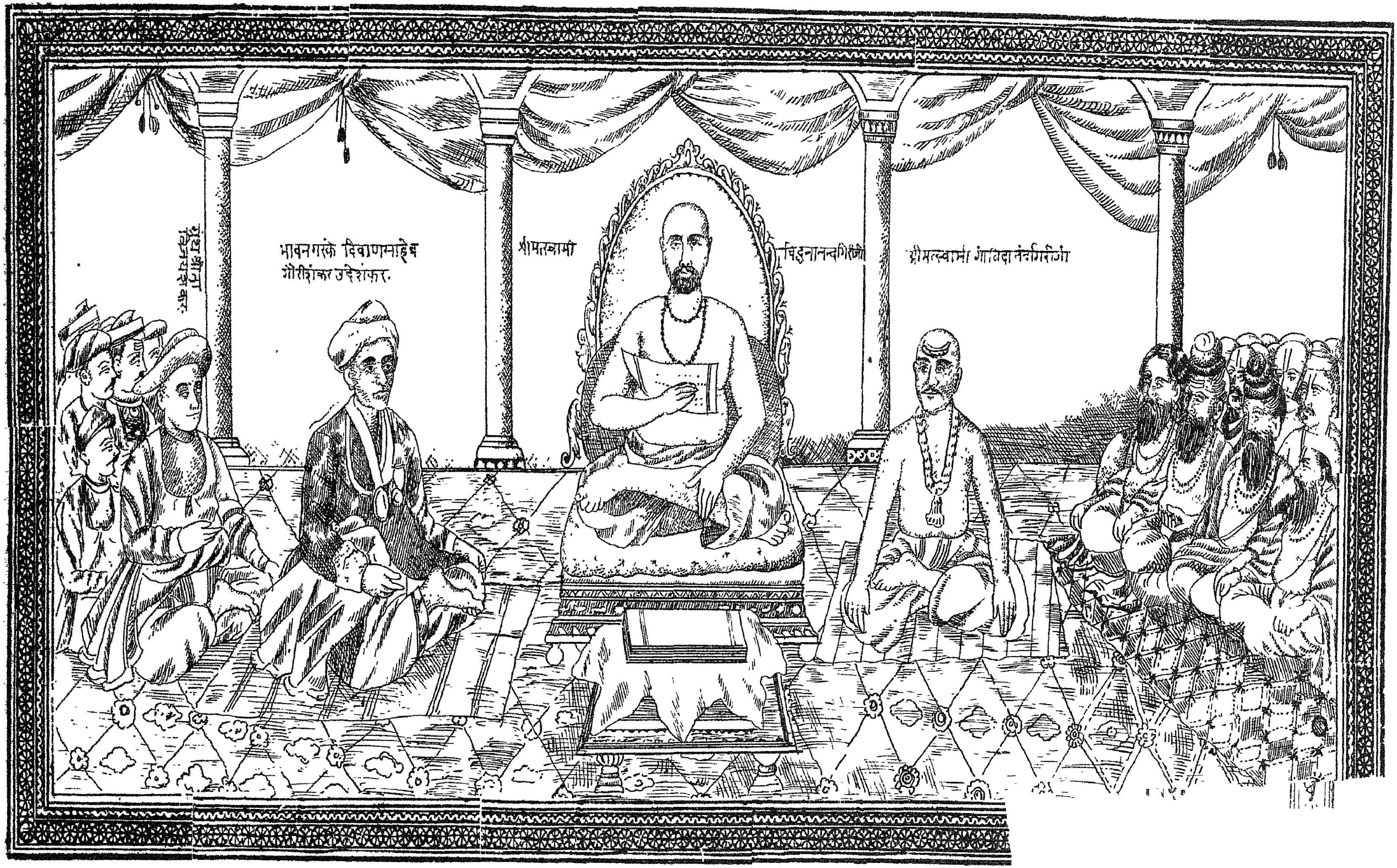
ग्रंथश्रीना
विजयशंकर.
भावनगरके दिवाणसाहेब
गौरीशंकर उदेशंकर.
श्रीमत्स्वामी
चिद्घनानन्दगिरिजी
श्रीमत्स्वामी गोविंदानंदगिरिजी

सूचना.

समस्त विद्वानोंको विदित है कि कैलासवासी परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामी श्रीचिद्धनानंदगिरिजी महाराज अपने समस्तग्रंथोंका सदासर्वदा छापनेका सर्वाधिकार हमको प्रदान करगयेहैं; तभीसे हम इस ग्रंथके सिवाय भगवद्गीता, तत्त्वानुसंधान, न्यायप्रकाश आदि ग्रंथ भी प्रकाशित करके विद्वानोंके दृष्टिगोचर करचुके हैं। परंतु, कईवर्ष हुये कि स्वार्थवश, बम्बईके हरिप्रसादभागीरथजीने यह ग्रंथ निर्णयसागरप्रेसमें छपा डाला परन्तु प्रकाशित नहीं करसके-और स्वामीजीके सचेत करनेसे और हमारा पूर्णाधिकार माननेसे ये रुके। और महाराजके कैलासवास होनेके पश्चात् भी जब महाराजके स्थानापन्न परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामी श्रीगोविंदानंदगिरिजीसे छापनेका अधिकार अन्योंने माँगा, तब साफ साफ नटकर उक्त स्वामीजीने हमाराही छापनेका अधिकार कायम रक्खा। तबसे संवत् १९५५ अर्थात् १६ वर्षसे ये छपे फार्म पडेही रहे, अब सहयोगीसे हमने ये छपे फार्म लेकर अपने स्वत्वसे यह चतुर्थावृत्ति प्रकाशित करीहै। अब साथही सर्वसाधारणको इस सूचनाद्वारा विदित भी कियेदेतेहैं कि भविष्यमें; कोई स्वामीजीके किसीग्रंथके छापनेका विचार करके सहयोगीकी भांति हानिमें न पडे ॥

आपका कृपाकांक्षी-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

मालिक-श्रीवेङ्कटेश्वर स्टीम् प्रेस-बंबई.

आत्मपुराणग्रंथके अध्यायोंकीतथाउपनिषदोंकी तथासंवादोंकी अनुक्रमणिका ।

अध्याय	वेदसहितउपनिषद्.	ऋषियोंकासंवाद.
१	ऋग्वेदका ऐतरेयउपनिषदर्थवर्णन.	सनकादिकमुनियोंका वामदेवादिप्रजाकेप्रति उपदेश.
२	ऋग्वेदका कौषीतकीउपनिषदर्थवर्णन.	देवराजइंद्रका प्रतर्दनराजाकेप्रति उपदेश.
३	ऋग्वेदका कौषीतकीउपनिषदर्थवर्णन.	राजाअजातशत्रुका बालाकिब्राह्मणकेप्रति उपदेश.
४	यजुर्वेदका बृहदारण्यकउपनिषदर्थवर्णन.	दध्यङ्ऋषिका इंद्र तथाअश्विनीकुमारोंकेप्रति उपदेश.
५	यजुर्वेदका बृहदारण्यकउपनिषदर्थवर्णन.	याज्ञवल्क्यमुनिका आश्वलायनादिब्राह्मणोंकेसाथसंवाद.
६	यजुर्वेदका बृहदारण्यकउपनिषदर्थवर्णन.	याज्ञवल्क्यमुनिका जनकराजाकेप्रति उपदेश.
७	यजुर्वेदका बृहदारण्यकउपनिषदर्थवर्णन.	याज्ञवल्क्यमुनिका मैत्रेयीस्त्रीकेप्रति उपदेश.
८	यजुर्वेदका श्वेताश्वतरउपनिषदर्थवर्णन.	श्वेताश्वतरऋषिका संन्यासियोंकेप्रति उपदेश.
९	यजुर्वेदका कठवल्लीउपनिषदर्थवर्णन.	यमराजाकानचिकेताकेप्रति उपदेश.
१०	यजुर्वेदका तैत्तिरीय नारायणीयउपनिषदर्थवर्णन.	वरुणऋषिका भृगुपुत्रकेप्रति उपदेश.
११	जाबालादिकएकादशउपनिषदर्थवर्णन.	वैराग्यादिसाधनोंसहित परमहंससंन्यासकानिरूपण.
१२	सामवेदका छांदोग्यउपनिषदर्थवर्णन.	उद्दालकऋषिका श्वेतकेतुपुत्रकेप्रति उपदेश.
१३	सामवेदका छांदोग्यउपनिषदर्थवर्णन.	सनत्कुमारभगवान्का नारदमुनिकेप्रति उपदेश.

१४	सामवेदका छांदोग्यउपनिषदर्थवर्णन.	प्रजापतिका इंद्रकेप्रति तथाविरोचनकेप्रति उपदेश.
१५	सामवेदका केनउपनिषदर्थवर्णन.	ब्रह्मविद्यारूपउमादेवीका देवतावोंकेप्रति उपदेश.
१६	अथर्वणवेदका मुंडकउपनिषदर्थवर्णन.	अंगिरामुनिका शौनकऋषिकेप्रति उपदेश.
१७	अथर्वणवेदका प्रश्नउपनिषदर्थवर्णन.	पिप्पलादमुनिका सुकेशादिकषट्ऋषियोंकेप्रति उपदेश.
१८	अथर्वणकानृसिंहतापिनीयईशावास्य उपनिषदर्थवर्णन.	प्रजापतिका देवतावोंकेप्रति उपदेश.

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ।

क्रय्य पुस्तकें (वेदान्तग्रंथ)

नाम.	की. रु. आ.
अनुभवप्रकाश—(वेदांत) योगेश्वर श्री १०८ बनानाथजी कृत मारवाडी भाषा। इसमें-गुरुकी महिमा, योगीकी प्रशंसादि आसावरी, सोरठ, वसन्त, गूजरी आदि ... अनेक रागोंमें वर्णन किया है.	०—८
अभिलाखसागर—भाषामें स्वामी अभिलाखदास उदासी कृत। इसमें-वन्दनविचार, ग्रन्थविचार, मार्गविचार, भजनविचार, जडब्रह्मविचार, चैतन्यब्रह्मविचार, निराकारब्रह्मविचार, मिथ्याब्रह्मविचार, अहंब्रह्मविचार, ब्रह्मविचार, वर्तमान ब्रह्मविचारादि विषय अच्छीरीतिसे वर्णितहैं...	१—८
अमृतधारा—वेदान्त भाषाछन्दोंमें भगवानदास निरंजनीकृत-वेदान्तकी प्रक्रिया छन्दोंमें लिखीगई है.	०—१०
आनन्दामृतवर्षिणी—आनन्दगिरिस्वामिकृत-गीताके कठिनशब्दोंका प्रतिपादन अर्थात् यह वेदान्तका मूल है. ...	०—१२
एकादशस्कन्ध—भाषामें चतुरदासजी कृत भागवतके एकादशस्कन्धकी वेदान्त समय कथा सुगम रीतिसे वर्णितहै.	०—१२
तत्त्वानुसन्धान—भाषामें स्वामी चिद्घनानन्दकृत अर्थात् "अद्वैतचिन्ताकौस्तुभ" यह ग्रन्थ आदिसे अन्ततक देखनेसे भलीप्रकार वेदान्तके छोटे बडे ग्रन्थ आपही आप विचार सक्ते हैं	२—०
दशोपनिषद्—भाषामें। स्वामी अच्युतानन्दगिरिकृत दशोपनिषद्का सरलभाषामें मूल २ का उल्था कियागयाहै, मुमुक्षुओंको पढनेसे शीघ्र अध्यात्म बोध होताहै. ...	२—०
पक्षपातरहित अनुभवप्रकाश (कामलीवाले बाबाजी कृत) इसमें चारवेद, षट्शास्त्रोंका सार औ अठारहों पुराणोंकी कथा आदिका अध्यात्म, विषयपर अर्थ लिखागयाहै। आत्मज्ञानियोंको अत्यन्त दुर्लभहै.	२—८

पुस्तक मिलनेका पता—

मालिक—खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस, बम्बई.

श्रीमान्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामीचिद्घनानन्दगिरिजीका जीवनचरित्र ।

श्रीमन्निखिलगुणगणालंकृतविद्वद्गण शिरोवतंस श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य पूज्यपाद श्रीमत्स्वामि चिद्घनानन्दगिरिजी महाशय महोदयका जन्म किस संवत् में और कहांपर हुआ था इस बातका कुछ पता नहीं मिलता । हां इतना अवश्य मालूम हुआहै कि, इनका शरीर सिंधुदेशका था । यह बातभी स्वामीजी महाराजके मुखसे विदित नहीं हुई किंतु उस देशके रहनेवालोंके कहनेसे जाननेमें आई है । इन्होंने प्रथम ब्रह्मचर्यावस्थामें हरिद्वारके निकट 'कनखल' तीर्थमें कुछ काल पर्यंत व्याकरणादि ग्रंथोंका अभ्यास किया । फिर श्रीकाशीपुरीमें आकर "न्याय वेदान्त" शास्त्रादिकोंको पढ कितनेही समयतक अधिकारी छात्रोंको पढाया । तदनन्तर मानुषानन्दसे लेकर हिरण्यगर्भ लोक पर्यंतके विषयसुखको विषवत् परित्याग कर अर्थात् इस असार संसारको छोडकर परमपूज्य ब्रह्मविद्वरिष्ठ श्री १०८ श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीस्वामी उद्धवानंदगिरिजी महाशयके चरणकमल में प्राप्त होकर संन्यास आश्रमको धारण किया और कितनेही काल पर्यंत स्वस्वरूपावस्थान रूप निर्विकल्पक समाधिमें स्थित रहे अर्थात् इनकी चित्तवृत्ति स्वस्वरूपसे उत्थान भावको प्राप्त नहीं होतीथी । फिर संसारके दुःखरूपी सूर्यसे संतप्त प्राणियोंके पुण्यपुंजकी प्रेरणासे श्रीस्वामीजी महाराजके मनमें रामेश्वरादि देवदर्शन करनेके लिये कुछ काल पर्यंत पर्यटन करनेकी इच्छा हुई । तदनुसार वह श्रीकाशीपुरीसे प्रस्थान कर गौतमीतटको और फिर गोदावरी तीर्थको गये । पश्चात् शनैः २ अन्यान्य तीर्थोंकी यात्रा करते हुए श्रीरामेश्वर क्षेत्रको गये । वहांपर श्रीरामेश्वरजी और सेतुका दर्शनकर श्रीद्वारिकापुरीकी यात्रा करते हुए काठियावाडके अंतर्गत भावनगर राजधानीमें पहुंचे । वहांके दीवान श्रीगौरीशंकरजी और विजयशंकरजी नागर जो अपने अनेक जन्मोंके उपार्जित पुण्योंके प्रभावसे बडे शुद्धान्तःकरण विवेकादि साधन सम्पन्न और परम प्रीतिमान् थे स्वामीजी महाराजका आगमन सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और हाथ जोडकर इनकी शरण आये । इन्होंने स्वामीजी महाराजसे प्रार्थना की कि, महाराज हमलोग अनादि कालसे वारंवार इस जन्ममरणादि महादुःखरूपी संसारसागर में निमग्न होरहे हैं । इस कारण जिस वस्तुको पानेसे यह प्राणी जन्म मरणादिके खेदसमुद्रको तर जाते हैं उसीका कृपया हमको उपदेश दीजिये । परम श्रद्धालु गौरीशंकरजी प्रभृति अधिकारियोंका ऐसा वचन सुनकर

परम करुणानिधि श्रीस्वामीजी महाराजने उनको उपनिषद्रत्नालय रूप आत्मपुराण श्रीमद्भगवद्गीता और तत्त्वानुसंधान, तथा शारीरक भाष्यादि ब्रह्मविद्याप्रतिपादक ग्रंथोंका श्रवण कराया। इनके सुननेसे ये अधिकारीवर्य प्राप्तव्य वस्तुको प्राप्तकर परम कृतार्थ भावको पहुंच गये। इन्होंने विनय किया कि "भगवन्! इस जगत्में मंदमतिवाले मुमुक्षु बहुत हैं जिनकी संस्कृत ग्रंथके श्रवणादिमें प्रवृत्ति नहीं हो सकती उन लोगोंके लिये आत्मपुराण गीता और तत्त्वानुसंधानादि ग्रंथोंकी प्राकृत भाषामें व्याख्या कर देवें तो अति उत्तम कार्य हो, क्योंकि इन ग्रंथोंके मनन करनेसे बहुतेरे मुमुक्षु जन परमकल्याणको प्राप्त होंगे और आप महानुभावोंका शरीर केवल जिज्ञासुजनोंके हितार्थही उत्पन्न हुआ है।" उक्त अधिकारियोंकी प्रार्थना सुनकर परम कृपालु श्रीस्वामीजी महाराजने भावनगरमें १२ वर्ष पर्यंत स्थित होकर "आत्मपुराण, गीता, तत्त्वानुसंधान और न्यायप्रकाश" इन चार ग्रंथोंकी हिन्दीभाषामें व्याख्या की। पश्चात् काशीजीमें पधारकर मोहल्ला टेढीनींबमें परम पूज्य श्रीमत्स्वामी उद्धवानन्दजीकी धर्मशालामें निवास किया। यहांपर श्रीस्वामीजी महाराजका ११ वर्षतक विराजना रहा और संवत् १९५४ की कार्तिक शुक्ला १ को अनुमान ६५ वर्षके वयमें यह स्थूल शरीरादि उपाधिका परित्याग कर निर्विशेष स्वस्वरूपको प्राप्त हुए। अब इन महाराजके स्थानमें इनके शिष्य मंडलीश श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीस्वामी गोविन्दानन्दजी महाराज विद्यमानहैं

प्रकाशक--खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणालयाध्यक्ष--मुम्बई.

अब या प्राकृतआत्मपुराणग्रंथके उत्पत्तिका देश तथा निमित्त वर्णनकरेहैं ।

गुजरातदेशविषे समुद्रकेतीरऊपर एक "भावनगर" नामाशहरहै ॥ ताभावनगरशहरविषे नागरब्राह्मणजातिकरिकैयुक्त देसाईगुलाबराइके पुत्र देसाईविजयशंकर रहैहैं ॥ सोविजयशंकर पूर्वलेपुण्यकर्मकेवशतैं यासंसारके व्यवहारतैं उपरामहोइकै केवलवेदांतशास्त्रकेश्रवणविषे तथा विचारविषे तत्परहोताभया ॥ तथा ऋग्वेदादिकोंकेऐतरेयादिकउपनिषदोंका निरंतरपाठकरताभया ॥ ताविजयशंकरनैं एकबार संस्कृत आत्मपुराणकाश्रवणकऱ्या ॥ ताआत्मपुराणविषे सर्वउपनिषदोंकेअर्थकूंश्रवणकरिकै ताकूं या प्रकारकीमनविषेइच्छाउत्पन्नहोतीभई ॥ जोयह आत्मपुराणग्रंथहीं हमारेकूं तथा सर्वमुमुक्षुजनोंकूं सर्वदा विचारकरणेयोग्यहै ॥ परंतु व्याकरणादिकसाधनोंतैंविनासंस्कृतग्रंथविषेप्रवृत्तिहोणी अत्यंतकठिनहै ॥ तथा वृद्धअवस्थाविषे व्याकरणादिकोंकापठनकरणाभी योग्यनहीं है ॥ यातैं यह आत्मपुराणग्रंथ जोकदाचित् भाषाविषेहोवै तौ हमारेकूं तथा सर्वमुमुक्षुजनोंकूं विचारणेविषेआवै ॥ ऐसीशुभइच्छाकरतेहुए दैवयोगतैं श्रीस्वामीचिद्घनानंदगिरिजी तीर्थयात्राकेनिमित्त श्रीकाशीजीतैंनिकसिकै श्रीरामेश्वरादिकतीर्थयात्राकरिकै श्रीद्वारकानाथकेदर्शनकरणेवासतैं ताभावनगरविषेआवतेभये ॥ तास्वामीचिद्घनानंदगिरिकेसमीप दर्शन करणेवासतै सोविजयशंकर जाताभया ॥ तथाकोईआत्मविचारकाप्रसंगचलावतभया ॥ तास्वामीकीब्रह्मविद्याविषे निष्ठादेखिकैएकदिनविषे किसीप्रसंगपाइकै याप्रकारकीप्रार्थनाकरताभया ॥ हेस्वामिन् हमसर्वमुमुक्षुजनोंकेहितवासतैं आप कृपाकरिकै या संस्कृत आत्मपुराणकेप्राकृतकरणेकापरिमश्रम अंगीकारकरौ ॥ ताकेप्रार्थनाकूंअंगीकारकरिकै सोस्वामीजी ताविजयशंकरके विश्वनाथमहादेवकेमंदिरविषेनिवासकरिकै ता आत्मपुराणके भाषाकरणेकाआरंभकरतेभये ॥ संवत् १९३१ शके १७९६ वैशाखसुदी ६ रविवाकूंआरंभ कऱ्या ॥ संवत् १९३४ शके १७९९ कार्तिकशुदी ११ शुक्रवारकूंसमाप्तभया ॥ ताभाषाआत्मपुराणग्रंथकी सर्वत्रप्रवृत्तिकरणेवासतैं श्रीस्वामीजीकीआज्ञातैं देसाई विजयशंकरनैं प्रथमवार प्रसिद्धकऱ्याथा ॥ उसीको अब तीसरीबार श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्रीमत्स्वामी चिद्घनानंद गिरिजीने शुद्ध करके ग्रंथ तथा छापनेकी आज्ञादीनी सो श्रीमहाराजकी अज्ञासे हमने छापके प्रसिद्ध कऱ्याहै ॥

उक्तस्वामीजी महाराजने अपने बनाये आत्मपुराण भाषा तथा श्रीमद्भगवद्गीता गूढार्थ दीपिका भाषाटीका, तथा तत्त्वानुसन्धान और न्यायप्रकाश आदिग्रन्थ सदाके लिये सर्वाधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यंत्रालयकोही प्रदान कर चुकेहैं। इस कारण कोई महाशय उक्त ग्रंथोंके छापनेका इरादा न करें कि, लाभकी आशासे इन्हीं महाराजके गीता छापनेवाले लोभियों की भांति हानि उठावें।

मुमुक्षुजनोंका कृपाकांक्षी-

क्षेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयाध्यक्ष खेतवाडी ७ वीं गलीखम्बाटालैन-मुंबई

उक्तस्वामीजी महाराजने अपने बनाये आत्मपुराण भाषा तथा श्रीमद्भगवद्गीता गूढार्थ दीपिका भाषाटीका, तथा तत्त्वानुसन्धान और न्यायप्रकाश आदिग्रन्थ सदाके लिये सर्वाधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यंत्रालयकोही प्रदान कर चुकेहैं। इस कारण कोई महाशय उक्त ग्रंथोंके छापनेका इरादा न करें कि, लाभकी आशासे इन्हीं महाराजके गीता छापनेवाले लोभियों की भांति हानि उठावें।

मुमुक्षुजनोंका कृपाकांक्षी-

क्षेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयाध्यक्ष खेतवाडी ७ वीं गलीखम्बाटालैन-मुम्बई.

ॐश्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ काशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ अज्ञानतिमिरांधस्य ज्ञानांजनशलाकया ॥ चक्षुरुन्मी
लितंयेन तस्मैश्रीगुरवेनमः ॥१॥ शंकरंशंकराचार्यं केशवंबादरायणम् ॥ सूत्रभाष्यकृतौवंदे भगवंतौपुनःपुनः ॥२॥ अथपरमकृपालु
जोपरमेश्वरहै ॥ सो सृष्टिकेआदिकालविषे जीवोंकेमोक्षवासतै वेदोंकूंरचताभया ॥ तहां प्रथमकर्मकांडविषे जीवोंकेचित्तशुद्धिके
वासतै वर्णाश्रमकेधर्मोंकूं निरूपणकरताभया ॥ दूसराजोउपासनाकांडहै ताविषे जीवोंकेविक्षेपकीनिवृत्तिवासतै नानाप्रकारकीउपा
सनांवोंकूं निरूपणकरताभया ॥ तीसराजोउपनिषद्रूपज्ञानकांडहै ताविषे कर्मऔरउपासनाकरिकेशुद्धभयाहैचित्तजिनोंका ऐसेजो
मुमुक्षुहैं तिनोंके ब्रह्मभावकीप्राप्तिऔरजन्ममरणकीनिवृत्तिरूपमोक्षवासतै जीवब्रह्मकेअभेदकूं निरूपणकरताभया ॥ याकहनेतैंय
हसिद्धभया ॥ संपूर्णवेद जीवब्रह्मकेअभेदकेप्रतिपादकहैं ॥ जीवब्रह्मकेभेदकेप्रतिपादकनहींहैं ॥ काहेतेंजीवब्रह्मकेभेदकूंदेखणेवा
लाजोपुरुषहै ॥ ताकूं वेदविषेभयकीप्राप्तिकहीहै ॥ किंवा ॥ जीवईश्वरकेभेदकूंजोवेदबोधनकरै ॥ तोवेद अप्रमाणहोवेगा ॥ काहेतैं
जीवईश्वरकाभेद मैंईश्वरनहींहूं यालोकोंकेअनुभवकरिकेसिद्धहै ॥ लोकोंकरिकेनहींजान्या ऐसाजोफलवालाअर्थ ॥ ताकेबोधनक
रिकेहीं वेदोंकूंप्रमाणता शास्त्रविषेकहीहै ॥ जीवब्रह्मकाभेद लोकविषेप्रसिद्धहै ॥ और भेदज्ञानतैं मोक्षरूपफलकीभीप्राप्तिहोवैन
हीं ॥ उलटा जन्ममरणरूपदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं भेदकेजनावणेमैं वेदोंकातात्पर्यनहींहै ॥ ऐसाजोपरमेश्वरकातात्पर्य ताकूंन
जाणिकरिके भेदवादीजेनैयायिकादिकहैं॥ ते संपूर्णवेदोंका जीवब्रह्मकेभेदनिरूपणविषे तात्पर्य वर्णनकरतेभये ॥ ताजीवब्रह्मकेभेद
कूंनिश्चयकरिकै जन्ममरणरूपदुःखकूं जीव प्राप्तहोतेभये ॥ ताजीवोंकूं दुःखीदेखिकरिकै परमकृपालुजोश्रीशंकरहै ॥ सो श्रीशंक
राचार्यरूपअवतारकोंधारिकरिकै उपनिषदोंका औरश्रीव्याससूत्रोंका भाष्यकरतेभये ॥ ताभाष्यविषे भेदवादियोंकाखंडनकरिकै
सर्वउपनिषदोंका जीवब्रह्मकेअभेदबोधनविषे तात्पर्यनिरूपणकरतेभये ॥ ताभाष्यतैं उपनिषदोंकेअर्थजानणेमैं जिनोंकीबुद्धिसम
र्थनहींहै ऐसैजेमुमुक्षुहैं ॥ तिनोंपर कृपाकरिके स्वामीशंकरानंद जोजोवाक्यमुमुक्षुकेमननमैंउपयोगीहैं ॥ ताताउपनिषदोंकेवाक्यों
काअर्थ आत्मपुराणविषे निरूपणकरतेभये ॥ ताआत्मपुराणविषेभी लोकोंकेप्रवृत्तिकूंनदेखिकरिकै पंडितकाकाराम तापरि टीकाकूं

करतेभये॥ ताटीकासहितआत्मपुराणतैंभी व्याकरणादिकोंकेअभ्यासतैंरहितजोहैं भाषाकेपठनकरणेवालेमुमुक्षु॥ तिनोंकूं श्रुतिअ
र्थकाज्ञानहोवैनहीं॥ यातैं तिनोंकेवास्तै जो जोउपयोगीटीकाहै ताकूंमिलाइकै संक्षिप्तभाषाकरेंहैं ॥ तहां प्रथमअध्यायविषे
ऋग्वेदकाजोऐतरेयउपनिषद्है ताकै अर्थका निरूपणकरैंहैं ॥ ताविषे गुरुशिष्यकेसंवादरूपकरिकै प्रथम अधिकारीकालक्षण निरूप
णकरैंहैं॥ पठनकरेहैंवेदजिसनें॥ और गुरुनैंकह्याजोअर्थ ताकेधारणेमें बुद्धिहैजाकी ॥ और कृपाकरिकैयुक्तहैमनजाका ऐ
साजोकोईकमुमुक्षुहै॥ सोपंचप्रकारकेभेदज्ञानकरिकै भयकूंप्राप्तभयाजोजगत ताकूंत्यागकरिकै एककालविषे विचारकरताभया॥
सोपंचप्रकारकाभेदयहहै॥ जीवईश्वरकाभेद १ जीवोंकापरस्परभेद २ जीवजडकाभेद ३ ईश्वरजडकाभेद ४ जडजडकाभेद ॥५॥
अब ताविचारकेस्वरूपकूंकहेहैं॥ बड़ाकष्टहै॥ संपूर्णजेदेहधारीजीवहैं ते यासंसाररूपशूलकरिकै जन्ममरणरूपदुःखकूंप्राप्तहोइर
हेहैं॥ कैसायहसंसाररूपशूलहै॥ कामक्रोधादिरूपकाकोंकाहैवासाजिसविषे॥ और स्त्रीरूपध्वजकरिकैयुक्तताकूंप्राप्तभयाहै ॥ यद्यपि
स्त्रीरूपध्वज याकेसुखकाकारणनहींहै॥ उलटा याकेदुःखकाकारणहै ॥ तथापि जैसें मार्गकेचलनेतैंपरिश्रमकूंप्राप्तभयाजोपुरुषहै
ताकूं दुःखकाकारणजोपादोंकाप्रहार सोभी सुखकाकारणहोवैहै ॥ तैसे विषयोंविषेंप्रीतिहैजाकी ऐसाजोपुरुषहै ताकूं दुःखकाका
रणजोस्त्रीहै सोसुखकाकारणप्रतीतहोवैहै॥ ऐसेसंसाररूपशूलतैं सर्वप्राणियोंकूं यालोकविषे भयकाहेतैंनहींहोता ॥ ऐसाविचारक
रिकै बुद्धिमान्जोमुमुक्षुहै॥ सो अपणेगुरुकूंपूछताभया॥ हेभगवन्! यासंसारशूलकूंपरित्यागकरिकै किसउपायकरिकै पुरुष मोक्ष
कूंप्राप्तहोवै? ॥ कैसायहसंसाररूपशूलहै॥ तीक्ष्णहै॥ और अज्ञानरूपलोहहैकारणजाका ॥ और सत्व रज तम येतीनगुणरूप
शिखाकरिकैयुक्तहै॥ इसप्रकार शिष्यकरिकैपूछाहुआ कृपाकासमुद्रजोगुरुहै॥ सो शिष्यकेप्रति कहताभया॥ हेशिष्य! अज्ञानकी
निवृत्तिकाउपाय एकज्ञानहीहै॥ और कर्मउपासनादिक अज्ञानकेनिवृत्तिकेकारणनहींहैं॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन्! मैंनें संसार
रूपशूलकीनिवृत्तिकाउपायपूछाहै॥ और आपनैं अज्ञानकीनिवृत्तिकाउपायकह्या॥ यातैं हमारेप्रश्नकेसमान उत्तरनहींभया॥ श्री
गुरुरुवाच॥ हेशिष्य! कामक्रोधादिरूपकाकोंका औरस्त्रीरूपध्वजकाहै निवासजाविषे ॥ ऐसाजो संपूर्णसंसाररूपशूलहै॥ सो पर

प स
मेश्वरकीमायाकरिकेउत्पन्नभयाहै ॥ ज्ञानतैंमायाकीनिवृत्तिहुए ताकाकार्यजोसंसारशूल ताकीभीनिवृत्तिबनेहै ॥ जैसे तंतुकेनाशतैं पटकानाशहोवेहै ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन्! पूर्व आपनें ज्ञानकरिकैअज्ञानकीनिवृत्तिकही ॥ और अब ज्ञानकरिकेमायाकीनिवृत्ति कही ॥ यातैं पूर्वउत्तरकहणेकाविरोधहोवेहै ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! माया औरअज्ञान येदोनोंशब्द एकहीअर्थकेवाचकहैं ॥ जैसे घट औरकलश येदोनोंशब्द एकहींअर्थकेवाचकहैं ॥ यातैंविरोधनहीं ॥ शिष्यउवाच ॥ पूर्व आपने ज्ञानतैंअज्ञानकीनिवृत्तिकही सोबनैनहीं ॥ काहेतैं घटपटादिकपदार्थोंकाज्ञानतो लोकोंकूंहै ॥ परंतु किसीकेअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हे शिष्य! वेदांतशास्त्रकेश्रवणतैंउत्पन्नभयाजोज्ञानहै ॥ सोई अज्ञानकानिवर्त्तकहै ॥ तिसतैंभिन्नजितनेंज्ञानहैं तेसंपूर्ण अज्ञानरूपहैं ॥ यातैं तिनोंतैं अज्ञानकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ जैसे सन्निपातकरिकेभ्रमकूंप्राप्तभयाजोपुरुष ॥ तानेंकह्या मेरेकूं भेरीकाशब्द श्रवणहोवेहै ॥ ताज्ञानकूं लोकविषेभीकोई यथार्थमानतानहीं॥यातैं मैंब्रह्महूं ऐसाजोवेदांतकेश्रवणतैं औरगुरुवोंकीकृपाकरिकै उत्पन्नभयाज्ञान ॥ सोईही मोक्षप्राप्तिकामार्गहै ॥ तातैं हेशिष्य! संसाररूपशूलकापरित्यागकरिके ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपजोमुक्तिमंडपहैताकूं प्राप्तहोवो॥ और अपणेस्वरूपकेअज्ञानकीनिवृत्तिवासतै "मैंब्रह्महूं" याज्ञानकूं वेदांतश्रवणादिकोंकरिकै अवश्यसंपादनकरो ॥ और आत्मज्ञानतैंभिन्न देहरूपबंधनकेदेणेहारे जेयज्ञादिककाम्यकर्महैं ॥ तिनोंका परित्यागकरो ॥ सोआत्मज्ञानकैसाहै ॥ संसाररूपशूलकाकारण जोअज्ञान ताका नाशकरणेहाराहै ॥ और भेदतैंरहितजोआत्मस्वरूपब्रह्म ताकी प्राप्तिकरणेहाराहै ॥ यातैं आत्माका ज्ञानहीं सर्वतैंअधिकहै ॥ अब आत्मस्वरूपब्रह्मविषे देशपरिच्छेद१कालपरिच्छेद२वस्तुपरिच्छेद३ यातीनोंपरिच्छेदोंकाअभावहै याअर्थकेजनावणेवासतैं प्रथम घटादिकअनात्मपदार्थोंविषे तीनपरिच्छेदोंकूंदिखावेहैं॥अत्यंताभावकीप्रतियोगिताकानाम देशपरिच्छेदहै ॥ जैसे भूतलविषेरह्याजोघट ताघटका अन्यदेशविषे अत्यंताभावहै ॥ ताअत्यंताभावकाप्रतियोगिपणा घटविषेहै ॥ ताकानाम देशपरिच्छेदहै ॥ प्रागभावऔरप्रध्वंसाभावकीप्रतियोगिताकानाम कालपरिच्छेदहै ॥ जैसे घटकीउत्पत्तितैंपूर्व कपालोंविषे घटकाप्रागभावरहेहै ॥ और घटकेनाशहुए ताकपालोंमें घटका प्रध्वंसाभावरहेहै ॥ तादोनोंअभावोंकाप्रतियोगीपणा घटविषेहै ॥

ताकानाम कालपरिच्छेदहै ॥ अन्योन्याभावकीप्रतियोगिताकानाम वस्तुपरिच्छेदहै ॥ जैसे पट घटनहींहै याप्रतीतितैं घटकाअन्योन्याभाव पटविषेभासेहै ॥ ताअन्योन्याभावकाप्रतियोगिपणा घटविषेहै ॥ ताकानाम वस्तुपरिच्छेदहै ॥ इसरीतिसैं सर्वअनात्मपदार्थ तीनपरिच्छेदोंकरिकैयुक्तहैं ॥ और आत्मस्वरूपब्रह्मविषे तीनपरिच्छेदोंकाअभावहै ॥ काहेतें ब्रह्म व्यापकहै यातें देशपरिच्छेद ब्रह्मविषेनहीं ॥ और उत्पत्तिनाशतैंरहितहै यातें कालपरिच्छेद ब्रह्मविषेनहीं ॥ और सर्वकाआत्माहै यातें वस्तुपरिच्छेद ब्रह्मविषेनहीं याअभिप्रायतैंहीं श्रुतिनें जीवब्रह्मकाअभेद कथनकऱ्याहै ॥ और आत्मस्वरूपब्रह्मकेप्राप्तिकासाधनज्ञानहै ॥ यातें ज्ञानकूं श्रुति ब्रह्मरूपकहतीभईहै ॥ और जैसे ज्ञानकूं ब्रह्मरूप श्रुतिविषेकह्याहै ॥ तैसे ज्ञानकूं सत्यरूपभी श्रुतिविषेकह्याहै ॥ काहेतें सत्यब्रह्मकीप्राप्तिकरणेहाराज्ञानहै ॥ यद्यपि अज्ञानकेनिवर्तकवृत्तिज्ञानकूं ब्रह्मरूपऔसत्यरूपकहणा बनैंनहीं ॥ काहेतें श्रवणादिकोंकरिकैज्ञानकीउत्पत्ति शास्त्रविषेकहीहै ॥ तथापि सत्यब्रह्मकेप्राप्तिकासाधनज्ञानहै ॥ यातें ज्ञानकूं ब्रह्मरूप औसत्यरूप कह्याहै ॥ जैसे आयुष्यकीवृद्धिकरणेहारा जोघृतहै ताकूं शास्त्रमें आयुषकहेहैं ॥ यातें ब्रह्मशब्दऔरसत्यशब्दका मुख्यअर्थ ज्ञाननहीं किंतु गौणअर्थहै ॥ आत्माही ब्रह्मऔरसत्यशब्दका मुख्यअर्थहै ॥ अब सत्यकेलक्षणकूंकहेहैं ॥ आदिकालविषे औरअंतकालविषे और मध्यकालविषे जोअपणेस्वरूपकूंनहींत्यागे किंतु तीनोंकालोंविषे एकरसहोवे ताकूं सत्यकहेहैं ॥ ऐसासत्यस्वरूपमैंहूं ॥ मेरेतेंअन्य अनात्मवस्तु सत्यनहीं ॥ इसरीतिसैं शास्त्रकरिकै सत्यशब्दकाअर्थकह्या ॥ अब लोकप्रसिद्धितैं सत्यशब्दकाअर्थकहेहैं ॥ जोवस्तु अस्ति याज्ञानका और अस्ति याशब्दका विषयहोवे ॥ सो लोकविषे सत्यशब्दकाअर्थहै ॥काहेतें वंध्यापुत्रविषे "वंध्यापुत्रोऽस्ति" याज्ञानकीविषयताहैनहीं ॥ यातैं वंध्यापुत्रकूं लोकविषे औरशास्त्रविषे कोई सत्यकहेनहीं॥ शिष्यउवाच ॥ हे भगवन् ! "घटःअस्ति" "पटःअस्ति" यारीतिसैं अस्तिशब्दऔरअस्तिबुद्धिकेविषय घटपटादिकभी सत्यहोणेचाहियें॥ और सिद्धांतमें ब्रह्मतैंभिन्न कोईसत्य पदार्थनहीं ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ! सत्‌चित् आनंदरूपब्रह्ममैंहूं यातें मेरीहीसत्यता सर्वअनात्मपदार्थोंविषे प्रतीतहोवेहै॥यातैं आत्मातैंभिन्नकोई सत्यनहीं ॥ तासत्यस्वरूपआत्माकूंविषयकरणेहाराजोज्ञानहै ॥ ताकूंभी सत्य श्रुतिने कह्याहै ॥ जैसे लोकवि

षे सत्यअर्थकूंबोधकरणेहारा जोविचारवानपुरुषकावचनहै ॥ ताकावचनकूं सत्यकहैहैं ॥ यातैं सत्यशब्दका परमात्माहीं मुख्यअर्थ
है ॥ और ज्ञान सत्यशब्दका गौणअर्थहै ॥ अथवा ॥ शत्रुतैंरहितजोहिरण्यगर्भहै ताकूं श्रुतिविषे सत्यकह्याहै ॥ तैसे अज्ञानऔर
अज्ञानकाकार्यप्रपंचरूपशत्रुकानाशकरणेहारा आत्मज्ञानहै ॥ यातैं ज्ञानकूं श्रुति सत्यकहैहैं ॥ शत्रुतैंरहितपणा ज्ञानविषे तैसेही
हिरण्यगर्भविषे समानहै ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन्! ज्ञानकाशत्रु जोअज्ञान औरताकाकार्यप्रपंच ॥ ताकूं आपनें असत्यकह्या सो
बनैनहीं ॥ काहेतैं तीनकालविषे जाकाअभावहोवै सो असत्यकहियेहै ॥ अज्ञानऔरताकेकार्यप्रपंचका तीनकालमैं अभावहैनहीं ॥
यद्यपि ज्ञानकालमैं अज्ञानकानाशहोवैगा ॥ तथापि वर्तमानकालविषे औरअतीतकालविषे अज्ञान विद्यमानहै ॥ काहेतैं अज्ञान
अनादिहै ॥ औरताकाकार्यप्रपंचभी वर्तमानकालविषेहै ॥ यातैं अज्ञानऔरप्रपंच असत्यनहीं ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! जोवस्तु
किसीकालविषेहोवै ॥ और किसीकालविषेनहींहोवै ॥ सो असत्यकहिएहै ॥ तीनकालों विषे जाकाअभावहोवै सोईहीं असत्यहो
वैहै यहनियमनहींहै ॥ यातैं अज्ञानकातो भविष्यत्कालमैंअभावहै ॥ और प्रपंचका भूतभविष्यत्दोनोंकालोंविषे अभावहै ॥ यातैं
अज्ञानऔरप्रपंच दोनों असत्यहैं जैसे वंध्यापुत्र भूतभविष्यत्कालविषेहैनहीं ॥ यातैं वर्तमानकालविषेभी ताकूं सत्यकोईकहैन
हीं ॥ यातैं आत्मातैंभिन्नसर्व वंध्यापुत्रकेसमान असत्यहैं ॥ काहेतैं जैसे वंध्यापुत्रका अपरोक्षज्ञान नहींहोवैहै ॥ तैसे कार्यसहित
अज्ञानकाभी अपरोक्षज्ञानहोवैनहीं ॥ यातैं दोनों समानहैं ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन्! आत्माकेप्रकाशकूंपाइकरिकै कार्यसहितअ
ज्ञान भासैहै ॥ और वंध्यापुत्र भासैनहीं ॥ यातैं वंध्यापुत्रतैं कार्यसहितअज्ञानमैं विलक्षणताहै ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! मुमुक्षुकूं
यद्यपि वंध्यापुत्रतैंअज्ञानमैंविलक्षणता प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि ज्ञानीकूं दोनोंसमानहैं ॥ यातैं आत्माकेसत्ताप्रकाशकूंपाइके अज्ञा
न भासैहै ॥ औरवंध्यापुत्र भासैनहीं यहकहना बनैनहीं ॥ काहेतैं जोआत्माकेसत्ताप्रकाशकूंपाइके अज्ञानकूं सत्यमानोगे तो वं
ध्यापुत्रभी सत्यहोणाचाहिये ॥ जैसे लोकविषे परधनकरिकै कोई धनीकहैनहीं ॥ तैसे आत्माकेसत्ताप्रकाशकरिकै अज्ञानकूंसत्य
कहना बनैनहीं ॥ यातैं कार्यसहितअज्ञान औरवंध्यापुत्र दोनों ज्ञानीकूंसमानहैं ॥ और मुमुक्षुकीदृष्टिकूंअंगीकारकरिकै आनंदरू

पआत्माविषे अज्ञानकूं रज्जुसर्पकीन्याईं कल्पितमानैं तौभी भेदबुद्धि मिथ्याहीसिद्धहोवैहै ॥ काहेतैं कल्पितवस्तुका अधिष्ठान तैंभेदहोवैनहीं ॥ और अनेकजन्मोंकेपुण्यकरिकै मैंब्रह्महूं ऐसाजाकूंबोध उत्पन्नभयाहै ॥ ताकूं अन्यकोईअनात्मवस्तु जानणेयोग्य नहींहै ॥ काहेतैं जीवब्रह्मकाअभेदज्ञानहीं परमानंदकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तातैं परमानंदकीप्राप्तिकरणेहारा वेदांतनतं उत्पन्नभया जोज्ञान ॥ ताकापरित्यागकरिकै जन्ममरणरूपबंधनकाकारणजोकर्महै ताकूं मुमुक्षु नकरै ॥ और सत्‌चित्‌आनंद सर्वका अंतर्यामी अद्वितीय आत्माकूं जेजेजीव परित्यागकरतेभये तेसंपूर्ण ताधर्मोपश्वादिशरीरोंकूं प्राप्तहोतेभये ॥ परमेश्वरकेउत्पन्नकरे वेदोंकूं न मानणा यहही परमेश्वरकापरित्यागहै ॥ हेशिष्य! याकेविषे पुरातनइतिहासकूंकहैहैं ॥ कैसाइतिहासहै ॥ मोक्षकेसाधनकूं जनावणे हाराहै ॥ और सनकादिकऋषियोंका औरप्रजाका संवादहै ताविषे ऐसेइतिहासकूं तुम श्रवणकरो ॥ सृष्टिकआदिकालविषे ब्रह्मा सनकादिकोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ कैसेहैंतेसनकादिक ॥ पुरुषोंकेतर्ककेनहींविषयजोवेदकाअर्थ ताकूंजानणेहारेहैं ॥ और चक्षुआ दिकजोबाह्यइंद्रिय औरमनरूपजोअंतरइंद्रिय तिनोंकूं जिनोंनें वशकियाहै ॥ और यथालाभकरिकै संतोषकूंप्राप्त भयेहैं ॥ और तउष्णादिकजिनोंनैंसहनकियाहै ॥ और आत्मज्ञानकरिकयुक्तहैं ॥ और लोकोंकेकल्याणवासते जिनोंनें शरीरधारणकरे ऐसेजेसनकादिकहैं ॥ ते प्रजाकूं मोक्षकेसाधनआत्मज्ञानतैंरहित देखिकरिकै औरविषयोंमैं आसक्तदेखिकरिकै कृपाकरिकैकहतेभये हेप्रजा! आत्मज्ञानहीं तुमारेकूं सुखकासाधनहै ॥ तातैंभिन्नसर्व दुःखकेसाधनहैं ॥ ऐसा सनकादिकोंकावचन श्रवणकरिकैभी पूर्व संस्कारकेवशतैं मोहकूंप्राप्तभई सा प्रजा तासनकादिकोंकेवचनोंका अनादरकरिकै विषयसुखवासते कर्मोंकूं करतभये ॥ ताप्रजा विषेभी अधम मध्यम उत्तम यहतीनप्रकारकी जाताप्रसीप्रजाहै ॥ ते पापकरिकेयुक्तहुए वेदकीआज्ञाकूं नमानतेभये ॥ और पूर्वम लिनसंस्कारतैंउत्पन्नभईजोबुद्धि ताकरिकै शब्दस्पर्शादिविषयोंकूं सुखकासाधनमानतेभये ॥ ताशब्दादिविषयोंमैं सुखसाधनबुद्धि तैं तिनोंकेमनवाक्‌शरीरविषे दोष उत्पन्नहोतेभये ॥ ताविषे परधनादिकोंकीइच्छादिक मनकेदोषहैं ॥ कठोरवचन औरमिथ्याबोल ना यह वाक्‌इंद्रियकेदोषहैं ॥ और चोरीसैंआदिलेके शरीरकेदोषहैं ॥ तिनदोषोंकरिकै तीनप्रकारकेशरीरोंकूं पावतेभये ॥ तहां

कोई आकाशमैंविचरणेहारे पक्षीआदिकू होतेभये ॥ कोई भूमीविषे वृक्षादिक होतेभये ॥ कोई सर्पादिक होतेभये ॥ कैसेपक्षीआ
दिकशरीरहैं ॥ मनुष्योंकरिकैभोग्यहैं ॥ और नाशकरणेयोग्यहैं ॥ और छेदनकरणेयोग्यहैं ॥ और हस्तपादवागादिकइंद्रियजि
नोविषेनहींहैं ॥ और सुखसैंरहितहैं ॥ अतिसैंकरिकेदुखीहैं ॥ तिनोविषेभी पक्षी हस्तोंतैंरहितहैं ॥ और वृक्ष ज्ञानइंद्रियऔरक
र्मइंद्रियोंतैंरहितहैं ॥ यद्यपिपंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय पंचप्राण मन बुद्धि यासप्तदशतत्वरूपलिंगशरीर वृक्षोंविषेभीहै ॥ यातैं
इंद्रियोंका वृक्षविषे अभावकहना बनैंनहीं ॥ तथापि जैसे मनुष्यादिकोंकेइंद्रिय प्रसिद्धहैं ॥ तैसे वृक्षादिकोंकेनहींहैं किंतु सूक्ष्महैं
॥ यातैं नहुयेसमानहैं ॥ और ग्रामऔरबनविषेरहणेहारे जेपशुहैं ॥ ते स्पष्टवाणीतैंरहितहैं ॥ काहेतैं तिनोकीवाणीतैं अर्थकाबोधहो
वैनहीं ॥ और सर्पादिक पादादिकोंतैंरहितहैं ॥ यहवार्ता सर्वलोकोंकूं प्रसिद्धहै ॥ याप्रकार तामसपुरुषोंकीगतीकही ॥ अब सात्वि
कपुरुषोंकीगतिकहणेवासते प्रथम राजससात्विकपुरुषोंकीप्रकृतियोंकूं दिखावेहैं ॥ दूसराप्रजा आत्मज्ञानकापरित्यागकरिकै वेदनैं
बोधनकरेजेयज्ञादिककर्म और अग्निसूर्यवायुआदिकदेवतावोंकीउपासना ॥ तिनोंकूं सुखकासाधनमानिकरिके करतेभये ॥ और
भिन्नभिन्नफलकेबोधकवेदवाक्योंकूंदेखिकरिकै कर्मउपासनाकरणेहारीप्रजाका दोप्रकारकाभेद होताभया ॥ तहां राजसीप्रजा स्व
र्गादिसुखवासते कर्मउपासनाकूं करतेभये ॥ और सात्विकप्रजा इसप्रकार परस्परविचारकरिकै कर्मउपासनाकूंकरतेभये ॥ ताबि
चारकेस्वरूपकूं कहेहैं ॥ वेदोंकूंजानणेहारे जेसनकादिकहैं ॥ तिनोंनैं हमारेकूं पूर्व मोक्षकासाधनआत्मज्ञान कह्याथा ॥ ताज्ञानविषे
अबीहमाराअधिकारहैनहीं ॥ काहेतैं जाकाज्ञान सुखकासाधनहै ॥ ऐसा जो त्वंपदकालक्ष्य साक्षीकूटस्थ ॥ और तत्पदकालक्ष्य
परब्रह्म ॥ तिनोंकूं हमोंनैंदेहादिकोंतैंभिन्न नहींकियाहै ॥ और वेदोंकेजानणेहारे जेपूर्वहमारे पितादिकथे ॥ तिनोंकेवचनोंकरिकेभी
सोपरमात्मा हमोंनैं नहींजान्या ॥ और आपनीबुद्धिकरिकेभी सोपरमात्मा हमोंनैं नहींजान्या ॥ और मनकीप्रवृत्तिमैंकुशलजोह
महैं ॥ तिनोंनैं मनकरिकेभी सोपरमात्मा नहींकल्पनाकऱ्या ॥ और यादेहरूपमंदिरविषे सोपरमात्मा घ्राणइंद्रियकरिकेभी हमों
नैं नहींजान्या ॥ और चक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकै स्वप्नविषेभी सोपरमात्मा हमोंनैं नहींदेख्या ॥ और श्रुतिवाक्योंकरिकेभी सो

निर्गुणपरमात्मा हमोंनें नहींजान्या ॥ और हमोंनें आपणेश्रद्धावान्शिष्योंकेतांई भी कबीनिर्गुणपरमात्माका उपदेशनहींकन्या ॥ औ
रस्थूलशरीरतैंभिन्न औरकर्त्ता पुण्यपापकेफलकाभोक्ता आत्माहै ॥ ऐसाआत्माकास्वरूप हमोंनें जान्याहै ॥ और श्रुतिनैंभी आ
त्माकूं श्रोता द्रष्टा विज्ञाता कह्याहै ॥ और वाक्प्राणकेव्यापारविषे परस्परलयचिंतनरूप अंतरअग्निहोत्रकूंजानणेहारे कवषमुनि
केपुत्र जैसे बाह्यअग्निहोत्रतैंवैराग्यकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तैसे यज्ञादिककर्मोंविषे वैराग्यकूंहम प्राप्तनहींभये ॥ यातैं गुरुकेसमीपजाइके
आपणेस्वरूपकेनिर्णयकरणेविषेभी हमाराअधिकारनहीं ॥ और जोहम तापरमात्माकूंनजाणिकरिके स्वर्गादिकोंकीप्राप्तिवासतै
कर्मोंकूंहींकरेंगे ॥ तो हमाराजन्म निष्फलजावेंगा ॥ काहेतें सर्वजीवोंकाशरीर परमात्मानें निर्गुणब्रह्मकेजानणेवासतेरचाहै ॥ विष
यभोगवासतेनहींरचा ॥ याकरणतेंहीं श्रुतिविषे पादकेनखाग्रतैंलेकरिके मस्तकपर्यंत उरू उदर हृदय आदिकस्थानोंविषेब्रह्मकाप्र
वेशकह्याहै ॥ तिनोंदेहोंविषेभीगुरुशास्त्रआदिकसाधनोंकरिकेयुक्त पुरुषकादेहही स्पष्टआत्मज्ञानवासतेहै ॥ काहेतें श्रुतिनें यापुरुषश
रीरविषेहीं आत्माकाअपरोक्षज्ञानकह्याहै ॥ और पूर्व सनकादिकोंने हमारेतांईश्रुतिकरिकेसिद्धि औरमोक्षकासाधन आत्मज्ञानहीं
तुमारेकूं करणेयोग्यहै ऐसाकह्याथा ॥ और सनकादिकोंनें कह्याजोआत्मज्ञान ताकेसंपादनमें आपणेसामर्थ्यकूंनदेखिकरिके और
याज्ञानविषेहमारेकूं किसप्रकारअधिकारहोवेंगा ऐसेचिंताकरिके मौनकूंधारिकै हम ईहांआवतेभयेहैं ॥ तातैं विवेकादिकसाधनच
तुष्टयरूपअधिकारकी प्राप्तिवासते कर्मऔरउपासनाकूं हमकरें ॥ ऐसाविचारकरिके प्रजा उपासनाकूंऔरकर्मोंकूं फलकीइछासें
रहितहोइकेकरतेभये ॥ ताकर्मउपासनाकरिकेशुद्धभयाहैमनजिनोंका ॥ और शमदमादिकसाधनोंकरिकेयुक्त ॥ औरआत्मज्ञानतें
रहित ॥ ऐसेजेमुमुक्षुहैं ॥ ते पुनःसनकादिकऋषियोंकूंप्राप्तहोइकरिके ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै तिनोकेतांई आपणासंपूर्णअभिप्राय
कहतेभये ॥ तिनोंकेवचनकूंश्रवणकरिके कृपाकरिकेयुक्त सर्वज्ञसनकादिक आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते तिनोंकूं कहतेभये ॥ सनकादिक
उवाच ॥ हेप्रजा! वाणीऔरमनका आत्माविषयनहींहै ॥ काहेतें जाति गुण क्रिया करिकेयुक्तवस्तुकाहीशब्दबोधनकरेहै ॥ जैसे घटय
हशब्द घटत्वजातिवालेघटकूं बोधन करेहै ॥ और नीलघट यास्थानमें नीलशब्द नीलगुणवालेका बोधनकरेहै ॥ और पाचकयहशब्द

पाकरूपक्रि ...वालेपुरुषकूं बोधनकरेहैं॥इसरीतिसैं किसीधर्मकूंग्रहणकरिकेहीं शब्द आपणे अर्थकूंबोधनकरेहै ॥ और आत्माजातिआदिकधर्मोंतैंरहितहै॥यातैं शब्दकी आत्माविषेप्रवृत्तिहोवैनहीं॥इसरीतिसैं मनवाणीकाअविषय और सत्चित्आनंदरूप आत्माकूं यद्यपिहमकहणेकूंसमर्थनहींहैं॥और तुमभी जानणेकूंसमर्थनहींहो॥तथापि निर्गुणपरमात्माविषे जगत्काआरोपणकरिके ताजगत्का निषेधरूप जोअध्यारोपअपवाद॥ताकरिकेसिद्ध जो भागत्यागलक्षणा॥ तालक्षणाकरिके परमात्माकूं हम अब तुमारेतांईकहतेहैं ॥ दृष्टांत॥जैसे सोयेहुएराजाकूं बंदीपुरुष जगावतेहैं॥तैसे वास्तवतैंशुद्ध औरअज्ञानरूपनिद्राकरिकेसोयेहुएपरमात्माकूं वेदांतशास्त्र भागत्यागलक्षणाकरिके बोधनकरेहैं॥प्रजाउवाच॥हेभगवन्! पूर्व आपनेंकह्या शुद्धआत्माकूं वेदांत बोधनकरेहै ॥ सोबनेंनहीं ॥काहेतें आत्मा अहंकारआदिकोंकरिकेविशिष्टहै ॥ यातैं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकेसिद्धहै ॥ सनकादिकउवाच ॥ हेप्रजा! आत्माविषे जोसाकारपणाहै ॥ सो मायाकरिकेकल्पितहै ॥ यातैंमिथ्याहै ॥ और सर्वकल्पनाकाअधिष्ठानवस्तुही आत्मशब्दकाअर्थहै ॥ अब याअर्थकूं स्पष्टकरिकेदिखावेहैं॥हेबुद्धिमानप्रजा॥ शास्त्रसंस्कारतैंरहित जेलौकिकपुरुषहैं॥ और शास्त्रकेजानणेहारेजेवादीपुरुषहैं ॥तिनोंनें लोकविषे दोप्रकारकाशब्द औरदोप्रकारकाज्ञान निश्चयकियाहै ॥ और ताशब्दऔरज्ञानकाविषयरूपअर्थभी दोप्रकारकानिश्चयकियाहै ॥ तहां अहं याशब्दका और अहं याज्ञानका अंतरआत्मा अर्थहै ॥ और न अहं याशब्दका और नअहं याज्ञानका बाह्यअनात्मवस्तु अर्थहै ॥ तहां अहं याशब्दतें और अहं याज्ञानतें आत्मारूपअर्थ भिन्नहै ॥ और नअहं याशब्दतें और नअहं याज्ञानतें अनात्मरूपअर्थ भिन्नहै॥इसरीतिसैं परस्परभिन्न जे शब्द ज्ञान अर्थ॥ तिनोंकूं एकरूपजाणिकरिके भ्रांतपुरुष आत्माकूं अहंयाशब्दऔर अहंयाज्ञानका विषयमानैंहैं ॥ और अनात्मपदार्थोंकूं नअहंशयाब्दका और नअहंयाज्ञानका विषयमानैंहैं ॥ यातैं अहं और नअहं यहसर्वव्यवहार भ्रमरूपहै ॥ इसरीतिसैं घट ऐसेशब्दतें और घट ऐसेज्ञानतें घटरूपअर्थ भिन्नहै ॥ ताविषे घट ऐसाजोलोकोंकाव्यवहारहै ॥ सोभी शब्द औरज्ञान औरअर्थ रूपहै ॥ यातैं भ्रमरूपहै ॥ काहेतें लौकिकपुरुषतैं किसीनेंपूछा ॥ यहकौनवस्तुहै तब घट यहउत्तर लौकिकपुरुष कहैहैं ॥ और कैसाज्ञान तुमारेकूंभयाहै ऐसाकिसीनेंपूछा तबभी घट यहउत्तर कहैहैं॥ और कौनशब्द

तुमनें श्रवणकऱ्या ऐसाकिसीनेपूछा तबभी घट ऐसाउत्तर कहेहैं ॥ इसरीतिसैं परस्परभेदवाले शब्दज्ञानअर्थोंकूं एकरूपकरिकेजा
नणा भ्रांतिसैंविनाबनैंनहीं ॥ यातैं सर्वलोकोंकाव्यवहार भ्रमरूपहै ॥ और यहलोकोंकेव्यवाहार युक्तिकूंभी नहींसहारता ॥ यातैं
भी भ्रमरूपहै॥ काहेतैं वाकइंद्रियविषे शब्दरहेहै ॥ और हृदयविषे ज्ञानरहेहै॥ और अर्थजोघटादिकहै सो भूमीविषेरहेहै ॥ताअ
र्थकूं शब्दऔरज्ञानरूपमानणा यह पुरुषोंकीभ्रांतिसैंविना बनैंनहीं ॥ किंवा ॥ शब्दज्ञान अर्थ यातीनोंकूं एकमानणेमैं व्याघात
दोषभी होवेहै ॥ काहेतैं जब शब्दऔरज्ञान प्रकाशकहोवैं ॥ और शब्दज्ञानकाजोअर्थ सो प्रकाश्यहोवै ॥ तब शब्दज्ञान औरअ
र्थ दोनोंका परस्परभेदहींसिद्धहोवेहै ॥ काहेतैं लोकविषे प्रकाशकऔरप्रकाश्यका परस्परभेदहीं देख्याहै ॥ जैसे किसीपुरुषनें पि
ताऔरपुत्र एकस्थानविषेदेखेहोवैं ॥ और दूसरेदेशमैं तापुत्रकूंदेखिकरिके ताकेपिताकास्मरण तापुरुषकूंहोवेहै ॥ यास्थानमैं पुत्र
प्रकाशकहै ॥ औरपिता प्रकाश्यहै ॥ तिनोंकाभेद लोकविषेप्रसिद्धहै ॥ तैसे प्रकाशक जेशब्दओज्ञानहैं ॥ तिनोंका प्रकाश्यरूप
अर्थसैं जोअभेदमानोगे ॥ तो आपणेतैंआपणाभेदरूप व्याघातदोष प्राप्तहोवैंगा॥ अब पूर्वकह्याजोअर्थ ताअर्थकूं सिद्धांतविषेजोडे
हैं॥ इसप्रकार व्यवहारकालविषे अहंयाशब्दका औरअहंयाज्ञानका लोकोनें आत्मा विषयमान्याहै ॥ और नअहंशयाब्दऔरज्ञा
नका अनात्मवस्तु विषयमान्याहै ॥ तहां अहं याशब्दऔरज्ञानकापरित्यागकरिके तिनोंका जोअर्थ भेदतैंरहित बाकीरह्या ॥ सोईही
भेदतैंरहित सर्वशक्तिसंपन्न परमात्मा जगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वहोताभया ॥ और लोकप्रसिद्ध जेशब्द औरज्ञान औरअनात्माहैं ॥ तेपूर्व
नहींहोतेभये ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अंधकारकाविरोधीसूर्यभगवान् अंधकारकीनिवृत्तिकरिके अंधकारतैं औरताविषेविचरणेहारेपिशाचा
दिकोंतैं रहितहुआ प्रकाशेहै ॥ तैसे परमात्माभी आपणाकार्यप्रपंच आपणेविषेलयकरिके अद्वितीयरूपतैं पूर्वस्थितहोवेहै ॥ अब
याअर्थकूंही स्पष्टकरिकेदिखावेहैं ॥ दिनदिनविषे जैसे सूर्यविषे अंधकार लयकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसे सत्यआनंदरूपआत्माविषे यह
संपूर्णजगत् लयकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और जैसे संपूर्णरात्रियोंविषे सूर्यकाआच्छादनकरिके अंधकार अविद्यातैंउत्पन्नहोवेहै ॥ तैसे सत्
चित्आनंद रूपआत्माकूंआच्छादनकरिके आत्मासैंविरुद्धस्वभाववाला असत् जड दुःख अनात्मस्वरूप जगत् उत्पन्नहोवेहै ॥

अन्यदृष्टांत ॥ जैसे सर्पकीउत्पत्तितैंपूर्व रज्जुहींस्थितहै ॥ और सर्प आपणीउत्पत्तितैंपूर्वनहींहै ॥ तैसे अनात्मजगत्‌कीउत्पत्तितैंपूर्व आनंदस्वरूपआत्माहीं स्थितहोताभयाऔर अनात्माजगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व नहींस्थितहोताभया ॥ प्रजाउवाच ॥ हेभग वन्! सृष्टितैंपूर्व आपनें अद्वितीयपरमात्माकह्या ॥ सोबनैंनहीं ॥ काहेतें सृष्टितैंपूर्व यद्यपि कार्यरूपप्रपंचकाअभावहै ॥ तथापि सर्व जगत्‌काकारणरूपमाया विद्यमानहै ॥ सनकादिकउवाच ॥ हेप्रजा! आत्मातैंभिन्नहोइके माया प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं मायाकूंसत्य मानोहो ॥ अथवा प्रमाणकरिकेमायासिद्धहै ॥ यातैं मायाकूंसत्यमानोहो ॥ तहां प्रथमपक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतें जैसे सुषुप्ति कूंप्राप्तभयापुरुष जाग्रत्स्वप्नकेअनंतसंस्काररूपगर्भकरिकेयुक्तअविद्याकूं देखताहुआभी आपणेतें ताअविद्याकूं भिन्ननहींदेख ता ॥ इसप्रकार मायावाला महेश्वर आनंदरूपआत्माभी संपूर्णजगत्‌रूपगर्भकरिकेविशिष्टमायाकूं देखताहुआभी आपणे तैंभिन्नताकूं नहींदेखता ॥ सुषुप्तिविषे औरप्रलयविषे संस्काररूपहोइके जगत् अज्ञानमैंरहैहै ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे वर्षाकेनि वृत्तिहुए मंडूकोंकेसूक्ष्म अवस्थारूपसंस्कार भूमिविषेरहैहैं ॥ और वर्षाकेहुए पुनःतिनोंका प्रादुर्भावहोवैहै ॥ ऐसे संसकाररूपतैं अज्ञानविषेरह्याजोजगत् ताका सृष्टिकालमैं प्रादुर्भावहोवैहै ॥ और मायाप्रमाणकरिकेसिद्धहैयातैंसत्यहै ॥ यहदूसरापक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतें मायाहै ऐसीजा मायाकीसिद्धिहै ॥ सोभी मायातैंहींमायाकीसिद्धिहै ॥ प्रमाणतैं मायाकीसिद्धि विवेकीपुरुषोंनें अंगीकारकरीनहीं ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे सुषुप्तपुरुषकीसुषुप्ति सुषुप्तिकरिकेही सिद्धहै ॥ किसीप्रमाणकरिकें सिद्धनहीं ॥ और जो प्रमाणअंगीकारकरे ॥ ताकूं यहपूछेहैं ॥ तासुषुप्तिरूपअविद्याविषे प्रत्यक्षप्रमाणहै ?॥ अथवा अनुमानप्रमाणहै? ॥ अथवा शब्दप्रमा णहै? ॥ अथवा इनोंतैंकोईभिन्नप्रमाणहै ॥ तहां प्रत्यक्षप्रमाणहै याप्रथमपक्षमैंभी सुषुप्तपुरुषकेप्रत्यक्षप्रमाणकरिकेसिद्धहै ॥ अथ वा अन्यपुरुषकेप्रत्यक्षप्रमाणकरिकेसिद्धहै ॥ यहदोनोंपक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतैं इंद्रियजन्यज्ञानकानाम प्रत्यक्ष नैनायिक मानैहैं ॥ सुषुप्तिविषे इंद्रियोंकालयहोवैहै ॥ यातैं सुषुप्तपुरुष प्रत्यक्षप्रमाणकरिके सुषुप्तिकूंजाणतानहीं ॥ तैसे जागताहुआजोअन्यपुरुषहै ॥ सोभी अन्यकेसुषुप्तिकूं प्रत्यक्षप्रमाणतैंजाणतानहीं ॥ काहेतैं जैसे एकपुरुषकेज्ञानका दूसरेपुरुषकूं प्रत्यक्षहोवैनहीं ॥ तैसे अज्ञान

रूपसुषुप्तिकाभी दूसरेपुरुषकूं प्रत्यक्षहोवैनहीं॥ यातें प्रत्यक्षप्रमाणतें सुषुप्तिकीसिद्धि बनैंनहीं॥ शंका॥ हेभगवन्! यद्यपि प्रत्यक्ष
प्रमाणतें सुषुप्तिकीसिद्धिबनैंनहीं॥ तथापि यहपुरुष सुषुप्तिवालाहै इंद्रियोंकीक्रियातेंरहितहोणेतें॥ याअनुमानकरिकै सुषुप्तिरूप
अज्ञानकीसिद्धि बनैहै॥समाधान॥इंद्रियोंकेक्रियाकाअभावरूपहेतु सुषुप्तिकासाधकबनैंनहीं॥काहेतें सुषुप्तिरूपसाध्यकेअभाववा
लेजेस्वप्नऔरसमाधि॥ तिनोंविषेभी इंद्रियोंकेक्रियाकाअभावरूपहेतु रहेहै॥ यातें व्यभिचारीहै॥ साध्यकूंछोडिकरिके जोहेतु क
बीरहैनहीं॥ सोहेतु साध्यकीसिद्धिकरैहै॥ यातें अनुमानप्रमाणभी सुषुप्तिकासाधकनहींहै॥ शास्त्ररूपशब्दप्रमाण सुषुप्तिरूपअज्ञा
नकासाधकहै॥ यहतीसरापक्षभी बनैंनहीं॥ काहेतें पुरुषोंकरिकेरचाहुआशास्त्र अविद्यारूपसुषुप्तिविषे प्रमाणहै॥ अथवा अ
पौरुषेयवेद ताविषे प्रमाणहै॥ तहां प्रथमपक्षतौ बनैंनहीं॥ काहेतें प्रत्यक्षादिप्रमाणोंकरिकेसिद्धपदार्थोंकूंहीं पुरुषोंकरिकेरचाहु
आशास्त्र प्रतिपादनकरैहै॥ प्रत्यक्षादिकप्रमाण अविद्याकेसाधकहैंनहीं॥यातें लौकिकशास्त्रभी ताविषे प्रमाणनहीं॥ और वेदप्रमा
णहै यहदूसरापक्षभी बनैंनहीं॥ काहेतें फलवालेअर्थविषेहीं वेद प्रमाणहोवेहै॥ फलनाम सुखकीप्राप्तिऔरदुःखकीनिवृत्तिकाहै॥
तेदोनों जीवब्रह्मकेऐक्यज्ञानतेंहोवैहै॥अविद्याकेज्ञानतेंहोवैनहीं॥ यातें अविद्याविषे शास्त्रप्रमाणनहीं॥ शंका॥ वेदविषे मायाओ
रअविद्याकेबोधकवाक्य औरअविद्यातेंजगत्कीउत्पत्तिकेबोधकवाक्य बहुत दिखातेहैं॥ तिनोंका क्याअभिप्रायहै?॥ समाधान॥
फलकेअभावहोणेतें अविद्याकेबोधनविषे शास्त्रकातात्पर्यनहीं॥ किंतु अद्वितीयआनंदरूपआत्माकेजनावणेवास्तेहीं अविद्याकाओ
तातेंजगत्कीउत्पत्तिका वेदविषेकथनहै॥ सोकैसीअविद्याहै॥ जैसे दीपककरिके अंधकारकाज्ञानहोवैनहीं॥ तैसे प्रमाणकरिकेअवि
द्याकाज्ञानहोवेनहीं॥ किंतु अविद्यातेंहीं अविद्यासिद्धहै॥ इसप्रकार प्रलयकालविषे परमात्मा कार्यकारणपरिणामकूंनहींप्राप्तभई
जामाया तामायाकरिकेविशिष्टभीहै॥ तोभी परमात्मा मायातेंरहितकह्याहै॥ दृष्टांत॥ जैसे सूर्यभगवान् अंधकारकाकारण
जोअज्ञानताकरिकेविशिष्टभीहै॥ तोभी दिनविषे कार्यरूपअंधकारतेंरहितहै यातें सूर्य अंधकारतेंरहितकहिएहै॥ इसप्रकार
स्थितहुआपरमात्मा सृष्टिकेआदिकालविषे ऐसाविचार करताभया॥ कैसाहैसोपरमात्मा पूर्वपूर्वकल्पोंविषे सृष्टिकूंविषयकरणे

हारा जोमायाकावृत्तिरूपज्ञान तातैंउत्पन्नभयेजेसंस्कार तिनोंकरिकेयुक्तहै ॥ और जीवोंकेपुण्यपापरूपअदृष्टकरिकै प्रगटहुएहैंसं
स्कार जिसपरमात्माके ॥ सोपरमात्मा विचारकरताभया ॥ अब ताविचारकेस्वरूपकूंकहैहैं ॥ मायाउपहितमैंपरमात्माविषे पंच
भूत औरताकाकार्यब्रह्मांडसंपूर्ण सूक्ष्मरूपहोइकरिकेरह्याहै ॥ यातैं इसप्रकार स्पष्टकरिकै स्वर्ग औरआकाश औरभूमि यातीनों
लोकोंकूंरचों ॥ ईहां स्वर्गकरिके ऊपरिकेसर्वलोकोंकाग्रहणकरणा ॥ और भूमिलोककरिकै नीचेकेसर्वलोकोंकाग्रहणकरणा ॥ इ
सप्रकार विचारकरिकै सत्यसंकल्पजोपरमेश्वरहै ॥ सो ब्रह्मांडकूंरचताभया ॥ कैसाब्रह्मांडहै ॥ विराट्भगवान्‌काशरीरहै ॥ और
हिरण्यगर्भकाशरीररूपजोपंचसूक्ष्मभूत तिनोंविषेस्थितहै ॥ और भूरादिचतुर्दशलोकोंकरिकेयुक्तहै ॥ और चेतनकीसत्तातैंभिन्न
जाकीसत्तानहीं ॥ और नाम रूप क्रिया हैंशरीरजाका ॥ तहां नामकरिके शब्दरूपप्रपंचका ग्रहणकरणा ॥ और रूपकरिके अ
र्थरूपप्रपंचका ग्रहणकरणा ॥ और क्रियाकरिके नामरूपकाकारणजोकर्महैं तिनोंका ग्रहणकरणा ॥ इसप्रकार सर्वज्ञऔरस
र्वशक्तिमान्‌परमेश्वर संपूर्णजगत्‌कूंरचिकरिकै ऐसाविचार करताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे असुरोंकाबालक रागद्वेषतैंरहितहुआ आ
पणीमायाकेबलतैं पदार्थोंकूंरचताहै ॥ तैसे परमेश्वर जगत्‌कूंरचताभया ॥ अब ताविचारकेस्वरूपकूंकहैहैं ॥ यहजेपंचभूतहैं॥औ
र जलहैप्रधानजिनोंविषेऐसेपंचभूतोंविषेस्थित जोयहब्रह्मांडहै ॥ और ताब्रह्मांडविषेस्थित जेयहचतुर्दशलोकहैं ॥ यहसंपूर्ण अ
चेतनहैं ॥ यातैं क्षणमात्रविषे नाशकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ दृष्टांत ॥ जैसे स्वामीतैंरहितगृह नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे प्राणीतैंरहितहु
आशरीर नाशहोवैहै ॥ ऐसाविचारकरिकै पिताकीन्यांई पालनकरणेहारा जोपरमेश्वरहै ॥ सो पूर्वआपणेआपणेसत्त्वगुणादिकका
रणोंतैं उत्पन्नभये जेसंपूर्णइंद्रिय औरदेवताआदिकेजगत् ताकेप्रगटकरणेवासते ताअंडविषे नानाप्रकारकेछिद्रोंकूं करताभया॥त
हां मुखछिद्ररूपगोलककूंप्राप्तहोइके शब्दव्यवहारकरणेहारा वाक्इंद्रिय प्रगटहोताभया॥तावाक्इंद्रियतैं वैदिकयज्ञादिककर्मोंकी
सिद्धिकरणेहारा अग्निदेवताप्रगटहोताभया ॥ और नासिकाछिद्ररूपगोलककूंप्राप्तहोइके घ्राणइंद्रिय प्रगटहोताभया ॥ ताघ्राणइं
द्रियतैं गंधउपाधिवालावायुदेवता प्रगटहोताभया ॥ और अक्षिछिद्ररूपगोलककूंप्राप्तहोइके चक्षुइंद्रिय प्रगटहोताभया॥ताचक्षुइं

द्रियतैं भगवान्सूर्यदेवता प्रगटहोताभया ॥ और कर्णछिद्ररूपगोलककूंप्राप्तहोइके श्रोत्रइंद्रिय प्रगटहोताभया ॥ ताश्रोत्रइं द्रियतैं संपूर्णदिशा प्रगटहोतीयांभयां ॥ और संपूर्णदेहविषे अतिसूक्ष्मजेअनंतछिद्रहैं तिनोंतैं सर्वशरीरविषेव्यापक जोचर्म रूपत्वचाहै सोप्रगटहोताभया ॥ तात्वचारूपगोलककूंप्राप्तहोइके लोमऔरकेशसहित स्पर्शनइंद्रिय प्रगटहोताभया ॥ तास्पर्श नइंद्रियसहितलोमऔरकेशोंतैं संपूर्णऔषधिआदिकस्थावरप्रगटहोतेभये ॥ और स्थावररूपउपाधिवाला वायुदेवता प्रगटहोता भया ॥ तेकैसेस्थावरहैं सर्वजीवोंकेउपकारवासतै दिनरात्रिविषे जिनोंनें आपणेमें क्लेशकूंधारणकऱ्याहै ॥ और मांसका कमलरूपहृदयगोलक उत्पन्नहोताभया ॥ सोहृदयकैसाहै ॥ पंचछिद्रोंकरिकैयुक्तहै ॥ और अंतरआकाशविषे जाकानिवास है ॥ ताहृदयरूपगोलककूंप्राप्तहोइके मन प्रगटहोताभया ॥ तामनतैं जगत्केआनंदकरणेहाराचंद्रमादेवता प्रगटहोताभया ॥ और नाभिछिद्ररूपगोलककूंप्राप्तहोइके अपानवायुप्रगटहोताभया ॥ कैसाअपानहै दुःखसैंसहनकियाजावेहै ॥ याकारणतैंहीं प्राणायामकूं शास्त्रविषेअतिसैंकठिणकह्याहै ॥ और मुखद्वारतैंप्राप्तभयाजोअन्नऔरजल तिनोंकूं नीचेदेशविषेलेजावेहै ॥ यातैं याकूं अपानकहैहैं ॥ ताअपानतैं महान्मृत्यु प्रगटहोताभया ॥ कैसामृत्युहै ॥ सर्वप्राणियोंकूंभयकेदेणेहाराहै ॥ अपान मृत्युकाकारणहै यहवार्ता लोकोंविषेभीप्रसिद्धहै ॥ काहेतैं अन्नकेदोषोंतैंविना किसीस्थानविषेभी प्राणी मरतनहीं ॥ किंतु अन्नदोषोंतैंहीं सर्वत्रप्राणी मरतेहैं ॥ अनादिकोंकूं यह अपानवायु ग्रसेहै ॥ याकारणतैं अपानतैंमृत्युकाप्रगटहोनाकह्याहै ॥ और उपस्थछिद्ररूपगोलककूंप्राप्तहोइके वीर्यसहितउपस्थइंद्रिय प्रगटहोताभया ॥ सोकैसावीर्यहै ॥ जरायुज औरअंडज देहोंकूं विस्तारकर्त्ताहुआ लोकविषेभी प्रसिद्धहै ॥ और पंचमआहुतीकासाधनहै ॥ यहवार्ता आगेकहैंगे ॥ और षट्कोशोंवालाजोशरीर ताका कारणहै ॥ तिनोंविषे त्वचा औररुधिर औरमांस यहतीनकोश माताकेअंशतैंहोवेहैं ॥ और नाडी अस्थि मज्जा यहतीनकोश पिताकेअंशतैंहोवेहैं ॥ और वीर्यसहितताउपस्थइंद्रियतैं जलहैप्रधानजिनोंविषेऐसेजेपंचभूत तेहैंशरीरजाका ऐसाजो प्रजापतिदेवता सो प्रगटहोताभया ॥ इसप्रकार ऐतरेयउपनिषद्विषे इंद्रियऔरतिनोंकेदेवतावोंका प्रगटहोणाकह्याहै ॥ अब बाकीरहेजेदेवताऔरइंद्रिय तिनोंकाभी

श्रुतिविषेस्थित जेवाक्औरअग्निआदिकशब्द तिनशब्दोंकीलक्षणातैं ग्रहणकाप्रकार दिखावेहैं ॥ पूर्वकह्याजो मृत्युकाकारणअपान सो गुदाछिद्रतैंस्पष्टहोवेहै ॥ याकारणतैं सोअपानवायु देवतासहितपायुइंद्रिय होवेहै ॥ तात्पर्ययह॥ अपानकरिके देवतासहित पायुइंद्रियकाभी प्रगटहोणाग्रहणकरणा ॥ और घ्राणइंद्रियकूंप्राप्तहोइके गंधतैंरहितभीवायु गंधवालाहोवेहै ॥ याकारणतैं घ्राणइंद्रिय पृथिवीहै ॥ यास्थानविषे गंधसहितवायुकरिकै पृथिवीदेवताकाग्रहणकरणा ॥ और पूर्व त्वचातैंलोमोंकाप्रगटहोणाकह्या ॥ ते लोम कंपकरिकेयुक्तहैं ॥ और लोमोंविषेकंप वायुकरिकेजन्यहै ॥ यातैं ऐसानिर्णयहोवेहै ॥ लोमऔरस्पर्शनइंद्रियकरिकेयुक्तत्वचारूपगोलकतैं वायुदेवता प्रगटहोताभया ॥ और आवरणकाविरोधीअवकाशरूपलक्षण आकाशऔरदिशाका समानहै ॥ यातैं पूर्वकहीजेदिशा तेआकाशरूपहैं ॥ और पूर्वहृदयविषे मनकाप्रगटहोणाकह्या॥तहां मनकेप्रगटहुए बुद्धिका और अहंकारका और चित्तकाभी प्रगटहोणाजानिलेणा ॥ काहेतैं श्रुतिविषे मनकरिकेहीं सर्वजगत्कीउत्पत्तिकहीहै॥ और पूर्वमनकेदेवताचंद्रमाकाप्रगटहोणाकह्या ॥ ताचंद्रमाकरिके बुद्धि अहंकार चित्तके जेदेवता ब्रह्मा रुद्र महेश इनोंकाभी प्रगटहोणाग्रहणकरणा ॥ और पूर्व अपानकाप्रगटहोणाकह्या ॥ ताअपानकरिके क्रियाशक्तिवालेसर्वप्राणोंका ग्रहणकरणा ॥ और पूर्व मुखरूपगोलकविषे वाक्इंद्रियका प्रगटहोणाकह्या ॥ और ताकेदेवताअग्निका प्रगटहोणाकह्याथा ॥ तहां वाक्इंद्रियकरिके मुखरूपएकस्थानविषेरहणेहारे रसनइंद्रियकाभी प्रगटहोणाजानणा ॥ और अग्निदेवताकरिकै वरुणदेवताकाभी प्रगटहोणा ग्रहणकरणा ॥ इसप्रकार अनंतप्रकारके छिद्र अंडविषेरचिकरिकै दोहस्तोंकूं औरदोपादोंकूं परमेश्वर प्रगटकरताभया ॥ और हस्तोंतैं इंद्रदेवताकूं प्रगटकरताभया ॥ और पादोंतैं उपेंद्रदेवताकूं प्रगटकरताभया ॥ इसप्रकार विराट्भगवान्केदेहमैं जेमुखादिकछिद्रहैं॥तिनोंछिद्रोंविषे जैसे श्रुतिविषेकह्याहै तिसीप्रकार संपूर्णदेवताकूं औरसंपूर्णवाक्तैंआदिलैकेइंद्रियोंकूं परमेश्वर प्रगटकरताभया ॥ जबी कर्मऔरउपासनाकरिकै प्राप्तभया जोदेवशरीर ॥ सोभी दुःखोंकरिकेयुक्तहै ॥ तो अन्यशरीरका क्याकहणाहै॥ इसअभिप्रायकरिकैताविराट्शरीरकूं समुद्ररूपकरिकेवर्णनकरैहैं ॥ अनंतकोटियोंकूंअनंतकोटिवारगणनाकरेसैं जासंख्याहोवै इतनेंयोजनविस्तरवाला विराट्कादेहरूपसमु

द्रहै ॥ यद्यपि समुद्रकेसंख्याका शास्त्रविषेनियमलिख्याहै ॥ तथापि प्रलयकालविषेनियमनहींहै ॥ काहेतें प्रलयकालविषे योजनोंकी गणतीकरणेहारा कोईहैनहीं ॥ यद्यपि ईश्वर प्रलयकालविषेभीहै ॥ तथापि ईश्वरकूं गणतीसैंकोईप्रयोजनहैनहीं ॥ यातें योजनों कीगणतीकरैनहीं ॥ और जैसेसमुद्र देखणेकरिके सर्वप्राणियोंकूं भयकीउत्पत्तिकरैहै ॥ तैसें "सर्वात्माविराट्मैंहूं" ऐसाजोविराट्का ज्ञान तातैं परिच्छिन्नदृष्टिवालेअज्ञानीपुरुष भयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और पंचमहाभूतरूपजलहैंजाविषे ॥ और चतुर्दशलोकरूप तरंग मालाहै जिसविषे ॥ और जैसे समुद्र शुक्तिऔरशंखोंकरिके शोभायमानहै ॥ तैसे यह विराट्भगवान्काशरीरभी जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारप्रकारकेशरीररूप शुक्तिऔरशंखोंकरिकेशोभायमानहोइरह्याहै ॥ और कामक्रोधादिकरूपमगरोंकाआश्रय है ॥ काहेतें जैसेसमुद्रकेमगर आपणेतंतुवोंसैं पुरुषकूंबांधिकरिके समुद्रविषे गिरायदेतेहैं ॥ तैसे कामक्रोधादिकभी वासनारूप तंतुवोंसैंबांधिकरिके यापुरुषकूं संसाररूपसमुद्रविषेगेरैहैं ॥ यातें मगरकेसमानहैं ॥ और जैसे समुद्रविषे नानाप्रकारकेबंधनकरणे हारेहैं ॥ तिनोंमैंभी कोईतो समुद्रकेपारजाणेमैंप्रतिबंधकहैं ॥ जैसे हनुमानकेछायाकेग्रहणकरणेहारेराक्षसहैं ॥ और कोईक समु द्रविषे तरणेकेप्रतिबंधकहैं ॥ जैसे जलोंकेभ्रमणहैं ॥ और कोईक बाहरनिकसणेमैंप्रतिबंधकहैं ॥ जैसे ग्राहोंकेमुखहैं ॥ इसप्रका र बंधनकेकरणेहारे संचित औरक्रियमाण औरप्रारब्धकर्महैं जिसविषे ॥ ऐसाविराट्भगवान्काशरीरहै ॥ और त्वचाआदिकधा तुवोंकरिकेदुर्गंधहै ॥ और विष्ठामूत्रमलकाआश्रयहै ॥ यद्यपि दुर्गंधादिकअन्नकेदोष विराट्शरीरविषेकहणे श्रुतिसैंविरुद्धहैं ॥ त थापि व्यष्टिशरीरद्वारा ताविषेजानणे ॥ स्वभावतें ताविषे दुर्गंधादिकनहींहैं ॥ ऐसे विराट्शरीरविषे प्राप्तभये जेवागादिकदेवता ते क्षुधा औरतृषाकरिकेव्याकुलहुए औरविराट्शरीरकेतृप्तकरणेयोग्य अन्नऔजलकूंनदेखतेहुए आपनापिताजो परमेश्वरहै ताकूं क हतेभये ॥ हेभगवन्! संपूर्णजगत्जाकाशरीरहै ऐसाजोविराट्भगवान्काशरीर आपनें उत्पन्नकर्याहै ॥ याशरीरतैंभिन्न कोई अन्न और जल दीखता नहीं ॥ और याशरीरविषेहमारेकूं भोजनकरणेयोग्यअन्नादिक नहींदीखते ॥ और पानकरणेयोग्यजलन हींदीखत ॥ तातैं हेभगवन्! हमारेसुखवासतैं थोडेअन्नऔरजलकरिके जाकीतृप्तिहोवै ऐसाकोईशरीर उत्पन्न करो ॥ जिसविषेस्थि

तहाँइके हम अन्नऔरजलकूं प्राप्तहोवैं ॥ इसप्रकार वागादिकदेवतावोंकरिकेकह्याहुआ सोपरमात्मा गौकेदेहकूं रचताभया ॥ ति
सगौदेहविषे वागादिकदेवतावोंकी प्रीतिनहोतीभई ॥ काहेतें गवादिकशरीरोंविषे पूर्वकऱ्याहुआकर्महीं भोगताहै ॥ नवीनबुद्धि
औरकर्मका संपादनहोवैनहीं ॥ इसप्रकार गौकेशरीरविषे तिनोंकीप्रीतिकूं नदेखिकरिके परमात्मा पुत्रोंकीप्रीतिवासतैं अश्वकूं
उत्पन्नकरताभया॥ताअश्वविषेभी तिनोंकीप्रीति नहोतीभई॥काहेतें अश्वविषे हस्तोंका औरज्ञानकर्मोंकेसाधनोंका अभावहै॥इसप्र
कार पुत्रोंकीप्रीतिवासतैं परमेश्वर चौरासीलक्षदेहोंकूं रचताभया ॥ परंतु किसीशरीरविषेभी तिनोंकीप्रीति नहोतीभई ॥ तापश्चात्
मनुष्यशरीरकूं परमेश्वर रचताभया॥तामनुष्यशरीरकूं उत्पन्नहुआदेखिकरिके देवता तिसशरीरमें प्रीतिकरतेभये॥ और हर्षवान्
होइके परमेश्वरकेप्रति कहतेभये॥ हेपिता! यहमनुष्यशरीर आपनेहीं साक्षात्‌रचाहै ॥ किसीद्वारा नहींरचाहै ॥ यातेंहर्षकेकरणेहा
राहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे बुद्धिमान्‌तक्षादिक जोआपणेहस्तसैंवस्तुरचेहैं ॥ सो रमणीयहोवेहै ॥ औरजोआपणेभृत्योंसैंवस्तुकरावै
सो रमणीयनहींहोवेहै ॥ यहलोकविषेप्रसिद्धहै ॥ और यामनुष्यशरीरविषे साक्षातईश्वरकाकार्यपणा युक्तहै ॥ काहेतें यहमनुष्य व
स्तुकूंजाणिकरिके कथनकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ज्ञानइंद्रियऔरकर्मइंद्रियकरिके युक्तहै ॥ यद्यपि वानरादिकशरीरोंविषेभी चक्षुआ
दिकइंद्रियोंसैंज्ञानहोवेहै॥यातें मनुष्यशरीरविषेतिनोंतेंविशेषता बनैनहीं ॥तथापिमनुष्यसैंभिन्न वानरादिकोंकेइंद्रियोंका वस्तुकेसा
थसंबंधहुएभी सर्वप्रकार अज्ञानकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥और घटादिकअर्थकेसाथी इंद्रियोंकेसंबंधहुए बहुतस्थानमें मनुष्यअज्ञानतैंर
हितहोवेहै॥यातें वानरादिकोंतेंमनुष्यश्रेष्ठहै॥और कैसायहमनुष्यशरीरहै॥इसलोककेजेसुखऔरसुखकेसाधनतिनोंकूंजाणताहै॥औ
र स्वर्गादिकलोकोंकेजेसुख और तिनोंकेसाधन जेयज्ञादिककर्म तिनोंकूंभी शास्त्रसैंजाणेहै ॥ और अतीतकालविषेजोहुआकार्य औ
रआगेहोणेवालाजोकार्यहै ताकूं जाणेह ॥ औरसुखकीप्राप्तिके औरदुःखकीनिवृत्तिके जेसाधनहैं ॥ तिनोंकेजानणेवासतैं साध
नोंकेजानणेहारेजेमहात्माहैं तिनोंके समागमकाप्रकारभी यहमनुष्य जाणेहै ॥ और महात्मावोंकेसमागमहुए यहमेरेकूंकरणेयोग्य
है यहनहींकरणेयोग्य यहसंपूर्ण प्रमाणसैंजानताहै ॥ और यामनुष्यशरीरविषेहीं वेदवाक्योंतें आत्माकासाक्षात्कारहोवेहै ॥ ऐसे

मनुष्यशरीरविषेहीं संपूर्णदेवता संतोषकूंमानतेभये॥इसप्रकार हर्षकरिकेयुक्तहुएपुत्रोंकूं पिता आज्ञाकरताभया॥हे देवतावो!या व्य
ष्टिशरीरविषे आपणेआपणेगोलकरूपस्थानविषे तुम प्रवेशकरो ॥ शंका ॥ हेभगवन्! इंद्रियोंकेरहणेयोग्ययास्थानविषे हमाराप्र
वेश बनैनहीं ॥ काहेतें हम व्यापकहैं ॥ और यहअल्पस्थानहै ॥ किंवा ॥ इंद्रियोंकरिकेहीं अर्थकीसिद्धिहोवैगी ॥ हमारेप्रवेशका
कछुप्रयोजनभीनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो! तुमारेसंबंधीजेइंद्रियहैं ॥ तिनोंविषे भेदभावकूंछोड़िकरिकै एकताअभिमानकरिकै
प्रवेशकरो॥ दृष्टांत ॥ जैसे सांचेमैंढालेहुएताम्रादिकधातूवां एकभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इहांयहअभिप्रायहै ॥ एकदूसरेकीअपेक्षाकूं
नकरिकै जे आपणेआपणेकार्यकूंकरैं ॥ तिनोंका एकअधिकरणमेंरहणाहोवैनहीं ॥ इंद्रियऔरदेवतावोंकूं परस्परअपेक्षाहै ॥ का
हेतें चक्षुतैंविना प्रकाशरूपसूर्य सिद्धहोवैनहीं ॥ और सूर्यतैंविना चक्षुइंद्रिय सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतें सूर्यतैंविना चक्षुइंद्रिय रूपा
दिकवस्तुवोंकेज्ञानकूं उत्पन्नकरैनहीं ॥ याकारणतैंहीं अंधकारमें रूपका चक्षुजन्यज्ञानहोवैनहीं ॥ और रूपादिकवस्तुकेज्ञानरूपका
र्यतैंहीं चक्षुइंद्रियका अनुमितिज्ञानहोवैहै ॥ काहेतें इंद्रियोंका इंद्रियोंकरिकैप्रत्यक्षहोवैनहीं ॥ यातैंयहसिद्धभया ॥ सूर्यहोवै तबीरू
पादिकोंकाप्रत्यक्षज्ञानहोवै ॥ ताज्ञानरूपकार्यतैं करणरूपचक्षुका अनुमितिरूपज्ञानहोवै ॥ इसप्रकार परंपराकरिकै सूर्य चक्षुइंद्रिय
कासाधकहै ॥ इसप्रकार संपूर्णइंद्रिय औरतिनोंकेदेवता परस्परअपेक्षाकरैहैं ॥ यातें इंद्रियोंसैंमिलिकरिकै देवतावोंका व्यष्टि
शरीरविषेप्रवेश बनैहै ॥ इसप्रकार परमेश्वरकरिकैकहेहुए संपूर्णदेवता तैसेहींकरतेभये ॥ तिनोंविषे अग्निदेवता पूर्वउत्पन्नभयाजो
वाक्इंद्रिय तासैंएकताकूंप्राप्तहोइकरिकै मुखरूपगोलकविषे स्थितिकूंप्राप्तहोताभया ॥ और जलोंकापतिजोवरुणहै ॥ सो र
सनइंद्रियकेसाथ एकताअभिमानकरिकै जिव्हाकेअग्रभागरूपगोलकविषे स्थितहोताभया ॥ और गंधविशिष्टवायुदेवता घ्राण
इंद्रियकेसाथ एकताअभिमानकरिकै नासिकाछिद्ररूपगोलकविषे प्रवेशकरताभया ॥ और सूर्यदेवता चक्षुइंद्रियविषे एकताअ
भिमानकरिकै अक्षिरूपगोलकविषे प्रवेशकरताभया ॥ और दिक्देवता श्रोत्रइंद्रियकेसाथ एकताअभिमानकरिकै करणछिद्ररूप
गोलकविषे प्रवेशकरताभया ॥ और स्थावररूपउपाधिवाला जोवायुदेवताहै ॥ सो लोमसहितस्पर्शनइंद्रियविषे एकताअभिमान

करिके त्वचारूपगोलकविषे स्थितहोताभया ॥ और चंद्रमादेवता मनकेसाथ एकताअभिमानकरिकै हृदयरूपगोलकविषे प्रवेश करताभया ॥ और मृत्युदेवता पायुइंद्रियकेसाथ एकताअभिमानकरिकै गुदाछिद्ररूपगोलकविषे स्थितहोताभया ॥ और प्रजापति देवता उपस्थइंद्रियकेसाथ एकताअभिमानकरिकै शिश्नछिद्रविषे प्रवेशकरताभया ॥ इतनेदेवतावोंकाप्रवेशश्रुतिविषे कह्याहै ॥ इसरीतिसैंदूसरेभीदेवता अध्यात्मइंद्रियोंविषे और अधिदैवोंविषे वर्तमानजोभेद तासैंरहितहुए औरइंद्रियोकेसाथएकताअभि मानकूंप्राप्तहुए आपणेआपणेस्थानविषे प्रवेशकरतेभये ॥याप्रकार व्यष्टिशरीरविषे प्रवेशकरिकै अधिदैव अध्यात्म अधिभूत यहत्रि पुटि सिद्धहोवैहै ॥ तहां सूर्यादिक अधिदैवहैं ॥ और चक्षुइंद्रियादिक अध्यात्महैं ॥ और रूपादिकविषय अधिभूतहैं ॥ यहरीति सर्वइंद्रियोंविषेजानणी ॥ इसप्रकार परमेश्वररूपपितानैं सर्वदेवतावोंकूं यथायोग्यस्थान दिये ॥ तिसतैंअनंतर अशनाऔरपिपा सादेवता आपणेसैंवृद्धसर्वदेवतावोंकूं स्थानकीप्राप्तिदेखिकरिकै परमेश्वरतैं स्थानकूंयाचतेभये ॥ ताअशनापिपासादेवतावोंका पूर्व पूर्वदेवतावोंकेस्थानसैंभिन्नस्थानकूं नदेखिककरिकै परमेश्वर अध्यात्मअधिदैवरूपदेवतावोंकेविषेहीं तिनोंकूं स्थानदेताभया ॥ और परमेश्वर कहताभया ॥ हेअशनापिपासा ! इनदेवतावोंकीतृप्तिकरिकेहीं तुम्हारीतृप्तिहोवैगी ॥ इसप्रकार परमेश्वरनें तिनोंकास्था नकऱ्या ॥ सोअबीभी ऐसादेखताहै ॥ सूर्यादिकदेवतावोंकेताईं घृतादिरूपहविषदियेहुए तिनदेवतावोंके अशनापिपासाकीशां तिहोवैहै ॥ और अध्यात्मइंद्रियोंकेप्रति रूपादिकविषयरूपहविषदियेहुए किंचित्काल तिनोंकेअशनापिपासाकीशांतिहोवैहै ॥ य हहीं तिनोकीतृप्तिहै ॥ इसप्रकार तिनदेवतावोंकूं स्थानदेकरिकै अन्नप्राप्तिकीइच्छावान्‌जोदेवताहै तिनोंके उपकारवासतै तिनदेव तावोंकरिकेनहींकह्याहुआभी पिताजोपरमेश्वरहै सो ऐसाविचारकरताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे लोकविषे पिता पुत्रोंकरिकेनहींकह्या हुआभीतिनोंका अन्नऔरवस्त्रादिकोंसैं पालनकरैहै ॥ यहजे इंद्रियऔरदेवतारूपहमारेपुत्रहैं ॥ ते क्षुधाकरिकेयुक्तहैं ॥ यातैं इनोंके वासते मैं अन्नकूंरचों ॥ ऐसाविचारकरिकै परमात्मा नानाप्रकारकेउपायोंकरिकै पंचभूतोंतैं बहुतप्रकारकाअन्न रचताभया ॥ काहे तैं एकप्रकारकेअन्नतैं सर्वप्राणियोंकीतृप्तिहोवैनहीं ॥ जैसे मनुष्यादिकोंका व्रीहि औरतृणादिक स्थावररूपअन्नहै ॥और सिंहादिकों

का मृगादिरूप जंगम अन्न है॥ और सर्पादिकोंका वायुऔरमूषकादिक अन्न है ॥ इसप्रकार अन्नोंकेउत्पन्नहुए याअन्नकूंतुमग्रहणक
रो ऐसेपरमेश्वरकरिकैकहेहुएभी संपूर्णदेवता अपानवायुसैंविना ताअन्नकाग्रहणकरणेमैं नसमर्थहोतेभये॥याकारणतैंहीं श्रुतिविषे
सर्वदेवतावोंका ईश्वर और अन्नाद अपानवायु कह्याहै ॥ अन्नकूंजोदेवे सोअन्नादकहियेहैं॥ यद्यपि यह अपानवायु हमारेताईं अन्न
केदेणेहाराहै ऐसामानिकरिकै सर्वदेवतावोंनैं ताअपानवायुका आश्रयणकऱ्या ॥ तथापि सो अपानवायु सर्वव्यवहारके साधकअं
तर्यामीआत्मातैंविना अन्नग्रहणकरणेकूं नसमर्थहोताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे चेतनपुरुषतैंविना कुठार छेदनरूपकार्यकरणेमैं समर्थ
नहींहोवेहै ॥ ऐसादेखिकरिकै परमेश्वर तिनोंदेवतावोंकरिकैनहींकह्याहुआभी विचारकरताभया ॥ यहअधिदैवादिरूपजगत् प्रा-
णवायुकरिकैयुक्तप्रगटभयाभी॥तौभी प्रकाशरूपमैंपरमात्मातैंविना यहजडजगत् किसीप्रकारभी सिद्धहोवैनहीं ॥याकहणेतैं यहसि
द्धभया ॥ जोजो जडवस्तुहै॥सोसो प्रकाशकीअपेक्षाकरेहै ॥ दृष्टांत॥ जैसे यहअन्न भोजनकरणेयोग्यहै ॥ और यहशब्द कहणे
योग्यहै॥ और यहरूपादिक देखणेयोग्यहैं॥याप्रकारकेज्ञान भोक्ता वक्ता द्रष्टा रूपप्रकाशकआत्मातैंविना सिद्धहोवैंनहीं ॥ त
हां एकहींआत्मा प्राणविशिष्टहुआ भोक्ताकहियेहै ॥ और वाक्इंद्रियविशिष्टहुआ वक्ताकहिएहै॥और चक्षुविशिष्टहुआ द्रष्टाकहिये
है ॥ यारीतिसैं श्रोतादिकभीजानणे॥यहशास्त्ररीतिसैंदृष्टांतकह्या ॥ अब लोकप्रसिद्धदृष्टांत कहेहैं ॥ जैसे प्रकाशविना अंधकारविषे
रूपवान्घटादिपदार्थोंकूं यहलोक नहींजाणेहै ॥ शंका॥ हेभगवन्! पूर्व आपनें यहनियमकह्या ॥ जोजो जड़वस्तुहै ॥ सोसो आ
पणीसिद्धिमैं प्रकाशकीअपेक्षाकरेहै ॥ सोनियम यद्यपि घटादिकोंमैंतौ बनेहै ॥ तथापि अंधकारविषे तानियमकाव्यभिचारहै ॥
काहेतैं अंधकार जडतौहै॥ परंतु आपणीसिद्धिमैं प्रकाशकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ उलटा प्रकाशतैंनिवृत्तहोवेहै ॥ समाधान ॥ अंधकार
यद्यपि सूर्यादिकप्रकाशकीअपेक्षानहींकरेहै॥तथापि चक्षुरूपप्रकाशकीअपेक्षाकरेहै॥याकारणतैंहीं चक्षुसैंरहितपुरुष अंधकारकूंनहीं
देखेहै ॥ अंधकारकूंप्रकाशकीअपेक्षाहै याअर्थकूं अब अनुमानप्रमाणतैंसिद्धकरैहैं ॥ जैसे घटादिकपदार्थोंकेज्ञानविषे घटादिकोंतैंभि
न्नसूर्यादिक प्रकाशकारणहै॥ तैसे अंधकारतैंभिन्नचक्षुकाप्रकाश ताअंधकारकेज्ञानमैं कारणहै ॥ अनुमानप्रकारयहहै ॥ अंधकार

जोहै ॥ सो प्रकाशकी अपेक्षाकरेहै ॥ काहेतें जडहोणेतें ॥ घटकीन्यांई ॥ जैसे अंधकारजड़है ॥ यातें चक्षुकेप्रकाशकीअपेक्षाकरेहै ॥ तैसे चक्षुआदिकभीजड़हैं ॥ यातें तिनोंकाभी दूसरेप्रकाशनैंप्रकाशकरताहै ॥ सो चक्षुआदिकोंकेप्रकाशकरणेहारा आत्माहै ॥ शंका ॥ चक्षुकाप्रकाशक आत्मा आपनैंकह्या ॥ सोबनैंनहीं ॥ काहेतें सूर्यकरिकैही चक्षुकाप्रकाशबनेहै ॥ समाधान ॥ जैसे विषयरूपघटनैं सूर्यकाप्रकाश नहींकरता ॥ तैसे विषयरूपसूर्यनैंभी चक्षुकाप्रकाश नहींकरता ॥ याकहणेतें यहअनुमान सिद्धभया ॥ चक्षुआदिकजोप्रकाशहैं ॥ तेआपणीसिद्धिमेंदूसरेप्रकाशकीअपेक्षाकरेहैं ॥ काहेतें जडहोणेतें ॥ जो आपणीसिद्धिमें दूसरेप्रकाशकीअपेक्षानहींकरेहै ॥ सो जडभीनहींहोवेहै ॥ जैसे स्वयंप्रकाशआत्मा किसीप्रकाशकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ यातें जडभीनहींहै ॥ किंतु चेतनहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! पूर्व आपने यहकह्या ॥ जो चक्षुआदिकप्रकाश जडहैं॥ यातें दूसरेप्रकाशकीअपेक्षाकरेहैं ॥ सोबनैंनहीं॥ काहेतें चक्षुआदिकप्रकाशजोहै ॥ सो अपणीसिद्धिमें दूसरेप्रकाशकी अपेक्षाकरैनहीं ॥ काहेतें प्रकाशरूपहोणेतें ॥ दीपककीन्यांई ॥ याअनुमानकाविरोधहोवैहै ॥ समाधान ॥ जैसे दीपक सजातीयदूसरेप्रकाशकीअपेक्षानहींकरेहै ॥ तैसे सर्वप्रकाश सजातीयदूसरेप्रकाशकीअपेक्षा नहींकरेहै यहनियमनहीं ॥ काहेतें मणिआदिकप्रकाशोंविषे प्रकाशरूपतातोहै ॥ परंतु सजातीयदूसरेप्रकाशकीअपेक्षाकाअभाव नहींहै ॥ किंतु अपेक्षाहीहै॥ यहसर्ववादियोंकूंसंमतहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! प्रकाशपणा मणिऔरचक्षुआदिकसंपूर्णोंमें समानहै ॥ परंतु कोईकप्रकाश दूसरेप्रकाशकीअपेक्षाकरेहै ॥ और कोईकप्रकाश दूसरेप्रकाशकीअपेक्षानहींकरेहै ॥ यामें क्याकारणहै ॥ समाधान॥ हेशिष्य! प्रकाश्यपणा औरप्रकाशकपणाविषे परिच्छिन्नपणा औव्यापकपणा कारणहै॥ जोजो प्रकाश परिच्छिन्नहै ॥ सोसो प्रकाश्यहै ॥ जैसे दीपककीअपेक्षाकरिकै मणिआदिक परिच्छिन्नहैं ॥ यातेंप्रकाश्यहै ॥ और जोजो व्यापक प्रकाशहै सोसो प्रकाशकहै ॥ जैसे मणिआदिकोंकीअपेक्षाकरिकै दीपादिकप्रकाश व्यापकहै ॥ यातें मणिआदिकोंके प्रकाशक हैं ॥ याकहणेतेंयह सिद्धभया ॥ जो व्यापकहोवै औरप्रकाशस्वरूपहोवै ॥ सोईही दूसरेपरिच्छिन्नप्रकाशकूं प्रकाशेहै ॥ सोप्रकाशपणा औरव्यापकपणा मेंकूटस्थविषेहै ॥ यातें मैंही सर्वप्रकाशोंकाप्रकाशकहूं ॥ याकहणेतेंयहअनुमानसिद्धभया किआपणेतेंभिन्नस

वैका प्रकाशकरणेहारी जाबुद्धिहै ॥ सा मुझकूटस्थकरिकैंप्रकाश्यहै॥काहेतैं परिच्छिन्नहोणेतैं॥दृष्टांत॥जैसे व्यापकऔरप्रकाशस्वरूप
बुद्धिकरिकै सूर्यऔरघटादिरूपजगत् प्रकाश्यहै ॥ जाकाप्रकाशकरिये सोप्रकाश्यहोवेहै ॥ पंचभूतोंकेसत्त्वगुणकाकार्यहै॥ यातैं बुद्धि
प्रकाशरूपहै ॥ और हिरण्यगर्भकाउपाधिहै ॥ यातैं व्यापकहै ॥ इसप्रकार श्रुतिनैं कथनकरीजाआत्माकीव्यापकता साव्याप
कता असंभावनाआदिकदोषोंतैं बुद्धिविषे आरूढहोवैनहीं ॥यातैं तिनदोषोंकीनिवृत्तिवासतै तीनपरिच्छेदोंकाअभाव आत्माविषे
दिखावेहैं॥ जैसे गौव्यक्तिरूपएकदेशविषे गोत्वजातिरहैहै ॥ अश्वादिकोंविषेरहैनहीं ॥ तैसे मैंपरमात्मा किसीएकदेशविषेस्थित
नहींहूं ॥ काहेतैं जोमैं किसीदेशविषेनहींहोवौं॥ तौ तिसदेशकेपदार्थोंका सत्ताऔरप्रकाश नहींहोवैगा ॥ यातैं मैं सर्वत्रव्यापकहूं ॥
याकहणेतैं देशपरिच्छेदकाअभाव आत्माविषे दिखाया ॥ और जैसे भूत भविष्यत् वर्तमान पदार्थ किसीकालविषेहैं औरकिसीका
लविषेनहींहैं॥यातैं कालपरिच्छेदवालेहैं॥तैसे मैंपरमात्मा किसीएककालविषेनहींहूं॥किंतु तीनोंकालोंविषेहूं॥याकहणेतैं कालपरिच्छेद
काअभावआत्माविषे दिखाया॥और जैसे अस्ति याशब्दऔरज्ञानका विषयभूमि घटतैंभिन्न प्रतीतहोवेहै ॥ और नास्ति याशब्दऔ
रज्ञानका विषयवंध्यापुत्र घटतैंभिन्न प्रतीतहोवेहै॥यातैं घटादिक वस्तुपरिच्छेदवालेहैं ॥ तैसे मैंपरमात्मातैंभिन्न अस्तिनास्तियाशब्द
औरज्ञानकाविषय कोईहैनहीं॥काहेतैं मैंही सर्वकाआत्माहूं॥ याकहणेतैं वस्तुपरिच्छेदकाअभाव आत्माविषे दिखाया॥ तीनोंपरिच्छे
दोंकेलक्षण पूर्वनिरूपणकरिआयेहैं ॥ यातैंईहांनहींकहे॥ अब अद्वितीयआत्माकीसिद्धिवासतै प्रपंचकूं मिथ्यारूपकरिकेनिरूपणकरे
हैं ॥ मैंपरमात्माविषे यहसंपूर्णजगत् कल्पितहै॥ कैसाजगतहै॥देशऔरकालादिकहैं स्वरूपजाका ॥ और नामरूपक्रियाकरिकेयुक्तहै
॥दृष्टांत॥ जैसे रज्जुविषेसर्प कल्पितहोवेहै ॥ तातैं मैंपरमात्माहीं सर्वत्रव्यापकहूं॥मेरेसैंभिन्न कोईवस्तुनहींहै॥शंका॥ हेभगवन्! ज
गत्काभेद आत्माविषेमतहोवै ॥ परंतु जैसे घटविषेरहेजेरूपादिकगुण॥ तिनोंतैं घट भिन्नहोवेहै ॥ तैसेसत्चित्आनंदधर्मोंतैं आ
त्मा भिन्नक्योंनहींहोवै ॥ यातैं वस्तुपरिच्छेद आत्माविषे है ॥ समाधान ॥ सत् चित् आनंद यहजेधर्महैं ॥ ते मैंअंतर्यामीपरमा
त्मातैं जोभिन्नहोवैं ॥ तौ आपणेसत्चित्आनंदस्वरूपतैंहीं रहितहोवैंगे ॥ कहेतैं व्यापकमेरेतैं जोआनंदभिन्नहोवै ॥ तौ वस्तुपरि

च्छेदवालाहोवेंगा ॥ जोपरिच्छिन्नहै ॥ सो आनंदरूपनहींहोवेहै ॥ श्रुतिनें व्यापककूंहींसुखरूपकह्याहै॥ इसप्रकार सत् जोमैं प्रका शस्वरूपआत्मातें भिन्नहोऊं॥ तौं असत्होऊंगा॥ और चित् जोमैंसत्स्वरूपआत्मातेंभिन्नहोऊं॥ तो असत् होऊंगा॥ काहेतें मेरेतें भिन्न इनोंकी कोईसिद्धिकरणेहाराहैनहीं॥ यातें सत् चित् आनंद आत्मस्वरूपहै॥ आत्मातैंभिन्ननहींहै॥ शंका॥ हेभगवन्! स त्चित्आनंदधर्म जो आत्मातेंअभिन्नमानोगे॥ तौं आत्मा धर्मीहै और सत्चित्आनंद धर्महै ॥ यहधर्मधर्मीव्यवहार नहींहोवें गा॥ काहेतें भिन्नोंकाहीं धर्मधर्मीभाव लोकविषेदेख्याहै॥ समाधान॥ हेशिष्य! अत्यंतभिन्नोंका औरअत्यंतअभिन्नोंका धर्मधर्मी भाव होवेनहीं॥ काहेतें अत्यंतभिन्नोंका जोधर्मधर्मीभावहोवें तौ गौतें अश्व अत्यंतभिन्नहै॥ यातें अश्व गौकाधर्म होणाचाहिये॥ और होवेनहीं॥ तैसे अत्यंतअभिन्नोंका जोधर्मधर्मीभावहोवें॥ तौ घटऔरकलशका अत्यंतअभेदहै॥ यातें कलश घटकाधर्म हो णाचाहिये॥ और होवेनहीं॥ यातें परस्परभिन्नऔरअभिन्नस्थलविषेहीं धर्मधर्मीव्यवहार होवेहै॥ शंका॥ हेभगवन्! एकअधिक रणविषे एकवस्तुकाभेद औरअभेद विरुद्धहै॥ समाधान॥ एकसत्तावाले भेदऔरअभेदका परस्परविरोधहोवेहै॥ भिन्नसत्तावाले भेदऔरअभेदका परस्परविरोधहोवेनहीं॥ तैसे ईहां सत्चित्आनंदधर्मोंका आत्मातेंअभेदतौ पारमार्थिकसत्तावालाहै ॥ और भेद कल्पितसत्तावालाहै॥ यातें तिनोंका परस्परविरोधनहीं॥ ताकल्पितभेदकूंअंगीकारकरिकेहीं धर्मधर्मीभावव्यवहार सिद्धहो वेहै॥ दृष्टांत॥ जैसे किसीराजानें दूसरेराजाकूं वंदीखानेमैंराखिके पश्चात्छोड़िदिया॥ और एकग्रामदिया ताग्रामकूं पाइके सो राजा संतोषकूं प्राप्तहोवेहै॥ तैसे कल्पितभेदकूंहीं अंगीकारकरिकै धर्मधर्मीभावव्यवहार सिद्धहोवेहै॥ सत्यभेदकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ और कल्पितभेदकरिकै द्वैतभीहोवेनहीं॥ यातें मैंपरमात्मासैंकल्पितभेदवाले जेसत्चित्आनंदधर्म॥ ते रज्जुसर्पकीन्याई भेदकूं उत्पन्नकरैंनहीं॥ औरपरमार्थतेंतौ सत्चित्आनंद मेरास्वरूपहै॥ यातें व्यापक औरप्रकाशस्वरूप मैंपरमात्माकरिकेहीं सूर्यादि कऔरघटादिकसर्वजडप्रपंचकाप्रकाश युक्तहै॥ औरसर्वकेप्रकाशक मैंपरमात्माका दूसरेवस्तुकरिकैप्रकाश युक्तनहींहै॥ दृष्टांत॥ जैसे घटकरिकै सूर्यकाप्रकाश होवेनहीं॥ और संपूर्णयाजडसंघातकी मेरेअधीनासिद्धिहै॥ इसीकारणतें असत्जडदुःखरूपयादेहा

दिकोंकूं आपणेतादात्म्यअध्यासतैं सत्‌चित्‌आनंदरूपकरणेवासतैं याकलेवरविषे मैंहीं परमात्मा प्रवेशकरोंगा ॥ तासंघातविषे जो परमेश्वरकाप्रवेशहै ॥ ताके दोप्रयोजनहैं ॥ एकतो भोगकीसिद्धिहै ॥ औरदूसरा आपणेस्वरूपकाज्ञानहै ॥ तहां प्रथमप्रयोजनका विचार पूर्वकह्या॥ अब दूसरेप्रयोजनकाविचार निरूपणकरैंहैं॥इसप्रकार चिंतनकरिकै पुनः याप्रकार परमेश्वर चिंतनकरताभया॥ यासंघातविषे ज्ञानशक्तिरूपबुद्धिवालेमैंपरमात्माके प्रवेशका कौणद्वारहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जिसीकिसीमार्गकरिकै प्रवेशकरो॥ यामैं विचारकाक्याप्रयोजनहै ? ॥ समाधान ॥ यासंघातविषे पादकाजोनखहै ताकेअग्रभागरूपमार्गकरिके पूर्व प्राण प्रवेशकरताभयाहै ॥ काहेतैं प्राण क्रियाशक्तिवालाहै औरज्ञानशक्तितैंरहितहै ॥ यातैं यासर्वतैंनीचेमार्गकरिकै प्राणकाप्रवेश युक्तहै ॥ और मैंज्ञानशक्तिपरमात्मा सर्वतैंउत्कृष्टहूं ॥ यातैं प्राणइंद्रियादिकभृत्योंकेप्रवेशकाजोमार्गहै ॥ तामार्गकरिकै हमाराप्रवेश बनैनहीं ॥ और मैंचैतनतैंविना यासर्वजडोंकी चेष्टाहोवैनहीं ॥ यातैं मैंइनोंतैंश्रेष्ठहूं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे चेतनतैंविना रथविषेचेष्टाहोवैनहीं ॥ इसप्रकार प्रवेशकेमार्गकाविचारकरिकै ॥ पुनः परमेश्वर दूसरा विचार करताभया ॥ जातैं मैंज्ञानशक्तिवालाहूं ॥ तातैं आपणेईश्वरस्वरूपकूं नविचारिकै कैसेप्रवेशकरोंगा ॥ किंतु आपणेस्वरूपकाभीविचारकरिकैहीं ॥ हमाराप्रवेशयुक्तहै ॥ तहां आपणेस्वरूपकेबोधनकीइच्छाकरिकै परमात्मा ऐसाविचारकरताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन्! अनात्मरूपकरिकै देह प्रसिद्धहै ॥ यातैं विचारकाकछुप्रयोजननहीं ॥ काहेतैं अप्रसिद्धवस्तुकाहीविचारहोवैहै ॥ समाधान ॥ यद्यपि शास्त्रकेतात्पर्यजानणेहारेजेविद्वानहैं ॥ तिनोंकीदृष्टिविषे देह अनात्माप्रसिद्धहै ॥ तथापि मंदबुद्धिपुरुषोंकेउपकारवासतैं देहकीअनात्मता दृश्यत्वादिकहेतुवोंकरिकै आत्मज्ञानीपुरुषोंनैं जनावणेकूंयोग्यहै ॥ यातैं विचार सफलहै ॥ याकहणेतैं यहअनुमानसिद्धभया ॥ यहदेहजोहै सो अनात्माहै ॥ काहेतैं दृश्यहोणेतैं ॥ और परिच्छिन्नहोणेतैं ॥ और जडहोणेतैं ॥ जो अनात्मानहींहै ॥ सो दृश्य परिच्छिन्न जडभी नहींहै ॥ जैसे आत्माहै ॥ और देह अनिर्वचनीयहै ॥ यातैंभी अनात्माहै ॥ अब याअर्थकूं विस्तारतैंनिरूपणकरैंहैं ॥ अनुभवकेविषयजेवस्तुहैं तिनोंविषे कौणदेहहै ? ॥ शंका ॥ हेभगवन्! संघातकानामदेहहै ॥ यहलोकोंकूंप्रसिद्धहै ॥ स

माधान ॥ हेशिष्य! केवललोकप्रसिद्धितैं अर्थकीसिद्धिहोवैनहीं॥जोकेवललोकप्रसिद्धितैं अर्थकीसिद्धिहोतीहोवै॥ तो देहभी आत्मा होणाचाहिये ॥ काहेतैं विचारहीनबहुतपुरुष देहकूंहीं आत्मामानैहैं ॥ यातैं प्रमाण औरयुक्तितैं अविरुद्ध लोकप्रसिद्धितैंहीं अर्थकी सिद्धिहोवैहै ॥ और विचारकरिकैसंघातकूंदेखिये ॥ तौ देहकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं समानधर्मवालोंका जोपरस्परसंबंधहै ता कानाम संघातहै ॥ तेसंघात बहुतहैं ॥ तिनोंविषे किससंघातकानामदेहहै ॥ तहां श्रोत्र त्वक् चक्षु घ्राण रसन यह पंचज्ञानइंद्रियोंकासंघातहै ॥ १ ॥ और वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ यह पंचकर्मइंद्रियोंकासंघातहै ॥ २ ॥ और प्राण अपान व्यान उदान समान यह पंचप्राणोंकासंघातहै ॥ ३ ॥ और त्वचा रुधिर मांस मेद अस्थि मज्जा रेत यह सप्तधातुवोंकासंघातहै ॥ ४ ॥ और कफ वात पित्त यह तीनदोषोंकासंघातहै ॥ ५ ॥ और विष्ठा मूत्र यह दोनोंकासंघातहै ॥ ६ ॥ और कदाचित्उत्पत्तिवाले स्वेद पूय यह दोनोंकासंघातहै ॥ ७ ॥ और केशलोमादिकोंका असंख्यातसंघातहै ॥ ८ ॥ यहजो भिन्नभिन्न अष्टसंघातोंकासमुदाय ॥ तिसविषे किससंघातकानामदेहहै ॥ और संघातकूंजोदेहमानैहैवादी ॥ तासैं यहपूछाचाहिये पूर्वकहेजेअष्टसंघात ॥ तिनसंपूर्णोंकाजोसंघात ॥ ताकानाम देहहै ॥ अथवा एकएकसंघातकानामदेहहै ॥ यहदोनोंपक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतैं जिससमुदायकूं तुम देह मानोंहो ॥ सोसमुदायही निर्वचनकरणेयोग्यनहीं ॥ तहां पूर्वकहेजे अष्टसंघात तिनोंकाजोसमुदाय सो महासमुदाय कहियेहै ॥ और पंचज्ञानइंद्रिय आदिकोंका भिन्नभिन्नजोसमुदाय सो अवांतरसमुदाय कहियेहै ॥ यहदोनोंप्रकारकेसमुदायका निर्वचनहोवैनहीं ॥ काहेतैं सोदोप्रकारकासमुदाय समुदायियोंतैंभिन्नहै ॥ अथवा तिनोंतैंअभिन्नहै ॥ तिनोंविषे प्रथमभिन्नपक्षतो बनैंनहीं ॥ काहेतैं समुदायियोंतैंभिन्न समुदायकास्वरूप युक्तिकरिकैसिद्धहोवैनहीं ॥ और दूसराजो अभिन्नपक्षहै सोभी बनैंनहीं ॥ काहेतैं महासमुदायकानामदेहहै यापक्षमैं महासमुदायकेसमुदायी जे अष्टअवांतरसमुदाय ॥ तिनोंसैं जबी महासमुदाय अभिन्नभया ॥ तबी एकएकअवांतरसमुदायविषेभी महासमुदायव्यवहार तथादेहव्यवहार होणाचाहिये ॥ और होवैनहीं ॥ किंवा अवांतरजेअष्टसमुदाय हैं ॥ तिनोंविषे एकएकसमुदायकानामदेहहै ॥ यापक्षमैं अवांतरसमुदायीजे एकएकइंद्रियआदिक तिनोंसैं जबी अवांतरसमुदा

य अभिन्नभया ॥ तबी एकएकइंद्रियआदिकोंविषे समुदायव्यवहार तथादेहव्यवहार होणाचाहिये ॥ औरहोवैनहीं ॥ यातैं अभिन्न
पक्षभी बनैंनहीं ॥ इहां समुदायकेघटककानाम समुदायीहै ॥ महासमुदायकेघटक अवांतरसमुदायहैं ॥ यातैं ताके समुदायीहैं ॥ तै
से अवांतरसमुदायकेघटक एकएकइंद्रियआदिकहैं ॥ यातैं ताके समुदायीहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! पूर्वआपनैं समुदाय समुदायियों
सैंभिन्नहै और अभिन्नहैं यादोनोंपक्षोंविषे दोषकहाहै ॥ यातैं दोनोंपक्षोंकूं हम अंगीकारकरैंनहीं ॥ किंतु पूर्वकहेजेइंद्रियआदिक ॥ ते
संपूर्णमिलेहुये समुदायहोवैहैं ॥ यातैं यापक्षविषेदूषणनहींहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! यापक्षविषेभी पुनरुक्तिदोष होवैहै ॥ काहेतें
सर्वसमुदायियोंका एकबुद्धिकरिकैविषयकरणारूपजोमेलन सो समुदायहै यह सर्वशास्त्रकासिद्धांतहै ॥ संपूर्णमिलेहुये समुदायहो
वैहैं याकहणेतैंयहअर्थसिद्धभया ॥ मेलनरूपसमुदायकरिकैविशिष्टजोहै सो समुदायहै ॥ जैसे देवदत्त धनीउत्पन्नभयाहै
यास्थानविषे विशेष्यजोदेवदत्त ताकेविषे उत्पत्तिकाअन्वयहोवैनहीं ॥ किंतु विशेषणजोधनहै ताकेविषे उत्पत्तिकाअन्वयहोवैहै ॥
तैसे मेलनरूपसमुदायविशिष्टजोहै सो समुदायहै यास्थानविषेभी मेलनरूपजोसमुदाय सोविशेषणहै ॥ ताकेविषे जोसमुदायका
अन्वयकरिये ॥ तौ समुदाय समुदायहै यहप्रतीतहोवैहै ॥ जैसे घट घटहै इहां पुनरुक्तिहोवैहै ॥ तैसे समुदाय समुदायहै इहांभी
पुनरुक्ति स्पष्टहै ॥ इहां अन्वयनाम संबंधकाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! मेलनविशिष्टोंकानाम समुदायहै यापक्षविषे आपनैं दोष क
ह्या ॥ यातैं यहपक्ष अंगीकारकरणेयोग्यनहीं ॥ किंतु इंद्रियादिकोंकाजोपरस्परमेलन तामेलनकाहीनाम समुदायहै ॥ समाधान ॥
हेशिष्य! मेलननाम संबंधकाहै ॥ सो तादात्म्यसंबंधहै ॥ अथवा संयोगहै ॥ अथवा समवायहै ॥ तिनोंविषे प्रथम तादात्म्यपक्षतौं
बनैंनहीं ॥ काहेतें भेदकूंसंहारणेहाराजोअभेद सो तादात्म्यसंबंध कहियेहै ॥ तहां निरपेक्षजोअभेदहै सोतौ वास्तवहै ॥ और
धर्मीप्रतियोगीकीअपेक्षाकरणेहाराजोभेदहै सो कल्पितहै यहसिद्धांतहै ॥ यातैं वास्तवतैंअभिन्नवस्तुवोंकामेलनकहणा ॥ मेरेमुख
विषे जिव्हानहींहै यावाक्यकेसमानहै ॥ इसरीतिसैं प्रथमतादात्म्यपक्ष बनैंनहीं ॥ और संयोगसंबंधकानाम मेलनहै? यहदूसरा
पक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतें दोद्रव्योंकासंयोगसंबंधहोवैहै ॥ सो संयुक्तदोद्रव्योंतैं भिन्न प्रतीतहोवैनहीं ॥ याकारणतैंहीं प्राभाकरोंनैं सं

योगकूं विकल्पमात्र कह्याहै ॥ और समवायसंबंधकानाम मेलनहै यहतीसरापक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतें गुणगुणीआदिकोंका नै यायिक समवायसंबंधमानेहैं ? ॥ सोसमवाय आपणेसंबंधीजेद्रव्यगुणादिक तिनोंविषे संयोगसंबंधकरिकैरहेहै ॥ अथवा समवाय करिकै समवाय रहेहै ॥ तहांआद्यपक्षतो बनैंनहीं ॥ काहेतें दोद्रव्योंका संयोगहोवेहै ॥ समवाय द्रव्यहैनहीं ॥ यातें ताका संयोग बनैंनहीं ॥ और समवायसंबंधकरिके आपणेसंबंधियोंविषे समवाय रहेहै यहदूसरापक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतें जासमवायसंबंधक रिकै समवाय रहेहै॥सोसमवाय प्रथमसमवायतें अभिन्नहै॥अथवा भिन्नहै॥तहांप्रथम अभिन्नपक्षतो बनैं नहीं ॥ काहेतें आपणीस्थि तिविषेआपणीअपेक्षारूप आत्माश्रयदोष प्राप्तहोवैहै॥ औरभिन्नहै यहदूसरापक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतें सोदूसरासमवाय आपणेसं बंधियोंविषे किससमवायकरिकैरहेहै ॥ जो प्रथमसमवायकरिकै दूसरासमवाय आपणेसंबंधियोंविषेरहै ॥ तो अन्योन्यआश्रयदोष प्राप्तहोवैगा ॥ काहेतें प्रथमसमवाय दूसरेसमवायकरिकै आपणेसंबंधियोंविषेरह्या ॥ और दूसरासमवाय प्रथमसमवायकरिकै आपणेसंबंधियोंविषेरह्या ॥ यादोषकीनिवृत्तिवासतै दूसरासमवाय तीसरेसमवायकरिकै आपणेसंबंधियोंविषे रहैहै यहअंगीकार करोगे ॥ तो सोतीसरासमवाय किससमवायकरिकै आपणेसंबंधियोंविषे रहैहै ॥ जोतौ प्रथमसमवायकरिकै संबंधियोंविषेरहै ॥ तो चक्रदोष प्राप्तहोवैगा ॥ काहेतें प्रथमसमवाय दूसरेकरिकैरह्या ॥ और दूसरा तीसरेकरिकैरह्या ॥ और तीसरा पुनःप्रथम करिकैरह्या ॥ यहचक्रकीन्यांई भ्रमणहोवैहै ॥ जो तीसरेसमवायकेस्थितिवासतै चतुर्थसमवाय औरचतुर्थवासतैपंचम याप्रकार स मवायोंकीधारा मानोगे ॥ तो अनवस्थादोष प्राप्तहोवैगा ॥ यातें समवायसंबंधरूपमेलनकानाम समुदायनहीं ॥ किंवा ॥ जो सं योगऔरसमवायसंबंधरूपमेलनकानाम समुदायहोवै ॥ तो वृक्षोंकाजोसमुदाय सोवन कहियेहै ॥ यास्थानविषे वृक्षोंका परस्पर संयोग औरसमवायसंबंध हैनहीं ॥ यातें समुदायव्यवहार नहोणाचाहिये ॥ और समुदायव्यवहार होवेहै ॥ यातैंभी संयोगस मवायसंबंधरूपमेलनकानाम समुदायनहीं ॥ किंवा ॥ संबंधकूं जोवादी समुदायमानेहै ॥ तासैं यहपूछाचाहिये ॥ संबंध इहां दोप दहैं एकतो सं यहपदहै ॥ और दूसरा बंध यहपदहै ॥ तहां संपदका क्याअर्थहै ॥ और बंधपदका क्याअर्थहै ? ॥ यहवादीनें क

ह्याचाहिये ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सं याशब्दका सम्यक्पणाअर्थहै॥और बंध याशब्दका बंधनअर्थहै॥समाधान॥हेशिष्य! यहअर्थ तेरेवचनतैंविना किसीभी संसारसंबंधीवस्तुविषे हम देखतेनहीं॥किंतु तेरेवचनविषेहीहै॥ अब या अर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहैं ॥ जोवस्तु तीनकालविषे नपरिणामकूं प्राप्तहोवै ॥ सोसम्यक्कहियेहै ॥ और यहसंपूर्णजगत् जडहै ॥ यातैं रज्जुकसर्पकीन्यांई परिणामकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और श्रुतिविषेभी आत्मातैंभिन्न सर्वजगत्कूं मिथ्याकह्याहै ॥ यातैं आत्मातैंभिन्न किसीवस्तुविषेभी सम्यक्पणा बनैनहीं ॥ तैसे बंध यापदकाअर्थजोबंधन सोभीबनैनहीं ॥ काहेतैं लोकविषे बंधायमानजेवस्तुहै ॥ तिनोंतैं बंधन भिन्नदेख्याहै ॥ जैसे बंधायमान जेदोगौहैं ॥ तिनोंतैं रज्जुरूपबंधन भिन्नहै ॥ किंवा ॥ मूर्त्तवस्तुही लोकविषे बंधन देख्याहै ॥ और अमूर्त्तवस्तु बंधनहोवैनहीं ॥ याकारणतैंहीं अमूर्त्तआकाशनैं घटपटादिकपदार्थ नहींबंधीते ॥ तैसे यादेहविषे इंद्रियआदिकोंकेपरस्परबंधनकरणेहारा औरइंद्रियआदिकसर्वसंघाततैंभिन्न रज्जुआदिकोंकीन्यांई कोईमूर्त्तपदार्थ नहींदीखता ॥ यातैं संबंधपदकाअर्थ कोईप्रसिद्धहैनहीं ॥ इसप्रकार संघात देहहै ॥ यापक्षकाखंडनकऱ्या ॥ अब संघातकेघटकजेइंद्रियआदिकहैं तिनोंकी अनात्मताकूंनिरूपणकरेहैं ॥ मुमुक्षुकेआत्मबोधवासतैं एकएकइंद्रियआदिकोंकीअनात्मताकाभी विचारकरणेयोग्य है ॥ और विद्वान्पुरुषोंनैं इंद्रियआदिकोंकीआत्मता कहांभी नहींअनुभवकरी ॥ काहेतैं सर्वतैंजोअंतरहोवै सो आत्माकहियेहै ॥ और इंद्रिय बाह्यहैं ॥ यातैं घटादिकोंकीन्यांई अनात्माहैं ॥ इसप्रकार विद्वान्केअनुभवप्रमाणकरिकै इंद्रियोंकीअनात्मताकही ॥ अब अनुमानप्रमाणतैंभी इंद्रियोंकीअनात्मता सिद्धकरेहैं ॥ वागादिकइंद्रियांजेहैं ते अनात्माहोणेकूंयोग्यहैं ॥ काहेतैं दृश्यहोणेतैं औरपरिच्छिन्नहोणेतैं ॥ जोजोवस्तुदृश्य औरपरिच्छिन्न होवेहै ॥ सोवस्तु अनात्माहीहोवेहै ॥ जैसे देहहै ॥शंका॥ हेभगवन्! कर्त्ताकानाम आत्माहै॥ यहशास्त्रविषेकह्याहै ॥ और स्वतंत्रकानाम कर्त्ताहै ॥ सोस्वतंत्रपणा आपणेआपणे व्यापारोंविषे इंद्रियोंकूंभीहै॥यातैं इंद्रियहीआत्माहै॥समाधान॥जोजोस्वतंत्रहोवेहै ॥सोचेतनहोवेहै॥चेतनतातैंविना स्वतंत्रपणारहै नहीं॥जैसे अग्नितैंविना धूम रहैनहीं॥ यातैं मैंपरमात्माचेतनतैंविनासंपूर्णइंद्रियोंविषे चेतनताकाअभावहै॥याकारणतैं अचेतनइंद्रि

योंकी किसीआपणेव्यापारविषे स्वतंत्रतानहींहै ॥ दृष्टांत॥ जैसेअचेतनरथादिक चेतनअश्वआदिकोंतैंविना स्वतंत्र गमनकरैनहीं ॥
और ज्ञानइंद्रियऔरअंतःकरणके जेज्ञानरूपव्यापारहैं ॥ और कर्मइंद्रियऔरप्राणोंके जेक्रियारूपव्यापारहैं ॥ तेसंपूर्णव्यापारभी
परमात्माकेसमीपताकरिकैहीं सिद्धहोवेहैं ॥ यातें स्वतंत्रपणा चेतनआत्माविषेहींहै ॥ जडइंद्रियोंविषे स्वतंत्रताहैनहीं ॥ अथवा ॥
वागादिकइंद्रियोंके शब्दकाउच्चारणादिक जेआपणेआपणेव्यापारहैं तिनोंविषे स्वतंत्रताहैभी ॥ तथापि अन्यव्यापारोंविषे इंद्रि
यआदिक समर्थहैंनहीं ॥ यातें तिनोंविषे आत्मताबनैंनहीं ॥ अब याअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहैं ॥ शब्दकाउच्चारण वाक्इंद्रि
यकाव्यापारहै ॥ और ग्रहण हस्तइंद्रियकाव्यापारहै ॥ और गमन पादइंद्रियकाव्यापारहै ॥ और मलकापरित्याग पायुइंद्रि
यकाव्यापारहै ॥ और आनंद उपस्थइंद्रियकाव्यापारहै ॥ जैसे राजा आपणेआपणेकार्यविषे भृत्योंकूं जोड़ताहै तैसे मैंपरमात्मा
नें आपणेआपणेव्यापारोंविषे इंद्रियादिक स्थापनकरेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जडइंद्रियोंकेव्यापारकाजोनियमहै ॥ सो मैंअंतर्यामीआ
त्माकूंबोधनकरेहै ॥ काहेतें चेतनतेंविना जडोंकी नियमकरिकैप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु वायुकरिकैचलायेहुएसूकेपत्रकीन्यांई नियम
तैंरहित प्रवृत्तिहोवैहै ॥ यहरीति ज्ञानइंद्रियप्राणादिकोंविषेभी जानणी ॥ और रूपादिकोंकाज्ञान शब्दज्ञान गंधज्ञान रसज्ञा
न स्पर्शादिकोंकाज्ञान यह क्रमतें चक्षुः श्रोत्र घ्राण रसन त्वक् यापंचज्ञानइंद्रियोंके नियमकरिकैव्यापारहैं ॥ पूर्वकहीरीतिसैं इ
नव्यापारोंकानियमभी सर्वांतर्यामीआत्माकूं बोधनकरेहै ॥ और प्राणोंकाभी इंद्रियोंकीन्यांई नियमकरिकैव्यापारहै ॥ काहेतें अ
न्नऔरजलकूं सूक्ष्मनाडीछिद्रोंविषेस्थापन प्राणकरेहैं ॥ यातें प्राणोंका एकतो यहआश्चर्यरूपक्रियाहै ॥ और दूसरा वागादि
कइंद्रियोंकेस्थितिकीकारणतारूपजीवनभी प्राणोंकाकार्यहै ॥ इनदोव्यापारोंतेंविना अन्यकिसीव्यापारका प्राण कारणहैनहीं ॥
और संकल्प निश्चय अभिमान स्मरण यहचारों क्रमतें मन बुद्धि अहंकार चित्तके नियमकरिकैव्यापारहैं ॥ अब पंचभूतोंके औ
रविषयोंके व्यापारोंकानिरूपणकरेहैं ॥ जैसे पात्र घृतकोधारणकरेहै ॥ तैसे जगत्काधारणकरणा पृथिवीकाव्यापारहै ॥ और
क्लेदन जलकाव्यापारहै ॥ और तंडुलादिकोंकूंपकावणा तेजकाव्यापारहै ॥ और संकोचविकासरूपक्रिया वायुकाव्यापारहै ॥ औ

र स्थितिमैं चलनेमैं अनुकूल जोअवकाशता सो आकाशकाव्यापारहै ॥ याव्यापारोंतैंभिन्न पृथिवीआदिकोंका कोईव्यापारहैन हीं ॥ और श्रोत्रादिकइंद्रियोंका जीवकेबंधनकरणेकाजोस्वभावहै ॥ तास्वभावकाप्रगटकरणा यहही शब्द स्पर्श रूप रस गंध विषयों काव्यापारहै ॥ काहेतैं विषयसंबंधतैंविना केवलइंद्रियोंविषे बंधनकीकारणताहैनहीं ॥ याकारणतैंहीं श्रुतिविषे विषयोंकूंअतिग्रह कह्याहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! इंद्रियादिकोंविषे स्वतंत्रताकाअभावहै ॥ यातैं आत्मानहींहै ॥ तौभी ज्ञानशक्तिहोणेतैं सर्वज्ञपरमा त्माकीउपाधिजाबुद्धि सा स्वतंत्रहै यातैं बुद्धि आत्माकाहेतैंनहोवै ॥ समाधान ॥ बुद्धिविषे सर्वज्ञपरमेश्वरकाउपाधिपणा ॥ यद्यपि प्रसिद्धहै ॥ तथापि साबुद्धि आत्मानहीं ॥ काहेतैं बुद्धिविषे जोसर्ववस्तुकेविषयकरणेकासामर्थ्यहै ॥ सो मैंपरमात्माकीसमीपता केअधीनहै ॥ स्वतंत्र बुद्धिविषेनहीं ॥ इहां यहअभिप्रायहै ॥ सर्वजगत्केप्रकाशकरणेहारा एकचेतन ज्ञानशब्दकामुख्यअ र्थहै ॥ और जैसे जल आपणेसंबंधकरिकै अस्वच्छघटादिकपदार्थोंविषे सूर्यादिकोंकेप्रतिबिंबग्रहणकरणेकीयोग्यता प्रगटकरेहै ॥ तैसे बुद्धिभी आपणेसंबंधकरिकै घटादिकपदार्थोंविषे चेतनकेप्रतिबिंबग्रहणकरणेकीयोग्यताकूं प्रगटकरेहै ॥ और आवरणकीनि वृत्तिकरेहै ॥ और आपभीबुद्धि चेतनकेप्रतिबिंबकूंग्रहणकरेहै ॥ यातैं बुद्धि ज्ञानशब्दकागौणअर्थहै ॥ याकहणेतैं यहसिद्धभया ॥ जैसे सूर्यकेप्रतिबिंबकरिकैयुक्तहुआ दर्पण भित्तिआदिकपदार्थोंकूंप्रकाशेहै ॥ तौभी दर्पण आपप्रकाशरूपनहीं ॥ तैसे चेतनकेप्रति बिंबकूंग्रहणकरिकैबुद्धि सर्वअर्थोंकूंप्रकाशेहै ॥ तथापि बुद्धि आपप्रकाशरूपनहीं ॥ यातैं मैंपरमात्माकीसमीपताकरिकैहीं बुद्धिविषे सामर्थ्यहै ॥ और मैंपरमात्मातैंविना बुद्धिविषे सामर्थ्यहैनहीं ॥ जैसे श्रीकृष्णभगवान्केसमीपतातैंहीं अर्जुनविषे सामर्थ्यहै ॥ श्री कृष्णतैंविना ॥ अर्जुनविषे सामर्थ्यहैनहीं ॥ यातैं बुद्धिआत्मानहीं ॥ और मैंव्यापकपरमात्मानैं ताबुद्धिकीजडताभी निश्चयकरीहै ॥ का हेतैं बुद्धि विषयाकारपरिणामकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जो परिणामकूंप्राप्तहोवेहै ॥ सो जडहोवैहै जैसे मृत्तिकादिकहै ॥ और चेतन परि णामकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैंभी बुद्धि आत्मानहीं ॥ अबपूर्वकहीजोप्राणोंकीअनात्मता ताकूं श्रुतिप्रमाणतैंसिद्धकरेहै ॥ यद्यपि प्राण जीवनकाहेतुहै ॥ और इंद्रियोंकीअपेक्षाकरिकैअंतरहै ॥ तथापि मैंपरमात्माकीसामर्थ्यतैंहीं जीवनविषे प्राण हेतुहै ॥ और श्रु

तिनेंभी कह्याहै ॥ प्राणकरिकै अपानकरिकै कोईप्राणी नहींजीवैहै ॥ किंतु प्राणऔरअपानकाअधिष्ठान जोआत्मा ॥ ताक रिकै प्राणीजीवतेहैं ॥ यातैं प्राणआत्मानहींहै ॥ याकहणेतैंयहसिद्धभया ॥ पूर्वकहेजेवाक्इंद्रियसैंआदिलैके ॥ तिनोंकूं किसीप्रका रकरिकैभी एकएककूं आत्मतानहींहै ॥ काहेतें जोसंपूर्णवागादिकोंकाप्रयोजकहोवै ॥ सो आत्माकहियेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जो आ पणीसमीपताकरिकै वागादिकोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवर्तकरावै ॥ और जिसकेवासतैं यहवागादिक प्रवर्त्तहोवैं ॥ सो आत्माकहियेहैं ॥ यह आत्माकालक्षण वाक्इंद्रियआदिकोंविषेहैनहीं ॥ काहेतैं वागादिक सर्वअर्थकेसाधकहैंनहीं ॥ किंतु आपणे आपणेव्यापारकीसिद्धिकरेहैं ॥ यातैं आत्मानहीं ॥ और वागादिकसंपूर्ण मिलिकरिकैसंघातरूपहैं ॥ यातैं मैंपरमात्माकेअर्थहैं ॥ जैसे गृहादिकपदार्थ मृत्तिकाकाष्ठादिकपदार्थोंकासमुदायरूपहैं ॥ यातैं गृहीपुरुषकेअर्थहैं ॥ और जोजोपदार्थ परकेवासतेहोवेहै॥ सोसो अनात्माहोवेहै ॥ जैसे गृहादिक अनात्माहैं ॥ यातैं मेरेसुखकेसाधन जेवागादिक तिनोंविषे मैंपरमात्माकीआत्मता कैसे होवे ॥ तात्पर्ययह ॥ तेवागादिक आत्मारूपनहींहैं और यहवागादिकसंपूर्ण मिलिकरिकै आपणेवासतैनहींहैं ॥ और एकएकभी आपणेवासतेनहींहैं ॥ किंतु मैंपरमात्माकेवासतेहैं ॥ यातैं यहसंपूर्णवागादिक मेरास्वरूपनहीं॥जबी संपूर्णवागादिक मिलिकरिकै मेरास्वरूपनहींभये॥तबी एकएकवागादिक मेरास्वरूप कैसेहोवैंगे॥किंतु नहींहोवैंगे॥शंका॥हेभगवन्! यहसंपूर्णवागादिक आपई श्वरकेभृत्यहैं ॥ यातैं आपकीप्रेरणातैंविनाहीं तुमारेभयकरिकै शब्दकेउच्चारणादिक जेआपणेआपणेव्यापारहैं तिनोंकूं करैंगे॥ दृष्टां त॥ जैसे राजाकेभयकरिकै भृत्य आपणेआपणेकार्यकूंकरेहैं ॥ यातैं संघातविषे तुमारेप्रवेशका कोईप्रयोजननहींहै॥ समाधान॥ यद्यपि यहवागादिक मेरेभयकरिकै आपणेआपणेव्यापारोंकूं करैंगे ॥ तथापि मैंपरमात्माकूं त्वंपदकाअर्थरूपकरिकै यहवागादिक नहींजाणते ॥ और सर्वजगत्काकारण जोमैंतत्पदकाअर्थ ॥ ताकूंभी यहवागादिक नहींजाणते ॥ जबी त्वंपदार्थकूं औरतत्पदा र्थकूं यहवागादिक नहींजाणते॥ तबी तिनोंकेएकताकूं कैसेजाणैंगे॥ किंतु नहींजाणैंगे ॥ यातैं परमात्माहीं यासंघातमैंप्रवेशकरि कै मैंकौनहूं ऐसाविचारकरो॥इहां वागादिकइंद्रियोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासकरिकै मैं शब्दउच्चारणकरूंहूं औरमैंदेखूंहूं याप्रकार

काअभिमानहीं परमेश्वरकाप्रवेशहै ॥ याहीकूं प्रतिबिंबवाद औरअवच्छेदवादकरिकै शास्त्रविषेकह्याहै॥शंका॥ हेभगवन्! जिसआ
पणेस्वरूपकाविचार आपनेंकरणाहै ॥ सोविचार याशरीरकेप्रवेशतैंविनाहीकरो ॥ किसवासतेयादुःखरूपशरीरविषे प्रवेशकरते
हो ॥ **समाधान** ॥ जैसामेरास्वरूपहै तैसाहोवो ॥ इसकालविषे आपणेस्वरूपकी चिंताकरिकै कछुप्रयोजन सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं
संघातविषेप्रवेशकरिकै इनवागादिकोंकूं सुखकीप्राप्तिकरिकै आपणेस्वरूपकानिर्णयकरूंगा ॥ इहांवागादिकोंकूं सुखकीप्राप्ति और
आपणेस्वरूपकानिर्णय यहदोप्रयोजन प्रवेशकेहैं॥इसप्रकार परमात्मा चिंतनकरिकै आपणेस्वरूपकेचिंतनकूंपरित्यागकरिकै शरी
रविषेप्रवेशवासतै द्वारकूं विचारताभया॥सोसर्वदेवतावोंकापितापरमेश्वर आपणेभृत्योंकेप्रवेशके जेमुखादिकद्वारहैं॥तिनोंविषेआप
णीयोग्यताकूंनदेखिकरिकै आपणीसमीपताकरिकै मूर्धसीमाकूंभेदनकरिकै याशरीरविषे प्रवेशकरताभया ॥ तहां शिरविषे जे
वाम दक्षिण मध्य यहतीनकपालहैं ॥ तिनोंकेमध्यभागकानाम मूर्धसीमाहै ॥ सो केशोंतैंरहितकृशपुरुषकेमस्तकविषे प्रसिद्धदीखे
है ॥ अथवा स्त्रियोंकेकेशविभागकीजोरेखा सो जहांसमाप्तहोवै तास्थानकानाम मूर्धसीमाहै ॥ यहसर्वपुरुषोंकूंप्रसिद्धहै ॥ और जै
से प्रसिद्धद्वारकापुरीविषे प्रवर्षणनामापर्वततैंकूदिकरिकै आकाशरूपऊर्ध्वमार्गतैं श्रीकृष्ण प्रथम प्रवेशकरताभया॥तैसे यामनुष्य
शरीररूपपुरीविषे कृष्णस्वरूपपरमात्मा ऊर्ध्वमार्गतैं प्रवेशकरताभया ॥ यातैं सर्वमनुष्योंकाशरीर द्वारकापुरीहै ॥ इहां मनुष्यश
रीरविषेहीं आत्मसाक्षात्कारकीयोग्यताहै ॥ यातैं मनुष्यशरीरविषे प्रवेशकह्या ॥ तामनुष्यशरीरकरिकै सर्वशरीरोंका ग्रहणकर
णा ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! श्रुतिऔरस्मृतिविषे नवद्वार प्रसिद्धहैं ॥ यहमूर्धद्वार प्रसिद्धहैनहीं ॥ यातैं याद्वारकरिकै शरीरकूं द्वारा
वतीपुरीकैसाकह्या ॥ **समाधान** ॥ जिसकारणतैं परमेश्वर मस्तककूंभेदनकरिकै याशरीररूपपुरीविषे प्रवेशकरताभया ॥ यातैं म
स्तककेऊर्ध्वभागविषेजोद्वारहै सोद्वार उपासकपुरुषोंनैं विदृति यानामकरिकैकथनकियाहै ॥ औरलोकविषेभी मस्तकविषकटुतै
लकेधारणतैं कटुताका बुद्धिमानपुरुष अनुभवकरताहै ॥ औरमूढपुरुषोंकरिकै श्रीकृष्ण औरताकाद्वार दोनों जानणेकूंअशक्य
हैं॥यातैं परमेश्वरकेप्रवेशकाद्वार अप्रसिद्धनहींहै ॥ औरवागादिकभृत्योंकेप्रवेशकेजेनवद्वार ॥ तिनोंकेसमान यहपरमेश्वरकेप्रवे

शकाद्वार हैनहीं ॥ यातैं तिननवद्वारोंकेसाथ याद्वारकी श्रुतिस्मृतिविषे गणतीनहींकरी ॥ और जाकारणतैं योगीपुरुष याऊर्ध्वद्वारतैंनिकसिकरिकै ब्रह्मलोककीप्राप्तिद्वारा मुक्तिकाकारण जोदेवयानमार्गहै ताकूं प्राप्तहोवैहैं॥ताकारणतैं यहऊर्ध्वद्वार नंदनहै ॥ जिसकरिकै आनंदकीप्राप्तिहोवै सो नंदनकहियेहैं ॥ यद्यपि इंद्रकेवनकानाम नंदनहै तथापि नीचेपतनकीभीतिजन्यदुःखकरिकै इंद्रकावनयुक्तहै ॥ यातैं ताविषे सुखकीकारणताका संशयहै॥ अब याऊर्ध्वद्वारकी नंदनवनकेसाथसमानताकूं कहैहैं ॥ जैसे स्वर्गविषेप्राप्तभये जेकर्मीपुरुष तिनोंके सुखकाकारण नंदनवनहै ॥ तैसे यहऊर्ध्वद्वारभी ब्रह्मलोकद्वारा मुक्तिरूपसुखकाकारणहै ॥ इसप्रकार जीवरूपकरिकै परमात्माकाप्रवेशकह्या ॥ अब उपाधिकेअभिमानकरिकै तापरमात्माकूं संसारकीप्राप्तिका निरूपणकरेहैं ॥ प्रसिद्धजेनवद्वार औरनाभि औरऊर्ध्वद्वार यह एकादशद्वारहैं॥ जाविषे ऐसेशरीररूपपुरीकूंप्राप्तहोइकै अग्निआदिकदेवतावोंकाप्रभूजोपरमात्माइंद्र सो आपणेनिवासवासते तीनगृहोंकूं करताभया॥ चक्षुइंद्रियकेरहणेकाजोगोलकतागोलकविषे प्रथमनिवास ॥ और चित्तकाजोस्थान हृदयकमलकेदलहैं तिनदलोंविषे दूसरानिवास और हृदयकमलकेअंतरआकाशविषे तीसरानिवास ॥यातीनगृहोंविषे अहंकाररूपशय्याउपरि चैतन्यपरमात्माकेप्रतिबिंबरूपगर्भकूंधारणेहारी जाज्ञानशक्तिरूपस्त्री ताकेसाथ शयनकूंप्राप्तहोइके इंद्ररूपआत्मा जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति रूपतीनस्वप्नोंकूं देखताहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! स्वप्नतो यद्यपि स्वप्नरूपहै तथापि जाग्रत्औरसुषुप्तिकूं स्वप्नरूपताकहनी बनैनहीं॥ समाधान ॥ यहइंद्ररूपजीवात्मा आपणेस्वरूपज्ञानतैंरहितहै यातैं जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यहतीनों याकूं स्वप्नस्वरूपहैं॥ काहेतैं जोजैसावस्तुकास्वरूपहोवै तैसाहीं ताकूंदेखै याकानाम जाग्रत्है ॥ और यहजीवात्मा अद्वितीयआनंदरूपआपणेस्वरूपकूंभुलाइके दुःखीकर्त्ताभोक्ता आपकूंमानेहैं॥ यातैं अज्ञानरूपनिद्राकरिकै जोजो वस्तुदेखताहैसोसर्व स्वप्नहै॥ तहां प्रथम जाग्रत्रूपस्वप्नकूं निरूपणकरेहैं॥वास्तवतैंशुद्धपरमात्मा शब्दस्पर्शादिकबाह्यस्थूलभोगोंकेप्राप्तिवासतै अनादिअज्ञानकरिकै भोगकाकारणधर्मअधर्मकूं जिसकालविषे अंगीकारकरैहै ताकानाम जाग्रत्है ॥ तिसजाग्रत् कालविषे वामदक्षिणदोनोंनेत्रोंविषे भगवान् स्त्रीपुरुष यादोनोंरूपकरिकै प्रगटहोवैहै॥ तहां दक्षिणनेत्रविषेरह्याजोरूप सो अधि

कप्रकाशरूपबलवालाहै ॥ यातैं भोक्तापुरुषरूपहै और वामनेत्रविषेरह्याजोरूप सो अधिकप्रकाशरूपबलवालानहीं है ॥ यातैं भोग्यस्त्रीरूपहै यारीतिसैं भोक्ताऔरभोग्यरूपतैं परमेश्वरकीउपासना श्रुतिविषेकह्याहै ॥ इसप्रकार व्यष्टिशरीरकेअभिमानकरिकै आपणेकूंपरिच्छिन्नमानताहुआ भगवान् वागादिकसर्वइंद्रियोंकूं अंगीकारकरिकै कर्मकेफलकास्वीकाररूपभोगकूं प्राप्तहोताभया ॥ तहां बाह्यनानाप्रकारकेभोगकूं निरूपणकरेहैं ॥ जिसतैं मैंउत्पन्नभयाहूं यहमेरापिताहै ॥ और यहमेरीमाताहै ॥ और यहमेरेभ्राताहैं ॥ और यहमेरीभगनियां हैं ॥और यहमेरेबांधवहैं ॥ और यहमेरेभृत्यहैं ॥ औरयहमेरीस्त्रियांहैं ॥ और यहमेरेपुत्रहैं ॥ और यहमेरीपुत्रियांहैं॥ और यहमेरेमित्रहैं ॥ और यहमेरेशत्रुहैं॥और यहमेरेउदासीनहैं॥मित्रऔरशत्रुप्रभावतैंरहितकानाम उदासीनहै॥ और यहमेरेनियामकहैं॥धर्ममर्यादाविषेजोस्थापनकरैताकूं नियामककहेहैं॥जैसे पितागुरुराजादिकहैं ॥ और यहमेरेऋत्विक्हैं॥ यज्ञकेकरावणेहारेब्राह्मणोंकूं ऋत्विक्कहेहैं ॥ और यहमेरेगुरुहैं॥और यहस्त्रीहै॥और यहपुरुषहै॥और यहनपुंसकहै॥इसप्रकार चेतनशरीरविषे भोगोंकूंकह्या ॥ अब जडोंविषेभोगोंकूंकहेहैं ॥ यहगृहमेरेहैं॥और यहभूमिमेरीहै॥और यहअन्नमेरेहैं ॥और यहसुवर्णमेराहै ॥ और यहपशुमेरेहैं ॥ और यहवस्त्रमेरेहैं ॥ और यहभूषणमेरेहैं ॥ और यहसिहजामेरीहै ॥ और यहसुंदरहै॥ और यह असुंदरहै॥ यह अधिकहै ॥ यह थोड़ाहै ॥ यह समीपहै ॥ यह दूरहै ॥अब ज्ञानकर्मइंद्रियोंकेविषयरूपभोगोंकूं निरूपणकरेहैं ॥ यहशब्दहैं॥ और यहस्पर्शहैं ॥ और यहगंधहैं ॥ और यहरसहैं ॥ और यहरूपहैं ॥ और यहशब्द कहणेयोग्यहैं ॥ और यह हस्तोंकरिकै ग्रहणकरणेयोग्यहैं॥ और यह पादोंकरिकैचलनेयोग्यहैं॥और यह आनंदहैं ॥ और यह मलादिकोंकेपरित्यागहैं ॥ अब जिसकरिकैविषयबंधनपुरुषकूंकरेहैं ताभोगकूं कहेहैं ॥ यह हमारेसुखकेकारणहैं ॥ और यह हमारेदुःखकेकारणहैं ॥ अब विषयोंकेफलरूपभोगकूंकहैहैं ॥ यह सुखहै ॥ और यह दुःखहै ॥ अब कालभोगकूंकहेहैं ॥ यह पूर्वहोताभया ॥ और यह वर्तमानहै॥ और यह आगेहोवैगा ॥ इसप्रकार आपणेविषे स्वामीपणेकेअध्यासरूप जेबाह्यभोगहैं ॥ तिनकूं कथनकऱ्या ॥ अब तादात्म्यअध्यासरूपशरीरके भोगोंकूं कहैहैं ॥ मैं पुरुषहूं ॥ और मैं स्त्रीहूं ॥ और मैं नपुंसकहूं ॥ और मैं मनुष्यहूं ॥ और मैं पशुहूं ॥ और मैं जरायुजहूं औ

र मैं स्वेदजहूं ॥ और मैं उद्भिजहूं ॥ और मैं अंडजहूं ॥ इसप्रकार शरीरविषेस्थित जेअन्नकेपरिणामसंपूर्णविकार ॥ तिनविकारोंकूं अज्ञानरूपनिद्राकरिकैसोयाहुआआत्मा मायाकरिकै आपणास्वरूपमानैहै ॥ और वास्तवतैंतोदेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै ॥ अब शरीरकेधर्मोंकाअध्यास निरूपणकरैहैं ॥ मैं बालहूं ॥ और मैंयुवाहूं ॥ और मैंवृद्धहूं ॥ और मैंरोगीहूं ॥ और मैंरोगरहितहूं ॥ और मैंरूपवानहूं ॥ और मैंकुरूपहूं ॥ और मैं शास्त्रविहितआचरणवालाहूं ॥ और मैंशास्त्रनिषिद्धआचरणवालाहूं ॥ याप्रकार देहकेधर्मोंकूं आत्माविषे अज्ञानकरिकैमानैहै ॥ अब चारिवर्णोंका औरचारिआश्रमोंका आत्माविषे अध्यास निरूपणकरैहैं ॥ मैंब्राह्मणहूं ॥ और मैंक्षत्रियहूं ॥ और मैंवैश्यहूं ॥ और मैंशूद्रहूं ॥ और मैंब्रह्मचारीहूं ॥ और मैंगृहस्थहूं ॥ और मैंवानप्रस्थहूं ॥ और मैंसंन्यासीहूं ॥ याप्रकार वर्णआश्रमकेसाथ अध्यासहुए पश्चात्तिसतिसवर्णआश्रमके जेअवांतरजातियां औरधर्म औरतिसतिसदेशकेआचार यहसंपूर्णदेहधर्मोंकूं अज्ञानकरिकै आपणेविषे मानताहै ॥ जैसे ब्राह्मणत्वजाति दशप्रकारकेब्राह्मणोंविषेरहैहै ॥ और एकएकब्राह्मणविषे रहीहुईजेगौडत्वद्रविडत्वादिकजातियां ते अवांतरजातियांहैं ॥ और दक्षिणदेशविषे मातुलीकन्याकेसाथविवाह और गुजरातदेशविषे मरेसैंपीछे सर्वसंबंधियोंकामिलिकेभोजन और मारवाडदेशमें चर्मपात्रकेजलकाग्रहण ॥ यह देशोंके आचारहैं ॥ अब इंद्रियोंकेधर्मोंकाअध्यास आत्माविषे निरूपणकरैहैं ॥ मैंअधिकदृष्टिवालाहूं ॥ और मैंमंददृष्टिवालाहूं ॥ इत्यादिक इंद्रियोंकेधर्म आपणेविषे मानताहै ॥ काहेतें मैंअंधहूं मैंकाणाहूं मैंबधिरहूं इत्यादिकवचनोंकरिकै अंतरअध्यासकूं प्रगटकरैहै ॥ इहां यहतात्पर्यहै ॥ जिसवस्तुकूं मनकरिकैध्यानकरताहै ॥ तिसवस्तुकूं वाक्इंद्रियकरिकैकथनकरैहै ॥ यहनियम शास्त्रविषेकह्याहै ॥ और यहपुरुष मैंअंधहूं मैंकाणाहूं ऐसाकथनकरैहै सोकथनचक्षुइंद्रियादिकोंकेसाथ आत्माकेअध्यासतैंविना सिद्धहोवैनहीं ॥ यातें मैं अंधहूं इत्यादिकथन पुरुषोंकेभीतरअध्यासका अनुमानकरावैहै ॥ यहरीति सर्वअध्यासविषे जानणी ॥ और व्यापकआत्माकूं परिच्छिन्नमानणा ॥ यह देहादिकअध्यासतैंविना बनैनहीं ॥ काहेतें यहपुरुष एकदेहका अभिमानकरिकै दूसरेदेहका अभिमान नहींकरता ॥ जैसे मैंब्राह्मणत्वजातिवालाहूं ॥ औरक्षत्रियत्वजातिवाला मैंनहींहूं ॥ और ब्राह्मणत्वजातिवाले जेदूसरेब्राह्मणहैं तेभी मैंन

हींहूं ॥ किंतु ते मेरेसैंभिन्नहैं ॥ यहपरिच्छिन्नपणाभी देहादिकोंकेअध्यासकूं बोधनकरेहै ॥ और अहं याशब्दकालक्ष्यअर्थ शुद्धआत्मा है ॥ और अहं यावृत्तिज्ञानकाविषयभी शुद्धआत्माहै ॥ सोआत्मा अहं याशब्दऔरज्ञानतें वास्तवतेंभिन्नहै ॥ काहेतेंशब्दऔरज्ञान तें अर्थ भिन्नहोवे है॥इसप्रकार आत्माकेबोधकअहंशब्दका आत्मसाक्षात्कारतेंरहितपुरुष देहादिकअर्थ मानेहै ॥ और आत्मविषय क अहं याज्ञानकाभी देहादिकविषयमानें हैं॥याकहणेतेंयहअर्थसिद्धभया॥अन्यवस्तुकेवाचकशब्दका अन्यस्तुविषे कथनकरणा यह अध्यासतेंविना होवैनहीं॥जैसे रजतरूपअर्थकेवाचक रजतशब्दका सन्मुखशुक्तिविषे यहरजतहै ऐसाकथनरजत अध्यासतेंविनाहो वैनहीं॥ तैसे यहपुरुषभी आत्माकेवाचकअहंशब्दका देहादिकोंविषे 'अहंगौरः' ऐसाकथनकरेहै॥ यातें शरीरादिकोंविषे अहंशब्दका कथन मैंगौरहूं याप्रकारकेज्ञानोंकी भ्रमरूपता सिद्धकरेहै॥इसप्रकार देहादिकोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासकरिकै आत्माविषे भेदज्ञान कानिरूपणकऱ्या॥अब ताअध्यासकरिकै बाहरीवस्तुवोंकूं विषयकरणेहारेभेदज्ञानकूं निरूपणकरेहैं॥यहपितामेराहै ॥ और यहमाता मेरीहै॥इसतेंभिन्नकोईमेरापिता औरमाता नहींहै॥और यहदेवतावोंकेमंदिर औनदीतीरसैंआदिलेकैवस्तु सर्वलोकोंकेवासतेहैं॥इस तेंआदिलेकै भेदोंकूं अज्ञानरूपनिद्राकरिकैसोयाहुआआत्मा स्वप्नकीन्यांई देखताहै ॥ और किसीस्थानविषे विनाहीं कारणतेंशोक कूंप्राप्तहोवे है ॥ और किसीस्थानविषे हर्षकूंप्राप्तहोवे है ॥ अब प्राणोंकेअध्यासकूंजनावणेहारा जोप्राणोंकेधर्मोंकाआत्माविषेअ ध्यास ताकूंनिरूपणकरै हैं ॥ मैंक्षुधावालाहूं ॥ और मैंतृषावालाहूं ॥ याप्रकार प्राणोंकेधर्मक्षुधापिपासाकूंआत्माविषेमानेहै ॥ अब मनकेधर्मोंका आत्माविषे अध्यासदिखावेहैं ॥ काम संकल्प संशय श्रद्धा अश्रद्धा धैर्य अधैर्य लज्जा वृत्तिज्ञान भय यह श्रुतिविषेक हेजेमनकेधर्म ॥ ते आत्माविषेमानिकरिकै यहपुरुष तपाइमानहोवेहै ॥ और वास्तवतैंतो आत्मा असंगहै ॥ और निर्गुणहै ॥ और देशकालवस्तुपरिच्छेदतेंरहितहै ॥ और आनंदचेतनरूपहै ॥ सोईहीआत्मा आपणेस्वरूपकेअज्ञानकरिकै आकाशादिकपंचभूतोंवि षे औरताकेकार्यप्रपंचविषे यहवस्तुसमीचीनहै औरयहवस्तुअसमीचीनहै इसरीतिसैं नानाप्रकारकेभेदबुद्धियोंकूंकरताहुआ नाना प्रकारकेसुखऔरदुःखोंकूंइसलोकविषे प्राप्तहोवेहै ॥ यह भेदज्ञानका अवांतरफलहै ॥ और मुख्यफलतो श्रुतिविषेकह्याहुआ जन्म

मरणकाप्रवाहहै ॥ और पूर्वकहेजे ज्ञानइंद्रियऔरकर्मइंद्रियोंकेव्यापार॥ और आकाशादिकपंचभूतोंकेव्यापार ॥ और भूतोंकेकार्य प्रपंचकेव्यापार ॥ तिनसर्वव्यापारोंकूंअज्ञानकरिकै आपणेविषे आत्मामानेहै ॥ और पूर्वकहेजितनेजाग्रत् अवस्थाकेज्ञान ॥ तेसंपूर्ण अध्यासकरिकैव्याप्तहुएहैं ॥ यातैं सत्चित्आनंदअनंतरूपआत्माका जोयहजाग्रत्है ॥ सोसंपूर्ण स्वप्नहै ॥ काहेतैं प्रबोधकाजहांअभावहोवै ॥ और मिथ्यावस्तुकाजहांदर्शनहोवै ॥ ताकानामस्वप्नहै ॥ यहस्वप्नकालक्षण जाग्रत्विषेभीघटैहै ॥ काहेतैं अज्ञानअवस्थाविषे आत्मज्ञानरूप प्रबोधकाअभावभीहै ॥ और मैंब्राह्मणहूं मैंक्षत्रियहूं औरमैंअंधहूं याप्रकार अनात्मदेहादिकोंकेधर्मोंका आत्माविषेआरोपणरूपमिथ्यादर्शनभीहै ॥ यातैं जाग्रत् स्वप्नरूपहै ॥ अब याअर्थकूं लोकप्रसिद्धितैंभीस्पष्टकरेहैं ॥ जोपुरुष चक्षुइंद्रियसैंआदिलैकेजितनीप्रत्यक्षज्ञानकीसामग्रीहै तिससामग्रीकरिकैयुक्तहोवै ॥ और सोपुरुष जबीघटादिकवस्तुवोंकूं घटादिरूप करिकैनजाणे ॥ किंतु घटादिकोंकूं पटादिरूपकरिकैजाणे ॥ ताभ्रांतपुरुषकूं जाग्रत्अवस्थाविषेभी लोक सोयाहुआकहेहैं ॥ यातैं यालोकव्यवहारतैंभी विपरीतदर्शनकानामस्वप्नसिद्धहोवैहै ॥ सोलक्षण जाग्रत्विषेभी पूर्वकहीरीतिसैंघटैहै ॥ याप्रकार यहआनंदरूपआत्माभी विपरीतदर्शनकरिकैविशिष्टहै ॥ यातैं ताका जाग्रत्भी स्वप्नरूपहै ॥ यद्यपि स्वप्नविषे इंद्रियोंकीउपरामताहोवैहै ॥ साउपरामता जाग्रत्विषेहैनहीं तथापि मिथ्यादर्शनरूपधर्म जाग्रत्स्वप्नविषेसमानहै ॥ यातैं जाग्रत्भी स्वप्नरूपहै ॥ इसप्रकार मिथ्याजाग्रत्अवस्थाकानिरूपणकिया ॥ अब स्वप्नअवस्थाकानिरूपणकरेहैं ॥ याप्रकार जाग्रत्अवस्थाविषे नानाप्रकारकेस्वप्नोंकूंदेखिकरिकै इंद्राणीसहितपरमात्मारूपइंद्र दूसरास्थानजोहृदयकमलकेदलहैंताविषे प्रवेशकरताभया ॥ इहां आत्माविषेकर्ताभोक्तापणेंकीउपाधिजाबुद्धिहै ताकानाम इंद्राणीहै ॥ तास्थानविषे इंद्रऔरइंद्राणीकेसमीप पूर्वपूर्वकर्मोंकेअनुसारकरिकै नटकीन्याईं अनंतप्रकारकेआपणेरूपोंकूं मनदिखावैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सोमन ज्ञानाकार औरविषयाकार परिणामकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और अनंतजन्मोंविषेउत्पन्नभये जेपदार्थोंकेसंस्कार ॥ तिनोंकरिकैमनयुक्तहै ॥ याकारणतैं मनविषे ऐसासामर्थ्यहै ॥ अब प्रसिद्धजाग्रत्तैं स्वप्नविषे इंद्रियोंकीउपरामतारूपविलक्षणता दिखावैहैं ॥ तिसस्वप्नअवस्थाविषे मनकरिकैउत्पन्नकिये जेनानाप्रकारकेकार्यरूप

स्वांगहैं ॥ तिनोंकूं परमात्मारूपइंद्र देखेहै ॥ कैसापरमात्माहै ॥ ज्ञानकर्मइंद्रियोंतेंरहितहै ॥ और जाग्रत्‌केसंस्कारकरिकैवि
शिष्टहै ॥ और स्वप्नभोगकेदेणेहारेकर्मोंकरिकैविशिष्टहै ॥ यास्थानविषे दोप्रक्रिया शास्त्रविषेकहीहै ॥ स्वप्नविषेमनहीं रथादिक
विषयाकार औरज्ञानाकार परिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसा कोइकग्रंथकार मानेहै ॥ औरकोइकग्रंथकारतौ ॥ मनविषेरहीजेवासना
ताकरिकैविशिष्टअज्ञानहीं स्वप्नविषे रथादिविषयाकार औरज्ञानाकार परिणामकूंप्राप्तहोवैहै ऐसा मानैहै ॥ अब जाग्रत्‌तैं दूसरी
भीविलक्षणता स्वप्नविषेदिखावैहैं ॥ तास्वप्नअवस्थाविषे द्रष्टा आपणेस्वरूपविषे और दृश्यपदार्थोंविषे स्वरूपनियम, देशनियम,
कालनियम, कारणनियम इनचारिप्रकारकेनियमोंकेअभावकूं देखताहै ॥ अब दृश्यपदार्थोंविषे स्वरूपनियमकेअभावकूं निरूपण
करैहैं ॥ स्वप्नविषेप्रतीतभयाजोहस्ती ॥ सोक्षणपीछे वृक्षहोइकेप्रतीतहोवै है ॥ और सोवृक्ष क्षणपीछे पर्वतहुआप्रतीतहोवै है और ॥
सोपर्वत क्षणपीछे तृणहुआप्रतीतहोवैहै ॥ इसप्रकार स्वप्नविषे दृश्यपदार्थोंकेस्वरूपका नियमहोवैनहीं ॥ अब द्रष्टाविषे स्वरूप
नियमकेअभावकूं निरूपणकरै हैं ॥ इसप्रकार स्वप्नविषे ब्राह्मणद्रष्टा क्षणसेंपीछे आपकूं क्षुद्रहुआदेखे है ॥ और क्षणसेंपीछे आपकूं
पशुहुआदेखे है ॥ और कहां क्षणसेंपीछे आपकूंदेवताहुआदेखे है ॥ और कहांक्षणसेंपीछे आपकूं महाराजाहुआदेखैहै ॥ याप्र
कार द्रष्टाकेस्वरूपविषेभी नियमकाअभावहै ॥ अब स्वप्नविषे देशनियमकेअभावकूंदिखावै हैं ॥ सूक्ष्मजेस्वप्नवहनामानाडियां हैं ॥
तिनोंविषेस्थितहुआद्रष्टा तासूक्ष्मस्थानविषे समुद्रकूं औरसुमेरुपर्वतकूं औरसप्तद्वीपोंकरिकेयुक्तपृथिवीकूं देखे है ॥ यातें स्व
प्नविषे देशनियमकाभीअभावहै ॥ अब कालनियमकेअभावकूंदिखावैहैं ॥ शय्यापरस्थितहुआ यहपुरुष रात्रिविषे सूर्य
सहितदिनकूंदेखैहै ॥ यातें कालनियमकाभी स्वप्नविषे अभावहै ॥ अब कारणनियमकेअभावकूं दिखावैहै ॥ याभारतखंडवि
षेस्थितहुआपुरुष यापुरुषशरीरकरिकैहीं सूर्यचंद्रमाकूं स्वप्नविषे भक्षणकरैहै ॥ और भक्षणका कोईकारणहैनहीं ॥ काहेतें वस्तु
केभक्षणमें तीनकारणहोवै हैं॥ एकतौ भक्षणकरणेयोग्यवस्तुका मुखकेसाथसंबंध ॥ और दूसरामुखकीअपेक्षाकरिकै वस्तुविषे
स्वल्पता ॥ और तीसरा भोक्तापुरुषकासामर्थ्य ॥ यातीनोंकारणोंकाअभावहै ॥ तौभी स्वप्नविषे पुरुष सूर्यचंद्रमाकूंभक्षणकरैहै ॥

और स्वप्नविषे रथकेकारण तक्षा काष्ठ वास्यादिकोंका अभावहै तौभी संकल्पमात्रतें रथकूंउत्पन्नकरेहै ॥ यातें कारणकाभी स्वप्नविषेनियमनहीं ॥ इसीवासतें मायातेंविना स्वप्नकाकोईकारणहैनहीं ॥ किंतु मायाही ताकाकारणहै ॥ यातें श्रुतिकेतात्पर्यजाणेहारे व्यासभगवान्आदिकोंनें स्वप्नकूं मायामात्रकह्याहै ॥ अब सुषुप्तिअवस्थारूपतीसरेस्वप्नकूंनिरूपणकरेहैं ॥ सोइंद्ररूपआत्मा स्वप्नकूंदेखिकरिकै अथवाजाग्रत्कूंदेखिकरिकै इंद्राणीकरिकैसहित तीसराजोहृदयकमलकेअंतरआकाशरूपस्थानहै ताविषे प्रवेशकरताभया ॥ इहांयहतात्पर्यहै ॥ जाग्रत्तैंउत्तरकालमैंस्वप्नहोवैहै ॥ और स्वप्नतैंउत्तर सुषुप्तिहोवैहै ॥ यहनियमनहीं है ॥ काहेतें कबीतौ जाग्रत्तैंउत्तर सुषुप्तिहोवैहै ॥ और सुषुप्तितैंउत्तरस्वप्नहोवैहै ॥ और कबीतौ जाग्रत्तैंउत्तर स्वप्नहोवैहै ॥ और स्वप्नतैं उत्तर सुषुप्तिहोवैहै ॥ और तिसहृदयआकाशविषे भोग्यरूपइंद्राणीकूंआलिंगनकरिकै ताइंद्राणीकेसाथ अभेदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्यंयह ॥ तहां भोक्ताभोग्यपणा भिन्नहोइकेप्रतीतहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सुषुप्तिविषे यद्यपि अज्ञानकाकार्यरूपभोग्यनहीं है ॥ तथापि अज्ञानरूपभोग्य तहां है ॥ यातें भोक्ताभोग्यकाअभेद बनैनहीं ॥ समाधान ॥ सुषुप्तिविषे आवरणरूपमायाकूं यहद्रष्टा देखताहुआभी नहींदेखे है ॥ इहांयहतात्पर्यहै ॥ जैसे दीपकसैं अंधकारकाज्ञानहोवैनहीं ॥ तैसेंकिसीप्रमाणसैं अज्ञानकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ किंतु साक्षीचेतनकरिकैहीं अज्ञानकीसिद्धिहोवै है ॥ सोसाक्षी सुषुप्तिअवस्थाविषेभीहै ॥ यातें द्रष्टाचेतन सुषुप्तिविषे अज्ञानकूंदेखे है और सुषुप्तितैंजाग्रत्हुआपुरुष मैंकछुनहींजाणताभया ऐसाअज्ञानकास्मरणकरेहै ॥ और जोजोस्मृतिज्ञानहोवै है ॥ सोसो पूर्वअनुभवकरिकैजन्यहोवैहै ॥ ऐसानियमहै ॥ यातें मैंकछुजानताभया ऐसाजो जाग्रत्विषेअज्ञानकास्मरणहै ॥ सोस्मरण सुषुप्तिविषे अज्ञानकेअनुभवकूंसिद्धकरैहै ॥ यारीतिसैं सुषुप्तिविषे सामान्यतैंअज्ञानकूंदेखताहुआभी स्पष्टकरिकै अज्ञानकूंनहींदेखता ॥ यातें सुषुप्तिविषे भोक्ताऔरभोग्यका अभेदकह्याहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जबी अज्ञानरूपआवरण सुषुप्तिविषेस्पष्टनहींहै ॥ तबी प्रतिबंधकेअभावहोणेतैं यहपुरुष आपणेस्वरूपकूं सुषुप्तिविषेजाणैगा ॥ यातैं सुषुप्तिमात्रकरिकैहीं सर्वजीवोंकामोक्षहोणाचाहिये ॥ समाधान ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे यहद्रष्टा अद्वितीयआनंदरूपआपणेस्वरूपकूं जाणतानहीं ॥ काहेतैं सुषुप्तिविषे विशेषज्ञानका

अभावहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सुषुप्तिविषे प्रतिबंधकका यद्यपिअभावहै ॥ तथापि शास्त्रऔरगुरुसैंआदिलैकेज्ञानकीसामग्री तहांहैनहीं ॥
यातैं सुषुप्तिविषे मोक्षकासाधनआत्मज्ञान होवैनहीं ॥ और सुषुप्तिविषे आपणेस्वरूपकाअज्ञान विद्यमानहै ॥ याकारणतैं आ
त्मसाक्षात्कारकेअभावहोणेतैं और साक्षीभाष्यमिथ्याअविद्याकीविद्यमानताहोणेतैंसुषुप्तिस्वप्नरूपहै ॥ ऐसा श्रुतिविषेकथन
कर्‍याहै ॥ काहेतें प्रबोधका जहांअर्थवहोवै ॥ और मिथ्यावस्तुकादर्शनहोवै ॥ सो स्वप्नकहिये ॥ यह पूर्वकह्यास्वप्नकाल
क्षण सुषुप्तिविषेभीघटैहै ॥ इसप्रकारतैं जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यहतीनहैंस्वप्नजाके ॥ और चक्षु हृदयकमल औरहृदयकमलके
अंतरआकाश यह तीनहैंगृहजाके ॥ अथवा पिताकाशरीर औरमाताकाशरीर पुनःपिताकाशरीर यहतीनहैंगृहजाके ॥ और
याशरीररूपद्वारवतीपुरीविषे स्थितिहैजाकी ॥ और देहादिकोंविषेहै अहंममअभिमानजाका ॥ और अहंममअभिमान
रूपजन्मकूंप्राप्तभया ॥ ऐसाजोपरमात्मादेवहै ॥ सोगुरुवोंकीकृपाकरिकै अज्ञानरूपनिद्रातैंजाग्रतहुआ ऐसाविचार करताभया ॥
वास्तवतैं उत्पत्तितैंरहित मैंपरमात्मा जिनपंचभूतोंतैं विशेषरूपकरिकैप्रगटभयाहूं ॥ तेयहआकाशादिकपंचभूत मैंपरमात्मा
केउपाधिरूपकरिकैउत्पन्नभयेहैं ॥ कैसेयहपंचभूतहैं ॥ शरीरादिकभेदकरिकै अनंतप्रकारकेहैं ॥ और संक्षेपतैं दोप्रकारकेहैं ॥
कोई जडरूपहैं ॥ और कोई अजडरूपहैं ॥ तहां भोग्यरूपकरिकैजडहैं ॥ और भोक्तारूपकरिकैअजडहैं ॥ अब भूतोंविषे भोग्यपणा
औरभोक्तापणा स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ तहां बाह्यआकाशादिकपंचभूत स्थावरजंगमोंकरिकै केवलभोग्यहैं ॥ और वृक्षादि
कस्थावरोंका तथामनुष्यादिकजंगमोंका परस्परभोक्ताभोग्यपणा नियमसैंनहीं है ॥ कवी स्थावर भोक्ताहोवैहै ॥ और जंगम
भोग्यहोवैहै ॥ और कवी स्थावर भोग्यहोवैहै ॥ और जंगमभोक्ताहोवैहै ॥ इहां जोउपकारकरै सोभोग्यकहियेहै ॥ और जापरउ
पकारकरिये सोभोक्ताकहियेहै ॥ जैसे मनुष्यादिक जलकासिंचनरूपउपकार वृक्षोंऊपरकरैहैं ॥ यातैं मनुष्यादिकजंगम भोग्य
हैं ॥ और वृक्षादिकस्थावर भोक्ताहैं ॥ और वृक्षादिकछायाकाष्ठफलादिकोंकीप्राप्तिरूपउपकार मनुष्यादिकोंउपरिकरैहैं ॥ यातैं
मनुष्यादिकजंगम भोक्ताहैं ॥ औरवृक्षादिकस्थावर भोग्यहैं ॥ यह सर्वजनोंकूंप्रसिद्धहै ॥ इसप्रकार भोक्तारूपऔरभोग्यरूप

सें दोप्रकारकाप्रपंचहै यहपूर्वकह्या ॥ अबविचारकरिकैदेखियेतौ मैंचेतनविषेहीं भोक्ताऔरभोग्यपणा घटताहुआ मेरेअद्वितीय
ताकूं बोधनकरेहै याअर्थकूं निरूपणकरेहैं ॥ जडवस्तुवोंकूं भोक्तापणा तीनकालविषेबनैनहीं ॥ काहेतें जोकर्ताहोवेहै ॥ सोईहीं भो
क्ताहोवे है ॥ जडवस्तुवोंकूं भोगरूपक्रियाका कर्तापणाहैनहीं ॥ यातें भोक्तापणाभी जडवस्तुवोंकूं बनैंनहीं ॥ इहांयहतात्पर्य है ॥
यहवस्तु मेरेसुखकासाधनहै ॥ यहवस्तु मेरेदुःखकासाधनहै ॥ याप्रकारकेज्ञानकानामभोगहै ॥ सो चेतनआत्माविषेहींघटेहै ॥ का
हेतें सर्वजडवस्तु चेतनआत्माकेसुखकेसाधनहैं ॥ जडवस्तु जडकेसुखकासाधनहोवैनहीं ॥ यातें भोगकाआश्रयरूपभोक्ता आत्मा
है ॥ और भोगरूपक्रियाकाकर्ताभी जडवस्तुहोवैनहीं ॥ काहेतें स्वतंत्रकानामकर्ताहोवेहै ॥ सास्वतंत्रता आत्मातेंभिन्नजडवस्तुमें
बनैनहीं ॥ यातें कर्ताभी आत्माहीं है ॥ याअर्थकूंपूर्वनिरूपणकरिआयेहैं ॥ अब जडवस्तु भोग्यभीनहीं याअर्थकूंनिरूपणकरेहैं ॥
यहवस्तु मेरेसुखकासाधनहै याअंतःकरणकीवृत्तिविषेआरूढजोफलचेतन ताकीआश्रयतारूपभोग्यताभी जडवस्तुविषे बनैनहीं ॥
तात्पर्ययह ॥ चेतनजडकेसंबंधकूंकरणेहाराजोअज्ञानहै सो विचारकालविषेनिवृत्तहोवे है ॥ यातें यहवस्तु मेरेसुखकासाधनहै या
अंतःकरणकीवृत्तिविषेआरूढजोफलचेतनरूपप्रकाश सोमैंआत्माहूं ॥ मेरेतेंभिन्न कोईप्रकाशरूपनहीं ॥ और अंतःकरणकीवृत्तिविषे
जोप्रकाशहै ॥ सोभी मैंपरमात्माकेसंबंधसेंहै ॥ स्वतंत्र अंतःकरणकीवृत्तिविषेप्रकाशनहीं है ॥ जैसे सूर्यकेप्रतिबिंबकूंग्रहणकरिकैहीं
दर्पण भित्तिआदिकोंकूंप्रकाशेहै ॥ सोदर्पण आपप्रकाशरूपनहीं है ॥ तैसे बुद्धिभी परमात्माकेप्रकाशकूंपाइके प्रकाशेहै ॥ यहपूर्वक
हिआयेहैं ॥ यातें समष्टिव्यष्टिदेहोंका मैंपरमात्मा प्रकाशकहूं ॥ और संपूर्णदृश्य मेरेअधीनहै ॥ जैसे महाराजाकीसभाविषे राजा
कीआज्ञातेंविना कोईपुरुष स्वतंत्र वचनउच्चारणकरैनहीं ॥ तैसे मैंपरमात्माकरिकैरहित कोईदृश्यवस्तु स्वतंत्र वचनकूंनहींकहै
है ॥ अब आत्मातेंभिन्नसर्वअनिर्वचनीयहै याअर्थकूं निरूपणकरेहैं ॥ तीनपरिच्छेदोंतेंरहितमैंकूटस्थविषे भोक्ताभोग्यस्वरूपप्रपंच
कल्पितहै ॥ काहेतें मैंपरमात्माकेअज्ञानकरिकै संपूर्णजगत्उत्पन्नभयाहै ॥ जैसे रज्जुकेअज्ञानतेंप्रतीतभयाजोसर्प सो कल्पितहै ॥
तात्पर्ययह ॥ मेरेतेंभिन्नकरिकै किसीवस्तुकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यद्यपि श्रुतिवचनतेंहीं प्रपंचविषेमिथ्यापणासिद्धहै ॥ तथापि असंभा

वनाकीनिवृत्तिवासतैं प्रपंचकाक्यास्वरूपहै ऐसा युक्तिसैंभीविचारकऱ्याचाहिये ॥ तात्पर्ययह ॥ श्रुतिऔरगुरुनैं बलात्कार सैं मेरेकूं प्रपंचमैंमिथ्यापणा अंगीकारकरायाहै ॥ ऐसाजो वादीकेचित्तविषेपश्चात्ताप ताकीनिवृत्तिवासतैं युक्तिसैं अवश्यप्र पंचमैंमिथ्यापणासिद्धकरणा ॥ तहां प्रपंचका क्यास्वरूपहै? ॥ नाम रूप क्रिया यातीनोंकेसमुदायकानाम प्रपंचहै ॥ अथवा एकए कनामादिकोंकानाम प्रपंचहै ॥ तहां प्रथमपक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतैं सोसमुदाय नामरूपक्रियातैंभिन्नहै ॥ अथवाअभिन्नहै ॥ तहां भि न्नपक्षतौबनैंनहीं ॥ काहेतैं नामरूपक्रियातैंभिन्नसमुदायकास्वरूप दीखैंनहीं ॥ और दूसराअभिन्नपक्षभीबनैंनहीं ॥ काहेतैं एकए कनामादिकोंविषे समुदायव्यवहार और प्रपंचव्यवहार होणाचाहिये ॥ औरहोवैंनहीं ॥ याअर्थकूं देहकेखंडनप्रसंगमैं विस्तारतैं निरूपणकरिआयेहैं ॥ इहां नाम यापदकरिकै शब्दकाग्रहणकरणा ॥ और रूप यापदकरिकै इंद्रियजन्यज्ञानकेविषयभूतअर्थका ग्रहणकरणा ॥ और क्रिया यापदकरिकै कर्मकाग्रहणकरणा ॥ अब नामरूपक्रियाकेसमुदायकानामप्रपंचहै याप्रथमपक्षविषे दूस रेदूषणकहणेवासतै विकल्पकूंकरेहैं ॥ सोनामरूपक्रियाभी नामरूपक्रियास्वरूपहै ॥ अथवा नहीं है? ॥ तहां अंत्यपक्षतौबनैंनहीं ॥ काहेतैं नामरूपक्रियाकूं जोनामरूपक्रियास्वरूपनहींमानोंगे ॥ तौ नामरूपक्रियाकूं अप्रपंचरूपता प्राप्तहोवैंगी ॥ तात्पर्ययह ॥ प्रपंचस्वरूप नामरूपक्रियाकूं प्रपंचसैंबाह्यमानणेमैं एकतौं व्याघातदोष प्राप्तहोवैहै ॥ और दूसरा श्रुतिसैंविरोधहोवैहै ॥ और ना मरूपक्रिया नामरूपक्रियास्वरूपहै ॥ यहप्रथमपक्षभीबनैंनहीं ॥ काहेतैं नामरूपक्रियाकूं एकएककूं नामरूपक्रियास्वरूपताहै ॥ अथवा एकएककूं एकएकरूपताहै ॥ यादोनोंविकल्पोंकातात्पर्ययहहै ॥ एकनाम नामरूपक्रियास्वरूपहै ॥ और एकरूप नामरूप क्रियास्वरूपहै ॥ और एकक्रिया नामरूपक्रियास्वरूपहै ॥ अथवा नाम नामस्वरूपहै ॥ और रूप रूपस्वरूपहै ॥ और क्रिया क्रि यास्वरूपहै ॥ तहां प्रथमपक्षतौबनैंनही ॥ काहेतैं एकएकनामादिकोंकूं नामरूपक्रिया यहतीनरूपताविषे अनुभवकाअभावरूप प्र थमदूषणहै ॥ तात्पर्ययह ॥ एकनाम नामरूपक्रियारूपतैंप्रतीतहोवैंनहीं ॥ तैसे रूपऔरक्रियाभी नामरूपक्रियास्वरूपतैंप्रतीतहोवै नहीं ॥ और एकएकनामादिक नामरूपक्रियास्वरूपहै ॥ याप्रथमपक्षविषे अनवस्थादूषणहैकारणजिनोंका ऐसेजे प्रागलोप विन

गमनाविरह प्रमाणापगम यहतीनदूषणहैं इनसर्वदूषणोंकासमुदायरूप दूसरादूषणभी प्राप्तहोवे है॥ अब तिनदूषणोंकानिरूपण करेंहै॥ भेदकूंसंहारणेहाराजोअभेद॥सोतादात्म्यसंबंधकहियेहैं॥ सोतादात्म्य दोप्रकारकाहोवैहै॥ एकतो द्रव्यऔरगुणका क्रिया औरक्रियावान्का जाति औरव्यक्तिका अवयवऔरअवयवीका विशेषऔरनित्यद्रव्योंका समवायसंबंध नैयायिकमानेहैं॥ तासम वायसंबंधकेस्थानमें वेदांतशास्त्रविषे तादात्म्यसंबंधमानेहैं॥ यास्थानविषे द्रव्यगुणादिकोंका अभेदतो वास्तवहोवे है॥ और भे द कल्पितहोवे है॥ यहवार्तापूर्व कहिआएहैं॥ और पूर्वकहेजेद्रव्यऔरगुणादिक॥ तिनोंतैंभिन्नस्थानविषे दूसरातादात्म्यहोवे है॥ जैसे दूरदेशविषेस्थितभिन्नभिन्नवृक्षोंका पुरुषकूं तादात्म्यप्रतीतहोवैहै॥ यास्थानविषे वृक्षोंकापरस्परभेदतो वास्तवहै॥ और अ भेद कल्पितहै॥ यादोप्रकारकेतादात्म्यकहणेतैं यहअर्थसिद्धभया॥ नामरूपक्रियाएकएककूं प्रथमतादात्म्यसंबंधकरिकैतौ नाम रूपक्रियास्वरूपताहैनहीं॥ किंतु दूसरेतादात्म्यसंबंधकरिकै नामरूपक्रियास्वरूपताहै॥ यातैं जैसे वाक्इंद्रियविषेस्थितनामका बा ह्यघटादिकोंकेसाथतादात्म्यविषे नामऔरघटादिकोंका परस्परभेद वास्तवहै॥ और अभेद कल्पितहै॥ तैसे नामविषे नामका तादात्म्यअंगीकारकियेहुयेभी प्रथमनामसैंदूसरेनामका वास्तवभेद अंगीकारकरणाहोवैगा॥ और तादूसरेनामविषे तीसरेनाम कातादात्म्य॥ तीसरेनामविषे चतुर्थनामकातादात्म्य मानणाहोवैगा॥ याप्रकार अनंतनामोंकीधारामानणेमैं अनवस्थादोषकी प्राप्तिहोवैगी॥ इसप्रकार रूपक्रियाविषेभी अनवस्थादिकदोषजानणे॥ जो अनवस्थादोषकूं वादीअंगीकारकरै॥ तौ उत्तरउत्तर नामोंकरिकैहीं अर्थकाज्ञानरूपव्यवहारकीसिद्धिहोवैगी॥ पूर्वपूर्वनामोंकीव्यर्थतारूप प्राग्लोपदोष प्राप्तहोवैगा॥ और अनंत नामोंकरिकैविशिष्टघटविषे किसनामनैं घट याव्यवहारकूंउत्पन्नकऱ्याहै॥ यह विनिगमनाविरहरूप दूसरादूषण होवैगा॥ अनंत अर्थोंविषे एकअर्थकासाधकयुक्तिकानाम विनिगमनाहै॥ विरहनाम अभावकाहै॥ और एकवस्तुविषे अनंतनामोंकूंविषयकरणेहा रा कोईप्रमाणहैनहीं॥ यातैं प्रमाणापगमरूप तीसरादूषण प्राप्तहोवैगा॥ अपगमनाम अभावकाहै॥ यातैं एकएकनामादिक नामरूपक्रियास्वरूपहैं॥ ऐसीवादीकीकल्पना प्रत्यक्षादिकप्रमाणतैं औरश्रुतिप्रमाणतैंरहितहै॥ काहेतैं प्रत्यक्षादिकप्रमाणों

करिकै एकएकनामादिकोंविषे नामरूपक्रियास्वरूपता दीखैनहीं ॥ और श्रुतितोसंपूर्णजगतकूं नामरूपक्रियास्वरूपकहैहै ॥ एक एकवस्तुकूं नामरूपक्रियास्वरूप श्रुतिकहैनहीं ॥ यातें एकएकनामादिक नामरूपक्रियास्वरूपनहीं यहसिद्धभया ॥ और नाम नामस्वरूपहै ॥ और रूप रूपस्वरूपहै ॥ और क्रिया क्रियास्वरूपहै ॥ यादूसरेपक्षविषेभी पूर्वकहेअनवस्थादिकदूषणोंकीप्राप्ति होवैहै ॥ यातें असंगतहै ॥ किंवा ॥ नाम नामस्वरूपहै ॥ यहनियमबनैंनहीं ॥ काहेतें श्रोत्रइंद्रियजन्यज्ञानका विषयहोणेतें नामकूंरूपस्वरूपताभीबनैंनहीं ॥ इंद्रियजन्यज्ञानकेविषयअर्थकूं रूपकहैहैं ॥ यापूर्वकहिआयेहैं ॥ और नाम कबी तोनामस्वरूपहै ॥ और कबी रूपस्वरूपहै ॥ यहअनियमभी बनैंनहीं ॥ काहेतें नामकीनामस्वरूपतेंहीं प्रतीतिहोवैहै ॥ रूपस्वरूपतें नामकी कबी भीप्रतीतिहोवैनहीं ॥ याकहणेतें नामरूपक्रियाकासमुदायप्रपंचनहीं ॥ यापूर्वकहेपक्षकाभी समाधानजानणा ॥ अब दूसरे प्रकारतेंभी प्रपंचकीअनिर्वचनीयता निरूपणकरेहैं ॥ सारीतियहहै ॥ नामरूपक्रियाकेसमुदायकूंप्रपंचकहैहैं ॥ तहां नामरूप क्रियाकेस्वरूपकी जबीसिद्धिहोवै ॥ तबी ताकासमुदायरूपप्रपंच सिद्धहोवै ॥ सोनामरूपक्रियाकेस्वरूपका निर्वचनहोवैनहीं ॥ यातें तिनोंकेसमुदायरूपप्रपंचकाभी निर्वचनहोवैनहीं ॥ याअर्थकीसिद्धिवासतें प्रथमविकल्पकूंकरेहैं ॥ नामरूपक्रियाकेसमुदायकूं प्रपंचकहैहैं ॥ यास्थानविषे नामका क्यास्वरूपहै? ॥ और रूपका क्यास्वरूपहै?॥ और क्रियाका क्यास्वरूपहै? ॥ तहां शब्दकूं नामकहैहैं ॥ ऐसाजोवादीकहै ॥ तावादीसैंयहपूछाचाहिये ॥ शब्दका क्यास्वरूपहै? ॥ ताशब्दकेस्वरूपका तुम निरूपणकरो ॥ तात्पर्य यह ॥ लक्षणऔरप्रमाणकरिकै वस्तुकीसिद्धिहोवैहै ॥ शब्दकूं नामकहैहैं ॥ याप्रकारके केवलकथनसैं वस्तुकी सिद्धिहोवैनहीं ॥ यातें शब्दकीसिद्धिवासतें ताशब्दकेलक्षणकूं तुमकथन करो ॥ तहां वादी शब्दकेलक्षणकूंकहैहै ॥ शंका ॥ शब्दकूंविषयकरणेहारे शब्दऔरज्ञानका जोकारणहोवै ॥ सो शब्दकहियेहैं ॥ जैसे घटकूंविषयकरणेहारा यहघटहै ॥ ऐसाजो शब्दऔरज्ञान ॥ तादोनोंका घटकारणहै ॥ तैसे शब्दकूंविषयकरणेहारा यहशब्दहै ऐसाजो शब्दऔरज्ञान ॥ तादोनोंका शब्दकारणहै ॥ याशब्दकेलक्षणकूं अतिव्याप्तिदोषकरिकै सिद्धांती खंडनकरैहै ॥ समाधान ॥ जोलक्षण आपणेलक्ष्यविषेभीरहै ॥ औरलक्ष्यतेंभिन्नअलक्ष्यवस्तुविषे

भीरहै ॥ सोलक्षण अतिव्याप्तिदोषवालाहोवैहै ॥ जैसे शृंगवालीगौहै ॥ यास्थानविषे शृंग लक्षणहै ॥ और गौ लक्ष्यहै सोशृंगरूप
लक्षण आपणालक्ष्यजोगौ ताविषेभी रहैहै ॥ और लक्ष्यतैंभिन्नजोमाहिषादिकअलक्ष्य तिनोंविषेभी रहैहै ॥ यातैं सो शृंगरूपलक्ष
ण अतिव्याप्तिदोषवालाहै ॥ तादुष्टलक्षणतैं वस्तुकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ तैसे यहशब्दकालक्षणभी अतिव्याप्तिदोषवालाहै काहेतैं जैसे
यहशब्दहै याप्रकारके शब्दऔरज्ञानका शब्द कारणहै ॥ तैसे बंध्यापुत्रहै याप्रकारके शब्दऔरज्ञानका बंध्यापुत्रभी कारणहै ॥
यातैं यादुष्टलक्षणतैं शब्दकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ अब दूसरेलक्षणतैं वादी शब्दकीसिद्धिकरैहै ॥ शंका ॥ सत्यअर्थकूंविषयकरणेहारे
ज्ञानका जोकारणहोवै सो शब्दकहिये ॥ बंध्यापुत्रहै याज्ञानका यद्यपि बंध्यापुत्रकारणहै ॥ तथापिबंध्यापुत्रहै यहज्ञान सत्यअ
र्थकूंविषयकरैनहीं ॥ किंतु असत्यबंध्यापुत्रकूंविषयकरैहै ॥ यातैं बंध्यापुत्रविषे यालक्षणकी अतिव्याप्तिनहीं ॥ और सत्यअर्थकूं
विषयकरणेहाराजो घटहै ऐसाज्ञान ॥ ताकाकारण घट ऐसाशब्दहै ॥ यातैं यादोषरहितलक्षणतैं शब्दकीसिद्धिबनैहै ॥ याप्र
कारकेवादीकेलक्षणकूं अव्याप्तिदोषकरिकै सिद्धांती खंडन करैहै ॥ समाधान ॥ जोलक्षण आपणे लक्ष्यकेएकदेशविषेरहै और ए
कदेशविषेनरहै ॥ सो अव्याप्तिदोषवालाहोवै है ॥ जैसे शुक्लरूपवालीगौहै ॥ यास्थानविषे शुक्लरूप गौकालक्षणहै ॥ सो नीलरूप
वालीगौविषे रहैनहीं ॥ यातैं अव्याप्तिदोषवालाहै ॥ तैसे सत्यअर्थकूंविषयकरणेहारेज्ञानकीकारणतारूपलक्षणभी भेरीआदिकों
केध्वनिरूपशब्दविषे हैनहीं ॥ काहेतैं भेरीशब्दतैं किसीपुरुषकूं अर्थकाबोधहोवैनहीं ॥ यातैं अव्याप्तिदोषवाले यालक्षणतैं श
ब्दकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ अबी ध्वनिरूपशब्दविषे अव्याप्तिदोषकेनिवारणवासतैं अन्यलक्षणतैं वादी शब्दकीसिद्धिकरै है ॥ शंका ॥
वर्णोंकेसाथतादात्म्यसंबंधकरिकै जोअर्थज्ञानकीकारणताहै ॥ सो शब्दकालक्षणहै ॥ यालक्षणकी ध्वनिरूपशब्दविषे अव्याप्तिन
हीं ॥ काहेतैं ध्वनिकूं वर्णोंकाअभिव्यंजक मीमांसक मानैहैं ॥ यातैं ध्वनिका वर्णोंकेसाथतादात्म्यसंबंधहै ॥ जोवस्तु जाकीप्रतीति
करावै ॥ सोवस्तु ताकाअभिव्यंजकहोवै ॥ इहांयहतात्पर्यहै ॥ जैसे नैयायिकोंकेमतमैं घटत्वादिकजातिसर्वत्ररहैहै ॥ तौभी ताजाति
की सर्वत्र प्रतीतिहोवैनहीं ॥ किंतु घटादिकव्यक्तिविषेहीं घटत्वादिकजातिकी प्रतीतिहोवैहै ॥ यातैं घटादिकव्यक्ति घटत्वादि

कजातिका अभिव्यंजकहै ॥ ताघटादिकव्यक्तिकाघटत्वादिकजातिकेसाथ तादात्म्यसंबंधहै ॥ तैसे मीमांसक वर्णोंकूंनित्यमानैहैं ॥
तानित्यवर्णोंकी सर्वदा प्रतीतिहोणीचाहिये ॥ याशंकाकीनिवृत्तिवासतैं ध्वनिकूं अभिव्यंजक मीमांसक मानैहैं॥ ताध्वनिकावर्णोंकेसा
थतादात्म्यसंबंधहै ॥ और वर्णोंकाभी वर्णोंविषे तादात्म्यसंबंधहै ॥ यातैं जैसे वर्णोंकेसाथतादात्म्संबंधकरिकै वर्णोंकूं अर्थज्ञानकीका
रणताहै तैसे वर्णोंकेसाथतादात्म्यसंबंधकरिकै ध्वनिरूपशब्दकूंभी अर्थज्ञानकीकारणताहै ॥ यातैं यादोषरहितलक्षणतैं शब्दकीसि
द्धिबनैहै ॥ अब यावादीकेलक्षणकूंखंडनकरणेवासतै सिद्धांती वादीसैंपूछैहै ॥ **समाधान** ॥ वर्णोंकेसाथतादात्म्यसंबंधकरिकै संपूर्णम
नुष्योंके ज्ञानकीकारणता शब्दका लक्षणहै ॥ अथवा जिसमनुष्यकेइंद्रियसैंशब्दकासंबंधहोवै ॥ तामनुष्यकेज्ञानकीकारणता शब्द
कालक्षणहै॥ तहांप्रथमपक्ष बनैनहीं ॥ काहेतैं वर्णतादात्म्यवालाशब्दभी नियमकरिकै सर्वमनुष्योंकेज्ञानका कारणहोवैनहीं ॥ जाका
रणतैं बधिरमनुष्यविषे औरसुषुप्तिवालेविषे और मूर्छावालेविषे औरप्रमत्तमनुष्यविषे औररोगीविषे अर्थज्ञानकूं शब्द उत्पन्नकरैन
हीं ॥ यातैं यहलक्षण असंभवदोषवालाहै ॥ जोलक्षण आपणेलक्ष्यविषेरहैनहीं ॥ सो असंभवदोषवालाहोवैहै ॥ जैसे एकशफवालीगौ
है ॥ यास्थानविषे एकशफरूपलक्षणकिसीगौविषे रहैनहीं ॥ किंतु अश्वादिकोंविषेरहैहै ॥ तैसे सर्वमनुष्योंकेज्ञानकीकारणता किसी
शब्दविषेहैनहीं ॥ और वर्णोंकेसाथतादात्म्यवालाहोवै और जिसमनुष्यकेइंद्रियकेसंबंधवालाहोवै ॥ तामनुष्यकेज्ञानकीकारणता
शब्दकालक्षणहै ॥ यादूसरेपक्षकेअंगीकारकियेहुए ॥ यद्यपि पूर्वकह्याअसंभवदोष नहींहै ॥ तथापि पर्वतविषेवन्हिज्ञानकेकारण
धूमादिकोंविषे अतिव्याप्तिरूपदूषणतैं यालक्षणकीभी रक्षाहोवैनहीं ॥ इहांयहतात्पर्य है ॥ शब्दऔरअर्थका परस्पर तादात्म्यसंबं
धहोवैहै॥ धूम यावर्णोंसैं धूमरूपअर्थका तादात्म्यसंबंधहै ॥ औरचक्षुइंद्रियकेसंबंधतैं पुरुषोंकेवह्निज्ञानकीकारणतावालाभी धूम
है ॥ काहेतैं धूमकूंनेत्रोंसैंदेखिकरिकै पर्वतादिकोंविषे वन्हिकाज्ञान पुरुषोंकूंहोवैहै ॥ यातैं याशब्दकेलक्षणकी धूमविषेअतिव्याप्ति
होणेतैं यालक्षणतैंभी शब्दकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ अब धूमविषेअतिव्याप्तिदोषकीनिवृत्तिवासतै वादी अन्यरीतिसैं तालक्षणकरिकै श
ब्दकीसिद्धिकरैहै ॥ **शंका** ॥ वर्णोंकेसाथतादात्म्यसंबंधवालाहोवै और जामनुष्यके श्रोत्रइंद्रियकेसंबंधवालाहोवै तामनुष्यके अर्थ

ज्ञानकीकारणता शब्दका लक्षणहै ॥ यालक्षणकी धूमविषे अतिव्याप्तिनहीं ॥ काहेतें धूमका यद्यपि पूर्वकहीरीतिसें वर्णोंकेसाथता दात्म्यभीहै ॥ औरनेत्रइंद्रियकेसंबंधवालाहुआधूम मनुष्योंके वन्हिज्ञानकाकारणभीहै ॥ तथापि श्रोत्रइंद्रियकेसंबंधवालाहुवाधूम ज्ञानकाकारणनहीं ॥ और शब्दतो श्रोत्रइंद्रियकेसंबंधवालाहुआ ज्ञानकाकारणहोवैहै ॥ इहां श्रोत्रकासंबंध श्रोत्रइंद्रियजन्यज्ञानकीविषयतारूप जानणा॥ अब याशब्दकेलक्षणकूंभी शब्दतत्वजातिविषे अतिव्याप्तिदोषकरिके सिद्धांती खंडनकरैहै ॥समाधान॥ पूर्वधूमविषेअतिव्याप्तिदोषकेनिवारणवासतें लक्षणविषे श्रोत्रइंद्रियकासंबंधकह्या ॥ सोसंबंधभी शब्दकेसिद्धिकाकारणनहीं ॥ काहेतें शब्दविषेस्थित शब्दत्वजातिका वर्णोंकेसाथ तादात्म्यसंबंधहै ॥ और श्रोत्रइंद्रियकेसंबंधतें ज्ञानकीकारणताभी ताशब्दत्वविषेहै ॥ यातें शब्दत्वजातिविषे लक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैहै ॥ यद्यपि गुणहोवै ॥ और वर्णोंकेसाथतादात्म्यसंबंधवालाहोवै ॥ और श्रोत्रइंद्रियकेसंबंधतेंज्ञानकाकारणहोवै ॥ सो शब्दकहियेहैं ॥ याप्रकार गुणपदकेनिवेशतें शब्दत्वजातिविषे अतिव्याप्तिहोवैनहीं॥ काहेतेंशब्दत्वजातिविषे गुणत्वधर्महैनहीं ॥ तथापि गुणका आगेआकाशनिरूपणविषे खंडनकरैंगे ॥ यातें यालक्षणतेंभी शब्दकी सिद्धिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ लक्ष्यतेंभिन्नवस्तुविषे जोलक्षणरहै ॥ सो अतिव्याप्तिदोषवालाहोवैहै ॥ और पूर्वकह्यालक्षण यद्यपि शब्दत्वजातिविषे रहैहै ॥ तथापि साशब्दत्वजाति लक्ष्यशब्दतेंभिन्ननहीं ॥ काहेतें जातिऔरव्यक्तिका तादात्म्यहोवैहै ॥ यातें शब्दत्वजातिभी शब्दकेलक्षणका लक्ष्यहै ॥ समाधान ॥ शब्दत्वजातिकूं जोशब्दस्वरूपमानोगे॥ तौ शब्दकास्वरूप रूपभावकूंप्राप्त होवैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ इंद्रियजन्यज्ञानकाविषयजोअर्थ सो रूपकहियेहैं ॥ यहरूपकालक्षण शब्दत्वादिकजातिविषेभी वर्तहै ॥ यातें संपूर्णजगतकूं नामरूपक्रियास्वरूप कथनकरणेहारीश्रुतिविषे जातिआदिक रूपकेअंतर कहेहैं ॥ अबी शब्दत्वजातिकूं जोशब्दरूपमानोगे॥तौ नामऔररूपका भेदसिद्धहोवैगानहीं॥शंका॥शब्दत्वजाति संपूर्णशब्दोंविषेरहैहै॥और शब्द सर्वत्ररहैनहीं ॥ यातें शब्दत्वजातिका औ शब्दका भेदप्रसिद्धहै ॥ समाधान ॥ जैसे संपूर्णककारोंविषे कत्वजातिरहैहै॥और संपूर्णशब्दोंविषे शब्दत्वजातिरहैहै ॥ तैसे संपूर्णघटादिकअर्थोंविषे शब्दकासंबंधभी प्रतीतहोवैहै ॥ यातें सर्वत्रअनुगतपणा शब्दत्वजातिविषे औरशब्दविषे

समानहै ॥ तात्पर्ययह॥ किसीप्रकारकरिकै रूपतैंनामकाभेद सिद्धहोवैनहीं॥ इसप्रकार नामकेअनिर्वचनीयताकूंसिद्धकरिकै अब रूप
औरक्रियाविषेभी अनिर्वचनीयता सिद्धकरेहैं॥ जैसे नाम किसीप्रकारतें सिद्धहोवैनहीं॥ तैसे रूपऔरक्रियाभी किसीप्रकारतें सिद्ध
होवैनहीं ॥ काहेतें अल्पमुख औरबड़ाउदर यह घटकास्वरूपहै ॥ सो घटतैंभिन्नहोइके जैसे प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे क्रियाभी रूपतैंभि
न्नहोइके प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातें जैसे रूप रूपतैंभिन्ननहींहै॥ तैसे क्रियाभी रूपतैंभिन्ननहींहै ॥ अब नामतैंभिन्न रूपकीअनिर्वच
नीयताकूं दिखावैहै॥ जाकारणतें संपूर्णरूप नामकेअनुकूल ज्ञानकूंउत्पन्नकरेहैं ॥ यातें रूप वास्तवनहींहै॥ किंतु विकल्पमात्रहै
॥ और श्रुतिविषेभी सर्वविकार नाममात्रकहेहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मनुष्यविषे तीक्ष्णहैअग्रभागजाकाऐसाशृंग असत्यहै ॥ तैसे रू
पभी असत्यहै ॥ शंका ॥ असत्य बंध्यापुत्र औनरशृंगविषे बंध्यापुत्रहै औरनरशृंगहै ऐसाज्ञान होवैनहीं ॥ और घटादिकपदार्थों
विषेतौ घटहै पटहै ऐसाज्ञान होवैहै ॥ यातें बंध्यापुत्रकी और घटपटादिकरूपोंकी तुल्यता होवैनहीं ॥ समाधान ॥ नरशृंगविषे
औरबंध्यापुत्रविषे नरशृंगहै और बंध्यापुत्रहै ऐसा उत्पन्नभयाजोज्ञान ॥ सो किसीकरिकै निवारणहोवैनहीं ॥ काहेतें सांख्यशास्त्र
वाले विकल्पज्ञानकाविषय बंध्यापुत्रादिकअसत्यपदार्थ मानेहैं ॥ और नैयायिक आहार्यज्ञानकाविषय मानें हैं ॥ जास्थानविषे जि
सवस्तुका अत्यंताभावहोवै ॥ तास्थानविषे तिसवस्तुकाज्ञान पुरुषकीइच्छातें जोउत्पन्नहोवै॥ सोज्ञान आहार्यकहियेहैं ॥ जैसे ज
लविषे अग्निकाअत्यंताभावहै ॥ और जलविषेअग्निकाज्ञानमेरेकूंहोवै ऐसीइच्छा जबीपुरुषकूंहोवै ॥ तबी ताइच्छातें जलअग्निवाला
है ऐसाज्ञान तापुरुषकूं उत्पन्नहोवैहै ॥ याज्ञानकूं नैयायिक आहार्यज्ञानकहेहैं ॥ याकहणेतें यहसिद्धभया ॥ जैसे घटहै पटहै या
ज्ञानकेविषय घटपटादिकहैं ॥ तैसे बंध्यापुत्रहै और नरशृंगहै याआहार्यज्ञानकेविषय बंध्यापुत्रऔरनरशृंगादिकभीहैं ॥ यातें दोनों
समानहैं॥ शंका ॥ घटहै और बंध्यापुत्रहै याज्ञानोंकी समानतानहीं॥ काहेतें घटादिकोंकाज्ञानतौ इंद्रियतेंजन्यहै ॥ और बंध्यापुत्र
काज्ञान इंद्रियकरिकैजन्यनहीं॥ समाधान॥ संपूर्णइंद्रियोंकरिकै घटादिकोंकेज्ञानजन्यहैं ॥ यातें बंध्यापुत्रकेज्ञानतें विलक्षणहै ॥
अथवा एकएकइंद्रियकरिकैजन्यहैं ॥ यातें बंध्यापुत्रकेज्ञानतें विलक्षणहैं ॥ तहां प्रथमपक्षतौ बनैंनहीं ॥ काहेतें गंधज्ञानका एकघ्रा

णइंद्रिय कारणहै ॥ चक्षुआदिकइंद्रिय कारणहैंनहीं ॥ तैसे रूपज्ञानका चक्षुइंद्रिय कारणहै ॥ अन्यइंद्रिय कारणहैंनहीं ॥ तात्पर्यय ह ॥ जैसे धनकीवृद्धिकीइच्छाकरिकै व्यापारविषेप्रवृत्तभयेपुरुषके मूलधनकीभी हानिहोइजावै॥तैसे बंध्यापुत्रतैं घटादिकोंविषेविल क्षणताकीसिद्धिवासतै सर्वइंद्रियजन्यज्ञानकीविषयतामानणेमैं गंधादिकोंकूं बंध्यापुत्रकीतुल्यताही प्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैं गंधादि कोंमैं सर्वइंद्रियजन्यज्ञानकीविषयताहैंनहीं ॥ और एकएकइंद्रियजन्यज्ञानकीविषयता गंधादिकोंविषे है॥ असत्यनरशृंगवंध्यापुत्र विषे हैनहीं ॥ यातैं विलक्षणहै ॥ यहदूसरापक्षभीबनैनहीं ॥ काहेतैं गंधादिकोंविषे एकएकइंद्रियजन्यज्ञानकीविषयतारूप विशेष ताकूं जोअंगीकारकरोगे ॥ तौ तुमारेमतविषे नरशृंगादिकोंकाज्ञान मनरूपइंद्रियकरिकेहोवै ॥ याकेविषे कोईप्रतिबंधकहैनहीं ॥ ता त्पर्ययह ॥ याविशेषतातैंभी वंध्यापुत्रतैं गंधादिकोंकीविलक्षणता सिद्धहोवैनहीं ॥ शंका ॥ मनकरिकै बंध्यापुत्रकाज्ञान होवैनहीं ॥ काहेतैं नेत्रादिकइंद्रियोंसेंविना मन किसीज्ञानकूं उत्पन्नकरैनहीं ॥ और नेत्रादिकइंद्रियोंका बंध्यापुत्रकेसाथ संबंधहैनहीं ॥ यातैं मनकूं इंद्रियोंकीअपेक्षाही बंध्यापुत्रकेज्ञानविषे प्रतिबंधकहै ॥ समाधान ॥ संपूर्णज्ञानोंकीउत्पत्तिविषे इंद्रियोंकीअपेक्षा मन करै है यहनियमनहीं ॥ काहेतैं नेत्रादिकोंकेअविषय जेसुखदुःखादिक ॥ तिनोंका जैसे मनकरिकै ज्ञानहोवै है॥ तैसे मनकरिकै बंध्या पुत्र औरनरशृंगके ज्ञानविषेभी कोईबाधकहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ नेत्रादिकइंद्रियोंसेंविना सुखदुःखादिकोंकेअनंतज्ञानोंकूं मन उत्पन्नकरैहै॥ तामनकूं इंद्रियोंसेंविना बंध्यापुत्रकेज्ञानकूं उत्पन्नकरणेमैं कोईभारहोवैनहीं ॥शंका॥ मनकरिकै असत्यवस्तुकाज्ञान लो कविषेप्रसिद्धहैनहीं ॥समाधान॥ जैसे वैरीविषेरह्यादुःख सुखरूपकरिकै वंध्यापुत्रकीन्यांईअसत्यहै ॥ तौभी तावैरीकेदुःखकूं सुखरू पकरिकै पुरुष जाणैहै ॥ यहलोकविषेप्रसिद्धहै ॥ तैसे असत्यबंध्यापुत्रनरशृंगकाज्ञान ॥ मनकरिकै बनैहै ॥ अबलोकप्रसिद्धितैंभी रूप नामतैंभिन्ननहीं याअर्थकूं निरूपणकरैहैं ॥ घटादिकपदार्थोंविषे पुरुषोंकी प्रवृत्तिहोवैहै ॥ साप्रवृत्ति इच्छाकरिकैजन्यहोवैहै ॥ काहेतैं इच्छासेंविना किसीवस्तुविषेप्रवृत्तिहोवैनहीं॥ और साइच्छा ज्ञानकरिकैजन्यहोवैहै॥ काहेतैं अन्यदेशविषेस्थितपदार्थोंकेज्ञान काअभावहोणेतैं तिनपदार्थोंकीइच्छा होवैनहीं ॥ यारीतिसै प्रवृत्तितैंपूर्वकालविषे इच्छाद्वाराप्रवृत्तिकाकारणज्ञान शब्दतैंविना वि

चारवान्पुरुषोंकूंहोवैनहीं ॥ किंतु शब्दकूंविषयकरताहुआज्ञान अर्थकूंविषयकरै है ॥ यातैं एकज्ञानकेविषय नामऔररूपका अभेदहीसिद्धहोवैहै ॥ याप्रकार युक्तिसैंनिरूपणकियेहुए नामरूपक्रिया सिद्धहोवैनहीं ॥ अब पंचभूतोंविषे युक्तिसेंअनिर्वचनीयता दिखावेहैं ॥ तेपंचभूत नामरूपक्रियातैंभिन्नहोइके किसीस्थानविषे रहैंनहीं ॥ यातैं अनिर्वचनीयहैं ॥ तिनपंचभूतोंविषेभी प्रथम आकाशका क्यास्वरूप तुम मानोहो? ॥ शंका ॥ अवकाशस्वरूप आकाशहै ॥ यह सर्वलोकोंकूंप्रसिद्धहै ॥ समाधान ॥ अवकाशस्वरूप आकाशहै ॥ यातुमारेकहणेतैं आवरणकेअभावकाजोअधिकरणहोवै सो आकाशहोवै है ॥ यहआकाशकालक्षण सिद्धभया सोयहलक्षण बंध्यापुत्रविषेभीरहैहै ॥ जैसे आकाशविषे आवरणकाअभावहै॥ तैसे बंध्यापुत्रविषेभी आवरणकाअभावहै॥ असत्यवस्तुविषेभी अभावकीअधिकरणता शास्त्रविषेकहीहै ॥ यातैं जैसे आकाशकूं अवकाशस्वरूप तैनें मान्याहै ॥ तैसे बंध्यापुत्र अवकाशस्वरूप काहैतैंनहीं ॥ किंतु बंध्यापुत्रकूंभी अवकाशस्वरूपताबनैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ आकाशकेलक्षणकी बंध्यापुत्रविषे अतिव्याप्तिहोवैहै ॥ यातैं यादुष्टलक्षणतैं आकाशकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ जो शब्दगुणवालाहोवै ॥ और अवकाशस्वरूपहोवै॥ सो आकाशकहिये हैं ॥ बंध्यापुत्रविषे यद्यपि पूर्वकहीरीतिसैं अवकाशस्वरूपताहै ॥ तथापि शब्दगुण ताविषेहैनहीं ॥ और आकाशविषे शब्दगुणहै ॥ यातैं बंध्यापुत्रतैं आकाशकाभेदहै ॥ तात्पर्ययह ॥ याआकाशकेलक्षणकी बंध्यापुत्रविषे अतिव्याप्तिनहीं ॥ समाधान ॥ शब्दगुणकरिकैभी बंध्यापुत्रतैं आकाशकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं सोशब्दगुण आकाशरूपगुणीतैंभिन्नहै अथवा अभिन्नहै ॥ तहां प्रथमभिन्नपक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतैं जैसे घटतैंपटभिन्नहै ॥ यातैं घटका पट गुणहोवैनहीं ॥ तैसे आकाशरूपगुणीतैं शब्दगुणकूं जोभिन्नमानोगे ॥ तौ आकाशका शब्द गुणनहींहोवैगा ॥ और शब्दगुण आकाशतैंअभिन्नहै ॥ यहदूसरापक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतैं जैसे गंधगुणका गंधतैंअभेदहै ॥ तहां गंधका गंधगुणहै ऐसाकोईकहैनहीं ॥ तैसे आकाशतैं शब्दगुणकाअभेदमानोगेतौ ॥ आकाशका शब्दगुणहै याअर्थकीसिद्धिनहींहोवैगी ॥ यद्यपि शब्दकाऔरआकाशका कल्पितभेदमानणेतैं गुणगुणीभाव बनैहै ॥ तथापि जैसापक्षहोवैहै ॥ तैसाही ताकाबलीहोवैहै ॥ यारीतिसैंकल्पितभेद कल्पितआकाशकीही सिद्धिकरैगा ॥ कल्पितभेदतैं वास्तवआ

काशकी सिद्धिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ गुणऔरगुणीका तादात्म्यसंबंधहोवैहै ॥ भेदकूंसंहारणेहाराजोअभेद सो तादात्म्यकहियेहैं ॥ सोभेदऔरअभेददोनों वास्तवहैं॥यातैं वास्तवभेदतैं वास्तवआकाशकीसिद्धिबनैंहै ॥ समाधान ॥ विरुद्धस्वभाववालेपदार्थ एकस्थानविषे रहैंनहीं ॥ जैंसे उष्णस्पर्श औरशीतस्पर्श एकवस्तुविषे रहैंनहीं ॥ याप्रकारकीयुक्तिसहित बुद्धिरूपनेत्रकरिकै समानसत्तावालेभेदऔरअभेद कहांदीखैंनहीं॥खोटाआग्रहकरिकै वास्तवभेदऔरअभेदकेअंगीकारकियेहुए पूर्वकह्याजो भेदपक्षविषे औरअभेदपक्षविषे दोष सो बलात्कारसैंप्राप्तहोवैगा ॥ यातैं वास्तवभेदऔरअभेद एकवस्तुविषे बनैंनहीं ॥ किंवा ॥ जाभेदऔरअभेदसैं वादी गुणगुणीभाव सिद्धकरेहै ताभेदऔरअभेदकास्वरूप विचारकियेतैं सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं शब्दादिकगुण औरआकाशादिकगुणीका भेदऔरअभेद जोवादी मानेंहै ॥ तासैंयहपूछाचाहिये ॥ सोभेदऔरअभेद शब्दऔरआकाशादिकवस्तुतैं अभिन्नहै अथवा भिन्नहैं तहां प्रथम अभिन्नपक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतैं जोभेदऔरअभेद वस्तुकास्वरूप अंगीकारकरोगेतौ ॥ यहभिन्नहै औरयहअभिन्नहै औरयहदोवस्तुहैं ॥ याप्रकारकाकथन असंगतहोवैगा॥ तात्पर्ययह ॥ जैंसे घटघटकूंलेआवो पटपटकूंलेआवो याप्रकारकाशब्द किसीस्थानविषे विद्वानोंनैं उच्चारणनहींकियाहै ॥ काहेतैं यहशब्द पुनरुक्तिदूषणसहितहै ॥ एकवारउच्चारणकरेशब्दका फेरि उच्चारणकरणेकानाम पुनरुक्तिहै ॥ तैंसे भेदऔरअभेदकूं वस्तुकास्वरूपमानणेमैं यहफलवृक्षतैंभिन्नहै यहघटमृत्तिकातैंअभिन्नहै औरयहदोवस्तुहैं याकथनविषेभी पुनरुक्तिदोषहोवैहै ॥ यातैं भेदऔरअभेद वस्तुकास्वरूपनहीं ॥ औरभेदऔअभेद वस्तुतैंभिन्नहैं॥ यहदूसरापक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतैं भेदवालेकूंभिन्नकहैहै॥ भेदऔरअभेद वस्तुतैंभिन्नहैं ॥ याकहणेतैं वस्तुकेभेदवाले भेदऔरअभेदहैं यहसिद्धहोवैहै ॥ तहां दूसरेभेदविषे तीसरावस्तुकाभेद मानोगे ॥ तीसरेविषे चौथाभेद ॥याप्रकार भेदोंकीधारामानणेमैंअनवस्थादोष प्राप्तहोवैहै ॥ यादोषकीनिवृत्तिवासतै औरप्रथमभेदऔअभेदकीसिद्धिवासतै दूसराभेद वस्तुकास्वरूप जबीकहोगे तबी यहतेरावचन बकबंधनकीन्यांई होवैगा॥ जैंसे बकपक्षीकेबांधणेकीइच्छावाला कोईपुरुष याप्रकारकाउपाय चित्तविषेकल्पना करै ॥ माछलीविषेहैचित्तएकाग्रजाका ऐसाजो आतपविषेस्थित बकपक्षीहै ॥ ताकेमस्तकविषे माखण जाइकेमैराखों॥ सोमाखण

सूर्यकीआतपकरिकै द्रवीभावहोइके याबककेनेत्रविषेपड़े ॥ तामाखणकेपड़णेतें अंधहुएयाबककूं मैंबांधों॥ ऐसीचित्तविषेकल्पनाकरि
कै तैसाहीउपायकरै ॥ जैसे तापुरुषकाउपाय व्यर्थहै ॥ काहेतें बककेसमीपगयेविना ताकेमस्तकउपरि माखण राख्याजावैनहीं॥ जबी
ताकेसमीपगया॥ तबी ताकालविषेही ताकाबंधन बनिसकैहै॥ तैसे प्रथमभेदऔरअभेदकूं वस्तुतेंभिन्नमानिके॥ तिनोंकेसिद्धिवास्तैं
कल्पना कऱ्याजोदूसराभेद॥ ताकूंवस्तुकास्वरूपमानणेमें केवल व्यर्थप्रयासहै॥ यातें शब्दगुणकी किसीप्रकारतेंभी सिद्धिहोवैनहीं ॥
शब्दकी असिद्धिहुये आकाशकी बंध्यापुत्रतेंविलक्षणता सिद्धहोवैनहीं ॥ जैसे आकाशकाशब्दगुण युक्तिसेंसिद्धनहींभया॥ तैसे वायु
कास्पर्शगुण औरअग्निकारूपगुण औरजलकारसगुण पृथिवीकागंधगुण पूर्वकहीरीतिसेंसिद्धहोवैनहीं ॥ तिनस्पर्शादिकगुणोंकेअ
भावहोणेतें वायुआदिकभूतोंकूंभी बंध्यापुत्रकीसमानताहै॥ किंवा॥ अवकाशकूंजोदेवै सोआकाश ॥ स्पर्शकूंजोकरै सोवायु अन्नादिकों
के पाककूंजोकरे सोअग्नि ॥ तृषाकूंजोनिवारणकरै सोजल ॥ लोकोंकूंजोधारणकरै साप्टथिवी ॥ याप्रकारकेलक्षण आकाशादिकोंके
लोकप्रसिद्धहैं ॥ तिनोंतेंभी आकाशादिकोंकीसिद्धि होवैनहीं ॥ काहेतें तेआकाशादिकपंचभूत सर्वलोकोंकेतांई अवकाशादिकोंकूं
देवैहै ॥ अथवा जिसकिसप्राणीकेतांईदेवै हैं ॥ तहां प्रथमपक्षतौ असंभवदोषकरिकैयुक्तहै ॥ काहेतें वातपित्तादिधातुवोंकीन्यूनअ
धिकताकरिकै जडभावकूंप्राप्तभयेप्राणियोंकूं आकाश अवकाशकूंनहींकरेहै ॥ और वायु स्पर्शकूंनहींकरेहै ॥ और अग्नि पाकादिकों
काकारणनहीं ॥ और जल तिनोंकेतृषाकी निवृत्तिनहींकरेहैं ॥ और पृथिवी धारणनहींकरै है ॥ याप्रकार अन्यधर्मोंविषेभी सर्वत्र
अनुगमकाअभावहै ॥ और आकाशादिकभूत जिसकिसप्राणीकूं अवकाशादिक देवै हैं ॥ यहदूसरापक्ष मानणेतें आकाशादिकभू
तोंका मिथ्यापणाही सिद्धहोवैहै ॥ काहेतें जैसे स्वप्नकेपदार्थ जिसकालविषेप्रतीतहोवै हैं ॥ तिसीकालविषे हैं ॥ प्रतीतितेंपूर्वउत्तर
कालविषेहैंनहीं ॥ यातें मिथ्याहैं ॥ तैसे आकाशादिकभूतभी जिसजिसपुरुषकरिकै प्रतीतहोवै हैं ॥ तिसतिसपुरुषकेप्रतीतिकालवि
षे हैं ॥ प्रतीतितेंपूर्वउत्तरकालविषे हैंनहीं ॥ यातेंमिथ्याहै॥ जबी आकाशादिकपंचभूतहीअसत्यभये ॥ तबी तिनभूतोंकाकार्यप्रपंच
सत्यकैसेहोवैगा॥ किंतु सोप्रपंचभी असत्यहीहोवैगा ॥ दृष्टांत ॥ जैसे असत्यबंध्यापुत्रका पुत्रभी असत्यहीहोवै है ॥ सत्यहोवैन

हीं ॥ तैसे असत्यपंचभूतोंकाकार्यप्रपंचभी सत्यहोवैनहीं ॥ यातें आत्मातेंभिन्नपंचभूत औरताकाकार्यप्रपंच बंध्यापुत्रकीन्यांई असत्यहै ॥ यह सिद्धभया ॥ अब आकाशादिकप्रपंचकाकारणमायाकी असत्यरूपतानिरूपणकरेहैं ॥ तहां कार्यप्रपंचकीमायातेंवि ना अनुपपत्तिरूप अर्थापत्तिप्रमाणतें मायाकीसिद्धिहै ॥ अथवा श्रुतिप्रमाणतें मायाकीसिद्धिहै ॥ अथवा अनुभवप्रमाणतें मायाकीसि द्धिहै ॥ तहां प्रथमपक्ष बनैनहीं ॥ काहेतें जैसे असत्यबंध्यापुत्रकी मायाकरिकैभी उत्पत्तिहोवैनहीं ॥ तैसे पूर्वकहीरीतिसें प्रपंच कूंअसत्यहोणेतें ताप्रपंचकी मायाकरिकैभीउत्पत्तिसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ लोकविषे असत्यकीभी मायातेंउत्पत्तिदेखीहै ॥ जैसे भूमि विषेस्थित मायावीनट आपणीमायाकरिकै आकाशविषेस्थित असत्यआपणादूसरास्वरूप दिखावैहै ॥ तैसे असत्यप्रपंचकीभी मा याकरिकेउत्पत्तिबनैहै ॥ **समाधान** ॥ तास्थलविषेभी निमित्तकारणरूपमायाकरिकै सत्यमायावीपुरुषकाही नानारूपकरिकैप्रादुर्भाव देखाहै ॥ तात्पर्ययह ॥ आकाशविषेस्थितस्वरूपका परिणामीउपादानकारण मायानहीं ॥ किंतु मायाकाविषयनटकाआत्माही तिस तिसस्वरूपकरिकै प्रतीतहोवैहै ॥ यातें असत्यवस्तुकीउत्पत्तिविषे माया कहांभीसमर्थनहींदेखी ॥ याकारणतें माया परतंत्रहै ॥ स्वतंत्रनहीं ॥ और माया श्रुतिप्रमाणकरिकैसिद्धहै ॥ यहदूसरापक्षभी बनैनहीं ॥ काहेतें मायाकूं जगत्केउत्पत्तिस्थितिनाशकी कारणता यद्यपि श्रुतिवाक्योंनैंकहीहै ॥ तथापि साजगत्कीकारणता मायाकूंहैनहीं ॥ माया आपहीअसत्यहै ॥ असत्यकिसीका कारण औरकार्य होवैनहीं ॥ और मायातें जगत्कीउत्पत्तिकूं बोधनकरणेहारीश्रुतिकाअद्वितीयब्रह्मकेजनावणेमैं तात्पर्यहै ॥ मायाके बोधनमैं तात्पर्यहैनहीं ॥ काहेतें फलवालेअर्थकूं श्रुतिबोधनकरेहै ॥ सोफलकीप्राप्ति अद्वितीयआत्माकेज्ञानतेंहोवैहै ॥ मायाकेज्ञानतें होवैनहीं ॥ और मायाअनुभवकरिकैसिद्धहै ॥ यहतीसरापक्षभी बनैनहीं ॥ काहेतें जाकालविषे अविवेकीपुरुष आपणेसत्‌चित्‌आ नंदस्वरूपकूंनहींअनुभवकरता ॥ ताकालविषे यहपुरुष मायाकूं मैंअज्ञानीहूं याप्रकारकेअपरोक्षज्ञानकाविषयमानैहै ॥ **दृष्टांत** ॥ जैसे सोयाहुआबालक आपणेदेहकूंराक्षसमानिकरिकै भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माभी सत्‌चित्‌आपणेस्वरूपकूं विस्मरण करिकै आत्मस्वरूपकेआवरणकरणेहारीमायाकूं आपही कल्पनाकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ विचाररहितभ्रांतपुरुषकंअनुभवकरिकैतौ मा

याकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं भ्रांतिज्ञान जोवस्तुकीसिद्धिकरै ॥ तौ शुक्तिविषेरजतकी और रज्जुविषेसर्पकीभी सिद्धिहोणीचाहिये ॥
और विचारसहितअनुभवकेउत्पन्नहुये माया ठहरैनहीं ॥ जैसे सूर्यकेउदयहुए अंधकार ठहरैनहीं ॥ यातैं माया अनुभवकरिकैसिद्ध
नहीं ॥ इसप्रकार किसीप्रमाणकरिकैमायासिद्धनहीं ॥ यातैं मैंअद्वितीयआत्माविषे मायाहैनहीं ॥ शंका ॥ जोमाया चैतन्यआत्मा
विषेनहींहै ॥ तौ मैंअज्ञानीहूं यहअनुभव किसकूंविषयकरेहै ॥ समाधान ॥ यहमाया मैंपरमात्मातैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु मेराहीस्वरू
पहै ॥ जैसे बालककेशरीरतैं राक्षस भिन्ननहीं ॥ किंतु आपशरीरकूंहीं राक्षसमानिकै बालक भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ यथार्थ
ज्ञानकाअविषय आत्माकास्वरूपही माया अज्ञान अविद्या याप्रकारकेशब्दोंकरिकै कहलाताहै ॥ यातैं माया स्वतंत्रनहीं ॥ शंका ॥
माया अविद्या अज्ञान याप्रकारकेशब्द औरज्ञानकेबलतैं चैतन्यआत्मातैंभिन्न स्वतंत्र मायाकीसिद्धि काहेतैंनहींहोवै ॥ समा
धान ॥ जोशब्दऔरज्ञानकूंप्रमाणताहोवै ॥ तौ ताकेबलतैं मायाकीसिद्धिहोवै ॥ सो शब्दऔरज्ञान प्रमाणरूपहैंनहीं ॥ काहेतैं
वस्तुकेअसत्यहुएभी शब्दऔरज्ञान होवैहै ॥ याकारणतैंहीं असत्यबंध्यापुत्रविषे बंध्यापुत्रहै याप्रकारकाशब्दऔरज्ञान देखताहै ॥
यातैं शब्दऔरज्ञानकूं आपणेविषयकेसिद्धकरणेकासामर्थ्यनहीं ॥ तहां शब्दकातौ पूर्वनामकेविचारविषे खंडनकरिआयेहैं ॥ अब
ज्ञानस्वरूपबुद्धिकाखंडनकरेहैं ॥ साबुद्धि क्यास्वरूपहै? यहप्रथम विचारकियाचाहिये ॥ तात्पर्ययह ॥ साबुद्धि बोधरूपहै ॥ अथवा
अबोधरूपहै ॥ तहां अबोधरूपबुद्धिहै यहदूसरापक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतैं जैसे अबोधस्वरूपहोणेतैं घटादिक स्वतंत्रनहीं हैं ॥ किंतु
परतंत्रहैं ॥ तैसे अबोधस्वरूपहोणेतैं बुद्धिकूंभी स्वतंत्रतासिद्धहोवैनहीं ॥ और बुद्धि बोधस्वरूपहै याप्रथमपक्षविषेभी सोबोध
धर्मरूपहै ॥ अथवा सर्वकाअधिष्ठानधर्मीस्वरूपहै ॥ तहां धर्मस्वरूपबोधहै याप्रथमपक्षविषे बोधकूं जोधर्मरूपतासिद्धहोवै ॥ तौ
बोधस्वरूपबुद्धिसिद्धहोवै ॥ परंतुविचारकियेतैं बोधकूंहीं धर्मरूपता सिद्धहोवैनहीं ॥ और धर्मीस्वरूपबोधहै ॥ यादूसरेपक्षविषे
बोधकूं अधिष्ठानमैंपरमात्मासैंअभिन्नहोणेतैं बोधरूपबुद्धिस्वतंत्रसिद्धहोवैनहीं ॥ याप्रकारकेनिर्णयकरणेवासतै प्रथम बोधकेस्वरू
पकाविचारकर्‍याचाहिये ॥ बोधकेस्वरूपकानिर्णयकरिकैहीं बोधस्वरूपबुद्धिकाभी निर्णयहोवैगा ॥ तहां प्रथम धर्मरूपबोधहै

यापक्षविषे विचारकूंकरैं हैं॥ सोबोध घटपटादिकविषयोंकाधर्महै ॥ अथवा ज्ञानकेकारणचक्षुआदिकइंद्रियोंकाधर्महै ॥ अथवा आत्माकाधर्महै॥ अथवा बुद्धिकाधर्महै ॥ तहां विषयकाधर्मबोधहै ॥ यहप्रथमपक्ष बनैंनहीं॥ काहेतें जोबोधघटादिकविषयोंकाधर्महोवै॥ तौ घटादिकविषय चेतनहोणेचाहियै ॥ जोजो बोधवालाहोवैहै ॥ सोसो चेतनहोवैहै ॥ यहनियमहै॥ शंका ॥ घटादिकविषय चेतनस्वरूपहैं ॥ यह हम अंगीकारकरैं हैं॥ समाधान ॥ घटादिकोंकूं जोचेतनस्वरूप मानोगे॥ तौ घटादिकोंकूं आपणेज्ञानमैंअन्यकीअपेक्षानहींहोवैगी॥ काहेतें चेतन स्वप्रकाशहोवैहै ॥ जो आपणीसिद्धिविषे अन्यप्रकाशकीअपेक्षानकरै॥ सो स्वप्रकाशकहियेहै॥ और घटादिक आपणीसिद्धिविषे अन्यप्रकाशकी अपेक्षाकरैहैं॥ यातें घटादिकविषयकाधर्म बोधनहीं॥ किंवा॥ जो घटादिकविषयकाधर्म बोधमानोगेतौ ॥ भोक्ताऔरभोग्यका विपरीतभाव प्राप्तहोवैगा॥ तात्पर्ययह॥ भोग्यरूपकरिकैप्रसिद्धघटादिकविषय भोक्तास्वरूपहोवैंगे ॥ और घटादिकविषयोंतैंभिन्नभोक्ता भोग्यस्वरूपहोवैगा ॥ काहेतें बोधवाला भोक्ता होवैहै ॥ यह भोक्ताकालक्षणहै ॥ और घटादिकविषयोंकूंभोक्ताकहणा अनुभवविरुद्धहै ॥ यातें घटादिकविषयकाधर्म बोधनहीं॥ और इंद्रियोंकाधर्मबोधहै ॥ यहदूसरापक्षभी बनैंनहीं॥ काहेतें जोजाकाधर्महोवैहै ॥ सो सदैव ताविषेप्रतीतहोवैहै ॥ जैसे अग्निका उष्णस्पर्शधर्महै॥किसीकालविषे अग्नि उष्णस्पर्शतैंरहित प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे जोबोध इंद्रियकाधर्महोवै ॥ तौ जहांजहा इंद्रियहोवै ॥ तहांतहां नियमसैं बोध प्रतीतहोणाचाहियै ॥ औनियमसैं बोधप्रतीतहोवैनहीं किंतु कबीतौ इंद्रियकेहुवे बोध प्रतीतहोवैहै ॥ और कबी नहींभी प्रतीतहोवैहै ॥ यातें इंद्रियोंकाधर्मबोधनहीं ॥ अब नियमकेअभावकूंनिरूपणकरैहैं ॥ शब्दके विद्यमानहुएभी बधिरपुरुषकाचक्षुइंद्रिय शब्दकूंजानैंनहीं॥ तैसे रूपकेविद्यमानहुएभी अंधपुरुषकाश्रोत्रइंद्रिय रूपकूंजानैंनहीं ॥ और जिसकालविषे मनसावधाननहीं॥ ताकालविषे सन्मुखदेशविषेस्थित अथवा पृष्ठदेशविषेस्थित पुरुषकूं चक्षुइंद्रिय जानैंनहीं॥ तैसे श्रोत्रादिकइंद्रियभी शब्दादिकविषयोंकूं जानैंनहीं ॥ जो इंद्रियोंकाधर्मबोधहोवै ॥ तौ जहां इंद्रियहोवै ॥ तहां अवश्यबोध प्रतीतहुवाचाहियै ॥ और सर्वत्रबोध प्रतीतहोवैनहीं॥ यातें इंद्रियोंकाधर्म बोधनहीं॥ किंतु बोधका उपकरणइंद्रियां हैं॥

तात्पर्ययह ॥ अंतःकरणकीवृत्तिविषेआरूढचेतनकानामबोधहै ॥ सावृत्तिइंद्रियादिकोंतैंउत्पन्नहोवैहै ॥ यातें इंद्रियां बोधकेउपकरण हैं ॥ उपकरणमानणेमैं पूर्वकहेदोषोंकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ इंद्रियोंविषेस्थितजोबोधहोवै ॥ तौ तिनइंद्रियोंकाधर्महोवै ॥ सोबोध किसीइंद्रियविषे प्रतीतहोवैनहीं ॥ किंतुघटादिकअर्थविषेस्थितहुवा बोध प्रतीतहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ स्फुरणकानाम बोधहै ॥ सोबोध घटस्फुरणहोवैहै ॥ औरपटस्फुरणहोवैहै याप्रकारकेअनुभवतें विषयविषेस्थितहुवा प्रतीतहोवैहै ॥ किंवा ॥ परोक्षज्ञानकेविषयभूतइंद्रियोंविषे बोधहै ॥ याविषे कोईप्रमाणभीनहीं ॥ शंका ॥ जैसे नैयायिकोंकेमतमैं आत्माविषेस्थितबोध घटादिकपदार्थोंकूं विषयकरैहै ॥ तैसे इंद्रियोंविषेस्थितबोधभी घटादिकोंकूंविषयकरैगा ॥ बोधका घटादिकविषयकेसाथ विषयतारूपसंबंध नैयायिकोंकीन्यांई इहांभीबनैहै ॥समाधान॥ जो अन्यवस्तुविषेस्थितहुवाबोध अन्यवस्तुकूं प्रकाशकरताहोवै॥ तौ तादात्म्यसंबंधतैंघटविषेस्थितहुवाबोध पटकूं काहेतेंनहींप्रकाशकरता॥ जैसे इंद्रियोंविषेस्थितबोधका घटादिकविषयकेसाथ विषयतासंबंध तुमोनैं अंगीकारकऱ्याहै ॥ तैसे घटविषेस्थितबोधका पटादिकोंकेसाथ विषयतासंबंधभी किसीतैंनिवारणहोवैनहीं ॥ यातें इंद्रियोंकाधर्म बोध नहीं ॥ किंवा ॥ जो चक्षुइंद्रियविषेस्थितबोधकरिकै घटादिकोंकाभान अंगीकारकरोगे ॥ तौ तुमारेमतविषे चक्षुइंद्रियका जैसे घटके साथसंयोगसंबंधहै ॥ और घटविषेस्थितरूपकेसाथ संयुक्तसमवायसंबंधहै ॥ तैसे घटविषेस्थितरसादिकोंकेसाथभी चक्षुका संयुक्तसमवायसंबंध संभवैहै ॥ यातें जैसे घटकारूप चक्षुइंद्रियविषेस्थितबोधविषे प्रतीतहोवैहै॥तैसे घटविषेस्थितरसादिक चक्षुइंद्रियविषेस्थितबोधविषे काहेतेंनहींप्रतीतहोते ॥ किंतु प्रतीतहोणेचाहिये ॥ और हमारेमतविषेतौ यादोषकीप्राप्तिनहीं ॥ काहेतें रूपाकारवृत्तिविषेआरूढ चेतनरूपबोधका तादात्म्यरूपविषयतासंबंध रूपविषेहै रसविषेहैनहीं ॥ यातें चक्षुइंद्रियकरिकै रसादिकोंकी प्रतीति होवैनहीं ॥ याकहणेतें यहसिद्धभया ॥ अन्यपदार्थविषेस्थितहुवाबोध अन्यपदार्थकूं प्रकाशैनहीं ॥ जो ऐसा अंगीकारकरोगे॥ तौ घटविषेस्थितहुआबोध पटकाभीप्रकाशकरैगा ॥ याअतिप्रसंगदोषकी प्राप्तिहोवैगी ॥ और जो घटादिकोंविषे धर्मरूपतैंबोधरहै ॥ तौ घटादिकोंका बोधकरिकैप्रकाशबनैं ॥ परंतु घटादिकोंविषे धर्मरूपकरिकै बोधरहैनहीं ॥ जो घटादिकोंकाधर्मबोधहोवै ॥

तौ घटादिक भोक्ताहोणंचाहिये ॥ यह पूर्वकहिआयेहैं यातैं इंद्रियोंकाधर्मबोधनहीं और आत्माकाधर्मबोधहै ॥ यहतीसरापक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतैं अन्यविषेस्थितहुवाबोध अन्यकूंप्रकाशेनहीं ॥ यादोषकी इहांभीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं मैंआत्माविषे धर्मरूपतैं बोधरहैनहीं ॥ शंका ॥ आत्माविषेस्थितहुवाबोध घटादिकोंकूं मतप्रकाशकरै ॥ तौभी आत्माकेप्रकाशवासतैं आत्माकाधर्मबोध हम अंगीकारकरेहैं ॥ समाधान ॥ जो आत्माकाधर्मबोधहोवै तौधर्मतैंधर्मीकूंभिन्नहोणेतैं बोधतैंभिन्नमैंआत्माकूं जडता प्राप्त होवैगी ॥ किंवा ॥ जैसे घटादिकनकूं बोधप्रकाशैहै ॥ तैसे मैंआत्माकूं बोध प्रकाशैनहीं ॥ काहेतैं घटादिकपदार्थ बोधविषे कल्पितहैं ॥ यातैं अधिष्ठानस्वरूपबोध तिनोंकूं प्रकाशैहै ॥ तात्पर्ययह घटउपहितचेतनमैं घट कल्पितहै ॥ जाकालविषे अंतःकरणकीवृत्ति नेत्रद्वारानिकसिकै घटाकारहोवैहै ॥ ताकालविषे घटउपहितचेतनकेसाथ वृत्तिउपहितचेतनरूपबोधका अभेद होवैहै ॥ काहेतैं चेतनमैं परमार्थसैंतौ भेदहैनहीं ॥ किंतु उपाधिकरिकैभेदहै ॥ तेउपाधियां जबपर्यंत भिन्नभिन्नदेशविषेस्थितहोवैंहैं तबपर्यंत चेतनकाभेदकरेहैं ॥ और जबीउपाधियां एकदेशविषेस्थितहोवैंहैं ॥ तबीता उपाधिवालेचेतनोंका भेदकरैंनहीं किंतु तहां चेतनोंकाअभेदहोवैहै ॥ जैसे मठतैंभिन्नदेशविषे जबी घटरहै ॥ तबीतौ घटाकाशका और मठाकाशका भेद होवैहै ॥ और जबी मठकेभीतर घटकूंलेआवैं तबी मठाकाशकेसाथ घटाकाशका अभेदहोवैहै ॥ यारीतिसैं घटउपहितचेतनकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तभया जोघटाकारवृत्तिउपहितचेतनरूपबोध ॥ ताबोधविषे घटादिक कल्पितहैं ॥ ताकल्पितघटादिकनकूं अधिष्ठानस्वरूपबोध प्रकाशैहै ॥ तिसप्रकार मैंआत्माका कोईअधिष्ठानहैनहीं ॥ किंतु मैंहीं आपणीमहिमाविषेस्थितहुवा सर्वअनात्मवस्तुकाअधिष्ठानहूं ॥ और जोबोधकूं मैंआत्माकाअधिष्ठान मानोगे ॥ तौ सोबोधही आत्मासिद्धहोवैगा ॥ काहेतैं सर्वकाअधिष्ठान आत्माहीहोवैहै और मैंआत्मातैंभिन्नबोधकूं जोप्रकाशस्वरूपमानोगे ॥ तौ ताबोधकरिकै मैंआत्माकाभान होवै नहीं ॥ जैसे पुत्रकेपंडितहुएभी पिता पंडितहोवैनहीं ॥ यातैं आत्माकाधर्मबोधनहीं यहसिद्धभया ॥ और बुद्धिकाधर्मबोधहै यहचतुर्थपक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतैं साबुद्धि बोधतैंभिन्ननहीं ॥ बोधकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुईबुद्धि ज्ञानपदवीकूं प्राप्त

होवैहै ॥ अंतःकरणकापरिणामरूपबुद्धिकूं स्वतः ज्ञानरूपताहैनहीं ॥ जबी बोध बुद्धिकाधर्ममानोंगे ॥ तबी बोधतें भिन्नहुईबुद्धि ज्ञानपदवीसें रहितहोवैगी ॥ किंवा ॥ जो बुद्धिकाधर्म बोधहोवै ॥ तौ बोधतेंभिन्नहुईबुद्धि क्यास्वरूपहै ॥ बोधतेंभिन्नहोणेतें बोधस्वरूपतौ होवैनहीं ॥ किंतु ॥ अबोधस्वरूप बुद्धि अंगीकारकरनीहोवैगी ॥ और साअबोधस्वरूपबुद्धि घटादिकोंकीन्यांई मैंआत्माविषेकल्पितहोणेतें मैंआत्माके अधीनहै स्वतंत्रनहीं ॥ यातें बुद्धिकाधर्मभी बोधनहीं ॥ यहसिद्धभया ॥ अब बोधकूंअनंतहोणेतें बुद्धिभी बोधस्वरूपहै याप्रकारकी वादीकेशंकाकीनिवृत्तिवासतें और बोधकूंएकआत्मस्वरूपताकीसिद्धिवासतें बोधकेस्वरूपविषे अन्यविचारकूंकरेहैं ॥ सोबोध जगत्विषे एकहै ॥ अथवा अनेकबोधहैं ॥ तहां एकबोधहै यहप्रथमपक्ष बनैनहीं ॥ काहेतें जोएकबोधहोवैतौ ॥ संस्कारोंकाभेद औरप्रमाणोंकाभेद औरप्रमाज्ञान औस्मृतिज्ञान औअप्रमाज्ञान इनोंका परस्परभेद नहोणाचाहिये ॥ तात्पर्ययह ॥ नाशअवस्थाकूंप्राप्तहुएज्ञानतें संस्कार उत्पन्नहोवैहैं ॥ तासंस्कारोंकाभेद ज्ञानकेभेदतेंविनाबनैनहीं ॥ और प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति अनुपलब्धि यहषट्प्रमाणोंकाभेदभी प्रमाज्ञानकेभेदतेंविना बनैनहीं ॥ यातें एकबोधनहीं ॥ यद्यपि आगे बोधकीएकताहीसिद्धकरणीहै ॥ तथापि ताएकताकीदृढतावासतें एकताखंडनकाविकल्प प्रथमकऱ्याहै ॥ और बोधअनेकहैं यादूसरेपक्षविषेभी यहविचार कऱ्याचाहिये ॥ जैसे स्वरूपतैंघटपटकाभेदहै ॥ तैसे बोधोंका परस्पर स्वरूपतैंभेदहै ॥ अथवा जैसे घटाकाशऔरमठाकाशका महाकाशतें घटमठरूपउपाधिकरिकैभेदहै ॥ तैसे उपाधिकरिकै बोधोंकापरस्परभेदहै तहां स्वरूपतैंबोधोंकाभेदहै ॥ यहप्रथमपक्ष बनैनहीं ॥ काहेतें बोधस्वरूपता संपूर्णबोधोंविषे समानहै ॥ यातें एकबोधविषे दूसरेबोधकाभेद रहैनहीं ॥ जैसे घटविषे घटकाभेदरहैनहीं ॥ यातें स्वरूपतैंबोधकाभेदनहीं ॥ और उपाधिकेभेदतें बोधोंकाभेदहै ॥ यहदूसरापक्ष हमारेकूं अंगीकारहै ॥ काहेतें जैसे घटमठरूपउपाधियोंकेभेदकरिकै आकाश नानाहोवैनहीं ॥ किंतु घटमठरूपउपाधिविषेस्थितभेदका आकाशविषे आरोपणहोवैहै ॥ तैसे अबोधस्वरूपअंतःकरणकीवृत्तिकेभेदहुएभी सोभेद बोधविषे परमार्थतें हैनहीं ॥ किंतु वृत्तिरूपउपाधिविषेस्थितभेदका बोधविषे आरोपणहोवैहै ॥ ताआरोपितभेदकरिकेहीं प्रमाज्ञान अप्रमाज्ञान स्मृतिज्ञान या

प्रकारका भेदव्यवहारहोवैहै ॥ और बोधकेउपाधिवृत्तिरूपज्ञानकेभेदतैं संस्कारोंकाभेद औप्रमाणोंकाभेदभी बनैहै ॥ और जैसे
कल्पितमृगतृष्णाकेजलकरिकै पृथिवी गीलीहोवैनहीं ॥ और जैसे कल्पितसर्पकरिके रज्जु विषवालीहोवैनहीं ॥ तैसे आरोपितभेद
करिकै बोधविषे नानापणासिद्धहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ बोधोंका जोपरस्परवास्तवभेदमानैहै ॥ तासैंयहपूछेहैं ॥ तेबोध परस्परअपेक्षा
वालेहैं?॥ अथवा परस्परअपेक्षातैंरहिततहैं?॥ तहां अंत्यपक्षमानणेमैं बोधोंकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं अन्यबोधकीअपेक्षातैंरहित
एकबोधकरिकैहीं सर्वव्यवहारकीसिद्धि बनिसकैहै ॥ अनंतबोधमानणेका कछुप्रयोजननहीं॥ और बोध परस्परअपेक्षावालेहैं॥यहप्र
थमपक्षभी बनैंनहीं॥काहेतैं जोबोध आपणेप्रकाशवासतै दूसरेबोधकीअपेक्षा करताहोवै॥ तौ अबोधस्वरूपहोवैगा॥जैसे घट आपणे
प्रकाशवासतैं बोधकीअपेक्षाकरैहै॥यातैं अबोधस्वरूपहै॥याकहणेतैं बोध एकहै यहसिद्धभया ॥ अब बोधकेस्वप्रकाशताकीसिद्धिवास
तै अन्यविचारकूंकरैहैं॥ सो बोध अज्ञातहुवा सर्वव्यवहारकाकारणहै॥ अथवा ज्ञातहुवा?॥ तहां अज्ञातहुवाबोध व्यवहारकाकारणहै॥
यहप्रथमपक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतैं ज्ञानकीविषयताकेअभावकानाम अज्ञाततताहै ॥ साअज्ञातता दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौ स्वप्रकाश
तारूप ॥ और दूसरी जडत्वधर्मविशिष्ट चेतनकेसंबंधकाअभावरूप॥ तहां बोधविषे स्वयंप्रकाशतारूप प्रथमअज्ञातताकूं सिद्धांत
रूपता आगेकहैंगे ॥ अब दूसरीअज्ञातताकूं खंडनकरैहैं ॥ जैसे घट अज्ञातहुवाभी जलकीआधारतारूपकार्यका कारणहै ॥ तैसे
यहबोधअज्ञातहुवा किसीकार्यकाकारणनहीं ॥ और जोबोधकूं अज्ञातमानोगे ॥ तौ बोधभी जडहोणेतैं बोधसैंरहितहुवा घटादिकोंके
समान होवैगा ॥ और बोध ज्ञातहुवा व्यवहारकाकारणहै ॥ यहदूसरापक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतैं ज्ञानकाविषयजोवस्तु सोज्ञात
कहियेहैं ॥ जो बोधकूंविषयकरणेहारा दूसराबोधमानोगे ॥ तौ बोधकूं घटादिकोंकीन्यांई अबोधरूपता एकदूषण प्राप्तहोवैहै ॥
और दूसरा अनवस्थारूपदूषण प्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैं प्रथमबोध दूसरेबोधकाविषयहुवा व्यवहारकासाधकहै ॥ सोदूसराबोध जो
अज्ञातहुवा प्रथमबोधकीसिद्धिकरैगा ॥ तौ अज्ञातपक्षविषे जितनेपूर्वदूषणकहेहैं ॥ तिनदूषणोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं सोदूसराबो
धभी तीसरेबोधकाविषयहुवाहीं प्रथमबोधकीसिद्धिकरैगा ॥ सोतीसराबोध चतुर्थबोधकाविषयहुवा दूसरेबोधकीसिद्धिकरैगा ॥

याप्रकार बोधोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैहै॥ **शंका** ॥ बोधकूंसिद्धकरणेहारा कोईबोधहैनहीं ॥ यातेंअनवस्था दोषहोवैनहीं ॥ **समाधान** ॥ बोधकासाधक जोबोधनहींमानोंगे ॥ तौ जगत्‌विषेअंधताकीप्राप्तिहोवैगी॥ तात्पर्ययह ॥ किसीभीव स्तुकीसिद्धिनहींहोवैगी ॥ यातें यहबोध बोधतैंरहितनहीं॥ **शंका** ॥ बोधअज्ञातहै यापक्षविषेभी दोष पूर्वआपनेंकहे ॥ और ज्ञातप क्षविषेभी दोष पूर्वआपनैंकहे ॥ यातें तिनदोषोंकीनिवृत्तिवासतै बोधकूं स्वयंप्रकाशता हम अंगीकारकरेहैं॥ **समाधान** ॥ विचार कियेहुए सोअद्वितीयबोध स्वयंप्रकाशहै॥ याप्रकारकाअर्थ जोतेरीबुद्धिविषे आरूढहुवाहै॥ सो हमारेकूंभीइष्टहै ॥ बोधकीस्वयंप्र काशता हमभीअंगीकारकरे हैं॥ **शंका** ॥ बोधकूं स्वयंप्रकाशतामानणेविषे तुमारेकूं किसलाभकीप्राप्तिहोवैहै ॥ **समाधान** ॥ सो स्वयंप्रकाशबोधस्वरूप मैंआत्माहूं ॥ मेरेतैंभिन्न बोधनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोबोध मैंआत्मातैंभिन्नहोवै ॥ तौ घटादिकोंकीन्यांई में आत्माका दृश्यहोवैगा ॥ और दृश्यवस्तु स्वयंप्रकाशहोवैनहीं॥ किंतु अन्यकरिकैप्रकाश्यहोवै है ॥ और बोधकूं अन्यकरिकैप्रका श्यमानणेमैं पूर्वकहे अनवस्थादिकदूषण प्राप्तहोवै हैं॥ यातें सोबोध मैंआत्मातैंअभिन्नहै ॥ बोधकूं आत्मस्वरूपताहुए भूमाआनं दकीप्राप्तिहीलाभहै॥ **शंका** ॥ भूमाआनंदकेप्राप्तहुएभी ताकेरक्षाकीचिंता तुमारेकूं प्राप्तहोवैगी॥ **समाधान** ॥ अनित्यवस्तुकीरक्षा होवै है ॥ नित्यवस्तुकीरक्षाहोवैनहीं॥ और सत्यस्वरूपमैंआत्माकूं अनित्यताहैनहीं ॥ यातें मैंआत्मासैंअभिन्न भूमाआनंदकूंभी अनित्यतासंभवैनहीं ॥ भूमानाम व्यापककाहै॥ अब आनंदस्वरूपआत्माविषे अनित्यताकेअभावकीसिद्धिवासतैं तीनपरिच्छेदोंके अभावकूं निरूपणकरेहैं ॥ जोवस्तु आदिकालविषे औरअंतकालविषे नहींहोवै ॥ सोवस्तु अनित्यकहियेहै ॥ और मैंआनंदस्वरू पआत्मा तीनकालविषे विद्यमानहूं ॥ यातें आनंदस्वरूपमैंआत्मा अनित्यनहींहूं॥ किंतु नित्यहूं॥और मेरेतैंभिन्न कोईवस्तुहैनहीं॥ किंतु मैंहींसर्वत्रहूं॥ याकहणेतें वस्तुपरिच्छेदकाअभाव आत्माविषेदिखाया ॥ और जोवस्तु किसीएककारणविषेरहैहै ॥ अथवा किसीएकदेशविषेरहैहै ॥ अथवा किसीएककालविषेरहैहै ॥ सोवस्तु तिसआपणेआधारतें औरजगत्‌तें भिन्नहोवैहै ॥ ताभेदकरिकै तिसवस्तुकूं अनित्यताप्राप्तहोवैहै ॥ काहेतें जोजो भेदवालावस्तुहोवैहै ॥ सोसो अनित्यहोवै है ॥ याप्रकारकानियम व्यासभग

वाननैं सूत्रविषेकह्याहै ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ भेदवालेहैं ॥ यातें अनित्यहैं ॥ और घटपटादिकनकीन्यांई मैंआनंदस्वरूपआत्मा किसीकारणविषे अथवा किसीदेशकालविषे रहतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ संपूर्णदेशकालादिककल्पितवस्तुका मैंआनंदस्वरूप आत्मा आधारहूं ॥ मैंआत्माकाआधार कोईकल्पितवस्तुहोवैनहीं ॥ यातें मैंआनंदस्वरूपआत्माकूं किसीप्रकारभी अनित्यतानहीं ॥ याकहणेतें आत्माविषे देशपरिच्छेदऔरकालपरिच्छेदकाअभाव दिखाया ॥ किंवा ॥ देश औकाल औरतिसदेशकालकरिकै उत्पन्नभयाजोवस्तु औरतिसदेशकालविषेस्थित जोसत्यअसत्यस्वरूप जडवस्तु ॥ यहसंपूर्ण मैंअधिष्ठानस्वरूपआत्माविषे रहैहैं ॥ और मैंसर्वकाअधिष्ठानआत्मा किसीअनात्मवस्तुविषे रहतानहीं ॥ किंतु आपणेमहिमाविषे मैंस्थितहूं ॥ अब नानाप्रकारकेप्रपंचका अद्वितीयआत्मा आधारहै याअर्थकूं अनेकदृष्टांतोंकरिकै स्पष्टकरैहैं ॥ जैसे मालाकेमणिके सूत्रविषेरहैहैं ॥ तैसे यहस्थूलप्रपंच मैंसूत्रआत्माविषेरहैहै ॥ और जैसे पृथिवीकेसूक्ष्मजोकणिकेहैं ते पृथिवीविषे रहैहैं॥ तैसे यह सूक्ष्मप्रपंच कारणस्वरूपमेंईश्वरविषे रहैहै ॥ और जैसे गंगादिकनदीयोंकेजल आपणेनामऔररूपकापरित्यागकरिकै समुद्रविषे स्थितहोवैहैं ॥ तैसे यहअव्याकृतरूपकारण मैंब्रह्मविषे स्थितहोवैहै ॥ और जैसे अग्निविषे धूमरूपअंधकार रहैहै ॥ तैसे सृष्टिकालविषे अनित्यजडदुःखरूप यह प्रपंच सत्चित्आनंदस्वरूपमैंआत्माविषे रहैहै ॥ और जैसे वायुकेआधार गंधऔरतृण रहैहैं ॥ तैसे यहप्रपंच स्थितिकालविषे मैंआत्माविषे रहैहै ॥ इहां गंधकरिकैगंधकाआधार पृथिवीकेसूक्ष्मभाग लेणे और जैसे शरदऋतुविषे आकाशमैंलयभावकूं प्राप्तहुएमेघ रहैहैं ॥ तैसे प्रलयकालविषे यहप्रपंच मैंपरमात्माविषे रहैहै ॥ इसप्रकार आत्माकूं तत्पदार्थईश्वरस्वरूपताकरिकै जगत्कीआधारता कही ॥ अब त्वंपदार्थजीवरूपताकरिकै कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकप्रपंचकीआधारता आत्माविषे तीनदृष्टांतोंकरिकैदिखावैहैं ॥ जैसे सुहृद्पुरुषविषे दुष्टता कल्पितहै ॥ और जैसे दुष्टपुरुषविषे साधुता कल्पितहै ॥ और जैसे बालककेशरीरविषेराक्षसभाव कल्पितहै ॥ इसप्रकार मैंआत्माविषे संपूर्णजगत् कल्पितहै ॥ कैसामैंआत्माहूं ॥ स्वयंप्रकाशहूं ॥ और सुखस्वरूपहूं ॥ और मैंआत्माविषे लेशमात्रभीदुःखनहीं॥शंका॥हेभगवान्! संपूर्णजगत्काआत्मा आपहो॥ताजगत्विषेविद्यमानदुःखकेसाथ आपकासं

बंध काहेतेंनहीं ॥ **समाधान** ॥ अद्वितीयआत्मस्वरूपकेविचारकियेतें याजगत्विषे कबीदुःखहैनहीं ॥ काहेतें जोजोवस्तु उत्पन्न
होवैहै ॥ सोसो जडहोवैहैं ॥ और दुःखकीउत्पत्ति सर्वप्राणियोंकूं प्रसिद्धहै ॥ यातें दुःखभीजडहै ॥ और मैंचेतनआत्माविषे जड
वस्तु परमार्थतेंहोवैनहीं ॥ यातें जडदुःखस्वरूप मैंनहीं ॥ **शंका** ॥ जैसेदुःख उत्पन्नहोवैहै यातेंजडहै ॥ तैसे सुखभी उत्पन्नहोवैहै ॥
यातें सुखभीजडहै ॥ और जडवस्तु परमार्थतेंहोवैनहीं यह पूर्वआपनेंकह्याहै ॥ यातें सुखस्वरूपताभी आत्माकूं नहींहोवैगी ॥
समाधान ॥ जैसे दुःख उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे आत्मास्वरूपहोणेतें सुखकी उत्पत्ति विवेकीपुरुषोंनें अंगीकारनहींकरी ॥ किंतु सुखकूं
नित्यमानैहैं॥ औमूढपुरुषतो आनंदस्वरूपआत्माकेप्रतिबिंबयुक्तअंतःकरणकीवृत्तिकूं सुखरूपमानिकै ताका उत्पत्तिऔरनाश अंगी
कारकरेहै॥**शंका**॥साअंतःकरणकीवृत्तिही मुख्यसुखरूप काहेतेंनहींहोवै ॥**समाधान** ॥ अंतःकरणकीवृत्तिकूं सुखरूपमानणा श्रुति
औरयुक्तिसें विरुद्धहै काहेतें श्रुतितोव्यापकआत्माकूंहीं सुखरूपकहैहै ॥ और परिच्छिन्नवस्तुकीसुखस्वरूपताकूं खंडनकरेहै॥ और
अनुमानरूपयुक्तिसेंभीवृत्तिकूंसुखरूपतासिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतें जोजोउत्पत्तिवालाहोवैहै ॥ सो सुखरूपहोवैनहीं ॥ जैसे दुःख उ
त्पत्तिवालाहै ॥ यातें सुखरूपनहीं ॥ तैसे अंतःकरणकीवृत्तिभी प्रसिद्ध उत्पन्नहोवैहै ॥ यातें सुखस्वरूपनहीं ॥ अब आत्मसाक्षा
त्कारकारण जोवैराग्यहै ॥ ताकी उत्पत्तिवासतें विषयजन्यसुखविषे दुःखरूपताकूं निरूपणकरैहैं ॥ विषयतैंउत्पन्नभयाजोफल
सो सुखरूपहै ॥ अथवा ताफलकेसाधनविषयहीं सुखरूपहैं ॥ तहां प्रथमपक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतें विषयतैंउत्पन्नभयाजोफल सो ती
नकालविषे सुखरूपनहीं ॥ किंतु दुःखरूपहै॥**शंका** ॥ जो विषयजन्यफल सुखरूपनहोवै॥तो विषयतैंहमारेकूं सुख उत्पन्नभयाहै॥
यहलोकोंकाकथन असंगतहोवैगा ॥ और सर्वलोक ऐसाकथनकरेहैं ॥ यातें विषयजन्यफलहीं सुखरूपहै ॥ **समाधान** ॥
विषयतें सुखरूपफल उत्पन्नहोवैनहीं ॥ किंतु ॥ दुःखरूपफल उत्पन्नहोवैहै ॥ तादुःखविषे पूर्वपूर्वभ्रमजन्यसंस्कारोंतें पुरुषों
कूं सुखबुद्धिहोवैहै ॥ सादुःखविषेसुखबुद्धि भ्रमरूपहै ॥ काहेतें अन्यवस्तुविषे अन्यबुद्धिकानाम भ्रांतिहै ॥ यातें विषय
जन्यफल सुखरूपनहीं ॥ और विषयहींसुखरूपहै ॥ यादूसरेपक्षकेखंडनवासतें प्रथम स्त्रीरूपविषयविषे सुखरूपताकाखं

डनकरैहैं ॥ ताकेखंडनहुवे सर्वविषयोंमें सुखरूपताकाखंडन होवैहै ॥ जैसे संपूर्णमल्लोंविषे जोप्रधानमल्लहोवै ॥ ताकेजयकिये हुए संपूर्णमल्लोंतैंजय होवै है ॥ तैसे संपूर्णलोकोंनें सर्वविषयनतें अधिकमान्याहुवा जोस्त्रीरूपविषय॥ ताविषे जबी सुखरूपताकाखंडनभया॥ तबी सर्वविषयनमैं सुखरूपताकाखंडन सिद्धहोवैहै ॥ यातैं प्रथम स्त्रीरूपविषयविषेहीं सुखरूपताकाअभाव कह्याचाहिये ॥ जैसे मृतकमंडूक फूलिके उदरतैंफाटिजावै ॥ सोदुर्गंधीवालाहोवै है ॥ और अधिकमांसवालाहोवै है ॥ और रुधिरविष्ठामूत्रकरिकैयुक्तहोवैहै॥ और कोमलस्पर्शवालाहोवै है॥ और स्निग्धहोवै है ॥ ऐसे दुर्गंधमंडूकचर्मविषे औरस्त्रीकीयोनिविषे विचारकियेतें किंचित्मात्रभी भेदनहीं ॥ किंतु दोनोंसमानहैं ॥ तथापि कामीपुरुषोंकूं जो दुर्गंधमंडूकचर्मतें स्त्रीकीयोनिविषेसुंदरताप्रतीत होवैहै ॥ सो केवल भ्रांतिकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ और रोमोंतैंरहित स्त्रीकेदोनोंस्तनविषे औरपुरुषकेकटिभागकेनीचेस्थितमांसपिंडोंविषे विचारकियेतें किंचित्मात्रभी भेदनहीं ॥ तथापि अविवेकीकामीपुरुषोंकूं जोभेद प्रतीतहोवैहै ॥ सो केवल भ्रांतिकरिकैप्रतीतहोवै है ॥ और रोमोंतैंरहित पुरुषोंकेमुखविषे और स्त्रीयोंकेमुखविषे विचारकियेतें किंचित्मात्रभी भेदनहीं ॥ तथापिअविवेकीकामीपुरुषोंकूं जोभेदप्रतीतहोवैहै ॥ सो केवल भ्रांतिकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ और नपुंसकोंका औस्त्रियोंकाभी विचारकियेतैंकिंचित्मात्रभी भेदनहीं ॥ भ्रांतिकरिके अविवेकीपुरुषोंकूं भेदप्रतीतहोवै है॥ तैसे पुरुषोंकेशरीरविषे औरस्त्रियोंकेशरीरविषे विचारकियेतें किंचित्मात्रभी भेदनहीं है॥ **शंका** ॥ पुरुषशरीरविषे औरस्त्रीशरीरविषे प्रसिद्धभेद लोकोंकूं प्रतीतहोवैहै ॥ तिनदोनोंशरीरोंकूंअभेदकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ **समाधान** ॥ पुरुषशरीरविषे और स्त्रीशरीरविषे तत्वोंकेभेदतैंभेदहै॥अथवा आत्माकेभेदतैंभेदहै॥तहांतत्वोंकेभेदतैंभेदहै यहप्रथमपक्ष बनैंनहीं॥ काहेतैं पंचकर्मइंद्रिय पंचज्ञानइंद्रिय पंचभूत पंचप्राण चारिअंतःकरण याचौबीसतत्वोंकासमुदायहीं स्त्रीपुरुषादिकप्राणीमात्रका शरीरहै॥ यहवार्त्ता पूर्वदेहकेखंडनविषे कहिआयेहैं॥यातैं तत्वोंकेभेदतैं स्त्रीपुरुषादिकशरीरोंविषे भेद सिद्धहोवैनहीं॥और आत्माकेभेदतैंभेदहै यहदूसरापक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतें स्त्रीपुरुषादिकसंपूर्णप्राणीमात्रकेहृदयदेशविषेसत्चित्आनंदस्वरूपमैंआत्मा स्थितहूं॥कैसामैंआत्माहूं॥अहं याज्ञानकाविषयहूं॥ और अहं याशब्दकालक्ष्यहूं ॥ और सर्वत्र व्यापक

हूं ॥ और आधारतैंरहितहूं॥इसप्रकार स्त्रीशरीरविषे औरपुरुषशरीरविषे चौबीसतत्वोंकी तथा आत्माकी समानताहुवेभी कामरू
पपिशाचकेवशहुवे पुरुषऔरस्त्रियां यहस्त्रीहै यहपुरुषहै याप्रकारकेभेदकूंकल्पनाकरिकै मुखतैंउत्पन्नहुयीलालोंकूं परस्पर पानकरै
हैं॥ और स्वेदादिकमलोंकूं ग्रहणकरै हैं॥ और जैसे मेष परस्पर शरीरकाताडनकरैहैं॥ और जैसे महादेवकीप्रसन्नतावासतै पिशाच
परस्पर शरीरकाताडनकरैहैं॥ तैसे स्त्रीऔरपुरुष कामकरिकैउन्मत्तहुवे परस्पर शरीरकाताडनकरैहैं ॥ याप्रकारका व्यापारकरते
हुवे तिनोंकेअंगोंतैं वीर्यरूपहोइकै अतिहास्ययुक्तपुरुषकीन्यांई काम निकसैहै ॥ और कबी नहींभीनिकसैहै॥ तात्पर्ययहहै॥ जैसे म
हाराजाकीसभाविषे स्थितपुरुषोंकूं किसीनिमित्तसैं अतिहास्यकावेग उत्पन्नहोवैहै॥ जबी ताहास्यकेवेगकूं नहींसहारिसकेहैं॥ तबी
सभातैंबाहरिनिकसिजावैहैं ॥ और जबी सहारिसकेहैं ॥ तबी सभाविषेहींस्थितहोवैहैं ॥ बाहरिनहींनिकसैहैं ॥ तैसे शरीरके
भीतरिस्थित जोदेवतावोंकीसभा ॥ ताकेमध्यविषेस्थितहुवाकाम जैसे महादेवकेविनोदवासतै नाटककूं रचाथा॥ तैसे नाटककूंरचै
है॥ तानाटककरिकै विपरीतआचरणकूंप्राप्तभये स्त्रीऔरपुरुषोंकूंदेखिकरिकै ॥ हास्यकेवेगकूं नसहारताहुवाकाम वीर्यरूपहोइके बा
हरिनिकसैहै ॥ याकहणेतैं यहसिद्धभया ॥ मुखकेलालादिकोंकूं अधरामृतरूपकरिकै कथनकरताहुवा कामशास्त्रकाभी पुरुषोंकेवैरा
ग्यउत्पत्तिविषेहीं तात्पर्यहै ॥ जैसे लोकविषे आपणेविपरीतआचरणकूंश्रवणकरिकै ताविपरीतआचारणतैं पुरुष निवृत्तहोवैहैं॥ तै
से कामीपुरुषकेविपरीतआचरणकाकथनरूपउपहास्यकूंकरताहुवाकामशास्त्रकाभी ताविपरीतआचरणतैंनिवृत्तिविषेहीं परमतात्पर्य
है ॥ ताविपरीतआचरणविषे तात्पर्यनहीं ॥ शंका ॥ तामैथुनधर्मतैं यद्यपि सुखकीप्राप्तिरूपपुरुषार्थ होवैनहीं ॥ तथापि कामकीशां
तिरूपदुःखकीनिवृत्तिस्वरूपपुरुषार्थ ताकरिकैप्राप्तहोवैहै॥ समाधान॥मैथुनधर्मतैं दुःखकीनिवृत्तिभी होवैनहीं ॥ उलटा क्लेशकीप्रा
प्तिहोवै है॥जैसे पिशाचादिरूपग्रहकरिकेयुक्तपुरुषताग्रहकेबलतैं विपरीतचित्तहुवे परस्पर सन्मुखहोइके अथवाविमुखहोइके आप
णेकटिभागोंका ताडनकरैहैं॥तातैं अतिक्लेशकूंप्राप्तहोइकरिकै पिशाचरूपग्रहतैंनहींछूटेहुवेभीतेपुरुषसुखीपुरुषकीन्यांईपूर्वव्यापारतैं
रहितहुवे स्थितहोवैहैं॥तैसे कामरूपग्रहतैंनहींछूटेहुवेभी कामीस्त्रीपुरुष पूर्वव्यापारतैंनिवृत्तहुवे सुखीकीन्यांई प्रतीतहोवैहैं॥यातैंकाम

की निवृत्तिरूपदुःखकीनिवृत्तिभी मैथुनधर्मतैंहोवैनहीं॥और जैसे घृतकाष्ठादिकोंकरिकै अग्निकीशांतिहोवैनहीं॥किंतुउलटावृद्धिहोवै है ॥तैसे मैथुनधर्मकरिकै कबीभी कामकीनिवृत्तिहोवैनहीं॥उलटा ताकरिकै कामकीवृद्धिहोवैहै॥ किंवा॥प्रथम जावस्तुविषे पुरुषकीइच्छा होवैहै॥तावस्तुविषे पश्चात् तिसपुरुषकीप्रवृत्तिहोवैहै॥यहनियमहै॥यातैं इच्छा कारणहै॥और प्रवृत्ति ताकाकार्य है॥और कारणतैंविना कार्यहोवैनहीं॥यातैं कार्यतैं कारणकाअनुमानहोवैहै ॥ जैसे नदीकेजलकीवृद्धितैं वर्षाका अनुमानहोवैहै तैसे स्त्रीऔरपुरुषोंकेकामकी जोनिवृत्तिहुईहोवै ॥ तौ पुनःमैथुनधर्मविषे प्रवृत्ति नहुईचाहिये ॥ और दिनदिनविषे इनोंकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ यातैं ऐसाजान्याजावै है ॥ इनोंके कामकीनिवृत्तिनहींभई ॥ शंका ॥ जैसे मैथुनधर्मविषे प्रवृत्तिरूपहेतुतैं स्त्रीकेतथापुरुषके कामकाअनुमानहोवैहै ॥ तैसे मैथुनधर्मतैंनिवृत्तिरूपहेतुतैं कामकेअभावकाभी अनुमानहोइसकेहै ॥ समाधान ॥ निवृत्तिरूपहेतुतैं कामकाअभाव सिद्धहोवैनहीं काहेतैं जोकामकेअभावविना निवृत्तिनहोती ॥ तौ निवृत्तिरूपहेतुतैं कामकेअभावका अनुमानहोता ॥ सानिवृत्ति कामकेअभावविनाहींहोवैहै ॥ यातैं निवृत्तिरूपव्यभिचारीहेतुतैं कामकेअभावकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ इहां यहतात्पर्यहै ॥ मैथुनधर्मतैं जोस्त्रियोंकी तथा पुरुषोंकी निवृत्तिहोवैहै ॥ सानिवृत्ति सुखरूपफलकीप्राप्तितैंनहीं ॥ काहेतैं फलकी प्राप्तिहुए पुनःसाधनकीइच्छाहोवैनहीं॥ और इहां पुनःसाधनकीइच्छादेखतीहै ॥ यातैं सुखरूपफलकीप्राप्तितैं सानिवृत्तिनहीं ॥ तैसे कामकेअभावतैंभी सानिवृत्तिनहीं ॥ किंतु जितनेपर्यंत स्त्रीतथापुरुषोंकूं शरीरविषे श्रम उत्पन्ननहींभया॥ तबपर्यंत मैथुनधर्मविषे परस्पर प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और जबी श्रमयुक्तहोवैहैं ॥ तबी तातैंनिवृत्तहोवैहैं॥ यातैं केवल श्रमकरिकैनिवृत्तिहोवैहै ॥ सुखकीप्राप्तिकरिकै अथवाकामकेअभावकरिकै सानिवृत्ति होवैनहीं॥ दृष्टांत ॥जैसे परस्परयुद्धकरतेहुवे दोनोंमल्लोंकी युद्धतैंनिवृत्तिहोवैहै ॥ सानिवृत्ति सुखरूपफलकीप्राप्तिकरिकै अथवाकामनाकेअभावकरिकै होवैनहीं ॥ किंतु केवल श्रमकरिकैसानिवृत्तिहोवैहै ॥ यातैं निवृत्तिरूपहेतुतैं कामकाअभाव सिद्धहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ वीर्यकेबाह्यनिकसणेविषे किंचिन्मात्रभी सुखहोवैनहीं ॥ उलटा दुःखहोवैहै॥ तथापि तादुःखकूं भ्रांतिकरिकैसुखमानेहैं ॥ और ताभ्रांतिसिद्धसुखतैं अधिकसुख विष्ठामूत्रकेपरित्यागविषे होवैहै ॥ काहेतैं वीर्यकेपरित्यागहुयेपीछे पुरुषोंकूं पश्चात्ताप तथा

बलकीहानि होवैहै ॥ और विष्ठामूत्रकेपरित्यागहुयेपीछे पश्चात्तापादिक होवैनहीं ॥ उलटा प्रसन्नताहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे स
मीपकिसीवृक्षविषे जबी मधुकीप्राप्तिहोवै ॥ तबी मधुकीप्राप्तिवासतै पर्वतकेऊपरिजाणा व्यर्थहै ॥ तैसे वीर्यकेपरित्यागजन्यसुख
तैं विष्ठामूत्रकेपरित्यागजन्य अधिकसुखकेनित्यप्राप्तहुवेभी वीर्यपरित्यागजन्यसुखकीप्राप्तिवासतै पुरुषोंकायत्न व्यर्थहै ॥ शंका ॥
जैसा रतितैंसुख उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसा विष्ठामूत्रकेपरित्यागतैं सुखहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ वीर्यकेपरित्यागविषे जैसे तैनें रतिशब्द
कीअर्थता मानीहै ॥ तैसे विष्ठामूत्रकेपरित्यागविषे रतिशब्दकीअर्थता किसदूषणकेभयतैं तैनें नहींमानीती ॥ किंतु मानीचाहिये॥
काहेतैं सुखकेअनुकूलव्यापारत्वरूप रतिशब्दकेप्रवृत्तिकानिमित्त वीर्यकेपरित्यागविषे तथा विष्ठामूत्रकेपरित्यागविषे समानहै॥किंवा
शब्दसहितअपानवायुकेपरित्यागविषे जोसुखहोवैहै ॥ सोसुख संपूर्णदेवांगनाकेसंयोगविषेभीहोवैनहीं ॥ यातैं जैसेभ्रांतपुरुषोंनें दे
वांगनाजन्यसुखकीप्राप्तिवासतै यज्ञादिककर्म करतेहैं ॥ तैसे अपानवायुजन्यसुखकीप्राप्तिवासतै यज्ञादिककर्म काहेतैंनहींकरते ॥
तात्पर्ययह ॥ तृणादिकतुच्छवस्तुकीप्राप्तिवासतै जोपुरुष चिंतामणिकापरित्यागकरेहै ॥ ताबुद्धिहीनपुरुषकूं चिंतामणि शापदेवैहै ॥
तैसे अपानवायुके निर्गमनजन्यसुखतैंभी अतिनिकृष्टजोदेवांगनाजन्यसुख॥ तातुच्छसुखकीप्राप्तिवासतै चित्तशुद्धिद्वारामोक्षकेसाध
नयज्ञादिककर्मोंकूं जोपुरुष करैहै ॥ ताअल्पबुद्धिपुरुषकूं यज्ञादिककर्मभी शापदेवैहैं ॥ किंवा ॥ जोवादी विषयजन्यसुखकूंमानेहै ॥
तातैं यहपूछाचाहिये ॥ तासुखका स्त्रीकाशरीर तथापुरुषकाशरीर कारणहै ॥ अथवा तिनदोनोंशरीरोंकासंबंध कारणहै ॥ अथवा
प्रजाकीउत्पत्तिकारणहै ॥ अथवासमानजातिवालीप्रजाकीउत्पत्ति कारणहै ॥ तहां स्त्रीकाशरीर तथापुरुषकाशरीर सुखकाकारण
है ॥ यहप्रथमपक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतैं जोशरीरविषे सुख उत्पन्नहोताहोवै ॥ तौ सुखकीप्राप्तिवासतै स्त्री पुरुषकेसमीप गमनकरैहै॥
सो नहोणाचाहिये ॥ तैसे पुरुष सुखकीप्राप्तिवासतै स्त्रीकेसमीप गमनकरैहै ॥ सो नहोणाचाहिये ॥ काहेतैं सुखकासाधन अ
पनाशरीर दोनोंकाविद्यमानहै ॥ यातैं देहविषे किसीस्त्रीकूं तथापुरुषकूं सुखहैनहीं ॥ और स्त्रीपुरुषकासंयोग सुखकाकारणहै ॥ यह
दूसरापक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतैं जोस्त्रीपुरुषकासंयोगहीं सुखकाकारणहोवै ॥ तौ मैथुनधर्मतैंअनंतरभी तासंयोगतैं सुखहोणाचाहि

ये ॥ और सुखहोवैनहीं ॥ उलटा पश्चात्तापहोवै है ॥ इसीकारणतैं महात्मापुरुषोंनैं कह्याहै ॥ श्लोक ॥ भोजनांतेश्मशानांते मैथुनांतेच यामतिः ॥ सामतिःसर्वदाचेत्स्यात् नरोनारायणोभवेत् ॥ १ ॥ अर्थयह भोजनकेअंतविषे तथाश्मशानभूमिविषे तथामैथुनकेअंत विषे जैसि पुरुषकूं दोषदृष्टिहोवैहै ॥ सादोषदृष्टि जोपुरुषकूं सर्वकालविषेरहै ॥ तौ यहपुरुष साक्षात् परमेश्वरस्वरूपहोवै ॥ परंतु ऐसीदृष्टि सर्वदारहैनहीं ॥ १ ॥ यातैं स्त्रीपुरुषकासंयोगभी सुखकाकारणनहीं ॥ और प्रजाकीउत्पत्ति सुखकाकारणहै ॥ यहतीसरापक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतैं जोप्रजाकीउत्पत्ति सुखकाकारणहोवै ॥ तौ मत्कुण औरकीट तथायूकादिक प्रजाकीउत्पत्तितैंभी हमारेकूं सुखहोणाचाहिये ॥ और होवैनहीं ॥ उलटा दुःखहोवैहै ॥ यातैं प्रजाकीउत्पत्तिभी सुखकाकारणनहीं ॥ और सजातीयप्रजाकीउत्पत्ति सुखकाकारणहै ॥ यहचतुर्थपक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतैं लोकविषे पुत्रादिरूपप्रजावालेभीपुरुष पुत्रादिकोंकरिकै दुःखीदीखतेहैं ॥ तात्पर्ययह॥प्रतिकूलपुत्रादिकतौ प्रसिद्ध पितामाताके दुःखकेकारणहोवैहैं॥और अनुकूलपुत्रादिकभी पालनपोषणकीचिंताद्वारा पितामाताके दुःखकेकारणहोवैहैं॥तहां पूर्वग्रंथकरिकै स्त्रीरूपविषयविषे सुखकीकारणताखंडनकरी॥ अब रसनइंद्रियकेविषयरसादिकोंविषे सुखकीकारणता खंडनकरे हैं॥ जैसे स्त्रीरूपविषय यापुरुषके सुखकाकारणनहीं॥तैसे अन्नऔरजलभी याके सुखकेकारणनहीं ॥ काहेतैं भोजनकियाहुवाअन्न तथापानकऱ्याहुवाजल उत्तरकालविषे यापुरुषके दुःखकेकारण प्रतीतहोवैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ भोजन करिकैतृप्तहुएपुरुषकूं जबीकोई अन्नपरोसैहै ॥ तबी ऊचैस्वरतैंनिवारणकरेहै ॥ यातैंयहजाण्याजावैहै ॥ यापुरुषका अन्नविषे द्वेषहै ॥ और जो द्वेषकाविषयहोवैहै ॥ सो दुःखकासाधनहोवैहै॥ जैसे सिंहसर्पादिकहैं ॥ यातैं अन्नादिक सुखकेकारणनहीं ॥ शंका ॥ जो अन्नऔजल सुखकेकारणनहोवैं ॥ तौ सुखकीप्राप्तिवासतै अन्नजलविषे लोकोंकीप्रवृत्ति नहींहोणीचाहिये ॥ और सर्वलोकोंकी अन्नजलविषे प्रवृत्तिदीखतीहै ॥ यातैं अन्नऔजल सुखकेहीकारणहैं ॥ समाधान ॥ अन्नऔजल सुखकेकारणनहीं ॥ किंतु अन्नजलतैं किंचित्काल क्षुधातृषाकीशांतिहोवैहै ॥ जैसे प्रज्वलितअग्निविषे पायाहुवाकाष्ठोंकासमूह क्षणमात्र ताअग्निकीऊचीज्वालावोंकूं निवारणकरेहै ॥ और जैसे जलकरिकेगीलीपृथिवीकूं वायु रूक्षकरे है॥ तावायुकाअनादरकरिकै जलकासिंचन क्षणमात्र ता

पृथिवीकीरूक्षताकूं निवारणकरेहै॥ इसप्रकार शरीरकेभीतरस्थित अग्निऔप्राणभी अप्रतिबद्धहुवे प्राणियोंकेक्षुधाऔतृषाकूं उत्पन्न करेहैं ॥ तहां प्राण क्षुधाकूंउत्पन्नकरेहै ॥ और अग्नि तृषाकूंउत्पन्नकरेहै ॥ और पुरुषोंनें शरीरकेभीतरपाया जोअन्नऔजल ॥ ताकरिकै किंचित्काल क्षुधाऔतृषाकीशांतिहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अन्नऔजलकेपड़नेतें प्राणाग्निकानिरोधहोवैहै ॥ तानिरोधतें क्षणमात्र क्षुधातृषाकीशांतिहोवैहै ॥ ताक्षुधातृषाकासहनरूपशांतिविषेही अल्पबुद्धिभ्रांतपुरुष सुखकूंमानेहैं ॥ यातें रसनइंद्रियकेविषय अन्नादिकोंविषे सुखकीकारणतानहीं ॥ याप्रकार शब्दादिकविषयोंकेप्राप्तहुवेभी पुरुषोंकूंसुख उत्पन्नहोवैनहीं ॥ किंतु क्षणमात्र इच्छाकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ शब्दादिकविषयोंकीइच्छाकरिकै प्रथम चित्त चंचलरहैहै ॥ तेशब्दादिकविषय जबीप्राप्तहोवैहैं ॥ तबी क्षणमात्र चित्तकेचंचलताकी निवृत्तिहोवैहै ॥ ताचंचलताकीनिवृत्तिरूप चित्तकीअवस्थाकूंहीं मूढपुरुष सुखरूपमानेहैं ॥ और ज्ञानीपुरुषतो ऐसेजाणेहैं ॥ चित्त भूतोंकेसत्वगुणकाकार्य है ॥ यातेंनिर्मलहै ॥ तथापि शब्दादिकविषयोंकीइच्छाकरिकै चलायमानहुवाचित्त आनंदरूपआत्माकेप्रतिबिंबकूं ग्रहणकरैनहीं॥ और ताशब्दादिकविषयोंकी जबीप्राप्तिहोवैहै ॥ तबी किंचित्काल इच्छाकेनिवृत्तिहुवे चित्त स्थिरहोवैहै॥ तास्थिरचित्तविषे आनंदरूपआत्माका प्रतिबिंबहोवैहै॥ जिसआनंदरूपआत्माकेप्रतिबिंबकरिकै दुःखरूपचित्तभी सुखकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ सोबिंबभूतआत्माही मुख्यसुखस्वरूपहै ॥ याअभिप्रायतेंही शास्त्रविषे विषयप्राप्तिकालविषेभी ज्ञानीकूं नित्यसुखकाअनुभव कह्याहै॥ और अज्ञानीकूं क्षणिकसुखकाअनुभव होवैहै ॥ यातें शब्दादिकविषयनतें किंचित्मात्रभी पुरुषोंकूं सुखउत्पन्नहोवैनहीं॥ किंतु दुःखरूपअंतःकरणकेपरिणामविषेही भ्रांतपुरुषोंनें सुखबुद्धिकरीहै ॥ किंवा ॥ विषयजन्यअंतःकरणकापरिणामरूपफलविषे उत्पत्ति औनाश तथापरिच्छिन्नता रूपदोषरहैहैं॥ यातें ताविषे बुद्धिमान्पुरुषोंकूं सुखबुद्धिकैसेहोवै ॥ किंतुनहींहोवैगी ॥ काहेतें श्रुतिविषे व्यापकआत्माकूंही सुखस्वरूपकह्याहै॥ किंवा ॥ व्याकरणकीरीतिसें सुखशब्दकाअर्थकरियै ॥ तौभी अंतःकरणकेपरिणामकूं सुखस्वरूपतासिद्धहोवैनहीं॥ काहेतें जाकरिकै इंद्रियोंकेगोलक प्रसन्नहोवैहैं ॥ सो सुखकहियेहै ॥ और विषयजन्यसुखकेविचारकियेतें उलटा दोषचिंताकरिकै हृदयरूपगोलक तपायमानहोवैहै ॥ यातें जितनेविषयजन्यसुखहैं ॥ तेसंपूर्ण दुःख

रूपहैं ॥ और पूर्वकहीयुक्तितें किसीकारणकरिकै सुख उत्पन्नहोवैनहीं ॥ किंतु सुख नित्यहोवै है ॥ और जोउत्पन्नहोवै है ॥ सो सुख रूपनहीं ॥ यातें ऐसानित्यसुखस्वरूप मैंआत्माहूं ॥ पुनःकैसामैंआत्माहूं ॥ सत्चित्अद्वितीयस्वरूपहूं ॥शंका॥ सत् चित् आनंद या प्रकारकेशब्दोंकेभेदतें आत्माकेस्वरूपकाभेद काहेतैंनहींहोवै ॥ समाधान ॥ बुद्धिमान्पुरुषोंकूं सत्यादिकशब्दनकेभेदतें सत्चित् आनंदरूपअर्थोंकीभेदबुद्धि कभीभीउत्पन्नहोवैनहीं ॥ काहेतें शब्दोंकेभेदहुएभी अर्थकीएकता लोकविषेदेखीहै ॥ जैसे एकही पुरुष व्यक्तिविषे पिता पुत्र पति भ्राता याप्रकारकेभिन्नभिन्नशब्द पुत्र पिता स्त्री भ्रातादिकोंनैं क्रमतेंकथनकरते हैं॥तथापि ताशब्दोंकेभेद तें पुरुषव्यक्तिकाभेदहोवैनहीं ॥तैसे मैंआत्माविषे सत् चित् आनंद परिपूर्ण याप्रकारकेभिन्नभिन्नशब्द शास्त्रनैं कथनकरेहैं ॥ तथापि सत्यादिकशब्दोंकेभेदतें मैंआत्माकाभेदहोवैनहीं ॥ अब जानिमित्तकूंग्रहणकरिकै सत्यादिकशब्द आत्माकूंबोधनकरै हैं तानिमित्तकूं दिखावै हैं ॥ जैसे वंध्यापुत्र असत्यहै ॥ तैसे मैंआत्मा असत्यनहींहूं ॥ किंतु असत्यतैंविलक्षणहूं॥ताविलक्षणतारूपनिमित्तकूंग्रहणक रिकै सत्यशब्द मैंआत्माविषे प्रवर्त्तै है ॥ और जैसेघटादिकजडपदार्थ अन्यकरिकैप्रकाश्यहैं॥ तैसे मैंआत्मा अन्यकिसीकरिकै प्रका श्यनहींहूं ॥ यातें मैंआत्मा जडनहींहूं ॥ किंतु घटादिकजडपदार्थोंतैंविलक्षणहूं॥ताविलक्षणतारूपनिमित्तकूंग्रहणकरिकै चेतनशब्द मैंआत्माविषे प्रवर्त्तै है॥और जोवस्तु प्रतिकूलहोवै है॥सो सुखशब्दकाअर्थ होवैनहीं॥ किंतु दुःखशब्दकाअर्थहोवै है ॥ जैसे सिंहसर्पा दिकहैं ॥ औजोवस्तु अन्यकाशेषहोवै है॥सोभी सुखशब्दकाअर्थहोवैनहीं॥ किंतु दुःखशब्दकाअर्थहोवै है ॥जैसे स्त्रीधनादिकहैं ॥ ऐसा दुःखरूप मैंआत्मानहींहूं॥ किंतु दुःखतैंविलक्षणहूं ॥यातें ताविलक्षणतारूपनिमित्तकूंग्रहणकरिकै आनंदशब्द मैंआत्माविषे प्रवर्त्तै है ॥ यारीतिसैंहीआत्मशब्द एकशब्द अद्वितीयशब्द अस्थूलशब्द अनणुशब्द भेदरहितसच्चिदानंदस्वरूपमैंआत्माविषे प्रवर्त्तै हैं॥इ हांयहअभिप्रायहै ॥ आत्माकेप्रतिपादकशब्द दोप्रकारकेहोवै हैं ॥ एकविधिमुख औरदूसरेनिषेधमुख तहां विधिमुखसत्यादिकश ब्दतौ प्रथम आत्माकाबोधनकरिकै पश्चात् असत्यादिकोंतैंव्यावृत्ति बोधनकरैहैं॥ और निषेधमुखअद्वितीयादिकशब्दतौ प्रथम सा क्षात्व्यावृत्तिकूंबोधनकरिकै अर्थतें आत्माकूंबोधनकरैहैं ॥ व्यावृत्तिनाम भेदकाहै ॥ यातें सत्यादिकशब्दोंकेभेदहुवेभी तिनोंकेअर्थ

कामेदनहीं ॥ किंतु एकहीआत्माकूं सर्वसत्यादिकशब्द बोधनकरैं हैं यहसिद्धभया॥अब युक्तितें सत्यादिकशब्दोंकेअर्थकाअभेद नि
रूपणकरैं हैं ॥ तहां सुखतें प्रकाश भिन्ननहीं ॥ काहेतें जोसुखतें प्रकाश भिन्नहोवै ॥ तौ दुःख तथादुःखकेसाधनसर्पादिकोंकीन्यांई
प्रकाशभी प्रतिकूलहोवैगा ॥ अथवा सुखकेसाधनस्त्रीतथाधनादिकनकीन्यांई अन्यभोक्ताकाशेषभूतहोवैगा ॥ और अनुकूलतनहो
णेतें प्रतिकूल तथाअन्यकाशेषभूत प्रकाश हैनहीं ॥ यातें प्रकाश सुखतैंभिन्ननहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ सुखकेसाधन जैसेस्रक्चंदनादिक
विषय ॥ ते अनुकूलकहियेहैं ॥ और तिनविषयोंकेसंबंधतें उत्पन्नभयी जाअंतःकरणकीवृत्ति ॥ सा अनुकूलतरकहियेहै ॥ और ति
नोंकाप्रकाशक आनंदस्वरूपआत्मा अनुकूलतम कहियेहै ॥ यातें प्रतिकूलता तथाअन्यशेषता दोनों प्रकाशविषे बनैंनहीं ॥ तर तम
यहदोनोंशब्द अधिकताकेवाचकहैं ॥ **शंका** ॥ प्रकाशऔरसुखका परस्परभेद मतहोवै ॥ तथापि तिनदोनोंधर्मोंतें आत्मारूपधर्मी
भिन्नकाहेतैंनहींहोवै ॥ **समाधान** ॥ यहआत्मा प्रकाशस्वरूपतैंभिन्ननहीं ॥ काहेतें आत्मा सर्वअंतःकरणकीवृत्तियोंका प्रकाशकहै॥
और जोप्रकाशतैंभिन्नहोवै है ॥ सो सर्ववृत्तियोंकूंप्रकाशकरैनहीं ॥ जैसे बुद्धिआदिकहैं ॥ और जोआत्मा प्रकाशतैंभिन्नहोवै ॥ तो अ
प्रकाशस्वरूपहोणेतें घटादिकोंकीन्यांई अनात्मस्वरूप होवैगा ॥ और घटादिकोंकीन्यांई अनात्मस्वरूपता आत्माकी वादीकूं
भी अंगीकारनहीं ॥ यातें प्रकाशतें आत्मा भिन्ननहीं ॥ किंतु प्रकाशस्वरूपहै ॥ और जैसे सुखतैंप्रकाशभिन्ननहीं यहपूर्वकह्या ॥
तैसे प्रकाशतें सुखभी भिन्ननहीं ॥ काहेतें जो प्रकाशतैंभिन्नहोवैहै ॥ सो अप्रकाशस्वरूपहोवै है ॥ और अप्रकाशमानसुखकूं सुख
रूपता बनैंनहीं ॥ **शंका** ॥ जैसे दीपककरिकै घटादिकोंकीप्रकाशमानताहोवै है ॥ तहांघटादिकोंतैं दीपकभिन्नहै ॥ तैसे सुखतैंभिन्न
प्रकाशकरिकैभी सुखकीप्रकाशमानता बनैंहै ॥ सुखप्रकाशका अभेदमानणा निष्फलहै ॥ **समाधान** ॥ जैसे रज्जुआदिक व्यावहा
रिकपदार्थ औरसर्पादिक कल्पितपदार्थ आपणेतैंभिन्नप्रकाशकरिकै प्रकाशमान होवैहैं ॥ तैसे आपणेतैंभिन्नप्रकाशकरिकै सुख प्र
काशमानहोवैनहीं ॥ किंतु आपणेतैंअभिन्नप्रकाशकरिकै सुख प्रकाशमानहोवैहै ॥ यातें सुखऔप्रकाशका अभेदहै ॥ इहांयहतात्प
र्यहै ॥ रज्जुआदिकदृश्यपदार्थ चेतनविषेकल्पितहैं ॥ यातैंतिनोंकी भिन्नप्रकाशकरिकैप्रकाशमानता संभवै है ॥ और आत्मस्वरूप

सुख कल्पितहैनहीं ॥ किंतु सर्वकाअधिष्ठानहै ॥ यातैं भिन्नप्रकाशकरिकै ताकी प्रकाशमानता बनैंनहीं ॥ और जैसे प्रकाशतैं आ त्मा भिन्ननहीं ॥ तैसे सुखतैंभी आत्मा भिन्ननहीं ॥ किंतु अभिन्नहै ॥ प्रकाशस्वरूपसुखतैं जोआत्मा भिन्नहोवै ॥ तो घटादिकोंकी न्यांई अनात्मा होवैगा ॥ और आत्माकीअनात्मता अंगीकारहैनहीं ॥ यातैं प्रकाश सुख आत्मा यातीनोंका अभेदहै यहासंद्दभ या ॥ इहां प्रकाशशब्दकरिकै चैतन्यकाग्रहणकरणा ॥ और सुखशब्दकरिकै आनंदकाग्रहणकरणा ॥ और आत्मा आनंद प्रकाश यहतीनों सत्तातैंभिन्ननहीं ॥ काहेतें जैसे सत्तातैंभिन्नहोणेतैं बंध्यापुत्र असत्यहै ॥ तैसे सत्तातैंभिन्नहुवे आत्मा आनंद प्रकाशकूंभी बंध्यापुत्रकीन्यांई असत्यताप्राप्तहोवैहै ॥ और आत्माकीअसत्यता कोईअंगीकारकरैनहीं ॥ और जैसे आत्मा आनंद प्रकाश य हतीनों सत्तातैंभिन्ननहीं ॥ तैसे सत्ताभी यातीनोंतैंभिन्ननहीं ॥ काहेतें जो आत्माआनंदप्रकाशतैं सत्ता भिन्नहोवै ॥ तो घटादिकों कीन्यांई अनात्मादुःखजडस्वरूपहोवैगी ॥ और अनात्मास्वरूपहुईसत्ता बंध्यापुत्रकेसमान असत्यहोवैगी ॥ तात्पर्ययह ॥ आत्मा नाम आपणेस्वरूपकाहै ॥ आपणेस्वरूपतैं जबी सत्ताभिन्नहुई ॥ तबी बंध्यापुत्रकीन्यांई असत्यहीहोवैगी ॥ यातैं सत्ता आत्मातैं भिन्ननहीं ॥ सो सत्‌चित्‌आनंदस्वरूप मैंपरमात्माहूं॥ और देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहूं ॥ यातैं मैंपरमात्मा अनंतहूं ॥ और जैसे रज्जुविषे सर्प कल्पितहै॥ तैसे मैंअनंतआत्माविषे सर्वप्रपंच कल्पितहै ॥ और कारण कार्य देश कालादिकोंकेवाचक सर्वशब्दोंका तथासर्वज्ञानोंका मैंपरमात्माही विषयहूं ॥ याकारणतैंही वेदांतवाक्योंतैं तथावेदांतवाक्यजन्यज्ञानतैं परिपूर्णआत्माकूंभी मैंदेखता भयाहूं ॥ यातैं मैंकृतकृत्यहूं ॥ तात्पर्ययह॥ जिसआत्मस्वरूपकेनिश्चयकरणेवासतै यादुःखरूपशरीरविषे हमनैं प्रवेशकियाथा ॥ सो आत्मसाक्षात्कार अबीहमारेकूं प्राप्तभयाहै॥ यातैं किंचित्‌मात्रभी हमारेकूं अबीकर्तव्यनहींरह्या ॥ औरयहपरामात्मादेव गु रुऔरवेदांतवाक्यजन्यज्ञानतैं अपरोक्ष आपणेस्वरूपकूंदेखताभया ॥ याकारणतैंही इंद्र यानामकूंप्राप्तहुवाआनंदआत्मा ब्रह्म रूपहोताभया ॥ काहेतें ब्रह्मकेजानणेहारेकूं ब्रह्मरूपता श्रुतिविषेप्रसिद्धहै ॥ और ताइंद्रनामापरमात्माकूं अग्निआदिकदेवता तथादेवभाववालेमनुष्य इंद्र यापरोक्षनामतैं कथनकरतेभये ॥ जाकारणतैं यहदेवता प्रत्यक्षनामग्रहणतैं द्वेषमानेहैं ॥ जैसे लोक

विषेभी महान्पुरुषोंकूं आचार्यादिकपरोक्षनामोंकरिकै जोबुलावै है॥ ताउपरि तेमहान्पुरुष प्रसन्नहोवैहैं ॥ और जो देवदत्त तथा यज्ञदत्त याप्रकार साक्षात्नामकरिकै महान्पुरुषोंकूं बुलावै है ॥ ताउपरि द्वेषकरेहैं॥ तात्पर्ययह ॥ जबी देवता तथाशिष्टपुरुषभी प्रत्यक्षनामग्रहणतैं द्वेषकरेहैं ॥तबी परमेश्वर प्रत्यक्षनामग्रहणतैं द्वेषकरैहै ॥ याविषे क्याआश्चर्यहै ॥ और इंद्रनामापरमेश्वरकूं इंद्रनामकरिकै यहदेवता कथनकरै हैं ॥ और आपभी प्रत्यक्षनामग्रहणतैं द्वेषकरैहैं ॥ याकारणतैं विवेकीपुरुषोंनैं परोक्षप्रिय देवताकहेहैं ॥ और यालोकविषेभी सन्मार्गविषेविचरणेहारे जेपुरुषहैं ॥ ते देवताकेसमानहैं॥ तिनोंविषेभी देवतावोंकीन्यांई नियमकरिकै परोक्षनामग्रहणतैंहीं प्रसन्नतादेखीहै॥याकारणतैंहीं पितातथाआचार्यादिकोंके साक्षात्देवदत्तादिकनामोंकूं बुद्धिमान्पुरुषकथनकरैनहीं ॥ तैसे स्त्रियांभी आपणेपतिआदिकोंके साक्षात्देवत्तादिकनामोंकूं कथनकरैंनहीं॥ किंतु स्वामीतैं आदिलेकेजेपरोक्षनामहैं॥तिनोंकरिकै व्यवहारकूंसिद्धकरेहैं ॥ याप्रकार सनकादिकऋषि सात्विकीप्रजाकूं आत्माकाउपदेशकरिकै कहतेभये ॥हे आत्मज्ञानविषेअधिकारीप्रजा॥ तुमारेतांई अध्यारोपअपवादकरिकै आत्माकास्वरूप अबपर्यंत हमोंनैं कथनकऱ्या ॥ सोकैसाआत्माहै॥महावाक्योंका तथामहावाक्यजन्यवृत्तिज्ञानका विषयहै॥ तथापि तुमोंनैं घटादिकोंकीन्यांई स्वरूपतैं आत्मा विषयरूपनहींजानणा॥ किंतु वेदांतकेतात्पर्यज्ञानद्वारा अविषयरूपकरिकैहीं आत्मा जानणेयोग्यहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे शृंगकूंग्रहणकरिकै गौ दिखाईजावैहै ॥ तैसे आत्माकूंदिखावणेमैं कोईसमर्थनहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! आपसर्वशक्तिसंपन्नहो ॥ यातैं गौकीन्यांई सक्षात्आत्माकूं हमारेतांई बोधनकरो ॥ समाधान ॥ हेअधिकारीप्रजा!॥ अध्यारोपअपवादरूपमायातैंविना कौणपुरुष ऐसाससमर्थहै ॥ जो अद्वितीयआत्माकूं कथनकरिसकै ॥और श्रवणकरिसकै? ॥ किंतु अध्यारोपअपवादकरिकैहीं आत्माकूं गुरुशास्त्र कथनकरै हैं ॥ और अधिकारी श्रवणकरैहैं ॥ याकारणतैंहीं तैत्तिरीयश्रुतिविषे आत्मा मनतथावाणीका अविषयकह्याहै ॥ और केनउपनिषद्विषे यहकह्याहै ॥ तत्त्ववेत्तापुरुषोंकेमतविषे आत्मा अविषयहै ॥ और जे अविवेकीपुरुष बुद्धिआदिकोंकूं आत्मामानेहैं ॥ तिनोंकेमतविषे घटादिकोंकीन्यांई आत्माभीविषयहै ॥ और कठउपनिषद्विषे यहकह्याहै ॥ वाणीके अविषयआत्माकूं जो कथनकरैहै ॥ सोआत्माका

वक्ताभी आश्चर्यरूपहै ॥ और इंद्रियकेअविषयआत्माकूं ॥ जो श्रवणकरै है ॥ सोश्रोताभी आश्चर्यरूपहै ॥ और मनकेअविषयआत्माकूं आचार्यकेउपदेशकरिकै जोसाक्षात्करैहै ॥ सोलब्धाभी आश्चर्यस्वरूपहै ॥ हेसात्विकीप्रजा ! ॥इसतैंआगे आत्माकेस्वरूप कहणेकूं हम समर्थ नहीं हैं ॥ किंतु दिशामात्रकरिकै आत्माकाउपदेश हमोंनैं तुमारेतांई कन्याहै ॥ आगे तुम सर्वयुक्तियोंकूं जानणेहारेहो ॥ और वेदशास्त्रकूंभी भलीप्रकारजानणेहारेहो ॥ यातैं आपणीबुद्धिकरिकैविचारकरिकै तिसआत्माकूं तुम प्राप्तहोवो ॥ दृष्टांत ॥ जैसे रामेश्वरकेप्राप्तिकीइच्छावान् किसीपुरुषनैं किसीसैंपूंछा ॥ किसमार्गकरिकै रामेश्वरकी हमारेकूं प्राप्तिहोवैगी ॥ तबी तापुरुषनैं दक्षिणदिशा दिखाइदीया ॥ आगे जाणेवालापुरुष आपणीबुद्धिकरिकैहीं रामेश्वरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे हेप्रजा!॥ आत्माकूं दिशामात्रकरिकै हमोंनैं तुमारेतांई कथनकऱ्याहै ॥ आगे आपणीबुद्धिकरिकै तुम आत्माकूंजाणों ॥ वशिष्ठभगवान्नैंभी रामचंद्रकूं याप्रकारकह्याहै ॥ श्लोक ॥ उपदेशक्रमोराम व्यवस्थामात्रपालनम् ॥ ज्ञप्तेस्तुकारणंशुद्धा शिष्यप्रज्ञैवकेवला ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ चतुष्टयसाधनसंपन्नमुमुक्षु श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजाइके वेदांतश्रवणकरै ॥ यहश्रुतिनैं आज्ञाकरीहै॥ ताआज्ञाकेपालनवासतैंहीं गुरुका शिष्यकेप्रतिउपदेशहै॥ और आत्मसाक्षात्कारकातौ शिष्यकीशुद्धबुद्धिहीं केवलकारणहै ॥ अशुद्धबुद्धिवालेपुरुषकूं ब्रह्माकेउपदेशतैंभी आत्मसाक्षात्कारहोवैनहीं ॥ याकारणतैंहीं ब्रह्माकेउपदेशतैं विरोचनकूं आत्मज्ञाननहींभया ॥ और हेसात्विकीप्रजा!॥ वैराग्यरहितपुरुषोंकरिकै यहपरमात्मा जानणेकूंयोग्यनहीं ॥ किंतु वैराग्यवान्पुरुषोंकरिकैहीं यहपरमात्मा जानणेयोग्यहै ॥ यातैं हेप्रजा ! ॥ आत्माकेसाक्षात्कारवासतैं तुम वैराग्यकूंसंपादनकरो ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! वैराग्यकाकौनउपायहै ॥ जाकरियै हम वैराग्यकूंसंपादनकरैं ॥ समाधान ॥ हेअधिकारीप्रजा!॥ वैराग्यकेप्राप्तिकाउपाय तुमारेतांई हम पूर्वकहिआयेहैं ॥ सुखकेसाधनस्त्रीपुत्रादिकोंविषे सर्वदा दोषोंकूंदेखणा ॥ यहही वैराग्यकेउत्पत्तिकाकारणहै ॥ याप्रकार अधिकारीप्रजाकूंउपदेशकरिकै लोकोंकेशोककूंहरणेहारे जेसनकादिकमहात्माहैं ॥ ते पुनःप्रश्नकरणेकीइच्छावान्अधिकारियोंकाअनादरकरिकै तहांअंतर्धानहोतेभये॥ और तिनसनकादिकऋषियोंकेगएहुए दुर्लभगुरोंकेलाभतैंप्रसन्नहैमनजिनोंका ऐसेजे संपूर्णअधिकारीप्रजाहैं ॥ ते परस्पर या

प्रकारकेवचनोंकूंकहतेभये ॥ हमअधिकारियोंके अहोभाग्यहैं अहोभाग्यहैं ॥ जाकारणतें सनकादिकऋषि हमारेगुरुहोतेभयेहैं ॥
कैसेसनकादिकऋषिहैं ॥ सर्वप्राणिमात्रविषे जिनोंकीसमानदृष्टिहै ॥ और कामक्रोधकरिकैरहितहैं ॥ और जैसे वायु बाह्यभीतर
विचरेहै ॥ तैसे सर्वपुरुषोंके अंतरिबाहरि विचरणेहारेहैं ॥ और परकेउपकारविषे जिनोंकी नित्यप्रीतिहै ॥ और आप शीतउष्णा
दिकोंकूं सहारेहैं ॥ और परदोषोंकेकथनविषे जिनोंने मौनधारणकऱ्याहै ॥ और आप सर्वदोषोंतैंरहितहैं ॥ और आत्मज्ञानकरिकै
संपन्नहैं॥और जैसे शरदऋतुकासमुद्र क्षोभतैंरहितहोवैहै॥तैसे क्षोभतैंरहितहैं ॥ और निश्चलहैं॥और निर्मलजिनोंकामनहै॥औरपूर्णि
माकेचंद्रमाकीकांतिकेसमान जिनोंकीकांतिहै ॥ ऐसेसनकादिकऋषियोंनैं हमारेहितवासते आत्माकाउपदेशकऱ्याभी॥तौभी हमारे
वैराग्यकेअभावतें तिनोंकासर्वउपदेश व्यर्थताकूंप्राप्तहोताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे बधिरपुरुषकेसमीप गीतगायनकऱ्याहुवा व्यर्थताकूं
प्राप्तहोवैहै॥और सनकादिकोंकेवचननतें हमारेकूं आत्माकाअपरोक्षज्ञान उत्पन्ननहींभया॥किंतु परोक्षज्ञानमात्र उत्पन्नभयाहै ॥ जैसे
विद्याध्ययन कालविषे सामान्यतेंअर्थकाज्ञानहोवैहै॥ तैसे आत्माकापरोक्षज्ञान हमारेकूं भयाहै ॥ और सनकादिकोंकेवचननतें यज्ञा
दिककर्मोंकेकरताभोक्ताहम अद्वितीयआत्मस्वरूपनहीं हैं याप्रकारका महान्संशय हमारेकूं उत्पन्नभयाहै॥तात्पर्ययहहैकि॥जैसे गुड
मधुररसकेअनुभवका यद्यपि कारणहै॥तथापि सोगुड पित्तरोगवालेपुरुषकूं कटुताकेअनुभवका कारणहोवैहै॥तैसे सनकादिकऋषि
योंकेवाक्य यद्यपि यथार्थआत्मज्ञानकेकारणहैं ॥ तथापि हमारेदोषतें तेवाक्य संशयकूंउत्पन्नकरतेभयेहैं ॥ और सनकादिकोंकेवच
नोंविषे हमारामन स्थितहोतानहीं ॥ काहेतें सनकादिकोंनैं हमारेकूं अद्वितीयआत्मस्वरूपकह्या ॥ सोबनैंनहीं काहेतें हम कर्म
केकरताहैं ॥ और कर्मकेफलकेभोक्ताहैं ॥ यातें अद्वितीयआत्मस्वरूप हम कैसेहोवैं किंतु अद्वितीयआत्मस्वरूप हम नहीं हैं ॥
और सनकादिकोंनैं पूर्व अहं याज्ञानकाविषय तथा अहं याशब्दकालक्ष्य आत्माकह्याथा ॥ सोभी बनैंनहीं ॥ काहेतें अहं याज्ञान
कीविषयता हमारेविषेहैनहीं ॥ तथा अहं याशब्दकीलक्ष्यताभी हमारेविषेहैनहीं ॥ यातें हेअधिकारियो॥ हमारेकूं आत्माविषे दृढ
असंभावना उत्पन्नभयीहै ॥ इसीकारणतें हमारीअसंभावनाकूंदेखिकरिकै हमोंनैं नहींपूछेहुवेभीसनकादिकऋषि आत्मज्ञानकी

प्राप्तिवासते हमारेतांईं वैराग्यरूपउपायकूंहीं कहतेभये ॥ और पदार्थोंविषेदोषदृष्टिरूपवैराग्यकाउपायभी हमारेतांईं कहतेभये ॥ तातैं हेअधिकारियो! ॥ हमसर्व मिलिकरिकै पदार्थोंविषेदोषोंकूंविचारकरैं ॥ तहां प्रथम याशरीरविषेकौणदोषहैं ॥ ऐसाविचार कऱ्याचाहिये ॥ ऐसाचिंतनकरिकै अग्निहोत्रकूंकरणेहारेअधिकारी परस्परमिलिके दोषोंकूंविचारतेभये ॥ तहां गर्भदुःखकेनिरूपण करणवासते प्रथम कर्मकेवशतैं जीवोंकास्वर्गादिकलोकविषेगमनकूं तथाआगमनकूं दिखावैहैं ॥ सायंकालविषे तथाप्रातःकाल विषे हवनकरी जेअग्निहोत्रविषेआहुतीदो ॥ तेकैसीदोनोंआहुतियांहैं ॥ जलप्रधानदुग्धादिकोंकापरिणामहोणेतैं जल जिनोंविषे प्रधानहै ॥ और होमतैंअनंतर अग्नितैं सूक्ष्मरूपकरिकै आकाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ पुनःकैसीआहुतियांहैं ॥ कर्मकूंकरणेहारे जेहमप्र मातांहैं ॥ तिनोंकाव्यापकजोजीवात्मा ताकरिकैंसर्वदायुक्तहैं ॥ याप्रकार अंतरिक्षलोककूंप्राप्तभयीजे सायंकालकी तथाप्रातःकालकी दोनोंआहुतियां ॥ और शरीरकेदाहकालविषे स्वर्गकीप्राप्तिवासते दयीजोतीसरीआहुती ॥ यहतीनोंआहुतियां हम कर्मीपुरुषोंकूं ग्रहणकरिकै प्रथम स्वर्गलोकरूपअग्निकूंप्राप्तकरैहैं ॥ तहां पुण्यकर्मकूंभोगिकरिकै तातैंअनंतर मेघरूपदूसरीअग्निकूंप्राप्तकरैहैं ॥ तासैंअनंतर वर्षाद्वारा पृथिवीरूपतीसरीअग्निकूं प्राप्तकरैहै॥ तासैंअनंतर अन्नद्वारा पुरुषरूपचतुर्थअग्निकूंप्राप्तकरैहै॥ तहां जीवका स्वर्गलोकतैंमेघद्वाराभूमिलोकमैं आवणेविषे इतनाभेदहै ॥ पुण्यपापकरिकैयुक्त जोकोईकजीवहै ॥ सो पुण्यकर्मकेउदयतैं प्रथम स्वर्गसुखकूंभोगिकरिकै पुण्यकर्मकेक्षयहुवे तास्वर्गतैंगिडेहै ॥ पुनः पापकर्मकेउदयतैं नरकदुःखकूंभोगिकरिकै तानरकतैं भूमीलो कविषेगिडेहै ॥ तागिडणेकालविषे जैसाजैसायाजीवकाकर्म उदयहोवैहै ॥ ताकर्मकेअनुसार पराधीनताकरिकैयहजीव नानाप्रका रजंतुवोंकेयोनियोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और केवल पुण्यकर्मकेउदयतैं यहपुण्यवान्जीव स्वर्गलोकविषे संपूर्णपुण्यकर्मकेफलकूंभोगिक रिकै नरककीप्राप्तितैंविनाहीं वर्षाद्वारा याभूमिलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ कैसाभूमिलोकहै ॥ औषधियोंकरिकैपूर्णहै ॥ और मनुष्यशरी रकाकारण जेपुण्यऔपापहैं तिनोंकरिकैयुक्तहुवा औरमूढअवस्थाकूंप्राप्तहुवा ऐसाजोपराधीनजीव सोअन्नकेसाथएकरूपहो इकरिकै पुनःपुरुषकेशरीरविषे प्रवेशकरैहै॥ जैसे रज्जुकरिकैबांध्याहुवाघट कूपविषेप्रवेशकरैहै ॥ तैसे कर्मरूपरज्जुकरिकैबांध्याहुवा

जीव पिताशरीरविषेप्रवेशकरै है॥ अन्यदृष्टांत॥ जैसे शृंखलाकरिकैबांध्याहैशरीरजाका औहरणकन्याहै धनतथाबांधवजाके ऐसा जो दोषवान्पुरुषहै सो राजाकेभृत्योंनैं बंधनगृहकूंप्राप्तकरताहै॥ तैसे कर्मरूपशृंखलाकरिकैबांध्याहुवा औरबांधवोंतैंरहित एकाकीयहजीवभी इंद्रियादिकोंकेअभिमानीदेवतावोनैं पिताशरीरकूं प्राप्तकरताहै और सोपिताकाशरीर अंधकूपकीन्यांई भयकाकारण याजीवकूं प्रतीतहोवैहै॥ कैसापिताकाशरीरहै॥ सर्पोंकेसमान भयकरणेहारे जेकृमिगणहैं तिनोंकरिकै व्याप्तहै॥ और जैसे धनकेहरणेवासते राजाकेपुरुष लोकोंकूंसंतापकरैहैं॥ तैसे अन्नद्वारा पिताकेउदरविषेप्राप्तहुवेजीवकूं पिताकीजठराग्नि संतापकरैहै॥ और जैसे हिमालयपर्वतविषे व्याधिग्रस्तबलहीनपुरुषकूं महान्वायु शोषणकरैहै॥ तैसे पिताकेउदरविषेस्थितयाजीवकूं पिताकाप्राणवायु शोषणकरैहै॥ यद्यपि पिताशरीरविषे यहजीव मूर्च्छासहितहोवैहै॥ यातैं दुःखकाअनुभव संभवैनहीं॥ तथापि वैराग्यकेउत्पत्तिवासते दुःखकाअनुभवकह्याहै॥ और जैसे योनिद्वारा माताकेगर्भविषे यहजीव प्रवेशकरैहै॥ तैसे मुखरूपयोनिछिद्रकरिकै पिताकेगर्भविषे यहजीव प्रवेशकरैहै॥ और जैसे कामकरिकैपीडाकूंप्राप्तभईस्त्री गर्भकेधारणेकीइच्छाकरैहै॥ तैसे क्षुधातृषाकरिकैपीडाकूंप्राप्तहुवा यहपुरुषभी जीवयुक्तअन्नरूपगर्भके धारणकीइच्छाकरैहै॥ यातैं जैसे माताकेशरीरविषे यहजीव गर्भभावकूंप्राप्तहोवैहै॥ तैसे पिताशरीरविषेभी गर्भभावकूंप्राप्तहोवैहै॥ शंका॥ जो स्त्रीकेसमानहीं जीवरूपगर्भकूं पिता धारणकरताहोवै तौ जैसे स्त्रीकेगर्भाधानविषे पुरुषरूपपिता औ ताकामैथुनरूपव्यापार कारणहोवैहै॥ तैसे पुरुषकेगर्भाधानविषेभी॥ पुरुषरूपपिताऔरताकाव्यापार कह्याचाहिये॥ समाधान॥ अन्नद्वारा पुरुषशरीरविषेप्राप्तभया जोजीवरूपगर्भ ताका लोकविषेप्रसिद्धजोपिताहै सोतो माताहै॥ काहेतें जागर्भकूंधारणकरैहै सामाताकहियेहै॥ और मायाविशिष्टईश्वररूप पुरुष याका पिताहै॥ और ईश्वरका तथापिताका संयोग मैथुनधर्मकीन्यांई यागर्भकाकारणहै॥ यातैंभी पिताके तथामाताके शरीरविषे समानगर्भभावकूं यहजीव प्राप्तहोवैहै॥ और यहजीव माताकेगर्भविषे जैसे दुःखकूंअनुभवकरैहै॥ तैसेहीं दुःखकूं पिताकेउदरविषेस्थितहुवा यहजीव प्राप्तहोवैहै॥ तहां अन्नकेसाथ एकरूपहुवा यहजीव प्रथम पुरुषकेमुखकूंप्राप्तहोवैहै॥ तहां दंतोंके

राग्निविषे जीवमिलितअन्नकापाकहोवैहै ॥ तापाककरिकैभी यहजीव प्रारब्धकर्मकेवशतैं मृत्युकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तापाकतैं सोअन्न उत्तम मध्यम अधम भावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तहां अन्नकाउत्तमभाग मनभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ अधमभाग विष्ठाभावकूंप्राप्त होवै है ॥ और अन्नकेमध्यमभागकेसाथ एकरूपहुवायहजीव त्वचा रुधिर मांस मेद अस्थि मज्जा याषट्धातुवोंकूं क्रमतैंप्राप्तहोवै है ॥ तहां समाननामावायुकेबलतैं पूर्वपूर्वधातुकूंप्राप्तहोइके पुनःउत्तरउत्तरधातुकूंप्राप्तहोवै है ॥ तहां एकएकधातुकेप्रवेशविषे याजीवोंकूं अनंतदुःसहदुःखप्राप्तहोवै हैं ॥ जब एकधातुकेप्रवेशविषेभी जीवोंकूं दुःसहदुःखोंकीप्राप्तिहोवै है तब षड्धातुकेप्रवेशविषे दुःसहअनंतदुःख याजीवोंकूं प्राप्तहोवै हैं याकेविषे क्याकहणाहै ॥ तहां प्रथम त्वचाकेप्रवेशविषे जीवकेदुःखोंकूं दिखावैहैं ॥ यहजीव अन्नकेमध्यमभागकेसाथएकरूपहोइकरिकै नाडीद्वारा प्रथमत्वचाकूंप्राप्तहोवै है ॥ तेकैसीनाडियां हैं ॥ केशकेअग्रभागकूंशतभागकरिये ॥ ताएकभागकेसमान सूक्ष्महैं ॥ और बहत्तरि ७२००० सहस्र जिनोंकीसंख्याहै ॥ और हृदयदेशतैं जिनोंकानिर्गमनहुवाहै ॥ ऐसेसूक्ष्मनाडीमार्गतैं यहजीव त्वचाकूंप्राप्तहोवै है ॥ सोकैसीत्वचाहै ॥ सर्वशरीरविषेव्यापकहै ॥ और केशतथालोमकरिकैयुक्तहै ॥ ऐसेसूक्ष्मनाडियोंकेप्रवेशविषे तथानाडीमार्गकेगमनविषे तथातिननाडियोंतैंनिकसणेविषे तथा नाडीद्वारात्वचाकीप्राप्तिविषे जेजे जीवोंकूं दुःखहोवै हैं ॥ ते स्मृतिविषेप्रसिद्धहैं ॥ तिनदुःखोंकेकहणेतैंभी हमारेकूं मोहप्राप्तहोवै है॥ इसप्रकार त्वचाविषे अनंतदुःखोंकूंअनुभवकरिकै तात्वचातैं पुनःरुधिररूपद्वितीयधातुकूं यहजीव प्राप्तहोवै है ॥ सोकैसारुधिरहै ॥ लाक्षाकेरससमान जाकारक्तवर्णहै और जाकेदेखणेकरिकै भययुक्तपुरुषोंकूं मोहउत्पन्नहोवै है ॥ ऐसेरुधिरविषे अनंतदुःखोंकूंअनुभवकरिकै पुनःतारुधिरतैं मांसरूपतृतीयधातुकूं यहजीव प्राप्तहोवै है ॥ सोकैसामांसहै ॥ अतिसघनहै ॥ और शाल्मलीवृक्षकेपुष्पकेसमान जाकावर्णहै ॥ ऐसेमांसविषे प्राप्तहुवा यहजीव कबी मूर्छाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और कबी भयकूंप्राप्तहोवै है ॥ और कबी ताकी इंद्रिय व्याकुलहोवै हैं ॥ इसप्रकार मांसविषेअनंतदुःखोंकूंअनुभवकरिकै पुनःतामांसतैं पतनहुवा यहजीव अग्नितथाप्राणवायुकरिकैचलायाहुवा मेदरूपचतुर्थधातुकूंप्राप्तहोवै है ॥ जैसे अग्निकरिकैतपायाहुवा घृत चूर्णविषेप्रवेशकरै है ॥ तैसे यहजीव

रिकै ताकाशरीर भेदनहोवै है ॥ और मुखकेदुर्गंधिकरिकै ताकाघ्राणइंद्रिय व्याप्तहोवै है ॥ याप्रकार पिताकेमुखविषे अनंतदुःखोंकूं अनुभवकरिकै पुनःदुःखकरिकै कंठछिद्रकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां अल्पमार्गकंठछिद्रविषे यहजीव कृमिकीन्यांई चेष्टाकरै है ॥ और कफ करिकैव्याप्तहोवैहै ॥ और व्याकुल जाकीइंद्रियांहोवैहै ॥ और शक्तितैंरहितहोवैहै ॥ और अतिसैंकरिकैदुःखीहोवैहै ॥ याप्रकार कंठविषेस्थितहुवा यहजीव दुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे गरुडकेमुखविषेप्राप्तभईमाछली सर्वओरितैं चलायमानहोवैहै और गरुडकेमुखतैंछूटणेकीइच्छाभीकरै है तथापि छूटिनहींसकैहै ॥ तैसे यहजीव कंठछिद्रविषेरुक्याहुवा अनंतदुःखोंकूंअनुभव करैहै ॥ याप्रकार कफकेस्थानकंठदेशविषे अनंतदुःखोंकूं यहजीव प्राप्तहोइकै ॥ जैसे योनिद्वारतैंनिकसणेमैं दुःखहोवै है तैसे दुःखकरिकै कंठस्थानतैं निर्मुक्तहोवैहै ॥ पुनःयहजीव हृदयदेशमैंस्थित पित्तकूंप्राप्तहोवैहै ॥ कैसापित्तहै ॥ विष्ठाद्रवकेसमान जाकाआकारहै ॥ और जैसेत्वचाकूं उतारिकरिकै किसीपुरुषकूं तप्ततेलविषेपाइये ॥ तातेलविषेपडनेतैं जैसा पुरुषकूंदुःखहोवैहै तैसेदुःखका अनुभवकरताहुवा यहजीव कफस्थानकंठतैंपित्तकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहां हृदयदेशविषे पित्तकूंप्राप्तहुवा यहजीव अनंतदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोकैसापित्तहै ॥ प्राणवायुकरिकै मर्कटकीन्यांई चलायमानहै ॥ और जठराग्निकरिकै तपायमानहै ॥ ऐसेपित्तविषेप्राप्तभयायहजीव कबीनीचेजावैहै ॥ और कबीऊपरिजावैहै और कबीपित्तविषेहीं चारोंओरतैंभ्रमणकरैहै ॥ जैसे तप्ततेलविषेप्राप्तभयाजल नीचेऊपरिभ्रमैहै ॥ तैसे यहजीव पित्तविषेभ्रमैहै ॥ याप्रकार पित्ताशयविषे अनंतदुःखोंकूंअनुभवकरिकै पुनःवातका आश्रयजोवायुहै ॥ ताकूं यहजीव प्राप्तहोवैहै ॥ कैसासोवायुहै ॥ पुरीततिरूपकोटकेमध्यविषेस्थितहै ॥ और नाभिरूपपर्वततैंजाकानिर्गमनहोवैहै ॥ पुरीततिनाम आंद्रकाहै ॥ और जैसे तृण वायुविषेप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहजीव वाताशयवायुविषे प्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे तक्षा काष्ठकूं वास्याकरिकै छेदनकरैहै ॥ तैसे प्राणवायु अन्नमिलितयाजीवके सर्वअंगोंकूं छेदनकरैहै ॥ ताछेदनकरिकै याजीवकेइंद्रिय व्याकुलहोवै हैं ॥ पुनःसोकैसावायुहै ॥ अग्निकेसमान जाकाउष्णस्पर्शहै और रूक्षहै और दुःखकरिकैसहन कियाजावै है ॥ ऐसेवायुविषे स्थितहोइकै किंचित्काल तहांदुःखकाअनुभवकरिकै पुनःजठराग्निकूं यहजीव प्राप्तहोवैहै ॥ तहां जठ

मेदविषेप्रवेशकरै है ॥ कैसासोमेदहै ॥ गोधूमकेचूर्णसमान जाकाशुक्लवर्णहै ॥ ऐसेमेदविषे अनंतदुःखोंकूंअनुभवकरिकै पुनःतामेद तैं अस्थिरूपपंचमधातुकूं यहजीव प्राप्तहोवै है ॥ जैसे मृत्तिका काष्ठसमुदायकूंप्राप्तहोवै है तैसे पुरुषकेगर्भविषेस्थितयहजीव अस्थियोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ तेकैसीअस्थियां हैं ॥ शरीररूपग्रहकेस्थूणाहैं ॥ और तीनसैसाठ ३६० जिनोंकीसंख्या शास्त्रविषेकहीहै ॥ ऐसेअस्थियोंविषेअनंतदुःखोंकूंअनुभवकरिकै पुनःताअस्थियोंतैं मज्जारूपषष्ठेधातुकूं शनैशनैकरिकै यहजीव प्राप्तहोवैहै ॥ जैसे काष्ठविषेस्थितहुवाजल शनैशनैकरिकै काष्ठविषेप्रवेशकरै है ॥ तैसे यहजीव मज्जाविषेप्रवेशकरै है ॥ सोकैसामज्जाहै ॥ अस्थियोंकेभीतरस्थितहै ॥ और साररूपवीर्यकरिकैयुक्तहै ॥ इसप्रकार मज्जाकासाररूपहुवा कोईकाल यहजीवरहैहै ॥ पुनःस्त्रीसंबंधरूपनिमित्ततैं पिताकूं जब कामरूपअग्नि मनविषेउत्पन्नहोवै है ॥ तब सर्वओरतैं मज्जा वीर्यरूपसारकूं परित्यागकरैहै ॥ जैसे अग्निकेसंबंधतैंघृतका द्रवीभावहोवै है ॥ तैसे कामाग्निकरिकै मस्तकतैंलेकरिकैपादपर्यंत सर्वअंगोंतैं मज्जाकासार निकसै है ॥ सोमज्जाकासाररूप वीर्य पिताकरिकै सहनकियानहींजावैहै ॥ याअर्थकूं चारिदृष्टांतोंकरिकैदिखावै हैं ॥ जैसे दशममासविषे प्रसवकालमें स्त्रीकरिकै यहगर्भ दुःखकरिकैसहनकियाजावै है ॥ तैसे कामाग्निकेउत्पन्नहुवे पिताकरिकै यहवीर्यरूपगर्भ दुःखकरिकैसहनकियाजावै है ॥ और जैसे आर्द्रवृक्ष आपणेकोटरविषे अग्निकूंनहींसहारिसकेहै ॥ तैसे पिताभी वीर्यरूपगर्भकूं ताकालविषे नहींसहारिसकेहै ॥ और जैसे किसीपुरुषनैं शत्रुकेनाशवासते श्येनयज्ञादिरूपकर्मकिया ॥ ताकर्मकरिकै तिसशत्रुकामन कबीभीस्थितहोवैनहीं ॥ तैसे कामाग्निकेतापकरिकै पिताकावीर्य स्थितहोवैनहीं ॥ और जैसे पारद देहविषे स्थितनहींहोवैहै ॥ तैसे कामाग्निकरिकै द्रवीभावहुवा मज्जाकासारवीर्य कबीभी देहविषेस्थितिनहींकरता ॥ यद्यपि माताकेउदरतैं गर्भकूं प्रसूतिकाकारणवायु बाहरिचलावैहै ॥ और पिताकेशरीरतैं गर्भकूं कामाग्नि चलावैहै ॥ यातैं दोनोंकीसमानता संभवैनहीं ॥ तथापि जैसे माताकेशरीरविषे यहजीव गर्भरूपहोइके स्थितहोवैहै ॥ तैसे पिताकेशरीरविषेभी गर्भरूपहोइके स्थितहोवैहै ॥ और जैसे प्रसवकालविषे माताकूं यहगर्भ व्यामोहकरै है ॥ तैसे पिताकूंभी यहवीर्यरूपगर्भ व्यामोहकरैहै ॥ यातैं दोनोंविषे जीवकीगर्भरूपता समानहै ॥ अन्यवस्तुविषेअन्यबुद्धिकानाम व्यामोह

है॥ तहां वीर्यरूपगर्भकेनिर्गमनकालविषे पिताकेव्यामोहकूं दृष्टांतकरिकैदिखावैहैं॥ जैसे कफदोषतें निंबादिककटु वस्तु मधुरभावकूं प्राप्तहोवै है॥ तैसे कामाग्निरूपदोषकेउत्पन्नहुएतें याकामीपुरुषकूं दुःखकासाधनभीस्त्रीशरीर सुखकासाधनप्रतीतहोवै है॥ और दुर्गंधजलकरिकैयुक्तस्त्रीकामुख यद्यपिविचारकियेतें ग्लानिकाकारणहै॥ तथापि कामदोषतें कामीपुरुषकूं चंद्रमाकीन्यांई सुखकासाधनप्रतीतहोवैहै॥ और मलकरिकेयुक्तस्त्रीकेनेत्र यद्यपि विचारकीयेतें ग्लानीकेसाधनहैं॥ तथापि कामदोषतें कामीपुरुषकूं कमलकीन्यांई रमणीकप्रतीतहोवैहैं॥ और स्त्रीकेनेत्रोंकेकटाक्ष विषयुक्तवाणकीन्यांई संपूर्णनरकोंकेकारणहैं॥ तथापि कामदोषतें कामीपुरुषकूं सर्वदा पुष्पकेसमानप्रतीतहोवैहैं॥ और श्लेष्मकेनिकसणेकामार्ग जोस्त्रीकीनासिकाहैं॥ सो यद्यपि विचारकियेतें ग्लानिकेकारणहैं॥ तथापि कामदोषतें कामीपुरुषकूं दुग्धकीन्यांई मधुरप्रतीतहोवैहैं॥ और पायुइंद्रियकेसमान जोस्त्रीकेअधरहैं॥ सो यद्यपि विचारकियेतें ग्लानिकेसाधनहै॥ तथापि कामीपुरुषकूं कामदोषतें अमृतकीन्यांई प्रतीतहोवैहैं॥ और अंधकारकेसमानश्याम जेस्त्रीकेकेशहैं॥ ते यद्यपि नेत्रकेशक्तिकूं हरणेहारेहैं॥ तथापि कामदोषतें कामीपुरुषकेनेत्रोंकूं हर्ष उत्पन्नकरेहैं॥ और मांसकेग्रंथी जेस्त्रीकेस्तनहैं॥ ते यद्यपि विचारकियेतें ग्लानिकेकारणहैं तथापि कामदोषतें कामीपुरुषकूं अमृतकरिकेपूरितसुवर्णकेकलश प्रतीतहोवैहैं॥ और अधिकमांसकरिकेयुक्त जोस्त्रीकाउदरहै॥ अथवा मांसरहितजो उदरहै॥ सो सूकरतथाश्वानकेउदरसमानहै॥ और विष्ठामूत्रकास्थानहै॥ सो यद्यपि विचारकियेतें ग्लानिकाजनकहै॥ तथापि कामग्रहकरिकेपीडित कामीपुरुषकूं आनंदकाकारण प्रतीतहोवैहै॥ और पायुरूपनदीकेतीररूप जोस्त्रीकेस्फिजहैं॥ सो विष्ठामूत्रकरिकेलेपितहैं॥ यातें विचारकियेतें यद्यपि ग्लानिकेकारणहैं॥ तथापि कामदोषतें कामीपुरुषकूं रमणीकप्रतीतहोवैहैं॥ कटीकेनिचेमांसपिंडोंकानाम स्फिजहै॥ ताहींकूं जघनभीकहेहैं॥ और भगंदररोगकेसमान औरमूत्रगंधकरिकैदूषित जोस्त्रीकीयोनिहै॥ सो यद्यपि विचारकियेतें ग्लानिकाकारणहै॥ तथापि कामदोषतेंकामीपुरुषकूं स्वर्गकेसमान प्रतीतहोवैहै और ऊरूतैंलेकरिकैपादपर्यंत जोमांसयुक्तअस्थिरूप स्त्रीकीजंघाहैं॥ सो यद्यपि विचारकियेतें ग्लानिकेकारणहैं॥ तथापि कामदोषतें कामीपुरुषकूं स्व

र्णकेसमान तथाकदलीफलकेस्तंभसमान रमणीकप्रतीतहोवै हैं॥ इसप्रकार कामदोषकेबलतैं कामीपुरुषकूं जैसे स्त्री अमृतसमान प्रतीतहोवै है ॥ तैसे कामदोषकेबलतैं स्त्रीकूंभी पुरुष अमृतसमान प्रतीतहोवै है ॥ इहांयहतात्पर्यहै ॥ कोईकदोष कार्यकाप्रतिबंध कहोवै है ॥ जैसे नेत्रविषेस्थितपित्तदोष शंखविषेश्वेतज्ञानरूपकार्यकाप्रतिबंधकहै ॥ और कोईकदोष विपरीतकार्यकूंउत्पन्नकरैहै ॥ जैसे अग्निकरिकेदग्धवेत्रबीज कदलीकाआरंभकरैहै ॥ अथवा जैसेभस्मकरोगकरिकेदूषितजठराग्नि बहुतअन्नकूंपचावैहै ॥ इसप्रकार कामरूपदोषभी विपरीतकार्यकाआरंभकहै॥ तथा कार्यकाप्रतिबंधकहै ॥ तहां स्त्रीकेमुखादिकअवयवोंविषे चंद्रमादिकबुद्धिरूपविपरीतकार्यकीआरंभकता कामदोषकूं पूर्वग्रंथकरिकेदिखाई ॥ अब सर्वज्ञानोंकीप्रतिबंधकता कामदोषकूं दिखावै हैं ॥ इसप्रकार कामीपुरुषके कामाग्निजन्यवीर्यरूपगर्भकेक्षोभहुवे ॥ तिसकालविषे यहकामीपुरुष शास्त्रप्रमाणतैं धर्मकूंनहींजाणैहै ॥ और अधर्मकूंनहींजाणैहै ॥ और रात्रिकूं तथादिनकूं नहींजाणैहै ॥ और आपणेकूं तथापरकूं नहींजाणैहै ॥ और सुहृदकूं तथामित्रकूं नहींजाणैहै॥ और स्त्रीकेअवयवोंविषे नेत्रकरिकेदोषोंकूंदेखताहुवाभी यहकामीपुरुष कामदोषकेबलतैं अधमपुरुषकीन्यांई नहींदेखैहै ॥ और दोषोंकूंश्रवणकरताहुवाभी यहकामीपुरुष बधिरकीन्यांई नहींश्रवणकरै है ॥ और घ्राणइंद्रियकरिकै दुर्गंधकूंसूँघताहुवाभी कामीपुरुष घ्राणदोषीपुरुषकीन्यांई नहींसूंघैहै ॥ और रसनइंद्रियकरिकै रसकाअनुभवकरताहुवाभी रसनरहित पुरुषकीन्यांई नहींअनुभवकरैहै ॥ और त्वक्इंद्रियकरिकै स्पर्शकरताहुवाभी यहकामीपुरुष त्वक्इंद्रियरहितपुरुषकीन्यांई नहींस्पर्शकरैहै ॥ इसप्रकार ज्ञानइंद्रियकेशक्तिकीप्रतिबंधकता कामदोषविषे दिखाई ॥ अब कर्मइंद्रियोंकेशक्तिकीप्रतिबंधकता कामदोषविषे दिखावैहैं ॥ कामदोषकेबलतैं पंडितभीयहपुरुष जडकीन्यांई भाषणकरै है ॥ और यहकामीपुरुष हस्तइंद्रियवालाहैभी ॥ तौभी हस्तइंद्रियतैंरहितपुरुषकीन्यांई वस्तुकाग्रहणकरैहै ॥ और पादइंद्रियवालाभी यहकामीपुरुषहै ॥ तौभी पादरहितपंगुपुरुषकीन्यांई गमनकरै हैऔर मलपरित्यागकीइच्छाकाजनकजोउदरकाफूलना ॥ ताकेहुवेभी रोगरहित यहकामी पुरुष मलकापरित्यागनहींकरैहै॥अथवा मलकापरित्यागकरताहुवाभी नहींपरित्यागकरै है॥तात्पर्ययह॥शरीरकेमलदर्शनकाफल शरीरविषे वैराग्यकीउत्पत्तिहै ॥

सो मलदर्शनतैं जबी शरीरविषैवैराग्यउत्पन्ननहीँभया॥तब मलकापरित्यागकरताहुवाभी नहींकरैहै॥अब बल ऐश्वर्य प्रभुताकी प्रति बंधकता कामदोषविषे दिखावैहैं ॥ यहकामीपुरुष बलवालाभीहै तौभी बलरहितप्रतीतहोवैहै ॥ और ऐश्वर्यवालाभीहै तौभी दरिद्र कीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ और प्रभुतावाला राजाभीयहकामीपुरुषहै ॥ तौभी भृत्यकीन्यांई प्रतीतहोवै है ॥ अब चतुष्टयअंतःकरणकीप्र तिबंधकता कामदोषविषे दिखावैहैं ॥ यहकामीपुरुष बुद्धिमान्भीहै॥ तौभी बुद्धिरहितप्रतीतहोवै है॥ और मनसहितभीहै॥ तौभी मन रहितप्रतीतहोवैहै ॥ और अहंकारवालाभी यहकामीपुरुषहै ॥ तौभी अहंकाररहितप्रतीतहोवै है ॥ और चित्तकेविद्यमानहुवेभी चित्तरहित यहकामीपुरुष प्रतीतहोवैहै ॥ इसप्रकार कामरूपज्वरकेवशहुवा वीर्यरूपगर्भकेधारणकरणेहारा कामीपुरुष विवेकीपु रुषोंकरिकेंनिंदित औरपश्चात्तापकाविषय जोपूर्वकहीअवस्था ताकूं प्राप्तहोवै है॥ शंका ॥ कामदोषनैं स्त्रीतैंभिन्नपदार्थोंविषे सर्वइं द्रियोंकेव्यापारकीप्रतिबंधकता किसवासते करतीहै ॥ समाधान ॥ कूटस्थआत्माकूं मोहरूपफांसीसेंबांधिकरिकै महामोह स्वतं त्रराजकरणेकीइच्छाकरैहै॥ सोमहामोह विवेकतैं भयकूंप्राप्तहुवा कामकूंप्रधानमंत्रीकरताभया ॥ सोकाम आपणेप्रभुमहामोहकूं ऐसा कहताभया ॥ हे महामोह! आप विवेकतैंकिंचित्मात्रभी भयनहींकरो ॥ काहेतैं जिसपुरुषशरीरविषे विवेककेउत्पत्तिकीआशाहै ॥ तापुरुषशरीरकूं सर्वइंद्रियोंसहित निंदितस्त्रीशरीरविषे मैंप्रवर्तकरोंगा ॥ ऐसीप्रतिज्ञा कामनैं महामोहकेआगेकरी ॥ ताप्रतिज्ञाके पालनकरणेवासते अन्यत्रइंद्रियोंकेव्यापारकाप्रतिबंधकरिकै स्त्रीविषेहीं सर्वइंद्रियोंकेव्यापारकूं काम प्रवर्त्तकरताभया ॥ इसअभि प्रायतैं कामीपुरुषकेसर्वइंद्रियोंकाव्यापार स्त्रीविषे दिखावैहैं ॥ सोकामीपुरुष कामकेउत्पत्तिकालविषे नेत्रोंकरिकैस्त्रीकूंहींदेखै है ॥ और एकाग्रमनहुवा सोकामीपुरुष श्रोत्रइंद्रियकरिकै तास्त्रीकाहींश्रवणकरै है ॥ और घ्राणइंद्रियकरिकैभी तास्त्रीकूंहींसूंघै है ॥ और रसनइंद्रियकरिकै वारंवार तास्त्रीकेरसकूंहीं आस्वादनकरैहै ॥ और त्वक्इंद्रियकरिकै आदरपूर्वक सर्वअंगोंकरिकै तास्त्रीका हींस्पर्शकरै है ॥ अब स्त्रीविषयक कर्मइंद्रियोंकेव्यापारकूं दिखावै हैं ॥ सोकामीपुरुष वाक्इंद्रियकरिकै तिसस्त्रीकूंहीं सुखकाकारणक हैहै ॥ और हस्तइंद्रियकरिकै आदरपूर्वक वारंवार तास्त्रीकाहींग्रहणकरै है ॥ और यहकामीपुरुष पादइंद्रियकरिकैभी देवतातथा

गुरुकेसमान ताख्रीकेसमीपहीं गमनकरैहै ॥ और पायुइंद्रियकरिकै मलकापरित्यागरूपव्यापारकरणेकूंभी यहकामीपुरुष प्रवृत्त होवै ॥ परंतु पायुइंद्रियकाव्यापार स्त्रीविषे अशक्यहै ॥ यातैं तिसतैंनिवृत्तहोवै है ॥ याकहणेतैं कामीपुरुषकेउपहासकूंदिखाया ॥ अब स्त्रीविषे चतुष्टयअंतःकरणकेव्यापारकूंदिखावैहैं ॥ जैसे विवेकीपुरुष मनकरिकै देवताकास्मरणकरैहै ॥ तैसे यहकामीपुरुष मनकरिकै ताख्रीकाहींस्मरणकरैहै ॥ और जैसे योगीपुरुष बुद्धिकरिकै आत्माकूंनिश्चयकरै है ॥ तैसे यहकामीपुरुष बुद्धिकरिकै ताख्रीकूंहींनिश्चयकरै है ॥ और जैसे शुद्धबुद्धिवालेविवेकीपुरुष रात्रिदिनविषे चित्तकरिकै विष्णुकूंचिंतनकरै है ॥ तैसे यहकामीपुरुष रात्रिदिनविषे ताख्रीकूंहीं चित्तकरिकैचिंतनकरै है ॥ और यहकामीपुरुष कामदोषकेबलतैं ताख्रीकूंहीं आत्मामानै है ॥ जाकारणतैं तिसख्रीकरिकैताडनकियाहुवाभी तिसख्रीकूंहीं अधिकमानैहै ॥ अब स्त्रीकीअधीनताजन्यपुरुषकेदोषकहणेवासते प्रथम लोकप्रसिद्धख्रीकेदोषोंकूंदिखावै है ॥ साख्रीभी स्वाधीनहुवेकामीपुरुषकूं जैसेमर्कटकूंपुरुषनचावै है तैसेनचावै है ॥ तात्पर्ययह ॥ आपणेअभिप्रायकेअनुसारहीं सर्वकार्यकूं करावै है ॥ अब स्त्रीकेअव्यवस्थितस्वभावरूपदोषकूं दिखावैहैं ॥ कबी साख्री अनेकप्रकारकीसेवाकरिकै पुरुषकूं सन्मानकरैहै ॥ और कबी तीक्ष्णबाणसमानवचनोंकरिकै पुरुषकूं निरादरकरैहै ॥ और कबी साख्री पतिकूंऐसा कहैहै ॥ हेनाथ! तुम हमारेकूं देहतैंतथाप्राणोंतैंभी अधिकपियारेहो ॥ और कबी ऐसाकहैहै ॥ तुम किसकेपतिहो ॥ मैं तुमारेकूंजाणतीभीनहीं ॥ और कबी साख्री पतिकेसाथि वचनउच्चारणकरै है ॥ और कबी वचनभीनहींउच्चारणकरै है ॥ और कबी साख्री पतितैं धनकीयाचनाकरै है ॥ और कबी साख्री पतिकूं आप धनदेवै है ॥ अब स्त्रीकेनिर्दयतारूपदोषकूं दिखावै हैं ॥ कबी साख्रीपरपुरुषविषेआसक्तहुई सोएहुवेआपणेपतिका नाशकरै है ॥ और कबी अन्यपुरुषकूंकहिकरिकै पतिकूंनाशकरावै है ॥ इसप्रकार साधुस्वभाववालीभीख्री आपणेअनिष्टकरणेहारेअन्यपुरुषोंकूं आपणेपतिकरिकै तथाभ्रातादिकोंकरिकैनाशकरावै है ॥ और व्यभिचारिणीस्त्री तौ स्नेहतैंरहितहुई आपणेपति तथापुत्र तथापितादिकोंकूंभी अन्यबलिपुरुषोंकरिकै नाशकरावैहै ॥ औ कबी साख्री शिष्टपुरुषोंकेसभाविषे साधुपुरुषोंकूंभी मिथ्यावचनकरिकै उपहासकेयोग्यकरैहै ॥ और कबी साख्री आपणेस्वल्पकार्यविषे पिताकूं तथाभ्राताकूं

तथापुत्रकूं तथाविद्यासंपन्नब्राह्मणकूं नाशकरैहै ॥ यहवार्ता सर्वलोकविषेप्रसिद्धहै ॥ इसप्रकारकीस्त्रीविषे आसक्तपुरुषकूं इसजन्म विषेनिश्चयकरिकै दुःख प्राप्तहोवैहै ॥ और परलोकविषे नरक प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं कौनऐसाविवेकीपुरुषहै जोस्त्रीविषेआसक्तिकरै है ॥ किंतु मूढपुरुषोंकीहीं आसक्तिहोवैहै ॥ इहांयहअभिप्रायहै ॥ राजादिकतौ स्नेहतैंरहितहुवे पुरुषोंकानाशकरैं हैं ॥ और डाकिनी स्नेहयुक्तहुई नाशकरैहै ॥ और स्त्रीतौ स्नेहयुक्तहुई तथास्नेहतैंरहितहुई दोनोंप्रकार पुरुषकानाशकरैहै ॥ सास्त्रीभी दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौआपणीस्त्री ॥ दुसरीपरस्त्री ॥ तहां स्नेहकरिकैयुक्तहुईभी आपणीस्त्री पतिकाअन्यस्त्रीकेसमीपगमनदेखिकरिकै क्रोधकूंप्राप्तहुई विषदेकरिकै तथाअन्यकिसीमंत्रादिकोंकरिकै आपणेपतिकूंनाशकरैहै ॥ और जब परस्त्री अन्यपुरुषविषेस्नेहयुक्त होवैहै ॥ तब सापरस्त्री किसीनिमित्तसैंक्रोधयुक्तहुई तिसपुरुषकूं आपणेपिताद्वारा तथाभ्राताद्वारा नाशकरावैहै ॥ इसप्रकार आपणीस्त्री तथापरस्त्री पुरुषविषेस्नेहयुक्तहुईभी दोनोंलोकोंविषे भयकाकारणहै ॥ और जब आपणीस्त्री यापुरुषविषेस्नेहरहितहोवैहै ॥ तब सास्त्री एकांतस्थानविषे कामज्वरकरिकैपीडितपुरुषकूं कठोरवचनोंकरिकै ताडनकरैहै ॥ और ताकेसमीपभी नहींजावैहै ॥ अथवा किसीकार्यकेबहानेकरिकै इसकामातुरपुरुषकूंपरित्यागकरिकै अन्यपुरुषकेसमीप गमनकरैहै ॥ और जब पति स्त्रीकापरपुरुषकेसमीपगमनकूं जाणेहै ॥ तब सास्त्री जोबलवान्होवैहै ॥ तौ रात्रिविषे पुरुषकूं आपहीनाशकरैहै ॥ और जब सास्त्री बलहीनहोवैहै ॥ तब अन्यपुरुषोंकरिकै पतिकानाशकरावैहै ॥ और जब परस्त्री अन्यपुरुषविषेस्नेहरहितहोवैहै ॥ तब सास्त्रीतौ ततकाल यापुरुषकेमरणकाकारणहै ॥ एकांतस्थानविषे यहपुरुष मेरेकूं याचनाकरताथा ॥ ऐसेआपणेसंबंधियोंकूंकहिकरिकै यापुरुषकूं नाशकरावैहै ॥ इसप्रकार आपणीस्त्रीविषे तथापरस्त्रीविषे अनंतप्रकारकेदोषहैं ॥ तेदोष कामीपुरुषों नैं रात्रिदिनविषे सर्वदा अनुभवकरीतेहैं ॥ और जैसे कामीपुरुषकेदुःखकाकारण स्त्रीहै ॥ तैसे कामयुक्तस्त्रीकेभी दुःखकाकारण पुरुषहै ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ कामहीं सर्वदुःखकाकारणहै ॥ स्त्री तथापुरुष दुःखकेकारणनहीं ॥ जोस्त्रीहीं पुरुषकेदुःखकाकारणहोवै ॥ तौ कामरहितस्त्रीभी पुरुषकेदुःखकाकारणहोणीचाहिये ॥ और कामरहितस्त्री पुरुषकेदुःखकाकारण होवैनहीं ॥ और जोपुरुषहीं स्त्रीकेदुःखकाकारणहोवै ॥ तौ काम

रहितपुरुषभी दुःखकाकारणहोणाचाहिये ॥ और कामरहितपुरुष स्त्रीकेदुःखकाकारणहोवैनहीं ॥ यातें कामकेउत्पत्तिहुवे दुःखकी उत्पत्ति ॥ और कामकेअभावतें दुःखकाअभाव ॥ याप्रकारके अन्वयव्यतिरेककरिकै कामकूंहीं सर्वदुःखकीकारणताहै ॥ इसप्रकार दुःखकाकारण कामरूपशत्रुकूंजाणिकरिकै बुद्धिमान्पुरुष ताकामकापरित्यागकरै ॥ याकेविषे विद्वानोंकाअनुभवकहैहैं ॥ श्लोक ॥ कामकिंकरतांप्राप्य जनोनोकस्यकिंकरः ॥ एकंकामंपरित्यज्य जनोऽसौकस्यकिंकरः ॥३॥ अर्थयह—एककामकेआधीनहुवायहपुरुष सर्वका दासहोवैहै ॥ और एककामका जब परित्यागकरैहै तब किसीकाभीदास नहींहोवैहै ॥ ३ ॥ अब कामकामूल तथाताके निवृत्तिकाउपाय दिखावैहैं ॥ यहनारीरमणीकहै ॥ ऐसीबुद्धितें काम उत्पन्नहोवैहै ॥ और रमणीकबुद्धि सौंदर्यादिकगुणबुद्धितें उत्पन्नहोवैहै ॥ यातें गुणबुद्धि रमणीकबुद्धिद्वारा कामकाकारणहै॥ताकेनाशविना कामकानाशहोवैनहीं॥और तागुणबुद्धिकानाश पूर्वकहे जेस्त्रीविषेदोष तिनोंकेज्ञानतेंहोवैहै और दोषोंकेदर्शनतें गुणबुद्धिकाकारणमोहभी नाशहोवैहै ॥ सोकैसामोहहै ॥ जगतकूं अंधकरणेहाराहै ॥ और सुंदरतागुणरहितनारीआदिकोंविषे सुंदरताबुद्धिकाकारणहै ॥ तात्पर्ययह ॥ आवरणशक्ति औरविक्षेपशक्तिकरिकै युक्तहै ॥ पुनःसोमोहकैसाहै॥अतिविस्तृतकामरूपवृक्षकाबीजहै॥यातें तिसमोहकेनष्टहुवे क्षणमात्रविषे काम आपहीनाशहोवैहै॥जैसे मूलकेनष्टहुवे वृक्ष नाशहोवैहै॥और इच्छास्वरूपकामकेनष्टहुवे क्रोधभी तिसीकालविषे नाशहोवैहै॥काहेतें इच्छारूपकामका जबी कोईपुरुष निरोधकरैहै॥तबी सोइच्छारूपकामहीं द्वेषरूपक्रोधाकारपरिणामकूं प्राप्तहोवैहै॥और जोपुरुष इच्छातें रहितहै॥तिसकूं किसीनिमित्तकरिकै क्रोधउत्पन्नहोवैनहीं॥अथ कामकेतथाक्रोधके निवृत्तिकाफलवर्णन॥श्लोक॥विवेकवह्निनादग्धे कामक्रोधेसमूलके ॥ संसारेभगवानेष आनंदात्माप्रसीदति ॥ ४ ॥ अर्थयह ॥ महावाक्यकरिकैजन्य आत्मज्ञानरूपअग्निकरिकै मूलअज्ञानसहितकामक्रोधकेनाशहुए इसीशरीरविषे महावाक्यकाअर्थरूप आनंदआत्मा प्रादुर्भावहोवैहै ॥ ४ ॥ या अर्थविषे स्मृतिवचनकूंभीदिखावैहैं ॥ श्लोक ॥ कामजानामितेमूलं संकल्पात्किलजायसे ॥ संकल्पेतुमयात्यक्ते कथंत्वंमयिजायसे ॥ ५ ॥ अर्थयह ॥ हेकाम! तेरामूल मैं जानताहूं ॥ संकल्पतें तुम उत्पन्नहोवोहो ॥ सोसंकल्प हमनैं परित्यागकर्याहै ॥ यातें किसीप्रकारकरिकैभी हमारेविषे तुमारीउ

त्पत्तिसंभवैनहीं ॥५॥ इसप्रकार कामविषे सर्वअनर्थकीमूलताकूं तथाकामकेनिवृत्तिकेउपायकूं यहकामीपुरुष नजानताहुवा और वीर्यरूपगर्भकरिकैयुक्तहुवा औरकामरूपग्रहकरिकैव्याकुलहुवा औरसर्पकीन्यांई उपस्थरूपसर्पकरिकैदंस्याहुवा ऐसा जो कामी पुरुषहै ॥ सो ताकालविषे किंचित्‌मात्रभी नहींजानता ॥ और कामरूपग्रहकेप्रवेशतैं तथाउपस्थरूपसर्पकृतभक्षणतैं यहकामी पुरुष वीर्यरूपगर्भकरिकैक्षीणहुवा तावीर्यरूपगर्भकेत्यागकीइच्छाकरै है ॥ सोकैसावीर्यरूपगर्भ है॥ शरीरकासारभूतहै॥और सर्वअं गोंतैंपृथक्‌कियाहुवाहै ॥ ऐसेवीर्यरूपगर्भकूं जब यहकामीपुरुष नहींसहारिसकैहै ॥ तब नारीकीयोनिविषे ताका परित्यागकरैहै ॥ याप्रकार मैथुनधर्मतैं पिताकास्वल्पस्वरूपजोवीर्यरूपगर्भ है सो स्त्रीकीयोनिकूं प्राप्तहोवै है ॥ और जैसे भारकरिकैदुःखीहुवापुरुष भारकेत्यागकियेतैं सुखीहोवैहै ॥ तैसे वीर्यरूपगर्भकेत्यागतैं यह गर्भीपुरुष सुखकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जैसे पिशाचादिकग्रहक रिकै आविष्टपुरुष दुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ और ताग्रहकेनिवृत्तहुवेतैं सुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहगर्भीपुरुष वीर्यरूपगर्भकेनिकसणेतैं सुखकूंप्राप्तहोवै है॥ इहां वीर्यकेनिर्गमनतैं सुखकीप्राप्ति लौकिकदृष्टीसैंकहीहै ॥ औरविचारदृष्टीसैंतौ वीर्यकेनिर्गमनविषे पुरुषोंकी महान्‌हानिहोवैहै ॥ जैसे जीर्णभावकूंनहींप्राप्तभयाजोअन्नहै सो प्राणांतदुःखकूंउत्पन्नकरिकैनिकसैहै ॥ तैसे यहवीर्यभी प्राणांत दुःखकूंउत्पन्नकरिकैनिकसैहै ॥और जैसे पुरुषोंकेबलकानाशक अजीर्णअन्नकानिर्गमनहै ॥ तैसे वीर्यकानिर्गमनभी पुरुषके बल कानाशक है॥और जैसे अतीसाररोग पुरुषोंकेसर्वतेजकूंहरणेहाराहै ॥ तैसे वीर्यकाबाह्यनिर्गमनभी पुरुषोंकेसर्वबलकानाशक है ॥ याप्रकारवीर्यकेबाह्यनिर्गमनतैं पुरुषोंकी महान्‌हानिकही ॥ अब तावीर्यकेनिरोधतैं पुरुषोंकूं महान्‌फलकीप्राप्तिदिखावैहैं ॥ पुरुषों करिकैनिरुद्धकर्‌याहुवा जोवीर्यरूपसप्तमधातु॥ताकी ओजनामा अष्टमीदशाहोवै है ॥ हृदयदेशविषेस्थित औरपीतवर्णवाला जो जीवकेनिवासकास्थान ताकूं ओजनामकरिकै योगवाशिष्ठमैंकह्याहै ॥ ताओजनामादशाकरिकै यहजीव तेजयुक्तहुवाजीवै है ॥ और यावीर्यकेनिरोधकियेहुवे पुरुषोंकूं विरूपकरणेहारीजराअवस्थाभी शीघ्रनहींप्राप्तहोवै है और मृत्युभी शीघ्रनहींप्राप्तहो वै है ॥ और बलभी तापुरुषका नाशनहींहोवै है ॥ औरवीर्यकेनिरोधकरणेहारे ब्रह्मचारीपुरुषोंकूं परलोकविषे ब्रह्मलोककीप्राप्ति

होवै है ॥ और इसलोकविषे महान्कीर्ति ताकीहोवै है ॥ यातें वीर्यकेनिरोधतेंहीं ब्रह्मचारीपुरुषोंके दोनोंलोकसिद्धहोवै हैं ॥ और वी
र्यकेपरित्यागतें कामीपुरुष दोनोंलोकोंतेंभ्रष्टहोवै हैं॥ और वीर्यकेनिरोधतें योगीपुरुष आकाशविषेगमनकरणेकूंभी समर्थहोवै हैं॥ औ
र अणिमादिकअष्टसिद्धियोंकूं प्राप्तहोवै है॥ इसप्रकार वीर्यकानिरोध महाफलकाहेतुहै ॥ तावीर्यकेपरित्यागतें कामीपुरुष महा
न्हानिकूंप्राप्तहोवैहैं॥ जैसे इक्षुकादंड पीडनतेंनिःसारहोवै है॥ तैसे यहकामीपुरुषभी स्त्रीकीभुजावोंकरिकेपीडनतें साररूपवीर्यतेंरहित
होवैहै ॥ और कामरूपअग्निकरिकै सर्वअंगोंतेंनिर्गमभयाजोवीर्य ॥ सोकैसावीर्यहै॥ आयुषऔरबलके वृद्धिकरणेहाराहै ॥ ऐसेवीर्यकूं
यहमूढकामीपुरुष अज्ञानकरिकेआवृतहुवा स्त्रीविषेपरित्यागकरै है॥ इसप्रकार स्त्रीकेयोनिस्थानविषेप्राप्तभयाजो जीवमिलितवीर्य
ताका पुरुषशरीरतेंनिर्गमनरूप प्रथमजन्म कहताहै ॥ और तायोनिविषेप्राप्तभयायहजीव नानाप्रकारकेसहस्रअवस्थावोंकूं प्रा
प्तहोवै है ॥ तेकैसीअवस्थाहैं॥ एकएकअवस्थाभी दुःखतथाशोकोंकेसहस्रोंकरिकै व्याप्तहै॥ और गर्भउपनिषद्विषे ते अवस्था वि
स्तारतेंनिरूपणकरीहैं ॥ और वीर्यरूपगर्भकेधारणकरनेहारायहपुरुष स्त्रीकेउदरविषेगर्भरूपकरिकै प्रवेशकरै है ॥ याकारणतें
पुरुषकेवीर्यरूपगर्भकेधारणकरणेहारीसास्त्री पुरुषनैं सर्वप्रकारकरिकै रक्षाकरणेकूंयोग्यहै ॥ अब तारक्षाकेप्रकारकूंदिखावै हैं ॥
वस्त्रोंकरिकै तथाअन्नकरिकै गर्भिणीस्त्रीकारक्षण पुरुषनैं करणा ॥ तथा धनकरिकैरक्षणकरणा ॥ और चतुर्थमासविषे हृदयदेश
विषेगर्भ स्थितहोवै है॥ तिसकालविषे जिसजिसपदार्थमें स्त्रीकीअभिलाषाहोवै ॥ तिसतिसपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकैभी स्त्रीकारक्षणक
रणा ॥ तापदार्थोंकेनदेणेतें बालककूंदुःखकी प्राप्ति सुश्रुतग्रंथविषे कहीहै॥ तहां यहप्रसंगहै॥ चतुर्थमासविषे चक्षुइंद्रियकेविषयजे
रूपादिकपदार्थ तिनोंकी जोस्त्रीकूंअभिलाषाहोवै॥ और तापदार्थोंकीप्राप्ति स्त्रीकूंनहींहोवै तब बालककेचक्षुइंद्रियविषे पीडाउत्प
न्नहोवै है ॥ तैसे रसनइंद्रियकेविषयजेरसादिकहैं ॥ तिनोंकी जब स्त्रीकूंअभिलाषाहोवै ॥ और तारसादिकोंकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तब
बालककूं रसनइंद्रियविषेपीडा उत्पन्नहोवै है ॥ इसप्रकार जिसजिसइंद्रियकाविषय गर्भिणीस्त्रीकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतिसइं
द्रियविषे बालककूं पीडाहोवैहै ॥ यातें सर्वइंद्रियोंकेविषयोंकीप्राप्तिकरिकै पुरुषनैं स्त्रीकारक्षणकरणा ॥ और नानाप्रकारकेरथादि

कोंकरिकै स्त्रीकारक्षणकरणा ॥ और स्नानकरिकै तथासिहजाकरिकै तथाआसनादिकोंकरिकै पुरुषने स्त्रीकारक्षणकरणा ॥ और
गृहकेव्यापारकीनिवृत्तिकरिकैभी स्त्रीकारक्षणकरणा ॥ और औषधादिकोंकेसेवननतें स्त्रीकीरक्षाकरणी ॥ तथा अपथ्यवस्तुकेनिवृ
त्तितें स्त्रीकीरक्षाकरणी ॥ इसप्रकार गर्भिणीस्त्रीकापालनकरणा पुरुषकूंउचितहै ॥ काहेतें लोकविषे यहमर्यादाप्रसिद्धहै ॥ जोपुरु
ष उपकारकरैहै॥ ताउपरि दुर्जनपुरुषभी उपकारकरैहैं ॥ और सज्जनपुरुष उपकारकरैहैं याकाक्याकहणाहै ॥ तैसे यहनारीभी
पुरुषकेवीर्यरूपगर्भकेधारणतें पुरुषउपरि उपकारकरैहै॥तात्पर्ययह ॥ पुरुषकेदुःखकाकारणवीर्यरूपगर्भ यास्त्रीनें आपणेविषेधारण
कऱ्याहै ॥ यातें कृतघ्नतादोषकीनिवृत्तिवासते पुरुषने सर्वप्रकार गर्भिणीस्त्रीकारक्षणकरणा ॥ किंवा ॥ वीर्यरूपगर्भविशिष्टपुरुष ग
र्भरूपकरिकै स्त्रीविषेप्रवेशकरैहै ॥ और पुनः नवीनहोइके तास्त्रीविषेउत्पन्नहोवैहै याकारणतें पुरुषकी स्त्रीजननीहै ॥ यातेंभी रक्षा
करणेयोग्यहै ॥औरगर्भाधानकालतैंलेकरिकै जबपर्यंत योनितें जीवकानिर्गमनहोवैहै ॥ तबपर्यंत स्त्रीकेरजकेसाथ तादात्म्यभा
वकूंप्राप्तभया जोपुरुषकाअंश ॥ ताकूं यहस्त्री आपणेशरीरकीन्यांईं धारणकरैहै॥ यातेंभी पुरुषकरिकै स्त्रीरक्षाकरणेकूंयोग्यहै॥तहां
पूर्वग्रंथकरिकै पुरुषकेशरीरविषेप्रवेशरूप प्रथमगर्भकरिकै जीवकूं दुःखोंकीप्राप्तिकही॥अब स्त्रीकेशरीरविषेप्रवेशरूप द्वितीयगर्भ
करिकै जीवकूं दुःखोंकीप्राप्तिकानिरूपणकरैहै ॥ योनिद्वारा जाविषेप्रवेशहोवै ऐसाजो स्त्रीकाउदरहै ॥ सोकैसाउदरहै ॥ कृमितथा
विष्ठादिकोंकरिकै दूषितहै ॥ ऐसेउदरविषेअनंतदुःखोंकूं जीव अनुभवकरिकै पुनःयोनिद्वाराबाहरिआवैहै ॥ यागर्भदुःखकेभयतैंहीं
सर्वमुमुक्षु ब्रह्मज्ञानकीइच्छाकरैहैं॥ और ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवासते आलसतैंरहितहुवे शास्त्रउक्तनिष्कामकर्मोंकूंकरैहैं॥ सोकैसागर्भ
दुःखहै॥ जैसा मरणकालविषे पुरुषोंकूंदुःखहोवैहै॥ और जैसा नरकविषेदुःखहोवैहै ॥ तिसदुःखतैंभीकोटीकोटीगुणितअधिकदुःख
योनियंत्रविषे जीवकूंहोवैहै ॥ और जैसे मरणकालविषे जीवकूंपीडाहोवैहै॥ तातैंशतगुणअधिकपीडा योनियंत्रकेप्रवेशविषे तथानि
र्गमनविषे जीवकूंहोवैहै ॥ और माताकेउदरविषे जोजीवकानिवासहै ॥ सो नरककेनिवासतैंभीअधिकहै॥ औरतिसमाताकेउदरवि
षे देहधारीजीव अनंतदुःखोंकाअनुभवकरते हैं ॥ जेदुःख कथनकरेहुवेभी हमारेकूं विव्हलता उत्पन्नकरैहैं ॥ और विष्ठामूत्रकाग

है जोजननीकाउदरहै ॥ ताविषेनिवासतें दुःसहदुःखकूं यहजीव प्राप्तहोवैहै ॥ सोमाताकाउदररूपगृहकैसाहै ॥ पूयऔररुधिरकरिके लिप्तहै ॥ और नानावर्णयुक्तजेकफवातापित्तधातुवां तिनधातुरूपचित्रोंकरिकैयुक्त जेमांसमयभित्ती तिनभित्तियोंकरिकैयुक्त है ॥ याकारणतें दुःसहहै ॥ और उदरकेकृमिरूप जेसर्पोंकेसहस्र तिनोंकरिकै युक्तहै ॥ और व्याधिरूपजेवृश्चिकहैं तिनोंकरिकै पूरितहै ॥ और माताकाजोमहान्प्राणवायुहै ॥ तिसकरिकै चलायमानभये हैं नाडीरूपरज्जुजिसके ॥ और जाकेभीतर सर्वदाअग्नि रहैहै ॥ याकारणतेंहीं अर्द्धदग्धहै ॥ और संकुचितहै गर्भकाअवकाशजिसविषे ॥ ऐसेमाताकेउदरविषे दुःसहदुःख जीवोंकूं प्राप्त होवैहैं ॥ सोगर्भदुःख विवेकीपुरुषोंकूं प्रसिद्धहै ॥ और विशेषकरिकै योगीपुरुष गर्भकादुःख स्मरणकरते हैं ॥ इसप्रकार गर्भविषे अनंतदुःखोंकूं जीव प्राप्तहोवैहै ॥ सहस्रजन्मोंकूंधारिकरिकै जोगर्भदुःखोंकीगिणतीकरिये॥ तौभी गिणेजावैंनहीं॥यातें किंचित्मात्र गर्भकेदुःख तुमारेकूं हमनेंकहेहैं॥और गर्भउपनिषद्विषेभी याप्रकार किंचित्दुःख कथनकरेहैं॥गर्भकेसर्वदुःखकहणेकूं कोईभीसमर्थनहीं ॥ यातें प्रधानप्रधान जेगर्भकेदुःखहैं ॥ तिनोंकूं हम कथनकरें हैं॥तागर्भविषे अष्टमासपर्यंत जीवोंकूंमूर्छारूपअज्ञानरहैहै॥सोकैसाअज्ञानहै ॥ सर्वदुःखोंकाकारणहै॥और गर्भविषे जीवकूं आपणीक्षुधापिपासाकरिकै अथवा माताकेक्षुधापिपासाकरिकै अतिसंताप होवैहै॥और शरीरविषे असमर्थताहोवैहै॥और नवममासविषे जीवकूंअनंतजन्मोंकेदुःखोंकीस्मृतिहोवैहै ॥तहां दुःखोंकास्मरणकरिकै याप्रकार कथनकरैहै ॥ श्लोक ॥ आहाराविविधाभुक्ताः पीताश्चविविधाःस्तनाः ॥मातरोविविधादृष्टाः पितरःसुहृदस्तथा ॥ यदियोन्याःप्रमुच्येयं तत्प्रपद्येमहेश्वरम्॥६॥अर्थयह ॥ नवममासविषे पूर्वदुःखनकास्मरणकरिकै यहजीव ऐसाकथनकरैहै ॥ चौरासीलक्षशरीरोंविषे मैंने अहारभीअनंतप्रकारकेभोजनकरेहैं ॥ और अनंतप्रकारके मैंने स्तनपानकरे हैं ॥ और अनंतप्रकारकेमातावोंकूं मैंने देखाहै ॥ और अनंतप्रकारकेपितावोंकूं मैंने देखाहै ॥ तथा अनंतप्रकारकेसुहृदोंकूं देखाहै ॥ अबी इसयोनितें जब मैंनिकसोंगा ॥ तब परमेश्वरकेशरणकूंप्राप्तहोवोंगा ॥६ ॥ इसप्रकार पूर्वदुःखोंकूंस्मरणकरिकै गर्भविषे याप्रकार जीव कथनकरैहै ॥ और माताकूंभीपीडाउत्पन्नकरैहै ॥ याप्रकार उदरविषे नानादुःखोंकूंसहनकरिकै परिपूर्णहुवा जोबालकहै ॥ ताकूं प्रसूतकालकावायु माताके

उदरतैंबाहरिनिकासेहै ॥ सोकैसाबालकहै ॥ कलिलादिअवस्थाक्रमकरिकै जिसके सर्वहस्तपादादिकअवयवपूर्णभयेहैं ॥ इहांयह तात्पर्यहै ॥ प्रथमरात्रिकरिकै कलिलअवस्थाहोवैहै ॥ और सप्तरात्रिकरिकै बुद्बुदहोवै है ॥ और अर्द्धमासकरिकै पिंडहोवै है ॥ और एकमासकरिकैकाठिन्यहोवैहै ॥ और दूसरेमासकरिकैशिरहोवै है॥ और तीसरेमासकरिकैपादहोवै हैं॥ और चतुर्थमासकरिकै अंगुलि उदर कटीदेश होवैहैं ॥ और पंचममासकरिकै पृष्ठदेशहोवै है ॥ और षष्ठेमासकरिकै मुख नासिका नेत्र श्रोत्र होवै हैं ॥ और सप्तममासकरिकै जीवकासंयोगहोवै है ॥ और अष्टममासकरिकै सर्वअंगोंकीपूर्णताहोवै है ॥ और नवमासकरिकै ज्ञानकीपूर्णतातें पूर्वजन्मोंकीस्मृतिहोवै है ॥ याप्रकार गर्भउपनिषद्‌विषे बालककेअवयवोंकीपूर्णता माताकेउदरविषेकहीहै॥ पुनः सोकैसाजीवहै॥ त्यागकियाहैगर्भासनजिसनैं ॥ गर्भविषे याप्रकारकाआसनहोवै है ॥ पृष्ठ तथाग्रीवा कुंडलीकृतहोवै हैं ॥ और हस्तपाद संकुचितहोवै हैं ॥ और कुक्षिविषे जाकामस्तकहोवै है ॥ पुनः सोकैसाबालकहै॥ प्रसवकेसमीपकालविषे जरायुरूपपट करिकैरहितहै॥ और माताकेउदरविषे मंडूककीन्यांई जहांतहां धावनकरै है ॥ और हस्तोंकरिकै तथापादोंकरिकै तथाशरीरकीक्रियाकरिकै माताकेउदरभेदनकरणेवासते उद्यमवालाहुवाहै॥ और कदाचित् सोबालक माताकेकुक्षिदेशविषे धावनकरै है॥ और कदाचित् हृदयदेशविषे धावनकरै है ॥ और कदाचित् योनीयंत्रविषे धावनकरै है ॥ जैसे मर्कट एकस्थानविषे स्थितनहींहोवै है ॥ तैसे यहबालकभी माताके उदरविषे कदाचित् स्थितिकूंनहींप्राप्तहोता॥ पुनःसोकैसाबालकहै॥ आपणेशरीरकेमध्यदेशविषे मस्तककूंधारिकरिकै कियाहैनीचेमस्तकजिसने ॥ और अनंतप्रकारकेक्लेशोंकरिकै जननीकूं क्लेशकरै है ॥ यातें अतिनिंदितहै ॥ और जैसे सर्पकेग्रसणेतें मंडूक पुकारै है तैसे यहबालकभी पुकारै है ॥ याप्रकारकेबालककूं प्रसूतिकालकाप्राणवायु माताकेउदरतें बाहरिनिकासेहै ॥ जैसे मूषककूं सर्प निकासेहै ॥ और काष्ठकेभेदनकरणेहाराजोक्रकचहै॥ तिसकेअग्रभागकेसहस्रों तैंभीअतितीक्ष्ण जोस्वल्पयोनियंत्रहै ॥ तासैंनिकसिकरिकै कीटकीन्यांई यहबालक भूमिविषेप्राप्तहोवै है ॥ ताबालककेनिकसणेतें स्त्रीकूंभी महान्‌पीडाहोवै है॥ जैसे कृमिकरिकैयुक्तव्रणकेकोपहुए पुरुषोंकूं पीडाहोवै है ॥ तिसपीडातेंभीअधिकपीडा योनियंत्रविषेबालककेप्राप्तहुवे स्त्रीकूं होवै है ॥ और जो

से उदरविषे व्रणकेहुवे तथासर्पकेहुवे अस्मदादिकपुरुषोंकूं पीडाहोवैहै ॥ तैसे गर्भकेधारणतें गर्भिणीस्त्रीकूं पीडाहोवैहै ॥ और पूय करिकैपूरितव्रणकेभेदनकरिकै तिसव्रणतैंकीटोंकेनिर्गमनहुए जैसे अस्मदादिक पुरुषोंकूं सुखहोवैहै तैसाहीसुख गर्भकेत्यागकि ये स्त्रीकूं होवैहै ॥ और विष्ठामूत्रकेनिरोधतें अस्मदादिकपुरुषोंकूं जैसा दुःख होवैहै ॥ तिसतैंभीअधिकदुःख गर्भकेधारणविषे स्त्री कूं होवैहै ॥ और चिरकालकेनिरुद्धहुवे जेमलमूत्रादिक॥ तिनोंकेपरित्यागतें जैसे अस्मदादिकपुरुषोंकूं सुख होवैहै ॥ तैसाहीसुख गर्भिणीस्त्रीकूं गर्भकेत्यागतेंहोवैहै ॥ अब अभूतउपमाकरिकै स्त्रीकेदुःखकूं दिखावैहै ॥ वीसअंगुलपरिमाणदीर्घहोवै ॥ और विस्ता रकरिकै तथाविशालताकरिकै वितस्तिमात्र जाका परिमाणहोवै ॥ और अस्थितथाश्वासोंकरिकै युक्तहोवै ॥ ऐसाजोकोईकजंतुविशेष सो अस्मदादिकपुरुषोंकेउदरविषेस्थितहोवै ॥ तिसजंतुकरिकै जैसा अस्मदादिकपुरुषोंकूं दुःखप्राप्तहोवैहै ॥ तैसाहीदुखस्त्रीकूं गर्भ धारणतेंहोवैहै ॥ और पायुद्वारतें तिसजंतुकेनिकसणेकरिकै जैसा अस्मदादिकपुरुषोंकूं दुःखप्राप्तहोवै ॥ तैसाहीदुःख गर्भिणीस्त्रीकूं गर्भकेत्यागतेंहोवैहै ॥ और षोडशअंगुलपरिमितहैमध्यकाअवकाशजाका ऐसाजो वर्तुलाकारक्रकचतिसतैंनिकसणेविषेजैसा अस्म दादिकपुरुषोंकूं दुःखहोवै॥तैसाहीदुःख बालककूं माताकेउदरतैंनिकसणेविषेहोवैहै ॥इसप्रकार माताकेउदरविषेप्रवेशतथाउदरतैंनि र्गमनविषे मातासहितयाजीवकूं अनंतदुःखप्राप्तहोवैहैं॥तेकैसेदुःखहैं॥लोकप्रसिद्धदुःखोंकीउपमातैंरहिततहैं॥ इसप्रकार पिताकाआ त्मास्वरूपपुत्र लोकोंकेप्रवाहकेअविच्छेदवासते माताकेउदरतैंबाहरिनिकसताभया॥सोकैसापुत्रहै ॥आपणेदर्शनकरिकै पिताकूं आनं दउत्पन्नकरैहै ॥ और उत्पन्नभयेपुत्रकूं आपणेअंकविषेस्थापनकरिकै अथवाभूमिविषेस्थापनकरिकै प्रसन्नमनहुवापिता जन्मकालके संस्कारोंकूं करैहै॥और जन्मतैंपूर्व गर्भाधानतैंलैकरिकै जोजोसंस्कार पुत्रविषे पिताकरैहै ॥ तथा जन्मतैंउत्तरकालविषे जोजोसंस्कार पिताकरैहै॥तेसंपूर्णसंस्कार आपणेकूंही पिताकरैहै॥काहेतें सोपिता पुनःपुत्ररूपतैंनवीनहोइकरिकै स्त्रीविषेउत्पन्नहोवैहै॥और पिता काकार्यजोसंततिकाप्रवाह ॥ तिसकूं पौत्रादिकरूपकरिकै यहपुत्र विस्तारकरैहै ॥ और सन्मार्गवर्तीपुत्र पिताकेस्वर्गकाभीकारणहोवै है॥और इसमनुष्यलोककाभी साधकपुत्रहै ॥ काहेतें पुत्रादिकोंकरिकैही मनुष्यलोक वशवर्तीहोवैहै॥ याकहणेतें यहसिद्धभया ॥ इ

सलोककी तथास्वर्गादिकलोककी प्राप्ति पुत्रकरिकैहोवै है ॥ परंतु मोक्षकीप्राप्ति पुत्रकरिकैहोवैनहीं ॥ काहेतें श्रुतिनैं पुत्रधनादिकोंविषे मोक्षकीसाधनताकानिषेधकरिकै केवलत्यागकरिकैही मोक्षकीप्राप्तिकहीहै ॥ और पूर्व अन्नद्वारा पिताशरीरविषेप्रवेशतें अनंतर वीर्यद्वारा पिताशरीरतैंनिर्गमनरूप प्रथमजन्म जीवका कह्याथा ॥ तिसजन्मकीअपेक्षाकरिकै माताकेउदरतैंनिर्गमनरूप द्वितीयजन्म याजीवका होवैहै ॥ और पुनः अन्नद्वारा पिताशरीरविषेप्राप्तहोइकरिकै वीर्यद्वारानिर्गमनरूप तीसरेजन्मकूं आगेनिरूपणकरेंगे ॥ और सत्कर्मवर्तीपुत्रकेजन्मकरिकै पिताकूंभी स्वर्गकीप्राप्तिहोवै है ॥ यातें चौरासीलक्षशरीरोंविषे मनुष्यशरीरही अतिसैंकरिकैदुर्लभहै ॥ ऐसे मनुष्यशरीरकूंपाइकरिकै पुण्यकर्मोंकूंहीं पुरुषनैं संपादनकरणा ॥ और यामनुष्यशरीरकेप्राप्तिकूं देवताभीसर्वदाइच्छाकरै हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ देवतादिकशरीरोंविषे तथापश्वादिकशरीरोंविषे नवीन पुण्य तथापाप संपादनहोवैनहीं ॥ किंतु पूर्वमनुष्यशरीरविषे कियाजो पुण्य तथा पाप॥ ताकाफल सुख तथादुःख भोग्याजावैहै ॥ और तिसमनुष्यशरीरविषेभी भारतखंडविषे विवेकादिकसाधनचतुष्टयरूपअधिकारकेसंपादनयोग्य जब याजीवकाशरीरहोवै है ॥ तबीही अष्टदोषोंकेनिवृत्तिकाउपाय ब्रह्मविद्या संपादनहोवै है ॥ ब्रह्मविद्यातेंअन्यउपायकरिकै अष्टदोषोंकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ भारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइके ब्रह्मात्मज्ञानही पुरुषोंकूं संपादनकरणेयोग्यहै ॥ काहेतें आत्मज्ञानही सर्वअनर्थकेनिवृत्तिकासाधनहै॥ और सर्वयज्ञादिककर्मोंकेफलकाभी आत्मज्ञानविषेही अंतर्भावहै ॥ अब अष्टदोषोंकानिरूपणकरै हैं ॥ इच्छा १ द्वेष २ भय ३ मोह ४ क्षुधा ५ तृषा ६ निद्रा ७ विष्ठामूत्रजन्यपीडा ८ ये अष्टदोष सर्वदेहधारीजीवोंकूं होवै हैं ॥ और आत्मज्ञानतैंविना अन्यउपायकरिकै नाशहोवैनहीं ॥ किंतु आत्मज्ञानकरिकैही नाशहोवैहैं ॥ अथ इच्छाअनुगमनिरूपणं ॥ सात्विकपुरुष मोक्षकीइच्छाकरै हैं॥ और राजसपुरुष मोक्ष और विषय दोनोंकीइच्छाकरै हैं॥ और तामसपुरुष केवल विषयोंकीहीइच्छाकरै हैं ॥ यातें इच्छातैंरहित कोईभीदेहधारीजीवनहीं ॥ अथ द्वेषअनुगमनिरूपणं॥ सात्विकपुरुष विषयोंविषेद्वेषकरै हैं ॥ और राजसपुरुष वैरीयोंविषेद्वेषकरै हैं ॥ और तामसपुरुष वैरीयोंविषे तथा मित्रोंविषे द्वेषकरै हैं॥ यातें द्वेषतैंरहित कोईभीदेहधारीजीवनहीं॥ अथ भयअनुगमनिरू

पणं ॥ सात्विकपुरुषोंकूं प्रमादतैंभयहोवैहै ॥ और राजसपुरुषोंकूं यमतैंभयहोवैहै ॥ और तामसपुरुषोंकूं केवल राजादिकोंतैंभयहोवैहै॥यातैं भयतैंरहित कोईभीदेहधारीजीवनहीं॥अथ अज्ञानरूपमोहअनुगमनिरूपणं॥सात्विकपुरुषकूं आत्माकाअज्ञानहोवैहै॥और राजसपुरुषकूं शास्त्रविद्याकाभी अज्ञानहोवैहै॥ और तामसपुरुषोंकूं सर्ववस्तुविषे अज्ञानहोवैहै॥ यातैं मोहतैंरहित कोईभीदेहधारीनहीं॥अथ क्षुधातृषानिद्राअनुगमनिरूपणं॥क्षुधा और तृषा तथा निद्रा ये तीनों सर्वदेहधारीजीवोंकूं समानहोवैहैं॥और विष्ठामूत्रजन्यपीडातौ वृक्षादिकस्थावरोंकूंछोडिकरिकै अन्यसर्वदेहधारीजीवोंकूंहोवैहै॥अथवाविष्ठामूत्रजन्यपीडा स्थावरजंगमसर्वदेहधारीजीवोंकूं होवैहै॥याकारणतैंही वृक्षादिकभी आपणेचिक्कणरसका परित्यागकरैहैं॥जारसकूं लोकविषेगूंदकहैहैं॥इसप्रकार अष्टदोषसर्वदेहधारीजीवोंविषेस्थितहैं॥ और सत्त्व रज तम या तीनगुणोंकेअभिमानका नाशकरणेहारा जोआत्मज्ञानहै॥ तासैंविना किसीउपायकरिकैभी अष्टदोषोंकानाश होवैनहीं ॥ एकआत्मज्ञानकरिकैही नाशहोवैहै॥ और अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज्ज ये चारिप्रकारके जेदेहधारीजीवहैं॥ ते अष्टदोषोंकापरित्यागकरिकै कबीभी स्थितहोवैनहीं॥ और यहमनुष्यशरीर ब्रह्मविद्याकारिकेअष्टदोषोंकेजयवासतै परमेश्वरनैं प्राप्तकऱ्याहै॥ तामनुष्यशरीरकूंपाइके ब्रह्मविद्यातैंशून्यमूढपुरुष उलटा अष्टदोषोंकेवशवर्तीहोवैहै॥ तहांप्रथमबाल्यअवस्थाविषे दोषोंकाअनुगम दिखावैहैं॥माताकेउदरतैंजन्माजोबालक॥ सोनानाप्रकारकेशब्दोंकूंकरताहुवा औरभूमिविषेसोयाहुवा माताकेस्तन्यकीइच्छाकरैहै॥ तिसस्तन्यपानकीइच्छातैंजन्यदुःखोंसैंआदिलैके जितनेदुःखोंकूं यहअज्ञानीजीव प्राप्तहोवैहै॥ तेसंपूर्णदुःख अष्टदोषोंकरिकैजन्यहोवैहैं॥ और पूर्वपूर्वइच्छादिकअष्टदोषोंकेअनुभवजन्य जेसंस्कारहैं॥ तिनोंकरिकै उत्तरउत्तर अष्टदोषोंकूं यहजीव प्राप्तहोवैहै॥ और जैसे माताकेउदरविषे यहबालक असमर्थहोवैहै॥ तैसे जन्मतैंउत्तरभी आपणीइच्छापूर्वक हस्तपादादिकअंगोंकेप्रवृत्तिमैं समर्थहोवैनहीं॥ और मत्कुणादिकजंतुवोंकेनिवारणविषे तथाआपणेअंगोंकेकंडूयनविषेभी यहबालक समर्थहोवैनहीं॥ यातैं अतिदुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥ और आपणीइच्छापूर्वक अन्नकूं तथाजलकूं यहबालक प्राप्तहोवैनहीं॥ किंतु क्षुधाकालविषे माता याकूं जलदेवैहै॥ और तृषाकालविषे अन्नदेवैहै॥ यातैंभी अतिदुःखकूंप्राप्तहो

वैहै ॥ और कंठकेअस्पष्टताकरिके किंचित्शब्दकाउच्चारणकरताहुवाभी यहबालक नहींउच्चारणकरैहै ॥ और कदाचित् अतिसें
करिकेदुःखीहुवा यहबालक उँचास्वरकरिकै माताकूं बुलावैहै ॥ तावचनकूंश्रवणकरिकै सा माता कबी ताकेसमीपआवैहै ॥ और
कबी नहींभीआवैहै ॥ यातैंभी अतिदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और विष्ठाकरिकै तथामूत्रकरिकै तथामुखकेलालाकरिकै लिप्तहुवे जे बा
लककेहस्तपादादिकअंगहैं ॥ तिनअंगोंकूं कदाचित् सामाता जलकरिकैप्रक्षालनकरैहै ॥ और कदाचित् नहींभीकरैहै ॥ यातैंभी
अतिदुःखकूं बालक प्राप्तहोवैहै ॥ और यहबालक व्यर्थहींहसैहै ॥ और व्यर्थहीं रुदनकरैहै ॥ और व्यर्थहीं भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥
और मोहकरिकैयुक्तहुवा यहबालक कदाचित् विष्ठादिकोंकूंभी भक्षणकरैहै ॥ और यहबालक वारंवार शब्दउच्चारणेकीइच्छाकरैहै ॥
और शब्दकेउच्चारणकरणेकासामर्थ्यहैनहीं ॥ यातैं अतिदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और गमनकरणेकी तथावस्तुकेग्रहणकरणेकी य
हबालक इच्छाकरैहै ॥ और गमनकरणेका तथावस्तुकेग्रहणकरणेका सामर्थ्यहैनहीं ॥ यातैंभी बालक अतिदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥
और मोहकूंप्राप्तहुवा यहबालक आपणीमाताकूं तथापिशाचीकूं अभेदकरिकैजाणैहै ॥ और आपणेपिताकूं तथाभ्राताकूं तथारा
क्षसकूं अभेदकरिकैजाणैहै ॥ इसप्रकार बाल्यअवस्थाविषे इच्छादिकअष्टदोषजन्य कोटिदुःखोंकूंअनुभवकरिकै तिसबाल्यअवस्था
केअंतर्भूत जोकुमारअवस्थाहै तिसकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिसकुमारअवस्थाविषे यहबालक जानुकरिकै तथाहस्तकरिकै धीरेधीरे ग
मनकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ कुमारअवस्थाविषे शीघ्रगमनकरणेकी बालक इच्छाकरैहै ॥ और शीघ्रगमनकरणेका सामर्थ्य हैनहीं ॥
यातैं अतिदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और शब्दउच्चारणेमैं असामर्थ्यहोणेतैं एकवस्तुकेप्राप्तिकीइच्छाकरिकै अन्यवस्तुकेवाचकशब्दका
उच्चारण बालक करैहै ॥ तावांछितवस्तुकेअप्राप्तितैंभी अतिदुःखकूं यहबालक प्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे श्वानशंकायुक्तहुवा गृह
विषे प्रवेशकरैहै ॥ तैसे यहबालकभी शंकायुक्तहुवा आपणेगृहविषे प्रवेशकरैहै ॥ और मोहकूंप्राप्तहुवा यहबालक हितकारीमाता
पितादिकोंतैंभी भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और पुरुषकेअभिप्रायकाबोधनकरणेहारी जोहस्तादिकोंकीचेष्टाहै ॥ तिसतैं पुरुषकेअभिप्राय
कूंजाणिकरिकै श्वानादिकपशुवोंकीभी प्रवृत्ति तथानिवृत्ति होवैहै ॥ और यहबालक हस्तादिकोंकीचेष्टातैंभी अभिप्रायकूंजाणता

नहीं ॥ यातें पशुतेंभी अतिअधमहै ॥ और किंचित्कालपाइके यहबालक पादोंकरिकैगमनकरै है ॥ और अतिसेंकरिकैचंचल होवै है ॥ और स्पष्टवाणीकरिके शब्दकूंउच्चारणकरै है ॥ और आपणेहितकूं तथाअहितकूं नहींजाणेहै ॥ और पितामाताकरिकै तथाअन्यबांधवोंकरिकै तथाबलवान्अन्यबालकोंकरिकै यहबालक ताडनाकूंप्राप्तहोवै है और दुर्वचनोंकरिकै निरादरकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जैसे श्वान गृहगृहविषे व्यर्थभ्रमणकरै है ॥ तैसे यहबालकभी व्यर्थही एकस्थानतैंदूसरेस्थानकूं गमन करै है ॥ और जैसे उन्मत्तपुरुष व्यर्थही वस्तुकाग्रहणकरै है ॥ और व्यर्थही शब्दकाउच्चारणकरै है ॥ तैसे यहबालकभी व्यर्थही वस्तुकाग्रहणकरै है ॥ और व्यर्थही शब्दकाउच्चारणकरै है ॥ और धूलिकरिकै जिसकेसर्वअंग धूसरहोइरहेहैं ॥ और महान्श्रमकरिकैयुक्तहै ॥ और अन्यबालकोंकेसाथ यहबालक व्यर्थहीस्नेहकरै है ॥ और व्यर्थहीद्वेषकरैहै ॥ और आपणेगृहविषे अविद्यमानवस्तुकीभी राजाकीन्यांई यहबालक याचनाकरै है ॥ और तिसवस्तुकेनहींप्राप्तहुवे यहबालक भोजनकूंनहींकरै है ॥ और कदाचित् रुदन करै है ॥ इसप्रकार कुमारअवस्थाविषे इच्छादिकअष्टदोषजन्य अनंतदुःखोंकूं यहजीव अनुभवकरिकै पुनःकोटी दुःखोंकेउत्पत्तिकास्थान जोयौवनअवस्थाहै ॥ ताकूं यहजीव प्राप्तहोवै है ॥ और तिसयौवनअवस्थाविषे स्त्रीभावकरिकै तथापुरुषभावकरिकै नानाप्रकारकेदुःखोंकूं सोजीव प्राप्तहोवै है ॥ कैसासोजीवहै ॥ आपणेसामर्थ्यतेंरहितहै ॥ और कर्मरूपपाशकेअधीनहै ॥ और जबी सोजीव कर्मकेवशतें नारीभावकूं प्राप्तहोवै है ॥ तबी पतितेंआदिलैकै जितनेआपणेसंबंधीहैं तिनोंतें भयकूंप्राप्तहोवै है॥ और सर्वदा स्त्री अस्वतंत्रहोवै है ॥ और गृहविषे महान् जाकूं व्यापारहोवै है ॥ और जैसे कामीपुरुषोंकूं सर्वदा स्त्रीकीइच्छारहै है ॥ तैसे स्त्रियोंकूंभी सर्वदा कामीपुरुषोंकीइच्छारहैहै ॥ और जैसे शृंखलाकरिकैबंधेहुवेचोरादिक दुःखपूर्वक कालकूं व्यतीतकरै हैं ॥ तैसे यहस्त्रीजनभी पतिआदिकोंकरिकैनिरोधकूंप्राप्तहुवा तथाआपणेसंबंधियोंकरिकैनिरोधकूंप्राप्तहुवा अथवा धर्मलोपकेभयकरिकैनिरोधकूंप्राप्तहुवा दुःखतें कालकूंव्यतीतकरै है ॥ और पुरुषकेअप्राप्तिकरिकै तथाप्राप्तहुवेपुरुषविषेभी रुचिकेअभावकरिकै नानादुःखरूपसमुद्रविषेप्राप्तहोवै है ॥ और पुत्रकीइच्छाकरिकै तथागर्भधारणकरिकै ॥ अनंतदुःखोंकूंसास्त्री प्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार

स्त्रीभावकूंप्राप्तहुवायहजीव यौवनअवस्थाविषे इच्छादिकअष्टदोषोंकरिकैजन्य अनंतदुःखोंकूं अनुभवकरै है ॥ और जबी यहजीव कर्मकेवशतैं पुरुषशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥ तहांभी यौवनअवस्थाविषे इच्छादिकअष्टदोषोंकरिकैजन्य अनंतदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसयौवनअवस्थाविषे शास्त्रकेजानणेहारेपुरुषकूंतो यमतैं तथाईश्वरादिकोंतैं भयहोवै है ॥ और व्यहारविषेकुशल जेपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं राजादिकोंतैंभयहोवै है ॥ औरमूढपुरुषकूं केवल आपणेपितादिकोंतैंभयहोवै है ॥ और धनतैं रहितपुरुष सर्वदा पराधीनहोवै है ॥ और यौवनअवस्थाविषे स्त्रीकेअप्राप्तहुवे ताकीइच्छातैं पुरुषकूं दुःखहोवै है ॥ और स्त्रीकेप्राप्तहुवेभी ताकेविषेइच्छाहैनहीं यातैंभी पुरुषकूं अतिदुःखहोवै है ॥ और कर्मकेअधीन जेपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं प्रथमयौवनही ज्वरकेसमान प्रधानदोषहै ॥ तिस यौवनरूपज्वरविषेभी अभिमानकाजनकजो ब्राह्मणादिकउत्तमकुलकीप्राप्ति औरविद्याकीप्राप्ति औरधनकीप्राप्ति ये तीनदोष महान्अनर्थकेकारणहैं ॥ जैसे लोकप्रसिद्धज्वरविषे जबी वात पित्त कफ ये तीनधातुरूपदोषोंका कोपहोवैहै ॥ तबी तिसपुरुषका मरणतैंविना अन्यकोईउपायहोवैनहीं ॥ किंतु मरणहीहोवै है ॥ तैसे यौवनरूपज्वरभी कुल विद्या धन यातीनदोषोंकरिकैयुक्तहुवा अनंतअर्थोंका आरंभकरै है ॥ यातैं तिसयौवनरूपज्वरकेनिवृत्तकरणेकाउपाय मरणतैंविना अन्यकोई हम देखतेनहीं ॥ और तिस यौवनरूपज्वरकरिकै मोहकूंप्राप्तहुवा जीव कबी गायनकरैहै ॥ और कबी नानाप्रकारकी आपणीगतिकूं दिखावै है ॥ और कबी हसैहै ॥ और कबी मत्तहस्तीकीन्यांई यहपुरुष आपणेपितादिकोंकेसमानजेवृद्धहैं ॥ तिनोंकूंभी भूमिपरिगिडावै है ॥ और कबीयुद्ध करै है ॥ और युद्धकरणेहारेअन्यपुरुषोंकूंविदारणकरै है ॥ और कबी नृत्यकरै है ॥ और चारोंओरतैं धावनकरै है ॥ और कबी हमारेसमानकौनहै ऐसाअहंकार करैहै ॥ और कबी शयनकरै है ॥ इसप्रकार यौवनअवस्थाविषे निरंकुशहुवा यहपुरुष नानाप्रकारकेदुष्टचेष्टाकूं वारंवारकरै है॥ औरतिसयौवनअवस्थाविषे यहपुरुष विषयभोगतैं तृप्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और विहितकर्मकूं तथानिषिद्ध कर्मकूंभी नहींजाणैहै॥ और जिसकामन सर्वदा स्त्रीजनोंनैं ग्रहणकऱ्याहै॥तात्पर्ययह ॥ मनकरिकै सर्वदास्त्रियोंकाहीचिंतनकरै है और परधनकेहरणेकी जिसकूं नित्यहीउत्कंठाहै॥ और शास्त्रकीआज्ञाकापरित्यागकरिकैवर्तै है ॥ ऐसे यौवनअवस्थावान्पुरुषकूं

शीघ्रही कालभगवान् आइके प्राप्तहोवै है ॥ और जैसे जुवानमंडूककूं सर्प ग्रसैहै॥ तैसे गृहविषे तथाक्षेत्रविषे तथाबांधवोंविषे आसक्त जो दुर्बुद्धियहजीवहै ॥ तिसकूंअतिदारुणकालभगवान् ग्रसैहै ॥ इसप्रकार यौवनअवस्थाविषे इच्छादिकअष्टदोषोंकरिकैजन्य अनंतदुःखोंकूं यहजीव प्राप्तहोवै है ॥ अब वृद्धअवस्थाविषे इच्छादिकअष्टदोषोंकरिकैजन्यदुःखोंकूं दिखावैहैं ॥ रात्रिदिनविषे दुःखोंका ग्रह औरचिंताकरिकैयुक्त ऐसाजो युवानपुरुषहै ॥ तिसकूं जरारूपपिशाचिनी ग्रसैहै ॥ कैसीसाजराहै ॥ श्वेतकुष्ठकरिकैयुक्तहै तिसकुष्ठिनी जराकेसंगकरिकै दुष्टहुवा यहपुरुषभी सर्वओरतैंश्वेतहोवैहै ॥ और कुरूपहोवै है॥ और शक्तितैंरहितहोवै है ॥ और दुःखकरिकै तथाशोककरिकै युक्तहोवै है ॥ और अनुभवकरीवस्तुकाभी जराअवस्थावान्पुरुषकूं स्मरणहोवैनहीं ॥ यातैं अनादरकापात्रहोवैहै ॥ और जराअवस्थाविषे यहमंदपुरुष कासश्वासरोगकरिकै व्याकुलहोवैहै ॥ और यौवनअवस्थाविषे करेजेपापकर्महैं ॥ तिनपापकर्मोंका जराअवस्थाविषेस्मरणकरताहुवा सोवृद्धपुरुष आपणेकूं धिक्कारकरै है ॥ और कैसेकैसेपापकर्म मैंनैं करे हैं याप्रकारका पश्चात्तापकरै है ॥ और विद्यातथाधनकरिकैयुक्त जोजराअवस्थावान्पुरुषहै ॥ तिसकूंभी पुत्रादिक आदरनहींकरैहैं ॥ तो मूर्खतथानिर्धनवृद्धकीक्याकथाहै ॥ और जिसपराधीनतारूपअवस्थाकूं यहपुरुष बाल्यअवस्थाविषेप्राप्तभयाथा तिसीपराधीनतारूपअवस्थाकूं जराअवस्थाविषे यहपुरुष प्राप्तहोवै है ॥ और वास्तवतैंविचारकरिये तौ बाल्यअवस्थातैंभी जराअवस्था अतिसैंकरिकैनिंदितहै ॥ काहेतैं शक्तितैंरहित तथाविष्ठामूत्रादिकोंकरिकैलिप्त जोबालकहै ॥ तिसकी अविवेकीलौकिकपुरुषभी निंदाकरैनहीं ॥ और मलादिकोंकरिकैलिप्त तामसवृद्धकूंदेखिकरिकै अविवेकीपुरुषभी ताकीनिंदाकरै हैं ॥ यातैं बाल्यअवस्थातैं जराअवस्था अतिनिकृष्टहै ॥ इसप्रकार वृद्धअवस्थाविषे कालपाशकेवशहुवे संपूर्णजीव नानाप्रकारके दुःखोंकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ और वृद्धअवस्थाविषे पुरुषकूं विषयकीप्राप्तिविषे महान्इच्छाहोवै है॥और शक्तिकेअभावतैं तथाइंद्रियोंकेक्षयतैं किंचित्विषयकूंभी वृद्धपुरुष प्राप्तहोवैनहीं॥और वृद्धपुरुषका बांधवोंविषेस्नेह वर्द्धताजावै है ॥ और शत्रुवोंविषेद्वेष वर्द्धताजावै है॥ परंतु तिसकेस्नेहतैं किसीमित्रका उपकारहोवैनहीं ॥ यातैं ताकास्नेहव्यर्थ है ॥ और तिसकेद्वेषतैं किसीशत्रुकी हानिहोवैनहीं ॥ यातैं ताकाद्वेषभीव्यर्थ है ॥ इसतैंआदिलैके अनं

तदुःखोंकूं वृद्धअवस्थाविषे यहजीव प्राप्तहोवै है ॥ तिसतैं अनंतर यौवनअवस्थाविषेउत्पन्नकन्याजोपुत्रहै ॥ तिसकूं इसमनुष्यलोकविषे स्थापनकरैं है ॥ सोकैसापुत्रहै ॥ पिताकाद्वितीयशरीर है ॥ और अनंतपुण्योंकरिकैप्राप्तभयाहै ॥ और पिताकरिकैकर्तव्य जो वेदोंकाअध्ययन तथायज्ञादिकर्म ॥ तिनोंकूं करणेहाराहै ॥ और यज्ञादिकोंकरिकै सर्वभूतोंकेसुखकाकरताहै ॥ और पितानैं आरंभकरे जेकूपतडागादिककार्य तिनोंकूंभी परिपूर्णकरणेहाराहै ॥ और जोकार्य पितानैं नहींकऱ्याथा ॥ तिसशुभकार्यकूंभी करणेहाराहै ॥ इसप्रकार पिताकेसर्वकार्यकूंकरणेहारा जोसन्मार्गवर्तीपुत्रहै तिसकूं इसलोकविषेस्थापनकरिकै जराअवस्थाकरिकैयुक्त हुवापिता ॥ मरणअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसतैंअनंतर कालभगवान्रूपरथवाही सूक्ष्मशरीररूपरथकूं सामग्रीकरिकैसंपन्नकरै है ॥ सोकैसासूक्ष्मशरीररूपरथहै ॥ पुण्यपापरूपचक्रोंकरिकैयुक्तहै ॥ और दुःखरूपपाथेयकरिकैपूरितहै ॥ मार्गविषे भोगणेयोग्यवस्तुकानाम पाथेयहै ॥ और इंद्रियरूपदुष्टअश्वोंकरिकैयुक्तहै ॥ और बुद्धिरूपकाष्ठकरिकैरचितहै ॥ और कास तथा श्वास तथा हिडकी रूपशब्दोंकरिकैयुक्तहै ॥ ऐसेसूक्ष्मशरीररूपरथकूं कालभगवान् त्यारकरै है ॥ और यहजीव यद्यपि शरीरकेसंबंधतैं बाल्यअवस्थाविषे तथायुवाअवस्थाविषे तथावृद्धअवस्थाविषे अनंतदुःखोंकूं अनुभवकरिआयाहै ॥ तथापि अध्यासकेबलतैं यास्थूलशरीरकेपरित्यागकीइच्छानहींकरै है ॥ और तिसमरणकालविषे अतिदुःखकूंप्राप्तहुवा यहजीव आपणेपुत्रोंकूं तथाबांधवोंकूं स्मरणकरै है ॥ और मरणकेक्षोभतैं महान्त्रासकूंप्राप्तहोवै है ॥ और शरीरजिसकाकांपे है ॥ और स्त्रीपुत्रादिकबांधवभी इसप्राणीकूं चारों तरफघेराकरिकैस्थितहोवै है॥परंतु मृत्युदुःखतैं रक्षाकरणेकूं कोईभीसमर्थहोवैनहीं॥दृष्टांत॥ जैसे हिंसाकेस्थानविषेस्थितजेपशुहैं ॥ ते अर्द्धहिंसाकूंप्राप्तहुवेपशुकी रक्षाकरिसकैनहीं ॥ तैसे बांधव याकीरक्षाकरिसकैनहीं ॥ और जैसे बहतरिसहस्र७२००० वृश्चिकएककालविषे सूचीकेअग्रभागतुल्यमुखोंकरिकै अस्मदादिकपुरुषोंकेशरीरोंविषे दंशकरै तिसतैं जोअस्मदादिकपुरुषोंकूं दुःखहोवै तिसतैंभीअधिकदुःख मरणअवस्थाकूंप्राप्तहुवेपुरुषकूं शरीरकेत्यागविषे उत्पन्नहोवै है ॥तादुःखकरिकै सोपुरुष हस्तोंकूं तथापादोंकूं चलावै है॥जैसे हिंसाकूंप्राप्तहुवापशु पादोंकूंचलावै है॥और तादुःखकरिकैयहपुरुष चेतनतातैंरहितहोवै है ऐसे दुःखकूंप्राप्तहुवेपुरुषकूंदेखि

करिकै सर्वबांधव शोककूंप्राप्तहोवै हैं॥ और रुदनकरै हैं॥ दृष्टांत॥ जैसे बंधनकरिकैदुःखकूंप्राप्तहुवेकाककूंदेखिकरिकै सर्वकाक शोकक रिकैयुक्तहुवे पुकारै हैं परंतु तिसकेछुडावणेमें तिनोंकूं सामर्थ्य हैनहीं॥ और जैसे व्याधपुरुषकरिकै बंधनकूंप्राप्तहुवा ग्रामसूकर अनंत शब्दोंकूंकरै है॥ तैसेअनंतशब्दोंकूंकरतेहुवे यापुरुषकूं कालरूपव्याध बांधिकरिकै जहांसंबंधीयोंकूंदर्शननहींहोवै ऐसेदूरदेशविषे लेजावै है॥ और जैसे पाशकरिकैबंध्याहुवा कपोत दीनताकूंप्राप्तहोवै है॥ तैसे कालपाशकरिकैबंध्याहुवा यहजीवभी दीनताकूंप्राप्तहोवै है॥ औरजैसे बडिशयुक्तकुंढीकूं जलविषे धीवर पावै है॥ तिसबडिशकेभक्षणवासतै प्राप्तभईजोमत्स्यहै॥ तिसकूं धीवर ग्रहविषेलेजावै है॥ तैसेमर्त्यलोकरूपमहाहृदविषे स्त्रीपुत्रधनादिरूपबडिशकेभक्षणकरणेवासतै प्राप्तभयाजोयहजीवरूपमत्स्यहै॥ तिसकूं मृत्युरूपधीवर बांधिकरिकै परलोकविषेलेजावै है॥ और जैसे वनविषेस्थितमृगकूं बाणोंकरिकै व्याध मारै है॥ तैसे संसाररूपवनविषेस्थित जीवरूपमृगकूं ज्वरादिकव्याधिरूपबाणोंकरिकै कालरूपव्याध हननकरै है॥ और मरणअवस्थाविषे ग्लानीकूंप्राप्तभयाहैमुखजाका॥ और अनंतहिडकीयोंकरिकैयुक्त दीनपुरुषकूं देखिकरिकैभी कालभगवान् दयाकूंनहींप्राप्तहोवै है॥ काहेतें प्रजापतिकीआज्ञातैं जिसमृत्युनैं प्रजाकाहननरूपप्रवृत्तिकूं धारणकर्‍याहै॥ यहवार्ता मोक्षधर्मविषेप्रसिद्धहै॥ जीवहिंसारूपअधिकारकीनिवृत्तिवासतै अनंतकालपर्यंत तपकूं मृत्यु करताभया॥ तौभी मृत्युकेताईं प्रजापति तिसीहिंसारूपअधिकारकूंही देताभया॥ और जैसे पथिकपुरुषकूं चौर हननकरै है॥ तैसे हापुत्र हास्त्री हाकलत्र याप्रकार सहस्रशब्दोंकूं करतेहुवे जीवरूपपथिककूं यहकालरूपचौर हननकरै है॥ और जैसे हिंसास्थानकास्वामी आपणेकार्यवासतैं मेषकूं हननकरै है॥ तैसे कालभगवान्‌भी आपणेकार्यवासतै या जीवकूं हननकरै है॥ सोकैसाजीवहै॥ कफकरिकैअवरुद्धभयाहैकंठजाका॥ और घुरघुर याप्रकारकेअनंतशब्दोंकूंकरै है॥ इहां जन्ममरणकेसमानअधिकरणताकारक्षणही कालभगवान्‌काकार्य जानणा॥ और जैसे अपराधीपुरुषकूं राजाकेभृत्य लेजावै हैं॥ तैसे पुकारतेहुवेसर्वबांधवोंका अनादरकरिकै यमकिंकर इसजीवकूंलेजावै हैं॥ और याजीवकेशरीरविषे प्राणोंकूंधारणकरणेहारियां बहतरिसहस्र ७२००० नाडियांरहे हैं तिननाडियोंतैंप्राणनिकासणेवासतै मृत्युभगवान् तिननाडियोंकेबंधनोंकूंछेदनकरै है॥ और

जैसे कृषिकेकरणेहारापुरुष अनायासतें कदलीबनकूं कुठारकरिकैछेदनकरैं है ॥ तैसे यहमृत्युभगवान्भी अंतरकालरूपकुठारकरि
कै याजीवकेअंगोंकेसाथजोप्राणोंकासंबंधरूपबंधनहै तिसकूं छेदनकरै है ॥ और मरणकालविषे मृत्युभगवान् कालरूपकुठारक
रिकै पुरुषोंकेशरीरविषे पादकेअग्रभागतैंलेकरिकेकेशपर्यंत अनंतपीडावोंकूंउत्पन्नकरैं है ॥ जैसे साढीतीनकोटितीक्ष्णसूचियां ए
ककालविषे अस्मदादिकपुरुषोंकेशरीरविषे लागें ॥ और जैसे दुःखकूंउत्पन्नकरैं ॥ तैसाहीदुःख मरणकाल विषे पुरुषोंकूं होवै है ॥और
तीक्ष्णक्रकचोंकरिकै अस्मदादिकजीवतपुरुषोंकेअंगोंकूं बहुतवारछेदनेतें जैसादुःख अस्मदादिकपुरुषोंकूंहोवै है ॥तैसाहीदुःख सर्वदे
हधारीजीवोंकूं मरणकालविषे होवै है ॥ और पादतैंलेकरिकैमस्तकपर्यंत त्वचाकेउतारणेविषे जैसादुःख अस्मदादिकजीवतपुरुषोंकूं
होवै है ॥ तैसाहींदुःख मरणकालविषे जीवोंकूंहोवै है ॥ और तप्ततैलविषेप्रवेशकरणेतें जैसादुःख अस्मदादिकजीवतपुरुषोंकूं होवै है ॥
तैसाहीदुःख मरणकालविषे पुरुषोंकूंहोवै है ॥ और मुखनासिकादिक नवद्वारोंकेनिरोधतें जैसाअस्मदादिकपुरुषोंकूंदुःख होवै है ॥ तै
साहीदुःख मरणकालविषे पुरुषोंकूंहोवै है ॥ अथवा तिसतैंभीअधिकदुःखहोवै है ॥ और दुर्मार्गवर्तीपुरुषोंकूं जैसानरकजन्यदुःखहोवै
है ॥ तैसाहीदुःख मरणकालविषे जीवोंकूंहोवै है ॥ अथवा तिसनरकदुःखतैंभीअधिकदुःख मरणकालविषेहोवै है ॥ और मरणकाल
विषे सोपुरुष किसीक्षणमैं मूर्छाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और किसीक्षणविषे मूर्छातैंजाग्रत्होवै है ॥ और किसीक्षणविषे भयानकयमकिंक
रोंकूंदेखिकरिकै ॥ भयकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसभयतैं कदाचित् विष्ठामूत्रादिकोंकाभी परित्यागकरै है ॥ और नेत्रोंतैंअश्रुकापरित्यागकरै
है ॥ और किसीक्षणविषे यमकिंकरोंकूंदेखिकरिकै महाभयानकशब्दकूंकरै है ॥ तेकैसेयमकिंकरहैं ॥ अतिसैंकरिकैदीर्घ हैं ॥ और वि
करालजिनोंकेमुखहैं ॥ और श्यामजिनोंकास्वरूपहै ॥ और जिनोंकेकेश खुलेहुएहैं ॥ और चाबक तथापाश जिनोंकेहस्तोंविषे हैं ॥
ऐसेयमकिंकरोंकूंदेखिकरिकै भयकूंप्राप्तहुवा यहजीव मुखतैंफेनकूंवमनकरैहै ॥ और सर्वद्वारोंतें मलोंकापरित्यागकरै है ॥
और तेयमकिंकर संमुखआइकरिकै प्रथम यापापीजीवकूं दुर्वचनोंकरिकैताडनकरैहैं ॥ पश्चात् बांधिकरिकै परलोकवि
षेलैजावैहैं ॥ अब तिनयमकिंकरोंकेवचनोंकूंदिखावैहैं ॥ हेपापीजीव! तेरेकूंधिक्कारहै ॥ काहेतें इसमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइ

करिकैभी तैंने नरकका कारणरूप पापकर्महीं संपादनकऱ्या और आपणामुख्यहितजोमोक्षहै तिसकूं तैंने आत्मज्ञानकरिकैसंपाद नकऱ्यानहीं ॥ और गौणहित जेस्वर्गादिकहैं ॥ तिनोंकूंभी यज्ञादिककर्मोंकरिकै तैंने संपादनकऱ्यानहीं ॥ उलटा यहमेराशत्रुहै और यहमेरामित्रहै और यहउदासीनहै याप्रकारकीभेदबुद्धिकरिकै आपणाअनर्थ आपहीतुमनैं संपादनकऱ्या ॥ यातैं आपणाश त्रु तुम आपहीहुवा ॥ दूसराकोई तुमाराशत्रुहैनहीं ॥ काहेतैं गुरुशास्त्रादिकआत्मज्ञानकीसामग्रीकूंप्राप्तहोइकेभी जन्ममरणरूपबं धनकी तुमनैं निवृत्तिकरीनहीं ॥ और जेअपमानादिक आपणेकूंप्रतिकूलहोवै हैं ॥ तेअपमानादिक जो अन्यपुरुषकूंकरै है ॥ सोपुरु ष आपणाहीआपशत्रुहोवैहै ॥ यातैं भेदबुद्धिही अनर्थकाकारणहै ॥ और जोपुरुष भेदबुद्धिकरिकै अन्यजीवोंकूंपीडाकरै है ॥ तिस कूं जीवत्कालविषे अन्यराजादिकबलीपुरुषोंतैं भयहोवैहै ॥ और मरणकालविषे हमयमकिंकरोंतैं भयहोवै है ॥ यातैं दोनोंलोक विषेभयकाहेतु जोभेदबुद्धिजन्यपरपीडा ताकूं कौनबुद्धिमान्पुरुष करैगा ॥ किंतु नहींकरैगा ॥ याप्रकारके दुर्वचनोंकरिकै यमकिं कर पापीजीवकी ताडनाकरै हैं ॥ और जैसे राजाकेभृत्य अपराधीपुरुषके चौरीआदिकअपराधकूं स्मरणकराइकै ताकूं बांधिकरिकै लेजावैहैं ॥ तैसे यमकिंकरभी भेदबुद्धिरूपअपराधकूं तथाअनात्मदेहादिकोंविषेआत्मबुद्धिरूपअपराधकूं स्मरणकराइके याजीवकूं परलोकविषेलेजावैहैं ॥ तहां प्रथम देहकेदोषोंकूंदिखावैहैं ॥ हेपापिष्ठ! जिसदेहविषे तुमनैं आत्मबुद्धिकरीहै ॥ सोदेहकैसाहै ॥ पि ताकेवीर्यरूपमलतैं औरमाताकेरक्तरूपमलतैं उत्पन्नभयाहै ॥ और विष्ठा तथामूत्रादिकमलोंकरिकैपूरितहै ॥ यहसर्वलोकोंकूंअनुभव सिद्धहै ॥ तथाशास्त्रविषेभीकह्याहै ॥ श्लोक ॥ यदंतरस्यदेहस्य बहिःस्याच्चतदेवचेत् ॥ दंडग्रहावारयेयुः शुनःकाकांश्चमानवाः ॥ ७ ॥ अ र्थयह ॥ इसशरीरकेअंतर जेविष्ठामूत्रमांसरुधिरादिकमलहैं ॥ सोजेबाहरिहोवै तौ सर्वपुरुष दंडकूंग्रहणकरिकै आपणेशरीरकी रक्षावास्तै सर्वदा काकोंकूं तथाश्वानोंकूंहीं निवारणकरै ॥ ७ ॥ यातैं यहशरीर अतिसैंकरिकैनिंदितहै ॥ और विनाशीहै ॥ और शतवर्षपर्यंत सेवनकऱ्याहुवाभी यहशरीर परित्यागकरिजावैहै ॥ यातैं कृतघ्नहै ॥ और सहस्रपरिणामोंकरिकैयुक्तहै ॥ और पुरुष केअधीननहीं ॥ और शरीरविषेआत्मबुद्धिद्वारा पुरुषार्थकानाशकहै ॥ यातैं सर्वदा दुःखकाकारण यहशरीरहै ॥ ऐसेनिंदितशरीर

विषे आत्मअभिमानकरिकै तुमनैं अनंतपापकर्मकरे हैं ॥ तिनपापोंकरिकैजन्य अनंतदुःख तुमारेकूं प्राप्तहोवैंगे ॥ यहवार्ता व्यास
भगवान्नैंभीकहीहै ॥ श्लोक ॥ सर्वाशुचिनिधानस्य कृतघ्नस्यविनाशिनः ॥ शरीरकस्यापिकृते मूढाः पापानिकुर्वंत इति ॥ ८ ॥ अर्थ
यह ॥ विष्ठामूत्रादिकसर्वअशुचिपदार्थोंकागृह औरकृतघ्न औरविनाशी ऐसेशरीरकेपालनपोषणवासते मूढपुरुष पापोंकूंकरे हैं ॥८॥
और हेपापीजीव!॥ याअनित्यदेहकेभोगोंकीसिद्धिवासते पुत्रस्त्रीधनादिकोंविषे ममताअभिमानकरिकै तुमनैं किंचित्मात्रभी सुकृत
कऱ्यानहीं ॥ उलटा पापकर्मोंकूं तुमनैं संपादनकऱ्याहे ॥ यातैं हमारेकूं बडाखेदहोवैहै ॥ यद्यपि यज्ञादिकोंकरिकैपुण्यकेसंपादन
में शरीरकाआयास तथाधनादिकोंकाखरच होवैहै ॥ यातैं तुमनैं संपादनकऱ्यानहीं ॥ तथापि मैंब्रह्महूं याअभेदज्ञानकेसंपादनमैं
शरीरकाआयास तथाधनादिकपदार्थोंकाखरच होवैनहीं ॥ ऐसे अतिसुलभआत्मज्ञानकूंभी तुमनैं संपादनकऱ्यानहीं ॥ यातैं हेपा
पिष्ठ! तेरेकूंधिक्कारहै ॥ किंवा मनवाणीकाअविषय जोनिर्गुणब्रह्महै ॥ तिसके साक्षात्कारकरणेकूं मैं समर्थनहींहूं ऐसाजोतूंकहै ॥ त
थापि सर्वसुखकेकरणेहारी जानिर्गुणब्रह्मकीउपासनाहै ॥ तिसकूं तुमनैं किसवासतेनहींकऱ्या ॥ किंवा मन अतिसैंकरिकैचंचल
है ॥ यातैं निर्गुणब्रह्मकेध्यानविषे लगतानहीं ऐसाजोतूंकहै ॥ तथापिपरस्त्रीगमनादिकपापकर्मोविषे जितनातेरेकूं शरीरकाआयास
तथाधनादिकोंकीहानिरूपक्लेश प्राप्तभयाहै ॥ तिसक्लेशकालेशमात्रभी परमेश्वरकेनामकीर्तनमें हैनहीं ॥ और स्वर्गादिकोंकी प्राप्तिकर
णेहाराहै ॥ ऐसेपरमेश्वरकेनामकीर्तनरूपसुकृतकूं तुमनैं काहेतैंनहींसंपादनकऱ्या ॥ और जैसे तुमनैं मनकूंसावधानकरिकै सर्वदा पर
पुरुषोंकेदोषोंका विचारकऱ्याहै ॥ तैसे महत्फलकीप्राप्तिकरणेहारा जोक्षणमात्रआत्मविचार तिसकूं काहेतैंतुमनैं नहींसंपादनकऱ्या
॥ क्षणमात्रब्रह्मविचारकाफल अन्यशास्त्रविषेभीकह्याहै ॥ श्लोक ॥ स्नातंतेनसमस्ततीर्थसलिलेदत्ताचसर्वाऽवनिः यज्ञानांचकृतं
सहस्त्रमखिलादेवाश्चसंपूजिताः ॥ संसाराच्चसमुद्धृताःस्वपितरस्त्रैलोक्यपूज्योप्यसौ यस्यब्रह्मविचारणेक्षणमपिस्थैर्यंमनःप्राप्नुया
त् ॥ ९ ॥ अर्थ यह ॥ जिसपुरुषकामन क्षणमात्रभी ब्रह्मविचारविषेस्थितिकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसपुरुषनैं सर्वतीर्थोंकेजलोंविषेभी
स्नानकिया ॥ और सर्वपृथिवीभी तिसनैं दानकरी ॥ औरसहस्त्रयज्ञभी तिसनैंकरे ॥ और संपूर्णदेवताभी तिसनैं पूजनकरे ॥ और

संसारसमुद्रतें आपणेपितरभी तिसनैं उद्धारकरै ॥ और तीनलोकोंकरिकैपूज्यभी सोपुरुषहै ॥ ९ ॥ ऐसेआत्मविचारकूंभी तुमनैं क
र्यानहीं ॥ और जैसे तुमनैं परप्राणियोंकेनाशवासते महान्उद्यमकर्याहै ॥ तैसे किंचित्मात्रभी उद्यम स्वर्गकीप्राप्तिवासते तथा
मोक्षकीप्राप्तिवासते तुमनै काहेतैंनहींकर्या ॥ तात्पर्ययह ॥ जोतू वृक्षादिकोंकीन्यांई उद्यमतैंरहितहोता ॥ तौ तेरेकूं हम उपालंभ
नहींदेते ॥ परंतु तुमनैं सर्वशक्तिसंपन्न मनुष्यशरीरकूंपाइकरिकैभी शास्त्रविहितपुण्यकर्मोंकूं संपादनकर्यानहीं ॥ उलटा पापकर्मों
कूंसंपादनकर्या ॥ यातैं तूं दंडकरणेयोग्यहै ॥ और तुम हमारेपापोंकूं कैसेजाणतेहो ऐसाजोतूंकहै ॥ सो बनैनहीं ॥ काहेतैं इसलो
कविषे जेजेपाप तैनैं राजादिकोंतैंगुह्यकरेहैं ॥ अथवा आपणेबलतैं जेजेपाप तुमनैं प्रसिद्धकरे हैं ॥ तिनसर्वतुमारेपापोंकूं सूर्यचंद्र
मादिक कथनकरैहैं ॥ तिनोंतैं हम तेरेपापोंकूंजाणेहैं ॥ तेकैसेपापहैं ॥ मर्मसदृशहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे मर्मस्थान भेदनकूंप्राप्तहुवे
दुःखकूंउत्पन्नकरै हैं ॥ तैसे पापकर्मभीप्रसिद्धहुवे दुःखकूंउत्पन्नकरै हैं ॥ और यमकिंकरोंकेवशकूंप्राप्तहुवा जोपापीजीवहै ॥ तिसकूं
तेयमकिंकर पुनःयाप्रकारकहैहैंकि हेपापिष्ठ! तूं याप्रकारकाअहंकार करताथा ॥ इसलोकविषे मैं सर्वतैंबलीहूं ॥ मेरेतैंअधिकबल
वान् कोईभीपुरुषनहीं ॥ याकर्मविषेप्रवृत्तहुवेमेरेकूं कौनशिक्षाकरैगा ॥ ऐसीदुर्बुद्धिकरिकै अनंतप्रकारकेदुर्विचारकूंकरिकै अहं
कारतैं पापकर्मविषे तूं प्रवृत्तहोताभया ॥ और शास्त्रयुक्तमर्यादाकाभी तूं परित्यागकरताभया ॥ यातैं सर्वलोकोंकरिकै तूं शोककर
णेयोग्यहै ॥ ऐसा सर्वलोकोंकूंपीडाकरणेहारा जोदुर्बुद्धितूं है ॥ तिसकेशिक्षाकरणेवासते हमयमकिंकर आइकेप्राप्तभयेहैं ॥ कैसेहम
हैं ॥ तुमारेतैंभीअधिकबलवान्हैं ॥ और तुमनैं जेजेपापकर्मकरे हैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं हमयमकिंकर जाणतेहैं ॥ यमराजाकीसभाविषे
वासरादिकोंनैं सर्वतेरेपापकर्म हमारेप्रति श्रवणकरायेहैं ॥ दिवसविषे तुमनैं जेजेपापकर्मकरेहैं ॥ तेसंपूर्णपापकर्म दिवसनैं तथा
सूर्यभगवान्नैं हमारेप्रति कहेहैं॥ और रात्रिविषेजेजेपापकर्म तुमनैं करेहैं॥तेसंपूर्णपापकर्म रात्रिनैं तथाचंद्रमानैं हमारेप्रति कहेहैं॥
और दोनोंसंध्याविषे जेजेपापकर्म तुमनैं करेहैं ॥ तेसंपूर्णपापकर्म दोनोंसंध्यानैं हमारेप्रति कहेहैं ॥ और सर्वकालविषे जेजेपापक
र्म तुमनैंकरेहैं ॥ तेसंपूर्णपापकर्म आकाश वायु अग्नि जल पृथिवी यापंचभूतोनैं हमारेप्रति कहेहैं॥ और जोतूंऐसाकहै ॥ गुह्यस्था

नविषेकरेजोहमनैंपापकर्म तिनोंकूं सूर्यादिक कैसेजाणे हैं ॥ यहतेराकहनाबनैंनहीं ॥ काहेतें सूर्यादिकसर्वज्ञहैं ॥ और सर्वप्राणि
योंकेसाथ यमराजाकेगुह्यपुरुष सर्वदाविचरेहैं ॥ परमेश्वरकीमायाकरिकैंमोहितहुवे तुमलोक तिनयमकेपुरुषोंकूं जाणतेनहीं ॥ या
प्रकारकेदुर्वचनोंकूंकहिकरिकै दारुणपाशियोंकरिकै तापापीजीवकूंबांधिकरिकै औरचाबकोंकरिकैताडनकरिकै पश्चात् तिसपापी
जीवकूं परलोकविषे यमकिंकर लेजावैं हैं ॥ और जैसे प्रसिद्धद्वारावतीपुरीतैं कृष्णभगवान्केस्वधामविषेगमनहुवे अनंतर तिस
द्वारावतीपुरीकूं समुद्र लयकरताभया॥ तैसे शरीररूपद्वारावतीपुरीकास्वामीजोयहजीवहै ॥ तिसका जबी शरीररूपद्वारावतीपुरी
तें कालरूपसारथिकरिकैयुक्तसूक्ष्मशरीररूपरथकरिकै परलोकविषे गमनभया ॥ तिसतैंअनंतर अग्निरूपसमुद्र याशरीररूपद्वारा
वतीपुरीकूं लयकरेहै ॥ और जैसे पतिकेमृत्युहुवे तैंअनंतर विधवास्त्री शोभातैंरहितहोवै है ॥ तैसे जीवरूपकृष्णभगवान्केनिर्गमनहु
वेतैंअनंतर यहशरीररूपपुरी शोभातैंरहितहोवैहै ॥ और जैसे प्रसिद्धद्वारकापुरीतैं कृष्णभगवान्केनिर्गमनहुएतैंपश्चात् अर्जुनस
हितसर्वबंधुजन दुर्जनआभीरपुरुषोंकरिकैहरणकरेस्त्रीआदिकसर्वपदार्थोंकेरक्षाकरणेकूं समर्थनहींहोतेभये ॥ तैसेशरीररूपपु
रीतें याजीवकेनिर्गमनहुवेअनंतर याकेस्त्रीधनादिकपदार्थोंकेरक्षाकरणेकूं कोईभीबांधव समर्थहोवैनहीं ॥ और पूर्व याशरीररूपपु
रीविषे मूर्द्धद्वारकरिकै परमात्माका जीवरूपतैंप्रवेशभयाथा ॥ तिसीमूर्द्धद्वारतें जबी याजीवकानिर्गमनहोवै है तबी ब्रह्मलोक
कूंहींप्राप्तहोवै है और जबी चक्षुआदिकद्वारोंकरिकै इसजीवकानिर्गमनहोवै है ॥ तबी जोपुण्यवान्जीवहोवै है ॥ सो स्वर्गा
दिकोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जोपापकर्मवालाजीवहोवै है ॥ सो चक्षुआदिकद्वारोंतैंनिर्गमनहुवाभी नरककूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ इस
प्रकार परलोकविषेजीवकेनिर्गमनहुवेतैंअनंतर ताकेसंबंधियोंकीअवस्थाकहे हैं ॥ यापुरुषकेजीवतेहुए जेस्त्रीपुत्रादिकबांधव
यापुरुषतैंविना एकग्रासमात्रभी नहींभोजनकरतेथे ॥ तेईहींस्त्रीपुत्रादिकबांधव यापुरुषकेमृत्युहुवेतैंअनंतर स्वादुअन्नकूं ग
लपर्यंतभोजनकरै हैं और यापुरुषकेजीवतेहुए जेस्त्रीपुत्रादिकबांधव यापुरुषकूं कोमलसिहजाऊपरि शयनकरावतेथे ॥ ते
ईहींस्त्रीपुत्रादिकबांधव मरणतैंअनंतर यापुरुषकूं प्रज्वलितअग्निविषेपावैहैं ॥ और जेस्त्रीपुत्रादिकबांधव जीवतेहुएयापुरु

षकूं कोमलस्पर्शवालेगंधपुष्पोंकरिकै तथाहस्तोंकरिकै स्पर्शकरतेहुएभी भयकूंप्राप्तहोतेथे ॥ तेईहींस्त्रीपुत्रादिकबांधव चितावि षेस्थितयापुरुषकूं तीक्ष्णकाष्ठोंकरिकैस्पर्शकरैहैं ॥ और जीवतेहुएयापुरुषकूं जेस्त्रीपुत्रादिकबांधव अश्वकरिकै तथापालकीकरि कै तथाहस्तीकरिकै तथारथकरिकै लेजातेथे ॥ तेईहींस्त्रीपुत्रादिकबांधव मरणतैंअनंतर तापुरुषकूं काष्ठकेसाथबांधिकरिकै काष्ठ कीन्यांई श्मशानभूमिविषे लेजावेहैं ॥ और जीवताहुवा जोपुरुष मंगलीकवादित्रोंकेसाथ ग्रामतैंबाहरिजाताथा ॥ सोईहींपुरुष मरणतैंअनंतर शोकयुक्तस्त्रियोंकेरोदनकेसाथ जावेहै ॥ और जीवतेहुवेयापुरुषकेअग्रे जेबांधव दधिआदिकमांगलिकवस्तुकूं लेचल तेथे ॥ तेईहींपुत्रादिकबांधव मरणतैंअनंतर यापुरुषकेआगे धूमयुक्तअग्निकूं लेचालेहैं ॥ और जीवताहुवायहपुरुष जिनस्त्रीपुत्रादि कोंकूं क्षणमात्रभीनहींत्यागकरताथा ॥ सोईहींपुरुष मरणकालविषे विरक्तपुरुषकीन्यांई सर्वबांधवोंकूंत्यागिकेजावैहै ॥ और जीवत्का लविषे जिसपुरुषतैंविना स्त्रीपुत्रादिकबांधव क्षणमात्रभी स्थितनहींहोतेथे ॥ मरणतैंअनंतर तेईहींस्त्रीपुत्रादिकबांधव तापुरुषतैंवि ना सुखपूर्वक स्थितहोवैहैं ॥ और जैसे सूर्यकूंदेखिकरिकै कमल विकासमानहोवैहैं ॥ तैसे जीवत्कालविषे जिसपुरुषरूपसूर्यकूंदे खिकरिकै स्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेमुखरूपकमल विकासमानहोतेथे ॥ मरणतैंअनंतर तिसीहींपुरुषकेदर्शनहुए तथास्पर्शहुए तेस्त्रीपु त्रादिकबांधव स्नानकूंकरैहैं ॥ और पूर्वजीवत्कालविषे जापुरुषकेपादोंतैंनिःसरणभयेजलकूं स्त्रीपुत्रादिकबांधव आपणेमस्तकविषे धारणकरतेथे ॥ मरणतैंअनंतर तिसीपुरुषकेस्पर्शतैं तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव स्नानकूंकरैहैं ॥ अथवा स्पर्शकूंहींनहींकरैहैं ॥ इसप्रकार प्रत्यक्षदोषोंकरिकैयुक्त संसाररूपशूलविषे प्राप्तभयायहजीव परमेश्वरकीमायाकरिकै मोहितहुवा प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्धसंसार दुःखोंकूंभी जाणतानहीं ॥ याप्रकार मरणतैंअनंतर बांधवोंकीअवस्थाकही ॥ अब परलोकविषे जीवकेअवस्थाकूंकहेहैं ॥ यास्थू लशरीरकूं परित्यागकरिकै अतिदुःखीहुवा यहजीव परलोककूं गमनकरैहै ॥ और क्षुधापिपासाकरिकैपीडितहोवैहै ॥ और यमकिं करोंकरिकै निरादरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और अनंतकोटियोजनदूर यमकास्थानहै तहां स्वल्पकालकरिकै ॥ याजीवकूं यमकिंकर ले जावैहैं ॥ जैसे पाशकरिकै बांध्याहुवा औरचाबकोंकरिकैताडनाकियाहुवा आजकू बलात्कारतैं राजाकेभृत्य लेजावैहैं ॥ तैसे याजीव

कूंभी यमकिंकर परलोकविषेलेजावैहैं॥ और तायमस्थानविषे पापीजीवोंकूं यमकीशासनातैं अनंतदुःख प्राप्तहोवैहैं॥तिनसमग्रदुःखों
के कथनकरणेकूं तथाश्रवणकरणेकूं कोईभी समर्थनहीं॥तथापि वैराग्यवासते किंचिन्मात्रदुःख शास्त्रविषे कथनकरै हैं॥तायमपुरीके
मार्गविषे मांसआहारी सूकरादिकोंका तथाकाकगृध्रादिकपक्षियोंका महाउपद्रव ताजीवकूंहोवैहै ॥ और तामार्गविषे पापीजीवकूं ना
नाप्रकारकेशस्त्रोंकरिकै राक्षसोंकेसमान चौर हननकरैहैं॥ ताशस्त्रोंकरिकैभी पापकेवशतैं ताजीवका मृत्युहोवैनहीं और तामार्गविषे
सोपापीजीव कहां विष्ठातथापूयकरिकैपूर्णनदियोंका उल्लंघनकरैहै ॥ और तिननदियोंविषे निमज्जनकरैहै ॥ और तानदियोंविषेजेम
गरहैं तिनोंतैं भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यमराजाकेस्थानविषे अग्निकापरिणामरूपनरकहै॥ तथा जल पृथिवी वायु आकाशका परि
णामरूप नरकहै ॥ तथा शस्त्रोंकापरिणामरूप नरकहै ॥ तथा अंधकारकापरिणामरूप नरकहै ॥ इसतैंआदिलेके अनंतप्रकारकेन
रक पापीजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहैं॥ और खड्गकेधारासमानहैंतीक्ष्णपत्राजिनोंके ऐसेवृक्षोंकेवनरूपनरकतैंआदिलेके महाभया
नकनरकोंविषे सोपापीजीव अनंतकल्पपर्यंत दुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै॥ और परलोकविषे पापीजीवोंकूं दुःखकरणेहारेजेनरकहैं॥ते गरुड
पुराणादिकोंविषेप्रसिद्धहैं ॥ यातैं इहांकथनकरैनहीं॥ इसप्रकार सोपापीजीव नरकदुःखोंकूंअनुभवकरिकै कालवशतैं पुनःवृष्टिद्वारा
अन्नभावकूंप्राप्तहोइके मनुष्यलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुण्यवान्जीवहोवैहै ॥ सो स्वर्गविषे महान्सुखकाअनुभवकरिकै तापुण्य
कर्मकेसमाप्तितैंअनंतर पूर्वकहीरीतितैं वृष्टिद्वारा अन्नभावकूंप्राप्तहुवा यालोकविषे प्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार यालोककूंप्राप्तहोइकरि
कै पूर्वकीन्यांई पुण्यपापकेवशतैं पुनःपिताद्वारा तथामाताद्वारा नानाप्रकारकेजन्मोंकूं सर्वदा यहजीव प्राप्तहोवैहै॥ और पूर्व याजीव
का पिताशरीरतैंजन्म तथामाताशरीरतैंजन्म निरूपणकरिआयेहैं ॥ तिनदोनोंजन्मोंकीअपेक्षाकरिकै पुनःपिताशरीरतैंतीसराजन्म
जीवकूंप्राप्तहोवैहै इसप्रकार पितातैंजन्म ॥ पुनःमातातैंजन्म ॥ पुनःपितातैंजन्म ॥ यहतीनोंजन्म घटीयंत्रकीन्यांई पुण्यपापकेव
शतैं जीवोंकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ और जबपर्यंत याजीवकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिनहींहोती ॥ तबपर्यंत मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ पुनःजन्मकूं
प्राप्तहोवैहै ॥ पुनःबाल्यअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ पुनःयुवाअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ पुनःवृद्धअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ पुनःमृत्युकूंप्रा

त्तहोवैहै ॥ इसप्रकार संसारविषे यहजीव भ्रमणकरै है ॥ और जैसे सूर्यादिकोंके रविवार सोमवार आदिकसप्तवारोंकीधारा उच्छे
दतैंरहितहुई वर्तै है ॥ तैसे याजीवके जन्ममरणादिकषट्विकारभी विच्छेदतैंरहितहुए वर्तै हैं ॥ और जैसे जीर्णवस्त्रोंकापरित्यागकरि
कै पुरुष नवीनवस्त्रोंका ग्रहणकरै है ॥ तैसे आत्मज्ञानतैंरहित जीवभी एकशरीरकापरित्यागकरिकै द्वितीयशरीरका ग्रहणकरैहै ॥
और जैसे सूर्यादिरूपतेजकूंप्राप्तहोइकरिकै अंधकार लयकूंप्राप्तहोवै है तैसे जन्मअवस्थाकूंप्राप्तहोइकरिकै मरणअवस्था लयकूं
प्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे प्रकाश तथाअंधकार यामनुष्यलोककूं परित्यागकरतानहीं ॥ किंतु दोनोंविषे कबीअंधकारहोवै है कबीप्र
काशहोवैहै ॥ तैसे अविवेकीजीवकूंभी जन्म तथामरण परित्यागकरैनहीं ॥ दोनोंविषे एकबन्यारहै है ॥ यातैं सर्वदुःखोंकाकारण
जोअज्ञानहै ताकेनाशकरणेहारा आनंदरूपआत्माकाज्ञान जबपर्यंत पुरुषोंकूं नहींउत्पन्नभया ॥ तबपर्यंत जन्ममरणादिकअनं
तदुःख जीवोंकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ आनंदरूपआत्माकाज्ञानही सर्वअनर्थकेनिवृत्तिकाकारणहै ॥ तातैंभिन्न सर्वउ
पाय जन्ममरणकेहेतुहैं ॥ और पूर्व सनकादिकऋषियोंनैंभी हमारेकूं आत्मज्ञानकाही उपदेशकर्याथा ॥ याप्रकार सर्वअधिकारी
जन वैराग्यकीउत्पत्तिवासते देहतैंआदिलेकेसर्वअनात्मवस्तुविषे दोषोंकाविचार करतेभये ॥ तादोषोंकेविचारतैं तिनअधिकारियों
कूं देहादिकोंविषे वैराग्य उत्पन्नहोताभया ॥ और तिनसर्वअधिकारियोंविषे एकवामदेवनामाअधिकारी मृत्युकूंप्राप्तहोताभया ॥
अदृष्टरूपभावीप्रतिबंधकेवशतैं सनकादिकऋषियोंकेउपदेशतैं तिसवामदेवकूं याजन्मविषे आत्मज्ञानभयानहीं ॥ यातैं पुनःपिता
केगर्भद्वारा माताकेगर्भविषे प्रवेशकरताभया ॥ तहां पूर्वसंस्कारकरिकैयुक्त वामदेव नवमासपर्यंत स्थितहोताभया ॥ और नवम
मासविषे नियमकरिकै सर्वजीवोंकूं गर्भविषे बोधउत्पन्नहोवै है ॥ ताबोधतैं सर्वजीव पूर्वपूर्वआपणेजन्मोंकूं स्मरणकरै हैं ॥ और वा
मदेवतौ नवममासविषे आत्मसाक्षात्कारकूं प्राप्तहोताभया ॥ काहेतैं भावीप्रतिबंधकेवशतैं वामदेवकूं पूर्वजन्मविषे आत्मज्ञाननहीं
उत्पन्नभयाथा ॥ नवममासविषे तापापरूपप्रतिबंधकेनिवृत्तहुए पूर्वसनकादिकोंकेउपदेशकी वामदेवकूं स्मृतिहोतीभयी ॥ तिसतैं
मनननिदिध्यासनकरिकैसंपन्नहुवा वामदेव गर्भविषेही आत्मसाक्षात्कारकूं प्राप्तहोताभया ॥ और पूर्व जिनअधिकारियोंकेसाथ

मिलिकरिकै वामदेवनैं सनकादिकऋषियों तैं ब्रह्मविद्याकाश्रवणकऱ्याथा ॥ तथा सर्वविषयोंविषे दोषोंकाविचारकऱ्याथा ॥ तिनस वैआपणेमित्रोंकूं गर्भविषेस्थितहुवा वामदेव याप्रकारकेवचनोंकूं कहताभया ॥ वामदेवउवाच ॥ हेमित्रो! पूर्वजन्मविषे मैंभी तुमारे मध्यमैंथा ॥ परंतुपूर्वजन्मविषे परिच्छिन्नदेहादिकोंविषेआत्मबुद्धिकरिकै परिच्छिन्नभावकूं मैं प्राप्तहोताभया ॥ और अबी हमारेकूं गर्भविषे सनकादिकोंकेउपदेशकेस्मरणतैं आत्माकाज्ञान उत्पन्नभयाहै ॥ यातैं आपणेअद्वितीयस्वरूपतैंभिन्न किंचिन्मात्रभीवस्तु हम देखतानहीं ॥ किंतु सर्वकूं आत्मरूपजाणताहूं ॥ पूर्वदक्षिणादिकअष्टदिशाभी मेरेकरिकेहीपूर्ण हैं ॥ और आकाशभी मेरेकरिकै हीपूर्णहै ॥ और सृष्टिकेआदिकालविषे स्वायंभुवादिकमनुभी मैंही पूर्वहोताभयाहूं ॥ और सूर्यभगवान्‌भी मैंहीहूं ॥ और शक्तिसं पन्नजेइंद्रादिकलोकपालहैं तेभी मेराहीस्वरूपहैं ॥ मेरेतैंभिन्न तिनोंकीसत्तानहीं ॥ और अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज्ज ये चारि प्रकारकेप्राणीभी मेरेतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु मेराहीस्वरूपहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ हिरण्यगर्भतैंआदिलेकेस्थावरपर्यंत जेजेपुण्यपापयुक्तजी वहैं ॥ तेसंपूर्ण मेराहीस्वरूपहैं ॥ मेरेतैं कोईभीवस्तुभिन्ननहीं ॥ शंका ॥ जबी सर्ववस्तु तुमारेतैंभिन्ननहीं ॥ तबी जन्म अस्तित्व वृ द्धि परिणाम अपक्षय नाश येषट्विकार आत्माविषेप्राप्तहोवैंगे ॥ समाधान ॥ इंद्रियसहितदेहके धर्मजन्मादिकषट्विकारहैं ॥ सोषट्विकारयुक्तदेह मेरेविषे कल्पितहै ॥ यातैं कल्पितदेहकेधर्म मैंअधिष्ठानकूं स्पर्श करैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ शीतकीनिवृत्तिवासते गुंजापुंजविषे वानरोंनैं कल्पनाकऱ्याजोअग्नि ॥ तिसअग्निकेउष्णस्पर्शतैं जैसे गुंजापुंजका दाहहोवैनहीं ॥ तैसे कल्पितदेहादिकों केधर्म जन्मादिकभी मैंअधिष्ठानकूं स्पर्शकरैनहीं ॥ और मैं आनंदरूपआत्मा वागादिकइंद्रियोंके तथातिनोंकेदेवतावोंके जन्मादि कोंकूं जाणताहूं॥ परंतु तिनोंकेजन्मादिकविकार अधिष्ठानरूपमैंआत्माकूं सुख तथादुःख प्राप्तकरैनहीं ॥ काहेतें तेसंपूर्ण मेरेविषे कल्पितहैं॥और जैसे पूर्वअज्ञानअवस्थाविषे शरीरइंद्रियादिकोंकेअध्यासतैं मैंब्राह्मणहूं मैंस्थूलहूं मैंबधिरहूं मैंमूकहूं इसतैंआदि लेके जेशरीरइंद्रियादिकोंकेधर्म मेरेविषे प्रतीतहोतेथे ॥ तेसंपूर्णधर्म और शरीरसहितइंद्रिय तथातिनइंद्रियोंकेदेवता अबीहमारे कूं स्पर्शकरैनहीं ॥ काहेतें अद्वितीयआत्माकेज्ञानकरिकै तिनशरीरादिकोंकाअध्यास निवृत्तहोगयाहै ॥ और हेमित्रो! जैसे लोह

करिकैरचितकाराग्रह पुरुषके बंधनकाहेतुहोवै है ॥ तैसे अज्ञानरूपलोहकरिकैरचित चौरासीलक्षशरीररूपपुरियाभी पूर्व हमारेबंधनकाकारण होतियाभयां ॥ और जैसे लोकविषे महान्शरीरवालाजोश्येनपक्षीहै ॥ सो अतिबलवान्होवै है ॥ यातैं पाशोंकरिकै दुर्ग्रहहै ॥ तथापि दृढपाशतैं ताकूंबांधिकरिकै लोहकेपिंजरविषे निरोधकरैहैं ॥ तैसेअज्ञानरूपलोहकरिकैरचित चौराशीलक्षशरीररूपपुरियांभी बंधनरहितमैंअद्वितीयआत्माकूं देहादिकोंविषेआत्मबुद्धिरूपपाशोंकरिकै निरोधकरतियाभयां ॥ और जैसे पिंजरविषेनिरुद्धहुवाश्येनपक्षी वज्रसमानआपणेतुंडकरिकै पिंजरेकेनीचेदेशकूंभेदनकरिकै बाहरिनिकसिजावै है ॥ तैसे मैंभी ब्रह्मज्ञानरूपतुंडकरिकै चौराशीलक्षशरीररूपपुरियोंकूं तथाकामक्रोधादिककीलोंकरिकैयुक्त देहादिकोंविषेआत्मबुद्धिरूपपाशकूं छेदनकरताभयाहूं ॥ और हेमित्रो! जोपूर्व सनकादिकऋषियोंनैं देहस्त्रीपुत्रादिकोंविषेवैराग्य आत्मज्ञानकाकारण तुमारेकूं कह्याथा ॥ सो हमनैं अबी आत्मज्ञानरूपफलकीउत्पत्तितैं निश्चयकऱ्याहै ॥ और पूर्वजन्मविषे तुमारेसाथमिलिकरिकै हमनैं विषयोंविषे दोषोंकाविचारकऱ्याथा ॥ परंतु भावीअदृष्टरूपप्रतिबंधकेवशतैं हमारेकूं ताजन्मविषे आत्मज्ञान भयानहीं ॥ मरणकेअनंतर ताप्रतिबंधकेअक्षयहुए सनकादिकऋषियोंकीकृपातैं तथाविषयोंविषेवैराग्यतैं हमारेकूं अब आत्मज्ञान उत्पन्नभयाहै ॥ यातैं विषयोंविषेवैराग्य औरगुरुकीकृपा यहदोनों आत्मज्ञानकेमुख्यकारणहैं ॥ और तुमारेकूं जोआत्मज्ञान नहींउत्पन्नभया ॥ सोभी किसीप्रतिबंधकेवशतैं नहींभया ॥ यातैंवैराग्यविषे तथागुरुकेउपदेशविषे आत्मज्ञानकीकारणतानहीं है ऐसी तुमनैं असंभावना कबीनहींकरणी ॥ और हेमित्रो! गुरुकीकृपातैं कैसाहमारेकूंज्ञान उत्पन्नभयाहै ॥ जिसज्ञानकेबलतैं संसारतैंभी मैं भयकूंनहींप्राप्तहोता ॥ और कालतैं तथामृत्युतैंभी मैं भयकूंनहींप्राप्तहोता ॥ काहेतैं द्वितीयवस्तुतैंभयकीप्राप्ति श्रुतिनैं कहीहै ॥ और मैंअद्वितीयहूं ॥ सर्वप्रपंच मेरेविषेकल्पितहै ॥ जैसे रज्जुविषेसर्पकल्पितहै कल्पितप्रपंचतैं द्वैतभाव मेरेविषेहोवैनहीं ॥ यातैं मैंअद्वितीयहूं ॥ और मृत्युतैंरहितहूं ॥ काहेतैं मेरेविषेकल्पितजोमृत्युहै ॥ सो मैंअधिष्ठानकी किंचित्मात्रभीहानिकरैनहीं ॥ और जैसे लोकोंविषे आपणेकूं कोईआप नाशकरैनहीं ॥ तैसेमृत्युकाभीआत्मस्वरूपजोमैंहूं ॥ तिसमेरेकूं मृत्यु नाशकरैनहीं ॥ और जन्म तथामरण तथाबाल्यअवस्था

युवाअवस्था जराअवस्था यहसंपूर्ण देहविषेदेखतेहैं ॥ मैंअद्वितीयआत्माविषे हैंनहीं॥ दृष्टांत ॥ जैसे अन्यपुरुषकेसुखकरिकै तथा दुःखकरिकै अन्यपुरुष सुखी तथादुःखीहोवैनहीं ॥ तैसे देहादिकोंतैंभिन्न जोमैंआनंदरूपआत्माहूं ॥ तिसमेरेकूं देहादिकोंकेधर्म जन्ममरणादिक प्राप्तहोवैनहीं ॥ और इच्छा द्वेष भय मोहक्षुधा तृषा निद्रा विष्ठामूत्रकीबाधा यहपूर्वकहेजेअष्टदोष ॥ ते आनंदस्वरूपमैंआत्माकूं स्पर्शकरैंनहीं ॥ काहेतें इच्छा द्वेष भय मोह यहचारि मनकेधर्महैं ॥ और क्षुधा तृषा प्राणोंकेधर्म हैं ॥ और निद्रा मनका तथाइंद्रियोंका धर्म है ॥ और विष्ठामूत्रकीबाधा शरीरकाधर्म है ॥ और मैंसाक्षीआत्मा मनइंद्रियादिकसर्व दृश्यका प्रकाशकहूं ॥ यातैं प्रकाश्यदृश्यकेधर्म मैंप्रकाशककूं स्पर्शकरैंनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे प्रकाश्यघटादिकपदार्थोंकेधर्म प्रकाशकसूर्यकूं स्पर्शकरैंनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैदिखावैं हैं ॥ मोक्षकी तथास्वर्गकी और यालोकविषेविषयजन्यसुखकी मन इच्छाकरै है ॥ आनंदरूपमैंआत्मा तिनोंकीइच्छाकरतानहीं ॥ और अज्ञानविषे तथानरकविषे मनही द्वेषकरैहै और यालोककेदुःखोंविषे तथादुःखकेसाधनसिंहसर्पादिकोंविषेभी मनही द्वेषकरै है ॥ मैंआनंदरूप सर्वकाआत्मा किसीविषे द्वेषकरतानहीं ॥ किंवा ॥ जो विषयकीकामनावाला तथाभेददृष्टिवाला पुरुषहोवै है ॥ सो कामनाकेप्रतिबंधकअन्यपुरुषविषे द्वेषकरै है ॥ यहवार्त्ता लोकविषेप्रसिद्धहै ॥ और मैंआप्तकामहूं ॥ और अभेददर्शीहूं ॥ यातैं हमारा किसीकेसाथद्वेष संभवैनहीं ॥ और भय तथामोह दोनों मनकेधर्म हैं ॥ मैंअद्वितीयआत्माहूं॥ यातैं भय मेराधर्मनहीं ॥ और बोधस्वरूपमैंहूं ॥ यातैं मोहभीमेराधर्मनहीं ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जोपुरुष आपणेतैं शत्रुकूं भिन्नजाणताहै ॥ तथा प्रतिकूलजाणताहै ॥ सोईहींपुरुष मोहकूं तथाभयकूंप्राप्तहोवै है ॥ और मैं आपणेस्वरूपतैंभिन्न किसीमित्रकूं तथाशत्रुकूं तथाउदासीनपुरुषकूं जाणता नहीं ॥ और किसीकूंप्रतिकूलभीनहींजाणता यातैं किसकारणकरिकैमेरेकूं भय तथामोह होवै ॥ तात्पर्ययह ॥ भयतथामोहका कारण जोभेदबुद्धि तथाप्रतिकूलताज्ञान सो मेरेविषेहैनहीं ॥ यातैं कारणकेअभावतैं भयतथामोह मेरेकूंस्पर्शकरैंनहीं ॥ और प्राणकेधर्म जेक्षुधातृषाहैं॥ तेभी प्राणतैंरहितमैंआत्माकेधर्महोवैंनहीं ॥ और कारणविषेलयरूपनिद्राभी जिसकालविषे स्वप्ननहींहोवैहै॥

तिसकालविषे मनकाधर्महै ॥ और वागादिकइंद्रियकातौ स्वप्नदर्शनकालविषे तथाअदर्शनकालविषे नित्यहीधर्महै ॥ यातैं मनत
थाइंद्रियकाधर्म निद्रा मनतथाइंद्रियतैंरहितमैंआत्माकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ और विष्ठामूत्रकीबाधा शरीरकाधर्महै ॥ शरीरतैंरहितमैं आ
त्माकूं साबाधाहोवैनहीं ॥ अधिकारीप्रजाउवाच ॥ हेवामदेव! ॥ हममित्रोंकेतांई अद्वितीय अमृत अजर आत्माहै याप्रकार निषेध
मुखकरिकै आत्माकाउपदेश किसवासतेकरतेहो ॥ जैसे कोईपुरुष शृंगतैंपकडिकरिकै गौकूंदिखावै ॥ तैसे विधिमुखकरिकै आ
त्माकूं काहेतैंनहींदिखावते ॥ वामदेवउवाच ॥ हेमित्रो! तुमारेहितवासते नानाप्रकारकेवचनोंकरिकै जोमैंनैं आत्माकास्वरूप कथन
कन्याहै ॥ सोआत्माकास्वरूप वास्तवतैं गौआदिकोंकीन्यांई इदं याज्ञानकाविषयहैनहीं ॥ और अद्वितीय अमृत अजर इसतैं
आदिलेकैनिषेधवाक्यभी लक्षणावृत्तिकरिकै आत्माकूंबोधनकरैहैं ॥ और हेमित्रो! सोअद्वितीयआत्मा चक्षुआदिकबाह्यइंद्रियोंक
रिकै जान्याजावैनहीं ॥ तथा मन बुद्धि चित्त अहंकार याचतुष्टयअंतःकरणकरिकैभी जान्याजावैनहीं ॥ अधिकारीजनउवाच ॥ हे
भगवन्! इंद्रियोंका यद्यपि आत्माविषयहैनहीं ॥ तथापि वेदांतवाक्यतैंउत्पन्नभयी जाबुद्धिकीवृत्तिहै ॥ तिसका तथाअज्ञानका आ
त्मा विषयहोवैगा ॥ वामदेवउवाच ॥ हेमित्रो! बुद्धिकेवृत्तिका तथाअज्ञानका प्रकाशकरणेहारा साक्षीआत्माहै ॥ यातैं आत्मा तिनों
काविषयहोवैनहीं ॥ उलटा बुद्धिकीवृत्ति तथाअज्ञान आत्माकरिकैभास्यमानहै ॥ यातैं आत्माकाविषयहैं ॥ तातैं हेमित्रो! पूर्व सन
कादिकऋषियोंनैं उपदेशकन्याजो देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित सर्वकाप्रकाशक आनंदस्वरूपआत्मा ॥ तिसकूं भलीप्रकारविचा
रकरिकै ॥ तुमसाक्षात्कारकरो ॥ तात्पर्ययह ॥ भावीप्रतिबंधकीशंकाकरिकै तुमोंनैंआत्मविचारतैंनिवृत्तहोणानहीं ॥ काहेतैं पुण्यपा
परूपअदृष्टकानाम भावीप्रतिबंधहै ॥ सो वर्तमानप्रतिबंधकीसहायतातैंविना विचारकाप्रतिबंधकहोवैनहीं ॥ किंतु वर्तमानप्रतिबंधके
सहायताकूंपाइकरिकैही प्रतिबंधकहोवैहै ॥ जब वर्तमानप्रतिबंधकाअभावहोवै ॥ तब अदृष्टरूपभावीप्रतिबंधकाभी अभावनिश्चयकर
णा ॥ यातैं विषयविषेआसक्ति बुद्धिकीमंदता कुतर्क विपर्ययविषेदुराग्रह इनचारिप्रकारकेवर्तमानप्रतिबंधोंकापरित्यागकरिकै तुम
शीघ्रही आत्मविचारविषेप्रवृत्तहोवो ॥ जाकरिकै हमारेन्यांई तुमारेकूं पुनःजन्मकीप्राप्तिनहींहोवै ॥ अधिकारीजनउवाच ॥ हेभग

वन् ! आत्मविचारविषेतौ हम प्रवृत्तहोवैं ॥ परंतु तत्ववेत्तातुमारेकूंभी गर्भदुःखकीप्राप्तिदेखिकरिकै दुःखकीनिवृत्तिरूपजोआ
त्मविचारकाफलहै ताविषे हमारेकूं संशयहोवैहै ॥ जो आत्मविचारकरिकैभी दुःखकीनिवृत्तिहोतीहै अथवानहींहोती य
हसंशय आत्मविचारकेप्रवृत्तिकाप्रतिबंधकहै ॥ वामदेवउवाच ॥ हेमित्रो ! तुमारीदृष्टिकरिकै मैंगर्भविषेस्थितहूं ॥ तथा ग
र्भकेदुःखोंकूंअनुभवकरताहूं ॥ और हमारीदृष्टिकरिकैतौ हम सर्वदेहइंद्रियादिकोंतैंरहित हैं ॥ और हेमित्रो ! पूर्वजन्मविषे हम
नैं तथातुमोंनैं मिलिकरिकै जोगर्भकेदुःखकाविचारकियाथा ॥ तितनाहीदुःख अबीमैं गर्भविषे अनुभवकरताहूं ॥ अथवा ति
सतैंभीअधिकदुःखका अनुभवकरताहूं ॥ परंतु सर्वविषेआत्मबुद्धिरूप पौर्णमासीकेचंद्रमाकीशीतलताकरिकै गर्भदुःखरूप
ग्रीष्मऋतुकासूर्य हमारेकूं संतापकरतानहीं ॥ यातैं हेमित्रो ! आत्मज्ञानकूंहीं तुम संपादनकरो ॥ इसप्रकार आत्मज्ञान
विषेश्रद्धाकरावणेवासते अनंतप्रकारकेवचनोंकूंकहिकरिकै वामदेवमुनि माताकेगर्भतैंनिकसिकरिकै भूमिलोकतैंआदिलेकैब्रह्म
लोकपर्यंत जीवन्मुक्तहोइकै विचरताभया ॥ कैसाहैसोवामदेव ॥ सनकादिकऋषियोंकेसमानहै ॥ और यालोककेसुखतैं
तथापरलोककेसुखतैं जाकीइच्छा निवृत्तभयीहै ॥ और उद्यमतैंरहितहै ॥ औरनिर्मलहैचित्तजाका ऐसाजोवामदेवहै ॥ सो प्रा
रब्धकर्मकीसमाप्तिवासते मनुष्यलोकविषे तथास्वर्गादिकलोकोंविषे प्राप्तभयेजे भोगहैं तिनोंकूं भोगताभया ॥ ताभोगोंकरिकै प्रार
ब्धकर्मकेनाशहुएतैंअनंतर सोवामदेव विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोताभया ॥ इसप्रकार गर्भविषेस्थित वामदेवकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै ते
सर्वअधिकारीजन आश्चर्यकूंप्राप्तहोतेभये ॥ और आपसविषे परस्परकहतेभये ॥ किबडाआश्चर्य है यहवामदेव हमसर्वअधिकारि
योंकेसमूहतैं किसीपुण्यकेप्रभावतैं निकसताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पंकविषेनिमग्नगौवोंकेसमूहतैं कोईएकगौ पुण्यकेप्रभावतैंनिकसि
जावै है ॥ तैसे यहवामदेव हमारेतैंनिकसताभया ॥ और जैसे पाशकरिकैबांधेहुए पक्षियोंकेसमूहतैं कोईएकपक्षी पुण्यकेबलतैं सर्व
पक्षियोंकापरित्यागकरिकै निकसिजावै है ॥ तैसे कामक्रोधादिकरूपपाशकरिकैबांधेहुए हमसर्वजनोंकापरित्यागकरिकै यहवामदे
व अबीजाताभया ॥ और जैसे दुर्भिक्षआदिकउपद्रवकेप्राप्तहुएभी मोहकेवशतैं देशकापरित्याग लोक करैनहीं ॥ तिनलोकोंविषे

कोईएकपुरुष स्नेहतैंरहितहुवा सर्वबांधवोंकापरित्यागकरिकै तिसदेशतैंनिकसिजावै है॥ तैसे यहवामदेव हमसर्वजनोंकापरित्याग करिकै जाताभया ॥ और जैसे मार्गविषेचलेजेअनेकपुरुष॥ तिनोंविषे किसीएकपुरुषकूं पुण्यकेप्रभावतैं भूमिविषेस्थितधनकीप्रा प्तिहोइजावै॥ तैसे हमसर्वअधिकारीजनोंविषे यहवामदेव आत्मसाक्षात्काररूपधनकूं प्राप्तहोताभया॥ और जैसे गुरुकीसेवाविषेप्रवृ त्तभयेजेअनेकशिष्य तिनोंविषेकोईएकशिष्यही महान्विद्याकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे हमसर्वअधिकारियोंविषे यहवामदेवही ब्रह्मविद्या रूपफलकूं प्राप्तहोताभया ॥ यातैं यहवामदेवही पुरुषहैं ॥ और हमसर्व नपुंसककेतुल्यहैं ॥ और जैसे बहुतपुरुष मंत्रकेजपविषेप्र वृत्तहोवैहैं ॥ तिनोंविषे किसीएकपुरुषकूंही सिद्धिप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे विचारविषेप्रवृत्तहुएहमसर्वोंविषे यावामदेवकूंहीं विचारजन्य आत्मज्ञानरूपफल होताभया ॥ और जैसे अनंतव्याधपुरुषोंकरिकै निरोधकऱ्याजोमृगोंकासमूह ॥ तिनोंकेमध्यतैं कोईएकहीमृग निकसिजावैहै ॥ तैसे हमसर्वदुःखीजनोंकेमध्यतैं एकवामदेवही जाताभया ॥ और याबुद्धिमान्वामदेवका कोईअद्भुतपुण्यकर्म है॥ जिसपुण्यकर्मकेप्रभावतैं गर्भविषेस्थितवामदेवकूं आत्मसाक्षात्कार उत्पन्नभयाहै ॥ और हमारेकूं गुरुशास्त्रादिकसाधनोंकरिकैसंपन्न याभूमीलोकविषेभी आत्मज्ञान उत्पन्नभयानहीं ॥ और यहवामदेव गर्भविषेस्थितहुवा हमारेप्रति वचनोंकूंकहताभया ॥ यातैं हम ऐसाजानतेहैं ॥ यावामदेवका हमारेविषे स्नेहनहीं ॥ केवल हमारेऊपरिकृपाहै ॥ जोस्नेहहोता तौ बाहरिनिकसिके आपणेमातापि तादिकोंकूंभी उपदेशकरता ॥ और यहवामदेवतौ जन्मताहुवाही मातापितादिकसर्वबांधवोंकीउपेक्षाकरिकै जडउन्मत्तपुरुषकीन्यां ई अथवापिशाचकीन्यांई संबंधियोंकरिकैअज्ञातदेशविषे जाताभया ॥ यातैं केवल कृपाकरिकै वामदेवनैं हमारेप्रति उपदेशकऱ्या है ॥ स्नेहकरिकैउपदेशकऱ्यानहीं ॥ और गर्भविषेस्थितहोइके जोवामदेवनैं हमारेप्रति उपदेशकऱ्याहै ताके दोप्रयोजनहैं ॥ ए कतौ पूर्वहमोंनैं जोगर्भकेदुःखोंकाविचारकियाथा सोयथार्थहै ॥ और दूसरा आत्मज्ञानकेबलतैं गर्भदुःख संतापकरैनहीं ॥ यहदोप्र योजनहैं ॥ और हमसर्व नपुंसककीन्यांई निरादरकेपात्रहैं ॥ काहेतैं मनुष्यशरीरकूंपाइकेभी हमोंनैं आत्मज्ञानकूं संपादनकऱ्या नहीं ॥ अज्ञानकरिकै व्यर्थहीकाल व्यतीतकऱ्या ॥ और यामनुष्यलोकविषे अनंतप्रकारकेदुःख हमोंनैं भोगे हैं ॥ और स्वर्गादिक

लोकोंविषेभी किंचिन्मात्रसुखकूं हम प्राप्तनहींभये ॥ काहेतें स्वर्गादिकलोकोंविषे तीनप्रकारकेदोष रहैं हैं ॥ एकतौ सातिशयदोष ॥ अर्थयह ॥ जिसके अधिकपुण्यहोवैंहैं ॥ तिसकूं अधिकभोगोंकीप्राप्ति स्वर्गविषेहोवैहै ॥ और जिसके न्यूनपुण्यहोवैंहैं ॥ तिसकूं न्यूनभोगोंकीप्राप्ति होवैहै ॥ आपणेतेंअधिकभोगवालेदेवताकूंदेखिकरिकै न्यूनभोगवालेदेवताकूं ईर्षाहोवैहैं ॥ और दूसरा इंद्रादिकदेवतावोंकीअधीनतारूपदोषहै ॥ तापराधीनतातें सर्वदा जीवकूं भयहोवैहै ॥ और तीसरा नीचेपतनरूपदोषहै ॥ तात्पर्ययह ॥ स्वर्गविषे कर्मीदेवतावोंकूं आपणेपुण्यकर्मका ज्ञानरहैहै ॥ जोइतनाकाल हमनैं स्वर्गविषेरहणाहै ॥ जिसकालविषे नीचेपतनका तिनोंकूं ज्ञानहोवैहै ॥ तिसकालविषे महाशोककूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातीनदोषोंकी स्वर्गविषे निवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातें स्वर्गभी दुःखरूपहै ॥ और कबी हम पुण्यकेवशतें भूमिलोकतें स्वर्गकूंप्राप्तहोतेभये ॥ पुनः स्वर्गलोकतें पुण्यकेक्षयहुए भूमिलोककूं प्राप्तहोतेभये ॥ पुनःपुण्यकेवशतें ताभूमिलोकतें स्वर्गलोककूंप्राप्तहोतेभये ॥ और कबी पापकेवशतें हम भूमिलोकतें नरककूंप्राप्तहोतेभये ॥ और पुनः तानरकतें भूमिलोककूं प्राप्तहोतेभये ॥ और पुनःपापकेवशतें नरककूंप्राप्तहोतेभये ॥ दृष्टांत ॥ जैसे आकाशविषेस्थितकपोतपक्षी भूमिदेशविषेस्थितकपोतीकूंदेखिकरिकै भूमिदेशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और भूमिदेशविषेस्थितकपोत आकाशविषेकपोतीकूंदेखिकरिकै आकाशकूंगमनकरैहै ॥ और पूर्वदिशाविषेस्थितकपोत पश्चिमदिशाविषेस्थितकपोतीकूंदेखिकरिकै पश्चिमदिशाकूं गमनकरैहै ॥ इसप्रकार विषयसुखकीतृष्णाकरिकै जैसे कपोतनीचेउपरिभ्रमणकरैहैं ॥ तैसे हमभी विषयसुखकीतृष्णाकरिकै कबी देवताशरीरकूं औरकबीमनुष्यशरीरकूं और कबीस्थावरादिकशरीरोंकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ तेकैसेशरीरहैं ॥ केवल दुःखऔरशोकके देणेहारेहैं ॥ इसप्रकार सर्वअधिकारीजन परस्पर विचारकूंकरतेभये ॥ ताविचारकरिकै उत्पन्नभयाहै वैराग्यजिनोंकूं औरसनकादिकोंकेउपदेशविषे उत्पन्नभयीहैश्रद्धाजिनोंकी ऐसेजे सर्वअधिकारीजनहैं ॥ ते पुनः परस्पर आत्मविचारकूंकरतेभये ॥ हेश्रेष्ठब्राह्मणों! पूर्वसनकादिकोंकेउपदेशतें और अबी वामदेवकेउपदेशतें जिसआत्माकेजानणेका हमोंनैं उद्यमकऱ्याहै ॥ सोआत्मा कौनहै ॥ तहां चक्षुआदिकइंद्रियोंकेसमुदायकरिकैसहित प्रत्यक्षजोयहदेह प्रतीतहोवैहै ॥ सोईहीं आत्माहै ॥ अथवा शास्त्र

करिकैजोप्रतीतहोवैहै सत्चित्आनंदस्वरूप सो आत्माहै ॥ तहां देहकूंतौ आत्मतासंभवैनहीं ॥ काहेतें देह उत्पत्तिनाशवान् है ॥
जो उत्पत्तिनाशवान्वस्तुहोवैहै ॥ सो आत्माहोवैनहीं ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ उत्पत्तिनाशवान्हैं यातें आत्मा नहीं ॥ किंवा ॥
जोआत्मा देहस्वरूपहोवै ॥ तौ स्वर्गकीप्राप्तिवासते वेदनैं बोधनकरेजेयज्ञादिककर्म तिनोंकूं कोईभीपुरुष करैगानहीं ॥ काहेतें दे
हकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ यातें ताकानाशभी अवश्यअंगीकारकरणाहोवैगा ॥ जोजोवस्तु उत्पत्तिमान्होवैहै॥सोसोवस्तु नाशवान्होवै
है यहनियमहै ॥ और नष्टहुईदेहका स्वर्गनरकविषेगमन संभवैनहीं ॥ यातें वेदनैं बोधनकऱ्याजो पुण्यकर्म तथापापकर्म सोस
र्व व्यर्थहोवैगा ॥ किंवा ॥ देहकूंआत्मामानणेमें शास्त्रउक्तकर्मकीहीं केवल व्यर्थतानहीं ॥ किंतु लौकिककर्मकीभी व्यर्थताहोवैहै ॥
काहेतें बाल्यअवस्थाविषे अध्ययनकरीजाविद्या ॥ ताकाफल युवाअवस्थाविषे तथावृद्धअवस्थाविषेहोवैहै॥ सोनहींहोणाचहिये॥
काहेतें बाल्यअवस्थाकादेह युवाअवस्थाविषे तथावृद्धअवस्थाविषे रहैनहीं ॥ अवयवोंकी वृद्धितें तथाक्षयतें देहकानाश सर्वम
तवाले अंगीकारकरें हैं॥ और जैसे चैत्रपुरुषनें कऱ्याजोकर्म ताकाफल मैत्रपुरुषकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु चैत्रपुरुषकूंही प्राप्तहोवै
है ॥ काहेतें जो कर्मकाकरताहोवैहै सोइही तिसकर्मकेफलकाभोक्ताहोवैहै ॥ अन्य भोक्ताहोवैनहीं ॥ तैसे बाल्यदेहरूपआत्मानें
कऱ्याजो विद्याअध्ययनरूपकर्म ताकर्मकाफल युवादेहरूपआत्माकूं तथावृद्धदेहरूपआत्माकूं नहींप्राप्तहोणाचहिये ॥ और प्राप्त
होवैहै ॥ यातें देह आत्मानहीं ॥ शंका ॥ जो करताहोवैहै सोईही भोक्ताहोवैहै यहनियम संभवैनहीं ॥ काहेतें लोकविषे करतातेंभि
न्नही फलकाभोक्ता देखाहै ॥ जैसे सेवकोंकरिकैकऱ्याजोयुद्धहै ताकेफलकूं राजा भोगेहै ॥ और शास्त्रविषेभी करतातेंभिन्नही भो
क्तादेखाहै ॥ जैसे पिताकरिकैकऱ्याजो वैश्वानरयज्ञ ताकेफलकूं पुत्र भोगेहै ॥ और पुत्रकरिकैकऱ्याजो गयाश्राद्धहै ताकेफलकूं पि
ता भोगेहै ॥ तैसे बाल्यदेहरूपआत्मानें कऱ्याजो विद्याअध्यनरूपकर्म ताकेफलकूं युवादेहरूपआत्मा ॥ तथावृद्धदेहरूपआत्मा
भोगेहै यहवार्त्ताभी संभवैहै॥ यातें देहकूंआत्मामानणेमें कर्मकीव्यर्थतारूपदोषनहीं ॥ समाधान ॥ सेवकका राजाकेसाथ स्वामि
त्वसंबंधहै ॥ यातें सेवककृतयुद्धकेफलकूं राजा भोगेहै ॥ और पिताका पुत्रकेसाथ पुत्रत्वसंबंधहै ॥ यातें पिताकृत वैश्वानरय

द्धकेफलकूं पुत्र भोगेहै ॥ और पुत्रका पिताकेसाथ पितृत्वसंबंधहै ॥ यातें पुत्रकृत गयाश्राद्धकेफलकूं पिता भोगेहै ॥ इस प्रकार बाल्यदेहका युवादेहकेसाथ तथावृद्धदेहकेसाथ स्वामित्वादिककोई संबंध हैनहीं ॥ यातें देहकूंआत्मामानणेमें कर्मोंकी व्यर्थतारूपदोष वज्रलेपहै ॥ किंवा ॥ जोदेहही आत्माहोवै तौ जो मैं पूर्व बालक था सोइहीमैं अबीवृद्धहूं ॥ यह बालक वृद्धआत्माकेअभेदकूंविषयकरणेहारीप्रत्यभिज्ञा नहींहोणीचाहिये ॥ काहेतें बाल्यदेहका तथावृद्धदेहका भेद प्रत्यक्षप्रमाणक रिकैसिद्धहै ॥ और परस्परभिन्नपदार्थोंका अभेदज्ञान होवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पिताऔरपुत्र परस्परभिन्नहैं ॥ यातें तिनोंका अभेदज्ञानहोवैनहीं ॥ यातेंभी देह आत्मानहीं ॥ किंवा ॥ अनुमानप्रमाणतैंभी देहकूं अनात्मताहीसिद्धहो वैहै ॥ यहदेहजोहै सो अनात्माहोणेकूंयोग्यहै ॥ काहेतें जडहोणेतें ॥ जोजोवस्तु जडहोवै है ॥ सो अनात्माहीहोवै है ॥ जैसे घटादिक जडहैं ॥ यातें अनात्माहैं ॥ और जडत्वधर्मकरिकै घटऔरदेहके समानताहुएभी जोदेहकूं आत्मामानोंगे तौ घटभी आत्माहोणाचाहिये ॥ और घट आत्माहोवैनहीं ॥शंका॥ नेत्रादिकइंद्रियोंकीआधारता देहविषेहै घटविषेहैनहीं॥ यातेंदेहवही चेतनहै घटचेतननहीं ॥ समाधान॥ इंद्रियोंकीआधारतारूपहेतुतें देहविषे घटतेंविलक्षणताकहणी संभवैनहीं ॥काहेतें जैसे देहविषे इंद्रियोंकीआधारताहै ॥ तैसे घटविषेभी परंपरासंबंधकरिकै इंद्रियोंकीआधारताहै ॥ तहां विषयतासंबंधकरिकैइंद्रि योंकेआधार जेरूपरसादिकहैं तिनोंकीआधारता घटविषेहै ॥ यापरंपरासंबंधकरिकै इंद्रियोंकीआधारता घटविषेभीहै ॥ साक्षा त्संबंधकीन्यांई परंपरासंबंधभी आधारताकान्यामकहोवैहै॥जैसे पर्यंकविषेसोयेहुएपुरुषमैं गृहविषेसोयाहै ऐसा लोकोंकाव्यवहा र होवै है ॥ यास्थानविषे पुरुषका साक्षात्संबंध पर्यंककेसाथहै ॥ पर्यंकद्वारा ग्रहकेसाथ परंपरासंबंधहै ॥ तापरंपरासंबंधकूंलेके गृहविषेपुरुषकीआधारता प्रतीतहोवै है ॥ तैसे घटविषेभी परंपरासंबंधकरिकै इंद्रियोंकीआधारता संभवैहै ॥ यातें देहकीन्यांई घ टभी चेतनहोणाचाहिये ॥ किंवा॥ इंद्रियोंकीआधारताकरिकै देहकूं चेतनतावीहोवै ॥ जबी इंद्रियोंविषे प्रथम चेतनतासिद्ध होवै ॥ सोइंद्रियोंविषे चेतनतासंभवैनहीं ॥ काहेतें चक्षुतेंआदिलेकेजेइंद्रियहैं ॥ तिनोंविषे एकएकइंद्रिय चेतनहै॥ अथवा सर्वइंद्रि

योंकासमुदाय चेतनहै ॥ तहां प्रथमपक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतें जोसर्वइंद्रियोंविषे एकचक्षुइंद्रियकूंही चेतनमानिये ॥ तौ अंधपुरुषकूं चक्षुइंद्रियहैनहीं ॥ यातें ताकूं कोईभीज्ञान नहींहोणाचाहिये ॥ और अंधपुरुषकूंभी शब्दादिकोंकाज्ञानतौ होवैहै ॥ और जो श्रोत्रइंद्रियकूंही चेतनमानिये ॥ तौ बधिरपुरुषकूं श्रोत्रइंद्रियहैनहीं ॥ यातें ताकूं रूपादिकोंकाभीज्ञान नहींहोणाचाहिये ॥ और बधिरपुरुषकूं रूपादिकोंकाज्ञानतौ होवैहै ॥ ऐसे अन्यइंद्रियोंविषेभी जानिलेणा ॥ और जोऐसेकहैं ॥ अंधपुरुषकूं रूपकाज्ञान नहीं होवैहै ॥ सोकहनाभीबनैंनहीं ॥ काहेतें रसादिकोंकाज्ञान अंधपुरुषकूंहोवैहै ॥ तेरसादिक रूपस्वरूपहैं ॥ काहेतें इंद्रियजन्यज्ञानका जोविषयहोवै सो रूपकहियेहै ॥ इंद्रियजन्यज्ञानकेविषय रसादिकभीहैं ॥ यातें रसादिक रूपस्वरूपहैं ॥ यहवार्त्ता पूर्व नामरूपक्रियास्वरूपजगत्है याअर्थकेनिरूपणविषे कहिआयेहैं ॥ यातें रूपकाज्ञान अंधपुरुषकूंभीसंभवैहै ॥ इसप्रकार बधिरपुरुषकूंभी ओष्ठकेचलनेतें शब्दकाज्ञानहोवैहै ॥ तथा पृष्ठदेशविषे हस्तकरिकै अक्षरोंकेलिखणेतेंभी शब्दकाज्ञान बधिरकूंहोवैहै ॥ सो नहोणाचाहिये ॥ यातें एकएकइंद्रियविषे चेतनतासंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ सर्वइंद्रियोंविषे एकएकइंद्रिय आत्माहै ॥ यहकहना संभवैनहीं ॥ काहेतें जोसर्वइंद्रियोंविषे एकचक्षुइंद्रियकूं आत्माकहोगे ॥ तौ चक्षुइंद्रियरूपआत्माही प्रधानहोवैगा ॥ अन्यश्रोत्रादिकइंद्रिय गौणहोवैंगे ॥ सोयहमानणा संभवैनहीं॥ काहेतें सर्वइंद्रिय समानहैं॥तिनोंविषे एककूं प्रधानमानणा अन्यकूं गौणमानणा याकेविषे कोईयुक्तिहैनहीं ॥ केवलकथनमात्रहै ॥ यातें एकएकइंद्रियकूं आत्मतानहीं यहसिद्धभया॥ और सर्वइंद्रियोंकासमुदाय आत्माहै यह दूसरा पक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतें जोसर्वइंद्रियोंकासमूह आत्माहोवै ॥ तौ एकचक्षुइंद्रियकेनाशहुएतें सर्वइंद्रियोंकासमूहरूपआत्मा रह्या नहीं ॥ यातें अंधपुरुषकाशरीर आत्मातैंरहितहोणाचाहिये ॥ दृष्टांत ॥ जैसे नैयायिकोंकेमतविषे सहस्रतंतुतेंउत्पन्नभयाजोपटहै सो एकतंतुकेनाशहुएतें नाशहोइजावैहै ॥ तैसे एकचक्षुइंद्रियकेनाशहुएतें आत्मातैंरहित अंधकाशरीर होणाचाहिये और होवैनहीं ॥ यातें इंद्रियोंकासमुदाय आत्मानहीं ॥ शंका ॥ जैसे ग्रामविषे जोप्रधानपुरुषहोवैहै ॥ सो जबी मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी प्रधानपुरुषपणा दूसरेजीवंतेपुरुषोंविषे होवैहै ॥ तैसे इहांभी चक्षुइंद्रियकेनाशहुए बाकीरहीजे श्रोत्रादिकइंद्रियहैं तिनोंविषे आत्मतार

हैहै ॥ यातैं इंद्रियही आत्माहैं ॥ समाधान ॥ दृष्टांतविषे जैसे एकप्रधानपुरुषकेनाशहुएभी ताकेनिर्णयरूपव्यवहारका लोप होवै
नहीं ॥ किंतु दूसरेजीवतेप्रधानपुरुष ताकेनिर्णयरूपव्यवहारकूं करै हैं ॥ उलटाकिसीस्थानविषेतौ ऐसादेखताहै ॥ प्रथम प्रधान
पुरुष आपणेग्राममात्रकेनिर्णयकूं करताथा ॥ ताकेमृत्युहुए दूसरेप्रधानपुरुष अन्यग्रामकेनिर्णयकूंभी करै हैं ॥ तैसे इहांभी चक्षु
इंद्रियकेनाशहुए ताकाकार्य जोनीलपीतादिकरूपोंकाज्ञानहै सो अन्यश्रोत्रादिकइंद्रियोंतैंभी होणाचाहिये ॥ और चक्षुइंद्रियका
कार्य श्रोत्रादिकइंद्रियोंतैं होवैनहीं ॥ जोकदाचित्होवै तौ अंधपुरुषकूंभी श्रोत्रादिकइंद्रियतैं नीलपीतादिकरूपकाज्ञान होणाचा
हियै ॥ और होवैनहीं ॥ यातैं तुमारादृष्टांत विषमहै ॥ शंका ॥ हमारादृष्टांत विषमनहीं ॥ काहेतैं किसीस्थानविषे प्रधानपुरुषकेमृत्यु
हुए ताकेनिर्णयरूपव्यवहारका लोपभीदेखाहै ॥ समाधान ॥ यातुमारेकहणेकरिकै यहअर्थसिद्धभया ॥ किसीग्रामविषे प्रधानपुरुष
केमृत्युहुए ताकेव्यवहारकूं अन्यप्रधानपुरुष करै हैं ॥ और किसीप्रधानपुरुषकेमृत्युहुए ताकेव्यवहारकूं अन्यकोईपुरुष करतानहीं
॥ किंतु ताकेव्यवहारका लोपहोइजावै है ॥ तैसे इहांभी सर्वअंधपुरुषोंकूं श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै नीलपीतादिकरूपकाज्ञान मतहो
वै ॥ परंतु किसीकिसीअंधपुरुषकूंतौ होणाचाहियै ॥ और किसीभीअंधपुरुषकूं रूपकाज्ञान होवैनहीं ॥ यातैं प्रधानपुरुषकेदृष्टांततैं
इंद्रियोंविषेआत्मता संभवैनहीं ॥ शंका ॥ इंद्रियोंतैंआत्माकूंभिन्नमानणांविषेभी अंधपुरुषकूं नीलपीतादिकरूपकेज्ञानकीप्राप्तिरूप
दोष काहेतैंनहींहोवै ॥ समाधान ॥ इंद्रियोंतैंभिन्नआत्माहै यापक्षविषे अंधपुरुषकूं नीलादिकरूपकेज्ञानकीप्राप्तिरूपदोष होवैनहीं ॥
काहेतैं शब्द स्पर्श रूप रस गंधके ज्ञानोंविषे क्रमतैं श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचइंद्रिय करणहैं ॥ अंधपुरुषविषे चक्षुइंद्रियका
अभावहै ॥ यातैं ताकूं नीलादिकरूपकाज्ञान होवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मणिआदिकपदार्थोंकेचाक्षुषज्ञानमैं उपकरण जोदीपकादिक
प्रकाश ॥ ताकेअभावहुवे चक्षुवालापुरुषभी मणिआदिकपदार्थोंकूं देखैनहीं ॥ तैसे चक्षुइंद्रियकेनष्टहुए अंधपुरुष रूपकूंदेखैनहीं ॥
किंवा ॥ जैसे एकदीपककेनाशहुए तिसीस्थानविषे दूसरेदीपककीउत्पत्तिहोवै है ॥ तैसे एकइंद्रियकेनाशहुवे दूसरेइंद्रियकीउत्पत्ति कि
सीआस्तिकपुरुषनैं अंगीकारकरीनहीं ॥ काहेतैं आस्तिकोंकेमतविषे धर्मअधर्मरूपअदृष्टतैंविना किसीकार्यकी उत्पत्तिहोवैनहीं ॥

और जिसचार्वाकनास्तिककेमतविषे देहतैंभिन्न कोईआत्माहैनहीं ॥ तिनोंकेमतविषे एकइंद्रियकेनाशहुए तिसीस्थानविषे द्वितीय इंद्रियकीउत्पत्ति होणीचाहिये ॥ और जोदेहात्मवादीकहै ॥ हमारेमतविषेभी अदृष्टरूपकारणकाअभावहै ॥ यातैं एकइंद्रियकेनष्टहुए तिसीस्थानविषे द्वितीयइंद्रियकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ सोयहकहना बनैनहीं ॥ काहेतैं पूर्वजन्मविषेसंपादनकरे पुण्यपापरूपअदृष्ट उत्तरउत्तरजन्मविषे कार्यकीउत्पत्तिकरैहैं यहनियमहै ॥ और पूर्वजन्म देहात्मवादियोंकेमतविषे संभवैनहीं ॥ जिसतैं अदृष्टकीउत्पत्तिहोवै ॥ यातैं एकइंद्रियकेनष्टहुए द्वितीयइंद्रियकीउत्पत्ति देहात्मवादीकेमतविषे अवश्यहोणीचाहिये ॥ किंवा ॥ जैसे देहात्मवादीकेमतविषे एकइंद्रियकेनष्टहुए द्वितीयइंद्रियकीउत्पत्तिरूपदोष होवैहै ॥ तैसे इंद्रियआत्मवादीकेमतविषेभी यहदोष प्राप्तहोवैहै॥काहेतैं पूर्वजन्मकेअभावहोणेतैं पुण्यपापरूपअदृष्टकीउत्पत्ति इंद्रियआत्मवादीकूंभी संभवैनहीं॥ यातैं एकचक्षुइंद्रियकेनष्टहुएभी बाकीरहेजेश्रोत्रादिकइंद्रिय तिनोंकरिकै द्वितीयचक्षुइंद्रियकीउत्पत्ति होणीचाहिये ॥ दृष्टांत॥ जैसे ग्रामविषेएकप्रधानपुरुषकेमृत्युहुए तिसकेकार्यविषे दूसरेप्रधानपुरुषकूं महाजनलोक स्थापनकरैहैं ॥ और जैसे एकराजाकेमृत्युहुए तास्थानविषे द्वितीयराजाकूं प्रजा अंगीकारकरैहै ॥ शंका ॥ एकचक्षुइंद्रियकेनष्टहुए ताकेस्थानविषे दूसरेचक्षुकूं श्रोत्रादिकइंद्रिय तबीस्थापनकरैं ॥ जबी सर्वइंद्रियोंकी परस्परएकमतिहोवै ॥ सोएकमति तिनोंकीहैनहीं ॥ यातैं एकचक्षुकेनष्टहुए द्वितीयचक्षुकीउत्पत्ति श्रोत्रादिकइंद्रियोंतैं होवैनहीं ॥ समाधान ॥ जो इंद्रियोंकी परस्पर एकमतिनहींहोवै ॥ तौ किसीइंद्रियकरिकैभी कोईक्रियाहोवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे ग्रामविषे प्रधानपुरुषोंकी जबी परस्परएकमति नहींहोती ॥ तबी किसीभीकार्यकीसिद्धिहोतीनहीं ॥ यातैं किसीप्रकारकरिकैभी इंद्रियोंविषे चेतनताकीसंभावना होवैनहीं ॥ और रूपरसादिकविषयोंकेसाथ चक्षुरादिकइंद्रियोंका केवल संबंधमात्रहोवैहै इंद्रियोंतैं किसीभीअर्थकाप्रकाश होवैनहीं ॥ यातैं रूपादिकविषयोंकेप्रकाशकरणेहारा इंद्रियोंतैंभिन्नही कोईचेतनहै ॥ इसप्रकार इंद्रियोंकूंअचेतनहोणेतैं देहविषे चेतनकीआधारतासंभवैनहीं ॥ यातैं घरकी तथादेहकी विलक्षणता बनैंनहीं ॥ किंतु दोनोंसमानहैं ॥ शंका ॥ जैसे काथाऔरचूनाकरिकैयुक्त तांबूलविषे रक्तता उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे आकाशा

दिकपंचभूतोंकेसमुदायरूपशरीरविषे चेतनता उत्पन्नहोवैहै॥सोईहीं चेतनता शरीरविषेघटतैंविलक्षणताहै॥ समाधान॥ पंचभूतों केमिलणेतैं शरीरविषे चेतनता उत्पन्नहोवैहै॥यहतुमाराकहणा बनैनहीं ॥ काहेतैं पंचभूततौ घटविषेभी मिलेहुएहैं॥ यातैं घटविषे चेतनता काहेतैंनहींउत्पन्नहोती ॥ किंतु होणीचाहिये॥ शंका ॥ घटविषे पृथिवीआदिकभूततौ हैं परंतु वायु घटविषेहैनहीं यातैं ताकेविषे चेतनता उत्पन्नहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ घटविषे वायुकाअभावकहना संभवैनहीं ॥ काहेतैं सर्वत्रआकाशविषे वायुके अवयव परस्परमिलेहुएरहेहैं ॥ याकारणतैंही व्यजनकेचलावणेकरिकै तिनअवयवोंका परस्परविभाग होवैहै॥सोआकाश घटविषेभीहै ॥ यातैं घटविषेभी वायुहै ॥ यातैं शरीरकीन्यांई घटविषेभी चेतनताहोणीचाहिये ॥ किंवा॥वायुकेसंबंधतैं देहविषे चेतनतासंभवैभीनहीं॥ काहेतैं मृतकशरीरविषे तथाघटविषे वायुकेसंयोगहुएभी चेतनता देखतीनहीं॥ यातैं पंचभूतोंकेमिलनेतैं शरीरविषे चेतनता उत्पन्नहोवैहै ॥ यहवचन तेरा मिथ्याहै ॥ किंवा ॥जो इंद्रियोंविषेचेतनताहोवै॥ तौ इंद्रियोंविषे मुख्यआत्मताहोवै ॥ और इंद्रियोंकेआधारशरीरविषे गौणआत्मताहोवै ॥ सो इंद्रियोंविषे चेतनताहैनहीं ॥यातैं इंद्रियोंविषे मुख्यआत्मता और देहविषे गौणआत्मता यहदोनों संभवैनहीं ॥ इहां यहतात्पर्यहै ॥वेदकेविरोधीनास्तिकोंकेअनंतमतहैं॥ तिनोंविषे एकचार्वाकहै ॥ तेचार्वाकभी चारिप्रकारकेहोवैहैं॥ एकतौ देहकूंही आत्मामानेहैं ॥और दूसरे इंद्रियोंकूंही आत्मामानेहैं॥ औरतीसरे हृदयकूंही आत्मा मानेहैं॥ और चौथे प्राणकूंही आत्मामानेहैं ॥ तहां देहात्मवादीका तथाइंद्रियआत्मवादीका पूर्व खंडनकऱ्या ॥ अब हृदयआत्मवादीका औरप्राणआत्मवादीका खंडणकरैहैं ॥ यद्यपि हृदयदेशविषे सर्वदेहधारीजीवोंकूं ज्ञानहोवैहै ॥ तथापि सोहृदयदेश आत्मानहीं ॥ काहेतैं जैसे देह मांसरूपहै ॥ यातैं आत्मानहीं ॥ तैसे हृदयदेशभी मांसरूपहै ॥ यातैं आत्मानहीं ॥ और जैसे बाह्य वायु आत्मानही ॥ तैसे प्राणभी वायुरूपहै ॥ यातैं आत्मानहीं ॥ शंका ॥ जिसकेअदर्शनतैं मृत्युहोवै सो आत्माकहियेहै॥यहआत्माकालक्षण प्राणविषेही संभवेहै॥काहेतैं प्राणकेअदर्शनतैंही मृत्युहोवैहै॥जबपर्यंत शरीरविषे प्राणोंकादर्शनहोवैहै॥ तबपर्यंत शरीरविषे मत्यव्यवहार होवैनही ॥ यातैं प्राणही आत्माहै ॥ समाधान ॥ शरीरविषेप्राणोंकेअदर्शनतैं मृत्युहोवैहै॥ यातुमारेकहणेतैं

प्राणोंकेअप्रत्यक्षतें मृत्युहोवैहै यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ काहेतें चार्वाक एकप्रत्यक्षप्रमाणकूंहीमानेहैं ॥ सोप्राणोंकेअप्रत्यक्षतें मृत्यु होवैनहीं ॥ काहेतें स्थावरवृक्षादिकोंविषे प्राणोंकाप्रत्यक्षज्ञान किसीपुरुषकूं हैनहीं ॥ तौभी वृक्षादिक मृत्युहोवैनहीं॥ और जोऐसाप्रा णात्मवादीकहैहैकि, जंगमजेमनुष्यादिकशरीरहैं तिनोंविषे प्राणोंकेअप्रत्यक्षतें मृत्युहोवैहै ॥ सोयहतुमाराकहनाभी बनैंनहीं ॥ काहे तें जंगममनुष्यादिकशरीरविषेभी मूर्च्छादिकअवस्थामैं प्राणोंकाप्रत्यक्षहोवैनहीं यातें मूर्च्छादिकअवस्थाविषे मृत्युहोणाचाहिये ॥ और मृत्युहोवैनहीं ॥ यातें प्राण आत्मानहीं ॥ शंका ॥ जाकेनिर्गमनतें मृत्युहोवैहै ॥ सो आत्माकहियेहै ॥ यहआत्माकालक्षण प्रा णोंविषेहीसंभवैहै ॥ काहेतें प्राणोंकेनिर्गमनतेंही मृत्युहोवैहै॥और मूर्च्छाअवस्थाविषे प्राणोंकानिर्गमनहोवैनहीं ॥ किंतु शरीरकेभीत रिहीं प्राणोंकेगतिकानिरोधहोवैहै॥ यातें मूर्च्छादिकअवस्थाविषे मृत्युहोवैनहीं ॥ यातें प्राणही आत्माहै॥ समाधान ॥ जाकेनिर्ग मनतेंमृत्युहोवै सोआत्माकहियेहै ऐसाप्राणहै ॥ यहजोतुमाराकहणाहै सो केवलव्यर्थहै ॥ काहेतें जठराग्निकेनिर्गमनतेंभी प्रा णियोंकामृत्यु देख्याहै ॥ यातें जठराग्निभी तुमारेमतविषे आत्माहोणाचाहिये ॥ और जठराग्निकीआत्मता प्राणात्मवादी कूंभी अंगीकारहैनहीं ॥ शंका ॥ अग्निकानिर्गमन मृत्युकाहेतु तबीहोवै ॥ जबी अग्निकेनिर्गमनका किसीकूंप्रत्यक्षहोवै ॥ सोअग्निकानिर्गमनप्रत्यक्षहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ जठराग्निकेनिर्गमनका यद्यपि प्रत्यक्षज्ञान होवैनहीं ॥ तथापि जैसे नासिकाछिद्रकेअग्रभागविषे हस्तराखणेतें प्राणवायुकेस्पर्शकेअभावकाज्ञान होवैहै ॥ तिसस्पर्शकेअभावरूपहेतुतें प्राणोंकेनि र्गमनकाअनुमान होवैहै ॥ तैसें जठराग्निके निर्गमनकाभी शीतलस्पर्शरूपहेतुतें अनुमानहोवैहै ॥ शंका ॥ प्राणोंकेनि र्गमनतें तथा जठराग्निकेनिर्गमनतें प्राणियोंकामृत्यु होवैहै ॥ यातें दोनोंही आत्माहैं ॥ समाधान ॥ अग्निऔरप्राण दोनों आत्माहोवैनहीं ॥ काहेतें जोदोनोंकूं आत्मामानोंगे ॥ तौएकशरीरविषे दोआत्मा सिद्धहोवैंगे ॥ सोएकशरीरविषेदो आत्मामानणेविरुद्धहैं ॥ काहेतें जोमैं पूर्व मातापितादिकोंकूंदेखताभया ॥ सोईहींमैं अबी तिनोंकास्मरण करताहूं ॥ या प्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान आत्माकेएकताकूंविषयकरणेहारा नहींहोणाचाहिये ॥ काहेतें अन्यकरिकेदेखीवस्तुका अन्यकूंस्मरण

होवैनहीं ॥ यातें अग्निऔरप्राणदोनों आत्मानहीं ॥ किंवा ॥ जाकेनिर्गमनतैंमृत्युहोवै सो आत्माकहियेहै ॥ ऐसाजो आत्माका लक्षणकरैं तौ रुधिरभी आत्माहोणाचाहिये ॥ काहेतैं रुधिरकेनिर्गमनतैंभी प्राणियोंकामृत्यु लोकविषेदेखाहै ॥ और अग्नि प्राण उभयआत्मवादीतेरेकूं रुधिरकीआत्मता अंगीकारहैनहीं ॥ किंवा ॥ रुधिरकूं आत्मामानणा संभवैभीनहीं ॥ काहेतैं रुधिरकेसुकाव णेहारा जोकोईरोगविशेषहै ॥ तिसकरिकैयुक्तहुएप्राणी रुधिरतैंविनाभी किसीस्थानविषे जीवतेदेखेहैं ॥ और शास्त्रविषेभी हिरण्यक शपुआदिकोंकाशरीर तपकरिकै रुधिरतैंरहित केवलअस्थिमात्र रह्याहै ॥ यातें रुधिरकूं आत्मतासंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ प्राण अग्नि रुधिर यातीनोंकूं आत्मतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोजोवस्तु जडहोवैहै ॥ सो अनात्माहोवैहै ॥ जैसे घटादिकहैं ॥ इसप्रकार शरीर तैंबाहरिस्थित जेप्राण अग्नि रुधिर तिनोंविषे जडताप्रत्यक्षसिद्धहै ॥ यातें शरीरकेभीतरिस्थित जेप्राण अग्नि रुधिरहैं तेभी जडहैं ॥ और जडवस्तु आत्माहोवैनहीं ॥ किंतु चेतनही आत्माहोवैहै ॥ यातें प्राण अग्नि रुधिर ये तीनों आत्मानहीं ॥ और मन बुद्धि चित्त अहंकार यहचारिप्रकारकाअंतःकरणभी आत्मानहीं ॥ काहेतैं एकशरीरविषे अनंतआत्मामानणेविषे जोमैं पूर्वपितादिकोंकूं देखताभया सोइहींमैं अबीस्मरणकरताहूं यह प्रत्यभिज्ञाज्ञान नहींहोणाचाहीये ॥ शंका ॥ चारिअंतःकरणकासमुदाय आत्मा मतहोवै ॥ परंतु एकएकअंतःकरण आत्माकाहेतैंनहींहोवै ॥ समाधान ॥ एकएकअंतःकरणकूंभी आत्मतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं अंतः करणवृत्तिरूपतैं चक्षुआदिकइंद्रियद्वारा बाहरिनिकसिकरिकै घटादिकविषयावच्छिन्नचेतनकेआश्रितजोआवरणहै ताकी निवृत्तिक रैहै ॥ और तावृत्तिउपहित साक्षीचेतन ताघटका प्रकाशकरै है ॥ यातें साक्षीचेतनकरिकै जोघटादिकोंकाप्रकाशहै ॥ ताविषे अंतः करण उपकरणहै ॥ जो उपकरणहोवैहै सो आत्माहोवैनहीं ॥ जो उपकरणभी आत्माहोताहोवै ॥ तौ दीपादिकप्रकाश तथाचक्षु आदिकइंद्रियभी विषयकेप्रकाशविषेउपकरणहैं ॥ यातें आत्माहोणेचाहिये ॥ काहेतैं प्रकाशतैंविना अंधकारविषेस्थितघटादिकों का चक्षुकरिकैज्ञानहोवैनहीं ॥ तैसे चक्षुआदिकइंद्रियतैंहीनपुरुषकूं रूपादिकविषयकाज्ञान होवैनहीं ॥ यातें अंतःकरणकीन्यांई दीपादिकप्रकार तथाचक्षुआदिकइंद्रिय यहसंपूर्ण विषयप्रकाशविषे उपकरणहैं ॥ और उपकरण आत्माहोवैनहीं ॥ यातें अंतःक

रण आत्मानहीं ॥ शंका ॥ इंद्रियोंकीन्यांई मन बुद्धि चित्त अहंकार ज्ञानविषे उपकरणनहीं ॥ किंतु करताहैं ॥ और करता आत्मा हीहोवैहै ॥ समाधान ॥ मनआदिकोंविषे करतापणा अंगीकारकियेहुएभी तिनोंविषे आत्मतासिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतें मन बुद्धि चित्त अहंकार याचारोंकेमध्यमें कोईएक करताहै ॥ अथवा चारोंही करताहैं ॥ तहां एककरताहै यहप्रथमपक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतें जडत्वधर्म चारोंविषे समानहै ॥ तिनोंमें एककूं करतामानणा ॥ और दूसरेकूं करतानहींमानणा ॥ याकेविषे कोईयुक्तिहैनहीं ॥ और चारों करताहैं यहदूसरापक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतें एकशरीरविषे अनेककरताआत्मामानणेविषे पूर्वदोषकहिआयेहैं ॥ यातें अंतःकरण आत्मा नहीं ॥ किंवा मन बुद्धि चित्त अहंकार याचारोंकूं जोवादी आत्मामानेहै तिसतें यहपूछनाचाहिये ॥ मन बुद्धि चित्त अहंकार यहचारिशब्द आत्माहैं ॥ अथवा मन बुद्धि चित्त अहंकार याचारिशब्दोंतेंउत्पन्नभईयां जेअर्थविषयक अंतःकरणकीचारिवृत्तियांहैं ते आत्मा हैं ॥ अथवा मन बुद्धि चित्त अहंकार याचारिशब्दोंके जेचारिअर्थ हैं ते आत्माहैं? ॥ तहां प्रथम और द्वितीयपक्षसंभवैनहीं ॥ काहेतें मन बुद्धि चित्तअहंकार येचारिशब्द औरतिनोंतेंउत्पन्नभईहुई जेअंतःकरणकीचारिवृत्तियांहैं येसंपूर्ण अर्थप्रकाशके उपकरणहैं ॥ यातें आत्मानहीं ॥ और मन बुद्धि चित्त अहंकार याचारिशब्दोंके जेचारिअर्थहैं ते आत्माहैं ॥ यहतीसरापक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतें तेचारिअर्थ जडहैं अथवा चेतनहैं? ॥ तहां प्रथमजडपक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतें जोजोवस्तु जडहोवैहै सोपरिच्छिन्नहोवैहै ॥ और जोजोवस्तु परिच्छिन्नहोवैहै सो अनित्यहोवैहै ॥ और जोजोवस्तु अनित्यहोवैहै सो अनात्माहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ हैं ॥ तैसे मन बुद्धि चित्त अहंकार रूपअर्थोंकूं जडमानणेविषे अनात्मताही सिद्धहोवैहै ॥ और अनेकजडोंकूं आत्मामानणेविषे पूर्वकह्या प्रत्यभिज्ञाज्ञानकाविरोधभी प्राप्तहोवैहै ॥ यातें मन बुद्धि चित्त अहंकाररूप अर्थ आत्मा नहीं ॥ शंका ॥ जोजोवस्तु जडहोवैहै सो परिच्छिन्नहोवैहै ॥ यह पूर्वआपनें नियमकह्या सो संभवैनहीं ॥ काहेतें आकाश काल दिशा येतीनों जडतोहैं ॥ परंतु परिच्छिन्नहैंनहीं ॥ किंतु व्यापकहैं ॥ याकारणतेंही आकाशादिक नित्यहैं ॥ समाधान ॥ आकाशादिकोंविषे परिच्छिन्नताकाअभाव संभवैनहीं ॥ काहेतें श्रुतिविषे आकाशादिकोंकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ जोजो उत्पत्तिमानकार्यहोवैहै ॥ सो आपणेउपादानकारणकेएकदेशविषेरहेहै ॥

यातें आकाशादिकभी आपणेकारणकीअपेक्षाकरिकै परिच्छिन्नहैं॥ शंका ॥ जो आकाश परिच्छिन्नहोवै ॥ तौ शास्त्रविषे आकाशकेदृष्टांतकरिकै आत्माविषे व्यापकतासिद्धकरीहै सो असंगतिहोवैगी ॥ समाधान ॥ व्यापकता दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एक निरपेक्षव्यापकता ॥ और दूसरी सापेक्षव्यापकता ॥ तहां निरपेक्षव्यापकतातौ एकआत्माविषेहीहै ॥ और आकाशादिकोंविषे आपणेकार्यजेवायुआदिकहैं तिनोंकीअपेक्षाकरिकै सापेक्षव्यापकताहै ॥ तिसीसापेक्षव्यापकताकूं अंगीकारकरिकैही आत्माविषे आकाशकादृष्टांत दियाहै ॥ और आत्माकीअपेक्षाकरिकैतौ आकाशादिक परिच्छिन्नहीहैं॥ यातें नित्यनहीं॥ और जेनैयायिक आकाशादिकोंकूंविभुमानेहैं ॥ तिनोंकीरीतितैंभी आकाशादिकोंकूं नित्यतासिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतें नैयायिकोंनैं आकाशादिकविभुपदार्थोंविषेभी अन्योन्याभावकीप्रतियोगितारूप वस्तुपरिच्छेदका अंगीकारकन्याहै ॥ परिछिन्नवस्तु नित्यहोवैनहीं॥ यातें आकाशादिकअनित्यहैं॥ याकहणेतें यहसिद्धभया॥सर्वअनात्मपदार्थोंविषे वस्तुपरिच्छेद औरदेशपरिच्छेद औरकालपरिच्छेद विद्यमानहै॥ यातें सर्वअनात्मपदार्थ अनित्यहैं ॥ तिनोंविषे आकाशादिकनित्यहैं औरघटादिकअनित्यहैं यहजो लोकोंकूं प्रपंचविषे भेदप्रतीतहोवैहै॥ सो केवल अविवेकतैंप्रतीतहोवैहै ॥ यातें मन बुद्धि चित्त अहंकारकूं जडमानिकरिकै जोतिनोंकूं नित्यमानणा सो अत्यंतविरुद्धहै ॥ और मन बुद्धि चित्त अहंकाररूपअर्थ चेतनहैं॥ यहजोदूसरापक्ष अंगीकारकरैं॥ तौ सत्यआनंदस्वरूपआत्मातैं मन बुद्धि चित्त अहंकार अभिन्नहीसिद्धहोवैंगे ॥ किंवा ॥ सत् चित्त आनंद आत्मा इनचारोंका परस्परभेद विचारकियेतें सिद्धहोवैनहीं ॥ और जोवादी सत् चित् आनंद आत्मा याचारोंका परस्परभेद मानैहै ॥ तातें यहहमपूछतेहैं ॥सत्तैंसत्भिन्नहै चित्तैंचित्भिन्नहै आनंदतैंआनंदभिन्नहै आत्मातैंआत्माभिन्नहै ॥ याप्रकार परस्परभिन्नहैं ॥ अथवा सत्तैंचित्भिन्नहै चित्तैंआनंदभिन्नहै आनंदतैंआत्माभिन्नहै ॥ याप्रकार इनचारोंका परस्परभेदहै ?॥ तहां प्रथमपक्ष संभवैनहीं ॥ काहेतें जैसे लोकविषे घटपटादिकवस्तु आपणेस्वरूपतें आप भिन्नहोवैनहीं ॥ तैसे सत्कासत्तैंभेद चेतनकाचेतनतैंभेद यहकहना संभवैनहीं॥ और सत् चित् आनंद आत्मा इनचारोंका परस्परभेदहै॥ यहदूसरापक्षभी बनैनहीं॥ काहेतें प्रकाशस्वरूपचैतन्य आनंदतैंभिन्ननहीं ॥ जोआनंदतैंचैतन्याभि

न्नहोवै तौ प्रतिकूलहोवैगा ॥ जोप्रतिकूलहोवैहै सो जडहोवैहै ॥ यातैं आनंदतैंचैतन्यभिन्ननहीं ॥ तैसे आनंदभी चैतन्यतैंभिन्न नहीं ॥ काहेतैं जोप्रकाशरूपचैतन्यतैं आनंदभिन्नहोवै तौ दुःखरूपहोवैंगे ॥ इसप्रकार सत्यभी आनंदतैं औरचैतन्यतैं भिन्न नहीं ॥ जोसत्य आनंदतैं औरचैतन्यतैं भिन्नहोवै तौ असतूरूपहोवैंगे ॥ जबी सत्यभी असत्यभया ॥ तबी यहवस्तु सत्यहै यह वस्तु असत्यहै याप्रकारकाभेदव्यवहार लोकविषे नहींहोवैगा ॥ यातैं आनंदतैं तथाचैतन्यतैं सत्य भिन्ननहीं ॥ तैसे आनंद और चैतन्यभी सत्यतैंभिन्ननहीं ॥ काहेतैं जोआनंद औरचैतन्य सत्यतैंभिन्नहोवै ॥ तौ वंध्यापुत्रकेसमान असत्यहीहोवैंगे ॥ इसप्रकार सत् चित् आनंदतैं आत्माभी भिन्ननहीं ॥ काहेतैं जोआत्मा सत्चित्आनंदतैंभिन्नहोवै ॥ तौ असत् जड दुःख स्वरूपहोवैगा ॥ सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं सर्वप्राणियोंकूं मैंहूं याप्रतीतिमें आत्माकीसत्यरूपता प्रतीतहोवैहै ॥ और मैंकबीभीअप्रियनहींहूं याप्रतीतिमें आत्माकी आनंदरूपता प्रतीतहोवैहै ॥ और मैंजानताहूं याप्रतीतिमें आत्माकीचैतन्यता प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सत्चित्आनंदतैं आत्मा भिन्ननहीं ॥ किंवा ॥ सर्वप्राणिमात्रकूं अनंतआत्माका अहंरूपकरिके तथाआत्मरूपकरिके ॥ संशयतैंरहितज्ञान दीखताहै ॥ मैंहूं अथवा नहींहूं याप्रकारकासंशय किसीकूं होवैनहीं ॥ किंतु मैंसर्वदाहूं ऐसानिश्चय सर्वप्राणियोंकूंहोवैहै ॥ यातैं सत् चित् आनंद येतीनोंभी आत्मातैंभिन्ननहीं ॥ जोआत्मातैं सत् चित् आनंद भिन्नहोवै ॥ तौ सत्यका सत्यरूपतैंज्ञान औरचित्का चित्रूपतैं ज्ञान और आनंदका आनंदरूपतैंज्ञान किसीकूंभी नहींहोवैगा ॥ काहेतैं आत्मातैंभिन्न नरशृंगविषे सत्यबुद्धि किसीकूं होवैनहीं ॥ और आत्मातैंभिन्न घटादिकोंविषे चैतन्यबुद्धि होवैनहीं ॥ और आत्मातैंभिन्न सिंहसर्पादिकोंविषे आनंदबुद्धि होवै नहीं ॥ यातैं आत्मातैं सत्चित्आनंद भिन्ननहीं ॥ शंका ॥ सत् चित् आनंद आत्मा इनचारोंका यद्यपि परस्परभेदनहीं ॥ तथापि घटपटादिकजडवस्तुवोंकरिके आत्माविषे वस्तुपरिच्छेद काहेतैंनहींहोवै ॥ समाधान ॥ आत्मातैंभिन्न कोईभीवस्तु जगत्काकारणनहीं ॥ काहेतैं आत्मानाम आपणेस्वरूपकाहै ॥ आपणेस्वरूपतैं जोभिन्नहोवैहै ॥ सो नरशृंगकीन्यांई निःस्वरूपहोवैहै ॥ यातैं आत्माही सर्वजगत्काकारणहै ॥ कारणतैं कार्य भिन्नहोइकेप्रतीतहोवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मृत्तिकातैं घट भिन्न

होइकेप्रतीतहोवैनहीं ॥ तसे कार्यरूपजगत्भी कारणरूपआत्मातैं भिन्नहोइकेप्रतीतहोवैनहीं ॥ शंका ॥ जडजगत्काकारण
आत्मानहीं ॥ किंतु जगत्आपणाकारण आपही है ॥ समाधान ॥ किसीस्थानविषे कोईभीवस्तु आपणाकारण आपहो
वैनहीं ॥ काहेतैं कार्यकेउत्पत्तितैं पूर्वक्षणविषे जोवस्तुरहै सो कारणहोवै है ॥ और कारणतैंपश्चात् भावी जोवस्तुहोवै सो
कार्यहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मृत्तिका घटकीउत्पत्तितैंपूर्वविद्यमान है ॥ यातैं घटका मृत्तिकाकारणहै ॥ औरघट मृत्तिकातैंप
श्चात्भावीहै ॥ यातैं मृत्तिकाका घट कार्य है ॥ जोजडजगत् आपनाकारणआपहीहोवै ॥ तौ जगत् आपही आपनेतैंपूर्ववृत्ति
औरआपहीआपनेतैंपश्चात्भावी कहणाहोवैगा ॥ सो अत्यंतविरुद्धहै ॥ शंका ॥ अज्ञानके बलतैं जडजगत् आपणाकारण आप
काहेतैंनहींहोवै ? ॥ समाधान ॥ अज्ञानके बलतैंभी जगत् आपनाकारणआप होवैनहीं ॥ काहेतैं अज्ञानके बलतैं रज्जुआदिकोंकूं
कल्पितसर्पादिकोंकीही कारणतादेखीहै ॥ रज्जुकूं रज्जुकेप्रतिकारणता अज्ञानके बलतैंभीसंभवैनहीं ॥ यातैं आत्मातैंभिन्न किसी
जडवस्तुकीसत्तानहीं ॥ याकहणेतैं आत्माविषे वस्तुपरिच्छेदकाअभाव दिखाया ॥ अब देशकालपरिच्छेदकाअभाव आत्माविषे दि
खावैहैं ॥ जैसे गोत्वजाति गौव्यक्तिविषेरहैहै ॥ तैसे आत्मा किसीदेशविषेरहैनहीं ॥ किंतु सर्वदेशविषेरहैहै ॥ और जैसे वर्षादिक
सर्वकालविषेरहैनहीं ॥ किंतु किसीकालविषेरहैहैं ॥ तैसे आत्मा किसीकालविषेनहीं ॥ किंतु सर्वकालविषेविद्यमानहै ॥ काहेतैं दे
शकालादिकजितने लौकिकआधारहैं तिनसर्वोंकी प्रकाशस्वरूपआत्मातैंविना सिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं आत्मा देशकालवस्तुप
रिच्छेदतैंरहितहै ॥ शंका ॥ जबी आत्माकास्वरूप देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै तौ प्रपंचकाभान काहेतैंहोताहै? ॥ समाधान ॥
देशकालतैंआदिलेके जितनाअनिर्वचनीयजगत्है ॥ सोसंपूर्ण आत्माविषे अज्ञानीपुरुषोंनैं कल्पनाकऱ्याहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मध्या
ह्नकेसूर्यविषे घूकादिकपक्षी रात्रिकीकल्पनाकरैहैं ॥ और जैसे सोयेहुएपुरुषोंकूं स्वप्नविषे निद्रादोषकरिके नानाप्रकारकाजगत् प्र
तीतहोवैहै ॥ तैसे आत्माकेअज्ञानकरिके संपूर्णजगत् हमारेकूं प्रतीतहोवैहै ॥ और सत्चित्आनंदस्वरूप आत्माविषे देशकाल
वस्तुपरिच्छेदकाअभावहै ॥ याकारणतैं आत्मा अनंतहै ॥ और सृष्टिकेआदिकालविषे सनकादिकऋषियोंनै इसीआत्माका हमारे

ताईं उपदेशकऱ्याथा॥और अबीवामदेवनैंभी इसीआत्माका हमारेताईं उपदेशकऱ्याहै॥और इसीअद्वितीयआत्माकेजानणेकीइच्छा करिकै हमसर्वअधिकारियोंकासमाज इहांस्थितहै ॥ और इसीअद्वितीयआत्माकेजानणेवासते विचारकेआरंभकालविषे हमोनैं या संघातविषेकौनआत्माहै याप्रकारकाकथन कऱ्याथा॥ सोइहीअद्वितीयआत्मा अबी हमोनैं अंतःकरणादिकोंकेविचारकरिकै निश्चय कऱ्याहै ॥ याकारणतैं हमसंपूर्णअधिकारी कृतकृत्यहैं ॥ और हमोनैं आनंदस्वरूपआत्माकूं अंतःकरणकेविवेकतैं निश्चयकऱ्याहै॥या तैं जितनेहृदयादिकनाम अंतःकरणकेवाचकहैं ॥ तिससंपूर्णनामोंकूं शुद्धआत्माविषे हम समर्पणकरैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जितने हृदयादिकनामहैं तेसंपूर्ण अंतःकरणविशिष्टचेतनके तथाअंतःकरणकीवृत्तिविशिष्टचेतनके वाचकहैं ॥ तहां भागत्यागलक्षणाकरिकै अंतःकरणतथावृत्तिरूपजडभागकेत्यागकियेतैं संपूर्णहृदयादिकपद शुद्धआत्माकेबोधकहैं॥शंका॥मनवाणीकेअविषय शुद्धआत्माविषे विशिष्टचेतनकेवाचकहृदयादिकपदोंका प्रयोगकरणा व्यर्थहै ॥ समाधान ॥ शुद्धआत्माविषे हृदयादिकपदोंकाप्रयोगकरणा व्यर्थनहीं ॥ किंतु अर्थवान्है॥ काहेतें जैसे हमअधिकारियोंनैं हृदयादिकपदोंकरिके शुद्धआत्माकानिश्चयकऱ्याहै ॥ तैसे सर्वअधिकारियोंनैं हृदयादिकपदोंकरिकै शुद्धआत्माकानिश्चयकरणा ॥ याप्रकार अधिकारियोंकेबोधकरणेवासते हृदयादिकपदोंका शुद्धआत्माविषे हमोनैं प्रयोगकऱ्याहै॥ तहां उपासनातैं तथापंचकोशोंकेविचारतैं हृदयदेशविषे आत्माका अपरोक्षज्ञानहोवैहै ॥ याकारणतैं आत्माकूं हृदय कहेहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा संपूर्णविश्वका प्रकाशकरैहै ॥ याकारणतैं याआत्माकूं मन कहेहैं ॥ अथवा सर्व मुमुक्षुवोंनैं मनकरिके आत्मानिश्चयकरताहै ॥ याकारणतैं आत्माकूं मन कहेहैं ॥ और आत्माविषेकल्पितजोसर्वप्रपंच ताकूं यह आत्मा भलीप्रकारजानैहै ॥ याकारणतैं आत्माकूं संज्ञान कहेहैं ॥ और आत्माकेआज्ञाविषे सर्ववागादिकइंद्रिय औरअग्निआदिकसर्वदेवता वर्तैहैं ॥ याकारणतैं आनंदस्वरूपआत्माकूं अज्ञान कहेहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा जडचेतनरूपप्रपंचकेभेद विचारपूर्वक आपणेस्वरूपकूं तथापरमात्माकूं विशेषकरिकैजाणेहै ॥ याकारणतैं आत्माकूं विज्ञान कहेहैं ॥ और यहआनंदस्वरूप आत्मा सर्वप्रपंचकाप्रकाशकजोआपणास्वरूपहै ताकूं मैंहूं याप्रकारकरिकै सर्वदाजानैहै॥ याकारणतैं आत्माकूं प्रज्ञान कहेहैं ॥

और यहआनंदस्वरूपआत्मा एकवारजान्याजो आपणास्वरूप तथाअन्यकोईअनात्मवस्तु ताका विस्मरणकरैनहीं ॥ याकारण तैं आत्माकूं मेधा कहैहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा चक्षुआदिकइंद्रियकरिकै सर्ववस्तुकूं देखैहै॥याकारणतैं आत्माकूं दृष्टि कहै हैं ॥ और जैसे स्तंभादिक गृहकेभीतरिप्रवेशकरिकै गृहकूंधारणकरै है ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माभी सर्वशरीरोंविषेप्रवेश करिकै देहइंद्रियादिकोंकूं धारणकरैहै॥ याकारणतैं आत्माकूं धृति कहैहैं ॥ अथवा जैसे काष्ठमृत्तिकाकरिकैरचितसेतु क्षेत्रादिकोंके मर्यादाकूं धारणकरैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माभी वर्णआश्रमकेमर्यादाकूं औरतिनोंकेधर्मकीमर्यादाकूं धारणकरै है ॥ याकार णतैं याआत्माकूं धृति कहैहैं ॥ और जैसे कष्ठादिकोंकापात्रविशेष जोप्रस्थहै सो यवादिकअन्नकेपरिमाणकूं निश्चयकरावै है ॥ और जैसेरज्जुअवच्छिन्नचेतन आपणेविषेकल्पित जेसर्पदंडादिकहैं तिनोंकेपरिणामकूं जनावैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माभी संपू र्णविश्वकेपरिमाणकूं निश्चयकरैहै ॥ याकारणतैं आत्माकूं मति कहैहैं ॥ अथवा सर्वप्राणियोंविषेस्थितहुवा यहआत्मा सर्वप्राणियों के हितकूं तथाअहितकूं भलीप्रकार निश्चयकरैहै ॥ याकारणतैं आत्माकूं मति कहैहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा यहवस्तु मेरे कूंप्राप्तहोवै यहवस्तु हमारेकूंनहींप्राप्तहोवै याप्रकारकाजोमनहै ताकेरोकणेमैं समर्थ है॥ याकारणतैं आत्माकूं मनीषा कहैहै ॥ और यह आनंदस्वरूपआत्मा देह इंद्रिय अंतःकरण अज्ञानादिकोंकूं प्रकाशकरैहै ॥ याकारणतैं आत्माकूं जूति कहैहैं ॥ अथवा अध्या त्मदुःख अधिदैवदुःख अधिभूतदुःख यातीनप्रकारकेदुःखोंकूं विषयकरणेहारियां जेअंतःकरणकीवृत्तियां हैं तिनोंकूं आत्मा प्रकाश करैहै ॥ याकारणतैं आत्माकूं जूति कहैहैं ॥ अथवा आत्माकेप्रकाशकरिकै संपूर्णजगत् आपणेआपणेकार्यकीसिद्धिकरै है ॥ याका रणतैं आत्माकूं जूति कहैहैं ॥ और जैसे माता आपणेपुत्रोंकूं स्मरणकरै है ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माभी मेरेतैंविना यहसंपू र्णजगत् कैसेसिद्धहोवै याप्रकारका स्मरणकरैहै ॥ याकारणतैं आत्माकूं स्मृति कहैहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा जाग्रत् स्व प्न सुषुप्ति यातीनअवस्थाकूं सम्यक् कल्पनाकरैहै ॥ याकारणतैं आत्माकूं संकल्प कहैहैं ॥ और याआनंदस्वरूपआत्माकीइच्छा करिकै यहसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोवैहै॥ याकारणतैं आत्माकूं क्रतु कहैहैं॥ अथवा आनंदस्वरूपआत्माका प्रपंचकूंविषयकरणेहारा जो

मायाकीवृत्तिरूपज्ञानहै ताज्ञानतैं यहसंपूर्णप्रपंच उत्पन्नभयाहै ॥ याकारणतैं आत्माकूं क्रतु कहैहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा आपनीसमीपताकरिकै प्राणोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवर्त्तकरै है ॥ याकारणतैं आत्माकूं असु कहै हैं ॥ और यहआनंदस्वरूप आत्मा सुखप्राप्तिकीइच्छाकूं तथादुःखनिवृत्तिकीइच्छाकूं प्रकाशकरै है ॥ याकारणतैं आत्माकूं काम कहैहैं ॥ और प्रजाकीउत्पत्ति काकारणजो स्वस्त्रीसंगमकीअभिलाषा ताकूं यहआनंदस्वरूपआत्मा प्रकाशकरैहै ॥ याकारणतैं आत्माकूं वश कहै हैं ॥ इसप्रकार हृदयदेशविषेस्थितजोअंतःकरण और ताकीवृत्तियां तिनोंकेहीं संपूर्णहृदयादिकशब्द वाचकहैं ॥ ताअंतःकरणविषे हमअधिकारियोंनैं आनंदस्वरूपआत्मा जान्याहै ॥ याकारणतैं वृत्तिसहितअंतःकरणके जितनेहृदयादिकनामहैं तेसंपूर्णनाम आनंदस्वरूपआत्माके हमोनैं कथनकरेहैं ॥ और अंतःकरणकेहृदयआदिकनाम परमात्माविषे संभवैभीहैं ॥ काहेतैं परमात्मातैंभिन्न कोईपदार्थहैनहीं ॥ औरं वास्तवतैंविचारकरियेतौ जितनेघटपटादिकनामहैं ॥ तेसंपूर्ण परमात्माकाहींबोधनकरैहैं ॥ काहेतैं परमात्मातैंभिन्न कोईवस्तुहैनहीं॥जावस्तकूं घटपटादिकनाम बोधनकरैं ॥ यहवार्ता वार्तिकग्रंथकेकर्ताजोसुरेश्वराचार्य हैं तिनोंनैंभी कहीहै श्लोक॥अतोऽनुभवएवैको विषयोऽज्ञातलक्षणः ॥ अक्षादीनांस्वतःसिद्धो यत्रतेषांप्रमाणता॥१०॥अर्थयह॥स्वप्रकाश औरअज्ञात जो चेतनहै ॥ सोइही प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकाविषयहै ॥ ताचेतनविषेही प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकूं प्रमाणताहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ अज्ञातअर्थकाजोबोधकहोवै सो प्रमाणकहियेहै ॥ अज्ञानकाजोआश्रयहोवै औरअज्ञानकाजोविषयहोवै सो अज्ञातकहियेहै ॥ अज्ञानका आश्रय औरविषय चेतनहै ॥ चेतनतैंभिन्न जडवस्तु अज्ञानकाआश्रयविषय होवैनहीं ॥ यातैं आत्माकेबोधनकरिकेही संपूर्णप्रमाणोंविषे प्रमाणतासिद्धहोवै है॥ १०॥ और यहआनंदस्वरूपआत्माही शुद्धब्रह्महै ॥ और जगत्काकारण मायाविशिष्टईश्वरभी यहआनंदस्वरूपआत्माही है॥ और समष्टिसूक्ष्मशरीरकाअभिमानी हिरण्यगर्भभी यहआनंदस्वरूपआत्माही है ॥ और समष्टिस्थूलशरीरकाअभिमानी विराट्भगवान्भी यहआनंदस्वरूपआत्माही है ॥ और विराट्भगवान्केशरीरविषे तथाअस्मदादिक सर्वप्राणियोंकेशरीरविषे भोक्ता औरतीनलोकोंकूंधारणकरणेहारा तथासर्वकूंप्रकाशकरणेहारा जोपरमात्माइंद्रहै सोभी यहआ

नंदस्वरूपआत्माही है ॥ अथवा प्रसिद्धजोदेवतावोंकाराजाइंद्रहै सोभी यहआनंदस्वरूपआत्माही है ॥ और मरीचितैंआदिलैकेजे प्रजापति हैं॥ तेभी आनंदस्वरूपआत्माही हैं॥ और शरीरकेआश्रितजोवाक्आदिकइंद्रिय और अग्नितिनोंकेआदिकदेवतातें संपूर्ण आनंदस्वरूपआत्माही हैं॥ आत्मातैंभिन्न किंचित्मात्रभीनहीं॥ दृष्टांत॥ जैसे स्वप्नविषे भिन्न भिन्नकल्पनाकरे जेप्रमाता तेसंपूर्ण हमही हैं॥ हमारेतैंभिन्न कोईस्वप्नविषेप्रमातानहीं॥ इतनैंकरिकै आत्माविषे सजातीयभेदकाखंडनकऱ्या ॥ अब विजातीयभेदकूं खंडनकरे हैं॥ पृथिवी जल तेज वायु आकाश येपंचभूत मैंआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ और अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज येजेचारिप्रकारकेभूतहैं॥ ते स्थावरजंगमरूपकरिकै तथाकार्यकारणरूपकरिकै दोप्रकारके हैं॥ तेसंपूर्ण आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्ननहीं॥ और जैसे अग्नितैं उष्णता औरप्रकाश भिन्ननहीं॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्मातैं स्थूलसूक्ष्मरूपप्रपंच भिन्ननहीं और जैसे जलतैं शीतलता औरद्रवत्व भिन्ननहीं तैसे आनंदस्वरूपआत्मातैं प्रपंचभिन्ननहीं ॥ और जैसे पृथिवीतैं कठिनता औरगंध भिन्ननहीं तैसे आनंदस्वरूपआत्मातैं स्थूलसूक्ष्मप्रपंच भिन्ननहीं॥और जैसेवायुतैं क्रिया तथास्पर्श भिन्ननहीं॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्मातैं प्रपंच भिन्ननहीं॥ और जैसे आकाशतैं अवकाश तथाशब्द भिन्ननहीं॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्मातैं जगत् भिन्ननहीं और जैसे दोषतैंरहितसूर्यकेप्रकाशविषे अंधकारका यद्यपिअभावहै॥ तथापि उलूकआदिक सूर्यविषे अंधकारकीकल्पनाकरै हैं॥ तैसे जगत्तैंरहित आनंदस्वरूपआत्माविषे अज्ञानीजन जगत्कीकल्पनाकरै हैं॥ और जैसे अमूर्त्तआकाशविषे मेघादिकमूर्तपदार्थ रहै हैं ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषे यहसंपूर्णजडजगत् रहैहै ॥ और जैसे नानाप्रकारकेमेघादिक आकाशमें किसीकालविषेप्रतीतहोवैहैं सर्वथा प्रतीतहोवैंनहीं॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषे यहसंपूर्णजगत् कदाचित्प्रतीतहोवैहै सर्वदा प्रतीतहोवैनहीं॥ और जैसे मायावीराक्षसोंकाबालक प्रयोजनतैंविना मायाकरिकैपदार्थोंकूंरचै है ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा प्रयोजनतैंविनाही जगत्कूंरचैहै॥ और जैसे मदिरापानकरिकैअंधहुवापुरुष आवरणतैंरहितदेशविषेभी भित्तिआदिकआवरणोंकूंदेखे है॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा असत्जगत्कूंदेखे है॥ और जैसे कोईपुरुष आपणेचित्तकेदोषकरिकै दोषतैंरहितआपणे

पिताऔरगुरुआदिकोंविषे दोषोंकूंदेखे है ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा प्रपंचरूपदोषतैंरहितआपणेस्वरूपविषे प्रपंचकूंदेखे है ॥
और जैसे सोयाहुवापुरुष स्वप्नविषे आपणेएकताकूं नहींजाणेहै ॥ किंतु नानारूपकरिकै आपणेकूंजाणेहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरू
पआत्मा जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिरूपतीनस्वप्नोंकूंदेखताहुवा आपणेएकताकूंनहींदेखता ॥ और जैसे नलिकाकेभ्रमणहुए नलिकाऊपरि
आरूढजोशुकहै सो नलिकाकरिकैनहींबांध्याहुवाभी आपकूंबांध्याहुवामानिकरिकै भ्रमणकरै है ॥ तैसे यहजीवात्मा नित्यमुक्तआ
नंदस्वरूपआत्माकेअज्ञाननतें संसाररूपशूलविषे भ्रमणकरै है ॥ और जैसे गंधकेलोभकरिकै भ्रमर कमलकूंत्यागतानहीं ॥ तहां रा
त्रिकेप्राप्तहुए कमल संकोचकूंप्राप्तहोवै है ॥ ताकमलकेभीतरि निरुद्धहुवाभ्रमर अत्यंतदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ और ऐसाविचारकरै है ॥
जब रात्रिव्यतीतहोवैगी ॥ और प्रातःकालहोवैगा ॥ तब मैंनिकसिजावोंगा ॥ ऐसाविचारकरतेहीं हस्ती ताकमलकूंभक्षणकरिलेवै है ॥
तैसे यहजीवात्मा स्त्रीआदिकविषयोंविषेआसक्तहुवा अनंतप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जैसे कोईधनीपुरुष भ्रांतिसैंआप
णेधनीपणेकूंविस्मरणकरिकै लोकविषेदुःखकाहेतुजोदरिद्रताहै ताकूं प्राप्तहोवै है ॥ तैसे यहआत्मा आनंदकासमुद्रजोआपणास्वरू
पहै ताकूंविस्मरणकरिकै तुच्छविषयसुखकीप्राप्तिवासते अत्यंतदीनदशाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जैसे सर्वगुणोंकरिकैसंपन्नकोईकपुरुष
किसीव्यभिचारिणीस्त्रीकरिकैमोहितहुवा दीनताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा मायाकरिकैमोहितहुआ नानाप्रकार
केदीनताकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जैसे त्रिलोकीकानाथजोइंद्रहै सो सर्वदेवतावोंकाअधिपतिहै ॥ यातैं कामदेवताकेवशकरणेकाभी इंद्र
कूंसामर्थ्यहै ॥ तौभी कामिनीकूंवशकरणेमैंसमर्थनहींहोवै है ॥ किंतु कामकरिकै कामनीकेअधीनहोवै है ॥ तैसे मायातैंआदिलेकेसर्व
काअधिष्ठानजोआत्माहै सो मायाकूंवशकरणेमैंसमर्थनहींहोवै है ॥ और जैसे प्रियपुत्रादिकोंनैं कियाजोनिरादर तानिरादरवि
षे पिता दोषकूंनहींदेखे हैं ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा मायाकेदोषोंकूंनहींदेखे है ॥ और जैसे भारशृंगनामाजोकोईमृगविशेष
है ॥ सो आपणेशृंगोंकेभारकूं प्रसन्नहुवा धारणकरै है ॥ तैसे यहआत्मा आपणेस्वरूपकेअज्ञाननतैं मायाकेभारकूं धारणकरै है ॥ और
जैसे दुर्जनपुरुषकेसंगतैं साधुपुरुष दोषकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा मायाकेसंगतैं दोषकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे

दुर्जनपुरुषकीदृष्टिकरिकै निर्दोषपुरुषविषेभी दोषहोवैहै ॥ तैसे अज्ञानीपुरुषकी दृष्टिकरिके आत्माविषे अनंतदोषयुक्तसंसारहै ॥ और जैसे आपणीप्रजाविषेस्थितदुःखकूं राजा आपणेविषेमानैहै ॥ तैसे जडअंतःकरणविषेस्थितदुःखकूं तादात्म्यअध्यासकरिके आत्मा आपणेविषेमानैहै ॥ और जैसे कारणसामग्रीतैंरहित एकस्वप्नपुरुषविषे अकस्मात्तैं संपूर्णजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषे अकस्मात्तैं स्थूलसूक्ष्मरूपप्रपंच उत्पन्नहोवै है॥ और जैसे स्वप्नविषे यहपुरुष प्रयोजनतैंविना आपणेकूंआपहीदुःखकीप्राप्तिकरै है ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा जाग्रत्विषे व्यर्थहीआपणेकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ और जैसे स्वप्नतैं जाग्रत्भयेपुरुषकूं स्वप्नकेदुःखकानाशहोवैहै ॥ और सोपुरुष ऐसाजाणैहै कि मेरेकूं पूर्वदुःखनहींहोताभया॥ और अबीवर्तमानकालविषेभी मेरेकूंदुःखनहीं है ॥ और आगेभीहमारेकूंदुःखनहींहोवैगा ॥ इसप्रकार तीनकालविषे स्वप्नकेदुःखकाअभाव निश्चय करै है ॥ तैसे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्तिरूपसंसारस्वप्नतैं आत्मसाक्षात्काररूपजाग्रत्केप्राप्तहुए याआनंदस्वरूपआत्माकूं सर्वदुःखोंका नाशहोवै है ॥ और तिसज्ञानअवस्थाविषे आत्मा याप्रकारजानैहै ॥ मेरेकूं पूर्वकालविषे दुःखनहींहोताभया ॥ और अबी वर्तमानकालविषेभी मेरेकूं दुःखनहीं और आगेभी हमारेकूं दुःखनहींहोवैगा ॥ इसप्रकार तीनकालविषे आपणेस्वरूपमें विद्वान् दुःखकूंनहींमानता॥ किंतु अंतःकरणादिकोंकेधर्म दुःखादिकजाणैहै ॥ और जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिरूपसंसारस्वप्नतैं ब्रह्मसाक्षात्काररूपजाग्रत् हमसर्वअधिकारियोंकूं प्राप्तभयाहै ॥ याकारणतैं हम महान्पुण्यवान्हैं॥ और पूर्वजोहमोनैं अंतःकरणकेवाचक हृदयआदिक नाम अद्वितीयआत्माविषे कथनकरेथे ॥ तिनसर्वनामोंविषे प्रज्ञानामही अत्यंत शोभायमानहै॥ काहेतैं प्रज्ञा यानामविषे दोशब्द हैं ॥ एकतौप्रशब्दहै॥ और दूसरा ज्ञाशब्दहै ॥ तहांसजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनभेदोंतैंरहितता प्रशब्दकाअर्थ है॥ और ज्ञाशब्दकाप्रकाशअर्थहै ॥ तादोनोंशब्दोंकेअर्थ आनंदस्वरूपआत्माविषेही घटैहैं ॥ आत्मातैंभिन्न अनात्मवस्तुविषे घटैनहीं ॥ इहां यहअभिप्रायहै ॥ समानजातिवालेपदार्थोंका जोपरस्परभेदहै ताकूं सजातीयभेदकहैहैं ॥ जैसे एकब्राह्मणका दूसरेब्राह्मणतैंभेदहै ॥ तहां ब्राह्मणत्वजाति दोनोंविषेसमानहै ॥ यहसजातीयभेदभी आत्माविषेनहीं ॥ काहेतैं आत्माकेसमानजातिवा

ला दूसराकोईआत्माहैनहीं ॥ और विरुद्धजातिवालेपदार्थोंका जोपरस्परभेदहै ताकूं विजातीयभेदकहे हैं ॥ जैसे ब्राह्मणका क्ष
त्रियतैंभेदहै ॥ तहां ब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वदोनोंजाति एकअधिकारणमैंरहैंनहीं ॥ यातैं परस्परविरुद्धहैं ॥ यहविजातीयभेदभी आत्मा
विषेरहैनहीं ॥ काहेतैं आत्मातैंभिन्न कोईवस्तुहैनहीं ॥ यद्यपि अनात्माजगत् आत्मातैंविजातीयहै ॥ तथापि कल्पितप्रपंचतैं आ
त्माविषे विजातीयभेदसिद्धहोवैनहीं ॥ समानसत्तावालापदार्थही भेदकासंपादकहोवैहै ॥ और आपणेविषेस्थितजोभेदहै
ताकूं स्वगतभेदकहेहैं ॥ जैसे एकहीशरीरविषे हस्तपादादिकोंकापरस्परभेदहै ॥ यहस्वगतभेदभी आनंदस्वरूपआत्मावि
षेनहीं ॥ काहेतैं स्वगतभेद सावयवपदार्थोंविषेहोवैहै ॥ और आत्मा निरवयवहै ॥ इसप्रकार तीनभेदतैंरहित औरप्रकाश
स्वरूप आत्मा प्रज्ञाननामकरिके पूर्वहमोंनैं कथनकऱ्याहै ॥ प्रज्ञाशब्दका औरप्रज्ञानशब्दका एकहीअर्थहै ॥ सोप्रज्ञानशब्दकाअर्थ
आनंदस्वरूपआत्माही ब्रह्मातैंआदिलैकेस्थावरपर्यंत सर्वकेशरीरोंविषे व्यापकहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे संपूर्णकाष्ठोंविषे अग्निस्थितहै ॥
और आकाशादिकजेपंचभूतहैं ॥ और तिनोंकेकार्यजेस्थावरजंगमहैं ॥ तिनसंपूर्णोंका प्रज्ञारूपनेत्रहीनिर्वाहकहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अ
स्मदादिकपुरुषोंके मांसमयनेत्र निर्वाहकहैं ॥ इहां इतनाभेदहै ॥ मांसमयनेत्रतौ केवल निमित्तकारणहुए निर्वाहकहैं ॥ और यहप्र
ज्ञारूपनेत्रतौ उपादानकारणहुवा प्रपंचकानिर्वाहकहै ॥ काहेतैं संपूर्णजगत्कीआत्मातैंउत्पत्ति और आत्माविषेस्थिति औरआत्मा
विषेहीलय श्रुतिनैं कथनकऱ्याहै ॥ सोउत्पत्तिस्थितिलयकीकारणता उपादानकारणविषेही होवैहै ॥ जैसे घटकी उत्पत्ति स्थितिल
य मृत्तिकाविषे होवैहै ॥ यातैं मृत्तिका घटकाउपादानकारणहै ॥ किंवा ॥ तीनलोकोंकेभीतरी सूर्य चंद्रमा अग्नि आदिकोंकाजोप्र
काशहै ॥ सोभी प्रज्ञारूपनेत्रतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु प्रज्ञास्वरूपहै ॥ प्रज्ञास्वरूपचैतन्यतैंविना सूर्यादिकोंकीभी सिद्धिहोवैनहीं ॥ यह
वार्ता संपूर्णप्राणियोंके अनुभवकरिकैसिद्धहै ॥ काहेतैं संपूर्णप्राणिमात्र किसीकालविषे किसीदेशविषे किंचित्किंचित्वस्तुकूं जा
णतेहीहैं ॥ सोसंपूर्ण प्रज्ञारूपनेत्रकरिकैजाणेहैं ॥ प्रज्ञारूपनेत्रतैंविना किसीभीवस्तुकाज्ञानहोवैनहीं ॥ अब चैतन्यरूपप्रज्ञाकी स
र्वत्रव्यापकताजनावणेवासते प्रथम वृक्षादिकस्थावरपदार्थोंविषे प्रज्ञाकासद्भाव दिखावैहैं ॥ जैसे अस्मदादिकपुरुषोंकूं अन्नादिकप

दार्थोंकीप्राप्तिकरिकै सुखकाज्ञानहोवैहै॥ तासुखकेज्ञानतैं शरीरकीवृद्धिहोवैहै॥ और शस्त्रादिकोंकेप्रहारकरिकै दुःखकाज्ञानहोवैहै॥ तादुःखकेज्ञानतैं शरीरकाक्षयहोवैहै ॥ तैसे वृक्षादिकोंकीभी जलसिंचनकरिकै वृद्धिदीखतीहै ॥ और मूलादिकोंकेछेदनतैं तथा अत्यंतउष्णतातैं तथाअत्यंतशीततैं वृक्षादिकोंका क्षयदीखताहै ॥ सोवृद्धि तथाक्षय सुखदुःखकेज्ञानतैंविना होवैनहीं ॥ यातैं वृद्धिरूपहेतुतैं वृक्षादिकोंकेसुखज्ञानका अनुमानहोवैहै ॥ और क्षयरूपहेतुतैं तिन्होंके दुःखज्ञानका अनुमानहोवैहै॥इसप्रकार स्थावरोंविषे चैतन्यरूपप्रज्ञा अनुगतहै॥ और ग्रामके तथावनके जेपशुहैं॥ तिनोंकी हरिततृणयुक्तहस्तादिकोंकूंदेखिकरिकै प्रवृत्तिहोवैहै ॥ और दंडादिकयुक्तहस्तकूंदेखिकरिकै निवृत्तिहोवैहै ॥ साप्रवृत्ति सुखसाधनताज्ञानतैंविना होवै नहीं ॥ किंतु यहवस्तु मेरेसुखकासाधनहै याप्रकारकेज्ञानतैं प्रवृत्तिहोवैहै ॥ और सानिवृत्ति दुःखसाधनताज्ञानतैंविना होवैनहीं॥ किंतु यहवस्तु हमारेदुःखका साधनहै याप्रकारकेज्ञानतैं निवृत्तिहोवैहै ॥ यहरीति अस्मदादिकपुरुषोंके प्रवृत्तिऔरनिवृत्तिविषे प्रसिद्धहै॥ यातैं प्रवृत्तिरूपहेतुतैं पशुआदिकोंविषे सुखसाधनताज्ञानका अनुमानहोवैहै॥ और निवृत्तिरूपहेतुतैं तिन्होंविषे दुःखसाधनताज्ञानका अनुमानहोवैहै ॥ इसप्रकार पिपीलिकातैंआदिलैकेमनुष्यपर्यंत जितनेजंगमप्राणीहैं ॥ तिनसंपूर्णोंका अनुकूलवस्तुविषेप्रवृत्ति औरप्रतिकूलवस्तुतैंनिवृत्तिरूपव्यवहार समानहै ॥ यातैं संपूर्णजंगम सुखदुःखकेज्ञानवालेहैं ॥ और वशिष्ठादिकमुनियोंके तथाब्रह्माआदिकदेवतावोंके सुखदुःखकाज्ञान शास्त्रप्रमाणतैं जान्याजावै ॥ अथवा चेतनतारूपहेतुतैं वशिष्ठादिकोंके सुखदुःखकेज्ञानका अनुमानहोवैहै ॥ जोजोचेतनहोवैहै सो सुखदुःखकेज्ञानवालाहोवैहै ॥ जैसे अस्मदादिकपुरुषहैं ॥ साचेतनता वशिष्ठादिकमुनियोंविषे तथादेवतावोंविषेभीहै ॥ यातैंतेभी सुखदुःखकेज्ञानवालेहैं ॥ इसप्रकार सर्वप्राणिमात्रविषे जोसुखदुःखका अनुभवहै ॥ सोअनुभवही प्रज्ञाशब्दकरिकैकथनकर्याहै ॥ और सुखविषे तथादुःखविषे कोईभीक्रिया नहींहै ॥ किंतु जबपर्यंत सुखदुःखरूपफलकीउत्पत्तिनहींभई ॥ तबपर्यंतही संपूर्णकारक क्रियाकूंकरैहैं॥ सुखदुःखरूपफलकीउत्पत्तितैंअनंतर क्रियाकूंकरैहैंनहीं॥ दृष्टांत ॥ जैसे जबपर्यंत तृप्तिरूपफलकीउत्पत्तिनहींभई तबपर्यंत करताआदिककारकोंनैं भोजनरूपक्रियाकरीतीहै ॥ तृप्तिरूपफलकेउत्पन्नहुए विद्यमान

कारकोंनैंभी भोजनरूपक्रिया करीतीनहीं ॥ और सुखदुःखरूपफलकेभोक्ताजेहमहैं तिनोंकूं प्रज्ञानरूपनेत्रतेंविना सुखदुःख उत्पन्नहोवैंनहीं ॥ और प्रज्ञारूपनेत्रतेंविना सुखदुःखकीस्थितिभी संभवैनहीं ॥ काहेतें जोप्रज्ञारूपनेत्रतें सुखदुःख भिन्नहोवैं तौ शशश्रृंगकीन्यांई असत्होवैंगे ॥ यातें प्रज्ञास्वरूपनेत्रतें सुखदुःखभिन्ननहीं किंतुअभिन्नही हैं ॥ और जैसे अस्मदादिकोंकेसुखदुःख प्रज्ञास्वरूपहैं ॥ तैसे सर्वदेहधारीजीवोंकेसुखदुःख प्रज्ञास्वरूपहैं ॥ प्रज्ञातेंअतिरिक्तनहीं ॥ और जैसे सर्वदेहधारीजीवोंकेसुखदुःख प्रज्ञास्वरूपहैं ॥ प्रज्ञातेंभिन्नकियेहुए शशश्रृंगकीन्यांई असत्होवैहैं ॥ तैसे जितना कार्यकारणरूपप्रपंचहै सोसंपूर्ण प्रज्ञास्वरूपहै ॥ काहेतें ताप्रज्ञारूपनेत्रकेविद्यमानहुएही प्रपंचकास्फुरणहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे रज्जुकेविद्यमानहुए सर्प प्रतीतहोवैहै ॥ रज्जुतेंभिन्नकियाहुआसर्प शशश्रृंगकीन्यांई असत्होवैहै ॥ तैसे प्रज्ञातें भिन्नकियाहुवा सुखदुःखादिकप्रपंच असत्होवैहै ॥ शंका ॥ सर्वअर्थोंकोबुद्धिप्रकाशकहै ॥ यातें बुद्धिहीप्रज्ञाहै ॥ समाधान ॥ जैसे सुखदुःखादिकप्रपंच जडहै ॥ यातें अपनीसिद्धिविषे प्रज्ञारूपप्रकाशकीअपेक्षाकरै ॥ तैसे बुद्धिभीजडहै ॥ यातें आपणीसिद्धिमें चैतन्यरूपप्रज्ञाकीअपेक्षाकरैहै ॥ और पंचभूतोंकेसत्त्वगुणकाकार्यरूपबुद्धिविषे चेतनकेप्रतिबिंबग्रहणकरणेकीयोग्यताहै ॥ यातें बुद्धिविषे प्रज्ञाशब्द गौणहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे सूर्यकेप्रकाशविषे प्रकाशशब्द गौणहै ॥ और सर्वप्रकाशोंका प्रकाशक भेदतैंरहित आनंदस्वरूपआत्माविषेही प्रज्ञाशब्द मुख्यहै ॥ और मायासहित भूतभौतिकसकलप्रपंचका स्वप्रकाशचेतनकरिकैही प्रकाशहोवैहै ॥ याकारणतैंही श्रुतिनैं सर्वप्रपंचकानिर्वाहक प्रज्ञानेत्र कह्याहै ॥ और साप्रज्ञाही सर्वप्रपंचकेस्थितिकाआधारहै ॥ काहेतें प्रज्ञा प्रपंचकाउपादानकारणहै ॥ उपादानकारणविषेही कार्यकीस्थिति लोकविषेदेखीहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मृत्तिकारूपउपादानकारणविषेही घटकीस्थितिहोवैहै॥ और यहसंपूर्णजगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व तथानाशतैंअनंतर अस्पष्टनामरूपकरिकै प्रज्ञाविषे रहैहै ॥ और मध्यकालविषे स्पष्टनामरूपकरिकै प्रज्ञाविषेरहैहै॥ यातें संपूर्णजगत् प्रज्ञारूपउपादानकारणविषे रहैहै ॥ इहांयहअभिप्रायहै ॥ उपादानकारण तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ परिणामीउपादानकारण ॥ और दूसरा आ

रंभकउपादानकारण ॥ और तीसरा विवर्तउपादानकारण ॥ तहां चैतन्यरूपप्रज्ञाकूं प्रपंचकेप्रति परिणामीउपादानकारणतातौ संभवैनहीं ॥ काहेतें प्रज्ञा निरवयवहै ॥ सावयवदुग्धादिकही दधिआदिकपरिणामकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ किंवा ॥ परिणामीउपादानकारण कार्यकेसमानसत्तावालाहोवैहै ॥ जैसे दुग्धविषे औरदधिविषे व्यावहारिकसत्ता अथवा प्रातिभासिकसत्ता समानहै ॥ तैसे चैतन्यरूपप्रज्ञाकी औरप्रपंचकी समानसत्तानहीं ॥ किंतु विषमसत्ताहै ॥ चैतन्यविषेतौ पारमार्थिकसत्ताहै ॥ और प्रपंचविषे व्यवहारिकसत्ताहै ॥ अथवा प्रातिभासिकसत्ताहै ॥ यातें प्रपंचका परिणामीउपादानकारण प्रज्ञानहीं ॥ और चैतन्यरूपप्रज्ञा प्रपंचका आरंभकउपादानकारणभीनहीं ॥ काहेतें आरंभ बहुतपदार्थोंतेंहोवै है ॥ एकतें आरंभहोवैनहीं ॥ जैसे नैयायिकोंकेमतविषे अनंतपरमाणुमिलिकरिकै जगत्काआरंभकरैहै ॥ और प्रज्ञाएकहै ॥ यातें जगत्का आरंभकउपादानकारण होवैनहीं ॥ किंतु प्रपंचका विवर्तउपादानकारण प्रज्ञाहै ॥ आपणेवास्तवस्वरूपकूंनत्यागिके जोअन्यथाप्रतीतहोवै ॥ सो विवर्तउपादान कहियेहै ॥ याअर्थकूं दृष्टांतकरिकैस्पष्टकरै हैं ॥ जैसे विशुद्धआकाशविषे गंधर्वनगर औरनीलता प्रतीतहोवैहै ॥ और जैसे बालककूं आपणेमनविषे दुःखकेदेणेहारेराक्षसादिक प्रतीतहोवै हैं ॥ तैसे चैतन्यरूपप्रज्ञाविषे संपूर्णजगत् प्रतीतहोवैहै ॥ याकारणतेंही वेदांतशास्त्रकेजानणेहारेमहात्मा प्रज्ञाकूं ब्रह्मरूपकहैहैं ॥ काहे तें 'प्रज्ञानमानंदंब्रह्म' यामहावाक्यविषे प्रज्ञानकूं ब्रह्मस्वरूपकह्याहै ॥ प्रज्ञान औरप्रज्ञाशब्दका एकहीअर्थ है ॥ प्रज्ञातेंपृथक् स्थूलसूक्ष्मरूपप्रपंचहैनहीं ॥ यातें प्रज्ञाकूं ब्रह्मस्वरूपता संभवैहै ॥ और जैसे शंकुकरिकै संपूर्णपत्र व्याप्तहोवै हैं ॥ तैसे चैतन्यस्वरूपप्रज्ञाकरिकै देशकालतेंआदिलेके संपूर्णभावअभावरूपप्रपंच व्याप्तहै ॥ और जैसे एकहीआकाश पाताल भूमि स्वर्ग यातीनलोकोंकूं तथातीनलोकतेंबाह्यदेशकूं व्याप्यकरिकै स्थितहोवैहै ॥ तैसे चैतन्यरूपप्रज्ञा सर्वजगत्कूं व्याप्यकरिकैस्थितहोवै है ॥ और जैसे आकाशविषे कल्पित जोगंधर्वनगर तथामेघ औरनीलिमा आदिक तेसंपूर्ण आकाशस्वरूपहैं आकाशतेंपृथक्नहीं ॥ तैसे चैतन्यस्वरूपप्रज्ञाविषे कल्पित जोजडचेतनरूपप्रपंच ॥ सो प्रज्ञास्वरूपहीहै ॥ प्रज्ञातेंपृथक्नहीं ॥ इसप्रकारविचारकरिकै संपूर्णअधिकारीजन विवेकवैराग्यआदिकसाधनोंकरिकेसंपन्नहुए जीवब्रह्मकेअभेद

कूं निश्चयकरतेभये ॥ तानिश्चयकरिकै शरीरआदिकोंविषे अहंअभिमानका परित्यागकरतेभये ॥ और गृहपुत्रादिकोंविषे ममअभिमानका परित्यागकरतेभये ॥ प्रारब्धकर्मकी भोगतेंविना निवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातें प्रारब्धकर्मकीसमाप्तिवासते इच्छा अनिच्छा परइच्छा पूर्वक भोगोंकूंभोगतेभये ॥ तात्पर्ययह ॥ जीवन्मुक्तहुए सर्वअधिकारीजन विचरतेभये ॥ और जैसे वामदेवमुनि प्रारब्धकर्मकीभोगतेंसमाप्तिकरिकै विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोताभया ॥ तैसे संपूर्णअधिकारीजन भोगतेंप्रारब्धकर्मकीसमाप्तिकरिकै आनंदस्वरूपआत्मा हम हैं याप्रकार अद्वितीयआत्माकाअनुभवकरतेहुए सुखस्वरूपब्रह्मविषे अभेदरूप विदेहमोक्षकूं प्राप्तहोतेभये ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! सनकादिकऋषियोंका औरवामदेवआदिकअधिकारीप्रजाका जोपरस्परसंवादरूप इतिहासहै ॥ सो इतराकेपुत्रऋषिनें आपनेशिष्योंकेतांईं वेदकेवचनोंकरिकै कथनकन्याहै याकारणतें याउपनिषदूका ऐतरेयनामहै ॥ और याइतिहासकहणेका यहप्रयोजनहैकि अध्यायकेआरंभविषे पूर्वयहकह्याथा ॥ अद्वितीयआत्माकाजोज्ञानहै सोइही मोक्षकामार्गहै ॥ और आत्मज्ञानही पुरुषनैं संपादनकरणेयोग्यहै ॥ और सत्यब्रह्मकीप्राप्तिकरणेहारा आत्मज्ञानहै ॥ यातें आत्मज्ञान सत्यस्वरूपहै ॥ और ब्रह्मस्वरूपहै ॥ ऐसेआत्मज्ञानतें पुरुषोंनैं प्रमादनहींकरणा ॥ किंतु ताकूं अवश्यसंपादनकरणा ॥ और आत्मज्ञानकीउपेक्षाकरिकै मोक्षकीप्राप्तिवासते अन्यसाधन मुमुक्षुनें नहींसंपादनकरणे ॥ और जेजेपुरुष याआत्मज्ञानकी उपेक्षाकरतेभयेहैं तेसंपूर्णदुर्बुद्धिपुरुष पराभवकूंप्राप्तहोतेभये हैं ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन्! जैसे लोकविषे एकमल्लका दूसरेमल्लकरिकै पराभवहोवै है ॥ तैसे इहां आत्मज्ञानरहितपुरुषोंका किसकरिकै पराभवहोवै है?॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हे शिष्य! द्वैतकेज्ञानतें श्रुतिनैं भयकीप्राप्तिकहीहै ॥ यातें अंतर्यामीईश्वरही यमराजकीन्यांईं आत्मज्ञानरहितपुरुषोंका पराभवकरणेहाराहै ॥ और मायाकाकार्यजो अहंममअभिमानरूपसंसारहै ॥ सो यमकिंकरकीन्यांईं आत्मज्ञानरहितजीवोंका पराभवकरणेहाराहै ॥ यातें आत्मज्ञानकूंही मुमुक्षुनें अवश्यसंपादनकरणा ॥ याअर्थविषे पुरुषोंकेश्रद्धाकीउत्पत्तिवासते ऐतरेयमुनि याइतिहासकूं कथनकरतेभये ॥ तात्पर्य यहकि ॥ वामदेवतेंआदिलेके जितने पूर्वअधिकारीभयेहैं तेसंपूर्ण आत्मज्ञानकरिकैही मोक्षकूं प्राप्तहोतेभये हैं ॥ याका

रणतैं इसकालकेमुमुक्षुवोंनैंभी मोक्षकीप्राप्तिवासते आत्मज्ञानकूंही अवश्यसंपादनकरणा ॥ यहही इतिहासकहणेका प्रयोजनहै ॥ और मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइके जेपुरुष याइतिहासकेअर्थकूं नहींजाणते तिनपुरुषोंकूं संसाररूपसुभट हननकरेंगे ॥ दृष्टांत॥ जैसे व्याध मृगोंकूंहननकरैं है ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन्! बाणोंकरिकै मृगोंकूं व्याध हननकरैहै ॥ इहां संसाररूपसुभट कौनशस्त्रोंकरिकै अज्ञानीजीवोंकूंहननकरै है ॥ श्रीगुरुरुवाच॥ हेशिष्य! जिनशस्त्रोंकरिकै संसारसुभट अज्ञानीजीवोंकूं हननकरै है सो हम पूर्वविस्तारतैंकहिआयेहैं ॥ तथापि संक्षेपतैंफेरि हम कहतेहैं ॥ तुम श्रवणकरो ॥ प्रथमतो पितामाताकेउदरविषे त्वचा रुधिर मांस मेद अस्थि मज्जा वीर्य यासप्तधातुरूपगर्तविषे अज्ञानीजीवोंकानिपातनरूप शस्त्रकरिकै संसारसुभट हननकरै है॥ और गर्भविषेविष्ठामूत्रादिकोंकेलेपनरूपशस्त्रकरिकै संसारसुभट हननकरै है ॥ और गर्भविषे बंधनकरणेहारे जे जरायु चरम तथाअस्थि आदिकबंधनहैं ॥ ताबंधनरूपशस्त्रोंकरिकै हननकरै है ॥ और सर्पकेसमान जेउदरकेकृमीरूपपाशहैं ॥ तापाशरूपशस्त्रोंकरिकै हननकरै है ॥ औरउदरविषेस्थितजोजठराग्नि औरप्राणवायु तिनोंकरिकै उत्पन्नभयेजेदुःसहतापहैं तिनतापरूपशस्त्रोंकरिकै हननकरै है॥ और सूक्ष्मउपस्थछिद्रतैंनिर्गमनरूपशस्त्रोंकरिकै अज्ञानीजीवोंकूं संसारसुभट हननकरैहै ॥ और गर्भविषे अनेकजन्मों कीस्मृतिरूप शस्त्रकरिकै औरमूर्च्छाकरिकैसर्वपदार्थोंकीविस्मृतिरूपशस्त्रकरिकै संसारसुभट अज्ञानीजीवोंका हननकरैहै ॥ इसप्रकार गर्भविषे अज्ञानीजीवोंकूं नरककेसमान अनंतदुःखोंकीप्राप्तिकरिकै पुनःबाल्यअवस्थाविषे असामर्थ्यऔरपराधीनतारूपशस्त्रकरिकै संसारसुभट अज्ञानीजीवोंकूं हननकरै है ॥ और मोहकरिकैविष्ठामूत्रादिकोंकाभक्षणरूपशस्त्रकरिकै तथाक्रीडाकीआसक्तिरूपशस्त्रकरिकै संसारसुभट हननकरै है ॥ और माता पिता अध्यापक आदिकोंतैंभीतिरूपशस्त्रकरिकै अज्ञानीजीवोंकूं संसारसुभटहननकरैहै ॥ इसप्रकार बाल्यअवस्थाविषे नरककेसमान अनंतदुःखोंकीप्राप्तिकरिकै पुनःयुवाअवस्थाविषे कामदेवनेंकन्याजो चित्तरूपभूमिविषे स्त्रीकेमूर्त्तिकालेखन (तात्पर्ययह वारंवार चित्तकरिकेस्त्रीकास्मरण ॥ तास्मरणरूपशस्त्रकरिकै) औरनानाप्रकारकेभ्रमणरूपशस्त्रोंकरिकै संसारसुभट अज्ञानीजीवोंकूं हननकरै है ॥ इसप्रकार युवाअवस्थाविषे अनंतदुःखोंकीप्राप्तिकरिकै पुनः

वृद्धअवस्थाविषे जराअवस्थाकीप्राप्तितैंउत्पन्नभयेजे नानाप्रकारकेकासश्वासादिकरोग तारोगरूपशस्त्रोंकरिकै अज्ञानीजीवोंकूं संसारसुभट हननकरैहै ॥ इसप्रकार वृद्धअवस्थाविषे अनंतदुःखोंकीप्राप्तिकरिकै पुनःमरणअवस्थाविषे कालसर्पकरिकैग्रसनरूपशस्त्रकरिकै तथायमकिंकररूपशस्त्रोंकरिकै अज्ञानीजीवोंकूं संसारसुभट हननकरैहै ॥ इसप्रकार मरणअवस्थाविषे अनंतदुःखोंकी प्राप्तिकरिकै पुनःनरकविषे नानाप्रकारकेआयुधोंकापरिहाररूपशस्त्रकरिकै औरपृथिवीजलआदिकोंकेविकार जेअनंतनरकहैं तानरकोंकीप्राप्तिरूपशस्त्रकरिकै आत्मज्ञानरहितपुरुषोंकूं संसारसुभट हननकरैहै ॥ और स्वर्गतैंनीचेपतनरूपशस्त्रकरिकै संसारसुभट हननकरैहै ॥ इसप्रकार परलोकविषे अनंतप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरिकै पुनःयामनुष्यलोकविषे देहादिकोंकीप्राप्तिवासते पितामाताकेगर्भविषेप्रवेशरूपशस्त्रोंकरिकै आत्मज्ञानरहितजीवोंकूं संसारसुभट हननकरैहै ॥ और जैसे लोकविषेएकमल्ल दूसरे निर्बलमल्लकूं कबीनीचेगिडावैहै ॥ और कबी ऊपरिगेडेहै ॥ और कबी पूर्वपश्चिमआदिकअष्टदिशावोंविषेगेडेहै ॥ और आपणेभुजारूपशस्त्रोंकरिकै ताकूं मर्दनकरैहै ॥ याप्रकार ताकापराभवकरैहै ॥ तैसे यहसंसारसुभटभी आत्मज्ञानतैंरहितदीनजीवोंकूं चौरासीलक्षशरीररूपदशदिशावोंविषे गिडावताहुवा औरपूर्वउक्तपितामाताकेशरीरविषे प्रवेशआदिकशस्त्रोंकरिकैमर्दनकरताहुवा अज्ञानीजीवोंका पराभवकरैहै ॥ जैसे यूकादिकक्षुद्रजंतुकेपराभवकरणेमैं अस्मदादिकपुरुषोंकूं आयास नहींहोवैहै ॥ तैसे आत्मज्ञानतैंरहितपुरुषोंकेपराभवकरणेमैं संसारसुभटकूंभी किंचित्मात्र आयासनहींहोवैहै ॥ हेशिष्य ! संसारसुभटनैं प्राप्तकरेजे जन्ममरणआदिकपराभवहैं ॥ तिनपराभवोंकूं जेजेपुरुष जाणतेहैं ॥ और तिनपराभवोंकेज्ञानकाफल जोवैराग्यहै ताकूं जेपुरुष संपादनकरैहैं ॥ तेसुभटपुरुषही यावेदांतशास्त्रकेअर्थकूंजाणतेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जबपर्यंत आत्माकासाक्षात्कारनहींभया ॥ तबपर्यंतही संसारसुभट यूकादिकक्षुद्रजंतुकीन्यांई जीवोंका पराभवकरैहै ॥ और जब याजीवकूं गुरुमुखतैंवेदांतकेश्रवणआदिकोंकरिकै आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ तब क्षुद्रजंतुकीन्यांई संसारही पराभवकूंप्राप्तहोवैहै ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् ! ऐतरेयउपनिषद्काअर्थ जीवब्रह्मकाअभेदहै ॥ यह आपनैं पूर्वकह्या ॥ सो हमारीबुद्धिविषे आरूढहोवैनहीं ॥ काहेतें दूसरेउपनिषद् जीव ब्रह्मकेअभेदरूप

अर्थकूं बोधनकरैहैं अथवा भेदकूंबोधनकरैहैं यहसंशय हमारेकूंहोवैहै ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ! सर्वउपनिषद् जीवब्रह्मकेअभेद कूंही बोधनकरैहैं ॥ जीवब्रह्मकेभेदमैं किसीउपनिषद्का तात्पर्यनहीं ॥ तहां प्रथम ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ जीवब्रह्म काअभेद तुमारेतांई हमनैं कह्या ॥ अब ऋग्वेदकाजो कौषीतकीउपनिषद्है ताकरिकै कथनकऱ्याजोअर्थहै ॥ सोभी तेरेकूं श्रवण करणेयोग्यहै ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्वाम्युद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामीचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतात्मपुराणे ऐतरेयार्थप्रकाशोनाम प्रथमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १ ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ ॥

इत्यात्मपुराणेश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां
प्रथमोऽध्यायः समाप्तः

अथात्मपुराणेस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां

द्वितीयाध्यायप्रारंभः

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ अथ द्वितीयअध्यायप्रारंभः ॥ तहां प्रथमअध्यायविषे
ऋग्वेदकाजोऐतरेयउपनिषद्है ताकेअर्थकूंनिरूपणकऱ्या ॥ अबद्वितीयअध्यायविषे ऋग्वेदकाजोकौषीतकीउपनिषद्है ता
केअर्थकूं निरूपणकरैहैं ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! मैंब्रह्महूं यहजो जीवब्रह्मकेअभेदकाज्ञानहै ॥ सोयद्यपि अनंतकोटीजन्मोंकरि
केभीदुर्लभहै ॥ तथापिविवेकीपुरुषोंनैं गुरुकीसेवा तथाश्रद्धाआदिकसाधनोंकरिकै पाईताहै ॥ और याआत्मज्ञानतैंविना कोईभी
पदार्थ मनुष्योंकाहिततमनहीं ॥ आत्मज्ञानही अत्यंतहिततमहै ॥ काहेतें निरतिशयसुखकीप्राप्तिका तथामूलसहितसर्वदुःखकीनि
वृत्तिका आत्मज्ञानही साधनहै ॥ आत्मज्ञानतैंभिन्नसर्वपदार्थ बंधनकेकारणहैं ॥ हेशिष्य! याअर्थविषे पूर्व प्रतर्दनराजाकाइंद्रकेसा
थसंवादरूप इतिहास कथनकऱ्याहै ॥ ताइतिहासकूं तुम श्रवणकरो ॥ श्रीकाशीजीविषे दिवोदासनामाराजा पूर्व होताभया ॥ ता
दिवोदासराजाकापुत्र प्रतर्दननामाराजाहोताभया ॥ सोकैसाप्रतर्दनराजाहै? ॥ बाहरिकेजेराजाआदिकशत्रुहैं ॥ और भीतरिकेजे
कामक्रोधादिकशत्रुहैं ॥ तेसंपूर्णशत्रु जिसनैंजीते हैं ॥ और क्षत्रियोंकेधर्मविषे सर्वदा जिसकीप्रीतिहै ॥ सोप्रतर्दनराजा धर्मयुद्धक
रिकै पृथिवीकेसंपूर्णराजोंकूं जीतताभया ॥ तिसतैंअनंतर देवतावोंकेजीतणेवासते सोप्रतर्दनराजा एकलाहीधनुषकूंलेकरिकै स्वर्ग
कूंजाताभया ॥ तहां स्वर्गकेद्वारेऊपरिजाइकेस्थितहुवा ॥ और इंद्रकेपास दूतकूंभेजताभया ॥ प्रतर्दनउवाच ॥ हेदूत! देवराजइंद्रकूं
हमारा यहसंदेसाजाइकेकहोकि हेदेवराज! यद्यपि संपूर्णलोक तुमारेकूं देवतावोंकाइंद्रकहै हैं और हमारेकूं मनुष्योंकाइं
द्रकहै हैं ॥ तथापि तुमहमदोनोंविषे इंद्रतासंभवैनहीं ॥ काहेतें परमऐश्वर्यवान्‌जोहोवै सो इंद्रकहियेहै ॥ जाऐश्वर्यकेसमा
न तथाअधिक दूसराऐश्वर्यनहोवै सो परमऐश्वर्यकहियेहै ॥ ऐसापरमऐश्वर्य एकविषेहीसंभवैहै ॥ दोनोंविषेसंभवैनहीं ॥ यातें तु
मारेहमारेविषे इंद्रशब्द मुख्यनहीं किंतुगौणहै॥ दृष्टांत ॥ जैसे देवदत्तपुरुष सिंहहै यास्थानविषे सिंहशब्द मृगराजपशुविशेषविषे
तौ मुख्यहै॥और देवदत्तपुरुषविषे गौणहै॥और हेदेवराज! तुमारेतैंभिन्न जितनेराजे पृथिवीविषेस्थितिहैं॥ तिनसंपूर्णोंकूंहम जीति
आयेहैं॥आपणेइंद्रभावकेगौणताकीनिवृत्तिवासते तुमारेजीतणेकीइच्छाकरिकै हम स्वर्गविषेआयेहैं॥यातैं हे देवराज! हमारेसाथयु

द्धकरणेवासते सैनाकूंलेकरिकै शीघ्रहीतुमआवो ॥ अथवा अकेलेआवो ॥ और जोयुद्धकरणेकातुमारेकूंसामर्थ्यनहींहोवै ॥ तौ हमारे समीपआइके ऐसावचनकहो जिससेहमपराजयकूंप्राप्तहोवेंगे ॥ यादोनुंवार्ताविषे जोतुमारिइच्छाहोवैसोकरो और धनुषहैदूसरासहायकजिसका ऐसाजोमैंप्रतर्दनहूं सोतुमारेप्रियधामस्वर्गकूंप्राप्तभयाहूं ॥ यामेरेप्रभावकूं विचारिकरिकै जोतुमारेकूंउचितहैसोकरो ॥ इसप्रकार प्रतर्दनराजाकरिकैकह्याहुवादूत देवसभाविषेजाताभया ॥ तहां देवराजइंद्रकूंनमस्कारकरिकै प्रतर्दनराजाकेसंदेसवाक्यकूं दूत कहताभया ॥ कैसासोइंद्रहै ॥ सुधर्मानामदेवसभाविषेस्थितहै ॥ और सूर्यकीन्यांई जाकातेजहै ॥ और संपूर्णदेवतावों करिकैपरिवेष्टितहै ॥ दूतउवाच ॥ हेभगवन्! सर्वलोकोंका औरसंपूर्णलोकपालोंका आपही एकस्वामीहो ॥ परंतु एककिंचित्वार्ता हम तुमारेप्रति कथनकरैंहैं ॥ भूमिलोकविषे काशीनामाएकमहान्देशहै ॥ सो तुमारेस्वर्गतेंभी अत्यंतरमणीकहै ॥ काहेतें देवतावोंकीनदीजोश्रीगंगाजीहै ॥ सो स्वर्गकीउपेक्षाकरिकै श्रीकाशीनामादेशकूंगमनकरैहै ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ जो स्वर्गतैंभी काशीनामादेश रमणीकहै ॥ तहां श्रीगंगाजीकेतीरविषे श्रीकाशीनामापुरीविद्यमानहै ॥ साकैसीहैकाशीपुरी ॥ श्रीमहादेवकेत्रिशूलऊपरिस्थितहै ॥ और आपणीशोभाकरिकै स्वर्गकाभी तिरस्कारकरणेहारीहै ॥ और जिसकाशीविषे मृत्युकूंप्राप्तभये अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज्ज येचारिप्रकारकेजीव महादेवकेतारकमंत्रउपदेशतें आत्मज्ञानद्वारा मोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और काशीकेमरणेतें वेदपाठीब्राह्मण जामोक्षकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिसीहीमोक्षकूं कृमिपतंगआदिक्षुद्रजंतु प्राप्तहोवैहैं ॥ और जाकाशीपुरीविषे भगवान् महादेव विराजमानहैं ॥ कैसेहैंसोभगवान्महादेव ॥ सर्वप्राणिमात्रका आत्मास्वरूपहैं ॥ और संपूर्णजगत्की उत्पत्ति स्थिति लयकूंकरणेहारेहैं ॥ और भवानीकाजोहृदयरूपकमलहै ताकेप्रफुल्लितकरणेहारे सूर्यहैं ॥ और कर्पूरकेसमान जिनोंकागौरवर्ण है ॥ और भगवान्महादेवकूंनमस्कारकरणेहारे जेसंपूर्णतुमदेवताहो तिनदेवतावोंनैं अपनेमस्तकविषेस्थितरत्नयुक्तभूषणोंकीकिरणावों करिकै जामहादेवकेचरणकमल प्रकाशमानकरेहैं ॥ और जाभगवान्महादेवकेउपकारकूंमानतेहुए संपूर्णमुनि औरचारोंवेद वारंवार जामहादेवकावर्णनकरैहैं ॥ **दृष्टांत** ॥ जैसे लोकविषे महाराजाकूं वंदीऔरचारण वर्णनकरैहैं ॥ इहांयहतात्पर्य है ॥ जैसे राजा

बंदीचारणोंऊपरि धनकीप्राप्तिरूपउपकार करैंहै ॥ याकारणतें बंदीऔरचारण राजाकावर्णनकरैंहैं ॥ तैसें महादेवभी मुनियोंऊप
रि ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिरूपउपकार करैंहैं ॥ याकारणतें मुनि भगवान्‌महादेवकावर्णनकरैंहैं ॥ और वेदोंउपरी प्रमाणताकीप्राप्ति
रूपउपकारकूं भगवान्‌महादेव करैंहैं ॥ याकारणतें वेद तिन्होंकावर्णनकरैंहैं ॥ काहेतें फलवान्‌अर्थकेबोधनकरिकैही वेदोंकूंप्रमाणता
शास्त्रविषेकहीहै ॥ अनात्मवस्तुकेज्ञानतें सुखकीप्राप्तिरूपफल अथवादुःखकीनिवृत्तिरूपफल प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातें अनात्मवस्तु
केबोधनकरिकै वेदोंविषे प्रमाणतासिद्धहोवै नहीं ॥ किंतु सर्वांतर्यामीमहादेवकेज्ञानतैंही सुखकीप्राप्तिऔरदुःखकीनिवृत्तिरूप
फलहोवैहै ॥ यातें भगवान्‌महादेवकेबोधनकरिकैही प्रमाणताकूं वेद प्राप्तहोवैहैं ॥ पुनःसोमहादेवकैसेहैं ॥ जिसकीइच्छामात्रकरिकै
ब्रह्मातैंआदिलेकैसंपूर्णदेवता याजगत्‌विषे अनंतवार प्रादुर्भावकूं तथा तिरोभावकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ और जामहादेवकेप्राप्तिकीइच्छाक
रिकै हिमाचलकीपुत्रीपार्वतीदेवी उग्रतपकूंकरतीभयीहै ॥ साकैसीपार्वतीहैं ॥ संपूर्णस्त्रियोंविषे प्रधानहै ॥ और पूर्वजन्मविषेभीस
तीरूपकरिकै भगवान्‌महादेवकीस्त्रीहै ॥ और जिसभगवान्‌महादेवके सेनानी औरगणेश दोनों महाबलवान्‌पुत्रहैं ॥ और जयकरि
कैशोभायमान जेप्रमथनामागणहैं ॥ ते जिसमहादेवकेसेनापतिहैं ॥ और जिसमहादेवकेनामग्रहणतें यहजीव संसाररूपदुःखकूं
नहींप्राप्तहोवैहै ॥ और जिसमहादेवकेचरणकमलकेपूजनतें पुरुषोंकूं मनवांछितफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहवार्ताशिवपुराणविषे व्यास
भगवान्‌नैंभीकहीहै ॥श्लोक॥ महादेवमहादेव महादेवेतियोवदेत् ॥ एकेनैवभवेन्मुक्तिर्द्वाभ्यांशंभुर्ऋणीभवेत् १ अर्थयह ॥ जोपुरुष श्र
द्धाकरिकै महादेव महादेव महादेव याप्रकार तीनवार महादेवकेनामकूंउच्चारणकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं एकनामकरिकैतौ मुक्तिरूपफल
कीप्राप्ति महादेव करैंहैं ॥ और दोनोंनामोंकरिकै महादेव भक्तोंकेऋणीहोवैहैं ॥ काहेतें मुक्तितेंअधिककोईपदार्थ जगत्‌विषेहैनहीं ॥
जिसकीप्राप्तिकरिकै महादेव ऋणतेंरहितहोवै ॥ १ ॥ पुनःसोमहादेवकैसेहैं ?॥ ब्रह्मांडविषेस्थित जेविषयभोगहैं तिनभोगोंकीइच्छातें
रहितहैं ॥ और ब्रह्मविद्याकेसमुद्रहैं ॥ और सर्वदाशुद्धहैं और चित्तकेनिरोधकूंकरणेहारेसर्वयोगीजनोंकेगुरुहैं ॥ और जिसभगवान्
महादेवतैं संपूर्णजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ और जिसभगवान्‌महादेवविषे संपूर्णजगत् स्थितहै ॥ और जिसमहादेवविषे संपूर्ण

जगत् लयकूं प्राप्तहोवेंहै ॥ ऐसे भगवान्महादेवकेगुणोंका वर्णनकरणेमें कौनप्राणी समर्थ है? ॥ किंतु कोईभीसमर्थनहीं ॥ ऐसे भगवान्महादेव जिसकाशीपुरीविषे विद्यमानहैं ॥ औरमुक्तिकोदेणेहारीजो अयोध्यापुरी १ मथुरापुरी २ मायापुरी ३ काशीपुरी ४ कांचीपुरी ५ अवंतिकापुरी ६ द्वारकापुरी ७ येसप्तपुरियांहैं ॥ तिनोंकेमध्यमें श्रीकाशीपुरीकाहीअधिकसौभाग्य संपूर्णजीवों नें अनुभवकऱ्या है ॥ काहेतें काशीपुरीविषे भोगमोक्षदोनोंकी सुलभतहै ॥ और हेदेवतावो! तुमारीजोअमरावतीपुरीहै ॥ साभी काशीपुरीकेसमाननहीं ॥ काहेतें तुमारीपुरीविषेप्राप्तभयेजीवोंकूं भूमिलोकविषेगिडनेंका सर्वदाभयरहैहै ॥ और नागोंकीजाभोगव तीपुरीहै ॥ साभी श्रीकाशीपुरीकेसमाननहीं ॥ जबी तुमारीअमरावतीपुरी औरनागोंकीभोगवतीपुरी काशीपुरीकेसमाननहींहोती ॥ तबी अन्यपुरियोंकीक्याकथाहै ? ॥ और काशीपुरीकूं श्रीगंगाजी सर्वदासेवनकरैहै ॥ और भगवान्महादेव सर्वदा जिसकाशीपुरी विषेरहैहैं ॥ और सर्वपुरियोंतें सौभाग्यकी जाविषेअधिकताहै ॥ याकारणतें याकूं काशीपुरीकहैहैं ॥ प्रकाशमानकानामकाशीहै ॥ ऐसीकाशीपुरीकाराजा दिवोदासनामा सर्वलोकविषेप्रसिद्धहै ॥ सोकैसादिवोदासराजाहै ? ॥ संपूर्णशत्रु जिसनेंजीतेहैं ॥ और आप णेप्रतिज्ञाकूंसत्यकरणेहाराहै ॥ और क्षत्रियोंकेधर्मविषे जाकीप्रीतिहै ॥ और हस्ति अश्व रथ पादात यहचारिप्रकारकीसेनाकरिकै युक्तहै ॥ और आपभी सोदिवोदासराजा अतिबलवान्है ॥ और यज्ञादिककर्मोंविषेतत्परहै ॥ याकारणतें तुमदेवतावोंकूंभी प्रसि द्धहै ॥ ऐसा दिवोदासराजा श्रीकाशीपुरीविषेस्थितहै ॥ और तादिवोदासराजाकापुत्र प्रतर्दननामाराजाभी अतिप्रसिद्धहै ॥ सोकै साप्रतर्दनराजाहै? ॥ संपूर्णशुभगुणोंकरिकै आपणेपिता तथापितामह आदिकोंकेसमानहै ॥ और संपूर्णप्राणिमात्रविषे जाकीकृपा दृष्टिहै ॥ और याप्रतर्दनराजाके पर्वतकेसमान अनेककोटीहस्तीहैं॥और सूर्यकेअश्वसमान अनंतगुणयुक्त अश्वभी अनंतकोटीहैं॥औ रपुरारीकेरथसमान महाशब्दकेकरणेहारे रथभी अनेककोटीजिसकेहैं॥और बलकरिकैआपणेसमान पादातभी असंख्यातहैं ॥ और यहप्रतर्दनराजा शस्त्रविद्याविषेभी अतिकुशलहै॥और युद्धविषेछलतैंरहितहै॥और यहप्रतर्दनराजा यद्यपि महादेवकेप्रसादतें संपूर्ण अस्त्रोंके प्रयोगरूपसंधानकूं जाणेहै ॥ और निर्मोक्षरूपविसर्गकूंजाणे है ॥ और अस्त्रोंकीमर्यादारूपस्थितिकूंजाणे है ॥ और उपसंहार

रूपसंहतिकूंजाणेहै॥तथापि यहप्रतर्दनराजा किसीऊपरि अस्त्रकूंचलावतानहीं॥काहेतें जोअस्त्रकरिकै पुरुष हननभया॥ सो मेरेकरि
कैहननननहींभया॥जैसे कोईअसमर्थपुरुष श्येनयज्ञरूपअभिचारकरिकै शत्रुकानाशकरै है॥तिसकेसमानही अस्त्रकरिकैशत्रुकानाशक
रणाहै॥यातें अभिचारऔरअस्त्रविषे किंचित्मात्रभी विशेषतानहीं॥ऐसाविचारकरिकै यहप्रतर्दनराजा अस्त्रोंकरिकैशत्रुकूंनहींहनन
करै है ॥ किंतु शत्रुकूं जैसीयुद्धकीइच्छाहोवैहै ॥ तैसीहीयुद्धकीप्राप्तिकरै है॥ और यहप्रतर्दनराजा शत्रुकरिकैनहींताडनकियाहुवा प्र
थम शत्रुकूंनहींहननकरै है ॥ किंतु शत्रुकरिकैताडनकियाहुवा पश्चात् शत्रुकूंहननकरै है ॥ और शत्रुकरिकैप्रथमताडनकियाहुवाभी
यहप्रतर्दनराजा पंचासवर्षतैंऊपरिआयुषवालेशत्रुकूं नहींहननकरै है॥तथा षोडशवर्षतैंन्यूनआयुषवालेशत्रुकूंभी नहींहननकरै है॥का
हेतैं शूरवीरोंकेव्रतकूं जिसप्रतर्दनराजानैं धारणकऱ्याहै॥शूरवीरकेधर्म धनुर्वेदविषेकहेहैं ॥ श्लोक ॥ मूर्छितंनैवविकलं नाशस्त्रंनान्ययो
धिनम् ॥ पलायमानंशरणं गतंनैवचहिंसयेत् ॥२॥ अर्थयह॥मूर्छाकूंप्राप्तभयेशत्रुकूं तथाव्याकुलकूं तथाशस्त्ररहितकूं तथाअन्यके
साथयुद्धकरणेहारेकूं तथापलायमानकूं तथाशरणागतकूं इतनेपुरुषोंकूं शूरबीर हनननहींकरै ॥ २ ॥ और याप्रतर्दनराजाका दूस
राक्याव्रतहै? ॥ ब्राह्मणोंका तथादेवतावोंका और गौवोंका तथावृषभोंका कदाचित्भी अपमाननहींकरता॥ और हे देवराज! याप्र
तर्दनराजाका दूसराक्याव्रतहै ?॥ अहंकारकरिकैयुक्त औरक्षात्रधर्मोंविषेस्थित देवताहोवैं अथवा ब्राह्मणहोवैं अथवा आपणापि
तापितामहहोवैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं आपणेबलकरिकै मैंजीतोंगा ॥ याप्रकारकेव्रतकरिकैयुक्त प्रतर्दनराजाकेसमीप एककालविषे ना
रदादिकमुनि जातेभये और कदाचित् प्रसंगपाइके प्रतर्दनराजाकेप्रति याप्रकारकेवचनकूंकहतेभये कि हेप्रतर्दनराजा! संपूर्णपृ
थिवीकेराजे तुमनैंजीते हैं॥ परंतु इंद्रादिकदेवता क्षात्रधर्मकरिकै संपूर्णपृथिवीकेराजावोंतैं बलवान्है॥ काहेतें तिनदेवतावोंकेसाथ
युद्धकरणेकूं असुर तथादानव तथादैत्य कोईभीसमर्थनहीं ॥ जबी असुर दानव दैत्यभी देवतावोंकेसाथ युद्धकरणेकूंसमर्थनहींभ
ये ॥ तबी मनुष्योंकीक्याकथाहै?॥ और यालोकविषे एकइंद्रकूंभी जीतणेविषे कोईसमर्थनहीं॥ तौ संपूर्णसेनाकरिकै तथालोकपा
लोंकरिकै युक्तइंद्रकूं कौन जीतणेमैंसमर्थहोवै ॥ किंतु कोईभी इंद्रकेजीतणेमैंसमर्थनहीं ॥ इसप्रकार नारदादिकमुनियोंकेवचन

कूंश्रवणकरिकै औरआपणेप्रतिज्ञारूपव्रतकूंस्मरणकरिकै सोप्रतर्दनराजा देवतावोंकेसाथयुद्धकरणेवासते उत्साहकरिकै अकेला हीस्वर्गकूंजाताभया ॥ हेदेवराज ! सोप्रतर्दनराजा इहांआइके तुमारीपुरीकेद्वारऊपरि समानपृथिवीविषेस्थितहै ॥ और सोप्रतर्द नराजा मैंदूतकूंबुलाइकरिकै तुमदेवतावोंकेसमीप भेजताभयाहै ॥ जोप्रतर्दनराजानैं हमारेकूं संदेसवचनकह्याथा ॥ सोसंपूर्ण हमनैं तुमारेताईं कह्या ॥ आगे जैसीतुमारीइच्छाहोवै तैसाकरो॥ इसप्रकार संपूर्णसंदेसवचनकूं देवराजइंद्रकेताईं दूत कथनकरताभया॥ इसप्रकार दूतकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै औरप्रतर्दनराजाकेअभयरूपपुरुषार्थकूं विचारिकरिकै देवराजइंद्रभी अतिविस्मयकूंप्राप्त होताभया ॥ और आपणेक्षात्रधर्मकूंस्मरणकरिकै क्रोधयुक्तहोताभया ॥ और संपूर्णदेवतावोंकूंसाथलैके शीघ्रही आपणीपुरीतैंबाह रि निकसताभया ॥ और युद्धकरणेवासतेप्राप्तभयेजेसंपूर्णइंद्रादिकदेवता तिनोंकूंदेखिकरिकै सोप्रतर्दनराजाभी तिसस्थानतैंनहीं चलायमानहोताभया ॥ और सोप्रतर्दनराजा इंद्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हे देव राजइंद्र! हेसंपूर्णदेवतावो! तुम ती क्ष्णबाणोंकरिकै प्रथम हमाराहननकरो ॥ पश्चात् हम तीक्ष्णबाणोंकरिकै तुमाराहननकरेंगे ऐसीहमारीप्रतिज्ञाहै ॥ इसप्रकार प्रत र्दनराजाकावचनश्रवणकरिकै इंद्रसहितसंपूर्णदेवता क्रोधकरिकैमूर्च्छितहोतेभये॥ और कुंडलाकारसेनाकीरचनाकरिकै प्रतर्दनराजा कूं चारोंओरतैंवेष्टनकरतेभये ॥ और याप्रतर्दनराजाकूंहननकरो और बांधो याप्रकारकेवचनकूं परस्पर देवता उच्चारणकरतेभये॥ और तहां युद्धविषे नानाप्रकारकेवादित्रोंकेशब्द प्रगटहोतेभये॥ और संपूर्णइंद्रादिकदेवता क्रोधयुक्तहुए प्रतर्दनराजाऊपरि बाणों कीवर्षाकरतेभये॥जैसे बादल पर्वतऊपरि जलकीवर्षाकरै हैं॥तादेवतावोंकेबाणोंकरिकै प्रतर्दनराजाकाशरीर भेदनहोताभया ॥पश्चा त् सोप्रतर्दनराजाभी शीघ्रही तीक्ष्णबाणोंकरिकै संपूर्णदेवतावोंकूं हननकरताभया ॥ ताप्रर्दनराजाकेबाणोंकरिकै कितनेदेवतावों कीभुजायें भेदनहोतीभई ॥ और कितनेदेवतावोंकेस्तन भेदनहोतेभये ॥ और कितनेदेवतावोंकेमस्तक भेदनहोतेभये ॥ इसप्रका र देवतावोंकीसेनाविषे कोईभीदेवता प्रतर्दनराजाकेबाणकरिकैअविद्धनहींरह्या ॥ किंतु संपूर्णदेवता बाणोंकरिकैविद्धहोतेभये ॥ और भुजाविषेबाणोंकेप्रहारतैंउत्पन्नभईजोपीडा तापीडाकरिकेदुःखीहुएसंपूर्णदेवतावोंकेभुजातैं नानाप्रकारकेआयुध भूमिविषे

गिडतेभये ॥ और युद्धविषे प्रतर्दनराजा किसीदेवताकूं शतबाणोंकरिकै वेधनकरताभया ॥ और किसीदेवताकूं पंचासबाणोंकरिकै वेधनकरताभया ॥ और देवराजइंद्रकूंतौ सहस्रबाणोंकरिकै वेधनकरताभया ॥ और भूमिविषेगिरिपडेहैंआयुधजिनोंके ऐसेदेवतावोंकूंदेखिकरिकै सोप्रतर्दनराजा आपणेधनुषकेरज्जुकूंउतारताभया ॥ और देवराजइंद्र याप्रकारकेमहान्‌युद्धकूंदेखिकरिकै और प्रतर्दनराजाकेपुरुषार्थकूंदेखिकरिकै विस्मयकूंप्राप्तहोताभया ॥ और प्रतर्दनराजाकेप्रति इंद्र कहताभया ॥ हेपृथिवीकेपतिप्रतर्दनराजा! ॥ तुमारेयुद्धऔरपुरुषार्थकरिकै मैं बहुतसंतुष्टभयाहूं॥ यातें जिसवरकीतुमारेकूंइच्छाहोवै ॥ सोवर तू हमारेतैंमांग॥इसीकालविषे सोवर मैं तुमारेतांई देवोंगा ॥ हेप्रतर्दन! तुमारेयुद्धऔरपुरुषार्थकेसमान किसीकायुद्धऔरपुरुषार्थ हमनैं नहींदेख्या ॥ तेरेतैंविना ऐसाकौनसमर्थहै ॥ जो देवतावोंसहितहमारेकूं स्वर्गविषेआइके पराजयकरै ॥ और संपूर्णदेवतावोंकूं एकक्षणविषे तीक्ष्णबाणोंकरिकैभेदनकरै ॥ किंतु तूहीऐसासमर्थहै ॥इसप्रकार जबी देवराजइंद्रनैंकह्या ॥ तबी सोप्रतर्दनराजा इंद्रकेतांई दंडवत्‌प्रणामकरताभया और याप्रकारवचन कहताभया ॥ हेदेवराज ! तुमनैं जोयहवचनकह्या ॥ जो देवतावोंकेसहितमैंइंद्रकूं तुमनैंजयकरा ॥ यावचनकरिकै तुमनैं हमारेप्रतिज्ञारूपवचनकूंपूर्णकर्‍या और हेदेवराज ! मुझदुर्बुद्धिबालककेअपराधकूं तुमक्षमाकरो ॥ काहेतें जेतुमदेवता पुष्पोंकरिकैभीताडनकरणेयोग्यनहींहो ॥ तिनदेवतावोंकूं तीक्ष्णबाणोंकरिकै हमनैं ताडनकर्‍याहै ॥ यातें यहहमारा महान्‌अपराधहै ॥ और हेदेवराज! हमारेकरिकैपूजणेयोग्य जेहमारेपितापितामहआदिक हैं॥ तिनोंकरिकैभी तुमदेवता पूजणेयोग्यहो ॥ यातें हमारेकरिकैतौ अत्यंतपूजणेयोग्यहो ॥ और हेदेवराज! तुमदेवता सत्वगुणकरिकैयुक्तहो ॥ याकारणतैंही हमारेअपराधकूंनविचारकरिकै आपनैं हमारेतांई वरदेणेकाउद्यमकर्‍याहै ॥ और हममनुष्य रजोगुणकरिकैयुक्तहैं ॥ याकारणतैं देवतावोंकेहननरूपपापविषे हम प्रवृत्तभयेहैं ॥ और हेदेवराज! सर्वविषेआत्मदर्शी जेसाधुजनहैं तिनोंकूं ‘यहवस्तु हमाराहै औरयहवस्तुपरकाहै’ याप्रकारकीविषमबुद्धि कबीनहींहोती ॥ याकारणतैंही हमअपराधीविषे तुम वरकूंदेतेहो ॥ और हेदेवराज ! यालोकविषे आपसरीखेमहात्माही पुरुषोंविषेउत्तमपुरुषहैं ॥ काहेतें जोहमसरीखेअपकारीपुरुषोंविषेभी तुमदेवता

उपकारकरतेहो ॥ अपकारीविषे उपकारकरणा यहही उत्तमपुरुषोंकालक्षणहै ॥ और हेदेवराज ! जैसे स्तंभोंनैं गृहकूंधारण कऱ्याजाताहै तैसे अपकारीपुरुषोंविषे जेउपकारीपुरुषहैं ॥ तिनोंनैं स्तंभकीन्यांई तीनलोकोंकूंधारणकऱ्याजाताहै ॥ और हेदेवराज ! उपकारीपुरुषोंविषे संपूर्णपुरुष उपकारकूंकरैहैं यह लौकिकपुरुषोंविषेप्रसिद्धहै ॥ परंतु हमसरीखेअपकारीपुरुषोंविषे आप सरीखेकोईमहात्माही उपकारकूंकरैहैं ॥ और हेदेवराज ! हममनुष्य रजोगुणकरिकैयुक्तहैं ॥ याकारणतैं लोकविषे आपणेहितकूं तथाआपणेअहितकूं हम नहींजाणते ॥ काहेतैं जो हमारेकूं आपणेहितका तथाअहितका ज्ञानहोता ॥ तौ तुमदेवतावोंकेसाथ युद्धकरणेवासते हम नहींआवते ॥ यातैं युद्धकरणेवासते जोहमाराइहांआगमनहै ॥ सोआगमनही हमारेहितऔरअहितके अज्ञानकूं बोधनकरैहै॥ और हेदेवराज! जैसे कोईक्षुद्रजंतु मशकादिक अज्ञानकरिकै महान्हस्तियोंकेसाथ युद्धकरणेवासतेआवै ॥ तैसे आपणेहितऔरअहितकेज्ञानतैंरहितमैंभी तुमदेवतावोंकेसाथ युद्धकरणेवासतैआयाहूं ॥ और हेदेवराज! हममनुष्य आपणे हितअहितकेज्ञानतैंरहितहैं ॥ याकाणतैं आपणेहितकीप्रार्थना हम नहींकरिसकते ॥ यातैं हेत्रिलोकीनाथ! संपूर्णदुःखोंकानाशकर णेहारा जोहिततमवस्तुहै ॥सो आपहीविचारिकरिकै हमारेतांईदेवो ॥ इसप्रकार प्रतर्दनराजाकेवचनकूंश्रवणकरिकै देवराजइंद्र प्र तर्दनराजाकेप्रतिकहताभया ॥ हे प्रतर्दनराजा! याचनातैंविना आपणीबुद्धिकरिकै कोईभीपुरुष किसीकेतांई वरकूंनहींदेता ॥ किंतु याचनातैंअनंतरही संपूर्णपुरुष वरकूंदेतेहैं॥ यातैं हेप्रतर्दनराजा! तुमभी प्रथम हमारेसेंवरमागो॥इसप्रकार इंद्रकेवचनकूंश्रवणक रिकै सोबुद्धिमान्प्रतर्दनराजा सत्यवादी इंद्रकेप्रति युक्तिसहितवचनकूंकहताभया ॥ हेदेवराज! यहजोतुमनैंवचनकह्या॥जो प्रार्थना तैंविना कोईपुरुष किसीकूंवरनहींदेता ॥ यहआपकावचनसत्यहै ॥ परंतु यहआपकावचन भेददर्शीविषमपुरुषोंविषेघटैहै ॥ आप सरीखेसमदृष्टिपुरुषोंविषे यहवचनघटतानहीं॥और हेदेवराज! तुमारेतैंविना ऐसाकौनपुरुषहै? ॥ जो अपकारीशत्रुकेतांई वरकूंदेवै ॥ किंतु तुमहीऐसेहो यातैं यहनिश्चयहोवैहै ॥ तुमदेवता किसीविषेविषमदृष्टिवालेनहीं ॥ किंतु सर्वविषेसमदृष्टिवालेहो ॥ यातैं हेदेव राज ! जोआपनैं हमारेदेणेवासते वरकीप्रतिज्ञाकरीहै ॥ तबी आपणीबुद्धितैंहिततमवरकूंविचारिकरिकै हमारेतांईदेवो ॥ और हेदे

वराज! जोहम आपणीइच्छातैंवरकूंमागेंगे ॥ तौ आपकीवरदेणेकीजाप्रतिज्ञाहै साप्रतिज्ञा हानिहोवैगी ॥ काहेतैं वरनाम श्रेष्ठकाहै
और श्रेष्ठनाम हिततमकाहै ॥ सो हिततम हम जाणतेनहीं ॥ यातैं अज्ञानकरिकै जोजोवर हममागेंगे सो अश्रेष्ठहीहोवैगा ॥
अश्रेष्ठकानामवरहैनहीं ॥ और आपनैंतौ वरदेणेकीप्रतिज्ञाकरीहै ॥ यातैं आपणीप्रतिज्ञाकीरक्षावासते आपहीविचारकरिकै हमारे
तांई वरकूंदेवो॥ इसप्रकार प्रतर्दनराजाकावचन श्रवणकरिकै तथाप्रतर्दनराजाकेबुद्धिकीचातुर्यतादेखिकरिके देवराजइंद्र पुनःसंतो
षकूंप्राप्तहोताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोदेवराज अत्यंतसंतुष्टभया ॥ तौ इंद्रकीप्रसन्नताही विद्याकीप्राप्तिविषेकारणहै ॥ काहे
तैं गुरुकीप्रसन्नतातैंविनाविद्याकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और श्रुतिविषे याप्रकारकह्याहै ॥ इंद्र आपणेसत्यप्रतिज्ञातैं नचलायमानहो
ताभया ॥ याकहणेतैं ऐसातात्पर्यजान्याजावैहै ॥ प्रतर्दनराजाकेतांई विद्यादेणेविषे देवराजइंद्रकूं कोईप्रतिबंधकरणेहारा प्राप्तभ
या तौभी देवराजइंद्र आपणेप्रतिज्ञाकूंसत्यकरणेवासते प्रतर्दनराजाकेतांई ब्रह्मविद्याकूंदेताभया ॥ सोप्रतिबंधकरणेहाराको
नहै? ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणकेप्रति जोब्रह्मविद्याकावचनहै ॥ तावचनकीस्मृतिही प्रतिबंधकरणेहारीहै ॥ अब
ताब्रह्मविद्याकेवचनकूंकहैहैं ॥ एककालमैं अनधिकारीपुरुषोंविषेप्राप्तहुईब्रह्मविद्या अत्यंतखेदकूंप्राप्तहोतीभयी ॥ और ब्रह्मवे
त्ताब्राह्मणोंकेसमीपजाइके ब्रह्मविद्या कहतीभई ॥ हेब्राह्मण! जैसे वेश्या सर्वपुरुषोंकरिकेसेवितहोवैहै ॥ तैसे धनकेलोभकरिकेब्र
ह्मविद्याकूं वेश्याकेसमान तुम मतकरो ॥ किंतु ॥ कुलीनस्त्रीकीन्यांई हमारेकूं तुम गुह्यराखो ॥ और श्रद्धातैंहमारासेवनकरो ॥ जा
कारणतैं मैंब्रह्मविद्या तुमारेकूं इसलोकविषे तथापरलोकविषे अक्षयनिधिकेसमानहूं ॥ और हेब्राह्मण! जो तुम ऐसाकहो॥ संपूर्णज
नोंकेउपकारविषे हमारीप्रीतिहै ॥ और उदारताकरिकैहमयुक्तहैं ॥ और दीनजनोंऊपरि हमारीअत्यंतकृपाहै ॥ यातैं ब्रह्मविद्याकूं
हम गुह्यराखिसकतेनहीं ॥ तथापि हेब्राह्मण! गुणहीनपुरुषोंकेतांई हमारेकूं कदाचित् तुमनैं नहींदेणा ॥ दृष्टांत॥जैसे अत्यंतरूप
वान्आपणीपुत्री नपुंसककूं कोईदेतानहीं और हेब्राह्मण! इतनेदोष सर्वदाहमारेकूंदुःखकेदेणेहारेहैं ॥ गुणवान्पुरुषोंविषे दोषोंका
आरोपणरूपनिंदा औरकुटिलता और इंद्रियोंकीअधीनता और नित्यहीस्त्रियोंकासंग और अनम्रता और शरीरकरिकै

मनकरिकै वचनकरिकै गुरुकीभक्तितैंरहितहोणा ॥ इसतैंआदिलेकेदोष जिसपुरुषविषेहोवै तिसपुरुषकेतांई मैंब्रह्मविद्याकूं क
दाचित् तुमनैंनहींदेणा ॥ किंतु इतनैंदोषोंतैंजोपुरुषरहितहोवै ॥ और शमदमादिकगुणोंकरिकैयुक्तहोवै ॥ तिसकेतांई हमारेकूं
देणा ॥ अथवा हमारेकूंगुह्यराखणा ॥ इनदोनोंपक्षोंविषे किसीभीपक्षकूं जोतुम अंगीकारकरोगे तौ तुमारेकूं कामधेनुकीन्यांई
मनवांछितपदार्थोंकी मैं प्राप्तिकरोगी ॥ और जोतुम धनकेलोभकरिकै गुणहीनपुरुषोंकेतांई मुझब्रह्मविद्याकूंदेवोगे तौफलतैंरहित
लताकीन्यांई मैंबंध्याहोवोंगी ॥ और हेब्राह्मण ! पूर्वउक्तदोषवान्पुरुषकूंविद्यानहींदेणी ॥ याअर्थविषे सर्वजनोंकेउपकारवासते
युक्तिसहितवचनकूं हम कथनकरैहैं तुमश्रवणकरो ॥ शिष्यकेहृदयविषेस्थितजोअज्ञानरूपअंधकारहै ॥ ताकूं सूर्यादिकदेवता
भी नाशकरिसकैनहीं ॥ ऐसेशिष्यकेअज्ञानरूपअंधकारकूं जोगुरु आत्मसाक्षात्कारकरिकैनाशकरैहै ॥ और तूब्रह्मस्वरूप
है यामहावाक्यरूपअमृतकूं जोगुरु पानकरावैहै ॥ तामहावाक्यरूपअमृतकरिकै शिष्यकेकर्णोंकूं दुःखतैंरहितकरैहै ॥ और
जोगुरु अनंतयुक्तियोंकरिकै शिष्यकूं सर्वदाआत्माकाबोधनकरैहै ॥ यातैं सोगुरुही मुमुक्षुपुरुषोंका पिताऔरमाताहै ॥ गुरु
तैंभिन्नदूसराकोईपितामाताहैनहीं ॥ काहेतैं गुरुकेब्रह्मविद्यारूपसंप्रदायविषेप्रवेशतैंही संपूर्णजन्ममरणादिकदुःखोंकानाशहो
वैहै ॥ और लौकिकपितामाताकेसंततिविषेप्रवेशतैं पुत्रकूं जन्ममरणादिकदुःखकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ उलटा जन्ममरणादिकों
कीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं जन्ममरणरूपदुःखकेनिवृत्तिकाउपाय ब्रह्मविद्यारूपगुरुसंप्रदायतैंविना दूसराकोईहैनहीं ॥ किंतु ब्रह्मविद्या
रूपगुरुसंप्रदायही जन्ममरणरूपदुःखकेनिवृत्तिकाउपायहै ॥ यातैं गुरुही मुमुक्षुजनोंका पितामाताहै ॥ किंवा ॥ पितामाताश
ब्दकाअर्थभी गुरुविषेहीघटैहै ॥ लौकिकपितामाताविषे घटतानहीं ॥ काहेतैं रक्षाकरणेहारेकानामपिताहै ॥ और पूजाकरणेहारे
कानाममाताहै ॥ तहां आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरिकै जन्ममरणरूपसंसारकेभयतैं मुमुक्षुजनकीगुरुरक्षाकरैहै ॥ यातैं गुरुहीपिता
है ॥ और आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिरूपस्वराज्यविषे शिष्यकूं गुरुही स्थापनकरैहै ॥ यातैं गुरुहीमाताहै ॥ ऐसे गुरुकेसाथ
शरीरकरिकै तथावाणीकरिकै तथामनकरिकै कदाचित्भी मुमुक्षुजन द्रोहनहींकरै ॥ तहां ताडनादिक शरीरकृतद्रोहहै ॥ और अ

नुचितवचनकाउच्चारण वाणीकृतद्रोहहै ॥ और अनिष्टकाचिंतन मनकृतद्रोहहै ॥ वाणीकृतद्रोहकाफल यहशास्त्रविषेकह्याहै ॥ श्लो
क ॥ गुरुंहुंकृत्यतुंकृत्य विप्रान्निर्जित्यवादतः ॥ श्मशानेजायतेवृक्षः कंकगृध्रोपसेवितः ॥ ३ ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष आपणेगुरुकूं हुंक
रिकैबोलताहै ॥ अथवा तूंकरिकैबोलताहै ॥ और जोपुरुष ब्राह्मणोंकूं वादकरिकैजीतताहै ॥ सोपुरुष श्मशानभूमिविषे वृक्षशरीरकूं
प्राप्तहोवैहै ॥ और मांसकेभक्षणकरणेहारे जेकंकगृध्रआदिकपक्षीहैं ॥ तिनोंकरिकै सोवृक्षसेवितहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ यद्यपि संपू
र्णवृक्षशरीर पापकाफलहै ॥ तथापि श्मशानभूमिविषेवृक्षशरीरकीप्राप्ति अत्यंतउग्रपापकाफलहै ॥ काहेतैं श्मशानभूमिकावृक्ष सर्व
दा श्मशानकेअग्निकरिकै दाहकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैंकिसीप्रकारकरिकैभी पुरुषनैं गुरुकाद्रोह नहींकरणा ॥ ३ ॥ और हेब्राह्मण! गु
रुकेसाथद्रोहनहींकरणा किंतु गुरुकीसेवाकरणा यहजोवचन हमनैंकह्या सो ब्रह्मविद्यादेणेहारेगुरुविषेकह्या ॥ और वेदकातौ यह
तात्पर्यहै ॥ लौकिकविद्याकेउपदेशकरणेहारेजेगुरुहैं ॥ तिनोंकेसाथभी पुरुषनैं कदाचितद्रोहनहींकरणा ॥ याकारणतैंही लोकविषे
जिसअध्यापकपुरुषनैं जिनशिष्योंकूं लौकिकविद्या अध्ययनकराइहै ॥ तिसअध्यापककूं तेशिष्य गुरुकरिकैमानेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥
ब्रह्मविद्याकेदेणेहारेजेगुरुहैं ॥ तथालौकिकविद्याकेदेणेहारेजेगुरुहैं ॥ तिनोंविषे जोजोशिष्य श्रद्धाभक्तिकूंकरैहै ॥ तिसकीविद्या स
फलहोवैहै ॥ और जोजोशिष्य श्रद्धाभक्तितैंरहितहोवैहै ॥ तिसकीविद्या निष्फलहोवैहै ॥ यातैं हेब्राह्मण! जोतेरेकूं मैंब्रह्मविद्या
केकहणेकीइच्छाहोवै ॥ और मेरेरक्षाकरणेविषे तेराअभिप्रायहोवै ॥ तौ ऐसेगुणवान्शिष्यकेताँई तुमनैं ब्रह्मविद्याकथनकरणी ॥
जोशिष्य गुरुकाभक्तहोवै ॥ और ब्रह्मविद्याकेश्रवणविषे जाकीश्रद्धाहोवै ॥ और प्रमादतैंरहितहोवै ॥ और अर्थकेधारणेविषे जा
कीबुद्धिकुशलहोवै ॥ और ब्रह्मचर्यकरिकैयुक्तहोवै ॥ ऐसेअधिकारीशिष्यतैंविना किसीकेताँई तुमनैं ब्रह्मविद्यानहींकहणी ॥ याप्र
कारकाब्रह्मवेत्ताकेप्रति जोब्रह्मविद्याकावचनहै ॥ तावचनकूंस्मरणकरिकै सत्यपाशकरिकैबंध्याहुवाइंद्र परमसंशयकूंप्राप्तहोताभ
या ॥ तात्पर्ययह ॥ प्रतर्दनराजाकेताँई ब्रह्मविद्या देणेयोग्यहै अथवा नहींदेणेयोग्यहै ॥ याप्रकारकेसंशयकूंप्राप्तहुवाइंद्र पुनः ऐ
साविचार करताभया ॥ ब्रह्मविद्यानैं जोअधिकारीशिष्यकेगुणकहेहैं ॥ तिनसर्वगुणोंकरिकैयुक्त यहप्रतर्दनराजाहैनहीं ॥ यद्यपि य

त्किंचित्गुण प्रतर्दनराजाविषेहैं ॥ तथापि यह हमाराशत्रुहै ॥ यातैं इसकेतांई ब्रह्मविद्यादेणेयोग्यनहीं ॥ अथवा याप्रतर्दनराजानैं मेरेवरकूंदेखिकरिकै शत्रुताकापरित्यागकर्‍याहै ॥ यातैं अधिकारीशिष्यकेगुणोंकरिकै यहप्रतर्दनराजा संपन्नहै ॥ याकारणतैं इसकेतांई विद्यादेणेयोग्यहै ॥ इहांबहुतविचारकरणेकाकछुप्रयोजननहीं ॥ यहप्रतर्दनराजा अधिकारीशिष्यकेगुणोंकरिकैयुक्तहै अथवानहीं है ॥ सर्वथा प्रतर्दनराजाकेतांई हिततमविद्याकाहम कथनकरेंगे ॥ काहेतैं हमनैं पूर्वऐसीप्रतिज्ञाकरीहै ॥ जो तुमारेतांई मैंवरकूंदेताहूं ॥ याप्रतिज्ञाकूंब्रह्मविद्याकेदानतैं हम सत्यकरेंगे ॥ तात्पर्ययह॥जहांदोनोंवाक्योंका परस्परविरोधहोवै है ॥ तहां एकवाक्य प्रबलहोवै है॥और एकवाक्य दुर्बलहोवै है॥जिसवाक्यकीकिसीप्रकारगतिनहींहोइसके सोवाक्य प्रबलहोवै है॥और जिसवाक्यकीकिसीप्रकारगतिहोइसके सोवाक्य दुर्बलहोवै है ॥ इहांप्रसंगविषे ब्रह्मविद्याकाजोवचनहै ताकीगतिहोइसकैहै यातैंदुर्बलहै ॥ काहेतैं ब्रह्मविद्याकेअधिकारी दोनप्रकारकेहोवैं हैं ॥ एकतौ उत्तमअधिकारीहोवैं हैं ॥ और दूसरे मध्यमअधिकारीहोवैं हैं ॥ तहां स्त्रीसंगतैंरहितजेविरक्तसंन्यासीहैं ते उत्तमअधिकारी हैं ॥ और ग्रहस्थ मध्यमअधिकारी हैं ॥ यहप्रतर्दनराजातौ ग्रहस्थहै ॥ यातैं विद्याकामध्यमअधिकारीहै ॥ याप्रकार ब्रह्मविद्याकेवचनकीगति होइसकतीहै ॥ और 'नानृतंवदेत्' अर्थयह मिथ्यावचनकूं पुरुष नहींकहै ॥ यावचनकी विद्यादेणेतैंविना अन्यकोईगतिहैनहीं ॥ यातैं यहवचन विद्यावाक्यतैंप्रबलहै ॥ इसप्रकार विचारकरिकै देवराजइंद्र प्रतर्दनराजाकूं कहताभया ॥ हेप्रतर्दनराजा! मैंइंद्रकूं तूजाण ॥ कैसामैंहूं ? संपूर्णजगत्काआत्माहूं ॥ और बुद्धिआदिकोंकासाक्षीहूं ॥ और जैसेआकाश सर्वकूंव्याप्यरह्याहै ॥ तैसे सर्वजगत्कूं बाहरिअंतरव्याप्यकरिकै मैंस्थितहूं ॥ और स्वप्नकेतुल्य जोसंपूर्णस्थूलसूक्ष्मजगत्है तिसतैंमैंरहितहूं ॥ याकारणतैं मैं तुरीयशिवरूपहूं ॥ और देशकालवस्तुपरिच्छेदतैं मैंरहितहूं ॥ और सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनभेदरूपबीजकेदाहकरणेहारा मैंअग्निस्वरूपहूं ॥ और जैसे कल्पितसर्पदंडादिकोंकाअधिष्ठान रज्जुहै ॥ तैसे स्थूलसूक्ष्मसर्वप्रपंचका मैंहीअधिष्ठानहूं ॥ याकारणतैं एकहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठान स्वविषयकज्ञानद्वारा कल्पितसर्पदंडादिकोंकानाशकरै है ॥ तैसे मैंअधिष्ठानआत्माभी स्वविषयकज्ञानद्वारा सर्व

कल्पितप्रपंचकानाशकरणेहाराहूं ॥ और मायाविशिष्टहुवा मैंहीईश्वरहूं ॥ हेप्रतर्दन! ऐसाजोमेरास्वरूपहै ताकूं विशेषकरिकैतूजा
ण ॥ मेरेस्वरूपकाज्ञानही तुममनुष्योंकेवासते हिततमहै ॥ यज्ञादिककर्मोंकाफल जोस्वर्गकासुखहै ॥ और ताकेसाधनजेअप्सरा
दिकहैं ॥ तेसंपूर्ण बंधनकेकारणहैं ॥ यातें मनुष्योंकेवासते हितनहीं ॥ और उपासनाकाफलजोब्रह्मलोककासुखहै ॥ और तासुख
केजेसाधनहैं ॥ तेसंपूर्ण बंधनकेहेतुहैं ॥ यातें मनुष्योंकेतांई हितनहीं ॥ जबी स्वर्गलोककासुख तथाब्रह्मलोककासुखभी मनुष्योंके
वासते हितनहींभया ॥ तबी मनुष्यलोकविषेस्थित जोवनितादिकविषयजन्यसुखहै सो अत्यंतअल्प और शीघ्रनाशवान्है ॥
ऐसामनुष्यलोककासुख मनुष्योंकेवासते किसप्रकाररहितहोवै किंतुहितनहीं ॥ और हेप्रतर्दन! जैसेकदलीकास्तंभ सारतैंरहित
होवैहै तैसे संपूर्णशरीर सारतैंरहितहै ॥ और जैसे जलविषेउत्पन्नहुवेबुद्बुद क्षणविषेनाशहोवैहैं तैसे यहसंपूर्णशरीर नाश
वान्हैं ॥ ऐसे अनित्यशरीरविषे वनितादिकसाधनोंकरिकैउत्पन्नभयाजोसुख सो केवलदुःखरूपही है आत्मारूपमैंइंद्रही एकसुख
रूपहूं ॥ मेरेतैंभिन्नसर्वअनात्मवस्तु दुःखरूपहै ॥ यातें हेप्रतर्दन! याप्रपंचविषे किसीकालमैं कोईभीवस्तु हितनहीं ॥ जबी प्रपंचवि
षेकोईवस्तु हितभीनहींभया ॥ तबी हिततर औरहिततमकी कैसेआशाहोवै ॥ तात्पर्ययह ॥ हिततैंजोअधिकहोवै ताकानाम हि
ततरहै ॥ और हिततरतैंजोअधिकहोवै ताकानाम हिततमहै ॥ आनंदस्वरूपमैंइंद्रतैंभिन्न कोईभीअनात्मपदार्थ हित हिततर हित
तम नहींहै ॥ शंका ॥ हेदेवराजइंद्र! लोकविषे जोकोईपदार्थ हित हिततर नहींहोवै ॥ तौ पूर्वआपनें आत्मज्ञानकूं हिततमकह्यासो
कैसेबनैगा ॥ काहेतें हितऔरहिततरकीअपेक्षाकरिकै हिततम कह्याजावैहै ॥ समाधान ॥ हेप्रतर्दन! जैसे कल्पिततीनशरीरोंकी
अपेक्षाकरिकै शुद्धआत्माकूं तुरीयकहैहैं ॥ तैसे भ्रांतिज्ञानकरिकैसिद्ध जोहित और हिततरहै ॥ तिनकीअपेक्षाकरिकै आत्मज्ञानकूं
हिततमकह्याहै ॥ तहां मनुष्योंका तथादेवतावोंका जोविषयजन्यसुखहै सो पुरुषोंकाहितहै ॥ और तिसविषयजन्यसुखतैं वैरा
ग्य हिततरहै ॥ और तिसवैराग्यतैं आत्मज्ञान हिततमहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! मनुष्यलोककेविषयजन्यसुख तथास्वर्गादिकलो
कोंकेविषयजन्यसुख हितहै ॥ और वैराग्य हिततरहै ॥ यह पूर्वआपनेंकह्या सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें मनुष्यलोककेसुखतैं स्वर्गादिक

लोकोंकेसुख उत्कृष्ट हैं ॥ यातें मनुष्यलोकके सुखतो हित हैं और स्वर्गादिकलोकोंकेसुख हिततर हैं ॥ वैराग्यकूं हिततर तावनैंनहीं ॥ समाधान ॥ मनुष्यलोकके सुखतें स्वर्गादिकलोकोंकेसुखविषे जोविशेषतातुमनैंकही ॥ साविशेषता स्वरूपतें है अथवा साधनोंतेंविशेषताहै ॥ तहां स्वरूपतेंविशेषताहै यहप्रथमपक्ष संभवैनहीं ॥ काहेतें मनुष्यलोकके जेविषयजन्य सुखहैं ॥ तथा स्वर्गलोकके जेविषयजन्यसुखहैं ॥ तथा ब्रह्मलोकके जेविषयजन्यसुखहैं ॥ तिनसंपूर्णसुखोंविषे अनुकूलताधर्म समानहै ॥ यातें स्वरूपतें स्वर्गादिकसुखविषे विशेषतासंभवैनहीं ॥ और साधनोंकीविशेषतातें स्वर्गादिकसुखकीविशेषताहै यहदूसरापक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतें जैसे स्वर्गादिकलोकोंविषेस्थितदेहधारीजीवोंकूं नानाप्रकारके आहारहैं ॥ और चक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकैयुक्तशरीरहै ॥ और मनोरमस्त्रियांहैं ॥ तैसे मनुष्यलोकविषेस्थितदेहधारीजीवोंकूंभी नानाप्रकारके आहार हैं ॥ और नेत्रादिइंद्रियोंकरिकैयुक्तशरीरहैं ॥ और मनोरमास्त्रियांहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अमृतकेपानतें देवतावोंकीतृप्तिहोवै है ॥ तैसे व्रीहियवादिकअन्नकेभक्षणतें मनुष्योंकीतृप्तिहोवै है ॥ तैसेही तृणादिकोंकेभक्षणतें पशुआदिकोंकीतृप्तिहोवै है ॥ और जैसे स्वर्गादिकलोकोंविषेस्थितअप्सरा देवतावोंकेसुखकासाधनहैं ॥ तैसे मनुष्यलोकविषेस्थितास्त्रियांभी पुरुषोंकेसुखकासाधनहै ॥ इसतेंआदिलेकै सर्वसाधनोंकीसमानताहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! मनुष्यलोककासुख पराधीनहै यातें निकृष्टहै ॥ और स्वर्गादिकलोकोंकासुख पराधीननहीं यातेंउत्कृष्टहै ॥ समाधान ॥ हेप्रतर्दन ! जैसे राजाकीसेवातेंप्राप्तभया जोलौकिकसुखहै सो पराधीन होवैहै ॥ तैसे देवतावोंकेआराधनतें प्राप्तभयाजो ब्रह्मलोककासुख तथास्वर्गलोककासुख सोभी पराधीनहीं होवै है ॥ यातें संपूर्णलोकोंविषे जीवोंकूं पराधीनतासमानहै ॥ स्वतंत्रता किसीभीलोकविषेनहीं ॥ काहेतें अस्मदादिकसंपूर्णतेंअधिकजोहिरण्यगर्भहै ॥ सोभी अंतर्यामीईश्वरकेअधीनहै ॥ और मैंइंद्र हिरण्यगर्भकेअधीनहूं ॥ जबी हिरण्यगर्भ औरमैंइंद्रभी पराधीनहुवा ॥ तबी अन्य लोकोंकेस्वतंत्रताकीक्याकथाहै? ॥ किंवा मनुष्यलोकतेंआदिलेके हिरण्यगर्भकेलोकपर्यंत जितनेविषयजन्यसुखहैं ॥ तेसंपूर्णसुख सातिशयदोषकरिकैयुक्तहैं यातेंभीसमानहैं ॥ काहेतें अंतर्यामीईश्वरकेआनंदतें शतभागन्यून हिरण्यगर्भकाआनंदहै ॥ और

हिरण्यगर्भकेआनंदतैं शतभागन्यून प्रजापतिकाआनंदहै और प्रजापतिकेआनंदतैं शतभागन्यून मुझइंद्रकाआनंदहै ॥ जबी हिर
ण्यगर्भकाविषयजन्यआनंद तथामुझइंद्रकाआनंदभी सातिशयदोषकरिकैयुक्तहुवा तबी दूसरेआनंदकी क्याकथाहै?॥ और हे प्रतर्द
न! जैसे तुममनुष्योंकूं मनुष्यलोककीस्त्रीकेआलिंगनतें सुखउत्पन्नहोवैहै तैसे मेरे(इंद्र)कूं स्वर्गलोककीस्त्रीकेआलिंगनतें सुखउत्पन्न
होवैहै ॥ तैसाही हिरण्यगर्भकूं स्त्रीकेआलिंगनतैंसुखहोवैहै ॥ और तैसाही ईश्वरकूं स्त्रीकेआलिंगनतैंसुखहोवैहै ॥ विषयजन्यसुख
विषेकिंचित्मात्रभी विशेषतानहीं ॥ यातें स्वर्गादिकसुखकूं हिततरतासंभवैनहीं ॥ किंतु विषयजन्यसुख मेरेकूंमतहोवै ऐसाजोवैरा
ग्यहै सोईही हिततरहै ॥ काहेतें विषयजन्यजितनेसुखहैं ॥ तेसंपूर्ण घटादिकोंकीन्यांई नाशकूंप्राप्तहोवैहैं॥ और यहवैराग्यरूपसुख
उत्तमपुरुषोंकूं एकवारउत्पन्नहुवा नाशकूंनहींप्राप्तहोता ॥ किंतु दिनदिनविषे वर्द्धताजावैहै ॥ यातें विषयजन्यसुखतें वैराग्यहितत
रहै ॥ किंतु ॥ जैसे वमनकरेअन्नविषे तथाविष्ठादिकोंविषे जोपुरुषोंकावैराग्यहै ॥ तावैराग्यविषे केवलदोषदृष्टिहीकारणहै ॥ तैसे
विषयजन्यसुखविषे दोषदृष्टिही वैराग्यकाकारणहै ॥ दोषदृष्टितैंभिन्न कोईवैराग्यकाकारणनहीं ॥ और विषयजन्यसुखविषेतौ
बाह्यधनादिक अनेककारणहैं ॥ यातैंभी विषयसुखतें वैराग्यरूपसुखहिततरहै ॥ किंवा ॥ जिसपुरुषकूं विषयविषेदोषदर्शनतैंभी
वैराग्य उत्पन्ननहींभया ॥ उलटा विषयसुखविषे इच्छाअधिकहोतीजावैहै ॥ ऐसेवैराग्यरहितपुरुषोंकूं यहमेरेतेंअधिकसुखीहै और
जोइसकेसमीपसुखकेसाधनहैं सोहमारेसमीपनहींहैं याप्रकारकाविषमताज्ञानरूपअग्नि सर्वदादाहकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ब्रह्मलो
कपर्यंत विषयजन्यसंपूर्णसुखोंकीप्राप्तिहुएभी दीनताकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ वैराग्यकीप्राप्तिहुए दीनताकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ याकारण
तैंभी वैराग्यहीहिततरहै ॥ और यावैराग्यतें मैंआनंदस्वरूपआत्माहूं ऐसाजो अद्वितीयआत्माकाज्ञानहै सो हिततमहै ॥ काहे
तें वैराग्यतें मूलअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातें मिथ्याज्ञानजन्यसंस्कारोंतें वैराग्यवान्पुरुषकूं भयबन्यारहेहै ॥ और मैंअद्वितीय
आत्माकेज्ञानतें मूलअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ यातें ज्ञानवान्पुरुषकूं मिथ्याज्ञानजन्यसंस्कारोंतेंभयहोवैनहीं ॥ याकारणतेंवैरा
ग्यतें अद्वितीयआत्माकाज्ञान हिततमहै ॥ किंवा ॥ आत्मस्वरूपआनंदकेभानविषे प्रतिबंधकजेदुःखहैं ॥ तिनदुःखोंकीनिवृ

त्तिविषे वैराग्य कारणहै ॥ आत्मस्वरूपआनंदकेभानविषे वैराग्य साक्षात्कारणनहीं किंतुपरंपराकारणहै ॥ और मुझ अद्वितीयआत्माकाज्ञानतौ आत्मस्वरूपआनंदकेभानविषे साक्षात्कारणहै ॥ यातैंभी आत्मज्ञान वैराग्यतैंहिततमहै ॥ और हेप्रतर्दन! मैंइंद्रस्वरूपआत्माकेज्ञानतैंभिन्न कोईभीवस्तु लोकविषेहिततमनहीं मेराज्ञानही हिततमहै ॥ और हेप्रतर्दन! ब्रह्महत्यासेंआदिलेके जेपाप लोकशास्त्रविषेप्रसिद्धहैं ॥ जिनपापोंकरिकै अनंतकोटीकल्पोंविषे जीवोंकूं अनंतदुःखोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ऐसेब्रह्महत्यादिकपापभी मेरेज्ञानकेप्रभावतैं जीवोंकूं कदाचित्स्पर्शनहींकरते ॥ और हेप्रतर्दन! ज्ञानवान्पुरुषकूं ब्रह्महत्यादिकपाप स्पर्शनहींकरते ॥ याप्रकारकेहमारेवचनकूं आत्मज्ञानकीस्तुतिरूपअर्थवाद तुमनैं नहींजानणा ॥ किंतु यथार्थकरिकैजानणा ॥ काहेतैं याआत्मज्ञानकेप्रभावतैं कोईभीपाप हमारेकूंस्पर्शनहींकरताभया ॥ याअर्थकूं विस्तारकरिकै तुमारेतांई हम कथनकरैंहैं तुमश्रवण करो ॥ तीनलोकोंकाराजाजोमैंइंद्रहूं ॥ सो आपणीरक्षाकेवासते तथाप्रजाकीरक्षावासते अनंतपापोंकूंकरताभयाहूं ॥ तौभी आत्मसाक्षात्कारकेप्रभावतैं तिनपापोंकरिकै हमारा रोमभीछेदननहींभया ॥ अब तिनपापोंकूंदिखावैहैं ॥ हे प्रतर्दन! एककालविषे त्वष्टानामादेवताकापुत्र विश्वरूप हमदेवतावोंका पुरोहितहोताभया ॥ सोविश्वरूप किसीस्थानविषे दैत्योंकीभगिनीतैंउत्पन्नभयाथा ॥ तिसविश्वरूपके तीनमस्तकहोतेभये ॥ एक सात्विकस्वभाववान् ॥ दूसरा तामसस्वभाववान् ॥ तीसरा राजसस्वभाववान् ॥ तहां देवतावोंकेअनुसारीहुवाविश्वरूप सात्विकमुखकरिकै अमृतकूंपानकरताभया ॥ और असुरोंकेअनुसारीहुवासोविश्वरूप तामसमुखकरिके सुराकूंपानकरताभया ॥ और राजसमुखकरिकै सोविश्वरूप मनुष्योंकीन्यांई अन्नादिकोंकूंभक्षणकरताभया ॥ और सोविश्वरूप कदाचित् किसीयज्ञविषे ऋत्विकहोइकरिकै देवतावोंकेतांई उच्चैःस्वरकरिकै यज्ञकेभागोंकूंदेताभया ॥ और आपणीमाताकेपक्षपातीजेअसुरहैं तिनोंकूंभी मंदस्वरकरिकै यज्ञकेभागोंकूंदेताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन्! विश्वरूप जैसेदेवतावोंकेतांई यज्ञकेभागकूं प्रत्यक्षदेताभया ॥ तैसे असुरोंकूं प्रत्यक्षयज्ञकाभाग काहेतैंनहींदेताभया ॥ समाधान ॥ यज्ञकेभागीअसुरहैंनहीं ॥ यातैं तिनोंकेतांई प्रत्यक्षयज्ञकाभाग देणासंभवैनहीं ॥ यहवार्ता लोकविषेभीप्रसिद्धहै ॥ जैसे किसीचारिपुरुषोंकूं राजानैं एकग्रामदियाहोवै ॥

तिसग्रामके तेचारिपुरुषभागीहैं ॥ और तिसग्रामविषे पिशुनवृत्तितैंजीवनकरणेहारा कोईदुष्टपुरुषभीरहैहै ॥ सो यद्यपि ग्रामका
भागीनहीं है ॥ तथापि तादुष्टपुरुषकूं ग्रामकाभागमिलेहै ॥ परंतु तादुष्टपुरुषकूं ग्रामकाभाग प्रसिद्धनहींमिलेहै किंतुअप्रसिद्धमिले
है ॥ और चारिभागीपुरुषोंकूं ग्रामकाभाग प्रसिद्धमिलेहै ॥ परंतु अभागीपुरुषकूं जोभाग देणाहै ॥ सो ग्रामकेस्वामीका अनर्थकर
णेहाराहै ॥ काहेतें अप्रसिद्धभागकीप्राप्तिकरिकै शनैःशनैःसामर्थ्यकूंप्राप्तभयासोदुष्टपुरुष एककालविषे ग्रामकेस्वामियोंकाहन
नकरैहै ॥ और ग्रामादिकसंपदाकाभी हरणकरैहै ॥ यातैं भागतैंरहितपुरुषकूंभागकीप्राप्ति स्वामीकेअनर्थकाकारणहै ॥ यहवार्ता
लोकविषेप्रसिद्धहै ॥ इसप्रकारविचारकरिकै औरदेवतावोंकेअनिष्टकरणेहारी जाअसुरोंकेतांईयज्ञभागकीप्राप्तिरूपविश्वरूपकी
क्रियाहै ताकूंदेखिकरिकै ताविश्वरूपपुरोहितविषे ऐसीबुद्धिकूं मैंइंद्र करताभया ॥ यहविश्वरूपपुरोहित हमारेशत्रुअसुरोंकेहितकी
इच्छाकरैहै ॥ यातैं हमराजोंका तथादेशका यह घातकरैगा ॥ यातैं यहदुरात्माविश्वरूप मारणेयोग्यहै ॥ अब विश्वरूपकेदुरा
त्मभावकूंदिखावैहैं ॥ विश्वासकरिकैयुक्तजोहमदेवताहैं ॥ तिनोंकेनाशकरणेवासते यहविश्वरूप हमारेशत्रुवोंकेतांई यज्ञभागोंकूंदे
वैहै ॥ यातैं यह विश्वरूप दुरात्माहै ॥ विश्वासघातीपुरुषकूं लोकविषेभी दुरात्माकहैहैं ॥ किंवा ॥ जोपुरुष जिसकेअन्नकूं सर्वदा
भक्षणकरैहै ॥ सोअन्नकाभोक्तापुरुष तिसअन्नदातापुरुषका आत्माहोवैहै ॥ और आत्मद्रोहीपुरुष अत्यंतपापवान्होवैहै ॥ यह सर्व
शास्त्रकासिद्धांतहै ॥ और यहविश्वरूपसर्वदा हमदेवतावोंकेअन्नकूंभोजनकरैहै ॥ यातैं हमदेवता विश्वरूपकेआत्माहैं ॥ हमारेसा
थ द्रोहकूंकरताहुवायहविश्वरूप आपणेआत्माकेसाथद्रोहकूंकरैहै ॥ आत्मद्रोहीपुरुषकेसमान कोईपापीनहीं ॥ यद्यपि यहविश्व
रूप वेदोंकावेत्ताहै ॥ औरब्राह्मणहै औरहमसर्वदेवतावोंकापुरोहितहै यातैंमारणेयोग्यनहीं ॥ तथापि हमयजमानोंकेनाशवासते इस
नैं उद्यमकन्याहै ॥ यातैं यहदुरात्माविश्वरूप अवश्यमारणेयोग्यहै ॥ हेप्रतर्दन! इसप्रकारकाविचारकरिकै मैंइंद्र देवतावोंकीसभा
विषे ताविश्वरूपकेतीनोंमस्तकोंकूं वज्रकरिकैछेदनकरताभया ॥ तापापकर्मकरिकै जिसआत्मज्ञानकेप्रभावतैं मेरारोममात्रभी नहीं
छेदनहोताभया ॥ और हेप्रतर्दन! याआत्मज्ञानकेप्रभावतैं वेदांतविचारतैंरहितकोटीसंन्यासियोंकेमारणेकरिकैभी हमारेकूं पापका

स्पर्शनहींहोताभया ॥ किसीकालविषे किसीदेशमैं कोटीसंन्यासी इकट्ठेभयेथे॥कैसेतेसंन्यासीथे ॥ वर्णआश्रमकेजेआचारहैं तिनोंवि
षे जिनोंकीप्रीतिथी ॥ और ब्रह्मचर्य ग्रहस्थ वानप्रस्थ संन्यास याचारिआश्रमोंविषे उत्तमआश्रमजोसंन्यासहै ताकरिकैयुक्तथे॥ और
यहइंद्र हमाराआत्माहै याप्रकारकेसर्वात्मज्ञानतैंरहितथे॥ऐसे बहिर्मुखसंन्यासियोंतैं मैंइंद्र पूँछताभया ॥ तुमसंपूर्ण कौनहो ऐसाजबी
हमनैंपुँछा ॥ तबी तेसंन्यासी हमारेप्रति कहतेभये ॥ वर्णआश्रमकेकर्मोंकूंकरणेहारे हम संन्यासीहैं॥ ऐसाकहिकरिकै पुनः तेसंन्यासी
दैवकरिकैमोहकूंप्राप्तहुवे ऐसावचन हमारेप्रति कहतेभये ॥ तूकौनहै? जो हमसंन्यासियोंकूं पूछणेवास्ते इहांआयाहै ॥ इसप्रकार
निरादरयुक्तवचन संन्यासीयोंका श्रवणकरिकैभी कृपाकरिकेयुक्तमैंइंद्र तिनसंन्यासियोंकूं कहताभया ॥ हेसंन्यासियो! तुमसंपूर्णों
काआत्मा मैंइंद्रहूं ॥ ऐसेमेरेवचनकूंश्रवणकरिकै तेसंपूर्णसंन्यासी क्रोधयुक्तहोतेभये ॥ कैसेतेसंन्यासीहैं ॥ हैंतोमूर्ख परंतुआपणेकूं
पंडितजिनोंनैंमान्याहै ऐसेसंन्यासी दैवकरिकैमोहितहुवे पुनः निरादरयुक्तवचनकूं हमारे(इंद्रके)प्रति कहतेभये ॥शरीररूपविग्रहवा
ला तू किसप्रकार इंद्रहोवैगा ?॥तात्पर्ययह॥इंद्र याप्रकारकाशब्द तथाइंद्रशब्दकाअर्थ दोनोंतैंभिन्नकोईइंद्र संभवैनहीं ॥ तहां इंद्र या
शब्दकूंइंद्रकहेहैं याप्रथमपक्षविषे विग्रहवान्तुमारेकूं इंद्ररूपतासंभवैनहीं ॥ और इंद्रशब्दकेअर्थकूंइंद्रकहेहैं यादूसरेपक्षविषेभी
विग्रह हविषकाभोग ऐश्वर्य प्रसन्नता फलप्रदान याविग्रहआदिकपंचविशेषणोंकरिकैविशिष्ट देवताविशेष इंद्रशब्दकाअर्थहै॥अथवा
तुमनैंकह्याजो हमसंपूर्णसंन्यासियोंकाआत्मा सो इंद्रशब्दकाअर्थहै ॥ तहां प्रथमपक्षतौ संभवैनहीं ॥ काहेतें शरीररूपविग्रहकरि
कैविशिष्ट देवताविशेष जोइंद्रशब्दकाअर्थहोवै ॥ तौ जैसे यज्ञविषे अतिथिकाप्रत्यक्षहोवैहै ॥ तैसे इंद्रकाभी प्रत्यक्षज्ञानहोणाचाहि
ये ॥ और इंद्रका यज्ञविषे प्रत्यक्षज्ञान होतानहीं ॥ यातैं शरीररूपविग्रहवान्देवताविशेष इंद्रशब्दकाअर्थ संभवैनहीं ॥ और हवि
षअन्नकाभोगरूपविशेषणकरिकैविशिष्ट देवताविषे इंद्रशब्दकाअर्थहै यहभीकहना संभवैनहीं ॥ काहेतें जैसे अतिथिकेतांई य
ज्ञविषेदियाजोअन्न ताअन्नकूं अतिथिभोजनकरै है॥ यहसर्वलोकोंकूंप्रत्यक्षदीखैहै ॥ तैसे यज्ञविषेइंद्रादिकदेवतावोंकेतांई दिया
जोहविषरूपअन्न ताअन्नकूं देवताभोजनकरैंनहीं ॥ जोदेवता हविषअन्नकूं यज्ञविषेभोजनकरतेहोवैं ॥ तौ हमारेकूं अतिथिकीन्यांई

दीखेचाहीये औरदीखतेनहीं ॥ शंका ॥ देवता यद्यपि प्रसिद्ध हविषरूपअन्नकूंभक्षणकरैनहीं ॥ तथापि जैसेभ्रमर पुष्पकेगंधकूं
ग्रहणकरै हैं॥ तैसे देवताभी अन्नकेसारअंशकूं ग्रहणकरै हैं ॥समाधान॥ देवता अन्नकेसारअंशकूंभीग्रहणकरैनहीं ॥ काहेतें जोदे
वता अन्नकेसारअंशकूंग्रहणकरैं ॥ तौ गणेशकूंसमर्पणकरेजेमोदक तेमोदक सारअंशतेंरहितहोणेचाहिये ॥ और सारअंशतेंरहित
मोदकहोवैनहीं ॥ यातें हविषकाभोगरूपविशेषणकरिकैयुक्त देवताविशेषभी इंद्रशब्दकाअर्थ संभवैनहीं ॥ और ऐश्वर्यरूपविशेषण
करिकैविशिष्ट देवताविशेष इंद्रशब्दकाअर्थहै यहकहनाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें आपणेविषे स्वामित्वकाअभिमान औरअन्यविषे
ममत्वअभिमानकानाम ऐश्वर्यहै ॥ अथवा अनेकयज्ञोंविषे एककालमैंप्राप्तिवासते अनंतस्वरूपधारणकरणेकीजोशक्तिहै ताकाना
म ऐश्वर्यहै ॥ यादोनोंपक्षविषे रागवान्देवता सिद्धहोवैहै ॥ यातें जैसे रागवान् औरनानास्वरूपोंकूंधारणकरणेहारीवेश्या
का कोईबुद्धिमान्पुरुष पूजनकरतानहीं ॥ तैसे रागवान् औरनानास्वरूपोंकूंधारणकरणेहारेदेवतावोंकूं कौनबुद्धिमान्पुरुष पूज
नकरैगा ॥ किंतु कोईभीपूजननहींकरैगा ॥ यातें ऐश्वर्यविशिष्टदेवताविशेषभी इंद्रशब्दकाअर्थ संभवैनहीं ॥ औरप्रसन्नतारू
पविशेषणकरिकैविशिष्ट देवताविशेष इंद्रशब्दकाअर्थहै यहकहनाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें यज्ञादिककर्मोंकेकरणेतें देवता प्रस
न्नहोवैहै ॥ अथवा यज्ञादिककर्मोंतेंविनाभी देवता प्रसन्नहोवैहै ॥ तहां प्रथमपक्षतौ संभवैनहीं ॥ काहेतें जोकर्मकेकियेतेंही देवता
प्रसन्नहोवैं॥ तौ हममनुष्योंतेंदेवताविषे कौनविशेषतासिद्धभयी॥सेवारूपकर्मकेकरणेहारेप्राणीऊपरि हममनुष्यभी प्रसन्नहोतेहैं॥तै
से यज्ञरूपकर्मकेकरणेहारेपुरुषऊपरि देवताभी प्रसन्नहोतेहैं॥यातैंहममनुष्योंतें देवतावोंविषे विशेषतासिद्धनहींहोवैगी॥औरकर्मोंकि
येविनाही देवताप्रसन्नहोवैहै यहदूसरापक्षभी संभवैनहीं काहेतें कर्मकियेतेंविना कहांभीदेवताकीप्रसन्नता देखीनहीं॥यातें प्रसन्नता
रूपविशेषणकरिकैविशिष्ट देवताविशेषभी इंद्रशब्दकाअर्थनहीं ॥ याकारणतें फलप्रदानरूपविशेषणकरिकैविशिष्ट देवताविशेषभी
इंद्रशब्दकाअर्थ संभवैनहीं ॥ काहेतें प्रसन्नतातें अनंतरही फलकादेणासंभवैहै ॥ प्रसन्नताकेअभावहुए फलप्रदानभी देवताविषेसंभ
वैनहीं ॥ यातें फलप्रदानरूपविशेषणकरिकैविशिष्ट देवताविशेषभी इंद्रशब्दकाअर्थनहीं॥ इतनेग्रंथकरिकै विग्रहादिकपंचविशेषण

करिकैविशिष्ट देवताविशेष इंद्रशब्दकाअर्थहै याप्रथमपक्षका संन्यासियोंनैं खंडनकऱ्या ॥ अब हमसंपूर्णोंकाआत्मा इंद्रशब्दका अर्थहै याद्वितीयपक्षकूं संन्यासी खंडनकरैहैं ॥ हमसंपूर्णोंकाआत्मा इंद्रशब्दकाअर्थ संभवैनहीं ॥ काहेतें संपूर्णप्राणियों काआत्मा एकएकशरीरविषे भिन्नभिन्नहोवैहै ॥ जोसंपूर्णशरीरोंविषे एकहीआत्माहोवै ॥ तौ एकशरीरविषे सुखतथादुःखके हुए सर्वशरीरोंविषे सुखदुःखकाअनुभव होणाचाहिये ॥ और अनुभवतौहोवैनहीं ॥ यातैं सर्वशरीरोंविषे आत्माएकनहीं ॥ किंतु नानाआत्माहैं ॥ और पुण्यपापकाकरता आत्माहै ॥ और आत्माही ताकेफलसुखदुःखका भोक्ताहै ॥ और आत्मा अमूर्तहै और विभुहै ॥ बुद्धि १ सुख २ दुःख ३ इच्छा ४ द्वेष ५ प्रयत्न ६ धर्म ७ अधर्म ८ संस्कार ९ संख्या १० परिमाण ११ पृथक्त्व १२ संयोग १३ विभाग १४ याचतुर्दशगुणोंकरिकैयुक्त आत्माहै ॥ और अहंसुखी अहंदुःखी याप्रतीतिका विषय आत्माहै ॥ और तू हमसंन्यासियोंतैंभिन्नप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं हमसंपूर्णसंन्यासियोंकाआत्मा तूंकैसेहोवैगा? ॥ किंतु हमारा आत्मा तूंनहीं है ॥ यातैं इंद्रशब्दकाअर्थ इंद्रनहीं ॥ किंतु इंद्र याप्रकारकाशब्दही इंद्रहै ॥ इंद्रशब्दतैंभिन्न कोईइंद्रदेवताकास्वरूप नहीं ॥ याप्रकार सर्वदेवता शब्दस्वरूपहैं ॥ शब्दतैंभिन्न कोईभीदेवतानहीं ॥ हेप्रतर्दन! तेवहिर्मुखसंन्यासी याप्रकारकीकुतर्कक रिकैयुक्त तथानिरादरकरिकैयुक्त वचनोंकूंकहिकरिकै पुनःमेरेउपरि क्रोधकूंकरतेभये ॥ तिनसंन्यासियोंकेमूर्खताकूं तथावचनोंकीक्रू रताकूं तथाविनाकारणतैंक्रोधकूं देखिकरिकै पुनःकृपाकरिकैयुक्त मैंइंद्र तिनसंन्यासियोंकूं कहताभया ॥ हेसंन्यासियो! देवतावोंके विग्रहआदिकनहींहोते ॥ और शरीरशरीरविषे आत्माकावास्तवभेद होवैहै ॥ और तूइंद्र हमाराआत्मानहीं है ॥ यहजोपूर्वतुमोनैंक ह्या ॥ याअर्थविषे कोईवेदकावचनजोप्रमाणहोवै तौ तुम कथनकरो ॥ हेप्रतर्दन याप्रकार जबी तिनसंन्यासियोंतैं हमनैं प्रमाण पूछा ॥ तबी तेमूर्खसंन्यासी पुनःक्रोधकरिकैयुक्तहुवे एकभीवेदकावचन नहींकथनकरतेभये ॥ कुटिलकरीहैभ्रुकुटी औरमुखजिनों नैं ऐसेतेसंन्यासी पुनःमेरीनिंदाकरिकै जावोजावो याप्रकारका कथनकरतेभये ॥ सोकथनभी मुखसैंनहींकरतेभये ॥ किंतु अत्यंत निरादरकासूचक जोहस्तकीचेष्टा ताकरिकै बोधनकरतेभये ॥ हेप्रतर्दन! इसप्रकार जबी संन्यासियोंनैं हमारानिरादरकऱ्या ॥

तबी त्रिलोकीकेरक्षणवासतेउद्यमवाला मैंइंद्र आपणेमनकरिकै याप्रकारकाविचार करताभया ॥ जो यासंन्यासियोंविषे क्याकरणे
कूंयोग्यहै ॥ तात्पर्ययह ॥ यासंन्यासियोंकी उपेक्षाकरणीयोग्यहै अथवा दंडकरणेयोग्यहै ॥ तहां उपेक्षाकरणी यहप्रथमपक्षतौ
संभवैनहीं ॥ काहेतें त्रिलोकीकूंअधर्मतैंरक्षाकरणेवासते हमाराअवतारहै ॥ और दंडकरणा यहदूसरापक्षतौ अपराधनिर्णयतैंवि
ना होवैनहीं ॥ यातैं इनसंन्यासियोंका अपराधनिर्णयकरनाचाहिये ॥ अपराधनिर्णयतैंअनंतरही दंडकरणाउचितहै ॥ तहां अपरा
धनिर्णयकरणेवासते संन्यासका तथासंन्यासकेधर्मोंका तथासंन्यासकेफलका बोधनकरणेहारीश्रुतियोंकेअर्थकानिरूपणकरैंहैं ॥ वि
वेकादिकसाधनचतुष्टययुक्तपुरुष आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते संपूर्णकर्मोंकात्यागरूपसंन्यासकूंकरै ॥ और सर्वकर्मोंकात्याग
करिकै संन्यासीनैं श्रवणमनननिदिध्यासनकरिकै एकवेदांतकेअर्थकाविचार सर्वदाकरणेयोग्यहै ॥ इसप्रकार संन्यासतथावेदांतवि
चारकरिकै जिसपुरुषकूं अद्वितीयआनंदस्वरूपआत्माकासाक्षात्कारभयाहै ॥ सोपुरुष जन्ममरणरूपसंसारदुःखकूं नहींप्राप्तहोता॥
याप्रकार श्रुतिनैं कथनकऱ्याहै ॥ इहां विवेकादिकसाधनसंपत्तिपूर्वक सर्वकर्मोंकेत्यागकानाम संन्यासहै ॥ और सर्वदावेदांत
शास्त्रकाविचार संन्यासीकाधर्महै॥ और जन्ममरणादिकअनर्थकीनिवृत्ति तथाब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षकीप्राप्ति संन्यासकाफल
है ॥ याप्रकारकासंन्यास इनोंविषेनहीं ॥ किंवा ॥ दोप्रकारकासंन्यास श्रुतिविषेकह्याहै ॥ एकतौ क्रमतैंसंन्यास और दूसरा
क्रमतैंविनासंन्यास॥ तहां प्रथम ब्रह्मचारीहोणा पश्चात्गृहस्थहोणा पश्चात्वानप्रस्थहोणा पश्चात्संन्यासीहोणा इसक्रमतैंसंन्यास
उत्कटवैराग्यतैंरहितपुरुषकूं ७०सतरिवर्षतैंअनंतर श्रुतिनैंकह्याहै ॥ और जिसपुरुषकूं विषयोंविषेउत्कटवैराग्यहै ॥ तिसपुरुषकूं
क्रमतैंविनाभी श्रुतिनैं संन्यासविधानकऱ्याहै ॥ जिसदिनविषे पुरुषकूं विषयोंविषेउत्कटवैराग्यहोवै उसीदिनविषे संन्यासकूंकरै ॥
ब्रह्मचारीहोवै अथवा गृहस्थहोवै अथवा वानप्रस्थहोवै ॥ यादोप्रकारकेसंन्यासविषे क्रमतैंसंन्यासतौ इनोंकाहैनहीं ॥ काहेतें ये
संपूर्ण युवाअवस्थावालेहैं ॥ और दूसरेक्रमतैंविनासंन्यासभी इनोंविषेनहीं ॥ काहेतें ये संपूर्ण आत्मज्ञानतैंरहितहैं ॥ और नी
तितैंरहितहैं ॥ और क्रोधरूपशत्रुकेवशहुएहैं ॥ याकारणतैं दुर्बुद्धिमूर्ख आपणेहितकूंनहींश्रवणकरते ॥ उलटा हितकेउपदेशकरणे

हारेमैंइंद्रकेसाथ द्वेषकूंकरैं हैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मरणकेनिकटप्राप्तभया रोगीपुरुष हितकारीवैद्यकेसाथ द्वेषकरैं है ॥ तैसे येसंन्यासी मृत्युकेनिकटहुए मेरेसाथद्वेषकरैं हैं ॥ शंका ॥ हे भगवन्! यद्यपि येसंन्यासी अपराधीहैं ॥ तथापि तुमारेकूं क्षमाकरणेयोग्य हैं ॥ किसीदूसरेकेउपदेशतैं इनोंकूं आत्मसाक्षात्कारहोवैगा ॥ समाधान ॥ मुझइंद्रकेवचनकूं जबीइनोंनैं अंगीकारनहींकऱ्या ॥ तबी येसंन्यासी किसीकेउपदेशकूं नहींअंगीकारकरैंगे ॥ काहेतैं इनसंन्यासियोंकेबोधवासते इनोंकेनिरादरयुक्तवचनकूंसहनकरिकैंभी कृपायुक्तमैंइंद्र इनोतैं श्रुतिप्रमाणपूछताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ निरादरकूंसहनकरिकै उपदेशकेकरणेहारा हमारेतैंविना दूसराकोई हैनहीं ॥शंका॥ हे भगवन्! ऐसेबहिर्मुखसंन्यासियोंतैं तुमनैं काहेवासतेश्रुतिप्रमाणपूछा ॥समाधान॥ हे प्रतर्दन! हमारेपूछणेका यहअभिप्रायथा॥ जबी येसंन्यासी आत्माकेवास्तवभेदविषे कोईवेदकावचनकहेंगे ॥ तबी तिसीवेदवचनकरिकैं इनोंकेताईं मैंआत्माकाउपदेशकरूंगा॥ यामेरेअभिप्रायकूंनजाणिकरिकै येमूढसंन्यासी विनाहीकारणतैं मेरेऊपरि क्रोधकूंकरतेभये ॥ और वेदकेवचनरूपप्रमाणोंकूंभी येसंन्यासीजाणतेनहीं ॥ और कुतर्कोंकूंकथनकरणेहारे हैं ॥ यातैं येसंन्यासी दंडकरणेयोग्यहैं ॥ किंवा ॥ यहशास्त्रकानियमहै ॥ चांडाल शत्रु पतित दुराचारी इनचारोंविषे कोईभी जोयथार्थप्रश्नपूछै तौ बुद्धिमान्पुरुषनैं ताप्रश्नकाउत्तरकह्या चहीये ॥ यानियमकाभी इनसंन्यासियोंनैं त्यागकऱ्याहै॥ काहेतैं साक्षात्मैंइंद्रकरिकैपूछेहुएभी येसंन्यासी उत्तरकूंनहींकहतेभये ॥ किंवा ॥ इनदुर्बुद्धिसंन्यासियोंका जन्मभीनिष्फलहै ॥ काहेतैं सर्वकर्मकात्यागरूपसंन्यासकूं इनोंनैं धारणकऱ्याहै ॥ यातैं ये कर्मकेअधिकारीभीनहीं ॥ और वैराग्यादिकसाधनोंतैंरहितहैं ॥ यातैं ये ज्ञानकेअधिकारीभीनहीं ॥ वैराग्य विवेक शमादिकषट्संपत्ति मुमुक्षुता याचारिसाधनोंकरिकैंयुक्तपुरुष वेदांतश्रवणविषे अधिकारीहोवैहै ॥ शंका ॥ संन्यासियोंविषे वैराग्यकाअभाव तुमनैं कैसेजान्याहै ॥ समाधान ॥ क्रोधरूपहेतुतैं इनोंकेवैराग्यकाअभाव जान्याजावैहै ॥ जहां क्रोधरहैहै तहां वैराग्यरहैनहीं ॥ काहेतैंप्रथमतौ जीवोंकूंजन्मही कष्टरूपहै ॥ ताजन्मतैंभी जन्मकाकारणजोकामहै सो कष्टतरहै ॥ तिसकामतैंभी क्रोध कष्टतमहै ॥ सोक्रोध इनसंन्यासियोंविषे विद्यमानहै ॥ यातैं इनोंविषे वैराग्यकाअभावहै ॥ अब कामतैं क्रोधकीअधिकताकूंदिखावैहैं ॥ कामकरिकैजन्य

जोदुःखहै सो परिणामकालविषे प्राणियोंकूंहोवैहै ॥ कामकेवर्तमानकालविषे दुःखहोवैनहीं ॥ और क्रोधतौ परिणामकालविषे तथावर्तमानकालविषे सर्वदा जीवोंकूं दुःखकेदेणेहाराहै ॥ यातें कामतेंक्रोध अधिकदुःखरूपहै ॥ किंवा ॥ दूसरीभी कामतेंक्रोधकी अधिकताहै ॥ कामतौ जिसशरीरविषेउत्पन्नहोवैहै ॥ तिसीशरीररूपआश्रयकूं संतापकरैहै अन्यकूंसंतापकरैनहीं ॥ और परकेता डनरूपफलकरिकैयुक्तहुवा क्रोधतौ जिसशरीरविषेउत्पन्नहोवैहै तिसशरीररूपआश्रयकूं तथाजिसशरीरऊपरिक्रोधहोवैहै ताश रीररूपविषयकूं दोनोंकूं संतापकरैहै ॥ याकारणतेंही क्रोधकरिकैयुक्तहुवे कोईकप्राणी आपणेमस्तकका ताडनकरैहै और कूपादि कोंविषेगिडेहैं ॥ यातेंभी कामतेंक्रोधकष्टतमहै ॥ किंवा ॥ अन्यभी कामतेंक्रोधकीअधिकताहै ॥ उत्पत्तिकाकारण कामहै ॥ यातें का म रजोगुणकापरिणामहै ॥ और क्रोध नाशकाकारणहै ॥ यातें तमोगुणकापरिणामहै ॥ काहेतें अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज्ज या चारिप्रकारकेप्राणियोंकीजा शरीरमनवाणीकरिकैहिंसाहोवैहै ॥ साहिंसा क्रोधतेंहीहोवैहै ॥ क्रोधतेंविना हिंसाहोवैनहीं ॥ यातेंभी कामतेंक्रोधअधिकहै॥किंवा॥जैसे कुष्ठादिकरोग त्वचाकूंनाशकरैहै।तैसे विश्वविषेव्यापिरहीजोपुरुषकीकीर्ति हैताकूं तत्कालही क्रोधना शकरैहै ॥किंवा॥ परताडनारूपफलकरिकैयुक्तहुवा यहक्रोध जीवोंकूं स्वर्गतेंभीविमुखकरैहै।।तात्पर्ययह॥स्वर्गकेकारणजेयज्ञादिककर्म हैं तेभी क्रोधकियेतें स्वर्गरूपफलकेहेतुहोवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसेदुर्जनपुरुष राजद्वारविषेप्रवेशरूपफलकरिकैयुक्तहुवा प्रवेशकरावे णहारेपुरुषकूं राजद्वारतें निकासिदेवैहै॥ तैसे क्रोधभी पुरुषकूंस्वर्गतेंविमुखकरैहै ॥ किंवा ॥ जैसे अश्ववारपुरुषकूं दुष्टअश्व गर्तविषे जाइकेगेडैहै ॥ तैसे यहक्रोधभी पुरुषोंकूं नरकविषेजाइकेगेडैहै ॥ यातें सुखकेप्राप्तिकीइच्छावान्पुरुषकूं क्रोधकेसमान कोईशत्रुनहीं क्रोधहीपरमशत्रुहै ॥ यातें सुखकेप्राप्तिकीइच्छावान्पुरुषनैं अवश्य क्रोधकानिरोधकरणा ॥ यहक्रोध कामतेंभीअधिकदुःखकेदेणेहा राहै ॥ किंवा ॥ जैसे प्रज्वलितमहान्अग्नि शुष्ककाष्ठोंकूं तथाआर्द्रकाष्ठोंकूं दाहकरैहै ॥ तैसे पुरुषविषेउत्पन्नहुवाक्रोधभी स्वर्गकेसा धनोंकूं तथामोक्षकेसाधनोंकूं नाशकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ साधनोंविषेजोफलकेउत्पत्तिकासामर्थ्यहै सो क्रोधकरिकैनष्टहोइजावैहै ॥ किंवा ॥ जैसे वृक्षविषे अग्निरूपहेतुकेज्ञानतें सरसताकेअभावकाअनुमितिज्ञान दूरदेशविषेस्थितपुरुषकूं होवैहै ॥ ताअनुमानकाप्र

कारयहहै ॥ यहवृक्ष सरसताकेअभाववालाहै ॥ काहेतें अग्निवालाहोणेतें ॥ प्रसिद्धवृक्षकीन्यांई ॥ याअनुमानतें जैसे वृक्षविषे स
रसताकेअभावकानिश्चयहोवैहै ॥ तैसे क्रोधरूपहेतुकेज्ञानतें इनसंन्यासियोंविषेभी वैराग्यकेअभावकाअनुमितिज्ञानहोवै है ॥ ता
अनुमानकाप्रकारयहहै ॥ येसंपूर्णसंन्यासी वैराग्यतेंरहितहैं ॥ काहेतें क्रोधवान्होणेतें ॥ प्रसिद्धअज्ञानीपुरुषोंकीन्यांई ॥ याअनु
मानकरिकै इनसंन्यासियोंविषे वैराग्यकेअभावकाज्ञानहोवैहै ॥ किंवा ॥ जहां क्रोधरहैहै तहां इच्छाभीअवश्यरहैहै ॥ इच्छातेंविना
क्रोधहोवैनहीं ॥ काहेतें जाइच्छाकेविषयका कोईप्रतिबंधकरैहै ॥ साइच्छाही क्रोधाकारपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्ता गीताविषे
भगवान्नें 'कामएषक्रोधएष' याश्लोकविषे प्रतिपादनकरीहै ॥ और लोकविषेभी यहवार्ताप्रसिद्धहै ॥ जोकोईपुरुष किसीवस्तुकीइ
च्छाकरिकै किसीपुरुषकेपासजावै ॥ तिसवस्तुकीप्राप्तिविषे जोकोई प्रतिबंधकरै है ॥ तिसऊपरि तापुरुषका अत्यंतक्रोधहोवै है ॥
जो इच्छानहींउत्पन्नहोवै तौ ताकेफलकाभी कोईप्रतिबंधकरैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे असतबंध्यापुत्रकेराजका कोईप्रतिबंधकरैनहीं ॥
यातें प्रतिबंधकरिकै फलतैंहीनहुईइच्छाही क्रोधाकारपरिणामकूंप्राप्तहोवै है ॥ और इनसंन्यासियोंविषे क्रोधदीखताहै ॥ यातें क्रोध
काकारणरूपइच्छाभी अवश्यइनोंविषेहोवैगी ॥ और जहांइच्छारहैहै तहांवैराग्यहोवैनहीं ॥ यातें येसंन्यासी वैराग्यतेंरहितहैं ॥
किंवा ॥ इनसंन्यासियोंविषे काम क्रोध दोनोंविद्यमानहैं ॥ कैसेकामक्रोधहैं ॥ निवृत्तिकेउपायतेंरहितहैं ॥ याकारणतें जयकरणेकूं
अशक्यहैं ॥ ऐसेकामक्रोधकेविद्यमानहुए इनसंन्यासियोंविषे वैराग्य कैसेसंभवै? ॥ किंतु इनोंविषेवैराग्यनहीं है ॥ यद्यपि स्त्रीकेसंस
र्गकीइच्छाकानामकामहै ॥ तथापि इहांकामशब्दकरिकै इच्छामात्रकाग्रहणकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन्! आपनें निवृत्तिकेउपायतेंर
हित कामक्रोधकूंकह्या सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें मुमुक्षुजन उपायोंकरिकै कामक्रोधकीनिवृत्तिकरैहैं ॥ समाधान ॥ जिसउपायकरिकै
मुमुक्षुजन कामक्रोधकीनिवृत्तिकरैहैं ॥ सोउपाय इनसंन्यासियोंविषेहैनहीं ॥ काहेतें ब्रह्मवेत्तामहात्मापुरुषोंकीसेवा तथाप्रश्नरूप
सतसंगही कामक्रोधकेनिवृत्तिकाउपायहै सोउपाय इनोंविषेहैनहीं ॥ सर्वब्रह्मवेत्तावोंविषेमुख्य मुझइंद्रकेसाथ यहसंन्यासी सुख
तैंभाषणभीजबीनहींकरते ॥ तबी इनोंनें सेवा तथाप्रश्न क्याकरणाहै? ॥ यातें इनोंकेकामक्रोधकेनिवृत्तिकाकोईउपायनहीं ॥ किंवा ॥

वैराग्यतैंरहित इनसंन्यासियोंकूं संन्यासआश्रमकेधारणतें किसीफलकीभीप्राप्तिनहींहोवैगी ॥ उलटा इनदेहाभिमानियोंका यासंन्यासकरिकै पतनहोवैगा ॥ किंवा ॥ वैराग्यतैंविना इनोंकासंन्यास निष्फलहै ॥ काहेतें संन्यास तथासंन्यासकाफल दोप्रकारकाहोवै है ॥ एकतौ विविदिषासंन्यास औरदूसरा विद्वत्संन्यास ॥ तहांब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै सर्वकर्मोंकेत्यागकूं विविदिषासंन्यासकहैहैं ॥ और आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तितैंअनंतर जीवन्मुक्तिकेसुखवासतै सर्वकर्मोंकेत्यागकूं विद्वत्संन्यासकहैहैं ॥ तहां गुरुमुखतैंवेदांतकाश्रवणकरिकै आत्माकूंनिश्चयकरणा विविदिषासंन्यासकाफलहै ॥ और जीवन्मुक्तिकेसुखकी प्राप्ति विद्वत्संन्यासकाफलहै ॥ तहां विविदिषासंन्यासके आत्मसाक्षात्काररूपफलकी इनसंन्यासियोंविषे संभावनाहैनहीं ॥ काहेतें इनोंविषे आत्मसाक्षात्कारकीइच्छाहैनहीं ॥ इच्छाकेअभावतें येमूर्खसंन्यासी आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै गुरुके समीपभीजावैंगेनहीं ॥ गुरुकेसमीपगयेविना आत्मसाक्षात्कार दुर्लभहै ॥ यातें विविदिषासंन्यासकाफल आत्मसाक्षात्कारभी इनोंविषेसंभवैनहीं ॥ जबी विविदिषासंन्यासकाफल आत्मसाक्षात्कार इनोंविषेनहींभया ॥ तबी आत्मसाक्षात्कारतैंअनंतर होणेवाला जीवन्मुक्तिकाआनंदरूप विद्वत्संन्यासकाफल इनोंविषे कैसेहोवैगा? ॥ यातें दोनोंफलकेअभावतें इनोंकासंन्यास निष्फलहै ॥ किंवा येसंन्यासी ऐसाभीनहींजाणते ॥ जो संन्यासशब्दकाअर्थ हमारेविषेघटताहै अथवानहीं ॥ जबी संन्यासशब्दके अर्थकूंभी इनोंनैं नहींजान्या ॥ तबी अन्यअर्थकूं येकैसेजानेंगे ॥ अब संन्यासशब्दकेअर्थकूंदिखावैंहैं ॥ संन्यास याशब्दविषे दो पदहैं ॥ एकतौ सं पदहै और दूयरा न्यास पदहै ॥ तहां मैंब्रह्मरूपहूं याआत्मज्ञानरूपशस्त्रकरिकै मूलअज्ञानसहितकामक्रोधादिकशत्रुवोंकाछेदन संपदकाअर्थहै ॥ और पुनरावृत्तितैंरहित ब्रह्मभावकरिकेस्थित न्यासपदकाअर्थहै ॥ दोनोंपदोंकामिलिकरिकै यहअर्थहोवैहै ॥ आत्मज्ञानरूपशस्त्रकरिकै मूलअज्ञानसहितकामक्रोधादिकोंकीनिवृत्तिकरिकै पुनरावृत्तितैंरहित ब्रह्मभावकरिकैस्थित यह संन्यासशब्दकाअर्थ इनवैराग्यहीनोंविषेहैनहीं ॥ यातें इनोंकासंन्यास निष्फलहै ॥ किंवा ॥ यहसंन्यासशब्दकाअर्थ यद्यपि विद्वत्संन्यासविषेघटैहै ॥ तथापि विविदिषासंन्यासविषेघटेनहीं ॥ यातें विविदिषासंन्या

सकेसंग्रहवासते अन्यप्रकारतैं संन्यासशब्दकाअर्थकहेहैं ॥ तहां साधनसहितइसलोककेसुखका तथासाधनसहितपरलोककेसुखका त्याग संपदकाअर्थहै ॥ और आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते गुरुकेसमीपस्थित न्यासपदकाअर्थहै ॥ दोनोंपदोंका मिलिकरिके यहअर्थहोवैहै ॥ साधनसहितसंपूर्णसुखोंकापरित्यागकरिकै आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै गुरुकेसमीपस्थिति ॥ यहविविदिषासंन्यासशब्दकाअर्थभी इनसंन्यासियोंविषेहैनहीं ॥ यातैंभी इनोंकासंन्यासनिष्फलहै ॥ किंवा ॥ विविदिषासंन्यास तथा विद्वत्संन्यास येदोनोंसंन्यास मोक्षकेकारणहैं ॥ तेदोनों इनोंविषेहैंनहीं ॥ केवल संन्यासमात्र इनोंनैं धारणकऱ्याहै ॥ केवलसंन्यासमात्रतैं मोक्षहोवैनहीं ॥ जोकेवलसंन्यासमात्रतैंहीमोक्षहोवै तौ संन्यासीकेस्वांगकूंधारणकरणेहारीनटोंकाभी मोक्षहोणाचाहिये परंतुहोवैनहीं॥यातैं संन्यासमात्र मोक्षकाकारणनहीं ॥ किंतु विषयजन्यसुखकीइच्छाकेपरित्यागतैं तथाकामक्रोधादिकोंकेपरित्यागतैं मोक्षहोवैहै ॥शंका॥ जोपुरुष कामक्रोधादिकोंके वशकरणमैं समर्थनहीं है सोपुरुष क्याउपायकरै?॥ समाधान ॥ जोपुरुष सर्वप्रकारतैं कामक्रोधादिकोंकेवशकरणेमैंसमर्थनहींहै ॥ सोपुरुष वारंवार सत्संगकूं तथावेदांतशास्त्रकेविचारकूं करै ॥ जैसे शरदऋतु जलोंकेमलिनताकूंनष्टकरैहै ॥ तैसे सत्संग औरवेदांतशास्त्रकाविचार शनैःशनैःकरिकै कामक्रोधादिकोंकूं नाशकरैहै॥ और जैसे दुष्टअश्व अश्वविद्याकेजानणेहारेपुरुषकरिकै अनंतवारसिखायाहुवाभी चिरकालपीछे आपणेदोषोंतैंरहितहोवैहै॥ तैसे कामक्रोधादिकोंकेवशहुवादुष्टमन गुरुशास्त्रकरिकैसिखायाहुवाभी चिरकालपीछे दोषोंतैंरहितहोवैहै ॥ यातैं श्रद्धाकरिकैव्यवधानतैंरहित चिरकालपर्यंत कियासत्संग औरवेदांतशास्त्रकाविचारही कामक्रोधादिकोंकीनिवृत्तिद्वारा पुरुषोंकेमोक्षकासाधनहै ॥ इनसाधनोंकीभी इनसंन्यासियोंविषे आशाहैनहीं ॥ काहेतैं ये हैंतौमूढ परंतु इनोंकूंआपणेविषे पंडितताकाअभिमानहै ॥ अभिमानीपुरुषतैं सतसंगहोवैनहीं ॥ और इनसंन्यासियोंनैं गुरुवेदांतकेवचनकाभी अनादरकऱ्याहै ॥ और ये आत्मज्ञानतैंरहितहैं ॥ और कर्मक्रियाविषे तत्परहैं ॥ कर्मीपुरुषोंकूं सतरिवर्षतैंअनंतरही संन्यासकाअधिकारहै ॥ ७० सतरिवर्षतैंपूर्व कर्मीपुरुषोंकूं संन्यासकाअधिकार हैनहीं ॥ और जिसपुरुषकूं विषयोंविषेउत्कटवैराग्यहोवै ॥ औरआत्मज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तापुरुषकूं संन्यासकेग्रहणकर

णेविषे कालकानियमनहीं ॥ जबी इच्छाहोवैतबीग्रहणकरै ॥ काहेतें श्रुतिविषे आत्माअनात्माकेविवेकवासते संन्यासकाविधानकऱ्या
है ॥ ताआत्माअनात्माकेविवेककूं येमूढसंन्यासी करतेनहीं यातेंपतितहैं ॥ सुरेश्वराचार्यनें वार्तिकग्रंथविषेभी यहवार्ताकहीहै ॥
श्लोक॥ प्रत्यक्त्वविवेकाय संन्यासःसर्वकर्मणां॥ श्रुत्याविधीयतेयस्मात् तत्त्यागीपतितोभवेत्॥४॥ अर्थयह॥ देहादिकोंतेंआत्माकेवि
वेकवासते सर्वकर्मोंकात्यागरूपसंन्यास श्रुतिनें विधानकऱ्याहै॥ जोपुरुष ऐसेसंन्यासकूंधारणकरिकै आत्मविचारकापरित्यागकरै है
सोपुरुष पतितहोवैहै॥४॥ किंवा॥ जोपुरुष उत्कटवैराग्यतेंरहितहै॥ और ब्रह्मलोककेप्राप्तिकीकामनावालाहै॥ तिसपुरुषकूं७०सतरि
वर्षतेंअनंतर क्रमसंन्यासविषे अधिकारहै ॥ तासंन्यासकरिकै ब्रह्मलोकविषेजावैहै॥ याप्रकारकेक्रमसंन्यासकरिकै तथापूर्वउक्त अ
क्रमसंन्यासकरिकै जेपुरुष रहितहैं॥ केवलवेषमात्र जिनोंनें धारणकऱ्याहै ॥ तिनोंकूं ब्रह्मलोककीप्राप्ति तथामोक्षकीप्राप्ति होवै
नहीं किंतु दोनोंतैंभ्रष्टहोवैहैं ॥ किंवा ॥ येसंन्यासी यद्यपि सदाचारकरिकैयुक्तहैं औरब्राह्मणहैं यातेंउत्कृष्टहैं ॥ तथापि जैसें दुष्ट
अश्व मार्गकापरित्यागकरिकै कुमार्गविषेचालैहै॥ तैसे येसंन्यासीभी आत्मविचाररूपमार्गकापरित्यागकरिकै कुमार्गविषेवर्ततेहैं ॥
इनोंकेशिक्षाकरणेहारा कोईहैनहीं काहेतें शिक्षाकरणेहारा एकतोगुरुहोवैहै॥ और दूसराराजाहोवैहै ॥ तहां गुरुतोइनसंन्यासि
योंकाकोईहैनहीं ॥ जो इनोंकूंबलात्कारतें आत्मविचाररूपमार्गविषेचलावै ॥ और येसंन्यासी आपणेबलकरिकैआपनेकूं वे
दांतविचारविषेप्रवृत्तकरणेमैंभीसमर्थहोवैंगेनहीं ॥ काहेतें मैंइंद्रकरिकैउपदेशकियेहुएभी येसंन्यासी वेदकेअर्थविषे बुद्धिकूंएकाग्र
नहींकरतेभये ॥ यातैं ऐसाजान्याजावैहै इनोंकामन किसीप्रकार वशहोणेवालानहीं ॥ यातें येदुरात्मासंन्यासी राजाकरिकै शास
नकरणेयोग्यहैं ॥ सोराजा तीनलोकोंकामैंइंद्रहूं ॥ यातैंमैंही इनोंकूंशासनकरों ॥ इसप्रकार संन्यासियोंकेअपराधोंकूंविचारिकरिकै ॥१४॥
दंडदेणेकानिश्चयकऱ्या ॥ पुनः याप्रकारकाइंद्र विचारकरताभया ॥ इनसंन्यासियोंकूं कौनदंडकरिये? ॥ तहां धनकाहरणरूपदंड
तो इनोंविषेसंभवैनहीं ॥ काहेतें यासंन्यासियोंकेपास धनकासंग्रहहैनहीं ॥ और दूसरा मस्तककामुंडनरूपदंडभी इनसंन्यासि
योंविषेसंभवैनहीं ॥ काहेतें येसंन्यासी प्रथमहीमुंडितहैं ॥ और तीसरा देशतेंनिकासणारूपदंडहै ॥ सोभी इनसंन्यासियोंविषे

संभवैनहीं ॥ काहेतें संपूर्णदेश हमाराहै ॥ किंवा ॥ इनसंन्यासियोंकूं यास्थूलशरीरकरिकै जोत्रिलोकीतैंबाहरिजाणेकासामर्थ्यहोवै तौ इनोंकूं देशतैंनिकासणारूपदंडसंभवै ॥ सोइनसंन्यासियोंकूं यास्थूलशरीरकरिकै त्रिलोकीतैंबाहरिनिकसणेविषेसामर्थ्यहैन हीं ॥ और संपूर्णत्रिलोकीहमारादेशहै ॥ यातैं देशतैंनिकासणारूपदंडभी इनसंन्यासियोंविषे संभवैनहीं ॥ परिशेषतैं इनसंन्या सियोंविषे शरीरकानाशरूपदंड करनाचाहिये ॥ इसप्रकारकाविचारकरिकै संपूर्णलोकोंकेरक्षणकरणेहारामैंइंद्र वेदांतविचारतैंरहि तसंपूर्णसंन्यासियोंकूं वनविषेहननकरिकै श्वानोंकेतांई देताभया ॥ और तिनसंन्यासियोंकेमस्तक मांसतैंरहितअस्थिरूपहैं ॥ या तैं तेमस्तक भूमिविषेगिडतेभये ॥ और अंतर्यामीमैंइंद्रकरिकैप्रेरणाकरेहुवेतेश्वान कर्मीलोकोंकेदिखावणेवासते तिनसंन्यासियोंके मांसकूंलेकरिकै यज्ञभूमिकेदक्षिणदिशाविषे भक्षणकरतेभये ॥ ताकरिकै कर्मीलोकोंकूं याअर्थकाबोधनकरतेभये ॥ हेकर्मीलोको ! वै राग्यतैंविनातुमोनैं कर्मोंकात्यागनहींकरणा ॥ जोवैराग्यतैंविना तुम कर्मोंकापरित्यागकरोगे तौ जैसे इनसंन्यासियोंकिदुर्गति भयीहै ॥ तैसे तुमकोभीदुर्गतिहोवैगी ॥ याअर्थकेबोधनकरणेवासते मैंइंद्रकरिकैप्रेरणाकरेहुवेश्वान यज्ञभूमिविषे संन्यासियोंकेमांस कूंभक्षणकरतेभये ॥ और तिनसंन्यासियोंके जेवनविषेमस्तकपडेथे ॥ तेमस्तक खर्जूरवृक्षाकारपरिणामकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तिसतैंअ नंतर खर्जूरवृक्षोंकाजोसाररूपरसहै सो ऊर्ध्वभागकूंजाताभया ॥ पुनःसोरस भूमिविषेपतनहोताभया ॥ तारसतैं करीरवृक्ष उत्पन्न होतेभये ॥ तेकैसेकरीरहैं सौम्यस्वभाववालेहैं ॥ याकारणतैंही देवतावोंकीप्रसन्नताकरणेवासते तेकरीर यज्ञकेआहुतीकासाधनहैं ॥ शंका ॥ करीरोंविषेसौम्यता किसहेतुतैंप्राप्तहोतीभयी ॥ समाधान ॥ परंपराकरिकैकरीरोंकी संन्यासियोंतैंउत्पत्तिभयीहै ॥ और सं न्यासी स्वभावतैंक्रोधतैंरहित औरसौम्यस्वभाववान्थे ॥ यातैं कारणकीसौम्यताकरिकै करीरोंविषेसौम्यताहै ॥ शंका ॥ पूर्वआप नैं संन्यासियोंविषे क्रोधादिकोंकाकथनकन्या ॥ और अबी क्रोधादिकोंतैंरहित सौम्यस्वभाव संन्यासियोंकाकह्या ॥ यातैं पूर्वउत्तर कथनका विरोधहोवैहै ॥ समाधान ॥ देहत्यागतैंपूर्व यद्यपि तिनसंन्यासियोंविषेक्रोधादिकथे ॥ तथापि देहकापरित्यागरूपदंडतैं पापरूपक्रोधादिक तिनसंन्यासियोंकेनिवृत्तिहोतेभये ॥ और संन्यासियोंकास्वभावजोसौम्यताहै तिसविषेस्थितहोतेभये ॥शंका॥

तौभी संन्यासियोंकीसौम्यता करीरोंविषे किसप्रकारआवतीभई? ॥ समाधान ॥ तिनसंन्यासियोंकाजोवीर्यहै सो ऊर्ध्वगतिवाला
है ॥ तावीर्यकरिकैयुक्तजेसंन्यासियोंकेमस्तकहैं तिनोंतेंखर्जूरवृक्ष उत्पन्नहोतेभये ॥ और तिनमस्तकोंविषे चिरकालपर्यंत काम
रूपअग्निकेक्षोभतैंरहितवीर्यकूं तिनसंन्यासियोंनैं धारणकर्‍याथा ॥ सोसौम्यस्वभाववान्‌वीर्यही खर्जूररसभावक्रमकरिकै करी
रभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ तासौम्यकरीरोंकीआहुतीकरिकै सर्वकाआत्मा मैंइंद्र प्रसन्नहोताहूं ॥ और सर्वजीवोंकूंउपकारक
रणेहारी सौम्यतमवृष्टिकूं करताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ संन्यासीतो सौम्यहैं ॥ और तिनोंकेवीर्यकापरिणामकरीर सौम्यतरहैं ॥
और करीरोंकापरिणामरूपवृष्टि सौम्यतमहै ॥ इहां तरतमशब्द अधिकताकेवाचकहैं ॥ और करीरशब्द वांसकावाचक
है ॥ शंका ॥ शरीरत्यागतैंअनंतर तिनसंन्यासियोंकी कौनगतिहोतीभयी? ॥ समाधान ॥ पूर्व तासंन्यासियोंकेआत्मविचा
रविषे कोईपापकर्म प्रतिबंधकथा ॥ तापापकर्मकी मुझइंद्रकेदंडकरिकै निवृत्तिहोतीभयी ॥ पश्चात् तेसंन्यासी क्रोधादिकोंतैंर
हितहोतेभये ॥ और याशरीरकूंपरित्यागकरिकै जन्मांतरकूंपावतेभये ॥ ताजन्मांतरविषे ब्रह्मविद्याकेप्रवर्तक जेव्यासभगवा
न् तथानारदादिकऋषिहैं तिनोंकीब्रह्मविद्यारूपसंततिविषे प्राप्तहोतेभये ॥ तहां मैंब्रह्महूं याप्रकारकेआत्मज्ञानकरिकै तिनों
केसंपूर्णविकार नष्टहोतेभये ॥ और मुझइंद्रकेसाथ तेसंन्यासी अभेदभावकूंप्राप्तहोतेभये ॥ हेप्रतर्दन! इसप्रकार विश्वरूपपुरो
हितकूं तथावरशापदेणेविषेसमर्थ औरकर्मकांडविषेतत्पर ऐसेजेब्राह्मणसंन्यासीथे तिनसंन्यासियोंकूं मैंइंद्र हननकरताभया ॥
तौभी आत्मज्ञानकेप्रभावतैं मेरेकूं किंचित्‌मात्रभी पापकास्पर्शनहींहोताभया ॥ हेप्रतर्दन! केवल विश्वरूपपुरोहितकूं तथासंन्या
सियोंकूं हमनैं नहींहननकर्‍या ॥ किंतु अन्यभीकोटीदैत्योंकूं हमनैं हननकर्‍याहै ॥ कैसेतेदैत्यथे? ॥ वेदोंकूंजानणेहारेथे ॥ और मा
याकाआचार्यजोमयदैत्यहै तिसकूंभी मोहकरणेहारियां ऐसीजोमायाहैं तिनमायावोंकरिकैयुक्तथे ॥ और हमारेसमान जिनोंकाब
लथा ॥ कोई हमारेतैंभीअधिकबलवान्‌थे ॥ और सूर्यकीन्याई जिनोंकातेजथा ॥ ऐसेदैत्योंके अनंतप्रकारकीमायाकूं तथाविचित्रब
लकूं तिरस्कारकरिकै जिसआत्मज्ञानकेप्रभावतैं तिनदैत्योंकूं मैंइंद्र हननकरताभया ॥ तहां स्वर्गलोकविषे प्रल्हादकेसंबंधीदैत्यों

कूं मैं हननकरताभया ॥ और अंतरिक्षलोकविषे पुलोमाकेपुत्रोंकूं मैंहननकेरताभया ॥ और भूमिलोकविषे कालखंजनामादैत्यों कूं मैंहननकरताभया ॥ हेप्रतर्दन! इसप्रकार विश्वरूपपुरोहितकूं तथाकोटीसंन्यासियोंकूं तथाकोटीदैत्योंकूं मैंइंद्र हननकरताभया परंतु तिनब्राह्मणोंकेशापकरिकै तथातिनदैत्योंकेशस्त्रोंकरिकै जाआत्मज्ञानकेप्रभावतें मेरारोममात्रभी छेदननहींहोताभया ॥ और लोकविषे मेरीअपकीर्तिभीनहींहोतीभयी ॥ उलटा लोकविषे हमारी याप्रकारकीकीर्तिहोतीभयी ॥ जो लोकवेदकरिकैनिंदित अनंतकर्मोंकूं इंद्र करताभया ॥ तौभी आत्मज्ञानकेप्रभावतें ताकूं किंचित्मात्रभी पापकास्पर्शनहींहोताभया ॥ याप्रकारकीकीर्ति हमारीहोतीभयी ॥ हेप्रतर्दन! निवृत्तिकेउपायतैंरहित जेब्राह्मणसंन्यासियोंकेशापहैं ॥ तथा निवृत्तिकेउपायतैंरहित दैत्योंके ब्रह्मअ स्त्रतैंआदिलैकेजितनेअस्त्रहैं ॥ तथा मयदैत्यकूंभीमोहितकरणेहारियां जितनीदैत्योंकीमायायें हैं ॥ तथा मेरेतैंअधिकबलवान्दै त्योंकरिकै चलायेजेशस्त्रहैं ॥ कैसेहैंतेशस्त्र? मृत्युकेमुखसमानहैं और सुमेरुपर्वतकूंभीभेदनकरणेहारेहैं ॥ याप्रकारके ब्राह्मणोंकेशा प तथादैत्योंकेअस्त्र तथादैत्योंकीमाया तथादैत्योंकेशस्त्र येसंपूर्ण जिसआत्मज्ञानकेप्रभावतें मेरेलोमकूंभी नहींछेदनकरतेभये ॥ हेप्रतर्दन! जैसे मुझइंद्रकूं आत्मज्ञानकेप्रभावतें निषिद्धकर्मोंकेकरणेकरिकैभी पापकास्पर्शनहींहोताभया ॥ तैसे दूसराभीजोकोईदे वता अथवामनुष्य याआत्मज्ञानकूंसंपादनकरैगा ॥ तिसकूंभी आत्मज्ञानकेप्रभावतें निषिद्धकर्मोंकेकरणेकरिकै पापकास्पर्शनहीं होवैगा ॥ पापकेउत्पत्तिकरणेहारेनिषिद्धकर्मोंकूं अब संक्षेपतैंनिरूपणकरै हैं॥ आपणेमातापिताकेनाशकरणेतें जीवोंकूं पापकीउ त्पत्तिहोवैहै ॥ और स्वर्णकीचोरीतें पापकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और वेदपाठीब्राह्मणकेमारणेतें पापकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और गर्भकेना शकरणेतें पापकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और ब्रह्मवेत्तामहात्माकेमारणेतें पापकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और आपणेमित्रकेमारणेतें पापकीउ त्पत्तिहोवैहै ॥ और ब्राह्मणकूं अथवा ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंकूं मदिराकेपानकरणेतें पापकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और आपणी माताकेसाथमैथुनकरणेतें पापकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तिनोंविषेभी स्वर्णकीचोरीकरणेहारापुरुष तथा ब्रह्महत्याकेकरणेहारापुरुष तथा मदिरापानकरणेहारापुरुष ॥ तथा गुरुकीस्त्रीकेसाथमैथुनकरणेहारापुरुष ॥ यचारों कर्मकरिकैचंडालहैं ॥ याकारणतें पतितहैं ॥

याचारोंकेसाथ एकवर्षपर्यंत जोकोईपुरुष खानपानादिकसंबंधकूंकरताहै ॥ सोभी तिनचारोंकेसमानहीपापकूं प्राप्तहो
वैहै ॥ येपंच महापातककहें ॥ इनतैंआदिलैकेजितनेपापकर्मशास्त्रविषेकहैहैं ॥ तिनसंपूर्णपापकर्मोंकरिकै तत्त्ववेत्ताका लोमसा
त्रभीछेदननहींहोता ॥ हेप्रतर्दन ! जिसपुरुषकूं मैंअद्वितीयआत्माकाज्ञानभयाहै ॥ सोपुरुष जोकदाचित् पापकर्मकरणेकीइच्छाभीक
रताहै ॥ तौभी तापापकर्मकरिकै तिसकेमुखकीकांति निवृत्तनहींहोती ॥ और जोआत्मज्ञानतैंरहितपुरुषहै ॥ तिसकी पापकर्मतें मु
खकीकांति निवृत्तहोइजावैहै ॥ यातैं यालोकविषे ब्रह्मविद्याकेसमान कोईभीवस्तुनहीं ॥ ब्रह्मविद्याही सर्वतेंउत्कृष्टहै ॥ और हेप्र
तर्दन! याब्रह्मविद्याका कैसाप्रभावहै? ॥ तत्त्ववेत्तापुरुष पापकर्मकीइच्छाकरैहै अथवाअनंतपापकर्मोंकूंकरैहै ॥ तौभी तिसतत्त्ववेत्तापु
रुषकी सर्वात्मदृष्टीकूंदेखिकरिकै बांधव तथाराजा तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं पंक्तितैंबाहरिनहींकरते ॥ और शरीरकादंडनहींकरते ॥ औ
र वाणीकरिकै तिसतत्त्ववेत्ताकूं शिक्षाभीनहींकरते ॥ उलटा ताकेआत्मज्ञानकेप्रभावकूंदेखिकरिकै विस्मयकूंप्राप्तहुवे बांधव तथा
राजाआदिक तातत्त्ववेत्ताकूं अधिकतैंअधिक आदरकरैहैं ॥ काहेतैं संपूर्णविश्वकूं आत्मस्वरूपकरिकैजानणेहाराजोतत्त्ववेत्तापुरुषहै
तिसतैंभिन्न कोईराजाआदिकहैंनहीं ॥ किंतु संपूर्णराजादिकोंका तत्त्ववेत्तापुरुष आत्माहै ॥ और आपणेआत्माकेअनिष्टकूं को
ईभीप्राणी करतानहीं ॥ यातैं तत्त्ववेत्तापुरुषका बांधव तथाराजादिक कोईभी निरादरनहींकरता ॥ किंतु संपूर्ण ताका आदरकरै
हैं ॥ यातैं अद्वितीयआत्माकाज्ञानही पुरुषोंकूं हिततमहै ॥ इसप्रकार इंद्रकेमुखतैं हिततमआत्मज्ञानकूंश्रवणकरिकै सोप्रतर्दन
राजा आपणेअभिप्रायकेबोधनकरणेहारियां जेशरीरकीचेष्टाहैं तिनचेष्टावोंकरिकै इंद्रसैंपूछताभया ॥ अब ताचेष्टावोंकूंदिखावैहै ॥
इंद्रकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै ताप्रतर्दनराजाकामुख विकासमानहोताभया ॥ और नेत्रभी कमलकीन्याईं प्रफुल्लितहोतेभये ॥ परंतु तुमा
रेवचनोंकरिकै मैंकृतार्थभयाहूं याप्रकारकेवचनकूं तथाविरोधयुक्ततुमारेवचनतैं हमारेकूंसंशयउत्पन्नभयाहै याप्रकारकेवचनकूं सोप्र
तर्दनराजा ! इंद्रकेप्रति नकहताभया किंतु मौनहोताभया ॥ इसप्रकारकीचेष्टाकरिकै प्रतर्दनराजानैं आपणेजडताकूंसूचनकऱ्या ॥
इष्टअर्थऔरअनिष्टअर्थकेदर्शनकरिकै उत्पन्नभयाजो कर्तव्यअर्थकाअनिश्चय ताकानाम जडताहै ॥ तहां इंद्रकूंमैंनैं वरकरिकैवशक

न्याहै ॥ यातैं हिततमआत्मज्ञानकूं अवश्यहमारेतांईदेवैगा ॥ याप्रकारका इष्टअर्थकादर्शन प्रतर्दनराजाकूं होताभया ॥ और मेरे कूंतुमजानो यहवचन जोइंद्रनैंकह्या ॥ इहां मेरेकूं याअस्मत्शब्दके अनेकअर्थ संभवहोइसकतेहैं ॥ जोमैं किंचित्मात्रकथनकरोंगा तौ मेरीबुद्धिकीमंदता सिद्धहोवैगी ॥ याप्रकारके अनिष्टअर्थकादर्शन प्रतर्दनराजाकूं होताभया ॥ इसप्रकार जडभावकूंप्राप्तहुये प्रतर्दनराजाकूंदेखिकरिकै सर्वज्ञइंद्र आपणेमनकरिकै याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ यहप्रतर्दनराजा आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरताहै ॥ आत्मज्ञानकीस्तुतिकरणेहाराजोयहइंद्रहै ॥ तिसनैं आत्मज्ञानविषेहमारेविश्वासकरावणेवासते आपणेकूं पापकर्मोंकाअस्पर्शदिखाया ॥ तौभी इंद्रकरिकैउपदेशकऱ्याजोहिततमज्ञान ताज्ञानकेविषयविषे हमारेकूंसंशयहोवै है ॥ काहेतें मेरेकूंतूंजान यहजोपूर्वहमारेतांई इंद्रनैंउपदेशकऱ्या ॥ इहां मेरेकूं याअस्मत्शब्दकरिकै तथाज्ञानकरिकै कौनअर्थकूं इंद्रनैं बोधनकऱ्या ॥ सहस्रजिसकेनेत्रहैं औरवज्रजिसकेहस्तविषे है औरसंपूर्णदेवता जिसकेपादोंकीसेवाकरै हैं औरशचीकापति ऐसाजो स्थूलशरीरहमारेसन्मुखस्थितहै सो अस्मत्शब्दकाअर्थ है ॥ अथवा याशरीरतैंभिन्न औरशरीरकेअंतर अन्यकोईआत्मा अर्थ है ॥ सोशरीरकेअंतरवर्तमानआत्माभी कौनहै ॥ मेरेकूंतुमजाणो याशब्दकावक्ताजीवात्माहै ॥ अथवा साक्षीआत्माहै ॥ तात्पर्ययह ॥ मेरेकूंतुमजाणो यहजोवचन इंद्रनैंकह्या ॥ इहां मेरेकूं याअस्मत्शब्दका क्याअर्थ है ॥ स्थूलशरीरअर्थ है अथवाजीवात्माअर्थ है अथवासाक्षीचेतनअर्थ है ॥ तहां स्थूलशरीरविषे तथाजीवविषे तो मेरेकूंतुमजाणो याइंद्रकेवाक्यकीविषयता संभवैनहीं ॥ काहेतें स्थूलशरीर तथाजीव दोनों परिच्छिन्नहैं ॥ तापरिच्छिनकेज्ञानतें अपरिच्छिन्नफलकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और तीसराजोसाक्षीकूटस्थहै तिसविषेभी मेरेकूंतुमजाणो याइंद्रकेवचनकी तथाज्ञानकी विषयतासंभवैनहीं ॥ काहेतें सोसाक्षीचेतन मनवाणीकाअगोचरहै ॥ याप्रकारकेसंशयकूं जोमैं प्रगटकरोंगा ॥ तौ मेरेबुद्धिकीमंदतासिद्धहोवैगी ॥ और जोयासंशयकूंनहींप्रगटकरोंगा ॥ तौ हमारेकूं संशयविपर्ययतैंरहित आत्मज्ञान नहींहोवैगा ॥ इसप्रकारकीचिंताकरिकै व्याकुलभयाहैमनजिसका ऐसाजोयहप्रतर्दनराजाहै सोमैंइंद्रकेप्रति किंचित्मात्रवचनकूं नहींकहता ॥ काहेतें आपणेबुद्धिकेन्यूनतासंपादककियाविषे बुद्धिमान्पुरुषोंकीरुचिहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ प्रत

र्दनराजानैं याअभिप्रायकरिकैभी मौनकूंधारणकऱ्याहै ॥ हममनुष्य आपणेहिततमकूंनहींजाणते ॥ यातैं तुम आपहीविचारिकरिकै हिततमवरकूंदेवो ॥ याप्रकार जबीहमनैं इंद्रकेप्रतिकह्या ॥ तबी इंद्र आपहीहमारेवासते हिततमवरकूंकथनकरताभया ॥ यातैं इंद्रकूं वरप्रदानकरिकै हमनैं आपणेवशकऱ्याहै ॥ जोमैं नहींभीपूछोंगा ॥ तौभी आपणीप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासते आपहीइंद्र ह मारेसंशयकीनिवृत्तिकरैंगा॥ याप्रकारका मनविषेविचारकरिकै यहप्रतर्दनराजा हमारेसैंपूछतानहीं ॥ और आत्मज्ञानकीइसकूं प्राप्तिभईनहीं ॥ याकारणतैं मैंकृतार्थहुवाहूं ऐसावचनभी यहप्रतर्दनराजा कहतानहीं ॥ यातैं आपणीप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासतै याप्रतर्दनराजाकूं हिततमआत्मज्ञानविषे जबपर्यंत संशयकाअभावहोवै तबपर्यंत विनाहीपूछेतैं इसकेतांई उपदेशकरणायोग्यहै ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै पुनःइंद्र ऐसाविचारकरताभया ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा अलौकिकपदार्थहै ॥ और मनवाणीकाअगोच रहै ॥ यातैं याआत्माकेसाक्षात्कहणेविषे हमसमर्थनहीं ॥ और यहप्रतर्दनराजाभी साक्षात्आत्माकेजानणेविषे समर्थनहीं ॥ किं तु उपाधिद्वारा आत्माकेकथनविषे हमसमर्थहैं ॥ और यहप्रतर्दनराजाभी उपाधिद्वारा आत्माकेजानणेविषे समर्थहै ॥ यातैं किसी उपाधिकूंद्वारकरिकै प्रतर्दनराजाकेतांई आत्माका मैंउपदेशकरूंगा ॥ तिनउपाधियोंविषेभी स्थूलशरीरतथाइंद्रियादिकउपाधियोंकी अपेक्षाकरिकै क्रियाशक्तिवालाप्राण औरज्ञानशक्तिवालीबुद्धि येदोनोंउपाधियां आत्माकेसमीपहैं ॥ यातैं लोकप्रसिद्धप्राणकूं तथा प्रज्ञारूपउपाधिकूं अंगीकारकरिकै प्रतर्दनराजाकेतांई अलौकिकआत्माका हम कथनकरैं ॥ अब संपूर्णउपाधियोंतैं प्राणऔरप्र ज्ञारूपउपाधिविषे अधिकताकूंदिखावैहैं ॥ प्राणऔरप्रज्ञाकेविद्यमानहुए देहइंद्रियादिकोंकीस्थितिहोवैहै ॥ और प्राणप्रज्ञाकेअ भावहुवे देहइंद्रियादिकोंकीस्थितिहोवैनहीं ॥ याअन्वयव्यातिरेककरिकै संपूर्णशरीरादिकउपाधियोंकीसाधकता प्राणप्रज्ञाविषेसि द्धहोवैहै॥ यातैं प्राणप्रज्ञाही सर्वउपाधियोंतैंउत्कृष्टहै ॥ इहां यहतात्पर्यहै ॥ जिसउपाधिकेकथनकरिकै मुमुक्षुकूं सुखेनहीं आत्माका बोधहोवै और लाघवहोवै ॥ तिसीउपाधिकूंअंगीकारकरिकै तत्त्ववेत्तापुरुषनैं आत्माकाउपदेशकरणा ॥ याप्रकारकानियमभीप्राण प्रज्ञाविषेहीघटेहै ॥ काहेतैं जिसकेविद्यमानहुए देहादिकोंकीस्थिति ॥ और जिसकेअविद्यमानहुए देहादिकोंकाअभाव याअन्व

यव्यतिरेककरिकै देहादिकसंघातकीसाधकता आत्माकालक्षणहै ॥ सोलक्षण प्राणप्रज्ञाविषेभीसंभवैहै ॥ यातैं प्राणप्रज्ञा आत्मा है॥ याप्रकार प्राणप्रज्ञाविषे जबीमुमुक्षुकीआत्मबुद्धिहोवैहै ॥ तबी प्राणप्रज्ञाकेसाक्षात्प्रवर्तकशुद्धआत्माविषेभी सुखैनहीं मुमुक्षुकीबुद्धिहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अत्यंतसूक्ष्मअरुंधतीतारेकूं जाणणेहारापुरुष अन्यकिसीपुरुषकूं जबी अरुंधतीदिखावैहै॥ तबी अरुंधतीकेसमीपवर्ती जेस्थूलतारेहैं तिनोंकूं प्रथम अरुंधतीरूपकरिकैदिखावैहै ॥ जबी देखणेहारेपुरुषकीदृष्टी तिनस्थूलतारोंविषेठहरैहै ॥ तबी क्रमतैंसाक्षात्अरुंधतीविषेभी ताकीदृष्टीपहुचैहै ॥ तैसे शुद्धआत्माकेजनावणेवासते प्राणप्रज्ञाकाही आत्मरूपकरिकै प्रथमउपदेशकरनाचाहियै ॥ किंवा ॥ प्राणप्रज्ञाशब्दकेलक्षणावृत्तिकरिकै आत्माकाबोधमानणेमैं प्राणप्रज्ञाकाआत्माकेसाथ साक्षात्संबंधसंभवैहै ॥ तातैं लाघवभीहै ॥ और शरीरादिकउपाधिकूं अंगीकारकरिकै जोआत्माकाबोधनकरीये ॥ तौ प्राणप्रज्ञाद्वारा आत्माकाबोधहोवैहै साक्षात्बोधहोवैनहीं ॥ और शरीरादिकपदोंकेलक्षणावृत्तिकरिकै आत्माकाबोधमानणेमैं शरीरादिकोंका आत्मकेसाथ प्राणप्रज्ञाद्वारा परंपरासंबंधसंभवैहै ॥ साक्षात्संबंधसंभवैनहीं ॥ सोपरंपरासंबंध गौरवरूपदूषणकरिकैयुक्तहै ॥ यातैं प्राणप्रज्ञारूपउपाधिकूं अंगीकारकरिकै आत्माकेबोधनविषेही सुगमताऔरलाघवताहै॥ शंका ॥ पूर्वउक्तअन्वयव्यतिरेककरिकै देहइंद्रियादिकोंकीसाधकतारूप आत्माकालक्षण प्राणप्रज्ञाविषे संभवैनहीं॥ काहेतैं प्राणप्रज्ञाका परस्पर व्यतिरेकहै ॥ तात्पर्ययह ॥ प्राणकूंछोडिकेप्रज्ञारहैहै और प्रज्ञाकूंछोडिकेप्राणरहैहै ॥ समाधान ॥ क्रियाशक्तिवालाप्राण प्रज्ञातैंविनारहैनहीं ॥ तथा ज्ञानशक्तिवालीप्रज्ञाभी प्राणतैंविनारहैनहीं ॥ जहां प्रज्ञाकाअभावहोवैहै ॥ तहां प्राणकाभीअभावहोवैहै ॥ जैसे स्थावरवृक्षोंविषे प्रज्ञास्वरूपबुद्धि प्रत्यक्षदीखैनहीं ॥ यातैं प्राणभीतिनवृक्षोंविषेदीखैनहीं ॥ शंका ॥ जैसे शरीरविषे शस्त्रकरिकैघावहोवैहै ॥ सोघाव चिरकालपीछेमिलिजावैहै ॥ तैसे वृक्षविषे कुठारादिकोंकरिकैकन्याजोघाव सोभी चिरकालपीछेमिलिजावैहै ॥ और जैसे शरीरकीवृद्धिहोवैहै तैसे वृक्षोंकीभीवृद्धिहोवैहै॥ यातैं घावकामेलनरूपहेतुतैं तथावृद्धिरूपहेतुतैं वृक्षोंविषे प्राणकाअनुमानसंभवैहै॥ यातैं प्रज्ञारूपबुद्धिकूंछोडिकेभी प्राण वृक्षोंविषेरहैहै॥समाधान॥ जैसे घावकेमेलनरूपहेतुतैं तथावृद्धिरूपहेतुतैं वृक्षोंविषे प्राणका

अनुमानसंभवै है ॥ तैसे लताकाउच्चदेशविषेगमनरूपहेतुतैं तिनौंकेप्रज्ञारूपबुद्धिकाभी अनुमानहोइसकैहै ॥ वृक्षौंविषे सूक्ष्मरूप करिकै यद्यपि प्राणप्रज्ञाहैं ॥ तथापि स्पष्टरूपकरिकैनहीं ॥ शंका ॥ जहां प्रज्ञाकाअभावहोवै है ॥ तहां प्राणकाभीअभावहोवैहै ॥ यह पूर्वआपनैंकह्या ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं सुषुप्तिविषे प्रज्ञारूपबुद्धिकेअभावहुवेभी प्राणकीविद्यमानताप्रतीतहोवैहै ॥ समाधान ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे प्रज्ञाकाअत्यंताभावनहीं ॥ किंतु कारणस्वरूपहोइके बुद्धि सुषुप्तिअवस्थाविषेरहैहै ॥ यातैं जहां प्रज्ञाकाअभावहोवैहै ॥ तहां प्राणकाअभावभीअवश्यहोवै है यहसिद्धभया ॥ और जहां प्राणकाअभावहोवै है ॥ तहां प्रज्ञाकाअभावभीअवश्यहोवैहै ॥ जैसे घटादिकौंविषे प्राणकाअभावहै ॥ यातैं तिनौंविषे प्रज्ञाकाभीअभावहै ॥ यातैं प्राण औरप्रज्ञा एककूंदूसरेकूंछोडिकैरहैं नहीं यहसिद्धभया ॥ तेप्राणऔरप्रज्ञादोनों आत्मज्ञानकेहेतुहैं ॥ काहेतैं जैसेस्तंभादिक जडहोणेतैं आपणेप्रतीतिविषे दीपकादिक प्रकाशकीअपेक्षाकरै हैं ॥ तैसे प्राणऔरप्रज्ञाभी जडहोणेतैं आपणीप्रतीतिविषे किसीदूसरेप्रकाशकीअपेक्षाकरैहैं ॥ सो प्राणप्रज्ञाकेप्रकाशकरणेहारा कूटस्थआत्माहै ॥ याप्रकारकीयुक्तिकरिकै प्राणप्रज्ञाकूं आत्मज्ञानकीकारणताहै ॥ इहांयहअभिप्रायहै ॥ प्राणशब्द औरप्रज्ञाशब्द शक्तिवृत्तिकरिकैतौ आत्माकेबोधककहेंनहीं ॥ काहेतैं शक्तिवृत्तिकरिकै सत्यादिकपदभी आत्माकूंबोधनकरैंनहीं ॥ किंतु लक्षणावृत्तिकरिकै प्राणशब्द औरप्रज्ञाशब्द आत्माकेबोधककहैं ॥ सालक्षणा शक्यअर्थकीअनुपपत्तिबिनाहोवैनहीं ॥ जैसे गंगाविषेग्रामहै यावाक्यविषे गंगापदकाशक्यअर्थ जलकाप्रवाहहै ताप्रवाहविषे ग्रामकीअधिकरणता अनुपपन्नहै ॥ यातैं गंगापदकीतीरविषेलक्षणाहोवैहै ॥ तैसे इहांप्रसंगविषेभी प्राणमैंहूं औरप्रज्ञामैंहूं यहवचन इंद्रनैंकह्या ॥ तहां शरीरकेअंतःसंचारी वायु प्राणशब्दकाशक्यअर्थहै ॥ और अंतःकरणकीवृत्तिविशेषबुद्धि प्रज्ञाशब्दकाशक्यअर्थहै ॥ तादोनोंशक्यअर्थोंविषे आत्मता संभवैनहीं ॥ यातैं प्राणशब्दकी तथाप्रज्ञाशब्दकी प्राणप्रज्ञाकेप्रवर्तकचेतनआत्माविषे लक्षणासंभवै है ॥ याअर्थकेनिरूपणकरणे वासते प्रथम प्राणप्रज्ञाशब्दकेशक्यअर्थकूं तथाशक्यअर्थकेअनुपपत्तिकूं दिखावै है॥ तथा प्राण याशब्दविषेदोपदहैं ॥ एकतौ प्र पदहै औरदूसरा अन पदहै ॥ तहां प्र पदका अतिशयअर्थ है ॥ और अन पदका चलनरूपक्रियाअर्थ है ॥ तैसे प्रज्ञा याशब्दविषेभीदो

पदहैं ॥ एकतौ प्र पदहै औरदूसरा ज्ञा पदहै ॥ तहां प्र पदका अतिशयअर्थ है ॥ और ज्ञापदका ज्ञानअर्थ है॥ तिनदोनोंप दोंकामिलिकरिकै यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ अतिशयकरिकैजोचलायमानहोवै सो प्राणकहियेहै ॥ और अतिशयकरिकैजोजाणै सा बुद्धिकहियेहै ॥ शरीरकेअंतरस्थितवायु अतिशयकरिकैचलायमानहोवैहै ॥ यातैं ताकूं प्राणकहैहैं ॥ और अंतःकरण कीवृत्तिविशेषबुद्धि घटपटादिकपदार्थोंकूं अतिशयकरिकैजानैहै ॥ यातैं ताकूं प्रज्ञाकहैहैं ॥ और वास्तवतैंविचारकरिये तौ प्राणविषेचलनाबनैनहीं ॥ काहेतैं प्राणजडहैं ॥ जडविषे स्वतंत्राक्रियाहोवैनहीं ॥ जैसे रथादिकजडपदार्थोंविषे चेतनअश्वादिकोंतैं विना किसीकालविषे तथाकिसीदेशविषे स्वतंत्र चलनरूपक्रियाहोवैनहीं ॥ तैसे जडप्राणविषेभी चेतनतैंविना स्वतंत्र चलनरूप क्रियासंभवैनहीं ॥ याप्रकार बुद्धिविषेभी घटपटादिकपदार्थोंकेजानणेकासामर्थ्य संभवैनहीं ॥ काहेतैं प्राणकीन्यांई बुद्धिभीजड है॥जडवस्तु आपणेकूं तथाअन्यकिसीपदार्थकूं जानैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे प्रथम मूलधन किसीकेपास जबीहोवैहै ॥ तबी ताधनके वृद्धिकीभी संभावनाहोवैहै ॥ मूलधनतैंविना धनकीवृद्धि संभवैनहीं ॥ तैसे सामान्यतैं जबीप्राणविषे चलनरूपक्रियाहोवै और बुद्धिविषे ज्ञानहोवै ॥ तबी ताक्रियाविषे तथाज्ञानविषे अतिशयतारूपविशेषता संभवै ॥ सो जडप्राणविषे चलनरूपक्रियासंभवैन हीं ॥ तथा बुद्धिविषे ज्ञानसंभवैनहीं ॥ यातैं जिसचेतनआत्माकेसमीपताकरिकै शरीरइंद्रियादिकोंविषे तथाअंतरवायुविषे चल नरूपक्रियाहोवैहै ॥ सोचेतनआत्माही प्राणशब्दका लक्ष्यअर्थहै ॥ याप्रकार प्रज्ञाशब्दकालक्ष्यअर्थभी चेतनआत्माहीहै ॥ काहेतैं चेतनआत्माही संपूर्णजडपदार्थाकूं प्रकाशेहै ॥ और स्वप्रकाशतारूपकरिकै भेदरहितआपणेस्वरूपकूंभी चेतनआत्मा प्रका शकरैहै ॥ अन्यकोईपदार्थ आत्माकूंप्रकाशकरैनहीं ॥ ऐसा स्वप्रकाशआनंदस्वरूपमैंआत्माही प्राणप्रज्ञाशब्दकाअर्थहूं ॥ मेरे तैंभिन्नकोईवस्तु प्राणप्रज्ञाशब्दकाअर्थ संभवैनहीं ॥ याप्रकारका आपणेमनविषेविचारकरिकै सोइंद्रदेवता प्रतर्दनराजाकूं कहतामया ॥ हेप्रतर्दनराजा! नानाप्रकारकीक्रियाकाकारणमैंहूं यातैं मैं प्राणस्वरूपहूं ॥ और भेदतैंरहितस्वयंप्रकाशमैंहूं यातैं मैंही प्रज्ञास्वरूपहूं ॥ और संपूर्णप्राणियोंकेजीवनकाकारणमैंहूं यातैं मैंही आयुपहूं ॥ और मैं आपनृत्युमरण

तेंरहितहूं यातें मेंही अमृतस्वरूपहूं ॥ हेप्रतर्दन! प्राण प्रज्ञा आयुष् अमृत ऐसाजोआपणास्वरूप हमनें तुमारेतांई कथनकर्याहै
तिसस्वरूपकूं तुम वारंवारविचारकरो ॥ और अनात्माकार विजातीयवृत्तियोंकापरित्यागकरिकै तास्वरूपाकारसजातीयवृत्तियों
करिकै मेरेस्वरूपकूं साक्षात्कारकरो ॥ दृष्टांत ॥ जैसें यहघटहै याप्रकारकेअनंतज्ञानोंकरिकै एकघटपदार्थ विषयकरीताहै ॥ हेप्रतर्द
न! जैसें पुरुषतें दंडभिन्नहोवैहै॥ तैसें आयुष् औरअमृत यादोनोंविशेषणोंकूं प्राणतेंभिन्ननहीं तुमनें जानणा॥ किंतु आयुष् औरअमृ
तयादोनोंविशेषणोंकूं प्राणतेंअभिन्न जानणा ॥ जैसें आकाशकूं नभकहैहैं ॥ और नभकूं आकाशकहैहैं ॥ आकाशपद औरनभपद
के अर्थकाभेदनहीं ॥ तैसें आयुषअमृतपदकेअर्थका औरप्राणपदकेअर्थका भेदनहीं ॥ किंतु आयुष् औरअमृत प्राणस्वरूपहै ॥ और
प्राण आयुष् अमृतस्वरूपहै ॥ शंका ॥ जो आयुष् अमृत प्राण यातीनोंपदोंका एकहीअर्थमानोंगे ॥ तो पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहो
वेगी ॥ एकअर्थकेबोधकअनेकपदोंकेउच्चारणकानाम पुनरुक्तिहै ॥ जहां पुनरुक्तिदोषहोवैहै ॥ तहां एकपदकूंहीसार्थकताहोवैहै ॥
दूसरेपद व्यर्थहोवैहै ॥ समाधान ॥ जैसें सत्य ज्ञान आनंद यहतीनपद एकहीआत्माकेबोधकहै ॥ परंतु तिनशब्दोंकेप्रवृत्तिकेनि
मित्त भिन्नभिन्नहै ॥ यातें पुनरुक्तिदोषहोवैनहीं ॥ तैसें इहांभी आयुष् अमृत प्राण येतीनपद एकहीअर्थकेबोधकहै परंतु ति
नोंकेप्रवृत्तिकेनिमित्त भिन्नभिन्नहै ॥ यातें पुनरुक्तिदोषहोवैनहीं ॥ अब या अर्थकूंही स्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ लोकोंकेजीवनकाकारण
जोहोवै सो आयुष्कहियेहै ॥ सोजीवनकाकारण प्राणहै ॥ काहेतें शरीरविषे जबपर्यंत प्राणरहैहै ॥ तबपर्यंत ताविषे जीवनव्यव
हारहोवैहै ॥ प्राणतेंविना जीवनव्यवहारहोवैनहीं ॥ यानिमित्तकूंलैके प्राणकूं आयुष्कह्याहै ॥ और शरीरत्यागतेंअनंतर स्वर्गरूप
अमृतकूं तथाशरीरकेविद्यमानहुए मोक्षरूपअमृतकूं प्राणकरिकैही जीव प्राप्तहोवैहै ॥ यानिमित्तकूंलैके प्राणकूं अमृतकह्याहै ॥
सो आयुषअमृतस्वरूपप्राण मैंआत्माहूं ॥ किंवा ॥ जैसें प्राणस्वरूप मैंआत्माहूं ॥ तैसें प्रज्ञास्वरूपभी मैंआत्माहूं ॥ काहेतें ज्ञान
शक्तिरूपप्रज्ञाकरिकैही आकाशादिकव्यावहारिकप्रपंचकूं औरस्वप्नादिकप्रातिभासिकपदार्थोंकूं मैंआत्मा जानोंहूं॥ हेप्रतर्दन! जोपु
रुष प्राणस्वरूपमेंआत्माकूं आयुषरूपकरिकैउपासनाकरैहै ॥ सोपुरुष १०० शतवर्षपर्यंतजीवैहै ॥ और जोपुरुष प्राणस्वरूपमें

आत्माकूं अमृतरूपकरिकैंउपासनाकरैहै ॥ सोपुरुष अक्षयस्वर्गकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष प्राणस्वरूपमैंआत्माकूं आयुष् अमृत दोनोंरूपकरिकै उपासनाकरैहै ॥ सोपुरुष शतवर्षपर्यंतजीवन औरअक्षयस्वर्गकीप्राप्ति यादोनोंफलोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ हेप्रतर्दन! जबी प्राणरूपउपाधियुक्तमैंआत्माके उपासनाकाही ऐसाफल प्राप्तहोवैहै ॥ तबी प्राणरूपउपाधितैंरहित शुद्धआत्माकेज्ञानतैं पुरुषोंकूं महान्‌फलकीप्राप्तिहोवैहै याकेविषे क्याआश्चर्यहै? ॥ इसप्रकार जबीइंद्रनैं प्राणस्वरूपआत्माकूंकह्या ॥ तबीप्रतर्दनराजा ताकेविषे कारणकूंपूछताभया ॥ प्रतर्दनउवाच ॥ हेभगवन्! प्राणस्वरूपमैंहूं याआपकेवचनकूंश्रवणकरिकै और पूर्वउक्तमुनियोंकेवचनोंकूंस्मरणकरिकै मेरेचित्तविषे याप्रकारकासंशयहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ आपनैं प्राणकूंहीप्रधानकह्या ॥ और मुनियोंनें प्राणकूंप्रधानकह्यानहीं ॥ यातैं किसअर्थविषे हम आत्मबुद्धिकरैं ॥ अब तामुनियोंकेवचनोंकूंदिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! एककालविषे हमारी सभामैं मुनिआवतेभये ॥ तेवेदकेवेत्तामुनि किसीप्रसंगपाइके हमारेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ अंतरवायुकरिकेसहितसंपूर्णइंद्रियोंका प्राणशब्द वाचकहै ॥ केवल अंतरवायुकावाचक प्राणशब्दनहीं ॥ काहेतें अतिशयकरिकै आपणव्यापारकूंजोकरै सो प्राणकहियेहै ॥ यह प्राणशब्दकाअर्थ संपूर्णइंद्रियोंविषेभी घटैहै ॥ यातैं संपूर्णइंद्रियोंकूं प्राणशब्दकीअर्थता संभवैहै ॥ तिन संपूर्ण प्राणोंविषे एककूं नियमकरिकेप्रधानतानहीं ॥ किंतु आपणेआपणेव्यापारविषे संपूर्णोंकूं प्रधानताहै ॥ काहेतें वाक्‌इंद्रियका कार्य शब्दउच्चारणहै ॥ और चक्षुइंद्रियका कार्य रूपादिकोंकादर्शनहै ॥ इसप्रकार अन्यइंद्रियोंकेभी आपनेआपनेकार्य भिन्नभिन्नहैं ॥ ताकार्यकेभेदकरिकै यद्यपि इंद्रिय भिन्नभिन्नहैं ॥ तथापि आपणेआपणेकार्यविषे संपूर्णइंद्रिय एकभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ जैसे ग्रामविषेभिन्नभिन्नस्थित महाजनपुरुष विवाहादिककार्यकेवासते संपूर्ण एकभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ जिसकालविषे एकइंद्रिय आपणेव्यापारविषे प्रवर्तहोवैहै तिसकालविषे अन्यइंद्रियोंकी आपणेव्यापारविषे प्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ यहही इंद्रियोंकीएकताहै ॥ काहेतें जिसकालविषे वाक्‌इंद्रिय शब्दकेउच्चारणरूपआपणेव्यापारकूंकरैहै ॥ तिसकालविषे नेत्रादिकइंद्रिय आपणेआपणे व्यापारोंकूंकरैंनहीं ॥ और जिसकालविषे चक्षुइंद्रिय रूपादिकोंकादर्शनरूपव्यापारकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तिसकालविषे वाक्

आदिकइंद्रिय आपणेव्यापारोंकूं उत्पन्नकरैनहीं ॥ इसप्रकार सर्वइंद्रियोंविषे जानिलेणा ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे वरकूं आपणे विवाहविषे प्रधानताहोवैहै ॥ और तिसीवरकूं दूसरेकेविवाहविषे गौणताहोवैहै ॥ यातैं नियमकरिकै वरविषे प्रधानता तथा गौणता नहीं ॥ तैसे वचनादिकव्यापारविषे वाक्इंद्रियकूं प्रधानताहै ॥ और नेत्रादिकइंद्रियोंकूं गौणताहै ॥ और रूपदर्शनवि षे चक्षुइंद्रियकूं प्रधानताहै ॥ वाक्आदिकइंद्रियोंकूं गौणताहै ॥ इसप्रकार सर्वइंद्रियोंविषे आपणेआपणेव्यापारविषे प्रधानता अन्यइंद्रियकेव्यापारविषेगौणता जानिलेणी ॥ नियमकरिकैप्रधानता किसीइंद्रियविषेभीनहीं ॥ यातैं संपूर्णसमानहैं ॥ और श्रुति विषेभी वाक्आदिकसंपूर्णप्राणोंकी समानता तथाअनेकता कथनकरीहै ॥ किंवा युक्तितैंविचारकरिये तौभी वाक्आदिकसंपूर्णप्रा णोंकी समानताही सिद्धहोवैहै ॥ विषमता सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं यहपुरुष जिसकालविषे वाक्इंद्रियकरिकै शब्दका उच्चारणकरै है तिसकालविषे चक्षुइंद्रियकरिकै देखतानहीं ॥ और जिसकालविषे नेत्रकरिकैदेखताहै तिसकालविषे वाक्इंद्रियकरिकै व चनकूंउच्चारणकरतानहीं ॥ इसप्रकार संपूर्णइंद्रियोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रधानताहै ॥ और अन्यइंद्रियकेव्यापारविषे गौ णताहै ॥ जोनियमकरिकै वाक्आदिकइंद्रियोंकूं प्रधानताहीहोवै ॥ तौ दर्शनरूपव्यापारविषे चक्षुकीन्याई वाक्इंद्रियकूंभी प्रधानता होणीचाहिये ॥ और दर्शनरूपव्यापारविषे वाक्इंद्रियकूं प्रधानताहैनहीं ॥ किंवा ॥ जोनियमकरिकै इंद्रियोंविषे गौणताही मानिये ॥ तौ शब्दउच्चारणरूपव्यापारविषेभी वाक्इंद्रियकूं प्रधानतानहोणीचाहिये ॥ किंतु गौणताहोणीचाहिये ॥ और गौणताहोवैनहीं ॥ याप्रकार सर्वइंद्रियोंविषे प्रधानताका तथागौणताकानियमनहीं ॥ किंवा वाक्आदिकसंपूर्णप्राणोंविषे एककालमैंक्रिया होवैनहीं ॥ किंतु एकइंद्रियकेव्यापारकी जबीउपरामताहोवैहै ॥ तबी दूसराइंद्रिय आपणेव्यापारकूंकरैहै ॥ शंका ॥ जो संपूर्णइंद्रिय एकका लविषे आपणेआपणेव्यापारोंकूं नउत्पन्नकरतेहोवैं तौ यहलोकोंकाअनुभव व्यर्थहोवैगा ॥ वाक्इंद्रियकरिकै वचनकूंउच्चारण करताहुवामैं चक्षुइंद्रियकरिकै रूपकूंदेखताहूं ॥ और श्रोत्रइंद्रियकरिकै शब्दकूंश्रवणकरताहूं ॥ और घ्राणइंद्रियकरिकै मैं गंधकूं ग्रहणकरताहूं ॥ और त्वक्इंद्रियकरिकै मैंस्पर्शकूंजानताहूं ॥ और रसनइंद्रियकरिकै मैंरसकूंजानताहूं ॥ और हस्तइंद्रियकरिकै

मैंग्रहणकरताहूं ॥ और पादइंद्रियकरिकै मैंचलताहूं ॥ और उपस्थइंद्रियकरिकै मैंआनंदकूंप्राप्तहोताहूं ॥ और पायुइंद्रियकरिकै मैंमलादिकोंकापरित्यागकरताहूं ॥ और प्राणकरिकै मैंश्वासादिकक्रियाकूंकरताहूं ॥ और अहंकारकरिकै मैंअहंभावकरताहूं ॥ और मनकरिकै मैंसंकल्पविकल्पकूंकरताहूं ॥ और चित्तकरिकै सामान्यरूपतैंपदार्थोंकूं मैंजानताहूं ॥ और बुद्धिकरिकै देहविषेस्थितसुखदुःखादिकपदार्थोंकूं सामान्यरूपतैं तथाविशेषरूपतैं मैंजानताहूं ॥ याप्रकारकेलोकोंकेअनुभवप्रमाणतैं संपूर्णइंद्रियोंविषे एककालमैंहीसंपूर्णव्यापार प्रतीतहोवैहैं ॥ यातैं नियमरहितप्रधानताकूंलेके संपूर्णइंद्रियोंकूं समानकहणा संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ एककालमैं संपूर्णइंद्रियोंकेव्यापारविषे जोलोकोंकाअनुभव तुमनैंकह्या ॥ सोअनुभव भ्रमरूपहै ॥ काहेतैं जिसक्षणविषे एकइंद्रियकाव्यापार होवैहै ॥ तिसक्षणमैं दूसरेइंद्रियकाव्यापार होवैनहीं ॥ किंतु दूसरेक्षणविषे दूसरेइंद्रियकाव्यापार होवैहै ॥ और तीसरेक्षणविषे तीसरेइंद्रियकाव्यापार होवैहै ॥ इसप्रकार क्षणक्षणतैंपीछे इंद्रियोंकाव्यापार होवैहै ॥ परंतु सोक्षण अतिसूक्ष्महै ॥ यातैं अविवेकीपुरुषोंकूं ऐसीभ्रांतिहोवैहै ॥ जो एककालविषे हमारेकूं संपूर्णदर्शनादिकव्यापार उत्पन्नभयेहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे नीचेऊपरिस्थित अनेकपद्मपत्रोंका एककालविषे सूचीकरिकैभेदनहोवैनहीं ॥ किंतु प्रथमक्षणविषे सूचीमैंक्रियाहोवैहै ॥ और द्वितीयक्षणविषे पूर्वदेशतैंसूचीकाविभाग उत्पन्नहोवैहै ॥ और तृतीयक्षणविषे सूचीकेपूर्वसंयोगकानाश होवैहै ॥ और चतुर्थक्षणविषे पद्मपत्ररूपउत्तरदेशकेसाथ सूचीकासंयोग उत्पन्नहोवैहै ॥ इसप्रकार एकएकपत्रकेभेदनविषे चारिचारिक्षणहोवैहैं ॥ परंतु तेक्षण अतिसूक्ष्महैं ॥ यातैं अविवेकीजनोंकूं ऐसीभ्रांतिहोवैहै ॥ जोएककालविषे हमनैं अनंतपद्मपत्रोंकूं सूचीकरिकैभेदनकऱ्या ॥ इसीप्रकार वाक्आदिकप्राणोंकेव्यापारभी भिन्नभिन्नकालविषे उत्पन्नहोवैहैं॥ परंतु सोकाल अतिसूक्ष्महै ॥ यातैं एककालताकीभ्रांति अविवेकीपुरुषोंकूंहोवैहै ॥ यातैं संपूर्णप्राण समानहैं ॥ हेदेवराजइंद्र याप्रकार संपूर्णप्राणोंविषेसमानता मुनियोंनैं पूर्वहमारेप्रति कहीथी ॥ और आपनैं वायुरूपप्राणविषेही आत्मबुद्धिकाविधानकऱ्या ॥ सो किसकारणतैंकऱ्या ? यहसंशय हमारेचित्तविषेहोवैहै॥ याप्रकारकेप्रतर्दनराजाके वचनकूं श्रवणकरिकै प्राणकीप्रधानताविषे कारणकेकथनकीइच्छावान्हुवाइंद्र ताप्रतर्दनकेवचनकूं अंगी

कारकरतामया ॥ और पुनःइंद्र कहतामया ॥ हेप्रतर्दनराजा! इसलोककेजीवनकीकारणता प्राणविषेहै ॥ और परलोककेजीवन
कीकारणताभी प्राणविषेहै ॥अन्यकिसीवाक्आदिकइंद्रियविषेहैनहीं ॥ साजीवनकीकारणताही प्राणविषे आत्मबुद्धिकाहेतुहै ॥ औ
र साजीवनकीकारणताही वाक्आदिकइंद्रियोंतैं प्राणविषेविशेषताहै ॥ दूसरीकोईविशेषताहैनहीं ॥ और हेप्रतर्दन! पूर्वतुमनें ऋषि
योंकेवचनोंकरिकै प्राणविषे प्रधानताका तथागौणताका अनियमकह्या ॥ सोअनियमभी वायुरूपमुख्यप्राणविषे संभवैनहीं ॥
किंतु वाक्आदिकइंद्रियरूपगौणप्राणोंविषेही सोअनियम संभवैहै ॥ काहेतें जबपर्यंत प्राणोंकाव्यापार शरीरविषे होतारहताहै ॥
तबपर्यंत संपूर्णवाक्आदिकइंद्रियोंविषे वचनादिरूपक्रियाहोवैहै ॥ प्राणकाव्यापार जबीउपरामहोवैहै ॥ तबी किसीइंद्रियविषे कोई
भीक्रियाहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकोंकेअनुभवसिद्धहै ॥ और प्राणकेविद्यमानहुए वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ त्वक् चक्षु श्रोत्र
रसन घ्राण यादशइंद्रियोंविषे एकएकइंद्रियकेव्यापारतेंविना अथवा सर्वइंद्रियकेव्यापारतेंविनाभी प्राणियोंकाजीवन देख्याहै ॥
जैसे वाक्इंद्रियकेवचनरूपव्यापारतेंविना मूकप्राणी जीवैहैं ॥ और हस्तइंद्रियकेग्रहणरूपव्यापारतेंविना कुणपपुरुष जीवैहैं ॥ औ
र पायुइंद्रियकेमलविसर्गरूपव्यापारतेंविना कोईरोगीप्राणी जीवैहैं ॥ और उपस्थइंद्रियकेआनंदरूपव्यापारतेंविना ब्रह्मचारी जी
वैहैं ॥ और त्वक्इंद्रियकेस्पर्शनरूपव्यापारतेंविना कुष्ठीप्राणी जीवैहैं ॥ और चक्षुइंद्रियकेदर्शनरूपव्यापारतेंविना अंधपुरुष जीवै
हैं ॥ और श्रोत्रइंद्रियकेश्रवणरूपव्यापारतेंविना बधिरपुरुष जीवैहैं ॥ और रसनइंद्रियकेरसग्रहणरूपव्यापारतेंविना रसनदोषवान्
पुरुष जीवैहैं ॥ और घ्राणइंद्रियकेगंधग्रहणरूपव्यापारतेंविना घ्राणदोषवालेपुरुष जीवैहैं ॥ और अंतःकरणकेनिश्चयरूपव्यापार
तेंविना जडउन्मत्तपुरुष जीवैहैं ॥ इसप्रकार सर्वइंद्रियोंकेव्यापारतेंविना प्राणी जीवैहैं ॥ परंतु प्राणकेव्यापारतेंविना कोईप्राणी
कहांजीवतादेख्यानहीं ॥ यातें सर्वइंद्रियोंतें प्राण उत्कृष्टहै॥ याकारणतें हेप्रतर्दन! प्राणरूपउपाधिकूं अंगीकारकरिकै प्राणस्वरूपमैंहूं
याप्रकारकाउपदेश तुमारेतांई हमनें कह्याहै और संपूर्णवाक्आदिकइंद्रियोंतें प्राणकीउत्कृष्टताकूंअंगीकारकरिकैही श्रुतिविषे प्रा
णोंकीउक्थरूपकरिकै उपासनाकहीहै ॥ गोलककरिकै तथाइंद्रियोंकरिकै तथादेवतावोंकरिकै युक्तहुवाभीयहशरीर मूर्छादिक

अवस्थाविषे मृतककेसमानहोवैहै ॥ तिसशरीरकूं आसनादिकोंतैं यहप्राण उठावैहै॥ याकारणतैं प्राणकूं उक्थनामकरिकै विवेकीपुरुष उपासनाकरैहैं ॥ किंवा ॥ संपूर्णवाक्आदिकोंतैंपूर्व कारणरूपप्राणही उत्थानकूंपावैहै ॥ याकारणतैंभी प्राणकूं उक्थकहैहैं ॥ और जोसर्वतैंपूर्व उत्थानकूंपावैहै सो श्रेष्ठहोवैहै ॥ जैसे हिरण्यगर्भ सर्वतैंपूर्वउत्थानकूंपावैहै यातैंश्रेष्ठहै ॥ तैसे प्राणभीसर्वतैंपूर्व उत्थानकूंपावैहै यातैंश्रेष्ठहै ॥ और जोश्रेष्ठहोवैहै सोहिततमहोवैहै ॥ यातैं प्राणस्वरूपमैंआत्माही हिततमहूं ॥ मेरेतैंभिन्न कोईहिततम नहीं ॥ अब प्राणकूंप्रज्ञास्वरूपतादिखावैहैं ॥ हेप्रतर्दन! जैसे नेत्रादिकज्ञानइंद्रियोंकूं तथावाकादिककर्मइंद्रियोंकूं मुख्यप्रज्ञास्वरूपतानहीं ॥ किंतु अंतःकरणकीवृत्तिकेसंबंधतैं नेत्रादिकइंद्रियोंकूं गौणप्रज्ञास्वरूपताहै ॥ तैसे प्राणकूं गौणप्रज्ञास्वरूपतानहीं ॥ किंतु प्राणकूं मुख्यप्रज्ञास्वरूपताहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे आयुष्यऔरअमृतका तथाप्राणका परस्परभेदनहीं ॥ किंतु प्राणही आयुषअमृतस्वरूपहै ॥ यह पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ तैसे प्राणऔरप्रज्ञाकाभी परस्परभेदनहीं ॥ किंतु प्राणही प्रज्ञास्वरूपहै ॥ किंवा ॥ लोकप्रसिद्धजोवायुरूपप्राणहै ॥ तथा अंतःकरणकीवृत्तिरूपजोप्रज्ञाहै ॥ तेदोनोंभी जैसे खाटकेचारिपाद भिन्नभिन्नहुएप्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे भिन्नभिन्नहोइके प्रतीतहोवैनहीं ॥ किंतु जीवनकालविषे सर्वजीवोंकेशरीरमैं एकठेही प्राणप्रज्ञा प्रतीतहोवैहैं॥ और मरणकालविषेभी एकठेही प्राणप्रज्ञा लोकांतरविषेगमनकरैहैं ॥ यातैं प्राणऔरप्रज्ञा अभिन्नहैं ॥ जबी लोकप्रसिद्धप्राणऔरप्रज्ञाविषे भेदनहींसिद्धभया ॥ तबी प्राणप्रज्ञाशब्दकेलक्ष्यअर्थ अलौकिक अद्वितीय मैंआत्माविषे किसकारणतैंभेदसिद्धहोवै ॥ किंतु किसीप्रकारकरिकै भेदसिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं प्राणप्रज्ञास्वरूप मैंआत्माहूं ॥ किंवा ॥ अन्वयव्यतिरेककरिकैभी प्राणकूंही आत्मतासिद्धहोवैहै ॥ काहेतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे प्राणविद्यमानहै॥ यातैं प्राणका सुषुप्तिमरणविषेअन्वयहै ॥ और वाक्आदिकइंद्रियोंका सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे लयहोवैहै यातैं तिनवाक्आदिकोंका तहांव्यतिरेकहै ॥ याप्रकारका अन्वयव्यतिरेकही प्राणकीआत्मरूपता सिद्धकरैहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ जिससुषुप्तिअवस्थाविषे स्थूलसूक्ष्मशरीरकाअभिमानी यहजीवात्मा शयनकूंप्राप्तहुवा किंचित्मात्रभी स्वप्नपदार्थोंकूं नहींदेखता ॥ तिससुषुप्तिअवस्थाविषे यहजी

यद्यपि जाग्रत्स्वप्नअवस्थाविषेभी अभेदहै ॥ तथापि जाग्रत्[illegible]
त्मा प्राणउपहितपरमात्माकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यद्यपि जाग्रत्स्वप्नअवस्थाविषेभी अभेदहै ॥ और इहांसुषुप्तिअवस्थाविषेतौ केवलअभेदहीहोवैहै ॥
स्वप्नअवस्थाविषे उपाधिकरिकैभेद औरवास्तवतैंअभेद दोनौं विद्यमानहैं ॥ और इहांसुषुप्तिअवस्थाविषेतौ केवलअभेदहीहोवैहै ॥
तात्पर्ययह ॥ वाकादिकपंचकर्मइंद्रिय औरनेत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय औरअंतःकरणचतुष्टय औरवाकादिकइंद्रियोंकेविषय यहसंपूर्ण
उपाधियां जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे आत्माकेभेदकरणेहारीयांहैं ॥ तिनउपाधियोंकरिकैभी सुषुप्तिअवस्थाविषेआ
त्माकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतें यहसंपूर्णवाकादिकइंद्रिय आपणेआपणेविषयोंसहित सुषुप्तिअवस्थाविषे प्राणउपहितमैंपरमात्मा
विषे लयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातें सुषुप्तिअवस्थाविषे मैंपरमात्माकीएकता संभवैहै ॥ और हेप्रतर्दन! मैंआत्माअद्वितीयहूं यातें स्वरूप
तैंमेरेविषेभेदसंभवैनहीं ॥ किंतु वाकादिकउपाधियोंकरिकै मैंआत्माविषेभेद प्रतीतहोवैहै ॥ तेवाकादिकउपाधियां सुषुप्तिअवस्था
विषे लयहोवैहैं ॥ यातें सर्वभेदतैंरहितप्राणस्वरूपमैंआत्माकी एकताही सुषुप्तिअवस्थाविषेसिद्धहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सुषु
प्तिअवस्थाविषे वाकादिकसंपूर्णइंद्रियोंका प्राणविषेलय आपनैंकह्या ॥ यातें यहनिश्चयहोवैहै ॥ वाकादिकइंद्रियोंकाउपादानकारण
प्राणहै ॥ काहेतें कार्यकेलयकाआधार उपादानकारणहीहोवैहै ॥ निमित्तकारण होवैनहीं ॥ जैसे घटकेलयकाआधार मृत्तिकाहै ॥ कु
लालहैनहीं ॥ यातें कुलालकीन्यांई वाकादिकइंद्रियोंका प्राणतैंभिन्नहीकोई निमित्तकारण कह्याचाहिये ॥ समाधान ॥ हेप्रतर्दन!
वाकादिकइंद्रियोंका उपादानकारण तथानिमित्तकारण प्राणस्वरूपमैंआत्माहीहूं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे एकहीऊर्णनाभिजंतु तंतुकाउ
पादान तथानिमित्तकारण होवैहै ॥ अन्यदृष्टांत ॥ जैसे नैयायिकोंकेमतविषे घटईश्वरकेसंयोगका एकईश्वरही उपादान तथा
निमित्तकारण होवैहै ॥ और हेप्रतर्दन! सुषुप्तिअवस्थाविषे जिसप्राणस्वरूपमैंआत्माविषे वाकादिकइंद्रिय लयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥
तिसीप्राणस्वरूपमैंआत्मातें जाग्रत्अवस्थाविषे संपूर्णवाकादिकइंद्रिय उत्पन्नहोवैहैं ॥ और जैसे मृत्तिकातैंउत्पन्नभयाघट मृत्ति
कातैंभिन्नहोवैनहीं ॥ तैसे प्राणस्वरूपमैंआत्मातैं उत्पन्नभयेवाकादिकइंद्रिय मेरेतैंभिन्न किसीप्रकारहोवैनहीं ॥ शंका ॥
हेभगवन्! जबी वाकादिकइंद्रिय प्राणस्वरूपआत्मातैंभिन्ननहीं तबी भिन्नहोइकेकाहेतैंप्रतीतहोतेहैं? ॥ समाधान ॥ हेप्रतर्दन!

येवाकादिक प्राणस्वरूपमैंपरमात्माकीविभूतियांहैं ॥ यातैं मैंआत्मातैंभिन्नहोइकेउत्पन्नहोवैंनहीं ॥ किंतु मेरास्वरूपहुएही मेरेतैंउत्पन्नहोवैंहैं ॥ अविवेकतैं तिनोंकाभेद प्रतीतहोवैंहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! वाकादिकइंद्रियरूपविभूतियोंकीप्राणस्वरूप आत्मातैं अभिन्नरूपकरिकै आपनैं उत्पत्तिकही ॥ सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं लोकविषे भिन्नोंकाही कार्यकारणभाव देख्याहै ॥ समाधान ॥ भिन्नोंकाही कार्यकारणभावहोवैंहै ॥ यहनियम संभवैनहीं ॥ किंतु अभिन्नोंकाभी कार्यकारणभावहोवैंहै ॥ जैसे प्रज्वलितअग्नितैं कण उत्पन्नहोवैंहैं ॥ तेकण अग्नितैंभिन्ननहीं किंतुअभिन्नहैं ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषे प्राणस्वरूपमैंआत्मातैं वाकादिकइंद्रिय उत्पन्नहोवैंहै ॥ तावाकादिकइंद्रियोंतैं अग्निआदिकदेवता उत्पन्नहोवैंहैं ॥ ताअग्निआदिकदेवतावोंतैं शब्द उच्चारणादिकविषय उत्पन्नहोवैंहैं ॥ अब दृष्टिसृष्टिवादकेस्पष्टकरणेवासते याहीअर्थकूं युक्तियोंकरिकै निरूपणकरैंहैं ॥ हेप्रतर्दन! सुषुप्तिअवस्थाविषे सुषुप्तपुरुष विषयसहितवाकादिकइंद्रियोंकूं देखतानहीं ॥ तथा अन्यकोईजाग्रत्पुरुषभी सुषुप्त पुरुषकेवाकादिकइंद्रियोंकूं देखतानहीं ॥ और सुषुप्तपुरुषकेप्राणकूंतौ अन्यजाग्रत्पुरुषदेखैंहैं ॥ याकारणतैंभी प्राणकूंही वाकादिकइंद्रियोंकीकारणता सिद्धहोवैंहै ॥ काहेतैं जिसवस्तुकेविद्यमानहुएही जोवस्तु प्रतीतहोवैं ॥ और जिसवस्तुकेविद्यमानहुएभी जोवस्तु तहांनप्रतीतहोवैं ॥ तिसवस्तुका सोवस्तु कार्यहोवैंहै ॥ जैसे मृत्तिकाकेविद्यमानहुएही घटादिक प्रतीतहोवैंहैं ॥ और घटकी उत्पत्तितैंपूर्व मृत्तिकाकेविद्यमानहुएभी घटादिक तहांप्रतीतहोवैंनहीं ॥ यातैंमृत्तिकाके घटादिक कार्यहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जिसकेविद्यमानहुवे जोप्रतीतहोवैंहै ॥ सो ताकाकार्यहोवैंहै ॥ यहकार्यकालक्षण आपनैंकह्या ॥ सोलक्षण अतिव्याप्तिदोषवालाहै ॥ काहेतैं सूर्यादिकप्रकाशकेविद्यमानहुएही घटादिकोंकी चक्षुइंद्रियकरिकैप्रतीतिहोवैंहै ॥ प्रकाशतैंविना अंधकारविषेस्थितघटादिकोंकी प्रतीतिहोवैंनहीं ॥ यातैं घटादिकभी प्रकाशकेकार्य होणेचाहिये ॥ और प्रकाशकेकार्य घटादिकहैंनहीं ॥ समाधान ॥ जिसवस्तुकेविद्यमानहुएही जोवस्तु उत्पन्नहोवैं ॥ और तिसवस्तुतैंभिन्नकिसीवस्तुतैं उत्पन्नहोवैंनहीं ॥ और तिसवस्तुकेविद्यमानहुएभी जोवस्तु कदाचित्तहांउत्पन्नहोवैंनहीं ॥ सोवस्तु तिसवस्तुका कार्यहोवैंहै ॥ जैसे तंतुकेविद्यमानहुएही पट उत्पन्नहोवैंहै ॥

तंतुतैंभिन्नमृत्तिकाकेविद्यमानहुएभी पटकीउत्पत्तिहोवैनहीं॥ और पटकीउत्पत्तितैंपूर्व तंतुवोंकेविद्यमानहुएभी तुरीवेमादिकसामग्री
तैंविना तहां पट उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं तंतुवोंका पटकार्यहै ॥ और मृत्तिकाकाकार्यघटहै॥ सूर्यादिकप्रकाशका घटकार्यनहीं ॥ यातैं
यहकार्यकालक्षण निर्दोषहै॥ सोयहकार्यकालक्षण वाकादिकइंद्रियोंविषेभीघटैहै॥ काहेतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे प्राणकेविद्यमानहुएभी
तहांवाकादिकइंद्रिय उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे प्राणकेविद्यमानहुएही वाकादिकइंद्रिय उत्पन्नहोवैहैं ॥ और प्रा
णतैंभिन्नकिसीकारणतैं वाकादिक उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं वाकादिकइंद्रिय प्राणकाकार्यहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अग्निकूंछोड़िकै
धूमरहैनहीं ॥ किंतु जहांधूमरहैहै तहां अवश्य अग्निरहैहै ॥ और अग्नितौ धूमकूंछोड़िकरिकैभी तप्तलोहविषे रहैहै॥ यातैं अग्नि
व्यापकहै औरधूम व्याप्यहै ॥ तैसे प्राणकूंछोड़िके वाकादिकइंद्रिय रहैंनहीं ॥ और प्राणतौ सुषुप्तिअवस्थाविषे वाकादिकइंद्रि
योंकेलयहुएभीरहैहै ॥ यातैं प्राण व्यापकहै ॥ और वाकादिकइंद्रिय व्याप्यहैं ॥ कारण व्यापकहोवैहै ॥ और कार्य व्याप्यहोवैहै ।
किंवा ॥ सुषुप्तिविषे विषयसहितवाकादिकइंद्रियोंकासमूह जोप्राणविषेलय नहींभयाहोवै ॥ तौ सुषुप्तिविषे सुषुप्तपुरुषकरिकै
तथाअन्यजाग्रत्पुरुषकरिकै सविषयवाकादिकइंद्रिय प्रतीतहोणेचाहिये ॥ और सुषुप्तिविषे सविषयवाकादिकइंद्रिय प्रतीतहोवैं
नहीं ॥ यातैं ऐसाजान्याजावैहै ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे विषयसहितवाकादिकइंद्रिय प्राणविषेलयहुएहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे दंडादिकों
करिकैप्रध्वंसहुवाघट मृत्तिकारूपआपणेकारणविषे लयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! वाकादिकइंद्रियोंका तथाशब्दउच्चार
णादिकविषयोंका परस्परभेदहै ॥ यातैं सुषुप्तिविषे वाकादिकइंद्रियोंकेलयहुएभी तिनोंकेविषयोंकालय संभवैनहीं ॥ समाधान ॥
कारणकेअभावहुए कार्य उत्पन्नहोवैनहीं ॥ जैसे प्रदीपतैंविना प्रदीपकाकार्यप्रभा उत्पन्नहोवैनहीं ॥ तैसे वाकादिकइंद्रियोंकेलयहुए
तिनोंकेकार्य शब्दउच्चारणादिकविषयभी सुषुप्तिअवस्थाविषे उत्पन्नहोवैंनहीं ॥ यातैं तिनविषयोंकाभीलयसंभवैहै ॥ किंवा ॥ जोव
स्तुका जिसवस्तुविषे लयहोवैहै ॥ सोवस्तु किसीवस्तुतैं उत्पन्नहोवैहै यहनियमहै ॥ जैसे प्रज्वलितअग्निविषे कणोंका लयहोवै
है ॥ और तिसीअग्नितैं तिनकणोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे वाकादिकइंद्रियोंका प्राणविषेलयहोवैहै ॥ और

जाग्रत् अवस्थाविषे तिसीप्राणतैं वाकादिकोंकी उत्पत्तिहोवैहै ॥ शंका ॥ हे भगवन्! जैसे अग्निविषे जोजोकण लयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ सोसोकण पुनःउत्पन्नहोवैनहीं ॥ किंतु तिनोंतैंभिन्नहीकण उत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे सुषुप्तिमें प्राणविषेलयभयेजे वाकादिकइंद्रिय ॥ तिनोंतैंभिन्नहीवाकादिकइंद्रियोंकी जाग्रत्‌विषे उत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ जैसे अग्नितैंउत्पन्नहुवाकण पूर्वविलीनकणतैंभिन्न प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे जाग्रत्‌विषे प्राणतैंउत्पन्नभयेवाकादिक पूर्वविलीनवाकादिकोंतैं भिन्नहुवेप्रतीतहोवैनहीं ॥ किंतु सुषुप्तिविषे जेवाकादिकइंद्रिय प्राणविषेलयभयेथे ॥ तेहीवाकादिकइंद्रिय पुनःजाग्रत्‌विषे प्राणतैंउत्पन्नहुएप्रतीतहोवैहैं ॥ यातैं तिनोंकेभेदविषे प्रत्यक्षप्रमाणसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ वर्तमानवाकादिकइंद्रियोंतैं पूर्वविलीनवाकादिकइंद्रियोंकाभेद अनुमानप्रमाणतैंसिद्धहोवैहै ॥ ताअनुमानकाप्रकारयहहै ॥ पूर्ववाकादिकइंद्रियजेहैं ते वर्तमानवाकादिकइंद्रियोंतैंभिन्नहैं ॥ काहेतैं विलीनहोणेतैं ॥ जोजोवस्तु पूर्वविलीनताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोसो वर्तमानवस्तुतैंभिन्नहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पूर्वअग्निविषेविलीनहुएकण वर्तमानकणतैंभिन्नहैं ॥ या अनुमानप्रमाणतैं पूर्वउत्तरवाकादिकइंद्रियोंका भेदहीसिद्धहोवैहै ॥ समाधान ॥ याअनुमानतैंभी वाकादिकइंद्रियोंकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं जोहेतु आपणेसाध्यकूंछोडिकेअन्यत्ररहेनहीं ॥ ताहेतुतैं तिससाध्यकीसिद्धिहोवैहै ॥ जैसे धूमरूपहेतु वन्हिरूपसाध्यकूंछोडिके अन्यत्ररहैनहीं ॥ यातैं धूमरूपहेतुतैं पर्वतविषे वन्हिकीसिद्धिहोवैहै ॥ और जोहेतु आपणेसाध्यकूंछोडिके अन्यत्रभी रहैहै ॥ ताहेतुतैं तिससाध्यकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ जैसे प्रमेयत्वहेतु वन्हिकेअभाववालेजलादिकोंविषेभीरहैहै ॥ यातैं प्रमेयत्वरूप व्यभिचारीहेतुतैं पर्वतविषेवन्हिरूपसाध्यकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ तैसे यहविलीनत्वरूपहेतुभी भेदरूपसाध्यकूंछोडिके अन्यत्रवर्तैहै ॥ यातैं व्यभिचारीहै ॥ काहेतैं बहुतधूलीकरिकेआच्छादितजोघटहै ॥ तिसविषे विलीनत्वरूपहेतुतौरहैहै ॥ परंतु वर्तमानतिसीघटतैंताकाभेदहोवैनहीं ॥ किंतु जोपूर्वधूलीकरिकेआच्छादितघटथा ॥ सोईहीघट धूलीतैंरहितहुवा प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं विलीनत्वरूप व्यभिचारीहेतुतैं वाकादिकइंद्रियोंकेभेदकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ धूलीकरिकेआच्छादितघटविषे जैसे वर्तमानतिसीघटकाभेदरूपसाध्यनहीं ॥ तैसे विलीनत्वरूपहेतुभी ताकेविषेनहीं ॥ यातैं विलीनत्वरूपहेतु व्यभिचारीनहीं ॥ समाधान ॥ वस्तुकेअदर्शन

कानाम लयहै ॥ अदर्शनतैंभिन्न कोईलयशब्दकाअर्थनहीं ॥ जैसे स्वप्नकेपदार्थोंकाजाग्रत्विषेदर्शनहोवै नहीं ॥ यातैं स्वप्नपदार्थोंका
जाग्रत्विषेलयकहीताहै ॥ तैसे धूलीकरिकैआच्छादितघटकाभी ताकालविषेदर्शनहोवैनहीं ॥ यातैं विलीनत्वरूपहेतु ताघटविषेसंभ
वैहै ॥ शंका ॥ अदर्शनकानामलयहै यहआपनैंकह्या ॥ सो यद्यपि प्रातिभासिकस्वप्नपदार्थोंविषेतौ घटैहै ॥ तथापि व्यावहारिकप
दार्थोंविषे घटैनहीं ॥ काहेतैं जोसर्वत्र अदर्शनकानामही लयहोवै ॥ तौ देशांतरविषेस्थितपुत्रादिकबांधवोंकादर्शन किसीकूंहोवैन
हीं ॥ यातैं मेरेपुत्रादिकबांधव लयहुएहैं याप्रकारकाव्यवहार लोकविषेहोणाचाहिये ॥ और ऐसाकोईकथनकरतानहीं ॥ यातैं अ
दर्शनकानाम लयनहीं ॥ समाधान ॥ जिसकालविषे पुत्रादिकबांधवोंकाअदर्शनहोवैहै ॥ तिसकालविषे तिनोंकालयहीहोवैहै ॥
और जिसकालविषे तिनपुत्रादिकबांधवोंकादर्शनहोवैहै ॥ तिसकालविषे तिनोंकीपुनःउत्पत्तिहोवैहै ॥ याअर्थमानणेविषे किंचिन्मा
त्रभी हमारीहानीनहीं ॥ शंका ॥ जोलयहुएपुत्रादिकोंकीपुनःउत्पत्तिमानोंगे ॥ तौ मृत्युहुएपुत्रादिकबांधवोंकीभी पुनःउत्पत्तिहोणी
चाहिये ॥ और मृतहुएपुत्रादिकबांधवोंकूं पुनःकोईदेखतानहीं ॥ समाधान ॥ पुत्रादिकबांधवोंकेदर्शनविषे मरण तथा जीवन कार
णनहीं ॥ किंतु तिनोंतैंभिन्नही अदृष्टादिककारणहैं ॥ काहेतैं अत्यंतदूरदेशविषेस्थित जीवतेहुएबांधवोंकाभी कदाचित् पुनःदर्शन
होतानहीं ॥ यातैं जीवन तथामरण पुनःदर्शनकेकारणनहीं ॥ शंका ॥ दूरदेशविषेस्थितबांधवोंकादर्शन तादेशविषेजाणेकरिकै सं
भवैहै ॥ और मृतबांधवोंकादर्शन किसीप्रकारसंभवैनहीं ॥ यातैं जीवनही पुनःदर्शनकाकारणहै मरणनहीं ॥ समाधान ॥ जैसे
जीवनकूं कदाचित् पुनःदर्शनकीकारणता तुमनैं दिखाई ॥ तैसे मरणकूंभी कदाचित् पुनःदर्शनकीकारणतासंभवैहै ॥ काहेतैं स्वप्न
विषे चिरकालमरेहुएबांधवोंकाभी कदाचित् लोकोंकूंदर्शनहोवैहै ॥ यातैं नियमकरिकै जीवन तथामरण पुनःदर्शनकेकारणनहीं ॥
किंतु अदृष्टादिकही पुनःदर्शनकेकारणहैं ॥ शंका ॥ दर्शनकालविषे पुत्रादिकबांधवोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ यह पूर्वआपनैंकह्या ॥
सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं लोकविषे जेजेपुत्रादिक उत्पन्नहोवैहैं ॥ तिनोंकूं याप्रकारकाज्ञान नियमतैंहोवैहै ॥ देवदत्तनामामैं
यज्ञदत्तनामापितातैं उत्पन्नभयाहूं ॥ यातैं ऐसाजान्याजावैहै ॥ तिसपितातैं मैंउत्पन्नभयाहूं याप्रकारकाज्ञानतौ व्यापकहै ॥

और पुत्रादिकोंकीउत्पत्ति व्याप्यहै ॥ व्यापकतैंविना व्याप्यकीस्थितिहोवैनहीं ॥ जैसे अग्नितैंविना धूमकीस्थितिहोवैनहीं ॥ जोदर्शनविषे पुत्रादिकोंकीउत्पत्तिहोतीहोवै ॥ तौ तिसतैं मैंअबीउत्पन्नभयाहूं ऐसाज्ञान पुत्रादिकोंकूंहोणाचाहिये ॥ और ऐसा ज्ञान किसीकूंहोतानहीं ॥ यातैं व्यापकरूपज्ञानकेअभावहोणेतैं ताज्ञानकाव्याप्यरूप जापुत्रादिकोंकीउत्पत्ति साभी दर्शनकालविषे होवैनहीं ॥ समाधान ॥ तिसतैंमैंउत्पन्नभयाहूं याज्ञानकूं उत्पत्तिकीव्यापकता जोसर्वत्रहोवै तौ तुमारापूर्वपक्ष संभवै ॥ परंतु ता ज्ञानकूं उत्पत्तिकीव्यापकता सर्वत्रहैनहीं ॥ काहेतें घटादिकजडपदार्थोंकी उत्पत्तितौंहोवैहै ॥ परंतु घटादिकजडपदार्थोंविषे तिस तैं मैंउत्पन्नभयाहूं याप्रकारकाज्ञानहोवैनहीं ॥ शंका ॥ तिसतैंमैंउत्पन्नभयाहूं याप्रकारकाज्ञान यद्यपि घटादिकजडदार्थोंविषेतौहैन हीं ॥ तथापि घटादिकोंकेद्रष्टापुरुषकूं याप्रकारकाज्ञानहोवैहै ॥ मृत्तिकादिकोंतैं यहघट उत्पन्नभयाहै ॥ यातैं जहांउत्पत्तिहोवैहै ॥ तहां याप्रकारकाज्ञान अवश्यहोवैहै ॥ समाधान ॥ द्रष्टापुरुषकेज्ञानकूं घटकेउत्पत्तिकीव्यापकता संभवैनहीं ॥ काहेतें एकअधिक रणविषेरहणेहारेपदार्थोंकाही परस्पर व्याप्यव्यापकभाव होवैहै ॥ जैसे एकअधिकरणविषेरहणेहारे धूम तथावन्हिका परस्पर व्याप्यव्यापकभावहोवैहै ॥ और जेभिन्नभिन्नअधिकरणविषेरहैहैं ॥ तिनोंका परस्परव्याप्यव्यापकभावहोवैनहीं ॥ जैसे शीतस्पर्श का तथाउष्णस्पर्शका परस्पर व्याप्यव्यापकभाव होवैनहीं ॥ तैसे उत्पत्तिका तथापूर्वउक्तज्ञानका एकअधिकरणहैनहीं ॥ किंतु उत्पत्तिकाअधिकरणतौघटहै ॥ और ज्ञानकाअधिकरण घटकाद्रष्टापुरुषहै ॥ भिन्नभिन्नअधिकरणविषेरहणेहारे उत्पत्तितथाज्ञा नका परस्पर व्याप्यव्यापकभावमानणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ यातैं उत्पत्तिका तथापूर्वउक्तज्ञानका परस्परव्याप्यव्यापकभाव सं भवैनहीं ॥ शंका ॥ घटादिकजडपदार्थोंकेउत्पत्तिका तथापूर्वउक्तज्ञानका परस्पर व्याप्यव्यापकभाव यद्यपि संभवैनहीं ॥ तथा पि चैतन्यमनुष्यादिकोंकूं तिसतैंमैंउत्पन्नभयाहूं याप्रकारकाज्ञान होवैहै ॥ यातैं चैतन्यमनुष्यादिकोंकेउत्पत्तिकाही पूर्वउक्तज्ञान व्यापकहै ॥ जडोंकेउत्पत्तिका व्यापकनहीं ॥ समाधान ॥ तिसतैंमैंउत्पन्नभयाहूं याप्रकारकाज्ञान चेतनमनुष्यादिकोंकेउत्पत्तिका व्यापकभी संभवैनहीं ॥ काहेतें चेतनमनुष्यादिकभी उत्पत्तितैंअनंतर याप्रकारजाणतेनहीं ॥ जोइसतैंहमउत्पन्नभये हैं ॥ किंतु माता

तथा पिताकेवचननोंतें ताबालककूं चिरकालकेपीछे सोज्ञानहोवैहै ॥ यातें चेतनकेउत्पत्तिका पूर्वउक्तज्ञानव्यापकहै यहतुमाराकहणाभी व्यर्थहै ॥ किंवा चेतनकेउत्पत्तिका पूर्वउक्तज्ञान व्यापकहै ॥ यहतुमारावचन मेरेमुखविषेजिव्हानहीं है याप्रकारकेवचनकीन्यांईव्याघातदोषकरिकैयुक्तहै ॥ काहेतें चैतन्य आत्मास्वरूपहै यातेंनित्यहै ॥ तानित्यचैतन्यकीउत्पत्तिकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ शंका ॥ सो यहदेवदत्तनामापुरुष उत्पन्नभयाहै याप्रकारकाअनुभव सर्वपुरुषोंकूंहोवैहै ॥ यातें चैतन्यकीभीउत्पत्तिसंभवैहै ॥ समाधान ॥ सो लोकोंकाअनुभव जोयथार्थहोवै तौ चैतन्यकेउत्पत्तिकूंसिद्धकरै ॥ परंतुसोलोकोंकाअनुभव भ्रांतिरूपहै ॥ काहेतें अन्यवस्तुकेधर्मोंका अन्यवस्तुविषेआरोपणकानाम भ्रांतिज्ञानहै ॥ जैसे रज्जुविषे यहसर्पहै याप्रकारकाज्ञान भ्रमरूपहै ॥ तैसे उत्पत्ति तथानाश दोनों देहकेधर्म हैं ॥ चैतन्यकेधर्मनहीं ॥ परंतु अज्ञानरूपदोषकरिकै अविवेकीपुरुष चैतन्यआत्माविषे उत्पत्ति तथानाश मानै हैं ॥ यातें तेपुरुष भ्रांतहैं ॥ तिनोंकेअनुभवतें चैतन्यकेउत्पत्तिकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ जोचैतन्यकीउत्पत्ति तथानाश नहींहोताहोवै ॥ तौ दर्शनकालविषेपुत्रादिकोंकीउत्पत्ति तथाअदर्शनकालविषेतिनोंकालय याप्रकारकादृष्टिसृष्टिवाद तुमारा कैसेसिद्धहोवैगा ? ॥ समाधान ॥ दर्शनकालविषे तथाअदर्शनकालविषे चैतन्यकीउत्पत्ति तथानाश हमभीअंगीकारकरतेनहीं किंतु तहांभी शरीरादिकअनात्मपदार्थोंकाही उत्पत्ति तथा नाश होवैहै ॥ किंवा जन्मशब्दकेअर्थकाविचारचाकरिये तौभी दृष्टिसृष्टिवादहीसिद्ध होवै ॥ काहेतें प्रादुर्भावकानामजन्महै ॥ सोप्रादुर्भाव दर्शनतेंभिन्ननहीं ॥ किंतु वस्तुकादर्शनही प्रादुर्भावहै जैसे प्रातःकालविषे जब सूर्यकादर्शनहोवैहै ॥ तब लोक ऐसाकथनकरै हैं ॥ सूर्यकाप्रादुर्भावभयाहै ॥ यालोकोंकेव्यवहारतें दर्शनकानामही प्रादुर्भावसिद्धहोवै है ॥ यातें पुत्रादिकपदार्थोंकादर्शनही तिनपुत्रादिकोंकीउत्पत्तिहै ॥ और पुत्रादिकोंकाअदर्शनही तिन पुत्रादिकोंकालयहै ॥ यहदृष्टिसृष्टिवादही उत्तमसिद्धांतहै ॥ शंका ॥ जैसे प्रथम माताकेउदरतें जबीपुत्रकीउत्पत्तिहोवै है ॥ तबी पिता ताबालककेजन्मसंस्कारोंकूंकरै है ॥ तथा देवदत्तादिकनामकूं राखेहै ॥ तैसे पुत्रकेदर्शनकालविषेभी जन्मकेसंस्कार होणेचाहिये ॥ काहेतें तुमारेमतविषे जबीजबी पुत्रकादर्शनहोवै है तबीतबी तापुत्रकाजन्महोवै है ॥ समाधान ॥ यहदोष केवल

हमारेमतविषेनहीं ॥ किंतु तैंवादीकेमतविषेभी यहदोष समानहै ॥ काहेतें तेरेमतविषे जैसेज्येष्ठपुत्रकेशरीरतें कनिष्ठपुत्रकाशरीरभिन्नहै ॥ यातें तिनकेसंस्कारभी भिन्नभिन्नहोवैहैं॥तैसे पुत्रकेबाल्यशरीरतें यौवनशरीरभीभिन्नहै॥ बाल्यशरीरका तथायौवनशरीरका अभेद तेरेकूंभीअंगीकारनहीं ॥ यातें बाल्यशरीरकीन्यांई यौवनशरीरकेउत्पन्नहुएभी पुनःजन्मकेसंस्कारहोणेचाहिये ॥ और युवाअवस्थाकेप्राप्तहुए जन्मकेसंस्कारोंकूं कोईकरतानहीं ॥ शंका॥ बाल्यशरीरका तथायौवनशरीरका परस्परभेदनहीं किंतुअभेदहै ॥ यातें जन्मकेसंस्कारोंकीआपत्तिरूपदोष हमारेमतविषेसंभवैनहीं ॥समाधान॥बाल्यशरीरका तथायौवनशरीरका अभेदसंभवैनहीं॥ काहेतें बाल्यशरीरकेपरिमाणतें यौवनशरीरकापरिमाण भिन्नहै ॥ आश्रयकेभेदतेंविना परिमाणकाभेद संभवैनहीं॥ जैसे पंचहस्तपरिमितपटतें दशहस्तपरिमितपट भिन्नहोवैहै॥ तैसे अल्पपरिमाणवालेबाल्यशरीरतें दीर्घपरिमाणवालायौवनशरीरभी भिन्नहै ॥ शरीरकाभेदही जन्मसंस्कारोंविषेकारणहै ॥ यातें यौवनशरीरकीउत्पत्तिविषे जन्मसंस्कारोंकीप्राप्तिरूपदूषण तुमारेकूंभी अवश्य होवैगा ॥ शंका ॥ जोबाल्यशरीरतें यौवनशरीर भिन्नहोवै तौ देवदत्तनामापुरुषकूं आपणेशरीरविषे याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान होवैहै॥ जोमैंबालकथा सोईमैंअबीयुवाहुवाहूं ॥ तथा तादेवदत्तपुरुषविषे अन्यपुरुषोंकूंभी याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवैहै सोईयहदेवदत्तहै ॥ येदोनोंप्रकारकेप्रत्यभिज्ञाज्ञान बाल्ययौवनदेवदत्तकेअभेदकूं विषयकरैहैं ॥ सो नहोणेचाहिये ॥ तैसे तुमदृष्टिसृष्टिवादीकेमतविषेभी सोईमैंदेवदत्तहूं अथवा सोईयहदेवदत्तहै ॥ येदोनोंप्रत्यभिज्ञाज्ञान नहींहोणेचाहिये ॥ और सर्वपुरुषोंकूं याप्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान होवैहै ॥ समाधान ॥ सोईमैंदेवदत्तहूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान पूर्वउत्तरशरीरकेअभेदकूंविषयकरैनहीं ॥ किंतु दोनोंशरीरोंविषे आरोपितजोआत्माकीएकता ताकूंविषयकरैहै ॥ और तादेवदत्तपुरुषविषे दूसरेयज्ञदत्तनामापुरुषकूं सोईयहदेवदत्तपुरुषहै ऐसाजोप्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवैहै ॥ सोभी आपणेसंबंधियोंकेवचनविषेविश्वासतेंहोवैहै ॥ शरीरकेअभेदतें किसीमतविषेभी प्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैनहीं ॥ यातें हेवादिन्! बाल्ययौवनादिकशरीरोंविषे आरोपितजोआत्माकीएकता ताएकताकूंग्रहणकरिकेही सर्वमतविषे प्रत्यभिज्ञाज्ञानकासंभव होइसकैहै ॥ शरीरोंकीएकतामानणी निष्फलहै ॥ शंका ॥ हमारेमत

विषे आत्माकेअभेदकूंग्रहणकरिकै सोईमैंदेवदत्तहूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवैनहीं ॥ किंतु शरीरकाआरंभकरणेहारी जोअ
वयवोंकीरचनाविशेषहै ॥ सारचना बाल्ययौवनशरीरविषेएकही है ॥ यातें ताअवयवोंकीरचनाविशेषकूंग्रहणकरिकै पूर्वउक्तप्र
त्यभिज्ञाज्ञान संभवैहै ॥ अथवा बाल्ययौवनशरीरकेआरंभकरणेहारे जोपितामाताकाशुक्रशोणितहै ॥ ताशुक्रशोणितकूंग्रहण
करिकै पूर्वउक्तप्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैहै ॥ समाधान ॥ आरंभककारणकेअभेदतें पूर्वउक्तप्रत्यभिज्ञाज्ञानसंभवैनहीं ॥ काहेतें जो
कारणकेअभेदतें प्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवै तौ एककाष्ठकरिकै अथवा एकपाषाणकरिकै रचेहुवे जेदोस्तंभहैं ॥ तिनदोनोंस्तंभोंकाका
रणएकहीहै ॥ यातें तिनदोनोंस्तंभोंविषे सोईयहस्तंभहै याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान होणाचाहिये ॥ और भिन्नभिन्नस्तंभोंविषे
याप्रकारकाअभेदज्ञान किसीपुरुषकूंहोवैनहीं ॥ यातें आरंभककारणकेअभेदकूंग्रहणकरिकै सोप्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैनहीं ॥ शंका ॥
भिन्नभिन्नशरीरोंविषेआरोपित जोआत्माकीएकता ताकूं ग्रहणकरिकै सोईमैंदेवदत्तहूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान देवदत्तकूंहो
वैहै ॥ यह पूर्वआपनेकह्या ॥ सो यद्यपि देवदत्तकेप्रत्यभिज्ञाज्ञानविषेसंभवै है ॥ तथापि स्तंभकेप्रत्यभिज्ञाज्ञानविषेसंभवैनहीं ॥
काहेतें स्तंभजडहै यातेंसोईमैंस्तंभहूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान ताकूंहोवैनहीं ॥ किंतु तास्तंभकेद्रष्टापुरुषकूं सोईयहस्तंभहै
याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवैहै ॥ सो नहोणाचाहिये ॥ काहेतें तहांआत्माकाअभेदहैनहीं ॥ समाधान ॥ आत्माकेअभेदकूंग्र
हणकरिकै यद्यपि स्तंभविषे अभेदप्रत्यभिज्ञा नहींहोती ॥ तथापि जैसे देवदत्तपुरुषविषे यज्ञदत्तनामापुरुषकूं आपणेसंबंधियोंकेव
चनोंकाविश्वासकरिकै सोईयहदेवदत्तहै याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवैहै ॥ तैसे स्तंभकेद्रष्टापुरुषकूंभी अन्यपुरुषकेवचनकाविश्वा
सकरिकै सोईयहस्तंभहै याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैहै ॥ किंवा ॥ बाल्ययौवनशरीरविषे पितामाताकेशुक्रशोणितकीएकता
कूंग्रहणकरिकै जोपूर्ववादीनें प्रत्यभिज्ञाज्ञानकह्या सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें जैसेअंकुरकेउत्पन्नहुए बीज नष्टहोइजावै है ॥
तैसे शरीरकेउत्पन्नहुएतेंअनंतर शुक्रशोणितभी नष्टहोइजावैहैं ॥ यातें ताशुक्रशोणितकूंग्रहणकरिकै प्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैनहीं
॥ किंवा ॥ पूर्वजोवादीनैंयहकह्याथा ॥ बाल्ययौवनशरीरविषे एकहीअवयवोंकीरचनाविशेष कारणहै ॥ यातें ताअवयवोंकीरचना

विशेषकूंग्रहणकरिकैही प्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैहै ॥ सोकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें अवयवोंकीरचनाविशेषकूं जोशरीरकी
कारणता किसीप्रमाणकरिकैसिद्धहोवै तौ तारचनाकूंग्रहणकरिकै प्रत्यभिज्ञाज्ञानसंभवै ॥ परंतु अवयवोंकीरचनाविशेषकूंशरी
रकीकारणता किसीप्रमाणकरिकैसिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतें जैसे पृथिवीआदिकोंकेपरमाणु अतिसूक्ष्महैं ॥ यातें तिनोंकाप्रत्यभि
ज्ञाज्ञान किसीकूंहोवैनहीं ॥ तैसे शरीरकेआरंभकरणेहारेअवयवभी अतिसूक्ष्महैं ॥ यातें प्रत्यक्षप्रमाणकरिकै तिनोंकाज्ञानसंभवै
नहीं ॥ प्रत्यक्षप्रमाणकेअप्रवृत्तहुए अनुमानादिकोंकरिकैभी तिनअवयवोंकाज्ञानसंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ परमाणुवोंकरिकै किसीकार्य
कीउत्पत्तिसंभवैनहीं ॥ काहेतें परमाणुजडहैं औरअनेकहैं ॥ जडवस्तुविषे कार्यकेआरंभकरणेकाविचारसंभवैनहीं ॥ और जोवा
दी परमाणुवोंकूंचेतनमानैं तौभी भिन्नभिन्नअभिप्रायवाले अनेकपरमाणुवोंतें एककार्यकीउत्पत्तिसंभवैनहीं ॥ यातें परमाणुरूपअ
वयवोंकीरचनाविशेषकूंग्रहणकरिकै सोईमैंहूं यहप्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैनहीं ॥ शंका ॥ प्रत्यक्षज्ञानकेविषयजेस्थूलअवयवहैं ॥ तिन
अवयवोंकीरचनाविशेषही बाल्ययौवनशरीरकाकारणहै ॥ यातें ताकूंग्रहणकरिकैही सोईमैंहूं यहप्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैहै ॥ समा
धान ॥ बाल्यशरीरविषे जोस्थूलअवयवोंकीरचनाहै ॥ सोईहीरचना यौवनशरीरविषेसंभवैनहीं ॥ काहेतें जोबाल्यशरीरकेअवयवों
कीरचना यौवनशरीरविषेहोवै ॥ तौ यौवनशरीरका बाल्यशरीरतें अधिकपरिमाण तथाअधिकपराक्रम नहोणाचाहिये ॥ और बाल्य
शरीरतें यौवनशरीरविषे अधिकपरिमाण तथाअधिकपराक्रम सर्वलोकोंकूंअनुभवसिद्धहै ॥ यातें बाल्ययौवनशरीरविषे स्थूलअवय
वोंकीरचना भिन्नभिन्नहै एकनहीं ॥ लोकविषेभी परिमाणकीन्यूनअधिकतातें अवयवोंकेरचनाकाभेदहीदेख्याहै ॥ जैसे दशमण
परिमितमाषराशितें पंचमणमाषके जोकोईनिकासिलेवै ॥ अथवा तामाषकीराशिविषे पंचमणमाषके कोईअधिकमिलाइदेवै ॥
तहां माषराशिकेरक्षकपुरुष अवयवोंकीरचनाविशेष भिन्नभिन्नहीमानैहैं ॥ एकरचनामानैंनहीं ॥ यातें परिमाणकेभेदहुए अवयव
रचनाभी भिन्नभिन्नहीहोवैहै एकहोवैनहीं ॥ यातें हेवादिन्! जैसे तुमारेमतविषे बाल्यशरीरतैंभिन्नयौवनशरीरकेउत्पन्नहुएभी
पुनःजन्मकेसंस्कारहोवैंनहीं तैसे हमदृष्टिसृष्टिवादीकेमतविषेभी दर्शनतैंपुत्रकीउत्पत्तिहुएभी पुनःजन्मकेसंस्कारहोवैंनहीं ॥

॥ शंका ॥ यौवनशरीरविषे यहदेवदत्त उत्पन्नभयाहै ॥ याप्रकारकाज्ञान किसीपुरुषकूंहोवैनहीं ॥ यातें यौवनशरीरविषे
पुनःजन्मकेसंस्कारकीप्राप्तिरूपदूषण हमारेमतविषे संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हमारेमतविषेभी दर्शनकालविषे पुत्रादिकोंके
उत्पन्नहुएभी तापुत्रादिकोंविषे यहपुत्रहमाराउत्पन्नभयाहै याप्रकारकाज्ञान पितामातादिकसंबंधियोंकूं होवैनहीं ॥ यातें हमदृ
ष्टिसृष्टिवादिकेमतविषेभी पुनःजन्मकेसंस्कारोंकीप्राप्तिरूपदोषनहीं ॥ शंका ॥ तुमदृष्टिसृष्टिवादीकेमतविषे पुत्रादिकोंकाअदर्श
नही तिनोंकामरणहै ॥ यातें जैसे मरणकेअनंतर पुत्रादिकोंकीदाहक्रियाकरितेहैं ॥ तैसे तिनोंकेअदर्शनतैंअनंतरभी तिनपु
त्रादिकोंकीअग्निदाहक्रियाकरनीचाहिये ॥ और अदर्शनतैंअनंतर पुत्रादिकबांधवोंकीअग्निदाहादिकक्रिया कोईकरतानहीं ॥ समा
धान ॥ हेवादिन्! जैसे तुमारेमतविषे यौवनशरीरकेउत्पन्नहुए बाल्यशरीर नाशहोइजावैहै ॥ काहेतें जोयौवनशरीरकेप्राप्तहुएभी
बाल्यशरीर नाशनहींभयाहोवै ॥ तौ यौवनकालविषेभी बाल्यशरीरकीप्रतीति होणीचाहिये ॥ और यौवनकालविषे तौ बाल्यशरीर
कीप्रतीति होतीनहीं ॥ यातें यौवनकालविषे बाल्यशरीरकानाशहोवैहै ॥ तानष्टहुएबाल्यशरीरकी जैसे तुम अग्निदाहादिकक्रिया
नहींकरते ॥ तैसे हमदृष्टिसृष्टिवादीकेमतविषेभी पुत्रादिकसंबंधियोंकेबाहरिगयेहुए तिनपुत्रादिकोंकादर्शनहोवैनहीं ॥ सोअदर्शन
ही तिनपुत्रादिकबांधवोंकामरणहै ॥ ताअदर्शनरूपमरणकेहुएभी तिनपुत्रादिकसंबंधियोंकेदाहादिकक्रियाकूं हम करैनहीं ॥ यातें
हमारेमतविषे तथातुमारेमतविषे यहउत्तर समानहै ॥ शंका ॥ हेदृष्टिसृष्टिवादिन्! तुमारेमतविषे किंचित्मात्रविशेषताहै ॥ का
हेतें पुत्रादिकसंबंधी जबी देशांतरतैंगृहविषेआवैहै ॥ तबी ताकेमातापिताकूं याप्रकारकाज्ञान होवैहै ॥ सोईयहहमारापुत्रहै ॥
याअभेदज्ञानकेबलतैं पूर्वउत्तरशरीरोंकाअभेदही सिद्धहोवैहै ॥ समाधान ॥ बाल्यशरीरतैंअनंतर यौवनशरीरकेउत्पन्नहुएभी सो ॥२७॥
ईयहदेवदत्तहै याप्रकारकाअभेदज्ञान तुमारेमतविषेहोवैहै ॥ यातें तुमारेमतविषेभी बाल्ययौवनशरीरकाअभेद होणाचाहि
ये ॥ और बाल्ययौवनशरीरकाअभेद पूर्वउक्तरीतिसैं संभवैनहीं ॥ यातें यहउत्तरभी तुमारेहमारेमतविषे समानहै ॥ शं
का ॥ पुत्रादिकसंबंधियोंकाअदर्शनही जोतिनपुत्रादिकोंकामरणहोवै तौ जैसे पुत्रादिकबांधवोंकेमरणतैंअनंतर पितामातादिक

संबंधी शोककूंकरैहैं तथा रुदनकूंकरैहैं ॥ तैसे पुत्रादिकबांधवोंकेअदर्शनकालविषेभी शोक तथारुदनादिक होणेचाहियें ॥ समाधान ॥ हेवादिन्! जैसे तुमारेमतविषे यौवनशरीरकीप्राप्तिकालविषे बालकशरीरकेनाशहुएभी पितामातादिकसंबंधी शोककूं तथारुदनकूं करैनहीं ॥ तैसे हमदृष्टिसृष्टिवादीकेमतविषेभी पुत्रादिकबांधवोंकेअदर्शनकालविषे पितामातादिकसंबंधी शोककूं तथारुदनकूं करैनहीं ॥ शंका ॥ यौवनशरीरकीप्राप्तिकालविषे बाल्यशरीरकेनष्टहुएभी सोईयहहमारापुत्रहै याप्रकारकाअभेद ज्ञान मातापितादिकसंबंधियोंकूं होवैहै ॥ यातें सोअभेदज्ञानही हमारेमतविषे अग्निदाहादिकक्रिया तथाशोकादिकोंका प्रतिबंधक है ॥ समाधान ॥ पुत्रादिकबांधवोंकेअदर्शनतेंअनंतर जबीतिनपुत्रादिकबांधवोंकापुनःदर्शनहोवैहै ॥ तबी सोईयहहमारापुत्रहै याप्रकारकाअभेदज्ञान पितामातादिकसंबंधियोंकूं होवैहै ॥ यातें सोअभेदज्ञानही हमारेमतविषेभी अग्निदाहादिकक्रियाका तथाशोकादिकोंका प्रतिबंधक है ॥ यातें यहउत्तरभी तुमारेहमारेमतविषे समानहै ॥ शंका ॥ पुत्रादिकसंबंधियोंकाअदर्शन ही जोतिनपुत्रादिकोंका मरणहोवै ॥ तौ पुनःदर्शनकालविषे तेपुत्रादिकबांधव याप्रकारकहैहैं ॥ हम नहींमरेथे ॥ यहतिनोंकावचन तुमारेमतविषे असंगतहोवैगा ॥ यातें अदर्शनकानाम मरणनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादिन्! तुमारेमतविषेभी यौवनदेहकेप्राप्तहुए बाल्यशरीर नष्टहोइजावैहैं ॥ परंतु सोयौवनपुरुष ऐसाकहैहै ॥ हमनहींमरेथे ॥ यातें यावचनकेविरोधतें तुमारेमतविषेभी बाल्यशरीरकानाश नहींहोणाचाहिये ॥ इसवार्ताका तेरेकूंभीअंगीकारनहीं ॥ शंका ॥ बाल्यशरीरका तथायौवनशरीरका परस्परभेदहै ताभेदकाज्ञान पुरुषकूं होवैनहीं ॥ यातें पूर्वउत्तरशरीकेभेदकाअज्ञानरूपदोषकरिकैयुक्त युवानपुरुषका हमनहींमरेथे याप्रकारका वचन प्रमाणरूपनहीं ॥ किंतु सोवचन अप्रमाणरूपहै यातें तावचनकरिकैबाल्यशरीरकीनित्यतासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ पुनःदर्शनकालविषे पुत्रादिकबांधवोंका जोयहवचनहै हमनहींमरेथे ॥ सोयहवचनभी पूर्वउत्तरशरीरकेभेदकाअज्ञानरूपदोषयुक्त पुरुषकरिकैजन्यहै ॥ यातें अप्रमाणरूपहै ॥ ताअप्रमाणवचनतें पूर्वशरीरकीनित्यता हमारेमतविषेभी सिद्धहोवैनहीं ॥ यातें यहउत्तरभी हमारेतुमारेमतविषे समानहीहै ॥ किंवा ॥ पूर्वशरीरतें उत्तरशरीरविषे भेदकेविद्यमानहुएभी ताभेदकाज्ञान लो

कोकूंहोवैनहीं ॥ यातैं ताभेदज्ञानका कोईप्रतिबंधकमाननाचाहिये ॥ सोप्रतिबंधक पूर्वउत्तरशरीरकेभेदकाअज्ञानरूपदोषहै ॥ या दोषकेप्रभावतैंही पूर्वउत्तरशरीरकेभेदकाज्ञान पुरुषोंकूंहोवैनहीं ॥ याकारणतैंभी पितामातादिकबांधव पुत्रकेपूर्वशरीरकेनाश हुएभी शोककूं तथारुदनकूं नहींकरै हैं ॥ किंवा ॥ पूर्वउत्तरशरीरकेभेदज्ञानकाप्रतिबंधक पूर्वउक्तअज्ञानरूपदोषकूं जोनहींमा नोंगे ॥ तौ पुत्रादिकोंके पूर्वशरीरतैं उत्तरशरीरविषेभेदकाज्ञान पितामातादिबांधवोंकूं अवश्यहोवैगा ॥ ताभेदज्ञानकरिकै पु त्रादिकोंकेपूर्वशरीरविषे मरणबुद्धिहोवैगी ॥ और तामरणबुद्धितैं पितामातादिकोंकूं शोकादिकोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं यादो षकीनिवृत्तिवासते पूर्वउत्तरशरीरकेभेदज्ञानकाप्रतिबंधक पूर्वउक्तअज्ञानरूपदोष हमनैं तथातुमनैं अवश्यमाननाचाहिये ॥ यातैं हेवादिन्! जैसे तुमारेमतविषे बाल्यशरीरका तथायौवनशरीरका अभेदहैनहीं किंतुभेदहै ॥ तैसे हमदृष्टिसृष्टिवादीकेमतविषेभी पूर्वदर्शनकेविषयजेपुत्रादिक तथाउत्तरदर्शनकेविषयजेपुत्रादिक तिनदोनोंका अभेदनहीं किंतुभेदहै ॥ और हेवादिन्! जैसे तुमारे मतविषे यौवनशरीरकेप्राप्तिकालविषे बाल्यशरीरकेनष्टहुएभी पितामातादिक तापुत्रविषे मरणबुद्धिकरैनहीं ॥ तैसे हमदृष्टिसृष्टिवा दीकेमतविषेभी अदर्शनकालविषेपुत्रादिकोंकेनष्टहुएभी पितामातादिकसंबंधी तापुत्रविषे मरणबुद्धिकरैनहीं ॥ यातैं हेवादिन्! तुम नैं जेजेदोष हमारेमतविषेकहे तेतेदोष तुमारेमतविषेभीप्राप्तहोवैहैं ॥ और तिनदोषोंकीनिवृत्तिवासते जोजोउत्तर तुमनैंकह्या सोसोउत्तर हमारेमतविषेभीसंभवैहै यहसिद्धभया ॥ किंवा ॥ लोकविषेप्रसिद्ध जोजीवोंकाजन्म तथामरण सोजन्ममरणही ह मारेदृष्टिसृष्टिवादकूं सिद्धकरैहै ॥ काहेतैं सोजन्म तथामरण ज्ञानतैंविना अन्यकिसीकारणतैंसिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु ज्ञानतैंही ताजन्म की तथामरणकी सिद्धिहोवैहै ॥ जबपर्यंत पुत्रादिकबांधवोंकेजन्मकूं तथामरणकूं पितादिकसंबंधी नहींजानते ॥ तबपर्यंत हर्षकूं त थाशोककूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु पुत्रादिकोंके जन्मतथामरणकेज्ञानतैंअनंतरही पितादिकसंबंधी हर्षकूं तथाशोककूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे येपुत्रादिकभी किसीअन्यकेवचनतैं आपणेजन्मकूंजाणिकरिकै हर्षकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और आपणेमरणकूंजानिकरिकै शोककूं प्राप्तहोवैहैं ॥ आपणेजन्मकेज्ञानतैंविना तथामरणकेज्ञानतैंविना किसीपुरुषभी हर्षशोककीप्राप्ति होवैनहीं ॥ तथा पुत्रादिकोंके

जन्मकूं तथामरणकूं पितामातादिकसंबंधी प्रत्यक्षप्रमाणतैंहीजानैंहैं ॥ और पुत्रादिक आपणेजन्मकूं तथामरणकूं प्रत्यक्षप्रमाण तैंजाणतेनहीं ॥ किंतु पितामातादिकसंबंधियोंकेवचनरूपशब्दप्रमाणतैं तथाअनुमानप्रमाणतैं आपणेजन्ममरणकूं जानैं हैं॥ काहेतैं योनितैंनिर्गमनकालविषे यहजीव दुःखकरिकैंमूर्च्छाकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ मूर्च्छाअवस्थाविषे किसीवस्तुकाज्ञान होवैनहीं ॥ यातैं योनितैंनि र्गमनरूपआपणेजन्मकूं ताकालविषे प्रत्यक्षजानणेमैं यहजीव समर्थहोवैनहीं ॥ तैसे मरणकालविषेभी यहजीव दुःखकरिकै मूर्च्छा भावकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ यातैं ताकालविषेभी यहजीव आपणेमरणकूं प्रत्यक्षजानिसकैनहीं ॥ किंतु शब्दप्रमाणतैं तथाअनुमानप्रमा णतैं आपणेजन्मकूं तथामरणकूं यहजीव जानैं है ॥ यातैं हेवादिन्! जैसे लौकिकपितामातादिकसंबंधीयोंकेवचनकरिकै आपणेज न्ममरणकूं तुमनैं निश्चयकऱ्याहै ॥ तैसे सर्वज्ञईश्वरकरिकैरचितवेदप्रमाणतैंभी पुत्रादिकपदार्थोंकादर्शनहीं तिनपुत्रादिकोंकीउत्प त्ति औरपुत्रादिकपदार्थोंकाअदर्शनही तिनपुत्रादिकोंकामरण याअर्थकीसिद्धिसंभवैंहै ॥ शंका ॥ वाकादिकइंद्रियोंका तथाअग्निआ दिकदेवतावोंका परित्यागकरिकै केवल पुत्रादिकविषयोंविषे दृष्टिसृष्टिवादकीसिद्धिवासतै युक्तियोंकाकथनविरुद्धहै ॥ काहेतैं आ त्मातैंभिन्नसर्वपदार्थ तुमारेमतविषे दृष्टिसृष्टिवादकेविषयहैं ॥ समाधान ॥ जैसे पुत्रादिकविषयोंविषे सोईयहदेवदत्तहै याप्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान होवैंहै ॥ तैसे वाकादिकइंद्रियोंविषे तथाअग्निआदिकदेवतावोंविषे सोईयहवाक्इंद्रियहै औरसोईयहअग्निदेवताहै याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान किसीपुरुषकूं होवैनहीं ॥ काहेतैं जिसवस्तुविषे प्रत्यक्षज्ञानकीविषयताहोवैंहै ॥ तिसवस्तुविषेही प्रत्य भिज्ञाज्ञानकीविषयताहोवैंहै ॥ सोप्रत्यक्षज्ञानकीविषयता वाकादिकइंद्रियोंविषेहैनहीं ॥ यातैं प्रत्यभिज्ञाज्ञानकीविषयताभी वाका दिकइंद्रियोंविषे संभवैनहीं ॥ इहांयहअभिप्रायहै ॥ केवल इंद्रियकरिकैजन्यज्ञानकानाम प्रत्यक्षहै ॥ जैसे चक्षुइंद्रियकरिकै यहदेव दत्तहै याप्रकारकाप्रत्यक्षज्ञान होवैंहै ॥ और पूर्वसंस्कारसहकृतइंद्रियकरिकैजन्यज्ञानकानाम प्रत्यभिज्ञाज्ञानहै ॥ जैसे देशांतरवि षे तथाकालांतरविषे देख्याहुआजोदेवदत्तहै तादेवदत्तकेसाथ जबी चक्षुइंद्रियकासंबंधहोवैंहै ॥ तबी सोईयहदेवदत्तहै याप्रका रकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान लोकोंकूंहोवैंहै ॥ तिनइंद्रियोंविषेभी वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ यापंचकर्मइंद्रियोंविषेतौ ज्ञानकीकारणता

होवैनहीं॥किंतु शब्दकाउच्चारणादिकक्रियाकीकारणताहोवैहै॥और चक्षु त्वक् रसन घ्राण श्रोत्र यापंचज्ञानइंद्रियोंविषे ज्ञानकीकारणताहोवैहै॥ तिनोंविषेभी रसनइंद्रिय रसगुणकूंग्रहणकरैहै॥ रसकेआश्रयद्रव्यकूं ग्रहणकरैनहीं॥ तैसे घ्राणइंद्रिय गंधगुणकूंग्रहणकरैहै॥ गंधगुणकेआश्रयद्रव्यकूं ग्रहणकरैनहीं॥ और श्रोत्रइंद्रिय शब्दगुणकूंग्रहणकरैहै॥ शब्दकेआश्रयद्रव्यकूं ग्रहणकरैनहीं॥ यातें यातीनइंद्रियोंकरिकैजन्यज्ञानोंकीविषयता वाकादिकइंद्रियोंविषे संभवैनहीं॥ काहेतें वाकादिकइंद्रिय द्रव्यरूपहैं गुणरूपहैंनहीं॥ और चक्षुइंद्रिय रूपादिकगुणोंकूं तथारूपादिकगुणोंकेआश्रयद्रव्यकूं ग्रहणकरैहै॥तैसे त्वक्इंद्रियभी स्पर्शादिकगुणोंकूं तथास्पर्शादिकगुणोंकेआश्रयद्रव्यकूं ग्रहणकरैहै॥ तिनदोनोंविषेभी चक्षुइंद्रियतौ उद्भूतरूपकूं तथाउद्भूतरूपवालेद्रव्यकूं ग्रहणकरैहै॥ तैसे त्वक्इंद्रियभी उद्भूतस्पर्शकूं तथाउद्भूतस्पर्शवालेद्रव्यकूं ग्रहणकरैहै॥ सो उद्भूतरूप तथाउद्भूतस्पर्श वाकादिकइंद्रियोंविषेहैंनहीं॥ किंतु अनुद्भूतरूपस्पर्शादिक इंद्रियोंविषेरहेहैं॥ यातें चक्षुइंद्रियजन्यज्ञानकीविषयता तथात्वक्इंद्रियजन्यज्ञानकीविषयता वाकादिकइंद्रियोंविषेसंभवैनहीं॥ किंतु शास्त्रप्रमाणतें तथाअनुमानप्रमाणतें वाकादिकइंद्रियोंका परोक्षज्ञानहोवैहै॥ तैसे वाकादिकइंद्रियोंकेअग्निआदिकदेवतावोंकाभी परोक्षहीज्ञानहोवैहै॥ यातें परोक्षज्ञानकेविषय जेवाकादिकइंद्रिय तथाअग्निआदिकदेवता तिनोंविषे सोईयहवाक्इंद्रियहै औरसोईयहअग्निदेवताहै याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैनहीं॥यातें केवलश्रुतिवचननेंहीवाकादिकइंद्रियोंविषे तथाअग्निआदिकदेवतावोंविषे दृष्टिसृष्टिवाद सिद्धहोवैहै॥ और पुत्रादिकविषयोंविषेतौ सोईयहदेवदत्तहै याप्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैहै॥ यातें ताप्रत्यभिज्ञारूपविरोधकीनिवृत्तिवासते पुत्रादिकविषयोंविषेही दृष्टिसृष्टिवादका युक्तियोंसेंनिरूपणकऱ्या और वास्तवतेंतौ आत्मातेंभिन्नसंपूर्णजडवस्तु दर्शनकालविषे उत्पन्नहोवैहैं॥ और अदर्शनकालविषेलयहोवैहैं॥ वाकादिकइंद्रियोंका यद्यपि अस्मदादिकजीवोंकूं प्रत्यक्षज्ञानहोवैनहीं तथापि अग्निआदिकअभिमानीदेवतावोंकूं वाकादिकइंद्रियोंका प्रत्यक्षहीज्ञानहोवैहै॥ यातें देवतावोंकेदर्शनतें वाकादिकइंद्रियोंकीउत्पत्ति और देवतावोंकेअदर्शनतें तिनोंकानाश संभवैहै॥ और जैसे आकाशादिकभूतोंकेकार्यवाकादिकइंद्रियोंका दर्शनकालविषे जन्महोवैहै॥ और अदर्शनकालविषे मरणहोवैहै॥ तैसे

आकाशादिकपंचभूतोंकाभी दर्शनकालविषे जन्महोवैहै ॥ तथा अदर्शनकालविषे नाशहोवैहै ॥ और जैसे बाल्ययौवनादिकशरीरों विषे प्रत्यभिज्ञारूपविरोधका पूर्वसमाधानकियाहै ॥ तैसे आकाशादिकपंचभूतोंविषेभी प्रत्यभिज्ञाज्ञानरूपविरोधकासमाधानजा निलेणा ॥ और पूर्व बाल्ययौवनशरीरादिकोंविषे जैसे अवयवोंकूं तथाअवयवरचनाकूं प्रत्यभिज्ञाज्ञानकीकारणताका खंडनकर्‍याहै तैसे आकाशादिकभूतोंविषेभीजानिलेणा ॥ यातैं आत्मातैंभिन्न सर्वजडवस्तुका दर्शनहीजन्महै ॥ और अदर्शनही तिनोंकानाश है ॥ शंका ॥ अदर्शनहीजोवस्तुकानाशहोवै तौ जिसकालविषे पुरुषकूं तडागकेजलकाज्ञाननहीं है ॥ तिसकालविषे तुमारेमतवि षे तडागकाजल नाशहोगयाहै ॥ यातैं जलकेविरोधीअग्निकी तहांउत्पत्तिहोणीचाहिये और ऐसाकबीहोवैनहीं ॥ यातैं दृष्टिसृ ष्टिवाद असंगतहै ॥ समाधान ॥ हेवादिन् ! यादोषकी तुमारेमतविषेभीप्राप्तिहोवैहै ॥ काहेतैं अन्यकिसीपुरुषकेबाल्यअवस्थाके नाशहुए ताबाल्यअवस्थाकाविरोधीयौवनअवस्था तुमारेकूंभी प्राप्तहोणीचाहिये ॥ जैसे अन्यपुरुषकेबाल्यअवस्थाकाविरोधी यौ वनअवस्था तुमारेकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे अदर्शनकालविषे जलकेनष्टहुएभी तहां अग्निउत्पन्नहोवैनहीं ॥ शंका ॥ यौवनअवस्था कीप्राप्तिविषे धर्मअधर्मरूपकर्म कारणहैं ॥ यातैं अन्यपुरुषकीयौवनअवस्था हमारेकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादिन् ! जैसे तुमनैं कर्मोंकूंअंगीकारकरिकै दूषणकीनिवृत्तिकरी तैसे हमदृष्टिसृष्टिवादीभी कर्मोंकूंअंगीकारकरिकै सर्वदूषणोंकीनिवृत्तिकरैहैं ॥ अदर्शनकालविषे तडागकेजलकानाशहुएभी कर्मोंकेवशतैं तहांजलहीउत्पन्नहोवैहै ॥ अग्नि उत्पन्नहोवैनहीं ॥ शंका ॥ आकाशादि कपंचभूतोंकेकार्यजेशरीरादिकहैं ते सुखदुःखरूपभोगकेसाधनहैं ॥ यातैं तिनोंकीउत्पत्तिविषे यद्यपि धर्माधर्मरूपकर्मोंकूं कारणता संभवैहै ॥ तथापि आकाशादिकपंचभूतोंकीउत्पत्तिविषे कर्मोंकूंकारणता संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादिन् ! आकाशादिकपंचभूतों केप्रति कर्मोंकूंकारणतानहीं है ॥ यहतुमनैं आशंकानहींकरी ॥ किंतु याकहणेकरिकै तुमनैं आपणेअज्ञानकूंप्रगटकर्‍याहै ॥ काहेतैं श्रुतिविषे तथास्मृतिविषे तथाव्यासभगवान्केसूत्रोंविषे याप्रकारकह्याहै ॥ जीवोंकेपुण्यपापरूपकर्मोंकरिकैयुक्तहुआ मायाविशिष्टप रमात्मा भूतभौतिकरूपप्रपंचकूं उत्पन्नकरैहै ॥ और तिसप्रपंचका पालन तथासंहार करैहै ॥ जोपरमात्मा जीवोंकेकर्मतैंविनाही

जगत्कीउत्पत्तिकरैगा तौ परमात्माविषे विषमता तथानिर्दयतारूपदोषकीप्राप्तिहोवैगी॥ काहेतें कोईपुरुष धनीहै॥ और कोईक
पुरुष निर्धनहै॥ और कोईकपुरुष सुखीहै॥ और कोईकपुरुष दुःखीहै॥ और कोईकपुरुष पंडितहै॥ और कोईकपुरुष मूर्खहै॥ याप्र
कारकेविषमप्रपंचकूंकरताहुवापरमात्मा विषमता तथानिर्दयतारूपदोषवालाहोवैगा॥ और समदृष्टिईश्वरविषे विषमता तथानि
र्दयतारूपदोष संभवैनहीं॥ यातें तादोषकीनिवृत्तिवासते अवश्यकर्मोंकूंअंगीकारकऱ्याचाहिये॥ किंवा॥ जोवस्तु जिसजीवके
सुखकासाधनहोवैहै॥ सोवस्तु तिसजीवकेपुण्यकरिकैउत्पन्नहोवैहै॥ और जोवस्तु जिसजीवकेदुःखकासाधनहोवैहै॥ सोवस्तु ति
सजीवकेपापकर्मकरिकैउत्पन्नहोवैहै॥ सोसुखदुःखकीकारणता जैसेशरीरादिकभौतिकपदार्थोंविषेहै॥ तैसे आकाशादिकपंचभूतों
विषेभीहै॥ यातें आकाशादिकपंचभूतोंकीउत्पत्तिविषेभी जीवोंकेअदृष्टोंकूंकारणताहै॥ शंका॥ पूर्वपूर्वसृष्टिविषेस्थितजेजीवहैं॥
तिनजीवोंकेकर्मोंकूं यद्यपि उत्तरउत्तरसृष्टिकेप्रति कारणतासंभवैहै॥ तथापि सर्वसृष्टियोंतैंप्रथमजोसृष्टिउत्पन्नभयीहै॥ ताकेविषे
कर्मोंकूंकारणतासंभवैनहीं॥ यातें संपूर्णकार्यकेप्रति कर्मोंकूंकारणतानहीं॥ समाधान॥ संपूर्णसृष्टियोंतैंप्रथमकोईसृष्टिहैनहीं॥
किंतु बीजअंकुरकीन्यांई संसारकाप्रवाह अनादिहै॥ पूर्वपूर्वकर्मोंकेअनुसार उत्तरउत्तरसृष्टि उत्पन्नहोवैहै॥ और यासंसारका आत्म
ज्ञानतैंविना अन्यउपायकरिकै नाशभीनहींहोवैहै॥ किंतु आत्मज्ञानकरिकैही यासंसारकानाशहोवैहै॥ शंका॥ कर्मोंकूंही जोसर्व
संसारकीकारणतामानौगे तौ मायाविषे जगत्कीकारणतामानणीव्यर्थहोवैगी॥ समाधान॥ कर्मोंविषेजगत्कीकारणतामानणे
मैं मायाकीव्यर्थता होवैनहीं॥ काहेतें मायातैंविना कर्मोंकेफलकीहीव्यवस्थासंभवैनहीं॥ तात्पर्ययह॥ कार्तिकमासविषे कृत्तिकान
क्षत्रकेयोगहुए जोपुरुष कार्तिकस्वामीकादर्शनकरैहै॥ सोपुरुष सप्तजन्मोंविषे धनकरिकैयुक्तवेदपाठीब्राह्मण होवैहै॥ याप्रकारका
फल कार्तिकस्वामीकेदर्शनरूपकर्मकरिकैप्राप्तहोवैहै॥ यह शास्त्रविषेकह्याहै॥ ताकेविषे याप्रकारकीशंकाहोवैहै॥ कार्तिकस्वामी
केदर्शनकरणेहारेपुरुषकूं जन्मांतरविषे ब्राह्मणशरीरकीप्राप्ति तथाधनादिकोंकीप्राप्तिरूप फल होवैहै॥ और तिसब्राह्मणतैंभिन्न
पुरुषोंविषे तादर्शनरूपकर्मकरिकै दुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं॥ याप्रकारकेनियमविषे कौनकारणहै॥ याप्रकारकीशंकाका हम

नहींजानते याप्रकारकेउत्तरतेंविना दूसराकोईउत्तरहैनहीं ॥ किंतु हमनहींजानते याप्रकारकाउत्तरही कहनाहोवैगा ॥ और हमनहीं जानतेयहप्रतीति मायाकूंहीविषयकरैहै ॥ यातें सर्वपुरुषोंकेअनुभवकरिकैसिद्ध औरसर्वकार्यकेसिद्धकरणेहारीमाया व्यर्थनहीं किंतु सार्थकहै ॥ शंका ॥ हमनहीं जानते याप्रकारकाशब्द भावरूपमायाकावाचकहैनहीं ॥ किंतु ज्ञानकेअभावकावाचकहै ॥ यातें याशब्दतें मायाकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ मैंनहींजानता यहशब्द किसीएकज्ञानकेअभावकूंबोधनकरैहै ॥ अथवा सर्वज्ञानोंकेअभावकूं बोधनकरैहै ॥ तहां प्रथमपक्षतौबनैनहीं ॥ काहेतें जिसकालविषे घटकाज्ञानपुरुषकूंहोवैहै ॥ तिसकालविषे पटकाज्ञान तापुरुषकूंहोवैनहीं ॥ यातें तापटज्ञानकेअभावकूंअंगीकारकरिकै मैंनहींजाणता यह प्रयोग होणाचाहिये ॥ और घटज्ञानकालविषे यहप्रयोग होवैनहीं ॥ यातें यत्किंचित्ज्ञानकेअभावकूं मैंनहींजाणता यहशब्द बोधनकरैनहीं ॥ और मैंनहींजानता यहशब्द संपूर्णज्ञानोंकेअभावकूं बोधनकरैहै ॥ यहद्वितीयपक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतें अभावकेज्ञानविषे प्रतियोगीकाज्ञान तथाअनुयोगीकाज्ञान कारणहोवैहै ॥ प्रतियोगीअनुयोगीकेज्ञानतेंविना अभावकाज्ञानहोवैनहीं ॥ जिसवस्तुकाअभावहोवैहै सोवस्तु ताअभावकाप्रतियोगीहोवैहै ॥ और जिसवस्तुविषे अभावरहैहै सोवस्तु ताअभावकाअनुयोगीहोवैहै ॥ जैसे घटकेअभाववालाभूतलहै ॥ यास्थानविषे अभावका घटप्रतियोगीहै ॥ और भूतल अनुयोगीहै ॥ तैसे संपूर्णज्ञानोंकेअभावका संपूर्णज्ञान प्रतियोगीहै ॥ और जीवात्माअनुयोगीहै ॥ तहां भूतभविष्यत्कालविषेहोणेहारेसंपूर्णज्ञानोंका अल्पज्ञपुरुषकूं ज्ञानसंभवैनहीं ॥ यातें मैंनहींजानता यहशब्द सर्वज्ञानोंकेअभावकूंभी बोधनकरैनहीं किंतु भावरूपमायाकूंहीबोधनकरैहै ॥ यातें माया अवश्यअंगीकारकरनीचाहिये ॥ अब अन्यप्रकारतें मायाकीअवश्यकता निरूपणकरैहैं ॥ स्वभावही जगत्काकारणहै यह स्वभाववादी कोईकनास्तिक मानैहैं ॥ और कालहीजगत्काकारणहै यह कालवादी कोईकनास्तिक मानैहै ॥ इसतें आदिलेके जेनास्तिकोंकेपक्षहैं ॥ तिनपक्षोंकूं खंडनतर्करूपराक्षसराजा मायारूपीजननीकीसहायतातेंविना भक्षणकरैनहीं किंतु मायारूपीजननीकीसहायतातेंही तिनपक्षोंकूं भक्षणकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ खंडनकरणेयोग्यजेनास्तिकोंकेमतहैं ॥ तथा खंडनतर्करूपजोराक्षसराजाहै ॥ तिनसर्वोंकीजननी

मायाहै सामाया खंडनतर्करूपकनिष्ठपुत्रविषे अतिस्नेहयुक्तहै॥ यातैं नास्तिकोंकेचित्तविषे हमनहींजानते यारूपकरिकैप्रगटहुई सामाया खंडनतर्करूपकनिष्ठपुत्रकेताईं नास्तिकोंकेमतरूपज्येष्ठपुत्रोंकूं भक्षणकरणेवासतै देवैहै ॥ यातैं खंडनतर्करूपकनिष्ठपुत्रके जयकासंपादनरूपदुर्घटकर्मकेकरणेहारीमाया अवश्यमानणीचाहिये ॥ किंवा जिसकालविषे खंडनतर्करूपराक्षसराजासर्वनास्तिकोंकेमतोंकूं खंडनकरैहै तिसकालविषे सामायाजननी आपणेदुर्घटतारूपकर्मकूं प्रगटकरैनहीं ॥ किंतु गुह्यरहैहै ॥ जो मायारूपीजननी आपणेदुर्घटतारूपकर्मकूंभी प्रगटकरै तौ खंडनतर्करूपराक्षसराजा तामायाकेदुर्घटतारूपकर्मकूंभी खंडनकरिदेवै ॥ यद्यपि आपणीमाताकानाशकरणा अनुचितहै ॥ तथापि आपणेकुलकानाशकरणा राक्षसोंकास्वभावहै ॥ याकारणतैंमायारूपीजननी खंडनतर्करूपकनिष्ठपुत्रतैं गुह्यहोइकेरहैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सर्वनास्तिकोंकेमतोंकूंखंडनकराइके आपगुह्यहोइकेरहणा ॥ यहभी मायाकादुर्घटकर्म है ॥ यातैं मैंनहींजानता याअनुभवकरिकैसिद्ध माया अवश्यमाननीचाहिये ॥ शंका ॥ अर्थकेबोधकवचनकानाम उत्तरहोवैहै ॥ मैंनहींजाणता यहवचन निरर्थकहै॥ यातैं यावचनकूं उत्तररूपतासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ प्रतिवादीकेमौनका जोवचन कारणहोवैहै तावचनकानाम उत्तरहै ॥ मैंनहींजानता यहवचनभी प्रतिवादिकेमौनकाकारणहै ॥ यातैं यावचनकूंभी उत्तररूपतासंभवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकूंअंगीकारकरिकैही परस्परवाद होवैहै ॥ जोपुरुष मैंनहींजानता याप्रकारकाकथनकरैहै ॥ तापुरुषतैं कोईभीप्रतिवादी पूछतानहीं ॥ किंतु मौनरहैहै यातैं प्रतिवादीकेमौनकासंपादनहीतावचनकाफलहै ॥ शंका ॥ मैंनहींजानता याप्रकारकीप्रतीतिकाविषय जोअज्ञानहै ताअज्ञानरूपदोषकूंअंगीकारकरिकैप्रतिवादीकाजयकरणाभी पराजयकेतुल्यहै ॥ समाधान ॥ अज्ञान दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ आत्मविषयक अज्ञान ॥ और दूसराअनात्मवस्तुविषयक अज्ञान ॥ तहां आत्मविषयकअज्ञानतौ जीवोंकेमहान्हानिकाकारणहै॥ और जन्मादिकअनात्मपदार्थविषयकअज्ञान जीवोंकीहानिकरैनहीं॥तात्पर्ययह ॥ जिसपुरुषकूं आत्मज्ञानभयाहै॥ तिसपुरुषकूं सर्वअनात्मवस्तुका मिथ्यारूपकरिकैज्ञानभयाहै॥ तामिथ्याप्रपंचकेविशेषरूपकरिकैजानणेकीइच्छाभी आत्मज्ञानीपुरुषकूं होवैनहीं॥ यातैं आत्मज्ञानीपुरुषकूं अनात्मप

दार्थोंकाअज्ञान दूषणनहीं उलटा भूषणहै॥ तैसे आत्मज्ञानतैंरहित अज्ञानीपुरुषकूंभी जन्मादिकअनात्मपदार्थोंकाअज्ञान दूषणनहीं ॥दृष्टांत॥ जैसे नेत्रहीनअंधपुरुषकूं रूपादिकपदार्थोंकाअज्ञान दूषणनहीं ॥ अन्यदृष्टांत॥ जैसे कर्दमकरिकेलिप्तपुरुषकूं पुनःधूलीकालेप दूषणहोवैनहीं ॥ तैसे आत्मज्ञानतैंरहितअज्ञानीपुरुषकूं अनात्मपदार्थोंकाअज्ञान दूषणहोवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकेनिरूपणकरणेवासते प्रपंचकीउत्पत्तिविषे तर्ककेअयोग्यताकूं निरूपणकरैहैं ॥ आनंदस्वरूपआत्मातैं जगत्कीउत्पत्ति शास्त्रविषेकहीहै सो संभवैनहीं ॥ काहेतें आत्मा प्रकाशस्वरूपहै ॥ और द्वैततैंरहितहै ॥ और असंगहै॥ और गुणोंतैंरहितहै॥ और अनंतहै॥ और विक्रियातैंरहितहै ॥ और मनवाणीकाअविषयहै ॥ ऐसा अद्वितीयआत्मा नानाप्रकारकेविचित्रजगत्कूं किसप्रकार उत्पन्नकरताभया॥ याप्रकारकीशंकाकेहुए ताशंकाकेसमाधानकरणेकूं तथाजानणेकूं कोईभीपुरुष समर्थनहीं॥ यातैं प्रपंचकीउत्पत्ति तर्ककाविषय नहीं ॥ सोकैसाप्रपंचहै ॥ जिसप्रपंचविषे एकएकवस्तुभी शतकोटीप्रमाणोंकरिके जानीजावैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ यावस्तुका क्यास्वरूपहै ॥ और कितने इसविषेधर्महैं ॥ और कितने यावस्तुकेअवयवहैं ॥ याप्रकार कोईवस्तु जाणीजावैनहीं॥ जबी एकवस्तुके जानणेविषेभी कोईपुरुष समर्थनहीं॥ तबी सर्वजगत्केजानणेविषे कौनपुरुष समर्थहोवैगा?॥ किंतु ऐसाकोईभीपुरुष समर्थनहीं॥ और जिनपुरुषोंकूं ऐसाअभिमानहै ॥ हम सर्वजगत्कूंजाणतेहैं तिनपुरुषोंतैं हम यहपूछतेहैं॥ सन्मुखदेशविषेस्थितजोयहघटहै॥ तिसकेस्वरूपका प्रथम तुमनिरूपणकरो ॥ याघटकेनिरूपणकियेहुये संपूर्णप्रपंचकाभी तुमारेसें निरूपणहोवैगा ॥ तहां घटकेस्वरूपका तथाअन्यपदार्थोंतैंघटकीव्यावृत्तिका तथाव्यावृत्तिकेप्रयोजकधर्मोंका निरूपणही घटकानिरूपणहै ॥ यातैं सन्मुखदेशविषे स्थितघटका स्वरूपक्याहै?॥ इतिस्वरूपप्रश्न॥ और यहघट घटतैंभिन्नकाहेतैंनहींहोवै ॥ तात्पर्ययह ॥ याघटकी अन्यपदार्थोंतैंव्यावृत्ति किसप्रकारहै॥ इतिव्यावृत्तिप्रश्न ॥ और सन्मुखदेशवृत्तियाघटकेव्यावृत्तिकाप्रयोजक नेत्रइंद्रियकासंबंधही कहणाहोवैगा ॥ यद्यपि घटत्वादिकजातियांभी व्यावृत्तिकेप्रयोजक संभवैहैं ॥ तथापि घटत्वादिकजातियोंका आगेनिराकरणकरैंगे ॥ यातैं घटत्वादिकजातियोंकूं व्यावृत्तिकीप्रयोजकता संभवैनहीं ॥ सोनेत्रइंद्रियकासंबंध सन्मुखदेशवृत्तिघटविषेहै अन्यपदार्थकेसाथनहीं ॥

याकेविषे कौननियामकहै ॥ इतिधर्मप्रश्न ॥ याप्रकार सिद्धांतीकेतीनप्रश्नोंकूंश्रवणकरिकै वादी प्रथमघटकेस्वरूपकानिरूपणकरै है ॥ शंका ॥ यहहै याप्रकारकेशब्दकावाच्यजोवस्तुहै ताकानाम घटहै ॥ समाधान ॥ यहहै याप्रकारकेशब्दकीवाच्यतारूपलक्षणतैं घटकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतें यहहै याशब्दकीवाच्यता जैसे घटविषेहै ॥ तैसे पटादिकोंविषेभीहै॥ यातैं यहलक्षण अतिव्याप्तिदोषवालाहै ॥ लक्ष्यविषे तथाअलक्ष्यविषे जोलक्षणकावर्तणाहै ताकानाम अतिव्याप्तिहै ॥ शंका ॥ यहघटहै याप्रकारकेशब्दकीवाच्यता घटकालक्षणहै ॥ पटादिकोंविषे यद्यपि यहहै याप्रकारकेशब्दकीवाच्यताहै ॥ तथापि यहघटहै याप्रकारकेशब्दकीवाच्यता पटादिकोंविषेहैनहीं ॥ किंतु केवलघटविषेहै ॥ यातैंपूर्वउक्तअतिव्याप्तिरूपदूषण यालक्षणविषेनहीं ॥ समाधान ॥ यहघटहै याप्रकारकेशब्दकीवाच्यता जैसेसन्मुखदेशवृत्तिघटविषेहै ॥ तैसे अन्यघटविषेभीहै ॥ यातैं यहलक्षणभी अतिव्याप्तिदूषणकरिकैयुक्त होणेतैं सन्मुखदेशवृत्तिघटकीसिद्धिकरैनहीं॥ शंका ॥ घटकेभेदवालाजोहोवै सो घटकहियेहै ॥ समाधान ॥ यालक्षणतैंभीघटकी सिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतें अघटकेभेदवालाजोहोवै सोघटकहियेहै ॥ यालक्षणविषे अघटशब्दका क्याअर्थहै?॥ घटकेभेदकूंही अघट कहोगे ॥ सोघटकाभेद अन्योन्याभावरूपहै ॥ यातैं प्रतियोगीरूपघटकेनिर्णयतैंविना घटकेभेदकानिर्णय संभवैनहीं ॥ और घटका निर्णय अबपर्यंतभयानहीं ॥ यातैं जैसे सन्मुखदेशवृत्तिघटविषे घटकेभेदकासंशयहै ॥ तैसे पटादिकोंविषेभी घटकेभेदकासंशयहै॥ यातैं सन्मुखदेशवृत्तिघट पटहोणाचाहिये॥ और पट घटहोणाचाहिये ॥ घटकूं पटरूपता तथापटकूं घटरूपता अत्यंतविरुद्धहै ॥ किंवा ॥ अघटकेभेदरूपलक्षणकरिकै जोघटकीसिद्धिकरिये ॥ तौ घटकीसिद्धिविषे घटकीअपेक्षारूप आत्माश्रयदूषणकीभीप्राप्ति होवैहै ॥ यातैं यालक्षणतैंभी घटकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ इंद्रियोंतैंभिन्नहोवै औरसन्मुखदेशवृत्तिघटकेसाथजोइंद्रियकासंयोगसंबंध तासंबंधकानिरूपकहोवै सो घटकहियेहै ॥ यालक्षणविषे इंद्रियोंतैंभिन्नहोवै यापदका जोनहींनिवेशकरते ॥ तौ इंद्रियोंविषेही घटकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ काहेतें घटकेसाथ जोनेत्रइंद्रियकासंयोगसंबंधहै ॥ सोसंयोगसंबंध घटतथानेत्रइंद्रिय दोनोंविषे रहैहै ॥ यातैं जैसेघट तासंबंधकानिरूपकहै ॥ तैसे नेत्रादिकइंद्रियभी तासंबंधकानिरूपकहैं ॥ परंतु नेत्रादिकइंद्रिय इं

द्रियोंतैंभिन्नहैनहीं ॥ और घटतो नेत्रादिकइंद्रियोंतैंभिन्नहै ॥ यातैंइंद्रियविषे लक्षणकीअतिव्याप्तिवारणवासते इंद्रियोंतैंभिन्नहोवै य यपद अवश्यदेणाचाहिये ॥ **समाधान** ॥ यालक्षणतैंभी सन्मुखदेशवर्त्तिघटकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं जिसक्षणविषेनेत्रइंद्रियकास न्मुखदेशवर्त्तिघटकेसाथ संयोगसंबंधहै ॥ तिसीक्षणविषे ताघटकेसमीपवर्तिअन्यपदार्थोंकेसाथभी नेत्रइंद्रियका संयोगसंबंधहै ॥ तासंयोगसंबंधके तेअन्यपदार्थभी निरूपकहैं ॥ और इंद्रियोंतैंभिन्नभी हैं ॥ यातैं तिनपदार्थोंविषे घटकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवै है ॥ **शंका** ॥ जलकेआनयनकी जिसविषेशक्तिहोवै सो घटकहियेहै ॥ **समाधान** ॥ जलकेआनयनकीशक्तिरूपलक्षणतैंभी सन्मु खदेशवर्त्तिघटकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे सन्मुखदेशवर्त्तिघटविषे जलकेआनयनकीशक्तिहै तैसे अन्यघटविषे तथापटविषे तथाअन्यकिसीपात्रविषेभी जलकेआनयनकीशक्तिदेखीजातीहै यातैं सोसन्मुखदेशवर्त्तिघट पटादिरूपहोणाचाहिये ॥ तात्पर्ययह॥ याघटकेलक्षणकी पटादिकोंविषे अतिव्याप्तिहोवै है॥ **शंका** ॥ जलकाआनयनरूपक्रिया घटरूपकारककीही अपेक्षाकरैहै॥ पटादिकों कीअपेक्षाकरैनहीं ॥ यातैं पटादिकोंविषे पूर्वउक्तलक्षणकी अतिव्याप्तिनहीं ॥ **समाधान** ॥ जाजाक्रियाहोवै है सा पूर्वकारककेसमा नकारककीअपेक्षाकरैहै ॥ जैसे पाकरूपक्रिया पूर्वअग्निकेसमानअग्निकीअपेक्षाकरै है केवल पूर्वअग्निमात्रकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ तै से जलकाआनयनरूपक्रियाभी केवलघटमात्रकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ किंतु पार्थिवत्वरूपकरिकै घटकेसमानजेपटादिकहैं तिनोंकीभीअ पेक्षाकरै है ॥ यातैं जलकेआनयनकीशक्ति पटादिकोंविषेभीहै किंवा जलकेआनयनकीशक्तिवालाजोहोवै सो घटकहियेहै ॥ यात्र कारका जोघटकालक्षणकरिये ॥ ता सछिद्रघटविषे जलकेलेआवणेकीशक्तिहैनहीं ॥ यातैं तासछिद्रघटविषे घटबुद्धिनहींहोणीचा हिये ॥ और सछिद्रघटविषे घटबुद्धि सर्वजीवोंकूंहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ घटकेलक्षणकी सछिद्रघटविषे अव्याप्तिहोवैहै ॥ किंवा ॥ ज लकेआनयनकीशक्ति जोघटकालक्षणहोवै ॥ तौ काचेघटविषे जलकेआनयनकीशक्तिहैनहीं ॥ यातैं काचेघटविषे घटबुद्धिनहींहो णीचाहिये ॥ और सर्वपुरुषोंकूं ताकेविषे घटबुद्धिहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ नेत्रादिकइंद्रियकरिकै शक्तिकाप्रत्यक्षज्ञान किसीकूंहोवैन हीं ॥ किंतु कार्यरूपहेतुतैं शक्तिकाअनुमानहोवैहै ॥ जैसे स्फोटादिककार्यतैं अग्निविषे दाहशक्तिकाअनुमानहोवैहै ॥ काचेघटकरिकै

जलकाआनयनरूपकार्यहोवैनहीं ॥ यातें अनुमानकरिकैभी काचेघटविषे शक्तिसिद्धिहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ जलकेआनयनकीजिस
विषेशक्तिहोवै सोघटकहियेहै ॥ ऐसाजो घटकालक्षणकरिये तौ जलकेआनयनकीशक्ति एकघटमात्रविषेनहीं ॥ किंतु अन्यभी
अनेकपात्रोंविषे जलकेआनयनकीशक्तिहै ॥ यातें तिनोंविषेभी घटबुद्धिहोणीचाहिये ॥ और घटतैंभिन्नपात्रोंविषे घटबुद्धिकिसीकूंहो
वैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ याघटकेलक्षणकी अन्यपात्रोंविषे अतिव्याप्तिहोवैहै ॥ यातें यादुष्टलक्षणतैंभी घटकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ आन
यननाम लेआवणेकाहै ॥ **शंका** ॥ घटत्वजातिवालाजोहोवै सो घटकहियेहै ॥ **समाधान** ॥ घटत्वजातिरूपलक्षणतैंभी घटकीसि
द्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं साघटत्वजाति सर्वत्रव्यापकहै ॥ अथवा परिच्छिन्नहै ॥ जोकहो घटत्वजातिव्यापकहै ॥ तौ जैसे घटत्वजा
तिका घटकेसाथसंबंधहै ॥ तैसे पटादिकोंकेसाथभी अवश्य संबंधमानणाहोवैगा ॥ काहेतैं सर्वमूर्तपदार्थोंकेसाथ जाकासंबंधहो
वै सो व्यापककहियेहै ॥ जैसे आकाशका सर्वघटपटादिकमूर्तपदार्थोंकेसाथ संबंधहै यातैं आकाश व्यापकहै तैसेही जोघट
त्वजातिकूं व्यापकमानोंगे ॥ तौ पटादिकोंकेसाथभी घटत्वजातिकासंबंधहोणेतैं पटादिकोंविषे घटत्वजातिरूपलक्षणकी अतिव्या
प्तिहोवैगी ताअतिव्याप्तिरूपदूषणकीनिवृत्तिवासते साघटत्वजाति जोपरिच्छिन्नमानोंगे तौ साघटत्वजाति घटव्यक्तिविषेहीच
लिकेआवैहै पटादिकोंविषेजावैनहीं ॥ यानियमविषे कौनप्रयोजकहै ?॥ और जोतुम ऐसाकहो ॥ अनंतगौवोंकेविद्यमानहुएभी
जैसे वत्स आपणीमाताकूंपछानिकरिकै ताकेसमीपजावैहै ॥ तैसे घटत्वजातिभी आपणेघटव्यक्तिकूंपछानिकरिकै ताविषे प्रवे
शकरैहै ॥ पटादिकोंविषे प्रवेशकरैनहीं ॥ सोयह तुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं वत्स चेतनहै यातैं ताकेविषे आपणेमाताका
ज्ञानसंभवैहै ॥ और घटत्वजाति जडहै यातैं ताकेविषे यहघटरूपव्यक्तिहमारीहै याप्रकारकाज्ञान संभवैनहीं ॥ किंवा ॥ मूर्तद्रव्य
विषेही गमनरूपक्रिया नैयायिक मानेहैं॥जैसे पृथिवी जल तेज वायु और मन येपंचमूर्तद्रव्यहैं॥ यातैं इनोंविषे गमनरूपक्रियाहो
वैहै ॥ और आकाश काल दिशा आत्मा येचारि अमूर्तद्रव्यहैं औरव्यापकहैं ॥ यातैं इनोंविषे क्रियाहोवैनहीं ॥ और घटत्व
जाति द्रव्यरूपनहीं तथामूर्तरूपनहीं ॥ यातैं घटत्वजातिविषे गमनरूपक्रियासंभवैनहीं ॥ और क्रियारहितघटत्वजातिका

घटविषेप्रवेशहोणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ शंका ॥ घटत्वजातिविषे स्वभावतैंक्रियाहैनहीं ॥ यातैं साघटत्वजाति स्वतंत्र घटव्यक्तिविषे आइसकेनहीं ॥ किंतु घटतैंभिन्नकिसीव्यक्तिविषे साघटत्वजातिरहैहै ॥ जिसकालविषे घटकीउत्पत्तिहोवैहै तिस कालविषे ताव्यक्तिका घटकेसमीप आगमनहोवैहै ॥ ताव्यक्तिकेसाथ घटत्वजातिभी घटविषेआवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे रूपादिकगुणोंविषे स्वतंत्र गमनरूपक्रियासंभवैनहीं ॥ परंतु रूपादिकगुणोंकेआश्रय जेकुसुंभादिकद्रव्यहैं ॥ तिनोंका जबी वस्त्रके साथसंभवहोवैहै ॥ तबी ताकुसुंभादिकोंकेसाथ रूपादिकोंकाभी वस्त्रविषेजाणाहोवैहै ॥ समाधान ॥ वस्त्रकेसंबंधतैंपूर्वही जैसे कुसुंभादिकोंविषे रक्तरूपकीप्रतीतिहोवैहै ॥ तैसेघटव्यक्तितैंविना किसीअन्यव्यक्तिविषे घटत्वजातिकीप्रतीतिहोवैनहीं ॥ यातैं अन्यव्यक्तिकेआगमनतैं घटत्वजातिका घटविषेआगमन संभवैनहीं ॥ शंका ॥ अन्यव्यक्तिकेआगमनतैं घटत्वजातिका घटविषेआगमन होवैनहीं ॥ किंतु जिसदेशविषेघटकीउत्पत्तिहोवै है तिसदेशविषे आपणेप्रादुर्भाववासते घटत्वजाति पूर्वहीस्थितहोवै है॥ समाधान ॥ घटकीउत्पत्तितैंपूर्व घटत्वजाति तहांरहैहै ॥ यहतुमाराकहना संभवैनहीं॥काहेतैं घटकी उत्पत्तितैंपूर्व घटत्वजातिका कोईआश्रयहैनहीं ॥ और जोघटकीउत्पत्तितैंपूर्व घटत्वजातिका घटतैंभिन्नकोईआश्रयमानोंगे ॥ तौ उत्पन्नहुएघटविषेभी घटत्वजातिका स्वतंत्र गमन तथाआश्रयकेगमनतैंगमन पूर्वउक्तयुक्तियोंकरिकेसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ जिसकालविषे घट उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसकालविषे घटकेसाथ घटत्वजातिभी उत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं पूर्वउक्तदोष यापक्षविषे संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ जैसे घटकेसाथ नीलपीतादिकरूपोंकीउत्पत्तिहोवै है तैसे घटत्वजातिकीउत्पत्ति संभवैनहीं ॥ काहेतैं जातिकीउत्पत्ति नैयायिक मानैंनहीं ॥ जो उत्पत्तिमान्पदार्थभी जातिहोवै तौ नीलपीतादिकगुणभी घटत्वजातिस्वरूपहोणेचाहियें ॥ और नीलपीतादिकरूपोंकूं कोई घटत्वजातिकहैनहीं ॥ यातैं किसीप्रकारकरिकैभी घटत्वजातिकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ साघटत्वजाति अभावरूपहै अथवा भावरूपहै? ॥ तहां अभावरूपघटत्वजातिहै याप्रथमपक्षविषेभी कौनअभावरूपहै ॥ तात्पर्ययह ॥ दोप्रकारकाअभाव नैयायिक मानैं हैं ॥ एक अनित्यअभाव और दूसरानित्यअभाव ॥ तहां प्रागअभाव तथाप्रध्वंसाभाव येदोनोंअभाव अनित्यहैं ॥ और अन्योन्या

भाव तथाअत्यंताभाव येदोनोंअभाव नित्यहैं॥ तहां प्रथम प्रागअभावरूपता घटत्वजातिविषे संभवैनहीं काहेतें साघटत्वजाति घटकाप्रागअभावरूपहै ॥ अथवा पटादिकोंकाप्रागभावरूपहै ॥ तहां घटकाप्रागभावरूप जो घटत्वजातिकूंमानोंगे तौ घटविषे घटत्व जातिकीप्रतीति नहींहोणीचाहीये॥ काहेतें घटकेउत्पन्नहुए घटकाप्रागअभाव नाशहोइजावैहै यातें घटकाप्रागभावरूप घटत्वजाति नहीं ॥ तैसे पटकाप्रागभावरूपभी घटत्वजातिनहीं ॥ काहेतें प्रागभाव प्रतियोगीकीउत्पत्तितेंपूर्व प्रतियोगीकेसमवायिकारणविषे रहैहै ॥ अन्यकिसीविषे प्रागभावरहैनहीं ॥ पटकाप्रागभाव पटकीउत्पत्तितेंपूर्व तंतुवोंविषेरहै है घटविषे रहैनहीं ॥ यातें पटादिकोंकाप्रागभावरूपभी घटत्वजातिनहीं ॥ और घटत्वजातिकूं जोप्रागभावरूपमानोंगे तौ प्रतियोगीकेउत्पन्नहुए प्रागभावकानाश होवैहै ॥ यातें घटत्वजातिकाभी नाशमानणाहोवैगा ॥ सो घटत्वजातिकी उत्पत्ति तथानाश तुमारेकूं अंगीकाररहैनहीं ॥ यातें प्रागभावरूप घटत्वजातिनहीं ॥ और प्रध्वंसाभावरूप घटत्वजातिहै ॥ याद्वितीयपक्षविषेभी घटकाध्वंसरूपघटत्वजातिहै ॥ अथवा पटादिकोंकाध्वंसरूप घटत्वजातिहै ॥ तहां घटकाध्वंसरूप जोघटत्वजातिहोवै तौ घटकेविद्यमानहुए नहींप्रतीतहोणीचाहिये ॥ काहेतें घटकेविद्यमानकालविषे घटकाध्वंसहैनहीं ॥ यातें घटकाध्वंसरूप घटत्वजातिनहीं ॥ तैसे पटादिकोंकाध्वंसरूपभीघटत्वजातिनहीं ॥ काहेतें पटकाध्वंस पटकेसमवायिकारणतंतुवोंविषेरहैहै ॥ घटविषे पटकाध्वंस कबीभीरहैनहीं ॥ यातें पटादिकोंकाप्रध्वंसाभावरूपभी घटत्वजातिनहीं ॥ किंवा ॥ जोप्रध्वंसाभावरूप घटत्वजातिकूंमानिये तौ प्रध्वंसाभावकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ यातें घटत्वजातिकीभी उत्पत्तिमानणीहोवैगी ॥ सोजातिकीउत्पत्ति तुमारेकूं अंगीकाररहैनहीं ॥ यातें प्रध्वंसाभावरूपभी घटत्वजातिनहीं ॥ इसप्रकार अन्योन्याभावरूपता तथाअत्यंताभावरूपता घटत्वजातिकूं संभवैनहीं ॥ काहेतें घटकाअन्योन्याभावरूप तथा घटकाअत्यंताभावरूप जोघटत्वजातिहोवै ॥ तौ घटविषेघटत्वजातिकीप्रतीतिहोवैहै सोनहोणीचाहिये ॥ किंतु पटादिकोंविषे घटत्व जातिकीप्रतीति होणीचाहिये ॥ काहेतें घटकाअन्योन्याभाव तथाअत्यंताभाव घटविषे रहैनहीं ॥ किंतु पटादिकोंविषे रहैहै॥ यातें घटकाअन्योन्याभावरूप तथाअत्यंताभावरूप घटत्वजातिनहीं और जोवादी ऐसाकहै पटका अन्योन्याभावरूप तथाअत्यंताभावरूप

घटत्वजातिहै सोयहकहनाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं पटका अन्योन्याभाव तथाअत्यंताभाव जैसे घटव्यक्तिविषे है ॥ तैसे स्तंभा
दिकपदार्थोंविषेभीहै ॥ यातैं स्तंभादिकोंविषेभी घटत्वजातिकीप्रतीति होणीचाहिये ॥ और जोवादीऐसाकहै ॥ घटतैंभिन्नसर्वपदा
र्थोंकाअन्योन्याभावरूप तथाअत्यंताभावरूप घटत्वजातिहै ॥ सोयहभीकहनासंभवैनहीं ॥ काहेतैं अभावकेज्ञानविषे प्रतियोगीका
ज्ञान कारणहोवैहै ॥ प्रतियोगीज्ञानतैंविना अभावकाज्ञानहोवैनहीं ॥ और घटतैंभिन्नसर्वपदार्थोंकाज्ञान ईश्वरतैंविना किसीअल्पज्ञ
जीवकूं संभवैनहीं ॥ यातैं घटतैंभिन्नसर्वपदार्थोंका अन्योन्याभावरूप तथाअत्यंताभावरूप घटत्वजातिका किसीपुरुषकूंभी प्रत्यक्ष
ज्ञाननहींहोवैगा ॥ और यहघटहै याप्रत्यक्षज्ञानकीविषयता घटत्वजातिविषे वादीनैंभी अंगीकारकरीहै ॥ यातैं घटत्वजाति अभा
वरूपनहीं यहसिद्धभया ॥ और घटत्वजाति भावरूपहै ॥ याद्वितीयपक्षविषेभी साभावरूपघटत्वजाति नित्यहै अथवाअनित्यहै?॥
तहां अनित्यरूपतातौ घटत्वजातिविषेसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जो अनित्यवस्तुहोवैहै सो अभावकरिकैव्याप्तहोवैहै ॥ जैसे घटादि
कअनित्यहैं यातैं अभावकरिकैव्याप्तहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोघटत्वजातिकूं अनित्यमानोंगे तौ एकघटकेअभावहुए घटत्वजा
तिकाभीअभाव अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ घटत्वजातिकेअभावहुए सर्वत्र घटाभावबुद्धिहोणीचाहिये ॥ और ऐसाहोवैनहीं ॥ यातैं
घटत्वजाति अनित्यनहीं ॥ और घटत्वजाति नित्यहै ॥ याप्रथमपक्षविषेभी किसहेतुतैं घटत्वजातिनित्यहै?॥ यहतुमारेकूं कह्याचा
हिये ॥ शंका ॥ घटत्वजातिकेनाशकाकोईकारणहैनहीं ॥ यातैं घटत्वजातिनित्यहै ॥ **समाधान** ॥ हेवादिन्! घटत्वजातिकेना
शका कोईकारणनहींहै ॥ यहकेवल तुमारेकूंभ्रांतिभईहै ॥ काहेतैं श्रुतिविषे आत्मज्ञानकरिकै सर्वअनात्मपदार्थोंकानाश कथनक
र्याहै ॥ किंवा ॥ जोघटत्वजातिकेनाशका कोईकारणनहींहोवै तौ घटकेनाशकाभी कोईकारणनहींहोणाचाहिये ॥ काहेतैं आ
श्रयकीनित्यतातैंविना आश्रितवस्तुकीनित्यता संभवैनहीं ॥ यातैं घटत्वजातिकीनित्यतावासतै घटव्यक्तिकूंभी नित्यमाननीचा
हिये ॥ सो घटकीनित्यता तुमारेकूंभी अंगीकारनहीं ॥ यातैं घटत्वजातिनित्यनहीं ॥ किंवा ॥ अनित्यवस्तुकेआश्रित जोवस्तुरहै
है ॥ सो अनित्यहीहोवैहै ॥ जैसे अनित्यतंतुवोंकेआश्रितपट॥ अनित्यहीहोवैहै नित्यहोवैनहीं ॥ तैसे अनित्यघटव्यक्तिकेआश्रित

रहीजाघटत्वजाति साभी अनित्यहीहोवैगी ॥ सोजातिकीअनित्यता तुमारेकूं अंगीकारहैनहीं ॥ किंवा ॥ साघटत्वजाति भाव
रूपहोवै अथवा अभावरूपहोवै ॥ याकेविषे हम विचारनहींकरते ॥ परंतु ताघटत्वजातिकेमानणेकरिकै किसफलकीप्राप्तिहोवै
है ? ॥ यहतुमारेकूं कह्याचाहिये ॥ शंका ॥ घटविषेस्थितजोपटादिकोंकाभेद ताभेदकाअनुमितिज्ञानही घटत्वजातिकेमानणेका
फलहै ॥ ताअनुमानकाप्रकारयहहै ॥ यहघट पटादिकोंतेंभिन्नहै ॥ काहेतें घटत्वजातिवालाहोणेतें ॥ जोपटादिकोंतेंभिन्ननहीं है ॥
सोघटत्वजातिवालाभीनहीं है ॥ जैसे पटादिकहैं ॥ समाधान ॥ घटत्वजातिरूपहेतुतैं घटविषे पटादिकोंकाभेद तबीसिद्धहोवै ॥
जबी घटत्वजातिका पटत्वजातितैंभेद सिद्धहोवै ॥ घटत्वपटत्वजातिकेभेदकीसिद्धिविना घटपटरूपव्यक्तियोंकाभेद सिद्धहोवै
नहीं ॥ यातैं प्रथम घटत्वजातिविषे पटत्वजातिकाभेद सिद्धकर्‍याचाहिये ॥ शंका ॥ घटत्वजातिविषेपटत्वजातिकाभेदभी अनु
मानप्रमाणकरिकैहीसिद्धहै ॥ ताअनुमानका यहप्रकारहै ॥ घटत्वजाति पटत्वादिकजातियोंतैंभिन्नहै ॥ काहेतें घटकेआश्रित
होणेतैंजोजो घटकेआश्रितहोवैहै ॥ सोपटत्वादिकजातियोंतैं भिन्नहोवैहै ॥ जैसे घटविषेस्थितरूपादिकगुणहैं ॥ समाधान ॥
घटाश्रितत्वरूपहेतुतैं घटत्वजातिविषे पटत्वादिकजातियोंकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतें घटकीसिद्धी अबपर्यंत तुमारेसैंभई
नहीं ॥ घटकीसिद्धितैंविना घटाश्रितत्वरूपहेतुकीभी सिद्धिसंभवैनहीं ॥ और असिद्धहेतुतैं असिद्धसाध्यकीअनुमिति कहांभी
होवैनहीं ॥ किंतु सिद्धहेतुतैं असिद्धसाध्यकीअनुमितिहोवैहै ॥ जैसे सिद्धधूमरूपहेतुतैं पर्वतविषे असिद्धवन्हिरूपसाध्यकी अ
नुमितिहोवैहै ॥ जोअसिद्धहेतुतैंभी अनुमितिहोतीहोवै ॥ तौ पर्वतविषेधूमज्ञानतैंरहितपुरुषकूंभी वन्हिकीअनुमिति होणीचाहि
ये ॥ और धूमज्ञानतैंविना वन्हिकीअनुमितिकिसीकूंहोवैनहीं ॥ तैंसे घटाश्रितत्वरूपअसिद्धहेतुकरिकै घटत्वजातिविषे पटत्वादि
कजातियोंकाभेद सिद्धकरणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ यातैं घटत्वजातिके स्वरूपका तथाफलका अनिरूपणहोणेतैं ताघटत्वजातिरूप
लक्षणकरिकै घटकीसिद्धिसंभवैनहीं यहसिद्धभया ॥ शंका ॥ घटहै याप्रकारकेशब्दकीवाच्यता तथा घटहै याप्रकारकेज्ञान
कीविषयता घटकालक्षण संभवैहै ॥ समाधान ॥ सामान्यतैंशब्दकीवाच्यता तथाज्ञानकीविषयता घटकालक्षणहै ॥ अथवा घट

है याशब्दकीवाच्यता तथा घटहै याज्ञानकीविषयता घटकालक्षणहै ॥ तहां प्रथमपक्षतौ संभवैनहीं ॥ काहेतें सामान्यतैंशब्द
कीवाच्यता तथाज्ञानकीविषयता पटादिकोंविषेभीहै ॥ यातें पटादिकोंविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैगी ॥ तैसे दूसरापक्षभी
संभवैनहीं ॥ काहेतें घटहै याशब्दकीवाच्यता तथाज्ञानकीविषयता तबीसिद्धहोवै जबी घटकीप्रथमसिद्धिहोवै ॥ सोघटकीसिद्धि
अबपर्यंत भईनहीं ॥ यातें ताघटकेविषयताकीभीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ घटहै याप्रकारकेज्ञानकीविषयतारूपलक्षणतें घटकी
सिद्धि तबीहोवै जबी प्रथम ताविषयताकीसिद्धिहोवै ॥ सोविषयताकीसिद्धि तुमारेसैंहोणी कठिनहै ॥ काहेतें जिसघटकरिकै
सर्वलोक जलादिकोंकूंलेआवैहैं ॥ तिसप्रसिद्धघटकास्वरूपभी जबी तुमारेसें निरूपणनहींभया ॥ तबी ताघटविषेरहीजाज्ञानकीवि
षयता ताकास्वरूप तुमारेसें कैसेनिरूपणहोवैगा ॥ किंतु ताविषयताकास्वरूप तुमारेसें कबीभीसिद्धहोइसकैगानहीं ॥ और जो
असिद्धविषयतातें घटकीसिद्धिकरोगे ॥ तौ असिद्धवस्तुकरिकैअसिद्धवस्तुकीसिद्धिरूप पूर्वउक्तदूषण तुमारेकूं प्राप्तहोवैगा ॥ या
तें घटहै याज्ञानकीविषयतारूपलक्षणतेंभी घटकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ मूलदेश तथाउदर जिसकाविशालहोवै और मुख
जिसकाअल्पहोवै ताकानाम घटहै॥ समाधान ॥ यालक्षणकरिकैभी सन्मुखदेशवर्तिघटकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतें पृथिवीविषे
जितनेघटहैं तेसंपूर्ण यालक्षणकरिकैयुक्तहैं ॥ यातें सन्मुखदेशवर्तिघटकेलक्षणकी देशांतरवर्तिघटोंविषे अतिव्याप्तिहोवैगी ॥ शं
का ॥ सन्मुखदेशविषेजोवर्तेहै सो घटकहीयेहै॥ अथवा इसकालविषेजोवर्तेहै सो घटकहीयेहै ॥ समाधान ॥ सन्मुखदेशविषे
वर्तणा तथाइसकालविषे वर्तणा ॥ यादोनोंलक्षणोंतें घटकीसिद्धिहोवैनहीं॥ काहेतें जैसे सन्मुखदेशविषे तथाइसकालविषे घट
वर्तेहै ॥ तैसे अन्यपटादिकपदार्थभी तादेशकालविषे रहेहैं ॥ यातें याघटकेलक्षणकी तिनपटादिकोंविषे अतिव्याप्तिहोवैहै ॥ किं
वा ॥ हेवादिन्! घटहै याप्रकार सर्वलोक कथनकरैहैं ॥ और घटहै याप्रकार तूभी घटकूंजाणताहै ॥ तिसविषे किसहेतुतें य
हघटहै ॥ याप्रकारकीहमारीशंकाका दूसराकोईउत्तर तुमारेसें होइसकैगानहीं ॥ किंतु हमनहींजाणते याप्रकारकाउत्तर तू देवै
गा अथवा हमारेऊपरि क्रोधकरैगा इनदोनोंउत्तरोंतेंभिन्न किंचित्मात्रभी तुमारेसें घटकास्वरूप निरूपणनहींहोवैगा ॥ जबी

सर्वलोकप्रसिद्ध तथासन्मुखदेशवर्त्ति घटकेस्वरूपनिरूपणकरणेकूं तुम समर्थनहींभये ॥ तबी संपूर्णप्रपंचकेस्वरूपकहणेकूं तुम किसप्रकारसमर्थहोवोगे ? ॥ किंतु नहींहोवोगे ॥ यातें हमनहींजानते यातुमारेअनुभवकरिकैसिद्ध अज्ञानकूंही घटका तथा सर्वप्रपंचका उपादानकारण मान्याचाहीये ॥ शंका ॥ मायांतुप्रकृतिंविद्यात् ॥ अर्थयह ॥ मायाकूंजगत्काउपादानकारणजानणा ॥ याश्रुतिप्रमाणकरिकै मायाविषे जगत्कीकारणतासिद्धहै ॥ यातें युक्तियोंसें जगत्कीकारणता मायाविषे कथनकरणीनिष्फलहै ॥ समाधान ॥ श्रुतिप्रमाणविषे जिनपुरुषोंकीश्रद्धाहै ॥ तिनोंकूं केवलश्रुतिप्रमाणतेंही मायाविषे जगत्कीकारणता सिद्धहोवैहै ॥ और जिनपुरुषोंकूं श्रुतिप्रमाणविषे श्रद्धानहींहै ॥ तिनोंकूं हमारेयुक्तियोंसेंही अज्ञानकीसिद्धिहोवैहै ॥ यातें युक्तियोंकरिकै मायाविषेजगत्केकारणताकाकथन निष्फलनहीं ॥ किंवा ॥ यहसंपूर्णप्रपंच सत्यरूपकरिकै तथाअसत्यरूपकरिकै निरूपणकियाजावैनहीं ॥ यातें अनिर्वचनीयहै ॥ ताअनिर्वचनीयप्रपंचका मायातेंविना दूसराकोईकारण संभवैनहीं ॥ किंतु अनिर्वचनीयमायाहीं अनिर्वचनीयजगत्काकारण संभवैहै॥ताअनिर्वचनीयमायाका तथाताकेकार्यप्रपंचका किसीतेंभीनिरूपणहोइ सकेनहीं ॥ काहेतें लोकविषेप्रसिद्ध जोइंद्रजालकेकरणेहारापुरुषहै ॥ तिसकेमायाकूं तथामायारचितअनेकपदार्थोंकूं सर्वलोक देखतेभीहैं ॥ परंतु ताकेस्वरूपनिरूपणकरणेविषे कोईभी समर्थहोवैनहीं ॥ जबी लौकिकऐंद्रजालिकपुरुषकेमायाकूं तथामायाकेकार्यकूं कोईपुरुष जानणेमैंसमर्थनहींभया ॥ तबी सर्वशक्तिसंपन्नपरमेश्वरकेमायाकूं तथामायाकेकार्यप्रपंचकूं कौनपुरुष निरूपणकरि सकैगा ॥ किंतु कोईनिरूपणकरणेमैंसमर्थनहीं ॥ यातें माया तथामायारचितसकलप्रपंच अनिर्वचनीयहै ॥ किंवा ॥ जिसपदार्थकी उत्पत्तिविषे योग्यदेश तथायोग्यकाल कारणनहींहोवैहैं ॥ सोपदार्थ मायाकरिकैरचितहोवैहै ॥ जैसे मथुराकेसमीपवनविषे रात्रिमैंसोयाहुआपुरुष आपणेहृदयदेशविषे सूर्यग्रहणकरिकैयुक्तसमुद्रकूं देखैहै ॥ तहां अल्पहृदयदेशविषे समुद्रकीयोग्यतानहीं ॥ तथा रात्रिकालविषे सूर्यग्रहणकीयोग्यतानहीं ॥ तथापिस्वप्नविषे तिनपदार्थोंकीप्रतीतिहोवैहै ॥ यातें स्वप्नपदार्थ मायाकरिकैरचितहैं ॥ तैसे योग्यदेश तथाकालतेंविनाही चराचररूपप्रपंचकूं मूढपुरुष देखैहैं ॥ यातें यहप्रपंचभी मायाकरिकैरचितहै ॥

वार्किं ॥ जिनपुरुषोंकूं शुद्धआत्माकासाक्षात्कारभयाहै ॥ तिनपुरुषोंकूं माया तथामायाकाकार्य असत्यप्रतीतहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे आकाशविषेस्थितजोसर्पकेपादोंकाचिन्ह तिसकूं अंधपुरुषदेखैहै ॥ और मूकपुरुषकेवचनकूं बधिरपुरुष श्रवणकरैहै ॥ यह वार्ता जैसेअसत्यहै ॥ तैसे तत्ववेत्तापुरुषकीदृष्टिविषे जगत् अत्यंतअसत्यहै ॥ और आत्मज्ञानतैंरहितमूढपुरुष हम जगत्कूं जाणतेहैं याप्रकारका जोकथनकरैहैं ॥ सोकेवलअभिमान तिनोंकूंहै ॥ जगत्कास्वरूप तिनोंनें जान्यानहीं ॥ यातें मायावीपरमेश्वरकरिकैरचितप्रपंचकूं कोईभीपुरुष जाणिसकतानहीं ॥ किंवा ॥ मायावीपरमेश्वरकरिकैरचितप्रपंचकाअज्ञान देहधारीजीवोंकूं दूषणरूपनहीं ॥ किंतु आत्मज्ञानरहितजीवोंकूं प्रपंचकाज्ञान भूषणरूपहै ॥ और अज्ञानीपुरुष जोकहैहैं ॥ हमारेकूं किसीवस्तुका अज्ञाननहीं ॥ यहतिनोंकाकहणाकेवलमिथ्याहै ॥ काहेतें जिसस्थूलशरीरविषे सर्वदा अविवेकीपुरुषोंकूंआत्मबुद्धिहै ॥ तिसशरीरकेस्वरूपकूंभी अविवेकीपुरुष यथावत् जाणतेनहीं ॥ तौ बाह्यप्रपंचकेस्वरूपकूं किसप्रकारजाणेंगे? ॥ किंतु नहींजाणेंगे ॥ किंवा ॥ जिनइंद्रियोंकरिकै यहपुरुष स्वर्गकीप्राप्तिकेहेतु विहितकर्मोंकूंकरैहै ॥ तथा नरकप्राप्तिकेहेतु निषिद्धकर्मोंकूंकरैहै ॥ तथा मोक्षकेहेतु निष्कामकर्मोंकूंकरैहै ॥ तिनइंद्रियोंकेस्वरूपकूंभी यहजीव यथावत् जाणतानहीं ॥ तौ बाह्यप्रपंचकूं यहमूढपुरुष कैसेजाणिसकेगा? ॥ किंतु नहींजाणेगा ॥ किंवा ॥ मेरेकूं सर्वदासुखकीप्राप्तिहोवै ॥ और मेरेकूं दुःखकीप्राप्ति कबीभी नहींहोवै ॥ याप्रकारकीबुद्धिकरिकै यहजीव कार्यविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ परंतु मेरेकूं याशब्दकेअर्थकूं यहपुरुष जानतानहीं ॥ तौ बाह्यप्रपंचकूं यहमूढपुरुष किसप्रकार जाणेगा? किंतुनहींजानैगा ॥ किंवा ॥ पूर्वजन्मविषे हमारे कौनसंबंधीथे? और आगेहमारे कौनसंबंधीहोवैंगे? ॥ याप्रकारकाज्ञानभी जिसपुरुषकूं नहींहै ॥ सोमूढपुरुष अन्यबाह्यप्रपंचकूं किसप्रकारजानैगा ? किंतु नहींजानैगा ॥ किंवा ॥ बाल्यअवस्थाविषे तथायुवाअवस्थाविषे जेजेपदार्थ इसपुरुषनें अनुभवकरैहैं ॥ तिनपदार्थोंकाभी इसकूं यथावत्स्मरणहोतानहीं ॥ तथा आगामीपदार्थोंकूंभी यहजीव यथावत्जाणतानहीं ॥ तौ सकलप्रपंचकूं किसप्रकार यहजानैगा किंतुनहींजानैगा ॥ यातें किसीपुरुषकूंभी प्रपंचका यथावत्प्रत्यक्षनहीं ॥ किंवा ॥ लोकविषेभी जोजोअर्थ इंद्रियजन्यज्ञानकाविषयनहींहोवैहै तिसअर्थकेज्ञानविषे शब्दकूंही

प्रमाणतादेखीहै ॥ जैसे व्यतीतहुआ कोईकव्यवहार तथाआपणेकुलकेआचारआदिक इंद्रियजन्यज्ञानकेविषयहैंनहीं ॥ किंतु मातापितादिकवृद्धपुरुषोंके वचनरूपशब्दप्रमातें तिनकुलाचारादिकोंका पुत्रकूंज्ञानहोवैहै ॥ तैसे पूर्वउक्तरीतितें घटादिकप्रपंच केस्वरूपकाभी किसीइंद्रियकरिकै निर्णयहोइसकतानहीं ॥ यातें प्रपंचभी अतिइंद्रियहै ॥ ताअतिइंद्रियप्रपंचकीसिद्धिविषेभी दृष्टिसृष्टिवादकूंबोधनकरणेहाराशब्दहीं प्रमाणहै ॥ शंका ॥ पितामातादिकवृद्धपुरुष जैसे कुलाचारादिकधर्मोंकूंकथनकरैहैं ॥ तैसे दर्शनकालविषे पदार्थोंकेउत्पत्तिकूं तथाअदर्शनकालविषे पदार्थोंकेलयकूं पितामातादिक कथनकरैनहीं ॥ यातें शब्दप्रमाणतैंभी दृष्टिसृष्टिवादकीसिद्धि संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ मातापितादिकोंकेवचनतें दृष्टिसृष्टिवादकीसिद्धिमतहोवै ॥ परंतु तिनसंपूर्णोंकागुरुजो वेदभगवान्है ॥ सो दृष्टिसृष्टिवादकूं कथनकरैहै ॥ यातें श्रुतिप्रमाणतैंही दृष्टिसृष्टिवादकीसिद्धिहोवैहै ॥ किंवा ॥ जिनमनुआदिकवृद्धपुरुषोंकेवचनकूं संपूर्णलोक प्रमाणरूपकरिकैमानैहैं ॥ तेमनुआदिकवृद्धपुरुषभी अस्मदादिकपुरुषोंकीन्यांई वेदकेवचनोंतैंही आत्मज्ञानकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ शंका ॥ सोवेदभगवान् किसकेवचनकरिकै ज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ समाधान ॥ सोवेदभगवान्भी वेदके वचनोंकरिकैही ज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै किसीअन्यकेवचनकरिकै वेदपुरुषकूं ज्ञानहोवैनहीं ॥ काहेतें वेदपुरुषकाशरीर जोशब्दरूपवेद है ॥ सोभारतादिकोंकीन्यांई पौरुषेयनहीं ॥ किंतु अपौरुषेयहै ॥ तहां पूर्वकल्पविषे वर्णोंकी तथाश्लोकोंकी तथाकथाप्रसंगकी जोजो आनुपूर्वीहोवैहै ॥ तिसीआनुपूर्वीतें किंचित्विलक्षण औरकिंचित्समान आनुपूर्वीजिसकी उत्तरकल्पविषेहोवै ॥ ताकूं पौरुषेयकहैं ॥ ऐसे महाभारतादिकहैं ॥ काहेतें पूर्वकल्पविषे जैसेमहाभारतकूं व्यासभगवान्नें कथनकऱ्याथा ॥ तैसेहीमहाभारतकूं उत्तरकल्प विषे व्यासभगवान् रचैनहीं ॥ किंतु पूर्वतैंकिंचित्विलक्षणहीरचेहैं ॥ यातें महाभारतादिक पौरुषेयहैं ॥ और वेदविषेतौयह नियमहै ॥ पूर्वकल्पविषे परमेश्वरतें जिसप्रकारकेवेदोंकाप्रादुर्भाव भयाथा ॥ तिसीप्रकारकेवेदोंका उत्तरकल्पविषेभी परमेश्वर तैंप्रादुर्भावहोवैहै ॥ किंचित्मात्रभी पूर्वउत्तरवेदोंविषे विलक्षणताहोवैनहीं ॥ यातेंवेद अपौरुषेयहैं ॥ किंवा ॥ जैसे अस्मदादिक पुरुषोंकेवचनविषे इतरप्रमाणकीअपेक्षारहैहै ॥ इतरप्रमाणकीसहायतातैंविना अस्मदादिकपुरुषोंकावचन किसीअर्थकूंसिद्धकरि

सकैनहीं ॥ तैसे वेद्भगवान्कूं आपणेज्ञानवासते तथाप्रमाणतावासते दूसरेकिसीप्रमाणकीअपेक्षाहैनहीं ॥ यातें वेद्भगवान्
अस्मदादिकपुरुषोंकूं जैसीआज्ञाकरै ॥ साआज्ञा श्रद्धापूर्वक अवश्य हमलोकोंनैं अंगीकारकरनीचाहीये ॥ दृष्टांत ॥ जैसे महा
राजाकेआज्ञाकूं श्रद्धापूर्वक प्रजा अंगीकारकरैहै ॥ और सोवेद्भगवान् सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे प्राणमैं संपूर्ण
वाक्आदिकइंद्रियोंकेलयकूं बोधनकरैहै ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे तथाजन्मकालविषे तिसीहीप्राणतैं वाक्आदिकइंद्रियोंकेउत्प
त्तिकूं कथनकरैहै ॥ याप्रकारकीवेद्भगवान्कीआज्ञा अवश्य हमलोकोंनैं अंगीकारकरनीचाहिये ॥ किंवा॥ सोवेद्भगवान्मात
पितादिकोंतैंभी अतिसुहृद्है ॥ यातें मायामयअनिर्वचनीयप्रपंचविषेस्थित हमजीवोंकूं कृपाकरिकै जिसजिसवचनकाउपदेशकरै
है ॥ तेसंपूर्णवचन हमजीवोंकेमोक्षकासाधनहैं ॥ किंवा ॥ जैसे सूर्यकेसन्मुखहुआचक्षु सूर्यकेतेजतें प्रतिघातकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे
वेद्भगवान्काज्ञान किसीवस्तुतैं प्रतिघातकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सर्ववस्तुकूंविषयकरैहै ॥ यातें वेदभगवान्कूं किसीभीवस्तुका
अज्ञाननहीं ॥ याकारणतैंही भ्रम प्रमाद विप्रलिप्सादिकदोष वेदभगवान्विषेनहीं॥ वचनकरणेकीइच्छाकूं विप्रलिप्साकहैहैं॥ किंवा
वेद याशब्दकेअर्थकाविचारकीयेतैंभी आवरणरहितज्ञानस्वरूपताहीं वेदकूं सिद्धहोवैहै॥ और जोज्ञानस्वरूपहोवैहै॥सो जड तथाप
रिच्छिन्नरूपहोवैनहीं॥ यह प्रथमअध्यायविषे कहिआयेहैं॥ यातें परिपूर्ण तथाचैतन्यरूप जोप्राणउपहितपरमात्माहै॥ सोईही वेदस्व
रूपहै ॥ याकारणतैंही वेदकूं शब्दब्रह्मकहैहैं ॥ ऐसे ब्रह्मरूपवेदभगवान्केप्रति तुमनैं यहवचन किसवासतेकह्याहै?॥याप्रकार
केप्रश्नकरणेकूं कोईभीजीव समर्थनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे नेत्रहीनअंधपुत्र चक्षुयुक्तपिताकूं नीलादिकरूपकेज्ञानविषे प्रश्नकरिस
कैनहीं ॥ यातें वेद्भगवान्नैं कथनकऱ्याजोअर्थ ॥ ताअर्थकेनिश्चयकरणेविषे जिसप्रकारकरिकै हमजीवोंकीबुद्धि समर्थहोवै ॥
तिसीप्रकारकाप्रयत्न हमजीवोंकूं करणेयोग्यहै ॥ किंवा जैसे धर्मात्माराजाकेवचनकूं प्रजा परित्यागकरैनहीं ॥ और जैसे पितामा
ताकेवचनकूं सुपुत्र परित्यागकरैनहीं॥ किंतु श्रद्धापूर्वक तावचनोंकूंग्रहणकरैहैं॥ तैसे वेदभगवान्केवचनकूंभी श्रोतापुरुषनैं कदा
चित्परित्यागनहींकरणा॥किंतु श्रद्धापूर्वक वेदकेवचनकूं अवश्यअंगीकारकरणा॥और तिसवेदकेवचनतें यहअर्थसिद्धहोवैहै॥सुषु

प्ति अवस्थाविषे विषयसहितसंपूर्णवागादिकइंद्रिय प्राणविषे लयकूंप्राप्तहोवैहैं॥और जाग्रत्अवस्थाविषे तिसीहीप्राणतैंवाक्आदिक इंद्रिय उत्पन्नहोवैहैं ॥ किंवा ॥ जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे संपूर्णवागादिकइंद्रिय प्राणविषे लयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे मरणअवस्थाविषेभी संपूर्णवागादिकइंद्रिय प्राणविषेलयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे संपूर्णवागादिकइंद्रिय तिसीप्राणतैंउत्पन्नहोवैहैं॥ तैसे जन्मअवस्थाविषेभी संपूर्णवागादिकइंद्रिय तिसीप्राणतैंउत्पन्नहोवैहैं यहअर्थसिद्धभया ॥ किंवा॥शरीरविषे प्राणकेविद्यमानहुए वाक्आदिकइंद्रियोंकीविद्यमानताहोवैहै॥और लोकांतरविषे प्राणकेगमनहुए वागादिकइंद्रियोंकाभी तहां गमनहोवैहै ॥ याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककानिश्चयही प्राणस्वरूपपरमात्माकीसिद्धिहै ॥ यद्यपि अन्वयव्यतिरेककानिश्चय प्राणकेसिद्धिकासाधनहै ॥ यातैं साधनकूंसिद्धिरूपकहणा संभवैनहीं ॥ तथापि जैसेभूमिविषेस्थितधनकीसिद्धि अंजनरूपसाधनकरिकेहोवैहै ॥ यातैं ताअंजनरूपसाधनकूंभी लोकविषेसिद्धिकहैहैं ॥ तैसे मरणअवस्थाविषे अन्वयव्यतिरेकनिश्चयकरिकेही प्राणस्वरूपआत्माकीसिद्धिहोवैहै ॥ यातैं ताअन्वयव्यतिरेकरूपसाधनकूं सिद्धिरूपकरिकेकथनकऱ्याहै॥ अब मरणअवस्थाविषे इंद्रियोंकेलयकूं स्पष्टकरिकेदिखावैहैं ॥ मरणअवस्थाविषे यहपुरुष नानाप्रकारकीव्याधियोंकरिके अत्यंतदुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥और तिसदुःखकरिके मूर्च्छाकूंप्राप्तहोवैहै॥ और सामर्थ्यतैंरहितहोवैहै ॥ यातैं ताभरणअवस्थाविषेयहपुरुष किंचित्मात्रभी शब्दउच्चारणेविषे समर्थ नहींहोता ॥ याप्रकारताकीदीनअवस्थाकूंदेखिकरिके स्त्रीपुत्रादिकसर्वबांधव अतिदुःखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तिसपुरुषकेसमीपस्थितहोइके याप्रकारपूछैहैं कि हेपिता!मुझप्रियपुत्रकूं तूजाणताहै? और हेपति! मुझप्रियस्त्रीकूं तूजाणताहै? और हेभ्राता! मुझसुहृदमित्रकूं तूजाणताहैं॥ इसप्रकार स्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकरिके पूछाहुवाभीसोपुरुष जबी काष्ठकीन्यांई किसीकूंभीनहींजाणता॥ तबी तेसर्व बांधव याप्रकार कहैहैं ॥ इसकूं किसीवस्तुकाभीज्ञान अबी नहींरह्या ॥ जोइसकाज्ञान नहींनिवृत्तिहोता॥ तो हमप्रियमित्रोंकेवचनकूं पूर्वकीन्यांई यह श्रवणकरता॥ और पूर्वकीन्यांई हमारीतरफदेखता॥ तथा हमारेसाथ किंचित्बोलता ॥ और यहपुरुष पूर्व जीवतअवस्थाकीन्यांई अबी हमारेतरफ देखतानहीं तैसे बोलताभीनहीं ॥ यातैं ऐसाजान्याजावैहै ॥ याकेविषे अबीज्ञाननहींर

ह्या ॥ याप्रकार सर्व बंधुजन कथनकरैहैं ॥ यातैं तामरणअवस्थाविषे वाक्आदिकसकलइंद्रिय आपणेआपणेविषयोंसहित प्रा
णविषे लयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जैसे सुषुप्तितैंअनंतर यहपुरुष जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे मरणतैंअनंतर जबी यहजीव
जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी विषयोंसहितसंपूर्णवाक्आदिकइंद्रिय पुनःतिस प्राणतैं उत्पन्नहोवैहैं ॥ शंका ॥ जैसे जीवतअवस्थाविषे या
जीवकेप्रति वाकादिकइंद्रिय भोगोंकूंप्राप्तकरैहैं ॥ तैसे मरणकालविषेभी वाकादिकइंद्रिय भोगोंकूं काहेतैंनहींप्राप्तकरैहैं ॥समाधान॥
पूर्वजीवतअवस्थाविषे जेवाकादिकइंद्रिय भृत्यकीन्यांई याजीवकूंभोगोंकीप्राप्तिकरतेथे ॥ तेहीवाकादिकइंद्रिय मरणअवस्थावि
षे याजीवकूं असमर्थजानिकरिकै ताकापरित्यागकरैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ मरणअवस्थाविषे तेवाकादिकइंद्रिय आपणेआपणेविषय
तैंउपरामहोइकै याजीवकूंभोगकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ यहहीवाकादिकइंद्रियोंकापरित्यागहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसेअसमर्थराजाकूं प्रजा प
रित्यागकरैहै ॥ और जैसे धनकूंनहींप्राप्तहुएसुभट युद्धकेमध्यकालविषे आपणेस्वामीकूंपरित्यागकरैहैं ॥ तैसे मरणअवस्थाविषे
वाकादिकइंद्रियभी जीवकृतआत्मअभिमानरूपधनकूंनहींप्राप्तभये याजीवकापरित्यागकरैहैं ॥ शंका ॥ मरणअवस्थाविषे वाका
दिकइंद्रियोंतैंविनाही किसीअन्यकारणतैं नामादिकव्यवहार काहेतैंनहींहोता ॥ समाधान ॥ अन्यकरिकैसाध्यजोव्यवहारहै ॥
सो तिसीतैंअन्यकिसीकरिकै सिद्धहोवैनहीं ॥ जैसे जिसग्रामकूं संपूर्णवैश्य परित्यागकेजावैहैं तिसग्रामविषे वैश्यकरिकैसाध्य
जोवाणिज्यादिककार्य है सो अन्यकिसीब्राह्मणादिकोंतैंहोवैनहीं ॥ तैसे वाकादिकइंद्रियोंकेपरित्यागहुए यापुरुषविषे वाकादिकइंद्रि
योंकरिकैसाध्यनामादिकव्यवहार अन्यकिसीकारणतैंउत्पन्नहोवैनहीं ॥ शंका ॥ मरणअवस्थाविषे यापुरुषकापरित्यागकरिकै वा
कादिकइंद्रिय कहांजावैहैं? ॥ समाधान ॥ जैसे महाराजाकेजयरूपकार्यकरणेवासते युद्धविषेप्राप्तभयाजोअल्पदेशकाअधिपतिरा
जा तिसका जबीशत्रुकरिकैनाशहोवैहै तबी ताकेसुभट अन्यराजाकेआश्रयकरणेकीइच्छाकरैहैं ॥ परंतु तेसुभट आपणेस्वामी
केअत्यंतभक्तहैं ॥ यातैं अन्यकिसीराजाकाआश्रयकरैनहीं ॥ किंतु आपणेस्वामीकाभीस्वामीजोमहाराजाहै तिसीकाही आ
श्रयकरैहैं ॥ तैसे जीवतअवस्थाविषे विषय तथादेवतासहितवाकादिकइंद्रिय अहंममअभिमानीरूपजीवकेआश्रितरहैहैं ॥

और मरणअवस्थाविषे ताजीवकूंमूर्च्छितहुवादेखिकै तेवाकादिकइंद्रिय सर्वकेअधिपतिरूपप्राणका आश्रयकरै हैं ॥ यातैं यह सिद्धभया कि प्राणकेविद्यमानहुए वाकादिकइंद्रियोंकीशरीरविषेविद्यमानता और प्राणकेअभावहुए वाकादिकइंद्रियोंका अभाव ॥ याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै प्राणविषेही संपूर्णवाकादिकोंकालय ॥ तथाप्राणतैंहीतिनोंकीउत्पत्ति सिद्धहोवैहै ॥ यातैं प्राणतैंभिन्न किंचित्मात्रभीवस्तुनहीं यहसिद्धभया ॥ किंवा ॥ जीवतअवस्थाविषे प्राणकेविद्यमानहुए प्रज्ञाभीरहेहै ॥ और मरणकालविषे प्राणकेनिर्गमनहुए प्रज्ञाभीरहैनहीं यातैं प्राणऔर प्रज्ञाकाअभेदहै ॥ यहजोपूर्वकह्याथा सो दोषतैंरहितसिद्धभया ॥ काहेतैं प्राणतैंरहितपुरुषविषे प्रज्ञाभीदेखतीनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसकालविषे पुरुषकेप्राण निकसिजावै हैं ॥ तिसकालविषे यापुरुषकेबांधव याप्रकारकहै हैं ॥ इसपुरुषविषे अबीज्ञाननहींरह्या ॥ यालोकव्यवहारतैंभी प्राणऔरप्रज्ञाका अभेदहीसिद्धहोवैहै ॥ किंवा ॥ प्राणस्वरूप तथाप्रज्ञास्वरूप मेरेकूंतूजाण ॥ याप्रकारके इंद्रकेवचनविषे जैसे प्राणशब्दकाअर्थ श्वासमात्रनहीं ॥ किंतु परमात्माही प्राणशब्दकाअर्थहै ॥ तैसे प्रज्ञाशब्दकाअर्थभी केवलबुद्धिमात्रनहीं ॥ किंतु स्वयंप्रकाशचैतन्यही प्रज्ञाशब्दकाअर्थहै ॥ तहां प्राणकीअद्वितीयरूपता पूर्वकही ॥ अब प्रज्ञाकेअद्वितीयरूपताकूंदिखावै हैं ॥ इंद्रउवाच ॥ हेप्रतर्दन! प्रज्ञापदकाअर्थजोसंवित्है सोवास्तवतैंएकहै ॥ तथापि उपाधिकेसंबंधतैं जैसे एकसंवित् नानारूपहोईकेप्रतीतहोवैहै ॥ सोप्रकार तेरेतांई मैंकथनकरताहूं ॥ तथा नानारूपहुईसंवित् जिसप्रकारकरिकै पुनःएकभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोप्रकारभी मैं तुमारेतांई कथनकरताहूं ॥ तुम एकाग्रमनकरिकैश्रवणकरो ॥ वाकादिकपंचकर्मइंद्रिय और श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय शरीर अंतःकरण यह द्वादशकरण आपणेआपणेविषयोंकरिकेयुक्तहुए प्रज्ञारूपसंवित्केभेदकूंकरै हैं ॥ तहां शब्दकाउच्चारण वाक्इंद्रियकाविषयहै ॥ और वस्तुकाग्रहण हस्तइंद्रियकाविषयहै ॥ और गमन पादइंद्रियकाविषयहै ॥ और मलकापरित्याग पायुइंद्रियकाविषयहै ॥ और आनंद उपस्थइंद्रियकाविषयहै ॥ ये कर्मइंद्रियोंकेपंचविषय तथापंचकर्मइंद्रिय प्रज्ञाकेभेदकूंउत्पन्नकरै हैं ॥ और शब्द श्रवणइंद्रियकाविषयहै ॥ और स्पर्श त्वक्इंद्रियकाविषयहै ॥ और रूप चक्षुइंद्रियकाविषयहै ॥ तथा रस रसनइंद्रियकाविषयहै ॥ तथा गंध घ्राण

इंद्रियकाविषयहै ॥ ये शब्दादिकपंच ज्ञानइंद्रियोंकेविषयहैं ॥ और सुख तथादुःख येदोनों शरीरकेविषयहैं ॥ और कामना तथा संकल्पादिक अंतःकरणकेविषयहैं ॥ इसप्रकार आपणेआपणेविषयोंकरिकैयुक्तहुए पूर्वउक्तवाकादिकद्वादशकरण प्रज्ञाकेविभाग कूंकरैहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसेदशगोपाल आपणेप्रयोजनकीसिद्धिवासते एकहीगौकूं दुहैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ तागौतैंदुग्धकूंपृथक्करैहैं ॥ तैसे वाकादिकद्वादशकरणभी एकहीप्रज्ञारूपीगौकूंदुहैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ चिदाभासरूपप्रज्ञाकेभागोंकूंपृथक्करैहैं ॥ इसप्रकार सो एकहीप्रज्ञा उपाधिकेवशतैं अनेकभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे एकहीअग्निकेशिखाकूं द्वादशकाष्ठरूपउपाधिकेवशतैंद्वादशप्रकार लोक कथनकरैहैं तैसे वाकादिकइंद्रियोंकेभेदकरिकै एकहीप्रज्ञाकूं भिन्नभिन्न हम कथनकरैहैं ॥ और जैसे द्वादशदीपकोंकरिकै गृहादिकदेशविषे द्वादशप्रकारकाप्रकाश उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे वाकादिकद्वादशकरणोंकरिकै एकहीबोध विषयोंविषे द्वादशप्रकारउत्पन्नहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ एकहीप्रज्ञाका जोजोभाग जिसजिसइंद्रियनैं भिन्नकरताहै ॥ तिसतिसप्रज्ञाकेभागनैं तिसतिसइंद्रियकेविषयका प्रकाशकरताहै ॥ याकारणतैंही चक्षुइंद्रियकरिकैजन्यअंतःकरणकी वृत्तिविषेस्थित जोचिदाभासरूपप्रज्ञाकाभागहै ॥ सो चक्षुइंद्रियकेविषयरूपादिकोंकूंही प्रकाशकरैहै ॥ रसादिकोंकूंप्रकाशकरैनहीं ॥ इसप्रकार अन्यइंद्रियोंविषेभी जानिलेणा ॥ किंवा ॥ पूर्वउक्तवाकादिकद्वादशकरण प्रज्ञाकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुएही आपणेनामादिकविषयोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ प्रज्ञाकेतादात्म्यतैंविना कोईभीइंद्रिय आपणेविषयकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ वाकादिकइंद्रियोंतैंविना नामादिकविषयोंकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं नामादिकविषय वाकादिकइंद्रियस्वरूपहैं ॥ तैसे प्रज्ञातैंविना वाकादिकइंद्रियोंकीभीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं वाकादिकइंद्रियभी प्रज्ञास्वरूपहैं ॥ प्रज्ञातैंभिन्न वाकादिकनहीं ॥ यारीतिसै प्रज्ञाकीअद्वितीयरूपताहीसिद्धहोवैहै ॥ शंका ॥ वाकादिकइंद्रिय प्रज्ञाकीअपेक्षातैंविनाही आपणेविषयोंकूं काहेतैंनहींप्रकाशकरते ॥ समाधान ॥ वाकादिकद्वादशकरण प्रज्ञाकेबलतैंही आपणेआपणेविषयकूंजानैहैं ॥ प्रज्ञातैंविना आपणेबलकरिकै किसीवस्तुकूं वाकादिकजाणिसकैनहीं ॥ याहीअर्थकूं लौकिकअनुभवकरिकै अब स्पष्टकरैहैं ॥ जिसपुरुषकामन सावधाननहींहोता ॥ तिसपुरुषकूं जोकोईअन्यपुरुष वचनकहैहै ॥ तबी सोपुरुष याप्रकार

तांकूंकहैहै ॥ हमारामन तुमारेवचनविषेनहींथा ॥ यातें हमनें तुमारेवचनकूंनहींजान्या ॥ तुम फेरितावचनकूंकहो ॥ इसप्रकार नेत्रोंकरिकेरूपकूंदेखताहुआ तथाशरीरकरिकैसुखदुःखकाअनुभवकरताहुआभी यहपुरुष मनकीअसावधानताहुए किंचित्मात्रभीनहींजाणता ॥ तात्पर्ययह ॥ वाकादिकइंद्रियोंका आपणेआपणेविषयोंकेसाथ संबंधहुएभी प्रज्ञातेंविना किसीभीविषयका प्रकाश होवैनहीं ॥ किंवा ॥ वाक्इंद्रियतेंआदिलेके जेद्वादशकरणहैं ॥ तथा तिनोंके नामादिक जेद्वादशविषयहैं ॥ तेसंपूर्ण प्रज्ञातेंविना कदाचित्भी प्रतीतहोवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मृत्तिकातेंविना घटशरावादिकविकार प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातें यहसिद्धभया ॥ जिसवस्तुकेविद्यमानहुए जोवस्तुप्रतीतहोवै ॥ और जिसवस्तुकेअविद्यमानहुए जोवस्तु नहींप्रतीतहोवै ॥ सोवस्तु तिसवस्तुतें भिन्ननहींहोवैहै ॥ जैसे मृत्तिकाकेविद्यमान्हुए घटकीप्रतीतिहोवैहै ॥ और मृत्तिकाकेअविद्यमानहुए घटकीप्रतीतिहोवैनहीं ॥ यातें घटादिक मृत्तिकातेंभिन्ननहीं ॥ किंतु मृत्तिकातें घटादिकअभिन्नहैं ॥ तैसे वाकादिकद्वादशकरण तथानामादिकद्वादशविषय यहसंपूर्ण प्रज्ञाकेविद्यमानहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और प्रज्ञाकेअविद्यमानहुए प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातें तेसंपूर्णवाकादिक प्रज्ञास्वरूपहैं ॥ प्रज्ञातें कींचित्मात्रभीतिनोंकाभेदनहीं ॥ यातें साप्रज्ञा एकरूपहै ॥ और प्राणतेंअभिन्नहै यहसिद्धभया ॥ प्रतर्दनउवाच ॥ हेभगवन्! उक्तरीतितें प्रज्ञाकूंजो सर्वरूपताहोवै तो वाकादिकइंद्रियभी प्रज्ञाकाहीस्वरूपहैं ॥ यातें जैसे प्रज्ञाविषेआत्मबुद्धि आपनें उपदेशकरी ॥ तैसे वाकादिकइंद्रियोंविषे आत्मबुद्धिकरणेमेंकोनदोषहै? ॥ इंद्रउवाच ॥ हेप्रतर्दन! वाकादिकोंकूं यद्यपि प्रज्ञास्वरूपताहै तथापि वाकादिकोंकूं सर्वरूपताहैनहीं ॥ यातें तिनोंविषे आत्मबुद्धिकरणीसंभवैनहीं ॥ और प्रज्ञाविषे तथाप्राणविषे पूर्वउक्तरीतितें सर्वरूपताहै ॥ यातें प्राणविषे तथाप्रज्ञाविषेही आत्मबुद्धिकरणेयोग्यहै ॥ यातें हेप्रतर्दन! वाकादिकोंकूंप्रज्ञास्वरूपताहै ॥ यातें तिनोंविषेभीआत्मबुद्धिकरणेयोग्यहै ॥ याप्रकारकेसंशयका परित्यागकरिकै प्राणप्रज्ञास्वरूपमेंइंद्रकूं तुम निश्चयकरो ॥ कैसामैंहूं वाक्इंद्रियकरिकै तेरेकूंउपदेशकरताहुआभी वास्तवतेंवाक्इंद्रियतेंरहितहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ वाकादिकोंकरिकेविशिष्टहुआ आत्मा वक्ता श्रोता द्रष्टा इसतेंआदिलेके संज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे एकहीब्राह्मण पाकक्रियाकरिकै

पाचकसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और पाठरूपक्रियाकरिकै पाठकसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे एकहीअद्वितीयआत्मा वाकादिकोंकरिकै विशिष्टहुआ वक्ताआदिकसंज्ञावोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिनवाकादिककरणोंकापरित्यागकरिकै परिशेषतैंरह्याजोप्राणप्रज्ञास्वरूप आत्मा ताकूं तुमनिश्चयकरो ॥ कैसासोआत्माहै ॥ आपणेआपणेव्यापारोंकरिकैयुक्त जेवाकादिककरणहैं तिनोंकूं प्रकाश करणेहाराहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! प्राणकूं तथाप्रज्ञाकूं पूर्वआपनें अद्वितीयरूपकह्या ॥ और वाकादिकसर्वोंका प्रकाशककह्या सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें लोकविषे प्रकाश्यरूपघटादिकोंका तथाप्रकाशकरूपदीपादिकोंका परस्परभेदही देख्याहै ॥ समाधान ॥ वाकादिकजेद्वादशकरणहैं ॥ तथा नामादिकजेद्वादशविषयहैं ॥ तेदोनों परस्परअपेक्षावालेहैं ॥ यातें तिनदोनोंका परस्परभी भेदसिद्ध होवैनहीं ॥ जबी तिनदोनोंका परस्परभेद निरूपणनहींभया ॥ तबी अधिष्ठानरूपप्राणप्रज्ञाकेसाथ तिनवाकादिकोंकाभेद किसप्रकारकरिकै निरूपणकऱ्याजावै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुतैंकल्पितसर्प भिन्नहोवैनहीं ॥ तैसे प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंआत्मातें कल्पितवाकादिकभी भिन्नहोवैनहीं ॥ अब वाकादिककरणोंविषे तथानामादिकविषयोंविषे परस्परसापेक्षताकूं दिखावैहैं ॥ भूतमात्राहै नामजिनोंका ऐसेजेनामादिकद्वादशविषयहैं ॥ ते वाकादिकद्वादशकरणोंकाआश्रयकरिकैही सिद्धहोवैहैं ॥ वाकादिकोंतैंविनानामादिकोंकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ इसप्रकार प्रज्ञामात्राहैनामजिनोंका ऐसेजेवाकादिकद्वादशकरणहैं ॥ तेभी नामादिकविषयोंकूंआश्रयणकरिकैही सिद्धहोवैहैं ॥ नामादिकविषयोंतैंविना वाकादिककरणोंकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतें जोकेवल वाकादिककरणोंकूंही अंगीकारकरीये और नामादिकविषयोंकूं नहींअंगीकारकरीये तौ वाकादिकोंविषे करणताहीनहींरहैगी ॥ काहेतें वाकादिकोंविषेजोकरणताधर्महै ॥ सो नामादिकविषयोंकरिकैनिरूपितहै ॥ याकारणतेंही लोकविषे करणहै याप्रकारकाशब्दश्रवणकरिकै किसविषयकाकरणहै याप्रकारकीजिज्ञासा पुरुषोंविषे देखीजातीहै ॥ यातें वाकादिककरणोंकूं नामादिकविषयोंकीअपेक्षाहै ॥ तैसे जोकेवल नामादिकविषयही अंगीकारकरीये ॥ और वाकादिककरणोंकूं नहींअंगीकारकरीये तौ नामादिकविषयोंविषे विषयताधर्म नहींरहैगा ॥ काहेतें नामादिकविषयोंविषे जोविषयताधर्महै सो वाकादिककरणोंकरिकैनिरूपितहै ॥ या

कारणतैंही लोकविषे विषयहै याप्रकारकेशब्दकूंश्रवणकरिकै किसकरणकाविषयहै ॥ याप्रकारकरणकीजिज्ञासा पुरुषोंविषे देखीजाती है ॥ यातैं नामादिकविषयोंकूंभी वाकादिककरणोंकीअपेक्षाहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पितासंज्ञा तथापुत्रसंज्ञा पुत्र तथापिताके विद्यमानहुएहीहोवैहै ॥ पिताकेअभावहुए पुत्रकोईकहैनहीं ॥ और पुत्रकेअभावहुए पिताकोईकहैनहीं ॥ तैसे वाकादिकोंविषे करणसंज्ञा नामादिकविषयोंकेविद्यमानहुएही होवैहै ॥ और नामादिकोंविषे विषयसंज्ञा वाकादिककरणोंकेविद्यमानहुएही होवैहै ॥ यातैं वाकादिककरणोंकूं नामादिकविषयोंकीअपेक्षाहै ॥ और नामादिकविषयोंकूं वाकादिककरणोंकीअपेक्षाहै ॥ एककेअभावहुए दूसरेकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ श्रुतिविषे भूतमात्रारूप नामादिकविषय दशकहेहैं ॥ तथा वाकादिककरणभी दशकहेहैं ॥ यातैं द्वादशकरणोंकाकथन तथाद्वादशविषयोंकाकथन श्रुतिसैंविरुद्धहै ॥ समाधान ॥ श्रुतिविषे शरीर तथाअंतःकरण यादोनोंकरणोंकूं तथासुखदुःख औरकामादिक यादोनोंविषयकूं परित्यागकरिकै केवलवाकादिकबाह्यकरणोंकूं तथानामादिकबाह्यविषयोंकूं दशप्रकार कथनकऱ्याहै ॥ यातैं श्रुतिकेसाथ याग्रंथकाविरोधनहीं ॥ शंका ॥ वाकादिककरण तथानामादिकविषय यद्यपि परस्परअपेक्षावालेहैं ॥ तथापि आपणीसिद्धिविषे किसीतीसरेकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ यातैं वाकादिकोंकीप्रकाशकतारूपहेतु करिकै आत्माकीसिद्धिनहींहोवैगी ॥ समाधान ॥ जेजेसापेक्षपदार्थहोवैहैं ॥ ते परस्परअपेक्षाकरिकैसिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु आपणेतैंभिन्न जोकोईनिरपेक्षवस्तुहै ॥ तिसकीअपेक्षाकरिकैही सापेक्षपदार्थ सिद्धहोवैहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे रज्जुविषे अयंसर्प याप्रकारकाज्ञान पुरुषकूंहोवैहै ॥ ताज्ञानविषे अयंशब्दकाअर्थरज्जु विशेष्यरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ और सर्प विशेषणरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ और जबी तारज्जुविषे सर्पअयं याप्रकारकाज्ञानहोवैहै ॥ तबी ताज्ञानविषे सर्पतौ विशेष्यरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ और अयंशब्दकाअर्थरज्जु विशेषणरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ और विशेषण तथाविशेष्य परस्पर सापेक्षहोवैहैं ॥ यातैं तिनोंकूंविषयकरणेहारेज्ञानभी परस्पर सापेक्षहीहोवैहैं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ जैसे अयंसर्प तथा सर्पअयं यहदोनोंज्ञान परस्परअपेक्षावालेतौ हैं ॥ परंतु निरपेक्षरज्जुतैंविना परस्परअपेक्षामात्रकरिकै तिनज्ञानोंकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ किंतु निरपेक्षरज्जुकीअपेक्षाकरिकैही तिनज्ञानों

कीसिद्धिहोवैहै ॥ तैसे वाकादिकरण तथानामादिकविषय यद्यपि परस्परअपेक्षावालेहैं तथापि तिनोंकी निरपेक्षआत्मातैंविना सिद्धिहोवैनहीं ॥ किंतु निरपेक्षआत्माकरिकैही तिनोंकीसिद्धिहोवैहै ॥ किंवा ॥ वाकादिककरण तथानामादिकविषय परस्परभिन्न नहीं ॥ तैसे आत्मारूपआश्रयतैंभी भिन्ननहीं ॥ याअर्थकूं अनुमानप्रमाणकरिकैभीसिद्धकरैहैं ॥ ताअनुमानकाप्रकारयहहै ॥ सविषयवाकादिककरण परस्पर तथाआश्रयतैं भिन्ननहीं ॥ काहेतैं सर्वदापरस्परसापेक्षहोणेतैं ॥ जेजेपदार्थ परस्परसापेक्षहोवैहैं ॥ ते परस्पर तथाआश्रयतैं भिन्ननहींहोवैहैं ॥ जैसे पूर्वउक्त रज्जुसर्पविषयकज्ञान परस्परसापेक्षहै ॥ यातैं परस्पर तथारज्जुरूपआश्रयतैं भिन्ननहीं ॥ किंवा ॥ नामादिकविषय जैसे वाकादिककरणोंतैं तथाआत्मारूपआश्रयतैं भिन्ननहीं ॥ तैसे आपणेज्ञानतैंभी भिन्ननहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे रज्जुविषेप्रतीतभयाजोसर्प सो यहसर्पहै याप्रकारकेज्ञानतैंभिन्ननहीं ॥ जोभिन्नहोवै तौ ताज्ञानकीनिवृत्तिकालविषेभी प्रतीतहोणाचाहिये ॥ और कल्पितसर्प यहसर्पहै याज्ञानकीनिवृत्तिकालविषे प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं कल्पितसर्पआपणेज्ञानतैंभिन्ननहीं ॥ तैसे नामादिकविषयभी आपणेज्ञानतैंभिन्ननहीं ॥ किंवा ॥ चक्षुआदिककरणोंकरिकै पुरुषोंकूं अंतःकरणकीवृत्तिरूपजडज्ञान उत्पन्नहोवैहैं ॥ कैसेहैंतेवृत्तिरूपज्ञान ॥ रूपादिकविषयोंकाआश्रयरूपहैं ॥ तिनवृत्तिरूपज्ञानोंकाद्रष्टा प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंचैतन्यहूं ॥ यातैं तेवृत्तिरूपजडज्ञान चैतन्यरूपमैंआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे स्वप्नविषे जीवोंकूं रथादिकपदार्थोंके ज्ञान उत्पन्नहोवैहैं ॥ तेरथादिकविषयसहितज्ञान स्वप्नद्रष्टापुरुषतैंभिन्ननहीं ॥ तैसे विषयसहितवृत्तिरूपजडज्ञान मैंद्रष्टाआत्मातैं भिन्ननहीं ॥ यातैं यहसिद्धभयाकि, प्राणप्रज्ञाशब्दकालक्ष्यअर्थआत्माही अद्वितीयहै ॥ तिसआत्मातैंभिन्न कोईभीवस्तुनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं चक्रकेदृष्टांतकरिकैदिखावैहैं ॥ जैसे रथकेचक्रविषे तीनभागहोवैहैं ॥ एकनेमी दूसराअरा तीसरानाभि ॥ तहांभूमिकेसाथ जाकास्पर्शहोवैहै ऐसाजो कंकणकेआकारकाष्ठहै ताकूं नेमीकहैहैं ॥ और नेमी जिनोंकेआश्रितरहैहै ऐसेजे बीचकेवक्रकाष्ठहैं तिनोंकूं अराकहैहैं ॥ और तिनअरोंका जोआधाररूपकाष्ठहै जाकेविषे शलाकाफिरैहै ताकूं नाभिकहैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसेनेमी अराकेआधार रहैहै ॥ और अरा नाभिकेआधार रहैहैं ॥ सोनाभि किसीकेआश्रितरहैनहीं ॥ किंतु संपूर्णोंकाआधारहोवैहै ॥

तैसे नामादिकविषय वाकादिककरणोंकेआश्रितरहेहैं ॥ और वाकादिककरण प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंआत्माकेआश्रितरहेहैं ॥ और प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंआत्मा किसीकेआश्रितरहतानहीं ॥ किंतु सकलविषय तथावाकादिकोंका मैंआत्मा अधिष्ठानहूं ॥ यातें हेप्रतर्दन! नामादिकविषयरूप तथावाकादिककरणरूप जोयह सकलसंसाररूपचक्रहै तासंसाररूपचक्रका प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंआत्मा नाभिहूं ॥ काहेतें जैसे प्रसिद्धरथकेचक्रकीनाभि किसीकेआश्रितरहैनहीं ॥ तैसे मैंआत्माभी किसीअन्यकेआश्रितरहतानहीं ॥ किंतु सकलजगत् मेरेआश्रितरहैहै ॥ किंवा ॥ विषय तथाविषयी यादोनोंकानाम जगत्‌है ॥ तहां नामादिक विषयहैं ॥ और वाकादिककरणविषयीहैं ॥ ताविषयविषयीरूप सकलप्रपंचके प्रकाशकरणेहारा प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंआत्माहूं ॥ किंवा ॥ प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंआत्मातैंही यहस्थूलसूक्ष्मसकलप्रपंच उत्पन्नभयाहै ॥ और मैंआत्माविषेही सकलजगत् अबीस्थितहै ॥ और मैंआत्माविषेही सकलजगत् लयकूंप्राप्तहोवैगा ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मूढबालकनैं आपणेशरीरविषे कल्पनाकन्याजोराक्षस ताराक्षसकी उत्पत्ति तथास्थिति तथालय तिसबालकतैंहीहोवैहै ॥ तैसे प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंआत्मातैंही सकलप्रपंचकी उत्पत्ति तथास्थिति तथालय होवैहै ॥ किंवा ॥ जैसे सर्वभेदतैंरहितआकाशविषे घटमठादिकउपाधियोंकेवशतैं भेदप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे शरीरादिकउपाधियोंकरिकै मैंअद्वितीयआत्माविषे नानाप्रकारकाभेद प्रतीतहोवैहै ॥ किंवा ॥ मैंअद्वितीयआत्माविषे उपाधिदृष्टिवालेबहिर्मुखपुरुषोंकूंही भेदप्रतीतहोवैहै ॥ उपाधिदृष्टितैंरहित अंतर्मुखपुरुषोंकूं मैंअद्वितीयआत्माविषेभेद प्रतीतहोवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे रंगकरिकै लिखित वृक्षादिरूपचित्रयुक्तपटविषे यद्यपि नीचापणातथाऊँचापणा संभवैनहीं ॥ तथापि वृक्षादिरूपचित्रोंकीदृष्टिकरिकै अविवेकीपुरुषोंकूं याप्रकारकीविषमदृष्टिहोवैहै ॥ यावृक्षका मूलदेश नीचेहै और शाखा ऊपरिहैं ॥ और जिनपुरुषोंकूं वृक्षादिरूपचित्रोंकीदृष्टिनहीं ॥ किंतु केवलपटदृष्टिहै ॥ तिनोंकूं साविषमदृष्टि होवैनहीं ॥ तैसे प्रपंचरूपउपाधिकीदृष्टिकरिकै अविवेकीपुरुषोंकूं मैंअद्वितीयआत्माविषे भेदप्रतीतहोवैहै ॥ और उपाधिदृष्टितैंरहित विवेकीपुरुषोंकूं प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंआत्माविषे भेदबुद्धिहोवैनहीं ॥ अब प्राणप्रज्ञाशब्दकेवास्तवअर्थकूंदिखावैहैं ॥ हेप्रतर्दन! वायुरूपप्राणतैं यद्यपि मैंआत्माभिन्नहूं तथापि अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारके

जीवोंका मैंआत्मातैंही जीवनहोवैहै ॥ याकारणतैं मैंअद्वितीयआत्माही प्राणशब्दकाअर्थहूं ॥ तथा प्राणशब्दजन्यज्ञानकावि षयहूं ॥ शंका ॥ चैतन्यआत्माविषेही प्राणियोंकेजीवनकीकारणताहै ॥ वायुरूपप्राणोंविषेनहीं ॥ याअर्थविषेकौनप्रमाणहै ॥ स माधान ॥ तैत्तिरीयउपनिषदविषे चैतन्यआत्माविषेही जीवनकीकारणताकहीहै ॥ तहां यहकह्याहै ॥ प्राणकरिकै तथाअपानकरि कै कोईभीप्राणी जीवतानहीं ॥ किंतु जिसचैतन्यआत्माकीसमीपताकरिकै यहप्राणअपानादिक प्रवर्तमानहोवैहैं ॥ ताचैतन्यआ त्माकरिकैही यहसंपूर्णप्राणी जीवैहैं ॥ यातैं सर्वप्राणियोंकेजीवनकाकारण अद्वितीयआत्माही प्राणशब्दकाअर्थहै यहसिद्धभया ॥ अब प्रज्ञाशब्दकेअर्थकूंदिखावैहैं ॥ पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय अंतःकरण शरीर याद्वादशकरणोंकूं तथानामादिकतिनोंकेविषयों कूं आपणेस्वप्रकाशस्वरूपकरिकै मैंअद्वितीयआत्मा जानताहूं ॥ याकारणतैं मैंअद्वितीयआत्मा प्रज्ञाशब्दकाअर्थहूं ॥ अथवा ॥ मेरेप्रकाशकेविद्यमानहुएही संपूर्णप्रपंच प्रतीतहोवैहै ॥ आपणेप्रकाशकरिकै जडजगत्काभान होवैनहीं ॥ याकारणतैं मैंअद्विती यआत्मा प्रज्ञाशब्दकाअर्थहूं ॥ अथवा ॥ देशपरिछेद तथाकालपरिछेद तथावस्तुपरिछेद यातीनपरिछेदोंतैं मैंआत्मारहितहूं ॥ त था स्वप्रकाशहूं ॥ याकारणतैं मैंअद्वितीयआत्मा प्रज्ञाशब्दकाअर्थहूं ॥ अथवा लोकविषे ज्ञानतैंभिन्नबाह्यरज्जुआदिकजडपदार्थ कल्पितसर्पादिकोंकेअधिष्ठानरूप देखेहैं ॥ और मैंआत्मा ज्ञानतैंभिन्ननहीं किंतुज्ञानस्वरूपहूं ॥ तथा बाह्यभी मैंआत्मानहीं किंतु सर्वतैंअंतरहूं ॥ इसप्रकार रज्जुआदिकबाह्यअधिष्ठानोंतैं विलक्षणरूपकरिकैयुक्तहुआभी मैंआत्मा सर्वप्रपंचकाअधिष्ठानहूं ॥ या कारणतैं मैंअद्वितीयआत्मा प्रज्ञाशब्दकाअर्थहूं ॥ अथवा ॥ सजातीयभेद तथाविजातीयभेद तथास्वगतभेद यातीनभेदोंतैंरहित जोआत्मस्वरूपहै ताआत्मस्वरूपप्रज्ञाकरिकै मैंनित्यहीयुक्तहूं ॥ याकारणतैं मैंअद्वितीयआत्मा प्रज्ञाशब्दकाअर्थहूं ॥ अब आत्म पदकेअर्थकूंदिखावैहैं ॥ हेप्रतर्दन! तेरेताईं जोहमनैं वारंवार प्राणप्रज्ञास्वरूपआत्माकाउपदेशकऱ्याहै ॥सोईहीआत्मा तेरा वास्तव स्वरूपहै ॥ तैसे स्थावरोंका तथाजंगमोंकाभी सोईहीआत्मा वास्तवस्वरूपहै ॥ और सोईहीआत्मा सर्वप्राणियोंविषे अहंशब्दकी लक्षणाकरिकै जान्याजावैहै ॥ और अहं याज्ञानकाविषयहै ॥ और वास्तवतैं अहं याशब्दतथाज्ञानके संबंधतैंरहितहै ॥ और

सोईहीआत्मा आकाशकीनाँईं भेदतैंरहितहुआ याजगत्‌विषेस्थितहै ॥ किंवा ॥ जैसे घटमठादिकनानाउपाधियोंविषेस्थितआका
शका आकाशहीएकनामहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ घटउपाधिविषेस्थितआकाशकूं घटाकाशकहैहैं ॥ मठरूपउपाधिविषेस्थितआकाश
कूं मठाकाशकहैहैं ॥ इसप्रकार नानाउपाधियोंविषेस्थितहुआभी आकाश 'आकाश' यानामतैंरहितहोवैनहीं ॥ यातैं सोअनुगत ए
कआकाशनाम आकाशकेएकताकूं बोधनकरैहै ॥ तैसे नानाशरीररूपउपाधियोंविषेस्थितअद्वितीयआत्माकाभी एकआत्माहीनाम
होवैहै ॥ यातैं सर्वत्रअनुगत एकआत्मानाम मैंअद्वितीयआत्माकेएकताकूं बोधनकरैहै ॥ शंका ॥ आत्मा जोवास्तवतैंएकहीहोवै
तौ नानारूपकरिकैकाहेतैंप्रतीतहोवैहै ?॥ समाधान ॥ अविद्यारूपदोषकेबलतैं एकहीअद्वितीयआत्मा जगत्‌रूपहोइकेप्रतीतहोवै
है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे एकहीस्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नविषे निद्रादोषकेबलतैं अनंतरूपहोइकेप्रतीतहोवैहै ॥ और जैसे स्वप्नविषेप्रतीतभये
जेरथादिकपदार्थ ते कल्पितहैं यातैं स्वप्नद्रष्टापुरुषतैंभिन्ननहीं ॥ तैसे अज्ञानकरिकैकल्पित यहसंपूर्णजगत्‌भी मैंअद्वितीयआत्मा
तैंभिन्ननहीं ॥ अब आनंदशब्दकेअर्थकूंदिखावैहैं ॥ हेप्रतर्दन! संपूर्णजीवोंकूं मैंआत्माअतिसैंकरिकैप्रियहूं ॥ यातैं मैंआत्मा आ
नंदस्वरूपहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ इसलोकविषे तथापरलोकविषे भोगणेयोग्यजेस्त्रीआदिकपदार्थहैं तेप्रियहैं ॥ और तिनविषयोंतैंउत्प
न्नभयाजो अंतःकरणकापरिणामरूपसुख सोप्रियतर है ॥ और आत्मा सकलकाशेषरूपहै ॥ यातैं आत्मा प्रियतमहै ॥ स्त्री
पुत्रादिकपदार्थ जिसकेवासतेहोवैं सोशेषिकहियेहै ॥ ऐसाशेषरूपआत्माहै ॥ अन्यसंपूर्णपदार्थ आत्माकाशेषरूपहैं ॥ अब
याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ संपूर्णप्राणी सुखकी तथासुखकेसाधनस्त्रीपुत्रादिकोंकी जबीइच्छाकरैहैं तबी आत्माकेवास
तेही सुखादिकोंकीइच्छाकरैहैं ॥ मेरेकूं सुखकीप्राप्तिहोवै ॥ मेरेकूं स्त्रीपुत्रादिकोंकीप्राप्तिहोवै ॥ याप्रकारकीइच्छा संपूर्णजीवक
रैहैं ॥ जोकेवल सुखकीहीइच्छाहोवै तौ वैरीकेसुखकीभीइच्छाहोणीचाहिये ॥ और वैरीकेसुखकीकोईइच्छाकरैनहीं ॥ किंतु
आत्मसंबंधीसुखकी सकलप्राणी इच्छाकरैहैं ॥ यातैं आत्माकेवासतेही सुखकी तथासुखकेसाधनस्त्रीपुत्रादिकोंकी इच्छाहोवैहै॥
सुखकेवासते तथासुखकेसाधनस्त्रीपुत्रादिकोंकेवासते आत्माकीकोईइच्छाकरैनहीं ॥ यातैं मैंअद्वितीयआत्माही सर्वकाशेषरूप

हूं ॥ अन्यसंपूर्णपदार्थ आनंदस्वरूपमैंआत्माकेशेषरूपहैं ॥ भोगकेसाधनोंकूं शेषकहैहैं ॥ भोक्ताकूं शेषिकहैहैं ॥ किंवा ॥ मनुष्यलोकतैंआदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनीकी विषयजन्यसुखकीन्यूनअधिकताहै ॥ सा जिसविषेजाइकेपर्यवसानकूंप्राप्तहोवै ॥ सो आनंदस्वरूपमैंआत्माहूं ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ मनुष्यलोककेआनंदतैं शतगुणअधिकआनंद पितरोंकूंहोवैहै ॥ पितरोंतैं शतगुणअधिकआनंद गंधर्वोंकूंहोवैहै ॥ गंधर्वोंतैं शतगुणअधिकआनंद कर्मदेवतावोंकूंहोवैहै ॥ कर्मदेवतावोंतैं शतगुणअधिकआनंद आजानदेवतावोंकूंहोवैहै ॥ आजानदेवतावोंतैं शतगुणअधिकआनंद प्रजापतिकूंहोवैहै ॥ प्रजापतितैं शतगुणअधिकआनंद हिरण्यगर्भकूंहोवैहै ॥ विषयजन्यसुखविषे हिरण्यगर्भलोककासुख सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ सोहिरण्यगर्भकाआनंद आनंदसमुद्ररूपमैंआत्माके एककणकेसमानहै ॥ तात्पर्ययह ॥ विषयजन्यसकलसुखोंतैं उत्कृष्ट हिरण्यगर्भकाआनंद भी जबी आनंदसमुद्रआत्माके एककणकेसमानभया ॥ तबी मनुष्यादिकोंकेआनंदकीक्याकथाहै?॥ यातैं सकलआनंदोंकाअवधिरूप मैंआत्माहूं ॥ यातैं मैंआत्मा आनंदस्वरूपहूं ॥ किंवा ॥ शब्द स्पर्श रूप रस गंध येपंचप्रकारकेविषय लोकोंनैं सुखके कारणमानेहैं ॥ तेशब्दादिकविषयभी मैंपरमात्माकूंही सुखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ शब्दादिकविषयोंतैंप्रगटभयाजोसुख सो मैंआत्माकाहीस्वरूपहै ॥ शंका ॥ शब्दादिकविषयोंतैंउत्पन्नभयेसुखोंकूं आत्मरूपतासंभवैनहीं ॥ काहेतें सत्‌चित्‌आनंदरूप आत्माकालक्षण तिनसुखोंविषेहैनहीं ॥ समाधान ॥ जिनपुरुषोंकूं वेदांतवाक्योंतैं आत्माकायथार्थज्ञानभयाहै ॥ तेपुरुष शब्दादिकविषयजन्यसुखविषेभी वृत्तिरूपउपाधिकापरित्यागकरिकै सुखमात्रकूं सत्‌चित्‌आनंदरूपहीमानैहैं ॥ और आत्मज्ञानतैं रहित मूढपुरुषतौ शब्दादिकविषयोंकूंहीसुखरूपमानैहैं ॥ याकारणतैंही तत्त्ववेत्तापुरुषकूं विषयकीप्राप्तिकालविषेभी आत्मस्वरूपनित्यसुखकाहीभान शास्त्रविषेकह्याहै ॥ किंवा ॥ शब्दादिकविषयोंविषे जोसुख प्रतीतहोवैहै ॥ सोभी आनंदस्वरूपमैंआत्माकेसंबंधतैंही प्रतीतहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे गुडविषेजोमधुरताहै सो किसीवस्तुकेसंबंधतैंनहीं ॥ किंतु स्वतःही गुडविषेमधुरताहै ॥ तागुडकाजिसवस्तुकेसाथसंबंधहोवैहै ॥ सोवस्तुभी मधुरप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे मैंआत्माविषे जोआनंदरूपताहै ॥ सा

किसीकेसंबंधतैंनहीं ॥ किंतु मैंआत्मा स्वतःहीआनंदस्वरूपहूं ॥ तिसआनंदस्वरूपमैंआत्माकेसंबंधतैं शब्दादिकविषयोंविषेआनंद
रूपताप्रतीतहोवैहै ॥ स्वतः शब्दादिकविषयोंविषे आनंदरूपतानहीं ॥ तौभी आत्मज्ञानतैंरहितमूढपुरुष शब्दादिकविषयोंकूंही
सुखरूपमानैंहैं ॥ अन्यदृष्टांत ॥ जैसे वायुकास्पर्श शीतलनहीं तथाउष्णभीनहीं ॥ किंतु जलकेशीतस्पर्शतैं तथाअग्निकेउष्णस्प
र्शतैं विलक्षणहीवायुकास्पर्शहोताहै॥ तथापि शीतस्पर्शवालेजलकेसाथ तथाउष्णस्पर्शवालेतेजकेसाथ जबी वायुकासंबंधहोवैहै॥
तबी तासमुद्रसंबंधीवायुकूं शास्त्रसंस्कारोंतैंरहित मूढपुरुष शीतस्पर्शवालाकहैहैं ॥ तथा तेजसंबंधीवायुकूं उष्णस्पर्शवालाकहैहैं ॥
और विचारवान्पुरुष वायुकूं उष्णस्पर्शवाला तथाशीतस्पर्शवाला मानैंनहीं॥ काहेतैं जलकेसूक्ष्मअवयवोंकूं वायुउठाइलेआवैहै ॥
तिनजलकेअवयवोंका जबीशरीरसैंसंबंधहोवैहै तबी शीतलताप्रतीतहोवैहै॥ ते जलकेअवयव सूक्ष्महैं यातैं तिनोंका चाक्षुषप्र
त्यक्षहोवैनहीं॥ याप्रकार उष्णस्पर्शविषेभी जानिलेणा॥ तैसे शब्दादिकविषयोंविषे आनंदस्वरूपआत्माकेतादात्म्यसंबंधकरिकैही
आनंदरूपताहै॥ स्वतः शब्दादिकविषयोंविषे आनंदरूपतानहीं ॥ तथापि आत्मज्ञानतैंरहित मूढपुरुषोंकूं याप्रकारकीभ्रांतिहोवै
है ॥ विषयोंतैंहीहमारेकूंसुखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं हेप्रतर्दन! मैंअद्वितीयआत्माही आनंदस्वरूपहूं ॥ शंका ॥ जो आत्माही आनं
दरूपहोवै ॥ तौ आत्मा सर्वदाविद्यमानहै ॥ किसीकालविषेभी आत्माकाअभावनहीं ॥ यातैं सर्वदा आनंदकीप्राप्तिहोणीचाहिये ॥
और सर्वदाआनंदकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा शब्दादिकविषयही हमारेकूंसुखकेदेणेहारे हैं याप्रकार संपूर्णलोक कथनकरैहैं
ताकेविषे कौनकारणहै?॥ समाधान॥ हेप्रतर्दन! सर्वबुद्धिआदिकजडसंघातकासाक्षी प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंआत्माही एकसुखरूपहूं ॥
ऐसेमैंआत्माका जबी याजीवोंकूं अज्ञानहोवैहै ॥ तबी अज्ञानकरिकेआवृत्तहुए तेमूढपुरुष शब्दादिकविषयोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरैहैं॥
ताइच्छाकरिकै अनंतदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेप्रतर्दन! तिनअज्ञानजन्यदुःखोंका तूभी पूर्वअनुभवकरिआयाहै ॥ यातैं आनंदरूप
आत्माकेसर्वदाविद्यमानहुएभी अज्ञानरूपआवरणकेवशतैं पुरुषोंकूं आत्मआनंदकाभानहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ शब्दादिकविषय
हमारे सुखकाकारणहैं ॥ याप्रकार जोसर्वलोक कथनकरैहैं ॥ याकेविषे यहकारणहै ॥ शब्दादिकविषयोंकेअप्राप्तिकालविषे तिन

शब्दादिकोंकीइच्छाकरिकै पुरुषोंकीबुद्धि चंचलहोवैहै ॥ और जबी पूर्वपुण्यकेवशतैं तिनशब्दादिकविषयोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥
तबी किंचित्काल ताइच्छाकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ ताइच्छाकेनिवृत्तहुए किंचित्काल साबुद्धि चंचलतातैंरहित एकाग्रहोवैहै ॥ ज
बपर्यंत दूसरेपदार्थकीइच्छाउत्पन्ननहींभई ॥ तबपर्यंत साएकाग्रबुद्धि मैंआनंदस्वरूपआत्माकरिकैव्याप्तहोवैहै ॥ याकारणतैंही
साएकाग्रबुद्धिसुखरूपआत्माकीन्यांई सुखरूपहुई प्रतीतहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे लोहपिंडविषे उष्णस्पर्श तथाप्रकाशमानता
यद्यपि नहींहै ॥ तथापि अग्निकरिकैयुक्तहुआलोहपिंड अग्निकेसमान उष्णस्पर्शवाला तथाप्रकाशमान् प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे बु
द्धि यद्यपि सुखरूपनहीं तथापि आनंदस्वरूपमैंआत्माकरिकैव्याप्तहुई साएकाग्रबुद्धि सुखरूपहोइकेप्रतीतहोवैहै ॥ तात्पर्यय
ह ॥ आनंदरूपआत्माकेप्रतिबिंबयुक्तबुद्धिकी एकाग्रअवस्थाकूंही मूढपुरुष सुखरूपमानैहैं ॥ और साबुद्धिकीएकाग्रअवस्था
शब्दादिकविषयोंकीप्राप्तिकरिकैहीहोवैहै ॥ शब्दादिकविषयोंतैंविना साबुद्धिकीएकाग्रता होवैनहीं ॥ याप्रकार मूढपुरुष मानि
करिकै शब्दादिकविषय हमारेकूंसुखकीप्राप्तिकरैहैं याप्रकारकाकथनकरैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! आनंदरूपआत्माकेप्रति
बिंबयुक्तबुद्धिकीएकाग्रअवस्था जोलोकप्रसिद्धसुखहोवै तौ सर्वप्राणिमात्रकूं विषयजन्यसुख समानहोणाचाहिये ॥ और वि
षयजन्यसुख समानहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेप्रतर्दन! जैसे छिद्रयुक्तजोसर्षपकादाणाहै ॥ सो महान्समुद्रविषेप्राप्तहुआ
भी आपणेछिद्रकेपरिमाणही जलकाग्रहणकरैहै ॥ आपणेछिद्रतैंअधिकजलका ग्रहणकरैनहीं ॥ तैसे आनंदसमुद्रमैंआत्माविषे
प्राप्तभयीजाविषयजन्यबुद्धि सा आपणेपरिमाणही आत्मानंदकूंग्रहणकरैहै ॥ आपणेपरिमाणतैंअधिकआनंदकूं बुद्धि ग्रहणकरै
नहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अतिस्वच्छदर्पणविषे सूर्यकेप्रतिबिंबकी अधिकताहोवैहै ॥ और मलिनदर्पणविषे सूर्यकेप्रतिबिंबकी न्यू
नताहोवैहै ॥ तैसे शुद्धसत्वगुणयुक्तएकाग्रबुद्धिविषे आनंदस्वरूपआत्माकाप्रतिबिंब स्पष्टहोवैहै ॥ यातैं तहांआनंदकीअधिकता
प्रतीतहोवैहै ॥ और मलिनसत्वगुणयुक्तबुद्धिविषे आनंदकाप्रतिबिंब स्वष्टहोवैनहीं ॥ यातैं तहां आनंदकीन्यूनता प्रतीतहोवैहै ॥
याकारणतैंही चिरकालपीछे गृहविषेआयाजोपुरुष ॥ ताकूं जैसा प्रथम स्त्रीकेदर्शनतैं तथापुत्रादिकोंकेदर्शनतैं आनंदहोवैहै ॥ तै

सा पुनःदर्शनतें आनंदहोवैनहीं ॥ किंतु प्रथमदर्शनजन्यआनंदतें न्यूनआनंद होवैहै ॥ काहेतें प्रथम पुत्रादिकोंकेदर्शनतें बुद्धिअत्यंतएकाग्रहोवैहै ॥ यातें आनंदकीअधिकता प्रतीतहोवैहै ॥ और पश्चात् अन्यपदार्थोंकीइच्छाकरिकै बुद्धिचंचलहोवैहै ॥ यातें पुनःपुत्रादिकोंकेदर्शनहुएभी प्रथमजैसाआनंद होवैनहीं ॥ यातें यहसिद्धभया ॥ आनंदस्वरूपआत्माकेप्रतिबिंबयुक्त जाएकाग्रबुद्धिहै ॥ ताकूं मूढपुरुष सुखरूपमानेहैं ॥ सोसुख इच्छाकीनिवृत्तितेंविना होवैनहीं ॥ यातें इच्छाकीनिवृत्ति तासुखविषे कारणहै ॥ ता इच्छाकीनिवृत्ति शब्दादिकविषयोंकीप्राप्तितेंविनाहोवैनहीं ॥ यातें शब्दादिकविषयोंकूं सुखकाकारणमानिकै अविवेकीपुरुष तिनशब्दादिकविषयोंकीप्राप्तिविषे यत्नकरैहैं ॥ इसप्रकार छिक्कातथाकंडूयनआदिकोंतें जोसुखउत्पन्नहोवैहै ॥ तिसविषेभी पूर्वउक्तरीति जानिलेणी ॥ यातें हेप्रतर्दन! संपूर्णशरीरोंविषे आनंदस्वरूपमैंआत्माही सुखदेणेहाराहूं ॥ मेरेतेंभिन्नकोई सुखदेणेहारानहीं ॥ और सोईहीआनंदस्वरूपआत्मा तेरास्वरूपहै ॥ और हेप्रतर्दन! अद्वितीयआनंदस्वरूप मैंआत्माहूं याप्रकारकेआत्मज्ञानकरिकै अबतुमाराअज्ञाननिवृत्तभयाहै ॥ यातें स्थूलशरीरभी तुमारानहीं ॥ जबी स्थूलशरीरका तुमारेविषे अभावभया तबी स्थूलशरीरकेधर्मजरामरणादिक तुमारेविषे किसप्रकारहोवैंगे? किंतुनहींहोवैंगे ॥ और हेप्रतर्दन! बुद्धिआदिकोंकासाक्षीरूप जोतेरास्वरूपहै तिसविषे बुद्धिभीनहीं बुद्धिकेअभावहुए बुद्धिकेधर्मजेपुण्यपापादिकहैं तेभी तेरेस्वरूपविषेनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकविषे प्रकाश्यघटादिकोंकेधर्म प्रकाशकदीपकादिकोंकूं स्पर्शकरैनहीं ॥ तैसे प्रकाश्यबुद्धिकेपुण्यपापरूपधर्म प्रकाशकसाक्षीआत्माकूं स्पर्शकरैनहीं ॥ तिसपुण्यपापकेअभावहुए इसलोकविषे तथापरलोकविषे सुखदुःखरूपफलकाभोक्ता आत्माहोवैनहीं ॥ और हेप्रतर्दन! जोपुण्यपापरूपकर्मकेफलकाभोक्ताहोवैहै ॥ तिसकी अधिकभोगोंकरिकै वृद्धिहोवैहै ॥ और अल्पभोगोंकरिकै न्यूनता होवैहै और तू कर्मोंकाकरता तथाभोक्ता हैनहीं ॥ यातें तुमारीवृद्धि तथान्यूनता किसकारणतेंहोवै? किंतुनहींहोवैगी ॥ और हे प्रतर्दन! जोअद्वितीयआत्मा मेरास्वरूपहै सोईहीअद्वितीयआत्मा तेरास्वरूपहै ॥ और तूही सर्वकासाक्षी है ॥ ऐसाआत्मस्वरूप तू पुण्यपापरूपकर्मकेपराधीन कदाचित्भीनहीं ॥ किंतुआपणीसमीपताकरिकै बुद्धिआदिकोंकूं पुण्य तथापाप करावताहै ॥ हेप्रत

र्दन! तूपरमात्मादेव जिसपुरुषकूं स्वर्गविषेलेजाणेकीइछाकरैंहै तिसपुरुषकूं पुण्यकर्मकरावैंहै ॥ और जिसपुरुषकूं नरकविषेलै जाणेकी तूइछाकरैंहै तिसपुरुषकूं पापकर्म तूकरावैंहै ॥ और जिसपुरुषकूं मनुष्यलोकविषेलैजाणेकीतूइछाकरैंहै ॥ तिसपुरुषकूं पुण्यतथापापदोनों करावैंहै ॥ शंका ॥ पुण्यकर्मके तथापापकर्मके करावणेहारा जोपरमात्माकूंमानोंगे तौ जीवोंकीन्यांई विषमता तथानिर्दयता रूपदोषकीप्राप्ति परमात्माविषेभीहोवैगी ॥ समाधान ॥ पुण्यकर्मकरिकै यहपुरुष पुण्यकर्मवालाहोवैंहै और पापकर्मकरिकै पापकर्मवालाहोवैंहै ॥ याप्रकार श्रुतिविषे कथनकर्‍याहै ॥ और तिनपुण्यपापकर्मोंकाज्ञान अल्पज्ञजीवकूंहैनहीं ॥ किंतु सर्वज्ञपरमात्माकूंहै ॥ यातैं याजीवकेपूर्वपुण्यकर्मकेअनुसार उत्तरउत्तरजन्मविषे पुण्यकर्मोंकूंईश्वरकरावैंहै ॥ और याजीवकेपूर्वपापकर्मकेअनुसार उत्तरउत्तरजन्मविषे पापकर्मोंकूं परमात्माकरावैंहै ॥ यातैं परमात्माविषे विषमता तथानिर्दयतारूप दोषकीप्राप्ति नहीं ॥ यातैं हेप्रतर्दन! सर्वकर्मोंकाप्रेरकमैंपरमात्माकास्वरूपजोतूहै ॥ सोपुण्यपापरूपकर्मकेअधीननहीं ॥ किंवा ॥ हेप्रतर्दन! संपूर्णबुद्धिआदिकोंकासाक्षी तथासकलकाप्रेरक जोतेरास्वरूप मैंनैं कथनकर्‍याहै ॥ सोईहीतेरास्वरूप सर्वलोकोंकापालनकरैंहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे माता बालकोंकापालनकरैंहै ॥ किंवा ॥ हेप्रतर्दन! जैसे गृहकास्वामी आपणेपुत्रादिकबांधवोंकूं नानाप्रकारकेभोगोंकीप्राप्तिकरिकै तृप्तकरैंहै ॥ तैसे तूपरमात्मादेवभी संपूर्णजगतकूंआपणामानिकरिकै नानाप्रकारकेभोगोंकीप्राप्तिकरिकै सर्वदातृप्तकरैंहै ॥ और हेप्रतर्दन! जैसे काष्ठतथामृत्तिकाकरिकैरचितप्रसिद्धसेतु जलकेमर्यादाकूंधारणकरैंहै ॥ तैसे पुण्यवान्जीव स्वर्गकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ और पापीजीव नरककूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ याप्रकारकेमर्यादाकूंधारणकरणेहारे जे वेद तथाब्राह्मणादिकहैं ॥ तिनोंकेसाथ विरोधकरणेहारेजेराक्षसादिकहैं ॥ तिनोंकूं आपणेबलकरिकै तूपरमात्माही वशकरैंहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे राजा आपणेबलकरिकैदुष्टपुरुषोंकूंवशकरैंहै ॥ और हेप्रतर्दन! स्थावर तथाजंगम सर्वभूतोंविषे आकाशकीन्यांई समानव्यापक जोपरमात्मादेवहै ॥ सो तेरेतांई हमनें कथनकर्‍या ॥ तिसअद्वितीयमैंपरमात्माकूंआत्मास्वरूपकरिकैतूजाण ॥ और हेप्रतर्दन! यहअद्वितीयआत्माकाज्ञानही मनुष्योंकेवासते हिततम हम मानतेहैं॥ आत्मज्ञानतैंविना कोईभीवस्तु जीवोंका

हिततमनहीं ॥ श्रीशंकरानंदमुनिरुवाच ॥ हेशिष्य आपणेप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासते देवराजइंद्र इसप्रकार हिततमआत्मज्ञा
नकूं प्रतर्दनराजाकेतांई कथनकरताभया ॥ ताइंद्रकेउपदेशकूंश्रवणकरिकै सोप्रतर्दनराजा इंद्रकीन्यांई आत्मज्ञानयुक्तहोताभया ॥
और देवराजइंद्रकूं दंडवत्प्रणामकरिकै तथाइंद्रकेआज्ञाकूंपाइकै सोप्रतर्दनराजा आपणेश्रीकाशीपुरीकूंजाताभया ॥ तहां श्रीकाशी
पुरीविषेआइकै प्रारब्धकर्मकीसमाप्तिकरणेवासते नानाप्रकारकेभोगोंकूंभोगताभया ॥ और भोगोंकूंभोगिकरिकै जबीप्रारब्धकर्म
कीसमाप्तिभई ॥ तबी शरीरकापरित्यागकरिकै सोप्रतर्दनराजा इंद्रकेवास्तवअद्वितीयस्वरूपकूं प्राप्तहोताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ ब्र
ह्मकेसाथ अभेदरूप जोविदेहमोक्षहै ताकूं प्राप्तहोताभया ॥ हेशिष्य! यहजोआत्मज्ञान हमनैं तेरेतांई कथनकऱ्याहै ॥ सोईही
आत्मज्ञान प्रतर्दनादिकमहान्अधिकारियोंनैं इंद्रादिकमहान्गुरुवोंतैंपायाहै ॥ यातैं यहआत्मज्ञानही अत्यंतदुर्लभहै ॥ पुनःसोआ
त्मज्ञानकैसाहै? ॥ जिसआत्मज्ञानकीअप्राप्तितैं गुरुपदवीकेयोग्यजेब्राह्मणहैं तेभी शिष्यभावकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ और जिसआत्मज्ञान
कीप्राप्तितैं शिष्यपदवीकेयोग्यक्षत्रियादिकभी गुरुभावकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ यातैं आत्मज्ञानही गुरुपणेकासंपादकहै ॥ किंवा ॥ आत्म
ज्ञानविषेजोमहानताहै ॥ सामहानता अन्यकिसीपदार्थविषेनहीं ॥ किंतु सामहानता आत्मज्ञानविषेहीहै ॥ याकारणतैंही छांदोग्य
उपनिषद्विषे ज्ञानकेसमान दक्षिणाकाअभाव कथनकऱ्याहै ॥ तहां यहप्रसंगहै ॥ आत्मज्ञानकीप्राप्तिकरणेहारेजेगुरुहैं ॥ तिनोंके
तांई जोशिष्य समुद्रपर्यंत पृथिवी दक्षिणादेवै ॥ तौभी आत्मज्ञानकेसमान सादक्षिणा नहींहोवैहै ॥ यातैं आत्मज्ञानहीसर्व
तैंअधिकहै ॥ किंवा ॥ लोकविषेभी गुरुशब्द अधिकअर्थकावाचकहोवैहै ॥ सोसर्वतैंअधिक अद्वितीयआत्माहै ॥ यातैं ताअ
द्वितीयआत्माकूंविषयकरणेहारा आत्मज्ञानभी अधिकहै ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ जिसकूंअद्वितीयआत्माकासाक्षात्कारभयाहै ॥
सोईहीगुरुपदवीकेयोग्यहै ॥ और जिनोंकूं आत्माकासाक्षात्कारनहींहै ॥ तेसंपूर्ण शिष्यपदवीकेयोग्यहैं ॥ ॥ इतिश्रीम
त्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे
कौषीतकीसारार्थप्रकाशे इंद्रप्रतर्दनाख्याननाम द्वितीयोऽध्यायःसमाप्तः ॥ २ ॥ ॥ द्वितीयाध्यायःसमाप्तः ॥ ॥

अथआत्मपुराणेस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां
तृतीयाऽध्यायप्रारंभः ॥ ३ ॥

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ अथ तृतीयअध्यायप्रारंभः ॥ तहांद्वितीयअध्यायविषे ऋग्वेदकेकौषीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ तहां देवराजइंद्रनें प्रतर्दनराजाकेताईं प्राणप्रज्ञाउपहितआत्माका उपदेशकऱ्या ॥ तिसप्राणप्रज्ञारूपउपाधितेंभिन्नकरिकै आत्माकेजानणेविषे जोपुरुष समर्थनहीं है ॥ तिनमुमुक्षुपुरुषोंकेबोधकेवासते प्राणादिकउपाधियोंतेंभिन्नकरिकै आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंकथनकरणेहारा जोकौषीतकीउपनिषद्काचतुर्थअध्यायहै ॥ ताकेअर्थकूं अब तृतीयअध्यायविषे निरूपणकरैहै तहां पूर्वअध्यायविषे आत्मज्ञानकूंही हिततमकह्या ॥ तिसकूंश्रवणकरिकै शिष्य अत्यंत आश्चर्यकूंप्राप्तहोताभया ॥ और संशयकरिकैयुक्तहुवा सोशिष्य आपणेगुरुकेप्रति याप्रकार पूँछताभया॥ शिष्यउवाच॥ हेभगवन्! प्रथमअध्यायविषे सनकादिकऋषियोंका तथावामदेवादिकअधिकारियोंका परस्परसंवादरूप इतिहासकरिकै ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्करिकैप्रतिपादितआत्मज्ञान आपनैं कथनकऱ्या ॥ सोकैसाआत्मज्ञानहै? ॥ संसाररूपशूलकेनिवृत्तिकासाधनहै॥ और द्वितीयअध्यायविषे इंद्रप्रतर्दनकेसंवादकरिकै तिसीहीआत्मज्ञानकूंदृढकरिकै हमारेताईं आपनैं कथनकऱ्या ॥ और पूर्वआपनैं यहकह्या ॥ यहआत्मज्ञानही मनुष्योंकाहिततमहै ॥ आत्मज्ञानतैंभिन्न कोईभीपदार्थ हिततमनहीं॥ याप्रकार आपकेवचनकूंश्रवणकरिकै मैंअबी कृतकृत्यभयाहूं॥ परंतु हमारेहृदयरूपकमलकूं आपकेवचनरूपपवनतैं उत्थानकूंप्राप्तभयासंशयरूपभ्रमर चलायमानकरैहै ॥ तात्पर्ययह॥ जैसे पवनकेवेगतैंउडिकरिकै भ्रमर कमलकूंचलायमानकरैहै ॥ तैसे पूर्वआपकेवचनतैंउत्पन्नभयासंशय हमारेहृदयकूं चलायमानकरैहै ॥ अब तासंशयकूंदिखावैहैं ॥ हेभगवन्! द्वितीयअध्यायकेअंतविषे आपनैं यहकह्या ॥ इसअद्वितीयआत्माकेअज्ञानतैं गुरुपदवीकेयोग्यब्राह्मणादिकभी शिष्यभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और शिष्यपदवीकेयोग्यक्षत्रियादिकभी इसअद्वितीयआत्माकेज्ञानतैं गुरुभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यहआपकाकथन हमारेकूंदुर्घटप्रतीतहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ याकहणेकरिकै आपनैं आत्मज्ञानकीस्तुतिकरीहै ॥ अथवा यहवार्तापूर्वकबीहुईहै ॥ यातैं आपने हमारेप्रतिकहीहै ॥ यहसंशय हमारेकूंहोवैहै ॥ और हेभगवन्! हमारेकूंतौ यहवार्ता दुर्घटप्रतीतहोवैहै ॥ काहेतें जैसे मुकुटकेधारणकरणेयोग्य मस्तकहोवैहै ॥ और पादोंविषेधारणकरणे

योग्य उपानहहोवैहै ॥ सोउपानह मस्तकविषेधारणहोवैनहीं ॥ और मुकट पादोंविषेधारणहोवैनहीं ॥ तैसे ब्राह्मणादिकोंविषेवर्त्तमा
नजोगुरुपणा सो क्षत्रियादिकशिष्योंविषे वर्तैनहीं ॥ और क्षत्रियादिकोंविषे वर्तमानजोशिष्यपणा सो ब्राह्मणोंविषे वर्तैनहीं ॥ याप्र
कारकीदुर्घटता हमारेकूं प्रतीतहोवैहै॥यातें हेभगवन्! आत्मज्ञानकीप्राप्तितें शिष्योंविषे गुरुपणा जोवेदविषे कहां कथनकऱ्याहोवै ॥
तौहमारेप्रति आप कथनकरो ॥ आपतैंभिन्न कोईदूसरापुरुषहमारेकूं बोधकरणेहाराहैनहीं ॥ इसप्रकार शिष्यकेवचनकूंश्रवणकरिकै
अत्यंतहर्षयुक्तहुवाश्रीगुरु शिष्यकेप्रति कहताभया ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! आत्मज्ञानकीप्राप्तितें शिष्यभी गुरुभावकूंप्राप्तहोवैहै
और आत्मज्ञानकीअप्राप्तितें गुरुभी शिष्यभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहजो हमनें पूर्वतुमारेताईं कथनकऱ्याहै सो आत्मज्ञानकीहम
नेस्तुतिनहींकरी ॥ किंतु यहवार्ता पूर्वहोइगईहै ॥ तहां कौषीतकीनामाऋषि बहुतकालपर्यंत तपकूंकरताभया ॥ तातपकेप्रभावतें
वेदमंत्रोंकेजानणेकीसामर्थ्यकूंप्राप्तहोताभया ॥ पुनःसोकौषीतकीनामाऋषि मुमुक्षुलोकोंकेकल्याणवासते आपणेशिष्योंकेप्रति कौ
षीतकीनामाउपनिषद्कूं कथनकरताभया ॥ ताकौषीतकीउपनिषद्विषे यहवार्ता कथनकरीहै ॥ तथा बृहदारण्यकउपनिषद्विषे सू
र्यभगवान् याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति यहवार्ता कथनकरताभयाहै ॥ तहां यहकथनकऱ्याहै ॥ यद्यपि क्षत्रिय [illegible] यतीनोंवर्ण
शिष्यपदवीकेयोग्यहैं ॥ गुरुपदवीकेयोग्यनहीं ॥ और ब्राह्मण गुरुपदवीकेयोग्यहै ॥ शिष्यपदवीकेयोग्यनहीं ॥ तथापि आत्मज्ञान
कीप्राप्तिवासते ब्राह्मणभी क्षत्रियराजाकाशिष्य होताभयाहै ॥ यहवार्ता बृहदारण्यक तथाकौषीतकीउपनिषद्के चतुर्थअध्यायविषे
प्रसिद्धहै ॥ यातें हेशिष्य! आत्मज्ञानकेप्रभावतें शिष्यभी गुरुभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहजोहमनेंपूर्वकह्याहै ॥ सो आत्मज्ञानकीस्तुति
रूपअर्थवादनहीं किंतुयथार्थहै ॥ तहां कौषीतकीउपनिदषविषे बालाकिब्राह्मणका राजाकेसाथसंवादरूप पुरातनइतिहास क
थनकऱ्याहै॥ तिसइतिहासकूं तुम श्रवणकरो ॥ ताकेश्रवणतें यहतुमारासंशय निवृत्तहोवैगा ॥ गर्गगोत्रविषेहैउत्पत्तिजाकी ऐसाब
लाकनामा एकब्राह्मणहोताभया ॥ सो बलाकनामाब्राह्मणकैसा था॥ षट्अंगोंकरिकैयुक्तचारिवेद जिसनेअध्ययनकरे हैं ॥ और धर्म
विषेजिसकीनिष्ठाहै ॥ ऐसेबलाकनामाब्राह्मणकापुत्र बालाकिनामाब्राह्मण होताभया ॥ सोबालाकिब्राह्मणभी आपणेपिताकेसमान

ही वेदवेदांगविद्याविषेकुशलहोताभया ॥ परंतु मैंसर्वब्राह्मणोंतैंविद्याविषेअधिकहूं ॥ मेरेसमान कोईभीलोकविषेविद्वान्नहीं ॥
याप्रकारकेविद्यामदकरिकै तथाधनकेमदकरिकै तथायौवनकेमदकरिकै तिसबालाकिनामाब्राह्मणकी धर्मविषेनिष्ठा नहींहोतीभयी॥
और सोबालाकिब्राह्मण सर्वदिशावोंकेपंडितोंकूंजीतणेवासते हिमालयपर्वततैंआदिलैके सेतुबंधरामेश्वरपर्यंत जितनेमध्यविषे
कुरुदेश पांचालदेश काशीदेश मिथिलादेश इसतैंआदिलेके सर्वदेशोंविषे विचरताभया ॥ सोकैसाबालाकिहै॥जिसकीसर्वदेशोंविषे
कीर्तिप्रसिद्धहै ॥ और बोलणेविषे अत्यंतवाचालहै ॥ और आत्मातैंभिन्नसर्वअनात्मापदार्थोंकूं जानणेहाराहै ॥ और आत्मसाक्षात्का
रतैंरहितहै ॥ और प्राणकूंहीजिसनेआत्मामान्याहै ॥ ऐसाबुद्धिमान्सोबालाकिब्राह्मण आपणेविद्याकेबलकरिकै पांचालादिकदे
शोंविषेस्थितजेब्राह्मण तथाक्षत्रिय तथावैश्य तिनसंपूर्णोंकूं जीतताभया॥ इसप्रकार सर्वदेशोंकेब्राह्मणादिकोंकूंजीतिकरिकै अत्यंत
अभिमानकरिकैयुक्तहुआसोबालाकि काशीदेशकेब्राह्मणादिकोंकेजीतणेवासते कदाचित्काशीदेशविषे आवताभया॥ तहां काशीदे
शविषे एककाशीकेराजाकूंछोडिकरिकै जितनेब्राह्मणक्षत्रियवैश्यथे तिनसंपूर्णोंकूं सोबालाकिब्राह्मण जीतताभया ॥ पुनःसोबालाकि
ब्राह्मण अजातशत्रुनामाकाशीराजाकेजीतणेकीइच्छाकरिकै तहांराजाकेसमीप जाताभया ॥ सोकाशीकाराजा अजातशत्रु कैसाहै ?
अतिसैंकरिकैधर्मात्माहै ॥ और सर्वधर्मात्मापुरुषोंविषेमुख्यहै ॥ और विनयकरिकैयुक्तहै ॥ और सत्यविषेजिसकीस्थितिहै ॥ और
महात्मापुरुषोंकेसेवाविषे जिसकीनित्यहीप्रीतिहै ॥ और जिसकेबलतैंअधिकबलवाला कोईभीशत्रु भूमिविषेउत्पन्नभयानहीं ॥ या
कारणतैंही सोकाशीराजा अजातशत्रु यानामकूंप्राप्तभयाहै ॥ अथवा अंतरकेशत्रुजेअहंकारादिक हैं ॥ ते जिसकाशीराजाकेनष्टहुए
हैं ॥ याकारणतैं सोराजा अजातशत्रु यानामकूंप्राप्तभयाहै ॥ अब अंतरशत्रुवोंकेअभावकूंदिखावैहैं ॥ आपणेशत्रुवोंविषे तथामि
त्रोंविषे तथाशत्रुमित्रभावतैंरहितउदासीनपुरुषोंविषेजिसराजाकी स्वप्नविषेभीविषयबुद्धिनहीं ॥ किंतु सर्वविषेजाकीसमानबुद्धिहै ॥
और आपणेशरीरविषे तथाकृमिविषे जिसराजाकीविषमबुद्धिनहीं किंतु दोनोंविषेसमानबुद्धिहै ॥ तात्पर्ययह ॥ यह हमाराशत्रुहै
और यह हमारामित्रहै ॥ याप्रकारकीविषमबुद्धितैंही रागद्वेषादिक उत्पन्नहोवैहैं ॥ विषमबुद्धिरूपकारणकेअभावहुए रागद्वेषादिरू

पकार्यभी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और साविषमबुद्धि अजातशत्रुराजाविषैहैनहीं ॥ यातैं संपूर्णरागद्वेषादिकोंकाअभाव राजाविषेहै ॥ ऐसा अजातशत्रुराजा आपणीसभाविषैस्थितथा ॥ ताराजाकेजीतणेवासते सोबालाकि तहांजाताभया ॥ और विनाहीप्रसंगतैं सोबालाकि राजाकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेराजन्! तू ब्रह्मज्ञानतैंरहितहै ॥ और जन्ममरणरूपसंसारसमुद्रविषेडूबाहुवाहै ॥ यातैं तुमारेतांई मैं ब्रह्मकावास्तवस्वरूप उपदेशकरताहूं ॥ तू मनकूंसावधानकरिकैश्रवणकर ॥ इसप्रकार बालाकिब्राह्मणकावचनश्रवणकरिकै सोअजातशत्रुराजा अत्यंतहर्षकूंप्राप्तहोताभया ॥ और बालाकिब्राह्मणकेप्रति याप्रकारकेवचनकूं राजा कहताभया ॥ हेबालाकि! ब्रह्मका मैंतुमारेतांई उपदेशकरताहूं यहजो आपने प्रसंगतैंविनाही वचनकह्या ॥ तिसवचनरूपवर्षाकरिकै हमारेकर्णोंकूं आपने शीतलकऱ्या ॥ और आपके यावचनकूंश्रवणकरिकै मेरेहृदयविषे अत्यंतआनंद उत्पन्नभयाहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे किसीपुरुषका एकहीपुत्रहोवै ॥ सोपुत्र बहुतकालका किसीदूरदेशविषेगयाहोवै ॥ और किसीपुरुषतैं तापुत्रकामरणा पितानेश्रवणकऱ्याहोवै ॥ और सोताकापिता धनसंपत्तिकरिकैयुक्तहोवै ॥ और वृद्धअवस्थाकूंप्राप्तहुआहोवै ॥ ऐसेपिताकूं मरणकेसमीप कालविषे जोकदाचित् सोपुत्र आइकेप्राप्तहोवै ॥ तापुत्रकेवचनकूंश्रवणकरिकै जैसे तावृद्धपिताकूं आनंदहोवैहै ॥ तैसे ब्रह्मकेउपदेशकीप्रतिज्ञारूप आपकेवचनकूं श्रवणकरिकै मेरेकूंअत्यंतआनंद उत्पन्नभयाहै ॥ और हेबालाकि! हमारीसभाविषे अनेकबुद्धिमान्ब्राह्मण आवतेहैं ॥ और वेदोंकेपाठकूंउच्चारणकरिकै तथावेदोंकेअर्थकूंप्रकाशनकरिकै आपणेआपणेविचित्रकर्मोंकूं दिखावै ॥ और लोकविषेप्रसिद्ध जेनानाप्रकारकीविद्याहैं ॥ तिनविद्यावोंकूं तेब्राह्मणकथनकरै हैं ॥ और ब्रह्मविद्याकेप्रसंगकेप्राप्तहुएभी तथाहमारेकरिकैपूंछेहुएभी तेब्राह्मणब्रह्मविद्याकूं कोईकथनकरतानहीं ॥ तेकैसेब्राह्मणहैं ॥ विद्याकरिकै लोकविषेप्रसिद्धहैं ॥ और वृद्धअवस्थायुक्तहैं ॥ और अनंतहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ ब्रह्मविद्याकेनहींउपदेशकरणेविषे तीनकारणहोवैहैं ॥ एकतौ अप्रसिद्धि ॥ और दूसरा अयोग्यता ॥ और तीसरा असहायता ॥ यातीनोंकारणोंका इनब्राह्मणोंविषेअभावहै ॥ काहेतैं ब्रह्मविद्यावान्रूपकरिकै इनब्राह्मणोंकी सर्वत्रप्रसिद्धिहै ॥ यातैं अप्रसिद्धिरूपकारणभी इनोंविषेनहीं ॥ और यहब्राह्मण वृद्धअवस्थाकरिकैयुक्तहैं ॥ और

श्रद्धापूर्वक हमनैं इनोतैंब्रह्मविद्यापूछीहै ॥ यातैं अयोग्यतारूपकारणभी इनोंविषेनहीं ॥ और यहसहस्त्रब्राह्मण एकठेहुएहैं ॥ या
तैं असहायतारूपकारणभी इनोंविषेनहीं ॥ किंतु प्रसिद्धि तथायोग्यता तथासहायता यहतीनकारण ब्रह्मविद्याउपदेशके इनब्राह्म
णोंविषे विद्यमानहैं ॥ तथापि इनब्राह्मणोंने हमारेतांई कबीभीब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्यानहीं ॥ और हेबालाकि! आपविषे याती
नोंकारणोंकाअभावहै ॥ काहेतैं बाल्यअवस्थाकरिकेयुक्तहो ॥ यातैं प्रसिद्धिरूपकारणभी आपविषेनहीं ॥ और हमने आपसेब्रह्मवि
द्यापूछीनहीं ॥ यातैं योग्यतारूपकारणभी तुमारेविषेनहीं ॥ और आप अकेलेहो ॥ यातैं सहायतारूपकारणभी आपविषेनहीं ॥ या
प्रकार उपदेशकेतीनकारणोंकेअभावहुएभी ब्रह्मकाउपदेश तुमारेतांई मैंकरताहूं ॥ यहजो आपनैं हमारेप्रति वचनकहा ॥ ताआ
पकेवचनकूंश्रवणकरिकै हम बहुतसंतोषकूंप्राप्तभयेहैं ॥ यातैं हेबालाकि! आप ब्रह्मकाउपदेशहमारेप्रतिकरो अथवा नहींकरो ॥ प
रंतु ब्रह्मउपदेशकीप्रतिज्ञारूपतुमारेवचनकी हमनैं यहदक्षिणा मनविषेधारणकरीहै ॥ एकसहस्त्रगौवां तैंब्रह्मवक्ताकेतांई मैंदेताहूं ॥
कैसीतेगौवांहैं ॥ घटकीन्यांई जिनोंकाऊधसहै ॥ और एकवर्षविषे वत्सीकूंदेणेहारीहैं ॥ और जिनोंकास्वभाव अत्यंतसौम्य
है ॥ ऐसे गौवोंकाएकसहस्त्र मैंतुमारेतांई देताहूं ॥ इसप्रकारकेवचनकूंकहिकरिकै सोअजातशत्रुराजा जैसे शास्त्रविषेगौदानकीवि
धिकहीहै ॥ तिसप्रकार सुवर्णादिकसामग्रीयुक्तसहस्त्रगौवोंकूं बालाकिकेतांई देताभया ॥ ब्रह्मउपदेशकी प्रतिज्ञामात्रतैं सहस्त्रगौ
वोंकेदेणेविषे अजातशत्रुराजाका यहअभिप्रायहै ॥ ब्रह्मवेत्ता तथाउदारताआदिकसर्वगुणसंपन्न मैंअजातशत्रुराजाकूं नजाणिकरि
कै यहब्राह्मण जनकराजाकेसमीपजावैहैं ॥ और मोहकेवशहुएतेब्राह्मण याप्रकारकेवचनकूं कथनकरैहैं ॥ जैसे पिता पुत्रोंके
तांई धनादिकपदार्थोंकूंदेवैहै ॥ तथा पुत्रोंकरिकैअध्ययनकरीविद्याकूंभी पिता श्रवणकरैहै ॥ तैसे जनकराजाभी ब्राह्मणोंकेतांई
धनकादान तथाब्रह्मविद्याकादान करैहै ॥ और आपभीजनकराजा ब्राह्मणोंतैंब्रह्मविद्याकाश्रवणकरैहै ॥ याप्रकार जोलोक कथन
करैहैं ॥ सो मैंअजातशत्रुराजाकेप्रभावकूंनजाणिकरिकै केवलभ्रांतितैंकथनकरैहैं ॥ काहेतैं जनकराजाकेप्रति जबीकोईब्राह्मण
ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताहै ॥ तबी तिसउपदेशतैंअनंतर जनकराजा तिसब्राह्मणकेतांई सहस्त्रगौ दक्षिणादेताहै ॥ और मैंअजा

तशत्रुराजातों ब्रह्मविद्याहमतुमारेतांईंकथनकरते हैं याप्रकारकेवचनमात्रकहणेहारेब्राह्मणकेतांईभी सहस्रगौवोंकूंदेताहूं ॥ यातें ज
नकराजातैं हमारीउदारता अधिकहै ॥ तिसहमारीउदारताकूं नजाणिकरिकै जनकराजाकेसमीप लोक जावैहैं ॥ याप्रकार अजात
शत्रुराजाकेअभिप्रायकूं सोअल्पबुद्धिबालाकि नहींजाणताभया ॥ किंतु याप्रकार जाणताभया ॥ याअजातशत्रुराजाकूं ब्रह्मजानणे
की अत्यंतउत्कटजिज्ञासाहै ॥ याकारणतैं ब्रह्मविद्याकेउपदेशतैंप्रथमही सहस्रगौ हमारेतांई राजानैं दियाहै ॥ यातैं याराजाकी
जिज्ञासा पूर्णकरनीचाहिये ॥ याप्रकारकीभ्रांति बालाकिकूंहोतीभई ॥ और बालाकिनैं जोब्रह्मकास्वरूप आपणेगुरुतैंजान्याथा ॥
तिसीब्रह्मका राजाकेतांई उपदेशकरताभया ॥ तहां व्यष्टिरूपकूंधारणकरणेहाराजो अध्यात्महै ॥ और समष्टिरूपकूंधारणकरणेहा
राजो अधिदैवहै ॥ सोअध्यात्मअधिदैवरूपप्राणही ब्रह्महै ॥ याप्रकार अव्याकृतपर्यंत सविशेषप्राणरूपब्रह्म बालाकिनैं जान्या
था ॥ सो राजाकेतांई कथनकरताभया ॥ परंतु अव्याकृततैंपरे जोनिर्गुणब्रह्महै ॥ ताकूं बालाकिनैं जान्यानहींथा ॥ यातैं राजाके
तांई नहींकहताभया ॥ इसप्रकार जोजोब्रह्मकाउपदेश बालाकि राजाकेतांईकरै ॥ तिसतिसउपदेशकूं राजाअजातशत्रु हेबाला
कि यहहमनैंआगेजान्याहै याप्रकारकेवचनकरिकै तथानिषेधकाबोधकजोहस्तकीचेष्टाहै ताकरिकै खंडनकरताभया ॥ और पुनः
सोबालाकि याप्रकार कहताभया ॥ हेराजन्! आदित्य १ चंद्रमा २ विद्युत् ३ मेघमंडलकाशब्द ४ आकाश ५ वायु ६ अग्नि ७ ज
ल ८ यहअष्ट अधिदैवब्रह्मपुरुषहैं ॥ और प्रतिबिंबकेग्रहणकरणेयोग्य जोदर्पणादिकउज्ज्वलवस्तु १ और दशोंदिशारूपश्रोत्र २
और वेगकरिकैचलतेहुएपुरुषकेपश्चात्होणेवालाजोध्वनिरूपशब्द ३ औरपुरुषकेसमानहैआकारजाकाऐसाजोछायास्वरूप ४
और स्थूलशरीर ५ तथासूक्ष्मशरीर ६ और दक्षिणनेत्रविषेस्थितजोसूक्ष्मशरीरकाआकार ७ तथावामनेत्रविषेस्थितजोसूक्ष्मश
रीरकाआकार ८ यहअष्ट अध्यात्मब्रह्मपुरुषहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ आदित्यादिकषोडशस्थानोंविषेस्थित जेषोडशब्रह्मपुरुषहैं
तिनोंकूं ब्रह्मबुद्धिकरिकै मैं उपासनाकरताहूं ॥ यातैं हेराजन्! तूभी तिनषोडशपुरुषोंकूं ब्रह्मबुद्धिकरिकैउपासनाकर ॥ तिसउपास
नातैं तुमारेकूं महान्फलकीप्राप्तिहोवैगी ॥ याप्रकार बालाकिकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोअजातशत्रुराजा बालाकिकेप्रति कहताभया

हेबालाकि ! इनषोडशब्रह्मपुरुषोंकूंहमनैं पूर्वभलीप्रकारजान्याहै ॥ और हमनैं पूर्व तिनब्रह्मपुरुषोंकी उपासनाभीकरीहै ॥ यातैं पूर्व जानीहुईवस्तुका पुनःउपदेशकरणा तुमाराव्यर्थहै ॥ इसप्रकार बालाकिनैं जोजोब्रह्मकास्वरूपजान्याथा तिनसंपूर्णोंकूं राजाअजातशत्रु हमनैं यहआगेजान्याहै ॥ याप्रकारकेउत्तरकरिकै खंडनकरताभया ॥ इसतैंपरे निर्गुणब्रह्मकेस्वरूपकूं सोबालाकिब्राह्मणजाणतानहीं ॥ जो राजाकेतांई उपदेशकरै ॥ और बालाकिनैं पूर्वयहप्रतिज्ञाकरीथी ॥ हेराजन् ! मैंतुमारेतांई ब्रह्मकाउपदेशकरताहूं ॥ साप्रतिज्ञा बालाकिकी मिथ्याहोतीभई ॥ यातैं ताबालाकिकामुख अत्यंतग्लानियुक्तहोताभया ॥ और चौरकीन्यांई नीचेमुखकरिकै सोबालाकि सभाविषेतूष्णींभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ सोकैसाबालाकिहै? ॥ कुलमदकरिकै तथाविद्यामदकरिकै तथाधनमदकरिकै अत्यंतअहंकारीहुआहै ॥ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंकेतिरस्कारजन्यपापोंकरिकै नष्टहोगयीहैमुखकीकांतिजिसकी ॥ और शरदृऋतुकेमेघकीन्यांई व्यर्थहैगर्जनाजिसकी ॥ ऐसेबालाकिब्राह्मणकूं राजाअजातशत्रु देखिकरिकै ताबालाकिकेअभिमानकीनिवृत्तिवासते निर्दयपुरुषकीन्यांई उच्चस्वरकरिकै याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदुष्टबुद्धिबालाकिविप्र! जिसब्रह्मज्ञानका तुमनैं हमारेप्रतिकथनकऱ्याहै ॥ इतनाहीतुमारेकूंब्रह्मज्ञानहै ? अथवा इसतैं अधिकभीकछुतेरेकूंज्ञानहै ? ॥ जोइसतैंअधिकतेरेकूं ज्ञानहोवै तौहमारेप्रतिकहो ॥ और हेबालाकि! तेरेतैंभीअधिकविद्यावालेसहस्त्रब्राह्मण इहांहमारीसभाविषेस्थितहैं ॥ परंतु विद्यामदकरिकैमोहित तेरेसमान कोईभीब्राह्मणनहीं ॥ किंतु एकतूही विद्यामदकरिकैमोहकूंप्राप्तभयाहै॥ यातैं हेबालाकि! जोतेरेकूं पूर्वउक्तज्ञानतैंअधिकज्ञानहोवै ॥ तौ हमारेप्रतिकहो ॥ इसप्रकार अजातशत्रुराजाकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै सोबालाकिब्राह्मण याप्रकारकहताभया ॥ हेराजन् ! जिसब्रह्मकाउपदेश हमनैं तुमारेतांईकऱ्याहै ॥ सोईहीब्रह्मकास्वरूप गुरुनैं पूर्वहमारेतांई उपदेशकऱ्याहै ॥ इसतैंअधिकब्रह्मकेस्वरूपकाउपदेश गुरुनैं हमारेतांई कऱ्यानहीं ॥ यातैं पूर्वउक्तकार्यब्रह्मकेस्वरूपतैंभिन्न निर्गुणब्रह्मकेस्वरूपकूं मैं जानतानहीं ॥ इसप्रकार बालाकिब्राह्मणकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोअजातशत्रुराजा याप्रकारकेवचनकूं बालाकिकेप्रति कहताभया ॥ हेबालाकिब्राह्मण ! जोतैंने पूर्वब्रह्मकास्वरूप हमारेतांई उपदेशकऱ्या ॥ तिसतेरेउपदेशकरिकै निर्गुणब्रह्मकास्वरूप जान्याजा

वैनहीं ॥ यातें मैंतुमारेतांई ब्रह्मकाउपदेशकरताहूं ॥ यहतुमारावचन मिथ्याहोवैंहै और मिथ्यावचनतेंपरेकोईपापकर्मनहीं ॥
याकारणतेंही बुद्धिमान्पुरुष आपणेवचनकूंमिथ्याकरैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ आपणेसत्यवचनकरणेविषे जोकदाचित्पुत्रस्त्रीधना
दिकपदार्थोंकाभीपरित्यागहोताहोवै तौ तिनपुत्रादिकोंकापरित्यागकरिकैभी बुद्धिमान्पुरुष आपणेवचनकूंसत्यकरैहैं ॥ आप
णेवचनकूंमिथ्याकरैनहीं ॥ काहेतें मिथ्यावादीपुरुष याजगत्विषे कर्मचांडालहोवैंहै ॥ तात्पर्ययह ॥ चांडाल दोप्रकारकेहोवैहैं ॥
एकतौ जातिकरिकैचांडालहैं ॥ जैसे प्रसिद्धश्वानादिकोंकूंभक्षणकरणेहारेचांडालहैं ॥ तिनोंविषे चांडालत्वजातिरहैहै ॥ और
दूसरे कर्मकरिकैचांडालहोवैहैं ॥ जैसे मिथ्यावादीपुरुषहैं ॥ मिथ्यावचनरूपकर्मकरिकै तेचांडालहैं ॥ तिनविषेभी जोपुरुष
स्वतंत्रहुआ गुरुकेसमीप तथा राजादिकोंकेसमीप मिथ्यावचनकूंकहैहै ॥ सोपुरुष विशेषकरिकैकर्मचांडालहै ॥ यातें मिथ्याव
चनकेसमान कोईभीपापकर्मनहीं ॥ किंवा ॥ वर्णिनांहिवधोयत्र तत्रसाक्ष्यनृतंवदेत् ॥ अर्थयह ॥ जहां ब्राह्मणादिकोंकीहिंसा
होतीहोवै ॥ तहांब्राह्मणादिकोंकीरक्षावासते साक्षीपुरुष मिथ्यावचनकूंभीउच्चारणकरै ॥ तामिथ्यावचनकरिकै साक्षीपुरुषकूं
पापहोवैनहीं ॥ उलटा पुण्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ इसतेंआदिलेके जोशास्त्रनें मिथ्यावचनकहणेकेकारणकहेहैं ॥ तिनकारणोंतें
विना जोपुरुष मिथ्यावचनकूंकथनकरैहै तिसपुरुषकेजिह्वाकूं शस्त्रकरिकै यमकिंकर छेदनकरैहैं ॥ किंवा ॥ लोकविषे जितने
अधमपुरुषहैं तिनसंपूर्णोंविषे मिथ्यावचनकहणेवालापुरुषही मुख्यअधमहै ॥ किंवा ॥ जोपुरुष अग्निआदिकदेवतावोंके
समीप तथागुरुकेसमीप तथाराजाकेसमीप मिथ्यावचनकूंउच्चारणकरैहै ॥ तिसमिथ्यावादीपुरुषकूं विचारतेंविनाही राजा हनन
करै ॥ याप्रकार यद्यपि शास्त्रविषेकह्याहै ॥ तथापि हेपापिष्टबालाकि! तूंब्राह्मणहै ॥ याकारणतें तुमारेशरीरकाहननमैंनेंनहींक
र्या ॥ कैसामैंहूं सर्वधर्मकूंजानणेहाराहूं ॥ तिसविषेभी राजसभाविषे विशेषकरिकै मैंधर्मकूंजानताहूं ॥ किंवा ॥ हेबालाकि! अने
कसाधुब्राह्मणोंका तुमनें निरादरकर्याहै ॥ तापापकर्मकरिकैही मैंब्रह्मकाउपदेशतुमारेतांईकरताहूं यहतुमारीप्रतिज्ञा मिथ्याभई
है ॥ काहेतेंयहशास्त्रकासिद्धांतहै ॥ जोकोईअधमपुरुष समदर्शीसाधुब्राह्मणोंकूं शरीरकरिकै तथावाणीकरिकै तथामनकरिकै

दुःखकीप्राप्तिकरैहै तिसअधमपुरुषकेसर्वमनोरथोंकूं सूर्यादिकदेवता नष्टकरैहैं ॥ तिसपुरुषका कोईभीमनोरथ सिद्धहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोपुरुष सर्वप्राणियोंकूंदुःखकीप्राप्तिकरैहै सोपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे आपणेकूंहीदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ तथा जोपुरुष सर्वप्राणियोंकूंसुखकीप्राप्तिकरैहै सोपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे आपणेकूंहीसुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे जोपुरुष आपणेमस्तककूं दूसरेकामस्तकजाणिकरिकै ताडनकरैहै ॥ सोपुरुष आपहीदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे आपणाआत्मास्वरूपजोसर्वप्राणीहैं तिनोंकूं आपणेतैंभिन्नमानिकरिकै जोपुरुष किसीप्राणिकूंदुःखकीप्राप्तिकरैहै सोअधमपुरुष आपणेकूंही दुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ किंवा ॥ हेबालाकि! विद्यादिकोंकेमदकरिकैउत्पन्नभयाजोमोह तामोहकरिकै तुमनैं बहुतसाधुब्राह्मणोंकानिरादरकऱ्याहै ॥ तिसनिरादररूपपापकर्मकाफल अबीतेरेकूंआइकेप्राप्तभयाहै ॥ यातैं हेबालाकि! ब्रह्मकाउपदेश मैंतुमारेतांईकरताहूं यहजोमिथ्यावचन तुमनैं हमारेप्रतिकथनकऱ्याहै ॥ ऐसामिथ्यावचन आजदिनतैंलेकरिकैकिसीकालविषे किसीपुरुषकेआगे तुमनैं नहींकहणा ॥ और हेबालाकि! शमदमादिकसाधनोंकरिकैयुक्त जेमुमुक्षुब्राह्मणहैं तिनोंकूं विशेषकरिकैगुरुहीशिक्षाकरैहै ॥ क्षत्रियादिक शमादिसाधनयुक्तब्राह्मणोंकेशासनाकरणेकूं यद्यपियोग्यनहींहैं ॥ तथापि तूशमदमादिकसाधनोंतैंरहितउन्मत्तब्राह्मणहै ॥ याकारणतैं हमनैं तुमारेकूं शासनाकरीहै ॥ तात्पर्ययह ॥ एकधर्मशास्त्रतौ याप्रकारकहैहै ॥ नाऽदंड्योनामराज्ञोऽस्ति धर्माद्विचलितःस्वकात् ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष आपणेवर्णाश्रमकेधर्मतैंरहितहुआ विपरीतआचरणकूंकरैहै सोपुरुष राजाकरिकै दंडकरणेयोग्यहै ॥ और दूसरेधर्मशास्त्रविषे यहकह्याहै ॥ अक्षतोब्रह्मणोव्रजेत् ॥ अर्थयह ॥ शरीरकादंड ब्राह्मणकूं राजानैं नहीं करणा ॥ यादोनोंशास्त्रोंकीव्यवस्थाकरिकै मैंनैं वाणीकरिकै तेरानिरादरकऱ्याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ चारिप्रकारकादंड नीतिशास्त्रविषे कह्याहै ॥ धिक्दंड १ वाक्दंड २ धनदंड ३ शरीरदंड ४ याचारिप्रकारकेदंडविषे कोईभीदंड जोतुमारेकूंनकरियै तौ प्रथमशास्त्र व्यर्थहोवैगा ॥ ताप्रथमशास्त्रकीप्रमाणतावासते तुमारेविषे दंडकरणेकीप्राप्तिअवश्यहोवैहै ॥ तिनदंडोंविषेभी शरीरकादंड ब्राह्मणविषे अक्षतोब्राह्मणोव्रजेत् याद्वितीयशास्त्रकरिकैहीनिवारणकऱ्याहै ॥ यातैं शरीरकाहननरूपदंड ब्राह्मणविषेसंभवैनहीं ॥

और धनकाहरणरूपदंडभी ब्राह्मणविषेसंभवैनहीं ॥ काहेतें भिक्षुकब्राह्मणोंविषे धनकीयोग्यताहैनहीं ॥ और धिग्दंडतथा वाग्दंड दुरात्माब्राह्मणोंविषेसंभवैहै ॥ याकारणतें हेबालाकि! तुमारेकूं कठोरवाणीकरिकै हमनैं ताडनकऱ्याहै ॥ और हेबालाकि! धर्मशास्त्रविषे राजाकायहधर्मकह्याहै ॥ उत्तमपुरुषोंकेतांई तथाअधमपुरुषोंकेतांई राजानैं सर्वदाहितकाउपदेशकरणा ॥ याशास्त्रकूंअंगीकारकरिकै मैंतेरेतांई हितकाउपदेशभीकरताहूं सो तुम श्रवणकरो ॥ हेबालाकि! जोतुमनैं पूर्वषोडश ब्रह्मपुरुषकहेहैं ॥ तिनोंकेज्ञानतें मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तिनषोडशपुरुषोंका तथासकलप्रपंचका कारणजोपरमात्माहै तिसकेज्ञानतेंही मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें सोपरमात्माही तुमारेकूंजानणेयोग्यहै ॥ और तिसपरमात्माकाज्ञान गुरुकेउपदेशतेंविना होवैनहीं ॥ यातें आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते आपणेगुरुकेसमीप तुमजावो ॥ और गुरुकेउपदेशतें जो आत्मज्ञानकूं तूनहींसंपादनकरैगा तो यहविद्यामद वारंवारतुमारेकूं जन्ममरणरूपनरककीप्राप्तिकरैगा ॥ और हेबालाकि! जो परमात्मा इसजगत्केउत्पत्तिका तथास्थितिका तथालयका कारणहै ॥ सोईहीपरमात्मा ब्रह्मशब्दकाअर्थहै ॥ और ब्रह्मशब्दजन्यज्ञानकाविषयहै ॥ इसप्रकार राजाअजातशत्रुकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोबालाकिब्राह्मण अभिमानतैंरहितहोताभया ॥ और याप्रकारकेअभिप्रायकरिकै सोबालाकि राजाअजातशत्रुकूंही गुरुरूपकरिकैनिश्चयकरताभया ॥ अब ताबालाकिकेअभिप्रायकूंदिखावैहैं ॥ तिसआत्माकेज्ञानतें पुरुषोंविषेगुरुपणाहोवैहै ॥ सोआत्मा अत्यंतगुरुहै ॥ ताआत्माकेउपदेशकरणेहारा जोकोईकपुरुष है ॥ तिसकूंभी गुरुपणायोग्यहै ॥ और अहंकारादिक जिसपुरुषकेआश्रितरहेहैं ॥ तिसकूंभी लघुताकीप्राप्तिकरैहैं ॥ यातें तेअहंकारादिक अत्यंतलघुहैं ॥ तिनअहंकारादिकोंकी जोपुरुष निवृत्तिकरैहै ॥ सोपुरुषभी गुरुहोणेकूंयोग्यहै ॥ यहदोनोंप्रकारकालक्षण याअजातशत्रुराजाविषेघटैहै ॥ काहेतें विद्यामद तथाधनमद तथाकुलमद यहतीनप्रकारकामद मेरेकूं नरककीप्राप्तिकरणेहारा है ॥ और इसलोकविषेभी जिसमदकेसंबंधतें महात्मापुरुषोंकीसभाविषे निरादररूपलघुताकूं मैंप्राप्तभयाहूं ॥ यातें विद्यादिकोंका मद अत्यंतलघुहै ॥ और अनंतप्रकारकेदुःखोंकूंकरणेहाराहै ॥ याप्रकारकेहमारेमदकूं याराजानैं अनादररूपउपायकरिकै निवृत्त

कन्याहै ॥ और राजा आपविद्यादिकमदतैंरहितहै ॥ यह गुरुकालक्षण याअजातशत्रुराजाविषेघटैहै ॥ यातैं यहअजातशत्रुराजा
ही हमारागुरुहोणेकूंयोग्यहै ॥ किंवा ॥ याअजातशत्रुराजाकापरित्यागकरिकै अन्यकिसीगुरुकेसमीप जोमैंजावोंगा ॥ तौ हमारे
विषे कृतघ्नतादोषकीप्राप्तिहोवेगी ॥ काहेतैं? जोपुरुष किसीपुरुषकेकियेउपकारकूंनहींमानता सोपुरुष कृतघ्नहोवै है ॥ और यारा
जानैं हमारेअहंकारादिकोंकीनिवृत्तिकरीहै ॥ यातैं याराजानैं हमारेऊपरि महानूउपकारकन्याहै ॥ ताराजाकेउपकारकूं नमानिक
रिकै जोमैं अन्यगुरुकेसमीपजावोंगा तौ मैंभी कृतघ्नहोवोंगा ॥ यातैं याअजातशत्रुराजाकूंही गुरुमानिकै याकेशरणकूंप्राप्तहो
वों ॥ किंवा ॥ इसलोकविषे राजाअजातशत्रु जैसे ब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकूंजाणताहै ॥ तैसे दूसराकोईपुरुष ब्रह्मकेवास्तवस्वरूप
कूंजाणतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकविषे द्वितीयाकाचंद्रमा जिसपुरुषनैं नेत्रोंकरिकैप्रत्यक्षदेख्याहोवै ॥ सोईहीपुरुष दूसरे
पुरुषकूं चंद्रमादिखावणेमैंसमर्थहोवैहै ॥ और जिसपुरुषनैं आप चंद्रमानहींदेख्या सोपुरुष दूसरेकूं चंद्रमादिखावणेमैंसमर्थहोवै
नहीं ॥ तैसे याराजातैंभिन्नपुरुषोंनैं ब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकूंजान्यानहीं तौ हमारेप्रति ब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकूं ते कैसेकहेंगे ? ॥ किं
वा ॥ पूर्वजिनगुरुवोंतैं मैंविद्याअध्ययनकरीहै तिनोंकूंभी ब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकाज्ञाननहीं ॥ काहेतैं? जोतिनोंकूंब्रह्मकेवास्तवस्व
रूपकाज्ञानहोता तौ प्राणकेसमानप्रियमैंशिष्यकेताईं तेगुरु ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरते॥ और तिनगुरुवोंनैं ब्रह्मविद्याकाउपदेश
हमारेताईं कन्यानहीं ॥ किंतु जितनीविद्या तिनगुरुवोंकूंआवतीथी तितनीसर्वविद्या तिनगुरुवोंनैंहमारेताईं अध्ययनकराईहै ॥
ब्रह्मविद्या तिनगुरुवोंनैं हमारेप्रतिकहीनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ तिनगुरुवोंकूं ब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकाज्ञाननहीं ॥ और हिं
मालयतैंआदिलेकैसेतुबंधरामेश्वरपर्यंत ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंविषे जितनेप्रसिद्धविद्वानूहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं मैंपराजय
करिकै राजाअजातशत्रुकेपराजयकरणेवासते इहांआयाहूं ॥ यातैं याराजातैं तथापूर्वहमारेगुरुवोंतैं भिन्नजितनेकीब्राह्मणादिकवि
द्वानूहैं ॥ तेसंपूर्ण हमारेशिष्यभावकूंप्राप्तभयेहैं ॥ यातैं तिनोंतैंभी ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकीसंभावना होवैनहीं ॥ जोतिनब्राह्मणादि
कोंकूं ब्रह्मविद्याआवतीहोती तौ हमारेसैंपराजयकूंप्राप्तनहींहोते ॥ और तिनसंपूर्णब्राह्मणोंकूं मैंपराजयकरिआयाहूं ॥ यातैं ति

नोंविषेब्रह्मविद्याकीसंभावनाहोवैनहीं ॥ और यहअजातशत्रुराजा यद्यपिहैतौमनुष्य ॥ तथापि गुणोंकरिकैंदेवतावोंकेसमानहै ॥ अ
थवा देवतावोंतैंभीअधिकगुणवान्है ॥ काहेतैं ? यहअजातशत्रुराजा प्रमादतैंरहितहुवा ब्रह्मविद्याकूंधारणकरैहै॥और अधिकारीमुमु
क्षुजनोंकेतांईभी ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैहै ॥ यातैं यहअजातशत्रुराजा देवतावोंतैंभीअधिकहै ॥ और इंद्रादिकदेवतातौ देवांग
नावोंकेमुखकादर्शनरूपमदिरापानकरिकै अत्यंतमोहकूंप्राप्तभयेहैं ॥ यातैं तेदेवता ब्रह्मविद्याकूंजाणतेहुएभीनहींजाणते ॥दृष्टांत॥
जैसे याभूमिलोकविषे मद्यपानकरणेहारेपुरुष आपणेगृहादिकोंकूंजाणतेहुएभीनहींजाणते ॥ और यहअजातशत्रुराजा इतनील
क्ष्मीकूंपाइकेभी मुनिलोकोंकीन्यांई अभिमानतैंरहितहै ॥ और पुत्रादिकप्रियवस्तुकेप्राप्तहुए याअजातशत्रुराजाकूं हर्षनहींहोता ॥
और अप्रियवस्तुकेप्राप्तहुए याराजाकूंशोकनहींहोता ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसवस्तुविषे पुरुषकारागहोवैहै तिसवस्तुकेप्राप्तहुए ता
पुरुषकूं हर्षउत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं रागही हर्षकाकारणहै ॥ और जिसवस्तुविषे पुरुषकाद्वेषहोवैहै तावस्तुकेप्राप्तहुए तिसपुरुषकूं
पीछेशोकउत्पन्नहोवैहै यातैं द्वेषहीशोककाकारणहै॥ सोराग तथाद्वेष याअजातशत्रुराजाविषे हैनहीं यातैं हर्ष तथाशोकभी यारा
जाविषेसंभवैनहीं॥ काहेतैं? याअजातशत्रुराजाकूं जैसे आपणेपुत्रहै तैसेहीशत्रुहैं॥ पुत्रोंविषे याराजाकारागनहीं ॥ और शत्रुवोंवि
षे याजाकाद्वेषनहीं ॥ किंवा ॥ यालोकविषे एकअजातशत्रुराजाही कामक्रोधतैंरहितहै ॥ दूसराकोईपुरुष कामक्रोधतैंरहितहैन
हीं ॥ काहेतैं जोयहराजा कामदोषवालाहोता तौ हमारेतांई सहस्त्रगौवोंकूंनहींदेता ॥ और यहअजातशत्रुराजातौ मैंब्रह्मकाउप
देशतुमारेप्रतिकरताहूं याहमारेवचनमात्रकरिकै सहस्त्रगौवां हमारेतांईदेताभयाहै॥ यातैं याराजाविषे कामदोषनहीं ॥ और जेपु
रुष कामदोषयुक्तहोवैहैं ते सुपात्रविषेदानकरैनहीं ॥ किंतु कुपात्रजेवेश्यादिकस्त्रियां हैं तथा वेश्याकेपृष्ठदेशविषे वादित्रोंकूंब
जावणेहारेजेपुरुषहैं तथा नानाप्रकारकेकौतुकोंकूंकरणेहारे जेनटादिकहैं इसतैंआदिलेकेजितनेकीकुपात्रहैं तिनकुपात्रोंकूं स
हस्त्ररुपैये कामीपुरुषदेवैहैं ॥ परंतु ब्रह्मवेत्तासुपात्रपुरुषकेतांई पंचकौडीभी कामीपुरुष देसकतेनहीं ॥ यातैं यहसिद्धभया॥ जिन
जिनपुरुषोंकाद्रव्य सुपात्रोंविषेखरचहोवैहै ॥ तेपुरुष कामदोषतैंरहितहैं ॥ और जिनपुरुषोंकाद्रव्य कुपात्रोंविषेखरचहोवैहै ॥ तेपु

रुष कामदोषवालेहैं ॥ और याअजातशत्रुराजाकाद्रव्य सुपात्रोंविषेहीखरचहोवैहै ॥ यातें यहराजा कामदोषतैंरहितहै ॥ किंवा ॥ कामदोषकरिकैजन्य जेजन्ममरणादिकदोषहैं तिनदोषोंकूं जोपुरुष जानताहै सोईहीपुरुष कामदोषतैंरहितहोवैहै ॥ कामजन्यदोषकेज्ञानतैंरहितपुरुष कामतैंरहितहोइसकैनहीं ॥ और यहअजातशत्रुराजा कामजन्यजन्ममरणादिकदोषोंकूंभलीप्रकारजाणेहै॥ यातें यहराजा कामदोषतैंरहितहै ॥ किंवा ॥ याअजातशत्रुराजाविषे क्रोधभीनहीं ॥ काहेतें? जेक्रोधवान्पुरुषहोवैहैं तिनोंका जबीकोईपुरुष अपराधकरैहै ॥ तबी तेक्रोधीपुरुष तिसअपराधीपुरुषकूंमारैहैं ॥ अथवा तिसअपराधीपुरुषकेमारणेविषेजोसमर्थनहींहोवैहैं तौ आपणेमस्तककूंताडनकरैहैं ॥ यहक्रोधवान्पुरुषोंकालक्षणहै ॥ सोलक्षण याराजाविषेहैनहीं ॥ काहेतें? सभाविषेआइके मैंअज्ञानीनें याब्रह्मवेत्ताअजातशत्रुकी अवज्ञाकरीभी ॥ तौभी यहराजा हमारेऊपरिक्रोधवान्नहींभया॥ उलटा हमारेहितकीइच्छाकरैहै ॥ यातें याराजाविषेक्रोधनहीं ॥ जो याराजाविषेक्रोधहोता तौ हमअपराधीकेहितकीइच्छानहींकरता॥ किंवा हमनें पूर्व आपणेगुरुवोंकेमुखतें तथाशास्त्रतें यहश्रवणकऱ्याहै ॥ एकब्रह्मवेत्तापुरुषकूंछोडिकरिकै सर्वप्राणिमात्रकेहृदयविषे कामक्रोधरहेहैं ॥ और ब्रह्मवेत्तापुरुषविषे कामक्रोधरहैंनहीं॥ याप्रकार गुरुशास्त्रकेवचनतैंभी यहअजातशत्रुराजाही ब्रह्मवेत्तासिद्धहोवैहै ॥ काहेतें याराजाविषे कामका तथाक्रोधका अभावहै ॥ यातें ऐसेब्रह्मवेत्ताराजाकापरित्यागकरिकै ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासते अन्यकिसीदेवताकेसमीपजाणा हमारेकूंउचितनहीं ॥ किंवा देवतावोंतैंब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषे हमारेकूंसंशयहोवैहै॥काहेतें? इसलोकविषे जैसे मनुष्यादिकोंका प्रत्यक्षदर्शनहोवैहै ॥ तैसे देवतावोंका प्रत्यक्षदर्शन किसीपुरुषकूंहोतानहीं ॥ और जोदेवतावोंकेदर्शनवासते अनेककालपर्यंत मैंतपकूंकरोंगा ॥ तौभी इसीजन्मविषे हमारेकूं तिनदेवतावोंकादर्शनहोवैगा ॥ अथवा दूसरेजन्मविषे तिनदेवतावोंकादर्शन हमारेकूंहोवैगा॥ यहसंशय हमारेकूंहोवैहै ॥ किंवा ॥ महान्तपकरिकै इसीजन्मविषेदेवतावोंकादर्शनहुआभी ॥ तौभी सर्वदेवतावोंविषेमुख्यब्रह्मवेत्ता कोईविरलाहीदेवताहोवैहै ॥ किंवा ॥ तपकेप्रभावतें कदाचित् तिसमुख्यब्रह्मवेत्तादेवताकादर्शनभी हमारेकूंहोवै ॥ तौभी सोदेवता रजोगुणकरिकैयुक्तहै ॥ यातें हमारेतांई ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैगा॥ अथवा

नहींउपदेशकरैगा ॥ अथवा किसीद्रव्यादिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै हमारेकूं मोहउत्पन्नकरैगा ॥ याप्रकारकासंशय हमारेकूंहो वैहै ॥ यातें देवतावोंकेउपदेशतैंब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषे हमारेकूं संभावनाहोवैनहीं ॥ और देवतावोंतैंभिन्न जितनेंइसलोकविषे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंमें प्रसिद्धविद्वान्हैं तेसंपूर्ण हमारेतैंपराजयकूंप्राप्तभयेहैं ॥ यातें तिनोंतैंभी ब्रह्मविद्याकेप्राप्ति कीसंभावना हमारेकूंहोवैनहीं ॥ इसप्रकारकाविचारकरिकै सोबालाकिब्राह्मण ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासते हस्तविषेकाष्ठोंकूंधारणकरि कै तिसअजातशत्रुराजाकेसमीप जाताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंकाबालक अष्टमवर्षविषे हस्तोंमें काष्ठोंकूंग्रहणकरिकै औरआचार्यकेसमीपजाइके याप्रकारकीप्रार्थनाकरैहैकि हेभगवन्! मैंतुमाराशिष्यहूं यातें हमारेकूंउपदेश करो ॥ तैसे बालाकिब्राह्मणभी राजाअजातशत्रुकेसमीपआइके याप्रकार कहताभया ॥ हेभगवन्! मैंतुमाराशिष्यहूं यातें हमा रेतांई ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरो ॥ याप्रकारकेवचनकरिकै बालाकि इसअर्थकूंबोधनकरताभया ॥ इसलोकविषे जोकोईपुरुष ब्रह्म विद्याकरिकैअधिकहै ॥ सोईहीपुरुष गुरुपदवीकेयोग्यहै ॥ सो ब्राह्मणहोवै ॥ अथवा क्षत्रियहोवै ॥ अथवा वैश्यहोवै ॥ अथवा शूद्रहोवै ॥ अथवा स्त्रीहोवै ॥ अथवा नपुंसकहोवै ॥ अथवा राक्षसहोवै ॥ सर्वथा ब्रह्मविद्यावाला गुरुपदवीकेयोग्यहै ॥ और जिस पुरुषकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिनहींभई सो ब्राह्मणभीहोवै तथा अन्यविद्यावोंविषेबृहस्पतिकेसमानहोवै तौभी सोपुरुष शिष्यप दवीकेयोग्यहै ॥ गुरुपदवीकेयोग्यनहीं ॥ एकब्रह्मवेत्ताही गुरुपदवीकेयोग्यहै ॥ याप्रकार आपणेअभिप्रायकूं सोबालाकि बोधनक रताभया ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार अभिमानतैंरहितबालाकिकूं राजाअजातशत्रु देखिकरिकै आपणेआसनतैंउठताभया ॥ और दो नोंहस्तोंकूंजोडिकरिकै सोराजा बालाकिकेतांई प्रमाणकरताभया ॥ और याप्रकारकेवचनकूं सोराजा बालाकिकेतांई कहताभया ॥ हेबालाकिब्राह्मण! इसलोकविषे ब्रह्मानैं ब्राह्मणत्वजातिवालेसर्वब्राह्मणोंकूं गुरुरूपकरिकैउत्पन्नकऱ्याहै ॥ और क्षत्रियादिकअन्यव र्णोंकूं स्वभावतें शिष्यरूपकरिकै ब्रह्मानैं उत्पन्नकऱ्याहै ॥ यातें हेबालाकि! तूब्राह्मणहोइके मैंक्षत्रियकेशिष्यभावरूपविपरीतकर्मकी इच्छा किसवासतेकरताहै?॥किंतु यहविपरीतकर्मकरणा तुमारेकूंउचितनहीं ॥ किंवा ॥ हेबालाकि ! विपरीतकर्मविषेप्रवृत्ति तिनका

रणोंतेंहोवैहै ॥ एकतौ क्रोधकरिकैविपरीतकर्मविषेप्रवृत्तिहोवैहै ॥ और दूसरा भयकरिकैविपरीतकर्मविषेप्रवृत्तिहोवैहै ॥ और तीसरा अज्ञानकरिकैविपरीतकार्यविषेप्रवृत्तिहोवैहै ॥ तहां क्रोधकरिकैजोआपकी याविपरीतकर्मविषेप्रवृत्तिहोतीहोवै ॥ तौ हमारेऊपरिक्षमाकरिकै ताक्रोधकीनिवृत्तिकरो ॥ तात्पर्ययह मैंअल्पबुद्धिबालकनैं राजधर्मकूंअंगीकारकरिकै जेजेकटुवचन तुमारे तांईकहैहैं तिनसंपूर्णहमारेअपराधोंकूं तुम क्षमाकरो ॥ क्षमाकरणाब्राह्मणोंकास्वभावहै ॥ किंवा ॥ हेबालाकि! मैंने जोआपकूंकटुवचनकहेहैं ॥ सोविनाअपराधतेंनहींकहे ॥ किंतु हमनैं बहुतजनोंकेमुखतें याप्रकारकावचन श्रवणकऱ्याथा ॥ जोबालाकि धनमदकरिकैतथाकुलमदकरिकै तथाविद्यामदकरिकै अनंतसाधुब्राह्मणोंकानिरादरकरैहै ॥ और हेबालाकि! जैसा हमनैं पूर्वश्रवणकऱ्याथा तैसाही हमनैं तुमारेकूंदेख्या ॥ इसीकारणतें तुमारेमदकीनिवृत्तिवासते हमनैं तुमारेकूंकटुवचनकहैहैं ॥ और हेबालाकि! तुमारेप्रति जोहमनैं कटुवचनकहेहैं ॥ सो आपणेप्रमादतेंनहींकहे ॥ किंतु धर्मशास्त्रकेअनुसारकहेहैं ॥ काहेतें? धर्मशास्त्रविषे यहकह्याहै ॥ दुराचारीजेब्राह्मणहैं ॥ तिनोंकेदुराचरणकूं भलीप्रकारनिर्णयकरिकै राजानैं तिनब्राह्मणोंका वाणीकरिकैनिरादरकरणा ॥ याप्रकार धर्मशास्त्रविषे हमनैंश्रवणकऱ्याहै ॥ याकारणतें हमनैं तुमारेकूंकटुवचनकहैहैं ॥ किंवा ॥ हेबालाकि! आपसरीखेब्राह्मणलोकोंनैंही हमारेप्रति राजधर्मकाउपदेशकऱ्याहै ॥ तिसधर्मकेआचरणविषे जोहमाराकोईप्रमाद आप देखतेहोवो तौ भी हमबालकऊपरिक्षमाकरो ॥ और हेबालाकि! तुमारेक्षोभकूंदेखिकरिकै हमारेकूं बहुतशोकहुआहै ॥ जोहमारेकूं धिक्कारहै ॥ और हमारेराजकूंभीधिक्कारहै ॥ तथा राजसंबंधीधर्मोंकूंभी धिक्कारहै ॥ जिनराजसंबंधीधर्मोंकूंअंगीकारकरिकै हमनैं ब्राह्मणकानिरादरकऱ्याहै ॥ किंवा ॥ हेबालाकिब्राह्मण! मेरेभयतें जोतू याविपरीतकर्मविषेप्रवृत्तहोताहोवै ॥ सोकदाचित् नहींहोणा ॥ काहेतें? नीचजातिवालाजोकोईअपराधीप्राणीहोवैहै तिसकूंभी हम हनननहींकरते तौ तुमसरीखेउत्तमब्राह्मणोंकूं हम कैसेहननकरेंगे? ॥ हेबालाकि! जेकोईपुरुष चोरीरूपप्रथमअपराधकूंकरैहैं ॥ तिनचौरपुरुषोंकेतांई धनादिकपदार्थोंकूंदेकरिकै चोरीकरणेतें मैंनिवृत्तकरताहूं ॥ ताधनकूंलेकरिकैभी तेपुरुष पुनःचोरीरूपदूसरेअपराधकूं जबीकरैहैं ॥ तबी तिनपुरुषोंकूंआपणेदेशतें मैंनिकासिदेता

हूं ॥ तादेशकेनिकासणेतैंअनंतरभी तेपुरुष जबीचोरीरूपतृतीयअपराधकूंकरै हैं ॥ तबी श्वानकेपदसमानहैआकारजिसका ऐसीजोलोहेकीमुद्राहै तिसकूंअग्निविषेतपाइके तिनचौरोंकेमस्तकविषेदेवैहैं ॥ और जबी तेपुरुष पुनःचतुर्थवार चोरीआदिक अपराधकूंकरैहैं ॥ तबी तिनपुरुषोंकेएकहस्तकाछेदन हम करैहैं ॥ और तेपुरुष पुनःपंचमवार जबी चोरीआदिकअपराधकूंकरैहैं ॥ तबी तिनचौरोंके दूसरेहस्तकाछेदन हमकरैहैं ॥ और तेपुरुष पुनःषष्ठवार चोरीआदिकअपराधकूं जबीकरैहैं ॥ तबी तिनोंकेएकपादकाछेदन हमकरैहैं ॥ और तेपुरुष पुनःसप्तमवार जबी चोरीआदिकअपराधकूंकरैहैं ॥ तबी तिनोंकेद्वितीयपादकाछेदन हमकरैहैं ॥ इसप्रकार सप्तवार अपराधकरणेहारेपुरुषोंकूं हम प्राणोंतेंरहितकरतेनहीं ॥ जबी तेपुरुष अष्टमवार अपराधकूंकरैहैं ॥ तबी तिनपुरुषोंकूं हम हननकरैहैं ॥ और हेबालाकि! युद्धविषेभी शत्रुकूं धर्मयुद्धतैंही मैंहननकरताहूं ॥ धर्मतैंकिसीशत्रुकूं मैंहननकरतानहीं ॥ काहेतैं? जोशूरवीर युद्धकरणेवासते हमारेसन्मुखहोवैहै ॥ और षोडशवर्षतैंअनंतर पंचास वर्षपर्यंत आयुषवालाहोवैहै ॥ और सावधानहोवैहै ॥ और प्रथम हमारेऊपरिशस्त्रकूंचलावैहै ॥ ऐसेशूरवीरकूं पश्चात् मैं हननकरताहूं ॥ वृद्धअवस्थावानकूं तथाबाल्यअवस्थावानकूं तथाअसावधानपुरुषकूं युद्धविषे मैंहननकरतानहीं ॥ और हेबालाकि! शत्रुवोंकूं तथाअपराधी पुरुषोंकूंभी जबी मैंहनननहींकरता ॥ तबी संपूर्णदेहधारियोंकरिकैपूजणेयोग्य तुमब्राह्मणोंकूं मैं कैसेहनन करूंगा? ॥ किंतु ब्राह्मणकूं कदाचित् मैंहनननहींकरता ॥ यातैं हेबालाकि! याप्रकारकेहमारेस्वभावकूंविचारिकरिकै तुम भयतैंरहितहोवो ॥ तात्पर्ययह ॥ ब्राह्मणहोइके क्षत्रियकाशिष्यहोणा यहविपरीतकर्म दोनोंलोकोंविषेनिंदितहै ॥ तानिंदितकर्मविषे हमारीभयकरिकै तुमप्रवृत्तमतहोवो ॥ और हेबालाकि! जोतू आपणेअज्ञानकीनिवृत्तिवासते याविपरीतकर्मविषेप्रवृत्तहोताहोवै ॥ तौभी पूर्वलेआपणेगुरुवोंकेसमीप तुमजावो ॥ तिनोंकेउपदेशतैंहीतुमारेअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैगी ॥ हेबालाकि! तुमारेताईं हम नमस्कारकरतेहैं ॥ जहांसैंतुमाराआगमनभयाहै तहांही तुमपुनःजावो ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! इसप्रकार जबीराजाअजातशत्रुनैं बालाकिब्राह्मणकेप्रतिकह्या ॥ तबी सोबालाकि तिससभातैंनहींजाताभया ॥ किंतु आपणेलज्जाकूं तथाचिं

ताकूं बोधनकरणेवासते नीचेमुखकरिकै पादकेअग्रभागतैं भूमिकूंलिखताभया॥ और उच्चैःश्वासोंकूंउठावताभया ॥ इसप्रकार बा
लाकिकेशरीरकीचेष्टाकूंदेखिकरिकै सोअजातशत्रुराजा बालाकिकेहृदयकेअभिप्रायकूंजाणताभया ॥ तहां ब्राह्मणहोइकेक्षत्रियका
शिष्यहोणा याविपरीतकर्मकीइच्छातैंउत्पन्नभयीजोबालाकिकूंलज्जा तालज्जाकूं नीचेमुख तथापादकरिकैभूमिकालेखन रूपदोनोंचे
ष्टावोंतैं राजा जानताभया॥ और याराजाकापरित्यागकरिकै किसतैंमैंब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोवूंगा?॥ याप्रकारकीबालाकिकेचिंताकूं उ
च्चैःश्वासरूपचेष्टातैं राजा जाणताभया ॥ काहेतैं? पादकरिकैभूमिकालेखन तथानीचेमुख लज्जातैंविनाहोवैनहीं ॥ किंतु लज्जाक
रिकैहीहोवैहै ॥ तैसे उच्चैःश्वासोंकाउठावणाभी चिंतातैंविनाहोवैनहीं ॥ किंतु चिंताकरिकैहीहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोवस्तु जिस
वस्तुतैंविनानहींहोवै ॥ और जिसवस्तुकेविद्यमानहुए जोवस्तुहोवै ॥ तावस्तुकरिकै तिसकाअनुमानहोवैहै ॥ जैसे अग्नितैंविना
धूमहोवैनहीं ॥ और अग्निकेविद्यमानहुए धूमहोवैहै ॥ यातैं धूमरूपहेतुतैं पर्वतादिकोंविषे अग्निकाअनुमानहोवैहै॥ तैसे लज्जातैं
विना नीचेमुख तथापादकरिकैभूमिकालेखन होवैनहीं ॥ किंतु लज्जाकरिकैहीहोवैहै ॥ यातैं नीचेमुख तथाभूमिकालेखनरूप
दोनोंहेतुवोंतैं बालाकिकेलज्जाकाअनुमान राजा करताभया ॥ तैसे चिंतातैंविना उच्चैःश्वासोंकाउठावणाहोवैनहीं ॥ किंतु चिंता
करिकैहीहोवैहै ॥ यातैं उच्चैःश्वासरूपहेतुतैं बालाकिकेचिंताकाअनुमान राजा करताभया ॥ अन्यपुरुषकेअंतःकरणकाधर्म जो
लज्जातथाचिंता तिसका अन्यपुरुषकूं प्रत्यक्षज्ञानहोवैनहीं ॥ किंतु अनुमितिज्ञानहोवैहै ॥ इसप्रकार बालाकिकेअभिप्रायकूं जा
णिकरिकै सोअजातशत्रुराजा बालाकिकेप्रति कहताभया ॥ हेबालाकि! जोउत्तमवर्णयुक्तधर्मात्माब्राह्मण यहक्षत्रिय हमारेताई
ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैगा याप्रकारकीइच्छाकरिकै क्षत्रियादिकोंकेसमीपजावैहै ॥ याप्रकारकेविपरीतकर्मकूं हम अत्यंतअनुचि
तमानैहैं॥ काहेतैं आपयज्ञकूंकरणा १ तथादूसरेयजमानकेप्रति यज्ञकूंकरावणा २ आपविद्याकाअध्ययनकरणा ३ तथाशिष्योंके
तांई विद्याकाअध्ययनकरावणा ४ आपदानकरणा ५ तथाशुद्धयजमानतैंदानलेणा ६ यहषट्कर्म ब्राह्मणोंकेशास्त्रविषेकहे हैं ॥ और
आपयज्ञकूंकरणा १ तथादानकूंदेणा २ तथाविद्याकूंअध्ययनकरणा ३ यहतीनकर्म ब्राह्मणकेसमानही क्षत्रियकेहैं ॥ परंतु यज्ञकूं

करावणा १ तथाविद्याकूंअध्ययनकरावणा २ तथाप्रतिग्रहकूंलेणा ३ यहतीनकर्म क्षत्रियकेकिसीशास्त्रविषेनहींकहे ॥ यातें हे बालाकि! आचार्यहोइके ब्राह्मणोंकेतांई विद्याउपदेशकरणेविषे यद्यपि हमारेकूं शास्त्ररीतिसैंअधिकारनहीं तथापि हमारायह नियमहैकि जोधर्मात्माब्राह्मण धनतें आदिलेकेप्राणपर्यंत किसीभीपदार्थकीयाचना करताहै ॥ तिसब्राह्मणकेतांई प्राणपर्यंतप दार्थोंकाभी हम दानकरैहैं ॥ यहहमारानियमहै ॥ यातें हेबालाकि! तुमब्राह्मण यद्यपि हमारेगुरुहो तथापि तुमनें हमारेप्र ति ब्रह्मविद्याकीयाचनाकरीहै ॥ जोमैं तुमारेतांई प्राणोंतैंभीअतिप्रियब्रह्मविद्याकूं नहींदेवोंगा तौ हमारेनियमकाभंगहोवैगा ॥ यातें आपणेनियमकीरक्षावासते तुमयाचकगुरुवोंकेतांई ब्रह्मविद्याकादान मैंकरताहूं॥ यातें हेबालाकि! तुमाराहमारा गुरुशिष्य भावसंबंधनहीं ॥ किंतु दातायाचकभावसंबंधहै ॥ तात्पर्ययह ॥ तुमारेविषे शिष्यबुद्धिकरिकै तथाआपणेविषे गुरुबुद्धिकरिकै तुमारेतांई मैंब्रह्मविद्यानहींकहता ॥ किंतु तुमारेविषे याचकबुद्धिकरिकै तथाआपणेविषे दाताबुद्धिकरिकै तुमारेतांई ब्रह्मवि द्याकाउपदेश हम करतेहैं तिसब्रह्मविद्याकूं तुम श्रवणकरो ॥ याप्रकारकावचनकहिकरिकै सोअजातशत्रुराजा बालाकिकेतांई प्रणामकरताभया ॥ और आपणेसिंहासनऊपरि बालाकिकूंबैठावताभया ॥ और आपअजातशत्रुराजा भूमिविषेस्थितहोइके बालाकिकेतांई ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ राजाअजातशत्रुरुवाच ॥ हेबालाकि! प्राणादिकजडपदार्थोंतैंभिन्न तथादेशका लवस्तुपरिच्छेदतैंरहित जोस्वप्रकाशआनंदस्वरूपआत्माहै तिसकूंही तूंब्रह्मरूपकरिकैजाण ॥ इसप्रकार राजाकेवचनकूंश्रवण करिकै उत्पन्नभयाहैविश्वासजिसकूं ऐसाजोबालाकिब्राह्मणहै ॥ तिसकेप्रति अन्वयव्यतिरेककरिकै जडप्राणोंकीअनात्मताबोधन करणेवासते सोअजातशत्रुराजा आपणेआसनतैंउठताभया ॥ और बालाकिकेहस्तविषेआपणेहस्तकूंधारणकरिकै सिंहासनतें बालाकिकूंउतारताभया ॥ और गुह्यअर्थका सभाविषेउपदेशहोवैनहीं ॥ याकारणतें सभाकापरित्यागकरिकै बालाकिसहितराजा अजातशत्रु अंतःपुरविषेजाताभया ॥ तहां अंतःपुरकेद्वारदेशविषे कोईपुरुष सोयाहुआथा ॥ सर्वइंद्रियोंकीचेष्टातैंरहित केवल प्राणमात्र तापुरुषकेचलतेथे ॥ तिससुप्तपुरुषकेसमीप बालाकिसहितराजाअजातशत्रु स्थितहोताभया ॥ और बालाकिकूं

अभिमत जोप्राणोंकीआत्मता ताकेनिवृत्तिकरणेवासते सोअजातशत्रुराजा बालाकिनैं जितनेप्राणकेनामजानेथे तिनसंपूर्णनामोंकूंउच्चैःस्वरतैंउच्चारणकरिकै तिससुप्तपुरुषकूंजगावताभया ॥ अब तिनप्राणोंकेनामोंकूंदिखावैंहैं ॥ हेआदित्यरूप! हेचंद्रमारूप! हेबृहत्! हेपांडुरनीरग! अर्थयह ॥ शुक्लवर्णवालेजलकूंआश्रयणकरणेहारा ॥ और हेनीरसंवृत्त! अर्थयह ॥ जैसे एकहीवस्त्रकरिकै नीचेतथाऊपरि पुरुष आवृत्तहोवैहै तैसे नीचेतथाऊपरि जलकरिकैआवृत्त ॥ और हेप्रियदर्शन! हेसोमनामा! हेब्राह्मणोंकेराजन्! ॥ और हेदीप्तिसहस्रभाक्! ॥ अर्थयह ॥ असंख्यातदेवतारूपकिरणोंकरिकैयुक्त इसप्रकार प्राणोंकेसमष्टिरूपकूंप्रतिपादनकरणेहारे जेसूर्यादिकदेवतावोंकेवाचकनामहैं तिननामोंकूं उच्चैःस्वरतैंउच्चारणकरिकै अजातशत्रुराजा प्राणकूंबुलावताभया तौभी प्राण जाग्रत्कूंप्राप्तनहींहोताभया ॥ काहेतैं? प्राण अचेतनहै ॥ याकारणतैंही सुखदुःखरूपफलकाभोक्ताप्राणनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे जडघट हेघट! हेकंबुग्रीवादिमान्! हेजलकेधारणकरणेहारा! इत्यादिकनामोंकरिकै बुलायाहुआभी आपणेकूंतथाबुलावणेहारेपुरुषकूं जाणतानहीं ॥ याकारणतैं घट अचेतनहै ॥ तैसे प्राणभी अचेतनहै ॥ इसप्रकार राजाअजातशत्रुनैं आदित्यादिकनामोंकरिकैबुलायाहुआभीप्राण जबी आपणेकूं तथाराजाकूं नहींजाणताभया ॥ तबी बालाकिनैं घटकीन्यांई प्राणविषेभीअनात्मतानिश्चयकरी ॥ तिसतैंअनंतर सोअजातशत्रुराजा यहविचारकरताभया ॥ मनवाणीकाअविषयजोशुद्धआत्माहै ॥ तिसकूंघटादिकोंकीन्यांई इदंतारूपकरिकै साक्षात्बोधनकरणेविषे कोईभीसमर्थनहीं ॥ और जानणेकूंभीकोईसमर्थनहीं ॥ यातैं स्थूलारुंधतीन्यायकरिकै शुद्धआत्माकेबोधनकरणेवासते प्रथमभोक्तारूपविशिष्टआत्माकेजनावणेकेउपायकूं सोराजा रचताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ अत्यंतसूक्ष्मअरुंधतीनक्षत्रकेजानणेहारेजेपुरुषहैं ते जबी अन्यकिसीकूंअरुंधतीकूंदिखावैंहैं ॥ तबी प्रथमही वास्तवअरुंधतीकूं दिखावैंनहीं काहेतैं अरुंधतीनक्षत्र अतिसूक्ष्महै ॥ यातैं प्रथमही ताकेविषेदृष्टिपहुंचिसकैनहीं ॥ किंतु ताअरुंधतीकेसमीपवर्तीजेस्थूलनक्षत्रहैं तिनोंकूं अरुंधतीरूपकरिकैप्रथमदिखावैंहैं ॥ तिनस्थूलनक्षत्रोंविषे जबी ताकीदृष्टिपहुंचेहै ॥ तबी शनैःशनैःकरिकैतावास्तवअरुंधतीकूंभी देखिलेवैंहैं ॥ तैसे राजाअजातशत्रु प्राणविषेअनात्मता बोधनकरिकै शुद्धआत्माकेबोधनकरणेवासते प्रथम

भोक्तारूपविशिष्टआत्माकेबोधकरावणेकेउपायकूंरचताभया॥ताउपायकूं दिखावैहैं॥अंतःपुरकेद्वारऊपरिसोएहुएपुरुषकेहस्तकूं आपणेहस्तकरिकैराजा पेषणकरताभया॥ और दूसरेकिसीपुरुषकूंप्रेरणाकरिकै तासोयेहुएपुरुषकेपृष्ठदेशविषे यष्टिमरावताभया ॥ इसप्रकार हस्तकेपेषणकरिकै तथायष्टिकेमारणेकरिकै उत्पन्नभयीहैपीडाजिसकूं ऐसाजोसुखदुःखकेअनुभवकरणेहाराभोक्तापुरुषहै॥ सोपीडाकरिकै जाग्रत्होताभया॥ जैसे भस्मकरिकैआवृतअग्नि भस्मकेनिवृत्तहुए प्रज्वलितहोवैहै॥ तैसे सोपुरुष क्रोधकरिकैप्रज्वलितहोताभया॥इसप्रकार तापुरुषकूंदेखिकरिकै सोबालाकि नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकैयुक्तभोक्ताआत्माकूं प्राणतैंभिन्नकरिकै निश्चयकरताभया ॥ परंतु भोक्तातैंभिन्न बुद्धिआदिकोंकासाक्षी जोशुद्धआत्माहै ताकूं सोबालाकि नहींजाणताभया ॥ अब शुद्धआत्माहीभोक्ताकाहेतैंनहींहोवै? याप्रकारवादिकैआशंकाकीनिवृत्तिकरणेवासते जिसनिमित्तकूंग्रहणकरिकै भोक्ताशब्द विशिष्टआत्माविषेप्रवर्तहोवैहै तानिमित्तकूं दिखावैहैं ॥ तहां भोजनरूपक्रिया भोक्ताशब्दकेप्रवृत्तिकानिमित्त संभवैनहीं॥ काहेतैं? भोजनरूपक्रिया नियमकरिकैसर्वभोक्तावोंविषेरहैनहीं॥ तात्पर्ययह ॥ भोजनरूपक्रियावालेविषे जोभोक्ताशब्दकीप्रवृत्तिहोवै तौ जोजोक्रियाहोवैहै सोदुःखरूपहोवैहै यहनियमहै ॥ यातैंदुःखवान्पुरुषविषेही भोक्ताशब्दकीप्रवृत्तिहोवैगी ॥ सुखवान्पुरुषविषे भोक्ताशब्दकीप्रवृत्तिनहींहोवैगी ॥ और सुखीपुरुषकूंभी लोकविषेभोक्ताकहैहैं ॥ किंवा ॥ भोजनरूपक्रियाकूंजोभोक्ताशब्दकेप्रवृत्तिकानिमित्तमानिये तौ भोक्तापणेतैंरहित जेमुख तथादंत तथाजिह्वादिकहैं तिनोंविषेभीभोजनरूपक्रियारहैहै॥ यातैं तिनोंकूंभी भोक्ताकह्याचाहिये॥ और सुखादिकोंकूं कोईभोक्ताकहतानहीं ॥ किंवा ॥ भोजनरूपक्रियाकाफलजोतृप्तिहै तातृप्तिरूपनिमित्तकूंग्रहणकरिकै जोभोक्ताशब्दकीप्रवृत्तिहोतीहोवै तौ तृप्तिदोप्रकारकीहोवैहै॥ एकतौ पुष्टिरूपतृप्ति ॥ और दूसरी तुष्टिरूपतृप्ति ॥ तहां पुष्टिरूपतृप्तिवालेकानाम जोभोक्ताहोवै तौ भित्तिआदिकजडपदार्थभी भोक्ताहोणेचाहिये॥ काहेतैं ! मृत्तिकादिकोंकेलेपनतैं भित्तिआदिकोंकीभीपुष्टिहोवैहै॥ और लोकविषेभित्तिआदिकोंकूं कोईभोक्ताकहैनहीं॥ यातैं पुष्टिरूपतृप्तिभी भोक्ताशब्दकेप्रवृत्तिकानिमित्तनहीं ॥ किंतु परिशेषतैं सुखदुःखरूपतृप्तिही भोक्ताशब्दकेप्रवृत्तिकानिमित्तहै ॥ तिनसुखदुःखदोनोंविषेभी सुखही भोगशब्दकामुख्य

अर्थ है ॥ दुःख भोगशब्दकामुख्यअर्थनहीं ॥ किंतु गौणअर्थ है ॥ काहेतें? लोकविषे वनितादिकविषयजन्यसुखवान्पुरुषकूंही भोगवान्कहेहैं ॥ और शूलविषेस्थितपुरुषकूं कोईभोगवान्कहैनहीं ॥ यातें भोगशब्दकामुख्यअर्थ दुःखनहीं ॥ शंका ॥ दुःख विषे सुखरूपताकरिकै भोगशब्दकीअर्थता मतहोवै ॥ परंतु सुखकीजनकतारूपकरिकै दुःखकूं भोगशब्दकीअर्थता काहेतैंनहीं होवै? ॥ समाधान ॥ यालोकविषे किसीभीपुरुषकेप्रीतिकूं दुःख उत्पन्नकरैनहीं ॥ यातें तादुःखकरिकै सुखरूपतृप्तिसंभवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसपदार्थविषेप्रीतिहोवैहै ॥ सोईहीपदार्थ सुखरूपतृप्तिकाजनकहोवैहै ॥ दुःखविषे किसीप्राणीकी प्रीतिहोवैनहीं ॥ यातें सुखरूपतृप्तिकूं दुःखउत्पन्नकरैनहीं ॥ किंवा ॥ अनुकूलजोवनितादिकविषयहैं तिनोंकेवारंवारभोगणेकरिकै जोपुरुषोंकूं सुखउत्पन्नहोवैहै ॥ ताकूं लोकविषेतृप्तिकहेहैं ॥ तातृप्ति अनुकूलपदार्थतैंउत्पन्नहोवैहै ॥ प्रतिकूलदुःखादिकोंतें सातृप्ति कदाचित्भीउत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातें भोगशब्दकामुख्यअर्थ दुःखनहीं ॥ किंतु भोगशब्दकागौणअर्थ दुःखहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे देवदत्तमनुष्यसिंहहै ॥ यास्थानविषे सिंहशब्दकामुख्यअर्थ मृगराजपशुविशेषहै ॥ और देवदत्तनामामनुष्य सिंहशब्दकागौणअर्थ है ॥ सिंहविषेवर्तमान जेक्रूरतादिकगुणहैं ॥ तेगुण देवदत्तनामामनुष्यविषेभीरहेहैं ॥ यातें ताकूंसिंहकहैहैं ॥ तैसे भोगशब्दकामुख्यअर्थसुखहै और गौणअर्थदुःखहै ॥ काहेतें? जैसेसुखकीप्राप्ति पुरुषकेचित्तविषे मैंसुखीहूं याअभिमानरूपअतिशयताकूंउत्पन्न करैहै ॥ तैसे दुःखकीप्राप्तिभी पुरुषकेचित्तविषे मैंदुःखीहूं याअभिमानरूपअतिशयताकूंउत्पन्नकरैहै ॥ अतिशयताकेउत्पत्तिकी कारणता सुखविषे तथादुःखविषे समानहै ॥ यातें भोगशब्दकागौणअर्थदुःखहै ॥ सुखही भोगशब्दकामुख्यअर्थ है ॥ इसप्रकार सुखदुःखरूपभोगकाआश्रय जोविशिष्टआत्मारूपभोक्ताहै ॥ ताकाउपदेश बालाकिकेप्रति राजानैंकर्‍या ॥ तिसभोक्ताआत्माके ज्ञानतें मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु शुद्धआत्माकेज्ञानतें मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याकारणतें शुद्धआत्माकेबोधकरणेवासते सोअजातशत्रुराजा बालाकिकेप्रति कहताभया ॥ हेबालाकि! सुखदुःखरूपभोगकीप्राप्तिकालविषे भोक्तारूपविशिष्टआत्माविषे मैंसुखीहूं मैंदुःखीहूं याप्रकारकेअनुभवकरिकैंसिद्धजोभोक्तापणाहै ॥ सोभोक्तापणा शुद्धअसंगआत्माविषे वास्तवतैंसंभवैनहीं ॥

किंतु कार्यकारणभावतैंरहित स्वप्रकाशआनंदस्वरूपआत्माविषे अध्यासतैंही भोक्तापणाप्रतीतहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे सर्पभावतैंरहितरज्जुविषे अध्यासकरिकैसर्पप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे सुखदुःखरूपभोगतैंरहित अद्वितीयशुद्धआत्माविषे अध्यासतैंभोक्तापणाप्रतीतहोवैहै ॥ किंवा ॥ सजातीय विजातीय और स्वगत भेदतैंरहित शुद्धआत्माविषे अज्ञानरूपमायातैंविना भोक्तापणेकाअध्याससंभवैनहीं ॥ याकारणतैंही वेदकेतात्पर्यकूंजानणेहारेमहात्मापुरुषोंनें ताअद्वितीयआत्माविषे मायाकीकल्पनाकरीहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपदार्थ जिसपदार्थतैंविना नहींसिद्धहोइसके ॥ सोपदार्थ तापदार्थकीकल्पनाकरावैहै ॥ जैसे दिनविषे भोजनकूंनकरणेहारेपुरुषविषेजोस्थूलताहै सास्थूलता रात्रिभोजनतैंविनासंभवैनहीं ॥ यातैं सास्थूलता तापुरुषकेरात्रिभोजनकूंकल्पनाकरावैहै ॥ तैसे अकर्ता अभोक्ता शुद्धआत्माविषे मैंसुखीहूं मैंदुःखीहूं याप्रकार जोभोक्तापणेकाअध्यासहै ॥ सोअध्यास मायातैंविनासंभवैनहीं ॥ यातैं सोअध्यास शुद्धआत्माविषे मायाकीकल्पनाकरावैहै ॥ इसप्रकार अर्थापत्तिरूपप्रमाणकरिकै सिद्धभयीजोमाया ताके दोस्वभावहैं ॥ एकतौ आवरणशक्तिरूपस्वभावहै ॥ और दूसरा विक्षेपशक्तिरूपस्वभावहै ॥ तहां मायाकाआवरणशक्तिरूपस्वभाव जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थाविषेविद्यमानहै ॥ जबपर्यंत आनंदस्वरूपआत्माकासाक्षात्कार पुरुषकूंनहींहोता ॥ तबपर्यंत मायाकीआवरणशक्तिनिवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु अद्वितीयआत्माकेज्ञानतैंही मायाकेआवरणशक्तिकानाशहोवैहै ॥ और मायाका दूसराजोविक्षेपशक्तिरूपस्वभावहै सो दोप्रकारकाहै ॥ एक जाग्रत्रूपहै और दूसरा स्वप्नरूपहै ॥ तहां जिसअवस्थाविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै बाह्यघटपटादिकस्थूलपदार्थोंकाज्ञानहोवै ताअवस्थाकूं जाग्रत्कहेहैं ॥ और जिसअवस्थाविषे पूर्वसंस्कारोंकूंग्रहणकरिकै केवलमनतैंही ज्ञानउत्पन्नहोवैहै ताअवस्थाकूं स्वप्नकहैहैं ॥ यह जाग्रत् तथास्वप्न दोनों विक्षेपरूपहैं ॥ यातैं हेबालाकि! जैसे जाग्रत्विषे सुखकीप्राप्तिकरिकै तथादुःखकीप्राप्तिकरिकै मैंसुखीहूं मैंदुःखीहूं यहभोगरूपअतिशयता पुरुषोंविषे उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे स्वप्नविषेभी सुखदुःखकीप्राप्तिकरिकै मैंसुखीहूं मैंदुःखीहूं यहभोगरूपअतिशयता पुरुषोंविषे उत्पन्नहोवैहै ॥ और स्वप्नविषे भोगरूपअतिशयताका जोआधारहै ॥ सोईही जाग्रत्विषे भोगरूपअतिशयताका आधारहै ॥ तहां स्वप्नविषे

सुखदुःखजन्यभोगका आधार केवलमनहीहै ॥ मनतैंभिन्नकोईभी स्वप्नविषेभोगकाआधारनहीं ॥ काहेतें? नेत्रादिकइंद्रियोंकातौ स्वप्नविषेलयहोवैहै ॥ यातें इंद्रियोंविषेभी भोगकीआधारतासंभवैनहीं ॥ और यद्यपि प्राण तथाशुद्धआत्मा स्वप्नविषेभीहै तथापि तिनोंविषे भोगकीआधारतासंभवैनहीं ॥ काहेतें? प्राणतौजडहै यातें भोगकीआधारता प्राणविषेसंभवैनहीं ॥ और शुद्धआत्मा असंगहै यातें ताकेविषेभी भोगकीआधारतासंभवैनहीं ॥ इसप्रकार स्वप्नविषे इंद्रियादिकोंविषे भोगकीआधारतासंभवैनहीं ॥ परिशेषतैं मनही स्वप्नविषे सुखदुःखजन्यभोगकाआश्रयहै॥ जबी स्वप्नविषे भोगकाआधार मनअंगीकारकर्‍या ॥ तबी जाग्रत्‌अवस्थाविषेभी तिसीमनकूंही सुखदुःखकेभोगकाआश्रयमाननाचाहिये ॥ किंवा ॥ जो स्वप्नकेभोगकाआधारतौ मनअंगीकारकहिये ॥ और जाग्रत्‌केभोगकाआधार मनतैंभिन्नकोईदूसरा अंगीकारकरिये ॥ तौ स्वप्नतैंअनंतरजाग्रत्‌विषे पुरुषकूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञनहोवैहै॥ जोमैं स्वप्नविषेराजाकेसुखकूं अनुभवकरताभया सोईहीमैं अब जाग्रत्‌विषे एकांतकेसुखकूंअनुभवकरताहूं॥ यहप्रत्यभिज्ञाज्ञान स्वप्नभोक्ताके तथाजाग्रत्‌भोक्ताके अभेदकूंविषयकरैहै ॥ सोप्रत्यभिज्ञाज्ञान असंगतहोवैगा ॥ यातैं स्वप्नका तथाजाग्रत्‌का एकहीमनरूपभोक्ता माननाचाहिये॥ शंका ॥ हेभगवन्! जैसे आकाशादिकपंचसूक्ष्मभूतोंतैं प्राणोंकीउत्पत्तिभयीहै यातैंप्राण जडहैं ॥ तैसे आकाशादिकपंचसूक्ष्मभूतोंतैं मनकीभीउत्पत्तिभयीहै यातैंमनभीजडहै ॥ जडप्राणोंविषे भोगकीआधारता जैसे पूर्व आपनैंखंडनकरी ॥ तैसे जडमनविषेभी भोगकीआधारतासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेबालाकि! यद्यपि प्राणोंकीन्याई मनभीअचेतनहै तथापि प्राणोंतैंमनविषेविशेषताहै॥ काहेतें? आकाशादिकपंचभूतोंकेमिश्रितसत्त्वगुणतैं अंतःकरणकीउत्पत्तिभयीहै यातैं मन प्रकाशकहै ॥ और आकाशादिकपंचभूतोंकेमिश्रितरजोगुणतैं प्राणकीउत्पत्तिभयीहै यातैं प्राण प्रकाशकनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे प्रदीप तथाघट दोनोंविषे जडताधर्मसमानहै तौभी प्रदीपकरिकैही घटकाप्रकाशहोवैहै ॥ घटकरिकै प्रदीपकाप्रकाशहोवैनहीं॥ शंका ॥ हेभगवन्! जडमनकूं जोप्रकाशकमानोंगे॥ तौ प्रदीपादिकोंकीन्याई मनविषे बाह्यपणासिद्धहोवैगा ॥समाधान ॥ हे बालाकि! मनकाजोवृत्तिरूपप्रकाशहै सो स्वतंत्रकिसीपदार्थकूंप्रकाशतानहीं ॥ किंतु चेतनआत्माकेआभासकीअपेक्षाकरिकैही पदा

श्नोंकूंदिखावैंहैं ॥ हेबालाकि! यासोयेहुएपुरुषकेउत्थानरूपव्यापारतैं तुमनैं विज्ञानमयकूं प्राणतैंभिन्नकरिकै तथारिआयाहै याप्र जान्याहै ॥ परंतु यहविज्ञानमयभोक्ता किसदेशविषेस्थितहुआ शयनकूंकरताभया ?॥१॥ और विज्ञानमयभोक्ताकेनहोवैंहै ॥ यातैं रकौनहै? ॥ २ ॥ और यहविज्ञानमयभोक्ता किसदेशतैंउठिकरिकै जाग्रत्‌अवस्थाविषेआयाहै? ॥३॥ इसप्रकार विज्ञानमन्त्रुराजाबा षे तीनप्रश्नोंकूं राजाकरताभया ॥ अब लोकोंकेव्यवहारकूंग्रहणकरिकै तिनप्रश्नोंकेपरस्परभेदकूंदिखावैंहैं ॥ लोकाविषे शरणवास पुरुष कदाचित् आपणेविषेस्थितहुआ शयनकूंकरैंहै ॥ जैसे खडाहुआपुरुष आपणेआश्रितहुआ शयनकूंकरैंहै ॥ और कदाचित् आपणेतैंभिन्नसहजाआदिकोंविषेस्थितहुआपुरुष शयनकूंकरैंहै ॥ यातैं शयनकरतापुरुषकेआधारकानियमनहीं ॥ शंका ॥ शयन करतापुरुषकेआधारकाजोप्रथमप्रश्नहै सो यद्यपिसंभवैंहै ॥ तथापि शयनकाआधारकौनहै? यहदूसराप्रश्नसंभवैनहीं ॥ काहेतैं? जो शयनकरतापुरुषकाआधारहोवैंहै ॥ सोईही ताकेशयनकाभीआधारहोवैंहै ॥ **समाधान** ॥ जोशयनकरतापुरुषकाआधारहोवैंहै ॥ सोईही ताकेशयनकाआधारहोवैंहै ॥ यहलोकविषे नियमनहीं ॥ किंतु कहांतो शयनकरतापुरुषका तथाशयनका एकहीआधारहो वैंहै ॥ जैसे एकहीमंचकादिक शयनकर्तापुरुषका तथाताकेशयनका आधार है ॥ और कहां शयनकर्तापुरुषका तथाताकेशयनका भिन्नभिन्नआधारहोवैंहै ॥ जैसे शयनकर्तापुरुषकाआधारतौ मंचकादिक हैं ॥ और मंचकऊपरिस्थितजोतूलकादिकहै ॥ सो ताके शयनकाआधारहै ॥ इसप्रकार शयनकर्तापुरुषकेआधारकूं तथाशयनकेआधारकूं लोकविषे भिन्नभिन्नमानेहैं ॥ यातैं प्रथमप्रश्नक रिकै दूसराप्रश्न चरितार्थनहीं ॥ किंतु भिन्नहीदूसराप्रश्नसंभवैंहै ॥ **शंका** ॥ द्वितीयप्रश्नकूं प्रथमप्रश्नतैंभिन्नहुएभी तृतीयप्र श्नकूं द्वितीयप्रश्नतैंभिन्नतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं? जोशयनकाआधारहोवैंहै ॥ सोईही शयनकरतापुरुषकेआगमनकीअवधिहोवै है ॥ शयनकेआधारका जबीनिश्चयहोवैगा ॥ तबी शयनकर्तापुरुषकेआगमनकेअवधिकाभी निश्चयहोइजावैगा ॥ यातैं तृती यप्रश्नव्यर्थहै ॥ **समाधान** ॥ जो शयनकाआधारहोवैंहै ॥ सोईही शयनकर्तापुरुषकेआगमनकाअवधिहोवैंहै यहनियमनहीं ॥ काहेतैं? लोकविषे शयनकेआधारतैंभिन्नभी आगमनकाअवधि कहांदेख्याहै ॥ जैसे मंचकऊपरिसोयाहुआपुरुष मंचकतैंउठि

थोंकूंप्रकाशेहै ॥ और तिसचेतनआत्माकेआभासकूंग्रहणकरिकै सोमनकीवृत्तिरूपप्रकाश आपणेजडभावकूंपरित्यागकरैहै ॥ किं
वा ॥ नानाप्रकारकेज्ञानवाला अंतःकरणहै यहजोशास्त्रविषेकह्याहै ॥ सोभी चेतनकीअपेक्षाकरिकैही नानाप्रकारकेज्ञानवाला अंतः
करणसंभवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोअंतःकरण स्वभावतैंहीचेतनहोवै तौ एकप्रकारकाहीज्ञान सर्वदाहोणाचाहियै ॥ और सर्वदाएकप्र
कारकाज्ञानहोवैनहीं ॥ और अंतःकरणकूं जोचेतनकीअपेक्षामानिये तौ सर्वदाएकप्रकारकेज्ञानकीआपत्तिरूपदोष होवैनहीं ॥ काहे
तें ? जिसकालविषे इच्छादिकोंतैंविलक्षण चेतनकेप्रतिबिंबग्रहणकरणेयोग्य अंतःकरणकीवृत्ति उत्पन्नभयीहै तिसीकालविषे सोज्ञा
नहै ॥ अन्यकालविषेसोज्ञाननहीं ॥ इसप्रकार नानाज्ञान अंतःकरणविषेसंभवैहैं ॥ ऐसेअंतःकरणविषे अविद्याजन्यतादात्म्यअध्यास
रूपसंबंधकरिकैस्थितहुआ यहपरमात्मा विज्ञानमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तिसअंतःकरणविषेस्थितहोइके यहआनंदस्वरूपआ
त्मा संपूर्णदेहादिकोंकूंप्रकाशकरैहै ॥ याकारणतैं यहआनंदस्वरूपआत्मा पुरुषसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसेआनंदस्वरूपआत्माविषे अं
तःकरणकापरिणामरूपदुःख जैसे वास्तवतैंनहीं ॥ तैसे अंतःकरणकापरिणामरूपसुखभी वास्तवतैं आत्माविषेनहीं ॥ याकहणेतैं यह
अनुमानसिद्धहोवैहै ॥ विषयजन्यसुखजोहै सो आत्माविषेवर्तैनहीं ॥ काहेतें? जडहोणेतैं तथापरिच्छिन्नहोणेतैं तथादृश्यहोणेतैं ॥ जो
जो जडपरिच्छिन्न दृश्य वस्तुहोवैहै ॥ सो आत्माविषेवास्तवतैंरहैनहीं ॥ जैसे जडपरिच्छिन्नदृश्यरूपदुःख आत्माविषे वास्तवतैंरहैनहीं ॥
किंवा ॥ सुखदुःखकीन्यांई सुखदुःखप्राप्तिकेसाधनभी जडपरिच्छिन्नदृश्यरूपहैं ॥ यातैं तेसाधनभी आत्माविषे वास्तवतैंरहैनहीं ॥
यातैं कार्यकारणभावतैंरहित स्वयंप्रकाशआत्माही विज्ञानमयभोक्ताका वास्तवस्वरूपहै ॥ याअर्थका बालाकिकेप्रति बोधकरणेवास
ते सोअजातशत्रुराजा याप्रकारकाविचार आपणेमनविषे करताभया ॥ याबालाकिनैं पूर्वहमारेउपप्राणतैं यद्यपि प्राणोंतैंदृष्टांतकी
के विज्ञानमयभोक्ताआत्माकूंजान्याहै ॥ तथापि विज्ञानमयभोक्तामिथ्याहै ॥ यातैं ताकेज्ञानतैं बालाकिकूं मोक्षकीप्राप्तिप्रकाशहोवै
किंतु शुद्धआत्माकेज्ञानतैं मोक्षहोवैहै ॥ यातैं आपणीप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासते याबालाकिकेतांई विज्ञानमयभोक्तासमाधान ॥ हे
पकाउपदेश करनाचाहियै ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोअजातशत्रुराजा विज्ञानमयभोक्ताविषे प्रश्नोंकूंकरताभयाकरिकैही पदा

करिकैबाहरिआयाहै ॥ याप्रकार कोईलोक कहैनहीं ॥ किंतु मंचकतैंउठिकरिकै गृहविषेस्थितहोइके तागृहतैंबाहरिआयाहै याप्रकार लोक कथनकरैहैं ॥ याप्रकारकेलोकोंकेव्यवहारतैं शयनकेआधारमंचकतैं आगमनकाअवधिगृह भिन्नहीप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं द्वितीयप्रश्नकरिकै तृतीयप्रश्नका चरितार्थनहीं ॥ किंतु द्वितीयप्रश्नतैंभिन्नही तृतीयप्रश्नसंभवैहै ॥ इसप्रकार सोअजातशत्रुराजाबालाकिकेप्रति शयनकर्ताविज्ञानमयभोक्ताकेस्वरूपबोधनकरणेवासते तथास्वप्नसुषुप्तिरूपदोप्रकारशयनकेस्वरूपबोधनकरणेवासते तथादोप्रकारकेशयनकाआधारबोधनकरणेवासते तथाशयनकर्ताविज्ञानमयभोक्ताकेआगमनकीअवधिबोधनकरणेवासते बालाकिकेप्रति तीनप्रश्नोंकूं राजापूछताभया ॥ इसप्रकार गुह्यअर्थकेबोधनकरणेहारे जेराजाकेतीनप्रश्नहैं ॥ तिनोंकूंश्रवणकरिकै सोबालाकि तिनप्रश्नोंकेउत्तरदेणेवासते आपणेचित्तविषे बहुतवारविचार करताभया ॥ परंतु तिनराजाकेप्रश्नोंकेउत्तरकूं किंचित्मात्रभी सोबालाकि नजाणताभया ॥ इसप्रकार बालाकिकेअज्ञानकूंदेखिकरिकै सोअजातशत्रुराजा आपणेप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासते तिनप्रश्नोंकेउत्तरकूंकहताभया ॥ कैसासोउत्तरहै? ॥ बालाकिकेसर्वसंशयोंकूं निवारणकरणेहाराहै ॥ तहां स्वप्नअवस्थाविषे विज्ञानमयभोक्ताकेस्वरूपकास्पष्टबोधकरणेवासते प्रथम स्वप्नसुषुप्तिरूपदोप्रकारकेस्वप्नकूंदिखावैहै ॥ हेबालाकि! याभोक्तापुरुषका शयन दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ स्वप्नरूपशयनहोवैहै और दूसरा सुषुप्तिरूपशयनहोवैहै ॥ तहां प्रथमस्वप्नरूपशयनकूं तुम श्रवणकरो ॥ जाग्रत्अवस्थाविषे यहआत्मा अंतःकरणविषेजोचेतनकाआभास ताआभासरूपविज्ञानकरिकै नेत्रादिकइंद्रियोंकेतांई आपणेआपणेरूपादिकविषयोंकेग्रहणकरणेकीसामर्थ्यकूंदेवैहै ॥ याकारणतैं जाग्रत्अवस्थाविषे यहआत्मा चक्षुमय श्रोत्रमय इत्यादिकसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं जाग्रत्अवस्थाविषे विज्ञानमयभोक्ताका स्पष्टभानहोवैनहीं ॥ और स्वप्नरूपशयनकेसन्मुखहुए सोविज्ञानमयभोक्ताआत्मा नेत्रादिकोंकेसामर्थ्यकूंउपसंहारकरिकै शयनकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसस्वप्नकालविषे यहभोक्ताआत्मा चक्षुमय श्रोत्रमय इत्यादिकनामोंकापरित्यागकरिकै केवलविज्ञानमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ तिसस्वप्नअवस्थाविषे शयनकर्ताविज्ञानमयभोक्ताकास्वरूप नेत्रादिकइंद्रियोंतैंभिन्नहोइके प्रतीतहोवैहै ॥ इसप्रकार शयनकर्ताविज्ञानमयभोक्ताकेस्वरू

पकूंकहिकरिकै अब ताकेआधारकूंदिखावैहैं ॥ हेबालाकि! यहविज्ञानमयभोक्ताआत्मा स्वप्नविषे हितनामानाडियोंविषेस्थितहु
आ शयनकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अथवा हृदयविषेस्थितहुआ यहविज्ञानमयभोक्ताकाआत्मा शयनकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अथवा पुरीतत्विषेस्थि
तहुआ यहभोक्ताआत्मा शयनकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार भिन्नभिन्नश्रुतिवाक्योंकेअनुसार शयनकर्तापुरुषकेआधारकूंकहिकरि
कै अब हृदयकेस्वरूपकूं तथापुरीतत्केस्वरूपकूं तथाहितानामानाडियोंकेस्वरूपकूं स्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ तहां संपूर्णप्राणि
योंका उदर तथाउरस्थान छिद्रकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ ताउदर तथाउरस्थानके मध्यदेशविषे नीचेहैमुखजिसका तथाचित्तकेनि
वासकास्थान ऐसाजोमांसमयकमलहै ताकूं हृदयकहैहैं ॥ और तिसहृदयकूंचारोंओरतेंवेष्टनकरणेहाराजोसर्पाकारचर्महै जाकूंलो
कविषेआंद्राकहैहैं ताकानाम पुरीतत्है ॥ आपणेहृदयका तथापुरीतत्काज्ञान किसीभीप्राणिकूं नेत्रोंकरिकैहोवैनहीं ॥ किंतु अ
न्यकिसीप्राणिकेउदरकाभेदनहुए ताकेहृदयका तथापुरीतत्काज्ञान अन्यपुरुषकूं नेत्रोंकरिकैहोवैहै ॥ अबनाडियोंकूंदिखावैहैं ॥
सहस्रविभागकूंप्राप्तभयाजोएककेश ताकेशकेएकविभागका जितनापरिमाणहोवैहै ॥ तिसपरिमाणकेसमानहैपरिमाणजिनों
का ऐसियांअनंतनाडियां हृदयदेशविषेरहैहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे सूत्रकरिकैरचितजोजालहै तिसके प्रथमग्रंथितेंअनंतसूत्रोंका
निर्गमनहोवैहै ॥ तैसे हृदयदेशतें अनंतनाडियोंकानिर्गमनहोवैहै ॥ तहां प्रश्नउपनिषद्विषेजितनीनाडियोंकीसंख्याकहीहै ति
ससंख्याकूं अबदिखावैहैं ॥ जैसे एकहीवृक्षतें प्रथमस्थूलस्कंधनिकसेहैं ॥ तिनस्कंधोंतें अन्ययत्किंचित्स्थूलशाखानिकसैहैं ॥
और तिनस्थूलशाखावोंतें अत्यंतसूक्ष्मअन्यशाकानिकसेहैं ॥ तैसे हृदयरूपएकवृक्षतें स्थूलस्कंधोंकेसमान एकउपरिशत १०१
नाडियांनिकसेहैं ॥ और तिनस्कंधरूपनाडीयोंविषे एकएकनाडीतें किंचित्स्थूलशाखाकेसमान एकएकशत १०० नाडियांनि
कसेहैं ॥ और तिनएकएकशतसर्वनाडियोंविषे एकएकनाडीतें अत्यंतन्यूनशाखाकेसमान बहातरिसहस्र ७२००० नाडियांनि
कसेहैं ॥ तिनसर्वनाडियोंकीमिलिकैइतनीसंख्याहोवैहै ॥ बहातरिकोटी बहातरिलक्ष दशसहस्र दोशत एक इतनीनाडियां हृदय
रूपवृक्षतेंनिकसेहैं ॥ और अन्नकापरिणामजोरसहै ॥ तारसकरिकै तेसर्वनाडियां पूर्णहोवैहैं ॥ तिनोंविषेभी केईकनाडियां पिंग

लरसकरिकैपूर्णहैं ॥ और केईक शुक्लरसकरिकैपूर्णहैं ॥ और केईकनाडियां कृष्णरसकरिकैपूर्णहैं ॥ और केईकनाडियां पीतरसक
रिकैपूर्णहैं ॥ और केईकनाडियां लोहितरसकरिकैपूर्णहैं ॥ ऐसेरसोंकीसूक्ष्मताकूंविचारिकरिकैभी हमारामन मोहकूंप्राप्तहोवैहै ॥
तात्पर्ययह ॥ जोवस्तु जिसकेभीतरिप्रवेशकरैहै सोवस्तु तिसकीअपेक्षाकरिकैसूक्ष्महोवैहै ॥ जैसे पुरुष आपणेगृहविषेप्रवेशकरै
है ॥ यातें गृहकीअपेक्षाकरिकै पुरुष सूक्ष्महै ॥ तैसे प्रथमतौ नाडियांही अत्यंतसूक्ष्महै ॥ तिननाडियोंविषेभी जोअन्नकापरिणाम
रूपरसप्रवेशकरैहै ॥ तारसकीसूक्ष्मताविषे कोईभीदृष्टांत हम देखतेनहीं ॥ इसप्रकार हृदयदेशतेंनिर्गमनभयीहुई जेसूक्ष्मनाडि
यांहैं ते पादतैंलेकरिकैमस्तकपर्यंत सर्वशरीरकूंव्याप्तकरिकैरहैहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे वृक्षकेपर्णोंकूं शंकु व्याप्तकरिकैरहैहैं ॥ ऐसे
सूक्ष्मनाडियोंविषे सर्वइंद्रियोंकाउपसंहारकरिकै मन प्राप्तहोवैहै ॥ सोकैसामनहै ? ॥ धर्मअधर्मरूपपाशकरिकैबंध्याहुआहै ॥ और
नानाप्रकारकेसंस्कारोंकरिकैयुक्तहै ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे द्रष्टा दर्शन दृश्य यात्रिपुटीरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ और साक्षीचेतन
करिकैप्रकाश्यमानहै ॥ ऐसा मन जबीनाडियोंविषेप्रवेशकरैहै ॥ तबी विज्ञानमयभोक्ताआत्मा आपणेमायाकेबलकरिकै तथापूर्वपू
र्वसंस्कारोंकीसहायतातैं अनंतप्रकारकेपदार्थोंकूं तहांदेखैहै ॥ स्वप्नविषे कदाचित् भिक्षुकपुरुष महाराजाहोवैहै ॥ और कदाचित्
महाराजाभी स्वप्नविषे भिक्षुकहोवैहै ॥ और स्वप्नविषे कदाचित् नीचजातिवालाचांडालभी उत्तमब्राह्मणहोवैहै ॥ और कदाचित्
उत्तमब्राह्मणभी स्वप्नविषे चांडालहोवैहै ॥ और स्वप्नविषे कदाचित् हिरण्यगर्भभी स्थावर तथाग्रामसूकर तथाकृमि होवैहै ॥ औ
र कदाचित् स्वप्नविषे स्थावर तथाग्रामसूकर तथाकृमिभी प्रजापतिहोवैहै ॥ इसप्रकार मायाकरिकैमोहितहुआ देहधारीजीवपुण्य
पापकर्मकेअनुसार स्वप्नविषे उच्चशरीरोंकूं तथानीचशरीरोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अब जाग्रत्के तथास्वप्नके समानताकूं दिखावैहैं ॥ हे
बालाकि! जैसे मायाकरिकै स्वप्नविषे रथादिकपदार्थप्रतीतहोवैहै ॥ वास्तवतैं तहां रथादिकपदार्थहैंनहीं ॥ जोस्वप्नकेपदार्थवास्त
वहोवैं तौ जाग्रत्विषेभी प्रतीतहोणेचाहियें ॥ और जाग्रत्विषे प्रतीतहोवैंनहीं ॥ यातें स्वप्नकेपदार्थमिथ्याहैं ॥ तैसे जाग्रत्केप
दार्थभी मायाकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ वास्तवतैंहैंनहीं ॥ जो जाग्रत्केपदार्थ वास्तवतैंहोवैं ॥ तौ समाधिकालविषेभी तत्ववेत्ताकूं प्रतीत

होणेचाहिये ॥ और समाधिकालविषे तत्त्ववेत्ताकूं पदार्थप्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं स्वप्नकीन्यांई जाग्रत्‌केपदार्थभी मिथ्याहैं ॥ किंवा ॥ जैसे स्वप्नविषे आपणेआत्माकाअज्ञान जीवोंकूंहोवैहै ॥ तैसे जाग्रत्‌विषेभी जीवोंकूंआत्माकाअज्ञानहै ॥ यातैंभी जाग्रत्स्वप्नदोनोंतुल्यहैं ॥ किंवा ॥ जैसे स्वप्नविषे पदार्थोंकाविपरीतभानहोवैहै तैसे जाग्रत्‌विषेभी पदार्थोंकाविपरीतभानहोवैहै ॥ यातैंभी जाग्रत्स्वप्नदोनोंतुल्यहै ॥ शंका ॥ जाग्रत्स्वप्नदोनोंकीतुल्यता संभवैनहीं ॥ काहेतैं स्वप्नकेपदार्थोंकी अल्पकालविषेस्थितहोवैहै ॥ और जाग्रत्‌केपदार्थोंकी दीर्घकालविषेस्थितहोवैहै ॥ समाधान ॥ जैसे जाग्रत्‌विषे धन वस्त्र तृणादिक सकलजडपदार्थ पार्थिवत्वरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे स्वप्नविषेभी धनादिकपदार्थ पार्थिवत्वरूपकरिकैप्रतीतहोवैहैं ॥ और जैसे जाग्रत्‌विषे धनादिकपदार्थ अस्तिरूपकरिकैप्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे स्वप्नविषेभी धनादिकजडपदार्थ अस्तिरूपकरिकैप्रतीतहोवैहैं ॥ यातैं जाग्रत् स्वप्नदोनोंसमानहैं ॥ और जाग्रत्‌पदार्थोंविषे चिरकालस्थायित्व तथा स्वप्नपदार्थोंविषे अल्पकालस्थायित्व येदोनोंविशेषधर्म अज्ञानकरिकैकल्पितहैं ॥ यातैं तिनकल्पितधर्मोंतैं जाग्रत्स्वप्नकेपदार्थोंकीविलक्षणता सिद्धहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे एकहीस्वप्नद्रष्टापुरुष अज्ञानरचितनानाप्रकारकेपदार्थोंकूंदेखैहै ॥ तैसे जाग्रत्‌अवस्थाविषेभी एकहीआनंदस्वरूपआत्मा अज्ञानरचितअनंतपदार्थोंकूंदेखैहै ॥ यातैंभी जाग्रत्स्वप्नदोनोंसमानहैं ॥ इसप्रकार स्वप्नअवस्थाकानिरूपणकरिकै पुनःसोअजातशत्रुराजा कहताभया ॥ हेबालाकि! यास्वप्नअवस्थाविषे शयनकर्त्ताविज्ञानमयभोक्ताकास्वरूप स्पष्टकरिकै हमनैंतुमारेप्रतिदिखाया ॥ सोविज्ञानमयभोक्ता प्राणतैंभिन्नहै ॥ काहेतैं जैसे राजाकेपुरीकीरक्षाकरणेहाराभृत्य राजातैंभिन्नहोवैहै ॥ तैसे यहप्राणभी भृत्यकीन्यांई स्थूलशरीररूपपुरीकीरक्षाकरैहै ॥ और विज्ञानमयभोक्ताआत्मा महाराजाकीन्यांई प्राणादिकसकलजडपदार्थोंकूं आपणेआपणेकार्यविषे प्रवृत्तकरैहै ॥ यातैं ताविज्ञानमयभोक्तातैंप्राणभिन्नहै ॥ किंवा ॥ जैसे महाराजा आपणीपुरीकीरक्षावासते किसीप्रधानमंत्रीकूं तापुरीविषेस्थापनकरिकै औरआपणीसैनाकूंलेकरिकै किसीसिकारादिकनिमित्ततैं आपणेदेशोंविषे विचरैहै ॥ तैसे यहविज्ञानमयभोक्ताभी स्थूलशरीररूपपुरीकीरक्षावासते प्राणरूपप्रधानमंत्रीकूंस्थापनकरिकै मनसहित

सर्वइंद्रियोंकूंग्रहणकरिकै आपणीइच्छापूर्वक याकलेवरविषेभ्रमणकरै है ॥ तात्पर्ययह ॥ अज्ञानरचितअनेकपदार्थोंकूंदेखे है ॥ इसप्रकार स्वप्नरूपप्रथमशयनकूंनिरूपणकरिकै अब सुषुप्तिरूपद्वितीयशयनकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेबालाकि! इसप्रकार नाडीआदिकोंविषेविचरताहुआसोमन जिसकालविषेआपणेकारणरूपअज्ञानविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहआत्मादेव परिपूर्णतारूपजोदूसरासुषुप्तिरूपशयनहै ताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ चेतनविषेजोपरिछिन्नताहै ॥ सो वास्तवतैंनहीं ॥ किंतु परिछिन्नउपाधिकेसंबंधतैं चेतनविषेपरिछिन्नताहोवैहै ॥ इहां अंतःकरणविशिष्टचैतन्यकानाम विज्ञानमयभोक्ताहै ॥ सोअंतःकरण जाग्रत्विषे तथास्वप्नविषे रहैहै ॥ यातैं जाग्रत्विषे तथास्वप्नविषे विज्ञानमयभोक्ताआत्माकीपरिछिन्नता निवृत्तहोवैनहीं ॥ और सुषुप्तिविषे अंतःकरणकाअज्ञानविषेलयहोवैहै ॥ यातैं सोविज्ञानमयभोक्ताआत्मा परिछिन्नभावकूंपरित्यागकरिकै सत्यपरमात्माकेसाथअभेदरूपपूर्णताकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अब सुषुप्तिरूपद्वितीयशयनकेआधारकूंनिरूपणकरहैं ॥सोविज्ञानमयभोक्ता तिसनाडीरूपद्वारकरिकैहृदयकमलकेअंतरस्थित परमात्मरूपमहान्आकाशकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ परिछिन्नभावकूंपरित्यागकरिकै मायाविशिष्टपरमात्माकेसाथअभेदरूपपरिपूर्णताकूं प्राप्तहोवैहै ॥ याकहणेकरिकै विज्ञानमयभोक्ताकेद्वितीयशयनका आधार मायाविशिष्टपरमात्मा दिखाया ॥ और तिसमायाविशिष्टपरमात्माविषेही नेत्रादिकसर्वइंद्रियोंकरिकैसहितमनकालयहोवै है॥ तात्पर्ययह ॥ कारणविषेहीकार्यकालयहोवैहै ॥ मायाविशिष्टपरमात्माही इंद्रियादिकसकलप्रपंचकाउपादानकारणहै ॥ यातैं सुषुप्तिविषे तिसमायाविशिष्टपरमात्माविषे इंद्रियादिकोंकालय संभवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे समुद्रकाजलहीघनीभूतहुआ लवणभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं समुद्रकाजल लवणकाकारणहै ॥ तिसकारणरूपसमुद्रकेजलविषे प्राप्तहुआलवणकापिंड लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे इंद्रियसहितमन परमात्मारूपकारणविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ किंवा ॥ जैसे पटविषे लिखेहुएचित्र पटकेसंकोचकियेहुए लयभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे मनकेलयहुए मनकरिकैकल्पितसर्वपदार्थोंकालयहोवैहै ॥ तिसकालविषे सर्व कार्यप्रपंचतैंरहितहुआ एकअद्वितीयपरमात्मा परिशेषतैंरहैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सुषुप्तिअवस्थाविषे यद्यपि

कार्यप्रपंचकालयहोवैहै ॥ तथापि अज्ञानरूपकारण तहांविद्यमानहै ॥ यातें सुषुप्तिविषे परमात्माकूं अद्वितीयरूपतासंभवैनहीं ॥
समाधान ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे यद्यपि अज्ञानहै तथापि ताअज्ञानका स्पष्टरूपकरिकै तहांभानहोवैनहीं ॥ यातें नहुएकेसमा
नहै ॥ अब याहीअर्थकूंलोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकैस्पष्टकरै है ॥ जैसे कोईयुवाअवस्थावान् कामीपुरुष चिरकालकेपीछे आपणेगृहवि
षेआवै ॥ और अत्यंतरूपवाली तथाअठारहवर्षकेआयुषवाली जोआपणीप्रियस्त्रीहै ताकेसाथआलिंगनकरिकै माघमासविषे मं
दिरविषेशयनकरै ॥ तिसकालविषे सोकामीपुरुष आनंदकरिकैपरिपूर्णहुवा बाह्यपदार्थोंकूंतथाअंतरपदार्थोंकूं किंचित्मात्रभी नहीं
जाणता ॥ और तिसकालविषे आपणेकूं तथाप्रियस्त्रीकूं देखताहुआभी नहींदेखता ॥ तैसे यहविज्ञानमयभोक्ताभी सुषुप्तिविषे पर
मात्माकेसाथतादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइके आपणेविषेस्थितमायाकूंभी नहींजाणता ॥ किंतु अज्ञानकेवृत्तियोंकरिकै केवलआपणेस्वरू
पआनंदकूंही अनुभवकरैहै ॥ याकारणतें श्रुतिविषे ताकूं आनंदभुक्कह्याहै ॥ किंवा ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषेजबी यहविज्ञानमयभो
क्ता विद्यमानमायाकूंभी नहींजाणता ॥ तबी लयभावकूंप्राप्तहुए जेमायाकेकार्य स्वप्नपदार्थ तथाजाग्रत्केपदार्थ तिनोंकूं कैसेजाणे
गा? ॥ किंतु किसीपदार्थकूंभी तहां नहींजाणता॥ केवल आनंदकरिकैपरिपूर्णहोवैहै ॥ अब सुषुप्तिविषेदुःखकीनिवृत्तिकूं तथापर
मानंदकीप्राप्तिकूं कुमार तथामहाराजा तथामहाब्राह्मण यातीनदृष्टांतोंकरिकै निरूपणकरै है ॥ कुमारदृष्टांत ॥ अन्नादिकोंके
भक्षणकरणेमेंअसमर्थ जोबालकहै ॥ तिसबालककूं माता गलापर्यंत दुग्धपानकराइके मत्कुणतथायूकादिकोंतेंरहित कोमलआ
सनऊपरि शयनकरावैहै ॥ ताआसनविषे सोयाहुआ सोबालक परमआनंदकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और मुखतें हसै है ॥ और
आनंदकरिकै परिपूर्णहुआ सोबालक आपणेसमीपवर्तिमातापितादिकोंकूं देखताहुआभी नहींदेखै है ॥ केवलआनंदकरिकै
पूर्णहोवै है ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहविज्ञानमयभोक्ता परमआनंदकीप्राप्तिकरिकै सर्वदुःखोंतें रहितहोवैहै ॥ और
तिसकालविषे आनंदकरिकै परिपूर्णहुआ यह विज्ञानमयभोक्ता मायाकूं देखताहुआभी नहींदेखै है ॥ अब महाराजाके
दृष्टांतकूं दिखावै हैं ॥ जैसे नानाप्रकारके धनकरिकैपूर्ण तथा शत्रुवोंतेंरहित जासंपूर्णपृथिवी है ॥ तापृथिवीका राज जिस

कूंप्राप्तहोवै ॥ और शरीरजिसकास्थूलहोवै ॥ और अत्यंतबलवान्होवै ॥ और युवाअवस्थाकरिकैयुक्तहोवै ॥ और सर्वरोगोंतैंर
हितजिसकाशरीरहोवै ॥ और रूपकरिकैयुक्तहोवै ॥ और हस्तपादादिकअंगोंकीउज्ज्वलतारूपलावण्यकरिकैयुक्तहोवै ॥ और ज
गत्विषेजिसकीकीर्तिहोवै ॥ और धर्मकरिकैसंपन्नहोवै ॥ और वेदोंकूं तथावेदकेअंगोंकूं जानणेहाराहोवै ॥ और मनकेहरणक
रणेहारी जेअनंतस्त्रियांहैं तिनोंकरिकै सेवितहोवै ॥ और तिनस्त्रियोंकरिकै गानकरेजेमधुरगीतहैं तथानानाप्रकारकेवादित्रोंके
जोशब्दहैं तिनोंकरिकैसेवितहोवै ॥ और ब्राह्मणोंके तथाचारणबंदिजनोंके जेजयशब्दहैं तथाआशीर्वादहैं तिनोंकरिकै सेवितहो
वै ॥ और पिताकेसमानगुणवाले तथापितामाताकेभक्त ऐसेजोअनेकपुत्रहैं तिनपुत्रोंकरिकैसेवितहोवै ॥ इसप्रकारके सर्वगुणोंकरि
कैसंपन्न जोमहाराजाहै सो सर्वभोगोंकीप्राप्तिकरिकै जैसे परमानंदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहविज्ञानमयभोक्ता सुषुप्तिविषे परम
आनंदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे सोमहाराजा किंचित्मात्रभी दुःखकूंनहींजानता तैसे यहविज्ञानमयभोक्ता सुषुप्तिविषे किंचि
त्मात्रभी दुःखकूंनहींजानता ॥ तात्पर्ययह ॥ इच्छाकेविषय जेस्त्रीधनादिकपदार्थहैं तिनपदार्थोंकी जब नहीं प्राप्तिहोवैहै तब
ताइच्छातैंअनंतदुःखोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तिनदुःखोंकेनिवृत्तिकेदोउपायहैं ॥ एकतौ तिनस्त्रीधनादिकपदार्थोंकीप्राप्ति तिनदुःखोंके
निवृत्तिकाउपायहै ॥ और दूसराइच्छाकीनिवृत्ति तिनदुःखोंकेनिवृत्तिकाउपायहै ॥ तहां महाराजारूपदृष्टांतविषेतौसर्वपदार्थोंकीप्रा
प्तिकरिकै दुःखोंकाअभावहै ॥ और सुषुप्तिमैंविज्ञानमयभोक्ताविषेतौ इच्छादिकसर्वविक्षेपकीनिवृत्तितैं सर्वदुःखोंकाअभावहै ॥ अब
महाब्राह्मणरूपदृष्टांतकूंनिरूपणकरैहैं ॥ तहां प्रथम महाब्राह्मणकेस्वरूपकूंदिखावैहैं ॥ नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकूं तथाअंतरमना
दिकोंकूं जिसनैंवशकऱ्याहै ॥ और सर्वइच्छावोंकाजिसनैंपरित्यागकऱ्याहै ॥ और यथालाभविषे जोसंतोषवालाहै ॥ और शरीर
करिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै दुष्टजनोंनैंकऱ्याजोअपकार तिसअपकारकूंजाणताहुआभी जोपुरुष याप्रकारकामन
विषेविचारकरिकै तिनदुष्टपुरुषोंकेसाथ द्वेषकूंनहींकरैहै ॥ उलटा तिनोंऊपरि उपकारकूंकरैहै ॥ अब ताकेविचारकूंदिखावैहैं ॥
जोदुःख तथाअपमानादिक आपणेकूंप्रतिकूलहोवैहैं ॥ तिसदुःखकूं तथाअपमानादिकोंकूं जोपुरुष शरीरकरिकै तथामनवाणी

रिकै अन्यकिसीप्राणिविषेकरैंहै ॥ सोदुःख तथाअपमानादिक करणेहारेपुरुषकूंही इसलोकविषे तथापरलोकविषे प्राप्तहोवैहै ॥
इसप्रकार आपणेकूंअनुकूलजोसुखहै तिससुखकीप्राप्ति जोपुरुष अन्यप्राणिविषेकरैंहै तिसकरणेहारेपुरुषकूं इसलोकविषे तथा
परलोकविषे तासुखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं पुरुषनैं किसीप्राणिकेदुःखकीइच्छानहींकरणी ॥ किंतु सर्वप्राणियोंकेसुखकीइच्छाकर
णी ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै जोपुरुष किसीप्राणीकूंदुःखनहींदेवैहै ॥ किंतु सर्वप्राणियोंकूंसुखदेवैहै ॥ और सर्ववेदोंकेअर्थकूं
जोजाणेहै ॥ और जोपरनिंदातैंरहितहै ॥ और आपणेदोषोंविषे सर्वदाजिसकीदृष्टिहै ॥ और दुष्टप्राणियोंकेसंगतैंजोरहितहै ॥
और आत्मातैंभिन्नसकलजगत्अनित्यहै ॥ और आत्माहीएकनित्यहै ॥ याप्रकारकेनित्यअनित्यविवेककरिकै जोपुरुष सर्वदायुक्त
है ॥ और पूर्वपक्षतर्कविषे तथासिद्धांततर्कविषे जोपुरुष अतिकुशलहै ॥ और इसलोकविषे तथापरलोकविषे स्थित जेनानाप्रकार
केअन्नपानादिकपदार्थ तथामनोहरस्त्रियां तथा शब्द स्पर्श रूप रस गंध येपंचप्रकारकेविषय ॥ तिनसंपूर्णोंकूं वमनकरेहुएअन्न
कीन्यांई देखताहुआजोपुरुष तिनविषयोंविषे इच्छानहींकरैंहै ॥ और स्थूलशरीरका तथासूक्ष्मशरीरका अभिमानकरणेहारे जितने
प्राणीहैं तिनोंकूं पुण्यपापकेवशतैं सुखकीप्राप्ति तथादुःखकीप्राप्ति अवश्यहोवैहै ॥ याप्रकारकीदोषदृष्टिकरिकै जोपुरुष स्थूलसू
क्ष्मशरीरतैंमुक्तहोणेकीइच्छाकरैंहै ॥ और जोपुरुष ब्रह्मचर्यआश्रमका अथवा गृहस्थआश्रमका अथवा वानप्रस्थआश्रमका परित्या
गकरिकै तथाविधिपूर्वकशिखासूत्रकापरित्यागकरिकै दंडादिकग्रहणपूर्वक संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिकै आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते
श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीप जावैहै ॥ और गुरुकेमुखारविंदतैं उच्चारणहुएजेवेदोंकेवचन तिनवचनोंका अद्वितीय ब्रह्मविषेतात्पर्य
कानिश्चयरूपश्रवणकूंकरिकै तथाश्रवणकरेहुएअर्थविषे नानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिकैविरोधकापरिहाररूपमननकूंकरिकै तथाताअ
र्थविषेचित्तकीएकाग्रतारूपनिदिध्यासनकूंकरिकै जोपुरुष मैंब्रह्महूं याप्रकारकेसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकारइंद्रियोंकेनिग्र
हतैंआदिलैके तत्वसाक्षात्कारपर्यंत कथनकरेजेशुभगुण तिनशुभगुणोंकरिकैयुक्त जोपुरुषहै ताकूं महाब्राह्मणकहैहैं ॥
ऐसामहाब्राह्मण जैसे रागद्वेषादिकोंतैंरहितहुआ परमआनंदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहविज्ञानमयभोक्ता

परमआनंदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे याप्रकारकेमहाब्राह्मणविषे अनर्थकेकरणेहारे रागद्वेषादिक नहींरहेहैं ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्था विषे याविज्ञानमयभोक्ताविषेभी अनर्थकेकरणेहारेरागद्वेषादिक नहींरहैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ रागद्वेषादिकसकलधर्म अंतःकरणकेहैं ॥ सोअंतःकरण सुषुप्तिविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें ताकेधर्मरागद्वेषादिक सुषुप्तिविषेहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ जिनपदार्थोंविषे सुखसा धनताज्ञानहोवैहै ॥ तिनपदार्थोंविषे रागहोवैहै ॥ सुखसाधनताज्ञानतैंविना रागहोवैनहीं ॥ यातें सुखसाधनताज्ञान रागकाकारणहै॥ और जिनपदार्थोंविषे दुःखसाधनताज्ञानहोवैहै ॥ तिनपदार्थोंविषे द्वेषहोवैहै ॥ दुःखसाधनताज्ञानतैंविना द्वेषहोवैनहीं ॥ यातें दुःख साधनताज्ञान द्वेषकाकारणहै ॥ सोसुखसाधनताज्ञान तथादुःखसाधनताज्ञान किसीपदार्थविषे तत्ववेत्तामहाब्राह्मणकूंहैनहीं ॥ काहे तें ? अद्वितीयआत्मातैंभिन्नसकलप्रपंचकूं जिसनैं शशशृंगकीन्यांई असत्यजान्याहै॥असत्यवस्तुविषे सुखकीसाधनता तथादुःखकी साधनता संभवैनहीं ॥ यातें पूर्वउक्तमहाब्राह्मणविषे रागद्वेषसंभवैनहीं ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषेभी अंतःकरणकेलयहुए सुखसाध नताज्ञान तथादुःखसाधनताज्ञान किसीपदार्थविषे सुषुप्तपुरुषकूंहोवैनहीं ॥ यातें ताकेविषेभी रागद्वेषकाअभाव संभवैहै ॥ इसप्रकार सुषुप्तिरूपद्वितीयशयनकानिरूपणकरिकै पुनःसोअजातशत्रुराजा कहताभया॥हेबालाकि! शयनकर्तापुरुषकाकौनआधारहै? याप्रथ मप्रश्नका तथाशयनकाकौनआधारहै याद्वितीयप्रश्नका यहउत्तर हमनैं कह्या ॥ परमात्मारूपआकाशही शयनकर्ताविज्ञानमयभोक्ता का तथासुषुप्तिरूपशयनका आधारहै॥तिसपरमात्मातैंभिन्नकोईभी तिनोंकाआधारनहीं॥और हेबालाकि! विज्ञानमयभोक्ताका जोपर मात्मकेसाथअभेदहै ॥ तथा अंतःकरणादिकोंकाजोताकेविषेलयहै ॥ यहही शयनकास्वरूपहै ॥ और जैसे घटाकाश महाकाशतैंभि न्ननहीं ॥ किंतु घटाकाश महाकाशस्वरूपहै ॥ तैसे हमनैं तुमारेतांई कथनकऱ्याजोविज्ञानमयभोक्ता ॥ सो परमात्मातैंभिन्ननहीं॥किंतु परमात्मास्वरूपहै ॥ और सोपरमात्माही सर्वप्राणियोंविषे व्याप्यकरिकैप्रकाशकरैहै ॥ याकारणतैंही श्रुतिविषे तापरमात्माकूं आका शकह्याहै ॥ और हेबालाकि! जैसे घटमठादिकअनेकउपाधियोंविषेस्थितहुआभीआकाश सर्वत्रआकाशरूपकरिकै प्रतीतहोवैहै ॥ याकारणतैं आकाश एकहै ॥ तैसे तुमाराआत्मा तथाहमाराआत्मा तथाअन्यकिसीप्राणीकाआत्मा मैंआपणेस्वरूपकूंनहींजाणता

तथाअन्यकूंमैंनहींजाणता याप्रकार अज्ञानकाआश्रयरूपहुआप्रतीतहोवैहै ॥ और मैंसुखपूर्वकशयनकरतामया याप्रकार
सुषुप्तिकासाक्षीरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सर्वप्राणियोंविषे एकआत्मा अनुगतहै ॥ और हेबालाकि! यद्यपि जाग्रत्अवस्था
विषे तथास्वप्नअवस्थाविषेभी आत्माकीवास्तवतैं एकरूपताही है तथापि जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे अंतःकरण
करिकैविशिष्टहुआआत्मा विज्ञानमयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं सोविज्ञानमयभावही जाग्रत्स्वप्नविषे आत्माकेभेदकाकारणहै ॥
और सुषुप्तिअवस्थाविषे आपणेकार्यसहितअंतःकरणका अज्ञानविषेलयहोवैहै ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे आत्माकाभेदहोवैन
हीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे घटमठादिरूपउपाधियोंकेविद्यमानहुएही आकाशकाभेद प्रतीतहोवैहै॥ और घटमठादिकउपाधियोंकेना
शहुए आकाशविषेभेद प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे अंतःकरण तथावाकादिकइंद्रिय जाग्रत्स्वप्नविषे आत्माकेभेदकरणेहारेहैं ॥ ते
मनसहितसर्ववाकादिकइंद्रिय सुषुप्तिअवस्थाविषे परमात्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे एकअद्विती
यपरमात्मारहैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सुषुप्तिअवस्थाविषे यद्यपि अंतःकरणादिककार्यनहींहै ॥ तथापि कारणरूपअज्ञान त
हांविद्यमानहै ॥ यातैं अज्ञानरूपउपाधिकेवशतैं आत्माकाभेद सुषुप्तिविषेभीसंभवैहै ॥ समाधान ॥ अज्ञानके दोस्वरूपहैं ॥
एकतौ आवरणस्वरूप और दूसरा विक्षेपस्वरूप ॥ तहां आवरणस्वरूपअज्ञानविषे भेदकीजनकताहै ॥ अथवा विक्षेपस्व
रूपअज्ञानविषे भेदकीजनकताहै ॥ तहां आवरणरूपतैंअज्ञानविषेभेदकीकारणताहै यहप्रथमपक्षतौ संभवैनहीं ॥ काहेतैं?
सुषुप्तिविषे आत्माकूंआवरणकरणेहाराअज्ञानतौ विद्यमानहै॥ परंतु सोअज्ञान तहां आत्माकेभेदकूंउत्पन्नकरैनहीं ॥ यातैं आवर
णस्वरूपअज्ञानविषे आत्माकेभेदकीकारणता संभवैनहीं॥ और सुषुप्तिविषे विक्षेपस्वरूपअज्ञान आत्माकेभेदकाकारणहै यहदूस
रापक्षभी संभवैनहीं॥ काहेतैं विक्षेप दोप्रकारकाहोवैहै॥ एकतौ जाग्रत्रूप और दूसरास्वप्नरूप ॥ यहदोनोंप्रकारका कार्य
रूपविक्षेप सुषुप्तिविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं विक्षेपरूपअज्ञानभी आत्माकेभेदकूंउत्पन्नकरैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूंदृष्टां
तकरिकैस्पष्टकरैहैं ॥ जैसे वर्षाकालकेअंधारीरात्रिविषे संपूर्णमेघादिक अंधकारविषेलयभावकूंप्राप्तहोवैहै॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाके

प्राप्तहुए आत्माकेअज्ञानविषे सर्वकार्यप्रपंच लयभावकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ और जैसे सूर्यभगवान्‌केउदयकरिकै तिसअंधकारकेति रस्कारहुए पुनःतेमेघादिक तिसीअंधकारतैंप्रगटहोवैंहैं ॥ तैसे मायाविशिष्टपरमात्मातैं पुनःकर्मोंकेवशतैं जाग्रत् उत्पन्नहोवैंहै॥ तात्पर्ययह ॥ जबीतौ जाग्रत्प्रपंचकेभोगदेणेहारेपुण्यपापरूपकर्मोंका उद्भवहोवैंहै ॥ तबी मायाविशिष्टपरमात्मातैं जाग्रत्प्रपंच कीउत्पत्तिहोवैंहै ॥ और जबी स्वप्नकेभोगदेणेहारेपुण्यपापरूपकर्मोंकाउद्भवहोवैंहै ॥ तबी तापरमात्मातैं स्वप्नप्रपंचकीउत्पत्ति होवैंहै ॥ यातैं हेबालाकि! जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंकीप्राप्तिविषे निनमनहीं ॥ किंतु आपणेस्वरूपकेअज्ञानतैं यहप रमात्मादेव कर्मोंकेवशतैं कदाचित् स्वप्नअवस्थातैंअनंतर जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ और कदाचित् सुषुप्तिअवस्थातैंअनंतर जाग्रत्कूंप्राप्तहोवैंहै ॥ और कदाचित् जाग्रत्अवस्थातैंअनंतर स्वप्नकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ और कदाचित् जाग्रत्अवस्थातैंअनंतर सुषु प्तिकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ और कदाचित्स्वप्नअवस्थातैंअनंतर सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ इसप्रकार कर्मोंकेअधीनहुआ यहजीवात्मा सर्वशरीरोंविषे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्तिरूप तीनअवस्थावोंकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे बालकोंनें यष्टिकरिकैआकाशविषेचला याहुआकंदुक चारोंदिशावोंविषे तथाभूमिविषे तथाआकाशविषे निरंतर भ्रमणकरैंहै ॥ तैसे पूर्वकरेहुएशुभअशुभकर्मोंकेवशतैं यह परमात्मादेव कबीजाग्रत्कूंप्राप्तहोवैंहै ॥ और कबी स्वप्नकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ और कबी सुषुप्तिकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ इसप्रकार निरंतरभ्रमण करैंहै ॥ और जैसे वायुकरिकैचलायेहुएतूलकी कदाचित्भी स्थितिहोवैंनहीं ॥ तैसे कर्मरूपवायुकेवशतैं याशरीरविषे जाग्रदादि कअवस्थावोंकाप्रवाह कदाचित्भी स्थिरहोवैंनहीं ॥ किंतु निरंतरही जाग्रदादिकअवस्थावोंकाप्रवाह चलाजावैंहै ॥ और जैसे आ काशविषे संपूर्णमेघमंडलकूं वायुभ्रमणकरावैंहै ॥ तैसे कर्मरूपवायुभी देहादिकप्रपंचकूं भ्रमणकरावैंहै ॥ और जैसे जलोंकाप्रवाह सूकेकाष्ठकूं कदाचित्उच्चैःस्थानविषेगेडेहै ॥ और कदाचित् नीचेस्थानविषेगेडेहै ॥ तैसे पुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं यहजीवात्मा कबी देवशरीरकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ और कबी मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ और कबी कृमिशरीरकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ और कबी वृक्षादिकस्थावरश रीरकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जबी पुण्यकर्मकीअधिकताहोवैंहै ॥ तबीतौ देवभावकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ और जबी पुण्यपापकीसमानता

होवैहै तबी मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोवैहै॥ और जबी पापकर्मोंकीअधिकताहोवैहै ॥ तबीकृमिआदिकशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार कर्मकेवशतैंयहजीव नानाप्रकारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोवै है॥और देवतावोंतैंआदिलैके कृमिपर्यंत सर्वशरीरोंविषे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति या तीनवअवस्थावोंकूं यहजीव प्राप्तहोवै है॥ जाग्रदादिकतीनअवस्थावोंतैंरहित कोईभीप्राणीनहीं॥शंका॥हेभगवन्! मनुष्यादिकोंविषे यद्यपि तीनअवस्थासंभवै हैं॥तथापि देवतावोंविषे तीनअवस्थासंभवैनहीं ॥ काहेतें? शास्त्रविषे देवतावोंकूं अस्वप्नकह्याहै ॥ यातें स्वप्नअवस्था देवतावोंविषेसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेबालाकि! देवतावोंकूं जोअस्वप्नकह्याहै ॥ सो देवतावोंविषे स्वप्नअवस्था नहींहोती याअभिप्रायतैंनहींकह्या ॥ किंतु देवतावोंविषे सत्वगुणकीप्रधानताहै ॥ यातें मनुष्योंकीन्यांई क्षणक्षणविषे देवतावोंकूं स्वप्नहोवैनहीं ॥ किंतु देवतावोंविषे अल्पस्वप्नहोवै है॥ याअभिप्रायतैंही शास्त्रविषे देवतावोंकूंअस्वप्नकह्याहै ॥ जोसर्वथा देवतावों विषे स्वप्नकेअभावका अंगीकारकरिये तौ सर्वदेवतावोंविषेमुख्यविष्णुभगवान् शेषनागकीसिहजाऊपरिशयनकरै है यहशास्त्रका कहणा असंगतहोवैगा ॥ यातें देवतावोंतैंआदिलेकेसर्वप्राणी जाग्रदादिकतीनअवस्थावोंकरिकैयुक्तहै यहसिद्धभया ॥ यातें हेबा लाकि! सुषुप्तिअवस्थाविषे सत्यपरमात्माकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहुआ विज्ञानमयभोक्ता कर्मोंकेवशतें जाग्रदादिकअवस्थावोंकूं प्राप्तहोवैहै॥ शंका ॥ हेभगवन्! अन्यउपनिषदोंविषे यद्यपि सुषुप्तिविषेमायाविशिष्टपरमात्माविषे अंतःकरणादिकोंकालय कथन कऱ्याहै ॥ तथापि याकौषीतकीउपनिषद्विषे प्राणविषेही सर्ववागादिकइंद्रियसहितअंतःकरणकालय कथनकऱ्याहै ॥ यातें श्रुति योंका परस्परविरोधहोवैहै ॥ समाधान ॥ सुषुप्तितैंउत्थानकूंप्राप्तहुआ यहपुरुष जाग्रत्विषे याप्रकारकास्मरण करैहै ॥ मैं कछुनहींजा णताभया ॥ यापुरुषकेस्मरणरूपअभिप्रायकरिकैतौ मायाविशिष्टपरमात्माविषेही सकलवागादिकोंकालय सिद्धहोवैहै ॥ और सुषु प्तिअवस्थाविषे प्राणोंकेलयकूं लोक अंगीकारकरैंनहीं ॥ किंतु प्राणकूंछोडिकै अन्यसर्ववागादिकोंकेलयकूं सुषुप्तिअवस्थाविषे लोक अंगीकारकरै हैं ॥ यातें लोकोंकेअभिप्रायकूंअंगीकारकरिकै श्रुतिनैं प्राणविषे वागादिकइंद्रियोंकालय कथनकऱ्याहै ॥ यातें प्राण शब्दकेलक्षणावृत्तिकरिकै मायाविशिष्टपरमात्माकाही ग्रहणकरणा ॥ याप्रकारतैं दोनोंश्रुतियोंकाविरोधहोवैनहीं ॥ यातें हे बा

लाकि! सुषुप्तिअवस्थाविषे परमात्मास्वरूपप्राणविषेही स्थूलसूक्ष्मरूपसर्वप्रपंच लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ काहेतें? जोसुषुप्तिअवस्था विषे मनसहितवागादिकइंद्रिय लयभावकूंनहींप्राप्तहोते तौ जाग्रत्कीन्यांई सुषुप्तिविषेभी तिनवागादिकोंकीप्रतीतिहोती ॥ और सुषुप्तिविषे मनसहितवागादिक प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातें वागादिकोंकालयही सुषुप्तिविषेजान्याजावैहै ॥ और हे बालाकि! जैसे आधारआधेयभावसंबंधकरिकै भूतलविषे घट प्राप्तिहोवैहै ॥ तहां भूतल आधारहै और घट आधेयहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्था विषे यहविज्ञानमयभोक्ता आधारआधेयभावसंबंधकरिकै परमात्माकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु आधारआधेयभावतेंरहित केवलअभेद संबंधकरिकै परमात्माकूंप्राप्तहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे गृहाकाशविषेप्राप्तभयाघटाकाश घटकेनाशहुएतेंअनंतर गृहाकाशकेसाथ एकतारूपसंबंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहविज्ञानमयभोक्ता अंतःकरणादिकउपाधियोंतेंरहितहुआ परमात्माकेसाथएकतारूपसंबंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हे बालाकि! जैसे गृहाकाशका गमन तथा आगमन होवैनहीं किंतु घटाकाशकाही गृहविषे आगमनहोवैहै तथा गृहतेंगमनहोवैहै ॥ तैसे हृदयदेशविषेस्थितपरमात्माका गमन तथा आगमन होवैनहीं ॥ और घटाकाशके समानविज्ञानमयभोक्ताकातौ नित्यही सुषुप्तिविषेगमन तथाजाग्रत्विषेआगमन होवैहै ॥ और हेबालाकि! वास्तवतें विचारकरिये तौ विज्ञानमयभोक्ताकेस्वरूपविषेभी गमन तथाआगमन संभवैनहीं ॥ किंतु अंतःकरणरूपउपाधिके गमन आगमनतें विज्ञानमय विषे गमन आगमन प्रतीतहोवैहै ॥ जैसे घटरूपउपाधिकेगमनआगमनतें घटाकाशविषे गमन आगमन प्रतीतहोवैहै ॥ वास्तवतैं घटाकाशविषे गमन तथा आगमन नहीं ॥ और हेबालाकि! यद्यपि यहपरमात्मादेव आकाशकीन्यांई देहके अंतर तथाबाहिर सर्वत्रव्यापकहै ॥ तथापि हृदयदेशविषेही परमात्माकाअंतर्यामीपणासिद्धहोवैहै ॥ अन्यत्र अंतर्यामीपणासिद्धहोवैनहीं ॥ याकारणतें हृदयदेशविषे परमात्माकीस्थितिकहीहै ॥ ऐसे अंतर्यामीपरमात्माकरिकै साक्षात्प्रकाशित जोमनहै तिसमनविषे संपूर्णवागादिकइंद्रियोंतेंविशेषताकूं अबनिरूपणकरैहैं ॥ सुखकेउपभोगवासते तथादुःखकेउपभोगवासते संपूर्णप्राणियोंकेशरीर उत्पन्नभयेहैं ॥ काहेतें? शरीरतेंविना सुखदुःखकाभोगहोवैनहीं ॥ और शब्दादिकविषयोंकेप्रकाशकूं उपभोगकहैहैं ॥ सोशब्दादिकविषयोंका

प्रकाश श्रोत्रादिकइंद्रियोंतेंविना होवैनहीं॥ किंतु श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकैही शब्दादिकविषयोंकाप्रकाशहोवैहै ॥ और तिनसंपूर्णश्रोत्रादिकइंद्रियोंका नियामकमनहै॥ काहेतें? आपणेआपणेशब्दादिकविषयोंकेसाथ श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेसंबंधहुएभी जबपर्यंत मनका संबंध श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेसाथ नहींहोवैहै ॥ तबपर्यंत यहश्रोत्रादिकइंद्रिय आपणेशब्दादिकविषयोंकूं जाणतेनहीं ॥ किंतु मनकेसंबंधहुएतैंअनंतरही श्रोत्रादिकइंद्रिय शब्दादिकविषयोंकूंजाणेहैं॥ यातें यहजान्याजावैहै॥ संपूर्ण श्रोत्रादिकइंद्रिय मनकेअधीनहैं ॥ अब याहीअर्थकूं लोकप्रसिद्ध दृष्टांत करिकै निरूपणकरैहैं ॥ जैसे लोकविषे काष्ठकरिकैरचित दशअश्व एकदीर्घकाष्ठविषेस्थितहोवैहै॥ और तिसदीर्घकाष्ठकेमध्यछिद्रविषे नीचेहैमुखजाकाऐसीएकनलिकाहोवैहै ॥ और तिनदशअश्वोंकेपादोंसाथबांध्येहुएदशसूत्र तिसमध्यछिद्रद्वारा नलिकाविषेपरोयेहोवैहैं॥ और तिनसूत्रोंकूं पिता बालककेहस्तविषेदेवैहै॥ और सोबालक पिताकेअंकविषेस्थित हुआ तिनसूत्रोंकूंआकर्षणकरिकै तिनअश्वोंकूं नानाप्रकारकीचेष्टाकरावैहै ॥ तैसे शरीररूपदीर्घकाष्ठहै ॥ तिसविषे वागादिकइंद्रियरूपदशअश्वहैं॥ और प्राणवायुरूपसूत्रकरिकै तेवागादिकबांध्येहुएहैं ॥ और नाडीरूपछिद्रद्वारा तेप्राणरूपसूत्र हृदयरूपनलिकाविषेपरोयेहैं ॥ और परमेश्वररूपपिताहै ॥ और मनरूपबालकहै ॥ तामनरूपबालककूं परमेश्वररूपपिता आपणेहृदयकमलरूपगोदविषेबैठाइकै प्राणवायुरूपसूत्रोंकूं ग्रहणकरावैहै ॥ तिनप्राणरूपसूत्रोंकूंग्रहणकरिकै सोमनरूपबालक वागादिकइंद्रियरूपअश्वोंकूं तथाप्राणरूपसूत्रोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवर्त्तकरावैहै ॥ याकारणतें सर्ववागादिकइंद्रियोंतें बुद्धिविषेउत्कृष्टताहै ॥ अब दूसरीरीतितैंभी वागादिकइंद्रियोंतैंबुद्धिविषे उत्कृष्टताकूंदिखावैहैं ॥ जैसे सूर्यभगवान्‌काप्रकाश यद्यपि सर्वपदार्थोंविषेसमानहै ॥ तथापि उपाधिकेवशतें तासूर्यकेप्रकाशविषेभेददेख्याहै ॥ जैसे ताम्रादिकधातुवोंकरिकैरचित जोकुशूलहै ताकेविषे सूर्यके तेजकी अल्पअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ और तिसकुशूलतें स्वच्छदर्पणविषे सूर्यकेतेजकी अधिकअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ और तिसदर्पणतैंभी कृपाणविषे सूर्यकेतेजकी अधिकअभिव्यक्तिहोवैहै॥ और तिसकृपाणतैंभी मणिविषे सूर्यकेतेजकी अधिकअभिव्यक्तिहोवैहै॥ और तिनमणियोंतैंभी सूर्यकांतमणिविषे तेजकीअधिकअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ काहेतें ! कुशूलादिकउपाधियोंविषेस्थितहुआ सूर्यका

तेज दाहादिककार्यकूंकरैनहीं ॥ और सूर्यकांतमणिविषेस्थितहुआ सूर्यकाप्रकाश दाहादिककार्यकूंभीकरैहै ॥ यातें कुशूलादिक सर्वउपाधियोंतें सूर्यकांतमणिविषे सूर्यकेतेजकी अधिकअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ तैसे कुशूलकेसमान यास्थूलशरीरविषे तथादर्पणके समान प्राणविषे तथाकृपाणकेसमान कर्मइंद्रियोंविषे तथामणिकेसमान ज्ञानइंद्रियोंविषे तथासूर्यकांतमणिकेसमान बुद्धिविषे यह आनंदस्वरूपआत्मा स्वभावतें यद्यपि एकरूपकरिकैहीस्थितहोवैहै ॥ तथापि बुद्धिरूपअंतःकरण अतिस्वच्छहै ॥ यातें ताअंतःकरण विषेस्थितहुआ यहआनंदस्वरूपआत्मा भोक्तासंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अन्यशरीरादिकउपाधियोंविषेस्थितहुआआत्मा भोक्तासंज्ञाकूंप्रा प्तहोवैनहीं ॥ और जैसे सूर्यभगवान् सूर्यकांतमणिविषेस्थितहोइकै दाहादिककार्यकूंकरैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा अंतःकर णविषेस्थितहुआही कर्तृत्वभोक्तृत्वरूपसंसारकूं तथालोकांतरविषेगमनागमनकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यद्यपि अल्पअंतःकरणविषे व्यापक आत्माकीस्थितिसंभवैनहीं ॥ तथापि जैसे अल्पदर्पण महान्पर्वतकेप्रतिबिंबकूंग्रहणकरैहै ॥ तैसे अल्पअंतःकरणभी अतिस्वच्छहोणे तें आत्माकेप्रतिबिंबकूंग्रहणकरैहै ॥ यहही अंतःकरणविषे आत्माकीस्थितिहै ॥ किंवा ॥ सोअंतःकरण सर्वदाहृदयकमलरूपगृहविषे ही निवासकरैहै ॥ और कदाचित् जाग्रत्अवस्थाविषे सोअंतःकरण नेत्रादिकस्थानविषेभी निवासकरैहै ॥ जिसकालविषे सुषुप्तिहो वैहै तिसकालविषेनेत्रादिकस्थानकूंछोडिकरिकै सोअंतःकरण हृदयकमलरूपआपणेगृहविषे आवैहै ॥ ताअंतःकरणकेआगमनतें विज्ञानमयभोक्ताभी हृदयदेशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ चैतन्यविषेस्वभावतेंतौ गमनतथाआगमनरूपक्रियाहैनहीं किंतु उपाधिके गमन तथाआगमनतें चैतन्यआत्माविषेगमन तथाआगमन होवैहै ॥ सोअंतःकरण जाग्रत्अवस्थाविषेदक्षिणनेत्रादिकस्थानोंविषेरहै है ॥ यातें विज्ञानमयभोक्ताभी तहांरहैहै ॥ और सुषुप्तिकालविषे नेत्रादिकस्थानोंकूंछोडिकरिकै सोअंतःकरण हृदयकमलरूपआपणे गृहविषे आवैहै यातें विज्ञानमयआत्माभी हृदयकमलकूंप्राप्तहोवैहै ॥ किंवा ॥ जैसे पशु तथामनुष्य आपणेगृहकूंछोडिकै अन्यदे शविषेजावैहैं ॥ तहां हानिकूं तथालाभकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ ताहानिकूंभी लाभकेसमानमानिकै तेपशु तथामनुष्य पुनःआपणेआप णेगृहविषेआवैहैं ॥ तैसे बुद्धिरूपअंतःकरणभी आपणेहृदयदेशरूपगृहकूंपरित्यागकरिकै नेत्रादिकदेशविषेजावैहै ॥ तहां हा

निकूं तथालाभकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ताहानिकूंभी लाभकेसमानभानिकै सोअंतःकरण नेत्रादिकदेशतैं पुनः आपणेहृदयकमलरूप गृहविषेआवैहै ॥ और जैसे विदेशतैंआपणेगृहविषेप्राप्तहुएजीवोंकूं लाभकाविचारकरिकै सुखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और हानिका विचारकरिकै दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे नेत्रादिरूपविदेशकूंछोडिकै हृदयकमलरूपआपणेगृहकूंप्राप्तहुईबुद्धि लाभकेविचारकूंक रिकै सुखकूंअनुभवकरैहै ॥ और हानिकाविचारकरिकै दुःखकूंअनुभवकरैहै ॥ एकहृदयकमलकूंछोडिकै नखतैंलैकरिकैशिखापर्यंत संपूर्णशरीर तथानेत्रादिकइंद्रियोंसहितसंपूर्णगोलक तथापुरीतत् तथाशिर यहसंपूर्णस्थान बुद्धिका परदेशहै ॥ एकहृदयकमलही बुद्धिका आपणादेशहै ॥ किंवा ॥ जाग्रत्के तथास्वप्नके भोगदेणेहारेकर्मोंका जब क्षयहोवैहै ॥ तबी हृदयकमलकेमध्यवर्ति दहरा काशरूपपरमात्माविषेप्राप्तहुईसाबुद्धि आपणेकारणविषेमूर्च्छाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे अत्यंतमूर्च्छाकूंप्राप्तहुआजोपुरुषहै तिस कूं लोकविषे मृतकहुआकहैहैं ॥ तैसे सुषुप्तिविषे आपणेकारणविषेमूर्च्छाकूंप्राप्तहुईबुद्धिविषे लयव्यवहारहोवैहै ॥ और जैसे आका शविषेप्राप्तहुआजो सूक्ष्मतूलहै ॥ तिसतूलका आकाशविषेलय लोक कथनकरैहैं ॥ तैसे हृदयकमलकेअंतर परमात्मारूपआका शविषे प्राप्तहुईबुद्धिकूं लयमानकरिकै वेद कथनकरैहै ॥ और जैसे पटकेसंकोचाकियेतैं पटविषेस्थितचित्र लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे पित्तधातुकरिकै हृदयकमलकेसंकोचरूपहेतुतैंभी बुद्धिविषे लयव्यवहारहोवैहै ॥ यातैं हेबालाकि! सोविज्ञानमयभोक्तापुरुष सुषुप्तिअवस्थाविषे अंतःकरणरूपउपाधिकेलयहुए परमात्माकेसाथ अभेदरूपशयनकूंअनुभवकरिकै पुनःसोविज्ञानमयआत्मा जाग्रत्केभोगदेणेहारेकर्मोंकेउदयहुए जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे ऊर्णनाभीतंतुविशेष अन्यसाधनोंकीअपेक्षातैंविना ही अनंततंतुवोंकूं आपणेतैंउत्पन्नकरैहै ॥ तैसे शयनतैंउत्थानकूंप्राप्तहुआ यहपरमात्मादेव प्राणादिकअनंतसृष्टिकूं उत्पन्नकरैहै ॥ और जैसे प्रज्वलितमहान्अग्नि आपणेसमानरूपवालेअल्पकणोंकूं उत्पन्नकरैहै तैसे शयनतैंउत्थानकूंप्राप्तहुआ यहआत्मदे वभी प्राणोंकूं तथाअंतःकरणकूं तथाज्ञानकर्मइंद्रियोंकूं तथातिनइंद्रियोंकेनानाव्यापारोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ और तिनवागादिकइंद्रि योंतैं अग्निआदिकदेवता उत्पन्नहोवैहै ॥ और तिनअग्निआदिकेदेवतावोंतैं शब्दादिकविषय तथासंपूर्णलोक उत्पन्नहोवैहै ॥ इस

प्रकार जाग्रत्‌अवस्थाविषे नित्यही वागादिकइंद्रियोंकीउत्पत्तिहोवैं है ॥ तथा अग्निआदिकदेवतावोंकीउत्पत्तिहोवैं है ॥ तथा नामादिकविषयोंकीउत्पत्तिहोवैं है ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे नित्यही तिनवागादिकइंद्रियोंकालयहोवैं है ॥ तथा अग्निआदिकदेवतावोंका तथानामादिकविषयोंका लयहोवैं है ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जाग्रत्‌विषे नित्यही वागादिकोंकीउत्पत्ति ॥ और सुषुप्तिविषे नित्यही वागादिकोंकालयहोवैं है ॥ यह आपनैं कह्या ॥ याअर्थविषे हमारानिश्चयहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेबालाकि! वेदभगवान्‌नैं कथनकऱ्याजोअर्थ है ॥ ताअर्थविषे कदाचित्‌भी बुद्धिमान्‌पुरुषोंनैं अविश्वासनहींकरणा ॥ किंतु जिसअर्थकूं शास्त्रबोधनकरै ॥ सोईहीअर्थबुद्धिमान्‌पुरुषोंनैं अंगीकारकरणेयोग्य है ॥ काहेतें? जेस्वर्गादिकपदार्थ इंद्रियजन्यज्ञानकेविषयनहींहोवैं हैं ॥ तिनस्वर्गादिकअतिइंद्रियपदार्थोंविषे शास्त्रप्रमाणतैंही ज्ञानउत्पन्नहोवैं है ॥ शास्त्रप्रमाणतैंभिन्नप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै तिनस्वर्गादिकपदार्थोंकाज्ञानहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसअर्थविषे परस्परविरोधी दोप्रमाणोंकीप्रवृत्तिहोवैं है ॥ तिसीअर्थविषे संशयहोवैं है ॥ सो ईहां संभवैनहीं ॥ काहेतें वेदकरिकैबोधनकरेअर्थविषे किसीप्रत्यक्षादिकप्रमाणकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातें वेदकेअर्थविषे संशयकरणा बुद्धिमान्‌पुरुषकूं योग्यनहीं ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैनिरूपणकरै है ॥ शास्त्रप्रमाणनैंबोधनकरे जेस्वर्गादिक तथाइंद्रादिकदेवता तथाधर्मअधर्मरूपअदृष्ट इनसंपूर्णविषे प्रत्यक्षप्रमाणकाबाध सर्वलोकोंनैं अनुभवकरिताहै ॥ काहेतें ? जोशास्त्रप्रतिपादित स्वर्गादिकोंविषेभी प्रत्यक्षप्रमाणकीप्रवृत्तिहोतीहोवै तौ सर्वजीवोंकूं नेत्रादिरूपप्रत्यक्षप्रमाणतें स्वर्गादिकोंकाप्रत्यक्षज्ञान होणा चाहिये ॥ और प्रत्यक्षप्रमाणकरिकै जीवोंकूं स्वर्गादिकोंकाअनुभवहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोप्रत्यक्षप्रमाणकरिकै जीवोंकूंस्वर्गकाअनुभवहोताहोवै तौ स्वर्गनरकादिकोंविषे मूढपुरुषोंकापरस्परविवाद नहींहोणाचाहिये ॥ काहेतें? प्रत्यक्षप्रमाणकेविषय जेघटादिकपदार्थ हैं तिनोंविषे कोईपुरुष विवादकरैनहीं ॥ और स्वर्गनरकादिकोंविषेतौ मूढपुरुषोंका बहुतप्रकारकाविवाद लोकविषे देखताहै ॥ कोईपुरुषतौ याप्रकारकथनकरै हैं कि स्वर्गनरकादिकहैनहीं ॥ और कोईमूढपुरुष याप्रकार कथनकरै हैं कि इस मनुष्यलोकविषेही स्वर्गनरकहैं ॥ इसमनुष्यलोकतैंभिन्न कोईस्वर्गनरकहैंनहीं ॥ धनादिकपदार्थोंकरिकैयुक्तपुरुष स्वर्गसु

खकूंभोगेहैं ॥ निर्धनदरिद्रीपुरुष तथापशुआदिक नरकदुःखकूंभोगेहैं ॥ याप्रकार स्वर्गनरकादिकोंविषे मूढपुरुषविवादकूंकरै हैं ॥ सो नहोणाचाहिये ॥ यातें प्रत्यक्षप्रमाणकरिकै स्वर्गादिकोंकाअनुभव किसीजीवकूंहोवैनहीं ॥ यद्यपि शास्त्रप्रतिपादित स्वर्गादिकोंका योगीपुरुषकूं प्रत्यक्षहीज्ञानहोवैहै तथापि योगीपुरुषकाप्रत्यक्षप्रमाण शास्त्रप्रमाणकाविरोधीहोवैनहीं ॥ काहेतें? शास्त्रकेअनुकूलआचरणकरिकैही योगीपुरुषकाप्रत्यक्ष उत्पन्नहोवै है ॥ यातें सोयोगीकाप्रत्यक्षप्रमाण पूर्वसिद्धशास्त्रप्रमाणरूप आपणेकारणकेसाथ विरोधकूंकरैनहीं ॥ यातें शास्त्रप्रतिपादितस्वर्गादिकअर्थविषे प्रत्यक्षप्रमाणकीप्रवृत्तिहोवैनहीं यहसिद्ध भया ॥ किंवा ॥ जैसे शास्त्रप्रतिपादितस्वर्गादिकअर्थविषे प्रत्यक्षप्रमाणकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ तैसे अनुमानप्रमाणकीभीप्रवृत्ति होवैनहीं ॥ काहेतें? प्रत्यक्षप्रमाणकी अपेक्षाकरिकैही पश्चात् अनुमानप्रमाणकीप्रवृत्तिहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसपुरुषकूं पूर्व महानसादिकोंविषे वारंवार धूमतथाअग्निकेसहचारदर्शनतें धूम वह्निकाव्याप्यहै याप्रकारकाव्याप्तिज्ञान प्रत्यक्षप्रमाणतें उत्पन्नभयाहै ॥ सोईहीपुरुष पर्वतविषेधूमकूंदेखिकै पूर्वव्याप्तिकास्मरणकरताहुआ पर्वतविषेअग्निकाअनुमानकरै है ॥ यातें प्रत्यक्षप्रमाण अनुमानप्रमाणकाकारणहै ॥ सोप्रत्यक्षप्रमाण पूर्वउक्तरीतितें स्वर्गादिकपदार्थोंविषे प्रवर्तहोवैनहीं ॥ यातें अनुमानप्रमाणभी स्वर्गादिकपदार्थोंकूं बोधनकरिसकैनहीं ॥ किंवा ॥ जोप्रत्यक्षप्रमाणकी अपेक्षातेंविनाही अनुमानप्रमाण आपणेअर्थकूंबोधनकरैगा ॥ तौ अनुमानसंज्ञातेंहीरहितहोवैगा ॥ काहेतें? अनुमान याशब्दविषे दोपदहैं ॥ एक अनुपदहै और दूसरा मानपदहै ॥ तहां अनुपदकाअर्थ पश्चात्है और मानपदकाअर्थ प्रमाणहै ॥ तादोनोंपदोंका मिलिकै पश्चात्भाविप्रमाण यहअनुमानशब्दकाअर्थसिद्धहोवै है ॥ याप्रकार अनुमानशब्दकेविचारकियेहुएभी प्रत्यक्षप्रमाणतेंअनंतरही अनुमानप्रमाणकीप्रवृत्तिसिद्धहोवै है ॥ किंवा ॥ प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैजन्य प्रत्यक्षज्ञानकी अल्पविषयविषेप्रवृत्तिहोवै है ॥ याकारणतेंभी शास्त्रप्रतिपादितस्वर्गादिकोंविषे प्रत्यक्षप्रमाणकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ काहेतें? इंद्रियइंद्रियविषे जोज्ञानउत्पन्नहोवै है ताकूं प्रत्यक्षज्ञानकहेहैं ॥ सो प्रत्यक्षज्ञान एकप्रकारका होवैनहीं ॥ किंतु नेत्रादिकइंद्रियोंकेभेदतें भिन्नभिन्नहीप्रत्यक्षज्ञान होवैहै ॥ तहां चक्षुइंद्रियतेंउत्पन्नहुएप्रत्यक्षज्ञानकूं चाक्षुषप्रत्यक्ष

कहैहैं ॥ और रसनइंद्रियजन्यप्रत्यक्षज्ञानकूं रासनप्रत्यक्ष कहैहैं ॥ और त्वक्इंद्रियजन्यप्रत्यक्षज्ञानकूं त्वाचप्रत्यक्ष कहैहैं ॥
और घ्राणइंद्रियजन्यप्रत्यक्षज्ञानकूं घ्राणजप्रत्यक्षकहैहैं॥ और श्रोत्रइंद्रियजन्यप्रत्यक्षज्ञानकूं श्रावणप्रत्यक्षकहै हैं ॥ इसप्रकार इंद्रि
योंकेभेदतैं प्रत्यक्षज्ञानभी भिन्नभिन्नहीहोवैहै ॥ यातैं सर्वपदार्थोंविषे एकप्रत्यक्षज्ञानकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु भिन्नभिन्नरूपादिक
विषयोंविषे भिन्नभिन्नही चाक्षुषादिकज्ञानोंकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ चाक्षुषज्ञानकेविषयजेरूपादिकपदार्थहैं ॥ तिनोंकूं
रासनज्ञान विषयकरैनहीं ॥ और रासनज्ञानकेविषयजेरसादिकहैं ॥ तिनोंकूं चाक्षुषज्ञान विषयकरैनहीं ॥ इसप्रकार अन्यप्र
त्यक्षज्ञानोंविषेभीजानिलेणा ॥ याप्रकार अल्पअर्थकूंविषयकरणेहारा प्रत्यक्षज्ञान शास्त्रप्रतिपादितअर्थकूं विषयकरिसकैनहीं ॥
किंवा ॥ जिसकालविषे देवदत्तनामापुरुषकेनेत्रोंकासंबंध घटादिकपदार्थोंकेसाथहोवैहै तिसकालविषे देवदत्तनामापुरुषकूंही ता
घटकाप्रत्यक्षज्ञानहोवैहै ॥ देवदत्तपुरुषतैंभिन्न जोयज्ञदत्तनामापुरुषहै तिसकूं इंद्रियकेसंबंधतैंविना ताघटकाप्रत्यक्षज्ञानहो
वैनहीं ॥ यातैं प्रत्यक्षज्ञानकेयोग्यघटादिकविषयोंविषेभी स्वतंत्र प्रत्यक्षज्ञानकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु विषयकेसाथ इंद्रियकेसंबं
धकीअपेक्षाकरिकैही प्रत्यक्षकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ याकहणेतैं यहसिद्धभया ॥ जबी प्रत्यक्षज्ञानकेयोग्यघटादिकपदार्थोंविषेभी प्रत्य
क्षज्ञानकी स्वतंत्रप्रवृत्तिनहींभयी ॥ तबी वेदप्रतिपादितस्वर्गादिकअतिइंद्रियपदार्थोंविषे किसप्रकार प्रत्यक्षकीप्रवृत्तिहोवैगी? ॥
किंतु नहींहोवैगी ॥ किंवा ॥ वेदप्रमाणकीअपेक्षातैंरहित जोकेवलप्रत्यक्षप्रमाणहै ॥ सोदोषोंतैंरहितहोवैनहीं ॥ किंतु दोषकरि
कैहीयुक्तहोवैहै ॥ काहेतैं? नेत्रादिकइंद्रियोंकानाम प्रत्यक्षप्रमाणहै ॥ और तिननेत्रादिकइंद्रियोंविषे अंधत्वबधिरत्वादिकदोषोंका
सर्वपुरुषोंकूं प्रत्यक्षहीज्ञानहोवैहै यातैं दोषयुक्तप्रत्यक्षप्रमाण वेदकेअपूर्वअर्थकूं बोधनकरिसकैनहीं ॥ किंवा ॥ वेदबोधितस्वर्गादि
कअर्थविषे उक्तरीतिकरिकै प्रत्यक्षप्रमाणकेअप्रवृत्तहुए अनुमानप्रमाणभी तिनस्वर्गादिकपदार्थोंविषे प्रवृत्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं प्र
त्यक्षप्रमाणकीअपेक्षाकरिकैही अनुमानप्रमाणकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ यहवार्ता पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ शंका ॥ वेदप्रतिपादितस्वर्गादिक
अर्थोंविषे प्रत्यक्षप्रमाणकी तथाअनुमानप्रमाणकी प्रवृत्तिमतहोवै ॥ तथापि अर्थापत्तिआदिकप्रमाणोंकीप्रवृत्ति स्वर्गादिकपदार्थों

विषे होवैगी ॥ समाधान ॥ तेअर्थापत्तिआदिकप्रमाण अनुमानप्रमाणतैंअभिन्नहैं अथवा भिन्नहैं? ॥ तहां प्रथम आपन्नपक्ष संभवै नहीं ॥ काहेतैं? तेअर्थापत्तिआदिकप्रमाण जबी अनुमानप्रमाणकेअंतरभूतमानोंगे तौ अनुमानप्रमाणकेप्रवृत्तिविषे जे पूर्वदोषकहेहैं ॥ ते संपूर्णदोष अर्थापत्तिआदिकप्रमाणोंविषेभी प्राप्तहोवैंगे ॥ यातैं अनुमानप्रमाणतैंअभिन्न अर्थापत्तिआदिकप्रमाण संभवैनहीं ॥ और अर्थापत्तिआदिकप्रमाण अनुमानप्रमाणतैं भिन्नहैं यहद्वितीयपक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं? जोअर्थापत्तिआदिकप्रमाणोंकूं अनुमानप्रमाणतैंभिन्नभी अंगीकारकरोगे तौभी तेअर्थापत्तिआदिकप्रमाण स्वतंत्र किसीप्रमाज्ञानकूंउत्पन्नकरतेनहीं ॥ किंतु किसीदृष्टांतकूंअंगीकारकरिकैही किसीपुरुषकेप्रमाज्ञानकूं उत्पन्नकरैंगे ॥ दृष्टांततैंविना अर्थापत्तिआदिकप्रमाण कहांभी ज्ञानकूंउत्पन्नकरैनहीं ॥ और सोदृष्टांत प्रत्यक्षतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु प्रत्यक्षकेअंतरभूत दृष्टांतहै ॥ और प्रत्यक्षकाखंडन पूर्वविस्तारतैंकरिआयेहैं ॥ यातैं अनुमानप्रमाणतैंभिन्नहुएभी अर्थापत्तिआदिकप्रमाण वेदप्रतिपादितस्वर्गादिरूपअर्थविषे प्रवृत्तहोवैनहीं यातैं हेबालाकि! संपूर्णदोषोंतैंरहित यहवेदभगवान् जिसजिसअर्थकूंबोधनकरैहै ॥ सोईहीअर्थ मुमुक्षुपुरुषोंनैं अवश्यग्रहणकरणेयोग्यहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे धर्मात्माराजाकेआज्ञाकूं प्रजा ग्रहणकरैहै तैसे वेदभगवान्काअर्थ बुद्धिमान्पुरुषोंनैं ग्रहणकरणेयोग्यहै ॥ वेदकेअर्थविषे कदाचित्भी असंभावनानहींकरणी ॥ और सोवेदभगवान्तौ दिनदिनविषे जाग्रत्अवस्थाकेप्राप्तहुए वाकादिकइंद्रियोंकेउत्पत्तिकूं कथनकरैहै ॥ तथा अग्निआदिकदेवतावोंकेउत्पत्तिकूं कथनकरैहै ॥ तथा नामादिकविषयोंकेउत्पत्तिकूं कथनकरैहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे तिनसंपूर्णवाकादिकोंकेलयकूं वेदभगवान् कथनकरैहै ॥ यातैं हेबालाकि! याप्रकारकेवेदअर्थविषे तुम श्रद्धाकूंकरो ॥ और हेबालाकि! पूर्व सोयेहुएपुरुषकेउत्थापनकालविषे याशरीरविषेस्थित आनंदस्वरूपआत्माकाउपदेश हमनैं तुमारे प्रतिकह्याथा ॥ और पश्चात् हृदयकमलविषेस्थित आत्माकाउपदेश हमनैं तुमारेप्रतिकह्या ॥ यातैं तुमनैं आत्माविषेपरिछिन्नदृष्टिनहींकरणी ॥ किंतु आत्माविषे पूर्णदृष्टिकरणी ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ हेबालाकि! जैसे एकहीपरिपूर्णआकाश घटमठशरावादिकउपाधियोंविषे स्थितहोवैहै ॥ तैसे एकहीपरिपूर्णआत्मा वाकादिकउपाधियोंविषे स्थितहोवैहै ॥ तावाकादिकवि

शिष्टआत्माकूं मूढपुरुष वक्तारूपकरिकै तथाश्रोतारूपकरिकै तथाद्रष्टारूपकरिकै मानैहैं ॥ तिसप्रकार तुमनैं आत्माकूं परिछिन्न करिकैनहींमानणा ॥ किंतु उपाधिकापरित्यागकरिकै परिपूर्ण आत्माकूं तुमनैं जानणा ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोआत्मा सर्वत्रपरिपूर्णहोवै तौ हृदयदेशविषेआत्माकीस्थिति पूर्वआपनैं काहेवासतेकथनकरी? ॥ समाधान ॥ हेबालाकि! जैसे केशोंकेछेदनकरणेकासाधनजोक्षुरहै सोक्षुर नापितकेपिटारीरूपकिसीएकदेशविषेरहैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा केवलहृदयदेशविषेरहैनहीं ॥ किंतु सर्वप्राणियोंकेअंतर तथाबाहरि व्याप्तकरिकैरहैहै ॥ तथापि अंतःकरणविषे तथाइंद्रियोंविषे तथाशरीरविषे आत्माकीविशेषकरिकैउपलब्धिहोवैहै ॥ याकारणतैं हृदय इंद्रिय शरीरविषे आत्माकीस्थिति हमनैं कथनकरीहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अग्निसामान्यरूपकरिकैसर्वत्रस्थितहै ॥ तथापि काष्ठविषे अग्निकीविशेषरूपकरिकैउपलब्धिहोवैहै ॥ याकारणतैं काष्ठविषेअग्निस्थितहैयाप्रकार लोककथनकरैहैं ॥ यातैं हेबालाकि! जैसे नापितकीपिटारीविषे क्षुररूपशस्त्रकी शीघ्रहीउपलब्धिहोवैहै ॥ तैसे हृदयकमलविषेस्थितबुद्धि अत्यंतस्वच्छहै ॥ यातैं ताबुद्धिविषे आत्माकीउपलब्धि विशेषकरिकैहोवैहै ॥ याअभिप्रायतैंबुद्धिविषेआत्माकीस्थिति हमनैं कथनकरीहै ॥ और जैसे नापितकीपिटारीविषेही क्षुररूपशस्त्र रहैहै अन्यत्ररहैनहीं ॥ तैसे बुद्धिरूपदेशविषेही आत्मारहैहै अन्यत्ररहैनहीं ॥ याअभिप्रायतैं आत्माकीबुद्धिविषेस्थिति हमनैं नहींकथनकरी ॥ इसप्रकार हृदयविषेआत्माकेविशेषअभिव्यक्तिकूंबोधनकरणेहाराजोक्षुरकादृष्टांतहै तिसकेअभिप्रायकूंनिरूपणकरिकै अब हृदयकीअपेक्षाकरिकै शरीरादिकोंविषेआत्माकेअल्पप्रकाशकूं बोधनकरणेहारा जोअग्निकादृष्टांतहै ताकेअभिप्रायकूं दिखावैहैं ॥ हेबालाकि! सोआनंदस्वरूपआत्मा जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेशरीरोंकूं उत्पन्नकरिकै आपणेचैतन्यरूपकरिकै नखकेअग्रभागतैंलेकरिकेशिखापर्यंत तिनसर्वशरीरोंविषे व्याप्तहोताभया ॥ और जैसे अग्नि यद्यपि सर्वत्रसमानहै ॥ तथापि अरणीरूपकाष्ठविषे अग्निकेविशेषअभिव्यक्तिकूंदेखिकरिकै काष्ठविषेस्थितअग्निहै याप्रकारकाकथन सर्वलोक करैहैं ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि चैतन्यरूपकरिकैसर्वत्रसमानहै तथापि शरीरविषे चैतन्यकेविशेषअभिव्यक्तिकूंदेखिकै शरीरविषे आत्मास्थितहै याप्रकारकाकथनभी सं

भवैहै ॥ इहां शरीरविषेजो आत्माकीविशेषअभिव्यक्तिकही सो घटादिकोंकीअपेक्षाकरिकैजानणी ॥ अंतःकरणकीअपेक्षाकरि
कै तौ शरीरविषे आत्माकीअल्पअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ यातैं हेबालाकि! आकाशकीन्यांई सर्वत्रपरिपूर्णआत्मा याशरीरविषे चैतन्य
रूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ याकारणतैं सर्वशरीरोंविषे नखकेअग्रभागतैंलेकरिकै परमात्माकाप्रवेश श्रुतिनैं कथनकर्याहै ॥ और
हेबालाकि! जैसे मृत्तिका घटाकारपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं मृत्तिकाविषे मुख्यप्रज्ञा तथागौणप्रज्ञा संभवैनहीं ॥ तैसे मनइंद्रि
यदेहादिरूपसंघातभी अनंतप्रकारकेपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं यासंघातविषेभी मुख्यप्रज्ञा तथागौणप्रज्ञा संभवैनहीं ॥ किंतु
प्रज्ञास्वरूपआत्माकेतादात्म्यअध्यासकेबलतैं अविचारकालविषे शरीरादिकोंमैं चैतन्यस्वरूपप्रज्ञा प्रतीतहोवैहै विचारकियेतैं श
रीरादिकोंविषे प्रज्ञासंभवैनहीं ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! मनविषे तथाइंद्रियोंविषे तथाशरीरविषे प्रज्ञाकाअभाव आपनैंकह्या
सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं? बुद्धिरूपप्रज्ञा तिनमनादिकोंविषेभीसंभवैहै ॥ **समाधान** ॥ हेबालाकि! चैतन्यआत्मातैंभिन्न मनइं
द्रियशरीरादिकसंपूर्ण जडहै ॥ और विकारवान्‌है ॥ यातैं तिनमनादिकोंविषेस्थित बुद्धिरूपप्रज्ञाभी जडहै ॥ काहेतैं? जैसे शरीरा
दिक परिणामकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे बुद्धिभी परिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं बुद्धि जडहै चैतन्यरूपनहीं ॥ यातैं हे बालाकि! आनंद
स्वरूपआत्मातैंभिन्न किसीभीवस्तुविषे ज्ञानस्वरूपप्रज्ञानहीं ॥ किंतु एकआत्माही ज्ञानस्वरूपहै ॥ और हे बालाकि! जैसे
आत्मातैंभिन्न किसीअनात्मपदार्थविषेज्ञाननहींहै ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न किसीअनात्मपदार्थविषे सुखभीनहींहैं ॥
किंतु एकआत्माही सुखरूपहै ॥ ऐसा सुखस्वरूप तथाज्ञानस्वरूप यहआत्मा सुखतथाज्ञानतैंरहितमनइंद्रियदेहादिकोंकूं आप
णेतादात्म्यसंबंधतैं सुखयुक्त तथाज्ञानयुक्त करैहै ॥ **दृष्टांत** ॥ जैसे धनीपुरुष आपणेसेवकोंकूं धनयुक्तकरैहैं ॥ तैसे सुखज्ञानस्व
रूपआत्मा मनइंद्रियादिकोंकूं सुखतथाज्ञानयुक्तकरैहै ॥ और हेबालाकि! ऐसे सुखस्वरूप तथाज्ञानस्वरूप आत्माका आश्रय
करिकैही संपूर्णवाकादिकअध्यात्म तथाअग्निआदिकअधिदैवता आपणेआपणेनामादिकविषयोंकूंनिश्चयकरैहैं ॥ तिसआ
त्माकेसंबंधतैंविना स्वतंत्रहोइके कोईभीवाकादिक किसीअर्थकूं निश्चयकरैनहीं ॥ **दृष्टांत** ॥ जैसे यथार्थज्ञानकरिकैयुक्त

अथवा विपरीतज्ञानकरिकैयुक्त जोकोईक धनीपुरुषहै ॥ तिसधनीपुरुषकेनिश्चयकेअनुसारही ताकेभृत्य किसीकार्यकानिश्चय यकरैहैं ॥ ताधनीपुरुषकेनिश्चयतैंविना भृत्योंका स्वतंत्रकोईनिश्चय होवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! बाह्यकार्यविषे यद्यपि भृत्योंकूं धनीपुरुषकीपराधीनताहै तथापि ज्ञानरूपअंतरनिश्चयविषे तिनभृत्योंकूं धनीपुरुषकीअपेक्षासंभवैनहीं॥ समाधान॥ हेबालाकि! ज्ञानरूपअंतरनिश्चयकीउत्पत्तिविषे यद्यपि भृत्योंकूं धनीपुरुषकीअपेक्षानहीं ॥ तथापि धनीपुरुषकेनिश्चयतैंविना तिनभृत्योंकानिश्चय निष्फलहै॥ तात्पर्ययह॥ ज्ञानरूपनिश्चयतैं पुरुषोंकीकार्यविषेप्रवृत्तिहोवैहै ॥ साप्रवृत्ति धनीपुरुषकेनिश्चयतैंविना स्वतंत्र भृत्योंकीहोवैनहीं ॥ किंतु धनीपुरुषकेसंमतिकूंग्रहणकरिकैही भृत्योंकी किसीकार्यविषेप्रवृत्तिहोवैहै॥ तैसे ज्ञानरूपआत्माकाआश्रयकरिकैही संपूर्णवाकादिकदेवता तथाएकएकवाकादिक 'यहकार्य अवश्यकरणेयोग्यहै और यह कार्य नहीं करणेयोग्यहै और यहवचन कहणेयोग्यहै और यहवस्तु देखणेयोग्यहै' याप्रकार पदार्थोंकूंनिश्चयकरैहैं॥ ज्ञानस्वरूपआत्मातैंविना स्वतंत्रहुआ कोईभीवाकादिकदेवता किसीपदार्थकूंजानैंनहीं ॥ इहां दृष्टांततैंसिद्धांतविषे इतनीविशेषताहै ॥ दृष्टांतविषे धनीपुरुषकेज्ञानतैंभिन्नही भृत्योंकेज्ञानहोवैहै ॥ और सिद्धांतविषेतौ आत्माकेस्वरूपज्ञानतैंभिन्न कोईभीज्ञान वाकादिकइंद्रियोंविषे नहीं ॥ किंतु आत्मस्वरूपज्ञानही वाकादिकइंद्रियोंकरिकैयुक्तहुआ नानाभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं आत्माही ज्ञानस्वरूपहै॥ आत्मातैंभिन्न सर्वअनात्मपदार्थ जडहैं॥ और हेबालाकि! जैसे भोगकेसाधनताधनादिकपदार्थोंकरिकैयुक्त कोईकवैश्यपुरुष आपणेपुत्रोंकेसहित तथाभृत्योंकेसहित धनादिकपदार्थोंकूंभोगेहै॥ पुत्रादिकोंतैंविना अकेलाही सोवैश्यपुरुष धनादिकपदार्थोंकूंभोगैनहीं॥ जोअकेलाही सोवैश्यपुरुष धनादिकपदार्थोंकूंभोगै तौ ताकासर्वधन चौरलेजावै॥ यातैं सर्वभृत्योंसैंमिलिकै सोधनीवैश्य पदार्थोंकूंभोगेहै॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माभी वाकादिकदेवतावोंकेसहितही भोगोंकूंभोगेहै ॥ वाकादिकइंद्रियोंतैंविना केवलशुद्धआत्मा भोगोंकूंभोगैनहीं॥ और जैसे धनीवैश्यके पुत्रादिकबांधव तथाभृत्य ताधनीवैश्यतैंविना स्वतंत्र किसीपदार्थकूंनहींभोगते॥ किंतु ताधनीवैश्यकेसहितही पुत्रादिकबांधव भोगोंकूंभोगेहैं॥ तैसे वाकादिकभी आत्मातैंविना स्वतंत्र

होइके किसीपदार्थकूं भोगतेनहीं ॥ किंतु आत्माकेसाथमिलिकैही वाकादिक भोगोंकूंभोगेहैं ॥ इहांयहतात्पर्यहै ॥ सुखदुःखके अनुभवकानाम भोगहै ॥ सोभोग उपाधिरहितशुद्धआत्माविषे संभवैनहीं ॥ तैसे वाकादिकजडपदार्थोंविषेभी सोभोग संभवै नहीं ॥ किंतु अंतःकरणादिकउपाधियोंकरिकैयुक्तआत्माही भोगकाआश्रयहै ॥ वास्तवतैं कोई भोगकाआश्रयहैनहीं ॥ यातैं सो भोग मिथ्याहै ॥ और हेबालाकि! जोहृदयाकाश शुद्धआत्मारूपकरिकै हमनैं तुमारेतांई कथनकऱ्याहै सोईहीपरमात्मा यासर्व संघातकाअधिपतिहै ॥ और सोईहीपरमात्मा यासंघातकेसाथ तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहुआ बुद्धिमान्पुरुषोंकरिकैभी जानणेकूं अशक्यहै ॥ हेबालाकि! जोआत्मा दुर्विज्ञेयनहींहोता तौ सर्वशास्त्रकेजानणेहारेतुमारेकूं आत्माकेयथार्थस्वरूपविषे भ्रांतिनहींहो ती ॥ और पूर्वतुमनैं प्राणकूंही आत्मारूपकरिकै हमारेप्रति उपदेशकऱ्याहै ॥ यातैं यहतुमारीभ्रांतिही आत्माकेदुर्विज्ञेयताकूं बोधन करैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जबी यहआनंदस्वरूपआत्मा यासंघातविषे दुर्विज्ञेयहै ॥ तबी यासंघाततैंभिन्नअन्यकिसीस्थानविषे स्थित आत्माका हमारेप्रति उपदेशकरी ॥ तिसीस्थानविषेस्थितआत्माकूं मैंनिश्चयकरोंगा ॥ समाधान ॥ हेबालाकि! यासंघातकूं छोडिकै अन्यत्रस्थितआत्माकेजानणेविषे किंचित्मात्रभी तुम उत्साहकूं मतकरो ॥ किंतु यासंघातविषेही आत्माकेजानणेकाउत्सा ह तुमकरो ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अग्निकेउपलब्धिकास्थान जेकाष्ठहैं ॥ तिनकाष्ठोंकरिकैयुक्त अग्निकापरित्यागकरिकै काष्ठसंबंधतैंरहि तअग्निकेप्राप्तिकीइच्छा कोईभीबुद्धिमान्पुरुष करैनहीं ॥ तैसे आत्माकेउपलब्धिकास्थान जोयहसंघातहै ॥ तिससंघातकापरित्या गकरिकै अन्यदेशविषे आत्माकाअन्वेषणकरणा व्यर्थहै ॥ यातैं हेबालाकि! इसीशरीरविषे अंतःकरणादिकसर्वउपाधियोंतैंरहित कूटस्थआत्माकूं ब्रह्मरूपकरिकैनिश्चयकरो ॥ इसप्रकार अजातशत्रुराजा पूर्वउक्ततीनप्रश्नोंकेअर्थकूं विस्तारतैंनिरूपणकरताभया ॥ अब तिसीहीतीनप्रश्नोंकेअर्थकूं संक्षेपतैंनिरूपणकरै हैं॥ हेबालाकि! हृदयाकाशरूप जोसर्वकाआत्माहै ॥ सोआत्माही शयनकर्ता पुरुषका तथाशयनका आधारहै ॥ और सोईहीहृदयाकाशस्वरूपआत्मा शयनकर्तापुरुषके आगमनकाअवधिरूपहै ॥ और हे बालाकि! वाकादिककरणोंकालयरूपशयन दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ स्वप्नरूपशयन होवैहै ॥ और दूसरासुषुप्तिरूपशयन

बुद्धितैंविना संपूर्णवाकादिकहैं ॥ और दूसरेसुषुप्तिरूपशयनकाकर्ता बुद्धिहै ॥ और दो
होवैहै ॥ तहां प्रथम स्वप्नरूपशयनकाकर्ता बुद्धिसहितवाकादिकइंद्रियोंकासमूहहै ॥ यद्यपि पूर्वग्रंथविषे विग्यज्ञानमयभोक्ता शयनकाक
नोंप्रकारकेशयनतैं आगमनकर्ताभी बुद्धिसहितवाकादिकइंद्रियोंकासमूहहै ॥ और इहां बुद्धिकूं तथावाकादिकोंकूं शयनकाकर्तारूपकरिकैकथनकऱ्या ॥ यातैं पूर्व
र्ता तथाआगमनकाकर्ता कथनकरिआयेहैं ॥ और इहां बुद्धिकूं तथावाकादिकोंकूं शयनकाकर्तारूपकरिकैकथनकऱ्या ॥ काहेतैं? बुद्धिविशिष्टचैतन्यकानाम विज्ञानमयहै ॥
उत्तरग्रंथका विरोधप्रतीतहोवैहै ॥ तथापि विचार कियेतैं सोविरोध संभवैनहीं ॥ काहेतैं? बुद्धिविशिष्टचैतन्यकानाम विज्ञानमयहै ॥ याअभिप्रायकरिकैही इहांबुद्धिकूं
तहां चैतन्यअंशविषेतौ कर्तापणा संभवैनहीं ॥ किंतु परिशेषतैं बुद्धिविषेही कर्तापणासंभवैहै ॥ याअभिप्रायकरिकैही इहांबुद्धिकूं
शयनकाकर्ताकह्याहै ॥ यातैं पूर्वउत्तरग्रंथकाविरोधनहीं ॥ और हेबालाकि! प्राणरूपउपाधिविषे तथाप्रज्ञारूपउपाधिविषे जोहृद
याकाशरूपआत्मा तुमारेतांई हमनैं कथनकऱ्याहै ॥ इसीही प्राणप्रज्ञारूपउपाधियुक्तआत्माकूं पूर्वदेवराजइंद्र प्रतर्दनराजाकेतां
ई कथनकरताभयाहै ॥ और इसीही आत्माकेसाक्षात्कारकेप्रभावतैं सोदेवराजइंद्र तीनलोकोंकेउपद्रवकरणेहारेअसुरोंकूं हननक
र्ताभयाहै ॥ तथा नीतितैंरहितविश्वरूपादिकब्राह्मणोंकूं हननकर्ताभयाहै ॥ तथा वेदांतविचारतैंरहित अनंतसंन्यासियोंकूं हननक
र्ताभयाहै ॥ तथापि आत्मज्ञानकेप्रभावतैं देवराजइंद्रका रोममात्रभी छेदननहींहोताभया ॥ और इसीहीआत्माकेज्ञानकेप्रभावतैं
सोदेवराजइंद्र सर्वदेवतावोंकेमध्यविषे अत्यंतश्रेष्ठताकूंप्राप्तहोताभयाहै ॥ और युद्धादिककार्यविषे सोइंद्र किसीदेवताकीअपे
क्षाकूंनहींकरताभया ॥ किंतु बलनामाअसुरतैंआदिलैकेसर्वअसुरोंकूं अकेलाही सोइंद्र हननकरताभया ॥ याकारणतैं सर्वबल
वानोंविषे सोइंद्र प्रधानबलीहोताभया ॥ और सोदेवराजइंद्र आपणेतेजकरिकैविराजमानहोताभया ॥ याकारणतैं स्वराट् यासं
ज्ञाकूंप्राप्तहोताभया ॥ और शुभगुण तथाकीर्तिआदिकोंकरिकैयुक्तहुआ सोदेवराजइंद्र सर्वदेवतावोंका प्रधानहोताभया ॥ यातैं
हेबालाकि! जैसेअद्वितीयआत्माकेज्ञानकेप्रभावतैं देवराजइंद्र सर्वकास्वामीहोताभया तैसे इदानींकालविषेभी जोकोईपुरुष
याआनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानकूं विवेकादिकसाधनोंकरिकैसंपादनकरैगा ॥ सोपुरुषभी ताआत्मज्ञानकेप्रभावतैं सर्वजीवोंकास्वा
मीहोवैगा ॥ शंका ॥ हेभगवन्! पूर्वआपनैं यहकह्या ॥ जोदेवराजइंद्र आत्मज्ञानकेप्रभावतैं सर्वअसुरोंकूंजीतताभया ॥ सो संभवै

नहीं ॥ काहेतें? पुराणोंविषे असुरोंकरिकै इंद्रकापराजयभी बहुतवार कथनकऱ्याहै ॥ समाधान ॥ हेबालाकि! जबपर्यंत देवराजइं
द्र प्रजापतिकेउपदेशतैं आत्मज्ञानकूं नहींप्राप्तभयाथा ॥ तबपर्यंतही देवराजइंद्रकूंजीतिकरिकै असुर तीनलोकके अधिपतिहोतेभ
ये ॥ और प्रजापतिकेउपदेशतैं आत्मज्ञानकीप्राप्तिहुएतैंअनंतर सर्वअसुरोंकाहननकरिकै सोदेवराजइंद्रही तीनलोकका अधिपति
होताभया ॥ यातें हेबालाकि! याआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माकाज्ञानही सर्वतैंअधिकहै ॥ ताज्ञानकूंही पुरुषोंनैं यत्नकरिकैसंपादन
करणा ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! इसप्रकार कौषीतकीऋषि आपणेशिष्योंकेतांई ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै तूष्णींभावकूंप्राप्तहो
ताभया ॥ और ब्रह्मकेनिरूपणतैंअनंतर ताब्रह्मका अवश्यकहणेयोग्यजो सत्यकासत्यहै याप्रकारकागुह्यनाम ॥ तानामकूंअर्थसहि
त सोकौषीतकिऋषि आपणेशिष्योंकेतांई नहींकथनकरताभया ॥ किंतु याज्ञवल्क्यकेतपकरिकै संतोषकूंप्राप्तहुवासूर्यभगवान् या
ज्ञवल्क्यनामाशिष्यकेतांई सत्यकासत्यहै याप्रकारकेब्रह्मकेनामकूं अर्थसहितउपदेशकरताभया ॥ और कौषीतकिऋषितौ देवरा
जइंद्रतैंभयकूंप्राप्तहुआ संपूर्णब्रह्मविद्या आपणेशिष्योंकेतांई नहींउपदेशकरताभया ॥ किंतु चारिअध्यायरूपजोकौषीतकिउ
पनिषद्है ॥ तिसके प्रथमअध्यायविषे प्राणरूपपर्यंकविषेस्थितब्रह्मकीउपासनाकूं कथनकरताभया ॥ और द्वितीयअध्यायविषे
अंगोंसहितप्राणविद्याकूं कथनकरताभया ॥ और तृतीयअध्यायविषे इंद्रप्रतर्दनकेसंवादकरिकै निर्गुणब्रह्मविद्याकूं कथनकरता
भया ॥ और चतुर्थअध्यायविषे बालाकिअजातशत्रुकेसंवादकरिकै तिसीनिर्गुणब्रह्मविद्याकूं कथनकरताभया ॥ इतनीविद्या कौषी
तकिऋषि आपणेशिष्योंकेतांई उपदेशकरिकै इंद्रतैंभयकूंप्राप्तहुआ सोकौषीतकिऋषि विद्याउपदेशतैंउपरामहोताभया ॥ यहसं
पूर्णवार्ता चतुर्थअध्यायविषेकथनकरैंगे ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामिउद्धवानंदपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घ
नानंदगिरिणा विरचिते प्राकृताऽऽत्मपुराणे कौषीतकिसारार्थप्रकाशे बालाकिअजातशत्रुसंवादोनाम तृतीयोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ३ ॥

अथआत्मपुराणेस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां चतुर्थोऽध्यायप्रारंभः ॥ ४ ॥

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ अथ चतुर्थअध्यायप्रारंभः ॥ तहां प्रथमअध्यायविषे ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ और द्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअध्यायविषे ऋग्वेदकेकौषीतकिउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब सप्तअध्यायोंकरिकै यजुर्वेदकेउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकरैहैं ॥ तहां प्रथमबृहदारण्यकउपनिषदकेअर्थकूं चारिअध्यायोंकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ तहां पूर्वतृतीयअध्यायकेअंतविषे गुरुनैं शिष्यकेतांई यहअर्थकथनकऱ्या ॥ देवराजइंद्रतैंभयकूंप्राप्तहुआ कौषीतकिऋषि आपणेशिष्योंकेतांई संपूर्णब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकरताभया ॥ और सूर्यभगवान् याज्ञवल्क्यऋषिकेतांई संपूर्णब्रह्मविद्याकाउपदेश करताभया ॥ यहविचित्रकथा तृतीयअध्यायकेअंतविषे गुरुनैंकही ॥ तिसविचित्रवार्ताकूंश्रवणकरिकै शिष्य अतिविस्मयकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सूर्यभगवान्नैं याज्ञवल्क्यकेतांई उपदेशकरीजाब्रह्मविद्या ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेकी यद्यपि शिष्यकूंकामनाहै ॥ तथापि सोशिष्य अत्यंतबुद्धिमान्है ॥ यातें ताब्रह्मविद्याका साक्षात्प्रश्न नहींकरताभया॥ किंतु कौषीतकिऋषि इंद्रतैंभयकूंप्राप्तहोताभया॥ यावचनकूंश्रवणकरिकै संशययुक्तहुआशिष्य प्रथम कौषीतकिऋषिकेभयकाकारण पूछताभया॥ भयकेकारणपूछणेविषे शिष्यका यहगुह्यअभिप्रायहै ॥ जबी कौषीतकिऋषिकेभयकाकारण मैंपूछोंगा ॥ तबी कौषीतकिऋषिकेभयकेकारणकूं कथनकरतेहुए श्रीगुरु तासंपूर्णब्रह्मविद्याकूंभी कथनकरैंगे ॥ याअभिप्रायतें शिष्य प्रथम कौषीतकिऋषिकेभयकाकारण पूछताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् ! देवराजइंद्र ऐसाकौनक्रूरकर्म करताभया? ॥ जिसकारणतें कौषीतकिऋषिकूं इंद्रतैंभयहोताभया ॥ याविचित्रआख्यानकेश्रवणकरणेकीहमारेकूंइच्छाहै ॥ आप क्रियाकरिकै हमारेतांई कथनकरो ॥ इसप्रकार शिष्यकेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै श्रीगुरु वेदकेमंत्रोंकरिकैकथनकरीजा दध्यङ्अश्विन्का तथाइंद्रका परस्परसंवादरूपकथाहै ॥ तिसविचित्रकथाकेउपदेशकरणेवासते प्रथम ब्रह्मविद्याकेप्रवर्तक संपूर्णगुरुवोंकूं स्मरणकरताभया ॥ काहेतें? जैसेविवेकादिकसाधनचतुष्टय ब्रह्मविद्याश्रवणकेसाधनहैं ॥ तैसे ब्रह्मविद्याकेप्रवर्तकगुरुवोंकास्मरणभी पापरूपप्रतिबंधकीनिवृत्तिद्वारा ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकासाधनहै ॥ यातें ब्रह्मविद्याअध्ययनकालविषे ब्रह्मविद्याकेप्रवर्तकगुरुवोंकास्मरण मुमुक्षुजनोंनैं

अवश्यकन्याचाहिये ॥ तहां मधुकांडकेअंत्यविषे तथायाज्ञवल्क्यकांडकेअंतविषे पुरुषनामकरिकैंघटित ऋषियोंकेनाम कथनकरेहैं ॥ यातैं तिनदोनोंवंशोंकूं पुरुषवंश कहेहैं ॥ और खिलकांडकेअंत्यविषे स्त्रीनामकरिकैंघटित ऋषियोंकेनामहैं ॥ यातैं तावंशकूं स्त्रीवंशकहैहैं ॥ तहां मधुकांडविषे तथायाज्ञवल्क्यकांडविषे वर्तमान जेदोनोंपुरुषवंशहैं ॥ तथाखिलकांडविषे वर्तमान जोस्त्रीवंशहै ॥ यातीनवंशोंविषेवर्तमानऋषियोंका कोईकशास्त्रवाले भेदमानैहैं ॥ और कोईकशास्त्रवाले तिनोंकाअभेद मानैहैं ॥ ताभेदअभेददोनोंपक्षोंविषे अभेदपक्षहीश्रेष्ठहै ॥ काहेतें एकअद्वितीयब्रह्महीं गुरुमूर्तिकूंधारणकरिकै शिष्यकेतांई उपदेशकरैहै ॥ यहवेदांतशास्त्रकासिद्धांतहै ॥ यातैं अभेदपक्षकूंअंगीकारकरिकै प्रथम स्त्रीवंशविषेस्थितऋषियोंके परंपराकूंनिरूपणकरैहै ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! याजगत्विषे पौतिमाषीनामास्त्री ब्रह्मविद्याकेअधिकारीहमसर्वजनोंकीमाताहै ॥ काहेतें? जिसपौतिमाषीकापुत्र इसलोकविषे सर्वब्राह्मणोंकेतांई दुर्विज्ञेयब्रह्मविद्याकूं देताभयाहै ॥ सोकैसाहैपौतिमाषीकापुत्र? ॥ जिसकूंस्त्रीवंशविषे पौतिमाषीपुत्रकहैहैं ॥ और दोनोंपुरुषवंशविषे जिसकूं पौतिमाष्यकहेहैं ॥ हेशिष्य! यापौतिमाषीपुत्रतैंआदिलेके हिरण्यगर्भपर्यंतजितनेकी ब्रह्मविद्याकेप्रवर्तकगुरुहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकेनामोंकूं हम तुमारेतांई कथनकरैहैं ॥ तिनब्रह्मवेत्ताऋषियोंकेनामश्रवणतैं तथानामस्मरणतैं ब्रह्मविद्याकेप्रतिबंधक संपूर्णपापकर्मोंका नाशहोवैगा ॥ तिसतैंअनंतर संपूर्णवेदांतअर्थकेजानणेविषे तू समर्थहोवैगा ॥ यहवार्ता साक्षात्श्रुतिविषेभीकहीहै ॥ श्लोक ॥ यस्यदेवेपराभक्तिः यथादेवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाः प्रकाशंते महात्मनः ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ जिसपुरुषकी विष्णुतथामहादेवआदिकदेवतावोंविषे परमभक्तिहै ॥ और जैसे देवतावोंविषेपरमभक्तिहै तैसीही ब्रह्मविद्याकेदातागुरुविषे परमभक्तिहै ॥ तिसमहात्मापुरुषकीबुद्धिविषे वेदांतकरिकैप्रतिपादनकरेअर्थ आरूढहोवैहैं ॥ जिसपुरुषकी देवतावोंविषे तथागुरुविषे परमभक्तिनहींहै ॥ तिसपुरुषकीबुद्धिविषे वेदांतकेअर्थ आरूढहोवैंनहीं ॥ यातैं मुमुक्षुपुरुषनैं अवश्य गुरुकीभक्तिकरणी ॥ अथ वंशावलीवर्णनं ॥ हेशिष्य! सोपौतिमाषीपुत्रनामाऋषि कात्यायनीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसीकात्यायनीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे गौपवनकहेहैं ॥ और सोकात्याय

नीपुत्र गौपवननामाऋषि भारद्वाजीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसीभारद्वाजीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवं
शविषे पौतिमाष्यकहैहैं ॥ यहपौतिमाष्य पूर्वपौतिमाष्यतैंभिन्नजानणा ॥ और सोभारद्वाजीपुत्र पौतिमाष्यनामाऋषि पा
राशरीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसीपाराशरीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे गौपवनकहैहैं ॥ यहगौपवन
भी पूर्वगौपवनतैंभिन्नजानणा ॥ और सोपाराशरीपुत्र गौपवननामाऋषि औपस्वस्तीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्त
होताभया ॥ तिसीऔपस्वस्तीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे कौषिक कहैहैं ॥ और सोऔपस्वस्तीपुत्र कौषिकनामाऋषि
पाराशरीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ यहपाराशरीपुत्रनामाऋषिभी पूर्वपाराशरीपुत्रतैंभिन्नजानणा ॥ ति
सपाराशरीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे कौंडिन्यकहैहैं ॥ और सोपाराशरीपुत्रकौंडिन्यनामाऋषि कौशिकीपुत्रनामाऋषि
तैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसीकौशिकीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे शांडिल्यकहैहैं ॥ और सोकौशिकीपुत्र शांडि
ल्यनामाऋषि आलंबीपुत्रनामाऋषि तथावैयाघ्रीपुत्रनामाऋषि यादोनोंगुरुवोंतैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसीआलं
बीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे कौशिककहैहैं ॥ और तिसीव्याघ्रीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे गौतमकहैहैं ॥ और तिनदो
नोंविषे आलंबीपुत्र कौशिकनामाऋषितौ साक्षात्ब्रह्मातैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और दूसराव्याघ्रीपुत्र गौतमनामाऋषि
कापीपुत्रनामाऋषि तथाकाण्वीपुत्रनामाऋषि यादोनोंगुरुवोंतैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसकापीपुत्रनामाऋषिकूं पु
रुषवंशविषे अग्निवेश्यकहैहैं ॥ काण्वीपुत्रनामाऋषिका पुरुषवंशविषे समानसंख्यावालाकोईनामहैनहीं यातैंलिख्यानहीं ॥
और तिनदोनोंविषे काण्वीपुत्रनामाऋषितौ साक्षात्ब्रह्मातैंही ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और दूसरा कापीपुत्र अग्निवेश्य
नामाऋषि आत्रेयीपुत्रनामाऋषितैं तथाशांडिल्यनामाऋषितैं यादोनोंगुरुवोंतैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसआत्रेयीपुत्रना
माऋषिकूं पुरुषवंशविषे अनभिम्लातकहैहैं ॥ शांडिल्यनामाऋषिकेअभेदकाबोधककोईनाम स्त्रीवंशविषे हैनहीं ॥ यातैं नहीं
कथनकऱ्या ॥ और तिनदोनोंविषे शांडिल्यनामाऋषितौ साक्षात्ब्रह्मातैंही ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और दूसरा आ

त्रेयीपुत्र अनभिम्लाननामाऋषि गौतमीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसगौतमीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंश विषे अनभिम्लातकहेहैं ॥ और सोगौतमीपुत्र अनभिम्लातनामाऋषि भारद्वाजीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसभारद्वाजीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे गौतम कहेहैं ॥ और सोभारद्वाजीपुत्र गौतमनामाऋषि पाराशरीपुत्रनामादोऋषि योंतें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिनदोनोंऋषियोंकूं पुरुषवंशविषे एककूं सैतव कहेहैं ॥ और दूसरेकूंप्राचीनयोग्य कहेहैं ॥ और सोपाराशरीपुत्र सैतवनामाऋषि तथाप्राचीनयोग्यनामाऋषि येदोनोंभ्राता वात्सीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोते भये ॥ तिसवात्सीपुत्रनामाऋषिकूं मधुकांडविषेस्थितपुरुषवंशविषे पाराशर्यकहेहैं ॥ और याज्ञवल्क्यकांडविषेस्थितपुरुषवंशवि षे पाराशर्यायणकहेहैं ॥ और सोवात्सीपुत्र पाराशर्यायणनामाऋषि पाराशरीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसपाराशरीपुत्रनामाऋषिकूं ॥ मधुकांडविषे भारद्वाजकहेहैं ॥ और याज्ञवल्क्यकांडविषे गार्ग्यायणकहेहैं ॥ और सोपाराशरीपुत्र भारद्वाजनामाऋषि वार्कारुणीपुत्रनामाऋषि तथागौतम यादोनोंगुरुवोंतें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसवार्कारुणीपुत्रनामाऋषिकूं याज्ञवल्क्यकांडविषे उद्दालकायनकहेहैं और मधुकांडविषे भारद्वाजकहेहैं ॥ तिनदोनोंविषे वार्कारुणीपुत्र भारद्वाजनामाऋषितो साक्षात्ब्रह्मातेंही ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और दूसरागौतमनामाऋषि द्वितीयवार्कारुणीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसवार्कारुणीपुत्रनामाऋषिकूं याज्ञवल्क्यकांडविषे जाबालायनकहेहैं ॥ और मधुकांडविषे भारद्वाज कहेहैं ॥ और सोवार्कारुणीपुत्र भारद्वाजनामाऋषि आर्तभागीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसआर्तभागीपुत्र नामाऋषिकूं याज्ञवल्क्यकांडविषे मध्यंदिनायनकहेहैं ॥ और मधुकांडविषे पाराशर्यकहेहैं ॥ और सोआर्तभागीपुत्र माध्यंदिनायननामाऋषि शौंगीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसशौंगीपुत्रनामाऋषिकूं याज्ञवल्क्यकांडविषे सौकरायणकहेहैं ॥ और सोशौंगीपुत्र सौकरायणनामाऋषि सांकृतीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिससांकृतीपुत्रनामाऋषिकूं याज्ञवल्क्यकांडविषे काषायणकहेहैं ॥ और सोसांकृतीपुत्र काषायणनामाऋषि आलंबाय

नीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसआलंबायनीपुत्रनामाऋषिकूं याज्ञवल्क्यकांडविषे सायकायनकहेहैं ॥ औ
र मधुकांडविषे वैजपायनकहेहैं ॥ और सोआलंबायनीपुत्र वैजपायननामाऋषि आलंबीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहो
ताभया ॥ तिसआलंबीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे कौशिकायनि कहेहैं ॥ और सोआलंबीपुत्र कौशिकायनिनामाऋषि
जायंतीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसजायंतीपुत्रनामाऋषिकूं दोनोंपुरुषवंशोंविषे घृतकौशिककहेहैं ॥ औ
र सोजायंतीपुत्र घृतकौशिकनामाऋषि मांडूकायनीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसमांडूकायनीपुत्रनामाऋ
षिकूं पुरुषवंशविषे पाराशर्यायणकहेहैं ॥ और सोमांडूकायनीपुत्र पाराशर्यायणनामाऋषि मांडूकीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूं
प्राप्तहोताभया ॥ तिसमांडूकीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे पाराशर्यकहेहैं ॥ और सोमांडूकीपुत्र पाराशर्यनामाऋषि शांडिली
पुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसशांडिलीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे जातूकर्ण्यकहेहैं ॥ और सोशांडिलीपुत्र
जातूकर्ण्यनामाऋषि राथीतरीपुत्रनामाऋषि तथायास्कनामाऋषि यादोनोंगुरुवोंतें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसराथीतरी
पुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे आसुरायणकहेहैं ॥ तिनदोनोंविषे यास्कनामाऋषितो साक्षात्‌ब्रह्मातेंही ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥
और दूसरा राथीतरीपुत्र आसुरायणनामाऋषि भाल्लुकीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसभाल्लुकीपुत्रनामा
ऋषिकूं पुरुषवंशविषे त्रैवणिकहेहैं ॥ अब स्त्रीवंशविषेवर्तमान जेअधिकषट्‌ऋषिहैं तिनोंका आसुरायणऋषिविषेअंतरभावकूं
दिखावैहैं ॥ सोभाल्लुकीपुत्र त्रैवणिनामाऋषि क्रौंचकीपुत्रनामादोनोंऋषियोंतें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तेक्रौंचकीपुत्रना
मादोनोंऋषि वैदभृतीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोतेभये ॥ और सोवैदभृतिपुत्रनामाऋषि कार्षकेयीपुत्रतें ब्रह्मविद्याकूंप्रा
प्तहोताभया ॥ और सोकार्षकेयीपुत्रनामाऋषि प्राचीनयोगीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोप्राचीनयोगीपु
त्रनामाऋषि सांजीवीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोसांजीवीपुत्रनामाऋषि प्राश्नीपुत्रनामाऋषितें ब्रह्म
विद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ कैसाहैसोप्राश्नीपुत्रनामाऋषि? स्त्रीवंशकेअंतविषेस्थितहै ॥ और आसुरिनामादेशविषेरहणेतें अथवा

आसुरिनामागुरुकेसमीपरहणेतें जिसप्राश्नीपुत्रनामाऋषिकूं आसुरिवासीकहैहैं ॥ और सोप्राश्नीपुत्रनामाऋषि पूर्वउक्तराथीतरी पुत्रआसुरायणनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥ कैसाहैसोआसुरायणनामाऋषि? पूर्वउक्त जातुकर्ण्यनामाऋषिकातौगुरुहै॥ और त्रैवणिनामाऋषिकाशिष्यहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! त्रैवणिनामाऋषिकेगुरुवोंकीपरंपराविषेवर्तमान प्राश्नीपुत्रनामाऋषि त्रैवणिनामाऋषिकेशिष्यआसुरायणनामाऋषितें किसप्रकार ब्रह्मविद्याकूंग्रहणकरताभया ॥ आपणेशिष्यकेभीशिष्यतें विद्याकाग्रहण करणा संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ आपणेशिष्यकेभीशिष्यतें यद्यपि विद्याकाअध्ययनकरणा असंगतहै ॥ तथापि किसीनिमित्तकरिकै पूर्वअध्ययनकरीविद्याकेविस्मरणहुए तथासंशयकेउत्पन्नहुए पुनःविद्याकाअध्ययन प्रसिद्धदेख्याहै ॥ और महाभारतकेगदापर्वविषेभी यहवार्ताप्रसिद्धहै ॥ तहांयहकह्याहै ॥ एककालविषे द्वादशवर्षपर्यंत दुर्भिक्षपडाथा ॥ तादुर्भिक्षकरिकै संपूर्णब्राह्मणोंकी विद्या विस्मरणहोतीभयी ॥ और सरस्वतीकीकृपाकरिकै एकसारस्वतनामाब्राह्मणकूं विद्याकाविस्मरण नहींहोताभया ॥ और दुर्भिक्षकेनिवृत्तहुए पुनःतेसंपूर्णब्राह्मण तासारस्वतनामाब्राह्मणतें विद्याकूंअध्ययनकरतेभये ॥ इसप्रकार विद्याकेविस्मरणहुए पुनः विद्याकाअध्ययन संभवैहै ॥ और सोपूर्वउक्तआसुरायणनामाऋषिकागुरु त्रैवणिनामाऋषि औपजंधनिनामाऋषितेंभी ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोऔपजंधनिनामाऋषि आसुरिनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥ सोकैसाहैआसुरिनामाऋषि? ॥ तिनवंशोंविषे जिसकासमानरूपहै ॥ और जिसआसुरिनामाऋषितेंलैके नीचैनीचै जोनानाप्रकारऋषियोंकेवंशकाभेदहै ॥ सोवंशकाभेद किसीपुरुषकरिकैभीसमाधानकरणेकूंअशक्यहै ॥ तात्पर्ययह ॥ पौतिमाषीपुत्रनामाऋषितेंलैके आसुरिनामाऋषिपर्यंतऋषियोंकेनामोंकीविलक्षणतादेखिकै तथासंख्याकीविलक्षणतादेखिकै कोईकशास्त्रवाले स्त्रीवंशकूंभिन्नहीअंगीकारकरैहैं ॥ और कोईकशास्त्रवाले महात्मापुरुष बहुतस्थानविषे नामोंकीसमानताकूंदेखिकरिकै स्त्रीवंशकूं भिन्नमानेनहीं ॥ किंतु अभिन्नमानैहैं ॥ तैसे दोनोंपुरुषवंशविषेभी कोईकशास्त्रवालेपुरुष अग्निवेश्यनामाऋषितेंलैके कौशिकायनिनामाऋषिपर्यंत परस्परनामोंकीविलक्षणताकूंदेखिकै भेदही अंगीकारकरैहैं ॥ और अग्निवेश्यनामाऋषितें पूर्वविद्यमानजेऋषिहैं ॥ तथा कौशिकायनिनामाऋषितें परेविद्य

मानजेऋषिहैं तिनोंकातौ परस्परअभेदहीअंगीकारकरैहैं ॥ और कोईकशास्त्रवालेपुरुषतौ सर्वत्र अभेदहीअंगीकारकरैहैं ॥ का
हेतें? एकहीऋषिके नानाप्रकारकेनामसंभवैहैं ॥ नामोंकेभेदकूंदेखिकै ऋषियोंकाभेदमानणा निष्फलहै ॥ किंवा ॥ तिनवंशोंका पर
स्परभेदअंगीकारकरिये ॥ अथवा अभेदअंगीकारकरिये ॥ सर्वप्रकारकरिकै आसुरिनामाऋषिविषे स्त्रीवंशका तथादोनोंपुरुषवंश
का अभेदहीसिद्धहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ आसुरिनामाऋषितैंपूर्व तीनोंवंशोंविषेभेदका तथाअभेदका विवादहै ॥ आसुरिनामाऋषि
तैंअनंतर केवलअभेदहीहै ॥ इसप्रकार स्त्रीवंशकूंनिरूपणकरिकै अब दोनोंपुरुषवंशोंकूं निरूपणकरैहैं ॥ तहां सोआसुरिनामाऋषि
भारद्वाजनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोभारद्वाजनामाऋषि आत्रेयनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥
और सोआत्रेयनामाऋषि मांटिनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोमांटिनामाऋषि गौतमनामाऋषितैं ब्रह्मविद्या
कूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोगौतमनामाऋषि दूसरेगौतमनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोदूसरा गौतमनामा
ऋषि वात्स्यनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोवात्स्यनामाऋषि शांडिल्यनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभ
या ॥ और सोशांडिल्यनामाऋषि कैशोर्यकाप्यनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोकैशोर्यकाप्यनामाऋषि कुमार
हारितनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोकुमारहारितनामाऋषि गालवनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥
और सोगालवनामाऋषितैं विदर्भीकौंडिन्यनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोकौंडिन्यनामाऋषि वात्सनेयाद्वाभ्र
वनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोवात्सनेयाद्वाभ्रवनामाऋषि पथिनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥
तिसपथिनामाऋषिकूं सौभरिभीकहैहैं ॥ और सोसौभरिपथिनामाऋषि अपास्यांगिरसनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥
और सोअपास्यांगिरसनामाऋषि त्वाष्ट्रआभूतिनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोत्वाष्ट्रआभूतिनामाऋषि त्वाष्ट्र
विश्वरूपनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोत्वाष्ट्रविश्वरूपनामाऋषि अश्विन्नामादोऋषियोंतैंब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहो
ताभया ॥ जिनअश्विन्नामाऋषियोंकेविद्याउपदेशरूपनिमित्ततैं देवराजइंद्र दध्यङ्अथर्वणनामाऋषिऊपरि क्रोधकूंकरताभया ॥

और तेअश्विन्नामादोनोंऋषि दध्यङ्अथर्वणनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोतेभये ॥ कैसाहैसोदध्यङ्अथर्वणनामाऋषि ? ॥ देव
राजइंद्रकाभीगुरुहै ॥ और सोदध्यङ्अथर्वणनामाऋषि दैवआथर्वणनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ औरसोदैवआथर्व
णनामाऋषि प्राध्वंसनमृत्युनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोप्राध्वंसनमृत्युनामाऋषि प्रध्वंसननामाऋषितें ब्रह्म
विद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोप्रध्वंसननामाऋषि एकर्षिनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोएकर्षिनामाऋषि विप्र
चित्तिनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोविप्रचित्तिनामाऋषि व्यष्टिनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ औ
र सोव्यष्टिनामाऋषि सनारुनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोसनारुनामाऋषि सनातननामाऋषितें ब्रह्मविद्या
कूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोसनातननामाऋषि सनकनामाऋषितें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोसनकनामाऋषि विराट्
भगवान्तें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोविराट्भगवान् हिण्यगर्भतें ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसहिरण्यगर्भतेंआ
गे कोईब्रह्मविद्याकावक्तानहीं ॥ किंतु हिरण्यगर्भही सर्वकालअबाधिरूपहै ॥ तिसहिरण्यगर्भकेतांई सर्वदा हमारानमस्कारहै ॥ कै
साहैसो हिरण्यगर्भ ? ॥ संपूर्णजगत्का तथावेदरूपवृक्षका मूलरूपहै ॥ इसप्रकार स्त्रीवंशकेसाथ पुरुषवंशकाअभेद अंगीकारकरिकै
पुरुषवंशकानिरूपणकऱ्या ॥ अब भेदपक्षकूंअंगीकारकरिकै स्त्रीवंशकानिरूपणकरै हैं ॥श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ! दोनोंपुरुषवंशोंविषे
ऋषियोंकेनामोंकीसमानता बहुतस्थानविषेदेखीतीहै ॥ यातें दोनोंपुरुषवंशोंका यद्यपि अभेदसंभवैहै तथापि स्त्रीवंशविषे ऋषि
योंकेसंख्याकाभेद देखीताहै ॥ तथा प्रकरणकाभी भेददेखिताहै ॥ तथा तीनऋषियोंकेनामोंकीभी विलक्षणतादेखीतीहै ॥ यातें
स्त्रीवंशकाभेदही हमारेचित्तविषे प्रतीतहोवैहै ॥ यातें ताभेदपक्षकूंअंगीकारकरिकै अब स्त्रीवंशकानिरूपण तेरेतांई हम करैहैं ॥
तिसकूं तुम श्रवणकरो ॥ पूर्व अभेदपक्षकूंअंगीकारकरिकै पौतिमाष्यनामाऋषितेंलैके उत्तरउत्तर आसुरिनामाऋषिपर्यंत
स्त्रीवंशकानिरूपणकऱ्या ॥ अब ब्रह्मातेंलैके नीचैनीचै ऋषियोंकेनामोंकूं निरूपणकरैहैं ॥ हे शिष्य! पूर्व पुरुषवंशकेअंत्यविषे
कथनकऱ्याजोस्वयंभूब्रह्मा तिसब्रह्मातें विराट्भगवान् ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसविराट्भगवान्तें कावषेयना

माऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसकावषेयनामाऋषिकूं तुरभीकहेहैं ॥ और तिसतुरनामाकावषेयऋषितें यज्ञवचस्ना
मा राजस्तंबायनऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसयज्ञवचस्नामाऋषितें कुश्रिनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥
और तिसकुश्रिनामाऋषितें वात्स्यनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसवात्स्यनामाऋषितें शांडिल्यनामाऋषि
ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसशांडिल्यनामाऋषितें वामकक्षायणनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसवा
मकक्षायणनामाऋषितें माहित्थिनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसमाहित्थिनामाऋषितें कौत्सनामाऋषि ब्रह्म
विद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसकौत्सनामाऋषितें मांडव्यनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसमांडव्यनामाऋषितें
मांडूकायनिनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसमांडूकायनिनामाऋषितें सांजीवीपुत्रनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहो
ताभया ॥ तिससांजीवीपुत्रनामाऋषितेंलेकै नीचेनीचे पौतिमाषीपुत्रपर्यंत जोशिष्योंकीपरंपरा पूर्वकथनकरिआयेहैं सोईहीपरं
परा इहां सांजीवीपुत्रतेंनीचेनीचेजानणी ॥ परंतु पूर्व तैंयहां इतनाभेदहै ॥ पूर्व स्त्रीनामकरिकैअघाटितजे पौतिमाष्य तथागौपवना
दिक नामहैं॥ तिननामोंकापरित्यागकरिकै तथापूर्वउक्तआसुरायणऋषिविषै अंतर्भावकापरित्यागकरिकै अन्यसंपूर्णशिष्योंकीपरंप
रा पूर्वकीन्यांई जानणी ॥ यातें हेशिष्य! पौतिमाषीपुत्रनामाऋषितेंआदिलैके जितनेऋषि स्त्रीवंशविषैविद्यमानहैं तिनसर्वऋ
षियोंका आद्यगुरु स्वयंभूब्रह्माहै ॥ ताब्रह्माकूंही हिरण्यगर्भकहेहैं ॥ और कोईकबुद्धिमान्पुरुष सूर्यभगवान्कूंभी स्त्रीवंशका आ
द्यगुरुकहेहैं ॥ यातें हेशिष्य! तिसप्रक्रियाकूंभी हम तुमारेतांई कथनकरेहैं ॥ तुम श्रवणकरो ॥ सोकैसाहैसूर्यभगवान्? जिससूर्यभ
गवान्कातेज मुमुक्षुजनोंनें सर्वदा ध्यानकरणेयोग्यहै ॥ और जोसूर्यभगवान् हमजीवोंकेअंतरस्थितहोइकै बुद्धिकेसंपूर्णवृत्तियोंकूं
धर्मादिकोंविषै प्रवृत्तकरैहै ॥ और जोसूर्यभगवान् मायाविशिष्टईश्वरस्वरूपहै ॥ तथा हिरण्यगर्भस्वरूपहै ॥ तथा वैश्वानरस्वरूप
है ॥ और जोसूर्यभगवान् भूमिलोक अंतरिक्षलोक स्वर्गलोक यहतीनलोकस्वरूपहै ॥ तथा ऋग् यजुष् साम यहतीनवेदस्वरूपहै ॥
तथा जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यहतीनअवस्थास्वरूपहै ॥ तथा ब्रह्मा विष्णु महादेव यहतीनदेवतास्वरूपहै ॥ और जोसूर्यभगवान्

प्रणवकाअर्थस्वरूपहै ॥ ऐसेसूर्यभगवान्तैं अंभिणीनामादेवता ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसअंभिणीनामादेवतातैं वाक् देवता ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसवाक्देवतातैं कश्यपनामानैध्रुविऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसनैध्रुविक श्यपनामऋषितैं शिल्पनामाकश्यपऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसशिल्पकश्यपनामाऋषितैं हरितकश्यपनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसहरितकश्यपनामाऋषितैं वार्षगणनामा असितऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसवार्षगणअसितनामाऋषितैं जिह्वावान्नामा बाध्योगऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसजिह्वावान्बाध्योगनामाऋषितैं वाजश्रवस्नामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसवाजश्रवस्नामाऋषितैं कुश्रिनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और कुश्रिनामाऋषितैं उपवेशिनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसउपवेशिनामाऋषितैं अरुणनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ औरतिसअरुणनामाऋषितैं उद्दालकनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसउद्दालकनामाऋषितैं याज्ञवल्क्यनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसयाज्ञवल्क्यनामाऋषितैं आसुरिनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसआसुरिनामाऋषितैं आसुरायणनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसआसुरायणनामाऋषितैंप्राश्नीपुत्रनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसप्राश्नीपुत्रनामाऋषितैं सांजीवीपुत्रनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ सोसांजीवीपुत्रनामाऋषि पूर्वब्रह्मातैंप्रवर्तभईवंशविषे मांडूकायनिनामाऋषिका शिष्यरूपकरिकैकथनकर्याथा ॥ इस प्रकार प्राचीनयोगीपुत्रनामऋषितैंआदिलैकै पौतिमाषीपुत्रनामाऋषिपर्यंत स्त्रीनामघटितनामोंकरिकै जेजेऋषिपूर्वनिरूपणकरथे तेसंपूर्णऋषि पुरुषनामतैंरहितहुए सांजीवीपुत्रनामाऋषिके शिष्यपरंपराविषेजानणे ॥ इसप्रकार सूर्यभगवान्तैं निर्गमनभईजोब्रह्मविद्या तथा स्वयंभूब्रह्मातैंनिर्गमनभईजोब्रह्मविद्या तेदोनोंप्रकारकीब्रह्मविद्या सांजीवीपुत्रनामाऋषिविषे एकभावकूं प्राप्तहोतीभई ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पर्वतकेदोशृंगोंतैं निर्गमनभयेजोनदीकेदोप्रवाह ते किंचित्दूरजाइकै एकताकूंप्राप्तहोवैहैं तैसे सूर्यभगवान्तैं तथाब्रह्मातैं निर्गमनभई जेब्रह्मविद्यारूपदोनदी तेदोनोंप्रकारकीब्रह्मविद्या सांजीवीपुत्रनामाऋषिकूंप्राप्तहो

इके एकभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ब्रह्मातैंलैके तथासूर्यभगवान्तैंलैकै सांजीवीपुत्रपर्यंत दोप्रकारकेशिष्यपरंपराकूं ब्रह्मविद्याप्राप्तहोवैहै ॥ और सांजीवीपुत्रतैंलैकै नीचेनीचे एकप्रकारकेशिष्यपरंपराकूं ब्रह्मविद्याप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार भेदपक्षकूंअंगीकारकरिकै स्त्रीवंशकानिरूपणकऱ्या ॥ अब तिसीभेदपक्षकूंअंगीकारकरिकै दोनोंपुरुषवंशोंकी जितनीअंशविषे समानरूपताहै तथा जितनीअंशविषे तिनोंकीविलक्षणताहै तिनदोनोंकूं निरूपणकरैहैं ॥ तहां बृहदारण्यकउपनिषद्के तृतीयचतुर्थअध्यायरूपमधुकांडविषे तथाबृहदारण्यकउपनिषद्के पंचमषष्ठअध्यायरूपयाज्ञवल्क्यकांडविषे पौतिमाष्यनामाऋषितैंआदिलैके स्वयंभूब्रह्मापर्यंत बहुतस्थानविषे पुरुषवंशकीसमानरूपतानहीं देखीहै ॥ और आग्निवेश्यनामाऋषिके तथाकौशिकायननामाऋषिके मध्यवर्तिजेऋषिहैं तिनऋषियोंविषे समानरूपताहैनहीं ॥ किंतु विलक्षणताहै ॥ तहां प्रथम मधुकांडविषे विलक्षणताकूंनिरूपणकरैहैं ॥ आग्निवेश्यनामाऋषिके दोगुरुहोतेभये ॥ एकतौ शांडिल्यनामाऋषि और दूसरा अनभिम्लातनामाऋषि ॥ तिनदोनोंविषे अनभिम्लातनामाऋषिका अन्यअनभिम्लातनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसदूसरे अनभिम्लातनामाऋषिका तृतीयअनभिम्लातनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसतृतीयअनभिम्लातनामाऋषिका गौतमनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसगौतमनामाऋषिके सैतवनामाऋषि तथाप्राचीनयोग्यनामाऋषि येदोनोंगुरुहोतेभये ॥ और सैतव तथाप्राचीनयोग्यनामादोनोंऋषियोंका पाराशर्यनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसपाराशर्यनामाऋषिका भारद्वाजनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसभारद्वाजनामाऋषिके द्वितीयभारद्वाजनामाऋषि तथागौतमनामाऋषि दोनों गुरुहोतेभये ॥ तिनदोनोंऋषियोंविषे गौतमनामाऋषिका अन्यभारद्वाजनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसभारद्वाजनामाऋषिका अन्यपाराशर्यनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसपाराशर्यनामाऋषिका वैजपायननामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसवैजपायननामाऋषिका कौशिकायनिनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ इसप्रकार मधुकांडविषे आग्निवेश्यनामाऋषितैंलैकै कौशिकायनिनामाऋषिपर्यंत विलक्षणताकथनकरी ॥ अब याज्ञवल्क्यकांडविषे ताविलक्षणताकूंनिरूपणकरैहैं ॥ तहां अग्निवेश्यनामाऋषिका गार्ग्यनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिस

गार्ग्यनामाऋषिका दूसरागार्ग्यनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसदूसरेगार्ग्यनामाऋषिका गौतमनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसगौतमनामाऋषिका सैतवनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिससैतवनामाऋषिका पाराशर्यायणनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसपाराशर्यायणनामाऋषिका गार्ग्यायणनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसगार्ग्यायणनामाऋषिका उद्दालकायननामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसउद्दालकायननामाऋषिका जाबालायननामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसजाबालायननामाऋषिका माध्यंदिनायननामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसमाध्यंदिनायननामाऋषिका सौकरायणनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिससौकरायणनामाऋषिका काषायणनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसकाषायणनामाऋषिका सायकायननामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिससायकायननामाऋषिका कौशिकायनिनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ हेशिष्य! मधुकांडविषे स्थितपुरुषवंशविषे तथायाज्ञवल्क्यकांडविषेस्थितपुरुषवंशविषे इतनीहीविलक्षणताहै ॥ ताविलक्षणताकूंदेखिकरिकै कोईकविद्वान्पुरुष तिनदोनोंपुरुषवंशोंकेभेदकूंही अंगीकारकरैहैं ॥ और कोईकविद्वान्पुरुष याप्रकार अंगीकार करैहैं ॥ मधुकांडकेअंतविषे तथा याज्ञवल्क्यकांडकेअंतविषे तथाखिलकांडकेअंतविषे एकहीवंशकानिरूपणकन्याहै ॥ परंतु मधुकांडादिरूपउपाधिकेभेदकरिकै वंशकाभेद प्रतीतहोवैहै ॥ वास्तवतैं वंशकाभेदनहीं॥ और कोईकविद्वान्पुरुष कल्पकेभेदतैंवंशकाभेद अंगीकारकरैहैं ॥ और वेदकेअर्थकूंयथार्थजानणेहारे जेश्रीशंकराचार्यादिकहैं तेतौ सर्वप्रकार तिनवंशोंकाअभेदही अंगीकारकरैहैं॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोतिनवंशोंका सर्वथाअभेदहीहोवै तौ एकवारकथनतैंहीप्रतिबंधकेनिवृत्तिद्वारा विद्याकीप्राप्तिरूपफलकासंभवहोइसकैहै ॥ तीनवारवंशकाकथन निष्फलहै ॥ समाधान ॥ तीनवारवंशकाकथननिष्फलनहीं किंतु सफलहै ॥ काहेतें? जैसे एकहीप्राण ज्येष्ठरूपकरिकैआराधनकन्याहुआ तथाश्रेष्ठरूपकरिकैआराधनकन्याहुआ भिन्नभिन्नफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे एकहीऋषियोंकावंश मधुकांडविषे स्थितनामोंकरिकैस्मरणकन्याहुआ मधुविद्याकेप्रतिबंधकपापकर्मकीनिवृत्तिद्वारा मधुविद्यारूपफलकीप्राप्तिकरै है ॥ और सोईहीऋषियोंकावंश याज्ञवल्क्यकांडविषेस्थितनामोंकरिकैस्मरणकन्याहुआ याज्ञवल्क्यविद्याकेप्रतिबंधकपापकर्मोंकीनिवृत्तिद्वारा याज्ञ

वल्क्यविद्यारूपफलकीप्राप्तिकरै है ॥ और सोईहीऋषियोंकावंश खिलकांडविषेस्थितनामोंकरिकैस्मरणकऱ्याहुआ सर्वविद्याकेप्र
तिबंधकपापकर्मकीनिवृत्तिद्वारा सर्वविद्यारूपफलकीप्राप्तिकरै है ॥ यातैं तीनोंकांडविषे ऋषियोंकेनामोंकाभेदहै ॥ ऋषियोंकेस्वरू
पविषेभेदनहीं ॥ किंवा ॥ स्त्रीवंशविषे जोपूर्व किंचित्मात्रविलक्षणता कथनकरिआयेहैं ॥ साविलक्षणताभी भेदकाकारणहोवैनहीं ॥
काहेतैं? जैसे दोनोंपुरुषवंशविषे अग्निवेश्यनामाऋषिके तथाकौशिकायनिनामाऋषिके मध्यवर्तिऋषियोंकेजोनामोंकाभेदहै ॥
सोभेद दोनोंपुरुषवंशकेभेदकूं उत्पन्नकरैनहीं ॥ तैसे कहांन्यूनऋषियोंकाकथन औरकहांअधिकऋषियोंकाकथन और कहांदोगुरुवों
काकथन औरकहांब्रह्मातथासूर्यरूपदोसंप्रदायोंकाकथन ॥ यहसर्वप्रकारकीविलक्षणताभी स्त्रीवंशकेभेदकूंसिद्धकरैनहीं ॥ किंवा ॥
ब्रह्मविद्याकाप्रवर्तक जोसूर्यभगवान्है सो स्वयंभूब्रह्मातैंभिन्ननहीं ॥ तैसेस्वयंभूब्रह्मातैं विराट्भगवान् वास्तवतैंभिन्ननहीं ॥
तैसे विराट्भगवान्तैं ऋषि वास्तवतैं भिन्ननहीं ॥ किंतु उपाधिकरिकैतिनोंकापरस्परभेद प्रतीतहोवेहै ॥ यातैं ऋषियोंकेस्वरूपका
भेदनहीं ॥ किंतु तिनोंकेनाममात्रकाभेदहै ॥ किंवा सांजीवीपुत्रनामाऋषितैंलेके ब्रह्मापर्यंत श्रुतिही तिनऋषियोंकेसमानरूपताकूं
कथनकरैहै ॥ यातैं पौतिमाषीपुत्रपर्यंतभी तिनवंशोंविषे भेदनहींजानणा ॥ किंतु अभेदहीजानणा ॥ किंवा ॥ तीनवंशोंविषेस्थितऋ
षियोंका परस्परभेदहोवै ॥ अथवा अभेदहोवै ॥ सर्वप्रकारकरिकै मुमुक्षुपुरुषनैं तिनऋषियोंका वारंवार स्मरणहीकरणेयोग्यहै ॥
और जोकदाचित् सर्वऋषियोंकेस्मरणकरणेकी जिसपुरुषकूंसामर्थ्यनहींहोवै ॥ तिसपुरुषनैंभी पौतिमाषीपुत्रनामाऋषिकातौ
अवश्यहीस्मरणकरणा ॥ काहेतैं ? ब्रह्मविद्याकेअधिकारीहमसर्वपुरुषोंकागुरु पौतिमाषीपुत्रनामाऋषिही है ॥ कैसाहैसोपौतिमाषी
पुत्रनामाऋषि? ॥ स्त्रीवंशविषे तथापुरुषवंशविषे प्रसिद्ध है ॥ इतिवंशव्याख्यानंसंपूर्णं ॥ हेशिष्य ! पूर्वजोतुमनैं भयकाकारणपूछाथा ॥
तिसकेकथनकरणेवासते यहऋषियोंकावंश हमनैं तुमारेतांई कथनकऱ्याहै ॥ अब तिनऋषियोंकेवंशविषे एकविचित्रइतिहा
सकूं हमनैं श्रवण कऱ्याहै तिसइतिहासकूं तुम श्रवणकरो ॥ ताइतिहासकेश्रवणकरणेतैं तुमारेसंदेहकीनिवृत्ति होवैगी ॥
कैसाहैसोइतिहास ? कि इंद्रके तथा अश्विनीकुमारोंके गुह्यकर्मकूं प्रकाशकरणेहाराहै ॥ और अश्विनीकुमारोंकूं देखिकै क्रोध

युक्तहुएकिसीऋषिनैं कथनकन्याहै ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! कोईकऋषि किसीकार्यकीसिद्धिवासतै अश्विनीकुमारोंकेसमी
प जाताभया ॥ और तेअश्विनीकुमार किसीनिमित्तकरिकै तिसऋषिकीअवज्ञाकरतेभये ॥ तिसकरिकैक्रोधयुक्तहुआसोऋषि अ
श्विनीकुमारोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया कि हेअश्विनीकुमारो! तुमोनैं जोपूर्वगुह्यपापकर्मकन्याहै तिसकूं मैं भलीप्रका
रजाणताहूं ॥ अहंकारकरिकैयुक्तहुएतुम जोहमारेकार्यकूंनहींकरोगे तौ जैसेबादल महान्वृष्टिकूंप्रगटकरैहै तैसे तुमारेपापक
र्मकूं मैंप्रगटकरोंगा ॥ इसप्रकार ऋषिकेवचनकूंश्रवणकरिकै तेमहात्माअश्विनीकुमार याप्रकारकाविचारकरतेभये ॥ जोयहऋषि
हमारेपापकर्मकूंप्रगटकरैगा तौ तिसकरिकै हमारीकिंचित्मात्रभीहानि नहींहोवैगी ॥ उलटा जगत्विषे हमारीकीर्तिहोवैगी ॥ ता
त्पर्ययह ॥ अज्ञानीपुरुषकेपापकर्म जबीप्रगटहोवैहैं तबी परलोकविषे ताअज्ञानीकेदुर्गतिकूंविचारिकरिकै संपूर्णलोक ताअज्ञानी
कीनिंदाकरैहैं ॥ और आत्मज्ञानीपुरुषकेपापकर्मकूंदेखिकै लोक निंदाकरैंनहीं ॥ उलटा याप्रकारकहैहैं ॥ यातत्ववेत्ताज्ञानीपुरुषनैं
ऐसाउग्रपापकर्मकन्या तौभी जिसआत्मज्ञानकेप्रभावतैं याका रोममात्रभीछेदननहींहोताभया ॥ याप्रकार सर्वलोक तत्ववे
त्ताज्ञानीपुरुषकी कीर्त्तिकरैहै ॥ याप्रकार आपणेमनविषेविचारकरिकै तेअश्विनीकुमार कहतेभये ॥ हेऋषि! क्रूरपुरुषकीन्याईं हमो
नें ऐसाकौनपापकर्मकन्याहै? और किसप्रकार हमोनैं सोपापकर्मकन्याहै? तथा किसनिमित्तकरिकै हमोनैं सोपापकर्मकन्याहै?
यहसंपूर्णवृत्तांत हमारेप्रति तुमकहो ॥ और हेऋषि! जोतूं हमारेगुह्यपापकर्मकूं प्रकटकरिकैनहींकहैगा तौ तुमारेकार्यकूं हम न
हींसिद्धकरैंगे ॥ यातैं आपणेकार्यकीसिद्धिवासते सोहमारापापकर्म प्रकटकरो ॥ हमारेपापकर्मकूं जबी तुम प्रकटकरोगे तबी
हम तुमारेकार्यकीसिद्धिकरैंगे ॥ यहहमारासत्यवचनहै ॥ इसप्रकार अश्विनीकुमारोंकेवचनकूं श्रवणकरिकै आपणेकार्यकीसिद्धिवास
ते सोऋषि तिनोंकेगुह्यपापकर्मकूं तथाताकेनिमित्तकूं अश्विनीकुमारोंकेआगे कहताभया ॥ ऋषिउवाच ॥ हेअश्विनीकुमारो! ब्र
ह्माकाशिष्यजोविराट्भगवान्है ॥ तिसतैंआदिलैकै पौतिमाष्यपर्यंत शिष्यपरंपराकरिकै विचित्र जोयहपुरुषवंश प्रवृत्तभयाहै
तिसपुरुषवंशविषे ब्रह्मातैंलैकैनीचेनीचे जोद्वादशमा दध्यङ्अथर्वणनामाऋषिहै सो दैवअथर्वणनामाऋषिकाशिष्यहोताभया ॥

और सोईहीतुमदोनोंका गुरुहोताभया ॥ सोकैसाहैदध्यङ्अथर्वणनामाऋषि? ब्रह्मविद्याकरिकैयुक्तहै ॥ और मधुकांडकेअर्थकूंजानणे हाराहै ॥ ऐसादध्यङ्अथर्वणनामामुनि तुंमदोनोंकेतांई वेदकेपाठकूं तथावेदकेअर्थकूं पढावताभया ॥ परंतु तुमारेकूंवैराग्यतैंरहित देखिकरिकै सोऋषि तुमारेतांई उपनिषद्रूपवेदांतभागकेअर्थकूं नहींपढावताभया ॥ किंतु अर्थसहितवेदकेकर्मकांडकूं तुमारेतांई प ढावताभया ॥ और तिसदध्यङ्अथर्वणनामागुरुतैं जैसातुमोनैं वेदोंकेपाठकूं तथाअर्थकूं अध्ययनकऱ्याथा ॥ तिसीप्रकार तुमदोनों त्वाष्ट्रविश्वरूपनामाऋषिकेतांई कथनकरतेभये ॥ और सोत्वाष्ट्रविश्वरूपनामाऋषि आभूतिनामात्वाष्ट्रकेतांई कथनकरताभया ॥ और सोआभूतित्वाष्ट्रनामाऋषि अपास्यनामाआंगिरसऋषिकेतांई वेदकाकथनकरताभया ॥ इसप्रकार सावेदविद्या परंपरा करिकै पौतिमाष्यनामाऋषिविषे प्राप्तहोतीभयी ॥ और सोपौतिमाष्यनामाऋषि मनुष्यलोकवर्तिहमसर्वेअधिकारियोंका गुरुहो ताभया ॥ इसप्रकार वेदविद्याकेसंप्रदायकूंप्रवर्तकरिकै सोदध्यङ्अथर्वणनामाऋषि ब्रह्मज्ञानकेप्रभावतैं महान्यशकूंप्राप्तहोताभ या ॥ और किसीदेशविषे आश्रमकूंकरिकै निवासकरताभया ॥ और तिसआश्रमविषेनिवासकरताहुआ सोदध्यङ्ऋषि पक्षपाततैंर हितहोइकै देवतावोंके तथाअसुरोंके तथामनुष्योंके सुखकूंउत्पन्नकरताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसाजिसपुरुषकूं स्वर्गरूपफलकेप्राप्ति कीइच्छाहोवै ॥ अथवा पशुपुत्रादिरूपफलकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ अथवा वैरिकेमारणेकीइच्छाहोवै ॥ तिसातिसपुरुषकेतांई तिस तिसउपायकरिकैसहित तिसातिसफलकाउपदेश करतेभये ॥ और लोकोंकेहितवासतै तिनकर्मोंकेपरिणामकालविषे होणेहारा जो सुख तथादुःख तिनसंपूर्णोंका उपदेशकरतेभये ॥ तात्पर्ययह ॥ स्वर्गकेप्राप्तिकाजोउपायपूछै ताकेप्रति याप्रकारकहतेभये ॥ द र्शपौर्णमासनामायज्ञकूं जोतुम करोगे तो तुमारेकूंस्वर्गकीप्राप्तिहोवैगी ॥ परंतु पुण्यकर्मकेक्षयहुएतैंअनंतर स्वर्गतैंनीचेगिरनेक रिकै महान्दुःख तुमारेकूंप्राप्तहोवैगा ॥ और पुनःउत्तमकुलविषेतुमाराजन्महोवैगा ॥ और जोकोईपुरुष शत्रुमारणेकाउपाय दध्यङ्ऋषितैंपूछै ॥ ताकेप्रति याप्रकारकहतेभये ॥ जोतुम श्येनयज्ञकरोगे तो तुमारेशत्रुकामरणहोवैगा ॥ परंतु श्येनयज्ञ केकरणेकरिकै पश्चात् तुमारेकूं नरककीभीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोपुरुष चित्तकेशुद्धिकाउपाय दध्यङ्ऋषितैंपूछै ॥ ताकेप्रति

याप्रकार कहतेभये ॥ फलकीइच्छाकूंपरित्यागकरिकै जोतुम कर्मोंकूंकरोगे ॥ तौ तुमारेचित्तकीशुद्धिहोवैगी ॥ और पश्चात् श्रवणादि
द्वारा आत्मज्ञानकीभी तुमारेकूंप्राप्तिहोवैगी ॥ इसप्रकार सोदध्यङ्अथर्वणऋषि सर्वजीवोंकेतांई हितकाउपदेशकरताभया ॥
और जोकोईपुरुष ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकीइच्छाकरिकै तिसदध्यङ्ऋषिकेसमीपआवै तिसकेतांईतौ याप्रकारकाउपदेश करतेभये ॥
विवेक वैराग्य शमादिकषट्संपत्ति मुमुक्षुता याचतुष्टयसाधनोंकूं प्रथम तुम संपादनकरिकेआवो ॥ पश्चात् तुमारेतांई मैं ब्रह्म
विद्याकाउपदेशकरोंगा ॥ इसप्रकार सोदध्यङ्ऋषि संपूर्णप्राणियोंकेतांई हितकाउपदेशकरताभया ॥ और तिसमहात्मादध्यङ्ऋ
षिकीकीर्ति तीनलोकोंविषे दशदिशावोंविषे पसरतीभई ॥ हेअश्विनीकुमारो! यद्यपि दध्यङ्ऋषिका सर्वप्राणीमात्रविषेस्नेहहै
तथापि तुमदोनों बाल्यअवस्थातैंलैकै तिसमुनिकेशिष्यहो ॥ यातैं दध्यङ्मुनिका तुमदोनोंविषे अधिकस्नेहहोताभया ॥ इसप्रकार
स्नेहकरिकैयुक्त दध्यङ्अथर्वणमुनितैं तुमनैं ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकीप्रार्थनाकरी तौभी तुमारीविषयोंविषेआसक्तिदेखिकै सोदध्य
ङ्ऋषि तुमारेतांई ब्रह्मविद्याकूंनहींदेताभया ॥ और विवेकादिकसाधनोंकीदृढताकरावणेवासते सोदध्यङ्ऋषि वारंवार याप्रकार
कहताभया ॥ जैसे अकालविषेपडीहुईवर्षा निष्फलहोवैहै ॥ और जैसे सूर्यकेसमीप दीपक निष्फलहोवैहै ॥ और जैसे पूर्वअन्नके
अजीरणहुए भोजनकऱ्याहुआदूसराअन्न निष्फलहोवैहै ॥ और जैसे तिसवस्तुकीइच्छातैंरहितपुरुषकेतांई तिसीवस्तुकादेणा निष्फ
लहोवैहै ॥ तैसे विवेकादिकसाधनचतुष्टयरूप अधिकारतैंरहितपुरुषकेतांई उपदेशकरीहुईब्रह्मविद्या निष्फलहोवैहै ॥ यातैं ब्रह्मवि
द्याकीप्राप्तिवासते विवेकादिकसाधनचतुष्टयरूपअधिकारकूं तुम संपादनकरो ॥ याप्रकार सोदध्यङ्अथर्वणमुनि तुमारेतांई उपदेश
करताभया ॥ और हेअश्विनीकुमारो! एककालविषे तुमदोनों किसीनिमित्तकरिकै देवराजइंद्रकेअवज्ञाकूंकरतेभये ॥ कैसे तुमदोनों
हो ॥ सुंकररूपकेअभिमानकरिकैयुक्तहो ॥ तथा विद्याकेअभिमानकरिकैयुक्तहो ॥ याकारणतैंही सर्वदेवतावोंकेअधिपतिइंद्रकीअवज्ञा
कूंतुमकरतेभये ॥ तिसतुमारीअवज्ञाकूंदेखिकरिकै क्रोधयुक्तहुआसोइंद्र तुमारेयज्ञभागकूंनिवृत्तकरताभया ॥ और तीनलोकोंविषे
याप्रकारकीआज्ञाकरताभया ॥ हेसंपूर्णलोको! येदोनोंअश्विनीकुमार चिकित्साकरणेहारे हैं यातैं अशुद्धहैं ॥ और पूर्वजन्मविषेभी नी

चजातिवालेहैं ॥ यातैंभीअशुद्धहैं ॥ अशुद्धपुरुषोंकेताँई यज्ञकाभागदेणा उचितनहीं ॥ यातैं आजदिनतैंलैकै किसीपुरुषनैं इनदोनोंके
ताँई यज्ञकाभागनहींदेणा ॥ याप्रकारकीआज्ञा देवराजइंद्र करताभया ॥ हेअश्विनीकुमारो! इसप्रकार जबी देवराजइंद्रनैं सर्वदेवता
वोंके तथा मुनियोंके सन्मुखवचनकह्या ॥ तबी तुमदोनोंकाभाग सर्वयज्ञोंतैंनिवृत्तहोताभया ॥ इसप्रकार यज्ञभागतैंरहितहुएतुमदो
नों अत्यंततपायमानहोतेभये ॥ और दध्यङ्अथर्वणनामागुरुकेसमीपजाइकै पुनःयज्ञभागकेप्राप्तिकाउपाय तुम पूछतेभये ॥ हेगुरो!
आज देवराजइंद्रनैं सभाकेमध्यविषे हमदोनोंकायज्ञभाग निवृत्तकऱ्याहै ॥ अब हमदोनोंकूं कौनउपाय करणेयोग्यहै ॥ यहआप कृपा
करिकैकहो ॥ और हेगुरो! जोआपकीआज्ञाहोवै ॥ तौसंपूर्णदेवतावोंसाहितइंद्रकूं युद्धकरिकैतृप्तकरणेविषेभी हमदोनों समर्थहैं ॥
याकेविषे किंचित्मात्रभी आपनैं संदेहनहींकरणा ॥ परंतु आपकीआज्ञातैंविना हम युद्धकरणेविषेसमर्थनहीं ॥ अब ऋषिकेसंदेह
कीनिवृत्तिवासते आपणेसामर्थ्यकूं अश्विनीकुमार निरूपणकरैहैं ॥ हेगुरो! हमाराकैसासामर्थ्यहै? हमदोनोंविषेएकभी तीनलोक
सहितब्रह्माकूं तथाविष्णुकूं तथामहादेवकूं तथासंपूर्णदेवतावोंसाहितइंद्रकूं जीतणेविषेसमर्थहै ॥ तौ हमदोनों मिलिकैकिसकूंनहींजी
तैंगे किंतु संपूर्णोंकूंजीतणेविषेहमसमर्थहैं ॥ काहेतैं? मृतसंजीवनीविद्याकूं हमजाणतेहैं ॥ यातैं किसीशस्त्रकरिकै तथाकिसीअस्त्र
करिकै तथाकिसीव्याधिकरिकै हमारा मृत्युहोवैनहीं ॥ और हेगुरो! देवतावोंनैं तथाअसुरोंनैं तथामनुष्योंनैं करीजोनानाप्रकारकी
माया तेमायाभी हमारेकूं किंचित्मात्रस्पर्श करिसकैनहीं ॥ और सर्पादिकोंविषेस्थितजेजंगमरूपविषहैं ॥ तथा कालकूटादिक
जेस्थावरविषहैं ॥ तेसंपूर्णनानाप्रकारकेविष हमारेलोममात्रकूंभी छेदनकरिसकैनहीं ॥ और हेगुरो! पुरुषोंकेमरणेकासाधन जेना
नाप्रकारकीऔषधियांहैं ॥ तथा नानाप्रकारकेजेमंत्रहैं ॥ तथा नानाप्रकारकेजेभूतपिशाचादिकहैं ॥ तथा श्येनयज्ञरूपजेअभिचार
हैं ॥ तथा ब्राह्मणोंकेजेनानाप्रकारकेशापहै ॥ यहसंपूर्ण यद्यपि मृत्युकेसाधनहैं ॥ तथापि तेसंपूर्ण हमारेकूं स्पर्शकरिसकैनहीं ॥
काहेतैं? आपकीकृपाकरिकै तथास्वभावतैं हम सिद्धियुक्तहैं ॥ यातैं तिनसंपूर्णमायाआदिकोंके निवृत्तिकाउपाय हम जाणतेहैं ॥ या
तैं हमारेजीतणेविषे कोईभीसमर्थनहीं ॥ और हेगुरो! युद्धतैंविनाभी हमदोनों देवतावोंकेजीतणेविषेसमर्थहैं ॥ काहेतैं? स्वर्गविषेहै

प्रवाहजिसका ऐसीजाश्रीगंगाजीहै ॥ तिसविषे जोहम एकऔषधिपावैं तौ संपूर्णदेवतावोंसहितइंद्रका एकक्षणविषे मृत्युहोइजावै ॥ और हेगुरो! एकमंत्रकेप्रयोगकरिकै संपूर्णदेवतावोंसहितइंद्रकेचित्तविषे स्वर्गतें वैराग्यउत्पन्नकरणेविषेभी हमसमर्थ हैं ॥ और संपूर्णदेवतावोंसहितइंद्रकूं स्वर्गलोकतैंभूमिलोकविषेगिडावणेमैंभी हमसमर्थ हैं ॥ और अन्यदिशाविषेस्थितदेवराजइंद्रकूं मोहकेवासतें अन्यदिशाविषेस्थितकरणेमेंभी हमसमर्थहैं॥ और हेगुरो! यद्यपि देवतावोंकूं स्वर्गकीअप्सरावोंविषेही कामकीअभिलाषाहोवैहै ॥ मनुष्यलोककीस्त्रियोंविषे देवतावोंकूं कामअभिलाषाहोवैनहीं ॥ तथापि संपूर्णदेवतावोंसहितइंद्रकूं तथासंपूर्णमुनियोंकूं ऐसाहमकाम उत्पन्नकरैं ॥ जोसंपूर्णदेवता तथामुनि मनुष्यलोककेस्त्रियोंकीअभिलाषाकरैं ॥ याप्रकारकीहमारेविषेसामर्थ्यहै ॥ हेअश्विनीकुमारो ! दध्यङ्ऋषिनामागुरुकेविश्वासकरावणेवासतें याप्रकारकेवचनोंकरिकै आपणेबलकूं तुमदोनों प्रगटकरतेभये ॥ इसप्रकारकेतुमारेवचनोंकूंश्रवणकरिकै सोदध्यङ्ऋषिनामातुमारागुरु आपणेमनविषे चिरकालपर्यंत विचारकरताभया ॥ और विचारकरिकै सोदध्यङ्ब्रह्मर्षि तुमारेतांई याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेअश्विनीकुमारो! सर्वशत्रुवोंकेनाशकरणेविषेसमर्थहोइके क्रोधरूपअंतरशत्रुकेवशकूं तुम मतप्राप्तहोवो ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे बाह्यशत्रुवोंकेजीतणेविषे तुम समर्थहो ॥ तैसे कामक्रोधादिकअंतरशत्रुवोंकेजीतणेविषेभी तुम समर्थहोवो ॥ अब क्रोधविषे शत्रुपणादिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ! तुमदोनोंकाशत्रु इंद्रनहीं ॥ तथा अन्यभीकोई तुमाराशत्रुनहीं ॥ किंतु यहक्रोधही तुमाराशत्रुहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! क्रोधकाकौनअपराधहै? जाकरिकै क्रोधकूं आप शत्रुकहोहो ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो! तुमसर्वदेवतावोंकरिकेपूजणेयोग्यजोइंद्रहै॥ तिसकेनाशकरणेविषे जोतुमारीप्रवृत्तिभईहै ॥ सो केवल क्रोधकेप्रभावतैंभईहै ॥ क्रोधतेंविना ऐसेनिषिद्धकर्मविषे किसीबुद्धिमान्पुरुषकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु क्रोधकेवशहुएहीजीव गुरुआदिकवृद्धपुरुषोंकेतिरस्कारकरणेविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और हेअश्विनीकुमारो! पूर्वकालविषे तुमारेकूं इंद्रकेजीतणेकीइछा कबीभईनहीं ॥ और इसकालविषेतुमारेकूं इंद्रकेजीतणेकीइछाभईहै ॥ याकेविषेकौनकारणहै?॥ यहतुमविचारिकरिकैदेखो ॥ क्रोधतेंविना दूसराकोईकारण याकेविषेनहीं ॥ किंतु अन्वयव्यतिरेककरिकै क्रोधही याकेविषेकारणहै ॥ यातें क्रोधही

तुमारा परमशत्रुहै ॥ और हेअश्विनीकुमारो! संपूर्णशत्रुवोंकाराजा जोकामक्रोधहै तथाताकेकिंकर जेइंद्रियहैं तिनसंपूर्णोंके जीतणेतैंविना देवशरीरकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु कामक्रोधादिकोंकेजीतणेकरिकैही देवताशरीरकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ तुमदोनोंनैंभी पूर्वजन्मविषे कामक्रोधादिकराजाकूं तथाइंद्रियरूपकिंकरोंकूं जीत्याहै ॥ जाकरिकै अबीतुमारेकूं देवताशरीरकीप्राप्तिभयीहै ॥ हेअश्विनीकुमारो! जिस सामर्थ्य करिकै पूर्वतुमोंनैं कामक्रोधादिक वशकरेहैं ॥ सो सामर्थ्य अबी तुमारा कहांगयाहै? ॥ और हेअश्विनीकुमारो! हमतौ आपणे मनविषे ऐसा जाणतेहैं ॥ जैसे किसीदेशका कोईकराजा अन्यदेशके राजाकूंजीतेहै ॥ और किसीकालविषे सोराजा सामर्थ्यकूंपाइके पूर्वलेवैरकूंस्मरणकरिकै तिसीराजाकूंजाइकेजीतेहै ॥ तैसे पूर्वजन्मविषे तुमदोनों कामक्रोधादिकसहितसंपूर्णइंद्रियोंकूं जयकरिआयेथे ॥ तेइंद्रियरूपकिंकर पूर्ववैरकास्मरणकरिकै क्रोधरूपराजाकूंसाथिलेकै स्वर्गविषे तुमारेजीतणेवासतेआयेहैं ॥ और हेअश्विनीकुमारो! क्रोधरूपअंतरशत्रुकेजीतणेविषे जबी तुमारासामर्थ्य नहींभया ॥ तबी इंद्रकेजीतणेविषे तुमकिसप्रकारसमर्थहोवोंगे? किंतु इंद्रकेजीतणेविषे तुमारासामर्थ्यनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो! देवतावोंकीसभाविषे देवराजइंद्रनैं वचनरूपबाणोंकरिकै जोपूर्वतुमाराताडनकर्याथा ॥ सोभी प्रथम कामरूपशत्रुकेवशहुएतुमारेकूंदेखिकरिकै इंद्रनैं तुमाराताडणकर्याथा ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसपुरुषकूं कोईकामनानहींहै ऐसाजोब्रह्मज्ञानीपुरुषहै तिसकूं संपूर्णजगत् आत्मस्वरूपहै ॥ यातैं ताका कोईताडनकरैनहीं ॥ कामनावालेपुरुषकाही जहांतहां निरादरहोवैहै ॥ अब क्रोधकीन्यांई कामविषेभी अन्वयव्यतिरेककरिकै अनर्थकीकारणताकूंदिखावैहैं॥ हे अश्विनीकुमारो! देवराजइंद्र पूर्व तुमदोनोंकानिरादर किसकारणतैंनहींकरताभया ॥ और इसकालविषे देवराजइंद्रनैं तुमारानिरादर किसकारणतैंकर्याहै? ॥ याप्रकारकेविचारतैं तुमदोनोंरहितहो॥ हेअश्विनीकुमारो! यातुमारेनिरादरविषे कामतैंविना कोईदूसराकारणनहींहै ॥ किंतु कामही तुमारेनिरादरकाकारणहै ॥ जबपर्यंत तुमारेविषे कामनहींभयाथा ॥ तबपर्यंत देवराजइंद्रनैं तुमारानिरादरकर्यानहीं ॥ और जबीतुमारेविषे कामकीउत्पत्तिभई तबीदेवराजइंद्रनै तुमारानिरादरकर्या ॥ यातैं कामही तुमारेनिरादरकाकारणहै ॥ और हेअश्विनीकुमारो! संपूर्णदेवता

वोंकरिकै पूजणेयोग्यजोइंद्रहै तिसकेजीतणेविषे तुमदोनों किसप्रकारसमर्थहोवोंगे? किंतुइंद्रकेजीतणेविषे तुमारासामर्थ्यनहीं काहेतें? एककामरूपशत्रुनें सर्वदेवतावोंकीसभाविषे तुमाराअपमान करायाहै ॥ तिसकामरूपएकशत्रुकेजीतणेविषे जबी तुम समर्थनहींभये ॥ तबी सर्वदेवतावोंसहितइंद्रकूं तुम किसप्रकारजीतोंगे?॥ तात्पर्ययह ॥ पूर्वएककामरूपशत्रुनें तुमाराअपमानकराया था ॥ अबक्रोधरूपपुत्रकरिकैयुक्तहुआसोकामरूपशत्रु तुमारेकिसअनर्थकूंनहींकरैगा? किंतु तुमारेसर्वअनर्थोंकूंकरैगा ॥ और हेअश्विनीकुमारो! संपूर्णदेहधारीजीवोंके कामक्रोधही परस्परशत्रुहैं ॥ जोपुरुष कामक्रोधरूपअंतरशत्रुवोंकीउपेक्षाकरिकै बाह्यराजादिकशत्रुवोंकेजीतणेकीइच्छाकरैहै सोपुरुष अत्यंतमूर्खहै ॥ यातें हेअश्विनीकुमारो! जोतुमारेकूं शत्रुवोंकेजीतणेकासामर्थ्यहै ॥ तौ कामक्रोधरूपमहाबलवान्शत्रुवोंकूं तुमजीतो ॥ अब कामकेमहान्प्रभावकूंदिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो! संपूर्णजगत्कूंउत्पन्नकरणेहाराजोब्रह्माहै तिसकूंभी यहकाम जीतताभयाहै ॥ और संपूर्णजगत्कूंपालनकरणेहाराजोविष्णुहै तिसकूंभी यहकामदेव जीतताभयाहै ॥ और संपूर्णजगत्केसंहारकरणेहाराजोरुद्रहै तिसकूंभी यहकामदेव जीतताभयाहै ॥ और संपूर्णदेवतावोंकाअधिपतिजोइंद्रहै तिसकूंभी यहकामदेव जीतताभयाहै ॥ हेअश्विनीकुमारो! जबी ब्रह्मादिकईश्वरोंकूंभी कामदेवतानें जीतलिया ॥ तबी स्त्रियोंकेक्रीडामृग जेअन्यदेवताहैं तिनोंकूं कामदेव नहींजीतैगा याकेविषेक्याकहणाहै? ॥ किंतु सर्वप्राणीमात्रकूं कामदेव आपणेअधीनकरैहै ॥ यद्यपि संपूर्णजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकूंकरणेहारे ब्रह्माविष्णुमहेशादिकईश्वरोंविषे कामकीअधीनता संभवैनहीं ॥ तथापि सर्वत्रकामकेप्रभावकूंजनावणेवासतै ब्रह्माविष्णुआदिकईश्वर लिलामात्रकरिकै कामादिकोंकूंधारणकरैहैं ॥ वास्तवतैं तेब्रह्मादिक कामादिकोंतैंरहितहैं ॥ और हेअश्विनीकुमारो! सर्वदेहधारीजीवोंकाशत्रुजोकामहै ॥ सोकामही तुमारेकूं जीतणेयोग्यहै ॥ परंतु ताकामदेवकूं तुमोंनैंजीत्यानहीं ॥ उलटा कामदेवनें तुमदोनोंकूंजीत्याहै ॥ और हेअश्विनीकुमारो! याकामदेवतैंभीक्रोध अतिसैंकरिकैबलवान्है ॥ यातें क्रोधकेजीतणेविषे तुमारेकूं अत्यंतयत्नकऱ्याचाहीये ॥ काहेतें? अनंतप्रकारके उपायोंकरिकै मुनिलोक कामदेवकूं तो आपणेवश करैहैं ॥ परंतु कामदेवका पुत्र जो क्रोधहै ताक्रोधकेजीतणेविषे तेमुनिलो

कभी समर्थहोवैनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो! यहकामक्रोधरूपपितापुत्रदोनों महान्शूरवीरहैं ॥ इनोंकेजीतणेविषे कोईपुरुष समर्थनहीं ॥ किंतु संपूर्णजगत्कूंजीतकरिकै यहकामक्रोधदोनों जयकरिकैशोभायमानहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो! जोतुमदोनों शत्रुवोंकेनाशकरणेविषेसमर्थहो ॥ और अत्यंतमानयुक्तहो ॥ तौ प्रथम कामक्रोधरूपशत्रुका तुम जयकरो ॥ पश्चात् देवराजइंद्रकेजीतणेकाउद्यम तुमकरो ॥ ऋषिरुवाच ॥ हेअश्विनीकुमारो! इसप्रकार क्रोधकेशांतिकरणेहारेवचनोंकरिकै सो दध्यङ्ऋषितुमारागुरु वैरकेनिवृत्तिकाउपदेश तुमारेतांई करताभया ॥ तथापि क्रोधरूपअग्निकरिकैतपायमानहुएतुमदोनों जबी तिनवचनोंकरिकैशांतिकूंनहींप्राप्तहोतेभये ॥ तबी सोदध्यङ्अथर्वणतुमारागुरु साममेदरूपदोनोंउपायोंकापरित्यागकरिकै तुमदोनोंकेशांतिकरणेवासते उपप्रदानरूपउपायकूं करताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ साम भेद उपप्रदान दंड याचारिउपायों करिकै लोकविषे प्राणी वशवर्तिहोवैहैं ॥ तहां प्रियवचनोंकरिकैक्रोधादिकोंकेनिवृत्तिकूं साम कहैहैं ॥ और अन्यशत्रुकेपक्षपाततैं निवृत्तकरिकै आपणेपक्षविषेलेआवणेकूं भेदकहैहैं ॥ और मनवांछितपदार्थोंकेदेणेकीप्रतिज्ञाकूं उपप्रदानकहैहैं ॥ और ताडनाकूं दंडकहैहैं ॥ इनचारोंउपायोंविषे प्रियवचनोंकरिकैक्रोधादिकोंकीनिवृत्तिरूपसाम तथाकामक्रोधादिकशत्रुवोंकेपक्षपाततैंनिवृत्तकरिकै आपणेसमतारूपपक्षविषेस्थापनरूपभेद यहदोनोंउपाय दध्यङ्ऋषिनैं करे ॥ परंतु तिनसामभेदरूपउपायकरिकै अश्विनीकुमारोंकेकामक्रोधादिकोंकीशांतिनहींहोतीभयी ॥ यातैं सोबुद्धिमान्दध्यङ्ऋषि तिनदोनोंउपायोंकापरित्यागकरिकै उपप्रदानरूपतृतीयउपायकूं करताभया ॥ अब ताउपप्रदानरूपउपायकूंदिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो! जिसब्रह्मविद्याकेप्राप्तिवासते पूर्वतुमोंनैं हमारेप्रतिप्रार्थनाकरीथी ॥ साब्रह्मविद्या मैंतुमारेतांई तबीउपदेशकरोंगा जबी तुम सर्वप्राणियोंविषे वैरकापरित्यागकरोगे ॥ यातैं जोतुमारेकूं ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै तौ देवराजइंद्रविषे वैरकापरित्यागकरो ॥ ऋषिरुवाच ॥ हेअश्विनीकुमारो! इसप्रकारकेवचन जबी तुमारेतांई दध्यङ्ऋषिनैंकहे तबी तुमदोनों याप्रकारकेवचन दध्यङ्ऋषिगुरुकेप्रति कहतेभये ॥ हेगुरो! यहकाल सामरूपउपायका तथाभेदरूपउपायकाहैनहीं ॥ और उपप्रदानरूपउपायकाभी यहकालहैनहीं ॥ काहेतें? पूर्वआपनैं

अनंतवार यहकथनकऱ्याहै ॥ जबीतुम विवेकादिकसाधनचतुष्टयरूपअधिकारकूं संपादनकरौगे ॥ तबी हम तुमारेतांई ब्रह्मविद्या
काउपदेशकरैंगे ॥ यातें ब्रह्मविद्याकेलोभकरिकैभी इंद्रकेसाथवैरकापरित्यागहमकरैंगेनहीं ॥ यातें हेगुरो! कृपाकरिकै हमारेतांई
युद्धकरणेकीआज्ञादेवो ॥ एकक्षणविषे संपूर्णदेवतावोंसहितइंद्रकूं हम जीतैंगे ॥ याकेविषे आप किंचित्मात्रभी संदेहनहींकरो ॥
हेअश्विनीकुमारो ! याप्रकारकेतुमारेवचनोंकूंश्रवणकरिकै सोदध्यङ्ऋषितुमारागुरु उपप्रदानरूपउपायकाभीपरित्यागकरिकैतु
मारेप्रति दंडरूपीवचनोंका कथनकरताभया ॥ कैसाहैसोदध्यङ्ऋषि? तुमारेहितकीजिसकूंइच्छाहै ॥ और सर्वप्राणियोंविषे जा
कीसमानदृष्टिहै ॥ अब तिनदंडरूपीवचनोंकूंनिरूपणकरैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ! जोकोईपुरुष पंचजीवोंकाभीपालनकरैहै ॥ सो
पुरुष पंचभूतहैशरीरजाका ऐसाजोईश्वरहै ताईश्वरकास्वरूपजानणा ॥ तापंचप्राणियोंकेपालनकरणेहारेपुरुषकूं जोकोईपुरुष हन
नकरैहै सोपुरुष ईश्वरसहितपंचभूतस्वरूपसंपूर्णविश्वकूं हननकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ईश्वरसहितसंपूर्णविश्वकेहननकरिकै जोपा
पउत्पन्नहोवैहै तापापकूं सोपुरुष प्राप्तहोवैहै ॥ हेअश्विनीकुमारो ! जबी पंचजीवोंकेपालनकरणेहारेपुरुषकेहननतैं इतनापाप
होवैहै ॥ तबी तीनलोकोंकेपालनकरणेहारेइंद्रकेहननकरिकै महान्पापकीउत्पत्तिहोवैहै याकेविषे क्याकहणाहै? ॥ और हेअश्वि
नीकुमारो ! जोपुरुष उपकारकरणेहारेआपणेस्वामीकाहननकरैहै सोअधमपुरुष संपूर्णकुटंबसहितआपणेमाताकूं तथा पिताकूं
हननकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ संपूर्णकुटंबसहित आपणेमातापिताकेमारणेकरिकै जोपाप उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसीपापकूं स्वामीकेद्रोह
करणेहारापुरुष प्राप्तहोवैहै ॥ और शास्त्रविषेभी ब्रह्महत्यादिकपापोंकेनिवृत्तिकेउपाय कहेहैं ॥ परंतुकृतघ्नतादोषजन्यपापकेनि
वृत्तिकाउपाय किसीशास्त्रविषेभी कह्यानहीं ॥ यातें कृतघ्नतादोषकेसमान कोईभीपापकर्म जगत्विषेनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमा
रो ! जोपुरुष आपणेस्वामीकेसाथद्रोहकरैहै सोअधमपुरुष अंधतामिस्त्रनामनरकविषे चिरकालपर्यंत निवासकरैहै ॥ तात्पर्य
यह ॥ ब्रह्महत्याकरणेहारेपुरुषतैंभी आपणेस्वामीकेसाथद्रोहकरणेहारापुरुष अत्यंतअधमहै ॥ काहेतें? ब्रह्महत्याकरणेहारापुरुष
सहस्त्रकोटीकल्पोंतैंअनंतर नरकरूपीसमुद्रतैं कदाचित्मुक्तहोवैहै ॥ परंतु आपणेस्वामीकेसाथद्रोहकरणेहारा कृतघ्नपुरुष कबीभी

नरकतैंमुक्तनहींहोवैहै ॥ यातैं कृतघ्नतारूपपापकर्मकेसमान कोईभीपापकर्म जगत्विषेनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो! जोकोई राजा भूमिकेकिसीएकदेशकूंभीपालनकरैहै सोराजाभी वैरियोंकरिकै मारणेयोग्यनहीं ॥ तौ तीनलोकोंकूंपालनकरणेहारा जोइंद्रहै सो किसप्रकार मारणेयोग्यहोवैगा?॥ किंतु सोइंद्र मारणेयोग्यनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो! अल्पपृथिवीकाप तिजोराजाहै सो मारणेयोग्यनहींहै ॥ यहजोशास्त्रविषेकह्याहै ॥ ताकेविषे यहकारणहै ॥ जितनेभूमिलोकविषेराजेहैं ते संपूर्णराजे इंद्रादिकलोकपालोंकेअंशरूपहैं ॥ यातैं तेराजे मारणेयोग्यनहीं ॥ जबी इंद्रादिकलोकपालोंकेअंशरूप पृथिवीकेराजे भी मारणेयोग्यनहींभये ॥ तबी साक्षात्इंद्रादिकलोकपाल किसप्रकार मारणेयोग्यहोवैंगे?॥ किंतु इंद्रादिक मारणेयोग्यनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो! पृथिवीमात्रविषेहैदेवतापणाजिनोंविषे ऐसेजेभूदेवब्राह्मणहैं तेभी कदाचित्मारणेयोग्यनहीं ॥ तौ तीनलोकोंविषेहैदेवतापणाजिनोंविषे ऐसेजेइंद्रादिकदेवताहैं ते किसप्रकार मारणेयोग्यहोवैंगे?॥ किंतु इंद्रादिकदेवता मारणेयोग्यनहींहै ॥ और हेअश्विनीकुमारो! भूदेवब्राह्मणमारणेयोग्यनहींहैं यहजोशास्त्रनैंकह्याहै ॥ ताकेविषे यहकारणहै ॥ जितनेइंद्रादिकदेवता स्वर्गविषेरहैहैं तेसंपूर्णदेवता ब्राह्मणकेशरीरविषे अंशरूपकरिकैरहैहैं ॥ याकारणतैं सोवेदकावेत्ताब्राह्मण मारणेयोग्यनहीं ॥ जबी इंद्रादिकदेवतावोंकेनिवासकास्थानब्राह्मणशरीरभी मारणेयोग्यनहींभया ॥ तबी साक्षात्स्वर्गविषेरहणेहारेइंद्रादिकदेवता किसप्रकार मारणेयोग्यहोवैंगे?॥ किंतु इंद्रादिकदेवता मारणेयोग्यनहीं॥ और हेअश्विनीकुमारो! जोअधमपुरुष शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै गौवोंकी तथाब्राह्मणोंकी तथादेवतावोंकी हिंसाकरैहै ॥ तथा सर्वलोकोंकेउपकारकरणेहारे धर्मात्माराजावोंकीहिंसाकरैहै ॥ सोअधमपुरुष शतकोटिकल्पोंकरिकैभी नरकतैंमुक्तनहींहोवैहै ॥ और हेअश्विनीकुमारो! जैसे मस्तककरिकै पर्वतकाभेदहोइसकैनहीं ॥ तैसे दशलोकपालोंकेजयकियेतैंविना तथासर्वदेवतावोंकेजयकियेतैंविना इंद्रकेजीतणेकूं कोईदेवता तथादानव समर्थहोवैनहीं किंतु लोकपालोंके तथाअन्यदेवतावोंके जीतणेतैंअनंतरही इंद्रकाजीतणासंभवैहै॥ इंद्र १ अग्नि २ यम ३ रक्ष ४ वरुण ५ प्रभंजन ६ धनेश ७ ईश्वर ८ शेष ९ ब्रह्मा १० ये दश दिक्पालहैं ॥ तहां पूर्वादिकअष्टदिशा

वोंके इंद्रादिकअष्ट दिक्पालहैं ॥ और ब्रह्मा ऊर्ध्वदिशाकापतिहै ॥ और शेष अधोदिशाकापतिहै ॥ यादशदिक्पालोंकेजीतणेविषेभी
कोईदेवता तथादानव समर्थहैनहीं ॥ तबी सर्वदेवतावोंकेअधिपतिइंद्रकूं कौन जीतेगा ? किंतु इंद्रकेजीतणेविषे कोइपुरुष सम
र्थनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो ! तुमदोनोंविषे जोसामर्थ्यहै सोभी इंद्रादिकदेवतावोंकेअनुग्रहकरिकैहीहै ॥ इंद्रादिकदेवतावोंके
कोपहुए तुमदोनों काष्ठकीन्यांई सामर्थ्यतेंरहितहो ॥ और हेअश्विनीकुमारो ! तुमदोनों द्वादशआदित्योंकूं तथाअष्टवसुवोंकूं त
थाएकादशरुद्रोंकूं तथाएकन्यूनपंचासमरुद्गणकूं किसप्रकारजीतोंगे ? किंतु तिनोंकेजीतणेविषे तुमदोनों समर्थनहींहोवेंगे ॥ और
हेअश्विनीकुमारो ! संपूर्णलोकपालजेहैं ॥ तथा संपूर्णदेवताजेहैं ॥ तथा संपूर्णमुनिजेहैं ॥ तथा संपूर्णसिद्धजेहैं ॥ तथा संपूर्णचारण
जेहैं ॥ तथा ब्रह्माजोहै ॥ तथा विष्णुजोहै ॥ तथा रुद्रजोहै ॥ तथा संपूर्णशक्तियांजेहैं ॥ तथा आकाशादिकपंचभूतोंकेअभिमानीदेव
ताजेहैं ॥ तथा चंद्रमाजोहै ॥ तथा संपूर्णग्रहजेहैं ॥ तथा संपूर्णनक्षत्रजेहैं ॥ तथा संपूर्णतारागणजेहैं ॥ इनोंतेंआदिलैकेजितना
विश्वहै ॥ तेसंपूर्ण इंद्रकेपक्षविषेहैं ॥ तुमारेपक्षविषे कोईभीदेवतानहीं ॥ जबी तुमदोनों इंद्रकेसाथयुद्धकरोंगे ॥ तबी यहसंपूर्णलो
कपालादिक प्रथम तुमारेसाथयुद्धकरणेवासते सन्मुखहोवैंगे ॥ तिनसंपूर्णलोकपालादिकोंकूं जबी तुमजीतोंगे ॥ तबी इंद्र तुमारे
साथ युद्धकरैगा ॥ सोतिनसंपूर्णलोकपालादिकोंकेजीतणेविषे तुमारासामर्थ्यहैनहीं ॥ यातें इंद्रकेसाथ युद्धकरणेकीइच्छाका तुम
परित्यागकरो ॥ और हेअश्विनीकुमारो ! जहां युद्धकरणेतेंविना कार्यकीसिद्धिनहींहोवै ॥ तहां युद्धकरणाभीउचितहै ॥ परंतु ब
लकरिकै तथाबुद्धिकरिकै तथाशूरवीरोंकीसहायताकरिकै जोआपणेसमानहोवै तिसकेसाथही युद्धकरणाउचितहोवैहै ॥ और जो
बलकरिकै तथाबुद्धिकरिकै तथा अन्यशूरवीरोंकीसहायताकरिकै आपणेतेंअधिकहोवै ॥ तिसकेसाथ युद्धकरणाउचितनहीं ॥ और य
हदेवराजइंद्र बलकरिकै तथाबुद्धिकरिकै तथा अन्यदेवतावोंकीसहायताकरिकै तुमदोनोंतेंअधिकहै ॥ यातें इंद्रकेसाथयुद्धकरणातुमा
रेकूंउचितनहीं ॥ अब इंद्रकेअधिकताकूंदिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ! तुमदोनोंविषेजितनासामर्थ्यहै ॥ तितनासामर्थ्य संपूर्णदेवता
वोंकेमध्यविषे एकएकदेवताविषेहै ॥ और स्वर्गविषे इंद्रकेसमीप जितनेदेवता निवासकरैहैं ॥ तिनसंपूर्णदेवतावोंविषे एकएकदेव

ताभी जगत्केउत्पत्तिकरणेविषे तथाजगत्केस्थितिकरणेविषे तथासंहारकरणेविषे समर्थहै॥ ऐसे अनंतदेवतावोंकरिकैयुक्त इंद्रकेसाथ युद्धकरणेविषे तुमारासामर्थ्यनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो! स्वर्गविषेस्थित इंद्रादिकदेवतावोंकेसाथ जोद्वेषकरणाहै ॥ सो केवल स्वर्गतैंनीचेगिडनेकाकारणहै ॥ यातैं जोतुमारेकूं स्वर्गविषेरहणेकीइच्छाहोवै तौ इंद्रकेसाथ तुम द्वेषमतकरो ॥ इंद्रकेसाथद्वेषकरणेकरिकै स्वर्गतैंभी तुमारानीचैपतनहोवैगा॥ ऋषिरुवाच ॥ हेअश्विनीकुमारो! इसलोकविषे तथापरलोकविषे भयकूं बोधनकरणेहारे औरनानाप्रकारकेयुक्तियोंसहित जेयाप्रकारकेवचनहैं तिनवचनोंरूपीदंडकरिकै सोदध्यङ्ऋषितुमारागुरु तुमदोनोंका ताडनकरताभया॥ तिसदध्यङ्ऋषिगुरुकेवचनोंकूंश्रवणकरिकैभी तुमदोनों तागुरुकेवचनोंकूंअंगीकारनहींकरतेभये॥ काहेतें? एकतौइंद्रनैंतुमारायज्ञभागनिवृत्तकऱ्याथा॥ और दूसरा सर्वदेवतावोंकीसभाविषे तुमदोनोंका अपमानकऱ्याथा॥ याकारणतें तुमदोनों अत्यंतदुःखीहोतेभये॥ यातैं हितकारीगुरुकेवचनोंकूंभी नहींमानतेभये॥ और हेअश्विनीकुमारो! तुमदोनों पुनःदध्यङ् ऋषिगुरुकेप्रति याप्रकारकेवचनोंकूंकहतेभये॥ हेगुरो! इंद्रकेसाथयुद्धकरणेकरिकै जोकदाचित् हमारामरणहोवै॥ तथा नरककी प्राप्तिहोवै॥ तिसकूं हम अंगीकारकरतेहैं॥ परंतु आप हमारेकूंयुद्धकरणेकीआज्ञादेवो॥ हेअश्विनीकुमारो! याप्रकारकेतुमारेवचनोंकूंश्रवणकरिकै सोदध्यङ्मुनितुमारागुरु पुनःयज्ञभागकेप्राप्तिकीइच्छारूपतुमारेअभिप्रायकूंजाणताभया॥ औरकृपाकरिकैयुक्त हुआसोदध्यङ्मुनि विनाहीयत्नतैंयज्ञभागकीप्राप्तिवासते पुनःयाप्रकारकेवचनोंकूंकहताभया॥ हेअश्विनीकुमारो! अत्यंतकोमल पुष्पोंकरिकैभी किसीशत्रुकेसाथयुद्धकरणेयोग्यनहीं तौ तीक्ष्णशस्त्रोंकरिकैयुद्धकरणा कैसेयोग्यहोवैगा? किंतु सर्वप्रकारतें युद्धकरणायोग्यनहीं॥ काहेतें? युद्धविषे इतनेदोषरहेहैं॥ एकतौ हमाराजयहोवैगा अथवा शत्रुकाजयहोवैगा याप्रकारकासंशय १ और दूसरा श्रेष्ठपुरुषोंकेनाशकाअवश्यहोणा २ और तीसरा युद्धविषेप्राप्तहुआपुरुष शस्त्रोंकेघावतैंविना तथाबांधवोंकेमृत्युतें विना जयकूंप्राप्तहोवैनहीं ३ और चतुर्थ पराजयकेहुए परमनिंदा ४ यहचारिदोष संपूर्णयुद्धविषे अवश्यहोवैहैं॥ यातैंयुद्धकरणायोग्यनहीं॥ और हेअश्विनीकुमारो! जिसयुद्धविषेमरणेतैं पुरुषकूं नरककीप्राप्तिहोवै॥ और जीवनैकरिकै लोकविषेअप

कीर्तिहोवै ॥ और जिसयुद्धविषे ब्राह्मणोंका तथाबांधवोंका तथादेवतावोंका नाशहोवै ॥ ऐसेअधर्मयुद्धविषे क्षत्रियराजाकूंभी उद्यम करणायोग्यनहीं ॥ किंतु ऐसेअधर्मयुद्धतें क्षत्रियराजाकूं भागणाहीश्रेष्ठहै ॥ और हे अश्विनीकुमारो ! याक्षणभंगुरसंसारविषेअधिकारीशरीरकूंपाइके पुरुषोंकूं आत्मज्ञानही संपादनकरणेयोग्यहैं ॥ युद्धादिक संपादनकरणेयोग्यनहीं ॥ कैसाहैयहसंसार ? ॥ जैसे केलेकास्तंभ सारतैंरहितहोवैहै ॥ तैसे सारतैंरहितहै ॥ और संपूर्णदुःखोंकरिकैपूर्णहैजीवनकाल जिसविषे ॥ और निमिषमात्रहैजीवन जिसविषे ऐसेअनित्यसंसारविषे मनुष्यशरीरकूंपाइकै पुरुषनें आपणेंहितकाउपायही संपादनकरणा सोहितकाउपाय अद्वितीयआत्माकाज्ञानही है। आत्मज्ञानतैंभिन्न संपूर्णयुद्धादिककर्म पुरुषोंकेअहितकेसाधनहैं ॥ यातें हेअश्विनीकुमारो! देवराजइंद्रकेसाथयुद्धकरणा इसलोकविषे तथापरलोकविषे तुमारेदुःखकाकारणहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! आपनेंसर्वप्रकारतैंयुद्धकानिषेधकऱ्या सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं? युद्धशास्त्रविषे अनंतप्रकारकेयुद्धकरणेकीरीतिलिखीहै ॥ यातैं सोयुद्धशास्त्र व्यर्थहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो! युद्धशास्त्र व्यर्थनहीं ॥ युद्धशास्त्रनेंभी तहांयुद्धकाविधानकऱ्याहै॥ जहां युद्धकरणेतैंविना आपणेमरणेकानिश्चयहोवै ॥ और युद्धकरणेतैं जीवनैकीसंभावनाहोवै ॥ तिसकालविषे पुरुष युद्धकूंकरै ॥ यहयुद्धशास्त्रविषेकह्याहै॥सोयाप्रकारका युद्धकरणेकाकाल तुमदोनोंविषे प्राप्तभयानहीं ॥ किंतु युद्धकरणेतैंविनाही तुमारेकार्यकीसिद्धिहोइसकैहै ॥ यातैं हेअश्विनीकुमारो ! युद्धकरणेकीइच्छाकापरित्यागकरिकै पुनःयज्ञभागकेप्राप्तिकाउपाय आपणीबुद्धिकरिकै तुम निश्चयकरो ॥ और हेअश्विनीकुमारो ! यास्थूलशरीरकेपराक्रमतैं बुद्धिकापराक्रम अधिकहै ॥ काहेतैं? पुरुषकरिकै चलायाहुआशस्त्र किसीएकशत्रुकूं जयकरैहै ॥ कदाचित् एकशत्रुकूंभी ताडं ... नहीं ॥ और नानाप्रकारकेउपायोंकूं निश्चयकरणेहाराबुद्धिरूपीशस्त्रतौ बुद्धिमानपुरुषकरिकैचलायाहुआ ... लेवैहै ॥ यातैं शरीरकेपराक्रमतैं बुद्धिकापराक्रम अधिकहै ॥ और हेअश्विनीकुमारो! याबुद्धिका ... पदार्थकेदेणेकीप्रतिज्ञाकरै ... कोटिजन्मोंकरिकैभी शरीरके युद्धादिकपराक्रमतैं जिन पदार्थोंकूं नहींसंपादनकरि ... कारीनहीं ॥ याप्रकारकाविचारकरि ... पराक्रमतैं थोडेकालविषे संपादनकरिसकैहै ॥ जैसे कोटिजन्मोंकूं पाइकैभी

यहपुरुष तुम्हारे उत्पत्तिकरणेविषे तथाजगत्‌केस्थितिकरके लोककूं प्राप्तहोइसकैनहीं ॥ और बुद्धिकरिकै निश्चयकन्याजो हिरण्य
गर्भकीउपासनारूपउपायतैं सामर्थ्यनहीं ॥ और हे उपायकरिकै थोडेकालविषेही हिरण्यगर्भकेलोककीप्राप्ति होइसकैहै ॥ यातैं श
रीरकेपराक्रमतैं बुद्धिकाकारण नहीं ॥ यातैं यातैं हेअश्विनीकुमारो! ताबुद्धिकरिकै पुनः यज्ञभागके प्राप्तिका उपाय तुम
निश्चयकरो ॥ शंका ॥ हेभगवन् चैंपतर विना दूसरा कोईउपाय हम जाणतेनहीं ॥ जिसउपायकरिकै हम पुनः यज्ञभा
गकूंप्राप्तहोवै ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो! इंद्रकेसाथयुद्धकरणेकरिकै तुमारेकूं कदाचित्‌भी यज्ञभागकीप्राप्तिहोणेवाली
नहीं ॥ यातैं पुनःयज्ञभागकीप्राप्तिवास्ते तुमारेतांई एकसुगमउपाय हमकहैहैं ॥ तुम सावधान होइके श्रवणकरो ॥ हेअ
श्विनीकुमारो! शर्यातिनामाराजानैं यज्ञकरणेकाउद्यमकऱ्याहै ॥ और शर्यातिनामाराजाका जामाता जो च्यवननामाऋषि
है तिसच्यवनऋषिकूं यज्ञकेहोताकरणेकासंकल्प शर्यातिराजानैं मनविषेकऱ्याहै ॥ परंतु सोच्यवननामाऋषि नेत्रोंतैंअंधहै ॥
यातैं शर्यातिराजाकूं याप्रकारकासंशयहुआहै ॥ यहनेत्रोंतैंरहितच्यवनऋषि किसप्रकार हमारेकूं यज्ञकरावेगा ॥ शंका ॥ हेभगव
न्! सोच्यवननामाऋषि शर्यातिराजाका जामाताकिसप्रकारहोताभया॥ और सोच्यवनऋषि नेत्रोंतैंरहित किसप्रकारहोताभया॥
यहसंपूर्णवार्ता हमारेप्रति कथनकरो॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो! ताशर्यातिनामाराजाकी सुकन्यानामाएककन्याथी ॥ सा
कन्याबाल्यअवस्थाविषे आपणेपिताकेसाथ वनविषेजातीभयी॥ और तिसवनविषे च्यवननामाऋषि बहुतकालकातपकरताथा ॥ कै
साहैसोच्यवनऋषि? जिसकासंपूर्णशरीर मृत्तिकाकरिकै ढांक्यागयाहै ॥ और नेत्रोंकरिकैसूर्यभगवान्‌कूंदेखिरह्याहै ॥ औरसर्वतप
स्वियोंविषेउत्तमहै॥ऐसेच्यवनऋषिकूंदेखिकरिकै साकन्या याप्रकारकाविचारकरतीभयी॥ यापृथिवीकेछिद्रोंविषेकाहेकाप्रकाशहै?
याप्रकारकाविचारकरिकै साकन्या किसीतृणकूंहाथविषेलेकै भूमिकेछिद्रविषेस्थितच्यवनऋषिकेनेत्रोंकूं भेदनकरतीभयी ॥ तिसतैं
अनंतर तानेत्रोंतैं रुधिरकाप्रवाह चलताभया ॥ तारुधिरकूंदेखिकरिकै सोशर्यातिराजा तामृत्तिकाविषेमुनिकूंजानताभया॥और अ
त्यंतभयकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसच्यवनऋषिकूं नेत्रोंतैंरहितअंधदेखिकै मुनिकेसेवाकरनेवासते सुकन्यानामाकन्याकूं च्यवन

ऋषिकेतांई देताभया ॥ हेअश्विनीकुमारो! इसप्रकार सोच्यवननामाऋषि नेत्रोंतेंरहितअंधहै ॥ और वृद्धअवस्थाकरिकैयुक्तहै ॥ तिसच्यवननामाऋषिकूं जोतुम नेत्रोंकीप्राप्तिकरिदेवोगे तथा यौवनअवस्थाकीप्राप्तिकरिदेवोगे तौ सोच्यवनऋषि समर्थहै ॥ यातें पुनःतुमारेकूं यज्ञभागकीप्राप्तिकरावैगा ॥ हेअश्विनीकुमारो ! इसप्रकार जबीदध्यङ्ऋषितुमारेगुरुनैंकह्या ॥ तबी तुमदोनों च्यवननामाऋषिकूंनेत्रयुक्तकरतेभये ॥ तथा यौवनअवस्थायुक्तकरतेभये ॥ पश्चात् सोच्यवनऋषिभी बलात्कारसैं तुमारेतांई यज्ञभागकूं दिवावताभया ॥ यहवार्ता भागवतकेनवमस्कंधविषे विस्तारतैंकथनकरीहै ॥ हेअश्विनीकुमारो! इसप्रकार तुमारेकूंयज्ञभागकी प्राप्तिहोतीभयी ॥ पश्चात् एककालविषे तुमारेगुरुदध्यङ्अथर्वणकेआश्रमविषे देवराजइंद्र अवताभया ॥ ताइंद्रकूं आपणेआश्रमविषेआयाहुआदेखिकरिकै सोदध्यङ्ऋषि इंद्रकाबहुतसन्मानकरताभया तिसतैं अनंतरसोइंद्र सुखपूर्वक आसनऊपरिबैठताभया ॥ और नानाप्रकारकीकथावोंकरिकै सोइंद्र अत्यंतहर्षकूंप्राप्तहोताभया ॥ इसप्रकार संतोषकूंप्राप्तहुएइंद्रकेप्रति सोदध्यङ्ऋषि याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदेवराजइंद्र ! तीनलोकोंकापतितूइंद्र हमारेआश्रमविषे अतिथिहोइकेआयाहै ॥ यातैं तुमारेप्रसन्नताकरणेवासतेमैं कौनपदार्थ देवों? ॥ हेअश्विनीकुमारो! इसप्रकार जबीतुमारेगुरुदध्यङ्ऋषिनें इंद्रकेप्रतिवचनकह्या ॥ तबीसोदेवराजइंद्र तुमारेगुरुदध्यङ्ऋषिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदध्यङ्ऋषि! जोहमारेप्रसन्नताकरणेकीतुमारेकूंइच्छाहै तौ सर्वप्राणियोंकरिकैदुर्लभ जाब्रह्मविद्याहै तिसब्रह्मविद्याका हमारेतांई उपदेशकरो ॥ हेअश्विनीकुमारो! जबी इसप्रकार इंद्रनें तुमारेगुरुदध्यङ्ऋषिकेप्रतिकह्या ॥ तबी सोदध्यङ्ऋषितुमारागुरु महान्संशयकूंप्राप्तहोताभया ॥ **दृष्टांत** ॥ जैसे कन्याकापिता किसीपुरुषकेप्रति मैंतुमारेतांई कन्यादेताहूं याप्रकारकावचनकहै ॥ और पश्चात् तापुरुषविषे विद्यादिकगुणोंकेअभावकूंदेखिकरिकै सोकन्याकापिता इसगुणहीनपुरुषकेतांई कन्याकूंदेवों अथवा नहींदेवों याप्रकारकेसंशयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सोदध्यङ्ऋषिभी देवराजइंद्रकेतांई पूर्व प्रियपदार्थकेदेणेकीप्रतिज्ञाकरताभया॥परंतु सोदेवराजइंद्र गुरुभक्तितैंरहितहै ॥ तथा विषयोंविषेआसक्तहै॥यातैं ब्रह्मविद्याकाअधिकारीनहीं ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोदध्यङ्ऋषि इंद्रकेतांई ब्रह्मविद्यादेणेयोग्यहै अथवानहींदेणेयोग्यहै ॥

याप्रकारकेसंशयकूं प्राप्तहोताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ जोदेवराजइंद्रकेतांई मैं ब्रह्मविद्यानहींउपदेशकरोंगा तौ हमारावचन मिथ्याहो
वैगा ॥ और जोइंद्रकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरोंगा तौ अनधिकारीइंद्रकेतांईदयीहुई ब्रह्मविद्या निष्फलहोवैगी ॥ याप्रकार विद्या
केदेणेपक्षविषे तथानहींदेणेपक्षविषे दोषोंकाविचारकरिकै सोदध्यङ्अथर्वणऋषि महान्संशयकूंप्राप्तहोताभया॥और पुनःसोदध्यङ्
ऋषि आपणेमनविषे याप्रकारकाविचार करताभया ॥ अनधिकारीपुरुषकेतांई ब्रह्मविद्यादेणेकरिकै ऐसापाप उत्पन्नहोवैनहीं ॥ जै
सापाप मिथ्यावचनकरिकैउत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं आपणेप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासते इंद्रकेतांई अवश्य ब्रह्मविद्यादेणीचाहिये ॥ याप्र
कारकाविचारकरिकै सोदध्यङ्ऋषि कहताभया ॥ हेदेवराजइंद्र! सर्वलोकविषेप्रसिद्ध जोहमारेअश्विनीकुमारदोशिष्यहैं तिनोंनैं
ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासते पूर्वहमारेआगे प्रार्थनाकरीथी ॥ परंतु तिनअश्विनीकुमारोंकूं वैराग्यादिकसाधनोंतैंरहितदेखिकरिकै ति
नोंकेप्रति मैं ब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकरताभया ॥ ऐसीदुर्लभब्रह्मविद्याकाउपदेश मैं तुमारेतांई करताहूं ॥ तुम सावधानहोइकै
श्रवणकरो ॥ हेदेवराजइंद्र! जैसे सुखशब्दकामुख्यअर्थ आत्मस्वरूपआनंदहै आत्मस्वरूपआनंदतैंभिन्न विषयजन्यआनंद सुख
शब्दकागौणअर्थहै ॥ तैसेविद्याशब्दकाभी मुख्यअर्थ ब्रह्मविद्याहीहै ॥ ब्रह्मविद्यातैंभिन्नदूसरीविद्या विद्याशब्दकागौणअर्थहै॥
अब ब्रह्मविद्याविषे विद्याशब्दकीमुख्यअर्थता दिखावणेवासते प्रथम विद्याशब्दकेअर्थकूंदिखावैहैं ॥ कार्यरूपकरिकैअनंतरूपोंकूं
प्राप्तहुआ तथावासनारूपीजालकामूलरूप औरसर्वप्राणियोंकूंभयकेदेणेहारा ऐसाजोअज्ञानहै तिसअज्ञानकूं निःशेषतैंजोनिवृ
त्तकरै ॥ तिसकानाम विद्याहै ॥ अथवावैराग्यादिकसाधनयुक्तअधिकारियोंकेतांई आनंदस्वरूपआत्माकूंजोदेवै ताकानाम वि
द्याहै ॥ अथवा अधिकारियोंकेप्रति जोआत्माकासाक्षात्कारकरावै ताकानाम विद्याहै ॥ याप्रकारकाविद्याशब्दकाअर्थ ब्रह्मवि
द्याविषेहीघटैहै॥ ब्रह्मविद्यातैंभिन्नविद्याविषे याप्रकारकाअर्थघटैनहीं ॥ काहतें? ब्रह्मविद्याही पुरुषोंकेअज्ञानकीनिवृत्तिकरैहै तथाआ ॥१५॥
नंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिकरैहै ॥ ब्रह्मविद्यातैंभिन्नकोईविद्या अज्ञानकीनिवृत्ति तथापरमानंदकीप्राप्ति करैनहीं ॥ यातैं ब्रह्मविद्या
ही विद्याशब्दकामुख्यअर्थहै ॥ याप्रकार विद्याशब्दकेअर्थकूंनिरूपणकरिकै सोदध्यङ्ऋषि कहताभया ॥ हेदेवराजइंद्र! संपूर्ण

वेदांतशास्त्रकरिकैप्रतिपादनकरणेयोग्य जोयहब्रह्मपुरुषहै ॥सो आपणेसत्‌चित्‌आनंदरूपकरिकै संपूर्णजगत्‌कूं व्याप्तकरिरह्याहै। याकारणतैं यहब्रह्मनामापुरुष पूर्णसंज्ञाकूंप्राप्तभयाहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! असत्‌शब्दकाअर्थ तथाअसत्‌शब्दजन्यज्ञानकाविषय जोतत्पदकाअर्थपरोक्षईश्वरहै ॥ और सत्‌शब्दकाअर्थ तथासत्‌शब्दजन्यज्ञानकाविषय जोत्वंपदकाअर्थअपरोक्षजीवहै ॥ तिनदोनोंकूं परमात्माकेसत्‌चित्‌आनंदस्वरूपकरिकै तू पूर्णजाण ॥ शंका ॥ हेभगवन्‌! आत्माकेभेदकाकारणजोप्रपंचरूपउपाधिहै ॥ तिसकेविद्यमानहुए परमात्माकीसर्वत्रपूर्णता संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! जोप्रपंच आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्नहोवै तौ प्रपंच आत्माकेभेदकूंउत्पन्नकरै ॥ परंतु आनंदस्वरूपआत्माकेअधिष्ठानतैं प्रपंच भिन्ननहीं ॥ किंतु पूर्णपरमात्मातैंही यहप्रपंच उत्पन्नहोवैहै ॥ और पूर्णपरमात्माविषेही यहसंपूर्णजगत्‌ स्थितहै ॥ और पूर्णपरमात्माविषेही यहसकलजगत्‌ लयहोवैहै ॥ अधिष्ठानआत्माकीसत्तातैंभिन्न जगत्‌कीसत्तानहीं ॥ यातैं संपूर्णजगत्‌ अधिष्ठानरूपआत्माविषेकल्पितहै ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानहुए कल्पितसर्पकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ परिशेषतैं रज्जुरूपअधिष्ठान रहैहै ॥ तैसे अधिष्ठानस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारहुए संपूर्णकल्पितप्रपंचकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ परिशेषतैं पूर्णपरमात्माही प्रपंचरूपउपाधितैंरहितहुआ स्थितहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे वर्षाकालविषे आकाशतैंही मेघ उत्पन्नहोवैहै ॥ और आकाशविषेही मेघ स्थितहोवैहै ॥ और आकाशविषेही मेघोंकालयहोवैहै ॥ और संपूर्णमेघोंकेनिवृत्तहुए परिशेषतैं एकआकाशहीरहैहै ॥ तैसे कल्पितप्रपंचकेनिवृत्तहुए परिशेषतैं एकअद्वितीयपरमात्माहीरहैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे आकाश सर्वत्रपूर्णहै ॥ तैसे आनंदस्वरूपपरमात्माभी सर्वत्रपूर्णहै ॥ और जैसे शरीरादिकअनात्मपदार्थ भूत भविष्यत्‌ वर्तमान यातीनकालोंविषे एकस्वभाववालेहोवैनहीं ॥ किंतु बाल्ययौवनादिकनानास्वभावोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा नानास्वभावोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तीनकालोंविषे एकस्वभाववालाहै ॥ और सत्‌ चित्‌ आनंद स्वरूपहै ॥ ऐसे निर्गुणपरमात्माकेवास्तवस्वरूपकूं शुद्धअंतःकरणवालेविद्वान्‌पुरुषही अनुभवकरैहैं ॥ मलिनअंतःकरणवालेपुरुष आत्माकेवास्तवस्वरूपकूं जाणिसकैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्‌! जिसआत्माकेवास्तवस्वरूपकूं विद्वान्‌पुरुष

अनुभवकरैहै ॥ तिसआत्माकेवास्तवस्वरूपकूं घटपटादिकोंकीन्यांई इदंतारूपकरिकै हमारेप्रति कथनकरो ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! यहआनंदस्वरूपपरमात्मा वास्तवतैंअसंगहै औरनिर्गुणहै ॥ और जगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयतैंरहितहै ॥ यातैं ऐसेनिर्गुणपरमात्माकूं घटादिकोंकीन्यांई इदंतारूपकरिकैबोधनकरणेविषे कोईभीविद्वान् समर्थनहीं ॥ किंतु ऐसेनिर्गुणपरमात्मा विषे जगत्केउत्पत्तिस्थितिलयका आरोपणकरिकै शिष्यकेतांई तिसनिर्गुणब्रह्मकाउपदेश गुरुकरैहैं ॥ प्रपंचकेअध्यारोपअपवादतैंविना साक्षात्निर्गुणपरमात्माकेबोधकरणेविषे कोईभीपुरुष समर्थनहीं ॥ काहेतें? यहनिर्गुणपरमात्मा स्वप्रकाशज्ञानस्वरूप है ॥ यातैं बाह्यचक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकैभी जान्याजावैनहीं ॥ तैसे अंतरमनबुद्धिआदिकोंकरिकैभी जान्याजावैनहीं ॥ तथा अन्यकिसीप्रमाणकरिकैभी जान्याजावैनहीं ॥ ऐसेमनवाणीकेअविषयनिर्गुणपरमात्माविषे जगत्कीउत्पत्तिस्थितिलय किसप्रकारसंभवै? ॥ याप्रकारकेविचारयुक्त जेमहात्मापुरुषहैं ॥ तिनोंनैं जगत्केउत्पत्तिकीसिद्धिवासते तिसनिर्गुणपरमात्माविषे मायाकीकल्पनाकरीहै ॥ सामाया अज्ञानतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु मैंअज्ञानीहूं याअनुभवकरिकैसिद्ध अज्ञानस्वरूपहीमायाहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! तिसअज्ञानरूपमायाकूं यहपरमात्माही प्रकाशकरैहै ॥ यातैं साअज्ञानरूपमाया संपूर्णपरमात्माकूं आच्छादनकरैनहीं ॥ किंतु परमात्माकेकिंचित्देशकूं सामाया आच्छादनकरैहै ॥ जोसर्वओरतैंपरमात्माकूं माया आच्छादनकरै तौ अस्तिभातिप्रियरूपकरिकै आत्माकाभान नहींहोणाचाहिये ॥ और सर्वप्राणियोंकूं मैंसर्वदाविद्यमानहूं याप्रतीतिविषे अस्तिरूपकरिकै परमात्माकाभानहोवैहै ॥ और मैंभासताहूं याप्रतीतिविषे भातिरूपकरिकै परमात्माकाभानहोवैहै ॥ और मैंकबीभीअप्रियनहींहूं याप्रतीतिविषे प्रियरूपकरिकै परमात्माकाभानहोवैहै ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र! यहआनंदस्वरूपपरमात्मापुरुष आपणेस्वप्रकाशज्ञानस्वरूपकरिकै संपूर्णबुद्धिआदिकजडपदार्थोंकाद्रष्टाहै ॥ और सजातीय विजातीय स्वगत भेदतैंरहितहै ॥ ऐसेस्वतःसिद्धआनंदस्वरूपपरमात्माका साक्षात्बोधकरणेविषे कोईभीपुरुष समर्थनहीं ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! शब्दस्पर्शादिकविषयोंकेअनुभवतैं उत्पन्नभयाजोपुरुषकूंसुखहै ॥ तिसआपणेसुखकूं सोपुरुष जबीअन्यकिसीपुरुषकेप्रति कथनकरैहै ॥ तबी अन्य

किसीपदार्थकूंदृष्टांतकरिकै ताआपणेसुखका कथनकरैहै ॥ किसीदृष्टांततैंविना विषयजन्यसुखकेसाक्षात्कथनकरणेविषे कोईभीपु रुष समर्थनहीं ॥ जबी अनुभवकरेहुएविषयजन्यसुखकूंभी कोईपुरुष साक्षात्कथनकरणेविषे समर्थनहींभया ॥ तबी अलौकिक आनंदस्वरूपआत्माकूंकौनपुरुष साक्षात्कथनकरिसकैगा?॥ किंतु आनंदस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कथनकरणेविषे कोईभीपुरुष समर्थ नहीं ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र! तानिर्गुणपरमात्माविषे जगत्काअध्यारोपकरिकै मैंतुमारेतांई आनंदस्वरूपआत्माकाउपदेश करताहूं ॥ जोतुमाराअंतःकरण शुद्धहोवैगा तौ आपेहीतू परमात्माकेवास्तवस्वरूपकूंजाणैगा ॥ अब परमात्माविषेजगत्केअध्यारोपकूंदि खावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ! याअनादिसंसारविषे जैसे रात्रिदिनकाप्रवाह निरंतरवर्तमानहै ॥ तात्पर्ययह ॥ रात्रिकेनिवृत्तहुए दिन कीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और दिनकेनिवृत्तहुए पुनःरात्रिकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ याप्रकार दिनरात्रिकाप्रवाह निरंतरवर्तमानहै ॥ तैसे जगत् के उत्पत्तिका तथाप्रलयका प्रवाहभी निरंतरवर्तमानहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जगत्केउत्पत्तितैंअनंतर प्रलयहोवैहै ॥ और प्रलयकेअनं तर पुनःजगत्कीउत्पत्तिहोवैहै ॥ याप्रकार जगत्केउत्पत्तिप्रलयकाप्रवाह निरंतरवर्तमानहै ॥ और जैसे रात्रिके तथादिनके जोम ध्यकालहै ताकूं लोकविषेसंध्याकहैहैं ॥ तैसे जगत्केउत्पत्तिका तथानाशका जोमध्यकालहै ताकूं शास्त्रविषेस्थितिकहैहैं ॥ अब जगत्केस्वरूपकूंदिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ! यहसंपूर्णजगत् नाम रूप क्रिया स्वरूपहै ॥ तहांविश्व लोक दृश्य प्रपंच याप्रका रकेशब्दोंकूंनामकहैहैं ॥ और आकाशादिकपंचभूतोंकूं तथापंचभूतोंकेकार्यशरीरादिकव्यक्तियोंकूं रूपकहैहैं ॥ और जगत्केउत्प त्तिकूं तथासंहारकूं क्रियाकहैहैं ॥ इसप्रकार संपूर्णजगत्विषे नामरूपक्रियास्वरूपताकथनकरिकै अब एकएकघटपटादिकप दार्थविषे नाम रूप क्रिया स्वरूपतादिखावैहैं ॥ जैसे एकघटका घट कुंभ कलश येनामहैं ॥ और उदरबडा मुखछोटा यह घटकारूपहै ॥ और जलादिकोंकाआनयन यहघटकीक्रियाहै ॥ इसप्रकारपटादिकसर्वपदार्थोंविषेभी नामरूपक्रिया जानि लेणी ॥ अब नामरूपक्रियाकेपरस्परअभेदकूंदिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ! जैसे पटादिकपदार्थ कबी नवीनअवस्थाकूंप्राप्त होवैहैं ॥ और कबी जीर्णअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ सानवीनअवस्था तथाजीर्णअवस्था पटादिकपदार्थोंतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु

तु पटादिकोंकास्वरूपहीहै ॥ तैसे आनयनादिरूपक्रियाभी घटादिकपदार्थोंकीअवस्थाविशेषहै ॥ यातें घटादिकवस्तुकेस्वरूप
तें क्रिया भिन्ननहीं ॥ किंतु रूपस्वरूपही क्रियाहै ॥ और सोघटादिकोंकारूप घटादिकनामोंतें भिन्ननहीं ॥ काहेतें? घटादिकना
मोंतेंविना घटादिकोंके रूपकी सिद्धि होवैनहीं ॥ यातें घटादिकोंकारूप नामस्वरूपहै ॥ इसप्रकार नाम रूप क्रिया येतीनों प
रस्परभिन्ननहीं किंतु अभिन्नहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे नामरूपक्रिया येतीनों परस्पर भिन्ननहींहैं ॥ तैसे आपणेकार
णतेंभी नामरूपक्रिया भिन्ननहीं ॥ किंतु नामरूपक्रिया आपणेकारणतेंअभिन्नहींहोवैहैं ॥ कार्यका कारणकेसाथअभेद लोक
विषेभीदेख्याहै ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित सर्पदंडादिककार्य रज्जुरूपकारणतेंभिन्नहोवैनहीं ॥ तथा परस्परभी भिन्नहोवैनहीं ॥ किंतु
कल्पितसर्पदंडादिक रज्जुरूपकारणतें तथापरस्परअभिन्नहीहैं ॥ तैसे नामरूपक्रिया आपणेकारणतें तथापरस्पर भिन्ननहीं किंतुअ
भिन्नहीहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे आकाशविषेकल्पितमेघादिक आपणीउत्पत्तितेंपूर्व आकाशस्वरूपहीहोवैहैं ॥ तैसे नामरूप
क्रियास्वरूपसकलजगत् आपणीउत्पत्तितेंपूर्व अद्वितीयब्रह्मरूपहीहोताभया ॥ याप्रकार श्रुतिनें जगत्कीउत्पत्तितेंपूर्व ब्रह्मरूपक
रिकैजगत्कीस्थिति कथनकरीहै ॥ साब्रह्मविषेजगत्कीस्थिति ब्रह्मकूंजगत्काकारणमानणेतेंविना संभवैनहीं ॥ काहेतें? आपणेउत्प
त्तितेंपूर्व कार्य कारणविषेहीरहैहै ॥ कारणतेंभिन्नकिसीपदार्थविषे कार्य रहैनहीं ॥ जैसे घटरूपकार्य आपणीउत्पत्तितेंपूर्व मृत्तिकारू
पकारणविषेरहैहै ॥ मृत्तिकातेंभिन्नकिसीपदार्थविषे घटरूपकार्य रहैनहीं ॥ और हेदेवराजइंद्र! अद्वितीयब्रह्मविषे श्रुतिनें कथन
करीजोजगत्कीकारणता सा मायातेंविनासंभवैनहीं ॥ यातें अद्वितीयनिर्गुणपरमात्माविषे जगत्केकारणताकीसिद्धिवासते तेविद्वा
नपुरुष तिसअद्वितीयब्रह्मविषे मायाकीकल्पनाकरैहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र! सामायाभी अधिष्ठानब्रह्मतेंभिन्ननहीं ॥ किंतु अज्ञात
ब्रह्मकानामहीमायाहै ॥ याकारणतें विवेकीमहात्मापुरुष ब्रह्मविषेजगत्कीकारणताकेसिद्धिवासते तिसअज्ञातपरमात्माकूंही माया
केवाचकअव्याकृतादिकशब्दोंकरिकैकथनकरैहै ॥ अब मायाविशिष्टपरमात्माकेनामोंकूं दिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! कोईवेदवेत्तापुरुष
तामायाविशिष्टपरमात्माकूं अव्याकृतकहैहैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं आकाशकहैहैं ॥ और कोईक

वेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं अक्षरकहेहैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं मायिकहेहैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं अधीश्वरकहेहैं॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं अंतर्यामी कहेहैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं ईश्वरकहेहैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं कारणकहेहैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं ब्रह्मकहेहैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं पूर्णकहेहैं ॥ इत्यादिकअनंतनामोंकरिकै तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं वेदवेत्तापुरुष कथनकरैहैं॥ अब अव्याकृतशब्दकेअर्थकूं दिखावैंहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! सृष्टिकीउत्पत्तितैंपूर्व मायाविशिष्टपरमात्माविषे यासंपूर्णप्रपंचकानामरूप अस्पष्टरूपकरिकैरहेहै ॥ या कारणतैं तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं अव्याकृतकहेहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे शीतकालविषे सूक्ष्मरूपहोइकेमेघ आकाशविषेर हेहैं ॥ और पुनःवर्षाकालविषे तिसीआकाशतैं स्थूलरूपकरिकैमेघ उत्पन्नहोवैंहैं ॥ तैसे प्रलयकालविषे तिसअव्याकृतपरमात्माविषे नामरूपक्रियास्वरूपजगत् सूक्ष्मरूपहोइकैरहेहै ॥ और पुनःसृष्टिकालविषे तिसअव्याकृतपरमात्मातैंही स्थूलरूपकरिकैयहजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं मायाविशिष्टअव्याकृतपरमात्माही संपूर्णजगत्काकारणहै ॥ अब हिरण्यगर्भकेस्वरूपकूंदिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! आकाश वायु अग्नि जल पृथिवी यहपंचभूत ॥ तथा नेत्र त्वक् रसन घ्राण श्रोत्र यहपंचइंद्रिय ॥ तथा प्राण अपान समान व्यान उदान यहपंचप्राण ॥ तथा मन ॥ याषोडशकलावोंकेसमूहकूं वेदवेत्तापुरुष सूक्ष्मशरीरकहेहैं ॥ तासमष्टिसूक्ष्मशरीरविषे अहंअभिमानकरिकैयुक्तहुआ सोमायाविशिष्टपरमात्माही हिरण्यगर्भसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! तिसहिरण्यगर्भकूं कोईकवेदवेत्तापुरुष सूत्रआत्माभीकहेहैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसहिरण्यगर्भकूं मृत्युकहेहैं ॥ और कोईवेदवेत्तापुरुष तिसहिरण्यगर्भकूं अशनायाकहेहैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसहिरण्यगर्भकूं प्रभंजनकहेहैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसहिरण्यगर्भकूं स्वयंभूकहेहैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसहिरण्यगर्भकूं ईशकहेहैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसहिरण्यगर्भकूं कार्यब्रह्मकहेहैं ॥ इसतैंआदिलेके अनंतनामोंकरिकै हिरण्यगर्भकाकथनकर्‍याहै॥ और हेदेवराजइंद्र! इसहिरण्यगर्भकास्वरूप

अत्यंतसूक्ष्महै ॥ और नानाप्रकारकेवर्णोंकरिकैयुक्तहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ईश्वर इंद्रिय प्राण विषय अंतःकरण इतनेपदार्थोंकासमु
दाय जाकास्वरूपहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे प्रथम बीजतैंअंकुरउत्पन्नहोवैहै ॥ और अंकुरतैंवृक्षउत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं बीज अं
कुरद्वारा वृक्षकाकारणहै ॥ और अंकुर साक्षात्वृक्षकाकारणहै ॥ तैसे मायाविशिष्टपरमात्मा हिरण्यगर्भद्वारा प्रपंचकाकारणहै ॥ औ
र यहहिरण्यगर्भ आकाशादिकस्थूलपंचभूतोंका तथापंचभूतोंकेकार्यस्थूलशरीरादिकोंका साक्षातहीकारणहै ॥ और यहसंपूर्ण
जगत् याहिरण्यगर्भकाहीस्वप्नहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जबी यहसंपूर्णजगत् हिरण्यगर्भकास्वप्नमानोंगे तो हिरण्यगर्भविषे
जीवपणासिद्धहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! उपाधिदृष्टिकरिकै यहहिरण्यगर्भ जबी आपणेचैतन्यस्वरूपकूंनहींअनुभवकर
ता ॥ तबी यहहिरण्यगर्भ जीवसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और चैतन्यदृष्टिकरिकै यहहिरण्यगर्भ आपणेव्यापकस्वरूपकाहीअनुभवकरै
है ॥ यातैं यहहिरण्यगर्भ ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे महाभारतविषे युधिष्ठिरादिकपंचपांडवोंविषे देवतावोंका
अंश तथामनुष्यकाअंश दोनोंकथनकरैहैं ॥ तैसे समष्टिसूक्ष्मउपाधिकीदृष्टिकरिकै हिरण्यगर्भविषे जीवव्यवहारहोवैहै ॥ और उ
पाधितैंरहितव्यापकचैतन्यदृष्टिकरिकै हिरण्यगर्भविषे ईश्वरव्यवहारहोवैहै ॥ अब हिरण्यगर्भविषे ईश्वरस्वरूपताकेस्पष्टकरणे
वासते ताहिरण्यगर्भविषे सर्वात्मताकूं तथाजगत्के उत्पत्ति स्थिति लयकीकारणताकूं दिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! यहहिरण्य
गर्भही जडचेतनरूपसंपूर्णजगत्स्वरूपहै ॥ और यहहिरण्यगर्भही इंद्रादिकसकलदेवतास्वरूपहै ॥ और यहहिरण्यगर्भही दश
दिशास्वरूपहै ॥ याकरिकै हिरण्यगर्भकीसर्वत्रव्यापकतादिखाई ॥ अब जगत्कीकारणताकूंदिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! जैसे माया
वीराक्षसोंकाबालक आपणेमायाकेप्रभावतैं अनेकपदार्थोंकी उत्पत्ति स्थिति लयकूंकरैहै ॥ तैसे यहहिरण्यगर्भभगवान् आपणेमाया
केबलतैं संपूर्णजगत्के उत्पत्तिकूंतथास्थितिकूं तथासंहारकूंकरैहै ॥ यातैं हिरण्यगर्भही संपूर्णजगत्काकारणहै ॥ और हेदेवराजइं
द्र! याजगत्विषे हिरण्यगर्भतैंअधिक तथाहिरण्यगर्भकेसमान कोईभीदेहधारीजीव नहीं ॥ किंतु संपूर्णदेहधारीजीवोंतैं यहहिरण्य
गर्भभगवान् अधिकहै ॥ यातैं यहहिरण्यगर्भभगवान् अतिशयतादोषतैंरहितहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे राजाकेप्रियभृत्य आप

णीआपणीइच्छाकेअनुसार शुभकर्मविषे तथाअशुभकर्मविषे प्रवर्तमानहोवैहैं ॥ तिनप्रियभृत्योंकीइच्छाकेअनुसारही राजा तिनोंकूं प्रेरणाकरैहै॥तैसे पूर्वपूर्व पुण्यपापरूपकर्मकेअनुसार पुण्यकर्मविषे तथापापकर्मविषे प्रवर्तमानभयेजीवोंकूं यहहिरण्यगर्भभगवान् प्रेरणाकरैहै ॥ यातें यहहिरण्यगर्भभगवान् अंतर्यामीहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ! यहहिरण्यगर्भ भगवान् जिनपुरुषोंकूं नरकविषेलेजाणेकीइच्छाकरैहै ॥ तिनपुरुषोंकूं प्रेरणाकरिकै पापकर्महीकरावैहै॥ और यहहिरण्यगर्भभगवा न् जिनपुरुषोंकूं स्वर्गविषेलेजाणेकीइच्छाकरैहै ॥ तिनपुरुषोंकूं प्रेरणाकरिकै पुण्यकर्महीकरावैहै ॥ और सोहिरण्यगर्भभगवान् जिनपुरुषोंकूं मनुष्यलोकविषेलेजाणेकीइच्छाकरैहै ॥ तिनपुरुषोंकूं प्रेरणाकरिकै पुण्यकर्म तथापापकर्म दोनोंकरावैहै॥ और हेदेवरा जइंद्र ! जैसे लोकविषेधर्मात्माराजा शुभकर्मकरणेहारेपुरुषकूं सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ और अशुभकर्मकरणेहारेपुरुषोंकूं दुःखकीप्रा प्तिकरैहै ॥ तैसे यहहिरण्यगर्भभगवान्भी पुण्यकर्मवान्पुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ और पापकर्मवान्पुरुषोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरै है॥ और यहहिरण्यगर्भभगवान् पापीपुरुषकेइच्छाकेअनुसार तापापीपुरुषकूं पापकर्मविषेप्रेरणाकरैहै ॥ और धर्मात्मापुरु षकेइच्छाकेअनुसार ताधर्मात्मापुरुषकूं पुण्यकर्मविषेप्रेरणाकरैहै ॥ यातें हिरण्यगर्भविषे विषमतादोष तथानिर्दयतादोष होवै नहीं ॥ **दृष्टांत** ॥ जैसे पिता माता नानाप्रकारकेपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै बालककूं सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ और कदाचित् सो पिता माता ताडनकरिकै बालककूं दुःखकीप्राप्तिभीकरैहैं ॥ परंतु बालककेताडनाकालविषे पितामाताकी बालकउपरि निर्दय ताहोवैनहीं॥ किंतु बालककेहितवासतेही पितामाता ताकाताडनकरैहै ॥ तैसे यहहिरण्यगर्भभगवान्भी जीवोंकेचित्तकीशुद्धिवा सते तिनजीवोंकेकर्मोंकेअनुसार तिनजीवोंकूं नरकदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ यातें हिरण्यगर्भविषे विषमतादोष तथानिर्दयतादोष संभ वैनहीं ॥ और हेदेवराजइंद्र! यहहिरण्यगर्भभगवान् सृष्टिकेआदिकालविषे संपूर्णजगत्कूंविचारकरिकैउत्पन्नकरैहै ॥ और स्थिति कालविषे संपूर्णजगत्का पालनकरैहै ॥ और प्रलयकालविषे संपूर्णजगत्का संहारकरैहै ॥ याहिरण्यगर्भतेंभिन्न दूसराकोईपुरुष जगत्के उत्पत्ति स्थिति लय करणेविषेसमर्थनहीं॥और हेदेवराजइंद्र! सोहिरण्यगर्भभगवान् जलहैंप्रधानजिनोंविषे ऐसेस्थूलपंच

भूतोंकूंउत्पन्नकरिकै तिनजलोंविषे आपणेशक्तिरूपवीर्यकूं पावताभया ॥ सोकैसावीर्यहै? उपासकपुरुषोंनैं करेजेकर्म तथाउपासना तिनोंका सूक्ष्मपरिणामरूपहै ॥ ऐसाशक्तिरूपवीर्य जबी हिरण्यगर्भनें जलविषेपाया तबी सोशक्तिरूपवीर्य जलकेऊपरिस्थितहो ताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अंकुरकीउत्पत्तिकालविषे बीज फूलिजावैहै ॥ तैसे सोवीर्य फूलताभया ॥ और तिसतैंअनंतर सोवीर्य दधिकेसमानहोताभया और तिसतैंअनंतर सोवीर्य अत्यंतकठिनभावकूंप्राप्तहोताभया॥ और अत्यंतकठिनभावकूंप्राप्तहुआ सोवीर्य पृथिवीरूपहोताभया ॥ और तिसपृथिवीकासाररूप यहब्रह्मांडगोलक होताभया ॥ याकारणतैंही यहपृथिवी साररूपतैंरहितहुई रूक्षप्रतीतिहोवैहै ॥ और सोपृथिवीकासाररूप ब्रह्मांडगोलककैसाहै? कुक्कुटकेअंडेसमान जाकाआकारहै ॥ और भूरादिकसप्तलो कोंकाआधारहै ॥ ऐसाब्रह्मांडरूपगोलक एकवर्षपर्यंत तिनजलोंविषेस्थितहोताभया ॥ और जैसे शुष्कतुंबीफल वायुकरिकै जल विषेभ्रमणकरैहै॥ तैसे जलविषे वायुकरिकैताडनकऱ्याहुआ यहब्रह्मांडरूपगोलक एकवर्षकेसमाप्तहुएतैंअनंतर कुक्कुटकेअंतरकीन्यां ई भेदनहोताभया ॥ तिसब्रह्मांडरूपगोलकतैं सप्तलोकहैंशरीरजाका ऐसाविराटभगवान् प्रगटहोताभया ॥ सोकैसाहैविराट्भ गवान्? भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषेस्थित जितनाप्रपंचहै ॥ सोसंपूर्ण विराट्भगवान्काही स्वरूपहै ॥ औ र यहविराट्भगवान्ही संपूर्णजीवोंकूं भोगोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ और यहविराट्भगवान्ही जीवोंकूं स्वर्गरूपगौणअमृतकीप्रा प्तिकरैहै ॥ तथा मोक्षरूप मुख्यअमृतकी प्राप्तिकरैहै ॥ और यहविराट्भगवान्ही वृक्षादिकस्थावरप्राणियोंकूं तथामनुष्या दिकजंगमप्राणियोंकूं नानाप्रकारकेअन्नादिकोंकीप्राप्तिकरिकै वृद्धिकरैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! याविराट्भगवान्काकैसा महिमाहै? ॥ संपूर्णजगत् जिसकेमहिमाका एकपादहै ॥ और तीनपादोंकरिकै युक्त सोमहिमा जिसविराट्भगवान्केस्वप्रका शस्वरूपविषेस्थितहै ॥ और जैसे लोकविषे सेनापतितैंआदिलैके संपूर्णद्रव्यादिकपदार्थ राजाकामहिमाहै॥ तिससेनापतिआदि कमहिमातैं तिसमहिमाकाआश्रयरूप महाराजा अधिकहोवै है॥ तैसे संपूर्णप्रपंचरूपमहिमातैं यहविराट्भगवान् अधिकहै ॥ औ र हेदेवराजइंद्र! सकामपुरुषोंकेस्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिवासते कर्मकांडरूपप्रवृत्तिमार्गकाकरताभी यहविराट्भगवान्हीहै ॥ तथा

निष्कामपुरुषोंकेमोक्षकीप्राप्तिवासते ज्ञानकांडरूपनिवृत्तिमार्गकाकरताभी यहविराट्भगवान्हीहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! आका
शादिकपंचभूतोंकरिकैरचितसंपूर्णप्रपंचतें यहविराट्भगवान् अधिकहै॥ याकारणतैं बुद्धिमान्पुरुष ताकूं विराट्कहैहैं॥और यहविरा
ट्भगवान् संपूर्णप्राणियोंकेशरीररूपपुरियोंका आश्रयकरिकैस्थितहोवैहै ॥ और आपणेस्वरूपकरिकै संपूर्णशरीरोंकूंपूर्णकरैहै ॥
याकारणतैं विराट्भगवान्कूं अधिपुरुषकहैहैं॥ और हेदेवराजइंद्र! ब्रह्मांडविषेस्थित जोयहविराट्भगवान्है तिसविराट्भगवान्
तैंही यहसंपूर्णशरीर उत्पन्नभये हैं ॥ तथा संपूर्णपर्वत तथापृथिवी उत्पन्नभयीहै ॥ याकारणतैं सोविराट्भगवान् संपूर्णदेहधारीजी
वोंतैंअधिकहै॥ और हेदेवराजइंद्र! यहविराट्भगवान्ही यज्ञस्वरूपहै॥ और ऋक् साम यजुष् अथर्वण याच्यारिवेदोंकाकारणभीयह
विराट्भगवान्हीहै॥ और याविराट्भगवान्तैंही गायत्रीआदिकछंद उत्पन्नभयेहैं॥ तथा अजातैंआदिलैकै संपूर्णग्रामकेपशु तथा
वनकेपशु उत्पन्नभये हैं ॥और याविराट्भगवान्केमुखतैं देवराजइंद्र तथाअग्नि तथासंपूर्णब्राह्मण उत्पन्नभये हैं॥और याविराट्भगवा
न्केबाहुतैं इंद्र वरुणादिक देवक्षत्रिय उत्पन्नभयेहैं॥ तथा भूमिकेराजे मनुष्यक्षत्रिय उत्पन्नभये हैं॥ और याविराट्भगवान्केऊरुदे
शतैं विश्वेदेवादिकदेववैश्य तथासंपूर्णमनुष्यवैश्य उत्पन्नभयेहैं॥ और याविराट्भगवान्केपादोंतैं पूषानामादेवशूद्र तथासंपूर्णमनु
ष्यशूद्र उत्पन्नभये हैं॥ और याविराट्भगवान्केमनतैं चंद्रमा उत्पन्नभयाहै ॥ और याविराट्भगवान्केनेत्रोंतैं सूर्यभगवान् उत्पन्न
भयाहै ॥ और याविराट्भगवान्केप्राणतैं वायु उत्पन्नभयाहै ॥ और याविराट्भगवान्कीनाभितैं आकाश उत्पन्नभयाहै ॥ और
याविराट्भगवान्केमस्तकतैं स्वर्गलोक उत्पन्नभयाहै ॥ और याविराट्भगवान्केश्रोत्रतैं दशोदिशा उत्पन्नभयीहैं ॥ इसप्रकार
अन्यभीसंपूर्णदेवता तथाशब्दादिकविषय याविराट्भगवान्तैंही उत्पन्नभयेहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र! घृततैंआदिलैकेजेद्रव्यहैं ॥
तथा वसंतऋतुतैंआदिलैकेजेकालहैं ॥ तथाअग्निआदिकजेदेवताहैं ॥ तथा यज्ञकाकरताजोयजमानहै ॥ और यज्ञादिकजेकर्महैं
यहसंपूर्ण विराट्भगवान्तैंभिन्ननहीं ॥ किंतु विराट्भगवान्कास्वरूपहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र! जितनेलोकविषेप्राणियोंकेमस्त
कहैं ॥ तेसंपूर्णमस्तक याविराट्भगवान्केहीहैं॥ यातैं यहविराट्भगवान् असंख्यातमस्तकोंवालाहै ॥ और लोकविषेजितनेप्राणि

योंकीइंद्रियहैं ॥ तेसंपूर्णइंद्रिय याविराट्भगवान्कीहैं ॥ याकारणतें यहविराट्भगवान् असंख्यातइंद्रियवान्है ॥ इसप्रकार हस्त
पादादिकसर्वअंगोंविषेभीजानिलेणा ॥ और हेदेवराजइंद्र! यहविराट्भगवान्ही संपूर्णभूतभौतिकप्रपंचकूं व्याप्तकरिकै हृदयदे
शविषेस्थितहै ॥ और संपूर्णबुद्धिआदिकोंकासाक्षीहै ॥ और संपूर्णदृश्यवर्गतें परेहै ॥ और आवरणतैंरहितस्वयंप्रकाशहै ॥ ऐसेस्व
प्रकाशविराट्भगवान्कूं हेइंद्र! मैंसाक्षात्अनुभवकराताहूं ॥ कैसाहैसोविराट्भगवान्? नामरूपात्मकसकलप्रपंचकाकारणहै ॥
और हृदयदेशविषेस्थितहुआ सोविराट्भगवान् शब्दउच्चारणआदिकसकलव्यवहारोंकूंसिद्धकरैहै ॥ हेदेवराजइंद्र! ऐसेविराट्भ
गवान्केस्वरूपकूं प्रतिबंधकीनिवृत्तिहुए ब्रह्माकेउपदेशतें तूभी साक्षात्अनुभवकरैगा ॥ और हेदेवराजइंद्र! यहविराट्भगवान्
दशोंदिशास्वरूपहै ॥ यातें सकलसामग्रीसहितयज्ञस्वरूपभी यहविराट्भगवान्हीहै ॥ जेपुरुष यज्ञकरिकै ताविराट्भगवान्कापू
जनकरैहैं ॥ तेमहात्मापुरुष तिसयज्ञरूपधर्मकरिकै तिसविराट्भगवान्केमस्तकरूपस्वर्गलोककूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र!
यहविराट्भगवान्कैसाहै? स्वर्गलोक याविराट्भगवान्का मस्तकहै ॥ और सूर्यचंद्रमादोनों याविराट्भगवान्के नेत्रहैं ॥ और
वायु याविराट्भगवान्का प्राणहै ॥ और अंतरिक्षलोक याविराट्भगवान्केदेहका मध्यदेशहै ॥ और संपूर्णजल याविराट्भगवान्
के मूत्राशयहैं ॥ और संपूर्णभूलोक याविराट्भगवान्के पादहैं ॥ और आहवनीयनामाअग्नि याविराट्भगवान्का मुखहै ॥ और
गार्हपत्यनामाअग्नि याविराट्भगवान्का हृदयहै ॥ और दक्षिणाग्निनामाअग्नि याविराट्भगवान्का मनहै ॥ और यज्ञविषेसंस्कार
युक्तजोभूमिहै ॥ सा याविराट्भगवान्का वक्षःस्थलहै ॥ और कुशा याविराट्भगवान्के लोमहैं ॥ और संपूर्णओषधि तथावनस्पति
याविराट्भगवान्के केशहैं ॥ याप्रकार विराट्भगवान्काध्यान उपासकपुरुषकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! यहविस्तारतैंविराट्भगवान्
कास्वरूप हमनैं तुमारेप्रतिकह्या ॥ अब संक्षेपतैंविराट्भगवान्केस्वरूपकूं तुम श्रवणकरो ॥ जितनाप्रपंच प्रत्यक्षदिखाईदेवैहै ॥
और जितनाप्रपंच प्रत्यक्षनहींदेखीता ॥ यहसंपूर्णजगत् विराट्भगवान्का स्वरूपहै ॥ ऐसेविराट्भगवान्रूपपुत्रकूं उत्पन्नहुआ
देखिकरिकै क्षुधाकरिकैपीडितहुआ सोहिरण्यगर्भ विराट्रूपपुत्रकेभक्षणकरणेवासते मुखकूंपसारताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन्!

हिरण्यगर्भभगवान्की पुत्रकेभक्षणरूपनिंदितकर्मविषे काहेतेंइच्छाहोतीभयी ? ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ! यहक्षुधारूपीपिशा
ची किसजीवकेबुद्धिकूंभ्रष्टनहींकरती ? किंतु सर्वप्राणियोंकेबुद्धिकूं यहक्षुधारूपीपिशाची भ्रष्टकरैहै ॥ याकारणतें सोहिरण्यगर्भ पु
त्रकेभक्षणकरणेविषे उद्यमकरताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ हिरण्यगर्भसरीखेईश्वरोंकूंभी जबी क्षुधारूपीपिशाची अनर्थविषेप्रवृत्तकरै
है ॥ तबी अन्यअविवेकीजीवोंकीक्याकथाहै ? ॥ किंवा ॥ यासंसारविषेनानाप्रकारकेरोगहैं ॥ और तिनरोगोंकेनिवृत्तिकेउपायभी ना
नाप्रकारकेशास्त्रविषेकहेहैं ॥ और याक्षुधारूपरोगकेनिवृत्तिकाउपाय अन्नभक्षणतैंविना दूसराकोईहैनहीं ॥ एकअन्नकाभक्षणही
क्षुधारूपरोगकेनिवृत्तिकाउपायहै ॥ याकारणतें सर्वरोगोंतें यहक्षुधारूपरोग अधिकहै ॥ किंवा ॥ जैसे पुत्रकेमरणतें पितामाताकूं
दुःखहोवैहै ॥ तिसदुःखतैंभीअधिकदुःख क्षुधावान्पुरुषकूं होवैहै ॥ याअर्थविषे हिरण्यगर्भही दृष्टांतहै ॥ काहेतें ? पुत्रकेमरणजन्य
दुःखकूंअल्पजाणिकरिकै सोहिरण्यगर्भ क्षुधाजन्यदुःखकीनिवृत्तिवासते पुत्रकेभक्षणकरणेविषेप्रवृत्तहोताभया ॥ यातें यहजान्या
जावैहै ॥ पुत्रकेमरणजन्यदुःखतैंभी क्षुधाजन्यदुःख अधिकहै ॥ किंवा ॥ जैसे दयातैंरहितराक्षस देहधारीजीवोंकीहिंसाकरैहै ॥
तैसे यालोकविषे क्षुधाकरिकैआतुरहुआपुरुष आपणेपिताकूं तथामाताकूं तथागुरुकूं तथाभ्राताकूं तथाबांधवोंकूं हननकरैहै ॥
किंवा ॥ यहक्षुधारूपीपिशाची सत्य शौच श्री धैर्य बल वीर्य पराक्रम यश धर्म दया इसतैंआदिलैके सर्वगुणोंका नाशकरैहै ॥
अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ क्षुधाकरिकैआतुरहुआयहपुरुष आपणेस्त्रीकूं तथापितामातादिकसंबंधियोंकूं श्वानकीन्यांई
तिरस्कारकरैहै ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ क्षुधाकरिकैआतुरहुआपुरुष दयातैंरहितहोवैहै ॥ जोदयावान्पुरुषहोवैहै सो किसीका
निरादरकरैनहीं ॥ दयातैंरहितपुरुषही पितामातादिकसंबंधियोंका निरादरकरैहै ॥ किंवा ॥ सर्वदेहधारीजीवोंविषे याक्षुधारूपीपि
शाचीका विचित्रबलहै ॥ काहेतें ? यालोकविषे निद्रा काम क्रोधादिकदोष अत्यंतप्रबलहैं ॥ तथापि तिनकामादिकदोषोंकूं यहक्षु
धारूपीपिशाची शीघ्रहीनाशकरैहै ॥ तथा सत्यादिकशुभगुणोंकूंभी यहक्षुधारूपीपिशाचीशीघ्रहीनाशकरैहै ॥ यातैंयहजान्याजा
वैहै ॥ सत्यादिकशुभगुणोंतें तथाकामादिकअशुभगुणोंतें यहक्षुधारूपीपिशाची बलवान्है ॥ लोकविषेभी बलवान्पुरुषकरिकैही

निर्बलपुरुषका पराजयहोवैहै ॥ अब क्षुधाविषे निद्रादिकदोषोंकेजयकीकारणताकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ क्षुधाकरिकै
आतुरहुआ यहपुरुष कोमलसिहजाऊपरिसोयाहुआभी निद्राकूंनहींप्राप्तहोता ॥ यातैं निद्रारूपदोषतैंभी यहक्षुधारूपीपि
शाची प्रबलहै ॥ और क्षुधाकरिकैआतुरहुआयहपुरुष जबीकिसीतैंअन्नकीयाचनाकरैहै ॥ तबी सोअन्नदातापुरुष नानाप्र
कारकेदुर्वचनोंकरिकै ताक्षुधावान्पुरुषका निरादरकरैहै ॥ तानिरादरकरिकैभी सोक्षुधातुरपुरुष क्रोधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं
क्रोधरूपदोषतैंभी यहक्षुधारूपीपिशाची बलवान्है ॥ किंवा ॥ चंद्रकेसमानहैमुखजिनोंका ॥ तथा पीनहैदोनोंस्तनजिनोंके ॥
तथा कोमलहैशरीरजिनोंका ॥ तथा षोडशवर्षकीअवस्थाहैजिनोंकी ॥ तथा कोमलहैभाषणजिनोंका ॥ तथा अप्सरा
वोंकेसमानहैसुंदरताजिनोंकी ॥ तथा कामकरिकैयुक्तहैशरीरजिनोंका ॥ इत्यादिकगुणोंकरिकैयुक्तजेस्त्रियांहैं ॥ तिनस्त्रियोंकरि
कै आलिंगनकऱ्याहुआभी यहक्षुधावान्युवापुरुष बालककीन्यांई कामदोषकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं कामदोषतैंभी यहक्षुधारूपी
पिशाची बलवान्है ॥ किंवा ॥ क्षुधाकरिकैआतुरहुआयहपुरुष स्वर्णादिकद्रव्यकीभी इच्छाकरतानहीं ॥ तथा अश्वादिकपशुवों
कीभीइच्छाकरतानहीं ॥ तथा तीनलोकसंबंधीपृथिवीकेराजकरणेकीभी इच्छाकरतानहीं ॥ यातैं यहक्षुधारूपीपिशाची लोभदोष
तैंभी प्रबलहै ॥ किंवा ॥ काम क्रोध लोभ यातीनोंदोषोंनैं तीनलोकोंकूंजीत्याहै ॥ यातैं काम क्रोध लोभ येतीनोंदोष महाबल
वान्हैं ॥ ते काम क्रोध लोभभी याक्षुधारूपीपिशाचीकेभयतैं जहांतहांभागेफिरतेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जबी काम क्रोध लोभ ये
तीनोंशूरवीरभी क्षुधारूपपिशाचीकेभयतैं याप्रकारकेदुर्गतिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तबी कामक्रोधलोभकरिकै पराजयकूंप्राप्तभयेजेस
त्यादिकगुणहैं तिनोंकूं यहक्षुधारूपीपिशाची नहींपराजयकरैगी यहकहणासंभवैनहीं ॥ यातैं यहक्षुधारूपीपिशाची सत्या
दिकशुभगुणोंतैं तथाकामक्रोधादिकअशुभगुणोंतैं बलवान्है ॥ जिसक्षुधारूपीपिशाचीकेवशहुआ यहहिरण्यगर्भभगवान्
आपणेपुत्रकेभक्षणकरणेकीइच्छाकरताभयाहै ॥ हेदेवराजइंद्र! इसप्रकार जबी हिरण्यगर्भनैं विराट्रूपपुत्रकेभक्षणकरणे
वासते मुखकूंपसाऱ्या तबी सोविराट् ताहिरण्यगर्भपिताकूंदेखिकरिकै भयकूंप्राप्तहोताभया ॥ और 'भाण्' याप्रकारकेशब्दकूं

करताभया॥हेदेवराजइंद्र! यहदेहाभिमानही जीवोंकेअनर्थकाकारणहै॥ काहेतें? जिसदेहाभिमानकरिकैयुक्तहुआ विराट्पुत्र हिर ण्यगर्भपिताकूंक्षुधातुरदेखिकै भयकूंप्राप्तहोताभया॥ यद्यपि मरणतैंअनंतर यास्थूलशरीरकूं श्वानादिकजंतु भक्षणकरैंगे याप्रकार काज्ञान विराट्कूंहै॥ तथापि जीवत्कालविषे जिसदेहाभिमानकेप्रभावतैं साक्षात्पिताकेतांईभी यहविराट्शरीरकादाननहींकर ताभया॥यातैं यहदेहाभिमानही सर्वधर्मकाप्रतिबंधकहै॥ शंका॥ हेभगवन्! विराट्भगवान्नैं हिरण्यगर्भपिताकेतांई जोशरीरका दाननहींकऱ्या॥ याकेविषेदेहाभिमानप्रतिबंधकनहीं॥ किंतु॥ अन्यहीकोईप्रतिबंधकहोवैगा॥ समाधान॥ हेदेवराजइंद्र! पिता केतांई शरीरदेणेविषे विराट्भगवान्कूं कौनप्रतिबंधकहै?॥ पिताकेतांई शरीरकादानकरणा हमारेअनिष्टकासाधनहै याप्रकारका अनिष्टसाधनताज्ञान प्रतिबंधकहै॥ अथवा पिताकेतांई शरीरकादानकरणा निष्फलहै याप्रकारकानिष्फलताज्ञान प्रतिबंधकहै॥ तहां प्रथमपक्षतौसंभवैनहीं॥ काहेतें? जैसे किसीपुरुषनैं कोईपदार्थ किसीपुरुषकेपास रख्याहोवै॥ तिसपदार्थकूं जबी सोपुरुष मागै॥ तबी देणेहारेपुरुषकूं तिसपदार्थकेदेणेविषे किसीअनिष्टकीप्राप्तिहोवैनहीं॥ उलटा नदेणेविषे प्रतीतिकीहानिरूपअनिष्टकी प्राप्तिहोवैहै॥ तैसे पिताकेवीर्यकरिकै पुत्रकाशरीर उत्पन्नहोवैहै॥ यातैं पुत्रकाशरीर पिताकाहीहै॥ तिसपुत्रकेशरीरकूं जबी पि ताभक्षणकरै॥ तबीपुत्रकूं किंचित्मात्रभी अनिष्टकीप्राप्तिहोवैनहीं॥ उलटा नदेणेकरिकै प्रतीतिकीहानिरूपअनिष्टकीप्राप्तिहोवै है॥ यातैं पिताकेतांई शरीरदानकरणेविषे अनिष्टसाधनताज्ञान प्रतिबंधकनहीं॥ और पिताकेतांई शरीरदानकरणेविषे निष्फल ताज्ञान प्रतिबंधकहै॥ यहदूसरापक्षभी संभवैनहीं॥ काहेतें? याअनित्यशरीरकरिकै जोकिसीकाकार्यसिद्धहोइसकै तौ इसतैंप रेकोईदूसराकर्तव्यनहीं॥ किंतु इतनैंकरिकैही शरीरकीसफलता सिद्धहोवैहै॥ यातैं पिताकेतांई शरीरदानकरणेविषे निष्फलता ज्ञानभी प्रतिबंधकनहीं॥ किंवा॥ अन्यकिसीक्षुधातुरपुरुषकेतांई जोकोईकपुरुष अन्नादिकपदार्थदेवैहै तिसअन्नदातापुरुषकूं स्व र्गादिकलोकोंकीप्राप्तिहोवैहै॥ यहशास्त्रविषेकथनकऱ्याहै॥ जबी अन्नादिकोंकेदानकरणेतैंभी पुरुषोंकूं स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्ति होवैहै॥ तबी साक्षात्आपणेशरीरकेदानकरणेतैं फलकीप्राप्तिनहींहोवैगी॥ यहकहणा अत्यंतअनुचितहै॥ किंतु शरीरकेदानकर

णेतें जीवोंकूं महान्‌फलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसीकिसीक्षुधातुरअतिथीकेतांई अन्नदानकरणेहारेपुरुषकूंभी जबी स्वर्गा दिकफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तबी क्षुधातुरसाक्षात्‌आपणेपिताकेतांई यास्थूलशरीरकेदानकरणेकरिकै यहपुरुष किसफलकूंप्राप्तनहींहो वैगा? किंतु सर्वफलकूंप्राप्तहोवैगा ॥ यातें पिताकेतांई शरीरदानकरणेविषे निष्फलताज्ञान प्रतिबंधकनहीं ॥ किंवा ॥ याअशुचिश रीरविषे जेपुरुष आत्मअभिमानकरै हैं तिनोंतें यहपूछाचाहिये ॥ श्लोक ॥ विण्मूत्रादिमलानांहिसंचयोदेहइरितः ॥ अस्मिन्नहंम तिश्चेत्स्यात् बाह्येकस्मान्नसाभवेत् ॥ अर्थयह हेदेहाभिमानीजीवो! विष्ठा मूत्र मांस रुधिर मज्जा अस्थि इत्यादिकमलों कासमुदायरूपयहशरीरहै ॥ ऐसेअशुचिशरीरविषे जबीतुमोंनैं आत्मबुद्धिकरीहै तबी शरीरतैंबाहरिजेविष्ठामूत्रमांसादिकहैं ॥ तिनोंविषेआत्मबुद्धि तुम काहेतैंनहींकरते? किंतु शरीरतैंबाहरिदेशविषेस्थित जेविष्ठामूत्रादिकमलहैं ॥ तिनोंविषेभी तुमारेकूं आ त्मबुद्धिकरीचाहिये ॥ शरीरतैंबाहरिदेशविषेस्थितविष्ठामूत्रादिकोंविषे तथाशरीरकेभीतरस्थितविष्ठामूत्रादिकोंविषे किंचित्‌मात्र भीविलक्षणतानहीं ॥ यातें जैसेशरीरतैंबाह्यविष्ठामूत्रादिकमलोंविषे तुम आत्मबुद्धिकरतेनहीं ॥ तैसे विष्ठामूत्रादिकोंकेसमु दायरूप याशरीरविषेभी तुमारेकूं आत्मबुद्धिकरणीउचितनहीं ॥ १ ॥ इसप्रकार देहाभिमानरूपकार्यकीअविद्याविषे अनर्थकी कारणतादिखाई ॥ अब देहाभिमानकाकारणजोअज्ञानरूपमायाहै ताकेविषे सर्वअनर्थकीकारणताकूंदिखावैहैं ॥ हेदेवराजइं द्र! यहपरमेश्वरकी मायाकैसीहै? ॥ मायाके आश्रय जेपुरुषहैं तिनोंकूंभी मोहितकरणेहारीहै ॥ याकारणतैंही यामायानैं मायाकेआश्रय विराट्‌पुरुषकूं मोहितकऱ्याहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! मायानैं विराट्‌पुरुषकूं मोहितकऱ्याहै यह कैसेजान्या जावै? ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! यहशरीरकैसाहै? पिताकेवीर्यतैंउत्पन्नभयाहै ॥ यातें पिताकाहीहै ॥ पुत्रका यहशरीर नहीं ॥ और दुर्गंधिकरिकैयुक्तहै ॥ और सर्वदाअपवित्रहै ॥ और क्षणक्षणविषे नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और घटकी न्यांई अनात्मरूपहै ॥ और स्थायीपणेतैंरहितहै ॥ ऐसेनिकृष्टशरीरकूंभी सोविराट्‌पुरुष क्षुधातुरपिताकेतांई नहींदेताभया ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ यहसंपूर्ण मायाकाहीप्रभावहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपुरुष द्रव्यादिकपदार्थोंकेदानकरणेविषे कृपण

होवै है ॥ तिसपुरुषका तिनद्रव्यादिकपदार्थोंविषेअध्यासहोवैहै ॥ अध्यासतैंविना कृपणताहोवैनहीं ॥ यातैं कृपणतारूपहेतुतैं अध्यासकाअनुमानहोवैहै ॥ और सोअध्यास अज्ञानरूपमायातैंविना संभवैनहीं ॥ यातैं अध्यासरूपहेतुतैं अज्ञानरूपमायाका अनुमानहोवैहै ॥ तैसे हिरण्यगर्भपिताकेतांई शरीरदानकरणेविषे जोविराट्पुरुषकीकृपणताहै ॥ साकृपणताही अध्यासद्वारा अज्ञानरूपमायाका अनुमानकरावैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ! शरीरादिकोंविषेआत्मअभिमानरूपजोमोहहै ॥ तथा अज्ञानरूपजोमोहहै ॥ यहदोनोंप्रकारकामोह जबी विराटादिकमहान्पुरुषोंकूंभी अनुचितकार्यविषेप्रवृत्तकरैहै ॥ तबी अन्यलौकिकपुरुषोंकूं अनुचितकार्यविषनहींप्रवृत्तकरैगा यहकहनासंभवैनहीं ॥ यातैं यहदोनोंप्रकारकामोहही जीवोंकेसर्वअनर्थकाकारणहै ॥ हेदेवराजइंद्र ! विराट्पुरुषनैं भयकरिकै जो'भाण्' याप्रकारकीवाणीउच्चारणकरी ॥ साविराट्पुरुषकीवाणी सर्वदेहधारीजीवोंकी वर्णरूपवैखरीवाणी तथाध्वनिरूपवैखरीवाणी होतीभयी ॥ और हेदेवराजइंद्र ! क्षुधाकरिकैआतुरहुआ सोहिरण्यगर्भभगवान् विराट्पुत्रकेभक्षणकरणेवासते प्रवृत्तभयाभी ॥ परंतु ताविराट्पुत्रकूं सोहिरण्यगर्भ भक्षणनहींकरताभया ॥ काहेतैं ? सोहिरण्यगर्भभगवान् विद्याकरिकैसंपन्न है ॥ यातैं विद्याकेबलतैं पुत्रकेभक्षणरूपनिषिद्धकर्मतैं निवृत्तहोताभया ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र ! यहविद्या किसपुरुषउपरि उपकारकूं नहींकरती ? किंतु सर्वजनोंउपरि यहविद्या उपकारकरैहै ॥ याअर्थविषे हिरण्यगर्भहीदृष्टांतहै॥ काहेतैं? पुत्रकेभक्षणरूपनिषिद्धकर्मविषे यहहिरण्यगर्भ प्रवृत्तभया तौभी यहविद्या ताहिरण्यगर्भकूं निषिद्धकर्मतैं निवृत्तकरतीभयी ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे हिरण्यगर्भकूं निषिद्धकर्मतैं विद्या निवृत्तकरतीभई ॥ तैसे अन्यभीजोकोईपुरुष याविद्याकूंसंपादनकरैगा ॥ तिसपुरुषकूंभी साविद्या निषिद्धकर्मतैंनिवृत्तकरिकैशुभकर्मविषेप्रवृत्तकरैगी ॥ अब विद्याकेप्रभावकूंदिखावैहै ॥ हेदेवराजइंद्र ! लोककरिकै तथाशास्त्रकरिकै निषिद्धकर्मोंकूं करणेहाराजोपुरुषहै तथा अत्यंतदीनदशाकूं प्राप्तभयाजोपुरुषहै तिनसंपूर्णोंकूं यहविद्या सुखकीप्राप्तिकरै है ॥ तथा सुखकेसाधनद्रव्यादिकपदार्थोंकी प्राप्तिकरैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ! दोनोंलोकोंकेहानिकरणेहारा तथाकीर्तिकेनाशकरणेहारा जोआपदारूपीदुस्तरसमुद्रहै तिसविषेप्राप्तहुआभी यहपुरुष जिसविद्याकेप्रभावतैं तिसआपदारूपीसमुद्रकूं सुखेनही तरिजावैहै ॥ और हे

देवराजइंद्र! यहविद्याही सर्वदेहधारीजीवोंकीमाताहै विद्यातैंभिन्न दूसरीकोई जीवोंकीमातानहीं॥काहेतें? लोकप्रसिद्धमाताकेउदरतें उत्पन्नहुआयहजीव इसलोकविषे तथापरलोकविषे सुखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और याविद्यारूपीमातातें प्रगटहुआयहपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे सुखकूंप्राप्तहोवैहै॥और हेदेवराजइंद्र! यहविद्याहीसर्वदेहधारीजीवोंकाधनहै ॥ याविद्याकेसमान कोईदूसराधननहीं॥काहेतें? लोकविषेप्रसिद्धजेसुवर्णादिकधनहैं तेदेणेकरिकै न्यूनताकूंप्राप्तहोवै हैं और परलोकविषेभी पुरुषकेसाथचलतेनहीं ॥ और यहविद्यारूपीधन सुपात्रपुरुषोंकेताईं दानकऱ्याहुआ दिनदिनविषे वृद्धिकूंप्राप्तहोताजावैहै ॥ और परलोकविषेभी याजीवका परित्यागकरतानहीं ॥ यातें स्वर्णादिकलौकिकधनतें यहविद्यारूपीधन अत्यंतउत्कृष्टहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! काम क्रोध लोभ मोह क्षुधा इत्यादिकशत्रुवोंकरिकै हननकूंप्राप्तहुआयहपुरुष एकविद्यारूपीशस्त्रकरिकैही तिनकामादिकशत्रुवोंकाहननकरैहै ॥ विद्यारूपीशस्त्रतैंविना अन्यकिसीउपायतें कामादिकोंकीनिवृत्तिहोवैनहीं॥यातें हेदेवराजइंद्र! याविद्याकेसमान कोईहितकारीपदार्थ नहीं ॥ याकारणतैंही साविद्या हिरण्यगर्भकेहृदयविषे प्राप्तहोइकै ताहिरण्यगर्भकूं कहतीभयी ॥ अब ताविद्याकेवचनोंकूंदिखावै हैं ॥ हेहिरण्यगर्भ! पुत्रकाभक्षणकरणा तुमारेकूंयोग्यनहीं॥काहेतें? सर्वलोकोंकूं धर्ममर्यादाविषेस्थापनकरणेवासते तुमारा प्रादुर्भावहुवाहै ॥ यातें सर्वलोकोंके तुम गुरुहो ॥ जबी तुमही मर्यादाकाभेदनकरोगे ॥ तबी इसतेंअनंतर कौनजीव मर्यादाकूंपालनकरैगा? किंतु कोईभीजीव मर्यादाकापालननहींकरैगा ॥ और हेहिरण्यगर्भ! यालोकविषे सर्वजीवोंकूं आपणेआपणेधर्मविषेस्थापनकरणेहारे तुमहो ॥ और तुमारेकूंधर्ममर्यादाविषे स्थापनकरणेहारा मैंविद्यातैंभिन्न दूसराकोईहैनहीं ॥ किंतु मैंविद्याही तुमारेकूं धर्ममर्यादाविषेस्थापनकरणेहारीहौं ॥ और हेहिरण्यगर्भ! जोतू हमारेउपदेशकूंनअंगीकारकरिकै विराट्पुत्रकूंभक्षणकरैगा तौ दोनों लोकविषे तुमारायश नष्टहोवैगा ॥ और पुत्रकरिकेउत्पन्नहोणेहाराजोआनंदहै सोभी तुमारानष्टहोवैगा ॥ यातें पुत्रकाभक्षणकरणा तुमारेकूंउचितनहीं॥ और हेहिरण्यगर्भ! यहपुत्रकाभक्षणरूपकर्म चांडालोंकरिकै तथापशुवोंकरिकैभी निंदितहै॥ काहेतें? क्षुधाकरिकैआतुरहुएचांडाल तथापशुभी पुत्रकाभक्षणकरतेनहीं ॥ यातें चांडाल तथापशुवोंकरिकैभीनिंदित जोपुत्रकाभक्षणरूप

कर्महै ॥ तिसविषे प्रवृत्तहोणा तुमारेकूंउचितनहीं ॥ और हेहिरण्यगर्भ! जेश्वानादिकपशु कामकरिकैमोहितहुए आपणीमाताके साथ तथाभगिनीकेसाथभी मैथुनकरैहैं ॥ तेश्वानादिकपशुभी आपणेपुत्रोंकूं जबीभक्षणनहींकरते ॥ तबी धर्मकेस्थापनकरणेहारे तुमारेविषे यहपुत्रकाभक्षणरूपकर्म कैसेसंभवैगा? ॥ हेदेवराजइंद्र! इसप्रकार विद्यानैं जबीहिरण्यगर्भकेप्रति उपदेशकऱ्या ॥ तबी सोहिरण्यगर्भभगवान् ताविद्याकेवचनोंकाविचारकरिकै पुत्रकेभक्षणतैंनिवृत्तहोताभया ॥ और सोहिरण्यगर्भभगवान् ताविराट्पुत्रकेतांई आत्मज्ञानकीप्राप्तिकरिकै तथासर्ववेदोंकाकथनकरिकै तहांअंतर्धानहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोविराट्भगवान् एकलाहीस्थितहोताभया ॥ और जैसे निर्जनदेशविषेस्थितहुआबालक भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सोविराट्पुरुष हिरण्यगर्भभीपिताकूंनदेखिकरिकै क्षणमात्र भयकूंप्राप्तहोताभया ॥ और क्षणतैंपश्चात् सोविराट्पुरुष विचारकरिकै ताभयकापरित्यागकरताभया ॥ अब ताविचारकेस्वरूपकूंदिखावैहैं ॥ श्रुतिविषे द्वितीयवस्तुतैंभयकीप्राप्तिकथनकरीहै ॥ सोमेरेस्वरूपतैंभिन्न कोईदूसरापदार्थहैनहीं ॥ काहेतैं? जोमेरेस्वरूपतैं ब्रह्मभिन्नहोवै तौ ब्रह्मविषेअद्वितीयपणा नहींरहैगा ॥ और शास्त्रविषे ब्रह्मकाअद्वितीयस्वरूपही कथनकऱ्याहै ॥ यातैं मेरेस्वरूपतैं ब्रह्म भिन्ननहीं ॥ और जोमेरेस्वरूपतैंआत्मा भिन्नहोवै तौ जैसे मेरेतैंभिन्न घटपटादिक अनात्माहैं ॥ तैसे आत्माभी अनात्माहोवैगा ॥ और आत्माकूंअनात्माकहणासंभवैनहीं ॥ यातैंआत्माभी मेरेस्वरूपतैंभिन्ननहीं ॥ इसप्रकार ब्रह्मकेस्वरूपकाविचारकरिकै तथाआत्माकेस्वरूपकाविचारकरिकै सोविराट्भगवान् भेददृष्टिकापरित्यागकरताभया ॥ ताभेददृष्टिरूपकारणकेनिवृत्तहुए सोविराट्भगवान् भयरूपकार्यतैंरहितहोताभया ॥ अब भेददृष्टिविषे भयकीकारणता स्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ जैसे लोकविषेदुःखकेसाधनजेसिंहसर्पादिकहैं तिनोंकूं जबीयहपुरुष आपणेतैंभिन्नकरिकैमानताहै ॥ तबी तिनसिंहसर्पादिकोंतैं सोपुरुष भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जबीयहपुरुष भेददृष्टिकापरित्यागकरैहै ॥ तबी किसीपदार्थतैंभयकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैंअन्वयव्यतिरेककरिकै भेददृष्टिही जीवोंकेभयकाकारणहै ॥ ताभेददृष्टिकूं सोविराट्भगवान् पूर्वउक्तविचारकरिकै परित्यागकरताभया ॥ यातैं सोविराट्भगवान् ॥ निर्भयताकूंप्राप्तहोताभया ॥ हेदेवराजइंद्र! सोविराट्भगवान् यद्यपि विचारकरिकै भयतैं

रहितहोताभया तथापि कामदोषकरिकैयुक्तहुआ सोविराट्भगवान् स्त्रीतैंविना किंचित्मात्रसुखकूंभी नहींप्राप्तहोताभया ॥
और जैसेलोकविषे कामीपुरुषोंकूं स्त्रीतैंविना वामभागविषेस्थित संपूर्णआकाश शून्यरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै॥ तैसे विराट्भगवान्
कूंभी स्त्रितैंविना वामभागविषेस्थितसंपूर्णआकाश शून्यरूपकरिकैप्रतीतहोताभया॥ तात्पर्ययह॥संपूर्णकामनावोंविषे एकएकअंश
विषे शून्यताज्ञानकीकारणताहै ॥ जैसे स्त्रीकीकामनावालाकामीपुरुष वामभागकेआकाशकूं शून्यरूपमानैहै ॥ और पुत्रकीकामना
वालापुरुष अंकआकाशकूं शून्यरूपमानैहै ॥ और पशुवोंकीकामनावान्पुरुष गृहअंगणकेआकाशकूं शून्यरूपमानैहै ॥ और ध
नकीकामनावालापुरुष कोशआकाशकूंशून्यमानैहै ॥ इसप्रकार जिसजिसपदार्थकी पुरुषकूंकामनाहोवैहै ॥ तिसतिसपदार्थके
रहणेकेस्थानकूं शून्यरूपकरिकैमानैहै ॥ एकनिष्कामपुरुषही सर्वत्रआत्माकूंपूर्णकरिकैमानैहै ॥ यातैं पदार्थोंकीकामनाही दुःख
काकारणहै ॥ जिसकामनाकेप्रभावतैं साक्षात्विराट्भगवान्कूंभी दुःखकीप्राप्तिहोतीभयी ॥ हेदेवराजइंद्र! इसप्रकार जीवों
केपुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं विराट्भगवान्विषे उत्पन्नभयाजोकामरूपसर्प तिसकामरूपीसर्पकरिकै दंशकूं प्राप्तहुआ सोविरा
ट्भगवान् आपणेमनविषे याप्रकारकाविचार करताभया ॥ सर्वत्रव्यापकजोयहहमाराशरीरहै सो किसीभोगकेभोगणेविषे
समर्थनहीं ॥ यातैं भोगोंकेभोगणेवासते याशरीरतैंभिन्न किसीअल्पशरीरकूं मैंउत्पन्नकरों ॥ जिसशरीरकरिकैमेरेकूं विषयज
न्यसुखकीप्राप्तिहोवै ॥ हेदेवराजइंद्र! इसप्रकारकाविचारकरिकै सोसत्यसंकल्पविराट्भगवान् दूसरेशरीरकूंउत्पन्नकरताभया ॥
सोकैसाहैदूसराशरीर? जैसे दोनोंशुक्तिकवोंकासंपुटहोवैहै॥ तैसे अर्द्धशरीरजिसकास्त्रीरूपहै ॥ और अर्द्धशरीरपुरुषरूपहै॥ या
प्रकारकेशरीरकूं सोविराट्भगवान् रचताभया ॥ हेदेवराजइंद्र! विराट्भगवान्तैंउत्पन्नभयाजो स्त्रीपुरुषात्मकशरीर सो कार
णअज्ञानकरिकैघटितहै ॥ यातैं मायाविशिष्टईश्वरस्वरूपहै ॥ और सोशरीर अंतःकरणादिकसूक्ष्मपदार्थोंकरिकैघटितहै ॥ या
तैं हिरण्यगर्भस्वरूपहै॥ और सोशरीर स्थूलभौतिकपदार्थोंकरिकैघटितहै॥ यातैं विराट्स्वरूपहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे
यह स्त्रीपुरुषात्मक शरीर ईश्वर हिरण्यगर्भ विराट्स्वरूप है ॥ तैसे जितनेलोकविषे स्त्रीशरीर हैं॥ तथा जितनेपुरुषशरीर हैं

तथा जितनेनपुंसकशरीर हैं तथा जितनेस्थावरजंगमशरीर हैं ॥ तेसंपूर्णशरीर ईश्वर हिरण्यगर्भ विराट्स्वरूप हैं ॥ काहेतें?
सर्वप्राणियोंकेसमष्टिस्थूलशरीरकाअभिमानी विराट्भगवान्‌है ॥ यातें सर्वप्राणियोंकेसाथ विराट्भगवान्‌कातादात्म्यहै ॥ और
सर्वप्राणियोंकेसमष्टिसूक्ष्मशरीरकाअभिमानी हिरण्यगर्भहै ॥ यातें सर्वप्राणियोंकेसंघातसाथ हिरण्यगर्भकातादात्म्यहै ॥ और
सर्वप्राणीयोंकेसमष्टिकारणशरीरकाअभिमानी ईश्वरहै ॥ यातें सर्वप्राणियोंकेसंघातकेसाथ ईश्वरकातादात्म्यहै ॥ इहां अज्ञानरू
पमायाकानाम कारणहै ॥ और अपंचीकृतपंचभूतोंकूं तथातिनोंकेकार्यअंतःकरणादिकोंकूं सूक्ष्मकहैहैं ॥ और पंचीकृतपंचभूतोंकूं
तथातिनोंकेकार्यकूं स्थूलकहैहैं ॥ इसप्रकारसंपूर्णप्राणियोंकेसंघात स्थूल सूक्ष्म कारण स्वरूप है ॥ यातें सर्वप्राणियोंकेशरीरों
केसाथ विराट् हिरण्यगर्भ ईश्वरका तादात्म्यसंबंधहै यहसिद्धभया ॥ अब पूर्ववृत्तांतकूंदिखावैहैं॥ हेदेवराजइंद्र! विराट्भगवान्
तेंउत्पन्नभयाजो स्त्रीपुरुषस्वरूपदूसराशरीर तिसशरीरतैंही यहसंपूर्णमनुष्यादिकसृष्टि उत्पन्नभईहै ॥ यातें सोविराट्भगवान्
कादूसराशरीर व्यष्टिकोटिविषेगण्याजावैनहीं ॥ किंतुसमष्टिकोटिविषे तिसकीगिणतीहै ॥ अब तिसविराट्भगवान्‌केदूसरेशरी
रतें मनुष्यादिकसृष्टिकेउत्पत्तिकाप्रकारदिखावैहैं हेदेवराजइंद्र! ऐसेस्त्रीपुरुषात्मकशरीरकूं उत्पन्नहुआदेखिकरिकै सोविराट्भ
गवान् ताशरीरकेदोविभागकरताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे शुक्तिकासंपुटविषेस्थितकीट शुक्तिकासंपुटकेदोविभागकरैहै ॥ तैसे
सोविराट्भगवान् तिसशरीरकेदोविभागकरताभया ॥ इहांएकविभाग स्त्रीरूपहोताभया ॥ जिसकूं शास्त्रविषे शतरूपाकहैहैं ॥
और दूसराविभाग पुरुषरूपहोताभया ॥ जिसकूं शास्त्रविषे स्वायंभुवमनुकहैहैं ॥ तिसीशतरूपा मनु दोनोंतें यहसंपूर्णमनुष्या
दिकसृष्टि उत्पन्नभईहै ॥ हेदेवराजइंद्र! इसप्रकारजबीविराट्भगवान्‌नें शतरूपानामास्त्रीकूं तथामनुकूं उत्पन्नकऱ्या ॥ तबी
साशतरूपानामास्त्री मनुपुरुषकूंकामातुरदेखिकरिकै भावीजीवोंकेकर्मअनुसार याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरतीभई ॥
अब शतरूपाकेविचारकूंदिखावैहैं ॥ यहमनुनामापुरुष विराट्भगवान्‌कास्वरूपहै ॥ यातें हमारापिताहोवैहै ॥ अथवा एकहीवि
राट्भगवान्‌तें इसमनुकी तथाहमारी उत्पत्तिभईहै ॥ यातें यहमनुनामापुरुष हमाराभ्राताहोवैहै ॥ यातें यामनुनामापुरुषकेसाथ

व्यभिचारिणीस्त्रीकीन्यांई मैंकैसेविषयसंबंधकरोंगी? ॥ किंतु इसमनुकेसाथ विषयसंबंधकरणा हमारेकूंउचितनहीं ॥ यद्यपि कामकरिकैमोहितहुआ यहमनुनामापुरुष स्वर्गकेप्राप्तिकासाधनधर्मकूं तथानरककेप्राप्तिकासाधनअधर्मकूं जाणतानहीं ॥ तथापि स्वर्गनरककेप्राप्तिकासाधनधर्मअधर्मकूं मैं भलीप्रकारजाणतीहूं ॥ यातें यानिंदितकर्मविषे प्रवृत्तहोणा हमारेकूंयोग्यनहीं ॥ किंवा ॥ स्त्रियोंविषे यद्यपि पुरुषोंतेंअधिककामहोवैहै ॥ तथापि यालोकविषे कामकरिकैआतुरहुएपुरुषही विशेषकरिकै धर्ममर्यादाका उल्लंघनकरैहै ॥ कामकरिकैआतुरहुयाभीस्त्रियां विशेषकरिकै धर्ममर्यादाका उल्लंघनकरैनहीं ॥ किंतु स्त्रियोंविषे पुरुषोंतेंअधिक धैर्यहोवैहै ॥ यातें आपणेहितकाउपाय मेरेकूंभीचिंतनकरणेयोग्यहै ॥ हेदेवराजइंद्र! इसप्रकार बहुतवारविचारकरिकै साशत रूपानामास्त्री मनुनामापुरुषकेनिवृत्तकरणेवासते याप्रकारकाउपाय चिंतनकरतीभयी ॥ अब ताउपायकूंदिखावैहैं ॥ यहमनुना मापुरुष कामकरिकैआतुरभयाहै ॥ यातें इसकूं धर्मकाउपदेशकरिकै जोमैं निवारणकरोंगी तौभी यह मनु हमारेवचनकूंअंगी कारकरैगानहीं ॥ काहेतें? जेपुरुष कामकरिकैआतुरहोवैहैं तिनपुरुषोंकूं तिसकालविषे साक्षात्गुरु तथाईश्वरभी आइकेनिवारण करैं तौभी कामातुरपुरुष तिनोंकेवचनकूं अंगीकार करतेनहीं ॥ तौ हमस्त्रीकेवचनकूं यहमनु कैसेअंगीकारकरैगा? ॥ यातें धर्मका उपदेशरूपउपायतें यामनुकानिवारण होवैनहीं ॥ किंतु यापूर्वस्वरूपकापरित्यागकरिकै दूसरेस्वरूपकूंधारणकरिकै मैंअंतर्धानहो वों ॥ यहही मनुकेनिवारणकरणेकाउपायहै ॥ काहेतें? लोकविषेसमानजातिवालीस्त्रीविषेही पुरुषोंकी कामभावनाहोवैहै ॥ विलक्षण जातिवालीस्त्रीविषे पुरुषोंकी कामभावनाहोवैनहीं ॥ जैसे मनुष्योंकूं मनुष्यत्वजातिवालीस्त्रीविषेही कामभावनाहोवैहै ॥ पशुत्वजा तिवालीस्त्रीविषे मनुष्योंकूंकामभावनाहोवैनहीं ॥ तैसे पशुवोंकूं पशुत्वजातिवालीस्त्रीविषेही कामभावनाहोवैहै ॥ मनुष्यत्वजातिवा लीस्त्रीविषे पशुवोंकूं कामभावनाहोवैनहीं ॥ यातें इसस्वरूपकापरित्यागकरिकै मैं दूसरेरूपकूंग्रहणकरों ॥ हेदेवराजइंद्र! इसप्रका रकाविचारकरिकै साशतरूपानामास्त्री पूर्वस्वरूपकापरित्यागकरिकै गौशरीरकूं धारणकरतीभयी ॥ ताशतरूपाकूंगौहुईदेखिक रिकै सोमनुनामापुरुषभी वृषभरूपकूंधारणकरताभया ॥ तिसगौवृषभदोनोंतें संपूर्णगौ तथावृषभ उत्पन्नहोतेभये ॥ और पुनःसा

शतरूपानामास्त्री तिसगौशरीरकापरित्यागकरिकै अश्विनीस्वरूपकूं धारणकरतीभई ॥ तिसअश्विनीकूंदेखिकरिकै सोमनुनामापुरुषभी अश्वशरीरकूंधारणकरताभया ॥ तिसअश्विनीअश्वदोनोंतें संपूर्णअश्व तथाअश्विनी उत्पन्नहोतेभये ॥ इसप्रकार जिसजिस जातिवालेस्त्रीशरीरकूं साशतरूपानामास्त्री ग्रहणकरतीभई ॥ तिसतिसजातिवालेपुरुषशरीरकूं सोमनुनामापुरुषभी ग्रहणकरताभया ॥ तिनदोनोंतें तिसतिसजातिवाले स्त्रीशरीर तथापुरुषशरीर उत्पन्नहोतेभये ॥ हेदेवराजइंद्र! याप्रकार मनुशतरूपादोनोंतें स्त्रीपुरुषरूप जितनेस्थावरजंगमप्राणिहैं तेसंपूर्ण उत्पन्नहोतेभये ॥ हेदेवराजइंद्र! इसप्रकार सोपरमात्मादेव दोपादोंवालेमनुष्यादिकोंकूं तथाचारिपादोंवालेअश्वादिकपशुवोंकूं तथापादोंतेंरहितसर्पादिकोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ इतनेंग्रंथकरिकैमायाविशिष्टपरमात्मातें जगत्‌केउत्पत्तिकाप्रकार निरूपणकऱ्या ॥ अब तिसीजगत्‌विषे परमात्माकेप्रवेशकाप्रकार निरूपणकरैंहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! जोपरमात्मादेव समष्टिअज्ञानरूपउपाधिविषेप्रविष्टहुआ जगत्‌काकर्ताईश्वरसंज्ञाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और जो परमात्मादेव समष्टिसूक्ष्मउपाधिविषेप्रविष्टहुआ हिरण्यगर्भसंज्ञाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और जो परमात्मादेव समष्टिस्थूलउपाधिविषेप्रविष्टहुआ विराट्‌संज्ञाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ सोईहीपरमात्मादेव संपूर्णशरीररूपपुरियोंविषे प्रवेशकरताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे महाकाश मठरूप उपाधिविषेप्रविष्टहुआ मठाकाशसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सोमठाकाश मठकेभीतरअल्पगृहविषेप्रविष्टहुआ अपवरकआकाशसंज्ञाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और सोअपवरकआकाश घटरूपउपाधिविषेप्रविष्टहुआ घटाकाशसंज्ञाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेव समष्टिअज्ञानरूपउपाधिविषे प्रविष्टहुआ ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और समष्टिसूक्ष्मउपाधिविषे प्रविष्टहुआ हिरण्यगर्भसंज्ञाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और समष्टिस्थूलउपाधिविषेप्रविष्टहुआ विराट्‌संज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सोईहीपरमात्मादेव आपणेचैतन्यरूपकरिकै सर्वप्राणियोंकेशरीरविषे पादतलैकेमस्तकपर्यंत प्रवेशकरैहैं ॥ याकारणतें जीवसंज्ञाकूंप्राप्तहोहैहै ॥ इहां यहअभिप्रायहै ॥ जैसे अन्नादिकपदार्थोंका गृहविषेप्रवेशहोवैहै ॥ तहां अन्नादिकपदार्थोंकाजो गृहविषेसंयोगसंबंधहै ॥ सोईही अन्नादिकपदार्थोंका गृहविषेप्रवेशहै ॥ याप्रकारकाप्रवेश परमात्माकासंभवैनहीं ॥ किंतु अज्ञानादिक उपाधियोंविषेस्थितहोइके जोपरमात्माका

स्फुरणहै ॥ यहही परमात्माकाप्रवेशहै ॥ याहीप्रवेशकूं शास्त्रविषे आभासवादकरिकै तथाअवच्छेदवादकरिकै कथनकरैहैं ॥ और
हेदेवराजइंद्र! जैसे सर्वत्रव्यापकआकाशकूं भ्रांतपुरुष घटविषेस्थितहुआमानैहै ॥ परंतु सोआकाश वास्तवतैंघटविषेरहैनहीं ॥ उ
लटा घटादिकसर्वपदार्थ आकाशविषेरहैहै ॥ तैसे सर्वजगत्केअधिष्ठानस्वरूपपरमात्माकूं विचारहीनपुरुष शरीरविषेस्थितहुआ
मानैहै ॥ परंतु सोपरमात्मादेव वास्तवतैंशरीरादिकोंविषेरहैनहीं ॥ उलटा शरीरादिकजडपदार्थ परमात्माकाआश्रितरहैहैं ॥ और
हेदेवराजइंद्र! जैसे घटकीउत्पत्तितैंपूर्वेही यद्यपि सर्वत्रआकाशविद्यमानहै ॥ तथापि घटकीउत्पत्तितैं अनंतर घटविषेआकाश प्रवि
ष्टहुआहै याप्रकार लोक कथनकरैहैं ॥ तैसे शरीरकीउत्पत्तितैंपूर्वेही यद्यपि परमात्मा सर्वत्रविद्यमानहै तथापि शरीरकेउत्पन्न
हुएतैंअनंतर शरीरविषेआत्माप्रविष्टभयाहै याप्रकारकाव्यवहारहोवैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे सूर्यभगवान्काप्रकाश यद्यपि
सर्वपदार्थोंविषेसमानहीहै ॥ तथापि सूर्यकांतमणिविषेप्रविष्टहुआ सूर्यकातेज दाहादिककार्यकूंकरैहै ॥ घटादिकपदार्थोंविषेस्थित
हुआ सूर्यकातेज दाहादिककार्यकूंकरैनहीं ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपपरमात्मा यद्यपि सर्वत्रसमानहीव्यापकहै ॥ तथापि हृदयदे
शविषे तापरमात्माकीविशेषकरिकैउपलब्धिहोवैहै ॥ याकारणतैं हृदयदेशविषे आत्माकीस्थितिशास्त्रविषेकहीहै ॥ और हेदेवराज
इंद्र! जैसे नापितपुरुषकेशस्त्रराखणेकी जोबडीपिटारीहै ॥ तिसपिटारीकेकिसीएकदेशविषेही क्षुररूपशस्त्रकी शीघ्रउपलब्धिहो
वैहै ॥ तैसे संपूर्णशरीरविषे एकहृदयदेशविषेही आत्माकीशीघ्रउपलब्धिहोवैहै ॥ याकारणतैं हृदयदेशविषे आत्माकीस्थितिकही
है ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे अग्नि सामान्यरूपकरिकै यद्यपि सर्वपदार्थोंविषेरहैहै ॥ तथापि विशेषरूपकरिकै काष्ठविषेही अ
ग्निकीउपलब्धिहोवैहै ॥ तैसे सामान्यरूपकरिकै यहपरमात्मादेव यद्यपि सर्वत्रव्यापकहै ॥ तथापि विशेषरूपकरिकै शरीरविषेही
आत्माकीउपलब्धिहोवैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे स्वरूपतैं अग्निविषे यद्यपि न्यूनता तथाअधिकता हैनहीं ॥ तथापि काष्ठ
रूपउपाधिकी न्यूनताअधिकतातैं अग्निविषेन्यूनता तथाअधिकता प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषे यद्यपि वास्तवतैं
न्यूनता तथाअधिकता हैनहीं ॥ तथापि शरीरादिकउपाधियोंकी न्यूनताअधिकताकरिकै आत्माविषे न्यूनताअधिकता प्रतीतहोवैहै ॥

शंका ॥ हेभगवन्! जो आत्मा सर्वशरीरोंविषे विशेषरूपकरिकैंस्थितहै ॥ तौ सर्वजीवोंकूं आत्माकासाक्षात्कार होणाचा हिये ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! जैसे अग्नि यद्यपि सर्वकाष्ठोंविषेविद्यमानहै ॥ तथापि मथनकरिकै किसीकाष्ठविषेही अग्नि उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि सर्वशरीरोंविषेविद्यमानहै ॥ तथापि श्रवणादिकसाधनोंकरिकै किसीशरीरविषेही आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ यद्यपि वेदांतशास्त्रकेश्रवणतैंविनाही अस्तिभातिरूपकरिकै सर्वजीवोंकूं आत्माकाज्ञानहै ॥ तथापि परिपूर्णआनंदअद्वितीयरूपकरिकै आत्माकाज्ञान श्रवणादिकसाधनोंतैंविना होवैनहीं ॥ किंतु श्रवणादिकसाधनोंकरिकैही अद्वितीयरूपकरिकैआत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे काष्ठरूपउपाधिकेभेदकरिकै अग्नि महान्‌भावकूं तथाअल्पभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ वास्तवतैं अग्निविषे महान्‌पणा तथाअल्पपणा हैनहीं ॥ तैसे शरीरादिकउपाधिकेभेदकरिकै यहआनंदस्वरूपआत्मा महान्‌भावकूं तथाअल्पभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ वास्तवतैं आत्मा एकरसहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे एकहीअग्निकाप्रकाश काष्ठरूपउपाधिकेभेदकरिकै नानाप्रकार होवैहै ॥ तैसे एकहीपरमात्मादेव अंतःकरणादिकउपाधिकेभेदकरिकै नानाभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे रात्रिविषे सूक्ष्मरूपकरिकै यद्यपि सूर्यकाप्रकाश विद्यमानहै ॥ तथापि अंधकारकरिकैअभिभवकूंप्राप्तहुआ सोसूर्यकाप्रकाश किसीपदार्थकूंविशेषकरिकैप्रकाशेनहीं ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि सर्वत्रविद्यमानहै ॥ तथापि अज्ञानकरिकैआवृतहुआ यहआत्मा प्रकाशकरैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! प्रकाशस्वरूपआत्माविषे अज्ञानकृतआवरण संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! जैसे दिनविषे अंधकाररूपराहु सूर्यकूंआश्रयणकरिकैरहैहै ॥ और तासूर्यकूंही आच्छादनकरैहै ॥ तैसे अज्ञानअवस्थाविषे प्रकाशस्वरूपआत्माकूंआश्रयणकरिकै अज्ञान रहैहै ॥ और ताआत्माकूंही आच्छादनकरैहै ॥ याकारणतैंही शास्त्रविषे अज्ञानकूं स्वाश्रयस्वविषयकह्याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अंधकार जिसगृहकेआश्रितरहैहै ॥ तिसीगृहकूं आच्छादनकरैहै ॥ तैसे अज्ञानभी अंधकाररूपहै ॥ यातैं जिसशुद्धआत्माके आश्रितरहैहै ॥ तिसीहीशुद्धआत्माकूं आच्छादनकरैहै ॥ अब पूर्वकथनकऱ्या जोआत्माविषे जगत्‌काअध्यारोप ताकेअपवादकूं

निरूपणकरैंहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ! जैसे सूर्यकीआतपविषे तथासूर्यविषे यद्यपि प्रकाशपणासमानहै ॥ तथापि सूर्यभगवान्ही पूर्ण प्रकाशस्वरूपहै ॥ सूर्यकीआतप पूर्णप्रकाशरूपनहीं ॥ किंतु परिछिन्नप्रकाशरूपहै ॥ तैसे वाकादिकइंद्रियोंविषेजो आत्माका प्रकाशहै ॥ सो परिपूर्णप्रकाशनहीं ॥ किंतु परिछिन्नप्रकाशहै ॥ आनंदस्वरूपआत्माही परिपूर्णप्रकाशरूपहै ॥ और हेदे वराजइंद्र ! यद्यपि यहआनंदस्वरूपआत्मा एकएकवाकादिकइंद्रियविषे वर्तमानहुआभी वास्तवतैंपरिपूर्णहीहै ॥ तथापि मैंवाक्हूं मैंश्रोत्रहूं इत्यादिकविपरीतज्ञानोंकाविषयहुआ आत्मा परिछिन्नकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ परिपूर्णआत्माविषे परिछि न्नदृष्टि जन्ममरणरूपसंसारकाकारणहै ॥ यातैंविद्वान्पुरुष आत्माकूंपरिछिन्नकरिकैनहींदेखैहैं ॥ किंतु सर्वत्रपरिपूर्णकरिकैदेखैहैं ॥ अब वाकादिकोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासकरिकै आत्माविषेपरिछिन्नताकूंनिरूपणकरैंहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ! जैसे एकहीदेवदत्तना मापुरुष जबीअन्नादिकोंकूंपकावैहै ॥ तबी तादेवदत्तकूं लोक पाचककहैंहैं ॥ और जबीसोदेवदत्तपुरुष पाठकूंकरैहै ॥ तबी तादेव दत्तपुरुषकूं लोक पाठककहैंहैं ॥ यातैं पाकरूपक्रियाकूंग्रहणकरिकै देवदत्तपुरुषविषे पाचकशब्दकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ और पाठरूप क्रियाकूंग्रहणकरिकै तिसीदेवदत्तपुरुषविषे पाठकशब्दकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ पाकरूपक्रियातैं तथापाठरूपक्रियातैं रहित देवदत्तपुरुष केस्वरूपविषे पाचक पाठकनाम प्रवृत्तहोवैंनहीं ॥ यातैं पाचक पाठकनाम देवदत्तपुरुषकेपरिछिन्नताकेबोधकहैं ॥ परिपूर्णताके बोधकनहीं ॥ काहेतें? पाचकशब्दतैं पापक्रियाविशिष्टदेवदत्तकाहीबोधहोवैहै ॥ पाठक्रियाविशिष्टदेवदत्तकाबोधहोवैनहीं ॥ तैसे पा ठकशब्दतैं पाठक्रियाविशिष्टदेवदत्तकाहीबोधहोवैहै ॥ पाकक्रियाविशिष्टदेवदत्तकाबोधहोवैनहीं ॥ यातैं पाचकपाठकनाम देवदत्त पुरुषकेपरिछिन्नताकेबोधकहैं ॥ तैसे वाकादिकनामभी किसीनिमित्तकूंग्रहणकरिकै आत्माविषेप्रवृत्तहोवैहैं ॥ स्वरूपतैंशुद्धआ आत्माविषे किसीनामकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं संपूर्णवाकादिकनाम आत्माकेपरिछिन्नताकेबोधकहैं ॥ जिसाजिसानिमित्तकूंग्रहण करिकै वाकादिकनाम आत्माविषेप्रवृत्तहोवैहैं ॥ तिसतिसनिमित्तकूं अब निरूपणकरैंहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ! यहआनंदस्वरूपआ त्मा शब्दकाउच्चारणरूपव्यापारकूंकरैहै ॥ याकारणतैं वाक्संज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहपरमात्मादेव घटपटादिकसर्वपदार्थोंका

ग्रहणकरैहै ॥ याकारणतें हस्तसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा मार्गविषेगमनकरैहै ॥ याकारणतें पादसंज्ञाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा मलादिकोंकेपरित्यागद्वारा सर्वप्राणियोंकापालनकरैहै ॥ याकारणतें पायुसंज्ञाकूंप्रा प्तहोवैहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वप्राणियोंकेआनंदकूंउत्पन्नकरैहै ॥ याकारणतें शिश्नसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यह आनंदस्वरूपआत्मा जीवोंकेपुण्यपापकाफलजोसुखदुःखकाभोगहै तिसका अधिकारीहोवैहै ॥ याकारणतें उपस्थसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार वाकादिककर्मइंद्रियोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासतें आत्माविषे वाकादिकशब्दोंकीप्रवृत्तिदिखाई ॥ अब घ्राणादिक ज्ञानइंद्रियोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासतें आत्माविषे घ्राणादिकशब्दोंकेप्रवृत्तिकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! यहआनंदस्व रूपआत्मा गंधकूंग्रहणकरैहै ॥ याकारणतें घ्राणसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा देखेहुएपदार्थकूंनिःशंकहुआक थनकरैहै ॥ याकारणतें चक्षुसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा शब्दकूंश्रवणकरैहै ॥ याकारणतें श्रोत्रसंज्ञाकूंप्रा प्तहोवैहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा मधुरादिकषट्रसोंकूंग्रहणकरैहै ॥ याकारणतें रसनसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहआनंद स्वरूपआत्मा शीतउष्णस्पर्शकूंअनुभवकरैहै ॥ याकारणतें त्वक्संज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब आत्माविषे प्राणके तथाअंतःकरणके नामोंकीप्रवृत्तिकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! यहआनंदस्वरूपआत्मा शरीररूपयंत्रविषे अतिशयकरिकैचलायमानहोवैहै ॥ याकारणतें प्राणसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा संपूर्णजगत्कूंविकल्पनाकरैहै ॥ याकारणतें मनसंज्ञाकूंप्रा प्तहोवैहै ॥ और जैसे स्त्री गर्भकूंधारणकरैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा आपणेस्वरूपविषे संपूर्णजगत्कूंवासनारूपकरिकै धा रणकरैहै ॥ याकारणतें धीसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा अनुसंधानरूपवृत्तिविषे स्फुरणहोवैहै ॥ याकारण तें चित्तसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और अहंयाप्रकारकानाम सर्वप्राणिमात्रकेआत्माकाबोधकहै ॥ याकारणतैंही लोकविषे तुमकौनहो? याप्रकार किसीकरिकैपूछाहुआपुरुष अहंदेवदत्त याप्रकारकाउत्तरदेवैहै ॥ ताउत्तरविषे अहंशब्दका प्रथमउच्चारणकरैहै ॥ और देव दत्तशब्दका पश्चात् उच्चारणकरैहै ॥ यातें अहंशब्द सर्वप्राणियोंकेआत्माकावाचकहै ॥ यातें हेदेवराजइंद्र! वाक्तैंआदिलैकेजितने

नाम पूर्वकथनकरे ॥ तथा अन्यभी देव मनुष्य असुर इत्यादिकजेअनेकनामहैं ॥ तेसंपूर्णनाम परिछिन्नरूपकरिकै आत्माकूं
बोधनकरेहैं ॥ परिपूर्णरूपकरिकै आत्माकूं वाकादिकनाम बोधनकरैनहीं ॥ यातैं वाकादिकशब्दोंकाअर्थ जोपरिछिन्नआत्माहै ॥ सो
विद्वान्पुरुषोंकरिकैजानणेयोग्यनहीं ॥ किंतु परिपूर्णआत्माही जानणेयोग्यहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे जलरूपउपाधिकेभेदक
रिकै एकहीसूर्यभगवान् अनेकप्रतिबिंबरूपकरिकै प्रतीतहोवैहै ॥ जलरूपउपाधिकेनिवृत्तहुए तेसर्वप्रतिबिंब बिंबरूपसूर्यविषे एक
ताकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे एकहीआनंदस्वरूपआत्मा उपाधिकेसंबंधतैं पूर्वउक्तवाकादिकविशेषरूपकूंप्राप्तहोवै है ॥ अंतःकरणादिकउ
पाधियोंकेनिवृत्तहुए तेसंपूर्णवाकादिकविशेषरूप आत्माविषे एकताभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ ऐसाजोपरिपूर्णआत्माहै ॥ सोईहीआत्मा
स्वरूपकरिकैजानणेयोग्यहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे एकहीमहाकाश घटाकाश मठाकाश गृहाकाश इत्यादिकविशेषरूपोंविषेअ
नुगतहै ॥ तैसे एकहीआनंदस्वरूपआत्मा वाकादिकसर्वविशेषरूपोंविषे अनुगतहै ॥ और सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद
यातीनप्रकारकेभेदोंतैंरहितहै ॥ काहेतैं? सर्वजीवोंविषे यहआनंदस्वरूपआत्मा अहंयाशब्दका तथाअहंयाज्ञानका विषयरूपहोइके
प्रतीतहोवै है ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र! परिपूर्णअर्थकाबोधकजोआत्मशब्दहै ॥ तथा लक्षणावृत्तिकरिकै परिपूर्णअर्थकाबोधकजोअहंश
ब्दहै ॥ तिनदोनोंशब्दोंकरिकैही बुद्धिमान्पुरुष परिपूर्णआत्माकूंजाणे है ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जैसे अनेकपुरुष आपणेशरीरविषे अ
हंब्राह्मणः अहंस्थूलः याप्रकार अहंशब्दकाप्रयोगकरे हैं ॥ तहां वक्तापुरुषोंकेभेदतैं तथाअहंशब्दकेभेदतैं अहंशब्दकेअर्थरूपशरीर
का भेदहीदेख्याहै ॥ तैसे अहंशब्दके तथाआत्मशब्दके वक्तापुरुषोंकेभेदतैं तथाअहंशब्द आत्मशब्दकेभेदतैं अहंशब्द आत्मशब्द
के अर्थरूपआत्माकाभी भेदहीहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! वक्तापुरुषोंकेभेदतैं तथाशब्दप्रयोगकेभेदतैं पदार्थकाभेदहीहो
वै है ॥ यहनियम सर्वत्रसंभवैनहीं ॥ काहेतैं? जैसे एकहीघटव्यक्तिविषे अनेकपुरुष घटहै कलशहै याप्रकार भिन्नभिन्नशब्द उच्चारण
करैहैं ॥ तहां वक्तापुरुषोंका तथाशब्दोंकातौ परस्परभेदहै ॥ परंतु घटव्यक्तिकाभेदनहीं ॥ किंतु एकहीघटव्यक्ति सर्वशब्दोंविषेप्र
तीतहोवै है ॥ तैसे सर्वपुरुष आत्माकूं अहंरूपकरिकै तथाआत्मरूपकरिकै कथनकरै हैं ॥ तहां यद्यपि वक्तापुरुषोंका परस्परभेद

है ॥ तथा अहंशब्द आत्मशब्दका परस्परभेदहै ॥ तथापि आत्मशब्दका तथाअहंशब्दका लक्षअर्थ जोआत्माहै ताका भेदसंभ वैनहीं ॥ किंतु एकहीआनंदस्वरूपआत्मा सर्वप्राणियोंके अहंशब्दविषे तथाआत्मशब्दविषे अनुगतहुआप्रतीतहोवैहै ॥ यातें व क्तापुरुषोंकेभेदतें तथाशब्दकेभेदतें आत्माकाभेदनहीं ॥ किंतु एकहीआत्मा सर्वप्राणिमात्रविषेव्यापकहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे गृहविषे स्थितआकाशकूं गृहाकाशकहैहैं ॥ और मठविषेस्थितआकाशकूं मठाकाशकहैहैं ॥ और घटविषेस्थितआकाशकूं घटाकाशकहै हैं ॥ तहां घटाकाशशब्दकाअर्थजो घटउपहितआकाशहै ॥ तथा मठाकाशशब्दकाअर्थ जोमठउपहितआकाशहै ॥ तिनदोनोंका यद्यपि परस्परभेदसंभवैहै ॥ तथापि आकाशशब्दकाअर्थजो शुद्धमहाकाशहै तिसकाभेद संभवैनहीं ॥ तैसे पूर्वउक्तवाकादिकनामों काअर्थ जोविशिष्टआत्माहै ॥ तिनोंका यद्यपि परस्परभेदसंभवैहै ॥ तथापि आत्मशब्दकाअर्थ तथाअहंशब्दकाअर्थ जोशुद्धआत्माहै ताका भेदसंभवैनहीं ॥ किंतु सर्वजगत्विषे आत्मशब्दकाअर्थ तथाअहंशब्दकाअर्थ शुद्धआत्मा अनुगतहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! यह जोआत्मशब्दकाअर्थ तथाअहंशब्दकाअर्थ शुद्धआत्मा हमनें तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ इसीशुद्धआत्माकेसाक्षात्कारकाउपाय मुमु क्षुजनोंकूं करणेयोग्यहै ॥ आत्मातेंभिन्न शब्दादिकविषयोंकेप्राप्तिकाउपाय अधिकारीजनोंकूं करणेयोग्यनहीं ॥ काहेतें? शास्त्रविषे बुद्धिमान्पुरुषोंनें यहकह्याहै ॥ जिसपदार्थकेप्राप्तिकेउत्तरकालविषे सुखकीप्राप्तिहोवै ॥ तिसीहीपदार्थकेप्राप्तिवासतै बुद्धिमान्पुरु षों नें यत्नकरणा ॥ और जिसपदार्थकेप्राप्तिकेउत्तरकालविषे दुःखकीप्राप्तिहोवै ॥ ऐसे पदार्थकेप्राप्तिवासतै बुद्धिमान्पुरुषनें यत्नन हींकरणा ॥ किंतु तिनपदार्थोंकेनिवृत्तिका यत्नकरणा ॥ याप्रकारकानियम शास्त्रविषेकह्याहै ॥ तहां शब्दादिकविषयोंकेप्राप्तिके उत्तरकालविषे जीवोंकूं सुखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु अनंतप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें शब्दादिकविषयोंकीप्राप्तिवास ते यत्नकरणाव्यर्थहै ॥ और आत्माकेसाक्षात्काररूपप्राप्तिकेउत्तरकालविषे जीवोंकूं निरतिशयआनंदकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें आनंद स्वरूपआत्माकेप्राप्तिवासतेही बुद्धिमान्पुरुषोंकूं यत्नकरणाउचितहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे शब्दस्पर्शादिकविषय परिणा मकालविषे दुःखकेकारणहैं ॥ यातें बुद्धिमान्पुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्यनहीं हैं तैसे शब्दस्पर्शादिकविषयभोगकेसाधन जे स्थूल

शरीर तथासूक्ष्मशरीर तथाकारणशरीर यहतीनप्रकारकेशरीरहैं ॥ तेभी भोगकीप्राप्तिद्वारा उत्तरकालविषे अनंतप्रकारकेदुःखों काकारणहैं ॥ यातें स्थूल सूक्ष्म कारण येतीनप्रकारकेशरीरभी अधिकारीपुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्यनहीं ॥ किंतु परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ एकआनंदस्वरूपआत्माही अधिकारीपुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्यहै ॥ यातें हेदेवराजइंद्र! शब्दादिकविषयोंतेंआदिलेके कारणशरीरपर्यंत जितनादृश्यप्रपंचहै तिसका परित्यागकरिकै यासंघातविषेस्थितजोसत्‌चित्‌आनंदस्वरूपआत्माहै तिसकूं जबी यहपुरुष जाणेहै ॥ तबी सर्वपदार्थोंविषे सत्‌चित्‌आनंदस्वरूपकरिकैआत्माकेजानणेविषे यहपुरुष समर्थहोवेहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे लोकविषे किसीपुरुषकीगौ जबी गृहतेंबाहरि कहांचलीजावैहै ॥ तबी सोपुरुषतागौकेपादोंकेचिन्हयुक्तभूमिकूंदेखिकरिकै याप्रकारका निश्चयकरैहै॥इसीपूर्वदिशाविषे हमारीगौगईहै॥दूसरीकिसीदिशाविषेनहींगई ॥ याप्रकारकानिश्चयकरिकै सोपुरुष जबीतिसीमार्गविषे शनैःशनैःचालैहै॥तबी सोपुरुष तिसगौकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे अधिकारीजनोंकेप्राप्तहोणेयोग्यजो यासंघातविषेस्थितआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ तिसकूं जबीयहपुरुष निश्चयकरताहै ॥ तबी सर्वभूतप्राणिविषेस्थित सत्‌चित्‌आनंदस्वरूपआत्माकूंभी साक्षात्कारकरिसकैहै ॥ यासंघातविषेस्थितआत्माकेज्ञानतेंविना सर्वत्रव्यापकरूपकरिकैआत्माकाज्ञान होइसकैनहीं ॥ तात्पर्ययह॥ अंतःकरणरूपमार्गविषे गौकेपादकेचिन्हकीन्यांई साक्षीरूपकरिकैवर्तमानजोआत्माहै ॥ ताकूं जबीअधिकारीजन निश्चयकरैहै ॥ तबी स्थावरजंगमरूपसंपूर्णजगत्‌कूं सत्‌चित्‌आनंदआत्मास्वरूपकरिकै निश्चयकरैहै ॥ यातें हेदेवराजइंद्र! ऐसेआनंदस्वरूपआत्माकेलाभतेंपरेयालोकविषे दूसरेकिसीपदार्थका लाभनहीं किंतु आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिहीपरमलाभहै ॥ ताआनंदस्वरूपआत्माकेप्राप्तहुए जितनेलौकिक यशकीर्तिआदिक अल्पपदार्थहैं ॥ तेसंपूर्ण आत्मज्ञानीपुरुषकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकविषे जितने मनुष्यादिकोंकेपादहैं ॥ तेसंपूर्णपाद हस्तिकेपादविषे अंतरभूतहोवैहैं ॥ तैसे आत्मज्ञानरूपफलविषे सर्वकर्मोंकेफलका अंतरभावहोवैहै ॥ यातें आत्मातेंभिन्न सर्वपदार्थोंकापरित्यागकरिकै आनंदस्वरूपआत्माकाज्ञानही अवश्यसंपादनकरणेयोग्यहै ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते पुत्रादिकसर्वप्रियपदार्थोंतें आत्माविषे मुख्यप्रियता दिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! लोकविषे

आत्माकूंप्रियकहैहैं ॥ तथा पुत्रादिकपदार्थोंकूंभी प्रियकहैहैं ॥ तिनदोनोंविषेआत्मातौ निरुपाधिकप्रीतिकाविषयहै ॥ यातैं अति
सैंकरिकैप्रियहै ॥ और पुत्रादिकपदार्थ सोपाधिकप्रीतिकेविषयहैं ॥ यातैं पुत्रादिकपदार्थ अतिसैंकरिकैप्रियनहीं ॥ अब पुत्रादिक
पदार्थोंविषे सोपाधिकप्रीतिकीविषयता निरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! पुत्रविषे तथास्त्रीविषे तथाधनविषे तथाबांधवादिकोंविषे
जोलोकोंकीप्रीतिहोवैहै ॥ सा आपणेआत्माकेवासतेहीहोवैहै ॥ पुत्रादिकोंकेवासते साप्रीतिहोवैनहीं ॥ जोपुत्रादिकोंकेवासतेही
साप्रियताहोवै ॥ तौ वैरीपुरुषकेपुत्रादिकोंविषेभी साप्रियता होणीचाहिये ॥ और वैरीकेपुत्रादिकोंकूं कोईभीपुरुष प्रियमानताना
हीं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ पुत्रादिकोंविषेजोपुरुषकीप्रियताहै सा आपणेआनंदकेवासतेहै ॥ और आपणेआत्माविषेजोप्रियताहै
साकिसीदूसरेकेआनंदकेवासतेनहीं ॥ यातैं आनंदस्वरूपआत्माविषे निरुपाधिकप्रीतिकीविषयताहै ॥ और पुत्रादिकोंविषे सो
पाधिकप्रीतिकीविषयताहै ॥ याकारणतैंही श्रुतिविषे पुत्रादिकसर्वपदार्थोंतैं आत्माकूं अधिकप्रियकह्याहै ॥ और हेदेवराजइंद्र!
जैसे आत्माकीअपेक्षाकरिकै पुत्रादिक बाह्यहै ॥ यातैं तिनोंविषे सोपाधिकप्रीतिकीविषयताहै ॥ तैसे आत्माकीअपेक्षाकरिकै प्राणा
दिकभी बाह्यहैं ॥ यातैं तिनोंविषेभी सोपाधिकप्रीतिकीहीविषयताहै ॥ अब प्राणादिकोंकेबाह्यताकूंनिरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र!
स्थूलशरीराकारपरिणामकूंप्राप्तभये जेशब्दादिकविषयहैं ॥ तिनोंतैं प्राणविशिष्टइंद्रिय अंतरहै ॥ और तिनइंद्रियोंतैं संकल्पविक
ल्परूपमन अंतरहै ॥ और तिसमनतैं निश्चयरूपबुद्धि अंतरहै ॥ और तिसबुद्धितैं अहंकारविशिष्टजीव अंतरहै ॥ और तिसजी
वतैं अव्याकृतनामाकारणअज्ञान अंतरहै ॥ और तिसकारणरूपअज्ञानतैं शुद्धआत्मा अंतरहै ॥ ता शुद्धआत्मातैंअंतर कोईभी
पदार्थनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं युक्तिकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! जैसे घटकाद्रष्टापुरुष घटरूपविषयतैंअंतरहोवैहै ॥
तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै रूपादिकविषयोंकूंजाणेहै ॥ यातैं द्रष्टाआत्माकाविशेषणजेइंद्रियहैं ॥ ते रू
पादिकविषयोंकीअपेक्षाकरिकै अंतरहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा मनकरिकैइंद्रियोंकूंजाणेहै ॥ यातैं द्रष्टाआत्माकाविशेषण
जोमनहै ॥ सो इंद्रियोंकीअपेक्षाकरिकैअंतरहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा निश्चयरूपबुद्धिकरिकै मनकूंजाणेहै ॥ यातैंद्रष्टा

आत्माकाविशेषणजोबुद्धिहै ॥ सा मनकीअपेक्षाकरिकैंअंतरहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा अहंकारविशिष्टजीवरूपकरिकै ता बुद्धिकूंजाणेहै ॥ यातें द्रष्टाआत्माकाविशेषणजोजीवहै ॥ सो बुद्धिकीअपेक्षाकरिकैंअंतरहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा ताअहंकारविशिष्टजीवकूं कारणअज्ञानउपहितसाक्षीरूपकरिकैंजाणेहै ॥ यातें द्रष्टाआत्माकाविशेषणजोअज्ञानहै ॥ सो जीवकीअपेक्षाकरिकैंअंतरहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा आपणेस्वप्रकाशस्वरूपकरिकै ताअज्ञानकूंप्रकाशैहै ॥ यातें कारणअज्ञानतें आत्माअंतरहै ॥ आत्मातैंअंतर कोईदूसरापदार्थनहीं ॥ किंतु आत्माकीअपेक्षाकरिकै सर्वअज्ञानादिकपदार्थ बाह्यहैं ॥ आत्माही सर्वकेअंतरहै ॥ याकारणतेंही आत्मा आनंदस्वरूपहै ॥ और आत्मा आनंदस्वरूपहै याकारणतेंही पुत्रादिकोंतैंलेकेकारणअज्ञानपर्यंत सर्वपदार्थोंतें अतिसैंकरिकैंप्रियहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! एकआत्माहीप्रियहै यहजोनियम आपनेंकह्या सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? यद्यपि मुख्यप्रियता आत्माविषेहीहै ॥ अन्यपुत्रादिकोंविषे मुख्यप्रियतानहीं ॥ तथापि गौणप्रियता पुत्रादिकोंविषेभी संभवैहै ॥ यातें पुत्रादिकपदार्थभी प्रियहैं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! श्रुतिविषे आत्मातैंभिन्नसर्वपदार्थोंकूं नाशवान्कह्याहै ॥ यातें विचारकियेतें पुत्रादिकपदार्थोंविषे गौणप्रियताभी संभवैनहीं ॥ और जोपुरुष आत्मातैंभिन्न शरीर पुत्र धनादिकपदार्थोंकूं प्रियकहैहै ॥ तिसपुरुषके तेशरीरपुत्रधनादिकपदार्थ अवश्यनाशकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ तात्पर्ययह ॥ जिनपुत्रधनादिकपदार्थोंकूं लोकोंनें प्रियमान्याहै ॥ तेपुत्रादिकपदार्थ नाशवान्हैं ॥ यातें तिनोंकावियोग अवश्यहोणेहाराहै ॥ कदाचित् यापुरुषकेविद्यमानहुए पुत्रादिकपदार्थोंकानाशहोवैहै ॥ और कदाचित् पुत्रादिकपदार्थोंकेविद्यमानहुए यापुरुषकामृत्युहोवैहै ॥ यादोनोंप्रकारकेवियोगकरिकै जीवोंकूं अनंतदुःखोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें पुत्रादिकपदार्थोंविषे बुद्धिमान्पुरुषोंकूं प्रीतिकरणीयोग्यनहीं ॥ किंतु नाशतेंरहितजोआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ तिसविषेही बुद्धिमान्पुरुषोंकूं प्रीतिकरणीयोग्यहै ॥ यातें हेदेवराजइंद्र! जोपुरुष केवलआत्माकूंहीप्रियजाणताहै ॥ तिसविद्वान्पुरुषकेसमीपजाइके किसीपुरुषनें आत्मातैंभिन्न पुत्रादिकपदार्थोंकूं प्रियनहींकहणा ॥ जोकदाचित् विद्वान्पुरुषकेसमीपजाइके कोईकपुरुष आपणेपुत्रादिकोंकूंप्रियकहैगा ॥ तौ तापुरुषकेमिथ्यावचनकूं नसहार

ताहुआसोविद्वान्पुरुष तेरेप्रियपुत्रादिकनाशवान्हैं याप्रकार जोकदाचित् वचनकहैंगा ॥ तौ तिसमहात्माविद्वान्पुरुषकेवचनकरिकै शीघ्रही तिनपुत्रादिकपदार्थोंकानाशहोवैगा ॥ दृष्टांत ॥ जैसे कोईमूढपुरुष रंगकूं रजतरूपमानिकरिकै किसी परीक्षकपुरुषकेसमीपजाइकै यहरजतहै याप्रकारकाकथनकरै ॥ तापुरुषकेमिथ्यावचनकूं नहींसहनकरताहुआ सोपरीक्षकपुरुष यहरंगहै रजतनहीं याप्रकारकावचन जबीकहैहै ॥ तबी तापरीक्षकपुरुषकेवचनकरिकै तामिथ्यारजतका नाशहोइजावैहै ॥ यातैं आत्माकूंप्रियजानणेहारेविद्वान्पुरुषकेसमीपजाइके पुत्रादिकअनात्मपदार्थोंकूं किसीपुरुषनैं प्रियनहींकहणा ॥ शंका ॥ हेभगवन्! आत्माकूंप्रियजानणेहारेविद्वान्पुरुषके वचनमात्रकरिकै पुत्रादिकअनात्मपदार्थोंकानाश संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! जिसविद्वान्पुरुषनैं एकआत्माकूंहीप्रियजान्याहै ॥ सोविद्वान्पुरुष यहपुत्रादिकपदार्थविनाशीहैं याप्रकारके वचनमात्रकरिकै तिनोंकेनाशकरणेविषेसमर्थहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! विद्वान्पुरुषतौ रागद्वेषतैंरहितहोवैहैं ॥ और दयालुहोवैहैं ॥ यातैं तेरेपुत्रादिकनाशवान्हैं याप्रकारकाकठोरवचन कैसेउच्चारणकरैंगे? ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! जोकदाचित् विद्वान् याप्रकारकावचन नहींभीकहैं ॥ तोभी विद्वान्पुरुषकेसमीप मिथ्यावचनकाउच्चारणनहींकरणा ॥ काहेतें? श्रुतिविषेब्रह्मज्ञानीपुरुषकूंब्रह्मस्वरूपकह्याहै ॥ यातैं जैसे परमेश्वर वचनउच्चारणतैंविनाही जीवोंकूं पुण्यपापकाफलसुखदुःख देवैहै ॥ तैसे परमेश्वरस्वरूप यह विद्वान्पुरुषभी वचनउच्चारणतैंविनाही पुण्यपापकेफल सुखदुःखकूंदेवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे श्रीगंगाजीकेतीरविषेनिवासकरिकै जोपुरुष पापकर्मकूंकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोपुरुष तहांनिवासकरिकै पुण्यकर्मकूंकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं सुखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे विद्वान्पुरुषकेसमीपजाइके जोपुरुष सत्यवचनकाउच्चारणरूप शुभकर्मकूंकरैहै ॥ तिसकूं सुखकीप्राप्तिहोवैहै और जोपुरुष असत्यवचनकाउच्चारणरूप अशुभकर्मकरैहै ॥ तिसकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं श्रीगंगाजीकीन्यांई विद्वान्पुरुषविषेभी निर्दयतारूपदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! पूर्वआपनैंयहकह्या ॥ विद्वान्पुरुषकेसमीपजाइकै जो कोईपुरुष पुत्रादिकअनात्मपदार्थोंकूंप्रियकहताहै ॥ तिसपुरुषकेपुत्रादिकप्रियपदार्थ नाशहोवैहैं ॥ यहआपकाकहणा संभवैनहीं ॥ काहेतें? इसजन्म

विषेक्याहुआपुण्यपापरूपकर्म इसजन्मविषेसुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकरैनहीं॥ किंतु जन्मांतरविषेही सुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिक
रैहै॥ यहशास्त्रविषेकह्याहै ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! यद्यपि बहुतस्थानविषेतौ जन्मांतरविषेही पुण्यपापकर्मकाफलहोवैहै ॥
तथापि अत्यंतउग्र जोकोईक पुण्यपापकर्म है ॥ तिसका इसीजन्मविषे सुखदुःखरूपफलहोवैहै॥ और विद्वान्पुरुषकेसमीपजाइके
जोमिथ्यावचनकाउच्चारणकरणाहै ॥ यहभी अत्यंतउग्रपापकर्महै॥ यातैं तापापकर्मकाफलदुःख इसीजन्मविषेसंभवैहै ॥ किंवा ॥
स्थावररूपकरिकैप्रसिद्ध जो अश्वत्थ तुलसी प्रतिमा आदिक अल्पदेवताहैं ॥ तिनोंकेसमीपजाइके जोपुरुष मिथ्यावचनकाउच्चार
णकरैहै ॥ तिसमिथ्यावादीपुरुषकेतांई मुखतैंनहींबोलतेहुएभी तेप्रतिमादिकअल्पदेवता जबी फलकीप्राप्तिकरैहैं॥ तबी सर्वदेवता
वोंकाआत्मास्वरूप तथावचनउच्चारणादिकव्यवहारकरणेविषेसमर्थ ऐसाजोविद्वान्पुरुषहै॥ सो मिथ्यावादीपुरुषकूं दुःखरूपफलकी
प्राप्ति कैसे नहींकरैगा? किंतु अवश्यकरैगा॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे विद्वान्पुरुषकेसमीपजाइकै जोकोईपुरुष पुत्रादिकअना
त्मपदार्थोंकूंप्रियकहैहै॥ तिसपुरुषके पुत्रादिकप्रियपदार्थ नाशकूंप्राप्तहोवैहैं॥ तैसे विद्वान्पुरुषकेसमीपजाइकै जोकोईपुरुष आ
त्माकूंहीप्रियकहैहै ॥ तिसपुरुषके पुत्रादिकप्रियपदार्थ नाशकूंनहींप्राप्तहोते ॥ किंतु अधिकआयुषवालेहोवै हैं॥ यातैं हेदेवराजइंद्र!
वैराग्यादिकसाधनोंतैंरहित जोपुरुष प्रियरूपकरिकैआत्माकेजानणेविषे समर्थनहींहोवै ॥ और पुत्रादिकप्रियपदार्थोंकेजीवन
कीइच्छाकरताहोवै सोपुरुष प्रियरूपकरिकैआत्माकीउपासनाकरै ॥ ताउपासनाकरिकै तिसपुरुषकेपुत्रादिकप्रियपदार्थ चिरका
लपर्यंत जीवतेरहैंगे ॥ शंका ॥ हेभगवन्! यथार्थअनुभवज्ञानतैं उपासनाकाकितनाभेदहै?॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! ध्यानक
रणेयोग्यवस्तुकेविद्यमानहुए अथवाअविद्यमानहुए केवल गुरुशास्त्रकेवचनतैं जोमानसज्ञानउत्पन्नहोवै॥ तिसज्ञानविषे विश्वासक
रिकै गुरुशास्त्रउपदेशितअर्थविषे सजातीयवृत्तियोंकेप्रवाहतैं जोविजातीयवृत्तियोंकानिरोधहै ॥ ताकानाम उपासनाहै ॥ जै
से श्रुतिविषे स्वर्ग मेघ मनुष्यलोक पुरुष योषित् यापांचोंकीअग्निरूपकरिकै उपासनाकहीहै ॥ तहां स्वर्गादिक यद्यपि अ
ग्निरूपनहीं है ॥ तथापि गुरुशास्त्रकेवचनतैं तिनस्वर्गादिकोंविषे पुरुषकी अग्निबुद्धिहोवैहै ॥ ताकेविषे विश्वासमात्रकरिकै स्व

गांदिकोंविषे निरंतर अग्निआकारसजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहहोवैहै ॥ तिसतें घटादिविषयकविजातीयवृत्तियोंका निरोधहोवैहै ॥ याकानाम उपासनाहै ॥ तात्पर्ययह ॥ यथार्थअनुभवरूपप्रमाज्ञानतौ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकें तथाविषयके अधीनहोवैहै ॥ और उपासनाप्रमाणके तथाविषयके अधीनहोवैनहीं ॥ किंतु गुरुशास्त्रकेवचनविषे विश्वासकेअधीनहोवैहै ॥ इतना दोनोंकाभेदहै ॥ पूर्व प्रियरूपकरिकैंआत्माकेउपासनाकाफल पुत्रादिकप्रियपदार्थोंकाजीवन कह्या ॥ अब प्रियरूपकरिकै आत्माकेयथार्थअनुभवकाफल कहेहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ! जोपुरुष आनंदस्वरूपआत्माकूं प्रियरूपकरिकैंजाणताहै ॥ सोपुरुष सर्वदेवतास्वरूपहोवैहै ॥ याअर्थविषे तुमनें किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ यातें हेदेवराजइंद्र ! आनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानतें अधिकारीपुरुषोंकूं सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहजोअर्थ हमनें तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ सो केवलआपणेमनकीयुक्तियोंतें नहींकथनकऱ्याहै ॥ किंतु याअर्थविषे एक पुरातनवृत्तांतहै ॥ ताकूं तुम श्रवणकरो ॥ कैसासोवृत्तांतहै ॥ अनेकमहात्माब्राह्मणोंकेसमाजविषे विचारतैंप्रगटभयाहै ॥ हेदेवराजइंद्र ! एककालविषे किसीनिमित्तपाइकै किसीदेशविषे अनेकब्राह्मण इकठेभयेथे ॥ तेकैसेब्राह्मणथे ? चारिवेदोंविषे तथाषट्अंगोंविषे तथाषट्शास्त्रोंविषे अत्यंत निपुणथे ॥ तिसब्राह्मणोंकेसमाजविषे नानाप्रकारकीलौकिककथा तथावैदिककथा प्रगटहोतीभई ॥ और तिसब्राह्मणोंकेसमाजविषे किसीप्रसंगपाइकै याप्रकारकीकथा प्रवृत्तहोतीभई ॥ अब ताकथाकूंदिखावैहै ॥ हेदेवराजइंद्र ! ताब्राह्मणोंकेसमाजविषे कोईकविद्वान्ब्राह्मण सर्वब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकाप्रश्नकरतेभये ॥ हेसर्वब्राह्मणो ! ब्रह्मविद्याकेजानणेहारेपुरुष ब्रह्मज्ञानकरिकै सर्वात्मभावकीप्राप्तिकथनकरैहैं ॥ याकेविषे हमारेकूं यहसंशयहोवैहै ॥ जिसब्रह्मकेज्ञानकरिकै अधिकारिजनोंकूं सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवैहै ॥ सोब्रह्मभी किसीपदार्थकेज्ञानकरिकै सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ अथवा किसीपदार्थकेज्ञानतैंविनाही सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ यादोनोंपक्षोंविषे किसीपदार्थकेज्ञानकरिकै सोब्रह्म सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोअंगीकारकरोगे तौ जिसपदार्थकेज्ञानतैं ब्रह्मकूं सर्वात्मभाव प्राप्तभयाहै ॥ तापदार्थका तुम निरूपणकरो ॥ और हेब्राह्मणो ! किसीपदार्थकेज्ञानतैंविनाही सोब्रह्म सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ यहदूसरापक्ष जोअंगी

कारकरौगे तौ ब्रह्मकाज्ञान निष्फलहोवैगा ॥ काहेतें? जैसे ब्रह्मकूं ज्ञानतैंविनाही सर्वात्मभावकीप्राप्तिभईहै ॥ तैसे अन्यअधिकारियोंकूंभी ब्रह्मज्ञानतैंविनाही सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ सर्वात्मभावकीप्राप्तिवासते ब्रह्मज्ञानकासंपादनकरणा निष्फल है ॥ और हेब्राह्मणो ! किसीपदार्थकेज्ञानतैं ब्रह्म सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ याप्रथमपक्षविषेभी यहविचार कऱ्याचाहिये ॥ सो ब्रह्म आपणेतैंभिन्न किसीअन्यपदार्थकेज्ञानकरिकै सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ अथवा आपणेस्वरूपकेज्ञानकरिकै सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ यादोनोंपक्षोंविषे प्रथमपक्ष जोअंगीकारकरौगे तौ ब्रह्मकाज्ञान निष्फलहोवैगा ॥ काहेतें? जिसअन्यपदार्थकेज्ञानकरिकै ब्रह्मकूं सर्वात्मभावकीप्राप्तिभईहै ॥ तिसीअन्यपदार्थकेज्ञानकरिकै दूसरेअधिकारीजनोंकूंभी सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ सर्वात्मभावकीप्राप्तिवासते ब्रह्मज्ञानकासंपादनकरणानिष्फलहै ॥ और हेब्राह्मणो! सोब्रह्म आपणेस्वरूपकेज्ञानकरिकै सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरौगे तौभी ब्रह्मज्ञान निष्फलहोवैगा ॥ काहेतें? जैसे ब्रह्मकूं आपणेस्वरूपकेज्ञानकरिकै सर्वात्मभावकीप्राप्तिभईहै ॥ तैसे अन्यअधिकारीजनोंकूंभी आपणेआत्मास्वरूपकेज्ञानकरिकै सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ सर्वात्मभावकीप्राप्तिवासते ब्रह्मज्ञानकासंपादनकरणा निष्फलहै ॥ हेदेवराजइंद्र ! इसप्रकार ब्रह्मका तथाआत्माका परस्पर भेद अंगीकारकरिकै तेब्राह्मण सर्वब्राह्मणोंकेसमाजविषे प्रश्नकूंकरतेभये ॥ तिनअधिकारीजनोंकेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै तेसंपूर्णवेदवेत्ताब्राह्मण अन्यकिसीपदार्थकेज्ञानतैंसर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवैहै याप्रथमपक्षका तथाविनाहीज्ञानतें सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवैहै या द्वितीयपक्षका परित्यागकरिकै आत्माकेज्ञानतैंसर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवैहै यातृतीयपक्षकूंअंगीकारकरिकै तथाआत्माब्रह्मकेअभेदकूं अंगीकारकरिकै ताप्रश्नकेउत्तरकूं कहतेभये ॥ अब ताउत्तरकूंनिरूपणकरै हैं ॥ हेअधिकारीब्राह्मणो ! अज्ञानकरिकै तथाअन्यकिसीपदार्थकेज्ञानकरिकै सोब्रह्म सर्वात्मभावकूंनहींप्राप्तभया॥ किंतु ब्रह्मशब्दका तथाआत्मशब्दका अर्थ जोआपणास्वरूपहै ॥ तिसकेज्ञानकरिकैब्रह्म सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै॥ यातैं हेब्राह्मणो! जैसे आत्माकेज्ञानतैं ब्रह्म सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै॥ तैसे सर्वात्मभावकीप्राप्तिवासते अन्यअधिकारीजनोंनैंभी आत्माकाज्ञानही संपादनकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन्! ब्रह्मकेज्ञानतैंविना केवलआत्माकेज्ञानमा

त्रतैं सर्वात्मभावकीप्राप्तिसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ! सोब्रह्म किसीप्राणीकेआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सर्वप्राणियोंकाआत्मारूप ब्रह्महै ॥ यातैं आत्माकाजोज्ञानहै सोईही ब्रह्मकाज्ञानहै ॥ और जोब्रह्मकाज्ञानहै सोईही आत्माकाज्ञानहै ॥ अब ब्रह्मके तथाआत्माके अभेदजनावणेवासते व्याकरणशास्त्रकीरीतितैं ब्रह्मशब्दके तथाआत्मशब्दके अर्थकूंनिरूपणकरैहैं ॥ तहां देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित तथासर्वतैंअधिक जोअर्थहै ॥ तिसकूं ब्रह्मशब्द बोधनकरैहै ॥ तैसे देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित तथासर्वके अंतरव्यापक जोअर्थहै ॥ तिसकूं आत्मशब्द बोधनकरैहै ॥ तहां देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितब्रह्मविषे जोसर्वतैंअधिकताहै ॥ सा सर्वकेसाथअभेदरूपहै ॥ अभेदतैंभिन्न कोईदूसरी ब्रह्मविषेअधिकतानहीं ॥ तैसे देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितआत्माविषे जोसर्वकेअंतरव्यापकताहै साभी सर्वकेसाथ अभेदरूप है ॥ अभेदतैं भिन्न कोईदूसरी व्यापकता आत्माविषेनहीं ॥ जोब्रह्मका तथाआत्माका किसीदेशकालकेसाथ तथा किसीस्थूलसूक्ष्मपदार्थकेसाथ भेद अंगीकार करिये तौ पूर्वउक्त ब्रह्मशब्दका अर्थ तथाआत्मशब्दकाअर्थ ब्रह्मविषे तथाआत्माविषे नहींघटैगा ॥ यातैं जैसे हस्तशब्द तथाकरशब्द एकहीअर्थकेवाचकहै ॥ तैसे ब्रह्मशब्द तथाआत्मशब्द सर्वभेदतैंरहित एकअद्वितीयचैतन्यकेबोधकहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! सर्वभेदतैंरहित अद्वितीयचैतन्य ब्रह्मशब्दका तथाआत्मशब्दका अर्थहै यहआपनेंकह्या सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं ? लोकविषे ब्रह्मका तथाआत्माका भेदहीप्रतीतहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ! ब्रह्मविषे जोभेदप्रतीतहोवैहै ॥ सो वास्तवतैं ब्रह्मविषेभेदनहीं ॥ किंतु उपाधिकेसंबंधतैं ब्रह्मविषेभेदप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सोभेद मिथ्याहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे आकाशविषे यद्यपि वास्तवतैंभेदनहीं है ॥ तथापि आकाशविषेउत्पन्नभये जेमेघविद्युत्आदिकहैं ॥ तिनमेघादिकोंनें भेदरहितआकाशविषेभी भेदउत्पन्नकरताहै ॥ तैसे ब्रह्मविषे यद्यपि वास्तवतैंभेदनहींहै ॥ तथापि ब्रह्मतैंउत्पन्नभये जेस्थूलसूक्ष्मपदार्थहैं ॥ तिनपदार्थोंनें भेदरहितब्रह्मविषेभी भेदउत्पन्नकरताहै ॥ याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकेदिखावैहैं ॥ जैसे भेदतैंरहितआकाशविषे कल्पितगंधर्वनगर प्रतीतहोवैहै ॥ तिसकल्पितगंधर्वनगररूपउपाधिकरिकै आकाशका प्रथमभेद प्रतीतहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर गंधर्वनगरविषेस्थित जेनानाप्रकारकेगृहहैं ॥ तिनोंकरिकै आकाशकाभेद प्रतीत

होवैहै ॥ तिसतैंअनंतर तिनगृहोंविषेस्थित जेअल्पगृहहैं तिनोंकरिकै आकाशकाभेद प्रतीतहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर तिनगृहोंविषेस्थित जेघटादिकपदार्थहैं तिनोंकरिकै आकाशकाभेद प्रतीतहोवैहै ॥ याप्रकार उपाधिकेसंबंधतैं भेदरहितआकाशविषे अनेकभेद प्रतीतहोवैहैं ॥ यातैं तेसंपूर्णभेद आकाशविषेकल्पितहैं ॥ तैसे भेदरहित आनंदस्वरूपआत्माविषे प्रथम आकाशादिकपंचमहाभूतोंकरिकै भेदप्रतीतहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर पंचमहाभूतोंविषेस्थित जे संपूर्णस्थूलसूक्ष्मशरीरहैं ॥ तिनशरीरोंकरिकै आत्माविषेभेद प्रतीतहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर प्राण बुद्धि इंद्रियादिकोंकरिकै आत्माविषेभेद प्रतीतहोवैहै ॥ याप्रकार उपाधिकेसंबंधतैं भेदरहितआत्माविषे अनेकप्रकारकाभेद प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं तेसंपूर्णभेद आत्माविषेकल्पितहैं ॥ ताकल्पितभेदकरिकै आत्माकीवास्तवएकता निवृत्तहोवैनहीं ॥ यातैं हेब्राह्मणो! आत्माका तथाब्रह्मका परस्परभेदनहीं किंतु अभेदही है ॥ और ब्रह्मवेत्तामहात्मापुरुष ब्रह्मज्ञानकरिकै जोसर्वात्मभावकीप्राप्ति कथनकरैहैं ॥ सोतिनोंकाकहणा मिथ्यानहीं किंतु यथार्थ है ॥ काहेतैं? समष्टिव्यष्टिउपाधिवान्ब्रह्म पूर्वपूर्व ब्रह्मज्ञानकरिकैही सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! जोब्रह्म सर्वत्रव्यापकहै तौ आपणेव्यापकस्वरूपकूं सर्वदा काहेतैंनहींजाणता? ॥ **समाधान** ॥ हेब्राह्मणो! जैसे निद्राविषेसोयाहुआ महाराजा निद्रादोषकरिकै आपणेमहाराजपणेकूंनहींदेखता ॥ किंतु आपणेकूंदरिद्रीमानैहै ॥ तैसे अज्ञानरूपमायाकरिकै आवृतहुआ यहब्रह्म आपणेव्यापकस्वरूपकूंनहींदेखता ॥ किंतु आपणेकूंपरिच्छिन्नमानैहै ॥ और हेब्राह्मणो! जैसे भेदतैंरहितशुद्धआकाशविषे मेघ धूम पवनादिकउपाधियां नानाप्रकारकाभेद उत्पन्नकरैहैं ॥ तैसे भेदतैंरहितशुद्धआत्माविषे यहअज्ञानरूपमायाही भेदकाकारणहै ॥ और हेब्राह्मणो! जैसे रात्रिकालविषे अंधकार सूर्यकेप्रकाशकूंआच्छादनकरैहै ॥ तैसे संसारकालविषे अज्ञानरूपमाया प्रकाशस्वरूपआत्माकूं आच्छादनकरैहै ॥ और हेब्राह्मणो! जैसे चारोंओरतैं महान्वनकरिकैयुक्त जोकोईकग्रामहै ॥ तिसग्रामविषेरहणेहारेपुरुषकूं शत्रुराजाकेसेनाका तथासेनाकरिकैग्रामकेलूटणेका अज्ञानरहैहै ॥ और कदाचित्दैवयोगतैं तिसग्रामवासीपुरुषकूं जबी शत्रुराजाकेसेनाका तथालूटणेका दर्शनहोवैहै ॥ तबी तादर्शनकरिकै वनवासीपुरुषके पूर्वअज्ञानकीनिवृत्तिहोवै

है॥ और एकवारिनिवृत्तहुआ सोअज्ञान पुनःकदाचित्भी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ तैसे याआत्मारूपब्रह्मविषे अनादिकालकाअज्ञानरहैहै॥ जबपर्यंत अधिष्ठानआत्माकासाक्षात्कार नहींहोवैहै ॥ तबपर्यंत अज्ञानकीनिवृत्ति किसीउपायकरिकैभीहोवैनहीं ॥ किंतु अधिष्ठान आत्माकेसाक्षात्कारकरिकैही अज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥और अधिष्ठानआत्माकेज्ञानकरिकै नाशकूंप्राप्तहुआअज्ञान पुनःकदाचित्भी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! अधिष्ठानआत्माकेज्ञानकरिकै अज्ञानकीनिवृत्ति आपनैं कथनकरी सो संभवैनहीं ॥ काहेतें? अज्ञान घटादिकपदार्थोंकीन्यांई भावरूपहोवै तौ ताकी ज्ञानकरिकैनिवृत्तिसंभवै ॥ परंतु सोअज्ञान भावरूपहैनहीं ॥ किंतु ज्ञानके अभावकानाम अज्ञानहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो! ज्ञानकाअभावरूप अज्ञाननहीं काहेतें? प्रकाशस्वरूपजोआत्माहै सोईही ज्ञान स्वरूपहै ॥ आत्मातेंभिन्नजडबुद्धिआदिक ज्ञानरूपनहीं ॥ और सोज्ञानरूपआत्मा नित्यहै ॥ यातें ताकाअभावमानणा संभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोआत्माही एकज्ञानरूपहोवै तौ सर्वलोकोंकूं अंतःकरणकीवृत्तिविषे घटज्ञानमेरेकूंउत्पन्नभयाहै पटज्ञान मेरेकूंउत्पन्नभयाहै याप्रकारकाज्ञानव्यवहार होवैहै ॥ सोव्यवहार नहींहोणाचाहिये ॥ काहेतें? तुमारेमतविषे आत्मातैंभिन्न कोई पदार्थ ज्ञानरूपहैनहीं ॥ एकआत्माही ज्ञानरूपहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो! जैसे लोहेकेपिंडविषे दाहकरणेकीशक्ति तथाप्रकाशक रणेकीशक्ति यद्यपि नहीं है ॥ तथापि जबीअग्निकालोहेकेसाथि तदात्म्यसंबंधहोवैहै ॥ तबी सोलोहेकापिंड दाहकरैहै तथाप्रका शकरैहै याप्रकार लोक कथनकरैहैं ॥ तैसे जडअंतःकरणविषे तथाताकेवृत्तियोंविषे यद्यपि वास्तवतें प्रकाशपणानहीं ॥ तथापि प्र काशस्वरूपआत्माका जबी अंतःकरणकेसाथ तादात्म्यअध्यासहोवैहै ॥ तबी अंतःकरणविषे तथाताकीवृत्तियोंविषे प्रकाशताप्र तीतहोवैहै ॥ सा अंतःकरणविषेप्रकाशता आत्माकीही है॥ यातें अंतःकरणकीवृत्तियोंविषे जोलोकोंकाज्ञानव्यवहारहै ॥ सो गौणहै मुख्यनहीं ॥ आत्माही मुख्यज्ञानरूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! अंतःकरणादिकजडपदार्थोंविषे प्रकाशताधर्म मतहोवै ॥ तथापि आत्माकाधर्म जोकोईकप्रकाशहै ॥ ताकेअभावकानाम अज्ञानहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो! आत्मातेंभिन्न जोज्ञानरूपप्रकाशका अं गीकारकरिये ॥ तौ आत्माविषे तथाप्रकाशविषे जडताभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतें? जोजोभेदवालापदार्थहोवैहै ॥ सो विकाररूप

होवैहै ॥ और जोजोविकाररूपहोवैहै ॥ सोसो जडरूपहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थहैं ॥ और जोआत्माकूं तथाताकेप्रकाशकूं जडरूपअंगीकारकरौगे तौ जोजोपदार्थ जडहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ अनात्माहीहोवैहै ॥ जैसे घट तथाघटगतशुक्लादिकरूप दोनोंजडहैं यातैंअनात्माहैं ॥ तैसे आत्मा तथाप्रकाश दोनौं जडहोणेतैं अनात्मभावकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ सोआत्माकी तथाप्रकाशकी अनात्मता तुमारेकूंभी अंगीकारहैनहीं ॥ यातैं आत्मातैं प्रकाश भिन्ननहीं ॥ और हेब्राह्मणो! जैसे आत्मातैं प्रकाश भिन्ननहीं ॥ तैसे आत्मा प्रकाश दोनोंतैं आनंदभी भिन्ननहीं ॥ जो आत्मप्रकाशदोनोंतैं आनंद भिन्नहोवै तौ आत्मा प्रकाश आनंद या तीनोंविषे पूर्वउक्तरीतितैं अनात्मभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अन्यकिसीपुरुषकाशरीर तथाशरीविषेस्थित गौरत्वादिकधर्म तथातिनोंकूंप्रकाशकरणेहारादीपक यातीनोंका परस्परभेदहै ॥ यातैं तिनतीनोंविषे अनात्मता अनुभवकरिकैसिद्धहै ॥ तैसे आत्मा प्रकाश आनंद यातीनोंकूं जोपरस्परभिन्न अंगीकारकरौगे तौ तीनोंविषे अनात्मभावकीप्राप्ति होवैगी ॥ यातैं आत्मप्रकाश दोनोंतैं आनंदभिन्ननहीं ॥ किंतु आत्माही प्रकाशस्वरूप तथाआनंदस्वरूपहै ॥ किंवा ॥ जोवादी प्रकाशरूपआत्माविषे प्रकाशधर्म मानैहै ॥ तासैं हम यहपूछेहैं ॥ प्रकाशरूपआत्माविषे जोप्रकाशधर्मरहैहै सो अंतःकरणादिकजडपदार्थोंकेभानवासतेहै ॥ अथवा आत्माकेभानवासतेहै ॥ तहां प्रथमपक्षतौ संभवैनहीं ॥ काहेतें? आत्मारूपप्रकाशकरिकैही अंतःकरणादिकजडपदार्थोंके भानका संभवहोइसकैहै ॥ यातैं अंतःकरणादिकोंकेप्रकाशवासते आत्माविषे प्रकाशधर्ममानणा निष्फलहै ॥ और आत्माकेप्रकाशवासते आत्माविषे प्रकाशधर्मकाअंगीकारहै यहदूसरापक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? प्रकाशरूपआत्माविषे जोअन्यप्रकाशकरिकैप्रकाश्यता अंगीकारकरौगे तौ आत्माविषे जडताभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतें? जोजोपदार्थ अन्यप्रकाशकरिकै प्रकाश्यहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ जडहोवैहै ॥ जैसे नेत्रजन्यअंतःकरणकीवृत्तिअवछिन्नचैतन्यकरिकै दीपादिकपदार्थ प्रकाश्यहैं ॥ यातैं दीपादिकजडहैं ॥ तैसे आत्माभी जोअन्यप्रकाशकरिकै प्रकाश्यहोवैगा तौ दीपादिकोंकीन्यांई जडहीहोवैगा ॥ सोआत्माकीजडता तुमारेकूंभीअंगीकारनहीं ॥ यातैं आपणेतैंभिन्नप्रकाशकरिकै आत्मा प्रकाश्यनहीं ॥ किंवा ॥ प्रकाश्यस्वरूपआत्मा जिसअन्यप्रकाश

करिकै प्रकाश्यहै ॥ सोप्रकाशभी किसी अन्यप्रकाशकरिकै प्रकाश्यहै अथवानहीं ॥ जोकहो सोअन्यप्रकाश किसीअन्यप्रकाशकरि
कै प्रकाश्यनहीं ॥ किंतु स्वप्रकाशहै तौ प्रथमआत्मरूपप्रकाशकूं स्वप्रकाशमानणेविषे कौनअपराधहै? ॥ आत्मारूपप्रकाशकूं
छोडिकै द्वितीयप्रकाशकूं स्वप्रकाशमानणेविषे केवलव्यर्थही तुमारापर्यासहै ॥ और जोकहो सोदूसराप्रकाशभी किसीतीसरेप्रका
शकरिकै प्रकाश्यहै ॥ और सोतीसराप्रकाश किसीचतुर्थप्रकाशकरिकै प्रकाश्यहै तौ तुमारेकूं अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥
यातैंप्रकाशस्वरूपआत्मा किसीअन्यप्रकाशकरिकै प्रकाश्यनहीं ॥ किंतु आपणेस्वप्रकाशरूपकरिकै आत्मा आपणेकूं तथाजडअं
तःकरणादिकोंकूं प्रकाशैहै ॥ यातैं आत्माहीज्ञानस्वरूपहै ॥ और तीनकालविषेनित्य है ॥ ऐसेज्ञानस्वरूपआत्माकाअभाव किसीप्र
कार संभवैनहीं ॥ यातैं ज्ञानकेअभावकानाम अज्ञानहै यहजोपूर्व तुमोनैं कह्याथा सोअत्यंतविरुद्धहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! आ
त्मा सत्यरूप तथाप्रकाशरूप नहीं ॥ किंतु शून्यरूपहै ॥ यातैं शून्यरूपआत्माविषे प्रकाशधर्मसंभवैहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो!
जो आत्माकूं शून्यरूप अंगीकारकरोगे तौ जैसे असत्यनरशृंगविषे आत्मता नहींहै ॥ तैसे असत्यआत्माविषेभी आत्मता न
हींरहैगी ॥ और आत्माविषे आत्माका अभाव तुमारेकूंभी अंगीकारनहीं ॥ यातैं आत्मा शून्यरूप नहीं ॥ किंवा ॥ आत्माकूंशू
न्यरूप मानिकै ताकेविषेप्रकाशधर्म अंगीकारणा यहभी अत्यंतविरुद्धहै॥ काहेतैं? सत्यवस्तुही अधिष्ठान होवैहै ॥ असत्य
वस्तु किसीपदार्थकाअधिष्ठानहोवैनहीं ॥ जो असत्यवस्तुभी किसीकाअधिष्ठानहोवै तौ वंध्यापुत्रभी रूपादिकगुणोंका अधिष्ठा
न होणाचाहिये ॥ और वंध्यापुत्रविषे रूपादिकगुणोंकीअधिष्ठानता कोईअंगीकारकरैनहीं ॥ यातैं सर्वकाअधिष्ठानआत्मा शून्यरू
पनहीं ॥ किंवा जोआत्मा नरशृंगकीन्यांई असत्यहोवै तौ जैसे नरशृंगकी अस्तिरूपकरिकैप्रतीति किसीभीप्राणीकूं हो
तीनहीं ॥ तैसे आत्माकीभी अस्तिरूपकरिकैप्रतीति नहींहोणीचाहिये ॥ और सर्वप्राणियोंकूं अहंअस्मि याप्रकार अस्तिरूपक
रिकै आत्माकीप्रतीतिहोवैहै ॥ यातैं नरशृंगकीन्यांई आत्मा असत्यनहीं ॥ किंतु सर्वदासत्यरूपहै ॥ तासत्यरूपआत्माकाअ
भाव कदाचित्संभवैनहीं ॥ यातैं ज्ञानकाअभावरूप अज्ञाननहीं ॥ किंतु सोअज्ञान भावरूपहै ॥ ताभावरूपअज्ञानकीनिवृत्ति ब्रह्म

विद्याकरिकैसंभवै है ॥ अब ताब्रह्मविद्याकेस्वरूपकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेब्राह्मणो ! ॥ सर्वभेदतैंरहित तथास्वप्रकाश तथासत्यस्वरूप तथाआनंदस्वरूप जोयहआत्माहै तिसकूंविषयकरणेहारी तथामहावाक्यतैं उत्पन्नभयी जोचैतन्यकेआभासयुक्तअंतःकरणकी वृत्तिकानाम ब्रह्मविद्या है ॥ याप्रकारकी ब्रह्मविद्या जबपर्यंत नहींउत्पन्नभई तबपर्यंत जीवोंकेअज्ञानकीनिवृत्ति होवैनहीं ॥ और जबपर्यंत अज्ञानकीनिवृत्ति नहींहोती तबपर्यंत जन्ममरणरूपसंसारकीनिवृत्ति होवैनहीं ॥ यातैं जन्ममरणरूपसंसारकीनिवृत्तिवासते ब्रह्मविद्याका अवश्यसंपादनकरणा और हेब्राह्मणो ! यद्यपि सत्चित्आनंदस्वरूपब्रह्म सर्वजीवोंके आत्मस्वरूपहैं ॥ तथापि ब्रह्मविद्यातैंविना अज्ञानकरिकैआवृतहुआ यहब्रह्म जन्ममरणरूपसंसारतैं जीवोंकीरक्षाकरैनहीं ॥ किंतु ब्रह्मविद्याकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर आवरणतैंरहितहुआ तथाअनुभवकाविषयहुआ ब्रह्म जन्ममरणरूपसंसारतैं जीवोंकीरक्षाकरै है ॥ **दृष्टांत** ॥ जैसे गृहविषेदाब्याहुआधन जबपर्यंत गृहीपुरुषकरिकै अज्ञातरहैहै ॥ तबपर्यंत तागृहीपुरुषकेदरिद्रताकूं निवृत्तकरै नहीं ॥ और सोईहीधन जबी गृहीपुरुषकरिकैज्ञातहोवैहै ॥ तबी तागृहीपुरुषकीदरिद्रताकूंनिवृत्तकरैहै ॥ तैसे सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थित यहआनंदस्वरूपआत्मा जबपर्यंत जीवोंकरिकैअज्ञातहै ॥ तबपर्यंत जन्ममरणरूपसंसारतैं जीवोंकीरक्षाकरैनहीं ॥ और जबी यहआनंदस्वरूपआत्मा ब्रह्मविद्याकरिकैज्ञातहोवैहै ॥ तबी जन्ममरणरूपसंसारतैं जीवोंकीरक्षाकरैहै ॥ यातैं जन्ममरणरूपसंसारकीनिवृत्तिवासते तथापरमआनंदकीप्राप्तिवासते अधिकारीजनोंनैं ब्रह्मविद्या अवश्यसंपादनकरणी ॥ और हेब्राह्मणो ! जोआत्मरूपब्रह्म अपरोक्षज्ञानकाविषयहुआ जन्ममरणरूपसंसारतैं जीवोंकीरक्षाकरैहै ॥ सोईहीब्रह्म समष्टिकारणअज्ञानरूपउपाधिकरिकैयुक्तहुआ ईश्वरभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सोईहीब्रह्म समष्टिसूक्ष्मरूपउपाधिकरिकैयुक्तहुआ हिरण्यगर्भभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और सोमायाविशिष्टईश्वर तथाहिरण्यगर्भ जीवोंकीन्यांई गुरुकेउपदेशतैं ब्रह्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु आपही स्वतंत्र वेदांतकेअर्थकूंविचारकरिकै ब्रह्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां मायाविशिष्टईश्वरविषे तथाहिरण्यगर्भविषे इतनीविशेषताहै ॥ ईश्वरकाउपाधि जोकारणअज्ञानहै ॥ सो अहंअज्ञः याप्रकार अहंकारविषेआरूढहुआ आवरणरूपव्यामोहकूं उत्पन्नकरैहै ॥

अहंकारविषेआरूढहुएतैंविना केवलअज्ञान आवरणरूपव्यामोहकूं उत्पन्नकरैनहीं ॥ सोअहंकार परमेश्वरविषेहैनहीं ॥ यातें सर्वज्ञ परमेश्वरकूं आवरणतैंरहित सर्वदा वेदांतकेअर्थकाअनुसंधानरहैहै ॥ और समष्टिसूक्ष्मरूपकार्यउपाधिवालाजोहिरण्यगर्भहै ॥ तिसविषे अहंकाररहैहै ॥ यातें सोहिरण्यगर्भ किंचित्आवरणकूंअनुभवकरिकैही वेदांतकेअर्थकाअनुसंधानकरैहै ॥ इत नीविलक्षणता यद्यपि ईश्वरविषे तथाहिरण्यगर्भविषेहै तथापि गुरुकेउपदेशकी दोनोंकूंअपेक्षानहीं ॥ **दृष्टांत** ॥ जैसे अग्नि जल वायु वृक्ष अंडजादिकचारिप्रकारकेप्राणी यहसंपूर्ण भय व्यथा शब्द नोदना द्वारा जीवोंकूंनिद्रातेंजाग्रतकरैहैं ॥ तिनअग्निजलादिकोंतैंरहित जोकोईकदेशहै तिसदेशविषेशयनकरिकै नानाप्रकारकेस्वप्नोंकूं देखताहुआ तथा गाढसुषुप्तिकूं प्राप्तहोइकै सर्वज्ञानतैंरहितहुआ कोईपुरुष आपही निद्रातेंजाग्रत्होवैहै ॥ तैसे समष्टिकारणअज्ञानरूपउपाधिविषेस्थितहु आब्रह्म तथासमष्टिसूक्ष्मरूपउपाधिविषेस्थितहुआब्रह्म गुरुकेउपदेशतैंविना आपही वेदांतकेअर्थकाविचारकरिकै आपणेअद्वितीयस्वरूपकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें मायाविशिष्टपरमेश्वरविषे तथाहिरण्यगर्भविषे गुरुकेउपदेशकीअपेक्षानहीं ॥ **शंका** ॥ हे भगवन्! मायाविशिष्टपरमेश्वरकूं तथाहिरण्यगर्भकूं गुरुकेउपदेशतैंविनाही ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहजोपूर्वआपनेंकह्या सो यद्यपिसंभवैहै ॥ तथापि परमेश्वरविषे तथाहिरण्यगर्भविषे जगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकीकारणता संभवैनहीं ॥ काहेतें? परमेश्वरविषे जगत्केउत्पत्तिकेअनुकूल कोईव्यापारहैनहीं ॥ और लोकविषे व्यापारवालेहीकुलालादिक घटादिकोंकेकारण होवैहैं ॥ व्यापारतैंरहित कोईकारणदेख्यानहीं ॥ **समाधान** ॥ हेब्राह्मणो! शुद्धचैतन्यकूं जोहम जगत्काकारणअंगीकारकरैं ॥ तो यहतुमारापूर्वपक्ष संभवै ॥ सो शुद्धब्रह्मकूं जगत्काकारण हमभी अंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु मायाविशिष्टईश्वरकूं जगत् काकारण हम अंगीकारकरैहैं ॥ यातें जैसे स्वप्नअवस्थाकूं तथागाढसुषुप्तिकूं प्राप्तभयाजोव्यष्टिउपाधिवालाजीवहै तिसजीवविषे स्वप्नपदार्थोंकेउत्पत्तिकाबीजरूप अज्ञानकाअनुभव तथाआपणीसमीपतामात्रकरिकैप्राणोंकाधारणरूपकर्म विद्यमानहै ॥ तैसे मायाविशिष्टपरमेश्वरविषे तथासमष्टिसूक्ष्मउपाधिवालेहिरण्यगर्भविषे जगत्केउत्पत्तिकाअनुकूलव्यापार संभवैहै ॥ और

हेब्राह्मणो! जैसे स्वप्नअवस्थाकूं तथासुषुप्तिअवस्थाकूं प्राप्तभयाजोजीवहै तिसकूं जबी व्यष्टिकारणरूपउपाधितें तथाव्यष्टिसूक्ष्म रूपउपाधितें भिन्नकरिये ॥ तबी ताजीवकेनिर्गुणस्वरूपविषे किंचित्मात्रभी कर्मसंभवैनहीं ॥ तैसे समष्टिकारणअज्ञानरूपउपाधिवालेईश्वरकूं तथासमष्टिसूक्ष्मरूपउपाधिवालेहिरण्यगर्भकूं जबी समष्टिकारणअज्ञानतें तथासमष्टिसूक्ष्मरूपउपाधितेंभिन्नकरिये तौ ताकेनिर्गुणस्वरूपविषे किंचित्मात्रभी कर्मसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जो ब्रह्म वास्तवतेंनिर्गुणहै तौ ब्रह्मविद्याकूंआपणेविषे किसवासतेधारणकरैहै? ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो! जैसे व्यष्टिशरीरविषे वास्तवतेंअकर्ताअभोक्तापुरुषका जोनिद्रातेंजागरणहोवैहै ॥ सो आपणेभोगवासतेनहीं ॥ किंतु अंतःकरणकेधर्म स्थूलभोगोंकेवासतेहोवैहै ॥ तैसे वास्तवतें अकर्ता अभोक्ता परमात्मा ब्रह्मविद्याकूं जोधारणकरैहै सो केवल जीवोंकेहितवासते धारणकरैहै ॥ आपणाकोईस्वार्थ परमेश्वरकाहैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जो परमेश्वरका आपणाकोईप्रयोजन नहींहोवै ॥ तौ जगत्केउत्पन्नकरणेविषे परमेश्वरकीप्रवृत्ति नहींहोणीचाहिये ॥ काहेतें? लोकविषे जिसजिसपुरुषकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ सा आपणेस्वार्थवासतेहीहोवैहै ॥ स्वार्थतेंविना चेतनजीवोंकी प्रवृत्ति होवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो! जैसे यालोकविषे ब्रह्मवेत्तागुरु आपणेस्वरूपकेसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोइके सर्वपदार्थोंकी कामनातेंरहितहोवैहै ॥ यातें ब्रह्मवेत्तागुरुका यद्यपि आपणाकोईस्वार्थहैनहीं ॥ तथापि हममुमुक्षुजनोंकेकल्याणवासते उपदेशरूपकार्यविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ तैसे परमात्मादेव यद्यपि आपणेस्वार्थतेंरहितहै ॥ तथापि जीवोंकेभोगवासते जगत्केउत्पत्तिरूपकार्यविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जो सर्वजीवोंकेसुखवासतेही परमेश्वरकीप्रवृत्तिहोवै तौ परमेश्वर देहरूपबंधनगृहविषे जीवोंकूं किसवासतेपावताहै? ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो! जैसे लोकविषे ब्रह्मवेत्तागुरु शिष्योंकेतांई नानाप्रकारकेक्लेशोंकूंदेणेहारेब्रह्मचर्यादिकधर्मोंकाउपदेशकरैहै ॥ सोब्रह्मवेत्तागुरुकाउपदेश यद्यपि प्रसिद्धतौ दुःखकाकारणप्रतीतहोवैहै ॥ तथापि सोउपदेश दुःखकाकारणनहीं ॥ किंतु मुमुक्षुजनोंकेचित्तकीशुद्धिद्वारा मोक्षरूपसुखकासाधनहै ॥ तैसे परमेश्वरभी अवश्यभोगणेयोग्यकर्मोंकेभोगवासते तथासाधनसंपत्तिद्वारा मोक्षरूपसुखकीप्राप्तिवासते जीवोंकेतांई शरीरादिकोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ और हेब्राह्मणो! जैसे लोकवि

षे गुरुकेउपदेशकूंपालनकरतेहुयेशिष्य उत्तरकालविषे परमआनंदकूंप्राप्तहोवैहैं॥ तैसे परमेश्वरनैं कथनकरेजेवेदहैं तिनोंकूं श्रद्धापूर्वकमानतेहुएजीव परमआनंदकूंप्राप्तहोवैंगे॥ यातैं परमेश्वरकेआज्ञारूपवेदोंकूं अवश्यमान्याचाहिये॥ शंका॥ हेभगवन्! द्वैतभानकाविरोधीजाब्रह्मविद्याहै तिसविद्याकरिकैनित्ययुक्तहुआपरमेश्वर किसप्रकार द्वैतजगत्कूंउत्पन्नकरैगा॥ समाधान॥ हेब्राह्मणो! जैसे ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकैयुक्तब्रह्मवेत्तापुरुष निद्राविषेसोयाहुआ स्वप्नभोगकेदेणेहारेप्रारब्धकर्मकेवशतैं नानाप्रकारकेजगत्कूं तहां उत्पन्नकरैहै॥ तैसे यहपरमात्मादेव ब्रह्मविद्याकरिकैआपणेस्वरूपकूंजाणताहुआभी मायाकरिकै संपूर्णभूतभौतिकप्रपंचकूंउत्पन्नकरैहै॥ इहां इतनीविशेषताहै॥ ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकैयुक्तजोनिष्कामपुरुषहै सो आपणेकर्मोंकेअनुसार स्वप्नपदार्थोंकूंउत्पन्नकरैहै॥ और मायाविशिष्टपरमात्माविषे पुण्यपापरूपकर्महैनहीं॥ यातैं आपणेकर्मोंकेअनुसार परमेश्वर जगत्कूंउत्पन्नकरैनहीं॥ किंतु जीवोंकेपुण्यपापरूपकर्मोंकेअनुसार परमेश्वर जगत्कूंउत्पन्नकरैहै॥ शंका॥ हेभगवन्! जैसे शुक्तिरूपअधिष्ठानकेज्ञानहुएतैंअनंतर कल्पितरजतकीनिवृत्तिहोवैहै॥ तैसे मायाविशिष्टपरमात्माकूं अधिष्ठानब्रह्मकेसाक्षात्कारकरिकै कल्पितप्रपंचकीनिवृत्ति काहेतैंनहींहोती?॥ समाधान॥ हेब्राह्मणो! जैसे स्वप्नअवस्थाविषे सोविद्वान्पुरुष स्वप्नपदार्थोंकूंदेखताहुआभी आपणेकूं तथा स्वप्नपदार्थोंकूं भिन्नकरिकैनहींदेखैहै॥ किंतु यहसंपूर्णस्वप्नपदार्थ मेरास्वरूपहै॥ मैंअधिष्ठानतैंभिन्न इनपदार्थोंकी किंचित्मात्र भीसत्तानहीं॥ याप्रकार विद्वान्पुरुषकूं स्वप्नविषेअधिष्ठानआत्माकेज्ञानहुएभी जैसे स्वप्नपदार्थोंकीनिवृत्तिहोवैनहीं॥ किंतु प्रारब्धकर्मकेवशतैं तिनस्वप्नपदार्थोंकाभान विद्वान्पुरुषकूंहोवैहै॥ तैसे आत्मसाक्षात्कारकरिकैयुक्त परमात्मादेव संपूर्णद्वैतप्रपंचकूंदेखताहुआभी आपणेस्वरूपतैंभिन्नकरिकैनहींदेखता॥ किंतु यहसंपूर्णजगत् मेराहीआत्माहै॥ मेरेआत्मातैंभिन्न कोईप्रपंचहैनहीं॥ याप्रकार परमात्माकूं अधिष्ठानब्रह्मकेसाक्षात्कारहुएभी जीवोंकेपुण्यपापरूपकर्मोंकेवशतैं जगत्कालयहोवैनहीं॥ किंतु मिथ्यारूपकरिकै जगत्काभानहोवैहै॥ तात्पर्ययह॥ दोप्रकारकाभ्रम लोकविषेहोवैहै॥ एकतौ निरुपाधिकभ्रमहोवैहै॥ और दूसरा सोपाधिकभ्रमहोवैहै॥ तहां अधिष्ठानकेज्ञानकरिकै जाकीस्वरूपतैंनिवृत्तिहोवैहै॥ सो निरुपाधिकभ्रमहोवैहै॥ जैसे शुक्तिरूपअधिष्ठान

केज्ञानतैं कल्पितसर्पकी तथा ताकेज्ञानकी स्वरूपतैंनिवृत्तिहोवैहै ॥ यातैं शुक्तिविषेरजतभ्रमतथारज्जुविषेसर्पभ्रम इत्यादिकसंपूर्ण भ्रम निरुपाधिकभ्रमहैं ॥ और अधिष्ठानकेज्ञानकरिकै जाकीस्वरूपतैंनिवृत्तिनहींहोवै ॥ किंतु ताकेविषेसत्यपणानिवृत्तहोवै ॥ सो सोपाधिकभ्रमहोवैहै ॥ जैसे जपाकुसुमकेसमीपवर्ति जोस्फटिकमणिहै सो रक्तरूपवालीप्रतीतहोवैहै ॥ तहां अधिष्ठानरूपस्फटिकमणिकेज्ञानहुएभी जबपर्यंत जपाकुसुमरूपउपाधि विद्यमानहै ॥ तबपर्यंत रक्तरूपकी तथाताकेप्रतीतिकी स्वरूपतैंनिवृत्तिहोवै नहीं ॥ किंतु ताकेविषे सत्यताबुद्धिकीनिवृत्तिहोवै ॥ जपाकुसुमकेनिवृत्तहुएही रक्तताकी तथाताकेप्रतीतिकी स्वरूपतैंनिवृत्तिहोवै है ॥ यातैं शुक्लरूपवालीस्फटिकमणिविषे रक्तरूपकीप्रतीति सोपाधिकभ्रमहै ॥ तैसे प्रपंचकीजोप्रतीतिहोवैहै सोभी सोपाधिकभ्रमहै ॥ यातैं ब्रह्मवेत्तापुरुषकूं अधिष्ठानब्रह्मकेसाक्षात्कारहुएभी जबपर्यंत प्रारब्धकर्मरूपउपाधि निवृत्तनहींभई ॥ तबपर्यंत मिथ्यारूपकरिकैप्रपंचकाभान संभवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जो परमात्माएकअद्वितीयहोवै ॥ तौ संसारविषे कोईजीवबद्धहै ॥ और कोईजीवमुक्तहै याप्रकारकाबंधमोक्षव्यवहार नहोणाचाहिये ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो! जैसे आत्मसाक्षात्कारकरिकैयुक्तविद्वान् पुरुष जबीस्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै तबी तहांस्वप्नविषे अज्ञानकरिकैकल्पितअनेकजीवोंकूंदेखैहै ॥ और तिसस्वप्नअवस्थाविषे स्वप्नद्रष्टाविद्वान्पुरुषकेविदेहमोक्षतैंविनाही तिनस्वप्नकल्पितजीवोंविषे कोईकजीव श्रवणादिकसाधनोंकरिकै मुक्तिकूंप्राप्त होवैहै और तिनमुक्तजीवोंतैंभिन्न दूसरेजीव बंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे जगत्केनिर्वाहवासते मायाविशिष्टपरमात्माकेस्थितहुए भी इसलोकविषे कोईमुमुक्षुजन श्रवणादिकसाधनोंकरिकै मुक्तिकूंप्राप्तहोवैहैं॥ और तिनमुक्तपुरुषोंतैंभिन्न अज्ञानीजीव संसाररूप बंधकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकार एकअद्वितीयआत्माकूंअंगीकारकरिकैभी कल्पितबंधमोक्षकीव्यवस्था संभवैहै ॥ और हेब्राह्मणो! जैसे आत्मज्ञानकरिकैयुक्तविद्वान्पुरुष स्वप्नविषे अनेकप्रकारकेचेतनजीवोंकूंदेखैहै ॥ तथा अनेकप्रकारकेघटादिकजडपदार्थों कूंदेखैहै ॥ और तिनस्वप्नजीवोंविषे यहजीव अभेददर्शीहै यातैंमुक्तहै औरयहजीव भेददर्शीहै यातैंबंधायमानहै ॥ याप्रकार सोस्वप्नद्रष्टाविद्वान्पुरुष तिनजीवोंकेबंधमोक्षकीकल्पनाकरैहै ॥ परंतु सोबंध तथामोक्ष वास्तवतैं विचारकरिकैदेखियेतौ स्वप्नद्र

ष्टाविद्वान्पुरुषविषे हैनहीं ॥ तथा स्वप्नकल्पितजीवोंविषेभी सोबंधमोक्ष वास्तवते हैनहीं ॥ केवल निद्रादोषकरिकै बंधमोक्ष प्रतीतहोवै है ॥ तैसे वास्तवतैंविचारकरिकेंदेखियेतो मायाविशिष्टपरमेश्वरविषे तथाअन्यजीवोंविषे बंध मोक्ष हैनहीं ॥ केवल अज्ञानकरिकैबंधमोक्ष प्रतीतहोवैहै ॥ शंका ॥ जो वास्तवतैंबंधमोक्षनहींहोवै तौ बंधकेनिवृत्तिके तथामोक्षकेप्राप्तिके साधनोंकूं प्रतिपादनकरणेहाराशास्त्र व्यर्थहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ! जैसे स्वप्नविषे बहुतअज्ञानीजीव शास्त्रकेउपदेशकरिकै स्वर्गकूं तथा मोक्षकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं स्वप्नविषे कल्पितअज्ञानीजीवोंकेप्रति शास्त्रकूं व्यर्थतानहीं ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी शास्त्रकेउपदेशकरिकैअज्ञानीजीव स्वर्गादिकलोकोंकूं तथामोक्षकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं अज्ञानीजीवोंकेप्रति श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्र व्यर्थनहीं किंतु अर्थवालाहै ॥ इसप्रकार अज्ञानीजीवोंकेप्रति शास्त्रकीअर्थवत्ताकथनकरिकै अब ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्रति शास्त्रकीव्यर्थताकूंदिखावैहैं ॥ हेब्राह्मणो ! जैसे तिसीस्वप्नविषे स्वप्नद्रष्टाविद्वान्पुरुषकेप्रति शास्त्रकूंव्यर्थताहै ॥ तथा स्वप्नविषेकल्पनाकऱ्ये जेअन्यजीवन्मुक्तपुरुष तिनोंकेप्रतिभीशास्त्रकूंव्यर्थताहै ॥ काहेतें? श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकेउपदेशजन्यज्ञान जीवोंकेअज्ञानकीनिवृत्तिकरैहै ॥ सो अज्ञान तिनविद्वान्पुरुषोंविषेहैनहीं ॥ यातैं तिनज्ञानीपुरुषोंकेप्रति शास्त्रकूं व्यर्थताहै ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी जिनपुरुषोंकूं आत्माकासाक्षात्कारभयाहै ॥ तिनपुरुषोंकेप्रतितथापरमेश्वरकेप्रति श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकीव्यर्थता हम अंगीकारकरैहैं ॥ किंवा हेब्राह्मणो! श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रविषे तबी व्यर्थताप्राप्तहोवै ॥ जबी सर्वजीवोंकेउपदेशविषे शास्त्रकी साधारणप्रवृत्तिहोवै ॥ सो सर्वजीवोंकेउपदेशविषे शास्त्रकी साधारणप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु अनधिकारीपुरुषोंकापरित्यागकरिकै अधिकारीपुरुषोंकेउपदेशविषे शास्त्रकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ जैसे वैश्यस्तोमनामायज्ञका अधिकारी वैश्यहीहोवैहै ॥ ब्राह्मण तथाक्षत्रिय ताकेअधिकारीहोवैंनहीं ॥ यातैं सोवैश्यस्तोमनामायज्ञब्राह्मणकी अपेक्षाकरिकै तथाक्षत्रियकीअपेक्षाकरिकै व्यर्थहै ॥ और तिनवैश्योंविषेभी जोवैश्य फलकीकामनावालाहोवैहै ॥ तथा स्त्रीधनादिकपदार्थोंकरिकै युक्तहोवैहै ॥ तथा पापादिकदोषोंतैंरहितहोवैहै ॥ याप्रकारकेवैश्यकी अपेक्षाकरिकैही सोवैश्यस्तोमनामायज्ञ सफलहोवैहै ॥ फलकामनादिकविशेषणोंतैंरहित वैश्यकोभीअपेक्षाकरिकै सोवैश्यस्तोम

नामायज्ञ निष्फलही है ॥ इसप्रकार बृहस्पतिसवनामायज्ञविषे ब्राह्मणकाहीअधिकारहै ॥ क्षत्रियवैश्यका ताकेविषेअधिकारहै नहीं ॥ यातें क्षत्रियवैश्यकीअपेक्षाकरिकै सोबृहस्पतिसवनामायज्ञ निष्फलहै ॥ औरतिनब्राह्मणोंविषेभी जोब्राह्मण फलकीकामनावालाहोवैहै ॥ तथा स्त्रीधनादिकपदार्थोंकरिकै युक्तहोवै है ॥ तथा पापादिकदोषोंतैंरहितहोवैहै ॥ याप्रकारकेब्राह्मणकीअपेक्षाकरिकैही सोबृहस्पतिसवनामायज्ञ सफलहै ॥ फलकामनादिकविशेषणोंतैंरहित अन्यब्राह्मणकीभीअपेक्षाकरिकै सोबृहस्पतिसवनामायज्ञ निष्फलहीहै ॥ इसप्रकार राजसूयनामायज्ञविषे क्षत्रियकाहीअधिकारहै ॥ ब्राह्मणवैश्यका तिसविषेअधिकारनहीं ॥ यातें ब्राह्मणवैश्यकीअपेक्षाकरिकै राजसूयनामायज्ञ व्यर्थहै ॥ तिनक्षत्रियोंविषेभीजोक्षत्रिय फलकीकामनावालाहोवैहै ॥ तथा स्त्रीधनादिकपदार्थोंकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ तथा पापादिकदोषोंतैंरहितहोवैहै ॥ याप्रकारकेक्षत्रियकीअपेक्षाकरिकैही सोराजसूयनामायज्ञ सफलहै ॥ फलकामनादिकविशेषणोंतैंरहित क्षत्रियकीभीअपेक्षाकरिकै सोराजसूयनामायज्ञ व्यर्थहीहै ॥ ऐसे दूसरेभीयज्ञादिककर्म अधिकारीपुरुषोंकेप्रति सार्थकहैं ॥ और अनधिकारीपुषोंकेप्रति निरर्थकहैं ॥ तैसे मुक्तिकूंप्रतिपादनकरणेहारा वेदांतशास्त्रभी सर्वजीवोंकेप्रति सार्थकनहीं ॥ किंतु आत्मज्ञानतैंरहित विवेकादिकसाधनचतुष्टयसंपन्न मुमुक्षुजनोंविषेही सार्थकहै ॥ यातें हेब्राह्मणो! जैसे समष्टिकारणअज्ञानरूपउपाधिवालापरमेश्वर तथासमष्टिसूक्ष्मरूपउपाधिवालाहिरण्यगर्भब्रह्मविद्याकरिकै सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ तैसे समष्टिस्थूलउपाधिवालाविराट्भगवान् तथास्वायंभूमनुआदिकभी ब्रह्मविद्याकरिकैही सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयेहैं ॥ तैसे इदानींकालविषेभी कोईमहात्मापुरुष ब्रह्मविद्याकरिकैही सर्वात्मभावकूंप्राप्तहोवैहैं तैसे आगेभी कोईमहात्मापुरुष ब्रह्मविद्याकरिकैही सर्वात्मभावकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ याप्रकार ब्रह्मविद्याकेसर्वात्मभावरूपफलकीसमानताकूंकहिकरिकै अब ब्रह्मविद्याकेउत्पत्तिविषे किंचित्विलक्षणताकूंदिखावैहैं ॥ हेब्राह्मणो! जैसे पक्षियोंविषे आकाशमेंचलणेकीजोचातुर्यताहै तथा मत्स्योंविषेजलमेंचलणेकीजोचातुर्यताहै साचातुर्यता किसीयत्नकरिकैसाध्यहोवैनहीं किंतु जन्मतैंही तिनोंविषे साचातुर्यता है॥तैसे विराट्भगवान्विषे तथाकपिलमुनिविषे तथासनत्कुमारादिकोंविषे अदृष्टादिकआगंतुककारणोंतैंविनाही ब्रह्मविद्या उत्पन्न

होवैहै ॥ और वाल्मीकि तथावामदेवादिकोंविषेतौ देशकालादिकनिमित्तकरिकै फलदेणेकूंसन्मुखभयेजे अनंतजन्मकेपुण्यकर्म तिनपुण्यकर्मादिकआगंतुकनिमित्तकरिकै ब्रह्मविद्या उत्पन्नहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे यौवनकालविषे पुरुषोंकूं पूर्वलेपुण्यकर्मकेवशतैं यश धन पुत्रादिकसुख प्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे वामदेवादिकोंकूं पूर्वलेपुण्यकर्मकेवशतैं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और हेब्राह्मणो! जैसे नेत्रोंकरिकै सर्वजनोंकूं रूपकाज्ञानहोवैहै ॥ तैसे गुरुउपदिष्टशास्त्रकरिकै संपूर्णअधिकारियोंकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! पूर्वआपनैं विराटादिकोंविषे स्वभावतैंहीब्रह्मविद्याकीउत्पत्ति कथनकरी ॥ और अबी संपूर्णब्रह्मविद्याकेप्रति शास्त्रकूं कारणता कथनकरी ॥ यातैं पूर्वउत्तरग्रंथका विरोधहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो! विराटादिकोंविषे स्वभावतैंहीब्रह्मविद्याकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और वामदेवादिकोंविषे पूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैं ब्रह्मविद्याकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ याकहणेविषे यहतात्पर्यहै ॥ जैसे अस्मदादिकजीवोंकूं ब्रह्मचर्यादिकसाधनपूर्वक गुरुकेसमीपनिवासकरणेतैं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे विराट्भगवान् तथाकपिलमुनिआदिकोंविषे यद्यपि ब्रह्मविद्याकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ तथापि ब्रह्मविद्याकीउत्पत्तितैंपूर्व विराटादिकोंविषे तथावामदेवादिकोंविषे श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकी तौ अवश्यअपेक्षारहैहै ॥ शास्त्रकेचिंतनतैंविना विराटादिकोंविषेभी ब्रह्मविद्या उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं विराटादिकोंकेब्रह्मविद्याविषेभी शास्त्रकूं कारणताहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे आकाशविषेगमनकरणेमैं यद्यपि पक्षी अन्यकिसीसाधनंकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ तथापि पंखोंकीअपेक्षाकरैहैं ॥ तैसे विराटादिकमहान्पुरुष ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषे यद्यपि अध्ययनादिकोंकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ तथापि ब्रह्मविद्याकीउत्पत्तितैंपूर्व श्रुतिरूपशास्त्रकीअपेक्षाकरैहैं ॥ यातैं पूर्वउत्तरग्रंथकाविरोधनहीं ॥ और हेब्राह्मणो! विराट्भगवान् कपिलमुनिआदिक स्वभावतैंब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और वामदेववाल्मीक्यादिक पूर्वपुण्यकर्मकेप्रभावतैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और गुरुउपदिष्टशास्त्रकरिकै सर्वअधिकारीजन ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातीनोंपक्षोंविषे जैसेशास्त्रकूं ब्रह्मविद्याकेप्रतिकारणताहै ॥ तैसे अद्वितीयब्रह्मविषे शास्त्रकेतात्पर्यकानिर्णयरूपजोश्रवणहै तिसकूंभी संपूर्णब्रह्मविद्याकेप्रति कारणताहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे क्षुधावान्पुरुषकेतृप्तिविषे भोजनही कारणहोवैहै ॥ भोजनतैंविना किसीकीतृप्तिहोवैनहीं ॥ तैसे

श्रवणतेंविना किसीकूंभी ब्रह्मविद्या प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु संपूर्णविराट्भगवान्‌आदिकोंकूं श्रवणतेंही ब्रह्मविद्या प्राप्तहोवैहै ॥ अब ब्रह्मविद्याकेस्वरूपकूंदिखावैहैं ॥ हेब्राह्मणो! ब्रह्मशब्दतें तथाआत्मशब्दतें तथाब्रह्मशब्द आत्मशब्दजन्यवृत्तिरूपज्ञानतें रहित जोब्रह्मशब्दका तथाआत्मशब्दका सर्वतेंअधिक तथासर्वकेअंतरव्यापकरूप अर्थहै सो मैंहूं ॥ याप्रकारकेअभेदज्ञानकूं बुद्धिमानूपुरुष ब्रह्मविद्याकहैहैं ॥ और हेब्राह्मणो! याप्रकारकीब्रह्मविद्या जबी उत्पन्नहोवैहै तबी सर्वात्मभावरूपफलकीप्राप्तिविषे ब्राह्मणत्वादिकउत्तमजातिकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ किंतु इसब्रह्मविद्याकरिकै जैसे ब्रह्म सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ तैसे दूसराभीजो कोईमनुष्य तथामुनि तथादेवता तथादानव श्रवणादिकसाधनोंकरिकै ब्रह्मविद्याकूंसंपादनकरैगा ॥ सो निश्चयकरिकै सर्वात्मभावकूंप्राप्तहोवैगा ॥ और हेब्राह्मणो! मैंब्रह्महूं याप्रकारकेअभेदज्ञानकरिकै अनेकब्राह्मण तथामुनि तथाअनेकअसुर सर्वात्मरूपब्रह्मकूंप्राप्तभयेहैं यहब्रह्मविद्याकाफल हमसर्वब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंकूं परोक्षनहीं ॥ किंतु ब्रह्मविद्याप्राप्तिकेउत्तरक्षणविषे यहफल हमसर्वब्राह्मणोंकेअनुभवकरिकैसिद्धहै ॥ और हेब्राह्मणो! हमसर्वअधिकारीजनोंकेमध्यविषे एकवामदेवनामामुनिहोताभया ॥ और सोवामदेवनामामुनि माताकेगर्भविषेस्थितहोइकै हमसर्वअधिकारियोंऊपरिकृपाकरिकै ब्रह्मविद्याकेफलविषे हमारेविश्वास करावणेवासते याप्रकारकेवचनोंकूंकहताभया ॥ वामदेवउवाच ॥ हेअधिकारीब्राह्मणो! माताकेगर्भविषे ब्रह्मविद्याकरिकै हमारेकूं सर्वात्मभावकीप्राप्तिभईहै ॥ यातें सर्वात्मभावकीप्राप्तिरूप ब्रह्मविद्याकेफलविषे तुमारेविश्वासकरावणेवासते तुमारेप्रति हम वचनोंकूंकहेहैं ॥ तिनवचनोंकूं सावधानहोइके तुम श्रवणकरो ॥ हेअधिकारीजनो! तुमारीदृष्टिकरिकै तुमारेमध्यविषे कोईकवामदेवनामामैं पूर्वशरीरकापरित्यागकरिकै इदानींकालविषे माताकेगर्भविषेनिवासकरताहूं ॥ और आपणीदृष्टिकरिकैतो मैंसर्वात्मरूपहूं ॥ और हेअधिकारीब्राह्मणो! पूर्वजन्मविषे हमारेकूं तथातुमसंपूर्णअधिकारियोंकूं सनकादिकमुनियोंनें समानही ब्रह्मविद्याकाउपदेशकर्‍याथा ॥ परंतु तिसकालविषे हमसंपूर्णअधिकारीजन विषयोंविषेआसक्तथे ॥ यातें हृदयदेशविषेस्थितआत्माकूंभी हम नहींजाणतेभये ॥ दृष्टांत ॥ जैसे जन्मकेअंध जेपुरुषहैं ते आपणेहस्तविषेस्थित अत्यंतप्रकाशमानमणियोंकूंभी देखतेनहीं ॥ तैसे

विषयोंविषेआसक्तिरूपदोषकेवशतैं हृदयदेशविषेस्थितआत्माकूंभी हम नहींदेखतेभये ॥ और हेअधिकारीजनो! ताविषयआस
क्तिरूपप्रतिबंधकेवशतैं पूर्वजन्मविषे हमारेकूं आत्माकासाक्षात्कारभयानहीं ॥ याकारणतेंही इदानींकालविषे हमारेकूं शरीररूप
बंधनकीप्राप्तिभईहै ॥ यातैं हेअधिकारीब्राह्मणो! जैसे हमारेकूंशरीररूपबंधनकी प्राप्तिभईहै ॥ तैसे तुमारेकूं पुनःशरीररूपबंधनकी
प्राप्ति जैसे नहींहोवै ऐसाकोईउपाय तुमकरो ॥ सोउपाय आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईहैनहीं ॥ यातैं आत्मसाक्षात्कारकीप्रा
प्तिवासते तुमसंपूर्णअधिकारी यत्नकरो ॥ और हेअधिकारीब्राह्मणो! ब्रह्मविद्याकरिकै सर्वात्मभावकीप्राप्तिरूपफलकाअनुभव हम
नैं गर्भविषेअबीकऱ्याहै ॥ यातैं ब्रह्मविद्याकेफलविषे तुमोंनैं संदेहनहींकरणा ॥ और हेब्राह्मणो! सत्ययुगविषेही ब्रह्मविद्याकरिकै स
र्वात्मभावकीप्राप्तिहोवैहै ॥ कलियुगादिकोंविषे होवैनहीं ॥ याप्रकारकासंदेहभी तुमोंनैं नहींकरणा ॥ काहेतैं? ब्रह्मविद्याकेउत्पन्नहुए
चारोंयुगोंविषे सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं हेअधिकारीब्राह्मणो! तुमारेविश्वासकरावणेवासते सर्वात्मभावकीप्राप्तिरूप ब्र
ह्मविद्याकाफल हम तुमारेप्रति कथनकरैंहैं सो तुम श्रवणकरो ॥ हेअधिकारीब्राह्मणो! मनुष्यादिकसृष्टिकाकारणजोस्वायंभूमनुहै
सोभी मैंहीहोताभया ॥ और सर्वजगतकूंप्रकाशकरणेहारा जोसूर्यभगवान्है सोभी मैंहीहोताभया ॥ और कक्षीवान्नामाजोमुनि
है सोभी मैंहीहोताभया ॥ और लोकविषेप्रसिद्ध जोसूर्यादिकप्रकाशहै तिनोंकेभीप्रकाशकरणेहारा जोचैतन्यरूपप्रकाशहै सोभी
मैंहीहूं ॥ इतनैंकरिकैवामदेवनैं आपणेविषे ईश्वरभावदिखाया ॥ अब आपणेविषेजीवभावकूंदिखावैहैं ॥ हेअधिकारीब्राह्मणो! च
तुर्दशलोकविषेस्थित जितनेशरीरहैं तिनोंकूं मैंहीप्राप्तिहोवोहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ वास्तवतैंजन्ममरणतैंरहितहुआभी मैं शरीरादिक
उपाधिकेजन्ममरणतैं आपणेविषे जन्ममरणमानोहूं ॥ और हेअधिकारीब्राह्मणो! सर्वत्र पसरिरहीहैदृष्टिजिसकी ऐसाजोभृगु
कापुत्रशुक्रहै सोभीमैंहीहूं ॥ और हेब्राह्मणो! मैंही परशुरामअवतारकूंधारणकरिकै कश्यपकेतांई धनकरिकैपूर्ण संपूर्णपृथिवी
कूंदेताभयाहूं ॥ और हेअधिकारीब्राह्मणो! पुण्यपापरूपकर्मकरिकैयुक्त जे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज येचारिप्रकारकेजी
वहैं ॥ तिनजीवोंकेतांई मेघरूपहोइके मैंहीवृष्टिदेवोहूं ॥ कैसीहैसावृष्टि? पुण्यपापकाफल जोउच्चनीचशरीरहै तिनोंकाकारणहै ॥

याकारणतेंही सादृष्टि जीवोंके सुखका तथादुःखका कारणहै ॥ और हेअधिकारीब्राह्मणो! तीनलोकविषेस्थितजलोंकूं सूर्यरूप होइकै मैंही आकर्षणकरोहूं ॥ कैसाहैसोसूर्यभगवान्? वैश्वानरादिकरूपकरिकै सर्वकेअंतर तथाबाहरि विचरणेहाराहै ॥ और हेअधिकारीब्राह्मणो! जैसे क्षुधाकरिकैआतुरहुआबालक माताकेशरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे दैत्योंकरिकै अभिभवकूंप्राप्तहुए इंद्रादिकदेवता मेरेहीशरणकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और हेअधिकारीब्राह्मणो! तारकासुरकापक्षपातिजोशंबरनामादुरात्मा असुरहै ॥ तिसनैं मायाकरिकैरचीहुई जेनवानवे ९९ पुरीहैं ॥ तेपुरियांकैसी हैं ॥ नित्यही देवतावोंके भयकूंकरणेहारी हैं ॥ ऐसेमायारचित नवानवेपुरियोंकूं स्वामिकार्तिकेयरूपकूंधारणकरिकै मैंही विनाशकरताभयाहूं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे प्रणवरूप तारकमंत्र मुमुक्षुजनोंकेहृदयकेअज्ञानकूंनाशकरैहै ॥ हेब्राह्मणो! याप्रकारकेवचनोंकरिकै सोवामदेवनामाऋषि सर्वात्मभावकीप्राप्तिरूप ब्रह्मविद्याकेफलकूं पूर्वहमारेप्रति कथन करताभया ॥ तेवामदेवकेवचन ॥ अबी हमारेस्मृतिविषेविद्यमानहैं ॥ यातैं हेब्राह्मणो! सर्वात्मभावकीप्राप्तिरूपफलकासाधन एकब्रह्मविद्याहीहै ॥ यातैं ताब्रह्मविद्याकूं अधिकारीपुरुषोंनैं अवश्यसंपादनकरणा ॥ दध्यङ्ऋषिरुवाच ॥ हेदेवराजइंद्र! इसप्रकार तेसंपूर्णविद्वान्‌ब्राह्मण ब्रह्मआत्माकेअभेदज्ञानतैं सर्वात्मभावकीप्राप्तिरूपफलका कथनकरतेभये ॥ यातैं इदानींकालविषेभी जोकोईदेवता तथादानव तथामनुष्य ब्रह्मविद्याकूंसंपादनकरैगा तिसकूंभी अवश्य सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और हेदेवराजइंद्र! मैंअद्वितीयब्रह्महूं याप्रकारकीब्रह्मविद्या जिसपुरुषकूंप्राप्तभईहै तिसपुरुषकूं आपणेवशकरणेविषे तुमदेवताभी समर्थनहींहो ॥ काहेतैं? तुमसर्वदेवता आपणेकूंवशकरणेविषेसमर्थनहींहो ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अग्नि आपणेतैंभिन्न काष्ठादिकोंकूं दाहकरैहै ॥ आपणेकूं अग्निदाहकरै नहीं ॥ तैसे तुमसर्वदेवता आपणेतैंभिन्नपुरुषोंके वशकरणेविषेसमर्थहो ॥ परंतु आपणेकूंवशकरणेविषे तुमदेवता समर्थनहींहो ॥ शंका ॥ हेभगवन्! यद्यपि हमदेवता आपणेआत्माकेवशकरणेविषे समर्थनहींहैं ॥ तथापि हमारेतैंभिन्न जोविद्वान्‌पुरुषहै तिसकेवशकरणेविषे हमदेवता काहेतैंसमर्थनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! ब्रह्मविद्याकरिकै विद्वान्‌पुरुष सर्वात्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं सोविद्वान्‌पुरुष तुमदेवतावोंतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु तुमसर्व

देवतावोंका सोविद्वान् आत्माहै ॥ यातैं आपणेआत्मारूपविद्वान्केवशकरणेविषे तुमदेवता समर्थनहींहो ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! आत्मा सर्वतैंअंतरहोवैहै ॥ और यहविद्वान्पुरुषस्थूलशरीरकरिकैयुक्तहुवा बाह्यप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं यहविद्वान्पुरुष हमाराआत्मा किसप्रकारसंभवैहै? ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ! जैसे घटरूपउपाधिकरिकैयुक्तहुआ आकाश यद्यपि सर्वत्रव्यापकनहींहै ॥ तथापि घटरूपउपाधितैंविमुक्तहुआआकाश सर्वकेहृदयदेशविषेविद्यमानहै ॥ तैसे ब्रह्मविद्याकरिकै निवृत्तहुआहैदेहाभिमानजिसका ऐसाजोविद्वान्पुरुषहै ॥ सो तुमसर्वदेवतावोंका आत्मासंभवैहै ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र! ऐसे सर्वात्मरूपविद्वान्पुरुषकी जोतुम देवता किंचित्मात्रप्रतिकूलताकरौगे तथा अनुकूलताकरौगे तौ साप्रतिकूलता तथाअनुकूलता तुमारेकूंही प्राप्तहोवैगी ॥ असंगविद्वान्पुरुषकूं साअनुकूलता तथाप्रतिकूलता स्पर्शकरैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे आपणेमस्तककूं अन्यपुरुषकामस्तकमानिकै जोकोईकमूढपुरुष ताडनकरैहै ॥ सोमूढपुरुष आपहीपीडाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सर्वकाआत्मारूपजोविद्वान्है तिसकूं आपणेतैं भिन्नमानिकै जो मूढपुरुष तिसविद्वान्काताडनकरैहै॥ सोमूढपुरुष आपणाहीताडनकरैहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! सर्वप्राणिमात्रके दोरूपहोवैहैं ॥ एकतौ असंगरूप और दूसरा संगवान्रूप ॥ संबंधकूंसंगकहैहैं ॥ संबंधतैंजोरहितहोवै ताकूं असंगकहैहैं ॥ और संबंधवालाजोहोवै ताकूं संगवान्कहैहैं ॥ तहां वास्तवतैंसंबंधरहित विद्वान्पुरुष सर्वप्राणियोंका असंगरूपहै ॥ और अविद्याकरिकैकल्पित जो कर्ताभोक्ताप्रमाताहै ॥ सो सर्वप्राणियोंका संगवान्रूपहै ॥ तहां आपणेअसंगरूपविद्वान्पुरुषविषे जोकोईमूढपुरुष किंचित्मात्रभी प्रतिकूलताकरैहै ॥ साप्रतिकूलता असंगविद्वान्पुरुषकूं स्पर्शकरैनहीं ॥ किंतु प्रतिकूलताकरणेहारा जोसंगवान्प्रमाताहै तिसविषेही साप्रतिकूलता प्राप्तहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे कोईकमूढबालक दर्पणसंबंधतैं रहित तथामंदहास्यकरिकैयुक्त आपणेमुखकूं सन्मुखदर्पणविषेस्थितमानैहै ॥ और सोमूढबालक जबी दर्पणविषेस्थितमुखके प्रतिकूलताकरणेकीइच्छाकरैहै ॥ तबी प्रथम आपणेग्रीवाविषेस्थितमुखकी प्रतिकूलताकरैहै ॥ पश्चात् दर्पणविषेस्थितमुखकी प्रतिकूलताकरैहै ॥ ग्रीवाविषेस्थितमुखकेप्रतिकूलताविना दर्पणविषेस्थितमुखकीप्रतिकूलता होवैनहीं ॥ और तिसप्रतिकूलताकरिकै

दर्पणविषेस्थितअसंगमुखकूं किंचित्मात्रभीदुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु प्रतिकूलताकरणेहारेबालककेग्रीवाविषेस्थित जोमु
खहै ॥ तिसविषेही ताप्रतिकूलताजन्यदुःखहोवैहै ॥ तैसे असंगविद्वान्पुरुषकी जोतुमदेवता किंचित्मात्रभीप्रतिकूलताकरौ
गे ॥ तौ साप्रतिकूलता असंगविद्वान्पुरुषकूं स्पर्शकरैगीनहीं ॥ किंतु कर्ताभोक्ताजोतुमदेवताहो ॥ तिनोंविषेही साप्रतिकू
लता प्राप्तहोवैगी ॥ दुःखकेजनक जेताडनाआदिकहैं तिनकूं प्रतिकूलकहैहैं ॥ और सुखकेजनक जेपूजनादिकहैं तिनकूं अ
नुकूलकहैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! हमदेवतावोंतैंअभिन्न जोविद्वान्पुरुषहै ॥ तिसकूं दुःखकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ और ह
मारेकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याकेविषे कौन कारणहै? ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! जैसे बिंबरूपशरीरकेअलंकारकरणेतैं
दर्पणविषेस्थित प्रतिबिंब अलंकारवालाहोवैहै ॥ और बिंबरूपशरीरकेतिरस्कारकरणेतैं दर्पणविषेस्थित प्रतिबिंब तिरस्कारवा
लाहोवैहै ॥ तैसे ब्रह्मरूपविद्वान्पुरुष तुमसर्वजीवोंकाबिंबरूपहै ॥ और तुमसंपूर्णजीव ताकेप्रतिबिंबरूपहो ॥ यातें जोतुमदेवता
तिसविद्वान्पुरुषके सुखकूं तथादुःखकूं करोगे तौ सो सुख तथादुःख तुमदेवतावोंकूंहीप्राप्तहोवैंगे ॥ विद्वान्पुरुषकेअसंगरूपवि
षे सुखदुःखादिकोंकासंबंधसंभवैनहीं ॥ और हेदेवराजइंद्र! जोकोईपुरुष श्रद्धाकरिकै असंगविद्वान्कापूजनकरैहै ॥ सोपूजनातिस
पूजनकरणेहारेपुरुषविषेही सफलहोवैहै ॥ विद्वान्पुरुषविषे तापूजनकासंबंधसंभवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे जोकोईपुरुष जलकरिकै
तथाधूलिकरिकै सूर्यभगवान्काआछादनकरैहै ॥ परंतु सोजल तथाधूलि सूर्यभगवान्कूं आछादनकरिसकैनहीं ॥ किंतु उलटा आ
छादनकरणेहारेपुरुषकाही आछादनकरैहै ॥ तैसे विद्वान्पुरुषकेकरेहुएपूजनादिक असंगविद्वान्पुरुषकूं स्पर्शकरैनहीं ॥ किंतु कर
णेहारेपुरुषविषेही तेपूजनादिक सफलहोवैहैं ॥ इसप्रकार फलसहितब्रह्मविद्याकूंकहिकरिकै ॥ अब अविद्याकेस्वरूपकूं निरूपण
करैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! जेपुरुष आपणेतैंदेवतावोंकूंभिन्नमानिकै तिनदेवतावोंकीउपासनाकरैहैं ॥ ऐसेभेददर्शीअज्ञानीजीवरूपीप
शुवोंके तुमदेवता स्वामीहो ॥ अब अज्ञानीजीवोंकूं पशुरूपकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! जैसे लोकविषेप्रसिद्धगौवोंकीशा
ला काष्ठकरिकै तथामृत्तिकाकरिकै रचीजावैहै ॥ तैसे अज्ञानरूपीमृत्तिका तथाकाष्ठोंकरिकै यहसंसाररूपीशाला ब्रह्मानैं उत्पन्न

करीहै ॥ कैसीहैसासंसाररूपीशाला? भेददर्शीअज्ञानीजीवरूपगौवोंकेरहणेकास्थानहै ॥ कैसेहैं? तेअज्ञानीजीवरूपपशु तुमदेवतावों केताईं हव्यकव्यादिकपदार्थोंकूंदेवैहैं ॥ यातैं तेअज्ञानीजीव तुमदेवतावोंका आश्रयरूपहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे लोकविषे दुग्धादिकोंकूंदेणेहारीजेगौवैंहैं तिनोंकूं लोक आपणाआश्रयमानैंहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे लोकप्रसिद्ध गौवोंकीशालाविषे ताशालाकेभारकूंधारणकरणेहारी अनेकस्थूणाहोवैंहैं ॥ और तिनस्थूणावोंविषे एकदीर्घरज्जु बांधीहोवैहै ॥ और तिसदीर्घरज्जुविषे अनेकअल्परज्जु बांधीहुईहोवैंहैं और तिनअल्परज्जुवोंविषे एकएकरज्जुकेसाथ एकएकगौ बांधीहोवैहै ॥ तैसे यहसंसाररूपीएकशालाहै ॥ और संसाररूपीशालाकेभारकरिकै व्याकूल जेकामक्रोधादिकहैं ॥ ते यासंसाररूपीशालाकेस्थूणाहैं ॥ और अग्निहोत्रादिककर्म ब्राह्मणकूंकरणेयोग्यहैं इत्यादिक जेविधिवाक्यहैं तथा ब्राह्मणादिकोंकीहिंसाकरणेयोग्यनहीं इत्यादिक जेनिषेधवाक्यहैं येदोनोंप्रकारकेवेदके वचन एकदीर्घरज्जुहै ॥ सावेदवचनरूपीदीर्घरज्जु कामक्रोधादिरूपस्थूणावोंकेसाथ बांधीहुईहै ॥ और अग्निहोत्रादिककर्मकेअधिकारियोंकूंबोधनकरणेहारे जेब्राह्मणादिकनामहैं ते अल्परज्जुकेसमानहैं ॥ और तेब्राह्मणादिकनामरूपअल्परज्जु विधिनिषेधवचनरूप दीर्घरज्जुविषे बांधीहुईहैं और तिनब्राह्मणादिकनामस्वरूप अनेकअल्परज्जुवोंविषे एकएकरज्जुकेसाथ एकएकअज्ञानीजीवरूपपशुबांध्याहुआहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! यद्यपि ब्राह्मणादिकनामरूपीरज्जुवोंविषे अनेकअज्ञानीजीवबांध्येहुएहैं तथापि यज्ञदानादिककर्मोंकूंकरणेहारा जोअज्ञानीगृहस्थहै सो तुमसर्वदेवतावोंका कामधेनुसमानहै ॥ अब अज्ञानीगृहस्थविषे कामधेनुपणादिखावैंहैं ॥ हे देवराजइंद्र! अग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरणेहारा जोएकअज्ञानीगृहस्थहै सो तुमसर्वदेवतावोंकूंपालनकरैहै ॥ तथा सर्वपितरोंकूंपालन करैहै ॥ तथा अतिथिआदिकमनुष्योंकूंपालनकरैहै ॥ तथा सर्वमुनियोंकूंपालनकरैहै तथा अन्यभीअनेकप्राणियोंकापालनकरैहै ॥ यातैं यहअज्ञानीगृहस्थ तुमसर्वदेवतावोंका कामधेनुगौहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे लोकविषे एकएककुटंबीगृहस्थके अनेकपशुहोवैंहैं ॥ तैसे तुमदेवतावोंके अनेकपशुहैनहीं ॥ किंतु एकहीअज्ञानीगृहस्थ कामधेनुगौकीन्याईं तुमसर्वदेवतावोंकापालनकरैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे लोकविषे किसीकुटुंबीगृहस्थकेअनेकपशुहोवैंहैं ॥ और तिनपशुवोंविषे जोकदाचित् एकपशुकूंभी चोर

लेजावैंहै तौ तिसकुटुंबीपुरुषकूं महानूदुःखकीप्राप्तिहोवैंहै ॥ जबी एकपशुकेजाणेकरिकैभी तिसकुटुंबीगृहस्थकूं महानूदुःखकी
प्राप्तिहोवैंहै ॥ तबी सर्वपशुवोंकेजाणेकरिकै जोतिसकुटुंबीगृहस्थकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैंहै सो कह्याजावैनहीं ॥ यातैं हेदेवराजइं
द्र! जैसे सर्वपशुवोंकेजाणेकरिकै ताकुटुंबीगृहस्थकूंदुःखकीप्राप्तिहोवैंहै तैसे तुमसर्वदेवतावोंके पशुजोअज्ञानीपुरुषहैं ॥ तिस
काजबीब्रह्मविद्याकरिकै अज्ञानकानाशहोवैंहै ॥ तबी तुमसर्वदेवतावोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैंहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे लोक
विषे तेकुटंबीगृहस्थ चौरोंतैंआपणेपशुवोंकीरक्षाकरणेवासते रात्रिदिनविषेसावधानहुए तिनचौरोंकेनिवृत्तिकाउपायकरैंहैं ॥ तैसे
ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासते जेपुरुष ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकूंसंपादनकरैंहैं तिनपुरुषोंके ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकेभंगकरणेवासते अ
नंतप्रकारकेउपद्रवोंकूं तुमदेवताकरोहो ॥ जीवोंकेबुद्धिकूंविपरीतकरणा यहही देवतावोंकाउपद्रवहै ॥ यातैं जोमुमुक्षुजन ब्रह्मवि
द्याकेप्राप्तिकीइच्छावालाहोवै सो प्रथम श्रद्धापूर्वक देवतावोंकाआराधनकरै ॥ ताआराधनकरिकै जबी देवता प्रसन्नहोवैंहैं त
बी अधिकारीजनोंकूं सत्बुद्धिकीप्राप्तिकरिकै ब्रह्मविद्याकेसर्वप्रतिबंधोंतैं रक्षाकरैंहैं॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ श्लोक॥
न देवादंडमादाय रक्षंतिपशुपालवत् ॥ यंहिरक्षितुमिच्छंतिबुद्ध्यासंयोजयंतितं ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ जैसे पशुवोंकेपालनकरणहारपुरुष
हाथविषेदंडलेकै सिंहादिकोंतैं पशुवोंकीरक्षाकरैंहैं ॥ तैसे देवता हाथविषेदंडलैके भक्तजनोंकीरक्षाकरैंनहीं ॥ किंतु जिसभक्तजनके
रक्षाकरणेकी देवताइच्छाकरैंहैं तिसपुरुषकूं सत्बुद्धिकीप्राप्तिकरैंहैं ॥ १ ॥ यातैं ब्रह्मविद्याकीउत्पत्तितैंपूर्व प्रतिबंधकीनिवृत्तिवा
सते मुमुक्षुजनोंनैं अवश्यदेवतावोंकाआराधनाकरणा॥ और जोपुरुष ब्रह्मविद्याकीप्राप्तितैंपूर्व देवतावोंकाआराधननहींकरैंहै ॥ ति
सपुरुषकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषे अनंतप्रकारकेविघ्न देवताकरैंहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे लोकविषे पशुवोंकेहरणकरणेहारे जे
अत्यंतबलवान्चौरहैं ॥ तेचौर पशुवोंवालेकुटुंबीगृहस्थोंकूं प्रियलागतेनहीं ॥ तैसे अज्ञानीजीवरूप तुमारेपशुवोंकूं ब्रह्मविद्या
कीप्राप्तिद्वारा हरणकरणेहारे जेविद्वानूपुरुष हैं तेविद्वान्पुरुष तुमदेवतावोंकूं प्रिय लागतेनहीं ॥ यद्यपि सर्वदेवतावोंका
आत्मारूप जोविद्वान्पुरुषहै तिसविषे देवतावोंकाद्वेषसंभवैनहीं ॥ तथापि चित्तशुद्धितैंरहित जेकर्मकेअधिकारीजीवहैं ति

नोंकूं जेविद्वान् कर्मतैंरहितकरैहैं तिनविद्वानोंविषेही देवतावोंकाद्वेषहोवैहै ॥ यहवार्त्तागीताविषे श्रीकृष्णभगवान्नैंभी अर्जु
नकेप्रतिकहीहै ॥ श्लोक ॥ नबुद्धिभेदंजनयेदऽज्ञानांकर्मसंगिनां ॥ अर्थयह ॥ चित्तशुद्धितैंरहित कर्मकेअधिकारीजेजीवहैं ॥ ति
नोंकूं विद्वानपुरुष कर्मोंतैंनिवृत्तनहींकरै ॥ किंतु तिनोंकूं शुभकर्मोंविषेलगावै ॥ १ ॥ याभगवान्केवचनका जेविद्वान्पुरुष उल्लं
घनकरैहैं तिनोंविषेही देवतावोंकाद्वेष होवैहै ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र! ब्रह्मविद्याकीउत्पत्तितैंपूर्व यद्यपि तुमदेवता विघ्नकरो
हो ॥ तथापि ब्रह्मविद्याकेउत्पन्नहुएतैंअनंतर ताविद्याकेसर्वात्मभावकीप्राप्तिरूपफलका प्रतिबंधनकरणेविषे तुमदेवताभी समर्थ
नहींहो ॥ यातैं यहविद्वान्पुरुष सर्वका आत्मरूपहै ॥ यातैं तुमदेवतावोंकाभी आत्मा है ॥ तथा यहविद्वान्पुरुष अद्विती
यब्रह्मरूपहै ॥ यातैं तुमदेवतावोंतैंभी अधिकहै ॥ ऐसेविद्वान्पुरुषकेसमीपजाइके आत्मातैंभिन्न पुत्रादिकअनात्मपदार्थोंकूंप्रि
यरूपकरिकैनहींकथनकरै ॥ यहजोपूर्वकथनकऱ्याथा सो संभवैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! पुत्रादिकसर्वअनात्मपदार्थोंतैं प्रिय जो
आनंदस्वरूपआत्माहै तिसकूं नजाणिकरिकै जोपुरुष मरणकूंप्राप्तहोवैहै तिसअज्ञानीपुरुषका स्वरूपभूतहुआभी यहआनंद
स्वरूपआत्मा ताअज्ञानीपुरुषकूं जन्ममरणकेप्रवाहतैंरक्षाकरैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे गुरु तथापुस्तकद्वारा वेदकेसमीपविद्यमान्हु
एभी जबपर्यंत यहपुरुष गुरुमुखतैं तावेदकाअध्ययननहींकरता ॥ तबपर्यंत सोनहींअध्ययनकऱ्याहुआ वेदभगवान् ब्राह्मणकूं पवि
त्रकरिनहींसकता ॥ किंतु गुरुमुखतैंजान्याहुआवेदही ब्राह्मणकूं पवित्रकरैहै॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माभी गुरुशास्त्रकेउपदेश
करिकैनहींजान्याहुआ जीवोंकूं जन्ममरणरूपसंसारतैंरक्षाकरिसकतानहीं ॥ किंतु गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंजान्याहुआ यहआत्मा जी
वोंकूं संसारतैंरक्षाकरैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! गुरुशास्त्रद्वारा यज्ञादिककर्म जान्येहुएभी अनुष्ठानतैंविना पुरुषोंकूं फलकीप्राप्ति
करैनहीं ॥ तैसे यहविवेकादिकसाधन गुरुशास्त्रद्वाराजान्येहुएभी अनुष्ठानतैंविना पुरुषोंकूं आत्मज्ञानरूपफलकीप्राप्तिकरतेनहीं॥
और हेदेवराजइंद्र! जो पुरुष आनंदस्वरूपआत्माकूं नजाणिकरिकै अश्वमेधादिकमहान्यज्ञोंकूंकरैहै॥ तिसपुरुषकूं ते अश्वमे
धादिकयज्ञरूपीकर्म किंचित्कालपर्यंत स्वर्गविषेसुखकीप्राप्तिकरिकै पुनःक्षयकूंप्राप्तहुए तेकर्म याजीवकूं परमदुःखकीप्राप्तिकरैहैं

यातें जिसपुरुषकूं नित्यआनंदकेप्राप्तिकीइच्छा होवै सोपुरुष अन्यसर्वउपायोंकापरित्यागकरिकै आत्मज्ञानकेप्राप्तिवासते पुरुषार्थकरै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जोपुरुष आत्मज्ञानकेसंपादनविषे समर्थनहींहोवै ॥ सोपुरुष उपासनाकूं तथानिष्कामकर्मोंकूं करै ॥ ताउपासनाके तथानिष्कामकर्मोंकेप्रभावतें चित्तशुद्धिद्वारा इसलोकविषे तथाब्रह्मलोकविषे ताउपासकपुरुषकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिही उपासनाकामुख्यफलहै ॥ अब उपासनाकेअवांतरफलकूंनिरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! यहउपासकपुरुष संसारविषेनिवासकरताहुआभी हिरण्यगर्भकेसमान ऐश्वर्यताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे हिरण्यगर्भभगवान् जिसजिसपदार्थकीइच्छाकरैहै तिसतिसपदार्थकूं आपणीइच्छामात्रकरिकैउत्पन्नकरैहै ॥ तैसे यहउपासकपुरुषभी कर्मउपासनाके प्रभावतें सर्वपदार्थोंकूं आपणीइच्छामात्रकरिकैउत्पन्नकरैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जोपुरुष मैंब्रह्महूं याप्रकारकीबुद्धिकरिकै आनंदस्वरूपआत्माकूंसाक्षात्कारकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं यहसंपूर्णअनात्मप्रपंच परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ जैसे तुमदेवतावोंकूं वमनकऱ्याहुआअन्न त्यागणेयोग्यहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! याआनंदस्वरूपआत्माकूंनजाणिकरिकै जोपुरुष अन्यअनात्मपदार्थोंकूं जाणैहै ॥ तापुरुषकूं शास्त्रकेवेत्तामहात्मापुरुष अनात्मज्ञ कहैहैं ॥ जैसे बालाकीब्राह्मण आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंनजाणिकरिकै प्राणकूंहीआत्माजाणताभया ॥ याकारणतें सोअनात्मज्ञबालाकी श्रीकाशीविषे अजातशत्रुराजाकाशिष्यहोताभया ॥ याकथाकूं तुमभलीप्रकारजाणतेहो ॥ यातें हेदेवराजइंद्र! आनंदस्वरूपआत्मातेंभिन्न कोईभीअनात्मपदार्थ जानणेयोग्यनहीं ॥ अब आत्मातेंभिन्न सर्वपदार्थोंकूं अनात्मरूपकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! यास्थूलशरीरविषे अभिमानीजीवकूं नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै जोस्थूलपदार्थोंकीप्रतीतिहोवैहै ॥ ताकूं शास्त्रविषेजाग्रत्अवस्थाकहैहैं ॥ साजाग्रत्अवस्था ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय तथा ध्याता ध्यान ध्येय इत्यादिकत्रिपुटीस्वरूपहै ॥ और साक्षीचैतन्यकरिकैभास्यहै यातें दृश्यरूपहै ॥ और जोजोदृश्यपदार्थहोवैहै ॥ सोसो अनात्माहीहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ दृश्यहैं यातेंअनात्माहैं ॥ तैसे त्रिपुटीरूपजाग्रत्प्रपंचभी दृश्यहै ॥ यातें अनात्माहीहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! स्वप्नअवस्थाविषे रथादिकपदार्थोंकेउत्पत्तिकेयोग्य देशकालादिकोंकेअभावहुएभी पूर्वपूर्ववासनावोंकरिकैविशिष्ट

हुआमन अनेकप्रकारकेपदार्थोंकूं स्वप्नविषेउत्पन्नकरैहै ॥ यातें तेस्वप्नकेपदार्थ मायामात्रहैं ॥ **दृष्टांत** ॥ जैसे देशकालादिकसामग्री तैंविनाही आकाशविषे गंधर्वनगर प्रतीतहोवैहै यातें सोगंधर्वनगर मिथ्याहै ॥ तैसे स्वप्नकेपदार्थभी मिथ्याहैं ॥ और उत्पत्तिना शवान्‌हैं ॥ यातें तेस्वप्नपदार्थभी आत्मारूपनहीं ॥ किंतु अनात्मारूपहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ! पुरीततरूपीकोटकेमध्यविषेस्थितजो हृदयहै तिसहृदयविषे नाडीरूपमार्गद्वाराजाइकै सुषुप्तिअवस्थाविषे जोअज्ञानकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ सोअज्ञानविशिष्टजीवभी शुद्ध आत्मातेंभिन्नहै ॥ यातें घटादिकोंकीन्यांई सोभी अनात्मारूप है ॥ **शंका** ॥ हेभगवन् ! जबी जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिविषेस्थित सर्वपदार्थ आत्मारूपनहींभये तबी तिनोंतेंभिन्न आत्माका कौनस्वरूप है यहआप कृपाकरिकै कथनकरो ॥ **समाधान** ॥ हेदेवराजइंद्र ! सोआत्मा स्वप्रकाशस्वरूपहै ॥ जोप्रकाश आपणेप्रकाशविषे तथाकिसीपदार्थकेप्रकाशविषे अन्यकिसीदूसरेप्रका शकीअपेक्षानहींकरैहै ॥ ताकूं वेदांतशास्त्रविषे स्वप्रकाशकहैहैं ॥ ऐसास्वप्रकाशस्वरूप आत्माहै ॥ आत्मातेंभिन्नसंपूर्ण परप्रका शहैं ॥ **शंका** ॥ हेभगवन् ! यास्वप्रकाशआत्माकेलक्षणकी सूर्यादिकभौतिकप्रकाशविषे अतिव्याप्तिहोवैहै ॥ काहेतें? सूर्यादिकप्रका शभी आपणेप्रकाशविषे तथाघटादिकपदार्थोंकेप्रकाशविषे अन्यकिसीप्रकाशकीअपेक्षाकरतेनहीं ॥ **समाधान** ॥ हेदेवराजइंद्र ! सूर्यादिकभौतिकप्रकाश यद्यपि आपणेप्रकाशविषे तथाघटादिकपदार्थोंकेप्रकाशविषे अन्यकिसीभौतिकप्रकाशकीअपेक्षाकरतेन हीं ॥ तथापि चैतन्यरूपअलौकिकप्रकाशकी सूर्यादिकप्रकाशभी अपेक्षाकरैहैं ॥ यातें सूर्यादिकप्रकाशोंविषे स्वप्रकाशआत्माकेल क्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ यातें हेदेवराजइंद्र ! सुषुप्तिअवस्थाविषे जिसआत्माका हृदयदेशविषेनिवास शास्त्रनैं कथनकऱ्याहै ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे जिसआत्माका मनविषेनिवास शास्त्रनैं कथनकऱ्याहै ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे जिसआत्माका स्थूल शरीरविषेनिवास शास्त्रनैं कथनकऱ्याहै तिसस्वप्रकाशआत्माका निषिद्धसुखकरिकै हम तुमारेतांई उपदेशकरैहैं ॥ पूर्व तृतीय अध्यायकेअंतविषे यहकह्याथा ॥ देवराजइंद्रतैंभयकूंप्राप्तहुआ कौषीतकिनामाऋषि सत्यकासत्यहै यहजोब्रह्मकागुह्यनामहै ता नामकूं अर्थसहित आपणेशिष्योंकेप्रति उपदेशनहींकरताभया ॥ अब तिसीअर्थकूं इहांस्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराज

इंद्र ! सुषुप्तिअवस्थाकेप्राप्तहुए याजीवकेपंचज्ञानइंद्रिय तथापंचकर्मइंद्रिय तथाअंतःकरणचतुष्टय इनसंपूर्णोंका अज्ञानविषेल
यहोवैहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाकेनिवृत्तहुए संपूर्णइंद्रियोंसहितअंतःकरण तिसीअज्ञानतैंउत्पन्नहोवैहै ॥ और जोजोपदार्थ उत्प
त्तिनाशवान्होवैहै ॥ सोसोपदार्थ घटादिकोंकीन्यांई असत्यहीहोवैहै ॥ यातैं उत्पत्तिनाशवान्होणेतैं अंतःकरणसहितसकलइंद्रिय
असत्यहैं ॥ और सुषुप्तिअवस्थाकेप्राप्तहुए यद्यपि प्राण लयकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा सुषुप्तिअवस्थाकेनिवृत्तहुए यहप्राण उत्पन्न
होवैनहीं ॥ यातैं प्राण सत्यहै ॥ तथापि यहआनंदस्वरूपआत्मा वास्तवतैंसत्यरूपहै ॥ यातैं सत्यप्राणोंतैं उत्कृष्टहै ॥ और यहप्रा
ण जडरूपहै ॥ तथा अनात्मारूपहै ॥ यातैं आनंदस्वरूपआत्मातैं यहप्राण अपकृष्टहै ॥ याअभिप्रायतैंही श्रुतिनैं ब्रह्मकूं सत्य
कासत्य कह्याहै ॥ तहां प्रथमसत्यशब्दकरिकै प्राणसहित संपूर्णभूतभौतिकप्रपंचका ग्रहणकरणा ॥ ताप्रपंचरूपकार्यका यहआनं
दस्वरूपपरमात्मा विवर्तउपादानकारण है ॥ यातैं यहपरमात्मापुरुष सत्यकाभीसत्य है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! प्राणसहितसंपूर्ण
भूतभौतिकप्रपंच अनित्यहै ॥ यातैं ताकूंसत्यकहणासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ! रूपादिकगुणोंतैंरहित जोअद्वितीय
ब्रह्महै ॥ ताकेसाक्षात्कारकरावणेवासते ताब्रह्मकेदोरूप श्रुतिविषेकथनकरेहैं ॥ तहां प्रथमब्रह्मकारूप चारिविशेषणोंकरिकैयुक्त
है ॥ तेचारिविशेषणयेहैं ॥ प्रत्यक्षप्रमाणकेयोग्यहोणेतैं सर्वलोकोंकूंप्रसिद्धहै ॥ यातैं ताकूं सत्यकहैहैं ॥ और देशकालादिकप
रिच्छेदवालाहै ॥ यातैं ताकूंस्थितिमान् कहैहैं ॥ और प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्ध जोअवयवोंकीरचनाविशेष ताअवयवरचनाकरिकै
युक्तहै ॥ यातैं ताकूं मूर्तकहैहैं ॥ और प्रत्यक्ष नाशवान्है यातैं ताकूं मर्त्यकहैहैं ॥ इसप्रकार सत्य स्थितिमान् मूर्त मर्त्य याचारि
विशेषणोंकरिकैयुक्त प्रथमब्रह्मकारूपहै ॥ तहां प्रथमसत्यरूपकासार सूर्यमंडलविषेस्थितहै ॥ सोकैसाहैसूर्यमंडल? ॥ संपूर्णजीवों
कूं प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्धहै ॥ और तप्तकरणेकाहैस्वभावजिसका ॥ और परमेश्वरकाविग्रहहै ॥ ऐसेसूर्यमंडलविषे प्रथमसत्यरू
पकासार स्थितहोवैहै ॥ याकारणतैंही सोसूर्यमंडल सर्वरूपादिकोंकाप्रकाशकहै ॥ अब चारिविशेषणोंकरिकैयुक्त ब्रह्मकेद्वितीयरू
पकूंदिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ! ब्रह्मकाजोद्वितीयरूपहै सो परोक्षहोणेतैं केवलशास्त्रप्रमाणकरिकै जान्याजावैहै ॥ यातैं ताकूं

श्रुतिविषे त्यत्कह्याहै ॥ और सर्वत्रव्यापकहै यातैं ताकूं गतिमान्कह्याहै ॥ और दृश्यमान्अवयवरचनाविशेषतैंरहितहै ॥ यातैं ताकूंअमूर्तकहे हैं ॥ और नाशतैंरहितहै यातैं ताकूं अमृतकहे हैं ॥ इसप्रकार त्यत् गतिमान् अमूर्त अमृत याचारि विशेषणोंकरिकैयुक्त ब्रह्मकाद्वितीयरूपकह्याहै ॥ तहां सूर्यमंडलविषेस्थित समष्टिसूक्ष्मशरीरकाअभिमानी जोहिरण्यगर्भहै ॥ सो प्रथमत्यत्शब्दकेअर्थकासाररूपहै ॥ काहेतें? हिरण्यगर्भकेशरीरआरंभकरणेवासतेंही सूक्ष्मभूतोंकीउत्पत्तिहै ॥ इतनेकरिकै ब्रह्मके अधिदैवरूप दोस्वरूपोंकूंनिरूपणकऱ्या ॥ अब ताब्रह्मकेअध्यात्मरूप दोस्वरूपोंकानिरूपणकरेहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ! अध्यात्मरूप यासंघातविषेस्थित जोब्रह्मकेदोरूपहैं ॥ तिनदोनोंकाभी पूर्वकीन्याई सारभावजानणा ॥ तहां चक्षु सत्पदार्थकासाररूप है और दक्षिणनेत्रविषे स्थित जोसूक्ष्मव्यष्टिअभिमानीपुरुष है ॥ सो त्यत्शब्दकेअर्थकासाररूप है ॥ यादोनोंरूपतैं भिन्न पंचभूत असाररूप है ॥ अब सत्शब्दके अर्थकूं तथात्यत्शब्दके अर्थकूं निरूपणकरे हैं ॥ हेदेवराजइंद्र! पृथिवी जल तेज ये तीनोंभूत प्रत्यक्षज्ञानकेविषयहैं ॥ यातैं पृथिवीआदिकतीनभूतोंकूं श्रुति सत्शब्दकरिकेकथनकरे है ॥ और वायु आकाश ये दोनोंभूत परोक्षज्ञानकेविषयहैं ॥ यातैं तिनदोनोंकूं श्रुति त्यत्शब्दकरिकेकथनकरे है ॥ अब स्थूलसूक्ष्मसमष्टिव्यष्टिकेअभेदकूंनिरूपणकरे हैं ॥ हेदेवराजइंद्र! सूर्यकाजोमंडलहै तथा पुरुषकाजोदक्षिणनेत्रहै ये दोनों पृथिवी जल तेजरूपहैं ॥ यातैं तेदोनों परस्परअभिन्नहै ॥ और सूर्यमंडलविषेस्थितजोपुरुषहै ॥ तथा दक्षिणनेत्रविषेस्थितजोपुरुषहै ॥ सो अमूर्तपुरुष एकहीहै ॥ और स्थूलशरीरकेअंतरहै ॥ यातैं तापुरुषकूं आत्माकहेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! स्थूलकूं जोपृथिवी जल तेज यातीनभूतरूपमानोंगे तथा सूक्ष्मकूं जोवायु आकाश यादोनोंभूतरूपमानोंगे तो स्थूलकूं तथासूक्ष्मकूं शरीररूपतानहीं संभवैगी ॥ काहेतें! श्रुतिविषे सर्वशरीरोंकूं पंचभूतरूपकह्याहै ॥ ताश्रुतिकाविरोधहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! पंचीकरण प्रक्रियाकीरीतिसैं पृथिवी जल तेज यातीनस्थूलभूतोंविषे आकाश वायु ये दोनोंसूक्ष्मभूत विद्यमानहैं ॥ यातैं स्थूलकूं शरीररूप तासंभवैहै ॥ इसप्रकार सूक्ष्मकेआरंभकरणेहारेजे वायु आकाशहैं ॥ तिनदोनोंविषेभी सूक्ष्मरूपकरिकै पृथिवी जल तेज ये तीनों

भूतविद्यमान्‌हैं ॥ यातैं ताअमूर्तसूक्ष्मकूंभी शरीररूपता संभवैहै ॥ अब सूक्ष्मशरीरके नानाप्रकारकेरूपोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हे देवराजइंद्र ! पूर्वपूर्ववासनावोंकरिकैजन्य तासूक्ष्मशरीरके नानाप्रकारकेरूपहैं ॥ तिनोंविषे कोईकरूपोंकूं हम तुमारेप्रति कथन करतेहैं ॥ तुम श्रवणकरो ! जिसकालविषे रजोगुणकरिकैयुक्तहुआ यहपुरुष स्त्रीआदिकपदार्थोंकूंदेखैहै ॥ तिसकालविषे यहपुरुष हरिद्राकरिकैरंजितवस्त्रके समानरूपवाला होवैहै ॥ और जिसकालविषे यहपुरुष सत्वगुणकेप्रभावतैं श्रद्धादिकगुणोंवालाहोवैहै ॥ तथा रजोगुणकेप्रभावतैं क्रोधादिकोंकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे यहपुरुष किंचित्‌शुक्लजोपर्वतकाकंबलहै ताकेसमानरूपवाला होवैहै ॥ और जिसकालविषे यहपुरुष एकांतदेशविषेस्थितहुआभी रजोगुणकेप्रभावतैं विषयोंकास्मरणकरैहै ॥ तिसकालविषे यहपुरुषइंद्रगोपकेसमान अत्यंतरक्तवर्णवालाहोवैहै ॥ वर्षाकालविषेहोणेहारा जोअत्यंतरक्तरूपवान्‌ कोईजंतुविशेषहै ताकूं इंद्रगोपकहैहैं ॥ और जिसकालविषे यहपुरुष सत्वगुणकेप्रभावतैं विद्यायुक्तहुआभी रजोगुणकेप्रभावतैं लोकोंकेसाथ ईर्षाकरैहै ॥ तिसकालविषे यहपुरुष दाहशक्तिमान्‌ तथाप्रकाशशक्तिमान्‌ जोअग्निकीज्वालाहै ताकेसमानरूपवालाहोवैहै ॥ और जैसे श्वेतकमल स्वभावतैंही शुद्ध तथाकोमल होवैहै ॥ तैसे किसीकालविषे यहपुरुष सत्वगुणकेप्रभावतैं जन्मतैंही शमदमादिकगुणोंवाला तथाकोमलस्वभाववाला होवैहै ॥ और जिसकालविषे यहपुरुष शुद्धसत्वगुणकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे यहपुरुष विद्युत्‌केसमान सर्वप्रकाशज्ञानवालाहोवैहै ॥ जैसे हिरण्यगर्भभगवान्‌ सर्वपदार्थविषयकज्ञानवालाहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ! जे सकामपुरुषहैं तिनोंकूंही उपासनाकेप्रभावतैं हिरण्यगर्भकीन्याई सर्वज्ञता प्राप्तहोवैहै ॥ और सा सर्वज्ञता उपासनारूप मानसकर्मकरिकैजन्य होणेतैं अनित्यहै ॥ यातैं मुमुक्षुजनोंनैं तासर्वज्ञताकीभीइच्छा नहींकरणी ॥ तात्पर्ययह ॥ जितनीपदार्थोंकीकामनाहैं तेसंपूर्ण आत्मरूपआनंदकाप्रतिबंधकहैं ॥ यातैं मुमुक्षुजनोंनैं सर्वकामना परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ हेदेवराजइंद्र ! इसप्रकार पुण्यपापरूप कर्मकरिकै तथावासनावोंकरिकै जन्य सहस्ररूप अमूर्तसूक्ष्मपुरुषकेहैं ॥ तिनसर्वरूपोंकेकथनकरणेविषे हमसमर्थनहींहैं ॥ तथा भगवतीश्रुतिभी तिनसर्वरूपोंकेकथनकरणेविषेसमर्थनहीं ॥ यातैं संक्षेपतैं तुमारेप्रति हमनैंकथनकरैहैं ॥ अब मूर्त अमूर्तयादोनोंरूपों

केनिषेद्धकरणेवासते प्रथम तिनोंविषेअविद्याकाकार्यपणा दिखावैंहैं॥ हेदेवराजइंद्र! जैसे तंतुवोंकाकार्यजोपटहै तिसपटविषे तंतु अनुगतहोइकैरहेहैं॥ तैसे स्थूलसूक्ष्मरूप जोयहप्रपंचहै सो अविद्यातेंउत्पन्नभयाहै॥ यातें साकारणरूपअविद्या संपूर्णप्रपंचरूपकार्यविषे अनुगतहोइकैरहेहै॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे पटादिकपदार्थ तथातिनोंकेकारणतंतुआदिक दृश्यहैं यातें अनात्माहैं॥ तैसे स्थूलसूक्ष्मप्रपंच तथातिनदोनोंकाकारणअविद्या यहतीनोंभी दृश्यरूपहैं यातें अनात्माहीहैं॥ शंका॥ हेभगवन्! स्थूलसूक्ष्मरूपकार्यप्रपंच तथाताकाकारणमाया ये दोनों दृश्यरूपहैं यातेंआत्मा मतहोवैं॥ परंतु तिनदोनोंकाअभावरूप जोनिषेधहै॥ सो आत्मा काहेतेंनहींहोवै?॥ समाधान॥ हेदेवराजइंद्र! जैसे प्रपंचरूपकार्य तथाअविद्यारूपकारण आत्मानहींहैं॥ तैसे तिनोंकाअभावरूपनिषेधभी आत्मानहींहैं॥ काहेतें? जैसीप्रतियोगीकीसत्ताहोवैहै तैसीही ताकेअभावकीसत्ताहोवैहै॥ जैसे शुक्तिविषेप्रतीतभयाजोरजतहै सो कल्पितहै॥ यातें ताकल्पितजरतकाअभावभी कल्पितहीहोवैहै॥ तैसे अनात्मप्रपंचकाअभावभी अनात्माहीहोवैहै॥ यातें हेदेवराजइंद्र! सर्वअनात्मप्रपंचकानिषेधकरिकै यहजोआनंदस्वरूपआत्माकाउपदेश हमनैं तुमारेप्रतिकन्याहै॥ इसतेंअधिकउपदेश कोईभीब्रह्मवेत्तागुरु शिष्यकेप्रति करतानहीं॥ किंतु संपूर्णब्रह्मवेत्तागुरु सर्वप्रपंचकानिषेधकरिकै याआनंदस्वरूपआत्माकाउपदेश आपणेशिष्योंकेप्रति करैंहैं॥ शंका॥ हेभगवन्! प्रपंचकेनिषेधतेंविनाही तूआनंदस्वरूपब्रह्महै याप्रकार विधिमुखकरिकै आत्माकाउपदेश गुरु काहेतेंनहींकरता?॥ समाधान॥ हेदेवराजइंद्र! यहआनंदस्वरूपआत्मा मनवाणीकाअविषय है॥ यातें विधिमुखकरिकै आत्माकेउपदेशकरणेविषे कोईभीपुरुष समर्थनहीं॥ याकारणतेंही ब्रह्मवेत्तागुरुवोंनैं सर्वअनात्मप्रपंचकानिषेधकरिकै मुमुक्षुजनोंकेप्रति आत्माकाउपदेशकरताहै॥ तात्पर्ययह॥ ब्रह्मकाउपदेश दोप्रकारकाहोवैहै॥ एकतौ विधिमुखकरिकैउपदेश॥ और दूसरा निषेधमुखकरिकैउपदेश॥ तहां यहअंतर्यामीआत्मा ब्रह्मस्वरूपहै तथासत्यरूपहै तथाज्ञानरूपहै तथाआनंदस्वरूपहै तथापरिपूर्णरूपहै॥ याप्रकारकेउपदेशकूं विधिमुखउपदेशकहैहैं॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा कार्यरूपनहीं तथाकारणरूपनहीं तथास्थूलरूपनहीं तथासूक्ष्मरूपनहीं॥ याप्रकारकेउपदेशकूं निषेधमुखउपदेशकहैहैं॥ तिनदोनोंप्रकारकेउप

देशोंविषे निषेधमुखउपदेशकीउत्कृष्टताकहणेवासते प्रथम विधिमुखउपदेशविषे अपकृष्टताकूंदिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ! तूंब्रह्मरू
पहै तथामैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारका विधिमुखकरिकेबोध जोहमनैंपूर्व तुमारेप्रति उपदेशकऱ्याथा ॥ सोविधिमुखबोध शब्दकेअनुगम
करिकेविशिष्टही उत्पन्नहोवैहै ॥ यातें मनवाणीकेअविषयआत्माविषे सोविधिमुखबोध संभवैनहीं ॥ किंवा तत्त्वमसि ॥ अर्थयह ॥
सो ब्रह्मतूहै ॥ याप्रकार विधिमुखकरिके प्रवृत्तभयाजोबोधहै ॥ ताकेविषे तत्पदकेअर्थका तथात्वंपदकेअर्थका परस्परअभेद प्रती
तहोवैहै ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? तत्पदकाअर्थजोमायाविशिष्टईश्वरहै ॥ ताकेविषेतौ सर्वज्ञपणा तथापरोक्षपणा रहैहै ॥ और
त्वंपदकाअर्थ जोअविद्याविशिष्टजीवहै ॥ ताकेविषे अल्पज्ञपणा तथाअपरोक्षपणा तथादुःखीपणा रहैहै ॥ याप्रकार विरोधीधर्मवाले
तत्त्वंपदार्थका परस्परअभेद संभवैनहीं ॥ किंतु जैसे अग्नि तथाबरफ परस्परविरुद्धधर्मवालेहैं ॥ यातें तिनोंकापरस्परभेदहै ॥ तैसे
विरुद्धधर्मवालतत्त्वंपदार्थकाभी परस्परभेदहीसंभवैहै ॥ याप्रकारकीआशंकाकेनिवृत्तिवासते तथातत्त्वंपदार्थकेअभेदकीसिद्धिवा
सते तत्त्वं यादोनोंपदोंविषे भागत्यागलक्षणा अंगीकारकरणीहोवैगी ॥ जहां पदकेवाच्यअर्थकेएकदेशकापरित्यागकरिके एकदे
शकाग्रहणहोवै ॥ ताकूं भागत्यागलक्षणाकहैहैं ॥ इहां तत्पदकावाच्यअर्थ ईश्वरहै ॥ ताकेविषे दोभागहैं ॥ एकतौ चैतन्यभागहै ॥
और दूसरा माया तथामायाकृतसर्वज्ञत्वादिकधर्म भागहै ॥ तहां माया तथासर्वज्ञत्वादिकधर्मरूप द्वितीयभागकापरित्यागकरि
कै प्रथम चैतन्यभागविषे तत्पदकीलक्षणाकरणी ॥ इसप्रकार त्वंपदकावाच्यअर्थजोजीवहै ॥ ताकेविषेभी दोभागहैं ॥ एकतौ चै
तन्यभागहै ॥ और दूसरा अविद्या तथाअविद्याकृतअल्पज्ञत्वादिकधर्म भागहै ॥ तहां अविद्या तथाअविद्याकृतअल्पज्ञत्वादिकध
र्मरूप द्वितीयभागकापरित्यागकरिकै चैतन्यरूपप्रथमभागविषे त्वंपदकीलक्षणाकरणी ॥ तिनदोनोंचैतन्यभागोंका परस्परअभेद
संभवैहै ॥ याप्रकार लक्षणावृत्तिकूंअंगीकारकरिकै जोविधिमुखउपदेशहै ॥ सो केवल क्लेशकाहेतुहै ॥ किंवा ॥ विधिमुखकरिके
आत्माकेउपदेशविषे अनुमानप्रमाणकीअपेक्षारूप गौरवदूषणकीप्राप्तिहोवैहै ॥ काहेतें ? सत्‌चित्‌आनंदस्वरूप जोत्वंपदकाअर्थ है
ताका जैसे अधिकारीपुरुषकेस्वरूपविषे भेदनहींहै ॥ तैसे सर्वजीवोंकेआत्माविषेभी ताकाभेदनहींहै ॥ तैसे तत्पदार्थविषेभी

ताकाभेदनहीं है ॥ याप्रकारकेअर्थकूंसिद्धकरणेहारा जोअनुमानप्रमाणहै ताकी अवश्यअपेक्षाकरणीहोवैगी ॥ ताअनुमानकाप्रकारयहहै ॥ त्वंपदकाअर्थ जोजीवहै सो परमात्मातेंभिन्ननहीं ॥ काहेतें? सत्‌चित्‌आनंदस्वरूपहोणेतें अधिकारीपुरुषकेआत्माकीन्यांई याप्रकारकेअनुमानप्रमाणकीअपेक्षा विधिमुखउपदेशकूंहै ॥ यातें विधिमुखउपदेश अपकृष्टहै ॥ किंवा विधिमुखउपदेशविषे तत्‌पदार्थके तथात्वंपदार्थके शोधनतेंविना तिनदोनोंकापरस्परअभेद संभवैनहीं ॥ यातें तत्त्वं पदार्थकाशोधन अवश्यकरनाचाहिये ॥ और देहादिकजडपदार्थोंकीव्यावृत्तितेंविना तत्‌त्वंपदार्थकाशोधन होवैनहीं ॥ यातें देहादिकजडपदार्थोंकी व्यावृत्ति अवश्यकरनीचाहीये और सादेहादिकजडपदार्थोंकीव्यावृत्ति युक्तिरूपअनुमानतेंविना सिद्धहोवैनहीं ॥ यातें देहादिक जडपदार्थोंकीव्यावृत्तिवासते अनेकप्रकारकेअनुमानोंकीअपेक्षा करणीहोवैगी ॥ याप्रकार अनेकअनुमानोंकीअपेक्षारूपगौरवदोष विधिमुखउपदेशविषे प्राप्तहोवैहै ॥ यातेंभी विधिमुखउपदेश अपकृष्टहै ॥ किंवा ॥ विधिमुखउपदेशविषे जिसजिसअनुमानकी अपेक्षाहोवैहै ॥ सोअनुमानभी स्वतंत्रहुआ किसीअर्थकीसिद्धिकरैनहीं ॥ किंतु अन्यप्रमाणकीअपेक्षाकरैहै ॥ जो अनुमानप्रमाण अन्यकिसीप्रमाणकीअपेक्षानहींकरै तौ ताकेविषे अनुमानपणाही नहींरहैगा ॥ काहेतें? अनुमान याशब्दविषे दोपदहैं ॥ एकतौ अनु पद है ॥ और दूसरा मान पदहै ॥ तहां अनुपदकाअर्थ पश्चात्‌भावीहै ॥ और मानपदकाअर्थ प्रमाणहै ॥ तादोनोंपदोंकामिलिकरिकै पश्चात्‌भावीप्रमाण याप्रकारकाअर्थहोवैहै ॥ जोअनुमानप्रमाण किसीप्रमाणकीअपेक्षानहींकरैगा ॥ तौ अनुमान याप्रकारकाशब्द ताकेविषेव्यर्थहोवैगा ॥ याकहणेतेंयहसिद्धभया ॥ जीवजोहै सो ब्रह्मतेंअभिन्नहै ॥ काहेतें? सत्‌चित्‌आनंदरूपहोणेतें अधिकारीपुरुषकेआत्माकीन्यांई याप्रकार जीवब्रह्मकेअभेदकासाधक जोअनुमानहै ॥ तथा देहादिकजेहैं ते अनात्माहोणेकूंयोग्यहै ॥ काहेतें? जडहोणेतें तथादृश्यहोणेतें तथापरिच्छिन्नहोणेतें ॥ घटादिकोंकीन्यांई ॥ याप्रकार देहादिकोंविषे अनात्मताकासाधक जेअनुमानहैं तिनअनुमानोंका कोईमूलरूप प्रमाण कह्याचाहिये ॥ जिसमूलरूपप्रमाणकीसहायतातें ते अनुमान विधिमुखउपदेशविषे सहायताकरैं ॥ जैसे धूमरूपहेतुतें पर्वतविषे अग्निकाअनुमान तबीहोवैहै जबी प्रथम गृहादिकोंविषे

प्रत्यक्षप्रमाणकरिकै धूमरूपहेतुविषे अग्निकेव्याप्तिकाज्ञानहोवैहै ॥ व्याप्तिज्ञानतैंविना धूमरूपहेतुतैं पर्वतविषेअग्निकाअनुमान होवैनहीं ॥ यातैं धूमविषे व्याप्तिकूंग्रहणकरणेहारा तथा पर्वतविषे धूमकूंग्रहणकरणेहारा जोप्रत्यक्षप्रमाणहै ॥ सो पर्वतविषेअग्निकेअनुमानका मूलरूपहै ॥ तैसे इहांप्रसंगविषे जडत्वादिकहेतुवोंकरिकै जोदेहादिकोंविषे अनात्मताकाअनुमानहै ॥ तिसविषे भी जडत्वादिकहेतुवोंविषे अनात्मतारूपसाध्यकेव्याप्तिज्ञानवासतै तथाजडत्वादिकहेतुकेज्ञानवासतै अन्यकिसीप्रमाणकीअपेक्षा होवैगी तहां प्रत्यक्षप्रमाणतौ ताअनुमानकामूलहोवैनहीं ॥ काहेतें? दृष्टांतरूपघटादिकोंविषे यद्यपि जडत्वादिकहेतु प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्धहैं ॥ तथापि अनात्मतारूपसाध्यका घटादिकोंविषेप्रत्यक्षहोवैनहीं ॥ काहेतें? आत्माकेभेदकानाम अनात्मताहै ॥ सो आत्माकाभेद अन्योन्याभावरूपहै ॥ और प्रतियोगीकेज्ञानतैंविना अभावकाज्ञानहोवैनहीं ॥ यातैं प्रतियोगीरूपआत्माकेप्रत्यक्षतैंविना ताकेभेदकाप्रत्यक्षसंभवैनहीं ॥ यातैं पूर्वउक्तअनुमानका प्रत्यक्षप्रमाण मूलनहीं ॥ किंवा ॥ जडत्वरूपहेतुकरिकै देहादिकोंविषे अनात्मताकासाधकजो पूर्वअनुमानहै ॥ तिसअनुमानविषे दृष्टांतरूपजोघटादिकहैं ॥ तिनोंविषे यद्यपि साअनात्मता प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैदेखीहै ॥ तथापि साअनात्मता तिनघटादिकोंविषेहीरहैहै ॥ घटादिकोंतैंभिन्न देहादिकोंविषे साअनात्मता रहैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे घटकूंविषयकरणेहाराजो यहघटहै याप्रकारकाज्ञानहै सोज्ञान घटविषे स्तंभता धर्मकूंविषयकरैनहीं ॥ तथापि सो स्तंभता धर्म स्तंभतैंनिवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु स्तंभविषेवर्तैहै ॥ तैसे घटादिकदृष्टांतोंविषे आत्मता धर्म मतहोवै ॥ तथापि सो आत्मताधर्म देहादिकोंविषेरहैगा ॥ याविपरीतअर्थकेमानणेविषे कोईबाधकतर्कहैनहीं ॥ शंका ॥ आत्मा चैतन्यहोवैहै ॥ जोदेह ही आत्माहोवै तौ देहविषेजडता नहींहोणीचाहिये ॥ और देहविषेजडता प्रत्यक्षप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं देह आत्मानहीं ॥ याप्रकारकीतर्क देहकेआत्मताका बाधकसंभवैहै ॥ समाधान ॥ जेचारिवाकनास्तक आत्मताधर्म देहकाही स्वभावमानैहैं ॥ तिसकेआगे यहतुमारातर्क संभवैनहीं ॥ काहेतें? जैसे घटादिकोंविषेरहेहुए जडत्वदृश्यत्वादिकधर्म घटादिकोंकेस्वभावकूं निवृत्तकरैनहीं ॥ तैसे देहविषेरहेहुए जडत्वदृश्यत्वादिकधर्मभी देहकेआत्मतास्वभावकूंनिवृत्तकरैनहीं ॥ किंवा ॥ जैसे नैयायिकोंकेमतविषे सत्ताना

माजाति द्रव्य गुण कर्म यातीनपदार्थोंविषेरहैहै ॥ परंतु सासत्ताजाति तिनद्रव्यादिकोंकेस्वभावकूंअन्यथाकरैनहीं ॥ तैसे जडत्व दृश्यत्वादिकधर्म आत्माविषे तथाअनात्माविषे रहैहैं ॥ परंतु तिसआत्माके तथाअनात्माके स्वभावकूं अन्यथाकरैंनहीं ॥ याप्रकार मानणेविषे देहात्मवादीचार्वाककूं कोईबाधकतर्कहैनहीं ॥ जिसबाधकतर्ककेभयतें जडत्वदृश्यत्वादिकधर्म आत्माविषेनहींअंगीकारकरै ॥ तात्पर्ययह ॥ जहां धूमरूपहेतुतें अग्निकाअनुमान होवैहै तहां धूमरूपहेतु कार्यहै ॥ और अग्नि ताधूमकाकारण है ॥ जो अग्नितैंविना धूमकीस्थिति कहांअंगीकारकरिये तौ धूमका तथाअग्निका परस्परकार्यकारणभाव नहींरहैगा ॥ याप्रकारकीतर्क तहांबाधकहै ॥ और इहांप्रसंगविषे अनात्मतारूपसाध्यतैंविनाभी जोजडत्वदृश्यत्वादिकधर्म अंगीकारकरिये तौ याकेविषे कोईबाधकतर्कहैनहीं ॥ काहेतें? जडत्वदृश्यत्वादिकधर्मोंका जोअनात्मताधर्म कारणहोवै तौ अनात्मताधर्मरूपीसाध्यतैंविना जडत्वदृश्यत्वादिकधर्मरूपहेतु नहींरहै ॥ सोतिनोंका परस्परकार्यकारणभावहैनहीं ॥ यातें आत्माविषे जडत्वदृश्यत्वादिकधर्मोंके अंगीकारकरणेविषे कोईबाधकतर्क देहात्मवादीकूंहैनहीं ॥ शंका ॥ आत्माकासर्वत्रचैतन्यरूपकरिकैही अनुभवहोवैहै ॥ जोजडदेहकूंहीआत्मामानोंगे तौ ताअनुभवकाविरोधहोवैगा ॥ समाधान ॥ आत्माकाजोचैतन्यरूपकरिकैअनुभवहोवैहै ॥ ताअनुभवविषे कौनकरणहै? ॥ नेत्रादिकबाह्यइंद्रिय करणहैं अथवा मन करणहै ॥ तहां चैतन्यरूपकरिकैआत्माकेअनुभवविषे नेत्रादिकबाह्यइंद्रिय करणहैं यहप्रथमपक्षतौ संभवैनहीं ॥ काहेतें? बाह्यअनात्मपदार्थोंके विषयकरणेकरिकैही नेत्रादिकइंद्रियोंकूं बाह्यइंद्रियकहैहैं ॥ तेनेत्रादिकइंद्रिय जबी अंतरआत्माकूंविषयकरैंगे ॥ तबी तिनोंविषे बाह्यइंद्रियपणा नहींरहैगा ॥ यातें नेत्रादिकबाह्यइंद्रिय आत्माकूं चैतन्यरूपकरिकैग्रहणकरैनहीं ॥ किंवा चैतन्यरूपकरिकैआत्माकेअनुभवविषे मनकरणहै यहदूसरापक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? जोआत्माकूंचैतन्यरूपकरिकै मन ग्रहणकरै तौ आत्माविषेजडत्वादिकधर्मोंकाविरोधहोवै ॥ सोमन आत्माकूं चैतन्यरूपकरिकै ग्रहणकरतानहीं ॥ किंतु अहंअस्मि याप्रकार आत्माकेसत्तामात्रकूं मन ग्रहणकरैहै ॥ यातें आत्माविषे जडत्वादिकधर्मोंकानिवारणहोवैनहीं ॥ शंका ॥ अहंअस्मि याप्रकारकाज्ञान यद्यपि आत्माकेचैतन्यरूपताकूंविषयकरैनहीं ॥ तथापि

अहंजानामि याप्रकारकाज्ञान आत्माकेचैतन्यरूपताकूंविषयकरै है ॥ समाधान ॥ जैसे तांबूलकेयोगकरिकै पुरुषोंकेमुखविषेरक्तता उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे मनकेयोगकरिकै आत्माविषेउत्पन्नभई जाचैतन्यता ताचैतन्यताकूंही अहंजानामि याप्रकारकाअनुभव विषयकरैहै ॥ शुद्धआत्माकेचैतन्यताकूं सोअनुभव विषयकरैनहीं ॥ यातें आत्माकेजडत्वादिकधर्मकाविरोधी जोचैतन्यपणाहै ताकूं कोई प्रत्यक्षप्रमाण विषयकरैनहीं ॥ किंवा जबी आत्माकेचैतन्यताविषे प्रत्यक्षप्रमाणकीप्रवृत्ति नहींभई ॥ तबी वादीकूं नित्यहीपरोक्ष जेआत्माकेव्यापकतादिकधर्म हैं तिनोंविषे प्रत्यक्षप्रमाणकीप्रवृत्ति किसप्रकारहोवैगी? किंतु नहींहोवैगी ॥ इतनेंकहणेकरिकै यहसिद्धभया ॥ विधिमुखउपदेशके सहायताकरणेवासते प्रवृत्तभयेजे पूर्वउक्तअनुमान तिनअनुमानोंकीमूलकारणता प्रत्यक्षप्रमाणविषेसंभवैनहीं ॥ यातें मूलकारणकेअभावहोणेतें ते अनुमान आत्माकेनिर्णयविषे प्रवृत्तहोवैंनहीं ॥ यातें पूर्वउक्तदोषोंकी निवृत्तिवासते श्रुतिप्रमाणही तिनअनुमानोंकामूलरूप मानणाहोवैगा ॥ साश्रुति यहहै ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म आनंदोब्रह्म ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्म सत्यरूपहै ॥ तथाज्ञानरूपहै तथाअनंतरूपहै तथाआनंदरूपहै ॥ याप्रकारकेश्रुतिरूप मूलप्रमाणोंकूं अंगीकारकरिकै तेपूर्वउक्त अनुमान विधिमुखउपदेशविषे सहायताकरै हैं ॥ किंवा जिसश्रुतिरूपमूलप्रमाणकीसहायततें पूर्वउक्तअनुमान विधिमुखउपदेशकीसहायताकरैहैं ॥ ते श्रुतिवाक्यही निषेधमुखउपदेशकेप्रधानताकूं बोधनकरै हैं ॥ काहेतें? सत्यादिकपदोंकी शक्तिवृत्तिकरिकै शुद्धब्रह्मविषे प्रवृत्ति किसीविद्वानूनें अंगीकारकरीनहीं ॥ किंतु भागत्यागलक्षणाकरिकै सत्यादिकशब्दब्रह्मकूंबोधनकरै हैं ॥ तहां सत्यशब्द असत्यकीव्यावृत्तिकरिकै ब्रह्मकूंबोधनकरै है ॥ और ज्ञानशब्द अज्ञानकीव्यावृत्तिकरिकै ब्रह्मकूंबोधनकरै है ॥ और अनंतशब्द देश काल वस्तु परिच्छेदकीव्यावृत्तिकरिकै ब्रह्मकूंबोधनकरै है ॥ और आनंदशब्द दुःखकीव्यावृत्तिकरिकै ब्रह्मकूंबोधनकरै है ॥ इसप्रकार संपूर्णसत्यादिकशब्द असत्यादिकधर्मोंकानिषेधकरिकै शुद्धब्रह्मकूं बोधनकरै हैं ॥ यातें तेसंपूर्णश्रुतिवाक्य निषेधमुखउपदेशकेहीप्रधानताकूंबोधनकरैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! श्रुतिवाक्यनिषेधमुखकरिकै ब्रह्मकूं किसवासते बोधनकरैहैं? ॥ समाधान ॥ हे देवराजइंद्र! यहअद्वितीयब्रह्म सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनभेदोंतेंरहितहुआ आपणेमहिमाविषेस्थितहै ॥ ऐसेनिर्गुण

ब्रह्मकूं जेश्रुतिवाक्य किसीगुणविशिष्टरूपकरिकै बोधनकरैंगे तौ तिनश्रुतिवाक्योंविषे अप्रामाण्यतादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥दृष्टांत॥ जैसेसर्पत्वधर्मतैंरहितरज्जुकूं सर्परूपकरिकैबोधनकरणेहारा जो यहसर्पहै याप्रकारकावाक्यहै ॥ तिसवाक्यकूं लोकविषे अप्रमाणमानेहैं॥ तैसे सर्वधर्मोंतैंरहित निर्गुणब्रह्मकूं किसीगुणविशिष्टरूपकरिकै बोधनकरणेहारा विधिवाक्यभी अप्रमाणहोवैगा ॥ यातैं आपणेअप्रमाणतादोषकीनिवृत्तिवासते संपूर्णसत्यादिकवाक्य निर्गुणब्रह्मकूं निषेधमुखकरिकैबोधनकरैहै ॥ शंका॥ हेभगवन्! सर्वभेदतैंरहित एकअद्वितीयब्रह्म यालोकविषे प्रसिद्धहैनहीं ॥ यातैं ताअप्रसिद्धब्रह्मकूं शास्त्र कैसेबोधनकरैगा? प्रसिद्धपदार्थकूंही शब्दबोधनकरैहै ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! लोकप्रसिद्धअर्थकूंही शास्त्र बोधनकरैहै ॥ यहनियम सर्वत्रनहीं ॥ किंतु लोकविषेअप्रसिद्धपदार्थकूंभी शास्त्र बोधनकरैहै ॥ जैसे यूपशब्दकाअर्थ यद्यपि लोकविषेअप्रसिद्धहै॥ तथापि यूपंतक्षति याप्रकारकेवेदवचनतैं संस्कारकरिकैविशिष्ट काष्ठविशेष यूपशब्दकाअर्थ प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे लोकविषे यद्यपि अद्वितीयनिर्गुणब्रह्म अप्रसिद्धहै ॥ तथापि सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म इत्यादिकश्रुतिवचनोंकेविश्वासतैं बुद्धिमान्पुरुषोंकरिकै सोनिर्गुणब्रह्म जानणेयोग्यहैं ॥ अब विधिमुखउपदेशकूं तथानिषेधमुखउपदेशकूं लक्षणकरिकै तथालोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! याआनंदस्वरूपआत्माकेबोधनकरणेवासते शास्त्रकी दोप्रकारकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ एकतौ विधिमुखकरिकैप्रवृत्तिहोवैहै ॥ और दूसरी निषेधमुखकरिकैप्रवृत्तिहोवैहै ॥ यहदोनोंप्रकारकीप्रवृत्ति अधिकारीजनोंकेबुद्धिअनुसारहोवैहै ॥ अब विधिमुखउपदेशकूंदिखावैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! जैसे कोईधनीपुरुष गोशालाविषेजाइके गोपालपुरुषतैंपूछै ॥ हमारीगौकौनहै? ॥ और आगतैंसोगोपालपुरुष तागौकेशृंगकूंपकडिकरिकै ताधनीपुरुषकूंदिखावै ॥ यहतुमारीगौहै ॥ याकूं शृंगग्राहिकान्यायकहैहैं ॥ इसप्रकार शृंगग्राहिकान्यायकरिकै जो शास्त्र आत्माकूंबोधनकरैहै ॥ ताकूं विधिशास्त्रकहैहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे तुमारेहस्तविषेआमलकफलहै यहलौकिकविधिवाक्यहै ॥ इसप्रकार कोईविधिवाक्य आनंदस्वरूपआत्माकूंबोधनकरैनहीं ॥ काहेतैं? यहआत्मा मनवाणीकाअविषयहै ॥ यातैं सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म इत्यादिकविधिवाक्यभी असत्यादिकोंकीव्यावृत्तिद्वाराही शुद्धआत्माविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ अब निषेधशास्त्रकूं लक्षणकरिकै

तथालोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! भ्रांतपुरुषोंनैं लक्ष्यरूपकरिकै अंगीकारकरेजेअनेकपदार्थ तिनसर्वों कानिषेधकरिकै परिशेषतैंवास्तवलक्ष्यपदार्थकूं जोशास्त्र अर्थतैंबोधनकरैहै ताकूं निषेधशास्त्र कहैहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे रथअश्वादिक नानाप्रकारकीसेनाकरिकैयुक्त जोकोईकराजाहै ॥ तिसकूं नजाणिकरिकै कोईकमूढबालक आपणेपितासैंपूछताभया ॥ यासर्वसमा जविषे कौनराजाहै? ॥ याप्रकार बालककेवचनकूंश्रवणकरिकै ताबालककेप्रति राजाकेजनावणेकीइच्छाकरताहुआ सोपिता प्रथम यहराजाहै याप्रकारकेवचनकूंनहींकहताभया ॥ किंतु याप्रकारकाविचार आपणेमनविषे करताभया ॥ याबालककेप्रति प्रथमही यहराजाहै याप्रकारकावचन जोमैंकहोंगा तौ यहबालक मूढबुद्धिहै ॥ यातैं किसीअन्यपुरुषकूं अथवा किसीछत्रचामरादिकसा मग्रीकूं राजारूपकरिकैमानैंगा ॥ यातैं यहराजाहै याप्रकारकावचन प्रथम याबालककेप्रति कहणायोग्यनहीं ॥ किंतु राजातैंभि न्न सर्वपदार्थोंकानिषेध मैंकरों ॥ परिशेषतैं सर्वपदार्थोंतैंविलक्षणराजाकूं यहबालक आपेहीजाणैंगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोपिता ताबालककेप्रति कहताभया ॥ हेपुत्र! यहजेवृक्ष दीखैहैं तेभीराजानहीं ॥ और यहअश्वभी राजानहीं ॥ और यहहस्तिभी राजानहीं ॥ और यहरथभी राजानहीं ॥ और यहपदातिपुरुषभी राजानहीं ॥ और नानाप्रकारकेआयुधोंकूंधारणकरणेहारे जे येपुरुषहैं तेभी राजानहीं ॥ और येविचित्रतुर्यांभी राजानहीं ॥ और यहश्वेतछत्रभी राजानहीं ॥ और यहचामरभी राजानहीं और छत्र चामर तुर्यादिकहैं हस्तविषेजिनोंके ऐसेजेयेपुरुषहैं तथास्त्रियां हैं तेभी राजानहींहै ॥ और यहनीलकंचुकवालापुरु षभी राजानहीं ॥ और यहपीतकंचुकवालापुरुषभी राजानहीं ॥ और यहरक्तकंचुकवालापुरुषभी राजानहीं ॥ और यहचित्रव स्त्रोंकूंधारणकरणेहारापुरुषभी राजानहीं ॥ और यहसुवर्णमयखड्गकूंधारणकरणेहारापुरुषभी राजानहीं ॥ और यहस्वर्ण मयधनुषकूं धारणकरणेहारापुरुषभी राजानहीं ॥ इत्यादिकवचनोंकरिकै सोपिता राजातैंभिन्नसर्वपदार्थोंका निषेधकरता भया ॥ तिसतैंअनंतरसोबालक परिशेषतैं सर्वतैंविलक्षणरूपकरिकै राजाकूंप्रत्यक्षदेखताभया ॥ कैसाहैसोराजा? ॥ स्वर्ण केसमानउज्ज्वलहैअंगजिसके ॥ और श्वेतछत्रहैमस्तकउपरिजिसके ॥ और समीपवर्तिजोगणिकाहैं ॥ तिनोंकेहस्तरूपीकम

लोंविषेविचरणेहारे जेचामररूपीहंसहैं ॥ तिनोंकरिकैसेवितहैमस्तकजिसका ॥ और श्वेतदुकूलकूंधारणकऱ्याहैजिसनैं ॥ और दिव्यहैकांतिजिसकी ॥ ऐसेराजाकूं सर्वसेनातैंविलक्षणरूपकरिकै सोबालक प्रत्यक्षदेखेहै ॥ इसप्रकार निषेधशास्त्रभीएकआत्मा कूंछोडिकरिकै अन्यसर्व स्थूलसूक्ष्मप्रपंचका निषेधकरैहै ॥ तिसनिषेधतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष सर्वप्रपंचतैंविलक्षणरूपकरि कै आत्माकूं आपेहीनिश्चयकरैहै ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र! यहनिषेधमुखकरिकैउपदेशही आत्माकेबोधकरणेविषे श्रेष्ठउपायहै ॥ जो यहनिषेधमुखउपदेश नहींअंगीकारकरिये तौ भावअभावतैंरहित निर्गुणपरमात्माकूं कौनबोधनकरैगा? किंतु निषेधमुखउपदे शतैंविना निर्गुणपरमात्माकेबोधकरणेविषे कोईभीवाक्य समर्थनहीं ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र! महावाक्यकालक्ष्यरूप जो अद्वितीय आत्माहै ॥ सो मनवाणीकाअविषयहै ॥ और शब्दकेप्रवृत्तिकेनिमित्त जे जाति गुण क्रियादिकहैं ॥ तिनोंतैं यहआत्मारहितहै ॥ यातैं सत्यादिकश्रुतिवाक्यभी ताआत्माकूं साक्षात् प्रतिपादनकरिसकैनहीं ॥ ऐसेअद्वितीयआत्माकूं कौनपुरुष मनकरिकैविषय करैगा? किंतु कोईभीपुरुष मनकरिकै आत्माकेजाननेंविषे समर्थनहीं ॥ ऐसेअद्वितीयआत्माकेबोधकरणेवासते जबी निषेध शास्त्र स्थूलसूक्ष्मरूपसर्वजगत्कानिषेधकरैहै ॥ तबी सोआनंदस्वरूपआत्मादेव आपेही अधिकारीपुरुषोंकेहृदयविषे प्रकाशमान होवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे दीपक मंदिरविषेप्राप्तहोइकै नेत्रोंकूंआवरणकरणेहाराजोअंधकारहै ताकीनिवृत्तिमात्रकरैहै ॥ इतनाही दी पककाउपयोगहै ॥ अंधकारकीनिवृत्तिहुएतैंअनंतर नेत्रवान्पुरुष स्वतंत्रही घटादिकपदार्थोंकूंदेखेहै ॥ तैसे यहभावअभावरूप तथाकार्यकारणरूप तथास्थूलसूक्ष्मरूप संपूर्णजगत् आत्मानहींहै याप्रकार जबी निषेधशास्त्र कथनकरैहै ॥ तबी अधिकारीपु रुष आपेही आत्माकूंसाक्षात्कारकरैहै ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र! अद्वितीयआत्माकेबोधवासते यहनिषेधमुखउपदेशही उत्कृष्टहै ॥ का हेतैं? जैसे विधिमुखउपदेशविषे तत्त्वंपदार्थकेशोधनकी तथाअनुमानादिकोंकी अपेक्षाहै ॥ तैसे निषेधमुखउपदेशविषे किसीअ नुमानादिकोंकीअपेक्षाहैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! नेतिनेति याप्रकारकीश्रुतिनैं मूर्तअमूर्तरूपप्रपंचकानिषेधकऱ्याहै ॥ तिसमूर्तअ मूर्तप्रपंचतैंभिन्न जेकेईकजडपदार्थहैं तिनोंका श्रुतिनैं निषेधकऱ्यानहीं ॥ यातैं तिनपदार्थोंकेसाथ आत्माकातादात्म्यअध्यासहो

णतें अधिकारीपुरुषोंकूं शुद्धरूपकरिकैआत्माकाभान नहींहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! कारणअज्ञानसहित जोमूर्त अमूर्तरूप प्रपंच हमनें तुमारेप्रति कथनकर्याहै ॥ इतनाही जडप्रपंचहै ॥ इसतेंअधिक कोईदूसराजडप्रपंचनहीं ॥ याकारणअज्ञानसहित मूर्तअमूर्तरूपप्रपंचकेनिषेधकियेतेंही विद्वान्‌पुरुषोंकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ यातें हेदेवराजइंद्र! नेतिनेति याप्रकारकीश्रुति अद्वितीयआत्मातेंभिन्न सर्वजडप्रपंचकानिषेधकरैहै ॥ तहां प्रथमनकारकरिकै कार्यकारणरूप तथास्थूलसूक्ष्मरूप जितनाकीभावप्रपंचहै ताका आत्माविषेनिषेधकरैहै ॥ और दूसरेनकारकरिकै ताभावप्रपंचकेअभावकूंनिषेधकरैहै ॥ जबी भावअभावरूपजडप्रपंच आनंदस्वरूपआत्मातेंनिवृत्तभया ॥ तबी यहआनंदस्वरूप स्वप्रकाशआत्माही परिशेषतेंरहैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अग्निकेविशेषभावकाकारणजेकाष्ठहैं तेकाष्ठ जबी अग्निकरिकैदाहकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तबी काष्ठोंतेंरहितहुआ सोअग्नि पूर्वविशेषरूपकापरित्यागकरिकै आपणेसामान्यरूपविषे स्थितहोवैहै ॥ तैसे आत्माकेविशेषरूपकाकारण जोभावअभावरूपजडप्रपंचहै ॥ ताकी जबी निवृत्तिहोवैहै ॥ तबी यहआनंदस्वरूपआत्माभी उपाधिकृतविशेषरूपकापरित्यागकरिकै आपणेसत्‌चित्‌आनंदस्वरूपविषे स्थितहोवैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! यहमैंहूं यहतूहै यहदृश्यप्रपंचहै ॥ येअन्यजीवहैं याप्रकारकेसंपूर्णभेद मूर्तअमूर्तरूपउपाधिकरिकैकरेहुएहैं ॥ यातें तेसंपूर्णभेद आनंदस्वरूपआत्माविषे वास्तवतेंहैंनहीं ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे भेदतेंरहितआकाशविषे धूम विद्युत् मेघ नानाप्रकारकेभेदोंकूं उत्पन्नकरैहैं ॥ तैसे भेदतेंरहितअद्वितीयआत्माविषे स्थूलसूक्ष्मशरीर नानाप्रकारकेभेदोंकूं उत्पन्नकरैहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र! आकाशविषे भेदकूंकरणेहारजेमेघादिकहैं तिनोंका उपादानकारण आकाशनहीं ॥ और आत्माकेभेदकूंकरणेहारा जोस्थूलसूक्ष्मप्रपंचहै तिसकातो आत्माही उपादानकारणहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! असंगआत्माविषे जगत्‌कीकारणता संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! असंगआत्माविषे जगत्‌कीकारणता नहींसंभवैहै यहवार्ता सत्यहै ॥ असंगआत्माविषे जगत्‌कीकारणता हमभी अंगीकारनहींकरते ॥ किंतु मायाविशिष्टपरमात्माविषे जगत्‌कीकारणता हम अंगीकारकरैहैं ॥ यातें स्थूलसूक्ष्मरूपसंपूर्णप्रपंच परमेश्वरकीमायाकरिकैरचितहै ॥ यातें संपूर्णप्रपंच मिथ्याहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! संपूर्णप्रपंच

मायाकरिकैंरचितहै यातें मिथ्याहै यहवार्ता यद्यपि संभवैहै ॥ तथापि माया मायाकरिकैंरचितहैनहीं ॥ यातें सामाया सत्यहोवैगी जोमायाकूंभी अन्यमायाकरिकैंरचित अंगीकारकरौगे तौ सादूसरीमाया तीसरीमायाकरिकैं रचित होवैगी ॥ याप्रकार मायावोंकी अनवस्थाहोवैगी ॥ किंवा मायाकूं वेदांतशास्त्रविषेअनादि मानैंहैं ॥ यातें मायाविषे मायाकाकार्यपणासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! जो मायाकाकार्यहोवैहै सो मिथ्याहोवैहै ॥ यहजोमिथ्याप्रपंचकालक्षण हमनैं कह्याहै ॥ सो केवलकार्यप्रपंचकाकह्याहै ॥ कारणरूपमायाकेमिथ्यापणेका यहलक्षणनहीं ॥ और सिद्धांतविषे कार्यप्रपंचकीन्यांई मायाभीमिथ्याहीहै ॥ यातें अधिष्ठानचैतन्यविषे जोअध्यस्तहोवै सो मिथ्याकहियेहै ॥ यहमिथ्यात्वकालक्षण मायाविषे तथामायाकेकार्यविषे दोनोंविषेहै ॥ काहेतें? जैसे स्थूलसूक्ष्मप्रपंच अधिष्ठानचैतन्यविषेअध्यस्तहै ॥ तैसे मायाभी अध्यस्तहै ॥ यातें दोनों मिथ्याहैं ॥ लोकविषेभी ऐंद्रजालिकपुरुषनैं प्रवृत्तकरीजामाया तथातामायाकरिकैंउत्पन्नकरेजेपदार्थ तेसंपूर्ण मिथ्याहीहोवैहैं ॥ तैसे माया तथामायारचितसंपूर्णप्रपंचभी मिथ्याहीहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे लोकविषे मायावी ऐंद्रजालिकपुरुषकरिकैं रचेहुए स्थूलसूक्ष्मपदार्थ लोकोंकूं प्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे मायाविशिष्टइंद्रकरिकैंरचाहुआ यहइंद्रजालरूपप्रपंच सर्वजीवोंकूं प्रतीतहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! तीनलोकोंविषे मैंहीइंद्रहूं ॥ मेरेतैंभिन्न कोईदूसराइंद्रहैनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! जोपरमात्मादेव पूर्व सर्वात्मरूपकरिकैं आत्माकूंजाणताभयाहै ॥ सोईहीपरमात्मादेव इहांइंद्रशब्दकरिकैं कथनकर्‍याहै ॥ तुमारेकूं सर्वात्मरूपकरिकैंआत्माकाज्ञानहैनहीं यातें तूइंद्रनहीं ॥ किंवा परमऐश्वर्यवान् जोहोवै सोइंद्रकहियेहै ॥ याप्रकार इंद्रशब्दकाअर्थभी सर्वात्मज्ञानकरिकैंयुक्त सर्वज्ञपरमात्मविषेहीघटैहै ॥ तुमारेविषेघटैनहीं ॥ काहेतें? जिसऐश्वर्यकेसमान तथाअधिक कोईऐश्वर्यनहींहोवै ताकूं परमऐश्वर्य कहैहैं ॥ ऐसापरमऐश्वर्य तुमारेकूंहैनहीं किंतु तुमारेतैंभी सहस्रगुणाअधिकऐश्वर्य हिरण्यगर्भभगवानकूंहै ॥ यातें सर्वात्मज्ञानकरिकैंयुक्त जोपरमात्मादेवहै सोईही इंद्रहै ॥ और सोईहीपरमात्माइंद्र संपूर्णजगत्काकारणहै ॥ हेदेवराजइंद्र! स्थूलसूक्ष्मशरीरकेसाथ तुमारातादात्म्यअध्यासहै ॥ यातें तापरमात्मारूपइंद्रतें तूउत्पन्नभयाहै ॥ याकारणतें तुमारेविषेइंद्रपणा

संभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोमैंइंद्रनहींहोवौं तौसर्वलोक मेरेकूं इंद्र किसवासतेकहतेहैं? ॥ समाधान ॥ हेदेवराज इंद्र! अस्मदादिकपुरुषोंकेसमीपजोऐश्वर्यहै ॥ तिसकीअपेक्षाकरिकै तुमाराऐश्वर्य अधिकहै ॥ याकारणतें सर्वलोक तुमारेकूं इंद्रकहैहैं ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ ब्रह्मात्मसाक्षात्कारयुक्तजोईश्वरहै सोईही इंद्रहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! अज्ञानकृतदेहाभिमानकालविषे तुमाराऐश्वर्य तथाश्वानकाऐश्वर्य समानहीहै ॥ काहेतें? जैसे नानाप्रकारकेऐश्वर्यविषे तथाआपणे देवताशरीरविषे तथातीनलोकोंविषे तथास्वर्गकीस्त्रियोंविषे रमणीबुद्धिकरिकै तुमारीआसक्तिहै ॥ तैसे श्वानकूंभी आपणेऐश्वर्यादिकपदार्थोंविषे रमणीकबुद्धिकरिकै आसक्तिहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोपदार्थसुंदरहोवैहै ताकेविषे रमणीकबुद्धितें आसक्ति होवैहै ॥ असुंदरपदार्थविषे रमणीकबुद्धिहोवैनहीं ॥ यातें ताकेविषे आसक्तिभीहोवैनहीं ॥ तेसुंदरपदार्थ हमारेसमीपविद्यमान्हैं ॥ यातें तिनपदार्थोंविषे हमारीआसक्तिसंभवैहै ॥ और श्वानकेसमीप कोईसुंदरपदार्थहैनहीं ॥ यातें श्वानकी आसक्तिसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! हमारेसमीप सुंदरपदार्थहै श्वानकेसमीप सुंदरपदार्थनहीं ॥ यह केवल तेरेकूंअभिमानभयाहै ॥ काहेतें? निरपेक्षऐश्वर्यादिकपदार्थ तुमारेससीपभीनहीं ॥ तैसे श्वानकेसमीपभीनहीं ॥ किंतु अस्मदादिकजीवोंकीअपेक्षाकरिकै तुमारेकूं महान्ऐश्वर्यहै ॥ तैसे कीटादिकक्षुद्रजंतुवोंकीअपेक्षाकरिकै श्वानकूंभी महान्ऐश्वर्यहै ॥ और जैसे अस्मदादिकजीवोंकीअपेक्षाकरिकै तुमाराशरीर कोमलहै ॥ तैसे सूकरादिकोंकीअपेक्षाकरिकै श्वानकाशरीरभी कोमलहै ॥ और जैसे तुमारेदेवताशरीरविषे इंद्राणीआदिकअप्सरावोंकीप्रीतिहै ॥ तैसे श्वानकेशरीरविषेभी श्वानणिस्त्रियोंकीप्रीतिहै ॥ और जैसे तुमदेवतावोंकूं अमृत प्रिय लागेहै ॥ तैसे वमनकऱ्याहुआअन्न श्वानकूंभी प्रियलागेहै ॥ और जैसे आपणेऊपरिउपकारकरणेहारेजीवोंविषे तुमदेवता प्रीति करोहो ॥ तैसे श्वानभी आपणेस्वामीउपरि प्रीतिकरैहै ॥ और जैसे अपकारीपुरुषऊपरी तुमदेवता कोपकरोहो ॥ तैसे अपकारी जीवोंविषे श्वानभी क्रोधकरैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! तीनलोकोंका मैंपालनकरताहूं ॥ यातें तीनलोकोंका मैंइंद्र उपकारकरता हूं ॥ और यहश्वान तीनलोकोंकाउपकारकरतानहीं ॥ याप्रकारकाअभिमानभी तुम मतकरो ॥ काहेतें? पृथिवी जल अग्नि वायु सूर्य

दिशा चंद्रमा विद्युत् मेघ आकाश धर्म सत्यवाक्य मनुष्यत्वादिकजाति मनबुद्धिप्राणादिरूप जोहिरण्यगर्भकाशरीरहै तथावि
राट्भगवानूकाजोशरीरहै येदोनोंप्रकारकेशरीर तथाचिदाभास यहसंपूर्णपृथिवीआदिकपदार्थ स्थूलरूपकरिकै तथासूक्ष्मदेव
तारूपकरिकै सर्वप्राणियोंका उपकारकरैहैं ॥ तथा श्वानादिकप्राणियोंकेस्थूलसूक्ष्मशरीरभी अदृष्टद्वारा पृथिवीआदिकसर्वपदार्थों
काउपकारकरैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपदार्थ जिसप्राणिकेसुखकाकारणहोवैहै सोपदार्थ तिसप्राणीकेपुण्यरूपअदृष्टकरिकै उत्पन्न
होवैहै ॥ और जोपदार्थ जिसप्राणीकेदुःखकाकारणहोवैहै सोपदार्थ तिसप्राणिकेपापकर्मकरिकैउत्पन्नहोवैहै ॥ यह शास्त्रकानि
यमहै ॥ यातें श्वानादिकसर्वप्राणि पुण्यपापरूपअदृष्टद्वारा पृथिवीआदिकोंकेकारणहैं ॥ यातें तेश्वानादिकप्राणी पृथिवीआदिकोंऊ
परि उपकारकरैहैं ॥ और तेपृथिवीआदिकपदार्थभी श्वानादिकप्राणियोंकूं सुखादिकोंकीप्राप्तिकरैहैं ॥ यातें तेपृथिवीआदिकपदार्थ
श्वानादिकप्राणियोंऊपरि उपकारकरैहैं ॥ यातें हेदेवराजइंद्र! सर्वऊपरिउपकाररूपधर्म श्वानविषे तथातुमारेविषे समानहीहै ॥
मैं सर्वऊपरिउपकारकरोंहूं यहव्यर्थअभिमान तुममतकरो ॥ याकहणेकरिकैयहअर्थ दिखाया ॥ जेपदार्थ परस्परउपकारकरैहैं ॥
तिनोंका एकहीकारणहोवैहै ॥ जैसे दोनोंभ्राता परस्परउपकारकरैहैं ॥ यातें तिनदोनोंका एकहीपितामाता कारणहोवैहै ॥ तैसे
यहसंपूर्णप्रपंचभी परस्परउपकारकरैहै ॥ यातें यासकलप्रपंचका एकहीमायाविशिष्टपरमात्मादेव कारणहै ॥ और सोमायाविशि
ष्टपरमात्माही सर्वजडप्रपंचविषे तादात्म्यसंबंधकरिकैस्थितहुआ सर्वऊपरिउपकारकरैहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैनिरूपण
करैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र! पृथिवीआदिकपदार्थ तथामनुष्यादिकप्राणी कोईभी किसीऊपरि किंचित्मात्रभी उपकारकरतानहीं ॥ किंतु
नेतिनेति याश्रुतिकरिकै पूर्वहमनें तुमारेप्रति कथनकऱ्याजोपरमात्मा सोईही नाशरहित स्वप्रकाश परमात्मादेव पृथिवीआदिक
पदार्थोंविषे तथास्थावरजंगमप्राणियोंविषे तादात्म्यसंबंधकरिकैस्थितहुआ सर्वऊपरिउपकारकरैहै ॥ हेदेवराजइंद्र! सोपरमात्मादे
व पृथिवीविषेस्थितहोइके सर्वप्राणियोंकेभोगकेसाधनजेशरीरहैं तिनशरीरोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ याकारणतें सर्वप्राणियोंकेऊपरि पृ
थिवी उपकारकरैहै ॥ और आधाररूपपृथिवीतेंविना जीवोंविषे सुखदुःखकाभोगसंभवैनहीं ॥ याकारणतें सोईहीपरमात्मादेव सर्व

प्राणियोंकेशरीरविषेस्थितहोइके पुण्यपापरूपअदृष्टद्वारा पृथिवीकीवृद्धिकूंकरै है॥ याकारणतें सर्वप्राणी पृथिवीऊपरि उपकारकरै हैं॥
इहां यहअभिप्रायहै॥ पृथिवीका तथासर्वप्राणियोंका परस्पर कार्यकारणभावहै तथापरस्पर भोक्तायोग्यभावहै ॥ तहां जडअंशकीप्र
धानताकरिकै पृथिवीविषे तथासर्वप्राणियोंविषे कार्यपणा तथाभोग्यपणाहै ॥ और चैतन्यकीप्रधानताकरिकै पृथिवीविषे तथासर्व
प्राणियोंविषे कारणपणा तथाभोक्तापणाहै॥ यहरीति आगेजलादिकोंविषेभी जानिलेणी ॥ और हेदेवराजइंद्र! सोपरमात्मादेव ज
लोंविषेस्थितहोइके जीवोंकेशरीरविषे वीर्यकीवृद्धिकूंकरै है ॥ याकारणतेंजल सर्वप्राणियोंऊपरि उपकारकरै है ॥ और सोपरमात्मादे
व जीवोंकेवीर्यविषेस्थितहोइके शरीरोंकीउत्पत्तिकरै है ॥ तिनशरीरोंकरिकैउत्पन्नभये जेपुण्यपापरूपअदृष्ट तिनअदृष्टोंकरिकै
पुनःजलादिकोंकीवृद्धिकरै है ॥ याकारणतें सर्वप्राणी जलोंऊपरि उपकारकरै हैं ॥ यहरीति आगेभीजानिलेणी ॥ और हेदेवराज
इंद्र! यहपरमात्मादेव अग्निविषेस्थितहोइकै संपूर्णजीवोंकेवाक्इंद्रियोंकूं शब्दउच्चारणरूपव्यापारविषे प्रवृत्तकरै है ॥ तथा रुधिरा
दिकधातुवोंकूंपकावै है ॥ याकारणतें अग्निदेवता सर्वप्राणियोंऊपरि उपकारकरै है ॥ और यहपरमात्मादेव सर्वप्राणियोंकेवाक्
इंद्रियविषेस्थितहोइकै मंत्रउच्चारणद्वारा अग्निकूंसंस्कारयुक्तकरै है ॥ जिसअग्निकूं वेदविषे आहवनीय गार्हपत्य दक्षिणाअग्नि इ
त्यादिकनामोंकरिकैकथनकरै हैं ॥ याकारणतें सर्वप्राणी अग्निऊपरि उपकारकरै हैं ॥ और हेदेवराजइंद्र! यहपरमात्मादेव वायुवि
षेस्थितहोइकै सर्वजीवोंकेप्राणोंकूंचलावै है ॥ याकारणतें वायु सर्वप्राणियोंऊपरि उपकारकरै है ॥ और परमात्मादेव प्राणविषे
स्थितहोइकै पुण्यपापरूपअदृष्टद्वारा वायुकूंप्रवृत्तकरै है ॥ यातें सर्वप्राणी वायुऊपरि उपकारकरै हैं ॥ और हेदेवराजइंद्र! यहप
रमात्मादेव सूर्यविषेस्थितहोइके सर्वजीवोंकेनेत्रोंकूं रूपादिकविषयोंविषेप्रवृत्तकरै है ॥ याकारणतें सूर्यभगवान् सर्वजीवोंऊपरि
उपकारकरै है ॥ और सोपरमात्मादेव सर्वप्राणियोंकेनेत्रविषेस्थितहोइकै यहसूर्यहै याप्रकार सूर्यकूंसिद्धकरै है ॥ याकारणतें स
र्वप्राणी सूर्यऊपरि उपकारकरै हैं ॥ और हेदेवराजइंद्र! यहपरमात्मादेव पूर्वादिकदशदिशावोंविषेस्थितहोइकै सर्वप्राणियोंके
श्रोत्रइंद्रियऊपरि उपकारकरै है ॥ यातें दशोंदिशा प्राणियोंऊपरि उपकारकरै हैं ॥ और सर्वप्राणियोंकेश्रोत्रइंद्रियोंविषेस्थित

होइकै सोपरमात्मादेव दिशावोंकेप्रतिध्वनिरूपशब्दकूंजाणेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ भेरीआदिकोंकेशब्दजन्य जोप्रतिध्वनिरूपशब्द है ॥ तिसतैंही विशेषकरिकैदिशावोंकाज्ञानहोवैहै ॥ सोप्रतिध्वनिकाज्ञान श्रोत्रइंद्रियकरिकैहोवैहै ॥ यातैं प्रतिध्वनिकेज्ञानद्वारा श्रोत्रइंद्रिय दिशावोंकूंसिद्धकरैहै ॥ यहही सर्वप्राणियोंका दिशावोंऊपरि उपकारहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ! सोपरमात्मादेव चंद्रविषेस्थितहोइकै सर्वजीवोंकेमनकूंप्रवृत्तकरैहै ॥ याकारणतैं चंद्र सर्वप्राणियोंऊपरि उपकारकरैहै ॥ और सर्वजीवोंकेमनविषे स्थितहोइकै सोपरमात्मादेव मनकेसंकल्पजन्यजेकर्महैं तिनकर्मोंकरिकै चंद्रलोककीवृद्धिकरैहै ॥ अथवा यहचंद्रहै याप्रकार मनकरिकैचंद्रकूंजाणेहै ॥ याकारणतैं सर्वप्राणी चंद्रऊपरि उपकारकरैहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र! यहपरमात्मादेव विद्युत्विषेस्थितहोइकै सर्वप्राणियोंकेअंधकारकीनिवृत्तिकरैहै ॥ याकारणतैं विद्युत् सर्वप्राणियोंऊपरि उपकारकरैहै ॥ और सर्वजीवोंकेत्वक्विषेस्थित जोउज्वलतारूपतेजहै तातेजकेअभिमानीविषेस्थितहोइकै यहपरमात्मादेव सर्वत्रव्याप्तविद्युत्केतेजकूंजाणेहै ॥ याकारणतैं सर्वप्राणी विद्युत्ऊपरि उपकारकरैहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र! यहपरमात्मादेव मेघोंविषेस्थितहोइकै गर्जनारूपशब्दकरिकै सर्वजीवोंकेआनंदकूं उत्पन्नकरै है ॥ याकारणतैं मेघ सर्वजीवोंऊपरि उपकारकरैहै ॥ और सोपरमात्मादेव जीवोंकेध्वनिरूपशब्दविषेस्थितहोइकै तागर्जनासहितमेघकूं श्रेष्ठकरिकैमानैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे मुखविषेस्थितलाला बाह्यरसकेज्ञानविषेकारणहोवैहै तैसे अंतरध्वनिरूपशब्दभी बाह्यशब्दकेज्ञानविषेकारणहै ॥ याकारणतैं सर्वप्राणी मेघोंऊपरि उपकारकरैहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र! यहपरमात्मादेव आकाशविषेस्थितहोइकै सर्वप्राणियोंकूं हृदयरूपछिद्रकीप्राप्तिकरैहै ॥ याकारणतैं आकाश सर्वप्राणियोंऊपरि उपकारकरैहै ॥ और हृदयाकाशविषे स्थितहोइकै यहपरमात्मादेव सर्वत्रव्यापकआकाशकूंजाणेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ नेत्रादिकोंकरिकै नीरूपआकाशकाज्ञान संभवैनहीं ॥ किंतु साक्षीचैतन्यकरिकै आकाशकाज्ञानहोवैहै ॥ सोसाक्षीचैतन्य विशेषकरिकै हृदयाकाशविषेहीरहैहै ॥ याकारणतैं सर्वप्राणी आकाशऊपरि उपकारकरैहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र! सोपरमात्मादेव धर्मविषेस्थितहोइकै सर्वजीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ याकारणतैंधर्म सर्वजीवोंऊपरि उपकारकरैहै ॥ और सोपरमात्मा

देव धर्मवान्जीवोंविषेस्थितहोइकै पुनःधर्मकूंकरैहै ॥ याकारणतैं सर्वप्राणी धर्मऊपरि उपकारकरै हैं ॥ और हेदेवराजइंद्र! सोपरमात्मादेव सत्यवाक्यविषेस्थितहोइकै जीवोंकूंयथार्थअर्थकाबोधकरैहै ॥ याकारणतैं सत्यवाक्य सर्वजीवोंऊपरि उपकारकरैहै ॥ और सोपरमात्मादेव सत्यवक्तापुरुषोंविषेस्थितहोइकै पुनःसत्यवाक्यकाउच्चारणकरैहै ॥ याकारणतैं सर्वजीव सत्यवाक्यऊपरि उपकारकरैहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र! यहपरमात्मादेव मनुष्यत्व ब्राह्मणत्वादिकजातियोंविषेस्थितहोइकै अधिकारसंपादनद्वारा जातिअभिमानीजीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ याकारणतैं मनुष्यत्व ब्राह्मणत्वादिकजाति सर्वजीवोंऊपरि उपकारकरैहै ॥ और सोपरमात्मादेव मनुष्यव्यक्तिविषे तथाब्राह्मणव्यक्तिविषे स्थितहोइकै मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं याप्रकार मनुष्यत्वादिकजातियोंकूंसिद्धकरैहै ॥ याकारणतैं मनुष्यादिकसर्वप्राणी मनुष्यत्वादिकजातिऊपरि उपकारकरैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! यहपरमात्मादेव देह इंद्रिय मन प्राण बुद्धिरूपयासंघातविषेस्थितहोइकै विज्ञानमयभोक्ताके जन्ममरणादिकोंकूंकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ देहतैंआदिलैकेबुद्धिपर्यंत जोसंघातरूपउपाधिहै तिसविषेस्थित जेजन्मादिकधर्म तिनधर्मोंकरिकै विज्ञानमयकूं जन्मादिकधर्मवालाकरैहै ॥ याकारणतैं यहसंघात विज्ञानमयभोक्ताऊपरि उपकारकरैहै ॥ और सोपरमात्मादेव बुद्धिकेवृत्तियोंविषेस्थितहोइकै विषयसहितबुद्धिकूंप्रकाशकरैहै ॥ याकारणतैं सोविज्ञानमय संघातऊपरि उपकारकरैहै ॥ यातैं हेदेवराइंद्र! पूर्वउक्तरीतितैं पृथिवीआदिकोंविषेस्थितहोइकै जोपरमात्मादेव सर्वत्रउपकारकरैहै ॥ सोआत्मा श्वानका तथातुमारा एकहीहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे मक्षिका सर्ववनस्पतितैं रसकूंग्रहणकरिकै मधुरूपरसकूं एकठाकरैहैं ॥ याकारणतैं मक्षिका मधुरूपरसऊपरि उपकारकरैहै ॥ और सोमधुरूपरसभी तिनमक्षिकावोंकेक्षुधाकीनिवृत्तिकरैहै ॥ याकारणतैं सोमधुरूपरस तिनमक्षिकावोंऊपरिउपकारकरैहै ॥ याप्रकार मक्षिका तथामधुरूपरस परस्परउपकारकरैहैं ॥ तैसे पृथिवीतैंआदिलैके जितनाजगत्मंडलहै सो जिसजिसप्राणिऊपरि उपकारकरैहै सोसोप्राणी तिसतिसपृथिवीआदिकोंऊपरि उपकारकरैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे लोकविषे धनीपुरुष आपणेभृत्योंविषे धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिरूप उपकारकरैहै ॥ और तेभृत्यभी ताधनीपुरुषऊपरि नानाप्रकारकीसेवारूपउपकार करैहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र!

पृथिवीआदिकोंकेजितनेउपकार हमनैं तुमारेप्रति कथनकरे हैं ॥ तेसंपूर्ण दृष्टांतमात्रकेजनावणेवासतेकहे हैं ॥ वास्तवतें तेउपकार अनंतप्रकारकेहैं ॥ यहवार्ता सुरेश्वराचार्यनैंभी कहीहै ॥ श्लोक ॥ सर्वंसर्वस्यकार्यंस्यात् सर्वः सर्वस्यभोजकः ॥ इत्येषामधुविद्याऽत्र वैषम्यक्लेशहारिणी ॥१॥ अर्थयह ॥ सर्वपदार्थ सर्वपदार्थोंकेकार्य हैं ॥ और सर्वपदार्थ सर्वपदार्थोंकेभोक्ताहैं ॥ याप्रकारकीमधुविद्याविषमतारूपीक्लेशकेनिवृत्तकरणेहारीहै ॥ १ ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र ! पूर्वउक्तपृथिवीआदिकपदार्थोंविषे एकएकपृथिवीआदिकपदार्थआपणेतेंभिन्नसर्वपदार्थोंऊपरि उपकारकरैं हैं ॥ तैसे पृथिवीतेंभिन्नसर्वजलादिकपदार्थ पृथिवीऊपरि उपकारकरैं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ पंचीकरणकीरीतिसैं पृथिवी आपणेभागकूंदेकरिकै जलादिकोंकीपूर्णताकरैं है ॥ और तेजलादिकभी आपणेआपणेभागकूंदेकरिकै पृथिवीकीपूर्णताकरैं हैं ॥ यहरीति सर्वत्रजानिलेणी ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र ! जैसे एकशरीरकेहस्तपादादिकअवयव परस्परउपकार करैं हैं ॥ याकारणतें तिनअवयवोंका एकहीआत्माहै ॥ तैसे पृथिवीआदिकपदार्थभी पूर्वउक्तरीतितें परस्परउपकारकरैं हैं ॥ याकारणतें तिनपृथिवीआदिकपदार्थोंकाभी एकहीआत्मा मानणेयोग्यहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ! सोपरमात्मादेवकैसाहै ॥ आपणेस्वप्रकाशतेजकरिकै विराजमानहै ॥ और जन्ममरणादिकविकारोंतेंरहितहै यातैंपरमअमृतरूपहै ॥ और सोईहीपरमात्मादेव संपूर्णप्राणियोंकेहृदयदेशविषेस्थितहोइकै बुद्धिकेसर्ववृत्तियोंकूंप्रकाशेहै ॥ और वास्तवतैंसंगरहितहै ॥ हेदेवराजइंद्र ! जोपरमात्मादेव स्थावर जंगमरूप सर्वशरीरोंविषे अस्तिभातिप्रियरूपकरिकैस्थितहै ॥ सोईहीपरमात्मादेव तुमारा तथाश्वानका आत्माहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ! जैसे घटमठरूपउपाधियोंविषे विद्यमानजोभेदहै सोभेद असंगआकाशकूं स्पर्शकरैनहीं ॥ तैसे शरीररूपउपाधियोंविषेविद्यमानजोभेदहै सोभेद असंगआत्माकूंस्पर्शकरैनहीं ॥ और हेदेवराजइंद्र ! सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थित तथाजन्ममरणतेंरहित तथासर्वभेदतेंरहित तथासर्वकाआत्मारूप जोब्रह्म हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ सोईहीब्रह्म आपणेआत्माकेज्ञानतें सर्वात्मभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ यहवार्ता पूर्वब्राह्मणोंकेपरस्परविचारविषे हम तुमारेप्रति कथनकरिआयेहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ! सोईहीपरमात्मादेव संपूर्णजीवोंकूं तथातुमदेवतावोंकूं आपणेवशवर्तिकरिकै पालनकरैं है ॥ यातैं मैंइंद्रही सर्वजीवोंकापालनकरताहूं ॥

याप्रकारका तुमाराअभिमान व्यर्थहीहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे सूर्यभगवान् ब्रह्मांडविषेस्थितहोइकै सर्वलोकोंकूंप्रकाशेहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेव सर्वभूतोंकेअंतरस्थितहोइके प्रकाशेहै ॥ याकारणतैं यहपरमात्माहीराजाहै ॥ मैंइंद्र तीनलोकोंकाराजाहूं याप्रकारका तुमाराअभिमान व्यर्थहीहै ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे रथकेचक्रविषे नेमि नाभि अरा येतीनप्रकारकेकाष्ठरहैहैं ॥ तहां पृथिवीविषेजाकास्पर्शहोवैहै ऐसाजो चंद्रमाकीन्यांईवर्तुलाकारकाष्ठहै ताकूं नेमिकहैहैं ॥ और जाकेविषे शलाकाफिरेहै ताकूं नाभिकहैहैं ॥ और नाभिनेमिकेमध्यविषे जोवक्रकाष्ठहैं तिनोंकूं अराकहैहैं ॥ ते अरा स्वतंत्ररहैंनहीं ॥ किंतु नेमिके तथानाभिके दोनोंकेआश्रितरहैहैं ॥ तैसे पृथिवीकाअभिमानी जोआत्माकाअंशहै सो नेमिकेसमानहै ॥ और शरीरकाअभिमानी जोआत्माकाअंशहै सो नाभिकेसमानहै ॥ और सर्वशरीर तथापृथिवी अराकेसमानहै ॥ तहां पृथिवीकाअभिमानी जोआत्माकाअंशहै तथाशरीरकाअभिमानी जोआत्माकाअंशहै तिनदोनोंकेआश्रितही संपूर्णशरीर तथापृथिवी रहैहैं ॥ स्वतंत्ररहिसकैनहीं ॥ कैसे हैंते आत्माकेदोनोंअंश? पूर्वकहीरीतितैं सर्वकेउपकारकरणेवासते पृथिवीआदिकोंविषेस्थितहै ॥ यहरीति जलादिकपदार्थोंविषे भी जानिलेणी ॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे रथकेचक्रविषे एकहीशिंशपकाकाष्ठ नेमि नाभि अरा यातीनरूपोंकूंधारणकरिकै उपकारक उपकार्य भावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा आधार आधेय भावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे एकहीपरमात्मादेव पृथिवीआदिक अधिदैवभावकूं तथाशरीरादिक अध्यात्मभावकूं तथापृथिवीआदिकोंकेअभिमानीपुरुषभावकूं प्राप्तहोइकै सर्वत्र उपकारकूंकरैहै ॥ हेइंद्र! तुम देवता तथापृथिवीआदिकपदार्थ किसीऊपरि उपकारकरतेनहीं ॥ यातैं हमही उपकारकरैहैं याप्रकारका तुमाराअभिमान व्यर्थहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! यद्यपि परमात्माही सर्वत्रस्थितहोइकै उपकारकरैहै यहवार्तासत्यहै ॥ तथापि सोपरमात्मादेव उत्कृष्टदेवतादिकशरीरोंविषेस्थितहोइकैही सर्वत्रउपकारकरैहै ॥ श्वानादिकनीचशरीरोंविषेस्थितहोइकै सोपरमात्मादेव किसीऊपरि उपकारकरैनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र! उत्कृष्टशरीरविषेस्थितहोइकैही परमात्मा उपकारकरैहै ॥ याप्रकारकाभी तुमाराअभिमान व्यर्थहै ॥ काहेतैं? जोपरमात्मादेव तुमदेवतावोंकेहृदयविषेस्थितहोइकै सर्वत्रउपकारकूंकरैहै ॥ सोईहीपरमात्मादेव श्वानकेहृदय

देशविषेस्थितहोइकै सर्वत्रउपकारकूंकरै है॥ यातैं हेदेवराजइंद्र! बहुतकहणेकाकछुप्रयोजननहीं॥ संक्षेपकरिकै आत्माके वास्तवस्वरूपकूं तुम निश्चयकरो॥ अब तासंक्षेपकूंदिखावै हैं॥ हेदेवराजइंद्र! सत्वगुणकरिकैयुक्त जेहमऋषिहैं तथा रजोगुणकरिकैयुक्त जेतुमदेवताहो तथा तमोगुणकरिकैयुक्त जेश्वानादिकपशुहैं तिनसंपूर्णोंविषे यहपरमात्मादेव समानव्यापकहै॥ शंका॥ हेभगवन्! श्वानकीसर्वलोकनिंदाकरैहैं॥ और देवतावोंकी लोक निंदाकरैनहीं॥ यातैं देवताशरीर उत्कृष्टहै॥ समाधान॥ हेदेवराजइंद्र! यहभी तुमाराअभिमान व्यर्थहै॥ काहेतैं? जैसे तुमदेवता तथाहममनुष्य श्वानकेजन्मकीनिंदाकरै हैं॥ तैसे हमारेकूं विषयोंविषे आसक्तदेखिकरिकै ब्रह्मवेत्ता विरक्तपुरुष हमारेजन्मकीभीनिंदाकरै हैं॥ और हेदेवराजइंद्र! जैसे तुमदेवतावोंकूं तथाहममनुष्योंकूं आपणेशरीरविषे उत्कृष्टताबुद्धिहै॥ तैसे श्वानकूंभी आपणेशरीरविषे उत्कृष्टताबुद्धिहै॥ यातैं हेदेवराजइंद्र! जिसआत्माकेतादात्म्य संबंधकरिकै निकृष्टशरीरोंविषेभी उत्कृष्टताप्रतीतहोवैहै॥ सोईही आनंदस्वरूपआत्मा अधिकारीपुरुषोंकरिकै जानणेयोग्यहै॥ और हेदेवराजइंद्र! ऐसे आनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानविषे अहंममअभिमानही प्रतिबंधकहै॥ यातैं शरीरविषे अहंअभिमानका परित्यागकरिकै तथाअप्सरावोंसहितस्वर्गविषे ममअभिमानकापरित्यागकरिकै तुम आत्माकूंनिश्चयकरो॥ और हेदेवराजइंद्र! जिसशरीरविषे लोकोंनैं अहंअभिमानकऱ्याहै॥ सोशरीरकैसाहै? जैसे श्वानकीविष्ठा दुर्गंधकरिकैयुक्तहोवैहै॥ तैसे दुर्गंधकरिकै युक्तहै॥ और क्षणक्षणविषे परिणामकूंप्राप्तहोवैहै॥ ऐसेशरीरविषे बुद्धिमान्पुरुषोंकूं अहंअभिमानकरणा उचितनहीं॥ और हेदेवराजइंद्र! जबपर्यंत जीवोंकूं शरीरादिकोंविषे अहंबुद्धिहोवैहै॥ तथा स्त्रीपुत्रधनादिकोंविषे ममबुद्धिहोवैहै॥ तबपर्यंत जीवोंकूं आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्ति तथाजन्ममरणादिकदुःखोंकीनिवृत्ति होवैनहीं॥ यातैं हेइंद्र! शरीरविषे अहंअभिमानकापरित्यागकरिकै तथाअप्सरावोंसहितस्वर्गविषे ममअभिमानकापरित्यागकरिकै आनंदस्वरूपआत्माकूं तुम निश्चयकरो॥ ऋषिरुवाच॥ हेअश्विनीकुमारो! याप्रकार सोदध्यङ्ऋषि तुमारागुरु नानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिकै इंद्रकेप्रतिब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया॥ कैसाहैसोदध्यङ्ऋषि? देवराजइंद्रकूं ब्रह्मविद्याकाअनधिकारीजाणताहुआभी आपणीप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासते संपूर्णब्रह्मविद्या

का उपदेशकरताभया ॥ हेअश्विनीकुमारो ! इसप्रकार आनंदकेदेणीहारी दध्यङ्ऋषिकेवाणीकूं श्रवणकरिकैभी सोदेवराजइंद्र आनंदकूंनहींप्राप्तहोताभया ॥ किंतु विषयोंविषेआसक्तिकरिकै अंधहुआ सोइंद्र उलटाक्रोधकूंप्राप्तहोताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे कोईदयालुपुरुष सर्पकूंक्षुधातुरदेखिकै तासर्पकूं दुग्धपानकरावै ॥ तादुग्धकूंपानकरिकै सोसर्प तादयालुपुरुषकेप्राणहरणेवासते क्रोधकरैहै ॥ तैसे श्रीमदकरिकै अंधहुआसोइंद्र दध्यङ्ऋषिकेअमृतमयवाणीकूंश्रवणकरिकैभी क्रोधकूंहीप्राप्तहोताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकविषे जिसपुरुषकी जिसजिसपदार्थविषेआसक्तिहोवैहै ॥ तिसतिसपदार्थकी जबीकोई निंदाकरैहै ॥ तबी सोपुरुष तिसनिंदाकरणेहारेपुरुषऊपरि अत्यंतक्रोधकरैहै ॥ तैसे स्वर्गादिकभोगोंविषेआसक्तइंद्र तिनस्वर्गादिकभोगोंकीनिंदाकूंश्रवणकरिकै अत्यंतक्रोधवान् होताभया ॥ और हेअश्विनीकुमारो! क्रोधकरिकैयुक्तहुआ सोइंद्र आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ हमारेशत्रु जेअसुरहैं तिनोंनैं हमारेराजकेपरित्यागकरावणेवासते यहब्राह्मण हमारीतरफभेजाहै ॥ याकारणतैंही यहब्राह्मण हमारेप्रति स्वर्गकेपरित्यागकरणेकाउपदेशकरैहै ॥ किंवा ॥ वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ यहब्राह्मण श्रेष्ठनहीं ॥ काहेतैं ? जेश्रेष्ठब्राह्मणहोवैहैं ते मिथ्यावचनकहतेनहीं ॥ और यहदुरात्मातौ सर्वथा मिथ्याहीभाषणकरैहै ॥ काहेतैं? तीनलोकोंकेपति मैंइंद्रकूं श्वानकेसमानकथनकरैहै ॥ यातैं याब्राह्मणकेसमान कोईमिथ्यावादीनहीं ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ ब्रह्महत्याकरणेहारेपुरुषकूं जन्मांतरविषे श्वानशरीरकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं श्वानशरीर ब्रह्महत्याकाफलहै ॥ और सोश्वान विष्ठादिकमलोंकूं भक्षणकरैहै ॥ और ताश्वानकेस्पर्शतैंभी लोक स्नानकरैहै ॥ याप्रकारकातौ श्वानहै ॥ और मैंइंद्रकैसाहूं ? एकशतअश्वमेधयज्ञोंकरिकै इंद्रपदकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं अश्वमेधयज्ञोंकाफल इंद्रशरीरकीप्राप्तिहै ॥ और मैंइंद्र सर्वदाअमृतकापानकरताहूं ॥ और बहुतकालपर्यंत उपासनाकरिकै लोकोंकूं हमारादर्शनहोवैहै ॥ ऐसेमैंइंद्रकूं यहदुरात्माब्राह्मण सर्वथा श्वानकेसमानहीकथनकरैहै ॥ यातैं यहब्राह्मण अत्यंतमिथ्यावादीहै ॥ किंवा ॥ यज्ञोंकरिकैभीदुर्लभ जेदेवांगनावोंकेशरीरहैं तिनोंकूं यहब्राह्मण श्वानिणीकेशरीरसमान कथनकरैहै ॥ जिसअभिप्रायकरिकै यहब्राह्मण ऐसेअनुचितवचन कहैहै ॥ सोअभिप्राय हम जाणतेहैं ॥ किंवा ॥ वज्रकूं

धारणकरणेहारामैंइंद्र अकेलाही संपूर्णजगत्‌केवशकरणेविषेसमर्थहूं ॥ ऐसेमैंइंद्रविषे श्वानकीसमानता किसनिमित्तकूंलैके याब्राह्म णनैं कहीहै ॥ सर्वप्रकार यहमिथ्यावादीहै ॥ यातैं यहब्राह्मणनहीं किंतु यहकोईअसुरहै ॥ स्वर्गकेलेणेवासते तपस्वीब्राह्मणकारू पधारिकै हमदेवतावोंकेबुद्धिकूं तथाअन्यब्राह्मणादिकवर्णोंकेबुद्धिकूं भ्रष्टकरणेवासते आयाहै ॥ किंवा ॥ कदाचित् यहब्राह्मणभीहो वै तौभी हमदेवतावोंकापक्षपाती ब्राह्मणनहीं ॥ किंतु दैत्योंकागुरुजोशुक्रहै सोईहोवैगा ॥ अथवा शुक्रके शंडामर्कनामाजोदो पुत्रहैं ते अत्यंतबुद्धिमान्‌हैं ॥ तिनोंविषे कोईएकहोवैगा ॥ किंवा ॥ इसदुरात्माकेब्राह्मणपणेकाविचारकरणाव्यर्थहै ॥ यातैं इस अधमपुरुषकूं इसीकालविषे मैंहननकरों ॥ अथवा यास्थानतैं इसकूं मैं निकासिदेवों ॥ हेअश्विनीकुमारो! इसप्रकार सोइंद्र आपणेमनविषेविचारकरिकै याप्रकारकानिश्चय करताभया ॥ जोमैं याअधमब्राह्मणकूं अबीहीहननकरोंगा ॥ अथवा यास्थान तैंनिकासिदेवोंगा तौ हमारीलोकविषे अपकीर्तिहोवैगी ॥ यातैं किसीअन्यउपायकरिकै याअधमब्राह्मणकूं मैंहननकरों ॥ किं वा अश्विनीकुमार जोहमारे बुद्धिमान्‌देवताथे तिनोंकूंभी याअधमब्राह्मणनैंही हमारेतैंविमुखकऱ्याथा ॥ यातैंभी यहब्राह्मण दं डकरणेयोग्यहै ॥ यातैं याब्राह्मणकूं ब्रह्मविद्याकेनहींउपदेशकरणेकी मैंआज्ञादेवों ॥ जोयहब्राह्मण हमारीआज्ञाकूंउल्लंघनकरिकै किसीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैगा ॥ तौ हम याब्राह्मणकामस्तक छेदनकरैंगे ॥ हेअश्विनीकुमारो! याप्रकारकेउपायकावि चारकरिकै सोदेवराजइंद्र! तुमारेगुरुदध्यङ्ऋषिकूं याप्रकारकीआज्ञा करताभया ॥ हेब्राह्मण! जाब्रह्मविद्या तुमनैं हमारेप्रति उप देशकरीहै ॥ साब्रह्मविद्या आजदिनतैंलेकरिकै जोकिसीअन्यपुरुषकेप्रति उपदेशकरैगा तौ वज्रकरिकै तुमारेमस्तककूं मैंछेदनक रोंगा ॥ हेअश्विनीकुमारो! इसप्रकार जबी देवराजइंद्रनैं तुमारेगुरुदध्यङ्ऋषिकेप्रति आज्ञाकरी तबी सोदध्यङ्ऋषि तुमारा गुरु देवराजइंद्रऊपरि किंचित्‌मात्रभीक्रोध नहींकरताभया उलटा प्रसन्नमनहुआ सोदध्यङ्ऋषि ताइंद्रकीआज्ञाकरिकै आपणेइष्टकीसिद्धि मानताभया ॥ अब जिसविचारकरिकै दध्यङ्ऋषिकूं हर्षहोताभया ताविचारकूं निरूपणकरैंहैं ॥ यादे वराजइंद्रकेआज्ञाकूं जोमैं पालनकरोंगा तौ हमारेकूं दोप्रकारकेदोषोंकीनिवृत्तिरूप इष्टअर्थकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तहां एकतौ ब्रह्म

विद्याकेउपदेशविषे निष्ठुरतारूपदोषकीनिवृत्तिहोवैगी ॥ और दूसरा अनधिकारीपुरुषकेप्रति ब्रह्मविद्याकादानरूपदोषकीनिवृत्तिहोवैगी ॥ यातें इंद्रकीआज्ञा हमारेकूंपालनकरणेयोग्यहै ॥ किंवा ॥ जैसे विद्याकेउपदेशतेंअनंतर गुरुकीप्रसन्नतावासते शिष्य गुरुकेप्रति दक्षिणादेवैहै ॥ तैसे यादेवराजइंद्ररूपीशिष्यनें यहजोआज्ञारूपीदक्षिणा हमारेप्रतिदईहै साआज्ञारूपीदक्षिणा हमारेकूं परम अनुकूलहै ॥ काहेतें? याआज्ञातेंअनंतर दुर्बुद्धिअनधिकारीपुरुषोंकेप्रति मैं कदाचित् ब्रह्मविद्याकाउपदेशनहींकरूंगा ॥ किंवा कामक्रोधादिकोंकरिकैयुक्त जेअनधिकारीपुरुषहैं तिनोंकेतांई दईहुईब्रह्मविद्या निष्फलहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे चांडालकेतांई दईहुईगौ निष्फलहोवैहै ॥ अन्यदृष्टांत ॥ जैसे रूपकरिकै तथायौवनकरिकैयुक्त आपणीकन्या नपुंसककेतांई दईहुई निष्फलहोवैहै ॥ तैसे विषयासक्तअनधिकारीपुरुषकेतांई दईहुई ब्रह्मविद्या निष्फलहोवैहै ॥ किंवा ॥ जोविद्वान्पुरुष स्नेहकरिकैमोहितहुआ अथवा धनकरिकैमोहितहुआ विषयासक्तअनधिकारीपुरुषोंकेतांई ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैहै सोविद्वान्पुरुष आपणेकूं तथाब्रह्मविद्याकूं तथाश्रोताकूं यातीनोंकूं नाशकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अनधिकारीपुरुषकेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेविषे ब्रह्मविद्या निष्फलहोवैहै ॥ और अनधिकारीश्रोता दोनोंलोकोंतेंभ्रष्टहोवैहै ॥ और ब्रह्मविद्याकेवक्ताकूं द्वेषकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहवार्ता महाभारतविषेभीकहीहै ॥ श्लोक ॥ यश्चाधर्मेणवैब्रूयात् यश्चाधर्मेणपृच्छति ॥ तयोरन्यतरःप्रैति विद्वेषंवाधिगच्छति ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष अधर्मकरिकै ब्रह्मविद्याकूंकथनकरैहै ॥ और जोपुरुष अधर्मकरिकैब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरैहै ॥ तिनदोनोंविषे एकचल्याजावैहै ॥ अथवा द्वेषकूंप्राप्तहोवैहै ॥ १ ॥ यातेंअनधिकारीपुरुषकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणा योग्यनहीं ॥ किंवा ॥ अतिथिकेसन्मानकरणेविषे तत्पर जोहमतपस्वीमुनिहैं तिनोंकूं दूसराकोईपापकेउत्पत्तिकानिमित्तहैनहीं ॥ अनधिकारीपुरुषोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशही पापकेउत्पत्तिकानिमित्तहै ॥ अब इंद्रकेआज्ञारूपीकृपातें सोपाप कबीउत्पन्नहोवैगानहीं ॥ किंवा ॥ जिनोंकेसंगकरिकै अनंतप्रकारकीभेदबुद्धिउत्पन्नहोवैहै और बहिर्मुखहैचित्तजिनोंका ऐसेजेमनुष्यहैं तथा देवताहैं तथाअसुरहैं तिनोंकरिकै हमाराकिंचित्मात्रभीप्रयोजनसिद्धहोवैनहीं ॥ उलटा इनभेदवादियोंकेसंगतें चित्त बहिर्मुख

होवेहै कैसेहैंयेभेददर्शीपुरुष ? याजाग्रत्अवस्थाविषे जिसजिसपदार्थका अनुभव करैंहैं तिसतिसअनुभवजन्यसंस्कारोंकेप्र भावतैं तिसतिसपदार्थकूं जैसेस्वप्नविषेप्राप्तहोवेंहैं ॥ तैसे मरणकालविषेभी तिसीतिसीपदार्थकूंप्राप्तहोवेंहैं ॥ यातें भेदबुद्धि ही जीवोंकेजन्ममरणरूपसंसारकाकारणहै ॥ और मेरेविषे भेदबुद्धिकाकारण दूसराकोईहैनहीं ॥ किंतु शिष्योंकेप्रति ब्रह्म विद्याकाउपदेशरूपकार्यही मेरेभेदबुद्धिकाकारणहै ॥ यातें ताभेदबुद्धिजन्यसंस्कार अज्ञानीजीवोंकीन्यांई मेरेकूंभी कदाचित्ज न्मादिकोंकीप्राप्तिकरैंगे ॥ किंवा ॥ मैंगुरुहूं यहशिष्यहै याप्रकारकीभेदबुद्धि अविद्यातैंविनाहोवैनहीं ॥ यातें उपदेशकालविषे सा भेदबुद्धि अविद्यातैंविनाअनुपपन्नहुई ब्रह्मवेत्तापुरुषविषेभी अविद्याकेलेशकूंबोधनकरैंहै ॥ यातें विद्याकेउपदेशकालविषे अज्ञानी पामरपुरुषोंकेसमान मैंहोवोंगा ॥ किंवा ॥ यहमैंहूं यहमेराहै यहमेरानहींहै याप्रकारकाभेददर्शन जबपर्यंत जीवोंकानिवृत्तनहीं होता ॥ तबपर्यंत देहरूपकाराग्रहतैं जीवोंकीमुक्तिहोतीनहीं ॥ यातें भेददर्शनही जीवोंकेबंधनकाकारणहै ॥ सोहमाराभेददर्शन या इंद्रनैं कृपाकरिकैनिवृत्तकऱ्याहै ॥ यातें दैवोअथर्वणनामा हमारेगुरुनैंभी यहइंद्र हमारापरमगुरुहै ॥ तात्पर्ययह ॥ आत्मसाक्षा त्कारतैंअनंतर जीवन्मुक्तिकेसुखवासतै मनोनाश वासनाक्षय हमारेकूं अवश्यकरणेयोग्यहै ॥ तामनोनाश वासनाक्षयकाउपाय दैवोअथर्वणनामाऋषिनैं परंपराकरिकै हमारेप्रति उपदेशकऱ्याथा ॥ यातें सोदैवोअथर्वणनामाऋषि हमारागुरुहै ॥ और या देवराजइंद्रनैंतौ साक्षात्ही हमारामनोनाश तथावासनाक्षयकऱ्याहै ॥ काहेतें ? शिष्यकेप्रति विद्याउपदेशकालविषे हमाराचित्त ब हिर्मुखहोवैहै ॥ ताचित्तकीबहिर्मुखताकेनिवृत्तिवासते याइंद्रनैं हमारेप्रति ब्रह्मविद्याके नउपदेशकरणेकीआज्ञाकरीहै ॥ यातें यह इंद्र हमारापरमगुरुहै ॥ हेअश्विनीकुमारो ! याप्रकारकाविचार आपणेहृदयविषेकरिकै सोदध्यङ्ऋषि तुमारागुरु देवराजइंद्र ऊपरि क्षमाकरताभया ॥ शंका ॥ गुरुकेसाथ द्रोहकरणेहाराजोइंद्रहै ॥ तिसकेप्रति सोदध्यङ्ऋषि शाप काहेतैंनहींदेताभया ? ॥ समाधान ॥ याप्रकारकाआपणेमनविषे विचारकरिकै सोदध्यङ्ऋषि इंद्रकूं शापनहींदेताभया ॥ अब ताविचारकूंदिखावेंहैं ॥ श्वानसर्पादिकजेतामसीजीवहैं तेअपकारीजीवोंविषेक्रोधकरैंहैं ॥ यहवार्ता लोकविषेप्रसिद्धहै ॥ जबी विद्वान्पुरुषभी अपकारी

जीवोंऊपरि क्रोधकरैगा तौ श्वानसर्पादिकतामसीजीवोंतैं विद्वान्पुरुषविषे कौनविशेषताहोवैगी? ॥ किंतु श्वानसर्पादिकोंकेतुल्य ही सोविद्वान्होवैगा ॥ यातैं जेपुरुष अपकारीजीवोंऊपरिक्रोधनहींकरते ॥ उलटा तिनोंऊपरि उपकारकरतेहैं तेपुरुषही विद्वान् हैं ॥ अपकारीजीवोंऊपरि जेपुरुष क्रोधकरैंहैं तेपुरुष विद्वान्होवैनहीं ॥ किंवा ॥ अपकारीजीवोंविषे विद्वान्पुरुष क्रोधकरैंहैं ॥ यहजोकोईवादी अंगीकारकरै ॥ तासैं यहपूछनाचाहीये ॥ कूटस्थआत्माकाअपकारमानिकै सोविद्वान्पुरुष अपकारीजीवोंऊपरिक्रोधकरैंहै? अथवा शरीरादिकजडपदार्थोंकाअपकारमानिकै सोविद्वान्पुरुष अपकारीपुरुषऊपरिक्रोधकरैंहै? ॥ तहां प्रथमपक्षतौ संभवैनहीं ॥ काहेतें? कूटस्थआत्मा अविकारीहै तथाअसंगहै ॥ यातैं ताकेविषे अपकाररूपविकारकासंबंधसंभवैनहीं ॥ तैसे दूसरा पक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? विद्वान्पुरुषोंनें शरीरादिकजडपदार्थोंतैं आत्माकूंभिन्नमान्याहै ॥ यातैं शरीरादिकोंकेअपकारहुएभी विद्वान्पुरुषकीहानिहोवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे एकपाषाणकरिकै दूसरेपाषाणकाताडनकियेहुएभी चैतन्यपुरुषोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तैसेजडदंडादिकोंकरिकै जडशरीरकेअपकारहुएभी विद्वान्पुरुषकूं दुःखहोवैनहीं ॥ शंका ॥ यद्यपि शरीर पाषाणकीन्यांईजडहै ॥ तथापि सोशरीर आत्माकेसुखकासाधनहै ॥ यातैं शरीरकेअपकारहुए विद्वान्पुरुषकाक्रोधसंभवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे भृत्योंकेअपकारहुए राजाकूंक्रोधहोवैहै ॥ समाधान ॥ जैसे कोईपुरुष आपणेएकहस्तकरिकै दूसरेहस्तका तथापादका तथामस्तकका ताडन करैहै ॥ ताताडनकरिकै तिसपुरुषकूं क्रोधहोवैनहीं ॥ काहेतें? एकशरीरविषेवर्तमान हस्तपादादिकअवयवोंका एकहीआत्माहै ॥ तैसे एकशरीरकरिकै दूसरेशरीरकेताडनहुएभी विद्वान्पुरुषोंकूं क्रोधहोवैनहीं ॥ काहेतें? शास्त्रप्रमाणकरिकै तथायुक्तियोंकरिकै तथा आपणेअनुभवकरिकै विद्वान्पुरुषनैं सर्वशरीरोंविषे एकआत्मा निश्चयकर्‍याहै ॥ यातैं ऐसेविद्वान्पुरुषकूं जैसे आपणाशरीर सुखका साधनहै ॥ तैसे सर्वशरीर सुखकेसाधनहैं ॥ याकारणतैं सोविद्वान्पुरुष किसीऊपरि क्रोधकरतानहीं ॥ किंवा जोपुरुष अपकारकरणेहारेजीवोंऊपरि क्रोधकरैहै ॥ सोपुरुष आत्मवेत्तानहीं ॥ किंतु सोपुरुष आत्माकेनाशकरणेहाराहै ॥ याकारणतैंही नास्तिकहै ॥ और सर्वभूतोंकीहिंसाकरणेहाराहै ॥ तात्पर्ययह ॥ असंगआत्माकातौ अपकारहोवैनहीं ॥ किंतु शरीरादिकजडपदार्थोंकाअपकारहोवैहै ॥

ताशरीरादिकोंविषे जिसपुरुषकूं आत्मबुद्धिहोवैहै ॥ तिसीपुरुषकूं शरीरकेअपकारकरणेहारेजीवोंऊपरि क्रोधहोवैहै ॥ यातें शरी
रादिकोंविषे आत्मबुद्धिही क्रोधकाकारणहै ॥ और चार्वाकनास्तिकभी शरीरकूंहीआत्मामानै हैं ॥ यातें क्रोधवान्पुरुषविषे तथा
नास्तिकविषे किंचित्मात्रभी भेदनहीं ॥ और क्रोधकीउत्पत्तितेंअनंतर यहपुरुष शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै जी
वोंकीहिंसा अवश्यकरैहै ॥ यातें क्रोधवान्पुरुषही सर्वभूतप्राणियोंकीहिंसाकरणेहाराहै ॥ याकहणेतैंयहसिद्धभया ॥ जिसपुरुषकूं
एकअद्वितीयआत्माकाज्ञानभयाहै ॥ सोपुरुष किसीप्राणीऊपरि क्रोधकरतानहीं ॥ और जोपुरुष किसीप्राणीऊपरि क्रोधकरैहै
सोपुरुष आत्मावेत्तानहीं ॥ किंवा ॥ जिसपुरुषकूं एकअद्वितीयआत्माकाज्ञाननहींभया ॥ किंतु याप्रकारकाज्ञान जिसकूंभयाहै ॥ आ
पणेपुण्यकर्मकरिकै जीवोंकूं सुखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और आपणेपापकर्मकरिकै जीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें पुण्यपापही जी
वोंकेसुखदुःखकेकारणहैं ॥ दूसराकोई जीवोंकेसुखदुःखकाकारणनहीं ॥ याप्रकारकाज्ञान जिसपुरुषकूंभयाहै ॥ सोपुरुषभी अ
पकारीजीवोंऊपरि क्रोधकरतानहीं तौ सर्वात्मदर्शीतत्ववेत्तापुरुष अपकारीजीवोंऊपरि कैसेक्रोधकरैगा ? किंतु नहींकरैगा ॥ किं
वा जोपुरुष शास्त्रकूंजाणताहुआभी क्रोधवान्होवैहै सोपुरुष किसप्रकार विद्वान्होवैगा ? किंतु सोक्रोधवान्पुरुष विद्वान्नहीं ॥
काहेतें? जोपुरुष विद्यावालाहोवैहै ताकूं विद्वान्कहैहैं ॥ और सर्वप्राणियोंविषे आत्मबुद्धिकरिकै सर्वकेहितकीइच्छाकरणी यहविद्या
काफलहै ॥ सोविद्याकाफल क्रोधवान्पुरुषविषेसंभवैनहीं ॥ यातें जैसे गर्दभ मृत्तिकाकेभारकूंउठावैहै ॥ तैसे क्रोधवान्पुरुष निष्फ
लही शास्त्ररूपीभारकूंउठावैहै ॥ किंवा जोपुरुष किंचित्मात्र शास्त्रकापठनकरैहै ॥ अथवा श्रवणकरैहै ॥ अथवा नहींश्रवणकरै
है परंतुसर्वप्राणियोंविषे आत्माकूंपरिपूर्णजानिकै शरीर मन वाणी करिकै किसीप्राणीकाद्रोहनहींकरता ॥ तिसीपुरुषनैं सर्वशास्त्र
केयथार्थअर्थकूंजान्याहै ॥ यहवार्ता महाभारतविषेभीकहीहै ॥ श्लोक ॥ आत्मानंचेद्विजानीयात् सर्वभूतगुहाशयं ॥ श्लोकेनयदिवा
र्द्धेनक्षीणंतस्यप्रयोजनं ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष एकश्लोककरिकै अथवाअर्द्धश्लोककरिकै सर्वभूतोंविषेव्यापक आत्माकूंजाणताहै ॥
तिसपुरुषका सर्वप्रयोजनसिद्धभयाहै ॥ १ ॥ गीताविषेभी श्रीकृष्णभगवान्नैं अर्जुनकेप्रतिकह्याहै ॥ श्लोक ॥ आत्मौपम्येनसर्वत्र सम

पश्यतियोऽर्जुन ॥ सुखंवायदिवादुःखं सयोगीपरमोमतः ॥१॥ अर्थयह ॥ हेअर्जुन! जैसे आपणेकूंसुख प्रियहोवैहै और दुःख अप्रियहोवैहै ॥ तैसे जोपुरुष सर्वप्राणियोंकेसुखकूं प्रियमानैहै ॥ और दुःखकूं अप्रियमानैहै॥ सोईहीपुरुष परमयोगीहै॥१॥ किंवा जोपुरुषशरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै प्राणियोंकाद्रोहकरैहै ॥ सोपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे आत्मस्वरूप आनंदकूं प्राप्तनहींहोता ॥ यातैं जीवोंकाद्रोहही सर्वअनर्थकाकारणहै ॥ हेअश्विनीकुमारो! याप्रकारकाविचारकरिकै सोदध्यङ्ङ् ऋषितुमारागुरु इंद्रकूं शापनहींदेताभया ॥ उलटा सोदध्यङ्ऋषि इंद्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदेवराजइंद्र! तुमनैं जोहमारेकूं आज्ञाकरीहै ॥ ताआज्ञाकूं मैंअवश्यपालनकरौंगा ॥ जोमैं तुमारीआज्ञाकानहींपालनकरौं तौतुमनैं हमारेमस्तककाछेद नकरणा ॥ और हेदेवराजइंद्र! ब्रह्मविद्याके नउपदेशकरणेकीआज्ञा जोतुमनैं हमारेप्रतिकरीहै साअज्ञा हमारेदुःखकाकारण नहीं ॥ किंतु उलटा जीवन्मुक्तिकेसुखकाकारणहै ॥ परंतु सर्वदेवतावोंकाअधिपति तूइंद्र स्वर्गलोकतैंचलिकै हमारेआश्रमविषेआ याहै ॥ यातैं तुमारेप्रसन्नताकरणेवासते मैं कौनपदार्थ तुमारेप्रतिदेवौं?॥ याप्रकारकाविचार मैंकरौंहूं ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र! धन करिकै तथाशरीरकरिकै तथाअन्यकिसीउपायकरिकै तुमारेप्रसन्नताकूं मैंअवश्यसिद्धकरौंगा ॥ तुमनैं याकेविषे किंचित्मात्रभी सं शयनहींकरणा ॥ हेअश्विनीकुमारो! इसप्रकारकावचन जबी दध्यङ्ऋषि तुमारेगुरुनैं इंद्रकेप्रतिकह्या ॥ तबी सोदेवराजइंद्र सा त्विकस्वभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ और मुनिकेकोमलस्वभावकूंदेखिकरिकै भयकूंप्राप्तहुआ तब सोइंद्र याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेब्राह्मण! आपणेवर्णाश्रमकेधर्मोंकूंकरणेहारेजेब्राह्मणहैं ॥ तिनोंकाभी मैंकदाचित् द्रोहनहींकरता ॥ तौ सर्वऊपरिउपकार करणेहारा जोतूश्रेष्ठब्राह्मणहै ॥ तिसकाद्रोह मैंकैसेकरौंगा?॥ और हेब्राह्मण! मैंनैं जोपूर्व विश्वरूपादिकब्राह्मणोंका ह ननकऱ्याथा ॥ तथा अनंतसंन्यासियोंकाहननकऱ्याथा ॥ सोभी तिनोंकेदुष्टस्वभावकूंजाणिकरिकैही हननकऱ्याथा ॥ अप राधतैंविना मैं किसीका हननकरतानहीं ॥ यातैं हेब्राह्मण! जोतू मेरेआज्ञाकाउल्लंघननहींकरैगा तौ तुमाराशिर छेदन नहींहोवैगा ॥ और जोतू हमारीआज्ञाकाउल्लंघनकरैगा तौ विश्वरूपादिकोंकीन्यांई तुमाराभी शिरछेदनहोवैगा ॥ और हेब्राह्मण!

पूर्वजोहमनैं तुमारेप्रतिकह्याथा ॥ हमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरो ॥ सो तुमनैं हमारेवचनकूंअंगीकारकरिकै हमारेप्रति
ब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्या ॥ ताविद्याकेउपदेशकरिकै हमारेइच्छाकूं तुमनैं पूर्णकऱ्या ॥ दूसराकोईकार्य अबीकरणेयोग्यहैनहीं ॥
यातैं हेब्राह्मण ! तुमाराकल्याणहोवै ॥ हम अबीआपणेस्वर्गलोककूंजातेहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ! याप्रकारकेवचनोंकूं सोदेवराजइंद्र
कहिकरिकै आपणेस्वर्गलोककूंजाताभया ॥ और तुमारागुरु दध्यङ्ऋषि महान्समुद्रकीन्यांई क्षोभतैंरहितहुआ तिसीआश्रमवि
षेस्थितहोताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरिकैहमारेइच्छाकूं तुमनैं पूर्णकऱ्या ॥ यहजोवचन इंद्रनैं दध्य
ङ्ऋषिकेप्रतिकह्या सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं ? जोइंद्रकूंब्रह्मविद्याकीप्राप्तिहोती तौ दध्यङ्ऋषिऊपरि क्रोधनहींकरता ॥ समा
धान ॥ हेअश्विनीकुमारो ! दध्यङ्अथर्वण तुमारागुरु देवराजइंद्रकेप्रति संपूर्णब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ तथा नानाप्रका
रकेकर्मोंका तथा नानाप्रकारकेउपासनावोंका उपदेशकरताभया ॥ तथा नानाप्रकार जगत्केउत्पत्तिकाउपदेशकरताभया ॥ परंतु
सोदेवराजइंद्र रागादिकप्रतिबंधकेवशतैं ब्रह्मविद्याकूंछोडिकरिकै अन्यसंपूर्णविद्याकूं ग्रहणकरताभया ॥ याकारणतैं इंद्रनैं आप
णेइच्छाकीपूर्णताकहीहै ॥ और हेअश्विनीकुमारो ! इसप्रकार इंद्रकेगएतैंअनंतर सोदध्यङ्ऋषि तुमारागुरु मौनकूंधारणकरिकै
स्थितहोताभया ॥ और तुमदोनों बहुतकालकेपीछै वैराग्यादिकसाधनोंकूंसंपादनकरिकै ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासते दध्यङ्ऋषि
केसमीप जातेभये ॥ तहां जाइकै दध्यङ्ऋषिगुरुकेप्रति प्रणामकरिकै तुमदोनों याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हेगुरो ! हमनैंपूर्व
आपतैं ब्रह्मविद्याकीप्रार्थनाकरीथी ॥ और आपनैं यहप्रतिज्ञाकरीथी ॥ वैराग्यादिक साधनोंकूं तुम संपादनकरिआवो ॥ पश्चा
त् तुमारेप्रति मैं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरौंगा ॥ सोअबी हमदोनों वैराग्यादिकसाधनोंकूं संपादनकरिकै आपकेचरणकमलोंकूं प्रा
प्तभयेहैं ॥ यातैं हेगुरो ! आपणीप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासते हमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरो ॥ हेअश्विनीकुमारो ! याप्रकारका
वचन जबीतुमोंनेंकह्या ॥ तबी सोदध्यङ्ऋषि तुमारागुरु याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै परमसंशयकूंप्राप्तहोताभया ॥
अब ताविचारकूंदिखावैहैं ॥ जोमैं अश्विनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरौंगा तौ इंद्र हमारामस्तकछेदनकरैगा ॥ और

जोमैं अश्विनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकरोंगा तौ हमारावचन मिथ्याहोवैगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोदध्य ङ्ऋषि परमसंशयकूंप्राप्तहोताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे शकटवालापुरुष याप्रकारकाविचारकरिकै संशयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जोमैं बल दोंकेआगेचलोंगा ॥ तौ बलदोंकेपाद हमारेपादोंऊपरिआवैंगे ॥ और जोमैं बलदोंकेपीछेचालोंगा तौ शकटकेचक्र हमारेपादों ऊपरिआवैंगे ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोविवेकीपुरुष संशयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे दध्यङ्ऋषि तुमारागुरु संशयकूंप्राप्तहोताभया ॥ हेअश्विनीकुमारो! याप्रकार संशयकूंप्राप्तहोइकै सोदध्यङ्ऋषि तुमारागुरु याप्रकारकानिश्चय आपणेमनविषेकरताभया ॥ अश्विनीकुमारोंकेउपदेशकरणेविषे जोहमारामृत्युहोवैगा सोश्रेष्ठहै ॥ परंतु हमारावचन मिथ्यामतहोवै ॥ अब मिथ्यावचनजन्यदुःखतें मरणजन्यदुःखविषे अल्पतादिखावैहैं ॥ यालोकविषे जोप्राणी उत्पन्नभयाहै ॥ तिसप्राणीकामरण अवश्यहोवैहै ॥ और मरणकालविषे रोगादिकनिमित्तकरिकै जीवोंकूं दुःखभी अवश्यहोवैहै ॥ यातें मरणजन्यदुःख नसहनकरणेयोग्यनहीं ॥ किंतु संपूर्णप्राणीतामरणजन्यदुःखकूं अनंतवारअनुभवकरैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! अन्यजीवोंकामृत्यु ज्वरादिकरोगोंकरिकैहोवैहै ॥ यातें तिनोंकूं अल्पदुःखहोवैहै ॥ और इंद्रकेवज्रजन्यमृत्युतें परमदुःखहोवैहै ॥ समाधान ॥ इतनैंनिमित्तकरिकै जीवोंकामृत्युहोवैहै ॥ ज्वरादिकव्याधि सर्प चौर सिंह विष अग्नि जल शत्रु अजीर्णअन्न इतनैंनिमित्तोंविषे किसीएकनिमित्तकरिकैही जीवोंकामृत्युहोवैहै ॥ और यहइंद्रकावज्रभी दिव्यअग्निरूपहै ॥ यातें तिननिमित्तोंकेभीतरिहीहै ॥ कोईअपूर्वनिमित्तनहीं ॥ यातें मरणजन्यदुःख नसहनकरणेयोग्यनहीं ॥ किंतु सहनकियाजावैहै ॥ अब मरणजन्यदुःखतें मिथ्यावचनजन्यदुःखविषे अधिकता दिखावैहैं ॥ जोमैं आपणावचन मिथ्याकरोंगा तौ मेरेकूं अनंतकोटिकल्पपर्यंत नरकविषे अनंतप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ जिननरकदुःखोंकेनिवृत्तिका कोईभीउपायनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोकोईपुरुष पापकर्मकूं तथाताकेफलकूं नजाणताहुआ तिसपापकर्मकूंकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं अल्पदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोकोईपुरुष पापकर्मकूं तथाताकेनरकादिकफलकूं ॥ शास्त्रप्रमाणतेंजाणिकरिकैभी पुनःतिसपापकर्मकूंकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं तापापकर्मकरिकै अधिकदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और मैं मिथ्यावचनरूपीपापकर्मकेफलकूंजाणताहूं ॥ यातें

जाणिकरिकै जोमैं मिथ्यावचन करौंगा तौ मेरेकूं अधिकदुःखकी प्राप्तिहोवैगी ॥ किंवा जोपुरुष देहाभिमानकरिकै युक्तहुआ मिथ्यावचनकाउच्चारणकरैहै सोपुरुष जीवताहुआभी मृतकजानणा ॥ काहेतें? यालोकविषे सर्वप्राणी तामिथ्यावादीपुरुषकीनिंदाकरैहैं ॥ और मरिकरिकै सोमिथ्यावादीपुरुष नरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें दोनोंलोकोंविषे मिथ्यावादीपुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याकहनेकरिकै यहअर्थ बोधनकऱ्या ॥ जोपुरुष सकामहै तिसपुरुषकूंतौ स्वर्गकामोयजेत इत्यादिकविधिवाक्योंका तथानानृतंवदेत् इत्यादिकनिषेधवाक्योंका दोनोंका अधिकारहै ॥ और जोनिष्कामविद्वान्‌पुरुषहै तिसकूं यद्यपि स्वर्गकामोयजेत इत्यादिकविधिवाक्योंकाअधिकारनहीं ॥ तथापि नानृतंवदेत् इत्यादिकनिषेधवाक्योंकाअधिकार निष्कामविद्वान्‌पुरुषकूंभीहै ॥ याकारणतेंही सोदध्यङ्ङृषि नानृतंवदेत् यानिषेधवाक्यकाउल्लंघन नहींकरताभया ॥ हेअश्विनीकुमारो! इसप्रकार आपणेमनविषेविचारकरिकै सोदध्यङ्ङृषि तुमारागुरु तुमारेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेअश्विनीकुमारो! बाल्यअवस्थातेंलेकरिकै मैंने कबीभीमिथ्यावचनकाउच्चारणनहींकऱ्या ॥ तौ अबीवृद्धअवस्थाविषे मिथ्यावचनकाउच्चारण मैं किसवासतेकरौंगा? किंतु मिथ्यावचनकरणा हमारेकूं उचितनहीं ॥ तथापि मिथ्यावचनकानिमित्त जोमैंने आपणेमनविषेचिंतनकऱ्याहै ॥ सो तुमारेप्रति मैंकथन करताहूं ॥ हेअश्विनीकुमारो! देवतावोंका तथामनुष्योंका तथाअसुरोंका तथाअन्यभीसर्वप्राणियोंका मैं उपकारकरणेहाराहूं ॥ याप्रकारकाहमारास्वभाव तुमदोनोंजाणतेहो ॥ पुनःकैसामैंहूं? प्रियपदार्थोंकेभोगकरिकै पूर्वलेपुण्यकर्मोंकूं मैं समाप्तकरताहूं ॥ और अप्रियपदार्थोंकेभोगकरिकै पूर्वलेपापकर्मोंकूं मैं समाप्तकरताहूं ॥ और जैसे अज्ञानीजीवोंकूं प्रियवस्तुकेप्राप्तहुए हर्षहोवैहै ॥ तथा अप्रियवस्तुकेप्राप्तहुए शोकहोवैहै ॥ तैसे मेरेकूं प्रियअप्रियवस्तुकेप्राप्तितें हर्षशोकहोवैनहीं ॥ किंतु दोनोंकीप्राप्तिविषे मैं समानरहोहूं ॥ और हेअश्विनीकुमारो! जैसे यालोकविषे भेददर्शीअज्ञानीपुरुषोंका कोईशत्रुहोवैहै कोईमित्रहोवैहै कोईउदासीनहोवैहै कोईबंधुहोवैहै कोईद्वेष्यहोवैहै कोईमध्यस्थहोवैहै ॥ तैसे मुझसमदर्शीका कोईशत्रु मित्र उदासीन बंधु द्वेष्य मध्यस्थ है नहीं ॥ तहां अपकारतेंविनाही स्वभावतेंजोअपकारकरैहै ताकूं शत्रुकहैहैं ॥ और जोपुरुष प्रातंउपकारकीनअपेक्षाकरिकै उपकार

करैहै ताकूं मित्रकहैहैं और जोपुरुष उपेक्षाकरैहै ताकूं उदासीनकहैहैं ॥ और जोपुरुष किंचित्संबंधकरिकैउपकारकरैहै ताकूं बंधु कहैहैं ॥ और जोपुरुष अपकारकीअपेक्षाकरिकै अपकारकरैहै ताकूं द्वेष्यकहैहैं ॥ और जोपुरुष विवादकरतादोनोंपुरुषोंकेहितकीइच्छाकरैहै ताकूं मध्यस्थकहैहैं ॥ और हेअश्विनीकुमारो! याआपणेब्राह्मणशरीरविषे तथासंपूर्णस्थावरजंगमशरीरोंविषे तथाश्वानशरीरविषे तथाहिरण्यगर्भकेशरीरविषे मैं समानरूपकरिकैस्थितहूं ॥ काहेतें? मैं सर्वरूपहूं ॥ अब सर्वरूपताकूंदिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो! मैंही पुरुषहूं ॥ तथामैंही स्त्रीहूं ॥ तथामैंही नपुंसकहूं ॥ तथामैंही पंचमहाभूतहूं ॥ तथामैंही भौतिकप्रपंचहूं ॥ तथामैंही मनुहूं ॥ तथामैंही सूर्यहूं ॥ तथामैंही चंद्रमाहूं ॥ तथामैंही अग्निहूं ॥ तथामैंही संपूर्णज्योतिहूं ॥ तथामैंही भूर् भुवः स्वर् महर् जन तप सत्य यहऊपरिकेसप्तलोकहूं ॥ और मैंही अतल वितल सुतल रसातल तलातल महातल पाताल यहनीचेकेसप्तलोकहूं ॥ और हेअश्विनीकुमारो! जैसे स्वप्नविषे स्वप्नद्रष्टापुरुषतैं स्वप्नकेपदार्थ भिन्ननहींहोवैहैं ॥ तैसे संपूर्णस्थूलसूक्ष्मप्रपंच मेरेतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु मेराहीस्वरूपहै ॥ और ब्रह्मांडविषेस्थित जे अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज्ज येचारिप्रकारकेजीवहैं ॥ तिनोंविषे कोईजीव उत्कृष्टहै औरकोईजीव निकृष्टहै ॥ तिनसंपूर्णोंका मैंआत्माहूं ॥ और सर्वभेदतैंरहितब्रह्मकूं मैं आत्मारूपकरिकैजाणताहूं ॥ याकारणतें मेरेविषे मायाकाभीस्पर्शनहीं ॥ तामायाकेअभावहुए काम क्रोध लोभ इत्यादिकदोषभी मेरेस्वरूपविषेहैंनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो! मैंही परमात्मादेव लीलामात्रकरिकै संपूर्णजगत्कीउत्पत्तिकरोंहूं ॥ और मैंही संपूर्णजगत्कापालनकरोंहूं ॥ और मैंही संपूर्णजगत्कासंहारकरोंहूं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे ऊर्णनाभिजंतु अन्यकारणकीसहायतातैंविनाही आपणेशरीरमात्रतैं तंतुवोंकूं उत्पन्न करैहै ॥ तथा तिनतंतुवोंका पालनकरैहै ॥ तथा तिनतंतुवोंकूं आपणेविषेलयकरैहै ॥ तैसे मैंही परमात्मादेव संपूर्णजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय करोंहूं ॥ परंतु ऊर्णनाभिरूपदृष्टांततैं हमारेविषे इतनीविलक्षणताहै ॥ ऊर्णनाभिजंतु सावयवहुआ तथासंबंधवालाहुआ तंतुवोंका परिणामीउपादानकारणहै ॥ और मैंपरमात्मादेवतौ निरवयवहुआ तथाअसंगहुआ जगत्काविवर्त उपादानकारणहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोऊर्णनाभिजंतुतैं आपविषे विलक्षणताहोवै तौ ऊर्णनाभिजंतुकेदृष्टांतकरिकै आपणेविषे

जगत्कीकारणता सिद्धकरणीसंभवैनहीं समानस्वभाववालाही दृष्टांतहोवैहै ॥ **समाधान** ॥ हेअश्विनीकुमारो! समानस्वभाववालापदार्थ दृष्टांतहोवैहै यहवार्ता यद्यपि सत्यहै ॥ तथापि सर्वअंशकरिकैसमानता दृष्टांतविषेहोवैनहीं ॥ किंतु किसीएकअंशकरिकै दृष्टांतविषे समानताहोवैहै ॥साएकअंशकरिकैसमानता इहांभीहै ॥ काहेतें? जैसे ऊर्णनाभिजंतु तंतुवोंकाउपादानकारण तथानिमित्तकारण दोनोंहै ॥ तैसे मैंपरमात्मादेव जगत्का उपादानकारण तथानिमित्तकारण दोनोंहूं ॥ याप्रकार अभिन्ननिमित्तउपादानकारणतामात्रअंशविषे ऊर्णनाभिकादृष्टांतहै ॥ सर्वअंशविषेनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो! जैसे स्वप्नविषेप्रतीतभयेजे रथादिकपदार्थहैं ते स्वप्नद्रष्टापुरुषतैंभिन्नहोवैंनहीं ॥ तैसे संपूर्णजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय मैंपरमात्मातैं भिन्ननहीं ॥ हेअश्विनीकुमारो! ऐसाब्रह्मनिष्ठमैं आपणेआश्रमविषेस्थितथा ॥ और किसीकालविषे देवराजइंद्र हमारेआश्रमविषे आवताभया ॥ और तिसइंद्रकूं अतिथिजाणिकरिकै यथाशक्ति मैं ताइंद्रकापूजनकरताभया ॥ पुनःमै इंद्रकेप्रतिकहताभया ॥ हेदेवराजइंद्र! तुमारीप्रसन्नताकरणवासते मैं कौनप्रियपदार्थदेवों? हेअश्विनीकुमारो! इसप्रकारकावचन जबीमैं इद्रकेप्रतिकह्या ॥ तबी सोइंद्र हमारेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेऋषि! जोतूं हमारेकूंप्रसन्नकऱ्याचाहताहै तौ दुर्लभब्रह्मविद्या हमारेप्रति उपदेशकरो ॥ हेअश्विनीकुमारो! इसप्रकारकावचन जबी देवराजइंद्रनें कह्या तबी मैं इंद्रकेप्रति मधुकांडकेअर्थयुक्त दुर्लभब्रह्मविद्याकाही उपदेशकरताभया ॥ ब्रह्मविद्यातेंभिन्न किसीअन्यविद्याकाउपदेश नहींकरताभया ॥ काहेतें? जगत्विषे ब्रह्मविद्याहीएकदुर्लभहै ॥ ब्रह्मविद्यातेंभिन्न शब्दस्पर्शादिकविषयतौ सर्वलोकोंविषे सर्वजीवोंकूं सुलभहैं॥ तहां स्वर्गलोकविषे जैसे कर्मीजीवोंकूं विषयप्राप्तहैं ॥ तैसे नरकविषेस्थित जीवोंकूंभी विषयप्राप्तहैं॥ और ब्रह्मलोकविषेस्थित जीवोंकूं जैसे विषयजन्यसुखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे विष्ठाविषेस्थित कृमिआदिकजीवोंकूंभी विषयजन्यसुखकीप्राप्तिहोवै है ॥ यातें शब्दस्पर्शादिकविषय दुर्लभनहीं ॥ किंतु आत्मातैंभिन्न सर्वविषयोंकीप्राप्ति कर्मउपासनाकरिकै जीवोंकूंहोवैहै ॥ और यह ब्रह्मविद्यातौ अत्यंत दुर्लभहै ॥ काहेतें? जोकबी हमारेकूं पूर्व ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिभईहोती तौ अबी जन्ममरणरूपसंसार हमारेकूं नहींप्राप्तहोता ॥ और जन्ममरणरूपसंसार अबी हमारेकूंप्रतीत

होवैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ पूर्वहमारेकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिनहींभई ॥ यातैं ब्रह्मविद्या अत्यंतदुर्लभहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जैसे ब्रह्मविद्यादुर्लभहै तैसे ब्रह्मलोकादिकोंकेप्राप्तिकेसाधन जेकर्मउपासनाहैं तेभी दुर्लभहीहैं ॥ समाधान ॥ कर्मउपासना दुर्लभनहीं ॥ काहेतैं? यालोकविषे बहुतब्राह्मण कर्मउपासनाकूं यथार्थजाणतेहैं तथा तिनकर्मउपासनावोंकाअनुष्ठानभी बहुतब्राह्मणकरैहैं ॥ यातैं कर्मउपासना दुर्लभनहीं ॥ किंतु ब्रह्मविद्याहीदुर्लभहै ॥ गीताविषेभी श्रीकृष्णभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति ब्रह्मविद्याकी दुर्लभताकहीहै॥ श्लोक ॥ मनुष्याणांसहस्रेषु कश्चिद्यततिसिद्धये ॥ यततामपिसिद्धानां कश्चिन्मांवेत्तितत्त्वतः ॥१॥ अर्थयह ॥ सहस्रमनुष्योंविषे कोईएकपुरुषही मेरीप्राप्तिवासते यत्नकरैहै ॥ और तिनयत्नकरणेहारेपुरुषोंविषेभी कोईएकपुरुषही वास्तवस्वरूपतैं मेरेकूं जाणेहै ॥ १ ॥ किंवा लोकविषेभी तिसपदार्थकूं लोक दुर्लभमानैहैं ॥ जिसपदार्थकेसमानजातिवाला कोईदूसरापदार्थनहींहोवैहै ॥ और जिसपदार्थकेसमानजातिवाला कोईदूसरापदार्थहोवैहै ॥ तिसपदार्थकूं लोकविषेभी कोईदुर्लभमानतानहीं ॥ याप्रकारकीदुर्लभता सुखकेसाधनशरीरादिकोंविषे तथाविषयजन्यसुखरूपफलविषे हैनहीं ॥ काहेतैं? शरीरस्वरूपजातिकरिकै सर्वशरीर समानजातिवालेहैं ॥ तथा सुखस्वरूपजातिकरिकै संपूर्णविषयजन्यसुख समानजातिवाले हैं ॥ यातैं संसारसंबंधी संपूर्णपदार्थोंविषे दुर्लभतानहीं ॥ और कार्य प्रपंचसहित अविद्याकूंनाशकरणेहारी जाब्रह्मविद्याहै ताकेसमानजातिवाला कोईदूसरापदार्थहैनहीं ॥ यातैं साब्रह्मविद्याही दुर्लभहै ॥ अब याअर्थकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम सर्वलोकोंविषे शरीरादिकसाधनोंकीसमानता दिखावैहै ॥ हेअश्विनीकुमारो! यास्थूलशरीरतैंविना सुखदुःखकाभोगहोवैनहीं ॥ यातैं ब्रह्मलोकविषेस्थित जीवोंका तथाविष्ठाविषेस्थितजीवोंका स्थूलशरीर समानहीहै ॥ और आत्मज्ञानतैंविना ब्रह्मलोकविषेस्थितजीवोंकूं विषय इंद्रियकेसंबंधतैं जैसेसुखउत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे विष्ठाविषेस्थितजीवोंकूंभी विषयइंद्रियकेसंबंधतैं सुखउत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं सुखभीसर्वत्र समानही है ॥ याकहणेकरिकै स्थूलशरीरकीसर्वत्रसमानतादिखाई ॥ अब सूक्ष्मशरीरकी सर्वत्र समानतादिखावैहै ॥ हेअश्विनीकुमारो! वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ येपंचकर्मइंद्रिय तथा श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण येपंचज्ञानइंद्रिय तथा मन बुद्धि

चित्त अहंकार यह अंतःकरणचतुष्टय तथा प्राण अपान समान व्यान उदान येपंचप्राण ॥ येसंपूर्णवाकादिक सूक्ष्मशरीरकेअवयवहैं ॥ तेवाकादिकअवयवभी ब्रह्मलोकविषेस्थित जंगमजीवोंके तथामनुष्यलोकविषेस्थित जंगमजीवोंके समानहीहैं ॥ और किसीस्थानविषे अभिव्यक्तिकीन्यूनता तथाअधिकताकरिकै तिनोंकीविषमताभी प्रतीतहोवैहै ॥ और हेअश्विनीकुमारो! वाक्तैंआदिलैके प्राणपर्यंत जितनेसूक्ष्मशरीरकेअवयवहैं ते जैसेमनुष्यादिकजंगमशरीरोंविषेहैं ॥ तैसे वृक्षादिकस्थावरशरीरोंविषेभीहैं ॥ परंतु जैसे मनुष्यादिकजंगमोंविषे तिनवाकादिकोंकीअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ तैसे वृक्षादिकस्थावरोंविषे तिनोंकी स्पष्टअभिव्यक्तिहोवैनहीं ॥ यातैं वृक्षादिकस्थावरशरीरभी मनुष्यादिकजंगमशरीरोंकेसमानहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! अभिव्यक्तइंद्रियोंवाले जेमनुष्यादिकजंगमहैं तिनोंकेसाथ अनभिव्यक्तइंद्रियवाले वृक्षादिकस्थावरोंकी समानताकहणी अत्यंतविरुद्धहै ॥ समाधान ॥ आपणेआपणेविषयोंकेग्रहणकरणेवासते जोइंद्रियोंकाव्यापारहै ताव्यापारकरिकैयुक्तइंद्रियोंकूं अभिव्यक्तकहेहैं ॥ और ताव्यापारतैंरहितइंद्रियोंकूं अनभिव्यक्तकहेहैं ॥ सोइंद्रियोंकाअनभिव्यक्तपणा मनुष्यादिकजंगमोंविषेभी कदाचित्रहेहै ॥ जैसे गृहकेभीतरस्थितहुआ कोईपुरुष बाह्यअश्वकेशब्दकूं श्रवणकरिकै ताशब्दरूपीहेतुतैं बाह्यवर्तमानअश्वकामनकरिकैअनुमानकरैहै ॥ तिसकालविषे सर्ववाकादिकइंद्रिय आपणेआपणेव्यापारतैंरहितहोवैहैं॥ इसप्रकार न्यूनइंद्रियवालेजे बधिर तथाअंधादिकहैं तथावृक्षादिकजेहैं तिनोंकूं जोज्ञानउत्पन्नहोवैहै सो इंद्रियोंतैंविना उत्पन्नहोवैनहीं ॥ किंतु इंद्रियोंकरिकैहीउत्पन्नहोवैहै ॥ परंतु तिनबधिरादिक न्यूनइंद्रियवालेपुरुषोंकी जेनेत्रादिकअभिव्यक्तइंद्रियहैं तिनोंतैंभिन्नश्रोत्रादिकइंद्रिय आपणेव्यापारतैंरहितहुए वर्तैहैं ॥ यातैं बधिरअंधादिकोंविषे तथावृक्षादिकोंविषे इंद्रियोंकाअभावनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सर्पविषेकर्णरूपगोलकहैनहीं ॥ यातैं ताकेविषेश्रोत्रइंद्रियका अभावहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो! गोलककेअभावतैं इंद्रियोंकाअभावसंभवैनहीं ॥ काहेतैं? किसीशरीरविषेतौ नेत्रादिकइंद्रिय आपणेआपणेगोलकविषेस्थितहोइके कार्यकूंकरैहैं ॥ और किसीशरीरविषे एकहीगोलकविषे दोइंद्रियस्थितहोइके आपणेआपणेकार्यकूंकरैहैं ॥ जैसे सर्पकेचक्षुगोलकविषे

स्थितहोइके श्रोत्रइंद्रिय तथानेत्रइंद्रिय आपणेआपणेकार्यकूंकरैहैं ॥ यातैंसर्वशरीरोंविषे वाकादिक सूक्ष्मशरीरकेअवयव विद्यमानहैं ॥ इतनेग्रंथकरिकै सुखदुःखकेसाधन वाकादिकइंद्रियोंकी सर्वत्रसमानतादिखाई ॥ अब सुखदुःखरूपफलकी सर्वत्रसमानतादिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो! वाकादिकइंद्रियोंविषे कोईएकइंद्रियहैअभिव्यक्त जिनोंकी अथवा संपूर्णवा कादिकइंद्रियहैंअभिव्यक्तजिनोंकी ऐसेजेमनुष्यादिकजंगमहैं तथावृक्षादिकस्थावरहैं तिनोंकूं जोसुखदुःख उत्पन्नहोवैहै ॥ सो केवल मनविषेही उत्पन्नहोवैहै ॥ मनकूंछोडिकरिकै अन्यकिसीविषे सुखदुःखकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ और सोसुख तथादुःख ए कइंद्रियकेव्यापारतैंउत्पन्नहोवै अथवा अनेकइंद्रियोंकेव्यापारतैं उत्पन्नहोवै याकेविषे कोईनियमनहीं ॥ परंतु तासुखविषे तथादुःखविषे स्वरूपतैंकोईविशेषतानहीं ॥ किंतु सर्वशरीरोंविषे समानहीसुखदुःखहोवैहै ॥ किंवा ॥ इंद्रियोंकरिकैप्राप्तहो णेयोग्य जे शब्दस्पर्शादिकविषयहैं तिनोंविषे जिसविषयविषे पुरुषकारागहोवैहै ॥ तिसविषयकीप्राप्ति जबीतापुरुषकूंहोवैहै ॥ तबी तापुरुषकेमनविषे सुखकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और जिसविषयविषे पुरुषकाद्वेष होवैहै ॥ तिसविषयकीप्राप्ति जबी तापुरुषकूंहो वैहै ॥ तबी तापुरुषकेमनविषे दुःखकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ यातैं आसक्तिरूपराग सुखकाकारणहै ॥ और द्वेष दुःखकाकारणहै ॥ सोरा ग जैसेदेवतावोंकूंआपणेशरीरादिकोंविषेहै ॥ तैसे विष्ठाविषेस्थित कृमिआदिकनीचजीवोंकूंभी आपणेशरीरादिकोंविषेरागहै ॥ इसप्रकार दुःखकीप्राप्तिकरणेहारे अपकारीजीवोंविषेद्वेषभी देवतादिक उत्कृष्टशरीरोंविषे तथाकृमिआदिकनीचशरीरोंविषे समा नहीहैं ॥ यातैं रागद्वेषजन्यसुखदुःखभी सर्वशरीरोंविषेसमानहीहैं ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो! जिसपुरुषका मृगोंकेमारणेविषे रागहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं मृगकेप्राप्तिकरिकै जैसासुखहोवैहै ॥ तथा जिसपुरुषकूं गायन श्रवण करणेविषे रागहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं गायनकीप्राप्तिकरिकै जैसासुखहोवैहै ॥ तैसाहीसुख कामीपुरुषकूं स्त्रीकेआलिंगनतैंहोवैहै ॥ और स्त्रीकेकामनावालेपुरुषकूं स्त्रीकेप्राप्तहुए जैसासुखहोवैहै ॥ तैसाहीसुख पुत्रकीकामनावालेपुरुषकूं पुत्रकीप्राप्तितैंहोवैहै ॥ और पुत्रकीप्राप्तितैं पुत्रार्थीपुरुषोंकूं जैसासुखहोवैहै तैसाहीसुख क्षुधातुरपुरुषकूं अन्नकीप्राप्तितैंहोवैहै ॥ यात्रकारकीरीति

सर्वत्रजानिलेणी ॥ यातैं आसक्तिरूपरागकरिकै सर्वशरीरोंविषे समानही सुखउत्पन्नहोवैहै ॥ यहसिद्धभया ॥ अब द्वेषकरिकै स र्वजीवोंविषे दुःखकीसमानता दिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो! अनिष्टवस्तुकेप्राप्तहुए एकइंद्रियकेव्यापारतैं तथाअनेकइंद्रियोंके व्यापारतैं जोमनविषेदुःख उत्पन्नहोवैहै ॥ सोभी सुखकीन्यांई सर्वत्रसमानहीहै ॥ तात्पर्ययह ॥ विष्ठाविषेस्थितजोकृमिहै तिस कूं मरणकालविषे जैसादुःखहोवैहै तैसाहीदुःख ब्रह्मलोकविषेस्थितजीवोंकूं मरणकालविषेहोवैहै ॥ अब सिंहावलोकनन्या यकरिकै पुनःसुखकी सर्वत्रसमानतादिखावैहैं ॥ जैसे सिंह मृगकूंमारिकै दूरिजाइके पुनःमृगकीतरफदेखेहै ॥ जोकदाचित् दूस रामृग तहांआयाहोवै तौ तिसकूंभीमारौ ॥ याकूंसिंहावलोकन न्यायकहैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो! ब्रह्मलोकविषेस्थितब्रह्माकूं विष यइंद्रियकेसंबंधतैं जैसासुखहोवैहै ॥ तैसाहीसुख विष्ठाविषेस्थितकृमिकूं विषयइंद्रियकेसंबंधतैंहोवैहै ॥ और जैसे ब्रह्मलोकविषे स्थित ब्रह्मकूं सुखकेसाधन स्त्री पुत्र अन्नादिकपदार्थहैं तैसे विष्ठाविषेस्थितकृमिकूंभी सुखकेसाधन स्त्री पुत्र अन्नादिकपदार्थ विद्यमानहैं ॥ और जैसे ब्रह्मलोकविषेस्थितब्रह्मा जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहै तैसे विष्ठाविषेस्थितकृमिभी जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहै॥ और सुखदुःखकेप्राप्तिकरणेहारादेहअभिमान जैसे ब्रह्माकूंहोवैहै तैसे विष्ठाकेकृमिकूंभीहोवैहै ॥ यातैं विषयजन्यसुख तथावि षयजन्यसुखकेसाधन स्त्रीपुत्रादिक विष्ठाकेकृमितैंआदिलैकै ब्रह्मापर्यंत सर्वशरीरोंविषे प्राप्तहैं ॥ यातैं तिनोंविषेदुर्लभता संभवै नहीं ॥ किंतु जन्ममरणकेनिवृत्तकरणेहारी ब्रह्मविद्याही दुर्लभहै ॥ हेअश्विनीकुमारो! इसप्रकार ब्रह्मविद्याकीदुर्लभता मैं आपणेमनविषे विचारकरिकै देवराजइंद्रकेप्रति ताब्रह्मविद्याकाही उपदेशकरताभया ॥ परंतु सोदेवराजइंद्र ब्रह्मविद्याकाअधि कारीथानहीं ॥ यातैं ताब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिकै सोइंद्र उलटाक्रोधवान्होताभया ॥ और हमारेप्रति याप्रकारकी गुरुदक्षिणादेताभ या ॥ हेब्राह्मण! आजदिनतैंलैकै यहब्रह्मविद्या तुमनैं किसीकेप्रति नहींउपदेशकरणी ॥ जोतू स्नेहकेवशहुआ किसीकेप्रति यहब्रह्म विद्या कथनकरैगा तौ तुमारेमस्तककूं वज्रकरिकै मैं छेदनकरौंगा ॥ हेअश्विनीकुमारो! याप्रकारकीआज्ञा जबीहमारेकूं इंद्रनैंकरी तबीमैं ताआज्ञाकूंअंगीकारकरताभया ॥ याकारणतैंही तुमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणेविषे हमारेकूं महान्भ्रै

ताप्राप्तभईहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! जोआपनैं देवराजइंद्रकेप्रति ब्रह्मविद्याकेनहींउपदेशकरणेकावचनकियाहै तौहमारेप्रति आप किसप्रकार ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरौगे ॥ तात्पर्ययह ॥ जोहमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरौगे तौ इंद्रकेप्रति जोआपनैं वचनदियाहै सो मिथ्याहोवैगा ॥ और जो तावचनकेसत्यकरणेवासते हमारेप्रति नहींउपदेशकरौगे तौ पूर्वहमारेप्रति जोआपनैं वचनदियाहै सो मिथ्याहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो ! हमनैं पूर्व तुमारेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेकावचनदियाहै और अबी इंद्रकेप्रति ब्रह्मविद्याके नहींउपदेशकरणेकावचनदियाहै ॥ परंतु याकेविषेइतनीविशेषताहै ॥ किसीकेप्रति मैं ब्रह्मविद्याकाउपदेशनहींकरौंगा ॥ याप्रकारका नियमकरिकैवचन हमनैं इंद्रकेप्रति नहींदिया ॥ किंतु जोहमनैं किसीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकर्‍या तौ तुमनैं हमारामस्तक छेदनकरणा ॥ याप्रकारकावचन हमनैं इंद्रकेप्रति कह्याहै ॥ यातैं तुमारेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेविषे हमारेकूं कोईप्रतिबंधकनहीं ॥ आपणेवचनकेसत्यकरणेवासते मैं तुमारेप्रति अवश्यब्रह्मविद्याकाउपदेशकरौंगा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! इंद्रकेवज्रकरिकै मृत्युहोणेकाभयही हमारेउपदेशविषे प्रतिबंधकहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो ! मरणेतैं हमारेकूंभयनहीं ॥ काहेतैं? यासंसारविषे जोजीव उत्पन्नभयाहै ॥ तिसका किसीनकिसीनिमित्ततैं अवश्यमृत्युहोवैगा ॥ तिनमृत्युकेनिमित्तोंविषे जोदेवराजइंद्र हमारेमृत्युकाकारणहोवै तौ अत्यंतदुर्लभहै ॥ तात्पर्ययह ॥ दध्यङ्ऋषि आपणेवचनकेसत्यकरणेवासते देवराजइंद्रतैंभी भयकूंनहींप्राप्तहोताभया ॥ याप्रकारकी हमारीकीर्ति सर्वलोक करैंगे ॥ और हेअश्विनीकुमारो! संपूर्णधनकानाशहोइजाणाभी श्रेष्ठहै ॥ और संपूर्णस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकापरित्यागहोइजाणाभी श्रेष्ठहै ॥ तथा आपणामृत्युहोइजाणभी श्रेष्ठहै ॥ परंतु मिथ्यावचनकाभाषणकरणा बुद्धिमान्पुरुषोंकूं श्रेष्ठनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो ! आपणेमरणकूंतुच्छजाणिकरिकै तुमारेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेविषेभी हमारेकूं मिथ्यावचनकेभाषणकी महानाचिंताहोवैहै ॥ काहेतैं ? जबी मैं तुमारेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकाआरंभकरौंगा ॥ तबी उसीकालविषे देवराजइंद्र हमारामस्तकछेदनकरैगा ॥ मस्तकछेदनहुए किसप्रकारमैं तुमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरौंगा? यातैं पुनःहमारावचन मिथ्याहोवैगा ॥ और वचनकेमिथ्याहोणेकरिकै मैं

नरकविषेप्राप्तहोवैंगा ॥ हेअश्विनीकुमारो! याप्रकारकीचिंता हमारेमनविषेहै ॥ और तुमदोनों बुद्धिमानहो ॥ यातें जोउपाय ह
मारेकूंकरणेयोग्यहोवै ॥ सोउपाय तुम हमारेप्रति कथनकरो ॥ हेअश्विनीकुमारो! इसप्रकार जबी दध्यङ्ऋषि तुमारेगुरुनैं तुमारे
प्रतिकह्या ॥ तबी तुमदोनों आपणेअर्थकेलोभकरिकैयुक्तहुए दध्यङ्ऋषिगुरुकेप्रति याप्रकारकावचनकहतेभये ॥ हेगुरो! दुष्टइंद्रतें
आप भयकूंमतप्राप्तहोवो ॥ काहेतें? अंगोंकेसंधानकरणेहारी जोमृतसंजीवनीविद्याहै तिसकूं हम जाणतेहैं ॥ यातें इंद्रकरिकैच
लायाहुआभीवज्र ताहमारीविद्याकेप्रभावतें निष्फलहोवैगा ॥ और हेगुरो! इंद्रकेवज्रकूंनिष्फलकरणा जोतुमारेकूंइष्टनहींहोवै ॥
तौ हमदोनों दूसराउपायकरैंगे ॥ ताउपायकूं आप श्रवणकरो ॥ यहजोअश्व सन्मुखदीखैहै ॥ ताकेमस्तककूं हमछेदनकरैंगे ॥ त
था आपकेमस्तककूं छेदनकरैंगे ॥ पश्चात् अश्वकामस्तक आपकीग्रीवाविषेस्थापनकरैंगे ॥ और आपकामस्तक अश्वकीग्रीवावि
षे स्थापनकरैंगे ॥ तिसतैंअनंतर अश्वकेमस्तककरिकै आपनैं हमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणा ॥ जबी देवराजइंद्र वज्रकरि
कै आपकेमस्तककाछेदनकरैगा ॥ तबी हम पूर्वकीन्यांई आपकामस्तक आपकीग्रीवाविषेस्थापनकरैंगे ॥ और अश्वकामस्तक अ
श्वकीग्रीवाविषे स्थापनकरैंगे ॥ हेगुरो! याउपायकरणेतें इतनेफलहोवैहैं ॥ एकतौ अश्वका तथाआपका मरणनहींहोवैहै ॥ और दू
सरा हमदोनोंकूं गुरुहिंसानहींहोवैहै ॥ और तीसरा आपका अपमृत्युनहींहोवैहै ॥ इंद्रकेवज्रकरिकै जोमृत्युहोवैहै ताकूं शास्त्र
विषे अपमृत्युकहेहैं ॥ और चतुर्थ आपका हमारेसैं मिथ्यावचननहींहोवैगा ॥ इतनेफल याउपायविषेहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो!
आपणेअर्थकेलोभकरिकैयुक्त तुमदोनोंनें जबीयाप्रकारकावचन दध्यङ्ऋषिगुरुकेप्रतिकह्या ॥ तबी सोसमदर्शी दध्यङ्ऋषि तु
मारेवचनकूंअंगीकारकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर जैसे दयातैंरहितकोईपुरुष पशुकामस्तकछेदनकरैहै ॥ तैसे दयातैंरहितहुए तुम
दोनों शस्त्रकरिकै आपणेदध्यङ्ऋषिगुरुकेमस्तककूं छेदनकरतेभये ॥ तथा अश्वकेमस्तककूंभी छेदनकरतेभये ॥ तिसतैंअनंतर
दध्यङ्ऋषिकामस्तक अश्वकीग्रीवाविषे स्थापनकरतेभये ॥ और अश्वकामस्तक दध्यङ्ऋषिकेग्रीवाविषे स्थापनकरतेभये ॥
तिसतैंअनंतर हयग्रीवसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ सोदध्यङ्ऋषि तुमारागुरु प्रथम तुमारेप्रति चित्तशुद्धिकेसाधन कर्मउपासना उपदेश

करताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोदध्यङ्ऋषि याप्रकारकाउपदेश तुमारेप्रति करताभया ॥ हेअश्विनीकुमारो! जबपर्यंत चित्त शुद्धनहींभया तबपर्यंत कर्मउपासना करणेयोग्यहै ॥ चित्तकेशुद्धहुएतैंअनंतर कर्मउपासनाकरणेका कोईप्रयोजननहीं ॥ या तैं चित्तकीशुद्धिहुएतैंअनंतर कर्मउपासनाका परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ किंतु केवलवेदांतशास्त्रकाविचारही निरंतरकरणेयोग्य है ॥ और तिसतैंअनंतर सोदध्यङ्ऋषि तुमारागुरु जाब्रह्मविद्या इंद्रकेप्रतिउपदेशकरीथी ॥ सोईहीब्रह्मविद्याका तुमारेप्रति उपदेशकरताभया ॥ और सोदध्यङ्ऋषि तुमारागुरु पुनःतुमारेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेअश्विनीकुमारो! यह जोब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति उपदेशकरीहै ॥ साब्रह्मविद्या आजादिनतैंलैके आगेआगे निःशंकहोइके कोईऋषि आपणे शिष्योंप्रति नहींकहैगा ॥ किंतु शंकायुक्तहुए कौषीतकिआदिकऋषि आपणेशिष्योंकेप्रति यहब्रह्मविद्या उपदेशकरैंगे ॥ काहेतें? यहदेवराजइंद्र हस्तविषेवज्रलैके हमारेमारणेवासते आकाशविषेस्थितहै ॥ और सोइंद्र याप्रकारकासंकल्प आपणे मनविषेकरिरह्याहै ॥ जोयहब्राह्मण हमारीआज्ञाकाउल्लंघनकरिकै अश्विनीकुमारोंकेप्रति समग्रब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैगा ॥ तौ वज्रकरिकै याब्राह्मणकामस्तक मैं छेदनकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्पकरिकै सोदेवराजइंद्र आपणेवचनकेसत्यकरणेवासते आकाशविषेस्थितहै ॥ हेअश्विनीकुमारो! जबीमैं तुमारेप्रति समग्रब्रह्मविद्याकाउपदेश करिरहौंगा तबी सोदेवराजइंद्र हमारेमस्तककूं अवश्यछेदनकरैगा ॥ और हमारेमस्तककूंछेदनहुआदेखिकरिकै संपूर्णब्राह्मण भयकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ और इंद्रतैंभयकूंप्राप्तहुएतेब्राह्मण आपणेप्रियपुत्रोंकेताईंभी संपूर्णब्रह्मविद्याकाउपदेशनहींकरैंगे ॥ किंतु कौषीतकिआदिककोईकऋषितौ आपणेशिष्योंकेप्रति अर्द्धब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैंगे ॥ और कोईकऋषितौ तपादिकोंकरिकै परमात्मादेवकूंप्रसन्नकरैंगे ॥ तापरमात्मादेवकेअनुग्रहकरिकैयुक्तहुए तेऋषि किसीएकशिष्यकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैंगे ॥ परंतु तिनोंकूंभी देवराजइंद्रतैं यत्किंचित्भय अवश्यहोवैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ सूर्यकेसमानहै तेजजिसका ऐसाजो सूर्यभगवान्काशिष्य याज्ञवल्क्यमुनिहै ॥ तिसकूंछोडिकरिकै अन्यसंपूर्णऋषि इंद्रतैं भयकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ एकयाज्ञवल्क्यमुनि इंद्रतैं भयकूंनमानिकरिकै आपणेशिष्योंकेप्रति संपूर्णब्रह्मविद्याका

उपदेशकरैगा ॥ हेअश्विनीकुमारो! इसप्रकार जबी दध्यङ्ङृषिनैं तुमारेप्रति संपूर्णब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्या तबी सोदेवराजइं द्र वज्रकरिकै तुमारेगुरुकामस्तक छेदनकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर तामस्तककूं भूमिविषेगिऱ्याहुआदेखिकै तुमदोनों तामस्तक कूंउठाइकै पुनःअश्वकीग्रीवाविषे स्थापनकरतेभये ॥ और अश्वकीग्रीवाविषेस्थित जोदध्यङ्ङृषिकामस्तकथा तिसकूं उतारिकै पु नःदध्यङ्ङृषिकेग्रीवाविषे स्थापनकरतेभये ॥ और हेअश्विनीकुमारो! दध्यङ्ङृषिनैं जोब्रह्मविद्या तुमारेप्रतिउपदेशकरीथी ॥ और जिसब्रह्मविद्याकेलोभकरिकै गुरुकेमस्तककाछेदनरूप अनुचितकर्म तुमोंनैं कऱ्याथा ॥ साब्रह्मविद्या पुनःतुमारेस्मरणकराव णेवासते संक्षेपतैं मैं कथनकरताहूं तुम श्रवणकरो ॥ हेअश्विनीकुमारो! जैसे लोकविषे महाराजा आपणेनिवासवासते प्रथम महा नपुरीरचैहै ॥ तिसतैंअनंतर अल्पपुरियोंकूंरचैहै ॥ तैसे जगत्काकारण परमात्मादेव प्रथम समष्टिशरीररूपी महान्पुरीकूं उत्पन्न करताभया ॥ तिसतैंअनंतर व्यष्टिशरीररूपी अनंतपुरियोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ तिनोंविषेभी कोईकशरीर चारिपादोंवाले उत्पन्न करताभया ॥ जैसे गौअश्वादिकहैं ॥ और कितनेकशरीर दोपादोंवाले उत्पन्नकरताभया ॥ तैसे मनुष्यादिकहैं ॥ और कितनेकशरी र तीनपादोंवाले उत्पन्नकरताभया ॥ और कितनेकशरीर एकपादवाले उत्पन्नकरताभया ॥ और कितनेकशरीर पादोंतैंरहितउत्पन्न करताभया ॥ जैसे सर्पादिकहैं इसतैंआदिलेकेअनंतप्रकारकेशरीरोंकूं सोपरमात्मादेव रचताभया॥ और जैसे पक्षी आपणेशरीरकासं कोचकरिकै आपणेगृहविषेप्रवेशकरैहै॥तैसे यहविभूपरमात्मादेवभी परिछिन्नताअभिमानरूप अत्यंतसूक्ष्मस्वरूपकूंधारणकरिकैति नशरीररूपीपुरियोंविषे प्रवेशकरताभया॥ और हेअश्विनीकुमारो! यह आनंदस्वरूपआत्मादेव संपूर्णशरीररूपीपुरियोंविषेनिवास करैहै॥ याकारणतैं याआत्मादेवकूं शास्त्रविषे पुरुषकहेहैं॥अथवा यहपरमात्मादेव आपणे अस्तिभातिप्रियरूपकरिकै संपूर्णशरीररूप पुरियोंकूं पूर्णकरैहै ॥ याकारणतैं आत्माकूं श्रुति पुरुषकहेहै ॥ और हेअश्विनीकुमारो! जैसेसंपूर्णघटमठादिकपदार्थ अंतरबाहरि आ काशकरिकैव्याप्तहैं॥तैसे यहसंपूर्णप्रपंच अंतरबाहरि परमात्मापुरुषकरिकैव्याप्तहै॥और जैसे तंतुवोंकरिकैव्याप्तहुआ तथाओतप्रोत हुआ पट तंतुवोंविषेहीस्थितहोवैहै॥तैसे यहसंपूर्णजगत् आनंदस्वरूपआत्माविषेही स्थितहोवैहै॥ और हेअश्विनीकुमारो! जोआनंद

स्वरूपआत्मा पूर्वे सर्वशरीरोंविषे प्रवेशकरताभया ॥ सोईही आनंदस्वरूपआत्मा इदानींकालविषे तुमारेहृदयदेशविषे तथाहमारे हृदयदेशविषे तथाअन्यसर्वप्राणियोंके हृदयदेशविषे विशेषरूपकरिकै प्रतीतहोवैहै॥ दृष्टांत॥ जैसे जोजल पूर्वघटविषेप्रवेशकरैहै सोईहीजल मध्यकालविषे घटविषेस्थितहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ और हेअश्विनीकुमारो! जैसे जल स्वभावतैं यद्यपि एकरूपमालहै ॥ तथापि स्थूलघटविषे स्थितहुआ सोजल स्थूलकह्याजावैहै ॥ और सूक्ष्मघटविषेस्थितहुआ सोजल सूक्ष्मकह्याजावैहै ॥ और अग्निकरिकैतप्तघटविषेस्थितहुआ सोजल तप्तकह्याजावैहै ॥ और शीतलघटविषेस्थितहुआ सोजल शीतलकह्याजावैहै ॥ और धूलीकरिकैआच्छादितघटविषेस्थितहुआ सोजल मैलाकह्याजावैहै ॥ और सुगंधघटविषेस्थितहुआ सोजल सुगंधकह्याजावैहै ॥ और दुर्गंधघटविषेस्थितहुआ सोजल दुर्गंधकह्याजावैहै ॥ और वायुकरिकैचलायमानघटविषेस्थितहुआ सोजल चलायमानकह्याजावैहै ॥ और निश्चलघटविषेस्थितहुआ सोजल निश्चलकह्याजावैहै ॥ और सूर्यकरिकैप्रकाशितघटविषेस्थितहुआ सोजल प्रकाशवान् कह्याजावैहै ॥ और अंधकारकरिकैआवृतघटविषेस्थितहुआ सोजल अंधकाररूपकह्याजावैहै ॥ इसप्रकार जिसजिसउपाधिकेसाथ जलकासंबंधहोवैहै ॥ तिसतिसउपाधिकेस्वरूपकूं जल प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माभी स्थूलशरीरकेतादात्म्यसंबंधतैं आपणेकूंस्थूलमानैहै ॥ और सूक्ष्मशरीरकेतादात्म्यसंबंधतैं यहआत्मा आपणेकूंसूक्ष्ममानैहै ॥ और जडशरीरकेतादात्म्यसंबंधतैं यहआत्मादेव आपणेकूंजडमानैहै ॥ और बुद्धिमान्शरीरकेतादात्म्यसंबंधतैं यहआत्मादेव आपणेकूंबुद्धिमान्मानैहै ॥ और धनीशरीरकेतादात्म्यसंबंधतैं यहपरमात्मादेवआपणेकूंधनीमानैहै ॥ और निर्धनशरीरकेतादात्म्यसंबंधतैं यहपरमात्मादेव आपणेकूंनिर्धनमानैहै ॥ और देवतादिकउत्कृष्टशरीरकेतादात्म्यसंबंधतैं यहपरमात्मादेव आपणेकूंउत्कृष्टमानैहै ॥ और नीचशरीरकेतादात्म्यसंबंधतैं यहपरमात्मादेव आपणेकूंनीचमानैहै ॥ और सुखीदुःखीशरीरकेतादात्म्यसंबंधतैं यहपरमात्मादेव आपणेकूंसुखीदुःखीमानैहै ॥ इसतैंआदिलैकेअनंतप्रकारके शरीरादिकउपाधियोंकेधर्म अज्ञानकरिकैमोहितहुआ यहआत्मा आपणेविषेमानैहै ॥ अन्यदृष्टांत ॥ जैसे विषयासक्तकामीपुरुष कामिनीकेधर्मोंकूंआपणेविषेमानैहै ॥तात्पर्ययह॥ कामिनीकूंचिंतातुरदेखिकरिकैसो

कामीपुरुष आपभीचिंतातुरहोवैहै ॥ और कामिनीकूंदुःखीदेखिकरिकै सोकामीपुरुष आपभीदुःखीहोवैहै ॥ और कामिनीकूंप्रसन्न देखिकरिकै सोकामीपुरुष आपभी प्रसन्नहोवैहै॥ तैसे यह आनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि बुद्धिआदिकोंकेसुखदुःखादिकधर्मोंतेंरहित है॥ तथापि अज्ञानकृत तदात्म्यसंबंधतें तिनबुद्धिआदिकोंके सुखदुःखादिकधर्मोंकूं आपणेविषेमानैहै ॥ और हेअश्विनीकुमारो! यहहीपरमात्मादेव सृष्टिकेआदिकालविषे आकाशादिकपंचभूतोंकूं तथातिनभूतोंकेकार्यशरीरोंकूं तथाचशब्दप्रपंचकूं उत्पन्नकरिकै तिनसर्वपदार्थोंकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइके तिनसर्वपदार्थोंकेभिन्नभिन्न नामोंकूंकरताभया ॥ और यहपरमात्मादेव वाका दिकइंद्रियोंकेसाथ तथावाकादिकोंकाप्रेरकजाबुद्धिहै ताकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइके वचनउच्चारणादिक नानाप्रकारकेव्य वहारोंकूंकरताहुआ वाकादिरूपहोवैहै ॥ तथा तूं मैं अन्यप्राणी इत्यादिकअनंतरूपोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेअश्विनीकुमारो! वा स्तवतेंभेदरहित असंगआत्मा जोनानाप्रकारकेभेदोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ सोआपणे इंद्रस्वभावकेजनावणेवासते करैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ यहपरमात्मादेव संपूर्णजगत्कूंउत्पन्नकरिकै तासंपूर्णजगत्कूं आत्मारूपकरिकेकेदेखताभया ॥ याकारणतें सोपरमात्मादेव इंद्रसं ज्ञाकूंप्राप्तहोताभया ॥ साइंद्रसंज्ञा जगत्कीउत्पत्तितेंविना संभवैनहीं यातें वास्तवतेंभेदरहितहुआभी यहपरमात्मादेव नानाप्र कारकेभेदोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ अब शरीरादिकउपाधियोंविषे मिथ्यात्वबोधनकरणेवासते प्रथम तिनोंविषेमायाकीकार्यतादिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो! जैसे लोकविषे मायावीऐंद्रजालिकपुरुष आपणीमायाकरिकै नानाप्रकारके हस्तिव्याघ्रादिकरूपोंकूं धार णकरैहै ॥ तैसे एकहीपरमात्मादेव आपणीमायाकरिकै नानाप्रकारकेरूपोंकूं धारणकरैहै ॥ परंतु तिनमायाकृतविशेषरूपोंकरि के परमात्माका अस्तिभातिप्रियरूप वास्तवस्वभाव निवृत्तहोवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं युक्तियोंकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हे अश्विनीकुमारो! यालोकविषे बुद्धिमान् जेसुवर्णकारादिकपुरुषहैं तेभी अन्यस्वभाववालेसुवर्णादिकपदार्थोंका अन्यस्व भावकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ किंतु तिसीसुवर्णादिकोंविषे कुंडलकटकादिक विशेषरूपोंकूंकरैहैं ॥ यातें वस्तुकेस्वभावकूं अन्यथाकरणेविषे कोईभीप्राणी समर्थनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे एकशत शिल्पिपुरुष इकट्ठेहोइकेभी तंतुरूपसूत्रकूं सुवर्ण

रूपकरिसकैंनहीं ॥ तथा एकसहस्त्र कुलाल इकठेहोइकैभी काष्ठकूं मृत्तिकाकरिसकैंनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोउपायकरिकै वस्तु अन्यभावकूंनहींप्राप्तहोताहोवै तौ धातुमारणेकेशास्त्रविषे ताम्रादिकधातुवोंकूं सुवर्णकरणेकाप्रकार लिख्याहै सो असंग तहोवैगा ॥ समाधान ॥ धातुमारणेकेशास्त्रकीरीतिसैं जेपुरुष ताम्रादिकधातुवोंकूंसुवर्णकरैं हैं ॥ तेपुरुषभी असत्यसुवर्णकीउत्पत्ति करैंनहीं ॥ काहेतें? जोउपायकरिकैअसत्यवस्तुकीभी उत्पत्तिहोतीहोवै तौ असत्यशशशृंगकी तथावंध्यापुत्रकीभी उपायकरिकै उत्पत्तिहोणीचाहिये और असत्यनरशृंगादिकोंकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं औषधिआदिकउपायोंकरिकै असत्यसुवर्णकीउत्पत्ति होवैनहीं ॥ किंतु औषधिकेबलतैं ताम्रादिकधातुवोंके पूर्वरक्तरूपकाअभिभवकरिकै ताकेविषे पीतरूपकीउत्पत्तिकरैं हैं ॥ तथापि पू र्वताम्रधातुतैं सोसुवर्णभिन्ननहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोपूर्वताम्रधातुतैं सुवर्ण भिन्ननहींहोवै तौ यहसुवर्ण पूर्वताम्रधातुतैं भि न्नहै ॥ याप्रकारकीभेदप्रतीति तिनपुरुषोंकूं नहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ तहां ताम्रधातुकातथासुवर्णका यद्यपि परस्परभेदन हीं ॥ तथापि रक्तरूपका तथापीतरूपका परस्परभेदहै ॥ ताभेदकूंअंगीकारकरिकैही तिनपुरुषोंकूं याप्रकारकीभ्रांतिहोवैहै ॥ यह सुवर्ण पूर्वताम्रतैंभिन्नहै ॥ यातैं हेअश्विनीकुमारो! मृत्तिकासुवर्णादिकोंका जैसापूर्वस्वभावहै तैसाही सर्वकालविषेरहैहै ॥ कि सीकालविषे तिनोंकास्वभाव अन्यथाहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोवस्तुकास्वभाव अन्यथानहींहोताहोवै तौ कुलाल दंडचक्रादिकसामग्री मृत्तिकातैंघटकीउत्पत्तिकरैहै तेकुलालादिककारण व्यर्थहोवैंगे ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो! कुलाला दिकोंकरिकै मृत्तिका अन्यथाभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु कुलालादिककारणोंकरिकै सामृत्तिका घटशरावादिकविशेषरूपोंकूंप्राप्त होवैहै ॥ यातैं कुलालादिककारण व्यर्थनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! तेघटशरावादिकविशेषरूपही मृत्तिकाकास्वभाव काहेतैंनहींहो वै? ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो! तेघटशरावादिकविशेषरूप मृत्तिकाकास्वभावनहीं ॥ काहेतें? जोघटशरावादिकविशेषरूप मृत्तिकाका स्वभावहीहोवै तौ घटादिकविशेषरूपोंकेनाशहुएतैंअनंतर मृत्तिकाकीप्रतीति नहींहोणीचाहिये ॥ और घटशरा वादिकोंतैंविनाभी मृत्तिकादेखीजातीहै ॥ यातैं घटशरावादिकविशेषरूप मृत्तिकाकास्वभावनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसवस्तुका जो

स्वभावहोवैंहै तास्वभावकेनिवृत्तहुए तावस्तुकीभीनिवृत्तिहोवैंहै ॥ जैसे तेजकास्वभाव जोप्रकाशहै ताप्रकाशकेनिवृत्तहुए सोतेजभी निवृत्तहोवैंहै ॥ तैसे घटशरावादिकविशेषरूप जोमृत्तिकाकास्वभावहोवै तौ घटादिकोंकेनाशहुए मृत्तिकाकाभीनाशहोणाचाहिये ॥ और घटादिकोंकेनाशहुएभी मृत्तिकाकानाशहोवैनहीं ॥ यातें घटशरावादिकविशेषरूप मृत्तिकाकास्वभावनहीं ॥ किंवा लोकविषेभी विशेषरूपकेनष्टहुए वस्तुकानाशहोवैनहीं ॥ जैसे मूर्तत्वस्वभाववालीपृथिवी पूर्वपिंडरूपविशेषभावकूं परित्यागकरिकै घटभावकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ तथापि आपणाजोमूर्तत्वस्वभावहै ताकूं कदाचित्भी पृथिवी परित्यागकरैनहीं ॥ याकहणेतें यहसिद्धभया ॥ मृत्तिका सुवर्णादिक वस्तुवोंकेविद्यमानहुएभी घटशरावादिकविशेषरूप तथाकुंडलकंकणादिकविशेषरूप प्रतीतहोतेनहीं ॥ यातें तेघटादिकविशेषरूप मृत्तिकादिकवस्तुवोंविषे आगमापायीधर्महै ॥ और जोपदार्थ आगमापायीहोवैंहै सोपदार्थ तावस्तुकास्वभाव नहींहोवैंहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मायावीऐंद्रजालिकपुरुष आपणीमायाकेप्रभावतें कबी सिंहरूपकूंधारणकरैहै ॥ और कबी हस्तिरूपकूंधारणकरैहै ॥ सोसिंहपणा तथाहस्तिपणा मायावीपुरुषविषे सर्वदाहोवैनहीं ॥ किंतुकिसीनिमित्तपाइके कबीकबीहोवैंहै ॥ यातें आगमापायीहोणेतें सोसिंहपणा तथाहस्तिपणा मायावीपुरुषकास्वभावनहीं ॥ तैसे घटशरावादिकविशेषरूप मृत्तिकादिकवस्तुकास्वभावनहीं ॥ अब तिनविशेषरूपोंविषे सत्यअसत्यतें विलक्षणतादिखावैंहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ! तेविशेषरूप जोवस्तुकीन्यांई सत्यरूपहोवै तौ वस्तुकेस्वभावकीन्यांई तिनविशेषरूपोंकाबाध नहींहोणाचाहिये ॥ और वस्तुकेविद्यमानहुएभी तिनविशेषरूपोंकाबाध दीखताहै ॥ यातें तेविशेषरूप सत्यनहीं किंतु सत्यतें विलक्षणहैं ॥ और तेविशेषरूप असत्यभीनहीं ॥ काहेतें ? वंध्यापुत्र तथानरशृंगादिक जेअसत्यपदार्थ ते नेत्रादिकइंद्रियोंकेसंबंधकरिकै किसीभीजीवकूं प्रत्यक्षहोवैंनहीं ॥ और यहविशेषरूपतौ सर्वप्राणियोंकूं नेत्रादिकइंद्रियोंकेसंबंधकरिकै प्रत्यक्षहोवैंहैं ॥ यातें तेविशेषरूप असत्यतेंभी विलक्षणहै ॥ और जोपदार्थ सत्यअसत्यतेंविलक्षणहोवैंहै सोपदार्थ शुक्तिरजतकीन्यांई मिथ्याहीहोवैंहै ॥ और जोपदार्थ मिथ्याहोवैंहै सोपदार्थ मायाकाहीकार्यहोवैंहै ॥ यातें संपूर्णविशेषरूपोंका मायाहीकारणहै ॥ अब तामायाकूंनिरूपणकरैंहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ! वास्तवतें

अत्यंतअसत् जोविशेषरूपहैं ॥ तिनोंका नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै प्रत्यक्षसंभवैनहीं ॥ और तिनविशेषरूपोंकाप्रत्यक्ष सर्वजनोंकूं होवैहै ॥ यातैं जिसकेप्रभावतैं तिनअसत्यविशेषरूपोंका प्रत्यक्षहोवैहै तिसकानाम मायाहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे दिनविषेभोजनकूं नकरणेहाराजोस्थूलपुरुषहै तिसकीस्थूलता रात्रिभोजनतैंविना संभवैनहीं ॥ यातैं तापुरुषकीस्थूलता तापुरुषकेरात्रिभोजनकी कल्पनाकरावैहै ॥ तैसे अत्यंतअसत्य विशेषरूपोंकीजोप्रतीतिहै सा मायातैंविनासंभवैनहीं ॥ यातैं साविशेषरूपोंकीप्रतीतिही मायाकीकल्पनाकरावैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! अत्यंतअसत्य जे वंध्यापुत्र नरशृंगादिकहैं ॥ तिनोंकाप्रत्यक्षज्ञान किसीजीवकूंहोवैनहीं॥ और अत्यंतअसत्य विशेषरूपोंकाप्रत्यक्षज्ञान सर्वजीवोंकूंहोवैहै याकेविषे कौनकारणहै? ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो! असत्य नरशृंग वंध्यापुत्रका तथाघटादिकविशेषरूपोंका यद्यपि वास्तवतैंभेदनहीं ॥ तथापि दुर्घटअर्थकूंसिद्धकरणेहारी जामायाहै तामायाकरिकै तिनोंकाभेदकल्पनाकरीतीहै॥ और जैसे विशेषरूप तथानरशृंगादिकोंतैंतिनोंकाभेद यहदोनों मायाकरिकैकल्पनाकरीतेहैं ॥ तैसे मायाभी मायाकरिकैही कल्पाकरीतीहै ॥ काहेतैं? जैसे घटादिकविशेषरूप तथानरशृंगतैंतिनोंकाभेद यहदोनों असत्यहैं तैसेमायाभी असत्यहीहै ॥ असत्यवस्तुकीसिद्धि मायातैंविनाहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे गुहाविषेस्थित व्याघ्रका प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै ज्ञानहोवैहै तैसे मायाका प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैज्ञानहोवैनहीं ॥ काहेतैं? जिसपदार्थकरिकै जिसपदार्थकीनिवृत्तिहोवैहै तिसपदार्थकरिकै तिसपदार्थकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ जैसे प्रकाशकरिकैअंधकारकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ यातैं प्रकाशकरिकै अंधकारकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ तैसे प्रमाणजन्यज्ञानकरिकै अज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ यातैं प्रमाणकरिकै अज्ञानरूपमायाकीसिद्धि संभवैनहीं ॥ किंतु मायाकरिकैही मायाकीसिद्धिहोवैहै ॥ अब अज्ञानीजीवोंकीप्रतीतितैं मायाकीसिद्धिकरैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो! असत्यजेनरशृंगवंध्यापुत्रहैं तिनोंतैं शुक्तिरजतादिकविशेषरूपोंकाभेद किसहेतुतैंहै? ॥ याप्रकारकाप्रश्न जबीकोईपुरुष अज्ञानीजीवोंकेप्रति करैहै ॥ तबी तेअज्ञानीपुरुष हम नहींजाणते याप्रकारकाउत्तरदेवैहैं ॥ यातैं हमनहींजानते यहजोअज्ञानीजीवोंकीप्रतीतिहै ॥ साप्रतीतिही दुर्घटमायाकासाधकहै ॥ अब मायाकेदुर्घटताबोधनकरणेवासते चारिप्रकारका मायाशब्दकाअर्थ निरूपणकरै

है ॥ तहां जोतीनकालविषेनहींहोवै ताकूं बुद्धिमान्पुरुष मायाकहेहैं ॥ १ ॥ अथवा कार्यकारणरूपजगत्केभेदका जोकारणहोवै ताकूं शास्त्रकेवेत्तापुरुष मायाकहेहैं ॥ २ ॥ अथवा हमजीवोंकेआत्मस्वरूपज्ञानकूं जोआच्छादनकरैहै ताकूं विद्वान्पुरुष माया कहेहैं ॥ ३ ॥ अथवा ॥ यथार्थज्ञानकरिकै जोनिवृत्तहोवैहै ताकूं विद्वान्पुरुष मायाकहेहैं ॥ ४ ॥ अब याहीमायाशब्दकेअर्थों कूंस्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो! यहआनंदस्वरूपआत्मा वास्तवतैंअसंगहै ॥ और स्वप्रकाशहै ॥ तथा सजातीय भेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनभेदोंतैंरहितहै ॥ ऐसे असंग अद्वितीयआत्माविषे मायाकासंभवहोवैनहीं ॥ और हेअश्वि नीकुमारो! ऐसेअसंगअद्वितीयआत्माविषे वास्तवतैं जगत्कीकारणतासंभवैनहीं ॥ और श्रुतिविषे आत्माकूं जगत्काकारण त थासर्वजगत्रूप कह्याहै॥याप्रकारकाविचारकरिकै वेदवेत्तापुरुष असंगआत्माविषे जगत्कीकारणताकेसिद्धिवासते ताअसंगआ त्माविषे मायाकीकल्पनाकरैहैं ॥ और हेअश्विनीकुमारो! जैसे सूर्यकेउदयहुए अंधकारकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तैसे याप्रकारकाज्ञान जबीजीवोंकूंहोवैहै तबी तिनोंकेअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ सोज्ञानयहहै ॥ यहआनंदस्वरूपआत्माही संपूर्णजगत्केउत्पत्ति स्थिति लयका कारणहै ॥ और यहसंपूर्णजगत् अस्तिभातिप्रियरूपहै ॥ और यहआत्मा सत्चित्आनंदस्वरूपहै तथा ब्रह्मरूप है ॥ याप्रकारकेयथार्थज्ञानकरिकै अज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और हेअश्विनीकुमारो! जैसे रज्जुकेविशेषरूपजे सर्पदंडादिकहैं ते रज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानतैं निवृत्तहोइजावैहैं ॥ तैसे निर्विशेषआत्माका विशेषरूप जोप्रपंचहै तथा प्रपंचकाकारणजोअज्ञान है सो अधिष्ठानआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै निवृत्तहोइजावैहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष ताअज्ञानकूंमायाकहेहैं ॥ और हेअ श्विनीकुमारो! जैसे दीपककरिकै अंधकारकाज्ञानहोवैनहीं ॥ तैसे हमसरीखेविवेकीपुरुष जहांजहांदृष्टीकरैहैं तहां२ मायाकूंदेख तेनहीं ॥ यातैं यथार्थज्ञानकरिकै जानिवृत्तहोवै सा मायाकहियेहै ॥ यहमायाशब्दकाअर्थ संभवैहै ॥ और हेअश्विनीकुमारो! सा जगत्काकारण माया यद्यपि एकहै ॥ तथापि यहघटहै यहपटहै इत्यादिकअनेकज्ञान घटादिकविषयोंकेअज्ञानोंकीनिवृत्तिकरैहैं ॥ याकारणतैं साएकहीमाया अनंतरूपोंकूंधारणकरैहै ॥ तिनअनंतरूपोंकूं शास्त्रविषे तूला अज्ञानकहेहैं ॥ तथा अवस्थाअज्ञानकहै

हैं ॥ मूलाअज्ञानका तथातूलाअज्ञानका इतनाभेदहै ॥ जोअज्ञान ब्रह्मकेआश्रितहोइकै ब्रह्मकूंहीआच्छादनकरै है ॥ और ब्रह्मकेज्ञा
नतैंहीनिवृत्तहोवैहै ॥ ताकूं मूलाअज्ञानकहैहैं ॥ और जोअज्ञान घटादिकविषयावच्छिन्न चैतन्यकेआश्रितहोइकै घटादिकविषयाव
च्छिन्नचैतन्यकूंही आच्छादनकरैहै ॥ और घटादिकविषयावच्छिन्नचैतन्यकेज्ञानकरिकैही निवृत्तहोवैहै॥ताकूं तूलाअज्ञानकहैहैं ॥ त
था अवस्थाअज्ञानकहैहैं ॥ याअवस्थाअज्ञानोंकूंग्रहणकरिकैही इंद्रोमायाभिःपुरुरूपईयते इत्यादिकश्रुतियोंविषे अनेकमाया कथ
नकरीहैं ॥ और अजामेकां इत्यादिकश्रुतियोंविषे जोमायाकीएकताकहीहै ॥ सो मूलाअज्ञानकूंलेकेकहीहै ॥ याप्रकारकीमायाकरि
कै यहपरमात्मारूपइंद्र नानाप्रकारकेरूपोंकूंधारणकरैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे एकहीमायावीऐंद्रजालिकपुरुष आपणीमायाकरिकै अने
करूपोंकूंधारणकरैहै ॥ तैसे वास्तवतैं एकअद्वितीय परमात्मादेव आपणीमायाकरिकै अनंतरूपोंकूंधारणकरैहै ॥ याप्रकार व्यासभ
गवानादिकतत्त्ववेत्तापुरुषोंनैं मायाकरिकै आत्माविषेनानारूपता कथनकरीहै॥ तथापि तिनमहात्मापुरुषोंका आत्माकेनानापणेवि
षे तात्पर्यनहीं ॥ किंतु आत्माकेएकताबोधनकरणेवासते तेमहात्मापुरुष लौकिकप्रमाणकरिकैसिद्ध नानाप्रकारकेभेदोंका अनुवाद
करैहैं ॥ लोकप्रसिद्धअर्थके कथनकरणेहाराजोवचनहै ताकूं अनुवादकहैहैं ॥ जैसे अग्नि हिमकाऔषधहै यहवचन लोकप्रसिद्धअ
र्थकाअनुवादकरैहै ॥ काहेतें? अग्निविषे हिमकेनिवृत्तिकीकारणता सर्वलोकोंकूंअनुभवसिद्धहै ॥ तैसे सर्वअज्ञानीजीवोंके अनुभ
वकरिकैसिद्धजोनानाप्रकारकाभेदहै तिसका विद्वान्पुरुष अनुवादकरैहैं ॥ और पुनःतेमहात्मापुरुष जगत्केकारणविषे लौकिक
प्रमाणोंकी अप्रवृत्तिदेखिकरिकै सर्वव्यवहारकीसिद्धिवासते एकमायाकूंही कारणरूपकरिकैकल्पनाकरैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ संपूर्णवि
द्वान्पुरुष अद्वितीयआत्माकेबोधकरावणेवासते तथामुमुक्षुजनोंकेबुद्धिकीवृद्धिवासते आनंदस्वरूपआत्माविषे अनेकप्रकारकरिकै
जगत्काआरोपणकरैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो! इसीअभिप्रायकरिकै दध्यङ्ऋषिनैं तुमारेबोधकरावणेवासते आत्माकेभेदका
कारण जो शरीर इंद्रिय विषयकाभेदहै ॥ सोतुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ परंतु आत्माकेभेदविषे ऋषिकातात्पर्यनहीं ॥
किंतु आत्माविषे भेदकाआरोपणकरिकै ताकेनिषेधद्वारा अद्वितीयआत्माकेजनावणेविषे दध्यङ्ऋषिकातात्पर्यहै ॥ अब इंद्रियों

विषे भेदकीकारणतादिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो! जैसे स्वर्गविषेस्थित जोदेवराजइंद्रहै सो त्रिलोकीविषे अनेककार्यकरणेवास्ते आपणीमायाकरिकै अनेकरूपोंकूंधारणकरै है ॥ ऐसेदेवराजइंद्रकेरथोंविषे वायुकेसमानवेगवाले अनेकप्रकारकेअश्व जुडेहुएहैं ॥ तैसे यासंसारविषेस्थितजोपरमात्मारूपइंद्रहै तिसके शरीररूपीरथोंविषे अत्यंतप्रबल इंद्रियरूपीअश्व विद्यमानहैं ॥ और ते इंद्रियरूपीअश्व एकएकशरीरविषे दशप्रकारकेहैं ॥ तेसंपूर्णइंद्रियरूपीअश्व आत्माकेभेदकरणेहारे हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ नेत्रादिकइंद्रियोंका जबीविषयकेसाथ संबंधहोवैहै तबी अंतःकरणकीवृत्ति ताविषयकारहोवैहै ॥ यातैं नेत्रादिकइंद्रिय अंतःकरणकीवृत्तियोंकेभेदकरणेहारेहैं ॥ और वृत्तियोंकेभेदहुए तिनवृत्तियोंविषे प्रतिबिंबितआत्माकाभी भेदहोवैहै ॥ यारीतितैं नेत्रादिकइंद्रिय आत्माकेभेदकरणेहारेहैं ॥ इतनेकरिकै आत्माविषे इंद्रियोंकेभेदकाअध्यारोपदिखाया ॥ अब तिनोंकेअपवादकूंदिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो! जिनइंद्रियादिकोंकरिकै यहआत्मा भेदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिनइंद्रियोंसहितसंपूर्णप्रपंचका यहआत्मादेव अधिष्ठानहै ॥ याकारणतैंही नेतिनेति यहश्रुति कल्पितप्रपंचकानिषेधकरिकै सर्वभेदतैंरहित अधिष्ठानआत्माकूं बोधनकरैहै ॥ इतने करिकै त्वंपदार्थकाशोधन दिखाया ॥ अब तत्पदार्थकाशोधनकाप्रकार दिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो! जोवस्तु नानाप्रकारकेभेदोंकरिकैभी भेदकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ ताकूं विद्वान्पुरुष ब्रह्मरूपकरिकैनिश्चयकरैहैं ॥ कैसाहैसोब्रह्म? पूर्वपश्चिमादिकदेशोंतैं तथाभूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंतैं रहितहै ॥ और अंतर्बाह्यस्वभाववालेजेपादर्थहैं तिनोंतैंभी सोब्रह्मरहित है ॥ इस प्रकार तत्त्वंपदार्थकाशोधनकरिकै अब तत्त्वंपदार्थकेअभेदकूंदिखावैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो! संपूर्णदेहधारीजीवोंका एकअद्वितीयआत्माहै सोअद्वितीयआत्मा अहंब्रह्मास्मि इत्यादिकमहावाक्योंकरिकै ब्रह्मरूपकरिकैजानणेयोग्यहै ॥ कैसाहैसोब्रह्मरूप आत्मा? द्रष्टारूपकरिकै तथाश्रोतारूपकरिकै संपूर्णजगत्काअनुभवकरैहै ॥ और संपूर्णजगत्काआत्माहै ॥ और संपूर्णबुद्धि आदिकोंकासाक्षीहै ॥ और स्वप्रकाशआनंदस्वरूपहै ॥ हेअश्विनीकुमारो! इसप्रकार सोदध्यङ्ऋषि तुमारागुरु सर्वमुमुक्षुजनोंके कल्याणवासते तुमारेप्रति आनंदस्वरूपआत्माका ब्रह्मरूपकरिकैउपदेशकरताभया ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सोऋषि

अश्विनीकुमारोंकेप्रति पूर्वगुह्यवृत्तांत कथनकरताभया ॥ और तिसऋषिकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै तेअश्विनीकुमार अत्यंतप्रसन्न होतेभये ॥ और ऋषिकेसर्वज्ञताकूंजाणिकरिकै तिसमहात्माऋषिकूं प्रणामकरतेभये ॥ और जिसकार्यकेवासते सोऋषि अश्विनीकुमारोंकेपासआयाथा ॥ ताऋषिकेकार्यकूं अश्विनीकुमार सिद्धकरतेभये ॥ और हेशिष्य! पूर्वतुमनैंकौषीतकिऋषिकेभयकाकारणपूँछाथा ॥ सोकौषीतकिऋषिकेभयकाकारण हमनैं तुमारेप्रति विस्तारतैंकथनकऱ्या ॥ दध्यङ्ऋषिकेमस्तककूंछेदनहुआदेखिकरिकै सोकौषीतकिऋषि इंद्रतैंभयकूंप्राप्तहोताभया ॥ याकारणतैंही शिष्योंकेप्रति समग्रब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकरताभया ॥ यहही कौषीतकिऋषिकेभयकाकारणहै ॥ और हेशिष्य! दध्यङ्अथर्वणका तथाअश्विनीकुमारइंद्रका परस्परसंवादरूप जोयह इतिहास हमनैं तुमारेप्रतिकह्याहै ॥ सोइतिहास पूर्व वेदकेमंत्रोंकरिकै कथनकऱ्याहुआहै ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारेकूंइच्छाहोवै सोहमारेप्रतिकहो ॥ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे बृहदारण्यकमधुकांडसारार्थप्रकाशके दध्यङ्अश्विनीसंवादोनाम चतुर्थोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ४ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथआत्मपुराणेस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां
पंचमाऽध्यायप्रारंभः ॥ ५ ॥

अश्विनीकुमारोंकेप्रति पूर्वगुह्यवृत्तांत कथनकरताभया ॥ और तिसऋषिकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै तेअश्विनीकुमार अत्यंतप्रसन्न होतेभये ॥ और ऋषिकेसर्वज्ञताकूंजाणिकरिकै तिसमहात्माऋषिकूं प्रणामकरतेभये ॥ और जिसकार्यकेवासते सोऋषि अश्विनीकुमारोंकेपासआयाथा ॥ ताऋषिकेकार्यकूं अश्विनीकुमार सिद्धकरतेभये ॥ और हेशिष्य! पूर्वतुमनेंकौषीतकिऋषिकेभयकाकारणपूँछाथा ॥ सोकौषीतकिऋषिकेभयकाकारण हमनें तुमारेप्रति विस्तारतैंकथनकऱ्या ॥ दध्यङ्ऋषिकेमस्तककूंछेदनहुआदेखिकरिकै सोकौषीतकिऋषि इंद्रतैंभयकूंप्राप्तहोताभया ॥ याकारणतैंही शिष्योंकेप्रति समग्रब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकरताभया ॥ यहही कौषीतकिऋषिकेभयकाकारणहै ॥ और हेशिष्य! दध्यङ्अथर्वणका तथाअश्विनीकुमारइंद्रका परस्परसंवादरूप जोयह इतिहास हमनें तुमारेप्रतिकह्याहै ॥ सोइतिहास पूर्व वेदकेमंत्रोंकरिकै कथनकऱ्याहुआहै ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारेकूंइच्छाहोवै सोहमारेप्रतिकहो ॥ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे बृहदारण्यकमधुकांडसारार्थप्रकाशके दध्यङ्अश्विनीसंवादोनाम चतुर्थोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ४ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथआत्मपुराणेस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां
पंचमाऽध्यायप्रारंभः ॥ ५ ॥

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ अथ पंचमाऽध्यायप्रारंभः ॥
तहां चतुर्थअध्यायविषे यजुर्वेदकाजोबृहदारण्यकउपनिषद्है ताके मधुकांडकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब पंचमअध्यायकरिकै
तथाषष्ठअध्यायकरिकै तिसीबृहदारण्यकउपनिषद्के याज्ञवल्क्यकांडकाअर्थ निरूपणकरैहैं ॥ तहां पूर्वअध्यायविषे दध्यङ्ऋषिके
आख्यानकूंश्रवणकरिकै सोशिष्य अत्यंतआश्चर्यकूंप्राप्तहोताभया॥ और पुनःकिंचित्अर्थकेपूछणेकीइच्छावान्हुआ सोशिष्य दो
नोंहाथजोडिकरिकै श्रीगुरुकेप्रति कहताभया ॥ तहां आपणेविषेबुद्धिमान्पणा जनावणेवासतै सोशिष्य पूर्वअध्यायोंविषेश्रवणक
रीकथाकूं गुरुकेप्रति कथनकरैहै ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन्! प्रथमअध्यायविषे आपने सनकादिकऋषियोंके तथावामदेवादिक
अधिकारीजनोंकेसंवादकरिकै ऐतरेयउपनिषद्केअर्थकानिरूपणकऱ्या॥ और द्वितीयअध्यायविषे इंद्रप्रतर्दनकेसंवादकरिकै आप
ने कौषीतकिउपनिषद्केअर्थकानिरूपणकऱ्या ॥ और तृतीयअध्यायविषे अजातशत्रुबालाकिकेसंवादकरिकै आपने तिसीकौषी
तकिउपनिषद्केअर्थका निरूपणकऱ्या॥ और चतुर्थअध्यायविषे जाब्रह्मविद्या कौषीतकिऋषिने इंद्रकेभयतैंनहींकहीथी॥ साब्रह्म
विद्याभी दध्यङ्ऋषिअश्विनीकुमारोंकेसंवादकरिकै आपने कथनकरी॥ और वेदविद्याकेप्रवर्त्तकजेऋषिहैं ॥ तिनऋषियोंकावंशभी
आपनैं हमारेप्रति कथनकऱ्या॥ कैसाहैसोऋषियोंकावंश? हिरण्यगर्भतैंलैके तथासूर्यभगवान्तैंलैके पौतिमाष्यनामाऋषिपर्यंत
विस्तारहैजिसका ॥ पुनःकैसाहैसोवंश? हिरण्यगर्भ तथासूर्यभगवान् येदोनोंहैंमूलजिसके॥ और एकस्त्रीवंश तथादोपुरुषवंश य
हतीनप्रकारकीहै शिष्योंकीपरंपराजिसविषे ॥ ऐसाजोऋषियोंकावंशहै सोभी आपने हमारेप्रति कथनकऱ्या ॥ और तिसतीनप्र
कारकेवंशविषेभी कितनेकऋषियोंके विलक्षणनामोंकूंदेखिकरिकै तिनोंकाभेदही आपने कथनकऱ्या ॥ और कितनेकऋषियोंकेना
मोंकीसमानरूपतादेखिकरिकै तिनऋषियोंकाअभेदही आपनेकथनकऱ्या॥ और तिनऋषियोंकीवंशविषे दैवोअथर्वणनामाऋषि ॥ १ ॥
काशिष्य जोदध्यङ्अथर्वणनामाऋषिहै ॥ जोदध्यङ्ऋषि अश्विनीकुमारोंकेप्रति तथाइंद्रकेप्रति मधुकांडकाउपदेशकरताभया ॥
ऐसेदध्यङ्ऋषिकावृत्तांतभी आपने हमारेप्रति कथनकऱ्या ॥ और दध्यङ्ऋषिविषे देवराजइंद्रकीजोदुरात्मताहै साभी अपनेक

थनकरी॥ और गुरुकेमस्तकका छेदनरूप जोउग्रकर्महै॥ ताकेविषे प्रवृत्तकरणेहारीजोअश्विनीकुमारोंकीलिप्साहै॥साभी आपने ह
मारेप्रति कथनकरी॥ और हेभगवन्! पूर्वआपनेयहकह्या॥इंद्रनें जबीदध्यङ्ऋषिकामस्तकछेदनकऱ्या॥ तबी सोदध्यङ्ऋषि ह
यग्रीवभावकूंप्राप्तहोइकैअश्विनीकुमारोंकेप्रति कहताभया॥ हेअश्विनीकुमारो! आजदिनतैंलेकेआगेआगे यहसंपूर्णब्रह्मविद्या
कोईभीऋषि नहींकथनकरैगा॥ एकसूर्यभगवान्‌काशिष्य याज्ञवल्क्यमुनि इंद्रतैंनिर्भयहोइके आपणेशिष्योंकेप्रति संपूर्णब्रह्मवि
द्याकाउपदेशकरैगा॥ याप्रकारका दध्यङ्ऋषिकावचन पूर्वआपने कह्याथा॥ और तृतीयअध्यायविषे अजातशत्रु बालाकिकेसं
वादविषे आपनेभी यहवार्ताकहीथी॥ याज्ञवल्क्यमहामुनि सूर्यभगवान्‌तैं वेदविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥ हेभगवन्! याकेविषे हम
यहपूछाचाहेंहैं॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि किसशिष्यकेताईं साब्रह्मविद्या देताभया? और किसप्रकार साब्रह्मविद्या देताभया? औ
र साब्रह्मविद्या कैसीहै? यातीनप्रश्नोंकेउत्तरश्रवणकरणेकीहमारेकूंइच्छाहै॥ इसप्रकार शिष्यकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोश्रीगुरु
अत्यंतआनंदकूंप्राप्तहोताभया॥ औ कहतभया॥ हेशिष्य! वेदविषेकथनकरी जाविचित्रकथाहै॥ साकथा मैं तुमारेप्रतिकथन
करताहूं॥ तुम सावधानहोइकै श्रवणकरो॥ श्रीगुरुरुवाच॥ हेशिष्य! याज्ञवल्क्यनामाऋषि प्रथम वैशंपायननामाऋषितैं वेद
विद्याकाअध्ययनकरताभया॥ तिसतैंअनंतर किसीनिमित्तकरिकै क्रोधवान्‌हुआ सोवैशंपायननामाऋषि याज्ञवल्क्यतैंसंपूर्णविद्या
लेताभया॥ ताविद्याकापरित्यागकरिकै सोयाज्ञवल्क्यनामामुनि पुनःविद्याकीप्राप्तिवासते महान्‌तपकरिकै सूर्यभगवान्‌कूंप्रसन्नक
रताभया॥ कैसाहैसोसूर्यभगवान्? सूर्यमंडलविषेहैनिवासजिसका॥ और नाम रूप क्रिया स्वरूपजोसंपूर्णप्रपंचहै॥ सोप्रपंच
हैस्वरूपजिसका॥ और रक्तपुष्पकेसमानजोनेत्रहैं तिनोंकूंछोडिकरिकै नखतैंलेके केशपर्यंत संपूर्णशरीर जिसकासुवर्णकेसमान
है॥ और सूर्यतैंऊपरिकेजेलोकहैं॥ तथा चक्षुविषेवर्तमानजो सूर्यभगवान्‌का अध्यात्मरूपहै तिसतैंनीचेकेजेलोकहैं॥ तथामध्यवर्ति
जेलोकहैं॥ तिनसर्वलोकोंविषेस्थित जितनेजीवहैं॥ तिनोंकूं यहसूर्यभगवान्‌ही मनवांछितपदार्थोंकीप्राप्तिकरैहै॥ और यहसू
र्यभगवान् समष्टिसूक्ष्मउपाधिवालाहै॥ तथा समष्टिकारणउपाधिवालाहै॥ याकारणतैं श्रुतिविषे ताकूं हिरण्यगर्भरूपकरिकै त

थाईश्वररूपकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ और जिससूर्यभगवान्‌तैं श्वासोंकीन्यांई यत्नतैंविनाही संपूर्णवेद उत्पन्नभयेहैं ॥ और जोसूर्य भगवान् ऋग् यजुष् साम येतीनवेदस्वरूपहैं ॥ तहां दिनकेप्रथमभागविषे ऋग्वेदरूपकरिकै सूर्यभगवान् प्रकाशकरैंहै ॥ और दिनकेमध्यभागविषे यजुर्वेदरूपकरिकै सूर्यभगवान् प्रकाशकरैंहै ॥ और दिनकेअंत्यभागविषे अथर्वांगिरसकरिकैयुक्तजोसामवेद है ॥ तिससामवेदरूपकरिकै सूर्यभगवान् प्रकाशकरैंहै॥ और जैसे लोकविषेप्रसिद्धमधु पुरुषोंकेआनंदकाकारणहै ॥ तैसे वसुआ दिकदेवतावोंकेआनंदकाहेतु तथासर्वकर्मोंकेफलकूंदेणेहारा जोआदित्यरूपमधुहै॥ तिसविषे जोसूर्यभगवान् सर्वदाविराजमानहै ॥ कैसाहैसोआदित्यरूपमधु? रक्त शुक्ल कृष्ण अतिकृष्ण गुह्य यापंचरूपोंकरिकैयुक्तहै॥ पुनःकैसाहैसोआदित्यरूपमधु? यथाक्रमतैं रक्तादिरूपवाले जेऋग् यजुष् साम अथर्वांगिरस उपनिषद् ॥ इनपांचप्रकारके वेदरूपीभ्रमरोंकरिकै रचितहै ॥ और जैसे लोक विषे मक्षिका पुष्पोंतैं रसकूंग्रहणकरिकै मधुदेशविषेलेजावैंहैं॥ तैसे ऋग्वेदादिकरूपभ्रमर यागादिककर्मरूपीपुष्पोंविषे मंत्ररूपतैं प्राप्तहोइकै यागादिककर्मोंकीसूक्ष्मअवस्थारूप जेपुण्यरूपीअदृष्टहैं ॥ ताअदृष्टरूपीरसकूं तेवेदरूपीभ्रमर आदित्यरूपीमधुविषेले जावैंहैं ॥ तिसतैंअनंतर सोसूर्यभगवान् सर्वकेआनंदकाहेतुजोवृष्टिहै ताकूंकरैंहै॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै॥ श्लोक ॥ अग्नौ प्रास्ताहुतिःसम्यगादित्यमुपतिष्ठति॥ आदित्याज्जायतेवृष्टिर्वृष्टेरन्नंततःप्रजाः॥१॥ अर्थयह॥ अग्निविषेप्राप्तकरीहुईआहुति सूक्ष्मरूपकरिकै आदित्यकूंप्राप्तहोवैहै॥ और तिसआदित्यतैंवृष्टि उत्पन्नहोवैहै॥ और वृष्टितैंअन्न उत्पन्नहोवैहै॥ और अन्नतैंप्रजाउ त्पन्नहोवैहै ॥ १ ॥ पुनःसोकैसाहैसूर्यभगवान्? सर्वप्राणियोंका बाह्यवर्तमानप्राणहै ॥ और ब्रह्मातैंआदिलेकेजितनेस्थावरजं गमप्राणीहैं तिनोंके हृदयदेशविषेस्थितहै ॥ हेशिष्य! ऐसेसूर्यभगवान्कूं सो याज्ञवल्क्यमुनि तपकरिकैप्रसन्नकरताभया ॥ ति सतैंअनंतर तिसीसूर्यभगवान्‌तैं सोयाज्ञवल्क्यमुनि चारिवेदोंकाअध्ययन करताभया॥ तिसतैंअनंतर गृहस्थाश्रमकूंधारणकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि अधिकारीशिष्योंकेप्रति चारिवेदोंकाअध्ययन करावताभया॥ और तिसयाज्ञवल्क्यमुनिकेशिष्योंकीमंडली चा रिप्रकारकीहोतीभई ॥ एकमंडली ऋग्वेदकेअध्ययनकरणेहारी ॥ और दूसरीमंडली यजुर्वेदकेअध्ययनकरणेहारी ॥ और ती

सरीमंडली सामवेदकेअध्ययनकरणेहारी॥ और चतुर्थमंडली अथर्वणवेदकेअध्ययनकरणेहारी॥ और जैसे सूर्यभगवान् पूर्वादिक दिशावोंकेमध्यविषे प्रकाशमान्हैं॥ तैसे सोयाज्ञवल्क्यमुनि चारिप्रकारकेशिष्योंकीमंडलीविषे विराजमानहोताभया॥ और लोकविषे तायाज्ञवल्क्यमुनिकी महान्कीर्तिहोतीभयी॥ अब याज्ञवल्क्यमुनिकेकीर्तिकूं वारांगनाकेसमानरूपकरिकै निरूपणकरैंहैं॥ हेशिष्य! याज्ञवल्क्यकेसाथ द्वेषकरणेहारे जितनेआश्वलादिकब्राह्मणहैं ॥ तेसंपूर्ण गणिकाकेपतियोंकेसमानहैं ॥ तिनआश्वलादिकोंकूं याज्ञवल्क्यकीकीर्तिरूपवारांगना प्राप्तहोतीभई ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धवारांगना कामीपुरुषोंकूं तापकरैहै ॥ तैसे याज्ञवल्क्यकीकीर्तिरूपीवारांगनाभी आश्वलादिकब्राह्मणोंकूं तापकरतीभई॥ और केईपुण्यवान् तथाबुद्धिमान् जेजनकादिकहैं॥ ते आश्वलादिकब्राह्मणोंकरिकै निवारणकरेहुएभी तायाज्ञवल्क्यमुनिकीकीर्तिरूपवारांगनाकूं भोगतेभये॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकविषे जोकोईपुरुष किसीपरस्त्रीविषेआसक्तहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं अनेकलोक निवारणकरैंहैं ॥ तौभी सोपुरुष तिनलोकोंकाकहणा अंगीकारकरतानहीं॥ तैसे याज्ञवल्क्यमुनिकीकीर्तिरूपवारांगनाविषे आसक्तहुआजनकराजा किसीब्राह्मणकाकह्या नहींमानताभया॥ और जैसे लोकविषे कोईराजा जबीकिसीवारांगनाविषे आसक्तहोवैहै ॥ तबी ताकेभृत्य राजाकूं तावारांगनातैंनिवृत्तकरणेवासते कोईअत्यंतरूपवाली आपणीपुत्री राजाकेतांईदेवैहैं ॥ तैसे याज्ञवल्क्यमुनिकीकीर्तिरूपवारांगनाविषे जनकराजाकीआसक्तिदेखिकरिकै तिसकीर्तिरूपवारांगनातैं जनकराजाकूंनिवृत्तकरणेवासते तेआश्वलादिकब्राह्मण असूयारूपीस्त्रीविषे निंदारूपीनवीनबधूकूं उत्पन्नकरतेभये ॥ अब आश्वलादिकोंके निंदावचनोंकूंदिखावैहैं ॥ जोयहयाज्ञवल्क्यमुनिकिसीलौकिकगुरुतैं विद्याकूंनहीं प्राप्तभयाहै ॥ किंतु साक्षात्सूर्यभगवान्तैंही विद्याकूंप्राप्तभयाहै ॥ तौ मुखतैंविनाही शिष्योंकेप्रति विद्या काहेतैंनहींपढावता ॥ और जैसे हमसर्वब्राह्मण मुखकरिकैविद्यापढावतेहैं ॥ तैसे यहयाज्ञवल्क्यभी मुखकरिकैही विद्यापढावताहै ॥ यातैं मैंसूर्यभगवान्तैंविद्यापढीहै यहयाज्ञवल्क्यकाकहणा मिथ्याहै ॥ किंवा ॥ सूर्यकेरथविषेस्थितहोइकै हमनैं विद्यापढीहै ॥ यह भीयाज्ञवल्क्यकाकहणा मिथ्याहै ॥ काहेतैं? जो पूर्व सूर्यकेरथविषेबैठिकरिकै याज्ञवल्क्यनैं विद्यापढीहोवै ॥ तौ अबी प्रज्व

लितमहान्अग्निविषेस्थितहोइकै यहयाज्ञवल्क्यमुनि वेदोंकापठन काहेतैंनहींकरता? ॥ किंवा ॥ तेजकासमूह जोसूर्यहै सो ज
बी याज्ञवल्क्यकेप्रति वेदोंकाकथनकरताभयाहै ॥ तौइदानींकालविषे तेजकासमूहजोमहान्अग्निहै सो हमारेप्रति वेदोंकाकथन
काहेतैंनहींकरता ? ॥ किंवा जोतुमयहकहो ॥ याज्ञवल्क्यकेतपकरिकै प्रसन्नहुआसूर्यभगवान् ॥ दूसरेशरीरकूंधारणकरिकै याज्ञव
ल्क्यकेप्रति वेदपडावताभयाहै ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं? जो सूर्यदेवताकूंशरीर अंगीकारकरौगे ॥ तौ जैसे
शरीरवाले स्त्रीआदिकप्राणी अनित्यहैं ॥ तैसे सूर्यभगवान्भी अनित्यहीहोवैगा ॥ जबी सूर्यदेवता अनित्यभया ॥ तबी हमारेतैं ता
केविषे कौनविशेषताहोवैगी! यातैं सूर्यभगवान्तैं याज्ञवल्क्यमुनि वेदविद्याकूंप्राप्तभयाहै ॥ याकेविषे कोईयुक्तिसंभवैनहीं ॥ और
यालोकविषे दूसराकोईगुरु याज्ञवल्क्यकाप्रसिद्धहैनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ यहयाज्ञवल्क्यमुनि आपणीइच्छातैं वेद
केसमानवाक्योंकूंकल्पनाकरिकै पठनकरैहै ॥ और यहवेद सूर्यतैंमैंनेंपठनकर्याहै ॥ याप्रकार सर्वलोकोंविषेप्रसिद्धकरिकै अज्ञा
नीजीवोंकूं मोह उत्पन्नकरैहै ॥ किंवा गुरुसंप्रदायकेअनुसार जोउदात्तादिकस्वरविशिष्टवर्णोंकीआनुपूर्वीहै ताकूं बुद्धिमान्पुरुष
वेदकहैहैं ॥ याप्रकारवेदकेलक्षणतैंरहित जितनेवाक्यहैं ॥ ते नटपुरुषोंकेवाक्योंकेसमानहैं ॥ और या याज्ञवल्क्यकाकोईगु
रुसंप्रदाय लोकविषेप्रसिद्धहैनहीं ॥ यातैं याज्ञवल्क्यकेवचनभी नटपुरुषोंकेवचनसमानहैं ॥ किंवा यहयाज्ञवल्क्य हस्तकेकंप
करिकैयुक्त तथापदक्रमकेसंप्रदायतैंरहित यजुर्वेदकूं नटकीन्यांई पठनकरैहै ॥ यातैं याज्ञवल्क्यकूं यजुर्वेद किंचित्मात्रभी नहींआ
वता ॥ किंवा पूर्व वैशंपायननामाऋषितैं इसयाज्ञवल्क्यनें यजुर्वेदकाअध्ययनकर्याथा ॥ तिसकूंभी यहयाज्ञवल्क्य इदानींकालवि
षेजाणतानहीं ॥ तौ अन्यवेदोंकूं यहयाज्ञवल्क्य कैसेजाणैगा ? हेशिष्य ! इसतैंआदिलेकै अनंतप्रकारकेनिंदावचनोंकरिकै ते
आश्वलादिकब्राह्मण याज्ञवल्क्यकीकीर्तिरूपीवारांगनाकेनिरोधकरणेविषे प्रवृत्तहोतेभये ॥ परंतु सायाज्ञवल्क्यकीकीर्तिरूपवा
रांगना जनकराजाकेहृदयतैं निवृत्त नहींहोतीभई ॥ इतनेकरिकै आश्वलादिकब्राह्मणोंकेनिंदावचनोंकूं दिखाया ॥ अब याज्ञवल्क्य
मुनिकेक्षमाकूंदिखावैहैं ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार आश्वलादिकब्राह्मणोंनें करीजोनिंदा तिसनिंदाकूं सोयाज्ञवल्क्यमुनि आप जा

णताहुआभी तथाअन्यलोकोंतैंश्रवणकरताहुआभी किंचित्मात्र क्षोभकूंनहींप्राप्तहोताभया ॥ किंतु आत्मज्ञानकेप्रभावतैं सो याज्ञवल्क्यमुनि उलटाप्रसन्नहोताभया ॥ और जैसे वर्षाकालविषे गर्जनातैंरहितहुएमेघ जलकीवर्षाकरैहैं ॥ तैसे याज्ञवल्क्यभी आपणेसुखतैं आपणीस्तुतिकूं नकरताहुआ पूर्वकीन्यांई शिष्योंकेप्रति अर्थसहितसर्ववेदोंका कथनकरताभया ॥ और निंदाकरणेहारे जेआश्वलादिकब्राह्मणहैं तिनोंकेप्रति सोयाज्ञवल्क्यमुनि किंचित्मात्रभीवचन नहींकहताभया ॥ हेशिष्य! इसप्रकार याज्ञवक्यमुनिकेकीर्तिकूंश्रवणकरिकै सोमिथिलाकापति जनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेदेखणेकीइच्छा करताभया ॥ और जनकराजाके याअभिप्रायकूंजाणिकरिकै ते आश्वलादिकराजाकेपुरोहित अनंतप्रकारकेउपायोंकरिकै तथापूर्वउक्तनिंदावचनोंकरिकै राजाकूंनिवारणकरतेभये ॥ हेशिष्य! इसप्रकार जबी आश्वलादिकपुरोहितोंनैं राजाजनककेप्रतिकह्या ॥ तबी सोबुद्धिमान्जनक राजा तिनआश्वलादिकब्राह्मणोंकेदुष्टअभिप्रायकूं जाणिकरिकैभी तिनोंकूंकिंचित्मात्रभी नहींकहताभया ॥ परंतु याज्ञवल्क्य मुनिकेदेखणेकी राजाकूं बहुतइच्छाहै॥ याकारणतैं सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेदेखणेवासते यज्ञकाआरंभकरताभया ॥ और जेआपणेविश्वासवालेब्राह्मणथे तथाक्षत्रियथे तथावैश्यथे तिनोंकेप्रति सोजनकराजा याप्रकारकीआज्ञा करताभया ॥ हेब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यो! हमनैं यज्ञकरणेकाविचारकर्याहै ॥ यातैं तुम सर्वदेशोंविषेजाइकै सर्वब्राह्मणोंकूं बुलाइलैआवो ॥ हेशिष्य! याप्रकार जनकराजाकेआज्ञाकूंपाइकैतेसंपूर्णभृत्य कुरुदेश तथापांचालदेशतैंआदिलैके सर्वदेशोंविषेजातेभये ॥ और तिनदेशोंविषेस्थित जितनेविद्वान्ब्राह्मणथे तिनसंपूर्णोंकूं शिष्योंसहितलेआवतेभये ॥ तथा याज्ञवल्क्यमुनिकूंभी सर्वशिष्योंसहित लेआवतेभये ॥ और तिनब्राह्मणोंकेआवणेकरिकै जनकराजाकेगृहविषे महान्वेदोंकीध्वनि होतीभई॥ कैसीहैसावेदोंकीध्वनि! एकशुद्रोंकूंछोडिकरिकै अन्यजितने ब्राह्मणहैं तथाक्षत्रियहैं तथा वैश्यहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं आनंददेणेहारी है ॥ अब तिस ब्राह्मणोंकेसमाजविषे प्रधान प्रधान ब्राह्मणोंकूंदिखावैहैं ॥ हेशिष्य! तिसजनकराजाके यज्ञविषे आश्वलनामाब्राह्मण ऋग्वेदउक्तकर्मोंकेकरणेहारा होताभया ॥ और जरत्कारुनामाब्राह्मणकापुत्र आर्तभागनामाब्राह्मण तहां आवताभया ॥ तथा

लह्यनामाब्राह्मणकापुत्र भुज्युनामाब्राह्मण तहां आवताभया ॥ तथा चक्रनामाब्राह्मणकापुत्र उषस्तनामाब्राह्मण तहां आवताभया ॥ तथा कुषीतकनामाब्राह्मणकापुत्र कहोलनामाब्राह्मण तहां आवताभया ॥ तथा ब्रह्मनिष्ठा गार्गीस्त्री तहां आवतीभई ॥ तथा अरुणनामाब्राह्मणकापुत्र उद्दालकनामाब्राह्मण तहां आवताभया ॥ तथा शकलनामाब्राह्मणकापुत्र जोशाकल्यनामाब्राह्मणहै जाकूं विदग्धभीकहैहैं ॥ सोविदग्धनामाब्राह्मण तहां आवताभया ॥ कैसाहैसोशाकल्य? अत्यंतवाचालहै ॥ और अत्यंतमानीहै ॥ और पापकरिकैमोहितहुआ सोशाकल्य सर्वदा याज्ञवल्क्यकेसाथ द्वेषकरैहै ॥ और चारिवेदोंकावक्ता जेअनेकशिष्यहैं तिनशिष्योंकेसहित याज्ञवल्क्यमुनिभी तायज्ञविषेआवताभया ॥ तथा आश्वलादिब्राह्मण आपणेआपणेशिष्योंसहित तहां आवतेभये ॥ तिनोंतैंअन्यभी अनेकविद्वान्ब्राह्मण आपणेआपणेशिष्योंसहित तहांआवतेभये ॥ संपूर्ण मिलिके अनेककोटिब्राह्मण होतेभये ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेआगमनकाउपाय करताभया ॥ और किसीप्रसंगपाइकै सोजनकराजा आश्वलादिकपुरोहितोंतैंआदिलैके सर्वब्राह्मणोंकेप्रति हाथजोडिके यहवचन कहताभया ॥ हेब्राह्मणो! अश्वमेधादिकयज्ञोंकरिकै मैं देवतावोंकेपूजनकरणेकीइच्छाकरताहूं तथा बहुतदक्षिणाकरिकै सर्वब्राह्मणोंकेपूजनकीइच्छाकरोहूं आप सर्वब्राह्मण हमारेकूं यज्ञकरणेकीआज्ञादेवो ॥ तिसतैंअनंतर मैंसर्वदिशावोंकूं भेरीआदिकोंकेशब्दोंकरिकै पूर्णकरोंगा ॥ हेशिष्य! इसप्रकार जबी जनकराजानैं ब्राह्मणोंकेप्रतिकह्या तबी तेसंपूर्णब्राह्मण राजाजनककूं यज्ञकरणेकीआज्ञादेतेभये ॥ तिसतैंअनंतर जनकराजाकूं यहइच्छाहोतीभई ॥ येजितनेब्राह्मण हमारेयज्ञविषे इकठेहुएहैं ॥ तेसंपूर्णब्राह्मण महात्माहैं ॥ तथा सदाचारकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा वेदोंविषे और वेदोंकेअंगोंविषे कुशलहैं ॥ और संपूर्णशिष्योंकरिकैयुक्तहैं ॥ परंतु इनसर्वब्राह्मणोंविषे अधिकवेदकावेत्ता कौनब्राह्मणहै? याप्रकारकीइच्छा जनकराजाकूंहोतीभई ॥ तिसतैंअनंतर सोजनकराजा सर्वब्राह्मणोंविषे एकब्राह्मणकीअधिकताजानणेवासते याप्रकारकेउपायोंकूं मनविषेविचारताभया ॥ जोमैं याब्राह्मणोंकेसमाजविषे किसीएकब्राह्मणतैं याप्रकारपूछौंगा ॥ तुमसर्वब्राह्मणोंविषे कौनब्राह्मण अधिकविद्वान्है? तौ सोब्राह्मण किसीआपणेमित्रकूंही अधिकविद्वान्कहैंगा ॥ काहेतैं? जिसपुरुषका जिसपुरुष

विषै द्वेषहोवैहै सो साक्षात्देवताहोवै अथवा गुरुहोवै अथवा सर्वविद्याविषे बृहस्पतिकेसमानहोवै तौभी सोद्वेषवान्पुरुष सर्वथा ताकीनिंदाहीकरैहै ॥ और जिसपुरुषका जिसपुरुषविषे स्नेहहोवैहै ॥ सोएकअक्षरभी नहींजाणताहोवै ॥ और कृषिकरणेहारे पुरुषोंकीन्यांई महामूढहोवै ॥ तौभी सोस्नेहवान्पुरुष ताकीसर्वदा स्तुतिहीकरैहै ॥ यातैं रागद्वेषवान् किसीब्राह्मणकेपूछणेतैं सर्वतैं अधिकविद्वान्ब्राह्मणकानिश्चयहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोब्राह्मण रागद्वेषतैंरहित उदासीनहोवै तिसतैंपूछिकरिकै अधिकविद्वान्कानिश्चय तुमकरो ॥ समाधान ॥ उदासीनपुरुषकेपूछणेतैंभी अधिकाताकज्ञानहोवैनहीं ॥ काहेतैं? शमदमादिकगुणोंके ज्ञानतैं अधिकताकाज्ञानहोवैहै ॥ और क्रोधादिकदोषोंकेज्ञानतैं न्यूनताकाज्ञानहोवैहै ॥ सोशमदमादिकगुणोंकाज्ञान तथाक्रोधादिकदोषोंकाज्ञान उदासीनपुरुषकूंहोवैनहीं ॥ यातैं ताकेवचनतैंभी सर्वतैंअधिकब्राह्मणकाज्ञान संभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! उदासीनपुरुषकूं यद्यपि ब्राह्मणोंकेगुणदोषोंकाज्ञाननहींहै ॥ तथापि ताउदासीनपुरुषकेआगे संपूर्णब्राह्मणोंकेगुणोंकूं तथादोषोंकूं आप वर्णनकरो ॥ पश्चात् सोउदासीनपुरुष तुमारेप्रति सर्वतैंअधिकविद्वान्का कथनकरैगा ॥ समाधान ॥ हमारेमुखतैं ब्राह्मणोंकेगुणोंकूं श्रवणकरिकै सोउदासीनपुरुष जिसब्राह्मणविषेअधिकताकहैगा ॥ तिनगुणोंकरिकै मैंही प्रथम तिसब्राह्मणविषे अधिकताजाणिसकताहूं ॥ उदासीनपुरुषकेप्रति ब्राह्मणोंकेगुणोंकाकथनकरणा निष्फलहै ॥ यातैं उदासीनपुरुषकेवचनतैंभी सर्वतैंअधिकब्राह्मणकानिश्चयहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! एकएकब्राह्मणकूं एकांतदेशविषेबुलाइकै तुम यहपूछो ॥ हेब्राह्मण! तुम सर्वतैंअधिकहो अथवा नहींहो ॥ जोब्राह्मण आपकूंसर्वतैंअधिककहै ॥ तिसकूंही तुमनैं सर्वतैंअधिकजानणा ॥ समाधान ॥ याप्रकारकेउपायतैंभी सर्वतैंअधिकब्राह्मणका निश्चयहोवैनहीं ॥ काहेतैं? जोमैं एकएकब्राह्मणकूंबुलाइकेपूछौंगा तौ संपूर्णब्राह्मण आपणेकूंही अधिक कहेंगे ॥ कोईभीब्राह्मण आपणेकूंन्यूननहींकहैगा ॥ यातैं याउपायकरिकैभी सर्वतैंअधिकब्राह्मणका निर्णयहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हे भगवन्! गुह्यअर्थकेबोधनकरणेहारेजेप्रश्नहैं तेप्रश्न सर्वब्राह्मणोंकेप्रति तुमकरो ॥ जोब्राह्मण तिनप्रश्नोंका भलीप्रकार उत्तरकहै तिसब्राह्मणकूं तुमनैं अधिकजानणा ॥ समाधान ॥ याप्रकारकेउपायकरिकैभी सर्वतैंअधिकब्राह्मणका निर्णयहोइसकैनहीं ॥

उलटी हमारीहानिहोवैगी ॥ काहेतें ? जोमैं तिनब्राह्मणोंकेप्रति गुह्यप्रश्नोंकूंकरौंगा तौ क्रोधवान्होइकै तेब्राह्मण हमारेकूंशापदेकै
दग्धकरैंगे ॥ यातें इनपूर्वउक्तसंपूर्णउपायोंतें सर्वतेंअधिकब्राह्मणका निर्णयहोवैनहीं ॥ किंतु परस्परविवादतेंही याब्राह्मणोंविषे अधि
कताका तथान्यूनताका निर्णयहोवैगा ॥ यातें यासभाविषे सर्वब्राह्मणोंकापरस्पर विवादकराइकै सर्वतेंअधिकब्राह्मणका मैं निर्णय
करौंगा ॥ तिसविषेभी जोमैं इनसर्वब्राह्मणोंकूं यहकहौंगा ॥ हेब्राह्मणो ! तुमसंपूर्ण परस्परविवादकरो तौ येब्राह्मण क्रोधवान्होइ
कै मेरेकूं शापदेकैभस्मकरैंगे ॥ यातें मेरेकहेतैंविनाही यहसंपूर्णब्राह्मण आपसविषे परस्परविवादकरैं ॥ ऐसाकोईउपाय हमकरैं ॥
सोऐसाउपाय धनतैंविना कोईदूसराहैनहीं ॥ किंतु धनहीसर्वविवादकाकारणहै ॥ यातें सर्वब्राह्मणोंकेमध्यविषे बहुतधनकूं मैं राखों ॥
तिसधनकेलोभकरिकै येब्राह्मण आपेहीविवादकरैंगे ॥ और तिनोंकेविवादतें सर्वतेंअधिकविद्वान्ब्राह्मणका हमारेकूं निर्णयहोवै
गा ॥ याप्रकारकेउपायकूं सोराजाजनक आपणेमनविषेनिश्चयकरताभया ॥ अब धनविषेसर्वविवादोंकीकारणता दिखावैहैं ॥ विषय
भोगकासाधन जोयहधनहै सो किसजीवकेचित्तकूं क्षोभनहींकरता ? किंतु सर्वजीवोंकेचित्तकूंक्षोभकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जेब्रह्मवे
त्ता संन्यासीहैं तिनोंकेभी चित्तकूं यहधन क्षोभकरैहै ॥ तौअन्यकुटुंबीगृहस्थोंकेचित्तकूं सोधन किसवासते नहींक्षोभकरैगा ? किं
तु अवश्य तिनोंकेचित्तविषे क्षोभकरैगा ॥ किंवा ॥ चित्तकेक्षोभकेकारण जेकाम क्रोध लोभ मोहादिकहैं ॥ तेभी याधनकरिकैही उ
त्पन्नहोवैहैं ॥ धनतैंविना कामक्रोधादिकविकार उत्पन्नहोवैंनहीं ॥ अब अन्वय व्यतिरेककरिकै धनविषे कामक्रोधादिकोंकीकारण
ता दिखावैहैं ॥ तहां धनकेविद्यमानहुए जोकामक्रोधादिकोंकीविद्यमानताहै याकूं अन्वयकहैहैं ॥ और धनकेअभावहुए जोका
मक्रोधादिकोंकाअभावहै ताकूं व्यतिरेककहैहैं ॥ तहां प्रथम व्यतिरेककूंदिखावैहैं ॥ क्षुधाकरिकैपीडित जोनिर्धनदरिद्रीपुरुषहै
सो कामजन्यसुखकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतें ? सोनिर्धनपुरुष याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै विवाहनहींकरैहै ॥ जोमैं वि
वाहकरौंगा तौ जितनाअन्न है सो स्त्रीभोजनकरैगी ॥ इतनाअन्नतौ मेरेकूंहीभोजनकरणेवासतेचाहिये ॥ स्त्रीकूंभोजनकरणेवासते मैं
कहांसैंअन्नदेवौंगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोदरिद्रीपुरुष स्त्रीकूं गृहविषेलेआवैनहीं ॥ और जैसेकृमिकरिकैयुक्त दुर्गंधमुडदेकूं

कोईपुरुष स्पर्शकरतानहीं ॥ तैसे पुरुषकूंनिर्धनदेखिकरिकै कामकरिकैआतुरहुईभीस्त्री तानिर्धनपुरुषकेस्पर्शकरणेकीइच्छाकरती नहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ धर्मशास्त्रकीरीतिसैं विवाहीहुई जापतिव्रतास्त्रीहै साभी आपणेपतिकूंनिर्धनदरिद्रीदेखिकरिकै सर्वदा ताकेमरणेकीइच्छाकरैहै तौ अन्यव्यभिचारिणीस्त्रियोंकीक्यावार्ताहै? ॥ किंवा जैसे सिद्धांजन पृथिवीविषेस्थितधनकेदर्शनकासाधनहोवैहै ॥ तैसे यहदरिद्रतारूपीसिद्धांजनभी सर्वधर्मोंकेदर्शनविषे साधनहोवैहै ॥ काहेतें? जैसे आपणीमातादिकोंविषे किसीपुरुषकूं कामभावनाहोवैनहीं ॥ तैसे यहदरिद्रीपुरुष किसीभीस्त्रीविषे कामनाकरतानहीं ॥ किंतु क्षुधाकरिकैआतुरहुआ दरिद्रीपुरुष एकअन्नमात्रकीइच्छाकरैहै ॥ किंवा जैसे विवेकीपुरुष सर्वकूंआत्मरूपजाणिकै किसीऊपरि क्रोध नहींकरैहै ॥ तैसे यहदरिद्रीपुरुषभी राजाकेभयतैं तथा धर्मराजाकेभयतैं किसीप्राणीऊपरि क्रोध नहींकरता ॥ किंवा ॥ सोनिर्धनदरिद्रीपुरुष याप्रकारकाविचारकरिकै किसीपापकर्मविषे प्रवृत्तहोतानहीं ॥ अब ताकेविचारकूंदिखावैहैं ॥ मैंनें पूर्वजन्मोंविषे अत्यंतपापकर्मकरेहैं ॥ जिनपापकर्मोंकाफल यहदरिद्रता हमारेकूंप्राप्तभईहै ॥ यादरिद्रतातेंपरे दूसराकोईपापकर्मकाफल क्याहोवैगा? ॥ किंतु यहदरिद्रताही सर्वपापकर्मोंकाफलहै ॥ काहेतें? जैसे ब्रह्महत्यारेपुरुषका सर्वलोक निरादरकरैहैं ॥ तैसे मेरेकूंदरिद्रीहुआदेखिकै यहहमारीमाता तथापिता तथास्त्री तथापुत्र येसंपूर्ण हमारानिरादरकरैहैं ॥ कोईभी हमाराआदरकरतानहीं ॥ यातें पूर्वलेपापकर्मोंकाफल जोयहदरिद्रताहै ताकूं भलीप्रकारअनुभवकरताहुआभी मैं जोपुनःपापकर्मोंकूंकरोंगा ॥ तौपुनःजन्मांतरोंविषे हमारेकूं यहदरिद्रता प्राप्तहोवैगी ॥ यातें हमारेकूं पापकर्म करणेयोग्यनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे सर्पकूं आपणेमृत्युकासाधनजाणिकरिकै कोईबुद्धिमान्पुरुष तासर्पकाउल्लंघनकरतानहीं ॥ याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै निर्धनदरिद्रीपुरुष पापकर्मविषेप्रवृत्तहोतानहीं ॥ किंवा जोनिर्धनदरिद्रीपुरुष किंचित्मात्रभीधर्मकूंनहींजाणता ॥ सोभी जबीपापकर्मोंकूंनहींकरता तौ शास्त्रप्रमाणतें धर्मकूंजाणताहुआ दरिद्रीपुरुष किसवासतेपापकर्मोंकूंकरैगा? किंतु नहींकरैगा ॥ किंवा जोधनतेंरहित दरिद्रीपुरुषहै सो राजादिकोंतैंभयवानहुआ परद्रव्यकी तथापरस्त्रीकी इच्छाकरतानहीं ॥ और क्षुधाकरिकैपीडितहुआ सोदरिद्रीपुरुष थोडेअन्नकीप्राप्तिकरिकैभी

प्रसन्नहोवैंहै ॥ यातैं दरिद्रीपुरुषविषे लोभभीनहीं ॥ इतनैंग्रंथकरिकै धनकेअभावहुए कामादिकदोषोंकाअभावरूप व्यतिरेकदिखा या ॥ अब धनकेविद्यमानहुए कामादिकदोषोंकीप्राप्तिरूप अन्वयकूंदिखावैंहैं ॥ धनकेमदकरिकैअंधहुआ यहधनीपुरुष आपणेबल करिकै राजाकीतथागुरुकी तथादेवतावोंकीभी अवज्ञाकरैहै ताकरिकै यहधनीपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे अनंतदुःखों कूंप्राप्तहोवैंहै ॥ किंवा ॥ यहधनीपुरुष जबी परस्त्रीआदिकपदार्थोंविषेमोहकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ तबी इसलोकविषे ताकी कीर्तिनष्टहोइ जावैंहै ॥ और संपूर्णलोक ताकूं धिक्कारकरैंहैं ॥ और मृत्युहोइकै सोधनीपुरुष नरकविषेदुःखकूंभोगेहै ॥ किंवा जैसे प्रज्वलित अग्नि घृतकरिकै तथाकाष्ठोंकरिकै तृप्तिकूंप्राप्तहोवैंनहीं तैसे यहधनीपुरुष धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै कबीभी तृप्तहोवै नहीं ॥ किंतु अधिकअधिकपदार्थोंकेप्राप्तिकी सर्वदाइच्छाकरैंहै॥ कदाचित् पूर्वलेपुण्यकेप्रभावतैं ताधनीपुरुषकूं समुद्रपर्यंतपृथि वीकाराजभी प्राप्तहोइजावै तौभी पुनःस्वर्गलोककेप्राप्तिकीइच्छाकरैंहै ॥ यातैं धनीपुरुषकेलोभकीशांति होतीनहीं ॥ किंवा तालोभकरिकै सोधनीपुरुष परस्त्रियोंका तथापरधनका हरणकरैंहै ॥ यातैं सर्वजनोंकरिकै सो निंदितहै ॥ ऐसेनिंदितकर्मोंकूंकरि कैभी सोधनीपुरुष निर्लज्जपुरुषकीन्यांई अन्यप्राणियोंकूंहसेहै ॥ यातैं सर्वजीवोंतैं सोधनीपुरुष अधमहै ॥ किंवा धनकरिकैमोह कूंप्राप्तहुआ यहधनीपुरुष आपणेहितकूं तथाअहितकूं जाणतानहीं ॥ किंतु मोहकेवशहुआ सोधनीपुरुष आपणेदुःखकूंही संपा दनकरैंहै ॥ किंवा धनकरिकैमोहकूंप्राप्तहुआ यहपुरुष आपणेहितकारीमाताकूं तथापिताकूं तथापुत्रकूं तथावेदवेत्ताब्राह्मणोंकूं शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै हननकरैंहै॥ इसप्रकार धनीपुरुष कामक्रोधादिकसर्वदोषोंकूं प्राप्तहोवैंहै ॥ और जो धनरहितदरिद्रीपुरुषहै तिसकूं कामक्रोधादिकदोष प्राप्तहोवैंनहीं ॥ किंतु याप्रकारकाविचारकरिकै सोदरिद्रीपुरुष सर्वदाआनंदवि षे मग्नरहैंहै ॥ अब ताकेविचारकूंदिखावैंहैं ॥ जोमैं किसीधनीपुरुषतैं अन्नादिकपदार्थोंकीयाचनाकरोंगा और आगेतैं सोध नीपुरुष हमारेप्रति अन्नमात्रभीनहींदेवैगा ॥ तौ हमारीयाचनाही व्यर्थजावैगी ॥ ताकरिकै हमारेकूं पश्चात्तापहोवैगा ॥ यातैं कि सीधनीकेआगे याचनाकरणीयोग्यनहीं ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै निर्धनदरिद्रीपुरुष लोभादिकोंतैंरहितहोवैंहै ॥ किंवा यहजो

हमारीमाताहै तथापिताहै तथाअन्यबांधवहैं तेसंपूर्ण हमारेहितकारी हैं ॥ यातैं मातापितादिक जाजाआज्ञा हमारेप्रतिकरैं सा
आज्ञा हमारेकूंअवश्यमानीचाहिये ॥ याप्रकारका विचारकरिकै सोनिर्धनदरिद्रीपुरुष मोहतैंभी निवृत्तहोवैहै ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥
धनकरिकैही संपूर्णकामक्रोधादिकदोष उत्पन्नहोवैहैं ॥ जेब्रह्मवेत्तापुरुषहैं तिनोंकूंभी जबी धनकरिकै कामक्रोधादिकदोष प्राप्तहो
वैहैं ॥ तबी बहिर्मुखअज्ञानीजीवोंकी क्याकथाहै ? ॥ यातैं सर्वतैंअधिकविद्वान्ब्राह्मणकेनिर्णयकरणेवासते यासर्वब्राह्मणोंकेसमा
जविषे जूवाकीन्यांई मैं बहुतधनकूंराखौं ॥ जोइनसर्वब्राह्मणोंविषे अधिकविद्वान्ब्राह्मणहोवैगा ॥ सोजबी याधनकूंलैजावैगा ॥ त
बी यहसंपूर्णब्राह्मण क्रोधकरिकैव्याकुलहुए आपेही तिसब्राह्मणकेसाथविवादकरैंगे ॥ शंका ॥ हेभगवन्! धनकरिकैजो तुम ब्रा
ह्मणोंकाक्षोभकरावोंगे तौ तुमारेकूंपापहोवैगा ॥ समाधान ॥ नीतिपूर्वकजोधर्महै सो राजावोंकेपापकासाधनहोवैनहीं ॥ किंतु
सुखकासाधनहोवैहै ताधर्मकेकरणेकरिकै हमारेकूं पापहोवैगानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ ब्राह्मणोंकेक्षोभविषे मैं कारणनहीं ॥ किंतु ति
नोंकेलोभादिकदोषही कारणहैं ॥ यातैं याउपायकरिकै सर्वतैंअधिकब्राह्मणकेजानणेविषे हमारेकूं किंचित्मात्रभी पापनहींहोवैगा
॥ शंका ॥ हेभगवन्! सर्वतैंअधिकजाणिकै जिसब्राह्मणकेतांई धनदेवोंगे ॥ सोब्राह्मण जोकदाचित् ताधनकरिकै पापकर्मकरैगा
तौ तुमारेकूंभी परंपराकरिकै पापकीप्राप्तिहोवैगी ॥ समाधान ॥ सर्वतैंअधिकजोविद्वान्है तिसकूं ताधनकरिकै पापकर्महोवैगा
नहीं ॥ काहेतैं ? शमदमादिकगुणोंकरिकैयुक्तब्राह्मणही सर्वतैंअधिकहोवैहै ॥ तेशमदमादिकगुण जहांरहैहैं तहां कामक्रोधादिक
दोषोंकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ और कामक्रोधादिकोंतैंविना पापकर्मविषेप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ तेकामक्रोधादिकदोष शमदमादिकगुणवा
न्पुरुषविषे संभवैनहीं ॥ यातैं कामक्रोधादिकोंतैंरहित शमदमादिकगुणवान् सर्वतैंअधिकविद्वान्पुरुष किसप्रकार पापकर्मकूंकरै
गा ॥ किंतु कदाचित्भी सोविद्वान्पुरुष पापकर्मनहींकरैगा ॥ हेशिष्य! याप्रकारकाविचारकरिकै सोजनकराजा पुनःयाप्रकार
काविचार करताभया ॥ याब्राह्मणोंकेसमाजविषे याज्ञवल्क्यमुनितैंविना अन्यकिसीब्राह्मणविषे सर्वतैंअधिकताकी संभावनाहो
वैनहीं ॥ किंतु सूर्यभगवान्काशिष्य यहयाज्ञवल्क्यमुनिही सर्वतैंअधिकप्रतीतिहोवैहै ॥ शंका॥ हेभगवन्! संभाषणकरेतैंविनाही

याज्ञवल्क्यकीअधिकता आपनैं कैसेजाणी? ॥ **समाधान** ॥ काम क्रोध लोभ मोह गर्व इत्यादिकदोषोंका जाकेविषेअभावहोवैहै सो विद्वानहीहोवैहै ॥ यहविद्वान्कालक्षण याज्ञवल्क्यमुनिविषेही घटैहै ॥ काहेतें? या याज्ञवल्क्यमुनिविषे काम क्रोध लोभ मोह हैंनहीं ॥ और इतनीविद्याकूंपाइकैभी याकेविषेगर्वनहीं ॥ और जडपुरुषकीन्यांई मौनकूंधारणकरिकै यहयाज्ञवल्क्यमुनिस्थितहै ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ याकेसमान कोईदूसराविद्वान्नहीं ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! जोयहयाज्ञवल्क्यमुनि रागद्वेषादिकोंतैंरहितहै तौ तुमारेधनकूंकैसेग्रहणकरैंगा? ॥ रागतैंविना धनादिकपदार्थोंकाग्रहण होवैनहीं ॥ **समाधान** ॥ यहयाज्ञवल्क्यमुनि हमारेधनकूंजोग्रहणकरैंगा सो आपणेभोगवासते नहींग्रहणकरैगा ॥ किंतु जीवोंकेउपकारवासते धनकूंग्रहणकरिकै याब्राह्मणोंकूं सभाविषेजीतैंगा ॥ किंवा यहहमाराधन जबी याज्ञवल्क्यमुनिकेहस्तविषेआवैगा तौ ताधनकरिकै सर्वप्राणियोंका उपकारहीहोवैगा ॥ काहेतें? याज्ञवल्क्यमुनिका धन तथाशरीर आपणेभोगवासतेनहीं ॥ किंतु केवल परउपकारकेवासतेहै ॥ किंवा जैसे कोईपामरपुरुष धनादिकपदार्थोंकीलिप्साकरिकैयुक्तहुआ प्रसन्नदृष्टितें राजाकूंदेखैहै ॥ तैसे यह याज्ञवल्क्यमुनि प्रसन्नदृष्टितें वारंवार हमारेकूंदेखैहै ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ यांमुनिका हमारेऊपरि परमअनुग्रहहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जहांजहां प्रसन्नतापूर्वक दृष्टिहोवैहै ॥ तहां धनादिकपदार्थोंकीलिप्साहोवैहै अथवा अनुग्रहहोवैहै ॥ लिप्सातैंविना तथा अनुग्रहतैंविना प्रसन्नतापूर्वक दृष्टिहोवैनहीं ॥ तहां धनादिकपदार्थोंकीलिप्सातौ याज्ञवल्क्यमुनिविषेहैनहीं ॥ परिशेषतें अनुग्रहकरिकैही हमारीओरिदेखतेहैं ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! याज्ञवल्क्यमुनिविषे रागद्वेषनहींहै यहतुम कैसेजाणतेहो? ॥ **समाधान** ॥ याज्ञवल्क्यमुनिकेजीतणेकीहैइच्छाजिनोंकूं ऐसे जे ये अहंकारीब्राह्मणहैं ॥ ते परस्परहसतेहुए दुरुत्तरवाक्योंकूंकथनकरैहैं ॥ तिनब्राह्मणोंकेवचनोंकूं यहयाज्ञवल्क्यमुनि अज्ञानीपुरुषकीन्यांई श्रवणकरैहै ॥ और तिनवचनोंकूंश्रवणकरिकैभी यहयाज्ञवल्क्यमुनि जडपुरुषकीन्यांई तिनोंकाउत्तरकहतानहीं ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ यायाज्ञवल्क्यमुनिकेचित्तविषे क्षोभनहीं ॥ और जोपुरुष क्षोभतैंरहितहोवैहै सोईहीपुरुष रागद्वेषतैंरहितहोवैहै ॥ हेशिष्य! इसतैंआदिलैके बहुतप्रकारकाविचार सोजनकराजा आपणेमनविषेकरताभया ॥

तिसतैंअनंतर सोजनकराजा कामधेनुगौकेसमान १००० एकसहस्रगौवोंकूं तथा ४०००० चालीसहस्र सुवर्णकेनिष्कोंकूं सभाविषे स्थापनकरताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ एकसहस्रगौवोंके दोसहस्र शृंगहोवैंहैं ॥ तहांएकशृंगकेसाथ बीसबीस सुवर्णकेनिष्क राजा बांधताभया ॥ नवेतोलापरिमाणसुवर्णकूं निष्ककहेहैं ॥ याप्रकार शास्त्रकीरीतिसें सोजनकराजा सभाविषे गौवोंकूंस्थापनकरताभया ॥ और सर्वब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचन राजा कहताभया ॥ हेसर्वब्राह्मणो! जोतुमारेमध्यविषे श्रेष्ठब्रह्मवेत्ताब्राह्मणहोवै ॥ सो यहसंपूर्णगौवों आपणेआश्रमविषेलैजावै ॥ हेशिष्य! याप्रकारके जनकराजाकेवचनकूंश्रवणकरिकै तेसंपूर्णब्राह्मण नीचैमुखक रिकै तूष्णींभावकूंप्राप्तहोतेभये ॥ आपणेविद्याकेबलकरिकै सर्वब्राह्मणोंकेजीतणेविषे कोईभीब्राह्मण समर्थनहींहोताभया ॥ याप्र कार संपूर्णब्राह्मणोंकूंतूष्णींहुआदेखिकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि सामवेदपाठीशिष्यकेप्रति यहवचन कहताभया ॥ हेसामवेदपाठी शिष्य! तू येसंपूर्णगौवां हमारेगृहविषे शीघ्रहीलैजावो ॥ और सर्वब्राह्मणोंकेप्रति उच्चैस्वरकरिकै यहवचनकहो ॥ सर्वतेंअधिक ब्रह्मवेत्ता याज्ञवल्क्यमुनि सर्वब्राह्मणोंकेगौवोंकूंलैजावैहै ॥ याप्रकार याज्ञल्क्यमुनिकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोसामवेदपाठीशिष्य तिसीप्रकार सर्वब्राह्मणोंकेप्रति वचनकहिकै सर्वगौवोंकूं याज्ञवल्क्यमुनिकेआश्रमविषेलेजाताभया ॥ तिसतैंअनंतर तेसंपूर्णब्राह्म ण याज्ञवल्क्यऊपरि क्रोधवान्होतेभये ॥ और जनकराजातौ परमआनंदकूंप्राप्तहोताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि ए कहीकालविषे ब्राह्मणोंकेतौ दुःखकाकारणहोताभया ॥ और जनकराजाके सुखकाकारणहोताभया ॥ याकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमु नि याअर्थकूंबोधनकरताभया ॥ सांख्यशास्त्रवाले शब्दस्पर्शादिकविषयोंविषेही सुखदुःखमानैंहैं ॥ सो तुमोंनैं अंगीकारनहींकर णा ॥ किंतु आपणेमनविषे सुखदुःखरहैहैं यहपक्ष तुमोंनैं अंगीकारकरणा ॥ काहेतें? जोस्नेहकरिकैयुक्त चित्तहोवैहै ताकेविषेतौ सु खकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ जैसे जनकराजाकूं सुखउत्पन्नभयाहै ॥ और जोचित्त द्वेषकरिकैयुक्तहोवैहै ताकेविषे दुःखकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ जैसे ब्राह्मणोंकूं दुःखकीउत्पत्तिभईहै ॥ जोविषयकाही सुखदुःखधर्महोवै तौ सर्वलोकोंकूं ताविषयतें सुखकीहीप्राप्तिहोणीचा हिये ॥ अथवा दुःखकीही प्राप्तिहोणीचाहिये ॥ किसीकूं सुखकीप्राप्ति औरकिसीकूं दुःखकीप्राप्ति यहविषमता संभवैनहीं ॥ और

यहविषमता सर्वजीवोंकूं अनुभवहोवैहै ॥ यातैं विषयकाधर्म सुखदुःखनहीं ॥ किंतु बाह्यकारणतैंविनाही यहवस्तु रमणीकहै तथा यहवस्तु अरमणीकहै याप्रकारकीकल्पनातैं मनविषे सुखदुःख उत्पन्नहोवैहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे निर्जनवनविषे प्राप्तभयाजोवीतराग पुरुषहै ताकूं आपणेमनतैंही तहांआनंदहोवैहै ॥ और तिसीनिर्जनवनविषे प्राप्तभयाजोरागीपुरुषहै तिसकूं आपणेमनतैंही तहांदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ किसीविषयतैं तावनविषेस्थितपुरुषोंकूं सुखदुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं मनही सुखदुःखकाआश्रयहै अब दुःखकरिकैजन्य ब्राह्मणोंकेक्रोधकूंदिखावैहैं ॥ हेशिष्य! याप्रकार गौवोंकूंगयाहुआदेखिकै क्रोधकरिकै तिनब्राह्मणोंकेआसन चलायमानहोतेभये ॥ और मुखकेश्मश्रु कंपायमानहोतेभये ॥ और नीचेकेदांतोंकीजोपंक्तिहै सा मुखकेभीतरि प्रवेशकरतीभई और ऊपरिकेदांतोंकीपंक्तिकरिकै नीचेकेअधरकूंदबावतेभये ॥ और जैसे भूतावेशवालापुरुष नानाप्रकारके रुदनादिककरैहै ॥ तैसे क्रोधकरिकैयुक्तहुए केईकब्राह्मण रुधिरकरिकैपूरितनेत्रोंकरिकै अश्रुवोंकापरित्यागकरतेभये ॥ और केईकब्राह्मण उन्मत्तपुरुषकीन्यांई नानाप्रकारकेशब्दोंकूंकरतेभये ॥ याप्रकार तिनब्राह्मणोंके यज्ञमंडलविषे महान्घोरशब्द होताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पूर्णिमाकेप्राप्तहुए समुद्रविषेक्षोभहोवैहै तैसे सर्वब्राह्मण क्षोभवान्होइकै याप्रकारकेवचन कहतेभये ॥ हमसर्वविद्वान्ब्राह्मणोंकूं यहयाज्ञवल्क्य एकलाहीउल्लंघनकरिकैजावैहै ॥ यातैं हमारेकुलोंकूंधिक्कारहै ॥ तथा हमारेअध्यापनकरावणेकी जे महान्शालाहैं तिनोंकूंभी धिक्कारहै ॥ तथा हमारेजीवनकूंभी धिक्कारहै ॥ और अध्ययनकालविषे जोहमोंनैं गुरुवोंकीसेवाकरीहै तासेवाकूंभी धिक्कारहै ॥ तथा हमारेवेदअध्ययनकूंभी धिक्कारहै ॥ तथा वेदोंकेअध्ययनकरणेहारे जेहमारेशिष्यहैं तिनोंकूंभीधिक्कारहै ॥ हेशिष्य! याप्रकार सर्वब्राह्मणोंकीअवस्थाकूंदेखिकरिकै आश्वलनामाब्राह्मण बहुतक्रोधवान्होताभया ॥ और याज्ञवल्क्यमुनिकेसमीप आइके सोआश्वलनामाब्राह्मण याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेगुरुसंप्रदायतैंरहित दुराचारियाज्ञवल्क्य! हमसर्वब्राह्मणोंकेमध्यविषे क्या तूहीएक सर्वतैंअधिकविद्वान्है? ॥ हेयाज्ञवल्क्य! तुमारेविषे विद्याकरिकैतौ अधिकताहैनहीं ॥ किंतु लोभकरिकै तथागर्वकरिकै तेरेविषे हमारेतैंअधिकताहै ॥ कैसेहैंहमसंपूर्णब्राह्मण? हिरण्यगर्भकेसमानहैं तथा गर्वलोभादिकदोषोंतैंरहितहैं ॥ तथा शमद

मादिकसाधनोंकरिकैयुक्तहै ॥ और तर्करूपीमननकीसिद्धिवासते चतुर्दशविद्याकूं हम जानणेहारेहैं ॥ तेचतुर्दशविद्याये हैं ॥ ऋग् यजुष् साम अथर्वण येचारिवेद तथा शिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त ज्योतिष पिंगल येषट् वेदकेअंग ॥ मीमांसाशास्त्र न्याय शास्त्र पुराण धर्मशास्त्र ॥ यहचतुर्दशविद्याहैं ॥ आयुर्वेद धनुर्वेद गंधर्ववेद अर्थशास्त्र याचारोंकूंमिलाइके अष्टादशविद्याहोवैहैं ॥ हे याज्ञवल्क्य ॥ यापृथिवीविषे लज्जातैंरहितहुआ पुरुष कौनपंडितनहींहोता ? किंतु लज्जातैंरहितहुआपुरुष पंडितहीहोवैहै ॥ जैसे ह मसर्वब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंविषे लज्जातैंरहितहुआ तू पंडितहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्य! महान्बली जेवासुकीआदिकसर्पहैं तिनोंकूं पा दोंकरिकैकौनस्पर्शकरैगा ॥ और तीनलोकोंकूंदाहकरणेहारी जोकालकूटविषहै तिसकूं योगसाधनातैंरहित कौनपुरुष भक्षणकरै गा ? और प्रज्वलितजोअग्निहै तिसकूं मुष्टिविषेबांधिकरिकै कौनपुरुष गृहविषेलैजावैगा? ॥ तैसे यासर्वब्राह्मणोंकूं तेरेतैंविना कौ नपुरुष क्रोधकरावैगा?॥ किंतु तेरेतैंविना दूसराकोई ब्राह्मणोंकेक्रोधकरावणेहारानहीं ॥ एकतूही गर्व लोभ अनम्रता करिकैयुक्तहु आ ब्राह्मणोंकेक्रोधकरावणेहाराहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्य! यासंपूर्णब्राह्मणोंविषे एकएकब्राह्मणभी क्रोधकरिकैयुक्तहुआ संपूर्णजग तकेदाहकरणेविषेसमर्थहै ॥ तौ क्रोधकरिकैयुक्तहुए येसंपूर्णब्राह्मण तेरेसरिखेअधमब्राह्मणकूं किसवासतेनहींदाहकरैंगे? किंतु अवश्यतेरानाशकरैंगे ॥ हेशिष्य! इत्यादिककठोरवचनरूपीबाणोंकरिकै सोआश्वलनामाब्राह्मण याज्ञवल्क्यमुनिकेकर्णोंकूंभेदन करताभया ॥ तथापि सोयाज्ञवल्क्यमुनि किंचित्मात्रभी क्षोभकूंनहींप्राप्तहोताभया ॥ **दृष्टांत** ॥ जैसे पाषाणोंकीवृष्टिकरिकै ताड नाकूंप्राप्तहुआ पर्वत क्षोभकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तैसे याज्ञवल्क्यमुनिभी क्षोभकूंनहींप्राप्तहोताभया ॥ उलटा आश्वलकेवचनोंकूंश्रव णकरिकै हसताहुआ सोयाज्ञवल्क्यमुनि याप्रकारकावचन आश्वलनामाब्राह्मणकेप्रति कहताभया ॥ हेआश्वलब्राह्मण! याब्राह्मणों केसमाजविषे जोजोब्राह्मण ब्रह्मवेत्ताहै ॥ तिसतिसब्राह्मणकेतांई हम सर्वदा नमस्कारकरैहैं ॥ **शंका** ॥ हेयाज्ञवल्क्य! जोतुमारी ऐसीब्राह्मणोंविषेश्रद्धाहै ॥ तौ सर्वब्राह्मणोंकीगौवां तुमनैं काहेवासतेहरणकरी हैं? ॥ **समाधान** ॥ हेआश्वल! सुवर्णकरिकै स हित गौवोंकूंदेखिकरिकै तिनगौवोंविषेहमारीअभिलाषाहुई ॥ याकारणतैं हमनैं गौवोंकाहरणकऱ्याहै ॥ याकेविषे किसवासते

ब्राह्मण क्रोधकरैं हैं ? हेआश्वल ! जोमैं इनब्राह्मणोंकीगौवां लैजाता तौ याब्राह्मणोंकाक्रोध हमारेऊपरि घटता ॥ परंतु हमनैं इ नब्राह्मणोंकीगौवां लियांनहीं ॥ किंतु जनकराजा गौवोंकादाताहै ॥ और मैं गौवोंकूंलैजाणेहाराहूं ॥ याकेविषे ब्राह्मणोंकेक्रोधका कौनकारणहै ॥ यहवार्त्ता तुमविचारकरिकैकहो ॥ और हेआश्वल! यहजनकराजा बहुतधनवान्‌है ॥ जोइनसर्वब्राह्मणोंकूं तथातुमारे कूंहमारेन्यांई धनग्रहणकरणेकीइच्छाहोवै तौ राजाजनकतैं तुमसंपूर्णब्राह्मण धनकूंलेवो तुमारेतांई दानदेणेविषे हम राजाकूंनि वारणकरतेनहीं ॥ यातैं हमारेऊपरि क्रोधकरणा तुमारेकूं उचितनहीं ॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं आ श्वलकेप्रतिकह्या तबी सोआश्वलनामाब्राह्मण जैसेघृतकेपायेतैं अग्नि क्षोभकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे पुनःक्षोभकूंप्राप्तहोताभया ॥ ति सतैंअनंतर याज्ञवल्क्यमुनिकेसाथ विवादकरणेवासते सोआश्वल याज्ञवल्क्यकेप्रति अष्टप्रश्न करताभया ॥ तिनोंविषे चारिप्रश्नों कानाम अतिमोक्षहै ॥ और चारिप्रश्नोंकानाम संपद है ॥ तहां कर्मीपुरुषोंके जेवाकादिअध्यात्महैं तिनवाकादिकअध्यात्मोंका जोअग्निआदिकअधिदैवोंकेसाथि परिछेदहै ॥ तापरिछेदरूपमृत्युकेनिवृत्तिकासाधन जोवाकादिकोंका अग्निआदिकोंकेसाथ अभे दज्ञानहै ताकूं मोक्षकहेहैं ॥ और ताअभेदज्ञानकरिकै वाकादिकअध्यात्मोंकूं जोअग्निआदिकअधिदैवभावकीप्राप्तिरूपफलहै ता कूं अतिमोक्षकहेहैं ॥ ताअतिमोक्षरूपफलकूंविषयकरणेहारे प्रश्नोंकूंभी अतिमोक्षकहेहैं ॥ और निकृष्टवस्तुविषे किंचित्‌मात्रस मानधर्मकूंलैके जोउत्कृष्टदृष्टीहै ताकूं संपदकहेहैं ॥ जैसे श्राद्धकेअन्नविषे अमृतदृष्टि तथाब्राह्मणविषे विष्णुदृष्टि ॥ तासंपदकूंवि षयकरणेहारेप्रश्नोंकूंभी संपदकहेहैं ॥ अब चारिअतिमोक्षप्रश्नोंकूंदिखावैहैं ॥ आश्वलउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ! ऋत्विगादिकसाधनों करिकैसंपन्नहुएभी अग्निहोत्रादिककर्म परिच्छेदभावजन्य जोप्रमादरूपमृत्युहै ताकरिकैव्याप्तहैं ॥ यद्यपि शास्त्रउक्तकर्मोंकेअ नुष्ठानतैं अशास्त्रीय इंद्रियादिकोंकीवृत्तियां निवृत्तहोवैहैं ॥ तथापि परिच्छिन्नभाव ज्ञानतैंविना निवृत्तहोवैनहीं ॥ यातैं कि सज्ञानकरिकै यजमान परिच्छिन्नभावका परित्यागकरिकै अपरिच्छिन्नभावरूपफलकूं प्राप्तहोवैहै? ॥ १ ॥ और हेयाज्ञवल्क्य ! दिनरात्रिरूपकाफलकरिकै संपूर्णपदार्थ परिच्छिन्नहोइरहैहैं ॥ तापरिच्छिन्नभावकीनिवृत्ति किसज्ञानकरिकैहोवैहै? ॥ २ ॥ और हेयाज्ञ

वल्क्य ! शुक्लपक्ष कृष्णपक्षरूप कालकरिकै संपूर्णपदार्थ परिच्छिन्न होइरहेहैं ॥ तापरिच्छिन्नभावकीनिवृत्ति किसज्ञानकरिकैहोवैहै? ॥ ३ ॥ और हेयाज्ञवल्क्य ! यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै निराश्रयआकाशविषे यजमान किससाधनकरिकैगमनकरैहै? ॥ ४ ॥ अब इनचारिप्रश्नोंकेउत्तरोंकूंदिखावैहैं ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेआश्वलब्राह्मण ! कर्मकर्तायजमानकी जोअध्यात्मवाक्हे ॥ और तावाक्का अधिदैवरूपजोअग्निहै ॥ और तावाक्का अधियज्ञरूपजोहोताहै ॥ यातीनोंकेअभेदकूंविषयकरणेहारी जा अधिदैवअग्निरूपयजमानकावाक्मैंहूं याप्रकारकी होताकीदृष्टिहै ॥ सादृष्टि यजमानके प्रथम परिच्छेदजन्यमृत्युकेतरणकासाधनहै ॥ १ ॥ और हेआश्वल ! यजमानकाजोअध्यात्मचक्षुहै ॥ और ताचक्षुका अधिदैवरूपजोसूर्यहै ॥ और ताचक्षुका अधियज्ञरूपजोअध्वर्युहै ॥ यातीनोंकेअभेदकूंविषयकरणेहारी जा अधिदैवसूर्यरूप यजमानकाचक्षु मैंहूं याप्रकारकी अध्वर्युकीदृष्टीहै ॥ सादृष्टि यजमानके द्वितीय परिच्छेदकूंनिवृत्तकरैहै ॥ २ ॥ और हेआश्वल ! यजमानका अध्यात्मरूपजोप्राणहै ॥ और ताप्राणका अधिदैवरूपजोवायुहै ॥ और ताप्राणका अधियज्ञरूपजोउद्गाताहै ॥ यातीनोंकेअभेदकूंविषयकरणेहारी जा अधिदैववायुरूप यजमानकाप्राण मैंहूं याप्रकारकी उद्गाताकीदृष्टिहै ॥ सादृष्टी यजमानकेतृतीयपरिच्छेदकूंनिवृत्तकरैहै ॥ ३ ॥ और हेआश्वल ! यजमानका अध्यात्मजोमनहै ॥ और तामनका अधिदैवरूपजोचंद्रमाहै ॥ और तामनका अधियज्ञरूप जोब्रह्माहै ॥ यातीनोंकेअभेदकूंविषयकरणेहारी जाअधिदैवचंद्रमारूप यजमानकामन मैंहूं याप्रकारकी ब्रह्माकीदृष्टीहै ॥ तादृष्टिकेप्रभावतैं यजमान आकाशविषेगमनकरैहै ॥ ४ ॥ इहां दृष्टिशब्दकरिकै सर्वत्र ज्ञानकाग्रहणकरणा ॥ और परिच्छेदशब्दकरिकै भेदकाग्रहणकरणा ॥ और ऋग्वेदकेजानणेहारेब्राह्मणकूं होता कहैहैं ॥ और यजुर्वेदकेजानणेहारेब्राह्मणकूं अध्वर्यु कहैहैं ॥ और सामवेदकेजानणेहारेब्राह्मणकूं उद्गाता कहैहैं ॥ और ऋग् यजुष् साम यातीनवेदोंकेजानणेहारेब्राह्मणकूं ब्रह्मा कहैहैं ॥ यहचारिऋत्विक् यज्ञकेकरावणेहारे होवैहैं ॥ और यज्ञकेकरणेहारे क्षत्रियादिकोंकूं यजमान कहैहैं ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार अतिमोक्षरूप चारिप्रश्नोंकेउत्तरकूं जबी याज्ञवल्क्यमुनिनेंकह्या ॥ तबी सोआश्वलनामाब्राह्मण पुनःसंपदरूप चारिप्रश्नोंकूं करताभया ॥ आश्वलउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ! होताके संपदरूपज्ञानकरिकै

यजमानकूं किसफलकीप्राप्तिहोवैहै? ॥ १ ॥ और अध्वर्युके संपदरूपज्ञानकरिकै यजमानकूं किसफलकीप्राप्तिहोवैहै? ॥२॥ और ब्रह्माकेसंपदरूपज्ञानकरिकै यजमानकूं किसफलकीप्राप्तिहोवैहै? ॥३॥ और उद्गाताके संपदरूपज्ञानकरिकै यजमानकूंकिसफलकीप्राप्तिहोवैहै? ॥४॥ अब याचारिप्रश्नोंकेउत्तरोंकूंदिखावैहैं॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच॥ हेआश्वल! याज्या पुरोनुवाक्या शस्या यातीनऋचावोंविषे त्रित्वसंख्यारहैहै ॥ तथा तीनलोकोंविषेभी त्रित्वसंख्यारहैहै ता त्रित्वसंख्यारूप समानधर्मकूंग्रहणकरिकै जबी होतायाज्यादिकतीनऋचावोंकूं तीनलोकरूपकरिकैदेखेहै तबी ताहोताके संपदरूपज्ञानकरिकै यजमानकूं तीनलोकोंकाजयरूपफल प्राप्तहोवैहै ॥ इहां यज याप्रकारकीप्रेरणातैंअनंतर पठनकरीहुई ऋचाकूं याज्याकहैहैं ॥ और ब्रूहि याप्रकारकीप्रेरणातैंअनंतर पठनकरीहुईऋचाकूं पुरोनुवाक्याकहैहैं ॥ और एकश्वासकरिकै पठनकरीहुईऋचाकूं शस्याकहैहैं ॥ १ ॥ और हेआश्वल! अध्वर्युनें अग्निविषे हवनकरी जेआहुतियां हैं ते उज्ज्वलत्व सशब्दत्व अधोगामित्वरूपकरिकै तीनप्रकारकीहैं ॥ और जैसे आहुतियोंविषे उज्ज्वलत्वादिकधर्म रहैहैं तैसे देवलोक पितृलोक मनुष्यलोक यातीनलोकोंविषेभी उज्ज्वलत्वादिकधर्म रहैहैं ॥ तिनउज्ज्वलत्वादिक समानधर्मोंकूंग्रहणकरिकै जबी सोअध्वर्यु तिनआहुतियोंकूं देवलोकादिरूपकरिकैदेखेहै तबी ताअध्वर्युकेसंपदरूपज्ञानकरिकै यजमानकूं देवलोक पितृलोक मनुष्यलोक यातीनलोकोंकाजयरूपफल प्राप्तहोवैहै ॥ २ ॥ और हेआश्वल! वृत्तिरूपकरिकै मन अनंतहै ॥ और विश्वेदेवताभीअनंतहैं ॥ ता अनंतत्वरूप सामान्यधर्मकूंग्रहणकरिकै जबी ब्रह्मा मनकूं विश्वेदेवतारूपकरिकैचिंतनकरैहै ॥ तबी ताब्रह्माकेसंपदरूपज्ञानकरिकै यजमानकूं अनंतफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ३ ॥ और हेआश्वल! उद्गातानें गायनकरीजे याज्या पुरोनुवाक्या शस्या यहतीनऋचा ॥ तिनतीनोंऋचावोंकूं जबी उद्गाता प्राण अपान व्यान रूपकरिकै देखेहै ॥ तबी ताउद्गाताकेसंपदरूपज्ञानकरिकै यजमानकूं भूर् भुवः स्वर् यातीनलोकोंकाजयरूपफल प्राप्तहोवैहै ॥ ४ ॥ हेशिष्य! याप्रकार जबी याज्ञवल्क्यमुनिनें आश्वलकेअष्टप्रश्नोंकाउत्तरकह्या तबी सोआश्वल याज्ञवल्क्यकेजीतणेकी आपणेविषेसामर्थ्य नहींदेखताभया ॥ और लज्जाकूंप्राप्तहुआ सोआश्वल याज्ञवल्क्यकेसाथ विवादकरावणेवासते आर्तभागनामाब्राह्मणकेमुखकी

ओरिदेखिकै पुनःप्रश्नकरणेतैं निवृत्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोआर्तभाग याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नोंकूंकरताभया ॥ आर्त्तभा
गउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! ग्रह कितनेहैं ? तथा अतिग्रह कितनेहैं ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेआर्तभाग! अष्टग्रहहैं ॥ और अष्ट अ
तिग्रहहैं ॥ आर्त्तभागउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! ते अष्टग्रह कौनहैं और ते अष्टअतिग्रह कौनहैं? ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेआर्तभा
ग! श्रोत्र १ त्वक् २ चक्षु ३ रसन ४ घ्राण ५ मन ६ वाक् ७ हस्त ८ येअष्टइंद्रिय जीवोंकूंबंधनकरैहैं यातैं इनअष्टोंकूं ग्रहकहै
हैं ॥ और शब्द १ स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गंध ५ इच्छा ६ नाम ७ क्रिया ८ येअष्ट श्रोत्रादिकअष्टइंद्रियोंके क्रमतैंविषयहैं ॥ ति
नशब्दादिकविषयोंतैंविना केवलश्रोत्रादिकइंद्रिय जीवकूंबंधनकरैनहीं ॥ किंतु शब्दादिकविषयोंकरिकैयुक्तहुए श्रोत्रादिकइंद्रिय
जीवोंकेबंधनकाहेतुहैं ॥ यातैं शब्दादिकअष्टविषयोंकूं अतिग्रहकहेहैं ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ हेआर्तभाग! जैसे
प्रसिद्धसमुद्रविषे प्राप्तहुएपुरुषकूं मकरादिकग्रह भक्षणकरैहैं ॥ और तिनमकरादिकग्रहोंकूं तिनोंतैंभीअधिकबलवान् तिमिंगिला
दिकअतिग्रह भक्षणकरैहैं ॥ तैसे संसाररूपसमुद्रविषे प्राप्तहुएअज्ञानीजीवकूं श्रोत्रादिकइंद्रियरूपग्रह भक्षणकरैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥
जीवकूं श्रोत्रादिकइंद्रिय आपणेअधीनकरैहैं ॥ और तिनश्रोत्रादिकइंद्रियरूपग्रहोंकूं शब्दादिकविषयरूपअतिग्रह भक्षणकरैहैं ॥
तात्पर्ययह ॥ शब्दादिकविषय श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेअधीनकरैहैं ॥ यहही तिनोंकाभक्षणहै ॥ और हेआर्तभाग! जैसे मा
र्जार मूषककूं ग्रहणकरैहै ॥ तैसे श्रोत्रादिकइंद्रिय याजीवकूं आपणेवशकरैहैं ॥ और जैसे धीवरपुरुष जलविषेस्थित मत्स्योंकूं
ग्रहणकरैहैं ॥ तैसे शब्दादिकविषय श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेवशकरैहैं ॥ और हेआर्तभाग! जैसे पिशाचादिकग्रहकरिकैयुक्तहु
आ यहपुरुष आपणेहितकूं तथाअहितकूं जाणतानहीं ॥ तैसे श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेअधीनहुआ यहजीव आपणेमोक्षरूपहितकूं त
थाबंधरूप अहितकूं देखतानहीं ॥ और हेआर्तभाग! जैसे किसीबलवान्पुरुषकरिकै बांध्याहुआ मकर यद्यपि किसीपुरुषकंमा
रणेकीइच्छा नहींकरैहै ॥ तथापि ताबलवान्पुरुषरूपअतिग्रहकरिकै प्रेरणाकन्याहुआ सोमकर अन्यपुरुषकेमारणेवासते प्रवृत्तहो
वैहै ॥ तैसे श्रोत्रादिकइंद्रियरूप ग्रह यद्यपि जीवोंकेबंधनकरणेकीइच्छानहींकरैहैं ॥ तथापि शब्दादिकविषयरूप अतिग्रहोंके अधीन

हुए श्रोत्रादिकइंद्रिय सर्वदा जीवकेबंधनकरणेवासते प्रवृत्तहोवैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! याज्ञवल्क्यमुनिनैं अष्टग्रह तथाअष्टअतिग्र
हकहे सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? अन्यशास्त्रविषे पंचकर्मइंद्रिय पंचज्ञानइंद्रिय एकअंतःकरण येएकादशइंद्रियांकहेहैं ॥ और एकादश
हीतिनोंकेविषयकहेहैं ॥ ताशास्त्रका विरोधहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ! यद्यपि इंद्रिय तथाविषय एकादशहैं ॥ तथापि श्रोत्रादिक
अष्टइंद्रियोंकीप्रधानताकूं तथाशब्दादिकअष्टविषयोंकीप्रधानताकूं ग्रहणकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं अष्टग्रह तथाअष्टअतिग्रह कथन
करैहैं ॥ अथवा ॥ त्वक्इंद्रियविषे तथाहस्तइंद्रियविषे पाद पायु उपस्थ यातीनोंका अंतर्भावमानिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं अष्टग्रह अष्टअ
तिग्रह कहेहैं तिनोंविषेभी उपस्थइंद्रियका त्वक्इंद्रियविषेअंतर्भावहै ॥ काहेतें ? त्वक्इंद्रिय सर्वशरीरविषेव्यापकहै ॥ यातैं स्त्रीकेसं
बंधतें जोउपस्थविषे सुखउत्पन्नहोवैहै ॥ सोसुख स्पर्शकरिकैजन्यहै ॥ यातैं सोसुख त्वक्इंद्रियकरिकैजन्यहै ॥ यारीतिसैं उपस्थका
त्वक्इंद्रियविषेअंतर्भावहै ॥ और पादइंद्रियतें गमनरूपक्रियाहोवैहै ॥ और पायुइंद्रियतें मलकापरित्यागरूप क्रियाहोवैहै ॥ औ
र हस्तइंद्रियतेंग्रहणरूपक्रियाहोवैहै ॥ याप्रकार क्रियाकीसाधनता तीनोंविषेसमानहै ॥ यातैं पायुका तथापादका हस्तइंद्रियविषे
अंतर्भावहै ॥ अथवा जिसकालविषे पायुइंद्रियका मलकापरित्यागरूपव्यापारहोवैहै ॥ तथा पादइंद्रियका गमनरूपव्यापारहो
वैहै ॥ तिसकालविषे हस्तइंद्रियका आकुंचन प्रसारणरूप व्यापार अवश्यहोवैहै ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ पायु पाद हस्त याती
नोंके नाडियोंकेबंध समानहैं ॥ तानाडीबंधकीसमानताकूंग्रहणकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं पायुपादका हस्तविषेअंतर्भावकह्याहै ॥
॥ १ ॥ हेशिष्य ! याप्रकार जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं आर्तभागकेप्रश्नकाउत्तरकह्या ॥ तबी सोआर्तभाग पुनःदूसराप्रश्न करताभया ॥
आर्तभागउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ! हिरण्यगर्भतैंआदिलैके जितनाजडअजडप्रपंचहै तिसकूं यहग्रहअतिग्रहरूपमृत्यु भक्षण
करैहै ॥ यातैं संपूर्णजगत् ग्रहअतिग्रहरूपमृत्युकाअन्नहै ॥ और सोग्रहअतिग्रहरूपमृत्युभी जिसदेवताकाअन्नहै ॥ सोदेवता इहांको
नहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ग्रहअतिग्रहरूपमृत्युकेभक्षणकरणेहारा कोईदूसराहै अथवा नहींहै ? जोकहो ग्रहअतिग्रहरूपमृत्युकेभक्षणकर
णेहारा कोईदूसराहै तौ सोभक्षणकरणेहारा दूसरा नित्यहै अथवा अनित्यहै ? जोकहोनित्यहै ॥ तौद्वैतापत्तिहोवैगी ॥ और जो

कहो सोअनित्यहै तौ तादूसरेकेभक्षणकरणेहारा कोईतीसरा मानणाहोवैगा ॥ और तीसरेकेभक्षणकरणेहारा चौथामानणाहोवैगा ॥ याप्रकार अनवस्थादोषकी प्राप्तिहोवैगी ॥ और जोकहो ग्रहअतिग्रहरूपमृत्युकेभक्षणकरणेहारा कोईहैनहीं तौ मोक्षकीप्राप्तिवासते नानाप्रकारकेयत्नकरणे व्यर्थहोवैंगे ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेआर्तभाग ! जैसे सर्वपदार्थोंकूंभक्षणकरणेहारा जोअग्निहै ॥ ताअग्निकूं जल भक्षणकरैहै ॥ तैसे सर्वजगत्कूंभक्षणकरणेहारा जोग्रहअतिग्रहरूपमृत्युहै ताकूं आत्माकासाक्षात्कार भक्षणकरैहै ॥ यातैं मोक्षकीप्राप्तिवासते यत्न व्यर्थनहीं ॥ और जैसे कतकरेणु जलकेमृत्तिकाकूंनिवृत्तकरिकै आपभी निवृत्तहोइजावैहै ॥ कतकरेणुकेनिवृत्तिवासते दूसरेकिसीसाधनकीअपेक्षा होवैनहीं तैसे महावाक्यतैंजन्य जोअंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानहै सो कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिकरिकै आपेहीनिवृत्तहोइजावैहै ॥ ताज्ञानकीनिवृत्तिविषे किसीदूसरेसाधनकीअपेक्षाहोवैनहीं यातैं द्वैतापत्ति तथाअनवस्था येदोनोंप्रकारकेदोष प्राप्तहोवैंनहीं ॥ २ ॥ हेशिष्य! याप्रकार जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं दूसरेप्रश्नका उत्तरकह्या तबी सोआर्त्तभाग पुनःतीसराप्रश्न करताभया ॥ आर्त्तभागउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि! जिसकालविषे ब्रह्मवेत्तापुरुष स्थूलशरीरकापरित्यागकरैहै ॥ तिसकालविषे ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राण अज्ञानीजीवकेप्राणोंकीन्यांई लोकांतरविषेजावैहैं अथवा नहींजावैहैं ॥ जोकहो अज्ञानीपुरुषकेप्राणोंकीन्यांई ब्रह्मवेत्तापुरुषकेभीप्राण लोकांतरविषेजावैहैं तौ जैसे अज्ञानीजीवकूं लोकांतरविषे पुनःदूसरेशरीरकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे ब्रह्मवेत्तापुरुषकूंभी लोकांतरविषे पुनःशरीरकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोकहो मरणकालविषे ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राण लोकांतरविषेनहींजाते ॥ तौ शरीरविषेप्राणोंकेस्थितहुए मृत्युहोवैनहीं ॥ यातैं ब्रह्मवेत्तापुरुषकेशरीरविषे कदाचित्भी मरणव्यवहार नहींहोणाचाहिये ॥ और प्रारब्धकर्मकेनाशतैंअनंतर ब्रह्मवेत्तापुरुषकेशरीरविषे सर्वलोकोंकूं मरणव्यवहारहोवैहै ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेआर्तभाग! ब्रह्मवेत्तापुरुषका जबी प्रारब्धकर्म क्षयहोवैहै ॥ तबी ताब्रह्मवेत्तापुरुषकाप्राण शरीरतैंबाहरीजावैनहीं ॥ किंतु याशरीरकेभीतरही लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अविद्या काम कर्म येतीनों प्राणोंकेलोकांतरगमनविषे कारणहैं ॥ ते अविद्याकामकर्म ब्रह्मवेत्तापुरुषके आत्मज्ञानकरिकैनिवृत्तहुएहैं ॥ यातैं ब्रह्म

वेत्तापुरुषकेप्राणोंका लोकांतरविषेगमनहोवैनहीं॥ याकारणतैं ब्रह्मवेत्तापुरुषकूं अज्ञानीकीन्यांई पुनःशरीरकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और स्थूलशरीरकेसाथ प्राणोंकेसंबंधकीनिवृत्तिकानाम मरणहै ॥ सासंबंधकीनिवृत्ति प्राणोंकेलयहुएभी संभवैहै ॥ यातेंवि द्वान्पुरुषकेशरीरविषे मरणव्यवहारभी संभवैहै ॥ **शंका** ॥ ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राण शरीरतैंबाहरिजातेनहीं ॥ किंतु शरीरकेभीतरि हीलयहोवैहैं यहवार्ता कैसेजाणीजावै? ॥ **समाधान** ॥ जीवत्अवस्थाविषे अत्यंतकृशशरीरभी मरणतैंअनंतर भेरीकीन्यांई सू जिकेस्थूलहोइजावैहै तास्थूलताकाकारण दूसराकोईपदार्थहैनहीं ॥ किंतु धनंजयनामाप्राणही तास्थूलताकाकारणहै ॥ यातें मरणतैंअनंतर शरीरकीविलक्षणस्थूलतारूपहेतुतें शरीरविषे प्राणोंकेलयकाअनुमानहोवैहै ॥ **शंका** ॥ ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राण लोकांतरविषेनहींजावैहैं याकेविषे कौनप्रमाणहै? ॥ **समाधान** ॥ याअर्थविषे साक्षात्श्रुतिभगवतीहीप्रमाणहै ॥ साश्रुतियहहै ॥ **अस्यपरिद्रष्टुरिमाः षोडशकलाःपुरुषायणाःपुरुषंप्राप्यास्तंगच्छंति** ॥ यर्थयह ॥ जैसे नदियां समुद्रविषेलयहोवैहै ॥ तैसे ब्रह्म वेत्तापुरुषके एकादशइंद्रिय पंचप्राण यहषोडशकला अधिष्ठानपुरुषविषेप्रतीतहोवैहैं॥ और तिसीअधिष्ठानपुरुषविषे लयकूंप्राप्तहो वैहैं ॥ यातें ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राण लोकांतरविषेगमनकरैंनहीं ॥ जोब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राणभी लोकांतरविषेगमनकरैंगे तौ ता ब्रह्मवेत्तापुरुषकूंभी अज्ञानीजीवकीन्यांई अवश्यदूसरेशरीरकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और पुनःपुनःशरीरकूंजोधारणकरैहै ताकूं मोक्ष कीप्राप्तिसंभवैनहीं ॥ यातें ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राण लोकांतरविषेजावैंनहीं ॥ ३ ॥ हेशिष्य! याप्रकार जबीयाज्ञवल्क्यमुनिनैं तृतीय प्रश्नकाउत्तरकह्या ॥ तबीसोआर्तभाग पुनःचतुर्थप्रश्न करताभया ॥ आर्तभागउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! जिसकालविषे सोब्रह्मवे त्तापुरुष विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे ताब्रह्मवेत्तापुरुषकूं कौनवस्तु नहींपरित्यागकरती? ॥ तात्पर्ययह ॥ जीवन्मु क्तिअवस्थाकीन्यांई तहां सावशेष द्वैतकालयहोवैहै॥ अथवा निरवशेष द्वैतकालयहोवैहै ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेआर्तभाग! दूसरेसर्वपदार्थ मुक्तपुरुषकापरित्यागकरैहैं ॥ परंतु वामदेवादिकनाम मुक्तपुरुषोंकापरित्यागकरैनहीं॥ यद्यपि वामदेवादिकमुक्त पुरुष नाम रूप क्रिया स्वरूपभेदप्रपंचतें मुक्तहुएहैं ॥ यातें वास्तवतें तिनमुक्तपुरुषोंविषे वामदेवादिकनामोंकासंबंध संभवैनहीं

तथापि लौकिकपुरुष इदानींकालविषे तिनवामदेवादिकमुक्तपुरुषोंके वामदेवादिकनामोंकूंग्रहणकरैंहैं ॥ यातें लौकिकपुरुषोंकीदृष्टिकरिकै मोक्षअवस्थाविषे मुक्तपुरुषोंके वामदेवादिकनामरहैंहैं ॥ और तेमुक्तपुरुषोंकेनाम अनंतहैं ॥ तथा विश्वेदेवताभी अनंतहैं ॥ यातें जोपुरुष ताअनंतनामोंविषे अनंतविश्वेदेवतावोंकाअभेदचिंतनकरैहै ॥ तापुरुषकूं अनंतफलकीप्राप्ति होवैहै ॥ ४ ॥ हेशिष्य! येचारिप्रश्न आर्तभागनें ज्ञानीपुरुषविषेकरे ॥ तिनचारिप्रश्नोंका जबी याज्ञवल्क्यमुनिनें उत्तरकह्या ॥ तबी सोआर्तभाग पुनः अज्ञानीपुरुषविषे पंचमाप्रश्नकरताभया ॥ आर्तभागउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! जिसकालविषे याजीवोंकूं मरणअवस्थाप्राप्त होवैहै ॥ तिसकालविषे याजीवोंका अध्यात्मरूप वाक्इंद्रिय अधिदैवरूपअग्निकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और अध्यात्मरूपप्राण अधिदैवरूपवायुकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और अध्यात्मरूपनेत्रइंद्रिय अधिदैवरूपसूर्यकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और अध्यात्मरूपश्रोत्रइंद्रिय अधिदैवरूपदिशावोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और अध्यात्मरूपमन अधिदैवरूपचंद्रमाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और अध्यात्मरूपशरीर अधिदैवरूपपृथिवीकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और शरीरकेभीतरिस्थित अध्यात्मरूपआकाश अधिदैवरूपबाह्यआकाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और शरीरविषेस्थित अध्यात्मरूपलोम अधिदैवरूपऔषधियोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और शरीरविषेस्थित अध्यात्मरूपकेश अधिदैवरूपवनस्पतिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और अध्यात्मरूपरुधिर तथावीर्य अधिदैवरूपजलकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकार अन्यअध्यात्मरूपइंद्रियोंकाभी आपणेअधिदैवरूपविषे लयजानणा ॥ अग्निआदिकदेवतावोंके अनाश्रितहोइकै आपणेआपणेव्यापारकूंनकरणा यहही मरणकालविषे वाकादिकोंका अग्निआदिकोंविषेलयहै ॥ याप्रकार मरणकालविषे संपूर्णवाकादिकइंद्रियोंकेलयहुए यहअज्ञानीजीव किसकेआश्रितहुआ परलोकविषे सुखदुःखकूंभोगेहै? ॥ हेशिष्य! याप्रकार आर्तभागकेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि ताप्रश्नकेअर्थकूंगुह्यमानिकै सभाविषे ताप्रश्नकेउत्तरकूंनहींकहताभया ॥ किंतु आर्तभागकेहस्तकूंग्रहणकरिकै एकांतदेशविषेलेजाइकै ताप्रश्नकेउत्तरकूं याज्ञवल्क्यमुनि कहताभया ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! यहआर्तभागकाप्रश्न कर्मविषयक है ॥ और आगे याज्ञवल्क्यमुनिनें सभाविषेस्थितहोइकै ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणाहै ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ ब्रह्मविद्यातेंभी कर्मविद्या अतिगुह्यहै ॥ **समाधान** ॥

हेशिष्य! ब्रह्मविद्यातेंकर्मविद्या गुह्यहै याअभिप्रायकरिकै याज्ञवल्क्यमुनि आर्तभागकूं एकांतदेशविषेनहींलेगया ॥ किंतु या प्रकारकेअभिप्रायकरिकै याज्ञवल्क्यमुनि आर्तभागकूं एकांतदेशविषेलेजाताभया ॥ अव ताअभिप्रायकूंदिखावैहैं ॥ मरणकूं प्राप्तहुआ अज्ञानीजीव आपणेपुण्यपापरूपकर्मोंकेअनुसार परलोकविषे सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्ता बालकोंतैंलैकेगोपालपुरुषपर्यंत सर्वलोक जाणेहैं ॥ यातें प्रसिद्धअर्थका जोहम विद्वानोंकीसभाविषेविचारकरैंगे ॥ तौ याआर्तभागकेप्रश्नविषे तथाहमारेउत्तरविषे तुच्छताप्राप्तहोवैगी ॥ तात्पर्ययह ॥ सभाविषेसर्वविद्वान्ब्राह्मण आर्तभागका तथाहमारा उपहासकरैंगे ॥ दृष्टांत ॥ जैसे भोजनकरिकै क्षुधाकीनिवृत्तिहोवैहै यहवार्ता संपूर्णलोक जाणेहै ॥ तहां बुद्धिमान्पुरुषोंकीसभाविषेजाइकै कोईएकपुरुष किसकरिकैक्षुधाकीनिवृत्तिहोवैहै याप्रकारकाप्रश्नकरै ॥ और आगेतैंकोईबुद्धिमान्पुरुष भोजनकरिकै क्षुधाकी निवृत्तिहोवैहै ॥ याप्रकारकाउत्तरकहै ॥ तहां प्रश्नकर्तापुरुषका तथाउत्तरदेणेहारेपुरुषका दोनोंका सभाविषे उपहासहोवैहै ॥ तैसे हमदोनोंका सभाविषेउपहासहोवैगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै याज्ञवल्क्यमुनि आर्तभागकूं एकांतदेशविषेलेजाताभया ॥ अब याज्ञवल्क्यकेउत्तरकूंदिखावैहैं ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेआर्तभाग! जैसे जीवत्अवस्थाविषे यहअज्ञानीजीव पुण्यपापकेअनुसार सुखदुःखकूंभोगेहैं ॥ तैसे मरणतैंअनंतरभी यहअज्ञानीजीव पूर्वलेपुण्यपापरूपकर्मकेआश्रितहुआ सुखदुःखरूपफलकूंभोगेहै॥ अबयाहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ हेआर्तभाग! जोपापीपुरुषहोवैहै सो नरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुण्यवान्पुरुषहोवैहै सो देवभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष पुण्यपापदोनोंवालाहोवैहै ॥ सो मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेआर्तभाग! यह जीव यद्यपि आपणेवास्तवरूपकरिकै अधिकभीनहीं तथान्यूनभीनहीं तथासमानभीनहीं ॥ तथापि कर्मोंकेवशहुआ यहजीव अधिकताकूं तथान्यूनताकूं तथासमानताकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहां जोपुण्यात्माजीवहोवैहै सो हिरण्यगर्भादिरूपअधिकताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपापात्माजीवहोवैहै सो वृक्षादिरूपन्यूनताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोजीव पुण्यपाप दोनोंकाकर्ताहोवैहै सो मनुष्यादिरूपसमानताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेआर्तभाग! जोपुरुष शरीरकरिकै तथावाणीकरिकै तथामनकरिकै अन्यकिसीप्राणिकूंसुखकीप्राप्ति

करैहै ॥ अथवा दुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ सोपुरुष इसजन्मविषे अथवा अन्यजन्मविषे तिसी शरीर मन वाणीकरिकै सुखकूं अथवा दुःखकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष जिसदेशविषे तथाजिसकालविषे तथाजिसनिमित्तकरिकै तथाजिसप्रकारकरिकै तथाजिसशरीरकरीकै तथाजिसअवस्थाकरिकै अन्यप्राणियोंकेन्यून अथवा अधिक सुखकूं अथवादुःखकूं उत्पन्नकरैहै ॥ सोपुरुष जन्मांतरकूं पाइकै तिसीदेशविषे तथातिसीकालविषे तथातिसीनिमित्तादिकोंकरिकै तैसेहीन्यून अथवा अधिक सुखकूं अथवा दुःखकूं प्राप्तहोवैहै॥ यातैं इसलोकविषे तथापरलोकविषे जोअज्ञानीजीवोंकूं सुखदुःखरूपफलहोवैहै॥ सो पूर्वलेपुण्यपापरूपककर्मकरिकै तिसीदेशकालादिकोंविषे समानहीहोवैहै ॥ और किसीस्थानविषे विशेषभीहोवैहै ॥ जैसे काशीआदिकदेशविषे तथासूर्यग्रहणकालविषे सुपात्रब्राह्मणकेप्रति थोडाभीदानकन्याहुआ कोटिकोटिगुणावृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै॥ दृष्टांत॥ जैसे वर्षाकालविषे उत्तमभूमिविषे पायेहुए शालिआदिकबीज वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै॥ तैसे उत्तमदेशकालादिकोंविषे दियाहुआदान वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै॥ हेआर्तभाग! जोपुरुष धनादिकपदार्थोंकीवृद्धिकरणेवासते व्यापारादिककरैहै ॥ तिसपुरुषके जैसे धनादिकपदार्थ दिनदिनविषे वर्द्धतेजावैहैं तैसे देहाभिमानीअज्ञानीजीवोंके पुण्यपापरूपकर्म दिनदिनविषे वृद्धिकूंप्राप्तहोतेजावैहैं ॥ और जैसेलोकविषे अत्यंतसूक्ष्म जोवटका बीजहै सो देशकालादिकनिमित्तकूंपाइकै महान्‌वटकेवृक्षकाकारणहोवैहै ॥ तैसे यज्ञादिककर्मोंकेअनंतर सूक्ष्मरूपकरिकैरह्याहुआ पुण्यपापरूपअदृष्टभी देशकालादिकनिमित्तकूंपाइकै महान्‌सुखदुःखकाकारणहोवैहै ? ॥ यातैं पुण्यपापरूपकर्महीं सुखदुःखरूपफलकेभोगविषे प्रधानकारणहैं ॥ ५ ॥ हेशिष्य! याप्रकार जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं आर्तभागकेपंचप्रश्नोंकाउत्तरकह्या तबी सोआर्तभाग याज्ञवल्क्यमुनिकीस्तुति करताभया ॥ तथायाज्ञवल्क्यमुनिभी ताआर्तभागकीस्तुतिकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सो आर्तभाग भुज्युनामाब्राह्मणकेमुखकीओरिदेखिकै पुनःप्रश्नकरणेतैंनिवृत्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोभुज्युनामाब्राह्मण याज्ञवल्क्यतैं आपणीउत्कृष्टता बोधनकरणेवासते पूर्वलाआपणावृत्तांतश्रवणकराइकै याज्ञवल्क्यकेप्रति प्रश्नकरताभया॥ भुज्युरुवाच॥ हेयाज्ञवल्क्य! पूर्व ब्रह्मचर्यअवस्थाविषे हमब्राह्मण वेदविद्याकेअध्ययनकरणेवासते मद्रनामादेशविषेविचरतेभये॥ तहां कापिगोत्र

विषे हैउत्पत्तिजिसकी ऐसाजोपतंजलनामाब्राह्मणहै ॥ ताकेगृहविषे एकआश्चर्यरूपवार्ताकूं हमदेखतेभये ॥ सावार्ता यहहै ॥ एककालविषे तापतंजलनामऋषिके कन्याकेशरीरविषे भूतकीन्याईं अग्निदेवता प्रवेशकरताभया तिसतैंअनंतर हमसंपूर्णविद्यार्थी ताकन्याकेसमीपजाइके यहपूछतेभये ॥ तुमारानाम क्याहै? तथा तुमारागोत्र क्याहै? तिसतैंअनंतर सोअग्निदेवता हमारेप्रतिकहताभया ॥ सुधन्वा हमारानामहै ॥ और आंगिरस हमारागोत्रहै ॥ तिसतैंअनंतर हमसंपूर्णब्राह्मण ताअग्निदेवतासे कर्मोंकेफलकाअंत पूछतेभये ॥ तिसतैंअनंतर सोअग्निदेवता यहउत्तरदेताभया ॥ जिसस्थानविषे पारिक्षितपुरुष स्थितहोवेहैं ॥ सोस्थानही सर्वकर्मोंकेफलकाअंतहै ॥ तिसतैंअधिक कर्मोंकाफलनहीं ॥ याप्रकार जबी अग्निदेवतानैं हमारेप्रति उत्तरकह्या ॥ तबी हम संपूर्णब्राह्मण पुनःअग्निदेवतासैंपूछतेभये ॥ तेपारिक्षितपुरुष किसस्थानविषेस्थितहोवैहैं? याप्रकार जबीहमोंनैंपूछा ॥ तबी सोअग्निदेवता हमारेप्रति पारिक्षितपुरुषोंकेस्थानकूं कहताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्य! जेअग्निदेवताकेप्रति पूर्वहमोंनैं प्रश्नकरेथे ॥ तेईहीप्रश्न अबी हम तुमारेप्रति करतेहैं ॥ तिनोंका तुम उत्तरकहो ॥ जिसस्थानविषे पारिक्षितपुरुष स्थितहोवेहैं ॥ सोस्थान कौनहै?॥ १॥ और तिसस्थानकेआवांतरलोकोंका कितनापरिमाणहै? ॥ २ ॥ और तिनपारिक्षितपुरुषोंकाक्यास्वरूपहै? ॥३॥ हेशिष्य! याप्रकार जबी भुज्युनैं याज्ञवल्क्यकेप्रति तीनप्रश्नकरे ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि भुज्युकेप्रति कहताभया ॥ हेभुज्युब्राह्मण! याप्रश्नोंका उत्तर पूर्व तुमारेप्रति अग्निदेवतानैंकह्याथा ॥ ताअर्थकूंभलीप्रकारजाणताहुआभीतू पुनःसभाविषे वेदकेगुह्यअर्थकूं किसवासतेपूछताहै? किंतु एकवारजान्याहुआ वेदकागुह्यअर्थ पुनःसभाविषेपूछणा तेरेकूंउचितनहीं ॥ तथापि हेभुज्यु! तेरेविश्वासकरावणेवासते तथा वेदअर्थकेगुह्यताकेरक्षणकरणेवासते संक्षेपतैं याप्रश्नोंकाउत्तर हम तुमारेप्रति कथनकरैहैं ॥ तुम श्रवणकरो ॥ हेभुज्यु! उपासनासहित अश्वमेधयज्ञकेकरणेहारेपुरुष जिसस्थानविषे उपासनासहितअश्वमेधयज्ञकाफल भोगेहैं ॥ तिसीस्थानविषे पारिक्षितपुरुष जावैहैं ॥ ईहां उपासनासहितअश्वमेधयज्ञकेकरणेहारेपुरुषही पारिक्षित हैं यहअर्थ याज्ञवल्क्यमुनिनैं वेदअर्थकेगुह्यताकीरक्षाकरणेवासते नहींकह्या ॥ हेशिष्य! याप्रकार जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं संक्षेपतैंउत्तरकह्या ॥ तबी सोभुज्युब्राह्मण

याज्ञवल्क्यकीसर्वज्ञताविषे अविश्वासकरिकै पुनःयाज्ञवल्क्यमुनिसैं पूछताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्य! उपासनासहितअश्वमेधयज्ञके करणेहारेपुरुष जिसस्थानविषेजावैहैं ॥ सोस्थान हमारेप्रति विस्तारतैंकहो ॥ हेशिष्य! याप्रकार जबी भुज्युनैंपूछा ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरताभया ॥ सभाविषे वेदकेरहस्यअर्थकेप्रकाशकरणेकी यद्यपि हमारेकूंइ च्छानहीं है ॥ तथापि यहभुज्यु वारंवार हमारेसैं सोअर्थ पूछताहै ॥ यातैं सभाविषे वेदकेरहस्यअर्थकेप्रकाशकरणेकरिकै जोपापकी उत्पत्तिहोवैगी ॥ सो याभुज्युकूंहीहोवैगी ॥ हमारेकूंहोवैगीनहीं ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि विस्तारतैं ताप्र श्नोंकेउत्तरकूंकहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेभुज्यु! समुद्रपर्यंत धनकरिकैपूर्णजापृथिवीहै सापृथिवीहैवशवर्तिजि नोंके ऐसेजे अश्वमेधयज्ञकेकर्तापुरुषहैं ॥ तिनोंकानाम परिक्षितिहै ॥ और तिनपरिक्षितिपुरुषोंकूंही शास्त्रविषे पारिक्षितकहेहैं ॥ अब सर्वकर्मकेभोगकास्थान जोविराट्भगवान्काशरीरहै ॥ ताकूं भूलोकरूपकरिकै वर्णनकरताहुआ याज्ञवल्क्यमुनि प्रथम ताके परिमाणकूंदिखावैहैं ॥ हेभुज्यु! यहसंपूर्णजंबुद्वीप एकलक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥ और तिसजंबुद्वीपकूं चारोंओरतैं मेखलाकी न्यांई वेष्टनकरिरह्याहुआ जोक्षारसमुद्रहै सोभी एकलक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥ १ ॥ और तिसतैंपरे प्लक्षद्वीपहै ॥ सोप्लक्षद्वीप दो लक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥ तिसप्लक्षद्वीपकूं चारोंओरतैंवेष्टनकरिरह्याहुआ जोइक्षुरसोदनामासमुद्रहै ॥ सोभी दोलक्षयोजनपरिमा णवालाहै ॥ २ ॥ और तिसतैंपरे शाल्मलीद्वीपहै ॥ सोशाल्मलीद्वीप चारिलक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥ ताशाल्मलीद्वीपकूं चारोंओरतैं वेष्टनकरिरह्याहुआ जोसुरोदनामासमुद्रहै ॥ सोभी चारिलक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥ ३ ॥ और तिसतैंपरे कुशद्वीपहै ॥ सोकुशद्वीप अ ष्टलक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥ ताकुशद्वीपकूं चारोंओरतैंवेष्टनकरिरह्याहुआ जोघृतोदनामासमुद्रहै ॥ सोभी अष्टलक्षयोजनपरि माणवालाहै ॥ ४ ॥ और तिसतैंपरे क्रौंचद्वीपहै ॥ सोक्रौंचद्वीप षोडशलक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥ ताक्रौंचद्वीपकूं चारोंओरतैंवेष्ट नकरिरह्याहुआ जोक्षीरोदनामासमुद्रहै ॥ सोभी षोडशलक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥ ५ ॥ और तिसतैंपरे शाकद्वीपहै ॥ सोशाक द्वीप बत्तीसलक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥ ताशाकद्वीपकूं चारोंओरतैंवेष्टनकरिरह्याहुआ जोदधिमंडोदनामासमुद्रहै ॥ सोभी बत्ती

सलक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥ ६ ॥ और तिसतैंपरे पुष्करद्वीपहै॥ सोपुष्करद्वीप चौसठिलक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥ तापुष्करद्वीपकूं चारोंओरतैंवेष्टनकरिरह्याहुआ जोशुद्धोदनामासमुद्रहै ॥ सोभी चौसठिलक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥७॥ यासप्तद्वीपोंका तथा सप्तसमुद्रोंका मिलिकै दोकोटि चौपनलक्षयोजन परिमाणहोवैहै॥ और सप्तद्वीपोंका तथासप्तसमुद्रोंका मिलिकै जितनेयोजनपरिमाणहै॥ तितनैंहीयोजन शुद्धोदनामासमुद्रतैंपरे भूमिकापरिमाणहै और ताभूमितैंपरे अष्टकोटि तथाओगणचालीसलक्ष योजनपरिमाणवाली सुवर्णकीभूमिहै॥ तिसभूमितैंपरे मंडलाकार लोकालोकनामापर्वतहै॥ तिसलोकालोकपर्वतकाजोमध्यदेशहै जिसमध्यदेशकूंशास्त्रविषे मानसोत्तरमूर्धस्थानकहैहैं॥ तिसमध्यदेशविषे रात्रिदिनकरिकै सूर्यभगवान् सर्वदा भ्रमणकरैहै ता मानसोत्तरपरिमंडलकापरिमाण एकलक्ष साढीनवकोटियोजन शास्त्रविषेकह्याहै ॥ इतनेयोजनपरिमाण रात्रिदिनविषे सूर्यभगवान्चालैहै ॥ और रात्रिदिनविषे जितनेयोजनपरिमाण सूर्यभगवान्चालैहै ॥ तिनयोजनोंकूं बत्तीसगुणाकरणेतैं जितनीयोजनोंकीसंख्याहोवैहै ॥ तितनेयोजनपर्यंतदेश सूर्यभगवान्कीकिरणावोंकरिकैव्याप्तहोवैहै ॥ तितनैंदेशकूं बुद्धिमान्पुरुष भूलोककरिकैकथनकरैहैं॥ यहभूलोक विराट्भगवान्काशरीरहै ॥ और याभूलोकविषेही सर्वकर्मोंकाफल भोग्याजावैहै ॥ अब उपासकपुरुषोंकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यजोदेशहै ताकूं निरूपणकरैहैं॥ हेभृज्यु ! याभूलोकतैंपरे जितनेयोजनभूलोककापरिमाणहै तिसतैंद्विगुणअधिकयोजनपरिमाणवालीभूमि स्थितहै ॥ कैसीहैसाभूमि ? भित्तिकीन्यांई चारोंओरतैं भूलोककूंआवरणकारिरहीहै ॥ और ता आवरणरूपभूमितैं परे ताभूमिकूंचारोंओरतैंवेष्टनकरणेहारा तथाताभूमितैंद्विगुणअधिकयोजनपरिमाणवाला समुद्रस्थितहै ॥ जासमुद्रकूं शास्त्रविषे घनोदनामकरिकैकथनकरैहैं ॥ और ताघनोदनामासमुद्रतैंपरे ब्रह्मांडहै ॥ जिसब्रह्मांडका एक कपाल रजतमयहै ॥ और दूसराकपाल सुवर्णमयहै॥ और तिनदोकपालोंकीजोसंधिहै ॥ सासंधि क्षुरकेधाराकीन्यांई अत्यंततीक्ष्णहै ॥ अथवा मक्षिकाकेपक्षकीन्यांई अत्यंतसूक्ष्महै ॥ याप्रकारकीसासंधि ब्रह्मांडतैंबाहरिनिकसणेकेमार्गविषेस्थितहै ॥ हेभुज्यु ! उपासनासहित अश्वमेधयज्ञकेकरणेहारे जेपारिक्षितपुरुष तुमनैंपूर्वपूछेथे॥ तेपारिक्षितपुरुष जबी शरीरकापरित्यागकरैहैं॥ तबी तापारिक्षितपुरुषकूं नानाप्रकारके

देवता तथाउपासनारूपबल घनोदनामासमुद्रपर्यंत लेजावैहैं ॥ तिसतैंआगे किसीदेवताकासामर्थ्यनहीं ॥ और हेभुज्यु ! जैसे उपासनासहित अश्वमेधयज्ञकेकर्तापुरुष पारिक्षितहैं ॥ तैसे अश्वमेधयज्ञतैंविना केवल हिरण्यगर्भकीउपासनाकरणेहारे जेपुरुषहैं ॥ ते भी पारिक्षितहैं ॥ काहेतैं ? जिसकरिकै संपूर्णपापकर्मोंकाक्षयहोवैहै ताकूं पारिक्षितकहैहैं ॥ सोपापकर्मोंकाक्षय जैसे अश्वमेधयज्ञ करिकैहोवैहै ॥ तैसे उपासनाकरिकैभी पापकर्मोंकाक्षयहोवैहै ॥ यातैं उपासना तथाअश्वमेधयज्ञ दोनों परिक्षितशब्दकाअर्थहैं ॥ तापरिक्षितशब्दकेअर्थकूंजोजानणेहाराहै ताकूं पारिक्षितकहैहैं ॥ यारीतिसैं केवलउपासकपुरुषविषेभी पारिक्षितशब्दकीप्रवृत्ति होवैहै ॥ और हेभुज्यु ! ताब्रह्मांडरूपकटाहकेसंधिविषेस्थित जोसूक्ष्ममार्गहै ॥ तिसमार्गविषे सर्वदेवतावोंकाअधिपति इंद्रदेवता भी जाणेमेंसमर्थनहीं ॥ जबी इंद्रभी तामार्गविषेजाणेमेंसमर्थनहींभया ॥ तबी घनोदनामासमुद्रकेपारि जाणेविषेभी असमर्थजेअन्यदेवताहैं ॥ ते तिससूक्ष्ममार्गविषे किसप्रकारजाइसकैंगे? ॥ किंतु तेअन्यदेवता घनोदनामासमुद्रके ओरलेकिनारेविषेही स्थितहोवैहैं ॥ **शंका** ॥ जबी इंद्रादिकदेवताभी तामार्गकेजाणेविषे समर्थनहींहैं तबी पारिक्षितपुरुष किसप्रकार ब्रह्मांडतैंबाहरिहोवैहैं ॥ ॥ **समाधान** ॥ हेभुज्यु ! सोविराट्‌रूपइंद्रदेवता पक्षीकारूपधारणकरिकै तिनपारिक्षितपुरुषोंकूं घनोदनामासमुद्रतैं पारिकरैहै ॥ और ताघनोदनामासमुद्रकेपारलेकिनारे हिरण्यगर्भरूप वायुदेवता आकाशविषेस्थितहै ॥ तावायुकेतांई पारिक्षितपुरुषोंकूंदेकरिकै सोइंद्रदेवता पीछे फिरिआवैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोहिरण्यगर्भरूपवायुदेवता तिनपारिक्षितपुरुषोंकूंसूक्ष्मरूपकरिकै आपणेशरीरके साथ अभिन्नकरिकै तासंधिरूपमार्गद्वारा ब्रह्मांडतैंबाहरिलैजावैहै ॥ और जिसस्थानविषे पूर्वपूर्वउपासकपुरुषगएहैं ॥ तिसीस्थान विषे तेपारिक्षितपुरुष प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैंयहसिद्धभया ॥ तेपारिक्षितपुरुष हिरण्यगर्भरूपकरिकै ब्रह्मांडकेअंतर तथाबाह्य व्याप्तहोइकैरहैहैं ॥ यातैं सर्वकर्मोंकेफलकाअंत हिरण्यगर्भलोकहै ॥ हिरण्यगर्भलोकतैंपरे कोईकर्मकाफलनहीं ॥ हेशिष्य ! पूर्वअग्निदेवतानैं जैसाउत्तर भुज्युकेप्रति कह्याथा ॥ तैसाहीउत्तर जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं भुज्युकेप्रतिकह्या ॥ तबीसोभुज्यु याज्ञवल्क्यकेजीतणेकीइच्छाकापरित्यागकरताभया ॥ और उषस्थब्राह्मणकेमुखकीओरदेखिकै सोभुज्यु पुनःप्रश्नकरणेतैंनिवृत्तहोताभया ॥ तिसतैं

अनंतर सोउषस्त याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरताभया ॥ उषस्तउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! जैसे अप्रकाशरूपलोह अग्निकेसंबंधतें प्रकाशमानहोवैहै ॥ तैसे वृत्तिअवच्छिन्नसाक्षीचैतन्यकेसंबंधतें घटपटादिकजडपदार्थ प्रतीतहोवैहैं ॥ यातें घटपटादिकजडपदार्थों विषे मुख्य अपरोक्षपणानहीं ॥ किंतु घटादिकोंविषे गौणअपरोक्षपणाहै ॥ और ब्रह्म स्वप्रकाशचैतन्यहै ॥ यातें ब्रह्मविषे मुख्यअ परोक्षपणाहै ॥ और सोब्रह्म सर्वकेअंतरबाहरिव्यापकहै ॥ यातें सोब्रह्मही आत्मारूपहै ॥ यहवार्ता संपूर्णशास्त्रकथनकरैहैं ॥ प रंतु यहवार्ता संभवैनहीं ॥ काहेतें? शास्त्रनें आत्माविषे ब्रह्मरूपता तथाअद्वितीयरूपता येदोनोंधर्म कथनकरेहैं ॥ याकेविषे हम विवादनहींकरते ॥ परंतु ब्रह्मरूपता तथाअद्वितीयरूपता येदोनोंधर्म जिसआत्मारूपधर्मीविषेरहेहैं ॥ सोआत्मा यासंघातसेंभि न्न हमारेकूं प्रतीतहोतानहीं ॥ यातें हेयाज्ञवल्क्य! यासंघातसेंजोआत्माविलक्षणहै तौ हमारेप्रति कथनकरो ॥ तिसतेंअनंतर हम तुमारेकूंबुद्धिमान्जाणेंगे ॥ हेशिष्य! याप्रकार जबीउषस्तनें याज्ञवल्क्यकेप्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि उषस्तके प्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेउषस्त! यहआत्मा अद्वितीयब्रह्मरूपहै ॥ यातें अत्यंतसमीपआत्माविषे तेरेकूंअसंभा वनाकरणीउचितनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ यहआत्माहै याप्रकारकाउत्तर जोयाज्ञवल्क्यमुनिनेंकह्या ॥ ताकेविषे याज्ञवल्क्यमुनिका य हअभिप्रायहै ॥ जोयहउषस्तब्राह्मण अंतर्मुखहोवैगा तौ यहआत्माहै याप्रकारकेउत्तरमात्रकरिकैही आत्माकेवास्तवस्वरूपकूं जाणिकै संतोषकूंप्राप्तहोवैगा ॥ परंतु सोउषस्त बहिर्मुखथा ॥ यातें यहआत्माहै याप्रकारकेउत्तरकरिकै आत्माकेवास्तवस्वरूपकूं नजाणताभया ॥ उलटा संशययुक्तहुआ सोउषस्त पुनःयाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरताभया ॥ उषस्तउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! सो आत्माकौनहै? ॥ तात्पर्ययह ॥ स्थूलशरीर आत्माहै ॥ अथवा सूक्ष्मशरीर आत्माहै ॥ अथवा तिनोंकाप्रकाशकसाक्षी आत्माहै ॥ तहां स्थूलशरीर तथासूक्ष्मशरीर आत्माहै येदोनोंपक्ष संभवैनहीं ॥ काहेतें? स्थूलसूक्ष्म येदोनोंशरीर परिच्छिन्नहैं ॥ यातें तिनों विषे सर्वव्यापकतासंभवैनहीं ॥ और शास्त्रविषे आत्माकूंसर्वांतर्यामीकह्याहै ॥ किंवा बुद्धिआदिकोंकासाक्षी आत्माहै यहतीस रापक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? साक्षी आत्माहै याकेविषे कोईप्रमाणहैनहीं ॥ हेशिष्य! याप्रकार जबी उषस्तनें आत्माकास्वरूप

पूछा ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि उषस्तकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेउषस्त! जैसे बालक सूत्रकरिकै मर्कटोंकूं नानाप्रकारकानृत्य करावैंहै ॥ तैसे तुमारेशरीरविषेस्थितहोइकै जो तुमारे प्राण अपान उदान समान व्यानकूं तथाबुद्धिआदिकसंघातकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवृत्तकरैंहै ॥ सोईही तुमाराआत्माहै ॥ याकहणेकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं यहअनुमानबोधन कऱ्या ॥ प्राणादिकोंकाप्रवर्तकजोआत्माहै ॥ सो तिनप्राणादिकोंतैंभिन्नहै ॥ काहेतें? प्राणादिकोंकाप्रवर्तकहोणेतें ॥ जोजोपदार्थ जिसजिसपदार्थका प्रवर्तकहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ तिसतिसपदार्थतैंभिन्नहीहोवैहै ॥ जैसे मर्कटोंकूंप्रेरणाकरणेहाराबालक मर्कटोंतैं भिन्नहीहोवैहै ॥ तैसे सर्वकाअंतर्यामीयहआत्माभी प्राणादिकसर्वसंघातका प्रवर्तकहै ॥ यातैं प्राणादिकसर्वसंघाततैं यहआत्मा भिन्नहै ॥ हेशिष्य! उषस्तकीमंदबुद्धिदेखिकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं अनुमानप्रमाणकरिकै आत्माकास्वरूप निरूपणकऱ्या ॥ तथापि याज्ञवल्क्यमुनिकेअभिप्रायकूंनजाणिकरिकै सोउषस्तब्राह्मण उपहासपूर्वक पुनःयाज्ञवल्क्यकेप्रति प्रश्नकरताभया ॥ उषस्त उवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! पूर्व स्पष्टकरिकै आत्माकेस्वरूपजानणेवासते हमनैं तुमारेप्रति प्रश्नकऱ्याथा ॥ सोतुमनैं अबपर्यंत स्पष्टकरिकैआत्माकास्वरूप हमारेप्रति कथनकऱ्यानहीं ॥ यातैं जोतू संघाततैंविलक्षण आत्माकेस्वरूपकूं जाणताहै तौ जैसेकोईपुरुष गौकूंशृंगतैंपकडिकै यहगौहै याप्रकार स्पष्टदिखावैहै ॥ तैसे अबीस्पष्टकरिकै आत्माकास्वरूप हमारेप्रति कथनकरो ॥ और हेयाज्ञवल्क्य! पूर्व हमनैं संघातसैंविलक्षणआत्माकास्वरूप पूछाथा ॥ और अबी तुमनैं प्राणादिकोंकाप्रवर्त्तकआत्माहै यहउत्तर कह्या ॥ सोयहतुमाराउत्तर संघातसैंविलक्षण आत्माकूं सिद्धकरतानहीं ॥ काहेतें? लोकविषे व्यापारवान्‌पुरुषही अन्यमर्कटादिकोंकाप्रेरकहोवैहै ॥ व्यापारतैंरहितकोई प्रेरकहोतानहीं ॥ सोव्यापारवालायहसंघातहै ॥ यातैं यहसंघातही प्राणादिकोंका प्रवर्त्तकहै ॥ और प्राणादिकोंकूं जोआपणेआपणेव्यापारविषे प्रवर्तकरैहै सो आत्माहै ॥ यातुमारेकहणेकरिकै संघातविषेही आत्मपणा सिद्धहोवैहै ॥ यातैं हेयाज्ञवल्क्य! जैसे कोईपुरुष किसीअन्यपुरुषतैं गौकास्वरूपपूछै ॥ और आगेतैंसोपुरुष तिसकेतांई अश्व दिखाइदेवै ॥ तैसे हमनैंतौ संघाततैंविलक्षण आत्माकास्वरूप पूछाथा ॥ और तुमनैं संघातकूंहीआत्मरूपकरिकैकथनकऱ्या ॥ यातैं यह

तुमाराउत्तर अत्यंतविरुद्धहै ॥ यातें हेयाज्ञवल्क्य! संघातसैंविलक्षणकरिकै करामलककीन्यांई आत्माकास्वरूप हमारेप्रति कथनकरो ॥ हेशिष्य! याप्रकार जबी उषस्तनैं उपहासयुक्तवचनकहे ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि किंचित्‌मात्रभीक्रोधकूं नहींप्राप्तहोताभया ॥ उलटा आपणीगंभीरताकरिकै मंदमंद हसताहुआ सोयाज्ञवल्क्यमुनि ताउषस्तकेप्रति कहताभया॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेउषस्त! संघातसैंविलक्षणआत्माकास्वरूप हमारेप्रतिकहो यहजोतूं प्रश्नकरताहै ॥ सोतुमाराआत्मा अत्यंतअपरोक्षहै ॥ काहेतें? अहंअस्मि याप्रकारकी अंतःकरणकीवृत्तिकरिकै तूभी आत्माकूंजाणताहै ॥ यातें अपरोक्षआत्माविषे असंभावना संभवैनहीं ॥ हेशिष्य! याप्रकारकाउत्तर जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैंकह्या ॥ तबी सोउषस्त पुनःयाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरताभया ॥ उषस्तउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! तुमनैं अहंबुद्धिकाविषय आत्माकह्या ॥ याकरिकै आत्माकानिर्णयहोवैनहीं ॥ काहेतें? अहंबुद्धि बहुतपदार्थोंविषेहोवैहै ॥ तहां अहंस्थूलः याप्रकारकीअहंबुद्धि स्थूलशरीरकूंविषयकरैहै ॥ और अहंकाणः अहंबधिरः याप्रकारकीअहंबुद्धि इंद्रियोंकूंविषयकरैहै ॥ और अहंक्षुधापिपासावान् याप्रकारकीअहंबुद्धि प्राणोंकूंविषयकरैहै ॥ और अहंनिश्चयवान् याप्रकारकीअहंबुद्धि बुद्धिकूंविषयकरैहै ॥ और अहंअज्ञः याप्रकारकीअहंबुद्धि अज्ञानकूंविषयकरैहै ॥ यातें स्थूलशरीरतैंआदिलैके अज्ञानपर्यंत सर्वसंघातविषे अहंबुद्धिकीविषयता प्रतीतहोवैहै॥ तिनसंपूर्णोंविषे कौनआत्माहै? यह जान्याजावैनहीं ॥ यातें हेयाज्ञवल्क्य! जोतुमारेकूं आत्माकाज्ञानहै तौ बुद्धिआदिकजडपदार्थोंतैंभिन्नकरिकै आत्माकास्वरूप हमारेप्रतिकहो ॥ हेशिष्य! याप्रकारकाप्रश्न जबी उषस्तनैंकऱ्या तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि उषस्तकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेउषस्त! विद्वान्‌पुरुषोंकेअनुभवकरिकैसिद्ध जोआत्माकीअपरोक्षताहै ॥ ताअपरोक्षतारूपकरिकै आत्माकेनिरूपणविषे तुमाराआग्रहहै ॥ अथवा जैसे घटविषे इंद्रियजन्यज्ञानकीविषयतारूप अपरोक्षताहै॥ तैसे अपरोक्षतारूपकरिकै आत्माकेनिरूपणविषे तुमाराआग्रहहै॥ तहां जो तू प्रथमपक्षअंगीकारकरै तौ जैसे विद्वान्‌पुरुष आत्माकेस्वरूपकूं निरूपणकरैहैं ॥ तैसे हमनैं तुमारेप्रति आत्माकास्वरूप निरूपणकऱ्याहै ॥ परंतु तू बहिर्मुखहै ॥ यातें विद्वान्‌पुरुषकीन्यांई तुमनैं आत्माकूंजान्यानहीं ॥ और हेउषस्त! जोतू दूसरापक्षअंगी

कारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं? नित्यअपरोक्षरूप यहआत्मा चिदाभासयुक्तबुद्धिकरिकै घटपटादिकपदार्थोंकूंजाणेहै ॥ और ताबु द्धिकूं आपणेस्वप्रकाशरूपकरिकैआत्मा प्रकाशेहै ॥ यातैं हेउषस्त! ऐसीबुद्धिआदिकोंकेद्रष्टाआत्माकूं तूंकिसकरिकैविषयकरैगा? किंतु बुद्धिसहितसर्वइंद्रिय द्रष्टाआत्माकूंविषयकरिसकैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थोंका प्रकाशकजोचक्षुइंद्रियहै ॥ ताच क्षुइंद्रियकूंघटादिकपदार्थ प्रकाशकरिसकैनहीं तैसे विषयइंद्रियकेसंबंधतैं उत्पन्नभयीं जेअंतःकरणकीवृत्तियां तिनवृत्तियोंकूं यह आनंदस्वरूपआत्मा प्रकाशकरैहै ॥ यातैं तेवृत्तियां प्रकाशकआत्माका प्रकाशकरैनहीं ॥ हेउषस्त! जो बुद्धिआदिकजडपदार्थोंकाप्रका शकहै तथा सर्वकेअंतर व्यापकहै तथा उत्पत्तिनाशतैंरहितहै सोईही संघातसैंविलक्षण तुमाराआत्माहै ॥ शंका ॥ हेयाज्ञवल्क्य! आत्मातैंभिन्न बुद्धिआदिकपदार्थ सत्यहैं अथवा असत्यहैं ॥ जोकहो बुद्धिआदिकपदार्थ सत्यहैं तौ जैसे घटपटादिकोंकेअंतरनहींहो ता ॥ तैसेआत्माविषे सर्वांतरपणानहींहोवैगा ॥ और जोकहो आत्मातैंभिन्न बुद्धिआदिकपदार्थ असत्यहैं तौभी आत्माविषे सर्वांतरप णा संभवैनहीं ॥ काहेतैं? आत्मा सर्वकेअंतरव्यापकहै यावचनविषे सर्वशब्दकरिकै बुद्धिआदिकोंकाग्रहणकरणाहोवैगा ते बुद्धिआदि कपदार्थ तुमारेमतविषे अत्यंतअसत्यहैं ॥ यातैं तिनबुद्धिआदिकोंकेअभावहोणेतैं आत्माविषे सर्वांतरपणा संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेउषस्त! याआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न जितने बुद्धि इंद्रिय शरीरादिकपदार्थहैं तेसंपूर्ण जडहैं ॥ यातैं घटादिकपदार्थोंकीन्यांई तेबुद्धिआदिकजन्ममरणवालेहैं ॥ याकारणतैं तेबुद्धिआदिक कल्पितहैं ॥ तिनकल्पितबुद्धिआदिकोंविषे अधिष्ठानआत्माकीव्यापकता संभवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषे कल्पित जे सर्प दंड जलधारादिकहैं तिनकल्पितसर्पादिकोंविषे रज्जुरूपअधिष्ठान व्यापकहै ॥ तैसे कल्पितबुद्धिआदिकोंविषे अधिष्ठानआत्मा व्यापकहै ॥ यातैं आत्माविषे सर्वांतरपणा संभवैहै ॥ हेशिष्य! याप्रकार जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं संघातसैंविलक्षण आत्माकास्वरूप निरूपणकऱ्या ॥ तबी सोउषस्त यहनिश्चयकरताभया ॥ यहयाज्ञवल्क्यमु नि अत्यंतबुद्धिमानहै ॥ यातैं हमारेसैं जीत्याजावैगानहीं ॥ याप्रकारकानिश्चयकरिकै सोउषस्तब्राह्मण कहोलब्राह्मणकेमुखकौ ओरदेखिकरिकै पुनःप्रश्नकरणेतैंनिवृत्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सो कहोलब्राह्मण याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति यहप्रश्नकरताभया ॥

कहोलउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! पूर्वउषस्तब्राह्मणकेप्रसंगविषे आत्माकूं ब्रह्मरूपता तुमनैंकही सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? समानधर्म वालेपदार्थोंकाही परस्पर अभेदहोवैहै ॥ विरुद्धधर्मवालेपदार्थोंका परस्पर अभेदसंभवैनहीं ॥ जैसे उष्णस्पर्शवालेअग्निका तथा शीतस्पर्शवालेबरफका परस्पर अभेदहोवैनहीं ॥ तैसे यासंघातकाप्रकाशक जोआत्माहै सो क्षुधा पिपासा शोक मोह जरा मरण यहषट्ऊर्मिरूपसंसारवान् प्रतीतहोवैहै ॥ और ब्रह्मतौ क्षुधापिपासादिकषट्ऊर्मिरूपसंसारतैंरहितहुआ शास्त्रतैंप्रतीतहोवैहै यातें संसारीआत्माका असंसारीब्रह्मकेसाथअभेदकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ हेशिष्य! याप्रकारकाप्रश्न जबी कहोलनैंकऱ्या ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि कहोलकेप्रति उत्तरकहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेकहोल! विरुद्धधर्मोंवालेपदार्थोंका अभेद नहींहोता यहजावार्ता तुमनैंकही सासत्यहै ॥ परंतु तेक्षुधादिकधर्म आत्माकेनहीं ॥ किंतु क्षुधा पिपासादि प्राणोंकेधर्महैं ॥ और शोक मोह मनकेधर्महैं और जरा मरण शरीरकेधर्महैं ॥ आत्माकाकोईधर्महैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे घटादिकपदार्थोंकाप्रकाशक जो सूर्यभगवान्है ॥ तासूर्यभगवान्कूं घटादिकोंकेधर्म स्पर्शकरैंनहीं ॥ तैसे प्राणादिकोंकूं प्रकाशकरणेहारा जोआत्माहै ताआत्माकूं प्राणादिकोंकेक्षुधापिपासादिकधर्म स्पर्शकरैंनहीं ॥ यातें जैसे ब्रह्म जन्मादिकसंसारतैंरहितहै ॥ तैसे यह आत्माभी जन्मादिकसंसारतैंरहितहै ॥ याकारणतें वेदकेवेत्तामहात्मापुरुष आत्माकूं ब्रह्मरूपकहैहै ॥ किंवा जिनपुरुषोंकूं निःसंशय आत्माकाज्ञानभयाहै ॥ तिनपुरुषोंकाभी जबी जन्ममरणादिरूपसंसार निवृत्तहोवैहै तबी साक्षात्ब्रह्मरूपआत्माविषे जन्ममरणादिरूपसंसार नहींरहैहै याकेविषेक्याकहणाहै? और हेकहोल! जन्मादिकसंसारतैंरहित तथाअज्ञानतैंरहित तथासर्वबुद्धिआदिकोंकासाक्षी जोब्रह्मरूपआत्माहै ॥ ताआत्माकासाक्षात्कार विक्षेपवान्पुरुषोंकूंहोवैनहीं ॥ किंतु विक्षेपतैंरहित जेविरक्तमहात्मापुरुषहैं ॥ तिनोंकूंही आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ याकारणतें पूर्ववामदेवादिकमहान्पुरुष आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते सर्वएषणावोंकापरित्यागकरिकै संन्यास आश्रमकूंग्रहणकरतेभयेहैं ॥ याकहणेतें यहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे विवेकवैराग्यादिक आत्मसाक्षात्कारकेसाधनहैं ॥ तैसे उपरतिशब्दकाअर्थसंन्यासभी विक्षेपकीनिवृत्तिद्वारा आत्मसाक्षात्कारकासाधनहै ॥ इहांसंन्यासशब्दकरिकै विविदिषासंन्या

सकाग्रहणकरणा ॥ अब एषणाकेस्वरूपकूं तथातिनोंकेभेदकूं दिखावैहैं ॥ हेकहोल! तीनप्रकारकीएषणाहोवैहै ॥ एकपुत्र एषणा १ दूसरीवित्तएषणा २ तीसरीलोकएषणा ३॥ तहां मेरेकूंपुत्रहोवै याप्रकारकीइच्छाकूं पुत्रएषणाकहैहैं ॥ तापुत्रएषणाकरिकै यहपुरुष स्त्रीकेसंग्रहादिकोंविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ और मेरेकूंधनहोवै याप्रकारकीइच्छाकूंवित्तएषणाकहैहैं ॥ सोधनभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ दैवधनहोवैहै ॥ और दूसरा मनुष्यधनहोवैहै ॥ तहां देवलोककेजयकासाधनजो कर्मउपासनाहै ताकूं दैवधनकहैहैं ॥ और यामनुष्यलोककेभोगकासाधन जोपशुसुवर्णादिरूपधनहै ताकूं मानुष्यधनकहैहैं ॥ तादोनोंप्रकारकेधनकीइच्छाकूं वित्तएषणाकहैहैं ॥ और मेरेकूंसुखहोवै याप्रकारकीइच्छाकूं लोकएषणाकहैहैं ॥ सोसुखभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ मनुष्यलोकविषेवर्तमानसुख और दूसरा देवलोकविषेवर्तमानसुख ॥ यादोनोंप्रकारकेसुखकीइच्छाकूं लोकएषणाकहैहैं ॥ यद्यपि इच्छाके विषयपदार्थ अनंतहैं ॥ यातैंइच्छाभी अनंतहीसंभवैहैं ॥ तथापि यातीनइच्छावोंकेभीतरही सर्वइच्छावोंकाअंतरभावहै ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ वित्तएषणा तथालोकएषणा यहदोप्रकारकीही एषणासिद्धहोवैहै॥ काहेतें? जैसे पशु क्षेत्र सुवर्णादिकधन पिताकेसुखकासाधनहै तैसे पुत्रभी पिताकेसुखकासाधनहै ॥ यातैं इसलोककेसुखकेजेसाधनहैं तथापरलोककेसुखकेजे साधनहैं तिनसंपूर्णोंकानाम वित्तहै ॥ तावित्तएषणाकरिकै संपूर्णसुखकेसाधनोंकीएषणाकाग्रहणहोवैहै ॥ और लोकएषणाकरिकै इसलोकके तथापरलोककेजितनेसुखरूपफलहैं तिनोंकेएषणावोंकाग्रहणहोवैहै ॥ यातैं फलएषणा तथासाधनएषणा यहदोनोंप्रकारकीएषणाही सर्वत्रअनुगतहै ॥ याकारणतैंही संपूर्णजीव प्रथमसुखरूपफलकीइच्छाकरैहैं ॥ परंतु सोसुख साधनोंतैंविना सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं तासुखकेसाधनकीभीइच्छाकरैहैं ॥ यालोकोंकेव्यवहारतैंभी दोप्रकारकीहीएषणा सिद्धहोवैहै ॥ शंका ॥ हेयाज्ञवल्क्य! विद्वान्पुरुषजोएषणावोंकापरित्यागकरैहै ॥ याकेविषे कौनकारणहै?॥ समाधान ॥ हेकहोल! जन्ममरणादिकसंसारतैंरहित जोस्वप्रकाशआनंदस्वरूपआत्माहै ताकेविषेही सुखहै ॥ और आत्मातैंभिन्नसर्वअनात्मपदार्थ परिणामकालविषे दुःखके देणेहारेहैं॥ यातैं तिनअनात्मपदार्थोंविषे किंचित्मात्रभीसुखनहीं ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै विद्वान्पुरुष सर्वएषणावोंकापरित्या

गकरैहैं ॥ अब आत्मातेंभिन्न सर्वअनात्मपदार्थोंविषे दुःखरूपतादिखावैहैं ॥ हेकहोल! यालोकविषे जितनेसुखकारीपदार्थहैं ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंविषे माता पुत्रकी अत्यंतसुखकारीहोवैहै ॥ काहेतें? यहमाता बाल्यअवस्थाविषे पुत्रकूं दुग्धपानकरावैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेउपायोंकरिकै जलअग्निआदिकोंतें पुत्रकीरक्षाकरैहै ॥ तथा आपणेहस्तोंकरिकै पुत्रकेविष्ठामूत्रादिकोंकूंउठावैहै ॥ तथा पुत्रविषे नानाप्रकारका स्नेहकरैहै ॥ इसतेंआदिलैके अनंतप्रकारकेउपायोंकरिकै माता पुत्रकापालनकरैहै ॥ यातें माताजैसा कोईपदार्थ सुखकारीनहीं ॥ परंतु क्रोधकरिकैयुक्तहुई सामाता ताडनाकरिकै बालककूं दुःखकीभीप्राप्तिकरैहै ॥ अथवा सामाता जबी मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबीभी बालककूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ बाल्यअवस्थाविषे माताकेमरणेकरिकै जैसा बालककूं दुःखहोवैहै ॥ तथा यौवनअवस्थाविषे स्त्रीकेमरणेकरिकै जैसापुरुषकूंदुःखहोवैहै ॥ तथा वृद्धअवस्थाविषे पुत्रकेमरणेकरिकै जैसापिताकूंदुःखहोवैहै ॥ तैसादुःख वज्रकेपडनेतें तथाजीवतेहुए अग्निविषेप्रवेशकरणेतें तथाशरीरकेछेदनकरणेतें तथाशूलविषेआरूढहोणेतें तथापर्वतकेनीचेगिडनेतेंभी जीवोंकूंनहींहोवैहै ॥ यातें अत्यंतसुखकारीमाताभी वियोगकालविषे जीवोंकेपरमदुःखकाकारणहोवैहै ॥ किंवा ॥ जैसे माताकावियोग जीवोंकेदुःखकाकारणहै ॥ तैसे पितातेंआदिलैके जितनेसुखकारीप्रियबांधवहैं तिनोंकाभी जबीवियोगहोवैहै ॥ तबी याजीवकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जिनपदार्थोंका परस्परसंबंधहोवैहै ॥ तिनपदार्थोंका देशकालादिकनिमित्तकरिकै वियोगभीअवश्यहोवैहै ॥ तावियोगकेनिवारणकरणेकूं कोईभीजीव समर्थनहीं ॥ यातें मातापितादिकसंपूर्णप्रियपदार्थ वियोगकालविषे याजीवकेदुःखकेहीकारणहोवैहैं ॥ और वास्तवतेंविचारकरिकैदेखियेतौ तीनकालविषे पदार्थ दुःखकेकारणहैं ॥ काहेतें? जबपर्यंत पुत्रादिकप्रियपदार्थोंकीप्राप्तिनहींहोती ॥ तबपर्यंत तिनोंकीइच्छाकरिकै जीवकूंदुःखहोवैहै ॥ और जबी पुत्रादिकप्रियपदार्थोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तबी तिनोंकेरक्षणादिकोंकरिकैदुःखहोवैहै ॥ और जबी तिनप्रियपदार्थोंकानाशहोवैहै ॥ तबी तिनोंकेवियोगकरिकै जीवोंकूंदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें आत्मातेंभिन्नसर्वप्रियपदार्थ याजीवकेदुःखकाकारणहैं ॥ इतनेकरिकै प्रियपदार्थोंविषे दुःखकीकारणतादिखाई ॥ अब अप्रियपदार्थोंविषे दुःख

कीकारणतादिखावैहैं ॥ हेकहोल! जैसे अग्निका जिसजिसपदार्थकेसाथ संबंधहोवैहै ॥ तिसतिसपदार्थकूं अग्नि दाहकरैहै ॥ तैसे सिंहसर्पादिक अप्रियपदार्थोंका जिसजिसजीवकेसाथ संबंधहोवैहै ॥ तिसतिसजीवकूं तेसिंहसर्पादिक नाशकरैहैं ॥ यहवार्ता सर्वजीवोंकूंअनुभवसिद्धहै ॥ यातें यहसिद्धभया ॥ मातापितादिक प्रियपदार्थ वियोगकालविषे जीवोंकेदुःखकाकारणहोवैहैं ॥ और सिंह सर्प शत्रु आदिकअप्रियपदार्थ संयोगकालविषे जीवोंकेदुःखकाकारणहोवैहैं ॥ इतनेकरिकै मातापितादिक चैतन्यपदार्थोंविषे दुःखकीकारणता दिखाई ॥ अब जडपदार्थोंविषे दुःखकीकारणता दिखावैहैं ॥ हेकहोल! जैसे चैतन्यरूप प्रिय अप्रिय पदार्थ वियोगकालविषे तथासंयोगकालविषे जीवोंकेदुःखकाकारणहोवैहैं ॥ तैसे सुवर्णादिकजडपदार्थभी जिसजिसजीवकूंप्रियहोवैहैं ॥ तिसतिसजीवकूं वियोगकालविषे तेसुवर्णादिकजडपदार्थ परमदुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और जिसजिसजीवकूं तेसुवर्णादिकजडपदार्थ अप्रियहोवैहैं ॥ तिसतिसजीवकूं तेसुवर्णादिक जडपदार्थ संयोगकालविषे परमदुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अग्नि पतंगोंकूं दाहकरैहै ॥ तैसे वैराग्यहीनजीवोंकूं प्रियअप्रियपदार्थ सर्वदा दुःखकीहीप्राप्तिकरैहैं ॥ और हेकहोल! जेपुरुष रागकरिकेअंधहैं तिनपुरुषोंकूं यद्यपि संसार दुःखरूप नहींप्रतीतहोवैहै ॥ तथापि रागदोषतेंरहित जेविवेकीपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं पुत्र धन लोक शरीर बांधव इत्यादिकसंपूर्णसंसार दुःखकाहीकारणप्रतीतहोवैहै ॥ और हेकहोल! यद्यपि संपूर्णअनात्मपदार्थ जीवोंकेदुःखकेकारणहैं ॥ तथापि वास्तवतेंविचारकरिकेदेखियेतौ पदार्थोंकीइच्छाही जीवोंकेदुःखकाकारण सिद्धहोवैहै॥काहेतें? धनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिकी तथाशत्रुवोंकेमारणेकी इच्छाकरिकै युक्तहुआयहजीव धनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिवासते तथाशत्रुकेमारणेवासते नानाप्रकारकायत्नकरैहै ॥ परंतु धनकीप्राप्तिविषे तथाशत्रुवोंकेमारणेविषे जबी सोजीव नहींसमर्थहोवैहै ॥ तबी तासें निवृत्तहोवैहै ॥ और जिसजिसपदार्थतें यहजीव निवृत्तहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ याजीवकेपरमदुःखकाकारणहोवैहै ॥ शंका ॥ जिसपदार्थकेप्राप्तिविषे पुरुषकासामर्थ्यनहींहै ऐसेपदार्थकेप्राप्तिकीइच्छा किसकारणतेंकरैहै ? ॥ समाधान ॥ शरीरइंद्रियादिकोंविषे अहंअभिमानरूप विपरीतज्ञानकरिकै तथापुत्रधनादिकोंविषे ममअभिमानरूप विपरीतज्ञानकरिकै यहजीव नप्राप्तहोणेयोग्यपदार्थोंविषेभी इच्छाकरै

है ॥ और जबीतिनपदार्थोंकीप्राप्तिनहींहोवैहै ॥ तबी याजीवकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं फलतैंरहितहुईइच्छाही जीवोंके दुःखकाकारणहै ॥ किंवा ॥ मनुष्यलोकतैंआदिलैके हिरण्यगर्भलोकपर्यंत जितने देहधारीजीवहैं ॥ तिनोंके शरीर इंद्रिय पुत्रादिकपदार्थ सर्वथाअनुकूल होवैनहीं ॥ यातैं प्रतिकूलहुए शरीर पुत्रादिकपदार्थ याजीवोंके दुःखकेहीकारणहोवैहैं ॥ इतनेग्रंथकरिकै अनात्मपदार्थोंविषे दुःखरूपतादिखाई ॥ अब अनात्मपदार्थोंविषे सुखरूपताकेअभावकूंदिखावैहैं ॥ हेकहोल ! आत्मातैंभिन्न किसीभीअनात्मपदार्थविषे सुखरूपतानहीं ॥ काहेतैं? जोपदार्थ जिसजीवकेसुखकाकारण होवैहै ॥ सोईहीपदार्थ कालांतरविषे तिसजीवकेदुःखकाकारणहोवैहै ॥ और जोपदार्थ जिसजीवकेदुःखकाकारणहोवैहै ॥ सोईहीपदार्थ कालांतरविषे तिसजीवकेसुखकाकारणहोवैहै ॥ जैसे ज्वरव्याधितैंरहितपुरुषकूं घृतादिकपदार्थ सुखकेकारणहोवैहैं ॥ और तेहीघृतादिकपदार्थ कालांतरविषे ज्वरव्याधियुक्त तिसीपुरुषके दुःखकेकारणहोवैहैं ॥ और जेघृतादिकपदार्थ ज्वरव्याधियुक्तपुरुषकूं दुःखकेकारणहोवैहैं ॥ तेही घृतादिकपदार्थ कालांतरविषे ज्वरव्याधिरहित तिसीपुरुषके सुखकेकारणहोवैहैं ॥ इसप्रकार सर्वअनात्मपदार्थोंविषे सुखकीकारणताका व्यभिचारजानिलेणा ॥ जोअनात्मपदार्थ नियमकरिकै सुखकेहीजनकहोवै तौ सर्वकालविषे तिनोंतैंसुखकीउत्पत्तिहोणी चाहिये ॥ और सर्वकालविषे तिनोंतैंसुखकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं अनात्मपदार्थोंविषे सुखकीकारणतानहीं ॥ शंका ॥ हेयाज्ञवल्क्य ! जोअनात्मपदार्थोंविषे सुखकीकारणतानहींहोवै तौ सुखकीप्राप्तिवासते संपूर्णजीव शब्दस्पर्शादिकविषयोंकीइच्छाकिसवासतेकरतेहैं? ॥ समाधान ॥ हेकहोल! शब्दस्पर्शादिकविषय हमारेसुखकेसाधनहैं ॥ यहजोसर्वलोकोंकाअनुभवहै सो यथार्थ नहीं किंतुभ्रांतिरूपहै ॥ काहेतैं? आनंदोब्रह्म अर्थयह ब्रह्म आनंदरूपहै ॥ याश्रुतिविषे ब्रह्मकूंही आनंदस्वरूकह्याहै और सोब्रह्मनित्यहै यातैं ब्रह्मरूपआनंदभी नित्यहै ॥ ता नित्यआनंदकी शब्दादिकविषयोंतैंउत्पत्तिकहणी भ्रांतिसैंविनासंभवैनहीं ॥ किंवा जोसुख शब्दस्पर्शादिकविषयोंकरिकैजन्यहोवैगा तौ सोसुख नित्यआत्मातैं भिन्नहीहोवैगा ॥ और जोआत्मातैंभिन्नहोवैहै ॥ सो दुःखरूपहीहोवैहै ॥ जैसेआत्मातैंभिन्नकरिकैजान्याहुआ वैरीपुरुषकासुखभी जीवोंकूं दुःखरूपहोइकेप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे जो

सुख आत्मातैंभिन्न होवैगा तौ दुःखरूपहीहोवैगा ॥ और सुखकूंदुःखरूपता संभवैनहीं ॥ यातैं सुख आत्मातैंभिन्न नहीं ॥ किंवा शब्दस्पर्शादिकविषय हमारेसुखकेसाधनहैं यहजोलोकोंकाअनुभवहै ताकेविषे यहकारणहै ॥ जैसे खद्योतजंतु रात्रिविषे संपूर्ण व्यापकआकाशकीअभिव्यक्तिकरिसकैनहीं ॥ किंतु व्यापकआकाशके किंचित्देशकी अभिव्यक्तिकरैहै ॥ तैसे शब्दस्पर्शादिकविषयभी संपूर्ण आत्मरूपव्यापकसुखकी अभिव्यक्तिकरैंनहीं ॥ किंतु व्यापकसुखकी किंचित्मात्र अभिव्यक्तिकरैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ शब्दस्पर्शादिकविषयोंकेसाथ श्रोत्रादिकइंद्रियोंका जबीसंबंधहोवैहै तबी आनंदस्वरूपआत्माकेप्रतिबिंबग्रहणकरणेहारी अंतःकरणकीवृत्ति उत्पन्नहोवैहै ॥ और साअंतःकरणकीवृत्ति जितनापरिमाणहोवैहै तितनापरिमाणही आत्मारूपसुखकीअभिव्यक्तिकरैहै ॥ यातैं अंतःकरणकीवृत्तिविषेस्थित जोशब्दस्पर्शादिकविषयोंकीजन्यता ताजन्यताकूं आत्मारूपसुखविषे आरोपणकरिकैमूढपुरुष सुखकूंविषयजन्यमानैहैं ॥ यातैं सुख विषयजन्यहै यहलोकोंकाअनुभव केवलभ्रमरूपहै ॥ यातैं हेकहोल! आत्मातैंभिन्नसर्वजगत्कूंदुःखरूपजाणिकै वामदेवादिकविद्वान्पुरुष आत्मरूपनित्यसुखकीप्राप्तिवासते सर्वएषणावोंकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरतेभयेहैं ॥ इतनेग्रंथकरिकै आत्मज्ञानकेप्राप्तिकासाधन तथाजीवन्मुक्तिकेसुखकासाधन जोसंन्यासहै ताकूं निरूपणकऱ्या ॥ अब आत्मज्ञानकेसाधन जे श्रवण मनन निदिध्यासनहैं तिनोंकेस्वरूपकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेकहोल! स्वप्रकाश सुखरूपजोब्रह्महै ताकेप्राप्तिकीइच्छाहैजिसकूं ॥ और शास्त्रकेपदार्थोंका तथावाक्यार्थोंका ज्ञानहैजिसकूं ॥ ऐसाजो चतुष्टयसाधनसंपन्न मुमुक्षुजनहै सो प्रथम गुरुमुखतैं वेदांतवाक्योंकाश्रवणकरिकै तिनवेदांतवाक्योंका अद्वितीयब्रह्मविषे तात्पर्यनिश्चयकरै ॥ याकानामश्रवणहै ॥ ताश्रवणतैंअनंतर सोमुमुक्षुजन जन्ममरणादिविकारवान् तथाआसक्तिद्वारा सर्वएषणावोंकाजनक जोयहशरीरहै ताकूं अन्वयव्यतिरेककरिकै दुःखकाकारणजानै ॥ और सर्वएषणावोंका परित्यागकरिकै सोमुमुक्षुजन बालककीन्यांई रागद्वेषतैंरहितहोइके स्थितहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ रागद्वेषपूर्वक जोविषयोंविषे इंद्रियोंकीप्रवृत्तिहै साप्रवृत्तिही जीवोंकेदुःखकाकारणहै ॥ याकारणतैंही रागद्वेषपूर्वक इंद्रियोंकीप्रवृत्तितैंरहितजोबालकहै सो दुःखकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ यातैं यहमुमुक्षुजनभी

बालककीन्याई रागद्वेषपूर्वक इंद्रियोंकीप्रवृत्तितैंरहितहोइकै वेदांतकेअर्थकामननकरै ॥ नानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिकै विरोधनिवृत्ति पूर्वक जोवेदांतकेअर्थकाचिंतनहै ताकूं शास्त्रवेत्तापुरुष मननकहैहैं सोमनन रागद्वेषवान् बहिर्मुखपुरुषतैंहोइसकैनहीं ॥ यातैं राग द्वेषतैंरहितहोइकै मुमुक्षुजन वेदांतकेअर्थकामननकरै ॥ और ताश्रवणमननतैंअनंतर यहमुमुक्षुजन अनात्माकार विजातीयवृत्तियों कापरित्यागकरिकै आत्माकार सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहरूप जोनिदिध्यासनहै ताकूं निरंतरकरै ॥ तात्पर्ययह ॥ मनवाणीका विषय जोदृश्य प्रपंचहै तिसतैं मैं विलक्षणहूं ॥ और मैं आनंदस्वरूपहूं ॥ और मैं स्वप्रकाशहूं ॥ और मैं सजातीय विजातीय स्वगत भेदतैंरहितहूं ॥ याप्रकारकेवृत्तियोंका निरंतरप्रवाहरूपजोनिदिध्यासनहै तानिदिध्यासनविषेहै नेष्ठाजिसकी तथा पूर्व उक्तश्रवणमननकूं चिरकालपर्यंत श्रद्धापूर्वक सेवनकऱ्याहैजिसनैं ऐसाजोमुमुक्षुजनहै सो ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोवैहै ता ब्रह्मवि द्यावान्पुरुषकूंही श्रुतिविषेब्राह्मणकह्याहै ॥ शंका ॥ हेयाज्ञवल्क्य! पूर्वकथनकऱ्ये जेश्रवण मनन निदिध्यासन तिनोंकापरित्याग करिकै यहमुमुक्षुजन अन्यकिसीउपायकरिकै ब्रह्मज्ञानरूपब्राह्मणभावकूं प्राप्तहोवैहै अथवा नहींहोवैहै ॥ जोश्रवणादिकोंतैंवि ना किसीअन्यउपायकरिकै ब्राह्मणभावकीप्राप्तिहोतीहोवै तौ सोउपाय हमारेप्रति कथनकरो ॥ समाधान ॥ हेकहोल! पूर्वक हेजेश्रवण मनन निदिध्यासन तिनोंकूंपरित्यागकरिकै यहमुमुक्षुजन अन्यकिसीउपायकरिकै ब्राह्मणभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किं तु श्रवणादिकोंकरिकैही यहमुमुक्षुजन ब्राह्मणभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं हेकहोल! नाम रूप क्रियातैंरहित तथास्वप्रकाशसुखरू प जोअद्वितीयब्रह्महै सोमैंहूं ॥ याप्रकारका निर्विकल्पकज्ञान जिसपुरुषकूंभयाहै तिसीब्रह्मवेत्तापुरुषकूं श्रुति ब्राह्मणकहैहै ॥ और याप्रकारकाब्राह्मणपणा श्रवण मनन निदिध्यासनतैंविना अन्यकिसीउपायकरिकै प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं ताब्राह्मणभावकी प्राप्तिवासते मुमुक्षुजननैं अवश्य श्रवणादिकसाधन संपादनकरणें ॥ और हेकहोल! याप्रकारकाब्राह्मणपणा जोकदाचित् श्रवणा दिकसाधनोंतैंविना अन्यकिसीसाधनतैं होताहोवै तौ निःशंकहोवै ॥ याकेविषे हमाराआग्रहनहीं ॥ काहेतैं? जैसे नदीके पारउतरणारूपफल नौकाकरिकैहोवैहै ॥ अथवा उडुपादिकसाधनोंकरिकैहोवैहै ॥ जबी उडुपादिकसाधनोंकरिकैही नदी

केपारजाणारूपफल सिद्धहोइसकै तबी नौकाकरिकै पारजाणेविषे कोईबुद्धिमान्पुरुष आग्रहकरतानहीं ॥ परंतु जो नदी महान्वेगवाली होवैहै तथा अत्यंतविस्तारवाली होवै तथा जानदीविषे अगाधजलहोवैहै ऐसीनदीकेपार जाणे विषे जैसे एकनौकाही साधनहोवैहै ॥ नौकातैंविना उडुपादिकसाधनोंकरिकै ऐसीनदीतैंपारहोणा संभवैनहीं ॥ तैसे पूर्वउक्त ब्राह्मणपणविषे श्रवणादिकहीसाधनहैं ॥ श्रवणादिकोंतैंविना किसीअन्यउपायकरिकै याप्रकारकाब्राह्मणपणा प्राप्तहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ सो श्रवणादिकोंतैंभिन्नउपाय हिरण्यगर्भकीउपासनाहोवैगी ॥ अथवा अश्वमेधयज्ञादिक उत्कृष्टकर्महोवैंगे ॥ तेसंपूर्णउपासना तथाकर्म श्रवणादिकोंतैंविना आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरैनहीं ॥ किंतु उपासनाकरिकै तथाकर्मोंकरिकै चित्तकीशुद्धिहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर विवेक वैराग्य शमादिषट्संपत् मुमुक्षुता याचारिसाधनोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर गुरुमुखद्वारा वेदांतकेश्रवणकरिकै तथामनननिदिध्यासनकरिकै मुमुक्षुपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं चित्तकीशुद्धिविषे कर्मउपासनाका उपयोगहै ॥ साक्षात्आत्मज्ञानविषे कर्मउपासनाकूं कारणतानहीं ॥ किंतु श्रवणादिकोंकूंही साक्षात्कारणताहै ॥ तहां वेदांतशास्त्र जीवईश्वरके अभेदकूंबोधनकरैहै अथवा जीवईश्वरकेभेदकूंबोधनकरैहै ॥ याप्रकारकी प्रमाणगतअसंभावना वेदांतशास्त्रकेश्रवणतैं निवृत्त होवैहै ॥ और आत्मा नित्य व्यापकसुखरूपहै अथवा अनित्य परिच्छिन्नदुःखरूपहै ॥ याप्रकारकी प्रमेयगतअसंभावना वेदांतशास्त्रकेमननतैं निवृत्तहोवैहै ॥ और अनित्य अशुचि दुःखरूप शरीरादिकोंविषे नित्य शुचि सुखरूपताबुद्धिकूं विपरीतभावनाकहैहैं ॥ साविपरीतभावना निदिध्यासनतैं निवृत्तहोवैहै ॥ याप्रकार असंभावनाविपरीतभावनाके निवृत्तिद्वारा श्रवण मनन निदिध्यासन आत्मज्ञानकेसाधनहैं ॥ यातैं श्रवणादिकोंकरिकैही ब्राह्मणभावकी प्राप्तिहोवैहै ॥ और हेकहोल ! जिसपुरुषनैं गुरुमुखतैं वेदांतशास्त्रकाश्रवणनहींकऱ्या तथा मनन निदिध्यासननहींकऱ्या तथा वित्तएषणा पुत्रएषणा लोकएषणा यातीनप्रकारके एषणावोंकापरित्यागनहींकऱ्या ॥ केवलविषयभोगविषे जोपुरुष आसक्तहै ऐसे साधनहीनपुरुषकूं किसीलोकविषे तथाकिसीकालविषे जोपूर्वउक्तब्राह्मणपणा प्राप्तहुआहोवै तौ हमारेप्रति तुमकथनकरो ॥

किंतु ऐसेसाधनहीनपुरुषोंकूं किसीलोकविषे तथाकिसीकालविषे ब्राह्मणपणा प्राप्तहोताभया॥ यातें हेकहोल! जैसे अन्नकाभक्षण नियमकरिकै तृप्तिकाउपायहै॥ अन्नकेभक्षणतेंविना अन्यकिसीउपायकरिकै पुरुषकी तृप्तिहोवैनहीं॥ तैसे ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिरूप ब्राह्मणपणेविषे श्रवण मनन निदिध्यासनहीनियमकरिकैसाधनहैं॥ याकारणतें हिरण्यगर्भकूंभी क्षणमात्र वेदांतवाक्यकेविचारतें ही आत्मज्ञानकीप्राप्तिकहीहै॥ तथा योगीपुरुषभी प्रणवकेअर्थकाविचारकरिकैही आत्मसाक्षात्कारकूं प्राप्तहोवैहै॥ श्रवणमनन निदिध्यासनतेंविना कोईभीपुरुष आत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैनहीं॥ हेशिष्य! याप्रकार जबी याज्ञवल्क्यमुनिनें कहोलकेप्रति उत्तर कह्या तबी सोकहोलब्राह्मण याज्ञवल्क्यकूंबुद्धिमान् जाणिकरिकै याज्ञवल्क्यकेजीतणेकीइच्छाका परित्यागकरताभया॥ और गार्गीकेमुखकीओरिदेखिकरिकै सोकहोलब्राह्मण पुनःप्रश्नकरणेतें निवृत्तहोताभया॥ तिसतैंअनंतर तर्कविषेकुशल जावचक्नुऋषिकी पुत्रीगार्गीहै॥ सा अनुमानप्रमाणकूंअंगीकारकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरतीभई॥ गार्गीउवाच॥ हेयाज्ञवल्क्य! या लोकविषे जोजोपदार्थ कार्यहोवैहै॥ सोसोपदार्थ आपणेकारणविषे स्थितहोवैहै॥ तथा अंतर बाह्य कारणकरिकैव्याप्तहोवैहै॥ जैसे पटरूपकार्य तंतुरूपकारणविषे रहेहै॥ तथा अंतबाह्य तंतुरूपकारणकरिकै व्याप्तहोवैहै॥ यहवार्ता सर्वलोकोंकूंअनुभवसिद्धहै॥ तैसे यामनुष्यलोकविषेवर्तमान जितनेस्थावर जंगमरूप पार्थिवपदार्थहैं तेसंपूर्णपार्थिवपदार्थ कार्यरूपहैं॥ यातें कारणरूपजलविषे स्थितहैं॥ तथा अंतर बाह्य कारणरूपजलकरिकै व्याप्तहैं॥ जोकदाचित् पार्थिवपदार्थ जलकरिकै व्याप्त नहींहोवै तौसक्तुकेमुष्टिकीन्यांई विशीर्णभावकूं प्राप्तहोणेचाहिये॥ और यहघटादिकपार्थिवपदार्थ विशीर्णभावकूंप्राप्तहोतेनहीं॥ यातें यहजान्याजावैहै॥ घटादिकपार्थिवपदार्थ जलरूपकारणकरिकैव्याप्तहैं॥ याकहणेकरिकै यहअनुमान बोधनकऱ्या॥ स्थावरजंगमरूप जेपार्थिवपदार्थहैं ते जलरूपकारणकरिकै व्याप्तहैं॥ काहेतें कार्यरूपहोणेतें पटकीन्यांई॥ यातें हेयाज्ञवल्क्य! पृथिवीकी न्यांई ते जलभी कार्यरूपहैं॥ यातें तेजलभी किसीआपणेकारणविषे ओतप्रोतहोवैंगे॥ सो जलोंकाकारण कौनहै? जिसविषे जल ओतप्रोतहैं॥ हेशिष्य! याप्रकार जबी गार्गीनें प्रश्नकऱ्या तबी याज्ञवल्क्यमुनि उत्तरकूंकहताभया॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच॥ हे

गार्गी! तेजल वायुरूपकारणविषे ओतप्रोतहैं ॥ यद्यपि वेदांतमतविषे जलोंकाउपादानकारण तेजहै ॥ और तेजकाउपादानकारण वायुहै ॥ यातैंवायुकूं जलोंकाउपादानकारणकहणा संभवैनहीं ॥ तथापि लोकविषे अग्निरूपतेजकी काष्ठरूपइंधनविषेही उपलब्धिहोवैहै ॥ काष्ठरूपइंधनतैंविना अन्यकिसीपदार्थविषे अग्निरूपतेजकी उपलब्धिहोवैनहीं ॥ और काष्ठोंविषेस्थित धूमतैंरहितजोअग्निहै ताकेविषे जलकाविरोधीपणा प्रत्यक्षदेखीताहै ॥ यातैं जलकाविरोधीजोअग्निहै ताकेविषे जलकीउपादानकारणता संभवैनहीं ॥ और काष्ठरूपइंधनतैंरहितजोअग्निहै ॥ ताकेविषे जलकीकारणता शास्त्रप्रमाणतैंविना अन्यकिसीप्रमाणकरिकै सिद्धहोवैनहीं ॥ एक शास्त्रप्रमाणकरिकैहीसिद्धहै ॥ यद्यपि आर्द्रइंधनयुक्तअग्निविषे धूमकेसंबंधद्वारा जलकीकारणताप्रत्यक्षप्रमाणकरिकै सिद्धहै ॥ तथापि तास्थलविषे जलकीकारणता अग्निविषेहै अथवा आर्द्रइंधनविषेस्थितजलविषेहै ॥ यह निर्णयहोइसकैनहीं ॥ याकारणतैं अग्निका परित्यागकरिकै वायुविषे जलकीकारणता कथनकरीहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे पुत्रकाकारणजोपिताहै ॥ सोपिता पुत्रकेपुत्रकाभीकारण है ॥ तैसे तेजकाकारणजोवायुहै सोवायु तेजकेकार्यजलकाभी कारणहोइसकैहै ॥ याकेविषे किंचित्मात्रभीविरोधनहीं ॥ हेशिष्य! याप्रकारजबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं उत्तरकह्या तबी सागार्गी पुनःयाज्ञवल्क्यमुनिसैं पूछतीभई ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! सोवायु किसकारणविषे ओतप्रोतहै? ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी! सोवायु अंतरिक्षलोकविषे ओतप्रोतहै ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! सोअंतरिक्षलोक किसकारणविषे ओतप्रोतहै? ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी! सोअंतरिक्षलोक गंधर्वलोकविषे ओतप्रोतहै ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! सोगंधर्वलोक किसकारणविषे ओतप्रोतहै? ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी! सोगंधर्वलोक सूर्यलोकविषे ओतप्रोतहै ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! सोसूर्यलोक किसकारणविषे ओतप्रोतहै? याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी! सोसूर्यलोक चंद्रमालोकविषे ओतप्रोतहै ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! सोचंद्रमालोक किसकारणविषे ओतप्रोतहै? याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी! सोचंद्रमालोक नक्षत्रलोकविषे ओतप्रोतहै ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! सोनक्षत्रलोक किसकारणविषे ओतप्रोतहै? याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी! सोनक्षत्रलोक देवलोकविषे ओतप्रोत है ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! सोदेवलोक

किसकारणविषे ओतप्रोतहै ? याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी ! सोदेवलोक इंद्रलोकविषे ओतप्रोतहै ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ! सोइंद्रलोक किसकारणविषे ओतप्रोतहै ? याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी ! सोइंद्रलोक प्रजापतिलोकविषे ओतप्रोतहै ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोप्रजापतिलोक किसकारणविषे ओतप्रोतहै ? याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी ! सोप्रजापतिलोक ब्रह्मलोकविषे ओतप्रोतहै ॥ अब अंतरिक्षादिक शब्दोंकेअर्थकूंनिरूपणकरैहैं ॥ अवकाशरूपकरिकै सर्वलोकोंकूंप्रसिद्ध जोस्थूलआकाशहै ताकूं अंतरिक्षकहैहैं ॥ और गंधर्वलोक सूर्यलोक चंद्रमालोक नक्षत्रलोक देवलोक इंद्रलोक येषट्प्रकारकेशब्द आकाशादिकपंचभूतोंकी जोउत्तरउत्तर सूक्ष्मअवस्थाहैं तिनोंकेवाचकहैं॥ तात्पर्ययह ॥ अंतरिक्षलोककेआरंभक जेआकाशादिकपंचभूतहैं ॥ तिनोंतैं अंतरिक्षलोककूंसर्वओरतैंपरिवेष्टनकरिकैस्थित जेगंधर्वशरीरोंकेआरंभकपंचभूतहैं ते सूक्ष्महैं ॥ तैसे गंधर्वलोककूंसर्वओरतैं परिवेष्टनकरिकैस्थित जेसूर्यलोककेआरंभकपंचभूतहैं तेभूत गंधर्वलोककेआरंभकभूतोंतैं सूक्ष्महैं ॥ इसप्रकार इंद्रलोकपर्यंत आकाशादिकपंचभूतोंकीसूक्ष्मता जानिलेणी ॥ याकेविषेभी इतनीविलक्षणताहै ॥ गंधर्वलोकतैंलैके इंद्रलोकपर्यंत जेषट्प्रकारकी भूतोंकीअवस्थाकही तेअवस्थाभी पूर्वपूर्वअवस्थाकीअपेक्षाकरिकै सूक्ष्महैं ॥ और उत्तरउत्तर अवस्थाकीअपेक्षाकरिकै स्थूलहैं ॥ जैसे गंधर्वलोककीअपेक्षाकरिकै सूर्यलोक सूक्ष्महै ॥ और चंद्रमालोककीअपेक्षाकरिकै सोसूर्यलोक स्थूलहै ॥ तैसे चंद्रमालोकभी सूर्यलोककीअपेक्षाकरिकै सूक्ष्महै ॥ और नक्षत्रलोककीअपेक्षाकरिकै सोचंद्रमालोक स्थूलहै ॥ इसप्रकार इंद्रलोकपर्यंत स्थूलता तथासूक्ष्मता जानिलेणी ॥ अब इंद्रलोक प्रजापतिलोक ब्रह्मलोक यातीनशब्दोंकेअर्थोंकूंनिरूपणकरैहैं ॥ तहां संपूर्णदृश्यप्रपंचकूं जोआत्मारूपकरिकैदेखे ताकूं इंद्रकहैहैं ॥ याप्रकारका इंद्रशब्दकाअर्थ विराट्पुरुषविषेहीघटैहै ॥ काहेतें ? यहसंपूर्णविश्व विराट्पुरुषकेशरीरविषे स्थितहै ॥ यातैं ताविश्वकूं आत्मरूपकरिकै सोविराट्पुरुष देखैहै ॥ यातैं इंद्रशब्दकरिकै विराट्पुरुषकाग्रहणकरणा ॥ और ब्रह्मांडरूपीकटाहकेअंतर तथाबाह्य वर्तमानजोसूत्रआत्माहै॥ जासूत्रआत्माकूं पारिक्षितपुरुष प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं प्रजापतिशब्दकरिकै ता सूत्रआत्माकाग्रहणकरणा ॥ और मायाअज्ञानशब्दकाअर्थ जोसर्वकाकारणअव्याकृतहै ॥ सोअव्याकृत

सूत्रआत्माकेस्थितिकाआधारहै ॥ यातें ब्रह्मलोकशब्दकरिकै ता अव्याकृतकाग्रहणकरणा ॥ कैसाहैसोअव्याकृत ? समष्टिरूपकरि
कै एकप्रकारकाहै ॥ और व्यष्टिरूपकरिकै अनेकप्रकारकाहै ॥ हेशिष्य ! याप्रकारके याज्ञवल्क्यमुनिकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै सागा
र्गीआपणेमनविषे याप्रकारकाविचार नहींकरतीभई ॥ सोविचार यहहै सर्वजगत्काकारणरूपजोअव्याकृतहै ॥ सो यद्यपि शुद्ध
आत्माके आश्रितरहैहै ॥ तथापि सोअव्याकृत जलादिकोंकीन्यांई अनुमानप्रमाणतें जान्याजावैनहीं ॥ काहेतें ? कार्यजोहै सो का
रणकरिकैव्याप्तहै ॥ कार्यत्वधर्मवालाहोणेतें पटरूपकार्यकीन्यांई याअनुमानकीप्रवृत्तितैंपूर्व जोजोकार्यहोवैहै सोसोकारणक
रिकैव्याप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकाव्याप्तिज्ञान तथाकार्यत्वरूपहेतुकाज्ञान अवश्यचाहिये ॥ व्याप्तिज्ञानतैंविना तथाहेतुज्ञानतैंविना अनु
मानप्रमाणतें किसीअर्थकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ और अव्याकृतकाआश्रयरूपकरिकै आत्माकेज्ञानविषे पूर्वउक्तव्याप्तिज्ञानका तथाका
र्यत्वरूपहेतुकेज्ञानका किंचित्मात्रभी उपयोगनहीं ॥ काहेतें ? अज्ञानमायारूपअव्याकृत अनादिहै ॥ यातें ताअव्याकृतविषे कार्यप
णासंभवैनहीं ॥ और शुद्धआत्माविषे कार्यपणा तथाकारणपणा दोनोंसंभवैंनहीं ॥ यातें अव्याकृतकाआश्रयआत्मा अनुमानप्र
माणकाविषयनहीं ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ सूत्रआत्माभी अनुमानकाविषयनहीं ॥ काहेतें ? लोकप्रसिद्धदृष्टांतकूं
लैके अनुमानकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ लोकप्रसिद्धदृष्टांततैंविना किसीअनुमानकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ सोलोकप्रसिद्धदृष्टांत सूत्रआत्मा
कीसिद्धिविषेहैनहीं ॥ याकारणतैंही ब्रह्मांडतैंबाह्यसूत्रआत्माहै याप्रकारकीप्रक्रिया किसीनैयायिकनेंलिखीनहीं ॥ यातें सूत्रआ
त्मा तथाअव्याकृतकाआश्रयरूप शुद्धआत्मा अनुमानरूपतर्ककाविषयनहीं ॥ याप्रकारकेविचारकूंनकरिकै सागार्गी आग्रहतें पुनः
याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरतीभई ॥ गार्ग्युवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ! सोअव्याकृतरूप ब्रह्मलोक किसकारणविषे ओतप्रोतहै ? ॥
हेशिष्य ! केवलशास्त्रप्रमाणकरिकैजानणेयोग्य जोआत्माकावास्तवस्वरूपहै ॥ सो जबी गार्गीनें आपणीमूर्खतातें अनुमानप्रमाण
कीरीतिकरिकैपूछा ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि गार्गीकेप्रतिकहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेगार्गी ! यहआनंदस्वरूप
आत्मा केवलशास्त्रप्रमाणकरिकै जानणेयोग्यहै ॥ यातें शास्त्रप्रमाणकरिकैही आत्माकास्वरूप तुमारेकूंपूछणेयोग्यथा ॥

परंतु तामर्यादाकापरित्यागकरिकै अनुमानकीरीतिसैं जोतुमनैं आत्माकाप्रश्नकऱ्याहै ॥ सोतुमाराप्रश्न व्यर्थहै ॥ काहेतैं? सर्वकाअधिष्ठानआत्मा किसीअनुमानकाविषयहैनहीं ॥ यातैं हेगार्गी! सर्वकाअधिष्ठानरूपआत्मादेवता अनुमानरीतिसैं तुमनैं कदाचित्नहींपूछणा ॥ और हेगार्गी! विचारतैंरहितहोइकैजोतू दुराग्रहतैं अतिप्रश्नकरैगी तौ तुमारामस्तक भूमिविषेपतनहोवैगा ॥ काहेतैं? जोपुरुष परमउत्कृष्टपदार्थकूं निकृष्टपदार्थकेसमानदेखेहै ॥ तापुरुषकूं परमअनर्थकीप्राप्तिहोवै है ॥ जैसे अर्जुनकेहस्तविषेस्थित जोपाशुपतअस्त्रहै ॥ सो अन्यशरकेसमान होणेयोग्यहै ॥ अस्त्रत्वधर्मवालाहोणेतैं ॥ दूसरेशरकीन्यांई ॥ याप्रकारकेअनुमानकरिकै पाशुपतअस्त्र अन्यशरकेसमान करणेयोग्यनहीं ॥ और जोकोईपुरुष दुराग्रहकरिकै तापाशुपतअस्त्रकूं अन्यशरकेसमानकरैहै तौ सोपाशुपतअस्त्र ता विपरीतदर्शीपुरुषके मस्तककूंछेदनकरिकै भूमिविषेगिडावैहै ॥ अन्यदृष्टांत ॥ जैसे अथर्वणवेदतैंउत्पन्नभयेजे मारणेकेमंत्रहैं ॥ तेमंत्रभी अतिक्रोधकरिकैयुक्त दुर्वासामुनिकेहृदयदेशविषेस्थितहोवैं ॥ ते मंत्र यद्यपि प्राकृतमंत्रोंकेसमान होणेयोग्यनहीं हैं ॥ तथापि जोपुरुष दुराग्रहकरिकै तिनमंत्रोंकूं प्राकृतमंत्रोंकेसमानकरैहै तौ तेअथर्वणवेदकेमंत्र ताविपरीतदर्शीपुरुषकेमस्तककूं भूमिविषेगिडावैहैं ॥ तैसे हेगार्गी! अनुमानकाअविषयजोआत्माहै ताकूं जलादिकोंकीन्यांई अनुमानकाविषयमानिकै जोतू आत्माका अतिप्रश्नकरैगी तौ तुमाराभीमस्तक भूमिविषेपतनहोवैगा ॥ हेशिष्य! याप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकेवचनकूंश्रवणकरिकै सागार्गी अत्यंतभयकूंप्राप्तहोतीभई ॥ और अरुणऋषिकापुत्र जोउद्दालकनामाऋषिहै ॥ ताकेमुखकीओरिदेखिकै सागार्गी पुनःप्रश्नकरणेतैं निवृत्तहोतीभई ॥ तिसतैंअनंतर सोउद्दालकऋषि अत्यंतक्रोधवान्होइकै पूर्वअग्निदेवतानैं उपदेशकऱ्याजो अत्यंतगुह्यअर्थहै ता गुह्यअर्थकाप्रश्न याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति करताभया ॥ तहां भुज्युकीन्यांई आपणेविद्याकीउत्कृष्टताबोधनकरणेवासते सोउद्दालक प्रथम आपणेपूर्ववृत्तांतकूं कथनकरताभया ॥ उद्दालकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! पूर्वब्रह्मचर्यआश्रमविषे हमबहुतब्रह्मचारी वेदोंकेअध्ययनकरणेवासते मद्रदेशविषे पतंचलनामाब्राह्मणकेगृहविषेस्थितहोतेभये ॥ और किसीकालविषे तापतंचलनामाब्राह्मणकीस्त्रीकेशरीरविषे पिशाचकीन्यांई अग्निदेवता प्रवेशकरताभया ॥

तिसतैंअनंतर पतंचलगुरुकेसहित हमसंपूर्णब्राह्मण ताअग्निदेवतासैं पूछतेभये ॥ तूकौनहै ? तिसतैंअनंतर सोअग्निदेवता हमसंपू
र्ण ब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेब्राह्मणो ! आथर्वण हमारागोत्रहै और कबंध हमारानामहै ॥ तुमसंपूर्णब्राह्म
णोंके उपकारवासते यास्त्रीकेशरीरविषे हमनैं प्रवेशकऱ्याहै ॥ हेयाज्ञवल्क्य ! याप्रकारकावचनकहिकै सोअग्निदेवता हमसंपूर्णशि
ष्योंकरिकैपरिवेष्टित पतंचलनामाहमारेगुरुकेतांई याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेपतंचल ! जैसे मालाकेपुष्पोंकूं सूत्र धारणकरै
है ॥ तैसे यहसंपूर्णभूतभौतिकप्रपंच जिससूत्रकरिकै बांध्याहुआहै ॥ तासूत्रकूं तू जाणताहै ॥ हेयाज्ञवल्क्य ! याप्रकारकाप्रश्न जबी
अग्निदेवतानैं हमारेगुरुकेप्रति कऱ्या ॥ तबी सोपतंचलनामा हमारागुरु अग्निदेवताकेप्रति कहताभया ॥ हेअग्निदेवता ! संपूर्ण
जगत्कूं जिससूत्रनैं धारणकऱ्याहै तासूत्रकूं हम नहींजाणते ॥ हेयाज्ञवल्क्य ! याप्रकारकाउत्तर जबी हमारेगुरुनैंकह्या ॥ तबी
सोअग्निदेवता पुनःहमारेगुरुसैं पूछताभया ॥ हेपतंचल ! जोसर्वजगत्काप्रेरकअंतर्यामीहै तिसकूं तू जाणताहै ॥ हेयाज्ञवल्क्य !
याप्रकारकादूसराप्रश्न जबी अग्निदेवतानैं हमारेगुरुसैंपूछा तबी सोपतंचलनामा हमारागुरु यहउत्तर देताभया ॥ हेअग्निदेव
ता ! अंतर्यामीकेस्वरूपकूंभी हम नहींजाणते ॥ हेयाज्ञवल्क्य ! पतंचलनामा हमारेगुरुनैं जबी अग्निदेवताकेप्रति सूत्रका तथा अंत
र्यामीका स्वरूपनहींकह्या ॥ तबी सोअग्निदेवता कृपाकरिकै युक्तहुआ पतंचलनामा हमारेगुरुकेप्रति कहताभया ॥ हेपतंचल ! ह
मनैं जोतुमारेसैं सूत्रका तथाअंतर्यामीका स्वरूपपूछाहै ॥ तासूत्रकूं तथाअंतर्यामीकूं जोपुरुष जाणताहै सोपुरुष सर्वज्ञभावकूंप्राप्त
होवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सोपुरुष परमात्माकूं तथाभूरादिकसप्तलोकोंकूं तथासंपूर्णदेवतावोंकूं तथासंपूर्णप्राणियोंकूं तथापंचभूतोंकूं त
थाआत्माकूं इत्यादिकसर्वपदार्थोंकूं जाणताहै ॥ हेयाज्ञवल्क्य ! याप्रकार सूत्रअंतर्यामीकेज्ञानकीउत्कृष्टता कथनकरिकै सोअग्निदेव
ता हमसंपूर्णब्राह्मणोंकेप्रति तासूत्रकेस्वरूपकूं तथाअंतर्यामीकेस्वरूपकूं कथनकरताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्य ! ताअग्निदेवताकेउपदेशक
रिकै हम सूत्रकेस्वरूपकूं तथाअंतर्यामीकेस्वरूपकूं भलीप्रकार जाणतेहैं ॥ और तूं तासूत्रकेस्वरूपकूं तथाअंतर्यामीकेस्वरूपकूं नजा
णिकरिकै जोसर्वब्राह्मणोंकीगौवां आपणेगृहविषेलैजावैगा तौ शीघ्रही तुमारामस्तक भूमिविषेपतनहोवैगा ॥ हेशिष्य ! याप्रकारका

प्रश्न जबी उद्दालकनैंकऱ्या तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि उद्दालककेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेउद्दालक! पूर्व अग्निदेव तानैं जोतुमारेप्रति सूत्रका तथाअंतर्यामीका स्वरूपकह्याहै तासूत्रकूं तथाअंतर्यामीकूं हम भलीप्रकारजाणतेहैं ॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं उद्दालककेप्रति कह्या तबी सोउद्दालक क्रोधवान्होइके याज्ञवल्क्यकेप्रति कहताभया ॥ उद्दालकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! जैंसे अज्ञानीपामरपुरुष हमसर्वअर्थकूंजाणतेहैं याप्रकारकेवचन उच्चारणकरैहैं ॥ तैंसे तूभी हमसूत्रकूंजाणतेहैं हम अंतर्यामीकूंजाणतेहैं याप्रकारकावचनमात्र उच्चारणकरैहैं ॥ परंतु सूत्रकेस्वरूपकूं तथाअंतर्यामीकेस्वरूपकूं तू कथनकरतानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ तेरेकूं सूत्रका तथाअंतर्यामीका ज्ञाननहीं ॥ काहेतें? जिसपुरुषकूं जापदार्थकाज्ञानहोवैहै ॥ सोपुरुष हमजाणतेहैं याप्रकारकेवचनमात्रकाउच्चारणकरतानहीं ॥ किंतु तापदार्थकेस्वरूपका कथनकरताहै ॥ यातैं हेयाज्ञवल्क्य! जोतू सूत्रकेस्वरूपकूं तथाअंतर्यामीकेस्वरूपकूं जाणताहै तौ हमारेप्रति कथनकरो ॥ और जोतू सूत्रअंतर्यामीकेस्वरूपकूंनहींजाणता तौ हम सूत्रअंतर्यामीकूंजाणतेहैं याप्रकारकी व्यर्थगर्जना मतकरो ॥ हेशिष्य! याप्रकारकाप्रश्न जबी उद्दालकऋषिनैं याज्ञवल्क्यकेप्रतिकऱ्या तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि उद्दालककेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेउद्दालक! जोतुमनैं सर्वजगत्केबंधनकाकारण सूत्रपूछाथा सोसूत्र प्राणरूपवायुहै ॥ काहेतें? जैंसे तंतु पटकूंधारणकरैहैं ॥ तैंसे यहप्राणरूपवायु इसलोककूं तथाअन्यलोककूं तथा सर्वभूतप्राणियोंकूं धारणकरैहै ॥ याकारणतैंही मरणकालविषे जबी प्राणोंकालोकांतरविषे निर्गमनहोवैहै तबी हस्तपादादिकसंपूर्णअवयव शिथलहोइजावैहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैंसे सूत्रकेनिर्गमनहुए मालाकेपुष्प शिथलहोइजावैहैं ॥ याप्रकारकी लोकप्रसिद्धयुक्तिकरिकैंभी प्राणकूंही सूत्ररूपतासंभवैहै ॥ इहां प्राणवायुशब्दकरिकै समष्टिव्यष्टिसूक्ष्मशरीरकाग्रहणकरणा ॥ हेशिष्य! याप्रकार जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं सूत्रकास्वरूपकह्या तबी सोउद्दालक याज्ञवल्क्यकेवचनकूं अंगीकारकरताभया ॥ और पुनःसोउद्दालक प्रश्नकरताभया ॥ उद्दालकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! जोपूर्व अग्निदेवतानैं हमारेप्रति सूत्रकास्वरूपकह्याथा सोईही सूत्रकास्वरूप तुमनैं हमारेप्रतिकह्या ॥ यातैं सूत्रकेस्वरूपविषे हमपुनः प्र

श्नकरतेनहीं ॥ परंतु अंतर्यामीकास्वरूप हमारेप्रति कथनकरो ॥ हेशिष्य! याप्रकारजबी उद्दालकनैं अंतर्यामीकास्वरूप पूछा तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि उद्दालककेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेउद्दालक! जोसर्वज्ञ परमात्मादेव पृथिवी जल अग्नि भुवर्लोक वायु स्वर्ग आदित्य दिशा चंद्रतारक आकाश अंधकार तेज या द्वादशअधिदैवोंविषे श्रुतिनैं कथनकर्‍याहै ॥ और जो परमात्मादेव स्थावरजंगमरूप सर्वअधिभूतोंविषे श्रुतिनैं कथनकर्‍याहै ॥ और जोसर्वज्ञपरमात्मादेव प्राण वाक् चक्षु श्रोत्र मन त्वक् बुद्धि उपस्थइंद्रिय याअष्टप्रकारकेअध्यात्मोंविषे श्रुतिनैं कथनकर्‍याहै ॥ और जोपरमात्मादेव पृथिवीआदिक एकवीस स्थानोंविषे स्थितहुआभी तिनपृथिवीआदिकस्थानोंतैं भिन्नहीरहैहै ॥ जैसे गृहवालापुरुष आपणेगृहतैंभिन्नहोवैहै ॥ तैसे जोपरमात्मादेव पृथिवीआदिकोंतैंभिन्नहोवैहै ॥ और जिनपृथिवीआदिकोंके अंतरस्थित परमात्मादेवहै ॥ ते पृथिवीआदिकभी जिसपरमात्मादेवकूं नहींजाणिसकते ॥ और जोपरमात्मादेव पृथिवीआदिकोंकूं नियमकरिकै आपणेआपणेकार्यविषे प्रवृत्तकरणेवासते किसीदूसरेशरीरकूं ग्रहणनहींकरता ॥ किंतु जैसे अस्मदादिकजीवोंका शुक्रशोणितकाविकाररूप यहशरीरहै ॥ तैसे जिसपरमात्मादेवके पृथिवीआदिकहीशरीरहैं ॥ और जैसे राजा आपणेभृत्योंकूं नानाप्रकारकेव्यापारोंविषे नियमकरिकै प्रवृत्तकरैहै ॥ तैसे जोपरमात्मादेव पृथिवीआदिकोंकेअभिमानी चेतनरूपलिंगशरीरोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे नियमकरिकै प्रवृत्तकरैहै ॥ सो मायाका अधिपतिपरमात्मादेवही अंतर्यामीहै ॥ यातैं हेउद्दालक! जोअंतर्यामीकास्वरूप तुमनैं पूर्वपूछाथा ॥ सोअंतर्यामीपरमात्मादेव तुमारा तथाहमारा तथासर्वजीवोंका आत्मारूपहै ॥ कैसाहैसोअंतर्यामी? जन्म मरण क्षुधा तृषा शोक मोह याषट्ऊर्मियोंतैंरहितहै ॥ हेशिष्य! याप्रकार याज्ञवल्क्यमुनि उद्दालककेप्रति पृथिवीआदिकोंविषे एकवीसवारअंतर्यामीकेस्वरूपका उपदेशकरताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपृथिवीविषेस्थितहै ॥ और पृथिवीतैंभिन्नहै ॥ और पृथिवीजिसकूंजाणतीनहीं ॥ और पृथिवीजिसकाशरीरहै ॥ और जोपृथिवीकूंआपणेकार्यविषेप्रवृत्तकरैहै ॥ सोपरमात्मादेव हेउद्दालक! तेराअंतर्यामीअमृतहै ॥ इसप्रकार जलादिकोंविषेभीजानिलेणा ॥ याप्रकार पृथिवीआदिकोंविषे एकवीसवार अंतर्यामीकास्वरूपकहिकरिकै सोधर्मात्मायाज्ञव

ल्क्यमुनि नेतिनेति याश्रुतिकूंअंगीकारकरिकै सर्वधर्मोंकेनिषेधकरणेहारे जेअदृष्टत्वादिकआत्माकेधर्महैं तिनोंकूं कथनकरताभ
या ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेउद्दालक! यहअंतर्यामीपरमात्मदेव ज्ञानवान्पुरुषकेनेत्रोंकरिकैभी देख्याजावैनहीं ॥ तथा श्रवणोंक
रिकै यहअंतर्यामीदेव सुन्याजावैनहीं ॥ और मनकरिकै चिंतनकऱ्याजावैनहीं ॥ और शुद्धबुद्धिकरिकैभी निश्चयकऱ्याजावैनहीं ॥
याप्रकार अन्यकिसीइंद्रियकरिकैभी यहअंतर्यामीपरमात्मादेव जान्याजावैनहीं ॥ यातैं यहपरमात्मादेव अदृष्टत्वअश्रुतत्वादि
कधर्मोंवालाहै ॥ और यहअंतर्यामीआत्मा दृष्टि श्रुति मति विज्ञाति याप्रकारकेबुद्धिवृत्तियोंकूं प्रकाशकरैहै ॥ याकारणतैं अंतर्या
मीआत्माकूं द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञाता इत्यादिकनामोंकरिकै श्रुति कथनकरै है ॥ और हेउद्दालक! नेत्रादिकइंद्रियोंके तथाबुद्धि
आदिकोंके जितनेंबाह्य अंतर व्यापारहैं ॥ तिनसंपूर्णव्यापारोंकूं यहअंतर्यामीआत्मा जाणताहै ॥ परंतु नेत्रादिकइंद्रिय ताअंत
र्यामीपरमात्माकूं जाणिसकतेनहीं ॥ यातैं अंतर्यामीआत्मातैंभिन्न कोईपदार्थ द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञातारूप नहीं ॥ किंतु अंतर्यामी
आत्माही द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञातारूप है ॥ यातैं हेउद्दालक! यहअंतर्यामीपरमात्मादेवही तुमाराआत्माहै ॥ अंतर्यामीतैंभिन्न तु
माराआत्मानहीं ॥ काहेतैं? जोपदार्थ चैतन्यरूपपरमात्मातैंभिन्नहोवैहै ॥ सोपदार्थ जडहोवैहै ॥ और जोपदार्थ जडहोवैहै ॥ सोप
दार्थ घटादिकोंकीन्यांई उत्पत्तिनाशवान्होवैहै ॥ हेशिष्य! याप्रकारकाउत्तर जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं उद्दालकऋषिकेप्रति कथ
नकऱ्या तबी सोउद्दालकऋषि पुनःप्रश्नकरणेतैं उपरामहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर वचक्नुऋषिकीपुत्री गार्गीनामास्त्री सर्वब्राह्म
णोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई ॥ हेब्राह्मणो! तुमसंपूर्ण हमारावचन श्रवणकरो ॥ इस याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति मैं दोप्रश्नक
रतीहूं ॥ जोयहब्रह्मवेत्तायाज्ञवल्क्यमुनि तिनदोनोंप्रश्नोंकाउत्तर हमारेप्रति कहैगा तौ तुमसंपूर्णब्राह्मणोंविषे कोईभीब्राह्मण याज्ञ
वल्क्यकूंजीतसकैगानहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अनेकखद्योतजंतुवोंविषे कोईभीखद्योत सूर्यकूंजीतसकैनहीं ॥ तैसे कोईभीब्राह्मण याज्ञव
ल्क्यकूं जीतसकैगानहीं ॥ यातैं तुमसंपूर्णब्राह्मण हमारेकूं प्रश्नकरणेकीआज्ञादेवो ॥ शंका ॥ हेभगवन्! ब्राह्मणोंकीआज्ञातैंवि
नाही गार्गी याज्ञवल्क्यकेप्रति किसवासते प्रश्न नहींकरतीभई ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै

सागार्गी ब्राह्मणोंतेंआज्ञालेतीभई ॥ सोविचारयहहै ॥ जोकदाचित् किसीब्राह्मणनें आपणेमनविषे प्रश्नकरणेकाआरंभकर्‍याहो वै ॥ और मध्यविषे मैं स्त्रीकेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै सोब्राह्मण क्रोधवान्होइकै मेरेकूंशापदेवैगा ॥ यातैं सर्वब्राह्मणोंकीआज्ञालैके मैं प्रश्नकरों ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै साबुद्धिमान्गार्गी ब्राह्मणोंतैंआज्ञालेतीभई ॥ तिसतैंअनंतर ते सर्वब्राह्मण गार्गीकूं प्रश्नक रणेकीआज्ञादेतेभये ॥ और तिनब्राह्मणोंकीआज्ञाकूंपाइकै सागार्गी याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई ॥ गार्गी उवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! यालोकविषे जैसे तू प्रसिद्धहै तैसे मैंगार्गीभी प्रसिद्धहूं ॥ और जैसे तू अधिकबुद्धिमानहै ॥ तैसे मैंगा र्गीभी अधिकबुद्धिमानहूं ॥ काहेतें? नीतिशास्त्रविषे पुरुषोंकीअपेक्षाकरिकै स्त्रियोंकीबुद्धि तथाअविवेक तथाधैर्य तथाकाम तथाक्रो धचारिगुणाअधिक कह्याहै ॥ तिनसर्वस्त्रियोंविषे सरस्वतीकेसमान मैं तीक्ष्णबुद्धिवालीहूं ॥ शंका ॥ हेगार्गी! तेरी कौनऐसीबुद्धि है ॥ जिसबुद्धिकरिकै तू सर्वतैंअधिक आपणेकूंमानेहै ॥ समाधान ॥ हेयाज्ञवल्क्य! सर्वजगत्विषे आत्मबुद्धिही हमारेअधिकता काकारणहै ॥ याकारणतैं मैं सर्वजगतकूं पुरुषभावतैंरहितमानतीहूं ॥ एकआपणेकूंही पुरुषमानतीहूं ॥ काहेतें? जगत्विषे जितने स्त्रीपुरुष नपुंसकहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं मैं आत्मरूपकरिकैदेखतीहूं ॥ यातैंयहसिद्धभया ॥ जिसकूं सर्वत्रव्यापकआत्माकाज्ञानहै सोईही पुरुषहै ॥ और जिसकूं व्यापकअद्वितीयआत्माकाज्ञाननहींभया ॥ ऐसेअज्ञानीजीव नपुंसकहैं अथवा स्त्रियाहैं ॥ अब अज्ञानीजीवोंवि षे नपुंसकपणादिखावैहैं ॥ हेयाज्ञवल्क्य! शक्तिहीनकूं लोकविषे नपुंसककहैहैं ॥ याप्रकारका नपुंसककालक्षण अज्ञानीजीवोंविषे हीघटैहै ॥ काहेतें? यहअज्ञानीजीव अत्यंतसमीप हृदयदेशविषेस्थित जोआनंदस्वरूपस्वप्रकाशआत्माहै ताकेजानणेविषेभी सम र्थहोतेनहीं ॥ यातैं यहसंपूर्णअज्ञानीजीव नपुंसकहैं ॥ अब अज्ञानीजीवोंविषे स्त्रीपणा दिखावैहैं ॥ हेयाज्ञवल्क्य! उच्चैस्तनोंवालीमैं गार्गी स्त्रीनहींहूं ॥ किंतु जिनपुरुषोंकूं आनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माकाज्ञाननहींभया ॥ तेअज्ञानीपुरुषही स्त्रीहैं ॥ काहेतें? जैसे लोकप्रसिद्धस्त्रियोंका आपणेतैंभिन्नपतिहोवैहै ॥ और तापतिकेसर्वदा स्त्री अधीनरहैहै ॥ कदाचित्भी स्त्री स्वतंत्रहोवैनहीं ॥ तैसे अज्ञानीजीवोंकेभी आपणेतैंभिन्नपतिहैं ॥ सर्वदा अज्ञानीजीवरूपीस्त्री तिनपतियोंके अधीनरहैहैं ॥ यातैं अज्ञानीजीवही स्त्रीहैं ॥

और हेयाज्ञवल्क्य! तिनस्त्रियोंविषेभी यहअज्ञानीजीव वारांगनास्त्रीकेसमानहैं॥ काहेतें? जैसे वारांगनास्त्रीकूं बहुतपुरुषभोगेहैं॥ तैसे याअज्ञानीजीवरूपीस्त्रीकूंभी काम क्रोध लोभ मोहादिक अनेकपति भोगेहैं॥ यातें यहसंपूर्णअज्ञानीजीव वारांगनास्त्रीकेसमानहैं॥ और मेरेविषे काम क्रोधादिकहैंनहीं॥ यातें मैंही पुरुषहूं॥ और हेयाज्ञवल्क्य! जैसे लोकप्रसिद्धस्त्री पुरुषकेसंबंधतें गर्भकूंधारणकरैहै॥ तैसे यहअज्ञानीजीवभी कालरूपीपुरुषकेसंबंधतें सप्तमधातुवीर्यरूपगर्भकूंधारणकरैहैं॥ याकारणतेंभी यहअज्ञानीजीवही स्त्रीहैं॥ अब कामादिकविकारोंकाअभाव आपणेविषेदिखावैहै॥ हेयाज्ञवल्क्य! मैंगार्गी वरयौवनअवस्थाविषेस्थितहूं॥ तथा सर्वयुवान्पुरुषोंकेमध्यविषेस्थितहूं॥ तथापि मैं किंचित्मात्रभी कामादिकविकारोंकूं नहींप्राप्तहोती॥ और हेयाज्ञवल्क्य! जैसे एकांतदेशविषे स्त्री नग्नहोवैहै॥ तैसे सभाकेमध्यविषे मैंनग्नस्थितहूं॥ और येसंपूर्णब्राह्मण कामादिकविकारोंके भयकरिकेयुक्तहैं॥ यातें मेरीतरफ देखतेभीनहीं॥ और मेरादेहअभिमानसे निवृत्तभयाहै॥ यातें यासंपूर्णब्राह्मणोंकूं मैं नेत्रोंकरिकैदेखतीहूं॥ तथा आपणेहस्तोंकरिकै स्पर्शकरतीहूं॥ तथापि हमारेविषे किंचित्मात्रभी कामादिकविकार नहींहोते॥ यातें मैं स्त्रीनहीं॥ किंतु अज्ञानीजीवही स्त्रीहैं॥ **शंका**॥ हेगार्गी! शास्त्रदृष्टिकरिकै यद्यपि तेरेविषेस्त्रीपणानहींहै॥ तथापि लोकदृष्टिकरिकै तेरेविषे स्त्रीपणा होवैगा॥ **समाधान**॥ हेयाज्ञवल्क्य! लोकदृष्टिकरिकैभी स्त्रीशब्दकाअर्थ जिसविषेघटैहै सोईही स्त्रीहै॥ और मेरेविषेस्त्रीशब्दकाअर्थ घटतानहीं॥ यातें मैं किसप्रकार स्त्रीहोवोंगी? किंतु मैं स्त्रीनहीं॥ अब व्याकरणकीरीतिसें स्त्रीशब्दकेअर्थकूं दिखावैहैं॥ हेयाज्ञवल्क्य! याप्रकारकेशब्दोंकासमूह जिसप्राणिविषेहोवै॥ ताप्राणिकूं बुद्धिमान्पुरुष स्त्रीकहैहैं॥ तेशब्द येहैं॥ मैं समीचीन वधूहूं॥ और मैं यौवनअवस्थाकरिकैयुक्तहूं॥ और मैं सुंदरस्तनोंवालीहूं॥ और यालोकविषे मेरेसमान कोईस्त्री सुंदरनहीं॥ और यहपतिमेराहै॥ और यहमेरेपुत्रहैं॥ और यहमेरी पुत्रीयांहैं॥ और यहधन तथाअन्न मेरेगृहविषेहै॥ और मैं वंध्याहूं॥ और मैं बहुतकुटुंबवालीहूं॥ इसतेंआदिलेके अहंममअभिमानकरिकै उत्पन्नभयेजेनानाप्रकारकेशब्द॥ तिनशब्दोंकासमूह जिसजिसअज्ञानीजीवविषे वर्तैहै॥ ते अज्ञानीजीवही यालोकविषेस्त्रियांहैं॥ और हेयाज्ञवल्क्य! जेप्राणी आनंदस्वरूपआत्माके

ज्ञानकरिकैपूर्णहैं ॥ तिनप्राणियोंकूं श्रुति पुरुषकहैहै ॥ तेआत्मज्ञानकरिकैयुक्तप्राणी शरीरकरिकैस्त्रीहोवैं ॥ अथवा पुरुषहोवैं ॥ अथवा नपुंसकहोवैं ॥ याकेविषे किंचित्मात्रभी ज्ञानीकीहानिनहीं ॥ सर्वथा आत्मज्ञानवान्ही पुरुषहैं ॥ और हेयाज्ञवल्क्य! जैसे एकहीनट आपणीमायाकरिकै स्त्रियोंकूंमोहनकरणेहारा सुंदरपुरुषरूपकूं धारणकरैहै ॥ और क्षणमात्रविषे सोनट पुरुषकेधैर्यकूं नाशकरणेहारी सुंदरस्त्रीकेरूपकूं धारणकरैहै ॥ और क्षणमात्रविषे सोनट नपुंसककेरूपकूंधारणकरैहै ॥ परंतु तास्त्रीआदिककल्पित रूपोंकरिकै तानटका पूर्वलावास्तवस्वरूप अन्यथाभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे एकहीयहआनंदस्वरूपआत्मा आपणीमायाकरिकै कबी पुरुषशरीरकूंग्रहणकरैहै ॥ और कबी स्त्रीशरीरकूंग्रहणकरैहै ॥ और कबी नपुंसकशरीरकूंग्रहणकरैहै ॥ परंतु तिनकल्पितशरीररूपउपाधियोंकरिकै आत्माकावास्तवएकत्वरूप निवृत्तहोवैनहीं ॥ और हेयाज्ञवल्क्य! जैसे एकहीपुरुष स्वप्नविषे निद्रादोषतें पुरुष स्त्री हस्ति अश्व इत्यादिकअनेकरूपोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ परंतु तिनकल्पितरूपोंकरिकै स्वप्नद्रष्टापुरुषकावास्तवस्वरूप निवृत्तहोवैनहीं ॥ तैसे एकहीपरमात्मादेव आपणीमायाकरिकै स्त्री पुरुष नपुंसक हस्ति अश्व इत्यादिक अनेकरूपोंकूंधारणकरैहै ॥ परंतु तिनकल्पितरूपोंकरिकै आत्माकावास्तवस्वरूप निवृत्तहोवैनहीं ॥ यातें हेयाज्ञवल्क्य! आत्मज्ञानरूपीपुरुषभावकरिकै युक्त तथासर्वज्ञताकरिकैयुक्त मैंगार्गी वाक्रूपीधनुषविषे प्रश्नरूपीदोबाणोंकूंधारणकरिकै तुमारेहननकरणेवासते आईहूं ॥ यातें हेयाज्ञवल्क्य! वादरूपयुद्धविषे जोतुमारासामर्थ्यहोवै तौ धैर्यकूंधारणकरिकै हमारेसाथ वादरूपयुद्धकरो ॥ और जो तुमारेकूंवादरूपयुद्धकरणेकासामर्थ्यनहींहोवै तौ हमारेआगेनम्रताभावकरो ॥ यादोनोंप्रकारोंविषे जैसीतुमारीरुचिहोवै सोकरो ॥ और हेयाज्ञवल्क्य! जैसे काशीराजदिवोदासकापुत्र प्रतर्दननामाराजा एकलाही धनुषबाणकूंलेके इंद्रकेसाथयुद्धकरणेवासते स्वर्गविषेप्राप्तहोताभया ॥ और जैसे यहजनकराजा सुवर्णमणिरत्नोंकरिकैजडितधनुषकूंग्रहणकरिकै तथा लोहमय तीक्ष्णबाणोंकूं हस्तविषेग्रहणकरिकै शत्रुवोंकेपीडाकरणेवासते युद्धविषे तिनशत्रुवोंकेसन्मुखस्थितहोवैहै ॥ तैसे धैर्यकूंधारणकरिकै मैंगार्गीभी प्रश्नरूपीबाणोंकरिकै तुमारेहननकरणेवासते इहांस्थितहूं ॥ यातें हेयाज्ञवल्क्य! तिनप्रश्नोंकेउत्तरकूं जोतूंजा

णताहै तौ हमारेप्रतिकथनकरो ॥ हेशिष्य! याप्रकारकेवचन जबी गार्गीनैं याज्ञवल्क्यकेप्रतिकहे तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनिगा
र्गीकेप्रति कहताभया ॥ हेगार्गी! जोतुमारेकूंप्रश्नकरणाहै सोनिःशंकहोइकैकरो ॥ हेशिष्य! याप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकेवचनकूं
श्रवणकरिकै सागार्गी प्रश्नकरतीभई ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! जोसूत्रआत्माकास्वरूप शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं ब्रह्मांडकेऊप
रिलेकपालतैंऊपरिस्थित कथनकऱ्याहै ॥ और जिससूत्रआत्माकास्वरूप शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं ब्रह्मांडकेनीचलेकपालतैंभीनीचैस्थि
त कथनकऱ्याहै ॥ और जिससूत्रआत्माकास्वरूप दोनोंब्रह्मांडकपालोंकेमध्यविषेकथनकऱ्याहै ॥ और जिससूत्रआत्माकास्वरूप
शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं भूत भविष्यत् वर्तमान स्वरूपसकलप्रपंचरूप कथनकऱ्याहै ॥ सोसूत्रआत्मा किसकारणविषे ओतप्रोतहु
आवर्तै है? ॥ शंका ॥ हेभगवन्! यहप्रश्नतौ पूर्वहीगार्गीनैंकऱ्याथा ॥ तथा याज्ञवल्क्यमुनिनैं याप्रश्नकाउत्तरभी पूर्वहीकह्याथा ॥
यातैं गार्गीनैं पुनःयहप्रश्न किसवासतेकऱ्या? ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! पूर्व अनुमानरूपतर्ककूंग्रहणकरिकै गार्गीनैं यहप्रश्नकऱ्या
था ॥ और अबी शास्त्रकीरीतिकूं ग्रहणकरिकै गार्गीनैं प्रश्नकऱ्याहै ॥ याप्रकारकीविलक्षणता बोधनकरणेवासतेही पूर्वउत्तरप्रश्न
विषे शब्दोंकाभेद गार्गीनैं राख्याहै॥ हेशिष्य! याप्रकारकाप्रश्न जबी गार्गीनैंकऱ्या तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि गार्गीकेप्रति कह
ताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी! जो तुमनैं सूत्रआत्मारूपकार्यका कथनकऱ्याहै ॥ सोसूत्रआत्मारूपकार्य आवर्णविक्षे
पशक्तिवाले अव्याकृतरूपआकाशविषे ओतप्रोतहोइकैरहैहै॥ हेशिष्य! याप्रकारकाउत्तर जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं गार्गीकेप्रतिक
ह्या तबी सागार्गी याज्ञवल्क्यकूंनमस्कारकरिकै कहतीभई ॥ हेयाज्ञवल्क्य! प्रथमप्रश्नकाउत्तर तुमनैं हमारेप्रतिकह्या ॥ अबी
दूसराप्रश्न मैं तुमारेप्रति करतीहूं॥ तुम सावधानहोइकै ताप्रश्नकाउत्तरकहो॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी गार्गीनैंकह्या ॥
तबी सोयाज्ञवल्क्य कहताभया॥ हेगार्गी! निःशंकहोइकै तुम दूसराप्रश्नकरो ॥ हेशिष्य! याप्रकार याज्ञवल्क्यकेवचनकूंश्रवण
करिकै सागार्गी जोप्रथमप्रश्नविषे सूत्रआत्माकाआधारपूछाथा ॥ सोईही पुनःदूसरीवार पूछतीभई ॥ और याज्ञवल्क्यनैंभी जो
प्रथमप्रश्नकेउत्तरविषे सूत्रआत्माका अव्याकृतरूपआकाश आधारकह्याथा ॥ सोईही द्वितीयप्रश्नकेउत्तरविषे कहताभया ॥

शंका ॥ हेभगवन्! प्रथमप्रश्नकूं दूसरीवारकरणेविषे गार्गीका क्याअभिप्रायहै? ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! जिसअभिप्रायकरि
के गार्गीनैं प्रथमप्रश्नकूं दूसरीवारकऱ्याहै ॥ ताअभिप्रायकूं तुम श्रवणकरो ॥ जैसे गृह केवलस्तंभोंकेआश्रितरहैनहीं ॥ किंतु
स्तंभोंके तथा भित्तियोंके आश्रितरहैहै ॥ तैसे सूत्रआत्मारूपकार्यभी अव्याकृतरूपआकाशविषे तथाअन्यकिसीकारणविषे
रहताहोवैगा ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकरिकै गार्गी प्रथमप्रश्नकूं पुनःदूसरीवार करतीभई ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सोयाज्ञ
वल्क्यमुनि प्रथमप्रश्नकेउत्तरकूं पुनःदूसरीवार किसवासते कहताभया? ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! जिसअभिप्रायकरिकै या
ज्ञवल्क्यमुनिनैं प्रथमप्रश्नकेउत्तरकूं दूसरीवार कथनकऱ्याहै ॥ तिसअभिप्रायकूं तुम श्रवणकरो ॥ सूत्रआत्मारूपकार्य अव्याकृ
तरूपआकाशतैंविना अन्यकिसीकेआश्रितरहतानहीं ॥ किंतु जैसे मेघ केवलभूताकाशके आश्रितरहैहैं ॥ तैसे यहसूत्रआत्मारू
पकार्यभी केवलअव्याकृतरूपआकाशके आश्रितहीरहैहै ॥ याअभिप्रायकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं प्रथमउत्तरकूंही पुनःदूस
रीवार कथनकऱ्याहै ॥ हेशिष्य! याप्रकारकाउत्तर जबीयाज्ञवल्क्यमुनिनैं गार्गीकेप्रतिकह्या तबी सागार्गी पुनःयाज्ञवल्क्यमुनि
सैंपूछतीभई ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! सोअव्याकृतरूपआकाश किसविषे ओतप्रोतहोइकेरहैहै? ॥ याप्रश्नकरणेविषे गा
र्गीका यहअभिप्रायहै ॥ अव्याकृतरूपआकाशकाअधिष्ठान जोआत्माहै ॥ सो मनवाणीकाअविषयहै ॥ यातें ताआत्माकूं जो
याज्ञवल्क्य नहींकथनकरैगा तौ अप्रतिभारूप निग्रहस्थानकूं प्राप्तहोवैगा ॥ और जोयहयाज्ञवल्क्य मनवाणीकेअविषयआ
त्माकूंकथनकरैगा तौ विप्रतिपत्तिरूप निग्रहस्थानकूं प्राप्तहोवैगा ॥ दोनोंप्रकारतें याज्ञवल्क्यका पराजयहीहोवैगा ॥ तहां
कथनकरणेयोग्यअर्थकेअज्ञानकूं अप्रतिभाकहैहैं ॥ और विरुद्धकथनकूंविप्रतिपत्तिकहैहैं ॥ और पराजयकेकारणकूं निग्रह
स्थानकहैहैं ॥ हेशिष्य! याप्रकारकाप्रश्न जबी गार्गीनैंकऱ्या ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि गार्गीकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्य
उवाच ॥ हेगार्गी! सर्वलोकोंके बुद्धिआदिकोंकासाक्षी तथानित्यहीअपरोक्ष जोआत्मारूपअक्षरहै ॥ ताअक्षरविषे यहअव्याकृतआ
काशओतप्रोतहोइकैरहैहै ॥ इहां अव्याकृतआकाशशब्दकरिकै मूलाअज्ञानका ग्रहणकरणा ॥ सोमूलाअज्ञान जीवके तथाईश्वर

केआश्रित रहतानहीं ॥ किंतु जीवईश्वर विभागतैंरहित जोशुद्धचैतन्यहै ताकेआश्रित मूलाअज्ञानरहैहै ॥ और सोशुद्धचैतन्य
रूपआत्मा सर्वत्रव्यापकहै ॥ तथा उत्पत्तिनाशतैंरहितहै ॥ यातैं शुद्धआत्माहीअक्षरहै ॥ ताआत्मारूपअक्षरकेआश्रित अव्याकृतआ
काशरहैहै ॥ अब पूर्वउक्त अप्रतिभा तथाविप्रतिपत्ति रूपनिग्रहस्थानकीनिवृत्तिवासतै अनात्मपदार्थोंकेनिषेधद्वारा अक्षरआत्माके
स्वरूपकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेगार्गी! जैसे घट बिल्वफलकीअपेक्षाकरिकै स्थूलहोवैहै ॥ और पर्वतकीअपेक्षाकरिकै सोघट सूक्ष्म
होवैहै ॥ याप्रकार जितनेस्थूलसूक्ष्मपदार्थहैं तिनसंपूर्णोंतैं यहअक्षरआत्मा विलक्षणहै ॥ और तृणकीन्यांई जितने ह्रस्व
पदार्थहैं ॥ तथा तालवृक्षकीन्यांई जितनेदीर्घपदार्थहैं ॥ तिनसंपूर्ण ह्रस्वदीर्घपदार्थोंतैं यहअक्षरआत्मा विलक्षणहै ॥ और अ
ग्निकीन्यांई जितने रक्तवर्णवालेपदार्थहैं ॥ तिनोंतैंभी यहअक्षरआत्मा विलक्षणहै ॥ और जलकीन्यांई जितनेस्नेहवालेपदार्थ
हैं ॥ तिनोंतैंभी यहअक्षरआत्मा विलक्षणहै ॥ और छायासदृशभूमिकीन्यांई जितनेकृष्णवर्णवालेपदार्थहैं ॥ तिनोंतैंभी यहअक्ष
रआत्मा विलक्षणहै ॥ और तमालवृक्षकीन्यांई श्याम तथाअंधकारकीन्यांई नेत्रोंकूंनिरोधकरणेहारे जितनेपदार्थहैं ॥ तिनोंतैं
भी यहअक्षरआत्मा विलक्षणहै ॥ और यहअक्षरआत्मा गतिसैंरहितहै ॥ यातैं गतिमान्‌वायुतैंभी विलक्षणहै ॥ और यहअक्षर
आत्मा छिद्रतैंरहितहै ॥ यातैं छिद्रवान्‌आकाशतैंभी विलक्षणहै ॥ और यहअक्षरआत्मा अमूर्तहै ॥ तथा संगतैंरहितहै ॥ यातैं मू
र्तसंगवान्‌तेजतैंभी विलक्षणहै ॥ और यहअक्षरआत्मा मधुरादिकरसोंतैंरहितहै ॥ यातैंमधुररसवालेजलतैंभी विलक्षणहै ॥ और
यहअक्षरआत्मा गंधतैंरहितहै ॥ यातैं गंधवालीपृथिवीतैंभी विलक्षणहै ॥ और हेगार्गी! याअक्षरआत्माका पंचज्ञानइंद्रियतथा
पंचकर्मइंद्रियभी स्वरूपनहीं ॥ और याअक्षरआत्माका मन बुद्धि चित्त अहंकार यहचतुष्टयअंतःकरणभी स्वरूपनहीं ॥ और
याअक्षरआत्माका प्राण अपान समान व्यान उदान यहपंचप्रकारकाप्राणभी स्वरूपनहीं ॥ और मोक्षपर्यंतहैस्थितिजिसकी ऐसा
जो दोनोंलोकोंविषेगमनकरणेहारा सूक्ष्मशरीरहै ॥ सोभी याअक्षरआत्माकास्वरूपनहीं ॥ और अद्वितीयआत्माकेभेदकरणेहा
रा जोअविद्यारूप कारणशरीरहै ॥ सोभी अक्षरआत्माकास्वरूपनहीं ॥ और हेगार्गी! जोयहअक्षरआत्मा केवलअंतरहीहोवै ॥

तौ बाह्यकेपदार्थोंकूं कौनप्रकाशकरैगा? ॥ और जोयहअक्षरआत्मा केवलबाह्यहीहोवै तौ अंतरकेपदार्थोंकूंकौनप्रकाशकरैगा? ॥
आत्मातैंभिन्न सर्वपदार्थ जडरूपहै ॥ यातैं तिनोंविषे प्रकाशकतासंभवैनहीं ॥ और यहअक्षरआत्मा आपणेस्वप्रकाशरूपकरिकै
अंतर बाह्य सर्वपदार्थोंकूंप्रकाशकरैहै ॥ यातैं सर्वकासाक्षी अक्षरआत्मा अंतरबाह्यपणेतैंरहितहै ॥ और यहअक्षरआत्मा निर्विकार
असंगहै ॥ यातैं भोक्तापणेतैं तथाभोग्यपणेतैंरहितहै ॥ और हेगार्गी! जैसे आकाशविषे मेघोंकासमूह तथाअंधकार प्रतीतहोवै
है ॥ और जैसे रज्जुविषे सर्पदंडादिक प्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे याअक्षरआत्माविषे यहसंपूर्णजगत् प्रतीतहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे
मेघादिकोंकरिकै आकाशकाभेद होवैनहीं ॥ और जैसे कल्पितसर्पादिकोंकरिकै रज्जुकाभेद होवैनहीं ॥ तैसे कल्पितप्रपंचकरिकै
अधिष्ठानरूपअक्षरआत्माका भेद होवैनहीं ॥ यातैं अक्षरआत्मा सर्वभेदतैंरहितहै ॥ हेशिष्य! इतनेग्रंथकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं
उपाधितैंरहित अक्षरआत्माकास्वरूप कथनकऱ्या ॥ ताअक्षरआत्माकास्वरूप जिनपुरुषोंकेचित्तविषे नहींआवता ॥ तिनपुरुषोंकेअ
नुग्रहवासते मायाविशिष्टअंतर्यामीकेजनावणेहारेलिंगोंकूं दिखावैहैं ॥ अप्रत्यक्षपदार्थकूं जोजनाइदेवै ताकूं लिंगकहैहैं ॥ जैसे प
र्वतविषे अप्रत्यक्षअग्निकूं धूमरूपीलिंग जनावैहै ॥ हेगार्गी! जैसे भृत्य नियमकरिकै राजाकीआज्ञाविषेवर्तैहैं ॥ तैसे येसूर्य
चंद्रमाभी नियमकरिकै जगत्केव्यवहारकूंचलावैहैं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ कोईसर्वज्ञपरमात्मादेव सूर्यचंद्रमाका अधिपति
है ॥ जिसपरमात्माकीआज्ञाकरिकै येसूर्यचंद्रमा नियमसैंवर्तैहैं ॥ यातैं सूर्यचंद्रमाकी नियमसैंप्रवृत्ति अंतर्यामीकेजनावणेहारा
लिंगहै ॥ और हेगार्गी! जोजोपदार्थ गुरुत्वधर्मवालाहोवैहै ॥ तिसका किसीआधारतैंविना नीचैपतनहोवैहै ॥ जैसे गुरु
त्वधर्मवालेवस्त्रादिक पुरुषरूपआधारतैंविना भूमिविषेपतनहोवैहै ॥ तैसे संपूर्णभूतप्राणियोंकेभारकूंधारणकरणेहारीपृथिवी
तथास्वर्ग येदोनोंभी गुरुत्वधर्मवालेतौहैं ॥ परंतु तिनोंका नीचैपतनहोतानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ कोईसर्वज्ञप
रमात्मादेव पृथिवीके तथास्वर्गके धारणकरणेहाराहै ॥ यातैं गुरुत्वधर्मवालीपृथिवीकी तथास्वर्गकीस्थितिभी परमात्माकेज
नावणेहारालिंगहै ॥ और हेगार्गी! जैसेराजाकरिकै प्रेरणाकरेहुएभृत्य नियमसैं कार्यकरैहैं ॥ तैसे निमेषतैंआदिलेके संवत्सर

पर्यंत जितना मुहूर्त प्रहर दिन पक्ष मास ऋतु रूपकालहै ॥ सोकाल नियमकरिकै सर्वभूतप्राणियोंके हितकूं तथाअहितकूं करै है ॥ तथा सर्वपदार्थोंकेआयुषकीगणतीकरै है ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ कोईसर्वज्ञपरमात्मादेव कालकेप्रेरणाकरणेहाराहै ॥ यातैं नियमपूर्वक कालकीप्रवृत्तिभी परमात्माकेजनावणेहारालिंगहै ॥ और हेगार्गी! हिमालयादिकपर्वतोंतैं उत्पन्नभई जेना नाप्रकारकी गंगादिकनदीयां तिनगंगादिकनदियोंका उत्पत्तिकालविषे जिसजिस पूर्वादिकदिशावोंविषे प्रवाहभयाहै ॥ तिसी तिसी पूर्वादिकदिशावोंविषे अबपर्यंत नियमसैं प्रवाह चल्याजावैहै॥ कदाचित्भी तिनोंका अन्यथाभावहोतानहीं ॥ यातैं यहजा न्याजावैहै ॥ कोईसर्वज्ञपरमात्मादेव गंगादिकनदियोंकूं नियमसैंचलावणेहाराहै ॥ यातैं गंगादिकनदियोंका नियमसैंप्रवाहभी अंतर्यामीपरमात्माकेजनावणेहारालिंगहै ॥ और हेगार्गी! शास्त्ररीतिसैं दानकरताजोधर्मात्मापुरुषहै ॥ तिसकी प्रामाणिकशिष्ट पुरुष स्तुतिकरैहैं ॥ और ताधर्मात्मापुरुषकूं शिष्टपुरुष आश्रयणकरै हैं॥ और जोपुरुष प्रमादकरिकै द्यूतादिकव्यसनविषे द्रव्यका खरचकरैहै ॥ तिसप्रमादीपुरुषकी प्रामाणिकशिष्टपुरुष उपेक्षाकरै हैं तथानिंदाकरै हैं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ कोई कर्मकेफल काप्रदाता सर्वज्ञपरमात्मादेवहै ॥ जिसकेभयतैं प्रामाणिकशिष्टपुरुष धर्मात्मापुरुषकूं आश्रयणकरैहैं तथा ताकीस्तुतिकरैहैं ॥ औ र जोसर्वज्ञपरमात्माकूं नअंगीकारकरिये तौ जैसे प्रमादीपुरुषकी प्रामाणिकशिष्टपुरुष उपेक्षाकरैहैं तथानिंदाकरैहैं ॥ तैसे धर्मा त्मापुरुषकी प्रामाणिकशिष्टपुरुष उपेक्षा तथानिंदा किसवासतेनहींकरते? ॥ यातैं याप्रकारका प्रामाणिकशिष्टपुरुषोंकाव्यवहारभी सर्वज्ञपरमात्माकेजनावणेहारालिंगहै ॥ और हेगार्गी! यज्ञकर्तापुरुषकूं देवता आश्रयणकरैहैं ॥ और श्राद्धादिककर्मकर्तापुरुषकूं पि तरआश्रयणकरैहैं ॥ यातैं सर्वकार्यविषेसमर्थ देवतावोंका तथापितरोंका जोमनुष्यकेअधीनजीवनहै ॥ सोभी अंतर्यामीपरमात्माके जनावणेहारा लिंगहै ॥ यातैं हेगार्गी! जिसअक्षरआत्माकेआश्रित अव्याकृतआकाश हमनैं पूर्वकथनकऱ्याथा ॥ तिसीअक्षरआ त्माकी आज्ञाविषे यहसंपूर्णजगत् वर्तताहै ॥ और हेगार्गी! याअक्षरआत्माकूं नजाणिकरिकै जोपुरुष यज्ञ दान तप होम इ त्यादिकअनेककर्मोंकूं बहुतकालपर्यंत करताहै ॥ तिसअज्ञानीपुरुषकूं तेयज्ञादिककर्म नाशवान्फलकीप्राप्तिकरैहैं ॥ तात्पर्य

यह ॥ मेरेस्वरूपकेअज्ञानहुए संपूर्णयज्ञादिककर्म नाशवान्फलकूं उत्पन्नकरैं ॥ याप्रकारकानियम जिसपरमात्मा देवनैं कऱ्याहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवविषे असंभावनाकरणी योग्यनहीं ॥ और हेगार्गी! जैसे कृमिकरिकैयुक्तश्वानकूं देखिकरिकै संपूर्णलोक ताश्वानकाशोककरैहैं ॥ तैसे अधिकारी मनुष्यशरीरकूंपाइकै याअक्षरआत्माकूं नजाणिकरिकै जोपुरुष मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोअज्ञानीपुरुष कृपणहै ॥ तथा सर्वलोकोंकेशोककाविषयहै ॥ और हेगार्गी! जोपुरुष याअक्षरआत्माकूंजाणिकरिकै याशरीरकापरित्यागकरैहै ॥ सोविद्वान्पुरुष यालोकविषे कृतकृत्यहै ॥ और सोईहीपुरुष ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणहै ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन्! याज्ञवल्क्यमुनिनैं गार्गीकेप्रति जैसे अक्षरआत्माकेज्ञानकाउपदेशकऱ्या तैसे अक्षरआत्माके ज्ञानकेसाधनोंकाउपदेश किसवासतेनहींकऱ्या? ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! गुरुमुखतैंवेदांतशास्त्रकाश्रवण तथामनन तथानिदिध्यासन येतीनों अक्षरआत्माकेज्ञानकेसाधनहैं ॥ तेश्रवणादिकसाधन पूर्वकहोलब्राह्मणकेप्रति याज्ञवल्क्यमुनिनैं कहेथे ॥ और गार्गीनैंभी तिनसाधनोंका श्रवणकऱ्याथा ॥ याअभिप्रायकूंमनविषेराखिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं पुनःगार्गीकेप्रति श्रवणादिकसाधन नहींकहे ॥ अथवा याज्ञवल्क्यमुनिनैं ब्रह्मसाक्षात्काररूपफलवान्पुरुषकूं ब्राह्मणकह्या ॥ सोब्रह्मसाक्षात्काररूपफल श्रवणादिकसाधनोंतैंविना उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं जैसेकिसीवृद्धकुमारीकूंइंद्रनैंकह्या ॥ हमारेसैं तूं वरमाग ॥ आगेतैं सावृद्धकुमारी यहवर मागतीभई ॥ मेरेपुत्र कांस्यकेपात्रविषे क्षीरकूंभोजनकरैं ॥ याप्रकारकेवचनकरिकै सावृद्धकुमारी पति पुत्र धन इत्यादिकसर्वपदार्थोंकूंलेतीभई ॥ तैसे ब्रह्मसाक्षात्काररूपफलकेकथनकरणेकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं संपूर्णश्रवणादिकसाधन कथनकरे ॥ शंका ॥ हेभगवन्! मायाविशिष्टअंतर्यामीकास्वरूप याज्ञवल्क्यमुनिनैं पूर्वउद्दालककेप्रति कथनकऱ्याथा ॥ और गार्गीनैंभी सोश्रवणकऱ्याथा ॥ और अबी विनाहींपूछेतैं याज्ञवल्क्यमुनिनैं गार्गीकेप्रति पुनःअंतर्यामीकास्वरूप किसवासतेकह्या? ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! जिसअभिप्रायकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं पुनःअंतर्यामीकास्वरूप गार्गीकेप्रति कह्याहै ॥ ताअभिप्रायकूं तुम श्रवणकरो ॥ उद्दालकब्राह्मणकेप्रति द्वितीयप्रश्नकेविचारविषे जोअंतर्यामी कथनकऱ्याथा ॥ सोअंतर्यामी अक्षरआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोअंतर्यामी अक्षरआत्मारूप

है ॥ तात्पर्ययह ॥ शुद्धआत्माकूं अक्षरकहेहैं ॥ सोशुद्धआत्माही जबी मायारूपउपाधिकूंअंगीकारकरिकै जगत्के उत्पत्ति स्थिति
लय नियमन प्रवेश इत्यादिककार्योंकूंकरैहै ॥ तबी ताअक्षरआत्माकूं अंतर्यामीकहेहैं ॥ यातेंअक्षरआत्मातें अंतर्यामीभिन्ननहीं ॥ या
अर्थकेबोधनकरणेवासते याज्ञवल्क्यमुनिनें पुनःअंतर्यामीकेस्वरूपकूं कथनकऱ्याहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी! यहअक्षरआ
त्मा नेत्रादिकसर्वदृश्यप्रपंचका साक्षीहै ॥ यातें ताअक्षरआत्माकूं नेत्रादिकदृश्यप्रपंच जाणिसकैनहीं ॥ और जैसे भित्तितें घट भि
न्नहोवैहै तैसे द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञाता रूपजोयहजीवात्माहै ॥ सो ताअक्षरआत्मातें भिन्ननहीं ॥ किंतु यहजीव अक्षरआत्मारू
पहै ॥ यातें हेगार्गी! स्थूलसूक्ष्मप्रपंचरूपविक्षेपकाकारण तथा आत्माकूंआच्छादनकरणेहारा जोअव्याकृतआकाशहै ॥ सो अव्याकृ
तआकाश याअक्षरआत्माविषेहीरहैहै ॥ हेशिष्य! याज्ञवल्क्यरूपीमेघतें उत्पन्नभयाजोवाक्यरूपीअमृत ॥ कैसाहैसोवाक्यरूपी
अमृत? श्रद्धावान्पुरुषोंके कर्णोंकेतापकूंहरणेहाराहै ॥ याकारणतें अत्यंतदुर्लभहै ॥ ऐसेअमृतरूपीवचनकूंश्रवणकरिकै सागार्गी
अत्यंतआनंदकूंप्राप्तहोतीभई ॥ और कृपाकरिकैयुक्तहुई सागार्गी सर्वब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई ॥ गार्गीउवाच ॥
हेसर्वब्राह्मणो! तुमसर्वब्राह्मणोंकीसभाकेमध्यविषे मैंगार्गी पक्षपाततेंरहितहोईके एकवचन कहतीहूं ॥ तावचनकूं तुम सर्वब्राह्म
ण सावधानहोइकेश्रवणकरो ॥ यालोकविषे यद्यपि हमनें बहुतप्रकारकेपुरुषदेखेहैं ॥ तथापि याज्ञवल्क्यकेसमान कोईपुरुष हमनें
नहींदेख्या ॥ अब आत्मज्ञानयुक्त यहयाज्ञवल्क्यहीपुरुषहै याअर्थकेबोधन करणेवासते आत्मज्ञानतेंरहित अज्ञानीजीवोंकीनिंदा
कूं दिखावैहैं ॥ हेब्राह्मणो! यालोकविषे हमनें केईकपुरुष धवलगृहकेसमानदेखेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे धवलगृह दूरसेंरमणी
कलागेहै ॥ और भीतरिजडताकरिकैयुक्तहै ॥ तैसे केईकपुरुष दूरसैंतौ रमणीकलागतेहैं ॥ और भीतरि तमोगुणकरिकै जडतायुक्त
हैं ॥ और हेब्राह्मणो! यालोकविषे हमनें केईकपुरुष भारवाहीवृषभकेसमानदेखेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे वृषभ आपणेप्रयोजनतैंविना
ही भारकूंउठावैहैं ॥ तैसे कोईकपुरुष शास्त्रकूंपढिकरिकै अन्यलोकोंकेप्रतितौ शास्त्रकेअर्थकाउपदेशकरतेहैं ॥ परंतु आपणेमनविषेरं
चकमात्रभी शास्त्रकेअर्थकूंनहींधारणकरते ॥ यातें व्यर्थही शास्त्ररूपीभारकूंउठावैहैं ॥ और हेब्राह्मणो! यालोकविषे हमनें केईकपुरुष

शुकसारिकाकेसमानदेखेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे शुकसारिकापक्षी सुंदरशब्दोंकाउच्चारणकरैहैं ॥ परंतु तिनशब्दोंकेअर्थकूंजाणतेनहीं ॥ तैसे केईकपुरुष सुंदरशब्दोंकूंउच्चारणकरतेहैं ॥ परंतु तिनशब्दोंकेअर्थकूंजाणतेनहीं ॥ और हेब्राह्मणो! यालोकविषे हमनें केईकपुरुष विशालनेत्रोंवालेभी अंधपुरुषकेसमानदेखेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अंधपुरुष अत्यंतसमीपवर्तिपदार्थोंकूंभी देखतानहीं ॥ तैसे केईकपुरुष अत्यंतसमीप हृदयदेशविषेवर्तमान आत्माकूंभी देखतेनहीं ॥ और हेब्राह्मणो! यालोकविषे हमनें केईकपुरुष चित्रलिखित मूर्तिकेसान देखेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे चित्रलिखित मूर्ति देखणेविषे बहुतसुंदरलागेहै ॥ परंतु किसीकार्यकरणेविषे सामूर्ति समर्थहोवैनहीं ॥ तैसे केईकपुरुष देखणेविषेबहुतसुंदरलागतेहैं ॥ परंतु किसीकार्यकरणेविषे समर्थहोवैंनहीं ॥ और हेब्राह्मणो! यालोकविषे हमनें केईकपुरुष कुपथ्यभोजनकेसमान देखे हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे कुपथ्यभोजन प्रथम आनंदकाहेतुहोवैहै ॥ और परिणामकालविषे दुःखकाकारणहोवैहै ॥ तैसे केईकपुरुष सभाविषे लोकोंकेप्रति सत्यअर्थकाउपदेशकरिकै किंचित्मात्र प्रसन्नताकूंउत्पन्नकरैहैं ॥ और एकांतदेशविषे असत्यअर्थकाउपदेशकरिकै दुःखकाकारणहोवैहैं ॥ और हेब्राह्मणो! यालोकविषे हमनें केईकपुरुष व्याघ्रकेसमानदेखेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे व्याघ्र मृगादिकपशुवोंकाहननकरैहै ॥ तैसे केईकपुरुष शरीर मन वाणी करिकै सर्वदा जीवोंकीहिंसाकरैहैं ॥ और हेब्राह्मणो! यालोकविषे हमनें केईकपुरुष मदिरापानकरिकैमत्त वानरकेसमानदेखेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे मदिरापानकरिकै मत्तहुआवानर अत्यंतचंचलहोवैहै ॥ तैसे केईकपुरुष अज्ञानरूपीमदिरापानकरिकै शास्त्रविरुद्ध नानाप्रकारकीचेष्टाकरैहैं ॥ और हेब्राह्मणो! यालोकविषे हमनें केईकपुरुष कामरूपीशत्रुकेवशहुए देखेहैं ॥ और केईकपुरुष हमनें क्रोधरूपीशत्रुकेवशहुएदेखेहैं ॥ और केईकपुरुष हमनें लोभमोहादिकशत्रुवोंकेवशहुएदेखे हैं ॥ और हेब्राह्मणो! वेदोंकूं तथावेदकेअंगोंकूं जानणेहारेजेदेवतापुरुषहैं ॥ तेभी सत्व रज तम यातीनगुणोंकरिकैयुक्तहैं ॥ यातें विषयोंविषे रागवान्ही हमनें देखेहैं ॥ और तिनदेवतापुरुषोंके स्वप्नविषे तथाजाग्रत्विषे किंचित्मात्रभी विलक्षणतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जाग्रत्विषे जोनिद्राकाविरोधीपणाहै ॥ यहही जाग्रत्विषे स्वप्नतैंविलक्षणताहै ॥ साविलक्षणता त्रिगुणअभिमानीदेवतावोंकेजाग्रत्विषेसंभवैनहीं ॥

काहेतें? तिनदेवतावोंनें अद्वितीयआत्माकेज्ञानकरिकै आपणेअज्ञानकीनिवृत्तिकरीनहीं ॥ और जबपर्यंत जीवोंकूं अद्वितीयआत्माकासाक्षात्कारनहींहोवैहै ॥ तबपर्यंत अज्ञानकीनिवृत्तिहोतीनहीं ॥ और त्रिगुणअभिमानीदेवतापुरुषोंकूं जोब्रह्मकाज्ञानहोवैहै ॥ सोभी अज्ञानरूपीनिद्राविषेहीहोवैहै ॥ ताज्ञानकरिकै तिनोंकेमूलाअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणो! यालोकविषे कितनेकीपुरुष व्याकरणशास्त्रकूंपढेहैं ॥ ताव्याकरणकरिकै पदार्थोंकेज्ञानविषे तिनपुरुषोंकीबुद्धि कुशलहोवैहै ॥ और कितनेकीपुरुष मीमांसाशास्त्रकूंपढेहैं ॥ तामीमांसाशास्त्रकरिकै वाक्यार्थज्ञानविषे तिनपुरुषोंकीबुद्धि कुशलहोवैहै ॥ और कितनेकीपुरुष न्यायशास्त्रकूंपढेहैं ॥ तान्यायशास्त्रकरिकै प्रमाणज्ञानविषे तिनपुरुषोंकीबुद्धि कुशलहोवैहै ॥ और कितनेकीपुरुष धर्मशास्त्रकूंपढेहैं ॥ ताधर्मशास्त्रकरिकै धर्मअधर्मकेज्ञानविषे तिनपुरुषोंकीबुद्धि कुशलहोवैहै ॥ इसप्रकार अन्यशास्त्रकूंभीपढिकै तिसीतिसीअर्थविषे तिनोंकीबुद्धि कुशलदेखीजातीहै परंतु अद्वितीयब्रह्मकाप्रतिपादक जोवेदांतशास्त्रहै ताकेअर्थविषे तिनपुरुषोंकेबुद्धिकीकुशलता देखीतीनहीं ॥ और हेब्राह्मणो! यालोकविषे जिनपुरुषोंकूं वेदांतशास्त्रकेअर्थकाज्ञानभीहै ॥ सोज्ञानभी समग्रनहीं ॥ किंतु यत्किंचितूअर्थकाज्ञानहै ॥ तायत्किंचितूअर्थकेज्ञानतें संशयकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणो! जिनपुरुषोंकूं समग्रवेदांतशास्त्रकेअर्थकाज्ञानभीहै ॥ तौभी कामक्रोधादिकप्रतिबंधोंकेवशते सोज्ञान तिनपुरुषोंकेमूलाअज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे समर्थहोतानहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अग्निकेसंबंधकरिकै नष्टहुईहैशक्तिजिनोंकी ऐसेजोभूनेधानहैं ॥ तेधान किसीफलकूंउत्पन्नकरतेनहीं ॥ तैसे कामक्रोधादिकप्रतिबंधोंकरिकैयुक्तहुआज्ञान तिनपुरुषोंकेमूलाअज्ञानकीनिवृत्तिकरतानहीं ॥ अब कामक्रोधादिकोंकीअपेक्षाकरिकै अहंकारविषे ज्ञानकीमुख्यप्रतिबंधकतादिखावैहैं ॥ हेब्राह्मणो! जैसे अपराधीचौरपुरुषोंकेबंधनकागृह स्तंभोंकेआश्रितरहैहै ॥ तिनस्तंभोंविषेभी एकमध्यकास्तंभ मुख्यहोवैहै ॥ और दूसरेकोणोंकेस्तंभ गौणहोवैहैं ॥ तैसे अज्ञानीजीवोंकेबंधनकागृह यहसंसार कामक्रोधादिकस्तंभोंके आश्रितरहैहै ॥ तिनस्तंभोंविषेभी यहअहंकार मध्यकामूलस्तंभहै ॥ और कामक्रोधादिक कोणोंकेस्तंभहैं ॥ और जैसे कोणस्तंभोंकेनाशहुएभी जबपर्यंत मूलस्तंभविद्यमानहोवैहै ॥ तबपर्यंत गृहकानाशहोवैनहीं ॥ तैसे कामक्रोधादिकोंकेनिवृ

त्तहुएभी जबपर्यंत यहअहंकार विद्यमानहोवैहै ॥ तबपर्यंत यासंसारकीनिवृत्तिहोतीनहीं ॥ यातें आत्मज्ञानविषे मुख्यप्रतिबं धकहै ॥ अब अहंकारकी सर्वत्रव्यापकतादिखावैहै ॥ हेब्राह्मणो! यहअहंकार सर्वजीवोंविषेस्थितहै ॥ अहंकारसैंरहित कोईभी जीव मैं नहींदेखती ॥ काहेतैं? याजनकराजाकेयज्ञविषे सर्वदेशोंकेविद्वान्ब्राह्मण इकठेहुएहैं॥ तिनोंविषे कितनेकब्राह्मण एक काम दोषतैंरहितहैं ॥ और कितनेकब्राह्मण काम क्रोध दोनोंदोषतैंरहितहैं ॥ और कितनेकब्राह्मण काम क्रोध लोभ मोह इत्यादिक बहुतदोषोंतैंरहितहैं ॥ परंतु अहंकारतैंरहित कोईभीब्राह्मण मैं देखतीनहीं ॥ यातें अहंकार सर्वत्रव्यापकहै ॥ अब अहंकारविषे दुर्विज्ञेयतादिखावैहै ॥ हेब्राह्मणो! अहंकारतैंभिन्न जितने काम क्रोध लोभ मोहादिकदोषहैं ॥ तिनोंविषे बुद्धिमान्पुरुष शास्त्रप्रमाणतैं तथाआपणेअनुभवतैं दुःखकीकारणताजाणिके तिनकामादिकोंकापरित्यागकरैहैं ॥ परंतु अहंकारविषे जोदुःखकीकारणताहै सा शास्त्रप्रमाणतैं तथाअनुभवतैं जाणीजावैनहीं ॥ काहेतैं! सर्वशास्त्रकेवेत्ता जोविद्वान्पुरुषहैं॥ तिनोंविषेभी अहंकारदेखीताहै ॥ जो शास्त्रप्रमाणतैं तथाअनुभवप्रमाणतैं तिनविद्वान्पुरुषोंनैं अहंकारविषे दुःखकीकारणताजाणीहोवै तौ किसवासते पुनः अहंकारकरतेहैं? ॥ यातें तिनशास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं अहंकारविषे दुःखकीकारणता नहींजाणी ॥ याअर्थविषे शास्त्रवेत्ता तुमसर्वब्राह्मणही दृष्टांतहो ॥ अब अहंकारविषे यालोकपरलोकके दुःखकीकारणतादिखावैहैं ॥ हेब्राह्मणो! जैसे मदिरापानकरिकै पुरुष विपरीतदर्शीहोवैहै ॥ तैसे अहंकाररूपीमदिरापानकरिकै यहपुरुष विपरीतदर्शीहोवैहै ॥ और ताविपरीतदर्शनकरिकै यहअहंकारीपुरुष आपणेमातापिताका तथाअन्यबांधवोंका तथादेवतावोंका तथापंडितब्राह्मणोंका निरादर करैहै ॥ और कृष्णसर्पकेसमान शीघ्रही मृत्युकेकारणजेराजेहैं ॥ तिनोंकीभी अहंकारीपुरुष अवज्ञाकरैहै ॥ और सोयेहुएसर्पकेसमान मृत्युकेकारण जेबुद्धिमान् ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यहैं तिनोंकीभी सोअहंकारीपुरुष अवज्ञाकरैहै ॥ याप्रकार सर्वजीवोंकीअवज्ञाकरणेहारा जोअहंकारीपुरुषहै ॥ सो यालोकविषे शीघ्रही प्राणांतदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सर्वप्राणियोंकीअवज्ञाकरिकै उत्पन्नभयाजोपापहै ॥ तापापकर्मकरिकै सो अहंकारीपुरुष मरिकै रौरवनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें यालोकविषे तथापरलोकविषे अहंकारही जीवोंकेदुःखकाकारणहै ॥ हेब्रा

ह्मणो! याप्रकारकाअहंकारदोष इसयाज्ञवल्क्यविषेहैनहीं ॥ यातें कामक्रोधादिकदोषभी याज्ञवल्क्यविषेनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे व्यापकअग्निकेअभावहुए व्याप्यधूम तहांरहैनहीं ॥ तैसे व्यापकअहंकारकेअभावहुए व्याप्यकामक्रोधादिक तहांरहैंनहीं ॥ यातें हेब्राह्मणो! तीनलोकोंविषे यहयाज्ञवल्क्यही एकपुरुषहै ॥ याज्ञवल्क्यकेसमान कोईदूसरापुरुषनहीं ॥ काहेतें? श्रुतिविषे सर्वत्रपूर्णकूं पुरुषकह्याहै ॥ और याब्रह्मवेत्तायाज्ञवल्क्यमुनिकरिकै स्थूलसूक्ष्मरूपसंपूर्णजगत् पूर्णहोइरह्याहै ॥ यातें यहयाज्ञवल्क्यही एकपुरुषहै ॥ तात्पर्ययह ॥ श्रुतिनें ब्रह्मकूं सर्वत्रपूर्णकह्याहै ॥ और ब्रह्मविद्ब्रह्मैवभवति ॥ अर्थयह ब्रह्मकूंजानणेहारापुरुष ब्रह्मरूप होवैहै ॥ याश्रुतिविषे ब्रह्मवेत्तापुरुषकूं ब्रह्मरूपताकहीहै ॥ यातें ब्रह्मवेत्तायाज्ञवल्क्यमुनिविषे सर्वत्रपूर्णतासंभवैहै ॥ हेब्राह्मणो! ऐसायाज्ञवल्क्यकास्वरूप मैंगार्गीनें शास्त्रप्रमाणकरिकै तथाआपणेअनुभवतें निश्चयकऱ्याहै ॥ और हेब्राह्मणो! दूसराएकआश्चर्य तुमदेखो ॥ नचक्षुषागृह्यतेनापिवाचा ॥ अर्थयह ॥ मांसमयचक्षुकरिकै तथावाणीकरिकै आत्मा जान्याजावैनहीं ॥ याप्रकारका श्रुतिवाक्य असत्यकी न्यांई मेरेकूंप्रतीतहोताहै ॥ काहेतें? श्रुतिनेंतौ यहकह्याहै ॥ सर्वत्रपूर्णपुरुष मांसमयनेत्रोंकरिकै देख्याजावैनहीं ॥ और मैंगार्गी यामांसमयनेत्रोंकरिकै सर्वत्रपूर्णयाज्ञवल्क्यपुरुषकूं आपणेसन्मुखदेखतीहूं ॥ यातें ताश्रुतिवाक्यविषे सत्यपणेकी संभावनाहोवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणो! वास्तवतेंविचारकरिकैदेखियेतौ सोश्रुतिवाक्य सत्यहीहै ॥ काहेतें? मांसमयनेत्रोंकरिकै तुमसंपूर्णब्राह्मण याज्ञवल्क्यकेवास्तवस्वरूपकूं जाणतेनहीं ॥ और मैंगार्गीतौ शास्त्रप्रमाण तथाअंतरअनुभव यादोनोंकरिकैयुक्तजोनेत्र हैं ॥ तानेत्रोंकरिकै याज्ञवल्क्यकेवास्तवस्वरूपकूंजाणतीहूं ॥ केवलमांसमयनेत्रकरिकै मैंभी नहींजाणती ॥ दृष्टांत ॥ जैसे सोऽयंदेवदत्तः ॥ याप्रत्यभिज्ञाज्ञानविषे अतीत तत्ताअंशकेज्ञानमें केवलनेत्रइंद्रियकूंकारणतानहीं ॥ किंतु पूर्वसंस्कारसहकृतनेत्रइंद्रियकूं कारणताहै ॥ तैसे यापूर्णपुरुषकेज्ञानविषेभी केवलनेत्रइंद्रियकूंकारणतानहीं ॥ किंतु शास्त्रप्रमाण तथाअंतरअनुभव यादोनोंकरिकै युक्तनेत्रइंद्रियकूं कारणताहै ॥ यातें पूर्वउक्तश्रुतिकाविरोधनहीं ॥ और हेब्राह्मणो! जिसमातापितातें यहब्रह्मवेत्ता याज्ञवल्क्य उत्पन्न भयाहै ॥ सोमातापिताभी धन्यहैं ॥ और जिसपृथिवीऊपरि यहयाज्ञवल्क्य विचरताहै सापृथिवीभी धन्यहै ॥ और यासभाविषेमें गा

गींकूं तथाजनकराजाकूं तथातुमसंपूर्णब्राह्मणोंकूं इसयाज्ञवल्क्यमुनिका दर्शनभयाहै ॥ तथा ताकेवचनोंकाश्रवणभयाहै ॥ यातें मैंगा
गीं तथाजनकराजा तथातुमसंपूर्णब्राह्मण धन्यधन्यहैं ॥ और हेब्राह्मणो! याजगत्‌विषे याज्ञवल्क्यकेसमान कोईपुरुष पूर्वहुआ
नहीं ॥ और इदानींकालविषे कोईहैनहीं ॥ और आगेकोईहोवैगानहीं ॥ यातें हेब्राह्मणो! शीतलचंदनकेसमान तथाक्षीरसमुद्रके
समान जोयहयाज्ञवल्क्यहै ॥ ताकाविवादरूपीमथन तुम मतकरो ॥ जोतुमब्राह्मण अहंकारकरिकै याज्ञवल्क्यकेसाथ विवादकरो
गे तौ जैसे अतिमथनकरिकै क्षीरसमुद्रतें कालकूटविष उत्पन्नभयाथा ॥ तथा अतिमथनकरिकै जैसे चंदनतें अग्निउत्पन्नहोवैहै ॥
तैसे याज्ञवल्क्यमुनितें शापरूपीकालकूटविष तथाशापरूपीअग्नि उत्पन्नहोवैगा ॥ ताशापरूपीअग्निकरिकै तुमसर्वब्राह्मणोंकाना
शहोवैगा ॥ यातें याज्ञवल्क्यकेसाथ तुम विवादमतकरो ॥ किंतु दोनोंलोकोंविषेदुःखकेदेणहारा जोअहंकारहै ॥ ताकापरित्याग
करिकै तुमसर्वब्राह्मण याज्ञवल्क्यगुरुकूं नमस्कारकरो ॥ और हेब्राह्मणो! आत्माकेअपरोक्षज्ञानवाला जोयहयाज्ञवल्क्यहै ॥ ति
सकेसाथ परोक्षज्ञानवालेहमोंनें व्यर्थही विवादकाआरंभकर्‌याहै ॥ ताविवादकरिकै हमारेकूं दुःखकीहीप्राप्तिहोवैगी ॥ तात्पर्ययह ॥
जैसे लोकविषे एकपुरुषकूं नेत्रोंकरिकै काशीकाअपरोक्षज्ञानभयाहै ॥ और दूसरेपुरुषकूं शब्दप्रमाणकरिकै काशीकापरोक्ष
ज्ञानभयाहै ॥ तिसपरोक्षज्ञानवालेपुरुषका अपरोक्षज्ञानवालेपुरुषकेसाथ काशीकेस्वरूपनिर्णयकरणेविषे विवादसंभवैनहीं ॥
तैसे आत्माकेअपरोक्षज्ञानवान् याज्ञवल्क्यकेसाथ आत्माकेपरोक्षज्ञानवाले हमसंपूर्णोंका विवादसंभवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणो!
पूजाकरणेयोग्य आत्मज्ञानरूपीसमुद्र जोयहयाज्ञवल्क्यहै ॥ तिसकूं उल्लंघनकरणेवासते हमप्रतिवादीयोंनें विवादरूपीपादकरिकै
स्पर्शकर्‌याहै ॥ यातें हमारेविषे महान्‌पापकीउत्पत्तिभईहै ॥ तापापकेनिवृत्तिकाउपाय दूसराकोईहैनहीं ॥ किंतु याज्ञवल्क्यकेतांई
वारंवार नमस्कारकरणाही तापापकेनिवृत्तिकाउपायहै ॥ यातें हेब्राह्मणो! तापापकीनिवृत्तिवासते तथामनवांछितपदार्थोंकीप्राप्ति
वासते तुमसंपूर्णब्राह्मण याज्ञवल्क्यकेतांई नमस्कारकरो ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकहीहै ॥ आत्मज्ञंह्यर्चयेद्भूतिकामः ॥ अर्थयह ॥
इसलोकके तथापरलोकके धनपुत्रादिकपदार्थोंकीकामनावाला जोसकामपुरुषहै ॥ सो शरीरकरिकै तथाधनकरिकै ब्रह्मवेत्ताज्ञानीपु

रुषकीसेवाकरै ॥ तासेवाकरिकै सर्वमनवांछितपदार्थ तिसपुरुषकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ १ ॥ यातैं हेब्राह्मणो! याज्ञवल्क्यकेजीतणेकीइ
च्छाकापरित्यागकरिकै तुमसर्वब्राह्मण याज्ञवल्क्यकेतांई नमस्कारकरो॥ हेशिष्य! याप्रकारकेवचन सर्वब्राह्मणोंकेप्रतिकहिकै सा
गार्गी याज्ञवल्क्यमुनिकेतांई प्रणामकरिकै पुनःप्रश्नकरणेतैं निवृत्तहोतीभई॥ तिसतैंअनंतर गार्गीकेवचनरूपीअमृतकेपानकरिकै
निवृत्तहुएहैं अहंकारादिकदोषजिनोंके ऐसेजेआश्वलादिकसर्वब्राह्मणहैं तेसंपूर्णब्राह्मण याज्ञवल्क्यकेतांई नमस्कारकरतेभये ॥
तिनब्राह्मणोंविषेभी केईकब्राह्मण मस्तककरिकै प्रणामकरतेभये ॥ और केईकब्राह्मण वाणीकरिकै नमस्कारकरतेभये ॥ और केई
कब्राह्मण मनकरिकै नमस्कारकरतेभये॥ एकविदग्धनामा शाकल्यब्राह्मण भावीमृत्युकरिकै मोहितहुआ याज्ञवल्क्यकेतांई नम
स्कार नहींकरताभया॥ तब जन्मकालकेनक्षत्रहैं भाविअर्थकेबोधकजिनोंके ऐसेजेज्योतिषशास्त्रकेजानणेहारेविद्वान्हैं ॥ ते शाक
ल्यकेजन्मनक्षत्रोंकूंदेखिकरिकै याप्रकारकाभावीअर्थ निश्चयकरतेभये ॥ यहशाकल्य याज्ञवल्क्यकेसाथ विविधप्रकारकीईर्षाकरिकै
दग्धहोवैगा॥ याप्रकारकेभावीअर्थकूंजाणिकै ते ज्योतिष्शास्त्रकेजानणेहारेपंडित शाकल्यका विदग्धनाम राखतेभये॥ और शास्त्र
विषे बुद्धिमान्पुरुषकूंभी विदग्धकहेहैं॥ यातैंसोविदग्धनाम शाकल्यकेबुद्धिमान्पणेकूंबोधनकरताहुआ शाकल्यकेमातापिताकूं आ
नंदकीप्राप्तिकरताभया॥ और वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ विदग्धशब्दका प्रथमअर्थही शाकल्यविषेघटे है॥ विदग्धशब्दका
दूसराअर्थ शाकल्यविषेघटतानहीं॥ काहेतैं? जोबुद्धिमान्पुरुषहोवैहै॥ सो आपणेहितकारीवचनोंकूं अंगीकारकरैहै ॥ और यहशा
कल्यतौ गार्गीके हितकारीवचनोंकूं श्रवणकरिकै उलटा क्रोधवान्होताभया॥ दृष्टांत ॥ जैसे सर्पकेप्रातं दुग्धपानकरायाहुआभी
विषकीहीवृद्धिकरैहै॥ तैसे गार्गीकेहितकारीवचनभी शाकल्यकेक्रोधकाहेतु होतेभये॥ यातैं शाकल्यविषे बुद्धिमान्पणा संभवैन
हीं॥ अब विदग्धशब्दकाप्रथमअर्थ शाकल्यविषे दिखावैहैं॥ हेशिष्य! याज्ञवल्क्य सूर्यभगवान्तैंविद्याकूंप्राप्तभयाहै ॥ याप्रका
रकावचन जिसदिनविषे शाकल्यनैंश्रवणकऱ्या॥ तिसदिनतैंलैके सोशाकल्य विविधप्रकारकीईर्षाकरिकै दग्धहोताभया॥ और
याज्ञवल्क्य सूर्यभगवान्तैं शुक्लयजुर्वेदकूंप्राप्तभयाहै ॥ याप्रकारकावचन जोकिसीप्रसंगपाइके किसीपुरुषकेमुखतैं शाकल्य

श्रवणकरै तौ तिसवचनकहणेहारेपुरुषकेप्रति याप्रकारकाकठोरवचन सोशाकल्य कहताभया ॥ यहयाज्ञवल्क्य जैसे सूर्यभगवानतैं शुक्लवर्णवालेयजुर्वेदकूं प्राप्तभयाहै ॥ तैसे चंद्रमातैं रक्तवर्णवाले अथर्वणवेदकेकांडकूंभी प्राप्तभयाहै ॥ तथा भौमतैं हरितवर्णवाले ऋग्वेदकेकांडकूंभी प्राप्तभयाहै ॥ याप्रकारके उपहासयुक्त कठोरवचनोंकूं रात्रिदिनविषे सोशाकल्य लोकोंकेप्रति कथनकरताभया ॥ और याज्ञवल्क्यकेनिंदाकूं नहींसहनकरणेहारे जेसज्जनपुरुषहैं ॥ तिनोंनैं याज्ञवल्क्यकेसाथ विवादकरावणेवासते शाकल्यकूंप्रेरणाकरीभी ॥ तौभी मेरेसमानयाज्ञवल्क्यनहींहै याप्रकारकेअभिमानकरिकै सोशाकल्य विवादकरणेवासतेभी याज्ञवल्क्यकेसमीप आवैनहीं ॥ किंतु जैसे अर्जुनकेसाथ करण स्पर्धाकरताभया ॥ और जैसेइंद्रकेसाथ नमुचिनामादानव स्पर्द्धाकरताभया ॥ तैसे सो शाकल्य याज्ञवल्क्यकेसाथ स्पर्धाकरताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन्! याज्ञवल्क्यकेसाथ जोशाकल्यकीबहुतस्पर्धाथी तौ सर्वब्राह्मणोंतैंप्रथमही शाकल्यनैं याज्ञवल्क्यकेप्रति किसवासते प्रश्ननहींकऱ्या? ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! जिसकालविषे याज्ञवल्क्यनैं गौवोंकाहरणकऱ्याथा ॥ तिसकालविषेभी सोशाकल्य तासभाविषेस्थितथा ॥ परंतु ताकालविषे सोशाकल्य आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरिकै प्रश्नकूं नहींकरताभया ॥ अब शाकल्यकेविचारकूंदिखावैहैं ॥ इसयाज्ञल्क्वयनैं सर्वब्राह्मणोंकीसभाविषे जोगौवोंकाहरणकऱ्याहै ॥ सो अत्यंतअनुचितकर्मकऱ्याहै ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ सर्वब्राह्मणोंकेपरोक्ष इसयाज्ञवल्क्यनैं मैंसूर्यभगवानकाशिष्यहूं याप्रकारकामिथ्यावचनकहिकै सर्वलोकोंकूं मोह उत्पन्नकऱ्याहै ॥ तापापकर्मका याप्रकारकाफल अबीयाज्ञवल्क्यकूं प्राप्तभयाहै ॥ आजदिनतैंलेके पूर्वपूर्वकालविषे इसयाज्ञवल्क्यका जोप्रतिष्ठापूर्वक जीवनथा ॥ सो आजदिनतैंलेके आगेआगे समाप्तभया ॥ काहेतें? यहयाज्ञवल्क्य भंडपुरुषकीन्यांई पाखंडीहै याप्रकारजाणिकरिकै हमनैं तथाअन्यसर्वब्राह्मणोंनैं इसयाज्ञवल्क्यकी उपेक्षाकरीहै ॥ और विद्वान्पुरुष जिसपुरुषकीउपेक्षाकरैहैं ॥ तिसपुरुषकूं लोकविषेभीकोई सत्कारकरतानहीं ॥ यातैं सर्वब्राह्मणोंकाअपमानकरिकै गौवोंकेहरणेतैं याज्ञवल्क्यकूं यहफल प्राप्तभया ॥ किंवा ॥ जैसे सूर्यभगवान्केसमीप अंधकाररहतानहीं ॥ तैसे सर्वविद्वान्ब्राह्मणोंकेसमीप किसीपुरुषका पाखंडचलतानहीं ॥ याप्रकारकेअर्थकूंभी पापकरिकैमोहि

तहुआ यहयाज्ञवल्क्य जाणतानहीं ॥ जोब्राह्मणोंकेमहात्म्यकूं यहयाज्ञवल्क्य जाणताहोवै तौ जिनब्राह्मणोंके एकबालककेतेज
कूं देवराजइंद्रभी सहारिनहींसकता ॥ ऐसे सर्वब्राह्मणोंकेसमीप यहयाज्ञवल्क्य गौवोंकाहरणरूप अनुचितकर्म नहींकरता ॥ हे
शिष्य ! इसतैंआदिलेके बहुप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै अहंकारकरिकैयुक्तहुआ सोशाकल्य पूर्ववतूष्णीहोताभया ॥ औ
र ताशाकल्यनैं जबी सर्वब्राह्मणोंकापराजयदेख्या ॥ तथा सर्वब्राह्मणोंसहित गार्गीका याज्ञवल्क्यकेतांई नमस्कारदेख्या ॥
तबी जैसे पादकरिकैहतहुआसर्प क्रोधवानहोवैहै ॥ तैसे शाकल्यकेनेत्र क्रोधकरिकैपूर्णहोतेभये ॥ और भ्रुकुटी तथालि
लाट ताशाकल्यका कुटिलहोताभया ॥ और वारंवार ऊचैश्वासोकूंउठावताभया ॥ और जैसे किसीपुरुषका जबीपुत्रमरै
है ॥ तबी सोपुरुष दैवकूंधिक्कारकरैहै ॥ तैसे सोशाकल्य दैवकूं धिक्कार करताभया ॥ और सोशाकल्य आपणेमनविषे
याप्रकारकाचिंतन करताभया ॥ यालोकविषे जैसाकी दैवकाबलहै ॥ तैसा शास्त्रअध्ययनकाभी बलनहीं ॥ और तैसाउ
त्तमकुलकाभीबलनहीं ॥ और तैसामंत्रादिकोंकाभीबलनहीं ॥ काहेतें? शास्त्र उत्तमकुल मंत्रादिकोंकरिकैयुक्त इनसर्वब्राह्मणोंका
जोयाज्ञवल्क्यनैं पराजयकर्‍याहै ॥ सोकेवल दैवबलसैंही पराजयकर्‍याहै ॥ दूसराविद्यादिकोंकाबल कोईयाज्ञवल्क्यकूंहैनहीं ॥ या
तें दैवकाबल विद्यादिसर्वबलोंतैं अधिकहै ॥ किंवा ॥ इतिहासोंविषे बुद्धिमानपुरुषोंनैं याप्रकारकेवचनकहेहैं ॥ निमेष मुहूर्त प्रह
र दिन पक्ष मास ऋतु अयन संवत्सर इत्यादिरूप जोकालभगवान्है ॥ सो प्रतिकूलहुआ सर्वजीवोंकेबुद्धिकूं अन्यथाकरैहै ॥ औ
र अनुकूलहुआ सोकाल सर्वजीवोंकेबुद्धिकीवृद्धिकरैहै ॥ ताकालकेउल्लंघनकरणेविषे कोईभीपुरुष समर्थनहीं ॥ यहइतिहासोंकाव
चन आजदिनविषे सत्यहुआ॥ काहेतें? जैसे कोईपाखंडीपुरुष मूढबालककूं पराजयकरैहै ॥ तैसे ब्रह्माकेसमानविद्यावाले इनसर्व
ब्राह्मणोंकूं यहदुर्बुद्धियाज्ञवल्क्य जीतताभयाहै॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ कालभगवान्कूं कोईपुरुष उल्लंघनकरिसकतानहीं ॥ जि
सकालभगवान्कीप्रतिकूलतातैं इनसर्वविद्वानब्राह्मणोंका पराजयभयाहै ॥ और जिसकालभगवान्कीअनुकूलतातैं विद्याहीन
याज्ञवल्क्यका जयभयाहै ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जोकार्य होणेवालाहोताहै ॥ सोकार्य अवश्यहोताहै ॥ सहस्रउपायोंकरिकैभी

ताकार्यकीनिवृत्तिहोतीनहीं ॥ यहजोवार्ता शास्त्रविषेलिखीहै सोभी आजदिनविषे सत्यभई ॥ काहेतें? यासमाजविषे जितने
ब्राह्मण इकठेभयेहैं ॥ तेसंपूर्ण ब्रह्माकेसमानविद्यावालेहैं ॥ और यहकृपणयाज्ञवल्क्य विद्यातेंरहितहै ॥ परंतु इसयाज्ञवल्क्य
काजय होणेहाराथा ॥ और इनसर्वब्राह्मणोंकापराजय होणेहाराथा ॥ सोअवश्यभया ॥ याकरिकै हमारेकूंबहुतखेदहुआहै ॥ अ
थवा यहकाल हमारेयशकेवृद्धिकरणेवासतेप्राप्तभयाहै ॥ काहेतें? इसयाज्ञवल्क्यनैं सर्वविद्वान्ब्राह्मणोंकूंजीत्याहै ॥ और मैं जबी
इसयाज्ञवल्क्यकूंजीतौंगा ॥ तबी सर्वलोकोंविषे हमारायशहोवैगा ॥ यातें यहकाल हमारेकूं यशकीप्राप्तिकरणेवासतेआयाहै ॥ हे
शिष्य! इसतैंआदिलैके नानाप्रकारकाविचार सोशाकल्य आपणेमनविषेकरताभया ॥ और भावीअर्थकेजानणेहारी गार्गीनैं जो
पूर्वहितकाउपदेशकऱ्याथा ॥ ताउपदेशकूं परित्यागकरिकै सोदुर्बुद्धिशाकल्य याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरणेकाआरंभ करताभ
या ॥ अब जिसदुर्बुद्धिकरिकै शाकल्यनैं गार्गीकावचन नहींअंगीकारकऱ्याथा ॥ ताशाकल्यकेदुर्बुद्धिकूंदिखावैहैं ॥ यहगार्गी कुमा
रीहै ॥ तथा यौवनअवस्थाकरिकैयुक्तहै ॥ और पितामाताकेगृहसैं बाहरिनिकसिकै व्यभिचारिणीस्त्रीकीन्यांई आपणीइच्छासैंवि
चरतीहै ॥ और कामीपुरुषोंविषे यागार्गीकी सदैवइच्छारहैहै ॥ और यासभाविषे एकयाज्ञवल्क्यतैंविना जितनेब्राह्मणहैं ते स
दाचारकरिकैयुक्तहैं ॥ और स्नानशौचादिककर्मोंविषे जिनोंकी नित्यहीप्रीतिहै ॥ और जटाश्मश्रुवोंकरिकैयुक्तहैं ॥ और तपकरिकै
जिनोंकाशरीर कृशभयाहै ॥ और वृद्धअवस्थाकरिकैयुक्तहैं ॥ ऐसेयेउत्तमब्राह्मण यानग्नगार्गीकूं नेत्रोंकरिकैभी नहींदेखते तौ या
निर्लज्जगार्गीविषे तेब्राह्मण किसवासतेइच्छाकरैंगे?॥ और यहयाज्ञवल्क्य यौवनअवस्थाकरिकैयुक्तहै ॥ तथा शरीर जिसका स्नि
ग्धहै ॥ तथा निरंतर शरीरकापोषणकरैहै ॥ तथा अत्यंतकामीहै ॥ तथा वेदकेअर्थोंकूं अन्यथाकरणेहाराहै ॥ ऐसादुर्बुद्धि यहयाज्ञ
वल्क्य पापनेत्रोंकरिकै गार्गीकेयोनिकूं तथास्तनोंकूं तथामुखकूं वारंवारदेखैहै ॥ और जिसकालविषे यहयाज्ञवल्क्य यासभाविषे
आयाहै ॥ तिसकालतैंलैकेअबपर्यंत इसयाज्ञवल्क्यकीदृष्टि राजाजनकविषे तथागार्गीविषे हमदेखतेहैं ॥ इनदोनोंकूंछोडिकै कि
सीब्राह्मणकीतरफ यहयाज्ञवल्क्य देखतानहीं ॥ और याज्ञवल्क्यतैंभिन्न जितनेदूसरेब्राह्मणहैं ॥ ते गुरुकेचरणकमलोंके अर्चनप

रायणहैं ॥ और गुरुशास्त्रकरिकैशिक्षितहैं ॥ यातें नासिकाकेअग्रभागाविषे दृष्टिकूंराखिकै यासभाविषेस्थितहैं ॥ और यहअधमयाज्ञ
वल्क्य यासभाविषेजोआयाहै ॥ सो आपणेविद्याकेप्रकाशकरणेवासतेनहींआया ॥ किंतु यागार्गीस्त्रीवासते तथासुवर्णवासते या
सभाविषेआयाहै ॥ याकारणतैंही यहयाज्ञवल्क्य वारंवार गार्गीकेमुखकूं तथाजनकराजाकेमुखकूं देखेहै ॥ किंवा यालो
कविषे जाव्यभिचारिणीस्त्रीहोवैहै ॥ सा व्यभिचारीपुरुषकूं शीघ्रहीपछाणिलेवैहै ॥ और जोव्यभिचारीपुरुषहोवैहै ॥ सोभी व्य
भिचारिणीस्त्रीकूं शीघ्रहीपछाणिलेवैहै ॥ काहेतें? यालोकविषे जोजोपदार्थ जिसनें बहुतवार अनुभवकर्‍याहोताहै ॥ तिसतिस
पदार्थकूं सोपुरुष शीघ्रहीजाणिलेवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे जलविषे मत्स्य मीनकेगमनआगमनकूं शीघ्रहीजाणिलेवैहै ॥ तैसे यह
गार्गीभी बाल्यअवस्थातैंलैके आपणीइच्छासैंविचरणेहारी व्यभिचारिणीहै ॥ और यहयाज्ञवल्क्यभी व्यभिचारीहै ॥ याकार
णतैंही इनदोनोंका परस्पर स्नेहभयाहै ॥ किंवा जेकुलीनस्त्रियांहोवैहैं ॥ ते आपणेभर्ताकूं तथापुत्रकूं तथाभ्राताकूं तथामा
तुलकूं तथाश्वशुरकूं तथाअन्यकिसीकुलीनस्त्रीकूं परित्यागकरिकै आपणेगृहकेद्वारपर्यंतभी नहींजावैहैं ॥ किंतु भर्तादिकोंविषे कि
सीएककूंसाथलैके बाहरिजावैहैं ॥ यहकुलीनस्त्रियोंकाधर्महै ॥ सोधर्म यागार्गीविषेहैनहीं ॥ काहेतें? यहगार्गी नग्नहोइकै एकलीही
तीनलोकोंविषेभ्रमणकरैहै ॥ और लोकविषे जहांतहां व्यभिचारीकामीपुरुषोंकूं देखतीरहतीहै ॥ परंतु जैसे कलियुगविषे वर्णआ
श्रमतैंरहित व्यभिचारीपुरुषहोवैहैं ॥ तैसे यात्रेतायुगविषे कोईपुरुष वर्णआश्रमतैंरहितनहीं जो इसगार्गीकीइच्छाकरै ॥ अब या
हीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ यात्रेतायुगविषे जेपुत्रकीकामनावालेगृहस्थहैं ॥ ते आपणीस्त्रीकेसाथभी सर्वदासंभोगकरैंनहीं ॥
किंतु ऋतुकालविषे संभोगकरैहैं ॥ यातैंतिनगृहस्थोंकूंभी यागार्गीकीइच्छानहीं ॥ और तिनगृहस्थोंतैंभिन्न जेब्रह्मचारी तथावा
नप्रस्थ तथासंन्यासीहैं ॥ ते ऊर्ध्वरेताहैं ॥ यातें तेभी यागार्गीकीइच्छाकरतेनहीं ॥ और जेनीचजातिवालेचांडालहैं ॥ तेभी आ
पणीस्त्रीकापरित्यागकरिकै परस्त्रीकीइच्छाकरतेनहीं तौ शिष्टपुरुष परस्त्रीकीकैसैइच्छाकरैंगे? ॥ और जेइंद्रादिकदेवताहैं ॥ तेस्व
र्गलोककीस्त्रीकूंछोडिकै मनुष्यलोककेस्त्रीका स्पर्शभीनहींकरते ॥ यातैं तेदेवताभी यागार्गीकीइच्छाकरतेनहीं ॥ और जेश्वानादि

कपशुहैं ते आपणेसमानजातिवालीस्त्रीकूं छोडिकै विजातीयमनुष्यस्त्रीकीइच्छाकरतेनहीं ॥ और यहगार्गी नित्यहीकामकरिकै आतुरहै ॥ याकारणतैंही नग्नहोइकै सर्वब्राह्मणोंकेसन्मुखस्थितहै तौभी एकपापात्मायाज्ञवल्क्यकूंछोडिकै येधर्मात्माब्राह्मणया गार्गीकीतरफदेखतेभीनहीं ॥ और कलियुगकेव्यभिचारीपुरुषोंकेसमान कामातुर यहयाज्ञवल्क्य वारंवार गार्गीकीतरफदेखै है ॥ और यहव्यभिचारिणीगार्गीभी इसयाज्ञवल्क्यकूंव्यभिचारीदेखिकै एकांतदेशविषेलेजाणेवासते व्यभिचारिणीस्त्रियोंकेचातुर्यता कूंअंगीकारकरिकै वारंवार याज्ञवल्क्यकूं नमस्कारकरैहै ॥ और लोकोंकेप्रति यहकथनकरैहै ॥ यहयाज्ञवल्क्यब्रह्मवेत्ताहै ॥ यातें मैं इसकूंनमस्कारकरतीहूं ॥ और जैसे ऐंद्रजालिकपुरुष लोकोंकेदृष्टिकाप्रतिबंधकरैहै ॥ तैसे राजाजनकके तथासर्वब्राह्मणोंके दृष्टिकाप्रतिबंधकरिकै यासभाविषे मैं याज्ञवल्क्यकेसाथ व्यभिचारकरौंगी ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै यहगार्गी सभाविषेस्थित है ॥ और सर्वब्राह्मणोंकेसमीपयहगार्गी वारंवार याज्ञवल्क्यकीस्तुतिकरैहै ॥ और यहसंपूर्णविद्वान्ब्राह्मणभी याव्यभिचारिणीगार्गीके अंतरअभिप्रायकूंनजाणिकै ताकेवचनकरिकैमोहितहुए याज्ञवल्क्यकूं नमस्कारकरैहैं ॥ और सर्वधर्मात्मावोंविषेमुख्य जोयह जनकराजाहै सोभी याव्यभिचारिणीगार्गीकेवचनकरिकै मोहकूंप्राप्तभयाहै ॥ याकारणतैंही यहजनकराजा वारंवार याव्यभिचारीयाज्ञवल्क्यकेतांई नमस्कारकरैहै ॥ हेशिष्य! सर्वदाब्रह्मचर्यधर्मविषेस्थित जागार्गीहै ॥ तागार्गीकी इत्यादिकअनेकप्रकारकेवचनोंकरिकै सोदुरात्माशाकल्य निंदाकरताभया ॥ और जैसे मृत्युकेसमीपप्राप्तहुआ पतंग प्रज्वलितमहान्अग्निकेउल्लंघनकरणेका उद्यमकरैहै ॥ तैसे मृत्युकेसमीपप्राप्तहुआ सोशाकल्य ज्ञानसमुद्ररूपयाज्ञवल्क्यके उल्लंघनकरणेवासते उद्यमकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोशाकल्य अनेकप्रश्नोंकरिकै याज्ञवल्क्यसैं देवतावोंकीसंख्यापूछताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनिभी तितनैहीउत्तरोंकरिकै देवतावोंकीसंख्या शाकल्यकेप्रति कहताभया ॥ तहां सोयाज्ञवल्क्यमुनि विस्तारतैं तिनदेवतावोंकी अनंतसंख्याकहताभया ॥ और संक्षेपतैं सूत्रआत्मारूप एकप्राणकूंही देवताकहताभया ॥ दूसरेसर्वदेवता तिससूत्रआत्मारूपप्राणकीविभूतियांहैं ॥ इसप्रकार विस्तारतैं तथासंक्षेपतैं सोयाज्ञवल्क्य देवतावोंकीसंख्या कहताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोशाकल्य याज्ञवल्क्य

केप्रति दूसरेअष्टप्रश्न करताभया ॥ तिनोंकेउत्तरभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि शाकल्यकेप्रति कहताभया ॥ हेशिष्य ! जैसे मंडूक सर्पकेमु
खविषेप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे कालरूपीसर्पकेमुखविषेप्राप्तहुआ सोमूढबुद्धिशाकल्य जबी याज्ञवल्क्यकेप्रति बहुतप्रश्न करताभया ॥ तबी
सोयाज्ञवल्क्य शाकल्यकेप्रति कहताभया ॥ हे शाकल्य ! जैसे तू विनाहीकारणतें द्वेषकरताहै ॥ तैसे तुमारेपितापितामहादिकवृद्धपु
रुषकिसीकेसाथद्वेष नहींकरतेभयेहैं ॥ तथा अन्यब्राह्मण तथाब्रह्मचारी तथाअन्यक्षत्रियादिकभी तेरेन्यांई विनाहीकारणतें किसी
कसाथद्वेष नहींकरतेभयेहैं ॥ ऐसेउत्तमकुलविषे उत्पन्नहुआ तू विनाहीकारणतें मेरेविषेद्वेष किसवासतेकरताहै? ॥ हेशाकल्य ! मेरे
द्वेषकरिकै तुमारामृत्यु मतहोवै ॥ याप्रकारकीइच्छा मैं सर्वदाकरताहूं ॥ और हेशाकल्य ! जैसे हमारे मातापिताका तथापुत्रोंका तथा
स्त्रीका तथाअन्यबांधवोंका हमारेशरीरविषे प्रेमहै ॥ तैसे तुमारे माता पिता स्त्री पुत्र बांधवादिकोंका तुमारेशरीरविषे प्रेमहै ॥ यातें इ
हां तुमारेमरणेकरिकै तिन तुमारेमातापितादिकसंबंधियोंकूं दुःखकीप्राप्तिमतहोवै ॥ ऐसीइच्छा मैं करताहूं ॥ और हेशाकल्य ! यहवे
दविद्या हमनैं सूर्यभगवान्‌तें पाई है ॥ याकारणतें हमारीविद्याकातेज दुःसहहै ॥ यातें हमारेविद्याकीअवज्ञा तू मतकर ॥ जोतू अहंका
रकरिकै हमारेविद्याकी अवज्ञाकरैगा तौक्षणमात्रविषे सा हमारीविद्या तुमारेकूंभस्मकरैगी ॥ हेशाकल्य ! जिसकालविषे सूर्यभगवा
न्‌तें विद्याअध्ययनकरिकै मैं पृथिवीविषेआवताथा ॥ तिसकालविषे प्रसन्नहोइके सूर्यभगवान् हमारेतांई कहताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्य !
तेरेतांई जोमैंनैं विद्यादयीहै ॥ ताविद्याकूं जोपुरुषनहींमानैगा ॥ तिसपुरुषकूं मैंसूर्यभगवान् तिसीकालविषे भस्मकरौंगा ॥ हेशाक
ल्य ! याप्रकारकावचन जबीसूर्यभगवान्‌नैं हमारेप्रतिकह्या ॥ तबीमैं सूर्यभगवान्‌केप्रति यहप्रार्थना करताभया ॥ हेभगवन् ! ह
मारीविद्याकरिकै किसीप्राणीकानाशनहींहोवै ॥ ऐसा हमारेप्रति वरदेवो ॥ हेशाकल्य ! याप्रकारकीप्रार्थना जबी हमनैं सूर्यभगवा
न्‌केप्रतिकरी ॥ तबी सोसूर्यभगवान् याप्रकारकानियम करताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्य ! जोपुरुष दुराग्रहकरिकै तुमारेसन्मुख वीसवार
प्रश्नकरैगा ॥ तिसदुरात्मापुरुषकूं तुमारीजिह्वाविषेस्थितहोइकै मैंसूर्यभगवान् शापदेवौंगा ॥ तिसशापकरिकै सोपुरुष शीघ्रहीभ
स्महोइजावैगा ॥ हेशाकल्य ! याप्रकारकावचन जबी सूर्यभगवान्‌नैं हमारेप्रतिकह्या ॥ तबी मेरेकूंभयहोताभया ॥ याकारणतें मैं

पुनःसूर्यभगवान्केप्रति प्रार्थनानहींकरतामया ॥ हेशाकल्य! सर्वलोकविषेप्रसिद्ध जोहमारागुरुसूर्यभगवान्है॥ तिसकूं किसीपापरूपप्रतिबंधकेवशतें तू जाणतानहीं ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ कालभगवान्करिकै तू मोहकूंप्राप्तभयाहै ॥ और हेशाकल्य! सूर्यभगवान्केवचनकूंस्मरणकरिकै मेरेकूं तुमारीबहुतचिंताहोती है ॥ जोहमारेद्वेषकरिकै तुमारीक्यागतिहोवैगी? ॥ हेशाकल्य! यद्यपि तू हमारेसाथ सर्वथाद्वेषकरताहै ॥ तथापि हमारा तेरेविषेद्वेषनहीं ॥ काहेतें? जैसे आपणेशरीरविषे मैंआनंदस्वरूपआत्मास्थित हूं ॥ तैसे तुमारेशरीरविषे तथाअन्यप्राणियोंकेशरीरविषे तथास्थावरजंगमसर्वशरीरोंविषे मैंआनंदस्वरूपआत्मास्थितहूं ॥ यातें यहसंपूर्णजगत् मैंआनंदस्वरूपआत्मातेंभिन्ननहीं ॥ और मैंआनंदस्वरूपआत्मातेंही याजगत्कीउत्पत्ति स्थिति लय होवैहै ॥ ऐसे सर्वात्मज्ञानकरिकैयुक्तजोमैंहूं ॥ तिसका किसीप्राणीविषेद्वेषनहीं ॥ और हेशाकल्य! सुखदुःख हर्षशोक अशनापिपासा इत्यादिक द्वंद्वधर्म मेरेस्वरूपविषे तीनकालनहीं ॥ और जैसे घटरूपउपाधिके उत्पत्ति स्थिति लयतें घटाकाशकी उत्पत्ति स्थिति लय होवैनहीं ॥ तैसे शरीररूपउपाधिके उत्पत्ति स्थिति नाश हुएभी मैंअद्वितीयआत्माकी उत्पत्ति स्थिति नाश होवैनहीं और हेशाकल्य! जो क्रियावालाहोवैहै॥सो किसीकाहननकरैहै॥ और मैंआनंदस्वरूपआत्मा निष्क्रियहूं॥यातें किसीभीप्राणीका मैं हननकरतानहीं ॥ और मैंआनंदस्वरूपआत्मा निराकारहूं ॥ यातें कोईभीप्राणी हमारा हननकरतानहीं ॥ और हेशाकल्य! जैसे कृमीआदिकक्षुद्र जंतुवोंका आत्मस्वरूपज्ञान अज्ञानकरिकै आवृतरहैहै ॥ तैसे तुमाराभी आत्मस्वरूपज्ञान अज्ञानकरिकैआवृतभयाहै ॥ याकारणतें सर्वात्मदर्शी मैंयाज्ञवल्क्यकूं आत्मघातीपापीपुरुषकेसमान तूदेखताहै ॥ हेशाकल्य! ब्रह्मवेत्ताज्ञानीपुरुषकेसाथ जोद्वेषहै ॥ सो प्रसिद्धअग्नितेंभीअधिकहै ॥ ताद्वेषरूपीअग्निकरिकै तुमारेकूंभस्महुआदेखिकै येसंपूर्णलोक तुमाराशोक मतकरैं ॥ और हे शाकल्य! तुमारीस्त्री विधवाभावकूंप्राप्तहोईकै तथासर्वभूषणोंतेंरहितहोइकै अत्यंतदीनहुई रुदनमतकरै ॥ हेशाकल्य! तुमारेमरणेकरिकै तुमारेपुत्रादिकसर्वबांधव शोकरूपीसमुद्रविषे मतप्राप्तहोवैं॥ और तुमारेमरणेकरिकै तुमारेशत्रु आनंदकूंमतप्राप्तहोवैं ॥ और हेशाकल्य! तू प्रेतशरीरकूंप्राप्तहोइकै क्षुधापिपासाकरिकैपीडितहुआ तथादुःखकरिकैव्याकुलहुआ धर्मराजाकेपुरीकूं मतदेख ॥ और

हेशाकल्य ! मरणेतैंअनंतर पुत्रोंनैंदियाजोबलिप्रदान तथातिलोदक ॥ तिसकूं काककीन्यांई तू मतभक्षणकर ॥ और हेशाकल्य ! यहतुमाराकोमलशरीर अग्निका तथाश्वानोंका भक्ष मतहोवै ॥ और हेशाकल्य ! यासर्वशिष्योंकापरित्यागकरिकै तू एकलाही पर लोकविषे मतजाव ॥ और हेशाकल्य ! जैसेभल्लातनामावृक्षकाफल जीवोंकानाशकरैहै ॥ तैसे तुमारेचित्तरूपीभूमीविषे बहुतकाल करिकै उत्पन्नभयाजो ब्रह्मवेत्ताकाद्वेषरूपीवृक्ष ॥ सोद्वेषरूपीवृक्ष तुमारेकूं मृत्युरूपफलकीप्राप्तिमतकरै ॥ और हेशाकल्य ! मरेतैं अनंतर तुमारेअस्थिकूं चौररूपीचांडाल मतस्पर्शकरै ॥ और हेशाकल्य ! जैसे पतंग अग्निविषेप्राप्तहोइकै भस्महोवैहै ॥ तैसे सूर्यभगवान्हैजिह्वाविषेजिसके ऐसाजोमैंअग्निहूं ॥ तिसविषे तूं मतभस्महोव ॥ और हेशाकल्य ! जैसे यालोकविषे अन्नकेभूनणे हारेपुरुष भठीविषेस्थित प्रज्वलितअग्निकूं आपणेहस्तोंकरिकै स्पर्शकरैनहीं ॥ किंतु दीर्घकाष्ठरूपदंडकरिकैयुक्त जोलोहेकीकण छीहै ॥ तिसकरिकै अग्निकूंस्पर्शकरैहैं ॥ तैसे यहसभारूपीभठीहै ॥ और मैंयाज्ञवल्क्य काष्ठोंकेसमानहूं ॥ और मेरागुरुसूर्यभगवान् अग्निरूपहै ॥ और तेरेकूंविवादकरणेविषे प्रेरणाकरणेहारे जेयेसंपूर्णब्राह्मणहैं ॥ ते अन्नभूनणेहारेपुरुषोंकेसमानहैं ॥ और तू कणछीकेसमानहै ॥ और येसंपूर्णब्राह्मण बुद्धिमान्हैं ॥ यातैं आपणीरक्षाकरणेवासते तैंमूढबुद्धिकूं कणछीकेसमानकरिकै सूर्य रूपअग्निविषे प्रवेशकरावैहैं ॥ तात्पर्ययह जेब्राह्मण तेरेकूंविवादकरणेवासते प्रेरणाकरतेहैं ॥ तेब्राह्मणभी तेरेमरणेविषेही प्रसन्न हैं ॥ परंतु कालभगवान्करिकैमोहितहुआ तू आपणेमरणेकूंजाणतानहीं ॥ यहहमारेकूं बहुतआश्चर्यहोवैहै ॥ हेशिष्य ! याप्रकार केवचन जबीयाज्ञवल्क्यनैं शाकल्यकेप्रतिकहे ॥ तबी कालकेवशहुआ सोशाकल्य तिनवचनोंकूंविपरीतमानिकै पुनःअधिकद्वेषकूं करताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मरणकेसमीपप्राप्तहुआरोगीपुरुष हितकारीवैद्यकेसाथद्वेषकरैहै ॥ और जैसे राज्यतैंभ्रष्टहोणेवाला राजा हितकारीमंत्रियोंकेसाथद्वेषकरैहै ॥ और जैसे भाग्यहीनपुरुष राजाकेसाथ द्वेषकरैहै ॥ और जैसे पापकरणेहारापुरुष सत्यउपदेशकरणेहारेगुरुकेसाथ द्वेषकरैहै ॥ तैसे सोशाकल्य याज्ञवल्क्यकेसाथ द्वेषकरताभया ॥ अब जिसबुद्धिकरिकै सोशाकल्य याज्ञवल्क्यकेसाथ द्वेष करताभया ताबुद्धिकूंदिखावैहैं ॥ जैसे कोईपुरुष मूढबालकोंकूं भयउत्पन्नकरैहै ॥ तैसे यहमंदबुद्धियाज्ञवल्क्य

मेरेकूं भय उत्पन्नकरैहै ॥ और मेरीसर्वज्ञताकूं तथानिर्भयताकूं यहमंदबुद्धियाज्ञवल्क्य जाणतानहीं ॥ किंवा कृषिकरणेहारेमूढपु
रुषोंकेजेग्रामहैं ॥ तथा पर्वतकेजेग्रामहैं ॥ तिनग्रामोंविषेस्थित जे बालकहैं तथा स्त्रियांहैं तथाकाष्ठादिकजडपदार्थहैं ॥ तिनोंके
मध्यविषेबैठिकै जैसे कोईनिर्लज्जपुरुष निःशंकहोइकै मिथ्याभाषणकरैहै तैसे यहयाज्ञवल्क्य सर्वविद्वानोंकीसभाविषे निःशंकहोइ
के मिथ्याभाषणकरैहै ॥ काहेतें? इसयाज्ञवल्क्यकागुरु जोसूर्यहै ॥ सो मैंद्वेषकरणेहारेशाकल्यके भस्मकरणेविषे जोसमर्थहोता
तौ इसकालतेंपूर्वकालविषेभी द्वेषकरणेहारेमेरेकूं काहेतेंनहींभस्मकरता? ॥ किंवा यहसूर्य जडहै यातें याकेविषेभस्मकरणेकासा
मर्थ्यहैनहीं ॥ काहेतें? सूर्य चंद्रमा इंद्र याप्रकारकेशब्दोंकानाम देवताहै ॥ अथवा सूर्य चंद्रमा इंद्र इत्यादिकशब्दोंकेजोअर्थहै ति
नोंकानाम देवताहै ॥ शब्दतें तथाअर्थतें भिन्न कोईदेवताकास्वरूपहैनहीं ॥ तहां जोसूर्यशब्दकूं सूर्यदेवतामानिये तौ सोसूर्यशब्द
आकाशकागुणहै ॥ यातें सर्वलोकोंकूं ताशब्दविषेजडता अनुभवसिद्धहै ॥ और जोसूर्यशब्दकेअर्थकूं सूर्यदेवतामानिये तौभी ते
जोमयमंडल सूर्यशब्दकाअर्थहै ॥ ता तेजोमयमंडलविषेभी जडताप्रसिद्धहै ॥ और सूर्यशब्दतें तथातेजोमयमंडलतें भिन्न जोकोई
चैतन्य सूर्यशब्दकाअर्थ मानिये तौभी सोसूर्यदेवता पापकर्मतेंविना किसीप्राणीकूंभस्मकरतानहीं ॥ किंतु जीवकेपापकर्मकीअपे
क्षाकरिकैही ताकूंभस्मकरैहै ॥ सोपापकर्म मेरेविषेहैनहीं ॥ यातें सोसूर्य हमारीक्याहानिकरैगा? ॥ किंवा सूर्यतेंहमनेंविद्यापढीहै
यहभी याज्ञवल्क्यकावचन मिथ्याहै ॥ काहेतें? यहयाज्ञवल्क्य भूमिविषेस्थितहै ॥ और सूर्य अत्यंतदूरआकाशविषेस्थितहै ॥ इन
दोनोंका परस्परसंबंधसंभवैनहीं ॥ हेशिष्य! याप्रकारका विपरीतचिंतनकरिकै सोशाकल्य पूर्वतेंभीअधिकद्वेष करताभया ॥ तिस
तैंअनंतर क्रोधकरिकैयुक्तहुआ सोशाकल्य याज्ञवल्क्यकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ शाकल्यउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य!
कुरु पांचालादिकदेशोंविषे रहणेहारेजेब्राह्मणहैं ॥ तिनोंकूं तुमनैं पराजयकऱ्याहै ॥ और सर्वब्राह्मणोंकेगौवोंकूं तथासुवर्णकूं तूं लै
गयाहै ॥ तिसपापकर्मकरिकै तेरेकूं निर्जलवनविषे अनेकवार ब्रह्मराक्षसशरीरकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और हेयाज्ञवल्क्य! जिसब्रह्मवि
द्याकेअभिमानकरिकै तुमनैं सर्वमहात्माब्राह्मणोंकूं पराजयकऱ्याहै ॥ साब्रह्मविद्या हमारेसन्मुख तूं कथनकर ॥ हेशिष्य! याप्र

कारकावचन जबीशाकल्यनैं कह्या ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्य आपणेविषेब्रह्मवेत्तापणा दिखावणेवासते याप्रकारकावचन शाकल्यकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य! देवतावोंसहित तथादेवतावोंकेकारणसहित सर्वदिशावोंकूं मैं जाणताहूं ॥ शाकल्यउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! पूर्वादिकदिशावोंकेदेवता कौनहैं! और तिनदेवतावोंका कारणकौनहै? और तिनदेवतावोंकेकारणकाभीकारण कौनहै? ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य! पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर ऊर्ध्व यापंचदिशावोंके क्रमतें आदित्य यम वरुण सोम अग्नि येपंचदेवताहैं ॥ तेदेवता मैं आनंदस्वरूपआत्मातेंभिन्ननहीं ॥ किंतु आनंदस्वरूपमैंआत्माही आदित्यादिकदेवतारूपकरिकैस्थितहूं ॥ और हेशाकल्य! सोआदित्यदेवता चक्षुरूपकारणविषेस्थितहै ॥ और यमदेवता श्रोत्रइंद्रियरूपकारणविषेस्थितहै ॥ और वरुणदेवता रसनइंद्रियरूपकारणविषेस्थितहै ॥ और सोमदेवता मनरूपकारणविषेस्थितहै ॥ और अग्निदेवता वाक्इंद्रियरूपकारणविषेस्थितहै ॥ तात्पर्ययह ॥ हिरण्यगर्भकीउपासनाकरिकै हिरण्यगर्भरूपकूंप्राप्तहोणेहाराजोपुरुषहै ॥ तिसके जेअध्यात्मरूपचक्षुआदिकइंद्रियहैं ॥ तेचक्षुआदिकही अधिदैवसूर्यादिरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याकारणतैं चक्षुआदिकइंद्रिय सूर्यादिकदेवतावोंकेकारणकहेहैं ॥ और हेशाकल्य! रूपादिकविषयोंनैं आपणेप्रकाशकरणेवासते चक्षुआदिकइंद्रियोंकाआरंभकरताहै ॥ याकारणतैं चक्षुआदिकइंद्रिय रूपादिकविषयरूपकारणविषेरहेहैं ॥ तहां चक्षुइंद्रिय शुक्लनीलपीतादिकरूपोंविषेरहैहै ॥ और श्रोत्रइंद्रियकरिकै ग्रहणकरणेयोग्य जोकर्मकांडरूपवेदहै ॥ ताका दोप्रकारकाअर्थहोवैहै ॥ एकतौ मनवाणीशरीरके क्लेशकरणेहारे यज्ञदानव्रतादिरूपअर्थहै ॥ और दूसरा श्रद्धारूपअर्थहै ॥ तहां श्रोत्रइंद्रिय यज्ञदानादिरूपकर्मविषेरहैहै ॥ और ते यज्ञदानव्रतादिरूपकर्म श्रद्धाविषेरहैहैं ॥ याकारणतैंही अश्रद्धासैंकरेहुए यज्ञदानव्रतादिककर्मफलकूंदेतेनहीं ॥ श्रद्धाकरिकैकरेहुए यज्ञदानादिक फलकूंदेवैहैं ॥ और जलरूपजोरसनइंद्रियहै ॥ सो रेतरूपकारणविषेरहैहै ॥ और दोषोंतैंरहितजोमनहै ॥ सो सत्यअर्थविषेरहैहै ॥ तैसे वाक्इंद्रियभी सत्यअर्थविषेरहैहै ॥ काहेतें? यन्मनसाध्यायतितद्वाचावदति ॥ अर्थयह ॥ यहपुरुष जिसअर्थकूं मनकरिकैध्यानकरताहै ॥ तिसीअर्थकूं वाणीकरिकैकथनकरताहै ॥ याश्रुतिविषे मन

का तथावाणीका एकहीविषयकह्याहै ॥ और हेशाकल्य! जैसे सर्वजलोंकेउत्पत्तिका तथास्थितिका कारण समुद्रहै ॥ तैसे सूर्यादिकदेवतावोंके तथानेत्रादिकइंद्रियोंके तथारूपादिकविषयोंके उत्पत्तिका तथास्थितिका कारण हृदयहै ॥ इहां हृदयशब्दकरिकै मायाविशिष्ट अंतर्यामीपरमात्माका ग्रहणकरणा ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ हेशाकल्य! जैसे लोकप्रसिद्धभित्तिविषे प्रथम रेखामात्र देवतादिकमूर्तियोंकेचित्र स्थितहोवैहैं ॥ और तिनरेखारूपचित्रोंविषे श्वेतपीतनीलरक्तादिकवर्ण स्थितहोवैहैं ॥ और तिनश्वेतादिकवर्णोंविषे देवतावोंकेमुखविषे दुग्ध स्थितहोवैहै ॥ और नेत्रोंविषे अंजन स्थितहोवैहै ॥ और मस्तकऊपरि मुकुट स्थितहोवैहै ॥ और हस्तोंविषे धनुषबाणादिक स्थितहोवैहैं ॥ याप्रकार चित्रादिकपदार्थ एकदूसरेकेआश्रितहुए सर्वलोकोंकूं प्रतीतहोवैहैं ॥ परंतु वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ तेसंपूर्णचित्रादिकपदार्थ एकाभित्तिकेआश्रितरहैहैं ॥ तैसे पूर्वादिकदिशा तथाअग्निआदिकदेवता तथानेत्रादिकइंद्रिय तथारूपादिकविषय इत्यादिकसंपूर्णजगत् साक्षात् अथवा परंपराकरिकै एकपरमात्मारूपहृदयविषेरहेहैं ॥ तहां वृत्तियोंसहितअंतःकरण साक्षात्हृदयविषेरहेहै ॥ और दूसराजगत् अंतःकरणद्वारा परंपरासंबंधकरिकै हृदयविषेरहेहै ॥ और हेशाकल्य! जैसे चित्रोंकाआधारजोभित्तिहै ताकूं जबीमृत्तिकाकरिकैलीपिये तबी तेचित्र लयभावकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे ब्रह्मज्ञानरूपीमृत्तिकाकेलेपकरिकै यहजगत्रूपीचित्र लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेशाकल्य! जैसे नीचेऊचेपणेतैंरहित जोसमानभित्तिहै ॥ ताकेविषे कोईचित्र ऊचाप्रतीतहोवैहै ॥ और कोईचित्र नीचाप्रतीतहोवैहै ॥ परंतु सोऊचानीचापणा वास्तवतैं हैनहीं किंतु कल्पितहै ॥ तैसे सर्वत्रसमानजोपरमात्मारूपहृदयहै ताकेविषे इंद्रादिकदेवता उत्कृष्ट प्रतीतहोवैहैं ॥ और वृक्षादिकस्थावर निकृष्ट प्रतीतहोवैहैं॥परंतु साउत्कृष्टता तथानिकृष्टता परमात्मारूपहृदयविषे वास्तवतैंनहीं किंतु कल्पितहै॥ और हेशाकल्य! जैसे चित्रकारपुरुष नीलपीतादिकनानाप्रकारकेवर्णोंकरिकै भित्तिविषे चित्रोंकूंरचेहै ॥ तैसे नानाप्रकारकीवासनाकरिकैयुक्त बुद्धिरूपचित्रकार अहंममअभिमानरूपीवर्णोंकरिकै परमात्मारूपहृदयविषे जगत्रूपीचित्रोंकूंरचेहै ॥ और हेशाकल्य! जैसे चित्रकेउपयोगी जेनीलपीतादिकरंगहैं ॥ तिनोंकूं धारणकरणेहारी जोकाष्ठकरिकैरचित छायाहै ॥ साछाया भित्तिके

साथसंबंधमात्रकरिकै ताभित्तिविषे नानाप्रकारकेचित्रोंकूंरचैहै ॥ तैसे भित्तिभी ताछायाकीसमीपताकरिकै नानाप्रकारकेचित्रोंकूं रचैहै ॥ काहेतें? जोभित्तिनहींहोवे तौ चित्रोंकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातेंभित्ति तथाछाया दोनों चित्रोंकेप्रति कारणहैं ॥ तैसे माया विशिष्टचैतन्यरूपीभित्तिविषे नानाप्रकारकीवासनायुक्त बुद्धिरूपछाया जगत्रूपचित्रोंकूंरचैहै ॥ यातें मायाविशिष्टपरमात्मा तथाबुद्धि येदोनों जगत्केकारणहैं ॥ और हेशाकल्य! जैसे भित्तिविषेस्थितचित्रोंऊपरि जबी वारंवार मृत्तिकाकालेपकरताहै ॥ तबी तेचित्र लेशमात्रकरिकै ताभित्तिविषेस्थितहुएभी बाह्यस्पष्टरूपकरिकैप्रतीतहोतेनहीं ॥ तैसे प्रारब्धकर्मकीसमाप्तिपर्यंत परमात्मारूपहृदयविषे आभासमात्रकरिकैरह्याहुआभीजगत्रूपचित्र वारंवार ब्रह्माकारवृत्तिरूपीमृत्तिकाकेलेपकरिकै समाधिकालविषे प्रतीतहोतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे पुनःपुनःमृत्तिकाकेलेपतें चित्रोंकीनिःशेषतेंनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु पुनःपुनःमृत्तिकाकेलेपतें चित्रोंका अदर्शनरूपलयहोवैहै ॥ भित्तिकेनिवृत्तहुएही चित्रोंकी निःशेषतें निवृत्तिहोवैहै ॥ तैसे ब्रह्मज्ञानकरिकैअज्ञानकेनिवृत्तहुएभी जबपर्यंत प्रारब्धकर्मनहींनिवृत्तहोता ॥ तबपर्यंत निःशेषतें प्रपंचकीनिवृत्तिहोतीनहीं ॥ किंतु जीवन्मुक्तपुरुषकूं विचारकालविषे प्रपंचकाअदर्शनहोवैहै ॥ प्रारब्धकर्मकेनिवृत्तहुएही निःशेषतें प्रपंचकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ याकारणतेंही जीवन्मुक्तपुरुषोंकूं आभासमात्रकरिकै जगत्काभानहोवैहै ॥ और हेशाकल्य! जैसे मायावीऐंद्रजालिक पुरुषरूपकारणकरिकै आकाशविषे नानाप्रकारकीसेना प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे बुद्धिरूपकारणकरिकै परमात्मारूपहृदयविषे नानाप्रकारकाप्रपंच प्रतीतहोवैहै ॥ और हेशाकल्य! जैसे मायावीपुरुषरूपकारणके नाशहुए अथवा सुषुप्तिअवस्थाके प्राप्तहुए अथवा दूसरेकिसीकार्यविषे आसक्तहुए आकाशविषेस्थित नानाप्रकारकाजगत् प्रतीतहोतानहीं ॥ तैसे किसीरोगादिकोंकरिकै बुद्धिरूपकारणके नाशहुए अथवा सुषुप्तिकेप्राप्तहुए अथवा आत्माविषेएकाग्रहुए परमात्मारूपहृदयविषेस्थित प्रपंचरूपीचित्र प्रतीतहोवैनहीं ॥ और हेशाकल्य! जैसे मायावीपुरुषनें आकाशविषे उत्पन्नकरेजेनानाप्रकारकेपदार्थ तेपदार्थ मायावीपुरुषतेंभिन्ननहीं ॥ किंतु मायावीपुरुषकास्वरूपहीहै ॥ तैसे परमात्मारूपहृदयविषे बुद्धिनें कल्पनाकऱ्याजोजगत् ॥ सोजगत् बुद्धितेंभि

न्ननहीं ॥ किंतु बुद्धिस्वरूपही है ॥ याअभिप्रायकरिकैही वेदांतशास्त्रविषे दृष्टिसृष्टिवादका कथनकन्या है ॥ और हेशाकल्य ! जैसे आकाशविषेस्थितहुआअंधकार अंधकारकरिकैहीप्रतीतहोवैहै ॥ सूर्यादिकप्रकाशकरिकै अंधकारकीप्रतीतिहोवैनहीं ॥ तैसे परमात्मारूपहृदयविषेस्थितहुईबुद्धि बुद्धिकरिकैहीप्रतीतहोवैहै ॥ और जैसे सूर्यादिकप्रकाशकरिकै अंधकारकेनिवृत्तहुए विशुद्धआकाशविषे दोषरहितनेत्रवालेपुरुष अंधकारकूंदेखतेनहीं ॥ तैसे आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहुए विशुद्धआत्माविषे कारणसहितबुद्धिकूं विद्वान्पुरुष देखतेनहीं ॥ यातैं आत्मातैंभिन्न बुद्धिआदिकजडपदार्थ प्रमाणकरिकैसिद्धनहीं ॥ किंतु भ्रांतिकरिकैसिद्धहैं ॥ शंका ॥ बुद्धिकूं जोप्रमाणजन्ययथार्थज्ञानकाविषय नहींअंगीकारकरौंगा तौ जोप्रमाणजन्ययथार्थज्ञानका अविषयहोवैहै ॥ सो शशशृंगकीन्यांई असत्यहीहोवैहै ॥ यातैं बुद्धिभी असत्यहीहोवैगी ॥ और जोपदार्थ असत्यहोवैहै ॥ सोपदार्थ किसीकार्यकरणेविषेसमर्थहोवैनहीं ॥ यातैं असत्यबुद्धिकरिकै किसीकार्यकीसिद्धि नहींहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ जैसे शशशृंग तथावंध्यापुत्र यद्यपि असत्यहैं ॥ तथापि सोशशशृंग तथावंध्यापुत्र शशशृंग वंध्यापुत्र याप्रकारकेशब्दोंतैं स्वविषयक विकल्परूपज्ञानकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तैसे कार्यकारणसहितबुद्धि यद्यपिअसत्यहै ॥ तथापि साबुद्धि नानाप्रकारकेभ्रांतिरूपज्ञानोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ यातैं शशशृंगकीन्यांई असत्यबुद्धिविषेभी नानाप्रकारकेव्यवहारकीकारणता संभवैहै ॥ शंका ॥ बुद्धिकेअसत्यहुएभी बुद्धिकाकारणजोअज्ञानहै सो सत्य क्यूंनहींहोवै ? ॥ जोअज्ञानकूंभी असत्यमानौंगे तौ असत्यवस्तु किसीकूंअनर्थकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ यातैं असत्यअज्ञानविषे जन्ममरणादिरूपअनर्थकीकारणता नहींहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ जैसे बुद्धिअसत्यहै ॥ तैसे बुद्धिकाकारणअज्ञानभी असत्यहीहै ॥ और असत्यवस्तुविषेभी अनर्थकीकारणता लोकविषेदेखीतीहै ॥ जैसे मक्षिकाके नहींभक्षणहुएभी जिसपुरुषकूं याप्रकारकीभ्रांतिहोवैहै ॥ हमनैं मक्षिकाकाभक्षणकन्याहै ॥ तिसपुरुषकूं वमनहोवैहै ॥ अथवा सर्पकेअविद्यमानहुएभी जिसपुरुषकूंऐसीभ्रांतिहोवैहै ॥ हमारेकूंसर्पनैं दंशकन्याहै ॥ और तासर्पकीविष हमारेकूंचडतीहै ॥ सोपुरुष प्राणोंकापरित्यागकरैहै ॥ यातैं जैसे असत्यमक्षिकाकाभक्षण वमनरूपअनर्थकाकारणहै ॥ और असत्यसर्प मृत्युरूपअनर्थकाकारणहै ॥ तैसे अत्यंतअसत्यअज्ञानभी भ्रां

तपुरुषोंके जन्ममरणादिरूपअनर्थकाकारण संभवैहै ॥ और हे शाकल्य! जैसे एकहीस्वप्नद्रष्टापुरुष असत्यअज्ञानकरिकै हस्ति
अश्वादिकनानाप्रकारकेरूपोंकूंधारणकरैहै ॥ तैसे एकहीपरमात्मादेव असत्यअज्ञानकेवशतैं प्रपंचरूपकूंधारणकरैहै ॥ और हेशा
कल्य! हमसरीखेविद्वान्पुरुषोंकीदृष्टिकरिकै यद्यपि अज्ञान तीनकालविषेअसत्यहै ॥ तथापि तुमारेसरीखेजेअविवेकीपुरुषहैं
तिनोंकूं यहअज्ञान वज्रकेपर्वतसमान दुर्भेद्यहै ॥ याकारणतैंही तेरेसरीखेअविवेकीपुरुष अत्यंतसमीपहृदयदेशविषेस्थित आत्मा
कूंभीनहींजाणते ॥ दृष्टांत ॥ जैसे नेत्रोंतैंरहितअंधपुरुष हस्तकरिकैस्पर्शकरीहुई निधिकूंभीजाणतानहीं ॥ यातैं हेशाकल्य! संपूर्ण
प्रपंचरूपचित्रकाआश्रय परमात्मारूपहृदयहै यहउत्तर हमनैं तुमारेप्रतिकह्या ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारेकूंइच्छा
होवै सोअर्थ हमारेसैं तुमपूछो ॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी याज्ञवल्क्यनैं शाकल्यकेप्रतिकह्या तबी सोमूढबुद्धिशाकल्य
पुनःप्रश्नकरणेतैं निवृत्तनहींहोताभया ॥ किंतु जैसे कालकरिकैमोहितहुआ मंडूक कृष्णसर्पकेबुलावणेहारीवाणीकूं वारंवार उच्चार
णकरैहै ॥ तैसे पापकर्मकरिकै प्रेरणाकऱ्याहुआ यहशाकल्यभी कालरूपसर्पकेबुलावणेहारी जोपुनःप्रश्नरूपीवाणीहै तिसकूं उ
च्चारणकरताभया ॥ ऐसेशाकल्यकूंदेखिकरिकै सोयाज्ञवल्क्य करुणाकरिकै अत्यंतदुःखीहोताभया ॥ अब जाविचारकरिकै याज्ञ
वल्क्यकूं चित्तविषेदुःखहुआ ताविचारकूंदिखावैहैं ॥ बडाकष्टहै यादुर्बुद्धिशाकल्यकामरणा अबीसमीपप्राप्तभयाहै ॥ काहेतैं? रक्तवर्ण
वालेहैंनेत्रजिसके ॥ तथा ऋग् यजुष् साम येतीनवेदहैंस्वरूप जिसके ॥ ऐसाजोसूर्यभगवान् हमारागुरुहै ॥ सो आपणीप्रति
ज्ञाकेसत्यकरणेवासते अबीमंडलतैंनीचैउत्तरकरिकै मेरीजिव्हाविषेस्थितहोवैगा ॥ तिसतैं अनंतर परवशहुईयहमेरीजिव्हा या
दुर्बुद्धिशाकल्यकेप्रति शापदेवैगी ॥ ताशापकरिकै यहशाकल्य क्षणमात्रविषे भस्महोवैगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै कृपाकरिकै
युक्तहुआ सोयाज्ञवल्क्यमुनि चित्तविषेदुःखीहोताभया ॥ और याशाकल्यका किसीप्रकारकरिकैमरणनहींहोवै तौश्रेष्ठवार्ता है ॥
याप्रकारकाचिंतन सोयाज्ञवल्क्य करताभया ॥ तिसतैंअनंतर मृत्युकेसमीपप्राप्तहुआ सोमूढबुद्धिशाकल्य पुनःयाज्ञवल्क्यकेप्रति या
प्रकारका प्रश्नकरताभया ॥ शाकल्यउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! संपूर्णप्रपंचरूपीचित्रकाआधारजोहृदयहै ॥ सो किसकेआश्रितरहैहै?

हेशिष्य! याप्रकारकाप्रश्न जबीशाकल्यनैंकऱ्या ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्य हेअहल्लिक! याप्रकारकासंबोधनदेकै शाकल्यकेप्रति कह
ताभया ॥ अब पंचप्रकारकरिकै अहल्लिकशब्दकेअर्थकूंदिखावैहैं ॥ तहां दिनविषेजोलयकूंप्राप्तहोवैं और रात्रिविषेप्रादुर्भावहोवैं
ताकूं अहल्लिककहैहैं ॥ ऐसेप्रेतशरीरहोवैहैं ॥ और यहशाकल्यभी मरिकेप्रेतभावकूंप्राप्तहोवैगा ॥ याकारणतैं याज्ञवल्क्यनैं शाक
ल्यकूं अहल्लिककह्याहै ॥ १ ॥ अथवा दिनकीन्यांईं प्रकाशमानअर्थविषे जोसंशयरूपलयकूंप्राप्तहोवैं ताकूं अहल्लिककहैहैं ॥ सो
याज्ञवल्क्यकेस्पष्टअर्थविषे याशाकल्यकूं संशयहुआहै ॥ याकारणतैं याज्ञवल्क्यनैं शाकल्यकूं अहल्लिककह्याहै ॥ २ ॥ अथवा सू
क्ष्मअर्थकूंनिश्चयकरणेहारा जोहृदयहै ॥ ताहृदयतैं जोपुरुषरहितहोवैहै ताकूं अहल्लिककहैहैं ॥ तहांस्पष्टकरिकै कथनकऱ्याजोअर्थ
है ताकेविषे कोईबुद्धिमान् पुनःप्रश्नकरतानहीं ॥ और यहशाकल्यतौ स्पष्टअर्थविषेभी पुनःपुनःप्रश्नकरैहै ॥ यातैं यहजान्याजावै
है ॥ सूक्ष्मअर्थकेनिश्चयकरणेहाराजोहृदयहै तिसतैं यहशाकल्यरहितहै ॥ जोशाकल्यकीबुद्धि सूक्ष्मअर्थकूंग्रहणकरती तौ यहशाक
ल्य पुनःपुनःप्रश्ननहींकरता ॥ याकारणतैं याज्ञवल्क्यनैं शाकल्यकूं अहल्लिककह्याहै ॥ ३ ॥ अथवा याज्ञवल्क्यनैंकथनकऱ्याजो प्र
पंचरूपचित्रकाआधार परमात्मारूपहृदय तिसकूं शाकल्यनैंजान्यानहीं ॥ किंतु मरणेतैंअनंतर पृथिवीविषेस्थित जोमांसमयहृदय
है ॥ जिसमांसमयहृदयकूं श्वानादिकभक्षणकरैहैं ॥ ता मांसमयहृदयकूंही शाकल्यनैं जान्याहै ॥ याकारणतैं याज्ञवल्क्यनैं शाकल्यकूं
अहल्लिककह्याहै ॥ ४ ॥ अथवा दिनकेकरणेहारा जोसूर्यभगवान्है ॥ सो यासभाविषे याशाकल्यकानाशकरैगा ॥ याकारणतैंया
ज्ञवल्क्यनैं शाकल्यकूं अहल्लिककह्याहै ॥ ५ ॥ हेशिष्य! याप्रकार याज्ञवल्क्यमुनि अहल्लिकसंबोधनदेकै शाकल्यकेप्रति उत्तरकह
ताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य! प्रपंचरूपचित्रकेधारणकरणेहारा जोपरमात्माहै ॥ तिसकूंही हमनैं हृदयरूपकरिकैक
ह्याहै ॥ परंतु तुमनैं यहवार्ताजाणीनहीं ॥ किंतु प्रसिद्धमांसकेखंडकूं तुमनैं हृदयरूपकरिकैजान्याहै ॥ यातैं तेरेअभिप्रायकेअनुसा
र मैं ताप्रश्नकेउत्तरकूंकहताहूं ॥ हेशाकल्य! सोहृदय मेरेसूक्ष्मशरीरकेआश्रितरहैहै ॥ काहेतैं? सूक्ष्मशरीरतैंविना यहस्थूलशरी
रस्थितहोवैनहीं ॥ और स्थूलशरीरतैंविना यहसूक्ष्मशरीरभी स्थितहोवैनहीं ॥ जबी सूक्ष्मशरीरतैं यहस्थूलशरीर पृथक्होवैहै ॥

तबी मांसमयहृदयसहित यास्थूलशरीरकूं श्वानादिक भक्षणकरैं हैं ॥ तथा काकादिकपक्षी खंडखंडकरिकैलेजावैं हैं ॥ याअभिप्राय करिकैही सूक्ष्मशरीरकूं हृदयसहितस्थूलशरीरकाआधारकह्याहै ॥ हेशिष्य! याज्ञवल्क्यनैं पूर्वशाकल्यकेप्रति हृदयशब्दकरिकै पर मात्माकाकथनकर्‌याथा ॥ तिसकूंनजाणिकरिकै जैसे सोशाकल्य पूर्व हृदयकाआश्रयपूछताभया ॥ तैसे सोमूढबुद्धिशाकल्य पुनः आधारपूछताभया ॥ शाकल्यउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! तुमनैं परस्परआश्रित जेस्थूलसूक्ष्मशरीरकहे ॥ ते स्थूलसूक्ष्मशरीर किसकेआश्रितरहैंहैं? ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य! सोस्थूलसूक्ष्मशरीर प्राणकेआश्रितरहैंहैं ॥ शाकल्यउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! सोप्राण किसकेआश्रितरहैंहै? ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य! सोप्राण अपानकेआश्रितरहैंहै ॥ शाकल्यउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! सोअपान किसकेआश्रितरहैंहै? ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य! सोअपान व्यानकेआश्रितरहैंहै ॥ शाकल्यउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! सोव्यान किसकेआश्रितरहैंहै? ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य! सोव्यान उदानकेआश्रितरहैंहै ॥ शाकल्यउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य! सोउदान किसकेआश्रितरहैंहै? ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य! सोउदान समानकेआश्रितरहैंहै ॥ हेशिष्य! यहजो शाकल्यनैं प्रश्नकरे हैं ॥ सोयाज्ञवल्क्यकेअभिप्रायकूं नजाणिकरिकैकरे हैं ॥ काहेतें? सर्वप्राणियोंकेबुद्धिविषे जोसाक्षीरूपकरिकै सर्वदाअपरोक्षहै ताकूं हृदयकहैहैं ॥ याअभिप्रायतें हृदयशब्दकरिकै याज्ञवल्क्यनैं परमात्माकह्याथा ॥ और सोशाकल्य हृदयशब्दकरिकै अंतःकरणकेनिवासकास्थान जोमांसमयहृदयहै ताका ग्रहणकरताभया ॥ जोशाकल्यनैं हृदयशब्दकरिकै परमात्मा जान्याहोता तौ सो हृदय किसकेआश्रितरहैंहै याप्रकारकाप्रश्न शाकल्य नहींकरता ॥ काहेतें? सभूमाकुत्रप्रतिष्ठितःस्वेमहिम्नि ॥ अर्थयह ॥ सोव्यापकपरमात्मा किसविषेस्थितहै? याशंकाकेहुए सोव्यापकपरमात्मा आपणेमहिमाविषेस्थितहै ॥ याश्रुतिविषे परमात्माका कोई दूसराआश्रय कह्यानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ शाकल्यनैं हृदयशब्दकरिकै परमात्माकाग्रहणनहींकर्‌या ॥ किंतु मांसमयहृदयकाग्रहणकर्‌याहै ॥ और सोहृदय मेरेविषेस्थितहै याउत्तरवाक्यविषे याज्ञवल्क्यनैं मेरेविषे याअस्मदशब्दकरिकै अहंप्रतीतिविषेभासमान आत्माकाही कथनकर्‌याथा ॥ और सोमंदबुद्धिशाकल्य ता अस्मदशब्दकरिकै सूक्ष्मशरीरकाहीग्रहणकरताभया ॥ और याज्ञव

ल्क्यनैं प्राण अपान व्यान उदान याचारिशब्दोंकीलक्षणावृत्तिकरिकै प्राणादिकोंकाप्रवर्त्तक मायाविशिष्टपरमात्माकाही कथनकऱ्या था॥ और सोशाकल्य प्राणादिकशब्दोंकरिकै वाचार्थभूतवायुकाही ग्रहणकरताभया॥ याकारणतैंही सोबुद्धिहीनशाकल्य सोप्राणकि सविषेरहैहै सोअपानकिसविषेरहैहै याप्रकारकेप्रश्न करताभया॥ और अंत्यविषे याज्ञवल्क्यनैं सर्वभूतोंकाआधार समान कह्याथा॥ और तासमानकूंभी सोशाकल्य वायुरूपहीजाणताभया॥ परंतु समानशब्दकरिकै याज्ञवल्क्यनैं वायुकाकथन नहींकऱ्याथा॥ किंतु सर्वकाआत्मारूप जोपरमात्मादेवहै॥ सो याज्ञवल्क्यनैं समानशब्दकरिकै कथनकऱ्याथा॥ कैसाहै सोपरमात्मादेव? आनंदस्वरूपहै॥ और नेतिनेति याप्रकारकीश्रुति दोनकारोंकरिकै स्थूलसूक्ष्मप्रपंचकानिषेधकरिकै जिसपरमात्मादेवकूं बोधनकरैहै॥ अथवा अज्ञानकालविषे विद्यमान जोभावअभावरूप दोप्रकारकाजगत् है॥ ताका निषेधकरिकै नेतिनेति यहश्रुति जिसपरमात्माकूंबोधनकरैहै॥ पुनःकैसाहैसोपरमात्मादेव? सजातीयभेद तथाविजातीयभेद तथा स्वगतभेद यातीनप्रकारकेभेदतैंरहितहै॥ और सोपरमात्मादेव निर्गुणहै॥ यातैं बुद्धिआदिककरणोंकरिकैजान्याजावैनहीं॥ और जैसे वस्त्र बहुतकालपाइकै जीर्णभावकूंप्राप्तहोवैहै॥ तैसे यह आनंदस्वरूपआत्मा कालकरिकै जीर्णभावकूंप्राप्तहोतानहीं॥ याकारणतैं यहआनंदस्वरूपआत्मा अशीर्यहै॥ और जैसे जलादिकपदार्थोंकेसाथ आकाशकासंबंधहोवैनहीं॥ यातैं आकाश असंगहै॥ तैसे बुद्धिआदिकोंकेसाथ आत्माकावास्तवतैं संबंधहैनहीं॥ यातैं यह आनंदस्वरूपआत्माभी असंगहै॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा अबद्धहै॥ यातैंदुःखकासंबंधरूपव्यथाकूं प्राप्तहोतानहीं॥ और यह आत्मा विनाशतैंरहितहै॥ यातैंहिंसाकूंभी प्राप्तहोतानहीं॥ हेशिष्य! याप्रकार जबी शाकल्यनैं याज्ञवल्क्यकेप्रति बहुतप्रश्नकरे॥ तबी सो सूर्यभगवान् आपणीप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासते याज्ञवल्क्यकेजिह्वाविषेस्थितहोइकै शाकल्यसैंपूछताभया॥ अब ताप्रश्नकी सिद्धिवासते शाकल्यकेपूर्वअष्टप्रश्नोंकेउत्तरकूं प्रसंगतैंदिखावैहैं॥ तहां पूर्वशाकल्यनैं देवतावोंकीसंख्यापूछीथी॥ ताका याज्ञवल्क्यनैं यहसमाधानकऱ्याथा॥ विस्तारतैंतौ देवताअनंतहैं॥ और संक्षेपतैंतौ एकप्राणदेवताहै॥ ताप्राणरूपएकदेवताकी यहअष्ट विभूतियांहैं॥ शारीरपुरुष १ काममयपुरुष २ आदित्यपुरुष ३ श्रोतपुरुष ४ छायामयपुरुष ५ प्रतिबिंबपुरुष ६ जलस्थपुरुष ७ पुत्रपुरुष ८॥

तहां पृथिवीरूप यास्थूलशरीरविषे मातातें उत्पन्नभयेजे त्वक् मांस रुधिर येतीनकोश ॥ तेकोश शारीरनामापुरुषका आयतनहैं ॥
॥ १ ॥ और स्त्रीकेसंभोगकीइच्छारूप जोकामहै ॥ सोकाम काममयनामापुरुषका आयतनहै ॥ २ ॥ और शुक्लनीलपीतादिकजेनानाप्र
कारकेरूपहैं ॥ तेरूप आदित्यनामापुरुषका आयतनहैं ॥ ३ ॥ और प्रतिध्वनिरूपशब्दविषे विशेषकरिकै है अभिव्यक्तिजिसकी ऐसा
जोश्रौतनामापुरुषहै ॥ ताश्रौतपुरुषका आकाश आयतनहै ॥ ४ ॥ और अंधकाररूपजोतमहै ॥ सोतम छायामयनामापुरुषका आ
यतनहै ॥ ५ ॥ और प्रतिबिंबकेग्रहणकरणेयोग्य जेदर्पणादिकस्वच्छपदार्थहैं ॥ तिनोंविषेस्थितजो प्रतिबिंबनामापुरुषहै ॥ ता प्रति
बिंबपुरुषका भास्वररूप आयतनहै ॥ ६ ॥ और जल जलस्थपुरुषका आयतनहै ॥ ७ ॥ और उपस्थइंद्रिय पुत्रनामापुरुषका आय
तनहै ॥ ८ ॥ और अग्नि १ हृदय २ चक्षु ३ श्रोत्र ४ हृदय ५ चक्षु ६ हृदय ७ हृदय ८ येअष्ट शारीरादिकअष्टपुरुषोंके क्रमतें चक्षुहैं ॥
इहां हृदयशब्दकरिकै बुद्धिकाग्रहणकरणा ॥ और अन्नादिकोंकापरिणामरूपजोअमृतहै ॥ सोअमृत शारीरपुरुषकाकारणहै ॥ १ ॥ औ
रस्त्री काममयपुरुषकाकारणहै ॥ २ ॥ और चक्षुइंद्रिय आदित्यपुरुषकाकारणहै ॥ ३ ॥ और दिशा श्रौतपुरुषकाकारणहै ॥ ४ ॥ और मृ
त्यु छायामयपुरुषकाकारणहै ॥ ५ ॥ और प्राण प्रतिबिंबपुरुषकाकारणहै ॥ ६ ॥ और वरुण जलस्थपुरुषकाकारणहै ॥ ७ ॥ और प्र
जापति पुत्रनामापुरुषकाकारणहै ॥ ८ ॥ इसप्रकार अष्टपुरुष ॥ और तिनपुरुषोंकेअष्टआयतन ॥ और तिनपुरुषोंकेअष्टचक्षु ॥
और तिनपुरुषोंकेअष्टकारण ॥ याचारिप्रकारकेअष्टकोंविषे कारणरूपतैंप्रवेशकरिकै जोपरमात्मादेव तिनोंकूं आपणेआपणेव्यव
हारकरणेविषे समर्थकरैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे तंतुरूपकारण पटरूपकार्यविषेप्रवेशकरिकैही शीतनिवृत्तिआदिकसर्वव्यवहारोंकूंकरै
है ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी संपूर्णकार्यप्रपंचविषेप्रवेशकरिकै नानाप्रकारकेव्यवहारोंकूंसिद्धकरैहै ॥ और जैसे तंतुरूपकारणपट
रूपकार्यकूं कार्यपणेतैंरहितकरिकै केवलकारणरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी प्रपंचकेउपसंहारकालविषेपूर्वादि
कदिशावोंतैंआदिलैके समानपर्यंत सर्वकार्यकाउपसंहारकरिकै कार्यभावतैंरहित एकअद्वितीयरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥
पूर्वादिकदिशावोंविषे वर्तमानजोपदार्थहैं तिनपदार्थोंसहित पूर्वादिकदिशावोंका सूर्यादिकदेवतावोंविषे उपसंहारकरैहै ॥ और

तिनसूर्यादिकदेवतावोंका चक्षुआदिकइंद्रियोंविषे उपसंहारकरैंहैं ॥ और तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंका रूपादिकविषयोंविषे उपसंहा
रकरैंहैं ॥ और तिनरूपादिकविषयोंका हृदयविषेउपसंहारकरैंहैं ॥ और ताहृदयका स्थूलसूक्ष्मशरीरविषे उपसंहारकरैं है॥ और ता
स्थूलसूक्ष्मशरीरका प्राणविषे उपसंहारकरैं है ॥ और ताप्राणका अपानविषे उपसंहारकरैं है॥ और ताअपानका व्यानविषेउपसंहा
रकरैंहै ॥ और ताव्यानका उदानविषेउपसंहारकरैं है ॥ और ताउदानका समानविषे उपसंहारकरैं है ॥ इसप्रकारजोपरमात्मादे
व सृष्टिकालविषे जगत्कूंउत्पन्नकरैंहैं ॥ और प्रलयकालविषे संपूर्णजगत्‌कासंहारकरिकै बुद्धिआदिकउपाधियोंतैं तथातिनोंकेसु
खदुःखादिकधर्मोंतैं रहितहोइकै कार्यकारणभावतैंरहित शुद्धस्वरूपविषेस्थितहोवैंहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे घटमठादिकउपाधियोंविषे
स्थितहुआआकाश अंतरबाह्यभावकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ और जबी सोआकाश घटादिकउपाधियोंका परित्यागकरैं है ॥ तबी अंतरबा
ह्यपणेतैंरहितहोइकै सोआकाश आपणेपरिपूर्णस्वभावविषे स्थितहोवैंहै ॥ तैसेशरीरादिकउपाधियोंकेसंबंधकरिकै यापरमात्मा
देवविषे अंतरबाह्यपणा प्रतीतहोवैंहै ॥ और जबीयहपरमात्मादेव शरीरादिकउपाधियोंकापरित्यागकरैंहैं ॥ तबी अंतरबाह्यपणे
तैंरहितहोइकै ॥ सोपरमात्मादेव आपणेपरिपूर्णस्वभावविषेस्थितहोवैं है॥ और जैसे मधुरादिकरस केवलरसनइंद्रियकरिकैही जा
न्याजावैंहै ॥ रसनइंद्रियतैंभिन्नकिसीइंद्रियकरिकै जान्याजावैनहीं ॥ तैसे जोपरमात्मादेव केवल उपनिषद्प्रमाणकरिकैही जा
न्याजावैंहै ॥ उपनिषद्प्रमाणतैंभिन्न किसीप्रत्यक्षादिकप्रमाणकरिकै जान्याजावैनहीं ॥ हेशाकल्य! ऐसेपरमात्मादेवकास्वरूप
तुमारेसैं मैं एकवारपूछताहूं ॥ जोतू तापरमात्माकेस्वरूपकूंजाणताहै तौ हमारेप्रतिकहो ॥ हेशाकल्य ! तुमारेप्रश्नोंकाउत्तर ह
मनैं बहुतवारदियाहै॥ यातैं हमारे एकप्रश्नकाउत्तर तुमभीकहो ॥ हेशाकल्य ! जोतू हमारेप्रश्नकाउत्तर नहींकहैगा तौ तीरथतैं
रहित तथामनुषोंकेसमूहकरिकैयुक्त जोयह जनकपुरीरूपअशुभदेशहै॥ तथा दक्षिणायनकेकृष्णपक्षकीअमावस्यारात्रिरूप जोअशु
भकालहै ॥ ताकेविषे तैंदुर्बुद्धिशाकल्यकामृत्युहोवैगा ॥ और हेशाकल्य ! मैंब्रह्मवेत्ताकेसाथ द्वेषकरणेहारा जोतूशाकल्यहै ॥ ति
सतुमारी मरणेतैंअनंतर अस्थियांभी तुमारेगृहकूंनहींप्राप्तहोवैंगी ॥ किंतु चौररूपीचांडाल धनकेलोभकरिकै अर्द्धमार्गविषे तिन

अस्थियोंकूंलैजावैंगे ॥ हेशिष्य ! जगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकेकरणेहारा जोसूर्यभगवान्हैं ॥ सो अत्यंतक्रोधवान्होइकै याज्ञव
ल्क्यकीजिह्वाविषेस्थितहोइकै याप्रकारकावचन शाकल्यकेप्रति कहताभया ॥ और सोशाकल्य आत्मज्ञानतैंरहितथा॥ यातैं किंचित्
मात्रभी ताप्रश्नकेउत्तरकूं नहींकहताभया ॥ तिसतैंअनंतर सूर्यभगवान्केशापकरिकै ताशाकल्यका मन तथावाकादिकइंद्रिय शरी
रतैंउत्क्रमणकरतेभये ॥ तिसतैंअनंतर ताअशुभदेशकालविषे शाकल्यकामस्तक शीघ्रहीभूमिविषेपडताभया ॥ दृष्टांत॥ जैसे देव
तावोंकूंजीतकरिकै स्वर्गविषेनिवासकरणेहारा जोनमुचिदानवथा ॥ ताकामस्तक वज्रकरिकै भूमिविषेपडताभया ॥ तैसे शाकल्य
कामस्तक भूमिविषेपडताभया ॥ हेशिष्य ! याप्रकार जबी शाकल्यकामृत्युभया ॥ तबी सर्वत्र हाहाकारशब्दहोताभया ॥ और
संपूर्णराजमंडली महान्क्षोभकूंप्राप्तहोतीभई ॥ और ताशाकल्यकेजेशिष्यथे तथाबांधवथे ॥ तेसंपूर्ण रुदनकरतेभये॥ और शाकल्य
कूंभूमिविषे पतनहुआदेखिकै तासभाविषेस्थित जितनेब्राह्मणथे तथाबालकथे तथास्त्रियांथी ॥ तेसंपूर्णजन शाकल्यकूंधिक्काराधि
क्कारकरतेभये ॥ और तेसंपूर्णसभावासीजन याप्रकारकेवचन कहतेभये ॥ ब्रह्मवेत्तायाज्ञवल्क्यकेसाथ याशाकल्यनैं द्वेषकऱ्याथा
ताद्वेषरूप विषकेवृक्षका मृत्युरूपफल याशाकल्यकूंप्राप्तभया ॥ यद्यपि यहशाकल्य विद्यादिकसर्वगुणोंकरिकैयुक्तथा ॥ तथा
पि ब्रह्मवेत्ताकेद्वेषरूप प्रबलदोषतैं यहशाकल्य मृत्युकूंप्राप्तहोताभया ॥ कैसाहैसोब्रह्मवेत्ताकाद्वेष? जैसे एकहीप्रलयकालका
अग्नि स्थावरजंगमरूपसंपूर्णजगत्कूंदाहकरैहै॥ तैसे एकहीब्रह्मवेत्ताकाद्वेष विद्यादिकसंपूर्णगुणोंकूंनाशकरैहै ॥ याअर्थविषे यहशा
कल्यहीदृष्टांतहै ॥ काहेतैं? यहशाकल्य यद्यपि बहुतविद्याविषेकुशलथा॥ तथा सर्वगुणोंकरिकैसंपन्नथा ॥ तथापि ब्रह्मवेत्ताकाद्वेष
रूपीअग्निनैं याशाकल्यकूं क्षणमात्रविषेदग्धकरिदिया ॥ किंवा ॥ जैसे यालोकविषेसमुद्रकेसुकावणेकी किसीकूंसंभावनाहोतीन
हीं ॥ तैसे याज्ञवल्क्यकेशापकरिकै याशाकल्यकेमरणेकी यद्यपि किसीप्राणीकूं संभावनानहींथी ॥ तथापि ब्रह्मवेत्तायाज्ञवल्क्यकेद्वे
षकरिकै याशाकल्यका मृत्युहोताभया ॥ यातैं ब्रह्मवेत्ताकाद्वेष अद्भुतप्रभाववालाहै ॥ किंवा सर्वगुणोंकरिकैसंपन्न तथाबहुतवि
द्याविषेकुशल यहशाकल्यभी ब्रह्मवेत्ताकेद्वेषकरिकै जबी याप्रकारकेदुर्गतिकूंप्राप्तहोताभया ॥ तबी विद्यादिकगुणोंतैंरहितइतरपुरुष

ब्रह्मवेत्ताकेद्वेषकरिकै किसदुर्गतिकूंनहींप्राप्तहोवैंगे? ॥ किंतु सर्वदुर्गतियोंकूं प्राप्तहोवैंगे ॥ यातैं ब्रह्मवेत्ताज्ञानीपुरुषकेसाथ कदाचि
तद्वेषनहींकरणा ॥ किंवा ब्रह्मवित्परमाप्नोति ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मवेत्तापुरुष ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहश्रुति हमोंनैं आजदिन
विषे सत्यहुईदेखी ॥ काहेतें? विद्यादिकसर्वगुणसंपन्न जोयहशाकल्यहै ॥ ताकेमारणेविषे जीवोंकासामर्थ्यहैनहीं ॥ किंतु अ
चिंत्यशक्तिपरमात्माकाही यहकार्यहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ यहयाज्ञवल्क्य साक्षात्ब्रह्मरूपहै ॥ किंवा ब्रह्मवेत्तापुरुष स
र्वात्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकीश्रुतिभी आजदिनविषे हमोंनैं सत्यहुईदेखी ॥ काहेतें? जैसे आपणेशत्रुकेनाशहुए देहधारी
जीव सुखकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तैसे याज्ञवल्क्यकाशत्रुजोशाकल्यहै ॥ ताकेनाशहुए संपूर्णलोक सुखकूंप्राप्तभयेहैं ॥ और जैसे देहधा
रीजीव आपणीनिंदाकरतेनहीं ॥ किंतु आपणेतैंभिन्नजीवोंकीनिंदाकरैंहै ॥ तैसे येसंपूर्णलोक याज्ञवल्क्यकीनिंदाकरतेनहीं ॥
किंतु वारंवार शाकल्यकीहीनिंदाकरैंहैं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ ब्रह्मवेत्ता यहयाज्ञवल्क्य सर्वजीवोंकाआत्माहै ॥ जोयहयाज्ञव
ल्क्य सर्वजीवोंकाआत्मारूपनहींहोता तौ जैसे देवदत्तनामापुरुषके शत्रुकेमरणेकरिकै यज्ञदत्तनामापुरुषकूं सुखकीप्राप्तिहोती
नहीं ॥ तैसे याज्ञवल्क्यके शत्रुकेमरणेकरिकै अन्यसर्वलोकोंकूं सुखकीप्राप्तिनहींहोणीचाहीये ॥ और शाकल्यकेमरणेकरिकै सर्व
लोक सुखकूंप्राप्तभयेहैं ॥ यातैं यहयाज्ञवल्क्य सर्वजीवोंका आत्मारूपहै ॥ याकारणतैंही आपणाआत्मारूपजोयाज्ञवल्क्यहै ॥ ता
की कोईप्राणी निंदाकरतानहीं ॥ किंतु संपूर्णलोक शाकल्यकीही निंदाकरैंहैं ॥ किंवा यालोकविषे सर्वपापकर्मोंतैं ब्रह्महत्यारू
पपापकर्म अधिकहोवैहै ॥ और ताब्रह्महत्यातैंभी ब्रह्मवेत्तापुरुषकाद्वेषरूपपापकर्म अधिकहोवैहै ॥ काहेतें? इसजन्मविषेकरीहुईब्र
ह्महत्या इसीजन्मविषे पुरुषकूं दुःखरूपफलकीप्राप्तिकरैंनहीं ॥ किंतु साब्रह्महत्या दूसरेजन्मविषे तापुरुषकूं दुःखरूपफलकीप्रा
प्तिकरैंहै ॥ और यहब्रह्मवेत्तापुरुषकाद्वेषतौ इसजन्मविषे तथाजन्मांतरविषे पुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिकरैंहै ॥ याअर्थविषे यहशाकल्य
हीदृष्टांतहै ॥ काहेतें? उत्तमसिंहजाआसनादिकोंकेयोग्य तथाअत्यंतकोमल जोयहशाकल्यकाशरीरथा सो ब्रह्मवेत्ताकेद्वेषकरिकै
पिशाचउन्मत्तपुरुषकीन्यांई याअपवित्रभूमिविषेपडाहै ॥ यातैं ब्रह्मवेत्ताकेद्वेषकरिकै याशाकल्यकूं इसजन्मविषे परमदुःखकीप्राप्ति

भई है ॥ और याज्ञवल्क्यकेशापतैं याशाकल्यका दक्षिणायनकेकृष्णपक्षकीअमावस्याविषे मृत्युभयाहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ यहशाकल्य अवश्यनरकविषे प्राप्तहोवैगा ॥ किंवा ब्रह्मवेत्तायाज्ञवल्क्यकेसाथ याशाकल्यनैं विनाहीकारणतैं द्वेषकऱ्याथा ॥ ता द्वेषरूपपापकर्मकरिकै केवलशाकल्यकूंही दुःखकीप्राप्तिनहींभई ॥ किंतु याशाकल्यनैं आपणेसंपूर्णबांधवोंकूंभी शोकरूपसमुद्रविषे प्राप्तकऱ्या ॥ और आपणीस्त्रीकूंभी विधवाभावकीप्राप्तिकरी ॥ और आपणेकूंभी नरकविषेप्राप्तकऱ्या ॥ और आपणेकोमलशरीरकूंभी भूमिविषेप्राप्तकऱ्या ॥ और आपणेपुण्यकर्मोंकूंभी पापरूपीअग्निविषेप्राप्तकऱ्या ॥ यातैं जैसे ब्रह्मवेत्ताकेद्वेषकरिकै याशाकल्य केदोनोंलोक भ्रष्टभयेहैं ॥ तैसे अन्यभीजोकोईपुरुष ब्रह्मवेत्ताकेसाथद्वेषकरैगा ॥ तिसकेदोनोंलोक भ्रष्टहोवैंगे ॥ हेशिष्य! इत्यादिक वचनोंकरिकै जनकराजा तथागार्गी तथाअन्यब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र येसंपूर्णलोक याज्ञवल्क्यकीस्तुतिकरतेभये ॥ और शाकल्यकीनिंदाकरतेभये ॥ तिसतैंअनंतर शाकल्यकेशिष्य शाकल्यकेशरीरकूंउठाइकै संस्कारतैंरहितजोलौकिकअग्निहै ताकेविषे जलावतेभये ॥ तिसतैंअनंतर तेश्रद्धावान्शिष्य शाकल्यकेअस्थियोंकूंगृहविषेलेजाणेवासते तिनअस्थियोंकूंदुकूलविषेबांधिकै गृहकूंजातेभये ॥ तहां मार्गविषे चांडालत्वजातिवालेचौर दुकूलविषेअस्थियोंकूंदेखिकरिकै याप्रकारकीकल्पनाकरतेभये ॥ जनकराजाकेयज्ञतैं यहब्राह्मण सुवर्णलेआयेहैं ॥ याप्रकार धनकेलोभयुक्त तेनिर्दयचौर तिनशिष्योंकूंमारिकरिकै दुकूलसहिततिनअस्थियोंकूं आपणेगृहविषेलेजातेभये ॥ हेशिष्य! याप्रकार शाकल्यकेमृत्युहुएतैंअनंतर तथाशाकल्यकेमरणेतैं जोसभाविषे हाहाकारशब्दभयाथा ताशब्दकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर याज्ञवल्क्यमुनि सर्वब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेसर्वब्राह्मणो! तुमसंपूर्णविद्वान्ब्राह्मण कुरुपांचालादिक नानादेशोंतैंचलिकै यासमाजविषेइकठेहुएहो ॥ यातैं हमाराएकवचन तुमसंपूर्ण श्रवणकरो ॥ तुमसंपूर्णब्राह्मणोंविषे जोब्राह्मण हमारेप्रति प्रश्नकरणेकीइच्छाकरताहोवै ॥ सोब्राह्मण निःशंकहोइकै हमारेप्रति प्रश्नकरै ॥ अथवा जोब्राह्मण हमारेप्रश्नकेउत्तरदेणेकीइच्छाकरताहोवै ॥ तिसब्राह्मणकेप्रति मैं प्रश्नकरताहूं ॥ और जोकिसी एकब्राह्मणविषे प्रश्नकरणेका तथा उत्तरदेणेका सामर्थ्य नहींहोवै तौ तुमसंपूर्णब्राह्मण मिलिकै हमारेप्रतिप्रश्नकरो ॥

अथवा ॥ तुमसंपूर्णब्राह्मणोंकेप्रति मैं प्रश्नकरताहूं॥ यादोनोंवार्ताविषे जोतुमारीइच्छाहोवै सोकरो॥ हे शिष्य! याप्रकारकावचन जबी याज्ञवल्क्यनैं सर्वब्राह्मणोंकेप्रति कह्या ॥ तबी तेसंपूर्णब्राह्मण याज्ञवल्क्यकेप्रति प्रश्नकरणेविषे तथा याज्ञवल्क्यके प्रश्नकाउत्तरदेणेविषे समर्थनहींहोतेभये॥ किंतु शाकल्यकेमृत्युकूंदेखिकै भयभीतहुए तेब्राह्मण मौनकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तिसतैंअनंतर सोयाज्ञवल्क्य आपणेविद्याकीउत्कृष्टताबोधनकरणेवासते आपही सर्वब्राह्मणोंकेप्रति प्रश्नकरताभया ॥ हेब्राह्मणो! जैसे लोकविषे पुष्पोंतैंविनाही फलकूंग्रहणकरणेहारे पिप्पलादिकवृक्ष मिथ्याप्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे यहमनुष्यादिकशरीरभी मिथ्याही प्रतीतहोवैहैं॥ अब मनुष्यादिकशरीरोंविषे तथापिप्पलादिकवृक्षोंविषे समानता दिखावैहैं॥ हेब्राह्मणो! जैसे पिप्पलवृक्षकेअनेकपत्रहोवैहैं॥ तैसे यामनुष्यादिकशरीरकेअनेकलोमहैं॥ और जैसे पिप्पलवृक्षकी बाह्यत्वचा कठिनहोवैहै ॥ तैसे याशरीरकीभी बाह्यत्वचाकठिनहै ॥ और जैसे कुठारकरिकैछेदनकियेहुए वृक्षकेभीतरसैं रसनिकसैहै ॥ तथा श्वेतवस्त्रकेसमान त्वचाकानीचला भागनिकसैहै ॥ तैसे शस्त्रकरिकैछेदनहुए याशरीरतैंभी रुधिरनिकसैहै ॥ तथा श्वेतवस्त्रकेसमान त्वचाकानीचलाभागनिकसैहै ॥ और जैसे कुठारकरिकैछेदनकियेहुए वृक्षतैं काष्ठमयखंड बाहरिनिकसैहैं॥ तैसे शस्त्रकरिकैछेदनकियेहुए याशरीरतैंभी मांसमयखंड बाहरिनिकसैहैं॥ और जैसे पिप्पलादिकवृक्षोंविषेस्थितनाडियां मिलिकरिकै ग्रंथीकूंकरैहैं॥ तैसे मनुष्यादिकशरीरोंविषेभी अनेक सूक्ष्मनाडियां मस्तकादिकअंगोंविषे इकठीहोइकै ग्रंथीकूंकरैहैं ॥ और जैसे वृक्षकेभीतरि कठिनसारभागहोवैहै ॥ तैसे यामनुष्यादिकशरीरोंविषेभी कठिणअस्थियांहैं॥ और जैसे वृक्षके कठिनसारभागविषे रसहोवैहै॥ तैसे यामनुष्यादिकशरीरोंकेअस्थियोंविषे मज्जारूपीरसहोवैहै ॥ यातैं मनुष्यादिकशरीरोंविषे तथापिप्पलादिकवृक्षोंविषे सर्वप्रकारतैं समानताप्रतीतहोवैहै ॥ परंतु हेब्राह्मणो! मनुष्यादिकशरीरोंविषे तथापिप्पलादिकवृक्षोंविषे एकविशेषताभी प्रतीतहोवैहै ॥ साविशेषता जिसकारणतैंहै॥ सो कारण तुमसंपूर्णब्राह्मण हमारेप्रति कथनकरो ॥ अब ताविशेषताकूंदिखावैहैं॥ हेब्राह्मणो! जैसे कुठारादिकोंकरिकै छेदनहुआवृक्ष पुनःतिसीमूलतैं नवीनहोइकै उत्पन्नहोवैहै ॥ यहसर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ तैसे नाशकूंप्राप्तहुए यहशरीरादिक जिसमू

लतैंनवीनहोइके उत्पन्नहोवैहैं ॥ सोमूल प्रत्यक्षदेखातानहीं ॥ और मूलतैंविना नवीनशरीरोंकी उत्पत्तिसंभवैनहीं ॥ यातैं शरीरा
दिकोंकाभी कोईमूलहोवैगा ॥ सोमूल तुमसर्वब्राह्मण हमारेप्रतिकहो ॥ और हेब्राह्मणो! जोतुम पिताकावीर्य तथामाताकारक्त या
शरीकामूलकहो ॥ सोयहतुमाराकहणा संभवैनहीं ॥ काहेतैं? प्राणोंकूंधारणकरणेहारे जेदेहधारीजीवहैं ॥ तिनोंविषे अन्नादिकोंके
भक्षणतैं वीर्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और हमारेपूछणेकातौ यहअभिप्रायहै ॥ जिससुषुप्तिअवस्थाविषे तथाप्रलयअवस्थाविषे संपू
र्णकार्यप्रपंचकानाशहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर किसमूलकाकारणतैं नवीनदेहादिक उत्पन्नहोवैहैं ॥ और मातापितादिकोंकेशरीर प्र
लयकालविषेहैनहीं ॥ यातैं देहकामूलकारण वीर्यनहीं ॥ और हेब्राह्मणो! जोतुमयहकहो ॥ जैसे पिप्पलकावृक्ष प्रसिद्धआपणेमूलतैं
विनाभी अन्यवृक्षकेऊपरि नवीनहोइकैउत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे यहशरीरभी मूलतैंविनाही नवीनहोइकैउत्पन्नहोवैगा ॥ सोयहतुमारा
कहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं! अन्यवृक्षकेऊपरि जोपिप्पलकावृक्षउत्पन्नहोवैहै ॥ सो यद्यपि आपणेमूलतैं उत्पन्नहोवैनहीं ॥ त
थापि तावृक्षकेऊपरि पिप्पलकेबीजकूंपक्षीलेजावैहैं ॥ ताबीजतैं तहां पिप्पलकावृक्ष उत्पन्नहोवैहै ॥ बीजतैंविना अन्यवृक्षकेऊपरि
पिप्पलकावृक्ष उत्पन्नहोवैनहीं ॥ तैसे याशरीरादिकोंके मूलरूपकारणकेअभावहुएभी बीजरूपकारण कोईतुमारेकूं कह्याचाहीये ॥
सोबीजकेसमान याशरीरादिकोंकाकौनकारणहै? यहतुमकहो ॥ और हेब्राह्मणो! जोतुमयहकहो शरीरादिकप्रपंचकेमूलरूप
कारणके तथाबीजरूपकारणके निश्चयकरणेकरिकै किसीप्रयोजनकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ सोयहतुमाराकहणा संभवैनहीं ॥ काहेतैं? जै
से जिसपुरुषकूं वृक्षकेनाशकरणेकीइच्छाहोवैहै ॥ सोपुरुष तावृक्षकेमूलका कुठारकरिकैछेदनकरैहै ॥ तथा तावृक्षकेबीजकूं अग्निवि
षेजलावैहै ॥ तादोनोंउपायोंकरिकै वृक्षकानाशहोवैहै ॥ तैसे याअधिकारीपुरुषकूं जबी शरीरादिकप्रपंचकेमूलका तथाबीजका ज्ञा
नहोवैहै ॥ तबी सोअधिकारीपुरुष असंगबुद्धिरूपशस्त्रकरिकै तथाज्ञानरूपी अग्निकरिकै तामूलबीजकानाशकरैहै ॥ मूलादिकोंके
ज्ञानतैंविना ताकानाशकरणासंभवैनहीं ॥ यातैं देहादिकप्रपंचकामूलरूपकारण तथाबीजरूपकारण अवश्यजान्याचाहीये ॥ और
हेब्राह्मणो! जोतुमयहकहो ॥ जोपदार्थ एकवार उत्पन्नहोताहै ॥ सोपदार्थ पुनःदूसरीवार उत्पन्नहोतानहीं ॥ किंतु स्वभावरूप

कारणतैं अपूर्वपदार्थही उत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं मूलकेविचारकरणेका कछुप्रयोजननहीं ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं? जोएकवार उत्पन्नहुएपदार्थकी पुनःउत्पत्ति नहींअंगीकारकरिये तौ करेहुएपुण्यपापरूपकर्मोंका भोगेतैंविनाहीनाशहोवैगा ॥ औ र नकरेहुएपुण्यपापरूपकर्मोंका सुखदुःखरूपफल भोगणाहोवैगा ॥ यहकृतनाश अकृताभ्यागमरूप दोनोंदोषोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोपूर्वउत्पन्नहुएपदार्थकी पुनःउत्पत्ति अंगीकारकरिये तौ येदोनोंप्रकारकेदोष प्राप्तहोवैंनहीं ॥ काहेतैं? पूर्वजन्मविषे या जीवनैं जोपुण्यपापरूपकर्मकरेहैं ॥ तिनपुण्यपापरूपकर्मोंकाफल सुखदुःख इसजन्मविषेभोगेहै ॥ और इसजन्मविषे जोजीवपुण्य पापरूपकर्मोंकूंकरेहै ॥ तिनकर्मोंकाफल जन्मांतरविषे भोगेगा ॥ यातैं पूर्वउत्पन्नहुएपदार्थविषेही पुण्यपापरूपअदृष्टरहेहै ॥ और जोपदार्थ नरशृंगकीन्यांई पूर्वकदाचित्‌भीउत्पन्ननहींभया ॥ तापदार्थविषे पुण्यपापरूपअदृश्य संभवैनहीं ॥ किंवा जोपूर्वउत्प न्नहुएपदार्थकी पुनःउत्पत्ति नहींअंगीकारकरिये तौ माताकेगर्भतैं निकस्याहुआबालक तिसीकालविषे स्तनपानविषे प्रवृत्तहोवैहै सोनहोणाचाहिये ॥ काहेतैं? यहपदार्थ मेरेसुखकासाधनहै याप्रकारका सुखसाधनताज्ञान जीवोंकेप्रवृत्तिविषेकारणहै ॥ सुखसाध नताज्ञानतैंविना किसीजीवकीप्रवृत्तिहोतीनहीं ॥ और जन्मकालविषे यहस्तनपान हमारेसुखकासाधनहै याप्रकारकाज्ञानताबा लककूंहैनहीं ॥ यातैं ताबालककी स्तनपानविषे प्रवृत्तिनहींहोणीचाहिये ॥ और उत्पन्नहुएपदार्थकी जोपुनःउत्पत्तिअंगीकारक रिये तौ यादूषणकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ काहेतैं? जन्मकालविषे याजीवकूं यद्यपियहस्तनपानहमारेसुखकासाधनहै याप्रकारकाज्ञान अनुभवरूपनहीं ॥ तथापि पूर्वअनंतजन्मोंविषे यहजीव स्तनपानविषे सुखकीसाधनताका अनुभवकरिआयाहै ॥ ताअनुभवजन्य संस्कारोंतैं याजीवकूं जन्मकालविषे यहस्तनपानहमारेसुखकासाधनहै याप्रकारकास्मृतिज्ञानहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर यहबालक स्तनपानविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ यातैं उत्पन्नहुएपदार्थकीहीउत्पत्तिहोवैहै ॥ अपूर्वपदार्थकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणो! जोतुम यहकहो जैसे बीजतैं अंकुरहोवैहै ॥ और अंकुरतैं पुनःबीजहोवैहै ॥ तैसे पुण्यपापरूपअदृष्टतैं यहशरीरहोवैहै ॥ औ याशरीरतैं पुनःपुण्यपापरूपअदृष्टहोवैहै ॥ यातैं दूसरेकिसीकारणकाविचारकरणा निष्फलहै ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं?

जैसे बीजविषे तथा अंकुरविषे पृथिवीरूपकारण अनुगतहुआप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे पुण्यपापरूपअदृष्टविषे तथाशरीरविषे कोई अनुगतकारण प्रतीतहोतानहीं ॥ यातें बीजअंकुररूपविषमदृष्टांतकरिकै अदृष्टशरीरका कार्यकारणभावसिद्धहोवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणो! जैसे बीजविषे तथाअंकुरविषे पृथिवीरूपमूलकारण अनुगतहै ॥ तैसे पुण्यपापरूपअदृष्टविषे तथाशरीरविषेभी कोईमूलभूतकारण अनुगतहोवैगा ॥ सोमूलभूतकारण यद्यपि प्रत्यक्षादिकलौकिकप्रमाणोंकरिकै सिद्धनहींहै ॥ तथापि वेदरूप अलौकिकप्रमाणकरिकै सिद्धहै ॥ यातें पुण्यपापरूपअदृष्टका तथाशरीरादिकप्रपंचका जोउपादानकारणहै ॥ ताकास्वरूप तथा लक्षण तुमसर्वब्राह्मण हमारेप्रति कथनकरो ॥ हेशिष्य! याप्रकारकाप्रश्न जबीयाज्ञवल्क्यनैं सर्वब्राह्मणोंकेप्रतिकऱ्या ॥ तबी तेसंपूर्णब्राह्मण जगत्केकारणकूं नहींजाणतेभये ॥ यातें तेसंपूर्णब्राह्मण पराजयकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तिसतैंअनंतर सोयाज्ञवल्क्य मुनि मुमुक्षुजनोंकेहितवासते आपही ताप्रश्नकेउत्तरकूंकहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेब्राह्मणो! स्थूलसूक्ष्मरूप जितना जडप्रपंचहै ॥ तिसका विज्ञानआनंदरूप परमात्माही कारणहै ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव? सुवर्णादिकपदार्थोंकेदानकरणेहारे जेपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं सुखरूपफलकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ और ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंके करणेहारे जेपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ इहांयहतात्पर्यहै ॥ परमात्माका दोप्रकारकालक्षणहोवैहै ॥ एकतौ स्वरूपलक्षण और दूसरा तटस्थलक्षण ॥ तहां जोलक्षण आपणेलक्ष्यकास्वरूपहुआ इतर पदार्थोंतैंआपणेलक्ष्यकीव्यावृत्तिकरैहै ताकूं स्वरूपलक्षणकहैहैं ॥ जैसे विज्ञान आनंद ब्रह्मकेस्वरूपभूतहुए जडप्रपंचतैं ब्रह्मकीव्यावृत्तिकरैहैं ॥ यातें विज्ञानआनंद यहब्रह्मका स्वरूपलक्षणहै ॥ और जोलक्षण आपणेलक्ष्यविषेसर्वदानहींरहैहैं ॥ किंतु कदाचित्रहैहै कदाचित्नहींरहैहै ॥ और आपणेलक्ष्यकूं इतरपदार्थोंतैंभिन्नकरिकैजनावैहै ताकूं तटस्थलक्षणकहैहैं ॥ जैसे सुखदुःखरूपफलदातृत्व ब्रह्मविषे सर्वदारहैनहीं ॥ किंतु जगत्केस्थितिकालविषेरहैहै ॥ और आकाशादिकजडपदार्थोंतैं लक्ष्यरूपब्रह्मकीव्यावृत्तिकरैहै ॥ यातें सुखदुःखरूपफलदातृत्व ब्रह्मकातटस्थलक्षणहै ॥ इसप्रकार जगत्केमूलकारणकूंनिरूपणकरिकै अब पूर्वउक्तवृक्षरूपदृष्टांतकी समानतादि

खावैहैं ॥ हेब्राह्मणो ! जैसे वृक्षके मूलकेनाशहुएभी पुनःवृक्षकीउत्पत्तिविषे बीज कारणहोवैहै ॥ तैसे याजीवोंके स्थूलशरीरकेनाश हुएभी पुनःस्थूलशरीरकीउत्पत्तिविषे सूक्ष्मशरीर कारणहै ॥ और जैसे तिनबीजोंकेभीनाशहुएतैंअनंतर केवलपृथिवी स्थितहोवैहै तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे तथाप्रलयकालविषे तासूक्ष्मशरीरकेभी लयहुएतैंअनंतर केवलअज्ञान स्थितहोवैहै ॥ शंका ॥ हेयाज्ञवल्क्य! अज्ञानतैं तथासूक्ष्मशरीरतैंही सर्वजगत्कीउत्पत्ति संभवहोइसकैहै ॥ ब्रह्मकूं किसवासतेअंगीकारकरणा? ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो! जैसे वृक्षकीउत्पत्तिकरणेविषे बीजकूं अदृष्टरूपनिमित्तकारणकीअपेक्षाहोवैहै तैसे स्थूलशरीरकीउत्पत्तिकरणेविषे सूक्ष्मशरीरकूं परमात्माकीअपेक्षाहोवैहै ॥ चैतन्यरूपपरमात्माकीसत्तातैंविना जडसूक्ष्मशरीर स्थूलशरीरकीउत्पत्तिकरिसकैनहीं ॥ यातैं परमात्माकूं अवश्यअंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ किंवा पृथिवीविषेस्थितजोबीजहै ॥ तीनोंका अंकुररूपकार्यद्वारा ज्ञानहोवैहै ॥ तहां पृथिवीविषे संस्काररूपकरिकैजोबीजोंकीस्थितिहै ॥ सा अंकुररूपकार्यद्वारा बीजोंकेज्ञानविषेकारणहै ॥ काहेतें? जोसंस्काररूपकरिकैबीज पृथिवीविषेनहींहोवै तौ अंकुररूपकार्यद्वारातिनबीजोंकाज्ञान होवैगानहीं ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे तथाप्रलयकालविषे स्थितजो अज्ञानहै ॥ सोअज्ञानही सृष्टिकालविषे सूक्ष्मशरीराकार परिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं अज्ञानविषे जोसूक्ष्मशरीरकेसंस्कारहैं ॥ तेसंस्कार सूक्ष्मशरीरकीउत्पत्तिकेकारणहैं ॥ काहेतें ? जोप्रलयकालविषे सूक्ष्मशरीरकेसंस्कार अज्ञानविषेनहींहोवै तौ सृष्टिकालविषे अज्ञानतैं सूक्ष्मशरीरकीउत्पत्ति नहींहोणीचाहिये ॥ यातैं प्रलयकालविषे सूक्ष्मशरीरकेसंस्कार अज्ञानविषेरहै हैं ॥ और तेसंस्कार अत्यंतसूक्ष्महैं ॥ यातैं सर्वज्ञपरमात्मातैंविना किसीजीवकरिकैजान्येजावैनहीं ॥ यातैं तिनसूक्ष्मसंस्कारोंकूंजानणेहारा सर्वज्ञपरमात्मा अवश्यअंगीकारकऱ्याचाहीये ॥ किंवा जैसे अमूर्त्तआकाशविषे यहमूर्त्तरूपपृथिवीस्थितहै ॥ तैसे विज्ञानरूपपरमात्माविषे यहजडअज्ञानस्थितहै ॥ चैतन्यरूपपरमात्मातैंविना अन्यकिसीपदार्थविषे अज्ञानरहैनहीं ॥ काहेतें? चैतन्यपरमात्मातैं भिन्न जितनेजडपदार्थ हैं ॥ ते अज्ञानकाकार्य हैं ॥ यातैं तिनजडपदार्थोंविषे अज्ञानरहैनहीं ॥ किंवा अज्ञान जिसकेआश्रितरहैहै ॥ तिसीपदार्थकूं अंधकारकीन्यांई आवरणकरैहै ॥ यहअज्ञानकास्वभावहै ॥ और आकाशादिकजडपदार्थ

स्वभावतैंहीआवरणरूपहैं ॥ यातैं अज्ञानकृतआवरण तिनजडपदार्थोंविषेसंभवैनहीं ॥ याकारणतैंभी जडपदार्थोंविषे अज्ञान नहींरहैहै ॥ किंवा जोवादी आकाशादिकजडपदार्थोंकेआश्रित अज्ञानकूंअंगीकारकरै ॥ तासैं यहपूछाचाहीये ॥ जबी आकाशादिकजडपदार्थ नहींउत्पन्नभयेथे ॥ तबी सोअज्ञान आश्रयतैंविनारहताथा ॥ अथवा किसीदूसरेकेआश्रितरहताथा ॥ तहां जोप्रथम निराश्रयपक्ष अंगीकारकरो सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं? लोकविषे अज्ञानहै याप्रकारकाशब्दश्रवणकरिकै लोक यह पूछे हैं॥ किसवस्तुकाअज्ञानहै तथाकिसविषेअज्ञानहै? ॥ याप्रकारकेलोकोंकेअनुभवतैं अज्ञानविषेआश्रयकी तथाविषयकी अवश्यअपेक्षारहैहै ॥ यातैं आश्रयतैंविना अज्ञानरहैनहीं ॥ और आकाशादिकजडपादार्थोंकीउत्पत्तितैंपूर्व किसीदूसरेकेआश्रित अज्ञानरहैहै ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तासैंयहपूछाचाहीये ॥ सोदूसरा जीवहै अथवा ईश्वरहै अथवा शुद्धपरमात्मा है?॥ तहां जीवईश्वरविषेतौ अज्ञानकीआश्रयतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं? अज्ञानविशिष्टचैतन्यकानाम जीवईश्वरहै ॥ ताजीवईश्वरविषे जोअज्ञानकीआश्रयतामानिये ॥ तौ अज्ञानविषे अज्ञानकीआश्रयतारूप आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं जीवईश्वरके आश्रित अज्ञाननहीं ॥ किंतु परिशेषतैं शुद्धपरमात्माकेआश्रित अज्ञानरहैहै॥ यह सर्ववेदांतकासिद्धांतहै ॥ और हेब्राह्मणो! जैसे यालोकविषे निर्धनपुरुष धनीपुरुषकूंआश्रयणकरैहै ॥ तैसे दुःखरूपयहअज्ञान विज्ञानआनंदरूपआत्माकूं आश्रयणकरैहै ॥ अब विज्ञानआनंददोनोंका अभेददिखावैहैं॥ हेब्राह्मणो! यालोकविषेभी विज्ञानतैंभिन्न आनंददेखीतानहीं॥काहेतैं? मैंसुखीहूं याप्रकारकेज्ञानतैंविना आनंदकीसिद्धिहोवैनहीं॥ यातैं आनंद विज्ञानरूपहै ॥ **शंका** ॥ जैसे मैंसुखीहूंयाप्रकारकेविज्ञानतैंविना सुखकी सिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं सुख विज्ञानरूपहै ॥ तैसे मैंदुःखीहूं याप्रकारकेज्ञानतैंविना दुःखकीभीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं दुःखभी विज्ञानरूपहोणाचाहीये ॥ **समाधान** ॥ हेब्राह्मणो! सुख विज्ञानरूपहै याकेविषे केवललोकप्रसिद्धिप्रमाणनहीं ॥ किंतु विज्ञानमानंदंब्रह्म ॥ यहश्रुतिभीप्रमाणहै ॥ तैसे दुःखकीविज्ञानरूपताविषे कोईश्रुति तथाप्रत्यक्षादिकप्रमाण हैनहीं॥ यातैं दुःख विज्ञानरूप नहीं ॥ **शंका** ॥ हेयाज्ञवल्क्य! सर्वशास्त्रोंविषे अप्राप्तवस्तुकीप्राप्तिरूपयोग तथाप्राप्तवस्तुकापरिपालनरूपक्षेम यादोनोंरूपों

करिकै सुखदुःखकीसमानताही कथनकरीहै ॥ यातैं जोसुखकूंविज्ञानरूपमानोंगे तौ दुःखकूंभीविज्ञानरूपता होणीचाहिये ॥ औ
र जोसुखकूं विज्ञानरूपमानिकै दुःखकूं विज्ञानरूपनहींमानोंगे तौ सर्वशास्त्रोंविषेकथनकरीहुई सुखदुःखकीसमानयोगक्षेमता
असंगतहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो! यद्यपि सर्वशास्त्रोंविषे सुखदुःखकीसमानताकहीहै ॥ तथापि सुखदुःखविषे याप्रका
रकीविलक्षणता सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ संपूर्णलोक यहसुख हमारेकूंसर्वदाहोवै याप्रकार आत्मासंबंधिसुखकीइच्छाकरै हैं ॥
और संपूर्णलोक यहदुःख हमारेकूं कदाचित्भीनहोवै याप्रकार दुःखविषेद्वेषबुद्धिकरै हैं ॥ याकहणेतैं यहसिद्धभया ॥ मेरेकूं यहप
दार्थ सर्वदाहोवै याप्रकारकीइच्छाकाविषय जोपदार्थहोवैहै सोपदार्थ अनुकूलहोवैहै ॥ तथा स्वशब्दकरिकैप्रतिपाद्यहोवैहै ॥ और
मेरेकूं यहपदार्थ कदाचित्भीनहींहोवै याप्रकारकीइच्छाकाविषय जोपदार्थहोवैहै सोपदार्थ प्रतिकूलहोवैहै॥ तथा स्वशब्दकरिकैअ
प्रतिपाद्यहोवैहै ॥ तहां मेरेकूंसर्वदासुखहोवै याप्रकारकीइच्छा सर्वजीवोंकूंहोवैहै ॥ ताइच्छाविषेभी सर्वदासुखहोवै इतनेंअंशकरिकै
तौ सुखविषे अनुकूलताप्रतीतहोवैहै॥ और मेरेकूं इतनेंअंशकरिकै सुखविषे स्वशब्दकीप्रतिपाद्यता प्रतीतहोवैहै॥ यातैं यहसुखका
लक्षणसिद्धभया ॥ जो सर्वदाअनुकूलहोवै तथास्वशब्दकरिकैप्रतिपाद्यहोवै ताकूं सुखकहैहैं॥ और मेरेकूं दुःख कदाचित्भीनहोवै
याप्रकारकीइच्छाभी सर्वजीवोंकूंहोवैहै॥ यातैं दुःखका यहलक्षणसिद्धभया॥ जो सर्वजीवोंकूंप्रतिकूलहोवै तथा स्वशब्दकरिकैअप्र
तिपाद्यहोवै ताकूं दुःखकहैहैं ॥ तहां जोअनुकूलहोवै ताकूंसुखकहैहैं इतनाजो सुखकालक्षणकरिये तौ वैरीपुरुषकासुखभी सुखरूप
करिकैअनुकूलहीहै॥ यातैं वैरीपुरुषकासुखभी अन्यपुरुषकूं सुखरूपहोणाचाहिये॥ और वैरीकासुख किसीकूं सुखरूपहोइकैप्रती
तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं स्वशब्दकरिकैप्रतिपाद्यकह्या ॥ और जोस्वशब्दकरिकैप्रतिपाद्यहोवै ताकूंसुखकहैहैं ॥ इतनाहीजोसु
खकालक्षणकरिये तौ यहमेराशत्रुहै यहमेरादुःखहै याप्रकारकीप्रतीति सर्वजीवोंकूंहोवैहै ॥ इहां स्वशब्दकरिकैप्रतिपाद्यता वै
रीविषे तथादुःखविषेभी प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं वैरी तथादुःखभी सुखरूपहोणाचाहिये ॥ याकारणतैं अनुकूलकह्या ॥ वैरीविषेत
थादुःखविषे किसीकूंअनुकूलताज्ञानहैनहीं ॥ शंका ॥ जो अनुकूलहोवै तथास्वशब्दकरिकैप्रतिपाद्यहोवै ताकूं सुखकहैहैं ॥ यासुख

केलक्षणविषे स्वशब्दकाअर्थ आत्माकासबंधीलेणा॥ अथवा स्वशब्दकाअर्थ आत्माहीलेणा ॥ तहां जोआत्माकासंबंधी स्वशब्दका अर्थमानिये तौ जैसे आत्माकेसंबंधीशरीरादिक आत्मारूपनहीं हैं॥ तैसे आत्माकासंबंधीसुखभी आत्मारूपनहींहोवैगा ॥ और जो स्वशब्दकाअर्थ आत्मा मानिये तौमेरेकूंसुखहोवै याप्रतीतिविषे सुखका तथाआत्माका भेदप्रतीतहोवैहै सो नहोणाचाहिये॥ किंतु मैंसुखीहूं याप्रकारकीप्रतीतिहोणीचाहिये॥**समाधान**॥ सुखकेलक्षणविषे जोस्वशब्दहै॥ ताका आत्माकासंबंधी अर्थनहीं॥ किंतु आत्माही तास्वशब्दकाअर्थहै॥ यातैं सुख आत्मारूपहै॥ और जैसे लोकविषे यहपुरुष आपका आपहीउपकारकरताहै याप्रकारकाशब्द उच्चारणकरैहैं॥ ताशब्दकरिकै यद्यपि आपणेविषेआपणाभेद प्रतीतहोवैहै॥ तथापि आपणेविषेआपणाभेदहैनहीं॥ यातैं साप्रतीति भ्रमरूपहै॥ तैसे श्रुतिप्रमाणकरिकै सुखआत्माकेअभेदकीसिद्धिहुएभी मेरेकूंसुखहोवै याप्रकारकेशब्दकरिकै जोसुखआत्माका भेदप्रतीतहोवैहै साप्रतीति भ्रांतिरूपहै॥ यातैं ताभ्रांतिज्ञानकरिकै सुखआत्माकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ किंवा सुखका तथाआत्माका जोपरस्परसंबंधहै सोनित्यहै ॥ काहेतें? जोसुखआत्माकासंबंध अनित्यमानिये तौ जोअनित्यपदार्थहोवैहै ॥ सो किसीकालविषेहोवैहै और किसीकालविषेनहींहोवैहै ॥ जैसे घटादिकअनित्यपदार्थ किसीकालविषेहै और किसीकालविषेनहीं है ॥ तैसे सुखआत्माकासंबंधभी जिसकालविषेनहींहोवैगा ॥ तिसकालविषे आत्मा सुखतैंभिन्नहोवैगा ॥ और जो सुखतैंभिन्नहोवैहै ॥ सोदुःखकीन्याईं प्रतिकूलहीहोवैहै॥ यातैं आत्माविषेभी प्रतिकूलताहोणीचाहिये ॥ और किसीकालविषे किसीजीवकूं आपणेआत्माविषे प्रतिकूलताहोवैनहीं ॥ किंतु सर्वजीवोंकूं आपणेआत्माविषे अनुकूलताहीहोवैहै ॥ यातैं सुखआत्माका नित्यसंबंधहै ॥ **शंका** ॥ समवायसंबंधकूंही नैयायिक नित्यसंबंधमानैहैं ॥ और गुण द्रव्यविषे समवायसंबंधकरिकैरहैहैं ॥ यातैं सुखरूपगुणभी आत्माविषे समवायसंबंधकरिकै रहैहै ॥ और जिनोंका समवायसंबंधहोवैहै ॥ तिनोंका परस्पर भेदहीहोवैहै ॥ यातैं सुखआत्माका भेदहीसिद्ध होगा ॥ **समाधान** ॥ सुखआत्माका परस्पर समवायसंबंधनहीं ॥ किंतु कल्पितभेदयुक्त वास्तवअभेदरूप जोतादात्म्यसंबंधहै ॥ सोतादात्म्यही सुखआत्माका नित्यसंबंधहै ॥ काहेतें? नेतिनेति यहश्रुति आत्मातैंभिन्न सकलजगत्कानिषेधकरैहै॥ और हेब्राह्म

णो! जैसे सुख आत्मातैंभिन्ननहीं ॥ तैसे विज्ञानभी आत्मातैंभिन्ननहीं ॥ काहेतें? जोविज्ञानकूं आत्मातैंभिन्न अंगीकारकरिये तौ
जैसे बुद्धिकीवृत्तिरूप गौणज्ञान आत्मातैंभिन्नहै यातें जडरूपहै ॥ तैसे आत्मातैंभिन्नहुआविज्ञानभी जडरूपहोवैगा ॥ और जोजो
पदार्थ जडहोवैहै ॥ तिसकूं आपणीसिद्धिवासते अन्यज्ञानकीअपेक्षारहैहै ॥ जैसे घटादिकजडपदार्थ आपणीसिद्धिविषे अन्यज्ञा
नकीअपेक्षाकरैहैं ॥ तैसे जडविज्ञानभी आपणीसिद्धिविषे किसीअन्यविज्ञानकीअपेक्षाकरैगा ॥ और सोदूसराविज्ञानभी आपणी
सिद्धिविषे किसीतीसरेविज्ञानकीअपेक्षाकरैगा ॥ याप्रकार विज्ञानोंकीअनवस्थारूपदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ किंवा जो आपणी
सिद्धिविषे अन्यविज्ञानकीअपेक्षाकरैहै ॥ सो विज्ञानरूपहोवैनहीं ॥ जैसे घटादिकपदार्थ आपणीसिद्धिविषे अन्यविज्ञानकीअपे
क्षाकरैहैं ॥ यातें घटादिक विज्ञानरूपनहीं ॥ तैसे विज्ञानभी जोआपणेप्रकाशवासते दूसरेविज्ञानकीअपेक्षाकरैगा तौ विज्ञान
भी घटादिकोंकीन्यांई अविज्ञानरूपहोवैगा ॥ और विज्ञानकूं अविज्ञानरूपकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ यातें सुखकीन्यांई विज्ञान
भी स्वप्रकाशआत्मारूपहै ॥ और हेब्राह्मणो! संपूर्णजगत्विषे मिथ्यात्वबोधनकरणेवासते श्रुति विज्ञानआनंदरूपआत्माकूं ब्रह्म
रूपकरिकै कथनकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ देशपरिच्छेद कालपरिच्छेद वस्तुपरिच्छेद यातीनपरिच्छेदोंतैंरहितमहान्अर्थकूं ब्रह्मशब्द बो
धनकरैहै ॥ तहां प्रपंचकूं जोसत्यमानिये तौ ब्रह्मविषे वस्तुपरिच्छेदकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातें ब्रह्मशब्द आत्मातैंभिन्न सर्वजगत्विषे
मिथ्यात्वकूंबोधनकरताहै ॥ और हेब्राह्मणो! जैसे एकहीआकाशविषे घटमठादिकउपाधियोंकरिकै नानाप्रकारकाभेद प्रतीतहोवैहै॥
तैसे एकहीअद्वितीयआत्माविषे अज्ञानादिकउपाधियोंकरिकै नानाप्रकारकाभेद प्रतीतहोवैहै॥ यातें ब्रह्मविषे सजातीयभेदनहीं ॥
और हेब्राह्मणो! जैसे मायावीपुरुषनें आपणीमायाकरिकै आकाशविषे उत्पन्नकन्याजो मायामयशरीर ताशरीररूपउपाधिकेविद्य
मानहुए मायावीपुरुषका जोआकाशादिकोंविषेभेद प्रतीतहोवैहै॥ तथा आकाशादिकोंका जोमायावीपुरुषविषेभेद प्रतीतहोवैहै ॥
सोभेद उपाधिकेमिथ्याहोणेतैं मिथ्याहीहै॥ तैसे अज्ञानादिकउपाधियोंकेमिथ्याहोणेतैं तिनअज्ञानादिकोंकरिकैकन्याहुआ जोब्रह्म
विषेनानाप्रकारकाभेदहै सोभी मिथ्याहीहै॥ यातें विजातीयभेदभी ब्रह्मविषेनहीं ॥ और विज्ञानआनंदरूपब्रह्म सर्वदाएकरसहै तथा

निरवयवहै॥ यातैं स्वगतभेदभी ब्रह्मविषेनहीं ॥ और हेब्राह्मणो! यहजोविज्ञानआनंदरूपब्रह्म हमनैं तुमारेप्रतिकथनकऱ्याहै ॥ सो शुद्धब्रह्म जगत्काकारणहोवैनहीं॥ किंतु मायाकरिकैविशिष्टहुआ सोब्रह्म जगत्काकारणहोवैहै॥ याअभिप्रायकरिकैही श्रुतिनैं पुण्यपापकेफलप्रदाताकूं जगत्काकारण कह्याहै॥ शुद्धब्रह्मविषे फलप्रदातृत्वसंभवैनहीं॥ और हेब्राह्मणो! मायाविषे जगत्कीकारणता बोधनकरणेवासते मायाविशिष्टपरमात्माविषे जगत्कीकारणता पूर्वकथनकरी॥ परंतु याअर्थविषेभी अनुपपत्तिरूपदूषणकीप्राप्तिहोवैहै॥ काहेतें? चैतन्यकीसत्तातैंविना साजडमाया आपणीस्थितिकरणेविषेभी समर्थनहींहोवैहै तौ संपूर्णजगत्केनिर्वाहकरणेविषे साजडमाया किसप्रकार समर्थहोवैगी?॥ याप्रकारकेअनुपपत्तिकाविचारकरिकै सोवेदभगवान् केवलशुद्धब्रह्मकूंही सर्वजगत्काअधिष्ठानकथनकरताभयाहै॥ और हेब्राह्मणो! सोब्रह्म केवल जडअज्ञानकाअधिष्ठाननहीं॥ किंतु ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकै जिनपुरुषोंकूं मैंब्रह्महूं याप्रकारकाअभेदज्ञानभयाहै॥ तिनविद्वान्पुरुषोंकाभी सोशुद्धब्रह्मही परमस्थानहै॥ श्रीगुरुरुवाच॥ हेशिष्य! मायाकरिकैविशिष्टहुआ जोब्रह्म पुण्यपापकेफलकादाताहै॥ और मायातैंरहितहुआ जोब्रह्म ज्ञानीपुरुषोंकाआत्माहै॥ सोईहीब्रह्म याजगत्का उपादानकारणहै॥ याअभिप्रायकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं सर्वब्राह्मणोंतैं जगत्काकारणपूछाथा॥ परंतु तेसंपूर्णब्राह्मण ताजगत्केकारणकूं नहींजाणतेभये॥ ऐसाकारणरूपब्रह्म हमअधिकारियोंनैं वेदकेवचनोंतैंश्रवणकऱ्याहै॥ हेशिष्य! याप्रकार सूर्यभगवान्काशिष्य सोयाज्ञवल्क्यमुनि गौवोंकूंगृहविषेलेजाणारूपनिमित्तकरिकै सर्वब्राह्मणोंकापराजय करताभया॥ और ब्रह्मवेत्ताकाद्वेषी जोशाकल्यथा ताकूं भस्मकरताभया॥ और जाब्रह्मविद्या सूर्यभगवान्नें याज्ञवल्क्यकेप्रति कथनकरीथी॥ और जाब्रह्मविद्या याज्ञवल्क्यनैं सर्वब्राह्मणोंसैंपूछीथी॥ साब्रह्मविद्या याज्ञवल्क्यमुनि श्रद्धावान्जनकराजाकेप्रति उपदेशकरताभया॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्वामीउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे बृहदारण्यके याज्ञवल्क्यकांडसारार्थप्रकाशे ऋषियाज्ञवल्क्यसंवादोनाम पंचमोऽध्यायःसमाप्तः॥ ५॥

॥ इतिपंचमोध्यायः समाप्तः॥

अथआत्मपुराणेस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां
षष्ठाऽध्यायप्रारंभः ॥ ६ ॥

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यानमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ षष्ठाध्यायप्रारंभः ॥ पूर्वपंचमअध्यायविषे बृहदारण्यकउपनिषद्‌के याज्ञवल्क्यकांडकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अव षष्ठेअध्यायविषे तिसीयाज्ञवल्क्यकांडकेअर्थकूं निरूपणकरैहैं ॥ तहां पूर्वअध्यायोंविषे ब्रह्मविद्याकरिकैयुक्त जेनानाप्रकारकीकथाहैं ॥ तिनकथावोंकूं गुरुमुखतैं श्रवणकरिकै सो श्रद्धावान्‌शिष्य पुनःआपणेगुरुसैंपूछताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन्! प्रथमअध्यायविषे आपनैं वामदेवादिकअधिकारियोंके तथासनकादिकऋषियोंके संवादकरिकै ऐतरेयउपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ और द्वितीयअध्यायविषे आपनैं इंद्रप्रतर्दनकेसंवादकरिकै कौषीतकीउपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ और तृतीयअध्यायविषे आपनैं अजातशत्रु बालाकीकेसंवादकरिकै तिसीकौषीतकीउपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ और चतुर्थअध्यायविषे आपनैं दध्यङ्‌अथर्वण अश्विनीकुमार देवराजइंद्रकेसंवादकरिकै बृहदारण्यकउपनिषद्‌के मधुकांडकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ और पंचमअध्यायविषे आपनैं याज्ञवल्क्य आश्वलादिकऋषियोंकेसंवादकरिकै बृहदारण्यकउपनिषद्‌के याज्ञवल्क्यकांडकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ तिनसंपूर्णअध्यायोंविषे नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं हमारेप्रति कथनकरी ॥ और हेभगवन्! पंचमअध्यायकेअंत्यविषे आपनैं यहकह्याथा ॥ सूर्यभगवान्‌काशिष्य याज्ञवल्क्यमुनिजनकराजाकेप्रति ब्रह्मविद्या उपदेशकरताभया ॥ हेभगवन्! ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेकी मैं इच्छाकरताहूं ॥ आप कृपाकरिकैकहो ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! याज्ञवल्क्यमुनिनैं जाब्रह्मविद्या जनकराजाकेतांई उपदेशकरीहै ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्या मैं तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ तुमसावधानहोइकै ताविद्याकूं श्रवणकरो ॥ हेशिष्य! याप्रकार जबीशाकल्यकामृत्युहुआ तथा संपूर्णब्राह्मणोंकापराजयहुआ ॥ तबी जनकराजा तथाअन्यसभावासीलोक आपणेआपणेगृहविषेजातेभये ॥ और जबी प्रातःकालहुआ ॥ तबी दुंदुभितैंआदिलैके जोमधुरस्वरवालेवादित्रहैं ॥ तथाअप्सरावोंकेसमानजोस्त्रियांहैं ॥ तिनोंकेमधुरशब्दोंकरिकै राजाजनक निद्रातैंजाग्रतहोताभया ॥ और प्रातःकालविषे शास्त्रनैं विधानकरेजेस्नानादिककर्म तिनकर्मोंकूं सोजनकराजा करताभया ॥ और ब्राह्मणोंके तथाअन्यवृद्धपुरुषोंके तथाचारणबंदिजनोंके जयजयशब्दोंकूं तथाआशीर्वादोंकूं सोजनकराजा ग्रहण

करताभया ॥ तिसतैंअनंतर सर्वअलंकारोंकूंधारणकरिकै सोजनकराजा नानाप्रकारकेवादित्रोंकेशब्दोंकरिकै तथागंधर्वोंकेशब्द करिकै आपणीराज्यसभाविषेआवताभया ॥ कैसीहैसासभा? ॥ नानाप्रकारके मणि रत्न मोति सुवर्ण रजत करिकैरचीहुई है ॥ और सुधर्मानामा जोदेवतावोंकीसभाहै ताकेसमानहै ॥ और आपणेप्रकाशकरिकै दशदिशावोंकूंप्रकाशकरिरहीहै ॥ ऐसीसभाविषे स्थित जोमणियोंकरिकैजडित सुवर्णमयउच्चासिंहासनहै ॥ तासिंहासनऊपरि राजाजनक बैठताभया ॥ और दूसरे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यभी तथायोग्य आपणेआपणेआसनऊपरि बैठतेभये ॥ और हेशिष्य! याज्ञवल्क्यमुनिभी प्रातःकालविषे स्नानादिकसर्वक्रियाकूंकरिकै तथासूर्यभगवान्‌काआराधनकरिकै सर्वशिष्योंकेसहित ताजनकराजाकीसभाविषेआवताभया ॥ और याज्ञवल्क्यमुनिकूं सभाविषे आयाहुआदेखिकै सोधर्मात्माजनकराजा संपूर्णसभावासीजनोंसहित अभ्युत्थानकरताभया ॥ तथा अर्घ्यपाद्यादिकोंकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिकापूजनकरताभया ॥ और नानाप्रकारके मणि रत्न मोति करिकैजडित तथाअत्यंतकोमल जोसुवर्णमयआसनहै ॥ सोआसन याज्ञवल्क्यमुनिकेतांई बैठणेवासते देताभया ॥ और याज्ञवल्क्यकेशिष्योंकेप्रतिभी यथायोग्य आसनदेताभया ॥ तिसतैंअनंतर ताआसनऊपरिबैठिकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि राजाजनककूं तथा अन्यब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंकूं याप्रकारकीआज्ञाकरताभया ॥ हेराजाजनक! हेसंपूर्णसभावासीजनों तुम संपूर्णआपणेआपणेआसनऊपरिबैठो ॥ याप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकेआज्ञाकूंपाइकै राजाजनकसहित संपूर्णसभावासीलोक याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति नमस्कारकरिकै आपणेआपणेआसनऊपरि बैठतेभये ॥ तिसतैंअनंतर सो राजाजनक अत्यंतनम्रतापूर्वक नमस्कारकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि! आपसरीखेजेविद्वान्‌ब्राह्मणहैं ॥ तेही यालोकविषे परमदेवताहैं ॥ काहेतैं? जैसेपरमात्मादेव जगत्‌के उत्पत्ति स्थिति लय करणेविषेसमर्थहै ॥ तैसे आपसरीखेविद्वान्‌ब्राह्मण इंद्रादिकदेवतावोंकेभी उत्पत्तिस्थिति लय करणेविषेसमर्थहैं तौ हमसरीखेदेहधारीजीवोंके उत्पत्ति स्थिति लय करणेविषे ब्राह्मणसमर्थहैं याकेविषे क्याकहणाहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि! आपसरीखेविद्वान्‌ब्राह्मण कैसेहैं? ॥ सर्वभूतप्राणियोंविषे जिनोंकीसमानदृष्टिहै ॥ तथा श

मद्मादिकगुणोंकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा मत्सरादिकविकारों तैंरहितहैं ॥ तथा सर्वकामनावोंतैंरहितहैं ॥ ऐसेआपसरीखेविद्वान्ब्राह्म
णोंकाजो यापृथिवीविषेविचरणाहै ॥ सो सुवर्णादिकपदार्थोंवासतेनहीं ॥ किंतु हमसरीखेअज्ञानीजीवोंके उद्धारकरणेवासतेही
आपसरीखेविद्वान्ब्राह्मणोंकाविचरणाहै ॥ परंतु लोकोंकरिकैपूछेहुए आपसरीखेविद्वान्ब्राह्मण यानिमित्तकूंकहतेनहीं ॥ किंतु तिन
लोकोंकेप्रति याप्रकारकानिमित्त कहतेहैं ॥ हम सुवर्णादिकपदार्थोंकीप्राप्तिवासतेविचरतेहैं ॥ और केईकब्राह्मण यहनिमित्त कह
तेहैं ॥ हम सत्संगकरिकै आत्माकेजानणेवासते विचरतेहैं ॥ इत्यादिकअनेकप्रकारकेनिमित्त आपणेविचरणेविषे तेब्राह्मण कथ
नकरतेहैं तथापि हेभगवन्! हमतो आपणेमनविषे यहनिश्चयकरतेहैं ॥ संसाररूपससुद्रविषे डुबेहुए जोहमसरीखेराजेहैं ॥ ति
नोंकेउद्धारकरणेवासतेही आपसरीखेविद्वान्ब्राह्मण पृथिवीविषेविचरतेहैं ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि! आप साक्षात्सूर्यभगवान्केशि
ष्यहो ॥ तथा आनंदस्वरूपआत्माके अपरोक्षज्ञानकरिकैयुक्तहो ॥ तथा पुत्रएषणा वित्तएषणा लोकएषणा यातीनप्रकारकीएषणा
वोंतैंरहितहो ॥ यातैं यालोकविषे आपणेविचरणेका यद्यपि कोईप्रयोजननहींहै ॥ तथापि आपकेआवणेका एकप्रयोजन मैं मान
ताहूं ॥ यासंसाररूपी गरतविषे फस्याहुआजोमैंहूं ताकेउद्धारकरणेवासते आपका इहांआवणाभयाहै ॥ अब संसारसंबंधीदुःख
कूंदिखावैहैं ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि! जैसे कृमिकीटोंकरिकै व्याप्तहै शरीरजिसका और छेदनहुआहै कर्ण तथापुच्छ जिसका ॥
और नानाप्रकारकीव्याधियोंकरिकै पीडितहै शरीरजिसका ऐसाजोकोईकश्वानहै ॥ सोश्वान विष्ठाकरिकैलिप्त सूकीअस्थिकूं
दांतोंविषेग्रहणकरिकै ताअस्थिकीरक्षाकरणेवासते दूसरेबलवान्श्वानोंकेसाथ वैरकरैहै ॥ तावैरकरिकै सोश्वान प्राणांतदुःखकूं
प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे अस्थिरूपीस्थूणाहैजिसविषे ॥ तथा विष्ठामूत्रादिकोंकीदुर्गंधहैजिसविषे ॥ ऐसे यानिंदितशरीरकूं अहंबुद्धि
तैंग्रहणकरिकै मैं अनेकप्रकारकेदुःखकूंप्राप्तहोताहूं ॥ किंचित्मात्रभी हमारेकूं सुखकीप्राप्तिनहींहोती ॥ अब शरीरकेसर्वव्य
वहारोंविषे दुःखकीकारणतादिखावैहैं ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि! जैसे क्षुधाकरिकैपीडितहुआराक्षस मनुष्यादिकजीवोंकूंभक्षणकरै
है ॥ तैसे क्षुधाकरिकैपीडितहुआमैंजनक तंडुलादिकस्थावरअन्नकूं तथामृगादिकजंगमजीवोंकूं भक्षणकरताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥

जोमैं अन्नादिकोंकूंनहींभक्षणकरताहूं तौ क्षुधाकरिकैमेरेकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोमैं अन्नादिकोंकूंभक्षणकरताहूं तौ राक्षसोंकीतुल्यता प्राप्तहोवैहै ॥ और ताभोजनकेपरिणामकालविषेभी दुःखकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं भोजनरूपव्यवहारभी सर्वथादुःखकाहीकारणहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि! जैसे श्मशानभूमिविषेस्थित मृतकशरीरकूं पिशाच ग्रहणकरैहै ॥ तैसे कामरूपीपिशाचकेआवेशकरिकैयुक्तहुआ मैंजनक सर्वदाअशुचिस्त्रीकेशरीरकूं आलिंगनकरताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोमैं स्त्रीकाआलिंगन नहींकरताहूं तौ कामकरिकै दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोमैं स्त्रीकाआलिंगनकरताहूं तौ पिशाचकीतुल्यताप्राप्तहोवैहै ॥ और स्त्रीसंभोगके परिणामकालविषेभी अनेकदुःखोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं स्त्रियोंकासंभोगरूपव्यवहारभी सर्वथादुःखकाहीकारणहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि! जैसे कोईनिर्दयराक्षस मनुष्यादिकशरीरोंकूं हननकरैहै ॥ तैसे गंधकेलोभकरिकैयुक्तहुआ मैंजनक चंदनादिकसुगंधपदार्थोंकूं घर्षणकरिकै यादुर्गंधशरीरविषेलगावताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोमैं चंदनादिकोंकूं नहींलगावताहूं तौ तिनोंकीइच्छाकरिकै दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोमैं चंदनादिकोंकूं शरीरविषेलगावताहूं तौ राक्षसकीतुल्यता प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं चंदनादिकोंकालेपरूपव्यवहारभी सर्वथादुःखकाहीकारणहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि! जैसे शांतस्वभाववालेमुनियोंकूं विनाहीअपराधतैं राक्षसहननकरैहै ॥ तैसे मृगयारूपीव्यसनकरिकैयुक्तहुआ मैंजनक तृणपर्णोंकूंभोजनकरणेहारे मृगोंकूं विनाहीअपराधतैं हननकरताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोमैं मृगोंकूंनहींहननकरता तौ मृगयारूपव्यसनकरिकै हमारेकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोमैं मृगोंकूंमारताहूं तौ राक्षसोंकीतुल्यताप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं यहमृगयारूपव्यवहारभी सर्वथादुःखकाहीकारणहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि! जैसे तैलकारपुरुष तिलोंकूंयंत्रविषेपीडिकै तैल निकासैहै ॥ तैसे द्रव्यकेलोभकरिकैयुक्तहुआमैंजनक प्रजाकूंनानाप्रकारकीपीडादेकरिकै तिनोंतैंद्रव्यकूंलेताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोमैं प्रजातैंद्रव्यकूंनहींलेताहूं तौ द्रव्यकीइच्छाकरिकैदुःखहोवैहै ॥ और जोमैं प्रजातैंद्रव्यलेताहूं तौ तैलकारपुरुषकीतुल्यता प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं प्रजातैंद्रव्यकाग्रहणरूपव्यवहारभी सर्वथादुःखकाहीकारणहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि! जैसे स्कंधदेशविषे तथापृष्ठदेशविषे उत्पन्नभयाजोगडूरोग सो मनुष्योंकूं तथापशुवोंकूं दुःखकीप्राप्ति

करैहै ॥ तैसे मैंजनक पुरुषोंकेस्कंधोंऊपरि आरूढहोइकै तथा हस्ति अश्वउष्ट्रोंकेपृष्ठऊपरि आरूढहोइकै तिनोंकूं दुःखकी प्राप्तिकरताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोमैं अश्वादिकोंऊपरि नहींआरूढहोताहूं तौ आरूढहोणेकीइच्छाकरिकै मेरेकूंदुःखकीप्राप्ति होवैहै ॥ और जोमैं अश्वादिकोंऊपरि आरूढहोताहूं तौ गड्डरोगकीतुल्यता प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं अश्वादिकोंऊपरि आरोहणरूपव्यवहारभी सर्वथादुःखकाहीकारणहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि! जैसे काक गृहकेशिखरऊपरिबैठिकै अप्रियशब्दोंकूं उच्चारणकरैहै ॥ तैसे मानकरिकैयुक्तहुआ मैंजनक सर्वलोकोंसैं ऊँचेआसनऊपरिबैठताहूं ॥ और नानाप्रकारकेअप्रियशब्दोंकूं उच्चारणकरताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोमैं ऊँचेसिंहासनऊपरि नहींबैठताहूं तौ मानकेभंगतैं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोमैं ऊँचेसिंहासनऊपरि बैठताहूं तौ काककीतुल्यताप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं ऊँचेसिंहासनऊपरिस्थितिरूपव्यवहारभी सर्वथादुःखकाहीकारणहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि! जैसे आसक्तिकरिकैयुक्तहुआ सर्प पृथिवीविषेस्थितधनकीरक्षाकरैहै ॥ तैसे धनकीआसक्तिकरिकैयुक्तहुआ मैंजनक सर्वदाधनकीरक्षाकरताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोमैंधनकीरक्षानहींकरता तौ धनकेवियोगकरिकै मेरेकूंदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोमैं धनकीरक्षाकरताहूं तौ सर्पकीतुल्यता प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं धनकीरक्षारूपव्यवहारभी सर्वथादुःखकाहीकारणहै ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि! जैसे ग्रामकासूकर आपणेस्त्रीपुत्रादिककुटुंबविषे अत्यंतआसक्तहोवैहै ॥ तैसे मैंजनकभी स्त्रीपुत्रादिककुटुंबविषे अत्यंतआसक्तहूं ॥ याकारणतैंही यहअज्ञानीजनक किसगतिकूंप्राप्तहोवैगा? याप्रकारके विद्वान्पुरुषोंकेशोकका मैं विषयहूं ॥ यातैं हेभगवन्! अध्यात्म अधिभूत अधिदैव येतीनप्रकारकेदुःखहैं तीनशाखाजिसकी ॥ तथा अज्ञानरूपलोहतैं है उत्पत्तिजिसकी ॥ ऐसाजोयहसंसाररूपशूलहै ॥ ताकेविषेप्राप्तहुआ जोमैंअज्ञानीजीवहूं ॥ ताके उद्धारकरणेवास्तेही आपका इहां आगमनभयाहै ॥ हेभगवन्! आपके इहांआगमनका जोप्रयोजन हमनैंजान्याथा ॥ सो आपकेआगेकथनकऱ्या ॥ अब जिसनिमित्तकरिकै आपका इहां आगमनभयाहै ॥ सोनिमित्त आप कृपाकरिकैहमारेप्रति कहो ॥ हेभगवन्! ब्राह्मणोंकेआगमनविषे दोप्रकारकेनिमित्त प्रसिद्धहैं ॥ एकतौ जनकराजाकेसभाविषेजाइकै सुवर्णसहितगौवोंकूं हम प्राप्तहोवैंगे यहनिमित्तहै ॥ और

दूसरा जनकराजाकीसभाविषेजाइकै सर्वब्राह्मणोंसैं आत्माकेस्वरूपका हम निर्णयकरैंगे यहनिमित्तहै ॥ हेभगवन्! दोनोंनिमि
त्तोंविषे जिसनिमित्तकरिकै आपका इहां आगमनहुआहै ॥ सोनिमित्त आप कृपाकरिकैकहो ॥ हेशिष्य! याप्रकार जबी जनकरा
जानैं याज्ञवल्क्यमुनिसैंपूछा ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेजनक! गौवोंकीप्राप्ति तथा आत्माका
निर्णय यादोनोंनिमित्तोंकरिकै हमारा इहांआगमनभयाहै ॥ हेशिष्य! याप्रकार आपणेआगमनविषे दोनिमित्तकहिकै सोयाज्ञव
ल्क्यमुनि पुनःजनककेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेजनक! आजदिनतैंलैके पूर्वपूर्व तुमारेतांई जोजोब्राह्मण जिसजि
सज्ञानकाउपदेशकरताभयाहै ॥ तिसतिसज्ञानकेश्रवणकरणेकी हमारेकूंइच्छाहै ॥ सोज्ञान जोगोप्यनहींहोवै तौ हमारेप्रति तुमक
थनकरो ॥ ता तुमारेज्ञानकूं श्रवणकरिकै पश्चात् मैं तुमारेप्रति उपदेशकरौंगा ॥ हेशिष्य! याप्रकार जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जन
कराजासैंपूछा ॥ तबी सो जनकराजा पूर्वमुनियोंनैं जोअनेकप्रकारकाज्ञान उपदेशकऱ्याथा ॥ सोसंपूर्णज्ञान याज्ञवल्क्यमुनिकेतां
ई श्रवणकरावताभया ॥ जनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि! शिलिननामाऋषिकापुत्र जित्वानामाऋषि अग्निदेवताकूंही ब्रह्मरूपक
हताभया ॥ १ ॥ और शुल्बनामाऋषिकापुत्र उदंकनामाऋषि वायुदेवताकूंही ब्रह्मरूपकहताभया ॥ २ ॥ और वृष्णुनामाऋषिकापु
त्रवर्कुनामाऋषि सूर्यकूंही ब्रह्मरूपकहताभया ॥ ३ ॥ और भारद्वाजगोत्रविषेहैउत्पत्तिजिसकी ऐसाजो गर्दभीविपीतनामाऋषिहै ॥
सो दिशावोंकूंही ब्रह्मरूपकहताभया ॥ ४ ॥ और जाबालाकापुत्र सत्यकामनामाऋषि चंद्रमादेवताकूंही ब्रह्मरूपकहताभया ॥ ५ ॥
और अबी मृत्युकूंप्राप्तभया जोविदग्धनामाशाकल्यऋषि ॥ सो प्रजापतिदेवताकूंही ब्रह्मरूपकहताभया ॥ ६ ॥ हेशिष्य! याप्रका
र पूर्वऋषियोंनैं उपदेशकऱ्याजोब्रह्मकास्वरूप ॥ सो जबी जनकराजानैं याज्ञवल्क्यकेप्रतिकह्या ॥ तबी सो याज्ञवल्क्यमुनि जन
कराजाकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक! अग्निआदिकदेवता सर्वजगत्केनिर्वाहकूं चलावणेहारेहैं ॥ यातैं
ब्रह्मरूपकरिकैतिनोंकीउपासनाकरणीश्रेष्ठहै ॥ परंतु इतनेज्ञानमात्रकरिकै मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और हेजनक! पूर्वऋषियोंनैं जो
तुमारेतांई अग्निआदिकदेवतावोंकाउपदेशकऱ्याहै ॥ सोभी संपूर्णनहींकऱ्या ॥ किंतु एकपादकाउपदेश तुमारेतांई कऱ्याहै ॥ तीन

पाद बाकीरहतेहैं ॥ यातें तिनऋषियोंकेउपदेशविषे न्यूनताहै ॥ हेजनक! तिन तीनपादोंकूं तुमश्रवणकरो ॥ अधिदैवरूपअग्नि प्रथमपादहै ॥ और अध्यात्मरूपवाक्इंद्रिय द्वितीयपादहै ॥ और अव्याकृतरूपआकाश तृतीयपादहै ॥ और प्रज्ञानाम चतुर्थपादहै ॥ १ ॥ तथा अधिदैवरूपवायु प्रथमपादहै ॥ और अध्यात्मरूपघ्राण द्वितीयपादहै ॥ और अव्याकृतरूपआकाश तृतीयपादहै ॥ और प्रियनाम चतुर्थपादहै ॥ २ ॥ तथा अधिदैवरूपसूर्य प्रथमपादहै ॥ और अध्यात्मरूपचक्षुइंद्रिय द्वितीयपादहै ॥ और अव्याकृतरूपआकाश तृतीयपादहै ॥ और सत्यनाम चतुर्थपादहै ॥ ३ ॥ तथा अधिदैवरूपदिशा प्रथमपादहै ॥ और अध्यात्मरूपश्रोत्रइंद्रिय द्वितीयपादहै ॥ और अव्याकृतरूपआकाश तृतीयपादहै ॥ और अनंतनाम चतुर्थपादहै ॥ ४ ॥ तथा अधिदैवरूपचंद्रमा प्रथमपादहै ॥ और अध्यात्मरूपमन द्वितीयपादहै ॥ और अव्याकृतरूपआकाश तृतीयपादहै ॥ और आनंदनाम चतुर्थपादहै ॥ ५ ॥ तथा अधिदैवरूपप्रजापति प्रथमपादहै ॥ और हृदय द्वितीयपादहै ॥ और अव्याकृतरूपआकाश तृतीयपादहै ॥ और स्थितिनाम चतुर्थपादहै ॥ ६ ॥ इहां अग्निआदिकचारिचारिपादोंविषे प्रथमपादकेचिंतनकरणेतें हिरण्यगर्भकीस्मृतिहोवैहै ॥ और दूसरेपादकेचिंतनकरणेतें विराट्भगवान्‌कीस्मृतिहोवैहै ॥ और तृतीयपादकेचिंतनकरणेतें अंतर्यामीईश्वरकीस्मृतिहोवैहै ॥ और चतुर्थपादकेचिंतनकरणेतें तुरीयकीस्मृतिहोवैहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार याज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति अग्निआदिकचारिपादोंकरिकैयुक्त सगुणब्रह्मकीउपासना षट्वार कहताभया ॥ और जनकराजाभी याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति षट्वार याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेभगवन्! हस्तिकेसमानहै वृषभ जिनोंविषे ऐसीजेयौवनअवस्थाकरिकैयुक्तगौवांहैं ॥ तिनगौवोंका एकसहस्र मैं तुमारेतांई गुरुदक्षिणादेताहूं ॥ आप तिनगौवोंकूंअंगीकारकरो ॥ हेशिष्य! याप्रकारका जनकराजाकावचन षट्वार श्रवणकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनिभी जनकराजाकेप्रति याप्रकारकावचन षट्वार कहताभया ॥ हेजनक! जबपर्यंत शिष्य कृतार्थनहींहोवैहै तबपर्यंत गुरुदक्षिणा ग्रहणकरणेयोग्यनहीं ॥ याप्रकारकाउपदेश हमारेकूं पितानैंकऱ्याहै ॥ यातें जबपर्यंत तुमारेकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिनहींहोती ॥ तबपर्यंत मैं तुमारेसैं गुरुदक्षिणा नहींलेवोंगा ॥ याकहणेकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति यहअर्थ बोधनकऱ्या ॥ अग्निआ

दिकचारिपादोंकरिकैयुक्त सगुणब्रह्मकेउपासनामात्रकरिकै शिष्य कृतार्थहोतानहीं ॥ किंतु निर्गुणब्रह्मकेअपरोक्षज्ञानकरिकै शिष्य कृतार्थहोवैहै ॥ सो निर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कार अबपर्यंत तुमारेकूंभयानहीं ॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी याज्ञवल्क्यमुनिनें जनककेप्रतिकह्या ॥ तबी सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकूंलोभतेंरहितदेखिकै अत्यंतआश्चर्यकूंप्राप्तहोताभया ॥ और जिसवस्तुकेज्ञानकरिकै शिष्य कृतार्थहोवैहै ॥ तिसवस्तुकेजाननेकीइच्छाकरताहुआ सोजनकराजा आपणेसिंहासनकापरित्यागकरिकै भूमिविषे स्थितहोताभया ॥ और याज्ञवल्क्यमुनिकेतांई दंडवत्प्रणामकरिकै याप्रकारकावचन कहताभया ॥ जनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि! आपकेतांई हमारा वारंवार नमस्कारहै ॥ हेभगवन्! जैसे कोईअंधपुरुष महान्वनविषेप्राप्तहोइकै अनेकदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताअंधपुरुषकूंदुःखीदेखिकै कोईदयालुपुरुष मार्गकाउपदेशकरिकै ताअंधपुरुषकूं वनतैंबाहरिनिकासैहै ॥ तैसे संसाररूपीमहान्वनविषे प्राप्तहोइकै मैंअज्ञानीजीव अनेकप्रकारकेदुःखोंकूं अनुभवकरताहूं ॥ और आपकादयालुस्वभावदेखिकै तासंसाररूपीवनतें बाहरिनिकसणेकामार्ग मैं आपसैंपूछताहूं ॥ आप कृपाकरिकै तामार्गकाउपदेशकरो ॥ अब संसारविषे वनकीसमानतानिरूपणकरैहैं ॥ हेभगवन्! जैसे लोकप्रसिद्धवन भयानकसर्पोंकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ तथा अनेकगर्तोंकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ तथा अनेकवृक्षोंकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ तथा अनेकसिंहोंकेशब्दोंकरिकै पूर्णहोवैहै ॥ तथा अग्निकरिकैदग्धहोवैहै ॥ तैसे यहसंसाररूपीवनभीकामरूपीसर्पोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा नारीरूपीमहान्गर्तोंकरिकैयुक्तहै तथा नेत्रादिकइंद्रियरूपवृक्षोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा अहंकाररूपसिंहकेशब्दोंकरिकै पूर्णहै ॥ तथा क्रोधरूपीअग्निकरिकै चित्तरूपीभूमि तथाशुभगुणरूपवृक्ष जिसकेदग्धभयेहैं ॥ और हे भगवन्! जैसे लोकप्रसिद्धवनविषे व्याधपुरुष श्वानोंकूंहाथविषेलैकै तथाधनुषबाणकूंहाथविषेलैकै ताश्वानोंकरिकै तथाधनुषबाणकरिक मृगोंकूं हननकरैहै ॥ तैसे यासंसाररूपवनविषे कालरूपव्याध मनरूपश्वानकूंलैकै तथा क्षणलवादिकालरूपधनुषविषे जराव्याधिरूपबाणोंकासंधानकरिकै अस्मदादिकजीवरूपमृगोंकूं हननकरैहै ॥ यातें हेभगवन्! तामृत्युरूपव्याधका जराव्याधिरूपबाण जबपर्यंत हमारेसन्मुखनहींभया ॥ तबपर्यंत शीघ्रही हमारेकूं मार्गकाउपदेशकरो ॥ विलंबकरणेका यहकाल

नहीं ॥ हेशिष्य! याप्रकार जबीजनकराजानैं दीनहोइकै याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रार्थनाकरी ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनिजनक राजाकेअधिकारकी परीक्षाकरणेवासते याप्रकारकावचन कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक! तुमनैं जोहमारेसैंमार्ग पूछाहै ॥ सोतुमारेअभिप्रायकाविषय जोगंतव्यपदार्थहै ॥ ताकेजाणेतैंविना हम तामार्गकूंकहिनहींसकते ॥ यातैं प्रथम तूं गंतव्यप दार्थकूंकथनकर ॥ पश्चात् मैं तिसकेमार्गकाउपदेश तुमारेतांई करोंगा ॥ इहां मार्गकेचलनेकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यजोग्रामादिकहैं ता कूंगंतव्यकहेहैं ॥ और हेजनक! जैसे लोकविषे जोपुरुष जबीदूरदेशविषेचालेहै ॥ तबी सोपुरुष पृथिवीकेमार्गविषेतौ रथकूं तथा अश्वादिकोंकूं ग्रहणकरिकैचालेहै ॥ और जोपुरुष जलकेमार्गविषेचालेहै तौ नौकाकूंग्रहणकरिकैचालेहै ॥ तैसे तुमनैंभी प्रज्ञाप्रि य सत्य अनंत आनंद स्थिति याषट्नामोंकरिकैयुक्त जे अग्नि वायु सूर्य दिक् चंद्रमा प्रजापति येषट्देवताहैं तिनोंकी ब्रह्मरूप करिकै उपासनाकरीहै ॥ और अहिंसासत्यादिकदैवीसंपदकेगुणोंकरिकै तू युक्तहै ॥ यातैं देवताकीन्यांई सर्वलोकोंकरिकै तू पूजणे योग्यहै ॥ और वेदोंकेपूर्वकांडकूंभी तुमनैं अध्ययनकऱ्याहै ॥ तथा अनेकऋषियोंतैं तुमनैं उपासनाकेरहस्यकूंभीजान्याहै ॥ और सर्वलोकविषे तुमाराबुद्धिमान्पणाभी प्रसिद्धहै ॥ यातैं हेजनक! याशरीरकापरित्यागकरिकै तिन कर्मउपासनारूपसाधनोंकरिकै तू किसस्थानविषेजावैगा ॥ सो गंतव्यस्थान जोतू जाणताहोवै तौ हमारेप्रति कथनकरो ॥ पश्चात् मैं तुमारेतांई तागंतव्यस्थान केमार्गकाउपदेशकरोंगा ॥ हेजनक! जैसेगंतव्यरूप जोविदेहदेश तथाकोशलदेश तथाकुरुदेश तथापांचालदेश इत्यादिकदेशहैं ॥ तिनगंतव्यदेशोंकूं नजाणिकरिकै जोपुरुष अन्यपथिकपुरुषकेप्रति याप्रकार मार्गकाउपदेशकरैहै ॥ यहमार्ग विदेहदेशकाहै ॥ यह मार्ग कोशलदेशकाहै ॥ यहमार्ग कुरुदेशकाहै ॥ यहमार्ग पांचालदेशकाहै ॥ याप्रकार दिशामात्रकरिकै जोपुरुष मार्गकाउपदेश करैहै ॥ सोपुरुष मार्गकाउपदेशकरताहुआभी नहींउपदेशकरता ॥ तैसे गंतव्यस्थानकेजाणेतैंविना मार्गकाउपदेशकरणा हमारा व्यर्थमतहोवै ॥ यातैं हेराजन्! चित्तशुद्धिद्वारा कर्मउपासनारूपसाधनोंकरिकै गंतव्यजोस्थानहै ॥ तिसकूं तुम प्रथमहमारेप्रति कथनकरो ॥ पश्चात् मैं तुमारेतांई तागंतव्यस्थानकेमार्गकाउपदेशकरोंगा ॥ हेशिष्य! जनकराजाकेप्रति याज्ञवल्क्यमुनिकेपूछणे

का यहअभिप्रायहै ॥ जोयहजनकराजा तागंतव्यस्थानकूं जाणिकरिकै कुतर्ककरिकै हमारेसैंपूछताहै तौ यहजनक श्रद्धावान् नहीं ॥ यातैं ब्रह्मविद्याकेउपदेशकाअधिकारीनहीं ॥ और जोयहजनक तागंतव्यस्थानकूं नजाणिकरिकै हमारेसैं पूछताहै तौ यहजनक श्रद्धावान्है ॥ यातैं ब्रह्मविद्याकाअधिकारीहै ॥ याअभिप्रायकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेअधिकारकीपरीक्षाकरणेवासते जनकराजासैं पूछताभया ॥ हेशिष्य! याप्रकार जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजासैंपूछा ॥ तबी सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ जनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि! हमारेकूं तथाअन्यपुरुषोंकूं कर्म उपासनादिकसाधनोंकरिकै गंतव्यजोस्थानहै तास्थानकूं मैं जाणतानहीं ॥ और हेभगवन्! जैसे सिंहसर्पादिकोंकरिकैयुक्तवन विषे कोईविदेशीअंधपुरुष आइकैप्राप्तहोवै ॥ और वृद्धअवस्थाकरिकैयुक्तहोवै ॥ और क्षुधापिपासादिक नानाप्रकारकीव्याधियों करिकै जिसअंधपुरुषकूं आपणेदेशकाभी विस्मरणहुआहोवै ॥ ऐसाअंधपुरुष जैसे तादेशकेमार्गकेजानणेहारे किसीदयालुपुरुषतैं मार्गपूछेहै ॥ तैसे हेमुनीश्वर! मैंजनक गंतव्यस्थानकूंनजाणिकरिकै आपसैं तास्थानकेमार्गकूंपूछताहूं ॥ अब आपणेअज्ञानकूं जनकराजा निरूपणकरैहै ॥ हेभगवन्! जैसे समुद्रतैं लवणकापिंड आवैहै ॥ तैसे जिसस्थानतैं मैं आयाहूं ॥ तिसस्थानकूंभी मैं जाणतानहीं तौ गंतव्यस्थानकूं मैं कैसेजाणोंगा? ॥ और हेभगवन्! भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनप्रकारकेपदार्थोंकूं आत्माकेकिसीधर्मकरिकै मैं जाणताहूं ॥ अथवा आत्माकेस्वरूपकरिकै मैं जाणताहूं ॥ याप्रकारकेअर्थकूंभी मैं जाणतानहीं तौ गंतव्यस्थानकूं मैं कैसेजाणोंगा? ॥ और हेभगवन्! मेराक्यास्वरूपहै? याप्रकारकेअर्थकूंभी मैं जाणतानहीं तौ गंतव्यस्थानकूं मैं कैसेजाणोंगा? ॥ और हेभगवन्! रात्रिदिनविषे मैं सुखदुःखकूंभोगताहूं ॥ परंतु तासुखदुःखका कौनकारणहै? याअर्थकूंभी मैं जाणिसकतानहीं तौ गंतव्यस्थानकूं मैं कैसेजाणिसकोंगा? ॥ हेभगवन्! बाल्यअवस्थातैंलैके अबपर्यंत सर्वअवस्थाविषे एकदुःखकूंही मैं अनुभवकरताहूं ॥ परंतु तादुःखकेभोक्ताकूं तथा तादुःखकेकारणोंकूं तथा तादुःखकेविशेषस्वरूपकूं मैं किंचित्मात्र भीजाणतानहीं ॥ हेभगवन्! जैसे वायुकरिकैभ्रमायाहुआपतंग महान्अग्निविषे प्राप्तहोवैहै ॥ सोपतंग जबपर्यंत मृत्युकूंनहीं

प्राप्तहोवैहै ॥ तबपर्यंत सोपतंग आपणेआत्माकूं तथापरकूं तथादुःखकेकारणोंकूं तथाअन्यकिसीपदार्थकूं अनुभवकरतानहीं ॥ किंतु एकदुःखकूंही सोपतंग अनुभवकरताहै ॥ तैसे कर्मरूपवायुकेवशतें यासंसाररूपीअग्निविषे प्राप्तहुआ मैंजनक आपणेआत्माकूं तथादुःखकेकारणोंकूं तथाअन्यकिसीपदार्थकूं जाणतानहीं ॥ केवल एकदुःखकूंही मैं निरंतर अनुभवकरताहूं ॥ हेभगवन्! ऐसामूढबुद्धिमैंजनक कर्मउपासनाकरिकै गंतव्यस्थानकूं कैसेजाणिसकोंगा? ॥ और हेभगवन्! जैसे लोकविषे जोपुरुष गंतव्यग्रामादिकोंकूं जाणताहै ॥ सोपुरुष ताग्रामकेमार्गकूंभी जाणताहै ॥ तैसे जोमैं कर्मउपासनारूपसाधनकरिकै गंतव्यस्थानकूं जाणताहोता तौ तागंतव्यस्थानकामार्ग मैं तुमारेसैं नहींपूछता ॥ परंतु तागंतव्यस्थानकूं मैं जाणतानहीं ॥ याकारणतैंही तागंतव्यस्थानकेज्ञानवासते हमनें आपसैं मार्गपूछाहै ॥ और हेभगवन्! अधिकारीपुरुषोंकरिकै गंतव्यजोस्थानहै ॥ सो दुर्विज्ञेयहै ॥ यह वार्ता कोईआश्चर्यरूपनहीं ॥ काहेतें? यहजीव जबी यास्थूलशरीरतें बाहरिनिकसैहै ॥ तबी ताजीवका क्यास्वरूपहोवैहै? ॥ और सोजीव किसप्रकारकरिकै परलोकविषेजावैहै? ॥ और सोजीव किसफलकूं तहांभोगैहै ॥ याप्रकारकेअर्थकूंभी कोईलोक जाणता नहीं तौ अधिकारीपुरुषकरिकै गंतव्यस्थानकूं हम नहींजाणिसकते ॥ यावार्ताविषे कोईआश्चर्यनहीं ॥ यातें हेभगवन्! कर्मउपासनादिकसाधनोंकरिकै गंतव्यजोस्थानहै ॥ ताकूं मैं जाणतानहीं ॥ याकारणतैंही तागंतव्यस्थानकामार्ग मैं आपसैंपूछताहूं ॥ आप कृपाकरिकै तागंतव्यस्थानकूं तथाताकेमार्गकूं हमारेप्रति उपदेशकरो ॥ हेशिष्य! याप्रकारकाप्रश्न जबी जनकराजानें याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रतिकर्या ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकूं ब्रह्मविद्याकाअधिकारीजाणिकै कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक! अधिकारीपुरुष कर्मउपासनादिकसाधनोंकरिकै चित्तकीशुद्धिद्वारा जिसगंतव्यस्थानकूं प्राप्तहोवैहै ॥ सोगंतव्यस्थान मैं तुमारेतांई उपदेशकरताहूं ॥ तागंतव्यस्थानकेज्ञानकरिकै तुमारा संपूर्णभय निवृत्तहोवैगा ॥ हेजनक! कर्मउपासनादिकसाधनोंकरिकै तू किसस्थानविषेप्राप्तहोवैगा? ॥ याप्रकारकाजोप्रश्न हमनें पूर्व तुमारेतांई कर्याथा ॥ ताप्रश्नकेकरणेविषे यह कारणहै ॥ लोकविषे वादियोंके दोप्रकारकेप्रश्न होवैहैं ॥ एकतौ प्रतिपादनकरणेयोग्यवस्तुकूं नजाणिकरिकै वादीकाप्रश्न होवैहै ॥

और दूसरा प्रतिपादनकरणेयोग्यवस्तुकूं जाणिकरिकै वादीकाप्रश्न होवैहै ॥ तहां प्रतिपादनकरणेयोग्यवस्तुकूं जाणिकरिकै जो वादीकाप्रश्न होवैहै ॥ सोभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ वस्तुकेयथार्थज्ञानपूर्वक वादीका प्रश्नहोवैहै ॥ और दूसरा वस्तुकेअयथार्थज्ञानपूर्वक वादीका प्रश्नहोवैहै ॥ तहां वादीकेज्ञानकाविषयजोपदार्थहै ॥ तथाप्रतिवादीकेज्ञानकाविषय जोपदार्थहै ॥ तिनदोनोंकेसमानताकानिर्णय वस्तुकेयथार्थज्ञानपूर्वकप्रश्नकाफलहै ॥ और संशयविपर्ययकीनिवृत्ति वस्तुकेअयथार्थज्ञानपूर्वकप्रश्नकाफलहै ॥ और सोवस्तुकेयथार्थज्ञानपूर्वकप्रश्नभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ आपणेबुद्धिकीनिर्मलता जनावणेवासते वादीकाप्रश्न होवैहै ॥ और दूसरा प्रतिवादीकेबुद्धिकीनिर्मलता जानणेवासते वादीकाप्रश्नहोवैहै ॥ हेजनक! इसप्रकार वस्तुकेज्ञानपूर्वक प्रश्नके अनेकप्रकारकेभेदहैं ॥ तिनप्रश्नोंविषे जोकोईवादी गंतव्यस्थानकूंजाणिकरिकै ताकेमार्गकाप्रश्नकरैहै ॥ तावादीकेप्रति बुद्धिमान्पुरुष गंतव्यस्थानकूं जाणिकरिकैही ताकेमार्गकाउपदेशकरैहै ॥ गंतव्यस्थानकेज्ञानतैंविना कोईभीबुद्धिमान्पुरुष ताके मार्गकाउपदेशकरतानहीं ॥ और हेजनक! जोपुरुष गंतव्यस्थानकूंनजाणिकरिकै ताकेमार्गकूंपूछेहै ॥ ता श्रद्धावान्पुरुषकेतांई बुद्धिमान्दयालुपुरुष गंतव्यस्थान तथा ताकामार्ग इनदोनोंकाउपदेशकरैहै ॥ केवलमार्गमात्रकाउपदेश करैनहीं ॥ तैसे तूभी गंतव्यस्थानकूंनजाणिकरिकै हमारेसैं मार्गकूंपूछताहै ॥ यातैं तैंश्रद्धावान्केतांई मैं प्रथम गंतव्यस्थानकाउपदेशकरताहूं ॥ ता गंतव्यस्थानविषे जोचित्तकीएकाग्रताहै यहही ताकामार्गहै ॥ यातैं हेजनक! तू संशयतैं रहितहोइकै मनकूंसावधानकरिकै ता गंतव्यस्थानकूंश्रवणकर ॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रतिकह्या ॥ तबी सोजनकराजा प्रसन्नहोइकै कहताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि! आप कृपाकरिकै हमारेप्रति गंतव्यस्थानकाउपदेशकरो ॥ मैं सावधानहुआस्थितहूं ॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी जनकराजानैं याज्ञवल्क्यकेप्रतिकह्या ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति उपदेशकरताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक! सूर्यभगवान्नैं जिसज्ञानका हमारेप्रति उपदेशकर्याहै ॥ सोज्ञान मैं तुमारेप्रति उपदेशकरताहूं ॥ तू सावधानहोइकै श्रवणकर ॥ कैसाहैसोज्ञान ॥ आत्मसाक्षात्कारकाकारणहै ॥ और यज्ञादिकबहिरंगसाधनोंके

रिकै तथा विवेकादिअंतरंगसाधनोंकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यहै ॥ अब तुरीयरूपशुद्धब्रह्मकेबोधनकरणेवासते जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंकेअभिमानी जे विश्व तैजस प्राज्ञहैं तिनोंकेस्वरूपकूंदिखावैहैं ॥ तहां प्रथम वैश्वानररूप जोविश्वहै ताकेस्वरूपकूंनिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! अविद्याकरिकै देहादिकोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहुआ यहपरमात्मादेव जिसकालविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै रूपादिकविषयोंकाग्रहणकरैहै ॥ तिसकालविषे यहपरमात्मादेव जाग्रतअवस्थावान् होवैहै ॥ और तिसजाग्रतअवस्थाविषे यहपरमात्मादेव दोरूपकरिकै स्थितहोवैहै ॥ तहां भोक्ताइंद्ररूपकरिकै दक्षिणनेत्रविषेरहैहै ॥ और भोग्यइंद्राणीरूपकरिकै वामनेत्रविषेरहैहै ॥ याप्रकार वैश्वानरकेउपासकपुरुष विश्वात्माकूं इंद्रइंद्राणीरूपकरिकै ध्यानकरैहैं ॥ अब आत्माविषे इंद्ररूपता निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यहआत्मादेव आकाशादिकभूतभौतिकप्रपंचकूं उत्पन्नकरिकै ताप्रपंचकूं इदंरूपकरिकै देखताभया ॥ याकारणतें यहपरमात्मादेव यद्यपि इदंद्रनामकरिकै कथनकरणेयोग्यथा ॥ तथापि परोक्षप्रिय अग्निआदिकदेवता इदंद्र याअपरोक्षनामकरिकै तापरमात्माका कथनकरैनहीं ॥ किंतु इंद्र यापरोक्षनामकरिकै तेअग्निआदिकदेवता परमात्माकाकथनकरैहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपपरमात्मादेव स्वप्रकाशस्वरूपहै ॥ याकारणतें यहआत्मादेव यद्यपि इंध यानामकरिकै कथनकरणेयोग्यथा ॥ तथापि परोक्षप्रिय अग्निआदिकदेवता इंध याअपरोक्षनामकरिकै आत्माकाकथनकरैंनहीं ॥ किंतु इंद्र यापरोक्षनामकरिकै आत्माकाकथनकरैहैं ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम आत्माविषे प्रकाशरूपतादिखावैहैं ॥ हेजनक! या आनंदस्वरूपआत्माकेप्रकाशकरिकैही यहसंपूर्णचराचररूपजगत् प्रतीतहोवैहै ॥ और जिसआनंदस्वरूपआत्माकूं सूर्यचंद्रमाभी नहींप्रकाशकरिसकते ॥ तथा तारागण अग्नि ज्ञानइंद्रिय कर्मइंद्रिय मन शब्द येसंपूर्ण जिसआत्माकूं नहींप्रकाशकरिसकते ॥ दृष्टांत ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थोंकूं प्रकाशकरणेहाराजोदीपकहै ॥ तादीपककूं घटपटादिकपदार्थ प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ तैसे सूर्यचंद्रमादिकोंका प्रकाशकजोआत्माहै ॥ ताआत्माकूं सूर्यचंद्रमादिक प्रकाशकरिसकैंनहीं ॥ किंतु आपणेप्रकाशकरिकैही यहआत्मा प्रकाशमानहै ॥ याकारणतें विद्वान्पुरुष याआत्माकूं स्वप्रकाशकहैहैं ॥ जोप्रकाश आपणेप्रकाशविषे तथाअ

न्यपदार्थोंकेप्रकाशविषे अन्यकिसीप्रकाशकीअपेक्षानहींकरैहै ताकूं स्वप्रकाशकहैहैं ॥ ऐसास्वप्रकाशआत्मा यद्यपि इंधयाप्रकारकेअपरोक्षनामकरिकैही कथनकरणेयोग्यथा ॥ तथापि अग्निआदिकसात्विकदेवता याआत्माकूं इंध याअपरोक्षनामकरिकै कथनकरतेनहीं ॥ किंतु इंद्र यापरोक्षनामकरिकैही आत्माकाकथनकरैहैं ॥ काहेतें? यामनुष्यलोकविषेभी जेसात्विकपुरुष हैं ॥ ते तामसीपुरुषोंकीन्यांई आपणेगुरुके तथा पितामातादिकवृद्धोंके साक्षात् देवदत्तादिकनामोंकूं कथनकरतेनहीं ॥ किंतु आचार्यादिकपरोक्षनामकरिकै तेसात्विकपुरुष व्यवहारकरैहैं ॥ और यालोकविषे जेसात्विकस्वभाववान्स्त्रियांहैं ॥ तेभी आपणेपतिके तथाश्वशुरादिकवृद्धोंके साक्षात् देवदत्तादिकनामोंकूं उच्चारणकरैंनहीं ॥ किंतु स्वामीआदिकपरोक्षनामकरिकै ते सात्विकस्त्रियां व्यवहारकरैहैं ॥ और तिनसात्विकपुरुषोंके पितामातागुरुका साक्षात् देवदत्तादिकनाम जोकोईदूसरापुरुष उच्चारणकरैहै ॥ तिसपुरुषऊपरिभी तेसात्विकपुरुष क्रोधवान्होवैहैं ॥ हेजनक! जबी मनुष्यलोककेसात्विकपुरुषोंकूंभी पितामातागुरुआदिकोंका परोक्षनामहीप्रियलागेहै ॥ तबी परमसात्विकजे अग्निआदिकदेवताहैं ॥ तिनोंकूंआत्माकापरोक्षनामहीप्रियहै याकेविषेक्याआश्चर्यहै? ॥ याकारणतें परोक्षप्रिय तेअग्निआदिकदेवता याआनंदस्वरूपआत्माकूं इदंद्र तथा इंध याप्रकारकेअपरोक्षनामकरिकैकथनकरैंनहीं ॥ किंतु इंद्र यापरोक्षनामकरिकै कथनकरैहैं ॥ हेजनक! ऐसाइंद्रनामापरमात्मादेव जाग्रत्अवस्थाविषे वाकादिकइंद्रियोंकूं आपणेअधीनकरिकै दक्षिणनेत्रविषे स्थितहोवैहै ॥ अब इंद्रनामा परमात्माविषे प्रसिद्धदेवराजइंद्रकीसमानता दिखावैहैं ॥ हेजनक! जैसे लोकप्रसिद्धइंद्र स्वर्गविषे वैजयंतनामागृहविषेस्थितहोवैहै ॥ और देवतावोंनैं अर्पणकरेजेनानाप्रकारकेभोग तिनभोगोंकूं भोगेहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी जाग्रत्अवस्थाविषे दक्षिणनेत्ररूपगृहविषे निवासकरैहै ॥ और अग्निआदिकदेवतावोंनैं अर्पणकरेजे रूपरसादिकनानाप्रकारकेविषय तिनोंकूंभोगेहै ॥ और हेजनक! जैसे वैजयंतनामागृहविषे देवतावोंकीसभाविषे स्थितजोइंद्र है ॥ ताकीस्त्रीइंद्राणी तावैजयंतनामागृहविषेरहैनहीं ॥ किंतु तावैजयंतनामागृहकेसमीपवर्ति जोकोईअन्यगृहहै ताकेविषे साइंद्राणीरहैहै ॥ और साइंद्राणीभी इंद्रकेसमानही संपदावालीहै ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषे दक्षिण

नेत्रविषेस्थित जोपरमात्मारूपइंद्रहै ॥ ताकीस्त्रीइंद्राणी वामनेत्रविषेरहैहै ॥ और जाग्रत्‌अवस्थाविषे नानाप्रकारकेस्थूलभोगोंकूंभो गणेहारा जोपरमात्मारूपइंद्रहै ॥ ताइंद्ररूपभर्ताकेसाथ विवधप्रकारकरिकै साइंद्राणीविराजमानहै ॥ याकारणतें विद्वान्‌पुरुष ताइं द्राणीकूं विराट्‌नामकरिकै कथनकरैहैं ॥ अथवा जैसे दक्षिणनेत्रविषेस्थित इंद्रनामापुरुष वाकादिकदशइंद्रियोंकाअधिष्ठाताहै ॥ तैसे वामनेत्रविषेस्थित इंद्राणीभी वाकादिकदशइंद्रियोंकाअधिष्ठाताहै ॥ याकारणतें विद्वान्‌पुरुष ताइंद्राणीकूं विराट्‌नामकरिकै क थनकरैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ दशअक्षरोंवालाजोछंदहै ताकूंविराट्‌कहैहैं ॥ और यहइंद्राणीभी वाकादिकदशइंद्रियोंकेसाथ तादात्म्य संबंधकरिकै दशप्रकारहोवैहै ॥ यातें बुद्धिमान्‌पुरुष ताइंद्राणीकूं विराट्‌नामकरिकै कथनकरैहैं ॥ अथवा ॥ अन्नंविराट्‌ याश्रुतिविषे भोग्यअन्नकूं विराट्‌नामकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ और यहइंद्राणीभी परमात्मारूपइंद्रकाभोग्यहै ॥ याकारणतें ताइंद्राणीकूं विद्वान्‌पुरु ष विराट्‌नामकरिकै कथनकरैहैं ॥ हेजनक! याप्रकार जाग्रत्‌अवस्थाविषे यहपरमात्मादेव इंद्राणीरूपकरिकै तथाइंद्ररूपकरिकै सर्व जीवोंके वामदक्षिणनेत्रविषे स्थितहोवैहै ॥ कैसाहैसोपरमात्मारूपइंद्र ? समष्टिरूपकरिकैतौ एकहै ॥ और व्यष्टिउपाधिकरिकै भ्रांतपु रुषोंकूं नानाकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ यातें हेजनक! इंद्रियोंकरिकै नानाप्रकारकेस्थूलभोगोंकूंभोगताहुआ तू इदानींकालविषे जिसअ वस्थाविषेवर्तमानहै ॥ ताअवस्थाकानाम जाग्रत्‌अवस्थाहै ॥ ताजाग्रत्‌अवस्थाविषे तू परमात्मादेव भोक्ताइंद्ररूपकरिकै तथाभोग्यइं द्राणीरूपकरिकै सर्वशरीरोंविषेस्थितहोइके सर्वव्यवहारकीसिद्धिकरैहै ॥ हेशिष्य! याकहणेकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनें यहअर्थबोधन कऱ्या ॥ जिसअवस्थाविषे परमात्माकेइंद्ररूपका तथाइंद्राणीरूपका भिन्नभिन्नस्थानविषेनिवासहोवैहै ॥ सो वैश्वानररूपविश्वकास्वरू पहै ॥ और जिसअवस्थाविषे परमात्माकेइंद्ररूपका तथाइंद्राणीरूपका एकस्थानविषे निवासहोवैहै ॥ सोहिरण्यगर्भसूत्रात्मारूप तैजसकास्वरूपहै ॥ तथा ईश्वररूपप्राज्ञकास्वरूपहै ॥ अब तैजसकी तथाप्राज्ञकी परस्परविलक्षणता निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे स्वर्गलोकवासी देवराजइंद्र तथा ताकीस्त्रीइंद्राणी वैजयंतनामागृहका परित्यागकरिकै परस्पर संभोगकरणेवासते किसीएकांतस्थानविषेजावैहैं ॥ तैसे यहपरमात्मारूपइंद्र तथाइंद्राणी दक्षिणवामनेत्रकापरित्यागकरिकै परस्परसंभोगकरणे

वासते हृदयरूप एकांतस्थानविषेजावैहैं ॥ जिसहृदयकूं दहरविद्याविषे ईश्वररूपकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ और बालाकिअजातश त्रुकेसंवादविषे सुषुप्तिकास्थानरूपकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ और हेजनक! ताहृदयरूपीकमलके कर्णिकाकेसमान रक्तवर्णवाला जो मांसकापिंडहै ॥ सो परमात्मारूपइंद्राणीका भक्षणकरणेयोग्यअन्नहै ॥ और हृदयकमलके केसरसमान जेनाडियांहैं ॥ तिननाडी योंका जालकेसमान जोपरस्परग्रंथनहै ॥ सो तापरमात्मारूपइंद्रइंद्राणीका वस्त्रहै ॥ और जासुषुम्नानामानाडी हृदयदेशतैंनिक सिकै मूर्द्धस्थानकूंप्राप्तभईहै ॥ और तामूर्द्धस्थानतैंभी ऊपरि ब्रह्मलोकपर्यंत प्राप्तभईहै ॥ सा सुषुम्नानामानाडी यापरमात्मारूप इंद्रइंद्राणीका गमनआगमनविषे राजमार्गहै ॥ और हेजनक! जबी यहपरमात्मारूपइंद्र यासुषुम्नानाडीरूपमार्गकरिकै याश रीरतैं बाहरिनिकसेहै ॥ तबी देवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंही प्राप्तहोवैहै ॥ और जबीयहपरमात्मारूपइंद्र शरीरकेभीतरिही वि चरेहै ॥ तबी सुषुम्नानाडीकेशाखारूप जोदूसरीनाडियांहैं ॥ तिननाडीरूपमार्गकरिकै हृदयदेशतैं दक्षिणनेत्रविषेआवैहै ॥ और हे जनक! जैसे एकवृक्षकी अनेकशाखाहोवैहैं ॥ तैसे तासुषुम्नानाडीवृक्षकी दूसरीअनेकनाडियां शाखाकेसमानहैं ॥ कैसीहैं तेना डियां? एककेशके सहस्रभागकरिये ताकेएकभागकेसमान सूक्ष्महैं ॥ और हेजनक! इंद्राणीसहित सोपरमात्मारूपइंद्र तानाडी रूपमार्गकरिकै जबी हृदयाकाशविषे जावैहै ॥ तबी सुषुप्तिअवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और इंद्राणीसहित सोपरमात्मारूपइंद्र ज बी तानाडीरूपमार्गविषेही स्थितहोवैहै ॥ तबी स्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! इंद्राणीसहित सोपरमात्मारूपइंद्र जा ग्रत्‌अवस्थाविषे वामदक्षिणनेत्रविषेस्थितहोइकै शब्दस्पर्शादिकस्थूलविषयोंकूं भोगेहैं ॥ याकारणतैं तापरमात्मारूपइंद्रकूं विद्वान् पुरुष स्थूलभुक्कहेहैं ॥ और व्यष्टिस्थूलशरीरकेअभिमानतैं तापरमात्मारूपइंद्रकूं विश्वनामा कहेहैं ॥ और सोईहीपरमात्मारूप इंद्र जाग्रत्‌अवस्थाकापरित्यागकरिकै स्वप्नअवस्थाविषे नाडीरूपस्थानविषेस्थितहोइकै मनोमयसूक्ष्मविषयोंकूं भोगेहै ॥ याका रणतैं तापरमात्मारूपइंद्रकूं विद्वान्पुरुष सूक्ष्मभुक्कहेहैं ॥ और व्यष्टिसूक्ष्मशरीरकेअभिमानतैं तापरमात्मारूपइंद्रकूं तैजसक हेहैं ॥ और इंद्राणीसहित सोपरमात्मारूपइंद्र स्वप्नअवस्थाकापरित्यागकरिकै सुषुप्तिअवस्थाविषे हृदयआकाशविषे प्राप्तहोवै

है ॥ तहा वासनामय अत्यंतसूक्ष्मभोगोंकूं भोगेहै ॥ याकारणतें तापरमात्मारूपइंद्रकूं विद्वान्पुरुष अत्यंतसूक्ष्मभुक् कहैहैं ॥ औ
र सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मारूपइंद्र आनंदस्वरूपअंतर्यामीकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतें ताकूं आनंदभुक् कहै
हैं ॥ और व्यष्टिकारणशरीरकेअभिमानतें ताकूं प्राज्ञकहैहैं ॥ और हेजनक! वास्तवतैंविचारकरिकेदेखिये तौ सुषुप्तिअवस्थाविषे
सोपरमात्मारूपइंद्र अभोक्ताहीहै ॥ काहेतें? सुखदुःखकेज्ञानकानाम भोगहै ॥ सोसुखदुःखकाज्ञान सुषुप्तिविषेबुद्धिकेलयहुए संभ
वैनहीं ॥ यातें सुषुप्तिविषे आत्मा अभोक्ताहीहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सुषुप्तिअवस्थाविषे जोआत्मा अभोक्ताहीहोवै तौ पूर्वआप
नें यहकह्याथा ॥ हृदयाकाशविषेस्थित इंद्राणीसहित परमात्मारूपइंद्रका रक्तवर्णवालामांसपिंड अन्नहै ॥ और नाडियोंकासमूहवस्त्र
है ॥ यहआपकाकहणा विरुद्धहोवैगा ॥ **समाधान** ॥ हेजनक! सुषुप्तिअवस्थाविषे परमात्मारूपइंद्र तामांसपिंडरूपअन्नकूं भक्षण
करैहै ॥ तथानाडीरूपवस्त्रोंकूं धारणकरैहै ॥ याप्रकारका हमाराअभिप्रायनहीं ॥ किंतु तावचनविषे हमारायहअभिप्रायहै ॥ जिस
पुरुषकामन बाह्यविषयोंकीवासनाकरिकै अत्यंतचंचलहै ॥ सोपुरुष मनकीएकाग्रताकरणेवासते अन्नवस्त्रादिकसामग्रीसहित
परमात्मारूपइंद्रका ध्यानकरै ॥ ताध्यानकरिकै तापुरुषकामन एकाग्रहोवैगा ॥ यातें आत्माकेध्यानविषे तावचनकातात्पर्यहै भोगवि
षेनहीं ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मादेव आपणेसाक्षीस्वरूपकरिकै सर्वदुःखोंकेअभावकूं अनुभवकरैहै ॥ याकारणतें ताकूं
आनंदभुक्कहैहैं ॥ तथा अत्यंतसूक्ष्मभुक्कहैहैं ॥ यातें सुषुप्तिअवस्थाविषे आत्माविषे आनंदभुक्पणा तथा अत्यंतसूक्ष्मभुक्पणा मु
ख्यनहीं किंतु गौणहै ॥ और हेजनक! जैसे स्वर्गविषेस्थितदेवराजइंद्र पूर्वादिकदशदिशावोंकाअधिपतिहै ॥ यातेंपूर्वादिकदशदिशा
वोंकूं आपणेतें अभिन्नकरिकैमानैहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मा अंतर्यामीईश्वरकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोइकै पूर्वादिक
दशदिशावोंकेसाथ अभिन्नहोवैहै ॥ तहां इतनीविशेषताहै ॥ दृष्टांतविषे देवराजइंद्रका जोपूर्वादिकदिशावोंकेसाथअभेदहै सोवास्त
वतैंनहीं ॥ किंतु अभिमानमात्रतैंहै ॥ और यहपरमात्मारूपइंद्र सर्वजगत्काउपादानकारणहै ॥ यातें जैसेमृत्तिकारूपकारण घटरूप
कार्यके अंतरव्यापकहै ॥ तथा घटरूपकार्यसैंअभिन्नहै ॥ तैसे यहपरमात्मारूपइंद्र दिशादिकसर्वप्रपंचकेअंतरव्यापकहै ॥ तथा सर्व

जगत्सैंअभिन्नहै ॥ अब सुषुप्तिविषेस्थित मायाविशिष्टईश्वरविषे सर्वजगत्कीकारणता निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! सुषुप्तिअवस्था विषेस्थित जोमायाविशिष्टपरमेश्वरहै ॥ सोमायाविशिष्टईश्वरही आकाशादिकपंचभूतोंकाकारणहै ॥ तथा जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेशरीरोंकाकारणहै ॥ तथा दिक्कालादिक संपूर्णस्थूलसूक्ष्म प्रपंचकाकारणहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सत् चित्आनंदस्वरूपपरमात्माविषे असत्जडदुःखरूपजगत्की कारणतासंभवैनहीं ॥ काहेतें? समानस्वभाववालेपदार्थोंकाही परस्पर कार्यकारणभावहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक! समानस्वभाववालेपदार्थोंका परस्पर कार्यकारणभावहोवैहै ॥ यहनियम सर्वत्रसंभवैनहीं ॥ काहेतें? जैसे निरवयव तथारूपादिकोंतेंरहितजोआकाशहै ताकेविषे सावयव तथारूपादिमान् मेघविद्युतादिकोंकीकारणताहै ॥ तैसे सत्चित्आनंदस्वरूप परमात्माविषेभी असत्जडदुःखरूपप्रपंचकीकारणतासंभवैहै ॥ और समानस्वभाववालेपदार्थोंका परस्पर कार्यकारणभावहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम परिणामीउपादानकारणविषेहै ॥ विवर्तउपादानकारणविषे यहनियम हैनहीं ॥ और यहपरमात्मादेव सर्व जगत्का विवर्तउपादानकारणहै ॥ अथवा शुद्धआत्माविषेतौ जगत्कीकारणताहैनहीं ॥ किंतु मायाविशिष्टपरमात्माविषे जगत्कीकारणताहै ॥ सामाया असत्जडदुःखरूपहै ॥ यातैं मायाकीअसत्जडदुःखरूपता कार्यप्रपंचविषेप्रतीतहोवैहै ॥ इतनेग्रंथकरिकै व्यष्टि स्थूल सूक्ष्म कारण शरीरकेअभिमानीजे विश्व तैजस प्राज्ञ हैं तिनोंकास्वरूपदिखाया ॥ अब तुरीयशुद्धआत्माकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जोतुमनैं पूर्व गंतव्यस्थान हमारेसैंपूछाथा सोगंतव्यस्थान तू श्रवणकर ॥ जो परमात्मादेव जाग्रत्अवस्थाविषे दक्षिणनेत्रविषेस्थितहोइकै आपणेस्वप्रकाशरूपकरिकै सूर्यादिकसकलजगत्कूं प्रकाशकरैहै ॥ और जोपरमात्मादेव स्वप्नकेसर्वपदार्थोंकूं प्रकाशकरैहै ॥ और जोपरमात्मादेव सुषुप्तिअवस्थाविषे हृदयाकाशविषेस्थितहोइकै दिशादिकसर्वजगत्केसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा सर्वभूतभौतिकप्रपंचकीउत्पत्तिकरै है ॥ सोपरमात्मादेवही तुमारेकूं तथा अन्यअधिकारियोंकूं गंतव्यहै ॥ और हेजनक! सोपरमात्मादेवही तुमारा तथा हमारा तथाअन्यप्राणियोंकाआत्मा है ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोएकहीपरमात्मादेव सर्वत्रअनुगतहोवै तौ विश्व तैजस प्राज्ञ इत्यादिरूपकरिकै तथा मैं तू अन्य

इत्यादिरूपकरिकै भिन्नभिन्न किसवासतेंप्रतीतहोवैहै ? ॥ समाधान ॥ हेजनक! जैसे एकहीमहाकाश घटमठादिरूपउपाधियों केभेदतें घटाकाश मठाकाश इत्यादिकभेदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे एकहीपरमात्मादेव शरीरादिकउपाधियोंकेभेदतें भिन्नभिन्न प्रतीतहोवैहै ॥ और जैसे उपाधिकृतभेदकरिकै आकाशका वास्तव एकपणा निवृत्तहोवैनहीं ॥ तैसे उपाधिकृतभेदकरिकै आत्माकाभी वास्तव एकपणा निवृत्तहोवैनहीं ॥ और हेजनक! जिनपुरुषोंकूं यासंसाररूपीघोरवनतें भयहोवैहै ॥ ऐसेअधिकारीपुरुषोंकूं यहअद्वितीयआत्माही जानणेयोग्यहै ॥ और याअद्वितीयआत्माका जोसाक्षात्कारहै सोईही गंतव्यआत्माकेप्राप्तिका राजमार्गहै ॥ हेजनक! ऐसेआत्मज्ञानरूपीमार्गविषे जबी तुमअधिकारी चलोंगे तबी तुमारेकूं आत्मारूपगंतव्यस्थानकी प्राप्तिहोवैगी ॥ और हेजनक! यहअद्वितीयआत्मा मनवाणीका अविषयहै ॥ यातें याअद्वितीयआत्माकूं हम साक्षात्कथनकरणेविषे समर्थनहीं ॥ और तूभी साक्षात्जानणेविषेसमर्थनहीं ॥ यातें अनात्मपदार्थोंके निषेधद्वारा याआत्माकूंविद्वान्पुरुष कथनकरैहैं ॥ अब निषेधमुखकरिकै आत्माकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यहआनंदस्वरूपआत्मा भावत्व अभावत्व धर्मतेंरहितहै ॥ यातें याआत्माकूं घटादिकपदार्थोंकीन्यांई भावरूपकरिकै तथाघटाभावकीन्यांई अभावरूपकरिकै तुमनें नहींजानणा ॥ दृष्टांत ॥ जैसे आकाश मेघविद्युतादिकभावपदार्थरूपनहीं ॥ तथा मेघविद्युतादिकोंकाअभावरूपनहीं ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा प्रपंचरूपनहीं ॥ तथा प्रपंचकाअभावरूपनहीं ॥ किंतु भावअभावपदार्थोंसें विलक्षणहै ॥ और हेजनक! जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानके अज्ञानतें तारज्जुविषेसर्पप्रतीतहोवैहै ॥ और जबी रज्जुरूपअधिष्ठानकाज्ञानहोवैहै तबी कारणअज्ञानसहित सोसर्प रज्जुरूपअधिष्ठानविषे लयहोवैहै ॥ तैसे आत्मारूपअधिष्ठानकेअज्ञानतें यहअभावरूपजगत् प्रतीतहोवैहै ॥ और जबी अधिष्ठानआत्माका साक्षात्कारहोवैहै तबी संपूर्णजगत् आत्मारूपअधिष्ठानविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब आत्माविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकी अविषयता निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यहआनंदस्वरूपआत्मा नेत्रादिकबाह्यकरणोंकरिकै तथा मन बुद्धि चित्त अहंकार याअंतःकरणोंकरिकै जान्याजावैनहीं ॥ यातें यहआनंदस्वरूपआत्मा अग्रह्यहै ॥ और हेजनक! जिसपदार्थकूं नेत्रादिककरण ग्रहणकरैहैं ॥ सोईहीपदार्थ प्रमाणकाविषय

होवैहै ॥ और जिसपदार्थकूं नेत्रादिककरण ग्रहणकरतेनहीं ॥ सोपदार्थ प्रमाणकाविषय होवैनहीं ॥ जैसे घटादिकपदार्थोंकूं नेत्रादिककरणग्रहणकरैहैं ॥ यातैं घटादिकपदार्थ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकेविषयहैं ॥ और जोपदार्थ प्रमाणकाविषयहोवैहै सोईही पदार्थ प्रमेयहोवैहै ॥ और याआनंदस्वरूपआत्माकूं नेत्रादिककरण ग्रहणकरिसकैनहीं ॥ यातैं यहआत्मा प्रमाणकाविषयहोवैनहीं ॥ याकारणतैं यहआनंदस्वरूपआत्मा अप्रमेयहै ॥ शंका ॥ हे भगवन्! जोपदार्थ नेत्रादिककरणोंकाविषयहोवैहै ॥ सोईपदार्थ प्रमाणकाविषय होवैहै ॥ याप्रकारकानियम आपनैंकह्या सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? स्वर्ग तथाइंद्रादिकदेवता तथा धर्म अधर्म इत्यादिक अतिइंद्रियपदार्थ नेत्रादिकरथोंकेविषय तौहैंनहीं ॥ तथापि शब्दादिकप्रमाणोंकेविषयहैं ॥ समाधान ॥ स्वर्गादिक अतिइंद्रियपदार्थ यद्यपि नेत्रादिकबाह्यकरणोंकेविषयहैंनहीं ॥ तथापि मनरूपकरणके विषयहैं ॥ जोस्वर्गादिकअतिइंद्रियपदार्थोंविषे मनरूपकरणकीविषयता नहींअंगीकारकरिये तौ स्वर्गादिकपदार्थ अतिइंद्रियहैं याप्रकारकाज्ञान जोमनविषेहोवैहै सोनहोणाचाहिये ॥ यातैं अनुमानकी तथाशब्दकी सहायतातैं मन स्वर्गादिकअतिइंद्रियपदार्थोंकूंभी विषयकरैहै ॥ इतनेग्रंथकरिकै आत्माविषे प्रमाणकीअविषयतादिखाई ॥ अब आत्मातैंभिन्न सर्वअनात्मपदार्थोंविषे विषयता निरूपणकरैहैं ॥ हे जनक! अबाधितअर्थकूं विषयकरणेहारा जोप्रमाज्ञानहै ॥ तथा बाधितअर्थकूंविषयकरणेहारा जो अप्रमाज्ञानहै ॥ और प्रमाज्ञानकेकरण जेप्रत्यक्षादिकप्रमाणहैं तथा अप्रमाज्ञानकेकरण जेदुष्टचक्षुआदिकअप्रमाणहैं ॥ और प्रमाज्ञानजन्य तथा अप्रमाज्ञानजन्य जेविषयनिष्ठ ज्ञाततारूपफलहैं ॥ और प्रमाज्ञानकेविषय जेघटादिकपदार्थहैं ॥ तथा अप्रमाज्ञानकेविषय जेशुक्तिरजतादिकहैं ॥ यहअष्ट जडहैं ॥ यातैं आपणीसिद्धिवासते स्वप्रकाशचैतन्यरूपसाक्षीआत्माकूं आश्रयणकरैहैं ॥ स्वप्रकाश साक्षीआत्मातैंविना जडप्रमाआदिकोंकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं प्रमाण १ अप्रमाण २ प्रमा ३ अप्रमा ४ प्रमाजन्यज्ञाततारूपफल ५ अप्रमाजन्यज्ञाततारूपफल ६ प्रमाज्ञानकाविषय ७ अप्रमाज्ञानकाविषय ८ ॥ येअष्ट साक्षीआत्माकेविषयहैं ॥ यातैं विषयरूपकरिकै यहअष्ट समानहीहैं ॥ और जेवादीपुरुष तिन प्रमाणादिकअष्टोंकी परस्पर विलक्षणता अंगीकारकरैहैं ॥ ते वादीपुरुष प्रमाणादिकोंविषे साक्षीआत्माकेविषयताकूं

नजाणिकरिकै तिनप्रमाणादिकोंकी परस्पर विलक्षणता कथनकरैहैं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ जैसे नेत्रवान्पुरुषकेसमीपस्थितहुआ दुग्ध एकशुक्लवर्णवालाहीहोवैहै ॥ और अंधपुरुषोंकीसभाविषेस्थितहुआ सोदुग्ध नीलपीतादिकनानावर्णवालाहोवैहै ॥ तैसे भेदवादीभ्रांतपुरुषोंकीदृष्टिकरिकै प्रमाणादिकोंविषे नानाप्रकारकीविलक्षणताहै ॥ और वेदांतशास्त्रकेतात्पर्यजानणेहारे जेअद्वैतवादीहैं तिनोंकीदृष्टिकरिकैतौ संपूर्णप्रमाणादिक साक्षीआत्माकेविषयहैं ॥ यातैं साक्षीआत्माकीविषयतारूपकरिकै संपूर्णप्रमाणादिक समानहीहैं ॥ अब प्रमाणादिकअष्टोंविषे साक्षीआत्माकीविषयताकूं नअंगीकारकरिकै जेभेदवादीपुरुष प्रमाणादिकोंविषे विलक्षणता मानैहैं तिनोंकाखंडनकरैहैं ॥ तहां जोवादी अप्रमाणकूंअंगीकारकरैहै तासैं यहपूछाचाहिये ॥ सोअप्रमाण किसीअप्रमाणकरिकैसिद्धहै अथवा किसीप्रमाणकरिकै सिद्धहै? ॥ तहां जोवादी अप्रमाणकरिकै अप्रमाणकीसिद्धि यहप्रथमपक्षअंगीकारकरै तौ जैसे अप्रमाणकरिकैसिद्ध शुक्तिरजतकूं कथनकरणेहारापुरुष भ्रांतहोवैहै ॥ तैसे अप्रमाणकरिकैसिद्ध अप्रमाणकूं कथनकरणेहारावादीभी भ्रांतहोवैगा ॥ यातैं अप्रमाणकरिकै अप्रमाणकीसिद्धि संभवैनहीं ॥ और जोवादी प्रमाणकरिकै अप्रमाणकीसिद्धि यहदूसरापक्ष अंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? मिथ्याअर्थकूं जोविषयकरैहै ताकूं अप्रमाणकहैहैं ॥ ताअप्रमाणरूपमिथ्याअर्थ जोप्रमाणविषयकरैगा तौ सोप्रमाणभी अप्रमाणहीहोवैगा ॥ और जोवादीयहकहै ॥ जो जिसअर्थकूं विषयकरैहै ॥ सो तिसअर्थकीसिद्धिविषे प्रमाणहीहोवैहै ॥ यातैं अप्रमाणकूंविषयकरणेहाराप्रमाणभी ताअप्रमाणकीसिद्धिविषे प्रमाणहीहै ॥ सोयहवादीकाकहणा संभवैनहीं ॥ काहेतें? जो जिसअर्थकूं विषयकरैहै ॥ सो तिसअर्थकीसिद्धिविषे प्रमाणहीहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम जोअंगीकारकरौगे तौ शुक्तिरजतकूंविषयकरणेहारा अप्रमाणभी प्रमाणहोणाचाहिये ॥ और याकेविषेभी जोवादी इष्टापत्तिकरै तौ यहप्रमाणहै यहअप्रमाणहै याप्रकारका तुमाराकथन व्यर्थहोवैगा ॥ किंवा ॥ चक्षुइंद्रिय रूपकूंग्रहणकरैहै गंधकूंग्रहणकरैनहीं ॥ यातैं रूपकीअपेक्षाकरिकैतौ चक्षुइंद्रियविषे प्रमाणताहै ॥ और गंधकीअपेक्षाकरिकै तिसीचक्षुइंद्रियविषे अप्रमाणताहै ॥ तैसे घ्राणइंद्रियविषे गंधकीअपेक्षाकरिकैतौ प्रमाणताहै ॥ और रूपकीअपेक्षाकरिकै तिसीघ्राणइंद्रियविषे

अप्रमाणताहै ॥ इसप्रकार सर्वप्रमाणोंविषे किसीअर्थकीअपेक्षाकरिकै प्रमाणताहै और किसीअर्थकीअपेक्षाकरिकै अप्रमाणता है ॥ नियमकरिकै प्रमाणता तथाअप्रमाणता किसीप्रमाणविषेहैनहीं ॥ याकारणतैंभी यहप्रमाणहै यहअप्रमाणहै याप्रकार का वादियोंकाकथन व्यर्थ है ॥ किंवा प्रमाणकरिकै जो अप्रमाणकीसिद्धिअंगीकारकरौगे तौ जैसे मिथ्या रज्जुसर्पकूं तथाशुक्तिरजतकूं विषयकरणेहाराज्ञान अप्रमाणहीहोवैहै ॥ तैसे अप्रमाणकूंविषयकरणेहारा प्रमाणभी अप्रमाणहीहोवैगा ॥ यातैं प्रमाणकरिकै अप्रमाणकीसिद्धि संभवैनहीं ॥ किंवा जैसे अप्रमाण अप्रमाणकरिकै तथाप्रमाणकरिकैसिद्धहोवैनहीं ॥ तैसे प्रमाणभी प्रमाणकरिकै तथाअप्रमाणकरिकै सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतें? जोप्रमाणका प्रमाणकरिकैहीग्रहणहोवै तौ सोग्राहकप्रमाण प्रथमग्राह्यप्रमाणतें अभिन्नहै अथवा भिन्नहै ॥ जोकहो सोग्राहकप्रमाण ग्राह्यप्रमाणतेंअभिन्नहै तौ आपणेग्रहणविषे आपणी अपेक्षारूप आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोकहो सोग्राहकप्रमाण ग्राह्यप्रमाणतैंभिन्नहै तौ तिसग्राहकप्रमाणकी किस प्रमाणकरिकै सिद्धिहोवैहै? ॥ जोकहो आपणेकरिकैही तिसग्राहकप्रमाणकीसिद्धिहोवैहै तौ आपणीसिद्धिविषेआपणीअपेक्षारूप आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोकहो प्रथमग्राह्यप्रमाणकरिकै ताग्राहकप्रमाणकीसिद्धिहोवैहै तौ प्रथमप्रमाणकूंआपणीसिद्धिविषे दूसरेप्रमाणकीअपेक्षा ॥ और दूसरेप्रमाणकूंआपणीसिद्धिविषे प्रथमप्रमाणकीअपेक्षा ॥ याप्रकार अन्योन्याश्रय दोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोकहो सोदूसराप्रमाण आपणीसिद्धिवासते तीसरेप्रमाणकीअपेक्षाकरैहै तौ ता तीसरेप्रमाणकी आपणेकरिकैसिद्धिहै ॥ अथवा दूसरेप्रमाणकरिकैसिद्धिहै ॥ अथवा प्रथमप्रमाणकरिकैसिद्धिहै ॥ जोकहो ता तीसरेप्रमाणकी आपणेकरिकैहीसिद्धिहै तौ आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोदूसरेप्रमाणकरिकै तीसरेप्रमाणकीसिद्धिमानौगे तौ अन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जो प्रथमप्रमाणकरिकै तीसरेप्रमाणकीसिद्धिमानौगे तौ प्रथमप्रमाणकीदूसरेप्रमाणकरिकैसिद्धि ॥ और दूसरेप्रमाणकी तीसरेप्रमाणकरिकैसिद्धि ॥ और तीसरेप्रमाणकी पुनःप्रथमप्रमाणकरिकैसिद्धि ॥ याप्रकार चक्रकीन्यांई भ्रमणरूप चक्रिकादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोतीसरेप्रमाणकीसिद्धिवासते चतुर्थप्रमाणकाअंगीकार ॥ और चतुर्थ

प्रमाणकीसिद्धिवासते पंचमप्रमाणका अंगीकार ॥ याप्रकार प्रमाणोंकीधारा अंगीकारकरोंगे तौ अनवस्थादोषकी प्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं प्रमाणकरिकै प्रमाणकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ और अप्रमाणकरिकै प्रमाणकीसिद्धिहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरोंगे तौ अप्रमाणकाविषयहुआ प्रमाणभी अप्रमाणरूपहीहोवैगा ॥ यातैं अप्रमाणकरिकैभी प्रमाणकीसिद्धि संभवैनहीं ॥ किंवा जैसे प्रमाणके तथाअप्रमाणके स्वरूपकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ तैसे प्रमाके तथाअप्रमाके स्वरूपकीसिद्धिभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं? सोप्रमाज्ञान प्रमाज्ञानकरिकैसिद्धहै ॥ अथवा अप्रमाज्ञानकरिकैसिद्धहै ॥ और सोअप्रमाज्ञान अप्रमाज्ञानकरिकैसिद्धहै ॥ अथवा प्रमाज्ञानकरिकैसिद्धहै ॥ इत्यादिकविकल्पोंविषे जेपूर्वदूषणकहेहैं तेसर्व संभवहोइसकैहैं ॥ यातैं प्रमाज्ञानका तथा अप्रमाज्ञानकाभीस्वरूप सिद्धहोइसकैनहीं ॥ किंवा प्रमाणअप्रमाणकेभेदकरिकै तथाप्रमाज्ञानअप्रमाज्ञानकेभेदकरिकै ज्ञाततारूपफलकाभेदहोवैहै ॥ सोप्रमाणअप्रमाणकाभेद तथा प्रमाअप्रमाकाभेद पूर्वउक्तयुक्तियोंकरिकै संभवैनहीं ॥ यातैं प्रमाअप्रमाजन्य ज्ञाततारूपफलकाभी भेदसंभवैनहीं ॥ किंवा प्रमाणकरिकै तथाप्रमाज्ञानकरिकै घटादिकविषयोंकीसिद्धिहोवैहै ॥ यातैं प्रमाणका तथाप्रमाज्ञानका भेदही घटादिकविषयोंकेभेदकासाधकहै ॥ सोप्रमाण तथाप्रमाज्ञान पूर्वउक्तयुक्तियोंकरिकै अप्रमाणरूपहै ॥ यातैं ताअप्रमारूपज्ञानकरिकै घटादिकविषयोंकेभेदकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ जोअप्रमाज्ञानकरिकैभी विषयकीसिद्धिहोतीहोवै तौ यहसर्पहै याप्रकारके अप्रमाज्ञानकरिकै रज्जुसर्पकीभी सिद्धिहोणीचाहिये ॥ और यहसर्पहै याप्रकारकेअप्रमाज्ञानकरिकै रज्जुसर्पकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं प्रमाणादिकोंकीन्यांई घटादिकविषयोंकाभेदभी संभवैनहीं ॥ किंवा जोवादी चक्षुआदिकप्रमाणोंकरिकै विषयकीसिद्धिमानैहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ चक्षुआदिकप्रमाण जिसकालविषे घटादिकविषयोंकूं ग्रहणकरैहै ॥ तिसीकालविषे चक्षुआदिकोंविषे प्रमाणताहै ॥ अथवा स्वभावतैंही चक्षुआदिकोंविषे प्रमाणताहै ॥ तहां प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै तौ चक्षुआदिकप्रमाणोंकरिकै घटादिकविषयोंकीसिद्धिनहींहोवैगी ॥ काहेतैं? प्रथम घटादिकविषयसिद्धहोवै तौ पश्चात् चक्षुआदिक प्रमाणोंविषे प्रमाणतासिद्धहोवै ॥ और प्रथम चक्षुआदिकप्रमाणोंविषे प्रमाणतासिद्धहोवै तौ पश्चात् घटादिकविषयोंकीसिद्धिहोवै ॥

याप्ररकाकेअन्योन्याश्रय दोषकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जहां अन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तहां किसीकार्यकीसिद्धिहोतीन हीं ॥ और चक्षुआदिकप्रमाणोंविषे स्वभावतैंही प्रमाणताहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै तौ जैसे चक्षुआदिकप्रमाणों विषे स्वभावतैं प्रमाणताहै ॥ तैसे अप्रमाणोंविषेभी स्वभावतैं प्रमाणता काहेतैंनहींहोवै? ॥ और जोवादी यहकहै ॥ चक्षुआदि कप्रमाणोंविषे जोप्रमाणताहै सा स्वभावतैंहीहै ॥ और अप्रमाणोंविषे स्वभावतैं प्रमाणता संभवैनहीं ॥ काहेतैं? काचकामलादि कदोषकरिकैयुक्त चक्षुआदिकोंकूं अप्रमाणकहेहैं ॥ तिनअप्रमाणोंविषे दोषकूंग्रहणकरणेहारा जोप्रमाणहै ॥ ताप्रमाणकरिकै ति नअप्रमाणोंविषे अप्रमाणताहीसिद्धहोवैहै ॥ यातैं अप्रमाणोंविषे स्वभावतैं प्रमाणता सिद्धहोइसकैनहीं ॥ सोयहवादीकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं? जैसे अप्रमाणविषे दोषकूंग्रहणकरणेहारा जोप्रमाणहै ॥ तिसप्रमाणकरिकै ताअप्रमाणविषे अप्रमाण तासिद्धहोवैहै ॥ तैसे दोषग्राहकप्रमाणविषेभी दोषकूंग्रहणकरणेहारा जोदूसराप्रमाणहै ॥ तादूसरेप्रमाणकरिकै दोषग्राहकप्र माणविषेभी अप्रमाणता क्यूंनहींसिद्धहोवै? ॥ और जोवादी यहकहै ॥ अप्रमाणविषे दोषकूंग्रहणकरणेहारा जोप्रमाणहै ॥ ताके विषे अप्रमाणता तबी सिद्धहोवै ॥ जबी ताकेविषे दोषकीप्रतीतिहोवै ॥ और तादोषग्राहकप्रमाणविषे किसीप्रमाणकरिकै दोष कीप्रतीतिहोतीनहीं ॥ उलटा अनुपलब्धिरूपप्रमाणकरिकै तादोषग्राहकप्रमाणविषे दोषकेअभावकीही प्रतीतिहोवैहै ॥ यातैं अ प्रमाणकेदोषग्राहकप्रमाणविषे अप्रमाणता संभवैनहीं ॥ सोयहवादीकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं? अप्रमाणविषेदोषकूंग्रहण करणेहारा जोप्रथमप्रमाणहै ॥ ताकेविषे दोषकेअभावकूंग्रहणकरणेहारा जोअनुपलब्धिप्रमाणहै ॥ सोअनुपलब्धिप्रमाण प्रमाण रूपहुआ दोषकेअभावकूंग्रहणकरैहै ॥ अथवा सोअनुपलब्धिप्रमाण अप्रमाणरूपहुआ दोषकेअभावकूंग्रहणकरैहै ॥ तहां प्रथमप क्ष जोवादी अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं? श्रुतिरूपअलौकिकप्रमाणकूंछोडिकै जितने प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति अनुपलब्धि यहलौकिकषट्प्रमाणहैं ॥ ते दोषकीशंकाकरिकै युक्तहैं ॥ यातैं स्वभावतैंतौ तिनप्रत्यक्षादिकोंविषे प्रमा णताहैनहीं ॥ किंतु जिसकालविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंविषे दोषकेअभावकाज्ञानहोवैहै ॥ तिसीकालविषे प्रत्यक्षादिकोंकूंप्रमाणता

है ॥ यातैं दोषग्राहकप्रमाणविषे दोषाभावकूं ग्रहणकरणेहारा जोअनुपलब्धिप्रमाणहै ॥ ताकेप्रमाणताकीसिद्धिवासते ताअनुपल ब्धिप्रमाणविषे दोषाभावकूंग्रहणकरणेहारा कोईअनुपलब्धिप्रमाण अंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ और सोअनुपलब्धिप्रमाण प्रथम अ नुपलब्धिप्रमाणतैं अभिन्नहै अथवा भिन्न है? ॥ जोवादी अभिन्नकहै तौ आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोवादी ताअनुपल ब्धिप्रमाणकूंभिन्नकहै तौ तादूसरेअनुपलब्धिप्रमाणविषे दोषाभावकूं कौनअनुपलब्धिप्रमाण ग्रहणकरैहै तहां जोवादी प्रथम अनुपलब्धिप्रमाणकरिकै दूसरेअनुपलब्धिप्रमाणविषे दोषाभावकाग्रहणमानैं तौ अन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जो वादी तादूसरेअनुपलब्धिप्रमाणविषे दोषाभावकेग्रहणवासते तीसराअनुपलब्धिप्रमाण अंगीकारकरै तौ तातीसरेअनुपलब्धि प्रमाणविषे दोषाभावका किसअनुपलब्धिप्रमाणकरिकै ग्रहणहोवैहै? ॥ तहां जोवादीकहै तीसरेअनुपलब्धिप्रमाणविषे प्रथम अनुपलब्धिप्रमाणकरिकै दोषाभावकाग्रहणहोवैहै तौ चक्रिकादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोवादी तीसरेअनुपलब्धिप्रमाणवि षे दोषाभावकेग्रहणवासते चतुर्थअनुपलब्धिप्रमाण औरचतुर्थवासते पंचम याप्रकार अनुपलब्धिप्रमाणोंकीधारा अंगीकारकरै तौ अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं प्रमाणरूपहुई अनुपलब्धि दोषाभावकूंग्रहणकरैहै यहप्रथमपक्ष संभवैनहीं ॥ और अ प्रमाणरूपहुआ सोअनुपलब्धिप्रमाण दोषग्राहकप्रमाणविषे दोषाभावकूंग्रहणकरैहै ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सो भी संभवैनहीं ॥ काहेतें? जो अप्रमाणकाविषयहोवैहै ॥ सोभी अप्रमाणही होवैहै ॥ यातैं अप्रमाणरूपअनुपलब्धिकाविषय जो दोषाभावविशिष्टप्रमाणहै ॥ सोभी अप्रमाणरूपहीहोवैगा ॥ याकहणेकरिकै यहअर्थसिद्धभया ॥ जोवादी आत्माकूंप्रकाशरूप नहीं अंगीकारकरैहै ॥ तिसवादीकेमतविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैही घटादिकविषयोंकीसिद्धिहोवैहै ॥ ते प्रत्यक्षादिकप्रमाण पूर्वउ क्तयुक्तियोंकरिकै सिद्धहोइसकैंनहीं ॥ याकारणतैं घटादिकविषयोंकी तथा प्रमाअप्रमारूपज्ञानकीभी सिद्धिहोइसकैनहीं ॥ किंवा प्रमाण प्रमा फल यातीनोंकीसिद्धिविषे कोईप्रमाणहै अथवा नहींहै? तहां जोवादीकहै तिनोंविषेप्रमाण नहींहै तौ नरशृंगकीन्यां ई ते प्रमाणादिक अत्यंतअसत्होवैंगे ॥ और जोवादीकहै ॥ प्रमाण प्रमा फल यातीनोंकीसिद्धिविषे कोईप्रमाणहै तौ जोपदार्थ

प्रमाणकाविषयहोवैहै ॥ सो पदार्थ प्रमेयहीहोवैहै ॥ यातें प्रमाण प्रमा फल यातीनोंविषेभी घटादिकपदार्थोंकीन्यांई प्रमेयरूप
ताहीप्राप्तहोवैगी ॥ और जोवादी याकेविषे इष्टापत्तिकरै तौ यहप्रमाणहै यहप्रमाहै यहफलहै और यहप्रमेयहै यहचारिप्रकारकाभे
द वादीकेमतविषे असंगतहोवैगा ॥ याकारणतेंभी प्रमाणादिकोंकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ यातें यहसिद्धभया ॥ जैसे आकाशकेविषे
मूढपुरुषोंकूं गंधर्वनगर प्रतीतहोवैहै ॥ परंतु सोगंधर्वनगर वास्तवतें आकाशविषेहैनहीं ॥ किंतु तिनमूढपुरुषोंकेकल्पनाकरिकै
सिद्धहै ॥ तैसे यहप्रमाणहै यहप्रमाहै यहफलहै और यहप्रमेयहै यहचारिप्रकारकाभेद केवलवादियोंकीकल्पनाकरिकैसिद्धहै ॥ और
जो कल्पितपदार्थहोवैहै ॥ सो साक्षीआत्माकरिकैही प्रकाश्यहोवैहै ॥ जैसे कल्पितस्वप्नकेपदार्थ साक्षीआत्माकरिकैप्रकाश्यहैं ॥
तैसे कल्पितप्रमाणादिकभी साक्षीआत्माकरिकैहीसिद्धहैं ॥ किंवा दोषजन्यदृष्टिकरिकै जिसअधिष्ठानविषे जोपदार्थप्रतीतहोवै
है ॥ ताअधिष्ठानविषे सोपदार्थ वास्तवतैंहोवैनहीं ॥ जैसे पुरुषकेवेषकूंधारणकरणेहारीस्त्रीविषे दोषजन्यदृष्टिकरिकै जोपुरुषपणा
प्रतीतहोवैहै ॥ सोपुरुषपणा ता स्त्रीविषेवास्तवतैंहैनहीं ॥ और जैसे दोषजन्यदृष्टिकरिकै रज्जुविषे जोसर्पप्रतीतहोवैहै ॥ सोस
र्प तारज्जुविषे वास्तवतैंहैनहीं ॥ तैसे दोषजन्यदृष्टिकरिकै वादियोंकूं जो प्रमाण प्रमा फल और विषय यहचारिप्रकारकाभेद प्रतीत
होवैहै ॥ सोभेदभी वास्तवतैंहैनहीं ॥ शंका ॥ प्रमाण प्रमा फल विषय इनचारोंकूं जोकल्पितअंगीकारकरोगे तौ तिनप्रमाणा
दिकोंकरिकै लोकोंकाव्यवहार सिद्धनहींहोवैगा ॥ यातें प्रमाणादिकोंकूं वास्तवमाननाही उचितहै ॥ समाधान ॥ कल्पितअर्थ
करिकै जोव्यवहारकीसिद्धिनहींहोती तौ प्रमाणादिकोंकूं हम सत्यअंगीकारकरते ॥ परंतु लौकिकव्यवहार मिथ्याअर्थकरिकै
भी सिद्धहोइसकेहै ॥ जैसे कल्पितरज्जुसर्पकूंविषयकरणेहारा जो यहसर्पहै याप्रकारकाज्ञानहै ॥ तामिथ्याज्ञानकरिकै भयकंपा
दिकव्यवहार होवैहैं ॥ तैसे कल्पितप्रमाणादिकोंकरिकैभी लोकोंकाव्यवहार संभवैहै ॥ यातें प्रमाण अप्रमाण प्रमा अ
प्रमा इत्यादिकसंपूर्ण जडजगत् साक्षीआत्माकाविषयहै ॥ और जैसे दीपककरिकै प्रकाश्यजेघटादिकपदार्थहैं ॥ ते प्र
काशकदीपककूं विषयकरिसकैंनहीं ॥ तैसे साक्षीआत्माकरिकैप्रकाश्य जेप्रमाणादिकहैं ॥ ते प्रकाशकसाक्षीआत्माकूं

विषयकरिकैसकैंनहीं ॥ शंका ॥ यद्यपि प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकाविषय आत्मानहींहै ॥ तथापि श्रुतिप्रमाणकाविषय आत्माहै ॥ काहेतैं? तंत्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामि ॥ अर्थयह ॥ उपनिषद्‌प्रमाणकरिकै जानणेयोग्यजोआत्माहै ॥ ताकास्वरूप मैं तुमारेसैंपूछताहूं ॥१॥ याश्रुतिविषे उपनिषद्‌प्रमाणजन्यज्ञानकीविषयता आत्माविषेकहीहै ॥ यातैं आत्मा प्रमाणकाअविषयनहीं किंतु विषयहीहै ॥ समाधान ॥ आत्मातैंभिन्न संपूर्णजडजगत् मिथ्याहै ॥ यातैं सोजडजगत् श्रुतिरूपप्रमाणकाविषयनहीं ॥ और आत्मा स्वप्रकाशहै ॥ यातैं आत्माभी श्रुतिरूपप्रमाणकाविषयनहीं ॥ किंतु माताकीन्यांई मुमुक्षुजनोंकेअत्यंतहितकारि श्रुतिभगवती आत्माविषे स्थूलसूक्ष्मजगत्‌काआरोपणकरिकै ताजगत्‌कानिषेधकरतीहुई अर्थतैंआत्माकाबोधनकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ श्रुतिप्रमाणजन्य अंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानकरिकै आत्माका प्रकाशहोवैनहीं ॥ किंतु तावृत्तिज्ञानकरिकै आत्माकेआवरणकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ ताआवरणकीनिवृत्तिमात्रकूंग्रहणकरिकैही श्रुतिविषे आत्माकूंउपनिषद्‌प्रमाणकाविषयकह्याहै ॥ यातैं स्वप्रकाशसाक्षीआत्मा किसीप्रमाणकरिकैसिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु स्वतःहीसिद्धहै ॥ अब आत्माविषेस्वप्रकाशताकीदृढताकरणेवासतै पुनःपूर्वविचारकूं कथनकरैहैं ॥ किंवा प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै मैं याअर्थकूंनिश्चयकरताहूं ॥ याप्रकारकेज्ञानकाआश्रय जोप्रमाताहै ॥ ताप्रमाताकूंआश्रयणकरिकैही प्रमाण अप्रमाण प्रमा अप्रमा फल प्रमेय इत्यादिकभेद सिद्धहोवैहैं ॥ आश्रयरूप प्रमाताकीसिद्धितैं विना प्रमाणादिकोंकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं प्रमाणादिकोंकीसिद्धिवासतै प्रमाताकीसिद्धि अवश्यचाहिये ॥ तहां वेदांतसिद्धांतविषे प्रमाताकास्वरूपभूत जोस्वप्रकाशचैतन्यहै ॥ ताकरिकैही प्रमाताकीसिद्धिहोवैहै ॥ काहेतैं? वेदांतसिद्धांतविषे अंतःकरणविशिष्टचैतन्यकानाम प्रमाताहै ॥ सोविशिष्टचैतन्य शुद्धचैतन्यतैंभिन्नहैनहीं ॥ यातैं स्वप्रकाशचैतन्यही प्रमाताकास्वरूप है ॥ ताकरिकै प्रमाताकीसिद्धि संभवैहै ॥ और जोवादी ॥ अहंअस्मि ॥ अर्थयह ॥ मैंहूं या प्रकारकेज्ञानकरिकै प्रमाताकीसिद्धि अंगीकारकरैहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ प्रमाताकेआश्रित जो अहंअस्मि याप्रकारकाज्ञानहै ॥ ताज्ञानकरिकै तिसीप्रमाताकीसिद्धिहोवैहै ॥ अथवा अन्यकिसीप्रमाताकेआश्रित जोअहंअस्मि यहज्ञानहै ॥ ताज्ञानकरिकै तिसप्रमाताकीसिद्धिहोवैहै ॥

तहां जोवादी अंत्यपक्षकूं अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? जैसे देवदत्तनामापुरुष आपणेतेंभिन्न यज्ञदत्तनामापुरुषकूंजाणताहुआ याप्रकारकाअनुभवकरैहै ॥ मैं इसयज्ञदत्तकूं जाणताहूं ॥ तैसे मैं इसप्रमाताकूं जाणताहूं याप्रकारकाअनुभव जीवोंकूंहोणा चाहिये ॥ और ऐसाअनुभव किसीजीवकूंहोतानहीं ॥ किंतु मैं आत्माकूंजाणताहूं याप्रकारकाअनुभव सर्वजीवोंकूंहोवैहै ॥ यातें अन्यप्रमाताकेआश्रितज्ञानकरिकै अन्यप्रमाताकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ और तिसप्रमाताकेआश्रित जोअहंअस्मि याप्रकारकाज्ञानहै ॥ ताज्ञानकरिकै तिसीप्रमाताकी सिद्धिहोवैहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? लोकविषे जाजा क्रियाहोवैहै ॥ ताका कर्ता भिन्नहोवैहै और कर्म भिन्नहोवैहै ॥ जैसे छेदनरूपक्रियाका पुरुष कर्ताहै ॥ और काष्ठादिक कर्महै ॥ तैसे अहंअस्मि याज्ञानरूपक्रियाकाभी कर्ता तथाकर्म भिन्नभिन्न होणेचाहिये ॥ एकहीप्रमाता ज्ञानरूपक्रियाकाकर्ता तथाकर्म यह वार्तासंभवैनहीं ॥ यातें स्वाश्रितज्ञानकरिकै प्रमाताकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ किंवा जोवादी याप्रकारकहै ॥ आत्मा स्वभावतेंतौ ज्ञानरहितजडहै ॥ यातें आपणेकूंजानिसकैनहीं ॥ परंतु मनकेसंबंधकरिकै आत्माविषेउत्पन्नभयाजो ज्ञानगुण ताज्ञानगुणकूंप्राप्तहोइकै चेतनभावकूंप्राप्तहुआआत्मा आपणेकूंआपेहीजानैहै ॥ सो यहवादीकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? तावादीकेमतविषे जैसे घट स्वभावतेंजडहै ॥ तैसे आत्माभी स्वभावतेंजडहै ॥ यातें जैसे मनकेसंबंधतें ज्ञानगुणवालाहुआ आत्मा आपणेकूंजानैहै ॥ तैसे मनकेसंबंधतें ज्ञानगुणवालाहुआघटभी आपणेकूंक्यूंनहींजाणता? ॥ और घट आपणेकूंजाणतानहीं ॥ यातें यहवादीकाकहणा असंगतहै ॥ किंवा जोवादी याप्रकारकहै ॥ जैसे आत्माकेसाथ मनकासंयोगसंबंधहै ॥ तैसे घटकेसाथ मनकासंयोगसंबंधहैनहीं ॥ यातें घट आपणेकूंजाणतानहीं ॥ सो यहवादीकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? नैयायिकोंकेमतविषे मन परमअणुपरिमाणवालाहै तथा नित्यहै ॥ और जेमुक्तपुरुषहैं तिनोंकेशरीरादिक नष्टहोइजावैहैं ॥ परंतु तिनोंकामन नष्टहोवैनहीं ॥ यातें बद्धअज्ञानीजीवोंकेमनकासंबंध यद्यपि घटादिकोंसें संभवैनहीं ॥ तथापि पूर्वमुक्तपुरुषोंकेमनकासंबंध घटादिकोंविषेसंभवैहै ॥ यातें घटादिकोंकूंभी आपणाज्ञान होणाचाहिये ॥ किंवा जोवादी आत्माकूं स्वभावतेंजडमानैहै ॥ तावादीकेमतविषे घटादिकजडपदार्थोंकी

तथा आत्माकी किंचित्मात्रभी विशेषतासिद्धनहींहोवैगी ॥ यातें वादीकेमतविषे घटादिकजडपदार्थभी आत्माहोणेचाहिये ॥ किंवा जोवादी याप्रकार कहै ॥ घटादिकोंविषे तथाआत्माविषे जडपणा तौसमान है ॥ परंतु घटादिक परिच्छिन्न हैं तथा मूर्त हैं ॥ और आत्मा विभु है तथा अमूर्त है ॥ यातें घटादिकोंकूं आत्मरूपता संभवैनहीं ॥ सो यहवादीकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? नैयायिकोंकेमतविषे जैसे आत्मा विभु है तथा अमूर्तद्रव्यहै ॥ तैसे आकाश काल दिक् यहतीनोंभी विभुहैं तथा अमूर्तद्रव्यहैं ॥ यातें आत्मातैंविलक्षण घटादिकपदार्थोंविषे यद्यपि आत्मरूपता संभवैनहीं ॥ तथापि आकाश काल दिक् यातीनोंविषे आत्मरूपता होणीचाहिये ॥ किंवा जोवादी याप्रकारकहै ॥ जैसे आत्माकेसाथ मनकासंबंध ज्ञानकाकारणहै ॥ तैसे शरीरकासंबंधभी ज्ञानकाकारणहै ॥ यातें शरीरकासंबंधही आत्माविषे आकाशादिकोंतें विशेषताहै ॥ सो यहवादीकाकहणा भीसंभवैनहीं ॥ काहेतें? नैयायिकोंकेमतविषे आकाश काल दिक् आत्मा यहचारोंद्रव्य विभुहैं ॥ और सर्वमूर्तद्रव्योंकेसाथ जाका संयोगसंबंधहोवै ताकूं नैयायिक विभुकहैहैं ॥ यातें जैसे मूर्तद्रव्यरूपशरीरकेसाथ आत्माकासंबंधहै ॥ तैसे आकाश काल दिक् यातीनोंकाभीशरीरकेसाथ संबंधहै ॥ यातें आकाशादिकोंविषेभी आत्मरूपता होणीचाहिये ॥ किंवा जोवादी आत्माकूं स्वभावतें जडमानैहै ॥ तावादीकेमतविषे आत्माका तथाघटादिकविषयोंका परस्पर भोक्ताभोग्यभावसंबंध तथा उपकार्यउपकारकभावसंबंध नहींसंभवैगा ॥ काहेतें? जैसे घटादिकपदार्थ स्वभावतेंजडहैं ॥ तैसे आत्माभी वादीकेमतविषे स्वभावतेंजडहै ॥ और आगंतुकज्ञानके कारणमनःसंयोगादिक पूर्वउक्तरीतिसैं घटादिकोंविषेभीहैं ॥ यातें जैसे आत्मा कर्ताभोक्ताहै ॥ तैसे घटादिकसंपूर्णजडपदार्थभी कर्ताभोक्ताहोणेचाहिये ॥ और घटादिकजडपदार्थोंकूं कोईभीवादी कर्ताभोक्ता मानतानहीं ॥ किंवा जोवादी याप्रकारकहै ॥ प्रत्यक्षरूपदृष्टि तथाअनुमितिरूपदृष्टि जिसविषेहोवैहै ॥ सोईही कर्ताभोक्ताहोवैहै ॥ सादृष्टि आत्माविषेहीहोवैहै ॥ घटादिकोंविषेहोवैनहीं ॥ यातें आत्माही कर्ताभोक्ताहै ॥ घटादिकपदार्थ कर्ताभोक्ताहोवैनहीं ॥ सोयहवादीकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? आत्माविषे कर्ताभोक्तापणेकीसिद्धिवासते तुमनैं अंगीकारकरीजादृष्टि सादृष्टि आत्माकास्वरूपभूतहै ॥ अथवा आत्माकाधर्महै ॥ तहां जोवादी

प्रथमपक्ष अंगीकारकरै तौ हमारेकूंइष्टापत्तिहै ॥ काहेतें? ज्ञानरूपदृष्टिकूं आत्मरूपता हमभीअंगीकारकरतेहैं ॥ और सादृष्टि आत्माकाधर्महै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतें? वादीकेमतविषे धर्मका तथा धर्मीका परस्पर भेदहीहोवैहै ॥ यातें दृष्टिरूपधर्मकूं प्रकाशरूपताहुएभी धर्मीरूपजडआत्माकूं प्रकाशरूपतासंभवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पुत्रके पंडितहुएभीपिता पंडितहोवैनहीं ॥ किंवा वादीनें आत्माविषे अंगीकारकरीजादृष्टि सादृष्टि धर्मीरूपआत्मातेंभिन्नहै ॥ यातें सादृष्टि आत्माकीसिद्धिकरिसकैनहीं ॥ और आत्मारूपधर्मीकेअसिद्धहुए ज्ञानरूपदृष्टिकीभी सिद्धिसंभवैनहीं ॥ किंवा जोवादी याप्रकारकहै ॥ ता धर्मरूपदृष्टिकरिकै आत्माकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ किंतु स्वप्रकाशरूपकरिकै अथवा अन्यकिसीप्रमाणकरिकै आत्माकीसिद्धिहोवैहै ॥ यातें आत्माकीधर्मरूपदृष्टिभी सिद्धहोइसकैहै ॥ सो यहवादीकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? जबी स्वप्रकाशरूपकरिकै अथवा अन्यकिसीप्रमाणकरिकैभी आत्माकीसिद्धिहोइसकैहै ॥ तबी आत्माविषे दृष्टिकाअंगीकारकरणा निष्फलहै ॥ किंवा जोवादी आत्माविषे दृष्टिकूं अंगीकारकरैहै ॥ तासें यहपूछाचाहिये ॥ पदार्थोंकाज्ञानहोवै जिसकरिकै ताकूंदृष्टिकहैहैं ॥ याप्रकारकेअर्थकूंअंगीकारकरिकै चक्षुआदिकोंकीन्यांई करणरूपहुई सादृष्टि प्रमाणहै ॥ अथवा ज्ञानरूपहुई सादृष्टि प्रमाणहै ॥ तहां प्रथमपक्षतौ संभवैनहीं ॥ काहेतें? प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकी अबपर्यंत सिद्धिभईनहीं ॥ यातें ताप्रमाणरूपदृष्टिकरिकै आत्माकीसिद्धि तुमारेसैंहोइसकैनहीं ॥ किंवा वादीनें अंगीकारकरी जाप्रमाणरूपदृष्टि तादृष्टिविषे प्रमाणरूपता तबी सिद्धहोवै ॥ जबी तादृष्टिजन्यज्ञानविषे प्रमापणासिद्धहोवै ॥ काहेतें? प्रमाज्ञानकाजोकरणहोवैहै ताकूंप्रमाणकहैहैं ॥ यातें सादृष्टि आपणेविषे प्रमाणताकीसिद्धिवासते स्वजन्यज्ञानविषे प्रमात्वकूंग्रहकरणेहारे किसीदूसरेप्रमाणकीअपेक्षाकरैहै ॥ और सोदूसराप्रमाणभी आपणेप्रमाणताकीसिद्धिवासते स्वजन्यज्ञानविषे प्रमात्वकूंग्रहणकरणेहारे किसीतीसरेप्रमाणकीअपेक्षाकरैहै ॥ याप्रकार प्रमाणोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादूषणकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें करणरूपहुई सादृष्टि प्रमाणहोवैनहीं ॥ किंवा ज्ञानरूपहुई सादृष्टि प्रमाणहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तासें यहपूछाचाहिये ॥ सा प्रमाणरूपदृष्टि प्रकाशतेंरहितहै

अथवा परप्रकाश्यहै अथवा स्वयंप्रकाश्यहै ? ॥ तहां प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतें ? जैसे प्रकाशतैंरहित घट प्रमाणरूपहैनहीं ॥ तैसे प्रकाशतैंरहित सादृष्टिभी प्रमाणरूप नहींहोवैगी ॥ और प्रकाशतैंरहितदृष्टिकूं जोप्रमाणरूप अंगीकारकरौगे तौ प्रकाशतैंरहितघटभी प्रमाणरूप होणाचाहिये ॥ और सादृष्टि परप्रकाश्यहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें ? जैसे घट परप्रकाश्यहै यातें प्रमाणरूपनहीं ॥ तैसे परप्रकाश्यहोणेतें सादृष्टिभी प्रमाणरूपनहींहोवैगी ॥ किंवा ताप्रमाणरूपदृष्टिकूं परप्रकाश्यमानणेविषे अनवस्थादोषकीभी प्राप्तिहोवैहै ॥ काहेतें ? साप्रमाणरूपदृष्टि जिसदूसरी प्रमाणरूपदृष्टिकरिकै प्रकाश्यहै ॥ सा दूसरीप्रमाणरूपदृष्टिभी किसीतीसरेप्रमाणरूपदृष्टिकरिकै प्रकाश्यहोवैगी ॥ तीसरीचतुर्थकरिकै होवैगी ॥ याप्रकार प्रमाणरूपदृष्टियोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातें साप्रमाणरूपदृष्टि परप्रकाश्य संभवैनहीं ॥ किंवा सा प्रमाणरूपदृष्टि स्वयंप्रकाश्यहै यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें ? श्रुतिप्रमाणतें रहित जे केवलशुष्कतर्कहैं ॥ तिनतर्कोंकूंग्रहणकरिकैही वादी अर्थकीसिद्धिकरैहै ॥ और सोतर्क लौकिकदृष्टांततेंविना किसीअर्थकूं सिद्धकरैनहीं ॥ यातें प्रमाणरूपदृष्टि स्वयंप्रकाश्यहै याअर्थकीसिद्धिविषेभी वादीनैं कोईलौकिकदृष्टांत कह्याचाहिये ॥ और लोकविषे ऐसाकोईपदार्थहैनहीं ॥ जो आपही प्रकाशनरूपक्रियाकाकर्ताहोवै ॥ और आपही प्रकाशरूपक्रियाकाकर्महोवै ॥ यातें प्रमाणरूपदृष्टिकूं स्वयंप्रकाशतासंभवैनहीं ॥ किंवा प्रमाणरूपदृष्टिकूं आत्मातेंभिन्नमानिकै जोवादी तादृष्टिकूं स्वयंप्रकाश मानेहै ॥ तावादीसें यहपूछाचाहिये ॥ सा स्वयंप्रकाशदृष्टि खद्योतजंतुकीन्यांई आपणेस्वरूपमात्रकाही प्रकाशकरैहै ॥ अथवा सूर्यकीन्यांई सर्वपदार्थोंकाप्रकाशकरैहै ॥ तहां प्रथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतें ? जैसे खद्योतनामाजंतु किसीपदार्थकाप्रकाशकरैनहीं ॥ केवल आपणाही प्रकाशकरैहै ॥ तैसे सादृष्टिभी आपणेतेंभिन्न किसीपदार्थका प्रकाश नहींकरैगी ॥ यातें लोकविषे किसीभीपदार्थकीसिद्धि नहींहोणीचाहिये ॥ और सूर्यकीन्यांई सादृष्टि सर्वपदार्थोंका प्रकाशक है यहदूसरा पक्षजोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें ? जो सादृष्टि सर्वपदार्थोंकाप्रकाशकहोवै तौ एकपदार्थकेज्ञानकालविषे सर्व

पदार्थोंकाज्ञानहोणाचाहिये ॥ और एकपदार्थकेज्ञानकालविषे सर्वपदार्थोंकाज्ञान किसीजीवकूंहोतानहीं ॥ यातें सादृष्टि सर्वप दार्थोंकाप्रकाशकनहीं ॥ इतनेग्रंथकरिकै चक्षुआदिकप्रमाणोंविषे प्रमाणताकाखंडनकरिकै आत्माविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकी अ विषयता निरूपणकरी ॥ अब चक्षुआदिकप्रमाणोंविषे प्रमाणताकाअंगीकारकरिकैभी आत्माविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकीअ विषयता निरूपणकरैहैं ॥ किंवा लोकविषे जीवोंकूं जोघटादिकपदार्थोंकाज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ सो घटादिकपदार्थोंकाज्ञान कि सीकारणतैंविना आपेहीउत्पन्नहोवैनहीं ॥ किंतु चक्षुआदिकप्रमाणोंका घटादिकपदार्थोंकेसाथ जोसंयोगादिकसंबंधहै ता सं योगादिकसंबंधरूप कारणकीअपेक्षाकरिकैही सो घटादिकपदार्थोंकाज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ याप्रकारकीप्रक्रिया वादी अंगीकारकरै है ॥ तावादीसें यहपूछाचाहिये ॥ आत्मा कर्ताभोक्ताहै याप्रकारकाज्ञान तुमारेकूं किसप्रमाणकरिकैभयाहै ॥ प्रत्यक्षप्रमाणकरि कैभयाहै ॥ अथवा अनुमानादिकप्रमाणोंकरिकैभयाहै ॥ तहां जोवादी प्रथमपक्ष अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतें? वादी केमतविषे प्रत्यक्षप्रमाण दोप्रकारका होवैहै ॥ एक बाह्यप्रत्यक्षप्रमाण ॥ और दूसरा अंतरप्रत्यक्षप्रमाण ॥ तहां मन अंतर प्रत्यक्षप्रमाणहै ॥ और बाह्यप्रत्यक्षप्रमाण पंचप्रकारकाहोवैहै ॥ श्रोत्र १ त्वक् २ चक्षु ३ रसन ४ घ्राण ५ इनपांचोंविषे श्रोत्र रसन घ्राण यहतीनइंद्रियतौ द्रव्यकूंविषयकरैनहीं ॥ किंतु क्रमतें शब्द रस गंध यातीनगुणोंकूंही विषयकरैहैं ॥ र वादी आत्माकूंभी द्रव्यमानैहै ॥ यातें श्रोत्र रसन घ्राण यातीनप्रमाणोंकरिकैतौ आत्माका कर्ताभोक्तारूपकरिकैज्ञान इसकैनहीं ॥ और चक्षु त्वक् यहदोनों इंद्रिय द्रव्यकूं ग्रहण करैहैं ॥ परंतु जिसद्रव्यविषे उद्भूतरूप तथा उद्भूतस्पर्श वैहै ॥ तिसद्रव्यकाग्रहण करैहैं ॥ अन्यद्रव्यकाग्रहण करैनहीं ॥ और आत्माविषे उद्भूतरूप तथा उद्भूतस्पर्श है यातैं चक्षु त्वक् यादोनोंइंद्रियोंकरिकैभी आत्माका कर्ताभोक्तारूपकरिकैज्ञान संभवैनहीं ॥ किंवा आत्माविषे इंद्रि नकीविषयतानहींहै ॥ यहवार्ता केवलयुक्तियोंकरिकैसिद्धनहीं ॥ किंतु श्रुतिप्रमाणकरिकैभी यहवार्ता सिद्धहै ति ॥ परांचिखानिव्यतृणत्स्वयंभूस्तस्मात्पराङ्पश्यतिनांतरात्मन् ॥ अर्थयह ॥ स्वयंभूपरमात्मा नेत्रादिकइंद्रियोंकूंप्राप्तहोवैन

स्वकरताभया ॥ याकारणतें तेनेत्रादिकइंद्रिय घटपटादिकबाह्यपदार्थोंकूंही देखेहैं ॥ अंतरआत्माकूं तेनेत्रादिकइंद्रिय ग्रशतेंरहित
॥ १ ॥ याश्रुतिविषे यहनियम कथनकऱ्या ॥ जिसजिसपदार्थविषे बाह्यपणा होवैहै ॥ तिसतिसपदार्थविषेही नेत्रादिक रूप अंगी
बंधहोवैहै ॥ बाह्यपणेतैंविना नेत्रादिकइंद्रियोंकासंबंधसंभवैनहीं ॥ और अंतरआत्माविषे बाह्यपणाहैनहीं ॥ यातैं आत्मा ीकारकरै
दिकइंद्रियोंकासंबंधभीसंभवैनहीं ॥ और संयोगादिकसंबंधतैंविना नेत्रादिकइंद्रिय किसीपदार्थकेज्ञानकूं उत्पन्नकरैनहीं नहींहोवै
आत्मा कर्ताभोक्ताहै याप्रकारकाज्ञान नेत्रादिकइंद्रियोंकरिके संभवैनहीं ॥ किंवा आत्मा कर्ताभोक्ताहै याप्रकारकाज्ञान मनरू दूसरी
रप्रत्यक्षप्रमाणकरिके जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? कामःसंकल्पोविचिकित्सा याश्रुतिविषे इच्छा करि
ल्प संशय श्रद्धा अश्रद्धा धैर्य अधैर्य लज्जा भय वृत्तिज्ञान इनसंपूर्णोंका मनही उपादानकारणकह्याहै ॥ और जोउपादानका संभ
होवैहै ॥ सो करणहोवैनहीं ॥ जैसे घटकाउपादानकारणमृत्तिका घटकाकरणहोवैनहीं ॥ तैसे वृत्तिज्ञानकाउपादानकारण जोमनहै वैनें
सोमन ताज्ञानका करणहोइसकैनहीं ॥ यातैं आत्मा कर्ताभोक्ताहै याप्रकारकाज्ञान मनकरिकैभी संभवैनहीं ॥ किंवा आत्मा क
र्ताभोक्ताहै याप्रकारकेज्ञानकीउत्पत्ति नेत्रादिकइंद्रियोंकेसंबंधतें जोवादी अंगीकारकरै तौ नेत्रादिकइंद्रियोंकासंबंध स्थूलशरीर
केसाथहै ॥ यातैं स्थूलशरीरविषेही सोज्ञान होवैगा ॥ और असुरोंकेमोहकरणेवासते देहात्मवादीचार्वाकोंकेमतकाकर्ता जोबृह
स्पतिहै ॥ ताकेमतकीप्राप्ति वादीकूं बलात्कारसैंहोवैगी ॥ यातैं आत्मा कर्ताभोक्ताहै याप्रकारकाज्ञान प्रत्यक्षप्रमाणकरिकै संभ
वैनहीं यहसिद्धभया ॥ किंवा आत्मा कर्ताभोक्ताहै याप्रकारकाज्ञान अनुमानादिकप्रमाणोंकरिकैहोवैहै यहदूसरापक्ष जोवादी
अंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? अनुमान उपमान शब्द यातीनप्रमाणोंका प्रत्यक्षप्रमाणही मूलकारणहै ॥ सोप्रत्यक्ष
प्रमाण जबी आत्माकेज्ञानविषे कारणनहींभया ॥ तबी अनुमानादिकप्रमाण किसप्रकार कारणहोवैंगे? यातैं आत्मा कर्ता भो
क्ताहै याप्रकारकाज्ञान अनुमानादिकप्रमाणोंकरिकैभी संभवैनहीं ॥ किंवा जोवादी याप्रकारकहै ॥ ऐतरेयउपनिषद्विषे आत्माकूं
द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञाता कह्याहै ॥ तहां दर्शनकर्ताकानाम द्रष्टाहै ॥ और श्रवणकर्ताकानाम श्रोताहै ॥ यातैं याश्रुतिकरिकैही आ

त्माविषे कर्तापणा सिद्धहै ॥ सोयहवादीकाकहणाभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें ! जैसे द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञाता यहश्रुति आत्माकूंकर्ता रूपकरिकै बोधनकरैहै ॥ तैसे अद्रष्टा अश्रोता अमंता अविज्ञाता यहश्रुति आत्माविषे कर्तापणेकानिषेधभीकरैहै ॥ यातें तिन दोनोंश्रुतियोंविषे आत्माकूं अकर्तारूपकरिकैबोधनकरणेहारीश्रुतिही मुख्यप्रमाणहै ॥ और आत्माकूंकर्तारूपकरिकै बोधनकरणे हारीजाश्रुतिहै ॥ सा भ्रांतपुरुषोंकरिकैसिद्ध जोआत्माविषेकर्तापणाहै ताका अनुवादकरैहै ॥ यातें साश्रुतिआपणेअर्थपर नहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ फलवान् तथालौकिकप्रमाणोंकरिकै अज्ञात जोअर्थहै ॥ ताकेबोधनकरणेकेहीश्रुतिकूं प्रामाण्यताहोवैहै ॥ और कर्ताभोक्तारूपकरिकैआत्मा सर्वलोकोंकूंप्रसिद्धहै ॥ तथा कर्ताभोक्तारूपकरिकैआत्माकेज्ञानतें किसीफलकीभी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ उलटा जन्मरणादिरूपअनर्थकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें कर्ताभोक्तारूपकरिकै आत्माकेबोधनविषे श्रुतिकातात्पर्यनहीं ॥ और अकर्ताअभोक्तारूपकरिकै आत्मा लोकविषेप्रसिद्धहैनहीं ॥ तथा अकर्ताअभोक्तारूपकरिकै आत्माकेज्ञानतें अज्ञानसहितसर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिरूपफलकीभीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें अकर्ताअभोक्तारूपकरिकै आत्माकेबोधनकरणेविषेही श्रुतिकातात्पर्यहै ॥ यातें प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै आत्माकाज्ञानहोवैनहीं ॥ किंतु आपणेस्वयंप्रकाशरूपकरिकै आत्माकाज्ञानहोवैहै ॥ और वास्तवतेंविचारकरिकैदेखियेतौ पूर्वउक्तयुक्तियोंसें किसीअनात्मपदार्थकाभी प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै ज्ञानसंभवैनहीं तौ निर्गुणपरमात्माकेज्ञानविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकूं किसप्रकार कारणता होवैगी? याकारणतेंही श्रुतिभगवती आत्माकूं अगृह्यकहैहै ॥ इतने ग्रंथकरिकै आत्माविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकीअविषयतादिखाई ॥ अब आत्माविषे अशीर्यता निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यह आनंदस्वरूपआत्मा सर्वप्राणियोंका आत्माहै यातें हननक्रियाकीकर्मतारूप जोशीर्णताहै ताकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंवा लोकविषे जोजोपदार्थ मूर्तिमान्होवैहै तथा भेदवान्होवैहै ॥ सोईहीपदार्थ अवयवोंकीशिथिलतारूप शीर्णताकूं प्राप्तहोवैहै ॥ जैसे वस्त्रादिकपदार्थ मूर्तिमान्हैं तथा भेदवालेहैं ॥ यातें किंचित्कालपाईके तंतुआदिकअवयवोंकीशिथिलतारूप शीर्णताकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और आत्माविषे मूर्तिमानता तथा भेद येदोनोंधर्म हैंनहीं ॥ यातें यहआनंदस्वरूपआत्मा शीर्णताभावकूंप्राप्तहोवैन

हीं ॥ याकारणतें याआनंदस्वरूपआत्माकूं श्रुति अशीर्यकहैहै ॥ अब आत्माविषे असंगपणानिरूपणकरैंहैं ॥ हेजनक! यालोक विषे जेपदार्थ संगवान्होवैंहैं ॥ तिनपदार्थोंकूं इतरपदार्थोंकेसंगतें दोषोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ जैसे स्वभावतेंशीतलस्पर्शवाला जो जलहै ॥ तिसजलविषे अग्निकेसंगतें उष्णता प्राप्तहोवैहै ॥ और स्वभावतें उष्णशीतस्पर्शतेंरहित जोवायुहै ॥ तिसवायुविषे अग्निकेसंगतें उष्णता प्राप्तहोवैहै ॥ और जलकेसंगतें शीतलता प्राप्तहोवैहै॥ और जोपदार्थ असंगहै ॥ तिसपदार्थविषे किसी दोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ जैसे असंगआकाशविषे मेघविद्युतादिकृतदोषोंकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और जोपदार्थ मूर्तिमान्होवैहै त थापरिच्छिन्नहोवैहै ॥ सोईहीपदार्थ संगवान्होवैहै ॥ जैसे मूर्तिमान् तथापरिच्छिन्न जलादिकपदार्थ अग्निआदिकोंकेसाथ संगकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा मूर्तिमान्नहीं तथा परिच्छिन्ननहीं ॥ या आत्माका किसीपदार्थकेसाथ संगहोवैन हीं ॥ और संगकेअभावहुए यहआत्मा किसीपदार्थकेदोषकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंवा संयोगादिकसंबंधोंकानाम संगहै ॥ औ र किंचित्कालपर्यंत इतरपदार्थकेस्वरूपकीन्यांई जोस्थितहै ॥ यहसंगकाफलहै ॥ जैसे उष्णस्पर्शवान्अग्निकेसाथ जबी जल कासंयोगसंबंधहोवैहै ॥ तबी सोजल किंचित्कालपर्यंत अग्निकेसमान उष्णस्पर्शवालाहुआ स्थितहोवैहै ॥ और यहआनंदस्व रूपआत्मा सजातीयभेद तथाविजातीयभेद तथा स्वगतभेद यातीन भेदोंतेंरहितहै ॥ यातें यहआत्मा संयोगादिसंबंधरूपसंग कूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा इतरपदार्थकेसाथ तादात्म्यरूप जोसंगकाफलहै ॥ ताफलकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंवा यालोकविषे सं गवान् जेवस्त्रादिकपदार्थहैं ॥ ते बंधनरूपफलकूं तथा परिणामरूपफलकूं अवश्यप्राप्तहोवैहैं ॥ और वस्त्रादिकपदार्थोंकाउपादा नकारण जेतंतुआदिकहैं ॥ तिनोंकेपरस्परविभागतें तथा तिनतंतुवोंकेनाशतें पटादिकपदार्थोंकानाशभी अवश्यहोवैहै ॥ कहां तौ पटादिकपदार्थोंका शीघ्रहीनाशहोवैहै ॥ और कहां शनैःशनैःकरिकैनाशहोवैहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा संगतेंरहि तहै ॥ याकारणतें यहआनंदस्वरूपआत्मा बंधनकूं तथापरिणामकूं तथा विनाशकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ और यहआनंदस्वरूप आत्मा सर्वविशेषभावतेंरहितहै ॥ तथा मनवाणीकाअविषयहै ॥ हेजनक! ऐसा तुरीयआत्माही तुमारेकूं ज्ञानकरिकैप्रा

प्तहोणेयोग्य गंतव्यहै ॥ और हेजनक! सर्वजीवोंकाआत्मारूप तथा भयतेंरहित जोअद्वितीयआनंदस्वरूपब्रह्महै ॥ ताअभय ब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजाणताहुआ तू ता अभयब्रह्मकूंप्राप्तभयाहै ॥ यातें संसाररूपशूलतें अबी तुमारेकूं भयनहीं होवैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ आपणेतेंभिन्न परिच्छिन्न जेग्रामादिकपदार्थहैं ॥ तिनोंकीप्राप्ति जैसे गमनरूपक्रियातेंहोवैहै ॥ तैसे सर्वत्रव्यापकब्रह्मकीप्राप्ति किसीगमनरूपक्रियातेंहोवैनहीं ॥ किंतु आत्मारूपकरिकै जोब्रह्मकाज्ञानहै सोईही ब्रह्मकीप्राप्तिहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! आत्माकेज्ञानहुएभी जीवोंकूं संसाररूपशूलतेंभय काहेतेंनहींहोता? ॥ समाधान ॥ हेजनक! संपूर्णजीवोंकूं द्वितीयपदार्थकेज्ञानतेंभयहोवैहै ॥ यातें द्वितीयपदार्थकाज्ञान भयकाकारणहै यहसिद्धभया ॥ और जबपर्यंत किंचित्मात्रभी द्वितीय पदार्थकाज्ञानहोवैहै ॥ तबपर्यंत अद्वितीयआत्माकाज्ञानहोवैनहीं ॥ और विद्वान्पुरुषकूं अद्वितीयआत्माकेज्ञानकरिकै द्वितीयपदार्थकाज्ञान निवृत्तभयाहै ॥ यातें द्वैतज्ञानरूपकारणकेअभावहुए विद्वान्पुरुषकूं भयकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ द्वितीयाद्वैभयंभवति ॥ अर्थयह ॥ द्वितीयपदार्थकेज्ञानतें जीवोंकूं भयकीप्राप्तिहोवैहै ॥ १ ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ हेजनक! जिसपदार्थविषे यहपदार्थ हमारेदुःखकासाधनहै याप्रकारका प्रतिकूलताज्ञानहोवैहै ॥ तिसीपदार्थतें जीवोंकूं भयकीप्राप्तिहोवैहै ॥ जैसे सिंहसर्पादिकोंविषे जबी जीवोंकूं प्रतिकूलताज्ञानहोवैहै ॥ तबी तासिंहसर्पादिकोंतें जीवोंकूं भयकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें यह सिद्धभया ॥ द्वैतज्ञानजन्य जोप्रतिकूलताज्ञानहै ॥ सोईही जीवोंकेभयकाकारणहै ॥ और आनंदस्वरूपआत्माविषे किसीजीवकूं प्रतिकूलताज्ञानहोवैनहीं ॥ किंतु सर्वजीवोंकूं आत्माविषे अनुकूलताज्ञानहै ॥ ऐसेअनुकूलआत्माका सर्वत्रव्यापकरूपकरिकैज्ञान जिसपुरुषकूंभयाहै ॥ तिसपुरुषकूं किसीपदार्थतेंभयहोतानहीं ॥ और हेजनक! सोप्रतिकूलताज्ञान द्वैतज्ञानतेंविनाहोवैनहीं ॥ यातें द्वैतपणाही प्रतिकूलताज्ञानकाकारणहै ॥ सोद्वैतपणा अद्वितीयब्रह्मविषेहैनहीं ॥ याकारणतें सोअद्वितीयब्रह्म अभयहै ॥ तथा विज्ञानआनंदरूपहै ॥ तथा संपूर्णभेदतेंरहितहै ॥ हेजनक! ऐसा अद्वितीयअभयब्रह्म तेरेतेंभिन्ननहीं किंतु तेरास्वरूपहै ॥ और हेजनक! मैं तथातू तथासंपूर्णभूतप्राणी तथास्थूलसूक्ष्मशरीर इसतेंआदिलेकेजितनाजगत्है ॥ सो संपूर्णजगत् ब्रह्मतेंभिन्न

नहीं किंतु ब्रह्मरूपही है॥याकारणतैं भेदरहितअद्वितीयब्रह्मकूं श्रुतिनैं अभयकह्याहै॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिकै स्पष्टकरै हैं॥ हेज नक! जैसे गंधर्वनगर आकाशतैं भिन्ननहींहै॥ तैसे यहसंपूर्णजगत् आनंदस्वरूपआत्मातैं भिन्ननहींहै॥ और जैसे आकाशविषे जो गंधर्वनगरकीस्थितिहै ॥ सा वास्तवतैंनहीं ॥ किंतु मायाकरिकैंहै ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषे जोजगत्कीस्थितिहै ॥ साभीवा स्तवतैंनहीं ॥ किंतु मायाकरिकैंहै ॥ और हेजनक! जैसे आकाशरूपअधिष्ठानविषे गंधर्वनगर पूर्वहुआनहीं ॥ और आगेहोवैगा नहीं ॥ और अबीहैनहीं ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माविषे जगत् पूर्वहुआनहीं ॥ और आगेहोवैगानहीं ॥ और अबीहैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोआनंदस्वरूपआत्माविषे तीनकाल जगत्नहींभयाहै तौ लोकोंकूं भिन्नाभिन्नरूपकरिकै यहजगत् किसवास ते प्रतीतहोताहै? ॥ समाधान ॥ हेजनक! जैसे आकाशविषे यद्यपि तीनकालविषे गंधर्वनगरनहींहै ॥ तथापि भ्रांतपुरुषोंकूं सो गंधर्वनगर स्थूलसूक्ष्मरूपकरिकै तथा जडचैतन्यरूपकरिकै प्रतीतहोवैहै॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषे यद्यपि तीनकालमैं जग त्नहींहै॥ तथापि अज्ञानीजीवोंकूं भ्रांतिकरिकै सोजगत् स्थूलसूक्ष्मरूपकरिकै तथा जडचैतन्यरूपकरिकै प्रतीतहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्वप्नके दृष्टांतकरिकै निरूपणकरै हैं ॥ हेजनक! जाग्रत्अवस्थाविषे रथ अश्व हस्ति आदिपदार्थोंकेउत्पत्तिकेसाधन जेदेशकालादिकहैं ॥ तिन देशकालादिकसाधनोंका स्वप्नअवस्थाविषे अभावहुएभी जैसे एकहीस्वप्नद्रष्टापुरुष अज्ञानकेवशतैं रथ अश्व हस्ति इत्यादिकअनेकभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे देशकालादिकसाधनोंतैंरहित एकहीपरमात्मादेव नानाप्रकारकेजगत् भावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! जैसे स्वप्नतैंजाग्रत्कूंप्राप्तहुआसोपुरुष स्वप्नकेपदार्थोंकूं देखतानहीं ॥ यातैं जाग्रत्अवस्था स्वप्नपदार्थोंकानाश करणेहारीहै ॥ तैसे आत्माकेसाक्षात्कारकरिकै यह संपूर्णजगत नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक! ऐसाअद्विती यआत्माकासाक्षात्कार तुमारेकूंप्राप्तभयाहै ॥ यातैं संसाररूपशूलतैं तू अबीभयमतकर ॥ हेशिष्य! याप्रकार जबी याज्ञवल्क्यमु निनैं जनकराजाकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्या ॥ तबी सोजनकराजा आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरिकै याज्ञवल्क्यमु निकेताईं देणेयोग्यगुरुदक्षिणाकूं नहींदेखताभया ॥ अब ता जनकराजाकेविचारकूं निरूपणकरै हैं॥ इसयाज्ञवल्क्यमुनिनैं हमारे

तांई आत्मज्ञानकीप्राप्तिकरीहै ॥ यातैं इसयाज्ञवल्क्यमुनिकेतांई मैं कौनपदार्थ गुरुदक्षिणादेवौं ? ॥ तहां जोमैं स्त्री पुत्र धन रा
ज्य सेनासहित आपणाशरीर गुरुदक्षिणादेवौं तौभी सादक्षिणा आत्मज्ञानकेसमानहोवैनहीं ॥ किंवा ब्रह्मविद्याकाउपदेशक
रिकै शिष्यकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिकरणेहारा जोगुरुहै ॥ तिसगुरुकेतांई जोशिष्य समुद्रपर्यंत सुवर्णकरिकैपूर्ण संपूर्णपृथिवी
गुरुदक्षिणादेवै तौभी सादक्षिणा आत्मज्ञानकेसमानहोवैनहीं ॥ किंवा अनेकजन्मोंविषे करेहैंब्रह्मचर्यादिकसाधन जिनोंनैं
ऐसेजे देहधारीजीवहैं ॥ तिनोंकरिकैभी यहआनंदस्वरूपआत्मा दुर्लभहै ॥ और तीनलोकोंविषे आत्माकेलाभतैंपरे दूसराको
ईलाभहैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ आत्मलाभान्नपरंविद्यते ॥ अर्थयह ॥ आनंदस्वरूपआत्माकेलाभतैंपरे कोईसंसारविषेलाभहैनहीं ॥
आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिही परमलाभहै ॥ १ ॥ ऐसे दुर्लभआत्माकीप्राप्ति जिसगुरुनैंकरीहै ॥ तिसगुरुकेतांई पुत्र स्त्री धन
राज्य पृथिवी इत्यादिकअनात्मपदार्थोंकीदक्षिणादेणी हमारेकूं उचितनहीं ॥ किंवा स्वर्गविषेदेवतावोंकूंजीतिकरिकै तथापाता
लविषे नागोंकूंजीतिकरिकै स्वर्ग भूमि पाताल येतीनलोक जोमैं याज्ञवल्क्यमुनिकेतांई गुरुदक्षिणादेवौं तौभी आत्मज्ञानके
समान सादक्षिणानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ याज्ञवल्क्यमुनिनैं हमारेकूं आत्माकीप्राप्तिकरीहै ॥ सोकैसाहैआत्मा ? अपरिच्छिन्नहै त
थानित्यहै तथा आनंदस्वरूपहै तथा दुर्लभहै ॥ ऐसे आत्माकेसमान कोईसंसारविषेपदार्थहैनहीं ॥ किंतु पुत्र स्त्री धन राज्य तीन
लोक इत्यादिकसंपूर्णपदार्थ परिच्छिन्नहैं तथाअनित्यहैं तथादुःखरूपहैं तथासुलभहैं ॥ यातैं आत्माकीप्राप्तिकेसमान यहदक्षिणा
होवैनहीं ॥ हेशिष्य ! याप्रकारकाविचारकरिकै सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेतांई गुरुदक्षिणादेणेयोग्य कोईपदार्थ नहींदेखता
भया ॥ तिसतैंअनंतर अत्यंतहर्षवान्होइकै सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ राजाजनकउवा
च ॥ हेभगवन् ! आपकागुरुजो सूर्यभगवान्है ॥ सो सर्वदेहधारीजीवोंका बाहरिविचरणेहाराप्राणहै ॥ तथा सर्वजीवोंकेनेत्रोंकूंनि
रोधकरणेहारा जोअंधकारहै ॥ ताअंधकारकीनिवृत्तिकरिकै सर्वजीवोंकेव्यवहारकीसिद्धिकरैहै ॥ ऐसेसूर्यभगवान्केउपकारकेसमा
न कोईपदार्थकूं नहींदेखतेहुए तेदेहधारीजीव तासूर्यभगवान्केतांई दीपकमात्र अर्पणकरैहैं ॥ और सोसूर्यभगवान् आपकागुरु ता

दीपकमात्रकरिकैही प्रसन्नताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेभगवन्! तिससूर्यभगवान्केआप शिष्यहो ॥ और जैसे सूर्यभगवान् जीवोंकेअंधकारकीनिवृत्तिकरैहै ॥ तैसे आपभी आत्मज्ञानकीप्राप्तिकरिकै शिष्योंके अज्ञानरूपअंधकारकीनिवृत्ति करतेहो ॥ यातें आपभी सूर्यभगवान्केसमानहो ॥ तथा सर्वकामनावोंतेंरहितहो ॥ यातें हेभगवन्! जैसेआपकागुरु सूर्यभगवान् दीपकमात्रकरिकै जीवोंऊपरिप्रसन्नहोवैहै ॥ तैसे आपभी हमारीस्वल्पदक्षिणाकरिकै प्रसन्नहोवो ॥ अब आशीर्वाद सर्वस्व नमस्कार यहतीनप्रकारकीअल्पदक्षिणा निरूपणकरैहैं ॥ हेभगवन्! पूर्वआपनैं स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंकापरित्यागकरिकै तुरीयअभयब्रह्मकाउपदेश हमारेप्रतिकऱ्या ॥ ताआपकेउपदेशकरिकै अभयब्रह्मकीप्राप्ति हमारेकूंभई है ॥ यातें हेभगवन्! जिसअभयब्रह्मकीप्राप्ति आपनैं हमारेप्रतिकरीहै ॥ सोअभयब्रह्म आपकूंभीप्राप्तहोवै ॥ यहआशीर्वादरूपदक्षिणा मैं आपकेताईं देताहूं ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि! कालभगवान्नैं जीवरूपीपक्षियोंकेबंधनकरणेवासते अज्ञानरूपसूत्रकरिकै कामक्रोधादिरूपग्रंथियोंकरिकैयुक्त अहंममअभिमानरूपीजाल रचेहैं ॥ तिनजालरूपीपाशोंतें मैंदुःखीदीनकूं आपनैं कृपाकरिकै मुक्तकऱ्याहै ॥ यातें आपकेउपकारकेसमान मैं कौन दक्षिणादेवो? अब सर्वस्वरूपदक्षिणाकूंनिरूपणकरैहैं ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि! सर्वलोकविषेप्रसिद्ध जोयहविदेहनामा हमारादेशहै ॥ तथा हमारेनिवासकास्थान जोयहमिथिलापुरीहै ॥ तथा हमारीजेस्त्रियांहैं तथा हमारेजोपुत्रहैं ॥ इत्यादिकसर्वपदार्थोंसहित मैं जनक आपकादासहूं ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि! श्रुतिविषे तथा स्मृतिविषे ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेहारेगुरुकूं पिताकह्याहै ॥ और शिष्यकूंपुत्रकह्याहै ॥ और जबपर्यंत पिताविद्यमानहोवैहै ॥ तबपर्यंत पुत्रका धनविषेअभिमानहोवैनहीं ॥ यातें शास्त्रकीरीतिसें विचारकरिकै देखियेतौ यहराज्यादिकसर्वपदार्थ हमनैं आपकेताईं दियेहैं ॥ याप्रकारकेवचनकहणेविषेभी मैं समर्थनहींहूं ॥ किंतु मेरेसैंआदिलेके संपूर्णराज्यादिकपदार्थ आपकेहीहैं ॥ हेभगवन्! आपकीआज्ञातेंविना जबी अन्नमात्रकेभोजनकरणेविषेभी मैं स्वतंत्र नहींहूं ॥ तबी राज्यादिकसंपूर्णपदार्थ हमनैं आपकेताईं दानकरेहैं ॥ याप्रकारकाहमाराकहणा कैसेसंभवैगा? यातें यहराज्यादिकसर्वस्वआपकाहीहै ॥ अब नमस्काररूपदक्षिणाकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि! ब्रह्मकाउपदेशकरणेहारे जोआपगुरुहो ॥ तिसआ

पकेतांई हमारावारंवार नमस्कारहै ॥ कैसेहोआप ? सर्वमुनियोंविषेश्रेष्ठहो ॥ और वेदकेमंत्रोंकूं प्रगटकरणेहारेहो ॥ और साक्षात्सूर्यभगवान्केशिष्यहो ॥ औरसाक्षात्परमेश्वररूपहो ॥ ऐसेआपकेतांईं हमारा वारंवार नमस्कारहै ॥ हेशिष्य! याप्रकार जबी आशीर्वादतथासर्वस्व तथा नमस्कार यहतीनप्रकारकीगुरुदक्षिणा जनकनैं याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति दई ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और जनकराजाकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक! विदेहदेशतैं आदिलैके तुमारे शरीरपर्यंत जितनेराज्यादिकपदार्थहैं ॥ ते संपूर्ण हमारेहीहैं ॥ याकेविषे तुम किंचित्मात्रभीसंशयनहींकरो ॥ परंतु एकगुरुदक्षिणा हम तुमारेसैंमागतेहैं ॥ सागुरुदक्षिणा तुम हमारेप्रतिदेवो ॥ हेराजन्! तुमाराचित्त अग्निआदिकोंकीउपासनाविषे अत्यंततत्परहै ॥ तथा तुमाराचित्त राज्यकेव्यवहारविषे अत्यंत संलग्नहै ॥ याकारणतैं हमारेकूंमनविषे ऐसीसंभावनाहोवैहै ॥ जो हमनैं तुमारेतांईं आत्माकाउपदेशकऱ्याहै ॥ तिसउपदेशकूं तू किसीकालपाइकै विस्मरणकरिदेवैगा ॥ इतनेकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं यहअर्थ बोधनकऱ्या ॥ अग्निआदिकोंकीउपासनाकरिकै ब्रह्मलोककीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं ब्रह्मलोककीइच्छा ॥ आत्मज्ञानका भावीप्रतिबंधकहै ॥ और राज्यादिकपदार्थोंविषेआसक्ति आत्मज्ञानका वर्तमानप्रतिबंधकहै ॥ प्रतिबंधककेविद्यमानहुए कार्यकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं हेजनक! जोहमनैं तुमारेतांईं आत्माकाउपदेशकऱ्याहै ॥ तिसउपदेशकूं तुमनैं कदाचित् विस्मरण नहींकरणा ॥ याप्रकारकीगुरुदक्षिणा तुम हमारेप्रतिदेवो ॥ और हेजनक! यहविदेहनामादेश तथा मिथिलापुरी तथासंपूर्णराज्यादिकपदार्थ हमारेहीहैं ॥ और तूभी हमाराहीदासहै ॥ यातैं यहहमारे राज्यादिकपदार्थ तैंदासकेपासहीरहैं ॥ हेजनक! अबी हम आपणेआश्रमकूंजातेहैं ॥ किसीकालकेपीछे पुनःतुमारेसमीप आवैंगे ॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रतिकह्या ॥ तबी जनकराजा तथा अन्यब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यहसंपूर्ण याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति तहांरहणेवासते बहुतप्रकारकी प्रार्थनाकरतेभये ॥ परंतु सोयाज्ञवल्क्यमुनि एकांतकेसुखकीइच्छाकरताहुआ आपणेआश्रमकूं जाताभया ॥ हेशिष्य! इसप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकेगयेतैंअनंतर किंचित्कालपाइकै सोजनकराजा राज्यकेकार्योंविषे चित्तकीसंलग्नताकरिकै तथा अग्निआदिकदे

वतावोंकीउपासनाविषे चित्तकीतत्परताकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिकेउपदेशकूं विस्मरणकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनिभी लोकोंकेमुखतैं जनकराजाकावृत्तांत श्रवणकरिकै तथा आपणीदिव्यदृष्टितैं राजाजनककेवृत्तांतकूं जाणिकरिकै जनकराजाकेपुरीकूं जाताभया ॥ और सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेमनविषे याप्रकारकासंकल्पकरताभया ॥ याजनकराजानैं हमारेउपदेशकाविस्मरणकरदियाहै ॥ यातैं जनककेसमीपजाइकै ताकेसाथ मैं किंचित्मात्रभी संभाषणनहींकरौंगा ॥ अथवा जो जनकराजाकेसाथ मैं संभाषणकरौंगा ॥ तौभी जिसनिर्गुणब्रह्मकाउपदेश मैंनैं पूर्व जनककेप्रतिकह्याथा ॥ तिसी निर्गुणब्रह्मकाउपदेश मैं पुनःजनककेप्रतिकरौंगा ॥ परंतु आपणेआगमनकाप्रयोजन जोयोगक्षेमादिकहै ॥ तिनोंकूं जनककेप्रति नहींकहौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषेकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकीसभाविषे जाताभया ॥ और आगेतैं सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकूं सभाविषेआयाहुआदेखिकै संपूर्णसभासहित अभ्युत्थान करताभया ॥ और अर्घ्यपाद्यादिकोंकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिका पूजनकरताभया ॥ और याज्ञवल्क्यमुनिकूं सिंहासनऊपरिबैठावताभया॥ तिसतैंअनंतर राजाकीसभाविषेरहणेहारे जेबुद्धिमान्ब्राह्मणहैं तथाअन्य क्षत्रिय वैश्यहैं॥ तेसंपूर्ण आपणीबुद्धिकेअनुसार नानाप्रकारकेविचित्रकथावोंकूं कहतेभये ॥ तिनोंविषे केईकविद्वान्ब्राह्मण वैश्वानरीविद्याकाप्रसंग चलावतेभये ॥ और तावैश्वानरीविद्याविषे जनकराजा अत्यंतकुशलथा ॥ याकारणतैं सभावासीसर्वब्राह्मणोंकेप्रति तथा अन्यक्षत्रियवैश्योंकेप्रति सोजनकराजा याप्रकारकावचन कहताभता ॥ हेसंपूर्णसभावासीजनो! नानाप्रकारकेफलोंकरिकैयुक्त तथा ब्रह्मलोककेदेणेहारी जावैश्वानरीविद्याहै ॥ तिसकूं मैं भलीप्रकार जाणताहूं ॥ यातैं यासभाविषेस्थित जितनेविद्वान्ब्राह्मणहैं तथाक्षत्रियवैश्यहैं ॥ तिनोंविषे जोपुरुष यावैश्वानरीविद्याविषे कुशलहोवै ॥ सो पुरुष हमारेप्रति निःशंकहोइकेप्रश्नकरै ॥ हम ताकाउत्तरदेवैंगे ॥ अथवा हम तिसपुरुषकेप्रति प्रश्नकरतेहैं ॥ सो पुरुष हमारेप्रश्नकाउत्तरदेवै॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी जनकराजानैं सर्वविद्वानोंकेप्रतिकह्या॥ तबी तेसभावासीविद्वान्ब्राह्मण तथाक्षत्रियवैश्य तावैश्वानरीविद्याविषे राजाजनककेप्रति प्रश्नकरणेमैं तथाराजाकेप्रश्ननकाउत्तरदेणेमैं समर्थ नहींहोतेभये ॥ किंतु संपूर्ण

सभावासीजन मौनकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तिसतैंअनंतर सर्वब्राह्मणोंकूंमौनहुएदेखिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेसाथ मैं नहींभाषणकरौंगा अथवा जनकराजाकेप्रति पुनः तिसीब्रह्मकाहीउपदेशकरौंगा याप्रकारके पूर्वसंकल्पका परित्यागकरताभया ॥ और सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजासैं नानाप्रकारकेप्रश्नोंकरिकै सावैश्वानरीविद्या पूछताभया ॥ और सोजनकराजाभीनाना प्रकारकेउत्तरोंकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति संपूर्णवैश्वानरीविद्या कहताभया ॥ हेशिष्य! याप्रकार जबी जनकराजानैं याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति संपूर्णवैश्वानरीविद्याका कथनकऱ्या ॥ तबी सो याज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेबुद्धिकीकुशलतादेखिकै जनक राजाऊपरि बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और जनकराजाकेप्रति कहताभया ॥ हेजनक! जोतुमारेकूंइच्छाहोवै सो हमारेसैंवरमागो ॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनककेप्रतिकह्या ॥ तबी सोजनकराजा आपणेकूं कृतार्थमानताभया ॥ और याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिसैं कामप्रश्नरूपवरकूंमागताभया ॥ अनेकप्रश्नोंकानाम कामप्रश्नहै ॥ अब जिसविचारकरिकै जनकराजानैं कामप्रश्नरूप वरकूंमाग्याहै ताविचारकूं निरूपणकरैहैं ॥ इसमहात्मायाज्ञवल्क्य मुनिनैं कृपाकरिकै पूर्व हमारेताईं आत्मज्ञानकाउपदेशकऱ्याथा ॥ ता याज्ञवल्क्यमुनिकेउपदेशकूं मैंमंदबुद्धिजनक विस्मरणकरताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं प्राप्तहुईचिंतामणिकूं मंदबुद्धिभाग्यहीनपुरुष परित्यागकरैहै ॥ तैसे मैंपापात्माजनक याज्ञवल्क्यमुनिकेउपदेशकापरित्यागकरताभया ॥ यातैं यहहमारा महान्अपराधहै ॥ ताअपराधकेनिवृत्तिकाउपाय दुर्लभहै ॥ परंतु पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं ताअपराधकेनिवृत्तिकाउपाय यहकामप्रश्नरूपवर हमारेकूं प्राप्तभयाहै ॥ किंवा हस्ति अश्व सुवर्ण स्त्री पुत्र इत्यादिक जोमनुष्यलोककाधनहै सोभी हमारेकूं प्राप्तहै ॥ और कर्मउपासनारूप जोदेवलोककाधनहै सोभी हमारेकूंप्राप्तहै ॥ यातैं तिसमनुष्यधनविषे तथादैवधनविषे हमारीइच्छाहैनहीं ॥ एकआत्मज्ञानविषे हमारीइच्छाथी ॥ सो आत्मज्ञानभी पूर्व हमारेकूंप्राप्तभयाथा ॥ परंतु हमनैं आपणीमूर्खताकरिकै ताआत्मज्ञानकूं विस्मरणकरिदिया ॥ और अबी हमारा कोईपूर्वलापुण्यकर्म उदयभयाहै ॥ जापुण्यकर्मकेप्रभावतैं यहयाज्ञवल्क्यमुनि हमारेऊपरि प्रसन्नहोइकै कामप्रश्नरूपवर

कूंदेताभयाहै ॥ यातैं ता कामप्रश्नरूपवरकरिकै मैं नष्टहुए आत्मज्ञानकूं पुनःयाज्ञवल्क्यगुरुतैं संपादनकरौंगा ॥ हेशिष्य! याप्रकारकाविचारकरिकै सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिसैं कामप्रश्नरूपवरकूंही मागताभया ॥ और सोयाज्ञवल्क्यमुनिभी दूसरीवार जोजनकराजाकेसमीपआयाथा ॥ सोकिसीसुवर्णादिकपदार्थोंकी प्राप्तिवासतै नहींआयाथा ॥ किंतु जनकराजाकेप्रतिपूर्वउपदेशकऱ्याथा जोआत्मज्ञान तिसीके पुनःस्मरणकरावणेवासतै आयाथा ॥ याकारणतैं सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेतांई कामप्रश्नरूपवरकूं देताभया ॥ हेशिष्य! याप्रकार जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेतांई कामप्रश्नरूपवरदिया ॥ तबी सो जनकराजा बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै निःशंकहोइके प्रश्नकरताभया ॥ अब ताजनकराजाकेविचारकूं निरूपणकरैहैं ॥ यद्यपि यहयाज्ञवल्क्यमुनि क्षमावान्है ॥ यातैं चंदनकीन्यांई शीतलस्वभाववालाहै ॥ तथापि जैसे चंदनविषे अत्यंतमथनकरिकै अग्निउत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे मेरे वारंवार प्रश्नकरिकै जोकदाचित् याज्ञवल्क्यमुनिकूं क्रोधउत्पन्न होवै तौ जैसे वारंवारप्रश्नकरणेतैं शाकल्यब्राह्मणकीदुर्गतिभईथी ॥ तैसे वारंवारप्रश्नकरणेतैं मेरीभी दुर्गति होवैगी ॥ याप्रकारकीशंकाकरिकै मैं याज्ञवल्क्यमुनिसैं पूछतानहीं ॥ साशंका अबीहमारेकूं हैनहीं ॥ काहेतैं? हमनैं याज्ञवल्क्यमुनिसैं कामप्रश्नरूपवर लियाहै ॥ यातैं जोमैं पुनःपुनः तिसीप्रश्नकूंकरौंगा ॥ तथा असंगतपूछौंगा तौभी याज्ञवल्क्यमुनि हमारेऊपरि क्रोधवान् नहींहोवैंगे ॥ हेशिष्य! याप्रकारकाविचारकरिकै सोजनकराजा आपणेमनविषे निःशंकहोइकै प्रश्नकरताभया ॥ तहां प्रथम देहादिकसंघातसैंविलक्षणकरिकै तथास्वयंज्योतिरूपकरिकै त्वंपदार्थरूपआत्माकूं निरूपणकरैहैं ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि! दिनविषेजाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहुआ जोस्थूलसूक्ष्मसंघातरूप यहपुरुषहै ॥ सोपुरुष किसज्योतिकरिकै भासमानहै? तात्पर्ययह ॥ संघातकेअंतर्वर्ति किसीज्योतिकरिकै भासमानहै? अथवा संघाततैंभिन्नकिसीस्थानविषेवर्तमानज्योतिकरिकै भासमानहै? यहआप कृपाकरिकै हमारेप्रतिकहो ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक! जाग्रत्अवस्थाविषे यापुरुषका आदित्यज्योतिहै ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि! जगत्काप्राणरूप जोआदित्यरूपज्योतिहै ॥ सो जबी अस्तभावकूंप्रा

सहोवैहै तबी यापुरुषका कौनज्योतिहै? याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ! आदित्यकेअस्तहुएतैंअनंतर यापुरुषका चंद्रमाही ज्योतिहै ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ! जबी चंद्रमाभी अस्तभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यापुरुषका कौनज्योतिहै? याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ! चंद्रमाकेअस्तहुएतैंअनंतर यापुरुषका अग्निही ज्योतिहै? राजाजनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ! जबी अग्निभीअस्तभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यापुरुषका कौनज्योतिहै? याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ! अग्निकेअस्तहुएतैंअनंतर यापुरुषका वाक्ही ज्योतिहै ॥ अब आदित्य चंद्रमा अग्नि वाक् याचारोंविषे स्पष्टकरिकै ज्योतिरूपता निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! आदित्य चंद्रमा अग्नि यातीनोंज्योतियोंविषे आदित्यरूपज्योतिकरिकै अथवा चंद्रमारूपज्योतिकरिकै अथवा अग्निरूपज्योतिकरिकै यहपुरुष सर्पकंटकादिकोंतैंरहित अनुकूलदेशकूंदेखिकरिकै ता देशविषेस्थितिकरैहै ॥ तथा गृहविषे जावैहै॥ तथा क्षेत्रादिकोंविषेजावैहै ॥ तहां क्षेत्रविषे जाइकै इसलोककेसुखकेसाधन जेकृषिआदिककर्महैं तिनोंकूं यहपुरुष करैहै ॥ और गृहविषेजाइकै यहपुरुष परलोकके सुखकेसाधनजे दानादिककर्महैं तिनोंकूंकरैहै ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेव्यवहारोंकूं यहपुरुष आदित्यादिकज्योतियोंकेप्रकाशकरिकैहीकरैहै ॥ आदित्यादिकज्योतियोंकेप्रकाशतैंविना अंधकारविषे किसीव्यवहारकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं आदित्यविषे तथाचंद्रमाविषे तथाअग्निविषे ज्योतिपणासंभवैहै ॥ अब वाक्विषे ज्योतिपणा स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! जिसस्थानविषे आदित्य चंद्रमा अग्नि यातीनोंज्योतियोंकाप्रकाश नहींहोवैहै ॥ तहां अत्यंतगाढअंधकार होवैहै ॥ जहां आपणाहस्तभी दिखाईनहींदेता ॥ ऐसेगाढअंधकारविषे आसनादिकसंपूर्णव्यवहार वाक्रूपज्योतिकरिकैहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अंधकारविषेस्थितहुआपुरुष अन्यकिसीपुरुषकूं जबी याप्रकारकावचनकहैहै ॥ यापूर्वदिशाविषे बहुतसमीचीनस्थानहै ॥ तहांआइकेतुम आसनकरो ॥ तबी सोपुरुष ताकीवाणीकूंश्रवणकरिकै तहां आसनादिकव्यवहारकरैहै ॥ यातैं जैसे आदित्य चंद्रमा अग्नि येतीनों लोकोंकेगमनआगमनादिकव्यवहारोंकेसाधककहैं ॥ यातैं आदित्यादिकतीनों ज्योतिरूपहैं ॥ तैसे अंधकारविषे वाक्भी गमनआगमनादिरूपव्यवहारकासाधककहै ॥ यातैं वाक्भी ज्योतिरूपहै ॥ हेशिष्य ! याप्रकार जाग्रत्अवस्थाविषे

याज्ञवल्क्यमुनिनें आदित्य चंद्रमा अग्नि वाक् येचारिप्रकारकेज्योतिकहे ॥ तिनोंकूं सोजनकराजा अंगीकारकरताभया ॥ तिसतें अनंतर सोजनकराजा पुनःयाज्ञवल्क्यमुनिसें पूछताभया ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ! आपनें जाग्रत्अवस्थाविषे आदित्य चंद्रमा अग्नि वाक् येचारिप्रकारकेज्योतिकहे ॥ तिनचारोंका स्वप्नअवस्थाविषेलयहोवैहै ॥ तास्वप्नअवस्थाविषे यासूक्ष्मसंघातरूपपुरुषका कौनज्योतिहै ? जिसज्योतिकरिकै स्वप्नअवस्थाविषेसर्वव्यवहार सिद्धहोवैहै ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ! जो आप यहकहो ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यद्यपि आदित्यादिकज्योतियोंकालयहोवैहै ॥ तथापि स्वप्नअवस्थाविषे मनकालयहोवैनहीं ॥ यातें स्वप्नअवस्थाविषे यापुरुषका मनही ज्योतिहै ॥ सोयहकहणा संभवैनहीं ॥ काहेतें? जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे नेत्रइंद्रियकेविद्यमान हुएभी आदित्यादिकज्योतियोंकेप्रकाशतेंविना सोनेत्रइंद्रिय किसीपदार्थकाप्रकाशकरिसकैनहीं ॥ यातें घटादिकपदार्थोंकेग्रहणविषे नेत्रइंद्रियकूं आदित्यादिकप्रकाशोंकीअपेक्षाहै ॥ तैसे घटादिकपदार्थोंकेग्रहणविषे मनकूंभी नेत्रादिकइंद्रियोंकीअपेक्षाहै ॥ नेत्रादिकइंद्रियोंतेंविना मन किसीपदार्थकूं ग्रहणकरैनहीं ॥ और नेत्रादिकइंद्रिय स्वप्नविषेलयकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातें स्वप्नअवस्थाविषे मनकूं ज्योतिरूपता संभवैनहीं ॥ किंवा जैसे मृत्तिका घटशरावादिककार्योंका उपादान कारणहोवैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे मन नही रथादिकपदार्थोंका तथारथादिआकार वृत्तिज्ञानोंका उपादानकारणहोवैहै ॥ याकारणतें मनतेंभिन्नहीकोई स्वप्नकेपदार्थोंका प्रकाशक चाहिये ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे अविद्याकूंही जोरथादिकपदार्थोंका उपादानकारण अंगीकारकरिये ॥ और जाग्रत्के संस्कारविशिष्टमनकूं करण अंगीकारकरिये तौभी जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे नेत्रादिककरणोंकूं आदित्यादिकप्रकाशोंकी अपेक्षा होवैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे मनरूपकरणकूंभी किसीप्रकाशकी अपेक्षा अवश्यहोवैगी ॥ और स्वप्नविषे आदित्यादिकज्योति तथानेत्रादिकइंद्रिय तौहैनहीं ॥ और स्वप्नअवस्थाविषेभी जाग्रत्अवस्थाकीन्यांई गमनआगमनादिक सर्वव्यवहारहोवैहै ॥ यातें स्वप्नअवस्थाविषे विद्यमानहुआभीमन जिसज्योतिकीसहायतातेंविना स्वप्नअवस्थाकेपदार्थोंकूंग्रहणकरतानहीं ॥ सो मनऊपरि अनुग्रहकरणेहारा स्वप्नअवस्थाविषे कौनज्योतिहै ? याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ! स्वप्नअवस्थाविषे यापुरुषका आत्माहीस्वयं

ज्योतिहै ॥ कैसाहैसोआत्मा ? मृत्तिकाकीन्यांई स्वप्नपदार्थोंका उपादानकारणरूप जोमनहै ताकासाक्षीहै ॥ और जिसआत्माकूं पूर्व हम इंधनामकरिकै तथा इदंद्रनामकरिकै वर्णनकरिआये हैं ॥ हेजनक ! जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे यहपुरुष आदित्यादिकज्योतियोंकेप्रकाशकरिकै गमनआगमनादिक नानाप्रकारकेव्यवहारकरैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहपुरुष आत्मारूपज्योतिकरिकैही गमनआगमनादिक नानाप्रकारकेव्यवहारोंकूं करैहै ॥ यातें स्वप्नअवस्थाविषे मनादिकोंकासाक्षीआत्माही स्वयंज्योतिहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनोंअवस्थावोंविषे स्वयंप्रकाशआत्मा विद्यमानहै ॥ यातें जाग्रत्अवस्थाविषेभी आत्माकूंज्योतिपणासंभवैहै ॥ जाग्रत्अवस्थाकूंछोडिकै श्रुतिनैं स्वप्नअवस्थाविषे आत्माकूंज्योतिरूपकरिकै किसवासतेकथनकर्‍या? ॥ समाधान ॥ हेजनक ! यद्यपि जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनोंअवस्थावोंविषे आत्माकास्वयंज्योतिपणा समानहीहै ॥ तथापि जाग्रत्अवस्थाविषे आदित्य चंद्रमा अग्नि वाक् येचारिज्योतिभीविद्यमानहैं ॥ यातें जाग्रत्अवस्थाविषे आदित्यादिकज्योतियोंकरिकै गमनआगमनादिकव्यवहारहोवैहैं ॥ अथवा आत्मारूपज्योतिकरिकै सोगमनआगमनादिकव्यवहारहोवैहै ॥ याप्रकारकानिर्णय अल्पबुद्धिपुरुषोंकूं होइसकैनहीं ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे आदित्यादिकचारोंज्योतियोंकालय होवैहै ॥ एकआत्माहीरहैहै ॥ यातें अल्पबुद्धिपुरुषोंकूं स्वयंज्योतिरूपआत्माके निश्चयकरावणेवासते श्रुतिनैं स्वप्नअवस्थाविषेही आत्माकूं स्वयंज्योतिकह्याहै ॥ जबी यहअधिकारीपुरुष स्वप्नअवस्थाविषे आत्माकूं स्वयंज्योतिरूपकरिकै निश्चयकरैगा ॥ तबी जाग्रत्अवस्थाविषेभी आत्माकेस्वयंज्योतिपणेकूं जाणिसकैगा ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते स्वप्नअवस्थाविषे आत्माकूं स्वप्नपदार्थोंकाकर्तारूपकरिकै निरूपण करैहैं ॥ हेजनक ! जैसे सृष्टिकालविषे एकहीमायाविशिष्टईश्वर संपूर्णजगत्कूं उत्पन्नकरैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे एकहीस्वयंज्योतिआत्मा आदित्य चंद्रमा अग्नि वाक् याचारिज्योतिरूप प्रकाशकोंकूं तथा रथअश्वादिरूप प्रकाश्यपदार्थोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तथा आदित्यादिकप्रकाशोंकरिकैअनुगृहीत जेनेत्रादिककरणहैं तिनोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ और तास्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा आकाशादिकपंचभूतोंकूं तथाभौतिकजगत्कूं उत्पन्नकरैहै ॥ तथा भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनप्रकारकेकालकूंउत्पन्नकरै

है तथा पूर्वदक्षिणादिकदशदिशावोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तथा स्थावरजंगमरूप जेऊंचनीचजंतुहैं तिनोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तथा क्षार समुद्रतैंआदिलैके जेसप्तसमुद्रहैं तिनोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तथा जंबुद्वीपतैंआदिलैके जेसप्तद्वीपहैं तिनोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तथा सुमेरुप र्वततैंआदिलैके सर्वपर्वतोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तथा श्रीगंगातैंआदिलैके सर्वनदियोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तथा नीचेकेसप्तलोकोंकूं उत्पन्न करैहै ॥ तथा ऊपरीकेसप्तलोकोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तथा तिनचतुर्दशलोकोंके अधिपतियोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तथा इंद्र अग्नि यम रक्षव रुण पवन धनद महेशान ब्रह्मा शेष यादशदिक्पालोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तथा ब्रह्मा विष्णु शिव इत्यादिकजेपरमेश्वरकेलीलाविग्रहहैं तिनोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तथा नानाप्रकारके भूमिकेराजोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ इसतैंआदिलैके जितनास्थूलसूक्ष्मजगतहै ॥ तथा परो क्षअपरोक्षरूपजगतहै ॥ तिससंपूर्णजगत्कूं स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा उत्पन्नकरैहै ॥ और हेजनक! यहजीवअल्पज्ञ है यातैं सर्वज्ञब्रह्मकेसाथ ताकाअभेदसंभवैनहीं ॥ याप्रकारकीकुतर्ककरिकै दूषितहैचित्ताजिनोंका ऐसेजे भेदवादीपुरुषहैं ॥ ते अहंब्र ह्मास्मि ॥ अर्थयह ॥ मैंब्रह्महूं याश्रुतिकूंअप्रमाणरूपमानेहैं ॥ तथापि स्वप्नअवस्थाविषे तिनभेदवादियोंकूं बलात्कारसें ताश्रुतिकीप्रमा णतासिद्धहोवैहै ॥ काहेतें? जैसे ब्रह्म आपणीमायाशक्तिकरिकै जगत्कीउत्पत्ति स्थिति लय करैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयं ज्योतिआत्माभी आपणीमायाशक्तिकरिकै जगत्की उत्पत्ति स्थिति लय करैहै ॥ यातैं जगत्के उत्पत्ति स्थिति लयकीकारणता जैसेब्र ह्मविषेहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे याजीवात्माविषेभी जगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकीकारणताहै ॥ याकारणतें यहजीवात्मा ब्रह्मतैंभिन्नन हीं किंतुअभिन्नहै ॥ और हेजनक! जैसे प्रज्वलितमहान्अग्नितैं अग्निकेसमानरूपवाले विस्फुलिंग उत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे स्वप्नअव स्थाविषे यास्वयंज्योतिआत्मातैं आपणेसमानरूपवाले अनेकजीव उत्पन्नहोवैहैं ॥ और हेजनक! जैसे मायाविशिष्टपरमेश्वर प्र थम समष्टिसूक्ष्महिरण्यगर्भरूपमनकूं उत्पन्नकरैहै ॥ कैसाहैसोहिरण्यगर्भरूपमन? उत्पन्नहोणेहारा स्थूलभूतभौतिकप्रपंचरूपग र्भकरिकैयुक्तहै ॥ ऐसेहिरण्यगर्भरूपमनकरिकै सोपरमात्मादेव नामरूपात्मक संपूर्णस्थूलसूक्ष्मजगत्कूं उत्पन्नकरैहै ॥ कैसाहैसोज गत्? हिरण्यगर्भरूपमनकीउत्पत्तिसैंपूर्व मायाविशिष्टपरमात्माविषे संस्काररूपकरिकैरहैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्यो

तिसआत्माभी एकमनरूपीसाधनकरिकै सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरैहै ॥ और हेजनक! जैसे लोकविषे एकहीआकाशविषे घटाका
श मठाकाश याप्रकारकाभेद प्रतीतहोवैहै ॥ परंतु सोभेद वास्तवतैंनहीं ॥ किंतु घटरूपसूक्ष्मउपाधिकरिकै तथा मठरूप
स्थूलउपाधिकरिकै सोभेद प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे अद्वितीयब्रह्मतैं जोजीवोंकाभेद प्रतीतहोवैहै ॥ सोभेदभी वास्तवतैंनहीं ॥ किंतु
स्थूलसूक्ष्मशरीररूपउपाधिकरिकै सोभेद प्रतीतहोवैहै ॥ और हेजनक! जैसे एकहीआकाश घटरूपउपाधिविषे तथामठरू
पउपाधिविषे एकरूपकरिकै विद्यमानहै ॥ आकाशविषे किंचित्मात्रभी विलक्षणतानहीं ॥ और घटाकाश मठाकाश इत्या
दिकजोविलक्षणता प्रतीतहोवैहै ॥ साविलक्षणता आकाशविषेअनुपपन्नहुई घटमठादिकउपाधियोंकूंही आश्रयणकरैहै ॥ तैसे
ब्रह्मभी स्थूलसूक्ष्मशरीरोंविषे समानरूपकरिकैही स्थितहोवैहै ॥ ब्रह्मविषे किंचित्मात्रभी विलक्षणतानहीं ॥ और लोकोंकूं जावि
लक्षणता प्रतीतहोवैहै ॥ साविलक्षणता अद्वितीयब्रह्मविषे अनुपपन्नहुई परिशेषतें स्थूलसूक्ष्मरूपउपाधियोंकूंही आश्रयणकरैहै ॥
याकहणेकरिकै आत्माका सर्वत्रअभेदनिरूपणकऱ्या ॥ अब उपाधियोंकेअभेदकहणेवासते प्रथम सूक्ष्मउपाधिके स्वरूपकूं निरूप
णकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे समष्टिअज्ञानविशिष्टईश्वरका हिरण्यगर्भरूपसूत्रआत्मा सूक्ष्मशरीरहै ॥ तैसे व्यष्टिअज्ञानविशिष्टजीवों
का मनही सूक्ष्मशरीरहै ॥ इहां मनशब्दकरिकै पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय पंचप्राण मन बुद्धि यासप्तदशतत्वोंकाग्रहणकरणा ॥
और हेजनक! जैसे समष्टिमायाविशिष्टईश्वर हिरण्यगर्भरूपसूत्रकरिकै स्थूलजगत्रूपपटकूंरचैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहजी
वात्मा मनरूपसूत्रकरिकै जगत्रूपपटकूं रचैहै ॥ अब व्यष्टिसमष्टिकेअभेदकहणेवासते प्रथम तिनोंकेसमानधर्मोंकूंदिखावैहैं ॥
हेजनक! जैसे प्रज्वलितमहान्अग्नितैं अनेकविस्फुलिंग उत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे सूत्रआत्मारूपहिरण्यगर्भतैं अनेकमन उत्पन्नहोवै
हैं ॥ और जैसे प्रज्वलितमहान्अग्नि दाहकरैहै तथाप्रकाशकरैहै ॥ तैसे अग्नितेंउत्पन्नहुएविस्फुलिंगभी दाहकरैहैं तथाप्रका
शकरैहैं ॥ इसीप्रकार जैसे हिरण्यगर्भरूपसूत्रात्मा जगत्की उत्पत्ति स्थिति लय करैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे सर्वदेहधारी
जीवोंकेमनभी जगत्की उत्पत्ति स्थिति लय करैहैं ॥ और जैसे प्रज्वलितअग्निविषे तथा विस्फुलिंगोंविषे तेजरूपता तथारक्तरूप

तासमानहींहै ॥ तैंसे समष्टिसूक्ष्मसूत्रात्माविषे तथा जीवोंके व्यष्टिमनविषे सूक्ष्मरूपता समानही है ॥ याकहणेकरिकै समष्टिसूक्ष्म
सूत्रात्माविषे तथाव्यष्टिसूक्ष्ममनविषे समानधर्मता दिखाई ॥ अब दोनोंकेअभेदकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे प्रज्वलितमहा
नूअग्नि तथा विस्फुलिंग येदोनों तेजरूपकरिकै समानहीहैं ॥ यातैं वास्तवतैं तिनोंकाभेदनहीं ॥ किंतु काष्ठरूपउपाधिकरिकै ति
नोंकाभेदहै ॥ तैंसे समष्टिसूत्रात्माविषे तथाव्यष्टिमनविषे वास्तवतैंभेदनहीं ॥ किंतु समष्टिस्थूलविराटशरीररूपउपाधिकरिकै सूत्र
आत्माविषेभेदहै ॥ तथाव्यष्टिस्थूलशरीररूपउपाधिकरिकै मनविषेभेदहै ॥ इतनेंकरिकै समष्टिव्यष्टिउपाधियोंका अभेददिखाया ॥
अब संपूर्णजडजगत्विषे मिथ्यात्वबोधनकरणेवासते प्रथम संपूर्णजडजगत्विषे चैतन्यआत्माकरिकै प्रकाश्यता निरूपणकरैहैं ॥
हेजनक! जैसे लोकविषे भित्ति नानाप्रकारकेचित्रोंकाआधारहोवैहै ॥ तैंसे समष्टिसूक्ष्मरूपसूत्रात्मा समष्टिस्थूलरूपचित्रोंका आ
धारहै ॥ इसीप्रकार व्यष्टिसूक्ष्ममनरूपीभित्तिभी व्यष्टिस्थूलशरीररूपचित्रोंकाआधारहै ॥ और हेजनक! जैसे दीपक प्रथम भि
त्तिकूंप्रकाशकरैहै ॥ ताभित्तिद्वारा तिनचित्रोंकूंप्रकाशकरैहै ॥ तैंसे समष्टिअज्ञानउपहित ईश्वरसाक्षी प्रथम सूत्रात्मारूपभित्तिकूंही
प्रकाशकरैहै ॥ तासूत्रआत्माद्वारा समष्टिस्थूलविराट्रूपचित्रोंकूंप्रकाशकरैहै ॥ इसीप्रकार व्यष्टिअज्ञानउपहितजीवसाक्षी प्रथम
व्यष्टिसूक्ष्मशरीररूपभित्तिकूंप्रकाशकरैहै ॥ तासूक्ष्ममनद्वारा व्यष्टिस्थूलशरीररूपीचित्रोंकूं प्रकाशकरैहै ॥ और जैसे भित्ति तथा
चित्र दीपककूंप्रकाशकरिसकैनहीं ॥ तैंसे समष्टिव्यष्टिसूक्ष्मस्थूलरूपउपाधि साक्षीआत्माकूंप्रकाशकरिसकैनहीं ॥ इतनेकरिकै
तत्त्वमसि याश्रुतिविषे तत्पदकालक्ष्यार्थ जोईश्वरसाक्षीहै ॥ तथात्वंपदकालक्ष्यार्थ जोजीवसाक्षीहै॥ तिनदोनोंके अभेदकीयोग्य
तादिखाई ॥ अब मनकेविद्यमानहुए आत्माविषे जगत्कीप्रतीति ॥ और मनकेलयहुए आत्माविषेजगत्कीअप्रतीति ॥ याप्रकार
के अर्थकेबोधनकरणेवासते समष्टिविषे मनकालय ॥ तथाकारणअज्ञानविषे मनकालय ॥ तथा अधिष्ठानविषे मनकालय ॥ यह
तीनप्रकारका मनकालयरूपव्यतिरेक निरूपणकरैहैं॥ तहां प्रथम समष्टिविषे मनकालयरूपव्यतिरेक निरूपणकरैहैं॥ हेजनक! जै
से काष्ठोंकेअभावहुए अग्नि सामान्यतेजविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै॥ तैंसे जेअधिकारीपुरुष हिरण्यगर्भकीउपासनाकरिकै अध्यात्म

परिच्छिन्नभावकीनिवृत्तिरूप मोक्षकूंप्राप्तहोवैंहैं॥ तथा हिरण्यगर्भभावकीप्राप्तिरूप अतिमोक्षकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तिनउपासकपुरुषोंकेमन सूत्रआत्मारूपहिरण्यगर्भविषे लयहोवैंहैं ॥ तिसकालविषे तिनउपासकपुरुषोंके अध्यात्मपरिच्छेदरूपसंसारकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ अब कारणअज्ञानविषे मनकालयरूपव्यतिरेक निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे भस्मकरिकै आच्छादितहुई अग्नि दाहरूपकार्यकूं तथा प्रकाशरूपकार्यकूं करैनहीं ॥ और भस्मकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर सोईअग्नि दाहरूपकार्यकूं तथा प्रकाशरूपकार्यकूं करैहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे तथा मरणअवस्थाविषे जीवोंकेमनरूपअग्नि भोगप्रदकर्मोंकेअभावरूपभस्मकरिकै आच्छादितरहैहैं॥ याकारणतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे तथा मरणअवस्थाविषे जीवोंकेमन जगत्कीउत्पत्ति स्थिति लयरूपकार्यकूंनहींकरैहैं॥ और जबी सुखदुःखरूपफलकेदेणेहारे पुण्यपापरूपप्रारब्धकर्मका उद्भवहोवैहै ॥ तबी सोईहीमन जाग्रत्स्वप्नविषे जगत्के उत्पत्ति स्थिति लयरूप कार्यकूंकरैहै ॥ अब अधिष्ठानविषे मनकालयरूपव्यतिरेक निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे सर्वकाष्ठोंकूंभस्मकरिकै जोअग्नि नाशकूंप्राप्तभयाहै ॥ सोअग्नि पुनः कदाचित्भी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और दोकाष्ठोंके मथनकरिकै जोअग्निउत्पन्नहोवैहै ॥ सोभी दूसराहीअग्नि उत्पन्नहोवैहै ॥ पूर्वनष्टहुआअग्नि पुनःउत्पन्नहोवैनहीं ॥ तैसे श्रवणादिकसाधनोंकरिकैयुक्त जोशुद्धमनहै ॥ सो आत्मसाक्षात्काररूपीअग्निकरिकै अज्ञानकूं तथाअज्ञानकेकार्यजगत्कूं दग्धकरैहै ॥ और सोमनभी अज्ञानकाकार्यहै ॥ यातैं अज्ञानरूपकारणकेदग्धहुएतैंअनंतर सोमनभी दग्धहोइजावैहै ॥ और एकवार आत्मज्ञानकरिकैनाशकूंप्राप्तहुआमन पुनःकदाचित्उत्पन्नहोवैनहीं ॥ याकारणतैं अज्ञानीजीवोंकीन्यांई मुक्तपुरुषका वारंवार जन्महोवैनहीं ॥ इतनेकरिकै मनकेअभावहुए संसारकाअभावरूप व्यतिरेकदिखाया ॥ अब मनकेविद्यमानहुए संसारकीविद्यमानतारूप अन्वय दिखावैंहैं ॥ हेजनक! जैसे ग्रीष्मऋतुकेरात्रिकालयविषे प्रकाशतैंरहित जोउष्णतारूपतेजहै ॥ सोतेज काष्ठादिकइंधनोंतैंविनाही संतापरूपकार्यकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे मनविशिष्टआत्मादेशकालादिकलौकिकसामग्रीतैंविनाही सूक्ष्मरथादिकपदार्थोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ और हेजनक! जैसे शीतकालविषेअग्निकाष्ठरूपीइंधनोंकूं आश्रयणकरिकैही जीवोंकेशीतकीनिवृत्तिरूपकार्यकूंकरैहै ॥ काष्ठोंतैंविना सोअग्नि शीतकीनिवृत्तिकरैनहीं ॥

तैसे जाग्रत्अवस्थाविषे यहमनविशिष्टआत्मा देशकालादिकलौकिकसाधनोंकूं आश्रयणकरिकैही स्थूलपदार्थोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ अब स्वप्नकेदृष्टांतकरिकै जाग्रत्विषे मिथ्यात्वबोधनकरणेवासते प्रथम जाग्रत्स्वप्नकीसमानताकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहमनही स्थूलसूक्ष्मजगत्भावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतें संपूर्णस्वप्नकेपदार्थ मनोमात्रहैं ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी यहमनही सर्वजगत्भावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातें जाग्रत्केपदार्थभी मनोमात्रहैं ॥ और जैसे स्वप्नअवस्थाविषे मनके निरोधहुए द्वैतप्रपंच प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी मनकेनिरोधहुए द्वैतप्रपंच प्रतीतहोवैनहीं ॥ और जैसे स्वप्नअवस्थाविषे मनही शत्रुकूं तथामित्रकूं तथाउदासीनपुरुषकूं उत्पन्नकरिकै शत्रुविषे द्वेषकरैहै ॥ और मित्रविषे रागकरैहै ॥ और उदासीनपुरुषविषे उपेक्षाबुद्धिकरैहै ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी यहमनही शत्रुकूं तथामित्रकूं तथाउदासीनपुरुषकूं उत्पन्नकरिकै शत्रुविषे द्वेषकरैहै ॥ और मित्रविषे रागकरैहै ॥ और उदासीनपुरुषविषे उपेक्षाबुद्धिकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जाग्रत्अवस्थाविषे बहुतकालकरिकै तथाबहुतदेशकरिकै तथाकाष्ठादिक नानाप्रकारकीसामग्रीकरिकै रथादिकपदार्थोंकी उत्पत्तिहोवैहै ॥ और स्वप्नविषे काष्ठादिकसामग्रीतैंविनाही रथादिकपदार्थोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ यातें स्वप्नकेपदार्थोंकीन्याई जाग्रत्केपदार्थ मिथ्यानहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक! रथादिककार्योंकूं आपणीउत्पत्तिविषे देश काल काष्ठादिक साधनमात्रकीअपेक्षाहै ॥ सत्यसाधनोंकीअपेक्षाहैनहीं ॥ यातें जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे कल्पित देशकालादिकसाधनोंकरिकै रथादिकपदार्थोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी कल्पित देशकालादिकसाधनोंकरिकै रथादिकपदार्थोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे जीवोंकूं केईपदार्थ सुखकेकारण प्रतीतहोवैहैं ॥ और केईपदार्थ दुःखकेकारण प्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी जीवोंकूं केईपदार्थ सुखकेकारण प्रतीतहोवैहैं ॥ और केईपदार्थ दुःखकेकारण प्रतीतहोवैहैं ॥ यातें जाग्रत्केपदार्थ तथास्वप्नकेपदार्थ दोनोंसमानहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! स्वप्नकेपदार्थ अल्पकालपर्यंतरहैहैं ॥ और जाग्रत्केपदार्थ बहुतकालपर्यंत स्थिररहैहैं ॥ यातें स्वप्नकेपदार्थोंसें जाग्रत्केपदार्थोंविषे विशेषताहै ॥ समाधान ॥ हेजनक! जाग्रत्केपदार्थ स्थिरहैं यहजोतुमनेंकह्या ॥ इहां स्थिरशब्दका क्याअर्थहै? त

हां जोपदार्थ कदाचित्भी अन्यथाभावकूं नहींप्राप्तहोवैहै सोपदार्थ स्थिरशब्दकाअर्थहै ॥ अथवा जोपदार्थ नियमकरिकै तिसीकार्य
कीउत्पत्तिकरैहै सोपदार्थ स्थिरशब्दकाअर्थहै॥ तहां प्रथमपक्षतौसंभवैनहीं॥ काहेतैं? आत्मातैंभिन्न जितनेजडपदार्थहैं ॥ ते क्ष
णक्षणविषे अन्यथाभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं अन्यथाभावतैंरहिततारूप स्थिरता जाग्रत्पदार्थोंविषेसंभवैनहीं ॥ तैसे दूसरापक्ष
भीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं? जोपदार्थ स्वप्नविषे जीवकूंसुखकीप्राप्तिकरैहै॥ सोइहीपदार्थ जाग्रत्अवस्थाविषे तिसीजीवकूं दुःखकीप्रा
प्तिकरैहै ॥ और जोपदार्थ स्वप्नअवस्थाविषे याजीवकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै॥ सोईहीपदार्थ जाग्रत्अवस्थाविषे ताजीवकूं सुखकीप्रा
प्तिकरैहै ॥ इसीप्रकार जाग्रत्अवस्थाविषे जोपदार्थ जीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ सोईहीपदार्थ स्वप्नअवस्थाविषे ताजीवकूं दुः
खकीप्राप्तिकरैहै ॥ और जोपदार्थ जाग्रत्अवस्थाविषे याजीवकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ सोईहीपदार्थ स्वप्नअवस्थाविषे ताजी
वकूं सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ यातैं कोईभीपदार्थ नियमकरिकै किसीकार्यकीउत्पत्तिकरैनहीं ॥ याकहणेकरिकै जाग्रत्अवस्थामें स्व
प्नकेपदार्थोंविषे विपरीतकार्यकीकारणता दिखाई ॥ तथा स्वप्नअवस्थामें जाग्रत्केपदार्थोंविषे विपरीतकार्यकीकारणता दिखा
ई ॥ अब जाग्रत्अवस्थामेंही जाग्रत्केपदार्थोंविषे विपरीतकार्यकीकारणता निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे स्वप्नअवस्थाविषे
जोप्रियपदार्थ सुखकाकारणहोवैहै॥ सोईहीप्रियपदार्थ वियोगकालविषे जीवोंकेदुःखकाकारणहोवैहै ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी
जेस्त्री पुत्र धनादिकपदार्थ जीवोंकेसुखकेकारणहैं ॥ तेही स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ वियोगकालविषे जीवोंके दुःखकेकारणहोवैहैं ॥
नियमकरिकै किसीभीपदार्थविषे सुखकीकारणता तथादुःखकीकारणता हैनहीं ॥ यातैं स्वप्नकेपदार्थोंतैं जाग्रत्केपदार्थोंविषे किंचि
त्मात्रभीविलक्षणतानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! स्वप्नपदार्थोंकेजेकारणहैं ॥ तिनोंतैं जाग्रत्पदार्थोंकेकारण विलक्षणहैं ॥ यातैं
जाग्रत्पदार्थोंविषे स्वप्नकेपदार्थोंकीतुल्यता संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक! जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे जीवोंकेस्थूलशरीर
शुक्रशोणिततैं उत्पन्नहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी जीवोंकेस्थूलशरीर शुक्रशोणिततैं उत्पन्नहुए प्रतीतहो
वैहैं ॥ और जैसे स्वप्नअवस्थाकेशुक्रशोणित असत्यहैं ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाकेशुक्रशोणितभी असत्यहीहैं ॥ और जैसे जा

ग्रत्‌अवस्थाविषे पिता माता पुत्र भ्राता इत्यादिकअनेकप्रकारकेपदार्थ विद्यमानहैं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी पिता माता पुत्र भ्राता इत्यादिकअनेकप्रकारकेपदार्थ विद्यमानहैं ॥ यातें जाग्रत्‌की तथास्वप्नकी किसीप्रकारतें विलक्षणता संभवैनहीं ॥ यातें हेजनक ! जाग्रत्‌अवस्थाविषे तथा स्वप्नअवस्थाविषे जितनेस्थूलसूक्ष्मपदार्थ हैं ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंका मनही कारणहै ॥ और यहजीव ईश्वरतैंभिन्न है ॥ और ईश्वर जीवतैंभिन्नहै ॥ याप्रकारका जीवईश्वरका भेदभी इसमननैंही कल्पनाकऱ्याहै ॥ जिसजीवईश्वरकेभेदकूंनिश्चयकरिकै अज्ञानीजीव वारंवार जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तहांश्रुति ॥ मृत्योःसमृत्युमाप्नोति यइहनानेवपश्यति ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष अद्वितीयब्रह्मविषे नानाभावकूंदेखताहै ॥ सोभेददर्शीपुरुष अनंतवार जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥१॥ और हेजनक ! यहमन केवलजगत्‌काहीकारणनहीं ॥ किंतु जीवोंकेबंधका तथामोक्षकाभी यहमनहीकारणहै ॥ तहां आत्माकूंआच्छादनकरणेहारा जोआवरणशक्तिरूपअज्ञानहै ॥ ताकूं आपणेविषेमानताहुआ अशुद्धमन जीवोंकेबंधकाकारणहै ॥ और भेदकादर्शनरूपजोविक्षेपशक्तिहै ताविक्षेपशक्तिरूपअज्ञानकूं आपणेविषेमानताहुआ यहमन अध्यात्म अधिदैव अधिभूत यातीनप्रकारकेदुःखका कारणहोवैहै ॥ और श्रुतिनैंकथनकऱ्याजोआत्माका स्वप्रकाशआनंदस्वरूप ताकूं गुरुशास्त्रकेप्रसादतें जाणताहुआ शुद्धमन जीवोंकेमोक्षका कारणहोवैहै ॥ काहेतें? मनका तथा मनकरिकैरचितप्रपंचका साक्षीरूप जोशुद्धआत्माहै ॥ ताकेविषे बंध मोक्ष भेददर्शन येतीनोंसंभवैंनहीं ॥ किंतु बंधमोक्षादिक संपूर्णजगत् मननैंउत्पन्नकऱ्याहै ॥ यातें मनविषेही बंधमोक्षादिकहैं ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! जैसे लोकविषे अत्यंतचंचलजोमर्कटहै ॥ सोनानाप्रकारकीचेष्टाकरिकै आपेही आपणेकूं मरणांतदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे अत्यंतचंचल यहमनभी विषयवासनाकरिकै आपेही आपणेकूं संसारदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ और हेजनक ! जैसे अगाधजलविषे स्थितजोमत्स्यहै ॥ ताकूं किंचित्‌मात्रभी तहांभयनहीं ॥ परंतु सोमत्स्य जबी कुंडीमीलितमांसकेभक्षणकरणेवासते ताअगाधजलकूंछोडिकै बाहरिआवैहै ॥ तबी सोमत्स्य प्राणांतदुःखकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे स्वप्रकाशआनंदस्वरूपआत्माविषे स्थितहुआयहमन किंचित्‌मात्रभी दुःखकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥

और जबी सोमन विषयभोगकेवासते आनंदस्वरूपआत्माकूंछोडिकरिकै बाहरिआवैहै ॥ तबी सोमन नानाप्रकारकेदुःखोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! जैसे दशरज्जुवोंकरिकैबांध्याहुआ जोअत्यंतचंचलमर्कटहै ॥ सो दशोंदिशावोंविषे भ्रमणकरताहुआ परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे वाकादिकदशइंद्रियरूपरज्जुकरिकै बांध्याहुआयहमनरूपीमर्कटभी विषयोंकीतरफधावताहुआ परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! जैसे अत्यंतदूरआकाशविषेस्थित जोकपोतपक्षीहै ताकूं तहांकिंचित्मात्रभीभयनहीं ॥ परंतु सोकपोत जबी पृथिवीविषेकपोतनीस्त्रीकूंदेखैहै ॥ तबी रागकरिकैअंधहुआसोकपोत ताआकाशकूंछोडिकै तत्कालभूमिविषेआवैहै ताभूमिविषे सोकपोत नानाप्रकारकेदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे चिदाकाशविषेस्थितहुआयहमन किंचित्मात्रभी दुःखकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ और जबीसोमन बाह्यशब्दस्पर्शादिकविषयोंकूंदेखिकरिकै रागकरिकैअंधहोवैहै ॥ और ताचिदाकाशकापरित्यागकरिकैतत्कालबाह्यविषयकीतरफआवैहै ॥ तबी सोमन अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! जैसे रज्जुकरिकैबांध्याहुआपशु पराधीनताकरिकै उत्तरउत्तर दुःखकेदेणेहारेस्थानोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे पुण्यपापरूपीरज्जुकरिकैबांध्याहुआ यहसकाममनभी उत्तरउत्तर दुःखकेदेणेहारी विषयरूपीभूमिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! जैसे मृत्यु सर्वलोकविषेविचरैहै ॥ परंतु ताकेविचरणेकाकारण कोईजाणिसकतानहीं ॥ तैसे मनभी सर्वदाविषयोंकीतरफजावैहै ॥ परंतु ताकेजाणेकाकारण कोईजाणिसकतानहीं ॥ और हेजनक! जैसे मूढबालक व्यर्थही नानाप्रकारकीचेष्टाकरैहै ॥ तैसे यहमनभी व्यर्थही नानाप्रकारकीचेष्टाकरैहै ॥ और हेजनक! जैसे पादजिसकेबांध्येहुएहैं और रथविषेजिसकाअत्यंतरागहै ऐसाजोकोई रथवाहीपुरुषहै ताकेरथविषे जीर्णरज्जुकरिकैबांध्येहुए अत्यंतदुष्टअश्वजुडेहोवैं ॥ ऐसारथवाहीपुरुष अश्वोंसहित गर्तविषेपडिकेनष्टहोवैहै ॥ तैसे मनरूपी शिथिलरज्जुकरिकैबांध्येहुए जेदशइंद्रियरूपीदुष्टअश्वहैं ॥ तिनोंकरिकैयुक्त जोयहसंघातरूपीरथहै तारथविषेस्थितहुआ यहजीवात्मापुरुष वारंवार संसाररूपीगर्तविषेप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! जैसे मूढबालक जबी प्रथम आपणेमुखविषे नानाप्रकारकीविक्रियाकरैहै तबीही सन्मुखशुद्धदर्पणविषे नानाप्रकारकी विक्रियादेखैहै ॥ परंतु सानानाप्रकारकीविक्रिया वास्तवतें

दर्पणविषेनहीं ॥ किंतु बालकके मुखविषेही है ॥ भ्रांतिकरिकै ताबालककूं दर्पणविषे विक्रियाप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे यहमनभी संसार संबंधी अनेकप्रकारकीविक्रियाकरैहै ॥ और तिनआपणेविक्रियावोंकूं समीपवर्तीस्वप्रकाशआत्माविषेदेखैहै ॥ परंतु वास्तवतें तेवि क्रिया मनविषेही है आत्माविषेनहीं ॥ भ्रांतिकरिकै मनकीविक्रिया आत्माविषेप्रतीतहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जडमनविषे नाप्रकारकेविक्रियावोंकीकारणता संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक! जैसे अम्लरसवाले जेनिंबुआदिकपदार्थहैं ते समीपदेखे हुए पुरुषोंकेमुखविषे जलकीउत्पत्तिकरैहैं ॥ तथा पुरुषोंकेमनकूंक्षोभकरैहैं ॥ तैसे स्वप्रकाशचैतन्यआत्माभी आपणीसमीपतामात्रकरिकै जडमनकूं नानाप्रकारकीविक्रियाविषे प्रवृत्तकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! असंगआत्माविषे मनकेक्षोभकीकारणता किसप्रकारसंभवैहै? ॥ समाधान ॥ हेजनक! असंगआत्माविषे यद्यपि मनकेक्षोभकीकारणतासंभवैनहीं ॥ तथापि अचिंत्यशक्तिअज्ञानकरिकै असंगआत्माविषेभी मनकेक्षोभकीकारणता संभवैहै ॥ और हेजनक! जैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहआनंदस्वरूपआत्मा जीवोंकेमनोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तैसे जिसमनकरिकैविशिष्टहुआ यहआत्मा स्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिसमनकूंभी सोआत्माहीउत्पन्न करैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! स्वप्नअवस्थाविषे जिसमनकरिकै आत्मा अनेकमनोंकीउत्पत्तिकरैहै ॥ तिस प्रधानमनकीभीकिसी अन्यमनकरिकै उत्पत्ति अंगीकारकरणीहोवैगी ॥ याप्रकारअनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेजनक! मनकरिकै जोमनकीउत्पत्ति हम अंगीकारकरैं तौअनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवै ॥ परंतु मनकरिकै मनकीउत्पत्ति हम अंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु जैसे लोकविषे बीजोंकूंनष्टहुआदेखिकरिकै पृथुराजा पृथिवीकूंप्रेरणाकरताभया ॥ तापृथुराजाकीप्रेरणाकरिकै सापृथिवी बीजोंकूंउत्पन्नकरतीभई ॥ तहां बीजोंकेप्रति बीजोंकूंकारणतानहीं ॥ किंतु जिसपृथिवीनैं बीजोंकूंआपणेविषेलयकऱ्याथा ॥ तिसपृथिवीकूंही बीजोंकेप्रति कारणताहै ॥ तैसे मनकीउत्पत्तिविषे मनकूंकारणतानहीं ॥ किंतु मूलाअज्ञानकरिकैविशिष्टआत्माही मनका कारणहै ॥ और सोमूलाअज्ञान अनादिहै ॥ यातैं ताकीउत्पत्तिविषे अन्यअज्ञानकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ और हेजनक! जैसे मेघविद्युतादिकोंतैंरहित अत्यंतनिर्मलजोआकाशहै सो आपणीअचिंत्यशक्तिकरिकै मेघविद्युतादिकोंके उत्पत्ति स्थिति लयका कारणहोवैहै ॥

मेघादिकोंकरिकैविशिष्टहुआआकाश मेघादिकोंकाकारणहोवैनहीं ॥ तैसे अज्ञानकरिकैविशिष्टहुआ यहआत्मा मनादिकजगत्केउत्पत्ति स्थिति लयका कारणहोवैहै॥ मनादिकप्रपंचकरिकैविशिष्टहुआआत्मा मनादिकप्रपंचकाकारणहोवैनहीं॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! अज्ञानकरिकै यहआत्मा किसप्रकार विपरीतभावकूंप्राप्तहोवैहै?॥ **समाधान** ॥ हेजनक! जैसे कोईदरिद्रीभिक्षुक किसीमायादिकनिमित्तकरिकै आपणेभिक्षुकपणेकेअज्ञानतैं राजाभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा कोईराजा आपणेराजापणेकेअज्ञानतैं भिक्षुकभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे ब्रह्मरूपयहआत्माभी आपणेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतैं स्थूलसूक्ष्मरूपजगत्भावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! अज्ञानकेवशतैं आत्माकूं जगत्भावकीप्राप्ति यद्यपिसंभवैहै ॥ तथापि अज्ञानकेवशतैं आत्माविषे जन्ममरण संभवैनहीं ॥ **समाधान** ॥ हेजनक! जैसे इदानींकालविषे जन्ममरणतैंरहितयहपुरुष आपणेस्वरूपकेअज्ञानतैं स्वप्नअवस्थाविषे जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी वास्तवतैं जन्ममरणतैंरहित यहआनंदस्वरूपआत्मा आपणेस्वरूपकेअज्ञानकरिकै जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं आपणेस्वरूपकाअज्ञानही जन्ममरणकाकारणहै॥ और हेजनक! जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे घटादिकजडपदार्थोंकाद्रष्टा जोपुरुषहै ताद्रष्टापुरुषकूं घटादिकदृश्यपदार्थ प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे रथादिकदृश्यपदार्थोंकेआकारकूंप्राप्तहुआ जोमनहै सोमन स्वप्नद्रष्टासाक्षीआत्माकूं प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ किंतु साक्षीआत्मा तामनकाप्रकाशकरैहै ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! जैसे श्रुतिनैं आत्माकूंज्योतिकह्याहै तैसे मनकूंभी ज्योतिकह्याहै ॥ यातैं आत्माकीन्यांई मनभी स्वप्रकाशहै ॥ **समाधान** ॥ हेजनक! मन आत्माकाप्रकाशकरैहै यातैं ज्योतिहै ॥ याअभिप्रायकरिकै श्रुतिनैं मनकूं ज्योतिनहींकह्या ॥ किंतु आत्मातैंभिन्न जोघटपटादिकपदार्थहैं तिनोंकूं मनकीवृत्तिद्वारा आत्मा प्रकाशकरैहै ॥ यातैं घटादिकबाह्यपदार्थोंकेप्रकाशविषे मन आत्माकासहकारीहै ॥ याअभिप्रायकरिकै श्रुतिनैं मनकूं ज्योतिकह्याहै ॥ **दृष्टांत** ॥ जैसे लोकविषे घटपटादिकपदार्थोंकेज्ञानविषे सहकारीजोचक्षुइंद्रियहै ताकूं ज्योतिकहैहैं ॥ तैसे घटादिकपदार्थोंकारवृत्तियोंका उपादानकारणजोमनहै ताकूं श्रुति ज्योतिकहैहैं ॥ और हेजनक! जैसे यहआत्मा बाह्यस्थूलसूक्ष्मपदार्थोंकूं नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकैजाणेहै ॥ और नेत्रादिकइंद्रियोंकेअवि

षय जेपरोक्षपदार्थहैं तिनोंकूं तथानेत्रादिकइंद्रियोंकूं यहआत्मा मनकरिकैंजाणेहै ॥ तैसे मनकूं तथामनकेवृत्तियोंकूं यहआत्मा अन्यकिसीसाधनकरिकै प्रकाशकरैनहीं ॥ किंतु आपणेस्वप्रकाशरूपकरिकै यहआत्मा मनकूंप्रकाशैहै ॥ और हेजनक ! आत्मा केआश्रितरहणेहारा तथा आत्माकूंविषयकरणेहारा जोअव्याकृतरूपअज्ञानहै सोई मनकाकारणहै ॥ ताकारणअज्ञानकूंभी जबी यहस्वप्रकाशआत्माहीप्रकाशकरैहै तबी ताअज्ञानकेकार्यमनकूं यहआत्मा प्रकाशकरैहै याकेविषे क्याकहणाहै? ॥ और हे जनक ! जैसे यहस्वयंज्योतिआत्मा अज्ञानसहितमनकूं प्रकाशकरैहै ॥ तैसे नेत्रादिकइंद्रिय तारागण मणियां रत्न सूर्य चंद्रमा अग्नि इनोंतैंआदिलैके जितनेलोकविषे प्रकाशकपदार्थहैं तिनसंपूर्णोंकूं यहस्वप्रकाशआत्माही प्रकाशकरैहै ॥ चैतन्यआत्मातैंविना जडपदार्थोंकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ इतनेग्रंथकरिकै आत्माविषे श्रुतिप्रमाणकरिकैसिद्धजो सर्वजगत्कीप्रकाशकताहै सानिरूपणकरी ॥ अब युक्तियोंकरिकै आत्माविषे सर्वजगत्कीप्रकाशकता निरूपणकरैहैं ॥ यहघटहै यहपटहै इत्यादिकज्ञानोंके जितने ज्ञानतैंभिन्ननेत्रादिककरण तथाघटपटादिकविषयरूपकारणहैं ॥ तिनकारणोंविषे सर्वशास्त्रवाले जडताअंगीकारकरैहैं ॥ एकबृहस्पतिकेशिष्य चार्वाकनास्तिक ज्ञानकेकारणोंविषे जडताअंगीकारकरतेनहीं ॥ काहेतें? चार्वाकनास्तिककेमतविषे शरीराकारपरिणामकूं प्राप्तभये जे पृथिवी जल तेज वायु येचारिभूतहैं तिनोंविषेही चैतन्यताहै ॥ सोतिनचार्वाकोंकेमतकूं कन्येहुएकर्मोंकाभोगतैंविनानाश तथानकन्येहुएकर्मोंकेफलकाभोग याप्रकारके कृतनाश अकृताभ्यागमरूपदोषकरिकै बालकभी खंडनकरिसकैहैं ॥ याकारणतैं तिनोंकेमतका इहांखंडनकरतेनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ यहघटहै यहपटहै इत्यादिकज्ञानोंतैंभिन्न जितनेपदार्थ हैं तेसंपूर्ण जडहैं ॥ तेज्ञानही प्रकाशरूपहैं ॥ अब याअर्थविषे यहविचारकन्याचाहिये ॥ यहघटहै यहपटहै इत्यादिकज्ञान चैतन्यरूपहोणेतैं स्वप्रकाशहैं ॥ अथवा अंतःकरणकीवृत्तिरूपहोणेतैं परप्रकाशहै ॥ अब प्रथमस्वप्रकाशपक्षविषे तिनज्ञानोंकूं ब्रह्मात्मरूपतासिद्धकरणेवासते तिनज्ञानोंकेभेदकाखंडनकरैहैं ॥ यहघटहै यहपटहै इत्यादिकजेस्वप्रकाशज्ञानहैं तिनज्ञानोंकाभेद किसकरिकैसिद्धहोवैहै? ताभेदकरिकैही ताभेदकीसिद्धिहोवैहै ॥ अथवा ताभेदकाआश्रयजोज्ञानहै ताज्ञानकरिकै ताभेदकीसिद्धिहोवैहै ॥ अथवा

किसीअन्यज्ञानकरिकै ताभेदकीसिद्धिहोवैहै ॥ तहां ताभेदकरिकै ताभेदकीसिद्धिहोवैहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसं भवैनहीं ॥ काहेतें ? जैसे कोईमूढपुरुष याप्रकारकावचनकहै ॥ मेरेमुखविषेजिव्हानहींहै ॥ सोयहताकावचन व्याघातदोषवालाहै ॥ काहेतें? जिव्हातेंविना याप्रकारकावचन कह्याजावैनहीं ॥ तैसेजडभेद आपणीसिद्धिकरैहै याप्रकारकावादीकावचनभी व्याघातदोष वालाहै ॥ काहेतें? जडपदार्थकरिकै आपणीसिद्धि तथाअन्यपदार्थकीसिद्धि कहांदेखीजातीनहीं ॥ और ताभेदकाआश्रयजोज्ञानहै ताज्ञानकरिकै स्वनिष्ठभेदकीसिद्धिहोवैहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें ? अभावके प्रतियोगीअनु योगीकेज्ञानतेंविना अभावकाज्ञानहोवैहैनहीं ॥ जैसे घटकेअभाववालाभूतलहै ॥ याप्रतीतिविषे घटाभावकाप्रतियोगी घटहै ॥ और अनुयोगीभूतलहै ॥ तहां घटरूपप्रतियोगीकेज्ञानतेंविना तथा भूतलरूपअनुयोगीकेज्ञानतेंविना घटाभावकाज्ञानहोवैनहीं॥तैसे ज्ञा नोंकाजोपरस्परभेदहै सोभी अभावरूपहै ॥ यातें ताभेदका प्रतियोगीरूपजोज्ञानहै ॥ तथा अनुयोगीरूपजोज्ञानहै तिनोंकेज्ञान तेंविना ताभेदकाज्ञान होवैनहीं ॥ और सोप्रतियोगीअनुयोगीरूपज्ञान स्वप्रकाशहै ॥ यातें तिनज्ञानोंकूंविषयकरणेहाराज्ञान संभ वैनहीं ॥ और जोतिनज्ञानोंकूंविषयकरणेहारा कोईदूसराज्ञान अंगीकारकरोंगे ॥ तौ घटादिकोंकीन्यांई तिनज्ञानोंविषे स्वप्रकाश ता नहींरहैगी ॥ किंतु तेज्ञान परप्रकाशहोवैंगे ॥ किंवा स्वप्रकाशज्ञानोंविषेस्थितजोभेदहै सोभेद किसीअन्यज्ञानकरिकैसिद्धहै यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै तासैं यहपूछाचाहिये ॥ सो स्वप्रकाशज्ञानोंकाभेद तुमनैं किसीअन्यज्ञानकरिकैग्रहणकरीताहै अथवा नहींग्रहणकरीताहै? तहां जोवादी प्रथमपक्ष अंगीकारकरै तासैं यहपूछाचाहिये ॥ भेदहै याप्रकारकेज्ञाननैं ताभेदकूंविष यकरीताहै अथवा इनज्ञानोंकेभेदहै याप्रकारकेज्ञाननैं ताभेदकूंविषयकरीताहै? तहां प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवै नहीं ॥ काहेतें ? भेदहै याप्रकारकाज्ञान भेदमात्रकूंविषयकरैहै ॥ ज्ञानोंकेभेदकूंविषयकरैनहीं ॥ यातें भेदहै याप्रकारकेज्ञानकरिकै स्वप्रकाशज्ञानोंकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ **दृष्टांत** ॥ जैसे भेदहै याप्रकारकेज्ञानकरिकै आकाशका आकाशतैंभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ तैसे भेदहै याप्रकारकेज्ञानकरिकै स्वप्रकाशज्ञानोंकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ और इनज्ञानोंकाभेदहै याप्रकारकेज्ञाननैं स्वप्रकाश

ज्ञानोंकेभेदकूं विषयकरीताहै ॥ यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? जैसे घट पटतेंभिन्नहै तथा घट तेंभिन्नहै ॥ याप्रकारकाज्ञान घटपटकूं तथातिनोंकेभेदकूं विषयकरैहै ॥ याकारणतें घटपट परप्रकाशहै तैसे यह घटहै याप्रकार काज्ञान यहपटहै याप्रकारकेज्ञानतेंभिन्नहै ॥ याप्रकारकाज्ञान तिनज्ञानोंकूं तथातिनोंकेभेदकूं विषयकरैहै ॥ यातें घटादिकोंकी न्यांई ते ज्ञानभी परप्रकाशहोणेचाहिये ॥ किंवा स्वप्रकाशज्ञानोंकाभेद किसीज्ञानकरिकै सिद्धनहीं है यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? जैसे मनुष्याकशृंग तथावंध्याकापुत्र किसीप्रमाणजन्यकाज्ञानकाविषयनहीं है ॥ याकार णतें अत्यंतअसत्यहैं ॥ तैसे प्रमाणजन्यज्ञानकाअविषयहोणेतें स्वप्रकाशज्ञानोंकाभेदभी अत्यंतअसत्यहोवैगा ॥ और प्रमाणजन्य ज्ञानकाअविषयमानिकै जोज्ञानकेभेदकूं सत्यमानोंगे ॥ तौ प्रमाणजन्यज्ञानकाअविषय जोमनुष्यकाशृंगहै तथावंध्यापुत्रहै ॥ सो भी सत्यहोणाचाहिये ॥ किंवा ज्ञानोंकेभेदकूंग्रहणकरणेहारा जोदूसराज्ञान है सो परप्रकाशहै अथवा स्वप्रकाश है ॥ तहां जोवादी प्रथमपक्ष अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतें? जिसज्ञाननें ज्ञानोंकेभेदकूंग्रहणकऱ्याहै ॥ सोज्ञान परप्रकाशहै ॥ यातें ताज्ञानका किसीदूसरेज्ञानकरिकै प्रकाशहोवैगा ॥ दूसरेका तीसरेकरिकै प्रकाशहोवैगा ॥ तीसरेका चतुर्थज्ञानकरिकै प्रकाशहो वैगा ॥ याप्रकार ज्ञानोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और ज्ञानोंकेभेदकूंग्रहणकरणेहारा सोदूसराज्ञान स्वप्रकाशहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? प्रतियोगीअनुयोगीकेज्ञानतेंविना अभावकाज्ञानहो वैनहीं ॥ यहवार्ता पूर्वकहिआये हैं ॥ यातें जोस्वप्रकाशज्ञान स्वप्रकाशज्ञानोंकेभेदकूंग्रहणकरैगा ॥ सो स्वप्रकाशज्ञान ताभेदकेप्रति योगीअनुयोगीरूप स्वप्रकाशज्ञानोंकूंभी अवश्यग्रहणकरैगा ॥ सो यहवार्ता संभवैनहीं ॥ काहेतें? जैसे सूर्य चंद्रमा दोनोंविषे प्रका शकता समानहै ॥ यातें सूर्य चंद्रमाकूंप्रकाशनहींकरता ॥ और चंद्रमा सूर्यकूं प्रकाशनहींकरता ॥ तैसे भेदकाआश्रयरूपज्ञानभी स्वप्रकाशरूपहै ॥ और ताभेदकूंग्रहणकरणेहाराज्ञानभी स्वप्रकाशरूपहै ॥ यातें स्वप्रकाशरूपज्ञानका स्वप्रकाशरूपदूसरेज्ञानक रिकै ग्रहणसंभवैनहीं ॥ और जोप्रकाशरूपज्ञानकाभी दूसरेप्रकाशरूपज्ञानकरिकै प्रकाशमानोंगे ॥ तौ सूर्यचंद्रमाकाभी परस्पर

प्रकाश्यप्रकाशकभावहोणाचाहिये ॥ किंवा जोवादी स्वप्रकाशज्ञानकरिकै स्वप्रकाशज्ञानकाप्रकाश अंगीकारकरैहै ॥ सोवादी तिन ज्ञानोंके परस्परन्यूनअधिकतारूपभेदकूंभीअवश्यअंगीकारकरैगा ॥ तहां प्रकाश्यज्ञानविषे न्यूनता मानणीहोवैगी ॥ और प्रकाशक ज्ञानविषे अधिकतामानणीहोवैगी ॥ यातैं जैसे यहघटहै यहपटहै इत्यादिकज्ञानोंकरिकै प्रकाश्य जेघटपटादिकपदार्थहैं ॥ तिनोंविषे स्वप्रकाशतानहींहै ॥ तैसेज्ञानकरिकैप्रकाश्य ज्ञानोंविषेभी स्वप्रकाशता नहींरहैगी ॥ यातैं ज्ञानकूंस्वप्रकाशमानिकै ताज्ञानकादूसरेज्ञानकरिकै प्रकाशमानणा यहवादीकाकहणाकैसाहै ॥ जैसे कोईपुरुषकहै मेरीमातावंध्याथी यावचनकीन्यांई व्याघातदोषवाला है ॥ किंवा जोवादीस्वप्रकाशज्ञानोंविषे न्यूनअधिकतारूपभेद नहींअंगीकारकरै ॥ तौभी तिनज्ञानोंका परस्पर प्रकाश्यप्रकाशकभाव सिद्धहोइसकैनहीं ॥ काहेतैं? समानजातिवालेपदार्थोंका परस्पर प्रकाश्यप्रकाशकभाव कहांलोकविषेदेख्यानहीं ॥ जैसे दीपक आपणेतैंविजातीयजेघटादिकपदार्थहैं तिनोंका प्रकाशकरैहै ॥ परंतु प्रकाशरूपकरिकैसमानजातिवाले जे खद्योतादिकहैं तिनोंकूं सोदीपक प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ तैसे स्वप्रकाशरूपकरिकै समानस्वभाववाले जेज्ञानहैं ॥ तिनोंकाभी परस्पर प्रकाश्यप्रकाशकभाव संभवैनहीं ॥ यातैं किसीप्रकारकरिकैभी ज्ञानोंकाभेदसिद्धहोइसकैनहीं यहासिद्धभया ॥ अब भेदरहितज्ञानोंकूं आत्मरूपता कथनकरणेवासते प्रथम ज्ञानविषे सुखरूपता निरूपणकरैहै ॥ ते भेदतैंरहितज्ञान सुखरूपहैं ॥ काहेतैं? यो वै भूमा तत्सुखं ॥ अर्थयह ॥ जोपदार्थभेदतैंरहितहै सोईपदार्थ सुखरूपहै ॥ याश्रुतिविषेकथनकऱ्या जोभेदशून्यत्वरूप सुखकालक्षण सोसुखकालक्षण भेदशून्यज्ञानोंविषेभीघटैहै ॥ यातैं भेदरहितज्ञान सुखरूपहै ॥ शंका ॥ श्रुतिनेंकथनकऱ्या जोभेदशून्यत्वरूपसुखकालक्षण सोलक्षणसुखविषे कहां घटैहै? ॥ समाधान ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे तथासमाधिअवस्थाविषे भेददर्शनकाअभावहोवैहै ॥ याकारणतैं यहजीव सुषुप्तिअवस्थाविषे तथासमाधिअवस्थाविषे दुःखकूंअनुभवकरतेनहीं ॥ किंतु सुखकूंही तहां अनुभवकरतेहैं ॥ शंका ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे तथासमाधिअवस्थाविषे विद्यमानजोसुखहै ॥ ताकेविषे भेदशून्यत्वरूपसुखकालक्षण यद्यपिसंभवैहै ॥ तथापि सोसुख स्वप्रकाशज्ञानस्वरूपहै याअर्थविषे कौनप्रमाणहै? ॥ समाधान ॥ स्वप्रकाशरूपकरिकै पूर्व वर्णनकरेजेज्ञान तेज्ञान जोसुखरूपनहींहोवै तौ जैसे सुषु

प्तिअवस्थाविषे तथासमाधिअवस्थाविषे जीवोंकूं दुःखका अनुभव नहींहोवैहै ॥ तैसे सुषुप्तिसमाधिविषे जीवोंकूं सुखकाअनुभवभी नहींहोणाचाहिये ॥ और सर्वजीवोंकूं सुषुप्तिअवस्थाविषे तथासमाधिअवस्थाविषे सुखकाअनुभवहोवैहै ॥ यातें स्वप्रकाशज्ञानही सुखरूपहै ॥ याकारणतैंही सर्वजीवोंकूं सुषुप्तिकेस्वप्रकाशज्ञानरूपआनंदविषे इच्छाहोवैहै ॥ शंका ॥ सुषुप्तिविषे जोसर्वजीवोंकीइच्छाहोवैहै ॥साइच्छा सुखकीप्राप्तिवासतै होवैनहीं ॥ किंतु सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वदुःखोंकाअभावहोवैहै ॥ ता दुःखाभावकीप्राप्तिवासतै जीवोंकूं सुषुप्तिविषेइच्छाहोवैहै ॥ यातें सुषुप्तिअवस्थाविषे स्वप्रकाशज्ञानकेसाथ सुखकाअभेदअंगीकारकरणानिष्फलहै ॥ **समाधान** ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे जैसे स्वप्रकाशज्ञान सुखरूपहै ॥ तैसे दुःखकाअभावरूपभीहै ॥ स्वप्रकाशज्ञानतैंभिन्न दुःखाभावनहीं ॥ काहेतैं? सुषुप्तिविषेस्थितजो सर्वदुःखोंकाअभावहै ॥ सोदुःखाभाव जोस्वप्रकाशज्ञानतैंभिन्नहोवैगा ॥ तौ तादुःखाभावकीसिद्धिही नहींहोवैगी ॥ और जोवादी सुषुप्तिअवस्थाविषे दुःखाभावकूं स्वप्रकाशज्ञानतैंभिन्नमानिकै तादुःखाभावकाप्रकाश अंगीकारकरैहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे तादुःखाभावकूं सूर्यादिक प्रकाशकरैहैं ॥ अथवा स्वप्रकाशज्ञान तादुःखाभावकूं प्रकाशकरैहै? ॥ तहां प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं? सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वकार्यप्रपंचकालयहोवैहै ॥ यातें सूर्यादिकप्रकाशोंकाभी सुषुप्तिविषेलयहोवैहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे स्वप्रकाशज्ञानकरिकै दुःखाभावकाप्रकाशहोवैहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं? सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित जोदुःखाभावहै ॥ तादुःखाभावकूं वादी स्वप्रकाशज्ञानतैंअत्यंतभिन्नमानेहै ॥ यातें ताअत्यंतभिन्नदुःखाभावकूं स्वप्रकाशज्ञान प्रकाशकरैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ चैतन्यरूपस्वप्रकाशज्ञान दोपदार्थोंकूं प्रकाशकरैहै ॥ एकतौ आपणेस्वरूपकूं प्रकाशकरैहै ॥ और दूसरा आपणेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तभयाजोपदार्थहै ताकूं प्रकाशकरैहै ॥ अत्यंतभिन्नदुःखाभावकूं स्वप्रकाशज्ञान प्रकाशकरैनहीं ॥ यातें सुषुप्तिअवस्थाविषे दुःखाभावकीसिद्धिवासतै वादीनैं तादुःखाभावकूं स्वप्रकाशज्ञानरूप मान्याचाहिये ॥ अब सत्ख्यातिवादीकेमतकूं अंगीकारकरिकै दुःखाभावविषे स्वप्रकाशज्ञानरूपता सिद्धकरैहै ॥ जैसे सत्ख्यातिवादीकेमतविषे घटविषेस्थित जोप

टादिकसर्वपदार्थोंकाअभावहै ॥ सोपटादिकोंकाअभाव अधिकरणरूपघटतैंभिन्ननहीं किंतु घटरूपहीहै ॥ तैंसे सुषुप्तिअवस्थाविषे अधिष्ठानरूपचैतन्यविषे स्थितजोदुःखाभावहै ॥ सोभी अधिष्ठानरूपचैतन्यतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोदुःखाभाव अधिष्ठानचैतन्यरूप है ॥ शंका ॥ सत्ख्यातिवादीकीन्याईं जोअभावकूं अधिकरणरूपमानोंगे तौ संपूर्णजगत्कूं अभावरूपता प्राप्तहोवैगी ॥ समाधान ॥ अभावकूं अधिकरणरूपमानणेविषे जोसंपूर्णजगत्कूं अभावरूपताप्राप्तहोवै तौ होणेदेवो ॥ याकेविषे हमअद्वैतवादियोंकी किंचित्मात्रभी हानिहोवैनहीं ॥ उलटा अद्वितीयआत्माका दृढनिश्चयहोवैहै ॥ शंका ॥ सत्ख्यातिवादीकेमतकूंअंगीकारकरिकै जो दुःखाभावकूं अधिष्ठानचैतन्यरूप अंगीकारकरोगे तौ तुमारेसिद्धांतकीहानिहोवैगी ॥ समाधान ॥ सर्वअंशतैं जोपरमतकाअंगीकारकरिये तौ हमारेसिद्धांतकीहानिहोवै ॥ परंतु सर्वअंशतैं हम परमतकाअंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु परमतकी जितनीअंश श्रुतिअर्थविषे अनुकूलहै ॥ तितनीअंशका हम अंगीकारकरैहैं ॥ यातैं आपणेसिद्धांतकीहानि होवैनहीं ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे केवल दधिकेभक्षणतैं यद्यपि ज्वरकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तथापि शर्करायुक्तदधिकेभक्षणतैं ताज्वरकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ तैंसे श्रुतिविरुद्धपरमतके अंगीकारकरणेतैं यद्यपि सिद्धांतकीहानिहोवैहै ॥ तथापि श्रुतिअर्थकेअनुकूलजोयुक्तिहै ॥ तायुक्तिरूपशर्कराकरिकैयुक्त परमतरूपीदधिकेग्रहणकरणेविषे किंचित्मात्रभी सिद्धांतकीहानिहोवैनहीं ॥ यातैं सत्ख्यातिवादी जिसघटकूं पटादिकसर्वपदार्थोंकाअभावरूपमानैहै ॥ ताघटकूंही हमअद्वैतवादी ब्रह्मरूपमानैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ अस्ति भाति प्रिय नाम रूप यापंचअंशोंकरिकै सर्वजगत् व्याप्तहै ॥ तहां घटका नामरूप यहदोनोंअंश कल्पितहैं ॥ यातैं अधिष्ठानचैतन्यतैंभिन्ननहीं ॥ और अस्ति भाति प्रिय ये तीनोंअंश ब्रह्मरूपहैं ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ श्लोक ॥ अस्तिभातिप्रियंरूपं नामचेत्यंशपंचकं ॥ आद्यंत्रयंब्रह्मरूपं जगद्रूपंततोद्वयं ॥ अर्थयह ॥ संपूर्णजगत् अस्ति भाति प्रिय नाम रूप यापंचअंशोंकरिकैयुक्तहै ॥ तहां अस्ति भाति प्रिय ये आदिकेतीनअंशतौ ब्रह्मरूपहैं ॥ और नाम रूप येदोनोंअंश जगत्रूपहैं ॥ १ ॥ किंवा अधिकरणरूपभावपदार्थतैं जोअभावभिन्नहोवैगा तौ ताअभावविषे पदार्थपणाही नहींसंभवैगा ॥ काहेतैं ? अस्तिपदकेतादात्म्यसंबंधवाला जोवस्तुहोवैहै ॥ तावस्तु

कूं बुद्धिमान्पुरुष पदार्थकहैंहैं ॥ जैसे घटोअस्ति पटोअस्ति यास्थानविषे अस्तिशब्दका घटपटरूपअर्थकेसाथ तादात्म्यसंबंधहै ॥ सोअस्तिशब्दकातादात्म्य अभावकेसाथ संभवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ लोकविषे तथाशास्त्रविषे जितनेवृक्षादिकशब्दहैं ॥ तिनोंकाभी सत्यतैंभिन्न अभावरूप अर्थहोवैनहीं तौ अस्तिशब्दका सत्यतैंभिन्नअभावरूपअर्थ किसप्रकारहोवैगा? ॥ याकारणतैं भी संपूर्णपदार्थ सत्यहैं ॥ शंका ॥ प्रतिसंख्यानिरोध अप्रतिसंख्यानिरोध आकाश यातीनोंकूं नास्तिक असत्यमानैहैं ॥ तहां बुद्धिपूर्वक पदार्थकेनाशकूं प्रतिसंख्यानिरोधकहैंहैं ॥ और अबुद्धिपूर्वक पदार्थकेनाशकूं अप्रतिसंख्यानिरोधकहैंहैं ॥ और आवरणकेअभावकूं आकाशकहैंहैं ॥ यातैं नास्तिकोंकेमतविषे येतीनों अभावरूपहोणेतैं जैसे असत्यहैं ॥ तैसे अभावरूपहोणेतैं घटादिकसर्वपदार्थोंकूंभी असत्यरूपता क्यूंनहींहोवै? ॥ समाधान ॥ आकाशविषे जोअभावरूपतासिद्धहोवै तौ आकाशकेदृष्टांतकरिकै घटादिकपदार्थोंविषे असत्यरूपता सिद्धहोवै ॥ सो आकाशविषे अभावरूपता संभवैनहीं ॥ काहेतैं? आकाशोअस्ति याप्रतीतिविषे आकाशशब्दका तथाअस्तिशब्दका आकाशकेसाथ तादात्म्यसंबंध सर्वलोकोंकूंप्रतीतहोवैहै ॥ और सत्यपदार्थका असत्यपदार्थकेसाथ तादात्म्यसंबंधसंभवैनहीं ॥ यातैं आकाशअसत्यनहीं ॥ किंवा आकाशकूं जोवंध्यापुत्रकीन्यांई तथानरशृंगकीन्यांई अत्यंतअसत्यमानौगे तौ जैसे वंध्यापुत्रविषे तथानरशृंगविषे किसीपदार्थकीआधारतानहींहै ॥ तैसे आकाशविषेभी शब्दगुणकीआधारता नहींहोवैगी ॥ और संपूर्णशास्त्रवालेपुरुष शब्दगुणकाआकाशही आधारमानैहैं ॥ याकारणतैंभी आकाश अभावरूपनहीं ॥ याप्रकार सत्ख्यातिवादी सर्वपदार्थोंकूं सत्यरूपमानैहैं ॥ और घटविषेस्थित जोपटादिकपदार्थोंकाअभावहै ॥ ताअभावकूं अधिकरणरूपघटतैं भिन्नमानैनहीं ॥ किंतु ताअभावकूं घटस्वरूपमानैहैं ॥ याप्रकारका सत्ख्यातिवादीकामतअद्वैतसिद्धांतविषे अनुकूलहै ॥ काहेतैं? वेदांतशास्त्रविषे वृद्धपुरुषोंनैं यहकह्याहै ॥ श्लोक ॥ अधिष्ठानावशेषोहि नाशःकल्पितवस्तुनः ॥ अर्थयह ॥ कल्पितवस्तुकाजोअभावहै ॥ सो अधिष्ठानतैंभिन्नहोवैनहीं ॥ किंतु अधिष्ठानरूपहीहोवैहै ॥ १ ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषे कल्पितजोसर्पहै ॥ ताकल्पितसर्पकाअभाव रज्जुरूपअधिष्ठानतैंभिन्ननहीं किंतु रज्जुरूपहै ॥ तैसे

नेहनानास्तिकिंचन ॥ अर्थयह ॥ अधिष्ठानआत्माविषे किंचित्मात्रभीद्वैतप्रपंच नहीं है ॥ याश्रुतिनैं अधिष्ठानआत्माविषे बोधनकन्याजो कल्पितप्रपंचकाभाव सोअभाव अधिष्ठानआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु अधिष्ठानआत्मारूपहै ॥ इसप्रकार सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित जोसर्वदुःखोंकाअभावहै ॥ सोदुःखाभाव अधिष्ठानपरमात्मातैंभिन्ननहीं किंतु परमात्मारूपहै ॥ इतनेग्रंथकरिकै यहअर्थ सिद्धभया ॥ जैसे परमात्मा स्वप्रकाशहै तथाआनंदरूपहै तथा भेदतैंरहितहै ॥ तैसे पूर्वउक्तरीतिसैं यहघटहै यहपटहै इत्यादिकज्ञानभी स्वप्रकाशरूपहैं तथाआनंदरूपहैं तथाभेदतैंरहितहैं ॥ यातैं परमात्माकेसमानलक्षणवालेहोणेतैं तेज्ञान परमात्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु परमात्मारूपहैं ॥ **शंका** ॥ पूर्वउक्तरीतिसैं ज्ञानोंविषे यद्यपि सजातीयभेद तथास्वगतभेद संभवैनहीं ॥ तथापि विजातीयघटादिकविषयोंकाभेद संभवैहै ॥ **समाधान** ॥ जहांजहां विषयोंकाभेदहोवैहै ॥ तहांतहां ज्ञानोंकाभेदअवश्यहोवैहै ॥ ज्ञानोंकेभेदतैंविना विषयोंकाभेद होवैनहीं ॥ याकारणतैंही यहघटहै याएकज्ञानकाविषयजोघटहै ॥ ताघटविषे कोईभीशास्त्रवाला भेदअंगीकारकरतानहीं ॥ यातैं ज्ञानोंकेभेदतैंही विषयकाभेदहोवैहै ॥ सोज्ञानोंकाभेद यद्यपि अविचारकालविषे प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि विचारकालविषे सोज्ञानोंकाभेद प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं विषयोंकाभेदभीसंभवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ लोकविषे कारणकेभेदतैंही कार्यकाभेद देख्याहै ॥ जैसे मृत्तिकातंतुरूपकारणकेभेदतैं घटपटरूपकार्यकाभेदहोवैहै ॥ और इहां प्रसंगविषे दृष्टिसृष्टिवादकीरीतिसैं ज्ञानरूपदृष्टिही घटादिकविषयोंकाकारणहै ॥ ता कारणरूपदृष्टिकेअभेदसिद्धहुए घटादिकविषयरूपकार्यकाभेदसिद्धहोवैनहीं ॥ **शंका** ॥ ज्ञानोंकेभेदतैंही विषयोंकाभेदहोवैहै याप्रकारकानियम संभवैनहीं ॥ काहेतें ? लोकविषे विशिष्टज्ञानकेएकताहुएभी ताकेविषयोंकाभेदहीदेख्याहै ॥ जैसे दशघटहैं याप्रकारका एकविशिष्टज्ञान दशत्वसंख्याविशिष्ट दशघटोंकूंविषयकरैहै ॥ और यहघट शुक्लहै याप्रकारकाविशिष्टज्ञान शुक्लगुणविशिष्टघटकूं विषयकरैहै ॥ और मैत्रकापुत्र चैत्रनामामनुष्य रूपवान् गमनकरैहै ॥ याप्रकारका एकहीविशिष्टज्ञान जाति गुण क्रिया संज्ञा संबंध यापंचविशेषणोंकरिकैयुक्तचैत्रव्यक्तिकूं विषयकरैहै ॥ तहां मनुष्य इतनीअंशकरिकै मनुष्यत्वजातिकूं विषयकरैहै ॥ और रूपवान् इतनेअंशकरिकै रूपगुणकूंविषयकरैहै ॥ और गमनकरै

है इतनेअंशकरिकै गमनरूपक्रियाकूं विषयकरैहै ॥ और चैत्र इतनेअंशकरिकै चैत्रसंज्ञाविषयकरैहै ॥ और मैत्रकापुत्र इतनेअं
शकरिकै जन्यजनकभावसंबंधकूंविषयकरैहै ॥ इसतैंआदिलैकेअन्यभीविशिष्टज्ञान अनेकपदार्थोंकूंविषयकरैहैं ॥ तहां ज्ञानकेएक
ताहुएभी विषयोंकाभेद सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ यातैं ज्ञानोंकेभेदतैंही विषयोंकाभेदहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम संभवैनहीं
॥ समाधान ॥ हेवादी ! जोतुमनैं पूर्व विशिष्टज्ञानकहे ॥ तहांभी ज्ञानोंकेभेदहैंविना विषयोंकाभेदहोवैनहीं ॥ किंतु ज्ञानोंकेभेदतैंही
तहां विषयोंकाभेदहोवैहै ॥ काहेतैं ? यहतुमारानियमहै ॥ विशेषणज्ञानतैंविना विशेष्यकाज्ञानहोवैनहीं ॥ यातैं विशिष्टज्ञानतैंपूर्ववर्ति
जे विशेषणज्ञानहैं तिनोंकेभेदकूंअंगीकारकरिकैही विषयोंकाभेदहोवैहै ॥ यातैं पूर्वउक्तनियमकाभंगहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती !
पूर्व तुमने ज्ञानोंकाअभेद सिद्धकऱ्याहै ॥ और अबी ज्ञानोंकाभेदअंगीकारकरिकै समाधानकऱ्या ॥ यातैं पूर्व उत्तर कथनकाविरोध
होवैहै ॥ समाधान ॥ हेवादी ! यहघट शुक्लहै इत्यादिकविशिष्टज्ञान जहां होवैहैं ॥ तहां प्रथम अंतःकरणकीवृत्तियोंकरिकै शुक्लरू
पविशेषणकूं तथाघटरूपविशेष्यकूं तथातिनदोनोंकेसंबंधकूं विषयकरैहै ॥ पश्चात् तिनतीनवृत्तियोंविषेआरूढजो फलचैतन्यहै ॥
ताकरिकै घट शुक्लरूप संबंध यातीनोंकूं विषयकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ पूर्वजोज्ञानोंकीएकताकहीहै ॥ सो अंतःकरणकीवृत्तियोंविषे
आरूढजोचैतन्यरूपज्ञानहै ताकेअभिप्रायतैंकहीहै ॥ और अबीजोज्ञानोंकाभेदकह्या ॥ सोअंतःकरणकीवृत्तिरूपउपाधिकेभेद
तैं कह्याहै ॥ यातैं पूर्वउत्तरग्रंथकाविरोधहोवैनहीं ॥ याकहणेकरिकै यहअर्थ सिद्धभया ॥ ज्ञानोंकेभेदकीअपेक्षाकरिकैही विषयोंका
भेद सिद्धहोवैहै ॥ और सोज्ञानोंकाभेद वास्तवतैंहैनहीं ॥ किंतु अंतःकरणकीवृत्तिरूपउपाधिकेभेदतैं ज्ञानोंकाभेद अज्ञानकालविषे
प्रतीतहोवैहै ॥ और जिसकालविषे याअधिकारीपुरुषकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिसकालविषे सोकल्पितज्ञानोंकाभेद निवृत्तहो
इजावैहै ॥ ताके निवृत्तहुए विषयोंकाभेदभी स्थितहोवैनहीं ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे स्वप्नविषे प्राप्तभयाजोराजापणा ताकाजाग्रत्विषेना
शहुए ताराजापणेकरिकैनिरूपित जोराज्यसामग्रीहै साभी नष्टहोइजावैहै ॥ तैसे विचारकालविषे ज्ञानोंकेभेदकेनिवृत्तहुए ताज्ञानों
केभेदनिरूपित जोविषयोंकाभेदहै सोभी निवृत्तहोइजावैहै ॥ एकअद्वितीयआत्मा परिशेषतैंरहैहै ॥ इतनेग्रंथकरिकै ज्ञानोंकूंस्वप्रका

शमानिकै अद्वितीयआत्माकीसिद्धिकरी ॥ अब ज्ञानोंकूंपरप्रकाश अंगीकारकरिकैभी अद्वितीयआत्माकीसिद्धिकरैहैं ॥ घटादिकवि
षयोंकरिकै तथानेत्रादिककरणोंकरिकै भेदवालेजेज्ञानहैं तेज्ञान परप्रकाशहैं यहद्वितीयपक्षजोअंगीकारकरीयं तौभी जैसे परप्र
काश्यघटादिकपदार्थोंका सूर्यादिकप्रकाशोंकरिकै प्रकाशहोवैहै ॥ तैसे तिनपरप्रकाश्यज्ञानोंकाभी किसीअन्यप्रकाशकरिकैही प्र
काश अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ सो ज्ञानोंकेप्रकाशकरणेहारा स्वयंप्रकाशसाक्षीआत्माहीहै ॥ हेशिष्य! याअभिप्रायकरिकै सोयाज्ञ
वल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति स्वप्नअवस्थाविषे एकआत्माकूंही स्वयंज्योतिकहताभया ॥ काहेतें? स्वप्नअवस्थाविषे सूर्य चंद्रमा
अग्नि वाक् यहचारिप्रकारकेज्योति लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और आत्मारूपज्योतिका किसीअवस्थाविषे लयहोतानहीं किंतु स
र्वअवस्थाविषे साक्षीरूपकरिकै विद्यमानहै ॥ यातें स्वप्नअवस्थाविषे आत्मारूपज्योतिकरिकैही गमनआगमनादिकसर्वव्यवहा
रोंकीसिद्धिहोवैहै ॥ हेशिष्य! यासंघातका आत्माहीज्योतिहै ॥ यावचनकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति संघातसैंभि
न्न स्वयंज्योतिआत्माकाउपदेशकऱ्या ॥ परंतु तायाज्ञवल्क्यमुनिकेअभिप्रायकूं जनकराजानें जान्यानहीं ॥ किंतु जनकराजानें
याप्रकार विपरीतअर्थकूंजान्या ॥ आत्मानाम स्वरूपकाहै ॥ यातें संघातकाजोस्वरूपहै सोई स्वयंज्योतिहै ॥ याप्रकारवि
परीतअर्थकूं जाणिकरिकै सोजनकराजा पुनः याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरताभया ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेभगवन्!
यासंघातविषेवर्तमान जे देह इंद्रिय प्राण अंतःकरण इत्यादिकपदार्थ हैं ॥ तिनोंविषे कौनआत्मा है? ॥ तात्पर्ययह ॥
स्थूलदेह आत्मा है ॥ अथवा वाकादिकइंद्रिय आत्मा है ॥ अथवा प्राण आत्माहै ॥ अथवा अंतःकरण आत्मा है ॥ याज्ञ
वल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक! आत्मा चेतन पुरुष इत्यादिकशब्दोंकरिकै जिसकूं सर्वलोक कथनकरैहैं ॥ तथा तिनशब्दोंकरिकै
जन्यवृत्तिज्ञान जिसकूं विषयकरैहैं ॥ और जो तिनशब्दज्ञानोंतैंभिन्नहै ॥ ऐसाआत्मा सर्वजीवोंकूंप्रसिद्धहै ॥ और जैसे घटादिकप
दार्थ दृश्यहोणेतें आत्मानहींहै ॥ तैसे देह इंद्रिय प्राण अंतःकरण इत्यादिकसंघातभी दृश्यहोणेतें आत्मानहीं ॥ किंतु सर्वसंघात
तैंभिन्न तथासर्वसंघातकाअधिष्ठान जोचेतनहै सोईही स्वयंज्योतिआत्माहै ॥ और हेजनक! आत्माकेज्ञानवासते तू दूरदृष्टि

मतकर ॥ किंतु जिसज्ञानकरिकै तुमनैं यहप्रश्नकऱ्याहै ॥ ताज्ञानविषेही आत्माकापरिचय होइसकैहै ॥ काहेतें ? जैसे लोकविषे वि
वादकेकरणेहारेपुरुषरूपसाक्ष्यतें साक्षीपुरुष भिन्नहोवैहै ॥ तैसे देह इंद्रिय प्राण अंतःकरण इत्यादिकसंघातरूपसाक्ष्यतें भिन्नहो
इकैजोस्थितहै ॥ और सर्वसंघातकाजोसाक्षीहै ॥ सोईही तुमारा अद्वितीयआत्माहै ॥ हेशिष्य ! याप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिनैं जन
कराजाकेप्रति सामान्यतें संघाततैंभिन्नकरिकै आत्माकाउपदेशकऱ्या ॥ अब संघातकेघटक जेदेहादिकपदार्थहैं तिनोंतैंभिन्नकरि
कैआत्माकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां प्रथम स्थूलशरीरतैंभिन्नकरिकै आत्माकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! जैसे अग्निविषेतपायाहुआ
जो लोहेकापिंडहै ॥ तालोहपिंडविषे अग्नि तादात्म्यसंबंधकरिकै रहैहै ॥ तैसे विज्ञानरूपजे नानाअंतःकरणहैं ॥ तिनोंविषे यहचे
तनआत्मा कल्पिततादात्म्यसंबंधकरिकैस्थितहै ॥ और जैसे लोहविषेस्थितहुएअग्निकूं लोकविषे लोहमय कहैहैं ॥ तैसे विज्ञानरू
पअंतःकरणविषेस्थितहुएआत्माकूं शास्त्रवेत्तापुरुष विज्ञानमय कहैहैं ॥ और हेजनक ! जैसे लोहेकापिंड स्वभावतें किसीपदार्थका
दाहकरैनहीं ॥ तथा प्रकाशभीकरैनहीं ॥ तैसे अंतःकरण तथाअंतःकरणकी स्मृति अनुभवरूपवृत्तियां जडहैं ॥ यातें स्वभावतें
प्रकाशरूपनहीं ॥ तथा किसीअन्यपदार्थकाप्रकाश करतेनहीं ॥ और जैसे अग्निकेतादात्म्यसंबंधकूंपाइकै लोहेकापिंड प्रकाशकरै
है तथादाहकरैहै ॥ तैसे स्वप्रकाशआत्माके तादात्म्यसंबंधकूंपाइकै अंतःकरण तथाअंतःकरणकीवृत्तियां प्रकाशमानहोवैहैं ॥ त
थास्थूलसूक्ष्मरूपसर्वजगतकूं प्रकाशकरैहैं ॥ इतनेकरिकै अंतःकरणकीवृत्तियोंविषे आत्माकेतादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणक
ऱ्या ॥ अब आत्माविषेभी ता तादात्म्यअध्यासकेफलकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! जैसे लोहकेपिंडकेसाथ तादात्म्यसंबंधकरिकै
लोहमयसंज्ञाकूंप्राप्तहुआअग्नि प्रकाशकूंकरैहै तथादाहकूंकरैहै ॥ लोहमयसंज्ञातैंविना केवलअग्नि प्रकाशमात्रकूंहीकरैहै ॥ तैसे वृत्ति
सहितअंतःकरणकेसाथ तादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहोइकै विज्ञानमयसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ यहआत्मा यहघटहै यहपटहै इत्यादिकविशेषज्ञा
नोंकाआश्रयहोवैहै ॥ अंतःकरणकेतादात्म्यसंबंधतैंविना केवलआत्मा चित्स्वरूपहीहै ॥ इतनेकरिकै स्थूलशरीरतें आत्माकाभेद
दिखाया ॥ अब वाकादिकइंद्रियोंतैं तथाप्राणोंतैं भिन्नकरिकै आत्माकानिरूपण करैहैं ॥ हेजनक ! यहआनंदस्वरूपआत्मा वायु

रूपमुख्यप्राणकेसाथ तथाइंद्रियरूपगौणप्राणकेसाथ तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहोइकै प्राणोंके तथावाकादिकइंद्रियोंके नानाप्रकारकेव्यापारोंकाकारणहोवैहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष आत्माकूं प्राणोंविषेस्थितकहैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! आत्मा सर्वत्रव्यापकविभुहै ॥ और प्राण परिछिन्नहैं ॥ तापरिछिन्नप्राणविषे विभुआत्माकीस्थिति संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक! जैसे सर्वत्रव्यापकजोआकाशहै ॥ ताकूं लोक घटविषेस्थित कहैहैं ॥ और जैसे सर्वत्रव्यापकजोवायुहै सो वृक्षकेचलावणेकरिकै अभिव्यक्तहोवैहै ॥ याकारणतैं लोक याप्रकारकहैहैं ॥ यावृक्षविषेवायुस्थितहै ॥ तैसे आत्मा यद्यपि सर्वत्रव्यापकहै ॥ तथापि जहां प्राणहोवैहैं ॥ तहां आत्माकीविशेषकरिकै अभिव्यक्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष प्राणोंविषेआत्माकीस्थितिकहैहैं ॥ अब अंतःकरणतैं भिन्नकरिकै आत्माकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि सर्वत्रव्यापकहै ॥ तथापि हृदयकमलविषेस्थितजोबुद्धिहै ॥ ताबुद्धिविषे विशेषकरिकै आत्माकीअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती आत्माकूं हृदयविषेस्थितकहैहै ॥ अब याहीअर्थकूं सर्वलोकोंकेअनुभवकरिकै स्पष्टकरैहैं ॥ हेजनक! पादतैंलेकेमस्तकपर्यंत सर्वशरीरविषे यहजीव सुखकूं तथादुःखकूं अनुभवकरैहै ॥ तथापि सोसुखदुःखकाअनुभव विशेषकरिकैहृदयदेशविषेही प्रतीतहोवैहै ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे धूपकरिकैतपायमानहुआपुरुष जबी शीतलगंगाजलविषेप्रवेशकरैहै ॥ तबी ताशीतलजलकेस्पर्शकरिकै सर्वअंगोंविषे सुखकाअनुभवकरैहै ॥ परंतु सोसुखकाअनुभव विशेषकरिकै हृदयदेशविषेही प्रतीतहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिकैस्पष्टकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे सूर्यकातेज यद्यपि सर्वब्रह्मांडविषे समानहै ॥ तथापि घटादिकअस्वच्छपदार्थोंविषे जोसूर्यकातेजहै ॥ ताकीअपेक्षाकरिकै स्फटिकादिकमणियोंविषे सूर्यकातेज अधिकहै ॥ और स्फटिकमणिविषेस्थिततेजकीअपेक्षाकरिकै सूर्यकांतमणिविषेस्थितजो सूर्यकातेजहै सो अधिकहै इसप्रकार उपाधिकी अस्वछतातैं तथास्वच्छतातैं एकहीसूर्यकातेज न्यूनअधिकभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूप आत्मा यद्यपि सर्वत्रसमानव्यापकहै ॥ तथापि घटादिकोंविषे जोआत्माकाप्रकाशहै ॥ तिसकीअपेक्षाकरिकै शरीरविषे अधिकहै ॥ और शरीरविषेजोआत्माकाप्रकाशहै ॥ तिसकीअपेक्षाकरिकै हृदयविषे आत्माकाप्रकाशअधिकहै ॥ इसप्रकार उपाधिकीअस्वछतातैं

तथास्वछतातैं एकहीआत्माकाप्रकाश न्यूनअधिकभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहां जैसे सूर्यकाप्रकाश घटादिकपदार्थोंविषे विद्यमानहु आभी स्पष्टरूपकरिकै प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे शरीरतैंबाहरि घटादिकपदार्थोंविषे विद्यमानहुआभीआत्मा स्पष्टरूपकरिकैप्रतीत होवैनहीं ॥ और जैसे सूर्यकाप्रकाश यद्यपि स्फटिकादिकमणियोंविषे प्रतिबिंबरूपकरिकै स्पष्टप्रतीतहोवैहै ॥ तथापि सोसूर्य काप्रकाश दाहरूपकार्यकूं करैनहीं ॥ तैसे शरीरविषे सामान्यतैं सुखदुःखकेज्ञानहुएभी विशेषतैं सुखदुःखकाज्ञानहोवैनहीं ॥ और जैसे सूर्यकांतमणिविषे सूर्यका स्पष्टरूपकरिकैप्रकाश तथादाहरूपकार्य दोनोंप्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे हृदयदेशविषे सुखदुःख तथातिनोंकाविशेषकरिकैअनुभव यहदोनोंप्रतीतहोवैहैं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती हृदयविषेआत्माकीस्थिति कथनकरैहै ॥ अथवा वाकादिकसर्वइंद्रियोंका तथा जगत्रूपचित्रकूंधारणकरणेहारेअंतःकरणका हृदयकमलहीआधारहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती आत्माकूं हृदयविषेस्थितकहैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अंतःकरणरूपउपाधिद्वारा आत्माका हृदय आधारहै ॥ अथवा यहआनंदस्वरूपआत्माअंतःकरणादिकसर्वउपाधियोंतैंरहितहोइकै हृदयविषे सुषुप्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती आत्माकूंहृदयविषेस्थितकहैहै ॥ अथवा अष्टांगयोगकरिकैयुक्त तथा ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकैयुक्त जेमुमुक्षुजनहैं तिनोंनैं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं यहआनंदस्वरूपआत्मा हृदयविषेहीजाणीताहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती आत्माकूं हृदयदेशविषेस्थितकहैहै ॥ अथवा मरणकालविषे ब्रह्मलोककूं तथापितृलोककूं तथा कीटपतंगादिकयोनियोंकूं प्राप्तहोणेकीइच्छावान्जोजीवहै ॥ तिसकूं तिनतिसलोककेप्राप्तिकामार्गरूपजोनाडियांहैं तिनोंकाप्रकाश सविज्ञानहृदयतैंहीहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती आत्माकूं हृदयविषेस्थितकहैहै ॥ याकहणेतैंयहअर्थ सिद्धभया ॥ जैसे सूर्यकाप्रकाश यद्यपि सर्वत्रविद्यमानहै ॥ तथापि सूर्यमंडलविषे ताप्रकाशकीविशेषकरिकै प्रतीतिहोवैहै ॥ याकारणतैं सर्वलोक सूर्यमंडलविषे प्रकाशस्थितहै याप्रकारकाकथनकरैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपिसर्वत्र व्यापकहै ॥ तथापि हृदयदेशविषे आत्माकी विशेषकरिकैअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती आत्माकूं हृदयविषेस्थितकहैहै ॥ अब चैतन्यरूपताकीसिद्धिवासते आत्माकूं ज्योतिरूपकरिकै वर्णनकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे बाह्यघटादिकपदा

थोंके प्रकाशकरणेहारे जेतेजरूपसूर्यादिकहैं ॥ ते सूर्यादिक ज्योतिरूपकरिकै सर्वलोकोंकूं प्रसिद्धहैं ॥ और सूर्यादिकप्रकाशोंतैंभिन्न जेघटादिकपदार्थ हैं ॥ तेघटादिकपदार्थ अज्योतिरूपकरिकै सबलोकोंकूं प्रसिद्धहैं ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा सूर्यादिकज्योतियोंकूं तथाघटादिकअज्योतियोंकूं प्रकाशकरैहै ॥ तथा चैतन्यरूपकरिकै तिनोंतैंविलक्षणहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याआनंदस्वरूपआत्माकूं ज्योतिकहैहै ॥ और हेजनक! शरीरतैंबाह्यवर्तमान जेसूर्यादिकज्योतिहैं ॥ तेसूर्यादिकज्योति आपणेतैंभिन्नसत्तावालेजे घटपटादिकपदार्थहैं तिनोंकूं प्रकाशकरैहै ॥ तिसप्रकार आत्मरूपज्योति जगत्कूं प्रकाशकरैनहीं ॥ किंतु आपणेतैंअभिन्नसत्तावाले जेघटादिकपदार्थहैं ॥ तिनोंकूं यहआत्मरूपज्योति प्रकाशकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित सर्पदंडादिक रज्जुरूपअधिष्ठानतैं भिन्नसत्तावालेनहीं ॥ तैसे आत्माविषे कल्पितजगत्भी अधिष्ठानआत्माकीसत्तातैंभिन्नसत्तावालानहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याआनंदस्वरूपआत्माकूं अंतरज्योतिकहैहै ॥ अथवा दूसरेप्रकाशकी नअपेक्षाकरिकै जोप्रकाश आपणेकूं तथाअन्यपदार्थोंकूं प्रकाशकरैहै ॥ ताकूं अंतरज्योतिकहैहैं ॥ ऐसाअंतरज्योतिपणा आत्माविषेहीसंभवैहै ॥ सूर्यादिकबाह्यज्योतियोंविषे संभवैनहीं ॥ काहेतें ? सूर्यादिकज्योति यद्यपि घटादिकपदार्थोंकेप्रकाशविषे दूसरेकिसीज्योतिकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ तथापि आपणेप्रकाशविषे तेसूर्यादिकजडज्योति चैतन्यआत्माकीअपेक्षाकरैहैं ॥ यातैं तिनसूर्यादिकोंविषे अंतरज्योतिपणा संभवैनहीं ॥ और हेजनक! जैसे परीक्षाकरणेवासते दुग्धविषेपाईहुयी मरकतमणि आपणेप्रकाशकरिकै सर्वदुग्धकूं पूर्णकरैहै ॥ तैसे यहज्योतिरूपआत्माभी आपणेप्रकाशकरिकै सर्वजगत्कूं पूर्णकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती यास्वयंज्योतिआत्माकूं पुरुषकहैहै ॥ अथवा ॥ जैसे पक्षी आपणेगृहविषे शयनकरैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा स्थावरजंगमशरीरोंकूं पुरीरूपमानिकै तिनशरीररूपपुरियोंविषे तादात्म्यअध्यासकरिकैस्थितिरूपशयनकूं करैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याआनंदस्वरूपआत्माकूं पुरुषकहैहै ॥ अब अंतःकरणादिकउपाधियोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासकरिकै याआत्मापुरुषविषे जन्ममरणादिकविकारोंकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे जाग्रत्अवस्थाकूं तथास्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोइकै यहआत्मापुरुष सुखकूं तथादुःखकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे इस

जन्मकूं तथाजन्मांतरकूं प्राप्तहोइकै यहआत्मापुरुष सुखकूं तथा दुःखकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे रज्जुकरिकैबांध्याहुआघटीयंत्र
नीचेऊपरिभ्रमणकरैहै ॥ तैसे कर्मरूपीरज्जुकरिकै बांध्याहुआयहपुरुष कबीजन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कबी मरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥
याप्रकार अनेकशरीरोंकाग्रहणकरताहुआ तथाअनेकशरीरोंकापरित्यागकरताहुआ यहपुरुष निरंतर संसारविषेभ्रमणकरैहै ॥
शंका ॥ हेभगवन्! यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वत्रपरिपूर्णहै॥ यातैं ताका लोकांतरविषे गमन आगमन संभवैनहीं॥ और यहआ
नंदस्वरूपआत्मा कर्तृत्व भोक्तृत्वतैंआदिलैके सर्वविकारोंतैंरहितहै॥ यातैं आत्माविषे पुण्यपापकासंबंधभी संभवैनहीं॥समाधान॥
हेजनक! यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि वास्तवतैं जन्मादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ तथापि आपणेस्वरूपकेअज्ञानतैं अंतःक
रणादिकोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासकूं प्राप्तहोइकै यहआत्मा पुण्यपापरूपकर्मोंकूंकरैहै ॥ तथा तापुण्यपापरूपकर्मके सुखदुःखरूप
फलकेभोगवासते लोकांतरविषे गमनआगमनकरैहै ॥ यातैं अंतःकरणरूपउपाधिकेसंबंधतैंही आत्माविषेकर्तृत्वभोक्तृत्वादिकवि
कार प्रतीतहोवैहैं वास्तवतैंनहीं ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे वास्तवतैं उष्णस्पर्शतैंरहितजोआकाशहै ॥ सो उष्णजलकरिकैयुक्तहुआ
अथवा उष्णजलकेऊपरिकेदेशकरिकैयुक्तहुआ उष्णकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे वास्तवतैं कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकविकारोंतैंरहित य
हआनंदस्वरूपआत्मा कर्ता भोक्ताअंतःकरणकेसाथ तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहोइकै कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकविकारोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ औ
र हेजनक! जैसे स्त्रीकेअधीनजोकामीपुरुषहै ॥ सो स्त्रीकेसुखीहुए सुखीहोवैहै ॥ और स्त्रीकेदुःखीहुए दुःखीहोवैहै ॥ तैसे बुद्धिके
साथ तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहुआ यहआत्मादेवभी बुद्धिकेअनुसारही प्रतीतहोवैहै ॥ तहां जोबुद्धि किसीपदार्थकाध्यानकरैहै तौ
आत्माभी ध्यानकरताकीन्यांई प्रतीतहोवैहै॥ और बुद्धिकेचलायमानहुए आत्माभी चलायमानकीन्यांई प्रतीतहोवैहै॥ इसप्रकार
अंतःकरणकेतादात्म्यअध्यासतैं अनेकप्रकारकेविकारोंकूं यहआनंदस्वरूपआत्मा प्राप्तहोवैहै ॥ इतनेग्रंथकरिकै बुद्धिकेसाथ जोआ
त्माका तादात्म्यअध्यासहै ताकेविषे अनर्थकीकारणतादिखाई ॥ अब स्थूलशरीरकेसाथ जोआत्माका तादात्म्यअध्यासहै ताकेवि
षे अन्वयव्यतिरेककरिकै अनर्थकीकारणताकूं निरूपणकरैहैं ॥ तहां प्रथम व्यतिरेककूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यहआनंदस्व

रूपआत्मा बुद्धिकेसाथ तादात्म्यअध्यासकूं प्राप्तहोइकै स्वप्नअवस्थाविषे तैजससंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां स्वप्नविषे आपणीमाया शक्तिकरिकै उत्पन्नकरेजेनानाप्रकारकेपदार्थ तिनोंकूंदेखैहै ॥ ऐसीस्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोइकै यहआत्मादेव सुखैनहीं ॥ जाग्रत्लोककूं उल्लंघनकरैहै ॥ कैसाहैसोजाग्रत्लोक? स्थूलशरीरहैप्रधानजिसविषे ॥ तथा ग्रहरूप जेवाकादिकइंद्रियहैं तथाअतिग्रहरूप जेशब्दादिकविषयहैं तिनोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा अविद्या काम कर्म रूपजोमृत्युहै ताकाकार्यहै ॥ तथा जलकेबुद्बुदकीन्यांई शीघ्रहीनाशवान्है ॥ तथा नानाप्रकारकेदुःखोंकाकारणहै ॥ तथा नानाप्रकारकीव्याधियोंकरिकैयुक्तहै ॥ याप्रकारकेजाग्रत्लोककूं यहपुरुष स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोइकै सुखैनहींपरित्यागकरैहै ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे महाराजा नौकारूपसाधनकरिकै सुखैनहीं अगाधनदीकूंउल्लंघनकरैहै ॥ तैसे यहपुरुष स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोणेहारी बुद्धिरूपनौकाकरिकै सुखैनहीं जाग्रत्लोकरूपीनदीका उल्लंघनकरैहै ॥ इतनेकरिकै स्वप्नअवस्थाविषे स्थूलशरीरकेअध्यासकेअभावहुए स्थूलशरीरकेअध्यासजन्यदुःखोंकाअभावरूप व्यतिरेक दिखाया ॥ अब जाग्रत्अवस्थाविषे स्थूलशरीरके तादात्म्यअध्यासकेविद्यमानहुए नानाप्रकारकेदुःखोंकीविद्यमानतारूपअन्वयकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे माताकेउदरतैं बालक बाहरिनिकसैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे सुखदुःखरूपफलकूंदेणेहारे जेपुण्यपापरूपकर्महैं ॥ तिनोंकेक्षयहुएतैंअनंतर जाग्रत्अवस्थाविषे सुखदुःखरूपफलकूंदेणेहारे जेपुण्यपापरूपकर्महैं ॥ तिनोंकरिकैजगायाहुआ यहपुरुष जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोइकै जबी स्थूलशरीरविषे अहंअभिमानकरैहै ॥ तबी यहपुरुष नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जाग्रत्अवस्थाविषे स्थूलशरीरकेअभिमानतैं यहपुरुष कौनकौनदुःखकूंप्राप्तहोवैहै?॥ समाधान ॥ हेजनक! जाग्रत्अवस्थाविषे यास्थूलशरीरकेअभिमानतैं जीवोंकूं जेदुःखहोवैहैं ॥ ते दुःख सर्वजीवोंकूंप्रत्यक्षसिद्धहैं ॥ यातैं तिनोंकेनिरूपणकरणेविषे कछुप्रयोजननहीं ॥ हेजनक! यहआनंदस्वरूपआत्मा जबपर्यंत स्थूलशरीरकेअभिमानकूं नहींपरित्यागकरता ॥ तबपर्यंत तास्थूलशरीरकेअभिमानकरिकै अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! जैसे स्थूलशरीरकेअभिमानकूं परित्यागकरिकै स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहुआ यहपुरुष स्थूलशरीरकेअभिमानजन्यदुःखोंकूं प्राप्तहोवै

नहीं ॥ तैसे मरणकालविषे यास्थूलशरीरकेअभिमानकापरित्यागकरिकै जबी यहपुरुष लोकांतरविषेजावैहै ॥ तबीयास्थूल शरीरकेअभिमानजन्य नानाप्रकारकेदुःखोंकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिकै स्पष्टकरैहैं ॥ हेजनक ! जैसे दुर्भिक्षादिकउपद्रवोंकरिकैयुक्तजोदेशहै ॥ तादेशविषे मोहकरिकै जोपुरुष निवासकरैहै ॥ सोपुरुष तादेशविषे नानाप्रकारके दुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यास्थूलशरीरविषे अहंममअभिमानकरिकै स्थितहुआ यहआत्मादेव नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्त होवैहै ॥ और हेजनक! जैसे दुर्भिक्षादिकउपद्रवोंकरिकै युक्तजोदेशहै ॥ ताकापरित्यागकरिकै जबी सोपुरुष अन्यकि सीदेशविषे चलाजावैहै ॥ तबी सोपुरुष तादेशजन्यदुःखोंकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे मरणकालविषे यास्थूलशरीरकापरि त्यागकरिकै जबीयहआत्मादेव परलोककूंजावैहै ॥ तबी तास्थूलशरीरकेअभिमानजन्य नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ इतनेग्रंथकरिकै अन्वयव्यतिरेकतैं स्थूलशरीरकेअभिमानविषे अनर्थकीकारणतादिखाई ॥ अब परलोककूं नहींमानणेहारेजेना स्तिकहैं ॥ तिनोंकेखंडनकरणेवासते परलोककीसिद्धिकरैहै ॥ हेजनक! वास्तवतैं जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहित जोयहपरमा त्मादेवहै ॥ सो अनिर्वचनीयअविद्याकेसंबंधतैं जीवभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और नानाप्रकारके पुण्यपापरूपकर्मोंकूंकरैहै ॥ तापुण्य पापरूपकर्मोंकेवशतैं नानाप्रकारकेशरीरोंकूं ग्रहणकरैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेशरीरोंका परित्यागकरैहै ॥ याप्रकार सर्वदासं सारविषे विचरणेहारे याआत्मादेवके दोस्थान अनुगतहैं ॥ एकतौ यहलोक और दूसरा परलोक ॥ तहां प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसि द्धजोयहस्थूलशरीरहै ताकूं यहलोककहैहैं ॥ और यास्थूलशरीरकेत्यागतैंअनंतर आगेहोणेहारेजेशरीरहैं ताकूंपरलोककहैहै ॥ यहदोनोंलोक आत्माकेविचरणेके स्थानहैं ॥ अब स्वप्नकेप्रत्यक्षप्रमाणकरिकै परलोककीसिद्धिकरणेवासते प्रथम स्वप्नअवस्था विषे दोनोंलोकोंकीसंधिरूपताकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे यहलोक तथा परलोक जीवके सुखदुःखकेभोगकास्थानहै ॥ तै से स्वप्नअवस्थाभी जीवके सुखदुःखकेभोगकास्थानहै ॥ याअभिप्रायतैं केईकविवेकीपुरुष स्वप्नकूं तृतीयस्थान मानैहैं ॥ और जेअत्यंतसूक्ष्मदर्शीपुरुषहैं ॥ ते स्वप्नकूं तृतीयस्थानमानैनहीं ॥ किंतु यहलोक तथा परलोक यहदोनोंस्थानमानैहैं ॥ और स्वप्न

दोनोंलोकोंकेसंधिविषे उत्पन्नहोवैहै ॥ याकारणतैं स्वप्नकूं सांध्य मानैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे दोनोंग्रामोंकीजोसंधिहै ॥ तासंधिकूं कोईपुरुष तीसराग्राम कहैनहीं ॥ तैसे दोनोंलोकोंकेसंधिविषेस्थित जोस्वप्नहै ॥ सोतीसरास्थान होइसकैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोस्वप्न तीसरास्थाननहींहै तौ इसलोकविषे तथापरलोकविषे स्वप्नकाअंतरभाव मान्याचाहिये ॥ स्वप्नकूं सांध्यरूपता किसवासते अंगीकारकरतेहो? ॥ समाधान ॥ हेजनक! दोनोंलोकोंविषे स्वप्नकाअंतरभाव होइसकैनहीं ॥ याकारणतैं स्वप्नकूं सांध्यमानैहैं ॥ तहां शुक्रशोणितकरिकैउत्पत्तिहैजिसकी ऐसाजो स्थूलशरीररूप यहलोकहै ॥ ताकेविषेभी स्वप्नकाअंतरभाव होइसकैनहीं ॥ काहेतें? जबी यहजीव स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी जाग्रत्कीन्यांई यास्थूलशरीरकाअभिमान ता जीवकूंहोवैनहीं ॥ याकारणतैंही मृतकशरीरकीन्यांई भूमिविषेपडेहुए यास्थूलशरीरकूं स्वप्नद्रष्टापुरुष देखतानहीं ॥ जोइसलोकविषे स्वप्नकाअंतरभावहोता तौ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे याजीवकूं स्थूलशरीरकाअभिमानहोवैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी यास्थूलशरीरकाअभिमानहोणाचाहिये ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे यास्थूलशरीरकाअभिमान होतानहीं ॥ यातैं इसलोकविषेभी स्वप्नकाअंतरभाव होइसकैनहीं ॥ याप्रकार परलोकविषेभी स्वप्नकाअंतरभाव होइसकैनहीं ॥ काहेतें? जैसे मरणतैंअनंतर यहजीव स्थूलशरीरकेदाहादिकोंकरिकै दुःखकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेहैनहीं ॥ किंतु स्वप्नअवस्थाविषे यास्थूलशरीरकेदाहादिकोंकरिकै जीवकूं दुःखहोवैहै ॥ तथा श्वासोंकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ जैसे मरणतैंअनंतर यास्थूलशरीरकेअभिमानकी अत्यंतनिवृत्तिहोवैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यास्थूलशरीरकेअभिमानकी अत्यंतनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ जोस्वप्नकापरलोकविषे अंतरभाव अंगीकारकरिये तौ स्वप्नविषे यास्थूलशरीरकेदाहादिकोंतैं जीवकूं पीडानहींहोणीचाहिये ॥ तथाश्वासोंकाभी अभाव होणाचाहिये ॥ यातैं परलोकविषेभी स्वप्नकाअंतरभाव होइसकैनहीं ॥ याकहणेतैं यहसिद्धभया ॥ स्थूलशरीरकेअभिमानकूं नपरित्यागकरणा यह इसलोककालक्षणहै ॥ सोभी स्वप्नविषेघटैहै ॥ और स्थूलशरीरके अहंममअभिमानका परित्यागकरणा यह परलोककालक्षणहै ॥ सोभी स्वप्नविषे घटेहै ॥ यातैं दोनोंलोकोंकेसंधिविषे स्वप्न उत्पन्नहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती स्वप्नकूं

सांध्यकहैहै ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिकैस्पष्टकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे मेघादिकोंतैंरहित निर्मलआकाशविषे तारा
गणका नदर्शनहोणा यह दिनकालक्षणहै ॥ और निर्मलआकाशविषे सूर्यमंडलका नदर्शनहोणा यह रात्रीकालक्षणहै ॥
यहदोनोंप्रकारकेलक्षण सायंकालविषेघटेहैं ॥ याकारणतैं सायंकालकूं बुद्धिमान्पुरुष रात्रि दिन यादोनोंकीसंधिकहैहैं ॥
तिस संधिविषेजोपदार्थ उत्पन्नहोवैहै ताकूं सांध्यकहैहैं ॥ तैसे स्वप्नभी इसलोकके तथापरलोकके संधिविषे उत्पन्नहोवै
है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती स्वप्नकूं सांध्यकहैहै ॥ इतनेकरिकै स्वप्नविषेसांध्यपणा निरूपणकऱ्या ॥ अब स्वप्नकेप्रत्यक्षक
रिकै परलोककीसिद्धिकरैहैं ॥ हेजनक! तिसस्वप्नरूपसांध्यस्थानविषेस्थितहुआ यहआत्मादेव इसलोककूं तथापरलोककूं देखैहै ॥
तात्पर्ययह ॥ इसशरीरकरिकै जेजेपदार्थ अनुभवकरैहैं ॥ तथा पूर्वशरीरोंकरिकै जेजेपदार्थ अनुभवकरैहैं ॥ तथा भावीशरीरोंक
रिकै जेजेपदार्थ आगेअनुभवकरणेहैं ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंकूं यहजीव स्वप्नविषेदेखैहै ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे गृहका तथागृहकेबाहर
अंगणका संधिरूपजोद्वारहै ॥ ताद्वाररूपसंधिविषेस्थितहुआ यहपुरुष गृहकेपदार्थोंकूं तथाबाहरिअंगणकेपदार्थोंकूं देखैहै ॥ तै
से यहआत्मादेव स्वप्नरूपसंधिविषेस्थितहोइकै इसलोककेपदार्थोंकूं तथा परलोकके पदार्थोंकूं देखैहै ॥ और हेजनक! यास्थू
लशरीरकेत्यागतैंअनंतर पुण्यपापरूपकर्मकेअनुसार यहजीव जिसप्रकारकेउत्कृष्टशरीरकूं अथवा निकृष्टशरीरकूं प्राप्तहोवैगा ॥
तिसीप्रकारकेशरीरकूं स्वप्नविषेग्रहणकरिकै यहजीवात्मा पुण्यकर्मकेप्रभावतैं सुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और पापकर्मकेप्रभावतैं दुःख
कूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार स्वप्नअवस्थाविषे पुण्यपापकेवशतैं सुखदुःखरूपफलकूंभोगताहुआ यहआत्मादेव इसलोककूं तथापर
लोककूं दोनोंकूंदेखैहै ॥ यातैं स्वप्नद्रष्टापुरुषकाप्रत्यक्ष परलोकविषे प्रमाणहै ॥ तथा अन्यभी श्रुति स्मृति इतिहास पुराण आदि
क परलोकविषेप्रमाणहैं ॥ इतनेकरिकै परलोककीसिद्धिकरी ॥ अब स्वप्नअवस्थाविषे आत्माकीस्वयंप्रकाशरूपता सिद्धकरैहैं ॥ हे
जनक! जबी यहआनंदस्वरूपआत्मा यास्थूलशरीररूपलोकका परित्यागकरिकै दोनोंलोकोंकेदर्शनवासते स्वप्नरूपसांध्यस्थान
कूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी स्थूलशरीरकेसंबंधी जेनेत्रादिकइंद्रियांहैं तथारूपादिकजेविषयहैं ॥ तिनोंकेसूक्ष्मवासनावोंकूं तथातिनवास

नावोंकाआधारजोमनहै तिसकूं साथलेकेही यहआत्मादेव स्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे महाराजा आपणेअ
नुचरोंकूंसाथलेकेही जावैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा विषयइंद्रियोंकेवासनायुक्तमनकूं साथलेकेही स्वप्नकूंप्राप्तहोवैहै ॥ औ
र हेजनक! जैसे रेतिविषेक्रीडाकरताहुआबालक ताक्रीडाकेसाधन जेनानाप्रकारकेगृहादिकपदार्थहैं॥ तेपदार्थ तारेतिकेहीरचैहैं॥
और क्षणपीछे सोबालक तिनसर्व रेतिमयपदार्थोंकूं नाशकरैहै ॥ इसप्रकार गृहादिकपदार्थोंकूं उत्पन्नकरिकै तथातिनोंकानाशक
रिकै निरंतर सोबालक क्रीडाकरैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माभी स्वप्नअवस्थाविषे नानाप्रकारकेरथादिकपदार्थोंकूं उत्पन्नक
रिकै तथातिनपदार्थोंकानाशकरिकै निरंतर क्रीडाकरैहै ॥ और हेजनक! तास्वप्नअवस्थाविषे स्वप्रकाशज्ञानरूपआत्मातेंविनादू
सराकोई सूर्यादिकज्योतिहैनहीं ॥ याकारणतें स्वप्नअवस्थाविषे आत्मास्वयंज्योतिहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे स्वयंदासास्तपस्विनः॥
अर्थयह ॥ तपस्विपुरुष आपहीदासहैं ॥ याप्रकारकेवचनतें तपस्वीपुरुषोंतेंभिन्न दूसरेदासकाअभाव जान्याजावैहै ॥ तैसे स्वप्न
अवस्थाविषे आत्मा स्वयंज्योतिहै॥याप्रकारकेवचनतेंभी आत्मातेंभिन्न दूसरेज्योतिकाअभाव जान्याजावैहै॥ यातें स्वप्नअवस्थावि
षे आत्माही स्वयंज्योतिहै ॥ शंका ॥ हे भगवन्! स्वप्नअवस्थाविषे आदित्यादिकज्योतियोंकालयहोवैहै ॥ यातें आदित्यादिकोंकूं
यद्यपि ज्योतिरूपता संभवैनहीं ॥ तथापि मनका स्वप्नअवस्थाविषेलयहोवैनहीं ॥ यातें स्वप्नअवस्थाविषे मनकूं ज्योतिरूपता कि
सवासतेनहींहोवै?॥ समाधान॥ हेजनक! जैसे बालककेक्रीडाकेसाधन जेगृहादिकपदार्थहैं ॥ तिनोंकाउपादानकारण मृत्तिकाज
डहै ॥ तैसे स्वप्नद्रष्टापुरुषके क्रीडाकेसाधनजेस्वप्नकेपदार्थहैं ॥ तिनोंकाउपादानकारणमनभी जडहै ॥ और जैसे क्रीडाकेसाधन
गृहादिकपदार्थोंका परिणामीउपादानकारण जामृत्तिकाहै ॥ तिसकूं सोबालक पूर्वदेखैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे रथादिकपदा
र्थोंका परिणामीउपादानकारणजोमनहै ॥ तिसमनकूं यहस्वप्रकाशसाक्षीआत्मा देखैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे मृत्तिका गृहादिकप
दार्थोंका परिणामीउपादानकारणहोणेतें जडहै॥ तैसे मनभी स्वप्नपदार्थोंका परिणामीउपादानकारणहोणेतें जडहै ॥ और जोपदा
र्थ जडहोवैहै ॥ सोपदार्थ मृत्तिकाकीन्यांई स्वयंप्रकाशहोवैनहीं॥ किंतु परप्रकाशहोवैहै ॥ यातें स्वप्नअवस्थाविषे जडमनकूं ज्योति

पणा संभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् स्वप्नअवस्थाविषे मनकूंज्योतिरूपता मतहोवे ॥ तथापि स्वप्नअवस्थाविषे अविद्याकूं ज्योति रूपता किसवासतेनहींहोवै? ॥ समाधान ॥ हेजनक! जैसे स्वप्नअवस्थाविषे साक्षीआत्माकरिकै प्रकाश्यहोणेतें जडमन स्वयंज्योति रूपनहींहै ॥ तैसे साक्षीआत्माकरिकै प्रकाश्यहोणे तें तथाआवरणरूपहोणेतें जडअविद्याभी स्वयंज्योतिरूपनहीं ॥ किंवा जोवादी आवरणरूपअविद्याकूं स्वयंज्योतिरूपता अंगीकारकरै तौ आवरणरूपअंधकारकूंभी स्वयंज्योतिरूपता अंगीकारकरीचाहिये ॥ यातें स्वप्नअवस्थाविषे अविद्याभी स्वयंज्योतिरूपनहीं ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे प्रकाशकरूपकरिकै प्रसिद्ध जेनेत्रादिकइंद्रियहैं ते इंद्रियभी स्वप्नअवस्थाविषेहैंनहीं ॥ तथा आदित्य चंद्रमा अग्नि वाक् यहचारिप्रकारकेज्योतिभी स्वप्नअवस्थाविषेहैंनहीं ॥ यातें परिशेषतें आत्मारूपज्योतिकरिकैही स्वप्नकेपदार्थोंकाप्रकाशहोवैहै ॥ याअभिप्रायकरिकैही श्रुतिभगवतीनें स्वप्नअवस्थाविषे आत्माकूंही स्वयंज्योतिरूप कह्याहै ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते सर्वलोकोंकेअनुभवकरिकै मनविषे दृश्यपणा निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जाग्रत्अवस्थाविषे किसीपुरुषकेप्रति जबी कोईअन्यपुरुष वचनकहैहै ॥ तबी सोपुरुष याप्रकार ताकेप्रतिकहैहै ॥ तुमनैंजोहमारेप्रति वचनकह्या ॥ तावचनकेअर्थकूं छोडिकरिकै हमारामन अन्यत्रगयाथा ॥ याकारणतें तुमारेवचनकाअर्थ हमनैं जान्यानहीं तुम फेरिदूसरीवार तावचनकूंकहो ॥ याप्रकारकेअनुभवकरिकै संपूर्णलोकोंनैं आपणेमनकूं विषयकरीताहै ॥ याकारणतें घटादिकपदार्थोंकीन्यांई मनभी दृश्यहै ॥ अब युक्तियोंकरिकै मनविषे जडपणा निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! वेदकूंनहींमानणेहारे जेनास्तिकहैं तिनोंकूंछोडिकरिकै कोईभीआस्तिकवादी मनकूंचेतन माननानहीं ॥ किंतु सर्वआस्तिकवादी मनकूंजडमानैहैं ॥ और जोनास्तिकवादी मनकूंचेतनमानैहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ जिसमनकूं तुम चेतनरूप मानतेहो ॥ सोमन आत्मरूप है अथवा अनात्मरूपहै ॥ तहां मन अनात्मरूपहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतें? मनकूंअनात्मरूपमानिकै जोवादी मनकूंचेतनरूपअंगीकारकरै तौमनकीन्यांई अनात्मरूप जेघटपटादिकजडपदार्थहैं तेभी चेतनरूपहोणेचाहिये ॥ और घटपटादिकजडपदार्थोंकी चेतनरूपताविषे जोवादी इष्टापत्तिकरै तौ मनविषे चेतनरूपताअंगीकारकरणी व्यर्थ हो

वैगी ॥ काहेतैं ? घटपटादिकसंपूर्णअनात्मपदार्थ मनकीन्यांई चेतनरूपहै ॥ तिनघटादिकचेतनोंकरिकैभी व्यवहारकीसिद्धि होइसकै है ॥ मनकूंचेतनमानणा व्यर्थहै ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे एकदीपकरिकैही घटादिकपदार्थोंकाप्रकाश संभवहोइसकैहै ॥ तिनघटादिकप दार्थोंके प्रकाशवासते दूसरेदीपककूं कोईपुरुष जगावतानहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ! श्रुतिविषे सर्वजगतकूं चैतन्यरूपकह्याहै ॥ यातैं हमभी सर्वजगतकूं चेतनरूपमानेहैं ॥ समाधान ॥ हेवादी ! संपूर्णजगत्विषे चैतन्यरूपताकूं कथनकरणेहारीजाश्रुतिहै ॥ साश्रुति अनुवादरूपहुई सर्वजगत्विषे चैतन्यरूपताकूं कथनकरैहै ॥ अथवा विधिरूपहुई साश्रुति सर्वजगत्विषे चैतन्यरूपताकूं कथनकरै है ॥ तहां प्रथमपक्षजोवादी अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं ? प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै सर्वलोकोंकूंज्ञात जोअर्थहै ॥ ताअर्थकूं कथनकरणेहाराजोवचनहै ॥ तावचनकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अनुवादकहैहैं ॥ जैसे अग्नि हिमका भेषजहै ॥ याप्रकारकावचन सर्वलोकोंकूं प्रत्यक्ष जोअग्निविषे हिमकेनिवृत्तिकीकारणताहै ताकूं कथनकरैहै ॥ याकारणतैं सोवचन अनुवादरूपहै ॥ तैसे संपूर्णजगत् चेतनरूप है याप्रकारकाश्रुतिवचनभी तबी अनुवादरूपहोवै ॥ जबी संपूर्णजगत्विषे अस्मदादिकजीवोंकूं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै चैतन्यरू पतासिद्धहोवै ॥ सो सर्वजगत्विषे चैतन्यरूपता प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै अस्मदादिकजीवोंकूं सिद्धहैनहीं ॥ यातैं सर्वजगत्विषे चैतन्यरूपताकूं कथनकरणेहारीश्रुतिअनुवादरूपनहीं ॥ और सर्वजगत्विषे चैतन्यरूपताकूं कथनकरणेहारीश्रुति विधिरूपहै यहदू सरापक्षजोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं ? जोअर्थ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै पूर्वज्ञातनहींहोवै ॥ तथा जिसअर्थ केज्ञानतैंफलकीप्राप्तिहोवै ॥ तथा जिसअर्थका प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै बाध नहींहोवै ॥ ऐसे अर्थकूं विधिरूपश्रुति बोधनकरै है ॥ याप्रकारकाअर्थ अद्वितीयआत्माही है ॥ यातैं संपूर्णजगत् चेतनआत्मारूपहै याप्रकारकेअर्थकूंबोधनकरणेहारीजाश्रुति है ॥ सा श्रुति जडजगत्विषे चैतन्यरूपताकूं बोधनकरैनहीं ॥ किंतु जैसे यहरज्जुहै याप्रकारकावचन सर्पत्वभ्रमकीनिवृत्तिकरिकै रज्जुत्वकूंबोधनकरैहै ॥ तैसे यहसंपूर्णजगत् चेतनआत्मारूपहै याप्रकारकाश्रुतिवचनभी द्वैतभ्रमकीनिवृत्तिकरिकै अद्वितीयआत्मा कूंही बोधनकरैहै ॥ तहां यहसंपूर्णजगत् अद्वितीयब्रह्मस्वरूपहै याप्रकारकेअर्थकूं बोधनकरणेहारीजाश्रुतिहै ॥ साश्रुति तत्पदार्थके

शोधनकूं बोधन करैहै ॥ और यह चराचररूप संपूर्णजगत् चेतनरूपहै याप्रकारकेअर्थकूं बोधनकरणेहारीजाश्रुतिहै ॥ साश्रुति तिसीतत्पदार्थरूपपरमात्माविषे चैतन्यरूपताका विधानकरैहै ॥ और यहसंपूर्णजगत् आत्मारूपहै याप्रकारकेअर्थकूं बोधनकरणेहारी जाश्रुतिहै ॥ साश्रुति आत्माविषे सर्वरूपताबोधनद्वारा त्वंपदार्थकेशोधनकूं विधानकरैहै ॥ और तत्पदकाअर्थ परमात्मा आत्मारूपहै याप्रकारकेअर्थकूं बोधनकरणेहारीजाश्रुतिहै ॥ साश्रुति जीवईश्वरकेअभेदकूं बोधनकरैहै ॥ इसतैंआदिलैके संपूर्णश्रुतिवचनोंविषे कोईश्रुतिवचन तत्पदार्थकेशोधनकाप्रकार बोधनकरैहै ॥ और कोईश्रुतिवचन त्वंपदार्थकेशोधनकाप्रकार बोधनकरैहै ॥ और कोईश्रुतिवचन तत्त्वंपदार्थकेअभेदकूं बोधनकरैहै ॥ अज्ञान तथाअज्ञानकाकार्यरूपउपाधिका परित्यागकरिकै ताउपाधितैंचेतनकूं भिन्नकरिकै जोजानणाहै ताकूं तत्त्वंपदार्थकाशोधनकहैहैं ॥ याप्रकारके श्रुतिकेअभिप्रायकूं नअंगीकारकरिकै जोवादी पूर्वउक्तश्रुतिवचनोंका जडचेतनके तादात्म्यबोधनविषे तात्पर्य कल्पनाकरैहै ॥ और ताचेतनआत्माकेतादात्म्यतैं संपूर्णजडजगत्कूं चेतनरूपमानेहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ चेतनआत्माका तथाजडजगत्का जोतादात्म्यसंबंधतैं तिस तादात्म्यसंबंधका संबंधीपणा चेतनआत्माविषे तथाजडजगत्विषे समानहीहै ॥ यातैं जैसे चेतनआत्माकेतादात्म्यसंबंधतैं वादी जडजगत्कूंचेतनरूप मानेहै ॥ तैसे जडजगत्केतादात्म्यसंबंधतैं सोवादी चेतनआत्माकूंभी जडजगत्रूपता किसवासतेनहींअंगीकारकरता ? किंतु तावादीनैं चेतनआत्माविषेभी जडजगत्रूपता अवश्य अंगीकारकरीचाहिये ॥ यातैं जडप्रपंचकीचैतन्यरूपताबोधनविषे श्रुतिका तात्पर्यनहीं ॥ किंवा जडजगत्विषे चैतन्यरूपताहै याप्रकारकेअर्थविषे श्रुतिका तात्पर्यसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ? जिसाजिसअर्थविषेबुद्धिमानूपुरुषोंके अनुभवकाविरोध नहींहोवैहै ॥ तिसीअर्थविषे वेदका तात्पर्यहोवैहै ॥ अनुभवविरुद्धअर्थविषे वेदका तात्पर्यहोवैनहीं ॥ जोअनुभवविरुद्धअर्थविषेभी वेदका तात्पर्यहोवै तौ आदित्योयूपः ॥ अर्थयह ॥ यज्ञभूमिविषेस्थित जोकाष्ठकास्तंभरूपयूप है सो आदित्यहै ॥ याप्रकारकेवेदवचनकरिकै आकाशविषेस्थित प्रकाशरूपसूर्यका अप्रकाशरूपकेसाथ तादात्म्य सिद्धहोणाचाहिये ॥ और सूर्यकाकाष्ठमययूपकेसाथ तादात्म्य सर्वलोकोंकेअनुभवविरुद्धहै ॥ यातैं ताविरुद्धअर्थविषे तावचनका तात्पर्यनहीं ॥

किंतु ता यूपकेस्तुतिविषे तावचनका तात्पर्यहै ॥ इसीप्रकार यजमानःप्रस्तरः ॥ अर्थयह ॥ दर्भोंकीमुष्टिरूप जोप्रस्तरहै सो यज्ञक र्तायजमानरूपहै ॥ याप्रकारकेवेदवचनकरिकै यजमानपुरुषका प्रस्तरकेसाथ तादात्म्य सिद्धहोणाचाहिये ॥ और यजमानपुरु षकाप्रस्तरकेसाथ तादात्म्य सर्वलोकोंकेअनुभवकरिकैविरुद्धहै ॥ यातें ताविरुद्धअर्थविषे तावचनका तात्पर्यनहीं ॥ किंतु ताप्र स्तरकी स्तुतिविषे तावचनका तात्पर्यहै ॥ जोप्रस्तर यजमानकेअभेदविषे तावचनकातात्पर्यहोवै तौ ताप्रस्तरका अग्निविषेदा हकीयेतें यजमानकाभीदाहहोवैगा ॥ यजमानकेदाहहुएतें संपूर्णयज्ञादिककर्मोंकालोपहोवैगा ॥ यातें यहअर्थ सिद्धभया ॥ बुद्धि मानपुरुषोंकेअनुभवकरिकैअविरुद्धजोअर्थहै ॥ ताकेविषे वेदका तात्पर्यहोवैहै ॥ और जडजगत्विषे चैतन्यरूपता सर्वलोकोंके अनुभवकरिकै विरुद्धहै ॥ यातें ताअनुभवविरुद्धअर्थविषे वेदकातात्पर्यनहीं ॥ किंवा जोअर्थ अधिकारीपुरुषोंके पुरुषार्थकाका रणहोवैहै ॥ ताअर्थकूंही वेदकावचन बोधनकरैहै ॥ यह वेदवेत्तापुरुषोंका सिद्धांतहै ॥ और चेतनआत्मा जडजगत्रू पहै ॥ तथाजडजगत् चेतनआत्मारूपहै ॥ याप्रकारकेअर्थज्ञानतें जीवोंकूं किंचित्मात्रभी पुरुषार्थकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ या तें तानिष्फलअर्थकेबोधनविषे वेदभगवान्का तात्पर्यनहीं ॥ किंवा जैसे प्रियपदार्थकेदर्शनवासते उन्मीलनकन्याहुआ चक्षु अप्रियपदार्थकूंभी प्रकाशकरैहै ॥ तैसे पुरुषार्थतेंरहितअर्थकूं वेदभगवान् कदाचित्भी कथनकरतानहीं ॥ काहेतें ? जो पुरुषार्थतेंरहितअर्थकूं वेदभगवान् बोधनकरैगा तौ वेद याप्रकारकेशब्दकाअर्थ वेदभगवान्विषे घटैगानहीं ॥ काहेतें ? अधिका रीपुरुषोंकेप्रति जो पुरुषार्थकूं जनावै ताकूं बुद्धिमान्पुरुष वेदकहैहैं ॥ किंवा व्याकरणकीरीतिसें विदधातुकरिकै वेदशब्दकीसि द्धिहोवैहै ता विदधातुका ज्ञानअर्थहै ॥ ताज्ञानविषेजो अधिकारीपुरुषोंकूं प्रेरणाकरै ताकूं वेदकहैहैं ॥ और प्रेरणाकरणेहाराप्र योजक लोकविषे दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ मुख्यप्रयोजकहोवैहै ॥ और दूसरा गौणप्रयोजकहोवैहै ॥ तहां प्रेरणाकाविषय जोप्रयोज्यपुरुषहै ॥ ताका जिसक्रियाविषे रागहोवैहै ॥ तिसक्रियाविषे ताप्रयोज्यपुरुषकूं जोपुरुष प्रेरणाकरैहै ॥ ताकूं मुख्यप्र योजककहैहैं ॥ जैसे भोजनरूपक्रियाकीइच्छावान् जोक्षुधार्थीपुरुषहै ॥ ताकूं ताभोजनरूपक्रियाविषे जोपुरुष प्रेरणाकरैहै ॥ ताकूं

शास्त्रवेत्तापुरुष मुख्यप्रयोजककहैहैं ॥ और जहां प्रयोज्यपुरुषका जिसक्रियाविषे राग नहींहोवैहै ॥ तिसीक्रियाविषे प्रयोज्यपुरुषकूं जोपुरुष प्रेरणाकरैहै ॥ ताकूं गौणप्रयोजक कहैहैं ॥ जैसे मरणरूपक्रियाविषे जोजीवोंकूंप्रेरणाकरै है ॥ ताकूं मारी कहैहैं ॥ इहां मरणरूपक्रियाविषे जीवोंकाराग हैनहीं ॥ और कालभगवान् जीवोंकूं मरणरूपक्रियाविषे प्रेरणाकरैहै ॥ यातैं कालरूपमारी गौणप्रयोजकहै ॥ और जोपदार्थ पुरुषार्थरूपहोवैहै ॥ तिसीपदार्थविषे प्रयोज्यपुरुषकारागहोवैहै ॥ पुरुषार्थतैंभिन्नपदार्थविषे प्रयोज्यपुरुषकारागहोवैनहीं ॥ और सोपुरुषार्थभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ मुख्यपुरुषार्थहोवैहै ॥ और दूसरागौणपुरुषार्थहोवैहै ॥ तहां सुखरूपफल मुख्यपुरुषार्थहै ॥ और तासुखकेसाधन गौणपुरुषार्थहै ॥ और आत्माविषे जडजगत्रूपता तथा जडजगत्विषे चेतनआत्मारूपता येदोनोंप्रकारकेअर्थ सुखरूपनहींहैं ॥ तथा किसीसुखकेसाधन नहींहैं ॥ उलटा जन्ममरणादिकदुःखकेसाधनहैं ॥ ऐसे अपुरुषार्थरूपअर्थविषे अधिकारीपुरुषोंकूं वेदभगवान् किसवासते प्रेरणाकरैगा ? किंतु नहींप्रेरणाकरैगा ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे पुत्रकेहितकीइच्छाकरणेहारा जोपिताहै ॥ सोपिता पुत्रकूं अपुरुषार्थरूपअर्थविषे प्रेरणाकरतानहीं ॥ तैसे सर्वजीवोंकेकल्याणकीइच्छावान् जोवेदभगवान्है ॥ सोवेदभगवान् जीवोंकूं अपुरुषार्थरूपअर्थविषे प्रेरणाकरैगानहीं ॥ जोवेदभगवान् ता अपुरुषार्थरूपअर्थकूं बोधनकरैगा तौ सोवेदभगवान् अप्रमाणरूपहोवैगा ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ! यहसंपूर्णजगत् चैतन्यआत्मारूपहै याप्रकारकेश्रुतिवचनका जबी जडचेतनकेअभेदविषे तात्पर्यनहींहै ॥ तबी किसअर्थविषे तावचनका तात्पर्यहै ॥ समाधान ॥ हेवादी ! जोअर्थ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै पूर्वज्ञातनहींहोवैहै तथा जिसअर्थका अन्यकिसीप्रमाणकरिकै बाधनहींहोवैहै ॥ तथा जिसअर्थतैं फलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ऐसेअर्थकेबोधनविषे वेदभगवान्का तात्पर्यहोवैहै ॥ सो याप्रकारकाअर्थ स्वप्रकाशअद्वितीयआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ यातैं अद्वितीयआत्माकेबोधनविषेही वेदभगवान्कातात्पर्यहै ॥ कैसाहैसोअद्वितीयआत्मा ? प्रपंचरूपद्वैतकूंदेखणेहारे जेकुतर्कीपुरुषहै ॥ तेकुतर्कीपुरुष अंनतजन्मोंकूंप्राप्तहोइकैभी जिसआत्माकूं जाणिनहींसकते ॥ जोकदाचित् वेदप्रमाणतैंभिन्न किसीप्रमाणकरिकै आत्माकेयथार्थस्वरूपकाज्ञानहोता तौ तर्कविषेकुशल जेनैयायिकादिकहैं ॥ तेभी

आत्माकेयथार्थस्वरूपकूंजाणते ॥ परंतु तेनैयायिकादिक आत्माकेयथार्थस्वरूपकूंजाणतेनहीं ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ श्रुतिप्र
माणतैंभिन्न केवलतर्ककरिकैआत्माका यथार्थस्वरूप जान्याजावैनहीं ॥ **शंका** ॥ हेसिद्धांती! यहसंपूर्णजगत् चेतनआत्मारूपहै
याप्रकारकेश्रुतिवचनोंका जोजडचेतनकाअभेदरूप अर्थनहींहै तौ तावचनोंका कौनअर्थहै?॥ **समाधान** ॥ हेवादी! मुमुक्षुजनोंके
बुद्धिविषेप्रपंचकेअभावकूं आरूढकरावणेवासते साश्रुतिभगवती माताकीन्यांई कृपाकरिकै मुमुक्षुजनोंकेप्रति याप्रकारकाउपदेश
करैहै ॥ हेमुमुक्षुजनो! जैसे रज्जुविषे अज्ञानकरिकैप्रतीतभयाजो सर्प दंड जलधारा माला इत्यादिकद्वैतहै ॥ सोसर्पादिकद्वैत र
ज्जुमात्रहीहैं ॥ सर्पादिकद्वैत तीनकालविषेनहीं ॥ तैसे यहसंपूर्णदृश्यप्रपंच तुमाराआत्माहीहै ॥ आत्मातैंभिन्नद्वैत तीनकालविषे
नहीं ॥ याप्रकार साश्रुति द्वैतप्रपंचकानिषेधकरिकै मुमुक्षुजनोंकेप्रति अद्वितीयआत्माकाबोधनकरैहै ॥ यातें अद्वितीयआत्माविषे
ही तिनश्रुतिवचनोंका तात्पर्यहै ॥ **शंका** ॥ हेसिद्धांती! जडजगत्कीचैतन्यरूपताविषे यद्यपि श्रुतिप्रमाण नहींसंभवैहै ॥ त
थापि अनुमानप्रमाणकरिकै जडजगत्विषे चैतन्यरूपता सिद्धहोवैगी ॥ **समाधान** ॥ हेवादी! जैसे धूमरूपलिंगतें पर्वतविषे
अग्निकाअनुमानहोवैहै ॥ तैसे जगत्केचैतन्यरूपताविषे कोईलिंगहैनहीं ॥ यातें अनुमानप्रमाणतेंभी जगत्विषे चैतन्यरूपता
सिद्धहोवैनहीं ॥ उलटा प्रत्यक्षप्रमाणसहकृत अनुमानप्रमाणकरिकै दृश्यत्वरूपलिंगतें जगत्विषे जडताहीसिद्धहोवैहै ॥ **शंका** ॥
हेसिद्धांती! श्रुतिप्रमाणतथाअनुमानप्रमाण यद्यपिजगत्केचैतन्यरूपताकूं सिद्धकरैनहीं ॥ तथापि किसीपुरुषकाप्रत्यक्षप्रमाण
जगत्केचैतन्यरूपताकूं सिद्धकरैगा ॥ **समाधान** ॥ हेवादी! जिसपुरुषकाप्रत्यक्षप्रमाण जगत्विषे चैतन्यरूपता सिद्धकरैहै ॥
सोपुरुष अस्मदादिकपुरुषोंकेसमानजातिवालाहै ॥ अथवा अस्मदादिकपुरुषोंतें सोपुरुष विलक्षणहै ॥ तहां जोतू प्रथम
पक्ष अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतें? अस्मदादिकपुरुषोंविषे किसीभीपुरुषकूं जगत्केचैतन्यरूपताकाप्रत्यक्षहोतान
हीं ॥ यातें अस्मदादिकपुरुषोंकेप्रत्यक्षकरिकै जगत्विषेचैतन्यरूपतासिद्धहोइसकैनहीं ॥ और अस्मदादिकपुरुषोंतेंविलक्षण
किसीपुरुषकेप्रत्यक्षकरिकै जगत्कीचैतन्यरूपतासिद्धहै यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें?

अस्मदादिकपुरुषोंतैं विलक्षण किसीपुरुषविषे जगत्केचैतन्यरूपताका प्रत्यक्षहै ॥ यहवार्ता हम कैसेजाणे? ॥ तात्पर्यय
ह ॥ जैसे नरशृंगकासाधक कोईप्रमाणनहीं ॥ तैसे ताविलक्षणपुरुषकेप्रत्यक्षकासाधक कोईप्रमाणनहीं ॥ शंका ॥ हेसि
द्धांती! जगत्केचैतन्यरूपताकूंविषयकरणेहारा जोविलक्षणपुरुषकाप्रत्यक्षहै ॥ सोप्रत्यक्ष यद्यपि प्रमाणोंकरिकेसिद्धहै ॥ त
थापि तेप्रमाण अस्मदादिकपुरुषोंविषेहैंनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादी! ताविलक्षणपुरुषकेप्रत्यक्षकासाधक जोप्रमाणहैं तौ
अस्मदादिकपुरुषोंकूं तेप्रमाण किसवासते नहींप्रतीतहोते? ॥ तात्पर्ययह ॥ सर्वकारणोंकरिकैयुक्त जेअस्मदादिकपुरुषहैं ॥ ति
नोंविषे जबी तेप्रमाण अप्रसिद्धभये ॥ तबी तेप्रमाण किसीभीपुरुषविषे नहींहोवेंगे ॥ और जोअप्रसिद्धप्रमाणोंकीभी सिद्धिअं
गीकारकरौगे तौ लोकविषेप्रसिद्धजो मधुर अम्ल लवण कटु कषाय तिक्त यहषट्रसहैं ॥ तिनोंतेंभिन्न किसीसप्तमरसकीभी सि
द्धिहोणीचाहिये ॥ यातैं तेप्रमाण अस्मदादिकपुरुषोंविषेनहीं है ॥ याप्रकारके वादीकेअर्थविषे दैवकी कोईविचित्रघटनाहै ॥ किंवा
जगत्विषे चैतन्यरूपताकूंविषयकरणेहारा जोप्रत्यक्षहै ॥ सो किसीपुरुषविशेषविषेरहैहै ॥ और किसीपुरुषविषे नहींरहैहै ॥ या
प्रकारकेअर्थकूं जोवादी अंगीकारकरैगा तौ तावादीकूं व्याघातदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतें? जोजगत् चैतन्यरूपकरिकै विष
यहोणेयोग्यनहीं है ॥ सोईहीजगत् चैतन्यरूपकरिकै किसीपुरुषकेज्ञानका विषयहोवैहै ॥ और सोईहीजगत् चैतन्यरूपकरिकै अ
स्मदादिकपुरुषोंकेज्ञानका अविषयहोवैहै ॥ याप्रकार एकहीजडजगत्विषे चैतन्यरूपकरिकै स्वभावतें विषयता तथाचैतन्यरूप
करिकै स्वभावतें अविषयता जोअंगीकारकरोगे तौ आपणेवचनकरिकैही आपणेवचनकाबाधरूप व्याघातदोष प्राप्तहोवैगा ॥ औ
र हेवादी! मनकूंअनात्मरूपमानिकै जोतू तामनकूंचेतनरूपमानैगा तौ अनात्मरूपकरिकै मनकेसमान जेघटपटादिकपदार्थहैं ॥
तेभी तुमारेमतविषे चेतनरूपहोवेंगे ॥ और अनात्मरूपकरिकै मनकेसमान जेघटादिकजडपदार्थहैं ॥ तिनोंकूंचेतनरूप नमा
निकै केवलमनकूंही जोतू चेतनरूपमानताहै ॥ यह तुमारा अत्यंतदुर्व्यसनहै ॥ इतनेकरिकै चेतनरूपमन अनात्मरूपहै याद्विती
यपक्षकाखंडनकऱ्या ॥ अब सोचेतनरूपमन आत्मरूपहै याप्रथमपक्षका खंडनकरैहैं ॥ चेतनरूपमन आत्मरूपहै याप्रकारका

पक्ष जोवादी अंगीकारकरैहै॥ तावादीसें यहपूछाचाहिये॥ सो चेतनआत्मारूपमन परिछिन्नहै अथवा विभुहै? तहां प्रथमपक्ष जो वादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं॥ काहेतें? जोपदार्थ परिच्छिन्नहोवैहै॥ सोपदार्थ भेदवालाहोवैहै॥ जैसे घटादिकपदार्थ परिच्छिन्नहोणेतें भेदवालेहैं॥ तैसे मनभी परिछिन्नहोणेतें भेदवालाहीहोवैगा॥ और जोपदार्थ भेदवालाहोवैहै॥ सोपदार्थ कार्यहोवैहै॥ जैसे घटादिकपदार्थ भेदवालेहोणेतें कार्यहैं॥ तैसे भेदवालाहोणेतें सोमनभी कार्यहीहोवैगा॥ और जोपदार्थ कार्यहोवैहै॥ सोपदार्थ किसीकारणकरिकै जन्यहोवैहै॥ जैसे घटादिकपदार्थ कार्यरूपहोणेतें मृत्तिकारूपकारणकरिकैजन्यहैं॥ तैसे कार्यरूपहोणेतें सोमन भी भूतभौतिकरूपकारणकरिकै जन्यहोवैगा॥ इहां भूतशब्दकरिकै सत्वगुणप्रधान आकाशादिकपंचभूतोंकाग्रहणकरणा॥ और भौतिकशब्दकरिकै भुक्तअन्नका ग्रहणकरणा॥ और जो पदार्थ किसीकारणकरिकैजन्यहोवैहै॥ सोपदार्थ जडहोवैहै॥ जैसे मृत्तिकारूपकारणकरिकै जन्यहोणेतें घटादिकपदार्थ जडहैं॥ तैसे भूतभौतिकरूपकारणकरिकैजन्यहोणेतें सोमनभी जडहीहोवैगा॥ यातें कार्यरूपजडमनकूं चेतनरूपकहणा तथा आत्मरूपकहणा अत्यंत विरुद्धहोवैगा॥ और सोचेतनआत्मारूपमन विभुहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं॥ काहेतें? जोपदार्थ विभुहोवैहै॥ सो किसीदेशविषे तथाकिसीकालविषे तथाकिसीवस्तुविषे रहैनहीं॥ किंतु देशकालवस्तुपरिच्छेदतेंरहितहोवैहै॥ याप्रकारका वादीनैं अंगीकारकऱ्याजोविभुमन॥ सो मनरूपनहींहोवैगा॥ किंतु स्वयंज्योतिआत्मरूपहोवैगा॥ तात्पर्ययह॥ लोकविषे अनेकप्रकारकेसंकल्पोंका जोकारणहोवै॥ तथा सत्वगुण जिसविषेप्रधानहोवै॥ ताकूं संपूर्णलोक मन कहैहैं॥ याप्रकारकामन तावादीनैं कथनकऱ्यानहीं॥ किंतु स्वयंज्योतिआत्माकाही वादीनैं मननाम राख्याहै॥ और सर्वशास्त्रवेत्तापुरुषोंका नाममात्रविषे विवाद होवैनहीं॥ किंतु पदार्थविषे विवादहोवैहै सो पदार्थकाभेद इहांहैनहीं॥ किंतु जिसविभुचेतनकूं हम आत्मानामकरिकै कथनकरैहै॥ तिसी विभुचेतनकूं सोवादी मननामकरिकै कथनकरैहै॥ यातें हेवादी! चेतनमन विभुहै॥ याप्रकारकेपक्षविषे तुमाराहमारा किंचित्मात्रभी विवादनहीं॥ शंका॥ हेसिद्धांती! तुमाराहमारा विवाद संभवैहै॥ काहेतें? तुमारेमतविषे आत्मादिक शक्तिवृत्तिकरिकै विभुचेतनकूं बोधनकरैहै॥ और

मनशब्द लक्षणावृत्तिकरिकै ताविभुचेतनकूं बोधनकरैहैं ॥ और हमारेमतविषेतौ मनशब्द शक्तिवृत्तिकरिकै विभुचेतनकूं बोधनकरै है ॥ और आत्मादिकशब्द लक्षणावृत्तिकरिकै ताविभुचेतनकूं बोधनकरैहैं ॥ याप्रकारका तुमाराहमाराविवाद संभवैहै ॥ समाधान हेवादी! याप्रकारका तुमाराहमाराविवाद तबीसंभवै ॥ जबी हम आत्मादिकशब्दोंकी शक्तिवृत्तिकरिकै विभुआत्माविषे प्रवृत्तिअंगीकारकरैं ॥ परंतु याप्रकारहम अंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु जैसे मनशब्द लक्षणावृत्तिकरिकै आत्माकूं बोधनकरैहै ॥ तैसे आत्मा चेतन इत्यादिकनामभी भागत्याग लक्षणावृत्तिकरिकैही आत्माकूंबोधनकरैहैं ॥ शक्तिवृत्तिकरिकै कोईभीशब्द आत्माकूं बोधनकरैनहीं ॥ याकारणतैंही यतोवाचोनिवर्ततअप्राप्यमनसासह ॥ अर्थयह ॥ जिसअद्वितीयआत्माकूं नप्राप्तहोइकै मनसहितवाणी निवृत्तहोवैहै ॥ याश्रुतिनैं आत्माविषे शब्दकेशक्तिवृत्तिकीअविषयता दिखाईहै॥ और हेवादी! आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंजानणेहारे जेविद्वान्पुरुषहैं ॥ तिनोंनैं जैसे आत्मादिकनाम चेतनआत्माविषेआरोपणकरते हैं ॥ तैसे तुमनैंभी एकमननाम चेतन आत्माविषे आरोपणकऱ्या॥ याकेविषे हमारी किंचित्मात्रभीहानिहोवैनहीं ॥ पूर्व किसीवादीनैं स्वप्नविषे मनकूंहीस्वयंज्योति मान्याथा ॥ तावादीका इतनेपर्यंत खंडनकऱ्या ॥ अब तिसीपूर्वप्रसंगकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! तास्वप्नअवस्थाविषे सूर्य चंद्रमा अग्नि वाक् अविद्या मन इत्यादिकसंपूर्णोंकूं पूर्वउक्तरीतिसैं ज्योतिरूपता संभवैनहीं ॥ यातैं परिशेषतैं आत्माही स्वप्नविषे स्वयंज्योतिहै ॥ और हेजनक! जैसे मीमांसकोंकेमतविषे आत्माकाधर्महोणेतैं स्वप्रकाशज्ञान आत्मातैंभिन्नहै ॥ तैसे सिद्धांतमतविषे स्वप्रकाशज्ञान आत्मातैंभिन्ननहीं ॥ काहेतैं? जोस्वप्रकाशज्ञानकूं आत्मातैंभिन्न अंगीकारकरिये तौ जोपदार्थ भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालाहोवैहै ॥ सोपदार्थ अनात्मरूपहीहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालेहैं ॥ यातैं अनात्मरूपहैं ॥ तैसे भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालेहोणेतैं आत्मा तथास्वप्रकाशज्ञान दोनों अनात्माहीहोवैंगे ॥ और आत्माकीअनात्मरूपता कोईभीवादी अंगीकारकरैनहीं ॥ यातैं स्वप्रकाशज्ञानका तथाआत्माका परस्परभेदनहीं किंतु अभेदहीहै ॥ और ज्ञानविषे स्वप्रकाशता सर्ववादियोंकूंसंमतहै ॥ यातैं स्वप्रकाशज्ञानकेसाथअभिन्न जोआत्माहै ॥ सोभी स्वप्रकाशहीहोवैगा ॥ याप्रकारकीयुक्तिकरिकै

यद्यपि आत्माविषे स्वयंज्योतिरूपता सिद्धहोइसकैहै ॥ तथापि स्वप्नअवस्थाविषे जो आदित्यादिकज्योतियोंकाअभावरूप व्यतिरेकहै ॥ तथा आत्माका साक्षीरूपकरिकै जोअन्वयहै ॥ याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै सुखैनहीं ॥ मुमुक्षुजनकूं आत्माकाबोधहोइसकैहै ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकरिकै श्रुतिभगवतीनैं स्वप्नअवस्थाविषे आत्माकूं स्वयंज्योतिकह्याहै ॥ और हेजनक! जैसे लोकविषे काष्ठोंकेसमूहकूं दाहकर्ताजोअग्निहै ॥ ताकूं लोक स्वयंज्योतिकहैहैं ॥ और काष्ठोंविषेस्थित जोसामान्यअग्निहै ॥ तथा भस्मकरिकैआवृत जोअग्निहै ॥ ताकूं कोईपुरुष स्वयंज्योतिकहैनहीं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे सर्वव्यवहारोंकासाधक जोआत्माहै ॥ ताकूंश्रुतिभगवती स्वयंज्योतिकहैहै ॥ और हेजनक! प्रलयकालविषे नहींहैस्पष्टनामरूपजिसका ऐसाजोयहजगत्है ॥ ताजगत्का अभिन्ननिमित्तउपादानकारण तथा वास्तवतैं नामरूपतैंरहित तथासर्वशरीरोंविषे व्यापक ऐसाजोसर्वज्ञब्रह्महै ॥ सोइही वेदांतशास्त्रविषे स्वयंज्योतिहै ॥ ऐसे स्वयंज्योतिब्रह्मकूंही स्वप्नअवस्थाविषे श्रुति जीवकाआत्मारूपकरिकै कथनकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जगत्के उत्पत्ति स्थिति लयका कारणजोस्वयंज्योतिब्रह्महै सोईही स्वप्नअवस्थाविषे जीवकाआत्माहै ॥ यहवार्ता कैसेजानीजावै? ॥ समाधान ॥ हेजनक! जैसे स्वयंज्योतिब्रह्म जगत्के उत्पत्ति स्थिति लयकूं करैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्माभी जगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकूंकरैहै ॥ और जैसे स्वयंज्योतिब्रह्म सत्चित्आनंदस्वरूपहै ॥ तैसे यहआत्माभी सत्चित्आनंदस्वरूपहै ॥ याप्रकार जगत्कीकारणतारूपतटस्थलक्षण तथा सत्चित्आनंदस्वरूपता यहस्वरूपलक्षण स्वयंज्योतिब्रह्मका तथा आत्माका समानहीहै ॥ याकारणतैं यहआत्मा स्वयंज्योतिब्रह्मरूपहै ॥ अब स्वप्नअवस्थाविषे जगत्कीकारणतारूप आत्माकेतटस्थलक्षणकूं स्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ हेजनक! स्वप्नविषे जेरथ प्रतीतहोवैहैं ॥ तेरथ स्वप्नविषेहैंनहीं ॥ कैसेहैं तेरथ? सुवर्णकरिकै तथामणियोंकरिकै भूषितहैं ॥ और जिनरथोंकीध्वजा आकाशकूंस्पर्शकरिरहीहै ॥ और नानाप्रकारकीअल्पपताकावोंनैं जिनरथोंविषे चमत्कारकऱ्याहै ॥ और मेघकीन्याईंजिनरथोंकीध्वनिहै ॥ और नानाप्रकारकीसामग्रीकरिकै जेरथ पूर्णहैं ॥ याप्रकारकेअद्भुतरथ स्वप्नविषेहैंनहीं ॥ और तिनरथोंविषे

जोडनेयोग्यजेअश्वहैं ॥ तेअश्वभी स्वप्नअवस्थाविषेहैंनहीं ॥ कैसेहैंतेअश्व ? विचित्रहैंगतिजिनोंकी ॥ तथा विचित्रहैंकर्णकेभूषण जि
नोंके ॥ और वायुकेसमानहै वेगजिनोंका ॥ याकारणतैंही सन्मुखभूमिकूंदेखिकै लज्जाकूंप्राप्तहुए तेअश्व भूमिकूंछोडिकै आका
शविषेगमनकरैहैं ॥ और कुदालकेसमान जेआपणेपादहैं ॥ तिनोंकरिकै भूमिकूंविदारणकरैहैं ॥ और जिनअश्वोंके पादोंकेभय
करिकै भूमिभीव्याकुलहोइरहीहै ॥ याप्रकारकेअश्वभी तास्वप्नविषेहैंनहीं ॥ और तिनअश्वोंयुक्तरथोंके चलणेकेजेमार्गहैं ॥ तेमा
र्गभी तास्वप्नविषेहैंनहीं ॥ कैसेहैंतेमार्ग? विचित्रहैं ॥ तथा लोकोंकेमनकीप्रसन्नता करणेहारेहैं ॥ और चंदनकरिकै तथाजलकरि
कै सिंचनकऱ्येहुएहैं ॥ याकारणते तेमार्ग कोमलहैं तथाशीतलहैं ॥ पुनःकैसेहैंतेमार्ग ? अत्यंतसघन जेआपणहैं तथागृहहैं तिनों
केमध्यविषेस्थितहैं ॥ और मंगलीकघटोंऊपरिस्थित तथागृहोंकेचित्रोंकूंप्रकाशकरणेहारे जेदीपकहैं ॥ तिनदीपकोंकरिकैप्रका
शितहैं ॥ पुनःकैसेहैंतेमार्ग ? अप्सरावोंकेसमान जेअनेकस्त्रियांहैं ॥ तिनस्त्रियोंकरिकैशोभायमानहैं ॥ कैसीहैं तेस्त्रियां ? मणि
रत्नोंकरिकैजडित जेसुवर्णकेभूषणहैं ॥ तिनोंकरिकैभूषितहैं ॥ तथा दधिलाजादिकमंगलिकपदार्थोंकरिकैपूर्ण जेसुवर्णकेकलशहैं
तेकलशहैं हस्तकमलोंविषेजिनोंके ॥ ऐसीस्त्रियोंकरिकै तेमार्ग शोभायमानहैं ॥ याप्रकारकेमार्गभी तास्वप्नविषेहैंनहीं ॥ और जाग्र
तूअवस्थाविषे प्रियस्त्रियोंकेभोगतैं जो आनंदहोवैहै ॥ तथा अन्न पान वस्त्र भूषण इत्यादिकप्रियपदार्थोंकेभोगतैं जो आनंदहोवै
है ॥ सो आनंदभी तास्वप्नविषेहैनहीं ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे प्रियवस्तुकेसमागमतैं तथाअप्रियवस्तुकेवियोगतैं जीवोंकूं जो ह
र्षहोवैहै ॥ सोहर्षभी तास्वप्नअवस्थाविषेहैनहीं ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे पुत्रादिकपदार्थोंतैंरहितपुरुषकूं पुत्रादिकपदार्थोंकीप्रा
प्तितैं जोअत्यंतहर्षहोवैहै ॥ सोहर्षभी तास्वप्नविषेहैनहीं ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे जलकरिकैपूर्ण जेअल्पतलावहैं ॥ तथा कूपादिक
हैं ॥ तथा जिनोंतैंसर्वदाजलस्रवताहै ऐसेजेबृहत्तलावहैं ॥ तेसंपूर्ण तास्वप्नविषेहैंनहीं ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे विद्यमान जेविचि
त्रगृहहैं ॥ तथा विंध्याचलादिकजेपर्वतहैं ॥ तथाइंद्रकेनंदनवनकेसमान जेनानाप्रकारकेवनहैं ॥ तथा श्रीगंगातैंआदिलैके जेना
नाप्रकारकीनदियांहैं ॥ तथा क्षारसमुद्रतैंआदिलैके जेनानाप्रकारकेसमुद्रहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ तास्वप्नविषेहैंनहीं ॥ और जाग्रत्

अवस्थाविषे विद्यमान जेभूरादिकचतुर्दशलोकहैं ॥ तथा तिनलोकोंकूंपालनकरणेहारे जेलोकपालहैं ॥ तथा पूर्वादिकजेदशदिशाहैं ॥ तथा आकाशादिकजेपंचभूतहैं ॥ तथा अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारिप्रकारकेजेप्राणीहैं ॥ तथा ब्रह्मांडविषे स्थित जितनेस्थूलसूक्ष्मपदार्थहैं ॥ तथा ब्रह्मांडतैंबाह्य जितनेस्थूलसूक्ष्मपदार्थहैं ॥ इसतैंआदिलैके सर्वपदार्थोंका स्वप्नविषेअभावहै ॥ एकमन स्वप्नअवस्थाविषेरहैहै ॥ और जैसे जगत्केउत्पत्तिकालविषे मायाविशिष्टईश्वर संपूर्णजगत्कीउत्पत्तिकरैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा पूर्वउक्तरथोंकूं तथाअश्वोंकूं तथातिनोंकेमार्गोंकूं तथाअन्यसर्वपदार्थोंकूं उत्पन्न करैहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ हेजनक! जैसे लोकविषे चित्रकारपुरुष भित्तिऊपरि नानाप्रकारकेचित्रोंकूंलिखेहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा मनरूपीभित्तिविषे जगत्रूपचित्रोंकूंलिखेहै ॥ याकारणतैंही यहस्वयंज्योति आत्मा जगत्काकर्ताईश्वररूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! स्वयंज्योतिआत्माही जोसर्वजगत्काकारणहोवैगा तौ माया निष्फल होवैगी ॥ समाधान ॥ हेजनक! देशकालादिकोंतैंरहित जोनिर्गुणआत्माहै ॥ तिसकूं जोहम जगत्काकारणअंगीकारकरैं तौ माया निष्फलहोवै ॥ परंतु निर्गुणआत्माकूं हम जगत्काकारण मानतेनहीं ॥ किंतु मायाविशिष्टपरमात्माकूंही हम जगत्काकारण मानतेहैं ॥ यातैं मायाकीव्यर्थतानहीं ॥ और हेजनक! जैसे सृष्टिकेआदिकालविषे मायाविशिष्टपरमात्मादेव देशकालादिककारणोंकूंरचिकै संपूर्णजगत्कूंरचेहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्माभी देशकालादिककारणोंकूंरचिकै रथादिक पदार्थोंकूंरचेहै ॥ और हेजनक! जाग्रत्अवस्थाविषे विद्यमान जोयहस्थूलशरीरहै ॥ तथा तास्थूलशरीरकेसंबंधी जेनेत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तथा तिननेत्रादिकइंद्रियोंकेविषय जेरूपादिकपदार्थहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकापरित्यागकरिकै यहस्वयंज्योतिआत्मा स्वप्नकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तास्वप्नअवस्थाविषेस्थितहोइकै यहस्वयंज्योतिआत्मा आपणेस्वप्रकाशरूपकरिकै मनकूं प्रकाशकरैहै ॥ तथा मनकेपरिणाम जेरथादिकपदार्थहैं तिनोंकूं प्रकाशकरैहै ॥ तथा मनादिकसर्वपदार्थोंकाकारण जोअज्ञानहै तिसकूं प्रकाशकरैहै ॥ और हेजनक! तास्वप्नअवस्थाके भोगकूंदेणेहारे जेपुण्यपापरूपकर्महैं ॥ तिनकर्मोंकाभोगकरिकै जबी क्षयहोवैहै ॥ तथा जा

ग्रत्केभोगदेणेहारेकर्मोंका प्रादुर्भावहोवैहै ॥ तबी यहस्वयंज्योतिआत्मा तास्वप्नअवस्थाकापरित्यागकरिकै जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्त
होवैहै ॥ और ताजाग्रत्अवस्थाकेभोगदेणेहारेकर्मोंका जबी क्षयहोवैहै ॥ तथा स्वप्नकेभोगदेणेहारेकर्मोंका प्रादुर्भावहोवैहै ॥
तबी यहस्वयंज्योतिआत्मा ताजाग्रत्अवस्थाकापरित्यागकरिकै पुनःस्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! जैसे क्रीडाकूं
करताहुआबालक एकपदार्थका परित्यागकरिकै दूसरेपदार्थकूं ग्रहणकरैहै ॥ तैसे एकहीस्वयंज्योतिआत्मा पूर्वपूर्वअवस्थाकाप
रित्यागकरिकै उत्तरउत्तरअवस्थाकूं ग्रहणकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तास्वयंज्योतिआत्माकूं एकहंस नामकरिकैकथनकरै
है ॥ और हेजनक! यालोकविषे जितने वृक्षादिकस्थावरशरीरहैं ॥ तथा जितनेमनुष्यादिकजंगमशरीरहैं ॥ तिनशरीरों
कूं अन्नकरिकै तथाजलकरिकै निरंतर यह जीव पूर्णकरैहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तिनशरीरोंकूं पुरी यानामकरिकैकथन
करैहै ॥ और तिनशरीररूपीपुरियोंविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा निवासकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तास्वयंज्योतिआत्मा
कूं पुरुषनामकरिकैकथनकरैहै ॥ और हेजनक! जैसे महाराजा आपणेपुरीकूंछोडिकै जबी किसीअन्यदेशकूं जावैहै ॥ तबी
आपणपुरीकीरक्षाकरणेवासतै किसीप्रधानमंत्रीकूं तापुरीविषे स्थापनकरिकै जावैहै ॥ तैसे यहस्वयंज्योतिपुरुष यास्थूलशरी
रकापरित्यागकरिकै जबी स्वप्नकूंप्राप्तहोवै है ॥ तबी यास्थूलशरीरकीरक्षावासतै प्राणकूंस्थापनकरिकै जावै है ॥ और ज
बी यहस्वयंज्योतिपुरुष मरणअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी प्राणकूंभीसाथलैकेपरलोककूं जावै है ॥ और हेजनक! यास्थू
लशरीरकेअभिमानका परित्यागकरिकै यहस्वयंज्योतिपुरुष स्वप्नअवस्थाविषे हितानामानाडियोंविषे आपणीइच्छापूर्वकवि
चरैहै ॥ तथा नानाप्रकारके पदार्थोंकूं कल्पनाकरै है ॥ और हेजनक! जैसे मायावीराक्षसोंका बालक नानाप्रकारकेपदा
र्थोंकूं रचैहै ॥ तैसे यहस्वयंज्योतिआत्माभी स्वप्नअवस्थाविषे सुखदुःखकेभोगकी प्राप्तिवासतै कबी ब्रह्मादिक उंचशरीरोंकूं
प्राप्तहोवैहै ॥ और कबी वृक्षादिकनीचशरीरोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा तिनशरीरोंका परित्यागकरैहै ॥ और हेजनक!
स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा जिसजिसशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतिसशरीरके जेजेअन्नपानादिकभोगकेसाधनहैं ॥

तिनसंपूर्णोंकूं तहांरचेहै ॥ आर हेजनक! स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा पितामातारूपभी आपहीहोवैहै ॥ तथा गुरु रूपभी आपहीहोवैहै ॥ तथा स्त्री पुत्र शत्रु मित्र इत्यादिकसंपूर्णपदार्थ आपहीहोवैहै ॥ याप्रकार सोस्वयंज्योतिआत्मा स्वप्नअवस्थाविषे नानाप्रकारकेऊचनीचशरीरोंकूंकल्पनाकरैहै ॥ और हेजनक! यहस्वयंज्योतिआत्मा यद्यपि वास्तवतैंसुखदुःखकाभोक्तानहीं है ॥ तथापि स्वप्नअवस्थाविषे आपणेमैं भोक्तापणेकीसिद्धिवासतै अंतःकरणकीवृत्तिरूपभोगकीकल्पनाकरैहै ॥ तथा तिस तिसदेवतादिकशरीरोंके भोगणेयोग्य जेनानाप्रकारकेभोग्यपदार्थहैं ॥ तिनोंकूं कल्पनाकरैहै ॥ और हेजनक! यहस्वयंज्योतिआत्मा यद्यपि वास्तवतैं कामादिकविकारोंतैंरहितहै ॥ तथापि यहस्वयंज्योतिआत्मा जबी आपणेविषे कामीपणा कल्पनाकरैहै ॥ तबी स्वप्नविषे सुंदरस्त्रियोंकेआलिंगनतैं परमआनंदकूं प्राप्तहोवैहै ॥ कैसीहैंतेस्त्रियां? स्वर्गकेअप्सरावोंकेसमानसुंदरहैं ॥ तथा षोडशवर्षकी जिनोंकीअवस्थाहै ॥ तथा कमलकेसमान जिनोंकेविशालनेत्रहैं ॥ तथा पुरुषकेप्राप्तिकी जिनोंकूं उत्कंठाहै ॥ तथा स्तनोंकेभारकरिकै तथाजघनोंकेभारकरिकै जिनोंकी मंदमंदगतिहै ॥ और पुष्पोंकरिकैरचाजोवेशहै तथाभूषणहैं ॥ ते विव्हलताकरिकै जिनोंके भूमिविषेपतनहोवैहै ॥ और मस्तकविषेविद्यमानजोसंधूरहै ॥ तासंधूरकरिकै गेरुमयभूमिकूंभी जिनोंनैं तिरस्कारकन्याहै ॥ और आपणेशरीरकीकांतिकरिकै हरितालमयभूमिकूंभी जिनोंनैं तिरस्कारकन्याहै ॥ और देवतावोंकेनंदनके समान जोवनहै ॥ तावनविषे जेस्त्रियां विचरिरह्याहैं ॥ और तुर्यवीणादिकवादित्रोंके मधुरशब्दोंकरिकै जिनोंनैं भूमिकूंपूर्णकन्याहै ॥ और गानविद्याविषे तथाकंठकीसुंदरताविषे तथा मनोहरताविषे जेस्त्रियां देवांगनावोंकेसमानहैं ॥ याप्रकारकीस्त्रियोंकेसाथ मरणकरताहुआ यहपुरुष स्वप्नअवस्थाविषे परमआनंदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इतनेकरिकै केवलपुण्यकर्मकाफल जोस्वप्नहै ताकूं निरूपणकन्या ॥ अब मिश्रितपुण्यपापरूपकर्मकाफल जोस्वप्नहै ताकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे यहपुरुष किसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं स्त्रीआदिकअनुकूलपदार्थोंकूं देखताहुआ सुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और दुर्गंधादिकप्रतिकूलपदार्थोंकूंदेखिकै तथा आपणेहस्तपादादिकअवयवोंकूं असुंदरदेखिकै दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योति

आत्मा पुण्यपापकेवशतैं अनुकूलप्रतिकूलवस्तुवोंकूंदेखताहुआ सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब केवलपापकर्मकाफलजोस्वप्नहै ता कूंनिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे केवलपापरूपकर्मकेवशतैं यहपुरुष चौरव्याघ्रादिकप्रतिकूलपदार्थोंकूंदेखि कै परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी केवलपापकर्मकेवशतैं यहजीव चौरव्याघ्रादिकपदार्थोंकूंदेखिकै परमदुःख कूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! जोस्वयंज्योतिआत्मा हमनैं तुमारेप्रतिकथनकर्याहै ॥ तिसस्वयंज्योतिआत्माकूं भाग्यहीन पुरुष देखतेनहीं ॥ किंतु तिसआत्माके क्रीडाकेसाधनजेरथादिकपदार्थहैं ॥ तिनरथादिकपदार्थोंकूंही तेभाग्यहीनपुरुषदेख तेहैं ॥ और हेजनक! जिसकालविषे यहइंद्ररूपआत्मा स्वप्नअवस्थाविषे तथासुषुप्तिअवस्थाविषे इंद्राणीकेसाथ आलिंग नकरिकै शयनकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे याआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्माकूं किसीपुरुषनैं निद्रातैंजगावणानहीं ॥ का हेतें? जैसेलोकविषे एकांतदेशमेंस्थित जोस्त्रीपुरुषहैं जिसस्त्रीपुरुषकी विषयभोगकरिकै अभिलाषानिवृत्तनहींभई ॥ ऐसे स्त्री पुरुषकूं जबी कोईपुरुष शीघ्रही तिसगृहतैं बाहरिनिकासेहै ॥ तबी ते स्त्रीपुरुषदोनों अत्यंतक्षोभकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसेस्वप्न रूपएकांतदेशविषे तथासुषुप्तिरूपएकांतदेशविषे स्थित जोआत्मारूप इंद्रइंद्राणी हैं ॥ तिनोंकूं जबीकोईपुरुष निद्रातैं जगावता है ॥ तबी सोआत्मारूपइंद्रइंद्राणी दोनों परमक्षोभकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं सोयेहुएपुरुषकूं कदाचित् नहींजगावणा ॥ किंवा सोयेहु एपुरुषके शीघ्रजागणेकरिकै तापुरुषकेप्राण शरीरकेनाडियोंविषे नियमकरिकैप्रवेशकरैनहीं ॥ याकारणतैंभी सोयेहुएपुरुषकूं शीघ्रनहींजगावणा ॥ किंवा जैसे महाराजा किसीअवश्यकार्यकेकरणेवासते रात्रिकालविषे आपणीअंतःपुरते शीघ्रही बाहरिगम नकरैहै ॥ और ताराजाकेगमनकूंदेखिकरिकै ताराजाके सेनापतिभृत्य शीघ्रही किसीमार्गकरिकै अथवा कुमार्गकरिकै ताराजा केसन्मुखहोवैहैं ॥ और जबी तेराजाकेभृत्य राजाकेआगेचलणेवासते मार्गकूंछोडिकै कुमार्गविषेचालेहैं ॥ तबी लोकोंकेगृहादिकप दार्थोंकाभी भेदनकरैहैं॥ तैसे स्वप्नसुषुप्तिरूपनिद्रातैं याजीवात्मारूपराजाकेशीघ्रआगमनहुए तेप्राणरूपकिंकरभी नाडीरूपमार्गकूं छोडिकरिकै शीघ्रही बाहरिगमनकरैहैं ॥ ताकरिकै तिसपुरुषविषे अंगमोटनरूप असाध्यरोगकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ याकारणतैंभी

सोयेहुएपुरुषकूं किसीनैं शीघ्रनहींजगावणा ॥ किंवा सोयेहुएपुरुषका तथा जगावणेहारेपुरुषका जोकदाचित्प्राणोंकेसमान को
ई प्रियकार्य सिद्धहोताहोवै ॥ तौभी सोयेहुएपुरुषकूं बुद्धिमान्पुरुषनैं शीघ्रनहींजगावणा ॥ किंवा सोयेहुएपुरुषका तथाजगाव
णेहारेपुरुषका जबी कोईमहान्कार्य होताहोवै ॥ तबी सोयेहुएपुरुषकूं यहपुरुष कोमलस्पर्शादिकउपायोंकरिकै शनैः शनैः जगा
वै ॥ जो तासोयेहुएपुरुषकूं शीघ्रहीजगावैगा तौ तासोयेहुएपुरुषविषे असाध्यरोगकीउत्पत्तिहोवैगी ॥ किंवा सोयेहुएपुरुषकेजगा
वणेकरिकै उत्पन्नभयाजो परमात्मारूपइंद्रइंद्राणीकावियोग ॥ सोवियोग सोयेहुएपुरुषकेभी दुःखकाहेतुहै ॥ तथा जगावणेहारेपुरु
षकेभी दुःखकाहेतुहै ॥ काहेतें ? जोपुरुषजगावैहै ॥ ताकूं भावीसुखकेनाशकरणेहारा पापहोवैहै ॥ और जागणेहारेपुरुषकूं वर्तमा
नसुखकेनाशकरणेहारा पाप होवैहै ॥ याकारणतें सोयेहुएकिसीप्राणीकूं बुद्धिमान्पुरुषनैं शीघ्रनहींजगावणा ॥ किंतु शनैः शनैः क
रिकैजगावणा ॥ अब अधिष्ठानआत्माविषे प्रपंचकेलयकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! जोस्वयंज्योतिआत्मा स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहो
वैहै ॥ सोईहीस्वयंज्योतिआत्मा जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें स्वप्नअवस्थाविषे तथाजाग्रत्अवस्थाविषे तास्वयंज्योतिआ
त्माकाभेदनहीं ॥ जोजाग्रत्विषे तथास्वप्नविषे आत्माका भेदहोवै तौ जोमैं स्वप्नकेपदार्थोंकूं अनुभवकरताभया सोईमैं अबी जा
ग्रत्अवस्थाविषे तिनपदार्थोंकास्मरणकरताहूं ॥ याप्रकारका सर्वलोकोंकाअनुभव व्यर्थहोवैगा ॥ काहेतें ? जोपुरुष जिसपदार्थकूं
अनुभवकरैहै ॥ सोईपुरुष तिसपदार्थकूं कालांतरविषेस्मरणकरैहै ॥ अन्यपुरुषकेअनुभवकियेपदार्थकूं अन्यपुरुष स्मरणकरैनहीं ॥
यातें यालोकोंकेअनुभवतैंभी जाग्रत्स्वप्नकेआत्माका अभेदहीसिद्धहोवैहै ॥ और हेजनक ! शास्त्रकेतात्पर्यकूंजानणेहारे केईमहा
त्मापुरुष याप्रकार कथनकरैहैं ॥ जाग्रत्अवस्थाविषे देशकालतैंआदिलैके जितनेदृश्यपदार्थहैं ॥ तथास्वप्नअवस्थाविषे देशका
लतैंआदिलैकेजितनेदृश्यपदार्थहैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेदृश्यपदार्थोंकी अधिष्ठानआत्मातैंभिन्नसत्तानहीं ॥ याकारणतें तेजाग्रत्स्व
प्नकेदृश्यपदार्थ असत्यहैं ॥ और जेअसत्यपदार्थहोवैहैं ॥ तिनोंका अधिष्ठाननतें तथापरस्परभेदहोवैनहीं ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित
जेसर्प दंड जलधारा आदिकअसत्यपदार्थहैं ॥ तिनोंका रज्जुरूपअधिष्ठाननतें तथापरस्पर भेदसंभवैनहीं ॥ तैसे अधिष्ठानआत्मा

विषेकल्पित जेजाग्रत्स्वप्नकेपदार्थहैं ॥ तिनोंका अधिष्ठानआत्मातें तथापरस्पर भेदसंभवैनहीं ॥ और उपाधिकेभेदतैंहीआत्माका भेदहोवैहै ॥ तिनउपाधियोंके भेदकेनिवृत्तहुए आत्माकाभेदसंभवैनहीं ॥ यातें सर्वअवस्थावोंविषे आत्माकाअभेदहै ॥ अबयाहीअर्थकूं आगेस्पष्टकरिकैदिखावैं हैं ॥ हेजनक! जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे संपूर्णभूतभौतिकरूप दृश्यपदार्थोंकरिकैयुक्त जोदेशकालहै ॥ सोदेशकाल अध्यस्तरूपकरिकै अधिष्ठानआत्माविषेस्थितहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी भूतभौतिकरूप दृश्यप्रपंचकरिकैयुक्त जो देशकालहै ॥ सो देशकाल अध्यस्तरूपकरिकै अधिष्ठानआत्माविषेही स्थितहै ॥ यातें आत्मारूपअधिष्ठानकीदृष्टिकरिकै तथास्वभावतें तिनजाग्रत्स्वप्नके देशकालादिकोंका परस्पर भेदसंभवैनहीं ॥ किंवा तर्कविषेकुशल जेनैयायिकहैं ॥ तेभी दिशाविषे दूसरी दिशाकूं तथाकालविषे दूसरेकालकूं अंगीकारकरतेनहीं ॥ और याअर्थविषे जोनैयायिक याप्रकारकीयुक्तिकहैहैं ॥ सोदेशकालरूपवस्तु दूसरेकिसीदेशकालविषेरहैनहीं ॥ किंतु आपणेव्यवहारकीसिद्धिवासते सोदेशकालरूपवस्तु तादात्म्यसंबंधकरिकै आपणेस्वरूपविषेहीरहैहैं ॥ सो याप्रकारकी तिनोंकीयुक्तिभी हमारेसिद्धांतकेअनुकूलहीहैं ॥ शंका ॥ नैयायिकोंकेमतविषे दिशा तथाकाल दोनोंविभुहैं तथानित्यहैं ॥ तहां सर्वदेशविषे जोपदार्थरहैहै ॥ ताकूं नैयायिक विभुकहैहैं ॥ और सर्वकालविषे जोपदार्थरहैहै ॥ ताकूं नैयायिक नित्यकहैहैं ॥ याप्रकारकेलक्षणविषे देशकी देशविषेआधारता प्रतीतहोवैहै ॥ और कालविषे कालकीआधारता प्रतीतहोवैहै ॥ और अभिन्नपदार्थोंका परस्पर आधार आधेयभावहोवैनहीं ॥ यातें देशका कोईदूसरादेश आधार मान्याचाहीये ॥ तथाकालका कोईदूसराकाल आधार मान्याचाहीये ॥ समाधान ॥ जैसे नैयायिकोंकेमतविषे घटकेअभावविषे जोपटकाअभावहै ॥ सोपटकाअभाव घटकेअभावतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोपटाभाव घटाभावरूपहै तौभी घटाभावविषे पटाभावहै याप्रकारका आधार आधेयभावप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे देशविषे देशहै ॥ तथा कालविषे कालहै ॥ तथा घटविषे घटहै ॥ याप्रकारकेव्यवहारभी तिनोंकेभेदतैंविनाही संभवहोइसकैहै ॥ यातें देशकालादिकोंका वास्तवतें भेदहैनहीं ॥ शंका ॥ देशकालादिकोंकेभेदव्यवहारकाजनक जोभेदहै ॥ ताकूं असत्यरूपता संभवैनहीं ॥ काहेतें? जोअसत्यपदार्थहोवैहै ॥ सोकिसीव्यवहारकाकारणहोवैनहीं ॥ समाधान ॥

सत्यवस्तुही व्यवहारकाजनकहोवैहै ॥ याप्रकार जोवादी अंगीकारकरैहै तासैं यहपूछाचाहिये ॥ जहांजहां व्यवहारहोवैहै ॥ तहां तहां सत्यवस्तुहीहोवैहै याप्रकारकानियमहै ॥ अथवा जहांजहां सत्यवस्तुहोवैहै ॥ तहांतहां व्यवहारहोवैहै याप्रकारकानियमहै ॥ तहां जोवादी प्रथमपक्षअंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? जबी कोईपुरुष अन्यकिसीपुरुषकेप्रति गालीदेवैहै ॥ तबी सोपुरुष ताकेगालीकूं श्रवणकरिकै क्रोधवान्होवैहै ॥ तहां गालीरूपवचनकाअर्थ असत्यहै ॥ परंतु सोअसत्यअर्थ क्रोधरूपव्यवहारकूं उत्पन्नकरैहै ॥ जैसे पतिव्रतास्त्रीकूं किसीनैं व्यभिचारिणीकह्या ॥ तहां व्यभिचारशब्दकाअर्थ जोपरपुरुषकागमनहै ॥ सो तापतिव्रतास्त्रीविषेहैनहीं ॥ तौभी तावचनकूंश्रवणकरिकै सापतिव्रतास्त्री क्रोधवान्होवैहै ॥ यातें जहांजहां व्यवहारहोवैहै ॥ तहांतहां सत्यअर्थहोवैहै ॥ यहवादीकानियम संभवैनहीं ॥ और जहांजहां सत्यअर्थहोवैहै ॥ तहांतहां व्यवहारहोवैहै ॥ यहदूसरानियम जोवादीअंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? सत्यरूपजोब्रह्मानंदहै ॥ सो सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषे विराजमानहै ॥ परंतु ताब्रह्मानंदका ज्ञानरूपव्यवहार तथाशब्दरूपव्यवहार किसीअज्ञानीजीवकूंहोतानहीं ॥ यातें व्यवहारतें वस्तुकासत्यपणा सिद्धहोइसकैनहीं ॥ और जेमीमांसकवादी सर्वव्यावहारिक पदार्थोंकूं सत्यमानेहैं ॥ तिनोंकेमतविषेभी तीनकालविषेजाकानाशनहींहोवै सोसत्यकहियेहै ॥ याप्रकारका सत्यशब्दकामुख्यअर्थ व्यावहारिकजगत्विषेसंभवैनहीं ॥ किंतु बहुतकालपर्यंतस्थायीतारूप गौणसत्यता तिनोंकूंअंगीकारकरणीहोवैगी ॥ किंवा जोवादी भेदविषेअभिनिवेशकरिकै देशकालकेविभुत्वकी तथानित्यत्वकी सिद्धिवासते एकदेशविषे दूसरादेश अंकीकारकरैहै ॥ तथा एककालविषे दूसराकाल अंगीकारकरैहै ॥ तथा एकघटविषे दूसराघट अंगीकारकरैहै ॥ तिसवादीकूं बलात्कारसैं अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतें? जैसेप्रथमदेशकाल दूसरेदेशकालविषेरहैहै ॥ तैसे सोदूसरादेशकालभी किसीतीसरे देशकालविषेरहैगा तीसराचतुर्थविषे रहैगा ॥ याप्रकार अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोवादी आर्हतकीन्यांई एकहीवस्तुकूं अनेकरूपअंगीकारकरै तौ उष्णअग्निकूं शीतरूपताहोणीचाहिये ॥ और शीतलजलकूं उष्णरूपताहोणीचाहिये ॥ याप्रकारकीअव्यवस्था वादीकूं प्राप्तहोवैगी ॥ और लोकविषे याप्रकारकी अव्यवस्था

हैनहीं ॥ किंतु जीवोंके सुखदुःखभोगवासते देशकालादिकसर्वपदार्थोंकी व्यवस्थाहीहै ॥ शंका ॥ जैसे वादीकेमतविषे व्यवस्थासंभवैनहीं ॥ तैसे तुमअद्वैतवादियोंकेमतविषेभी जगत्कीव्यवस्थासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हमअद्वैतवादियोंकेमतविषे आत्मसाक्षात्कारतैंपूर्वपूर्व संपूर्णपदार्थोंकीव्यवस्थासंभवैहै ॥ परंतु सा जगत्कीव्यवस्था किसीप्रमाणकरिकै सिद्धनहीं ॥ किंतु जैसे स्वप्नकेपदार्थ भ्रमकरिकैसिद्धहैं ॥ तैसे जाग्रत्प्रपंचकीव्यवस्थाभी भ्रमकरिकैसिद्धहै ॥ यातैं जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे विद्यमानजोदेशकालहै ॥ तथा तादेशकालविषेस्थित जितनेस्थूल सूक्ष्मपदार्थहैं ॥ तेसंपूर्ण अद्वितीयआत्माविषेकल्पितहैं ॥ और अधिष्ठानआत्माकीसत्ताकूंपाइकैही तेजाग्रत्स्वप्नकेपदार्थ आपणेआपणे कार्यकरणेविषे समर्थहोवैहैं ॥ यातैं जाग्रत्के पदार्थ तथास्वप्नकेपदार्थ दोनोंसमानहैं ॥ और हेजनक! जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषे सर्प दंड माला जलधारा येसंपूर्ण कल्पितहैं ॥ तैसे अधिष्ठानसाक्षीआत्माविषे देशकालतैंआदिलैके संपूर्णजगत् कल्पितहै ॥ यातैं देशकालादिसंपूर्णजगत् अधिष्ठानआत्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! जैसे रज्जुविषेकल्पित जेसर्प दंड माला जलधाराहैं ॥ तिनसर्पादिकोंका परस्परभेद रज्जुरूपअधिष्ठानकेभेदतैंविना संभवैनहीं ॥ तैसे अधिष्ठानआत्माकेभेदतैंविना जाग्रत्स्वप्नकेप्रपंचका परस्परभेदसंभवैनहीं ॥ और पूर्वउक्तयुक्तिसैं जाग्रत्स्वप्नविषे आत्माकाभेदसंभवैनहीं ॥ यातैं आत्माविषेकल्पित देशकालादिकपदार्थोंकाभी परस्परभेद संभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! परमार्थदृष्टिकरिकैतौ अभेदहै ॥ परंतु कार्यकीदृष्टिकरिकै मेरेकूं भेदभ्रमहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक! लोकविषे आश्रयकेभेदतैं तथाज्ञानोंकेभेदतैं पदार्थोंकाभेदहोवैहै ॥ जैसे यहघटहै याज्ञानकाविषयघटहै ॥ और ताघटकाआश्रय मृत्तिकाहै ॥ और यहपटहै याज्ञानकाविषय पटहै ॥ और तापटकाआश्रय तंतुहै ॥ याप्रकार ज्ञानोंके भेदतैं तथाआश्रयकेभेदतैं घटपटादिकपदार्थोंका परस्परभेद लोकविषेदेख्याहै ॥ सो आश्रयकाभेद तथाज्ञानोंकाभेद जगत्विषेहैनहीं ॥ काहेतैं? देशकालतैंआदिलैके जितनास्थूलसूक्ष्मजगत्है ॥ ताका एकहीमायाविशिष्टपरमात्मा आश्रयहै ॥ और नेत्रादिकइंद्रियद्वारा वृत्तिरूपकरिकै घटादिकपदार्थोंकूंविषयकरणेहाराजो अंतःकरणरूप गौणज्ञानहै सोभी एकही है ॥ तथा

तिनवृत्तियोंविषेआरूढ जोचैतन्यरूप मुख्यज्ञानहै सोभी एकहीहै ॥ यातें एकआश्रयवाला तथाएकज्ञानकाविषय जोजगतहै ॥ ताका परस्परभेदसंभवैनहीं ॥ और उपाधिकेभेदतैंही आत्माकाभेदहोवैहै ॥ ताजगतरूपउपाधियोंकेभेदकेनिवृत्तहुए आत्माकाभी भेदसंभवैनहीं ॥ यातें जाग्रत्स्वप्नप्रपंचका एकहीआत्मा अधिष्ठानहै ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे आकाशविषे प्रतीतभये जेमेघविद्युता दिकपदार्थ तिनमेघविद्युतादिकपदार्थोंकेभेदकरिकै अधिष्ठानआकाशका भेदहोवैनहीं ॥ तैसे अधिष्ठानआत्माविषे प्रतीतभयेजे देशकालादिकपदार्थ तिनदेशकालादिकोंकेभेदकरिकै अधिष्ठानआत्माकाभेदहोवैनहीं ॥ इतनेकरिकै आधेयपदार्थोंकेभेदकूंअंगी कारकरिकैभी आत्मारूपआधारकी एकता निरूपणकरी ॥ अब कल्पितआधारोंके भेदकूंअंगीकारकरिकैभी आधेयपदार्थोंकीएक ताकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे एकहीघट मृत्तिकारूपअवयवोंविषेस्थितहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ और सोईघट गृहविषे तथागृह केअंगणविषे स्थितहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ तहां मृत्तिका गृह गृहकाअंगण इत्यादिकजेघटकेआधारहैं ॥ तिनआधारोंकेभेदहुएभी आधेयरूपघटकाभेदहोवैनहीं ॥ तैसे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति इत्यादिकअवस्थावोंकेभेदहुएभी स्वयंज्योतिआत्माकाभेदहोवैन हीं ॥ और हेजनक! जोस्वयंज्योतिआत्मा जाग्रत्केपदार्थोंकाअधिष्ठानहै ॥ सोईस्वयंज्योतिआत्मा स्वप्नकेपदार्थोंकाअधिष्ठान है ॥ यातें जाग्रत्प्रपंचकी तथास्वप्नप्रपंचकी किंचित्मात्रभीविलक्षणतानहीं ॥ कल्पितरूपकरिकै दोनोंसमानहैं ॥ यातें हेजन क! ऐसाभेदतैंरहितस्वयंज्योतिआत्मा स्वप्नअवस्थाविषे स्वयंज्योतिरूपकरिकै हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ अब जिसअर्थ केपूछणेकी तुमारेकूंइच्छाहोवै ॥ सोअर्थ तू हमारेसैंपूछ ॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति कह्या ॥ तबी सोबुद्धिमान्जनक याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि! जोकोईब्राह्मण हमारेप्रति किसीसाधारणविद्याकाभी उपदेशकरताहै ॥ तिसब्राह्मणकेताईं मैंजनकराजा एकसहस्रगौवांदक्षिणा देताहूं ॥ कैसीहैंतेगौवां ॥ हस्तीकेसमानहैवृषभजिनोंविषे ॥ तथा यौवनअवस्थाकरिकैयुक्तहैं ॥ और शास्त्रविषे जेश्रेष्ठगौवोंके लक्षणलिखेहैं तिनलक्षणोंकरिकैयुक्तहैं ॥ याप्रकारकीगौवां शास्त्रकीरीतिसैं मैं तिसब्राह्मणकेताईंदेताहूं ॥ याप्रकारका हमारानियम

सर्वलोकजाणतेहैं ॥ यातैं हेभगवन्! आपनैं हमारेप्रति जोसाधारणविद्याउपदेशकरीहै ॥ तासाधारणविद्याकीगुरुदक्षिणा एकस हस्रगौवां मैं आपकेतांईदेताहूं ॥ तिसगुरुदक्षिणाकूंआप अंगीकारकरो ॥ तिसतैंअनंतर आत्माकेवास्तवस्वरूपकाउपदेश हमारे प्रति करो ॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन तीनवार जबी जनकराजाने याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रतिकह्या ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि आप णेमनविषे याप्रकारकाविचार करताभया ॥ हमनैं जनकराजाकेतांई संपूर्णब्रह्मविद्याकाउपदेशकर्‍याहै ॥ तौभी यहजनकराजा ता ब्रह्मविद्याकूं यथार्थ नहींजाणताभयाहै ॥ किंतु अन्यविद्याकेसमान यहभीकोई साधारणविद्याहै याप्रकार जनकराजानैं जान्याहै ॥ हेशिष्य! याप्रकारका मनविषेविचारकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनि रुवाच ॥ हेजनक! यहजोतुमनैं वचनकह्या ॥ साधारणविद्याकीगुरुदक्षिणा एकसहस्रगौवां मैं आपकेताईदेताहूं ॥ तिसतैंअनंतर आत्माके यथार्थस्वरूपकाउपदेश हमारेप्रतिकरो ॥ सोयहतुमारावचन श्रवणकरिकै हमारेकूं यहसंशयहोवैहै ॥ जोहमनैं पूर्वस्व यंज्योतिआत्मा तुमारेप्रति उपदेशकर्‍याहै ॥ तिसस्वयंज्योतिआत्माकूं तुमनैं यथार्थजान्याहै अथवा नहींजान्याहै? ॥ यहवृत्तांत तू हमारेप्रतिकहो ॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रतिकह्या ॥ तबी सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमु निकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि! आपनैं जोहमारेप्रति स्वयंज्योतिआत्माकाउपदेशकर्‍याहै ॥ तिसकूं हमनैं अबपर्यंत जान्यानहीं ॥ यातैं तिसस्वयंज्योतिआत्माकेज्ञानवासते अबी हमारेप्रति उपदेशकरो ॥ अब पूर्वकथनकर्‍येअर्थवि षे जनकराजाकेतीनप्रश्नोंकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि! पूर्वआपनैं हमारेप्रति स्वप्नअवस्थाविषेस्थित स्वयंज्योतिआत्मा काउपदेशकर्‍या ॥ ताकेविषे मैं याप्रकारकेदोषकूंदेखताहूं ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा सुंदरस्त्रियोंकेसाथ क्रीडाकरैहै तथा हसेहै ॥ तथानानाप्रकारकेअन्नकूं भक्षणकरैहै ॥ तथा प्रियपदार्थोंकेदेखणेवासते प्रवृत्तहोवैहै ॥ तथा अप्रियपदार्थोंतैंनिवृत्त होवैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ सोस्वयंज्योतिआत्मा भोक्ताहै ॥ और जोभोक्ताहोवैहै ॥ सो संगवान्होवैहै ॥ यातैं स्वप्नअवस्था विषे सोस्वयंज्योतिआत्मा असंगनहीं ॥ इतिप्रथमप्रश्न ॥ अब द्वितीयप्रश्नकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि! आपनैं

स्वप्नअवस्थाविषे जोआत्माकूंअसंगकह्या ॥ सोयद्यपिसंभवैहै ॥ काहेतें? स्वप्नअवस्थाविषेविद्यमान जोसूक्ष्मशरीरहै सो असंग है ॥ याकारणतेंही तासूक्ष्मशरीरका पर्वतादिकोंविषेभीप्रवेशहोवैहै ॥ ऐसे असंगसूक्ष्मशरीरकरिकैयुक्त जोस्वयंज्योतिआत्माहै ॥ ताकूंभी असंगरूपता संभवैहै ॥ तथापि जाग्रत्अवस्थाविषेविद्यमान जोस्थूलशरीरहै ॥ सो सर्वलोकोंकूं संगवान्प्रतीतहोवैहै ॥ ता संगवान्स्थूलशरीरविषेस्थित जोस्वयंज्योतिआत्माहै ॥ ताकूं असंगरूपतासंभवैनहीं ॥ इतिद्वितीयप्रश्न ॥ अब तृतीयप्रश्नकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि! जाग्रत्अवस्थाकूं तथास्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोणेहारा जोएकआत्माहै ॥ तिसएकआत्माकी दोनोंस्थानोंविषेस्थितिहोणी अत्यंतदुर्घटहै ॥ काहेतें? जैसे उज्जयिनीपुरीविषेस्थितजोराजाहै ॥ सोराजा काशीपुरीविषे स्थितहोइसकैनहीं ॥ किंतु काशीपुरीकाराजा उज्जयिनीपुरीकेराजातें भिन्नहीहोवैहै ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेस्थित जोआत्माहै ॥ सोआत्मा स्वप्नअवस्थाविषे स्थितहोइसकैनहीं ॥ किंतु जाग्रत्अवस्थाकेआत्मातें स्वप्नअवस्थाकाआत्मा भिन्नहीहोवैगा ॥ इतितृतीयप्रश्न ॥ हेशिष्य! याप्रकारकेतीनप्रश्न जबी जनकराजानें याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रतिकरे ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि तिसराजाकेतीनप्रश्नों काउत्तर क्रमतेंकहताभया ॥ अब प्रथमप्रश्नकेउत्तरकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! पूर्वहमनें स्वप्नअवस्थाविषे जोआत्मा स्वयंज्योतिरूपकरिकै तुमारेप्रति उपदेशकऱ्याहै ॥ सोईहीस्वयंज्योतिआत्मा कदाचित् संप्रसादनामास्थानविषे स्थितहोवैहै ॥ अब संप्रसादशब्दकेअर्थकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे शरद्ऋतुविषे जल कालुष्यकापरित्यागकरिकै निर्मलहोवैहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्मा स्थूलसूक्ष्मशरीरके अभिमानकूंपरित्यागकरिकै स्थितहोवैहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तासुषुप्तिकूं संप्रसादनामकरिकै कथनकरैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सुषुप्तिअवस्थाविषेभी श्रुतिनें आत्माविषे रति तथागति कथनकरीहै ॥ तहां नानाप्रकारकीक्रीडाकानामरतिहै ॥ और नानाप्रकारकेविषयोंकीप्राप्तिवासते जोपरिअटनहै ताकूं गतिकहैहैं ॥ यातें सुषुप्तिअवस्थाविषेभी विक्षेपकाअभावनहीं ॥ किंतु जाग्रत्स्वप्नकीन्यांई सुषुप्तिविषेभी रति गतिरूपविक्षेपरहैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक! सुषुप्तिअवस्थाविषे यद्यपि रति गति दोनोंनहींहैं ॥ तथापि सुषुप्तिकीप्राप्तितेंपूर्व तथा पश्चात् सा रति

गति दोनोंविद्यमानहैं ॥ तिनोंकूंग्रहणकरिकै सुषुप्तिअवस्थाविषे श्रुतिभगवती आत्माविषे रति गति कथनकरैहै ॥ इसीप्रकार सु
खदुःखरूपफलकेदेणेहारे जेपुण्यपापरूपकर्महैं ॥ तेपुण्यपापरूपकर्म यद्यपि सुषुप्तिअवस्थाविषैहैनहीं ॥ तथापि तेपुण्यपापरूपक
र्म सुषुप्तिअवस्थाविषे कारणअज्ञानरूपहोइकैरहैहैं ॥ जोसुषुप्तिअवस्थाविषे पुण्यपापरूपकर्मोंका सर्वथाअभावहोवै तौ सुषुप्तितैंअ
नंतर जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे सुखदुःखरूपफलकीप्राप्ति नहींहोणीचाहिये ॥ और जाग्रत्स्वप्नविषे सुखदुःखरूप
फलकीप्राप्ति सर्वजीवोंकूंदेखीती है ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे पुण्यपापरूपकर्म कारणअज्ञानरूपहोइकैरहैहै ॥
और सुषुप्तिअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा आपणेस्वप्रकाशरूपकरिकै ताकारणअज्ञानकूं प्रकाशकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभग
वतीनैं यहकह्याहै ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे सोआत्मा पुण्यपापरूपकर्मोंकूंदेखेहै ॥ और हेजनक! याअनादिसंसारविषे यहजीवात्मा
जैसे पूर्वपूर्व संप्रसादरूपअनेकसुषुप्तिअवस्थावोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसीप्रकार यहजीवात्मा पुनः सुषुप्तिरूपसंप्रसादकूंप्राप्तहोवैहै ॥
और यहजीवात्मा सुषुप्तिरूपसंप्रसादविषे जिसमार्गकरिकैजावैहै ॥ तिसीमार्गकरिकै यहजीवात्मा तासुषुप्तिरूपसंप्रसादतैं बाह
रिआवैहै ॥ और हेजनक! सुषुप्तिअवस्थातैंपूर्व जिसजातिवालेशरीरकरिकैयुक्त यहजीवात्माहोवैहै ॥ सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोइकै
यहजीवात्मा तिसीजातिवालेशरीरकूंग्रहणकरिकै तासुषुप्तितैंबाहरिआवैहै ॥ पूर्वशरीरतैंविलक्षण दूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ त
हांव्याघ्रशरीरकरिकैयुक्तहुआ यहजीवात्मा जबी सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी व्याघ्रशरीरकूंग्रहणकरिकैही तासुषुप्तितैं बाह
रिआवैहै ॥ इसप्रकार सिंह वृक वराह कीट मनुष्य इसतैंआदिलेके जितनेप्राणीहैं ॥ तेसंपूर्णप्राणी जिसजिसजातिवालेशरीर
करिकै युक्तहुए सुषुप्तिरूपसंप्रसादकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसीतिसीजातिवालेशरीरकूंग्रहणकरिकै पुनःसुषुप्तितैंबाहरिआवैहैं ॥ शंका ॥
हेभगवन्! यहजीवात्मा सुषुप्तिरूपसंप्रसादतैंजोबाहरिआवैहै ॥ सोस्वप्नकीप्राप्तिवासतेहीआवैहै ॥ यहजोश्रुतिनैंकथनकर्याहै
सो संभवैनहीं ॥ काहेतें? सुषुप्तितैंअनंतर स्वप्नहीहोवैहै याप्रकारकानियमहैनहीं ॥ किंतु सुषुप्तितैंअनंतर कदाचित् जाग्रत्हो
वैहै ॥ और कदाचित् स्वप्नहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक! यहजीवात्मा स्वप्नकीप्राप्तिवासते सुषुप्तितैंबाहरिआवैहै॥ यहजोश्रुति

नैंकथनकऱ्याहै सोअसंगतनहीं किंतु यथार्थहीहै ॥ काहेतें? इहांस्वप्नशब्दकरिकै केवलस्वप्नअवस्थाका ग्रहणनहींकरणा ॥ किंतु स्वप्नशब्दकरिकै विपर्ययज्ञानरूपविक्षेपकाग्रहणकरणा ॥ सो विक्षेपरूपता जैसे स्वप्नविषेहै तैसे जाग्रत्विषेभीहै ॥ यातें श्रुतिविषे जोस्वप्नपदहै ॥ तास्वप्नशब्दकरिकै जाग्रत्स्वप्नदोनोंकाग्रहणकरणा ॥ अब आत्माविषे असंगरूपताकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! सोआनंदस्वरूपआत्मा सुषुप्तितैंबाहरिआइकै विक्षेपरूपस्वप्नविषे स्थितहोवैहै ॥ और तास्वप्नविषेस्थितहुआ यहआनंदस्वरूप आत्मा स्त्रीसंभोगतैंआदिलेकै नानाप्रकारकेविषयोंकूंदेखैहै ॥ परंतु जैसे घटकाद्रष्टापुरुष घटादिकदृश्यपदार्थोंकेसाथ संबंधकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे नानाप्रकारकेविषयोंकाद्रष्टाआत्मा तिनदृश्यरूपविषयोंकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! स्वप्नअवस्थाविषे यहद्रष्टापुरुष जैसे रूपादिकविषयोंकूंदेखैहै ॥ तैसे अहंसुखी अहंदुःखी याप्रतीतिकरिकै अहंशब्दकाअर्थजोआत्माहै ॥ ताकूंभी यहद्रष्टापुरुष जानैहै ॥ यातें स्वप्नअवस्थाविषे जैसे रूपादिकपदार्थ ज्ञानकेविषयहैं ॥ तैसे आत्माभी अहंयाज्ञानकाविषयहै ॥ यातें रूपादिकदृश्यपदार्थोंकेसाथ यद्यपि द्रष्टापुरुषकासंबंधनहींहै ॥ तथापि आत्मारूपदृश्य पदार्थकेसाथ द्रष्टापुरुषकासंबंध संभवैहै ॥ **समाधान** ॥ हेजनक! आत्माकरिकैविशिष्टजोकोईपदार्थहै ॥ तिसकूं कोईभीपुरुष देखणेविषेसमर्थनहीं ॥ काहेतें? जोवादी आत्माविशिष्टपदार्थविषे ज्ञानकीविषयता अंगीकारकरैहै ॥ तिसवादीकूं आत्माविषेभी विषयता बलात्कारसैंअंगीकारकरणीहोवैगी ॥ काहेतें? जोधर्मविशेषणविशिष्टपदार्थविषेरहैहै ॥ सोधर्म विशेषणविषेभी अवश्यर हैहै ॥ जैसे नीलघटहै याप्रकारकेज्ञानकीविषयता नीलगुणविशिष्टघटविषेरहैहै ॥ और साविषयता नीलगुणरूपविशेषणविषेभीर हैहै ॥ तैसे आत्माविशिष्टपदार्थविषे जोज्ञानकीविषयताहै ॥ साविषयता विशेषणरूपआत्माविषेभी अवश्यरहैगी ॥ किंवा जोपुरुष विशेषणकूं तथाविशेष्यकूं तथा तिनदोनोंकेसंबंधकूं नहींजाणता ॥ सोपुरुष विशिष्टपदार्थकूं जाणिसकैनहीं ॥ यातें विशिष्टपदार्थके ज्ञानविषे विशेषणकाज्ञान तथाविशेष्यकाज्ञान तथातिनोंकेसंबंधकाज्ञान येतीनोंज्ञान कारणहैं ॥ जैसे दंडविशिष्टपुरुषकूं विषयक रणेहारा जोदंडीपुरुषहै याप्रकारकाविशिष्टज्ञानहै ॥ सोविशिष्टज्ञान दंडरूपविशेषणकेज्ञानतैंविना तथापुरुषरूपविशेष्यकेज्ञानतैंवि

ना तथा दंडपुरुषकेसंयोगसंबंधकेज्ञानतैंविना कदाचित्होवैनहीं ॥ किंतु दंड पुरुष संयोग यातीनोंकेज्ञानकरिकैही दंडीपुरुषहै या प्रकारकाविशिष्टज्ञान होवैहै ॥ इसीप्रकार जोज्ञान आत्माविशिष्टपदार्थकूंविषयकरैगा ॥ सोज्ञान विशेषणरूपआत्माकूंभी अवश्य विषयकरैगा ॥ यातैं आत्माविषेभी ज्ञानकीविषयता प्राप्तहोवैगी ॥ शंका ॥ हेभगवन्! आत्माविषे ज्ञानकीविषयता माननेमें क्याहानिहोवैहै? ॥ समाधान ॥ हेजनक! जैसे दक्षिणहस्तकीमुष्टिकरिकै दक्षिणहस्तकेमुष्टिकाग्रहणहोइसकैनहीं ॥ तैसे आत्माक रिकै आत्माकाग्रहण किसीप्रकारकरिकैसंभवैनहीं ॥ और जोआत्माविषेभी ज्ञानकीविषयता अंगीकारकरिये तौ जोजोपदार्थ ज्ञानकाविषयहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ जडहोवैहै ॥ जैसे ज्ञानकेविषयहोणेतैं घटादिकपदार्थ जडहैं ॥ तैसे ज्ञानकाविषयहोणेतैं अना त्माभी जडहोवैगा ॥ और जो जो पदार्थ जडरूपहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ अनात्मारूपहोवैहै ॥ जैसे जडरूपहोणेतैं घटादिकपदार्थ अनात्मारूपहैं ॥ तैसे जडरूपहोणेतैं आत्माभी अनात्मारूपहोवैगा ॥ और आत्माविषे अनात्मरूपता कोईभीवादी अंगीकारकर तानहीं ॥ किंवा जोवादी जडपदार्थोंकूंभी आत्मारूपअंगीकारकरै ॥ तौ जैसे जडआत्माविषे आत्मरूपताहै ॥ तैसे जडघटादिकोंवि षेभी आत्मरूपता अवश्यमानणीहोवैगी ॥ और जडघटादिकोंकूं कोईवादी आत्मरूपमानतानहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ आ काशादिकविभुपदार्थोंविषे तथाघटादिकपरिच्छिन्नपदार्थोंविषे जहांजहां जडपणारहैहै ॥ तहांतहां अनात्मरूपताहीदेखीतीहै ॥ यातैं आत्माविषे किसीज्ञानकीविषयतानहीं ॥ और जेवादी अहंसुखी अहंदुःखी याप्रकारकेज्ञानकीविषयता आत्माविषेमानैहैं ॥ तेवादी भ्रांतिकरिकैमानैहैं ॥ काहेतैं? अहं याज्ञानकीविषयता अंतःकरणविषेहै ॥ ता अंतःकरणकीविषयताकूं शुद्धआत्माविषे आ रोपणकरिकै तेवादी आत्माकूं अहं याज्ञानकाविषयमानैहैं ॥ यातैं आत्मा किसीज्ञानकाविषयनहीं ॥ और हेजनक! स्वप्नअवस्था विषे स्त्रीसंभोगतैंआदिलैके जितनेअन्नपानादिकदृश्यपदार्थहैं ॥ तिनोंकेसाथ द्रष्टाआत्माकासंबंधहैनहीं ॥ काहेतैं? यालोकविषे भीजोपुरुष द्रष्टाहोवैहै ॥ ताका दृश्यपदार्थकेसाथ संबंधहोवैनहीं ॥ जैसे घटादिकपदार्थोंकूंदेखणेहारा जोद्रष्टापुरुषहै ॥ ताद्रष्टापु रुषका घटपटादिकदृश्यपदार्थोंकेसाथ तीनकालसंबंधनहीं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे स्वप्नद्रष्टापुरुषका स्वप्नकेदृश्यपदार्थोंकेसाथ

तीनकाल संबंधनहीं ॥ यातैं हेजनक! याप्रकारका स्वप्नअवस्थाविषे सर्वसंगतैंरहित जोअसंगआत्माहै ॥ सोआत्मा स्वप्रकाश रूपकरिकैजान्याहुआ अधिकारीपुरुषोंकूं मोक्षकीप्राप्तिकरैहै ॥ हेशिष्य! याप्रकारका प्रथमप्रश्नकाउत्तर जबी याज्ञवल्क्य मुनिनैं जनकराजाकेप्रतिकह्या ॥ तबी सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेउत्तरकूं अंगीकारकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोयाज्ञव ल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति द्वितीयप्रश्नकाउत्तर कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक! जैसे द्रष्टाआत्माकूं स्वप्नकेप दार्थ लिपायमानकरैंनहीं ॥ तैसे द्रष्टाआत्माकूं जाग्रत्‌केपदार्थभी लिपायमानकरैंनहीं ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाकीन्यांई जाग्रत्‌अवस्था विषेभी आत्माअसंगहै ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते जाग्रत्‌अवस्थाके तथास्वप्नअवस्थाके तुल्यताकूंनिरूपणकरैहैं ॥ हेजन क! जैसे यहस्वयंज्योतिआत्मा जाग्रत्‌केपदार्थोंकूं देखिकरिकै स्वप्नअवस्थाविषेजावैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योति आत्मानाडीरूपमार्गकूं तथा पुण्यपापरूपकर्मोंकूं तथाबुद्धिकूं देखिकरिकैही जाग्रत्‌अवस्थाविषे आवैहै ॥ और जिसनाडिरूपमार्ग करिकैयहजीवात्मा स्वप्नअवस्थाविषेप्राप्तहोवैहै ॥ तिसीनाडीरूपमार्गकरिकै यहजीवात्मा जाग्रत्‌अवस्थाविषेआवैहै ॥ यातैं जाग्रत् स्वप्नदोनोंसमानहैं ॥ इहां स्वप्नअवस्थातैं जाग्रत्‌अवस्थाविषे इतनीविशेषताहै ॥ जाग्रत्‌अवस्थाविषे केवलबाह्यपणाहै ॥ और स्व प्नअवस्थाविषे बाह्यपणा तथाअंतरपणा दोनोंहैं ॥ तहां जाग्रत्‌अवस्थाकीअपेक्षाकरिकैतो स्वप्नअवस्थाविषे अंतरपणाहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाकीअपेक्षाकरिकै तास्वप्नअवस्थाविषे बाह्यपणाहै ॥ और हेजनक! जैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहद्रष्टापुरुष दृश्यपदा र्थोंकेसंगतैं रहितहोवैहै ॥ तैसे जाग्रत्‌अवस्थाविषेभी यहद्रष्टापुरुष दृश्यपदार्थोंकेसंगतैं रहितहोवैहै ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाकीन्यां ई जाग्रत्‌अवस्थाविषेभी यहद्रष्टाआत्मा असंगहै ॥ तात्पर्ययह ॥ एकमूर्तपदार्थका दूसरेमूर्तपदार्थकेसाथ जोक्रियाजन्यसंयोग संबंधहै ॥ तासंयोगसंबंधकूं शास्त्रवेत्तापुरुष संगकहैहैं ॥ जैसे घटरूपमूर्तपदार्थका भूतलरूपमूर्तपदार्थकेसाथ जोक्रियाजन्यसं योगसंबंधहै ॥ तासंयोगसंबंधकानाम संगहै ॥ याप्रकारकासंग किसीपदार्थकेसाथ आत्माकासंभवैनहीं ॥ काहेतैं? आत्मा आ काशकीन्यांई अमूर्तहै तथाविभुहै ॥ अमूर्तविभुपदार्थविषे कोईभीवादी क्रिया अंगीकारकरतानहीं ॥ यातैं विभुआत्माका क्रि

याजन्यसंयोगरूपसंग किसीपदार्थकेसाथसंभवैनहीं ॥ यातें स्वप्नअवस्थाकीन्यांई जाग्रत्अवस्थाविषेभी आत्मा असंगहै ॥ हे शिष्य! याप्रकार जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति द्वितीयप्रश्नकाउत्तर कथनकऱ्या ॥ तबी सोजनकराजा ताउत्तरकूं अंगीकारकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति तृतीयप्रश्नकेउत्तरकूं कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक! जाग्रत्अवस्थाविषे यहआनंदस्वरूपआत्मा स्वप्नकीन्यांई प्रियस्त्रियोंकेसाथ क्रीडाकरिकै तथानानाप्रकारके मार्गोंविषे गमनकरिकै तथा पुण्यपापरूपकर्मोंकरिकैउत्पन्नभईजा सुखदुःखाकारबुद्धि ताबुद्धिकूंदेखिकरिकै स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां स्वप्नअवस्थाविषे नानाप्रकारकेपदार्थोंकूंदेखिकरिकै यहस्वयंज्योतिआत्मा पुनःजाग्रत्अवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार एकहीस्वयंज्योतिआत्मा क्रमतैं जाग्रत्अवस्थाकूं तथास्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे लोकविषे जलकरिकै पूर्ण जामहान्नदीहै तथा तानदीविषेस्थितजोमहान् मत्स्यहै ॥ सोएकहीमत्स्य कबी नदीकेओरलेकिनारेआवैहै ॥ और कबी नदीके पारलेकिनारेजावैहै ॥ तैसे एकहीस्वयंज्योतिआत्मा कबी जाग्रत्अवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और कबी स्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातें स्वप्नकेद्रष्टाआत्मातैं जाग्रत्काद्रष्टाआत्मा भिन्ननहीं ॥ किंतु एकहीआत्माक्रमतैं जाग्रत्कूं तथास्वप्नकूं प्राप्तहोवैहै ॥ एकहीकालविषे आत्माकूं जाग्रत्स्वप्नदोनोंअवस्थाकीप्राप्ति हम अंगीकारकरतेनहीं ॥ यातें उज्जयिनीपुरीके तथाकाशीपुरीके राजाकेदृष्टांततैं जाग्रत्स्वप्नकेआत्माका भेदसिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे एकहीतीर्थयात्रीपुरुष कबी काशीपुरीविषे प्राप्तहोवैहै ॥ और कबी उज्जयिनीपुरीविषे प्राप्तहोवैहै ॥ एकहीआत्मा कबीजाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कबी स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इतनेकरिकै तृतीयप्रश्नकाउत्तरकह्या ॥ अब सुषुप्तिअवस्थाविषेभी आत्माके असंगरूपताकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे श्येनपक्षी अथवा गरुडपक्षी भूमिकेसमीपआकाशदेशविषेस्थित जोआपणागृहहै ॥ तागृहकापरित्यागकरिकै अत्यंतदूर आकाशविषेजावैहै ॥ तहां आपणेगृहकापरित्यागकरिकै अत्यंतदूरआकाशविषेजाणेमैं तापक्षीके चारिप्रकारकेप्रयोजनहोवैहैं ॥ एकतौ स्त्रीकीप्राप्ति ॥ और दूसरा भक्षणकरणेयोग्य पदार्थकीप्राप्ति ॥ और तिसरा अन्यकिसीपक्षीकाहननकरणा ॥ और चतुर्थ आपणेइच्छाकीपूर्णताक

रणी ॥ याचारिप्रकारकेप्रयोजनोंविषे किसीएकप्रयोजनकूं ग्रहणकरिकैही सोपक्षी आपणेगृहकापरित्यागकरिकै दूरआकाशवि
षे जावैहै ॥ तहांजाइकै सोपक्षि जबी अत्यंतश्रमकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोपक्षी विश्रामकरणेवासते आपणेदोनोंपक्षोंका आ
पणेशरीरविषेसंकोचकरिकैं आपणेगृहकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तागृहविषेस्थितहोइके सोपक्षी विश्रामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यह
आनंदस्वरूपआत्मारूपपक्षीभी सुषुप्तिरूपगृहकापरित्यागकरिकै पुण्यपापरूपदोनोंपक्षोंकेबलतैं जाग्रत्स्वप्नरूप दूरआकाश
विषेजावैहै ॥ ताजाग्रत्स्वप्नअवस्थाविषे नानाप्रकारकेविषयभोगरूपव्यापारोंकूंकरिकै जबी यहआत्मारूपपक्षी अत्यंतश्रम
कूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी पुण्यपापरूपदोनोंपक्षोंकासंकोचकरिकै विश्रामकीप्राप्तिवासते सुषुप्तिरूपगृहकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तासुषुप्ति
विषेस्थितहुआ यहस्वयंज्योतिआत्मा किसीविषयकीइच्छाकरतानहीं ॥ और किसीविषयकूंदेखतानहीं ॥ इतनेकरिकै यहअर्थ बो
धनकऱ्या ॥ स्थूलसूक्ष्मशरीरकेसाथ तथा स्थूलसूक्ष्मशरीरकेधर्मोंकेसाथ आत्माकावास्तवतैंसंबंधनहीं ॥ जोतिनोंकेसाथ
आत्माका वास्तवतैं संबंधहोता तौ सुषुप्तिअवस्थाविषेभी आत्माविषे तेस्थूलसूक्ष्मादिकपदार्थ प्रतीतहोते ॥ और सुषु
प्तिविषे तिनपदार्थोंकेलयहुएभी आत्मा साक्षीरूपकरिकै विद्यमानहै ॥ यातैं तिनस्थूलसूक्ष्मपदार्थोंकेसाथ आत्माका वास्तव
तैंसंबंधनहीं ॥ अब अज्ञानरूपकारणशरीरतैं आत्माकूं भिन्नकरणेवासते अविद्यारूपअज्ञानकेस्वरूपकूं तथा आत्माकेस्व
रूपकूं निरूपणकरैहैं ॥ याअर्थकीसिद्धिवासते प्रथम स्वप्नसुषुप्तिकेप्राप्तिका मार्गरूपजेनाडियांहैं तिनोंकूं निरूपणकरैहैं ॥
हेजनक! जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंकी प्राप्तिवासते तथातिनअवस्थावोंतैंबाहरिआवणेवासते जोस्वयंज्योतिआत्मा
कामार्ग हमनैं तुमारेप्रति पूर्व कथनकऱ्याथा ॥ सोमार्ग नाडीरूपहै ॥ कैसीहैं तेमार्गरूपनाडियां? हृदयस्थानतैं जिनोंकानि
र्गमनभयाहै ॥ तिननाडियोंविषेभी एकऊपरिएकशतनाडी प्रधानहैं ॥ और तिनप्रधाननाडियोंकी शाखारूपदूसरीनाडियां अनेक
कोटीहैं ॥ कैसीहैंतेनाडियां? एककेशकेजोसहस्रविभागकरियें ॥ ताकेएकविभागकेसमान जिननाडियोंकीसूक्ष्मताहै ॥ अथवा ति
सकेशकेविभागतैंभी अतिसूक्ष्महैं ॥ ऐसीनाडियोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष हितानामकरिकै कथनकरैहैं ॥ काहेतैं? जैसे मातानाविषे

स्थित जेनाडियांहैं ॥ तेनाडियां बालकक्रूं दुग्धकीप्राप्तिकरैहैं ॥ यातैं तेनाडियां बालककेहितकरणेहारीहैं ॥ तैसे सर्वशरीरविषे
स्थित जेनाडियांहैं ॥ तेनाडियां पादतैंलैके मस्तकपर्यंत सर्वशरीरविषे अन्नकेसूक्ष्मरसक्रूं प्राप्तकरैहैं ॥ यातैं तेनाडियां याजीवके
अत्यंतहितकारीहैं ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तिननाडियोंक्रूं हितानामकरिकै कथनकरैहैं ॥ पुनःकैसीहैं तेनाडियां ? जैसे लो
कविषे नदियां जलकरिकैपूर्णहोवैहैं ॥ तैसे अन्नपानके जेविचित्रवर्णवालेरसहैं तिनोंकरिकैपूर्णहैं ॥ पुनःकैसीहैं तेनाडियां? जैसे
चित्रकारपुरुषकेगृहविषे शुक्ल नील पीत इत्यादिकअनेकवर्णोंकरिकैपूर्ण अनेकपात्रहोवैहैं ॥ तैसे याशरीरविषे कफक्रूंधारणकरणे
हारी नाडियां शुक्लरसकरिकै पूर्णहोवैहैं ॥ और वातक्रूंधारणकरणेहारीजेनाडियां हैं ॥ ते नीलरसकरिकै पूर्णहोवैहैं ॥ और पि
त्तक्रूंधारणकरणेहारी जेनाडियांहैं ॥ तेनाडियां पिंगलरसकरिकैपूर्णहोवैहैं ॥ और अल्पपित्तक्रूंधारणकरणेहारी जेनाडियांहैं ॥ तेना
डियां हरितरसकरिकैपूर्णहोवैहैं ॥ और रुधिरक्रूंधारणकरणेहारी जेनाडियांहैं ॥ तेनाडियां लोहितरसकरिकैपूर्णहोवैहैं ॥ इहां नील
शब्दकरिकै अंजनकेसमान श्यामवर्णवालेपदार्थका ग्रहणकरणा ॥ और हरितशब्दकरिकै दूर्वादलकेसमानवर्णवालेपदार्थका ग्रह
णकरणा ॥ और पिंगलशब्दकरिकै सुवर्णकेसमान पीतवर्णवालेपदार्थकाग्रहणकरणा ॥ पुनः कैसीहैंतेनाडियां? जैसे चित्रकार
पुरुष नीलपीतादिक दोतीनवर्णोंक्रूंइकठाकरिकै अपूर्ववर्णक्रूं उत्पन्नकरैहै ॥ तैसे वात पित्तादिकधातुवोंकेसन्निपाततैं नानाप्रकार
केवर्ण उत्पन्नहोवैहैं ॥ तिननानाप्रकारकेवर्णोंकरिकै जेनाडियांपूर्णहैं ॥ ऐसेनाडीरूपमार्गकरिकै यहजीवात्मा स्वप्नक्रूंप्राप्तहोवैहै ॥
तथा सुषुप्तिक्रूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब स्वप्नअवस्थाविषे कार्यद्वारा अविद्याकेस्वरूपक्रूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! तिसनाडीरूपमार्गक
रिकैप्राप्तहोणेयोग्यजोस्वप्नहै सोस्वप्न दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकस्वप्न सुखकेदेणेहारा होवैहै ॥ और दूसरास्वप्न दुःखकेदेणेहाराहोवै
है ॥ तहां जाग्रत्अवस्थाकीन्यांई पुण्यकरिकैसहकृतजाअविद्याहै ॥ ताअविद्याकरिकैजन्यजोस्वप्नहै ॥ सोस्वप्न जीवोंक्रूं सुखकीप्रा
प्तिकरैहै ॥ और पापकर्मकरिकैसहकृतजाअविद्याहै ॥ ताअविद्याकरिकैजन्यजोस्वप्नहै ॥ सोस्वप्न जीवोंक्रूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥
और हेजनक! जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे प्रतिकूलरूपकरिकैजान्येहुए चौरादिकपदार्थ जीवोंक्रूंदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ और

अनुकूलरूपकरिकैजान्येहुए स्त्रक्चंदनादिकपदार्थ जीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी प्रतिकूलरूपकरिकै जान्येहुए चौरादिकपदार्थ जीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और अनुकूलरूपकरिकैजान्येहुए ॥ स्त्रक्चंदनादिकपदार्थ जीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ यातैं जाग्रत्‌केपदार्थोंविषे तथास्वप्नकेपदार्थोंविषे स्वरूपतैंविशेषतानहीं ॥ तथा सुखदुःखकीउत्पत्तिरूप कार्यतैंभी विशेषतानहीं ॥ यातैं जाग्रत्‌केपदार्थ तथास्वप्नकेपदार्थ दोनों समानहैं ॥ अब दुःखकेदेणहारेस्वप्नकूं स्पष्टकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे आकाश शस्त्रादिकोंकरिकै छेदनकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माभीवास्तवतैं शस्त्रादिकोंकरिकै छेदनकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ ऐसाआनंदस्वरूपनिर्विकारआत्मा जबी अंतःकरणादिकउपाधियोंकेसंबंधतैंस्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तबी पूर्वलेपापकर्मकेवशतैं यास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं धनकीप्राप्तिवासते चौरशस्त्रोंकरिकैहननकरैहैं ॥ और मांसके भक्षणकरणेहारे जेव्याघ्रवृकादिकजंतुहैं ॥ तेव्याघ्रादिकजंतु यास्वप्नद्रष्टास्वरूपकूं तीक्ष्णनखोंकरिकै तथादंतोंकरिकै छेदनकरैहैं ॥ तथा तीक्ष्णखुरोंकरिकै ताडनकरैहैं ॥ और हेजनक! जैसे आयुषकेक्षयहुए यापुरुषकूं जराअवस्था वशकरिलेवैहै ॥ तैसे वास्तवतैं सर्वजगत्‌कूं वशकरणेहारा जोयहआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ तिसकूं स्वप्नअवस्थाविषे कोईदुर्बुद्धिधूर्तपुरुष आपणेवशकरिलेवैहै ॥ तिनधूर्तपुरुषोंकेवशहुआ यहआत्मादेव स्वप्नविषे परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! जैसे लोकविषे दुर्बुद्धिजोराजाहै ॥ ताराजाकेभृत्य धनकेलेणेवासते बलात्कारसैं धनीपुरुषोंकूं आपणेवशकरैहैं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे याजीवात्माकूं कोईधूर्तपुरुष बलात्कारसैं आपणेवशकरैहैं ॥ तिनोकेवशहुआ यहजीवात्मा परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! जैसे जाग्रत् अवस्थाविषे राजाकेद्वारविषेस्थित जोहस्तीहै ॥ ताहस्तीकेसमानहैआकारजिसका ऐसाजोकाष्ठकाहस्तीहै ॥ ताहस्तीकूंदेखिकरिकै मूढबालक भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा आपणेगृहकीओरिभागेहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी यहजीवात्मा हस्तिकूंदेखिकरिकै भयकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथाआपणेगृहकीतरफिभागेहै ॥ ताकरिकै याजीवात्माकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और हेजनक! जैसे जाग्रत्‌अवस्थाविषे समानभूमिविषेस्थित जोकोईविचित्रसभाहै ॥ तासभाकूं गर्तरूपजाणिके दुर्योधनराजाकीन्याईं कोईमूढपुरुष तागर्तविषे

पतनहोवैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी यहजीवात्मा समानभूमिकूं गर्तरूपमानिकै तागर्तविषे पतनहोवैहै ॥ तागर्तकेपतनकरिकै भी याजीवात्माकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और हेजनक! जाग्रत्अवस्थाविषे यहपुरुष जिसजिस अप्रियपदार्थकूंदेखिकै भयकूंप्रा प्तहोवैहै ॥ स्वप्नअवस्थाविषेभी तिसतिसअप्रियपदार्थकूंदेखिकै यहजीवात्मा भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसतैं आदिलेके अनेकप्रकारके दुष्टस्वप्नोंकूं पापकर्मकेवशतैं यहजीवात्मा प्राप्तहोवैहै ॥ इतनेकरिकै पापकर्मसहकृतजाअविद्याहै ताअविद्याजन्य दुष्टस्वप्नकानिरू पणकऱ्या ॥ अब अविद्याकेस्वरूपकहणेवासतै प्रथम अविद्याकाविरोधीजाविद्याहै ताकेस्वरूपकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! यह ब्रह्मकैसाहै? देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै तथा सर्वजीवोंकाआत्मारूपहै ॥ तथा स्वयंप्रकाशरूपहै ॥ तथा सत्चित्आनंद स्वरूपहै ॥ तथा अद्वितीयरूपहै ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मकेविशेषस्वरूपकूं करामलककीन्यांई अधिकारीपुरुषोंके जोसमीपकरिदेवै ॥ अथवा ऐसेअद्वितीयब्रह्मकेविशेषरूपकूं अधिकारीपुरुषोंका आत्मारूपकरिकै जोप्रकाशकरै ताकूं शास्त्रवेत्तापुरुष विद्याकहैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ महावाक्यकेश्रवणतैं उत्पन्नभई जो जीवईश्वरकेअभेदकूंविषयकरणेहारी अंतःकरणकीवृत्ति ॥ तावृत्तिकरिकैउपल क्षितजोचैतन्यहै ताकानामविद्याहै ॥ इतनेकरिकै विद्याकास्वरूप निरूपणकऱ्या ॥ अब ताविद्याकरिकैनिवृत्तहोणेयोग्य जाअवि द्याहै ताअविद्याकेस्वरूपकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! तिसविद्यातैंभिन्न जोपरिच्छिन्न अनात्मा असत् जड दुःखरूपहै ॥ ताकूं शा स्त्रवेत्तापुरुष अविद्याकहैहैं ॥ साअविद्या अज्ञानतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु साअविद्या अज्ञानरूपहै ॥ अब याहीअर्थकूं सर्वलोकोंकेअनु भवकरिकै स्पष्टकरैहैं ॥ हेजनक! यहआनंदस्वरूपपरमात्मा वास्तवतैं सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनप्रकारके भेदतैंरहितहै ॥ तथा मनवाणीकाअविषयहै ॥ तथा स्वप्रकाशचैतन्यरूपहै ॥ ऐसानिर्विकारआत्मा नानारूपकूं किसप्रकार प्राप्तहोवैहै? ॥ और ऐसे निर्विकारचैतन्यपरमात्मातैं असत् जड दुःखरूप यहजगत् किसप्रकार उत्पन्नहोवैहै? ॥ याप्रका रकाप्रश्न किसीपुरुषनैं अन्यपुरुषकेप्रतिकऱ्या ॥ ताप्रश्नकूंश्रवणकरिकै सोअन्यपुरुष आपणेचित्तविषे मैंनहींजाणता याप्रकार काजोअनुभवकरैहै ॥ ताअनुभवकाविषय जोअज्ञानहै ॥ सोअज्ञानही अविद्याकास्वरूपहै ॥ इतनेकरिकै अविद्याकास्वरूप

दिखाया ॥ अब स्वप्नविषे ताअविद्याकीस्पष्टताकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! इसीअविद्याकेप्रभावतैं यहपरमात्मादेव स्वप्नअवस्थाविषे शास्त्रादिकोंकरिकै आपणेकूंछेदनहुआमानैहै ॥ तथा दुष्टपुरुषोंकेवशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा सिंहसर्पादिकोंकूंदेखिकैभयकूंप्राप्तहोवैहै तथाभागेहै ॥ तथा महान्गर्तविषेपडेहै ॥ तथा स्त्रीआदिकप्रियपदार्थोंकेवियोगतैं परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेदुःखोंकूं जोयहजीवात्मा प्राप्तहोवैहै ॥ सो अविद्याकरिकैही प्राप्तहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ हेजनक! श्रुतिभगवतीनैं स्वप्नअवस्थाविषे रथादिकसर्वपदार्थोंकाअभाव कथनकऱ्याहै ॥ काहेतैं? सुखदुःखकेकारणजे रथादिकपदार्थहैं तेमहान्हैं ॥ और जिसहृदयदेशविषेस्वप्नहोवैहै ॥ सोहृदयदेश अत्यंतअल्पहै ॥ ताअल्पदेशविषे महान्रथादिकपदार्थोंकी स्थितिहोणीसंभवैनहीं ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे रथादिकपदार्थोंकेउत्पत्तिकेकारण जेदीर्घदेश तथादीर्घकाल तथाकाष्ठादिक इसतैंआदिलैकेनानाप्रकारकेकारणहैं ॥ तिनकारणोंकाभी स्वप्नअवस्थाविषेअभावहै ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाविषे अल्पहृदयदेशविषे तथाअल्पकालविषे वास्तवतैं रथादिकपदार्थोंकीउत्पत्ति संभवैनहीं ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे रथादिकपदार्थोंकेअभावहुए तिनरथादिकपदार्थोंकरिकैजन्य जोसुखदुःखहै ॥ सोभी वास्तवतैंसंभवैनहीं ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे सर्वजीवोंकूं रथादिकपदार्थोंकाअनुभवहोवैहै तथा पुण्यपापकेवशतैं सुखदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और कारणतैंविना कार्यकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यहवार्ताभी सर्व लोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ यातैं स्वप्नकेपदार्थोंकाभी कोईकारणमान्याचाहिये ॥ और लोकप्रसिद्धदेशकालादिककारणोंतैंविना जोपदार्थउत्पन्नहोवैहै ॥ सोपदार्थ साक्षात्मायाकाहीकार्यहोवैहै ॥ जैसे योग्यदेशकालादिककारणोंतैंविना आकाशविषेगंधर्वनगर प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सोगंधर्वनगर साक्षात्मायाकाहीकार्यहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी लोकप्रसिद्धदेशकालादिककारणोंतैंविनाही रथादिकपदार्थ उत्पन्नहोवैहैं ॥ यातैं तेरथादिकपदार्थ साक्षात्मायाकेहीकार्यहैं ॥ और सामाया अज्ञानरूपअविद्यातैं भिन्ननहीं ॥ किंतु सामाया अज्ञानअविद्यारूपहै ॥ इतनेकरिकै अविद्या अज्ञान माया इनतीनोंका अभेदनिरूपणकऱ्या ॥ अब शक्तिका तथाअविद्याका अभेद निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! स्वप्नअवस्थाविषे रथादिकजगत्कूंउत्पन्नकरणेहारी जास्वप्नद्रष्टाआ

त्माकीशक्तिहै ॥ साशक्ति अविद्यातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु ताशक्तिकूंही शास्त्रवेत्तापुरुष अविद्याकहैहैं ॥ किंवा जोवादी ताशक्तिकूं
अविद्यातैंभिन्न अंगीकारकरै है ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ अविद्यातैंभिन्न साशक्ति किसकार्यकरणेविषे समर्थहै ?॥ तात्पर्यय
ह ॥ ताशक्तिकरिकै यहजीवात्मा जाग्रत्केप्रपंचकूं आपणेस्वप्नविषेलैआवै है ॥ अथवा ताशक्तिकरिकै यहजीवात्मा बाहिरजाइकै
जाग्रत्केरथादिकपदार्थोंकूंदेखैहै ॥ यादोनोंपक्षोंविषे ताशक्तिका अविद्यातैंभेदसिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतें ? जैसे जाग्रत्अवस्थावि
षे स्थूणाकेसमान अत्यंतस्थूलजोकोईसर्पहै ॥ तासर्पकूं जोकोईपुरुष आपणेकर्णके सूक्ष्मछिद्रविषेस्थापनकरै है ॥ सोपुरुष माया
रूपअविद्याकेबलतैंहीकरै है ॥ मायारूपअविद्यातैंविना ऐसेदुर्घटकार्यकरणेविषे कोईपुरुष समर्थहोइसकैनहीं ॥ तैसे स्वप्नअवस्था
विषे अंगुष्ठमात्रपरिणाम जोहृदयाकाशहै ॥ ताहृदयाकाशविषे जडचेतनरूप सर्वबाह्यजगत्कूं मायारूपअविद्यातैंविना कौनस्थाप
नकरैगा ? किंतु मायारूपअविद्याविषेही ऐसासामर्थ्यहै ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाविषे बाहिरलेप्रपंचकूं भीतरिलेआवणेहारी साशक्ति
मायारूपअविद्यातैं भिन्ननहीं ॥ किंवा जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे जोकोईपुरुष भूमिलोकविषेस्थितहोइकै क्षणमात्रविषे सूर्यलोककूं
प्राप्तहोइकै पुनःभूमिलोकविषेआवैहै ॥ सोपुरुष मायारूपअविद्याकेबलतैंही सूर्यलोककूंदेखिकैआवैहै ॥ मायारूपअविद्यातैंविना
ऐसेदुर्घटकार्यकूंकोईकरिसकैनहीं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे याशरीरमैंप्राणोंकेविद्यमानहुएभी याजीवका जोक्षणमात्रविषे दूसरेद्वी
पविषेगमनहोवैहै ॥ तथा क्षणमात्रविषे स्वर्गलोककूंदेखिकै जोपुनःयाभूमिलोकविषे आगमनहोवैहै ॥ इसतैंआदिलैके जेअनेकप्र
कारकेदुर्घटकार्यहैं ॥ तेकार्य मायारूपअविद्यातैंविना संभवैनहीं ॥ किंतु मायारूपअविद्याकेबलतैंही याप्रकारकेदुर्घटकार्योंकूं यह
जीवात्मा स्वप्नविषेकरैहै ॥ यातैं सास्वप्नद्रष्टापुरुषकीशक्ति मायारूपअविद्यातैंभिन्ननहीं ॥ इतनेकरिकै स्वप्नअवस्थाविषे जाग्रत्के
बाह्यपदार्थोंकाआगमन तथाजीवात्माका बाहिरगमन ॥ यादोनोंपक्षोंकूंअंगीकारकरिकै ताशक्तिकूं अविद्यारूपता सिद्धकरी ॥ अ
ब तिनदोनोंपक्षोंकाखंडनकरैहैं ॥ हेजनक ! स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष आपणीमायाशक्तिकेप्रभावतैं जाग्रत्केबाह्यप्रपं
चकूं भीतरिचित्तविषेलैआवैहै ॥ अथवा तिसमायारूपशक्तिकेप्रभावतैं यहजीवात्मा बाहिरजाइकै जाग्रत्केपदार्थोंकूंदेखैहै ॥ या

दोनोंप्रक्रियाविषे कोईश्रुतिप्रमाणनहीं ॥ किंतु श्रुतिभगवतीतौ स्वप्नअवस्थाविषे हृदयदेशकेभीतरिही रथादिकसंपूर्णजगत्‌केउत्पत्तिकूंकथनकरैहै ॥ यातें तेदोनोंप्रक्रिया श्रुतितेंविरुद्धहैं ॥ इतनैंकरिकै तिनदोनोंप्रक्रियाविषे श्रुतिप्रमाणकाविरोध दिखाया ॥ अब लोकोंकेअनुभवकरिकैभी तिनदोनोंप्रक्रियाविषे विरुद्धपणा दिखावैहैं ॥ हेजनक! स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष मायाशक्तिकेप्रभावतें जोकदाचित् जाग्रत्‌केपदार्थोंकूं भीतरिहृदयदेशविषेलेआवताहोवै तौ जिनस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थोंकूं यहस्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नविषेदेखताहै ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव जाग्रत्‌कालविषे तास्वप्नद्रष्टापुरुषकेप्रति याप्रकारकावचन क्यूंनहींकहते?॥ हेमित्र! आजस्वप्नविषे तू हमारेकूंहृदयदेशविषेलेगयाथा ॥ अथवा सोस्वप्नद्रष्टापुरुष जाग्रत्‌अवस्थाविषे तिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेप्रति याप्रकारकावचन क्यूंनहींकहता ?॥ हेमित्रो! आजस्वप्नविषे मैं तुमारेकूं हृदयदेशविषेलैगयाथा ॥ सोयाप्रकारकावचन लोकविषेकोईपुरुष कहतानहीं ॥ और याप्रकारकेवचनकूं कोईमानताभीनहीं ॥ यातें जाग्रत्‌केपदार्थ स्वप्नविषेआवैहैं यहप्रक्रिया सर्वलोकोंके अनुभवकरिकैविरुद्धहै ॥ किंवा स्वप्नअवस्थाविषे यहजीवात्मा बाहरिजाइकै जाग्रत्‌केपदार्थोंकूंदेखेहै यहदूसरीप्रक्रियाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? स्वप्नअवस्थाविषे यहजीवात्मा जोकदाचित्‌बाहरिजाइकै पदार्थोंकूंदेखताहोवै तौ स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष जिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकूंदेखेहै ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव जाग्रत्‌अवस्थाविषे तास्वप्नद्रष्टापुरुषकेप्रति याप्रकारकावचन क्यूंनहींकहते?॥ हेमित्र! आजतुमनैं हमारेकूं गृहविषेदेख्याथा ॥ अथवा सोस्वप्नद्रष्टापुरुष जाग्रत्‌अवस्थाविषे तिनस्त्रीपुत्रादिक बांधवोंकेप्रति याप्रकारकावचन क्यूंनहींकहता ?॥ हेमित्रो! आजरात्रिविषे मैं तुमारेगृहविषेआयाथा ॥ सोयाप्रकारकावचन लोकविषेकोईपुरुष किसीकेप्रतिकहतानहीं ॥ और याप्रकारकावचन कोईमानताभीनहीं ॥ यातें स्वप्नअवस्थाविषे यहजीवात्मा बाहरिजाइकै जाग्रत्‌केपदार्थोंकूंदेखेहै ॥ यहद्वितीयप्रक्रियाभी लोकोंकेअनुभवतेंविरुद्धहै ॥ किंवा जोवादी स्वप्नअवस्थाविषे बाहरिलेपदार्थोंका भीतरिहृदयदेशविषे आगमन मानैहै ॥ अथवा स्वप्नद्रष्टापुरुषका बाहरिगमन मानैहै ॥ तावादीसें यहपूछाचाहीये ॥ स्वप्नद्रष्टापुरुषके हृदयदेशविषे जेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थ आवैहैं तेचेतनपदार्थ स्वप्नकेसूक्ष्मशरीरकरिकैविशिष्टहुए आवैहैं ॥ अथ

वा जाग्रत्‌केस्थूलशरीरकरिकैविशिष्टहुए आवैहैं ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष बाहरिजाइकै स्वप्नकेसूक्ष्मशरीरकरि
कैविशिष्ट जेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थहैं तिनोंकूंदेखैहै ॥ अथवा जाग्रत्‌केस्थूलशरीरकरिकैविशिष्ट जेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थहैं ति
नोंकूंदेखैहै ॥ यादोनोंपक्षोंविषे स्वप्नकेसूक्ष्मशरीरकरिकै विशिष्टहुए तेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थ स्वप्नद्रष्टापुरुषकेहृदयदेशविषेआवै
हैं ॥ अथवा सोस्वप्नद्रष्टापुरुष बाहरिजाइकै स्वप्नकेसूक्ष्मशरीरकरिकैविशिष्ट जेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थहैं तिनोंकूंदेखैहै ॥ यहप्रथ
मपक्षजोवादी अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतें ? जिसकालविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नकूंप्राप्तभयाहै ॥ तिसीकालविषे जोक
दाचित् तिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकूंभी स्वप्नकीप्राप्तिहुईहोवै तौ यह तुमाराकहणासंभवै ॥ परंतु स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरु
षजिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकूंदेखैहै ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव तिसीकालविषे स्वप्नकूंहीप्राप्तहुएहोवैहैं ॥ याप्रकारकानियम लोकविषे
देखीतानहीं ॥ किंतु जिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकूं यहस्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नविषेदेखैहै ॥ तेस्त्रीपुत्रादिबांधव तिसीकालविषे कोई जाग्र
त्‌अवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और कोई सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कोई स्वप्नकूंभीप्राप्तहोवैहै ॥ नियमकरिकै तिनसंपूर्णों
कूं एककालविषे स्वप्नहोवैनहीं ॥ यातैं स्वप्नकेसूक्ष्मशरीरकरिकैविशिष्ट जेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थहैं ॥ तिनोंकूं यहस्वप्नद्रष्टापुरुष
स्वप्नविषे बाहरिजाइकै देखैहै ॥ अथवा तिनोंकूंहृदयदेशविषेलेआइकै देखैहै ॥ यहप्रथमपक्ष संभवैनहीं ॥ किंवा जाग्रत्‌केस्थूलश
रीरकरिकैविशिष्ट जेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थहैं ॥ तिनोंकूं यहस्वप्नद्रष्टापुरुष बाहरिजाइकैदेखैहै ॥ अथवा तेस्त्रीपुत्रादिकचेतनप
दार्थ स्वप्नद्रष्टापुरुषकेहृदयदेशविषे आवैहै ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें ! स्वप्नअवस्थाविषे
यहस्वप्नद्रष्टापुरुष हृदयदेशकेभीतरि अथवा बाहरिजाइकै जिनस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थोंकूंदेखैहै ॥ सोईहीस्वप्नद्रष्टापुरुष जाग्रत्
अवस्थाकूंप्राप्तहोइकै तिनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकूंदेखैहै ॥ परंतु जाग्रत्‌अवस्थाविषे जिनभूषणादिकविशेषणोंकरिकैविशिष्ट स्त्रीपुत्रा
दिकचेतनपदार्थोंकूं यहपुरुषदेखैहै ॥ तिनभूषणादिकविशेषणोंकरिकैविशिष्ट स्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थोंकूं यापुरुषनैं स्वप्नअवस्था
विषे नहींदेख्याथा ॥ किंतु जाग्रत्‌सैं विलक्षणही स्वप्नविषेदेखेथे ॥ यातैं जाग्रत्‌केस्थूलशरीरकरिकैविशिष्ट जेस्त्रीपुत्रादिकबांधवहैं

तिनोंका स्वप्नविषे दर्शनहोवैहै ॥ यहदूसरापक्षभी संभवैनहीं ॥ किंवा स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नकेसूक्ष्मशरीरविशिष्ट जेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थहैं तिनोंकूं आपणेहृदयदेशविषेदेखैहै ॥ अथवा बाहरिजाइकैदेखैहै ॥ याप्रथमपक्षविषे यहदूसरादूषणभी संभवैहै ॥ काहेतें ? जिसकालविषे देवदत्तनामापुरुषकूं स्वप्नविषे यज्ञदत्तनामापुरुषकादर्शनभयाहै ॥ तिसीकालविषे तायज्ञदत्तनामापुरुषकूंभी दैवयोगतें स्वप्नविषे देवदत्तनामापुरुषका दर्शनभयाहै ॥ तहां जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोइकै तिनदोनोंका परस्पर याप्रकारकाविवाद होणाचाहिये ॥ हेयज्ञदत्त ! रात्रिविषे तू हमारेहृदयदेशविषे आयाथा ॥ हेदेवदत्त ! यहवार्ता तू मिथ्याकहताहै ॥ रात्रिविषे तू हमारेहृदयदेशविषे आयाथा ॥ याप्रकार तिनदोनोंका परस्पर विवादहोणाचाहिये ॥ और याप्रकारकाविवाद कोई लोकविषेकरतानहीं ॥ यातें स्वप्नअवस्थाविषे जाग्रत्केपदार्थ स्वप्नद्रष्टापुरुषकेहृदयदेशविषे आवैहैं ॥ अथवा स्वप्नद्रष्टापुरुष शरीरतैंबाहरिजाइकै जाग्रत्केपदार्थोंकूंदेखैहै ॥ येदोनोंप्रकारकीप्रक्रिया श्रुतिप्रमाणतें तथालोकोंकेअनुभवतें विरुद्धहैं ॥ यातें ये दोनोंप्रक्रिया परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! तिनदोनोंप्रक्रियाकापरित्यागकरिकै किसप्रक्रियाकूं हम अंगीकारकरें ? समाधान ॥ हेजनक ! स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष आपणेहृदयदेशविषे जितनेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थोंकूं देखताहै ॥ तथा जितने रथादिकअचेतनपदार्थोंकूं देखताहै ॥ तेसंपूर्णचेतनअचेतनपदार्थ स्वप्नद्रष्टापुरुषकेमायाशक्तिकरिकै शरीरकेभीतरिहीउत्पन्नहोवैहैं ॥ याकारणतें तेस्वप्नकेपदार्थ मायामयहैं ॥ यहप्रक्रिया श्रुतिप्रमाणकरिकैसिद्धहै ॥ तथा लोकोंकेअनुभवसेंभी विरुद्धनहीं ॥ यातें यहप्रक्रियाही सर्ववादियोंकूं अंगीकारकरणेयोग्यहै ॥ अब स्वप्नकेपदार्थोंविषे मायामयत्वकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम स्वप्नकेपदार्थोंविषे योग्यदेशकालादिककारणोंकाअभाव दिखावैहैं ॥ हेजनक ! स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष कदाचित् दूसरेदेशविषेस्थित जोराजाकामहान्गृहहै ॥ तागृहकूं आपणेअल्पकुटीविषेदेखैहै ॥ और सहस्रयोजनपरिमाणहैविस्तारजिसका तथाअनेकलहरियोंकरिकैशोभायमान ऐसाजोमहान्समुद्रहै ॥ तिससमुद्रकूं कदाचित् यहस्वप्नद्रष्टापुरुष आपणेगृहकेद्वारविषेदेखैहै ॥ और लक्षयोजनहैपरिमाणजिसका तथागंगादिकसर्वनदियोंकापति ऐसाजोअगाधसमुद्रहै ॥ तासमुद्रकूं कदाचित्

यहस्वप्नद्रष्टापुरुष गुल्फमात्रमानिकै यामनुष्यशरीरकरिकैही ताका उल्लंघनकरैहै ॥ और कदाचित् यहस्वप्नद्रष्टापुरुष तासमुद्रके पारजाइकै भगवान्नरसिंहकेनिवासकास्थान जोनीलपर्वतहै ताकूं देखैहै ॥ और कदाचित् काशीपुरीविषे रात्रिकालमें सोयाहुआ यहस्वप्नद्रष्टापुरुष कुरुक्षेत्रविषे सूर्यकेग्रहणकूंदेखैहै ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेमिथ्यापदार्थोंकूं यहस्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नविषेदेखैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ स्वप्नद्रष्टापुरुषके शरीरतैंआदिलैके जितनेसुखदुःखकेदेणेहारे जडचेतनपदार्थहैं ॥ तेसंपूर्णस्वप्नकेपदार्थ मायामयहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! मायामय जेस्वप्नकेपदार्थहैं ॥ तिनोंकाउपादानकारण तथाआश्रय कौनहै? ॥ समाधान ॥ हेजनक! सहिसर्वस्यकर्ता ॥ अर्थयह ॥ स्वप्नद्रष्टापुरुषही स्वप्नकेपदार्थोंकाकर्ता है ॥ याश्रुतिनें मायाविशिष्टस्वप्नद्रष्टापुरुषकूंही स्वप्नकेसर्वपदार्थोंका कर्ताकह्याहै ॥ यातैं मायामयजेस्वप्नकेपदार्थहैं ॥ तिनोंका मायाविशिष्टस्वप्नद्रष्टापुरुषही उपादानकारणहै तथाआश्रयहै ॥ याप्रकारकासिद्धांत श्रुतिप्रमाणकरिकै तथायुक्तियोंकरिकै सिद्धहोवैहै ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाविषे जाग्रत्काप्रपंच भीतरिआवैहै ॥ अथवा स्वप्नद्रष्टापुरुष बाहरिजाइकै जाग्रत्केप्रपंचकूंदेखैहै ॥ यहदोनोंप्रकारकी वादियोंकीप्रक्रिया निष्फलहै ॥ यातैं हेजनक! स्वप्नप्रपंचकेउत्पत्तिस्थितिलयकूंकरणेहारा जो स्वप्नद्रष्टापुरुषकाअज्ञानहै ॥ ताअज्ञानकूंही शास्त्रवेत्तापुरुष मायाशब्दकरिकै तथाअविद्याशब्दकरिकै कथनकरैहैं ॥ और हेजनक! जैसेस्वप्नअवस्थाविषे यहपुरुष अविद्याकरिकै जडचेतनरूपजगत्कूंदेखताहै ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी यहआत्मादेव अविद्याकरिकैही जडचेतनरूपजगत्कूंदेखताहै ॥ यातैं जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे द्रष्टारूपकरिकै आत्माकाभी भेदनहीं ॥ और दृश्यरूपकरिकै अनात्मपदार्थोंकाभी भेदनहीं ॥ यातैं जाग्रत्विषे तथास्वप्नविषे किंचित्मात्रभीविलक्षणतानहीं ॥ किंतु दोनों समानहैं ॥ याकहणेतैं यहअर्थसिद्धभया ॥ वास्तवतैं भयदुःखतैंरहित जोअद्वितीयआत्माहै ॥ सो जाग्रत्विषे तथास्वप्नविषे दुःखकूं तथाभयकूं जोआपणेविषे मानैहै ॥ सो अविद्याकरिकैही आपणेविषेमानैहै ॥ इतनेकरिकै स्वप्नअवस्थाविषे भेददर्शनरूपकार्यद्वारा अविद्याकास्वरूप निरूपणकर्‍या ॥ अब जिसआत्माकेस्वरूपकूंआच्छादनकरिकै अविद्या पूर्वउक्तनानाप्रकारकेदुर्घटकार्योंकूंकरैहै ॥ तिसआत्माकेस्वरूपकूं

सुषुप्तिअवस्थाविषे निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यहजीवात्मा नाडीरूपमार्गकरिकै स्वप्नकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा सुषुप्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहअर्थ पूर्व हमनैं तुमारेप्रति कथनकर्याथा ॥ तिनविषे नाडीरूपमार्गकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य जोस्वप्नहै ॥ तास्वप्नकाविस्तार अब पर्यंत हमनैं तुमारेप्रति कथनकर्या ॥ अब तिसनाडीरूपमार्गकरिकै यहआत्मादेव जिससंप्रसादनामासुषुप्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिससुषुप्तिकेस्वरूपकूं हम तुमारेप्रति कथनकरतेहैं ॥ तू सावधानहोइकै श्रवणकर ॥ हेजनक! पुरीतत्करिकैवेष्टित जोहृदयाकाशहै ॥ ताकेविषे यहइंद्ररूपआत्मा नाडीरूपमार्गकरिकैजावैहै ॥ कैसाहैसोआत्मा? आपणास्वरूपभूत जोस्वप्रकाशबोधहै ॥ तास्वप्रकाशबोधकरिकै आपही बोधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताइंद्ररूपआत्माकूं देवशब्दकरिकै कथनकरैहै ॥ और यहआत्मादेव दूसरेप्रकाशकीअपेक्षाका परित्यागकरिकै आपणेस्वयंज्योतिरूपकरिकै प्रकाशमानहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं राजाशब्दकरिकै कथनकरैहै ॥ ऐसापरमात्मादेव तिसनाडीरूपमार्गकरिकै सुषुप्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तासुषुप्तिविषे मनतैंआदिलैके जितने जाग्रत्स्वप्नकेपदार्थहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और अंधकारकीन्यांई आवरणकरणेहारा जोअज्ञानहै ॥ सोअज्ञानभी सुषुप्तिअवस्थाविषे स्पष्टप्रतीतहोवैनहीं ॥ यद्यपि सुषुप्तिअवस्थाविषे अज्ञानकूंविषयकरणेहारी तथा सुखकूंविषयकरणेहारी अज्ञानकीवृत्ति सिद्धांतविषे अंगीकारकरीहै ॥ तथापि ताअज्ञानकीसूक्ष्मवृत्तिविषे अज्ञानका स्पष्टरूपकरिकै भानहोवैनहीं ॥ किंतु जाग्रत्स्वप्नविषेही मैं अज्ञानीहूं याप्रकारकीअंतःकरणकीवृत्तिविषे अज्ञानका स्पष्टरूपकरिकैभानहोवैहै ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे अज्ञानका स्पष्टरूपकरिकै भानहोवैनहीं ॥ याप्रकारकीसुषुप्तिअवस्थाकूं यहजीवात्मा नाडीरूपमार्गकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ और ताहृदयाकाशविषेस्थित जोसत्यस्वरूप परमात्मादेवहै ॥ ताकेसाथ यहजीवात्मा जबी अभेदभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहजीवात्मा मुक्तपुरुषके समानहोवैहै ॥ काहेतें? जोपुरुष सर्वजगत्कूं आत्मरूपकरिकैजानैहै ॥ तापुरुषकूं शास्त्रविषे मुक्तकहैहैं ॥ याप्रकारका मुक्तपुरुषकालक्षण सुषुप्तजीवात्माविषेभीघटैहै ॥ काहेतें? संपूर्णजगत्का आत्मारूप जोपरमात्मादेवहै ॥ ताकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोइकै यहजीवात्माभी सर्वजगत्कूंआत्मरूपकरिकै जानैहै ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाकूं

प्राप्तभया यहजीवात्मा मुक्तपुरुषकेसमानहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सुषुप्तिकूंप्राप्तभयाजोयहजीवात्माहै ॥ ताकूं मुक्तपुरुषकीसमान
तासंभवैनहीं ॥ काहेतें? मुक्तपुरुषका ज्ञानरूपअग्निकरिकै अज्ञान तथाअज्ञानकाकार्यप्रपंच नष्टहोइजावैहै ॥ और सुषुप्तजीवका
यद्यपि कार्यप्रपंच निवृत्तहोवैहै ॥ तथापि कारणरूपअज्ञान निवृत्तहोवैनहीं ॥ यातें सुषुप्तजीवात्माकी मुक्तपुरुषकेसाथ समानतासं
भवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक! मुक्तपुरुषकी तथासुषुप्तपुरुषकी सर्वअंशतैंसमानता हम अंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु जैसे सर्वदुः
खतैंरहितभूमाआनंदविषे मुक्तपुरुषकीस्थितिहोवैहै ॥ तैसे सर्वदुःखतैंरहितभूमाआनंदविषे सुषुप्तपुरुषकीभीस्थितिहोवैहै ॥ इत
नेअंशकूंग्रहणकरिकै सुषुप्तपुरुषकूं मुक्तपुरुषकेसमान हमनैं कह्याहै ॥ हेशिष्य! इतनेकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं यहअर्थ बोधनक
र्या ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे आत्माकेविद्यमानहुएभी तहां सर्वकार्यप्रपंचका अभावहोवैहै ॥ याकारणतैं सोकार्यप्रपंच आत्माकास्वभा
वनहीं ॥ जोकार्यप्रपंच आत्माकास्वभावहोता तौ सुषुप्तिअवस्थाविषेभी आत्माके सत्‌चित्‌आनंदस्वभावकीन्यांई सोकार्यप्रपंचभी
आत्माविषेरहता ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे कार्यप्रपंचकी प्रतीतिहोवैनहीं ॥ यातें सोकार्यप्रपंच आत्माकास्वभावनहीं ॥ इसीप्रका
र मुक्तिअवस्थाविषे आत्माकेविद्यमानहुएभी कारणरूपअज्ञानरहैनहीं ॥ यातें कारणअज्ञानभी आत्माकास्वभावनहीं ॥ जोकार
णअज्ञान आत्माकास्वभावहोता तौ जैसे मुक्तिअवस्थाविषे सत्‌चित्‌आनंदादिक आत्माकेस्वभाव प्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे कारणअ
ज्ञानभी प्रतीतहोता ॥ परंतु मुक्तिअवस्थाविषे विद्वान्‌पुरुषोंकूं कारणअज्ञान प्रतीतहोतानहीं ॥ यातें सोकारणअज्ञानभी आ
त्माकास्वभावनहीं ॥ और हेजनक! मुक्तपुरुषोंकरिकै तथासुषुप्तपुरुषोंकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य जो स्वप्रकाशआनंदस्वरूपपरमा
त्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेव स्वर्गादिकसर्वअनात्मलोकोंतें उत्कृष्टहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं परमलोक या
नामकरिकैकथनकरैहै ॥ अब लोकशब्दकेअर्थकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकै अधिकारीपुरुष जिसपदा
र्थकूंजानैहै ॥ तापदार्थकानाम लोकहै ॥ याप्रकारका लोकशब्दकाअर्थ आनंदस्वरूपआत्माविषेहीघटैहै ॥ काहेतें? विषयवास
नातेंरहित जेउत्तमअधिकारीहैं ॥ ते इसीजन्मविषे गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकै आनंदस्वरूपआत्माकूं जानैहैं ॥ और उपासकपुरुष

ब्रह्मलोकविषेजाइकै ताआनंदस्वरूपआत्माकूं जानैहैं ॥ यातैं यहआनंदस्वरूपआत्माही परमलोकहै ॥ याआनंदस्वरूपआत्मा
तैंभिन्न जितनेस्वर्गादिकलोकहैं ते मिथ्यारूपहैं ॥ यातैं तिनलोकोंकूं गुरुशास्त्र बोधनकरैंनहीं ॥ और हेजनक! सोआनंदस्व
रूपपरमात्मादेव जाति गुण क्रिया संबंध इत्यादिकसर्वधर्मोंतैं रहितहै ॥ यातैं वेदकेगायत्रीआदिकछंदोंका सोपरमात्मादेव
विषयनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआनंदस्वरूपपरमात्माकूं अतिछंद यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और हेजनक! ताआ
नंदस्वरूप परमात्मादेवविषे भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालविषे पापकर्मोंकासंबंधनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआ
नंदस्वरूपपरमात्मादेवकूं अपहतपाप्मा यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और हेजनक! सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित जोआनंदस्वरूप प
रमात्मादेवहै सो सर्वभेदतैंरहितहै ॥ यातैं तापरमात्माविषे किंचित्मात्रभी तहांभयनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मा
देवकूं अभय यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ हेजनक! सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित जोपरमात्मादेवहै ताकूं भयनहींहोवैहै ॥ याकेविषे
यहकारणहै ॥ भेदज्ञानतैंही जीवोंकूंभयहोवैहै ॥ सो भेदज्ञानरूपभयकाकारण सुषुप्तिअवस्थाविषेहैनहीं ॥ यातैं सुषुप्तिविषे भ
यरूपकार्यकीभी उत्पत्तिहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ द्वितीयाद्वैभयंभवति ॥ अर्थयह ॥ द्वितीयपदार्थतैं जीवोंकूं भयकीप्राप्तिहोवैहै ॥
और हेजनक! आपणेतैंभिन्न जोपदार्थ भयकाकारणहोवैहै ॥ सोपदार्थभी स्वरूपतैंभयकाकारणहोवैनहीं ॥ किंतु दुःखकाकारणरू
पकरिकै जान्याहुआसोपदार्थ भयकाकारणहोवैहै ॥ जैसे दुःखकेकारणरूपकरिकैजान्येहुए सिंहसर्पादिकपदार्थ लोकोंकूंभयकी
प्राप्तिकरैहैं ॥ यातैं दुःखही भयकाकारणहै ॥ सोभयकाकारणदुःख स्वप्रकाशपरमात्मादेवविषेहैनहीं ॥ यातैं दुःखरूपकारणकेअ
भावहुए तापरमात्मादेवविषे भयकीप्राप्ति संभवैनहीं ॥ और हेजनक! सुषुप्तिविषेदुःखनहीं है याकेविषे यहकारणहै ॥ लोकवि
षे देहधारीजीवोंकूं जोदुःखहोवैहै ॥ सो अप्रियपदार्थके विशेषज्ञानतैंहोवैहै ॥ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे सिंहसर्पादिकअप्रियपदा
र्थोंकेज्ञानतैं जीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं अप्रियपदार्थोंकाविशेषज्ञान जीवोंकेदुःखकाकारण सिद्धहोवैहै ॥ सोविशेषज्ञान सु
षुप्तिअवस्थाविषेहैनहीं ॥ यातैं विशेषज्ञानरूपकारणकेअभावहुए कार्यरूपदुःखभी तहां परमात्माविषेसंभवैनहीं ॥ अब याही

अर्थकूं लोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे लोकविषे अत्यंतप्रियस्त्रीकरिकै आलिंगनकऱ्याहुआ जोकामी पुरुषहै ॥ सोकामीपुरुष तिसकालविषे संपूर्णविशेषज्ञानोंतैं रहितहोवैहै ॥ काहेतें? ताकालविषे सोकामीपुरुष धनपुत्रादिकबाह्यपदार्थोंकूंभी जानतानहीं ॥ तथा अंतरकेपदार्थोंकूंभी जानतानहीं ॥ तथा आपणेकूं तथाआपणीप्रियस्त्रीकूंभी विशेषकरिकैजानतानहीं ॥ ताकालविषे सर्वदुःखोंकाअभाव जैसे तुमारेकूं तथाअन्यलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषेभी स्वप्रकाशपरमात्मादेवकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोइकै यहजीवात्मा संपूर्णविशेषज्ञानोंतैंरहितहोवैहै ॥ काहेतें? ताकालविषे यहजीवात्माबाहरिकेभूतभौतिकपदार्थोंकूंभी जानतानहीं ॥ तथा अंतरकेइंद्रियादिकपदार्थोंकूंभीजानतानहीं ॥ तथा सुषुप्तिविषेविद्यमान जोमायारूपअज्ञान है ताकूंभी जानतानहीं ॥ तथा इंद्राणीसहित सोआत्मारूपइंद्र हृदयाकाशकूं प्राप्तहोइकै जिससुखकूं प्राप्तहोवैहै ॥तासुखकूंभी विशेषकरिकै जानतानहीं ॥ इसतैंआदिलेकै सर्वविशेषज्ञानोंकाअभाव सुषुप्तिविषे होवैहै ॥ याकारणतें तहां किंचित्मात्रभी दुःखकी प्राप्ति जीवकूं होवैनहीं ॥ और हेजनक! सुषुप्तिअवस्थाविषे तथा मुक्तिअवस्थाविषे प्राप्तहोणेयोग्य जोआनंदस्वरूप परमात्मादेव है ॥ सोपरमात्मादेवही सर्वजगत्काउपादानकारण है ॥ और लोकविषे उपादानकारणकीप्राप्तितैं ताकेकार्यकीभी अवश्य प्राप्ति होवैहै ॥ जैसे सुवर्णकेप्राप्तहुए ताकेकार्यकुंडलादिकभूषणोंकीभी अवश्यप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे सर्वजगत्का उपादानकारणजोपरमात्मादेवहै ॥ ताकीप्राप्तिहुए संपूर्णपुत्रधनादिकपदार्थ प्राप्तहोवैहैं ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं आप्तकाम यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और हेजनक! जैसे सुवर्णकापरित्यागकरिकै कुंडलादिकभूषण रहैंनहीं ॥ तैसे आनंदस्वरूप परमात्माकूंपरित्यागकरिकै याजीवोंकी धनपुत्रादिकअनात्मपदार्थोंविषे कामनाहोवैनहीं ॥ किंतु आनंदस्वरूपआत्माविषेही सर्वजीवोंकीकामना होवैहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं आत्मकाम यानामकरिकै कथनकरैहै ॥ और हेजनक! वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ आत्माविषे कामनासंभवैनहीं ॥ काहेतें? यालोकविषे जोपदार्थ जीवोंकूं अप्राप्त होवैहै ॥ तापदार्थविषे जीवोंकीकामना होवैहै ॥ प्राप्तपदार्थविषे किसीजीवकीकामनाहोवै

नहीं ॥ और यहआनंदस्वरूप परमात्मादेव सर्वजीवोंकाआत्मारूपहै ॥ यातैं सर्वजीवोंकूं नित्यहीप्राप्तहै ॥ ता नित्यप्राप्तपरमात्मादेवविषे कामनासंभवैनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं अकाम यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और हेजनक! सर्वदुःखोंकाकारण जाकामनाहै ॥ साकामना जिसपुरुषविषे होवैहै ॥ तिसीपुरुषविषे ताकामनाकरिकै शोकादिकविकार उत्पन्नहोवैहैं ॥ और जिसपुरुषविषे किसीपदार्थकीकामनानहींहै ॥ तिसपुरुषविषे शोकादिकविकार उत्पन्नहोवैंनहीं ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मादेव सर्वकामनावोंतैंरहितहोवैहै ॥ यातैं तापरमात्मादेवविषे शोकादिकविकार संभवैंनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं अशोक यानामकरिकै कथनकरैहैं ॥ इतनेकरिकै सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित जोपरमात्मादेवहै ताकेस्वरूपकानिरूपणकऱ्या ॥ अब तिसीपरमात्मादेवविषे संपूर्णअध्यासकेअभावकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! सुषुप्तिकरिकैप्राप्तहोणेयोग्यजो परमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेव अहंममअध्यासतैंरहितहै ॥ तथा पुण्यपापरूपकर्मतैंरहितहै ॥ याकारणतैं तापरमात्मादेवविषे यास्थूलशरीरकाजनक जोपिताहै सोपिता अपिताभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और माता अमाताभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और स्त्रीतैंआदिलैकेजेपुत्रादिकबांधवहैं ॥ तेबांधव अबांधवभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥तात्पर्ययह ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे यहमेरापिताहै यहमेरीमाताहै येमेरेबांधवहैं याप्रकारका ममताअध्यासहोवैनहीं ॥ इतनेकरिकै सुषुप्तिअवस्थाविषे स्थूलशरीरकेसंबंधीजेमातापितादिकपदार्थहैं तिनोंकेअध्यासकाअभाव निरूपणकऱ्या ॥ अब सूक्ष्मशरीरकेसंबंधी जेपदार्थहैं तिनोंकेअध्यासकेअभावकूं आत्माविषे निरूपण करैहैं ॥ हेजनक! सुषुप्तिअवस्थामैं तापरमात्मादेवविषे शब्दस्पर्शादिकविषय अविषयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और वाकादिकइंद्रिय अनिंद्रियभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और वाकादिकइंद्रियोंके जेअग्निआदिकदेवताहैं ॥ तेदेवता अदेवताभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और ऋग्वेदतैंआदिलैकेजेचारिवेदहैं ॥ तेवेद अवेदभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इतनेकरिकै सुषुप्तिअवस्थाविषे आत्माविषे ममत्वअध्यासकाअभाव दिखाया ॥ अब सुषुप्तिअवस्थाविषे अहंतारूपअध्यासकेअभावकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! सुवर्णादिकपदार्थोंकीचोरीकरणेहारा जोस्तेनपुरुषहै ॥ सोस्तेनपुरुष सुषुप्तिअवस्थाविषे स्तेनभावतैंरहितहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥

मैंस्तेनहूं याप्रकारकाअहंअध्यास सुषुप्तिविषेहोवैनहीं ॥ यहरीति आगेभीजानिलेनी ॥ और हेजनक ! यज्ञतथयज्ञकेक रणेहारे जेब्राह्मणक्षत्रियवैश्यहैं ॥ तथा शास्त्रकावेत्ताजोब्राह्मणहै ॥ तथाब्राह्मणभावकूंप्राप्तहोणेहारा जोगर्भहै ॥ इनचारोंकूं शास्त्रविषे भ्रूणनामकरिकैकथन करैहैं ॥ ताभ्रूणकूं जोपुरुष हननकरैहै ॥ तापुरुषकानाम भ्रूणहा है ॥ सोभ्रूणहापुरुष सुषु प्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोइकै भ्रूणहा भावतैंरहितहोवैहै ॥ और हेजनक! ब्राह्मणीस्त्रीविषे शूद्रपुरुषतैं उत्पन्नभयाजोपुत्रहै ताकूंशास्त्र विषेचांडालकहैहैं॥ सोचांडालभी सुषुप्तिकूंप्राप्तहोइकै चांडालभावतैंरहितहोवैहै ॥ और क्षत्रियाणीस्त्रीविषे शूद्रपुरुषतैं जोपुत्र उत्पन्नहोवैहै ॥ ताकूं शास्त्रविषे पुल्कसकहैहैं ॥ अथवा किसीनीचजातिवालेपुरुषकानाम पुल्कसहै ॥ सोपुल्कसभी सुषुप्तिकूं प्राप्तहोइकै पुल्कसभावतैंरहितहोवैहै ॥ और हेजनक! चतुर्थआश्रमकरिकैयुक्त जोसंन्यासीपुरुषहै ॥ सोसंन्यासी सुषुप्तिकूंप्रा प्तहोइकै संन्यासीभावतैंरहितहोवैहै ॥ और वानप्रस्थआश्रमकरिकैयुक्त जोपुरुषहै ॥ सोसुषुप्तिकूंप्राप्तहोइकै वानप्रस्थभावतैंर हितहोवैहै ॥ हेजनक! इहां बहुतविस्तारकरिकैकहणेका कछुप्रयोजननहीं ॥ किंतु येपितामाता मेरे हैं ॥ इसतैंआदिलेके जि तने ममताकूंविषयकरणेहारेअध्यासहैं ॥ तथा मैंस्तेनहूं मैंब्राह्मणहूं मैंसंन्यासीहूं इसतैंआदिलेके जितने अहंताकूंविषय करणेहारेअध्यासहैं ॥ तेसंपूर्णअहंममअध्यास सुषुप्तिविषे आत्मामें हैंनहीं ॥ अब अध्यासरूपकार्यअविद्याविषे तथापुण्यपापरूप कर्मोंविषे अन्वयव्यतिरेककरिकै शोकादिकविकारोंकीकारणताकूं निरूपणकरै हैं ॥ हेजनक! सुषुप्तिअवस्थाविषे परमात्माकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तभयाजो यहजीवात्माहै ॥ ताकेविषे अहंअध्यास तथाममअध्यास यहदोनोंप्रकारकाअध्यासहैनहीं ॥ तथा पुण्य पापरूपकर्मभीनहीं ॥ याकारणतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे सोपरमात्मादेव शोकतैंआदिलेके सर्वअंतःकरणकेधर्मोंतैंरहितहोवै है ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे याजीवात्माविषे अहंममअध्यासविद्यमानहै ॥ तथा पुण्यपापरूपकर्मभी विद्यमा नहैं ॥ यातैं जाग्रत्स्वप्नअवस्थाविषे यहजीवात्मा पुत्रादिकप्रियपदार्थोंकेवियोगतैं तथासिंहसर्पादिकअप्रियपदार्थोंकेसंयोगतैं अनेकप्रकारकेशोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ कैसेहैंतेशोक? ॥ अग्निकेसमान दाहकरणेहारेहैं ॥ ऐसेशोकरूपसमुद्रकूं यहजीवात्मा जाग्रत

स्वप्नविषेतरिसकैनहीं ॥ किंतु सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वविशेषज्ञानोंतें रहितहुआ यहजीवात्मा ताशोकरूपसमुद्रकूंतरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआनंदस्वरूपआत्मा संपूर्णविशेषज्ञानोंतेंरहितहोवैहै यहजोआपनैंकह्या ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? जोपदार्थ ज्ञानतेंरहितहोवैहै ॥ सोपदार्थ जडहोवैहै ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ ज्ञानतेंरहितहैं यातें जडहैं ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे ज्ञानतेंरहितहोणेतें आत्माभी जडहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेजनक! सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीवात्मा सर्व विशेषज्ञानोंतेंरहितहोवैहै ॥ यहजोहमनैंकथनकर्‍याहै ॥ तावचनका तुमनैं यहअभिप्राय नहींजानणा ॥ जोसुषुप्तिअवस्थाविषे आत्मा प्रकाशरूपनहींहै ॥ याकारणतें किसीपदार्थकूंजाणतानहीं ॥ किंतु तावचनका तुमनैं यहअभिप्रायजानणा ॥ सुषुप्तिअव स्थाविषे यहआत्मादेव यद्यपि आपणेस्वरूपभूतज्ञानकरिकैयुक्तहै ॥ तथापि सुषुप्तिअवस्थाविषे आत्मातेंभिन्न कोईद्वैतप्रपंचहैन हीं जिसकूं आत्मादेखे ॥ याअभिप्रायकरिकै सुषुप्तिविषे सर्वविशेषज्ञानोंकाअभाव कथनकर्‍याहै ॥ हेजनक! जैसे आकाश स र्वपदार्थोंविषेव्यापकहै ॥ तैसे श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यापंचज्ञानइंद्रियोंकरिकै उत्पन्नभईजेअंतःकरणकीवृत्तियां तिनवृ त्तियोंविषे प्रतिबिंबरूपकरिकै आत्माकीचैतन्यशक्तिव्यापकहै ॥ तथा वाकादिककर्मइंद्रियोंकेव्यापारोंविषे साचैतन्यशक्ति व्याप कहै ॥ ऐसीआत्माकीचैतन्यशक्ति सुषुप्तिअवस्थाविषेभी विद्यमानहै ॥ यातें सुषुप्तिअवस्थाविषे सोस्वप्रकाशआत्मा घटादिकों कीन्यांई अज्ञानीरूप तथाजडरूप तथाअसत्‌रूप होइसकैनहीं ॥ और हेजनक! जाग्रत्‌अवस्थाविषे यहआत्मादेव श्रोत्रइंद्रि यकरिकै शब्दकूंजानैहै ॥ और त्वक्इंद्रियकरिकै स्पर्शकूंजानैहै ॥ और चक्षुइंद्रियकरिकै रूपकूंजानैहै ॥ और रसनइंद्रियकरि कै रसकूंजानैहै ॥ और घ्राणइंद्रियकरिकै गंधकूंजानैहै ॥ और वाक्इंद्रियकरिकै शब्दकाउच्चारणकरैहै ॥ और हस्तइंद्रियक रिकै पदार्थोंकाग्रहणकरैहै ॥ और पादइंद्रियकरिकै गमनआगमनकरैहै ॥ और उपस्थइंद्रियकरिकै आनंदकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और पायुइंद्रियकरिकै मलादिकोंकापरित्यागकरैहै ॥ और मनकरिकै संकल्पविकल्पकरैहै ॥ और बुद्धिकरिकै निश्चयकरै है ॥ और चित्तकरिकै स्मरणकरैहै ॥ और अहंकारकरिकै अभिमानकरैहै ॥ इसतेंआदिलैके अनेकप्रकारकेव्यापारोंकूं

यहजीवात्मा जाग्रत्विषेकरैहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोइकै सोआत्मादेव तिनव्यापारोंकूंकरतानहीं ॥ याकेविषे यहकार
णहै ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे श्रोत्रादिकइंद्रियोंतैंआदिलैके तथाशब्दादिकविषयोंतैंआदिलैके संपूर्णद्वैतप्रपंचकाअभावहोवैहै ॥ या
कारणतैं सुषुप्तिविषे कोईव्यापार होतानहीं ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे आत्माकाचैतन्यरूपज्ञाननहींहै ॥ याकारणतैं सुषुप्तिवि
षे कोईव्यापारनहींहोता ॥ याप्रकारकेअर्थविषे श्रुतिकातात्पर्यनहीं ॥ और हेजनक! जैसे काष्ठरूपउपाधिकरिकैयुक्तजोअग्नि
है ॥ सोअग्नि दाहकूंकरैहै तथा अन्नादिकोंकूंपकावैहै तथाप्रकाशकरैहै ॥ और सोईअग्निकाष्ठरूपउपाधितैंरहितहुआ तथाभस्म
करिकैआवृतहुआ दाहादिककार्योंकूंकरैनहीं ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषे इंद्रियादिकउपाधियोंकरिकैयुक्तहुआ यहजीवात्मा नाना
प्रकारकेव्यापारोंकूंकरैहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंका तथाशब्दादिकविषयोंका कारणअज्ञानविषेलयहो
वैहै ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे विद्यमानहुआभीसोआत्मादेव किसी व्यापारकूंकरैनहीं ॥ और हेजनक! जैसे अग्निकास्वरूपभू
तजोप्रकाशहै ॥ सोप्रकाश काष्ठोंकेनष्टहुएभी नाशहोवैनहीं ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे विषयइंद्रियरूपउपाधिकेलयहुएभी आ
त्माकास्वरूपभूतज्ञान नाशहोवैनहीं ॥ काहेतैं? लोकविषेजितनेपदार्थहैं तिनपदार्थोंका जोस्वरूपहै ॥ सोस्वरूप तिनपदार्थोंके
विद्यमानहुए कबीभीनाशहोवैनहीं ॥ किंतु तिनपदार्थोंकेनाशहुएही तिनोंकेस्वरूपकानाशहोवैहै ॥ जैसे अग्निकास्वरूपभूत जोउ
ष्णताहै तथाप्रकाशरूपताहै ॥ तास्वरूपका अग्निकेनाशतैंविना किसीउपायकरिकैनाशहोइसकैनहीं ॥ किंतु अग्निकेनाशतैंही ता
केस्वरूपकानाशहोवैहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित जोद्रष्टाआत्माहै सो अविनाशीहै ॥ यातैं ताद्रष्टाआत्माका नाशहोवैन
हीं ॥ द्रष्टाआत्माकेनहींनाशहुए ताद्रष्टाआत्माकास्वरूपभूत जोस्वप्रकाशज्ञानरूपदृष्टिहै ॥ ताकाभी नाशहोवैनहीं ॥ इतनेकरि
कै श्रुतिप्रमाणतैं आत्माकाअविनाशीपणासिद्धकऱ्या ॥ अब तिसीअर्थकूं युक्तिकरिकै स्पष्टकरैहैं ॥ हेजनक! जोवादी आत्माका
भीनाशमानैहै तावादीनैं यहपूछाचाहिये ॥ द्रष्टाआत्माकानाश किसीकारणकरिकैहोवैहै ॥ अथवा किसीकारणतैंविनाही द्रष्टाआ
त्माकानाशहोवैहै ॥ तहां आत्माकानाश किसीकारणकरिकैजन्यहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहि

ये ॥ सोआत्माकानाश आत्मातेंभिन्नहै ॥ अथवा सोआत्माकानाश आत्मस्वरूपहै ॥ तहां सोआत्माकानाश आत्मस्वरूपहै यहदू सरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? आत्माकानाश आत्मरूपहै याकहणेकरिकै यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ जिस आनंदस्वरूपचेतनआत्माकूं वादी आत्माकानाश यानामकरिकै कथनकरैहै ॥ तिसीचेतनआत्माकूं हमसिद्धांती आत्मा यानाम करिकैकथनकरैहैं ॥ यातें वादीका तथाहमारा आत्माकेनाममात्रविषे विवादसिद्धहोवैहै ॥ तिननामोंकेअर्थविषे विवादसिद्धहोवैन हीं ॥ और नाममात्रकेविवादकरिकै अर्थकीहानिहोवैनहीं ॥ जैसे एकहीघटव्यक्तिकूं कोईपुरुष घट यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और कोईपुरुष ताघटव्यक्तिकूं कलश यानामकरिकै कथनकरैहै ॥ तहां घट कलश यादोनोंनामोंकेभेदहुएभी घटव्यक्तिकाभेदहो वैनहीं ॥ तैसे आत्माकानाश तथाआत्मा यादोनोंनामोंकेभेदहुएभी आत्मरूपव्यक्तिकाभेदसंभवैनहीं ॥ और सोआत्माकानाश आत्मातेंभिन्नहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें? सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मरूपआत्मा सत्यरूपहै तथाज्ञानरूपहै तथाअनंतहै याश्रुतिविषे आत्माकूंहीसत्यकह्याहै ॥ तासत्यरूपआत्मातें जोआत्माकानाश तथाताना शकेकारण भिन्नहोवैंगे तौ वंध्यापुत्रकीन्यांई सोआत्माकानाश तथातानाशकाकारण दोनोंअसत्यहोवैंगे ॥ और जोपदार्थअस त्यहोवैहै ॥ तापदार्थकी किसीप्रमाणकरिकै सिद्धिहोवैनहीं ॥ जैसे असत्यवंध्यापुत्रकी किसीप्रमाणकरिकैसिद्धिहोवैनहीं ॥ तैसे असत्यरूप जोआत्माकानाशहै ॥ तथा तानाशकाजोकारणहै ॥ तिनदोनोंकीभी किसीप्रमाणकरिकै सिद्धिहोइसकैनहीं ॥ किंवा सजातीयभेद तथा विजातीयभेद तथास्वगतभेद यातीनप्रकारकेभेदतेंरहित जोअद्वितीयआत्माहै ॥ तासत्यस्वरूपआत्मातेंभि न्नहुआ सोआत्माकानाश असत्यरूपहीहोवैगा ॥ और आत्माकेनाशकेअसत्यहुए तानाशरूपकार्यकरिकै अनुमानकरणेयोग्य जो तानाशकाकारणहै ॥ सोभी असत्यहीहोवैगा ॥ और आत्माकानाश तथातानाशकाकारण यादोनोंकेअसत्यहुए तिनदोनों कूं सिद्धकरणेहारा जोप्रमाणहै ॥ सोभी असत्यहीहोवैगा ॥ काहेतें? प्रमेयरूपवस्तुकीजोसत्ताहै ॥ ताकेअधीनही प्रमाणकीसत्ता होवैहै ॥ प्रमेयरूपवस्तुकेअसत्यहुए ताकाप्रमाणभी असत्यहीहोवैहै ॥ जैसे वंध्यापुत्रकेअसत्यहुए ताकाप्रमाणभी असत्यहीहोवै

है ॥ किंवा वादीनें अंगीकारकन्याजोआत्माकानाश ॥ सोनाश भावरूपहै ॥ अथवा सोनाश अभावरूपहै ॥ तहां सोनाश भाव रूपहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसें यहपूछाचाहिये ॥ सोभावरूप आत्माकानाश घटादिकपदार्थोंकीन्यांई अनित्यहै ॥ अथवा आत्माकीन्यांई नित्यहै ॥ तहां सोभावरूप आत्माकानाश घटादिकोंकीन्यांई अनित्यहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? घटादिकोंकीन्यांई नाशवान् जोआत्माकानाशहै ॥ सो नाश नित्यआत्माकीहानिकरीसकैनहीं ॥ और सोआत्माकानाश आत्माकीन्यांई नित्यहै ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? जैसे आत्मा भावरूपहै तथाचैतन्यरूपहै तथानित्यहै ॥ तैसे सोआत्माकानाशभी भावरूपहै तथाचैतन्यरूपहै तथानित्यहै ॥ यातें ताचैतन्यरूपनाशकरिकै चैतन्यरूपआत्माकीहानिहोवैनहीं ॥ किंवा आत्माकीन्यांई चैतन्यरूपजोआत्माकानाशहै ॥ सोनाश जो कदाचित् चैतन्यरूपआत्माकेनाशकूंकरैगा तौ चैतन्यरूपकरिकै तानाशकेसमानजोआत्माहै ॥ सोआत्माभी तानाशकूं अवश्य नाशकरैगा ॥ आत्माकीन्यांई चैतन्यरूप सोनाश आत्माकानाशकरैहै ॥ और चैतन्यरूपआत्मा तानाशकूं नाशनहींकरैहै ॥ याप्रकारकेअर्थकीसाधक कोईयुक्तिहैनहीं ॥ यातें सोआत्माकानाश भावरूपहै यहवादीकाकहणा अत्यंतअसंगतहै ॥ किंवा सो आत्माकानाशअभावरूपहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसें यहपूछाचाहिये ॥ ताअभावरूपनाशका अनात्मपदार्थ प्रतियोगीहै ॥ अथवा ताअभावरूपनाशका आत्मा प्रतियोगीहै ॥ तहां ताअभावरूपनाशका अनात्मपदार्थ प्रतियोगीहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? जैसे घटकेअभाववालाभूतलहै ॥ याप्रकारकीप्रतीतिकरिकै भूतलविषेस्थितघटाभावकीसिद्धिहोवैहै ॥ ताघटाभावका प्रतियोगीघटहै ॥ पटादिकपदार्थ ताअभावकेप्रतियोगीहैंनहीं ॥ यातें घटाभाववालाभूतलहै याप्रकारकीप्रतीतिकरिकै भूतलविषेघटाभावकेसिद्धहुएभी ताप्रतीतिकरिकै पटादिकोंकाअभाव सिद्धहोवैनहीं ॥ तैसे आत्मातेंभिन्न जेअनात्मपदार्थहैं ॥ तिनोंकेअभावसिद्धहुएभी आत्माकाअभाव सिद्धहोवैनहीं ॥ यातें ताअभावरूपनाशका अनात्मपदार्थ प्रतियोगीहैं यहवादीकाकहणा असंगतहै ॥ किंवा ताअभावरूपनाशका आत्मा प्रतियोगीहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगी

कारकरै ॥ तावादीसें यहपूछाचाहिये ॥ ताअभावरूपनाशका प्रतियोगीजोआत्माहै॥ सोआत्मा एकहै अथवा अनेकहैं? तहांसो अभावरूपनाशकाप्रतियोगीआत्मा एकहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें?जोआत्मा अभावरूपनाशका प्रतियोगीहै॥ सोईहीआत्मा ताअभावरूपनाशकाभी आत्माहै॥ यातें आपणेआत्माकेसाथ सोअभावरूपनाश किसप्रकारविरोधक रैगा? किंतु सोअभावरूपनाश आपणेआत्माकेसाथ विरोधनहींकरैगा ॥ काहेतें? यालोकविषे कोईभीपुरुष आपणेआत्माकेसाथ विरोधकरतानहीं ॥ किंतु आपणेतेंभिन्न जेप्रतिकूलपदार्थहैं तिनोंकेसाथ सर्वलोकविरोधकरैहैं ॥ यातें सोअभावरूपनाश आपणे आत्माकेसाथ विरोधकरैनहीं ॥ और ताअभावरूपनाशका प्रतियोगीजोआत्माहै सोअनेकहै ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकार करै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें? ताअभावरूपनाशकाजोआत्माहै॥ ताआत्माकूं सोअभावरूपनाश निवृत्तकरैनहीं॥ यातें ताआत्मा केनाशकरणेवासते कोईदूसराअभावरूपनाश अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ और सोदूसरा अभावरूपनाशभी आपणेआत्माकानाश करिसकैनहीं ॥ यातें तादूसरे अभावरूपनाशके आत्माकेनाशकरणेवासते कोईतीसरा अभावरूपनाश अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ याप्रकार उत्तर उत्तर अभावरूपनाशोंकीकल्पनाकरणेतें अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोवादी ताअनवस्थादूषणके निवारणवासते उत्तर उत्तर अभावरूपनाशोंकी कल्पनानहींकरैगा॥ तौ आत्माका अभावरूपनाश सिद्धनहींहोवैगा॥ काहेतें? जैसे नीलपीतादिकरूपवाले जेअनेकघटहैं ॥ तिनघटोंविषे एकघटभी जिसभूतलविषेरहैहै ॥ तिसभूतलविषे घटाभाववालाभूतलहै याप्रकारकी सामान्यप्रतीति होवैनहीं ॥ किंतु नीलघटकेअभाववालाभूतलहै ॥ तथा पीतघटकेअभाववालाभूतलहै ॥ याप्रकार की विशेषप्रतीतियां तहांहोवैहैं ॥ जबी ताभूतलविषे संपूर्णघटोंकाअभावहोवैहै॥ तबी घटाभाववालाभूतलहै याप्रकारकी सा मान्यप्रतीतिहोवैहै ॥ तैसे एकआत्माकेभीविद्यमानहुए सामान्यतेंआत्माकाअभावरूपनाश संभवैनहीं ॥ इतनेकरिकै आत्माके नाशविषे सामान्यतें अभावरूपताकाखंडनकऱ्या ॥ अब प्रागभावादिकविशेषरूपकरिकैभी ताकाखंडनकरैहैं ॥ जोवादी आत्मा केनाशकूं अभावरूपमानैहै ॥ तावादीसें यहपूछाचाहिये ॥ सोअभावरूपआत्माकानाश प्रागभावरूप है॥ अथवाअन्योन्यभावरू

पहै ॥ अथवा अत्यंताभावरूपहै ॥ अथवा प्रध्वंसाभावरूपहै? ॥ तहां सोआत्माकाअभावरूपनाश प्रागभावरूपहै ॥ यहप्रथमप
क्ष जोवादीअंगीकारकरै तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ जिसकालविषे सोआत्माकाप्रागभावरूपनाश विद्यमानहै ॥ तिसकाल
विषे सोआत्मा विद्यमानहै ॥ अथवा नहींविद्यमानहै? ॥ तहां प्रथमपक्षकूं जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? आ
त्माकाप्रागभावरूपजोनाशहै ॥ ताप्रागभावकालविषे जो आत्माकास्वरूपविद्यमानहै तौ सोआत्माही आपणेप्रागभावरूपनाशकूं
निवृत्तकरैगा ॥ यातें ताप्रागभावरूपनाशकरिकै आत्माकीकिंचित्मात्रभी हानिहोइसकैनहीं ॥ और सोप्रागभावरूपनाश जि
सकालविषेहै ॥ तिसकालविषे आत्मा विद्यमाननहींहै ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें ? जैसे
लोकविषे परोक्षगालीप्रदानतें किसीपुरुषकीहानिहोवैनहीं ॥ तैसे भिन्नकालविषेस्थित जोप्रागभावहै ॥ ताकरिकै आत्माकी
हानिहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ एककालविषे तथाएकदेशविषे वर्तमानजेपदार्थहैं ॥ तिनपदार्थोंकाही परस्पर साधकबाधकभाव
होवैहै ॥ भिन्नकालविषे तथाभिन्नदेशविषे वर्तमानजेपदार्थहैं ॥ तिनोंका परस्परसाधकबाधकभावहोवैनहीं ॥ जैसे भिन्नदेशविषे
तथाभिन्नकालविषेस्थित जे कुलाल दंड चक्रादिककारणहैं ॥ तिनोंतें भिन्नदेशकालविषेस्थितघटकी उत्पत्ति होवैनहीं ॥ तथाभि
न्नदेशकालविषेस्थितजोअग्निहै ॥ ताअग्निकरिकै भिन्नदेशकालविषेस्थिततृणादिकोंकादाहहोवैनहीं ॥ तैसे भिन्नकालविषेस्थित जो
प्रागभावरूपनाशहै ॥ ताकरिकै भिन्नकालविषेस्थितआत्माकी हानिहोवैनहीं ॥ किंवा जोवादी कार्यकीउत्पत्तितैंपूर्व ताकार्यका
उपादानकारणविषे प्रागभाव अंगीकारकरैहै सोवादीभी प्रागभावकूं कार्यकीउत्पत्तिविषेहीकारणमानैहै ॥ परंतु प्रागभावविषे
कार्यकीनाशरूपता सोवादी अंगीकारकरतानहीं ॥ उलटा कार्यकरिकै ताप्रागभावकानाश मानैहै ॥ जैसे पटकीउत्पत्तितैंपूर्व
तंतुरूपकारणविषे तापटकाप्रागभावरहैहै ॥ और तंतुकीन्यांई सोप्रागभावभी पटकाकारणहोवैहै ॥ और जबी पटरूपकार्यकी
उत्पत्तिहोवैहै ॥ तबी सोप्रागभाव नाशहोइजावैहै ॥ यातें कार्यकेउत्पत्तिकाकारण जोप्रागभावहै ॥ सो कार्यकाविरोधीहोवैनहीं ॥
उलटा कार्यही प्रागभावकाविरोधीहोवैहै ॥ किंवा जिसजिसपदार्थका प्रागभावहोवैहै ॥ तिसतिसपदार्थका जन्महोवैहै ॥ और

जोपदार्थ जन्मतैंरहितहै ॥ तापदार्थका प्रागभावहोवैनहीं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा जन्मतैंरहितहै ॥ यातैं ताआत्माका प्रागभावसंभवैनहीं ॥ और जिसपदार्थकानाशहोवैहै ॥ तिसपदार्थकाही जन्महोवैहै ॥ यातैं जैसे दिनविषेनहींभोजनकरणेहारा जोस्थूलपुरुषहै ॥ ताकीस्थूलता भोजनतैंविना अनुपपन्नहुई ॥ तापुरुषकेरात्रिभोजनकी कल्पनाकरावैहै ॥ तैसे तापदार्थका नाशभी तापदार्थकेजन्मतैंविना अनुपपन्नहुआ तापदार्थकेजन्मकी कल्पनाकरावैहै ॥ और आत्माकानाश किसीप्रमाणकरिकै सिद्धहैनहीं ॥ यातैं तानाशकरिकै आत्माकेजन्मकी कल्पनाहोइसकैनहीं ॥ यातैं आत्माकानाश प्रागभावरूपनहीं ॥ किंवा सो आत्माकानाश अन्योन्याभावरूपहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं? सोआत्माकानाश जोअन्योन्याभावरूपहोवैगा तौ सोअन्योन्याभाव आश्रयरूपआत्माका विरोधीनहींहोवैगा ॥ जैसे घट पटरूपनहींहै ॥ और पट घटरूपनहींहै ॥ याप्रतीतिकाविषय जोअन्योन्याभावहै ॥ सोअन्योन्याभाव घटपटरूपप्रतियोगीअनुयोगीके आश्रितरहै है ॥ घटपटरूपआश्रयकेअविद्यमानहुए ताअन्योन्याभावकीस्थितिसंभवैनहीं ॥ तैसे आत्मारूपआश्रयकेअविद्यमानहुए ता अन्योन्याभावकीस्थितिसंभवैनहीं ॥ यातैं सोअन्योन्याभावरूपआत्माकानाश आत्माकी किंचित्मात्रभी हानिकरिसकैनहीं ॥ किंवा सोआत्माकानाश अत्यंताभावरूपहै यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं? सोआत्माकानाश जोअत्यंताभावरूपहोवैगा तौ नरश्रृंगकीन्यांई आत्माभी नास्तिरूपकरिकैप्रतीतहोवैगा ॥ और नरश्रृंगकीन्यांई नास्तिरूप करिकै आत्माकीप्रतीतिहोतीनहीं ॥ किंतु अहंअस्मि याप्रकार अस्तिरूपकरिकै आत्माकाभान सर्वजीवोंकूंहोवैहै ॥ यातैं सो आत्माकानाश अत्यंताभावरूपनहीं ॥ किंवा सोआत्माकानाश प्रध्वंसाभावरूपहै यहचतुर्थपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं? सोआत्माकानाश प्रध्वंसाभावरूपहै ॥ याचतुर्थपक्षविषे आत्माकीसत्तातैंविना तानाशकीसत्ता दुर्लभहै इसतैं आदिलैकेजेपूर्वदूषणकहेहैं तेसंपूर्णदूषण प्राप्तहोवैहैं ॥ शंका ॥ सोआत्माकानाश अभावरूपहै यापक्षविषे जेपूर्वदूषणकहे हैं ॥ तेदूषण यद्यपि इसचतुर्थपक्षविषेसंभवैहैं ॥ तथापि सोआत्माकानाश भावरूपहै यापक्षविषे जेपूर्वदूषणकहेहैं ॥ तेदूषण याचतुर्थ

पक्षविषे संभवहोइसकैनहीं ॥ समाधान ॥ सोआत्माकानाश भावरूपहै यापक्षविषे जेपूर्वदूषणकहेहैं ॥ तेसंपूर्णदूषण याचतुर्थपक्ष विषे संभवैहैं ॥ काहेतें ? यालोकविषे भावपदार्थतेंभिन्न कोईअभावपदार्थहैनहीं ॥ किंतु अभावपदार्थ भावपदार्थरूपहै ॥ यहवार्ता इसीअध्यायविषे पूर्व विस्तारतेंकहिआयेहैं ॥ जैसे घटकाप्रध्वंसाभाव घटकेउपादानकारणरूपकपालोंतें भिन्ननहीं ॥ किंतु सोघट काध्वंसकपालरूपहै ॥ तैसे तिनकपालोंकाध्वंसभी ताकपालकाउपादानकारणरूपजेकपालिकाहैं तिनोंतेंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोकपा लकाध्वंस कपालिकारूपहै ॥ यहवार्ता केवलयुक्तिकरिकैसिद्धनहीं ॥ किंतु विष्णुपुराणविषे व्यासभगवान्नेंभी यहवार्ताकहीहै ॥ त हां ॥ श्लोक ॥ महीघटत्वंघटतःकपालिका कपालिकाचूर्णरजस्ततोऽणुः॥ अर्थयह ॥ मृत्तिकाकाप्रध्वंसाभाव घटरूपहै ॥ और घट काप्रध्वंसाभाव कपालरूपहै ॥ और कपालोंकाप्रध्वंसाभाव कपालिकारूपहै ॥ और कपालिकाकाप्रध्वंसाभाव चूर्णरूपहै ॥ और चूर्ण काप्रध्वंसाभाव रजरूपहै ॥ और रजकाप्रध्वंसाभाव अणुरूपहै ॥ १ ॥ यातें सोआत्माकानाश भावरूपहै यापक्षविषे जेपूर्व दूष णकहेहैं ॥ तेसंपूर्णदूषण याचतुर्थपक्षविषेभी प्राप्तहोइसकैहैं ॥ इतनेग्रंथकरिकै आत्माकानाश किसीकारणकरिकैजन्यहै याप्रथम पक्षकाखंडनकऱ्या ॥ अब सोआत्माकानाश किसीकारणकरिकैजन्यनहींहै यादूसरेपक्षका खंडनकरैहैं ॥ सोआत्माकानाश किसी कारणकरिकैजन्य नहींहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें ? लोकविषे जिसजिसघटादिकपदार्थोंका नाशहोवैहै ॥ सोनाश मुद्गरप्रहारादिककारणोंकरिकैहीहोवैहै ॥ कारणतेंविना किसीपदार्थकानाशहोवैनहीं ॥ यातें आत्माका नाश किसीकारणकरिकैजन्य नहींहोवैहै ॥ यहवादीकाकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ किंवा सोआत्माकानाश किसीकारणकरिकैजन्य है ॥ याप्रथमपक्षविषे सोआत्माकानाश आत्मातेंभिन्नहै अथवा अभिन्नहै इत्यादिकजेपूर्वविकल्पकरेथे ॥ तथा तिनविकल्पोंविषे जेपूर्वदूषणकहेथे तेसंपूर्णविकल्प तथादूषण याद्वितीयपक्षविषेभी प्राप्तहोइसकैहै ॥ याकारणतेंभी यहद्वितीयपक्ष असंगतहै ॥ किंवा जैसे सिंह मृगकूंमारिकै दूरिजाइकै पुनःतामृगकीतरफदखेहै ॥ जोकदाचित् तहांदूसरामृगभीआयाहोवै तौ तामृगकूंभी हननकरैं ॥ याकानाम सिंहावलोकनन्यायहै ॥ तासिंहावलोकनन्यायकरिकै पुनःप्रथमपक्षविषे दूषणोंकूं निरूपणकरैहैं ॥ सो

आत्माकानाश जिसकारणकरिकैजन्यहै ॥ सोकारण किसीदूसरेकारणकरिकैजन्यहै अथवा अजन्यहै ॥ तहां सोआत्माकेनाशकाका
रण किसीदूसरेकारणकरिकैजन्यहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? जैसे आत्माकेनाशकाकारण दूसरे
कारणकरिकैजन्यहै ॥ तैसे सोदूसराकारणभी किसीतीसरेकारणकरिकैजन्यहोवैगा ॥ और सोतीसराकारण किसीचतुर्थकारणकरि
कैजन्यहोवैगा ॥ याप्रकार उत्तरउत्तर कारणोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादूषणकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और सोआत्माकेनाशकाकारण
किसीकारणकरिकैजन्यनहीं है यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? सोआत्माकेनाशकाकारण जोकिसी
कारणकरिकैजन्यनहींहोवैगा तौ सोआत्माकेनाशकाकारण नित्यहीहोवैगा ॥ और आत्मातैंभिन्न दूसराकोईपदार्थ नित्यहैनहीं ॥
यातैं सोआत्माकेनाशकाकारणभी आत्मास्वरूपहीहोवैगा ॥ और लोकविषे कोईभीजीव आपणेआत्माकेनाशकरतानहीं ॥ यातैं
सोआत्माकेनाशकाकारण आपणेआत्माकूंकिसप्रकारनाशकरैगा ? किंतु नहींनाशकरैगा ॥ यातैं सोआत्माकानाशकाकारणकिसी
कारणकरिकैजन्यनहीं है यहवादीकाकहणा अत्यंतअसंगतहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ! पूर्वउक्तयुक्तियोंकरिकै यद्यपि आत्माकाना
शसंभवैनहीं ॥ तथापि जोजोपदार्थ सत्होवैहै ॥ सोसोपदार्थ क्षणिकहोवैहै ॥ जैसे विद्युत् सत्पदार्थहै यातैं क्षणिकहै ॥ तैसे
आत्माभी सत्पदार्थहै यातैं क्षणिकहै ॥ याअनुमानप्रमाणकरिकै आत्माकेनाशकीसिद्धिहोइसकैहै ॥ समाधान ॥ हेवादी ! आ
त्माकेनाशकूंसिद्धकरणेहारा तथा तानाशकेकारणकूंसिद्धकरणेहारा जोअनुमानप्रमाण तुमनैं कथनकऱ्याहै ॥ ताअनुमानकी प्रमा
णताकालाभरूपसिद्धि तबीहोवै ॥ जबी आत्माकेनाशका तथातानाशकेकारणका सत्वहोवै ॥ प्रमेयपदार्थकीसत्तातैं विना प्रमाण
कीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं ताअनुमानविषे प्रमाणताकीसिद्धिवासते आत्माकेनाशकासत्त्व तथातानाशकेकारणकासत्त्व अवश्यतुमा
रेकूंअंगीकारकरणाहोवैगा ॥ ताकेविषेभी यहविचारकऱ्याचाहिये ॥ ताअनुमानरूपप्रमाणकीप्रवृत्तितैंपूर्वकालविषे आत्माकानाश
रूपप्रमेयकेअविद्यमानहुएभी ताप्रमाणविषे प्रमाणताव्यवहारहोवैहै ॥ अथवा ताप्रमाणकीप्रवृत्तितैंपूर्वकालविषे ताप्रमेयकेविद्य
मानहुएही ताप्रमाणविषे प्रमाणताव्यवहारहोवैहै ॥ तहांप्रमेयकेअविद्यमानहुएभी प्रमाणविषे प्रमाणताव्यवहारहोवैहै यहप्रथम

पक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? प्रमेयपदार्थ तैंविनाभी जोकदाचित् प्रमाणविषे प्रमाणताकीसिद्धिहोवैगी तौ प्रमेयपदार्थकाअंगीकारकरणा व्यर्थहोवैगा ॥ और प्रमेयपदार्थकेविद्यमानहुएही प्रमाणविषे प्रमाणताव्यवहारहोवैहै यहदूसरा पक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ ताप्रमेयपदार्थकीसत्ता प्रमेयपदार्थकेस्वभावतैंसिद्धहै ॥ अथवा ताप्रमेय पदार्थकीसत्ता प्रमाणकेबलतैंसिद्धहै ॥ तहां प्रमेयपदार्थकी स्वभावतैंहीसत्ताहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? प्रमाणतैंविनाही जोप्रमेयकीस्वभावतैंसत्तासिद्धहोवैगी ॥ तौ तुमारेमतविषे प्रमाणकाअंगीकारकरणानिष्फलहोवैगा ॥ काहेतें ? प्रमेयपदार्थकीसिद्धिवासतेही प्रमाणकाअंगीकारहोवैहै ॥ सोप्रमेयपदार्थ स्वभावतैंहीसिद्धहै॥ यातें ताप्रमेयपदार्थकीसि द्धिवासते प्रमाणकाअंगीकारकरणा निष्फलहै ॥ और प्रमाणकेबलतैं प्रमेयपदार्थकेसत्ताकीसिद्धिहोवैहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? जोकदाचित् प्रमाणकेबलतैंही प्रमेयपदार्थकीसिद्धिहोतीहोवै तौ मिथिलापुरीविषे वं ध्याकापुत्र राज्यकरैगा ॥ काहेतें ? जनककादौहित्रहोणेतें प्रसिद्ध जनककेदौहित्रकीन्यांई ॥ याअनुमानरूपशब्दप्रमाणतें वंध्यापु त्रकीभीसिद्धिहोणीचाहिये ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ! वंध्यापुत्र मिथिलापुरीविषेराज्यकरैगा ॥ यहवचन जोप्रमाणरूपहोवै तौ ताव चनकेबलतैं वंध्यापुत्रकीसत्तासिद्धहोवै॥परंतु सोवचन प्रमाणरूपहीनहीं ॥ यातें तावचनकरिकै वंध्यापुत्रकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ समा धान ॥ हेवादी ! शब्दप्रमाणविषे तीनदोषोंकरिकै अप्रमाणता प्राप्तहोवैहै॥ एकतौ मिथ्याअर्थकीबोधकता ॥ और दूसरा किसीअ र्थकूंबोधननहींकरणा ॥ और तीसरा संशयकूंउत्पन्नकरणा ॥ तहां जोवादी प्रमाणकेबलतैं प्रमेयपदार्थकीसत्ता अंगीकारकरैहै ॥ ता वादीकेमतविषे मिथ्याअर्थकीबोधकतारूप प्रथमदूषण संभवैनहीं ॥ और वंध्याकापुत्र मिथिलापुरीविषे राज्यकरैगा याप्रकारकेवा क्यविषे अर्थकीअबोधकता तथा संशयकीजनकता येदोनोंप्रकारकेदूषणहैंनहीं ॥ यातें सोवचनभी तुमारेमतविषे प्रमाणहीहोवैहै ॥ तावचनकरिकै वंध्यापुत्रकीसिद्धिहोणीचाहिये॥ और तावचनकरिकै वंध्याकेपुत्रकीसत्ता सिद्धहोवैनहीं ॥ यातें प्रमाणकेबलतैं प्रमेयप दार्थकीसिद्धिमानणी वादीकूंउचितनहीं॥ किंतु प्रमेयपदार्थकेबलतैंही प्रमाणकीसत्तामानणी उचितहै ॥ यातें जिसप्रमाणकरिकै वादी

आत्माकेनाशकूं तथातानाशकेकारणकूं सिद्ध करैहै ॥ ताप्रमाणकीसत्ताभी तबी सिद्धहोवैगी ॥ जबी आत्माकेनाशरूपप्रमेयकीसत्ता तथा तानाशकेकारणकीसत्ता सिद्धहोवैगी ॥ और सोआत्माकानाश तथा तानाशकाकारण लोकविषे कहांदेख्यानहीं ॥ यातैं आत्माकेनाशकूं तथा तानाशकेकारणकूं सिद्धकरणेहारा वादीकाप्रमाण निष्फलहै ॥ इतनेग्रंथकरिकै आत्माकेनाशविषे सामान्यतैं प्रमाणकीअविषयता दिखाई ॥ अब विशेषकरिकै प्रमाणकीअविषयताकूं निरूपणकरैहैं ॥ जोवादी आत्माकेनाशविषे तथा तानाशकेकारणविषे प्रमाण अंगीकारकरैहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ आत्माकेनाशविषे प्रत्यक्षप्रमाणहै ॥ अथवा अनुमानप्रमाणहै ॥ अथवा शब्दप्रमाणहै? ॥ तहां आत्माकेनाशविषे प्रत्यक्षप्रमाणहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? प्रतियोगीकेज्ञानतैंविना अभावकाज्ञानहोवैनहीं ॥ जैसे घटरूपप्रतियोगीकेज्ञानतैंविना घटाभावकाज्ञानहोवैनहीं ॥ और इहांप्रसंगविषे आत्माकानाशरूपजोअभावहै ॥ ताअभावकाप्रतियोगी आत्माहै ॥ सोआत्मा रूपादिकगुणोंतैंरहितहै ॥ यातैं नेत्रादिकइंद्रियों करिकै आत्माकाप्रत्यक्षज्ञान होइसकैनहीं ॥ और आत्मारूपप्रतियोगीकेअप्रत्यक्षहुए ताकेअभावकाभीप्रत्यक्षहोवैनहीं ॥ काहेतें ? जोपदार्थ इंद्रियजन्यज्ञानकाविषयहोवैहै ॥ तापदार्थकेहीअभावकाप्रत्यक्षहोवैहै ॥ और जोपदार्थ इंद्रियजन्यज्ञानकाविषय नहींहोवैहै ॥ तापदार्थकेअभावकाप्रत्यक्षहोवैनहीं ॥ याकारणतैंही शून्यस्थानविषे पिशाचकीशंकाकरिकै लोक निवासकरतेनहीं ॥ यातैं आत्माकेनाशविषे प्रत्यक्षप्रमाण संभवैनहीं ॥ और आत्माकेनाशविषे अनुमानप्रमाणहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? प्रत्यक्षप्रमाणकीसहायतातैंविना अनुमानप्रमाण किसीअर्थकीसिद्धिकरिसकैनहीं ॥ किंतु प्रत्यक्षप्रमाणकीसहायतातैंही अनुमानप्रमाण किसीपदार्थकीसिद्धिकरैहै ॥ जैसे जिसपुरुषनैं आपणेगृहविषे बहुतवार धूमकाअग्निकेसाथ सहचारदेख्याहै ॥ सोईपुरुष कालपाइकै पर्वतविषेधूमकूंदेखिकै अग्निकाअनुमानकरैहै ॥ और जिसपुरुषनैं धूमकूं तथाअग्निकूं कबीदेख्यानहीं ॥ तापुरुषकूं धूमकेदर्शनतैं अग्निकाअनुमानहोवैनहीं ॥ यारीतिसैं अनुमानप्रमाणकूं प्रत्यक्षप्रमाणकीअपेक्षाहै ॥ और पूर्वउक्तरीतिसैं आत्माकेनाशविषे प्रत्यक्षप्रमाण संभवैनहीं ॥ यातैं अनुमानप्रमाणकरिकैभी आत्माकेनाशकीसिद्धि होइसकैनहीं ॥

और आत्माकेनाशविषे शब्दप्रमाणहै यहतीसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें? श्रुति स्मृति इतिहास पुराण इसतेंआदिलैके जितनाशब्दप्रमाणहै ॥ तिसविषे कहांभी आत्माकानाश कथनकऱ्यानहीं ॥ उलटा ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे तथा ॥ अजोनित्यःशाश्वतोऽयंपुराणो नहन्यतेहन्यमानेशरीरे ॥ इत्यादिकस्मृतिवचनोंविषे आत्माकूं अविनाशीरूपकरिकैही कथनकऱ्याहै ॥ यातें आत्माकेनाशविषे शब्दप्रमाणभीसंभवैनहीं ॥ इतनेग्रंथकरिकै आत्माकेनाशविषे तथातानाशकेकारणविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकाखंडनकऱ्या ॥ अब सर्वलोकोंकेअनुभवकरिकैभी आत्माकेअविनाशीपणेकूं सिद्धकरैहै ॥ हेवादी! सर्वलोकोंकूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवैहै ॥ जोमैं स्वप्नअवस्थाविषे हस्तीकूंदेखताभया ॥ सोईमैं अबी जाग्रत्अवस्थाविषे नीलकमलोंकूंदेखताहूं ॥ तथा नानाप्रकारकेशब्दोंकूंश्रवणकरताहूं ॥ और जोमैं जाग्रत्अवस्थाविषे नीलकमलोंकूंदेखताभया ॥ तथानानाप्रकारकेशब्दोंकूंश्रवणकरताभया ॥ सोईमैं सुषुप्तिअवस्थाविषे किंचित्मात्रभीनहींजाणताभया ॥ याप्रकारका प्रत्यभिज्ञारूपअनुभव सर्वलोकोंकूंहोवैहै ॥ ताअनुभवकरिकै जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनोंअवस्थाविषे आत्माकीनित्यताही सिद्ध होवैहै ॥ इतनेकरिकै जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंविषे आत्माकीनित्यता सिद्धकरी ॥ अब बाल्य यौवन वृद्ध यातीनअवस्थावोंविषे आत्माकीनित्यता सिद्धकरैहै ॥ जोमैं बाल्यअवस्थाविषे आपणेमातापिताकूंदेखताभया ॥ सोईमैं अबी यौवनअवस्थाविषे आपणेस्त्रीपुत्रादिकोंकूंदेखताहूं ॥ और जोमैं यौवनअवस्थाविषे आपणेस्त्रीपुत्रादिकोंकूंदेखताभया ॥ सोईमैं अबीवृद्ध अवस्थाविषे आपणेपौत्रोंकूं तथादौहित्रोंकूं देखताहूं ॥ याप्रकारका प्रत्यभिज्ञारूपअनुभव सर्वलोकोंकूंहोवैहै ॥ ताअनुभवकरिकैबाल्य यौवन वृद्ध यातीनोंअवस्थाविषे आत्माकी नित्यताहीसिद्धहोवैहै ॥ शंका ॥ याप्रकारके प्रत्यभिज्ञारूपअनुभवकरिकै इस जन्मविषे यद्यपि आत्माकाअविनाशीपणा सिद्धहोवैहै ॥ तथापि पूर्वजन्मोंविषे तथाआगेहोणेहारेजन्मोंविषे आत्माकाअविनाशीपणा सिद्धहोइसकैनहीं ॥ **समाधान** ॥ बाल्यअवस्थातेंआदिलैके वृद्धअवस्थापर्यंत जैसे आत्माकाअविनाशीपणाहै ॥ तैसे पूर्वजन्मोंविषे तथाभाविजन्मोंविषेभी आत्माअविनाशीहै ॥ काहेतें? यालोकविषे माताकेउदरतेंबाहरिनिकस्याहुआबालक उसीक्षणविषे

माताकेस्तन्यपानविषेप्रवृत्त होवैहै ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्ध है ॥ और लोकविषे चेतनपुरुषकी जाजाप्रवृत्तिहोवैहै सासाप्रवृत्ति यहपदार्थ हमारेसुखकासाधनहै याप्रकारकेइष्टसाधनताज्ञानकरिकैजन्यहोवैहै ॥ इष्टसाधनताज्ञानतैंविना किसीचेतनपुरुषकी प्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ताभी सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ यातैं जन्मकालविषे माताकेस्तन्यपानविषेजोबालककीप्रवृत्तिहै ॥ साप्रवृत्तिभी यहस्तन्यपान हमारेसुखकासाधनहै याप्रकारके इष्टसाधनताज्ञानतैंविना संभवैनहीं ॥ यातैं ताबालककेप्रवृत्तिरूपहेतुतैं ताबालककेइष्टसाधनताज्ञानकाअनुमानहोवैहै ॥ और जन्मकालविषे यहस्तन्यपान हमारेसुखकासाधनहै याप्रकारकाइष्टसाधनताज्ञान जोबालककूंभयाहै सोज्ञान अनुभवरूपसंभवैनहीं ॥ यातैं सोइष्टसाधनताज्ञान स्मृतिरूपमानणाहोवैगा ॥ और लोकविषे जोजोस्मृतिज्ञानहोवैहै ॥ सोसो पूर्वअनुभवजन्यसंस्कारोंतैंहोवैहै ॥ पूर्वसंस्कारोंतैंविना स्मृतिज्ञानहोवैनहीं ॥ यहवार्ताभी सर्वलोकोंकूंअनुभवसिद्धहै ॥ यातैं ताबालकके स्मृतिरूपइष्टसाधनताकेज्ञानतैं पूर्वलेजन्मकेसंस्कारोंका अनुमानहोवैहै ॥ और तेसंस्कार रूपादिकोंकीन्यांई आश्रयतैंविना स्वतंत्ररहैनहीं ॥ यातैं तिनपूर्वजन्मोंकेसंस्कारोंतैं आश्रयरूपआत्माकाअनुमान होवैहै ॥ याप्रकारकीरीतिसैं पूर्वलेजन्मविषेभी आत्माकाअविनाशीपणा सिद्धहोवैहै ॥ अब भावीजन्मविषे आत्माकाअविनाशीपणा सिद्धकरैहैं ॥ यालोकविषे शास्त्रकेतात्पर्यकूंजानणेहारे जेबुद्धिमान्पुरुषहैं ॥ तिनोंकी यज्ञादिकपुण्यकर्मोंविषे प्रवृत्तिहोवैहै ॥ और ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंतैं निवृत्तिहोवैहै ॥ तहां यज्ञादिककर्मोंकेकरणेकरिकै इसलोकविषेतौ तिनोंकूं किंचित्मात्रभी सुखकीप्राप्तिनहींहोती ॥ उलटा कर्मोंकेकरणेतैं तिनोंकूं क्लेशकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै॥ तिनयज्ञादिकपुण्यकर्मोंकरिकै जन्मांतरविषे तिनोंकूं सुखकीप्राप्तिहोवैगी ॥ याप्रकारकीरीतिसैं भावीजन्मविषेभी आत्माकाअविनाशीपणा सिद्धहोवैहै ॥ इतनेग्रंथकरिकै नानाप्रकारकीयुक्तियोंसैं आत्माकाअविनाशीपणा सिद्धकऱ्या ॥ अब पूर्वलेप्रसंगकूंनिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! पूर्वउक्तरीतिसैं यहद्रष्टाआत्मा अविनाशीहै ॥ यातैं ताअविनाशीआत्माका स्वरूपभूत जाज्ञानरूपदृष्टिहै॥ साभी नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सर्वदा रहैहै ॥ जैसे अग्निकेविद्यमानहुए ताअग्निकास्वरूपभूतउष्णता निवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु अग्निकेनाशहुएही साउष्णतानाशहोवैहै ॥

तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा विनाशतेंरहितहै ॥ यातें ताआत्माकास्वरूपभूतजोज्ञानरूपदृष्टिहै ॥ ताकाभी नाशहोवैनहीं ॥ याकह णेकरिके यहअर्थसिद्धभया ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मादेव द्वैतप्रपंचकूं जोनहींदेखता ॥ याकेविषे आत्माकेस्वरूपभूतज्ञानका अभाव कारणनहीं ॥ किंतु सर्वद्वैतप्रपंचकाअभावही ताकेविषे कारणहै ॥ और हेजनक! जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्था विषे भेदरूप कार्यअविद्या विद्यमानहै ॥ याकारणतें जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे यहद्रष्टापुरुष रूपादिकदृश्यपदा थोंकूं आपणेतेंभिन्नमानेहै ॥ तथा नेत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेतेंभिन्नमानेहै ॥ और आपणेतेंभिन्नरूपकरिकेंकल्पनाकऱ्ये जेनेत्रा दिकइंद्रिय तिनोंकरिकें भिन्नरूपादिकविषयोंकूंदेखेहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे भेदरूपकार्यअविद्याका तथाकामकर्मका अ भावहोवैहै ॥ यातें यहद्रष्टापुरुष सुषुप्तिअवस्थाविषे आपणेस्वरूपतेंभिन्नरूपकरिके कल्पितप्रपंचकूंदेखतानहीं ॥ काहेतें? सु षुप्तिअवस्थाविषे यहसंपूर्णभूतभौतिकप्रपंच जोकदाचित्आत्मातें भिन्नहोवै तौ ताप्रपंचकूंआत्मादेखै ॥ परंतु सुषुप्तिअवस्थावि षे यहसंपूर्णजगत् आत्मातेंभिन्नहोवैनहीं ॥ यातें सुषुप्तिअवस्थाविषे यहद्रष्टापुरुष ताजगत्कूं आपणेतेंभिन्नरूपकरिके नहींदेख ता ॥ हेजनक! सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित जोआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ सो सजातीयभेदतें तथाविजातीयभेदतें तथास्वगतभेदतें रहितहै ॥ याकारणतें सोआत्मादेव एकअद्वितीयरूपहै ॥ और सोईहीआत्मादेव ब्रह्मरूपहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा परलोकरूपहै ॥ और हेजनक! सुषुप्तिअवस्थाविषे जोहमनें तुमारेप्रति आत्माकास्वरूपकथनकऱ्याहै ॥ सोआत्माकास्व रूपही अधिकारीपुरुषोंकूं यज्ञादिकबहिरंगसाधनोंकरिकें प्राप्तहोणेयोग्यहै ॥ तथा विवेक वैराग्य शमादिकषट्संपत्तिमु मुक्षुता श्रवण मनन निदिध्यासन तत्त्वंपदार्थकाशोधन याअष्टअंतरंगसाधनोंकरिके प्राप्तहोणेयोग्यहै ॥ आत्मातेंभिन्न संपूर्णपदार्थ नाशवान्हैं ॥ यातें तेअनात्मपदार्थ अधिकारीपुरुषोंकूंप्राप्तहोणेयोग्यनहीं ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताआनं दस्वरूपआत्माकूं परमगति यानामकरिकेंकथनकरैहै ॥ इहां चित्तकीशुद्धिविषे जिनसाधनोंकाउपयोगहोवैहै तिनसाधनोंका नाम बहिरंगसाधनहै ॥ और श्रवणविषे तथाआत्मज्ञानविषे जिनसाधनोंकाउपयोगहोवैहै तिनसाधनोंकानाम अंतरंगसाधन

है ॥ और हेजनक ! यालोकविषे जितनीसंपदाहै ॥ तिसतें कुबेरकीसंपदा अधिकहै ॥ याकारणतें कुबेरकीसंपदाकूं लोक परम संपदाकहैहैं ॥ तैसे सुषुप्तिविषेस्थित जो आनंदस्वरूपआत्माहै ॥ तिसतें परेकोई अधिकसंपदानहीं ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताआनंदस्वरूपआत्माकूं परमसंपदा यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और हेजनक ! सुषुप्तिअवस्थाविषे जिसआनंदस्वरूपआत्माकूं यहजीव नित्यहीप्राप्तहोवैहै ॥ तिसआनंदस्वरूपआत्मातेंपरे कोईअनात्मपदार्थ दर्शनकरणेयोग्यनहीं ॥ किंतु यहआनंदस्वरूपआत्माही अधिकारीपुरुषोंनें देखणेयोग्यहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताआनंदस्वरूपआत्माकूं परमलोक यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ हेजनक ! याआनंदस्वरूपआत्मातेंभिन्न रूपादिकगुणोंकरिकैयुक्तजेसुंदरस्त्रियांहैं ॥ तेस्त्रियांभी याजीवका परमलोकरूपनहीं ॥ और सर्वगुणोंकरिकैसंपन्न जेआज्ञाकारीपुत्रहैं ॥ तेपुत्रभी याजीवका परमलोकनहीं ॥ और सुंदररूपकरिकैयुक्त तथाअत्यंतकोमल जोआपणाशरीरहै सोभी परमलोकनहीं ॥ और हेजनक ! पर्वतकेसमानहैआकारजिनोंका ऐसेजेहस्ती हैं ॥ तथा वायुकीन्यांई आकाशमार्गविषेगमनकरणेहारेजेअश्वहैं ॥ तथा मेघकीगर्जनाकेसमानहैशब्दजिनोंका ऐसेजेरथहैं ॥ तथाभयतेंरहित अत्यंतशूरवीरजेपदातपुरुषहैं ॥ तथा शंखपदमसंख्याहैधनजिनोंविषे ऐसेजेधनकेकोशहैं ॥ तथा नानाप्रकारकेअन्नकरिकैपूर्ण जे अनेककोठियांहै ॥ तथा स्वर्गकीअप्सरावोंकेसमान जेअनेकवारांगनाहैं ॥ तथा इंद्रकेवैजयंतनामागृहकेसमान जेअनेकगृहहैं ॥ तथा इंद्राणीकेसमानसुंदर जेअनेकस्त्रियांहैं तथा धनधान्यकरिकैपूर्ण जेआज्ञाकारीप्रजाहैं ॥ इसतेंआदिलैके अनेकप्रकारके भोगसाधनोंकरिकै युक्तजोराज्यहै ॥ सोराज्यभी याजीवका परमलोकनहीं ॥ और ताराज्यकेभोगणेकरिकै याजीवकूं जोसुखहोवैहै ॥ सोसुखभी याजीवका परमलोकनहीं ॥ किंतु सुषुप्तिअवस्थाविषे प्राप्तहोणेयोग्य जो अद्वितीयआत्माहै ॥ सोईही याजीवका परमलोकहै ॥ और हेजनक ! सुषुप्तिअवस्थाविषे जिसआनंदस्वरूपआत्माकूं यहजीव प्राप्तहोवैहै ॥ सोआत्मस्वरूपआनंद सर्वलौकिकआनंदोंतेंअधिकहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताअद्वितीयआत्माकूं परमआनंद यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! सर्वलौकिकआनंदोंतें यहआनंदस्वरूपआत्मा किसप्रकारअधिकहै ? ॥ समाधान ॥ हेजनक ! आनंदकासमुद्रजो

यहआत्मादेवहै ॥ ताके लेशमात्रआनंदकूंआश्रयणकरिकै संपूर्णस्थावरजंगमप्राणी जीवनकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इहां लेशशब्दकायहअ
र्थहै ॥ सन्निग्धजेघृतादिकपदार्थहैं तिनोंकूं हस्तविषेग्रहणकरिकै पुनःताघृतादिकोंकेपरित्यागकीयेतैंअनंतर जोहस्तविषे घृतादि
कोंकाअंशरहैहै ताकानामलेशहै ॥ याप्रकारके आत्मानंदकेलेशकूं आश्रयणकरिकै सर्वप्राणी जीवनकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और हेजनक !
जैसे सर्वजलोंकानिधिजोसमुद्रहै ताके लेशमात्रजलकूंग्रहणकरिकै वर्षाकालविषे मेघ अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे आनंदस
मुद्रआत्माके लेशमात्रआनंदकूंआश्रयणकरिकै ब्रह्मातैंआदिलेकेकीटपर्यंत सर्वप्राणी जीवनकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याकारणतैंही श्रुति
भगवती ताआत्माकूं परमआनंदरूपकहैहै ॥ अब आत्माविषे परमानंदरूपता स्पष्टकरणेवासतै प्रथम संसारदशाविषे तापरमा
नंदकीअप्रतीतिविषे कारणकूंनिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! विषयोंकीप्राप्तिकरिकै मनुष्यादिकप्राणियोंकूं जोसुखहोवैहै ॥ तासु
खकूंही लोक आनंदकहैहैं ॥ और स्त्री पुत्र धन अन्न इसतैंआदिलेकै जेनानाप्रकारकेविषयहैं ॥ तिनविषयोंकूं लोक तासुख
काकारणमानैहैं ॥ याकेविषे यहविचारकर्‍याचाहिये ॥ तास्त्रीपुत्रादिकविषयोंविषे तासुखकीउत्पादकतारूपकारणताहै ॥ अथ
वा प्रतिबंधकीनिवृत्तिद्वारा तासुखकीअभिव्यंजकतारूपकारणताहै ॥ तहां आत्मस्वरूपजोनित्यसुखहै ॥ ताकी विषयोंकरिकेउ
त्पत्तिसंभवैनहीं ॥ यातें सुखकीउत्पादकतारूप प्रथमकारणता यद्यपि विषयोंविषेसंभवैनहीं ॥ तथापि स्त्रीपुत्रादिकविषयोंविषेप्र
तिबंधकीनिवृत्तिद्वारा सुखकीअभिव्यंजकतारूप दूसरीकारणतासंभवैहै ॥ काहेतें ? जैसे तृषाकरिकै आतुरकोईमूढपुरुष तृणोंकरि
कैआछादितजोसमीपवर्त्तिजलहै ताकापरित्यागकरिकै मृगतृष्णाकेजलकूं पानकरणेजावैहै ॥ तैसे सुखप्राप्तिकीइच्छावाले जेयहअ
ज्ञानीजीवहैं ॥ तेजीव अज्ञानकरिकैआवृत जोअत्यंतसमीपवर्त्तिआनंदरूपआत्माहै ताकापरित्यागकरिकै बाह्यविषयोंकूंदेखिकै
तिनविषयोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरैहैं ॥ और तिनविषयोंकीइच्छाकरिकै तिनजीवोंविषे दुःखकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और सोइच्छाजन्यदुःख
आत्मारूपआनंदका प्रतिबंधकहै ॥ जैसे मणिमंत्रादिकप्रतिबंधक जबपर्यंत अग्निकेसमीपरहैहै ॥ तबपर्यंत अग्नि दाहकूंकरैनहीं ॥
तैसे जबपर्यंत सोइच्छाजन्यदुःखअंतःकरणविषेविद्यमानहै ॥ तबपर्यंत आत्मस्वरूपआनंदकाभान जीवोंकूंहोवैनहीं ॥ और जैसे

मणिमंत्रादिरूपप्रतिबंधककेनिवृत्तहुएतैंअनंतर सोअग्नि दाहकूंकरैहै ॥ तैसे याजीवकूं जिसाजिसविषयकीइच्छाहोवैहै ॥ सोसो विषय याजीवकूं जबीप्राप्तहोवैहै ॥ तबी ताविषयकीइच्छा निवृत्तहोइजावैहै ॥ परंतु साविषयइच्छाकीनिवृत्ति तबपर्यंतरहैहै ॥ जब पर्यंत तिसीविषयविषे अथवा किसीअन्यविषयविषे याजीवकी पुनःइच्छाउत्पन्ननहीं भई॥पुनःइच्छाकेउत्पन्नहुए सापूर्वइच्छाकीनिवृत्तिरहैनहीं ॥ और विषयकीइच्छारूपकारणकेनाशहुए ताइच्छाजन्यदुःखकाभी नाशहोइजावैहै और जबपर्यंत सोदुःखकाअभाव अंतःकरणविषेरहैहै ॥ तबपर्यंत विक्षेपतैंरहित तथाअज्ञानकरिकैआवृत जोआत्मस्वरूपआनंदहै ताआनंदकीप्रतीति जीवोंकूं होवैहै ॥ तिसीआत्मस्वरूपआनंदकूं अज्ञानीजीव सुखनामकरिकैकथनकरैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ लोकविषे दोप्रकारकाप्रतिबंधकहोवैहै ॥ एक तौ आवरणरूपप्रतिबंधकहोवैहै ॥ जैसे सूर्यकेदर्शनविषे मेघ आवरणरूपप्रतिबंधकहै ॥ और दूसरा विक्षेपरूपप्रतिबंधकहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थोंकेदर्शनविषे नेत्रोंकीअत्यंतचंचलता विक्षेपरूपप्रतिबंधकहै ॥ तैसे इहांप्रसंगविषे विषयकीइच्छारूपकरिकै जोबुद्धिकीचंचलताहै ॥ सोबुद्धिकीचंचलतारूपविक्षेप आत्मस्वरूपआनंदकेभानका प्रतिबंधकहै ॥ और जिसविषयकीइच्छाकरिकै बुद्धि चंचलहोवैहै ॥ ताविषयकी जबी प्राप्तिहोवैहै ॥ तबी चंचलतारूपविक्षेपकापरित्यागकरिकैं साबुद्धि जबपर्यंत दूसरेविषयकीइच्छानहीं भई तबपर्यंत स्थिरहोवैहै॥ तास्थिरबुद्धिविषे अज्ञानकरिकैआवृतजोआनंदस्वरूपआत्माहै ताका स्पष्टरूपकरिकै भानहोवैहै ॥ तिसी अज्ञानकरिकैआवृतआत्मरूपआनंदकूं अज्ञानीमूढपुरुष विषयजन्यसुखकहैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! विषयकेप्राप्तिकालविषे अज्ञानकरिकैआवृत आत्मानंदकाभानहोवैहै यहवार्ता कैसेजानीजावै? ॥ समाधान ॥ हेजनक! विषयकीप्राप्तिकालविषे अज्ञानीजीवोंकूं जोकदाचित् आवरणरहितआत्मानंदकाभानहोता तौ जैसे मुक्तिअवस्थाविषे ज्ञानीपुरुषोंकूं मैंसुखरूपहूं याप्रकारका सुखकाअनुभवहोवैहै ॥ तैसे अज्ञानीजीवोंकूं विषयकीप्राप्तिकालविषे मैंसुखरूपहूं याप्रकारकाअनुभव होणाचाहिये ॥ और मैंसुखरूपहूं याप्रकारकाअनुभव अज्ञानीपुरुषोंकूंहोवैनहीं ॥ किंतु मैंसुखवाल्हूं याप्रकारकाअनुभव अज्ञानीजीवोंकूंहोवैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ विषयकीप्राप्तिकालविषे जोआत्मानंदप्रतीतहोवैहै ॥ सो अज्ञानकरिकैआवृतहुआही प्रतीतहो

वैंहै ॥ एकमुक्तिअवस्थाविषेही आवरणरहितआत्माकाभानहोवैंहै ॥ अब ताविषयजन्यसुखके न्यूनअधिकताकूं दृष्टांतकरिकै स्प
ष्टकरैंहैं ॥ हेजनक! जैसे अंधकारकरिकैयुक्त जोआकाशहै ॥ ताआकाशकेकिसीअंशविषेस्थितहोइकै खद्योतजंतु अथवा मणि
ताआकाशकेजितनेदेशकाअंधकार निवृत्तकरैंहैं ॥ तितनैंदेशविषेही आकाशकास्फुरणहोवैंहै ॥ तिसतैं अधिकआकाशका स्फुरण
होवैनहीं ॥ तैसे आत्मरूपआकाशविषेस्थित जोइच्छाजन्यदुःखरूपअंधकारहै ॥ तिसदुःखरूपअंधकारके जितनीअंशकूं विषय
कीप्राप्तिरूपखद्योतादिक निवृत्तकरैंहैं ॥ तितनेपरिमाणही आत्मरूपसुख विक्षेपतैंरहितहुआप्रतीतहोवैंहै ॥ तिसतैंअधिकसुख
प्रतीतहोवैनहीं ॥ याप्रकार एकहीआत्मरूपसुखकी न्यूनअधिकताप्रतीतहोवैंहै ॥ इतनेकरिकै इच्छाजन्यदुःखरूपप्रतिबंधके अभा
वकेविद्यमानहुए आत्मानंदकेप्रतीतिकीविद्यमानतारूप अन्वयदिखाया ॥ अब तादुःखरूपप्रतिबंधककेअभावकेअविद्यमानहु
ए आत्मानंदकेप्रतीतिकीअविद्यमानतारूपव्यतिरेकका निरूपणकरैंहैं ॥ हेजनक! जैसे अंधकारयुक्तआकाशविषे खद्योतके तथा
मणिके विद्यमानहुए जोआकाशकादेश स्फुरणहोताथा ॥ सोईहीआकाशकादेश खद्योतके तथामणिके निवृत्तहुएतैंअनंतर पुनः
अंधकारकरिकैआवृतहुआ प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे विषयकीप्राप्तिकालविषे ताविषयकीइच्छाजन्यदुःखकेनिवृत्तहुए जोआत्मारूप
आनंद प्रतीतहोताथा ॥ सोआत्मारूपआनंद दूसरेविषयकीइच्छाकेउत्पन्नहुए प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ विषयकी
प्राप्तिकरिकैजन्य जोदुःखाभावहै ॥ सोदुःखाभावही अन्वयव्यतिरेककरिकै आत्मरूपसुखकेप्रतीतिकाकारणहै ॥ शंका ॥ हेभग
वन्! विषयकीप्राप्तितैं इच्छाकीनिवृत्तिहोवैंहै ॥ और इच्छाकेनिवृत्तहुए दुःखकीनिवृत्तिहोवैंहै ॥ और विक्षेपरूपदुःखकेनिवृत्तहु
ए आत्मरूपसुखकीप्रतीतिहोवैंहै॥ याप्रकारकानियम जोआपनैंकह्या ॥ सोनियम यद्यपि स्त्रीपुत्रादिकविषयजन्यसुखविषेघटैहै ॥
तथापि पीनसरोगवालेपुरुषकूं छिक्काकीप्राप्तिकरिकै जोसुखहोवैंहै ॥ तथा उद्गारकीप्राप्तिकरिकैजोसुखहोवैंहै ॥ तासुखविषेसो
नियमघटैनहीं ॥ काहेतैं? आपनैं विषयकेइच्छाकीनिवृत्ति आत्मरूपसुखकेप्रतीतिविषे कारणकहीहै॥ और छिक्काविषे तथाउद्गार
विषे किसीपुरुषकूंइच्छाहोवैनहीं ॥ यातैं इच्छाकीनिवृत्ति तहांसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक! किसीनिमित्तकरिकै जबी छिक्काका

तथाउद्गारका निरोधहोवैहै ॥ तबी ताछिक्काविषे तथाउद्गारविषे लोकोंकीइच्छा प्रसिद्धदेखीतीहै ॥ यातैं छिक्काकीप्राप्तितैं तथाउद्गारकीप्राप्तितैं जोजीवोंकूं सुखहोवैहै ॥ सोसुखभी इच्छाकीनिवृत्तितैंहीहोवैहै ॥ यातैं पूर्वउक्तनियमका किसीस्थलविषेविरोधनहीं ॥ यातैं हेजनक ! यालोकविषे न्यूनअधिकभावकरिकैस्थित जितनावैषयिकसुखहै ॥ सोसुख आत्मस्वरूपआनंदतैं भिन्ननहीं ॥ किंतु सोसुख आत्मानंदरूपहै ॥ याकारणतैंही स्त्रीपुत्रादिकविषयोंकीप्राप्ति ताआत्मरूपसुखकेउत्पत्तिकाकारणनहीं ॥ किंतु साविषयोंकीप्राप्ति इच्छाकीनिवृत्तिद्वारा तासुखकेअभिव्यक्तिकाकारणहै ॥ इतनेकरिकै विषयजन्यसुखविषे आत्मानंदरूपता दिखाई ॥ अब विषयजन्यलौकिकसुखोंविषे सापेक्षअधिकता निरूपणकरिकै आत्मानंदविषे निरपेक्षअधिकता निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष यौवनअवस्थाकरिकैयुक्तहोवै ॥ तथा वज्रकेसमान जिसकाशरीर दृढहोवै ॥ तथा भीमअर्जुनकेसमान जोबलवान्होवै ॥ तथा व्यासभगवान्केसमान जोसर्वशास्त्रकावेत्ताहोवै ॥ तथा नानाप्रकारकेअस्त्रोंकेचलावणेविषे जोमहादेवकेसमानहोवै ॥ तथा अश्विनीकुमारोंकेसमान जोरोगतैंरहितहोवै ॥ तथा अणिमादिकअष्टसिद्धियोंकरिकैयुक्तहोवै ॥ और श्रीकृष्णभगवान्कीसहायतातैं जैसे राजायुधिष्ठिर तथाअर्जुन समृद्धिकूंप्राप्तभयेथे ॥ तैसे शूरवीरोंकीसहायताकरिकै जोसमृद्धिकूं प्राप्तहुआहोवै ॥ तथा सप्तद्वीपोंविषेस्थित जितनेमनुष्यादिकप्राणी हैं ॥ तिनसंपूर्णोंका जोचक्रवर्तीराजाहोवै ॥ तथा लोकविषे जिसका महान्यशहोवै ॥ तथा मनुष्योंकेभोगकेसाधन जे अन्न पान स्त्री पुत्र इत्यादिकपदार्थहैं ॥ तिनसंपूर्णसाधनोंकरिकैयुक्तहोवै ॥ तथा मनुष्यलोककाकोईभीविषय जिसकूं अप्राप्तनहींहोवै ॥ तथा तिनपदार्थोंकेभोगणेकीशक्तिकरिकैसंपन्नहोवै ॥ तथा बहुतजिसकीआयुषहोवै ॥ इसतैंआदिलैके सर्वभोगोंकीसामग्रीकरिकैसंपन्न जोचक्रवर्तीराजाहै ॥ तिसकूंजो आनंदहोवैहै ॥ ताआनंदकेसमान यामनुष्यलोकविषे किसीप्राणीकूंआनंदहोवैनहीं ॥ यातैं अस्मदादिकमनुष्योंकेआनंदकीअपेक्षाकरिकै सोचक्रवर्तीराजाकाआनंद परमआनंदहै ॥ और ताचक्रवर्तीराजाकूं जोविषयजन्यआनंदहोवैहै ॥ तिसआनंदतैंभी शतगुणाअधिकआनंद पितृलोकविषे पितरोंकूंहोवै ॥ यातैं चक्रवर्तीराजाकेआनंदकीअपेक्षाकरिकै सोपितरोंकाआनंद परमआनंदहै ॥ और पितरोंकूंजो

आनंदहोवैहै ॥ तिसआनंदतैंभी शतगुणाअधिकआनंद गंधर्वलोकविषे गंधर्वोंकूंहोवैहै ॥ यातैं पितरोंकेआनंदकीअपेक्षाकरिकै सो गंधर्वोंकाआनंद परमआनंदहै ॥ और गंधर्वोंकूंजोआनंदहोवैहै ॥ तिसआनंदतैंभी शतगुणाअधिकआनंद कर्मदेवतावोंकूंहोवै है ॥ यातैं गंधर्वोंकेआनंदकीअपेक्षाकरिकै कर्मदेवतावोंकाआनंद परमआनंदहै ॥ अग्निहोत्रादिककर्मोंकरिकै जिनपुरुषोंकूं देवभावप्राप्तहोवैहै ॥ तिनोंकानाम कर्मदेवताहै ॥ और तिनकर्मदेवतावोंकूं जोआनंदहोवैहै ॥ तिसआनंदतैंभी शतगुणाअधिकआनंद आजानजदेवतावोंकूंहोवैहै ॥ यातैं कर्मदेवतावोंकेआनंदकीअपेक्षाकरिकै आजानजदेवतावोंकाआनंदपरमआनंदहै॥ सृष्टिकेआदिकालविषे उत्पन्नहुएजेअग्निआदिकदेवताहैं ॥ तिनोंकानाम आजानजदेवताहै ॥ और आजानजदेवतावोंकूं जोआनंदहोवैहै ॥ तिसआनंदतैंभी शतगुणाअधिकआनंद प्रजापतिकेलोकविषेहोवैहै ॥ यातैं आजानजदेवतावोंके आनंदकीअपेक्षाकरिकै प्रजापतिलोककाआनंद परमआनंदहै ॥ और प्रजापतिलोकविषे जोआनंदहोवैहै ॥ तिसआनंदतैंभी शतगुणाअधिकआनंद विराट्भगवान्‌केलोकविषेहोवैहै ॥ यातैं प्रजापतिलोककेआनंदकीअपेक्षाकरिकै विराट्भगवान्‌केलोककाआनंद परमआनंदहै ॥ और विराट्भगवान्‌केलोकविषे जोआनंदहोवैहै ॥ तिसआनंदतैंभी शतगुणाअधिकआनंद ब्रह्मलोकविषेहोवैहै ॥ यातैं विराट्लोककेआनंदकीअपेक्षाकरिकै ब्रह्मलोककाआनंद परमआनंदहै ॥ कैसाहैसोब्रह्मलोक ? स्थूलजगत्‌काकारण जोसूत्रआत्मारूपहिरण्यगर्भहै ताके निवासका स्थानहै ॥ ऐसेब्रह्मलोकविषेस्थित उपासकपुरुषोंकूं जोविषयजन्यआनंदहोवैहै ॥ तिसआनंदतैंपरे कोईविषयजन्यआनंदनहीं ॥ किंतु मनुष्यलोकतैंआदिलेकेविराट्लोकपर्यंत जितनाविषयजन्यआनंदहै ॥ तिनसंपूर्णआनंदोंका हिरण्यगर्भकाआनंद अवधिरूपहै ॥ हेजनक ! मनुष्यलोकतैंआदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत जोविषयजन्यआनंदोंकीन्यूनअधिकता श्रुतिनैंकथनकरीहै ॥ ताश्रुतिभगवतीका यहअभिप्रायहै ॥ विषयजन्यसर्वआनंदोंतैंअधिक जोहिरण्यगर्भकाआनंदहै ॥ ताआनंदकीभी जबपर्यंत यापुरुषकूं इच्छारहैहै ॥ तबपर्यंत तापुरुषकूं आत्मारूपआनंदकाभानहोवैनहीं ॥ यातैं आत्मारूपआनंदकेप्राप्तिकी जिसपुरुषकूंइच्छाहोवै ॥ तिसपुरुषनैं हिरण्यगर्भकेआनंदकीभीइच्छानहींकरणी ॥ याप्रकारकेपरमवैराग्यविषे ताश्रुतिकातात्पर्यहै ॥ इहां मनुष्यलोकतैंआदि

लैके ब्रह्मलोकपर्यंत जितने विषयजन्यआनंदहैं ॥ तथा तिनआनंदोंकेसाधन जेधन स्त्री पुत्र शरीरादिकहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं काकविष्ठाकीन्यांई असारजाणिकै तिनोंकेप्राप्तिकीइच्छानहींकरणी याकानाम परमवैराग्यहै ॥ याप्रकारकापरमवैराग्य जिसपुरुषकूं होवैहै ॥ तिसीपुरुषकूं आनंदस्वरूपआत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ इतनेकरिकै परमवैराग्यकाफल दिखाया अब तावैराग्यकीन्यून अधिकताकरिकै जोजोफलहोवैहै ताकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! मनुष्यलोकतैंआदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत जोजोविषयजन्यआनंदहमनैं तुमारेप्रति कथनकरैहैं ॥ तिनआनंदोंकीप्राप्तिके दोप्रकारकेसाधनहैं ॥ एकतौ कालांतरविषे ताआनंदस्वरूपफलकूंदेणेहारे कर्मउपासनारूपसाधनहै ॥ और दूसरा शीघ्रही ताआनंदस्वरूपफलकूंदेणेहारा साधनहै ॥ सोदूसरासाधनयहहै ॥ जिसपुरुषने विधिपूर्वक गुरुमुखद्वारा वेदोंकेपाठकूं तथावेदोंकेअर्थकूं अध्ययनकऱ्याहै ॥ तथा सर्वपापकर्मोंतैंरहितहै ॥ तथा संपूर्णविषयजन्यसुखकीकामनातैंरहितहै ॥ ऐसे वेदवेत्तानिष्कामपुरुषकूं मनुष्यलोकतैंआदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत संपूर्णआनंद प्राप्तहोवैहैं ॥ परंतु याकेविषे इतनीविशेषताहै ॥ जोवेदवेत्तानिष्पापपुरुष चक्रवर्तीराजाकेविषयजन्यआनंदकूं काकविष्ठाकीन्यांई असारजानिकै ताके प्राप्तिकीइच्छानहींकरैहै॥ परंतु पितृलोकादिकोंकेआनंदकीइच्छाकरैहै ॥ तिसवेदवेत्तानिष्पापपुरुषकूं केवल चक्रवर्तीराजाके आनंदकीही प्राप्तिहोवैहै ॥ पितृलोकादिकोंकेआनंदकीप्राप्तिहोवैनहीं॥इसीप्रकार जोवेदवेत्तानिष्पापपुरुष पितृलोकके आनंदकूं काकविष्ठाकीन्यांई असारजानिकै ताआनंदकेप्राप्तिकीइच्छाकरतानहीं ॥ परंतु गंधर्वलोकादिकोंकेआनंदकीइच्छाकरैहै ॥ तिसवेदवेत्तानिष्पापपुरुषकूं पितृलोकके आनंदकीप्राप्तिहोवैहै ॥ गंधर्वलोकादिकोंकेआनंदकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ याप्रकार ऊपरिकेलोकोंविषेभी जिसजिसलोकके आनंदकूं यहवेदवेत्तानिष्पापपुरुष काकविष्ठाकीन्यांई असारजानिकै ताकेप्राप्तिकीइच्छानहींकरैहै ॥ तिसतिसलोकके आनंदकूं यहवेदवेत्तानिष्पापपुरुष प्राप्तहोवै ॥ और जोवेदवेत्तानिष्पापपुरुष ब्रह्मलोकके आनंदकूंभी काकविष्ठाकीन्यांई असार जानिकै ताकेप्राप्तिकीइच्छानहींकरैहै ॥ सोवेदवेत्तानिष्पापपुरुष ब्रह्मलोकके आनंदकूंभीप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार कर्मउपासनादिक साधनोंतैंविनाही सोवेदवेत्तानिष्कामपुरुष संपूर्णआनंदोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! मनुष्यलोकतैंआदिलैके जितनेवि

षयजन्यआनंद हैं ॥ तिनसंपूर्णआनंदोंतैं ब्रह्मलोकका आनंद अधिक है ॥ सोब्रह्मलोकका आनंदभी जिसआत्मस्वरूपआनंदका एकलेशमात्र है ॥ ऐसाआनंदकासमुद्र जोपरमात्मादेव है ॥ सोआनंदस्वरूपपरमात्मादेव सर्वजीवोंकूं सुषुप्तिअवस्थाविषे प्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहै सोपरमात्माकास्वरूपभूतआनंद ? मनका तथावाणीका अविषय है ॥ तथा न्यूनअधिकतातैंरहित है ॥ याकारणतैंही सोआत्मारूपआनंद ब्रह्मलोकके आनंदतैंभी अधिकहै ॥ याहीअर्थकेबोधनकरणेवासते श्रुतिभगवतीनैं निष्कामपुरुषकूं ब्रह्मलोककेआनंदकीप्राप्तिकहीहै ॥ यातैं हेजनक! सुषुप्तिअवस्थाविषे जोआत्माकास्वरूप हमनैं तुमारेप्रतिकथनकऱ्याहै ॥ सो मनुष्यलोकतैंआदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत संपूर्णआनंदोंतैंअधिकहै ॥ यातैं सोपरमात्मादेवही परमआनंदरूपहै ॥ हेशिष्य! याप्रकारकाउपदेश जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रतिकऱ्या ॥ तबी सोजनकराजा आपणेज्ञानकीअपूर्णताकूं बोधनकरताहुआ पूर्वकीन्यांई पुनःयाप्रकारकावचन कहताभया ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि! यहजोसाधारणविद्या आपनैं हमारेप्रति उपदेशकरीहै ॥ ताविद्याकी गुरुदक्षिणा एकसहस्रगौवां मैं आपकेताईंदेताहूं ॥ तागुरुदक्षिणाकूं आप अंगीकारकरो ॥ तिसतैंअनंतर जिसविद्याकरिकै हमारेकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवै ॥ तिसविद्याकाउपदेश आप हमारेप्रतिकरो ॥ हेशिष्य! जिसअभिप्रायकरिकै जनकराजानैं याप्रकारकावचन याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति कह्याहै ॥ ताजनकराजाकेअभिप्रायकूं तूं श्रवणकर ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि! पूर्वआपनैं हमारेप्रति यहउपदेशकऱ्याथा ॥ वास्तवतैंसंगतैंरहित जोस्वयंज्योतिआत्माहै ॥ सोएकहीस्वयंज्योतिआत्मा अविद्याकेसंबंधतैं जीवभावकूंप्राप्तहोइकै जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंविषे निरंतर भ्रमणकरैहै ॥ तिनअवस्थावोंविषेभी पूर्वलेपुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं यहस्वयंज्योतिआत्मा कबी जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कबी स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताजाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे पूर्वलेपुण्यकर्मकेवशतैं यहस्वयंज्योतिआत्मा सुखकूंभोगै है ॥ और पूर्वलेपापकर्मकेवशतैं दुःखकूंभोगैहै ॥ और जाग्रत्स्वप्नअवस्थाविषे सुखदुःखरूपफलकेदेणेहारे जे पुण्यपापरूपकर्महैं ॥ तेकर्म जबी नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तबी जैसे आकाशविषेभ्रमणकरिकै परिश्रमकूंप्राप्तहुआपक्षी ताआकाश

कापरित्यागकरिकै आपणेगृहविषेआवैहै ॥ तैसे जाग्रत्स्वप्नअवस्थाकेव्यापारोंकरिकै परिश्रमकूंप्राप्तहुआ यहस्वयंज्योतिआत्मा सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेभगवन्! याप्रकार जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंतेंभिन्नकरिकै आत्माकास्वरूप आपनैं पूर्व हमारेप्रति उपदेशकऱ्याथा ॥ सोइतनेज्ञानमात्रकरिकै मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ काहेतें? दूसरेशरीरकीप्राप्तिरूप जोजन्महै ॥ तथा यास्थूलशरीरकापरित्यागरूपजोमरणहै ॥ तथा तिसजन्ममरणकाकारण जेनानाप्रकारकीकामनाहैं ॥ तिनज न्मादिकविकारोंका जोआत्माविषेसंबंधप्रतीतहोवैहै ॥ तिसका नानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिकै आपनैं खंडनकऱ्यानहीं ॥ यातें ज न्ममरणादिकविकारवान् यहसंसारीआत्मा परमआनंदरूप किसप्रकारहोवैगा ॥ हेभगवन्! जन्ममरणादिकसंसारधर्मोंकूं नविष यकरणेहारा जोआत्माकायथार्थज्ञानहै ॥ सोज्ञान जबपर्यंतअधिकारीपुरुषोंकूं नहींप्राप्तहोता ॥ तबपर्यंत अनेकजन्मोंकरिकैभी मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातें हेभगवन्! मोक्षकीप्राप्तिवासते जन्ममरणादिकविकारोंतेंभिन्नकरिकै आत्माकायथार्थस्वरूप ह मारेप्रति आप उपदेशकरो ॥ हेशिष्य! याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिकै सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरता भया ॥ और सोयाज्ञवल्क्यमुनिभी ताजनकराजाकेअभिप्रायकूंजाणिकै भयकूंप्राप्तहोताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जनकराजा केप्रश्नकेउत्तरदेणेविषे याज्ञवल्क्यमुनिकासामर्थ्यनहींथा ॥ याकारणतें सोयाज्ञवल्क्यमुनि भयकूंप्राप्तहोताभया ॥ अथवा किसी दूसरेनिमित्तकरिकै भयकूंप्राप्तहोताभया ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! सूर्यभगवान्कीन्यांई सर्वज्ञजोयाज्ञवल्क्यमुनिहै ॥ ताकेवि षे जनकराजाकेप्रश्नकेउत्तरदेणेकीअसमर्थता संभवैनहीं ॥ किंतु जिसविचारकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि भयकूंप्राप्तभयाहै ॥ सो विचार तू श्रवणकर ॥ चारिवेदोंकूंअध्ययनकरणेहारे अनेकबुद्धिमान्शिष्य हमारेहैं ॥ तिनशिष्योंविषे कोईभी हमाराशिष्य ज नकराजाकेसमान बुद्धिमान्नहीं ॥ काहेतें? जाविद्या अनेकवर्षपर्यंत अध्ययनकरीहुईभी प्राप्तहोइसकैनहीं ॥ तासंपूर्णविद्याकूं य हजनकराजा कामप्रश्नरूपवरकरिकै थोडेकालविषेही लियाचाहेहै ॥ यातें यहजनकराजा अत्यंतबुद्धिमान्है ॥ और याजनकराजा नैं पूर्वकामप्रश्नरूपवर हमारेतेंलियाथा ॥ यातें तासत्यवचनरूपपाशकरिकै याजनकराजानैं हमारेकूं बांध्याहै ॥ यातें सूर्यभगवान्

कीआराधनाकरिकै जाविद्या हमारेकूंप्राप्तभई है ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्या आपणेवचनकेसत्यकरणेवासते याजनकराजाकेप्रति उपदेशकरणीहोवैगी॥ हेशिष्य! याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि भयकूंप्राप्तहोतामया ॥ तिसतैंअनंतर सो याज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति कहतामया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक! बुद्धिआदिकसर्वसंघातकासाक्षी जोस्वयंज्योतिआत्मा हमनैं पूर्व तुमारेप्रति उपदेशकर्‍याथा ॥ सोस्वयंज्योतिआत्मा कदाचित् जाग्रत्अवस्थातैंअनंतर प्रथम सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सुषुप्तितैंपश्चात् स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कदाचित् सोस्वयंज्योतिआत्मा सुषुप्तिकीप्राप्तितैंविनाही प्रथम स्वप्नअवस्थाकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ तास्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा स्त्रीआदिकोंकेसाथ नानाप्रकारका व्यवहारकरैहै ॥ तथा अनेकनाडीरूपमार्गोंविषे भ्रमणकरैहै ॥ तथा पुण्यपापरूपकर्मोंकाफल जोसुखदुःखहै तिसकूं देखैहै ॥ इसतैंआदिलेकै अनेकप्रकारकेव्यवहार स्वप्नविषेकरैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोस्वयंज्योतिआत्मा तास्वप्नअवस्थाकापरित्यागकरिकै तिसीनाडीरूपमार्गद्वारा जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताजाग्रत्अवस्थाविषेभी यहस्वयंज्योतिआत्मा पुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं अनेकप्रकारकेसुखदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! जैसे स्वप्नअवस्थाविषे सुखदुःखरूपफलकेदेणेहारे जेपुण्यपापरूपकर्म हैं ॥ तिनकर्मोंका जबीक्षयहोवैहै ॥ तथा जाग्रत्केभोगदेणेहारेकर्मोंकाप्रादुर्भावहोवैहै ॥ तबी यहजीवात्मा स्वप्नअवस्थाकापरित्यागकरिकै जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यास्थूलशरीरविषे सुखदुःखरूपभोगकेदेणेहारे जेपुण्यपापरूपकर्म हैं ॥ तिनोंकाजबीक्षयहोवैहै ॥ तथा जन्मांतरविषे सुखदुःखरूपभोगकेदेणेहारेकर्मोंका जबीप्रादुर्भावहोवैहै ॥ तबी यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै दूसरे शरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक! यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै जोपरलोकविषेजावैहै ॥ याकेविषे तू दृष्टांतकूंश्रवणकर ॥ जैसे कोईधनीपुरुष आपणेग्रामकापरित्यागकरिकै दूसरेकिसीग्रामविषेजाणेकाउद्यमकरैहै ॥ सोधनीपुरुष आपणेशकटकूं त्यारकरैहै ॥ ताशकटऊपरि नानाप्रकारका अन्न तथाधन तथास्त्री तथापुत्र इसतैंआदिलेकेअनेकप्रकारकीसामग्रीराखैहै ॥ सोधनीपुरुषकाशकट नानाप्रकारकेशब्दोंकूंकरताहुआ शनैःशनैःकरिकै मार्गविषेचालैहै ॥ तैसे मरणकालविषे यास्थूलशरीरकापरित्याग

करिकै परलोककूंजाणेहारा जोयहजीवात्मरूपधनीपुरुषहै ॥ ताजीवात्माका परलोककेजाणेकासाधन यहसूक्ष्मशरीररूपरथहै ॥ कैसाहैसोसूक्ष्मशरीररूपरथ? पुण्यपापरूपसामग्रीकरिकैपूर्णहै ॥ ऐसासूक्ष्मशरीररूपीरथ मरणकालविषेनानाप्रकारकेशब्दोंकूंक रताहुआ परलोकविषेजावैहै ॥ अब सूक्ष्मशरीररूपरथकेशब्दोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जिसकालविषे यहपुरुष मरणकेस मीपप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे याप्रकारकेशब्दोंकूंउच्चारणकरैहै ॥ हे हमारे गुणवान्पुत्र! हे हमारी प्राणोंकेसमानप्रिय नवी नयौवनवालीस्त्री! हे हमारे धन! तेरेकूंबहुतयत्नकरिकै मैंनें इकट्ठाकऱ्याथा ॥ हे हमारे हितकारीबांधव! तुमसंपूर्णोंकापरित्याग करिकै मैंभाग्यहीन एकलाही दूरमार्गविषेजाताहूं ॥ यातें हमारेकूं धिक्कारहै ॥ हेजनक! इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेशब्दोंकूं यहजीवात्मा मरणकालविषे स्त्रीपुत्रादिकोंकेवियोगतैं करैहै ॥ अब बाल्यअवस्थाविषे जेपापकर्मकरैहैं ॥ तिनोंकास्मरणकरिकै यहजीवात्मा मरणकालविषे जिनशब्दोंकूंउच्चारणकरैहै तिनशब्दोंकानिरूपणकरैहैं ॥ बाल्यअवस्थाविषे मैंपापात्माजीव दुर्बलबा लकोंका वाणीकरिकै निरादरकरताभया ॥ तथा तिनबालकोंकूं ताडनकरताभया ॥ और जेदेवता पूजनकरणेकूंयोग्यहैं ॥ तिनदेव तावोंकेमस्तकऊपरि मैंपापात्माजीव पादोंकूंराखताभया ॥ और हमारेहितकेकरणेहारी जाहमारीमाताथी ॥ जिसमातानैं पाषाण कीन्यांई नवमासपर्यंत उदरविषेराख्याथा ॥ ऐसीहितकारीमाताकूंभी मैंकृतघ्न नानाप्रकारके क्लेश देताभया ॥ जैसें लोहेकाक्रकच काष्ठकूंविदारणकरैहै ॥ तैसे ताहितकारीमाताके योनियंत्रकाविदारणकरिकै मैंदुरात्माजीव माताकेउदरतैंबाहिरनिकसताभया ॥ तिसतैंअनंतर बाल्यअवस्थाविषे हमारेविष्ठाकूं तथामूत्रकूं जा माता आपणेहस्तोंऊपरिउठाइकैडारतीभई ॥ और तिसबाल्यअव स्थाविषे अन्नादिकोंकेभक्षणकरणेविषे हमारेकूंअसमर्थदेखिकै आपणेस्तनोंकादुग्धपानकरावतीभई ॥ और भक्षणकरणेयोग्यजे उत्तमपदार्थहैं ॥ तिनोंकूं आपणेउदरविषेनपाइकैभी जा माता तिनउत्तमपदार्थोंकूं हमारेतांईदेतीभई ॥ और बाल्यअवस्थाविषे आपणेहितअहितकेज्ञानतैंरहित जोमैंमूढथा ताकी नानाप्रकारकेउपायोंकरिकै जा माता जलअग्निआदिकोंतैंरक्षाकरतीभई ॥ ऐ सीहितकारीमाताका मैंदुर्बुद्धिकृतघ्न बाल्यअवस्थाविषे राक्षसकीन्यांई अनादरकरताभया ॥ तथा कठोरवचनरूपबाणोंकरिकै ता

मातोकेकणोंकूंभेदनकरताभया ॥ और शत्रुकेवचनकीन्यांई तामाताकेहितकारीवचनोंकूंभी मैंपापात्मा नहींमानताभया ॥ और
ताबाल्यअवस्थाविषे मैंदुर्बुद्धिजीव पितापितामहादिकवृद्धपुरुषोंकूं तथाशास्त्रवेत्ताब्राह्मणोंकूं तथासुहृद्मित्रोंकूं नानाप्रकारकेकठो
रवचनोंकरिकै ताडनकरताभया ॥ और ताबाल्यअवस्थाविषे मैंमूढबुद्धिजीव नहींभक्षणकरणेयोग्यपदार्थोंकूंभी भक्षणकरताभया ॥
और लोकवेदविषेनिंदितजेकर्म हैं तिनोंकूंभी करताभया ॥ इसतें आदिलैके अनेकप्रकारकेनिंदितकर्मोंकूं मैंपापात्माजीव बाल्यअ
वस्थाविषेकरताभया ॥ याकारणतें हमारेकूंधिक्कारहै ॥ हेजनक! इसप्रकार मरणकालविषे बाल्यअवस्थाकेकर्मोंकूं स्मरणकरताहुआ
यहजीवात्मा नानाप्रकारकेशब्दोंकूंकरै है ॥ अब मरणकालविषे यौवनअवस्थाकेनिषिद्धकर्मोंकास्मरणकरिकै जिनशब्दोंकाउच्चारण
यहजीवात्माकरै है ॥ तिनशब्दोंकानिरूपणकरै हैं ॥ जैसे कोईपुरुष चित्तकूंएकाग्रकरिकै विष्णुआदिकदेवतावोंका निरंतरध्यानकरै
है ॥ तैसे यौवनअवस्थाविषे मैंमूढबुद्धिजीव आपणेहृदयरूपीमंदिरविषे आपणीस्त्रीकूं अथवा परस्त्रीकूं स्थापनकरिकै तिनस्त्रियोंका
निरंतरध्यानकरताभया ॥ एकक्षणमात्रभी हमनैं परमेश्वरकाध्यान नहींकऱ्या ॥ और तायौवनअवस्थाविषे हमारेकूं धनादिकपदा
र्थोंकेइकठेकरणेका अत्यंतलोभहोताभया ॥ तालोभकेवशहुआ मैंदुर्बुद्धि ब्राह्मणादिकमहान्पुरुषोंके सुवर्ण पशु गृह क्षेत्र अन्न स्त्री
इसतेंआदिलैके अनेकपदार्थोंकूं हरणकरताभया ॥ और तायौवनअवस्थाविषे मैंमूढबुद्धिजीव धनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरि
कै संपूर्णदिवसोंकूं व्यतीतकरताभया ॥ और स्त्रियोंकेसाथक्रीडाकरिकै संपूर्णरात्रियोंकूं व्यतीतकरताभया ॥ और तायौवनअव
स्थाविषे मैंदुरात्माजीव धनकेलोभकरिकै ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकूं करताभया ॥ जेब्रह्महत्यादिकपापकर्म अनेकजन्मोंविषे हमारे
कूं दुःखकीप्राप्तिकरैंगे ॥ और तायौवनअवस्थाविषे मैंदुरात्माकृतघ्न स्त्रीकेअधीनहोइकै आपणेमातापिताकाभी परित्यागकरताभया ॥
और तायौवनअवस्थाविषे अहंकारकरिकैयुक्तहुआ मैंदुरात्माजीव आपणेपितादिकवृद्धपुरुषोंकाभी उपहासकरताभया ॥ इसतें
आदिलैके अनेकप्रकारकेनिंदितकर्मोंकूं मैंपापात्मा यौवनअवस्थाविषेकरताभया ॥ याकारणतें हमारेकूं धिक्कारहै ॥ हेजनक!
याप्रकार मरणकालविषे यहजीवात्मा यौवनअवस्थाकेनिंदितकर्मोंका स्मरणकरिकै नानाप्रकारकेशब्दोंकूंकरै है ॥ अब मरणका

लविषे यहजीवात्मा वृद्धअवस्थाकेनिंदितकर्मोंका स्मरणकरिकै जिनशब्दोंकूंउच्चारणकरैहै तिनशब्दोंकानिरूपणकरैहैं ॥ वृद्धअवस्थाकूंप्राप्तहोइकै मैंदुरात्माजीव आपणेहस्तपादादिकअंगोंकेचलावणेविषेभी नहींसमर्थहोताभया और तावृद्धअवस्थाविषे काम क्रोध लोभ मोह येचारों वृद्धिकूंप्राप्तहोतेभये ॥ और तावृद्धअवस्थाविषे कामकरिकैआतुरहुआ मैंमूढबुद्धि स्त्रीकीअप्राप्तिकरिकै भीदुःखीहोताभया ॥ और स्त्रीकेप्राप्तहुएभी ताकेभोगणेकीअसामर्थ्यकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तावृद्धअवस्थाविषे मैंदुरात्माजीवकूं क्रोधरूपीअग्निकरिकै तथालोभादिकविकारोंकरिकै जोजोदुःख प्राप्तभयाहै ॥ तादुःखकूं मैंजडतैंविना कौनचेतनपुरुष सहनकरिसकैगा? कैसेहैंतेदुःख? जिनदुःखोंविषे एकएकदुःखभी ब्रह्महत्याजन्यदुःखकेसमानहै ॥ याप्रकारकेअनेकदुःखोंकूं मैंपापात्मा वृद्धअवस्थाविषे प्राप्तभयाहूं ॥ और तावृद्धअवस्थाविषे हमारेहृदयकमलविषे काम क्रोध लोभ मोह येचारों अत्यंतवृद्धिकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तिनकामक्रोधादिकोंकरिकै यहहमाराहृदयकमल कर्कटीफलकीन्यांई भेदनकूं नहींप्राप्तहोताभया ॥ यहहमारेकूं बहुतआश्चर्यहोवैहै ॥ और जेस्त्रीपुत्रादिकबांधव हमारेकूं प्राणोंकेसमान प्रियजाणतेथे ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव हमारेकूं वृद्धहुआदेखिकै श्वानकीन्यांई हमारानिरादरकरतेभये ॥ और काम क्रोध लोभ मोह याचारों बाल्यअवस्थातैंलेके वृद्धअवस्थापर्यंत हमारेविषेवर्तमानहैं ॥ और जैसे घृतकेपावणेकरिकै प्रज्वलितअग्निकीशांतिहोवैनहीं उलटा घृतकेपावणेतैं अग्निकीवृद्धिहोतीजावैहै ॥ तैसे विषयोंकीप्राप्तिकरिकै कामादिकोंकीशांतिहोवैनहीं ॥ उलटा विषयोंकीप्राप्तितैं दिनदिनविषे कामादिकोंकीवृद्धिहोतीजावैहै ॥ एकआत्माकाविचार कामादिकोंकेशांतिकाउपायथा ॥ तिसआत्मविचारकूं हमनैं संपादनकर्यानहीं ॥ किंतु बाल्यअवस्थातैं लेके मरणपर्यंत आपणेशरीरकेपालनकरणेवासते तथास्त्रीपुत्रादिककुटुंबकेपालनकरणेवासते अनेकप्रकारकेपापकर्मोंकूं मैंदुरात्मा करताभया ॥ यातैं हमारेकूंधिक्कारहै ॥ हेजनक! याप्रकार मरणकालविषे वृद्धअवस्थाकेनिंदितकर्मोंकूंस्मरणकरिकै यहजीवात्मा अनेकप्रकारकेशब्दोंकूं उच्चारणकरैहै ॥ अब मरणकालकेदुःखकाअनुभवकरिकै यहजीवात्मा जिनशब्दोंकूंउच्चारणकरैहै तिनशब्दोंका निरूपणकरैहैं ॥ जैसे मलीनजलकरिकैपूर्णजोतलावहै ॥ तातलावविषेस्थितजोमत्स्यहै ॥ सोमत्स्य मृत्तिकाकरिकेआवृतहोवैहै ॥ तथा स

र्यकीतप्तकिरणोंकरिकै तपायमानहोवैहै ऐसीमत्स्यकूं जैसे धीवरपुरुष लेणेवासतेआवैहै तैसे स्त्रीपुत्रादिरूपमलीनजलकरिकैपूर्ण जो यहगृहरूपतलावहै तिसविषे मैंदुरात्मारूपमत्स्य स्थितहूं ॥ कैसाहूंमैं? अध्यात्म अधिदैव अधिभूत यातीनप्रकारकेदुःखरूपसूर्यकरिकैतपायमानहूं ॥ तथा कामक्रोधादिरूपमृत्तिकाकरिकैआवृतहूं ॥ याप्रकारके मत्स्यरूपमैंदीनकूं मृत्युरूपधीवर लेणेवासतेआयाहै और जैसे पशुवोंकेहिंसास्थानविषे कोईनिर्दयपुरुष लोहेकेक्रकचकरिकै पशुकेअंगोंकूंछेदनकरैहै ॥ तैसे दयातैंरहितयहमृत्यु हमारेअंगोंकाछेदनकरैहै ॥ ताकरिकै हमारेकूंबहुतकष्टहोवैहै ॥ और यामरणकालविषे अनेकतीक्ष्णसूचियोंकरिकै हमारेसर्वअंगोंकूं कौनवेधनकरताहै? तिसपुरुषकूं मैं जाणिसकतानहीं ॥ और यामरणकालविषे हमारेहस्तपादभी काष्ठकेसमानजडहोइगयेहैं ॥ और जैसे दुष्टअश्व रथवाहिपुरुषके वशवर्तीहोवैनहीं ॥ तैसे इसकालविषे मनसहितनेत्रादिकसंपूर्णइंद्रिय हमारे वशवर्तीहैंनहीं ॥ याकारणतैं अंधपुरुषकीन्यांई किसीपदार्थकूं मैं देखतानहीं ॥ तथा बधिरपुरुषकीन्यांई किसीशब्दकूं मैं श्रवणकरतानहीं ॥ और इसकालविषे हमाराकंठ कफधातुने निरोधकरिलियाहै ॥ और जठराग्निभी आपणेस्थानकूंछोडिके हमारेशरीरकूंदाहकरताहुआ ऊपरिचल्याआवैहै ॥ और प्राणवायुभी आपणेस्थानकूंछोडिके हमारेशरीरकूं शोषणकरताहुआ ऊपरिचल्याआवैहै ॥ और जैसे यालोकविषे कोटीवृश्चिक क्रोधवान्होइके किसीपुरुषकेशरीरविषे वारंवार दंशकरै ॥ ताकरिकै जैसीपीडा तापुरुषकूंहोवैहै ॥ तैसीहीपीडा इसकालविषे हमारेकूंहोतीहै ॥ हेजनक! इसतैंआदिलेकेअनेकप्रकारकेशब्दोंकूं यहजीवात्मा मरणकालविषेकरैहै ॥ और तामरणकालविषे वाणीकेनिरोधहुएभी यहजीवात्मा घुरघुर याप्रकारकेशब्दोंकूंकरैहै ॥ याप्रकारकेअनेकशब्दोंकूंकरताहुआ यहसूक्ष्मशरीररूपरथ यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै परलोककूं गमनकरैहै ॥ और यास्थूलशरीररूपपुरीतैं एकवारबाहरिनिकस्याहुआ यहसूक्ष्मशरीररूपरथ पुनःतास्थूलशरीरविषेआवैनहीं ॥ और हेजनक! जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीवात्माहृदयदेशविषेस्थितपरमात्मादेवकेसाथ तादात्म्यभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे मरणकालविषेभी यहजीवात्मा हृदयदेशविषेस्थितपरमात्माकेसाथ तादात्म्यभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थितहुआ यहजीवात्मा जाग्रत्स्वप्नकेसंपू

र्णविशेषज्ञानोंतैं रहितहोवैहै ॥ तैसे मरणकालविषेभी यहजीवात्मा संपूर्णविशेषज्ञानोंतैंरहितहोवैहै ॥ याकारणतैंही यहजीवा
त्मा मरणकालविषे परमात्माकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीवात्मा परमात्माकेसाथ
तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइकै जाग्रत्स्वप्नकेसर्वविक्षेपोंतैं रहितहोवैहै ॥ तैसे मरणकालविषेभी यहजीवात्मा परमात्माकेसाथ तादा
त्म्यभावकूंप्राप्तहोइकै पूर्वउक्तसंपूर्णशब्दोंका परित्यागकरैहै ॥ तिसतैंअनंतर ऊर्ध्वश्वासोंकरिकै आपणेदीनभावकूंबोधनकरताहु
आ यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै पूर्वलेपुण्यपापरूपकर्मोंकेअनुसार दूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अव पूर्वशरीरका
परित्यागकरिकै याजीवात्माकूं जिसप्रकारतैं दूसरेशरीरकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ताप्रकारका निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! मरणकालविषे
बहुतस्थानोंविषेतौ यहरीतिहै ॥ प्रथम यहजीवात्मा दुर्बलताकूंप्राप्तहोइकै पश्चात् ऊर्ध्वश्वासोंकरिकैउपलक्षितजोदीनदशाहैता
दीनदशाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और सादुर्बलता याजीवकूं दोप्रकारकेकारणोंतैंहोवैहै ॥ एकतौ जरावस्थाकरिकै सादुर्बलताहोवैहै ॥
और दूसरा व्याधिकरिकै सोदुर्बलताहोवैहै ॥ तादुर्बलताकरिकै दीनदशाकूंप्राप्तहुआयहजीव मरणकालविषेऊर्ध्वश्वासलेवैहै ॥
हेजनक ! याप्रकारकीदशाकूंप्राप्तहुआ यहजीवात्मा जिसप्रकार यास्थूलशरीरकापरित्यागकरैहै ताप्रकारकूं तू श्रवणकर ॥ जैसे
यालोकविषे आम्रकाफल तथा उदुंबरकाफल तथा पिप्पलकाफल जबी परिपक्कहोवैहै ॥ तबी तत्कालही तावृक्षकीशाखातैं
टूटिके भूमिविषेपडेहै ॥ अनेकप्रकारकेउपायोंकरिकैभी परिपक्कफलकी वृक्षविषेस्थितिहोइसकैनहीं ॥ तैसे यास्थूलशरीरकेआ
रंभकरणेहारे जेपुण्यपापरूपप्रारब्धकर्महैं ॥ तिनोंका जबी भोगकरिकैक्षयहोवैहै ॥ तबी यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकाशीघ्रही
परित्यागकरैहै ॥ और हेजनक ! जैसे नीचेपतनतैंपूर्वआम्रादिकफलोंका वृक्षकेसाथ तादात्म्यसंबंधहोवैहै ॥ तैसे मरणतैंपूर्व या
जीवात्माकाभी यास्थूलशरीरकेसाथ तादात्म्यसंबंधहोवैहै ॥ याकारणतैंही मैंब्राह्मणहूं मैंक्षत्रियहूं मैंस्थूलहूं याप्रकारकीप्रतीति
लोकोंकूंहोवैहै ॥ और जैसे नीचेपतनतैंपूर्व वृक्षकेसाथ फलोंकातादात्म्यहुएभी परिपक्कअवस्थाविषे तिनफलोंका वृक्षकेसाथ अव
श्यवियोगहोवैहै ॥ तैसे मरणतैंपूर्व याजीवात्माका स्थूलशरीरकेसाथ तादात्म्यसंबंधहुएभी मरणकालविषे याजीवात्माका तास्थू

लशरीरकेसाथ अवश्यवियोगहोवैहै ॥ और हेजनक ! आम्रादिकवृक्षकीशाखातैं नीचेपतनहुआ आम्रादिकफल किसीआधारतैंवि
ना रहैनहीं ॥ किंतु नीचेपतनतैंपूर्व तेआम्रादिकफल वृक्षकेआश्रितरहै हैं ॥ और नीचेपतनतैंपश्चात् तेआम्रादिकफल भूमिआदिकों
केआश्रितरहै हैं ॥ तैसे यहसूक्ष्मशरीरभी यास्थूलशरीरकेत्यागतैंअनंतर किसीआधारतैंविनारहैनहीं ॥ किंतु मरणतैंपूर्व सोसूक्ष्म
शरीर यास्थूलशरीरकेआश्रितरहै है ॥ और यास्थूलशरीरकेत्यागतैंअनंतर सोसूक्ष्मशरीर किसीदूसरेस्थूलशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥
तहां यहसूक्ष्मशरीरविशिष्टजीवात्मा जिसप्रकार पूर्वलेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा जिसजातिवालेपूर्वशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसी
प्रकार तथा तिसीजातिवालेदूसरेशरीरकूं यहजीवात्मा प्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक ! जिसजातिवालापूर्वशरीरहोवैहै ॥ तिसजातिवाले
दूसरेशरीरकूं यहजीवात्मा प्राप्तहोवैहै ॥ यहअर्थ जोश्रुतिभगवतीनैंकथनकर्याहै ॥ ताका यहअभिप्रायहै ॥ पूर्वलेपुण्यपापरूप
कर्मकेवशतैं यहजीवात्मा कदाचित् पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालेशरीरकूंभी प्राप्तहोवैहै ॥ परंतु यहजीवात्मा पूर्वलेशरीरकेसमा
नजातिवालेशरीरकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकेनियमविषे श्रुतिभगवतीकातात्पर्यनहीं ॥ किंतु एकशरीरकापरित्यागकरिकै यह
जीवात्मा दूसरेशरीरकूंअवश्यप्राप्तहोवै है ॥ याप्रकारकेनियमविषे श्रुतिभगवतीकातात्पर्य है ॥ सोदूसराशरीर पूर्वलेशरीरकेसमा
नजातिवालाहोवै ॥ अथवा पूर्वलेशरीरतैंविलक्षणहोवै ॥ याकेविषे कोईनियमनहीं ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं ॥
हेजनक ! प्रारब्धकर्मकेक्षयहुएतैंअनंतर यद्यपि यास्थूलशरीरकानाशहोवैहै ॥ तथापि जबपर्यंत याजीवकूं अद्वितीयब्रह्मकासाक्षा
त्कारनहींभया तबपर्यंत सूक्ष्मशरीरकानाशहोवैनहीं ॥ एकब्रह्मज्ञानकरिकैही सूक्ष्मशरीरकानाशहोवैहै ॥ और सोसूक्ष्मशरीरस्थू
लशरीरतैंविना स्थितहोवैनहीं ॥ किंतु स्थूलशरीरकूंआश्रयणकरिकैही यासूक्ष्मशरीरकीस्थितिहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ आत्मज्ञा
नतैंपूर्व संसारदशाविषे यासूक्ष्मशरीरकी दोप्रकारकीअवस्थाहोवैहै ॥ एकतौ कारणअज्ञानविषे संस्काररूपकरिकैस्थितिरूपअ
वस्थाहोवैहै ॥ और दूसरी स्थूलशरीरकूंआश्रयणकरिकैस्थितिरूपअवस्थाहोवैहै ॥ तहां सुषुप्तिकालविषे यहसूक्ष्मशरीरकारण
अज्ञानविषे संस्काररूपकरिकैरहै है ॥ और सुषुप्तितैंभिन्नकालविषे यहसूक्ष्मशरीर स्थूलशरीरकूंआश्रयणकरिकैरहै है ॥ यादोनों

प्रकारकीअवस्थाविषे किसीएकअवस्थाकूंआश्रयणकरिकैही यहसूक्ष्मशरीररहैहै ॥ और हेजनक! पापकर्मकेवशतें यहसूक्ष्मशरीर
नरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तानरकविषे यहसूक्ष्मशरीर नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और पुण्यकर्मकेवशतें यहसूक्ष्मशरीर स्वर्गा
दिकलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा उपासनाकेबलतें यहसूक्ष्मशरीर ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तास्वर्गादिकलोकोंविषे तथाब्रह्मलोकविषे
यहसूक्ष्मशरीर नानाप्रकारकेसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोनरकविषेदुःखकाभोग तथास्वर्गविषे सुखकाभोग तथाब्रह्मलोकविषेसुखका
भोग स्थूलशरीरतेंविना संभवैनहीं ॥ यातें स्वर्गविषे तथाब्रह्मलोकविषे तथानरकविषे यहसूक्ष्मशरीर स्थूलशरीरकूंआश्रयणक
रिकैही सुखदुःखकूंभोगेहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! आपने सूक्ष्मशरीरकी दोअवस्थाकही सोसंभवैनहीं ॥ किंतु सूक्ष्मशरीरकीतीन
अवस्थासंभवैहैं ॥ काहेतें ? जबी यहसूक्ष्मशरीर यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै परलोकविषेजावैहै ॥ तिसकालविषे यहसूक्ष्मश
रीर संस्काररूपकरिकैकारणअज्ञानविषेरहैनहीं ॥ तथा तिसकालविषे यहसूक्ष्मशरीर स्थूलशरीरकूंभीआश्रयणकरैनहीं ॥ यातें
तिसकालविषे यासूक्ष्मशरीरकीतीसरीअवस्थाअंगीकारकरीचाहिये ॥ समाधान ॥ हेजनक! यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकैयह
सूक्ष्मशरीर जबपर्यंत दूसरेस्थूलशरीरकूंनहींप्राप्तभया ॥ तबपर्यंत यासूक्ष्मशरीरकी जोकदाचित् तीसरीअवस्थासंभवतीहोवैहै ॥
तौ सातीसरीअवस्था निःशंकहोवै ॥ याकेविषे हमाराकोईआग्रहनहीं ॥ परंतु सुखदुःखकेभोगकेवासते जोसूक्ष्मशरीरकीस्थितिहै
सास्थिति स्थूलशरीरतेंविनाहोवैनहीं ॥ याप्रकारकेअर्थविषे हमारातात्पर्यहै ॥ और हेजनक! यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै
यहसूक्ष्मशरीर जबपर्यंत दूसरेस्थूलशरीरकूंनहींप्राप्तहोता ॥ तबपर्यंत मध्यकालविषे यहसूक्ष्मशरीर किसीसुखदुःखकूंभोगता
नहीं ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे गृध्रपक्षी मांसकूंमुखविषेग्रहणकरिकै आकाशविषेउडै है ॥ सोगृध्रपक्षी यद्यपि ताकालविषेभी मांसके
भक्षणकरणेविषेसमर्थहै ॥ तथापि आकाशविषेचलताहुआ सोगृध्र तामांसकूंभक्षणकरैनहीं ॥ किंतु किसीवृक्षादिकोंविषेस्थितहो
इकै सोगृध्र तामांसकूंभक्षणकरैहै ॥ तैसे यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै यहसूक्ष्मशरीर जबपर्यंत दूसरेस्थूलशरीरकूं नहींग्रह
णकरता ॥ तबपर्यंत यहसूक्ष्मशरीर किसीपदार्थकेभोगणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ याकारणतें सोसूक्ष्मशरीर यास्थूलशरीरकापरि

त्यागकरिकै सुखदुःखकेभोगणेवासते दूसरेस्थूलशरीरकूं अवश्यप्राप्तहोवैहै ॥ सोदूसराशरीर पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालाहो वै ॥ अथवा पूर्वलेशरीरतैंविलक्षणहोवै ॥ याकेविषेकोईनियमनहीं ॥ काहेतें? नरकविषे केवलपापकर्मकेदुःखरूपफलकूंभोगताहुआ जोजीवहै ॥ ताजीवका जबीकोई पूर्वलापुण्यपापरूपमिश्रितकर्म उदयहोवैहै ॥ तबी सोनरकवासीजीव नरककेस्थूलशरीरकापरि त्यागकरिकै यापृथिवीलोकविषे मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तानरकवासीजीवका जबीकोईपूर्वला केवलपुण्यकर्मउदयहोवैहै ॥ तबी सोनरकवासीजीव तानरककेस्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै स्वर्गविषे देवताशरीरकूंभी प्राप्तहोवैहै ॥ और स्वर्गविषेस्थित जेकर्मदेवताहैं ॥ तिनदेवतावोंका जबी कोईपूर्वलापुण्यपापरूपमिश्रितकर्मउदयहोवैहै ॥ तबी तेदेवता स्वर्गकेस्थूलशरीरकापरित्या गकरिकै याभूमिलोकविषे मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तामनुष्यशरीरकेपरित्यागकालविषे जबीकोईपूर्वलापापकर्मउदयहो वैहै ॥ तबी तेदेवता तामनुष्यशरीरकापरित्यागकरिकै नरककेशरीरकूंभीप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकार स्थूलशरीरकेपरित्यागकालविषे जोजोपुण्यकर्म अथवा पापकर्म याजीवकाउदयहोवैहै ॥ तिसपुण्यपापकर्मकेअनुसार याजीवकूंदूसरेशरीरकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं याजीवकूं पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालाहीदूसराशरीर प्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम संभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! यहजीव अल्पज्ञहै ॥ यातैं यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै इसजातिवालेशरीरकूं मैं प्राप्तहोवैंगा याप्रकारकाज्ञान जीवविषेसंभवैनहीं ॥ और पुण्यपापरूपकर्म जडहैं ॥ यातैं तिनोंविषेभी उत्तरशरीरकाज्ञानसंभवैनहीं ॥ यातैं याजीवकूं दूसरेशरीरकीप्राप्ति कौनकरावताहै? समाधान ॥ हेजनक! जैसे यालोकविषे दीर्घकाष्ठकेसाथ सूत्रकरिकैबांध्येहुए जेकाष्ठकेमर्कटहैं ॥ तिनमर्कटोंकेसाथ बालकक्रीडा करैहै ॥ तहां सोबालक जिसमर्कटकेक्रीडाकरावणेकीइच्छाकरैहै ॥ तिसमर्कटकेसूत्रकूंआकर्षणकरैहै ॥ तासूत्रकेआकर्षणकरिकै तेमर्कट नानाप्रकारकीक्रीडाकरैहैं ॥ तैसे यहअनादिसंसार दीर्घकाष्ठकेसमानहै ॥ और स्थावरजंगमरूपसर्वप्राणी मर्कटकेसमान हैं ॥ और जीवोंकेपुण्यपापरूपकर्म सूत्रकेसमानहैं ॥ और मायाविशिष्टअंतर्यामीपरमात्मा बालककेसमानहै ॥ यातैं सोपरमात्मा रूपबालक क्रीडाकरणेवासते जिसजिसप्राणीरूपमर्कटके पुण्यपापकर्मरूपसूत्रकूंआकर्षणकरैहै ॥ सोसोजीवरूपमर्कट यासंसार

विषे नानाप्रकारकीचेष्टाकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ याजीवनैं पूर्वजन्मोंविषे अनेकपुण्यपापरूपकर्मकरेहैं ॥ तिनकर्मोंकाज्ञान याअल्पज्ञ जीवकूंहैनहीं ॥ किंतु सर्वज्ञपरमात्माकूंही जीवकेपुण्यपापकाज्ञानहै ॥ और यहजीव जिसकालविषे यास्थूलशरीरकापरित्यागकरै है ॥ तिसकालविषे सोपरमात्मादेव ताजीवकेजिसपुण्यपापरूपकर्मोंकूं सुखदुःखरूपफलकेदेणेवासतै सन्मुखकरैहै ॥ तिसीपुण्यपापरूपकर्मकेअनुसार यहपराधीनजीव दूसरेजन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं पुण्यपापरूपकर्मकेकरणेविषे तथापुण्यपापकर्मकेसुखदुःखरूपफलकेभोगणेविषे तथादूसरेशरीरकीप्राप्तिविषे यहजीव स्वतंत्रनहीं ॥ किंतु अंतर्यामीपरमात्माही ताकेविषेकारणहै ॥ सोपरमात्मादेव याजीवकेपुण्यपापकर्मकेअनुसार जैसेजैसेशरीरकूंरचैहै ॥ तिसीतिसीशरीरकूंयहजीव प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालेदूसरेशरीरकूं यहजीव प्राप्तहोवैहै याप्रकारकानियम संभवैनहीं ॥ किंवाअत्यंतअल्पतृणशरीरविषे स्थितहुआयहजीव पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं ब्रह्माकेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और अत्यंतउत्कृष्टब्रह्माकेशरीरविषे स्थितहुआयहजीव पूर्वलेकिसीपापकर्मकेप्रभावतैं तृणशरीरकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ जैसे पिशाचशरीरोंका तथामेघोंका वायुकेअधीन गमनहोवैहै ॥ स्वतंत्रगमनहोवैनहीं ॥ तैसे ब्रह्मलोकविषे तथास्वर्गलोकविषे तथाभूमिलोकविषे याजीवका जोगमनहोवैहै सो स्वतंत्रहोवैनहीं ॥ किंतु परमेश्वरने सुखदुःखरूपफलकेदेणेवासतै सन्मुखकऱ्येजेपुण्यपापरूपकर्म तिनकर्मोंकेअनुसारही याजीवका परलोकविषेगमनहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! यहजीव पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालेदूसरेशरीरकूं जोनप्राप्तहोताहोवै तौ श्रुतिनैं याजीवकूं पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालेदूसरेशरीरकीप्राप्ति किसवासतेकथनकरीहै? ॥ समाधान ॥ हेजनक! पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालेदूसरेशरीरकूंही यहजीव प्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकेनियमविषे श्रुतिभगवतीका तात्पर्यनहीं ॥ किंतु यहजीवात्मा जिसकालविषे यास्थूलशरीरकापरित्यागकरैहै ॥ तिसकालविषे जोकदाचित् तिसीशरीरकेसमानजातिवालेदूसरेशरीरकीप्राप्तिकरणेहारेकर्मोंकाउद्भवहोवैहै तौ यहजीवात्मा पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतैं तिसीजातिवालेशरीरकूं पुनःप्राप्तहोवैहै ॥ और जबी पूर्वशरीरतैंविलक्षणशरीरकीप्राप्तिकरणेहारेकर्मोंकाउद्भवहोवैहै ॥ तबी यहजीवात्मा पूर्वलेशरीरतैं

विलक्षणशरीरकूंभी प्राप्तहोवैहै ॥ परंतु एकशरीरकापरित्यागकरिकै यहजीवात्मा दूसरेशरीरकूंअवश्यप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारके नियमविषे श्रुतिभगवतीकातात्पर्यहै ॥ और हेजनक! जोकदाचित् याजीवकूं नियमकरिकै पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालाही दूसराशरीर प्राप्तहोताहोवै तौ पुण्यकेसुखरूपफलकूं तथापापकेदुःखरूपफलकूं बोधनकरणेहाराजोशास्त्रहै ॥ सोशास्त्र अप्रमाणरूपहोवैगा ॥ काहेतें? अग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरणेहारा जोपुरुषहै ॥ तिसकूं स्वर्गविषे देवताशरीरकीप्राप्ति शास्त्रनैंकथनकरीहै ॥ और उपासनाकूंकरणेहाराजोपुरुषहै ॥ तिसकूं ब्रह्मलोककीप्राप्ति शास्त्रनैंकथनकरीहै ॥ और ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकूंकरणेहाराजोपुरुषहै ॥ तिसकूं श्वानादिकनीचशरीरोंकीप्राप्ति शास्त्रनैंकथनकरीहै ॥ इसतैंआदिलैकेसंपूर्ण विधिनिषेधरूपशास्त्र अप्रमाणरूपहोवैंगे ॥ किंवा यहसंसार प्रवाहरूपकरिकैअनादिहै ॥ ताअनादिसंसारविषे कोईभीपदार्थ सर्वतैंप्रथमहैनहीं ॥ यातैं याजीवका सर्वशरीरोंतैं प्रथम किसजातिवालाशरीरथा? याप्रकार वादीकीआशंकाहुए याजीवका सर्वशरीरोंतैंप्रथम किसजातिवालाशरीरथा याप्रकारकेउत्तरदेणेविषे कोईभीविद्वान्समर्थनहीं ॥ किंवा जोवादी वर्तमानशरीरोंकूंदेखिकरिकै याप्रकारकानियमकरै ॥ याजीवका मनुष्यत्वजातिवालाशरीरहीयोग्यहै ॥ और याजीवका पशुत्वजातिवालाशरीरहीयोग्यहै तौ पूर्वशरीरोंकेअज्ञानतैं यासंसारविषे सादिपणाही प्राप्तहोवैगा ॥ और संसारविषेसादिपणा कोईभीआस्तिकवादी अंगीकारकरैनहीं ॥ किंतु चार्वाकनास्तिकतैंभिन्न संपूर्णआस्तिकवादी संसारकूं प्रवाहरूपकरिकै अनादिहीमानैंहैं ॥ यातैं याजीवकूं नियमकरिकै पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालादूही सराशरीर प्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकाजोनियमअंगीकारकरियै तौ संसारविषेअनादिपणानहींरहेगा ॥ अब संसारकूंसादिमानणेहारे जेचार्वाकनास्तिकहैं ॥ तिनोंकेमतकूं खंडनकरणेवासते नानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिकै संसारविषेअनादिपणा सिद्धकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंविषे यहजाग्रत्अवस्था सर्वजाग्रत्अवस्थावोंतैं प्रथमहै ॥ और यहस्वप्नअवस्था सर्वस्वप्नअवस्थावोंतैं प्रथमहै ॥ और यहसुषुप्तिअवस्था सर्वसुषुप्तिअवस्थावोंतैं प्रथमहै ॥ याप्रकारकानियमकऱ्याजावैनहीं ॥ तैसे याजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय यातीनोंविषेभी यहजगत्कीउत्पत्ति सर्वउत्पत्तियोंतैं प्रथमहै ॥ और यह

जगत्कीस्थिति सर्वस्थितियोंतें प्रथमहै ॥ और यहजगत्कालय सर्वलयोंतें प्रथमहै ॥ याप्रकारकानियम कन्याजावैनहीं ॥ यातें जगत्की उत्पत्ति स्थिति लय येतीनों प्रवाहरूपकरिकैअनादिहैं ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे कूपादिकोंतें जलकेनिकासणेकासाधन जोघटीयंत्रहै ॥ ताकेविषेस्थितजोदीर्घरज्जुहै ॥ तारज्जुकेसाथ बांध्येहुए जेमृत्तिकाकेघटीनामापात्रविशेषहैं ॥ तिनपात्रोंविषे यहमृत्ति काकापात्र सर्वपात्रोंतेंप्रथमहै याप्रकारकानियम कन्याजावैनहीं ॥ तैसे यहसंसार संपूर्णसंसारोंतेंप्रथमहै याप्रकारकानियम किसी सैंकन्याजावैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं सत्कार्यवादकीरीतिसें स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैंहैं ॥ हेजनक! यालोकविषे जितनेकार्यरूपघ टादिकपदार्थहैं ॥ तेघटादिकपदार्थ प्रथम उत्पत्तिकूंप्राप्तहोइकैही पश्चात् वर्तमानतारूपस्थितिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याप्रकारकानियमसं भवैनहीं ॥ काहेतें? उत्पत्तितैंपूर्व अत्यंतअसत्घटादिकपदार्थोंकी जोउत्पत्ति अंगीकारकरिये तौ अत्यंतअसत्वंध्यापुत्रकी तथानर शृंगकीभी उत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ यातें उत्पत्तितैंपूर्व घटादिकपदार्थ अत्यंतअसत्नहीं ॥ किंतु आपणीउत्पत्तितैंपूर्व तेघटादिकपदार्थ आपणेमृत्तिकादिकउपादानकारणोंविषे सूक्ष्मरूपकरिकैस्थितहोवैहैं ॥ यातें यहसिद्धभया ॥ स्थितिकूंप्राप्तहुएतेघटादिकपदार्थ उ त्पत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और उत्पत्तिकूंप्राप्तहुए तेघटादिकपदार्थ पुनःस्थितिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और उत्पत्तिस्थितितैंअनंतर तेघटादि कपदार्थ नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और नाशतैंअनंतर तेघटादिकपदार्थ पुनःकारणरूपकरिकैस्थितहोवैहैं ॥ और कारणरूपकरिकैस्थि तहुए तेघटादिकपदार्थ पुनःउत्पत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याप्रकार घटादिकपदार्थोंके उत्पत्तिका तथास्थितिका तथालयका पुनःपुनः व्यवहारहोवैहै ॥ यातें घटादिकपदार्थोंकी उत्पत्ति स्थिति लय येतीनों घटीयंत्रकीन्यांई प्रवाहरूपकरिकैअनादीहैं ॥ किंवा जो चार्वाकनास्तिक संसारकूंसादिमानेहै ॥ ताचार्वाकवादीसें यहपूछाचाहिये ॥ जिसकालविषे संसारकासादिपणाहै ॥ तिसकालकूं जोतूजाणताहोवै तौ सोकाल हमारेप्रतिकहो ॥ तहां सोचार्वाकवादी जोयाप्रकारकाउत्तरकहै ॥ जिसकालविषे यासंसारमैं सा दिपणाहै ॥ तिसकालकूं हम जाणतेनहीं तौ सोचार्वाकवादी यासंसारविषे सादिपणा किसप्रकार सिद्धकरिसकैगा? यातें यह संसार सादिहै याप्रकारकी तावादीकीप्रतिज्ञा मिथ्याहोवैगी ॥ और सोचार्वाकवादी जोअत्यंतदुराग्रहकरिकै याप्रकारकावचन

कहे ॥ जिसकालविषे यहहमाराशरीर उत्पन्नभयाथा ॥ तिसकालविषे यासंसारमैं सादिपणाहै ॥ सोयहवादीकाकहणा संभवैन
हीं ॥ काहेतें? ताचार्वाकवादीसें यहपूछाचाहिये ॥ यहतुमारास्थूलशरीर पितामातादिककारणोंतैंविनाही उत्पन्नभया अथवा
पितामातादिककारणोंकरिकै उत्पन्नभयाथा ?॥ तहां जोवादी प्रथमपक्ष अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? यालोकविषे जोजोप
दार्थ कार्यरूपहोवैंहै ॥ सोसोपदार्थ किसीकारणकरिकैहीजन्यहोवैंहै ॥ जैसे कार्यरूपघटादिकपदार्थ मृत्तिकाकुलालादिककारणोंक
रिकैजन्यहैं ॥ तैसे कार्यरूपयहस्थूलशरीरभी किसीकारणकरिकैहीजन्यहोवैगा ॥ यातें मातापितादिककारणोंतैंविनाही यहहमा
राशरीर उत्पन्नभयाहै यहवादीकाकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ और यहहमाराशरीर मातापितादिककारणोंतैं उत्पन्नभयाहै यहदूसरापक्ष
क्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तौभी वादीकेप्रतिज्ञाकीहानीहोवैगी ॥ काहेतें? कार्यकीउत्पत्तितें नियमकरिकैजोपूर्वहोवैहै ॥ ताकूंबुद्धि
मान्पुरुष कारणकहेहैं ॥ यातें ताचार्वाकवादीनैं आपणेशरीरकीउत्पत्तितैंपूर्व मातापितादिककारणोंकीविद्यमानता अवश्यअंगीका
रकरणीहोवैगी ॥ यातें हमारेशरीरकीउत्पत्तिकालविषे संसारमैंसादिपणाहै यहवादीकीप्रतिज्ञा मिथ्याहोवैगी ॥ और सोचार्वाक
वादी जोयाप्रकारकहै ॥ हमारीअपेक्षाकरिकै यहसंसारसादिहै॥ हमारे पितापितामहादिकोंकीअपेक्षाकरिकै यहसंसार सादिनहीं ॥
सो याप्रकारकाकहणाभी तावादीकासंभवैनहीं ॥ काहेतें? ताचार्वाकवादीसें यहपूछाचाहिये ॥ तेरेमतविषे संसारकाक्यास्वरूप
है ? तहां सोचार्वाकवादी जोयहउत्तरकहै ॥ यहस्थूलशरीरहीसंसारहै ॥ ताचार्वाकवादीकेप्रति यहकह्याचाहिये ॥ हेवादी! यह
स्थूलशरीररूपसंसार सादीहै यहांजोतू कहताहै तिसका हम खंडनकरतेनहीं ॥ किंतु यास्थूलशरीरविषे हमभी सादिपणा अंगी
कारकरतेहैं॥ परंतु यहशरीर सर्वशरीरोंतैंप्रथमहै याप्रकार हमअंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु याशरीरतैंपूर्वकी अनेकशरीरोंतैं होतेभ
येहैं ॥ याप्रकार हम अंगीकारकरतेहैं ॥ तिसहमारेसिद्धांतकूं तुमनैं खंडनकऱ्यानहीं ॥ किंवा सोचार्वाकवादी यहहमाराशरीर
सर्वशरीरोंतैंप्रथमहै याप्रकारजोकथनकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ हेवादी! तू देहस्वरूपहै अथवा देहतैंभिन्नहै? ॥ तहां
देहस्वरूप मैंहूं यहप्रथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? जैसे लोकविषे कोईपुरुष याप्रकारकावचनकहै ॥

यहहमारागृह इसगृहतैं प्रथमहै ॥ याप्रकारकेवचनतैं गृहवालेपुरुषका गृहतैंभेदहीप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे यहहमाराशरीरसर्वश
रीरोंतैंप्रथमहै याप्रकारकेवादीकेवचनतैं शरीरतैंवादीकेस्वरूपकाभेदहीसिद्धहोवैहै ॥ यातैं मैं शरीररूपहूं यहवादीकाकहणा अ
त्यंत विरुद्धहै ॥ और याशरीरतैं मैं भिन्नहूं यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ जबी यहतुमारा
शरीर नहीं उत्पन्नभयाथा ॥ तबी तू किसस्थानविषेस्थितथा ॥ और याशरीरकीउत्पत्तितैंअनंतर याशरीरविषे किसप्रयोजनवा
सते तू आयाथा? तहां सोचार्वाकवादी जोयाप्रकारकहै ॥ याशरीरकीउत्पत्तितैंपूर्व मैं किसीदूसरेशरीरविषेस्थितनहींथा? किंतु
आपणेआत्माविषेस्थितथा ॥ और याशरीरकीउत्पत्तितैंअनंतर मैं याशरीरविषे यदृच्छाकरिकैआयाहूं ॥ इहां नहींचिंतनकरेहुएपदा
र्थकीप्राप्तिकरणेहाराजोस्वभावहै ताकानाम यदृच्छाहै ॥ याप्रकारकथनकरणेहारा जोचार्वाकवादीहै ॥ तासैं यहपूछाचाहिये ॥ इस
शरीरकीप्राप्तितैंपूर्व तू दूसरेशरीरकूं किसवासतेनहींप्राप्तभया? और जिसयदृच्छाकरिकै तू इसशरीरकूंप्राप्तभयाहै ॥ सायदृच्छा
इसशरीरतैंपूर्व तुमारेविषे किसवासतेनहींहुई? इनदोनोंप्रश्नोंकाउत्तर तू हमारेप्रतिकहु ॥ याप्रकार सिद्धांतीकरिकैपूछाहुआ सो
चार्वाक किंचित्मात्रभी उत्तरकहणेविषे समर्थनहींहोवैगा ॥ किंवा सोचार्वाकवादी पूर्वशरीरोंकेअभावकीसिद्धिकरणेवासते जो
याप्रकारकाअनुमानप्रमाण अंगीकारकरै ॥ जोकदाचित् इसशरीरतैंपूर्व हमारेकूं दूसरेशरीरोंकीप्राप्तिहुईहोती तौ इसवर्तमान
शरीरविषे तिनपूर्वशरीरोंकास्मरण हमारेकूंहोता ॥ परंतु इसवर्तमानशरीरविषे हमारेकूं पूर्वशरीरोंकास्मरणहोतानहीं ॥ यातैं यह
जान्याजावैहै ॥ इसशरीरतैंपूर्व हमारेकूं कोईदूसराशरीरप्राप्तनहींभया ॥ इहां अनुमानकाआकार यहहै ॥ मैंचार्वाक पूर्वशरीरोंके
अत्यंताभाववालाहूं ॥ काहेतें? पूर्वशरीरोंकीस्मृतिकेअभाववालाहोणेतें ॥ अन्यपुरुषकीन्याईं ॥ सो यह चार्वाकवादीकाअनुमानप्र
माण संभवैनहीं ॥ काहेतें? यालोकविषे जितनेपदार्थोंकूं अनुभवकरताहै ॥ तिनसर्वपदार्थोंकीस्मृति जोनियमकरिकैजीवोंकूं
होती तौ यहवादीकाअनुमानप्रमाण पूर्वशरीरोंकेअत्यंताभावकूंसिद्धकरता ॥ परंतु इसीजन्मविषेअनुभवकरेहुएपदार्थोंका
इसीजन्मविषेभी नियमकरिकैस्मरणहोवैनहीं तौ जन्मांतरोंकेशरीरकास्मरण किसप्रकार वादीकूंहोवैगा? यातैं सोवादीकाअ

नुमान व्यभिचारीहै ॥ व्यभिचारीअनुमानतें किसीअर्थकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ इसतेंआदिलैके अनेकप्रकारकेदूषण संसारकूंसादि मानणेविषे प्राप्तहोवैहैं ॥ यातें चार्वाकतेंआदिलैके संपूर्णवादियोंने यासंसारकूं प्रवाहरूपकरिकै अनादिमान्याचाहिये ॥ और संसारकूंअनादिमानणेविषे पुण्यवान्पुरुष सुखरूपफलकूंप्राप्तहोवैगा और पापीपुरुष दुःखरूपफलकूंप्राप्तहोवैगा याप्रकारकीशास्त्रकीव्यवस्थाभी सुखैंनहीं सिद्धहोइसकैहै ॥ यातें यहसिद्धभया ॥ यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै तिसीजातिवालेदूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकेनियमविषे श्रुतिभगवतीकातात्पर्यनहीं ॥ किंतु याप्रकारकेअर्थविषे श्रुतिभगवतीकातात्पर्यहै ॥ यहसंसार अनादिहै ॥ ताअनादिसंसारविषे यहजीवात्मा जैसे अबीशरीरकूंप्राप्तभयाहै॥ तैसे पूर्वभी यहजीवात्मा जिसजिसजातिवालेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतिसजातिवालेशरीरकूं पुनःभीकदाचित्प्राप्तहोवैगा॥ तात्पर्ययह॥ यहजीवात्मा पशुपक्षीतेंआदिलैके जिसजिसजातिवालेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतिसजातिवालेशरीरके खान पान मैथुन इसतेंआदिलैके जितनेकीव्यवहारहैं ॥ तिनसंपूर्णव्यवहारोंकूं यहजीवात्मा उपदेशतेंविनाहीकरैहै ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ याजीवात्माकूं इसजातिवालाशरीर पूर्वभीकबीप्राप्तभयाहै ॥ तिसशरीरकेसंस्कारोंतें यहजीवात्मा उपदेशतेंविनाही खानपानादिकसर्वव्यवहारोंकूंकरैहै ॥ इतनेग्रंथकरिकै यहअर्थकथनकऱ्या ॥ जबपर्यंत याजीवकूं आत्माकेवास्तवस्वरूपकासाक्षात्कार नहींभया ॥ तबपर्यंत यह जीव एकस्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै पुण्यपापकेवशतें दूसरेस्थूलशरीरकूं अवश्यप्राप्तहोवैहै ॥ सो दूसराशरीर कदाचित् पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालाहोवैहै ॥ कदाचित् विलक्षणहोवैहै ॥ याकेविषे कोईनियमनहीं ॥ अब यहजीवात्मा याशरीरकापरित्यागकरिकै पुण्यपापकेवशतें जिसप्रकार दूसरेस्थूलशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसअर्थकूं लोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! क्षत्रियाणीमाताविषे वैश्यपितातें जेपुत्रउत्पन्नहोवैहै तिनोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष उग्र नामकरिकैकथनकरैहैं ॥ अथवा हिंसादिकउग्रकर्मोंकूंकरणेहारेजेपुरुषहैं तिनोंकानाम उग्रहै ॥ अथवा हीनजातिवालीमाताविषे उत्कृष्टजातिवालेपितातें जेपुत्रउत्पन्नहोवैहैं ॥ तिनोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अनुलोम नामकरिकैकथनकरैहैं ॥ और उत्कृष्टजातिवालीमाताविषे निकृष्टजा

तिवालेपितातैं जेपुत्र उत्पन्नहोवैंहैं ॥ तिनोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष प्रतिलोम नामकरिकैकथनकरैंहैं ॥ तिसीअनुलोमनामापुरुषोंकूं त
थाप्रतिलोमनामापुरुषोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष उग्र नामकरिकैकथनकरैंहैं ॥ और ब्राह्मणीमाताविषे क्षत्रियपितातैं उत्पन्नभयेजेपुत्र
हैं ॥ तिनोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष सूत नामकरिकैकथनकरैंहैं ॥ तिनसूतनामापुरुषोंकी दोप्रकारकी आजीविकाहोवैंहै ॥ कोईकसूततौ
रथोंविषेसारथिहोवैंहैं ॥ और कोईकसूत भागवतादिकपुराणोंकेज्ञाताहोवैंहैं ॥ अथवा राजाकेधनकरिकै आपणेकुटुंबकूंपालनकरणे
हारे जेब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र येचारिवर्णहैं ॥ तथा अनुलोमनामा प्रतिलोमनामा जेपुरुषहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूंशास्त्रवेत्तापुरुष
सूत नामकरिकैकथनकरैंहैं अथवा माताकेउदरतैं जेप्राणीबाहरिनिकसैंहैं तिनोंकानाम सूतहै ॥ यहसूतशब्दकाअर्थ सर्वदेहधारी
जीवोंविषेघटेहै ॥ और पापीपुरुषोंकूंदंडदेणेहारे जेराजाकेभृत्यहैं ॥ तथा पुरीकेलोकोंकूंनीतिमार्गविषेचलावणेहारेजेप्रधानपुरुष
हैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष प्रत्येनस नामकरिकैकथनकरैंहैं ॥ और ग्रामकेलोकोंकूं नीतिमार्गविषेचलावणेहारेजेपुरुषहैं ॥
तिनोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष ग्रामणी नामकरिकैकथनकरैंहैं ॥ हेजनक! याप्रकारके उग्रनामवालेजेपुरुषहैं ॥ तथा सूतनामवालेजेपुरु
षहैं ॥ तथा प्रत्येनसनामवालेजेपुरुषहैं ॥ तथा ग्रामणीवालेजेपुरुष हैं ॥ इनोंतैंआदिलैकेदूसरेभी जितनेराजाकेधनतैं कुटुंबकीपा
लनाकरणेहारेपुरुषहैं ॥ तेसंपूर्णउग्रादिकपुरुष तादेशकेराजाकाआगमनश्रवणकरिकै ताराजाकेसन्मुखजावैंहैं ॥ और तेउग्रादिक
पुरुष महाराजाकीप्रसन्नताकरणेवासते नानाप्रकारकेकौतुककरैंहैं ॥ तथानानाप्रकारकेमंगलकरैंहैं ॥ कैसेहैंतेउग्रादिकपुरुष? तूर्यतैं
आदिलैकेजेनानाप्रकारकेवादित्रहैं तिनोंकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा कर्णोंकूंआनंदकीप्राप्तिकरणेहारे जेनानाप्रकारकेमधुरगायनहैं तिनों
करिकैयुक्तहैं ॥ तथा नानाप्रकारकीवारांगनावोंके हस्तकमलविषेस्थितजेआर्तिदीपकहैं ॥ तिनोंकरिकैयुक्तहैं ॥ इसतैंआदिलैके अ
नेकप्रकारकेकौतुकोंकूंकरतेहुए तेउग्रादिकपुरुष आपणेमहाराजाकेसन्मुखजावैंहैं ॥ और तामहाराजाकेआगमनतैंपूर्वही तेउग्रादि
कपुरुष याप्रकारकीव्यवस्थाकरिराखैंहैं ॥ इसगृहविषे महाराजा निवासकरैगा ॥ और इसगृहविषे महाराजाकेप्रधानमंत्री निवास
करैंगे ॥ और इसगृहविषे महाराजाकीसेना निवासकरैगी ॥ याप्रकार राजाकेनिवासवासते नानाप्रकारकेगृहोंकीकल्पनाकरिकै पुनः

तेउग्रादिकपुरुष तिनगृहोंविषे शरीरकूं तथामनकूं तथानेत्रादिकइंद्रियोंकूं सुखकेदेणेहारे जेनानाप्रकारकेअन्नवस्त्रादिकपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंकूं यथायोग्यराखेहैं ॥ इसप्रकार नानाप्रकारकेसामग्रीकूंत्यारकरिकै तेउग्रादिकपुरुष तानगरकापरित्यागकरिकै महाराजाकेसन्मुखहोणेवासते दूरजावेहैं ॥ और तेउग्रादिकपुरुष महाराजाकहांगया? महाराजाअबीआवताहै इसतैंआदिलैके तिसीमहाराजाकेवार्ताकूंही परस्परकरैहैं ॥ हेजनक! इसीप्रकार यहजीवात्मारूपमहाराजा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै जिसकालविषे दूसरेशरीरप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे याजीवकेकर्मोंकेअनुसारभोगदेणेहारे जेआदित्यादिकदेवताहैं ॥ तथादूसरे शरीरकेआरंभकरणेहारे जेआकाशादिकपंचभूतहैं ॥ तेआदित्यादिकदेवता याजीवकेपुण्यपापरूपकर्मकेअनुसारसंपूर्णभोगसामग्रीकूंत्यारकरिकै याजीवात्मारूपमहाराजाकेआगमनकूंदेखेहैं ॥ और तेआदित्यादिकदेवता परस्पर याप्रकारकीवार्ताकरैहैं ॥ हमाराकर्ता तथाभोक्ता जोयहजीवात्मारूपमहाराजाहै ॥ सोजीवात्मा यादेवदत्तनामापुरुषकापुत्रहोणेवासते यादेवदत्तकीस्त्रतुस्नातपत्नीविषे जन्मलेणेवासते अबीआवताहै ॥ याप्रकार तेआदित्यादिकदेवता याजीवात्मारूपमहाराजाकेआगमनकूं उडीकेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! यहजीवात्मारूपमहाराजा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै एकलाही दूसरेशरीरविषेजावैहै ॥ अथवा कोईवस्तु याजीवात्माकेसाथजावैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक! जैसे महाराजा आपणेपुरीकूंछोडिकै जबी किसीदूसरीपुरीविषे जाणेकीइच्छा करैहै ॥ तबी तामहाराजाकेअभिप्रायकूंजाणिकरिकै तेउग्रादिकभृत्य महाराजाकेसाथजावैहैं ॥ तैसे यहजीवात्मारूपमहाराजाया स्थूलशरीररूपपुरीकापरित्यागकरिकै जबी परलोकविषेजाणेकीइच्छाकरैहै ॥ तबी वाकादिकदशइंद्रिय तथापंचप्राण तथाअंतःकरण येसंपूर्ण ताजीवात्मारूपमहाराजाकेसाथजावैहैं ॥ अब याषष्ठेअध्यायकीसमाप्तिपर्यंत साधनोंसहित संसारकूं तथासाधनोंसहितमोक्षकूं विस्तारकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ तहांप्रथम संसारकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जिसमरणकालविषेअत्यंतनिर्बलताकूंप्राप्तहोइकै यहजीवात्मा वाकादिकइंद्रियोंकरिकै किसीपदार्थकूंनहींजाणता ॥ तिसकालविषे यहजीवात्मा वाकादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेस्थानोंतैंग्रहणकरिकै हृदयआकाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक! जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीवात्मा वाकादिकइंद्रियोंकूं

ग्रहणकरिकै हृदयदेशविषे मायाविशिष्टपरमात्माकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ [illegible]कै [illegible]विषेभी यहजीवात्मा वाकादि कइंद्रियोंकूंग्रहणकरिकै हृदयदेशविषे परमात्माकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे यहजीवात्मा किसीइंद्रियकरिकै किसीविषयकाग्रहणकरैनहीं ॥ किंतु तिसकालविषे यहजीवात्मापुरुष वाकादिकसर्वइंद्रियोंकेव्यापारतैंरहितहोवैहै ॥ हेजनक! मरणकालविषे यहजीवात्मापुरुष परमात्माकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोइकै सर्वइंद्रियोंकेव्यापारतैंरहितहोवैहै ॥ यहवार्ता जोहमनैं तुमारेप्रतिकथनकरीहै ॥ सोकेवलशास्त्रविषेप्रसिद्धनहीं ॥ किंतु सर्वलोकविषेभी यहवार्ताप्रसिद्धहै ॥ काहेतैं? जिसकालविषे यहपुरुष मरणअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे पुत्रस्त्रीआदिकसंपूर्णबांधव यापुरुषकूं भूमिविषेशयनकराइकै याप्रकारकेवचन परस्परकहैहैं ॥ इसकालविषेयहहमारापिता हमपुत्रोंकीतरफदेखतानहीं ॥ और यहपिता हमपुत्रोंकेवचनकूंभी नहींश्रवणकरता ॥ और आपणेकंठविषेस्थितजोपुष्पोंकीमालाहै ॥ तिसकेसुगंधकूंभी यहपितालेतानहीं ॥ और इसकालविषे यहहमारापिता मुखविषेदयीहुईदधिकेरसकूंभी ग्रहणकरतानहीं ॥ और इसकालविषे यहपिता हमप्रियपुत्रोंकेसाथ बोलताभीनहीं ॥ और इसकालविषे यहपिता हमप्रियपुत्रोंकास्पर्शभीनहींकरता ॥ और यहहमारापिता वाकादिकसंपूर्णइंद्रियोंकेव्यापारतैंरहितहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ यहपिता मनकरिकै तथाबुद्धिकरिकैभी किसीपदार्थकूंजाणतानहीं ॥ और जैसेसुषुप्तिअवस्थाविषे हमलोक वाकादिकसर्वइंद्रियोंकेव्यापारतैंरहितहोवैहैं ॥ तैसे यामरणकालविषे यहहमारापिताभी वाकादिकसर्वइंद्रियोंकेव्यापारतैंरहितहुआहै ॥ और इसकालविषे याहमारेपिताकीवाकादिकइंद्रिय आपणेआपणेस्थानोंकूंछोडिकै हृदयदेशविषेजाइकै इकठीभईहैं ॥ याकारणतैं यहहमारापिता किसीइंद्रियकेव्यापारकूंकरतानहीं ॥ हेजनक! याप्रकारके लोकोंकेवचनतैंभी मरणकालविषे सर्वइंद्रियोंकेव्यापारकाअभाव तथाहृदयदेशविषे तिनइंद्रियोंकीएकता सिद्धहोवैहै ॥ और हेजनक! जिसमरणकालविषे यहजीवात्मापुरुष हृदयदेशविषे परमात्माकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे यद्यपि दूसरेसंपूर्ण विशेषज्ञानोंकाअभावहोवैहै तथापि परलोकगमनकेअनुकूलजोज्ञानहै ताकाअभावहोवैनहीं ॥ किंतु परलोककेमार्गदिखावणेवासते चिदाभासयुक्तवृत्तिकरिकै ह

दयकाअग्रभाग प्रकाशमानहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिकै स्पष्टकरैहैं ॥ हेजनक! जैसेमहाराजा आपणेपुरीकापरित्या
गकरिकै जबी किसीदूसरीपुरीविषे जाणेकीइच्छाकरैहै ॥ तबी तामहाराजाकेचलणेकाजोराजमार्गहै ॥ तामार्गविषे नानाप्रकारकेदी
पक प्रकाशकरैहैं ॥ तैसे यहजीवात्मारूपमहाराजा यास्थूलशरीररूपपुरीका परित्यागकरिकै जबी परलोकजाणेकीइच्छाकरैहै ॥ तबी
हृदयकाअग्रभागरूप जोराजमार्गहैं ॥ तिनमार्गोंकूं चिदाभासयुक्तवृत्तिरूपदीपक प्रकाशकरैहै ॥ तिसतैंअनंतर यहजीवात्मारूपम
हाराजा यास्थूलशरीररूपपुरीतैं एकादशद्वारोंसैं बाहरिनिकसैहै ॥ तेएकादशद्वार ये हैं ॥ दोचक्षु २ दोश्रोत्र ४ दोनासिका ६ मूर्द्धद्वा
र ७ मुख ८ नाभि ९ उपस्थ १० पायु ११ याएकादशद्वारोंविषे किसीएकद्वारतैं यहजीवात्माबाहरिनिकसैहै ॥ अब तिनएकादशद्वारों
तैंबाहरिनिकसिकै यहजीवात्मा जिसजिसस्थानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिनस्थानोंकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! मरणकालविषे यहजीवात्मापु
रुष जबी पायुद्वारतैंबाहरिनिकसैहै ॥ तबी यहजीवात्मा नरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जबी यहजीवात्मा उपस्थद्वारतैंबाहरिनिकसैहै ॥ त
बी अत्यंतकामातुर जेकपोतादिकहैं ॥ तिनोंकेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जबी यहजीवात्मा नाभिद्वारतैंबाहरिनिकसैहै ॥ तबी प्रेतश
रीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जबी यहजीवात्मा मुखद्वारतैंबाहरिनिकसैहै ॥ तबी अन्नविषे अत्यंतआसक्तजेप्राणीहैं तिनोंकेशरीरकूंप्राप्त
होवैहै ॥ और जबी यहजीवात्मा नासिकाद्वारतैंबाहरिनिकसैहै ॥ तबी गंधविषेआसक्तजेप्राणीहैं तिनोंकेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ज
बी यहजीवात्मा श्रोत्रद्वारतैंबाहरिनिकसैहै ॥ तबी गंधर्वलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जबी यहजीवात्मा चक्षुद्वारतैंबाहरिनिकसैहै ॥ तबी
यहजीवात्मा सूर्यलोककूं तथाचंद्रलोककूं तथाअग्निलोककूं प्राप्तहोवैहै ॥ और जबी यहजीवात्मा मूर्द्धद्वारतैंबाहरिनिकसैहै ॥ त
बी यहजीवात्मा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार यहजीवात्मा आपणेपुण्यपापकर्मकेअनुसार तिसतिसद्वारतैंबाहरिनिकसि
कै तिसतिसशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक! याएकादशद्वारोंविषे निकृष्टफलकेदेणेहारेजेद्वारहैं ॥ तिनोंविषे पायुद्वारतैंपरेकोईनि
कृष्टद्वारनहीं ॥ और उत्कृष्टफलकूंदेणेहारेजेद्वारहैं ॥ तिनोंविषे मूर्द्धद्वारतैंपरेकोईउत्कृष्टद्वारनहीं ॥ और मूर्द्धद्वार तथापायुद्वार इन
दोनोंद्वारोंकूंछोडिकै दूसरेद्वारोंविषे किसीद्वारकीअपेक्षाकरिकै उत्कृष्टताहै ॥ औ[illegible] अवस्था[illegible]पेक्षाकरिकै निकृष्टताहै ॥ और

हेजनक ! बुद्धिरूपज्ञानशक्तिवाला यहजीवात्मापुरुष जबी यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै बाहरिनिकसे है ॥ तबी क्रियाशक्तिवालाप्राणभी तिसजीवात्माकेसाथहीबाहरिनिकसे है ॥ और जबी क्रियाशक्तिवालाप्राण याशरीरतैंबाहरिनिकसे है ॥ तबी वाकादिकइंद्रियभी ताप्राणकेसाथहीबाहरिनिकसे हैं ॥ और हेजनक ! जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीवात्मा हृदयदेशविषे परमात्माकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइकै सर्वविशेषज्ञानोंतैंरहितहोवै है ॥ तैसे मरणकालविषे यहजीवात्मा हृदयदेशविषे परमात्माकेसाथतादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइकै सर्वविशेषज्ञानोंतैंरहितहुआभी पुनःविशेषज्ञानकूंप्राप्तहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषेतौ सर्वविशेषज्ञानोंकाअभावहोवै है ॥ और मरणअवस्थाविषे दोप्रकारकाज्ञान याजीवकूंहोवै है ॥ एकतौ हृदयकाअग्रभागरूपजोमार्ग है ॥ तामार्गकूंविषयकरणेहाराज्ञानहोवै है ॥ और दूसरा याशरीरकेत्यागतैंअनंतर जोभावीशरीरप्राप्तहोणेहाराहै ॥ तिसकूंविषयकरणेहाराज्ञानहोवै है ॥ यादोप्रकारकेज्ञानकूंछोडिकै दूसरेसर्वविशेषज्ञानोंकाअभावहोवै है ॥ इतनीही सुषुप्तिअवस्थातैं मरणअवस्थाविषे विशेषताहै ॥ और हेजनक ! पुण्यपापके सुखदुःखरूपफलकूं भोगणेहाराजोयहजीवात्माहै ॥ सोजीवात्मा जबी याशरीरतैंबाहरिनिकसे है॥ तबी पूर्वपूर्वशरीरोंविषेअनुभवकऱ्येजेपदार्थ हैं॥ तिनपदार्थोंकेसंस्कार तथा पुण्यपापरूपकर्म येदोनों ताजीवात्माकेसाथजावै हैं ॥ तहांजाइकै सोपुण्यपापरूपकर्मतौ याजीवकूं सुखदुःखभोगणेकेअनुकूलशरीरकीप्राप्तिकरै है ॥ और पूर्वलेसंस्कार याजीवकूं तिसतिसजातिवालेशरीरकेव्यवहारोंविषे प्रवृत्तकरै हैं ॥ और हेजनक ! यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै दूसरेस्थूलशरीरकेआलंबनतैंविना स्थितहोवैनहीं ॥ किंतु दूसरेस्थूलशरीरकूंआलंबनकरिकैही यहजीवात्मा पूर्वलेस्थूलशरीरकापरित्यागकरै है ॥ तहांदृष्टांत॥ जैसे तृणजलौकानामा कोईकृमिविशेष तृणोंविषेभ्रमणकरै है॥तहां सोतृणजलौकाकृमि दूसरेतृणकूंआलंबनकरिकैही प्रथमतृणकापरित्यागकरै है ॥ दूसरेतृणकेआलंबनतैंविना प्रथमतृणकापरित्यागकरैनहीं ॥ यहवार्ता सर्वलोकोंकूंअनुभवसिद्धहै ॥ तैसे यहजीवात्माभी दूसरेभावीशरीरकूंआलंबनकरिकैही यास्थूलशरीरकापरित्यागकरै है॥ दूसरेशरीरकेआलंबनतैंविना यहजीवात्मा प्रथमशरीरकापरित्यागकरैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं अन्यदृष्टांतकरिकैभी स्पष्टकरै हैं ॥ हेजनक ! जैसे यालोक

विषे कोईमहाराजा अथवा कोईधनीपुरुष जो आपणेपूर्वजीर्णगृहकापरित्यागकरैहैं ॥ सो दूसरेनवीनगृहकेसंपादनतैंविना परित्यागकरैनहीं ॥ किंतु दूसरेनवीनगृहकूं संपादनकरिकैही सोमहाराजा तथाधनीपुरुष पूर्वलेजीर्णगृहकापरित्यागकरैहैं ॥ तैसे यह जीवात्माभी दूसरेभावीशरीरकेआलंबनतैंविना प्रथमशरीरकापरित्यागकरैनहीं ॥ किंतु दूसरेशरीरकूंआलंबनकरिकैही यहजीवात्मा प्रथमशरीरकापरित्यागकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! जोपदार्थ परिच्छिन्नहोवैहै ॥ सोईहीपदार्थ एकस्थानकापरित्यागकरिकै दूसरेस्थानविषेजावैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ परिच्छिन्नहैं ॥ यातैं एकदेशकापरित्यागकरिकै दूसरेदेशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहआत्मादेव परिच्छिन्नहैनहीं किंतु यहआत्मासर्वत्रपूर्णहै॥यातैं इसशरीरकापरित्यागकरिकै आत्माका दूसरेशरीरविषे गमनसंभवैनहीं॥ और जोकदाचित् इसशरीरकापरित्यागकरिकै आत्मा दूसरेशरीरविषेजावैगा तौघटादिकोंकीन्यांई आत्माभी परिच्छिन्नहीहोवैगा समाधान ॥ हेजनक ! यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपिवास्तवतैं सर्वत्रपरिपूर्णहै॥तथासर्वभेदतैंरहितहै॥ यातैं पुण्यपापकेफलभोगणेवासतै आत्माका परलोकविषेगमनसंभवैनहीं ॥ तथापि जैसे परिपूर्णआकाश घटरूपउपाधिकेसंबंधतैं गमनआगमनकूंप्राप्तहोवैहै॥ तैसे बुद्धिरूपउपाधिकेतादात्म्यसंबंधतैं यहपरिपूर्णआत्माभी लोकांतरविषे गमनआगमनकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ घटरूपउपाधिकेसंबंधतैं जोघटाकाशविषे गमनआगमनप्रतीतहोवैहै ॥ सोगमनआगमन वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ आकाशविषेसंभवै नहीं॥किंतु घटरूपउपाधिविषेही सोगमनआगमनरूपक्रियासंभवैहै॥ तैसे बुद्धिउपहितआत्माविषे जोगमनआगमनरूपक्रिया प्रतीतहोवैहै॥ सागमनआगमनरूपक्रिया वास्तवतैंविचारकरियेतौ आत्माविषेसंभवैनहीं ॥ किंतु बुद्धिरूपउपाधिविषेही सागमनआगमनरूपक्रियासंभवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! तृणजलौकाकीन्यांई इसशरीरविषेस्थितहुईबुद्धि दूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहजो आपनैंकह्या सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ? परिच्छिन्नमूर्तपदार्थका जोदूसरेदेशकेसाथ क्रियाजन्यसंबंधहोवैहै ॥ सो पूर्वदेशकेसाथ विभागहुएतैंविना संभवैनहीं ॥ किंतु प्रथमक्षणविषे मूर्तपदार्थमैं क्रियाहोवैहै॥ और द्वितीयक्षणविषे तामूर्तपदार्थका पूर्वदेशकेसाथ विभागहोवैहै ॥ और तृतीयक्षणविषे तामूर्तपदार्थका पूर्वदेशकेसाथजोसंयोगसंबंधहै तासंयोगकानाशहोवैहै॥ और चतुर्थक्षणवि

षे तामूर्तपदार्थका उत्तरदेशकेसाथ संयोगहोवैहै ॥ और पंचमक्षणविषे तामूर्तपदार्थकेक्रियाकानाशहोवैहै ॥ इसप्रकार पूर्वदेश केसाथविभागहुएतैंअनंतरही मूर्तपदार्थका उत्तरदेशकेसाथसंबंधहोवैहै ॥ यातैं मरणकालविषे इसशरीरविषेस्थितहुईबुद्धिका दूसरेशरीरकेसाथ संबंधसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक! जैसे तेजरूपचक्षुइंद्रिय आपणेगोलकविषेस्थितहुआही वृत्तिद्वारा सूर्यचंद्रमादिकदूरदेशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जोकदाचित्चक्षुइंद्रिय आपणेगोलकरूपस्थानकापरित्यागकरिकैही सूर्यमंडलादिकदेशकूं प्राप्तहोताहोवै तौ ताचक्षुइंद्रियकेगयेतैंअनंतर यहपुरुष अंधहोणाचाहिये ॥ इसप्रकार मरणकालविषे पूर्वलेपुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं तथापूर्वलेसंस्कारोंकेप्रभावतैं तथापरमेश्वरकीइच्छाकेप्रभावतैं यहबुद्धिभी यास्थूलशरीरविषेस्थितहुईही आपणीवृत्तिद्वारा दूसरेभावीशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जैसे मरणकालविषे साबुद्धि वृत्तिद्वारा दूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे मरणतैंपूर्व जीवत्अवस्थाविषेभी साबुद्धि वृत्तिद्वारा दूसरेभावीशरीरकूं किसवासतै नहींप्राप्तहोती?॥ समाधान ॥ हेजनक! जिसकालविषे यावर्तमानशरीरकेभोगदेणेहारेप्रारब्धकर्मोंकाक्षयहोवैहै ॥ और भावीशरीरकेभोगदेणेहारेकर्मोंकाप्रादुर्भावहोवैहै ॥ तिसीकालविषे अंतर्यामीपरमात्माकरिकैप्रेरणाकरीहुईसाबुद्धि आपणीवृत्तिद्वारा भावीशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अन्यकालविषे साबुद्धि भावीशरीरकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! मरणकालविषे याजीवकीबुद्धि जोकदाचित् भावीशरीरकूंप्राप्तहोतीहोवै तौमरणकालविषे साबुद्धि मैंदूसरेशरीरकूंप्राप्तभईहूं याप्रकारकाअनुभव किसवासतेनहींकरती? ॥ समाधान ॥ हेजनक! जैसे चक्षुइंद्रिय जडहै तथा अत्यंतवेगवालाहै ॥ याकारणतैं सोचक्षुइंद्रिय आपणीवृत्तिद्वारा सूर्यादिकदेशकूंप्राप्तहोइकैभी मैंसूर्यमंडलकूंप्राप्तभयाहूं याप्रकारकाअनुभव करैनहीं ॥ तैसे यहबुद्धिभी पंचभूतोंकाकार्यहोणेतैंजडहै तथाअत्यंतवेगवालीहै ॥ यातैं मरणकालविषे साबुद्धि वृत्तिद्वारा भावीशरीरकूंप्राप्तहोइकैभी मैंभावीशरीरकूंप्राप्तभईहूं याप्रकारकाअनुभवकरैनहीं ॥ और हेजनक! पूर्वतृणजलौकाकेदृष्टांतकरिकै याजीवात्माकूं दूसरेशरीरकीप्राप्ति जोहमनैं तुमारेप्रति कथनकरीथी ॥ ताकहणेकायहअभिप्रायहै ॥ जैसे कोईमहाराजा जबी जीर्णगृहकापरित्यागकरिकै नवीनगृहविषेनिवासकरणेकी

इच्छाकरै ॥ तबी तामहाराजाकेभृत्य तामहाराजाकेअभिप्रायकूंजाणिकै दूसरेनवीनगृहकूंत्यागकरै हैं ॥ और तामहाराजाके आगमनतैंपूर्वही तेराजाकेभृत्य प्रथम तानवीनगृहविषे हस्तीअश्वादिकराज्यसामग्रीकूंलेजावै हैं ॥ ताअश्वादिकराज्यसाम ग्रीकूंदेखिकरिकै नगरवासीलोक परस्पर याप्रकारकथनकरै हैं ॥ यहराजाआयाहै यहराजाआयाहै ॥ तहां सोमहाराजा यद्यपि ताकालविषे पूर्वलेजीर्णगृहमेंस्थितहै अथवा मार्गविषेहै ॥ तथापि अश्वादिकराज्यसामग्रीकूंदेखिके तेनगरवासी लोक यहराजा नवीनगृहविषेआयाहै याप्रकारकाकथनकरै हैं ॥ तैसे यहजीवात्मारूपमहाराजा यास्थूलशरीररूपजीर्णगृ हकापरित्यागकरिकै मरणतैंअनंतर जिसदूसरेशरीररूपनवीनगृहकूंप्राप्तहोवैगा ॥ तिसदूसरेशरीररूपगृहकूं पुण्यपापकर्म रूपभृत्य पंचभूतोंकरिकैत्यारकरै हैं ॥ तहां जीवात्मारूपमहाराजाके पूर्वशरीरविषेस्थितहुएही तेपुण्यपापकर्मरूपभृत्य प्र थम बुद्धिकीवृत्तिरूपराज्यसामग्रीकूं ताभावीशरीरविषेप्राप्तकरै हैं ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकरिकैही पूर्वतृणजलौकाकेदृष्टांतसैं याजीवात्माकूं भावीशरीरकीप्राप्तिकहीहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं ॥ हेजनक! यहजीवात्मा यास्थूलश रीरकापरित्यागकरिकै जिसभावीशरीरकरिकै सुखदुःखरूपफलकूंभोगैगा ॥ सोभावीशरीर याजीवात्माकेभविष्यत्भोगकासाधन है ॥ और यहजीवात्मामरणकालविषे जिसशरीरकापरित्यागकरैहैं ॥ सोशरीर याजीवात्माकेपूर्वभोगकासाधनहै ॥ यातैं याजी वात्माका दोनोंशरीरोंकेसाथसंबंध संभवैहै ॥ और हेजनक! जैसे यालोकविषे कोईपुरुष आपणेशरीरविषे पुष्पोंकीमालाकूंधार णकरैहै ॥ अथवावस्त्रोंकूंधारणकरै है ॥ सामाला तथावस्त्र जबी जीर्णभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तबी सोपुरुष तामालाके तथावस्त्रके परि त्यागकरणेकीइच्छाकरताहुआ दूसरेनवीनमालाकूं तथानवीनवस्त्रकूं वारंवारदेखैहै ॥ तैसे मरणकालविषे यास्थूलशरीरकेपरित्या गकरणेकीइच्छाकरताहुआ यहजीवात्मा पुण्यपापकर्मकेअनुसार भावीशरीरकूंदेखैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ मरणकालविषे याजीवा त्माकूं पुण्यपापकर्मकेअनुसार जोभावीशरीरकाज्ञानहोवैहै ॥ सोभावीशरीरकाज्ञानही याजीवात्माकूं मरणकालविषे भावीशरीर कीप्राप्तिहै ॥ और हेजनक! जैसे दाहकरणेहारा तथाप्रकाशकरणेहारा जोप्रज्वलितअग्निहै ॥ सोअग्नि आपणेतादात्म्यसंबंध

करिकै लोहपिंडकूंभी आपणेसमान प्रकाशवाला तथादाहशक्तिवालाकरैहै ॥ और सोअग्नि जबी तालोहकेपिंडकापरित्यागकरै
है ॥ तबी प्रकाशतैंरहित तथादाहशक्तितैंरहित जोलोहकापूर्वलास्वभावथा ॥ तिसीपूर्वलेस्वभावकूं सोलोहकापिंड प्राप्तहोवैहै ॥
तैसे यहआत्मादेवभी आपणेतादात्म्यसंबंधकरिकै याजडशरीरविषे चैतन्यभावकीप्राप्तिकरैहै ॥ और मरणकालविषे यहचेतनआ
त्मा जबी यास्थूलशरीरकापरित्यागकरैहै ॥ तबी यास्थूलशरीरका जैसापूर्वलाजडस्वभावथा ॥ तिसीजडस्वभावकूं यहस्थूलशरीर
प्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! जैसे अग्नि लोहकेपिंडकाजोपरित्यागकरैहै ॥ सोपरित्यागही लोहकेपिंडकाहननहै ॥ तैसे यहचै
तन्यआत्मा यास्थूलशरीरकाजोपरित्यागकरैहै ॥ सोपरित्यागही यास्थूलशरीरकाहननहै ॥ और हेजनक! जैसेप्रज्वलितअग्नि
प्रथमलोहपिंडकापरित्यागकरिकै दूसरेनवीनलोहपिंडकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसदूसरेलोहपिंडकूंभी सोअग्नि आपणेतादात्म्यसंबंध
करिकै आपणेसमानहीरूपवान्करैहै ॥ तैसे यहजीवात्माभी यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै दूसरेनवीनशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ औ
र यहआनंदस्वरूपजीवात्मा आपणेतादात्म्यसंबंधकरिकै जैसेपूर्वलेशरीरकूंचैतन्यरूपकरताभया ॥ तथा आपणेसुखकासाधनमा
नताभया ॥ तैसे दूसरेशरीरकूंभी यहआत्मादेव आपणेतादात्म्यसंबंधतैं चैतन्यरूपकरैहै ॥ तथासुखकासाधनमानैहै ॥ और हेज
नक! जैसे यालोकविषे सुवर्णकारपुरुष एकहीसुवर्णकेपिंडतैं कबी कंकणकूंउत्पन्नकरैहै ॥ और कबी कुंडलकूंउत्पन्नकरैहै ॥ इसप्र
कार सोसुवर्णकारपुरुष एकहीसुवर्णकेपिंडकूं क्रमतैं नानाभावकीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी एकहीअविद्यातैं कबी मनु
ष्यशरीरकीउत्पत्तिकरैहै ॥ और कबी देवताशरीरकूंउत्पन्नकरैहै ॥ और कबी पशुशरीरकूंउत्पन्नकरैहै ॥ इसप्रकार सोपरमात्मादेव
एकहीअविद्याकूंअनेकशरीरभावकीप्राप्तिकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! लोकविषे कारणकीविलक्षणतातैं कार्यकीविलक्षणताहोवैहै ॥
जैसे मृत्तिकारूपकारणकीविलक्षणतातैं तथातंतुरूपकारणकीविलक्षणतातैं घटरूपकार्यकी तथापटरूपकार्यकी परस्परविलक्षणता
होवैहै ॥ कारणोंकीविलक्षणतातैंविना कार्यकीविलक्षणताहोवैनहीं ॥ और इहांप्रसंगविषे मनुष्यादिकशरीरोंकापरिणामी उपादा
नकारणजोअविद्याहै सोएकहीहै ॥ तथामनुष्यादिकशरीरोंका विवर्तउपादानकारणजोचेतनहै सोभीएकहीहै ॥ यातैं मनुष्यादिक

शरीरोंविषेविलक्षणता नहींहोणीचाहीये ॥ समाधान ॥ हेजनक! यद्यपि चेतनआत्मा तथाअविद्यारूपकारणएकहीहै ॥ तथापि जीवोंकेपुण्यपापरूपकर्मविलक्षणहैं ॥ यातें तापुण्यपापरूपकारणकीविलक्षणताकरिकै शरीररूपकार्यभी विलक्षणहीहोवैहै ॥ और हेजनक! जिसमरणकालविषे याशरीरकेभोगदेणेहारेकर्मोंकाक्षयहोवैहै ॥ तथा भावीशरीरकेभोगदेणेहारेकर्मोंकाप्रादुर्भावहोवैहै ॥ तिसमरणकालविषे यहजीवात्मा पूर्वलेउत्कृष्टशरीरकूंभी निकृष्टजानैहै ॥ और भावीनिकृष्टशरीरकूंभी उत्कृष्टमानैहै ॥ शंका ॥ हे भगवन्! मरणकालविषे यहजीवात्मा पूर्वलेउत्कृष्टशरीरकूं निकृष्टजानैहै ॥ और भावीनिकृष्टशरीरकूं उत्कृष्टजानैहै ॥ यहजोवचन आपनें हमारेप्रतिकह्या ॥ सोआपकाकहणा हमारेकूंआश्चर्यजैसालागेहै ॥ समाधान ॥ हेजनक! यावार्ताविषे तूं आश्चर्यमतकर ॥ मरणकालविषे पापकर्मरूपदोषकेप्रभावतें याजीवकीबुद्धि विपरीतभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें मरणकालविषे यहजीवात्मा वर्तमान उत्कृष्टशरीरकूं निकृष्टमानैहै ॥ और भावीनिकृष्टशरीरकूं उत्कृष्टमानैहै ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे यालोकविषे कोईव्यभिचारिणीस्त्री किसीधनीपुरुषकूं किसीमंत्रकेप्रभावतें तथा किसीऔषधिकेप्रभावतें आपणेवशकरिलेवैहै ॥ कैसीहै साव्यभिचारिणीस्त्री? कुष्ठरोगकरिकैयुक्तहै ॥ तथा मृत्तिकाकरिकैजिसकाशरीर आवृतहै ॥ तथा कर्णनासिकातेंरहितहै ॥ ऐसीकुरूपव्यभिचारिणीस्त्रीकेवशकूं प्राप्तहुआ सोधनीपुरुष ताव्यभिचारिणीस्त्रीकूं इंद्राणीकेसमान सुंदरमानैहै ॥ और ताधनीपुरुषकेगृहविषेस्थित जाआपणीस्त्री है ॥ साइंद्राणीकेसमान सुंदरहै ॥ तथा सर्वगुणोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा पतिव्रताहै ॥ तथा कुलीनगृहकीहै ॥ ऐसीपतिव्रतासुंदर स्त्रीकूं सोधनीपुरुष निकृष्टमानिकै ताका परित्यागकरिदेवैहै ॥ यहवार्ता लोकविषेप्रसिद्धहै ॥ तैसे मरणकालविषे पापकर्मकरिकै मोहितहुआ यहजीवात्मा सर्वसुखोंकरिकैसंपन्नदेवताशरीरकूं तथाचक्रवर्तीराजशरीरकूं अत्यंतनिकृष्टमाने है ॥ और भावीहोणे हारेश्वानादिकनीचशरीरोंकूं यहजीवात्मा तामरणकालविषे अत्यंतउत्कृष्टकरिकैमानैहै ॥ हेजनक! मरणकालविषे जबी याजीवात्माका कोईपूर्वलापुण्यकर्म फलदेणेकूंसन्मुखहोवैहै ॥ तबी यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै तापुण्यकर्मकेप्रभावतें तथापूर्वलेशुभसंस्कारोंकेप्रभावतें पितरलोकविषे तथागंधर्वलोकविषे तथादेवलोकविषे तथाप्रजापतिलोकविषे तथाब्रह्मलोक

विषे उत्कृष्टदेवताशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और मरणकालविषे जबी याजीवकेपुण्यपापदोनों फलदेणेकूंसन्मुखहोवैहैं ॥ तबी यहजीवात्मायास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और मरणकालविषे जबी याजीवात्माकाकोईपापकर्म फलदेणेकूंसन्मुखहोवैहै ॥ तबी यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै तापापकर्मकेवशतैं श्वानादिकनीचशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार ब्रह्मातैंआदिलैके कीटपर्यंत जितनेआत्मज्ञानतैंरहितप्राणीहैं ॥ तेअज्ञानीजीव पुण्यपापकर्मकेवशतैं निरंतर संसाररूपशूलविषे भ्रमणकरैहैं ॥ अब जिसशुद्धआत्माकेज्ञानतैं जीवोंकेसंसारकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तिसशुद्धआत्माकेस्वरूपका कथनकरणेवासते प्रथम आत्माकेआनंदरूपताकूंनिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! आत्माकाजोआनंदस्वरूपहै ॥ सो सर्वत्रसमानहीहै ॥ ताआत्मस्वरूपआनंदविषे किंचित्मात्रभी न्यूनअधिकतानहीं ॥ और पूर्व मनुष्यलोकतैंआदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत जो आनंदकीन्यूनअधिकताहमनैंकथनकरीथी ॥ सान्यूनअधिकता स्वभावतैं आत्मस्वरूपआनंदविषेनहीं ॥ किंतु चेतनकेप्रतिबिंबकूंग्रहणकरणेहारी तथा चेतनकेआवरणकूंनिवृत्तकरणेहारी जाबुद्धिहै ॥ ताबुद्धिकेसंबंधकीअपेक्षाकरिकै आत्मस्वरूपआनंदकेअभिव्यक्तिकी न्यूनअधिकताहोवैहै ॥ तहां अधिकसत्वगुणवालीबुद्धिकेसंबंधतैं आत्मस्वरूपआनंदकी अधिकअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ और न्यूनसत्वगुणवालीबुद्धिकेसंबंधतैं आत्मस्वरूपआनंदकी न्यूनअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकूंदृष्टांतकरिकैस्पष्टकरैहैं ॥ हेजनक ! जैसे भेदतैंरहित एकहीआकाश सूचिविषे तथाघटविषे तथागृहविषे तथानगरविषे स्थितहोइकै न्यूनअधिकताभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे एकहीआत्मस्वरूपआनंद बुद्धिकेसंबंधतैं न्यूनअधिकताभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और उपाधिकेसंबंधतैं जोउपहितपदार्थविषेधर्मप्रतीतहोवैहै ॥ सोधर्म वास्तवतैंउपहितपदार्थविषे होवैनहीं ॥ किंतु उपाधिविषेहीसोधर्महोवैहै ॥ जैसे घटमठादिकउपाधियोंकेसंबंधतैं जोआकाशविषे न्यूनअधिकताप्रतीतहोवैहै ॥ सान्यूनअधिकता आकाशविषे वास्तवतैंहोवैनहीं ॥ किंतु घटमठादिकउपाधियोंविषेही सान्यूनअधिकताहै ॥ तैसे बुद्धिरूपउपाधिकेसंबंधतैं जोआत्मस्वरूपआनंदविषे न्यूनअधिकता प्रतीतहोवैहै ॥ सान्यूनअधिकता वास्तवतैं आत्मस्वरूपआनंदविषेहैनहीं ॥ किंतु बुद्धिरूपउपाधिविषेही सान्यूनअधिकताहै ॥

याकारणतैंही शास्त्रविषे उपाधिशब्दका याप्रकारकाअर्थकह्याहै ॥ उपहितपदार्थकेसमीपस्थितहोइकैजोवस्तु आपणेधर्मोंका ताउपहितपदार्थविषे आरोपणकरैहै ॥ तावस्तुकानाम उपाधिहै ॥ सोइहांप्रसंगविषे आत्मस्वरूपआनंदकेसमीपस्थितहोइकै साबुद्धि आपणेन्यूनअधिकताकूं आत्मस्वरूपआनंदविषेआरोपणकरैहै ॥ याकारणतैं साबुद्धि उपाधिरूपहै ॥ उपाधिवालेपदार्थका नाम उपहितहै ॥ यातैं हेजनक ! ब्रह्मलोकविषेस्थित जोसर्वतैंउत्कृष्टब्रह्माकाशरीरहै ॥ तथा भूमिलोकविषेस्थित जोसर्वशरीरोंतैं निकृष्टश्वानकाशरीरहै ॥ इसतैंआदिलैकेसर्वशरीरोंविषे अंतःकरणविशिष्टभोक्ताआत्माकी तथासुखदुःखरूपभोग्यकी किंचित्मात्रभी विषमतानहीं ॥ किंतु सर्वशरीरोंविषेसमानहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जबी अंतःकरणविशिष्टभोक्ताआत्माकी तथा सुखदुःखरूपभोग्यकीभी सर्वशरीरोंविषे विषमतासिद्धनहींभई ॥ तबी आनंदस्वरूपशुद्धआत्माकीविषमता किसप्रकारसंभवैगी ? अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! जैसे कोद्रवादिकनिकृष्टअन्नकेभक्षणकरिकै निर्धनदरिद्रीपुरुष सुखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य याचारिप्रकारकेअन्नकेभक्षणकरिकै महाराजा तथाधनीपुरुष सुखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं सुखकेभोक्ताविषे तथासुखरूपभोगविषे किंचित्मात्रभी विषमतानहीं ॥ और हेजनक ! जैसे क्षुधापिपासादिकोंकरिकै निर्धनदरिद्रीपुरुष दुःखकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे क्षुधापिपासादिकोंकरिकैमहाराजा तथाधनीपुरुषभी दुःखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं दुःखकेभोक्ताविषे तथादुःखरूप भोगविषे किंचित्मात्रभी विषमतानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! महाराजाविषे तथादरिद्रीपुरुषविषे यद्यपि सुखदुःखरूपफलकीविषमतानहींहै ॥ तथापि तासुखदुःखरूपफलकीउत्पत्तिके जे अन्नपानादिकसाधनहैं ॥ तिनोंकी परस्परविषमता प्रत्यक्षप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं ताअन्नपानादिकसाधनोंकीविषमतातैं सुखदुःखरूपफलकीभीविषमताहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेजनक ! सुखदुःखरूपफलकी उत्पत्तिके दोप्रकारकेसाधनहोवैहैं ॥ एकतौ बाह्यसाधनहोवैहैं ॥ और दूसरे अंतरसाधनहोवैहैं ॥ तहां अन्नपानादिक बाह्यसाधनहैं ॥ और रागद्वेषादिक अंतरसाधनहैं ॥ तहां यद्यपि अन्नपानादिकबाह्यसाधनोंविषे किंचित्मात्र कल्पितविषमतासंभवैहै ॥ तथापि रागद्वेषादिकअंतरसाधनोंविषे किंचित्मात्रभी विषमतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं ? क्षुधा १ पिपासा २ भय ३ निद्रा ४ प्रियवस्तुवि

षेराग ५ अप्रियवस्तुविषेद्वेष ६ आत्माकूंआवरणकरणेहारामोह ७ विष्ठामूत्रकेपरित्यागतैंपूर्व विषमदशाकीप्राप्ति ८ यहअष्टप्रका
रकेदोष जीवोंके सुखका तथादुःखका कारणहोवैंहैं ॥ तहां निवृत्तिकूंप्राप्तहुए येअष्टदोष जीवोंके सुखकाकारणहोवैंहैं ॥ और वि
द्यमानहुएयेअष्टदोष जीवोंके दुःखकाकारणहोवैंहैं ॥ तेअष्टदोष सर्वप्राणियोंविषेसमानहैं ॥ यातैं सुखदुःखरूपफलभी सर्वप्राणि
योंविषेसमानहै ॥ और हेजनक! दरिद्रीपुरुषोंविषे तथामहाराजाविषे तथाश्वानादिकोंविषे यद्यपि लोकोंकीदृष्टिकरिकै महान्‌वि
षमता प्रतीतहोवैंहै ॥ तथापि अष्टदोषरूपकारणोंविषे तथासुखदुःखरूपफलविषे किंचित्‌मात्रभीविषमतानहीं ॥ यातैं सर्वशरीरों
तैंउत्कृष्ट जोब्रह्माकाशरीरहै ॥ तथा सर्वशरीरोंतैंनिकृष्ट जोश्वानकाशरीरहै ॥ तिनदोनोंविषे किंचित्‌मात्रभी विषमतानहीं ॥ अब
सर्वशरीरोंकीसमानता सिद्धकरणेवासते सर्वशरीरोंविषे अष्टदोषोंकाअनुगतपणा निरूपणकरैंहैं ॥ हेजनक! जैसे श्वानशरीरविषे
कामक्रोधादिकदोष विद्यमानहैं ॥ तैसे हिरण्यगर्भशरीरविषेभी कामक्रोधादिकदोष विद्यमानहैं ॥ यातैं कामक्रोधादिकदोषसर्व
शरीरोंविषेअनुगतहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सर्वजगत्‌के उत्पत्ति स्थिति लयकूंकरणेहारा जोसूत्रात्मारूपहिरण्यगर्भहै ॥ ताके वि
षे यद्यपि कामक्रोधादिकसंभवैंहैं ॥ तथापि क्षुधापिपासादिकदोष हिरण्यगर्भविषेसंभवैंनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक! जगत्‌
काईश्वरजोहिरण्यगर्भहै ॥ सो श्वानतैंभीनिकृष्टहै ॥ काहेतैं? क्षुधाकरिकैआतुरहुएभी श्वानादिक आपणेपुत्रोंकूंभक्षणकरैंनहीं ॥
और यहहिरण्यगर्भतौ विराट्‌रूपपुत्रकूंउत्पन्नकरिकै तिसीविराट्‌रूपपुत्रकूं भक्षणकरणेवासते प्रवृत्तहोताभया ॥ यहवार्ता चतुर्थअ
ध्यायविषे विस्तारतैंकहिआयेहैं ॥ यातैं हिरण्यगर्भविषेभी क्षुधापिपासादिकदोषहैं ॥ और हेजनक! श्वानादिकपशु जोकदाचित्‌
आपणेपुत्रोंकूंभक्षणकरणेविषेप्रवृत्तहोवैं तौ तिनश्वानादिकोंकीनिंदा कोईप्राणीकरैंनहीं ॥ यातैं श्वानादिकपशुवोंकूं पापकर्मकेक
रणेविषे लोकोंकेनिंदाकाभयनहीं ॥ और संपूर्णजगत्‌कागुरु जोहिरण्यगर्भहै ॥ सोहिरण्यगर्भ जोकदाचित् पुत्रभक्षणादिकपापक
र्मविषे प्रवृत्तहोवैगा तौ सर्वलोक ताहिरण्यगर्भकीनिंदाकरैंगे ॥ तालोकनिंदाकाभय हिरण्यगर्भकूंहै ॥ याकारणतैंभी सोहिरण्य
गर्भ श्वानादिकोंतैंनिकृष्टहै ॥ और हेजनक! श्वानके जोभक्षणादिरूपव्यापारहैं ॥ तेव्यापार चौरादिकोंकीनिवृत्तिकरैंहैं ॥ यातैं

तेश्वानकेभक्षणादिकव्यापार गृहवालेपुरुषके सुखकेसाधनहैं ॥ और याहिरण्यगर्भके जे जगत्कीउत्पत्तिआदिकव्यापारहैं ॥ ते व्यापार किसीप्राणीकेसुखकेसाधननहीं ॥ याकारणतैंभी सोहिरण्यगर्भ श्वानादिकोंतैंनिकृष्टहै ॥ हेजनक! जोवादी हिरण्यगर्भकेव्यापारोंकूं जीवोंकेसुखकासाधन मानैहै॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये॥ जगत्कीउत्पत्तिआदिक जेहिरण्यगर्भकेव्यापारहैं॥ तेव्यापार कर्मीपुरुषोंके सुखकासाधनहैं ॥ अथवा उपासकपुरुषोंके सुखकासाधनहैं ॥ अथवा ज्ञानीपुरुषोंके सुखकासाधनहैं ॥ तहां हिरण्यगर्भकेव्यापार कर्मीपुरुषोंकेसुखकासाधनहैं यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? रात्रिविषे जबी हिरण्यगर्भ निद्राकरैहै ॥ तबी स्वर्गादिकतीनलोकोंकाप्रलयहोइजावैहै ॥ जाप्रलयकूं शास्त्रविषे नैमित्तिकप्रलयकहैहैं ॥ यातैं ताहिरण्यगर्भका निद्रारूपव्यापार कर्मीपुरुषोंकेसुखकाहेतुनहीं ॥ उलटा कर्मीपुरुषोंकेभयकाहेतुहै॥ और ताहिरण्यगर्भकाव्यापारउपासकपुरुषोंकेसुखकासाधनहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं॥काहेतें? उपासनाकेप्रभावतैं जेपुरुषहिरण्यगर्भलोकविषेजावैहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं हिरण्यगर्भकेसमान ऐश्वर्यहोवैनहीं ॥ यातैं हिरण्यगर्भकेऐश्वर्यकूंदेखिके तेउपासकपुरुष ईर्ष्याकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं हिरण्यगर्भकाऐश्वर्यरूपव्यापार उपासकपुरुषोंकेसुखकाहेतुनहीं ॥ उलटा उपासकपुरुषोंकेदुःखकाहेतुहै ॥ और हिरण्यगर्भकाऐश्वर्यरूपव्यापार ज्ञानीपुरुषोंकेसुखकासाधनहै यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकार करै सोभीसंभवैनहीं ॥काहेतें? जबपर्यंत यापुरुषकूं ब्रह्मलोककेप्राप्तिकीइच्छाहोवैहै ॥ तबपर्यंत यापुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवैनहीं॥ यातैं ब्रह्मलोकविषयकइच्छाकीउत्पत्तिद्वारा सोहिरण्यगर्भकाऐश्वर्यरूपव्यापार ज्ञानीपुरुषोंकेभयकाहीकारणहै ॥ यातैं हिरण्यगर्भकाव्यापार किसीप्राणीकेसुखकासाधननहीं ॥ उलटा जीवोंकेदुःखकासाधनहै ॥ अथवा संपूर्णस्थूलप्रपंचकाकारण जोविराट्भगवान्है ॥ ताकेभक्षणकरणेवासते हिरण्यगर्भकाजोप्रवृत्तिरूपव्यापारहै ॥ सोव्यापार किसीप्राणीकेसुखकासाधननहीं ॥ किंतु सर्वजीवोंकेदुःखकाहीसाधनहै याकारणतैं श्वानादिकोंतैंभी सोहिरण्यगर्भ निकृष्टहै॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोकदाचित् हिरण्यगर्भ तथाश्वानादिकपशु दोनोंसमानहोवै॥ तौशास्त्रविषे जोहिरण्यगर्भकीउत्कृष्टताकहीहै ॥ तथा श्वानादिकोंकीनिकृष्ट

ताकहीहै ॥ साशास्त्रअसंगतहोवैगा ॥ **समाधान** ॥ हेजनक! सुखदुःखरूपफलकूंलैके तथाअष्टदोषरूपसाधनोंकूंलैके तथापांच भौतिकशरीरकूंलैके शास्त्रनैं हिरण्यगर्भकीउत्कृष्टतानहींकही ॥ किंतु ब्रह्मविद्याकूंलैके शास्त्रनैं हिरण्यगर्भकीउत्कृष्टताकहीहै ॥ सा ब्रह्मविद्या श्वानादिकोंविषेहैनहीं ॥ यातैं श्वानादिकनिकृष्टहैं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाअभेदज्ञान जिसपु रुषकूंप्राप्तभयाहै ॥ सोईहीपुरुष सर्वतें उत्कृष्टहै ॥ और जिसपुरुषकूं सोअभेदज्ञान नहींप्राप्तभया ॥ सोपुरुष श्वाननतेंभीनिकृष्टहै ॥ और हेजनक! जिसआनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानतैं जीवोंकूं उत्कृष्टताप्राप्तहोवैहै ॥ सोआनंदस्वरूपआत्मा हिरण्यगर्भविषे तथा श्वानविषे तथातुमारेविषे तथाहमारेविषे तथाअन्यप्राणियोंविषे सर्वत्र समानव्यापकहै ॥ और सोआनंदस्वरूपआत्माही ब्रह्मरू पहै ॥ इतनेकरिकै सर्वकाअधिष्ठानरूपजोशुद्धआत्माहै ॥ ताकास्वरूप निरूपणकऱ्या ॥ अब बुद्धिआदिकउपाधियोंके तादात्म्यसं बंधतैं जोआत्माके कल्पितनानारूपहैं तिनोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! बुद्धिरूपउपाधिकेतादात्म्यसंबंधतैं यहआत्मादेव विज्ञा नमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और मनरूपउपाधिकेसंबंधतैं यहआत्मादेव मनोमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और प्राणरूपउपाधिकेसंबं धतैं यहआत्मादेव प्राणमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यापंचइंद्रियरूपउपाधिकेसंबंधतैं यहआत्मा देव क्रमतैं श्रोत्रमय त्वग्मय चक्षुमय रसनमय घ्राणमय इत्यादिकसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और आकाश वायु तेज अप् पृथिवी यापं चभूतरूपउपाधिकेसंबंधतैं यहआत्मादेव क्रमतैं आकाशमय वायुमय तेजोमय अप्मय पृथिवीमय इत्यादिकसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और अज्ञानरूपतमकेसंबंधतैं यहआत्मादेव तमोमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कामक्रोधरूपउपाधिकेसंबंधतैं यहआत्मादेव कामम यसंज्ञाकूं तथाक्रोधमयसंज्ञाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और धर्मरूपउपाधिकेसंबंधतैं यहआत्मादेव धर्ममयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सुषुप्ति विषेस्थितजोधर्मकाअभावहै ॥ तथा जलताडनादिकनिष्फलक्रियाविषेस्थित जोधर्मकाभेदहै ॥ तथा हिंसादिकनिषिद्धक्रियाविषे स्थित जोधर्मकाविरोधहै ॥ तिनतीनोंकेसंबंधतैं यहआत्मादेव अधर्ममयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक! बहुतक्याकहैं? जितने स्थूलसूक्ष्मपदार्थहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकेतादात्म्यसंबंधतैं यहआत्मादेव सर्वमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! यहआत्मादेव

नानाप्रकारके वेदविहितकर्मोंकूंकरैहै ॥ तथा निषिद्धकर्मोंकूंकरैहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव यथाकारीसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहआत्मादेव नानाप्रकारकेआचारोंकूंकरैहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव यथाचारीसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! धर्म अधर्मरूपकर्मतैं आचार भिन्नहैनहीं ॥ किंतु कर्मोंकानामहीआचारहै ॥ यातैं यथाचारी यहआत्माकानाम संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक! यद्यपि धर्मअधर्मरूपकर्मतैं आचार भिन्ननहींहै ॥ तथापि कर्मतैं आचारविषैइतनीविशेषताहै ॥ जिसकर्मकूं वेदभगवान् पुरुषोंकेसुखकासाधनरूपकरिकै कथनकरैहै ॥ ताकर्मकानाम धर्महै ॥ जैसे अग्निहोत्रादिकहैं ॥ और जिसकर्मकूं वेदभगवान् पुरुषोंकेदुःखकासाधनरूपकरिकै कथनकरैहै ॥ ताकर्मकानाम अधर्महै ॥ जैसे ब्रह्महत्यादिकहैं ॥ और जोकर्म शास्त्रकरिकैप्रतिपादितनहींहोवैहै ॥ किंतु देशकीपरंपरातैं तथाआपणेकुलकीपरंपरातैं प्राप्तहोवैहै ॥ ताकर्मकानाम आचारहै ॥ सोआचार भी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ विहितआचारहोवैहै ॥ और दूसरा निषिद्धआचारहोवैहै ॥ तहां जिसआचारकूं पितापितामहादिकवृद्धपुरुष सुखकासाधनरूपकरिकै कथनकरैहैं॥ सोआचार विहितहोवैहै ॥ और जिसआचारकूं पितापितामहादिकवृद्धपुरुष दुःखकासाधनरूपकरिकै कथनकरैहैं ॥ सोआचार निषिद्धहोवैहै ॥ हेजनक! यहआत्मादेव जबी लोकविहितशुभकर्मोंकूंकरैहै ॥ तथा शास्त्रविहितशुभकर्मोंकूंकरैहै ॥ तबी यहआत्मादेव साधुकारीसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और लोककरिकै तथाशास्त्रकरिकै निषिद्धजेकर्म हैं ॥ तिननिषिद्धकर्मोंकूं जबी यहआत्मादेवकरैहै ॥ तबी यहआत्मादेव असाधुकारीसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इहां संज्ञाशब्दकरिकै नामकाग्रहणकरणा ॥ और हेजनक! जबी यहआत्मादेव शास्त्रकरिकैविधानकऱ्येशुभकर्मोंकूंकरैहै ॥ तबी देवतादिकउत्कृष्टशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जबी यहआत्मादेव शास्त्रकरिकैनिषिद्धअशुभकर्मोंकूंकरैहै ॥ तबी श्वानादिकनीचशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार पुण्यपापकर्मकेवशतैं यहजीवात्मा निरंतर संसारविषैभ्रमणकरैहै ॥ इतनेकरिकै बुद्धिआदिकउपाधियोंकेसंबंधतैं आत्माके विज्ञानमयादिकअनेकरूपोंकानिरूपणकऱ्या ॥ अब तिनविज्ञानमयादिकरूपोंविषै कल्पितरूपताके स्पष्टकरणेवासतै अधिष्ठानआत्माविषै तिनविज्ञानमयादिकरूपोंकेअभावकूंनिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यहआनंदस्वरूपआत्मा असंगहै ॥ यातैं याआत्मा

देवविषे वास्तवतें पुण्यपापदोनोंनहीं हैं ॥ और याआनंदस्वरूपआत्माविषे लौकिकआचारभीनहीं है॥ तथा धर्मभी आत्माविषेनहीं है ॥ और धर्मकाअभावरूप तथाधर्मकाभेदरूप तथाधर्मकाविरोधरूप जोअधर्म है॥ सोअधर्मभी याआनंदस्वरूपआत्माविषेनहीं है ॥ और अज्ञानरूपजोअंतरतमहै ॥ तथा अंधकाररूपजोबाह्यतमहै ॥ यहदोनोंप्रकारकातमभी आत्माविषेनहीं है ॥ और आकाशादिकपंचभूतभी आत्माविषेनहीं हैं ॥ और वाकादिकदशइंद्रियभी आत्माविषेनहीं हैं ॥ और क्रियाशक्तिवालाजोप्राणहै ॥ सोप्राणभी आत्माविषेनहीं है ॥ और ज्ञानशक्तिवालीजाबुद्धिहै तथा मनहै येदोनोंभी आत्माविषेनहीं हैं ॥ और प्राप्तिकालविषे सुखकीप्राप्तिकरणेहारे तथाअप्राप्तिकालविषेदुःखकीप्राप्तिकरणेहारे जेशब्दस्पर्शादिकाविषयहैं ॥ तेविषयभी आत्माविषेनहीं हैं ॥ इसतैंआदिलैके जितनास्थूलसूक्ष्मजगत् है ॥ सोजगत् अधिष्ठानआत्माविषे वास्तवतेंनहीं है ॥ और हेजनक! जोपदार्थ जिसअधिष्ठानविषे वास्तवतैंहोवैनहीं ॥ और तिसीअधिष्ठानविषे जोकदाचित् सोपदार्थ प्रतीतहोवै तौ सोपदार्थ मिथ्याहीहोवैहै ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषे सर्प वास्तवतैंहैनहीं ॥ और तिसीरज्जुरूपअधिष्ठानविषे दोषकेप्रभावतें सोसर्प प्रतीतहोवैहै ॥ यातें सोसर्पमिथ्याहै ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषे यहजगत्वास्तवतैंहैनहीं ॥ और आत्माविषे यहजगत् प्रतीतहोवैहै ॥ याकारणतें यहजगत्भी मिथ्याही है ॥ हेजनक! जिसअधिष्ठानआत्माविषे यहसंपूर्णजगत्कल्पितहै ॥ सोअधिष्ठानआत्मा कैसाहै? आनंदस्वरूपहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा मनवाणीकाअविषयहै॥ तथा सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनप्रकारकेभेदतैंरहितहै ॥ हेजनक! ऐसाआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि सर्वत्रसमानव्यापकहै ॥ तथापि जैसे सर्वत्रव्यापकसूर्यकाप्रकाश सूर्यकांतमणिविषे विशेषकरिकैस्फुरणहोवैहै ॥ तैसे यहआत्मादेवभी तुमारेहृदयविषे तथाहमारेहृदयविषे तथाअन्यप्राणियोंकेहृदयविषे विशेषकरिकैस्फुरणहोवैहै ॥ और हेजनक! जैसे वास्तवतैंसंगतैंरहितजोआकाशहै ॥ सोआकाश गंधर्वनगरकाकारण होवैहै ॥ तैसे वास्तवतें संगतैंरहितजोअद्वितीयआत्माहै ॥ सोआत्मा याकल्पितजगत्काकारणहोवैहै ॥ हेजनक! ऐसाअद्वितीय आनंदस्वरूपआत्मा आपणेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतें नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब बुद्धिकेतादात्म्यसंबंधकरिकै विज्ञान

मयसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ यहआत्मादेव जिनदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिनदुःखोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! यहआनंदस्वरूपआत्मादेव यद्यपि सर्वत्रव्यापकहै ॥ तथापि परिच्छिन्नबुद्धिकेसाथ तादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहोइकै यहआत्मादेव शुष्कतुंबीकीन्यांई अत्यंतल घुताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जन्ममरणादिरूपसंसारकेकारण जेअविद्याकामकर्महैं ॥ तिनोंकेसंबंधकूं यहविज्ञानमयआत्मा प्राप्तहो वैहै ॥ और हेजनक ! जैसे यालोकविषे क्रीडाकरतेहुएबालक हस्तविषेदंडकूंग्रहणकरिकै कंदुककूं दशोंदिशाविषेभ्रमणकरावैहैं ॥ एकक्षणमात्रभी ताकंदुककूं भूमिविषेठहरणेदेवैनहीं ॥ तैसे पुण्यपापरूपकर्म याजीवकूं नानाप्रकारकीयोनियोंविषेप्राप्तकरैहैं ॥ और हेजनक ! जैसे यालोकविषे कूपादिकोंतैंजलकेनिकासणेकासाधन जोअरघटनामायंत्रहै ॥ तायंत्रकेऊपरिस्थितजोदीर्घरज्जु है ॥ तारज्जुकेसाथबांधीहुई जेमृत्तिकाकीघटियांहैं ॥ तेघटियां कूपादिकोंतैंजलकाग्रहणकरिकै ऊपरिआइकै ताजलकापरित्याग करैहैं ॥ पुनःतेघटियां नीचेजाइकै कूपादिकोंतैंजलकाग्रहणकरिकै ऊपरिआइकै ताजलकापरित्यागकरैहैं ॥ इसप्रकार तेघटियां अ नेकवारजलकाग्रहणकरैहैं ॥ और अनेकवार ताजलकापरित्यागकरैहैं ॥ तैसे यहजीवात्माभी पुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं अनेकप्र कारकेऊचनीचशरीरोंकूंग्रहणकरिकै पुनःतिनशरीरोंकापरित्यागकरैहै ॥ कदाचित् यहजीवात्मा पातालकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कदा चित् यहजीवात्मा नरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कदाचित् यहजीवात्मा स्वर्गादिकलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कदाचित् यहजीवात्मा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार पुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं यहजीवात्मा अनेकप्रकारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ! किसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं यहजीवात्मा जबी ब्रह्माकेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै तबी ताश्वानकेशरीरकूंही आपणाआत्मारूपकरिकैमानैहै ॥ और किसी पापकर्मकेप्रभावतैं यहजीवात्मा जबी श्वानकेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी ताश्वानकेशरीरकूंही आपणाआत्मारूप करिकैमानैहै ॥ इसप्रकार पुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं यहविज्ञानमयआत्मा जिसजिसशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतिसशरीरकूं आप णाआत्मारूपकरिकैहीमानैहै ॥ और हेजनक ! यहविज्ञानमयआत्मा जबी पुण्यकर्मकेक्षयहुए ताब्रह्माकेशरीरकापरित्यागकरैहै ॥ तबी यहजीवात्मा ताब्रह्माकेशरीरकूंश्वानकेविष्ठासमान अत्यंतनिकृष्टमानैहै ॥ और यहजीवात्मा पापकर्मकेक्षयहुए जबी ताश्वा

नशरीरकापरित्यागकरैहै ॥ तबी यहजीवात्मा ताश्वानशरीरकूंभी अत्यंतनिकृष्टमानैहै ॥ इसप्रकार जिसजिसशरीरकूं यहजीवा त्मापरित्यागकरै ॥ तिसतिसशरीरकूं यहजीवात्मा श्वानकेविष्ठासमान अत्यंतनिकृष्टमानैहै ॥ और हेजनक! यहविज्ञानमयआ त्मा यास्थूलशरीरकापरित्याकरिकै ब्रह्मातैंआदिलैके श्वानपर्यंत जिसजिसशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतिसशरीरकेआहारोंकूं त थास्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकूं सर्वतैंअधिककरिकैमानैहै ॥ और हेजनक! यहविज्ञानमयआत्मा जबी यास्थूलशरीरविषे आत्मबु द्धिकरैहै ॥ तबी तास्थूलशरीरकेदाहतैं आपणादाहमानैहै ॥ और स्थूलशरीरकेचंदनादिकपूजनतैं आपणापूजनमानैहै ॥ औ र स्थूलशरीरकेजन्ममरणतैं आपणाजन्ममरणमानैहै ॥ इसप्रकार शरीरादिकोंविषे आत्मबुद्धिकरिकै यहविज्ञानमयआत्माअने कप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब नरककेदुःखोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यद्यपि यासंसारविषेदुःखरूपता तुमनैंअनंतवा र अनुभवकरीहै ॥ तथापि तिनदुःखोंकेस्मरणकरावणेवासते यत्किंचित्दुःखोंकूं मैं तुमारेप्रतिकथनकरताहूं ॥ तिनदुःखोंकूं तू सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ हेजनक! यहविज्ञानमयआत्मा जबी यास्थूलशरीरकापरित्यागकरैहै ॥ तबी अनेकप्रकारकेदुःखोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिनदुःखोंकाकथन पूर्व मैंने तुमारेप्रतिकऱ्याहै ॥ यातैं तिनमरणकालकेदुःखोंका पुनःहम कथनकरतेनहीं ॥ याकार णतैं अबी नरककेदुःखोंकूं कथनकरैहैं ॥ हेजनक! यहविज्ञानमयआत्मा एकशरीरकापरित्यागकरिकै दूसरेशरीरकूं अवश्यप्राप्तहो वैहै ॥ तहां पूर्वलेपापकर्मकेवशतैं यहजीवात्मा जबी नरककेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी तानरकविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूं यहजीव प्राप्तहोवैहै ॥ जिननरककेदुःखोंकूंस्मरणकरणेतैंभी हमारेकूं भयकीप्राप्तिहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जैसे यालोकविषे जिसजीव कूं बहुतदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिसजीवकाशरीर नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे नरकविषे बहुतदुःखकरिकै याजीवकाशरीर नाशकूं क्यूं नहींप्राप्तहोता ॥ समाधान ॥ हेजनक! जैसे स्वप्नअवस्थाविषे याजीवकूंनानाप्रकारकेदुःखप्राप्तहोवैहैं ॥ तौभी ताजीवकेस्थूलशरी रकानाजहोवैनहीं ॥ तैसे नरकविषे नानाप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिहुएभी याजीवका यमयातनाकाशरीर नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ ता त्पर्ययह ॥ जिनपापकर्मोंने नरकविषे याजीवकूंदुःखकीप्राप्तिकरणीहै ॥ तेपापकर्म ताशरीरकूंनाशहोणेदेवैनहीं ॥ और हेजनक!

यामनुष्यलोकविषे यापुरुषनें अन्यकिसीप्राणीकूं जिसशरीरकरिकै जिसमनकरिकै जिसवाणीकरिकै जैसेदुःखकीप्राप्तिकरीहै ॥ सोपुरुष जबी नरकविषेजावैहै ॥ तबी तापुरुषकूं सोअन्यप्राणी तिसीशरीरकरिकै तिसीमनकरिकै तिसीवाणीकरिकै तिसदुःखतेंकोटिगुणाअधिकदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ इतनेकरिकै सामान्यतेंनरकदुःखोंकानिरूपणकऱ्या ॥ अब विशेषकरिकै तिनदुःखोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष मार्गविषे चोरीआदिकउपद्रवोंकूंकरैहै ॥ सोपुरुष जबी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी तापुरुषकाअत्यंतसमीपमार्गभी कोटियोजनपरिमाणविस्तारवालाहोवैहै ॥ तिसमार्गविषेचलताहुआयहपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष पादत्राणकीचोरीकरैहै ॥ सोपुरुष जबी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी तापुरुषकेपादोंविषे विषयुक्तलोहेकेतीक्ष्णकंटकलागेहैं ॥ ताकरिकै यहपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष अन्नकी तथाजलकी चोरीकरैहै ॥ सोपुरुष जबी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै तबी सोपुरुष क्षुधाकरिकै तथातृषाकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष वस्त्रोंकीचोरीकरैहै ॥ अथवा जोपुरुष आपणेमातापितादिवृद्धोंकेसमीप बालकभावसैंनहींरहैहै ॥ किंतु अहंकारीहोइकैरहैहै ॥ सोपुरुष जबी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी तापुरुषकेवस्त्रोंकूं यमकेदूत हरणकरैहैं ॥ ताकरिकै सोपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष सुवर्णकीचोरीकरैहै ॥ सोपुरुष जबी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी तापुरुषकीसुवर्णकीत्वचाबनाइकै यमकिंकर तापुरुषकेत्वचाकाछेदनकरैहैं ॥ ताकरिकै सोपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष ब्राह्मणकूंहननकरैहै ॥ सोपुरुष जबी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी जैसेलोहकारपुरुष लोहेकेमुद्गरकरिकै तप्तलोहेकूं ताडनकरैहै ॥ तैसे यमकिंकर लोहेकेमुद्गरोंकरिकै ताब्रह्महत्यारेपुरुषकेमस्तककूं ताडनकरैहैं ॥ ताकरिकै सोपुरुषपरमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष मदिरापानकरैहै ॥ सोपुरुष जबी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यमकिंकर तापुरुषकेमुखविषे मदिराकूंतपाइकैपियावैहैं ॥ कैसीसोमदिरा? ॥ अग्निकेसंबंधतें द्रवीभावकूंप्राप्तहुएलोहेकेसमान

है ॥ ऐसेमदिराकेपडनैकरिकै सोपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष एकतिलप्रमाणभी ब्रा
ह्मणकेसुवर्णकीचौरीकरैहै ॥ सोपुरुष जबी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यमकिंकर तापुरुषकी सुवर्णकेसमानउज्वल तथासघन
ऐसीत्वचाबनाइकै तात्वचाकूं तिलतिलप्रमाणकरिकैछेदनकरैहैं ॥ ताकरिकै सोपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! या
मनुष्यलोकविषे जोपुरुष आपणेगुरुकीस्त्रीकेसाथ तथाआपणीमाताकेसाथ मैथुनकरैहै ॥ सोपुरुष जबी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥
तबी यमकिंकर तापुरुषकेउपस्थकूंछेदनकरैहैं ॥ और ताउपस्थकूं तापुरुषकेमुखविषेदेकै ताकेप्राणोंकानिरोधकरैहैं ॥ और जिस
प्रकार तादुष्टपुरुषनैं पूर्व गुरुकीस्त्रीकेसाथ आलिंगनकऱ्याथा तिसप्रकार यमकिंकर लोहेकीस्त्रीकूंअग्निविषेतपाइकै तालोहेकी
स्त्रीकेसाथ तादुष्टपुरुषकूं आलिंगनकरावैहैं ॥ ताकरिकै सोपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! यामनुष्यलोकविषे जो
पुरुष परस्त्रीकेसाथ मैथुनकरैहै ॥ सोपुरुष जबी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी तापुरुषकूं गुरुकीस्त्रीगामीपुरुषतैं किंचित्न्यूनदुः
खकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ परस्त्रीगामीपुरुषके उपस्थकाछेदन यमकिंकरकरैंनहीं ॥ किंतु तापरस्त्रीकेसमान लोहेकीस्त्रीकूं
अग्निविषेतपाइकै तालोहेकीस्त्रीकेसाथ तापुरुषकूंआलिंगनकरावैहैं ॥ ताकरिकै सोपरस्त्रीगामीपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ औ
र हेजनक! जैसे परस्त्रीकेगमनतैं सोव्यभिचारीपुरुष नरकविषेदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे साव्यभिचारिणीस्त्रीभी परपुरुषकेगम
नतैं नरकविषेदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! पुण्यपापकर्मकेफलकूंबोधनकरणेहारे जेश्रुतिस्मृतिआदिकशास्त्रहैं ॥ तिन
शास्त्रोंविषे पुरुषकानामलैकैही पुण्यपापकर्मकेफलकाकथनकऱ्याहै ॥ स्त्रीकानामलैकै पुण्यपापकर्मकाफल किसीशास्त्रविषेकथनक
ऱ्यानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ स्त्रीकूं पुण्यपापकर्मकाफलहोवैगानहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक! स्त्रीकूं तथानपुंसककूं पुण्यपा
पकर्मकाफलनहींहोवैहै ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकरिकै शास्त्रविषे पुरुषनामकाग्रहणनहींकऱ्या ॥ किंतु पुरुष स्त्री नपुंसक यातीनोंश
रीरोंविषे पुरुषशरीर प्रधानहै ॥ यातैं पुरुषनामकेग्रहणतैं स्त्रीनपुंसककाभी अर्थतैंग्रहणहोइसकैहै ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकरिकै
शास्त्रविषेपुरुषनामकाग्रहणकऱ्याहै ॥ यातैं पूर्वउक्तपापकर्मोंकाफल जैसेपुरुषभोगैहै ॥ तैसे स्त्री तथानपुंसक दोनोंभोगैहैं ॥ हेजनक!

कोईशास्त्रवेत्तामुनितौ पशुपक्षीआदिकोंकूंभी पुण्यपापकर्मकेफलकीप्राप्ति अंगीकारकरैं हैं ॥ यातैं पशुपक्षियोंकूंभी जबी पुण्य
पापकर्मकाफलहोवैहै ॥ तबी पत्नीरूपकरिकै यज्ञादिककर्मोंकेअधिकारीजेस्त्रियांहैं ॥ तिनस्त्रियोंकूं पुण्यपापरूपकर्मकाफलहोवैहै ॥
याकेविषे क्याकहणाहै ? ॥ शंका ॥ हेभगवन्! पत्नीरूपकरिकै यज्ञकाअधिकारीजास्त्रीहै ॥ तास्त्रीकूं यद्यपि यज्ञादिकपुण्यकर्मोंके
फलकीप्राप्तिसंभवैहै ॥ तथापि तास्त्रीकूं पापकर्मकेफलकीप्राप्तिसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक! जोकदाचित् स्त्री केवलपुण्यक
र्मकेफलकूंहीप्राप्तहोतीहोवै ॥ और पापकर्मकेफलकूंनहींप्राप्तहोतीहोवै तौस्त्रीकापाणिग्रहणकरणा व्यर्थहोवैगा ॥ काहेतैं? विवा
हकालविषे पुरुष याप्रकारकावचनउच्चारणकरिकै स्त्रीकेपाणिकूंग्रहणकरैहै ॥ त्वंममधर्मादौसहायनीस्याः ॥ अर्थयह ॥ हेपत्नी!
तूं मेरेधर्मविषे तथाअधर्मविषे तथाअर्थविषे तथाकामविषे हमारेसमान फलकाभागीहोवै ॥ याप्रकारकावचनउच्चारणकरिकै सोपु
रुष तास्त्रीकापाणिग्रहणकरैहै ॥ सो व्यर्थहोवैगा ॥ यातैं पुण्यकर्मकेफलकीन्यांई सास्त्री पापकर्मकेफलकूंभी अवश्यभोगेहै ॥ किंवा
यालोकविषे जोपुरुष जिसपुरुषकेशुभकर्मकेफलकूंभोगेहै ॥ सोपुरुष तापुरुषके अशुभकर्मकेफलकूंभी अवश्यभोगेहै ॥ जैसे यालो
कविषे महाराजाकेपुण्यकर्मकाफलजोराज्यसंपदाहै ॥ तासंपदाकूं जेपुरुष भोगेहैं ॥ तेपुरुष महाराजाकेपापकर्मकाफलजोआपदाहै
ताकूंभी अवश्यभोगेहैं ॥ पापकर्मकेफलकापरित्यागकरिकै केवलपुण्यकर्मकाफल कोईप्राणी भोगेनहीं ॥ तैसे जास्त्री पतिकेपुण्य
कर्मकेफलकूंभोगेहै ॥ सास्त्री पतिकेपापकर्मकेफलकूंभी अवश्यभोगेगी ॥ इतनेकरिकै यहअर्थसिद्धभया ॥ पुरुष अथवास्त्री अथवा
नपुंसक जोजोप्राणी पापकर्मकूंकरैहै ॥ सोसोप्राणी मरिकैनरकविषे दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब पापकर्मविषे दूसरेकूंप्रेरणाकरणेहारे
जेजीवहैं ॥ तिनोंकेदुःखोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यामनुष्यलोकविषे जोस्त्री अथवा पुरुष अन्यकिसीस्त्रीकूं अथवा अन्यकि
सीपुरुषकूं बलात्कारसैं पापकर्मविषेप्रवृत्तकरैहैं ॥ तापापकर्मकाफल करणेहारीस्त्रीकूं तथापुरुषकूं होवैनहीं ॥ किंतु तापापकर्मवि
षे प्रवृत्तकरणेहारीजोस्त्रीहै अथवा पुरुषहै ॥ तिनोंकूंही तापापकर्मकाफलहोवैहै ॥ और जहां किसीस्त्रीनैं अथवाकिसीपुरुषनैं अन्य
किसीस्त्रीकूं अथवा अन्यकिसीपुरुषकूं किसीपापकर्मविषेप्रवृत्तकन्याहोवै ॥ और तापापकर्मविषे तास्त्रीकी तथापुरुषकी आपणीभी

इच्छाहोवै ॥ तास्थलविषे तापापकर्मकाफल तापापकर्मकेकरणेहारे स्त्रीपुरुषकूं तथा पापकर्मविषे प्रवृत्तकरणेहारे स्त्रीपुरुषकूं समानही
होवैहै ॥ और जबी किसीस्त्रीकी तथाकिसीपुरुषकी व्यभिचारकरणेविषे आपणीइच्छाहोवैनहीं ॥ और दूसराकोईबलवान्पुरुष बलात्
कारसैं तिनोंकूं व्यभिचारकर्मविषेप्रवृत्तकरै ॥ तबी तास्त्रीकूं तथापुरुषकूं ताव्यभिचारकर्मकाफल प्राप्तहोवैनहीं॥ किंतु बलात्कारसैं ता
पापकर्मकूंकरावणेहाराजोपुरुषहै ॥ तिसीकूंही ताव्यभिचाररूपकर्मकाफल प्राप्तहोवैहै ॥ परंतु याकेविषेभी इतनीविशेषताहै ॥ जास्त्री
की तथापुरुषकी व्यभिचारकर्मकरणेविषे आपणीइच्छाहोवैनहीं॥ और किसीबलवान्पुरुषनैं तिनोंकूं व्यभिचारकर्मविषे प्रवृत्तकऱ्या॥
तहां सास्त्री तथापुरुष ताव्यभिचारकर्मके निवृत्तिकेउपायकूंनकरिकै ताव्यभिचारकर्मविषे जोकदाचित्प्रवृत्तहोवै तौ तिसस्त्रीकूं
तथापुरुषकूं ताव्यभिचारकर्मकाफल प्राप्तहोवैहै ॥ परंतु ताव्यभिचारकर्मकेकरावणेहारेपुरुषकूं अधिकफलहोवैहै ॥ और करणेहा
रेकूंअल्पफलहोवैहै ॥ यालोकविषे व्यभिचाररूपपापकर्मविषे विशेषकरिकैलोकोंकीप्रवृत्ति देखणेमैंआवैहै ॥ याकारणतैं व्यभिचा
ररूपपापकर्मविषे दुःखरूपफलकीव्यवस्थादिखाईहै ॥ यातैं याप्रकार कर्मकेफलकीव्यवस्था हिंसादिकसर्वपापकर्मोंविषे बुद्धिमान्
पुरुषोंनैंजानिलेणी ॥ अब पापकर्मतैंनिवृत्तिकेउपायकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! कोईकशास्त्रवेत्तामुनितौ याप्रकारका कथनकरैहैं ॥
किसीबलवान्पुरुषनैं अन्यकिसीपुरुषकूं अथवा किसीस्त्रीकूं बलात्कारसैंकिसीपापकर्मविषे प्रवृत्तकऱ्या ॥ तापापकर्मकीनिवृत्ति
जोकिसीदूसरेउपायतैंनहींहोतीहोवै तौ सोपुरुष अथवा सास्त्री तापापकर्म तैंनिवृत्तहोणेवासते आपणेशरीरकाभी परित्यागक
रिदेवै ॥ परंतु तापापकर्मकूंनहींकरै ॥ और जोकदाचित् सोपापकर्मकेकरावणेहारापुरुष तिनोंकूंमरणेकाउपायभी नहींकरणेदेवै
तौ तापापकर्मकाफल करणेहारेपुरुषकूं तथास्त्रीकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु बलात्कारसैं तापापकर्मकूंकरावणेहाराजोपुरुषहै ॥ तिसकूंही
तापापकर्मकाफल प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं मरणपर्यंत पापकर्मकेनिवृत्तिकाउपाय जीवोंनैंकरणा ॥ याप्रकार कोईशास्त्रवेत्तामुनि कथन
करैहैं ॥ और हेजनक ! शास्त्रकेयथार्थतात्पर्यकूंजानणेहारेजोकोईमुनिहैं ॥ तेतौ याप्रकारका कथनकरैहैं ॥ बलात्कारसैं प्राप्तभ
याजोपापकर्महै ॥ ताकेनिवृत्तिकरणेवासते यापुरुषनैं मरणरूपउपायकूंछोडिकै दूसरेसर्वउपायकरणे ॥ मरणरूपउपायकूं यापुरुष

नें कदाचित्‌नहींकरणा ॥ काहेतें ? ब्रह्महत्यातैंआदिलैके जितनेपापकर्म हैं ॥ तिनसंपूर्णोंतें आत्महत्या अधिकहै ॥ यातें जोपुरुष व्यभिचारादिकअल्पपापकर्मोंकेभयतें आत्महत्यारूप महान्‌पापकर्मकूंकरै है ॥ सोपुरुष कैसामूढहै ? जैसे यालोकविषे कोईमूढपुरुष वृश्चिककेदंशकेभयतें भागिकै सर्पकेदंशकूंप्राप्तहोवै तापुरुषकेसमानहै ॥ यातें आपणेशरीरकानाशकरिकैभी यहपुरुष पापकर्मतें निवृत्तहोवै ॥ याप्रकारकाकहणा अत्यंतअसंगतहै ॥ उलटा जिसस्थलविषे किसीपापकर्मकेनकरणेकरिकै आपणामृत्युहीनिश्चयहोता होवै ॥ तिसस्थलविषे सोपुरुष आपणेशरीरकीरक्षाकरणेवासते निःशंकहोइकै तापापकर्मकूंकरै ॥ हेजनक ! यासिद्धांतपक्षविषे ते शास्त्रवेत्तामुनि याप्रकारकीयुक्तिभीकहैहैं ॥ जिसपुरुषकी जापापकर्मकेकरणेविषे आपणीइच्छाहैनहीं ॥ और कोईबलवान्‌पुरुष बलात्कारसें तापुरुषकूं तिसपापकर्मविषेप्रवृत्तकरै है ॥ तापापकर्मकाफल करणेहारेपुरुषकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु करावणेहारेपुरुषकूं ही तापापकर्मकाफल प्राप्तहोवैहै ॥ और सोपापकरणेहारापुरुष जबी तापापकर्मकेकरणेतैंभयकूंप्राप्तहोइकै आपणेमरणकूंसंपादनकरैहै ॥ तबी ताआत्महत्याकाफल करणेहारेपुरुषकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ पापकर्मकेकरावणेहारेपुरुषकूं ताआत्महत्याकाफल प्राप्त होवैनहीं ॥ काहेतें ? तापापकर्मकेकरावणेहारेपुरुषनैंतौ तापुरुषकूं तापापकर्मकेकरणेविषे प्रेरणाकरीहै ॥ आत्महत्याकरणेविषे प्रेरणाकरीनहीं ॥ यातें यहसिद्धभया ॥ पापकर्मकीनिवृत्तिवासते यापुरुषनैं आपणेमरणकूंछोडिकै दूसरेसर्वउपायकरणे ॥ आपणेमरणकूंकदाचित्‌नहींकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! शास्त्रविषेतौ पापकर्मका सर्वथानिषेधकऱ्याहै॥तहां श्लोक॥अकर्तव्यं नकर्तव्यं प्राणैः कंठगतैरपि॥ कर्तव्यमेव कर्तव्यं प्राणैःकंठगतैरपि॥ अर्थयह ॥ जबपर्यंत यापुरुषोंकेकंठविषेप्राणस्थितहै ॥ तबपर्यंत यापुरुषोंनैं नकरणेयोग्यपापकर्म कदाचित्‌नहींकरणा ॥ और करणेयोग्यजोपुण्यकर्म है तिसकूं तबपर्यंतकरणा ॥१॥ इत्यादिकशास्त्रोंविषे सर्वथा पापकर्मकानिषेधकह्याहै ॥ यातें मरणतें याशरीरकीरक्षाकरणेवासते यापुरुषनैं पापकर्मकूंभीकरणा ॥ याप्रकारकाकहणा शास्त्रसेंविरुद्धहोवैहै ॥ **समाधान** ॥ हेजनक ! किसीबलीपुरुषनैं पापकर्मविषेप्रवृत्तकऱ्याहुआ यहपुरुष आपणेमरणकूंसंपादनकरिकैभी तापापकर्मतैंनिवृत्तहोवै ॥ याप्रकारकेअर्थविषे तिनवचनोंकातात्पर्यनहीं ॥ किंतु जबपर्यंत यापुरुषकेकंठविषेप्राणस्थितहैं ॥ तबपर्यंत

यहपुरुष आपणीइच्छाकरिकै किसीपापकर्मकूंनहींकरै ॥ याप्रकारकेअर्थविषेही तिनवचनोंकातात्पर्य है ॥ यातें पापकर्मकीभयतें यापुरुषनें आत्महत्याकदाचित्भीनहींकरणी ॥ और जोपुरुष पापकर्मकीभयतें आत्महत्याकरै है ॥ तापुरुषकूं परमदुःखकीप्राप्ति होवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ असुर्यानामतेलोका अंधेनतमसावृताः ॥ मृत्वातानभिगच्छंति येकेचात्महनोजनाः ॥ अर्थयह ॥ जे पुरुषआपणेआत्माकाहननकरै हैं ॥ तेपुरुष मारिकरिकै अविवेकीपामरपुरुषोंकूंप्राप्तहोणेयोग्य तथाअंधकारकरिकै आवृत जेतामसी लोकहैं ॥ तिनलोकोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ १ ॥ याश्रुतिनें आत्महत्यारेपुरुषोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिकथनकरीहै ॥ यातेंयहअर्थसिद्धभया ॥ प्रयोजकपुरुष तथाप्रयोज्यपुरुष तथाअनुमंतापुरुष यातीनोंकूं पापकर्मकादुःखरूपफल अवश्यप्राप्तहोवैहै ॥ परंतु सोदुःखरूपफल रोगादिकआपदावोंकीन्यूनअधिकताकरिकै तिनप्रयोजकादिकपुरुषोंविषे न्यूनअधिकभीहोवैहै ॥ इहां दूसरेपुरुषकूं पापकर्मविषे प्रवृत्तकरणेहाराजोपुरुषहै ॥ तापुरुषकानाम प्रयोजकहै ॥ और दूसरेकिसीबलवान्पुरुषनें प्रवृत्तकऱ्याहुआजोपुरुष रागपूर्वक तापापकर्मविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ तापुरुषकानाम प्रयोज्यहै ॥ और जोपुरुष दूसरेपुरुषकूं पापकर्मतेंनिवृत्तकरणेविषेसमर्थहोवै ॥ और तापुरुषकूं पापकर्मतेंनिवारणनहींकरैहै ॥ तापुरुषकानाम अनुमंताहै ॥ यातीनोंकूं पापकर्मकेफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याकारणतें जिसपुरुषकूं आपणेकल्याणकरणेकीइच्छहोवै ॥ तिसपुरुषनैं आप पापकर्मकूंकरणानहीं ॥ और दूसरेपुरुषकूंप्रेरणाकरिकै पापकर्मकूंकरावणानहीं ॥ और जोआपणासामर्थ्यहोवै तौ दूसरेपुरुषकूंभी पापकर्मतेंनिवारणकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन्! पापकर्मकेकरणेहारापुरुष नरकविषेजाइकै तिनपापकर्मोंकेदुःखरूपफलकूं अवश्यभोगेहै ॥ याप्रकारकानियम पूर्व आपनेंकथनकऱ्या ॥ सोनियम संभवैनहीं ॥ काहेतें? धर्मशास्त्रविषे दुःखरूपफलकेभोगतेंविनाही प्रायश्चित्तकरिकै पापकर्मकीनिवृत्ति कथनकरीहै ॥ समाधान ॥ हेजनक! जोपुरुष व्यामोहकरिकै अथवा भ्रमकरिकै अथवा आपदाकरिकै किसीपापकर्मकूंकरै है ॥ तापुरुषकेपापकर्मकीनिवृत्तिवासते धर्मशास्त्रनें प्रायश्चित्तोंकाविधानकऱ्याहै ॥ और ताप्रायश्चित्तकरिकैभी तापुरुषकापापकर्म तबी निवृत्तहोवैहै ॥ जबी सोपुरुष तिसपापकर्मकूं पुनःकदाचित्नहींकरैहै ॥ और जोपुरुष तिसपापकर्मकीनिवृत्तिवासते प्रायश्चित्तकूंकरिकै पुनःति

सीपापकर्मकूंकरैहै ॥ तापुरुषका सोपापकर्म प्रायश्चित्तकरिकैनिवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे हस्ती जलविषेस्नानकरिकै पुनः आपणे मस्तकविषेमृत्तिकापावैहै ॥ यातैं सोहस्तीकास्नान निष्फलहै ॥ तैसे जोपुरुष किसीपापकर्मकीनिवृत्तिवास्ते प्रायश्चित्तकूंकरिकै पुनःतिसीपापकर्मकूंकरैहै ॥ तापुरुषका सोप्रायश्चित्तभी निष्फलही है ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ पापकर्मकेप्रायश्चित्ततैंरहित जेपापी पुरुषहैं तथास्त्रियां हैं तथानपुंसकहैं ॥ तेसंपूर्णपापीजीव मरिकैनरकविषे अवश्यदुःखकूंभोगेहैं॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै॥ श्लोक ॥ नाऽभुक्तंक्षीयतेकर्म कल्पकोटिशतैरपि ॥ अर्थयह ॥ आत्मज्ञानतैं तथाप्रायश्चित्ततैं रहितजोपुरुषहै ॥ ताअज्ञानीपुरुषके पुण्यपापरूपकर्म अनेककोटिकल्पोंकरिकैभी भोगतैंविना क्षयहोवैनहीं ॥ किंतु भोगकरिकैही तिनपुरुषोंकेकर्मोंकाक्षयहोवैहै ॥ १ ॥ और हेजनक! ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकूंकरणेहारामहापातकीपुरुष तथाकरावणेहारापुरुष जिसप्रकारकेनरकदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिनमहापातकीपुरुषोंकेसाथ एकवर्षपर्यंत जोपुरुषसंगकरैहै॥ सोपुरुषभी मरिकैनरकविषे तिसीप्रकारकेदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! यामनुष्यलोकविषे वादविवादतैंरहित जेसाधुस्वभाववालेप्राणी हैं॥ तिनप्राणियोंकूं जोनिर्दयपुरुष हननकरैहै॥ सोनिर्दय पुरुष जबी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी जिसप्रकारकेजीवोंकूं तानिर्दयपुरुषनैं पूर्व हननकऱ्याथा ॥ तिसीप्रकारकेजीव नरकके मार्गविषे तापापीजीवके प्राणोंकारोधनकरैहैं ॥ तथा नानाप्रकारकेशस्त्रोंकरिकै तापापीजीवकेशरीरकाछेदनकरैहैं ॥ तथातीक्ष्ण दांतोंकरिकै तापापीजीवकाछेदनकरैहैं ॥ तथा तीक्ष्णखुरोंकरिकै तथा तीक्ष्णशृंगोंकरिकै तापापीजीवकेशरीरकाछेदनकरै हैं ॥ तथा लोहकेमुद्गरोंकरिकै तापापीजीवकेमस्तककूंभेदनकरैहैं ॥ ताकरिकै सोपापीजीव परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष मांसकूंभक्षणकरैहै सोपुरुष जबी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी तापापीपुरुषकेमांसकूं श्वानगृध्रादिकजंतु भक्षणकरैहैं ॥ ताकरिकै सोपापीजीव परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष छलकपटसैं परायेधनकाहरणकरिकै आपणे स्त्रीपुत्रादिककुटंबकापालनकरैहै ॥ सोपुरुष जबी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी तापुरुषके सन्मुख ताकेस्त्रीपुत्रादिकप्रियबांधवोंकूं श्वानगृध्रादिकजंतु भक्षणकरैहैं ॥ तिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेभक्षणकूंदेखिकै सोपुरुष परम

दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! अधर्मकरिकैकुटुंबकूंपालनकरणेहाराजोपुरुषहै ॥ तिसकूं तथा ताकेस्त्रीपुत्रादिककुटुंबकूं गृध्रा दिकपक्षी आपणेमुखमैंलेकै आकाशविषेउडेहैं ॥ तहां दूरआकाशविषेजाइकै तिनपापीजीवोंकूं नीचेगेडे हैं ॥ इसप्रकार दूरआका शतैंनीचेगिडेहुए तेपापीजीव कबीतो अग्निकेकुंडविषेपडे हैं ॥ और कबी मूषकादिकजीवोंकरिकैपूर्ण जेजलकेस्थानहैं तिनोंविषेपडे हैं ॥ और कबी पाषाणकीभूमिविषेपडे हैं ॥ और कबी अगाधजलविषे पडे हैं ॥ और कबी महान्वायुकेकुंडविषेपडे हैं ॥ और कबी विष्ठामूत्रादिकोंकेकुंडविषेपडे हैं ॥ इसतैंआदिलैकै अनेकमलिनस्थानोंविषेपडे हैं ॥ और भूमिविषेपडेहुए तिनपापीजीवोंकूंभ क्षणकरणेवासते तेश्वानगृध्रादिकजंतु परस्पर आकर्षणकरैं हैं ॥ कबी तिनपापीजीवोंकूं तेश्वानादिक समानभूमिविषेलेजावैं हैं ॥ औ र कबी विषमभूमिविषेलेजावैं हैं ॥ याप्रकारकीदुर्गतिकूंप्राप्तहुए तेपापीजीव शरीरकरिकै तथामनकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और जैसे कृमियुक्तश्वानका लोक निरादरकरैं हैं ॥ तैसे नरकविषे तिनपापीजीवोंका संपूर्णप्राणी निरादरकरैं हैं ॥ हेजनक! अधर्म करिकैकुटुंबकूंपालनकरणेहारापुरुष इसतैं आदिलैकै अनेकप्रकारकेदुःखोंकूं सहनकरताहुआ कुटुंबसहित अथवा एकलाही यम लोककेमार्गकूंप्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोयमलोककामार्ग? यहसूर्यभगवान् द्वादशमूर्तिकूंधारणकरिकै जिनमार्गोंविषे तप्तकरै है ॥ और अग्निकरिकैतपायेहुए जेलोष्टादिकधातुहैं तिनोंकरिकै तेमार्ग जडेहुएहैं ॥ और अग्निकीज्वालाकरिकै तेमार्गव्याप्तहैं ॥ और जिन मार्गोंविषे कोईजलनहीं है ॥ तथा कोईवृक्षनहीं हैं ॥ हेजनक! यामनुष्यलोकविषे जेपुरुष शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीक रिकै जीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ तेपापीपुरुष यमकिंकरोंकरिकैताडनकरेहुए याप्रकारकेभयानकमार्गोंकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ तामार्गके चलनेकरिकै तेपापीजीव परमदुःखकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ और हेजनक! जैसे यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष चौरीआदिकपापकर्मोंकूंकरै है ॥ तापुरुषकूं राजाकेभृत्य दारुणपाशोंसैंबांधिकै राजद्वारविषेलेजावैं हैं ॥ और तेराजाकेभृत्य तापापीपुरुषकेशरीरविषे नानाप्रकार केशस्त्रोंकाप्रहारकरैं हैं ॥ और तापापीपुरुषनैं महाराजाका तथाअन्यलोकोंका जोजोअपराधकऱ्याहै ॥ ताअपराधकूं वारंवार क थनकरतेहुए तेराजाकेभृत्य तापापीपुरुषकूं कठोरवचनोंकरिकैताडनकरैं हैं ॥ तैसे यामनुष्यलोकविषे स्त्रीपुत्रादिककुटुंबकेपालनकर

णेवासते नानाप्रकारकेपापकर्मोंकूं करणेहाराजोपुरुषहै ॥ तिसपापीपुरुषकूं दृढपाशोंसैंबांधिकरिकै यमकिंकर नरककेमार्गविषेलै जावैहैं ॥ और तामार्गविषे तेयमकिंकर नानाप्रकारकेशस्त्रोंकरिकै तापापीजीवकूंहननकरैहैं ॥ और यापुरुषनैं कुटुंबकेपालनकर णेवासते जेजेपूर्वपापकर्मकरेथे ॥ तिनपापकर्मोंकूं वारंवार कथनकरतेहुए तेयमकिंकर नानाप्रकारकेकठोरवचनोंकरिकै तापापी जीवकूंताडनकरैहैं ॥ अब जिनकठोरवचनोंकरिकै तेयमकिंकर तापापीजीवकानिरादरकरैहैं ॥ तिनवचनोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हे जनक! तापापीजीवकेप्रति तेयमकिंकर याप्रकारकेकठोरवचनकहैहैं ॥ हेपापीजीव! अग्निहोत्रादिककर्मोंकरिकै स्वर्गकीप्राप्तिकर णेहारा तथा श्रवणादिकसाधनोंकरिकै मोक्षकीप्राप्तिकरणेहारा जोयहमनुष्यशरीरहै ॥ सो अत्यंतदुर्लभहै ॥ तिसविषेभी भारत खंडविषे मनुष्यशरीरकीप्राप्तिहोणी अत्यंतदुर्लभहै ॥ ऐसेदुर्लभमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकैभी तुमनैं किंचित्मात्रभी पुण्यकर्मकऱ्या नहीं ॥ उलटा कुटुंबकीपालनाकरणेवासते तुमनैं नानाप्रकारकेपापकर्मही संपादनकरे ॥ यातैं तेरेकूंधिक्कारहै ॥ और हेपापीजीव! यामनुष्यशरीरकूंपाइकै जिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेमोहकरिकै तुमनैं पुण्यकर्मकूंसंपादननहींकऱ्या ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव कोईदु र्लभनहींहैं ॥ किंतु यानरकशरीरविषेभी तथाश्वानादिकोंकेशरीरोंविषेभी तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव तुमारेकूं बहुतप्राप्तहोवैंगे ॥ परंतु सुखकेदेणहारेजेपुण्यकर्महैं ॥ तेपुण्यकर्म तुमारेकूं यामनुष्यशरीरतैंविना किसीभीशरीरविषे प्राप्तनहींहोवैंगे ॥ और हेपापीजीव! जिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंके पालनकरणेवासते तुमनैं नानाप्रकारकेपापकर्मकरेथे तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव कैसेकृतघ्नहैं? ॥ जोश्मशा नभूमिविषे तेरेकूंएकलाछोडिकै आपणेगृहकूंजातेभयेहैं ॥ ऐसेकृतघ्नस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंके पालनकरणेवासते तुमनैं अनेकप्रकारके पापकर्मकरेहैं॥ याकारणतैं तेरेकूंधिक्कारहै॥ और हेपापीजीव! यामनुष्यशरीरविषे कुटुंबकेपालनकरणेवासते जोजोपापकर्म तुमनैं करेथे ॥ तेपापकर्म जैसे दुःखदेणेवासते तुमारेसाथआयेहैं ॥ तैसे यामनुष्यशरीरविषे जोतू पुण्यकर्मोंकूंकरता तौ तेपुण्यकर्मभी सुखकेदेणेवासते तुमारेसाथआवते ॥ परंतु यामनुष्यशरीरविषे तुमनैं पुण्यकर्मकरेनहीं ॥ यातैं केवलपापकर्मके दुःखरूपफलकूं तू अबीभोग ॥ और हेपापीजीव! जैसे व्याघ्रतैं जीवोंकूंभयकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे दूसरेप्राणियोंकेधनादिकपदार्थोंकूं हरणकरणेहारा

जोतू बलवान्था ॥ तिसतुमारेतैं तेजीव भयकूंप्राप्तहोतेभये ॥ और हेपापीजीव ! यामनुष्यलोकविषे जिसजिसपुरुषकेपास सुंदरीस्त्रीथी ॥ तथा गौअश्वादिकसुंदरपशुथे ॥ तथा नानाप्रकारकाधनथा ॥ तिनपुरुषोंकेस्त्रीआदिकसुंदरपदार्थोंकूं तूपापात्मा बलात्कारसैं हरणकरताभया ॥ तापापकर्मकरिकै अबी तुमारेनेत्रोंकूं तथाहृदयकूं येगृध्रादिकपक्षी छेदनकरै हैं ॥ और हेपापीजीव ! यामनुष्यलोकविषे जोतुमनैं शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै दूसरेप्राणियोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरी है ॥ सोईतुमारापापकर्म अबी तुमारेकूंदुःखदेणेवासते तुमारेसन्मुखभयाहै ॥ और हेपापीजीव ! जैसे यामनुष्यलोकविषे कोईभाग्यहीनपुरुष पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं राज्यपदवीकूंप्राप्तहोइकैभी तत्काल नष्टहोइजावैहै ॥ तैसे पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं याभारतखंडविषे मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकैभी तूभाग्यहीनजीव पापकर्मकरिकै नरककूंहीप्राप्तभयाहै ॥ याकारणतैं तेरेकूंधिक्कारहै ॥ अब पापीजीवकेउद्वेगकरणेवासतै पितृलोकके पितृयाणनामामार्गकूं निरूपणकरै हैं ॥ हेपापीजीव ! यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष यज्ञादिकपुण्यकर्मोंकूंकरै है ॥ सोपुरुष यामनुष्यशरीरकापरित्यागकरिकै प्रथम धूमकूंप्राप्तहोवै है ॥ और ताधूमतैंअनंतर सोकर्मीपुरुष रात्रिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तारात्रितैंअनंतर सोकर्मीपुरुष कृष्णपक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कृष्णपक्षतैंअनंतर सोकर्मीपुरुष षट्मासरूपदक्षिणायनकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तादक्षिणायनतैंअनंतर सोकर्मीपुरुष पितृलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तापितृलोकतैंअनंतर सोकर्मीपुरुष अंतरिक्षलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताअंतरिक्षलोकतैंअनंतर सोकर्मीपुरुष चंद्रलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताचंद्रलोकविषेदेवतावोंनैं प्राप्तकरेजेनानाप्रकारकेभोग तिनभोगोंकूं सोकर्मीपुरुष चिरकालपर्यंतभोगै है ॥ इहां धूम रात्रि कृष्णपक्ष इत्यादिकशब्दोंकरिकै धूमादिकोंकेअभिमानीरूपदेवतावोंकाग्रहणकरणा ॥ हेपापीजीव ! यामनुष्यलोकविषे तेयज्ञादिककर्म तुमनैंकर्येनहीं ॥ याकारणतैं तुमारेकूं पितृलोककीप्राप्तिभीनहींभई ॥ और हेपापीजीव ! स्वर्गादिकलोकोंकेप्राप्तिकासाधन जेयज्ञादिककर्महैं ॥ तेकर्म यास्थूलशरीरकरिकैसिद्धहोवैहैं ॥ यातैं तेयज्ञादिक शारीरककर्म हैं ॥ और ब्रह्मलोककेप्राप्तिकासाधन जेउपासनाहैं ॥ तेउपासना मनकरिकैसिद्धहोवैहैं ॥ यातैं तेउपासना मानसकर्म हैं ॥ और शारीरकर्मोंकीअपेक्षाकरिकै मानसकर्म अत्यंतकठि

नहोवैहैं ॥ हेपापीजीव ! तायज्ञादिरूपशारीरककर्मोंकरिकैभी जबीतू स्वर्गकूंनहींप्राप्तभया ॥ तबी उपासनारूपप्रधानसत्कर्मकरिकै
तू ब्रह्मलोकविषेजावैगा याकेविषे क्याआशाहै? अब ब्रह्मलोकके अधिकारीकानिरूपणकरैहैं ॥ हेपापीजीव ! याभारतखंडविषे
अधिकारीमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइके जेपुरुष विषयसुखतैंविरक्तहोवैहैं ॥ तथा जितइंद्रियहोवैहैं ॥ तथा यमनियमादिकसाध
नोंकरिकैसंपन्नहोवैहैं ॥ ऐसेअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं नानाप्रकारकेउपासनावोंकूंजाणिकरिकै तिनउपासनावोंविषे
पर्यंकविद्यारूपउपासनाकरिकै अथवा पंचाग्निविद्यारूपउपासनाकरिकै अथवा किसीअन्यउपासनाकरिकै तेउपासकपुरुष ब्रह्म
लोककूंप्राप्तहोवैहैं ॥ अब ब्रह्मलोककेस्वरूपकूं तथा ब्रह्मलोकके देवयाननामामार्गकेस्वरूपकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेपापीजीव !
यामनुष्यलोकविषे जेपुरुष पंचाग्निआदिकउपासनावोंकूंकरैहैं ॥ तेउपासकपुरुष सुषुम्नानाडीरूपमार्गद्वारा दशमद्वारतैंबाहरिनि
कसिकै प्रथम अर्चिषकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और ताअर्चिषतैंअनंतर तेउपासकपुरुष दिनकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तादिनतैंअनंतर तेउ
पासकपुरुष शुक्लपक्षकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और ताशुक्लपक्षतैंअनंतर तेउपासकपुरुष षट्मासरूपउत्तरायणकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और ताउत्त
रायणतैंअनंतर तेउपासकपुरुष संवत्सरकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तासंवत्सरतैंअनंतर तेउपासकपुरुष देवलोककूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और
तिसदेवलोकतैंअनंतर तेउपासकपुरुष वायुकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ कैसाहैसोवायु ? ॥ रथकेचक्रविषेछिद्रहोवैहै ॥ तिसीप्रकारकाछिद्र
उपासकपुरुषकेताईं आपणेशरीरविषेदेवैहै ॥ और तावायुतैंअनंतर तेउपासकपुरुष आदित्यकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ कैसाहैसोआदित्य?
जैसे डंबरनामावादित्रविशेषका मध्यकाछिद्रहोवैहै ॥ तिसीप्रकारकाछिद्र सोआदित्य आपणेविषे उपासकपुरुषकेताईंदेवैहै ॥
और ताआदित्यतैंअनंतर तेउपासकपुरुष चंद्रमाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोचंद्रमा? जैसे दुंदुभिनामावादित्रविशेषका मध्यछिद्र
होवैहै ॥ तिसीप्रकारकाछिद्र सोचंद्रमा आपणेविषेउपासकपुरुषकेताईं देवैहै॥ और ताचंद्रमातैंअनंतर तेउपासकपुरुष विद्युतकूं
प्राप्तहोवैहैं ॥ ताविद्युतलोकविषे अमानवनामापुरुष आइकै ताउपासकपुरुषकूं ब्रह्मलोकविषेलेजावैहै ॥ इहां अर्चिष दिन शुक्लप
क्ष इत्यादिकशब्दोंकरिकै अर्चिआदिकोंकेअभिमानीदेवतावोंकाग्रहणकरणा ॥ और मनुकीसृष्टिविषे जिसकीउत्पत्तिनहींहोवैहै ॥

ताकानाम अमानवपुरुषहै ॥ जिसब्रह्मलोकविषे सोउपासकपुरुषजावैहै ॥ सोब्रह्मलोककैसाहै? वरुणलोक इंद्रलोक विराट्लोक या तीनोंलोकोंतेंपरेस्थितहै ॥ पुनःकैसाहैसोब्रह्मलोक?॥ आरनामा ह्रदकरिके तथा विजरानामानदीकरिके युक्तहै ॥ ऐसे ब्रह्मलोक विषे सोअमानवपुरुष ताउपासकपुरुषकूंलेजावैहै ॥ तहां विद्युत्लोकतेंअनंतर सोउपासकपुरुष जबी आरनामाह्रदके ओरलेकि नारेऊपरिजावैहै ॥ तबी ब्रह्माकीआज्ञाकूंपाइके पंचशत ५०० दिव्यअप्सरा नानाप्रकारकेपदार्थोंकूंहस्तोंविषेलेके ताउपासकपुरु षकेसमीपआवैहैं ॥ और तिनपंचशतअप्सरावोंविषे एकशतअप्सरावोंकातौ ताउपासकपुरुषकेपहरावणेवासते सुगंधिवालेपुष्पों कीमाला हस्तविषेलेआवैहै ॥ और दूसराअप्सरावोंकाशततौ ताउपासकपुरुषकेमर्दनकरणेवासते कस्तूरीकपूरादिकोंकरिकैयुक्त नानाप्रकारकातेल हस्तोंविषेलेआवैहै ॥ और तीसराअप्सरावोंकाशततौ ताउपासकपुरुषकेभोजनकरावणेवासते नानाप्रकारके दिव्यफलोंकूं हस्तोंविषेलेआवैहै ॥ और चतुर्थअप्सरावोंकाशततौ ताउपासकपुरुषकेशरीरविषेलगावणेवासते नानाप्रकारकेसु गंधिवालेचूर्ण हस्तोंविषेलेआवैहै ॥ और पंचम अप्सरावोंकाशततौ ताउपासकपुरुषकेपहरावणेवासते नानाप्रकारकेवस्त्र तथा नानाप्रकारकेभूषण हस्तोंविषेलेआवैहै ॥ और तेअप्सरा जैसे दिनदिनविषे ताअलंकारोंकरिके ब्रह्माकूंशोभायमानकरैहैं ॥ तिसीप्रकार तेअप्सरा पुष्पादिकअलंकारोंकरिके ताउपासकपुरुषकूंशोभायमानकरैहैं ॥ इसप्रकार तिनअप्सरावोंकरिकैअलंकार युक्तकऱ्याहुआ सोउपासकपुरुष एकक्षणमात्रविषे मनकेसंकल्पकरिकेही ताआरनामाह्रदके पारलेकिनारेकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताआरनामाह्रदकेपारलेकिनारेऊपरिस्थित जेतीसमुहूर्तहैं ॥ जिनमुहूर्तोंकूं श्रुतिविषे येष्टिह यानामकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ तिनतीसमुहूर्तोंके समीप सोउपासकपुरुषजावैहै ॥ ताउपासकपुरुषकूं तहांआयाहुआदेखिके तेयेष्टिहनामातीसमुहूर्त तहांतेंभागिजावैहैं ॥ इहां येष्टिह यानामकायहअर्थहै ॥ ब्रह्मलोककेप्राप्तिकीइच्छावाले जेउपासकपुरुषहैं ॥ तिनोंकेउपासनाकूं नानाप्रकारकेसंकल्पकीउत्पत्तिकरिके जेहननकरैं ॥ तिनोंकानाम येष्टिहहै ॥ और ताआरनामाह्रदतेंअनंतर सोउपासकपुरुष विजरानामानदीकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताविजरानामानदीकेओरलेकिनारेऊपरिस्थितहुआ सोउपासकपुरुष आपणेपूर्वलेपापकर्मोंकूं द्वेषीपुरुषोंकेतांईदेवैहै ॥ और आपणे

पुण्यकर्मोंकूं सुहृद्पुरुषोंकेतांईदेवैहै ॥ और आपणेधनादिकपदार्थोंकूं पुत्रोंकेतांईदेवैहै ॥ इसप्रकार पुण्यपापकर्मकेलयहुएतें अनंतर सोउपासकपुरुष जरामरणतेंरहितहोइकै ताविजरानामानदीकूं एकक्षणमात्रविषे मनकेसंकल्पकरिकै तरिजावैहै ॥ और तिसविजरानामानदीतेंअनंतर सोउपासकपुरुष इल्यनामावृक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां ब्रह्माकेप्राप्तहोणेयोग्यजोदिव्यसुगंधहै ॥ सोसुगंध ताउपासकपुरुषकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताइल्यनामावृक्षतेंअनंतर सोउपासकपुरुष शालज्यनामास्थानकूंप्राप्तहोवै है ॥ तहां ब्रह्माकेप्राप्तहोणेयोग्य जोदिव्यरसहै ॥ सोरस ताउपासकपुरुषकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताशालज्यनामास्थानतेंअनंतर सोउपासकपुरुष ब्रह्माकेअपराजितनामामंदिरकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहां ताउपासकपुरुषविषे ब्रह्माकातेज प्रवेशकरैहै ॥ तातेजकेप्रवेशकरणे तें सो उपासकपुरुष ब्रह्माकेसमान तेजवालाहोवैहै ॥ और ताअपराजितनामामंदिरकेद्वारऊपरि इंद्रनामा तथा प्रजापतिनामा येदोनों द्वारपालस्थितहैं ॥ तेदोनोंद्वारपाल ताउपासकपुरुषकेतांई भीतरिजाणेकामार्गदेकै भययुक्तपुरुषकीन्यांई स्थितहोवैहैं ॥ और तिस तैंअनंतर सोउपासकपुरुष ब्रह्माके विभुप्रमितनामा सभामंडपकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां ताउपासकपुरुषविषे ब्रह्माकायश प्रवेशकरै है ॥ तायशकेप्रवेशकरणेतें सोउपासकपुरुष ब्रह्माकेसमानयशवालाहोवैहै ॥ और तासभामंडपतेंअनंतर सोउपासकपुरुष ब्रह्माके बुद्धिमयवेदिकाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जिसवेदिकाकूं श्रुतिविषे आसंदीनामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ इहां काष्ठादिकोंकरिकैरचित चारिपादोंवालाजोऊंचाआसनहै ताकानाम वेदिकाहै ॥ तावेदिकाकूंप्राप्तहोइकै सोउपासकपुरुष ब्रह्माकेसमानबुद्धिवालाहोवैहै ॥ कैसीहैसावेदिका ?॥ बृहत्नामासामवेद तथा रथंतरनामासामवेद येदोनों जिसवेदिकाकेपूर्वदिशाकीतरफकेदोपादहैं ॥ और श्यैतनामासामवेद तथा नौधसनामासामवेद येदोनों जिसवेदिकाकेपश्चिमदिशाकीतरफकेदोपादहैं ॥ और तावेदिकाके जेऊपरिकेचारकोणहैं ॥ तिनोंविषे वैरूपनामासामवेद दक्षिणकीकोणरूपहै ॥ और वैराजनामासामवेद उत्तरकोणरूपहै ॥ और शाक्करनामासामवेद पूर्वकोणरूपहै ॥ और रैवतनामासामवेद पश्चिमकोणरूपहै ॥ याप्रकारकीवेदिका तासभामंडपविषेस्थितहै ॥ और तावेदिकातैंअनंतर सोउपासकपुरुष ब्रह्माकेपर्यंककूंप्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोपर्यंक ?॥ तावेदिकाकेऊपरिस्थितहै ॥ तथा नानाप्रकारकीविचि

त्रताकरिकैयुक्तहै ॥ तथा प्राणरूपहै ॥ और जिसपर्यंककूं अमितौजसनामकरिकैकथनकन्याहै ॥ पुनःकैसाहैसोपर्यंक ? ॥ भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालविषेस्थित जितनाजगत्है ॥ सोसंपूर्णजगत् जिसपर्यंककेपूर्वदिशाकेदोपादहैं ॥ और पृथिवी तथालक्ष्मी येदोनों जिसपर्यंकके पश्चिमदिशाकेदोपादहैं ॥ और बृहत्नामासामवेद जिसपर्यंकके दक्षिणदिशाकेतरफकी काष्ठमयदीर्घपटिकाहै ॥ और रथंतरनामासामवेद जिसपर्यंकके उत्तरदिशाकेतरफकी काष्ठमयदीर्घपटिकाहै ॥ और भद्रनामासामवेद जिसपर्यंकके पूर्वदिशाकेतरफकी काष्ठमयलघुपटिकाहै ॥ और यज्ञायज्ञीयनामासामवेद जिसपर्यंकके पश्चिमकेतरफकी काष्ठमयलघुपटिकाहै॥ और गीतिरूपसामकरिकैयुक्त जेछंदोबद्धमंत्ररूपऋचाहैं ॥ तेऋचा जिसपर्यंकके पूर्वपश्चिमकेतरफकी सूत्रमयदीर्घपाटियांहैं ॥ और मंत्ररूपयजुर्वेद जिसपर्यंकके दक्षण उत्तरकेतरफकी सूत्रमयलघुपाटियांहैं ॥ और ताब्रह्माकेपर्यंकऊपरि तूलकरिकैयुक्तजोउपस्तरणहै ॥ जिसकूंलोकविषेगदेलाकहैहैं ॥ सोउपस्तरण चंद्रमाकीकिरणरूपहै ॥ और ताउपस्तरणऊपरि जो श्वेतवस्त्रपाईताहै ॥ सोश्वेतवस्त्र उद्गीथनामासामवेदरूपहै ॥ और तापर्यंकऊपरि मस्तकराखणेकाजोसिराणाहै ॥ सोसिराणा लक्ष्मीरूपहै ॥ यद्यपि पूर्व तापर्यंककापादरूपकरिकै लक्ष्मीकाकथनकन्याथा ॥ और अबी तापर्यंककासिराणारूपकरिकै लक्ष्मीकावर्णनकन्याहै ॥ तथापि पूर्व लौकिकलक्ष्मीकाकथनकन्याहै ॥ और अबी वैदिकलक्ष्मीकाकथनकन्याहै ॥ यातें पूर्वउत्तरग्रंथकाविरोधहोवैनहीं ॥ ऐसीपर्यंकऊपरि हिरण्यगर्भरूपब्रह्मा स्थितहोवैहै ॥ कैसाहैसोब्रह्मा ? जिसब्रह्माके विषयजन्यआनंदतैंपरे किसी लोकविषेअधिकआनंद नहीं ॥ ऐसेब्रह्माकेलोकविषे ताब्रह्माकेप्रीतिकूंकरणेहारा सोमसवननामा अश्वत्थकावृक्षहै ॥ जिसवृक्षतैं सर्वदा अमृतस्रवताहै ॥ याकारणतैंही तावृक्षकानाम सोमसवनहै ॥ और ताब्रह्मलोकविषे ब्रह्माकेप्रीतिकूंकरणेहारे अरनामासमुद्रतथा ण्यनामासमुद्र येदोनोंसमुद्र अमृतकरिकैपूर्णहैं ॥ और मनकीजननी तथासर्वजगत्काकारण जोअविद्याशक्तिहै ॥ सा अविद्याशक्ति ताब्रह्माकीप्रियभार्याहै ॥ और चक्षुइंद्रियकाउपादानकारणरूप जोसत्वगुणप्रधानतेजहै ॥ सोतेज ताब्रह्माका प्रतिबिंबरूपछायाहै ॥ और संपूर्णजगत्काकारणरूप जेवेदकीश्रुतियांहैं तथातिनश्रुतियोंकरिकैजन्य जोशाब्दबोधरूपप्रज्ञा

नहैं ॥ तेसंपूर्ण ताब्रह्माकेसमीप अप्सरारूपकरिकैनिवासकरैहैं ॥ इहां वेदरूपश्रुतियोंकूंजगत्काकारणकह्या ॥ ताकायहअ
भिप्रायहै ॥ सृष्टिकेआदिकालविषे सोपरमात्मादेव तिसतिसपदार्थकेनामकूंउच्चारणकरिकै तिसतिसपदार्थकूंउत्पन्नकरैहै ॥ त
हांश्रुति ॥ सभूरित्युक्त्वाभुवमसृजत् ॥ अर्थयह ॥ सृष्टिकेआदिकालविषे सोपरमात्मादेव भूःयाप्रकारकेनामकूं उच्चारणकरि
कै पृथिवीरूपअर्थकूंउत्पन्नकरताभया ॥ याप्रकार वेदकेशब्दोंकाउच्चारणकरिकै आकाशादिकसर्वपदार्थोंकूंउत्पन्नकरताभया ॥ १ ॥
तहांस्मृति ॥ वेदशब्देभ्यएवादौ निर्ममेसमहेश्वरः ॥ अर्थयह ॥ सोमहेश्वररूप परमात्मादेव सृष्टिकेआदिकालविषेवेदकेश
ब्दोंतैंही संपूर्णजगतकूंउत्पन्नकरताभया ॥ १ ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतिप्रमाणकरिकै वेदभगवान्विषेभी जगत्कीकारणतासिद्धहो
वैहै ॥ और ताहिरण्यगर्भरूपब्रह्माकेदेशविषे नानाप्रकारकीउपासनारूपनदियां सगुणनिर्गुणब्रह्मकाज्ञानरूपजलकूंधारणकरिकै
बहेहै ॥ और स्थूलसूक्ष्मरूपसंपूर्णजगत् ताब्रह्माकेपुष्पहैं अथवा वस्त्रहैं ॥ इसप्रकार देवयानमार्गतैंआदिलैके वस्त्रपर्यंतजितनी
ब्रह्माकीविभूति कथनकरीहै ॥ ताविभूतिविशिष्टब्रह्माकी अहंग्रहउपासनाकरिकै सोउपासकपुरुष ब्रह्माकेआसनऊपरिपुत्रकी
न्यांई शंकातैंरहितहोइकै स्थितहोवैहै ॥ और ताउपासकपुरुषतैं सोब्रह्मा याप्रकारपूछैहै ॥ हेपुत्र! तूकौनहै?॥ और तेरेभोगके
साधनकौनहैं?॥ याप्रकारके ब्रह्माकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोउपासकपुरुष याप्रकारकाउत्तरकहैहै ॥ हेभगवन्! जोतूहै सोईमैंहूं औ
र जोतुमारेभोगकेसाधनहैं ॥ सोई हमारेभोगकेसाधनहैं ॥ याप्रकारकासंवाद ब्रह्माकेसाथकरिकै सोउपासकपुरुष ब्रह्माकीआज्ञा
कूंपाइकै ब्रह्माकेसमान भोगोंकूंभोगेहै ॥ और जबी ब्रह्माकीआयुष समाप्तहोवैहै ॥ तबी सोउपासकपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥
याप्रकारकी पर्यंकविद्यारूपअहंग्रहउपासना कौषीतकीउपनिषद्केप्रथमअध्यायविषेकहीहै ॥ तथा अन्यउपनिषदोंविषेभी नाना
प्रकारकीअहंग्रहउपासनाकही हैं ॥ हेपापीजीव! तुमनैं अधिकारीमनुष्यशरीरकूंपाइकै तिनउपासनावोंकूंभीनहींकऱ्या ॥ याका
रणतैं तुमारेकूंधिक्कारहै ॥ अब छांदोग्यउपनिषद्के तृतीयअध्यायविषे जोहृदयकमलकाध्यान कथनकऱ्याहै ताकूं निरूपणकरैहैं ॥
यापुरुषकेहृदयकमलविषे पंचछिद्रहैं ॥ तहां पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर याचारीदिशावोंकीतरफ ताहृदयकमलविषे चारिछिद्रहैं ॥

और पंचमाछिद्र ताहृदयकमलके ऊर्ध्वभागविषेहै॥ तहां अधिदैवरूपआदित्यकरिकैयुक्त जोचक्षुइंद्रियहै॥ ताचक्षुइंद्रियका अध्यात्मरूपप्राण आश्रयहै॥ और ताअध्यात्मरूपप्राणका हृदयकमलकेपूर्वदिशाकाछिद्र आश्रयहै ॥१॥ और अग्निरूपअधिदैवकरिकै युक्त जोवाक्इंद्रियहै॥ तावाक्इंद्रियका अध्यात्मरूपअपान आश्रयहै॥ और ताअध्यात्मरूपअपानका हृदयकमलकेदक्षिणदिशाकाछिद्र आश्रयहै॥ २॥ और अधिदैवरूपदिक्करिकैयुक्त जोश्रोत्रइंद्रियहै ॥ ताश्रोत्रइंद्रियका अध्यात्मरूपव्यान आश्रयहै॥ और ताअध्यात्मरूपव्यानका हृदयकमलकेपश्चिमदिशाकाछिद्र आश्रयहै॥ ३॥ और अधिदैवरूपपर्जन्यकरिकैयुक्त जोमनहै॥ तामनका अध्यात्मरूपसमान आश्रयहै॥ और ताअध्यात्मरूपसमानका हृदयकमलकेउत्तरदिशाकाछिद्र आश्रयहै॥ ४॥ और अधिदैवरूपआकाशकरिकैयुक्तजोवायुहै॥ तावायुका अध्यात्मरूपउदान आश्रयहै॥ और ताअध्यात्मरूपउदानका हृदयकमलकाऊर्ध्वछिद्र आश्रयहै॥ याप्रकारके पंचछिद्रोंकरिकैयुक्त जोहृदयकमलहै॥ ताहृदयकमलविषे सत्यकाम सत्यसंकल्प इत्यादिकगुणोंकरिकैविशिष्ट जोसगुणब्रह्महै ताका जेपुरुष ध्यानकरैहैं॥ तेपुरुषभी ब्रह्मलोकक्रूंप्राप्तहोवैहैं॥ हेपापीजीव! सो हृदयकमलविषे सगुणब्रह्मकाध्यानभी तुमनैंकर्‍यानहीं॥ याकारणतैं तुमारेकूंधिक्कारहै ॥ और हेपापीजीव! निर्गुणब्रह्मकेध्यानकीअपेक्षाकरिकै सगुणब्रह्मकाध्यान अत्यंतसुगमहै॥ सोसगुणब्रह्मकाध्यानभी जबी तुमारेसैंनहींहोइसक्या॥ तबी निर्गुणब्रह्मका ध्यान तुमारेसैं किसप्रकारहोवैगा?॥ कैसाहैसोनिर्गुणब्रह्म?॥ जिसनिर्गुणब्रह्मकेसाक्षात्कारकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं जन्ममरणादिकसंसारकेदुःख किंचित्मात्रभी प्राप्तहोवैंनहीं॥ और हेपापीजीव! पर्यंकविद्यारूपउपासनातैंआदिलैके जितनीकीअहंग्रहउपासनाहैं॥ तेअहंग्रहउपासना अंतर्मुखदृष्टिकरिकै सिद्धहोवैहैं॥ यातैं अत्यंतकठनहैं॥ याकारणतैंही तिन अहंग्रहउपासनावोंकरिकै ब्रह्मलोकक्रूंप्राप्तहुआ यहअधिकारीपुरुष पुनःभूमिलोकविषेआवैनहीं॥ किंतु ताब्रह्मलोकविषेहीमोक्षकूंप्राप्तहोवैहै॥ याप्रकारकीअहंग्रहउपासनाकूं यद्यपि तुमनैं कठिनजाणिकरिकै नहींकर्‍या॥ तथापि बाह्यदृष्टिकरिकैसिद्धहोणेहारी जापंचाग्निविद्यारूपउपासनाहै॥ साउपासना अत्यंतसुगमहै॥ याकारणतैंही तापंचाग्निविद्यारूपउपासनाकरिकै ब्रह्म

लोककूंप्राप्तहुआ यहउपासकपुरुष पुनःभूमिलोकविषेआवैहै ॥ सापंचाग्निविद्यारूपउपासनाभीतुमनैंकरीनहीं ॥ अब पंचाग्निवि
द्याकूंनिरूपणकरैहैं ॥ ब्रह्मलोककेप्राप्तिकीइच्छा जिसपुरुषकूंहोवै ॥ तथा अग्निहोत्र जिसपुरुषकेगृहविषेहोवै ॥ ऐसापुरुष पंचाग्नि
विद्याकाअधिकारीहै ॥ सोअधिकारीपुरुष स्वर्ग१ मेघ२ मनुष्यलोक३ पुरुष४ योषित्५ यापांचोंका अग्निरूपकरिकैध्यानकरै ॥ अब
स्वर्गादिकपंचअग्नियोंविषे लोकप्रसिद्धअग्निकेसमानधर्मोंका निरूपणकरैहैं ॥ जैसे लोकप्रसिद्धअग्निकूं काष्ठादिकप्रज्वलितकरैहैं ॥
यातैं काष्ठादिक लोकप्रसिद्धअग्निकेसमिधहैं ॥ तैसेस्वर्गलोककेप्राप्तिकेसाधन जेपुण्यकर्महैं ॥ तिनपुण्यकर्मोंविषे आदित्यभगवान्
हीसर्वजीवोंकूंप्रवृत्तकरैहै ॥ याकारणतैं सोआदित्यभगवान् स्वर्गरूपअग्निका समिधहै ॥ १ ॥ और संवत्सरकरिकै जलकासंग्रहकर
णेहारेजेमेघहैं ॥ तेमेघ वर्षाकालविषे वृष्टिकरणेविषे समर्थहोवैहैं ॥ याकारणतैं संवत्सर मेघरूपअग्निकासमिधहै ॥ २ ॥ और संपू
र्णलोकोंकाआधाररूप जोयहपृथिवीहै ॥ तापृथिवीकरिकै यहमनुष्यलोक शोभायमानहै ॥ याकारणतैं सापृथिवी मनुष्यलोकरू
पअग्निकासमिधहै ॥३॥ और यहपुरुष संभाषणकालविषे प्रसारितमुखकरिकै शोभायमानहोवैहै ॥ याकारणतैं सोप्रसारितमुख पुरु
षरूपअग्निकासमिधहै ॥ ४ ॥ और पुत्रादिसंतानका जिसतैंनिर्गमनहोवैहै ॥ ऐसाजो योषित्का उपस्थइंद्रियहै ॥ ताउपस्थइंद्रिय
करिकै योषित् शोभायमानहोवैहै ॥ याकारणतैं सोउपस्थइंद्रिय योषित्रूपअग्निकासमिधहै ॥ ५ ॥ अब स्वर्गादिकपंचअग्नियोंके
धूमरूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्यजेपदार्थहैं तिनोंका निरूपणकरैहैं ॥ जैसे लोकप्रसिद्धअग्निविषे काष्ठरूपसमिधतैं धूमकीउत्पत्तिहो
वैहै ॥ तैसे आदित्यरूपसमिधतैं किरणोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं तेकिरण स्वर्गरूपअग्निका धूमहैं ॥ १ ॥ और संवत्सररूप
समिधतैं श्वेतमेघोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं तेश्वेतमेघ मेघरूपअग्निका धूमहैं ॥ २ ॥ और काष्ठमयपृथिवीरूपसमिधतैं लो
कप्रसिद्धअग्निउत्पन्नहोवैहै ॥ याकारणतैं सोअग्नि मनुष्यलोकरूपअग्निका धूमहै ॥ ३ ॥ और प्रसारितमुखरूपसमिधतैं प्राणरूप
वायुकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं सोप्राणरूपवायु पुरुषरूपअग्निका धूमहै ॥ ४ ॥ और उपस्थरूपसमिधतैं लोमोंकीउत्पत्तिहो
वैहै ॥ याकारणतैं तेलोम योषित्रूपअग्निकाधूमहै ॥ ५ ॥ अब स्वर्गादिकपंचअग्नियोंके ज्वालारूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्यजे

पदार्थहैं तिनपदार्थोंकूंनिरूपणकरैहैं ॥ जो समिधकरिकैजन्यहोवै तथाप्रकाशकहोवै ताकानामज्वालाहै॥ जैसे प्रसिद्धअग्निकीज्वाला काष्ठरूपसमिधकरिकैजन्यहै तथा प्रकाशकहै ॥ तैसे दिन आदित्यरूपसमिधकरिकैजन्यहै तथाप्रकाशकहै ॥ याकारणतें सोदिन स्वर्गरूपअग्निकीज्वालाहै ॥ १ ॥ और विद्युत् संवत्सररूपसमिधकरिकैजन्यहै तथाप्रकाशकहै ॥ याकारणतें सोविद्युत् मेघरूपअग्निकीज्वालाहै ॥ २ ॥ और अंधकारमयरात्रि कृष्णवर्णवालीपृथिवीरूपसमिधकरिकैजन्यहै ॥ तथा निशाचरजीवोंकूं प्रकाशकरणेहारीहै ॥ याकारणतें सारात्रि मनुष्यलोकरूपअग्निकीज्वालाहै ॥ ३ ॥ और वाक्इंद्रिय प्रसारितमुखरूपसमिधकरिकै जन्यहै ॥ तथा अर्थकाप्रकाशकहै ॥ याकारणतें सोवाक्इंद्रिय पुरुषरूपअग्निकीज्वालाहै ॥ ४ ॥ और गोलकरूपयोनि उपस्थइंद्रियरूपसमिधकरिकैजन्यहै ॥ तथा अग्निकेज्वालासमान रक्तवर्णकरिकैप्रकाशमान है ॥ याकारणतें सायोनि योषित्रूपअग्निकीज्वालाहै ॥ ५ ॥ अब स्वर्गादिकपंचअग्नियोंके अंगाररूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्यजेपदार्थहैं तिनोंका निरूपणकरैहैं ॥ तहां जैसे लोकप्रसिद्धअग्निकीज्वालाकेउपशमकालविषे अंगार प्रकाशमानहोवैहै॥ तैसे दिनरूपज्वालाकेउपशमरूपसंध्याकालविषे पूर्वादिकचारिदिशा नानारूपकरिकैप्रकाशमान्होवैहैं ॥ याकारणतें पूर्वादिकदिशा स्वर्गरूपअग्निकेअंगारहैं ॥ १ ॥ और विद्युत्रूप ज्वालाकेउपशमकालविषे वज्ररूपअशनि प्रकाशमान्होवैहै ॥ याकारणतें तेअशनि मेघरूपअग्निकेअंगारहैं ॥ २ ॥ और रात्रिरूपज्वालाकेउपशमकालविषे मंदप्रभावालाचंद्रमा प्रकाशमान्होवैहै ॥ याकारणतें सोचंद्रमा मनुष्यलोकरूप अग्निकेअंगारहैं ॥ ३ ॥ और वाक्इंद्रियरूपज्वालाकेउपशमकालविषे चक्षुइंद्रियप्रकाशकरैहै ॥ याकारणतें सोचक्षुइंद्रिय पुरुषरूप अग्निकेअंगारहैं ॥ ४ ॥ और योनिरूपज्वालाकेउपशमकालविषे मैथुनकेमध्यकालमें जोआनंदहोवैहै ॥ सोआनंद योषित्रूपअग्निकेअंगारहैं ॥ ५ ॥ अब स्वर्गादिकपंचअग्नियोंके विस्फुलिंगरूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्यजेपदार्थहैं तिनपदार्थोंका निरूपणकरैहैं ॥ तहां जैसे लोकप्रसिद्धअग्निके विस्फुलिंगहोवैहैं ॥ तैसे ईशानकोणतेंआदिलैके जेचारिउपदिशाहैं ॥ तेउपदिशा स्वर्गरूपअग्निके विस्फुलिंगहैं ॥ १ ॥ और मेघोंकेगर्जनारूपजेशब्दहैं ॥ तेशब्द मेघरूपअग्निकेविस्फुलिंगहैं ॥२॥ और

यज्ञादिककर्मोंकूंकरणेहारेजेकर्मीपुरुषहैं ॥ तेकर्मीपुरुषही यामनुष्यलोकविषे तारागणरूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याकारण तैं नक्षत्ररूपतारागण मनुष्यलोकरूपअग्निकेविस्फुलिंगहैं ॥ ३ ॥ और श्रोत्रइंद्रियजन्य जेशब्दाकारवृत्तियांहैं॥ तेवृत्तियां पुरुषरूपअग्निकेविस्फुलिंगहैं ॥ ४ ॥ और आलिंगनादिकोंतैं उत्पन्नभयेजेआनंदहैं ॥ तेआनंद योषितूरूपअग्निकेविस्फुलिंगहैं ॥ ५ ॥ अब स्वर्गादिकपंचअग्नियोंके आहुतिरूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्यजेपदार्थहैं तिनपदार्थोंका निरूपणकरैहैं ॥ तहां जैसे प्रसिद्धअग्निके यवघृतादिकपदार्थ आहुति होवैहैं ॥ तैसे श्रद्धा स्वर्गरूपअग्निका आहुतिहै ॥ इहां श्रद्धाशब्दकरिकै श्रद्धाकरिकैकऱ्ये हुए जेअग्निहोत्रादिककर्महैं ॥ तिनकर्मोंतैंउत्पन्नभया जोधर्मरूपअपूर्वहै ॥ जोधर्मरूपअपूर्व याजीवात्माकेसाथ परलोकविषे जावैहै ॥ ताधर्मरूपअपूर्वका ग्रहणकरणा ॥ १ ॥ और साधर्मरूपश्रद्धा स्वर्गविषेजाइकै ताकर्मीपुरुषके सोममयशरीरकूंरचैहै॥ तहां भोगकीसमाप्तिकालविषे शोकरूपअग्निकरिकै सोसोममयशरीर द्रवीभावकूंप्राप्तहोइकै मेघोंविषेप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं सोजीवमिश्रितसोम मेघरूपअग्निकाआहुतिहै ॥ २ ॥ और तामेघोंतैंअनंतर सो वृष्टिरूपकरिकै यामनुष्यलोकविषेप्राप्तहोवैहै॥ याकारणतैं सा जीवमिश्रितवृष्टि मनुष्यलोकरूपअग्निकीआहुति है ॥३॥ और तावृष्टितैंअनंतरअन्नरूपकरिकै सो पुरुषविषेप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं सोजीवमिश्रितअन्न पुरुषरूपअग्निकीआहुतिहै ॥ ४ ॥ और तिसपुरुषतैंअनंतर सो रेतरूपकरिकै योषित्विषेप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं सोजीवमिश्रितरेत योषित्रूपअग्निकीआहुतिहै ॥ ५ ॥ और यजमानपुरुषके इंद्रियादिककरणोंके अधिष्ठातारूपजेइंद्रादिकदेवताहैं ॥ तेइंद्रादिकदेवता स्वर्गादिकपंचअग्नियोंविषे श्रद्धादिकपंचआहुतियोंकूं हवनकरणेहारे हैं ॥याप्रकार स्वर्गादिकपांचोंकूं अग्निरूपकरिकैध्यानकरणेहारापुरुषभी ब्रह्मलोकविषेजावैहै ॥ हेपापीजीव! सापंचाग्निविद्यारूपउपासनाभी तुमनैंकरीनहीं ॥ याकारणतैंभी तुमारेकूंधिक्कारहै ॥ और हेपापीजीव! पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं तुमारेकूंस्वर्गकीप्राप्तिभईथी ॥ तापुण्यकर्मका जबीभोगकरिकैनाशहुआ ॥ तबी आकाश वायु मेघ इत्यादिकमार्गकरिकै तू भूमिलोकविषे मनुष्यशरीरकूंप्राप्त होताभया ॥ अब गर्भकेदुःखोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेपापीजीव! माताकेउदरविषे कलिल बुद्बुद इत्यादिकअवस्थावोंकरिकै जो

जोदुःख तुमारेकूंप्राप्तभयाहै ॥ तादुःखकालेशमात्रभी यानरकविषैनहीं है ॥ हेपापीजीव! याप्रकारकेदारुणदुःखकीप्राप्तिकरणेहारा जोमाताकेउदरकानिवासहै ॥ तानिवासकूं तुमारेसरीखेजडतैंविना दूसराकौनचेतनप्राणी सहनकरिसकैगा ? किंतु तुमनैंही ताग र्भकेनिवासकूं सहनकऱ्याहै ॥ हेपापीजीव! जिसमाताकेउदरविषे तू अनेकवारनिवासकरिआयाहैं सोमाताकाउदर कैसाहै ? विष्ठा करिकै तथामूत्रकरिकै पूर्णहै ॥ याकारणतैं अत्यंतदुर्गंधहै ॥ तथा कृमिगणोंकरिकैपूर्णहै ॥ याप्रकारके माताकेउदरविषे तूपापा त्माजीव जरायुनामापटकरिकैआवृतहुआ निवासकरताभया ॥ और तामाताकेउदरविषे तूपापात्माजीव श्वासोंकूं तथाहस्तपादादि कअवयवोंकूं चलावणेविषेभी समर्थनहींहोताभया ॥ और तामाताकेउदरविषे माताकाजठराग्नि तुमारेकूं जिसप्रकारकाताप करताभयाहै ॥ तिसतापकालेशमात्रभी यानरकविषेतापनहीं है ॥ और हेपापीजीव! तामाताकेउदरविषे प्राणरूपवायुकरिकै तूपा पात्मा दशदिशावोंविषेभ्रमणकरताभया ॥ ताभ्रमणकरिकै जोजोदुःख तुमारेकूं प्राप्तभयाहै ॥ तादुःखकालेशमात्रभी यानरकविषे दुःखनहीं ॥ और हेपापीजीव! माताकेउदरविषे प्रवेशकरणेतैं तथाप्रसूतिवायुकरिकै माताकेउदरसैंबाहरिनिकसणेतैं जोजोदुःख तु मारेकूंप्राप्तभयाहै ॥ तिसतुमारेदुःखकूं हमयमकिंकरभी कहणेकूंसमर्थनहीं हैं ॥ और हेपापीजीव! जिसजिसअन्नकूं माताभोजनकरै है तिसतिसअन्नकासूक्ष्मरस गर्भविषेस्थितबालककूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं तुमारीमातानैं भोजनकऱ्येजे कटु अम्ल लवण कषाय तिक्त उष्ण इत्यादिकअनेकपदार्थ तिनोंकरिकै दाहकूंप्राप्तहुआतूपापात्मा तामाताकेउदरविषे दशमासपर्यंत किसप्रकारस्थितहोताभ या ? और हेपापीजीव! जैसे किसीगृहविषे अग्नियोंकाएकशत प्रज्वलितकरिये ॥ ताअग्नियोंकरिकै सोगृह अत्यंत तपायमानहोवै है ॥ तागृहकेसमान तपायमान जोमाताकाउदरहै ॥ ताउदरविषे सर्पोंकेसमान जेअनेककृमिहैं ॥ ताकृमियोंकरिकैभक्षणकऱ्याहुआ तूपापात्मा दशमासपर्यंत किसप्रकार स्थितहोताभया ? और हेपापीजीव! माताकेउदरविषे जेजेदुर्दशा तुमारेकूंप्राप्तभई हैं ॥ तिन तुमारेदुर्दशावोंकेकहणेविषे भयकरिकै हमाराशरीर कंपायमानहोवैहै ॥ याकारणतैं तिन तुमारेदुर्दशावोंकेकहणेकूं हमयमकिंकरभी समर्थनहीं हैं ॥ हेपापीजीव! सोगर्भनिवासकादुःख कैसाहै ? ॥ जोकदाचित् कोईमहापापीजीव अनेकशतकोटिकल्पपर्यंत निरंतर

नरकविषेनिवासकरै ॥ तानिवासकरणेकरिकै तापापीपुरुषकूं जिसप्रकारकादुःखप्राप्तहोवैहै॥ तैसाहीदुःख माताकेगर्भविषेनिवासकरणेतैं याजीवकूंहोवैहै ॥ और हेपापीजीव! गर्भकेधारणेतैंअनंतर जोस्त्रियोंका आपणेपुरुषकेसाथसुरतहै ॥ सोसुरत गर्भविषेस्थित बालकका तथागर्भिणीस्त्रीका तथापुरुषका यातीनोंका दुरंतहै॥ परंतु सोदुरंत परोक्षकालविषेहोवैहै॥ याकारणतैं लोक ताकूं दुरंतक है नहीं॥ किंतु सुरतकहे हैं॥ इहां विषयसंभोगकानाम सुरतहै॥ और परिणामकालविषे जोदुःखकाहेतुहोवै ताकानाम दुरंतहै॥ और ताविषयसंभोगरूपदुरंतकूं सुरतनामकरिकैजोबुद्धिमानपुरुष कथनकरैहैं ॥ याकेविषे यहकारणहै ॥ यालोकविषे जेशिष्टमहात्मा पुरुषहैं ॥ तेमहात्मापुरुष आपणेतैंभिन्नपदार्थोंकूं किसीउत्कृष्टनामकरिकैहीकथनकरैहैं ॥ निकृष्टनामकरिकै किसीवस्तुका कथनकरैनहीं ॥ याप्रकारकेशिष्टपुरुषोंकेआचरणकूं अंगीकारकरिकै तेबुद्धिमानपुरुष विषयसंभोगरूपदुरंतकर्मकूं सुरतनामकरिकैकथन करैहैं ॥ अब विषयसंभोगविषे दुरंतपणा स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ जोपुरुष गर्भिणीस्त्रीकेसाथ विषयसंभोगकरैहै ॥ तापुरुषकूं स्त्रीकेहत्याकादोष तथा बालककेहत्याकादोष प्राप्तहोवैहै ॥ और जागर्भिणीस्त्री पुरुषकेसाथ विषयसंभोगकरैहै ॥ तिसगर्भिणी स्त्रीकूं आत्महत्याकादोष तथा बालहत्याकादोष प्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं गर्भिणीस्त्रीकेसाथ विषयसंभोग स्त्री पुरुष बालक या तीनोंकेदुःखकाहेतुहै ॥ और हेपापीजीव! यासंसारचक्रविषेप्राप्तहोइकै यद्यपि तुमनैं अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकर्याहै ॥ तथापि तिनसंपूर्णदुःखोंकूंविस्मरणकरिकै यामनुष्यशरीरविषे तू पुनःपापकर्मोंकूंकरताभया॥ और हेपापीजीव! जिसशरीरकेअभिमानकरिकै तुमनैं पापकर्मकरेहैं ॥ सोशरीरकैसाहै? जैसे पितामाताका विष्ठामूत्रादिकमलहोवैहैं ॥ तैसेही तापितामाताके शुक्रशोणितरूपमलहैं ॥ ताशुक्रशोणितरूपमलतैं याशरीरकीउत्पत्तिभईहै ॥ याकारणतैं यहशरीर पितामाताके विष्ठामूत्रादिकोंकेसमानहै ॥ और वर्तमानकालविषेभी यहशरीर विष्ठामूत्रादिकमलोंकरिकैपूर्णहै ॥ और मरणतैंअनंतर यहशरीर श्वानशृगालादिकोंकाभक्ष्यहै ॥ ऐसेनिंदितशरीरकूं तुमनैं आत्मारूपमानिकैलोकशास्त्रकरिकैनिषिद्धकर्मोंकूंकर्याहै ॥ तिनपापकर्मोंकादुःखरूपफल अबी नरकविषेतुमारेकूंप्राप्तभयाहै ॥ हेपापीजीव! जैसे यालोकविषे किसीपुरुषकेगृहविषेअग्निलागै॥ और सोपुरुष ताअग्निके

शांतिकरणेवासते तिसकालविषेकूपकूंखोदे ॥ सोकूपकाखोदणारूप तापुरुषकाव्यापार निष्फलहै ॥ तैसे इसकालविषे मैं पूर्व पापकर्मोंकूंकिसवासतेकरताभया ?॥ और पुण्यकर्मोंकूं मैं क्यूंनहींकरताभया याप्रकारकातुमारापश्चात्ताप निष्फलहै ॥ और हेपापी जीव ! हमयमकिंकरभी तुमारेदुःखकेकरणेहारेनहीं हैं ॥ और सूर्यकापुत्रधर्मराजाभी तुमारेदुःखकाकरणेहारानहीं है ॥ और ये श्वानगृध्रादिकभी तुमारेदुःखकेकरणेहारेनहीं हैं ॥ किंतु यामनुष्यशरीरकूंपाइकै जोतुमनैं शरीरकरिकै तथामनवाणीकरिकै अन्य प्राणियोंकूंदुःखकीप्राप्तिकरी है ॥ सोतुमारापापकर्महीं इहांनरकविषे तुमारेकूंदुःखकीप्राप्तिकरै है ॥ अब तापापीजीवकेपश्चात्ताप करावणेवासते तापापीजीवकेपूर्वलेपापकर्मोंकानिरूपणकरै हैं ॥ हेपापीजीव ! यामनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकै तुमनैं सर्वजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरी है ॥ तिनजीवोंविषेभी जेसाधुस्वभाववालेमहात्मापुरुषहैं ॥ तिनोंकूंविशेषकरिकै तुमनैं दुःखकीप्राप्तिकरी है ॥ हेपापीजीव ! जिनदुर्भावनावोंकरिकै तुमनैं महात्मापुरुषोंकानिरादरकऱ्याहै ॥ तिनआपणीदुर्भावनावोंकूं तूश्रवणकर ॥ जैसे पित्तदोषवालापुरुष श्वेतशंखकूंपीतदेखेहै ॥ तैसे कामरूपदोषकरिकै दूषितहुआतूपापात्मा सर्वजगतकूं कामीमानताभया ॥ तहां एकांतदेशविषेस्थित जेमहात्मासंन्यासीहैं ॥ तथानैष्ठिकब्रह्मचारीहैं ॥ तथा वनविषेस्थित जेवानप्रस्थहैं ॥ तिनमहात्मापुरुषोंकूंदेखिकरिकै तूपापात्मा याप्रकारकेवचनोंकूं कहताभया ॥ जैसे मैं दिनदिनविषे अन्नपानादिकोंकाभक्षणकरताहूं ॥ याकारणतें मैं मैथुनकापरित्यागरूपब्रह्मचर्यतेंरहितहूं ॥ तैसे यहसंन्यासी तथा ब्रह्मचारी तथावानप्रस्थभी दिनदिनविषे अन्नपानादिकोंकूंभक्षणकरतेहैं ॥ याकारणतें येसंन्यासीआदिकभी ब्रह्मचर्य तेंरहितहीहोवैंगे ॥ किंवा येसंन्यासी एकांतदेशविषेस्थितहैं ॥ तथा शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचविषयोंकूं श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंकरिकैग्रहणकरै हैं ॥ तथा येसंन्यासी वाकादिककर्मइंद्रियों करिकै शब्दउच्चारणादिकव्यापारोंकूंकरै हैं ॥ तथा मनकरिकैसुखदुःखकाग्रहणकरै हैं ॥ याप्रकार श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियोंकेव्यापारोंकूंकरतेहुए येसंन्यासी उपस्थइंद्रियकेमैथुनरूपव्यापारकूं क्यूंनहींकरतेहोवैंगे ॥ किंतु मैथुनभी अवश्यकरतेहोवैंगे ॥ किंवा यालोकविषे जिसपुरुषकीवाकादिकइंद्रिय भोगभोगणेविषेसमर्थहैं ॥ सोपुरुष जबपर्यंतजीवैहै तबपर्यंत आहार निद्रा मैथुन यातीनोंकापरि

त्यागकरैनहीं ॥ और येसंन्यासी आहार तथानिद्रा यादोनोंकूंतौकरै हैं ॥ यातैं तीसरेमैथुनकूंभी येसंन्यासी अवश्यकरतेहोवैंगे ॥ किंवा यामनुष्यलोकविषे वाक्इंद्रियतैंआदिलैके कोईभीइंद्रिय आपणेव्यापारतैंरहितहोवैनहीं॥ किंतु संपूर्णवाकादिकइंद्रिय आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ यातैं इनसंन्यासियोंका उपस्थइंद्रिय आपणेमैथुनरूपव्यापारतैंरहितहोवैहै यहवार्त्ता अत्यंत असंभवहै ॥ किंवा वनविषे तृणोंकूंभक्षणकरणेहारे जेमृगादिकपशुहैं ॥ तिनोंकूंभी यहकामदेव आपणेवशकरिलेवैहै ॥ और जलविषेविचरणेहारे तथाजलकूंभक्षणकरणेहारे जेमत्स्यादिकहैं ॥ तिनोंकूंभी यहकामदेव आपणेवशकरिलेवैहै ॥ और मृत्तिकाकूं तथापवनकूं भक्षणकरणेहारे जेसर्पादिकहैं ॥ तिनोंकूंभी यहकामदेव आपणेवशकरिलेवैहै ॥ यातैं तृणादिकोंकूंभक्षणकरणेहारे मृगादिकपशुभी जबी कामतैंरहितनहींहोइसकते ॥ तबी नानाप्रकारकेअन्नादिकोंकूंभक्षणकरणेहारे येयुवानसंन्यासी किसप्रकार कामतैंरहितहोवैंगे ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ जैसे मार्जार मूषकोंकेपकडनेवासते ध्यानकरैहैं ॥ तैसे येसंन्यासी लोकोंकेस्त्रीधनादिकपदार्थोंकेहरणकरणेवासते ध्यानलगाइकैबैठेहैं ॥ याकारणतैं येसंन्यासीदंभी हैं ॥ और येसंन्यासी नासिकाकेअग्रभागविषे जोदृष्टिलगाइकेबैठेहैं ॥ सोभी लोकोंकेमोहकरणेवासतेबैठेहैं ॥ मनकरिकेतौ येसंन्यासी परधनकूं तथापरस्त्रीकूं चिंतनकरतेहोवैंगे ॥ हेपापीजीव! इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकीदुर्भावनावोंकरिकै तुमनैं धर्मात्मासंन्यासियोंविषे तथानैष्ठिकब्रह्मचारियोंविषे तथावानप्रस्थोंविषे नानाप्रकारकेदूषण आरोपणकरैहैं ॥ तिनपापकर्मोंका दुःखरूपफल अबी नरकविषे तुमारेकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेपापीजीव! यामनुष्यलोकविषे जोपतिव्रतास्त्रियांहैं ॥ तिनोंविषे जिसदुर्भावनाकरिकै तुमनैं दूषणआरोपणकरैहैं ॥ तिनआपणेदुर्भावनावोंकूं तू श्रवणकर ॥ हेपापीजीव! पतिव्रतास्त्रियोंकूंदेखिकरिकै तूपापात्मा याप्रकारकेवचनकहताभया ॥ यामनुष्यलोकविषे यौवनअवस्थाकरिकैयुक्त ऐसीस्त्रीकौनहै? जास्त्री रूपवान्परपुरुषकीइच्छानहींकरैहै किंतु संपूर्णस्त्रियां रूपवान्परपुरुषकी इच्छाकरैहैं ॥ काहेतैं? येस्त्रियां आपणेपिताकूं तथाआपणेभ्राताकूं तथाआपणेपुत्रकूंभी रूपवान्देखिकै जबी कामातुरहोवैहैं ॥ तबी परपुरुषकूंरूपवान्देखिकै तेस्त्रियां क्यूंनहींकामातुरहोवैंगीं ॥ किंतु परपुरुषकूंरूपवान्देखिकै येस्त्रियां कामातुर अवश्यहोवैं हैं ॥

और येस्त्रियां जोपरपुरुषकेसमीप नहींजावैहैं ॥ याकेविषे येचारिकारणहैं ॥ एकतौआपणामान ॥ और दूसरा लोकोंकीलज्जा ॥ और तीसरा पतिआदिकोंकाभय ॥ और चतुर्थ एकांतस्थानकाअभाव ॥ याचारिप्रकारकैनिमित्तकरिकै येस्त्रियां परपुरुषकेसमीपन हींजावैहैं ॥ परंतु आपणेमनविषे येस्त्रियां सदैवही परपुरुषोंकाचिंतनकरैहैं ॥ किंवा परपुरुषोंकूंदेखिकरिकै जास्त्रीनीचैमुखकरैहै ॥ तास्त्रीकूं लोक पतिव्रताकहैहैं ॥ सो याप्रकारका पतिव्रतास्त्रीकालक्षणभी संभवैनहीं ॥ काहेतें ? जास्त्री परपुरुषकूंदेखिकै नीचैमुखकरैहै ॥ सास्त्री कामकरिकेआतुरहुई आपणेमनकरिकै तीनलोकवर्त्तिपुरुषोंकाध्यानकरैहै ॥ किंवा यालोकविषे जास्त्री पतिव्रतारूपकरिकै प्रसिद्धहै ॥ सास्त्री गणिकातैंभी अत्यंतव्यभिचारिणीजानणी ॥ काहेतें ? गणिकास्त्री आपणेसंबंधियोंसैं व्यभिचारकरैनहीं ॥ और यह स्त्रीतौ आपणेसंबंधियोंसैंभीव्यभिचारकरैहै ॥ यातैं सास्त्री गणिकातैंभी अधिकव्यभिचारिणीजानणी ॥ किंवा विवेकादिकसाधनोंकरि कैयुक्तजेइंद्रादिकमहान्पुरुषहैं ॥ तिनोंकेधैर्यकूंभी जबी यहकामदेव हरणकरैहै ॥ तबी यामूढस्त्रियोंकेधैर्यकूं यहकामदेव हरणकरैहै या केविषे क्याकहणाहै ? ॥ हेपापीजीव ! इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकीदुर्भावनावोंकरिकै तूपापात्मा तिनपतिव्रतास्त्रियोंविषे नानाप्र कारकेदूषण आरोपणकरताभया ॥ और हेपापीजीव ! जैसे तैलकेसंबंधकरिकै वस्त्र दूषितहोवै है ॥ तैसे यालोकविषे जितना शास्त्रकरिकैप्रतिपादितधर्म है ॥ तिसधर्मविषे तूपापात्माजीव नानाप्रकारकीकुतर्ककरिकै नानाप्रकारकेदूषण आरोपणकरताभया ॥ कैसाहैसोधर्म ? ॥ जैसे मालाकेपुष्पोंकूं सूत्र धारणकरैहै ॥ तैसे यहधर्मरूपसूत्र जगत्रूपपुष्पोंकूंधारणकरैहै ॥ और हेपापीजीव ! यामनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकै तू पापात्मा ब्रह्मादिकदेवतावोंकी तथाआपणेगुरुवोंकीभी निंदाहीकरताभया ॥ और पितामातातैंआ दिलैकेसंपूर्णबांधवोंका तूपापात्मा निरादरहीकरताभया ॥ और लोभकेवशहुआ तूपापात्मा अन्यपुरुषोंकेधनादिकपदार्थोंकूं हर णकरताभया ॥ और कामकेवशहुआ तूपापात्मा अन्यपुरुषोंकेस्त्रियोंकूं हरणकरताभया ॥ और हेपापीजीव ! यामनुष्यलोकविषे तूदुर्बुद्धि अन्यप्राणियोंकेदुःखदेणेवासतै याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ इसशत्रुकूं अल्पदुःखकीप्राप्तिकरणेहारा जोयहसुगमउ पायहै ॥ तिसउपायकूं मैं प्रथमसिद्धकरिकै तिसतैंअनंतर याशत्रुकूं महान्दुःखकीप्राप्तिकरणेहारा जोयहमहान्उपायहै ॥ तिसम

हानउपायकूं मैं सिद्धकरौंगा ॥ ताउपायकरिकै याशत्रुकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैगी ॥ अथवा याशत्रुकेसाथ मैं प्रथम मित्रता करौंगा ॥ तामित्रताकरिकै याशत्रुका जबी हमारेऊपरिविश्वासहोवैगा ॥ तबी याशत्रुकूं मैं परमदुःखकीप्राप्तिकरौंगा ॥ हेपापी जीव! इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकेउपायोंकूं आपणेमनविषेचिंतनकरिकै तूपापात्मा अन्यप्राणियोंकूं शरीरकरिकै तथा वाणीक रिकैनानाप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरताभया ॥ याकारणतैं तेरेकूंधिक्कारहै ॥ हेजनक! इसतैंआदिलैके नानाप्रकारकेकठोरवचनोंक रिकैतेयमकिंकर तापापीजीवकानिरादरकरैंहैं ॥ तिसतैंअनंतर तेयमकिंकर तिनपापीजीवोंकूं नानाप्रकारकेनरकोंविषेपावैहैं ॥ तिन नरकोंविषेप्राप्तहुए तेपापीजीव अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ और हेजनक! तिनपापीजीवोंकूं केवलनरकविषेहीदुःखहोवै है ॥ अन्यत्रतिनपापीजीवोंकूं दुःखनहींहोवैहै ॥ याप्रकारकाअर्थ तुमनैं निश्चयनहींकरणा ॥ किंतु तिनपापीजीवोंकूं नरकविषे जैसा दुःखहोवैहै ॥ तैसाहीदुःख याशरीरकेजन्मकालविषेहोवैहै ॥ और तैसाहीदुःख याशरीरकीस्थितिकालविषेहोवैहै॥ और तैसाहीदुः ख याशरीरकेमरणकालविषेहोवैहै ॥ अब सर्वलोकोंविषे जन्मकेदुःखकीसमानताकूं निरूपणकरैंहैं ॥ हेजनक! ब्रह्मलोकविषे तथा स्वर्गलोकविषे तथामनुष्यलोकविषे तथापाताललोकविषे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेशरीरोंकी समानहीउत्प त्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं तिनशरीरोंकेजन्मकालकादुःखभी सर्वलोकोंविषे समानहीहोवैहै॥ इहां जैसे वृक्षादिकशरीर भूमिकूंउद्भेद नकरिकै उत्पन्नहोवैंहैं ॥ याकारणतैं तेवृक्षादिकशरीर उद्भिज्जहैं ॥ तैसे देवतावोंकेशरीरभी सूक्ष्मभूतोंकूं उद्भेदनकरिकैउत्पन्नहोवै हैं ॥ याकारणतैं तेदेवताशरीरभी उद्भिज्जहैं ॥ अब सर्वलोकोंविषे स्थितिकालकेदुःखकीसमानताकूं निरूपणकरैंहैं ॥ हेजनक! ब्रह्मलोकतैंआदिलैके पातालपर्यंत जितनेकीलोकहैं ॥ तिनलोकोंविषे याजीवोंकूं जोजोविषयजन्यसुखहोवैंहै ॥ सोसोसुख अति शयतादोषवालाहोवैहै ॥ याकारणतैं सोविषयजन्यसुख सर्वलोकोंविषे ईर्ष्याकीउत्पत्तिद्वारा जीवोंकेदुःखकाहीकारणहोवैहै॥ और सोविषयजन्यसुख पराधीनहै ॥ याकारणतैं सोविषयजन्यसुख भयकीउत्पत्तिद्वारा याजीवोंकेदुःखकाहीकारणहै ॥ और सोविषय जन्यसुख कर्मउपासनादिकसाधनोंकरिकैजन्यहै॥ और जोपदार्थ जन्यहोवैहै ॥ सोपदार्थ घटादिकोंकीन्यांई नाशवान्होवैहै ॥ या

कारणतें सोविषयजन्यसुख नाशकेचिंताकीउत्पत्तिद्वारा जीवोंकेदुःखकाहीकारणहै ॥ याप्रकार ब्रह्मलोकतेंआदिलैके पातालपर्यं
त सर्वलोकोंविषे याजीवोंकूं शरीरकीस्थितिकालविषे समानहीदुःखहोवैहै ॥ अब सर्वलोकोंविषे मरणकालकेदुःखकीसमानता
कूंनिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! ब्रह्मलोकतेंआदिलेके पातालपर्यंत जितनेलोकहैं ॥ तिनलोकोंविषेस्थित जितनेदेहधारीजी
व हैं ॥ तिनजीवोंकूं आपणेआपणेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषे अत्यंतआसक्तिहोवैहै ॥ और जिसजिसपदार्थविषे याजीवोंकी अत्यंत
आसक्तिहोवैहै ॥ तिसतिसपदार्थकेवियोगतें तिनजीवोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और सोप्रियपदार्थोंकावियोग दोप्रकार
सैंहोवैहैं ॥ एकतौ स्त्रीपुत्रादिकप्रियपदार्थोंकेविद्यमानहुए ताभोक्तापुरुषकेमृत्युहुएतैंवियोगहोवैहै ॥ और दूसरा ताभोक्तापुरुष
केविद्यमानहुएभी तिनस्त्रीपुत्रादिकप्रियपदार्थोंकेमरणेतैं वियोगहोवैहै ॥ याकहणेतें यहअर्थसिद्धभया ॥ यामनुष्यलोकविषे आ
पणेमरणेकरिकै तथास्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेमरणेकरिकै याजीवोंकूं जिसप्रकारकादुःख प्राप्तहोवैहै ॥ तिसदुःखतें अनेककोटिगुणाअ
धिकदुःख ब्रह्मलोकविषे तथास्वर्गलोकविषे तथापाताललोकविषे आपणेमरणेकरिकै तथास्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेमरणेकरिकै प्राप्त
होवैहै ॥ हेजनक! जैसे यामनुष्यलोकविषे यादेहधारीजीवोंका कोईपिताहै ॥ तथा कोईमाताहै ॥ तथाकोईस्त्रीहै ॥ तथा कोईपुत्रहै ॥
तथा कोईबांधवहै ॥ तथा कोईमित्रहै ॥ तथा कोईशत्रुहै तथा कोईउदासीनहै ॥ तैसे ब्रह्मलोकादिकोंविषेभी याजीवोंके मातापितादि
कअनेकसंबंधीहोवैहैं ॥ तिनसंबंधियोंकेवियोगकरिकै याजीवोंकूं सर्वलोकोंविषेदुःखहोवै है ॥ अब शरीरकेतादात्म्यसंबंधविषे सर्व
दुःखोंकीकारणताकूं साधनकरणेवासते प्रथम ब्रह्मादिकदेवतावोंके महानूपणेकानिरूपणकरै हैं॥ हेजनक! यहजोहिरण्यगर्भरूपब्रह्मा
है॥ सोब्रह्मा अस्मदादिकसर्वजीवोंतैं प्रथमउत्पन्नभयाहै ॥ और मनुष्यलोकतैंआदिलैके विराट्लोकपर्यंत जितनाविषयजन्यसुख
जीवोंकूंहोवैहै ॥ तिनजीवोंतैं सोब्रह्मा अधिकसुखवालाहै ॥ और जोब्रह्मा ऋग् यजुष् साम अथर्वण याचारिवेदोंकेसंप्रदायकाप्र
वर्तकहै ॥ और जोब्रह्मा याजगत्के उत्पत्ति स्थिति लयकूं करणेहाराहै ॥ तथा स्वभावसिद्धब्रह्मविद्याकरिकै द्वैतभावतैंरहितहै ॥
और जिसब्रह्मारूपवृक्षतैं अनेकब्रह्मांडरूप उदुंबरकेफल उत्पन्नहोवैहैं ॥ और जिसब्रह्माविषे तेब्रह्मांड लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥

और जिसब्रह्माके प्रजापतिआदिकविभूतियां आपणेआपणेलोकोंविषे निवासकरैहैं ॥ और जोब्रह्मा प्राणरूपीपर्यंकऊपरि आपणीभार्याकेसहितस्थितहुआ सर्वदा ब्रह्मलोकविषेनिवासकरैहै ॥ और जोदेवराजइंद्र स्वर्गलोकविषे इंद्राणीकेसहित निवासकरैहै ॥ और जोइंद्र अग्निआदिकसर्वदेवतावोंकास्वामीहै ॥ तथा तीनलोकोंकापतिहै ॥ और पूर्वादिकदिशावोंकेअधिपति जेअष्टलोकपालहैं ॥ और पाताललोकविषेस्थित जेवासुकि तक्षक पद्मक इत्यादिकनागहैं ॥ और यामनुष्यलोकविषेस्थित जितने मनुष्य पशु पक्षी कृमि आदिकजीवहैं ॥ हेजनक! ब्रह्मातैंआदिलैके कृमिपर्यंत जितनेदेहधारीजीवहैं ॥ तिनोंविषे जोसुख प्रतीतहोवैहै ॥ सो अविचारकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ विचारदृष्टिकरिकैदेखियेतौ तिनदेहधारी जीवोंविषे किंचित्मात्रभीसुखनहीं ॥ हेजनक! ब्रह्मातैंआदिलैके कृमिपर्यंत सर्वजीवोंविषे जन्ममरण तथासुखदुःख तथासुखदुःखकेसाधन तथापांचभौतिकशरीर येसंपूर्ण पदार्थ समानहीहैं ॥ यातैं ब्रह्मातैंआदिलैके कृमिपर्यंत सर्वदेहधारीजीवोंविषेकिंचित्मात्रभी विषमतानहीं ॥ इहांयहतात्पर्य है ॥ हिरण्यगर्भरूपब्रह्मा तथादेवराजइंद्र तथाअष्टलोकपाल तथा वासुकीआदिकनाग इसतैंआदिलैके जेमहापुरुषहैं ॥ तेभी शरीरकेतादात्म्यसंबंधतैं जबी जन्ममरणादिकदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तबी अस्मदादिकजीवोंकूं शरीरकेसंबंधकरिकै दुःखकीप्राप्तिहोवैगी याकेविषे क्याकहणाहै?॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जोजो विज्ञानमयआत्माहै ॥ सोसो शरीरतैंरहितहोवैनहीं ॥ और जोजो शरीरवालाहोवैहै ॥ सोसो सुखदुःखतैंरहितहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ नहवैसशरीरस्यसतःप्रियाऽप्रिययोरपहतिरस्ति ॥ अर्थयह ॥ जोजोशरीरधारीजीवहै ॥ ताके सुखदुःखकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥१॥ हेजनक! याप्रकार बुद्धिकेसाथ तादात्म्यसंबंधकरिकै विज्ञानमयसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ यहआत्मादेव नानाप्रकारकेऊंचनीचशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इतनेग्रंथकरिकै बुद्धिकेतादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकऱ्या ॥ अब मनकेतादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यहआनंदस्वरूपआत्मा मनकेतादात्म्यअध्यासतैं जबी मनोमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहआत्मादेव नानाप्रकारकीइच्छावालाहोवैहै ॥ तथा ताइच्छाकाकारणरूप जो शुभअशुभवस्तुकाज्ञानहै ॥ ताज्ञानवालाहोवैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेसंशयवालाहोवैहै ॥ तथा श्रद्धा अश्रद्धा धैर्य अधैर्य लज्जा

चिंता भय इत्यादिक अनेकधर्मवाला होवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ इच्छा संकल्प संशय श्रद्धा अश्रद्धा धैर्य अधैर्य लज्जा चिंता भय इत्यादिकसंपूर्णधर्म श्रुतिनैं मनकेकहेहैं ॥ यातैं जैसे यालोकमैं स्त्रीविषेआसक्तजोकामीपुरुषहै ॥ सोकामीपुरुषतास्त्रीके सुखदुःखादिकधर्मौंकूं आपणेविषेमानेहै ॥ तैसे मनकेसाथ तादात्म्यअध्यासकरिकै यहआत्मादेव मनकेइच्छादिकधर्मौंकूं आपणेविषेमानेहै ॥ याप्रकारकीरीति आगेप्राणादिकोंकेअध्यासविषेभी जानिलेणी ॥ अब प्राणकेतादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! प्राणकेतादात्म्यअध्यासकरिकै यहआत्मादेव जबी प्राणमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहआत्मादेव प्राण अपान समान व्यान उदान नाग कूर्म कृकल देवदत्त धनंजय यादशप्रकारकेभेदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा अनेकनाडियोंविषेविचरणेहारेजेअनेकप्राणहैं ॥ तिनोंकेभेदकरिकै सोआत्मादेवभी अनेकभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और प्राणकेसंबंधतैं सोआत्मादेव ऊर्ध्वश्वासादिकव्यापारोंका तथाजीवनव्यवहारका कारणहोवैहै ॥ और प्राणकेसंबंधतैंसोआत्मादेव अन्नादिकोंकाभोक्ताहोवैहै ॥ तथा बलकरिकैसाध्य जेअनेककर्म हैं ॥ तिनकर्मौंकाकर्ताहोवैहै ॥ इसप्रकार प्राणकेतादात्म्य अध्यासतैं प्राणमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोइकै सोआत्मादेव संपूर्णप्राणोंकेधर्मौंकूं आपणेविषेमानेहै ॥ अब इंद्रियोंकेतादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यापंचज्ञानइंद्रियोंकेतादात्म्यसंबंधकरिकै यहआत्मादेव जबी श्रोत्रमय त्वक्मय चक्षुमय रसनमय घ्राणमय याप्रकारकेसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहआत्मादेव नानाप्रकारकेशब्दोंकूंग्रहण करैहै ॥ तथा नानाप्रकारके कोमलकठिनादिकस्पर्शोंकूं ग्रहणकरैहै ॥ तथा नानाप्रकारके नीलपीतादिकरूपोंकूं ग्रहणकरैहै ॥ तथा नानाप्रकारके मधुरअम्लादिकरसोंकूंग्रहणकरैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेगंधकूंग्रहणकरैहै ॥ इसप्रकार वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ यापंचकर्मइंद्रियोंकेतादात्म्यअध्यासकरिकै यहआत्मादेव जबी वाक्मय पाणिमय पादमय पायुमय उपस्थमय याप्रकारकेसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहआत्मादेव नानाप्रकारकेशब्दोंकाउच्चारणकरैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेपदार्थोंकाग्रहणकरैहै ॥ तथा नानाप्रकारका गमनआगमनकरैहै ॥ तथा मलादिकोंकापरित्यागकरैहै ॥ तथा स्त्रीसंभोगतैं आनंदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार श्रो

त्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंके तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रियोंके तादात्म्यअध्यासकरिकै यहआत्मादेव तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेधर्मोंकूं आपणेविषेमानैहै ॥ अब आकाशादिकपंचभूतोंके तादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! आकाश वायु तेज जल पृथिवी यापंचभूतोंकेतादात्म्यअध्यासतैं यहआत्मादेव जबी भूतमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहआत्मादेव जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेशरीरोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तथा श्रोत्रादिकदशइंद्रियोंकेविषय जे शब्दस्पर्शादिकहैं ॥ तिनोंकूं उत्पन्न करैहै ॥ अब अतेजकेतादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! अतेजरूपजाअविद्याहै ॥ ताअविद्याकेतादात्म्यअध्यास करिकै यहआत्मादेव जबी अतेजोमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहआत्मादेव आपणेस्वरूपकेआवरणका तथा उत्पत्तिरूपविक्षेपका कारणहोवैहै ॥ अथवा अतेजरूपजोअंधकारहै ॥ ताअंधकारकेतादात्म्यअध्यासकरिकै यहआत्मदेव जबी अतेजोमय संज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहआत्मादेव निद्रास्वप्नादिकोंकाकारणहोवैहै ॥ अब कामकेतादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकरैहैं ॥ हे जनक ! कामकेतादात्म्यअध्यासकरिकै यहआत्मादेव जबी काममयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहआत्मादेव पुत्रादिकप्रजाकेउत्पत्तिकाकारणहोवैहै ॥ तथा परिणामकालविषे दुःखकीप्राप्तिकरणेहारा जोविषयजन्यसुखहै तासुखका कारणहोवैहै ॥ तथा क्रीडाकेमर्कटकीन्यांई स्त्रीजनोंकेअधीनहोवैहै ॥ तथा पुण्यपापकर्मकाकर्ताहोवैहै ॥ तथा यहशुभहै यहअशुभहै याप्रकारकेज्ञानकाभी कारणहोवैहै ॥ अब क्रोधकेतादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! क्रोधकेतादात्म्यअध्यासकरिकै यहआत्मादेव जबी क्रोधमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहआत्मादेव नानाप्रकारके ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकूंहीकरैहैं ॥ और जैसे अग्निकेकुंडविषेस्थितहुआपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकरिकै सोक्रोधवान्पुरुष कुंभीपाकादिक नरकोंविषे दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक ! येकामक्रोधदोनों संसारकेकारणहैं ॥ यातैं तिनकामक्रोधोंकापरित्यागकरिकै यहआत्मादेव जबी अकाममय तथाअक्रोधमय संज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहआत्मादेव जीवन्मुक्तअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब धर्मअधर्मरूपअदृष्टके तादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! धर्म अधर्मरूपअदृष्टकेतादात्म्यसंबंधतैं

यहआत्मादेव जबी धर्ममयसंज्ञाकूं तथाअधर्ममयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहआत्मादेव नानाप्रकारके सुखदुःखका कारण होवैहै ॥ तथा नानाप्रकारके ऊंचनीचशरीरोंका कारणहोवैहै ॥ अब संक्षेपतैं सर्वपदार्थोंकेतादात्म्यअध्यासकाफलनिरूपण करैहैं ॥ हेजनक! परोक्षरूपकरिकै तथाप्रत्यक्षरूपकरिकैयुक्त जितनेजगत्विषेपदार्थहैं ॥ तिनसर्वपदार्थोंकेतादात्म्यसंबंधतैं यहआत्मादेव जबी सर्वमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहआत्मादेव सर्वपदार्थोंकेधर्मोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक! जैसे यालोकविषे एकहीपुरुष पाकरूपक्रियाकरिकै पाचकसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और पाठरूपक्रियाकरिकै पाठकसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहआत्मादेवभी जिसजिसकर्मकूं तथाआचारकूं करैहै ॥ तिसतिससंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और वास्तवतैंतौ यहआत्मादेव साधु असाधु पुण्य पाप इत्यादिकसर्वनामोंतैंरहितहै ॥ तथा आकाशकीन्यांई सर्वत्रपरिपूर्णहै ॥ ऐसाआत्मादेव अविद्याके संबंधतैं जीवभावकूंप्राप्तहोइकै जबी पुण्यकर्मोंकूंकरैहै ॥ तबी यहआत्मादेव साधुकारी यासंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा यालोकविषे यशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहआत्मादेव जबी पापकर्मोंकूंकरैहै ॥ तबी यहआत्मादेव असाधुकारी यासंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा यालोकविषे निंदाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इतनेग्रंथकरिकै पुण्यपापरूपकर्मोंकेप्रधानताकूंअंगीकारकरिकै पुण्यपापरूपकर्मोंविषे संसारकीकारणता निरूपणकरी ॥ अब अविद्याजन्यकामहीयासंसारकामुख्यकारणहै यासिद्धांतपक्षकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! याजन्ममरणादिरूपसंसारकेविचारविषे कोईबुद्धिमान्महात्मापुरुष याप्रकार कथनकरैहैं ॥ यहपरमात्मादेव निर्गुणहै तथाअसंगहै तथासर्वभेदतैंरहितहै ॥ ऐसानिर्गुणपरमात्मादेव स्वभावतैं किसीस्थूलसूक्ष्मपदार्थकूं उत्पन्नकरैनहीं ॥ किंतु सोपरमात्मादेव अनिर्वचनीयअविद्याकेसंबंधकूंप्राप्तहोइकै प्रथम कामकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तिसकामकीउत्पत्तितैंअनंतर सोपरमात्मादेव आकाशादिकसर्वजगत्कूंउत्पन्नकरैहै ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकरिकैही श्रुतियोंविषे कामपूर्वक सर्वजगत्कीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ सोऽकामयत एकोहंबहुस्यां ॥ अर्थयह ॥ सोमायाविशिष्ट परमात्मादेव सृष्टिकेआदिकालविषे याप्रकारकीइच्छाकरताभया ॥ एकहीमैंपरमात्मादेव बहुतरूपकरिकैउत्पन्नहोवौं ॥ याप्रकार

कासंकल्पकरिकै सोपरमात्मादेव स्थूलसूक्ष्मरूपसंपूर्णजगत्कूं उत्पन्नकरताभया ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे अविद्याजन्यकामविषेही सर्वजगत्कीकारणता कथनकरीहै ॥ हेजनक! केवलश्रुतिप्रमाणतेंही कामविषे जगत्कीकारणतासिद्धनहीं ॥ किंतु लोकोंकेव्यवहारकरिकैभी कामविषेही संसारकीकारणतासिद्धहोवैहै ॥ काहेतें? यालोकविषे जितनेचेतनप्राणीहैं ॥ तेप्राणी प्रथम यहवस्तु हमारेकूंप्राप्तहोवै यहवस्तु हमारेकूं नहींप्राप्तहोवै याप्रकारकीकामनाकरैहैं ॥ ताकामनातेंअनंतर तिसतिसकार्यविषेप्रवृत्तिद्वारा तेप्राणीनानाप्रकारकेसंसारकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातें यालोकोंकेव्यवहारकरिकैभी कामविषेही संसारकीकारणता सिद्धहोवैहै ॥ अब कामशब्दकेअर्थकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! शास्त्रकेतात्पर्यकूंजानणेहारेजेबुद्धिमान्पुरुषहैं ॥ तेबुद्धिमान्पुरुष काम इच्छा राग स्पृहा याचारिशब्दोंका भिन्नभिन्नअर्थ मानैंनहीं ॥ किंतु तिनचारोंशब्दोंका एकहीअर्थ अंगीकारकरैहैं ॥ और जेबुद्धिमान्पुरुष स्त्रीकेसंगकूं कामकहैहैं ॥ तेबुद्धिमान्पुरुषभी कामशब्दकरिकै स्त्रीकेसंगकीइच्छाकूंही कथनकरैहैं ॥ यातें इच्छाही कामशब्दकामुख्यअर्थहै ॥ और सोइच्छारूपकामही संसाररूप कुचलेकेवृक्षकाबीजहै ॥ और विज्ञानमय मनोमय प्राणमय इत्यादिकशब्दोंकरिकैकथनकरी जेनानाप्रकारकीअवस्थाहैं ॥ तिनअवस्थावोंवाला यहसंसारीजीवात्मा तासंसाररूपवृक्षकाफलरूपहै ॥ और गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकैजानणेयोग्यजोशुद्धब्रह्महै सो नित्यसिद्धहै ॥ यातें सोशुद्धब्रह्म तासंसाररूपवृक्षकाफलरूपनहीं ॥ और हेजनक! कर्ताभोक्तारूपसंसारीजीवविषे इच्छारूपकामहीप्रधानहै ॥ याप्रकारकेअर्थविषे तेबुद्धिमान्पुरुष याप्रकारकीयुक्तिकूं कथनकरैहैं ॥ यालोकविषे यहदेहधारीजीव प्रथम याप्रियपदार्थकूं मैं प्राप्तहोवौंगा याअप्रियपदार्थकूं मैं परित्यागकरौंगा याप्रकारकीइच्छाकरैहै ॥ और ताइच्छातेंअनंतर सोपुरुष तिसपदार्थकेप्राप्तिका तथातिसपदार्थकेपरित्यागका निश्चयकरैहै ॥ और तानिश्चयतेंअनंतर सोपुरुष ताप्रियपदार्थकेप्राप्तिवासते तथा ताअप्रियपदार्थकेपरित्यागवासते शुभकर्मविषे अथवा अशुभकर्मविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ और ताशुभअशुभकर्मकेकरणेतेंअनंतर सोपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे सुखदुःखरूपफलकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातेंइच्छारूपकामही पुरुषोंकेदुःखकाकारणहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सुखकीप्राप्ति

हुआ सोकर्मीपुरुष भूमिलोकतैं स्वर्गकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और स्वर्गलोकतैंपुनःभूमिलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ और भूमिलोकतैंपुनःस्वर्गकूं प्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकार घटीयंत्रकीन्यांई सोसकामकर्मीपुरुष निरंतर संसारविषेभ्रमणकरैहै ॥ और याजीवके जबी पापकर्मअधि कहोवैहैं ॥ तबी यहजीव भूमिलोकतैं नरकविषेप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! जैसे यालोकविषे धान्यादिकबीज जलकेसंबंधकूंप्रा प्तहोइकैही अंकुरादिरूपकार्यकेकरणेविषेसमर्थहोवैहै ॥ तैसे पुण्यपापकर्मरूपबीज इच्छारूपजलकेसंबंधकूंपाइकैही शरीररूपअं कुरकूंउत्पन्नकरैहै ॥ यातैं ब्रह्मलोक स्वर्गलोक भूमिलोक पाताल नरक इत्यादिकलोकोंविषे जोयहजीवात्मा नानाप्रकारकेशरीरों कूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोइच्छारूपकामकरिकैहीप्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! इच्छारूपकामकेअनुसारही यापुरुषकूं मरणतैंअनंतर दूसरेशरीरकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहवार्ता कैसेजानीजावैहै? ॥ समाधान ॥ हेजनक! जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे यापुरुषका जिसजिस पदार्थविषे उत्कटरागहोवैहै ॥ सोपुरुष जबी जाग्रत्अवस्थाकापरित्यागकरिकै स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोपुरुष जाग्र त्केसंस्कारोंकेवशतैं स्वप्नअवस्थाविषेतिसतिसपदार्थकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे मरणकालविषेयापुरुषकूं जिसजिसशरीरविषेरागहो वैहै ॥ मरणतैंअनंतर तिसतिसशरीरकूं यहजीवात्मा प्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! मरणकालकीइच्छाकेअनुसारहीय हजीवात्मा जोशरीरकूं प्राप्तहोताहोवै तौ संपूर्णपापीजीव मरणकालविषे स्वर्गकेप्राप्तिकीइच्छा किसवासते नहींकरते? ॥ समाधान ॥ हेजनक! मरणकालविषे यहजीवात्मा स्वर्गादिकलोकोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरणेविषे स्वतंत्रहोवैनहीं ॥ किंतु मरणका लविषे पुण्यपापरूपकर्मकरिकै प्रेरणाकऱ्याहुआयहजीव जिसजिसऊंचनीचशरीरकेप्राप्तिकीइच्छाकरैहै ॥ मरणतैंअनंतरयहजी वात्मा तिसीतिसीशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं पूर्वलेपुण्यपापरूपकर्मोंकेअनुसारही मरणकालविषे यापुरुषकीइच्छाहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जैसे मरणकालविषे यहजीवात्मा जिसजिसशरीरकीइच्छाकरैहै ॥ तिसतिसशरीरकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे मरणतैंपूर्व जीवत्अवस्थाविषे यापुरुषकूं इच्छाकऱ्येहुएपदार्थकीप्राप्ति क्यूंनहींहोती? ॥ समाधान ॥ हेजनक! यावर्तमानशरीरकेभोगदेणेहारे जेप्रारब्धकर्महैं ॥ तिन प्रारब्धकर्मोंकीविद्यमानता तथा भावीशरीरकेप्राप्तिकरणेहारेकर्मोंविषे फलकीअजनकता ॥ येदोनों

वासते तथादुःखकीनिवृत्तिवासते यज्ञादिककर्मोंकूंकरणेहारे जेसकामपुरुषहैं ॥ तिनोंकूंदुःखकीप्राप्ति किसप्रकारहोवैहै?॥ समाधान॥ हेजनक! यद्यपि येसकामपुरुष सुखकीप्राप्तिवासते तथादुःखकीनिवृत्तिवासते यज्ञादिककर्मोंकूंकरैहैं ॥ तथापि तिनसकामपुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिरूपफल तथादुःखकीनिवृत्तिरूपफल प्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं? स्वर्गादिकफलकेप्राप्तिकीइच्छाकूं मनविषेराखिकै यज्ञादिककर्मोंकूंकरणेहारे जेसकामपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं किंचित्साधनकीन्यूनतारूप वैगुण्यदोष अवश्यप्राप्तहोवैहै॥ और वैगुण्यरूपदोषकरिकैयुक्तहुआ काम्यकर्म फलकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ उलटा पश्चात्तापद्वारा दुःखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ याकारणतैं सकामपुरुषकूं किंचित्मात्रभीसुखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा जोकदाचित् सकामपुरुष वैगुण्यदोषतैंरहित यज्ञादिककर्मोंकीसमाप्तिकरैहैं॥ तौभी तिनयज्ञादिककाम्यकर्मोंकरिकै जोजोविषयजन्यसुख प्राप्तहोवैहै॥ सोविषयजन्यसुख नानाप्रकारकेदुःखोंकरिकै मिश्रितहै॥ याकारणतैंभी सकामपुरुषकूं किंचित्मात्रसुखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं हेजनक! मनकाधर्म जोइच्छारूपकामहै॥ ताकामकरिकैही यहजीव! जन्ममरणादिरूपसंसारकूंप्राप्तहोवैहै॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकै निरूपणकरैहैं॥ हेजनक! मरणकालविषे भावीकर्मोंकरिकैप्रेरणाकन्याहुआ यहजीवात्मा ब्रह्मलोक स्वर्गलोक भूमिलोक नरक इसतैंआदिलैकेजिसजिसलोककेप्राप्तिकीइच्छकरैहै॥ तिसतिसलोकविषे सोजीवात्मा स्थूलशरीरकूंप्राप्तहोवैहै॥ तहां मरणकालविषे पूर्णलेपुण्यकर्मोंकरिकैप्रेरणाकन्याहुआ यहजीवात्मा जबी स्वर्गादिकउत्तमलोकोंकीइच्छाकरैहै॥ तबी यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै सोजीवात्मा स्वर्गादिकलोकोंविषे देवताशरीरकूंप्राप्तहोइकै तहांनानाप्रकारकेभोगोंकूंभोगेहै॥ और जिनपुण्यकर्मोंनैं स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिकरीथी ॥ तिनपुण्यकर्मोंका जबी भोगकरिकैक्षयहोवैहै॥ तबी जोजीवात्मा तास्वर्गादिकलोकोंकापरित्यागकरिकै पूर्वलेकर्मोंकेअनुसार भूमिलोकविषे स्थूलशरीरकूंप्राप्तहोवैहै॥ और भूमिलोकविषेप्राप्तहुआ सोजीवात्मा जबी याभारतखंडविषे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यात्रैवर्णिकशरीरकूंप्राप्तहोवैहै॥ तबी सोजीवात्मा पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतैं पुनःस्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिवासते यज्ञादिककर्मोंकूंकरैहैं॥ तिनयज्ञादिककर्मोंकरिकै सोपुरुष पुनःस्वर्गादिकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकार इच्छारूपकामकरिकैयुक्त

वांछितशरीरकेप्राप्तिविषे प्रतिबंधकहैं ॥ और तेदोनोंप्रतिबंधक जीवत्अवस्थाविषे विद्यमानहैं ॥ याकारणतें जीवत्अवस्था विषे याजीवात्माकूं इच्छापूर्वकशरीरकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और मरणकालविषे तिनदोनोंप्रतिबंधकोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ यातें मरण कालविषे यहजीवात्मा जिसजिसशरीरकेप्राप्तिकीइच्छाकरैहै ॥ मरणतैंअनंतर यहजीवात्मा तिसतिसशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेजन क! जैसे यालोकविषे कोईनटपुरुष लोकोंकेप्रसन्नकरणेवासते नानाप्रकारकेशरीरोंकूंधारणकरैहै ॥ तैसे यहजीवात्मा कर्मकेफल भोगणेवासते नानाप्रकारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें यासंसाररूपचक्रका इच्छारूपकामही मूलकारणहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्प ष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यहजीवात्मा प्रथम शुभकर्मविषे अथवा अशुभकर्मविषे इच्छाकरैहै ॥ तिसतैंअनंतर यहजी वात्मा ताशुभअशुभकर्मोंकेकरणेका निश्चयकरैहै॥ तानिश्चयतैंअनंतर यहजीवात्मा ताशुभअशुभकर्मविषेप्रवृत्तहोवैहै॥ तिसतैंअ नंतर यहजीवात्मा पूर्वलेशुभअशुभकर्मोंकेअनुसार पुनःशुभअशुभकर्मकीइच्छाकरैहै ॥ इसप्रकार कामरूपमूलकारणकरिकै यहसं साररूपचक्र सर्वदा भ्रमणकरैहै ॥ तात्पर्ययह॥ चित्तरूपीभूमिविषे दोप्रकारकेसंस्कारहोवैहैं ॥ तहां एकतौ कर्मजन्यसंस्कार रहे हैं ॥ और दूसरे ज्ञानजन्यसंस्काररहेहैं ॥ तहां कर्मजन्यसंस्कारतौ आपणेफलकेआरंभकीसिद्धिवासते तापुरुषके इच्छाकूंउत्पन्न करैहैं ॥ और दूसरे ज्ञानजन्यसंस्कारतौ जिसकर्मविषेइच्छाहोवैहै तिसकर्मविषे यहकर्म हमारेकूंअवश्यकर्तव्यहै॥ याप्रकारकेज्ञान कूंउत्पन्नकरैहैं ॥ और ताकर्तव्यताज्ञानकेअनुसार यहजीवात्मा ताशुभअशुभकर्मविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ और ताशुभअशुभकर्मोंकेसं स्कारकरिकै यहजीवात्मा पुनःताशुभअशुभकर्मकीइच्छाकरैहै॥ और पूर्वलेकर्तव्यताज्ञानकेसंस्कारोंकरिकै यहजीवात्मा तिनशुभ अशुभकर्मोंविषे यहकर्म हमारेकूंअवश्यकर्तव्यहै याप्रकारकानिश्चयकरैहै ॥ तिसतैंअनंतर यहजीवात्मा पुनःतिनशुभअशुभकर्मों विषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ याजीवकूं शुभअशुभकर्मविषेप्रवृत्तकरणेहारा जोकर्तव्यपदार्थकानिश्चयहै ॥ तानि श्चयका इच्छारूपकामही मुख्यकारणहै ॥ याकारणतें सोइच्छारूपकामही याजीवके जन्ममरणादिरूपसंसारविषे कारणहै ॥ कै साहैसोइच्छारूपकाम? जिसकामकेशांतिकरणेहारा कोईलोकविषेपदार्थहैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! नानाप्रकारकेविषयोंकी

प्राप्तिही ताइच्छारूपकामकेशांतिकाउपायहै ॥ समाधान ॥ हेजनक! विषयोंकीप्राप्तिकरिकै इच्छारूपकामकीनिवृत्तिहोइसकैनहीं ॥
काहेतें? जोपुरुष कामरूपअग्निकरिकैयुक्तहै ॥ तापुरुषकूं जोकदाचित् संपूर्णपृथिवीकेसुवर्णादिकपदार्थोंकीभीप्राप्तिहोवै तौभी
तापुरुषकेइच्छारूपकामकीशांतिहोवैनहीं ॥ उलटा पदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै दिनादिनविषे यापुरुषकेइच्छारूपकामकीवृद्धिहोतीजावैहै ॥
हेजनक! जोकदाचित् नानाप्रकारकेविषयोंकीप्राप्तिकरिकै यापुरुषके इच्छारूपकामकीनिवृत्तिहोती तौ देवराजइंद्रकूं अस्मदादि
कसर्वलोकोंतें अधिकविषयोंकीप्राप्तिहै ॥ यातें देवराजइंद्रकेइच्छारूपकामकीनिवृत्तिहोणीचाहिये ॥ और देवराजइंद्रकेइच्छारूपका
मकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु ब्रह्मलोककेविषयजन्यसुखकीकामनाकरिकै सोदेवराजइंद्र सदैवही तपायमानहोतारहैहै ॥ और इंद्र
पदवीकीप्राप्तिवासतै जोपुरुष अश्वमेधादिकयज्ञकरैहै ॥ तिसपुरुषकेयज्ञादिककर्मोंविषे सोदेवराजइंद्र नानाप्रकारकेविघ्नकरैहै ॥
और जबीकोईदैत्य बलात्कारसैं स्वर्गकूंलैलेवैहै ॥ तबी सोइंद्र तास्वर्गकीप्राप्तिवासतै ब्रह्मादिकदेवतावोंकेसमीपजाइकै नाना
प्रकारकीदीनताकूंकरैहै ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ स्वर्गकेभोगोंकरिकै देवराजइंद्रके इच्छारूपकामकीनिवृत्तिनहींभई ॥ हेज
नक! बहुतआयुषवाले तथा बहुतभोगोंवाले जेइंद्रादिकदेवताहैं ॥ तिनइंद्रादिकदेवतावोंकेकामकीभी जबी विषयोंकीप्राप्ति
करिकैनिवृत्तिनहींहोवैहै ॥ तबी अल्पआयुषवाले तथा अल्पभोगोंवाले तथा रोगादिकोंकरिकैग्रस्त जेअस्मदादिकजीवहैं ॥
तिनोंकेइच्छारूपकामकी विषयोंकीप्राप्तिकरिकै किसप्रकार निवृत्तिहोवैगी? और हेजनक! यद्यपि यहलोकप्रसिद्धअग्नि घृतादि
रूपइंधनोंकीप्राप्तिकरिकै शांतिकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ तथापि अत्यंतघृतादिकोंकेपावणेकरिकै ताअग्निकीशांति होइसकैहै॥ परंतु भूमि
लोक स्वर्गलोक ब्रह्मलोक यातीनलोकोंकूंदाहकरणेहारा जोकामरूपअग्निहै ॥ ताके शांतिकरणेहारा कोईविषयरूपइंधनहैनहीं ॥
उलटा विषयोंकीप्राप्तिकरिकै ताइच्छारूपकामकीवृद्धिहोतीजावैहै ॥ और हेजनक! जैसे यालोकविषे कोईबलवान्पुरुष लोहादि
कोंकेकंचुककूंपहरिकरिकै तथा शिबिकाविषेआरूढहोइकै शत्रुवोंकेभयतैंरहितहुआ विचरैहै॥ तैसे यहजीवात्मा कामरूपीकंचुक
कूंपहरिकै तथा सूक्ष्मशरीररूपीशिबिकाविषेआरूढहोइकै विवेकरूपराजाके तथा शमदमादिरूपसेनाके भयतैंरहितहुआ चौरा

सीलक्षशरीरोंविषेविचरैंहै ॥ और हेजनक! जैसे यालोकविषे तंतुरूपसूत्र पटकाकारणहै ॥ तैसे यहइच्छारूपसूत्रही जगत्‌रूपपटकामुख्यकारणहै ॥ याकारणतैंही ॥ कामःसंकल्पोविचिकित्साश्रद्धाअश्रद्धा ॥ याश्रुतिभगवतीनैं संपूर्णमनकीवृत्तियोंविषे इच्छारूपकामकूं सर्वतैंप्रथमकथनकऱ्याहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जन्ममरणादिरूपसंसारदुःखके जितनेकारणहैं ॥ तिनकारणोंविषे अविद्या मन येदोनोंकारण प्रधानहैं ॥ यहवार्ता बहुतशास्त्रोंविषे महात्मापुरुषोंनैं कथनकरीहै ॥ और आपनेतौ इहां कामकूंही संसारदुःखकाप्रधानकारणकह्याहै ॥ याकेविषेकौनहेतुहै? ॥ समाधान ॥ हेजनक! जिसअभिप्रायकरिकै कामकीप्रधानता हमनैंकथनकरीहै ॥ ताअभिप्रायकूं तू श्रवणकर ॥ यासंसारकेजितनेकारण हैं ॥ तिनसंपूर्णकारणोंविषे जोअविद्याकीप्रधानताहै ॥ सो मनकूंअंगीकारकरिकैही अविद्याविषे प्रधानताहै ॥ और मनरूपकारणविषेजोप्रधानताहै ॥ सो इच्छारूपकामकूंअंगीकारकरिकैही प्रधानताहै ॥ इच्छारूपकामकूंआश्रयणकरिकैही यहमन संपूर्णजगत्‌काजयकरैहै ॥ याकारणतैं इच्छारूपकामही संसारदुःखकाप्रधानकारणहै ॥ इतनेकरिकै इच्छारूपकामकेविद्यमानहुए संसारदुःखकीविद्यमानतारूपअन्वयका निरूपणकऱ्या ॥ अब इच्छारूपकामकेअविद्यमानहुए संसारदुःखकीअविद्यमानतारूपव्यतिरेकका निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जोपुरुष इच्छारूपकामतैंरहितहै ॥ तिसपुरुषकूं संकल्पादिकवृत्तियोंसहितमन तथा जगत्‌कीजननीअविद्या येदोनों किंचित्‌मात्रभी दुःखकीप्राप्तिकरिसकैंनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे याजीवमें इच्छारूपकामहैनहीं ॥ याकारणतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे विद्यमानहुईभीअविद्या सुषुप्तपुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ और समाधिअवस्थाविषे मुक्तपुरुषमें इच्छारूपकामहैनहीं ॥ याकारणतैं समाधिअवस्थाविषे विद्यमानहुआभीमन तामुक्तपुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ जोकदाचित् इच्छारूपकामतैंविना स्वतंत्रही अविद्या मन दुःखकेकारणहोते तौ सुषुप्तिअवस्थाविषे तथासमाधिअवस्थाविषेभी यापुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिहोणीचाहिये ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे तथासमाधिअवस्थाविषे यापुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ इच्छारूपकामही याजीवोंके संसारदुःखकाकारणहै ॥ किंवा इच्छारूपकामतैंरहितहुआयहपुरुष जिनविषयोंकूंदेखैहै ॥ तेविषयभी ताइच्छारहितपुरुषकूं सुखकीप्राप्ति अथवा

दुःखकीप्राप्ति करिसकैंनहीं ॥ और ताइच्छारहितपुरुषकामनभी यहकार्य हमारेकूंअवश्यकरणेयोग्यहै याप्रकारकेनिश्चयकूं उत्पन्नकरैंनहीं ॥ और श्वासप्रश्वासादिकव्यापारोंवालेजेपंचप्राणहैं ॥ तथा आपणेआपणेव्यापारयुक्त जेवाकादिकदशइंद्रियहैं ॥ तथा आकाशतैंआदिलैकेजेपंचभूतहैं ॥ तथा तिनभूतोंकाकार्य जोयहस्थूलशरीरहै ॥ इसतैंआदिलैके संपूर्णपदार्थ विद्यमानहुएभी इच्छारहितपुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिकरिसकैंनहीं ॥ याकारणतैं ताइच्छारहितपुरुषका प्राणादिकसंघात विद्यमानहुआभी नहींविद्यमानहुएकेसमानहै ॥ और हेजनक! यौवनरूपअग्निकरिकैतपायमान जेसुंदरस्त्रियां हैं ॥ तथा शरीर मन वाणीकरिकैहिंसा करणेहारेजेशत्रुहैं ॥ तथा सुखकीप्राप्तिकरणेहारा जोधर्महै ॥ तथादुःखकीप्राप्तिकरणेहारा जोअधर्महै ॥ इसतैंआदिलैके संपूर्णप्रियअप्रियपदार्थ इच्छारहितपुरुषकूं किंचित्मात्रभी सुखदुःखकीप्राप्ति करिसकैंनहीं ॥ और जिसपुरुषविषे इच्छारूपकामहोवैहै ॥ तिसपुरुषविषेही तेस्त्रीपुत्रादिकप्रियपदार्थ सुखकीउत्पत्तिकरैंहैं ॥ और शत्रुआदिकअप्रियपदार्थ दुःखकीउत्पत्तिकरैंहैं ॥ यातैं अन्वयव्यतिरेककरिकै इच्छारूपकामही याजीवोंके संसारदुःखकाकारणहै ॥ और जोपुरुष ताइच्छारूपकामतैंरहितहै ॥ सोपुरुष जीवन्मुक्तपुरुषकेसमानहै ॥ हेजनक! यामनुष्यलोकविषे इच्छाकरिकैयहजीव जिसप्रकारकेदुःखोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिसीप्रकारकेदुःखोंकूं यहजीवात्मा आगेहोणेहारेऊंचनीचशरीरोंविषेभी प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं संपूर्णशरीरोंविषे यहइच्छारूपकामही जीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ इतनेग्रंथकरिकै इच्छारूपकामविषे सर्वदुःखोंकीकारणता दिखाई ॥ अब पूर्वउक्तसुषुप्तिकेदृष्टांतकरिकै मोक्षकानिरूपणकरैंहैं ॥ हेजनक! पूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैं यहपुरुष जबी इच्छारूपकामतैंरहितहोवैहै ॥ तबी यहपुरुष किंचित्मात्रभी संसारदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु इच्छातैंरहितहुआयहपुरुष मोक्षकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक! जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वकामनावोंकेनाशहुएतैं यहपुरुष निष्कामभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे पूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैं उत्पन्नभयाजोतीव्रवैराग्य ताវैराग्यकरिकै जबी यापुरुषकीसर्वकामना निवृत्तहोवैहैं ॥ तबी यहपुरुष निष्कामभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन्! विद्वान्पुरुषविषे सर्वकामनावोंकाअभावरूपनिष्कामता किसहेतुतैंहोवैहै ? ॥ समाधान ॥ हेजनक! यहसकामपुरुष अनेक

जन्मोंकूंपाइकैभी जिनधनपुत्रादिकसंपूर्णपदार्थोंकूं नहींप्राप्तहोइसकैहै ॥ तिनधनपुत्रादिकसंपूर्णपदार्थोंकूं यहविद्वान्पुरुष एकही कालविषेप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतें सोआप्तकामविद्वान्पुरुष निष्कामहै॥ तात्पर्ययह ॥ अप्राप्तवस्तुविषेही जीवोंकीइच्छाहोवैहै ॥ प्राप्तवस्तुविषे किसीजीवकीइच्छाहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! ताविद्वान्पुरुषके धनपुत्रादिकसर्वपदार्थोंकीप्राप्तिरूपआप्तकामताविषे कौनहेतुहै? ॥ समाधान ॥ हेजनक! जैसे सुवर्णरूपकारणकेप्राप्तहुए ॥ तासुवर्णविषेकल्पित जेकुंडलादिकभूषणहैं ते भीअवश्यप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे धनपुत्रादिकसंपूर्णपदार्थोंकाउपादानकारणरूप जोआनंदस्वरूपपरमात्माहै॥ तापरमात्मादेवकीप्राप्तिकरिकै ताविद्वान्पुरुषकूं धनपुत्रादिकसंपूर्णपदार्थ प्राप्तहोवैहैं ॥ यातें सोआत्मकामरूपविद्वान् आप्तकामहै ॥ याकहणेतेंयह अर्थ सिद्धभया ॥ जोपुरुष आत्मकामहोवैहै ॥ सोईपुरुष आप्तकामहोवैहै ॥ यातें आत्मकामता आप्तकामताविषेहेतुहै ॥ और जोपुरुष आप्तकामहोवैहै ॥ सोईपुरुष निष्कामहोवैहै ॥ यातें आप्तकामता निष्कामताविषेहेतुहै ॥ और जोपुरुष निष्कामहोवैहै ॥ सोईपुरुष सर्वकामनावोंतेंरहित अकामहोवैहै ॥ यातें निष्कामता अकामताविषेहेतुहै ॥ यारीतिसें आत्मकामताही परंपराकरिकै सर्वकामनाकेअभावरूपअकामताविषे कारणहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यालोकविषे इच्छारूपकामकरिकैयुक्त जेअज्ञानीपुरुषहैं ॥ तेअज्ञानीपुरुष जिनजिन स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ते स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ नाशवान्हैं ॥ यातें ते स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ तिनअज्ञानीपुरुषोंके तृष्णाकीनिवृत्तिकरैंनहीं ॥ किंतु जैसे घृतादिकोंकरिकै अग्निकीवृद्धिहोतीजावैहै॥ तैसे तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकरिकै तिनअज्ञानीजीवोंकाकामरूपअग्नि दिनदिनविषे वृद्धिकूंप्राप्तहोताजावैहै ॥ और आत्मकामविद्वान्पुरुष जोतिनस्त्रीपुत्रधनादिकसर्वपदार्थोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सो अज्ञानीपुरुषकीन्यांई नानाप्रकारकेयत्नकरिकै तथा बाह्यरूपकरिकै तिनपदार्थोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु स्त्री पुत्र धन इसतेंआदिलेकेसंपूर्णजगत् मेराहीआत्माहै ॥ याप्रकार सर्वात्मभावकीप्राप्तिरूपब्रह्मविद्याकरिकै सोआत्मकामविद्वान्पुरुष सर्वजगत्कूंआपणाआत्मारूपमानिकै प्राप्तहोवैहै ॥ यातें मैं ब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाअभेदज्ञानही इच्छारूपकामकीनिवृत्तिद्वारा परमआनंदकेप्राप्तिकाहेतुहै ॥ इतनेकरिकै

इच्छारूपकामकेअभावविषे श्रुतिप्रमाणतैं परमआनंदकेप्राप्तिकीकारणतानिरूपणकरी ॥ अब लोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकैभी ताअर्थकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यालोकविषे जेपुरुष धनादिकपदार्थोंकीइच्छाकरिकैयुक्तहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं ताधनादिकपदार्थोंकी इच्छाकरिकै परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जेपुरुष धनादिकपदार्थोंकीइच्छातैंरहित संतोषवान्हैं ॥ तिनसंतोषवान्पुरुषोंकूं परमसुखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ काहेतें? यालोकविषे धनादिकपदार्थोंकी तृष्णाकरिकैयुक्त जेधनीपुरुषहैं ॥ तेधनीपुरुष धनकी प्राप्तिवासते राजादिकोंकीसेवाकरैहैं ॥ तासेवादिकोंकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोइकै कदाचित् यत्किंचित्मात्र राजससुखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और सर्वकामनावोंतैंरहित तथा यथालाभविषेसंतुष्ट ऐसाजोसंतोषवान्पुरुषहै ॥ सो यद्यपि दरिद्री है ॥ तथापि सोसंतोषवान्पुरुष परमसात्विकसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं सर्वकामनावोंकाअभावरूपसंतोषही जीवोंके सुखका कारणहै ॥ किंवा यालोकविषे तृष्णाकरिकैयुक्त जेधनीपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं चौर अग्नि राजा आदिकोंतैं सर्वदाभयकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और संतोषवान्दरिद्रीपुरुषकूं चौरादिकोंतैंभयकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ याकारणतैंभी संतोषवान्पुरुष परमसुखीहै ॥ किंवा सर्वकामनावोंकाअभावरूपसंतोष थोडेउद्यमकरिकैभी पुरुषकूं सुखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ यातैं संतोषविषे सुखकीकारणताकानिश्चयहै ॥ और इच्छारूपकाम महान्उद्यमकरिकैभी पुरुषोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ यातैं इच्छारूपकामविषे सुखकीकारणताका संशयहै ॥ और हेजनक! जैसे कंटकादिकोंतैं पादोंकीरक्षाकरणेहारा जोचर्मकाउपानहहै ॥ सोउपानह मार्गविषेचलणेहारेपुरुषोंके सुखकाकारणहोवैहै ॥ तैसे सर्वकामनावोंकाअभावरूप यहसंतोषभी जीवोंकेपरमसुखकाकारणहोवैहै ॥ और हेजनक! जैसे मार्गविषेचलणेहाराकोईपुरुष याप्रकारकासंकल्पकरै ॥ मैं संपूर्णपृथिवीकूं कंटकोंतैंरहितकरौं तथाकोमलकरौं ॥ जाकरिकै हमारेकूं पादोंविषे कंटकादिकनहींलागै ॥ याप्रकारकासंकल्पकरिकै जोपुरुष तिसकेउपायविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥ काहेतें? संपूर्णपृथिवी कंटकोंतैंरहितहोणी तथाकोमलहोणी अत्यंतदुर्घटहै॥ तैसे इच्छारूपकामकेविषय जितने पदार्थहैं ॥ तिनसंपूर्णपदर्थोंकूं मैं प्राप्तहोवौं ॥ याप्रकारकासंकल्पकरिकै जोपुरुष तिनपदार्थोंकीप्राप्तिवासते प्रयत्नकरैहै ॥

सोमूढबुद्धिपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥ काहेतें? पुरुषोंकेइच्छारूपकामकेविषय जितनेपदार्थहैं ॥ तिनसर्वपदार्थोंकीप्राप्तिहोणी
अत्यंतदुर्घटहै ॥ याकारणतें सकामपुरुषकूं दुःखकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ और हेजनक! सर्वकामनावोंकेपरित्यागतें जोसुख निष्कामपु
रुषकूंहोवैहै ॥ सोसुख चक्रवर्तीराजाकूंभीनहींहोवैहै ॥ तथा सोसुख स्वर्गविषे देवराजइंद्रकूंभी नहींहोवैहै॥ तथा सोसुख ब्रह्मलो
कविषे ब्रह्माकूंभीनहींहोवैहै ॥ काहेतें? चक्रवर्तीराजातैंआदिलेकै ब्रह्मापर्यंत जितनेविषयजन्यसुखहैं ॥ तेसुख कर्मउपासनादि
कसाधनोंकरिकैजन्यहैं॥ याकारणतें तेसुख नाशवान् हैं॥ तहांश्रुति॥ यथेहकर्मचितोलोकःक्षीयतेएवमेवामुत्रपुण्यचितोलोकः
क्षीयते ॥ अर्थयह ॥ जैसे यामनुष्यलोकविषे गृहादिकपदार्थ शरीरकेव्यापाररूपकर्मकरिकैरचितहैं॥ यातें तेगृहादिकपदार्थ किसी
कालपाइकै क्षयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे स्वर्गलोकतैंआदिलेकै ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेलोकहैं ॥ तेलोक जीवोंकेपुण्यउपासनारूपकर्म
करिकैरचितहैं ॥ यातें तेलोकभी किसीकालपाइकैक्षयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ १ ॥ याश्रुतिप्रमाणकरिकै तथा जोजोपदार्थ उत्पत्तिवालाहो
वैहै सोसोपदार्थ नाशवान्होवैहै जैसेघटादिकपदार्थहैं याअनुमानप्रमाणकरिकै तिनस्वर्गादिकलोकोंविषे अनित्यताहीसिद्धहोवै
है ॥ और जोपदार्थ नाशवान्होवैहै ॥ सोपदार्थ वियोगकालविषे अवश्यदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ यातें चक्रवर्तीराजातैंआदिलेकेब्र
ह्मापर्यंत जितनेविषयजन्यसुखहैं तेसुख परिणामकालविषेदुःखकाहेतुहोणेतें दुःखरूपहीहैं ॥ तहांमूलश्लोक ॥ नसुखंसार्वभौ
मस्य विद्यतेनबिडौजसः ॥ ब्रह्मणोनसुखंयत्स्यात् पुंसःकामविवर्जनात् ॥ अर्थयह ॥ सर्वकामनावोंकेअभावतें यानिष्काम
पुरुषकूं जोसुखहोवैहै ॥ सोसुख चक्रवर्तीराजाकूं तथाइंद्रकूं तथाब्रह्माकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ १ ॥ और हेजनक! विषयजन्यसुखकी
इच्छारूपकामही याजीवोंकेआत्मसाक्षात्कारविषेप्रतिबंधकहै ॥ सोइच्छारूपकाम जिसपुरुषकानिवृत्तभयाहै ॥ तिसीनिष्कामपु
रुषकूंगुरुउपदिष्टमहावाक्यतें मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और ताआत्मसाक्षात्कारकरिकै तिसनि
ष्कामपुरुषके पुण्यपापरूपसंचितकर्मोंका नाशहोइजावैहै ॥ और तेपुण्यपापरूपकर्मही वासनाकीउत्पत्तिद्वारा लोकांतरकेप्राप्ति
काकारणहोवैहैं ॥ यातें तिनपुण्यपापरूपकर्मोंकेनाशहुए ताविद्वान्पुरुषकी किसीलोकविषेवासनाहोवैनहीं ॥ याकारणतें ताविद्वान्

पुरुषकालिंगशरीर लोकांतरविषेजावैनहीं ॥ किंतु जैसे गृहविषेस्थितदीपकका गृहविषेहीलयहोवैहै ॥ तैसे प्रारब्धकर्मकीस माप्तितैंअनंतर ताविद्वान्पुरुषके मनइंद्रियसहितप्राण शरीरकेभीतरिही अधिष्ठानआत्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तहांश्रुति ॥ नतस्यप्राणाउत्क्रामंति ॥ अर्थयह ॥ जैसे मरणतैंअनंतर अज्ञानीजीवोंकेप्राण वासनाकेअनुसार लोकांतरविषेगमनकरैंहैं ॥ तैसे वासनारहितविद्वान्पुरुषकेप्राण किसीलोकांतरविषेगमनकरैंनहीं ॥ किंतु शरीरकेभीतरिही लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! मरणकालविषे ताविद्वान्पुरुषके प्राणादिकोंकेलयहुएभी ताविद्वान्पुरुषकाचैतन्यभाग कहांजावैहै? ॥ समाधान ॥ हेजनक ! सोविद्वान्पुरुष आत्मसाक्षात्कारतैंपूर्वभी ब्रह्मरूपहीथा ॥ परंतु आत्मसाक्षात्कारतैंपूर्व सोविद्वान्पुरुष अज्ञानकरिकै आवृतब्रह्मरूपथा ॥ और आत्मसाक्षात्कारतैंअनंतर सोविद्वान्पुरुष अज्ञानरूपआवरणतैंरहित शुद्धब्रह्मरूपहोवैहै ॥ सोशुद्धब्रह्म सर्वत्रपरिपूर्णहै ॥ यातैं ताब्रह्मका कहां गमनआगमन होवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिकैस्पष्टकरैंहैं ॥ हेजनक ! जैसे घटविषेस्थितजोआकाशहै ॥ सोआकाश घटकेनाशतैंपूर्वभी महाकाशरूपहीहै ॥ परंतु घटरूपउपाधिकेसंबंधतैं सोआकाश घटाकाशसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और घटरूपउपाधिकेनाशतैंअनंतर सोईहीआकाश घटाकाशसंज्ञाकापरित्यागकरिकै महाकाशरूपही होवैहै ॥ तैसे विद्वान्पुरुषकाआत्मा शरीरादिकउपाधियोंकेविद्यमानहुएभी ब्रह्मरूपहीहै ॥ और शरीरादिकउपाधियोंकेनिवृत्तितैं अनंतर सोविद्वान्पुरुषकाआत्मा ब्रह्मरूपहीहोवैहै ॥ और हेजनक ! जैसे अज्ञानकाविषयहुआ शुद्धआकाश गंधर्वनगररूपवृक्ष केउत्पत्तिकाक्षेत्रहोवैहै ॥ तैसे अज्ञानकाविषयहुआ यहआत्मादेव कामरूपबीजसहित यासंसाररूपवृक्षकेउत्पत्तिकाक्षेत्रहोवैहै ॥ और जैसे आकाशरूपअधिष्ठानकेवास्तवज्ञानकरिकै ताकल्पितगंधर्वनगरकीनिवृत्तिहोइजावैहै ॥ तैसे अधिष्ठानरूपशुद्धआत्माके साक्षात्कारकरिकै यहसंसाररूपवृक्ष नाशहोइजावैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ आत्माकेअज्ञानतैं इच्छारूपकामकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और ता इच्छारूपकामतैं संपूर्णजगत्कीउत्पत्तिहोवैहै ॥ यातैं अज्ञानविशिष्टआत्मा यासंसाररूपवृक्षकेउत्पत्तिकाक्षेत्रहै ॥ और इच्छारूपकाम यासंसाररूपवृक्षकाबीजहै ॥ और आत्मसाक्षात्काररूपअग्निकरिकै जबी अज्ञानकानाशहोवैहै ॥ तबी अज्ञानविशिष्टआत्मारूप

क्षेत्रकाभीनाशहोइजावैहै॥ यद्यपि आत्मा नित्यहै यातैं आत्माकानाशसंभवैनहीं॥ तथापि शुद्धआत्माविषेतौ संसाररूपवृक्षकीक्षेत्र रूपताहैनहीं॥ किंतु अज्ञानविशिष्टआत्माविषे क्षेत्ररूपताहै॥ ताअज्ञानरूपविशेषणकेनाशहुए आत्माविषे संसाररूपवृक्षकीक्षेत्र रूपतारहैनहीं॥ और ताक्षेत्रकेनाशहुए कामरूपबीजकाभीनाशहोइजावैहै॥ और ताकामरूपबीजकेनाशहुए संसाररूपवृक्षकाभी नाशहोइजावैहै॥ इसप्रकार आत्मसाक्षात्कारकरिकैनाशकूंप्राप्तहुआ सोसंसाररूपवृक्ष पुनःउत्पन्नहोवैनहीं॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं॥ हेजनक! पुत्रएषणा वित्तएषणा लोकएषणा यहतीनप्रकारकीएषणा जबी यापुरुषकीनिवृत्तहोवैहैं॥ तबी यहपुरुष इसीशरीरविषे अद्वितीयब्रह्मकूंप्राप्तहोइकै मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै॥ हेजनक! देहादिकोंविषेजोअहंअभिमानरूपअ ध्यासहै॥ तथा देहकेसंबंधीपुत्रधनादिकपदार्थोंविषे जोममअभिमानरूपअध्यासहै॥ सोअहंममअभिमानही सर्वकामनावोंका कारणहै॥ ताअहंममअभिमानकूं यद्यपि मरणतैंअनंतर सर्वअज्ञानीजीवभी परित्यागकरैहैं॥ तथापि जोपुरुष जीवत्अवस्थावि षेही ताअहंममअभिमानकापरित्यागकरैहै॥ सोपुरुष याशरीरविषेस्थितहुआभी मुक्तहीजानणा॥ काहेतैं? इच्छारूपकामका जोहृ दयविषेनिवासहै॥ ताकूं बुद्धिमान्पुरुष संसाररूपबंधकहैहैं॥ और तिसइच्छारूपकामका जोहृदयदेशविषेअभावहै॥ ताकूं बुद्धि मान्पुरुष मोक्षकहैहैं॥ और सोइच्छारूपकामकानाश ब्रह्मज्ञानतैंविनाहोवैनहीं॥ किंतु ब्रह्मज्ञानकरिकैही अविद्याकीनिवृत्तिद्वारा ताइच्छारूपकामकानाशहोवैहै॥ और सोब्रह्मज्ञान जबी यापुरुषकूं जीवत्अवस्थाविषेप्राप्तहोवैहै॥ तबी याशरीरकेविद्यमानहुए भी सोपुरुष जीवन्मुक्तिकूंप्राप्तहोवैहै॥ यातैं हेजनक! जबी आत्मसाक्षात्कारकेप्रभावतैं यहविद्वान्पुरुष शरीरादिकउपाधियोंके विद्यमानहुएभी जीवन्मुक्तिकूंप्राप्तहोवैहै॥ तबी शरीरादिकउपाधियोंकेनाशतैंअनंतर सोविद्वान्पुरुष विदेहमुक्तिकूंप्राप्तहोवैहै॥ याकेविषेक्याकहणाहै?॥ **शंका**॥ हेभगवन्! जीवन्मुक्तितैं विदेहमुक्तिविषे कितनीविशेषताहै?॥ **समाधान**॥ हेजनक! आत्माके आश्रितजोमायारूपअविद्याहै ताअविद्याकीदोप्रकारकीशक्तिहोवैहै॥ एकतौआवरणशक्तिहोवैहै॥ और दूसरीविक्षेपशक्तिहोवैहै॥ तहां साविक्षेपशक्तिभी दोप्रकारकीहोवैहै॥ एकतौ शरीरविषे तथाशरीरकेसंबंधीधनपुत्रादिकोंविषे रागकूंउत्पन्नकरणेहारी विक्षेप

शक्तिहोवैहै ॥ और दूसरी प्रपंचकीप्रतीतिकरावणेहारी विक्षेपशक्तिहोवैहै ॥ इनसंपूर्णोंकानामबंधहै ॥ तहां आत्मसाक्षात्का
रकरिकै याविद्वान्पुरुषका जबी आवरणशक्ति तथा रागकाकारणविक्षेपशक्ति यहदोनोंप्रकारकाबंध निवृत्तहोवैहै ॥ तबी यह
विद्वान्पुरुष जीवन्मुक्तअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जबी प्रपंचकीप्रतीतिकरावणेहारीविक्षेपशक्तिकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी
यहविद्वान्पुरुष विदेहमुक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इतनीही जीवन्मुक्तितैं विदेहमुक्तिविषेविशेषताहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जि
सकालविषे आत्मसाक्षात्कार आवरणशक्तिकूं तथा रागकाकारणरूपविक्षेपशक्तिकूं नाशकरैहै ॥ तिसकालविषे सोआत्म
साक्षात्कार प्रपंचकीप्रतीतिकरावणेहारीविक्षेपशक्तिकूं किसवासतेनहींनाशकरता? ॥ समाधान ॥ हेजनक! जिनपुण्यपाप
रूपप्रारब्धकर्मोंनें विद्वान्पुरुषकेशरीरकाआरंभकऱ्याहै ॥ तेप्रारब्धकर्म ताविद्वान्पुरुषकूं सुखदुःखकेभोगदेणेवासते ताविक्षेपअं
शकूंनिवृत्तहोणेदेवैनहीं ॥ जबी भोगकरिकै ताप्रारब्धकर्मकाक्षयहोवैहै ॥ तबी ताविद्वान्पुरुषकेशरीरका तथाताविक्षेपशक्तिका
नाशहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोविद्वान्पुरुष विदेहमुक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जीवत्अवस्थाविषे ताविक्षेपशक्तिक
रिकै प्रपंचकूंदेखताहुआ सोविद्वान्पुरुष अज्ञानीपुरुषकीन्यांई बंधकूंकिसवासते नहींप्राप्तहोता? ॥ समाधान ॥ हेजनक! अज्ञा
नीजीव आपणेआत्माकेतादात्म्यसंबंधकरिकै यास्थूल सूक्ष्म कारण शरीरादिकोंकूंदेखेहै ॥ आत्माकूं असंगजानतानहीं ॥ या
कारणतैं सोअज्ञानीजीव संसारविषेबंधायमानहोवैहै ॥ और यहविद्वान्पुरुष आपणेआत्माकूंअसंगजानिकरिकै शरीरादिकप्रपं
चकूंदेखेहै ॥ यातैं सोविद्वान्पुरुष संसारविषे बंधायमानहोवैनहीं ॥ याकारणतैंही सोविद्वान्पुरुष जीवन्मुक्तहै ॥ शंका ॥ हेभगव
न्! रागादिकोंतैंरहित जोजीवन्मुक्तविद्वान्पुरुषहै ॥ ताके खानपानादिकलौकिकव्यवहार किसप्रकार होवैंगे? ॥ समाधान ॥ हेजन
क! जैसे प्रारब्धकर्मकेवशतैं उन्मत्तपुरुषके तथाबालकके खानपानादिकव्यवहारहोवैहैं ॥ तैसे प्रारब्धकर्मकेवशतैं ताजीवन्मुक्त
विद्वान्पुरुषकेभी खानपानादिकव्यवहारहोवैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! खानपानादिकव्यवहारोंकूंकरताहुआ सोविद्वान्पुरुष तिन
पदार्थोंविषेरागवान् क्यूंनहींहोवैहै? ॥ समाधान ॥ हेजनक! पदार्थोंका विशेषरूपकरिकैज्ञानही रागद्वेषकाकारणहोवैहै ॥ सोपदा

थोंकाविशेषज्ञान विद्वान्पुरुषकूंहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे नवममासतैंपूर्व माताकेगर्भविषे स्थितहुआबालक मातानैंभोजनकऱ्येजेना नाप्रकारकेरस तिनरसोंकूंभोजनकरताहुआभी विशेषकरिकै तिनरसोंकूंजाणतानहीं ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माकूं चिंतनकरता हुआ यहविद्वान्पुरुष खानपानादिकव्यवहारोंकूंकरताहुआभी विशेषकरिकै तिनव्यवहारोंकूंजाणतानहीं ॥ याकारणतें ताविद्वान्पु रुषका किसीपदार्थविषेरागद्वेषहोवैनहीं ॥ और हेजनक! जैसे अशोकवनिकान्यायकरिकै उन्मत्तपुरुषोंकाचित्त किसीएकविषय विषे अवश्यलगनहोवैहै ॥ तैसे ताजीवन्मुक्तपुरुषकाचित्त आत्माकेविचारविषेहीलगनहोवैहै ॥ अशोकवनिकान्यायकायहअर्थहै॥ जैसे सीताकूंहरणकरिकै रावणनैं तासीताकूं किसीएकवनविषे अवश्यराखणाथा ॥ परंतु दैवयोगतें तारावणनैं सीताकूं अशोकव नविषेहीराख्या ॥ याकानाम अशोकवनिकान्यायहै ॥ तैसे यहचित्तभी किसी न किसीविषयविषे अवश्यलागेहै ॥ याकारणतें ते विद्वान्पुरुष आत्माकेविचारविषेहीताचित्तकूंलगावैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! आनंदस्वरूपआत्माकूं सर्वदाचिंतनकरताहुआ सो विद्वान्पुरुष जोकदाचित् बाह्यपदार्थोंकूंविशेषरूपकरिकैनहींजानताहोवै तौ जैसे ताविद्वान्पुरुषकी शास्त्रविचारादिकशुभकर्मों विषे प्रवृत्तिहोवैहै ॥ तैसे परद्रोहादिकनिषिद्धकर्मोंविषे ताविद्वान्पुरुषकीप्रवृत्ति किसवासतेनहींहोती?॥ समाधान ॥ हेजनक! जै से यालोकविषे जिसपुरुषनैं बहुतकालपर्यंत शास्त्रकाअभ्यासकऱ्याहै ॥ तथा शास्त्रकेअनुसार शुभकर्मकरेहैं ॥ सोपुरुष जोकदा चित् किसीरोगादिकनिमित्तकरिकै उन्मत्तदशाकूंभीप्राप्तहोवैहै तौभी सोपुरुष पूर्वशुभकर्मोंकेअभ्यासकेवशतें शास्त्रनिषिद्धकर्मों कूंकरैनहीं ॥ किंतु ताउन्मत्तदशाविषेभी सोपुरुष यथार्थ अथवा अयथार्थ शुभकर्मोंकूंहीकरैहै ॥ तथा पूर्वअभ्यासकऱ्येहुएशास्त्र काही वारंवारउच्चारणकरैहै॥ तैसे याविद्वान्पुरुषनैं आत्मसाक्षात्कारतैंपूर्व मुमुक्षुदशाविषे बहुतकालपर्यंत शमदमादिकसाधनकरे हैं॥ तथा निरंतरवेदांतशास्त्रकाविचारकऱ्याहै॥ तिनसंस्कारोंकेवशतें सोविद्वान्पुरुष जीवन्मुक्तअवस्थाविषे परद्रोहादिकनिषिद्धक र्मोंविषेप्रवृत्तहोवैनहीं॥ किंतु पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतें सोविद्वान्पुरुष शुभकर्मोंविषे तथा वेदांतशास्त्रकेविचारविषेही प्रवृत्तहोवैहै॥ शंका ॥ हेभगवन्! अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै याविद्वान्पुरुषकीभेददृष्टि निवृत्तहोइजावैहै॥ यातैं सोविद्वान्पुरुष यहशिष्य

उपदेशकाअधिकारी है ॥ और यहशिष्य उपदेशकाअधिकारीनहीं है ॥ याप्रकारकीभेददृष्टिकूं अंगीकारकरिकै किसप्रकार उपदेशकरै है?॥ **समाधान** ॥ हेजनक! जैसे सर्वशास्त्रोंकूंजानणेहारा जोकोईमायावीपुरुषहै॥सोमायावीपुरुष आपणेमायाकेप्रभावतें नानाप्रकारकेरूपोंकूंधारणकरिकै आपणेएकअद्वितीयस्वरूपकूंविस्मरणकरिदेवै ॥ और तिनआपणेरूपोंकूंआपणे तैंभिन्नमानिकै सोमायावीपुरुष तिनोंकेप्रति शास्त्रकाउपदेशकरै है ॥ तहांवास्तवतैंभेदतैंरहितहुआभी सोमायावीपुरुष भेदवालेकीन्यांई प्रतीतहोवै है ॥ तैसे अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै सर्वभेददर्शनतैंरहितहुआभी यहविद्वान्पुरुष प्रारब्धकर्मकेवशतैं भेदकूंदेखताहुआ शिष्योंकेप्रति उपदेशकरै है ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! द्वितीयाद्वैभयंभवति ॥ अर्थयह ॥ द्वैतरूपभेदकेदर्शनतैं जीवोंकूं भयकीप्राप्तिहोवै है ॥ याश्रुतिविषे भेददर्शीपुरुषकूंभयकीप्राप्तिकही है ॥ यातैं गुरुशिष्यादिकोंकेभेदकूंदेखणेहारा जोविद्वान्पुरुषहै ॥ तिसकूंभी भयकीप्राप्तिहोवैगी ॥ **समाधान** ॥ हेजनक! जैसे स्थूलशरीरकेअभिमानकापरित्यागकरिकै स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहुआ कोईकपुरुष तास्वप्नअवस्थाविषे नानाप्रकारकेजडचेतनपदार्थोंकूंदेखै है ॥ और कदाचित् सोस्वप्नद्रष्टापुरुष तिसीस्वप्नअवस्थाविषे यहसंपूर्णपदार्थ स्वप्नरूपहोणेतैं मिथ्याहैं याप्रकारकानिश्चयकरै है ॥ तानिश्चयतैंअनंतर सोस्वप्नद्रष्टापुरुष तिनमिथ्यापदार्थोंविषे बंधायमानहोवैनहीं ॥ और शास्त्रकेअभ्यासजन्यजेसंस्कारहैं ॥ तिनसंस्कारोंकेवशतैं सोस्वप्नद्रष्टापुरुष तिनमिथ्यापदार्थोंकेउपदेशादिकोंविषेभी प्रवृत्तहोवै है ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुषभी अज्ञानसहितस्थूलसूक्ष्मशरीरादिरूपसर्वप्रपंचकूं मिथ्याजाणिकै ताकेविषेबंधायमानहोवैनहीं ॥ तथा अधिकारीशिष्योंकेताईं उपदेशादिकभीकरै है ॥ तात्पर्ययह ॥ अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै सर्वजगतकूंमिथ्यारूपकरिकैजानणेहाराजोविद्वान्पुरुषहै ॥ ताविद्वान्पुरुषकूं जीवन्मात्रकाउपयोगीभेददर्शन बंधकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ सत्यरूपकरिकैभेदकादर्शनही बंधनकाहेतुहोवै है ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! जैसे जीवन्मुक्तअवस्थातैंपूर्व बंधअवस्थाविषे यहविद्वान्पुरुष शरीरसहितप्रतीतहोवै है ॥ तैसे जीवन्मुक्तअवस्थाविषेभी यहविद्वान्पुरुष शरीरसहितप्रतीतहोवै है ॥ यातैं बंधअवस्थातैं जीवन्मुक्तअवस्थाविषेकौनविशेषताहै? ॥ **समाधान** ॥ हेजनक! जैसे यालोकविषे सर्प जबपर्यंत आपणेकंचुककापरित्यागनहींकरै है ॥ तबपर्यंत सोसर्प ताकंचुककेछेदनादि

कोंकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जबी सोसर्प आपणेकंचुककापरित्यागकरैहै ॥ तबी सोसर्प ताकंचुककेछेदनादिकोंकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और आपणेबिलकेद्वाररूपरिस्थितजोकंचुकहै ॥ ताकूं दिनदिनविषे देखताहुआभी सोसर्प ताकंचुकविषे आसक्तिकरैनहीं ॥ तथा ताकंचुककेधर्मोंकूं आपणेविषेमानैनहीं ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुष जबपर्यंत देहकेअभिमानकापरित्याग नहींकरैहै ॥ तबपर्यंतही तादेहकेछेदनादिकोंकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा तादेहकेजन्ममरणादिकधर्मोंकूंआपणेविषेमानैहै ॥ और आत्माकेसाक्षात्कारकरिकै सोविद्वान्पुरुष जबी देहादिकोंतें आपणेकूंभिन्नकरिकैजानैहै ॥ तबी सोविद्वान्पुरुष देहादिकोंके दाहछेदनादिकोंकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और दिनदिनविषे आपणेदेहादिकोंकूंदेखताहुआभी सोविद्वान्पुरुष तिनदेहादिकों विषे आसक्तिकरैनहीं ॥ तथा तिनदेहादिकोंकेजन्ममरणादिकधर्मोंकूं आपणेस्वरूपविषेमानैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ विचारतेंरहित जेतामसीसर्पादिकजंतुहैं ॥ तेसर्पादिकभी जबी कंचुककेपरित्यागतेंअनंतर ताकंचुककेछेदनादिकधर्मोंकूं आपणेस्वरूपविषेनहींमानते ॥ तबी विचारादिकसाधनोंयुक्त जोसात्विकविद्वान्पुरुषहै ॥ सोविद्वान्पुरुष शरीरादिकोंकेअभिमानत्यागतेंअनंतर तिनशरीरादिकोंकेजन्ममरणादिकधर्मोंकूं आपणेस्वरूपविषेनहींमानैहै ॥ याकेविषेक्याकहणाहै? ॥ शंका ॥ हेभगवन्! कंचुककेपरित्यागतें अनंतर तासर्पका कंचुककेसाथ कोईसंबंधहैनहीं ॥ याकारणतें सोसर्प ताकंचुककेछेदनादिकोंकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यहवार्ता यद्यपि संभवैहै ॥ तथापि विद्वान्पुरुषका जीवन्मुक्तअवस्थाविषे शरीरादिकोंकेसाथ संबंधप्रतीतहोवैहै ॥ यातें शरीरादिकोंकेछेदनादिकोंकरिकै ताविद्वान्पुरुषकूं अवश्यदुःखकीप्राप्तिहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेजनक! सामान्यतेंशरीरकासंबंध सुखदुःखकाहेतुहोवैनहीं ॥ किंतु मैं शरीररूपहूं अथवा यहमेराशरीरहै याप्रकारकेअहंममअभिमानरूपसंबंधकरिकै शरीरविशिष्टजोपुरुषहै ॥ तिसकूंहीशरीरकेपूजनदाहादिकोंकरिकै सुखदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोपुरुष शरीरकेअहंममअभिमानतेंरहितहै ॥ तिसपुरुषकूं शरीरकेपूजनताडनादिकोंकरिकै सुखदुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे भूतकेआवेशकरिकैयुक्तजोशरीरहै ॥ सोशरीर ताभूतकेपूजनताडनकरिकै सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताशरीरविषेस्थितजोभूतहै ॥ ताभूतकातिसमनुष्यशरीरविषे अहंममअभिमानहैनहीं ॥

याकारणतें सोभूत ताशरीरकेपूजनताडनादिकोंकरिकै सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे पुण्यपापरूपप्रारब्धकर्मकेनाशतें याविद्वान्पुरुषकाशरीर पूजनादिकोंकरिकै सुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा ताडनादिकोंकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताशरीरकेंअहंममअभिमानतैंरहित तथापुण्यपापरूपकर्मतैंरहित जोविद्वान्पुरुषकावास्तवस्वरूपहै ॥ सो सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ इतनेकरिकै समाधिअवस्थाविषेस्थितजोविद्वान्पुरुषहै ताकेविषे सुखदुःखकेअनुभवकाअभाव दिखाया ॥ अब समाधितैंउत्थानकालविषे याविद्वान्पुरुषकूं जोसुखदुःखकाअनुभवहोवैहै ॥ ताकेविषे अज्ञानीपुरुषोंतैंविलक्षणता निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे यालोकविषे बालककूं प्रियवस्तुकीप्राप्तितैं सुखकाअनुभवहोवैहै ॥ तथा अप्रियवस्तुकीप्राप्तितैं दुःखकाअनुभवहोवैहै ॥ परंतु सोसुखदुःखकाअनुभव ता बालकविषे रागद्वेषकीउत्पत्तिकरैनहीं ॥ तैसे समाधितैंउत्थानकालविषे याविद्वान्पुरुषकूं प्रियवस्तुकीप्राप्तितैं सुखकाअनुभवहोवैहै ॥ तथा अप्रियवस्तुकीप्राप्तितैं दुःखकाअनुभवहोवैहै ॥ परंतु सोसुखदुःखकाअनुभव ताविद्वान्पुरुषविषे अज्ञानीपुरुषकीन्यांई रागद्वेषकीउत्पत्तिकरैनहीं ॥ यातैं अज्ञानीपुरुषके सुखदुःखकेअनुभवतैं विद्वान्पुरुषके सुखदुःखकेअनुभवविषे महान्विषमताहै ॥ अब ताविद्वान्पुरुषविषे परइच्छाअधीन सुखदुःखकीप्राप्तिका निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यालोकविषे जोपुरुष वृद्धअवस्थाकरिकैयुक्त है ॥ तथा रोगादिकोंकरिकै जिसकीशक्तिनष्टहुईहै ॥ ऐसाशक्तिहीनवृद्धपुरुष आपणीइच्छातैं सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सोवृद्धपुरुष आपणेस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकीइच्छाकेअधीनही सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां स्त्रीपुत्रादिकबांधव तावृद्धपुरुषकेतांई जोप्रियपदार्थोंकीप्राप्तिकरैहैं ॥ तौ सोवृद्धपुरुष सुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव तावृद्धपुरुषकेतांई जोअप्रियपदार्थोंकीप्राप्ति करैहैं तौ सोवृद्धपुरुष दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुषभी आपणीइच्छातैं सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु अन्यपुरुषोंकी इच्छाकेअधीन सोविद्वान्पुरुष सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां जोकोईभक्तजन ताविद्वान्कापूजनकरैहै तौ सोविद्वान्पुरुष सुखकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और जोकोईदुष्टजन ताविद्वान्पुरुषकाताडनकरैहै ॥ तौ सोविद्वान्पुरुष दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब अनात्मपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै तथातिनोंकेवियोगकरिकै विद्वान्पुरुषकूं हर्षशोकहोवैंनहीं याअर्थकूंनिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जैसे यालोकविषे

बहुतधनकरिकै तथाअन्नकरिकै युक्तजोकोईधनीपुरुषहै ॥ सोधनीपुरुष किसीनिमित्तपाइकै आपणेक्षेत्रविषेजावैहै ॥ तहां क्षेत्रतैंअन्नादिकोंकीअप्राप्तिदेखिकरिकै सोधनीपुरुष शोककूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और ताक्षेत्रतैं बहुतअन्नादिकोंकीप्राप्तिदेखिकै सोधनीपुरुष हर्षकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे ब्रह्मानंदकरिकैतृप्तहुआ यहविद्वान्पुरुषभी धनपुत्रादिकलौकिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै हर्षकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा धनपुत्रादिकपदार्थोंकेवियोगतैं सोविद्वान्पुरुष शोककूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ अब ताविद्वान्पुरुषकेचित्तकी आत्माविषे तत्परता तथाव्यवहारविषेउदासीनता निरूपणकरैंहैं ॥ हेजनक! जैसे यालोकविषे कोईगृहवालापुरुष किसीकार्यकेकरावणेवासते किसीमजूरकूंराखैहै ॥ तामजूरकेसाथ सोगृहीपुरुष याप्रकारकाठहरावकरैहै ॥ प्रातःकालतैंलेके सायंकालपर्यंत याकार्यकूं जोतूकरैगा तौ तुमारेतांई मैं इतनेपैसेमजूरीकेदेवोंगा ॥ याप्रकारकाठहरावकरिकै सोमजूर आपणेमजूरीकेपैस्योंकूंचिंतनकरताहुआ तथासायंकालकूंदेखताहुआ ताकार्यविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ परंतु ताकार्यविषे तिसमजूरकारागहैनहीं ॥ यातैं गृहवालेपुरुषकीन्यांई अधिककार्यकूं तथान्यूनकार्यकूं सोमजूर करैनहीं ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुषभी आनंदस्वरूपआत्माकूंचिंतनकरताहुआ तथा प्रारब्धकर्मकेसमाप्तिकालकूंदेखताहुआ खानपानादिकव्यवहारोंकूंकरैहै ॥ परंतु ताखानपानादिकव्यवहारोंविषे ताविद्वान्पुरुषकारागहैनहीं ॥ यातैं सोविद्वान्पुरुष अज्ञानीपुरुषोंकीन्यांई तिनव्यवहारोंकीवृद्धिकरैनहीं ॥ अब प्रारब्धकर्मकेवशतैं ताविद्वान्पुरुषकेगमनआगमनादिकोंका निरूपणकरैंहैं ॥ हेजनक! जैसे सूत्रकेकातणेकासाधन जोकाष्ठकायंत्रहै ॥ सोयंत्र सूत्रकेडोरेकरिकैभ्रमणकरैहै ॥ तैसे विद्वान्पुरुषकाशरीरभी प्रारब्धकर्मकेवशतैं तीर्थादिकोंविषे गमनआगमनकरैहै ॥ अब जीवोंकेभावनाकेअनुसार विद्वान्पुरुषकेशरीरविषे सुखदुःखकीकारणताका निरूपणकरैंहैं ॥ हेजनक! जैसे किसीपुरुषनें कौतुककेवासते चर्मका अथवा काष्ठका हस्तीरच्या ॥ सोकाष्ठकाहस्ती जीवोंकेभावनाकेअनुसार किनोंकूंसुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ तथा किनस्त्रीबालकादिकमूढोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुषकाशरीरभी जीवोंकेभावनाकेअनुसार सुखदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ तहां जेजीव विद्वान्पुरुषकेशरीरविषेप्रीतिकरैंहैं ॥ तिनजीवोंकूं सोविद्वान्पुरुष आपणेपुण्यकर्मदेके सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ और जे

जीव ताविद्वान्पुरुषकेशरीरविषेद्वेषकरैंहैं ॥ तिनजीवोंकूं सोविद्वान्पुरुष आपणेपापकर्मदेके दुःखकीप्राप्तिकरैंहै ॥ तहांश्रुति ॥ तस्यपुत्रादायमुपयांति सुहृदःसाधुकृत्यं द्विषंतःपापकृत्यं ॥ अर्थयह ॥ तिसविद्वान्पुरुषकेधनादिकपदार्थोंकूं पुत्रादिकबांधव लेजावैंहैं ॥ और ताविद्वान्पुरुषकेपुण्यकर्मोंकूं सुहृदभक्तजन लेजावैंहैं ॥ और ताविद्वान्केपापकर्मोंकूं द्वेषकरणेहारेदुष्टपुरुष लेजावैंहैं ॥१॥ अब मनकेव्यापारतैंविनाही विद्वान्पुरुषकेशरीरकीप्रवृत्तिका निरूपणकरैंहैं ॥ हेजनक! जैसेकोईपुरुष धनुषतैं बाणकूंछोडेहै ॥ सोबाण जबपर्यंत भूमिविषेनहींपडेहै ॥ तबपर्यंत सोबाण पूर्वलेवेगकेवशतैं आकाशविषे भ्रमणकरैंहै ॥ तैसे जबपर्यंत याविद्वान्पुरुषकेशरीरकापातनहींहोता तबपर्यंत सोविद्वान्पुरुषकाशरीर प्रारब्धकर्मकेवेगकरिकै गमनआगमनकरैंहै ॥ अब ब्रह्मनिष्ठाकेआवेशतैं विद्वान्पुरुषविषे सर्वव्यवहारोंकेविस्मरणका निरूपणकरैंहैं ॥ हेजनक! जैसे यालोकविषे जिसपुरुषकेशरीरविषे भूत प्रवेशकरैंहै ॥ सोपुरुष ताकालविषे नानाप्रकारकेव्यवहारोंकूंकरताहुआभी विशेषकरिकै तिनव्यवहारोंकूंजाणतानहीं ॥ तैसे ब्रह्मनिष्ठाकेआवेशतैंअनंतर यहविद्वान्पुरुष नानाप्रकारकेव्यवहारोंकूंकरताहुआभी तिनव्यवहारोंकूं विशेषकरिकैजाणतानहीं ॥ हेजनक! याप्रकारकेअवस्थाकूं जबी यहविद्वान्पुरुष प्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहविद्वान्पुरुष स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंकेविद्यमानहुएभी तिनशरीरोंतैंरहितहोवैहै ॥ तथा तिनशरीरोंकेजन्ममरणादिकधर्मोंतैंरहितहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताविद्वान्पुरुषकूं अशरीर यानामकरिकैकथनकरैंहै ॥ और शरीरादिकोंकेनाशहुएभी ताविद्वान्पुरुषकावास्तवस्वरूप नाशहोवैनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताविद्वान्पुरुषकूं अमृत यानामकरिकैकथनकरैंहै ॥ और हेजनक! यहविद्वान्पुरुष यद्यपि वास्तवतैं प्राण अपानादिकोंतैंरहितहै तथापि यहविद्वान्पुरुष आपणीसमीपताकरिकै तिनप्राणोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवृत्तकरैंहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताविद्वान्पुरुषकूं प्राण यानामकरिकैकथनकरैंहै ॥ और सोविद्वान्पुरुष सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनभेदोंतैंरहितहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताविद्वान्पुरुषकूं ब्रह्म यानामकरिकैकथनकरैंहै ॥ और सोविद्वान्पुरुष स्वप्रकाशचैतन्यरूपहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताविद्वान्पुरुषकूं तेज यानामकरिकैकथनकरैंहै ॥ हेशिष्य! याप्र

कार जबी याज्ञवल्क्यमुनिनें जनकराजाकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्या ॥ तबी सोजनकराजा ताब्रह्मविद्याकूं जाणताभया ॥ परंतु ताब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकेजेसाधनहैं ॥ तिनसाधनोंकूं सोजनकराजा नहींजाणताभया ॥ याकारणतैं सोजनकराजा आपणेमनविषे याप्रकारकाविचार करताभया ॥ साधनोंतेंरहितजोपुरुषहै ताकामन शुद्धहोवैनहीं ॥ और अशुद्धमनवालेपुरुषकूं वेदांतकेश्रवणतेंभी यथार्थज्ञानहोवैनहीं ॥ यातें मनकेशुद्धिकूंकरणेहारेजेसाधनहैं ॥ तिनोंकाश्रवण अवश्यकऱ्याचाहिये ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिकै सोजनकराजा पूर्वकीन्यांई पुनःयाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति यहवचनकहताभया ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि! आपकेउपदेशतैं मैंजनक विद्याकूंप्राप्तभयाहूं ॥ यातें ताविद्याकीगुरुदक्षिणा एकसहस्त्रगौवां मैं आपकेतांईदेताहूं ॥ तागुरुदक्षिणाकूं आप अंगीकारकरो ॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी जनकराजानैं याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रतिकह्या तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि ताजनकराजाकेअभिप्रायकूंजाणिकरिकै नानाप्रकारकेसाधनोंसहित ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक! अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मोंकेप्रभावतैं अंत्यजन्मविषे जोआत्माकासाक्षात्कार उत्पन्नहोवैहै ॥ सोआत्मसाक्षात्कारही ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षकामार्गहै ॥ कैसाहैसोआत्मसाक्षात्काररूपमार्ग? ॥ अत्यंततर्कविषेकुशलजेपुरुषहैं ॥ तिनोंकूंभी दुर्विज्ञेयहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताज्ञानरूपमार्गकूं सूक्ष्म यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और यहआत्मज्ञान परिपूर्णनित्यब्रह्मकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मज्ञानरूपमार्गकूं वितत पुराण यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ हेजनक! ऐसे आत्मसाक्षात्काररूपमार्गकूं मैंसर्वज्ञयाज्ञवल्क्यही जाणताहूं ॥ मेरेतेंभिन्न अल्पज्ञप्राणी ताज्ञानरूपमार्गकूं जाणिसकैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोआपतेंविना दूसराकोईप्राणी तिसज्ञानरूपमार्गकूंनहींजाणिसकता तौ अस्मदादिकजीवोंकूं ताज्ञानरूपमार्गकेजानणेविषे क्याआशाहै? ॥ समाधान॥ हेजनक! मैंयाज्ञवल्क्यनैंही तिसज्ञानरूपमार्गकूंजान्याहै ॥ याहमारेकहणेका यहअभिप्रायहै ॥ जैसे मैंयाज्ञवल्क्यमुनि ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकै तथागुरुकीकृपाकरिकै आत्मज्ञानरूपमार्गकूंप्राप्तभयाहूं ॥ तथा तामार्गद्वारा मोक्षकूंप्राप्तभयाहूं ॥ तैसे दूसरेभी अधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकै

तथागुरुकीकृपाकरिकै ताआत्मज्ञानरूपमार्गकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा ताज्ञानरूपमार्गद्वारा मोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जेपुरुष ब्रह्म
चर्यादिकसाधनोंतैंरहित बहिर्मुखहैं ॥ तेबहिर्मुखपुरुष ताआत्मज्ञानरूपमार्गकूंजाणिसकैनहीं ॥ याअभिप्रायकरिकै हमनैं सोवच
नकह्याहै ॥ और हेजनक! जैसे लवणकापिंड समुद्रकूंप्राप्तहोइकै समुद्ररूपहोइजावैहै ॥ तैसे तेविद्वानूपुरुष ज्ञानरूपमार्गद्वा
रा आनंदस्वरूपआत्माकूंप्राप्तहोइकै आत्मरूपहुएस्थितहोवैहैं ॥ और ऐसेआनंदस्वरूपआत्माविषेस्थितहोइकै तेविद्वानूपुरुष
जन्ममरणादिकदुःखोंतैं तथा रागद्वेषतैं तथाअज्ञानतैं रहितहोवैहैं ॥ और देहादिकउपाधियोंतैं आपणेकूंभिन्नमानिकै तेविद्वानूपु
रुष देहादिकोंकेसर्वधर्मोंतैंरहितहोवैहैं ॥ यातैं हेजनक! कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्ति तथाब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपजोमोक्षहै ॥ ताके
प्राप्तिकरणेहारा आत्माकाज्ञानहीमार्गहै ॥ तहांश्रुति ॥ नान्यःपंथाविद्यतेअयनाय ॥ अर्थयह ॥ मोक्षकीप्राप्तिवासते ज्ञानतैंभि
न्नदूसराकोईमार्गनहींहै ॥ किंतु आत्मज्ञानही मोक्षकीप्राप्तिकामार्गहै ॥ १ ॥ अब जैसे कोईपुरुष मणिकीप्रभाविषे मणिबुद्धिकरै
है ॥ तैसे केईकउपासकपुरुष सुषुम्नानामानाडीकूंही मोक्षकामार्गकहैहैं ॥ तिनोंकेमतका निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! केईकउपास
कपुरुष याप्रकार कथनकरैहैं ॥ हृदयकमलविषेस्थितजोसूर्यभगवान्‌है ॥ तथाबाह्यआकाशविषेस्थितजोसूर्यभगवान्‌है॥ तिनदोनों
केसाथ संबंधहैजिसका ऐसीजासुषुम्नानामानाडीहै ॥ तानाडीरूपमार्गकरिकै यहउपासकपुरुष जबी ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥
तबी सोउपासकपुरुष ब्रह्माकेसाथ मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं जैसे आत्मसाक्षात्काररूपमार्गकरिकै यहअधिकारीपुरुष मोक्ष
कूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सुषुम्नानाडीरूपमार्गकरिकैभी यहउपासकपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं सुषुम्नानामानाडीभी मोक्षकेप्राप्ति
कामार्गहै ॥ कैसाहैसोब्रह्मलोककामार्ग? सूर्यतैंनिकसेजेकिरणहैं ॥ तथा हृदयकमलतैंनिकसियांजेनाडियांहै ॥ तिनदोनोंकरिकैर
चितहै ॥ और नानाप्रकारके अन्नकेरसोंकरिकै तेनाडियांपूर्णहैं ॥ याकारणतैं तेउपासकपुरुष ताब्रह्मलोककेमार्गकूं शुक्ल नील पिं
गल हरित लोहित इत्यादिकअनेकवर्णवालामानैहैं ॥ ऐसेविचित्रमार्गकूं तेउपासकपुरुषही आपणेसाक्षीरूपप्रत्यक्षकरिकैजानैहैं ॥
दूसराकोईपुरुष तामार्गकूंजानिसकैनहीं ॥ और जेअधिकारीपुरुष तासगुणब्रह्मकी अहंग्रहउपासनाकरैहैं ॥ तेउपासकपुरुष ता

नाडीरूपमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा पूर्वउक्तपंचाग्निविद्याकूंजानणेहारे जेअग्निहोत्रीगृहस्थहैं ॥ तेगृहस्थभी तानाडी रूपमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा गृहस्थतैंभिन्न जेऊर्ध्वरेता ब्रह्मचारी वानप्रस्थ संन्यासी येतीनआश्रमवालेहैं ॥ ते भी आपणेआपणेआश्रमकेपुण्यकर्मोंकूंकरिकै तानाडीरूपमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ताब्रह्मलोकविषेजाइकै तेउपासकपुरुष ब्रह्माकेसाथ मोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं सुषुम्नानामानाडीही मोक्षकामार्गहै ॥ हेजनक! याप्रकार कोईउपासकपुरुष सुषुम्नानामानाडीकूंही मोक्षकामार्गकहैहैं ॥ अब आत्मज्ञानरूपमार्गविषे मुमुक्षुजनोंकीश्रद्धाकरावणेवासते तिसतैंभिन्न दूसरेसर्वमार्गोंकीनिंदाकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जेपुरुष स्वर्गलोककीप्राप्तिवासतै यज्ञदानादिककर्मोंकूंकरैहै ॥ तेसकामपुरुष धूमादिरूपदक्षिणमार्गकरिकै स्वर्गलोककूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तास्वर्गलोकविषेप्राप्तहोइकै तेकर्मीपुरुष देहाभिमानरूपअंधतमकूंहीप्राप्तहोवैहैं ॥ कैसाहैसोदेहाभिमानरूपअंधतम? ॥ स्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषे आसक्तिद्वारा तिनपुरुषोंकेविचाररूपीनेत्रोंकूंआच्छादनकरणेहाराहै ॥ इतनेकरिकैयहअर्थ बोधनकऱ्या ॥ यज्ञदानादिकपुण्यकर्मोंकरिकै दक्षिणमार्गविषेगमनकरणेहारेजेकर्मीपुरुषहैं ॥ तेकर्मीपुरुषभी जबी अंधतमकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तबी केवलपापकर्मकरिकै कीटपतंगादिकभावकीप्राप्तिरूप तीसरेमार्गविषेगमनकरणेहारे जेपापात्मापुरुषहैं ॥ तेपापात्मापुरुष अंधतमविषेप्राप्तहोवैहैं याकेविषे क्याकहणाहै? ॥ अब ब्रह्मलोककेमार्गकीनिंदाकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जेपुरुष ब्रह्मलोककीप्राप्तिवासते ब्रह्मादिकदेवतावोंकीउपासनाकरैहैं ॥ तेउपासकपुरुष कर्मीपुरुषोंतैंभी अधिकअंधतमकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ काहेतैं? ब्रह्मादिकदेवतावोंकीउपासनाकरिकै तेउपासकपुरुष जबी ब्रह्मलोकविषेजावैहैं ॥ तबी तिनउपासकपुरुषोंकूं तहां परमऐश्वर्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और स्वर्गलोकविषेकर्मीपुरुषोंकूं स्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषे जितनीआसक्तिहोवैहै ॥ तिसतैंभीकोटिगुणाअधिकआसक्ति ब्रह्मलोकविषे उपासकपुरुषोंकूं स्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषेहोवैहै ॥ यातैं ब्रह्मलोककेप्राप्तिकामार्गभी तिनउपासकपुरुषोंकूं देहाभिमानरूपअंधतमकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ हेजनक! याप्रकार स्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषे आसक्तहुए तेकर्मीपुरुष तथाउपासकपुरुष तिनलोकोंविषे किंचित्मात्रसुखकूंभोगिकै तिनपुण्यकर्मोंकेनाशतैंअनंतर तेसकामपुरुष

पुनःजन्ममरणरूपदुःखकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ आत्मसाक्षात्कारतैंरहित जेकर्मीपुरुषहैं तथाउपासकपुरुषहैं ॥ तेक
र्मीउपासकपुरुष मृत्युकूंप्राप्तहोइकै ताकर्मउपासनाकेफलकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ कैसाहैसोफल? ॥ अतिशयतादोषवालाहै ॥ तथा नाश
वान्है ॥ याकारणतैं सोफल सुखतैंरहितहै ॥ तथा देहअभिमानरूपअंधतमकरिकैआवृतहै ॥ याप्रकारकेफलकूं तेकर्मीउपासकपु
रुष प्राप्तहोवैंहैं ॥ और हेजनक! यामनुष्यलोकविषे जितनेसात्विक राजस तामस जीवहैं ॥ तेसंपूर्णजीव मरणतैंअनंतर ती
नमार्गोंकरिकै परलोकविषेजावैंहैं ॥ तहां एकतौ उपासकपुरुषोंकूं ब्रह्मलोककीप्राप्तिकरणेहारा देवयाननामामार्गहै ॥ जिसमार्गकूं
शास्त्रविषे अर्चिष्नामकरिकैकथनकरैंहैं ॥ और दूसरा कर्मीपुरुषोंकूं स्वर्गलोककीप्राप्तिकरणेहारा पितृयाणनामा मार्गहै ॥ जिस
मार्गकूं शास्त्रविषे धूममार्ग यानामकरिकैकथनकरैंहैं ॥ और तीसरा कीटपतंगादिकशरीरोंकी तथानरककीप्राप्तिकरणेहारा तृती
यस्थाननामा मार्गहै ॥ येतीनोंमार्ग यद्यपि पूर्वउक्तरीतिसैं दुःखरूपफलकीहीप्राप्तिकरैंहैं ॥ तथापि तिनतीनोंमार्गोंविषे परस्पर
इतनीविलक्षणताहै ॥ तहां कीटपतंगादिकशरीरोंकीप्राप्तिकरणेहारा तथा नरककीप्राप्तिकरणेहारा जोतृतीयस्थाननामा तीसरा
मार्गहै ॥ तातीसरेमार्गका ब्रह्मज्ञानरूपचतुर्थमार्गकेसाथ परंपराकरिकैभीसंबंधनहीं ॥ यहवार्ता गीताविषे श्रीकृष्णभगवान्नैंभी
अर्जुनकेप्रतिकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ तानहंद्विषतःक्रूरान्संसारेषुनराधमान् ॥ क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेवयोनिषु ॥ अर्थ
यह ॥ द्वेषादिकपापकर्मोंकूंकरणेहारे जेअधमजीवहैं ॥ तिनोंकूं मैंकृष्णभगवान् यासंसारविषे कीटपतंगादिकतामसीयोनियोंविषे
प्राप्तकरोहूं ॥ १ ॥ याभगवद्गीताकेवचनतैंभी तातृतीयस्थाननामातीसरेमार्गका आत्मसाक्षात्काररूपचतुर्थमार्गकेसाथ संबंधसंभ
वैनहीं ॥ और उपासकपुरुषोंका जोदेवयाननामा मार्गहै ॥ तथा कर्मीपुरुषोंका जोपितृयाणनामा मार्गहै ॥ तेदोनोंमार्ग कदाचित्
चित्तकीशुद्धिद्वारा किसीभाग्यवान्पुरुषकूं आत्मज्ञानकीभीप्राप्तिकरैंहैं ॥ यातैं देवयानपितृयाण यादोनोंमार्गोंका चित्तकीशुद्धिद्वा
रा आत्मज्ञानरूपचतुर्थमार्गविषे संबंधसंभवैंहै ॥ हेजनक! जन्ममरणादिकसर्वदुःखोंतैंरहित जोब्रह्मज्ञानरूपचतुर्थमार्गहै ॥ ति
समार्गविषेविचरणेकीजिसपुरुषकूंइच्छाहोवै ॥ तिसअधिकारीपुरुषनैं यातीनोंमार्गोंकापरित्यागकरिकै केवलआत्मज्ञानरूपमार्ग

विषेहीविचरणा ॥ इतनेकरिकै आत्मज्ञानरूपचतुर्थमार्गकीउत्कृष्टता निरूपणकरी ॥ अब ताआत्मज्ञानकरिकैजोफलप्राप्तहोवैहै ताका निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यहआनंदस्वरूपआत्मा शरीरादिकोंतैंभिन्नहै ॥ यातैं सुखदुःखतैंआदिलैके जितनेशरीरादिकोंकेधर्महैं तेधर्म असंगआत्माकूंस्पर्शकरैंनहीं ॥ ऐसाआनंदस्वरूपआत्मा आपणेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतैं जबी शरीरके साथ तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोआत्मादेव आपणेसर्वात्मभावकूंविस्मरणकरिकै मूढताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सुखदुःखादिकसंसारधर्मोंकरिकै तपायमानजोयहशरीरहै ॥ ताकेतादात्म्यसंबंधकरिकै सोआत्मादेवभी तपायमानहोवैहै ॥ और मेरेकूंसुखकीप्राप्तिहोवै याप्रकारकीइच्छाकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! जिसपुरुषकूं याप्रकारकाज्ञानभया है ॥ सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थित तथा सर्वसुखोंकासमुद्र ऐसाजोस्वयंज्योतिपरमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेव मेरेस्वरूपतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु मैंही परमात्मारूपहूं ॥ याप्रकार आत्माकूंजानणेहाराजोपुरुषहै ॥ सोविद्वान्पुरुष शरीरादिकोंतैं आपणेकूंभिन्नमानैहै तथा सर्वविषयजन्यसुखकीइच्छातैंरहितहोवैहै ॥ याकारणतैं सोविद्वान्पुरुष विषयजन्यसुखकीइच्छाकरिकै तथा शरीरकेसुखदुःखादिकधर्मोंकरिकै तपायमानहोवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जिसपुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ तिसपुरुषकी कारणअविद्या निवृत्तहोइजावैहै ॥ और ताकारणअविद्याकेनिवृत्तहुएतैंअनंतरताविद्वान्पुरुषकी शरीरादिकोंविषेतादात्म्यअध्यासरूपकार्यअविद्या निवृत्तहोइजावैहै ॥ और ताकार्यअविद्याकेनिवृत्तितैंअनंतर ताविद्वान्पुरुषकूं शरीरकेसुखदुःखादिकधर्म तपायमानकरैंनहीं ॥ तहां दृष्टांत॥ जैसे लोहकेपिंडका जबपर्यंत अग्निकेसाथ तादात्म्यसंबंधहोवैहै ॥ तबपर्यंत सोलोहकापिंड प्रकाशमानहोवैहै तथा तपायमानहोवैहै ॥ और जबी तालोहकेपिंडका अग्निकेसाथ तादात्म्यसंबंध निवृत्तहोवैहै ॥ तबी सोलोहकापिंड प्रकाशमान्होवैनहीं तथा तपायमानहोवैनहीं ॥ तैसे जबपर्यंत याविद्वान्पुरुषका शरीरकेसाथ तादात्म्यअध्यासहोवैहै ॥ तबपर्यंत यहविद्वान्पुरुष शरीरकेसुखदुःखादिकधर्मोंकरिकै तपायमानहोवैहै ॥ और जबी ताविद्वान्पुरुषका शरीरकेसाथ तादात्म्यअध्यास निवृत्तहोवैहै॥ तबी सोविद्वान्पुरुष शरीरकेसुखदुःखादिकधर्मोंकरिकै तपाय

मानहोवैनहीं ॥ हेजनक! यालोकविषेभी तादात्म्यअध्यासही जीवोंकेदुःखकाकारणदेख्याहै ॥ काहेतें? यालोकविषे जोपुरुष आपणेस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकैमानैहै ॥ सोपुरुष तिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेदुःखकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष तिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंके अहंममअभिमानका परित्यागकरैहै ॥ सोपुरुष उदासीनपुरुषकीन्यांई तिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेदुःखकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे यहविद्वान्‌पुरुषभी जबी शरीरविषेअहंममअभिमानकरैहै ॥ तबी ताशरीरकेदुःखकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जबी यहविद्वान्‌पुरुष ताशरीरकेअहंममअभिमानकापरित्यागकरैहै ॥ तबी सोविद्वान्‌पुरुष ताशरीरकेदुःखकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातें आनंदस्वरूपआत्माकासाक्षात्कारही कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिद्वारा परमानंदकेप्राप्तिका तथासर्वदुःखोंकेनिवृत्तिका कारणहै ॥ इतनेकरिकै सर्वदुःखोंकीनिवृत्तिरूप आत्मज्ञानकाफल निरूपणकऱ्या ॥ अब तिसीआत्मसाक्षात्कारके जगत्कर्तृत्वरूपफलका तथा सर्वात्मभावकीप्राप्तिरूपफलका निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! हृदयकमलविषेस्थित जोआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ सो स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा सर्वत्रव्यापकहै तथा बुद्धिआदिकसंघाततैंविलक्षणहै ॥ ऐसेआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माकूं जिसअधिकारीपुरुषनैं गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकै निश्चयकऱ्याहै ॥ सोविद्वान्‌पुरुषही यासंपूर्णविश्वकाकर्ताहै ॥ और हेजनक! जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषेकल्पित जेसर्प दंड माला जलधारा इत्यादिकपदार्थहैं ॥ तिनसर्पादिककल्पितपदार्थोंका एकरज्जुही अधिष्ठानहै ॥ तैसे मनुष्यलोकतैंआदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेसुखदुःखकेदेणहारेलोकहैं ॥ तिनसंपूर्णलोकोंका सोविद्वान्‌पुरुषही अधिष्ठानहै ॥ और जैसे कल्पितसर्पदंडादिक रज्जुरूपअधिष्ठानतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु तेकल्पितसर्पादिक रज्जुरूपही हैं ॥ तैसे पूर्वउक्ततीनमार्गोंकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य जेब्रह्मलोकादिकहैं ॥ तथा अध्यात्म अधिदैव अधिभूत इसतैंआदिलैके जितनास्थूलसूक्ष्मजगत्‌है ॥ सोसंपूर्णजगत् ताविद्वान्‌पुरुषतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु संपूर्णजगत् ताविद्वान्‌पुरुषकाआत्मारूपहीहै ॥ इतनेकरिकै आत्मज्ञानकेफलकानिरूपणकऱ्या ॥ अब ताआत्मज्ञानतैंविना जीवोंकूं महान्‌हानिकीप्राप्तिका निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! देवयान पितृयाण तृतीयस्थान येतीनोंमार्ग संसाररूपीघोरवनविषे याजीवकूंप्राप्तकरणहारेहैं ॥ याकारणतैं

तिनतीनोंमार्गोंकापरित्यागकरिकै जबपर्यंत मृत्युसन्मुखनहींभया तबपर्यंत यहमुमुक्षुजन शीघ्रही आत्मज्ञानरूपचतुर्थमार्गविषे प्राप्तहोवैं॥ और ताज्ञानरूपमार्गविषेप्राप्तहोइकै हमअधिकारीजन जीवत्अवस्थाविषेही ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षकूंप्राप्तहोवैं॥ तथा आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते हमअधिकारीजन वेदांतशास्त्रके श्रवण मनन निदिध्यासनकूं यत्नकरिकैसंपादनकरैं॥ जिस आत्मसाक्षात्कारकरिकै हमअधिकारीजन सर्वात्मभावकूंप्राप्तहोवैं॥ हेजनक! याब्राह्मणशरीरविषे तथाक्षत्रियशरीरविषे तथा वैश्यशरीरविषे जोकदाचित् हमअधिकारीजनोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिनहींहोवैगी तौ हमअधिकारीजीवोंकी महान्हानिहोवैगी॥ यातैं विद्युत्कीन्यांईचंचल तथाअत्यंतदुर्लभ जोयहअधिकारीमनुष्यशरीरहै॥ तिसकूंप्राप्तहोइकै हमअधिकारीजीव ऐसा कोईउपायकरैं॥ जिसउपायकरिकै हमअधिकारीजीवोंकूं पुनःजन्ममरणादिकदुःखोंकीप्राप्तिनहींहोवै॥ सोऐसाउपाय आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईहैनहीं॥ यातैं जन्ममरणादिकदुःखोंकीनिवृत्तिवासते आत्मज्ञानकूंही हमअधिकारीजीव संपादनकरैं॥ अब मनुष्यशरीरकेदुर्लभताकूं निरूपणकरैहैं॥ हेजनक! जैसे ग्रीष्मऋतुकेमध्याह्नकालकेसूर्यकरिकै तपायमानजोरेतीहै॥ तातप्तरेतीविषे किसीपुरुषकेहस्ततैं पतनभयाजोघृतहै॥ ताघृतकूं बुद्धिमान्पुरुषभी पुनःप्राप्तहोइसकैनहीं॥ तैसे याअधिकारीमनुष्यशरीरकेनष्टहुएतैंअनंतर हमजीवोंकूं पुनःतिसीअधिकारीमनुष्यशरीरकीप्राप्तिहोणी अत्यंतदुर्लभहै॥ और हेजनक! यामनुष्यशरीरकूं छोडिकै दूसरेजितनेऊंचनीचशरीरहैं तेशरीर कोईदुर्लभनहीं॥ किंतु सर्वयोनियोंविषे तेशरीरसुलभहैं॥ एकमनुष्यशरीरही दुर्लभहै॥ हेजनक! तिनमनुष्यशरीरोंविषेभी याभारतखंडविषे मनुष्यशरीरकीप्राप्तिहोणी अत्यंतदुर्लभहै॥ और तिसभारतखंडविषेभी ब्राह्मणशरीरकीप्राप्तिहोणी तथाक्षत्रियशरीरकीप्राप्तिहोणी तथावैश्यशरीरकीप्राप्तिहोणी अत्यंतदुर्लभहै॥ यातैं भारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकीप्राप्तिरूपलाभतैंपरे दूसराकोईअधिकलाभनहीं॥ हेजनक! जिन स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकेमोहकरिकै हमअधिकारीजीव यामनुष्यशरीरकूं व्यर्थगवांवतेहैं॥ तेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ कोईदुर्लभनहींहैं॥ किंतु स्वर्गविषे तथानरकविषे तथा चौरासीलक्षशरीरोंविषे जहांजहां हमजीव प्राप्तहोवैंगे॥ तिसतिसशरीरविषे तिसतिसशरीरकेसमानजातिवाले स्त्रीपुत्रा

दिकपदार्थ हमजीवोंकूं पुण्यपापकर्मकेवशतें विनाहीयत्नतें प्राप्तहोवेंगे ॥ यातें तेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ दुर्लभनहीं ॥ और यहअ
धिकारीमनुष्यशरीरतौ एकवारप्राप्तहुआ पुनःप्राप्तहोणाकठिनहै ॥ यातें यहअधिकारीमनुष्यशरीरही सर्वपदार्थोंतेंदुर्लभहै ॥
अब याअधिकारीमनुष्यशरीरविषे सर्वलोकोंकप्राप्तिकीसाधनतादिखाइकै ताकीदुर्लभतासिद्धकरैहैं ॥ हेजनक! याभारतखंडकूं
परमेश्वरनें मनुष्योंकेकर्मकरणेवासतेरचाहै ॥ ताभारतखंडविषे यहजीव मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकै जोकदाचित् पुण्यकर्मोंकूंकरै
है तौ सोजीव स्वर्गादिकउत्तमलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपापकर्मकरैहै तौ नरकादिकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें भारतखंडविषे
जोमनुष्यशरीरहै ॥ सोमनुष्यशरीरही पुण्यपापकर्मकीउत्पत्तिद्वारा याजीवोंकूं सर्वलोकोंकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ और हेजनक!
याभारतखंडकेपुण्यकर्मोंकरिकैही यहजीव पाताललोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोपाताललोक? ॥ स्वर्गलोकतैंभी अधिकशोभावा
लाहै ॥ और अतल वितल सुतल तलातल महातल रसातल पाताल यासप्तरूपकरिकैविराजमानहै ॥ और नानाप्रकारकेभो
गकेसाधनोंकरिकैपरिपूर्णहै ॥ और जिसपाताललोकविषे नागोंकीसुंदरकन्या नानाप्रकारकीनृत्यकरैहैं ॥ कैसीहैंतेनागोंकीक
न्या? हरिचंदनादिकोंकेलेपकरिकैयुक्तहैं पीनउन्नतस्तनजिनोंके ॥ और नानाप्रकारकेमणियोंकीकांतिकरिकै शोभायमानहै मु
खरूपीचंद्रमा जिनोंका ॥ और चित्रकीलिखीहुईजोमूर्तिहै ताकेसमानहैशरीरजिनोंका ॥ पुनःकैसीहैंतेनागोंकीकन्या? यौवनअ
वस्थायुक्तपुरुषोंके धैर्यरूपधनकूंहरणेहारीहैं ॥ और जिननागकन्यावोंकेसमान स्वर्गविषेभी कोईस्त्रीनहीं ॥ और जिनकन्या
वोंकेमस्तकविषे सूर्यकेसमानप्रकाशवान् मणियां विराजमानहैं ॥ और बिल्वफलकेसमान जेमोतियोंकेगुच्छेहैं ॥ तिनोंकरिकैयुक्त
नानाप्रकारकेहार जिनकन्यावोंकेअंगोंविषे विराजमानहैं ॥ ऐसे सर्वगुणोंकरिकैसंपन्न नागोंकीसुंदरकन्या जिसपाताललोकविषे
विराजमानहैं ॥ हेजनक! पाताललोकविषेरहणेहारेजेजीवहैं ॥ तिनोंकेसंपूर्णपुण्यकर्म एकठेहोइकै पातालभावकूंप्राप्तहुएहैं ॥ औ
र हेजनक! सूर्यभगवान्कूंजेनहींदेखेहैं तिनोंकानाम असूर्यपश्यहै ॥ याप्रकारका असूर्यपश्यशब्दकाअर्थ यद्यपि पाणिनिऋषिनें रा
जाकेस्त्रियोंविषेघटायाहै ॥ तथापि तिनराजाकेस्त्रियोंकूं कदाचित् सूर्यकादर्शनहोवैभीहै ॥ यातें असूर्यपश्य यहशब्द मुख्यवृत्तिकरिकै

तिनराजाकेस्त्रियोंकूं बोधनकरैनहीं ॥ किंतु गौणवृत्तिकरिकै सोअसूर्यंपश्यशब्द तिनस्त्रियोंकूंबोधनकरैहै ॥ और पाताल
विषेरहणेहारेजेजीवहैं ॥ तिनोंकूं कदाचित्भी सूर्यकादर्शनहोवैनहीं ॥ किंतु मणियोंकेप्रकाशकरिकै तिनपातालवासीजी
वोंके गमनआगमनादिकव्यवहारहोवैहैं ॥ यातैं असूर्यंपश्य यहशब्द मुख्यवृत्तिकरिकै पातालवासीलोकोंकूंही बोधनकरैहै ॥
हेजनक! जिसपाताललोकविषे नानाप्रकारकेऐश्वर्यकूंभोगतेहुएअसुर तथानाग निवासकरैहैं ॥ याकारणतेंहीतिनपातालवा
सीनागोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष भोगी यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ अब तिननागोंके तथाअसुरोंके प्रसिद्धनामोंकानिरूपणकरै
हैं ॥ हेजनक! महादेवकेकंठकाभूषण जोवासुकीनागहै ॥ सोवासुकीभी पाताललोकविषेहीरहैहै ॥ और विष्णुभगवान्का
शय्यारूपजोशेषनागहै ॥ सोभी पाताललोकविषेहीरहैहै ॥ और सूर्यभगवान्केरथविषेस्थित जोतक्षकनागहै ॥ जिसतक्षकके
विषकीनिवृत्तिकरणेहारा कोईलोकविषेउपायनहीं ॥ ऐसातक्षकनागभी तापाताललोकविषेही निवासकरैहै ॥ और नलराजा
कामित्र जोकर्कोटकनामानागहै ॥ तथा पद्म महापद्म सशंख कुलिक एलापत्रक इननामोंवालेजे अनेकविषधारीनागहैं ॥
जेनाग महादेव देवी गरुडादिकदेवतावोंके कुंडलादिकभूषणरूपहैं ॥ ऐसेसंपूर्णनाग आपणेस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंसहित तथा
भृत्योंसहित जिसपाताललोकविषेनिवासकरैहैं ॥ और हेजनक! विश्वकर्माकेसमान तथा मायाविषेअत्यंतकुशल जोमयना
मादैत्यहै ॥ तथा विप्रचित्ति बलितेंआदिलैकेजेअनेकअसुरहैं ॥ जिनअसुरोंतें इंद्रादिकदेवताभी भयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ऐसेअ
सुरभी जिसपाताललोकविषे निवासकरैहैं ॥ हेजनक! ऐसेपाताललोकविषे नारदादिकमुनिआइकै तापातालकेप्रभावकूंदे
खिकै तेनारदादिकमुनि स्वर्गलोकविषेजाइकै देवराजइंद्रकेसमीप तापाताललोककेप्रभावकावर्णनकरैहैं ॥ हेजनक! ऐसेपाता
ललोकविषे जोसुख जीवोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा ब्रह्मलोकविषे जोसुखप्राप्तहोवैहै ॥ तथा स्वर्गलोकविषे जोसुख प्राप्तहोवैहै ॥
तथा यामनुष्यलोकविषे जोसुख प्राप्तहोवैहै ॥ तिनसंपूर्णसुखोंकूं जोयहजीव प्राप्तहोवैहै ॥ सोभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यश
रीरकेपुण्यकर्मोंकरिकैही प्राप्तहोवैहै ॥ और ताभारतखंडविषे मनुष्यशरीरकेपापकर्मोंकरिकै यहजीव नरककूंभीप्राप्तहोवैहै ॥ और

आत्मसाक्षात्कारकरिकैप्राप्तहोणेयोग्यजामुक्तिहै तामुक्तिकूंभी यहअधिकारीपुरुष भारतखंडकेमनुष्यशरीरकेसाधनोंकरिकैहीप्रा प्तहोवैहैं ॥ और हेजनक! जैसे क्षेत्रोंविषे धान्यादिकअन्न उत्पन्नहोवैहै ॥ ताअन्नकूं लोक गृहोंविषेभोजनकरैहैं ॥ तैसे याभार तखंडविषे पुण्यपापरूपकर्म उत्पन्नहोवैहै ॥ तापुण्यपापरूपकर्मोंकेफलकूं यहजीव स्वर्गादिकलोकोंविषेभोगेहैं ॥ यातैं यहभारत खंडही स्वर्गादिकसुखोंके तथाब्रह्मज्ञानके उत्पत्तिकाक्षेत्ररूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! व्यासभगवान्नैं ॥ तदुपर्यपि ॥ यासूत्रविषे देवताशरीरोंविषेभी ब्रह्मविद्याकाअधिकार सिद्धकर्‍याहै ॥ यातैं भारतखंडविषेही ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याप्रकारकानियमसं भवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक! यद्यपि व्यासभगवान्नैं देवताशरीरोंविषेभी ब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ तथापि तिन देवताशरीरोंविषे हमअधिकारीजीवोंकूं अवश्यब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैगी याप्रकारकानिश्चय होइसकैनहीं ॥ किंतु तिनदेवताशरी रोंविषे ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैगी अथवा नहींहोवैगी याप्रकारकासंशयहोवैहै ॥ और याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरके श्रवणादिकसाधनोंकरिकै ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिविषे संशयनहीं किंतु निश्चयहीहै ॥ यातैं याभारतखंडविषेही ब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति वासते हमअधिकारीजीव प्रयत्नकरैं ॥ हेजनक! याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकै जोपुरुष ब्रह्मज्ञानकी प्राप्तिवासते प्रयत्ननहींकरैहै ॥ किंतु स्वर्गादिकलोकोंविषे ब्रह्मज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छाकरैहै ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष ॥ पिंडंत्यक्त्वाकरंले ढि ॥ याप्रकारकेन्यायकाविषयहोवैहै ॥ तान्यायका यहअर्थहै ॥ जैसे किसीक्षुधातुरपुरुषकूं दधिकरिकैयुक्त ओदनकापिंड हस्त विषेप्राप्तभया ॥ ताओदनकेपिंडकापरित्यागकरिकै सोक्षुधातुरपुरुष क्षुधाकीनिवृत्तिवासते आपणेहस्तकूंचाटणेलागा ॥ सोपुरुष अत्यंतमूढबुद्धिहै ॥ तैसे याभारतखंडके अधिकारीमनुष्यशरीरकापरित्यागकरिकै जोपुरुष स्वर्गादिकलोकोंविषे ब्रह्मज्ञानकेप्रा प्तिकीइच्छाकरैहै ॥ सोपुरुषभी तिसपुरुषकीन्यांई अत्यंतमूढबुद्धिजानणा ॥ यातैं बुद्धिमान्पुरुषनैं याभारतखंडविषेही ब्रह्मज्ञा नकेप्राप्तिकायत्नकरणा ॥ अब स्वर्गादिकलोकोंविषे ब्रह्मज्ञानकेप्राप्तिकासंशय निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूं प्राप्तहोइकै जोपुरुष ब्रह्मज्ञानकेप्राप्तिकासाधननहींकरता ॥ किंतु स्वर्गादिकलोकोंविषे ब्रह्मज्ञानके

प्राप्तिकीइच्छाकरैं है ॥ तिसपुरुषकूं विद्वान्महात्मापुरुष मूढबालकमाने हैं ॥ काहेतें ? याअनादिसंसारविषे याजीवनैं पूर्वअनेकजन्मों विषे जेजेपुण्यपापरूप अनेककर्मकरैं हैं ॥ तेसंपूर्णपुण्यपापरूपकर्म सूक्ष्मरूपकरिकै याजीवोंकेअंतःकरणविषेरहे हैं ॥ तिनकर्मोंविषे कौनकर्म मरणकालविषे याजीवकूं भावीफलकेदेणेवासते सन्मुखहोवैगा ॥ यहवार्ता सर्वज्ञईश्वरतेंविना दूसराकोईजीव जाणिसकतानहीं ॥ किंतु सर्वज्ञईश्वरही तिनकर्मोंकेगतिकूंजाणे है ॥ यातें स्वर्गादिकलोकोंविषे ब्रह्मज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छावान्जोपुरुषहै ॥ तिसका जोकदाचित् मरणकालविषे पापकर्मही नरकादिकफलदेणेवासते सन्मुखहोवैगा तौ सोमूढबुद्धिपुरुष तिसकालविषे कौनउपायकरैगा! ॥ अब याहीअर्थकूं जूवाखेलणेहारेपुरुषोंकेदृष्टांतकरिकैस्पष्टकरैं हैं ॥ हेजनक! जैसे यालोकविषे जूवाखेलणेहारे जूवारीपुरुषोंविषे कोईएकजूवारीपुरुष पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतें ताजूवाविषे किसीमहान्पदार्थकूं प्राप्तहोवै ॥ और ताजूवारीपुरुषका सोमहान्पदार्थ तिसीजूवाविषे पुनःनष्टहोइजावै ॥ तिसतेंअनंतर सोजूवारीपुरुष वारंवार जूवाकूंखेलताहुआभी तामहान्पदार्थकूं पुनःप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे यहजीवरूपजूवारीपुरुष विषयरूपजूवारीपुरुषोंकेसाथ संसाररूपजूवाखेले है ॥ तासंसाररूपजूवाकेखेलतेहुए याजीवात्मारूपजूवारीपुरुषकूं पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतें यहअधिकारीमनुष्यशरीररूप महान्पदार्थ प्राप्तभयाहै ॥ तामनुष्यशरीररूपमहान्पदार्थकूं यहजीवात्मारूपजूवारी जबी संसाररूपजूवाविषे नष्टकरिदेवैगा ॥ तबी सोमनुष्यशरीररूपमहान्पदार्थ याजीवात्मारूपजूवारीकूं पुनःप्राप्तहोणादुर्लभहै ॥ हेजनक! जैसे यालोकविषे जोजूवारीपुरुष जूवाविषे पराजयकूं प्राप्तहोवैहै ॥ सोजूवारीपुरुष सर्वलोकप्रसिद्धदुःखका तथागुह्यदुःखका अनुभवकरै है ॥ तैसे याभारतखंडविषे विषयरूपजूवारीपुरुषोंतें पराजयकूंप्राप्तहुआ यहजीवात्मारूपजूवारी यामनुष्यशरीरकापरित्यागकरिकै जबी पाताललोकविषे तथास्वर्गलोकविषे तथा ब्रह्मलोकविषे तथाभूमिलोकविषे तथानरकलोकविषे नानाप्रकारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ तबी सोजीवात्मारूपजूवारी तिनपातालादिकलोकोंविषे विषयजन्यपराधीनसुखकेलेशकरिकैआवृतदुःखकूंही भोगे है ॥ और नरकादिकोंविषेतौ प्रसिद्धदुःखकूंही भोगे है ॥ हेजनक! यालोकविषे जूवाखेलणेहारेजूवारीपुरुषोंका यहस्वभावप्रसिद्धहै ॥ तेजूवारीपुरुष जिसमूढपुरुषकूं जूवाविषेएकवारजीते हैं ॥

सोमूढपुरुष जहांजहां जावैंहैं ॥ तहांतहां तेजूवारीपुरुषजाइकै ताकेजीतणेकाउद्यमकरैंहैं ॥ जबपर्यंत तामूढपुरुषकेपास किंचित् मात्रभीधनरहैहै ॥ तबपर्यंत तेजूवारीपुरुष ताकापीछाछोडेनहीं ॥ जबी तापुरुषकेपास एककौपीनमात्ररहैहै ॥ तबी तेजूवारीपुरुषतामूढपुरुषकापीछाछोडेहैं॥ तैसे तेविषयरूपजूवारीपुरुष याभारतखंडविषे जिसमूढजीवकामनुष्यशरीररूपधन जीतिलेवैंहैं॥ सोमूढजीव यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै जिसजिसलोकविषेजावैहै ॥ तिसतिसलोकविषे यहविषयरूपजूवारीपुरुष तामूढजीवकेजीतणेवासतेजावैंहैं ॥ जबपर्यंत तामूढजीवकेपास पुण्यरूपधनरहैहै ॥ तबपर्यंत तेविषयरूपजूवारीपुरुष तामूढजीवकापीछाछोडेनहीं ॥ किंतु सर्वपुण्यरूपीधनकूंजीतिकरिकै जबी तामूढजीवकेपास पापरूपीकौपीनमात्ररहैहै ॥ तबी तेविषयरूपजूवारीपुरुष तामूढजीवकापीछाछोडेहैं ॥ हेजनक! याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकैजेपुरुष मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअभेदज्ञानकूं नहींप्राप्तहोवैंहैं ॥ तिनअज्ञानीपुरुषोंकी यामनुष्यशरीरकेनाशतेंअनंतर याप्रकारकीमहान्हानिहोवैहै ॥ सामहान्हानि जैसे हमअधिकारीजीवोंकूं नहींप्राप्तहोवै ऐसाकोईउपाय हमअधिकारीजीवकरैं ॥ सोऐसाउपाय ब्रह्मज्ञानतेंविना दूसराकोईहैनहीं यातें याभारतखंडविषेही हमअधिकारीजीव ब्रह्मज्ञानकूंसंपादनकरैं ॥ जाब्रह्मज्ञानकरिकै सामहान्हानि हमअधिकारीजीवोंकूं पुनःनहींप्राप्तहोवै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिकरिकै अधिकारीपुरुषोंकूं विषयरूपजूवारियोंतें भयकीनिवृत्ति किसप्रकारहोवैहै?॥ समाधान ॥ हेजनक! जैसे यालोकविषे जूवाखेलणेहारेजूवारीपुरुष कपटकेपाशकोंकरिकै अन्यकिसीमूढपुरुषकूं तबी पराजयकरैंहैं ॥ जबी ताजूवाविषे यथार्थवक्तासाक्षीपुरुषनहींहोवैहै॥ और जबी यथार्थवक्ताकोईसाक्षीपुरुष विद्यमानहोवैहै ॥ तबी तेजूवारीपुरुष कपटकेपाशकोंकरिकै अन्यकिसीपुरुषकापराजयकरैं नहीं ॥ उलटा तेकपटीजूवारीपुरुषही पराजयकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तैसे हमअधिकारीजीवोंनें पूर्वअनेकजन्मोंविषे विषयरूपजूवारीपुरुषोंकेसाथ जोजूवाखेलीहै ॥ सोवेदांतशास्त्ररूपसाक्षीपुरुषतेंविनाही खेलीहै ॥ याकारणतें तिनविषयरूपजूवारीपुरुषोंनें कपटकेपाशकोंकरिकै हमअधिकारीजीवोंका पराजयकऱ्याहै ॥ और अबीइसकालविषे हमअधिकारीजीवोंनें वेदांत

शास्त्ररूपसाक्षीकूंस्थापनकरिकै तिनविषयरूपजूवारियोंकेसाथ जूवाखेलणेकाआरंभकऱ्याहै ॥ याकारणतैं तिनविषयरूपजूवारी पुरुषोंकूं हमअधिकारीजीव अबी अवश्यपराजयकरैंगे ॥ हेजनक! हमारेन्यांई तूभी वेदांतशास्त्रकूंसाक्षीराखिकै तिनविषयरूप जूवारियोंकेजीतणेकाउद्यमकर ॥ वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकेविद्यमानहुए यहविषयरूपकपटीजूवारी तुमारेकूंजीतिनहींसकैंगे ॥ किंतु तुमही तिनोंकूंजीतौगे ॥ हेजनक! वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीतैंपूर्व जोहमनैं विषयरूपजूवारियोंकेसाथ जूवाखेलणेकाआरंभक ऱ्याथा ॥ सोमनुष्यशरीररूपधनकूं मध्यविषेराखिकै जूवाकऱ्याथा ॥ सोमनुष्यशरीररूपधन विषयरूपजूवारीपुरुषोंकेभी भोगका उपयोगीहै ॥ याकारणतैं पूर्व हमअधिकारीजीवोंका जयभयानहीं ॥ और अबी हमअधिकारीजीवोंनैं वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकूं म ध्यविषेस्थापनकऱ्याहै ॥ और सोवेदांतशास्त्ररूपसाक्षी हमअधिकारीजीवोंकेअनुकूलहै ॥ याकारणतैं तावेदांतशास्त्ररूपसाक्षीनैं हमअधिकारीजीवोंकूं याप्रकारकाउपदेशकऱ्याहै ॥ हेअधिकारीजीवो! यहमनुष्यशरीररूपधन विषयरूपजूवारीपुरुषोंकेअनुकूल है ॥ यातैं तामनुष्यशरीररूपधनकूं मध्यविषेराखिकै जोतुम विषयरूपजूवारीपुरुषोंकेसाथ जूवाखेलौगे तौ तुमारा कदाचित्भी जयनहींहोवैगा ॥ किंतु पराजयही तुमाराहोवैगा ॥ यातैं विषयरूपजूवारीपुरुषोंकेजीतणेकी जोतुमारेकूंइच्छाहै तौ तुमअधिका रीजीव ब्रह्मचर्यादिकसाधनरूपधनकूं मध्यविषेराखिकै विषयरूपजूवारीपुरुषोंकेसाथ जूवाखेलो॥ तेब्रह्मचर्यादिकसाधनरूपधन विषयरूपजूवारीपुरुषोंकेप्रतिकूलहैं ॥ यातैं तिनब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकूंदेखिकै तेविषयरूपजूवारी शीघ्रहीभागिजावैंगे ॥ हेजन क! याप्रकारके वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकेवचनकूं श्रद्धापूर्वकअंगीकारकरिकै हमअधिकारीपुरुष इसकालविषे तिनविषयरूपजूवा रीपुरुषोंकूंअवश्यजीतैंगे ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! याजीवोंके विषयरूपशत्रु बहुतहैं ॥ तिनसंपूर्णोंका जूवामात्रकरिकै पराजयहोइस कैनहीं ॥ **समाधान** ॥ हेजनक! जैसे यालोकविषे जीवोंकेअनेकशत्रुहैं॥ तिनशत्रुवोंविषे जेशत्रु दूरदेशविषेस्थितहैं ॥ तिनशत्रुवों काबाणोंकरिकैहननहोवैहै ॥ और समीपदेशविषेवर्तमानजेशत्रुहैं ॥ तिनशत्रुवोंका पाशोंकरिकैबंधनहोवैहै ॥ और अत्यंतअल्पश त्रुवोंका जूवाकरिकैपराजयहोवैहै ॥ तैसे जिनविषयोंकाशास्त्रविषेनिषेधकऱ्याहै॥ तिनविषयरूपशत्रुवोंकूं हमअधिकारीपुरुष शास्त्र

विहित यज्ञदानादिकबहिरंगसाधनरूपीबाणोंकरिकै हननकरैंगे ॥ और जिनविषयोंका शास्त्रविषेनिषेधनहींकऱ्या ॥ तिनविषयरूपशत्रुवोंकूं हमअधिकारीपुरुष शमदमादिकअंतरंगसाधनरूपपाशोंकरिकै बांधैंगे ॥ और ब्रह्माकारवृत्तिकेउत्थानकालविषेकदाचितूप्रतीतहोणेहारे जेअल्पविषयहैं ॥ तिनविषयरूपशत्रुवोंकूं हमअधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यादिरूपधनकूं मध्यविषेराखिकै जूवाविषेजीतैंगे ॥ हेजनक! वेदांतशास्त्ररूपप्रमाणतैं उत्पन्नभयाजो हमब्रह्मरूपहैं याप्रकारकाअभेदज्ञान ताब्रह्मज्ञानरूपअग्निकरिकै हम अधिकारीपुरुष तिनविषयरूपप्रमत्तशत्रुवोंकूं तथा तिनोंकेमातापिताकूं तथा तिनोंकेबांधवोंकूं दग्धकरैंगे ॥ शंका ॥ हेभगवन्! तिनविषयरूपशत्रुवोंके माता पिता बांधव कौनहैं? ॥ समाधान ॥ हेजनक! अनित्यपदार्थोंविषे नित्यबुद्धि तथा अशुचिपदार्थोंविषे शुचिबुद्धि इसतैंआदिलैके अन्यपदार्थोंविषे अन्यबुद्धिरूपजाविक्षेपशक्तिहै ॥ तथा आत्माकूंआच्छादनकरणेहारी जाआवरणशक्तिहैं ॥ यादोनोंप्रकारकीशक्तिवाली जाअविद्याहै ॥ साअविद्याही याविषयरूपजूवारियोंकीमाताहै ॥ और शास्त्रकेसंस्कारोंतैंरहित जोअशुद्धमनहै ॥ सोमन तिनविषयरूपजूवारियोंकापिताहै ॥ और नानाप्रकारकीजेवासनाहैं ॥ तेवासना तिनविषयरूपीजूवारियोंकेसंबंधीहैं ॥ ऐसेमातापिताबांधवोंसहित तिनविषयरूपशत्रुवोंकूं ब्रह्मज्ञानरूपअग्निसैं दग्धकरिकै हमअधिकारीजीव तिनविषयरूपशत्रुवोंका पराजयकरैंगे ॥ शंका ॥ हेभगवन्! याविषयरूपशत्रुवोंनैं ऐसाकौनअपराधकऱ्याहै ॥ जिसअपराधकरिकै आपनैं तिनविषयरूपशत्रुवोंका कुटंबसहित नाशकरणेकाउद्यमकऱ्याहै? ॥ समाधान ॥ हेजनक! याविषयरूपकपटीजूवारियोंनैं हमअधिकारीजीवोंकूं पूर्वजन्मोंविषे बहुतवार पराजयकऱ्याहै ॥ यातैं इनविषयरूपशत्रुवोंका यहमहान्अपराधहै ॥ ताअपराधकेअनुसारही तिनोंकूंदंडदीयाचाहीये ॥ शंका ॥ हेभगवन्! विषयरूपकपटीजूवारियोंनैं हमअधिकारीजीवोंका पूर्व बहुतवार पराजयकऱ्याहै ॥ याअर्थविषे कौनप्रमाणहै? ॥ समाधान ॥ हेजनक! याअर्थविषे पृथिवीआदिकलोक तथाधर्मराजादिकलोकपाल तथा अंतर्यामीईश्वर येसंपूर्ण साक्षीरूपकरिकैप्रमाणहैं ॥ यहवार्ता मनुस्मृतिविषे मनुभगवान्नैंभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ आदित्यचंद्रावनिलोनलश्च द्यौर्भूमिरापोहृदयंमनश्च ॥ अहश्चरात्रिश्चउभेचसंध्ये धर्मश्चजानातिनरस्यवृत्तं ॥ अर्थयह ॥ आदि

त्य चंद्रमा पवन अग्नि स्वर्गलोक भूमि जल साक्षीआत्मा मन दिन रात्रि दोनोंसंध्या धर्मराज येसंपूर्ण याजीवोंकेशुभअशुभवृत्तांत कूंजानैंहैं ॥ १ ॥ हेजनक! जोहमअधिकारीजीव पूर्वपूर्वजन्मोंविषे विषयरूपजूवारियोंतैं पराजयकूंप्राप्तभएथे ॥ सोईहमअधिकारी जीव अबी वेदांतशास्त्ररूपसाक्षिकेबलतैं इंद्रियरूपपाशकोंकरिकै तथायज्ञदानादिरूपबाणोंकरिकै तिनविषयरूपकपटीजूवारियोंकूं अवश्यजीतेंगे ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकप्रसिद्धजूवारीपुरुषोंका पाशकोंकीप्रवृत्तिकरिकैजयहोवैहै ॥ तैसे रागद्वेषतैंरहित जाइंद्रियरूपपाशकोंकीप्रवृत्तिहै ॥ ताकरिकै हमअधिकारीजीवोंकाभी विषयरूपजूवारियोंतैंजयसंभवैहै ॥ यहवार्ता गीताविषे श्रीकृष्णभगवान्नेंभी अर्जुनकेप्रति कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिंद्रियैश्चरन् ॥ आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥१॥ अर्थयह ॥ रागद्वेषतैंरहित तथाआपणेवशवर्ती ऐसेजेनेत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तिनइंद्रियोंकरिकै रूपादिकाविषयोंकूंग्रहण करताहुआ यहविद्वान्पुरुष बंधनकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु परमआनंदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ १ ॥ और हेजनक! जैसे युधिष्ठरादिपंचपांडव श्रीकृष्णभगवान्रूपसाक्षीकेबलतैं दुर्योधनादिककपटीजूवारियोंकूं पराजयकरतेभयेहैं॥ तैसे हमअधिकारीकाजीवभी वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकेबलतैं इनविषयरूपकपटीजूवारियोंकूं अवश्यपराजयकरेंगे ॥ हेजनक! जेपुरुष वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीतैंविना विषयरूपजूवारियोंकेसाथ जूवाखेलैहैं ॥ तिनअज्ञानीपुरुषोंकी महान्हानिहोवैगी ॥ और हमअधिकारीजीव अबी वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकीसहायतातैं विषयरूपजूवारियोंकेसाथ जुवाखेलतेहैं ॥ याकारणतैं हमअधिकारीजीव तामहान्हानिकूं नहींप्राप्तहोवैंगे ॥ किंतु अबी हमाराहीजयहोवैगा ॥ हेजनक! जैसे पूर्व शुकवामदेवादिकअधिकारीपुरुष वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकेबलतैं विषयरूपजूवारियोंकूंजीतकरिकै ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपस्वाराज्यकूं प्राप्तभयेहैं ॥ तैसे हमअधिकारीजीवभी अबी वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकेबलतैं विषयरूपकपटीजूवारियोंकूंजीतकरिकै ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपस्वराज्यकूं प्राप्तहोवैं ॥ याकार्यकेकरणेविषे हमअधिकारीजीवोंकूं विलंब नहींकऱ्याचाहिये ॥ हेजनक! जेमूढबुद्धिपुरुष वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीतैंविनाही विषयरूपजूवारियोंकेसाथ जूवाखेलणेकाआरंभकरैहैं ॥ तेमूढबुद्धिपुरुष पुण्यरूपधनतैंरहितहोइकै एकपापरूपीकौपीनकूंग्रहणकरिकै अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥

हेजनक ! जैसे लोकप्रसिद्धजूवाविषे जिनपुरुषोंकापराजयहोवैहै ॥ तिनपुरुषोंकीमंडली ताजूवाकेगृहविषे भिन्नदेखणेमेंआवैहै ॥ तैसे यासंसारविषे जेमूढपुरुष विषयरूपजूवारियोंतैं पराजयकूंप्राप्तहुएहैं ॥ तिनोंविषे कोईजीवतौ पक्षीशरीरकूंप्राप्तहुएहैं ॥ और कोइकजीवतौ वृक्षादिकस्थावरशरीरोंकूंप्राप्तहुएहैं ॥ और कोईकजीवतौ ग्रामकेरहणेहारे तथावनकेरहणेहारे पशुशरीरोंकूंप्राप्त हुएहैं ॥ और कोईकजीवतौ सर्पादिकशरीरोंकूंप्राप्तहुएहैं ॥ इनोंतैंआदिलैके जितनेचौरासीलक्षशरीरप्रतीतहोवैहैं ॥ तेसंपूर्ण पराजयकूंप्राप्तहुएजीवोंकीमंडलीजानणी ॥ और हेजनक ! जैसे यालोकविषे कृत द्वापर त्रेता कलि याप्रकारकेनाम कल्पनाकरैहैं जिनोंके ऐसेजे जूवाखेलणेकेसाधनरूप पाशकहैं ॥ तिनपाशकोंकरिकै तेजूवारीपुरुष तिनपुरुषोंकापराजयकरैहैं ॥ जिनपुरुषोंकूं तिनपाशकोंकेअनुकूलपावणेकासाधनरूप अक्षहृदयनामामंत्रकाज्ञाननहींहै ॥ और जिनपुरुषोंकूं ताअक्षहृदयनामामंत्रकाज्ञानहै ॥ तिनपुरुषोंकूं तेकपटीजूवारीपुरुष पराजयकरिसकैनहीं ॥ उलटा तेकपटीजूवारी आपहीपराजयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहविषयरूपकपटीजूवारीभी तिसपुरुषका पराजयकरैहै ॥ जिसपुरुषकूं अद्वितीयब्रह्मरूप अक्षहृदयनामामंत्रकाज्ञाननहींहै ॥ और जिसपुरुषकूं अद्वितीयब्रह्मरूप अक्षहृदयनामामंत्रकाज्ञानहै ॥ तिसपुरुषकूं यहविषयरूपजूवारी पराजयकरिसकैनहीं ॥ किंतु तेविषयरूपजूवारी आपहीपराजयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेजनक ! सोअद्वितीयब्रह्मरूप अक्षहृदयनामामंत्र हमअधिकारीपुरुषोंनैं अबी जान्याहै ॥ यातैं यहविषयरूपजूवारी अबी हमअधिकारीजीवोंका पराजयनहींकरिसकैंगे ॥ किंतु हमअधिकारीजी वही तिनविषयरूपजूवारियोंका पराजयकरैंगे ॥ हेजनक ! संपूर्णजगत्काअधिष्ठानरूप जोअद्वितीयब्रह्महै ॥ सोअद्विती यब्रह्म मेरेआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोअद्वितीयब्रह्म मैंहूं याप्रकार जबी यहअधिकारीपुरुष अद्वितीयब्रह्मरूप अक्षहृदयना मामंत्रकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंनिश्चयकरैहै ॥ तबी सोअधिकारीपुरुष अज्ञानीजीवकीन्यांई पश्चात्तापकूंकरैनहीं ॥ अब तापश्चा त्तापकूंनिरूपणकरैहैं ॥ याभारतखंडविषे पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं हमारेकूं अधिकारीमनुष्यशरीरकीप्राप्तिहोतीभई ॥ ता मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकैभी मैंमूढबुद्धिजीव वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकीसहायतातैंविनाही विषयरूपजूवारियोंकेसाथ जूवाखेलता

भया ॥ याकारणतैं तिनविषयरूपजूवारियोंनैं हमाराविद्यारूपधन तथापुण्यरूपधन संपूर्णहरणकरिलिया ॥ एकपापरूपकौपीनमेरे पासरहीहै ॥ जिसपापरूपकौपीनकरिकै मैंमूढबुद्धिजीव अनेकजन्मोंविषेदुःखकूंप्राप्तहोवांगा ॥ हेजनक! याप्रकारकापश्चात्तापक रिकै जैसे अज्ञानीपुरुष आपणेकूं धिक्कारकरैहै ॥ तैसे अद्वितीयब्रह्मरूप अक्षहृदयनामामंत्रकूंजानणेहाराविद्वान्पुरुष तापश्चात्तापकूं करिकै आपणेकूंधिक्कारकरैनहीं ॥ हेजनक! जिसअद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकूंनिश्चयकरिकै सोविद्वान्पुरुष तापश्चात्तापतैंरहितहोवै है ॥ सोअद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकैसाहै? जन्ममरणादिकजेशरीरकेधर्महैं ॥ तथा क्षुधापिपासादिकजेप्राणोंकेधर्महैं ॥ तथा कर्तृत्व भोक्तृत्वादिकजेअंतःकरणकेधर्महैं ॥ तिनसंपूर्णधर्मोंतैंरहितहै ॥ तथा अंतःकरणादिकसर्वसंघातकासाक्षीरूपहै ॥ और ब्रह्मादिक देवतावोंकेजोदिनहैं ॥ तिनदिनोंकरिकैघटित जोसंवत्सररूपनानाप्रकारकाकालहै ॥ सोकालभी आकाशादिकपदार्थोंकेभेदकरणेवा सते तिसआत्मादेवतैंही उत्पन्नहोवैहै ॥ ऐसाआनंदस्वरूपआत्मा आपणेप्रकाशविषे दूसरे सूर्य चंद्रमा विद्युत वाक् इत्यादिकज्यो तियोंकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ किंतु सोस्वयंज्योतिआत्माही सूर्यादिकजडज्योतियोंकूंप्रकाशकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादे वकूंज्योतियोंकाभीज्योतिकहैहै ॥ और हेजनक! यादेहधारीप्राणियोंकूं प्राणरूपवायु तथाअपानरूपवायु जीवनकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ किंतु यहस्वयंज्योतिआत्माही सर्वप्राणियोंकूं जीवनकीप्राप्तिकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तास्वयंज्योतिआत्माकूं आयुष् याना मकरिकैकथनकरैहै ॥ और हेजनक! जिसअधिष्ठानरूपआत्मादेवविषे प्राण चक्षु श्रोत्र मन सूर्यादिक येपांचोंस्थितहैं ॥ तथा जिस आत्मादेवविषे पृथिवीआदिकचारिभूतोंसहितआकाशस्थितहै ॥ ऐसेअधिष्ठानआत्माकूं मैं आपणाआत्मारूपकरिकै जानताहूं ॥ या कारणतैं मैंभी जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहित सर्वजगत्काअधिष्ठानरूपहूं ॥ और प्राण चक्षु श्रोत्र मन सूर्यादिक येजेपंचप्रकार केज्योतिहैं ॥ तिनोंविषे यहआत्मादेव प्राणकाभीप्राणहै ॥ और यहआत्मादेव चक्षुकाभीचक्षुहै ॥ और यहआत्मादेव श्रोत्रकाभीश्रो त्रहै ॥ और यहआत्मादेव मनकाभीमनहै ॥ और यहआत्मादेव सूर्यादिकोंकाभीसूर्यहै ॥ याप्रकार सर्वप्राणादिकज्योतियोंकाभी ज्योतिरूपकरिकै ताअंतर्यामीआत्माकूं जेअधिकारीपुरुष निश्चयकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही ताअद्वितीयब्रह्मरूपअक्षहृदयनामा

मंत्रकूंजानैहैं ॥ कैसाहैसोअंतर्यामीआत्मा ? याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व तथा याजगत्केनाशतैंअनंतर एकअद्वितीयरूपकरिकैस्थि
तहोवैहै ॥ और जगत्कीस्थितिकालविषे सोआत्मादेव शरीरादिरूपकल्पितउपाधियोंकेसंबंधतैं नानारूपहुएकीन्यांई प्रतीतहोवै
है ॥ याप्रकार आत्माकेवास्तवस्वरूपकेजानणेहारेपुरुषोंकूं विषयरूपशत्रुवोंतैं किंचित्मात्रभीभयकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हे
भगवन्! ऐसेअद्वितीयआत्माकासाक्षात्कार अधिकारीपुरुषोंकूं किसप्रमाणतेंहोवैहै? ॥ समाधान ॥ हेजनक! सर्वभेदतैंरहित
जोअद्वितीयआत्माहै ॥ सोअद्वितीयआत्मा रूपस्पर्शादिकगुणोंतैंरहितहै ॥ याकारणतैं नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकरिकै ताअद्वितीय
आत्माका साक्षात्कारहोवैनहीं ॥ किंतु मनकरिकैही ताअद्वितीयआत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोमनकरिकै
ही अद्वितीयआत्माकासाक्षात्कारहोताहोवै तौ सर्वजीवोंकेमन विद्यमानहैं ॥ यातैं तिनजीवोंकूं साधनोंतैंविनाही अद्वितीयआ
त्माकासाक्षात्कार किसवासतेनहींहोता? ॥ समाधान ॥ हेजनक! वेदांतशास्त्रकेश्रवणमननादिकजेसाधनहैं ॥ तिनसाधनोंकरि
कैसंस्कृतजोशुद्धमनहै ॥ ताशुद्धमनकरिकैही आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ याप्रकारकामन सर्वजीवोंकाहैनहीं ॥ याकारणतैं सा
धनहीनपुरुषोंकूं अद्वितीयआत्माकासाक्षात्कारहोवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते मनविषे सर्वपदार्थोंकेज्ञानकी
कारणताका निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यद्यपि ॥ परांचिखानिव्यतृणत्स्वयंभूः ॥ याश्रुतिविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकूं अं
तरात्माकेदर्शनकीअयोग्यताकथनकरीहै ॥ तथापि ब्रह्मानैं मनकूं अंतरबाहरिसर्वपदार्थोंकेदर्शनवासते उत्पन्नकर्याहै ॥
याकारणतैं भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषेवर्तमान जेबाह्यपदार्थहैं तिनपदार्थोंकूं यहजीव मनकरिकैहीजानैहैं ॥
और तीनकालोंतैंरहित जोअंतरअद्वितीयआत्माहै ॥ तिसकूंभी यहअधिकारीपुरुष मनकरिकैहीजानैहैं ॥ शंका ॥ हे
भगवन्! जोमनकरिकैही सर्वपदार्थोंकाज्ञानहोताहोवै तौ नेत्रइंद्रियतैंरहितजोअंधपुरुषहै ॥ तिसकामनतौविद्यमानहै ॥ यातैं
तामनकरिकै तिसअंधपुरुषकूं रूपादिकोंकानिश्चय होणाचाहिये ॥ समाधान ॥ हेजनक! रूपादिकपदार्थोंकेदर्शनविषे नेत्रा
दिकइंद्रिय मनकेसहकारीकारणहैं ॥ तानेत्रादिकसहकारीकारणोंकेअभावतैं सोमन रूपादिकोंकेनिश्चयकूं उत्पन्नकरैनहीं ॥

काहेतें ? यालोकविषे नेत्रइंद्रियसहितमनवाला जोपुरुषहै ॥ सोपुरुष जैसे नीलपीतादिकरूपोंकूंदेखे है ॥ तैसे श्रोत्रइंद्रियसहितमनवाला जोअंधपुरुषहै ॥ सोअंधपुरुष नीलपीतादिकरूपोंकूंदेखेनहीं ॥ और सोनेत्रइंद्रियतैंरहितअंधपुरुष नीलपीतादिकरूपोंकूं नहींजाणताहुआ जैसे अपराधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे नेत्रादिकप्रमाणोंतैंविना नीलपीतादिकरूपोंकूं नहींजाणताहुआ यहमन भी अपराधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं यहजीवात्मापुरुष मनकरिकैही सर्वअंतरबाह्यपदार्थोंकूंजाणे है ॥ तहां भेदकूंग्रहणकरणेहारे जेनेत्रादिकप्रमाणहैं ॥ तिनोंकरिकैसहकृतजोमनहै ॥ तामनकरिकै यहपुरुष नानाप्रकारकेभेदकूंग्रहणकरै है ॥ और जीवईश्वरके अभेदकूंबोधनकरणेहारा जोमहावाक्यरूपशब्दप्रमाणहै ॥ ताशब्दकरिकैसहकृतजोमनहै ॥ तामनकरिकै यहअधिकारीपुरुष अद्वितीयब्रह्मकूं साक्षात्कारकरै है ॥ यातैं हेजनक! सर्वभेदतैंरहित तथासर्वजीवोंकाआत्मरूप जोअद्वितीयब्रह्महै ॥ ताकासाक्षात्कार शुद्धमनकरिकैहीहोवै है ॥ तहांश्रुति ॥ मनसैवानुद्रष्टव्यं ॥ अर्थयह ॥ श्रवणमननादिकसाधनोंकरिकैयुक्तजोशुद्धमनहै ॥ तामनकरिकैही अधिकारीपुरुषोंनें अद्वितीयआत्मा देखणेयोग्यहै॥ १॥ शंका॥ हेभगवन्! यतोवाचोनिवर्ततंअप्राप्यमनसा सह॥ अर्थयह॥ जैसे मध्याह्नकेसूर्यकूं विषयकरणेवासते प्रवृत्तभयाचक्षुइंद्रिय तासूर्यकेतेजकूंनसहारताहुआ तासूर्यतैंनिवृत्तहोइ आवैहै॥ तैसे अद्वितीयआत्माकूं विषयकरणेवासतेप्रवृत्तहुआ मन तथावाणी ताअद्वितीयआत्माकूंनप्राप्तहोइकै ताअद्वितीयआत्मातैं निवृत्तहोइआवै हैं ॥ १ ॥ याश्रुतिविषे अद्वितीयब्रह्मकूं मनसहितवाणीका अविषयकह्याहै॥ और ॥ मनसैवानुद्रष्टव्यं ॥ याश्रुतिविषे अद्वितीयआत्माकूं मनकाविषयकह्याहै ॥ यातैं तिनदोनोंश्रुतियोंका परस्पर विरोधहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक! यतोवाचोनिवर्तंते ॥ याश्रुतिविषे जोमनकानिषेधकऱ्याहै ॥ सो अशुद्धमनकानिषेधकऱ्याहै ॥ शुद्धमनकानिषेधकऱ्यानहीं ॥ और ॥ मनसैवानुद्रष्टव्यं ॥ याश्रुतिविषे जोअद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारविषे मनकूंकरणताकहीहै॥ सो श्रवणादिकसाधनोंकरिकैयुक्त शुद्धमनकूं करणताकहीहै॥ यातैं तिनदोनोंश्रुतियोंका परस्पर विरोधसंभवैनहीं॥ शंका॥ हेभगवन्! तंत्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामि॥ अर्थयह॥ उपनिषद्रूपशब्दप्रमाणकरिकै जानणेयोग्यजोअद्वितीयब्रह्मरूपआत्माहै॥ ताआत्माकास्वरूप मैं तुमारेसेंपूछता

हूं ॥ याश्रुतिविषे अद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकेसाक्षात्कारविषे उपनिषद्रूपशब्दकूंही कारणताकहीहै ॥ और ॥ मनसैवानुद्रष्टव्यं ॥ याश्रुतिविषे अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारविषे मनकूंहीकरणताकहीहै ॥ यातें तिनदोनोंश्रुतियोंका परस्पर विरोधहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक! उपनिषद्रूपशब्दप्रमाणकीसहायतातेंविना यहमन आत्मसाक्षात्कारकूं उत्पन्नकरैनहीं ॥ किंतु उपनिषद्रूपशब्दप्रमाणकीसहायताकरिकैही यहशुद्धमन आत्माकेसाक्षात्कारकूंउत्पन्नकरैहै ॥ यातें तिनदोनोंश्रुतियोंकाभी परस्पर विरोधसंभवै नहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ कोईकविद्वान्पुरुषतौ आत्मसाक्षात्कारविषे उपनिषद्रूपशब्दकूं करणमानैहै ॥ और मनकूंसहकारीकारण मानेहैं ॥ और कोईकविद्वान्पुरुषतौ आत्मसाक्षात्कारविषे मनकूंकरणमानेहैं ॥ और उपनिषद्रूपशब्दप्रमाणकूं सहकारीकारण मानेहैं ॥ यहदोनोंप्रकारकीप्रक्रिया श्रुतिप्रमाणकरिकैसिद्धहै ॥ इतनेकरिकै अद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकेसाक्षात्कारविषे प्रमाणका निरूपणकऱ्या ॥ अब तिसीअद्वितीयब्रह्मविषेसर्वद्वैतकेनिषेधकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! अद्वितीयब्रह्मरूपजोयहआत्मादेव है ॥ ताकेविषे नानाप्रकारकेभेदवाला यहप्रपंच किंचित्मात्रभीनहीं ॥ काहेतें? व्याकरणकीरीतिसें देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित जोसर्वतेंअधिकवस्तुहै ॥ सोवस्तुही ब्रह्मशब्दकाअर्थ सिद्धहोवैहै॥ जोकदाचित् ब्रह्मविषे किसीपदार्थकाभेद अंगीकारकरिये ॥ तौ जोपदार्थ भेदवालाहोवैहै ॥ सोपदार्थ वस्तुपरिच्छेदवालाहोवैहै ॥ और जोपदार्थ भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालाहोवैहै ॥ सोपदार्थ अल्पहोवैहै ॥ और जोपदार्थ अल्पहोवैहै ॥ सोपदार्थ सर्वतेंअधिकहोवैनहीं ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थहैं ॥ यातें भेदकेअंगीकारकरणेतें सर्वतेंअधिकतारूपब्रह्मशब्दकाअर्थ तापरमात्मादेवविषेनहींघटैगा ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ हेजनक ! यालोकविषे शास्त्रवेत्तापुरुष शब्दोंका दोप्रकारकाअर्थ अंगीकारकरैहैं ॥ तहां एकतौ शब्दका मुख्यअर्थहोवैहै ॥ और दूसरा शब्दका गौणअर्थहोवैहै ॥ जैसे देवदत्तनामापुरुष सिंहहै ॥ यास्थलविषे मृगराजपशुविशेष सिंहशब्दकामुख्यअर्थहै ॥ और देवदत्त नामापुरुष सिंहशब्दकागौणअर्थहै ॥ और जिसस्थलविषे शब्दकामुख्यअर्थ संभवहोइसकै ॥ तिसस्थलविषे ताशब्दकागौणअर्थ नहींअंगीकारकरणा ॥ याप्रकारकाभी शास्त्रवेत्तापुरुषोंकासंकेतहै ॥ यातें एकअद्वितीयपरमात्मादेवकूंछोडिके जितने हस्ती

आदिकअनात्मपदार्थहैं ॥ तिनहस्तीआदिकोंविषे यद्यपि अश्वादिकोंकीअपेक्षाकरिकै अधिकताहै॥ तथापि पर्वतादिकोंकीअपेक्षा करिकै तिनहस्तीआदिकोंविषे अधिकताहैनहीं ॥ तैसे पर्वतादिकोंविषेभी यद्यपि हस्तीआदिकोंकीअपेक्षाकरिकै अधिकताहै ॥ तथापि आकाशादिकोंकीअपेक्षाकरिकै तिनपर्वतादिकोंविषे अधिकताहैनहीं ॥ इसप्रकार सर्वअनात्मपदार्थोंविषे सापेक्षअधिकताहै ॥ याकारणतैं तेहस्तीआदिकअनात्मपदार्थ ब्रह्मशब्दकामुख्यअर्थनहीं ॥ किंतु तेहस्तीआदिकअनात्मपदार्थ ब्रह्मशब्दकागौणअर्थहै ॥ और देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितजोपरमात्मादेवहै ॥ ताकेविषे किसीपदार्थकीअपेक्षाकरिकै अधिकतानहीं ॥ किंतु ताकेविषे निरपेक्षअधिकताहै ॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेवही ब्रह्मशब्दकामुख्यअर्थहै ॥ हेजनक ! जोपदार्थ किसीदेशकालविषेहोवैहै ॥ और किसीदेशविषेनहींहोवैहै ॥ सोपदार्थ देशपरिच्छेदवालाहोवैहै ॥ और जोपदार्थ किसीकालविषेहोवैहै ॥ और किसीकालविषेनहींहोवैहै ॥ सोपदार्थ कालपरिच्छेदवालाहोवैहै ॥ और जोपदार्थ दूसरेकिसीपदार्थतैंभिन्नहोवैहै ॥ सोपदार्थ वस्तुपरिच्छेदवालाहोवैहै ॥ और जोपदार्थ देशकालवस्तुपरिच्छेदवालाहोवैहै ॥ सोपदार्थ अल्पहोवैहै ॥ जैसे पुरुषकेहस्तविषेस्थित जोआमलकफलहै ॥ सो देशकालवस्तुपरिच्छेदवालाहै ॥ याकारणतैं सोआमलकफल अल्पहै ॥ तैसे परमात्मादेवतैंभिन्न जितनेअनात्मपदार्थहैं ॥ ते देशकालवस्तुपरिच्छेदवालेहैं ॥ यातैं तेसंपूर्णअनात्मपदार्थ अल्पहैं ॥ और देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित जोसर्वतैंअधिकवस्तुहै ॥ सो ब्रह्मशब्दकाअर्थहै ॥ और सर्वतैंअधिकता तथाअल्पता येदोनोंधर्म परस्पर विरोधीहैं ॥ यातैं एकपदार्थविषे तेदोनोंधर्मरहैनहीं ॥ किंतु जिसपदार्थविषे अधिकताधर्म रहैहै ॥ तिसपदार्थविषे अल्पताधर्मरहैनहीं ॥ और जिसपदार्थविषे अल्पताधर्मरहैहै ॥ तिसपदार्थविषे अधिकताधर्मरहैनहीं ॥ याकारणतैं परमात्मादेवतैंभिन्नसर्वअनात्मपदार्थ ब्रह्मशब्दकागौणअर्थहै ॥ एकपरमात्मादेवही ब्रह्मशब्दकामुख्यअर्थहै ॥ और हेजनक ! सोभेदरूपवस्तुपरिच्छेदभी तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ स्वरूपभेदरूप वस्तुपरिच्छेदहोवैहै ॥ और दूसरा सजातीयभेदरूप वस्तुपरिच्छेदहोवैहै ॥ और तीसरा विजातीयभेदरूप वस्तुपरिच्छेदहोवैहै ॥ तहां आपणेस्वरूपविषेस्थितजोभेदहै ताकानाम स्वरूपभेदहै ॥ जैसे एकहीवृक्षविषे स्कंध शाखा पत्र पुष्प फल इत्यादि

कोंका जोपरस्परभेदहै ॥ सोभेद स्वरूपभेदहै ॥ यास्वरूपभेदकूंही शास्त्रविषे स्वगतभेदकहैहैं ॥ सोस्वरूपभेद सावयवपदार्थों विषेहोवैहै ॥ और यहअद्वितीयब्रह्म निरवयवहै ॥ याकारणतें ताअद्वितीयब्रह्मविषे स्वरूपभेदसंभवैनहीं ॥ और समानजातिवालेपदार्थोंका जोपरस्परभेदहोवैहै ॥ ताभेदकानाम सजातीयभेदहै ॥ जैसे गोत्वरूपजातिवालियां जेसर्वगोवां हैं॥ तिनोंविषे शुक्लवर्णवालीगोविषे कृष्णवर्णवालीगोंकाभेदरहैहै ॥ अथवा सर्वअंगोंकरिकैसंपन्नगोविषे शृंगादिकअंगहीनगोंकाभेदरहैहै ॥ याकानाम सजातीयभेदहै ॥ सोसजातीयभेदभी अद्वितीयब्रह्मविषेहैनहीं ॥ और विरुद्धजातिवालेपदार्थोंकाजोपरस्परभेदहोवैहै ॥ ताभेदकानाम विजातीयभेदहै ॥ जैसे मनुष्यत्वजातिवालेमनुष्योंविषे घटत्वजातिवालेघटोंकाभेदहोवैहै ॥ ताभेदकानाम विजातीयभेदहै ॥ सोविजातीयभेदभी अद्वितीयब्रह्मविषेसंभवैनहीं ॥ और हेजनक ! जैसे आकाशविषे जोमहान्गंधर्वनगर प्रतीतहोवैहै ॥ सोगंधर्वनगर अधिष्ठानरूपआकाशतें तीनकालविषेभिन्ननहीं ॥ तैसे अद्वितीयब्रह्मविषे जोयहस्थूलसूक्ष्मरूपसंपूर्णजगत् प्रतीतहोवैहै ॥ सोजगत् अधिष्ठानब्रह्मतैंतीनकालविषेभिन्ननहीं ॥ और हेजनक ! जैसे स्वप्नअवस्थाविषे संपूर्णपदार्थोंसहितदेशकाल स्वप्नद्रष्टापुरुषविषेहीउत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे देशकालतैंआदिलैकेयहसंपूर्णजगत्भी ब्रह्मविषेहीउत्पन्नहोवैहै ॥ कैसाहैसोब्रह्म ? परमानंदस्वरूपहै॥ तथा सूर्यादिकज्योतियोंकाभीज्योतिहै ॥ तथा नाशतैंरहितहै ॥ तथा सर्वभेदतैंरहितहै ॥ तथा सर्वत्रव्यापकहै ॥ और हेजनक ! जैसे घटादिकउपाधियोंतैंरहित शुद्धआकाशका आपणेस्वरूपकेसाथ भेदनहींहै ॥ तैसे मायादिकउपाधियोंतैंरहितशुद्धब्रह्मका अंतःकरणादिकउपाधियोंतैंरहित शुद्धआत्माकेसाथभेदनहींहै॥काहेतें ? जैसे मशकशरीरविषे तथा हस्तीशरीरविषे आकाश अंतरबाहरि समानव्यापकहै ॥ तैसे यहआत्मादेवभी सर्वजगत्विषे अंतरबाहरि समानव्यापकहै ॥ ऐसेआत्माकी ब्रह्मकेसाथएकतासंभवैहै ॥ और हेजनक ! जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषे प्रतीतभयेजेसर्प दंड माला जलधारा इत्यादिककल्पितपदार्थहैं ॥ तेसर्पादिककल्पितपदार्थ रज्जुरूपअधिष्ठानविषेही स्थितहैं ॥ रज्जुरूपअधिष्ठानतैंतेसर्पादिक तीनकालविषेभिन्ननहीं ॥ तैसे देशकालतैंआदिलैके संपूर्णजगत् अधिष्ठानरूपब्रह्मविषेहीस्थितहै ॥ अधिष्ठानब्रह्मतैं सोजगत् तीनकालविषे

भिन्ननहीं ॥ और हेजनक! संपूर्णदेहधारीजीवोंकाजोआत्माहै ॥ सोआत्मा पूर्वउक्तसर्वभेदोंतेंरहितहै ॥ याकारणतें यहआत्मादे वही परब्रह्मरूपहै ॥ और याआनंदस्वरूपआत्मातेंपरे दूसराकोईअधिकपदार्थहैनहीं ॥ किंतु यहआत्मादेवही सर्वपदार्थोंतेंअधिकहै ॥ याकारणतें ॥ अयमात्माब्रह्म ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे याआनंदस्वरूपआत्माकूंही ब्रह्मरूपकरिकैकथनकन्याहै ॥ यातें ब्रह्मविषे तथाआत्माविषे किंचित्मात्रभीभेदनहीं ॥ हेजनक! जोकदाचित् याआनंदस्वरूपआत्माविषे भेदहोवैगा तौ ॥ अयमात्माब्रह्म ॥ याश्रुतिनें कथनकरीजोआत्माकीब्रह्मरूपता सोनहींसंभवैगी ॥ और याआनंदस्वरूपआत्माविषे जोब्रह्मरूपताहोवैगी तौ याआनंदस्वरूपआत्माविषे भेदनहींरहैगा ॥ काहेतें? ब्रह्मरूपता तथाभेद येदोनोंधर्म परस्परविरोधीहैं ॥ और जेधर्म परस्परविरोधीहोवैहैं ॥ तेधर्म एकअधिकरणविषेरहैनहीं ॥ जैसे उष्णता तथाशीतलता येदोनोंधर्म परस्परविरोधीहैं ॥ यातें ते दोनोंधर्म एकअधिकरणविषेरहैनहीं ॥ तैसे ब्रह्मरूपता तथाभेद येदोनोंधर्मभी परस्पर विरोधीहोणेतें एकअधिकरणविषेरहैनहीं ॥ यातें तिनदोनोंधर्मोंविषे एकधर्मका परित्यागकन्याचाहिये ॥ तहां अन्योन्याभावरूपभेद आपणेप्रतियोगीकीअपेक्षाकरैहै ॥ यातें सोभेद बहिरंगहै ॥ और ब्रह्मरूपता किसीकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ याकारणतें साब्रह्मरूपता अंतरंगहै ॥ और बहिरंगधर्मोंकी तथाअंतरंगधर्मोंकी जहां एकअधिकरणविषे प्राप्तिहोवै ॥ तहां विरोधकीनिवृत्तिवासते बहिरंगधर्मोंकाहीपरित्यागकरणाउचित है ॥ यहवार्ता सर्ववादियोंकूंसंमतहै ॥ याकारणतें बहिरंगभेदकापरित्यागकरिकै आत्माविषे ब्रह्मरूपताही अंगीकारकरीचाहिये ॥ हेजनक! सर्वकेअंतर व्यापकजोवस्तुहै ॥ सोवस्तुही आत्मशब्दकाअर्थहै ॥ याकारणतें सा ब्रह्मरूपता आत्मरूपतातेंभिन्ननहीं ॥ किंतु साब्रह्मरूपता आत्मरूपतातेंअभिन्नहै ॥ तहां आत्माविषे जोकदाचित् भेदकापरित्याग नहींकरिये तौ आत्माविषे ब्रह्मरूपताकानाशहोवैगा ॥ और ब्रह्मरूपताकेनाशहुएतेंअनंतर ताब्रह्मरूपतातेंअभिन्न जोआत्मरूपताहै ॥ साआत्मरूपताभी नाशकूं प्राप्तहोवैगी ॥ और ताआत्मरूपताकेनाशहुएतेंअनंतर आत्माकाभीनाशहोवैगा ॥ सोआत्माकानाश किसीभीआस्तिकवादीकूंअंगीकारनहीं ॥ यातें आनंदस्वरूपआत्माकीरक्षाकरणेवासते ताभेदकाहीनाश अंगीकारकन्याचाहिये ॥ अब याहीअर्थकूं

स्पष्टकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! जेकेवलनीतिशास्त्रकूंजानणेहारेपुरुष अर्थकूं तथाकामकूंही परमपुरुषार्थकहैहैं ॥ तेनीतिशास्त्रकेजानणेहारेपुरुषभी याप्रकारकावचनकहैहैं ॥ जिसस्थानविषे आपणेआत्माकेनाशकीप्राप्तिहोवै ॥ तिसस्थानविषे यहबुद्धिमान्पुरुष आपणेआत्माकीरक्षाकरणेवासते सर्वपदार्थोंकापरित्यागकरिदेवै ॥ याप्रकारकावचन तेनीतिशास्त्रकेजानणेहारेपुरुष कथनकरैहैं ॥ तिनोंकेवचनतैंभी आत्माकीरक्षाकरणेवासते सर्वभेदकापरित्यागकरणाउचितहै ॥ तात्पर्ययह ॥ यास्थूलशरीरकूंहीजिनोंने आत्मामान्याहै ॥ ऐसेजेबहिर्मुख तथासकाम नीतिशास्त्रकेजानणेहारेपुरुषहैं ॥ तेसकामपुरुषभी जबी शरीररूपमिथ्याआत्माकीरक्षाकरणेवासते सर्वपदार्थोंकापरित्यागकरैहैं ॥ तबी अंतरमुख तथानिष्काम जेहमअधिकारीपुरुषहैं ॥ तेहमअधिकारीपुरुष परमपुरुषार्थरूपशुद्धआत्माकीरक्षाकरणेवासते दुःखरूपजडभेदकूं किसवासतेनहींपरित्यागकरैंगे? किंतु शुद्धआत्माकीरक्षाकरणेवासते हमअधिकारियोंनैं जडभेदकापरित्याग अवश्यकऱ्याचाहिये ॥ हेजनक! जेपुरुष जडपदार्थोंविषे अभिनिवेशकरिकै आपणेआत्मरूपताका परित्यागकरैहैं ॥ तिनपुरुषोंकेअनात्मजडपदार्थोंका विनाहीपरित्यागतैं नाशहोइजावैहै ॥ जैसे कृपणपुरुष जीवत्कालविषे धनकापरित्यागकरैनहीं ॥ परंतु ताकृपणपुरुषकेमरणतैंअनंतर ताकाधनभी विनाहीत्यागेतैं नाशहोइजावै ॥ तैसे आत्माकेनाशहुए तिनजडपदार्थोंकाभी अवश्यनाशहोवैहै ॥ यातैं आनंदस्वरूपआत्माकीरक्षाकरणेवासते हमअधिकारीपुरुषोंनैं जडभेदकापरित्याग अवश्यकरणा ॥ हेजनक! बृहस्पतिकेशिष्य जेचार्वाकनास्तिकहैं ॥ तथा शास्त्रकेविचारतैंरहित जेपामरपुरुषहैं ॥ तेचार्वाक तथापामरपुरुष यास्थूलशरीरकूंहीआत्मामानैहैं ॥ और तेचार्वाक तथापामरपुरुष यास्थूलशरीररूपमिथ्याआत्माकेनाशतैंअनंतर सर्वजगत्कानाश अंगीकारकरैहैं ॥ जबी चार्वाक तथापामरपुरुषभी शरीररूपआत्माकेनाशहुएतैंअनंतर सर्वजगत्केनाशकूंकथनकरैहैं ॥ तबी शास्त्रकूंजानणेहारेबुद्धिमान्पुरुष साक्षीआत्माकेनाशतैंअनंतर सर्वजगत्केनाशकूं किसवासतेनहींकथनकरैंगे ? तात्पर्ययह ॥ सूर्यादिकज्योतियोंकाभीज्योतिरूपजो आत्माहै ॥ सोआत्माहीएकचेतनहै ॥ और आत्मातैंभिन्नजितनेअनात्मपदार्थहैं ॥ तेसंपूर्णअनात्मपदार्थ जडरूपहैं ॥ तिनजडरूप

साक्ष्यपदार्थोंकी चेतनरूपसाक्षीआत्मातैंविना किसीप्रकारसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं आत्माकेनाशकाअंगीकारकरणेतैं तिनजडप
दार्थोंकानाशभी अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ शंका ॥ अद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकीरक्षाकरणेवासते सर्वजडपदार्थोंकानाश अंगीकार
करणाउचितहै ॥ यहजोआपनैंकह्या सोयद्यपिसत्यहै ॥ तथापि संपूर्णजडपदार्थोंकेनाशहुएतैंअनंतर तिनसर्वपदार्थोंकीसिद्धिकर
णेहारा अद्वितीयब्रह्मरूपसाक्षी किसप्रकारस्थितहोवैगा? ॥ समाधान ॥ हेजनक! जैसे साक्षीआत्माकासाक्ष्यरूपजेअंतःकरण
कीवृत्तियांहैं ॥ तिनवृत्तियोंका सुषुप्तिअवस्थाविषेनाशहुएभी तासुषुप्तिअवस्थाविषे साक्षीआत्माकानाशहोवैनहीं ॥ तैसे संपूर्णज
डजगत्केनाशहुएभी अद्वितीयब्रह्मकानाशहोवैनहीं ॥ याकारणतैं हमअधिकारीपुरुषोंनैं अद्वितीयब्रह्मकीरक्षाकरणेवासते जडप्र
पंचकाहीपरित्यागकऱ्याचाहिये ॥ हेजनक! जैसे उष्णस्वभाववान्अग्निविषे शीतलता किसीप्रमाणकरिकै ग्रहणकरिजावैनहीं ॥
तैसे अद्वितीयस्वभाववालेब्रह्मविषे भेद किसीप्रमाणकरिकैग्रहणकऱ्याजावैनहीं ॥ और लोकविषे जिसपदार्थका किसीप्रमाणक
रिकैग्रहणहोवैहै ॥ तिसपदार्थकीहीसिद्धिहोवैहै ॥ याकारणतैं ताभेदकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ हेजनक! जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषे
जोसर्प प्रतीतहोवैहै ॥ सोसर्प वास्तवतैंरज्जुरूपअधिष्ठानविषेहैनहीं ॥ काहेतें? जोरज्जुरूपअधिष्ठानविषे सोसर्प वास्तवतैंहोवै ॥
तौ रज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानहुएतैंअनंतरभी सोसर्प प्रतीतहोणाचाहिये ॥ और रज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानतैंअनंतर सोसर्प प्रतीत
होवैनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ सोसर्प रज्जुविषे वास्तवतैंनहीं ॥ तैसेअद्वितीयब्रह्मविषे जोभेदप्रतीतहोवैहै ॥ सोभेद अद्विती
यब्रह्मविषे वास्तवतैंनहीं ॥ काहेतें? जोकदाचित् अद्वितीयब्रह्मविषे सोभेद वास्तवतैंहोता तौसमाधिअवस्थाविषे विद्वान्पुरुषकूं
जैसे ब्रह्मविषे सत्चित्आनंदरूपताप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे ताअद्वितीयब्रह्मविषे विद्वान्पुरुषकूं भेदभीप्रतीतहोता ॥ परंतु विद्वान्
पुरुषकूं अद्वितीयब्रह्मविषे भेद प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ ताअद्वितीयब्रह्मविषे सोभेद वास्तवतैंनहीं ॥ शंका ॥
हेभगवन्! जोकदाचित् अद्वितीयब्रह्मविषे सोभेद वास्तवतैंनहींहोवै तौसोभेद अद्वितीयब्रह्मविषेस्थितहुआ किसवासतेप्रतीत
होवैहै? ॥ समाधान ॥ हेजनक! जोपदार्थ जिसपदार्थविषे स्थितहुआप्रतीतहोवैहै ॥ सोपदार्थ तिसपदार्थविषे वास्तवतैंही

होवैहै ॥ याप्रकारकानियमसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? जैसे प्रकाशमान्सूर्यविषे घूकादिकनिशाचरजीव अंधकारकूंदेखे हैं ॥ परंतु सोअंधकार प्रकाशमान्सूर्यविषे वास्तवतैंहैनहीं ॥ जो सोअंधकार सूर्यविषेवास्तवतैंहोवै तौ अस्मदादिकजीवोंकूंभी सोअंधकार प्रतीतहोणाचाहिये ॥ और अस्मदादिकजीवोंकूं सूर्यविषे अंधकारप्रतीतहोवैनहीं ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ घूकादिकोंनें आपणेअज्ञानकरिकै सूर्यविषे अंधकार कल्पनाकऱ्याहै ॥ तैसे अद्वितीयब्रह्मविषे अज्ञानीजीव भेदकूंदेखेहै ॥ परंतु सोभेद अद्वितीयब्रह्मविषे वास्तवतैंहैनहीं ॥ जोकदाचित् अद्वितीयब्रह्मविषे सोभेद वास्तवतैंहोता तौ अस्मदादिकविद्वान्पुरुषोंकूंभी सोभेद प्रतीतहोता ॥ और अस्मदादिकविद्वान्पुरुषोंकूं अद्वितीयब्रह्मविषे सोभेद प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातेंयहजान्याजावैहै ॥ अविवेकी पुरुषोंनें आपणेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानकरिकै अद्वितीयब्रह्मविषे भेदकल्पनाकऱ्याहै ॥ और जोपदार्थ अज्ञानकरिकैकल्पितहोवैहै ॥ सोपदार्थ वास्तवतैंहोवैनहीं ॥ यातें भेद याप्रकारकेशब्दतें तथा भेद याप्रकारकेज्ञानतें भिन्न कोईताभेदकावास्तवस्वरूपनहीं ॥ किंतु भेद याप्रकारकाशब्दरूप तथा भेद याप्रकारकाज्ञानरूपही सोभेदहै ॥ जैसे वंध्यापुत्र याप्रकारकेशब्दतें तथा वंध्यापुत्र याप्रकारकेज्ञानतें भिन्न तावंध्यापुत्रकाकोईवास्तवस्वरूपनहीं ॥ किंतु वंध्यापुत्र याप्रकारकाशब्दरूप तथा वंध्यापुत्र याप्रकारकाज्ञानरूपही सोवंध्यापुत्रहै ॥ याकारणतें सोवंध्यापुत्र अत्यंतअसत्यहै ॥ तैसे सोभेदभी अत्यंतअसत्यहीहै ॥ हेजनक ! यासंसारविषे अद्वितीयब्रह्मतेंभिन्नजोकोईपदार्थहोवै तौ तिसपदार्थकाभेद अद्वितीयब्रह्मविषेरहै ॥ परंतु यासंसारविषे अद्वितीयब्रह्मतैंभिन्न कोईस्थूलसूक्ष्मपदार्थहैनहीं ॥ किंतु यहसंपूर्णजगत् अद्वितीयब्रह्मरूपहीहै ॥ यातें ताअद्वितीयब्रह्मविषे भेदकीसंभावनाभीहोवैनहीं ॥ हेजनक ! जैसे शशशृंग वंध्यापुत्र याप्रकारकेशब्दकेबलतें तथा याप्रकारकेज्ञानकेबलतैंही सोशशशृंग तथावंध्यापुत्र स्थितहोवैहै ॥ ताशब्दज्ञानतेंभिन्न दूसराकोईपदार्थ शशशृंगके तथावंध्यापुत्रके स्थितिकाकारणनहीं ॥ तैसे भेद याप्रकारके शब्दकेबलतें तथा याप्रकारकेज्ञानकेबलतैंही सोभेद स्थितहोवैहै ॥ भेद याप्रकारकेशब्दज्ञानतेंविना दूसराकोईपदार्थ ताभेदके स्थितिकाकारणनहीं ॥ यातें भेद याप्रकारकेशब्दज्ञानकेप्रभावतें प्रतीतहुआभीसोभेद ताअद्वितीयब्रह्मविषे वास्तवतैंहैनहीं ॥ इतनेक

रिकै अद्वितीयब्रह्मविषे संपूर्णभेदरूपप्रपंचकाअभाव निरूपणकऱ्या ॥ अब भेददर्शनविषे अनर्थकीकारणताकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! मनवाणीकाअविषय जोस्वयंप्रकाशअद्वितीयब्रह्महै ॥ ताअद्वितीयब्रह्मविषे जोपुरुष नानाप्रकारकेभेदकूंदेखेहै ॥ सोभेददर्शीपुरुष पुनःपुनःमृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ मृत्योःसमृत्युमाप्नोति यइहनानेवपश्यति ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष अद्वितीयब्रह्मविषे नानाप्रकारकेभेदप्रपंचकूंदेखेहै ॥ सोभेददर्शीपुरुष वारंवार मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक ! अद्वितीयब्रह्मविषे जोभेदबुद्धिहै ॥ साभेदबुद्धिही अज्ञानीजीवोंकूंसंसारकीप्राप्तिकरैहै ॥ याकारणतें मुमुक्षुजननें अद्वितीयब्रह्मविषे भेदबुद्धिकदाचित्भीनहींकरणी ॥ और जोपुरुष अद्वितीयब्रह्मविषेभेदबुद्धिकरैहै ॥ सोपुरुष नरकादिकोंविषे अनेकप्रकारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोइकै अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतें मुमुक्षुजननें ताभेदबुद्धिकापरित्यागकरिकै ताब्रह्मकूं एकअद्वितीयरूपकरिकैनिश्चयकरणा ॥ कैसा हैसोअद्वितीयब्रह्म ॥ सूर्यादिकज्योतियोंकाभी ज्योतिरूपहै ॥ तथा मनवाणीकाअविषयहै ॥ याकारणतेंही सो अद्वितीयब्रह्म अप्रमेयहै ॥ प्रत्यक्षादिकप्रमाणजन्यज्ञानकाजोअविषयहोवैहै ॥ ताकानाम अप्रमेयहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! मनसैवानुद्रष्टव्यं ॥ याश्रुतिकेव्याख्यानविषे पूर्व आपनें शुद्धमनजन्यज्ञानकीविषयता अद्वितीयब्रह्मविषे कथनकरीथी ॥ और अबी आपनें अद्वितीयब्रह्मविषे प्रमाणजन्यज्ञानकीअविषयता कथनकरी ॥ याकारणतें पूर्वउत्तरग्रंथका विरोधहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ! चेतनके आभासयुक्त जोअंतःकरणकीवृत्तिहै ॥ ताकानाम ज्ञानहै ॥ तहां घटादिकजडपदार्थोंविषे अंतःकरणकीवृत्तितौ आवरणकी निवृत्तिकरैहै ॥ और तावृत्तिविषेस्थित जोचिदाभासहै ॥ सोचिदाभास तिनघटादिकजडपदार्थोंकाप्रकाशकरैहै ॥ याकारणतें घटादिकजडपदार्थोंविषे वृत्तिकीविषयता तथा चिदाभासरूपफलकीविषयता दोनोंविद्यमानहैं ॥ और चेतनरूपअद्वितीयब्रह्म स्वयंज्योतिरूपहै ॥ याकारणतें ताअद्वितीयब्रह्मविषे चिदाभासरूपफलकीविषयतातौसंभवैनहीं ॥ और महावाक्यतैंउत्पन्नभई जोअंतःकरणकीवृत्तिहै ॥ सावृत्ति अद्वितीयब्रह्मकेअज्ञानरूपआवरणकीनिवृत्तिकरैहै ॥ यातें तावृत्तिकीविषयताअद्वितीयब्रह्मविषेभीहै ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ पूर्वजोहमनें अद्वितीयब्रह्मविषे प्रमाणजन्यज्ञानकीविषयताकहीथी ॥ सो वृत्तिकीविषय

ताकूंअंगीकारकरिकै कहीथी ॥ और अबीजो हमनें अद्वितीयब्रह्मविषे ज्ञानकीअविषयता कथनकरीहै ॥ सो चिदाभासरूपफलकीअविषयताकूंअंगीकारकरिकै कथनकरीहै ॥ यातें पूर्वउत्तरग्रंथकाविरोधहोवैनहीं ॥ ऐसेसर्वभेदतैंरहितअद्वितीयब्रह्मविषे जोपुरुष भेदकूंदेखैहै ॥ सोभेददर्शीपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक! भेददर्शीपुरुषोंकूं नानाप्रकारकेदुःखकीप्राप्ति करणेहाराजोभेदहै ॥ ताभेदकूंउत्पन्नकरणेहारीजोअविद्याहै ॥ ताअविद्यातैंभी जोअद्वितीयब्रह्मपरेहै ॥ और सोअद्वितीयब्रह्म जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहै ॥ याकारणतैं ताअद्वितीयब्रह्मकूं श्रुतिभगवती अज यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और सोअद्वितीय ब्रह्म गमनआगमनादिकक्रियातैंरहितहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताअद्वितीयब्रह्मकूं ध्रुव यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और सो अद्वितीयब्रह्म देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताअद्वितीयब्रह्मकूं महान् यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ हेजनक! ऐसेअद्वितीयब्रह्मकेसाक्षात्कारकी जिसपुरुषकूंइच्छाहोवै ॥ सोपुरुष याप्रकारकाउपायकरै ॥ अनात्मपदार्थोंकूंप्रतिपादन करणेहारे जितनेकीव्याकरणादिकशास्त्रहैं ॥ तिनोंकापरित्यागकरिकै यह अधिकारीपुरुष श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेमुखतैं केवलवेदांतशास्त्रकाश्रवणकरै ॥ और एकांतदेशविषेस्थितहोइकै ताश्रवणकऱ्येहुएअर्थकामननकरै ॥ और मननकरिकैनिश्चयकऱ्याजोअद्वितीयब्रह्मरूपअर्थ ताकेविषे चित्तकेवृत्तियोंकानिरंतरप्रवाहरूपनिदिध्यासनकरै ॥ तथा बालककीन्यांई रागद्वेषादिकोंतैंरहितहोवै ॥ तथा ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकैयुक्तहोवै ॥ याप्रकार श्रवणादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहुआ यहअधिकारीपुरुष आपणेमनका अंतरात्माविषेलयकरै ॥ याप्रकारका मनकालयही सर्वदुःखोंकेनिवृत्तिकाकारणहै ॥ अब अनात्मपदार्थोंकेनिवृत्तिका निरूपणकरैहै ॥ हेजनक! याअद्वितीयआत्मातैंभिन्न जितनेकीलोकप्रसिद्धअनात्मपदार्थहैं ॥ तथा तिनअनात्मपदार्थोंकूं प्रतिपादनकरणेहारे जितनेकीशास्त्रहैं ॥ तथा तिनअनात्मपदार्थोंकीप्राप्तिकेजितनेकीसाधनहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ जोकदाचित् शास्त्रकरिकैनिषिद्ध नहींभीहोवै ॥ तौभी तेअनात्मपदार्थ चिंतनकरणेहारेपुरुषके वाकादिकइंद्रियोंकूं परिश्रमरूपदुःखकीहीप्राप्तिकरैहैं ॥ याकारणतैं तिनअनात्मपदार्थोंका तथा तिनअनात्मपदार्थोंकेप्रतिपादनकरणेहारेशास्त्रोंका यामुमुक्षुजननैं परित्यागहीकरणा ॥ हेजनक!

जैसे यालोकविषे भारकूंउठावणेहारे गर्दभ परमदुःखकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तैसे वर्तमानविषयोंकीचिंताकरिकैव्याकुलहुआ यहपुरुषप रमदुःखकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ तात्पर्ययह ॥ वर्तमानविषयोंकीचिंताकरिकैभी यहपुरुष जबी परमदुःखकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ तबी भूतभविष्यत् विषयोंकीचिंताकरिकै यहपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैंहै याकेविषे क्याकहणाहै ? और हेजनक! आनंदस्वरूपआत्माकेचिंतनका परित्यागकरिकै यहपुरुष जिनाजिनविषयोंकाचिंतनकरैंहै ॥ तेविषय जोकदाचित् शास्त्रकरिकैनिषिद्धनहींभीहोवैं तौभी तेविषय तापुरुषकीप्रवृत्तिद्वारा तापुरुषकेवाकादिकइंद्रियोंकूं केवलपरिश्रमरूपदुःखकीहीप्राप्तिकरैंहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ शास्त्रनैंविधानकऱ्ये जेपाणिग्रहीतस्त्रीकेसंभोगादिकविषयहैं ॥ तेविषयभी जबी यापुरुषकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरैंहैं ॥ तबी शास्त्रनैं निषेधकऱ्येजेपर स्त्रीगमनादिकविषयहैं ॥ तेनिषिद्धविषय यापुरुषकूं परमदुःखकीप्राप्तिकरैंहैं याकेविषे क्याकहणाहै ? यातैं यह मन जैसे पुनःदुः खकूंनहींप्राप्तहोवै ॥ तैसे यहपुरुष सर्वविषयोंकापरित्यागकरिकै तामनकूं अंतरात्माविषेएकाग्रकरै ॥ यहही सर्वदुःखोंकेनिवृत्ति कासाधनहै ॥ हेजनक! याप्रकार शमदमादिकसाधनोंकरिकै तथाश्रवणादिकसाधनोंकरिकै तथा अन्नमयादिकपंचकोशोंकेवि चारकरिकै जिनअधिकारीपुरुषोंनैं अद्वितीयआत्माविषे मनकूंएकाग्रकऱ्याहै ॥ तेअधिकारीपुरुषही अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्का रकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ अनात्मपदार्थोंकेचिंतनकापरित्यागकरिकै अंतरआत्माविषे जोचित्तकीएकाग्रताहै ॥ साएकाग्रताही आत्मसाक्षात्कारकासाधनहै ॥ अब व्याकरणादिकशास्त्रोंनैं कथनकऱ्येजेअनात्मपदार्थहैं तिनोंकानिरूपणकरैंहैं ॥ हेजनक! जैसे रोगीपुरुषकूं कुपथ्यअन्नकाभक्षण दोषकाहीकारणहोवैंहै ॥ तैसे अधिकारीपुरुषोंकूं व्याकरणादिकअनात्म शास्त्रोंकाअध्ययनभी बहिर्मुखताकाहीकारणहोवैंहै ॥ तहां प्रथम व्याकरणशास्त्रकेपदार्थोंकानिरूपणकरैंहैं ॥ पाणिनिऋ षिकृत अष्टाध्यायीतैंआदिलेके जेव्याकरणकेग्रंथहैं ॥ तिनोंविषे याप्रकारकेपदार्थोंकानिरूपणकऱ्याहै ॥ तहां शक्ति गौणीलक्षणा यहतीनप्रकारकीवृत्तिहोवैंहै ॥ पदोंका जोआपणेआपणेअर्थकेसाथसंबंधहै तासंबंधकानाम वृत्तिहै ॥ तहां शक्तिवृत्ति दोप्रकारकी होवैंहै ॥ एकतौ योगशक्तिहोवैंहै ॥ और दूसरी रूढीशक्तिहोवैंहै ॥ तहां पदकेअवयवोंविषेरहणेहारी जाशक्तिहै ताकानाम योगश

क्तिहै ॥ तायोगशक्तिवालेपदकानाम यौगिकहै ॥ जैसे पाचक यापदविषे दोअवयवहैं ॥ एक तौ पचधातुरूपअवयवहै ॥ और दूसरा अकप्रत्ययरूपअवयवहै ॥ तहां पचधातुरूपअवयवकी पाकरूपअर्थविषेशक्तिहै ॥ और अकप्रत्ययरूपअवयवकी कर्तारूपअर्थविषेशक्तिहै ॥ तेदोनोंअवयव मिलिकै पाककर्तापुरुषकाबोधनकरैंहैं ॥ और पदकेअवयवोंकाजोसमुदायहै ॥ तासमुदायविषेरहणेहारीजाशक्तिहै ताकानाम रूढीशक्तिहै ॥ तारूढीशक्तिवालेपदकानाम रूढहै ॥ जैसे विप्र गौ घट इत्यादिकपदोंकेजेअवयवहैं ॥ तिनअवयवोंकेसमुदायविषेही ब्राह्मणादिकअर्थकेबोधनकरणेकीशक्तिरहैहै ॥ शक्तिवालेपदकानाम शक्तपदहै ॥ और पदकेवाच्यअर्थविषे वर्तमानजोगुणहै तागुणद्वारा तापदका अवाच्यअर्थकेसाथ जोसंबंधहै ताकानाम गौणीवृत्तिहै ॥ तागौणीवृत्तिवालेपदकानाम गौणहै ॥ जैसे किसीपुरुषनैंकह्या यहबालकअग्निहै ॥ यावचनविषे अग्निशब्दकावाच्यअर्थ लोकप्रसिद्धअग्निहै ॥ ताअग्निविषे तेजस्वीपणागुणरहैहै ॥ सोतेजस्वीपणागुण ताबालकविषेभीरहैहै ॥ यातैं अग्निपदकी ताबालकविषे गौणीवृत्तिहै ॥ और पदकेवाच्यअर्थका जोअवाच्यअर्थकेसाथ संबंधहै ताकानाम लक्षणावृत्तिहै ॥ तालक्षणावालेपदकानाम लाक्षणिकपदहै ॥ सालक्षणाभी तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौ जहत्लक्षणाहोवैहै ॥ और दूसरी अजहत्लक्षणाहोवैहै ॥ और तीसरी लक्षितलक्षणाहोवैहै ॥ तहां जिसस्थलविषे पदकेवाच्यअर्थकापरित्यागकरिकै अवाच्यअर्थकाग्रहणहोवैहै ॥ तहां जहत्लक्षणाहोवैहै ॥ जैसे किसीपुरुषनैं गंगाविषेग्रामहै याप्रकारकावचन उच्चारणकर्‍या ॥ यावचनविषे गंगापदकावाच्यअर्थ जोजलकाप्रवाहहै ॥ ताकेविषे ग्रामकीस्थितिसंभवैनहीं ॥ याकारणतैं जलकाप्रवाहरूपवाच्यअर्थकापरित्यागकरिकै ताप्रवाहकासंबंधीजोतीरहै ताकेविषे गंगापदकीलक्षणाहोवैहै ॥ और जिसस्थूलविषे पदकेवाच्यअर्थका नपरित्यागकरिकै अवाच्यअर्थकाग्रहणहोवैहै ॥ तहां अजहत्लक्षणाहोवैहै ॥ जैसे किसीपुरुषनैं काकोंतैंदधिकी रक्षाकरणी याप्रकारकावचन किसीअन्यपुरुषकेप्रतिकह्या ॥ तहां सोपुरुष तावचनकूंश्रवणकरिकै काकतैंआदिलैकै जितनेदधिकेनाशकरणेहारेश्वानादिकपशुहैं ॥ तिनसंपूर्णोंविषे काकशब्दकीलक्षणाकरैहै ॥ और पदकेवाच्यअर्थका अवाच्यअर्थकेसाथ जोपरंपरासंबंधहै ॥ ताकानाम लक्षितलक्षणाहै ॥ जैसे किसीपुरुषनैं द्विरेफ शब्द करैहै याप्रकारकावचन उच्चारणकर्‍या ॥ यावचन

विषे द्विरेफपदकावाच्यअर्थ दो रकारहैं ॥ तिनवर्णरूपदोरकारोंविषे शब्दकीकारणतासंभवैनहीं ॥ यातें द्विरेफपदकी मधुकरव्यक्ति विषेलक्षणाहोवैहै ॥ तहां द्विरेफपदकेवाच्यअर्थरूप दोरकारोंका मधुकरव्यक्तिकेसाथ साक्षात्संबंधसंभवैनहीं ॥ किंतु स्वघटितप दवाच्यत्वरूप परंपरासंबंधसंभवैहै ॥ इहां स्वशब्दकरिकै दोरकारोंकाग्रहणकरणा ॥ तादोरकारोंकरिकैघटितजोभ्रमरपदहै ॥ ता भ्रमरपदकावाच्यअर्थ मधुकरव्यक्तिहै ॥ इसप्रकार व्याकरणशास्त्रविषे पाचकादिकपदोंविषे शक्तिआदिकवृत्तियां कथनकरी हैं ॥ और तेव्याकरणशास्त्रकेकर्तापुरुष पुनःयाप्रकारकेपदार्थोंकाकथनकरैहै ॥ श्वकः इत्यादिकपदोंविषे प्रकृतिअर्थ प्रधानहोवैहै ॥ और पाचकः इत्यादिकपदोंविषे प्रत्ययकाअर्थ प्रधानहोवैहै ॥ और कर्ता कर्म करण संप्रदान अपादान अधिकरण यहषट्प्रकार केकारकहोवैहैं ॥ और पचादिकधातुवोंकेअर्थकानाम क्रियाहै ॥ और तंडुलादिकपदार्थोंकानाम कर्महै ॥ और पचादिकधातु सक र्मकधातुहैं ॥ और भूवादिकधातु अकर्मकधातुहैं ॥ और यहणिच्प्रत्यय प्रयोजकपुरुषकेव्यापारकाकथनकरैहै ॥ और यहप्रत्यय प्रयोज्यपुरुषकेव्यापारकाकथनकरैहै ॥ और यहप्रकृतिप्रत्ययदोनों इकठेहीउच्चारणकरनेजावैहैं ॥ और सु औ जस् इत्यादिक प्रत्ययोंकानाम सुप्प्रत्ययहै ॥ तेसुप्प्रत्यय जिसपदकेअंतविषेहोवैहैं ताकानाम सुबंतपदहै ॥ और तिप् तस् झि इत्यादिक प्रत्ययोंकानाम तिङ् प्रत्ययहैं ॥ तेतिङ्प्रत्यय जिसपदकेअंतविषेहोवैहैं ताकानाम तिङंतपदहै ॥ और येसुप्तिङ्प्रत्यय जहां विद्यमानहोवैहैं ॥ तहां दूसराकोईप्रत्यय प्राप्तहोइसकैनहीं ॥ और यहताद्धितप्रत्ययहैं ॥ और यहकृदंतप्रत्ययहै ॥ और यहकृ त्यप्रत्ययहै ॥ और अव्ययीभाव तत्पुरुष द्विगु द्वंद्व कर्मधारय बहुव्रीहि यहषट्प्रकारकासमासहै ॥ और यहनामधातुहै ॥ और यहस्त्रीप्रत्ययहै ॥ और यहप्रत्यय भावविषेहै ॥ और यहप्रत्यय कर्ताविषेहै ॥ इसतेंआदिलेके व्याकरणशास्त्रविषे अनेकप्रका रकेशब्द कथनकरैहैं ॥ तेसंपूर्णशब्द अनात्मपदार्थोंकाबोधनकरैहैं ॥ याकारणतें तिनशब्दोंकेचिंतनकरणेतें यहअधिकारीपुरुष परममोहकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब जैमिनिऋषिकृत पूर्वमीमांसाशास्त्रकेपदार्थोंकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां ककारादिकवर्णोंकेसमुदाय कानामपदहै ॥ और तिनपदोंकेसमुदायकानाम वाक्यहै ॥ और ॥ ज्योतिष्टोमेनयजेतस्वर्गकामः ॥ इत्यादिकवाक्योंविषे

स्थितजोपदहैं ॥ तेपद एकदूसरेकापरित्यागकरिकै शाब्दबोधकूंउत्पन्नकरैंनहीं ॥ याकारणतें तेपद परस्पर आकांक्षावालेहैं ॥ और ॥ ज्योतिष्टोमेनयजेतस्वर्गकामः ॥ यावाक्यविषेस्थितजोपदोंकासमूहहै ॥ तथा ॥ उद्भिदायजेत ॥ यावाक्यविषेस्थित जोपदोंकासमूहहै ॥ तिनदोनोंसमूहोंकूं परस्परआकांक्षाहैनहीं ॥ यातें तेदोनोंवाक्य परस्परभिन्नहैं ॥ और एकवारउच्चारणकऱ्याहुआपद तथावाक्य एकहीअर्थकूंबोधनकरैहै ॥ और जिसस्थलविषे सोपद तथावाक्य दूसरेभीअर्थकूंबोधनकरैहै ॥ तहां वाक्यभेदकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जैसे मायाविशिष्टपरमात्मातें आकाशादिकभूत उत्पन्नहोवैंहैं ॥ तैसे ककारखकारादिकवर्णभी उत्पन्नहोवैंहैं ॥ याप्रकार उत्तरमीमांसावालेकथनकरैहैं ॥ और पूर्वमीमांसावालेतौ याप्रकारका कथनकरैहैं ॥ ककारादिकवर्ण विभूहैं तथानित्यहैं ॥ यातें तिनोंका उत्पत्तिनाश संभवैनहीं ॥ शंका ॥ ककारादिकवर्ण जोनित्यहोवैं तौ तिनककारादिकवर्णोंकी सर्वदाप्रतीतिहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ जैसे आकाशविषेविद्यमानहुएभीनक्षत्र दिनविषेप्रतीतहोवैंनहीं ॥ किंतु रात्रिविषे तेनक्षत्र प्रतीतहोवैंहैं ॥ यातैं रात्रि तानक्षत्रोंकाअभिव्यंजकहै ॥ तैसे सर्वदाविद्यमानहुएभी ककारादिकवर्ण कंठतालुआदिकोंकेसंबंधतें विना प्रतीतहोवैंनहीं ॥ किंतु कंठतालुआदिकोंकेसंबंधतेंअनंतरही तेककारादिकवर्ण प्रतीतहोवैंहैं ॥ यातें अंतरवायुकरिकैसंबद्ध जे उर कंठ शिर जिह्वामूल दंत नासिका ओष्ठ तालु येअष्टस्थानहैं ॥ तथा स्पृष्टादिकजेप्रयत्नहैं ॥ तेसंपूर्ण तिनककारादिकवर्णोंकेअभिव्यंजकहैं ॥ याप्रकार तिनस्थानोंकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुए तेककारादिकवर्ण जबी श्रोतापुरुषकेश्रवणविषेप्राप्तहोवैंहैं ॥ तबी तेककारादिकवर्ण पदसंज्ञाकूं तथावाक्यसंज्ञाकूं प्राप्तहोवैंहैं ॥ और तिनपदोंके तथावाक्योंके अंत्यविषेस्थितजोवर्णहै ॥ सोवर्णही पूर्ववर्णोंकेअनुभवजन्यसंस्कारोंकरिकै सहकृतहुआ पदार्थज्ञानका तथावाक्यार्थज्ञानका कारणहोवैहै ॥ और पदोंकेसाथ तथावाक्योंकेसाथ जोअर्थका बोध्यबोधकभावसंबंधहै सोसंबंध नित्यहै ॥ और सोबोध्यबोधकभावसंबंध घटादिकपदोंका घटत्वादिकजातियोंविषेही है ॥ यातें घटादिकशब्दोंतें घटत्वादिकजातियोंकाही शाब्दबोधहोवैहै ॥ और घटादिकव्यक्तियोंकाज्ञान अर्थापत्तिरूपआक्षेपतेंहोवैहै ॥ और ॥ ज्योतिष्टोमेनयजेतस्वर्गकामः ॥ इत्यादिकवाक्योंविषेस्थितजेपदहैं ॥ तेपद आपणेआपणे

अर्थोंका स्मरणकरावैहैं ॥ याकारणतैं तेपद अभिधायकहैं ॥ यद्यपि वाक्यार्थकेज्ञानवासतेही तिनपदोंकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ तथापि पदार्थोंकेज्ञानतैंविना वाक्यार्थकाज्ञानहोवैनहीं ॥ यातैं तेपद आपणेआपणेअर्थकाभी अवश्यबोधनकरैहैं ॥ और सत् चित् आनंदरूपआत्माहै ॥ इत्यादिकवाक्योंविषेस्थितजेपदहैं ॥ तिनपदोंनैं स्मरणकरायेजेआपणेआपणेअर्थहैं ॥ तेअर्थही परस्परसंबंधरूपवाक्यार्थकूं बोधनकरैहैं ॥ और जितनेपदार्थोंकी परस्परआकांक्षाहोवैहै ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंका तिसवाक्यार्थविषेसंबंधहोवैहै ॥ और कर्ता कर्म इत्यादिकपदार्थोंकेविद्यमानहुएभी क्रियापदार्थतैंविना वाक्यार्थकीपूर्णताहोवैनहीं ॥ यातैं क्रियापदार्थही वाक्यार्थकीपूर्णताकरैहै ॥ और जोवाक्य दूसरेवाक्यकीअपेक्षानहींकरैहै ताकानाम वाक्यहै ॥ याकारणतैं एकवाक्यविषेएकहीक्रियापदहोवैहै ॥ एकवाक्यविषे अनेकक्रियापदहोवैंनहीं ॥ और जहां एकवाक्य दूसरेवाक्यकीअपेक्षाकरैहै ॥ तहां प्रकरणरूपप्रमाणहोवैहै ॥ और तिनक्रियापदघटितवाक्योंविषेभी लिङ् लोट् लेट् तव्यादिककृत्यप्रत्यय येसंपूर्णप्रत्यय विधिकाबोधनकरैहैं ॥ और लोकविषे तथावेदविषे जोपदार्थ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैज्ञातनहींहोवैहै ॥ सोअज्ञातपदार्थही लिङादिकविधिप्रत्ययोंकाअर्थहोवैहै ॥ और अपौरुषेयवाक्योंकेसमूहकानाम वेदहै ॥ सोवेदभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ मंत्रभागरूप वेदहोवैहै ॥ और दूसरा ब्राह्मणभागरूप वेदहोवैहै ॥ और विधिवाक्योंकेयज्ञादिरूपअर्थकीस्तुतिकरिकै जेवेदवाक्य अधिकारीपुरुषोंकूंतिनयज्ञादिककर्मोंविषे प्रवृत्तकरैहैं ॥ तेवेदकेवाक्य अर्थवादरूपहोवैहैं ॥ सोअर्थवादभी तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ गुणवाद ॥ दूसरा अनुवाद ॥ तीसरा भूतार्थवाद ॥ और जिसवाक्यविषे क्रियापदनहींहोवै ॥ तिसवाक्यविषे पूर्ववाक्यतैं अथवा उत्तरवाक्यतैं क्रियापदकाअनुषंगकरणा ॥ इसप्रकार जिसवाक्यविषे कर्ताकर्मादिककारकोंकेवाचकपद नहींहोवैं॥ तिसवाक्यविषेभी पूर्वउत्तरवाक्योंतैं तिनपदोंकाअनुषंगकरणा ॥ और जिसवाक्यविषे जोपद अपेक्षितहोवै ॥ और सोपद जोकदाचित् पूर्वउत्तरवाक्योंविषेहोवैनहीं ॥ तौ तिसवाक्यविषे तापदका अध्याहारकरणा ॥ और आकांक्षायोग्यतादिकोंकेवशतैं पदोंका तथावाक्योंका परस्पर व्यत्ययभावकरणा ॥ और पदोंका जोअर्थकेसाथसंबंधहै ॥ सो लोकविषे वृद्धपुरुषोंकेव्यवहारकरिकै जान्याजावैहै ॥ यातैं जेलौकिकशब्दहैं

तेहीवैदिकशब्दहैं ॥ और यद्यपि लोकविषे तथावेदविषे पदोंकी तथापदार्थोंकी समानताहीहै ॥ तथापि वेदविषे वाक्योंकाअर्थ
अपूर्वहीहोवैहै ॥ तहां पूर्वकांडकेवाक्योंका धर्मरूपअर्थ है॥ और उपनिषद्रूपउत्तरकांडकेवाक्योंका अद्वितीयब्रह्मरूपअर्थहै ॥
तेदोनों प्रत्यक्षादिकलौकिकप्रमाणोंकरिकैज्ञातनहींहै ॥ यातैं तेदोनों अपूर्वहैं ॥ और विधिवाक्योंका जोयज्ञादिरूपअर्थहै ॥ ता
अर्थकीस्तुतिकरिकै तथातिसअर्थतैंभिन्नअर्थकीनिंदाकरिकै अर्थवादरूपवचन ताअर्थविषे अधिकारीपुरुषोंकीप्रवृत्तिकरावैहै ॥
और मंत्ररूपवचन देवतादिकोंकास्मरणकरावैहै ॥ यातैं तेअर्थवाद तथामंत्र विधिवाक्यकेअर्थविषेही प्रमाणहैं ॥ और ते विधि
वाक्यभी चारप्रकारकेहोवैहैं ॥ एकतौ विनियोगविधिहोवैहै ॥ और दूसरा प्रयोगविधिहोवैहै ॥ और तीसरा उत्पत्तिविधिहो
वैहै ॥ और चतुर्थ अधिक्रियाविधिहोवैहै ॥ और भावनाकूंप्रतिपादनकरणेहारा जोविधिवाक्यहोवैहै ॥ तावाक्यकेअर्थविषेसा
धन साध्य इतिकर्तव्यता येतीनों उपयोगीहोवैहैं ॥ और स्वर्गकामोयजेत ॥ यावाक्यकेअर्थज्ञानतैंअनंतर तिनयज्ञादिकक
र्मोंकेअनुष्ठानतैं धर्मरूपअपूर्व उत्पन्नहोवैहै ॥ जिसधर्मरूपअपूर्वकरिकै यापुरुषकूं स्वर्गकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और तेवेदप्रतिपादित
कर्मभी दोप्रकारकेहोवैहैं ॥ एकतौ प्राकृतकर्महोवैहैं ॥ और दूसरे वैकृतकर्महोवैहैं ॥ तहां यहकर्म इसीप्रकारकरणा याप्रकार
विधानकऱ्याहुआकर्म प्राकृतकर्महोवैहै ॥ और यहकर्म इसकर्मकीन्यांईकरणा याप्रकार विधानकऱ्याहुआकर्म वैकृतकर्महोवैहै ॥
और शब्दांतर अभ्यास संज्ञा संख्या गुण प्रकरणांतर इनोंकरिकै तेकर्म भिन्नभिन्नहोवैहैं ॥ तिनकर्मोंविषेभी कोईकर्मअंगरू
पहैं ॥ और कोईकर्म अंगीरूपहैं ॥ तिनकर्मोंकेअंगअंगीभावविषे श्रुति लिंग वाक्य प्रकरण स्थान समाख्या येषट्प्रमाणहैं ॥
और तिनकर्मोंकेअंगअंगीभावकेनिश्चयतैंअनंतर इयत्तारूपपरिमाण श्रुति अर्थ पाठ स्थान मुख्य प्रवृत्ति याषट्प्रमाणोंकरिकैजा
न्याजावैहै ॥ कैसाहैसोकर्मोंकापरिमाण? पत्नीकरिकैयुक्तजे त्रैवर्णिकअधिकारीपुरुषहैं ॥ तिनोंविषे एककरिकै तथा अनेकोंकरिकै
व्यवस्थापूर्वक करणेयोग्यहै ॥ और यज्ञादिककर्मोंविषे उपयोगीजेद्रव्यहैं तथादेवताहैं ॥ तिनोंकूंदेखकै विवेकीपुरुषनैं यहकर्म
इसकर्मकाविकृतिहै याप्रकार यज्ञादिककर्मोंका परस्पर प्रकृति विकृतिभाव निश्चयकरणा ॥ और विकृतियज्ञोंविषे बुद्धिमान्

पुरुषोंनें पदादिकोंकीऊहाकरणी ॥ और सर्वकर्मोंकेपूर्णहुए ताविकृतिकर्मोंविषे प्रकृतिकर्मोंकेअंगोंका निवृत्तिरूपबाध जानणा ॥ और जहां अन्यकिसीवासतेकऱ्याजोअंग ताअंगकरिकै किसीअन्यकाहीउपकारहोवै ताकानामप्रसंगहै ॥ और एकवारकऱ्याहुआजोकर्म नानाकर्मोंकाअंगरूपहोवैहै ताकानाम तंत्रहै ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेपदार्थ पूर्वमीमांसाविषे जैमिनिऋषिनें कथनकरेहैं ॥ तिनपदार्थोंकाअभ्यासकरिकै इदानींकालकेपुरुष आपणेकूंपंडितमानैहैं ॥ और विद्वानोंकीसभाविषेस्थितहोइकै तेपुरुष तिनपूर्वमीमांसाकेपदार्थोंकाकथनकरैहैं ॥ और तेपुरुष अभिमानकरिकै याप्रकारकेवचन कहैहैं ॥ उत्तरमीमांसाकूंभी हमही जाणतेहैं ॥ उत्तरमीमांसाविषे ब्रह्मकेज्ञानतैं मोक्षकीप्राप्तिकहीहै ॥ और ताब्रह्मज्ञानकेप्राप्तिविषे यज्ञादिककर्मोंतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेसाधन कहेहैं॥ तिनसंपूर्णोंकूं हम भलीप्रकारजाणतेहैं॥ याप्रकार मीमांसाशास्त्रकेअनात्मपदार्थोंकाचिंतनकरिकै तेबहिर्मुखपुरुष नानाप्रकारकेव्यामोहकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ अब गौतमऋषिकृत न्यायशास्त्रकेपदार्थोंकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां प्रतिज्ञा हेतु उदाहरण यातीनअवयवोंकासमुदायरूपजोवाक्यहै॥ ताकरिकै परार्थअनुमानहोवैहै ॥ याप्रकार मीमांसकमानैहैं॥ और उदाहरण उपनय यादोअवयवोंका समुदायरूपजोवाक्यहै ॥ ताकरिकै परार्थअनुमानहोवैहै ॥ याप्रकार बौद्धमानैहैं ॥ येदोनोंमतअसंगतहैं॥ किंतु प्रतिज्ञा हेतु उदाहरण उपनय निगमन यापंचअवयवोंकासमुदायरूपजोवाक्यहै ताकरिकैही परार्थअनुमानहोवैहै ॥और तेनैयायिक दूसरेशास्त्रवाले पुरुषोंकेमतविषे याप्रकारकेदूषणकहैहैं ॥ तुमारेमतविषे यहआत्माश्रयरूपतर्क प्राप्तहोवैहै ॥ और तुमारेमतविषे यहअन्योन्याश्रयरूपतर्क प्राप्तहोवैहै ॥ और तुमारेमतविषे यहचक्रिकारूपतर्क प्राप्तहोवैहै ॥ और तुमारेमतविषे यहअनवस्थारूपतर्क प्राप्तहोवैहै ॥ और तुमारेमतविषे यहव्याघातरूपतर्क प्राप्तहोवैहै ॥ और तुमारेमतविषे यहप्रतिबंदीरूपतर्क प्राप्तहोवैहै ॥ और यह तुमारातर्क इष्टापत्तिरूपदूषणकरिकैग्रस्तहै यातैंअसत्यहै ॥ और यहतुमारातर्क प्रतिवादीकेअनिष्टकूंकरतानहीं यातैंअसत्यहै ॥ और यहतुमारातर्क व्याप्तितैंरहितहै यातैंअसत्यहै ॥ और यहतुमारातर्क विपरीतहै यातैंअसत्यहै ॥ और यहतुमारातर्क अनुग्राहकप्रमाणतैंरहितहै यातैंअप्रयोजकहै ॥ और यहतुमाराहेतु व्याप्तिपक्षधर्मतातैंरहितहै यातैं हेत्वाभासहै ॥ और यहतुमारासाध्य

आश्रयतैंरहितहै तथा प्रसिद्धितैंरहितहै ॥ और यातुमारेअनुमानविषे कोईदृष्टांतसमीचीननहीं ॥ और याअनुमानविषे तुमनैं उदाहरण व्यर्थकह्याहै ॥ और याअनुमानविषे तुमनैं निगमन व्यर्थकह्याहै ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेअनात्मपदार्थ न्याय शास्त्रविषे कथनकरेहैं ॥ हेजनक! इसप्रकार व्याकरणशास्त्रविषे तथा पूर्वमीमांसाविषे तथा न्यायशास्त्रविषे अनेकप्रकारकेअनात्मपदार्थोंकाकथनकर्याहै ॥ तिनअनात्मपदार्थोंविषेआसक्तिकरिकै इदानींकालकेबहिर्मुखपुरुष याप्रकारकेवचनकहेहैं ॥ यासंपूर्ण अर्थकूंहमहीजाणतेहैं ॥ हमारेतैंविना दूसराकोईपुरुष याअर्थकूंजाणतानहीं ॥याप्रकार आपणेकूंसर्वतैंउत्कृष्टमानिकै तेबहिर्मुखपुरुष व्यर्थहीक्रोधकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ जैसे अनेकश्वानोंकरिकैवेष्टितहुआश्वान क्रोधकरिकै आपणेदांतोंकूंदिखावै ॥ तैसे क्रोधकरिकैयुक्तहुए तेबहिर्मुखपुरुषभी आपणेदांतोंकूंदिखावैहैं ॥ और हेजनक! वेदांतशास्त्रकेविचारकापरित्यागकरिकै जेपुरुष पूर्वउक्तअनात्मशास्त्रोंकाविचारकरैहैं ॥ तेपुरुष यद्यपि लोकविषे शास्त्रवेत्ताकहेजावैहैं ॥ तथापि तिनपुरुषोंविषे इतरजीवोंतैं किंचित्मात्रभीविशेषतानहीं ॥ काहेतैं? यालोकविषे जितनेदेहधारीजीवहैं ॥ तिनोंविषे क्षुधा पिपासा निद्रा भय इत्यादिकधर्म समानहीहैं ॥ और जोतुमयहकहो ॥ अनात्मशास्त्रोंकेविचारकरणेहारेपुरुष दूसरेजीवोंतैं अधिकसंभाषणकरैहैं ॥ याकारणतैं दूसरेजीवोंतैंतिनोंविषेविशेषताहै ॥ सोयहतुमाराकहणाभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं? बहुतबोलणेकरिकै क्रोष्टुनामकूंप्राप्तभयेजेशृगालहैं ॥ तिनशृगालोंतैं तिनबहिर्मुखपुरुषोंविषे विशेषतासंभवैनहीं ॥ किंतु बहुतभाषणकरणेहारे तेबहिर्मुखपुरुष शृगालोंकेहीसमानहैं ॥ और हेजनक! अनात्मपदार्थोंकाविचारकरणेहारे जेबहिर्मुखपुरुषहैं ॥ तेबहिर्मुखपुरुष ब्रह्मचिंतनकरणेहारेविद्वान्पुरुषोंका विनाहीप्रयोजनतैं निरादरकरैहैं ॥ तथा शास्त्रकेव्याख्यानकरणेहारे महात्मापुरुषोंकाउपहासकरैहैं ॥ और जैसे यालोकविषे कोईदुर्जनपिशुनपुरुष दोषतैंरहितमहात्मापुरुषोंविषे दोषोंकाआरोपणकरिकै तिनदोषोंकाकथनकरैहैं॥ तैसे अनात्मपदार्थोंकेविचारकरिकै अत्यंतअभिमानकूंप्राप्तहुए तेबहिर्मुखपुरुष ऋषियोंविषेभी याप्रकारकेदोष आरोपणकरैहैं ॥ तैसे पाणिनिऋषिनैं यहजोसूत्ररचाहै ॥ सो विचारतैंविनाहीरचाहै ॥ और जैमिनिऋषिनैं यहजोसूत्ररचाहै ॥ सो विचारतैंविनाहीरचाहै ॥ और व्यासभगवान्नैं यहजोसूत्ररचाहै ॥

सो विचारतैंविनाहीरचाहै ॥ काहेतैं? पूर्वसूत्रकरिकै अथवा उत्तरसूत्रकरिकै याअर्थकीसिद्धिहोइसकैहै ॥ यातैं यहसूत्रव्य र्थहीहै ॥ और यहवेदकावचन उन्मत्तपुरुषकेवचनकीन्यांई असंगतप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ यहवचनपरमेश्वर करिकैरचितनहीं ॥ किंतु यहवचन किसीधूर्तपुरुषनैं वेदविषेपायाहै ॥ यातैं यहवचन व्यर्थहै ॥ अथवा यहवचन परमेश्वर करिकैरचितहै यातैंव्यर्थनहीं ॥ किंतु सार्थकहै ॥ परंतु यावचनकेअर्थकूं एकमैंही जाणताहूं ॥ मेरेतैंविना दूसराकोई पुरुष यावचनकेअर्थकूंजाणतानहीं ॥ याप्रकार तेबहिर्मुखपुरुष जिनऋषियोंके शास्त्रोंकूंपडिकै बुद्धिमान्होवैहैं तिनऋषियोंविषेही ना नाप्रकारकेदूषणोंकाआरोपणकरैहैं ॥ और वेदकेपाठकूंश्रवणकरिकै तेबहिर्मुखपुरुष याप्रकारकेवचनकहेहैं ॥ इहां यहस्वर चाही ताथा ॥ और इहां यहवर्ण चाहीताथा ॥ और इहांयहपद चाहीताथा ॥ और इहां यहक्रम चाहीताथा ॥ तेस्वरवर्णादिक इन ब्राह्मणोंनैं उच्चारणकरेनहीं ॥ यातैं इनब्राह्मणोंनैं वेदोंकूंही नष्टकरिदियाहै ॥ याप्रकार तेबहिर्मुखपुरुष वेदपाठकसाधुब्राह्मणोंकी भीनिंदाहीकरैहैं ॥ और तेबहिर्मुखपुरुष पुनःयाप्रकारकेवचन कहैहैं ॥ शास्त्रकेविचारविषे जैसीहमारीबुद्धितीक्ष्णहै ॥ तैसीतीक्ष्ण बुद्धि हमारेगुरुकीभीनहीं ॥ और ब्रह्माकीभी ऐसीतीक्ष्णबुद्धिनहीं है॥ तथा अन्यविद्वान्पुरुषोंकीभी ऐसीतीक्ष्णबुद्धि नपूर्वभईहै नअबीवर्तमानहै नआगेहोवैगी ॥ और जैसे समुद्रतैं नानाप्रकारकीलहरियां उत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे मेरेमुखरूपीसमुद्रतैं व्याकरण मीमांसा न्यायशास्त्रकेअनुसार नानाप्रकारकीविचित्रवाणियां निकसैहैं ॥ हेजनक! जैसे भारकरिकैआतुरहुआगर्दभ नानाप्रकार केशब्दोंकूंकरैहै ॥ तैसे अनात्मशास्त्ररूपभारकरिकैआतुरहुए तेबहिर्मुखपुरुष नानाप्रकारकेशब्दोंकूंउच्चारणकरैहैं ॥ याकारणतैं तेबहिर्मुखपुरुष अत्यंतदुर्जनहैं ॥ और हेजनक! यालोकविषे स्त्री पुत्र धन इत्यादिकपदार्थोंकात्यागकरणा यद्यपि अत्यंतकठिन है ॥ तथापि कोईपुरुष तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकूंधारणकरिकैभी विद्यादिकोंकेअभिमान कापरित्यागकरतेनहीं ॥ हेजनक! जैसे यालोकविषे कोईभारवाहीपुरुष आपणेमस्तकऊपरिस्थित जोदधिओदनादिकअन्नका भारहै ॥ जिनअन्नादिकोंकेभक्षणकरिकै क्षुधादिकोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ ऐसे अन्नरूपभारकापरित्यागकरिकै पाषाणकाभारआपणे

मस्तकऊपरिउठावै ॥ सोभारवाहीपुरुष अत्यंतमूढबुद्धिहै ॥ तैसे सुखकेसाधन जेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थहैं तिनोंकापरित्यागकरि कै संन्यासआश्रमकूंधारणकरिकैभी जेपुरुष विद्याआश्रमादिकोंकेअभिमानरूपभारकूंउठावैहैं ॥ तेपुरुषभी अत्यंतमूढबुद्धिजानणे ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं आपणेकल्याणकरणेकीइच्छाहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष वेदांतशास्त्रकेविचारकूंछोडिकै दूसरे अनात्मशास्त्रोंकाविचार कदाचित्भीनहींकरै ॥ काहेतें? सोअनात्मपदार्थोंकाविचार यापुरुषकेवाकादिकइंद्रियोंकूं केवलपरिश्रमकीहीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तथाअभिमानकीउत्पत्तिकरणेहाराहै ॥ तहांश्रुति ॥ नानुध्यायाद्बहूञ्छब्दान्वाचोविग्लापनंहितत् ॥ अर्थयह ॥ बहुतअनात्मपदार्थोंकाचिंतन यापुरुषकेवाकादिकइंद्रियोंकूं परिश्रमकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ याकारणतैं यहअधिकारीपुरुष तिनअनात्मपदार्थोंकाचिंतन नहींकरै ॥ किंतु यहअधिकारीपुरुष निरंतर वेदांतशास्त्रकाहीचिंतनकरै ॥ हेजनक! जैसे लोकप्रसिद्धगौ आपणेचारिस्तनोंकरिकै वत्सकीतृप्तिकरैहै ॥ तैसे स्वाहाकार वषट्कार स्वधाकार हंतकार याचारिस्तनोंकरिकै देवता ऋषि पितर मनुष्यादिक यासंपूर्णोंकीतृप्तिकरणेहारी जोयहवेदकीवाणीरूपकामधेनुगौहै ॥ तावाणीरूपधेनुकूं जेपुरुष अभिमानादिकविकारोंतैंरहितहोइकै प्रसन्नकरैहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकेतांईही सावाणीरूपकामधेनु मोक्षरूपदुग्धकीप्राप्तिकरैहै ॥ और अभिमानादिकविकारोंकरिकैयुक्तहुए जेपुरुष तावेदवाणीरूपकामधेनुकूं ग्लानिकीप्राप्तिकरैहैं ॥ तिनअभिमानीपुरुषोंकेतांई सावेदवाणीरूपकामधेनु मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ यातैं यामनुष्यलोकविषे ऐसाकौनविवेकीपुरुषहै जो वेदवाणीरूपकामधेनुकूं ग्लानिकीप्राप्तिकरै? किंतु आत्मविचारतैंरहित बहिर्मुखपुरुषही तावेदवाणीरूपकामधेनुकूं ग्लानिकीप्राप्तिकरैहै ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष तावेदवाणीरूपकामधेनुकीप्रसन्नताकरणेवासते याप्रकारकाउपायकरै ॥ अद्वितीयब्रह्मरूपआत्माविषे आपणेमनकूंएकाग्रकरिकै नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकेसंपूर्णव्यापारोंकापरित्यागकरै ॥ याप्रकारकेउपायकरिकै प्रसन्नताकूंप्राप्तहुई सावेदवाणीरूपकामधेनु याअधिकारीपुरुषकेतांई मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिकरैहै ॥ इतनेकरिकै निर्गुणब्रह्मविषे मनकीएकाग्रताकाप्रकार निरूपणकऱ्या ॥ अब सगुणब्रह्मविषेमनकीएकाग्रताकाप्रकार निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यहमन अत्यंतचंचलहै ॥ यातैं निर्गुणब्रह्मविषे

ताचंचलमनकालयरूपनिग्रहकरणेविषे जोतू समर्थ नहींहोइसकै तौ तुमारेतांई सगुणब्रह्मकाअभेदचिंतनरूप दूसराउपाय मैंकथनकरताहूं ॥ ताउपायकूं तू सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ हेजनक! पूर्व हमनैं तुमारेप्रति प्राणइंद्रियोंकासाक्षीरूपकरिकै जोपरमात्मादेव कथनकऱ्याथा ॥ जोपरमात्मादेव बुद्धिकेतादात्म्यसंबंधकरिकै विज्ञानमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपरमात्मा देव सर्वप्राणियोंकेहृदयदेशविषेस्थितहै ॥ और जिसपरमात्मादेवविषे यहविज्ञानमयजीव सुषुप्तिअवस्थामें अभेदभावकूंप्राप्त होवैहै ॥ सोपरमात्मादेव सर्वत्रपरिपूर्णहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं महान् यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और सोपरमात्मादेव जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं अज यानामकरिकैक थनकरैहै ॥ और जैसे यालोकविषे मंत्रसिद्धिवालेपुरुषके संपूर्णप्राणीवशवर्तीहोवैहैं ॥ तैसे तामायाविशिष्टपरमात्मादेवके संपू र्णभूतभौतिकजगत् वशवर्तीरहैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं वशी यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ अथवा जैसे पुत्रोंविषेस्नेहवान्जामाताहै ॥ तामाताकूं तेपुत्र आपणेवशकरिलेवैहैं ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी सर्वजीवोंकेहृदयदेशकापरित्याग करिकै कहांजावैनहीं ॥ यातैं संपूर्णजीवोंनैं तापरमात्मादेवकूं आपणेवशकऱ्याहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं वशी यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और जैसे यालोकविषे कोईगृहीपुरुष आपणेस्त्रीपुत्रादिककुटुंबकूं आपणीआज्ञाविषेचलावैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी संपूर्णजगत्कूं आपणीआज्ञाविषेचलावैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं ईशान यानामक रिकैकथनकरैहै ॥ और जैसे सूर्यभगवान् यासर्वजगत्कापालनकरैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी फलप्रदातारूपकरिकै सर्वजगत् कापालनकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं अधिपति यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और हेजनक! जैसे यालोक विषे पुण्यवान्पुरुष तापुण्यकर्मोंकरिकै यशआदिकोंकूंप्राप्तहोइकै वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपपरमात्मादेव पुण्यक र्मकरिकै वृद्धिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जैसे यालोकविषे पापीपुरुष तिनपापकर्मोंकरिकै अयशआदिकोंकूंप्राप्तहोइकै लघुताकूं प्रा प्तहोवैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेव पापकर्मकरिकै लघुताकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ हेजनक! वास्तवतैं पुण्यपापतैंरहित तथाविषमतातैं रहित

जोयहपरमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेवही महाराजाकीन्यांई संपूर्णजगतकूं आपणेआज्ञाविषेचलावैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगव
ती तापरमात्मादेवकूं सर्वेश्वर यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और सूर्यभगवान्कीन्यांई यहपरमात्मादेवही सर्वभूतोंकाराजाहै ॥ या
कारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं भूताधिपति यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और जैसे माताआपणेपुत्रोंकापालनकरैहै ॥ तै
से यहपरमात्मादेवही सर्वभूतप्राणियोंकापालनकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं भूतपाल यानामकरिकैकथन
करैहै ॥ और जैसे यालोकविषे नदीकेपारलेकिनारेके तथाओरलेकिनारेके मध्यविषेस्थित जोकाष्ठमृत्तिकादिकोंकरिकैरचाहुआसे
तुहै ॥ सोसेतु नदीकेजलोंकीमर्यादाकूंधारणकरैहै ॥ तैसे यहस्वयंज्योतिपरमात्मादेवही भूरादिकलोकोंकी तथावर्णआश्रमकेधर्मों
की मर्यादाकूंधारणकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं सेतु यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरि
कैनिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! सालोकविषे यहपरमात्मादेव जोकदाचित् जगत्केमर्यादाकूं व्यवस्थापननहींकरै तौ पृथिवी ज
ल तेज वायु आकाश यहपंचभूत आपणेआपणेमर्यादाकापरित्यागकरिकै संपूर्णजगत्केप्रलयकरणेविषे जोकदाचित् प्रवृत्तहोवैं
तौ तापरमात्मादेवतैंविना दूसराकौनपुरुष तिनपृथिवीआदिकभूतोंकूं निवारणकरैगा? किंतु यहपरमात्मादेवही तिनभूतोंकूंआ
पणीआपणीमर्यादाविषे स्थापनकरिरह्याहै ॥ और हेजनक! यापृथिवीलोकविषे जेप्रियव्रतादिकक्षत्रियराजेहैं ॥ कैसेहैंतेराजे?
महान्हैप्राक्रमजिनोंका ॥ तथा अग्निकेसमानहैतेजजिनोंका ॥ तथा शस्त्रअस्त्रविद्याविषे जेराजे अत्यंतकुशलहैं॥ तथा यापृथिवी
लोकविषे जिनराजोंतैंकोईअधिकबलवान्नहींहै॥ ऐसे महाबलवान्प्रियव्रतादिकराजे जोकदाचित् आपणेधर्ममर्यादाकापरित्याग
करिकै प्रजाकेअनर्थकरणेविषेप्रवृत्तहोवैं तौ सर्वज्ञपरमात्मादेवतैंविना दूसराकौनपुरुष तिनराजोंकूंनिवारणकरैगा ? किंतु यहपर
मात्मादेवही तिनराजोंकूं आपणेधर्ममर्यादाविषे स्थापनकरिरह्याहै ॥ और हेजनक ! वरशापदेणेविषेसमर्थ जेदुर्वासादिकक्रोधी
ब्राह्मणहैं ॥ तेब्राह्मण जोकदाचित् शापदेकै तीनलोकोंकेभस्मकरणेविषेप्रवृत्तहोवैं तौ यापरमात्मादेवतैंविना दूसराकौनपुरुषति
नब्राह्मणोंकूं निवारणकरिसकैगा? किंतु यहपरमात्मादेवही तिनब्राह्मणोंकूं आपणीमर्यादाविषे स्थापनकरिरह्याहै ॥ और हेज

नक! यालोकविषे सर्पकीन्यांई क्रोधवान्जोसिंहादिकतामसीजीवहैं ॥ तेतामसीजीव जोकदाचित् आपणेमर्यादाकापरित्यागकरि कैसर्वप्राणियोंके हिंसाकरणेविषेप्रवृत्तहोवैं तौ सर्वज्ञपरमात्मादेवतैंविना दूसराकौनपुरुष तिनसिंहादिकोंकूंनिवारणकरैगा? किंतु यहपरमात्मादेवही तिनसिंहादिकतामसीजीवोंकूं आपणीआपणीमर्यादाविषेस्थापनकरिरह्याहै ॥ और हेजनक! अगाधहै जलजिनोंविषे ऐसेजेक्षारसमुद्रतैंआदिलैकेसप्तसमुद्रहैं ॥ तेसमुद्र आपणेआपणेमर्यादाकापरित्यागकरिकै जोकदाचित् संपूर्ण जगत्केप्रलयकरणेविषेप्रवृत्तहोवैं तौ यापरमात्मादेवतैंविना तिनसमुद्रोंकूं दूसराकौनपुरुष निवारणकरैगा? किंतु यहपरमात्मादेवही तिनसमुद्रोंकूं आपणीआपणीमर्यादाविषेस्थापनकरिरह्याहै ॥ और हेजनक! श्रीगंगातैंआदिलैकेजेनदियोंकेजलहैं ॥ तेजल आपणेमर्यादाकापरित्यागकरिकै जोकदाचित् उलटाहीगमनकरैं तौ तिनजलोंकूं सर्वज्ञपरमात्मातैंविना दूसराकौनपुरुष निवारणकरैगा? किंतु यहपरमात्मादेवही तिनजलोंकूं आपणेआपणेमर्यादाविषेचलावैहै ॥ और हेजनक! ब्रह्मांडकेभारकरि कैयुक्त जोयहपृथिवीहै ॥ सापृथिवी जलकेऊपरिस्थितहै ॥ जोकदाचित् सापृथिवी आपणेमर्यादाकापरित्यागकरिकै ताजल विषेप्रवेशकरणेकीइच्छाकरै तौ सापृथिवीकूं सर्वज्ञपरमात्मादेवतैंविना दूसराकौनपुरुष निवारणकरैगा? ॥ किंतु यहपरमात्मादेवही तापृथिवीकूं आपणेमर्यादाविषे स्थापनकरिरह्याहै ॥ और हेजनक! आकाशविषेस्थित जेसूर्यचंद्रादिकहैं ॥ तेसूर्यादिकआपणेमर्यादाकापरित्यागकरिकै जोकदाचित् नीचेपृथिवीविषे पतनहोवैं तौ तिनसूर्यादिकोंकूं यापरमात्मादेवतैंविना दूसराकौन पुरुष निवारणकरैगा? किंतु यहपरमात्मादेवही तिनसूर्यादिकोंकूं आपणीआपणीमर्यादाविषे स्थापनकरिरह्याहै ॥ हेजनक! याप्रकार सेतुकीन्यांई जोपरमात्मादेव सर्वजगत्केमर्यादाकूं व्यवस्थापनकरैहै ॥ तापरमात्मादेवकूं तू आपणाआत्मारूपकरिकै निश्चयकर ॥ इतनेकरिकै मायाविशिष्टसगुणब्रह्मकेअभेदचिंतनकाप्रकार निरूपणकऱ्या ॥ अब बहिर्मुखपुरुषोंऊपरि अनुग्रहक रिकै दूसरेउपायकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! सर्वजगत्कूं आपणीआपणीमर्यादाविषे स्थापनकरणेहारा जोमायाविशिष्टसगुण ब्रह्महै ॥ सोसगुणब्रह्मभी बहिर्मुखपुरुषोंकरिकैजान्याजावैनहीं ॥ याप्रकारकावचन जोतूकहै तौ तामनकेअंतर्मुखताकाउपाय

जोविद्वानूपुरुषोंनें कथनकऱ्याहै ॥ ताउपायकूं तू श्रवणकर ॥ हेजनक! जैसे यहबहिर्मुखमन बाह्यविषयोंकीइच्छाकरिकै तिनवि
षयोंविषेप्रवृत्तहोवैहै तैसे अंतरआत्माकीइच्छाकरिकै यहमन अंतरआत्माविषेभीप्रवृत्तहोवैहै यातैंयहजान्याजावैहै ॥ अंतर अ
थवा बाहरि जाजामनकीप्रवृत्तिहै ॥ ताप्रवृत्तिका इच्छाहीकारणहै ॥ और यहपदार्थ सर्वदोषतैंरहित सुंदरहै ॥ याप्रकार सुंदरता
रूपकरिकै जिसजिसपदार्थकूं यहमन जानैहै ॥ तिसतिसपदार्थकेप्राप्तिकीइच्छाकरैहै ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ पदार्थोंकेसौंदर्य
काज्ञान तिनपदार्थोंकेइच्छाकाकारणहै ॥ और यालोकविषे पापीजीवोंकूं सिंहसर्पादिकअप्रियपदार्थोंका जोज्ञानहोवैहै ॥ सोपूर्वले
पापकर्मोंकरिकैहोवैहै ॥ यातैं पापकर्म अप्रियपदार्थोंकेज्ञानकाकारणहै ॥ और यालोकविषे पुण्यवानूपुरुषोंकूं धनादिकप्रियपदार्थों
काजोज्ञानहोवैहै ॥ सोपूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैंहोवैहै ॥ यातैं पुण्यकर्म प्रियपदार्थोंकेज्ञानविषेकारणहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥
जिसअधिकारीपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारकीइच्छहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष यज्ञ दान तप अनाशक इत्यादिकपुण्यकर्मोंकूंकरै ॥ ति
नयज्ञादिकपुण्यकर्मोंकरिकै ताअधिकारीपुरुषकूं आत्माकेसौंदर्यताकाज्ञानहोवैहै ॥ और तासौंदर्यताज्ञानतैंअनंतर ताअधिकारीपु
रुषकूं आनंदस्वरूपआत्माकेप्राप्तिकीइच्छाहोवैहै ॥ और ताइच्छातैंअनंतर ताअधिकारीपुरुषकामन आनंदस्वरूपआत्माविषेप्रवृ
त्तहोवैहै ॥ याप्रकार तिनयज्ञादिककर्मोंका आत्मज्ञानविषेपरंपराकरिकै उपयोगहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! ज्योतिष्टोमेनयजेतस्व
र्गकामः ॥ इत्यादिकवेदवाक्योंविषे यज्ञादिककर्मोंकूं स्वर्गादिकफलकासाधनकह्याहै ॥ यातैं तिनयज्ञादिककर्मोंविषे आत्मज्ञानकीसा
धनता किसप्रकारसंभवैगी? ॥ समाधान ॥ हेजनक! यद्यपि यज्ञादिककर्मोंकूं स्वर्गादिकफलकासाधनकह्याहै ॥ तथापि तेयज्ञादि
ककर्म आत्मज्ञानकेभीसाधनहैं ॥ काहेतैं? जैसे यावज्जीवंदर्शपूर्णमासाभ्यांयजेत ॥ यावचनतैं दर्शपौर्णमास्यनामायज्ञोंविषे नि
त्यकर्मरूपता सिद्धहोवैहै ॥ और दर्शपूर्णमासाभ्यांस्वर्गकामोयजेत ॥ यावचनकरिकै उत्पन्नभईजोहमअधिकारीजीवोंकीइच्छाता
इच्छाकेवशतैं तिनदर्शपौर्णमासनामायज्ञोंविषे काम्यकर्मरूपताभीसंभवैहै ॥ जैसे दर्शपूर्णमासाभ्यांस्वर्गकामोयजेत ॥ यावचन
तैंउत्पन्नभईजाइच्छा ताइच्छाकेवशतैं तेयज्ञादिककर्म यद्यपि हमअधिकारीजीवोंके स्वर्गादिकफलकासाधनहैं तथापि तमेतंवेदानुव

चनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसानाशकेन॥ अर्थयह ॥ अधिकारीब्राह्मण वेदाध्ययन यज्ञ दान तप अनाशक इत्यादि ककर्मोंकरिकै याआनंदस्वरूपआत्माकेजानणेकीइच्छाकरैहैं ॥१॥ याश्रुतिवचनतैं तिनयज्ञादिककर्मोंविषे पूर्वउक्तरीतिसैं आत्मज्ञान कीकारणताभीसिद्धहोवैहै ॥ अब याहीश्रुतिकेअर्थकूं विस्तारकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! याश्रुतिभगवतीनैंकथनकर्‍येजे यज्ञ दान तप अनशन येचारिप्रकारकेकर्म तिनचारिप्रकारकेकर्मोंके वर्णआश्रमकेभेदकीअपेक्षाकरिकै नानाप्रकारकेस्वरूपहैं ॥ तहां प्रथम यज्ञोंकेस्वरूपकीव्यवस्थाकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! दर्शपौर्णमासयज्ञतैंआदिलैके जितने द्रव्यादिकपदार्थोंकरि कैसाध्ययज्ञहैं ॥ तिनयज्ञोंविषे गृहस्थआश्रमवालेपुरुषकाही अधिकारहै ॥ ब्रह्मचारी वानप्रस्थ संन्यासी यातीनोंका तिनयज्ञा दिककर्मोंविषेअधिकारनहीं ॥ और विनाहीद्रव्यतैंजिसकीसिद्धिहोवै ऐसेजे मंत्रकेजपरूपयज्ञहैं ॥ तथा समाधिरूपयज्ञहैं ॥ तिनयज्ञोंविषे ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी याचारिआश्रमोंकाअधिकारहै ॥ परंतु याकेविषेइतनीविशेषताहै ॥ ब्रह्मचारी वानप्रस्थ संन्यासी इनतीनोंकूंतौ मुख्यअधिकारहै ॥ और गृहस्थकूं गौणअधिकारहै ॥ और धनतैंविनाही सिद्धहोणहारे जेज्ञान अभ्यासरूपयज्ञहैं ॥ तिनोंविषेभी ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी याचारिआश्रमोंकाअधिकारहै ॥ परंतु याकेविषेभी इतनी विशेषताहै ॥ ज्ञानअभ्यासरूपयज्ञोंविषे संन्यासीका मुख्यअधिकारहै ॥ और ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ इनतीनोंका गौणअधिकारहै ॥ अब दानरूपकर्मकेस्वरूपकीव्यवस्थाकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! पक्वअन्न काचाअन्न सुवर्ण गौ अश्व पृथिवी इसतैं आदिलैके अनेकप्रकारकेपदार्थोंकादान शास्त्रनैंविधानकर्‍याहै ॥ सोदान संन्यासआश्रमतैंभिन्न ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ इनतीनोंआश्रमवालेपुरुषोंनैं यथाशक्ति अवश्यकरणा ॥ और संन्यासियोंनैंतौ सर्वप्राणियोंकेताईं अभयरूपदानकरणा ॥ इहां शरीर करिकै तथावाणीकरिकै तथामनकरिकै जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिनहींकरणी याका नामअभयदानहै ॥ याअभयरूपदानतैंपरे दूसराकोईदान अधिकनहीं ॥ किंतु यहअभयरूपदानही सर्वदानोंतैंउत्कृष्टदानहै ॥ हेजनक! यहअभयरूपदान केवलसंन्यासियोंनैंहीकरणा ॥ दूसरेआश्रमवालेपुरुषनैं नहींकरणा ॥ याप्रकारकेअर्थविषे शास्त्रका

तात्पर्यनहीं ॥ किंतु ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र याचारिवर्णोंनैं तथा ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी याचारिआश्रमोंनैं यहअभयरूपदान अवश्यकरणा ॥ परंतु संन्यासियोंनैं याअभयरूपदानकूंही विशेषकरिकैकरणा ॥ काहेतैं? कुटीचक बहूदक हंस परमहंस याचारिप्रकारकेसंन्यासविषे किसीभीसंन्यासआश्रमकेधारणकरणेकीइच्छा जबी यहअधिकारीपुरुषकरैहै ॥ तबी सोअधिकारीपुरुष मैं सर्वभूतप्राणियोंकेतांई अभयरूपदानदेताहूं याप्रकारकामंत्रउच्चारणकरिकै पूर्वगृहस्थादिकआश्रमकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकाग्रहणकरैहै ॥ याकारणतैं संन्यासीनैं जरायुजादिकचारिप्रकारकेजीवोंकेतांई अभयरूपदान अवश्यदेणा ॥ जोपुरुष संन्यासआश्रमकूंधारणकरिकै शरीरमनवाणीकरिकै किसीजीवकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ तापुरुषका संन्यासआश्रमही निष्फलहोवैहै ॥ यातैं आपणेसंन्यासआश्रमकेसफलकरणेवासते यासंन्यासीनैं सर्वप्राणियोंकेतांई अभयरूपदान अवश्यदेणा ॥ और अधिकारीपुरुषोंकेतांई यहसंन्यासी ब्रह्मविद्याका तथाब्रह्मविद्याकेसाधनोंका दानकरै ॥ याप्रकारकावचन जोशास्त्रोंविषेकथनकर्याहै ॥ सोभी आपणीप्रतिष्ठावासते तथाधनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिवासते संन्यासी अधिकारीपुरुषोंकेतांई ब्रह्मविद्याकादानकरै याप्रकारकेअभिप्रायकरिकै सोवचन शास्त्रविषेनहींकह्या ॥ किंतु मेरेशरणकूंप्राप्तहुए जेयेअधिकारीशिष्यहैं ॥ तिनोंकूं अभयब्रह्मकीप्राप्तिहोवै याप्रकारकाउद्देशकरिकै यहसंन्यासी तिनअधिकारीपुरुषोंकेतांई ब्रह्मविद्याकादानदेवै ॥ यातैं ब्रह्मविद्याकादानभी अभयदानरूपहीहै ॥ अब अभयरूपदानविषे सर्वदानोंतैंउत्कृष्टताकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! कुरुक्षेत्रभूमिविषे सूर्यके ग्रहणकालविषे जोपुरुष सुवर्णादिकपदार्थोंकरिकैपूर्ण संपूर्णपृथिवीकूं ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणकेतांई श्रद्धापूर्वक दानकरिदेवै ॥ तिसदानतैंभी स्थावरजंगमप्राणियोंविषे किसीएकप्राणीकूंभी अभयकीप्राप्तिकरणी अधिकदानहै ॥ तात्पर्ययह ॥ स्थावरजंगमप्राणियोंविषे किसीएकप्राणीकेतांईभी जोपुरुष अभयदानदेवैहै ॥ ताअभयदानतैंपरेभी जबी कोईपुण्यकर्म अधिकनहींभया ॥ तबी जोकोईपुरुष सर्वकालविषे तथासर्वदेशविषे स्थावरजंगमरूपसर्वप्राणियोंकेतांई अभयरूपदानदेवैहै ॥ ताअभयदानतैंपरे यालोकविषे कोईअधिकपुण्यकर्मनहींहै याकेविषेक्याकहणाहै? यातैं जोसंन्यासी सर्वप्राणियोंकेतांई अभयरूपदानदेकरिकै

आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते प्रयत्नकरैहै ॥ सोसंन्यासी इसशरीरविषे अथवा अन्यशरीरविषे द्वैतदर्शनजन्यभयकूंप्राप्तहोवै नहीं ॥ किंतु सर्वभयतैंरहितअद्वितीयब्रह्मकूंही सोसंन्यासी प्राप्तहोवैहै ॥ यातैंअभयरूपदानतैंपरे दूसराकोईदानहैनहीं ॥ अब अभयरूपदानकीउत्कृष्टताबोधनकरणेवासते ताअभयरूपदानकालक्षणरूपजोअहिंसाधर्महै ताकेविषे सर्वधर्मोंकाअंतर्भावकरिकै ता अहिंसाकीउत्कृष्टताकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेजीवोंकूं शरीरकरिकै तथावाणी करिकै तथामनकरिकै जोदुःखकीप्राप्तिनहींकरणी याकानाम अहिंसाहै ॥ ताअहिंसाविषेही सत्य दया तप दान याचारिपादों वालाधर्म सर्वदानिवासकरैहै ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम हिंसाकेस्वरूपकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यालोकविषे तीनप्रकारकीहिंसाहोवैहै ॥ एकतौ शरीरकृतहिंसाहोवैहै ॥ और दूसरी वाणीकृतहिंसाहोवैहै ॥ और तीसरी मनकृतहिंसाहोवैहै ॥ तहां शरीरकृतहिंसाकायहस्वरूपहै ॥ जरायुनामाचर्मतैंउत्पन्नहोणेहारे जेमनुष्य गौ अश्वादिकहैं तिनोंकानाम जरायुजहै ॥ और अंडतैंउत्पन्नहोणेहारे जेपक्षीसर्पादिकहैं तिनोंकानाम अंडजहै ॥ और स्वेदतैंउत्पन्नहोणेहारे जेमत्कुणयूकादिकहैं तिनोंकानाम स्वेदजहै ॥ और भूमिकूंभेदनकरिकैउत्पन्नहोणेहारे जेवृक्षादिकहैं तिनोंकानाम उद्भिज्जहै ॥ याचारिप्रकारकेजीवोंकेशरीरविषे जोशस्त्रादिकोंकाप्रहारकरणा ॥ तथा मंत्रऔषधिआदिकोंकरिकै तिनजीवोंकेशरीरविषे रोगादिकोंकीउत्पत्तिकरणी तथा तिनजीवोंके स्त्री धन अन्न पशु आदिकपदार्थोंकाहरणकरणा ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारके जेजीवोंकेमरणकेउपायहैं ॥ तिनोंकानाम शरीरकृतहिंसाहै ॥ अब वाणीकृतहिंसाकेस्वरूपकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यालोकविषे चौरीआदिकपापकर्मोंकूं करणेहारे जेपापात्माजीवहैं ॥ तिनजीवोंके चौरीआदिकपापकर्मोंका राजाकेसमीप तथाराजाकेभृत्योंकेसमीप कथनकरणा ॥ तथा अन्यप्राणियोंकीनिंदाकरणी ॥ तथा गुणवान्पुरुषोंविषे दोषोंकाकथनकरणा ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकीवाणीकरिकै जोजीवोंकूंदुःखकीप्राप्तिकरणी ॥ याकानाम वाणीकृतहिंसाहै ॥ अब मनकृतहिंसाकेस्वरूपकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! अन्यपुरुषोंविषे विद्यादिकोंकरिकैउत्पन्नभये जेकीर्तिआदिकगुणहैं ॥ तिनगुणोंकूंनहींसहनकरणा ॥ जिसकूं शास्त्रविषेमत्सरकहैहैं ॥

तथा अन्यपुरुषोंके जेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थहैं ॥ तिनपदार्थोंकेप्राप्तिवासते नानाप्रकारकेउपायोंकाचिंतनकरणा ॥ तथा अन्यप्रा
णियोंकेमारणेकेउपायोंकाचिंतनकरणा ॥ इसतैंआदिलैके जोअनेकप्रकारका मनकरिकै जीवोंकेदुःखकेउपायकाचिंतनहै ॥ याकाना
ममनकृतहिंसाहै ॥ और हेजनक! यालोकविषे देवदत्तनामापुरुषका जोयज्ञदत्तनामापुरुषशत्रुहै ॥ तायज्ञदत्तनामापुरुषकेप्रति जो
पुरुष तादेवदत्तनामापुरुषकेमारणेकीबुद्धिदेवैहै ॥ तथा धनादिकपदार्थदेवैहै ॥ याकानाम उपायहिंसाहै ॥ साउपायहिंसा यालोकवि
षे नानाप्रकारकीहोवैहै ॥ और इसलोकविषे तथापरलोकविषे अन्यप्राणियोंके तथाआपणे दुःखकेकरणेहारा जोमिथ्यावचनहै ॥
सोमिथ्यावचनभी हिंसाहीहै ॥ और यज्ञदानादिकशुभकर्मोंकेकरणेविषे प्रवृत्तभयाजोकोईपुरुषहै ॥ तापुरुषकूं नानाप्रकारकीकुत
र्ककरिकै जोपुरुष ताशुभकर्मतैंनिवृत्तकरैहै ॥ तथा जोपुरुष आपभीशुभकर्मोंकूंकरतानहीं ॥ याकानाम नास्तिकपणाहै ॥ सो
नास्तिकपणाभी हिंसाहीहै ॥ और शास्त्रनैंविधानकर्‌येजे संध्यागायत्रीआदिकनित्यनैमित्तिककर्म तिनोंकापरित्यागकरिदेणा ॥
और शास्त्रनैंनिषेधकर्‌येजेपरस्त्रीगमनादिकपापकर्म तिनोंकूंकरणा ॥ यहदोनों करणेहारेपुरुषकूं तथाताकेकुलकूं तथादेशादिकोंकूं
अनर्थकीहीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ यातैं येदोनोंभी हिंसाहीहैं ॥ और जेपुरुष याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूं प्राप्तहोइकै
निद्रातंद्रादिकतामसीवृत्तियोंकरिकै आपणेआयुषकूं व्यर्थव्यतीतकरैहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं इसलोकविषे तथापरलोकविषे दुःखकीहीप्रा
प्तिहोवैहै ॥ यातैं निद्रातंद्रादिकोंकरिकै जोव्यर्थ आयुषकाव्यतीतकरणाहै सोभीहिंसाहीहै ॥ हेजनक! इसतैंआदिलैके हिंसावोंके
नानाप्रकारकेस्वरूप शास्त्रविषेकथनकरैहैं ॥ तिनहिंसावोंतैंजोविपरीतहोवै तथा शास्त्रनैं जिसकाविधानकर्‌याहोवै ताकानामधर्म
है ॥ सोसंपूर्णधर्म अहिंसाविषे अंतर्भूतहै ॥ याकारणतैंही श्रुतिस्मृतिआदिकशास्त्रोंविषे अहिंसाधर्मकूं परमधर्मकह्याहै ॥ जि
सधर्मतैंकोईअधिकधर्मनहींहोवै ताकानाम परमधर्महै ॥ यातैं संपूर्णविवेकीपुरुषोंनैं अहिंसाधर्मकूं अवश्यसंपादनकरणा ॥ अ
ब अहिंसाधर्मकेफलकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यालोकविषे जोपुरुष अहिंसाधर्मकूंसंपादनकरैहै ॥ तापुरुषकेहस्तविषे धर्म
अर्थ काम मोक्ष यहचारिप्रकारकापुरुषार्थ स्थितहोवैहै ॥ यातैं अहिंसाधर्मही सर्वफलकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ याकारणतैंही पतंज

लिभगवान्नें ॥ अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहायमाः ॥ यायोगसूत्रविषे अहिंसाधर्मकूं सर्वतेंप्रथम कथनकऱ्याहै ॥ अब यो गसूत्रविषे कथनकऱ्येजे अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह येपंचप्रकारकेयमहैं तिनोंविषे ब्रह्मचर्य सत्य अस्तेय अपरिग्रह याचारोंका अहिंसाविषेअंतर्भाव दिखावैंहैं ॥ हेजनक! स्त्रीकेसंभोगकाअभावरूपजोब्रह्मचर्यहै ॥ ताब्रह्मचर्यकाभी अहिंसाविषे हीअंतर्भावहै ॥ काहेतें ? ब्रह्मचर्यतेंरहितकामीपुरुषोंकूं स्त्रीसंभोगकेउत्तरकालविषे परमदुःखकीप्राप्तिहोवैंहै ॥ काहेतें ? यौवनअव स्थाविषे स्त्रीकेसंभोगकरणेतें स्त्रीविषेगर्भकीउत्पत्तिहोवैंहै ॥ तागर्भकीउत्पत्तिकरिकै गर्भिणीस्त्रीकूं तथा तागर्भकूं मरणकेसमान दुःखकीप्राप्तिहोवैंहै ॥ और कदाचित् तास्त्रीकूं तथागर्भकूं मरणरूपदुःखकीभीप्राप्तिहोवैंहै ॥ यातें स्त्रीकासंभोगभी हिंसारूप हीहै ॥ किंवा यहकामीपुरुष जबी स्त्रीकासंभोगकरैंहै ॥ तबी याकामीपुरुषका सप्तमधातुरूपवीर्य स्त्रीकेउदरविषे जीवोंकेशरीर कीउत्पत्तिकरैंहै ॥ ताशरीरकेसंबंधतें तिनजीवोंकूं अध्यात्म अधिदैव अधिभूत येतीनप्रकारकेदुःख प्राप्तहोवैंहैं ॥ तिसकरिकै ता स्त्रीकेसंभोगकरणेहारेकामीपुरुषकूं पापकीप्राप्तिहोवैंहै ॥ तापापकरिकै सोकामीपुरुष इसलोकविषे अथवा परलोकविषे दुःखकूं प्राप्तहोवैंहै ॥ यातें सोस्त्रीकासंभोग स्त्री बालक पुरुष यातीनोंकेदुःखकाकारणहोणेतें हिंसारूपहीहै ॥ और जोपुरुष ब्रह्मचर्यध र्मकूंधारणकरैंहै ॥ तिसपुरुषकूं साहिंसा प्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतें सोब्रह्मचर्य अहिंसारूपधर्मविषेही अंतर्भूतहै ॥ और शरीर मन वाणी करिकै जोपुरुष किसीप्राणीकीहिंसानहींकरैंहै ॥ सोमहात्मापुरुष असत्यवचनकाभी उच्चारणकरैनहीं ॥ तथा सोपु रुष अन्यपुरुषोंकेधनादिकपदार्थोंकीचौरीभीकरैनहीं ॥ तथा सोपुरुष धनादिकपदार्थोंकासंग्रहभीकरैनहीं ॥ याकारणतें सत्य अ स्तेय अपरिग्रह यातीनोंकाभी अहिंसाधर्मविषेही अंतर्भावहै यातें अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यापांचप्रकार केयमोंविषे अहिंसा सत्यादिकसर्वयमोंकीजननीहै ॥ ताअहिंसाधर्मकरिकैयुक्तजोपुरुषहै ॥ सोपुरुष सर्वपुरुषोंतेंउत्तमहै ॥ याका रणतें संन्यासीनें अहिंसारूपअभयदानकूंही स[र्व]दाकरणा ॥ यद्यपि गृहस्थ वानप्रस्थ ब्रह्मचारी यातीनआश्रमोंकूंभी अहिंसा रूपअभयदान करणेयोग्यहै ॥ तथापि गृहस्थादिकोंतें सर्वथाहिंसादिकोंकापरित्याग होइसकैनहीं ॥ और संन्यासियोंकातौ अ

हिंसारूपअभयदानकेदेणेवासतेही संन्यासआश्रमकाग्रहणहै ॥ यातैं संन्यासियोंनैं अहिंसारूपअभयदानही विशेषकरिकैदेणा ॥ इतनेकरिकै दानकेस्वरूपकानिरूपणकऱ्या अब तपकेस्वरूपकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र याचारिवर्णोंके तथा ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास याचारिआश्रमोंके जेजेधर्म शास्त्रनैंविधानकरेहैं ॥ तिनआपणेआपणेधर्मोंकूं श्रद्धापूर्वककरणेकानामतपहै ॥ अब अनशनकेस्वरूपकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! शास्त्रनैं जिनविषयोंकानिषेधनहींकऱ्याहै ॥ तिनविषयोंकेभोगकाभी यथाशक्ति परित्यागकरणा ॥ याकानाम अनशनहै ॥ याप्रकारकाअनशनधर्म संन्यासियोंकूंछोडिकै संपूर्णवर्णआश्रमवालेपुरुषोंकूं यथाशक्ति करणेयोग्यहै ॥ और संन्यासियोंकूंतौ याप्रकारकाअनशन करणेयोग्यहै ॥ इसलोकविषे तथापरलोकविषे विद्यमानजेविषयजन्यसुखहैं ॥ तथा ताविषयजन्यसुखकेसाधन जेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थहैं तिनपदार्थोंके प्राप्तिकीइच्छामात्रभीनहींकरणी ॥ किंतु प्रारब्धकर्मकेयोगतैं जिसप्रकारकाभिक्षाकाअन्न प्राप्तहोवै तथा जिसप्रकारकावस्त्रप्राप्तहोवै ॥ ताअन्नवस्त्रकरिकै संन्यासियोंनैं आपणेशरीरकानिर्वाहकरणा ॥ याप्रकारकाअनशन संन्यासियोंकूं अवश्यकरणेयोग्यहै ॥ हेजनक ! याप्रकार श्रुतिभगवतीनैं विधानकऱ्येजे यज्ञ दान तप अनशन यहचारिप्रकारकेपुण्यकर्म ॥ तापुण्यरूपअदृष्टकारणकरिकै तथा गुरु शास्त्र अधिकारीशरीर इत्यादिकदृष्टकारणोंकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं जबी अद्वितीयआनंदस्वरूपब्रह्मकाज्ञानहोवैहै ॥ तबी ताअद्वितीयब्रह्मकेसाक्षात्कारविषे याअधिकारीपुरुषकी आपेहीइच्छाहोवैहै ॥ याकहणेतैं यहअर्थसिद्धभया ॥ यज्ञ दान तप अनशन याशुभकर्मोंकेकरणेतैं यापुरुषविषे पुण्यरूपअदृष्टकोउत्पत्तिहोवैहै ॥ और तापुण्यरूपअदृष्टतैं यापुरुषकूं गुरु शास्त्र अधिकारीशरीर शुद्धबुद्धि इत्यादिकदृष्टकारणोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और तागुरुशास्त्रादिकदृष्टकारणोंतैं याअधिकारीपुरुषकूं प्रथम आत्माकापरोक्षज्ञानहोवैहै ॥ और तिसपरोक्षज्ञानतैंअनंतर याअधिकारीपुरुषकूं आत्माकेअपरोक्षज्ञानकीइच्छाहोवैहै ॥ और ताइच्छातैंअनंतर याअधिकारीपुरुषकेचित्तकी आनंदस्वरूपआत्माविषे एकाग्रताहोवैहै ॥ याप्रकारपरंपराकरिकै यज्ञदानादिकपुण्यकर्म आत्मसाक्षात्कारविषे कारणहैं ॥ यातैं गुरुशास्त्रादिरूपदृष्टकारणोंकेसंपादनकरणेवासते तथा

पापरूपप्रतिबंधकीनिवृत्तिकरणेवासते याअधिकारीपुरुषनैं यज्ञदानादिकपुण्यकर्मोंकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! यज्ञ दान तप अनशन याचारिप्रकारकेपुण्यकर्मोंकरिकैही हमअधिकारीजीवोंकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैगी ॥ आत्मज्ञानकाक्या प्रयोजनहै? ॥ **समाधान** ॥ हेजनक! आत्मज्ञानतैंविना केवलकर्मोंतें मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ काहेतें? जबी याअधिकारीपुरुषका चित्त बाह्यविषयोंकीतरफनहींजावै है॥ तबी याअधिकारीपुरुषकूं ताएकाग्रचित्तविषे संशयविपर्ययतैंरहित महावाक्यजन्य आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ ताआत्मसाक्षात्कारतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष जीवन्मुक्तिरूपमुनिभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्ध भया ॥ यज्ञदानादिकपुण्यकर्मोंकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं जबी अद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकेजानणेकीदृढइच्छाहोवैहै ॥ तबी सो अधिकारीपुरुष ताअद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकूं गुरुकेउपदेशतें साक्षात्कारकरिकै जीवन्मुक्तिरूपमुनिभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ आत्मज्ञानतैं विना केवलकर्मोंकरिकै यहअधिकारीपुरुष जीवन्मुक्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ अब आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते विविदिषासंन्यासकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! संन्यासीपुरुषोंकरिकैजानणेयोग्य तथा वास्तवतैंमनवाणीकाअविषय ऐसाजोआनंदस्वरूपआत्मा है ॥ ताआनंदस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारकीइच्छाकरतेहुए अधिकारीविरक्तपुरुष यज्ञादिकसर्वकर्मोंकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकाग्रहणकरैहैं ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! तेविरक्तमहात्मापुरुष यज्ञादिककर्मोंकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकूं किसवासतेग्रहणकरैहैं? ॥ **समाधान** ॥ हेजनक! धर्मोंकेकरणेविषे आसक्तजोकर्मीपुरुषहै ॥ तिसकर्मीपुरुषकीआत्मसाक्षात्कारविषे निष्ठाहोणी अत्यंतदुर्लभहै ॥ यातैं आत्मज्ञानविषे निष्ठाकरणेवासते याअधिकारीपुरुषनैं कर्मोंकापरित्याग अवश्यकर्‍याचाहिये ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! संन्यासआश्रमतैंविनाही सर्वकर्मोंकापरित्यागकरिकै आत्मज्ञानविषेनिष्ठाहोइसकैहै ॥ यातैं संन्यासआश्रमकेग्रहणकरणेकाकछुप्रयोजननहीं ॥ **समाधान** ॥ हेजनक! संन्यासआश्रमतैंविना ब्रह्मचर्यआश्रमविषे तथागृहस्थआश्रमविषे तथा वानप्रस्थआश्रमविषे सर्वकर्मोंकात्याग कर्‍याजावैनहीं ॥ काहेतैं? निषिद्धकर्म काम्यकर्म नित्यकर्म नैमित्तिककर्म यहचारिप्रकारकाकर्म शास्त्रविषेकथनकर्‍याहै ॥ तहां ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकानाम निषिद्धकर्म है॥ और स्वर्गादिकफलकी प्राप्तिवासते शास्त्रनैंविधानकर्‍ये

जेज्योतिष्टोमादिकयागहैं तिनोंकानाम काम्यकर्महै ॥ और संध्याअग्निहोत्रादिककर्मोंकानाम नित्यकर्म है ॥ और सूर्यग्रहणविषे स्नानश्राद्धादिकोंकानाम नैमित्तिककर्म है ॥ तहां स्थूलसूक्ष्मशरीरकेअध्यासकरिकैयुक्त जेबहिर्मुखपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं निषिद्धकाम्यकर्म भोगकेअनुकूलहैं ॥ यातें तेबहिर्मुखपुरुषतो निषिद्धकाम्यकर्मोंकाभीत्यागकरिसकैनहीं ॥ और शास्त्रकेविचारकरिकैयुक्त जेब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ येतीनआश्रमवालेपुरुषहैं ॥ तेपुरुष यद्यपि शास्त्रविचारकेबलतें निषिद्धकर्म काम्यकर्म यादोनोंप्रकारकेकर्मोंकापरित्यागकरिसकैहैं ॥ तथापि शास्त्रनैंविधानकन्येजेनित्यनैमित्तिककर्म तिनकर्मोंकापरित्याग संन्यासआश्रमतैंविना इतरआश्रमियोंतैं होइसकैनहीं ॥ जोकदाचित् ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ येतीनोंआश्रम संन्यासआश्रमकेग्रहणतैंविनाही प्रमादकरिकै अथवा आलस्यकरिकै नित्यनैमित्तिककर्मोंकापरित्यागकरैंहैं तौ तिनोंकूं पापकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ यातीनआश्रमोंविषेरहिकै जोपुरुष नित्यनैमित्तिककर्मोंकूंकरैहै ॥ तिसपुरुषकाचित्त अंतरआत्माविषेएकाग्रहोवैनहीं ॥ और तिनआश्रमोंविषेरहिकै जोपुरुष नित्यनैमित्तिकर्मोंकूंनहींकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं पापकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याप्रकार तिनपुरुषोंकूं दोनोंप्रकारसैं बंधनकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोपुरुष शास्त्रउक्तरीतिसैं संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिकै नित्यनैमित्तिकादिकसर्वकर्मोंकापरित्यागकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं तिनकर्मोंकेपरित्यागतें पापकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा तापुरुषकूं कर्मोंकेत्यागतें परमआनंदकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोपुरुष संन्यासआश्रमकेग्रहणतैंविनाही नित्यनैमित्तिककर्मोंकापरित्यागकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं पापकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तापापकरिकै सोपुरुष अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां स्मृति ॥ मोहात्तस्य परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष संन्यासआश्रमकेग्रहणतैंविनाही प्रमादरूपमोहतें तथाआलस्यतें नित्यनैमित्तिककर्मोंकापरित्यागकरैहै ॥ तिसपुरुषका सोकर्मोंकात्याग तामसत्यागहै ॥ ता तामसत्यागकरिकै तिसपुरुषकूं किंचित्मात्रभीफलकीप्राप्ति होवैनहीं ॥ उलटा तापुरुषकूं पापकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ १ ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते कर्मोंकेअधिकारीका तथा संन्यासके अधिकारीका निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! स्रक् चंदन स्त्री धन पुत्र इत्यादिकविषयोंविषे जिसपुरुषकाचित्त अत्यंतआसक्तहोवैहै ॥

सोविषयआसक्तरागीपुरुष आत्माकेसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातें ताविषयआसक्तरागीपुरुषनें नित्यनैमित्तिककर्मोंकूंही अवश्यकरिकैकरणा ॥ और जिसकर्मीपुरुषकाचित्त विषयोंकेप्राप्तिकीइच्छातेंरहितहुआहै ॥ सोपुरुष पुनःकर्मरूपीभारकूंउठावैनहीं ॥ किंतु संन्यासआश्रमकूंधारणकरिकै सोपुरुष सर्वकर्मोंकापरित्यागहीकरै ॥ काहेतें? जिसपुरुषकूं स्वर्गादिकफलकेप्राप्तिकीइच्छाहै ॥ ताफलइच्छावान्पुरुषकेप्रतिही वेदभगवान् यज्ञादिककर्मोंकाविधानकरैहै ॥ और जिसपुरुषकूं स्वर्गादिकफलकेप्राप्तिकीइच्छानहींहै ॥ तिसनिष्कामपुरुषकेप्रति वेदभगवान् यज्ञादिककर्मोंकाविधानकरैनहीं ॥ यातें विषयोंविषेरागवान्पुरुषही कर्मोंका अधिकारीहै ॥ रागतेंरहितनिष्कामपुरुष कर्मोंकाअधिकारीनहीं ॥ किंतु सोनिष्कामपुरुष संन्यासआश्रमकाहीअधिकारीहै ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ जबपर्यंत यापुरुषकाचित्त शुद्धनहींभया ॥ तबपर्यंत सोपुरुष नित्यनैमित्तिककर्मोंकूं अवश्यकरिकैकरै ॥ और जबी नित्यनैमित्तिककर्मोंकरिकैयाअधिकारीपुरुषकाचित्तशुद्धहोवैहै ॥ तबी पुनःकर्मोंकेकरणेकाकछुप्रयोजनहैनहीं ॥ यातें सोअधिकारीपुरुष सर्वकर्मोंकात्यागरूपसंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिकै निरंतर वेदांतशास्त्रकाहीविचारकरै ॥ यहवार्ताअन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहां श्लोक ॥ प्रत्यक्प्रवणतांबुद्धेः कर्माण्युत्पाद्यशुद्धितः ॥ कृतार्थान्यस्तमायांति प्रावृडंतेघनाइव ॥ अर्थयह ॥ जैसे वर्षाकालविषे मेघ जलकीवृष्टिरूपप्रयोजनकीसिद्धिकरिकै वर्षाकालकेअंतविषे तेमेघ आपेहीलयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे नित्यनैमित्तिककर्मभी चित्तकीशुद्धिद्वारा बुद्धिकूंआत्मपरायणकरिकै आपेहीलयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ १ ॥ शंका ॥ हेभगवन्! अंतरआत्माकेविचारविषे जिसपुरुषकीबुद्धि तत्परभईहै ॥ तिसपुरुषकूं नित्यनैमित्तिककर्मोंकेकरणेकरिकै कौनहानिहोवैहै?॥ समाधान ॥ हेजनक! याअधिकारीपुरुषकी आत्माकेविचारविषे तत्परभईजाबुद्धिहै ॥ ताबुद्धिकूं जैसे स्रक् चंदन स्त्री पुत्र इत्यादिकविषय बहिर्मुखकरैहैं ॥ तैसे नित्यनैमित्तिककर्मभी ताबुद्धिकूं बहिर्मुखहीकरैहैं ॥ यातें चित्तकीशुद्धिपर्यंतही तिनकर्मोंकाउपयोगहै ॥ चित्तकीशुद्धितेंअनंतर तेकर्म आत्मविचारविषेप्रतिबंधकहैं ॥ यातें तिनकर्मोंकापरित्यागकरणाहीउचितहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जेपुरुष संन्यासआश्रमकूंधारणकरैहैं ॥ ते पुरुषभी भिक्षाअटनादिककर्मोंकूंकरैहैं ॥ यातें जैसे भिक्षाअटनादिककर्मोंकरिकै संन्यासि

योंकीबुद्धि बहिर्मुखनहींहोवैहै ॥ तैसे अग्निहोत्रादिकनित्यनैमित्तिककर्मोंकेकरणेकरिकै अस्मदादिकगृहस्थपुरुषोंकीबुद्धिभी बहिर्मुखनहींहोवैगी ॥ यातैं अग्निहोत्रादिकनित्यनैमित्तिककर्मोंकेपरित्यागकरणेका कछुप्रयोजननहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक! अग्निहोत्रादिककर्मोंविषे जिसपुरुषकाचित्त तत्परहै ॥ सोईपुरुष अग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरिसकैहै ॥ चित्तकीतत्परतातैंविना अग्निहोत्रादिककर्म सिद्धहोइसकैंनहीं ॥ यातैं अग्निहोत्रादिककर्म जैसे बुद्धिकूंबहिर्मुखकरैहैं ॥ तैसे भिक्षाअटनादिककर्म संन्यासीकेबुद्धिकूंबहिर्मुखकरैंनहीं ॥ काहेतैं? जैसे भोजनकालविषे अन्यपदार्थोंकूंचिंतनकरताहुआभी यहपुरुष ताभोजनविषे चित्तकीतत्परतातैंविनाही आपणेहस्तसैं अन्नकूंउठाइकै आपणेमुखविषेपावैहै ॥ तैसे मनकरिकै आनंदस्वरूपआत्माकूंचिंतनकरताहुआयहसंन्यासी भिक्षाअटनादिककर्मोंविषे चित्तकीतत्परतातैंविनाही भिक्षाअटनादिककर्मोंकूंकरैहै ॥ यातैं भिक्षाअटनादिककर्म तासंन्यासीकेबुद्धिकूंबहिर्मुखकरैंनहीं ॥ किंवा अग्निहोत्रादिकनित्यकर्मोंकेनहींकरणेतैं जैसे गृहस्थपुरुषकूं पापकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे भिक्षाअटनादिककर्मोंकेनहींकरणेतैं संन्यासीकूं पापकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ याकारणतैंभी भिक्षाअटनादिकसंन्यासीकेकर्म अग्निहोत्रादिकनित्यकर्मोंतैं विलक्षणहैं ॥ हेजनक! इसप्रकार अग्निहोत्रादिककर्मोंकूं विक्षेपकाकारणमानिकै पूर्वअधिकारी पुरुष आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते विविदिषासंन्यासकूंधारणकरिकै निरंतर वेदांतशास्त्रकाहीश्रवणकरतेभयेहैं ॥ यातैं इदानींकालकेअधिकारीपुरुषोंकूंभी तिसीप्रकार करणाउचितहै ॥ इतनेकरिकै आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते विविदिषासंन्यासकानिरूपणकऱ्या ॥ अब जीवन्मुक्तिसुखकीप्राप्तिवासते विद्वत्संन्यासकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! पूर्व संन्यासआश्रमकेग्रहणतैंविनाही जिनमहात्मापुरुषोंकूं पूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैं गृहस्थआश्रमविषे आत्मसाक्षात्कारभयाहै ॥ अथवा ब्रह्मचर्य वानप्रस्थ आश्रमविषे आत्माकासाक्षात्कारभयाहै ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंकूं यद्यपि पदार्थोंकेग्रहणत्यागतैं कोईहानिलाभहोवैनहीं ॥ तथापि तेविद्वान्पुरुष अग्निहोत्रादिककर्मोंकूं विक्षेपकाकारणमानिकै जीवन्मुक्तिसुखकेवासते विद्वत्संन्यासकूंही ग्रहणकरतेभयेहैं ॥ याकहणेतैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जिनपुरुषोंनें अद्वितीयआनंदस्वरूपआत्माकूं करामलकीन्यांई

साक्षात्कारकऱ्याहै ॥ तेविद्वान्‌पुरुषभी जबी नित्यनैमित्तिककर्मोंकूं विषयोंकीन्यांई विक्षेपकाकारणमानिकै जीवन्मुक्तिकेसुखवासते विद्वत्संन्यासकाग्रहणकरैंहैं ॥ तबी आत्मसाक्षात्कारकेप्राप्तिकीइच्छावान् जेमुमुक्षुजनहैं ॥ तेमुमुक्षुजन कर्मोंकूंविक्षेपकाकारणमानिकै विविदिषासंन्यासकूंग्रहणकरैंहैं ॥ याकेविषेक्याआश्चर्यहै? ॥ हेजनक! ऐसेविद्वान्‌संन्यासियोंतैं किसीलोकोंनैं याप्रकारपूछा ॥ हेविद्वान्‌संन्यासियो! यालोकविषे सुखकाकारणजोपुत्रादिकप्रजाहै ताकाकारणजोस्त्रीहै ॥ तास्त्रीकासंग्रह तुमविद्वानोंनैं किसवासतेनहींकऱ्या? ॥ हेजनक! याप्रकार लोकोंकरिकैपूछेहुए तेविद्वान्‌पुरुष तिनलोकोंकेप्रति याप्रकारकेवचनकहतेभये ॥ आत्मास्वरूपनित्यसुखतैंअधिक कोईलोकविषेसुखहैनहीं ॥ ऐसाआत्मस्वरूपनित्यसुख हमविद्वानोंकूं अपरोक्षरूपकरिकैप्राप्तभयाहै ॥ यातें पुत्रादिकविषयजन्यअनित्यसुखकीइच्छा हमारेकूंहैनहीं ॥ हेलोको! इसलोकविषे अथवा परलोकविषे पुत्रादिकप्रजाकरिकै जोसुखउत्पन्नहोवैहै ॥ ताजन्यसुखकाही परंपरासंबंधकरिकै स्त्रीकासंग्रहकारणहै ॥ ताजन्यसुखकी हमारेकूंइच्छाहैनहीं ॥ किंतु हमविद्वान्‌तौ आपहीनित्यसुखरूपहैं ॥ यातैं पुत्रादिकप्रजाकरिकै हमविद्वान्‌पुरुष किसप्रयोजनकीसिद्धिकरैंगे? ॥ शंका ॥ हेभगवन्! अपुत्रस्यगतिर्नास्ति स्वर्गोनैवचनैवच ॥ अर्थयह पुत्ररहितपुरुषकीगतिहोवैनहीं ॥ तथा पुत्ररहितपुरुषकूं स्वर्गकीभीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ १ ॥ याशास्त्रविषे पुत्रादिकप्रजाकूंही पिताकेमोक्षका तथास्वर्गका कारणकह्याहै ॥ सो असंगतहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेलोको! यहवचन विषयआसक्तरागीपुरुषोंकेअभिप्रायकूंकथनकरैंहै ॥ यातैं यहवचन अनुवादरूपअर्थवादहै ॥ यातैं तावचनकरिकै पुत्रादिकप्रजाविषे मोक्षकीकारणतासिद्धहोवैनहीं ॥ जोकदाचित् पुत्रादिकप्रजाकरिकै पिताकामोक्षहोताहोवै तौ सूकरादिकपशुवोंकूंमनुष्योंतैंभी बहुत पुत्रादिकप्रजाहोवैहै ॥ यातैं तिनसूकरादिकोंकाभी मोक्षहोणाचाहिये ॥ यातैं पुत्रादिकप्रजाकरिकै पिताकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ उलटा तिनपुत्रादिकप्रजाके पालणपोषणकरणेवासते सोपिता अनेकप्रकारकेपापकर्मोंकूंकरैहै ॥ तापापकर्मोंकरिकै सोपिता नरककूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ और हेलोको! जिस निरतिशयब्रह्मानंदस्वरूपसमुद्रकेलेशमात्रकूंग्रहणकरिकै ब्रह्मादिकलोकभी आनंदकूंप्राप्तहोइरहेहैं ॥ सोब्रह्मानंद हमविद्वान्‌पुरुषोंकूं आपणेआत्मातैंअभिन्नहुआवर्तैहै ॥ यातैं हमविद्वान्‌पुरुषोंकूं

पुत्रादिकविषयजन्यक्षुद्रसुखकीइच्छाहोवैनहीं ॥ हेजनक! तिनलोकोंकेप्रति याप्रकारकेवचनोंकूंकहतेहुए तेविद्वान्पुरुष संन्यास
आश्रमकूंग्रहणकरिकै केवलभिक्षावृत्तिकरिकै शरीरकानिर्वाहकरतेभये ॥ कैसेहैंतेविद्वान्पुरुष ! कोईकविद्वान्पुरुषतौ पूर्वगृहस्थ
आश्रमकूंकरिकै पश्चात् संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरतेभये ॥ और कोईकविद्वान्पुरुषतौ गृहस्थआश्रमकेग्रहणतैंविनाही ब्रह्मचर्यआ
श्रमतें संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरतेभये ॥ और लोकएषणा पुत्रएषणा वित्तएषणा यातीनप्रकारकेएषणावोंकापरित्यागकरतेभये ॥
अब यातीनोंएषणावोंकूं एकरूपमानिकै दोप्रकारकीएषणा निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यालोकविषे जैसे गौसुवर्णादिरूपवित्त यापु
रुषकेसुखकासाधनहै॥ तैसे पुत्रभी पिताकेसुखकेसाधनहैं॥ यातें पुत्रएषणा वित्तएषणातें भिन्ननहीं ॥ किंतु सापुत्रएषणा वित्तएष
णारूपहै॥ और जैसे पशुसुवर्णादिकरूपवित्त यापुरुषकेसुखकासाधनहै॥ तैसे स्वर्गादिकलोकभी यापुरुषकेसुखकासाधनहैं॥ यातें
सावित्तएषणा लोकएषणातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सावित्तएषणा लोकएषणारूपहै॥ यातें यासंसारविषे दोप्रकारकीएषणाहीसिद्धहोवै
है॥ एकतौ सुखरूपफलकीएषणा॥ और दूसरी तासुखरूपफलकेसाधनोंकीएषणा॥ और जिनविद्वान्पुरुषोंकूं आत्मरूपनित्यसु
खकीप्राप्तिभईहै॥ तेविद्वान्पुरुष तादोनोंप्रकारकीएषणाका परित्यागकरैहैं ॥ केवलआत्मरूपनित्यसुखकरिकै तेविद्वान् तृप्तरहे
हैं ॥ अब संन्यासआश्रमकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यजोआत्माहै ताकेस्वरूपकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! पूर्वग्रंथविषे जोपरमात्मादेव
स्वयंज्योतिरूपकरिकै तथाआनंदरूपकरिकै हमनैं तुमारेप्रतिकथनकऱ्याथा ॥ तिसीपरमात्मादेवकूं यहविद्वान्पुरुष आपणाआ
त्मरूपकरिकै साक्षात्कारकरैहैं॥ और इसीपरमात्मादेवकास्वरूप पूर्वहमनैं शाकल्यब्राह्मणसैंपूछाथा ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव?
मूर्तअमूर्तरूप तथाभावअभावरूप जितनाजगत्है॥ तिससंपूर्णजगत्तैं सोपरमात्मादेव रहितहै ॥ और यहपरमात्मादेव स्व
यंज्योतिरूपहै॥ याकारणतैं वाकादिकइंद्रियोंकरिकै तथा अग्निसूर्यादिकबाह्यप्रकाशोंकरिकै यहआत्मादेव ग्रहणकऱ्याजावैनहीं ॥
हेजनक! यालोकविषे पदार्थोंकाप्रकाशरूपजोग्रहणहै॥ सोपदार्थोंकाग्रहण कर्ता करण कर्म फल संबंध यापांचोंकेभेदकीअपेक्षा
करिकैहीहोवैहै ॥ तिनकर्तादिकोंकेभेदतैंविना सोपदार्थोंकाग्रहणसिद्धहोवैनहीं ॥ जैसे घटादिकपदार्थोंकूं यहपुरुष चक्षुइंद्रिय

करिकै ग्रहणकरैहै ॥ इहां पुरुषतौकर्ताहै ॥ और चक्षुइंद्रिय करणहै ॥ और घट कर्महै ॥ और घटनिष्ठज्ञातता फलहै ॥ और चक्षु काघटकेसाथसंयोगसंबंधहै ॥ यापांचोंकेभेदकीअपेक्षाकरिकैही घटादिकपदार्थोंकाग्रहणहोवैहै ॥ तिनोंकेभेदतैंविना किसीपदार्थकाग्रहणहोवैनहीं ॥ और यहआत्मादेव सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनप्रकारकेभेदतैंरहितहै ॥ यातैं याआनंदस्वरूपआत्माकूं वाकादिकइंद्रिय ग्रहणकरिसकैनहीं ॥ तथा अग्निसूर्यादिक प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ याकारणतैं यास्वयंज्योतिआत्माकूं श्रुतिभगवती अगृह्य यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और हेजनक! यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वभेदतैंरहितहै ॥ यातैं जैसे वस्त्रादिकपदार्थ कालपाइकै परिणामरूपशीर्णभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे यहपरमात्मादेव परिणामरूपशीर्णभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं अशीर्य यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और हेजनक! यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वभेदतैंरहितहै ॥ याकारणतैं अंतरबाहरि जितनेपदार्थहैं ॥ तिनोंकेसाथ आत्माकासंबंधहैनहीं ॥ काहेतैं? जोपदार्थ भेदवालाहोवैहै ॥ सोईपदार्थ संयोगादिरूपसंबंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मातौ सर्वभेदतैंरहितहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव संबंधरूपसंगकूं तथाबंधकूं तथानाशकूं तथादुःखकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ हेजनक! ऐसेसर्वसंगतैंरहितअसंगआत्माकूं संगवान्‌रागीपुरुष जानिसकैनहीं ॥ किंतु पूर्वउक्ततीनएषणातैंरहित तथा केवलभिक्षावृत्तिकरिकै शरीरकानिर्वाहकरणहारे जेमहात्मासंन्यासीहैं ॥ तेविरक्तसंन्यासीही तापरमात्मादेवकूं साक्षात्कारकरैहैं ॥ अब आत्मज्ञानकेफलकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जिनविद्वान्‌पुरुषोंनैं तीनएषणावोंकापरित्यागकरिकै याआनंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकऱ्याहै ॥ तिनविद्वान्‌पुरुषोंकूं यहपुण्यपापरूपकर्म अज्ञानीपुरुषकीन्यांई तपायमानकरैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! यहपुण्यपापरूपकर्म नकरणेहारेअज्ञानीपुरुषकूं तथाकरणेहारेअज्ञानीपुरुषकूं सर्वदा दुःखकीहीप्राप्तिकरैहैं ॥ काहेतैं? यहपुरुष जबी पापकर्मकूंकरैहै ॥ तबी तापापकर्मकेआरंभकालविषे याअज्ञानीपुरुषकूं परमक्लेशकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं पापकर्म आरंभकालविषेभी कर्तापुरुषकेदुःखकाहीहेतुहै ॥ और जबी सोपापकर्म ताकर्तापुरुषकूं फलकीप्राप्तिकरैहै ॥ तबीभी सोकर्तापुरुष परमदुःखकूं

प्राप्तहोवैहै ॥ यातें सोपापकर्म फलकीप्राप्तिकालविषेभी ताकर्तापुरुषकेदुःखकाहीहेतुहोवैहै ॥ इसप्रकार यहपुरुष जबी पुण्यकर्म कूंकरैहै ॥ तबी तापुण्यकर्मकेआरंभकालविषे सोकर्तापुरुष परमक्लेशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें सोपुण्यकर्म आपणेआरंभकालविषेभी ताकर्तापुरुषकेदुःखकाहीहेतुहोवैहै ॥ और सोपुण्यकर्म जबी ताकर्तापुरुषकूं नाशवान्सुखरूपफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ तबीभी सोकर्ता पुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें सोपुण्यकर्म फलकीप्राप्तिकालविषेभी ताकर्तापुरुषके दुःखकाहीहेतुहोवैहै ॥ इतनेकरिकै पुण्य पाप कर्मोंविषे अज्ञानीकर्तापुरुषके तापकीकारणतानिरूपणकरी ॥ अब तिनपुण्यपापकर्मोंविषे अज्ञानीअकर्तापुरुषके तापकीकार णतानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! जेअज्ञानीपुरुष पापकर्मोंकूं नहींकरैहैं ॥ तेअज्ञानीपुरुष दूसरेपापीजीवोंकूंदेखिकै आपणेकूं तिनोंतें उत्कृष्टमानिकै गर्वकरैहैं ॥ यातें सोपापकर्म गर्वकीउत्पत्तिद्वारा तिनअज्ञानीअकर्तापुरुषोंके तापकाहीकारणहोवैहै ॥ इसीप्रकार जे अज्ञानीपुरुष पुण्यकर्मकूंनहींकरैहैं ॥ तेदयावान्अज्ञानीपुरुष निर्धनलोकोंकूंदुःखीदेखिकरिकै तिनोंऊपरि कृपाकरिकै परमदुःख कूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातें सोपुण्यकर्म कृपाकीउत्पत्तिद्वारा अकर्ताअज्ञानीपुरुषोंके तापकाहीकारणहोवैहै ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषे भीकहीहै ॥ तहां श्लोक ॥ ईर्ष्युर्घृणीत्वसंतुष्टः क्रोधनोनित्यशंकितः ॥ परभाग्योपजीवीच षडेतेनित्यदुःखिनः ॥ अर्थयह ॥ ईर्षाकरणेहारापुरुष तथा दयावान्पुरुष तथा संतोषतेंरहितपुरुष तथा क्रोधवान्पुरुष तथा संशयवान्पुरुष तथा परधनतैंजीवनक रणेहारापुरुष यहषट्प्रकारकेपुरुष यालोकविषे सर्वदादुःखीहीरहैहैं ॥ १ ॥ किंवा जोपुरुष पुण्यकर्मकूंनहींकरैहै तिसपुरुषकूं सुखकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ याकारणतैंभी सोपुण्यकर्म अकर्ताअज्ञानीपुरुषोंके तापकाहीकारणहै ॥ किंवा इसलोकविषे तथापरलोकविषे जि सपुण्यकर्मनें जीवोंकूं महान्सुखकीप्राप्तिकरीहै ॥ तिसपुण्यकर्मकूं जिसअज्ञानीपुरुषनैंनहींकऱ्या ॥ सोअज्ञानीपुरुष तिनजीवोंके महान्सुखकूंदेखिकरिकै ईर्ष्याकरैहै ॥ याकारणतैंभी सोपुण्यकर्म ईर्ष्याकीउत्पत्तिद्वारा ताअकर्ताअज्ञानीपुरुषोंके तापकाही कारणहोवैहै ॥ किंवा मरणकालविषे यहअज्ञानीपुरुष आपणेमनविषे याप्रकारकासंकल्पकरिकै तपायमानहोवैहै ॥ याभा रतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकैभी मैंदुर्बुद्धिजीव जन्मतैंलैके मरणपर्यंत केवलपापकर्मोंकूंहीकरताभया ॥ और

सुखकेदेणेहारेजेपुण्यकर्मथे तिनपुण्यकर्मोंकूं मैंपापात्माजीव नहींकरताभया ॥ याप्रकारकासंकल्पकरिकै यहअज्ञानीजीव परम दुःखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं मरणकालविषेभी तेपुण्यपापरूपकर्म ताअज्ञानीजीवोंके तापकाहीकारणहैं ॥ हेजनक! इसप्रकार तेपुण्यपापरूपकर्म तिनकर्मोंकेकरणेहारेअज्ञानीजीवोंकूं तथा तिनकर्मोंकेनहींकरणेहारेअज्ञानीजीवोंकूं सर्वदा तापकीहीप्राप्तिकरैहैं ॥ और जिसपुरुषकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं आत्माकासाक्षात्कार प्राप्तभयाहै ॥ तिसविद्वान्पुरुषकूं तेपुण्यपापकर्म कऱ्येहुए अथवा नहींकऱ्येहुए तपायमानकरैनहीं ॥ किंतु जैसे हनुमान् समुद्रकूंतरिगयाथा तैसे सोविद्वान्पुरुष पुण्यपापकर्मरूपसमुद्रकूं विनाहीयत्नतैंतरिजावैहै ॥ इहां आत्मज्ञानकेप्रभावतैं विद्वान्पुरुषविषे पुण्यपापकर्मोंकाजोअस्पर्श है सोईही पुण्यपापकर्मोंकातरणाहै ॥ हेजनक! विद्वान्पुरुषकूं पुण्यपापकर्म तपायमाननहींकरैहैं याकेविषे यहकारण है ॥ याप्रकारकेसंकल्पोंकरिकैयुक्त जेअज्ञानीपुरुषहैं तिनअज्ञानीपुरुषोंकूंही तेपुण्यपापरूपकर्म तपायमानकरैहैं ॥ ते संकल्पयहहैं– इसज्योतिष्टोमनामायज्ञकरिकै मेरेकूं स्वर्गलोककीप्राप्तिहोवैगी ॥ और इसब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकरिकै हमारेकूं नरकादिकोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और इसपुत्रइष्टिआदिककर्मोंकरिकै हमारेकूं इसीजन्मविषे पुत्रादिकपदार्थोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और इसअश्वमेधादिकयज्ञोंकाफल हमारेकूं इसजन्मविषेनहींहोवैगा किंतु दूसरेजन्मविषेहोवैगा ॥ और ब्राह्मणोंकेधनादिकपदार्थोंकूंहरणकरिकै आपणेकुटुंबकापालनकरणेहाराजोमैंहूं ॥ तिसमेरेकूं शीघ्रही कुष्ठादिकरोगोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तथा यालोकविषे हमारी अपकीर्तिहोवैगी ॥ हेजनक! इसतैंआदिलैके नानाप्रकारकेसंकल्पोंकूंकरणेहारे जेअज्ञानीजीवहैं तिनअज्ञानीजीवोंकूंही तेपुण्यपापरूपकर्म तापकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और विद्वान्ज्ञानीपुरुषविषे तेनानाप्रकारकेसंकल्पहैंनहीं ॥ यातैं ताविद्वान्पुरुषकूं तेपुण्यपापरूपकर्म तापकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ इसप्रकार सोविद्वान्पुरुष पुण्यपापरूपकर्मोंकूं तरिजावैहै ॥ हेजनक! याप्रकारकेविद्वान्पुरुषकूं वेदकेमंत्र याप्रकार कथनकरैहैं ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाअभेदज्ञान जिसपुरुषकूं प्राप्तभयाहै ॥ ताविद्वान्पुरुषकी जो स्वरूपभूतमहिमा है सोमहिमा तीनकालविषे अन्यथाभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं सोविद्वान्पुरुषकामहिमा नित्यहै ॥

हेजनक! जैसे यालोकविषे अज्ञानीपुरुष पुण्यकर्मकरिकै वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और पापकर्मकरिकै तेअज्ञानीजीव लघुताकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे सोविद्वान्पुरुष पुण्यकर्मकरिकै वृद्धिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा पापकर्मोंकरिकै लघुताकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं ताविद्वान्पुरुषकामहिमा अत्यंतअद्भुतहै ॥ हेजनक! जैसे पूर्वलेअधिकारीपुरुष अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै पुण्यपापतैंरहिततारूपमहिमाकूं प्राप्तभयेहैं ॥ तैसे इदानींकालविषेभी जेअधिकारीपुरुष अस्ति भाति प्रियरूपकरिकै अद्वितीयआत्माकूं साक्षात्कारकरैहैं ॥ तेविद्वान्पुरुषभी तामहिमाकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ आत्मसाक्षात्कारतैंविना ऐसीमहिमाकीप्राप्तिहोणी अत्यंतदुर्लभहै ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं आत्मसाक्षात्कारकूं अवश्यसंपादनकरणा ॥ इतनेकरिकै आत्मसाक्षात्कारकेफलकानिरूपणकऱ्या ॥ अब ताआत्मसाक्षात्कारके शमदमादिकसाधनोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! इसकालतैंपूर्वकालविषे जेअधिकारीपुरुषहुएहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते शमदमादिकसाधनोंकूंसंपादनकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरतेभयेहैं ॥ यातैं इदानींकालकेअधिकारीपुरुषोंनैंभी शमदमादिकसाधनोंकूंसंपादनकरिकै आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते संन्यासआश्रमकाहीग्रहणकरणा ॥ हेजनक! बालककीन्यांई यामनकूंरागद्वेषादिकविकारोंतैंरहितकरणा याकानाम शमहै ॥ और वाकादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेविषयोंतैंरहितकरणा याकानाम दमहै ॥ और प्रारब्धकर्मकेयोगतैं जोपदार्थप्राप्तहोवै ॥ तापदार्थकरिकै आपणेशरीरकानिर्वाहकरणा तथा प्रियवस्तुकीप्राप्तिकरिकै हर्षकूंनहींप्राप्तहोणा ॥ और अप्रियवस्तुकीप्राप्तिकरिकै द्वेषकूं नहींप्राप्तहोणा ॥ याप्रकारकेसंतोषकानाम उपरतिहै ॥ अब क्षमारूपतितिक्षाकेस्वरूपकानिरूपणकरैहैं ॥ यहअधिकारीपुरुष याप्रकारकाविचारकरिकै क्षमारूपतितिक्षाकूंकरै ॥ सोविचारयहहै- शरीरकरिकै तथा मनवाणीकरिकै दुष्टपुरुषोंनैंकरीजापीडाहै ॥ सापीडाहमारेवास्तवस्वरूपविषे तीनकालनहींहै ॥ किंतु हमारेशरीरअंतःकरणइंद्रियादिकोंविषे सापीडाहै ॥ और मैं तिनशरीरादिकोंतैं सर्वदाअसंगहूं ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोअधिकारीपुरुष तिनदुष्टपुरुषोंऊपरि क्रोधनहींकरै ॥ और सोअधिकारीपुरुष आपणेनिंदाकूंश्रवणकरिकै तिननिंदकपुरुषोंऊपरि याप्रकारकाविचारकरिकै क्षमाकरै ॥ सोविचारयहहै- हमारीनिंदाकूंकरणेहारे जे

येनिंदकपुरुषहैं ॥ तेनिंदकपुरुष हमारेशत्रुनहीं हैं ॥ किंतु तेनिंदकपुरुष हमारे परममित्रहैं ॥ काहेतें ? यालोकविषे जोपुरुष जिस पुरुषऊपरि उपकारकरैहै ॥ सोउपकारकरणेहारापुरुष तिसपुरुषकामित्रहोवैहै ॥ सोयाप्रकारकामित्रकालक्षण इननिंदकपुरुषों विषेभीघटेहै ॥ काहेतें ? दुःखरूपफलकूंदेणेहारे जेहमारेपापकर्महैं ॥ तिनपापकर्मोंकूं यहनिंदकपुरुष आपणेविषेलैजावैहैं ॥ इसतें परे कोईदूसराउपकारहैनहीं ॥ ऐसेपरमउपकारकूंकरणेहारे यहनिंदकपुरुष हमारे परममित्रहैं ॥ किंवा यानिंदकपुरुषोंकूं यद्यपि लोक शत्रुकहेहैं ॥ तथापि यहनिंदकपुरुष हमारेतौं मित्रहीहै ॥ काहेतें ? हमारेदोषोंकाचिंतनकरिकै यहनिंदकपुरुष आपणेमनकूं तथावाणीकूंपरिश्रमकीप्राप्तिकरैहैं ॥ तथा हमारेपापकर्मोंकूं आपणेविषेग्रहणकरिकै यहनिंदकपुरुष तिनपापकर्मोंकेदुःखरूपफल कूं आपभोगेहैं ॥ यातें जैसे समुद्रकेमथनकरणेतें उत्पन्नभया जोहलाहलविष ताहलाहलविषकरिकै सर्वजीवोंकूंदग्धहुआदेखि कै कृपाकरिकैयुक्तहुआश्रीमहादेव ताहलाहलविषकूं आपणेकंठविषे धारणकरताभया ॥ तैसे हमारेकूंदुःखकीप्राप्तिकरणेहारे जे हमारेपापकर्महैं ॥ तिनपापकर्मोंकूं यहनिंदकपुरुष कृपाकरिकै आपणेविषेधारणकरैहैं ॥ परंतु लोकविषे तथा शास्त्रविषे श्रीमहा देवकूं सज्जनकहेहैं ॥ और यानिंदकपुरुषोंकूं दुर्जनकहेहैं ॥ यहवार्ताश्रवणकरिकै हमारेकूं बहुतआश्चर्यहोवैहै ॥ हेजनक ! याप्र कारकाविचारकरिकै तेअधिकारीपुरुष तिननिंदकपुरुषोंऊपरिभी क्षमाहीकरैहैं ॥ और हेजनक ! तिनअधिकारीपुरुषोंकूं जबी कोई दुष्टपुरुष हननकरैहै ॥ तबी तेअधिकारीपुरुष याप्रकारकाविचारकरिकै तिनदुष्टपुरुषोंऊपरि क्षमाकरैहैं ॥ यहपुरुष किसकारणतें हमाराहननकरैहै ? हमारेदुःखरूपअनिष्टकेचिंतनकरणेकरिकै इसपुरुषकूं चांडालयोनिकीप्राप्तिमतहोवै ॥ याप्रकारकीइच्छा मैं करताहूं ॥ यहवार्ता मनुभगवाननैंभी कहीहै ॥ तहांश्लोक– परद्रव्याण्यऽभिध्यायंस्तथाऽनिष्टानिचिंतयन् ॥ वितथाऽभिनि वेशीचजायतेंऽत्यासुयोनिषु ॥ अर्थयह– जोपुरुष परायेधनस्त्रीआदिकपदार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरैहै ॥ तथा जोपुरुष अन्यपु रुषकेदुःखरूपअनिष्टकाचिंतनकरैहै ॥ तथा जोपुरुष वेदविरुद्धपाखंडमतोंविषे दुराग्रहकरैहै ॥ सोपुरुष मरिकै चांडालयोनियोंविषे उत्पन्नहोवैहै ॥ १ ॥ यातें हमारेअनिष्टकेचिंतनकरणेकरिकै इनपुरुषोंकूं चांडालशरीरकीप्राप्तिमतहोवै ॥ किंवा जैसे आपणेदोनों

हस्तोंका तथादोनोंपादोंका आपहीताडनकरणा अनुचितहै जैसे मेरेशरीरकाताडनकरणाभी इनपुरुषोंकूं उचितनहीं ॥ काहेतैं? हमारेशरीरविषे तथा इनपुरुषोंकेशरीरविषे तथा अन्यप्राणियोंकेशरीरविषे आत्माएकहीहै ॥ यातैं आपणेशरीरकेताडन करिकै जैसेहमारेकूंदुःखहोवैहै तैसे हमारेशरीरकेताडनकरिकै इनजीवोंकूंदुःखकीप्राप्तिनहींहोवै ॥ याप्रकारकीइच्छा हम करैहैं ॥ किंवा यहताडनकरणेहारेपुरुष हमारेकूं दुःखकीप्राप्तिनहीं करते ॥ किंतु जेहमनैं पूर्व पापकर्मकरैहैं ॥ तेपापकर्मही इदानींका लविषे हमारेकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ यातैं इनपुरुषोंकाकोईअपराधनहीं ॥ किंवा जैसे यहप्रसिद्धशरीर मैंआत्माकाहै ॥ तैसे यहसंपूर्णशरीर मैंआत्माकेहैं ॥ याप्रकार गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं हमनैं अंतर्यामीआत्माकानिश्चयकऱ्याहै ॥ यातैं इसताडनकाल विषे जोदुःख हमारेशरीरविषेहोवैहै ॥ सोदुःख इनताडनकरणेहारेपुरुषोंकेशरीरविषे मतहोवै ॥ किंतु यहसंपूर्णदेहधारीजीव सर्व दा सुखीहोवै ॥ तथा सर्वरोगतैंरहितहोवै ॥ और मेरेताडनकरिकै किसीजीवकूंपापकीप्राप्तिनहींहोवै ॥ हेजनक! याप्रकारकाविचा रकरिकै तेअधिकारीपुरुष तिनताडनकरणेहारेपुरुषोंऊपरिभी क्षमाहीकरैहैं ॥ याकानाम तितिक्षाहै ॥ अब समाधान श्रद्धा यादो नोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक! आत्माकेसाक्षात्कारवासते जोचित्तकीसावधानताहै ताकानाम समाधानहै ॥ और गुरुशास्त्रकेउ पदेशविषे जोविश्वासहै ताकानाम श्रद्धाहै ॥ इसप्रकार शम दम उपरति तितिक्षा समाधान श्रद्धा याषट्साधनोंकरिकैयुक्तहुआ यहअधिकारीपुरुष गुरुमुखतैं वेदांतशास्त्रकाश्रवणकरै ॥ ताश्रवणतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष श्रुतिअनुकूल नानाप्रकारकीयु क्तियोंकरिकै ताश्रवणकऱ्येअर्थकामननकरै ॥ तिसमननतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष अंतरआत्माविषे चित्तकेवृत्तियोंकानिरंतर प्रवाहरूप निदिध्यासनकूंकरै ॥ तिसतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष गुरुउपदिष्ट महावाक्यरूपप्रमाणकरिकैसहकृतजोशुद्धमनहै ॥ ताशुद्धमनकरिकै स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! ताआत्मसाक्षात्कारकरिकै याअधिकारी पुरुषकूं किसफलकीप्राप्तिहोवैहै?॥ समाधान॥ हेजनक! मैंअद्वितीयब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाअभेदज्ञान जिसअधिकारीपुरुषकूं प्रा प्तभयाहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकी अविद्यारूपमाया निवृत्तहोइजावैहै ॥ कैसीहैसामाया? आवरणशक्तिकरिकै तथा विक्षेपशक्ति

करिकै युक्तहै ॥ ऐसीअविद्यारूपमाया आत्मसाक्षात्कारकरिकै एकवार नाशकूंप्राप्तहुई पुनःउत्पन्नहोवैनहीं ॥ और याविभुआ
त्माविषे जोपरिच्छिन्नपणाप्रतीतहोताथा ॥ सो अविद्यारूपमायाकरिकैप्रतीतहोताथा ॥ आत्मसाक्षात्कारकरिकै तामायाकेनिवृत्त
हुएतैंअनंतर यहविद्वान्पुरुष तापरिच्छिन्नभावकापरित्यागकरिकै आपणेआत्माकूं सर्वजीवोंकाआत्मारूपकरिकैदेखेहै ॥ यातैं अ
विद्याकीनिवृत्तिपूर्वक सर्वात्मभावकीप्राप्तिही आत्मसाक्षात्कारकाफलहै ॥ और हेजनक! इसप्रकार गुरुवेदांतशास्त्रकेउपदेशतैंजि
सअधिकारीपुरुषनैं आत्माकूं साक्षात्कारकऱ्याहै ॥ तिसविद्वान्पुरुषतैंअसंगस्वरूपकूं पुण्यपापरूपकर्म तरिसकैनहीं ॥ तथा ता
विद्वान्पुरुषकूं तेपुण्यपापकर्म तपायमानकरिसकैनहीं ॥ किंतु जैसे नौका समुद्रकूंतरेहै तथा जैसे आकाशतैंउत्पन्नभया विद्युत्रूप
अग्नि तूलादिकोंकूंदग्धकरैहै ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुष आत्मसाक्षात्कारकेप्रभावतैं तिनपुण्यपापरूपकर्मोंकूंतरैहै ॥ तथा ज्ञानरूपअग्नि
करिकै यहविद्वान्पुरुष तिनपुण्यपापरूपकर्मोंकूं दग्धकरैहै ॥ तहां स्मृति ॥ ज्ञानाग्निःसर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुतेतथा ॥ अर्थय
ह ॥ हेअर्जुन! यहज्ञानरूपअग्नि विद्वान्पुरुषके सर्वकर्मोंकूंदग्धकरैहै ॥ १ ॥ हेजनक! पूर्वउक्तशमदमादिकसाधनोंकरिकै यह
विद्वान्पुरुष जिसआनंदस्वरूपआत्माकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोआत्मादेवकैसाहै? वास्तवतैं पुण्यपापकर्मोंतैंरहितहै ॥ तथा मायारूप
अविद्यातैंरहितहै ॥ तथा संशयतैंरहितहै ॥ ऐसे असंगआत्माकूं जोअधिकारीपुरुष अद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैजानैहै ॥ सोविद्वान्पु
रुष याशरीरकेविद्यमानहुएभी ब्रह्मरूपहीहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपकरिकै
जानणेहारा ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष ब्रह्मरूपहीहोवैहै ॥ और हेजनक! पूर्व हमनैं तुमारेप्रति सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वजीवोंकूंप्राप्त
होणेयोग्य जोपरमात्मादेव कथनकऱ्याथा ॥ सोईहीपरमात्मादेव बुद्धिआदिकोंकासाक्षिरूपकरिकै अबी हमनैं तुमारेप्रति कथन
कऱ्याहै ॥ कैसाहै सोपरमात्मादेव? तुमारेहृदयविषे तथा हमारेहृदयविषे तथा अन्यप्राणियोंकेहृदयविषे आकाशकीन्यांई
परिपूर्णहै ॥ तथा सूर्यादिकज्योतियोंकाभी जोआत्मादेव ज्योतिरूपहै ॥ ऐसास्वयंज्योतिरूपआत्मा वास्तवतैं संपूर्णसंसार
धर्मोंतैंरहितहै ॥ यातैं अविद्याकेसंबंधतैं यहआत्मादेव जन्म मरण जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति इत्यादिकअवस्थावोंविषे भ्रमणकरताहु

आभी वास्तवतैं जन्ममरणादिकअवस्थावोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेजनक! पूर्वजिसब्रह्मका अभयरूपकरिकै हमनैं तुमारेप्रतिकथ नकन्याथा ॥ सोईअभयब्रह्म अबी हमनैं तुमाराआत्मारूपकरिकैकथनकन्याहै ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मरूपआत्मातैंभिन्न कोईभीस्थूलसूक्ष्मपदार्थ सिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु अधिष्ठानरूपआत्माकीसत्ताकूंपाइकैही यहकल्पितजगत् प्रतीतहोवैहै ॥ हेजनक! नाना प्रकारकेसाधनोंयुक्त आत्मसाक्षात्कारकूं बोधनकरणेहारी जाब्रह्मविद्या सूर्यभगवान्नैं हमारेप्रति उपदेशकरीथी ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्या मैंयाज्ञवल्क्यनैं तुमारेप्रति उपदेशकरी है ॥ ताब्रह्मविद्याकेश्रवणतैं अबी तुमारेकूं संशयविपर्ययतैं रहित आत्माकासाक्षात्कार प्राप्तभयाहै ॥ यातैं अबी तुम जन्ममरणादिरूपसंसारकेभयकापरित्यागकरिकै आपणेचित्तविषेप्रसन्नहोवो ॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति कथनकन्या ॥ तबी सोजनकराजा आपणेबोधकीपूर्णताजनावणेवासते याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि! याविदेहदेशतैंआदिलैकेजितनीकी हमारीराज्यसंपदाहै ॥ सासंपूर्णराज्यसंपदा हमनैं पूर्व आपकेतांईदईहै ॥ तासंपूर्णराज्यसंपदासहित तथा पुत्रादिककुटुंबसहित यहमैंजनक दासकीन्यांई आपकेसन्मुखस्थितहूं ॥ यातैं हेभगवन्! मैंजनककूं तथा मेरेपुत्रादिककुटुंबकूं आपणादासजानिकै आपणीसेवाविषेग्रहणकरिकै जिसस्थानविषे आपकीइच्छाहोवै तिसस्थानविषे हमारेकूं आपणेसाथलैजावो ॥ अथवा इसी मिथिलापुरीविषे आपनिवासकरो ॥ हेभगवन्! आपतैंविना एकक्षणमात्रभी मैं स्थितनहींहोवोंगा ॥ याप्रकारकी हमारीप्रार्थनाकूं आपकृपाकरिकै अंगीकारकरो ॥ हेशिष्य! याप्रकार जबी जनकराजानैं याज्ञवल्क्यमुनिकेआगे अत्यंतदीनतापूर्वक प्रार्थनाकरी ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनिभी जनकराजाकेअत्यंतप्रीतिकूंदेखिकै कृपाकरिकैयुक्तहुआ तामिथिलापुरीकेसमीपवनविषे स्थानकूंबनाइकै तहांनिवासकरताभया ॥ और तिसतैंअनंतर बहुतकालकेपीछे सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणीस्त्रीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै तथा संन्यासआश्रमकूं ग्रहणकरिकै राजाजनककेसाथ विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोताभया ॥ इहां पूर्वग्रंथविषे इतिहासरूपकरिकै वर्णनकन्याजोआत्मा ताआत्माकेदोस्वरूपहैं ॥ एकतौ सगुणरूपहै ॥ और दूसरा निर्गुणरूपहै ॥ तिनदोनों

स्वरूपोंविषे प्रथम सगुणआत्माकेस्वरूपका तथा ताकेज्ञानकेफलका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! पूर्ववर्णनकऱ्या जोजन्ममरणादिकविकारोंतैंरहित आत्माकास्वरूप ॥ सोईहीआत्मादेव मायाकेसंबंधतैं ॥ सगुणरूपकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तासगुणरूपकूंप्राप्तहोइकै सोआत्मादेव संपूर्णशरीररूपउपाधियोंविषेस्थितहोइकै नानाप्रकारकेअन्नोंकूंभक्षणकरैहै ॥ याकारणतैं ताआत्मादेवकूं श्रुतिभगवती अन्नाद यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और यहआत्मादेवही दानकरतापुरुषोंकूं कर्मकेफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगती ताआत्मादेवकूं वसुदान यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ इसप्रकार अन्नादिरूपकरिकै तथा वसुदानरूपकरिकै तासगुणआत्माकीउपासना जोअधिकारीपुरुषकरैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष लोकोंनैंश्रद्धापूर्वकदीयेजे नानाप्रकारकेअन्नादिकपदार्थ तिनोंकूंभोगेहै ॥ तथा इसजन्मविषे अथवा जन्मांतरविषे सोउपासकपुरुष नानाप्रकारकेधनादिकपदार्थोंकूं लोकोंकेतांईदेवैहै ॥ अब निर्गुणआत्माकेस्वरूपका तथाताकेज्ञानकेफलका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जोविज्ञानआनंदस्वरूपआत्मा याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनककेप्रति अभयब्रह्मरूपकरिकै उपदेशकऱ्याहै ॥ सोनिर्गुणआत्मादेव जराअवस्थातैंरहितहै यातैं अजरहै ॥ और सोआत्मादेव मरणअवस्थातैंरहितहै यातैं अमरहै ॥ और यहआत्मादेव अजरअमरहै याकारणतैंअभयहै ॥ काहेतैं? जोपुरुष जराअवस्थाकरिकैमरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोईहीपुरुष जन्ममरणकेदुःखकूं तथा तिनदुःखोंतैंभयकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और यहआत्मादेव अजरअमरहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव जन्ममरणकेदुःखकूं तथाभयकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ पुनःकैसाहै सोआत्मादेव ॥ स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंतैंरहितहै ॥ तथा आकाशकीन्यांई सर्वत्रव्यापकब्रह्मरूपहै ॥ ऐसेअभयब्रह्मकूं जोपुरुष आपणाआत्मरूपकरिकै साक्षात्कारकरैहै ॥ सोब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष अभयब्रह्मरूपहोवैहै ॥ हेशिष्य! जनकराजाकेप्रति जाब्रह्मविद्या याज्ञवल्क्यमुनिनैं उपदेशकरीथी ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति कथनकरीहै ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारेकूंइच्छाहोवै ॥ सोअर्थ हमारेसैंपूछो ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येणस्वामिचिद्घनानंदगिरिणाविरचितेप्राकृतआत्मपुराणे बृहदारण्यकयाज्ञवल्क्यकांडसारार्थप्रकाशे याज्ञवल्क्यजनकसंवादोनामषष्ठोऽध्यायः समाप्तः ॥ ६ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ ॥ ॥

इति आत्मपुराणे स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां

षष्ठोऽध्यायसमाप्तः ॥ ६ ॥

अथआत्मपुराणेस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां
सप्तमाऽध्यायप्रारंभः ॥ ७ ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ अथ सप्तमअध्यायप्रारंभः ॥
तहां षष्ठेअध्यायविषे यजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब सप्तमअध्यायविषे तिसीबृहदारण्यकउपनिषद्केअर्थकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां षष्ठेअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति उपदेशकरीजाब्रह्मविद्या ताब्रह्मविद्याकूं गुरुकेमुखतैंश्रवणकरिकै सोशिष्य पुनः ब्रह्मविद्यायुक्तकथाकेश्रवणकरणेकीइच्छाकरताहुआ आपणेगुरुसैं याप्रकारपूछताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् ! याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे आपनैं ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ ताप्रथमअध्यायविषे सनकादिकऋषियोंका तथा वामदेवादिकअधिकारीप्रजाका जोपरस्परसंवादहै तासंवादकरिकै नानाप्रकारकेवैराग्यादिकसाधन आपनैं निरूपणकऱ्ये ॥ और याआत्मपुराणकेदूसरेअध्यायविषे आपनैं तिसीऋग्वेदकेकौषीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ ताद्वितीयअध्यायविषे देवराजइंद्र प्रतर्दनकेसंवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं निरूपणकरी ॥ और याआत्मपुराणकेतृतीयअध्यायविषे आपनैं तिसीकौषीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ तातृतीयअध्यायविषे राजाअजातशत्रु बालाकीब्राह्मणकेसंवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं निरूपणकरी ॥ और याआत्मपुराणकेचतुर्थअध्यायविषे आपनैं यजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ ताचतुर्थअध्यायविषे दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंविषेस्थितऋषियोंका परस्परभेद तथाअभेद आपनैं निरूपणकऱ्या ॥ तथा सर्वज्ञदध्यङ्अथर्वणऋषिकेसाथ अश्विनीकुमारोंकासंवाद आपनैं निरूपणकऱ्या॥ तथा दध्यङ्अथर्वणकेउपदेशनैं ज्याब्रह्मविद्या अश्विनीकुमारोंकूंप्राप्तभयीथी ॥ तथा जाब्रह्मविद्या देवराजइंद्रकूंप्राप्तभईथी॥साब्रह्मविद्याभी आपने निरूपणकरी॥तथा परउपकारविषेहैप्रीतिजिसकी ऐसाजोदध्यङ्अथर्वणनामाऋषिहै ॥ सो देवराजइंद्रतैं तथाअश्विनीकुमारोंतैं जिस मस्तककाछेदनरूपआपदाकूंप्राप्तभयाथा ॥ ताआपदाकाभी आपनैं निरूपणकऱ्या ॥ और याआत्मपुराणकेपंचमअध्यायविषे आपनैं तिसीबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ तापंचमअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिकेसाथ आश्वलादिकब्राह्मणोंकासंवाद आपनैं निरूपणकऱ्या ॥ तथा याज्ञवल्क्यमुनिकाजय तथा शाकल्यब्राह्मणकामृत्यु

आपने निरूपणकऱ्या ॥ और याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे आपने तिसीबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ ताषष्ठे
अध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति जाब्रह्मविद्याउपदेशकरीथी सासंपूर्णब्रह्मविद्या आपनैं निरूपणकरी ॥ तथा
जिसकामवरकरिकै जनकराजा कृतकृत्यभावकूंप्राप्तभयाथा॥ सोकामवरभी आपनैं निरूपणकऱ्या ॥ हेभगवन्! ताषष्ठेअध्यायकेअं
त्यविषे आपनैं यहवार्ता कथनकरीथी ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणीस्त्रीकेतांई ब्रह्मविद्याकाउपदेशदेकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणक
रताभया ॥ हेभगवन्! सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणीस्त्रीकेप्रति जाब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरताभयाहै ॥
ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेकी हमारेकूंइच्छाहै ॥ आप कृपाकरिकै ताब्रह्मविद्याकाउपदेश हमारेप्रतिकरो ॥ इसप्रकार शिष्यकेव
चनकूंश्रवणकरिकै सोश्रीगुरु परमआनंदकूंप्राप्तहोताभया ॥ और बृहदारण्यकउपनिषद्के मधुकांडविषे तथा याज्ञवल्क्यकांडवि
षे कथनकरीजाकथाहै साकथा सोगुरु शिष्यकेप्रति कहताभया ॥ कैसीहैसाकथा ? अधिकारीपुरुषोंकेमनकूं तथाश्रवणकूं सुखकी
प्राप्तिकरणेहारीहै ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! जिसयाज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति उपदेशकऱ्याहै सोयाज्ञवल्क्यमुनि बा
ल्यअवस्थातैंलैके वृद्धअवस्थापर्यंत विषयोंकीइच्छातैंरहितहोताभया ॥ यद्यपि सोयाज्ञवल्क्यमुनि बाहरितैं विकारीपुरुषोंकीन्यांई
लोकोंकूंप्रतीतहोताभया ॥ तथापि सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेचित्तविषे सर्वविकारोंतैंरहितहोताभया॥ तथा सर्वलोकोंकेउपकारवि
षे जिसयाज्ञवल्क्यमुनिकी सर्वदा प्रीतिहोतीभई॥ऐसायाज्ञवल्क्यमुनि विद्याकीप्राप्तिवासते बाल्यअवस्थाविषेही तपकाआरंभकर
ताभया॥तायाज्ञवल्क्यमुनिकेतपकूंदेखिकै भययुक्तहुआदेवराजइंद्र तायाज्ञवल्क्यमुनिकेतपविषे विघ्नकरणेवासते अनेकअप्सरावों
कूं तहां भेजताभया ॥ ताअप्सरारूपठगोंकरिकैयुक्तजोमहान्वनहै तावनविषेस्थितहुआसोयाज्ञवल्क्यमुनि तिनअप्सरावोंकेहाव
भावकूंदेखिकरिकैभी आपणेधैर्यतैंनहींचलायमानहोताभया॥अब याज्ञवल्क्यमुनिकेतपकानिरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य! जबी वर्षाकाल
आवै तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि वृक्षकीन्यांई तथापर्वतकीन्यांई छत्रादिकआवरणतैंविनाही समानभूमिविषेस्थितहोताभया ॥ और
मेघोंकेजलकीधाराकूं आपणेशरीरऊपरिसहनकरताभया ॥ और जबी उष्णकालआवै तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि मध्याह्नकेसूर्य

करिकै तपायमानकरिजापाषाणकीशिलाहै ताशिलाऊपरि चारोंओरतैंअग्निजगाइकै तिनअग्नियोंकेमध्यविषेस्थितहोताभया ॥ और जबी शीतकालआवै ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि हिमयुक्तदेशविषेस्थित जोस्थिरजलहै ताजलविषे स्थितहोताभया ॥ और ऋग् यजुष् साम येतीनवेदहैंस्वरूपजिसका ऐसाजोआदित्यमंडलविषेस्थित सूर्यभगवान्है ॥ तासूर्यभगवान्विषे आपणेनेत्रोंकी दृष्टिकूंएकाग्रकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि मनकरिकै तासूर्यभगवान्काध्यानकरताभया ॥ और आपणेप्राणोंकीरक्षाकरणेवासते सो याज्ञवल्क्यमुनि वृक्षोंकेपत्रोंकूं तथामूलफलोंकूं भक्षणकरताभया ॥ सोपत्रादिकोंकाभक्षणभी दिनदिनविषे नहींकरताभया ॥ किंतु कबीतौ सोयाज्ञवल्क्यमुनि तीसरेदिनविषे पत्रादिकोंकाभक्षणकरताभया ॥ और कबीतौ सोयाज्ञवल्क्यमुनि षष्ठेदिनविषे पत्रादिकोंकाभक्षणकरताभया ॥ और कबीतौ सोयाज्ञवल्क्यमुनि द्वादशदिनविषे पत्रादिकोंकाभक्षणकरताभया ॥ इसप्रकार पत्रादिकोंकाभक्षणकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेशरीरकूंसुकाता भया ॥ और निद्रातैं तथाश्रमतैं रहितहोताभया ॥ और पूर्व उपनयनकालविषे पितानैंउपदेशकऱ्याजोगायत्रीमंत्र तागायत्रीमंत्रकूं वाणीकरिकैजपताहुआ सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेमनकरिकै निरंतर सूर्यभगवान्काध्यानकरताभया ॥ हेशिष्य ! याप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिनैं जबी बहुतकालपर्यंत तपकऱ्या तबी याज्ञवल्क्यमुनिकेतपकरिकै प्रसन्नहुआसोसूर्यभगवान् पुरुषकेरूपकूंधारणकरिकै तायाज्ञवल्क्यमुनिकेसन्मुख स्थितहोताभया ॥ तासूर्यभगवान्कूंदेखिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि तासूर्यभगवान्केप्रति दंडवत्प्रणामकरताभया ॥ और संपूर्णजगत्काबाह्यप्राणरूप तथा महान्तपकाफलरूप जोसूर्यभगवान्है ताकूंदेखिकरिकै प्रसन्नमनहुआ सोयाज्ञवल्क्यमुनि तासूर्यभगवान्कीस्तुतिकरताभया ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रेमकूंदेखिकै सोसूर्यभगवान्भी बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और तासूर्यभगवान्केनेत्र आनंदकेअश्रुवोंकरिकै पूर्णहोतेभये ॥ और प्रेमकरिकै तासूर्यभगवान्केरोमांच खडेहोतेभये ॥ इसप्रकार प्रेमकरिकेपूर्णहुआ सोसूर्यभगवान् आपणेदोनोंहस्तोंकूं याज्ञवल्क्यमुनिकेमस्तकऊपरिराखताभया ॥ और सोसूर्यभगवान् तायाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेपुत्र ! तू बाल्यअवस्थाविषे यौवनविषेस्थितहोइकै महान्तपकरिकै बहुतक्लेशकूंप्राप्तभयाहै ॥

तातुमारेतपकरिकै मैंसूर्यभगवान् बहुतप्रसन्नभयाहूं॥ यातैं जिसपदार्थकेप्राप्तिकीइच्छा तुमारेकूंहोवै ॥तिसपदार्थकेप्राप्तिकावर तू ह
मारेसैंमाग॥ मैंसूर्यभगवान् तुमारेप्रति तिसीपदार्थकीप्राप्तिकरौंगा॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी सूर्यभगवान्ने याज्ञवल्क्य
मुनिकेप्रतिकह्या॥ तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेमस्तकऊपरि दोनोंहाथोंकूंजोडिकरिकै तथा नीचमुखकरिकै सूर्यभगवान्केप्रति
याप्रकारकावचन कहताभया॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच॥ हेसूर्यभगवन्! आप सर्वजगत्केप्राणहो तथा संपूर्णशुभअशुभकर्मोंके
साक्षीहो॥ यातैं याजगत्विषे यद्यपि आपकूंकोईपदार्थअज्ञातनहींहै॥ तथापि आपकेसमीप मैंबालक आपणेवृत्तांतकूंकथनकरता
हूं॥ हेभगवन्! व्यासभगवान्काशिष्यजोवैशंपायननामाऋषिहै॥ तावैशंपायनसें मैंयाज्ञवल्क्य पूर्व विद्याअध्ययनकरताभया॥ औ
र मैंयाज्ञवल्क्य शरीरमनवाणीकरिकै देवताकीन्यांई तावैशंपायननामागुरुकीसेवाकरताभया॥ और किसीकालपाइके सर्वऋषि
मिलिकै परस्पर याप्रकारकासंकेत आपसमैं करतेभये॥ जोऋषि आजदिनविषे महामेरुऊपरि समाजविषेनहींआवेगा॥ तिस
ऋषिकूं सप्तरात्रितैंअनंतर ब्रह्महत्याकीप्राप्तिहोवेगी॥ याप्रकारका जो तिनऋषियोंकासंकेतथा तासंकेतकूं हमारागुरुवैशंपायन
भेदनकरताभया॥ तासंकेतकेभेदनकरणेकरिकै तावैशंपायनकूं किंचित्निमित्तकरिकै ब्रह्महत्याकीप्राप्तिहोतीभई॥ ताब्रह्महत्याकरि
कै ग्लानिकूंप्राप्तभयाहैमुखजिसका ऐसासोवैशंपायननामाहमारागुरु ताब्रह्महत्याकेनिवृत्तिवासतै हमसर्वशिष्योंकेप्रति प्रायश्चि
त्तकरणेकीआज्ञाकरताभया॥ तिसतैंअनंतर मैंयाज्ञवल्क्य तिनसर्वब्रह्मचारियोंऊपरिअनुग्रहकरिकै भक्तिपूर्वक तावैशंपायननामागु
रुकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥ हेगुरो! आपकाशरीर वृद्धअवस्थाकरिकै युक्तहै॥ यातैं ताप्रायश्चित्तकरणेविषे आपकातौसा
मर्थ्यहैनहीं॥ और यहजेआपकेशिष्यहैं ते बाल्यअवस्थाकरिकैयुक्तहैं॥ यातैं इनशिष्योंकाभी ताप्रायश्चित्तकरणेविषे सामर्थ्यनहीं॥
और मैंयाज्ञवल्क्य दृढशरीरवालाहूं तथा यौवनअवस्थाकेसन्मुख प्राप्तभयाहूं॥ यातैं आपकेब्रह्महत्याकीनिवृत्तिवासतै मैंही ता
प्रायश्चित्तकूंकरोंगा॥ हेभगवन्! याप्रकारकावचन जबी हमनें वैशंपायननामागुरुकेप्रतिकह्या तबी सोवैशंपायननामा हमारागुरु
ब्रह्महत्याकेप्रभावतैं विपरीतभावकूंप्राप्तहोइकै हमारेऊपरि उलटाक्रोधवान्होताभया॥ इसप्रकार क्रोधकूंप्राप्तहुआ सोवैशंपायन

नामाहमारागुरु निर्दयपुरुषकीन्यांई याप्रकारकावचन हमारेप्रति कहताभया ॥ हेब्राह्मणोंकेनिंदकयाज्ञवल्क्य! तुमारेतांई जावि
द्या हमनेंदईहै ॥ तिसविद्याकूं शीघ्रही तुम परित्यागकरो ॥ हेभगवन्! याप्रकारकावचन जबी तावैशंपायनगुरुनें हमारेप्रतिक
ह्या ॥ तबी मैंयाज्ञवल्क्य आपणेअपराधकेक्षमाकरावणेवासते आपणेशरीरमनवाणीकरिकैं नानाप्रकारकेनमस्कारादिकउपायों
कूंकरताभया ॥ परंतु सोवैशंपायननामा हमारागुरु हमारेउपरि प्रसन्ननहींहोताभया ॥ किंतु उलटा हमारी प्रार्थनाकूंदेखिकरिकैं
सोवैशंपायननामा हमारागुरु अधिकक्रोधवान्होइकै याप्रकारकावचन हमारेप्रति कहताभया॥ हेब्राह्मणोंकेनिंदकयाज्ञवल्क्य! जो
तू हमारेप्रसन्नकरणेवासते उद्यमकरैगा तौ तेरेशरीरप्राणादिकोंकूंनाशकरणेहाराशाप मैं तुमारेतांईदेवोंगा ताशापकरिकै इस
लोकविषे तथा परलोकविषे तू दुःखकूंहीप्राप्तहोवैगा ॥ यातैं जो तुमारेकूं इसलोकके तथापरलोकके सुखकीइच्छाहोवै तौ हमारे
प्रसन्नकरणेकेउपायोंकापरित्यागकरिकैं शीघ्रही हमारीविद्याकापरित्यागकरो ॥ जोतूहमारीविद्याका शीघ्रहीपरित्याग नहींकरै
गा तौ इसीकालविषे मैं तुमारेकूंशापदेकेनष्टकरोंगा ॥ हेभगवन्! याप्रकारकावचन जबी तावैशंपायननामागुरुनें हमारेप्रतिक
ह्या तबी मैंयाज्ञवल्क्य तागुरुतैंभयकूंप्राप्तहोइकै तागुरुकेप्रसन्नकरणेकेउपायोंतैं निवृत्तहोताभया ॥ और जैसे कोईपुरुष अ
न्नकावमनकरैहैतैसे मैंयाज्ञवल्क्य तासंपूर्णविद्याकावमनकरताभया ॥ इसप्रकार संपूर्णविद्याका परित्यागकरिकै सोमैंयाज्ञवल्क्य
विद्यातैंरहितहोताभयाहूं ॥ और मनुष्यगुरुतैंविद्याअध्ययनकरिकै हमनैं पूर्व दुःखकाअनुभवकर्‍याहै ॥ यातैं पुनःकिसीमनु
ष्यगुरुकेआगे विद्याकीप्राप्तिवासते मैं प्रार्थनाकरतानहीं ॥ याकारणतैं पुनःविद्याकीप्राप्तिवासते मैंयाज्ञवल्क्य आपईश्वरकेशरण
कूंप्राप्तभयाहूं ॥ हेशिष्य! याप्रकारकीप्रार्थना जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं सूर्यभगवान्केआगेकरी तबी सोसूर्यभगवान् याज्ञव
ल्क्यमुनिकूं आपणेरथविषेस्थापनकरिकै व्याकरणादिकषट्अंगोंयुक्त चारिवेदोंकाअध्ययन याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति करावताभया ॥
और जैसे पूर्व अंभिणीनामादेवता सूर्यभवान्काशिष्यहोताभया तैसे सोयाज्ञवल्क्यमुनिभी सूर्यभगवान्काशिष्य होताभया ॥ हे
शिष्य! इसप्रकार सूर्यभगवान्तैं संपूर्णवेदोंकेयथार्थअर्थकूंजाणिकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि गृहस्थआश्रमकरणेतैं विरक्तहोताभया॥

और तिसीब्रह्मचर्यआश्रमतैंही सोयाज्ञवल्क्यमुनि संन्यासआश्रमकेग्रहणकरणेका उद्यमकरताभया ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार तायाज्ञवल्क्यमुनिकूंविरक्तहुआदेखिकै सोसूर्यभगवान् तायाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ सूर्यभगवानुउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ! विद्याकेअध्ययनतैंअनंतर शिष्यनैं गुरुकेप्रति गुरुदक्षिणा अवश्यदेणी ॥ यहशास्त्रकीआज्ञाहै ॥ यातैं हमनैं जोतुमारेप्रति विद्यादईहै ॥ ताविद्याकीगुरुदक्षिणा तुमहमारेप्रतिदेवो ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥हेभगवन् ! जागुरुदक्षिणा आप हमारेप्रतिकहो ॥ सागुरुदक्षिणा मैं आपकेतांईदेवों ॥ सूर्यभगवानुवाच ॥हेयाज्ञवल्क्य ! याप्रकारकीगुरुदक्षिणा हम तुमारेसैं मागतेहैं ॥ तू अबी संन्यासआश्रमकूंग्रहणमतकर ॥ किंतु अबीतुम गृहस्थआश्रमकाग्रहणकरो॥ और हमनैं जोतुमारेप्रति वेदविद्याउपदेशकरीहै ॥ तावेदविद्याका अधिकारीब्राह्मणोंकेप्रति तथा अधिकारीक्षत्रियवैश्योंकेप्रति उपदेशकरो ॥ इसप्रकार हमारे विद्याकीसंप्रदायकूंप्रवृत्तकरिकै पश्चात् आपने संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरणा॥ याप्रकारकी हमारी आज्ञाकूं तुमअंगीकारकरो॥ यह ही हमारीगुरुदक्षिणाहै ॥ हेयाज्ञवल्क्य ! तिनचारीवेदोंविषे जाउपनिषद्भागरूपब्रह्मविद्या हमने तुमारेप्रति उपदेशकरीहै ॥ सा ब्रह्मविद्या तुमनैं संन्यासआश्रमतैंपूर्व अथवा संन्यासआश्रमतैंउत्तर विषयवासनातैंरहित अधिकारीपुरुषोंकेप्रतिही उपदेशकरणी॥ हेशिष्य ! इसप्रकार जबी सूर्यभगवान्नैं याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति आज्ञाकरी ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि तासूर्यभगवान्केआज्ञाकूं आपणेमस्तकऊपरिराखिकै तथा सूर्यभगवान्केतांई दंडवत्प्रणामकरिकै भूमिलोकविषेआवताभया॥ तहांभूमिलोकविषेजाइकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेयज्ञवल्कनामापितातैं गृहस्थआश्रमकरणेकीआज्ञामागताभया ॥ तापिताकीआज्ञाकूंपाइकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजातैंधनकूंलैकै दोस्त्रियोंकूं विवाहताभया ॥ तहां एकतौ कात्यायननामाऋषिकीपुत्री कात्यायनीनामास्त्री और दूसरी मित्रयुनामाऋषिकीपुत्री मैत्रेयीनामास्त्री ॥ इसप्रकार गृहस्थआश्रमकूंधारणकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि जैसे पूर्वब्रह्मचर्यआश्रमविषे वेदोंकेअध्ययनकरिकै ऋषियोंकेऋणकूं निवृत्तकरताभया॥ तैसे देवतावोंकेऋणकूं तथा पितरोंकेऋणकूंभी निवृत्तकरताभया ॥ तहां बहुतदक्षिणाकरिकैयुक्त जेअग्निष्टोमादिकयज्ञहैं॥ तिनयज्ञोंकूंकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि देवतावोंकेऋणकीनि

वृत्तिकरताभया॥और आपणेसमानगुणवालेजेश्रद्धावान्पुत्रहैं तथापुत्रियांहै ॥ तिनोंकूंउत्पन्नकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि पितरोंके ऋणकीनिवृत्तिकरताभया ॥शंका॥ हेभगवन्! पूर्व आपने याज्ञवल्क्यमुनिकूंविरक्तकह्या ॥ और अबीआपने याज्ञवल्क्यमुनिकूं ऋणकीप्राप्तिकही ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? जोपुरुष विरक्तहोवैहै ॥ ताकूं ऋणकीप्राप्तिसंभवैनहीं ॥ और जोपुरुष ऋणवान्होवैहै॥ताकेविषे विरक्ततासंभवैनहीं॥समाधान॥हेशिष्य! यहयाज्ञवल्क्यमुनि विरक्तहै॥यातें ताकेविषे यद्यपि ऋणकीप्राप्तिसंभवै नहीं॥ तथापि ब्रह्मचर्यआश्रमकेसंबंधतें तथा गृहस्थआश्रमकेसंबंधतें तायाज्ञवल्क्यमुनिविषे ऋणकीप्राप्तिसंभवैहै ॥तहांश्रुति॥ जायमानोवैब्राह्मणस्त्रिभिर्ऋणैर्ऋणवाञ्जायते॥अर्थयह॥ उपनयनसंस्कारकरिकैयुक्तजोब्राह्मणहै ॥ सोब्राह्मण ऋषिऋण देवऋण पितृऋण यातीनऋणोंकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ १ ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जैसे ब्रह्मचर्यआश्रमवालापुरुष ऋषियोंकाऋणीहोवैहै ॥ तैसे गृहस्थआश्रमवालापुरुषभी देवतावोंका तथापितरोंकाऋणीहोवैहै ॥ और जोपुरुष तीव्रवैराग्यकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरैहै ॥ तिससंन्यासीपुरुषकूं जैसे लौकिकपुरुषोंकाऋण प्राप्तहोवैनहीं ॥तैसे ऋषिऋण देवऋण पितृऋण यहतीनप्रकारकावैदिकऋणभी तासंन्यासीकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातें संन्यासआश्रमतैंपूर्व विद्वान्पुरुषकूंभी तेतीनऋण अवश्यप्राप्तहोवैहैं ॥ किंवा जैसे यालोकविषे पुत्रकेजन्मादिकनिमित्तोंकेप्राप्तहुए यहपुरुष पुत्रइष्टिआदिककर्मोंकूंअवश्यकरैहै॥ यातें तेपुत्रकेजन्मादिक पुत्रइष्टिआदिककर्मोंकेकरणेविषे निमित्तकारणहैं ॥ तैसे ऋषिऋण देवऋण पितृऋण यातीनऋणोंकीनिवृत्तिवासते शास्त्रने विधानकरेयेजेकर्महैं ॥ तिनकर्मोंकेकरणेविषे ब्रह्मचर्यआश्रम तथागृहस्थआश्रम येदोनोंआश्रम निमित्तकारणहैं ॥ याकारणतें संन्यासआश्रमतैंपूर्व विद्वान्पुरुषनेंभी तिनतीनऋणोंकीनिवृत्तिवासते तिनकर्मोंकूंअवश्यकरणा॥ शंका ॥ हेभगवन्! ब्रह्मचर्यआश्रम तथागृहस्थआश्रम येदोनोंआश्रमही याअधिकारीपुरुषकूं जोतीनऋणोंकीप्राप्तिकरतेहोवैं तो यहअधिकारीपुरुष तिनदोनोंआश्रमोंकूंकिसवासते ग्रहणकरताहै ? किंतु तिनदोनोंआश्रमोंकापरित्यागकरिकै यहअधिकारीपुरुष प्रथम वानप्रस्थआश्रमकूंहीग्रहणकरै ॥ जाकरिकै यहअधिकारीपुरुष तिनतीनोंऋणोंतैंमुक्तहोवै ॥समाधान॥ हे

शिष्य! ब्रह्मचर्यआश्रम तथागृहस्थआश्रम यादोनोंआश्रमोंकेग्रहणतैंविना प्रथमही वानप्रस्थआश्रमकाग्रहणकरणा योग्य नहीं॥काहेतैं! स्मृतिविषे यहकह्याहै ॥ अनाश्रमीनतिष्ठेतक्षणमेकमपिद्विज॥ अर्थयह॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंका नामद्विजहै ॥ तेद्विज किसीआश्रमतैंविना एकक्षणमात्रभी नहींस्थितहोवें ॥ किंतु ब्रह्मचर्यादिकचारिआश्रमोंविषे किसीएक आश्रमकूंग्रहणकरिकैही यहद्विज यामनुष्यलोकविषेस्थितहोवें ॥ जोपुरुष किसीआश्रमतैं विनाअनाश्रमीरहैहै ॥ तापुरुषकूं पापकीप्राप्तिहोवैहै ॥ १ ॥ यास्मृतिविषे आश्रमतैंविना द्विजकेस्थितिका निषेधकऱ्याहै ॥ यातैं ब्रह्मचर्यादिकचारिआश्रमविषे किसीएकआश्रमकूं ग्रहणकरिकैही द्विजनैं यामनुष्यलोकविषे स्थितहोणा ॥ और शास्त्रविषे तौ वानप्रस्थआश्रमग्रहणकरणेके कालकानियमकथनकऱ्याहै ॥ यातैं ब्रह्मचर्य गृहस्थ यादोनोंआश्रमोंकेग्रहणतैंविना प्रथमही वानप्रस्थआश्रमकाग्रहणसंभवै नहीं ॥ अब वानप्रस्थआश्रमकेग्रहणकरणेकेकालकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! मनुस्मृतितैंआदिलैके जेधर्मशास्त्रहैं ॥ तिनोंविषे यहकह्याहै ॥ यहगृहस्थाश्रमवालापुरुष जिसकालविषे आपणेशरीरमैं चर्मकीशिथिलतादेखै ॥ तथा आपणेकेशोंविषे शुक्लवर्ण देखै॥ तथा आपणेपुत्रोंकेपुत्रोंकूंउत्पन्नहुआदेखै॥ तिसीकालविषे सोगृहस्थपुरुष पूर्वगृहस्थआश्रमकापरित्यागकरिकै वनविषेनि वासरूप वानप्रस्थआश्रमकाग्रहणकरै ॥ याप्रकार शास्त्रोंविषे वानप्रस्थआश्रमग्रहणकरणेकाकाल कथनकऱ्याहै॥ यातैं यहसिद्ध भया ॥ ब्रह्मचर्यआश्रम तथागृहस्थआश्रम यादोनोंआश्रमोंकूंग्रहणकरिकै यह अधिकारीपुरुष जोकदाचित् बाल्यअवस्थाविषे तथायौवनअवस्थाविषे वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरैगा ॥ तौ वानप्रस्थआश्रमकेकालकूंबोधनकरणेहारेशास्त्रकाविरोधहोवैगा ॥ और जोयहअधिकारीपुरुष तावानप्रस्थआश्रमकेकालपर्यंत किसीआश्रमतैंविनाही स्थितहोवैगा तौ ॥ अनाश्रमीनतिष्ठेत क्षणमेकमपिद्विजः॥ यावचनकाविरोधहोवैगा॥ यातैं ब्रह्मचर्यआश्रमतैंतथागृहस्थआश्रमतैं प्रथमही वानप्रस्थआश्रमकाग्रहण श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रतैंविरुद्धहै ॥ शंका ॥ हे भगवन्! जैसे गृहस्थआश्रमतैंविनाही ब्रह्मचर्यआश्रमतैं अनंतर संन्यासआश्रमकाग्र हणहोवैहै॥ तैसे गृहस्थआश्रमतैंविनाही ब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रमकेग्रहणकरणेविषे कौनबाधकहै? ॥समाधान॥

हेशिष्य! जैसे तीव्रवैराग्यकेउत्पन्नहुए श्रुतिनें ब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतर तथागृहस्थआश्रमतैंअनंतर संन्यासआश्रमकाविधानक
न्याहै ॥ तैसे ब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रमकाविधान किसीश्रुतिस्मृतिनैंकन्यानहीं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषनैं गृह
स्थआश्रमतैंअनंतरही वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरणा ॥ शंका ॥ हे भगवन्! ब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतर याअधिकारीपुरुषनैं गृह
स्थआश्रमकूंग्रहणकरणा ॥ और तागृहस्थआश्रमतैंअनंतर याअधिकारीपुरुषनैं वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरणा ॥ याप्रकारका
जोअपनेनियमकह्या सोसंभवैनहीं॥काहेतें ? ब्रह्मचर्यंपरिचरेदाशरीरविमोक्षणात्॥अर्थयह ॥ यास्थूलशरीरकेनाशपर्यंत यह
अधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यआश्रमकूंसेवनकरै ॥ १ ॥ यावसिष्ठभगवान्केवचननसैं तानियमकाविरोधहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य!
मरणपर्यंत यहअधिकारीपुरुष एकआश्रमकासेवनकरै ॥ याप्रकारकेअर्थकूंबोधनकरणेहारा जोवसिष्ठभगवान्कावचनहै ॥ सोवच
न पूर्वउक्तक्रमकानिवारणकरैनहीं किंतु उलटा ताक्रमकूं सोवचन दृढकरैहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेशि
ष्य! तावसिष्ठभगवान्केवचनका यहअभिप्रायहै ॥ ब्रह्मचर्यआश्रमविषे तथा गृहस्थआश्रमविषे तथा वानप्रस्थआश्रमविषे याअ
धिकारीपुरुषका जोअत्यंतरागहोवै तौ ताअधिकारीपुरुषनैं मरणपर्यंत ताआश्रमकेनहींपरित्यागकरणेकासंकल्पकरिकै मरणप
र्यंत ताआश्रमविषेहीस्थितहोणा॥इसप्रकारकादृढसंकल्पकरिकै जोपुरुष एकआश्रमविषेहीस्थितहोवैहै॥सोपुरुष उत्तरउत्तरआ
श्रमकेनहींग्रहणकरणेकरिकै पापरूपदोषकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रागपूर्वक एकआश्रमकेसेवनकरणेहारेपुरुषकूं पा
परूपदोषकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे दृढसंकल्पपूर्वक एकआश्रमकेसेवनकरणेहारेपुरुषकूं तापापरूपदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हे
भगवन्! जिसकूंगृहस्थआश्रमकरणेकीइच्छानहींहै ऐसाजोनैष्ठिकब्रह्मचारीहै॥ सोनैष्ठिकब्रह्मचारी वनविषेनिवासादिरूप वानप्र
स्थकेकर्मोंकूंकरिकै आपणेविषे वानप्रस्थभावकूंसिद्धकरैगा ॥ यातैं गृहस्थआश्रमतैंउत्तरही वानप्रस्थआश्रमहोवैहै याप्रकारकी
व्यवस्थासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! जैसे यालोकविषे कोईगृहस्थपुरुष आपत्कालकेप्राप्तहुए वनविषेनिवासकरैहै ॥ त
था भिक्षाअटन काषायवस्त्रोंकूंधारणकरैहै॥ परंतु वनविषेनिवासादिरूप वानप्रस्थकेकर्मोंकेकरणेकरिकै सोगृहस्थपुरुष वानप्रस्थ

होइसकैनहीं ॥ तथा भिक्षाअटनादिरूप संन्यासीकेकर्मकरणेकरिकै सोगृहस्थपुरुष संन्यासीहोइसकैनहीं ॥ तैसे सोनैष्ठिकब्रह्म चारीभी वनविषेनिवासकरणेकरिकै वानप्रस्थहोइसकैनहीं ॥ किंवा जैसे गृहस्थपुरुष देवतावोंका तथा पितरोंका ऋ णीहोवैहै ॥ तैसे यहब्रह्मचारी यद्यपि देवतावोंका तथा पितरोंका ऋणीनहींहै ॥ तथापि सोब्रह्मचारी ऋषियोंकाऋणीहै ॥ और जोअधिकारीपुरुष वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष ऋषिऋण देवऋण पितृऋण यातीनऋणों कीनिवृत्तितैंविना वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरैनहीं ॥ किंतु तिनतीनऋणोंकूंनिवृत्तकरिकैही सोअधिकारीपुरुष वानप्रस्थ आश्रमकूंग्रहणकरैहै ॥ याकारणतैंभी वनकेसेवनकरिकै सोनैष्ठिकब्रह्मचारी वानप्रस्थभावकूं प्राप्तहोइसकैनहीं ॥ किंवा जैसे यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यआश्रमतैंविना गृहस्थआश्रमकूंग्रहणकरैनहीं ॥ किंतु ब्रह्मचर्यआश्रमकूंप्रथमग्रहणकरिकैही पश्चात् यहअधिकारीपुरुष गृहस्थआश्रमकाग्रहणकरैहै ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुष गृहस्थआश्रमतैंविना वानप्रस्थआश्रमका ग्रहणकरै नहीं ॥ किंतु प्रथमगृहस्थआश्रमकूंग्रहणकरिकैही पश्चात् यहअधिकारीपुरुष वानप्रस्थआश्रमकाग्रहणकरै ॥ यातैं यहक्रमसिद्ध भया ॥ यहअधिकारीपुरुष प्रथम ब्रह्मचर्यआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ ताब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष गृहस्थआश्रम कूंग्रहणकरै ॥ तागृहस्थआश्रमतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ याप्रकारकाक्रम अनेकश्रुतिस्मृतिआ दिकशास्त्रोंविषे कथनकऱ्याहै ॥तहांश्रुति॥ ब्रह्मचर्याद्गृही भवेद्गृहाद्वनी भवेत् ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यआ श्रमतैंअनंतर गृहस्थआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ और गृहस्थआश्रमतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ १ ॥ तहां दक्षप्रजापति कीस्मृति ॥श्लोक॥ त्रयाणामानुलोम्यंस्यात् प्रातिलोम्यंनविद्यते॥प्रातिलोम्यंनयोयाति नतस्मात्पापकृत्तमः॥ और प्रथम ब्रह्मचर्यआश्रम तिसतैंअनंतर गृहस्थआश्रम तिसतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रम याप्रकारकेक्रमकानाम अनुलोमहै ॥ और प्रथम गृहस्थआश्रम तिसतैंअनंतर ब्रह्मचर्यआश्रम तिसतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रम॥अथवा प्रथमब्रह्मचर्यआश्रम तिसतैंअनंतर वा नप्रस्थआश्रम तिसतैंअनंतर गृहस्थआश्रम ॥ याप्रकारकेविपरीतक्रमकानाम प्रतिलोमहै ॥ तहां जोअधिकारीपुरुष अनुलोम

करिकै ब्रह्मचर्यादिकतीनआश्रमोंकूंग्रहणकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं महान्पुण्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोपुरुष प्रतिलोमकरिकै तिनब्रह्मचर्यादिकतीनआश्रमोंकूंग्रहणकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं महान्पापकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें अनुलोमकरिकैही याअधिकारीपुरुषनैं तिनआश्रमोंकूंग्रहणकरणा ॥ शंका ॥ जैसे ब्रह्मचर्यादिकतीनआश्रमोंविषे आपनैं क्रमकह्या॥तैसे चतुर्थसंन्यासआश्रमविषे आपनैं सोक्रम किसवासतेनहींकह्या ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ! ब्रह्मचर्यादिकतीनआश्रमोंविषे जिसप्रकारकाक्रम श्रुतिस्मृतिनैं कथनकऱ्याहै ॥ तिसप्रकारकाक्रम संन्यासआश्रमविषे किसीश्रुतिस्मृतिनैं कथनकऱ्यानहीं ॥ यातें संन्यासआश्रमकेग्रहणकरणेविषे कोईक्रमनहीं ॥ किंतु जिसकालविषे याअधिकारीपुरुषकूं तीव्रवैराग्य प्राप्तहोवै॥तिसीकालविषे यहअधिकारीपुरुष संन्यासआश्रमकाग्रहणकरै ॥ तहांश्रुति॥यदहरेवविरजेत्तदहरेवप्रव्रजेत् यदिवेतरथाब्रह्मचर्यादेवप्रव्रजेद्गृहाद्वावनाद्वा॥अर्थयह ॥ याअधिकारीपुरुषकूं जिसदिनविषे तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै॥तिसीदिनविषे सोअधिकारीपुरुष संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै॥तहां याअधिकारीपुरुषकूं पूर्वलेपुण्यकर्मोंकेवशतें जोकदाचित् ब्रह्मचर्यआश्रमविषेही तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै तौ यहअधिकारीपुरुष ताब्रह्मचर्यआश्रमतैंही संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ और याअधिकारीपुरुषकूं ग्रहस्थआश्रमविषे जोकदाचित् तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ तौ यहअधिकारीपुरुष ताग्रहस्थआश्रमतैंही संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ और याअधिकारीपुरुषकूं जोकदाचित् वानप्रस्थआश्रमविषे तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै तौ यहअधिकारीपुरुष वानप्रस्थआश्रमतैंही संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै ॥१॥ तहांस्मृति॥श्लोक॥यदैवचास्यवैराग्यं जायतेसर्ववस्तुषु॥ तदैवसंन्यसेद्विद्वान् अन्यथापतितोभवेत्॥अर्थयह॥ याअधिकारीपुरुषकूं जिसकालमैं सर्वपदार्थोंविषे तीव्रवैराग्यउत्पन्नहोवै॥तिसीकालविषे सोअधिकारीपुरुष संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ याकेविषेकोईक्रमहैनहीं॥परंतु तावैराग्यतैंविना संन्यासकूंकरताहुआ यहपुरुष पतितहोवैहै॥१॥ हेशिष्य! इसतैंआदिलेके अनेकश्रुतिस्मृतियोंविषे संन्यासआश्रमकेग्रहणकरणेविषे तीव्रवैराग्यकूंही मुख्यकारणकह्याहै॥सोतीव्रवैराग्य जिसआश्रमविषे यापुरुषकूंप्राप्तहोवै॥तिसीआश्रमतैंयहपुरुष संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै॥शंका॥हेभगवन्! जैसे श्रुतिस्मृतियोंनैं ब्रह्मचर्यादिकतीनआश्रमोंकाक्रम

निरूपणकऱ्याहै॥ तैसे कितनीकश्रुतिस्मृतियोंनें संन्यासआश्रमका भीक्रमही कथनकऱ्याहै॥ तहांश्रुति ॥ ब्रह्मचर्याद् गृही भवेद् गृहा द्वनी भवेद्वनात्प्रव्रजेत्॥ याश्रुतिविषे वानप्रस्थआश्रमतैं अनंतरही संन्यास आश्रमकाविधानकऱ्याहै॥ तहांस्मृति॥ श्लोक॥ ऋणत्रयम पाकृत्य निर्ममोनिरहंकृतः॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवाथ वैश्योवाप्रव्रजेद् गृहात्॥ अर्थयह॥ ऋषिऋण देवऋण पितृऋण यातीनऋणों कीनिवृत्तिकरिकै अहंममअभिमानतैंरहित जोब्राह्मणहै अथवा क्षत्रियहै अथवावैश्यहै॥ येतीनोंवर्णसंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरैं॥ १॥ या स्मृतिविषेभी तीनऋणोंकीनिवृत्तितैंअनंतरही संन्यासआश्रमकाविधानकऱ्याहै यातैं संन्यासकेअक्रमकूंबोधनकरणेहारी श्रुतिस्मृति योंका तथा संन्यासकेक्रमकूंबोधनकरणेहारी श्रुतिस्मृतियोंका परस्परविरोधप्राप्तहोवैहै?॥ समाधान॥ हेशिष्य! विषयभोगोंतैं जिसपु रुषकूंतीव्रवैराग्यनहींप्राप्तभयाहै॥ किंतु मंदवैराग्य प्राप्तभयाहै॥ तामंदवैराग्यवान्पुरुषकेप्रति तेश्रुतिस्मृतियां वानप्रस्थआश्रमतैंअनं तरचतुर्थअवस्थाविषे संन्यासआश्रमकाविधानकरैंहैं ॥ और जिसपुरुषकूं विषयभोगोंतैं तीव्रवैराग्य प्राप्तभयाहै॥ तातीव्रवैराग्यवान् पुरुषकेप्रति तेश्रुतिस्मृतियां ब्रह्मचर्यादिकआश्रमोंविषेभी संन्यासआश्रमकाविधानकरैंहैं॥ यातैं संन्यासआश्रमकेअधिकारीपुरुषोंके भेदहोणेतैं तिनश्रुतिस्मृतियोंका परस्परविरोधहोवैनहीं ॥ किंवा न्यासोहिब्रह्म ॥ याश्रुतिविषे संन्यासआश्रमकूं ब्रह्मरूपकह्या है ॥ और तदेतद्ब्रह्मापूर्वमनपरं ॥ याश्रुतिविषे ब्रह्मकूं पूर्वउत्तरभावतैंरहितकह्याहै ॥ यातैं जैसे ब्रह्मविषे पूर्वउत्तरभावनहींहै ॥ तैसे ब्रह्मरूपसंन्यासविषेभी पूर्वउत्तरभावसंभवैनहीं ॥ शंका॥ हेभगवन्! जैसे ब्रह्मचर्यआश्रमतैंउत्तर गृहस्थआश्रमहोवैहै ॥ तैसे संन्यासआश्रमतैंउत्तरभी कोईआश्रमहोवैहै अथवा नहींहोवैहै?॥ समाधान ॥ हेशिष्य! जैसे ब्रह्मचर्यआश्रमतैंउत्तर गृहस्थआश्रम होवैहै ॥ तथा गृहस्थआश्रमतैंउत्तर वानप्रस्थआश्रमहोवैहै ॥ तैसे संन्यासआश्रमतैंउत्तर कोईदूसराआश्रमहोवैनहीं ॥ किंतु ब्रह्म चर्यादिकसर्वआश्रमोंका यहसंन्यासआश्रमही अवधिरूपहै ॥ यहवार्ता शारीरकभाष्यकेतृतीयअध्यायकेचतुर्थपादविषे ॥ तद्भूत स्यतुनातद्भावोजैमिनेरपिनियमात्तद्रूपाभावेभ्यः॥ याचालीसमेसूत्रविषे श्रीव्यासभगवान्नें तथा तासूत्रकेव्याख्यानकरता श्रीभाष्यकारोंनें विस्तारतैंनिरूपणकरीहै ॥ तासूत्रकासंक्षेपतैं यहअर्थहै ॥ संन्यासआश्रमतैंऊपरि किसीआश्रमकेग्रहणकरणेका

बोधनकरणेहारीकोईश्रुतिस्मृतिहैनहीं ॥ तथा शिष्टपुरुषोंका ऐसाआचारभीदेखणेविषेआवतानहीं ॥ याकारणतें चतुर्थ संन्यासआ श्रमकूंप्राप्तभयाजोपुरुषहै ॥ तापुरुषका शरीरकेनाशपर्यंत ताचतुर्थआश्रमतैंऊपरिअवरोहहोवैनहीं ॥१॥ हेशिष्य ! चतुर्थसंन्यास आश्रमतैंऊपरि किसीआश्रमकाग्रहणहोवैनहीं ॥ यहवार्ता जैसे सर्वशास्त्रोंविषेप्रसिद्धहै ॥ तैसे द्विजनैं किसीआश्रमतैंविना नहीं स्थितहोणा यहवार्ताभी श्रुतिस्मृतिआदिकसर्वशास्त्रोंविषेप्रसिद्धहै ॥ तहां दक्षप्रजापतिकीस्मृति ॥ श्लोक ॥ अनाश्रमीनैवतिष्ठेद ब्दमेकमपिद्विजः॥आश्रमेणविनातिष्ठत् प्रायश्चित्तीयतेहिसः॥अर्थयह॥यालोकविषे द्विज आश्रमतैंविना एकवर्षपर्यंतभी नहीं स्थितहोवै॥किंतु किसीएकआश्रमकूंअंगीकारकरिकैही यहद्विज स्थितहोवै ॥ और जोद्विज एकवर्षपर्यंतभी आश्रमतैंविनारहैहै॥ताद्वि जकूं प्रायश्चित्तकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जबपर्यंत याद्विजकीस्त्रीजीवैहै ॥ तबपर्यंत गृहस्थआश्रमहोवैहै ॥ और स्त्रीकेमृत्युतैं अनंतर सोगृहस्थआश्रम निवृत्तहोइजावैहै॥यातैं याद्विजनैं स्त्रीकेमृत्युतैंअनंतर एकवर्षकेभीतरिही कैतौ पुनःस्त्रीकाविवाहकरणा॥ अथवा वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरणा ॥ अथवा संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरणा ॥ परंतु किसीआश्रमग्रहणतैंविना अनाश्रमीहोइ के द्विजनैं कदाचित्भीनहींरहणा ॥ १ ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ ब्रह्मचर्यआश्रमविषे ऋषियोंकेऋणकीनिवृत्तिकरिकै तथागृह स्थआश्रमविषे देवतापितरोंकेऋणकीनिवृत्तिकरिकै यहअधिकारीपुरुष वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ तावानप्रस्थआश्रमविषे यह अधिकारीपुरुष तीनोंऋणोंतैंरहितहोवैहै ॥ और जैसे ब्रह्मचारी देवताऋण पितृऋण यादोनोंऋणोंतैंरहितहोवैहै ॥ तथा गृ हस्थ ऋषियोंकेऋणतैंरहितहोवैहै ॥ तथा वानप्रस्थ ऋषिऋण देवऋण पितृऋण यातीनोंऋणोंतैंरहितहोवैहै॥ तैसे यहचतुर्थआ श्रमवालासंन्यासी लौकिकवैदिकसर्वऋणोंतैंरहितहोवैहै ॥ हेशिष्य ! याप्रकारशास्त्रकीव्यवस्थाकूंजानणेहारा सोयाज्ञवल्क्यमुनि मनकरिकै सर्वऋणोंतैंमुक्तहुआभी तागृहस्थआश्रमकेसंबंधतैं तिनऋणोंकूंप्राप्तहोताभया ॥ हेशिष्य ! गृहस्थआश्रमकूंअंगीकार करिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि जिसविचारकरिकै देवतापितरोंकीप्रसन्नताकरणेवासते गौसुवर्णअन्नादिकपदार्थोंकादानकरताभया ॥ ताविचारकूं तूश्रवणकर॥मैंयाज्ञवल्क्यनैं ब्रह्मचर्यआश्रमविषे वेदोंकाअध्ययनकरिकै जिसप्रकार ऋषियोंकाऋणदियाहै ॥ तिसी

प्रकार देवतावोंकाऋण तथापितरोंकाऋण देकरिकै पश्चात् मैं संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरौंगा॥ जोकदाचित् ऋषियोंकीन्यांई देवतापि
तरोंकाऋण मैं नहींदेवौंगा॥ तौ ऋषि देवता पितर यातीनोंकाविषमअर्चनरूपपंक्तिभेदहोवैगा॥ यातैंऋषियोंकीन्यांई देवतापितरोंके
तांईभी मैं भलीप्रकार ऋणदेवौं॥ इसप्रकार तीनऋणोंकीनिवृत्तिकरिकै मैंयाज्ञवल्क्य जबी संन्यासआश्रमकाग्रहणकरौंगा॥ तबी ह
मारेगुरुसूर्यभगवान्ने जोहमारेप्रति आज्ञाकरीथी॥ ताआज्ञाकापालन हमारेसैं भलीप्रकारहोवैगा॥ यातैं सूर्यभगवान्केवचनकूंसत्य
करणेवास्ते मैंयाज्ञवल्क्य स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिकरणेहारा जोयज्ञादिरूपप्रवृत्तिमार्गहै॥ तथामोक्षकीप्राप्तिकरणेहाराजोआत्मज्ञान
रूपनिवृत्तिमार्गहै॥ तिनदोनोंमार्गोंका पालनकरौं॥ हेशिष्य! याप्रकारकाविचारकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि देवतापितरोंकीप्रसन्नता
करणेवास्ते नानाप्रकारकादानकरताभया॥ अब तायाज्ञवल्क्यमुनिकेगृहस्थआश्रमकावर्णनकरैहैं॥ हेशिष्य! रात्रिदिनविषेसर्व
जीवोंकेउपकारकरणेहारा जोयाज्ञवल्क्यमुनिकागृहस्थआश्रमहै॥ ताकूंदेखिकरिकै सर्वलोक आश्चर्यकूंप्राप्तहोतेभये॥ तहां कात्याय
नी मैत्रेयीयादोनोंभार्यासहित तथाआज्ञाकारीपुत्रोंसहित सोयाज्ञवल्क्यमुनि यज्ञहोमादिककर्मोंकूंकरिकै इंद्रादिकदेवतावोंकापा
लनकरताभया॥ और दिनदिनविषे वेदकेपाठादिकोंकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि ऋषियोंकापालनकरताभया॥ और पुत्रादिकोंकीउत्प
त्तिकरिकै तथा पिंडदानादिकोंकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि स्वर्गवासी पितरोंकापालनकरताभया॥ और रात्रिविषेनिवासकरणेकेस्था
न तथानानाप्रकारकेअन्न तथा नानाप्रकारकेवस्त्र तथा सुवर्णादिकधन इसतैंआदिलेकै अनेकप्रकारकेपदार्थोंकादानकरणेकरिकै सो
याज्ञवल्क्यमुनि अर्थिमनुष्योंकापालनकरताभया॥ और तृणादिकोंकेदानकरणेकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि गौअश्वादिकपशुवोंका
पालनकरताभया॥ और अन्नकेपकावणेकेजेपात्रहैं॥ तथा भोजनकरणेकेजेपात्रहैं॥ तिनपात्रोंविषे परिशेषतैंरह्याजोअन्नहै॥ ताअन्नके
पावणेकरिकै तथा बलिदानादिकोंकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि काक श्वानकीटादिकजंतुवोंका पालनकरताभया॥ और जैसे यालो
कविषे किसीउदारधनीपुरुषकेगृहविषे दुंदुभिकेशब्दोंकरिकै अन्नार्थिजीवोंकूंबुलावैहैं॥ तैसे तायाज्ञवल्क्यमुनिकेगृहविषे वेदवाणी
रूपधेनुके स्वाहा वषट् स्वधा हंत याचारिस्तनरूपशब्दोंकरिकै देवतादिकोंका आवाहन करतेभये॥ तहां स्वाहा वषट् यादोनोंशब्दों

करिकै इंद्रादिकदेवतावोंका आवाहनकरतेभये ॥ और स्वधा याशब्दकरिकै पितरोंका आवाहन करतेभये॥ और हर्षकावोधनकरणेहा
राजोहंतशब्दहै ताहंतशब्दकरिकै अन्नार्थिमनुष्योंकूंबुलावतेभये ॥ हेशिष्य! याप्रकारका अद्भुतगृहस्थआश्रम तायाज्ञवल्क्यमु
निकाहोताभया ॥ अब याज्ञवल्क्यमुनिके कात्यायनीस्त्रीकावृत्तांत निरूपणकरैहैं॥ हेशिष्य! साकात्यायनीनामास्त्री गृहकेकार्योंवि
षे अत्यंतकुशलहोतीभई ॥ तहां आपणेगृहकीजेभित्तियांहैं तथागृहकीजाभूमिहै तथागृहकेजेद्वारहैं तथायज्ञशालाकीजाभूमिहै ॥
इत्यादिकसंपूर्णस्थानोंकूं साकात्यायनी दिनदिनविषे मार्जनकरिकैशुद्धकरतीभई ॥ और साकात्यायनी चूनादिकशुक्लमृत्तिकाकरिकै
संपूर्णगृहकूं दुग्धकीन्यांई शुक्लकरतीभई ॥ और तागृहकीशोभावासते साकात्यायनी कहांकहां तागृहकूं सिंधुरादिकोंकरिकै
रक्तवर्णयुक्तकरतीभई ॥ और साकात्यायनीतागृहकूं कहांकहां रक्तपीतादिकवर्णोंकरिकैविचित्ररूपवालाकरतीभई ॥ और सा
कात्यायनी अन्नपकावणेकेपात्रोंकूं तथा जलकेघटोंकूं तथा कमंडलुवोंकूं तथा तिनोंकेढाकणेकेअल्पपात्रोंकूं भस्मादिकोंसेंमार्जन
करिकै सर्वदाशुद्धराखतीभई ॥ और जैसे भीमसेननलादिक पाकविद्याविषेकुशलहैं ॥ तैसे साकात्यायनीभी सूर्यकेतेजकरिकै
तथाप्रसिद्धअग्निकेतेजकरिकै भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य याचारिप्रकारकेअन्नकूंपकावतीभई ॥ और साकात्यायनी प्रातःकालविषे
उठिकै स्नानादिकनित्यकर्मोंकूंकरिकै आपणेपतिकापूजनकरतीभई ॥ तथा आपणेपतिकेजेमातापिताहैं तथा पतिकेजेज्येष्ठ
कनिष्ठभ्राताहैं तथा भगिनियांहैं ॥ तिनसंपूर्णबांधवोंका साकात्यायनी यथायोग्यपूजनकरतीभई ॥ हेशिष्य! इसप्रकार गृहकेव्य
वहारोंविषे अत्यंतकुशलबुद्धिकरिकै साकात्यायनी सर्वस्त्रियोंविषेप्रधानहोतीभई ॥ ताकात्यायनीकेसमान व्यवहारविषेकुशल कोई
स्त्री पूर्वहुईनहीं और आगेहोवैगीनहीं और अबीवर्तमानकालविषेहैनहीं ॥ अब याज्ञवल्क्यमुनिके दूसरीमैत्रेयीस्त्रीकावृत्तांत
निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! तायाज्ञवल्क्यमुनिकी दूसरीमैत्रेयीनामास्त्रीहोतीभई ॥ सामैत्रेयी संसारसंबंधिजन्ममरणादिकदुःखों
कूंदेखिकै उन्मत्तपुरुषकीन्यांईविचरतीभई ॥ और जैसे वत्सकेमरणेकरिकै गौ सर्वदाशोकातुररहैहै ॥ तैसे सामैत्रेयी या
प्रकारकाविचारकरिकै सर्वदाशोकातुर रहतीभई॥ अब ताकेविचारका निरूपणकरैहैं ॥ मैंमैत्रेयी कौनहूं ? देहादिकसंघातरूपमैंहूं ॥

अथवा देहादिकसंघाततैं मैं भिन्नहूं ॥ तहां देहादिकसंघाततैंभिन्नहुईभीमैं क्याजडरूपहूं अथवा चैतन्यरूपहूं ॥ और इसमनुष्य लोकविषे मैं किसप्रयोजनवासतैआईहूं ॥ और इसशरीरकीउत्पत्तितैंपूर्व मैं किसस्थानविषेस्थितथी ॥ और अबीवर्तमानकालविषे मैं किसविषेस्थितहूं ॥ और मरणतैंअनंतर मैं किसस्थानकूंप्राप्तहोवोंगी ॥ और यामेरेपतिकाक्यास्वरूपहै ॥ और यामेरेपुत्रपुत्रियोंकाक्यास्वरूपहै? ॥ तात्पर्ययह ॥ प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्धजेयहस्थूलशरीरहैं॥तिनोंकेही पतिपुत्रादिकनामहैं॥अथवा तिनशरीरोंतैंभिन्नकिसीवस्तुके पतिपुत्रादिकनामहैं॥सोभिन्नवस्तुभी जडहै अथवा चेतनहै ? यहरीतिआगेभीजानिलेणी॥और दिनदिनविषे जोमेरेकूंदुःखहोवैहै॥तादुःखका क्यास्वरूपहै॥और विषयसंबंधतैं जोमेरेकूंसुखहोवैहै॥तासुखका क्यास्वरूपहै॥और जिनचक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकै मैं रूपादिकविषयोंकूंदेखतीहूं॥तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंका क्यास्वरूपहै॥ और जिनस्थावरजंगमजीवोंकूं मैं आपणेनेत्रोंकरिकैदेखतीहूं ॥ तिनजीवोंका क्यास्वरूपहै ॥ हेशिष्य! याप्रकारकाविचारआपणेमनविषे सदैवकरतीहुई सामैत्रेयी परमशोकातुरहोतीभई॥और तामैत्रेयीस्त्रीकेचित्तकेसर्ववृत्तांतकूं जाणताहुआभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेगृहस्थआश्रमकीसिद्धिवासते पूर्व तामैत्रेयीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकरताभया किंतु सोयाज्ञवल्क्यमुनि तामैत्रेयीस्त्रीकूं गृहकेकार्योंविषे प्रवृत्तकरताभया॥अब याज्ञवल्क्यमुनिकेवृत्तांतकानिरूपणकरेंहैं॥हेशिष्य!इसप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकूं गृहस्थआश्रमविषेरहतेहुए जबी बहुतकालव्यतीतभया॥तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि एककालविषे एकांतस्थानविषेबैठिकै याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ यहबडाआश्चर्यहै ॥ यालोकविषे सर्वदेहधारीजीवोंकूं अत्यंतप्रियजोप्राणोंकाधारणहै ॥ सोप्राणोंकाधारणही परमदुःखरूपहै ॥ काहेतें? यह जीव शरीररूपबंधनगृहकूं जोग्रहणकरेहै ॥ सोप्राणोंकेधारणवासतेही ग्रहणकरेहै ॥ कैसाहैयहशरीर ? त्वक् रुधिर मांस मेद मज्जा अस्थि वीर्य यासप्तधातुवोंकरिकैपूर्णहै ॥ तथा वात पित्त कफ यातीनदोषोंवालाहै ॥ तथा पूय विष्ठा मूत्र इत्यादिकमलोंकरिकै पूर्णहै ॥ याकारणतैंही यहशरीर अत्यंतदुर्गंधवालाहै ॥ तथा नानाप्रकारकेभयकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ पुनःयहशरीरकैसाहै? आध्यात्मिकदुःख तथा आधिभौतिकदुःख तथा आधिदैविकदुःख यातीनप्रकारकेदुःखोंकरिकैयुक्तहै ॥ तहां शिरोरोग अक्षिरोग

अतीसार प्लीह गुल्म भगंदर गुदावर्त्त गंडमाला इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकीव्याधियोंकरिकै उत्पन्नभयेजेनानाप्रकारकेदुःखहैं॥
तथा कामक्रोधद्वेषलोभमोहादिरूपआधियोंकरिकै उत्पन्नभयेजेनानाप्रकारकेदुःखहैं ॥ यादोनोंप्रकारकेदुःखोंकानाम आध्यात्मि
कदुःखहै ॥ और सिंह सर्प वृश्चिक शत्रु इत्यादिकभूतोंकरिकैजन्य जेनानाप्रकारकेदुःखहैं ॥ तिनदुःखोंकानाम आधिभौतिकदुःख
है ॥ और शीत आतप वर्षा अग्निजल वायु इत्यादिकदेवतावोंकरिकैजन्य जेनानाप्रकारकेदुःखहैं ॥ तिनदुःखोंकानाम आधिदैवि
कहै ॥ पुनःयहशरीरकैसाहै ? वाल्य यौवन वृद्ध यातीनअवस्थावोंविषे राग द्वेष मोह शोक अशक्ति इत्यादिकविकारोंकरिकै ना
नाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और याशरीरविषेजोप्राणोंकाप्रवेशहै ॥ तथा याशरीरतैंजोप्राणोंकानिर्गमनहै ॥ यादोनोंकेस्मर
णकरिकै उत्पन्नभयाजोभयहै ॥ सोभय सर्वअवस्थावोंविषे अस्मदादिकजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ ताभयजन्यदुःखतैंअधिक
दुःख माताकेगर्भविषे तथामरणकालविषेभी होवैनहीं ॥ इसतैंआदिलैके जोअनेकप्रकारकेदुःख इसलोकविषे तथापरलोकविषे
जीवोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सो शरीरकेसंबंधतैंही प्राप्तहोवैहै ॥ शरीरकेसंबंधतैंविना याजीवोंकूं कदाचित्भी दुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥
यातैं यहशरीरकासंबंधही सर्वदुःखोंकाकारणहै ॥ किंवा एकांतदेशविषेनिवासकरणेहारे जेजीवन्मुक्तविद्वान्पुरुषहैं ॥ तिन
मुक्तपुरुषोंकूंभी जवी यहशरीर दुःखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ तबी संसारविषेआसक्त जेअस्मदादिकजीवहैं ॥ तिनोंकूं यहशरीर दुःख
कीप्राप्तिकरैहै याकेविषेक्याकहणाहै ? ॥ किंवा आपणेएकशरीरविषे जोअहंममअभिमानरूपसंगहै ॥ सोसंगभी जवी याजी
वोंकूं अनेकप्रकारकेदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ तवी याशरीरकेसंबंधी जेस्त्रीपुत्रादिकअनेकबांधवहैं ॥ तिनोंविषेअहंममअभिमानरूपसं
ग याजीवोंकूं अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ याकेविषेक्याकहणाहै ? ॥ अव याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते अनेकदृष्टांतोंक
रिकै संगविषे दुःखकीकारणताकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां वास्तवतैंसर्वसंगतैंरहित जोनिर्गुणआत्माहै ॥ सोआत्माभीअवि ॥९॥
द्यादिकोंकेकल्पितसंगकरिकै नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं यहसंगही सर्वजीवोंकेअनर्थकाकारणहै ॥ किंवा स्वभा
वतैंशीतस्पर्शवालाजोजलहै ॥ सोजल जबी अग्निकेसाथसंबंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोजल उष्णभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और स्व

भावतैं छेदनभावतैंरहितजोवृक्षहै ॥ सोवृक्ष जबी कुठारकेसंगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोवृक्ष छेदनभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और स्वभाव
तैं छेदनभावतैंरहितजोयहशरीरहै ॥ सोशरीर जबी शस्त्रकेसंगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोशरीर छेदनभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और स्व
भावतैंअंतर्मुखजोमनहै ॥ सोमन जबी विषयोंकेसंगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोमन बहिर्मुखताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और पूर्वलेपापकर्मों
करिकैयुक्तजोपापीपुरुषहै ॥ सोपापीपुरुष जबी दुष्टपुरुषोंकेसंगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबीहीसोपापीपुरुष तापापकेदुःखरूपफलकूं अनु
भवकरैहै ॥ और स्वभावतैं दुःखतैंरहितजोधर्मात्मापुरुषहै ॥ सोधर्मात्मापुरुष जबी दुःखीपुरुषोंकेसंगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोध
र्मात्मापुरुष अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और स्वभावतैं कामदोषतैंरहितजोपुरुषहै ॥ सोपुरुष जबी कामीपुरुषोंकेसंगकूंप्रा
प्तहोवैहै ॥ तबीसोपुरुष कामदोषकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार स्वभावतैं चोरिआदिकविकारोंतैंरहितजोपुरुषहै ॥ सोपुरुष जबी चो
रादिकपुरुषोंकेसंगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोपुरुष चोरीआदिकविकारोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और अम्लरसवालेजेदाडिमनिंबुआदिकप
दार्थहैं ॥ तिनोंकेदर्शनरूपसंगतैं यापुरुषकेमुखकाजल द्रवीभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और स्वभावतैं क्रियातैंरहितजोलोहहै ॥ सोलोह ज
बी चुंबकपाषाणकेसंगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोलोह नानाप्रकारकी गमनआगमनादिरूपक्रियाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार यहजी
व स्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकेसंगकूंप्राप्तहोइकै नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ यालोकविषे जडरूपकरिकैप्रसिद्धजे
लोहादिकपदार्थहैं ॥ तेलोहादिकजडपदार्थभी चुंबकादिकजडपदार्थोंकेसंगकरिकै जबी नानाप्रकारकेविकारोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी
यहचेतनजीव स्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थोंकेसंगकरिकै नानाप्रकारकेविकारोंकूंप्राप्तहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै ? यातैं अहंममअभि
मानरूपसंगकरिकैयुक्तहुआ यहशरीरही सर्वजीवोंकेदुःखकाकारणहै ॥ याअर्थविषे मैंयाज्ञवल्क्यहीदृष्टांतहूं ॥ काहेतैं ? पूर्व ब्रह्म
चर्यअवस्थाविषे मैंयाज्ञवल्क्य सर्वसंगतैंरहितहोताभया ॥ यातैं मेरेकूं किंचित्मात्रभीविक्षेपकीप्राप्तिनहींहोतीभई सोईमैंयाज्ञ
वल्क्य अबी स्त्रीपुत्रादिकोंकेसंगकरिकै नानाप्रकारकेविक्षेपकूंप्राप्तहोताहूं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ यहसंगही परमदुःखकाकारणहै
अब स्त्रीपुत्रादिकोंकेसंगविषे अन्वयव्यतिरेककरिकै विक्षेपकीकारणताका निरूपणकरैहैं ॥ पूर्व ब्रह्मचर्यअवस्थाविषे मैंयाज्ञव

ल्क्य आपणेशरीरकूंभी विष्ठाकेसमानमलिनजाणिकै परमवैराग्यकूंप्राप्तहोताभया ॥ और परमधैर्यकूंधारणकरिकै मैंयाज्ञव
ल्क्य वनविषेतपकरताभया ॥ तावनविषे स्वर्गलोककीअप्सराआइकै नानाप्रकारकेहावभावकरिकै हमारेधैर्यकूंचलायमानकर
तीभई ॥ परंतु तिनअप्सरावोंकेहावभावकरिकै हमाराधैर्य नहीं चलायमानहोताभया ॥ कैसीथीतेअप्सरायें ? बहुतकामरूपी
भारकरिकै मंदमंदहैगतिजिनोंकी ॥ तथा आपणेशरीरकीसुगंधिकरिकै केतकीचंपकादिकपुष्पोंकेसुगंधकूं तिरस्कारकऱ्याहैजिनों
नें ॥ तथा सुवर्णकेपुष्पोंसमानहै शरीरकीकांतिजिनोंकी ॥ तथा पीनउन्नतजेस्तनहैं तथाजघनस्थानहैं तिनोंतें वायुनेंहरणकरेहैंव
स्त्रजिनोंके ॥ तथा पौर्णमासीकेचंद्रमासमानहै मुखजिनोंके तथा चंद्रमाकेसमानउज्ज्वलजेवस्त्रभूषणहैं तिनवस्त्रभूषणोंकरिकै शो
भायमानहैंशरीरजिनोंके ॥ ऐसीस्वर्गकीअप्सरा आपणेकटाक्षोंकरिकै मेरेधैर्यकूं नहींनिवृत्तकरतीभई ॥ कैसेहैंतिनअप्स
रावोंकेकटाक्ष ? कामीपुरुषोंकेधैर्यकूंनष्टकरणेहारेहैं ॥ तथा संभोगकीइच्छारूपउत्कृष्टअभिप्रायकूंबोधनकरणेहारेहैं ॥ और तेअप्
सरा आपणेमधुरवचनोंकरिकैभी मेरेधैर्यकूं नहींनिवृत्तकरतीभई ॥ कैसेहैंतिनोंकेवचन ? अत्यंतकोमलहैं ॥ तथा मंदमंदहास
युक्तहैं ॥ तथा कामीपुरुषोंकेमनकूंहरणकरणेहारेहैं ॥ तथा प्रसिद्धजिनोंकाअर्थहै ॥ तथा गंभीरजिनोंकाअभिप्रायहै ॥ तथा घृत
कीन्यांई कामरूपअग्निकूंप्रज्वलितकरणेहारेहैं तथा दीर्घललितस्वरकरिकै जिनोंकाउच्चारणहै ॥ ऐसेमधुरशब्दोंकरिकै तथा पा
दोंविषेस्थितनूपुरादिकभूषणोंकेशब्दोंकरिकै तेअप्सरा हमारेधैर्यकूं नहींनिवृत्तकरतीभई ॥ और तेअप्सरा आपणेहस्तपा
दादिकअंगोंकरिकैभी मेरेधैर्यकूं नहींनिवृत्तकरतीभई ॥ कैसेहैंतिनअप्सरावोंकेअंग ? वायुकरिकै तथाचलनेकरिकै शि
थिलभावकूंप्राप्तभये जेदुकूलादिकवस्त्रहैं तथा कांची कंकण अंगद आदिकभूषणहैं तिनोंकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा रोमांचरूपीकं
चुककरिकैविशिष्टहैं ॥ तथा चलनेकरिकैउत्पन्नभयाजोश्रम ताश्रमरूपीभारकरिकै विह्वलहैं ॥ तथा द्रवीभावकूंप्राप्तभया
जोमस्तककासिंदूर तथानेत्रोंकाअंजन ताकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा ललाटउरस्थानादिकोंविषेस्थितजे कुंकुमचंदनादिकपदार्थहैं
तिनोंकरिकैयुक्तहैं ॥ और सुगंधिवालेपुष्पोंकरिकै ग्रंथनकरेजेकेशहैं ॥ तिनकेशोंकेग्रंथीकेखुलणेकरिकैशोभायमानहैं ॥ तथा

हास्यवादित्रगीतादिकोंकरिकै शोभायमानहैं ॥ ऐसेआपणेसुंदरअंगोंकरिकैभी तेअप्सरा मेरेधैर्यकूं नहींनिवृत्तकरतीभई ॥ और तेअप्सरा सुंदरस्थलोंकरिकैभी मेरेधैर्यकूं नहींनिवृत्तकरतीभई ॥ कैसेहैंतेस्थल ? कोकिलादिकपक्षियोंकेमधुरशब्दोंकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा वसंतऋतुकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा मंदाकिनीगंगाकेजलकीसमीपताकरिकै अत्यंतकोमलहैं ॥ तथा वालुकाकरिकैयुक्तहैं॥तथा देवतावोंकरिकैसेवितहैं ॥ इसतैंआदिलैकेनानाप्रकारकेउपायोंकूं तेअप्सरा हमारेधैर्यकेनिवृत्तकरणेवासते करतीयभई ॥ परंतु तिनअप्सरावोंकेउपायोंकरिकै हमाराधैर्य नहींनिवृत्तहोताभया॥सोहमाराधैर्य अवीवृद्धअवस्थाविषे केवलभ्रांतिकरिकै नष्टहोताभया॥ अब ताभ्रांतिकानिरूपणकरेहैं॥ अवीवृद्धअवस्थाविषे जिनस्त्रियोंनैं हमारेधैर्यकूं निवृत्तकऱ्याहै॥ तिनास्त्रियोंकाशरीर हमारेशरीरतैं किंचित्मात्रभीविलक्षणनहीं ॥ किंतु जैसे रुधिर मांस पूय विष्ठा मूत्र नाडी मज्जा अस्थि इत्यादिकमलिनवस्तुवोंकासमुदायरूप हमाराशरीरहै॥तैसे इनस्त्रियोंकाशरीरभी रुधिरमांसादिकमलिनवस्तुवोंकासमुदायरूपहै ॥ यातैं ऐसे मलिनस्त्रियोंकेशरीरकूं जोहमनैं सुखकासाधनमान्याहै ॥ सो केवलभ्रांतिकरिकैमान्याहै ॥ किंवा मैंयाज्ञवल्क्य याआपणेशरीरकूं वारंवार मृत्तिकाजलादिकोंकरिकै प्रक्षालनकरताहूं ॥ तौभी यहहमाराशरीर शुद्धहोतानहीं ॥ किंतु सर्वदादुर्गंधकरिकै अशुद्धहीरहैहै ॥ और येस्त्रियांतौहमारेन्यांई मृत्तिकाजलादिकोंकरिकै आपणेशरीरकूं प्रक्षालनकरतींनहीं ॥ तौ इनस्त्रियोंका शरीर किसप्रकारशुद्धहोवैगा ? किंतु इनस्त्रियोंकाशरीर सर्वदाअशुद्धहीरहैहै ॥ ऐसे अशुद्धस्त्रियोंकेशरीरविषे जोहमनैं सुखकीकारणतामानीहै ॥ सोकेवलभ्रांतिकरिकैमानीहै ॥ जोविवेकीविरक्तपुरुषहै ते आपणेशरीरकूं तथा स्त्रीआदिकोंकेशरीरकूं सर्वदाअशुद्धहीजानैहै॥तहां श्लोक॥स्थानाद्बीजादुपष्टंभान्निष्पंदान्निधनादपि ॥ कायमाधेयशौचत्वात्पंडिताह्यशुचिंविदुः ॥अर्थयह॥ यहशरीर माताके उदररूपस्थानविषेस्थितहोवैहै ॥ तथा पितामाताकेशुक्रशोणितरूपबीजतैं उत्पन्नहोवैहै॥ तथाअन्नपानादिकोंके रसकापरिणामरूपहै तथा नेत्रादिकनवद्वारोंतैं जिसकामलनिकसैहै ॥ तथा अशुचिपणेकाकारणहै ॥ तथा स्वभावतैंशुद्धपणेतैंरहितहै ॥ इतनेकारणोंतैं विवेकीमहात्मापुरुष याशरीरोंकूं अशुचहीजाणेहैं ॥ १ ॥ किंवा यौवनअवस्थाकेप्राप्तहुए जेस्त्रियोंके

पीनउन्नतस्तनहोवैंहैं ॥ जिनस्तनोंकूं मैंयाज्ञल्क्य सुवर्णकेकलशोंकीउपमादेताभया ॥ तेस्तनकैसेहैं ? जैसे अस्मदादिकपुरुषोंकूं किसीरोगकेवशतैं हृदयदेशविषे मांसकीग्रंथिहोवैंहैं ॥ तिनमांसकेग्रंथियोंकेसमान तेस्त्रियोंकेस्तनहैं ॥ ऐसे मांसकीग्रंथीरूपस्तनोंविषे जोहमारेकूं सुखकीकारणताकाज्ञानभयाहै ॥ सोज्ञान केवलभ्रमरूपहै ॥ किंवा एकस्तनोंकूंछोडिके दूसरा स्त्रीकाशरीर तथा पुरुषकाशरीर समानहीहै ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकेदेखियेतौ तिनस्तनोंकरिकेभी तास्त्रीकेशरीरविषे विलक्षणतासंभवैनहीं ॥ काहेतें? पुरुषोंकेकटीस्थानकेनीचेस्थित जेमांसकीग्रंथीरूपस्फिजहैं॥तिनस्फिजोंविषे तथास्त्रीकेस्तनोंविषे किंचित्मात्रभीविलक्षणतानहीं ॥ किंवा पुरुषकाजोपायुछिद्रहै ॥ तथास्त्रीकाजो योनिछिद्रहै ॥ तेदोनोंछिद्र मलनिकसणेकेद्वारहैं ॥ यातें तिनदोनों छिद्रोंविषे किंचित्मात्रभीविलक्षणतानहीं॥यातेंयहसिद्धभया ॥ स्त्रीकाशरीर दोपायुद्वारवालाहै ॥ और पुरुषकाशरीर एकपायुद्वारवालाहै ॥ ऐसेस्त्रीकेशरीरविषे येस्त्रियां हमारेसुखकेसाधनहैं याप्रकारका सुखसाधनज्ञान जोहमारेकूंभयाहै ॥ सोज्ञान भ्रांतिरूपहै ॥ काहेतें ? विचारदृष्टिकरिकेदेखियेतौ यहस्त्रियोंकाशरीर ग्लानिकीउत्पत्तिद्वारा विवेकीपुरुषोंके पश्चात्तापकाही कारणहै ॥ ऐसेदुःखकेसाधनरूपस्त्रीकेशरीरविषे सुखसाधनताबुद्धि भ्रांतिरूपहीसिद्धहोवैहै॥जैसे सर्पभावतैंरहितरज्जुविषे सर्पबुद्धि भ्रांतिरूपहै ॥ किंवा यालोकविषे जे अविवेकीपामरपुरुषहैं ॥ तेभी अन्यपुरुषकेसमीपविद्यमानहुए आपणेस्त्रीकेसाथ संभोगकरैंनहीं ॥ और मैंयाज्ञवल्क्यतौ तिनस्त्रियोंकेहृदयदेशविषेस्थितजो अंतर्यामीआत्मारूपपुरुषहै ताकेअत्यंतसमीपविद्यमानहुएभी निर्लज्ज होइके स्त्रियोंकेसाथ संभोगकरताभया॥ यातें तिनपामरपुरुषोंतैंभी मैंयाज्ञवल्क्य निकृष्टहूं ॥ अब विषयसुखके कारणकाविचार करैहैं ॥ किंवा स्त्रीपुरुषका जोपरस्परसंयोगसंबंधहै ॥ सोसंयोगसंबंध याजीवोंकेविषयजन्यसुखकाकारणनहीं ॥ किंतु यहस्त्री हमारेविषयसुखकासाधनहै॥तथा यहपुरुष हमारेविषयसुखकासाधनहै॥ याप्रकारकी जापुरुषकी तथास्त्रीकी भावनाहै ॥ साभावनाही तिनपुरुषोंके तथास्त्रियोंके विषयसुखकासाधनहै ॥ काहेतें? जोकदाचित् स्त्रीपुरुषकासंयोगसंबंधही ताविषयसुखकाकारणहोवै॥ तौ स्नेहकरिकै आपणीयुवानमाताकूंआलिंगनकरताहुआ जोयुवानपुत्रहै॥ तथा स्नेहकरिकै आपणेयुवानपुत्रकूंआलिंगनकरतीहुई जा

युवानमाताहै॥ तिनदोनोंकूं सोविषयसुखहोणाचाहीये॥ तथा स्नेहकरिकै आपणेयुवानपिताकूंआलिंगनकरतीहुई जायुवानपुत्रीहै ॥ तिसकूंभी सोविषयसुखप्राप्तहोणाचाहीये॥ तथा स्नेहकरिकै परस्पर आलिंगनकरतेहुए जेयुवानभगिनी तथायुवानभ्राताहैं॥ तिनदोनोंकूंभी सोविषयजन्यसुखहोणाचाहीये॥ तथा परस्परद्वेषकरिकैयुक्तजेयुवानस्त्रीपुरुषहैं॥ तेदोनों किसीदैवयोगतैं परस्परआलिंगनकूंप्राप्तहुएभी ताविषयसुखकूंप्राप्तहोणेचाहीये ॥ और तिनपुत्रादिकपुरुषोंकूं आपणीमातादिकस्त्रियोंकेआलिंगनतैं सोविषयसुखप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ स्त्रीशरीरका तथापुरुषशरीरका परस्परसंयोगसंबंध ताविषयसुखकाकारणनहीं॥ किंतु पूर्वकथनकरीहुईभावनाहीं ताविषयसुखकाकारणहै ॥ स्त्रीकाशरीर तथापुरुषकाशरीर तथा तिनदोनोंका परस्परसंयोगसंबंध येतीनों ताविषयसुखकेकारणनहीं ॥ किंवा जिसआत्मस्वरूपआनंदके लेशमात्रआनंदकरिकै ब्रह्मादिकलोक आनंदकूंप्राप्तहोइरहेहैं ॥ ऐसाआनंदकासमुद्र स्वयंज्योतिआत्मा सर्वदा हमारेहृदयदेशविषे विराजमानहै ॥ ताआनंदस्वरूपआत्माकीउपेक्षाकरिकै मैंयाज्ञवल्क्य जैसे भूताविष्टपुरुष याभूमिविषे नानाप्रकारकीनृत्यकरेहै तैसे यानारीरूपीनरकभूमिविषे नानाप्रकारकीनृत्यकरताभयाहूं ॥ यातैं आत्मरूपनित्यसुखकीउपेक्षाकरिकै स्त्रीरूपनरकविषे जाहमारीसुखबुद्धिहै ॥ सासुखबुद्धिही हमारेमूर्खताकूंजनावैहै ॥ काहेतैं? यालोकविषेभी जोपुरुष उत्कृष्टपदार्थकापरित्यागकरिकै निकृष्टपदार्थकाग्रहणकरेहै ॥ तापुरुषकूं सर्वलोक मूर्खहीकहेहैं ॥ किंवा यालोकविषे महान्पुरुषोंकीजाअवज्ञाहै ॥ साअवज्ञाही तिनमहान्पुरुषोंकाहननहै ॥ और सूर्यचंद्रमादिकोंकूंभी आपणीआज्ञाविषे चलावणेहारा जोयहआनंदस्वरूपअंतर्यामीआत्माहै सोसर्वतैंमहान्है ॥ तामहान्आत्माकी मैंयाज्ञवल्क्यनैं विषयसुखकीप्राप्तिवासते उपेक्षाकरिदयीहै ॥ साउपेक्षारूपअवज्ञाही ताआत्माकाहननहै ॥ और आत्महत्यारेकेसमान यालोकविषे कोईपापात्माहोवैनहीं ॥ यातैं आपणेआत्माकाहननकरणेहारा मैंयाज्ञवल्क्य अत्यंतपापात्माहूं ॥ किंवा यालोकविषे जेअविवेकी पामरपुरुषहैं॥ तेपामरपुरुष आनंदस्वरूपआत्माकूंजाणतेनहीं याकारणतैं तेपामरपुरुष स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंविषे आसक्तिकरिकै बहिर्मुखहोवैहै ॥ और मैंयाज्ञवल्क्यतौ गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं आनंदस्वरूपआत्माकूंजाणताहुआभी इनस्त्रीपुत्रधनादि

कपदार्थोंविषे आसक्तिकरिकैबहिर्मुखहुआहूं ॥ यातें मैंयाज्ञवल्क्य अविवेकीपामरपुरुषोंतैंभी निकृष्टहूं ॥ किंवा यालोकविषेवृद्ध अवस्थाकरिकैयुक्तजेपामरपुरुषहैं ॥ तेपामरपुरुषभी आपणीस्त्रीकूंवृद्धदेखिकै ताव्रद्धस्त्रीकेसंभोगकीइच्छाकरैनहीं ॥ और मैंयाज्ञव ल्क्यतौ वृद्धअवस्थाकूंप्राप्तहोइकै इनवृद्धस्त्रियोंकेसंभोगकीइच्छाकरताहूं ॥ याकारणतैंभी मैंयाज्ञवल्क्य तिनपामरपुरुषोंतैंभी निकृष्ट हूं ॥ किंवा वृद्धअवस्थाविषे जिनस्त्रियोंमैं हमारी आसक्तिभईहै ॥ तेस्त्रियांकैसीहैं ? शुष्ककाष्ठकेसमान जिनोंकाशरीरहै ॥ तथा भे रीकेसमानजिनोंकाउदरहै ॥ तथा पुत्रोंकेप्रति स्तन्यपानकरावणेकरिकै जिनस्त्रियोंकेस्तन शुष्कहोइगयेहैं ॥ ऐसेकुरूपवृद्धस्त्रियोंवि षे हमारामन अबपर्यंत प्रवृत्तहोवैहै ॥ यहहमारेकूं बहुतआश्चर्यहोवैहै ॥ किंवा पूर्व सूर्यभगवान्नैं जोहमारेप्रति गृहस्थआश्र मकेकरणेकीआज्ञाकरीथी ॥ सो पुत्रोंकीउत्पत्तिवासते तथावेदविद्याकेसंप्रदायकीप्रवृत्तिवासते आज्ञाकरीथी ॥ ताआज्ञाकीपूर्णता तैंअनंतर जोहमनैं गृहस्थआश्रमविषे कालव्यतीतकऱ्याहै ॥ सोआपणीआसक्तिकरिकै कालव्यतीतकऱ्याहै ॥ इतनेकालपर्यंत गृह स्थआश्रमविषेरहणेमैं कोईसूर्यभगवान्कीआज्ञानहींथी ॥ किंतु आपणेविद्याकी संप्रदायकेप्रवृत्तिकरणेविषे सूर्यभगवान्नैं हमारेप्र ति आज्ञाकरीथी ॥ सोविद्याकासंप्रदाय मैंयाज्ञवल्क्यनैं बहुतप्रवृत्तकऱ्या ॥ काहेतैं ? चारिवेदोंकूंजानणेहारे कितनेब्राह्मणतौ हमारे शिष्यहैं ॥ और कितनेब्राह्मणतौ हमारेशिष्योंकेभीशिष्यहैं ॥ और कितनेब्राह्मणतौ तिनहमारेप्रशिष्योंकेभीशिष्यहैं ॥ इसप्रकार संपूर्णब्राह्मणमिलिके अनेककोटिब्राह्मण हमारेशिष्यहोतेभयेहैं ॥ ऐसेमहान्संप्रदायकेप्रवृत्तहुएभी मैंयाज्ञवल्क्य याप्रकारकीआ सक्तिकरिकै तागृहस्थआश्रमकापरित्याग नहींकरताभया ॥ अब ताआसक्तिकानिरूपणकरेहैं ॥ मैंयाज्ञवल्क्यविषेहैअत्यंतस्नेहजिनों का ऐसीजेयहकात्यायनी तथामैत्रेयी मेरीदोभार्याहैं ॥ तिनोंकूं एकलावनविषेपरित्यागकरिकै जोमैं अबीसंन्यासआश्रमकूंग्रहण करौंगा ॥ तौ येदोनोंहमारीस्त्रियां मेरेवियोगकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवैंगी ॥ यातैं इसकालविषे हमारेकूं संन्यासकरणाउ चितनहीं ॥ किंतु इनस्त्रियोंकूं कोईकालपर्यंत संसारसुखकीप्राप्तिकरिकै पश्चात् मैं संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरौंगा ॥ याप्रकारकाविचा रकरिकै मैंयाज्ञवल्क्य तिनस्त्रियोंकूं संसारसुखकीप्राप्तिकरणेविषे कोईकालव्यतीतकरताभया तिसतैंअनंतर मैंयाज्ञवल्क्य पुनःया

प्रकारकाविचारकरताभया॥इनस्त्रियोंकूं संसारसुखकीप्राप्तितौभई॥परंतु इनस्त्रियोंकूं पुत्रकीप्राप्तिनहींभई॥यातैं पुत्रोंकीउत्पत्तिक रतैंविना जोमैं इनस्त्रियोंकापरित्यागकरौंगा ॥ तौपुत्रोंतैंरहितहुई येदोनोंस्त्रियां मेरेवियोगकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवैंगी ॥ यातैं अबीगृहस्थआश्रमकापरित्यागकरणा हमारेकूं योग्यनहीं ॥ किंतु इनस्त्रियोंविषे पुत्रोंकीउत्पत्तिकरिकै पश्चात् मैं संन्यासआश्रम कूंग्रहणकरौंगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै मैंयाज्ञवल्क्य पुत्रोंकीउत्पत्तिकरणेविषे कोईकालव्यतीतकरताभया ॥ और तिनपुत्रोंके उत्पन्नहुएतैंअनंतर मैंयाज्ञवल्क्य पुनःयाप्रकारकाविचारकरताभया ॥इनस्त्रियोंकूं पुत्रोंकीप्राप्तितौभई॥परंतु इनपुत्रोंकेजातकर्मादि कसंस्कारभयेनहीं॥जोमैं इनबालकोंकापरित्यागकरिकै अबीसंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरौंगा ॥ तौ जातकर्मादिकसंस्कारोंतैंरहितहुए येबालक परमदुःखकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ यातैं अबीहमारेकूं संन्यासकरणायोग्यनहीं ॥ किंतु जातकर्मतैंआदिलैके उपनयनपर्यंत इन बालकोंकेसंस्कारकरिकै पश्चात् मैं संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरौंगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै मैंयाज्ञवल्क्य तिनबालकोंके जातकर्मादिकसंस्कारकरणेविषेभी कोईकालव्यतीतकरताभया ॥ और तिनपुत्रोंकेउपनयनपर्यंत संस्कारोंकेकरणेतैंअनंतर मैंयाज्ञवल्क्य याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ इनपुत्रोंके उपनयनपर्यंत संस्कारतौहुए ॥ परंतु इनहमारेपुत्रोंकूं विद्याकीप्राप्तिभईनहीं ॥ जोमैं इनपुत्रोंकापरित्यागकरिकै अबीसंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरौंगा ॥ तौ येहमारेपुत्र विद्यातैंरहितहुए परमदुःखकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ यातैं अबीहमारेकूं संन्यासकरणायोग्यनहीं ॥ किंतु इनपुत्रोंकेतांई आपणीसंपूर्णविद्यादेकै पश्चात् मैं संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरौंगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै मैंयाज्ञवल्क्य तिनपुत्रोंकेविद्यापढावणेविषे कोईकालवितीतकरताभया ॥ और तिनपुत्रोंकूं विद्याकीप्राप्तिहुएतैं अनंतर मैंयाज्ञवल्क्य पुनःयाप्रकारकाविचारकरताभया ॥ इनहमारेपुत्रोंकूं विद्याकीतौप्राप्तिभईहै ॥ परंतु इनहमारेपुत्रोंकूं स्त्रीकीप्राप्तिभईनहीं ॥ जोमैं इनपुत्रोंकापरित्यागकरिकै अबीसंन्यासकरौंगा ॥ तौ स्त्रीतैंरहितहुए येहमारेपुत्र परमदुःखकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ यातैं अबीहमारेकूं संन्यासग्रहणकरणायोग्यनहीं ॥ किंतु इनपुत्रोंकाविवाहकरिकै पश्चात् मैं संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरौंगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै मैंयाज्ञवल्क्य तिनपुत्रोंके विवाहकरणेविषे कोईकालव्यतीतकरताभया ॥ और ति

नपुत्रोंके तथापुत्रियोंके विवाहहुएतैंअनंतर मैंयाज्ञवल्क्य पुनःतिनपुत्रोंकेभीपुत्रोंकेदेखणेवासते कोईकालव्यतीतकरताभया ॥ और तिनपौत्रोंकेउत्पन्नहुएतैंअनंतर मैंयाज्ञवल्क्य तिनपौत्रोंकेभीविवाहकरणेवासते कोईकालव्यतीतकरताभया ॥ याप्रकारकाविचारकर ताहुआ सोमैंयाज्ञवल्क्य अत्यंतजीर्णअवस्थाकूंप्राप्तभयाहूं॥तौभीहमाराचित्त यासंसारतैं उपरामनहींहोता॥किंतु अवपर्यंतभी सोह माराचित्त संसारविषेही धावनकरैहै॥यातैं यहजान्याजावैहै॥इनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकाजोसंगहै सोसंगही याजीवोंकेअनर्थका कारणहै॥तिनजीवोंविषेभी चतुर्थआश्रमवालेजेसंन्यासीहैं तिनसंन्यासियोंकातौ यहसंग विशेषकरिकैअनर्थकाकारणहै॥तहां श्लोक निःसंगतामुक्तिपदंयतीनां संगादशेषाःप्रभवंतिदोषाः॥आरूढयोगोपिनिपात्यतेऽधः संगेनयोगीकिमुताल्पसिद्धिः॥अर्थ यह॥स्त्रीधनादिकपदार्थोंकेसंगकापरित्यागरूप जोनिसंगताहै सानिःसंगताही संन्यासियोंकूं मोक्षकामार्गहै॥काहेतें?स्त्रीआदिकोंके संगतें यापुरुषकूं संपूर्णदोषप्राप्तहोवैहैं॥जोपुरुष योगविषेआरूढहै॥तिसपुरुषकूंभी जबी यहस्त्रीआदिकोसंग नीचैपतनकरैहै॥तवी योगविषेआरूढहोणेकीइच्छावान्पुरुषकूं यहस्त्रियोंकासंग नीचैपतनकरैहै याकेविषेक्याकहणाहै? यातैं संन्यासियोंनैं तिनस्त्रीधना दिकपदार्थोंकेसंगका विशेषकरिकैपरित्यागकरणा॥१॥तात्पर्ययह॥विद्यादिकसर्वगुणोंकरिकैयुक्त जोमैंयाज्ञवल्क्यहूं॥सोमैंभी यास्त्री पुत्रादिकोंकेसंगतैं जबी याप्रकारकेदुर्दशाकूंप्राप्तभयाहूं ॥ तौ अल्पविचारवालेइतरजीव स्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकेसंगकरिकै ताहुर्दशाकूं प्राप्तहोवैंगे याकेविषेक्याकरणाहै?॥ यातैं यहसिद्धभया यास्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकासंगही आसक्तिद्वारा याजीवोंकेसर्वअनर्थोंका कारणहै॥ यातैं जिसपुरुषकूं करामलककीन्यांई संशयविपर्ययतैंरहित आत्माकासाक्षात्कारहोवै॥तिसविद्वान्पुरुषनैंभी स्त्रीपुत्रधना दिकपदार्थोंकासंग कदाचित्भीनहींकरणा ॥ तिनपदार्थोंविषेभी स्त्रीकासंग यापुरुषनैं कदाचित्नहींकरणा ॥ तिनस्त्रियोंविषेभी युवानस्त्रियोंकासंग यापुरुषनैं कदाचित्भी नहींकरणा ॥ काहेतें? मरणतैंअनंतर पापीजीवोंकूं जोनरकप्राप्तहोवैहै ॥ सोन रक स्थावरहै ॥ यातैं सोनरक त्यागकियेतैंअनंतर तिनपापीजीवोंकेपीछेआवैनहीं ॥ और यहस्त्रीतौ दोपादोंसैंचलणेहारा मूर्ति मान्नरकहै ॥ यातैं सोस्त्रीरूपनरक त्यागकियेतैंअंतरभी यापुरुषकेपीछेआवैहै ॥ ऐसेस्त्रीरूपबलवान्नरकविषे जोकदाचित् सर्वज्ञा

स्त्रीकावेत्ताविद्वान्पुरुषभीपडेहैं॥तौ सोविद्वान्पुरुषभी तास्त्रीरूपनरकतैं आपणेकूंनिकासणेविषे समर्थहोइसकैनहीं ॥ तिनविद्वान्पु
रुषोंविषे मैंयाज्ञवल्क्यहीदृष्टांतरूपहूं॥काहेतें? सर्वविद्वान्पुरुषोंविषेमुख्य तथा संपूर्णविद्याकूंजानणेहारा तथा आत्मसाक्षात्कारकरि
कैयुक्त ऐसाजोमैंयाज्ञवल्क्यहूं॥सोभी यास्त्रीरूपनरकतैं आपणेकूंनिकासणेविषे समर्थनहींहोइसकता॥यातैं योगारूढपुरुषभी स्त्री
केसंगकरिकै अधःपतनहोवैहै ॥ यहजोवार्ता सर्वशास्त्रोंविषेकहीहै सोयथार्थहै ॥ किंवा जैसे यालोकविषे ग्रामकेप्राप्तिकरणेहा
रामार्गहोवैहै ॥ तैसे नरकरूपग्रामकेप्राप्तिकरणेहारा यहस्त्रीकाशरीररूपहीमार्गहै ॥ यातैं मोक्षकीप्राप्तिकरणेहारा जोआत्मज्ञान
रूपमार्गहै ॥ ताज्ञानरूपमार्गकेप्राप्तिकीइच्छा जिसपुरुषकूंहोवै ॥ तिसमुमुक्षुजननैं यहस्त्रीरूपनरककामार्ग अवश्यपरित्यागकर
णा ॥ किंवा यालोकविषे जेअधिकारीपुरुष संन्यासआश्रमरूपमार्गकरिकै मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाकरैहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं
तासंन्यासरूपमार्गविषे एकस्त्रियोंतैंहीभयकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिनस्त्रियोंकूंछोडिके दूसरेकिसी सिंह सर्प चौर राजा जल अग्नि विष
आधि व्याधि देव भूत इत्यादिकोंतैं तिनअधिकारीपुरुषोंकूं भयकीप्राप्तिहोवैनहीं॥तहां स्त्रियोंतैं जो तिनसंन्यासियोंकूं भयहोवैहै
॥याकेविषेयहकारणहै ॥ बहिर्मुखपुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवैनहीं ॥ यहशास्त्रकासिद्धांतहै ॥ साबहिर्मुखता जैसीस्त्रिकेसंगतैं
होवैहै ॥ तैसे दूसरेकिसीपदार्थकेसंगतैंहोवैनहीं ॥ काहेतैं ? यास्त्रियोंका जोमनकरिकैस्मरणहै ॥ सोस्मरणभी यापुरुषोंकेचित्तविषे
कामकीउत्पत्तिकरैहै ॥ जबी तिनस्त्रियोंकेस्मरणतैंभी यापुरुषविषे कामउत्पन्नहोवैहै ॥ तबी तिनस्त्रियोंकेदर्शनतैं तथा तिनस्त्रियों
केवचनतैं तथा तिनस्त्रियोंकेस्पर्शतैं यापुरुषोंकेचित्तविषे कामकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ याकेविषेक्याकहणाहै? ॥ यातैं आत्मसाक्षात्कार
कीप्राप्तिवासते जिनअधिकारीपुरुषोंनैंसंन्यासआश्रमकूंग्रहणकऱ्याहै ॥ ते अधिकारीपुरुष शरीरकरिकै तथा मनकरिकै तथा वाका
दिकइंद्रियोंकरिकै कदाचित्भी तिनस्त्रियोंकासंगनहीं करैं॥ जोकदाचित् यह अधिकारीपुरुष संन्यासआश्रमधारणकरिकै स्त्रियों
कासंगकरैंगा ॥ तौ जैसे अग्निकेसंबंधतैं घृत द्रवीभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यासंन्यासियोंकाचित्तभी आपणेधैर्यकापरित्यागकरिकै
द्रवीभावकूंप्राप्तहोवैगा ॥ ताकरिकै सोसंन्यासी मोक्षमार्गतैंपतितहोवैगा ॥ यातैं संन्यासियोंनैं सर्वप्रकारतैं स्त्रियोंकासंगनहींकर

णा ॥ किंवा यालोकविषेप्रसिद्धजोसर्पादिकोंकाविषहै ॥ ताविषकेनिवृत्तिकरणेवासते यद्यपि शास्त्रनैं नानाप्रकारकेउपाय कथन
करेहैं तथापि यास्त्रीरूपसर्पकेविषकीनिवृत्तिकरणेका एकहीउपाय शास्त्रनैं कथनकन्याहै ॥ सोएकउपाययहहै ॥ शरीरकरिकै
तिनस्त्रियोंकास्पर्शनहींकरणा ॥ और मनकरिकै तिनास्त्रियोंकास्मरणनहींकरणा ॥ और वाकादिकइंद्रियोंकरिकै तिनास्त्रियोंकेसाथ
संभाषणादिकनहींकरणे ॥ याप्रकारकेउपायकूंछोडिकरिकै दूसराकोईउपाय तास्त्रीरूपसर्पकेविषकीनिवृत्तिकरणेहारानहीं ॥ सो
याप्रकारकाउपाय गृहस्थआश्रमविषेरहिकरिकै मैंयाज्ञवल्क्यसें होइसकैगानहीं ॥ यातैं यास्त्रीपुत्रधनादिकसर्वपदार्थोंकापरित्या
गकरिकै मैंयाज्ञवल्क्य संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरों ॥ जोमैं इनस्त्रीपुत्रादिकोंकेसंगकापरित्याग नहींकरोंगा ॥ तौ इनस्त्रीपुत्रादिकों
केसंगतैं हमारेकूं दूसरेजन्मकीप्राप्ति अवश्यहोवैगी ॥ काहेतें ? वासनाकरिकैही याजीवोंकूंजन्मकीप्राप्तिहोवैहै ॥ जैसे जाग्रत् अव
स्थाविषे यापुरुषकी जिसपदार्थविषेदृढवासनाहोवैहै ॥ तिसीपदार्थकूं यहपुरुष स्वप्नविषेदेखैहै ॥ तैसे मरणकालविषेभी यापुरुष
कूं जैसीदृढवासनाहोवैहै ॥ तावासनाकेअनुसारही सोपुरुष दूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तादूसरेशरीरविषेभीयहजीव पूर्व
लेकामक्रोधलोभमोहादिकोंकेसंस्काररूपवासना करिकै पुनःकामक्रोधादिकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिनकामक्रोधादिकोंकेसंस्काररूपवास
नाकरिकै यहजीव पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार यहजीव स्त्रीआदिकोंकेसंगकरिकै अनेकप्रकारकेजन्मोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ किं
वा स्त्रीआदिकोंकेसंगतैं यापुरुषोंकेचित्तविषे कामक्रोधादिकविकार उत्पन्नहोवैहै ॥ और तिनकामक्रोधादिकविकारोंकरिकै यापु
रुषकाचित्त अशुद्धभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताअशुद्धचित्तविषे पूर्वउत्पन्नहुआभीआत्मज्ञान शिथिलहोइजावैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ पू
र्वउत्पन्नहुआआत्मज्ञानभी जबी ताअशुद्धचित्तविषे शिथिलहोइजावैहै ॥ तबी ताअशुद्धचित्तविषे नवीनज्ञानकेउत्पत्तिकीक्याआशा
है ? यातैं यहसिद्धभया ॥ स्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकेसंगतैं यापुरुषविषे कामक्रोधादिकविकार उत्पन्नहोवैहै ॥ ताकामक्रोधादिकविका
रोंकरिकै यहपुरुष ब्रह्मज्ञानतैं तथा कर्मउपासनारूपदोनोंमार्गतैं भ्रष्टहोइकै वारंवार कीटपतंगादिकशरीरोंकीप्राप्तिरूप तथा नर
ककीप्राप्तिरूप तृतीयमार्गकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकार स्त्रियोंकेसंगतैं यहपुरुष कोटिकल्पपर्यंत नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥

किंवा जैसे यहपुरुष स्त्रियोंकेसंगतैं कामादिकोंकीउत्पत्तिद्वारा अनेकजन्मोंविषेदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे विषयासक्तकामीपुरुषों
केसंगतैंभी यहजीव तिसीप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ काहेतें? तेविषयासक्तकामीपुरुष सर्वदा स्त्रिसंबंधीकामकाहीवर्णनकरैहैं ॥
तिनकामीपुरुषोंकेवचनोंतें तिसपुरुषकूं अवश्यकरिकै स्त्रीकास्मरणरूपज्ञानहोवैगा ॥ और तास्मरणकरिकै सास्त्रियोंरूपअग्नि
तापुरुषकेचित्तकूं अवश्यदग्धकरैगी ॥ तादग्धचित्तविषे आत्माकाविचारहोइसकैनहीं ॥ यातैं मोक्षकीप्राप्तिवासते जिसपुरुषनैं सं
न्यासआश्रमकाग्रहणकऱ्याहै ॥ सोसंन्यासीपुरुष स्त्रियोंकेसंगका तथा स्त्रियोंविषेआसक्तकामीपुरुषोंकेसंगका अवश्यकरिकै परि
त्यागकरै ॥ किंवा जैसे महान्वायुविषेस्थितजोदीपकहै ॥ सोदीपक मार्गादिकपदार्थोंकाप्रकाशरूपकार्यकूं उत्पन्नकरैनहीं ॥ तैसे
गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंउत्पन्नभयाभीब्रह्मज्ञान स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकेसंगरूपप्रतिबंधकेवशतैं अज्ञानकीनिवृत्तिरूपकार्यकूंउत्पन्न
करैनहीं ॥ यातैं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छा जिसपुरुषकूंहोवै तिसपुरुषनैं स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकेसंगका अवश्यपरित्यागकरणा ॥
हेशिष्य! याप्रकार स्त्रीआदिकपदार्थोंकेसंगविषे नानाप्रकारकेदोषोंकाविचारकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि तिनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थों
केसंगकापरित्यागकरणेवासते संन्यासआश्रमकेग्रहणकरणेका दृढनिश्चयकरताभया ॥ और सोयाज्ञवल्क्यमुनि अत्यंतकृपालुहै ॥
यातैं सोयाज्ञवल्क्यमुनि पुनःयाप्रकारकाविचारकरताभया याभूमिविषे सप्तपादोंकेउठावणेकरिकै जितनाकाल वितितहोवैहै ॥
तितनेकालपर्यंतभी जोपुरुष किसीपुरुषकेसाथ सहवासकरैहै ॥ सोपुरुष तिसपुरुषकामित्रहोवैहै ॥ यहवार्ता शास्त्रोंविषे महा
त्माकेपुरुषोंनैं कथनकरीहै ॥ और मैंयाज्ञवल्क्यतौ इनस्त्रियोंकेसाथ चिरकालपर्यंत रह्याहूं ॥ यातैं शास्त्रकीरीतिसैंयेस्त्रियां हमारे
मित्रहोवैहैं ॥ और यालोकविषे उपकारकरणेहारेकानाम मित्रहोवैहै ॥ यातैं इनस्त्रियोंउपरिभीहमारेकूं उपकारकऱ्याचाहिये ॥ त
हां यहहमारीकात्यायनीनामास्त्रीतौ केवलगृहकेकार्योंविषेहीकुशलहै ॥ दूसरेकिसीबंधकूं तथामोक्षकूं यहकात्यायनीजाणतीनहीं
यातैं याकात्यायनीकूं ब्रह्मविद्याकाअधिकारनहीं ॥ और यहहमारी मैत्रेयीनामाजोदूसरीस्त्रीहै ॥ सामैत्रेयी संसारकेजन्ममरणा
दिकदुःखोंकूंदेखिकरिकै सर्वदाशोकातुररहैहै ॥ और यहमैत्रेयी सर्वदा मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाकरैहै ॥ और यामैत्रेयीकूं यौवन

अवस्थाविषेभी कामादिकविकार नहींप्राप्तभयेहैं॥ और यामैत्रेयीका आपणेशरीरविषेभी स्नेहनहींहै॥जबी आपणेशरीरविषेभीया मैत्रेयीकास्नेहनहींभया॥ तबी पतिपुत्रादिकोंविषे यामैत्रेयीकास्नेह किसप्रकारहोवैगा? और यहमैत्रेयीस्त्री पूर्वजोहमारीसेवाकरती भईहै॥ सोभी लौकिकस्त्रियोंकीन्यांई कामभावनाकरिकै यामैत्रेयीनैं हमारीसेवानहींकरी॥ किंतु पतिव्रतास्त्रीनैं पतिकीसेवाकरणी याप्रकारकेशास्त्रनैं बोधनकऱ्याजोपतिव्रतास्त्रियोंकाधर्म ताधर्मकेभंगकीभयतैं यहमैत्रेयी हमारीसेवाकरतीभईहै॥ यातैं यहमैत्रेयी ब्रह्मविद्याकाअधिकारीहै ॥ जोमैंयामैत्रेयीकेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकियेतैंविनाही संन्यासआश्रमकूंधारणकरौंगा तौ कात्सायनी कीन्यांई यामैत्रेयीकूं धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकैतौ संतोषहोवैगानहीं॥ यातैं यहमैत्रेयी चिंताकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवैगी॥ यातैं यामैत्रेयीकेप्रति प्रथम ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै पश्चात् मैं संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरौं॥हेशिष्य! याप्रकारकाविचार आपणे मनविषेकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि तामैत्रेयीस्त्रीकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच॥ हेमैत्रेयी! मैंयाज्ञव ल्क्य अबी यागृहस्थआश्रमकापरित्यागकरिकै चतुर्थसंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरताहूं॥ यावार्ताकूंतुमअंगीकारकरो॥हेमैत्रेयी! हमारे गृहविषे जितनासुवर्णगौआदिकधनहै ॥ ताधनकेदोविभागकरिकै एकधनकाभाग मैं तुमारेताईंदेताहूं॥ और दूसराधनकाभागमैं कात्यायनीकेताईंदेताहूं॥ ताधनकरिकै हमारेगएतैंअनंतर तुमदोनोंस्त्रियोंकूं सुखकीप्राप्तिहोवैगी॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं मैत्रेयीस्त्रीकेप्रतिकह्या ॥ तबी संसाररूपभारकरिकैअत्यंतखेदकूंप्राप्तहुई सामैत्रेयी याप्रकारकेअवसरकूंपाइकै याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई॥ मैत्रेयीउवाच॥ हेभगवन्! जिसधनकीप्राप्तिकरिकै मैंमैत्रेयी मरणतैंरहित होवौं॥ ऐसेधनकेप्राप्तिकी मैं इच्छाकरतीहूं॥ और जिसधनकीप्राप्तिकरिकै यालोकविषे मरणकीप्राप्तिहोवैहै॥ ताधनकेप्राप्तिकी मैं इच्छाकरतीनहीं॥ हेभगवन्! सुवर्णादिकधनकरिकैपूर्ण यहसंपूर्णपृथिवी जोकदाचित् आप हमारेताईंदेवौ तौ ताधनकीप्रा प्तिकरिकै मैंमैत्रेयी अमृतभावकूंप्राप्तहोवौंगी॥ अथवा ताधनकरिकै मैं अमृतभावकूंनहींप्राप्तहोवौंगी॥ यादोनोंपक्षोंविषे एकपक्ष कूं आप निश्चयकरिकै हमारेप्रतिकथनकरो॥ तिसतैंअनंतर विचारकरिकै मैं आपसैंधनलेवौंगी॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन

जबी मैत्रेयीनैं याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रतिकह्या ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि सुवर्णादिकधनकरिकै याजीवोंकूं अमृतभावकीप्राप्तिनहीं होवैहै ॥ यादूसरेपक्षकूंअंगीकारकरिकै तामैत्रेयीकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेमैत्रेयी! यासुवर्णादिरूपनाशवान्धनकरिकै कोईभीदेहधारीजीव मोक्षरूपअमृतभावकूंप्राप्तहोइसकैनहीं ॥ उलटा यासुवर्णादिरूपधनकरिकैय हजीव मरणकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ अब सुवर्णादिकधनविषे अन्वयव्यतिरेककरिकै मरणकीकारणतानिरूपणकरैहैं ॥ यालोकविषेजि तनेकीधनवान्पुरुषहैं तेधनीपुरुष महाराजातैं तथा चोरपुरुषोंतैं तथाअन्यदुष्टपुरुषोंतैं अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोइकै मृत्युकूं हीप्राप्तहोवैहै ॥ हेमैत्रेयी! यालोकविषे ऐसाकोईधनवान्पुरुषहैनहीं ॥ जो चिंतातैंरहितहोइकैनिवासकरैहै ॥ किंतु याधनवान्पुरु षोंकूं स्वप्नअवस्थाविषेभी राजाचोरअग्निआदिकोंकाभय बन्यारहैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जबी स्वप्नअवस्थाविषेभी यहधनवान्पुरुष राजादिकोंकीभयतैंरहितनहींहोवैहै ॥ तबी जाग्रत्अवस्थाविषे यहधनवान्पुरुष राजादिकोंकेभयतैंरहित किसप्रकारहोवैगे? और हेमैत्रेयी! यालोकविषे धनतैंरहितजेनिर्धनपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं विशेषकरिकैरोगादिकभीहोवै नहीं ॥ तथा तिननिर्धनपुरुषोंकेशरीर विषे बलभीअधिकहोवैहै ॥ तथा तिननिर्धनपुरुषोंकीजठराग्निभी प्रज्वलितरहैहै ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ तिननिर्धनपुरुषों ऊपरि दैवभीअनुकूलहीरहैहै ॥ अब धनीपुरुषोंऊपरिदैवकीप्रतिकूलता दिखावैहैं ॥ हेमैत्रेयी! यालोकविषे जेधनवान्पुरुषहैं तिनों ऊपरि विशेषकरिकैतौ दैव प्रतिकूलहीरहैहै ॥ काहेतैं? यालोकविषे विशेषकरिकैतौ धनवान्पुरुष रोगीहीरहैं ॥ तथा तिनधनवा न्पुरुषोंकूं क्षुधाभीनहींलागैहै॥तथा तिनधनवान्पुरुषोंका आयुषभीअल्पहीहोवैहै ॥ तथा बहुतधनकेप्राप्तहुएभी तिनधनीपुरुषों केतृष्णाकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ और तेधनीपुरुष आपणेपुत्रादिकबांधवोंकेसाथभी मनविषेद्वेषहीराखैहैं ॥ और कोईकधनवान्पु रुषतौ श्वानोंकीन्यांई प्रसिद्धही पुत्रादिकबांधवोंकेसाथ द्वेषकरैहैं ॥ और याकार्यकूं मैंकरौं तथायाकार्यकूंमैंनहींकरौं याप्रकारकी चिंताकरिकै तेधनवान्पुरुष सर्वदा व्याकुलहीरहैहैं ॥ ताचिंताकरिकै तेधनवान्पुरुष किंचित्मात्रभी सुखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और यालोकविषे महात्मादयालुपुरुष निर्धनपुरुषोंऊपरि कृपाकरिकै जैसास्नेहकरैहैं ॥ तैसास्नेह तेमहात्मादयालुपुरुष धनवान्पुरुषऊ

परिकरैंनहीं ॥ और यालोकविषे धनकेमदकरिकै यहधनीपुरुष जिसप्रकारकेपापकर्मोंकूंकरैहैं ॥ तिनपापकर्माकूं यहनिर्धनपुरुष राजादिकोंकेभयतैंकरैंनहीं ॥ और यालोकविषे धनवान्पुरुष धनकेमदकरिकै देवतावोंकीभीअवज्ञाकरैहैं॥ तथा तेधनीपुरुष गुरुवोंकीभीअवज्ञाकरैं हैं ॥ तथा तेधनीपुरुष अतिथीपुरुषोंकीभीअवज्ञाकरैं हैं ॥ तथा तेधनीपुरुष वेदवेत्ताब्राह्मणोंकीभीअवज्ञाकरैं हैं॥ तथा तेधनीपुरुष ब्रह्मवेत्ताज्ञानीपुरुषोंकीभीअवज्ञाकरैं हैं॥ और यहधनवान्पुरुष आपणेपक्षविषेस्थितजीवोंके तथापरपक्षविषेस्थित जीवोंके सर्वदा उपद्रवकूंहीकरैं हैं॥याकारणतैं तेधनवान्पुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंहीप्राप्तहोवैं हैं ॥ और यालोकविषे जेनिर्धनदरिद्रीपुरुषहैं ॥ तेनिर्धनपुरुष परजीवोंकेपीडाकरणेविषे समर्थहैंनहीं ॥ यातैं तेनिर्धनपुरुष तिनदुःखोंकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ याकारणतैं तिनधनवान्पुरुषोंतैं तेनिर्धनपुरुष अत्यंतउत्कृष्टहैं ॥ हेमैत्रेयी! जबीतूं यासुवर्णादिरूपधनकूं अंगीकारकरैगी ॥ तबी यालोकविषे जैसे प्रसिद्धधनीपुरुषोंका जीवनहोवैहै ॥ तैसे ताधनकरिकै तुमाराभीजीवनहोवैगा ॥ और जैसे यालोकविषे धनकीआसक्तिकरिकै चलायमानहैंचित्तजिनोंके ऐसेधनवान्पुरुषोंकूं मोक्षरूपअमृतभागकेप्राप्तिकीआशानहींहै तैसे धनकीआसक्तिकरिकै तुमारेकूंभी मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकी आशानहींहोवैगी॥हेमैत्रेयी! धनवान्पुरुषोंकूं अमृतभावकीप्राप्ति नहींहोवैहै ॥ याकेविषेयहकारणहै ॥ ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपजोमोक्षहै ताकानामअमृतहै॥ सोमोक्षरूपअमृत देहादिकोंविषेअहंमम अभिमानकीनिवृत्तितैंविना होवैनहीं ॥ यातैं देहादिकोंविषेअहंममअभिमानकीनिवृत्ति तामोक्षरूपअमृतकाकारणहै ॥ और साअहंममअभिमानकीनिवृत्ति अज्ञानकीनिवृत्तितैंविनाहोवैनहीं ॥ यातैं साअज्ञानकीनिवृत्ति अहंममअभिमानकेनिवृत्तिकाकारण है ॥ और साअज्ञानकीनिवृत्ति आनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानतैंविनाहोवैनहीं ॥ यातैं सोआत्माकाज्ञान अज्ञानकेनिवृत्तिकाकारणहै ॥ और धनकीआसक्तिकरिकै विक्षिप्तहैंचित्तजिनोंका ऐसेधनवान्पुरुषोंकेचित्तविषे सोआत्मज्ञानउत्पन्नहोवैनहीं ॥और ताआत्मज्ञानकेअभावहुए तिनधनीपुरुषोंके अज्ञानकीभीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ और ताअज्ञानकेस्थितहुए ताअज्ञानकाकार्यरूपसूक्ष्मशरीरभी निवृत्तहोवैनहीं ॥ और तासूक्ष्मशरीरकेस्थितहुए तासूक्ष्मशरीरकेआश्रित पुण्यपापकर्मभी नाशहोवैनहीं ॥ और तापुण्यपापक

मोंकेस्थितहुए पुनःस्थूलशरीरकीप्राप्ति अवश्यहोवैहै ॥ और तास्थूलशरीरकेप्राप्तहुए यहजीव पूर्वलेपुण्यपापकर्मोंकेअनुसार सुखदुःखकूंभोगेहैं ॥ तथा पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतैं यहजीव पुनःपुण्यपापकर्मोंकूंकरैहैं ॥ तथा प्रारब्धकर्मकूंभोगिकै तेजीव मरणकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ और मरणतैंअनंतर तेअज्ञानीजीव पुनःजन्मकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकार आत्मज्ञाननैंरहित तेधनवान्पुरुष घटीयंत्रकीन्यांई निरंतर संसारविषेभ्रमणकरैहैं ॥ ऐसेधनवान्पुरुषोंविषे मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकीआशाहैनहीं ॥ यातैं सुवर्णादिरूपधनकरिकै मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिहोवैनहीं यहअर्थसिद्धभया ॥ हेशिष्य ! याप्रकारकेवचन जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं मैत्रेयीकेप्रति कहे ॥ तबी सामैत्रेयी याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई ॥ मैत्रेयीउवाच ॥ हेभगवन् ! यासुवर्णादिरूपधनकीप्राप्तिकरिकै जबी मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकीआशानहींहै ॥ उलटा मरणकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ तबी मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकीइच्छावाली मैं मैत्रेयी यासुवर्णादिरूपधनकूंलैके किसप्रयोजनकीसिद्धिकरौंगी ? किंतु याधनकरिकै हमारा किंचित्मात्रभी प्रयोजनसिद्ध नहींहोवैगा ॥ यातैं हेभगवन् ! यहआपकासंपूर्णधन कात्यायनीकूंप्राप्तहोवै ॥ हमारेकूं इसधनकेप्राप्तिकीइच्छानहीं ॥ शंका ॥ हेमैत्रेयी ! यासुवर्णादिरूपधनकूं जोतू नहींअंगीकारकरैगी ॥ तौ तुमारेशरीरकेखानपानादिकव्यवहार किसप्रकारहोवैंगे ॥ समाधान ॥ हेभगवन् ! जैसे संन्यासआश्रमकूंधारणकरिकै आप शरीरकेनाशपर्यंत भिक्षाअन्नकरिकै आपणेशरीरकानिर्वाहकरौंगे ॥ तैसे मैंमैत्रेयीभी याशरीरकेनाशपर्यंत भिक्षाअन्नकरिकै आपणेशरीरकानिर्वाहकरौंगी ॥ यातैं हमारेजीवनकी आप किंचित्मात्रभीचिंतामतकरो ॥ हेभगवन् ! पूर्व माताकेउदरविषे दशमासपर्यंत जिसविश्वंभरदेवनैं हमारीरक्षाकरीहै ॥ सोविश्वंभरदेवअबीभी हमारीरक्षाकरैगा ॥ यातैं ऐसेविश्वंभरपरमात्मादेवकेविद्यमानहुए आपणेशरीरकेजीवनकीचिंताकरणी हमारेकूंउचितनहीं है ॥ हेभगवन् ! जोकदाचित् भिक्षाअन्नकेअप्राप्तिकरिकै हमाराशरीर नष्टहोइजावैगा ॥ तौभी हमारेकूंभयनहीं ॥ उलटा याशरीरकेनाशहुए मैं परमेश्वरका उपकारमानोंगी ॥ काहेतैं ? यहशरीर विष्ठामूत्रादिकमलोंकरिकैपूर्णहै ॥ यातैं यहशरीर अत्यंतदुर्गंधीवालाहै ॥ तथा यहशरीर अनेकप्रकारकीव्याधियोंकरिकैग्रस्तहै ॥ तथा नानाप्रकारकेदुःखोंकाकारणहै ॥ तथा यहशरीर अशु

भप्रवृत्तिद्वारा अनेकपापोंकाकारणहै ॥ ऐसेनिंदितशरीरविषे मेरीकिंचित्मात्रभीआसक्तिनहीं ॥ शंका ॥ हेमैत्रेयी ! आपणेशरीर विषे जोतुमारीआसक्तिनहींहै॥ तौयाशरीरकेरक्षणकरणेवासते तू अन्नादिकोंकाभक्षण किसवासतेकरती है?॥समाधान॥ हेभगवन्! जैसे यालोकविषे राजाकेभृत्य किसीपुरुषकूं बलात्कारसें किसीकार्यविषे प्रवृत्तकरैंहैं ॥ तैसे मैंमैत्रेयीभी पराधीनताकरिकै भोजना दिकव्यवहारोंविषे प्रवृत्तहोतीहूं॥ शरीरविषेरागकरिकै मैं भोजनादिकोंविषेप्रवृत्तहोतीनहीं ॥ अब अन्नकेभोजनविषे दोषोंकानिरूप णकरैंहैं॥ हेभगवन्! अन्नकेभोजनकरणेतैं याजीवोंकेचित्तविषे काम क्रोध लोभ मोह उत्पन्नहोवैहैं॥ तथा अन्नकेभोजनतैंही याजी वोंविषे निद्रातंद्रादिकदोष उत्पन्नहोवैंहैं॥ तथा विष्ठामूत्रादिकमलकीवृद्धिभी अन्नकेभोजनकरिकैहीहोवैहै ॥तथा अन्नकेभोजनकरि कैही याजीवोंके नेत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रिय तथामन शरीर आपणेआपणेव्यापारोंविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ ता नेत्रादिकोंकीप्रवृत्तितैं याजीवविषे अनेकप्रकारकेपापउत्पन्नहोवैंहैं ॥ और जेप्राणी आहारतैंरहितक्षुधातुरहैं ॥ तिनप्राणियोंकेनेत्रा दिकइंद्रिय किसीविषयविषेप्रवृत्तहोवैंनहीं ॥ हेभगवन्! अन्नकेनहींभोजनकरणेतैं याजीवकूं एकक्षुधा पीडाकरैहै ॥ और अन्नके भोजनकरणेतैं याजीवोंकूं कामक्रोधादिकअनेकशत्रु पीडाकरैहैं ॥ हेभगवन्! पूर्व कामरूपदोषनैं जोजोहमारेकूं दीनदशाकीप्राप्ति करीहै ॥ तिसहमारीदीनदशाकूं आप जाणतेहो ॥ यातैं आपकेआगे मैं ताआपणेदीनदशाका कथनकरतीनहीं ॥ हेभगवन्! ता कामरूपदुःखका गर्भरूपफल हमास्त्रियोंकूं शीघ्रहीप्राप्तहोवैहै ॥ तागर्भकेधारणकरणेतैं तथा तागर्भकेपरित्यागकरणेतैं हमास्त्रि योंकूं जोदुःख प्राप्तहोवैहै ॥ सोदुःख नरककेदुःखतैं तथामरणकेदुःखतैंभी कोटिगुणाअधिकहै ॥ हेभगवन्! जैसे यालोकविषे कुचलेकावृक्ष जीवोंकूं विषरूपफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे यहकामरूपवृक्ष हमास्त्रियोंकूं नानाप्रकारकेदुःखरूपफलोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ तिनदुःखोंकाअनुभव जैसे हमास्त्रिजनोंकूंहै ॥ तैसे पुरुषोंकूं तिनदुःखोंकाअनुभवहैनहीं ॥ हेभगवन्! ऐसेदारुणदुःखोंकूंसहनकरि कैभी हमास्त्रियोंका यहशरीर नाशकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ यहहमारेकूं बहुतआश्चर्यहोवैहै ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ ब्रह्मानैं हम स्त्रीजनोंकाशरीर कोईवज्ररूपउत्पन्नकर्याहै ॥ हेभगवन्! याकामकरिकै जिसप्रकारकेदुःख हमारेकूंप्राप्तहुएहैं ॥ तिसीप्रकारके

दुःख क्रोधलोभमोहादिकोंकरिकैभी हमारेकूंप्राप्तभयेहैं ॥ तिनसंपूर्णदुःखोंकूं मैं आपणेचित्तविषे अनुभवकरतीहूं ॥ आपसर्वज्ञहो
याकारणतैं आपकेसमीप मैं तिनदुःखोंकावर्णनकरतीनहीं ॥ और हेभगवन्! अन्नकेभोजनकरणेतैं उत्पन्नभये जेकामक्रोधादि
कअनेकविकारहैं ॥ तिनकामक्रोधादिकअनेकविकारोंकरिकै जोकदाचित् हमारामृत्युहोवै ॥ तामृत्युतैं क्षुधाजन्यमृत्युकूं मैं श्रेष्ठमा
नतीहूं ॥ काहेतें? जैसे यालोकविषे एकशूरवीरपुरुष एकहीशूरवीरपुरुषकेसाथ युद्धकरणेविषे समर्थहोवैहै ॥ एकशूरवीरपुरुषका
अनेकशूरवीरपुरुषोंकेसाथ युद्धकरणासंभवैनहीं ॥ जोकदाचित् सोएकशूरवीरपुरुष अनेकअशूरवीरपुरुषोंकेसाथभी युद्धकरैहै ॥
तौ सोशूरवीरपुरुषभी अनेकोंकेसाथ युद्धकरिकै क्लेशकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे कामक्रोधादिकअनेकविकारोंविषे प्रबल जोयह
क्षुधारूपविकारहै ॥ ताएकक्षुधाकेसाथ युद्धकरणेविषे यद्यपि मैं समर्थहूं ॥ तथापि अनेककामक्रोधादिकविकारोंकेसाथ युद्धकर
णेविषे मैं समर्थनहींहूं ॥ यातैं हेभगवन्! धनकेग्रहणकरणेतैंविना जोकदाचित् यहहमाराशरीर नष्टहोइजावैगा तौ हमारेऊप
रिसैं यहदुर्गंधशरीररूपभारउतरेगा ॥ याशरीरकेरक्षणकरणेविषे हमारा किंचित्मात्रभीरागनहीं ॥ परंतु हेभगवन्! याभारत
खंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंपाइके आत्मज्ञानतैंरहितहुई मैंमैत्रेयी याशरीरकेपरित्यागकरणेकीइच्छानहींकरती ॥ किंतु जैसे
आप आत्मज्ञानकरिकैसंतोषकूंप्राप्तभयेहो ॥ तैसे मैंभी आत्मज्ञानकूंसंपादनकरिकै पश्चात् जोशरीरका परित्यागकरौं तौश्रेष्ठवार्ता
है ॥ यातैं हेभगवन्! जोआपकीहमारेऊपरिकृपाहै ॥ तथा जोआप मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकाउपाय जाणतेहोवौं तौ सोमोक्षरूपअ
मृतकेप्राप्तिकाउपाय आप कृपाकरिकै हमारेप्रति उपदेशकरौ ॥ जिसकरिकै मैं मोक्षरूपअमृतकूंप्राप्तहोवौं ॥ हेशिष्य! याप्रकार धन
केनहींअंगीकारकरणेकावचन जबी मैत्रेयीनैं याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रतिकह्या॥तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेमनविषे याप्रकारकाविचार
करिकै तामैत्रेयीकेवचनकूं अंगीकारकरताभया ॥ अब ताविचारकानिरूपणकरैहैं ॥ यालोकविषे यद्यपि यहजीव धनकरिकै कामरूपपु
रुषार्थकूं तथाधर्मरूपपुरुषार्थकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तथापि ताधनकरिकै यहजीव मोक्षरूपअमृतकूं कदाचित्भी प्राप्तहोइसकैनहीं ॥
और धनकरिकै याजीवोंकूं जोस्त्रीआदिकविषयोंकासंबंधरूपकाम प्राप्तहोवैहै ॥ सोकाम वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ जीवोंके

दुःखकाहीसाधनहै ॥ परंतु जैसे मार्गकेचलणेकरिकैपरिश्रमकूंप्राप्तभयाजोपुरुषहै ॥ तिसपुरुषकूं दुःखकाकारणभीपादोंकाप्रहार सु
खकाकारणप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे विषयासक्तभ्रांतपुरुषोंकूं दुःखकाकारणभीसोकाम सुखकाहीकारणप्रतीतहोवैहै ॥ किंवा वास्तवतैं
विचारकरिकैदेखियेतौ विषयजन्यसुखविषे सुखरूपतासंभवैनहीं ॥ किंतु ताविषयजन्यसुखविषे दुःखरूपताहीहै ॥ परंतु विषया
सक्तलोकोंकीदृष्टिकूंलैके जोकदाचित् ताविषयजन्यसुखविषे सुखरूपता अंगीकारभीकरिये तौभी ताविषयजन्यसुखविषे धनकूं
कारणतासंभवैनहीं ॥ काहेतें? धनतैंरहित जेश्वानादिकपशुहैं ॥ तेभी आपणीस्त्रीकेसंभोगतैं विषयसुखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं स्त्रीरू
पविषयजन्यसुखविषेभी धनकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ और धनतैंरहितजेभ्रमरहैं ॥ तेभी नानाप्रकारकेपुष्पोंकीसुगंधकूंग्रहणकरि
कैसुखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं गंधरूपविषयजन्यसुखविषेभी धनकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ और धनतैंरहितजेशुककोकिलादिकपक्षी
हैं ॥ तेभीआम्रादिकफलोंकेरसकूंग्रहणकरिकै सुखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं रसरूपविषयजन्यसुखविषेभी धनकूंकारणतासंभवैनहीं ॥
और विष्णुआदिकदेवतावोंकेमंदिरविषेस्थित जेगौआदिकपशुहैं तथा अन्यनिर्धनपुरुषहैं ॥ तेभी नानाप्रकारकेगीतवादित्रोंकेश
ब्दकूंश्रवणकरिकै सुखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं शब्दरूपविषयजन्यसुखविषेभी धनकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ और यालोकविषे धनतैंरहि
तजेदरिद्रीपुरुषहैं ॥ तेभी वारांगनादिकसुंदरस्त्रियोंकेरूपकूंदेखिकै आनंदकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं रूपविषयजन्यसुखविषेभी धनकूंका
रणतासंभवैनहीं ॥ और धनतैंरहितजेमक्षिकादिकजीवहैं॥तेभी दुर्लभराजाओंकीस्त्रियोंकेस्पर्शकूंप्राप्तहोइकै सुखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ या
तैं स्पर्शरूपविषयजन्यसुखविषेभी धनकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ यद्यपि यालोकविषे किसीकिसीमनुष्यकूं धनकरिकै विषयसुखकी
प्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं धनविषे यत्किंचित्‌विषयसुखकीकारणतासंभवैहै ॥ तथापि संपूर्णकार्यव्यक्तियोंका जोवस्तु नियमकरिकैजन
कहोवैहै ॥ ताकूं शास्त्रविषेकारणकहैहैं ॥ और जोवस्तु किसीकार्यव्यक्तिकाजनकहोवै ॥ और किसीकार्यव्यक्तिकाजनकनहींहोवै ॥
तावस्तुकूं शास्त्रविषेकारणकहैंनहीं ॥ जैसे मृत्तिका दंड चक्र कुलाल येचारों नियमकरिकै संपूर्णघटोंकेजनकहैं ॥ यातैं तेचारों घ
टकेकारणहैं ॥ और ताकुलालकेगृहविषेस्थितजोरासभहै ॥ सो यद्यपि यत्किंचित्‌घटकाजनकहै ॥ तथापि सोरासभ संपूर्णघटों

काजनकहैनहीं ॥ यातैं सोरासभ घटकाकारणनहीं ॥ किंतु अन्यथासिद्धहै ॥ तैसे यहधन यद्यपि यत्किंचित्पुरुषकेविषयसुखकाज कहै ॥ तथापि यहधन पशुआदिकसर्वजीवोंकेविषयसुखकाजनकहैनहीं ॥ यातैं यहधन विषयसुखकाकारणनहीं ॥ किंतु रासभ कीन्यांई अन्यथासिद्धहै ॥ किंवा यालोकविषे जेधनवान्पुरुषहैं तेभी ताधनकरिकै संपूर्णविषयसुखोंकूंप्राप्तहोइसकैंनहीं ॥ किंतु तेधनवान्पुरुष यत्किंचित्विषयसुखकूंही प्राप्तहोवैहैं ॥ सोयत्किंचित्विषयसुख निर्धनपुरुषोंकूंभीप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं विषयजन्यसुख विषे धनकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ किंवा जैसे विषयजन्यसुखविषे धनकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ तैसे स्वर्गादिकसुखकाहेतुजोधर्म है ॥ ताधर्मविषेभी धनकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ काहेतें ? मुद्गलब्राह्मणतैंआदिलैकेजेनिर्धनपुरुषहुएहैं ॥ तेभी अतिथिकीसेवादिकक र्मोंकरिकै स्वर्गकूंप्राप्तहुए शास्त्रविषेश्रवणकरीतेहैं ॥ यातैं धनकरिकैही यापुरुषकूं धर्मकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम संभवै नहीं ॥ उलटा कितनेकधनवान्पुरुषतो धनकेमदकरिकै नरककूंहीप्राप्तहोवैहैं ॥ शंका ॥ स्वर्गकीप्राप्तिकेसाधन जेअश्वमेधादिक यज्ञहैं ॥ तेयज्ञ धनतैंविनाहोवैंनहीं ॥ यातैं धनही स्वर्गकेप्राप्तिकासाधनहै ॥ समाधान ॥ अश्वमेधादिकयज्ञोंतैंविना दूसरेकिसीउ पायकरिकै जोकदाचित् याजीवोंकूं स्वर्गकीप्राप्तिनहींहोती तौधनविषे स्वर्गकीकारणतासंभवती ॥ परंतु स्वर्गकीप्राप्तिवासते शास्त्रनैं जप व्रत तप आदिकअनेकप्रकारकेसाधन कथनकरेहैं ॥ तिनजपादिकसाधनोंकरिकैभी याजीवोंकूं स्वर्गकीप्राप्तिहोइसकै है ॥ यातैं धनही स्वर्गादिकोंकाकारणहै याप्रकारकानियम संभवैनहीं ॥ किंवा जोवादी धनकूं मोक्षविषेकारणमानैहै ॥ सोवा दीभी मोक्षविषे धनकूं साक्षात्कारणमानैंनहीं ॥ किंतु यज्ञादिककर्मोंद्वारा ताधनकूं मोक्षविषेकारणमानैहै ॥ तिनयज्ञादिककर्मोंवि षेही जबी मोक्षकीकारणतासंभवैनहीं ॥ तबी धनविषे मोक्षकीकारणता किसप्रकारसंभवैगी ? और स्वर्गादिकोंकीप्राप्तिविषे जै से यज्ञादिककर्मोंकूंकारणताहै ॥ तैसे जपव्रतादिककर्मोंकूंभीकारणताहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ अश्वमेधादिकयज्ञ यद्यपि ध नकरिकैप्राप्तहोवैहैं ॥ तथापि धनकरिकै मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ! याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि तामैत्रेयीकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेप्रियमैत्रेयी ! धनकेपरित्यागकरणे

का जोतुमनैं हमारेप्रति वचनकह्याहै ॥ तथा मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकासाधन जोतुमनैं हमारेसैंपूछाहै ॥ तातुमारेवचनकूंश्रवणकरि
के हमारेमनविषे बहुतप्रसन्नताभईहै ॥ हेमैत्रेयी! यालोकविषे यहपुरुष पुत्ररूपकरिकैप्रीतियुक्तहुआ जिसस्त्रीतैंउत्पन्नहोवैहै ॥ ता
स्त्रीकानाम जायाहै ॥ सोयाप्रकारकी हमारीजाया एकतूहीहै ॥ काहेतें ? यातुमारेवचनकूंश्रवणकरिकै प्रीतिविशिष्टहुआमैंयाज्ञव
ल्क्य तुमारेतैंउत्पन्नभयाहूं ॥ यातें तेरेसरीखीजेविचारवान्स्त्रियांहै ॥ तेही जाया यानामकरिकैकहणेयोग्यहैं ॥ और तुमारेसरी
खीविचारवान्स्त्रियोंतैंभिन्न जितनीलौकिकस्त्रियांहै ॥ तेस्त्रियां अन्नवस्त्रभूषणादिकपदार्थोंकीयाचनाकरिकै आपणेपतियोंकूं अने
कप्रकारकेक्लेशोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ यातें तेस्त्रियां जाया यानामकरिकैकथनकरणेयोग्यनहींहै ॥ किंतु तेस्त्रियां ललना भार्या इत्यादि
कनामोंकरिकै कथनकरणेयोग्यहैं ॥ हेमैत्रेयी! याकालविषे मैंयाज्ञवल्क्य जैसे धनादिकपदार्थोंकीकामनातैं रहितहुआहूं ॥ तैसे तु
मनैंभी धनादिकपदार्थोंकीकामनाकापरित्यागकरिकै हमारेसैं आत्माकास्वरूपपूछाहै ॥ तातुमारेनिष्कामवचनकूं श्रवणकरिकै मैं
परमआनंदकूंप्राप्तभयाहूं ॥ यातें स्त्रियोंकाजोस्वभावतैंलज्जाधर्म है तालज्जाकापरित्यागकरिकै तुम हमारेसन्मुखस्थितहोवो ॥ हेमैत्रे
यी! जोतुमनैं मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकासाधनपूछाहै ॥ सोसाधन मैंयाज्ञवल्क्य तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ तू आपणेमनकूं तथा
नेत्रोंकूं तथाकरणोंकूं सावधानकरिकै श्रवणकर ॥ अब अन्वयव्यतिरेककरिकै आत्माकेपरमानंदरूपताका निरूपणकरैहैं ॥ या
ज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेमैत्रेयी! तेरेकूं मैंपतिप्रियहूं ॥ और मेरेकूं तूजायाप्रियहै ॥ यहवार्ता तुमारेहमारेकूं अनुभवसिद्धहै ॥ प
रंतु याकेविषेयह विशेषताहै ॥ हमारीजातुमारेशरीरविषेप्रीतिहै ॥ साप्रीति तुमारेसुखवास्तेनहींहै ॥ किंतु आपणेआत्माकेसुखवा
सतेही हमारी तुमारेशरीरविषेप्रीतिहै ॥ और हेमैत्रेयी! तुमारीजाहमारेशरीरविषेप्रीतिहै ॥ साप्रीतिभी हमारेसुखवासतेनहीं है
किंतु आपणेआत्माकेसुखवासतेही तुमारी हमारेशरीरविषेप्रीतिहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी!
यहजाया आपणेपतिसैंजोप्रीतिकरैहै ॥ सो पतिकेसुखवासतेनहींकरैहै ॥ किंतु कामरूपअग्निकरिकैतपायमानहुई साजाया ता
कामरूपअग्निकीशांतिद्वारा आपणेविषयसुखवासते तथा वस्त्रभूषणादिकोंकीप्राप्तिजन्यसुखवासते आपणेपतिविषेप्रीतिकरैहै ॥

शंका ॥ हेभगवन् ! यहजाया आपणेसुखवासते पतिविषेप्रीतिकरैहै॥ यहवार्ता कैसेजाणिजावे ? ॥ **समाधान** ॥ हे मैत्रेयी ! जोकदाचित् पतिकेसुखवासते यहजाया पतिविषेप्रीतिकरतीहोवै तौ जिसकालविषे सोपति किसीपरस्त्रीकीआसक्तिकरिकै ताजायाकेप्रतिकूलहोवैहै ॥ तिसकालविषेभी ताजायाकी आपणेपतिविषेप्रीतिहोणीचाहीये ॥ और आपणे तैंप्रतिकूलजोपतिहै तापतिविषे कोईभीजाया प्रीतिकरतीनहीं ॥ किंतु अनुकूलपतिविषेही संपूर्णजाया प्रीतिकरैहैं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ यहजाया आपणे सुखवासतेही पतिविषेप्रीतिकरैहै ॥पतिकेसुखवासते कोईजाया पतिविषेप्रीतिकरतीनहीं ॥ और हेमैत्रेयी ! जैसे यहजाया पतिकेसुखवासते पतिविषेप्रीतिकरैनहीं ॥ तैसे यहपतिभी ताजायाकेसुखवासते ताजायाविषेप्रीतिकरैनहीं ॥ किंतु कामरूपअग्निकी शांतिद्वारा आपणेविषयसुखवासते तथा अन्नपाकादिकगृहकेव्यवहारजन्यसुखवासते सोपति आपणीजायाविषेप्रीतिकरैहै ॥ जो कदाचित् ताजायाकेसुखवासते सोपति ताजायाविषेप्रीतिकरताहोवै तौजिसकालविषे साजाया ऋतुधर्मकरिकै अथवा किसी व्यभिचारादिककर्मोंकरिकै तापतिकेप्रतिकूलहोवैहै ॥ तिसकालविषेभी तापतिकी तिसजायाविषेप्रीतिहोणीचाहिये ॥ और आपणेतैंप्रतिकूलजायाविषे किसीभीपतिकीप्रीतिहोवैनहीं ॥ किंतु अनुकूलजायाविषेही सर्वपतियोंकीप्रीतिहोवैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ ताजायाकेसुखवासते तिसपतिकी जायाविषेप्रीतिनहीं ॥ किंतु आपणेसुखवासतेही तापतिकी तिसजायाविषेप्रीतिहै ॥ यातैं हेमैत्रेयी ! जैसे यालोकविषे शर्करा स्वभावतैंमधुरहै॥ तथा आपणेसंबंधकरिकै साशर्करा अमधुरपदार्थोंकूंभी मधुरकरैहै॥ यातैं साशर्करा मधुरतमहै ॥ तैसे यास्त्रियोंका तथापुरुषोंका जोस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माहै॥ सोआत्माही स्वभावतैंप्रियरूपहै ॥ और सोआनंदस्वरूपआत्मा आपणेतादात्म्यसंबंधकरिकै शरीरादिकअप्रियपदार्थोंकूंभी प्रियरूपकरैहै॥ याकारणतैं सोआत्मादेव प्रियतमहै ॥ और हेमैत्रेयी! जैसे जायाकूं आपणेसुखवासते पतिप्रियहै॥ तथा पतिकूं आपणेसुखवासते जायाप्रियहै॥ तैसे पुत्र सुवर्णादिकधन गवादिकपशु ब्राह्मत्वजाति क्षत्रियत्वजाति भूरादिकसप्तलोक इंद्रादिकदेवता ऋगादिवेद स्थावरजंगमप्राणी इसतैं आदिलैके जितनेजगत्विषेपदार्थहैं॥ तिनपुत्रादिकपदार्थोंविषे जोजीवोंकीप्रीतिहोवैहै ॥ सो तिनपुत्रादिकपदार्थोंकेसुखवासतेनहीं

होवै है किंतु आपणेसुखवासतेही तिनजीवोंकी पुत्रादिकपदार्थोंविषेप्रीतिहोवै है ॥ जोकदाचित् तिनपुत्रादिकपदार्थोंकेसुखवासतेही तिनजीवोंकी पुत्रादिकपदार्थोंविषेप्रीतिहोतीहोवै तौ जिसकालविषे तेपुत्रादिकपदार्थ याजीवोंकेप्रतिकूलहोवै हैं॥ तिसकालविषेभी तिनजीवोंकी तिनपुत्रादिकपदार्थोंविषे प्रीतिहोणीचाहीये॥ और आपणे तैंप्रतिकूलपुत्रादिकपदार्थोंविषे कोईभीजीव प्रीतिकरतान हीं किंतु अनुकूलपुत्रादिकपदार्थोंविषेही सर्वजीव प्रीतिकरै हैं॥ यातैंयहजान्याजावै है॥ यहजीव आपणेसुखवासतेही तिनपुत्रादिक पदार्थोंविषेप्रीतिकरै है ॥ तिनपुत्रादिकपदार्थोंकेसुखवासते कोईजीव तिनपुत्रादिकोंविषे प्रीतिकरतानहीं॥ यातैं सर्वजीवोंकूं आप णाआत्माहीस्वभावतैंप्रियहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! पति जाया पुत्र इसतैंआदिलैकेजितनाजगत्है ॥ सोजगत् यद्यपि प्रतिकू लहुआ जीवोंकेसुखकाहेतुनहीं है॥ तथापि अनुकूलहुआसोजगत् जीवोंकेसुखकाहेतुहै ॥ यातैं आनंदस्वरूपआत्माकेसंबंधकूंपाइ कै यहजगत् प्रियरूपनहीं॥ किंतु स्वभावतैंही यहजगत् प्रियरूपहै ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी! एकआनंदस्वरूपआत्माकूंछोडि कै जितनेपतिजायापुत्रादिकअनात्मपदार्थ हैं ॥ तेपदार्थ स्वभावतैंप्रियरूपनहीं तथाअप्रियरूपनहीं ॥ किंतु यहपदार्थ हमारे सुखकासाधनहै याप्रकारकाअनुकूलताज्ञान जिसजीवकूं जिसपदार्थविषेहोवै है ॥ तिसजीवकूं सोपदार्थ प्रियहोवै है ॥ और यह पदार्थ हमारेदुःखकासाधनहै याप्रकारकाप्रतिकूलताज्ञान जिसजीवकूं जिसपदार्थविषेहोवै है ॥ तिसजीवकूं सोपदार्थ अप्रिय होवै है॥ याकारणतैंही यालोकविषे जिसपुरुषकूं भ्रांतिकरिकै आपणेप्रियमित्रविषे प्रतिकूलताज्ञानहोवै है॥ और आपणेशत्रुविषे अनुकूलताज्ञानहोवै है ॥ सोभ्रांतपुरुष आपणेमित्रकूंतौ अप्रियमानै है और आपणेशत्रुकूंप्रियमानै है ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ अनात्मपदार्थोंकीप्रियताविषे अनुकूलताज्ञान कारणहै ॥ और अनात्मपदार्थोंकीअप्रियताविषे प्रतिकूलताज्ञान कारण है॥ स्व भावतैं कोईभीअनात्मपदार्थ प्रियअप्रियरूपनहीं॥ तहां दृष्टांत॥ जैसे वायु स्वभावतैं नउष्णहै नशीतलहै॥ परंतु सोवायु अग्निके संबंधकरिकै उष्णप्रतीतहोवै है॥ और जलकेसंबंधकरिकै सोवायु शीतलप्रतीतहोवै है॥ तैसे येअनात्मपदार्थ स्वभावतैं नप्रिय रूपहैं नअप्रियरूपहैं॥ परंतु अनुकूलताज्ञानकरिकै तेअनात्मपदार्थ जीवोंकूं प्रियरूपहुएप्रतीतहोवै हैं॥ और प्रतिकूलज्ञानकरिकै

तेअनात्मपदार्थ जीवोंकूं अप्रियरूपहुएप्रतीतहोवैं हैं ॥ किंवा यालोकविषे जिसपदार्थका जोस्वभावहोवैहै ॥ तिसपदार्थका सोस्वभाव किसीकालविषेभी निवृत्तहोवैनहीं ॥ जैसे अग्निकाजोउष्णतास्वभावहै ॥ सोउष्णतास्वभाव ताअग्निनें किसीकालविषेनिवृत्तहोवैनहीं ॥ तैसे पतिजायादिकअनात्मपदार्थोंविषे जोस्वभावनैंही प्रियताहोवै ॥ तौसर्वदा तिनपदार्थोंविषे प्रियताप्रतीतहोणीचाहिये ॥और सर्वदा तिनअनात्मपदार्थोंविषे प्रियताप्रतीतहोवैनहीं ॥ किंतु आपणेस्थितिकालविषे जेपतिजायादिकअनात्मपदार्थ याजीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरैंहैं ॥ तेहीपतिजायादिकअनात्मपदार्थ आपणेवियोगकालविषे तथा प्रतिकूलताज्ञानकालविषे तिन जीवोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ यातें आनंदस्वरूपआत्मातेंभिन्न जितनेपतिजायादिकअनात्मपदार्थहैं ॥ तिनोंविषे स्वभावनैंप्रियरूपतानहीं ॥ किंतु जिसकालविषे याजीवोंकूं तिनपतिजायादिकपदार्थोंविषे अनुकूलताज्ञानहोवैहै ॥ तिसीकालविषे तेपतिजायादिकपदार्थ ताजीवोंकूं प्रियलागेहैं ॥ यातें यहसिद्धभया ॥ जोआनंदस्वरूपआत्मा आपणेसंबंधकरिकै अप्रियपदार्थोंकूं भी प्रियकरैंहै ॥ सोआनंदस्वरूपआत्माही सर्वजीवोंकाप्रियतमहै ॥ अब आनंदस्वरूपआत्माविषे प्रियतमताकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम अप्रिय प्रिय प्रियतर यातीनोंकानिरूपणकरैंहैं ॥ हेमैत्रेयी ! यहपदार्थ हमारेकूं कदाचित्भी नहींप्राप्तहोवै ॥ याप्रकार जीवोंकेद्वेषकाविषयजोदुःखहै ॥ तथा तादुःखकेसाधनजेसिंहसर्पादिकहैं ॥ तिनदोनोंकानाम अप्रियहै ॥ और येपदार्थ हमारेसुखकेसाधनहैं याप्रकार जीवोंकेज्ञानकाविषय जेपतिजायादिकपदार्थहैं ॥ तिनोंकानाम प्रियहै और तिनपतिजायादिकप्रियपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै जोसात्विकअंतःकरणकापरिणामरूपसुखहोवैहै ॥ तासुखकानाम प्रियतरहै ॥ और जैसे पतिजायादिक प्रियपदार्थोंविषे जोजीवोंकीप्रीतिहोवैहै ॥ सो तिनपतिजायादिकपदार्थोंकेसुखवासतेहोवैनहीं ॥ किंतु आपणेसुखवासतेही तिनजीवोंकी तिनपतिजायादिकपदार्थोंविषेप्रीतिहोवैहै ॥ तैसे ताप्रियतरसुखविषे जोजीवोंकीप्रीतिहोवैहै ॥ सो तासुखवासतेनहींहोवैहै ॥ किंतु आपणेआत्मावासतेही तिनजीवोंकी तासुखविषेप्रीतिहोवैहै ॥ जोकदाचित् तासुखकेवासतेही जीवोंकी तासुखविषेप्रीतिहोवै ॥ तौ वैरीपुरुषकेसुखविषेभी तिनजीवोंकीप्रीतिहोणीचाहिये ॥ और वैरीपुरुषकेसुखविषे किसीजी

वकीप्रीतिहोवैनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै आपणेआत्मावासतेही याजीवोंकूं सोसुख प्रियतरहै ॥ याकारणतैं यहआनंदस्वरू पआत्माही सर्वजीवोंकूं प्रियतमहै ॥ इहां प्रियतैंजोअधिकहोवै ताकानाम प्रियतरहै ॥ और प्रियतरतैंभीजोअधिकप्रियहोवै ता कानाम प्रियतमहै ॥ हेमैत्रेयी! ऐसेप्रियतमआत्माके लेशमात्रआनंदकूंआश्रयणकरिकै ब्रह्मादिकलोकभी आनंदकूंप्राप्तहोइरहेहैं ॥ याकारणतैं सोआत्मस्वरूपआनंद ब्रह्माकेआनंदतैंभी उत्कृष्टहै ॥ हेमैत्रेयी! स्वर्गलोकतैंआदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेविषय जन्यआनंदहैं ॥ तिनसंपूर्णआनंदोंतैंअधिक तथाद्वैतभावरहित जोब्रह्मानंदहै ॥ सोब्रह्मानंद याजीवोंकेआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किं तु सोब्रह्मानंद याजीवोंकाआत्मरूपहीहै ॥ याकारणतैं यहआत्मस्वरूपआनंदही याजीवोंकापरमपुरुषार्थरूपहै ॥ इतनेकरिके आ नंदस्वरूपआत्माविषे परमपुरुषार्थरूपता निरूपणकरी ॥ अब तानंदस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारवासते श्रवणादिकसाधनोंका निरूपणकरेहैं ॥ हेमैत्रेयी! जिनअधिकारीपुरुषोंकूं करामलककीन्याई संशयविपर्ययतैंरहित आत्माकेसाक्षात्कारकीइच्छाहोवै ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंनैं प्रथम विवेक वैराग्य शमादिषट्संपत्ति मुमुक्षुता याचारिसाधनोंकूंसंपादनकरणा ॥ तिसतैंअनंतर याअधि कारीपुरुषनैं श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजाणा॥तहांजाइकै याअधिकारीपुरुषनैं तागुरुकेमुखतैं॥अयमात्माब्रह्म ब्रह्माहमास्मि॥ इसतैंआदिलैके अनेकश्रुतिवचनोंका वारंवारश्रवणकरणा ॥ और उपक्रमउपसंहारादिकषट्लिंगोंकरिकै याअधिकारीपुरुषनैं तिन वेदांतवचनोंका अद्वितीयब्रह्माविषे तात्पर्यनिश्चयकरणा ॥ याकानाम श्रवणहै ॥ याश्रवणकरिके अधिकारीपुरुषकी प्रमाणगतअ संभावना निवृत्तहोवैहै ॥ तहां वेदांतशास्त्र जीवब्रह्मकेअभेदकाप्रतिपादकहै अथवा भेदकाप्रतिपादकहै? ॥ याप्रकारकेसंशयकाना म प्रमाणगतअसंभावनाहै॥ अब मननकानिरूपणकरेहैं ॥ हेमैत्रेयी! याप्रकार गुरुकेमुखतैं वेदांतवचनोंकूंश्रवणकरिकै यहअधिका रीपुरुष एकांतदेशविषेस्थितहोइकैश्रुतितैंअविरुद्धतर्ककरिके तिनवचनोंकेअर्थकामननकरै ॥ सोतर्कयहहै ॥ जैसे यालोकविषे एक हीमृत्तिकादिककारण घटशरावादिकअनेककार्यरूपकरिकै स्थितहोवैहैं ॥ तैसे एकहीअद्वितीयपरमात्मादेव अज्ञानकेसंबंधतैं नाना जगत्‌रूपहोइकै प्रतीतहोवैहै ॥ और जैसे घटशरावादिककार्य मृत्तिकादिककारणोंविषेलयहोवैहैं ॥ तैसे यहसंपूर्णजगत् अधि

ष्ठानपरमात्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे मालाकेपुष्पोंविषे सूत्रकातौअन्वयहै ॥ और पुष्पोंका परस्परव्यतिरेकहै ॥ तैसे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति बाल्य यौवन वृद्ध इत्यादिकअवस्थावोंविषे आत्माकातौअन्वयहै ॥ और तिनअवस्थावोंका परस्पर व्यतिरेकहै ॥ इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकीतर्कोंकरिकै यहअधिकारीपुरुष वेदवचनोंकेअर्थकामननकरै ॥ तामननकरिकै याअधिकारीपुरुषकी प्रमेयगतअसंभावना निवृत्तहोवैहै ॥ इहां आत्मा व्यापकहै अथवा परिच्छिन्नहै ? ॥ इत्यादिकसंशयोंकानाम प्रमेयगतअसंभावनाहै ॥ अब निदिध्यासनकानिरूपणकरै हैं ॥ हेमैत्रेयी ! यहमन अत्यंतचंचलहै ॥ यातैं तामनकूं यहअधिकारीपुरुष प्रथम किसीबाह्यप्रियपदार्थविषे एकाग्रकरै ॥ तिसतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष ताशिक्षितमनकूं अंतरआत्माविषेएकाग्रकरै ॥ जाआत्माविषे एकाग्रताकूंप्राप्तहुआ यहमन पुनःबहिर्मुखताकूं नहींप्राप्तहोवै ॥ याकानाम निदिध्यासनहै ॥ तानिदिध्यासनकरिकै याअधिकारीपुरुषकी विपरीतभावना निवृत्तहोवैहै ॥ अन्यवस्तुविषे अन्यबुद्धिकानाम विपरीतभावनाहै ॥ हेमैत्रेयी ! इसप्रकार श्रवणमनननिदिध्यासनकरिकै असंभावनाविपरीतभावनातैंरहितहोइकै अंतरआत्माविषेएकाग्रताकूंप्राप्तहुआ यहशुद्धमन गुरुउपदिष्टमहावाक्यरूपशब्दप्रमाणतैं आत्माकेसाक्षात्कारकूंउत्पन्नकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! महावाक्यरूपशब्दप्रमाणतैंविनाही स्वतंत्रमन आत्मसाक्षात्कारकूं किसवासतेनहींउत्पन्नकरता ? ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ! जैसे नेत्रादिकबाह्यइंद्रिय कदाचित् यथार्थज्ञानरूपप्रमाकूंउत्पन्नकरैहैं ॥ और कदाचित् तेनेत्रादिकइंद्रिय दोषकेवशतैं अयथार्थज्ञानरूपअप्रमाकूंभीउत्पन्नकरैहैं ॥ यथार्थज्ञानकूंही हम उत्पन्नकरैं अयथार्थज्ञानकूं हम नहींउत्पन्नकरैं ॥ याप्रकारकाआग्रह तिननेत्रादिकइंद्रियोंविषेहोवैनहीं ॥ तैसे सर्ववृत्तियोंकाउपादानकारणजोयहमनहै ॥ सोमनभी कदाचित् यथार्थज्ञानरूपप्रमाकूंउत्पन्नकरैहै ॥ और कदाचित् सोमन दोषकेवशतैं अयथार्थज्ञानरूपअप्रमाकूंभीउत्पन्नकरैहै ॥ यथार्थज्ञानकूंही मैं उत्पन्नकरौं अयथार्थज्ञानकूं मैं नहींउत्पन्नकरौं याप्रकारकाआग्रह तामनविषेहोवैनहीं ॥ और सर्वदोषोंतैंरहित यहमहावाक्यरूपशब्दप्रमाणतौ केवलयथार्थज्ञानरूपप्रमाकूंहीउत्पन्नकरैहै ॥ यातैं आत्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तिविषे महावाक्यरूपशब्दप्रमाणही प्रधानकारणहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! आत्माके

साक्षात्कारविषे जोमहावाक्यरूपशब्दप्रमाणकूंही प्रधानता होवै तौ मनकीसहायतातैं विनाही सोमहावाक्यरूप शब्दप्रमाण आत्मसाक्षात्कारकूं किसवासतेनहींउत्पन्नकरता ? ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ! जैसे नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकरिकैजन्य जोघटपटादि रूपदार्थोंकाप्रत्यक्षज्ञानहै ॥ ताप्रत्यक्षज्ञानविषे नेत्रादिकइंद्रियोंका घटादिकविषयोंकेसाथ संयोगादिकसंबंध कारणहै ॥ विषयइंद्रियकेसंबंधतैंविना प्रत्यक्षज्ञानहोवैनहीं ॥ तैसे महावाक्यरूपशब्दप्रमाणतैं मनविषेउत्पन्नभईजोआत्माकारवृत्तिहै ॥ तावृत्तिज्ञानविषे साक्षात्काररूपता तबीसिद्धहोवै ॥ जबी आत्माकेसाथ मनकासंयोगसंबंधहोवै ॥ आत्माकेसाथ मनकेसंबंधतैंविनाता वृत्तिज्ञानविषे साक्षात्काररूपता सिद्धहोवैनहीं ॥ याकारणतैं महावाक्यजन्यआत्मसाक्षात्कारविषे आत्माकेसाथ शुद्धमनकासंबंध भी अवश्यअपेक्षितहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ श्रवण मनन निदिध्यासन यातीनसाधनोंकरिकैयुक्त जोशुद्धमनहै ॥ सोमन गुरु उपदिष्टमहावाक्यरूपशब्दप्रमाणतैं अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकूंउत्पन्नकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! आत्मसाक्षात्कारकेउत्पन्नहुए याअधिकारीपुरुषोंकूं कौनफलकीप्राप्तिहोवैहै ? ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ! याअधिकारीपुरुषोंकूं जबी श्रवणादिकसाधनोंकरिकै आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तबी या अधिकारीपुरुषोंके अज्ञानरूपअविद्याकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और ताअविद्यारूपकारणकेनाशहुएतैंअनंतर याअधिकारीपुरुषोंके कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकसंपूर्णदुःखोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ इसप्रकार कार्यसहितअविद्याके निवृत्तहुएतैंअनंतर याअधिकारी पुरुषोंकेहृदयविषे स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्मा प्रादुर्भावहोवैहै ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे मेघादिकोंकेनिवृत्तहुए केवलशुद्धआकाश प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे कार्यसहितअविद्याकेनाशहुए याअधिकारीपुरुषोंकूं आनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माप्रतीतहोवैहै ॥ हेमैत्रेयी ! जैसे स्वप्नअवस्थातैं जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहुआयहपुरुष तास्वप्नकेदुःखोंकूंमिथ्या मानैहै ॥ तैसे आत्मसाक्षात्कार करिकै अविद्यारूपनिद्रातैंजाग्रत्हुआ यहविद्वान्पुरुष संपूर्णदृश्यप्रपंचकूं मिथ्यामानैहै ॥ हेमैत्रेयी ! जैसे भयतैंरहित चक्रवर्तीमहाराजा स्वप्नविषेजाइकै नानाप्रकारकेभयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तास्वप्नतैंजाग्रत्हुआ सोमहाराजा तास्वप्नकेभयकूंआपणेविषेमानैनहीं ॥ तैसे वास्तवतैं सर्वदुःखोंतैंरहितहुआभीयहपुरुष आपणेआत्मस्वरूपकेअज्ञानतैं

आपणेविषे नानाप्रकारकेदुःखोंकूंमानेहै ॥ और आत्माकेसाक्षात्कारहुएतैंअनंतर यहविद्वान्पुरुष आपणेस्वरूपविषे तिनसंपूर्ण दुःखोंकूंमिथ्यामानेहै ॥ अब आत्माकेज्ञानतैं सर्वप्रपंचकेज्ञानकीसिद्धिकरणेवासते प्रथम अनेकदृष्टांतोंकरिकै प्रपंचविषे मिथ्याप णानिरूपणकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी ! जैसे शुद्धआकाशविषे अविद्याकरिकै गंधर्वनगर उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे याशुद्धआत्माविषेभी अवि द्याकरिकैही जगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ और जैसे वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ ताआकाशविषे सोगंधर्वनगर तीनकालमैं उत्पन्न नहींभया ॥ तैसे वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ याअद्वितीयआत्माविषेभी यहदुःखरूपजगत् तीनकालमैं उत्पन्ननहींभया ॥ हेमै त्रेयी ! जैसे नेत्रकेतिमररोगकरिकै यहपुरुष एकचंद्रमाकूं अनेकदेखैहै ॥ तैसे अविद्यारूपदोषकरिकै यहअज्ञानी जीव एकअद्वि तीयआत्माकूं अनेकरूपदेखैहै ॥ और जैसे मूढबालक आपणीअंगुलीसैं नेत्रोंकानिरोधकरिकै निर्मल आकाशविषे मयूरकेपुच्छस मान विचित्ररूपकूंदेखैहै ॥ तैसे यहमूढअज्ञानीजीवभी अविद्यारूपदोषकरिकै आनंदस्वरूपआत्माविषे यहदुःखरूपजगत्देखैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! जिनपुरुषोंकूं आत्माकासाक्षात्कारनहींभया ॥ ऐसेअज्ञानीजीव जोकदाचित् याजगत्कूंदेखैहैं ॥ तौयाके विषे कोईआश्चर्यनहीं ॥ परंतु आत्मसाक्षात्कारकरिकै जिनविद्वान्पुरुषोंकी कार्यसहितअविद्यानिवृत्तभईहै ॥ ऐसेविद्वान्पुरुषभी याप्रपंचकूंदेखैहैं ॥ यहहमारेकूंबहुतआश्चर्यहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ! जैसे यालोकविषे पूर्वादिकदिशावोंविषे पश्चिमादिक दिशावोंकाभ्रम अज्ञानीपुरुषोंकूंहोवैहै ॥ तैसे शास्त्रवेत्तापुरुषोंकूंभी सोदिशाभ्रमहोवैहै ॥ इसप्रकार जैसे याअज्ञानीपुरुषोंकूं अ द्वितीयआत्माविषे नानाप्रकारकाजगत्प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे प्रारब्धकर्मोंकरिकैरक्षित जोअविद्याकालेशहै ॥ ताकरिकै तिनविद्वान् पुरुषोंकूंभी शरीरकेनाशपर्यंत कल्पितरूपकरिकै जगत्काभानहोवैहै ॥ हेमैत्रेयी ! जैसे यालोकविषे जिसपुरुषनैं शंखकूंशुक्ल रूपवालाजान्याहै ॥ तिसपुरुषकूंभी नेत्रोंकेपित्तदोषकरिकै सोशंख पीतरूपवालाप्रतीतहोवैहै ॥ तथा जिसपुरुषनैं गुडकूंमधुररस वालाजान्याहै ॥ तिसपुरुषकूंभी जिव्हादोषकेवशतैं सोगुड तिक्तरसवालाप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे जिसविद्वान्पुरुषनैं अद्वितीयआ त्माकानिश्चयकऱ्याहै ॥ तिसविद्वान्पुरुषकूंभी अविद्यालेशकेवशतैं प्रारब्धकर्मकेनाशपर्यंत यहजगत् कल्पितरूपकरिकैप्रतीतहो

वैहै ॥ अब विद्वान्पुरुषोंविषे अज्ञानीजीवोंतैंविलक्षणता बोधनकरणेवासते अज्ञानीजीवोंकेप्रपंचदर्शनका अनेकदृष्टांतोंकरिकैनि
रूपणकरैंहैं ॥ हेमैत्रेयी! जैसे वास्तवतैंजलतैंरहितजोऊषरभूमिहै ॥ ताऊषरभूमिविषे तृषातुरमृगादिकजीवोंकूं नानाप्रकारकील
हरियोंयुक्तजलप्रतीत होवैहै ॥ तैसे वास्तवतैं भेदप्रपंचतैंरहित जोयहअद्वितीय आत्माहै ताकेविषे विषयासक्तअज्ञानीपुरुषोंकूं यह
भेदप्रपंच प्रतीतहोवैहै और जैसे वास्तवतैं रजतभावतैंरहित जोशुक्तिहै ताशुक्तिविषे लोभीपुरुषोंकूं रजतप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे वास्त
वतैं प्रपंचभावतैंरहित जोयहअद्वितीयआत्माहै ॥ ताकेविषे अज्ञानीपुरुषोंकूं यहजगत् प्रतीतहोवैहै ॥ और जैसे मंदअंधकारविषे
यहपुरुष भयरूपदोषकेवशतैं सर्पभावतैंरहितरज्जुविषे सर्पकूंदेखैहै॥तथा चौरभावतैंरहितस्थाणुविषे चौरकूंदेखैहै ॥ तैसे यहअज्ञानी
जीव अविद्यारूपदोषकेवशतैं निर्दुःखचेतनआत्माविषे दुःखजडअनात्मरूपजगतकूंदेखैहै ॥ हेमैत्रेयी ! जैसे स्वप्नअवस्थाविषे
यास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं जितना पतिजायादिकजगत्प्रतीतहोवैहै ॥ सोजगत् तास्वप्नद्रष्टापुरुषतैंभिन्ननहीं ॥ तैसे जाग्रत्
अवस्थाविषेभी जितना पतिजायादिकजगत्प्रतीतहोवैहै ॥ सोजगत् आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोजगत्
आत्मरूपहीहै ॥ यातैं हेमैत्रेयी ! ऐसे अद्वितीयआनंदस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारकूं तुम श्रवणादिकसाधनोंयुक्तशुद्धमनकरिकै त
था महावाक्यरूपशब्दप्रमाणकरिकै सिद्धकरो ॥ ऐसेआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तितैंअनंतर तूं पुनःसंसारदुःखोंकूंनहींप्राप्तहोवैगी ॥
हेमैत्रेयी ! जैसे आकाशविषेकल्पितजोगंधर्वनगरहै ॥ सोगंधर्वनगर आकाशरूपहीहै ॥ आकाशतैंभिन्न तागंधर्वनगरकीसत्तानहीं ॥
तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषेकल्पितजोयहजगत्है सोजगत्भी आत्मस्वरूपहीहै ॥ आत्मतैंभिन्न ताजगत्कीसत्तानहींहै ॥
याकारणतैं ताअधिष्ठानआत्माकेश्रवणतैं यासंपूर्णजगत्काश्रवणहोवैहै ॥ तथा ताअधिष्ठानआत्माकेमननतैं यासंपूर्णजगत्कामन
नहोवैहै ॥ तथा ताअधिष्ठानआत्माकेध्यानतैं यासंपूर्णजगत्काध्यानहोवैहै॥ तथा ताअधिष्ठानआत्माके ज्ञानतैं यासंपूर्णजगत्का
ज्ञानहोवैहै ॥ हेमैत्रेयी ! अधिष्ठानआत्माकेज्ञानतैं याविद्वान्पुरुषकूं सर्वजगत्काज्ञानहोवैहै ॥ याप्रकारकावचन जोहमनैं तुमारे
प्रतिकह्याहै ॥ तावचनकायहअभिप्रायहै॥अधिष्ठानआत्मातैं याकल्पितजगत्कीभिन्नसत्ताहैनहीं॥ यातैं ताअधिष्ठानआत्माकेज्ञान

हुएतैंअनंतर याविद्वान्पुरुषकूं ताकल्पितजगत्काभी अर्थतैंज्ञानहोवैहै ॥ परंतु यादेशविषे इतनेपदार्थ हैं॥तथा तिनपदार्थोंके याप्र
कारकेस्वरूपहैं याप्रकार विशेषरूपकरिकै तासंपूर्णजगत्काज्ञान ताविद्वान्पुरुषकूंहोवैनहीं ॥ काहेतें? यहविद्वान्पुरुष विशेषरूपक
रिकैजगत्कूंजानै याअर्थकूंबोधनकरणेहारा कोईश्रुतिवचन देखीतानहीं॥और यहसंपूर्णजगत् सुखरूपपुरुषार्थनहीं है ॥ तथा दुःखा
भावरूपपुरुषार्थनहीं है॥तथा तिनदोनोंपुरुषार्थोंकासाधनरूपनहीं है॥ऐसेअपुरुषार्थरूपजगत्के विशेषज्ञानकरिकै ताविद्वान्पुरुषकूं
किंचित्मात्रभी सुखकीप्राप्तिहोवैनहीं॥उलटा ताजगत्केविशेषज्ञानकरिकै ताविद्वान्पुरुषकूं परिश्रमकीहीप्राप्तिहोवै है ॥ हेमैत्रेयी !
जोकदाचित् यहसंपूर्णजगत् याजीवोंकेसुखकाभीहेतुहोवै तौभी यासंपूर्णजगत्का विशेषरूपकरिकैज्ञानहोणा अत्यंतदुर्घट है ॥
यातैं याविद्वान्पुरुषनैं ताजगत्कूं विशेषरूपकरिकैनहींजानणा ॥ हेमैत्रेयी ! यद्यपि याअनात्मप्रपंचकेज्ञानकरिकै अधिकारीपुरुषोंकूं
किंचित्मात्रभी पुरुषार्थकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तथापि तुमारास्त्रीस्वभावहै॥ यातैं जोकदाचित् कौतुकवासते तू यासंपूर्णजगत्केदेख
णेकीइच्छाकरतीहोवै तौ अधिष्ठानआत्माकाज्ञानही याकल्पितजगत्केज्ञानकाहेतुहै॥अधिष्ठानआत्माकेज्ञानतैंविना दूसराकोईउ
पाय जगत्केज्ञानकानहीं ॥ हेमैत्रेयी ! जैसे घटशरावादिकजितनेमृत्तिकाकेकार्य हैंतिनघटादिकोंकावास्तवस्वरूपमृत्तिकारूप
उपादानकारणहै॥ यातैं तामृत्तिकारूपउपादानकारणके ज्ञानहुएतैंअनंतर यापुरुषकूं भिन्नदेशविषेस्थित तथाभिन्नकालविषेस्थित
संपूर्णघटशरावादिककार्योंकाज्ञानहोवैहै ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माकाकार्यरूपजितनाजगत्है ॥ ताजगत्का सोआत्मारूप
कारणही वास्तवस्वरूपहै ॥ यातैं श्रवणादिकसाधनोंकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं जबी आत्मारूपकारणकाज्ञानहोवैहै ॥ तबी
ताअधिकारीपुरुषकूं जगत्रूपकार्यकाभी अर्थतैंहीज्ञानहोवै है ॥ अब भेदज्ञानविषे अनर्थकीकारणताकानिरूपणकरै हैं ॥ हेमैत्रेयी !
जोपुरुष अद्वितीयआत्माविषे नानाभेदकूंदेखै है॥ सोभेददर्शीपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे विषयसंबंधीसुखकूंभी प्राप्तहोवै
नहीं ॥ तौ सोभेददर्शीपुरुष मोक्षरूपसुखकूंप्राप्तहोवैगा याकेविषेक्याआशाहै ? अब भेददर्शीपुरुषविषे इसलोककेसुखकाअभाव
निरूपणकरै हैं ॥ हेमैत्रेयी ! यालोकविषे जानारी आपणेपतिकूं तथा पुत्रादिकबांधवोंकूं जबी आपणेआत्माकीन्यांई प्रियरूपकरि

के नहींदेखेहै ॥ किंतु आपणेतैंभिन्नकरिकै तिनपतिपुत्रादिकबांधवोंकूंदेखेहै ॥ तबी तानारीकीआपणेविषे भेददृष्टिरूपविषमताकूं देखिकै सोपति तथा पुत्रादिकबांधव तानारीकापरित्यागकरिदेवैहैं ॥ अथवा आपणेचित्तविषे तानारीकीउपेक्षाकरिदेवैहैं ॥ इसी प्रकार जोपति तथापुत्रादिकबांधव तानारीकूं आपणेआत्माकीन्यांई जबीप्रियरूपकरिकैनहींदेखेहै ॥ किंतु आपणेतैंभिन्नकरिकै तानारीकूंदेखेहैं ॥ तबी तापतिपुत्रादिकबांधवोंकी आपणेविषेभेददृष्टिरूपविषमताकूंदेखिकै सानारी तापतिका तथापुत्रादिकबांधवोंका परित्यागकरिदेवैहै ॥ अथवा सानारी आपणेचित्तविषे तिनपतिपुत्रादिकोंकीउपेक्षाकरिदेवैहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ या लोकविषे जानारी जोपुरुष जबपर्यंत याजडचेतनपदार्थोंकूं आपणेआत्माकीन्यांई प्रियजाणिकै तिनपदार्थोंकापालनकरैहैं ॥ तब पर्यंतही तेजडचेतनपदार्थ तानारीकूं तथातापुरुषकूं सुखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और जबी यहदेहधारीजीव तिनपदार्थोंकूं आपणेतैंभिन्न करिकैजानैहैं ॥ तबी तेपदार्थ तिनजीवोंकापरित्यागकरिजावैहैं ॥ तिनपदार्थोंकेवियोगकरिकै तिनजीवोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेमैत्रेयी ! भेददर्शनकरिकै यहजीव दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकेविषे यहकारणहै ॥ जैसे यालोकविषे जोपुरुष महाराजाकूं महाराजारूपकरिकैदेखेहै ॥ तिसपुरुषऊपरि सोमहाराजा प्रसन्नहोवैहै ॥ और जोपुरुष तामहाराजाकूंदरिद्रीरूपकरिकैदेखेहै ॥ तिसपुरुषऊपरि सोमहाराजा क्रोधवान्होवैहै ॥ तैसे जोदेहधारीजीव पतिजायादिकपदार्थोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकैदेखेहै ॥ तिसजीवकूंतेपतिजायादिकपदार्थ सुखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और जोदेहधारीजीव तिनपतिजायादिकपदार्थोंकूं आपणेतैंभिन्नकरिकैदेखेहै॥ तिसजीवकूं तेपतिजायादिकपदार्थ दुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ जोकदाचित् तेपतिजायादिकपदार्थ याजीवकाआत्मारूपनहीं होते तौ आपणेतैंभिन्नरूपकरिकैदेखेहुए तेपतिजायादिकपदार्थ याजीवकूं दुःखकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ यातैं यासर्वलोकोंकेअनुभवतैं यह अर्थसिद्धहोवैहै ॥ यालोकविषे जितनेपतिजायापुत्रादिकपदार्थहैं ॥ तिनपदार्थोंका एकआत्माहीवास्तवस्वरूपहै ॥ ताभेदरहितअद्वितीयआत्माकूं जोपुरुष भेदवालादेखेहै ॥ सोभेददर्शीपुरुष दुःखकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ हेमैत्रेयी! पतिजायादिकपदार्थोंकूं आपणेतैंभिन्नदेखणेहारायहजीव जैसे दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे जोपुरुष ब्राह्मणत्वजातिकूं तथाक्षत्रियत्वजातिकूं आपणेआ

त्मातैंभिन्नकरिकैदेखेहै॥ताभेददर्शीपुरुषकूं साब्राह्मणत्वजाति तथाक्षत्रियत्वजाति दोनोंलोकविषे दुःखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ तहां इस जन्मविषेतौ साब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वजाति ताभेददर्शीपुरुषकूं पापकीप्राप्तिकरैहै ॥ तथा तापापजन्य अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यापंचक्लेशोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ और परलोकविषे साब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वजाति ताभेददर्शीजीवकूंप्राप्तहोवै नहीं ॥ यातैं नीचजातिकीप्राप्तिद्वारा साब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वजाति परलोकविषेभी ताभेददर्शीजीवकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ और हे मैत्रेयी ! जैसे ब्राह्मणत्वतथाक्षत्रियत्वजाति ताभेददर्शीपुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे स्वर्गादिकलोक तथा इंद्रादिकदेवता तथा ऋगादिकवेद इत्यादिकसंपूर्ण ताभेददर्शीपुरुषकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरैहैं ॥ तहां यहपुरुष जबी स्वर्गादिकलोकोंकूं आपणेआत्मातैंभिन्नकरिकैमानेहै ॥ तबी तेस्वर्गादिकलोक ताभेददर्शीपुरुषकूं इसजन्मविषे नानाप्रकारकाभ्रमणकरावैहै ॥ और मरणतैंअनंतर ताभेददर्शीपुरुषकूं नानाप्रकारकेनरकोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ और यहपुरुष जबी इंद्रादिकदेवतावोंकूं आपणेआत्मातैंभिन्नकरिकैदेखेहै ॥ तबी तेइंद्रादिकदेवता ताभेददर्शीपुरुषकूं नानाप्रकारकेनरकदुःखोंकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और यहपुरुष जबी ऋगादिकवेदोंकूं आपणेआत्मातैंभिन्नकरिकैदेखेहै ॥ तबी तेऋगादिकवेद ताभेददर्शीपुरुषकूं शूद्रादिकनीचजातियोंकीप्राप्तिकरैहैं ॥ अथवा ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यात्रैवर्णिकशरीरकेप्राप्तहुएभी ताभेददर्शीपुरुषकूं तेऋगादिकवेद यज्ञोपवीतादिकसंस्कारोंतैंरहित करैहैं ॥ अथवा ताभेददर्शीपुरुषकूंपतितकरैहैं ॥ अथवायज्ञोपवीतादिकसंस्कारकेहुएभी ताभेददर्शीपुरुषकूंतेऋगादिकवेद वेदकेपदवाक्यस्वरोंकेउच्चारणकरणेविषे असमर्थकरैहैं॥अथवा तावेदोंकेअध्ययनहुएभी ताभेददर्शीपुरुषकूं तेऋगादिकवेद वेदकेअर्थज्ञानतैंरहितकरैहैं ॥ अथवा तिनवेदोंकेअर्थज्ञानहुएभी ताभेददर्शीपुरुषकूं तेऋगादिकवेद तावेदोंकेअर्थकी तथातावेदोंकेपाठकी शीघ्रहीविस्मृतिकीप्राप्तिकरैहैं॥ अथवा तिनवेदोंकेअर्थकास्मरणहुएभी ताभेददर्शीपुरुषकूं तेऋगादिकवेद वेदविहितकर्मोंकेकरणेविषे अरुचिकीप्राप्तिकरैहैं ॥ इसतैंआदिलैके ताभेददर्शीपुरुषकूं तेऋगादिकवेद अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरैहैं॥ और यहपुरुष जबी संपूर्णदेहधारीजीवोंकूं आपणेआत्मातैंभिन्नकरिकैदेखेहै ॥ तबी तेसंपूर्णदेहधारीजीव ताभेददर्शीपुरुषकूं इसजन्मविषे

तथाजन्मांतरविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरैंहैं ॥ हेमैत्रेयी! बहुतविस्तारकरिकैक्याकहैं? आकाशादिपंचभूतोंसहित जितनाजडचेतनरूपजगत्है ॥ ताजगत्कूं यहपुरुष जबी आपणेआत्मातैंभिन्नकरिकैदेखैहै ॥ तबी सोसंपूर्णजगत् ताभेददर्शीपुरुषकूं अनेकदुःखोंकीहीप्राप्तिकरैंहैं ॥ हेमैत्रेयी! इसलोकविषे तथापरलोकविषे जितनेस्त्रीपुत्रधनादिकप्रियपदार्थहैं॥ तेप्रियपदार्थ जबी याजीवोंकूंनहींप्राप्तहोवैहैं ॥ तबी तिसअज्ञानीजीवकूं तिनपदार्थोंकीअप्राप्तिकरिकै दुःखोंकूंप्राप्तहोवैहैं॥ और जोकदाचित् दैवयोगतैं तिनअज्ञानीजीवोंकूं तिनपदार्थोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तोभी किसीरोगादिकनिमित्तकरिकै तेअज्ञानीजीव जबी तिनप्रियपदार्थोंकेभोगणेविषे असमर्थहोवैहैं॥ अथवा अन्यदेशविषेजाणेकरिकै जबी तिनपदार्थोंकावियोगहोवैहै॥ अथवा तिनप्रियपदार्थोंका जबी नाशहोवैहै॥ तबी तेअज्ञानीजीव परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं यहस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ आपणेअप्राप्तिकालविषे तथा आपणे प्राप्तिकालविषे तिनअज्ञानीजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरैंहैं ॥ हेमैत्रेयी! इसप्रकारसंपूर्णस्थावरजंगमपदार्थ ताभेददर्शी अज्ञानीजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरैंहैं ॥ याकारणतैं तुमनैं तिनपदार्थोंकूं आपणेआत्मातैंभिन्नकरिकै कदाचित्भी नहींदेखणा ॥ किंतु तुमनैं यासंपूर्णजगत्कूंआपणाआत्मारूपकरिकैदेखणा॥ हेमैत्रेयी! यहआनंदस्वरूपआत्मा सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनोंभेदोंतैंरहितहै॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै॥ तथा जन्मादिकविकारोंतैंरहितहै ॥ याप्रकारका जोआत्माकाज्ञानहै॥ सोईही यथार्थज्ञानहै ॥ और याआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न जितनेअनात्मपदार्थहैं ॥ तिनअनात्मपदार्थोंकूंविषयकरणेहारे जितनेज्ञानहैं ॥ तेसंपूर्णज्ञान भ्रांतिरूपहैं॥ यातैं हेमैत्रेयी! ब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वजाति तथा स्वर्गादिकलोक तथाऋगादिकवेद तथा आकाशादिकपंचभूत इसतैंआदिलैके जितनाजडचेतनरूपजगत्है ॥ सोसंपूर्णजगत् याआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्ननहीं॥ किंतु सोजगत् आत्मारूपहीहै॥ इतनेकरिकैश्रवणकीरीतिदिखाई ॥ अब मननकीरीतिदिखावैहैं ॥ हेमैत्रेयी! जडचेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध जितनायहजगत्है॥ सोसंपूर्णजगत् ताआनंदस्वरूपआत्माविषेही स्थितहै॥ और ताआनंदस्वरूपआत्मातैंही सोजगत् उत्पन्नहोवैहै॥ और ताआनंदस्वरूपआत्माविषेही सोजगत्लयहोवैहै ॥ और सर्वजगत्काकारणजोअज्ञानहै ॥ सोअज्ञानभी

आत्मसाक्षात्कारकेउत्पन्नहुए ताआनंदस्वरूपआत्माविषेहीलयहोवैहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव अद्वितीयरूपहै ॥ हेमैत्रेयी ! ऐसे अद्वितीयआत्माविषे मनकीस्थिरताकरणेहारेजेदृष्टांतहैं ॥ तिनोंका हम कथनकरैहैं ॥ तू सावधानहोइकै श्रवणकर ॥ अब प्रपंचकी स्थितिकालविषे आत्माकीअद्वितीयरूपतासिद्धकरणेवासते दृष्टांतकानिरूपणकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी ! यालोकविषे तामस राजस सात्विक येतीनप्रकारकेपदार्थ स्थितहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ आपणीस्थितिकालविषे याआनंदस्वरूप आत्मातैं भिन्न नहींहैं ॥ याप्रकारकेअर्थविषे तुमारीसंभावनाकरावणेवासते मैंयाज्ञवल्क्य भेरी शंख वीणा यातीनदृष्टांतोंकाकथनकरताहूं ॥ तू सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ हेमैत्रेयी ! जैसे यालोकविषेप्रसिद्ध जे भेरी शंख वीणा येतीनप्रकारकेवादित्रहैं ॥ तेभेरीआदिकवादित्र दंडरूपनिमित्तकरिकै तथासुखकावायुआदिकनिमित्तकरिकै क्रूर मध्यम मंजुल यातीनप्रकारकेशब्दोंकूंकरैहैं ॥ तहां वीररसकूंबोधनकरणेहारा जोभेरीआदिकोंकाशब्दहै ताकानाम क्रूरशब्दहै ॥ और भयानकरसकूंबोधनकरणेहारा जोभेरीआदिकोंकाशब्दहै ताकानाम मध्यमशब्दहै ॥ और शृंगाररसकूंबोधनकरणेहारा जोभेरीआदिकोंकाशब्दहै ताकानाम मंजुलशब्दहै ॥ येतीनप्रकारकेशब्दभी ऊंचनीचभेदकरिकैअनेकप्रकारकेहैं ॥ हेमैत्रेयी ! भेरी शंख वीणा यातीनोंकेविशेषशब्द क्रमतैं भेरीशब्दत्व शंखशब्दत्व वीणाशब्दत्व यातीनधर्मोंवालेहोणेतैं तीनप्रकारकेहैं ॥ तहां भेरीशब्दत्व शंखशब्दत्व वीणाशब्दत्व येतीनोंधर्म यद्यपि क्रमतैं क्रूरभेरीशब्दत्व मध्यमभेरीशब्दत्व मंजुलभेरीशब्दत्व ॥ क्रूरशंखशब्दत्व मध्यमशंखशब्दत्व मंजुलशंखशब्दत्व ॥ क्रूरवीणाशब्दत्व मध्यमवीणाशब्दत्व मंजुलवीणाशब्दत्व ॥ इनधर्मोंकीअपेक्षाकरिकै सामान्यधर्महैं ॥ तथापि सर्वशब्दोंविषेवर्तणेहारा जोशब्दत्वरूपसामान्यधर्महै ॥ ताशब्दत्वरूपसामान्यधर्मकीअपेक्षाकरिकै भेरीशब्दत्व शंखशब्दत्व वीणाशब्दत्व येतीनोंविशेषधर्महैं ॥ तिनभेरीशब्दत्वादिकतीनविशेषधर्मोंकाज्ञान शब्दत्वरूपसामान्यधर्मकेज्ञानतैंविना होइसकैनहीं ॥ किंतु याजीवोंकूं जबी प्रथम शब्दत्वरूपसामान्यधर्मकाज्ञानहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतरही भेरीशब्दत्व शंखशब्दत्व वीणाशब्दत्व यातीनविशेषधर्मोंकाज्ञानहोवैहै ॥ इहां अधिकदेशविषेरहणेहारेधर्मकानाम सामान्यधर्महै ॥ औरअल्प

देशविषेरहणेहारेधर्मकानाम विशेषधर्म है ॥ तहां भेरीशब्द शंखशब्द वीणाशब्द यातीनप्रकारकेशब्दोंविषेशब्दत्वधर्मरहेहैं ॥ औ
र भेरीशब्दत्वरूपधर्म केवलभेरीशब्दविषेरहेहै ॥ शंखवीणाकेशब्दविषेरहेनहीं ॥ तथा शंखशब्दत्वरूपधर्मभी केवलशंख
शब्दविषेहीरहेहै ॥ भेरीवीणाकेशब्दविषेरहेनहीं ॥ तथा वीणाशब्दत्वरूपधर्मभी केवलवीणाशब्दविषेहीरहेहै ॥ भेरीशंखकेश
ब्दविषेरहेनहीं ॥ यातैं शब्दत्वरूपसामान्यधर्मकेदेशकीअपेक्षाकरिकै भेरीशब्दत्व शंखशब्दत्व वीणाशब्दत्व येतीनोंधर्म न्यून
देशविषेवर्तेहैं ॥ याकारणतैं तेतीनोंधर्म शब्दत्वरूपसामान्यधर्मकीअपेक्षाकरिकै विशेषधर्महैं ॥ इसप्रकार क्रूरभेरीशब्द मध्यमभेरी
शब्द मंजुलभेरीशब्द यातीनोंशब्दोंविषे भेरीशब्दत्वरूपसामान्यधर्म अनुगतहोइकेरहेहै ॥ और क्रूरभेरी शब्दत्वरूपधर्म केवल
क्रूरभेरीशब्दविषेरहेहै ॥ मध्यममंजुलभेरीशब्दविषेरहेनहीं ॥ तथा मध्यमभेरीशब्दत्वरूपधर्मभी केवल मध्यमभेरीशब्दविषेरहेहै ॥
क्रूरमंजुलभेरीशब्दविषेरहेनहीं ॥ तथा मंजुलभेरीशब्दत्वरूपधर्मभी केवलमंजुलभेरीशब्दविषेरहेहै ॥ क्रूरमध्यमभेरीशब्दविषेरहेन
हीं ॥ यातैं भेरीशब्दत्वरूपसामान्यधर्मकेअधिकरणकीअपेक्षाकरिकै क्रूरभेरीशब्दत्व मध्यमभेरीशब्दत्व मंजुलभेरीशब्दत्व येतीनों
धर्म न्यूनदेशविषेवर्तेहैं ॥ याकारणतैं भेरीशब्दत्वरूपसामान्यधर्मकीअपेक्षाकरिकै क्रूरभेरीशब्दत्वादिकतीनधर्म विशेषधर्महैं ॥ याप्र
कारकीरीति शंखशब्दविषे तथावीणाशब्दविषेभी जानिलेणी ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे शब्दत्वरूपसामान्यधर्मकेज्ञानतैंवि
ना भेरीशब्दत्वादिकविशेषधर्मोंकाज्ञानहोवैनहीं ॥ तैसे यास्वयंज्योतिआत्माके अस्ति भाति प्रियरूप सामान्यधर्मोंके
ज्ञानतैंविना यालोकविषे किसीविशेषपदार्थकाज्ञानहोवैनहीं ॥ किंतु अस्ति भाति प्रियरूप सामान्यधर्मोंकेज्ञानतैंअनंतरही याजी
वोंकूं घटादिकविशेषपदार्थोंकाज्ञानहोवैहै ॥ अब अस्ति भाति प्रियरूप आत्माविषे सामान्यरूपता स्पष्टकरणेवासते प्रथम
सर्वत्र आत्माकाअनुगतपणा निरूपणकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी ! यालोकविषे जिनपदार्थोंका प्रत्यक्षरूपकरिकैग्रहणहोवैहै ॥ तथा जि
नपदार्थोंका परोक्षरूपकरिकैग्रहणहोवैहै ॥ तथा जिनपदार्थोंका सत्यरूपकरिकैग्रहणहोवैहै ॥ तथा जिनपदार्थोंका असत्यरूपक
रिकैग्रहणहोवैहै ॥ तथा जिनपदार्थोंका अहंरूपकरिकैग्रहणहोवैहै ॥ तथा जिनपदार्थोंका ममरूपकरिकैग्रहणहोवैहै ॥ तेसंपूर्ण

पदार्थ चेतनआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु तेसंपूर्णपदार्थ चेतनआत्मारूपहीहैं ॥तात्पर्ययह॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषेप्रतीतभयेजे सर्प दंड माला जलधारादिकपदार्थ तेकल्पितसर्पादिक रज्जुरूपअधिष्ठानतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोरज्जुरूपअधिष्ठानही अज्ञानके वशतैं सर्पदंडमालाजलधाराआदिकअनेकरूपोंकरिकैस्थितहोवैहै ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माविषे प्रतीतभयाजोआकाशादिक प्रपंच सोप्रपंच ताअधिष्ठानआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोअधिष्ठानआत्माही अज्ञानकेवशतैं आकाशादिकजगत्रूपहोइके स्थितहोवैहै ॥ यातैं अस्तिभातिप्रियरूप सामान्यधर्मोंकीअपेक्षाकरिकै तेआकाशादिकपदार्थ आत्माकेविशेषधर्म हैं ॥ तिनविशे षधर्मोंकाज्ञान अस्तिभातिप्रियरूपसामान्यधर्मोंकेज्ञानकरिकैहीहोवैहै ॥ हेमैत्रेयी ! तेचेतनआत्माकेविशेषरूप यद्यपि बहुतप्रका रकेहैं ॥ तथापि संक्षेपतैं तेआत्माकेविशेषरूप दोप्रकारकेहैं ॥ एकतौ युष्मद्शब्दकाअर्थरूपहै ॥ और दूसरे अस्मद्शब्दकेअर्थ रूपहैं॥तहां इदं एतत् इत्यादिकशब्दोंकरिकै जिनपदार्थोंकाकथनहोवैहै॥ तेपदार्थ युष्मद्शब्दकाअर्थरूपहोवैहैं ॥ और अहं मम अनिदं इत्यादिकशब्दोंकरिकै जिनपदार्थोंकाकथनहोवैहै ॥ तेपदार्थ अस्मद्शब्दकाअर्थरूप होवैहैं ॥ हेमैत्रेयी ! अंतःकरणादि कसंघातविशिष्टचेतन अस्मद्शब्दका वाच्यअर्थहै ॥ और बाह्यघटादिकपदार्थविशिष्टचेतन युष्मद्शब्दका वाच्यअर्थहै ॥ तहां युष्मद्अस्मद्शब्दकेवाच्यअर्थका यद्यपि परस्परभेदहै ॥ तथापि तिनदोनोंशब्दोंकीभागत्यागलक्षणाकरिकै प्रतीतभयाजोचेतन मात्ररूपलक्ष्यअर्थहै सोचेतनमात्ररूपलक्ष्यअर्थ तिनदोनोंशब्दोंकाएकहीहै ॥ यातैं जिसअर्थकूं युष्मद्शब्दकथनकरैहै ॥ तिसी अर्थकूं अस्मद्शब्दकथनकरैहै ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम युष्मद्शब्दकेअर्थविषे अस्मद्शब्दकीअर्थरूपता नि रूपणकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी ! अस्मद्शब्दकाअर्थरूप जोअंतरआत्माहै ॥ तिसतैंभिन्न जिननेबाह्यशंखादिकजडपदार्थहैं ॥ तथा पुरुषादिकचेतनपदार्थहैं तेसंपूर्णजडचेतनपदार्थ युष्मद्शब्दकाअर्थरूपहैं ॥ परंतु तेशंखादिकजडपदार्थ जबी चेतनपुरुषोंकेवा कादिकइंद्रियोंकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोवैहैं॥ तबी तेशंखादिकजडपदार्थ नानाप्रकारकेशब्दोंकूंकरतेहुए चेतनव्यवहारकेयोग्यहोवैहैं तथा चेतनपुरुषोंकेशरीरसाथ तादात्म्यअभिमानकूंप्राप्तहुए तेशंखादिक अस्मद्शब्दकेअर्थरूपआपणेआत्माकूंयुष्मद्शब्दकेअ

र्थरूप बाह्यपदार्थोंतें भिन्नकरिकैमाने हैं॥ इसप्रकार युष्मद्शब्दकाअर्थरूपकरिकैप्रसिद्ध जेपुरुषादिकचेतनपदार्थहैं ॥ तेभी अस्मद्शब्दकेअर्थरूपआपणेआत्माकूं युष्मद्शब्दकेअर्थरूप अन्यपदार्थोंतेंभिन्नकरिकैमानेहैं ॥ यातें युष्मद्शब्दकेअर्थरूप जेशंखादिकजडपदार्थहैं॥तथा पुरुषादिकचेतनपदार्थहैं॥तिनोंविषेभी अस्मद्शब्दकीअर्थरूपता संभवहोइसकैहै ॥शंका॥ हेभगवन्! शंखादिकजडपदार्थोंका चेतनपुरुषोंकेसाथ तादात्म्यसंबंध किसप्रकारसंभवैहै॥समाधान॥हेमैत्रेयी! यालोकविषे ऐसाकोईपदार्थ है नहीं॥जिसपदार्थकूं चेतनपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकैनहींग्रहणकरैहै ॥ किंतु यासंपूर्णजडपदार्थोंकूं चेतनपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकैहीग्रहणकरैहै ॥ तहां सर्वपदार्थोंकामूलकारणजोअविद्याहै॥ ताअविद्याकूं यहपरमात्मादेव आपणाशरीररूपकरिकैग्रहण करैहै ॥ और ताअविद्याकाकार्य जितनाकीसूक्ष्मप्रपंचहै ॥ तासमष्टिसूक्ष्मप्रपंचकूं यहहिरण्यगर्भभगवान् आपणाशरीररूपकरिकैग्रहणकरैहै॥ और ताअविद्याकाकार्यरूप जितनास्थूलप्रपंचहै ॥ तासमष्टिस्थूलप्रपंचकूं यहविराट्भगवान् आपणाशरीररूप करिकैग्रहणकरैहै ॥ और व्यष्टिरूपकरिकैप्रसिद्धजेजडपदार्थहैं॥ तिनजडपदार्थोंकूं यहअनेकमनुष्यादिकचेतनपुरुष आपणाशरीररूपकरिकैग्रहणकरैहै॥यारीतिसें संपूर्णजडपदार्थ चेतनकेहीआश्रितहैं॥यातेंयहअर्थसिद्धभया॥यालोकविषे नियमकरिकै किसीपदार्थविषे युष्मद्शब्दकीअर्थरूपतानहीं॥तथा नियमकरिकै किसीपदार्थविषे अस्मद्शब्दकीअर्थरूपतानहीं ॥ किंतु एकदूसरेकीअपेक्षा करिकैही याजडचेतनपदार्थोंविषे युष्मद्अस्मद्शब्दकीअर्थरूपताहै ॥ जिसपदार्थकूं यहपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकैमानैहै ॥ तिसपदार्थविषे अस्मद्शब्दकीअर्थरूपताहै ॥ और जिनपदार्थोंकूं यहपुरुष आपणेआत्मातेंभिन्नकरिकैमानैहै ॥ तिनपदार्थोंविषे युष्मद्शब्दकीअर्थरूपताहै ॥ जैसे देवदत्तनामापुरुषकीअपेक्षाकरिकै यज्ञदत्तनामापुरुषविषे युष्मद्शब्दकीअर्थरूपताहै ॥ और यज्ञदत्तनामापुरुषकीअपेक्षाकरिकै तादेवदत्तनामापुरुषविषे युष्मद्शब्दकीअर्थरूपताहै ॥ हेमैत्रेयी ! मनवाणीकाअविषयरूप जोयहआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ सोआत्मादेव आपणेअस्तिभातिप्रियरूपकरिकै सर्वअनात्मपदार्थोंकाअधिष्ठानरूपहै ॥ याकारणतें सोआत्मादेव किसीशब्दकावाच्यअर्थनहीं ॥ किंतु सोआत्मादेव तिनयुष्मद्अस्मदादिकसर्वशब्दोंका लक्ष्यअर्थरूपहै ॥ यातें

चेतनआत्मारूपलक्ष्यअर्थकूंग्रहणकरिकै तेयुष्मदअस्मदशब्द एकहीअर्थकाबोधनकरैहैं ॥ इसप्रकार युष्मद्अस्मद् यादोनोंश
ब्दोंकाभागत्यागलक्षणाकरिकै जबी एकचेतनआत्मारूपअर्थ सिद्धभया॥तबी तायुष्मदअस्मदशब्दकेअर्थकाव्याप्यरूपजेअर्थ हैं ॥
तिनअर्थोंकूंबोधनकरणेहारेजेइदमादिकशब्दहैं ॥ तिनइदमादिकशब्दोंकाभी लक्षणावृत्तिकरिकै एकचेतनआत्माही अर्थसिद्धहोवै
है ॥ कैसाहैसोचेतनआत्मा ? ॥ आपणेअस्तिभातिप्रियरूपकरिकै सर्वपदार्थोंविषे स्फुरणहोवैहै ॥ तथा सूर्यादिकज्योतियोंकाभी
सोआत्मादेव ज्योतिरूपहै॥ऐसेआनंदस्वरूपआत्माविषे ये आकाशादिकविशेषपदार्थ अज्ञानीजीवोंनें आरोपणकरीतेहैं ॥ हेमैत्रे
यी! याकहणेतैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे शब्दत्वरूपसामान्यधर्मके ज्ञानहुएतैंअनंतरही भेरीशब्दत्वशंखशब्दत्ववीणाशब्दत्व
इत्यादिकविशेषधर्मोंकाज्ञानहोवैहै ॥ तथा भेरीशब्दत्वादिकसामान्यधर्मोंकेज्ञानहुएतैंअनंतरही याजीवोंकूं क्रूरभेरीशब्दत्व क्रूर
शंखशब्दत्व आदिकविशेषधर्मोंकाज्ञानहोवैहै॥तैसे अस्तिभातिप्रियरूपआत्माके स्फुरणहुएतैंअनंतरही याजीवोंके अहंत्वंआदि
कविशेषव्यवहार सिद्धहोवैहै ॥ आनंदस्वरूपआत्माकेस्फुरणतैंविना यालोकविषे कोईभीव्यवहार सिद्धहोइसकैनहीं ॥ यातैं आ
पणी स्थितिकालविषे यहसंपूर्णजडचेतनरूपजगत् अद्वितीयआत्मारूपहीहै॥ हेमैत्रेयी! यहहीअद्वितीयआत्मा पूर्व हमनें प्रियतम
रूपकरिकै तुमारेप्रति कथनकर्‍याथा॥इतनेग्रंथकरिकै जगत्की स्थितिकालविषे आत्माकीअद्वितीयरूपता सिद्धकरी॥अब जगत्की
उत्पत्तितैंपूर्वभी आत्माकीअद्वितीयरूपतासिद्धकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी ! जैसे जगत्की स्थितिकालविषे यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वभेद
तैंरहित अद्वितीयरूपहै ॥ तैसे जगत्कीउत्पत्तिकालविषेभीयहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वभेदतैंरहित अद्वितीयरूपहीहै ॥ याअर्थ
विषेभी तू दृष्टांतकूंश्रवणकर ॥ जैसे विस्फुलिंगादिककार्यकीउत्पत्तितैंपूर्व सर्वभेदतैंरहित जोप्रज्वलितअग्निहै ॥ ताप्रज्वलितअ
ग्नितैं ताअग्निकेसमानस्वभाववाले विस्फुलिंग तथाअंगार रूपकार्य उत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे प्रपंचरूपकार्यकीउत्पत्तितैंपूर्व सर्वभेदतैंर
हित जोअद्वितीयआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ ताआत्मातैं यहजडचेतनरूपजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ हेमैत्रेयी ! तापरमात्मादेवतैं
हिरण्यगर्भद्वारा जिसप्रकार यास्थूलजगत्की उत्पत्तिभईहै ॥ सोप्रकार बहुतश्रुतिस्मृतियोंविषे कथनकर्‍याहै॥ तहांश्रुति ॥ सूर्या

चंद्रमसौधाता यथापूर्वमकल्पयत्॥अर्थयह॥सोमायाविशिष्टपरमात्मादेव जगत्कीउत्पत्तिकालविषे सूर्यचंद्रमातैंआदिलैकेसंपूर्ण जगत्कूं पूर्वकल्पकीन्यांई रचताभया॥तहांस्मृति॥तेषांचनामरूपाणिकर्माणिचपृथक्पृथक्॥वेदशब्देभ्यएवादौ निर्ममेसमहेश्वरः॥अर्थयह॥जगत्कीउत्पत्तिकालविषे सोपरमात्मादेव आकाशादिकपदार्थोंके भिन्नभिन्ननामोंकूं तथा भिन्नभिन्नरूपोंकूं तथा भिन्नभिन्नकर्मोंकूं वेदकेशब्दोंतैंउत्पन्नकरताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ भू यावेदकेशब्दकाउच्चारणकरिकै सोपरमात्मादेव पृथिवीकूंउत्पन्न करताभया ॥ तथा आकाश यावेदकेशब्दकाउच्चारणकरिकै सोपरमात्मादेव आकाशकूंउत्पन्नकरताभया ॥ याप्रकार सर्वजगत्कूं उत्पन्नकरताभया॥१॥ हेमैत्रेयी! इसतैंआदिलैकेअनेकश्रुतिस्मृतिवचनोंतैं याआकाशादिकजगत्कीउत्पत्तिकूं तू आपेहीजाणेगी ॥ यातैं ताकेकहणेकी अबी आवश्यकतानहींहै ॥ परंतु ऋग्वेदादिकशब्दप्रपंचकेउत्पत्तिकूं तू आपेजाणिसकैगीनहीं ॥ यातैं ऋग्वेदादिरूपशब्दप्रपंचकीउत्पत्ति जिसप्रकार आत्मदेवतैंभईहै ॥ ताप्रकारकूं तू श्रवणकर ॥ हेमैत्रेयी! जैसे यालोकविषे शुष्ककाष्ठोंकरिकै तथा आर्द्रकाष्ठोंकरिकै युक्तजोप्रज्वलितअग्निहै ॥ ताअग्नितैंविलक्षणधूमकीउत्पत्तिहोवैहै॥ तैसे यासर्वज्ञपरमात्मादेवतैं यहविलक्षणशब्दरूपवेद उत्पन्नहोवै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! ऋगादिकवेदोंकी जोईश्वरतैंउत्पत्तिअंगीकारकरोगे ॥ तौ सोवेदरूपशब्द लौकिकशब्दोंकीन्याई पौरुषेयशब्दहोवैगा ॥ और शास्त्रविषेतौ वेदरूपशब्दोंकूं अपौरुषेयकथनकऱ्याहै ॥ यातैं ताशास्त्रकाविरोधहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी! जिसशब्दकेउच्चारणहुएतैंअनंतर ताशब्दकेअर्थकानिश्चयकरणेवासते प्रत्यक्षअनुमानादिकप्रमाणोंकीअपेक्षाहोवैहै ॥ सोशब्द ताअर्थकेविचारपूर्वकही उत्पन्नहोवैहै ॥ अर्थकेविचारतैंविना सोशब्द उत्पन्नहोवैनहीं ॥ जैसे इदानींकालकेलोकोंकेशब्द अर्थकेविचारपूर्वकही उत्पन्नहोवैहैं ॥ और यहवेदरूपशब्द जोपरमात्मादेवतैं उत्पन्नहोवैहै ॥ सोअर्थकेविचारपूर्वकउत्पन्नहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे यत्नतैंविनाही यापुरुषोंतैं श्वासउत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे विनाहीप्रयत्नतैं तापरमात्मादेवतैं तेवेदरूपशब्द उत्पन्नहोवै हैं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ पुरुषकरिकैउच्चारणकऱ्याजोवचनहै ॥ तावचनकानाम पौरुषेयवचननहीं ॥ किंतु यहपुरुष आपणेमनविषे अर्थकाविचारकरिकै जिसवचनकाउच्चारणकरैहै ॥ सोवचन पौरुषेय

होवैहै॥ ऐसापौरुषेयपणा वेदवचनोंविषेहैनहीं॥ याकारणतैं तेवेद अपौरुषेयहैं ॥ शंका ॥ हे भगवन्! अर्थविचारतैंविनाही पुरुषनैंउच्चारणकरेजेवचनहैं ॥ तेवचन जोकदाचित् अपौरुषेयहोतेहोवैं तौ इदानींकालविषे लौकिकपुरुषोंनैं अर्थकेविचारतैंविनाहीउच्चारणकरेजेवचनहैं॥ तेवचनभी वेदवचनोंकीन्यांई अपौरुषेयहोणेचाहियें॥ समाधान॥ हे मैत्रेयी! यहजीव भ्रमप्रमादादिकदोषोंकरिकैयुक्तहै॥ यातैं यहजीव अर्थकेविचारतैंविना जिसजिसवचनकाउच्चारणकरैहै ॥ तेवचन उन्मत्तपुरुषकेवचनकीन्यांई आपणेअर्थतैं व्यभिचारीहीहोवैंहैं ॥ इहां जिसवचनकेअर्थका प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैबाधहोवै ॥ सोवचन आपणे अर्थतैंव्यभिचारीहोवैहै॥ जैसे किसीपुरुषनैं अग्नि शीतलहै याप्रकारकावचन उच्चारणकऱ्या॥ तावचनकाअर्थरूप जोअग्निविषेशीतलताहै ॥ सो प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैबाधितहै ॥ यातैं अग्निशीतलहै यहवचन आपणे अर्थतैं व्यभिचारीहै ॥ हे मैत्रेयी! यामनुष्यलोककीक्यावार्ताहै? जोकदाचित् यहजीव ब्रह्मलोकविषेस्थितहोइकैभी अर्थविचारतैंविनाही किसीवचनकाउच्चारणकरैहै ॥ सोताकावचनभी उन्मत्तपुरुषकेवचनकीन्यांई आपणे अर्थतैंव्यभिचारीहीहोवैहै॥ और सर्वज्ञपरमात्मादेव भ्रमप्रमादादिकदोषोंतैंरहितहै ॥ यातैं तासर्वज्ञईश्वरनैं अर्थकेविचारतैंविनाही उच्चारणकरेजेवेदकेवचनहैं ॥ तेवेदवचन आपणेअर्थतैं व्यभिचारीहोवैंनहीं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ वेदवचनोंकूं आपणेअर्थकी सिद्धिवासते किसीप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकीअपेक्षाहैनहीं॥ तथा तिनवेदवचनोंकाआपणेअर्थतैंव्यभिचारभीहैनहीं ॥ यातैं तेवेदकेवचन प्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणोंविषे राजाहैं ॥ अब वेदवचनोंविषे प्रमाणताकीसिद्धिकरणेवासते प्रथम मीमांसाशास्त्रकीरीतिसैं लौकिक शब्दोंविषेभी सामान्यतैंप्रमाणताका निरूपणकरैहै ॥ हे मैत्रेयी! यालोकविषे अयथार्थवचनकूं कथनकरणेहाराजोअनाप्तपुरुषहै ॥ तिसअनाप्तपुरुषनैं किसीमार्गकेचलणेहारेपथिकपुरुषकेप्रति याप्रकारकावचनकह्या ॥ यानदीकेतीरउपरि तुमारेभक्षणकरणेयोग्य नानाप्रकारकेफलस्थितहैं ॥ सोयाप्रकारकावचन तिसकालविषे श्रोतापुरुषकूं नदीकेतीरविषे फलोंकीस्थितिरूपअर्थकाबोधनकरैहै ॥ यातैं सोवचनभी सामान्यतैंप्रमाणरूपहीहै ॥ तात्पर्य यह ॥ नदीतीरविषे फलोंकीस्थितिरूपअर्थ तिसकालविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकैं दिखाईदेतानहीं ॥ यातैं ताअर्थविषे प्रत्यक्षप्रमाणतौ हैनहीं॥ और तिसकालविषे ताशब्दकरिकै तिसअर्थ

काबोधहोवैहै ॥ यातैं ताअर्थविषेशब्दकूंहीप्रमाणताहै ॥ याकारणतैंही तेमीमांसाशास्त्रवाले याप्रकारकीप्रमाणअप्रमाणकी व्यवस्थाकरैंहै ॥ जोकिसीअर्थकाबोधनकरैंहै ताकानाम प्रमाणहै ॥ और जोकिसीभीअर्थकाबोधननहींकरैहै ताकानाम अप्रमाण है ॥ सोअर्थकीबोधकता तावचनविषेभीहै ॥ यातैं सोवचनभी सामान्यतैंप्रमाणरूपहीहै ॥ किंवा जेनैयायिकवादी अर्थकीबोधकता रूपकरिकै तिनप्रमाणोंविषे प्रमाणरूपता नहींअंगीकारकरैहैं ॥ तिननैयायिकोंकेमतविषे तिनप्रमाणोंमें प्रमाणरूपता किसक रिकैसिद्धहोवैगी ? तहां सोनैयायिक जोयाप्रकारकावचनकहै ॥ अर्थकीबोधकतारूपकरिकै तिनप्रमाणोंविषे प्रमाणरूपतासिद्धहो वैनहीं ॥ किंतु जिसप्रमाणजन्यज्ञानतैं याजीवोंकी समर्थप्रवृत्तिहोवैहै ॥ तासमर्थप्रवृत्तिरूपहेतुतैं ताप्रमाणविषे तथा ताप्रमाण जन्यज्ञानविषे प्रमाणरूपताकाअनुमानहोवैहै ॥ जैसे पूर्वअज्ञातस्थलविषे जलकूंदेखिकै यहपुरुष ताजलकेलेणेवास्तेजावैहै॥जबी तास्थलविषे यापुरुषकूं जलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तबी सोपुरुष याप्रकारका अनुमानकरैहै ॥ पूर्वजोमेरेकूंजलकाज्ञानभयाथा ॥ सो ज्ञान प्रमारूपथा ॥ काहेतैं ? हमारेसमर्थप्रवृत्तिकाजनकहोणेतैं ॥ याप्रकार जेनैयायिक अंगीकारकरैहै ॥ तिननैयायिकोंतैं यहपू छाचाहिये जिससमर्थप्रवृत्तिरूपहेतुतैं ताज्ञानकेप्रमाणताकाअनुमानहोवैहै ॥ ताप्रवृत्तिविषे समर्थता क्यावस्तुहै ? तहां जोपदा र्थ ताज्ञानकाविषयहै ॥ सोईहीपदार्थ ताप्रवृत्तिकाविषयहै ॥ याप्रकारकीजोसमानविषयताहै ॥ तासमानविषयताकानाम समर्थ ताहै ॥ अथवा फलकीजनकतानाम समर्थताहै ॥ तहां प्रथमपक्षकूं जोनैयायिकअंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ? यालोक विषे चेतनपुरुषोंकी जाजाप्रवृत्तिहोवैहै॥साप्रवृत्ति यहपदार्थ हमारेसुखकासाधनहै याप्रकारकेइष्टसाधनताज्ञानतैंविनाहोवैनहीं ॥ किंतु इष्टसाधनताज्ञानतैंअनंतरही चेतनजीवोंकीप्रवृत्तिहोवैहै॥यातैं ताप्रवृत्तिकूं तथाप्रवृत्तिकेसमर्थताकूं ताज्ञानकीअवश्यअपेक्षा है ॥ ताज्ञानतैंविना ताप्रवृत्तिविषेसमर्थरूपतासंभवैनहीं ॥ यातैं तासमर्थप्रवृत्तितैं ज्ञानमात्रकाहीअनुमानहोवैगा ॥ ताज्ञानकेप्र माणताकाअनुमानसंभवैनहीं ॥ और ताप्रवृत्तिविषेफलकीजनकतारूप समर्थताहै ॥ यादूसरेपक्षकूंजोनैयायिकअंगीकारकरै ॥सो भी संभवैनहीं ॥ काहेतैं ? सुख दुःख यादोनोंकानामफलहै ॥ तासुखदुःखरूपफलकीसिद्धिविषे उपयोगीजोज्ञानहै ॥ ताज्ञानमात्रकी

ही साप्रवृत्ति अपेक्षाकरैहै ॥ प्रमाणज्ञानकीअपेक्षा साप्रवृत्तिकरैनहीं ॥ सा सुखदुःखरूपफलकीजनकतारूपसमर्थता अनाप्तपुरु षकेवचनजन्यप्रवृत्तिविषेभीहै॥काहेतें ! नदीकेतीरविषेफलहै याप्रकारका ताअनाप्तपुरुषकावचनश्रवणकरिकै तहांप्रवृत्तभयाजो पथिकपुरुषहै॥ तापथिकपुरुषकूं तानदीतीरकेदर्शनतें सुखदुःखरूपफलकीअवश्यप्राप्तिहोवैहै॥शंका॥ हेभगवन्! तानदीतीरविषे फलोंकीप्राप्तिकरिकै तापथिकपुरुषकूं यद्यपि सुखरूपफलकीप्राप्तितौसंभवैहै ॥ तथापि तापथिकपुरुषकूं दुःखरूपफलकीप्राप्ति संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ! इसलोकविषे तथापरलोकविषे ऐसीकोईपुरुषकीप्रवृत्तिहैनहीं ॥ जाप्रवृत्ति दुःखतैंरहित केव लसुखकूंही उत्पन्नकरै ॥ किंतु जोजोजीवोंकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ साप्रवृत्ति सुखदुःखदोनोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ और वास्तवतैंविचारकरि केदेखियेतौ जोजोपुरुषकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ साप्रवृत्ति केवलदुःखकाहीकारणहै॥ताप्रवृत्तिविषे जोलोकोंकूं सुखसाधनताबुद्धिहोवैहै॥ सोकेवलभ्रांतिकरिकैहोवैहै ॥ हेमैत्रेयी ! यालोकोंकीप्रवृत्ति दुःखतैंरहितकेवलसुखकूं उत्पन्नकरैनहीं ॥ याअर्थविषे नैयायिकोंका सिद्धांतभी अनुकूलहै॥काहेतें ? तेनैयायिक दुःखतैंरहितकेवलसुखकूं किसीपदार्थविषे अंगीकारकरैनहीं याकारणतैंही तेनैयायिक तानियमकीरक्षाकरणेवासते श्रुतिप्रसिद्धपरमानंदरूपमोक्षविषेभी आनंदरूपता अंगीकारकरैनहीं ॥ किंतु दुःखाभावविषेही तेनैया यिक मोक्षरूपताअंगीकारकरैहैं ॥ यातें पुरुषोंकीप्रवृत्ति केवलदुःखकाहीकारणहै ॥ यहतुमाराकहणासंभवैनहीं ॥ यातें यहअर्थसि द्धभया ॥ प्रमाणोंविषे जाअर्थकीबोधकताहै ॥ साअर्थकीबोधकताही तिनप्रमाणोंविषे प्रमाणरूपताकीसिद्धकरैहै ॥ साअर्थकीबो धकता जैसे शब्दप्रमाणविषेहै ॥ तैसे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंविषेहैनहीं ॥ यातें नदीकेतीरविषेफलहै याप्रकारका जोअनाप्तपुरुषका वचनहै ॥ सोभी अर्थकाबोधकहोणेतें प्रमाणरूपहीहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! यानदीकेतीरविषेफलहै यावचनविषेप्रमाणरूपतासं भवैनहीं ॥ काहेतें ? यानदीकेतीरविषेफलनहींहै यानिषेधकवचनकरिकै तावचनकेप्रमाणरूपताका बाधहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेमैत्रे यी ! तानिषेधकवचनकरिकै यद्यपि तावचनकेप्रमाणरूपताकाबाधहोवैहै ॥ तथापि तानिषेधकवचनकी जबपर्यंत प्रवृत्तिनहींभई ॥ तबपर्यंत तावचनकेप्रमाणरूपताकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तानिषेधकवचनकेप्रवृत्तितैंअनंतरही तावचनकेप्रमाणरूपताकाबाध

होवैहै ॥ याकारणतैंही भाष्यकारभगवान्नैं आत्मसाक्षात्कारपर्यंतही संपूर्णलौकिकवैदिकप्रमाणोंविषे प्रमाणरूपताअंगीकारकरी है ॥ यातैं जैसे सर्वमृगोंविषे सिंह बलवान्है ॥ तैसे आपणेसंबंधकरिकै सर्वपदार्थोंकेअभावकूंबोधनकरणेहारा जोयहनकारहै ॥ सोनकार यासंपूर्णककारादिकवर्णोंविषे बलवान्है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! जहांनकारकरिकैयुक्त दोनिषेधकवचनहोवैहैं ॥ तहां परस्पर प्रतिबंधकताकरिकै किसीअर्थकीभी सिद्धिनहींहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ! जहां एकहीपदार्थविषे दोनिषेधकवचनोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तहां एकअर्थकेनिश्चयकरणेवासते कोईतीसराप्रमाण अवश्यअंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ परंतु सोतीसराप्रमाणभी तबी ताअर्थकीसिद्धिकरैहै ॥ जबी तातीसरेप्रमाणकेअर्थकाबोधकरणेहारा कोईचतुर्थप्रमाणनहींहोवैहै ॥ किंवा तिनदोनों निषेधकवचनोंविषेभी जहां एकनिषेधकवचन लौकिकहोवैहै॥ और दूसरानिषेधकवचन वैदिकहोवैहै॥ तहां एकवचनकेअर्थकानिश्चयकरणेवासते किसीतीसरेप्रमाणकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ किंतु भ्रमप्रमादादिकदोषोंकीशंकाकरिकैयुक्त जोलौकिकनिषेधकवचनहै सो दुर्बल होवैहै ॥ और भ्रमादिकदोषोंकी शंकातैंरहित जोवैदिकनिषेधकवचन है ॥ सो बलवान् होवैहै ॥ ताबलवान् वैदिकप्रमाणकरिकै दुर्बललौकिकप्रमाणकाबाधहोइजावैहै ॥ किंवा जैसे नदीकेतीरविषे फलोंकीविद्यमानताकूं बोधनकरणेहारा जोनदीकेतीरविषेफलहैं याप्रकारकालौकिकवचनहै ॥ तथा तानदीकेतीरविषे फलोंकेअभावकूंबोधनकरणेहारा जो नदीकेतीरविषेफलनहींहै याप्रकारकालौकिकनिषेधकवचनहै ॥ तिनदोनोंलौकिकवचनोंका जैसे परस्परविरोधहै ॥ तैसे परलोकनहींहै याप्रकारकाजोलौकिकनिषेधकवचनहै ॥ तथा परलोकहै याप्रकारकाजोवैदिकवचनहै ॥ तिनदोनोंवचनोंकाभी परस्परविरोधहै ॥ तहां परलोकनहींहै यहलौकिकवचन यद्यपि निषेधकवचनहोणेतैंप्रबलहै तथापि तालौकिकवचनविषे भ्रमप्रमादादिकदोषोंकीसंभावनाहोवैहै ॥ यातैं सोलौकिकवचन दुर्बलहै ॥ और परलोकहै याप्रकारकेवैदिकवचनोंविषे भ्रमादिकदोषोंकीसंभावनाहोवैनहीं ॥ यातैं सोवैदिकवचन तालौकिकवचनतैं बलवान्है ॥ ताबलवान्वैदिकवचनकरिकैही तालौकिकवचनकाबाधहोवैहै ॥ किंवा ककारादिकशब्दोंकेस्वरूपकूंबोधनकरणेहारे जेकखगघङ इत्यादिकवचनहैं ॥ तिनवच

नोंविषेभी शब्दरूपअर्थकीबोधकतारूपकरिकै जबी प्रमाणरूपतासिद्धहोवैहै ॥ तबी नानाप्रकारकेअर्थोंकूंबोधनकरणेहारेजेवचन हैं॥तिनवचनोंविषे अर्थकीबोधकतारूपकरिकै प्रमाणरूपतासिद्धहोवैहै ॥ याकेविषेक्याकहणाहै? ॥शंका॥ हेभगवन्! अर्थकीबोध कतारूपकरिकै जोकदाचित् तावचनोंविषे प्रमाणरूपताहोवै तौ जिसवचनतैं किसीभीअर्थकाबोधनहींहोवैहै ॥ सोवचन अप्र माणरूपहोणाचाहिये ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी! जोवचन किसीभीअर्थकेबोधकूं नहींउत्पन्नकरैहै ॥ तावचनविषे जोप्रमाणरूपता नहींसिद्धहोवै तौमतहोवै ॥ याकेविषेहमारी किंचित्मात्रभीहानिहोवैनहीं॥ काहेतें? जोवचन किसीअर्थकाबोधकहोवैहै ॥ तिसीव चनकूं हम प्रमाणरूप मानैहैं ॥ अबोधकवचनकूं हमभी प्रमाणरूप मानतेनहीं ॥ किंवा परस्परविरोधवाले जेप्रत्यक्षादिक प्रमा णहैं ॥ तिनोंकूंजीतणेवासते जोअविरुद्धप्रमाण समर्थहोवैहै ॥ सो अभावकूंकथनकरणेहारेनकारकीसहायतातैंही समर्थहोवैहै ॥ याकारणतैं सोनकार ककारादिकसर्ववर्णोंविषेबलवान्है ॥ सोबलवान्नकार जोकदाचित् अभावरूपअर्थकूंविषयकरणेहारेबोध कूं उत्पन्नकरैहै ॥ तौ नेतिनेति याश्रुतिकेनकारजन्य सर्वजगत्केअभावकाबोध हमअधिकारीजीवोंकूं सर्वदाहोवै ॥ यातैं जैसे नि षेधकवचनोंविषे अर्थकीबोधकतारूपकरिकै प्रमाणरूपता सिद्धहोवैहै ॥ तैसे सर्ववचनोंविषे अर्थकीबोधकतारूपकरिकैही प्रमाण रूपताहै ॥ पुरुषोंकेप्रवृत्तिकीजनकतारूपकरिकै किसीभीवचनविषे प्रमाणरूपतानहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ भ्रमप्रमादा दिकदोषोंकरिकैदूषित जेलौकिकवचनहैं॥ तेलौकिकवचनभी जबी पूर्वउक्तयुक्तियोंसैं अर्थकीबोधकतारूपकरिकै प्रमाणरूपताकूंप्रा प्तहोवैहैं॥तबी भ्रमादिकसर्वदोषोंतैंरहित जेवेदकेवचनहैं॥ तेवेदकेवचन अर्थकीबोधकतारूपकरिकै प्रमाणरूपताकूंप्राप्तहोवैहैं॥ या केविषेक्याकहणाहै? इतनेकरिकै ईश्वरउच्चारितअपौरुषेयवेदविषे स्वतःप्रमाणताकानिरूपणकऱ्या ॥ अब तावेदकेविभागका निरूपणकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी! प्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणोंविषे राजारूपजोवेदप्रमाणहै ॥ सोवेद प्रथम दोप्रकारकाहै ॥ एकतौ मंत्ररू पवेदहै ॥ और दूसरा ब्राह्मणरूपवेदहै॥ तहां प्रथम मंत्ररूपसोवेद ऋग् यजुष् साम अथर्वण याभेदकरिकैचारिप्रकारकाहै ॥ और दूसरा ब्राह्मणरूपवेदभी इतिहास १ पुराण २ विद्या ३ उपनिषद् ४ श्लोक ५ सूत्र ६ व्याख्यान ७ अनुव्याख्यान ८ या

भेदकरिकैअष्टप्रकारकाहै ॥ तहां जेवेदकेवचन जनकराजादिकोंकेकथाप्रसंगकूं बोधनकरैहैं ॥ तिनवेदवचनोंकानाम इतिहासहै ॥
॥ १ ॥ और जेवेदकेवचन मायाविशिष्टपरमात्मातैं जगत्के उत्पत्ति स्थिति लयकूं कथनकरैहैं ॥ तथा पौतिमाष्यादिकऋषियोंके
वंशकूंकथनकरैहैं ॥ तथा विराट्भगवान्कापुत्र जोस्वायंभुवमनुहै ताकेउत्पत्तिकाकथनकरैहैं ॥ तथा मनुकीसृष्टिविषे उत्पन्नभये जे
ब्राह्मणादिकचारिवर्णहैं ॥ तथा ब्रह्मचर्यादिकचारिआश्रमहैं ॥ तिनसंपूर्णोंके भिन्नभिन्नकर्मोंका कथनकरैहैं ॥ तिनवेदवचनोंकाना
म पुराणहै ॥ २ ॥ और जेवेदकेवचन उपासीत इत्यादिकशब्दोंकरिकै ब्रह्मादिकदेवतावोंकेउपासनाकाकथनकरैहैं ॥ तिनवेदवच
नोंकानाम विद्याहै ॥ ३ ॥ और जेवेदकेवचन सत्यकामीसत्यहै इत्यादिकब्रह्मकेरहस्यनामोंकूंकथनकरैहैं ॥ तिनवेदवचनोंकानाम
उपनिषद्है ॥ ४ ॥ और वेदकेब्राह्मणभागविषे कथनकरेजेमंत्रहैं तिनमंत्रोंकानाम श्लोकहै ॥ ५ ॥ और संक्षेपकरिकै
अनेकअर्थोंकूंकथनकरणेहारे जे आत्मानमुपासीत इत्यादिकवेदकेवचनहैं ॥ तिनोंकानाम सूत्रहै ॥ ६ ॥ और मंत्रोंकेअ
र्थकूंकथनकरणेहारा जोब्राह्मणरूपवेदकाभागहै ताकानाम व्याख्यानहै ॥ ७ ॥ और जेवेदकेवचन सूत्रकेअर्थकूं मंत्रअर्थ
वादादिकोंसहित विस्तारतैंकथनकरैहैं ॥ तिनवेदवचनोंकानाम अनुव्याख्यानहै ॥ ८ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! अनेकअर्थोंकूं जोवच
न बोधनकरैहै तावचनकानाम सूत्रहै ॥ यहजो आपनें सूत्रकालक्षणकह्या सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? एकवारउच्चारणकऱ्याहु
आशब्द एकहीअर्थकूंबोधनकरैहै ॥ याप्रकारकानियम शास्त्रविषेकथनकऱ्याहै ॥ तानियमका विरोधहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेमै
त्रेयी ! जैसे लौकिकवाक्योंविषे पुनःपुनः आवृत्तिकरिकै अनेकअर्थोंकीबोधकता दूषणरूपहोवैहै ॥ तैसे सूत्ररूपवेदवाक्योंविषे
पुनःपुनःआवृत्तिकरिकै अनेकअर्थोंकीबोधकता दूषणरूपनहींहै ॥ किंतु उलटा अनेकअर्थोंकीबोधकता सूत्रवाक्योंकाभूषणरूपहै
हेमैत्रेयी ! जैसे भूमिरूपक्षेत्रतैं वृक्षकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तैसे ब्रह्मरूपक्षेत्रतैं यहवेदरूपीकल्पवृक्ष उत्पन्नहोवैहै ॥ कैसाहैसोवेद
रूपवृक्ष ? ऋग् यजुष् साम अथर्वण याचारिस्कंधोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा नानाप्रकारकीशाखावोंकरिकैयुक्तहै ॥ ऐसेवेदभगवान्की
ब्रह्मतैंउत्पत्तिभईहै ॥ याकारणतैं तावेदभगवान्कूं शास्त्रविषे ब्रह्मरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ हेमैत्रेयी ! तामायाविशिष्टब्रह्मतैं

जैसे यहशब्दरूपवेद उत्पन्नभयाहै ॥ तैसे तिनवेदोंकेअर्थभी तिसीब्रह्मतैंउत्पन्नभयेहैं ॥ अब संक्षेपतैंतिनपदार्थोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी ! ज्ञानयोग कर्मयोग यहदोनोंप्रकारका जोयोगहै ॥ तथा यज्ञभूमिनैंबाहरिकरणेयोग्य जोनानाप्रकारकादानहै ॥ तथा इसलोकविषे तथापरलोकविषे जीवोंकूंप्राप्तहोणेयोग्य जोसुखदुःखरूपफलहै ॥ तथा तासुखदुःखरूपफलकेभोगणेकासाधनरूप जोस्थावरजंगमशरीरहै ॥ तथा आकाशादिकजेपंचभूतहैं ॥ तथा वाकादिकजेएकादशइंद्रियहैं ॥ तथा जेपंचप्राणहैं ॥ तथा तिनवाकादिकइंद्रियोंके जेअभिमानीदेवताहैं ॥ इसतैंआदिलैके यहसंपूर्णजगत् तापरमात्मादेवतैंही उत्पन्नहोवैहै ॥ इतनेकरिकै जगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व ब्रह्मविषे अद्वितीयरूपतासिद्धकरी ॥ अब जगत्केप्रलयकालविषेभी ताब्रह्मविषे अद्वितीयरूपता सिद्धकरैहैं ॥ हे मैत्रेयी ! जैसे जगत्कीउत्पत्तिस्थितिकालविषे ब्रह्ममें अद्वितीयरूपताहै ॥ तैसे याजगत्केप्रलयकालविषे ताब्रह्मकेअद्वितीयरूपताविषे तू दृष्टांतकूंश्रवणकर ॥ हेमैत्रेयी! जैसे श्रीगंगादिकनदियोंविषेस्थितजेजलहैं ॥ तथा मेघादिकोंविषेस्थितजेजलहैं ॥ ते संपूर्णजल साक्षात्संबंधकरिकै अथवा परंपरासंबंधकरिकै महान्समुद्रकूंहीप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे प्रलयकालविषे यहसंपूर्णस्थावरजंगमरूपजगत् साक्षात्संबंधकरिकै अथवा परंपरासंबंधकरिकै परमात्मादेवकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपण करैहैं ॥ हेमैत्रेयी ! प्रलयकालविषे येशब्दस्पर्शादिकविषय श्रोत्रादिकइंद्रियोंविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तेश्रोत्रादिकइंद्रिय आकाशादिकभूतोंविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तेआकाशादिकपंचभूत मायाविशिष्टपरमात्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तहां स्पर्शरूपविषय त्वक्इंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और संपूर्णमधुरादिकरस रसनइंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और संपूर्णगंध घ्राणइंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और संपूर्णनीलपीतादिकरूप चक्षुइंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और संपूर्णलौकिकशब्द श्रोत्रइंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और संपूर्णसंकल्प मनविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और संपूर्णनिश्चयरूपवृत्तियां बुद्धिविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और संपूर्णग्रहणादिकव्यापार हस्तइंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और संपूर्णविषयजन्यआनंद उपस्थइंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और संपूर्णमलादिकोंकेविसर्ग पायुइंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं

और संपूर्णगमनआगमनादिकव्यापार पादइंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ और संपूर्णवैदिकशब्द वाकइंद्रियविषे लयभावकूं प्राप्तहोवैंहैं ॥ इसप्रकार जोजोइंद्रिय जिसजिसभूतकाकार्यहै ॥ सोसोइंद्रिय तिसतिसभूतविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेमैत्रेयी ! जैसेयालोकविषे अल्पनदियोंकेजल प्रथम श्रीगंगादिकमहान्नदियोंकूंप्राप्तहोइके तागंगादिकनदियोंकेसाथ तेअल्पनदियोंकेजल महान्समुद्रकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तैसे प्रलयकालविषे यहसंपूर्णकार्य प्रथम आपणेआपणेकारणकूं प्राप्तहोइके ताकारणकेसहित तेकार्य परमकारणरूपपरमात्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ यातें प्रलयकालविषे सोपरमात्मादेव अद्वितीयरूपहीहै ॥ इतनेकरिकै प्रलयकालविषे आनंदस्वरूपआत्माकी अद्वितीयरूपतासिद्धकरी ॥ अब मोक्षअवस्थाविषेभी ताआनंदस्वरूपआत्माकी अद्वितीयरूपता सिद्धकरैंहैं ॥ हेमैत्रेयी ! ब्रह्मज्ञानकेउत्पन्नहुएतेंअनंतर यहकार्यसहितअविद्या जिसप्रकार लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताकेविषे तू दृष्टांतकूंश्रवणकर ॥ जैसे यालोकविषे स्वभावतेंद्रवीभूतजेसमुद्रादिकोंकेजलहैं तेजल जबी आतपवायुआदिकदृष्टनिमित्तकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तथा जीवोंकेपुण्यपापरूपअदृष्टनिमित्तकूंप्राप्तहोवैंहैं॥तबी तेसमुद्रादिकोंकेजल लवणादिरूपघनीभावकूंप्राप्तहोवैंहैं॥तैसे वास्तवतेंजीवईश्वरादिकभेदतेंरहित यहशुद्धआत्मादेवभी जबी अविद्याकेसंबंधरूपनिमित्तकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोआत्मादेव जीवभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेमैत्रेयी ! जैसे तालवणपिंडकेदशोंदिशाविषे तथामध्यविषे तासमुद्रकेजलतेंभेदनहींहै ॥ किंतु क्षाररसकरिकै सोलवणकापिंड समुद्रजलरूपहीहै ॥ तैसे याजीवात्माविषे तापरमात्मातेंभेदनहींहै ॥ किंतु सत्चित्आनंदरूपकारिकै यहजीवात्मा तापरमात्मातेंअभिन्नहीहै ॥ और हेमैत्रेयी ! जैसे सोलवणकापिंड जबी तासमुद्रकेजलकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सो लवणकापिंड ताजलविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै॥ तैसे यहजीव जबी ब्रह्मविद्याकरिकै ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहजीव ता ब्रह्मविषेलयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेमैत्रेयी ! तालवणकेपिंडविषे जोजीवोंकूं घनीभावताप्रतीतहोवैहै ॥ सो तासमुद्रजलके भेद दर्शनकालविषेही प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे हमजीवोंकूं अद्वितीयब्रह्मविषे जोयहसंसारप्रतीतहोवैहै ॥ सो ताअद्वितीयब्रह्मकेभेददर्शनकालविषेही प्रतीतहोवैहै ॥ और जैसे सोलवणकापिंड वास्तवतें तीनकालविषे समुद्रकेजलतेंभिन्ननहींहै ॥ तैसे यहजीवात्मा

वास्तवतैं तीनकालविषे ताब्रह्मतैंभिन्ननहीं है ॥ और हेमैत्रेयी ! जैसे तालवणपिंडविषे जोघनीभावताहै ॥ साघनीभावता नाशवान्है ॥ और तालवणपिंडविषे जासमुद्रजलरूपताहै ॥ साजलरूपता नाशतैंरहितहै ॥ तैसे या आत्मादेवविषे जाजीवरूपताहै ॥ साजीवरूपता नाशवान्है ॥ और याआत्मदेवविषे जाब्रह्मरूपताहै ॥ साब्रह्मरूपता नाशतैंरहितहै ॥ और हेमैत्रेयी ! जैसे तालवणपिंडके घनीभावताका जबीनाशहोवैहै ॥ तबी तालवणपिंडकाभीनाशहोवैहै ॥ तैसे मोक्षअवस्थाविषे अविद्याकेनाशहुए ताजीवपणेकाभीनाशहोवैहै ॥ और हेमैत्रेयी ! जैसे सोलवणकापिंड आपणीउत्पत्तिस्थितिलयकालविषे सर्वओरितैं क्षाररसवालाहै ॥ तैसे यहजीवात्माभी तीनकालविषे स्वयंप्रकाशचेतनरूपहीहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! यहआनंदस्वरूपआत्मा जो स्वयंप्रकाशरूपहै ॥ तौ सर्वजीवोंकूं सोआत्मादेव किसवासतेनहींप्रतीतहोता ? समाधान ॥ हेमैत्रेयी ! जैसे अत्यंतसमीपवर्तमान जोसूर्यादिकोंकाप्रकाशहै ॥ ताप्रकाशकूं नेत्रोंतैंअंधपुरुष देखिसकैनहीं ॥ तैसे अज्ञानरूपअंधकारकरिकै आवृतहैबुद्धिरूपनेत्रजिनोंके ऐसेजेअज्ञानीजीवहैं ॥ तेअज्ञानीजीव अत्यंतसमीपवर्तमानस्वयंज्योतिआत्माकूं देखिसकैनहीं ॥ और हेमैत्रेयी ! जैसे यालोकविषे जिसपुरुषकामन स्त्रीआदिकविषयोंविषेजावैहै ॥ सोपुरुष अत्यंतसमीपस्थितपदार्थकूंभी देखतानहीं ॥ तैसे जिनपुरुषोंकामन स्त्रीधनपुत्रादिकपदार्थोंविषेआसक्तहै ॥ तेपुरुष अत्यंतसमीपस्थितआत्माकूंभी देखिसकतेनहीं ॥ और हेमैत्रेयी ! जैसे समुद्रकेलवणपिंडविषे घनीभावताहोवैहै ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माविषे मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं इत्यादिकविशेषज्ञानही घनीभावतारूपहै और ताविशेषज्ञानरूप घनीभावताकाकारण यहस्थूलशरीरहै ॥ यातैं तास्थूलशरीरका जबी नाशहोवैहै ॥ तबी ताविशेषज्ञानरूप घनीभावताविशिष्टआत्माकाभीनाशहोवैहै ॥ हेशिष्य ! यास्थूलशरीरकेनाशतैंअनंतर आत्माकाभीनाशहोवैहै याप्रकारकावचन जिसअभिप्रायकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं मैत्रेयीकेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ तायाज्ञवल्क्यमुनिकेअभिप्रायकूं तू श्रवणकर ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि वास्तवतैंनाशरहितहै ॥ तथापि जैसे चारिकोणवालेलोहकेपिंडोंकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुआअग्निभी चारिकोणवालाप्रतीतहोवैहै ॥ तहां चारिकोणवालेलोहपिंडकेनाशहुएतैंअनंतर ताचारिकोणवालेअग्निकाभीनाशहोवैहै ॥ तैसे

जीवत्अवस्थाविषे यास्थूलशरीरकेतादात्म्यअध्यासकरिकै यहआत्मादेव मैंमनुष्यहूं इत्यादिकविशेषज्ञानोंकरिकैविशिष्टहुआ प्र
तीतहोवैहै ॥ और मरणकालविषे यास्थूलशरीरका जबी नाशहोवैहै ॥ तबी ताविशेषज्ञानविशिष्टआत्माकाभी नाशहोवैहै ॥ तात्पर्यय
ह ॥ जैसे पुरुषकेविद्यमानहुएभी दंडरूपविशेषणकेनाशकरिकै इहांदंडीपुरुषनहींहै याप्रकार दंडविशिष्टपुरुषकेअभावकानिश्चयहो
वैहै तैसे मरणकालविषे आत्माकेविद्यमानहुएभी मैंमनुष्यहूं इत्यादिकविशेषज्ञानरूपविशेषणकेनाशकरिकै ताविशेषणविशिष्ट
आत्माकेनाशकाव्यवहारहोवैहै ॥ और जैसे मरणकालविषे यहजीव मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं इत्यादिकसर्वविशेषज्ञानोंतैंरहितहो
वैहै ॥ याकारणतैं सोजीव तामरणकालविषे यास्थूलशरीरकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे मोक्षअवस्थाविषेभी यहजीव मैंमनु
ष्यहूं इत्यादिकसंपूर्णविशेषज्ञानोंतैंरहितहोवैहै ॥ याकारणतैं यहजीव तामोक्षअवस्थाविषे किंचित्मात्रभीदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥
शंका ॥ हेभगवन्! जैसे मरणकालविषे मैंमनुष्यहूं इत्यादिकसर्वविशेषज्ञानोंकाअभावहोवैहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषेभी तिनसर्व
विशेषज्ञानोंकाअभावहोवैहै ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाकेदृष्टांतकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं मोक्षअवस्थाविषे सर्वदुःखोंकाअभाव किस
वासतेनहींकथनकऱ्या? ॥ **समाधान** ॥ हेशिष्य! यद्यपि सुषुप्तिअवस्थाविषे याजीवके तासंपूर्णविशेषज्ञानोंकाअभावहोवैहै ॥ त
थापि यहजीव तासुषुप्तिअवस्थाकापरित्यागकरिकै जबी जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोजीव इसीशरीरविषे नानाप्र
कारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और मरणकालविषे यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकूं तथा यास्थूलशरीरसंबंधीदुःखोंकूं पुनःप्राप्तहोवैन
हीं ॥ याकारणतैं सुषुप्तिअवस्थाकापरित्यागकरिकै तायाज्ञवल्क्यमुनिनैं मोक्षअवस्थाविषे मरणअवस्थाकादृष्टांत कथनकऱ्याहै ॥
यातैं जैसे यास्थूलशरीरकेनाशतैंअनंतर संपूर्णविशेषज्ञानोंतैंरहितहुआ यहजीव पुनःताशरीरजन्यदुःखोंकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे
आत्मसाक्षात्कारकरिकै अविद्याकेनाशहुएतैंअनंतर सर्वविशेषज्ञानोंतैंरहितहुआ यहस्वयंज्योतिआत्मा पुनःताशरीरसंबंधीदुःखों
कूंप्राप्तहोवैनहीं॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! मोक्षअवस्थाकीन्यांई मरणकालविषेभी जोकदाचित् सर्वदुःखोंकाअभावहोताहोवै तौ मरण
अवस्थाकूंप्राप्तहुए अज्ञानीजीवोंतैं तिनमुक्तपुरुषोंविषे विलक्षणता सिद्धनहींहोवैगी ॥ **समाधान** ॥ हेशिष्य! मरणकालविषे ता

संपूर्णविशेषज्ञानोंकेअभावहुए यहअज्ञानीजीव यद्यपि पूर्वशरीरजन्यदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथापि भावीशरीरोंकेप्राप्तिकरणे हारे जेपुण्यपापरूपअदृष्टहैं ॥ तथा सर्वशरीरोंकाकारणजाअविद्याहै ॥ तेदोनों अज्ञानीजीवोंकेमरणकालविषे विद्यमानहैं ॥ यातें तापुण्यपापरूपकर्मोंकेवशतैं तेअज्ञानीजीव दूसरेजन्मोंकूंप्राप्तहोइकै तहां अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और मुक्तपुरुषके आत्मज्ञानकरिकै अविद्या तथापुण्यपापरूपअदृष्ट येदोनोंनाशहोइजावैंहैं ॥ यातें तामुक्तपुरुषकूं पुनःशरीरकीप्राप्तिकरिकै दुःखोंकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ! याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि तामैत्रेयीकेप्रति शरीरकेनाशतैं अनंतर आत्माकानाश कथनकरताभया ॥ तायाज्ञवल्क्यमुनिकेअभिप्रायकूंनजाणिकरिकै सामैत्रेयी याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकाप्रश्नकरतीभई ॥ मैत्रेयीउवाच ॥ हेभगवन् ! पूर्वआपनैं याआनंदस्वरूपआत्माकूं सत्‌चित्‌आनंदरूपकरिकै कथनकऱ्याथा ॥ और अबीआपनैं यास्थूलशरीरकेनाशतैंअनंतर ताआत्माकानाश कथनकऱ्या ॥ यातैं आपकेपूर्वउत्तरवचनोंका परस्पर विरोधहोवैहै ॥ हेभगवन् ! जैसे पवन तूलकूं दशोंदिशाविषेभ्रमणकरावैहै ॥ तैसे यहआपकावचनरूपीपवन हमारेमनरूपतूलकूं सर्वओरितैंभ्रमणकरावैहै ॥ हेभगवन् ! जैसे राजाकेवचनकेअभिप्रायकूंनजाणिकरिकै सेवककामन व्यामोहकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे आपकेवचनकेअभिप्रायकूंनजाणिकरिकै हमारामन व्यामोहकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेभगवन् ! जैसे विचारतैंरहितगौ तृणोंकेलोभकरिकै दूरदेशविषेजावैहै ॥ तहांतृणोंकरिकैआच्छादितजोपंकहै तापंकविषे सागौ फसिजावैहै ॥ तैसे आत्मज्ञानकेलोभकरिकै आपसैंपूछती हुई मैंमैत्रेयी आपकेवचनरूपीपंकविषे फसिगईहूं ॥ हेभगवन् ! पूर्वहमनैं आत्माकानाशनहींहोवैहै याप्रकारकावचन बहुतविद्वान्ब्राह्मणोंकेमुखतैंश्रवणकऱ्याहै ॥ और आत्माकानाशनहींहोवैहै याप्रकारकावचन किसीप्रसंगपाइकै आपकेमुखतैंभी हमनैंबहुतवारश्रवणकऱ्याहै ॥ और अबीआपनैं यास्थूलशरीरकेनाशतैंअनंतर ताआत्माकानाश कथनकऱ्याहै ॥ यातैं ताआपकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोआत्माकेनित्यरूपताकानिश्चय हमारा निवृत्तहोताभयाहै ॥ हेभगवन् ! जैसे कोई पुरुष आपणेधनकीवृद्धिकरणेवासतै किसीव्यापारविषेप्रवृत्तहोवै ॥ ताव्यापारविषे सोपुरुष आपणेपूर्वमूलधनकूंभीनष्टकरिदेवै ॥ याप्रकारकान्याय हमारेविषेप्राप्तभयाहै ॥ काहेतैं?

आत्माकेवास्तवस्वरूपकेजानणेवासते हमनैं आपकेप्रतिप्रश्नकऱ्याथा ॥ सोआपकेवचननतैं आत्माकेवास्तवस्वरूपकाज्ञानतौनहीं भया ॥ उलटा हमनैं पूर्व जोआत्माकीनित्यरूपता निश्चयकरीथी॥ साआत्माकीनित्यरूपताभी आपकेवचननतैं निवृत्तहोगई ॥ हे शिष्य ! याप्रकारकावचन जबी मैत्रेयीनैं याज्ञवल्क्यमुनिकंप्रति कथनकऱ्या ॥ तबी सोयाज्ञवल्क्यमुनि कृपाकरिकै तामैत्रेयीके प्रति आपणेहृदयकाअभिप्राय कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेमैत्रेयी ! याशरीरकेनाशतैंअनंतर आत्माकाभीनाशहोवैहै ॥ याप्रकारकेहमारेवचननतैं तुमारेकूं ताव्यामोहकीप्राप्ति मतहोवै ॥ तथा पूर्वनिश्चयकरीजाआत्माकीनित्यरूपता ताकेहानिकीचिंता करिकै तुमारेकूं खेदकीप्राप्तिभीमतहोवै ॥हेमैत्रेयी!हमारेवचनकूंश्रवणकरिकैतू जिसमोहकूंप्राप्तभईहै ॥ तातुमारेमोहकरणेवासते हमनैं सोवचन नहींकह्याहै किंतुहमारे पूर्वउत्तरवचनोंके तात्पर्यकूंनजाणिकरिकै तू व्यर्थहीमोहकूंप्राप्तभईहै॥ हेमैत्रेयी ! यास्थूलशरीरकेनाशतैंअनंतर आत्माकाभीनाशहोवैहै याप्रकारकावचन जिसअभिप्रायकरिकै हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ ताअभिप्रायकूं तूश्रवणकर ॥ हेमैत्रेयी ! यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि वास्तवतैं जीवईश्वरभावतैंरहितहै ॥ तथापि अविद्याकेसंबंधतैं सोआत्मादेव जीवरूपघनीभावताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जबी आत्मसाक्षात्कारकरिकै ताअविद्याकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी यहआनंद स्वरूपआत्मा ताजीवरूपघनीभावताकापरित्यागकरिकै आपणेवास्तवस्वरूपविषेस्थितहोवैहै ॥ तामोक्षअवस्थाविषे मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मण हूं इत्यादिकसंपूर्णविशेषज्ञानोंकेनाशहुएभी ताआनंदस्वरूपआत्माकानाशहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे मरणकालविषे सर्वविशेष ज्ञानोंकेनाशहुए यहपुरुष यास्थूलशरीरजन्यदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे तामोक्षअवस्थाविषेभी सर्वविशेषज्ञानोंकेअभाव हुए यहआत्मादेव ताशरीरजन्यदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेमैत्रेयी ! तुमारेप्रति याप्रकारकेअर्थकाबोधकरणेवासते मैंयाज्ञवल्क्य नैं याशरीरकेनाशतैंअनंतर आत्माकानाशकथनकऱ्याहै ॥ परंतु वास्तवतैं आत्माकेनाशविषे हमारातात्पर्यनहींहै ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिकैस्पष्टकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी ! जैसे घटविषेस्थितजोआकाशहै ॥ ताआकाशका स्वभावतैंनाशहोवैनहीं ॥ किंतु घटरूपउपाधिकेनाशतैंअनंतर ताघटकेनाशका घटाकाशविषेआरोपणकरिकै मूढपुरुष घटाकाशकानाशमानैहै ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआ

त्माकाभी स्वभावतैं नाशहोवैनहीं ॥ किंतु यास्थूलशरीररूपउपाधिकेनाशतैंअनंतर ताशरीरकेनाशकूं आत्माविषेआरोपणकरिकैं
अविवेकीपुरुष याआत्माकानाशमानैंहैं ॥ हेमैत्रेयी ! जोकदाचित् स्वभावतैंही आत्माकानाश अंगीकारकरिये ॥ तौ यालोकविषे
कर्येहुएपुण्यपापरूपकर्मोंका सुखदुःखरूपफलकेभोगतैंविनाहीनाशरूप जोकृतनाशरूपदोषहै ॥ तथा नकर्येहुएपुण्यपापरूपक
र्मोंके सुखदुःखरूपफलकाभोगरूप जोअकृताभ्यागमरूपदोषहै ॥ यादोनोंप्रकारकेदोषोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं बुद्धिमान्पुरुषों
कूं आत्माकानाश अंगीकारकरणायोग्यनहीं ॥ हेमैत्रेयी ! मरणकालविषे यापुरुषके देहइंद्रियादिकसर्वसंघातकालयहोवैहै ॥
याकारणतैं तामरणकालविषे मैंमनुष्यहूं इत्यादिकविशेषज्ञान तापुरुषविषेउत्पन्नहोवैनहीं ॥ तासर्वविशेषज्ञानोंकेअभावहुए य
हआत्मादेव जबी मरणअवस्थाविषेभी संसारदुःखोंकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ तबी आत्मसाक्षात्कारकरिकै कार्यसहितअविद्यातैंर
हितहुआ यहआत्मादेव मोक्षअवस्थाविषे तासंसारदुःखोंकूंनहींप्राप्तहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै ? यातैं हेमैत्रेयी ! तामोक्षअ
वस्थाविषे मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं इत्यादिकसर्वविशेषज्ञानोंकेनाशहुएभी यास्वयंज्योतिआत्माकानाशहोवैनहीं ॥ याकारणतैं
यहस्वयंज्योतिआत्मा अविनाशीरूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! मोक्षअवस्थाविषे यहआत्मादेव जोस्वप्रकाशहोवै ॥ तौ
तामोक्षअवस्थाविषे यहआत्मादेव शरीरादिकद्वैतप्रपंचकूं किसवासतेनहींदेखता ? और मोक्षअवस्थाविषे यहआत्मादे
व द्वैतप्रपंचकूंदेखतानहीं ॥ यातैं यहजन्याजावैहै ॥ तामोक्षअवस्थाविषे यहआत्मादेव स्वप्रकाशरूपनहींहै ॥ समाधान
॥ हेमैत्रेयी ! जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे स्वप्रकाशचैतन्यरूपकरिकै विद्यमानहुआभीयहआत्मादेव जो
पुत्रस्त्रीधनादिकपदार्थोंकूंनहींदेखैहै ॥ तानदेखणेविषे आत्माकेस्वप्रकाशरूपताकाअभाव कारणनहींहै ॥ किंतु तासुषुप्तिअव
स्थाविषे तथा मरणअवस्थाविषे तिनपुत्रधनादिकपदार्थोंकाअभावहोवैहै ॥ तथा नेत्रादिककरणोंकाभीअभावहोवैहै ॥ याका
रणतैं तासुषुप्तिअवस्थाविषे तथा मरणअवस्थाविषे स्वप्रकाशचैतन्यरूपकरिकै विद्यमानहुआभी यहआत्मादेव ताद्वैतप्रपंच
कूंदेखतानहीं ॥ तैसे मोक्षअवस्थाविषेभी यहआत्मादेव जोद्वैतप्रपंचकूंनहींदेखताहै ॥ तानदेखणेविषे आत्माकेस्वप्रकाशरूपता

काअभाव कारणनहीं ॥ किंतु तामोक्षअवस्थाविषे सर्व द्वैतप्रपंचकाअभावहोवैहै ॥ याकारणतैं तामोक्षअवस्थाविषे स्वप्रकाशचै तन्यरूपकरिकै विद्यमानहुआभी यहआत्मादेव ताद्वैतप्रपंचकूंदेखतानहीं और हेमैत्रेयी ! यहआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्मा अविनाशी रूपहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव सुषुप्ति मरण मोक्ष यातीनोंअवस्थावोंविषे आपणेवास्तवस्वरूपकापरित्यागकरैनहीं ॥ यातैं जोआत्माकावास्तवस्वरूप मोक्षअवस्थाविषेहै ॥ सोईहीआत्माकावास्तवस्वरूप संसारदशाविषेहै ॥ परंतु संसारदशाविषे देहादिकोंकेतादात्म्यसंबंधकरिकै सोआत्माकावास्तवस्वरूप प्रतीतहोतानहीं ॥ और मोक्षअवस्थाविषे देहादिकोंकेतादात्म्यसंबंधकीनिवृत्तिहोइजावैहै याकारणतैं मोक्षअवस्थाविषे सोआत्माकावास्तवस्वरूप विद्वान्पुरुषोंकूं करामलककीन्याईं स्पष्टप्रतीतहोवैहै यातैं यहअर्थसिद्धभया॥जैसे अग्निकाउष्णस्वभाव कदाचित्भी अन्यथाभावकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ तैसे सुषुप्ति मरण मोक्ष यातीनों अवस्थावोंविषे याआनंदस्वरूपआत्माका स्वप्रकाशअद्वितीयचैतन्यस्वरूप कदाचित्भी अन्यथाभावकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ यातैं यहआत्मादेव सर्वभेदतैंरहितहै ॥ इतनेकरिकै त्वंपदार्थरूपजीवकाशोधनकन्या ॥ अब ताजीवका परिपूर्णब्रह्मकेसाथ अभेदबोधनकरणेवासते प्रथम भेददर्शनविषे अविद्याकीव्याप्यता निरूपणकरैहै ॥हेमैत्रेयी ! याआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्माविषे वास्तवतैं यहद्वैतप्रपंच कदाचित्भीनहींहै ॥ ऐसेअद्वितीयआत्माविषे जीवोंकूं जोद्वैतप्रपंच प्रतीतहोवैहै॥ सो जैसे नेत्रदोषकरिकै मूढबालकोंकूं आकाशविषे दोचंद्रमाप्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे अविद्यारूपी दोषकरिकै अज्ञानीजीवोंकूं अद्वितीयआत्माविषे यहद्वैतप्रपंचप्रतीतहोवैहै ॥ याकारणतैं यहसंपूर्णद्वैतप्रपंच मायामात्रहै ॥ हेमैत्रेयी ! ऐसाआत्माकाअद्वितीयस्वरूप जिसकालविषे द्वैतप्रपंचकीन्यांई प्रतीतहोवैहै॥ तिसकालविषे यहअज्ञानीजीव आपणेकूं ब्रह्मतैंभिन्नहुआदेखैहै ॥ तथा विश्व तैजस प्राज्ञ इत्यादिकअनेकभेदवाला आपणेकूंदेखैहै॥ तथा शब्द स्पर्श रूप रस गंध इसतैंआदिलेकेसंपूर्णजगतकूं यहअज्ञानीजीव श्रोत्रादिकएकादशइंद्रियोंकरिकै भिन्नभिन्नदेखैहै ॥ इननेकरिकै अविद्याकेविद्यमानहुएद्वैतदर्शनकीविद्यमानतारूप अन्वयकानिरूपणकन्या॥ अब अविद्याकेअभावहुए द्वैतदर्शनकाअभावरूपव्यतिरेककानिरूपणकरैहैं॥हेमैत्रेयी ! याअधिकारीपुरुषोंकूं जबी गुरुशास्त्रकेउपदे

शकरिकै अद्वितीयब्रह्मकाज्ञानहोवैहै ॥ तबी ताअधिकारीपुरुषोंके मायारूपअज्ञानकानाशहोइजावैहै ॥ ताअज्ञानरूपकारणके नाशहुएतैंअनंतर स्थावरजंगमशरीर तथा शब्दादिकविषयोंसहित श्रोत्रादिकइंद्रिय तथा सुखदुःखादिकोंसहित अंतःकरण इस तैंआदिलैकेसंपूर्णकार्यप्रपंच लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार संपूर्णकार्यप्रपंचसहित अज्ञानकेनाशहुएतैंअनंतर परिशेषतैं स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माही स्थितहोवैहै ॥ हेमैत्रेयी ! ऐसीमोक्षअवस्थाकूंप्राप्तहुआ यहविद्वान्पुरुष संपूर्णजगत्कूं आपणा आत्मारूपहीदेखैहै ॥ यातैं तामोक्षअवस्थाविषे यहविद्वान्पुरुष आपणेतैंभिन्न नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै रूपादिकपदार्थोंकूं देखता नहीं ॥ तथा रूपादिकपदार्थोंकेदर्शनतैं जोआवरणकीनिवृत्तिरूपफलहोवैहै ॥ सोफलभी पूर्वआत्मसाक्षात्कारकरिकैसिद्धभयाहै ॥ यातैं तामोक्षअवस्थाविषे सोआवरणकीनिवृत्तिरूपफलभीहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! तामोक्षअवस्थाविषे यहविद्वान्पुरुष आपणेतैंभिन्नजगत्कूं मतदेखै ॥ परंतु सोविद्वान्पुरुष तामोक्षअवस्थाविषे आपणेआत्माकूं किसवासतेनहींदेखता?॥समाधान॥ हे मैत्रेयी ! जिसअविद्याकालविषे यहआत्मादेव द्वैतकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ तिसअविद्याकालविषेभी यहस्वयंज्योतिआत्मा किसी ज्ञानकाविषयहोवैनहीं ॥ जबी अविद्याकालविषेभी यहस्वयंज्योतिआत्मा किसीज्ञानकाविषयनहींभया ॥ तबी मोक्षअवस्थाविषे सर्वद्वैतप्रपंचकेअभावहुए यहस्वयंज्योतिआत्मा किसीज्ञानकाविषयनहींहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै? अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी ! आपणेस्वप्रकाशरूपकरिकै सर्वजगत्कूंजानणेहारा जोविज्ञाताआत्माहै ॥ ताविज्ञाताअद्वितीयआत्माकूं मैं जानताहूं याप्रकारकावचन जोपुरुष कथनकरैहै तामूढपुरुषतैं यहपूछाचाहिये ॥ यालोकविषे याजीवोंकूं जिसजिसपदार्थका जोजोज्ञानहोवैहै ॥ सोसोज्ञान किसीनेत्रादिककरणोंकरिकैजन्यहीहोवैहै ॥ नेत्रादिकरणोंतैंविना कोईभीज्ञान उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं अद्वितीयआत्माकूंविषयकरणेहारा जोतुमारेकूंज्ञानभयाहै ॥ सोज्ञान किसकरणकरिकैउत्पन्नभयाहै? काप्रश्नकाउत्तर तूं हमारेप्रतिकह ॥ तहां सोवादी जोमूर्तअमूर्तरूपजगत्कूं तथा ताजगत्केअभावकूं आत्माकेज्ञानविषे करणमानै ॥ सोवादीकाकहणा संभवैनहीं ॥ काहेतें ? अविद्यातैंरहित ताशुद्धआत्माविषे मूर्तअमूर्तरूपजगत् तथा ताजगत्काअभाव वास्तवतैं हैन

हीं ॥ यातैं यहस्वयंज्योतिआत्मादेव मनबुद्धिआदिकअंतरकरणोंकरिकै तथा नेत्रादिकबाह्यकरणोंकरिकै ग्रहणकऱ्याजावैनहीं ॥
किंवा ॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ इंद्रियजन्यज्ञानकाविषयहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ शनैःशनैःकरिकै आपणेअवयवोंकीशि
थिलतारूप शीर्यताकूं अवश्यप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे इंद्रियजन्यज्ञानकेविषय जेवस्त्रादिकपदार्थहैं ॥ तेवस्त्रादिक शनैःशनैःकरि
कै ताशीर्यताकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे इंद्रियजन्यज्ञानकाविषयहोणेतैं यहआत्मादेवभी ताशीर्यताकूं अवश्यप्राप्तहोवैगा ॥ और य
ह आनंदस्वरूपआत्मा अशीर्यहै ॥ यातैं यहआत्मादेव किसीइंद्रियजन्यज्ञानकाविषयहोवैनहीं ॥ और हेमैत्रेयी ! यालोक
विषेजोजोपदार्थ शीर्यताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ संयोगादिकसंबंधरूपसंगवालाहोवैहै ॥ जैसे वस्त्रादिकपदार्थ शीर्य
ताधर्मवाले हैं ॥ यातैं तेवस्त्रादिकपदार्थ जलादिकपदार्थोंकेसंगवालेभीहैं ॥ और यहस्वयंज्योतिआत्मा संयोगादिकसंबंधरू
प सर्वसंगतैंरहितहै ॥ यातैं यहआत्मादेव शीर्यताकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और हेमैत्रेयी ! यालोकविषे जोजोपदार्थ संयोगादिरूपसंयो
गवालाहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ भयवालाभीअवश्यहोवैहै ॥ जैसे यहमनुष्यादिकशरीर संयोगादिरूपसंगवालेहैं ॥ यातैं यहमनुष्या
दिकशरीर सिंहसर्पादिकोंतैंभयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहआत्मादेव सर्वभयतैंरहितहै ॥ यातैं यहआत्मादेव किसीपदार्थकेसंग
वालाभीनहींहै ॥ और हेमैत्रेयी ! यालोकविषे जोजोपदार्थ भयवालाहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ व्यथावालाहोवैहै ॥ जैसे यहमनुष्या
दिकशरीर भयवालेहैं ॥ यातैं यहमनुष्यादिकशरीर व्यथावालेभीहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वव्यथातैंरहितहै ॥ यातैं य
हआत्मादेव भयतैंभीरहितहै ॥ और हेमैत्रेयी ! यालोकविषे जोजोपदार्थ व्यथावालाहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ विनाशकेकारणोंकरिकै
युक्तहोवैहै ॥ जैसे यहमनुष्यादिकशरीर व्यथावालेहैं ॥ यातैं यहमनुष्यादिकशरीर विनाशकेकारणोंकरिकैभीयुक्तहैं ॥ और यहआत्मा
देव विनाशकेकारणोंतैंरहितहै ॥ यातैं यहआत्मादेव व्यथातैंभीरहितहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे जहांजहांधूमरहैहै तहांतहां अग्नि
अवश्यरहैहै ॥ अग्नितैंविना धूम रहैनहीं ॥ यातैं धूम व्याप्यहै ॥ और अग्निव्यापकहै ॥ व्यापकअग्निका जहां अभावहोवैहै ॥ तहां
व्याप्यधूमकाभीअभावहोवैहै ॥ जैसे जलकरिकैपूर्णतलावविषे व्यापकअग्निकाअभावहै ॥ यातैं तातलावविषे व्याप्यधूमकाभी

अभावहै ॥तैसे इहांप्रसंगविषे इंद्रियजन्यज्ञानकीविषयता १ शीर्यता २ संयोगादिकसंबंधरूपसंग ३ भय ४ व्यथा ५ विनाशका कारण ६ याषट्पदार्थोंविषे पूर्वपूर्वपदार्थकीअपेक्षाकरिकै उत्तरउत्तरपदार्थ व्यापकहै ॥ और उत्तरउत्तरपदार्थकीअपेक्षाक रिकै पूर्वपूर्वपदार्थ व्याप्यहै ॥ तिनउत्तरउत्तर व्यापकपदार्थोंका आत्माविषे अभावहै ॥ यातैं पूर्वपूर्वव्याप्यपदार्थोंकाभी आत्माविषे अभावहीसिद्धहोवैहै ॥ जैसे यहआत्मादेव नाशकेकारणोंतैंरहितहै यातैं व्यथातैंरहितहै ॥ और यहआत्मा देव व्यथातैंरहितहै यातैं भयतैंरहितहै ॥ और यहआत्मादेव भयतैंरहितहै यातैं संगतैंरहितहै ॥ और यहआत्मादेव संगतैंरहितहै यातैंशीर्यतातैंरहितहै ॥ और यहआत्मादेव शीर्यतातैंरहितहै यातैं इंद्रियजन्यज्ञानकाविषयनहीं ॥ या अभिप्रायकरिकैही श्रुतिभगवती यास्वयंज्योति आत्माकूं अगृह्य यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ हेमैत्रेयी ! इसप्रकार भावअभावरू पसर्वजगततैंरहित तथामायातैंरहित जोस्वप्रकाशआत्माहै ॥ तास्वप्रकाशआत्माविषे नेत्रादिककरणजन्यज्ञानकीविषयता क दाचित्भीसंभवैनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ वेदांतशास्त्रकेमतविषे तथायोगशास्त्रकेमतविषे आत्माकेसाक्षात्कारमैं नेत्रादिकों कूंकरणरूपतासंभवैनहीं ॥ अबअन्यशास्त्रोंकेमतविषेभी आत्मसाक्षात्कारमैं नेत्रादिककरणोंकाअभाव निरूपणकरैहै ॥ हेमैत्रेयी ! बृहस्पतिकेशिष्य जेचार्वाकहैं ॥ तिनचार्वाकोंविषे कोईकचार्वाकतौ यास्थूलशरीरकूंही आत्मामानैहै ॥ और कोईकचार्वाकतौ ने त्रादिकइंद्रियोंकूंही आत्मामानैहै ॥ और कोईकचार्वाकतौ प्राणकूंहीआत्मामानैहै ॥ और कोईकचार्वाकतौ मनकूंहीआत्मामानैहैं ॥ और न्यायशास्त्रवालेतौ देहइंद्रियादिकोंतैंभिन्न कर्ताभोक्ताकूंहीआत्मामानैहै ॥ तिनसंपूर्णोंकेमतविषे आत्मसाक्षात्कारमैं नेत्रादि कोंकूंकरणरूपतासंभवै नहीं ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहै ॥ हेमैत्रेयी! जेचार्वाक यास्थूलसंघातकूंही आत्मामानैहैं ॥ तिनचार्वाकोंकेमतविषेभी यासंघातरूपआत्माकेसाक्षात्कारविषे नेत्रादिकोंकूं करणरूपतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं यासंघातरूपआ त्मातैं यहनेत्रादिककरणभिन्नहैंनहीं ॥ किंतु यहनेत्रादिककरण संघातरूपहीहै ॥ और सोसंघातरूपआत्मा ताज्ञानरूपक्रिया काकर्ताहै ॥ यातैं तासंघाततैं अभिन्न नेत्रादिकभी कर्तारूपहीहोवैंगे ॥ तिनकर्तारूपनेत्रादिकोंविषे करणरूपतासंभवैनहीं ॥ काहे

तैं यालोकविषे कर्तापुरुषतैंभिन्नहीं करणदेख्याहै ॥ जैसे छेदनरूपक्रियाकाकर्त्ताजोपुरुषहै तातैं कुठाररूपकरण भिन्नहीहो
वैहै ॥ यातैं तिनचार्वाकोंकेमतविषे तासंघातरूपआत्माकेसाक्षात्कारविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकूं करणरूपतासंभवैनहीं ॥ और दूसरे
चार्वाक नेत्रादिकइंद्रियोंकेसमुदायकूंही आत्मामानैहैं ॥ तिनचार्वाकोंकेमतविषेभी इंद्रियरूपआत्माकेसाक्षात्कारविषे कोईकरण
संभवैनहीं ॥ काहेतैं नेत्रादिकइंद्रियरूपआत्मातौ ताज्ञानरूपक्रियाकाकर्ताहै ॥ यातैं ताइंद्रियरूपकर्ताआत्माविषेभी ताज्ञानरूप
क्रियाकी करणरूपतासंभवैनहीं ॥ और यहस्थूलशरीर तथा बाह्यघटादिकपदार्थ यहसंपूर्ण ताज्ञानरूपक्रियाकेकर्मरूपहैं ॥ यातैं
तिनदेहादिकपदार्थोंविषेभी ताज्ञानरूपक्रियाकीकरणरूपतासंभवैनहीं ॥ यातैं तिनचार्वाकोंकेमतविषेभी इंद्रियरूपआत्माकेसाक्षा
त्कारविषे कोईकरणसंभवैनहीं ॥ और जेदूसरेचार्वाक प्राणकूंहीआत्मामानैहैं ॥ तथा मनकूंहीआत्मामानैहैं॥ और जेनैयायिक
देहादिकोंतैंभिन्न कर्ताभोक्ताकूंहीआत्मामानैहैं ॥ तिनतीनोंवादियोंकेमतविषेभी ताआत्माकेसाक्षात्कारविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकूं क
रणरूपतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं तिनतीनोंवादियोंसैंयहपूछाचाहिये ॥ तुमोंनें प्राणरूप तथामनरूप तथाकर्ताभोक्तारूप जोआत्मा
अंगीकारकऱ्याहै ॥ सोतुमाराआत्मा नीलपीतादिकरूपवालाहै अथवा नीलपीतादिकरूपोंतैंरहितहै ? तहां सोआत्मा रूपवा
लाहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोघटपटादिकपदार्थोंकीन्यांई आत्मा रूपवालाहोवै ॥ तौ
जैसे रूपवालेघटपटादिकपदार्थ हमजीवोंकूं नेत्रादिकइंद्रियोंकरिके प्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे सोरूपवान् तुमाराआत्माभी हमजीवों
कूं नेत्रादिकइंद्रियोंकरिके प्रतीतहोणाचाहिये॥और घटादिकोंकीन्यांई नेत्रादिकइंद्रियोंकरिके सोआत्मा प्रतीतहोतानहीं॥यातैं ने
त्रादिकबाह्यइंद्रियोंविषेतौ ताआत्माकेसाक्षात्कारकीकरणरूपता संभवैनहीं ॥ और नेत्रादिकइंद्रियोंकीसहायतातैंविना रूपवानप
दार्थोंकूं मन ग्रहणकरैनहीं ॥ यातैं ताआत्माकेसाक्षात्कारविषे मनकूंभी करणरूपतासंभवैनहीं ॥ और सोआत्मा नीलपीतादि
करूपोंतैंरहितहै यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरै ॥ तौभी तारूपरहितआत्माकेसाक्षात्कारविषे कोईकरणसंभवैनहीं ॥ काहे
तैं नेत्रादिकबाह्यइंद्रियतौ रूपवान्घटादिकपदार्थोंकूंही ग्रहणकरैहै ॥ यातैं तारूपरहितअंतरात्माकेसाक्षात्कारविषे नेत्रादिक

बाह्यइंद्रियोंकूंतौ करणरूपतासंभवैनहीं ॥ तहां जोवादी तासाक्षात्कारविषे मनकूंही करणमानै है ॥ तावादीसैंयहपूछाचाहिये ॥ मनरूपकणकररिकै जोआत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ ताज्ञानरूपक्रियाका सोआत्मा कर्महै ॥ अथवाकर्ताहै ? तहां सोआत्मा ताज्ञानरूपक्रियाका कर्मरूपहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं सोआत्मा ताज्ञानरूपक्रियाकाजो कर्महोवै ॥ तौ जोपदार्थ जाक्रियाकाकर्मरूपहोवैहै ॥ सोपदार्थ ताक्रियाकाकर्तारूपहोवैनहीं ॥ यातैं ताज्ञानरूपक्रियाका ताआत्मातैंभिन्न कोईदूसरापदार्थ कर्तामान्याचाहिये ॥ और आत्मातैंभिन्न कोईदूसरापदार्थ ताज्ञानरूपक्रियाकाकर्ताहैनहीं ॥ यातैं कर्ताकेअभावहुए ताज्ञानरूपक्रियाविषे मनकूंकरणरूपतासंभवैनहीं ॥ और सोआत्मा ताज्ञानरूपक्रियाका कर्ताहै यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं आत्माकूंविषयकरणेहाराजोज्ञानहै ॥ ताज्ञानरूपक्रियाका आत्मातैंभिन्न दूसराकोईपदार्थ कर्मरूपहोवैनहीं ॥ यातैं कर्मकेअभावहुए ताज्ञानरूपक्रियाविषे मनकूंकरणरूपतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जोजोकरणहोवैहै ॥ सो कर्ताकी तथाकर्मकी अवश्यअपेक्षाकरैहै ॥ कर्तातैंविना तथाकर्मतैंविना करणकास्वरूप सिद्धहोवैनहीं ॥ जैसे छेदनरूपक्रियाकाकर्ताजोपुरुषहै ॥ तथा ताछेदनरूपक्रियाकाकर्मरूप जोकाष्ठहै ॥ तिनदोनोंकेविद्यमानहुएही कुठारविषे करणरूपतासिद्धहोवैहै ॥ तिसकर्ताकर्मतैंविना ताकुठारविषे करणरूपतासिद्धहोवैनहीं ॥ याकारणतैंही शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं ताकरणका यहलक्षणकह्याहै ॥ कर्तापुरुष जिसपदार्थकरिकै कर्मविषे किंचित्फलकीउत्पत्तिकरैहै ॥ तापदार्थकानाम करणहै ॥ जैसे यहकर्तापुरुष कुठारकरिकै काष्ठरूपकर्मविषे द्विविभागरूपफलकीउत्पत्तिकरैहै ॥ यातैं सोकुठार करणरूपहै ॥ याप्रकारकीकरणरूपता तामनविषेसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ आत्मातैंभिन्नदूसराकोईपदार्थ ताज्ञानरूपक्रियाकाकर्तारूप तथाकर्मरूप यद्यपि नहींहै ॥ तथापि सोएकआत्माहीं ताज्ञानरूपक्रियाका कर्तारूपहै तथाकर्मरूपहै ॥ यातैं कर्ताकर्मकेविद्यमानहुए ताज्ञानरूपक्रियाविषे तामनकूं करणरूपता संभवहोइसकैहै? ॥ समाधान ॥ हेवादी! एककालविषे एकहीक्रियाविषे एकहीपदार्थकूं कर्तारूपता तथाकर्मरूपता कहांलोकविषेदेखीनहीं ॥ और युक्तियोंकरिकैभी संभवैनहीं ॥ यातैं एकहीज्ञानरूपक्रियाविषे एकहीआत्माकूं

कर्तारूपता तथाकर्मरूपता अत्यंतविरुद्धहै ॥ और याविरुद्धअर्थकूंअंगीकारकरिकैभी जोवादी आत्मसाक्षात्कारविषे मनकूंक
रणरूपतामानैं ॥ तौ तावादीकेप्रति यहवचनकह्याचाहिये ॥ हेवादी ! यालोकविषे कर्ताकर्मकाअभेद अत्यंतविरुद्धहै ॥ ताविरु
द्धअर्थकूंअंगीकारकरिकैभी जोतूं आत्मसाक्षात्कारविषे मनकूंकरणरूपतामानताहै ॥ तौश्रुतिकरिकैसिद्ध तथा विद्वान्पुरुषोंके
अनुभवकरिकैसिद्ध जोआत्माकीस्वप्रकाशरूपताहै ॥ तास्वप्रकाशरूपताकेअंगीकारकरणेविषे तुमारेकूं कौनभारहोवैहै ? यातें
श्रुतिअनुभवसिद्ध आत्माकेस्वप्रकाशरूपताकापरित्यागकरिकै आत्माविषे नेत्रादिककरणजन्यज्ञानकीविषयता अंगीकारकरणी
अत्यंतअनुचितहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! पूर्वआपनें आत्माकेसाक्षात्कारविषे महावाक्यरूपशब्दकूं करणरूपता कथनकरी
थी ॥ और अबीआपनें आत्मसाक्षात्कारविषे करणकाखंडनकर्‌याहै ॥ यातें आपके पूर्वउत्तरवचनोंकापरस्पर विरोध
प्राप्तहोवैहै! समाधान ॥ हेमैत्रेयी ! जैसे घटादिकजडपदार्थोंकेसाक्षात्कारविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकूं करणरूपताहै ॥ तै
से आत्मसाक्षात्कारविषे महावाक्यरूपश्रुतिकूं करणरूपतानहींहै ॥ किंतु आत्माकेआश्रित तथा आत्माकूंविषयकरणेहारा
जोअज्ञानरूपआवरणहै ॥ सोअज्ञानरूपआवरण आत्माकेसाक्षात्कारका प्रतिबंधकहै ॥ ताआवरणरूपप्रतिबंधककीनिवृत्ति
महावाक्यजन्यवृत्तिकरिकैहोवैहै ॥ ताआवरणकेनिवृत्तहुएतेंअनंतर यहआनंदस्वरूपआत्मा आपणेस्वप्रकाशरूपकरिकै स्फु
रणहोवैहै ॥ यातें आत्माकेसाक्षात्कारविषे महावाक्यरूपश्रुतिकूंभी वास्तवतेंकरणरूपतानहीं ॥ किंतु तामहावाक्यरूपश्रुति
जन्यअंतःकरणकीवृत्ति आवरणरूपप्रतिबंधकीनिवृत्तिकरैहै ॥ यातें इतनीअंशकूंअंगीकारकरिकै पूर्वहमनें आत्मसाक्षात्का
रविषे महावाक्यरूपश्रुतिकूं करणरूपताकहीहै ॥ यातें पूर्वउत्तरवचनोंका विरोधहोवैनहीं ॥ हेमैत्रेयी ! जेमंदबुद्धिचार्वाकादि
क शरीरादिकोंकूंही आत्मामानेहैं ॥ तिनचार्वाकादिकोंकेमतविषेभी जबी शरीरादिरूपआत्माकेसाक्षात्कारविषे पूर्वउक्तरीतिसैं को
ईकरणसिद्धनहींभया ॥ तबी आत्माकूंस्वप्रकाशरूपमानणेहारे जेहमअद्वैतवादीहैं ॥ तिनोंकेमतविषे तास्वप्रकाशआत्माकेसाक्षा
त्कारविषे कोईकरणनहींहै याअर्थविषे क्याकहणाहै ॥ हेमैत्रेयी ! जैसे घटपटादिकपदार्थ जडरूपहैं ॥ यातें तेघटादिकपदार्थ अना

त्मरूपहैं ॥ तैसे देह इंद्रिय प्राण मन इसतैंआदि लैके यहसंपूर्णसंघातभी जडरूपहै ॥ यातैं सोसंघात अनात्मरूपहीहै ॥ सो अनात्मरूपसंघात अधिष्ठानआत्माकेसंबंधकूंपाइकैही प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं मिथ्यारूपहै ॥ तामिथ्याजगत्काअधिष्ठानरूपआत्मा सर्वभेदतैंरहित अद्वितीयरूपहै ॥ हेमैत्रेयी! सोअद्वितीयरूपआत्माही याबुद्धिआदिकसंघातकासाक्षीरूपहै ॥ ऐसे साक्षीरूपस्वप्रकाशआत्माकूं यहअधिकारीपुरुष नेत्रादिककरणोंकरिकै जाणिसकैनहीं ॥ यातैं हेमैत्रेयी! दुःखकेदेणेहारे जेपतिपुत्र धनादिक पदार्थहैं ॥ तिनोंकापरित्यागकरिकै तू आपणेहृदयविषे ऐसेस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माकूं निश्चयकर ॥ हेमैत्रेयी! जोतुमनैंपूर्व हमारेसैं मोक्षरूपअमृतकासाधनपूछाथा ॥ सो हमनैं जातुमारेप्रति यहब्रह्मविद्याउपदेशकरीहै ॥ साब्रह्मविद्याही तामोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकासाधनहै ॥ हेमैत्रेयी! सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषे विराजमान जोपरब्रह्महै सोब्रह्म हमाराआत्मारूपहै ॥ याप्रकारका जोआत्माकासाक्षात्कारहै ॥ ताआत्माकासाक्षात्कारतैंविना दूसराकोई मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकासाधनहैनहीं ॥ किंतु यहआत्मसाक्षात्कारही तामोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकासाधनहै ॥ हेमैत्रेयी! यादेहादिकअनात्मपदार्थोंके अहंममअभिमानकापरित्यागकरिकै जबीतूं याआनंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरैंगी ॥ तबी ताआत्मसाक्षात्कारकेप्रभावतैं तु याशरीरकेपरित्यागतैंअनंतर पुनःमृत्युकूंतथाजन्मकूं कदाचित्भीनहींप्राप्तहोवैंगी ॥ यातैं देहादिकसर्वअनात्मपदार्थोंकेअभिमानकापरित्यागकरिकै याआनंदस्वरूपआत्माविषे तुम चित्तकूंएकाग्रकरो ॥ हेशिष्य! याप्रकार सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेमैत्रेयीस्त्रीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै पश्चात् तागृहस्थाश्रमकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकूं ग्रहणकरताभया॥ हेशिष्य! जिसविचारकूंकरताहुआ सोयाज्ञवल्क्यमुनि संन्यासआश्रमकाग्रहणकरताभया॥ ताविचारकूं तू श्रवणकर ॥ सत् चित् आनंदस्वरूपआत्मातैंविलक्षण जाअसत्जडदुःखरूपमायाशक्तिहै ॥ जामायाशक्तिसत्व रज तम यातीनगुणोंकरिकैयुक्तहै॥ ऐसी आत्माकेमायारूपशक्तिकूं सोयाज्ञवल्क्यमुनि मिथ्यारूपकरिकैदेखताभया॥ जिसमायारूपशक्तिकूं पूर्वमुनीश्वरभी जगत्केकारणोंकाविचारकरिकै याप्रकार निश्चयकरतेभयेहैं॥ यहआनंदस्वरूपआत्माही याजगत्काप्रधानकारणहै ॥ और यहमायारूपशक्तितौ याजगत्का सहकारीकारणहै ॥ याप्रकारकाविचारक

रिकै तेमुनीश्वर तामायारूपशक्तिकूंनिश्चयकरतेभये ॥ तिसीमायारूपशक्तिकूं सोयाज्ञवल्क्यमुनि मिथ्यारूपकरिकैनिश्चयकरताभ
या ॥ और शीत उष्ण सुख दुःख मान अपमान शत्रु मित्र आपणाशरीर परशरीर धर्मात्मा पापात्मा इसतैं आदिलैके जितने
कीअनुकूलप्रतिकूलपदार्थहैं ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंविषे सोयाज्ञवल्क्यमुनि समानदृष्टिकरताभया ॥ और रूपादिकविषयोंविषे जा
नेत्रादिकइंद्रियोंकीप्रवृत्तिहै ॥ ताप्रवृत्तिविषे सोयाज्ञवल्क्यमुनि द्वेषबुद्धि नहीं करताभया ॥ और तिनरूपादिकविषयोंतैं जानेत्रादि
कइंद्रियोंकीनिवृत्तिहै ॥ तानिवृत्तिविषे सोयाज्ञवल्क्यमुनि इच्छानहींकरताभया ॥ किंतु विषयोंविषेप्रवृत्ति तथाविषयोंतैंनिवृत्ति यह
दोनों नेत्रादिकइंद्रियोंकेहीधर्म है ॥ मैंआनंदस्वरूपआत्मातौ सर्वदानिर्विकारहूं ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि
इंद्रियोंकीप्रवृत्तिविषे तथानिवृत्तिविषे उदासीनहोताभया ॥ तथा शरीर मन वाणी करिकै सर्वप्राणियोंकूंअभयकीप्राप्तिकरताहु
आ सोयाज्ञवल्क्यमुनि सूर्यचंद्रमाकीन्यांई रागद्वेषादिकविकारोंतैं रहितहोइके यापृथिवीविषे विचरताभया ॥ इतनैंकरिकै याज्ञव
ल्क्यमुनिका वृत्तांतकह्या ॥ अब मैत्रेयीकेवृत्तांतकानिरूपणकरै है ॥ हेशिष्य ! जैसे सोयाज्ञवल्क्यमुनि चतुर्थसंन्यासआश्रमकूं
धारणकरिकै यालोकविषे विचरताभया ॥ तैसे साब्रह्मवेत्तामैत्रेयीभी चतुर्थसंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिकै यालोकविषे विचरतीभ
ई ॥ परंतु याकेविषेइतनीविशेषताहै याज्ञवल्क्यमुनितौ लिंगसंन्यासकूंधारणकरताभया ॥ और मैत्रेयी अलिंगसंन्यास
कूंधारणकरतीभई ॥ तहां दंडग्रहणपूर्वक जोसंन्यासहै ॥ ताकानाम लिंगसंन्यासहै ॥ और दंडग्रहणतैंविना जोसंन्यास
है ॥ ताकानाम अलिंगसंन्यासहै ॥ इतनीविशेषताकूंछोडिकै दूसरेभिक्षाटनादिकबाह्यधर्म तथाशमदमादिकआंतरधर्म लिं
गसंन्यासियोंके तथा अलिंगसंन्यासियोंके समानहीहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! याज्ञवल्क्यमुनिकीन्यांई सामैत्रेयीभी
दंडग्रहणपूर्वक लिंगसंन्यासकूं किसवासते नहींधारणकरतीभई ? ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! दंडग्रहणपूर्वकजोलिंगसंन्या
सहै ॥ ताकेविषे एकब्राह्मणकाही अधिकारहै ॥ ब्राह्मणतैंभिन्नक्षत्रियका तथावैश्यका तालिंगसंन्यासविषे अधिकारनहीं
॥ जबी क्षत्रियवैश्यकाभी तालिंगसंन्यासविषे अधिकारनहींभया ॥ तबी तालिंगसंन्यासविषे स्त्रीकाअधिकार किसप्रका

रहोवैगा ॥ यहवार्ता स्मृतिविषेभीकहीहै ॥तहां श्लोक॥ मुखजानामयंधर्मो यद्विष्णोर्लिंगधारणम्॥बाहुजातोरुजातानां नायं धर्मोविधीयते ॥ अर्थयह ॥ परमेश्वरकेमुखतैंउत्पन्नभयेजेब्राह्मणहैं तिनब्राह्मणोंकाही दंडग्रहणपूर्वकलिंगसंन्यासविषे अधिकारहै ॥ और परमेश्वरके बाहुतैंउत्पन्नभयेजेक्षत्रियहैं ॥ तथा परमेश्वरके ऊरुस्थानतैंउत्पन्नभयेजेवैश्यहैं ॥ तिनदोनोंका तालिंगसंन्यासविषे अधिकारनहीं ॥ १ ॥ हेशिष्य! पूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैं जिनक्षत्रियपुरुषोंकूं तथावैश्यपुरुषोंकूं तथा त्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं यासंसारतैं उत्कटवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ तौ तेक्षत्रिय वैश्य स्त्रियां अलिंगसंन्यासकूंधारणकरिकै जेलिंगसंन्यासियोंके अहिंसाब्रह्मचर्य सत्यइत्यादिकधर्म शास्त्रविषेकथनकरेहैं॥तिनसंपूर्णधर्मोंकूं संपादनकरैं॥ अहिंसादिकधर्मोंकेकरणेविषे सर्वप्राणियोंकाअधिकारहै ॥ अब साधनचतुष्टयसंपन्नअधिकारियोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासतै गुरुशिष्यभावकीव्यवस्था का निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! याभरतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूं प्राप्तहोइकै जेपुरुष आत्मसाक्षात्कारकूं नहीं प्राप्तहोवैहैं॥तिनपुरुषोंकूं महान्‌हानिकीप्राप्ति श्रुतिकहेहै ॥तहांश्रुति॥ नचेदवेदीर्महतीविनष्टिः यतद्विदुरमृतास्तेभवंति ॥अर्थयह ॥ याभरतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकै जेपुरुष याआनंदस्वरूपआत्माकूंनहींजाणते ॥ तिनअज्ञानीपुरुषोंकूं जन्ममरणादिकअनेकदुःखोंकी प्राप्तिहोवैहै ॥ और जेपुरुष ताआनंदस्वरूपआत्माकूंजाणेहैं ॥ तेपुरुष मोक्षरूपअमृतकूंप्राप्तहोवैहैं॥ १ ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं आत्मसाक्षात्कारकूंअवश्यसंपादनकरणा॥और स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्तेपियांतिपरांगतिम्॥अर्थयह स्त्रियां तथा वैश्य तथा शूद्र यहसंपूर्ण मोक्षकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ १ ॥ याभगवद्गीताकेवचनतैं स्त्री वैश्य शूद्र यातीनोंकूंभी मोक्षविषे अधिकारसिद्धहोवैहै ॥ और सोमोक्ष आत्मज्ञानतैंविनाहोवैनहीं॥तहांश्रुति॥ऋतेज्ञानान्नमुक्तिः नान्यःपंथाविद्यतेअयनाय॥अर्थ यह ॥ आत्मज्ञानतैंविना मुक्तिहोवैनहीं॥और आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईमार्ग मोक्षकीप्राप्तिवासतै हैनहीं ॥ किंतु एकआत्मज्ञानही मोक्षकेप्राप्तिकामार्गहै ॥ १ ॥ और सोआत्माकाज्ञान श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेउपदेशतैंहीप्राप्तहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ आचार्यवान्पुरुषोवेद ॥ अर्थयह ॥ श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठआचार्यवालापुरुषही आत्माकूंजाणेहै ॥१॥ यातैं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र याचारिव

र्णोंकेपुरुषोंनैं तथा तिनचारिवर्णोंवालीस्त्रियोंनैं श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेमुखतैं ब्रह्मविद्याकाश्रवणकरिकै आत्मज्ञानकूं अवश्यसंपादनकरणा ॥ तहां किसवर्णवालेअधिकारीनैं किसवर्णवालेविद्वान्कूं गुरुकरणा ॥ याप्रकारकीव्यवस्थाकूं तू श्रवणकर ॥ संपूर्णवर्णोंविषे ब्राह्मणउत्तमहै ॥ यातैं सोब्रह्मवेत्ताब्राह्मण साधनचतुष्टयसंपन्न अधिकारी ब्राह्मणोंकूं तथाक्षत्रियोंकूं तथावैश्योंकूं तथात्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं उपनिषद्रूपवेदकेवचनोंकाउपदेशकरिकै आत्मसाक्षात्कारकी प्राप्तिकरै॥ काहेतें! जैसे शास्त्रविषे शूद्रोंकूं उपनिषद्रूपवेदवचनोंकेश्रवणकरणेका निषेध कथनकऱ्याहै ॥ तैसे अधिकारीक्षत्रियवैश्योंकूं तथात्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं उपनिषद्रूपवेदवचनोंकेश्रवणकरणेकानिषेध किसीशास्त्रविषे कथनकऱ्यानहीं॥शंका॥ हेभगवन्! श्रुतिविषे स्त्रियोंकूं वेदकेअध्ययनकरणेका निषेध कथनकराहै ॥तहांश्रुति॥ स्त्रीशूद्रौनाधीयाताम्॥अर्थयह॥ स्त्री शूद्र यादोनोंकूं वेदकाअध्ययन नहींकरावै॥ याश्रुतिवचनकाविरोधहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! जिसवेदकेवचनकूं गुरु उच्चारणकरै ॥ तिसीवेदकेवचनकूं शिष्यभी उच्चारणकरै ॥ याकानाम अध्ययनहै ॥ याप्रकारकेवेदाध्ययनका यद्यपि त्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं निषेधहै॥ तथापि ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदवचनोंकेश्रवणकरणेका त्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं निषेधनहीं॥ जोकदाचित् त्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं वेदवचनोंकेश्रवणकाभी निषेधहोवै तौ तावेदविषेही मैत्रेयीगार्गीआदिकस्त्रियोंकेप्रति जोब्रह्मविद्याकेउपदेशकाप्रकार कथनकऱ्याहै सोसंपूर्ण असंगतहोवैगा ॥ यातैं मुमुक्षुत्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं उपनिषद्रूपवेदवचनोंके श्रवणकरणेकाअधिकारहै ॥ और क्षत्रियपुरुषोंकूं तथावैश्यपुरुषोंकूंतौ वेदकेअध्ययनकरणेविषेभी अधिकारहै ॥ यातैं सोब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष अधिकारीक्षत्रियवैश्योंकूं तथा त्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं उपनिषद्रूपवेदवचनोंकेउपदेशकरिकै आत्मसाक्षात्कारकी प्राप्तिकरै ॥ परंतु सोविद्वान्पुरुष तिनक्षत्रियवैश्योंकूं तथा त्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं दंडग्रहणपूर्वकलिंगसंन्यास कदाचित् नहींकरावै ॥ और जोकदाचित् तिनक्षत्रियवैश्यपुरुषोंकूं तथा त्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं यासंसारतैं उत्कटवैराग्यहोवै॥ तौ सोविद्वान्पुरुष तिनक्षत्रियवैश्यस्त्रीजनोंकूं दंडकेग्रहणतैंविना अलिंगसंन्यास करावै॥काहेतें? जैसे शास्त्रविषे यद्यपि शूद्रोंकूं यज्ञादिकविशेषकर्मोंकेकरणेकानिषेधकथनकऱ्याहै ॥ तथापि तायज्ञविषे ब्राह्मणादिकअधिकारियोंकरिकै करणेयोग्य जेदान तप सत्य नम

स्कारादिक शुभकर्म हैं ॥ तिन दानादिकशुभकर्मोंकेकरणेविषे शुद्रोंकूंभी अधिकार शास्त्रविधानकरैहै ॥ तैसे दंडग्रहणपूर्वकलिंग सन्यासविषे यद्यपि केवलब्राह्मणकूंही अधिकारहै ॥ तथापि तिनलिंगसंन्यासियोंकरिकै करणेयोग्य जेअहिंसा ब्रह्मचर्य सत्यादिकधर्म हैं ॥ तिन अहिंसादिकधर्मपूर्वक अलिंगसंन्यासकेग्रहणकरणेविषे क्षत्रियवैश्यपुरुषोंकूं तथात्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं दोषकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ उलटा तिनोंकूं महान् पुण्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेशिष्य ! यालोकविषे क्षत्रिय वैश्य त्रैवर्णिकस्त्रियां यहसंपूर्ण जो कदाचित् ब्रह्मविद्याविषेकुशलभीहोवैं ॥ तौभी ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणकेविद्यमानहुए तेक्षत्रियादिक गुरुरूपहोइकै दूसरेअधिकारीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशनहींकरैं ॥ किंतु ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणही तिनअधिकारियोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरै ॥ और जबीकोईब्रह्मवेत्ताब्राह्मण नहींविद्यमानहोवै ॥ तबी सोब्रह्मवेत्ताक्षत्रियपुरुष गुरुरूपहोइकै आपणेसमानजातिवालेक्षत्रियपुरुषोंकूं तथा क्षत्रियीस्त्रियोंकूं तथावैश्यपुरुषोंकूं तथावैश्यास्त्रियोंकूं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरै ॥ परंतु सोक्षत्रिय गुरुरूपहोइकै ब्राह्मणोंकेप्रति तथाब्राह्मणीस्त्रियोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशनहींकरै ॥ इसीप्रकार ब्रह्मवेत्तावैश्यपुरुषभी ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणके तथाब्रह्मवेत्ताक्षत्रियकेअभावहुए आपणेसमानजातिवालेवैश्योंकेप्रति तथावैश्यास्त्रियोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरै ॥ परंतु सोब्रह्मवेत्तावैश्य गुरुरूपहोइकै आपणेतेंउत्तमवर्णवालेक्षत्रियोंकेप्रति तथाब्राह्मणोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशनहींकरै ॥ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंकीजेस्त्रियां हैं ॥ तिनस्त्रियोंकूं शास्त्रविषे वेदकेअध्ययनकानिषेधकर्‌याहै ॥ यातें ते त्रैवर्णिकस्त्रियां गुरुरूपहोइकै त्रैवर्णिकपुरुषोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकरैं ॥ और जबीकोई त्रैवर्णिकपुरुष ब्रह्मविद्यावालानहींहोवै ॥ तबी तेत्रैवर्णिकस्त्रियांभी गुरुरूपहोइकै ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैं ॥ परंतु तेत्रैवर्णिकस्त्रियां आपणेसमानजातिवालेपुरुषोंकेप्रति तथा आपणेतेंनिकृष्टजातिवालेपुरुषोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैं ॥ आपणेतेंउत्तमजातिवालेपुरुषोंकेप्रति तेस्त्रियां ब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकरैं ॥ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंवालेपुरुषोंकूंभी जबी आपणेतेंउत्तमजातिवालेगुरुकी तथा आपणेसमानजातिवालेगुरुकी नहींप्राप्तिहोवै ॥ तबी तेब्राह्मणादिकपुरुषभी आपणेतेंनीचजातिवालेब्रह्मवेत्तागुरुतें शास्त्रकेमर्यादाकूंजाणिकरिकै वेदकेवचनोंतें

आपही आत्मसाक्षात्कारकूं संपादनकरै ॥ और जोब्राह्मण कुलीनहोवै ॥ तथा बाल्यअवस्थाविषे मातांकरिकैशिक्षितहोवै ॥ तिसतैंअनंतर पिताकरिकैशिक्षितहोवै ॥ तिसतैंअनंतर आचार्यकरिकैशिक्षितहोवै ॥ ऐसेब्रह्मवेत्ताब्राह्मणकूंही ब्राह्मणीस्त्रीनैं गुरुकरणा ॥ तथा अन्यक्षत्रियादिकोंनैंभी ऐसेब्रह्मवेत्ताब्राह्मणकूंही गुरुकरणा ॥ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंकीस्त्रियोंकातौ आपणापतिहीगुरुहोवैहै ॥ जोकदाचित् सोपति ब्रह्मविद्यावालानहींहोवै ॥ तौ तिनस्त्रियोंनैं आपणेतैंउत्तमजातिवाले किसीब्रह्मवेत्तापुरुषकूंगुरुकरणा ॥ और जोआपणेतैंउत्तमजातिवाला कोईब्रह्मवेत्तापुरुषनहींहोवै ॥ तौतिनस्त्रीयोंनैं आपणेसमानजातिवाले किसीब्रह्मवेत्तापुरुषकूंगुरुकरणा ॥ और ब्राह्मणोंकीअपेक्षाकरिकै अधमजातिवाले जेक्षत्रियवैश्यहैं ॥ तथा क्षत्रियवैश्योंकीअपेक्षाकरिकैभी अधमजातिवालेजेशूद्रहैं तेशूद्र किसीआपत्कालविषेभी ब्राह्मणादिकउत्तमवर्णोंके गुरुहोवैंनहीं ॥ और शूद्रपुरुषोंकूं तथाशूद्रस्त्रियोंकूं तथा अन्यकिसीसंकरजातिवालेपुरुषोंकूं पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं जोआत्मसाक्षात्कारकीइच्छाहोवै ॥ तौयहविद्वान्पुरुष तिनशूद्रादिकोंकेप्रतिभी ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरै ॥ परंतु यहविद्वान्पुरुष तिनशूद्रादिकोंकेप्रति साक्षात् उपनिषद्रूपवेदकाउपदेशनहींकरै ॥ किंतु उपनिषदोंकेअर्थकानिरूपणकरणेहारे जेभागवतादिकपुराणहैं तथा पंचदशीआदिकप्रकरणग्रंथहैं ॥ तिनोंकाउपदेशकरिकै सोविद्वान्पुरुष मुमुक्षुशूद्रादिकोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरै ॥ और जबीकोई उत्तमजातिवालाब्रह्मवेत्तागुरु नहींप्राप्तहोवै ॥ और अधमजातिवालाकोईब्रह्मवेत्तागुरुप्राप्तहोवै ॥ तबी उत्तमजातिवालेब्राह्मणादिकोंनैं ताअधमजातिवालेक्षत्रियादिकोंतैं धनादिकपदार्थदेकै ब्रह्मविद्यालेणी ॥ और जोकदाचित् तेअधमजातिवालेगुरु धनादिकपदार्थोंकीइच्छातैंरहित निष्कामहोवैं ॥ तौ ताअधमजातिवालेगुरुवोंकेतांई तिनउत्तमजातिवालेशिष्योंनैंकोईआपणीविद्यादेकै ब्रह्मविद्यालेणी ॥ और सोअधमजातिवालापुरुष जोकदाचित् ताउत्तमजातिवालेपुरुषकेप्रति ब्रह्मविद्यादेवै ॥ तौभी ता उत्तमजातिवालेशिष्यतैं सोअधमजातिवालागुरु पादसंवाहनादिकनिकृष्टसेवानहींकरावै ॥ हेशिष्य ! वेदविषे अश्वपति नामा क्षत्रियराजानैं उद्दालकादिकब्राह्मणोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकर्याहै ॥ तथा अजातशत्रुनामा क्षत्रियराजानैं बालाकी

ब्राह्मणकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्याहै ॥ याप्रकारकी वेदप्रतिपादितकथावोंकूंदेखिके धर्मशास्त्रकेवक्तामनुआदिकऋषियों
नें क्षत्रियादिकअधमवर्णोंतें ब्राह्मणादिकउत्तमवर्णोंकूं ब्रह्मविद्यालेणेकाप्रकार कथनकऱ्याहै ॥ परंतु यहसंपूर्णप्रकार तबपर्यंतहो
वैहै ॥ जबपर्यंत किसी ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणकाअभावहोवैहै ॥ और जोब्रह्मवेत्ताब्राह्मणगुरुकालाभहोवै ॥ तौ क्षत्रियादिकोंनें ब्राह्मणनें
ब्रह्मविद्याकाअध्ययननहीं करणा ॥ हेशिष्य! याप्रकारकी जोशास्त्रविषेमर्यादाकथनकरीहै ॥ तासंपूर्णमर्यादाकूं जाणतीहुईसा
ब्रह्मवेत्तामैत्रेयी दंडग्रहणपूर्वक लिंगसंन्यासकूं नहींधारणकरतीभई ॥ किंतु ब्रह्मचर्यादिकसाधनपूर्वक अलिंगसंन्यासकूंधारणकरि
के सामैत्रेयी याज्ञवल्क्यमुनिकीन्यांई यालोकविषे विचरतीभई ॥ तहां तामैत्रेयीतैं याज्ञवल्क्यमुनिविषे एकदंडग्रहणमात्रकीविशेष
ताहोतीभई ॥ तादंडग्रहणरूपविशेषताकूंछोडिकै दूसरेशमदमादिकधर्म जैसेयाज्ञवल्क्यमुनिविषेहोतेभये ॥ तैसेहीधर्म मैत्रेयीवि
षेभीहोतेभये ॥ हेशिष्य ! याज्ञवल्क्यमुनिनें आपणीमैत्रेयीस्त्रीकेप्रति जाब्रह्मविद्याउपदेशकरीथी सासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनें तु
मारेप्रति कथनकरीहै ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारेकूंइच्छाहोवै सोहमारेप्रति तुम कथनकरो ॥ इतिश्रीमत्परमहंसप
रिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतात्मपुराणे बृहदारण्यकया
ज्ञवल्क्यमैत्रेयीसंवादो नाम सप्तमोऽध्यायः समाप्तः ॥७॥ श्रीगुरुभ्यो नमः॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः॥ श्रीशंकराचार्येभ्यो नमः॥

इतिश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे
सप्तमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ७ ॥

अथ आत्मपुराणे स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां
अष्टमाऽध्यायप्रारंभः ॥ ८ ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ अष्टमाध्यायप्रारंभः ॥
तहां याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषे यजुर्वेदके बृहदारण्यकउपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब
अष्टमअध्यायविषे तिसयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकरैहैं ॥ तहां पूर्वअध्यायोंविषे याज्ञवल्क्यमुनिनैं कथनक
रीजाब्रह्मविद्या ॥ ताब्रह्मविद्याकूं श्रवणकरिकै परमआश्चर्यकूंप्राप्तहुआ सोशिष्य आपणेगुरुकेप्रति पुनःयाप्रकारकाप्रश्नकरताभया
शिष्यउवाच ॥ हेभगवन्! याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्‌काअर्थ आपनैं निरूपणकऱ्या ॥ ताप्र
थमअध्यायविषे सनकादिकऋषियोंके तथा वामदेवादिकअधिकारीप्रजाके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं निरूप
णकरी ॥ और याआत्मपुराणके दूसरेअध्यायविषे तथातीसरेअध्यायविषे तिसऋग्वेदकेकौषीतकीउपनिषद्‌काअर्थ आपनैं निरू
पणकऱ्या ॥ तहां द्वितीयअध्यायविषे देवराजइंद्रके तथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरी ॥
और तीसरेअध्यायविषे राजाअजातशत्रुके तथाबालाकीब्राह्मणके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरी ॥
याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषे यजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्‌काअर्थ आपनैं कथनकरी ॥ और
चतुर्थअध्यायविषे एक स्त्रीवंश दो पुरुषवंश यातीनवंशोंकेऋषियोंका परस्पर भेद तथाअभेद आपनैं निरूपणकऱ्या ॥ तहां
दध्यङ्‌अथर्वणऋषिके तथाअश्विनीकुमारोंके तथा देवराजइंद्रके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरी ॥ तथा
अश्विनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेकरिकै तादध्यङ्मुनिकूं मस्तकच्छेदनरूपक्लेशकीप्राप्ति आपनैं कथनकरी ॥ और
याआत्मपुराणकेपंचमअध्यायविषे जनकराजाकेयज्ञविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथाआश्वलायनादिकऋषियोंके परस्परसंवादकरिकै
नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं निरूपणकरी ॥ तथा याज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरिकै शाकल्यब्राह्मणकामरण आपनैं कथनकऱ्या ॥
और याआत्मपुराणके षष्ठअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथाजनकराजाके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथन
करी ॥ और याआत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथामैत्रेयीस्त्रीके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं

कथनकरी ॥ हेभगवन्! तासप्तमअध्यायकेअंतविषे आपनैं यहवार्ता कथनकरीथी ॥ पूर्व शास्त्रवेत्तामुनीश्वर जगत्केकारणकावि
चारकरिकै जिसअविद्यारूपशक्तिकूंदेखतेभयेहैं ॥ तिसअविद्यारूपशक्तिकूं सोयाज्ञवल्क्यमुनि संन्यासआश्रमकूंधारणकरिकै मि
थ्यारूपकरिकैदेखताभया ॥ हेभगवन्! यहवार्ता सप्तमअध्यायकेअंतविषे आपनैं कथनकरीथी ॥ याकेविषे हमारेकूं ऐसीजि
ज्ञासाहोवैहै ॥ तिनमुनीश्वरोंका किसप्रकारकाविचार होताभया ? तथा तिनमुनीश्वरोंकी किसप्रकारकीसभा होतीभई ? तथा ते
मुनीश्वर किसप्रकारका आपणाआपणाअभिप्राय प्रगटकरतेभये ? तथा तेमुनीश्वर जगत्केकारणकाविचारकरिकै ब्रह्मकूंही ज
गत्काकारणरूप निश्चयकरतेभये ? अथवा किसीअन्यपदार्थकूं जगत्काकारणरूप निश्चयकरतेभये ? तथा तेसंपूर्णमुनीश्वर कि
ससिद्धांतकूं निश्चयकरतेभये ? हेभगवन्! यहसंपूर्णवार्ता आप कृपाकरिकै हमारेप्रति कथनकरौ ॥ हमारेतैंगुह्यराखणेकी कोई
वार्ता आपकूंहैनहीं ॥ इसप्रकार जबी शिष्यनैं गुरुकेप्रति प्रश्नकरा ॥ तबी सोश्रीगुरु कृपाकरिकै ताशिष्यकेप्रति याप्रकारकाव
चन कहताभया ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! तपकरिकै नष्टहोइगयेहैंपापकर्मजिसके ऐसाश्वेताश्वतरनामाऋषि पूर्वहोताभया ॥
और एककालविषे ताश्वेताश्वतरनामाऋषिकेआश्रमविषे बहुतमहात्मासंन्यासी एकठेहोइकै आवतेभये ॥ तहां श्वेताश्वतरनामाऋ
षिकूंदेखिकै तेमहात्मासंन्यासी ताश्वेताश्वतरनामाऋषिकेप्रति याप्रकारकेवचन कहतेभये ॥ हेवेदकीशाखाकेप्रवर्त्तकरणेहारे श्वे
ताश्वतरमुनि! तुमारेकल्याणहोवै ॥ हेश्वेताश्वतरमुनि! हमअतिथिसंन्यासी तुमारेआश्रमविषेआयेहैं ॥ यातैं आप ब्रह्मविद्यारूपभि
क्षा हमसंन्यासियोंकेताईंदेवो ॥ हेभगवन्! जाब्रह्मविद्या आपकूं ब्रह्माकेउपदेशतैं प्राप्तभईहै ॥ ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेवासते
हमसर्वसंन्यासी आपकेआश्रमविषेआयेहैं ॥ यातैं आप कृपाकरिकै साब्रह्मविद्या हमारेप्रति श्रवणकरावो ॥ ताब्रह्मविद्याकेश्रवण
करिकैही हमारेसंशयकीनिवृत्तिहोवैंगी ॥ हेभगवन्! शास्त्रोंकेभिन्नभिन्नसंप्रदायोंकूं अंगीकारकरिकै हमसंपूर्णसंन्यासी जगत्केका
रणोंकूं भिन्नभिन्न अंगीकारकरतेहैं ॥ याकारणतैं हमसंन्यासियोंका जगत्केकारणविषे बहुतकालपर्यंत विवादहुआहै ॥ परंतु यहप
दार्थही सर्वजगत्काकारणहै याप्रकारकानिश्चय अबपर्यंत हमसंन्यासियोंकूंहुआनहीं ॥ याकारणतैं हमसंपूर्णसंन्यासियोंनैं याज

गत्केकारणकानिश्चयकरणेवासते परस्पर याप्रकारकासंकेतकऱ्याहै ॥ यालोकविषे यजुर्वेदकेशाखाकाप्रवर्त्तक जोश्वेताश्वतरना माऋषिहै ॥ सोऋषि पक्षपाततैंरहितहै ॥ तथा ब्रह्माकीन्यांई सर्वशास्त्रोंकेजानणेहाराहै ॥ और शत्रुविषे तथाआपणेपुत्रविषे तथाआपणेशरीरविषे जिसकीसमानबुद्धिहै ॥ ऐसा श्वेताश्वतरनामामुनि याजगत्का जोकारणहै ॥ सोजगत्काकारण हमसर्वसंन्यासियोंनैं अंगीकारकरणा ॥ हेभगवन्! याप्रकारका परस्पर संकेतकरिकै हमसंपूर्णसंन्यासी आपकेसमीपआयेहैं ॥ यातैं आप ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै हमारेसंशयकीनिवृत्तिकरो ॥ हेशिष्य! तिनमहात्मासंन्यासियोंनैं जबी याप्रकार काप्रश्न श्वेताश्वतरनामाऋषिकेप्रति कऱ्या ॥ तबी सोश्वेताश्वतरमुनि तिनसंन्यासियोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ श्वेताश्वतरमुनिरुवाच ॥ हेसंन्यासियो! जैसे इदानींकालविषे जगत्केकारणकाविचारकरणेवासते तुमसंन्यासी एकठेहुए हो ॥ तैसे पूर्वभी किसीकालविषे तथाकिसीदेशविषे किसीनिमित्तपाइकै संपूर्णवेदवेत्ताब्राह्मण एकठेहोतेभये ॥ कैसेथेतेब्राह्मण? वेदोंविषे तथावेदकेषट्अंगोंविषे अत्यंतकुशलथे ॥ तथा शास्त्रोंकेअर्थकीकल्पनाकरणेविषे जिनोंकीबुद्धि अत्यंतकुशल थी ॥ तिनब्राह्मणोंविषेभीकोईकब्राह्मणतौ ब्रह्मविद्याविषेकुशलथे ॥ और कोईकब्राह्मण अन्यविद्यावोंविषेकुशलथे ॥ याप्रकार के संपूर्णब्राह्मण एकठेहोतेभये ॥ तिनब्राह्मणोंविषेभी जेब्रह्मवेत्ताब्राह्मणथे ॥ तेब्रह्मवेत्ताब्राह्मण सर्वअज्ञानीजीवोंकेउद्धारकरणेवासते तिनसर्वब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचनकहतेभये ॥ हेब्राह्मणों! वेदवेदांगविद्याविषेकुशल तथालोकोंकेअनुग्रहकरणेहारेजेतुमविद्वान्ब्राह्मणहो ॥ तिनतुमविद्वान्ब्राह्मणोंकायहसमाज जिसप्रकार लोकोंकेउपकारवासतेहोवै ॥ ऐसाकोईविचार तुम करो ॥ सोअज्ञानीलोकोंऊपरिउपकार तबीसिद्धहोवैगा ॥ जबी तुमसंपूर्णब्राह्मण ग्लानिकेकरणेहारीलौकिककथावोंकापरित्यागकरिकै वेदकेवचनोंकाविचारकरोंगे ॥ वेदवचनोंकेविचारतैंविना अज्ञानीजीवोंकाकल्याणनहींहोवैगा ॥ यातैं हेब्राह्मणो! जोतुमारेकूं इसलोकोंकेउपकारकरणेविषेप्रीतिहै तौ तुमसंपूर्णब्राह्मण लौकिककथावोंकापरित्यागकरिकै याजगत्केकारणकाविचारकरो ॥ हेसंन्यासियो! याप्रकारकावचन जबी तिनब्रह्मवेत्तावृद्धब्राह्मणोंनैं तासभावासीसर्वब्राह्मणोंकेप्रतिकह्या ॥ तबीतेसंपूर्णब्राह्मण

तिनब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंकेवचनकूंश्रवणकरिकै बहुतप्रसन्नहोतेभये॥ और तेसंपूर्णसभावासीब्राह्मण याजगत्केकारणकाश्रवणकरणेवा
सते तिनब्रह्मवेत्तावृद्धब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये॥ हेब्रह्मवेत्तावृद्धब्राह्मणों ? याजगत्काजोकारण आपनें निश्चयक
ऱ्याहोवै॥ सोकारण आप कृपाकरिकै हमसर्वब्राह्मणोंकेप्रति कथनकरो ॥ हमसंपूर्णब्राह्मण ताजगत्केकारणकाश्रवणकरेंगे ॥ हे
संन्यासियो ! याप्रकारकावचन जबी तिनसर्वब्राह्मणोंनें कह्या॥ तबी तेब्रह्मवेत्तावृद्धब्राह्मण तिनसर्वब्राह्मणोंकूं तर्कविषेकुशलदे
खिकै नानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिकै तिनब्राह्मणोंकेप्रति जगत्काकारण कहतेभये॥ हेसर्वब्राह्मणो! जोतुमकहो यहजगत् किसीका
रणतैंविनाहीउत्पन्नहोवैहै सोयहतुमाराकहणा संभवैनहीं ॥ काहेतैं? यालोकविषे जैसे पटादिककार्य तंतुआदिककारणोंतैंविना
उत्पन्नहोवैनहीं ॥ तैसे यहकार्यरूपजगत्भी किसीकारणतैंविना उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणों! जोतुम कारणतैंविनाही कार्य
कीउत्पत्ति अंगीकारकरौ ॥ तौ तंतुरूपकारणतैंविनाही पटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोणीचाहिये॥ किंवा कारणतैंविनाही जोकदाचित्
कार्यकीउत्पत्तिहोतीहोवै ॥ तौ पुत्ररूपकार्यकीप्राप्तिवासते स्त्रीका पुरुषकेसमीप गमन नहींहोणाचाहिये ॥ तथा पुरुषका स्त्रीकेस
मीप गमन नहींहोणाचाहिये॥ तथा धनकीप्राप्तिवासते निर्धनपुरुषकूं धनीपुरुषकीसेवा नहींकरीचाहिये ॥ तथा क्षुधापिपासा
कीनिवृत्ति करणेवासते याजीवोंका अन्नजलकीप्राप्तिवासते भ्रमण नहींहोणाचाहिये ॥ तथा अन्नजलकेभक्षणतैंविनाही याजी
वोंके क्षुधातृषाकीनिवृत्तिहोणीचाहिये ॥ तथा शीतआतपकीनिवृत्तिवासते किसीपुरुषकी वस्त्रगृहादिकोंकेसंपादनविषे प्रवृत्तिन
हींहोणीचाहिये॥ इसतैंआदिलैके सर्वव्यवहारोंकाअभावहोवैगा॥ जोकारणतैंविनाही कार्यकीउत्पत्तिअंगीकारकरौगे ॥ यातैं कार
णतैंविना किसीभीकार्यकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ याकारणतैं याजगत्रूपकार्यकाभी कोईकारण अंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ अब जेब
हिर्मुखवादी कार्यकीउत्पत्तिविषे कारणकेअभावकूंही कारणमानैंहैं तिनोंकेमतकाखंडनकरैहैं ॥ हेब्राह्मणो! जेबहिर्मुखवादी
बीजादिककारणोंकेअभावकूंही अंकुरादिककार्योंकेप्रति कारणमानैहैं॥ तिनवादियोंकेमतविषे यहपूर्वउक्तसर्वव्यवहारोंकूंअभा
वकीप्राप्तिरूपमहान्दूषण प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं तिनवादियोंकामत अत्यंतविरुद्धहै ॥ किंवा जेवादी कारणकेअभावकूंही कारण

मानैंहैं ॥ तिनवादियोंसैं यहपूछाचाहिये ॥ कार्यकीउत्पत्तिविषे जिसकारणकेअभावकूं तुमनैंकारणमान्याहै ॥ सोकारणकाअभाव अत्यंताभावरूपहै अथवा प्रागभावरूपहै ? अथवा प्रध्वंसाभावरूपहै अथवा अन्योन्याभावरूपहै ? तहां कार्यकीउत्पत्तिविषे कारणकाअत्यंताभाव कारणहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? यहजगत् विनाहीकारणतें उत्पन्न होवैहै यात्रकारकीप्रतिज्ञा तावादीनैं करीहै ॥ ताआपणीप्रतिज्ञाकेसिद्धकरणेवासते तावादीनैं कारणकेअभावकूं जगत्काकारणमान्याहै ॥ सोकारणकेअभावकूं जबी वादीनैं जगत्काकारण अंगीकारकऱ्या ॥ तबी विनाहीकारणतें यहजगत् उत्पन्नहोवैहै यहवादीकी प्रतिज्ञा मिथ्याहोवैंगी ॥ किंवा जोकारणकाअत्यंताभाव कार्यकीउत्पत्तिविषे हेतुहोवै तौ कारणकाअत्यंताभाव सर्वत्रसुलभहै ॥ यातें सर्वत्र ताकार्यकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और सर्वत्र सर्वकार्योंकीउत्पत्ति देखणेमेंआवतीनहीं ॥ यातें कार्यकीउत्पत्तिविषे कारणकेअत्यंताभावकूं कारणरूपतासंभवैनहीं ॥ इसप्रकार कारणतैंविनाही यहजगत्रूपकार्य उत्पन्नहोवैहै ॥ याप्रतिज्ञाकेहा निरूपदोष आगेप्रागभावादिकोंविषेभीजानिलेणा ॥ और जगत्रूपकार्यकीउत्पत्तिविषे कारणकाप्रागभाव कारणहै यहदूसरा पक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? जोवादी प्रागभावतैंही कार्यकीउत्पत्ति अंगीकारकरैहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ जिसकालविषे घटादिककार्योंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तिसकालविषे सोप्रागभाव नाशहोइजावैहै ॥ अथवा ताका लविषे सोप्रागभाव विद्यमानहोवैहै ॥ तहां घटादिरूपकार्यकीउत्पत्तिकालविषे सोप्रागभाव नाशहोइजावैहै ॥ यहप्रथमपक्ष जो वादीअंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोप्रागभाव घटादिककार्योंकीउत्पत्तितैंपूर्व नाशहोवैहै ॥ अथवा घटादिकका र्योंकीउत्पत्तितैंअनंतर सोप्रागभाव नाशहोवैहै ॥ तहां घटादिककार्योंकीउत्पत्तितैंपूर्व सोप्रागभाव नाशहोवैहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? जैसे यालोकविषे घटरूपकार्यकीउत्पत्तितैंपूर्व नाशकूंप्राप्तहुआकुलाल ताघटकाका रणहोवैनहीं ॥ तैसे घटादिककार्योंकीउत्पत्तितैंपूर्वही नाशकूंप्राप्तहुआ सोप्रागभाव तिनघटादिकोंकीउत्पत्तिविषे कारणहोइस कैनहीं ॥ जोकदाचित् पूर्वनष्टहुएताप्रागभावतैं घटादिककार्योंकीउत्पत्ति अंगीकारकरौंगे तौ पूर्वनष्टहुएकुलालतैंभी घटकोउ

त्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और नष्टहुआकुलाल घटकाकारणहोवैनहीं ॥ यातें घटादिककार्योंकीउत्पत्तितेंपूर्वे नाशकूंप्राप्तहुआ सोप्राग भाव तिनघटादिकोंकाकारणहोवैहै यहकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ और सोप्रागभाव घटादिककार्योंकीउत्पत्तितैंअनंतर नाशहोवैहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ घटादिककार्योंकीउत्पत्तितैंअनंतर नाशहोणेहारा सोप्राग भाव एकहै अथवा अनेकहैं? तहां सोप्रागभाव एकहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोएकप्रागभाव इसवर्तमानकालविषे नष्टहुआहै अथवा विद्यमानहै? तहां इसवर्तमानकालविषे सोएकप्रागभाव नष्टहुआहै यह प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? घटादिकसर्वकार्योंका कारणरूपजोएकप्रागभावहै ॥ सोप्रागभाव जो कदाचित् इसकालविषेनष्टहुआहोवै तौ कारणतैंविनाकार्यकीउत्पत्तिसंभवैनहीं ॥ यातैं इदानींकालविषे घटादिककार्योंकीउत्पत्ति नहींहोणीचाहिये ॥ और इदानींकालविषेभी घटादिककार्योंकीउत्पत्ति सर्वलोकोंकूंदेखणेविषेआवैहै ॥ यातैं इदानींकालविषे ता प्रागभावकानाश संभवैनहीं ॥ और अबीवर्तमानकालविषे सोएकप्रागभाव विद्यमानहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सो भीसंभवैनहीं ॥ काहेतें? कार्यकीउत्पत्तितैंअनंतर सोप्रागभाव नाशहोइजावैहै यहवार्ता संपूर्णवादीअंगीकारकरैंहै ॥ सोअबपर्यंतअनेककार्योंकेउत्पन्नहुएभी सोतुमाराप्रागभाव जबी नष्टनहींभया ॥ तबी सोतुमाराप्रागभाव कबीनष्टहोवैगा? किंवा याजगत् काकारणरूप सोएकप्रागभाव जबी नष्टहोवैगा ॥ तबी यहजगत्रूपकार्य पुनःउत्पन्नहोवैगा अथवा नहींउत्पन्नहोवैगा? तहां ताप्रागभावकेनाशतैंअनंतरभी यहजगत् उत्पन्नहोवैगा यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? तावादीनैं प्रागभावकूंही जगत्काकारणमान्याहै ॥ ताप्रागभावरूपकारणकेनाशहुएतैंअनंतरभी जोवादी जगत्कीउत्पत्ति अंगीकारकरैगा ॥ तौ कारणतैंविनाही कार्यउत्पत्ति माननीहोवैगी ॥ यातैं तावादीकेमतविषे तंतुतैंविनाही पटकीउत्पत्ति तथा अन्नजलकेभक्षणतैंविना क्षुधापिपासाकीनिवृत्ति इत्यादिकपूर्वउक्तसर्वदूषणोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ किंवा ताप्रागभावरूपकारणकेनाशतैंअनंतर जैसे विनाहीकारणतैं जगत्रूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैगी ॥ तैसे इदानींकालविषेभी तंतुआदिककारणोंतैंविनाही पटादिककार्योंकी

उत्पत्ति किसवासतेनहींहोती? इसकालविषे तंतुआदिककारणोंतैंविना पटादिककार्योंकीउत्पत्तिनहींहोती ॥ और आगे प्रागभा
वरूपकारणतैंविना जगत्रूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैंगी ॥ याअर्थकीसिद्धिकरणेवासतै वादीनैं कोईयुक्तिकहीचाहिये ॥ सोयाअर्थकेसि
द्धकरणेहारी कोईयुक्तिहैनहीं ॥ यातैं ताप्रागभावरूपकारणकेनाशतैंअनंतर यहजगत्रूपकार्य उत्पन्नहोवैगा यहवादीकाकहणा अ
त्यंतविरुद्धहै ॥ और ताप्रागभावरूपकारणकेनाशतैंअनंतर सोकार्यरूपजगत् नहींउत्पन्नहोवैगा यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकार
करै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं? ताप्रागभावरूपकारणकेनाशतैंअनंतर जोकदाचित् यहजगत्रूपकार्य नहींउत्पन्नहोताहोवै तौ श्र
वणादिकसाधनोंतैंविनाही जीवोंकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं मोक्षकीप्राप्तिवासते नानाप्रकारकेब्रह्मचर्यादिकसाधनकरणेनिष्फ
लहोवैंगे ॥ किंवा ताप्रागभावरूपकारणकेनाशतैंअनंतर जोकदाचित् पुनःसंसारकीउत्पत्तिनहींहोतीहोवै तौ कितनैंवादियोंके
प्रति अनादिरूपकरिकै तथा अनंतरूपकरिकै प्रसिद्धजोयहजगत्है ॥ ताजगत्विषे सांतरूपतासिद्धहोवैगी ॥ सांतरूपताकेसिद्ध
हुए ताजगत्विषे सादीपणाभी अवश्यसिद्धहोवैगा ॥ काहेतैं? यालोकविषे जोजोपदार्थ नाशरूपअंतवालाहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ उ
त्पत्तिवालाभीहोवैहै ॥ जैंसे घटपटादिकपदार्थ नाशवालेहैं ॥ यातैं तेघटादिकपदार्थ उत्पत्तिवालेभीहैं ॥ और जोवादी याजगत्कूं
उत्पत्तिवाला तथानाशवाला अंगीकारकरै तौ तिसवादीनैं जिनपुरुषोंकूंमुक्तमान्याहै ॥ तिनमुक्तपुरुषोंकूंभी पुनःसंसारकीप्रा
प्तिहोणीचाहिये ॥ और तिनमुक्तपुरुषोंकूंभी जोकदाचित् पुनःसंसारकीप्राप्तिहोवैगी तौ तावादीनैं जितनेकीमुक्तिकेसाधनमानैं
हैं॥ तेसंपूर्णसाधन व्यर्थताकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ इतनेकरिकै सोजगत्काकारणरूपप्रागभाव एकहै याप्रथमपक्षकाखंडनकर्या ॥ अब सो
जगत्काकारणरूपप्रागभाव अनेकहैं याद्वितीयपक्षकाखंडनकरैहैं ॥ सोकारणरूपप्रागभाव अनेकहैं यहदूसरापक्ष जोवादी अं
गीकारकरै ॥ तावादीसैंयहपूछाचाहिये ॥ यालोकविषे कोईभीवादी स्वरूपतैंअभावकाभेद अंगीकारकरतानहीं ॥ किंतु प्रतियोगी
केभेदतैंही ताअभावकाभेद सर्ववादी अंगीकारकरैहैं ॥ जैंसे घटपटरूपप्रतियोगीकेभेदतैं घटाभाव पटाभावका परस्परभेदहोवैहै ॥
तैंसे ताप्रागभावकाभेदभी प्रतियोगीकेभेदतैंही अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ सोतिसप्रागभावकाप्रतियोगीपणा किसविषेहै! कार

णोंविषेहै अथवा कार्योंविषेहै? तहां ताप्रागभावकाप्रतियोगीपणा कारणोंविषेहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोसं भवैनहीं ॥ काहेतें? सोप्रागभाव वादीकेमतविषेअनादिहै ॥ यातें ताअनादिप्रागभावका कोईकारणसंभवैनहीं ॥ और ताप्रागभा वकाप्रतियोगीपणा कार्योंविषेहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें? जोवादीकार्योंविषे प्रागभावका प्रतियोगीपणा अंगीकारकरैगा तौ कार्यकेअभावविषे कारणरूपतासिद्धहोवैगी ॥ और तावादीनें कार्यकेअभावविषे कारणरूपता अंगीकारकरीनहीं ॥ किंतु तावादीनें कारणकेअभावविषे कारणरूपता अंगीकारकरी है ॥ सावादीकीप्रतिज्ञाहानिहोवैगी ॥ और तावादीनें अंगीकारकरी जोकारणकेअभावविषे कारणरूपता ॥ साजबी सिद्धनहींभई तबी कारणतैंविनाही कार्यकी उत्पत्ति अंगीकारकरणीहोवैगी ॥ यातें कारणतेंविना कार्यकीउत्पत्तिविषे जेपूर्व सर्वव्यवहारोंकेअभावकीप्राप्तिरूप दूषण कहेहैं ॥ तेसंपूर्णदूषण यापक्षविषेप्राप्तहोवैंगे ॥ किंवा जोवादी प्रागभावकूंहीकारणमानैहै ॥ तावादीसें यहपूछाचाहिये ॥ ताप्रागभावविषे प्रागभावत्वरूपकरिकै कारणताहै ॥ अथवा घटप्रागभावत्व पटप्रागभावत्व इत्यादिकविशेषरूपोंकरिकै ताप्रा गभावविषे कारणरूपताहै? तहां प्रागभावत्वरूपकरिकै ताप्रागभावविषे कारणरूपताहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतें? जोप्रागभावत्वरूपकरिकै ताप्रागभावकूंकारणताहोवै तौ घटकेप्रागभावतें पटादिककार्योंकीभी उत्पत्तिहो णीचाहिये ॥ और घटकेप्रागभावतें पटादिककार्योंकीउत्पत्तिहोवैनहीं यातें प्रागभावत्वरूपकरिकै ताप्रागभावविषे कारणरूपता संभवैनहीं ॥ और घटप्रागभावत्व पटप्रागभावत्व इत्यादिकविशेषरूपोंकरिकै ताप्रागभावकूं कारणताहै यहदूसरापक्ष जोवा दी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? घटकाप्रागभाव घटकाकारणहै तथा पटकाप्रागभाव पटकाकारणहै याकहणेतें यहअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ प्रतियोगितासंबंधकरिकै घटरूपविशेषणविशिष्ट जोप्रागभावहै सोप्रागभाव घटकाकारणहै ॥ तथा पटरू पविशेषणविशिष्टजोप्रागभावहै सोप्रागभाव पटकाकारणहै ॥ सोप्रागभावविषे घटरूपविशेषणकरिकैविशिष्टरूपता तबी सिद्धहो वै ॥ जबी घटविशिष्टप्रागभावहै याप्रकारकाविशिष्टज्ञानहोवै ॥ और सोविशिष्टज्ञान तबी उत्पन्नहोवै ॥ जबी प्रथम घटरूपविशे

षणकाज्ञानहोवै ॥ काहेतें ? यालोकविषे जोजोविशिष्टज्ञानहोवैहै ॥ सोसोविशिष्टज्ञान विशेषणकेज्ञानकरिकैजन्यहोवैहै ॥ विशेषण
केज्ञानतैंविना विशिष्टज्ञानहोवैनहीं ॥ जैसे दंडरूपविशेषणकेज्ञानहुएतैंअनंतरही यहदंडवालापुरुषहै याप्रकारकाविशिष्टज्ञानहोवै
है ॥ दंडरूपविशेषणकेज्ञानतैंविना यहदंडवालापुरुषहै याप्रकारकाविशिष्टज्ञानहोवैनहीं ॥ यातें घटविशिष्टप्रागभावकेज्ञानविषेभी
घटरूपविशेषणकाज्ञानअवश्यचाहिये ॥ और जिसकालविषे घटकाप्रागभावहै ॥ तिसकालविषे घटरूपविशेषण उत्पन्नभयानहीं ॥
यातें ताघटविषे ताप्रागभावकीविशेषणरूपतासंभवैनहीं ॥ वर्तमानपदार्थही विशेषणरूपहोवैहै ॥ यातें घटप्रागभावत्वरूपकरिकै
तथापटप्रागभावत्वरूपकरिकै ताप्रागभावविषे कारणरूपतासंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ! हमारेमतविषे तुमनैं यहजोदूषणदि
या सोदूषण हमारेमतविषे तबीप्राप्तहोवै ॥ जबी हमवादी विशिष्टज्ञानविषे विशेषणज्ञानकूंकारणमानतेहोवै ॥ सोहम विशिष्टज्ञान
विषे विशेषणज्ञानकूं कारणमानतेनहीं ॥ किंतु हमवादीतौ कारणकेअभावकूंही सर्वत्र कारणमानते हैं ॥ यातें सोतुमारादूषण हमारे
मतविषे प्राप्तहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादी ! विशिष्टज्ञानविषे विशेषणज्ञानकूंकारणता सर्ववादियोंनेंअंगीकारकरी है ॥ ताकारण
ताकूं जोतू नहींअंगीकारकरैगा तौ विशेषणज्ञानतैंविना दूसरेकिसीउपायकरिकै सोविशिष्टज्ञानहोतानहीं ॥ यातें घटविशिष्टप्रागभा
वहै याप्रकारकाविशिष्टज्ञान तुमारेमतविषे कदाचित्भी नहींहोवैगा ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ! जैसे वंध्यापुत्रहै याप्रकारकेशब्दतें वं
ध्यापुत्रका विकल्परूपज्ञानहोवैहै ॥ तैसे प्रागभावकालविषे ताघटकेअविद्यमानहुएभी ताघटरूपविशेषणका विकल्परूपज्ञान संभ
वहोइसकैहै ॥ ताविकल्परूपविशेषणज्ञानतैंअनंतर घटविशिष्टप्रागभावहै याप्रकारकाविशिष्टज्ञान संभवैहै ॥ समाधान ॥ हेवा
दी ! तुमारेमतविषे जैसे वंध्यापुत्र अत्यंतअसत्यहै ॥ तैसे प्रागभावकालविषे सोघटभी अत्यंतअसत्यहै ॥ यातें जैसे वंध्यापुत्रका
प्रागभावहै याप्रकारकेविशिष्टज्ञानहुएभी ताप्रागभावविषे वंध्यापुत्रकीकारणतानहीं है ॥ तैसे घटकाप्रागभावहै याप्रकारकेविशिष्ट
ज्ञानहुएभी ताप्रागभावविषे घटकीकारणता नहींसंभवैगी ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ! जिसकालविषे घटरूपकार्य उत्पन्ननहींभया ॥
तिसकालविषे यद्यपि ताप्रागभावका ताघटकेसाथसंबंधनहीं है ॥ तथापि जबी सोघटरूपकार्य उत्पन्नहोवैगा ॥ तबी ताघटरूपविशे

पणकेसाथ ताप्रागभावकासंबंधहोवैगा ॥ ताभावीसंबंधकूं अंगीकारकरिकै ताघटकीउत्पत्तितैंपूर्वभी घटविशिष्टप्रागभावहै याप्रकारकाकथनसंभवैहै ॥ जैसे बाल्यअवस्थाविषे राजाकेपुत्रका यद्यपि राजापणकेसाथ संबंधनहींहै ॥ तथापि यौवनअवस्थाविषे ता बालकका राजापणकेसाथ संबंधहोवैगा ॥ यातैं ताभावीसंबंधकूंलेके सर्वलोक ताबालककूंराजाकहेहैं ॥ समाधान ॥ हेवादी ! यौवनअवस्थाविषे ताराजाकेपुत्रका ताराजापणेकेसाथ संबंधहोवैहै ॥ यातैं ताभावीसंबंधकूंअंगीकारकरिकै बाल्यअवस्थाविषे यद्यपि ताराजाकेपुत्रविषे राजापणकाकथन संभवैहै ॥ तथापि भावीसंबंधकूंअंगीकारकरिकै ताप्रागभावविषे घटविशिष्टरूपताकाकथन संभवैनहीं ॥ काहेतैं ? जिसकालविषे घटरूपकार्य उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसकालविषे जोकदाचित् सोप्रागभावरहताहोवै तौ ताप्रागभावका घटकेसाथसंबंधसंभवै ॥ परंतु घटरूपकार्यकीउत्पत्तितैंअनंतर सोप्रागभावरहतानहीं ॥ यातैं भावीसंबंधकूंअंगीकारकरिकैभी ताघटकीउत्पत्तितैंपूर्व ताप्रागभावविषे घटविशिष्टरूपतासंभवैनहीं ॥ किंवा जोवादी घटादिकरूपकार्यकीउत्पत्तितैं अनंतर ताकार्यकेसाथ ताप्रागभावकासंबंध अंगीकारकरै ॥ तौ ताप्रागभावविषे नित्यरूपतासिद्धहोवैगी ॥ काहेतैं ? प्रागभावकूं अंगीकारकरणेहारे जितनेकीवादीहैं ॥ तेवादी कार्यकीउत्पत्तितैं ताप्रागभावकानाशमानेहैं ॥ ताकार्यकीउत्पत्तितैंभी जबी ताप्रागभावकानाश नहींकऱ्या ॥ तबी कार्यकीउत्पत्तितैंविना दूसराकोईपदार्थ ताप्रागभावकेनाशकरणेहाराहैनहीं ॥ यातैं सोप्रागभाव नित्यहीहोवैगा ॥ और जोपदार्थ तीनकालोंविषे अबाधितहोवै ताकानाम नित्यहै ॥ याप्रकारकीनित्यरूपता ताप्रागभावविषेसंभवै नहीं ॥ काहेतैं ? कार्यकीउत्पत्तितैंपूर्वकालविषे ताकार्यकेउपादानकारणविषेरहणेहारा जोअभावहै ॥ ताकानाम प्रागभावहै ॥ याप्रकारका प्रागभावशब्दकाअर्थ तानित्यप्रागभावविषेघटैगानहीं ॥ किंवा जोवादी ताप्रागभावकूं स्वरूपतैंनित्यमानैगा ॥ तौ तानित्यप्रागभावविषे अनेकरूपता नहींसंभवैगी ॥ काहेतैं ? जोवादी ताप्रागभावकूं नित्यरूपमानिकै अनेकरूपमानैहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ प्रतियोगिरूपउपाधिकेभेदकरिकैही अभावकाभेदहोवैहै ॥ स्वरूपतैं ताअभावकाभेदहोवैनहीं ॥ यातैं तानित्यप्रागभावकाजोभेदहै सो नित्यपदार्थरूपउपाधिकेभेदतैंहोवैहै ॥ अथवा अनित्यपदार्थरूपउपाधिकेभेदतैंहोवैहै ? तहां नित्यप

दार्थरूपउपाधिकेभेदतें तानित्यप्रागभावकाभेदहोवैहै यहप्रथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? जोपदार्थ प्रागभावका तथाप्रध्वंसाभावका अप्रतियोगीहोवैहै सोपदार्थ नित्यहोवैहै ॥ जैसे आत्मा प्रागभावका तथाप्रध्वंसाभावका अप्रतियोगीहै ॥ यातें सोआत्मा नित्यहै ॥ ऐसेनित्यपदार्थोंविषे ताप्रागभावकीप्रतियोगिता संभवैनहीं ॥ और प्रतियोगीकेभेदतैंही अभावकाभेदहोवैहै ॥ यातें तानित्यपदार्थरूपउपाधिकेभेदतें तानित्यप्रागभावकाभेद संभवैनहीं ॥ और अनित्यपदार्थरूपउपाधिकेभेदतें तानित्यप्रागभावकाभेदहोवैहै ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? जैसे अनित्यघटादिकपदार्थोंकेभेदतें प्रध्वंसाभावकाभेदहै ॥ तैसे अनित्यघटादिकपदार्थोंकेभेदतें जोकदाचित् ताप्रागभावकाभेद अंगीकारकरोगे तौ ताप्रागभावतें अतिरिक्त प्रध्वंसाभावकाअंगीकारकरणा व्यर्थहोवैगा ॥ किंतु सोप्रागभावही प्रध्वंसाभावरूपहोवैगा ॥ और जोवादी ताप्रागभावकूं प्रध्वंसाभावरूपभीअंगीकारकरै तौ ताप्रागभावविषे कारणरूपता नहींसिद्धहोवैगी ॥ किंतु जैसे प्रध्वंसाभाव घटादिककार्योंकाविरोधीहोवैहै ॥ तैसे सोप्रागभावभी घटादिककार्योंकाविरोधीहीहोवैगा ॥ किंवा याप्रसंगविषे जोवादी कारणकेअभावकूं प्रागभावरूपमानैंहै ॥ तावादीकेमतविषेभी यहसंपूर्णपूर्वउक्तदूषण प्राप्तहोवैहैं ॥ काहेतें ? जिसकारणकेप्रागभावकूं कारणरूपताहै सोकारण जोनित्यहोवैगा तौ तानित्यकारणविषे ताप्रागभावकीप्रतियोगिता नहींहोवैगी ॥ और सोकारण जोअनित्यहोवैगा ॥ तौ ताअनित्यकारणकेप्रागभावकूं प्रध्वंसाभावरूपता सिद्धहोवैगी ॥ और जैसे घटादिककार्योंकाप्रध्वंसाभाव तिनघटादिककार्योंकाविरोधीहोवैहै ॥ तैसे मृत्तिकादिककारणोंकाप्रध्वंसाभावभी घटादिककार्योंकाविरोधीहीहोवैहै ॥ यातें प्रध्वंसाभावरूप ताकारणकेप्रागभावविषे कारणरूपता संभवैनहीं ॥ इतनैंकरिकै कारणकाप्रागभाव जगत्काकारणहै ॥ याद्वितीयपक्षकाखंडनकऱ्या ॥ अब कारणकाप्रध्वंसाभाव जगत्काकारणहै यातृतीयपक्षकाखंडनकरैहैं ॥ तहा नास्तिकवादीकेअभिप्रायकूंजानणेवासते प्रथम सिद्धांती तावादीसैंपूछेहैं ॥ हेवादी ! यालोकविषे नित्यरूपकरिकै तथाअनित्यरूपकरिकै प्रसिद्ध जेमृत्तिकातंतुआदिकभावपदार्थहैं ॥ तिनभावपदार्थोंकूंही संपूर्णलोक घटपटादिकोंकाकारणमानैंहैं ॥ तिनभावकारणोंकापरित्यागकरिकै तिनभावकारणोंकेअभावकूं जो

तुमनैं कारणमान्याहै ॥ सोकिसप्रयोजनकीसिद्धिवासते मान्याहै? सोप्रयोजन तू हमारेप्रतिकह ॥ याप्रकार सिद्धांतीकरिकै पूछाहुआसोनास्तिकवादी याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेसिद्धांती! यालोकविषे जबपर्यंत बीजादिककारणोंकानाशनहींहोवैहै ॥ तबपर्यंत अंकुरादिककार्योंकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु पृथिवीजलादिकोंकेसंबंधतैं जबी ताबीजकानाशहोवैहै ॥ तबीही ता अंकुरादिककार्योंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ याप्रकारकीव्यवस्थाकूंदेखिकै हमवादी बीजादिकभावपदार्थोंकूं अंकुरादिककार्योंकेप्रति कारण नहींमानैंहैं ॥ किंतु तिनबीजादिकभावपदार्थोंकेअभावकूंही हम अंकुरादिकोंकाकारणमानतेहैं ॥ याप्रकारके तावादीकेअभिप्रायकूंश्रवणकरिकै सोसिद्धांती तावादीकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेवादी! बीजादिकोंका जबी नाशहोवैहै ॥ तबी अंकुरादिककार्योंकीउत्पत्तिहोवैहै याप्रकारका जोतुमनैं वचनकह्याहै ॥ तातुमारेवचनतैं यहतुमाराअभिप्राय जान्याजावै ॥ बीजादिककार्योंकाप्रागभाव अंकुरादिकोंकाकारणनहीं ॥ किंतु बीजादिककारणोंकाप्रध्वंसाभावही अंकुरादिकोंकाकारणहै ॥ सो बीजादिककारणोंकाप्रध्वंसाभावभी अंकुरादिरूपकार्यकीउत्पत्तिविषे कारणरूपहोवैनहीं ॥ काहेतैं? जोकारणकाप्रध्वंसाभाव कार्यकीउत्पत्तिविषे हेतुहोवै तौ याजीवोंकीजठराग्निविषे बीजादिकअनेककारणोंका प्रध्वंसाभाव होवैहै ॥ यातैं ताबीजादिककारणोंकेप्रध्वंसाभावतैं ताउदरविषे अंकुरादिककार्योंकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और याजीवोंकेउदरविषे अंकुरादिककार्योंकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं कारणकेप्रध्वंसाभावविषे कारणरूपतासंभवैनहीं ॥ किंवा जोपदार्थ जिसपदार्थकीउत्पत्तिकरैहै ॥ सोपदार्थ तापदार्थकाकारणहोवैहै ॥ जैसे तंतु पटरूपकार्यकीउत्पत्तिकरैंहैं ॥ यातैं तेतंतु तापटकाकारणहैं ॥ और जोवादी बीजादिकोंविषे अंकुरादिककार्योंकीजनकता नहींअंगीकारकरैहै ॥ तावादीकेमतविषे बीजादिकोंविषे कारणरूपताहीनहीं ॥ यातैं अकारणरूपबीजादिकोंकेअभावकूं जोवादी कारणभाव यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ तावादीका सोवचनकैसा है? जैसे कोईपुरुषकहै हमारेमुखविषेजिह्वानहींहै ॥ याप्रकारकावचन जैसे वदतोव्याघातदोषवालाहै ॥ तैसे सोवादीकावचनभी वदतोव्याघातदोषवालाहै ॥ जाअर्थकीसिद्धिकरणेवासते जोवचन उच्चारणकरिये ॥ तावचनकरिकै तिसीअर्थकाबाध जहांहोवै

ताकानाम वदतोव्याघातहै ॥ किंवा जोवादी बीजादिककारणोंकेअभावकूं अंकुरादिककार्योंकीउत्पत्तिविषेकारणमानैहै॥ तावादीकेमतविषे अनवस्थादोषकीभीप्राप्तिहोवैहै ॥ काहेतें ? जैसे तावादीकेमतविषे बीजादिकोंकाअभाव कारणाभावरूपहै ॥ यातें सोबीजाभाव अंकुरादिकोंकाकारणहै ॥ तैसे तिनबीजादिकोंकेअभावकाजोअभावहै सोभी बीजाभावरूपकारणकाअभावरूपहै॥ यातें सोबीजादिकोंकेअभावकाअभावभी अंकुरादिकोंकाकारणहोवैगा ॥ इसप्रकार तृतीयअभाव चतुर्थअभावतेंआदिलैके संपूर्णअभावोंकूं कारणकाअभावरूपहोणेतें अंकुरादिककार्योंकीउत्पत्तिविषे कारणरूपताहोवैगी ॥ याप्रकार कारणोंकीअनवस्था प्राप्तहोवैगी ॥ किंवा कारणकाप्रध्वंसाभाव कार्यकीउत्पत्तिविषे कारणहै ॥ यहवादीकाकहणा प्रत्यक्षप्रमाणतेंभी विरुद्धहै ॥ काहेतें? यालोकविषे कुंडल कंकणादिक कार्योंकीउत्पत्तितेंअनंतर तिनकुंडलकंकणादिककार्योंविषे सर्वलोकोंकूं सुवर्णरूपकारण प्रत्यक्षप्रतीतहोवैहै ॥ तथा पटरूपकार्यकीउत्पत्तितेंअनंतर तापटरूपकार्यविषे सर्वलोकोंकूं तंतुरूपकारण प्रत्यक्षप्रतीतहोवैहै ॥ इसतेंआदिलैके जेजेलोकविषेभावकार्यहैं ॥ तिनकार्योंविषे आपणाआपणाउपादानकारण अनुगतहोइकैप्रतीतहोवैहै ॥ जोकदाचित् कारणकाप्रध्वंसाभावहुआहोवै तौ कुंडलकंकणादिककार्योंविषे सुवर्णरूपकारण नहींप्रतीतहोणाचाहिये ॥ तथा पटरूपकार्यविषे तंतुरूपकारण नहींप्रतीतहोणाचाहिये ॥ यातें कार्यकीउत्पत्तिविषे कारणकाप्रध्वंसाभाव कारणहै यहवादीकाकहणा सर्वलोकोंकेअनुभवतेंविरुद्धहै ॥ किंवा पूर्वजोवादीनें बीजकेनाशतें अंकुररूपकार्यकीउत्पत्तिकहीथी ॥ सोभी बीजरूपकारणकेनाशतें अंकुरकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु ताबीजकेनाशहुएभी ताबीजकेअंतरवर्तमान जेपार्थिवअवयवहैं ॥ तेअवयव नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातें तेबीजकेअवयवही ताअंकुररूपकार्यकीउत्पत्तिविषे कारणहैं ॥ किंवा कारणकाप्रागभावही जगत्काकारणहै याद्वितीयपक्षविषे जेजेपूर्वविकल्पकऱ्येथे ॥ तथा तिनविकल्पोंविषे जेजेपूर्वदूषणदीयेथे ॥ तेसंपूर्णविकल्प तथातेसंपूर्णदूषण याप्रध्वंसाभावपक्षविषे तथाअत्यंताभावपक्षविषे तथा अन्योन्याभावपक्षविषेभी प्राप्तहोइसकैहैं ॥ याकारणतेंभी ताकारणकेप्रध्वंसाभावविषे जगत्कीकारणरूपतासंभवैनहीं ॥ और यहघट पटतेंभिन्नहै तथायहपट घटतेंभिन्नहै याप्रकारकेज्ञानकाविषयजोभेदरूपअन्योन्या

भावहै ॥ ताअन्योन्याभावविषे जगत्कीकारणता किसीभीवादीकूंप्रतीतहोतीनहीं ॥ यातें कारणकाअन्योन्याभाव जगत्काकारण है यहचतुर्थपक्षभी संभवैनहीं ॥ अब शून्यवादीकेमतकाखंडनकरैहैं ॥ हेब्राह्मणो! पूर्वउक्तदूषणोंकीप्राप्तिहोणेतें जबी ताअत्यंताभावविषे तथाप्रागभावविषे तथाप्रध्वंसाभावविषे तथाअन्योन्याभावविषे याजगत्कीकारणता नहींसिद्धभई ॥ तबी शून्यकूंभी याजगत्कीकारणतासंभवैनहीं ॥ काहेतें? जेवादी शून्यकूंही जगत्काकारणमानैहैं ॥ तेवादी अत्यंताभावकूंही शून्य यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ और सोअत्यंताभावरूपशून्य वंध्यापुत्रकीन्यांई अत्यंतअसत्यहै ॥ यातें जैसे वंध्यापुत्रकूं किसीकार्य कीउत्पत्तिविषे कारणरूपतानहींहै ॥ तैसे ताअत्यंताभावरूपशून्यकूंभी किसीकार्यकीउत्पत्तिविषे कारणरूपता संभवैनहीं ॥ किंवा जोवादी ताअत्यंताभावरूपशून्यकूंही कारणमानैहै ॥ तावादीसैंयहपूछाचाहिये ॥ ताशून्यरूपअत्यंताभावका कौनप्रतियोगी है ॥ कार्यप्रतियोगीहै अथवा कारणप्रतियोगीहै अथवा कार्यकारण दोनोंप्रतियोगीहैं? तहां ताशून्यरूपअत्यंताभावका कार्य प्रतियोगीहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? तावादीनैं कार्यकीउत्पत्तिविषे कारणकेअभावकूं हेतु मान्याहै ताकापरित्यागकरिकै सोवादी जोकार्यकेअभावकूंकारणमानैंगा तौ तावादीकेपूर्वप्रतिज्ञाकीहानिहोवैगी ॥ तथा आपणे सिद्धांतकापरित्यागरूप अपसिद्धांतदोषभी प्राप्तहोवैगा ॥ किंवा जोवादी कार्यकेअत्यंताभावकूं कारणमानैहै ॥ तावादीसें यह पूछाचाहिये सोकार्यकाअत्यंताभाव लोकप्रसिद्धकारणोंकीअपेक्षातेंविनाही ताकार्यकीउत्पत्तिकरैहै ॥ अथवा जैसे दंडरूपकारण चक्रकुलालादिककारणोंकीअपेक्षाकरिकै घटरूपकार्यकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तैसे सोकार्यकाअत्यंताभावभी लोकप्रसिद्धकारणोंकीअपेक्षाकरिकैही ताकार्यकीउत्पत्तिकरैहै ॥ तहां सोकार्यकाअत्यंताभाव लोकप्रसिद्धकारणोंतैंनिरपेक्षहुआ कार्यकूंउत्पन्नकरैहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं॥ काहेतें? पटादिककार्योंकीउत्पत्तितेंपूर्व तिनपटादिककार्योंकाअत्यंताभाव जैसे तंतुआदिकोंविषेहै ॥ तैसे अन्यपदार्थोंविषेभीहै ॥ यातें तिनसर्वपदार्थोंविषे पटादिकसर्वकार्योंकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और सर्वपदार्थोंविषे सर्वकार्योंकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ और लोकप्रसिद्धकारणोंकीअपेक्षाकरिकैही सोकार्यकाअत्यंताभाव ताकार्यकूंउत्पन्नकरैहै

यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें? तावादीकेमतविषे जैसे वंध्यापुत्र अत्यंतअसत्यहै ॥ तैसे घटपटादिककार्यभी आपणीउत्पत्तितैंपूर्व अत्यंतअसत्यहै ॥ यातैं तावादीकेमतविषे जैसे लोकप्रसिद्धदंडचक्रकुलालादिककारणोंकरिकै सहकृत ताघटकेअत्यंताभावतैं घटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तैसे लोकप्रसिद्धवंध्यास्त्रीरूपकारणकरिकैसहकृत तावंध्यापुत्रकेअत्यंताभावतैं तावंध्यापुत्रकीभी उत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और वंध्यास्त्रीतैं पुत्रकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं इतरकारणसापेक्ष ताकार्यके अत्यंताभावविषे कारणरूपता संभवैनहीं ॥ **शंका** ॥ हेसिद्धांती! जिसपदार्थविषे कार्यकेउत्पत्तिकरणेकीशक्तिहोवैहै ॥ सोपदार्थही ताकार्यकीउत्पत्तिविषे कारणहोवैहै ॥ जैसे मृत्तिकादंडचक्रादिकपदार्थोंविषे घटरूपकार्यकेउत्पत्तिकरणेकीशक्तिरहैहै ॥ यातैं तेमृत्तिकादंडचक्रादिकपदार्थ ताघटकेकारणहैं ॥ और वंध्यास्त्रीविषे पुत्ररूपकार्यकेउत्पत्तिकरणेकीशक्तिहैनहीं ॥ यातैं सावंध्यास्त्री पुत्रकाकारणहीनहीं ॥ **समाधान** ॥ हेवादी! जिसशक्तिकरिकै कार्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ ताशक्तिकाक्यास्वरूपहै ॥ सोतुमारेकूंकह्याचाहिये ॥ **शंका** ॥ हेसिद्धांती! जिसकेबलतैं सोकारण कार्यकीउत्पत्तिकरैहै ॥ ताकानाम शक्तिहै ॥ **समाधान** ॥ हेवादी! जिसशक्तिकेबलतैं सोकारण कार्यकीउत्पत्तिकरैहै ॥ साशक्ति ताकारणतैं भिन्नहै अथवा अभिन्नहै? तहां साशक्ति ताकारणतैंभिन्नहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ साशक्ति ताकारणकीअपेक्षातैंविनाही कार्यकाजनकहै ॥ अथवा ताशक्तिकीन्यांई सोकारणभी ताकार्यकाजनकहै? तहां साएकशक्तिही कार्यकाजनकहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? ताशक्तितैंभिन्न जितनेलोकप्रसिद्धकारणहैं ॥ तेकारण जोकदाचित् कार्यकेजनकनहींहोवैंगे तौ तिनलोकप्रसिद्धकारणोंविषे कारणरूपताहीनहींरहैंगी ॥ और तेलोकप्रसिद्धकारणभी कार्यकेजनकहैं यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें? यालोकप्रसिद्धकारणोंकरिकैभी जबी कार्यकीउत्पत्तिहोइसकैहै ॥ तबी ताशक्तिकूंकारणमानणा व्यर्थहोवैगा ॥ और साशक्ति ताकारणतैंअभिन्नहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें? साशक्ति जोकदाचित् ताकारणतैंअभिन्नहोवैगी तौ शक्ति कारण यहदोनोंनाम एकहीअर्थकेवाचकहोवैंगे ॥ याकारणतैंभी साशक्ति व्यर्थहोवैगी ॥ इसप्र

कार जबी ताशक्तिकीसिद्धिनहींभई ॥ तबी जोवादी कार्यकेअत्यंताभावकूंही कारणमानैहै ॥ तावादीकेमतविषे घटादि ककार्योंकीन्यांई वंध्यापुत्रकीभी उत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ! आपणीउत्पत्तितैंपूर्व यद्यपि तेघटपटादिककार्य अत्यंतअसत्यहैं ॥ तथापि तेघटपटादिककार्य मृत्तिकातंतुआदिककारणोंतैंही उत्पन्नहोवैहैं ॥ और वंध्यास्त्रीतौं पुत्रकीउत्पत्तिविषेकारणहीनहीं ॥ यातैं तावंध्यास्त्रीतैं पुत्रकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादी ! वंध्यास्त्रीविषे पुत्रकीकारणता नहींहै याप्रकारकाकथनकरणेहाराजोतूहै ॥ तातुमारेसें हम यहपूछतेहैं ॥ तावंध्याविषेपुत्रकीकारणतानहींहै याकेविषेकौन हेतुहै? हेवादी ! जोतूयहकहैं ॥ पुत्ररूपकार्यकाजोअदर्शनहै सोईही ताकेविषेहेतुहै ॥ तौ हमसिद्धांती तुमारेतैंयहपूछतेहैं ॥ तापुत्ररूपकार्यका जोदर्शननहींहोता ॥ ताकेविषेभी कौनहेतुहै? हेवादी ! सोतूयहकहैं ॥ वंध्यापणा तथा वंध्याविषेकारणताकाअभाव यहदोनों तापुत्ररूपकार्यकेअदर्शनविषेहेतुहैं ॥ सोयहतुमाराकहणासंभवैनहीं ॥ काहेतें? तावंध्यास्त्रीविषे जबी वंध्यापणासिद्धहोवै ॥ तथा पुत्रकीकारणताकाअभाव सिद्धहोवै ॥ तबी तावंध्यापुत्रका अदर्शनसिद्धहोवै ॥ और जबी तावंध्यापुत्रकाअदर्शनसिद्धहोवै ॥ तबी तावंध्यास्त्रीविषे वंध्यापणा तथापुत्रकेकारणताकाअभाव सिद्धहोवै ॥ याप्रकारकेअन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ किंवा हेवादी ! जैसे सत्कार्यवादीसांख्यादिक घटादिककार्योंकीउत्पत्तितैंपूर्व मृत्तिकादिककारणोंविषे तिनघटादिककार्योंकी सूक्ष्मरूपकरिकैस्थितिमानैहैं ॥ तैसे तुमअसत्कार्यवादी अंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु तुमारेमतविषेतौ घटादिककार्योंकीउत्पत्तितैंपूर्व तिनघटादिककार्योंका जैसे मृत्तिकादिककारणोंविषेअत्यंताभावरहैहै ॥ तैसे तंतुआदिकोंविषेभी अत्यंताभावहीरहैहै ॥ यातैं तुमारेमतविषे जैसे मृत्तिकातैंघटकीउत्पत्तिहोवैहै तैसे तंतुवोंतैंभी घटकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ इसप्रकार संपूर्णकार्य सर्वत्र उत्पन्नहोणेचाहिये ॥ और सर्वकार्योंकी सर्वत्र उत्पत्तिहोतीनहीं ॥ याकारणतैंभी तुमारामत असंगतहै ॥ किंवा जोवादी घटादिककार्योंकूं अत्यंतअसत्यमानैहै तावादीकेमतविषे मृत्तिकादिकसत्यपदार्थोंकूं घटादिकोंकीकारणरूपता सिद्धनहींहोवैगी ॥ काहेतैं? समानस्वभाववालेपदार्थोंकाही परस्पर कार्यकारणभावहोवैहै ॥ विलक्षण

स्वभाववालेपदार्थोंका परस्पर कार्यकारणभावहोवैनहीं ॥ यातैं मृत्तिकादिकसत्यपदार्थोंविषे घटादिकअसत्यपदार्थोंकीकारणता संभवैनहीं ॥ किंवा जेअसत्यकार्यवादी नैयायिकादिक याप्रकारकथनकरैहैं ॥ घटपटादिककार्य आपणीउत्पत्तितैंपूर्व यद्यपिअत्यंतअसत्यहैं ॥ तथापि तेघटपटादिककार्य सत्ताजातिकेसंबंधतैं सत्त्वरूपउत्पत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ सोयहतिनोंकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? अत्यंतअसत्यघटादिकपदार्थोंविषे सोकदाचित् सत्ताजातिकेसंबंधतैं कार्यरूपताहोतीहोवै तौ अत्यंतअसत्यवंध्यापुत्रविषेभी तासत्ताजातिकासंबंध तथा तासत्ताजातिकेसंबंधतैंकार्यरूपता होणीचाहिये ॥ और वंध्यापुत्रविषे सत्ताजातिकेसंबंधतैंकार्यरूपता प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं सत्ताजातिकेसंबंधतैं असत्यकार्यकीउत्पत्तिमानणी अत्यंतविरुद्धहै ॥ किंवा जोवादी कार्यकूं असत्यमानैहै ॥ तावादीकेमतविषे कारणकूंभी असत्यरूपताहीसिद्धहोवैगी ॥ और सोवादी जोकदाचित् किसीयुक्तिप्रमाणतैं विना आपणीइच्छातैंही कार्यकूंअसत्यमानिकै कारणकूंसत्यमानैंगा तौ तावादीकेमतविषे अर्धजरतीयन्यायकीप्राप्तिहोवैगी ॥ आपणीइच्छातैंही किसीअंगकाग्रहणकरणा तथा किसीअंगकापरित्यागकरणा याकानाम अर्धजरतीयन्यायहै ॥ किंवा ताअर्धजरतीयन्यायकीनिवृत्तिवासते सोवादी जोकदाचित् कारणकूंभी असत्यहीमानैंगा तौ तावादीकेसिद्धांतकीहानिहोवैगी ॥ काहेतें? सत्यकारणतैं असत्यकार्यकीउत्पत्तिहोवैहै याप्रकारका तावादीकासिद्धांतहै ॥ सो नष्टहोवैगा ॥ किंवा यालोकविषे असत्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जेवंध्यापुत्र नरशृंगादिकहैं ॥ तिनअसत्यपदार्थोंतैं पटतैलादिककार्योंकीउत्पत्ति देखणेमैंआवैनहीं ॥ किंतु सत्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जेतंतुतिलादिककारणहैं ॥ तिनसत्यकारणोंतैंही पटतैलादिककार्योंकीउत्पत्ति देखणेविषेआवैहै ॥ याकारणतैंभी असत्यपदार्थोंविषे कारणरूपतासंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती! तंतुआदिकसत्यकारणोंकेविद्यमानहुए पटादिककार्योंकीउत्पत्ति॥ तथा तंतुआदिकसत्यकारणोंकेअविद्यमानहुए पटादिककार्योंकीअनुत्पत्ति ॥ याप्रकारका जोलोकोंकाअन्वयव्यतिरेकज्ञानहै ॥ सोअन्वयव्यतिरेकज्ञान जोकदाचित् यथार्थहोवै तौ ताज्ञानकरिकै तिनकारणोंविषेसत्यरूपतासिद्धहोवै ॥ परंतु सोअन्वयव्यतिरेकज्ञान भ्रांतिरूपहै ॥ यातैं ताभ्रांतिज्ञानकरिकै कारणकीसत्यरूपता सिद्धहोइसकैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादी! यालोक

विषे जितनेज्ञानउत्पन्नहोवैंहैं ॥ तिनसंपूर्णज्ञानोंकूं भ्रांतिरूपअंगीकारकरणा तुमारेकूंउचितनहीं ॥ किंतु धर्मिरूपवस्तुकूंविषय करणेहारेजेज्ञानहैं ॥ तिनज्ञानोंकूं प्रमाणरूपहीमान्याचाहिये ॥ याकारणतैंही शास्त्रविषे यहकह्याहै ॥ सर्वंज्ञानंधर्मिण्यऽभ्रांतं प्रकारेतुविपर्ययः ॥ अर्थयह ॥ यालोकविषे प्रमारूपकरिकै तथा अप्रमारूपकरिकै प्रसिद्ध जितनेज्ञानहैं॥ तेसंपूर्णज्ञान धर्मीअंशविषेप्रमारूपहीहोवैंहैं ॥ और दोषकेवशतैं तेज्ञान जोकदाचित् अप्रमारूपहोवैंहैं ॥ तौभी प्रकारअंशविषेही अप्रमारूप होवैंहैं ॥ धर्मीअंशविषे कोईभीज्ञान अप्रमारूपहोवैनहीं ॥ जैसे शुक्तिविषे इदंरजतं याप्रकारकाजोअप्रमाज्ञानहोवैहै ॥ सोभी इदंरूपधर्मीअंशविषे प्रमारूपहीहोवैहै ॥ और रजतरूपप्रकारअंशविषे सोज्ञान अप्रमारूपहोवैहै ॥ १ ॥ ताधर्मीअंशविषे ज्ञानकी प्रमाणरूपताकूंअंगीकारकरिकैंही पूर्वपक्षोंका तथासिद्धांतपक्षोंका निर्णयहोवैहै ॥ तहां धर्मीपदार्थकेवास्तवस्वरूपतैं बहिर्भूतजे पदार्थहैं ॥ तिनपदार्थोंकूंविषयकरणेहारेपक्षोंकानाम पूर्वपक्षहै ॥ जैसे रज्जुविषे सर्प दंड माला जलधारादिकपदार्थोंकूंविषयकरणेहारेपक्ष पूर्वपक्षरूपहैं ॥ और धर्मीपदार्थकेवास्तवस्वरूपकूंविषयकरणेहारेजेपक्षहैं तिनोंकानाम सिद्धांतपक्षहै॥जैसे यहरज्जुहै याप्रकार रज्जुरूपधर्मीकूंविषयकरणेहारापक्ष सिद्धांतपक्षरूपहै ॥ जोकदाचित् ताधर्मीअंशविषेभी तिनज्ञानोंकूं प्रमाणरूपता नहींअंगीकारकरिये ॥ तौ तिनपूर्वपक्षोंका तथासिद्धांतपक्षोंका निर्णयनहींहोवैगा ॥ यातैं धर्मीअंशविषे तिनज्ञानोंकूंप्रमाणरूपता अवश्यअंगीकारकरीचाहिये ॥ किंवा घटादिककार्योंविषे तथा मृत्तिकादिककारणोंविषे जोअत्यंतअसत्यरूपताहोवै ॥ तौ सर्वलोकोंकूं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै साअसत्यरूपता प्रतीतहोणीचाहिये ॥ और तिसकार्यकारणरूपजगत्विषे अस्मदादिकजीवोंकूं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै साअसत्यरूपता प्रतीतहोतीनहीं ॥ उलटा ताकार्यकारणरूपजगतविषे सत्यरूपताही अनुगतहुई प्रतीतहोवैहै ॥ याकारणतैंभी ताकार्यकारणरूपजगत्कूं असत्यरूपतासंभवैनहीं ॥ किंवा कार्यरूपकरिकै तथा कारणरूपकरिकै प्रसिद्ध जितनाकीयहजगत्है ॥ सोजगत् जोकदाचित् वंध्यापुत्रशशशृंगकीन्यांई अत्यंतअसत्यरूपहीहोवै ॥ तौभी ताजगत्कीअसत्यरूपता साक्षीआत्मातैंविना किसीप्रमाणकरिकै सिद्धहोइसकैनहीं॥ किंतु तासाक्षीआत्माकूंआश्रयणकरिकैही ताजगत्की अस

त्यरूपतासिद्धहोवैगी ॥ यातैं कार्यकारणरूपजगत्केअसत्यहुएभी ताजगत्केअसत्यरूपताकूंसिद्धकरणेहारा साक्षीआत्मा सत्य
रूपहीसिद्धहोवैगा ॥ किंवा यहकार्यकारणरूपजगत् जोकदाचित् अत्यंतअसत्यहोवै ॥ तौ जैसे याजीवोंकूं भ्रांतिदशातैंविना
प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै वंध्यापुत्रनरशृंगकीप्रतीतिहोतीनहीं ॥ तैसे भ्रांतिदशातैंविना याजीवोंकूं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै
याजगत्कीप्रतीति नहींहोणीचाहिये ॥ किंतु जैसे वंध्यापुत्रकी तथानरशृंगकी भ्रांतिदशाविषेही प्रतीतिहोवैहै ॥ तैसे याजगत्की
भी भ्रांतिदशाविषेही प्रतीतिहोणीचाहिये ॥ सोभ्रांतिदशाविषे याजगत्कीप्रतीतिहोतीनहीं ॥ किंतु सर्वजीवोंकूं प्रत्यक्षादिकप्रमाणों
करिकैही याजगत्कीप्रतीतिहोवैहै ॥ यातैं ताकार्यकारणरूपजगत्विषे अत्यंतअसत्यरूपतासंभवैनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥
कार्यकाअत्यंताभाव तथा कारणकाअत्यंताभाव तथा कार्यकारणदोनोंकाअत्यंताभाव याजगत्काकारणहै ॥ येतीनोंपक्ष संभवैनहीं ॥
किंवा यहकार्यकारणरूपजगत् जोकदाचित् अत्यंतअसत्यरूपहोवै ॥ तौ जोअसत्यपदार्थहोवैहै ॥ ताका किसीप्रत्यक्षादिकप्र
माणोंकेसाथ संबंधहोवैनहीं ॥ जैसे असत्यवंध्यापुत्रनरशृंगका प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकेसाथ संबंधहोतानहीं ॥ तैसे ताअसत्यज
गत्काभी प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकेसाथ संबंधनहींहोवैगा ॥ और संबंधतैंविना तेप्रत्यक्षादिकप्रमाण किसीअर्थकेज्ञानकूंउत्पन्नकरै
नहीं ॥ यातैं संबंधतैंविना ताअसत्यजगत्का किसीभीप्रमाणकरिकैज्ञाननहींहोवैगा ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती! जैसे वंध्यापुत्रहै
याप्रकारकेशब्दतैं असत्य वंध्यापुत्रकाज्ञानहोवैहै ॥ तैसे ताकार्यकारणरूप असत्यजगत्काभी शब्दप्रमाणतैं ज्ञानसंभवैहै ॥
समाधान ॥ जिसशब्दका जिसअर्थविषे वाच्यवाचकभावसंबंध जिसपुरुषकूंग्रहणहोवैहै ॥ तिसपुरुषकेप्रति सोशब्द तिसीअर्थ
काबोधकरैहै ॥ जैसे घट याशब्दका घटरूपव्यक्तिविषे यहघटव्यक्ति घटशब्दकावाच्यअर्थहै याप्रकारकावाच्यवाचकभावसंबंध
जिसपुरुषकूंग्रहणभयाहै ॥ तिसीपुरुषकेप्रति सोघटशब्द ताघटरूपव्यक्तिकाबोधकरैहै ॥ अर्थकेसंबंधज्ञानतैंविना सोशब्द
किसीअर्थकूंबोधनकरैनहीं ॥ और सोवंध्यापुत्ररूपअर्थ अत्यंतअसत्यहै ॥ यातैं ताअत्यंतअसत्यअर्थविषे वंध्यापुत्र याशब्दका
संबंध किसीपुरुषकूं ग्रहणहोवैनहीं ॥ याकारणतैं वंध्यापुत्र याशब्दतैंभी तावंध्यापुत्रकाज्ञान संभवैनहीं ॥ किंवा जेवादी वंध्यापुत्र

इत्यादिकशब्दोंतैं असत्यवंध्यापुत्रादिकोंकाज्ञान अंगीकारकरैहैं ॥ तेवादीभी तिनअसत्यपदार्थोंकेज्ञानकूं प्रमारूपमानतेनहीं ॥
किंतु ताज्ञानकूं विकल्परूपमानैंहैं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ! जैसे वंध्यापुत्रादिकअसत्यपदार्थोंका विकल्परूपज्ञानहोवैहै ॥ तैसे याका
र्यकारणरूपजगत्काभी विकल्परूपज्ञानहोवैगा ॥ याकेविषे हमारीकौनहानिहै ? ॥ समाधान ॥ हेवादी ! जोतू वंध्यापुत्रकेज्ञानकी
न्यांई याजगत्केज्ञानकूं विकल्परूपमानैंगा तौ जैसे वंध्यापुत्रकेविकल्परूपज्ञानतैं किसीजीवकी प्रवृत्ति तथानिवृत्ति होवैनहीं ॥
तैसे याजगत्केज्ञानतैंभी किसीजीवकी प्रवृत्ति तथानिवृत्ति नहींहोवैगी ॥ यातैं प्रवृत्तिनिवृत्तितैंआदिलैके संपूर्णव्यवहारोंकालोप
होवैगा ॥ यातैं वंध्यापुत्रकेज्ञानकीन्यांई याजगत्केज्ञानकूं विकल्परूपतासंभवैनहीं ॥ किंवा जिसशब्दप्रमाणकरिकै सोवादी अस
त्यपदार्थकीसिद्धिकरैहै ॥ सोशब्दरूपकार्यही कारणकेसत्यरूपताकूंसिद्धकरैहै ॥ काहेतैं ? यालोकाविषे वाकादिकइंद्रियोंकरिकैयुक्त जो
देवदत्तादिकपुरुषोंकाशरीरहै ॥ ताशरीररूपसत्कारणतैंही ताशब्दरूपकार्यकीउत्पत्ति देखणेमैंआवैहै ॥ और असत्यरूपकरिकैप्रसि
द्ध जोवंध्यापुत्रकाशरीरहै ॥ ताअसत्यशरीरतैं ताशब्दरूपकार्यकीउत्पत्ति देखणेमैंआवतीनहीं ॥ याकारणतैंभी असत्यपदार्थोंवि
षे कारणरूपतासंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ! केवलयुक्तिकेबलतैं हम कारणकूंअसत्यरूपनहींमानते ॥ किंतु साक्षात्श्रुति
ही कारणकूंअसत्यरूपकहेहै ॥ तहांश्रुति ॥ असद्वाइदमग्रआसीत् ततोवैसदजायत ॥ अर्थयह ॥ यहदृश्यप्रपंच आपणीउत्प
त्तितैं पूर्व असत्यरूपहीहोताभया ॥ ताअसत्यकारणतैं यहसत्यरूपजगत् उत्पन्नहोताभया ॥ १ ॥ याश्रुतिविषे असत्यकारणतैंही
जगत्कीउत्पत्तिकथनकरीहै ॥ यातैं ताश्रुतिकेअर्थकीअनुपपत्तिकरिकै कल्पनाकरीजामायाहै ॥ तामायाकेबलतैं हमवादी असत्य
कूंही जगत्काकारणमानतेहैं ॥ समाधान ॥ हेवादी ! तुमारेमतविषे जोकदाचित् वेदकूंप्रमाणरूपताहोवै तौ ताश्रुतिकेअर्थकीअनु
पपत्तिकरिकै कल्पनाकरीजामायाहै ॥ तामायाकेबलतैं असत्यपदार्थविषे कारणरूपतासिद्धहोवै ॥ परंतु तुमारेमतविषे वेदोंकूंप्र
माणरूपताहैनहीं ॥ यातैं तुमारेमतविषे ताश्रुतिकेबलतैंभी असत्यपदार्थविषे कारणरूपतासिद्धहोवैनहीं ॥ और हेवादी ! जोतू वेद
कूंप्रमाणरूपभीअंगीकारकरै ॥ तौभी सोवेदभगवान् किसीभीस्थलविषे ताकार्यकारणकेअसत्यरूपताकूं कथनकरतानहीं ॥ और

प्रत्यक्षआदिकप्रमाणोंकरिकैतौ याकार्यकारणरूपजगत्‌विषे असत्यरूपताप्रतीतहोतीनहीं ॥ यातैं तुमारेमतविषे साकार्यकारणकीअ
सत्यरूपता किसप्रमाणकरिकैसिद्धहोवैगी ॥ किंतु साअसत्यरूपता किसीभीप्रमाणकरिकैसिद्धहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ! वेद
विषेकहांभी असत्यपदार्थकूंकारणरूपतानहींकही यहजोवचन तुमनैंकह्या सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ? असद्वाइदमग्रआसीत् ॥ यह
श्रुति याजगत्‌केकारणकूंअसत्यरूपहीकहैहै ॥ समाधान ॥ हेवादी ! याश्रुतिविषेजोअसत्‌शब्दहै ॥ सोतुमारेअत्यंताभावरूपशून्य
कूंबोधनकरतानहीं ॥ किंतु सोअसत्‌शब्द यास्थूलजगत्‌कीउत्पत्तितैंपूर्व अव्याकृतरूपसूक्ष्मअवस्थाकूंबोधनकरैहै ॥ अथवा अत्यंता
भावरूपशून्यकूंही जगत्‌काकारणमानणेहारे जेतुमशून्यवादीहो ॥ तिनतुमारेपूर्वपक्षका सोवचन अनुवादकरैहै ॥ परंतु तावच
नका कारणकीअसत्यरूपताविषे तात्पर्यनहींहै ॥ जोकदाचित् ताश्रुतिवचनका कारणकी असत्यरूपताविषे तात्पर्यकल्पनाकरि
ये ॥ तौ कारणकेसत्यरूपताकूंबोधनकरणेहारीश्रुतिकाविरोधहोवैगा ॥ तहांश्रुति ॥ सदेवसोम्येदमग्रआसीत् ॥ अर्थयह ॥ हे
प्रिय ! यहदृश्यप्रपंच आपणीउत्पत्तितैंपूर्व सत्यरूपहोताभया ॥ १ ॥ याश्रुतिविषे कारणकीसत्यरूपता कथनकरीहै ॥ सोअसंगत
होवैगी ॥ यातैं कारणकीअसत्यरूपताविषे ताश्रुतिवचनकातात्पर्यनहीं ॥ इतनैंग्रंथकरिकै कारणकेअभावकूं तथाकार्यकेअभावकूं
जगत्‌काकारणमानणेहारेवादियोंकेमतकाखंडनकऱ्या ॥ अब ब्रह्मविषे जगत्‌कीकारणताकाखंडनकरैहैं ॥ हेब्राह्मणो ! जैसे कारण
केअभावविषे तथाकार्यकेअभावविषे याजगत्‌कीकारणतानहींसंभवैहै ॥ तैसे ब्रह्मविषेभी याजगत्‌कीकारणतासंभवैनहीं ॥ काहे
तैं ? देशकालपरिच्छेदतैंरहित तथासजातीय विजातीय स्वगत यातीनभेदोंतैंरहित जोसर्वतैंअधिकवस्तुहै ॥ सोईही ब्रह्मशब्दकामु
ख्यअर्थहै ॥ ऐसेआनंदस्वरूपअद्वितीयब्रह्मविषे याजगत्‌कीकारणतासंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! यतोवाइमानिभूतानिजा
यंते ॥ अर्थयह ॥ जिसब्रह्मतैं यहसंपूर्णभूतभौतिकजगत् उत्पन्नभयाहै ॥ इसतैं आदिलैकेअनेकश्रुतिस्मृतियोंविषे ब्रह्मकूंही याज
गत्‌काकारणकह्याहै ॥ जोब्रह्म जगत्‌काकारणनहींहोवैगा तौ तिनश्रुतिस्मृतिवचनोंकी क्यागतिहोवैगी ? ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो !
जिनश्रुतिवचनोंविषे ब्रह्मकूं जगत्‌काकारणकह्याहै ॥ तिनश्रुतिवचनोंविषेभी निर्विकारअद्वितीयब्रह्मकूं जगत्‌काकारणकह्यानहीं ॥

किंतु ब्रह्मशब्दकागौणअर्थ जेआकाशादिकहैं ॥ तिनोंविषेही जगत्कीकारणताकथनकरीहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जैसे यहभौतिकप्रपंच उत्पत्तिवालाहै ॥ तैसे आकाशादिकभी उत्पत्तिवालेहैं ॥ यातैं तिनआकाशादिकोंकाभी कोईकारणमान्याचाहिये ॥ और आत्मनआकाशःसंभूतः ॥ याश्रुतिविषे आत्मातैंही आकाशकीउत्पत्तिकहीहै ॥ यातैं तिनआकाशादिकोंकीकारणता ब्रह्मविषेसंभवैहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो! वास्तवतैंतौ ताअद्वितीयनिर्विकारब्रह्मविषे किसीपदार्थकीकारणताहैनहीं ॥ और बहुतश्रुतिस्मृतियोंविषे ब्रह्मकूंही जगत्काकारणकह्याहै ॥ यातैं ताअद्वितीयब्रह्मकेसमीपस्थितहोइकै ताअद्वितीयब्रह्मविषे कारणताकीप्रतीतिकरावणेहारा कोईदूसरा अनादिकारणकल्पनाकर्‍याचाहिये ॥ जिसकारणकेसंबंधतैं अद्वितीयब्रह्मविषेभी कारणताप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं हेब्राह्मणो! कारणतैंविनाही यहजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ अथवा अभावतैं यहजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ अथवा अद्वितीयब्रह्मतैं यहजगत् उत्पन्नहोवैहै? यातीनोंपक्षोंविषे पूर्वउक्तसर्वदूषणोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं तेतीनोंपक्ष असंगतहैं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ तिनकारणोंतैंभिन्नकोईदूसरायाजगत्काकारणहै ॥ सो याजगत्काकारणकौनहै? याप्रकारकाविचार हमसर्वब्राह्मणोंकूंकर्‍याचाहिये ॥ हेब्राह्मणो! जिसकारणतैं यहसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ ताकारणकेविचारकूं अबीतुम रहणेदेवो ॥ किंतु प्रथम हमसंपूर्णब्राह्मण यास्थूलशरीरकेकारणकाविचारकरैं ॥ जोयहहमारास्थूलशरीर सोकिसकारणतैंउत्पन्नभयाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! पिताकेवीर्यतैंही यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ यहवार्ता संपूर्णलोकजाणेहैं ॥ यातैं यासर्वलोकप्रसिद्धअर्थविषे विचारकरणानिष्फलहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो! त्वचा रुधिर मांस मेद अस्थि मज्जा वीर्य यासप्तधातुवोंविषे अंत्यकासप्तमधातुजोवीर्यहै ॥ तावीर्यतैंही जोकदाचित् यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोतीहोवै ॥ तौ पुरुषकेशरीरविषेस्थित तावीर्यतैंभी यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और पुरुषकेशरीरविषेस्थित तावीर्यतैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं तावीर्यविषे यास्थूलशरीरकीकारणतासंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! त्वचादिकधातुवोंकेसाथ मिल्याहुआजोवीर्यहै ॥ तावीर्यविषे यद्यपि यास्थूलशरीरकीकारणतानहींहै ॥ तथापि तिनत्वचादिकधातुवोंतैं पृथक्भावकूंप्राप्तहुआजोवीर्यहै ॥ तावीर्यविषे यास्थूलशरीरकीकारणतासंभवैहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो! त्वचादिकधा

तुवोंतैंभिन्न हुआसोवीर्य जोकदाचित् यास्थूलशरीरकेउत्पत्तिकाकारणहोवैं तौं कामरूपअग्निकेतापकरिकै तिनधातुवोंतैंपृथक्होइकै पुरुषकेहृदयदेशविषेप्राप्तहुआजोवीर्यहै॥ तावीर्यतैंभी यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोणीचाहिये॥ और तावीर्यतैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोतीनहीं॥ यातैं तावीर्यविषे यास्थूलशरीरकीकारणतासंभवैनहीं॥ शंका॥ हेभगवन्! पुरुषकेशरीरविषेस्थितहुआ सोवीर्य यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिकरैनहीं॥ किंतु उपस्थइंद्रियद्वारा तापुरुषकेशरीरतैंबाहरिनिकस्याहुआसोवीर्य याशरीरकाकारणहोवैहै॥समाधान॥ हेब्राह्मणो! पुरुषकेशरीरतैंबाहरिनिकस्याहुआसोवीर्य जोकदाचित् याशरीरकाकारणहोताहोवै तौं निद्रादोषकरिकै तापुरुषका उपस्थइंद्रियद्वारा निकस्याजोवीर्यहै॥ तावीर्यतैंभी यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोणीचाहिये॥ और तावीर्यतैं याशरीरकीउत्पत्तिहोतीनहीं॥ यातैं तावीर्यविषे याशरीरकीकारणतासंभवैनहीं॥ शंका॥ हेभगवन्! स्त्रीकेसंभोगकरिकै यापुरुषकेशरीरतैंबाहरिनिकस्याजोवीर्यहै॥ सोवीर्य यास्थूलशरीरकाकारणहै॥ समाधान॥ हेब्राह्मणो! स्त्रीकेसंभोगकरिकै पुरुषकेशरीरतैंबाहरिनिकस्याहुआ सोवीर्य जोकदाचित् यास्थूलशरीरकाकारणहोवै तौं स्वप्नविषे स्त्रीकेसंभोगकरिकै तापुरुषकेशरीरतैंबाहरिनिकस्याजोवीर्यहै॥ तावीर्यतैंभी यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोणीचाहिये॥ और तावीर्यतैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोतीनहीं॥ यातैं तावीर्यविषे याशरीरकीकारणतासंभवैनहीं॥ शंका॥ हेभगवन्! जाग्रत्अवस्थाविषे स्त्रीकेसंभोगकरिकै तापुरुषकेशरीरतैंबाहरिनिकस्याजोवीर्यहै॥ सोवीर्यही यास्थूलशरीरकाकारणहै॥ समाधान॥ हेब्राह्मणो! जाग्रत्अवस्थाविषे स्त्रीकेसंभोगकरिकै यापुरुषकेशरीरतैंबाहरिनिकस्याहुआसोवीर्य जोकदाचित् यास्थूलशरीरकाकारणहोवै तौं बाल्यस्त्रीकेसंभोगकरिकै तथावृद्धस्त्रीकेसंभोगकरिकै यापुरुषकेशरीरतैंबाहरिनिकस्याजोवीर्यहै॥ तावीर्यतैंभी यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोणीचाहिये॥ और तावीर्यतैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोतीनहीं॥ यातैं तावीर्यविषे याशरीरकीकारणतासंभवैनहीं॥ शंका॥ हेभगवन्! यौवनअवस्थावालीस्त्रीकेसंभोगकरिकै यापुरुषकेशरीरतैंबाहरिनिकस्याजोवीर्यहै॥ सोवीर्य यास्थूलशरीरकाकारणहै॥ समाधान॥ हेब्राह्मणो! युवतीस्त्रीकेसंभोगकरिकै यापुरुषकेशरीरतैंबाहरिनिकस्याहुआ सोवीर्य जोकदाचित् यास्थूलशरीरकाकारणहोवै तौं यौवनअवस्थावालीवंध्यास्त्रीकेसंभोगकरिकै यापुरुष

केशरीरतैंबाहरिनिकस्याजोवीर्यहै ॥ तावीर्यतैंभी यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और तावीर्यतैं याशरीरकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं तावीर्यविषे याशरीरकीकारणतासंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! जास्त्रीविषे गर्भकेधारणकरणेकीशक्तिहै ॥ तास्त्रीकेसंभोगकरिकै यापुरुषकेशरीरतैंबाहरिनिकस्याजोवीर्यहै ॥सोवीर्य यास्थूलशरीरकाकारणहै ॥ वंध्यास्त्रीविषे गर्भकेधारणकरणेकीशक्तिहैनहीं ॥ यातैं तावंध्यास्त्रीकेसंभोगकरिकै यापुरुषकेशरीरतैं बाहरिनिकस्येहुएवीर्यविषे याशरीरकीकारणताहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ! गर्भकेधारणकरणेविषेसमर्थयुवतीस्त्रीकेसंभोगकरिकै यापुरुषकेशरीरतैंबाहरिनिकस्याहुआसोवीर्य जोकदाचित् यास्थूलशरीरकाकारणहोवै ॥ तौ तास्त्रीकेसंभोगकरिकै कामीपुरुषोंका दिनदिनविषेवीर्यनिकसेहैं॥यातैं दिनदिनविषे तावीर्यतैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और दिनदिनविषे तावीर्यतैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं तावीर्यविषे याशरीरकीकारणतासंभवैनहीं ॥ यातैं हेब्राह्मणो ! यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिविषे किसीप्रकारकरिकैभी तावीर्यकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ और मातापिताविषेजो यास्थूलशरीरकीकारणताहोवैहै ॥ सोवीर्यद्वाराहोवैहै ॥ तावीर्यविषे जबी यास्थूलशरीरकीकारणतासिद्धनहींभई ॥ तबी तामातापिताविषे याशरीरकीकारणता किसप्रकारसिद्धहोवैगी ॥ किंतु सोमातापिताभी यास्थूलशरीरकाकारणनहींहै ॥ इतनैंकरिकै वीर्यकेविद्यमानहुएभी यास्थूलशरीरकीअनुत्पत्तिरूप अन्वयव्यभिचार निरूपणकऱ्या ॥ अब तावीर्यकेअभावहुएभी यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिरूप व्यतिरेकव्यभिचारकानिरूपणकरैहैं ॥ हेब्राह्मणो ! मत्कुणयूकादिकजेस्वेदजशरीरहैं ॥ तथा वृक्षादिकजोउद्भिज्जशरीरहैं ॥ तेस्वेदजउद्भिज्जशरीर पुरुषकेवीर्यतैंविनाहीउत्पन्नहोवैहैं ॥ याकारणतैंभी तापुरुषकेवीर्यविषे यास्थूलशरीरकीकारणतासंभवैनहीं ॥ इतनैंकरिकै पुरुषकेवीर्यविषे यास्थूलशरीरकीकारणताकाखंडनकऱ्या ॥ अब धर्मअधर्मरूपकर्मविषे याशरीरकीकारणताकाखंडनकरैहैं ॥ हेब्राह्मणो ! जोवादी पुण्यपापरूपकर्मविषे याशरीरकीकारणता अंगीकारकरैहै ॥ तावादीसैंयहपूछाचाहिये ॥ याशरीरकेकारणरूप जेपुण्यपापरूपकर्महैं तिनकर्मोंका कौनकारणहै ? शुद्धआत्मा तिनकर्मोंकाकारणहै अथवा यहस्थूलशरीरही तिनकर्मोंकाकारणहै ? तहां शुद्धआत्मा तिनकर्मोंकाकारणहै यहप्रथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहे

तें ? आत्मज्ञानकरिकै जिनपुरुषोंकामोक्षभयाहै ॥ तिनमुक्तपुरुषोंकाभी शुद्धआत्मा विद्यमानहै ॥ यातें सोमुक्तपुरुषोंकाशुद्धआत्माभी पुण्यपापरूपकर्मोंकूंउत्पन्नकरैगा ॥ तथा तापुण्यपापरूपकर्मकेसुखदुःखरूपफलकूंभीभोगैगा ॥ और जोपुरुष पुण्यपापकर्मकाकरताहोवैहै ॥ तथा ताकेफलकाभोक्ताहोवैहै ॥ सोपुरुष मुक्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु बंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें शुद्धआत्माविषे कर्मोंकीकारणतामानणेमैं किसीभीपुरुषकूं मोक्षकीप्राप्तिनहींहोवैगी ॥ और यहस्थूलशरीरही तिनकर्मोंकाकारणहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसैंयहपूछाचाहिये ॥ तिनकर्मोंकाकारणरूपजोयहस्थूलशरीरहै तास्थूलशरीरका कौनकारणहै ? सोपुण्यपापरूपकर्मही तास्थूलशरीरकाकारणहै अथवा तापुण्यपापतैंभिन्न कोईदूसरापदार्थ ताशरीरकाकारणहै तहां पुण्यपापरूपकर्म तास्थूलशरीरकाकारणहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? जबी प्रथम पुण्यपापरूपकर्म उत्पन्नहोवै ॥ तबी तिनकर्मोंतैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोवै ॥ और जबी प्रथम यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोवै ॥ तबी यास्थूलशरीरतैं तिनकर्मोंकीउत्पत्तिहोवै ॥ याप्रकार अन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातें यास्थूलशरीरविषे तिनकर्मोंकी कारणतासंभवैनहीं ॥ और पुण्यपापकर्मतैंभिन्न कोईदूसरापदार्थही यास्थूलशरीरकाकारणहै ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीनैं सोदूसराकारणकह्याचाहिये ॥ तहां सोवादी यास्थूलशरीरका जोसूक्ष्मशरीर कारणमानैं ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोसूक्ष्मशरीर किसीएकस्थूलशरीरकाकारणहै? अथवा सोसूक्ष्मशरीर सर्वस्थूलशरीरोंकाकारणहै तहां सोसूक्ष्मशरीर किसीएकस्थूलशरीरकाकारणहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? जोपदार्थ जिसकार्यकेकिसीएकव्यक्तिकूं उत्पन्नकरैहै ॥ सोपदार्थ ताकार्यकाकारणहोवैनहीं ॥ किंतु सोपदार्थ ताकार्यकेप्रति अन्यथासिद्धहोवैहै ॥ जैसे कुलालकारासभ यद्यपि यत्किंचित्घटव्यक्तिकाकारणहै ॥ तथापि सोरासभ सर्वघटोंकाकारणहैनहीं ॥ यातें सोरासभ घटरूपकार्यकीउत्पत्तिविषेअन्यथासिद्धहै ॥ तैसे किसीएकस्थूलशरीरकीउत्पत्तिकरणेहारा सोसूक्ष्मशरीरभी यास्थूलशरीररूपकार्यकीउत्पत्तिविषे अन्यथासिद्धहीहोवैगा ॥ इहां सर्वकार्यव्यक्तियोंकीउत्पत्तिविषे नियमकरिकैजेकारणहोवैहैं ॥ तिनकारणोंतैंभि

न्नपदार्थोंकानाम अन्यथासिद्धहै ॥ यातैं तासूक्ष्मशरीरविषे किसीएकस्थूलशरीरकीकारणतासंभवैनहीं ॥ और सोसूक्ष्मशरीर सर्वस्थूलशरीरोंकाकारणहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? तासूक्ष्मशरीरविषे जोकदाचित् सर्वस्थूलशरीरोंकीकारणताहोवै तौ जैसे देवदत्तनामापुरुषकेसूक्ष्मशरीरतैं तादेवदत्तनामापुरुषकास्थूलशरीर उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे तादेवदत्तनामापुरुषकेसूक्ष्मशरीरतैं यज्ञदत्तनामापुरुषकास्थूलशरीरभी उत्पन्नहोणाचाहिये ॥ और देवदत्तनामापुरुषकेसूक्ष्मशरीरतैं यज्ञदत्तादिकपुरुषोंकेस्थूलशरीर उत्पन्नहोतेनहीं ॥ यातैं तासूक्ष्मशरीरविषे सर्वस्थूलशरीरोंकीकारणतासंभवैनहीं ॥ किंवा सोसूक्ष्मशरीर जोकदाचित् यास्थूलशरीरकाकारणहोवै तौ तासूक्ष्मशरीरतैंही यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिसंभवहोइसकैहै ॥ यातैं तावादीनैं अंगीकारकरी जापुण्यपापकर्मविषे यास्थूलशरीरकीकारणता साव्यर्थहोवैगी ॥ किंवा जैसे यहस्थूलशरीर उत्पत्तिवालाहै ॥ तैसे सोसूक्ष्मशरीरभी उत्पत्तिवालाहै ॥ यातैं तासूक्ष्मशरीरकाभीकोईकारण तावादीनैं कह्याचाहिये ॥ तहां सोवादी जोकदाचित् अज्ञानकूंही तासूक्ष्मशरीरकाकारणमानैं तौ ताअज्ञानकरिकैही यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोइसकैहै ॥ तिन दोनोंकेमध्यविषे तासूक्ष्मशरीरकाअंगीकारकरणा निष्फलहै ॥ किंवा सोअज्ञानभी पुण्यपापरूपकर्मकीअपेक्षातैंविनाही तासूक्ष्मशरीरकाकारणहै ॥ अथवा सोअज्ञान पुण्यपापरूपकर्मोंकीअपेक्षावालाहुआ तासूक्ष्मशरीरकाकारणहै? तहां सोअज्ञान कर्मकीअपेक्षातैंविनाही तासूक्ष्मशरीरकाकारणहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? पुण्यपापरूपकर्मकीअपेक्षातैंविनाही सोअज्ञान जैसे तासूक्ष्मशरीरकीउत्पत्तिकरैहै ॥ तैसे सोनिरपेक्षअज्ञान यास्थूलशरीरकीभीउत्पत्तिकरैगा ॥ यातैं तासूक्ष्मशरीरविषे यास्थूलशरीरकीकारणतामानणी निष्फलहोवैगी ॥ और सोअज्ञान पुण्यपापरूपकर्मकीअपेक्षावालाहुआ तासूक्ष्मशरीरकाकारणहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें? पुण्यपापादिककार्योंकीवासनाकरिकैयुक्तहुआ सोअज्ञान जैसे तासूक्ष्मशरीरकाकारणहोवैहै ॥ तैसे सोअज्ञान यास्थूलशरीरकाभीकारणहोवैगा ॥ यातैं तासूक्ष्मशरीरविषे यास्थूलशरीरकीकारणतामानणी निष्फलहोवैगी ॥ किंवा पुण्यपापरूपकर्मोंकीवासनावोंकूं जोकदाचित् तासू

क्ष्मशरीरकाकारणमानिये तौ घटीयंत्रकीन्यांई अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतें ? संस्कारोंकानाम वासनाहै ॥ तेवासनारूपसंस्कार विनाशअवस्थावालेपुण्यपापरूपकर्मोंतेंउत्पन्नहोवेंहैं ॥ और जोवस्तु पूर्वविद्यमानहोवैहै ॥ ताकाही नाशहोवैहै ॥ अविद्यमानवस्तुकानाशहोवैनहीं ॥ यातें तिनवासनारूपसंस्कारोंतेंपूर्व तिनपुण्यपापरूपकर्मोंकीविद्यमानता अवश्यअपेक्षितहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ पुण्यपापरूपकर्मोंतें वासनारूपसंस्कार उत्पन्नहोवैहै ॥ और तिनसंस्कारोंतें सूक्ष्मशरीर उत्पन्नहोवैहै ॥ और तासूक्ष्मशरीरतें यहस्थूलशरीर उत्पन्नहोवैहै ॥ और यास्थूलशरीरतें पुनःपुण्यपापरूपकर्म उत्पन्नहोवैहै ॥ याप्रकार घटीयंत्रकीन्यांई अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें हेब्राह्मणो ! याप्रकारकेपूर्वउक्तदूषण जिसविषेनहींप्राप्तहोवै ॥ ऐसाकोई यास्थूलशरीरकाकारण प्रतीतहोतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ सर्वलोकोंकूं प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्ध जोयहस्थूलशरीरहै ॥ तास्थूलशरीरकेकारणकाभी जबी हमलोकोंकूं निश्चयनहींभया ॥ तबी यासर्वजगत्केकारणकानिश्चय हमजीवोंकूं किसप्रकारहोवैगा ? और कारणतेंविना किसीकार्यकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ यास्थूलशरीररूपकार्यकाभी कोईकारणहोवैगा ॥ परंतु ताकारणकानिश्चय हमलोकोंकूंहैनहीं ॥ जोयहस्थूलशरीर इसकारणतेंउत्पन्नभयाहै ॥ और हे ब्राह्मणो ! यहहमाराशरीर अन्नतेंउत्पन्नहोवैहै ॥ याप्रकारकावचन जोवादी कहै ॥ सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? यास्थूलशरीरकीउत्पत्तितेंपूर्व कोईजीव अन्नकाभक्षणकरतानहीं ॥ किंतु यास्थूलशरीरकीउत्पत्तितेंअनंतरही याशरीरकीतृप्तिवासते तथापुष्टिवासते हमसर्वजीव अन्नकाभक्षणकरतेहैं ॥ यातें ताअन्नविषेभी यास्थूलशरीरकीकारणतासंभवैनहीं ॥ इतनेकरिकै यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिकेकारणकाविचारकऱ्या ॥ अब याशरीरकीस्थितिकेकारणकाविचारकरैहैं ॥ हेब्राह्मणो ! यहव्रीहियवादिकअन्न जैसे यास्थूलशरीरकेउत्पत्तिकाकारणनहींहै ॥ तैसे सोअन्न याशरीरकेजीवनकाभीकारणनहींहै ॥ काहेतें ? जोकदाचित् यहअन्न याप्राणियोंकेजीवनकाकारणहोवै तौ ताअन्नकेविद्यमानहुए तिनप्राणियोंकामृत्यु नहींहोणाचाहिये ॥ और अन्नकेविद्यमानहुएभी तिनप्राणियोंकामृत्यु देखणेविषेआवैहै ॥ यातें याअन्नविषे जीवनकीकारणतासंभवैनहीं ॥ उलटा ताअन्नकेदोषतें याजीवोंकेशरीरविषे नानाप्रकारकीव्याधियां उत्पन्नहोवैहैं ॥

ताव्याधियोंकरिकै तिनजीवोंकामृत्युहोवैहै ॥ इसप्रकार चिकित्साशास्त्रविषे व्याधिकीउत्पत्तिद्वारा ताअन्नकूंही जीवोंकेमृत्युकाका रणकह्याहै ॥ यातैं ताअन्नविषे जीवनकीकारणतासंभवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणो! जैसे अन्नकीप्राप्ति यापुरुषोंकेजीवनकाकारणनहीं है ॥ तैसे अन्यविषयोंकीप्राप्तिभी यापुरुषोंकेजीवनकाकारणनहीं है ॥ किंतु उलटा तिनविषयोंकीप्राप्ति यापुरुषोंके मरणकाहीकारण है ॥ तहां स्त्रीरूपविषयकीप्राप्तितैं याकामीपुरुषोंकूं हृदयविषे परमतापकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं स्त्रीरूपविषयकीप्राप्तिभी यापुरुषोंकेदुः खकाहीकारणहै ॥ और जोरोगीपुरुष आपणेशरीरकेभीतर घंटाकेशब्दसमान प्राणवायुकेशब्दोंकूंश्रवणकरैहै ॥ सोरोगीपुरुष थोडे कालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकार निमित्तशास्त्रकेजानणेहारेपुरुष कथनकरैहैं ॥ यातैं शब्दरूपविषयभी याजीवोंकेमरण काहीकारणहै ॥ अब स्त्रीरूपविषयकीप्राप्तिविषे मरणकीकारणता स्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ हेब्राह्मणो! वेदकेअर्थकूंजानणेहारेजेवि द्वान्पुरुषहैं ॥ तेविद्वान्पुरुष याप्रकार कथनकरैहैं ॥ जोकामीपुरुष शास्त्रकीमर्यादाकापरित्यागकरिकै रात्रिदिनविषे आपणीस्त्री मैं वीर्यकापरित्यागकरैहै ॥ सोकामीपुरुष पापकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तापापकर्मकरिकै सोकामीपुरुष शीघ्रही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और परस्त्रीविषेतौ एकवार वीर्यकेपरित्यागकियेतैंभी याकामीपुरुषकूं पापकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ तापापकर्मकरिकै सोपरस्त्रीगामीपुरुष शी घ्रही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहांश्रुति प्राणंवाएतेप्रस्कंदंतियेदिवारत्यासंयुज्यंते ॥ अर्थयह ॥ जेपुरुष आपणीस्त्रीकेसाथ दि नविषे संभोगकरैहैं ॥ तेपुरुष आपकेप्राणोंकूंहीनष्टकरैहैं ॥ तहांस्मृतिभी ॥ श्लोक ॥ परदारानगंतव्याः सर्ववर्णेषुकर्हिचित् ॥ न हीदृशमनायुष्यं त्रिषुलोकेषुविद्यते ॥ अर्थयह ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र याचारिवर्णोंविषे किसीभीपुरुषनैं परस्त्रीकागमननहीं करणा ॥ काहेतैं ? यातीनलोकोंविषे जैसे परस्त्रीकागमन यापुरुषकेआयुष्यकीहानिकरैहै ॥ तैसे दूसराकोईकर्म यापुरुषकेआयुषकीहा निकरतानहीं ॥ १ ॥ याप्रकार तेशास्त्रवेत्तापुरुष कथनकरैहैं ॥ और योगशास्त्रकेजानणेहारेजेविद्वान्पुरुषहैं ॥ तेविद्वान्पुरुषतौ याप्रका रकथनकरैहैं ॥ जैसे यालोकविषे जिसवृक्षकारस बाहरिनहींनिकसेहै ॥ सोवृक्ष तारसकेप्रभावतैं चिरकालपर्यंत स्थितहोवैहै ॥ और जिसवृक्षकारस बाहरिनिकसेहै ॥ सोवृक्ष थोडेकालमैंही सूकिकै मूलसहितनष्टहोवैहै ॥ तैसे जिसपुरुषकावीर्यरूपरस याशरीरतैंबाहरि

नहींनिकसेहै ॥ सोपुरुष तावीर्यरूपरसकेप्रभावतैं कामदेवकीन्यांई सुंदरकांतिवालाहुआ चिरकालपर्यंत जीवैहै ॥ और जिसपुरुषका सोवीर्यरूपरस याशरीरतैंबाहिरिनिकसेहै ॥ सोपुरुष शीघ्रहीमृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ किंवा जैसे वृक्षकीशाखावोंविषे तथास्कंधोंविषे स्थितजोरसहै ॥ तारसकेनिर्गमनहुएभी सोवृक्ष नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जबी तावृक्षकेमूलतैंरसनिकसेहै ॥ तबी सोवृक्ष शीघ्रही नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यापुरुषकेहस्तपादादिकअंगोंविषेस्थित जेरुधिरादिकरसहैं ॥ तिनरुधिरादिकरसोंकेनिर्गमनहुएभी यहपुरुष नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जबी यापुरुषकेमस्तकतैं सोवीर्यरूपरसनिकसेहै ॥ तबी यहपुरुष शीघ्रही नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं रुधिरादिकसर्वधातुवोंतैं सोवीर्यरूपसप्तमधातु उत्कृष्टहै ॥ किंवा जैसे लोकप्रसिद्धपिप्पलादिकवृक्षोंकामूलहोवैहै ॥ तैसे याशरीररूपवृक्षका यहमस्तकहीमूलहै ॥ तहांश्रुति॥ऊर्ध्वमूलोऽवाक्शाखएषोऽश्वत्थः सनातनः॥अर्थयह ॥ यालोकप्रसिद्धअश्वत्थादिकवृक्षोंकातौ मूलनीचेहोवैहै और शाखा ऊपरिहोवैहैं ॥ और प्रवाहरूपकरिकै अनादि जोयहशरीररूपअश्वत्थकावृक्षहै ॥ ताका मस्तकरूपमूलतौ ऊपरिहै ॥ और हस्तपादादिकअवयवरूपशाखा नीचेहैं ॥ किंवा जैसे प्रसिद्धवृक्षकेमूलविषे मध्यभागहोवैहै ॥ तैसे यापुरुषकेमस्तकरूपमूलविषे मस्तिष्कनामामध्यभागरहैहै ॥ और जैसे तावृक्षकेमूलकेमध्यभागविषेस्थितजोरसहै ॥ सोरस तावृक्षकेजीवनकाकारणहै ॥ तैसे यापुरुषकेमस्तकरूपमूलकेमस्तिष्कभागविषेस्थित जोवीर्यरूपरसहै ॥ सोवीर्यरूपरसही यापुरुषकेजीवनकाकारणहै ॥ इहां पुरुषकेमस्तकविषेस्थित जोश्लेष्मलविशिष्टमांसकापिंडविशेषहै ॥ ताकानाम मस्तिष्कहै ॥ कैसाहैसोमस्तिष्क ? यापुरुषकेदशमद्वारकूंनिरोधकरणेहाराहै ॥ तथा चंद्रमाकेबिंबसमान जाकाशुक्लवर्णहै ॥ तथा संपूर्णनाडीरूपसूत्रोंकूंधारणकरणेहाराहै ॥ और जिसमस्तिष्कविषे पद्मपत्रकेसमान सहस्रस्थूलनाडियां रहैहैं ॥ तथा तेसहस्रनाडियां तहां सहस्रदलवालेकमलकूंरचैहैं ॥ और जिसमस्तिष्कनामादेशविषे यहजीवरूपहंस गंगायमुनाकापरित्यागकरिकै पश्चिमवाहिनीसरस्वतीरूपमार्गकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहै सोजीवरूपहंस ? मनरूपीमानससरोवरविषे निवासकरणेहाराहै ॥ इहां इडानामाजा वामनाडीहै ताकानाम गंगाहै ॥ और पिंगलानाम जादक्षिणनाडीहै ताकानाम यमुनाहै ॥ और तिनदोनोंनाडियोंकेमध्यविषे

स्थित जासुषुम्नानामानाडी है ताकानाम सरस्वती है ॥ यहवार्ता स्वरोदयशास्त्रविषेभीकही है ॥ तहांश्लोक ॥ इडागंगेतिविज्ञेया पिंगलायमुनानदी ॥ मध्येसरस्वतींविद्यात्प्रयागादिसमस्तयोः ॥ अर्थयह ॥ इडानामावामनाडी गंगारूपहै ॥ और पिंगलानामादक्षिणनाडी यमुनारूपहै ॥ और तिनदोनोंकेमध्यविषेस्थित सुषुम्नानामानाडी सरस्वतीरूपहै ॥ और तिनतीनोंकासंगम प्रयागके समानहै ॥ १ ॥ किंवा याशरीरविषेस्थित जे मूलाधार स्वाधिष्ठान मणिपूरक अनाहत विशुद्धि आज्ञा यहषट्चक्रहैं ॥ जेषट्चक्र कुंडलिनीनामानाडीकेविचरणेकास्थानहैं ॥ ताषट्चक्ररूपीमार्गकाज्ञान यापुरुषकूं गुरुकीकृपातेंहीहोवैहै ॥ गुरुकीकृपातेंविना तिसषट्चक्ररूपीमार्गकाज्ञान यापुरुषकूं होवैनहीं ॥ और गुरुकीकृपातेंरहितहुआ यहजीवरूपहंस जबी ताषट्चक्ररूपमार्गकूंनहींजाणे है ॥ तबी सोजीवरूपहंस याशरीरकेअनेकनाडियोंविषे वारंवार भ्रमणकरै है ॥ तथा तिननाडियोंविषेस्थित अन्नकेस्थूलसूक्ष्मरसोंकूंभोगै है ॥ परंतु ताजीवरूपहंसका ऊर्ध्वगमनहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे जलकेसरोवरविषेस्थितजोप्रसिद्धहंसहै ॥ ताहंसका जबी ताजलकेऊपरिआकाशविषे गमनकरणेकामार्ग निरुद्धहोवैहै ॥ तबी सोहंस ताजलविषेहीभ्रमणकरै है ॥ तथा ताजलकेपदार्थोंकूंभक्षणकरताहुआ सोहंस तहांहीस्थितहोवैहै ॥ तैसे मोक्षकामार्गरूपजासुषुम्नानामानाडी है ॥ ताकूं जोजीवरूपहंस नहींजानै है ॥ सोजीवरूपहंस यासंसारविषेहीवारंवार भ्रमणकरै है ॥ ऐसीसुषुम्नानामानाडीरूपमार्गद्वारा यहजीवरूपहंस जिसमस्तिष्कदेशकूंप्राप्त होवै है ॥ तामस्तिष्कविषेस्थित जोयहवीर्यरूपसप्तमधातु है ॥ सोवीर्यरूपसप्तमधातु त्वगादिकषट्धातुवोंकासाररूपहै ॥ और सोवीर्यरूपसप्तमधातुभी याशरीरविषे तीनप्रकारकेपरिणामकूं प्राप्तहोवै है ॥ तहां कामदोषतेंरहितजोजीवोंकाहृदयकमलहै ॥ ताहृदयकमलविषे विशेषरूपकरिकैस्थितहुआसोवीर्य तथा अन्यहस्तपादादिकअंगोंविषे सामान्यरूपकरिकैस्थितहुआसोवीर्यबलरूपप्रथमपरिणामकूंप्राप्तहोवै है ॥ जोबल सर्ववैरियोंकूं भयकीप्राप्तिकरै है और मस्तकविषेस्थितहुआसोवीर्य सामर्थ्यरूपद्वितीयपरिणामकूंप्राप्तहोवै है ॥ जोसामर्थ्य याशरीरकेचिरकालपर्यंतस्थितिकाकारणहै ॥ और कामरूपअग्निकरिकैक्षोभकूंप्राप्तहुआभीजोवीर्य निरोधकूंप्राप्तहोवै है ॥ तथा जोवीर्य अधिकताकूंप्राप्तहोवै है ॥ सोवीर्य ओजनामाअष्टमधातुरूप तृतीयपरिणामकूंप्राप्तहोवै है ॥ जिस

ओजकरिकै यहपुरुष नीरोगरहैहै ॥ इतनैंकरिकै तावीर्यकेनिरोधकरणेकाफल निरूपणकऱ्या ॥ अब तावीर्यकेपरित्यागकरणेविषे दोषकानिरूपणकरैहैं ॥ याजीवोंका सोसप्तमधातुरूपवीर्य जबी याशरीरतैंबाहरिनिकसैहै ॥ तबी सोपूर्वउक्तफल तिनजीवोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं ताफलकीप्राप्तिवासते यहअधिकारीपुरुष मंत्र औषधि ध्यान इत्यादिकउपायोंकरिकै तावीर्यकूं शरीरतैंबाहरि निकसणेनहींदेवै ॥ तहां वीर्यकेनिरोधकायहलक्षणहै ॥ जैसे यालोकविषे अग्निकेसंबंधकरिकै वृक्षोंकारस बाहरिनिकसैहै ॥ तैसे स्त्रीरूपअग्निकेसंबंधहुएभी यापुरुषरूपीवृक्षकावीर्यरूपरस जबी बाहरिनहींनिकसै ॥ तबी यावीर्यकानिरोधजानणा ॥ तावीर्यकेनिरोधकरिकै योगीपुरुषोंकूं आकाशविषेगमनादिकसिद्धियोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ताफलकूं वीर्यकेपरित्यागकरणेहाराभोगीपुरुष प्राप्तहोवै नहीं ॥ उलटा तावीर्यकेपरित्यागकरणेतैं सोभोगीपुरुष नाशकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अग्निकेसंबंधकरिकै जिसवृक्षकारस एकवारभी बाहरिनिकस्याहै ॥ सोवृक्षभी जबी शीघ्रहीनाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी अनेकवार अग्निकेसंबंधकरिकै जिसवृक्षकारस अनेकवार बाहरिनिकसैहै ॥ सोवृक्ष शीघ्रहीनाशकूंप्राप्तहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै ? तैसे एकवार स्त्रीरूपअग्निकेसंबंधकरिकै जिसपुरुषरूपीवृक्षका वीर्यरूपरस एकवारभी बाहरिनिकसैहै ॥ सोपुरुषभी जबी नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी अनेकवार स्त्रीरूप अग्निकेसंबंधकरिकै अनेकवार वीर्यरूपरसकेनिकसणेतैं यहपुरुषरूपवृक्ष नाशकूंप्राप्तहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै ? यातैं यापुरुषनैं अनेकउपायोंकरिकै तावीर्यकानिरोधकरणा ॥ हेब्राह्मणो ! इसप्रकार योगशास्त्रविषे स्त्रीकेसंभोगकूं पुरुषकेमृत्युकाकारणकह्याहै ॥ यातैं सोस्त्रीकासंभोगरूपविषयभी यापुरुषकेजीवनकाकारणनहीं ॥ और हेब्राह्मणो ! जैसे स्त्रीकासंभोगरूपविषय या जीवोंकेमरणकासाधनहै ॥ तैसे चंदनकर्पूरादिकोंकरिकैयुक्त जेनानाप्रकारकेलेपहैं ॥ तेलेपभी यापुरुषोंकेशरीरविषे शीत वात कफ सन्निपातादिकरोगोंकीउत्पत्तिकरैहैं ॥ तिनशीतादिकरोगोंकरिकै सोपुरुष शीघ्रहीमृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं चंदनादिकोंकेलेपभी शीतादिकोंकीउत्पत्तिद्वारा यापुरुषकेमृत्युकेहीकारणहैं ॥ हेब्राह्मणो ! इसतैंआदिलैके जितनेकीनेत्रादिकइंद्रियोंकेरूपादिकविषयहैं ॥ तेसंपूर्णविषय याजीवोंकेमृत्युकेहीकारणहैं ॥ तथा तिनविषयोंकेप्राप्तिकीइच्छावालेजेदुर्जनशत्रुहैं ॥ तथासिंहसर्पादिकहैं ॥

तेभी यापुरुषोंकेमृत्युकाहीकारणहैं॥ तात्पर्ययह ॥ नेत्रादिकइंद्रियोंकेजेरूपादिकविषयहैं ॥ तेरूपादिकविषय जबी याशरीरोंकेजीवनकाकारणभीनहींभये॥ तबी तेरूपादिकविषय याशरीरोंकीउत्पत्तिकेकारण किसप्रकारहोवैंगे ?॥ शंका ॥ हेभगवन्! प्राणोंकाजोश्वासप्रश्वासरूपव्यापारहै ॥ सोव्यापारही याशरीरोंकेजीवनकाकारणहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो! सोप्राणोंकाश्वासप्रश्वासरूपव्यापारभी याशरीरोंकेजीवनकाकारणनहीं ॥ काहेतें ? वृक्षादिकस्थावरशरीरोंविषे सोप्राणोंकाव्यापार किसीकूंदेखणेविषे आवतानहीं ॥ तथापि तेवृक्षादिक जीवनकूंप्राप्तहुए देखतेहैं ॥ तथा मनुष्यादिकजंगमशरीरभी मूर्च्छाअवस्थाविषे ताप्राणके व्यापारतैंरहितहुएभी जीवतेदेखतेहैं ॥ यातें सोप्राणोंकाश्वासप्रश्वासरूपव्यापारभी याशरीरोंकेजीवनकाकारणनहीं ॥ शंका ॥ हे भगवन्! जठराग्नि तथारुधिर याशरीरोंकेजीवनकाकारणहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो! जठराग्नि तथारुधिर यहदोनोंभी याशरीरकेजीवनकाकारणनहीं ॥ काहेतें? कितनेकरोगीपुरुषोंकेनाडीकूं शस्त्रकरिकैछेदनकियेहुएभी रुधिरनिकसतानहीं ॥ तथा कितनेकरोगीपुरुषोंकेशरीरकास्पर्शकीएहुएभी तिनोंकेशरीरविषेउष्णताप्रतीतहोतीनहीं ॥ तथापि तेरोगीपुरुष जीवतेहुएदेखणेमैंआवतेहैं ॥ यातें रुधिर तथाजठराग्नि यहदोनोंभी पुरुषकेजीवनकाकारणनहीं ॥ हेब्राह्मणो! हमसंपूर्णप्राणी किसपदार्थकरिकैजीवतेहैं ॥ याप्रकार जीवनकेकारणकानिश्चयकरणेविषेभी जबीहम समर्थनहींभये ॥ तबी याशरीरोंकीउत्पत्तिकेकारणकानिश्चयकरणेविषे हम किसप्रकार समर्थहोवैंगे ? किंतु ताकारणकेनिश्चयकरणेविषे हम समर्थनहींहोवैंगे ॥ इतनेकरिकै याशरीरकेजीवनकेकारणकाविचारकऱ्या ॥ अब याशरीरकेआधारकाविचारकरैहैं ॥ हेब्राह्मणो! यहहमाराशरीर जिसआधारविषेस्थितहै ॥ ताआधारकूंभी हम जाणतेनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! यहप्रत्यक्षभूमिही याशरीरकाआधारहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो! याभूमिविषे याशरीरकीआधारतासंभवैनहीं ॥ काहेतें? याशरीरकाआधाररूपजाभूमिहै ॥ साभूमि किसआधारविषेरहैहै ? और सो भूमिकाआधारभी किसआधारविषेरहैहै ? इसप्रकार उत्तरउत्तर आधारकीकल्पनाकरणेतें अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ याकारणतें यहभूमि याशरीरकाआधारनहीं ॥ और हेब्राह्मणो! याशरीरकीअविशेषताहुएभी चित्तकीगति नानाप्रकारकीदेखणेविषे

आवैहै ॥ यातैं याशरीरकाजोआधारहै ॥ सोचित्तकाआधारसंभवैनहीं ॥ किंतु याशरीरकेआधारतैंभिन्नहीकोई चित्तकाआधार कह्याचाहियें ॥ किंवा याभूमिविषे इसशरीरकीआधारतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं ? जापदार्थकेविद्यमानहुए आधेयवस्तुकानीचेपत ननहींहोवै ॥ तापदार्थकानाम आधारहै ॥ जैसे स्तंभोंकेविद्यमानहुए गृहकानीचेपतनहोवैनहीं ॥ यातैं तेस्तंभ तागृहकाआधा रहैं ॥ सोयाप्रकारका आधारकालक्षण याभूमिविषेघटतानहीं ॥ काहेतैं ? ऊंचीभूमिविषे अथवा किसीआसनविषे स्थितहुआभीय हपुरुष जबी निद्राकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ तबी सोपुरुष आपणेशरीरकूंस्थितकरणेविषेसमर्थनहींहोवैहै ॥ किंतु तानिद्राकरिकै सोपुरुष नीचेपडिजावैहै॥ यातैं यहजान्याजावैहै॥ यहशरीर भूमिकेआधारविषे स्थित नहीं॥ किंतु ताभूमितैंभिन्नकिसीआधारविषे यहशरीर स्थितहै ॥ हेब्राह्मणो ! ताशरीरकेआधारकूं तथा याभूमिकेआधारकूंभी जबी हम नहींजाणिसकते ॥ तबी याशरीरकेजीवनके कारणकूं तथाउत्पत्तिकेकारणकूं हम किसप्रकार जाणिसकैंगे ? किंतु ताकारणकूं हम नहींजाणिसकैंगे ॥ इतनेकरिकै याशरीरके आधारकाविचारकऱ्या ॥ अब याशरीरकेप्रवर्तककाविचारकरैहैं ॥ हेब्राह्मणो ! जैसे यालोकविषे भूतकेआवेशकरिकैयुक्तजो पुरुषहै ॥ सोपुरुष आपणीइच्छातैंविनाही नानाप्रकारकेशुभअशुभकर्मोंकूंकरैहै ॥ तैसे शुभअशुभकर्मोंकेकरणेकीइच्छातैंरहित जोहमजीवहैं ॥ तिनोंकूं हृदयदेशविषेस्थितहोइकै कौनदेव तिनकर्मोंविषे प्रवृत्तकरैहै ? यहवार्ता पांडवगीताविषे दुर्योधननैंभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ जानामिधर्मंनचमेप्रवृत्तिर्जानामिपापंनचमेनिवृत्तिः ॥ केनापिदेवेनहृदिस्थितेन यथानियुक्तो स्मितथाकरोमि ॥ अर्थयह ॥ मैंदुर्योधन धर्मकूंजाणताहूं तौभी ताधर्मविषे मेरीप्रवृत्तिहोतीनहीं ॥ और मैं पापकर्मकूंजाणता हूं तौभी तापापकर्मतैं हमारीनिवृत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ हमारेहृदयदेशविषेकोईदेवस्थितहै ॥ सोदेव जिस जिसकर्मविषे हमारेकूंप्रेरणाकरैहै ॥ तिसतिसकर्मकूं मैं पराधीनहुआकरताहूं ॥ १ ॥ सो नानाप्रकारकेशुभअशुभकर्मोंविषे हमा रेकूंप्रवर्तकरणेहारा कौनदेवहै ? तादेवकूं हम जाणतेनहीं ॥ और हेब्राह्मणो ! तिनपुण्यपापरूपकर्मोंकेसुखदुःखरूपफलकूं जो हम दिनरात्रिविषेभोगतेहैं ॥ तासुखदुःखरूपफलकेभोगणेविषे कौनकारणहै ? यहभी हमजाणतेनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! ता

सुखदुःखरूपफलकेभोगणेविषे हमजीवही स्वतंत्रकारणहैं ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ! तासुखदुःखरूपफलकेभोगणेविषे हमजीव स्वतंत्रकारणनहीं ॥ काहेतैं? हमजीव कितनेकीकर्मोंकूं सुखकासाधनमानिकैकरतेहैं ॥ परंतु तेकर्म हमारेकूंसुखकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ किंतु उलटा तेकर्म हमारेकूंदुःखकीहीप्राप्तिकरतेहैं ॥ और हमजीव कितनेककर्मोंकूं दुःखकासाधनमानिकैकरतेहैं ॥ परंतु तेकर्म हमारेकूंदुःखकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ किंतु उलटा तेकर्म हमारेकूंसुखकीहीप्राप्तिकरतेहैं ॥ जैसे कुपथ्यसेवनतैंभी कदाचित् रोगकीनिवृत्तिहोइजावैहै ॥ जोकदाचित् हमजीव सुखदुःखरूपफलकेभोगविषेस्वतंत्रहोवैं तौ सर्वकर्मोंविषे हमारेकूं सुखकीहीप्राप्तिहोणी चाहिये और सर्वदा हमजीवोंकूं सुखकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ यातैं यहअन्याजावैहै ॥ ताशुभअशुभकर्मोंकेकरावणेहारा तथा ताकर्मोंकेसुखदुःखरूपफलकेदेणेहारा कोईस्वतंत्रदेव हमारेहृदयविषेविराजमानहै ॥ जादेवकीप्रेरणाकारिकै हमजीव शुभअशुभकर्मोंविषे प्रवृत्तहोतेहैं ॥ तथा ताकर्मकेफलकूंभोगतेहैं ॥ परंतु तादेवकूं हमजीव जाणिसकतेनहीं ॥ हेब्राह्मणो ! ऐसेअत्यंतसमीपदेवकूंभी जबीहमजीव नहींजाणिसकते ॥ तबी याशरीरके उत्पत्ति स्थिति जीवनकेकारणकूं हमजीव किसप्रकार जाणिसकैंगे ? यातैं हे ब्राह्मणो ! हमसंपूर्णबुद्धिमान्ब्राह्मण किसीदैवयोगतैंइहांआइकैएकठेभयेहैं ॥ सोहमाराएकठाहोणा जिसप्रकार सर्वलोकोंकेउद्धारकरणेवासतेहोवै ॥ तिसप्रकार हमसंपूर्णब्राह्मण याजगत्केकारणकाविचारकरैं ॥ इसप्रकार तेब्रह्मवेत्ताब्राह्मण सर्वब्राह्मणोंके प्रति वचनकहिकै कालादिकोंकूंजगत्काकारणमानणेहारेवादियोंकेमतोंकाखंडनकरणेवासते प्रथम तिनोंकेमतकानिरूपणकरते भये ॥ तहांप्रथम ज्योतिश्शास्त्रवाले कालवादियोंकामत निरूपणकरैहैं ॥ हेब्राह्मणो ! कोईकब्राह्मणतौ याकालकूंही जगत्काकारण मानैहैं ॥ तेकालवादी याप्रकारकेवचनकहैहैं ॥ आकाशादिकपंचभूतोंतैंआदिलैके यहसंपूर्णजगत् कालतैंहीउत्पन्नहोवैहै ॥ और कालविषेही सोजगत्स्थितहोवैहै ॥ और कालविषेही जोजगत् लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहजीव कालकरिकैही स्वर्गकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा कालकरिकैही यहजीव नरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा कालकरिकैही यहजीव भूरादिकसप्तलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कालकरिकैही यहजीव ब्रह्मादिकउच्चशरीरोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा कालकरिकैही यहजीव मनुष्यादिकमध्यमशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा का

लकरिकैही यहजीव पशुआदिकनीचशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कालकरिकैही यहजीव संपदाआपदाकूंप्राप्तहोवैहै॥ और कालक रिकैही यहजीव सुखदुःखकेदेणेहारेविषयोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और भोगमोक्षकेदेणेहारीविद्याकूंभी यहजीव कालकरिकैहीप्राप्तहोवैहै॥ और उपकारकरणेहारेजेसुहृद्‌मित्रहैं ॥ तथा अपकारकरणेहारेजेदुर्जनशत्रुहैं। तथा उपकारअपकारतैंरहित जेउदासीनपुरुषहैं ॥ तिनमित्रादिकोंकूंभी यहजीव कालकरिकैहीप्राप्तहोवैहै ॥ और कालकरिकैही यहजीव जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कालकरिकैही यहजीव बाल्य यौवन वृद्ध यातीनअवस्थावोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कालकरिकैही यहजीव मरणकूं तथा पुनःमातापिताकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और कालकरिकैही यहजीव भ्रातावोंकूं तथा भगिनियोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और कालकरिकैही यहजीव गर्भवासकूं तथा तागर्भतैंबाहरिनिर्गमनकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और कालकरिकैही यहजीव नानाप्रकारकेऐश्वर्यकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा ताऐश्वर्यकेनाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कालकरिकैही यहस्त्रियां ऋतुधर्मकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और कालकरिकैही येस्त्रियां गर्भकूंधारणकरैहैं ॥ और वात वर्षा आतपइत्यादिकसंपूर्णपदार्थ ताकालतैंहीउत्पन्नहोवैहैं ॥ हेब्राह्मणो! इहांबहुतकहणेकाकछुप्रयोजननहीं ॥ तेकालवादीज्योतिशशास्त्रवाले यासंपूर्णस्थावरजंगमरूपजगत्‌कीउत्पत्ति कालतैंहीअंगीकारकरैहैं ॥ यातैं तिनोंकेमतविषे यहकालही सर्वजगत्‌काकारणहै ॥ या अर्थविषे तेकालवादीब्राह्मण याप्रकारकीयुक्तिभीकथनकरैहैं ॥ जोकदाचित् कोईभावपदार्थ कालकीअपेक्षातैंविनाही किसीकार्यके पूर्ववर्तीहोवै तौ तिसपदार्थविषेही कारणरूपताहोवै ॥ याकानिवारण हम करतेनहीं ॥ परंतु ऐसाकोईभावपदार्थहैनहीं ॥ जोकालकी अपेक्षानहींकरताहोवै ॥ किंतु लोकप्रसिद्धसर्वकारणोंकेविद्यमानहुएभी याकालकीअपेक्षा अवश्यहोवैहै ॥ यातैं यहकालहीसर्वजगत्‌काकारणहै ॥ किंवा एककालतैंविना जितनेकीलोकप्रसिद्धकारणहैं ॥ तेकारण कार्योंकीउत्पत्तिविषे परस्पर व्यभिचारीहैं ॥ और यहकालतौ सर्वकार्योंकीउत्पत्तिविषे अव्यभिचारीहै ॥ याकारणतैंभी यहकालही सर्वजगत्‌काकारणहै ॥ किंवा जिसपदार्थकेपूर्वविद्यमानहुए जोपदार्थ उत्पन्नहोवैहै ॥ और जिसपदार्थकेपूर्वअविद्यमानहुए जोपदार्थ नहींउत्पन्नहोवैहै ॥ सोपदार्थ तापदार्थकाकारणहोवैहै॥ जैसे मृत्तिकादंडचक्रकुलालादिकपदार्थोंकेविद्यमानहुए घटकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और मृत्तिकादंडादिकोंकेअवि

द्यमानहुए ताघटकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातें तेमृत्तिकादंडादिकपदार्थ ताघटकेकारणहैं ॥ याप्रकारका कारणकालक्षण याकालविषेही घटेहै ॥ याकारणतैंभी यहकालही सर्वजगत्‌काकारणहै ॥ किंवा जैसे लोकविषे तंतुवोंतें पटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तथा मृत्ति कातें घटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवै ॥ तथा बीजोंतें अंकुररूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तहां पटादिककार्योंकीउत्पत्तिविषे यद्यपि तंतुआदिक विशेषकारणप्रतीतहोवैहै ॥ तथापि तंतु मृत्तिका बीज इत्यादिकविशेषकारणोंविषे यहभूमि अनुगतहुईप्रतीतहोवैहै ॥ यातें पट घट अंकुर इत्यादिकपार्थिवकार्योंविषे ताभूमिकूंही कारणरूपताहै ॥ और तंतु मृत्तिका बीज इत्यादिकविशेषपदार्थ तिनपटादिककार्योंकीउत्पत्तिविषे सहकारीहै ॥ तैसे यहकालभी सर्वत्रअनुगतहुआप्रतीतहोवैहै ॥ यातें नानाप्रकारकेकारणोंतेंउत्पन्नभयेजेकार्यहैं ॥ तिनकार्योंकीउत्पत्तिविषे यहकालही मुख्यकारणहै ॥ और दूसरेलोकप्रसिद्धनानाप्रकारकेकारण ताकेसहकारीहैं ॥ काहेतें ? यालोकविषे कालकीअपेक्षातेंविना कोईभीकारण किसीकार्यकीउत्पत्तिकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ तथा कालकीअपेक्षातेंविना सोकार्यभी आपणीउत्पत्तिविषेसमर्थहोवैनहीं ॥ याकारणतैंभी यहकालही सर्वजगत्‌काकारणहै ॥ किंवा जैसे याजगत्‌कीउत्पत्तिविषे कालतेंविना दूसराकोईपदार्थ कारणनहींहै ॥ तैसे याजगत्‌कीस्थितिविषे तथा याजगत्‌केलयविषेभी ताकालतें विना कोईदूसरापदार्थ कारणहोइसकैनहीं ॥ किंतु यहकालही याजगत्‌के उत्पत्तिस्थितिलयकाकारणहै ॥ यातें जेसांख्यादिकवादी प्रत्यक्षअनुमानादिकप्रमाणोंकेबलतें प्रधान परमाणु आदिकोंकूंही याजगत्‌काकारणमानैंहैं ॥ तेप्रधानपरमाणुआदिकभी कालकीअपेक्षातेंविना स्वतंत्रही याजगत्‌कीउत्पत्तिकरणेविषेसमर्थहोवैनहीं ॥ किंतु याकालकेसंबंधकरिकेही तिनप्रधानपरमाणु आदिकोंविषे सामर्थ्यहोवैहै ॥ यातें यहकालही सर्वजगत्‌काकारणहै ॥ अब सो कालकूंकारणमानणेहारावादी परमाणुवोंविषे जगत्‌कीकारणताकाखंडनकरैहै ॥ तहांप्रथम परमाणुवोंकूंकारणमानणेहारे नैयायिकोंकीप्रक्रिया निरूपणकरैहैं ॥ पृथिवी जल तेज वायु याचारिभूतोंकेजेपरमाणुहैं ॥ तेपरमाणुही याजगत्‌काकारणहैं ॥ तहां झरोखेद्वारा गृहविषेप्राप्तभयेजेसूर्यकेकिरणहैं ॥ तिनकिरणोंविषेजोसूक्ष्मरजप्रतीतहोवैहै ॥ तारजका जोषष्ठभागहै ताकानाम परमाणु ॥ तेपरमाणुहैं नेत्रादिकइंद्रियजन्यज्ञानकेविषय

होवैनहीं ॥ तथा तेपरमाणु नित्यहोवैंहैं ॥ तथा परमअणुत्वपरिमाणवालेहोवैंहैं ॥ ऐसेपरमाणुवोंविषे परमेश्वरकीइच्छाकेवशतैं
क्रिया उत्पन्नहोवैंहै॥ ताक्रियातैं दोदोपरमाणुवोंका परस्पर संयोगसंबंधहोवैंहै॥ तासंयोगतैंअनंतर द्व्यणुकरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवै
है ॥ ताद्व्यणुकरूपकार्यविषे तेदोनोंपरमाणु समवायिकारणहैं॥और तिनदोपरिमाणुवोंका परस्परसंयोगसंबंध असमवायिकारणहै॥
और ईश्वरइच्छादिक निमित्तकारणहैं ॥ इसप्रकार तिनद्व्यणुकरूपकार्योंविषेभी प्रथम क्रिया उत्पन्नहोवैंहै ॥ ताक्रियातैंअनंतर
तिनतीनद्व्यणुकोंका परस्पर संयोगसंबंधहोवैंहै ॥ तासंयोगतैंअनंतर त्र्यणुकरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैंहै ॥ इसप्रकार चतुरणुकादि
कोंकीउत्पत्तिक्रमतैं यहमहान्पृथिवी महान्जल महान्तेज महान्वायु उत्पन्नहोवैंहै ॥ और जिसकालविषे याजगत्काप्रलयहोवै
है ॥ तिसकालविषे पुनःपरपरमेश्वरकीइच्छाकेवशतैं तिनपरमाणुवोंविषे क्रिया उत्पन्नहोवैंहै ॥ ताक्रियातैंअनंतर तिनपरमाणुवोंका
परस्पर विभागहोवैंहै ॥ ताविभागतैंअनंतर तिनपरमाणुवोंकेसंयोगकानाशहोवैंहै ॥ तासंयोगनाशतैंअनंतर द्व्यणुकरूपकार्यका
नाशहोवैंहै ॥ ताद्व्यणुकरूपकारणकेनाशतैंअनंतर त्र्यणुकरूपकार्यकानाशहोवैंहै ॥ इसप्रकारचतुरणुकादिकोंकेनाशक्रमतैं यहम
हान्पृथिवी महान्जल महान्तेज महान्वायु नाशकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ इसप्रकार तेनैयायिक परमाणुवोंतैंही याजगत्कीउत्पत्तिअंगी
कारकरैंहैं ॥ सोयहतिनोंकामत तबीसिद्धहोवै ॥ जबी प्रथम तिनपरमाणुवोंविषे नित्यरूपतासिद्धहोवै ॥ सो तिनपरमाणुवोंविषेही
नित्यरूपतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं ? जैसे प्रसिद्धस्थूल पृथिवी जल तेज वायु याचारिभूतोंविषे क्रमतैंपृथिवीत्व जलत्व तेजस्त्व वायु
त्व यहचारिधर्मरहेहैं ॥ याकारणतैं यहप्रसिद्धपृथिवीआदिकचारिभूत अनित्यहैं ॥ तैसे तिनपृथिवीआदिकचारिभूतोंकेपरमाणु
वोंविषेभी क्रमतैं तेपृथिवीत्वादिकचारिधर्मरहेहैं॥ यातैं तेपृथिवीआदिकचारिभूतोंकेपरमाणुभी अनित्यही सिद्धहोवैंहैं॥ याकहणेतैं
यहअनुमानसिद्धभया॥ पृथिवीपरमाणु अनित्यहोणेयोग्यहैं॥ पृथिवीत्वधर्मवालेहोणेतैं प्रसिद्धपृथिवीकीन्यांई ॥ इसप्रकार क्रमतैं
जलत्व तेजस्त्व वायुत्व याहेतुवोंकरिकै तथा प्रसिद्धजलतेजवायुकेदृष्टांतकरिकै परमाणुरूपजलतेजवायुविषेभी अनित्यरूपताके
अनुमान बुद्धिमान्पुरुषनैं जानिलेणे ॥ ऐसे अनित्यपरमाणुवोंविषे याजगत्कीकारणतासंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेकालवादी ! परमा

णुवोंविषे जोतुमनैं अनित्यरूपतासिद्धकरी सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? यालोकविषे जिसजिसपदार्थविषे अनित्यपणाहोवैहै ॥ तिसति सपदार्थविषे मध्यमपरिमाण अवश्यहोवैहै ॥ तैसे घटादिकपदार्थोंविषे अनित्यपणाहै ॥ यातें तिनघटादिकोंविषे मध्यमपरिमाण भीहै ॥ सोमध्यमपरिमाण तिनपरमाणुवोंविषेहैनहीं ॥ यातें तिनपरमाणुवोंविषे अनित्यपणाभीसंभवैनहीं ॥ याकहणेतें यहअनुमा नसिद्धभया ॥ पृथिवीआदिकोंकेपरमाणु नित्यहोणेयोग्यहैं मध्यमपरिमाणकेअभाववालेहोणेतें ॥ जोपदार्थ नित्यनहींहोवैहै ॥ सोपदार्थ मध्यमपरिमाणकेअभाववालाभीनहींहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ नित्यनहीं हैं ॥ यातें मध्यमपरिमाणकेअभाववाले भीनहीं हैं ॥ किंतु तेघटादिक मध्यमपरिमाणवालेही हैं ॥ समाधान ॥ हेनैयायिक ! अणुपरिमाण परममहत्परिमाण यादोनोंपरि माणोंतेंभिन्नजोपरिमाणहै ॥ ताकानाम मध्यमपरिमाणहै ॥ तामध्यमपरिमाणकाअभाव जैसे परमाणुवोंविषेहै ॥ तैसे शब्दादिकगु णोंविषेभीहै ॥ यातें तिनपरमाणुवोंकीन्यांई शब्दादिकगुणोंविषेभी नित्यरूपता सिद्धहोणीचाहिये ॥ और शब्दादिकगुणोंविषेनि त्यरूपता तुम नैयायिक अंगीकारकरतेनहीं ॥ यातें मध्यमपरिमाणके अभावरूपहेतुतें तिनपरमाणुवोंविषेनित्यरूपतासिद्धहोवैन हीं ॥ किंवा जैसे मध्यमपरिमाणकाअभाव वस्तुकेनित्यपणेका प्रयोजकनहीं है ॥ तैसे मध्यमपरिमाणभी वस्तुकेअनित्यपणेका प्रयोजकनहीं है ॥ काहेतें ? नैयायिकोंकेमतविषे रूपादिकगुणोंविषे तथाकर्मविषे रूपादिकगुणरहैनहीं ॥ यातें मध्यमपरिमाणरू पगुणकेअभाववालेजेशब्दादिकगुणहैं तथाकर्महैं तिनोंविषे अनित्यपणा नहींहोणाचाहिये ॥ और तिनशब्दादिकोंविषे अनित्य पणातौ प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ यातें सोमध्यमपरिमाण वस्तुकेअनित्यपणेका प्रयोजकनहीं है ॥ किंतु आकाश काल दिक् आत्मा याचारिविभुपदार्थोंतेंभिन्नपणाही वस्तुकेअनित्यपणेका प्रयोजकमानणाहोवैगा ॥ सोविभुपदार्थोंतेंभिन्नपणा जैसे प्र सिद्धघटादिकपदार्थोंविषेहै ॥ तैसे पृथिवीआदिकोंकेपरमाणुवोंविषेभी सोविभुपदार्थतेंभिन्नपणा विद्यमानहै ॥ यातें घटादिकपदा र्थोंकीन्यांई तिनपरमाणवोंकूंभी अनित्यरूपहीमान्याचाहिये ॥ घटादिकमूर्तपदार्थोंकूं अनित्यमानिके परमाणुरूपमूर्तपदार्थोंकूंनि त्यमानणेविषे केवल तावादीका पक्षपातहीप्रतीतहोवैहै ॥ शंका ॥ हेकालवादी ! यालोकविषे जोजोपदार्थ निरवयवहोवैहै ॥ सो

सोपदार्थ नित्यहीहोवैहै ॥ जैसे आत्मा निरवयवहै ॥ यातें नित्यहै ॥ तैसे यहपरमाणुभी निरवयवहैं ॥ यातें तेपरमाणु नित्यहीहैं॥ याकहणेकरिकै यहअनुमानसिद्धभया ॥ पृथिवीआदिकोंकेपरमाणु नित्यहोणेकूंयोग्यहैं निरवयवहोणेतें आत्माकीन्यांई ॥ याअनुमानप्रमाणकरिकै तिनपरमाणुवोंविषे नित्यपणाहीसिद्धहोवैहै ॥ यातें तिनपरमाणुवोंविषे अनित्यपणेकूंसिद्धकरणेहारा सोकालवादीकाअनुमान सत्प्रतिपक्षदोषवालाहै ॥ जिसहेतुकेसाध्यकेअभावकूं दूसराहेतु सिद्धकरै ॥ सोहेतु सत्प्रतिपक्षदोषवालाहोवैहै॥ **समाधान** ॥ हेनैयायिकवादी! तानिरवयवत्वरूपहेतुतैं तिनपरमाणुवोंविषे नित्यत्वरूपसाध्यकीसिद्धिहोइसकैनहीं ॥ काहेतें? तुम नैयायिकोंकेमतविषे जोहेतु आपणेसाध्यकेअभाववालेपदार्थविषेरहैहै॥ सोहेतु व्यभिचारीहोवैहै ॥ ताव्यभिचारीहेतुकरिकै तासाध्यकीसिद्धि तुम अंगीकारकरतेनहीं॥ और यहतुमारा निरवयवत्वरूपहेतुतौ नित्यत्वरूपसाध्यकेअभाववालेगुणकर्मादिकोंविषेभी रहैहै॥ यातें सोनिरवयवत्वरूपहेतुभी व्यभिचारीहै॥ ताव्यभिचारीहेतुकरिकै तिनपरमाणुवोंविषे नित्यरूपता सिद्धहोइसकैनहीं॥ **शंका** ॥ हेकालवादी! यद्यपि सोनिरवयवत्वरूपहेतु नित्यत्वरूपसाध्यकेअभाववालेगुणकर्मादिकोंविषेभीरहैहै ॥ यातें सोनिरवयवत्वरूपहेतु व्यभिचारीहै ॥ तथापि निरवयवद्रव्यत्वरूपहेतु तिनगुणकर्मादिकोंविषेरहतानहीं ॥ यातें सोनिरवयवद्रव्यत्वरूपहेतु व्यभिचारीनहीं॥ तानिरवयवद्रव्यत्वरूपहेतुकरिकैही हमनैयायिक तिनपरमाणुवोंविषे नित्यरूपतासिद्धकरैहैं ॥ **समाधान** ॥ हेपरमाणुवादीनैयायिक! पृथिवीआदिकोंकेपरमाणु अनित्यहोणेयोग्यहैं मूर्तपदार्थहोणेतें प्रसिद्धपृथिवीआदिकोंकीन्यांई ॥ याहमारेअनुमानकेविद्यमानहुए सोतुमारानिरवयवद्रव्यत्वरूपहेतु तिनपरमाणुवोंविषे नित्यरूपता सिद्धकरिसकैनहीं ॥ **शंका** ॥ हेकालवादी! जैसे तिनपरमाणुवोंविषे अनित्यरूपताकीसिद्धिकरणेहारा जोतुमाराअनुमानहै ॥ ताअनुमानकेविद्यमानहुए हमनैयायिकोंकूं तिनपरमाणुवोंविषे नित्यरूपताकानिश्चय होइसकैनहीं ॥ तैसे तिनपरमाणुवोंविषे नित्यरूपताकीसिद्धिकरणेहारा जोहमाराअनुमानहै॥ ताअनुमानकेविद्यमानहुए तुमारेकूंभी तिनपरमाणुवोंविषे अनित्यरूपताकानिश्चय होइसकैनहीं ॥ **समाधान** ॥ हेपरमाणुवादीनैयायिक! जिसस्थलविषे परस्परविरोधीअर्थकीसिद्धिकरणेवासते दोअनुमानप्रवृत्तहोवैहैं ॥ तिसस्थलविषे यद्यपि एकअ

र्थकानिश्चय होइसकैनहीं ॥ तथापि तिनदोनोंअनुमानोंविषे जिसअनुमानका श्रुतिस्मृतिआदिकप्रमाण सहकारीहोवैहै ॥ सोअनुमान प्रबलहोवैहै ॥ और जिसअनुमानका श्रुतिस्मृतिआदिकप्रमाण सहकारीनहींहोवैहै ॥ सो अनुमान दुर्बलहोवैहै ॥ और प्रबलकरिकैदुर्बलकाबाध यालोकविषे प्रसिद्धदेख्याहै ॥ और ॥ यावद्विकारंतुविभागोलोकवत् ॥ याव्यासभगवान्केसूत्रविषे तथा ॥ अतोऽन्यदार्तं ॥ याश्रुतिविषे भेदवालेपरिच्छिन्नपदार्थोंविषे अनित्यरूपताहीकथनकरीहै ॥ सोभेदवालेपरिच्छिन्न परमाणुभीहैं ॥ यातें ताश्रुतिसूत्ररूपप्रमाणकीसहायतातें प्रबलताकूंप्राप्तहुआ सोहमाराअनुमान तुमारेअनुमानकाबाधकरिकै तिनपरमाणुवोंविषे अनित्यरूपताही सिद्धकरैहै ॥ और तुमारेअनुमानविषे कोईश्रुतिस्मृतिरूपप्रमाण सहायताकरणेहाराहैनहीं ॥ यातें तादुर्बलअनुमानकरिकै तिनपरमाणुवोंविषे नित्यरूपता सिद्धहोइसकैनहीं ॥ किंवा ॥ जिसनिरवयवत्वरूपहेतुकरिकै तुमनैयायिक तिनपरमाणुवोंविषे नित्यरूपता सिद्धकरोहो ॥ सोनिरवयवत्वरूपहेतु तिनपरमाणुवोंविषे रहताहीनहीं ॥ काहेतें ? तुमनैयायिक तिनपरमाणुवोंका पूर्वादिकअष्टदिशावोंकेसाथ संयोगसंबंध अंगीकारकरोहो ॥ तथा तिनपरमाणुवोंका परस्परभी संयोगसंबंध अंगीकारकरोहो ॥ और तासंयोगसंबंधकूं तुमनैयायिक अव्याप्यवृत्तिमानोहो ॥ तहां जोपदार्थ आपणेआश्रयके एकदेशविषेरहैहै तथा एकदेशविषेनहींरहैहै ताकानाम अव्याप्यवृत्तिहोवैहै ॥ ऐसेअव्याप्यवृत्तिसंयोगसंबंधवाले परमाणुवोंविषे निरवयवरूपता संभवैनहीं ॥ किंतु संयोगसंबंधवालेमूर्तपदार्थ सावयवहीहोवैहैं ॥ जैसे घटपटादिकमूर्तपदार्थ संयोगसंबंधवालेहोणेतें सावयवहीहैं ॥ तैसे संयोगसंबंधवालेहोणेतें तेपरमाणुभी सावयवहीसिद्धहोवैंगे ॥ और जोजोपदार्थ सावयवहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ किसीकारणकरिकैजन्यहीहोवैहै ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ सावयवहोणेतें मृत्तिकादिककारणोंकरिकैजन्यहैं ॥ तैसे तेपरमाणुभी सावयवहोणेतें किसीकारणकरिकै अवश्यजन्यहोवैंगे ॥ और सोतिनपरमाणुवोंकाकारणभी जोकिसीदूसरेकारणकरिकैजन्यमानिये तो सोदूसरकारणभी किसीतीसरेकारणकरिकैजन्यहोवैगा ॥ याप्रकार कारणोंकीअनवस्थाप्राप्तहोवैगी ॥ यातें तिनपरमाणुवोंकेकारणकूंअजन्यहीमान्याचाहिये ॥ सोऐसाउत्पत्तितैंरहितकारण कालतैंविनादूसराकोई हैनहीं ॥ यातें ताकालकूंही तिनपरमाणुवोंकाकारणमान

णाहोवैगा॥ जबी ताकालविषे परमाणुवोंकीकारणता वादीनैं अंगीकारकरी ॥ तबी ताकालकरिकैही सर्वजगत्कीउत्पत्ति संभव होइसकैहै ॥ तिनदोनोंकेमध्यविषे परमाणुवोंकूंकारणमानणा निष्फलहै ॥ किंवा जोनैयायिकवादी तिनपरमाणुवोंकूं नित्यभीअं गीकारकरै तौभी तिननित्यपरमाणुवोंतें सर्वदाजगत्कीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ कदाचित्भी प्रलय नहींहोणाचाहिये ॥ सो स र्वदा जगत्कीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातें याजगत्के उत्पत्तिप्रलयकी व्यवस्थाकरणेवासते तेपरमाणु कालकीअपेक्षा अवश्यकरैंगे ॥ याकारणतैंभी ताकालकूंही जगत्काकारणमानणा उचितहै ॥ किंवा प्रलयकालविषे तेपरमाणु परस्पर विभागवालेहुएस्थितहो वैहैं ॥ याकारणतैं तेपरमाणु ताप्रलयकालमैं याजगत्कीउत्पत्तिकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ और जगत्कीउत्पत्तिकालविषे ति नपरमाणुवोंकापरस्पर संयोगसंबंधहोवैहै ॥ याकारणतैं तेपरमाणु याजगत्कीउत्पत्तिकरणेविषेसमर्थहोवैहैं ॥ तासंयोगसंबंधकी उत्पत्तिविषे याकालकीअपेक्षा अवश्यहोवैगी ॥ याकारणतैंभी यहकालही सर्वजगत्काकारणहै ॥ ताकालतैंभिन्न परमाणुआदि कोंविषे याजगत्कीकारणतासंभवैनहीं ॥ इतनेकरिकै कालवादीज्योतिश्शास्त्रवालेपुरुषोंका मतनिरूपणकर्‍या ॥ अब स्वभावकूं ही जगत्काकारणमानणेहारे जेस्वभाववादीलोकायतहैं तिनोंकेमतकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां तेस्वभाववादी ताकालवादीकेमतवि षे याप्रकारकेदूषण कथनकरैहैं ॥ हेकालवादी! यासर्वजगत्काकारणरूपकरिकै तुमनैं अंगीकारकर्‍याजोकालहै ॥ सोकाल आ पणेस्वभावकी तथाकार्यकेस्वभावकी अपेक्षाकरिकैही कारणहोवैहै ॥ अथवा तास्वभावकीअपेक्षातैंविनाही सोकाल याजगत्का का रणहोवैहै ॥ तहां सोकाल तास्वभावकीअपेक्षातैंविनाही कारणहोवैहै ॥ यहद्वितीयपक्ष जोतुम अंगीकारकरो सोसंभवैनहीं ॥ का हेतें? वस्तुकेस्वभावकीअपेक्षातैंविनाही सोतुमाराकाल जोकदाचित् कार्यकीउत्पत्तिकरताहोवै तौ प्रज्वलितमहान्अग्निविषे तथा आकाशविषे सोतुमाराकाल जलकीउत्पत्ति किसवासतेनहींकरता ? और सोतुमाराकाल अग्निकरिकै जीवोंकेतृषाकीनिवृत्ति किस वासतेनहींकरता ? और सोकाल अन्नतैंविनाही याजीवोंकेक्षुधाकीनिवृत्ति किसवासतेनहींकरता ? और सोतुमाराकाल पुत्रार्थी पुरुषोंकूं स्त्रीतैंविनाही पुत्रोंकीप्राप्ति किसवासतेनहींकरता ? और सो तुमाराकाल मृतकशरीरकेसंयोगकरिकैभी याजीवोंविषे सु

खदुःखकीउत्पत्ति किसवासतेनहींकरता? और ताकालकेप्रभावतैं यहमृतकशरीर हमारेसाथसंभाषण किसवासतेनहींकरता? और ताकालकेप्रभावतैं यहस्त्रियां पुरुषकेसंबंधतैंविनाही गर्भकाधारण किसवासतेनहींकरती हैं? और ताकालकेप्रभावतैं यह आकाश अवकाशभावतैंरहितहोणाचाहिये ॥ तथा यहपृथिवी रसातलविषेगयीचाहिये ॥ तथा यहजल स्नेहभावतैंरहितहोणाचाहिये ॥ तथा यहअग्निआदिकतेज प्रकाशतैंरहितहोणेचाहिये ॥ तथा यहवायु निश्चलताकूंप्राप्तहोणाचाहिये ॥ किंवा सोतुमाराकाल जोकदाचित् वस्तुकेस्वभावकीअपेक्षातैंविनाही कार्यकीउत्पत्तिकरताहोवै तौ सोकाल यापुरुषोंकेमुख्यद्वारतैं मलमूत्रादिकोंका परित्याग किसवासतेनहींकरावता? तथा सोकाल यापुरुषोंकेघ्राणइंद्रियकरिकै शब्दकाश्रवण किसवासतेनहींकरावता? तथा सोकाल यापुरुषोंकेश्रोत्रइंद्रियकरिकै गंधकाग्रहण किसवासतेनहींकरावता? तथा सोकाल यापुरुषोंकेनेत्रइंद्रियकरिकै आहारका ग्रहण किसवासतेनहींकरावता? इसप्रकार सोकाल यापुरुषोंकेवाकादिकइंद्रियोंकेव्यापारोंकाविपरीतभाव किसवासतेनहींकरावता? इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकेदूषणोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ जो ताकालकूं वस्तुकेस्वभावकीअपेक्षातैंविनाही याजगत्काकारणमानौगे ॥ यातैं तास्वभावकीअपेक्षातैंविना ताकालविषे जगत्कीकारणतासंभवैनहीं ॥ और सोकाल कारणके तथाकार्यके स्वभावकीअपेक्षाकरिकैही याजगत्काकारणहोवैहै ॥ यहप्रथमपक्ष सोकालवादी जोअंगीकारकरै तौ जिसस्वभावकीअपेक्षाकरिकै सोकाल याजगत्कीव्यवस्थापूर्वक उत्पत्तिकरैहै ॥ तास्वभावविषेही याजगत्कीकारणतासंभवहोइसकैहै ॥ यातैं स्वभाव जगत् यादोनोंकेमध्यविषे कालकूंजगत्काकारणमानणा निष्फलहोवैगा ॥ किंवा तास्वभावकूंही जगत्काकारणमानणेविषे पूर्वउक्तदोषोंकीभीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ काहेतें? यापुरुषोंकाचक्षुरिंद्रिय आपणेस्वभावतैं रूपकूंहीग्रहणकरैहै ॥ रसादिकोंकूंग्रहणकरैनहीं ॥ तथा श्रोत्रइंद्रियभी आपणेस्वभावतैं शब्दकूंहीग्रहणकरैहै ॥ रूपादिकोंकूंग्रहणकरैनहीं ॥ इसप्रकारदूसरेइंद्रियभी आपणेस्वभावकेबलतैं आपणेआपणेविषयकूंहीग्रहणकरैहैं ॥ अन्यइंद्रियकेविषयकूं अन्यइंद्रिय ग्रहणकरैनहीं ॥ इसप्रकार रूपादिकविषयभी आपणेआपणेस्वभावकेबलतैं आपणेआपणेनेत्रादिकइंद्रियोंकेही विषयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ अन्यइंद्रियकाविषय अन्यइंद्रियकेविषयभावकूंप्रा

सहोवैनहीं ॥ इसप्रकार वस्तुकेस्वभावकाअंगीकारकरिकै पूर्वउक्तसर्वदोषोंकापरिहार होइसकैहै ॥ यातें याजगत्कीप्रवृत्तिनिवृत्ति
विषे तथा याजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयविषे यहस्वभावहीकारणहै ॥ यास्वभावतैंभिन्नदूसराकोईपदार्थ याजगत्काकारणहोवैनहीं ॥
इतनेकरिकै स्वभावकारणवादी लोकायतोंकामतनिरूपणकऱ्या ॥ अब धर्मअधर्मरूपनियतिकूंही याजगत्काकारणमानणेहारे जे
मीमांसकवादीहैं तिनोंकेमतकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां तेमीमांसकवादी ताधर्मअधर्मरूपनियतिविषे जगत्कीकारणतासिद्धकरणे
वासते प्रथम तिनस्वभावकारणवादियोंकेमतविषे याप्रकारकेदूषण कथनकरैहैं ॥ हेस्वभाववादी! याजगत्काकारणरूपकरिकै तुम
नैंअंगीकारकऱ्याजोस्वभावहै ॥ सोस्वभाव धर्मअधर्मरूपनियतिकीअपेक्षाकरताहुआ याजगत्काकारणहै ॥ अथवा सोस्वभाव ता
नियतिकीअपेक्षातैंविनाही याजगत्काकारणहै? तहां धर्मअधर्मरूपनियतिकीअपेक्षातैंविनाही सोस्वभाव याजगत्काकारणहै ॥ यह
दूसरापक्ष जोतुम अंगीकारकरौ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? तानियतितैंविनाही सोस्वभाव जोकदाचित् याजगत्काकारणहोताहोवै
तौ ताअनियतस्वभावकेबलतैं याउष्णस्वभाववालेअग्नितैंभी शीतलताउत्पन्नहोणीचाहिये॥तथा शीतलस्वभाववालेजलतैंभी उष्ण
ताकी उत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ याप्रकार सर्वकालविषे तथासर्वपदार्थोंविषे सर्वकार्योंकीउत्पत्तिहोणीचाहिये॥ और सर्वकालविषे तथा
सर्वपदार्थोंविषे सर्वकार्योंकीउत्पत्ति देखणेमैंआवतीनहीं ॥ यातें तानियतिकीअपेक्षातैंविना तास्वभावविषे जगत्कीकारणतासंभवै
नहीं ॥ और सोस्वभाव धर्मअधर्मरूपनियतिकीअपेक्षाकरिकैही याजगत्काकारणहै यहप्रथमपक्ष जोतुम अंगीकारकरौ तौ जैसे
स्वभावकीअपेक्षाकरताहुआ सोकाल याजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकाकारणहोवैहै ॥ याकारणतें सोकाल याजगत्काकारणनहीं
है ॥ किंतु सोस्वभावही याजगत्काकारणहै ॥ याप्रकारकीयुक्तिसें तुमनैं कालकाखंडनकरिकै स्वभावकूंही जगत्काकारणमान्या
है ॥ तैसे सोतुमारास्वभावभी धर्मअधर्मरूपनियतिकीअपेक्षाकरिकैही याजगत्काकारणहोवैहै ॥ याकारणतें सोतुमारास्वभाव
भी याजगत्काकारणहोइसकैनहीं ॥ किंतु सोधर्मअधर्मरूपनियतिही याजगत्काकारणमान्याचाहिये ॥ नियति जगत् यादोनों
के मध्यविषे स्वभावकूंकारणमानणानिष्फलहै ॥ इतनेकरिकै धर्मअधर्मरूपनियतिकूंकारणमानणेहारे मीमांसकवादियोंकामत नि

रूपणकऱ्या ॥ अब यदृच्छाकूंही याजगत्काकारणमानणेहारे जेकोईकवादीहैं तिनोंकेमतकानिरूपणकरैंहैं ॥ इहां कार्यकूं आपणी उत्पत्तिविषे कर्तादिकोंकीअपेक्षानहींहोणी याकानाम यदृच्छाहै ॥ तेयदृच्छाकारणवादी आपणेमतकीसिद्धिकरणेवासते तानियतिवादीकेमतविषे याप्रकारकेदूषणकहेहैं ॥ हेनियतिकारणवादी! तुमनैं याप्रकारका तानियतिकास्वरूपकह्याहै ॥ यहकार्य इसीहीकारणकरिकैउत्पन्नहोवैहै ॥ इसकारणतैंभिन्न दूसरेकिसीकारणकरिकै यहकार्य उत्पन्नहोवैनहीं ॥ तथा यहकार्य इसीप्रकारतैंउत्पन्नहोवैहै ॥ दूसरेकिसीप्रकारतैंउत्पन्नहोवैनहीं ॥ तथा याकारणतैं यहहीकार्य उत्पन्नहोवैहै ॥ दूसराकोईकार्य उत्पन्नहोवैनहीं ॥ याप्रकारकीनियतिकूंही तुमनैं याजगत्काकारणमान्याहै ॥ जैसे ऋतुधर्मयुक्तस्त्रियोंका जो रजहै ॥ सोरजही नियमकरिकैगर्भधारणेकाकारणहोवैहै ॥ सो याप्रकारकीनियतिकूं जगत्काकारणमानणा तुमारेकूंयोग्यनहीं ॥ काहेतैं? यालोकविषे तानियतितैंविनाही कितनेकीकारणोंकी तथाकितनेकीकार्योंकी यदृच्छारूपहेतुतैं प्राप्तिदेखणेमैंआवैहै ॥ जैसे यालोकविषे कितनेधर्मात्मापुरुषोंकूं अकस्मात्तैंदुःखकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ और कितनेपापात्मापुरुषोंकूं अकस्मात्तैं सुखकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ और यालोकविषे सुखकासाधनरूपकरिकैप्रसिद्ध जेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थहैं ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थभी कदाचित् याजीवकेदुःखकाहीकारणहोवैहैं ॥ और यालोकविषेदुःखकासाधनरूपकरिकैप्रसिद्ध जोपादादिकोंकाप्रहारहै ॥ सोभी कदाचित् परिश्रमयुक्तपुरुषोंकेसुखकाहीकारणहोवैहै ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकाविपरीतभाव देखणेमैंआवैहै ॥ जोपूर्वउक्तनियतिहीकारणहोवै तौ याप्रकारकाविपरीतभाव नहींहोणाचाहिये ॥ और याप्रकारकाविपरीतभाव प्रसिद्धदेखणेमैंआवैहै ॥ यातैं तानियतिविषे जगत्कीकारणतासंभवैनहीं ॥ किंतु सायदृच्छाही याजगत्काकारणहै ॥ इतनैंकरिकै यदृच्छाकारणवादियोंकामत निरूपणकऱ्या ॥ अब आकाशादिकपंचभूतोंकूं जगत्काकारणमानणेहारे जेकोईकवादीहैं तिनोंकेमतकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां तेभूतकारणवादी आपणेमतकीसिद्धिकरणेवासते तायदृच्छाकारणवादीकेमतविषे याप्रकारकेदूषण कथनकरैहैं ॥ हेयदृच्छाकारणवादी! यालोकविषे जितनेरूपरसादिकधर्महैं ॥ तेधर्म घटादिकधर्मियोंकीअपेक्षातैंविना स्वतंत्ररहतेनहीं ॥ किंतु तेरूपरसादिकधर्म घटादिकधर्मियोंकीअपेक्षाकरिकैही स्थितहोवैहैं ॥ तैसे सातुमा

रीयदृच्छाभी धर्मरूपहै ॥ यातैं सायदृच्छा किसीधर्मिकीअपेक्षातैंविना स्वतंत्रस्थितहोइसकैनहीं ॥ किंतु सायदृच्छा किसीधर्मिकी अपेक्षाकरिकैही स्थितहोवैगी ॥ और जबपर्यंत प्रत्यक्षवस्तुकासंभवहोइसकै ॥ तबपर्यंत परोक्षवस्तुकीकल्पनाकरणीअनुचितहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम सर्वशास्त्रोंविषेकथनकऱ्याहै ॥ यातैं प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्ध जेयहआकाशादिकपंचभूतहैं ॥ तेभूतही तायदृच्छारूपधर्मका धर्मिरूप अंगीकारकरणेहोवैगे ॥ यातैं सायदृच्छा जिनभूतोंकीअपेक्षाकरिकै याजगत्काकारणहोवैहै ॥ तिन भूतोंकरिकैही याजगत्केउत्पत्तिकासंभवहोइसकैहै ॥ तिनदोनोंकेमध्यविषे यदृच्छाकूंजगत्काकारणमानणा निष्फलहोवैगा ॥ यातैं आकाशादिकपंचभूतही याजगत्काकारणहैं ॥ इतनेकरिकै आकाशादिकभूतोंकूं जगत्काकारणमानणेहारेवादियोंकामत निरूपणकऱ्या ॥ अब प्रकृतिकूंही याजगत्काकारणमानणेहारे जेसांख्यशास्त्रवाले हैं तिनोंकेमतकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां तेप्रकृतिकारणवादी तिनभूतकारणवादियोंकेमतविषे याप्रकारकेदूषण कथनकरैहैं ॥ हेभूतकारणवादी! तुमनैं जिनभूतोंकूं जगत्काकारणमान्याहै ॥ तेभूत घटादिकपदार्थोंकीन्यांई सावयवहैं ॥ और जोजोपदार्थ सावयवहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ किसीकारणकरिकैजन्यहोवैहै ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ सावयवहैं ॥ यातैं मृत्तिकातंतुआदिककारणोंकरिकैजन्यहैं ॥ तैसे तिनसावयवभूतोंकाभी कोईदूसरा कारण तुमनैं अंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ और यालोकविषे जिसप्रकारकाकार्यहोवैहै ॥ तिसप्रकारका कारणहोवैहै ॥ कार्यतैं विलक्षणस्वभाववाला कारणहोवैनहीं ॥ जैसे घटादिककार्योंकेसमानस्वभाववालीजामृत्तिकाहै ॥ सामृत्तिकाही तिनघटादिकोंकाकारणहोवैहै ॥ तैसेयाजगतरूपकार्यकेसमानस्वभाववालाहीकोईपदार्थ ताजगत्काकारणमान्याचाहिये ॥ और याजगतविषे सुवर्ण स्त्री रत्न वस्त्र इसतैंआदिलैकेजितनेपदार्थहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ सुखरूपसत्वगुणकरिकै तथादुःखरूप रजोगुणकरिकै तथा मोहरूपतमोगुणकरिकै युक्तहैं ॥ तहां तेसुवर्णादिकपदार्थ जिसपुरुषकेहस्तविषेरहैहैं ॥ तिसपुरुषकूंतौ सुखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और तासुवर्णादिकपदार्थोंवालेपुरुषकाजोशत्रुहोवैहै ॥ ताशत्रुकूं तेसुवर्णादिकपदार्थ दुःखकीहीप्राप्तिकरैहैं ॥ और तिनसुवर्णादिकपदार्थोंकीप्राप्तिनतैंरहितजोलोभीपुरुषहै ॥ तालोभीपुरुषकूं तेसुवर्णादिकपदार्थमोहकीप्राप्तिकरैहैं ॥ इसप्रकार यहसंपूर्णजगत् सत्व रज तम यातीनगुणों

करिकैयुक्तहै ॥ यातैं तात्रिगुणरूपजगत्का कारणभीकोईत्रिगुणरूपवस्तु मान्याचाहिये॥ सोऐसीत्रिगुणरूप तथासर्वकार्योंविषेअनुगत जडप्रकृतिहै ॥ यातैं साजडप्रकृतिही याजगत्काकारणहोणेयोग्यहै ॥ याहीप्रकृतिकूं श्रुतिविषे योनि यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ऐसीजडरूपनित्यप्रकृतितैं प्रथम महत्तत्त्व उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसमहत्तत्त्वतैं अहंकार उत्पन्नहोवैहै ॥ ताअहंकारतैं शब्द स्पर्श रूप रस गंध यह पंचतन्मात्रा तथा एकादशइंद्रियां उत्पन्नहोवैहैं ॥ तहां श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचज्ञानइंद्रिय तथा त्वक् पाणि पाद उपस्थ पायु यहपंचकर्मइंद्रिय तथा मन यहएकादशइंद्रियकह्येजावैहैं ॥ और तिनशब्दादिकपंचतन्मात्रावोंतैं यथाक्रमतैं आकाश वायु तेज जल पृथिवी यहपंचमहाभूत उत्पन्नहोवैहैं ॥ इसरीतिसैं यहसंपूर्णजगत् प्रकृतितैंहीउत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं साप्रकृतिही सर्वजगत्काकारणहै ॥ इतनैंकरिकै प्रकृतिकारणवादी सांख्यशास्त्रज्ञोंकामत निरूपणकऱ्या ॥ अब हिरण्यगर्भादिकपुरुषोंकूंही याजगत्काकारणमानणेहारे जेपुरुषकारणवादीहैं तिनोंकेमतकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां तेपुरुषकारणवादी आपणेमतकीसिद्धिकरणेवासते प्रथम तिनप्रकृतिकारणवादियोंकेमतविषे याप्रकारकेदूषण कथनकरैहैं ॥ हेप्रकृतिकारणवादी ! कारणविषे कार्यकीसादृश्यताकूंअंगीकारकरिकै जोतुमनैं त्रिगुणात्मकप्रकृतिकूं याजगत्काकारणमान्याहै ॥ तातुमारेसैं हम यहपूछतेहैं ॥ कार्यकारणकी सर्वरूपकरिकैसादृश्यताहोवैहै ॥ अथवा यत्किंचित्रूपकरिकैसादृश्यताहोवैहै ? तहां कार्यकारणकी सर्वरूपकरिकैसादृश्यताहोवैहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोतूअंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ? कार्यकारणका जोअत्यंतसादृश्यहोवैगा ॥ तौ तिसकार्यकारणका परस्पर भेदसिद्धनहींहोवैगा ॥ और यत्किंचित्भेदकीअपेक्षाकरिकैही पदार्थोंका परस्पर कार्यकारणभावहोवैहै ॥ अत्यंतअभिन्नपदार्थोंका परस्पर कार्यकारणभावहोवैनहीं ॥ यातैं कार्यकारणकीअत्यंतसादृश्यताअंगीकारकियेतैं ताप्रकृतिविषे याजगत्कीकारणताही सिद्धनहींहोवैगी ॥ और कार्यकारणकी यत्किंचित्रूपकरिकैसादृश्यताहोवैहै ॥ यहद्वितीयपक्ष जोतुमअंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ? तुमसांख्यीयोंकेमतविषे कार्यकारणभावतैंरहित जोचेतनअसंगपुरुषहै ॥ सोपुरुषभी भावत्वरूपयत्किंचित्धर्मकरिकै याजगत्केसदृशाहीहै ॥ यातैं सोअसंगपुरुषभी याजगत्काकारणहोणाचाहिये ॥ और ताअसंगपुरुषकूं तुम

सांख्यी याजगत्काकारणमानतेनहीं ॥ यातें कार्यकारणकी यत्किंचित्रूपकरिकैभी सादृश्यतासंभवैनहीं ॥ किंवा जैसे यालोक
विषे जडरूपकरिकैप्रसिद्ध जेशकटादिकपदार्थहैं ॥ तिनशकटादिकोंकीप्रवृत्ति चेतनपुरुषतैंविना स्वतंत्रहोवैनहीं ॥ किंतु चेतनपुरु
षकेअधीनही तिनशकटादिकोंकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ तैंसे सातुमारीजडप्रकृतिभी चेतनपुरुषकीप्रेरणातैंविना स्वतंत्र किसीकार्यकर
णेविषे प्रवृत्तनहींहोइसकैगी ॥ यातें ताजडप्रकृतिकूं आपणेकार्यविषेप्रवृत्तकरणेहारा कोईचेतनपुरुष तुमोंनैं अवश्यअंगीकारक
न्याचाहिये ॥ यातें जिसचेतनपुरुषकीअपेक्षाकरिकै साप्रकृति याजगत्कूंउत्पन्नकरैहै ॥ ताचेतनपुरुषकरिकैही याजगत्कीउत्पत्ति
संभवहोइसकैहै ॥ यातें चेतनपुरुष जगत् यादोनोंकेमध्यविषे तीसरीप्रकृतिकूंकारणमानणा निष्फलहै ॥ यातें चेतनपुरुषही याज
गत्काकारणहै ॥ इतनैंकरिकै पुरुषकारणवादियोंकामत निरूपणकन्या ॥ हेब्राह्मणो! इसप्रकार काल १ स्वभाव २ नियति ३
यदृच्छा ४ भूत ५ प्रकृति ६ पुरुष ७ यहसप्तपक्ष हमोंनैं तुमारेप्रतिकथनकरैहैं ॥ तहां पूर्वपूर्वमतविषे दूषणोंकाकथनकरिकै उत्तर
उत्तरमतकाग्रहणकन्याहै ॥ परंतु यहसप्तमत पूर्वउक्तदूषणोंकरिकैदूषितहैं ॥ यातें इनसप्तमतोंविषे कोईभीमत ग्रहणकरणेयोग्य
नहीं ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! कालतैंआदिलेके प्रकृतिपर्यंत याषट्मतोंविषे यद्यपि पूर्व दूषणकथनकरैहैं ॥ तथापि यहचेतनपुरुष
जगत्काकारणहै ॥ यासप्तममतविषे कोईदूषण कथनकन्यानहीं ॥ यातें यहपुरुषकारणवादही अंगीकारकरणेयोग्यहै ॥ **समा
धान** ॥ हेब्राह्मणो! जैसे कालादिकोंविषे कारणतासंभवैनहीं ॥ तैंसे ताचेतनपुरुषविषेभी साकारणतासंभवैनहीं ॥ काहेतें? सोचे
तनपुरुष सर्वसंगतैंरहितहै तथानिर्गुणहै तथासर्वव्यापारोंतैंरहितहै ॥ ऐसेनिष्क्रियअसंगपुरुषविषे याजगत्कीकारणतामानणी
अत्यंतअसंगतहै ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! ताचेतनपुरुषकेवासतै जोतिनकालादिकोंकासंयोगहै ॥ सोसंयोगही याजगत्काकारणहो
वैगा ॥ **समाधान** ॥ हेब्राह्मणो! ताचेतनपुरुषकेविद्यमानहुए ताचेतनपुरुषकेवासतै जोतिनकालादिकोंकासंयोगहै॥ सोसंयोगभी
ताप्रकृतिकीन्यांई जडहोणेतैं किसीअन्यकारणकीअपेक्षा अवश्यकरैगा॥ और तिनकालादिकोंकेसंयोगकाभी कौनकारणहै? याप्र
कारकीजिज्ञासाभी निवृत्तहोवैनहीं ॥ यातें जैसे कालादिकोंकूंकारणतानहींहै ॥ तैंसे तिनकालादिकोंकेसंयोगकूंभी कारणतासंभ

वैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सोशुद्धपरमात्मापुरुष असंगहै ॥ यातें ताशुद्धपुरुषविषे यद्यपि कारणतासंभवैनहीं ॥ तथापि प्रति बिंबरूपजीवात्माविषे याजगत्कीकारणता संभवहोइसकैहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो! यहजीव परतंत्रहै ॥ यातें यहजीव आपणे सुखदुःखकीउत्पत्तिकरणेविषेभीसमर्थहोइसकैनहीं ॥ जबी यहजीव आपणेसुखदुःखकीउत्पत्तिकरणेविषेभी समर्थनहींभया ॥ तबी यासंपूर्णजगत्केउत्पन्नकरणेविषे यहजीव किसप्रकार समर्थहोवैगा? किंवा यहजीवात्मा जोकदाचित् याजगत्कीउत्पत्तिकरणेविषे स्वतंत्रहोवैगा तौ यहजीवात्मा आपणेसुखकेसाधनोंकूंही उत्पन्नकरैगा ॥ दुःखकेसाधनोंकूंउत्पन्नकरैगानहीं ॥ यातें ताजीवात्माविषेभी याजगत्कीकारणतासंभवैनहीं ॥ इतनेग्रंथकरिकै याजगत्केकारणविषे जितनेकीवादियोंकेपक्षथे तिनपक्षोंकानिरूपण करिकैखंडनकऱ्या ॥ अब सिद्धांतपक्षकानिरूपणकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो! याप्रकारकेवचन जबी तिनब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंनें सर्वसभावासीब्राह्मणोंकेप्रतिकहे ॥ तबी तेशुद्धचित्तवाले संपूर्णसभावासीब्राह्मण तिनपूर्वपक्षोंविषे नानाप्रकारकेदूषणोंकूंदेखिकरिकै तिनपक्षोंकापरित्यागकरतेभये ॥ और तेब्राह्मण वेदकेवचनोंतें ब्रह्मकूंहीजगत्काकारण जानतेहुएभी ताअर्थकीदृढताकरणेवासते नानाप्रकारकीयुक्तियोंकेजानणेकीइच्छाकरतेभये ॥ तिसतेंअनंतर तेसंपूर्णब्राह्मण योगशास्त्रकीरीतिसैं ताअद्वितीयब्रह्मविषे चित्तकेवृत्तियोंकाप्रवाहरूपध्यान करतेभये ॥ इसप्रकार ध्यानकूंप्राप्तहोइकै तेविद्वान्ब्राह्मण ताअद्वितीयआत्माकेआश्रित एकअविद्यारूपशक्तिकूंदेखतेभये ॥ कैसीहैसाअविद्यारूपशक्ति? याजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकूंकरणेहारीहै ॥ तथा कुतर्कीपुरुषोंकरिकै देखिजावैनहीं ॥ तथा आवरणविक्षेपादिकगुणोंकरिकैढाकीहुईहै ॥ ऐसीअविद्यारूपशक्तिकूंदेखिकरिकै तेसंपूर्णब्राह्मण आश्चर्यकूंप्राप्तहोतेभये ॥ अब तामायारूपशक्तिकेगुणोंकानिरूपणकरैहैं ॥ स्वप्रकाश अद्वितीयआनंदरूप जोयहआत्मादेवहै ॥ ताकेविषे यहमायारूपशक्ति यद्यपि वास्तवतैंहैनहीं ॥ तथापि ताआनंदस्वरूपआत्माविषे भासमानहुईयहमायारूपशक्ति आपणे असत्जडदुःखरूपोंकरिकै तासत्चित्आनंदरूपआत्माकूं आच्छादनकरिलेवैहै ॥ यातें तामायारूपशक्तिका यहआवरणरूप स्वाभाविकगुणहै ॥ और याजगत्कीजोउत्पत्तिस्थितिलयहै ॥ तथा यास्थूलसूक्ष्मशरीरकेअध्यासतैं याआनंदस्वरूपआत्माकूं प्राप्तहोणे

हारे तथा ताअध्यासकीनिवृत्तितैंनिवृत्तहोणेहारे जेकामक्रोधादिकअनेकविकारहैं ॥ तेसंपूर्णविकार तामायाशक्तिकेविक्षेपरूपगुण हैं ॥ ऐसेआवरणविक्षेपरूपअनेकगुणोंकरिकैयुक्तजामायाशक्तिहै ॥ तामायाशक्तिकूंदेखिकरिकै तेविद्वान्ब्राह्मण परमआश्चर्यकूंप्राप्त होतेभये ॥ अब तामायाशक्तिकेअधिष्ठानआत्माकास्वरूपनिरूपणकरैं हैं ॥ हेसंन्यासियो! यहमायाशक्ति जिसअधिष्ठानआत्माके आश्रितरहैहै सोअधिष्ठानआत्माकैसाहै? जैसे यहसूर्यभगवान् घटादिकसर्वपदार्थोंकूंप्रकाशितकरैं है ॥ तैसे सोअद्वितीयआत्माभी आपणे अस्ति भाति प्रियरूपकरिकै पूर्वउक्तकालादिकसर्वकारणोंकूं व्याप्तकरैं है ॥ और जैसे यहआकाश घटमठादिकसर्वपदार्थोंविषे व्याप्तहै ॥ तैसे सोपरमात्मादेव प्रथम समष्टिरूपकालादिककारणोंकूंव्याप्तकरिकै तिसतैंअनंतर व्यष्टिरूपजगत्कूंव्याप्तकरैं है ॥ और हेसंन्यासियो! सर्वविकारोंतैंरहित जोअसंगआत्माहै ॥ ताअसंगआत्माविषे जोहमनैं कालादिककारणोंकीअधिष्ठानता तथा कार्यप्रपंचकीअधिष्ठानता कथनकरी है ॥ साअधिष्ठानताभी यामायारूपशक्तिकेबलतैंहीहोवै है ॥ वास्तवतैं ताअसंगआत्माविषे या कार्यकारणप्रपंचकीअधिष्ठानतासंभवैनहीं ॥ जैसे किसीव्यभिचारिणीस्त्रीनैं कन्येजेमंत्रऔषधादिकउपायहैं ॥ ताउपायोंकरिकैमो हकूंप्राप्तहुआ कोईधनीपुरुष ताव्यभिचारिणीस्त्रीकेविलासोंविषेआसक्तहोवै है ॥ तैसे तामायारूपशक्तिकरिकै मोहकूंप्राप्तहुआ यह आत्मादेव तामायाकेप्रपंचरूपविलासोंविषे आसक्तहोवै है ॥ और जैसे यालोकविषे सर्वसंगतैंरहितहुआभी कोईमहात्मापुरुष आपणेसुहृदयस्वभावकरिकै जबी किसीदुष्टपुरुषकेसंगकूंप्राप्तहोवै है ॥ तबी तादुष्टपुरुषकेसंगकरिकै सोमहात्मापुरुष मिथ्या वचनरूपपापकूं तथातापापकेदुःखरूपफलकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे वास्तवतैंअसंगरूपआत्मादेव तामायारूपशक्तिकेसंबंधकूंपाइकै जबी जीवरूपताकूं तथा जगत्केकारणरूपताकूंप्राप्तहोवै है ॥ तबी सोआत्मादेव अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ हेसंन्यासि यो! वास्तवतैंसर्वसंगतैंरहित जोयहस्वयंज्योतिनिर्गुणआत्माहै ॥ ताअसंगआत्माकूंभी यहमायारूपशक्ति मोहितकरिलेवै है ॥ यातैं यामायाशक्तिकाप्रभाव बहुतआश्चर्यरूपहै ॥ याकारणतैंही वेदांतशास्त्रविषे तामायाशक्तिकूं अघटितघटनापटीयसी यानामकरिकैकथनकरैं हैं ॥ ऐसीमायारूपशक्तिकेसंबंधकरिकैही यहअसंगआत्मादेव यासंसारचक्रविषेप्रवेशकरै है ॥ अब

याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम यासंसारकूं चक्ररूपकरिकैवर्णनकरैंहैं ॥ हेसंन्यासियो! जैसे यालोकविषेप्रसिद्ध जोरथका चक्रहै ॥ ताचक्रका एकनेमिहोवैहै ॥ और दूसरानाभिहोवैहै ॥ और तीसरेअराहोवैहैं ॥ तहां पृथिवीकेसाथ जाकासंबंधहोवैहै ऐसाजोवर्तुलाकार काष्ठविशेषहै ताकानाम नेमिहै ॥ और जाकेविषेरथकीशलाकाफिरैहै ऐसासोमध्यकाकाष्ठविशेषहै ताकानाम नाभिहै ॥ और तानेमिनाभिदोनोंकेमध्यविषे जेकाष्ठविशेषहैं तिनोंकानाम अराहै ॥ तैसे माया शक्ति अज्ञान मूलप्रकृति प्रधान अव्याकृत् इत्यादिकनामोंकरिकै कथनकरणेयोग्यजाअविद्याहै ॥ साअविद्या यासंसारकूं सर्वओरतैंव्याप्यकरिकैस्थितहै ॥ याकारणतैं साअविद्या यासंसाररूपचक्रकानेमिहै ॥ और जैसेप्रसिद्धरथकाचक्र लोहरजतसुवर्णादिकधातुमय पटिकाकरिकैजडि तहोवैहै ॥ तैसे यहसंसाररूपचक्रभी शुक्लवर्णवालासत्वगुण रक्तवर्णवालारजोगुण कृष्णवर्णवालातमोगुण यातीनगुणरूपपटिका करिकै जडित है ॥ और जैसे याप्रसिद्धचक्रकेनाभिविषे अरारूपकाष्ठोंकेरहणेवासते छिद्ररूपसंस्थानहोवैहैं ॥ तैसे यासंसाररूपचक्र केनाभिविषे क्लेशादिरूपअराकेरहणेवासते षोडशविकाररूप छिद्रस्थानहैं ॥ तेषोडशविकार यहहैं ॥ श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यह पंच ज्ञानइंद्रिय तथा वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ यह पंच कर्मइंद्रिय आकाश वायु तेज जल पृथिवी यहपंचमहाभूत एकमन इनोंकानाम षोडशविकारहै ॥ और जैसे प्रसिद्धचक्रविषे अराहोवैहैं ॥ तैसे यासंसाररूपचक्रविषे ५० पचासअराहैं ॥ तेअरायहहैं पंचक्लेश ५ अष्टसिद्धि ८ नवतुष्टि ९ अठावीसअशक्ति २८ तहां अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश येपंचप्रकारकेक्लेशहोवै हैं ॥ तहां अनात्मरूपदेहादिकोंविषे आत्मबुद्धिरूपजोविपर्ययहै ॥ ताविपरीतबुद्धिकानाम अविद्याहै ॥ याअविद्याकूंही शास्त्रविषे तम यानामकरिकैकथनकरैंहैं ॥ १ ॥ और विचारहीनपुरुषोंकूं जादेहादिकोंविषे अहंबुद्धिहै ताकानाम अस्मिताहै ॥ याअस्मिता कूंही शास्त्रवेत्तापुरुष मोह यानामकरिकैकथनकरैंहैं ॥ २ ॥ और विषयसुखकेसाधन जेधनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थहैं तिनोंविषेजाअत्यंत आसक्तिहै याकानामरागहै ॥ याहीरागकूं शास्त्रवेत्तापुरुष महामोह यानामकरिकैकथनकरैंहैं ॥ ३ ॥ और दुःखकीप्राप्तिकरणेहा रेशत्रुआदिकोंके अनिष्टकाजोचिंतनहै याकानामद्वेषहै ॥ याहीद्वेषकूं शास्त्रवेत्तापुरुष तामिस्र यानामकरिकैकथनकरैंहैं ॥ ४ ॥ और

धनस्त्रीपुत्रादिकप्रियपदार्थोंके जोत्यागकीइच्छानहींकरणी ऐसीजोतिनधनादिकपदार्थोंविषेममताहै ॥ याकानाम अभिनिवेशहै ॥
याहीअभिनिवेशकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अंधतामिस्र यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ ५ ॥ येपंचप्रकारकेक्लेशहोवैहैं ॥ और सुहत्प्राप्ति १
अध्ययन २ ऊह ३ शब्द ४ अध्यात्मदुःखकानाश ५ अधिदैवदुःखकानाश ६ अधिभूतदुःखकानाश ७ दान ८ येअष्ट सिद्धियांहोवैहैं ॥
और प्रकृति १ उपादान २ काल ३ भाग्य ४ शब्दनिवृत्ति ५ स्पर्शनिवृत्ति ६ रूपनिवृत्ति ७ रसनिवृत्ति ८ गंधनिवृत्ति ९ यह
नवप्रकारकीतुष्टिहोवैहै ॥ तहां प्रकृतिआदिकचारि अंतरतुष्टियां हैं ॥ और शब्दादिकपंच बाह्यतुष्टियांहैं ॥ और श्रोत्रादिकपंचज्ञान
इंद्रिय तथा वाकादिकपंचकर्मइंद्रिय एकमन याएकादशइंद्रियोंका जोकुष्ठादिकरोगोंकरिकैनाशहै ॥ अथवा तिनश्रोत्रादिकइंद्रियों
केविद्यमानहुएभी तिनइंद्रियोंविषे जोआपणेकार्यकरणेकाअसामर्थ्यहै ॥ अथवा दूसरेपुरुषकेइंद्रियोंकीअपेक्षाकरिकै जोतिनइंद्रि
योंविषे अल्पकार्यकरणेकासामर्थ्य है ॥ यहही तिनइंद्रियोंकानाशहै ॥ याप्रकार तिनएकादशइंद्रियोंकेएकादशनाशोंकरिकै याबुद्धि
विषे असामर्थ्यरूप एकादशअशक्तियां उत्पन्नहोवैहैं ॥ इसप्रकार पूर्वउक्तअष्टसिद्धियोंकेअप्राप्तिकरिकै ताबुद्धिविषे अष्टअशक्तियां
उत्पन्नहोवैहै ॥ इसप्रकार नवतुष्टियोंकेअप्राप्तिकरिकै ताबुद्धिविषे नवअशक्तियां उत्पन्नहोवैहैं ॥ इसप्रकार संपूर्णमिलिकै अठा
वीसअशक्तियां होवैहैं ॥ तेअठावीसअशक्तियां तथा नवतुष्टियां तथा अष्टसिद्धियां तथा पंचक्लेश यहसंपूर्णमिलिकैपचासहोवै
हैं ॥ तेसंपूर्ण यासंसाररूपचक्रकेअराहैं ॥ तहां पूर्व अविद्यादिकपंचक्लेशोंका सामान्यतैंनिरूपणकऱ्याथा ॥ अब तिसीपंचक्लेशोंका वि
स्तारतैंनिरूपणकरैहैं ॥ तहां अनात्मपदार्थोंविषेआत्मबुद्धिरूपजाअविद्याहै ॥ ताअविद्याकेअष्टप्रकारकेविषयहोवैहैं ॥ ताविषयकेभेद
करिकै साअविद्याभी अष्टप्रकारकीहोवैहैं ॥ तेअष्टविषययहहैं ॥ कारणरूपप्रकृति महत्तत्व अहंकार पंचभूत याअष्टविषयोंकेभेदतैं
सातमोरूपअविद्याभी अष्टप्रकारकीहोवैहै ॥ साअविद्या सुषुप्तिअवस्थाविषेभी बीजरूपहोइकैरहैहै ॥ १ ॥ ऐसीअविद्याकाबीजरूपजा
अस्मिताहै ॥ साअस्मिताभी जाग्रत्स्वप्नविषे तिसअविद्याकेप्रकृतिआदिकअष्टविषयोंकूंही अहंरूपकरिकैविषयकरैहैं ॥ यातैं तिनप्र
कृतिआदिकअष्टविषयोंकेभेदकरिकै सामोहरूपअस्मिताभी अष्टप्रकारकीहोवैहै ॥ २ ॥ और श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंके ज क्रमतैं

शब्द स्पर्श रूप रस गंध यहपंचप्रकारकेविषयहैं॥ तेशब्दादिकपंचविषयभी दिव्य अदिव्य याभेदकरिकै दोदोप्रकारकेहोवैहैं॥ तहां स्वर्गादिकलोकोंकेजेशब्दादिकविषयहैं ॥ ते दिव्यविषयहैं ॥ और यामनुष्यलोककेजेशब्दादिकविषयहैं ॥ ते अदिव्यविषय हैं ॥ इसप्रकार दिव्यअदिव्यभेदकरिकै दशप्रकारकेजेशब्दादिकविषयहैं॥ तेदशप्रकारकेविषय याजीवोंकेसुखकासाधनहोणेतैं या जीवोंकेरागकाविषयहैं ॥ यातैं तादशप्रकारकेविषयोंकेभेदकरिकै सोमहामोहरूपरागभी दशप्रकारकाहोवैहै ॥ ३ ॥ और अणिमा गरिमा लघिमा महिमा प्राप्ति प्राकाम्य ईशित्व वशित्व यहअष्टप्रकारकीसिद्धियां ॥ तथा पूर्वउक्तदिव्यअदिव्यभेदतैं शब्दादिक दशविषय ॥ यहअष्टादशविषय द्वेषकेविषयहैं ॥ यातैं तिनअष्टादशविषयोंकेभेदतैं सोद्वेषभी अष्टादशप्रकारकाहोवैहै ॥ अथवा पूर्वउक्तअस्मिताके जेप्रकृतिआदिकअष्टविषयहैं ॥ तथा पूर्वउक्तरागके जेशब्दादिकदशविषयहैं॥ तेअष्टादश द्वेषकेभीविषयहैं॥ यातैं तिनअष्टादशविषयोंकेभेदकरिकै सोद्वेषभी अष्टादशप्रकारकाहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ यहअष्टादशविषय किसीनिमित्तकरिकै जबी नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तबी तेअष्टादशविषय याजीवविषे दुःखकीउत्पत्तिकरिकै याजीवकेद्वेषकाविषयहोवैहैं॥ ताअष्टादशवि षयोंकेभेदकरिकै सोतामिस्त्ररूपद्वेषभी अष्टादशप्रकारकाहोवैहै ॥ ४ ॥ और पूर्वउक्तअणिमादिकअष्टसिद्धियोंसहित जेशब्दा दिकदशविषयहैं ॥ अथवा पूर्वउक्तअस्मिताके प्रकृतिआदिकअष्टविषयोंसहित जेशब्दादिकदशविषयहैं ॥ तिनविषयोंकेनाशक रणेहाराजोकोईकबलवान्पुरुषहै ॥ ताबलवान्पुरुषविषे आपणीप्रतिकूलताजाणिकै जोतिनविषयोंकेनाशकाभयहै ॥ याकानाम अभिनिवेशहै ॥ सोअभिनिवेशभी तिनअष्टादशविषयोंकेभेदतैं अष्टादशप्रकारकाहीहोवैहै ॥ ५ ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ तमोरूपअविद्या अष्टप्रकारकी ८ तथा मोहरूपअस्मिता अष्टप्रकारकी ८ तथा महामोहरूपराग दशप्रकारका १० तथा तामि स्त्ररूपद्वेष अष्टादशप्रकारका १८ तथा अंधतामिस्त्ररूपअभिनिवेश अष्टादशप्रकारका १८ यहसंपूर्णमिलिकै ६२ बासठिसंख्या होवैहैं ॥ इतनैंकरिकै अविद्यादिकपंचक्लेशोंकानिरूपणकऱ्या ॥ अब पूर्वउक्तअष्टसिद्धियोंकेस्वरूपका निरूपणकरैंहैं ॥ तहां ब्रह्मवि द्याकाउपदेशकरणेहारा जोश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुहै ताकेप्राप्तिकानाम सुहत्प्राप्तिहै ॥ १ ॥ ताब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं जोवेदांतशास्त्र

काश्रवणकरणाहै ॥ याकानाम अध्ययनहै ॥ २ ॥ और ताश्रवणकरेअर्थका जोनानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिकैमननकरणाहै याका
नाम ऊहहै ॥ ३ ॥ और तामननकन्येहुएअर्थविषे जोनिरंतर चित्तकेवृत्तियोंकाप्रवाहरूप निदिध्यासनहै ॥ ताकानाम शब्दहै
॥ ४ ॥ और ज्वरादिकव्याधियोंकरिकै तथा कामक्रोधादिकआधियोंकरिकै उत्पन्नभयाजोदुःखहै ॥ तादुःखकेनाशकानाम अध्यात्म
दुःखनाशहै ॥ ५ ॥ और अग्निजलादिकोंकरिकै उत्पन्नभयाजोदुःखहै ॥ तादुःखकेनाशकानाम अधिदैवदुःखनाशहै ॥ ६ ॥ और
सिंहसर्पादिकभूतोंकरिकै उत्पन्नभयाजोदुःखहै ॥ तादुःखकेनाशकानाम अधिभूतदुःखनाशहै ॥ ७ ॥ औरपूर्ववृद्धमहान्पुरुषों
केअनुसार जोवेदांतविद्याकेसंप्रदायकीप्रवृत्तिकरणीहै याकानाम दानहै ॥ ८ ॥ यहसुहत्प्राप्तितैंआदिलैके जेअष्टसिद्धियांहैं ॥
तेसिद्धियां याजीवकेमोक्षकासाधनहैं ॥ यातैंयहअष्टही सिद्धिशब्दकामुख्यअर्थहैं ॥ और पूर्वउक्तअणिमादिकअष्टसिद्धियांतो
मायिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरणेहारियांहैं ॥ यातैं तेअणिमादिक तासिद्धिशब्दकामुख्यअर्थनहीं ॥ किंतु तासिद्धिशब्दकागौण
अर्थहैं ॥ इतनेंकरिकैअष्टसिद्धियोंकानिरूपणकऱ्या ॥ अब पूर्वउक्तनवतुष्टियोंकास्वरूप निरूपणकरैंहैं ॥ तहां प्रथम प्रकृति
तुष्टिकास्वरूप निरूपणकरैंहैं ॥ यहप्रकृतिरूपमायाही यासंपूर्णजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय करैहै ॥ तथा सामायारूपप्रकृति
ही नानाप्रकारकेदुर्घटकार्योंकूंभीउत्पन्नकरैहै ॥ यातैं सामायारूपप्रकृति जैसे याजगत्कूंउत्पन्नकरैहै ॥ तैसे साप्रकृति कदाचित्
हमारेआत्मज्ञानकूंभीउत्पन्नकरैगी ॥ ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते हमाराउद्यम निष्फलहै ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै जेआलसी
मूढपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहैं ॥ याकानाम प्रकृतितुष्टिहै ॥ १ ॥ और जोपदार्थ नियमकरिकै जिसकार्यकी
उत्पत्तिकरैहै ॥ सोपदार्थ ताकार्यकीउत्पत्तिविषे कारणहोवैहै ॥ और दंडग्रहणमात्रेण नरोनारायणोभवेत् ॥ इत्यादिकशा
स्त्रोंविषे संन्यासआश्रमकूंही आत्मज्ञानकाकारणकह्याहै ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै जोपुरुष संन्यासआश्रमकूंधारणकरैहै ॥ और
तासंन्यासआश्रमकरिकैही आपणेकूंकृतकृत्यमानताहुआ जोपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहै ॥ याकानाम संप्रदा
नतुष्टिहै ॥ २ ॥ और यहकालही सर्वजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयकरैहै ॥ यातैं यहकाल जैसे सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरैहै ॥ तैसे सो

काल कदाचित् हमारेआत्मज्ञानकूंभीउत्पन्नकरैगा ॥ ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते हमाराउद्यम निष्फलहै ॥ याप्रकारकाविचार करिकै जोबुद्धिहीनआलसीपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहै ॥ याकानाम कालतुष्टिहै ॥ ३ ॥ और यहजीव आपणे भाग्यतैंही राज्यकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा भाग्यतैंही यहजीव लक्ष्मीयशआदिकपदार्थोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं जोभाग्य हमारेकूं धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ सोभाग्य कदाचित् हमारेआत्मज्ञानकूंभी उत्पन्नकरैगा ॥ ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते हमाराउद्यमनिष्फलहै ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै जोमूढआलसीपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहै ॥ याकानाम भाग्यतुष्टिहै ॥ ४ ॥ यहचारों आंतरतुष्टिहैं ॥ अब बाह्यपंचतुष्टियोंकास्वरूप निरूपणकरैहैं ॥ जोपुरुष श्रोत्रइंद्रियकरिकै नानाप्रकारकेशब्दोंकूं नहीं श्रवणकरैहै ॥ और ताश्रोत्रइंद्रियकेनिरोधकरणेकरिकैही आपणेकूंकृतकृत्यमानिकै जोपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहीं करैहै ॥ याकानाम शब्दनिवृत्तितुष्टिहै ॥ ५ ॥ और जोपुरुष त्वक्इंद्रियकरिकै नानाप्रकारकेस्पर्शोंकूंग्रहणनहींकरैहै ॥ और तात्वक्इंद्रियकेनिरोधकरणेकरिकैही आपणेकूंकृतकृत्यमानिकै ॥ जोपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहै ॥ याकानाम स्पर्शनिवृत्तितुष्टिहै ॥ ६ ॥ और जोपुरुष नेत्रइंद्रियकरिकै नानाप्रकारकेरूपोंकूंनहींदेखैहै ॥ और तानेत्रइंद्रियकेनिरोधकरणेकरिकैही आपणेकूंकृतकृत्यमानिकै जोपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहै ॥ याकानाम रूपनिवृत्तितुष्टिहै ॥ ७ ॥ और जोपुरुष रसनइंद्रियकरिकै नानाप्रकारकेमधुरादिकरसोंकूंनहींग्रहणकरैहै ॥ और तारसनइंद्रियकेनिरोधकरणेकरिकैही आपणेकूंकृतकृत्यमानिकै जोपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहै ॥ याकानाम रसनिवृत्तितुष्टिहै ॥ ८ ॥ और जोपुरुष घ्राणइंद्रियकरिकै नानाप्रकारकेगंधकूंग्रहणनहींकरैहै ॥ और ताघ्राणइंद्रियकेनिरोधकरणेकरिकैही आपणेकूंकृतकृत्यमानिकै जोपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहै ॥ याकानाम गंधनिवृत्तितुष्टिहै ॥ ९ ॥ और कोईकशास्त्रवेत्तेपुरुषतौ तिनबाह्यपंचतुष्टियोंका याप्रकारकास्वरूप निरूपणकरैहैं ॥ याधनादिकपदार्थोंकाजोइकठाकरणाहै १ तथा याधनादिकपदार्थोंकाजोरक्षणकरणाहै २ तथा याधनादिकपदार्थोंकाजोखरचकरणाहै ३ तथा याधनादिकपदार्थोंकाजोभोगणाहै ४ तथा याधनादिकपदार्थोंकाजोनाशहै ५ यह

पांचों याजीवोंकूं क्लेशकीहीप्राप्तिकरैहैं ॥तहांश्लोक ॥ अर्थानामर्जनेक्लेशस्तथैवपरिपालने ॥ नाशेव्ययेचभोगेच धिगर्थान्क्लेशभाजिनः ॥ अर्थयह ॥ याधनादिकपदार्थोंके इकठेकरणेविषे तथा रक्षणकरणेविषे तथा नाशविषे तथा खरचकरणेविषे तथा भोगणेविषे याजीवोंकूं क्लेशकीहीप्राप्तिहोवैहै॥ यातें सर्वदा क्लेशकीप्राप्तिकरणेहारेजेधनादिकपदार्थहैं तिनोंकूंधिक्कारहै ॥ १॥ याप्रकारका विचारकरिकैजोपुरुष पूर्वइकठेकियेहुएधनादिकपदार्थोंकाभी परित्यागकरिदेवैहै॥ अथवा ताविचारकूंकरिकै जोपुरुष तिनधनादिकपदार्थोंकूंइकठाहीनहींकरैहै॥ तापुरुषकेचित्तविषे तिसपांचप्रकारकेनिमित्तकरिकै पांचप्रकारकीउपरामताहोवैहै ॥ तापांचप्रकारकीउपरामताकरिकैही आपणेकूंकृतकृत्यमानिकै जोपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहै ॥ याकानाम बाह्यपांचप्रकारकीतुष्टिहै ॥ हेमुनीश्वरो ! यानवप्रकारकीतुष्टियोंविषे किसीभीतुष्टिकूंअंगीकारकरिकै जोमूढबुद्धिपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहै ॥ तामूढबुद्धिपुरुषकूं कदाचित्भी आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातें यहनवप्रकारकीतुष्टियां आत्मसाक्षात्कारकाविरोधीहोणेतें ॥ याजीवोंकेजन्ममरणादिरूपसंसारकेहीकारणहैं ॥ यातें मुमुक्षुजननें तिननवतुष्टियोंकापरित्यागकरिकै श्रवणादिकसाधनोंविषेही उद्यमकरणा ॥ और हेमुनीश्वरो! जैसे प्रसिद्धचक्रविषे एकमहान्अराहोवैहै॥ और दूसरेअल्पअराहोवैहैं॥ तैसे यासंसाररूपचक्रके पूर्वउक्तक्लेशादिकपचास महान्अराहैं ॥ और श्रोत्रादिकदशइंद्रिय तथा शब्दादिकदशविषय यहवीस २० तासंसारचक्रकेअल्पअराहैं ॥ और हेमुनीश्वरो ! जैसे प्रसिद्धचक्रकेनेमिविषे तीक्ष्णधाराहोवैहैं ॥ तैसे यासंसाररूपचक्रविषे यहषट्अष्टकरूपतीक्ष्णधाराहैं ॥ अब ताषट्अष्टकोंकास्वरूप निरूपणकरैहैं ॥ भूमि १ जल २ तेज ३ वायु ४ आकाश ५ मन ६ बुद्धि ७ अहंकार ८ यहप्रकृतिअष्टकहै ॥ अथवा प्रकृति १ भूमि २ जल ३ तेज ४ वायु ५ आकाश ६ मन ७ अहंकार ८ याप्रकारका प्रकृतिअष्टकहोवैहै ॥ १ ॥ और यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ यहयोगांगअष्टकहै ॥ २ ॥ और सुहृत्प्राप्ति १ अध्ययन २ ऊह ३ शब्द ४ अध्यात्मदुःखनिवृत्ति ५ अधिदैवदुःखनिवृत्ति ६ अधिभूतदुःखनिवृत्ति ७ दान ८ यहसिद्धिअष्टकहै ॥ ३ ॥ और अणिमा १ गरिमा २ लघिमा ३ महिमा ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ ईशित्व ७ वशित्व ८

यहसिद्धिअष्टकहै ॥ ४ ॥ और वाक् १ श्रोत्र २ त्वक् ३ चक्षु ४ रसन ५ घ्राण ६ मन ७ हस्त ८ यहग्रहअष्टकहै ॥५॥ और या वाकादिकइंद्रियोंके जेक्रमतें शब्दउच्चारण १ शब्द २ स्पर्श ३ रूप ४ रस ५ गंध ६ संकल्प ७ ग्रहण ८ यहअष्टप्रकारकेविषयहैं ॥ सोयहअष्टविषय अतिग्रहअष्टकहै ॥ ६ ॥ इसप्रकार षट्अष्टकोंकास्वरूप कोईकविद्वान्पुरुष अंगीकारकरैहैं ॥ और कोईकशास्त्रवेत्तापुरुषतौ याप्रकार तिनषट्अष्टकोंकास्वरूप निरूपणकरैहैं ॥ वाक् १ श्रोत्र २ त्वक् ३ चक्षु ४ रसन ५ घ्राण ६ मन ७ हस्त ८ यहग्रहअष्टकहै ॥ १ ॥ और शब्दउच्चारण १ शब्द २ स्पर्श ३ रूप ४ रस ५ गंध ६ संकल्प ७ ग्रहण ८ यहअतिग्रहअष्टकहै ॥ २ ॥ याग्रहअतिग्रहोंकास्वरूप पंचमाध्यायविषे आर्तभागकेसंवादमैं विस्तारसैंकहिआयेहैं ॥ और पृथिवी १ काम २ रूप ३ आकाश ४ तम ५ रूप ६ जल ७ रेत ८ यहआयतनअष्टकहै ॥ ३ ॥ और अग्नि १ हृदय २ चक्षु ३ श्रोत्र ४ हृदय ५ चक्षु ६ हृदय ७ हृदय ८ यहलोकअष्टकहै ॥ ४ ॥ और अमृत १ स्त्री २ सत्य ३ दिशा ४ मृत्यु ५ प्राण ६ वरुण ७ प्रजाप्रति ८ यहदेवताअष्टकहै ॥ ५ ॥ और शारीर १ काममय २ आदित्य ३ श्रौत ४ छायामय ५ प्रतिबिंब ६ उदकस्थ ७ पुत्रमय ८ यहपुरुषअष्टकहै ॥ ६ ॥ तहां आयतनअष्टक लोकअष्टक देवताअष्टक पुरुषअष्टक याचारिअष्टकोंकास्वरूप पूर्वपंचमाध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिशाकल्यकेसंवादविषे विस्तारसैंनिरूपण करिआयेहैं ॥ याकारणतें इहांसंक्षेपतें नाममात्रलिखेहैं ॥ इसप्रकार जैसे कुलालकेचक्रविषे घटस्थितहोवैहै ॥ तैसे यहषट्प्रकारकेअष्टक यासंसाररूपचक्रकेनेमिकी तीक्ष्णधाराहैं ॥ और हेमुनीश्वरो! जैसे प्रसिद्धचक्रकेधारणकरणेहारे रज्जुआदिकपाशहोवैहैं ॥ तैसे यास्थावरजंगमरूपजगत्भावकूंप्राप्तभया जोमायाविशिष्टपरमात्माहै ॥ सोपरमात्मादेव यासंसाररूपचक्रकेधारणकरणेहारा रज्जुरूपपाशहै॥ और नेमि नाभि अरा इत्यादिकअवयवोंकरिकैयुक्त जोप्रसिद्धचक्रहै ॥ सोचक्र जैसे रज्जुआदिकबंधनोंतेंविना शीघ्रही विशीर्णभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसेयहसंसाररूपचक्रभी तापरमात्मारूपबंधनतैंविना शीघ्रही विशीर्णभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेमुनीश्वरो! ब्रह्मलोककीप्राप्तिकरणेहारा जोदेवयाननामामार्गहै ॥ तथा स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिकरणेहारा जोपितृयाणनामामार्गहै ॥ तथा कीटपतंगादिकक्षुद्रशरीरोंकी

प्राप्तिकरणेहारा जोतृतीयस्थाननामामार्गहै ॥ येतीनप्रकारकेमार्ग तासंसाररूपचक्रकेभेदकाकारणहैं ॥ तिनतीनमार्गोंकेयोगतें यहसंसाररूपचक्र तीननाभिवाला तथा तीननेमिवालाकह्याजावैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे प्रथम वर्तुलाकार एकसूक्ष्ममंडललिखणा ॥ तासूक्ष्ममंडलकूं बाह्यतीनमंडलकोंकरिकैवेष्टितकरणा ॥ तिनचारोमंडलोंविषे जोप्रथममध्यकासूक्ष्ममंडलहै ॥ सो सर्वमंडलोंकेअंत र्भूतहै ॥ यातें सोसूक्ष्ममध्यकामंडल केवलनाभिरूपही है ॥ और तिनचारिमंडलोंविषे जोअंत्यकामंडलहै ॥ सो सर्वमंडलोंकीअ पेक्षाकरिकैबाहरिहै ॥ यातें सोअंत्यकामंडल केवलनेमिरूपहीहै ॥ और तिनचारोमंडलोंविषे जेमध्यकेदोमंडलहैं ॥ तिनदोमंड लोंविषेतौ बाह्यमंडलकीअपेक्षाकरिकै नाभिरूपताहै ॥ और आंतरमंडलकीअपेक्षाकरिकै नेमिरूपताहै ॥ इसप्रकार यहसंसाररू पचक्र तीननेमिवाला तथातीननाभिवाला सिद्धहोवैहै ॥ तहां ब्रह्मलोकके प्राप्तिकरणेहारा देवयाननामामार्ग अंतर्मुख उपा सकपुरुषोंकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ यातें सोदेवयाननामामार्ग यासंसारचक्रका प्रथममध्यनाभिहै ॥ और स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिकर णेहारा जोपितृयाणनामामार्गहै ॥ सोमार्ग उपासकपुरुषोंकीअपेक्षाकरिकै बहिर्मुखकर्मीपुरुषोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें सोपितृयाण नामामार्ग यासंसारचक्रका दूसरानाभिहै ॥ और कीटपतंगादिकक्षुद्रशरीरोंकीप्राप्तिकरणेहारा जोतृतीयस्थाननामामार्गहै ॥ सो मार्ग कर्मीपुरुषोंकीअपेक्षाकरिकै अत्यंतबहिर्मुखपापात्माजीवोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें सोतृतीयस्थाननामामार्ग यासंसारचक्रकाती सरानाभिहै ॥ और तिनकीटपतंगादिकजीवोंतैंभी अत्यंतनिकृष्टजेवृक्षादिकतामसीजीवहैं ॥ तिनतामसीजीवोंकरिकैप्राप्तहोणेयो ग्य जातमोरूपअविद्याहै ॥ सातमोरूपअविद्या यासंसारचक्रका अत्यंतबाह्यनेमिहै ॥ और जैसे काष्ठमृत्तिका यहदोनों कुलालकेच क्रकाकारणहोवैहैं ॥ तैसे सुखदुःखरूपफलकूंदेणेहारे यहपुण्यपापरूपदोनोंकर्म यासंसारचक्रकेनिमित्तकारणहैं ॥ और हृदयदेश विषेस्थितआत्माकाभीविस्मरणकरिदेणा ऐसाजोतमोरूपमोहहै ॥ सो मोह यासंसारचक्रका सर्वत्रअनुगतएकरूपहै ॥ हेसंन्यासि यो! ऐसेसंसारचक्रभावकूंप्राप्तभया जोमायाविशिष्टपरमात्माहै ॥ तापरमात्मादेवकूं तेवेदवेत्तेब्राह्मण ध्यानकरिकैदेखतेभये ॥ इतनेंकरिकै तामायाविशिष्टपरमात्माकूं संसारचक्ररूपकरिकैवर्णनकऱ्या ॥ अब तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं नदीरूपकरिकै

वर्णनकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो! तासंसारचक्रका उपादानकारण जामायारूपमहान्नदीहै ॥ तामायारूपनदीका पुनःयाप्रकारकास्वरूप तेब्राह्मणदेखतेभये ॥ श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यापंचज्ञानइंद्रियोंकेरहणेकेस्थान जेपंचगोलकहैं ॥ तेपंचगोलकस्थान यामायारूपनदीकेपंचस्रोतहैं ॥ जलवहणेकेजेस्थानविशेषहैं ॥ तिनोंकानाम स्रोतहै ॥ और जैसे प्रसिद्धनदीयोंकेजल तिनस्रोतस्थानोंविषेचलेहै ॥ तैसे यहश्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियभी गोलकरूपस्थानोंविषेगमनकरैहैं ॥ यातैं तेश्रोत्रादिकपंचइंद्रिय यामायारूपनदीके पंचप्रकारकेजलहैं ॥ और जैसे प्रसिद्धनदीयोंकेजलोंका मेघ कारणहोवैहै ॥ तैसे आकाश वायु तेज जल पृथिवी यहपंचभूत ताइंद्रियरूपजलोंका तथातागोलकरूपस्रोतोंका कारणहै ॥ और जैसे वर्षाकालविषे लोकप्रसिद्धनदीयोंके कुटिलप्रवाहहोवैहैं ॥ तैसे कामक्रोधादिकआसुरीसंपदावालेप्रमादीजीवोंविषे श्रोत्रादिकपंचइंद्रियोंकरिकै उत्पन्नभयेजेपंचप्रकारकेज्ञानहैं ॥ तेपंचज्ञान याजीवोंकेदुःखकाहेतुहैं ॥ यातैं तेपंचप्रकारकेज्ञान यामायारूपनदीकेअत्यंतउग्र तथा कुटिल पंचप्रवाहहैं ॥ अथवा जैसे लोकप्रसिद्धनदीयोंविषे जलकाभ्रमणरूपजेचक्रहोवैहैं ॥ तेचक्र याजीवोंकूंनीचेलैजावैहैं ॥ तैसे शास्त्रसंस्कारतैंरहितप्रमादीपुरुषोंविषे श्रोत्रादिकपंचइंद्रियोंकरिकै उत्पन्नभयेजेपंचप्रकारकेज्ञानहैं ॥ तेज्ञानभी तिनप्रमादीपुरुषोंकूं कीटपतंगादिकशरीरोंकीप्राप्तिरूप अधोगतिकीप्राप्तिकरैहैं ॥ यातैं तेपंचप्रकारकेज्ञान यामायारूपनदीके पंचउग्रचक्रहैं ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धनदीयोंविषे नानाप्रकारकेतरंगहोवैहैं ॥ तैसे प्राण अपान व्यान उदान समान यहपंचप्राण यामायारूपनदीके महान्पंचतरंगहैं ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धनदीयोंकेमूलहोवैहैं ॥ तैसे शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापांचोंकूंविषयकरणेहारे जेशास्त्रविहित अथवा शास्त्रनिषिद्ध पंचप्रकारकेज्ञानउत्पन्नहोवैहैं ॥ तथा पंचप्रकारकीइच्छाउत्पन्नहोवैहैं ॥ तेपंचज्ञान तथापंचइच्छा संस्कारद्वारा यामायारूपनदीके पंचमूलहैं ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धनदीयोंविषे नानाप्रकारकेआवर्त्तहोवैहैं ॥ जिनआवर्त्तोंविषेप्राप्तहुआयहजीव बाहरिनिकसिसकतानहीं ॥ तैसे शब्द स्पर्श रूप रस गंध यहपंचविषय यामायारूपनदीके पंचमहान्आवर्त्तहैं ॥ काहेतें? जैसे लोकप्रसिद्धनदीयोंतें जीवोंकूंपारिउतारणेहाराजोनाविकपुरुषहै ॥ सोनाविकपुरुषभी जोकदाचित् तिननदीयोंकेआवर्त्तोंविषेप्राप्तहोवैहै तौ सोनाविकपुरुषभी तानदीकेआवर्त्तोंतें

आपणेकूंनिकासणेमैंसमर्थहोतानहीं ॥ तैसे अधिकारीपुरुषोंकूं शास्त्रकाउपदेशकरिकै मायारूपनदी तैंपारिकरणेहारा जोविद्वान्‌पुरुष
है ॥ सोविद्वान्‌पुरुषभी जोकदाचित् याविषयरूपआवर्त्तोंविषेप्राप्तहोवैहै तौ सोविद्वान्‌पुरुषभी ताविषयरूपीआवर्त्तोंतैं आपणेकूंबाह
रिनिकासणेविषे समर्थनहींहोवैहै ॥ और जैसे सोनाविकपुरुष अन्यलोकोंकूंनदी तैंपारिकरिकै जबी आप तानदीकेआवर्त्तोंविषेप्राप्त
होवैहै ॥ और तानदीकेआवर्त्तोंतैं आपणेकूंनिकासणेमैंसमर्थनहींहोवैहै ॥ तबी तानाविकपुरुषोंनैं जिनलोकोंकूं तानदीतैंपारिकन्या
था ॥ तेलोक तानाविकपुरुषकूं नदीकेआवर्त्तोंविषेप्राप्तहुआदेखिकै कोईकलोकतौ तानाविकपुरुषकाशोककरैहैं ॥ और कोईकलोक ता
का उपहासकरैहैं ॥ तहां तानाविकपुरुषकेउपकारकूंजानणेहारे जेसज्जनपुरुषहैं ॥ ते सज्जनपुरुषतौ तानाविकपुरुषकाशोककरैहैं ॥ औ
र तानाविकपुरुषकेउपकारकूंनहींजानणेहारे जेकृतघ्नलोकहैं ॥ तेकृतघ्नलोकतौ तानाविकपुरुषकाउपहासकरैहैं ॥ तैसे जोविद्वान्‌पुरुष
शास्त्रकाउपदेशकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं मायारूपनदीतैंपारिकरैहै ॥ सोविद्वान्‌पुरुष जबी ताविषयरूपआवर्त्तोंविषेप्राप्तहोइकै ता
विषयरूपआवर्त्तोंतैं आपणेकूंनिकासणेमैंसमर्थनहींहोवैहै ॥ तबी ताविद्वान्‌पुरुषनैं जिनअधिकारीपुरुषोंकूं यामायारूपनदीतैंपारिक
न्याथा ॥ तेअधिकारीपुरुष याविद्वान्‌पुरुषकूं विषयरूपआवर्त्तोंविषेप्राप्तहुआदेखिकै कोईकसज्जनपुरुषतौ ताविद्वान्‌पुरुषकाशोककरै
हैं ॥ और कोईककृतघ्नपुरुषतौ ताविद्वान्‌पुरुषकाउपहासकरैहैं ॥ यातैं हेमुनीश्वरो! याविद्वान्‌पुरुषनैंभी ऐसाअभिमान कदाचित्‌नहीं
करणा ॥ जोहमविद्वान्‌पुरुष शास्त्रकाउपदेशकरिकै सर्वजीवोंकूं यामायारूपनदीतैंपारिकरणेहारेहैं ॥ यातैं हमविद्वानोंकूं यहविषयरू
पआवर्त्त क्याकरैंगे? याप्रकारकाअभिमानकरिकै सोविद्वान्‌पुरुष जोकदाचित् तिनविषयरूपआवर्त्तोंविषेप्राप्तहोवैगा तौ सोविद्वान्
पुरुषभी लोकोंकेउपहासका तथाशोकका विषयहोवैगा ॥ यातैं करामलककीन्याईं जिनपुरुषोंकूंआत्माकासाक्षात्कारप्राप्तभयाहै ॥ ऐसे
विद्वान्‌पुरुषोंनैंभी याविषयरूपआवर्त्ततैं सर्वदा भयहीकरणा ॥ और हेमुनीश्वरो! जैसे लोकप्रसिद्धनदीयोंकेआवर्त नाविकपुरुषों
कूं तथा अन्यपुरुषोंकूंअत्यंतदुस्तरहोवैहैं ॥ तैसे यामायारूपनदीके विषयरूपआवर्त्तभी विद्वान्‌पुरुषोंकूं तथाअविद्वान्‌पुरुषोंकूं अ
त्यंतदुस्तरहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जिनविषयरूपआवर्त्तोंविषेप्राप्तहुआ यहविद्वान्‌पुरुषभी तिनविषयरूपआवर्त्तोंतैं बाहरिनहीं

निकसिसकता ॥ ऐसे विषयरूपआवर्त्तोंतैंरक्षाकरणेहारा जोकोईउपायहै तौ हमारेप्रतिकहो ॥ समाधान ॥ हेमुनीश्वरो! यावि षयरूपआवर्त्तोंतैंरक्षाकरणेहारा एकहीउपाय शास्त्रविषेकह्याहै ॥ सोतुमश्रवणकरो ॥ जैसे लोकप्रसिद्धनदीयोंविषेचलणेहारे ना विकपुरुष जबी तानदीकेआवर्त्तोंकूं आपणेवामभागकीतरफ अथवा दक्षिणभागकीतरफ परित्यागकरिकैचाले हैं ॥ तबीहीतेना विकपुरुष तिनआवर्त्तोंविषे नहींप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे जोविद्वान्पुरुष तथामुमुक्षुजन शास्त्रविचारकेबलतैं याविषयरूपआवर्त्तोंकूं दूरतैंहीपरित्यागकरैहैं ॥ सोईहीपुरुष याविषयरूपआवर्त्तोंविषे नहींप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं विषयोंविषेदोषदृष्टिकरिकै तिनविषयोंका संगहीनहींकरणा ॥ यहही तिनविषयरूपआवर्त्तोंतैंरक्षाकाउपायहै ॥ याउपायकापरित्यागकरिकै जोकदाचित् विद्वान्पुरुषभी तिनविषयरूपआवर्त्तोंविषेप्राप्तहोवैगा तौ सोविद्वान्पुरुषभी तिनविषयरूपआवर्त्तोंतैं आपणेकूंनिकासणेमैंसमर्थनहींहोवैगा ॥ और जबी यहविद्वान्पुरुषभी तिनविषयरूपआवर्त्तोंविषेप्राप्तहोइकै तिनआवर्त्तोंतैं आपणेकूंनिकासणेमैंसमर्थनहींहोवैहै ॥ तबी अविद्वान्पुरुष तिनविषयरूपआवर्त्तोंतैं आपणेकूंनिकासणेविषे किसप्रकारसमर्थहोवैगा? यातैं तिनविद्वान्पुरुषोंनैं तथामुमु क्षुजनोंनैं यहविषयरूपआवर्त्त दूरतैंहीपरित्यागकरणे ॥ यासंगकापरित्यागरूपउपायकूंछोडिकै दूसराकोईउपाय तिनविषयरूप आवर्त्तोंतैंरक्षाकाहैनहीं ॥ यातैं यहशब्दादिकपंचविषय यामायारूपनदीकेपंचआवर्त्तहैं ॥ और तिनशब्दादिकपंचविषयोंतैं या जीवोंविषे जोपंचप्रकारकासुखउत्पन्नहोवैहै ॥ सोविषयसुख नाशवान्है तथाभयकाकारणहै ॥ यातैं मधुविषयुक्तअन्नकीन्यांई ते विषयजन्यसुख दुःखरूपहीहैं ॥ ऐसेपंचप्रकारकेदुःखोंका जोरात्रिदिनविषे निरंतरप्रवाहहै ॥ सोपंचप्रकारकेदुःखोंकाप्रवाह यामा यारूपनदीका पंचप्रकारकावेगहै ॥ अथवा गर्भदुःख जन्मदुःख जरादुःख व्याधिदुःख मरणदुःख यहपंचप्रकारकादुःख तामा यारूपनदीकेपंचवेगहैं ॥ और तम मोह महामोह तामिस्र अंधतामिस्र यहपंचप्रकारकेक्लेश यामायारूपनदीके पंचपर्वहैं ॥ इ हां विभागकानाम पर्वहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ पंचइंद्रियोंकेगोलक १ पंचश्रोत्रादिकइंद्रिय २ आकाशादिकपंचभूत ३ पंच ज्ञान ४ पंचप्राण ५ पंचबुद्धि ६ पंचइच्छा ७ पंचविषय ८ पंचदुःख ९ पंचक्लेश १० यापचासभेदकरिकै सामायारूपनदी पचास

भेदवालीहै ॥ अथवा पंचक्लेश अष्टसिद्धि नवतुष्टि अठाईसअशक्ति यहपूर्वउक्तपचासभेदकरिकै सामायारूपनदी पचासभेदवाली है ॥ हेसंन्यासियो ! ऐसीमायाशक्तिकूं तेवेदवेत्ताब्राह्मण ध्यानकालविषे कारणब्रह्मकेआश्रित देखतेभये ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! अद्वितीयब्रह्मकेध्यानपरायण जेविद्वान्ब्राह्मणथे ॥ तेब्राह्मण तामायाशक्तिकूं किसवासते देखतेभये ? समाधान ॥ हेसंन्यासियो ! तेविद्वान्ब्राह्मण अद्वितीयब्रह्मकेध्यानकरिकै तामायाकूं सर्वदादेखतेनहीं ॥ किंतु जिसकालविषे तेविद्वान्ब्राह्मण ताअद्वितीयब्रह्मतैं याजगत्केउत्पत्तिआदिकोंकीअनुपपत्तिकास्मरणकरैहैं ॥ तिसकालविषे तेविद्वान्ब्राह्मण तामायाशक्तिकूंदेखैहैं ॥ हेसंन्यासियो ! जैसे पूर्व तेविद्वान्ब्राह्मण ब्रह्माकारवृत्तियोंकेप्रवाहरूपध्यानकरिकै तामायाशक्तिकूंदेखतेभयेहैं ॥ तैसे तुमभी जबी ताअद्वितीयब्रह्मविषे वृत्तियोंकाप्रवाहकरोगे ॥ तबी तामायाशक्तिकूं तुम आपहीजाणिलेवोगे ॥ यातैं तुमसंन्यासियोंकेप्रति मैंश्वेताश्वतरऋषि ताअद्वितीयब्रह्मकाउपदेशकरताहूं ॥ तुम सावधानहोइकेश्रवणकरो ॥ हेसंन्यासियो ! पूर्वउक्तकालादिकसर्वकारणोंकाअधिष्ठान जोनिर्गुणब्रह्महै ॥ जिसनिर्गुणब्रह्मकूं पूर्वमुनीश्वर ध्यानकरिकैदेखतेभयेहैं ॥ सोनिर्गुणब्रह्म तुमारेआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सो निर्गुणब्रह्म तुमाराआत्मारूपहीहै ॥ हेसंन्यासियो! जोअद्वितीयब्रह्मरूपआत्मा तुमारेहृदयदेशविषेस्थितहोइकै बुद्धिआदिकसंघातकूंप्रकाशकरैहै ॥ सोइहीब्रह्मरूपआत्मा मायारूपउपाधिकेसंबंधतैं ईश्वरसंज्ञाकूं तथाईश्वरसाक्षीसंज्ञाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और सो इहीब्रह्मरूपआत्मा अविद्यारूपउपाधिकेसंबंधतैं संसारचक्रविषेभ्रमणकरताहुआ जीवसंज्ञाकूं तथाजीवसाक्षीसंज्ञाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ एकहीप्रकृति शुद्धसत्त्वगुणकीप्रधानताकरिकै मायासंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और मलिनसत्त्वगुणकीप्रधानताकरिकै अविद्यासंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां मायाविशिष्टचेतनकानाम ईश्वरहै ॥ और मायाउपहितचेतनकानाम ईश्वरसाक्षीहै ॥ इसीप्रकार अविद्याविशिष्टचेतनकानाम जीवहै ॥ और अविद्याउपहितचैतन्यकानाम जीवसाक्षीहै ॥ हेसंन्यासियो ! जैसे कुलाल दंडकरिकै चक्रकूंभ्रमणकरावैहै ॥ तैसे सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थितहोइकै यहपरमात्मादेव कामक्रोधादिरूपदंडकरिकै यापराधीनजीवोंकूं निरंतर भ्रमणकरावैहै ॥ हेसंन्यासियो ! यहजीवात्मा तबपर्यंत यासंसारविषेभ्रमणकरैहै ॥ जबपर्यंत याजीवात्माकूं अद्वितीय

आत्माकासाक्षात्कारनहींभया ॥ और जबी यहजीवात्मा गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकै ताअद्वितीयआत्माकूंनिश्चयकरैहै ॥ तबी यहजीवात्मा संसाररूपकार्यसहित ताअविद्याकूंनाशकरैहै ॥ याकारणतैंही श्रुतिभगवती याजीवात्माकूं हंस यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ जोजीव अद्वितीयआत्माकेज्ञानकरिकै अविद्याकूंहननकरैहै ताजीवकानाम हंसहै ॥ ऐसाजीवरूपहंस जबी आपणेआत्माकूं अद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैदेखैहै ॥ तबी यहजीवात्मा जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहोइकै मोक्षरूपअमृतकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो! जिसअद्वितीयब्रह्मकूं यहजीवरूपहंस आपणाआत्मारूपकरिकैदेखैहै ॥ तिसीअद्वितीयब्रह्मकूं यहवेदांतशास्त्र प्रतिपादनकरैहै ॥ तथा तिसअद्वितीयब्रह्मरूपअधिष्ठानविषे तेज जल पृथिवी यहतीनभूतरहैहैं ॥ और सोइअद्वितीयब्रह्म सर्वकर्मफलोंकाअवधिरूपहै ॥ और आत्मसाक्षात्कारतैंविना किसीउपायकरिकै जिसकानाशनहींहोवैहै ॥ ऐसीजाआत्माकूंआवरणकरणेहारी मायाशक्तिहै ॥ सामायाशक्तिभी तिसपरमात्मादेवकेआश्रितरहैहै ॥ और पूर्व तेवेदवेत्ताब्राह्मणभी इसस्वयंज्योतिआत्मादेवकूं मायातैंभिन्नजाणिकै तथा अद्वितीयब्रह्मरूपजाणिकै ताआवरणविक्षेपरूपमायातैं विमुक्तहोतेभयेहैं ॥ तथा इसीअद्वितीयब्रह्मविषे अभेदभावकूंप्राप्तहुए तेवेदवेत्ताब्राह्मण जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहोतेभयेहैं ॥ यातैं तुमभी ऐसेअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजाणों ॥ अब तत्त्वमसि यावाक्यविषेस्थितजो तत् त्वं यहदोपदहैं तिनोंकेअर्थका तथा ताकेविचारतैंमोक्षकेप्राप्तिका निरूपणकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो! सर्वत्रव्यापकजोपरमात्मादेवहै ॥ सो तत्पदकाअर्थहै ॥ और पूर्वहंसरूपकरिकैकथनकऱ्याजोजीवात्माहै ॥ सो त्वंपदकाअर्थहै ॥ और तिसतत्पदार्थरूपईश्वरका तथा त्वंपदार्थरूपजीवका जोपरस्परभेदप्रतीतहोवैहै ॥ सोभेद वास्तवतैंनहींहै ॥ किंतु सोभेद उपाधिकरिकैहै ॥ तहां श्रुतिविषे क्षर व्यक्त यादोनोंनामकरिकैकथनकऱ्या जोअंतःकरणादिककार्यप्रपंचहै ॥ सोकार्यप्रपंच यात्वंपदार्थरूपजीवकाउपाधिहै ॥ और श्रुतिविषे अव्यक्त अक्षर यादोनोंनामकरिकैकथनकऱ्या जोकारणअज्ञानहै ॥ सोकारणअज्ञान तत्पदार्थरूपईश्वरकाउपाधिहै ॥ तहांश्रुति ॥ कार्योपाधिरयंजीवः कारणोपाधिरीश्वरः ॥ अर्थयह ॥ अंतःकरणादिरूपकार्यउपाधिवाला जीवहोवैहै ॥ और अज्ञानरूपकारणउपाधिवाला ईश्वरहोवैहै ॥ १ ॥ तिसकार्य

कारणरूपदोनोंउपाधियोंकाअधिष्ठान शुद्धपरब्रह्महै ॥ सोपरमात्मादेवही जबी बुद्धिकेसाथतादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहोइकै आपणे वास्तवस्वरूपकूंनहींजाणेहै ॥ तबी सोपरमात्मादेव जीवभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताजीवभावकरिकै सोपरमात्मादेव पुण्यपापकेव शतैं नानाप्रकारकेसुखदुःखोंकूंभोगेहै ॥ और सोइहीपरमात्मादेव जबी मायाकृतजीवभावकापरित्यागकरिकै आपणेकूंअद्वितीयब्रह्मरूपजाणेहै ॥ तबी सोपरमात्मादेव सर्वबंधनोंतैंमुक्तहोइकै मोक्षरूपअमृतभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ! जैसे वास्तवतैंन्यूनअधिकभावतैंरहितजोआकाशहै ॥ सोआकाश जबी सूचीकेमूलछिद्रविषेस्थितहोवैहै ॥ तबी सोआकाश अल्पकह्याजावैहै ॥ और सोइहीआकाश जबी ब्रह्मांडरूपउपाधिविषेस्थितहोवैहै ॥ तबी सोआकाश महान्कह्याजावैहै ॥ तैसे वास्तवतैंजीवईश्वरभावतैंरहित जोयहपरमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेव जबी बुद्धिरूपउपाधिविषेस्थितहोवैहै ॥ तबी सोपरमात्मादेव जीवसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सोइहीपरमात्मादेव जबी मायारूपउपाधिविषेस्थितहोवैहै ॥ तबी सोपरमात्मादेव ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं कार्यकारणरूपउपाधिकेभेदकरिकैही जीवईश्वरकाभेदप्रतीतहोवैहै ॥ वास्तवतैं ताजीवईश्वरकाभेदहै नहीं ॥ यातैं ताकल्पितउपाधियोंकापरित्यागकरिकै यहजीवात्मारूपहंस जबी आपणेकूंअद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैजाणेहै ॥ तबी यह जीवात्मा मायारूपकारणसहित सर्वकामक्रोधादिकपाशोंतैंमुक्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! ऐसेअद्वितीयआत्माविषे जीव ईश्वर ब्रह्म इत्यादिकभेदव्यवहार कौनकरावैहै ? समाधान ॥ हेसंन्यासियो ॥ एकईश्वर दूसराजीव तीसराशुद्धब्रह्म यातीनोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अनादिकहैहैं ॥ सोतिनतीनोंविषे जोअनादिपणाहै ॥ तथा जन्मतैंरहितपणाहै ॥ सोभी यामायाकरिकैही कल्पितहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सामायाशक्तिही तिनईश्वरादिकोंकूं अनादिरूपकरिकैकल्पनाकरैहै ॥ और आकाशादिकप्रपंचकूं सादिरूपकरिकै कल्पनाकरैहै ॥ और तामायानें जीव ईश्वर शुद्धब्रह्म यातीनोंविषे जबी अनादिपणाकल्पनाकऱ्या ॥ तबी तिसजीव ईश्वरकाभेद तथा सामाया तथा मायाचैतन्यकासंबंध यातीनोंविषेभी अनादिपणा अर्थतैंहीसिद्धहोवैहै ॥ यहवार्ता सुरेश्वराचार्यनैंभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ जीवईशोविशुद्धाचिद्विभागश्चतयोर्द्वयोः ॥ अविद्यातच्चितोर्योगःषडस्माकमनादयः ॥

अर्थयह ॥ जीव ईश्वर शुद्धचेतन तिनदोनोंकापरस्परभेद अविद्या अविद्याचैतन्यकासंबंध यहषट् वेदांतशास्त्रविषे अनादिहोवैहैं ॥ १ ॥ इसतैंआदिलैकेजोअद्वितीयआत्माविषेभेदप्रतीनहोवैहै ॥ सोसंपूर्ण मायाकरिकैहीप्रतीतहोवैहै ॥ और यहअधिकारी पुरुष जबी जीव ईश्वर शुद्धचेतन यातीनोंकूं आपणेआत्मातैंअभिन्नकरिकैजानै है ॥ तथा आपणेस्वरूपकूं सर्वत्रव्यापकरू पकरिकैजानैहै ॥ तबी यहअधिकारीपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब ताआदिमायाके निवृत्तिकाउपाय वर्णनकरैहैं ॥ हे संन्यासियो! जाअनादिमाया जगत्कीउत्पत्तिकालविषे भोक्ताभोग्यरूपकरिकै याजीवकूं अनेकप्रकारकेसुखदुःखकीप्राप्तिकरै है ॥ और जामाया प्रलयकालविषे नामरूपात्मकजगद्भावतैंरहितहुई स्थितहोवैहै ॥ तामायाकूं श्रुतिभगवती अक्षर यानामक रिकैकथनकरैहै ॥ और सामायाही आत्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तितैंअनंतर नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तामा याकूं क्षर यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! पूर्वश्रुतिनैं यामायाकूं अक्षरनामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ और अबीश्रुति नैंतामायाकूं क्षरनामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ सोअक्षरपणा तथाक्षरपणा एकपदार्थविषेसंभवैनहीं ॥ यातैं तिनदोनोंश्रुतियोंका परस्प रविरोधहोवैगा ॥ **समाधान** ॥ हेसंन्यासियो! यहअनादिमाया आत्मसाक्षात्कारतैंविना अन्यकिसीउपायकरिकै नाशहोतीनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिनैं तामायाकूं अक्षरकह्याहै ॥ और आत्मसाक्षात्कारकरिकै तामायाकानाशहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिनैं तामा याकूं क्षरकह्याहै ॥ यातैं तिनदोनोंश्रुतियोंका परस्परविरोधहोवैनहीं ॥ और हेसंन्यासियो! जोवस्तु नाशतैंरहितहोवैहै ॥ ताका नाम अक्षरहै ॥ ऐसाअक्षरपणा तामायाविषेसंभवैनहीं ॥ किंतु उत्पत्तिनाशतैंरहित यापरमात्मादेवविषेही सोअक्षरपणासंभवैहै ॥ ऐसाअक्षरपरमात्मादेव जबी याअधिकारीपुरुषोंकेवृत्तिविषेआरूढहोइकै यामायाकाहरणकरैहै ॥ तबी यापरमात्मादेवकूं श्रुति भगवती हर यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और यहपरमात्मादेव आपणीसत्ताकरिकै तामायारूपकारणकूं तथाजगद्रूपकार्यकूंनि यमतैंप्रवृत्तकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं ईश यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ हेसंन्यासियो! तुमोंनैं आपणेम नविषे याप्रकारकीअसंभावनानहींकरणी ॥ जोहमारेकूं आत्माकाज्ञानतौभयाहै ॥ परंतु हमारेअविद्याकीनिवृत्तिभईनहीं ॥ यातैं

आत्माकाज्ञान अविद्याकेनिवृत्तिका कारणनहीं ॥ याप्रकारकीअसंभावना तुमोंनें कदाचित्भीनहींकरणी ॥ काहेतें? याअ
विद्याकीअनेकशक्तियांहैं ॥ तिनशक्तियोंकूं क्रमतेंही आत्मज्ञानकीअवस्था नाशकरैहै ॥ अब तिनअज्ञानकेशक्तियोंका तथा
तिनआत्मज्ञानकेअवस्थावोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो! याजगत्विषे प्रथम सत्यबुद्धिकराइकै पश्चात् ताजगत् वि
षे आसक्तिकरावणेहारी जाकोईकअविद्याकीशक्तिहै ॥ साअविद्याकीशक्ति अभिध्यानरूपज्ञानतेंनाशहोवैहै ॥ तहां यहसंपूर्ण
जगत् हमाराआत्मास्वरूपहै ॥ याप्रकारकेचिंतनकानाम अभिध्यानहै ॥ ताअभिध्यानकीउत्पत्तितेंपूर्व याअधिकारीपुरुषकी
जैसीपदार्थोंविषेआसक्तिहोवैहै ॥ तैसीआसक्ति ताअभिध्यानकीउत्पत्तितेंअनंतर याअधिकारीपुरुषकीहोवैनहीं ॥ यातें यह
जान्याजावैहै ॥ ताअभिध्यानकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकी कोईकअविद्याकीशक्ति निवृत्तभईहै ॥ जिसअविद्याशक्तिकेनाश
करिकै यहविद्वान्पुरुष संसारविषेआसक्तअज्ञानीजीवोंतें विलक्षणहोवैहै ॥ तथा रागद्वेषादिकोंतेंरहितहुआ सोविद्वान्पुरुषशां
तिआदिकगुणोंवालाहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो! याअर्थविषे तुमसंन्यासीही दृष्टांतहो ॥ काहेतें? सर्वात्मभावकाचिंतनरूपअभिध्यानतें
पूर्वजैसीतुमारी अनात्मपदार्थोंविषेआसक्तिथी॥ तैसीआसक्ति जबी तुमारेविषेहैनहीं॥ और हेसंन्यासियो! याजीवोंका परस्परभे
दहै तथा जीवईश्वरका परस्परभेदहै ॥ याप्रकारकीभेदप्रतीतिकरावणेहारी जादूसरीअविद्याकीशक्तिहै॥ सादूसरीशक्ति योजनातें
निवृत्तहोवैहै ॥ तहां जीवईश्वरकेअभेदचिंतनकानाम योजनाहै ॥ और जैसे लौकिकपुरुष आपणेब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वादिकजाति
योंविषे संशयविपर्ययतेंरहितहोवैहैं ॥ तैसे तायोजनाकरिकै ताअविद्याशक्तिकेनिवृत्तहुए यहविद्वान्पुरुष आपणेआत्माकेब्रह्मरू
पताविषे संशयविपर्ययतेंरहितहोवैहै ॥ और हेसंन्यासियो! अनात्मपदार्थोंकूंविषयकरणेहारे जेज्ञानकर्मवासनाहैं ॥ तिनोंकूं
उत्पन्नकरणेहारी जातीसरीअविद्याकीशक्तिहै ॥ सातीसरीशक्ति तत्त्वभावतेंनाशहोवैहै ॥ तहां निरंतर अद्वितीयआत्माकाचिंतन
रूप जाआत्मनिष्ठाहै तानिष्ठाकानाम तत्त्वभावहै ॥ तातत्त्वभावकरिकै ताअविद्याशक्तिकेनाशहुए यहविद्वान्पुरुष जीवत्अवस्था
विषेभी विदेहमुक्तपुरुषकेसमानहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो! यातत्त्वभावअवस्थाकेप्राप्तहुए याविद्वान्पुरुषोंकी शुभअशुभसंस्का

रसहितसर्वप्रकारकीअविद्या नाशहोवैहै ॥ और जैसे स्वप्नतैंजाग्रतहुआयहपुरुष स्वप्नकेप्रपंचकूंदेखतानहीं ॥ तैसे स्वप्रकाश आनंदस्वरूपआत्माकेनिष्ठाकूंप्राप्तहुआ यहविद्वान्पुरुष शरीरादिकप्रपंचकूंदेखतानहीं ॥ और हेसंन्यासियो! समाधिअवस्थाविषे यद्यपि ताविद्वान्पुरुषकूं प्रपंचकाभानहोवैनहीं ॥ तथापि तासमाधितैंउत्थानकालविषे ताविद्वान्पुरुषकूंभी जगत्काभानहोवैहै॥ यातैं ताविद्वान्पुरुषकूंभी जगत्कीप्रतीतिकरावणेहारी जाचतुर्थअविद्याकीशक्तिहै ॥ साशक्ति प्रारब्धकर्मकेनाशतैंअनंतरहीनाशहोवैहै ॥ इसप्रकार ज्ञानकीअवस्थाविशेषोंकरिकै ताअविद्याकेशक्तियोंकानाशहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो! यहअधिकारीपुरुष जबी सर्वात्मभावकाचिंतनरूप अभिध्यानकरिकै आत्माकूंसाक्षात्कारकरैहै ॥ तबी यहअधिकारीपुरुष कामक्रोधादिकसर्वपाशोंतैंमुक्तहोवैहै ॥ कैसेहैंतेकामक्रोधादिक? जिनकामक्रोधादिकपाशोंकरिकैबद्धहुआ यह अज्ञानीपुरुष नानाप्रकारकेऊंचनीचशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा तिनऊंचनीचशरीरोंविषेभी अध्यात्म अधिदैव अधिभूत यातीन प्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसेकामक्रोधादिकदारुणपाश याअधिकारीपुरुषोंके तबीनिवृत्तहोवैहैं ॥ जबी यहअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं इससंपूर्णजगत्कूंआपणाआत्मरूपकरिकैजाणेहैं ॥ इतनेकरिकै प्रथम अभिध्यानरूपअवस्थाकाफल निरूपणकऱ्या ॥ अब दूसरीयोजनारूपअवस्थाकाफल निरूपणकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो! जैसे घटाकाश महाकाशतैंअभिन्नहै ॥ तैसे यहहमारा आत्मा अद्वितीयब्रह्मरूपहै ॥ याप्रकार जीवब्रह्मकेअभेदचिंतनरूपयोजनातैं याअधिकारीपुरुषोंकूं जबी अद्वितीयब्रह्मकाज्ञानहोवैहै॥ तबी इसअधिकारीपुरुषके आत्माअनात्माअध्यासरूप हृदयग्रंथिकाभेदनहोवैहै॥ तथा अविद्यादिकपंचक्लेशोंकीनिवृत्तिहोवैहै॥ तथा संपूर्णशुभअशुभकर्मोंकाक्षयहोवैहै ॥ तथा संपूर्णसंशयोंकीनिवृत्तिहोवैहै॥ तहांश्रुति ॥ भिद्यतेहृदयग्रंथिश्छिद्यंतेसर्वसंशयाः॥ क्षीयंतेचास्यकर्माणि तस्मिन्दृष्टेपरावरे ॥ अर्थयह॥ अद्वितीयपरमात्माकेसाक्षात्कारहुए इसअधिकारीपुरुषकी अध्यासरूपहृदयग्रंथी भेदनकूंप्राप्तहोवैहै॥ तथा आत्माकूंविषयकरणेहारेसंपूर्णसंशय छेदनकूंप्राप्तहोवैहैं॥ तथा प्रारब्धकर्मतैंअतिरिक्तसंपूर्ण कर्म क्षयकूंप्राप्तहोवैहैं॥ १ ॥ इसप्रकारआत्मसाक्षात्कारकरिकै जबी इसअधिकारीपुरुषोंकेअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै॥ तबी अविद्या अ

स्मिता राग द्वेष अभिनिवेश इनपांचप्रकारकेक्लेशोंकीनिवृत्तिहोवैहै॥ और तिनक्लेशोंकेनिवृत्तहुए इनअधिकारीपुरुषोंकूं पुनःदुःखों कीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ हेसंन्यासियो! इनजीवोंविषे जबपर्यंत आपणेस्वरूपकाअज्ञानहोवैहै॥ तबपर्यंतही इनजीवोंविषे अविद्यादिकपंचक्लेश उत्पन्नहोवैहैं॥ तथा तिनक्लेशोंकरिकै नानाप्रकारकेदुःख उत्पन्नहोवैहैं॥ और इनअधिकारीपुरुषोंकूं जबी गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै॥ तबी ताअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै॥ ताअज्ञानकेनिवृत्तहुए इनअधिकारीपुरुषोंके अविद्यादिकपंचक्लेश निवृत्तहोवैहैं॥ तिनक्लेशोंकेनिवृत्तहुए इनअधिकारीपुरुषोंके सर्वदुःखोंकीनिवृत्तिहोवैहै॥ इसप्रकार आत्मसाक्षात्कारकेप्रभावतैं सर्वदुःखोंतैंरहितहुआ यहविद्वान्पुरुष आपणेप्रारब्धकर्मकेसमाप्तिकीइच्छाकरताहुआ इससंसारविषेविचरैहै॥ और हेसंन्यासियो! इसदेहादिकसंघातविषेहैआत्मबुद्धिजिनोंकी ऐसेजेअज्ञानीजीवहैं तेअज्ञानीजीव जैसे तासंघातकेपूजनताडनादिकोंकरिकैसुखदुःखकूंप्राप्तहोवैहैं॥ तथा अनुकूलप्रतिकूलपदार्थोंकीप्राप्तितैं सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैहैं॥ तैसे यहविद्वान्पुरुष सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ किंतु यहबुद्धिदेहादिकसंघातही पूर्वलेपुण्यकर्मतैंसुखकूंप्राप्तहोवैहै॥ और पूर्वलेपापकर्मतैं दुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥ मैंआत्मा ताबुद्धिआदिकसंघाततैंभिन्नहूं॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोविद्वान्पुरुष बुद्धिआदिकसंघातविषेही सुखदुःखादिकधर्ममानैहै॥ आपणेआत्माकेधर्ममानैनहीं॥ और जैसे इसलोकविषे जोपुरुष आपणेशरीरतैंभिन्न दूसरेशरीरोंकेअभिमानतैंरहितहै॥ सोपुरुष तिनदूसरेशरीरोंकेसुखदुःखकरिकै आपणेकूंसुखीदुःखीमानतानहीं॥ तैसे यहविद्वान्पुरुष आपणेशरीरकूंभी दूसरेशरीरकीन्यांईजाणैहै॥ याकारणतैं सोविद्वान्पुरुष याशरीरकेसुखदुःखकरिकै आपणेआत्माकूंसुखीदुःखीमानैनहीं॥और हेसंन्यासियो! जैसे इसलोकविषे परस्परविवादकरणेहारेजेदोपुरुषहैं॥ तिनदोनोंकेपक्षपाततैंरहितजोमध्यस्थपुरुषहै॥ सोमध्यस्थपुरुष तिनविवादकरणेहारेपुरुषोंकेसुखदुःखकूंजाणताहुआभी तिससुखदुःखकूंआपणेविषेमानतानहीं॥ तैसे यहअसंगविद्वान्पुरुषभी इससंघातकेसुखदुःखोंकूंजाणताहुआभी आपणेस्वरूपविषे तासुखदुःखकूंमानतानहीं॥ और हेसंन्यासियो! जैसे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष पूर्वलेकर्मवासनाकेअनुसार नानाप्रकारकेस्वप्नकूंदेखैहै॥ तैसे यहविद्वान्पुरुषभी प्रारब्धकर्मकेअनुसार समाधितैंउत्थानकालविषे इससुखदुःखादिकप्रपंचकूंदेखैहै॥ हेसंन्यासि

यो! अभिध्यान योजना तत्वभाव इनतीनअवस्थावोंविषे प्रथम अभिध्यानरूपअवस्थाका जोफल हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्या है ॥ सोऐश्वर्यरूपफल देवराजइंद्रकूंभीदुर्लभहै ॥ और पूर्व योजनारूपदूसरीअवस्थाका जोफल हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ सोऐश्वर्यरूपफल ब्रह्माकूंभीदुर्लभहै ॥ और तत्वभावरूपतीसरीअवस्थाकीप्राप्तिकरिकै इसविद्वानूपुरुषके अविद्यासहितसर्वसंस्कारोंकानाशहोवैहै ॥ ताकरिकै याविद्वानूपुरुषकूं परमेश्वरकाऐश्वर्यरूपफल प्राप्तहोवैहै ॥ तातत्वभावरूपअवस्थाकेप्राप्तहुए यह विद्वानूपुरुष आपणेआत्माकूं तथाअन्यपदार्थोंकूं भिन्नरूपकरिकैस्मरणभीनहींकरैहै ॥ और तातत्वभावकेप्राप्तहुए यहआप्तकाम विद्वानूपुरुष सर्वभेदतैंरहितहोवैहै ॥ तथा मनवाणीकाअविषयहोवैहै ॥ तथा सर्वउपमातैंरहितहोवैहै ॥ तथा स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो! श्रुतिविषेसत्यशब्दकरिकैकथनकरेजेप्राणहैं ॥ तेप्राण जबी लोकांतरविषेगमननहींकरैहैं ॥ किंतु तेप्राण याशरीरविषेही लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याप्रकारकेऐश्वर्यरूपफलकूं कोईविरलाहीपुरुष अंत्यजन्मविषेप्राप्तहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो! जिसविद्वानूपुरुषकेप्राण लोकांतरविषेगमननहींकरैहैं ॥ ऐसाअपरोक्षज्ञानवालाविद्वानूपुरुष इसलोकविषे अत्यंतदुर्लभहै ॥ काहेतैं? इसलोकविषे सहस्रमनुष्योंविषे कोईएकमनुष्यही मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाकरैहै ॥ यातैं तिनमनुष्योंविषे मोक्षकीइच्छावालामुमुक्षुपुरुष दुर्लभहै ॥ और तिनसहस्रमुमुक्षुवोंविषेभी कोईएकहीमुमुक्षु श्रवणादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहोवैहै ॥ यातैं तिनमुमुक्षुजनोंविषे श्रवणादिकसाधनसंपन्नपुरुष दुर्लभहै ॥ और तिनश्रवणादिकसाधनसंपन्नसहस्रपुरुषोंविषेभी कोईएकहीपुरुष आत्माकेपरोक्षज्ञानवालाहोवैहै ॥ यातैं तिनसाधनसंपन्नपुरुषोंविषे परोक्षज्ञानवालापुरुष दुर्लभहै ॥ और तिनपरोक्षज्ञानवालेसहस्रपुरुषोंविषेभी कोईएकहीपुरुष आत्माकेअपरोक्षज्ञानवालाहोवैहै ॥ यातैं रागद्वेषतैंरहित तथा सर्वभूतोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकै देखणेहारा जोआत्माकेअपरोक्षज्ञानवालापुरुषहै ॥ सोविद्वानूपुरुष यालोकविषे अत्यंतदुर्लभहै ॥ यहवार्तागीताविषे श्रीकृष्णभगवाननैंभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ मनुष्याणांसहस्रेषुकश्चिद्यततिसिद्धये ॥ यततामपिसिद्धानां कश्चिन्मांवेत्तितत्त्वतः ॥ अर्थयह ॥ हेअर्जुन! इसलोकमैं सहस्रमनुष्योंविषे कोईएकमनुष्यही हमारीप्राप्तिवासते यत्नकरैहै ॥ और तिनयत्नकरणेहारे

सहस्रमनुष्योंविषेभी कोईएकमनुष्यही मेरेवास्तवस्वरूपकूंजानेंहै ॥ १ ॥ यातें आत्माकेअपरोक्षज्ञानवालापुरुष यालोकविषेअत्यंतदुर्लभहै ॥ हेसंन्यासियो ! ऐसाब्रह्मवेत्तापुरुष जिसमातापितातें उत्पन्नहोवैंहै ॥ तेमातापिताभी कृतार्थहोवैंहैं ॥ तथा सोब्रह्मवेत्तापुरुष जिसकुलविषे उत्पन्नहोवैंहै ॥ सोकुलभी कृतार्थहोवैंहै ॥ तथा सोब्रह्मवेत्तापुरुष जिसपृथिवीविषेविचरैंहै ॥ सापृथिवीभी कृतार्थहोवैंहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जिनमातापितादिकोंतें यहब्रह्मवेत्तापुरुष उत्पन्नहोवैंहै ॥ तिनमातापितादिकोंकामहिमाभी जबी वाणी करिकैकह्याजावैनहीं ॥ तबी ताब्रह्मवेत्तापुरुषकामहिमा यहवाणीकरिकै किसप्रकारकह्याजावैगा ? हेसंन्यासियो ! जिसपुरुषकूं संशयविपर्ययतेंरहित आत्माकासाक्षात्कारभयाहै ॥ सोब्रह्मवेत्तापुरुष जोकदाचित् ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकूंकरणेहारेमहापातकीजीवों ऊपरि आपणीकृपादृष्टिकरैंहै ॥ तौ ताब्रह्मवेत्तापुरुषकीदृष्टिकेविषयहुए तेमहापातकीजीव तिनब्रह्महत्यादिकपापोंतेंमुक्तहोवैंहैं ॥ यहवार्ताअन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ यस्यानुभवपर्यंता बुद्धिस्तत्त्वेप्रवर्त्तते ॥ तद्दृष्टिगोचराःसर्वे मुच्यंतेसर्वकिल्बिषैः ॥ अर्थयह ॥ जिसविद्वान्पुरुषकीबुद्धि अद्वितीयआत्माविषे अपरोक्षअनुभवपर्यंत प्रवृत्तहोवैंहै ॥ ऐसाब्रह्मवेत्तापुरुष जिनपुरुषोंऊपरि आपणीकृपादृष्टिकरैंहै ॥ तेपुरुष संपूर्णपापकर्मोंतेंमुक्तहोवैंहैं ॥ १ ॥ हेसंन्यासियो ! जैसे इसलोकविषे जिसपुरुषकूंक्षयरोगहोवैंहै ॥ सोपुरुष बहुतकालतेंपीछे आपणेशरीरकूं सर्वदोषोंकागृहजाणैहै ॥ और जिसपुरुषकूं इसशरीरविषेकोईरोगनहींभयाहै ॥ सोनीरोगपुरुष याशरीरकेदोषोंकूंजाणतानहीं ॥ तैसे जोविद्वान्पुरुष बहुतकालपर्यंत याअद्वितीयआत्माकाध्यानकरैंहै ॥ सोइहीविद्वान्पुरुष याआत्माके सत् चित् आनंद आदिकगुणोंकूंयथार्थजानैंहै ॥ ऐसाविद्वान्पुरुष आपणेआत्माकूं परमेश्वररूप जाणिकरिकै तापरमेश्वरके ऐश्वर्यरूपफलकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ जाकरिकै सोविद्वान्पुरुष किंचित्मात्रभीभयकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेसंन्यासियो ! सर्वत्रव्यापकअद्वितीयब्रह्म हमाराआत्मारूपहै याप्रकारकाजोजीवब्रह्मकाअभेदज्ञानहै ॥ ताअभेदज्ञानतेंपरे याअधिकारीपुरुषोंकूं कोईवस्तुजानणेयोग्यनहीं ॥ किंतु यहजीवब्रह्मकाअभेदही इनअधिकारीपुरुषोंकूंजानणेयोग्यहै ॥ हेसंन्यासियो ! इससंसाररूपचक्रविषेहैस्थितिजिसकी ऐसाजोसुखदुःखकाभोक्ता जीवरूपहंसहै ॥ और तासंसारचक्रकीजननी जामायारूपनदी

है ॥ और ताजीवरूपहंसकरिकैजानणेयोग्य जोपरमात्मादेवहै ॥ जोपरमात्मादेव इनजीवोंकूं शुभअशुभकर्मोंविषेप्रेरणाकरै है ॥ और जिसपरमात्माकेज्ञानतें यहजीव ईश्वरभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसा तत्पदकाअर्थब्रह्म तथा त्वंपदकाअर्थ जीवरूपहंस तथा इसजगत्कीजननीमाया यहतीनों वास्तवतें अद्वितीयब्रह्मरूपहीहैं ॥ और जैसे घटमठरूपउपाधियोंकेभेदकरिकै आकाशविषेभेदप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे जीव ब्रह्म माया यातीनोंविषेजोभेदप्रतीतहोवैहै ॥ सोभी कल्पितउपाधिकेभेदकरिकैहीप्रतीतहोवैहै ॥ वास्तवतें तिनतीनोंकाभेदहैनहीं ॥ इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष तत्त्वंपदार्थकाशोधनकरैहै ॥ ताअधिकारीपुरुषकूं शीघ्रही आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और हेसंन्यासियो ! मायाकेकार्यजेदेहादिकपदार्थहैं ॥ तिनदेहादिकोंतें यहआत्मादेव विलक्षणहोइकैप्रतीतहोतानहीं ॥ याकारणतें इसआत्मादेवविषे अद्वितीयरूपतासंभवैनहीं ॥ किंतु इसआत्माविषे अनेकरूपताहीसंभवैहै ॥ याप्रकारकीशंका तुमोंनें आपणेमनविषे कदाचित्भीनहींकरणी ॥ काहेतें ? सातुमारीशंका तबी संभवै ॥ जबी इसदेहादिकसंघातविषे किसीभीउपायकरिकै आत्माकादर्शननहींहोवै ॥ परंतु इसदेहादिकसंघातविषे अनेकउपायोंकरिकै आत्माकीसत्ताप्रतीतहोवैहै ॥ यातें सातुमारीशंकासंभवैनहीं ॥ अब यासंघातविषे प्रथम अनुमानकरिकै आत्माकीसत्तासिद्धकरैहै ॥ हेसंन्यासियो ! जैसे काष्ठोंविषेस्थितजोअग्निहै ॥ सोअग्नि यद्यपि स्वरूपतैंप्रतीतहोतानहीं ॥ तथापि तिनकाष्ठोंविषे सोअग्नि नहींहै ॥ यहवचन कह्याजावैनहीं ॥ काहेतें ? ताकाष्ठोंविषेजोउष्णताप्रतीतहोवैहै ॥ साउष्णता अग्नितेंविनासंभवैनहीं ॥ यातें जैसे शरीरकीउष्णतातें जीवकाअनुमानहोवैहै ॥ तैसे ताउष्णतारूपहेतुतें तिनकाष्ठोंविषे अग्निकाअनुमानहोवैहै ॥ तैसे यादेहादिकसंघातविषेस्थित जो आत्मादेवहै ॥ सोआत्मादेव यद्यपि उपायतेंविनाप्रतीतहोतानहीं ॥ तथापि यासंघातविषे आत्मानहींहै ॥ याप्रकारकावचन कह्याजावैनहीं ॥ काहेतें ! इनदेहधारीजीवोंकूं घटपटादिकजडपदार्थोंका जोप्रकाशरूपस्फुरणहोवैहै ॥ सोस्फुरण आत्माकीसत्तातें विनासंभवैनहीं ॥ यातें तास्फुरणरूपहेतुतें इससंघातविषे आत्माकाअनुमानहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ! जिसस्फुरणरूपहेतुकरिकै इससंघातविषे आत्माकाअनुमानहोवैहै ॥ सोस्फुरण भेदतेंरहितहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! यहघटहै यहपटहै यहभित्तिहै इत्यादि

कस्फुरणोंकाभेद प्रत्यक्षप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं तिनस्फुरणोंकाअभेद किसप्रकारहोवैगा? समाधान ॥ हेसंन्यासियो! तास्थलविषे भी घटपटादिकपदार्थोंकाही भेदहोवैहै ॥ प्रकाशरूपस्फुरणविषे सोभेदहोवैनहीं ॥ यातैं सोप्रकाशरूपस्फुरण सर्वदाअभिन्नहै ॥ और सोस्फुरण आपणेप्रकाशविषे दूसरेकिसीप्रकाशकीअपेक्षाकरतानहीं ॥ याकारणतैं सोस्फुरण स्वप्रकाशरूपहै ॥ शंका ॥ हे भगवन्! नेत्रादिकइंद्रियोंका जबी घटपटादिकपदार्थोंकेसाथ संबंधहोवैहै ॥ तबीही यहघटहै यहपटहै इत्यादिकस्फुरण उत्पन्नहोवैहै ॥ और इसलोकविषे जोजोपदार्थ उत्पत्तिवालाहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ परप्रकाशहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ उत्पत्तिवालेहोणेतैं परप्रकाशहैं ॥ तैसे नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकैजन्यहोणेतैं सोस्फुरणभी परप्रकाशहीहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो! नेत्रादिकइंद्रिय जोकदाचित् तास्फुरणकीउत्पत्तिकरतेहोवैं तौ तास्फुरणविषे परप्रकाशतासिद्धहोवै ॥ परंतु तेनेत्रादिकइंद्रिय तास्फुरणकीउत्पत्तिकरतेनहीं ॥ किंतु तेनेत्रादिकइंद्रिय अंतःकरणकेवृत्तिकीउत्पत्तिद्वारा ताप्रकाशरूपस्फुरणकीअभिव्यक्तिकरैहैं ॥ यातैं अंतरबाहरिसर्वभेदतैंरहित सोस्फुरण स्वप्रकाशरूपहीहै ॥ और हेसंन्यासियो! यहप्रकाशरूपस्फुरण देहादिकसर्वसंघाततैंअंतरहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तास्फुरणकूं आत्मारूपकहैहैं ॥ और यहस्फुरण सर्वपदार्थोंतैंअधिकप्रियहै ॥ तथा सर्वभेदतैंरहितहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तास्फुरणकूं आनंदरूपकहैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! यहस्फुरण जबी आत्मरूपहीहै ॥ तबी तास्फुरणरूपहेतुकरिकै आत्माकाअनुमाननहींहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो! जैसे अग्नितैंअभिन्नजाउष्णताहै ॥ ताउष्णतारूपहेतुकरिकै ताअग्निकाअनुमानहोवैहै ॥ तैसे आत्मातैंअभिन्न जोप्रकाशरूपस्फुरणहै ॥ तास्फुरणरूपहेतुतैं इस संघातविषे आत्माकाअनुमानसंभवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे सत् चित् आनंद यहतीनोंधर्म यद्यपि वास्तवतैंआत्मस्वरूपहीहैं ॥ तथापि कल्पितभेदकूंअंगीकारकरिकै तिनसत्यादिकधर्मोंकूं आत्माकास्वरूपलक्षणमानैहैं ॥ तैसे वास्तवतैंआत्मस्वरूपजोस्फुरण है ॥ तास्फुरणविषे कल्पितभेद अंगीकारककरिकै आत्माकीसिद्धिविषे हेतुरूपतासंभवैहै ॥ जैसे यालोकविषेप्रसिद्ध जोलौकिकअग्निहै ॥ तथा वेदविषेप्रसिद्ध जोगार्हपत्यादिकवैदिकअग्निहै ॥ यहदोनोंप्रकारकाअग्नि काष्ठोंकेमथनरूपउपायतैं याजीवोंकूंप्राप्त

होवैहै ॥ तैसे स्वर्गादिकलोकोंकेफलकाभोक्ता जोसंसारीआत्माहै ॥ तथा सर्वगुणोंतैंरहित जोशुद्धआत्माहै ॥ यहदोनोंप्रकारका आत्मा याअधिकारीपुरुषोंकूं स्फुरणरूपहेतुजन्यअनुमानरूपउपायतैं प्राप्तहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो! याअधिकारीपुरुषोंकूं जबी कि सप्रतिबंधकेवशतैं तत्त्वमस्यादिकवेदवाक्योंकरिकै कार्यसहितअविद्यातैंभिन्नरूपकरिकै ब्रह्मात्माकासाक्षात्कार नहींप्राप्तहोवै ॥ तबी सर्वअर्थकूंजानणेहारा महात्मागुरु तिनअधिकारियोंकेप्रति ॐकाररूपप्रणवकेध्यानकाउपदेशकरिकै आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरै ॥ अब ताप्रणवकेध्यानकाप्रकार निरूपणकरैहैं ॥ जैसे यालोकविषे काष्ठरूपदोअरणियोंकेमथनतैं लोक अग्निकूंप्रगटकरैहैं ॥ तैसे यहहमाराशरीर नीचेकीअरणिहै ॥ और ब्रह्मकावाचकप्रणवमंत्र ऊपरकीअरणिहै ॥ और यहॐकाररूपप्रणव मैंब्रह्मरूपआत्माकाहीनामहै ॥ याप्रकार जोचित्तकेवृत्तियोंकानिरंतरप्रवाहहै ॥ सो तिनदोनोंअरणियोंकामथनहै ॥ हेशिष्य! याप्रकारकेमथनकूं जबी तू निरंतरकरैगा ॥ तबी यासंघातविषे तूशीघ्रही आत्मरूपअग्निकूं साक्षात्कारकरैगा ॥ याप्रकार प्रणवकेध्यानकाउपदेशकरिकै सोब्रह्मवेत्तागुरु तिनअधिकारीपुरुषोंकेप्रति आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरै ॥ यातैं प्रणवकाध्यानभी आत्मसाक्षात्कारकाउपायहै ॥ हेसंन्यासियो! जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेशरीरोंविषे सोआत्मादेव नहींप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सोआत्मादेव यासंघातविषेहैनहीं ॥ जोकदाचित् सोआत्मादेव यासंघातविषेहोता तौहमारेकूंप्रतीतहोता ॥ याप्रकारकीशंका तुमोंनैं आपणेमनविषे कदाचित्भीनहींकरणी ॥ काहेतें? जोवस्तु जहांनहींप्रतीतहोवैहै ॥ सोवस्तु तहांनहींहोवैहै ॥ याप्रकारकानियमसंभवैनहीं ॥ किंतु जोवस्तु जहां किसीउपायकरिकैभी नहींप्रतीतहोवैहै ॥ सोवस्तु तहांनहींहोवैहै ॥ याप्रकारकानियमसंभवैहै ॥ और यासंघातविषेतौ अनेकउपायोंकरिकै आत्माकीप्रतीतिहोवैहै ॥ यातैं यासंघातविषेआत्मानहींहै ॥ ऐसीआशंकाकरणीसंभवैनहीं ॥ हेसंन्यासियो! यासंघातविषेस्थितआत्माका उपायोंकरिकै साक्षात्कारहोवैहै याअर्थकीदृढताकरावणेवासतै मैंतुमारेप्रति चारिदृष्टांतकहताहूं ॥ तिनोंकूं तुम श्रवणकरो ॥ जैसे तिलोंविषेस्थितजोतैलहै ॥ सोतैल यद्यपि प्रसिद्धदिखाइदेवैनहीं ॥ तथापि तिनतिलोंकेपीडनरूपउपायकरिकै सोतैल प्रसिद्धदिखाइदेवैहै ॥ और जैसे दधिविषेस्थितजोघृतहै ॥सोघृत यद्यपि प्रसिद्धदिखा

इदेवैनहीं ॥ तथापि तादधिकेविलोडनरूपउपायतैं साघृत प्रसिद्धदिखाइदेवैहै ॥ और जैसे नदीप्रवाहकेरेतविषेस्थितजोजलहै ॥
सोजल यद्यपि प्रसिद्धदिखाइदेवैनहीं ॥ तथापि तारेतकास्खलनरूपउपायकरिकै सोजल प्रसिद्धदिखाइदेवैहै॥ और जैसे काष्ठोंविषे
स्थितजोअग्निहै ॥ सोअग्नि यद्यपि प्रसिद्धदिखाइदेवैनहीं ॥ तथापि तिनकाष्ठोंकेमथनरूपउपायतैं सोअग्नि प्रसिद्धदिखाइदेवैहै ॥ तै
से गुरुशास्त्रादिकउपायोंतैंरहित जेबहिर्मुखपुरुषहैं ॥ तिनवहिर्मुखपुरुषोंकूं यद्यपि यासंघातविषेआत्माकादर्शनहोवैनहीं ॥ तथापि गु
रुशास्त्रकेउपदेशकेअनुसार वर्तणेहारे जेश्रद्धावान्अधिकारीपुरुषहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष यमनियमादिकउपायोंकरिकै यासंघातविषे
ही आत्माकूंसाक्षात्कारकरैहैं ॥ और हेसंन्यासियो ! जैसे घृत क्षीरकेअंतरव्यापकहै ॥ तैसे यहआत्मादेव सर्वजगत्केअंतरव्यापकहै ॥
तथा यहआत्मादेवही ईश्वररूपकरिकै कर्मउपासनातपादिकधर्मोंके संप्रदायकाप्रवर्तकहै ॥ तथा तिनकर्मउपासनातपकेफलकादेणे
हाराहै ॥ तथासर्वजगत्काकारणरूपहै ॥ ऐसेआत्मादेवकूं जोअधिकारीपुरुष गुरुउपदिष्टमहावाक्यतैं साक्षात्कारकरैहै ॥ सोईहीअ
धिकारीपुरुष वेदोंकावेत्ताहै ॥ हेसंन्यासियो ! यहसर्वशास्त्रकाअर्थ हमनैं संक्षेपतैं तुमारेप्रति कथनकन्याहै ॥ अब तिसीअर्थकूं विस्ता
रकरिकै हम तुमारेप्रति कथनकरतेहैं ॥ तुम सावधानहोइकैश्रवणकरो ॥ हेसंन्यासियो ! पूर्वहमनैं तुमारेप्रति जोआत्मादेव हंसरूप
करिकै तथाब्रह्मरूपकरिकै कथनकन्याथा ॥ सोईहीआत्मादेव आपणेवास्तवस्वरूपकेज्ञानवासते जबी याअधिकारीपुरुषोंकेसंकल्प
रूपमनकूं ताआत्माकेस्वरूपविषे अष्टांगयोगकीरीतिसैंजोडेहै ॥ तबी सोआत्मादेव निश्चयरूपबुद्धिकाकारणहोवैहै ॥ और तानिश्चय
रूपबुद्धिकरिकै यहअधिकारीपुरुष तास्वयंज्योतिरूपआत्माकूंनिश्चयकरैहै ॥ तानिश्चयतैंअनंतर यासंघाततैंभिन्नरूपकरिकैस्थितहु
आ तथा यासंघातकानियंतारूपकरिकैस्थितहुआ सोविद्वान्पुरुष अंतरबाहरिपूर्णरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ! सूर्यमंडल
विषेस्थित जोसवितानामाअंतर्यामीदेवहै ॥ ताअंतर्यामीदेवके ध्यानकेप्रभावतैं पूर्व हमसरीखेअधिकारीपुरुष सर्वदुःखकीनिवृत्तिवा
सते तथाब्रह्मानंदकीप्राप्तिवासते ताईश्वरपरायणशुद्धमनकरिकै ज्ञानअभ्यासरूपयत्नकूंकरतेभयेहैं ॥ और हेसंन्यासियो ! ताअंतर्या
मीदेवकीशक्तिकरिकैयुक्तजोमनहै ॥ तामनकरिकै यहअधिकारीपुरुष जिनवाकादिकइंद्रियोंकूं शुभकर्मविषेप्रवृत्तकरैहै ॥ तिनवाका

दिकइंद्रियोंकूंभी सोअंतर्यामीपरमात्मादेवही शुभकर्मविषेप्रवृत्तकरै है ॥ कैसे हैंतेवाकादिकइंद्रिय ? भूमानंदरूपनित्यसुखकेज्ञानकूं प्रगटकरणेहारे हैं ॥ हेसंन्यासियो ! तिनवाकादिकइंद्रियोंतैं उत्पन्नभईजाआत्माकारबुद्धिहै ॥ ताबुद्धिरूपकार्यकीउत्पत्तितैं यहअधिकारीपुरुष तिनवाकादिकइंद्रियोंऊपरि परमेश्वरकेअनुग्रहकाअनुमानकरिकै तास्वप्रकाशपरमात्मादेवकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ! अंतर्यामीईश्वरकेअनुग्रहतैंविना याअधिकारीपुरुषोंकी साआत्माकारबुद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं ताआत्माकारबुद्धिरूपकार्यतैं याअंतर्यामीदेवकाअनुग्रह अवश्यजान्याजावैहै ॥ याकारणतैंही महात्मायोगीजन प्रथम आपणेसंकल्परूपमनकूं तापरमात्माविषेजोडे हैं ॥ तिसतैंअनंतर तामनकेजोडनेतैं उत्पन्नभईजानिश्चयात्मकबुद्धिहै ॥ ताबुद्धिकूंभी तिसीपरमात्माविषेजोडे हैं ॥ कैसीहैसाबुद्धि ? तास्वयंज्योतिरूपपरमात्मादेवकेस्वरूपभूतआनंदकूंविषयकरणेहारी है ॥ ताबुद्धिकेप्रसादतैं तिनमहात्मायोगीजनोंकूं इसशरीरविषे आत्माकासाक्षात्कारहोवै है ॥ और हेसंन्यासियो ! प्राण अपान यादोनोंप्रकारकेवायुका परस्परलयचिंतनरूपजोअंतरअग्निहोत्रहैं ॥ ताअग्निहोत्रकूं पूर्व महात्मापुरुष करतेभये हैं ॥ तिनमहात्मापुरुषोंकेमनोरथोंकूं सोपरमात्मादेव इसप्रकारपूर्णकरै है ॥ जिसप्रकार हमअधिकारीपुरुषोंका आत्मज्ञानकामनोरथ पूर्णकऱ्याहै ॥ काहेतें ? सन्मार्गविषेवर्तणेहारे अधिकारीजनोंऊपरिअनुग्रहकरणा ईश्वरकास्वभावही है ॥ और हेसंन्यासियो ! याअंतर्यामीपरमात्मादेवके एकआश्चर्यरूपस्वभावकूं तुमदेखो ॥ जोयहपरमात्मादेव मनवाणीकाअविषयहुआभी याअधिकारीपुरुषोंकेबुद्धिकाविषयहोवै है ॥ ऐसे सर्वमनोरथोंकीप्राप्तिकरणेहारेपरमात्मादेवकीस्तुति हमअधिकारीजीवोंकूं सर्वदाकरणेयोग्यहै ॥ अब तास्तुतिकाप्रकार निरूपणकरै हैं ॥ हेसंन्यासियो ! याअधिकारीपुरुषोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिविषे अनेकप्रकारकेविघ्नहोवै हैं ॥ यातैं तिनविघ्नोंकीनिवृत्तिवासते याअधिकारीपुरुषनैं इसप्रकार परमेश्वरकीस्तुतिकरणी ॥ हे तत्पदकाअर्थरूप ब्रह्म हेत्वंपदकाअर्थरूपजीवात्मा तुमदोनोंकेअभेदरूपयोगकूंहमअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रसहकृतशुद्धमनकरिकेकरै हैं ॥काहेतें? सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ इत्यादिकअवांतरवाक्योंकरिकैसहकृत जेतत्त्वमस्यादिकमहावाक्यहैं ॥ तेमहावाक्य तुमदोनोंकेवास्तवस्वरूपकाअभेदही प्रतिपादनकरै हैं ॥ तथा आत्मावाइदमेकएवाग्रआसीत् ॥ इत्यादिकश्रुतिवचन याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व तुमदो

नोंकूं अद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैकथनकरैंहैं ॥ और जैसेलौकिकपुरुष लोकप्रसिद्धमार्गकरिकै नगरकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तैसे तुमारेध्यानकरिकै सर्वविघ्नोंतैंरहितहुए यहअधिकारीपुरुष आत्मज्ञानरूपमार्गकरिकैब्रह्मानंदरूपमोक्षकूंप्राप्तहोवैंहैं॥ और जिनअधिकारीपुरुषोंकूं तुमारासाक्षात्कारभयाहै ॥ तेअधिकारीपुरुष आपणेमोक्षरूपकीर्तिकूं बुद्धिमान्पुरुषोंकेमुखतैं बहुतवारश्रवणकरैंहैं ॥ और जैसेपिताकेधनविषे पुत्रकाभागहोवैहै ॥ तैसे ब्रह्मानंदरूपमोक्षविषे तेसंपूर्णअधिकारीपुरुष भागवालेहोवैंहैं॥ और जेअधिकारीपुरुष हृदयादिकस्थानोंविषे तुमाराचिंतनकरैंहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोइकै ताआत्मसाक्षात्कारकेप्रभावतैं सूर्यचंद्रादिकोंविषेस्थित परमेश्वरकेतेजकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ और वास्तवतैं शुद्धब्रह्मरूप तथाभेदतैंरहित जोतुमदोनोंहो ॥ तिनतुमदोनोंकेप्राप्तिकेद्वारकूं हमअधिकारीजन गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं भलीप्रकारजाणतेहैं ॥ काहेतैं ? जैसेकाष्ठोंकेमथनतैंउत्पन्नभयाजोअग्निहै ॥ सोअग्निजिसस्थानतैं उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसस्थानविषेलयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे वायुचंद्रसूर्यादिकजगत् जिसमायाविशिष्टचेतनविषे उत्पत्तिलयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोमायाविशिष्टरूपही तुमदोनोंकेशुद्धस्वरूपकूंजनावैहै ॥ याकारणतैं सोमायाविशिष्टस्वरूप तुमदोनोंकेप्राप्तिकामार्गहै ॥ काहेतैं ? जैसे यालोकविषे मृत्तिकारूपकारणकेज्ञानहुएतैंअनंतर घटशरावादिककार्योंकाभेददर्शन निवृत्तहोइजावैहै ॥ तैसे सर्वजगत्काकारणरूप जोमायाविशिष्टचेतनहै॥ ताविशिष्टचेतनकेज्ञानहुएतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष भेददर्शनजन्यसर्वभ्रांतिकापरित्यागकरिकै शुद्धब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकारशुद्धआत्माकेसाक्षात्कारहुएतैंअनंतर तत्पदकाअर्थरूप तूईश्वर आपणेपरोक्षताकीनिवृत्तिवासते तादात्म्यसंबंधकरिकै यात्वंपदार्थरूपजीवकासेवनकरैंहैं ॥ और यहत्वंपदार्थरूपजीव आपणेपरिच्छिन्नभावकीनिवृत्तिवासते तादात्म्यसंबंधकरिकै तैंतत्पदार्थरूपईश्वरकासेवनकरैंहै ॥ ऐसीअभेददशाविषे तूपरमात्मादेव आपणेसाक्षात्कारकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकेअविद्याकूंनाशकरैंहैं ॥ कैसीहैसाअविद्या ? याजीवोंकेजन्ममरणादिकदुःखोंकाकारणहै ॥ तथा नानाप्रकारकेभेददर्शनकाकारणहै ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष तुमारीप्राप्तिवासते अग्निहोत्रादिकइष्टकर्मोंकूं तथा कूपतडागादिकपूर्तकर्मोंकूं कदाचित्भीनहींकरैंहैं ॥ किंतु तुमारीप्राप्तिवासते यहअधिकारीपुरुष आत्मज्ञानकाहीअभ्यासकरै ॥

आत्मज्ञानतैंविनादूसराकोईउपाय तुमारेप्राप्तिकाहैनहीं ॥ हेसंन्यासियो ! इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष ताअंतर्यामीपरमात्मादेवकीस्तुतिकरैहै ॥ ताअधिकारीपुरुषके सर्वपापकर्म निवृत्तहोवैंहैं ॥ और तापापकर्मरूपप्रतिबंधकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर याअधिकारीपुरुषकाचित्त शुद्धहोवैहै ॥ और ताचित्तशुद्धितैंअनंतर याअधिकारीपुरुषकूं योगकेप्राप्तिकीइच्छाउत्पन्नहोवैहै ॥ ताइच्छाकीउत्पत्तितैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष तायोगकूंकरैहै ॥ और तायोगकरिकै यहअधिकारीपुरुष साक्षीआत्माकूंदेखैहै ॥ तासाक्षीआत्माकेदर्शनकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं मुमुक्षुजननैं पूर्वउक्तरीतिसैं परमेश्वरकीप्रार्थना अवश्यकरणी ॥ अब ताअष्टांगयोगकानिरूपणकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो! यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ यहयोगकेअष्टअंगहैं ॥ तहां अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यहपांचप्रकारकायमहोवैहै ॥ तहां शरीरमनवाणीकरिकै किसीजीवकूंपीडानहींकरणी याकानाम अहिंसाहै ॥ और परजीवोंकेहितवासते यथार्थवचनकहणा याकानाम सत्यहै ॥ और बलात्कारसैं तथाछलसैं परधनादिकोंका नहींहरणकरणा याकानाम अस्तेयहै ॥ और नेत्रादिकइंद्रियोंकेनिरोधपूर्वक जोउपस्थकूंइंद्रियकानिरोधहै याकानाम ब्रह्मचर्यहै ॥ और शरीरकेनिर्वाहतैंअधिक भोगकेसाधनोंकासंग्रहनहींकरणा याकानाम अपरिग्रहहै ॥ १ ॥ अब नियमरूपदूसरेअंगकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां शौच संतोष तप स्वाध्याय ईश्वरप्रणिधान यह पांचप्रकारकानियमहोवैहै ॥ तहां शौच दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एक बाह्यशौचहोवैहै और दूसरा आंतरशौचहोवैहै ॥ तहां जलमृत्तिकादिकोंकरिकै शरीरकूंशुद्धराखणा यहबाह्यशौचहै ॥ और मैत्री करुणा मुदिता इत्यादिकधर्मोंकरिकै आपणेचित्तकूं द्वेषादिकविकारोंतैंरहितकरणा याकानाम आंतरशौचहै ॥ और प्रारब्धयोगतैंप्राप्तभयेजेअन्नवस्त्रादिकपदार्थ तिनोंकरिकै आपणेप्राणोंकाधारणकरणा ॥ तिसतैंअधिकपदार्थोंकीतृष्णानहींकरणी ॥ याकानाम संतोषहै ॥ और शीतउष्णादिकोंकूंसहनकरणा तथाकृच्छ्रचांद्रायणादिकव्रतोंकूंकरणा याकानाम तपहै ॥ और प्रणवादिकमंत्रोंकाअभ्यासकरणा याकानाम जपहै ॥ और यहजीव जाणिकरिकै अथवा अजाणिकरिकै जिनशुभअशुभकर्मोंकूंकरैहै ॥ तिनसर्वकर्मोंका ईश्वरविषेअर्पणकरणा याकानाम ईश्वरप्र

णिधानहै ॥ २ ॥ अब आसनकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां आसनदोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ बाह्यआसनहोवैहै ॥ और दूसरा शारीरकआसनहोवैहै ॥ तहां प्रथमकुशाविछावणे ॥ तिनकुशाऊपरि मृगचर्म विछावणा ॥ तामृगचर्मऊपरि वस्त्रविछावणा ॥ याकानाम बाह्यआसनहै ॥ और पद्मासन स्वस्तिकासन भद्रासन इसतैंआदिलैकेजेअनेकप्रकारकेआसनहैं ॥ तिनआसनोंकानाम शारीरकआसनहै ॥ तहां वामपादकूं दक्षिणजंघकेऊरुऊपरिराखणा ॥ और दक्षिणपादकूं वामजंघकेऊरुऊपरिराखणा ॥ याकानाम पद्मआसनहै ॥ और वामपादकूं दक्षिणजंघकेऊरुकेअंतरराखिकै दक्षिणपादकूं वामजंघकेऊरुकेअंतर राखणा याकानाम स्वस्तिकआसनहै॥ और दोपादकेदोतलोंकूं वृषणकेसमीप इकट्ठाकरिकै तिनोंऊपरि दोहस्त इकठ्ठेकरिकैराखणे याकानाम भद्रासनहै ॥ ३ ॥ अब प्राणायामकानिरूपणकरैहै॥ पूरक कुंभक रेचक याभेदकरिकै सोप्राणायाम तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां वामनासिकाद्वारा बाहरिलेवायुकूंखेंचिके शरीरकेभीतरिस्थितकरणा याकानाम पूरकहै॥ और तिसीवायुकूं दक्षिणनासिकाद्वारा शरीरतैंबाहरिनिकासणा याकानाम रेचकहै ॥ और पूरकरेचकभावतैंरहित तावायुकूं शरीरकेभीतरिनिरोधकरणा याकानाम कुंभकहै॥ सोप्राणायामकरणेकाप्रकार गुरुमुखतैंहीजान्याजावैहै ॥ ४ ॥ अब प्रत्याहारकानिरूपणकरैहैं ॥ रूपादिकविषयोंविषे दोषदर्शनतैं अनंतर चित्तकेअंतर्मुखहुए जोनेत्रादिकइंद्रियोंका तिनरूपादिकविषयोंतैंनिरोधहै याकानाम प्रत्याहारहै ॥ ५॥ अब धारणाकानिरूपणकरैहैं ॥ नाभिचक्र हृदय नासिकाग्र इत्यादिकस्थानोंविषे परमात्मादेवमैं आपणेमनकूंजोडना याकानाम धारणाहै ॥ ६ ॥ अब ध्यानकानिरूपणकरैहैं ॥ विजातीयवृत्तियोंकापरित्यागकरिकै तापरमात्मादेवविषे जोसजातीयवृत्तियोंकानिरंतरप्रवाहहै याकानाम ध्यानहै ॥ ७ ॥ अब समाधिकानिरूपणकरैहैं ॥ समाधिदोप्रकारकीहोवैहै ॥ एक सविकल्पसमाधिहोवैहै ॥ और दूसरी निर्विकल्पसामधिहोवैहै ॥ तहां ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय यात्रिपुटीकेभानपूर्वक जोअंतःकरणकेवृत्तिकीअद्वितीयब्रह्मविषे स्थितिहै ॥ याकानाम सविकल्पसमाधिहै ॥ और तात्रिपुटीकेभानतैंरहित जोअंतःकरणकेवृत्तिकी अद्वितीयब्रह्मविषेस्थितिहै ॥ याकानाम निर्विकल्पसमाधिहै ॥ यादोनोंसमाधियोंविषे प्रथमसविकल्पसमाधि साधनरूपहै ॥ और दूसरीनिर्विकल्पसमाधि फलरूपहै ॥

याकेविषेभी इतनीविशेषताहै ॥ अंगिरूपनिर्विकल्पसमाधिका जोअद्वितीयब्रह्मविषयहै ॥ सोइहीअद्वितीयब्रह्म धारणा ध्यान समाधि यातीनअंगोंकाभीविषयहै ॥ याकारणतें तेधारणादिकतीनों योगकेअंतरंगसाधनहैं ॥ और यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार यहपांचों निर्विकल्पसमाधिकेविषयतें भिन्नपदार्थोंकूंविषयकरै हैं ॥ याकारणतें तेयमादिकपांच तायोगकेबहिरंगसाधनहैं ॥ हेसंन्यासियो! इसप्रकार अद्वितीयब्रह्मकेसाक्षात्कारहुए याअधिकारीपुरुषकीअविद्या नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै एकवारनाशकूंप्राप्तहुईसाअविद्या पुनःकदाचित्भी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ हेसंन्यासियो! इसप्रकार यमतेंआदिलेके समाधिपर्यंत अष्टांगयोग योगशास्त्रवेत्तामुनियोंनें कथनकन्याहै ॥ यातें यहअधिकारीपुरुष पूर्वउक्तपद्मादिकआसनोंविषे किसीआसनकूंग्रहण करिकै किसपवित्रदेशविषेस्थितहोवै ॥ और उदर उर ग्रीवा इत्यादिकशरीरकेअवयवोंकूं दंडकीन्यांई सरलस्थापनकरै ॥ और इंद्रियरूपजेदुष्टअश्वहैं ॥ तिनोंकूंमनरूपरज्जुकेसाथबांधिकरिकै हृदयदेशविषेस्थितबुद्धिरूपसारथिविषे समर्पणकरै ॥ और जैसे यालोकविषे पथिकपुरुष नौकाकरिकै नदीकूंतरै हैं ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुषभी ब्रह्मज्ञानरूपदृढनौकाकरिकै याअविद्यारूपनदीके इंद्रियरूपप्रवाहोंकूंतरै ॥ हेसंन्यासियो! याब्रह्मज्ञानतेंविना तिनइंद्रियोंकातरणा अत्यंतदुर्घटहै ॥ काहेतें? मनरूपरज्जुकरिकैबद्ध हुएभी यहनेत्रादिकइंद्रिय जहांतहांचलायमानहोवैहै ॥ और यहनेत्रादिकइंद्रिय यासंसारीजीवोंकेदुःखवासतेही सर्वदाप्रवृत्तहोवैहैं॥ ऐसेदुष्टइंद्रियोंकाजोनिरोधहै ॥ याकानाम प्रत्याहारहै ॥ और हेसंन्यासियो! यहअधिकारीपुरुष गुरुकेउपदेशानुसार प्रथम याशरीरकेमुखादिकनवद्वारोंकूंनिरोधकरै ॥ तिसतेंअनंतर तिनमुखादिकद्वारोंविषेस्थितजोप्राणरूपवायुहै ॥ तावायुकूं हृदयदेशविषेनिरोधकरिकै जबपर्यंत अंतरहीवायुकालयहोवै ॥ तबपर्यंत उत्साहपूर्वकअभ्यासकरै ॥ इसप्रकार अंतरहीवायुकेलयतेंअनंतर यहअधिकारीपुरुष नासिकाद्वारा श्वासउच्छ्वासकरिकै तावायुकूं शरीरतेंबाहरिनिकासै ॥ जबपर्यंत सोवायु सूक्ष्मताकूं नहींप्राप्तहोवै ॥ तबपर्यंत यहअधिकारीपुरुष ताअभ्यासकूंकरै ॥ इसप्रकार अभ्यासकरतेहुए याअधिकारीपुरुषके जबी सोप्राणरूपवायु वशवर्तीहोवैहै ॥ तबी यहमनभी वशवर्तीहोवैहै ॥ और याअधिकारीपुरुषके जबी यहमन वशवर्तीहोवैहै ॥ तबी नेत्रा

दिकइंद्रियभी सुखेनही वशवर्तीहोवैंहैं ॥ काहेतें ? जैसे यालोकविषे सारथिपुरुष जबी दुष्टअश्वोंकेबंधनकरणेहारीरज्जूकूं आप
णेवशवर्तीकरैहै ॥ तबी सोसारथिपुरुष तिनदुष्टअश्वोंकूं सुखेनही आपणेवशवर्तीकरिलेवैंहै ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुष जबी म
नरूपरज्जुकूंआपणेवशवर्त्तीकरैहै ॥ तबी इंद्रियरूपदुष्टअश्वोंकूंभी सुखेनही आपणेवशवर्त्तीकरिलेवैंहै ॥ अब तायोगकरणेकेदेश
कानिरूपणकरैंहैं ॥ हेसंन्यासियो ! योगाभ्यासकरणेहारेपुरुषोंकूं आसनकरणेवासते याप्रकारकादेश सुखकाहेतुहोवैहै ॥ जोदे
श अत्यंतऊंचाभीनहींहोवै ॥ तथा अत्यंतनीचाभीनहींहोवै ॥ तथा गोमयादिकोंकरिकैलेपितहोवै ॥ तथा नदीतेंआदिलेकेजेज
लकेस्थानहैं ॥ तेजलकेस्थानभी जिसदेशकेअत्यंतसमीपनहींहोवै ॥ तथा जोदेश कंटकादिकोंतेंरहितहोवै ॥ तथा वालुका पा
षाणकेसूक्ष्मकंकरोंतेंरहितहोवै ॥ तथा जादेशविषे अत्यंतशीतभीनहींहोवै ॥ तथा अत्यंतउष्णताभीनहींहोवै ॥ तथा नानाप्रका
रकेपक्षीआदिकोंकेशब्दतेंरहितहोवै ॥ तथा मशकादिकजंतुवोंतेंरहितहोवै ॥ तथा अत्यंतवायुतेंरहितहोवै ॥ तथा देखणेतें ने
त्रादिकइंद्रियोंकूं तथामनकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहाराहोवै ॥ ऐसेपर्वतकीगुहाआदिकदेशविषे आसनकूंबांधिकरिकै यहअधिका
रीपुरुष योगाभ्यासकरै ॥ हेसंन्यासियो ! जादेशविषे यहअधिकारीपुरुष योगकरणेकाआरंभकरै ॥ तादेशविषे जोकदाचित्
याअधिकारीपुरुषकूं किसीविघ्नकीशंकाहोवै तौ यहअधिकारीपुरुष तादेशविषे योगाभ्यासकूंनहींकरै ॥ हेसंन्यासियो !
विघ्नकीनिवृत्तिवासते ताअधिकारीपुरुषकूं जैसेआसनकानियमकह्याहै ॥ तैसे अन्नादिकोंकेभोजनकाभीनियमकह्याहै ॥ तहां
सोयोगाभ्यासकरणेहारापुरुष आपणेउदरकेदोभाग अन्नकरिकैपूर्णकरै ॥ और एकभाग जलकरिकैपूर्णकरै ॥ हेसंन्यासियो !
इसप्रकारकेअष्टांगयोगकरिकै जोअधिकारीपुरुष आत्मसाक्षात्कारकेप्राप्तिकीइच्छाकरैहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकूं फलकेस
मीपकालविषे अणिमादिकसिद्धियां प्रगटहोवैंहैं ॥ और सोअधिकारीपुरुष जोकदाचित् तिनासिद्धियोंविषेआसक्तिकरैहै तौ
ताअधिकारीपुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवैनहीं ॥ यातें तेअणिमादिकसिद्धियां आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिविषे विघ्नरूपहैं ॥
अब तिनसिद्धियोंकानिरूपणकरैंहैं ॥ हेसंन्यासियो ! इसप्रकार योगाभ्यासकरतेहुए याअधिकारीपुरुषकूं जबी आत्मसा

क्षात्कारकेप्राप्तिकाकाल समीपहोवैहै ॥ तबी सोयोगीपुरुष आपणेमनविषे कदाचित् नीहारकेसमानरूपकूंदेखेहै ॥ और कदाचित् धूमकेसमानरूपकूंदेखेहै ॥ और कदाचित् सूर्यकेसमानरूपकूंदेखेहै ॥ और कदाचित् अग्निकेसमानरूपकूंदेखेहै ॥ और कदाचित् वायुकेसमानरूपकूंदेखेहै ॥ इहांजलकेशुक्लरूपसमान शुक्लवर्णवालानीहारहोवैहै ॥ जानीहारकूं शास्त्रविषे तुषारभीकहैहैं ॥ और धूमका कृष्णवर्णहोवैहै ॥ और सूर्यका पिंगलवर्णहोवैहै ॥ अनेकवर्णोंकेसमुदायकानाम पिंगलवर्णहै ॥ और अग्निका रक्तवर्णहोवैहै ॥ और वायुका दूर्वाकेसमान श्यामवर्णहोवैहै ॥ और कदाचित् सोयोगीपुरुष आपणेमनविषे खद्योतकेसमानरूपकूंदेखेहै ॥ और कदाचित् विद्युत्केसमानरूपकूंदेखेहै ॥ और कदाचित् स्फटिककेसमानरूपकूंदेखेहै ॥ और कदाचित् चंद्रमाकेसमानरूपकूंदेखेहै ॥ हेसंन्यासियो ! सोयोगीपुरुष जैसेनेत्रइंद्रियकरिकै दिव्यरूपोंकूंदेखेहै ॥ तैसे सोयोगीपुरुष श्रोत्रइंद्रियकरिकै नानाप्रकारकेदिव्यशब्दोंकूं श्रवणकरैहै ॥ और रसनइंद्रियकरिकै नानाप्रकारकेदिव्यरसोंकूंग्रहणकरैहै ॥ और घ्राणइंद्रियकरिकै नानाप्रकारकेदिव्यगंधोंकूंग्रहण करैहै ॥ और त्वक्इंद्रियकरिकै नानाप्रकारकेदिव्यस्पर्शोंकूंग्रहणकरैहै ॥ इतनेंकरिकै आंतरसिद्धियोंकानिरूपणकऱ्या ॥ अब बाह्य सिद्धियोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो ! जैसे समाधिकालविषे तायोगीपुरुषकूं दिव्यरूपादिकोंकादर्शनरूप आंतरसिद्धियां प्राप्त होवैहैं ॥ तैसे समाधितैंउत्थानकालविषे तायोगीपुरुषकूं याप्रकारकीबाह्यसिद्धियां प्राप्तहोवैहैं ॥ जैसे अग्निकेसंबंधकरिकै सुवर्णके संपूर्णमलादिकविकार निवृत्तहोवैहैं ॥ तैसे योगरूपअग्निकेप्राप्तहुए तायोगीपुरुषके पांचभौतिकस्थूलशरीरके संपूर्णरोग तथा जरा मृत्यु नाशहोवैहैं ॥ और तायोगकेप्रभावतैं तायोगीपुरुषकेशरीरविषे इतनेंगुण उत्पन्नहोवैहैं ॥ हस्तपादादिकअंगोंकीजडताकाअ भावरूप जोलघुपणाहै सोलघुपणा तायोगीकेशरीरविषेप्राप्तहोवैहै ॥ और तायोगीकेशरीरविषे अरोगताहोवैहै ॥ और पृथिवीस्व र्गादिकलोकोंकेविषयोंविषे तायोगीकीइच्छानहींहोवैहै ॥ और सुवर्णकेसमान तायोगीकेशरीरकावर्णहोवैहै ॥ और तायोगीकेदर्श नतैं सर्वलोकोंकेमनकूं तथानेत्रोंकूं आनंदकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और तायोगीकास्वरभी मधुरहोवैहै ॥ और चंपकादिकपुष्पोंकेगंधसमान तायोगीकेशरीरकागंधहोवैहै ॥ और तायोगीकेशरीरविषे अन्नजलादिकोंका अत्यंतपाचनहोवैहै ॥ यातैं बहुतअन्नजलकेभक्षणक

रिकैभी तायोगीपुरुषके विष्ठामूत्रादिकमल अल्पहोवैहैं ॥ हेसंन्यासियो! इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकेफल तायोगीपुरुषकूंआत्म
साक्षात्कारतैंप्रथमहोवैहैं ॥ और तिसकालविषे तायोगीपुरुषकूं आणिमादिकअष्टसिद्धियोंकीभीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिनसिद्धियोंविषे
सोयोगीपुरुष जोकदाचित् आसक्तिकरैहै ॥ तौ तायोगीपुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवैनहीं ॥ किंतु सोयोगीपुरुष योगभ्रष्टकह्या
जावैहै ॥ और जबी सोयोगीपुरुष तिनसिद्धियोंकापरित्यागकरैहै ॥ तबी तायोगीपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ताआ
त्मसाक्षात्कारकरिकै सोयोगीपुरुष कृतार्थहोवैहै ॥ और हेसंन्यासियो ! जैसे पूजनकरणेवासते रजतादिकधातुवोंकरिकैरच्याहुआ
जोसूर्यका अथवा चंद्रमाका मंडलहै ॥ सोमंडल जबी मृत्तिकाकरिकैलिप्तहोवैहै ॥ तबी तामृत्तिकारूपआवरणकीनिवृत्तितैंविना तामं
डलकादर्शन होइसकैनहीं ॥ किंतु तामृत्तिकारूपआवरणकीनिवृत्तितैंअनंतरही तामंडलकादर्शनहोवैहै ॥ तैसे तायोगीपुरुषकूं जब
पर्यंत तिनसिद्धियोंविषेरागहोवैहै ॥ तबपर्यंत सोयोगीपुरुष आत्माकूंदेखिसकैनहीं ॥ और जबी सोयोगीपुरुष तिनसिद्धियोंकापरि
त्यागकरैहै ॥ तबी सोयोगीपुरुष अद्वितीयआत्माका साक्षात्कारकरैहै ॥ तथा सर्वशोकोंतैंरहितहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ! तेयोगशा
स्त्रवालेपुरुष जैसे केवलत्वंपदार्थरूपआत्माकेज्ञानतैंही मोक्षकीप्राप्तिमानैंहै ॥ तैसे तुमोंनैं केवल त्वंपदार्थरूपआत्माकेज्ञानतैं मोक्ष
कीप्राप्तिनहींमानणी ॥ किंतु यहमहान्भाग्यवालेअधिकारीपुरुष जबी प्रथम तायोगकेप्रभावतैं सर्वभेदतैंरहितस्वयंज्योतिरूप
तत्पदार्थब्रह्मकेस्वरूपकूंजानैंहैं ॥ तिसतैंअनंतर कार्यकारणभावतैंरहित तथा जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहित त्वंपदार्थरूपआत्मा
केस्वरूपकूंजानैंहै ॥ तिसतैंअनंतर सोअद्वितीयब्रह्ममैंहूं याप्रकार तिनदोनोंकेअभेदकूंनिश्चयकरैहैं ॥ तबीही यहअधिकारीपुरुष
अविद्यादिकसर्वपाशोंतैंमुक्तहोवैहैं ॥ केवलत्वंपदार्थकेज्ञानतैं अविद्यादिकपाशोंकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ और हेसंन्यासियो! तेयोगीपु
रुष जिसस्वयंज्योतिआत्माकासाक्षात्कारकरैहैं ॥ सोस्वयंज्योतिआत्मा कैसाहै ? पूर्वादिकदशदिशारूपहै ॥ तथा सोपरमात्मादेवही
पूर्व हिरण्यगर्भरूपकरिकैउत्पन्नहोवैहै ॥ तथा सोपरमात्मादेवही ब्रह्मांडरूपकरिकै जलादिकोंविषे स्थितहोवैहै ॥ तथा सोपर
मात्मादेवही स्त्रियोंकेगर्भविषेस्थितहोवैहै ॥ तथा सोपरमात्मादेवही बुद्धिआदिकसंघातकेअंतरवर्तमानहै ॥ तथा शरीरइंद्रिया

दिकसंघातकाभोक्तारूपहै ॥ तथा सोपरमात्मादेवही अग्निजलादिकमहाभूतोंविषेस्थितहै ॥ और जेपदार्थ पूर्वउत्पन्नभयेहैं ॥ तथा जेपदार्थ आगेउत्पन्नहोवैंगे ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंविषेभी सोपरमात्मादेवहीव्यापकहै ॥ और सोपरमात्मादेव संपूर्णविश्वकूंउत्पन्नकरिकै ताविश्वविषे आपहीप्रवेशकरताभयाहै ॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेव सर्वजीवोंकेहृदयविषे साक्षीरूपकरिकैविराजमानहै ॥ और सोपरमात्मादेव स्थावरजंगमसर्वपदार्थोंविषेस्थितहै ॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेव सर्वभूतरूपहै ॥ ऐसेसर्वरूपशुद्धपरमात्मादेवकेप्रति हमारा वारंवार नमस्कारहै ॥ हेसंन्यासियो ! आत्मसाक्षात्कारकासाधनरूप जोअष्टांगयोगहै ॥ सोयोग हमनैं तुमारेप्रति संक्षेपतैंकथनकऱ्याहै ॥ अब तायोगकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य जोअद्वितीयआत्माहै ताअद्वितीयआत्माकासाक्षात्कार जिसविद्याकरिकै प्राप्तहोवैहै ताविद्याकूं तुम श्रवणकरो ॥ हेसंन्यासियो ! जोहमनैं पूर्व तुमारेप्रति परमात्मादेव कथनकऱ्याथा ॥ और जोहमनैं अबी तुमारेप्रति परमात्मादेव कथनकऱ्याहै ॥ सोपरमात्मादेव तुमोंनैं एकहीजाणना ॥ तथा यासंसाररूपजालका सोपरमात्मादेवही स्वामीहै ॥ और सोपरमात्मादेवही आपणेवशवर्तीमायाकी अनेकशक्तियोंकरिकै यासंपूर्णलोकोंकूं आपणेवशवर्तीकरैहै ॥ और सोपरमात्मादेवही याजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकरणेविषेसमर्थहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं साक्षात्कारकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही मोक्षरूपअमृतकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेसंन्यासियो ! ऐसेपरमात्माकेसाक्षात्कारहुए याअधिकारीपुरुषोंकूंपुनःजन्मकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ और यालोकविषे जिसपदार्थकाजन्महोवैहै ॥ तिसपदार्थकानाशहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थोंकाजन्महोवैहै ॥ यातैं कालपाइकै तिनघटादिकोंकानाशभीअवश्यहोवैहै ॥ और यहविद्वान्पुरुषतौ आत्मसाक्षात्कारकरिकै जन्मतैंरहितहोवैहै ॥ यातैं सोविद्वान्पुरुष पुनःमरणकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और हेसंन्यासियो ! यहपरमात्मादेव जैसे आपणीमायाशक्तिकरिकै याजगत्कीउत्पत्तिस्थितिकरैहै ॥ तैसे प्रलयकालकेप्राप्तहुए यहपरमात्मादेव याजगत्कूंनाशकरिकै सर्वजीवोंकेताईं दुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं रुद्र यानामकरिकै कथनकरैहै ॥ और हेसंन्यासियो ! जैसे ऊर्णनाभिजंतु आपणेशरीरतैं तंतुवोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तथा तिन तंतुवोंकापालनकरैहै ॥ तथा अंत्यविषे तिनतंतुवोंकूं आपणेविषेलय

करैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी सृष्टिकालविषे याजगत्कूं आपणेतैंउत्पन्नकरैहै ॥ और स्थितिकालविषे याजगत्कापालनकरैहै ॥ और प्रलयकालविषे यासंपूर्णजगत्कूं आपणेविषेलयकरैहै ॥ इसप्रकार सर्वजगत्कूंआपणेविषेलयकरिकै सोपरमात्मादेव एकअद्वितीयरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ और हेसंन्यासियो! यालोकविषे जितनेकीस्थावरजंगमशरीरहैं ॥ तथा तिनशरीरोंविषेस्थितजितनेकीनेत्रादिकज्ञानइंद्रियहैं ॥ तथा वाकादिककर्मइंद्रियहैं ॥ तेसंपूर्णशरीरइंद्रियादिक याअंतर्यामीपरमात्मादेवकेहीहैं ॥ और सोपरमात्मादेवही आपणीमायाशक्तिकरिकै प्रथम आकाशादिकपंचभूतोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तिसतैंअनंतर याशरीरादिकभौतिकपदार्थोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ हेसंन्यासियो! जैसे पक्षोंकरिकैयुक्त तथादोभुजावोंकरिकै जोप्रसिद्धपक्षीहै ॥ सोपक्षी आपणेगृहकूंरचैहै ॥ तैसे आकाशादिकपंचभूतरूपपक्षोंकरिकैयुक्त तथा पुण्यपापरूपदोभुजावोंकरिकैयुक्त जोयहपरमात्मादेवहै॥ सोपरमात्मादेव यासंपूर्णभौतिकपंचककूं उत्पन्नकरैहै ॥ तथा स्वर्गादिकऊपरिकेलोकोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तथा भूमिआदिकनीचेकेलोकोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ याकेविषे इतनीविशेषताहै ॥ यहलोकप्रसिद्धपक्षीतौ आपणेतैंभिन्नगृहकूंउत्पन्नकरैहै ॥ और सोपरमात्मादेवतौ आपणेकूंहीजगत्रूपकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सोपक्षी आपणेगृहका केवलनिमित्तकारणहै उपादानकारणनहीं ॥ और यहपरमात्मादेवतौ याजगत्का उपादानकारण तथा निमित्तकारण दोनोंहै ॥ यातैं केवलनिमित्तकारणताकूंलैकै पक्षीकादृष्टांतदियाहै ॥ और निमित्तकारणता तथा उपादानकारणता यादोनोंकारणताविषेतौ पूर्वउक्तऊर्णनाभिकादृष्टांतहीसमीचीनहै ॥ और हेसंन्यासियो! जोरुद्रभगवान् यासंपूर्णविश्वतैं अधिकहै ॥ तथा संपूर्णवेदोंकेस्मरणकरणेहारा महान्ऋषिरूपहै ॥ तथा सर्वज्ञानोंकरिकैसंपन्नहै ॥ तथाअग्निआदिकदेवतावोंके तथा वाकादिकइंद्रियोंके उत्पत्तिस्थितिलयकूंकरणेहाराहै तथा जोरुद्रभगवान् पूर्व हिरण्यगर्भकूंउत्पन्नकरताभयाहै ॥ तथा स्थावरजंगमरूपसर्वशरीरोंकूं उत्पन्नकरताभयाहै ॥ सोरुद्रभगवान्ही हमअधिकारीजीवोंकूं शुभबुद्धिकीप्राप्तिकरैहै ॥ याकारणतैं मैंश्वेताश्वतरऋषि पूर्व तारुद्रभगवान्केप्रति याप्रकारकीप्रार्थनाकरताभया ॥ हेरुद्रभगवन्! तुमारीदोमूर्तिहैं ॥ एकतौ सात्विकीमूर्तिहै ॥ और दूसरी तामसीमूर्तिहै ॥ तिनदोनोंविषे ब्रह्मविद्याकीप्रवृत्तिकरणेहारी जातुमारीसात्विकीगुरुमूर्तिहै ॥ तागुरुमूर्तिकरि

के हमविचारहीनअज्ञानीजीवोंकूं प्रकाशकरो ॥ हेभगवन्! जैसे यालोकविषे नेत्रोंतैंहीनअंधपुरुषोंकूं बुद्धिमान्वैद्य नेत्रोंकीप्राप्तिक रिकै प्रकाशकरावैहै ॥ तैसे मोहरूपीरोगकरिकै अंधहुएहैंबुद्धिरूपनेत्रजिनोंके ऐसेजेहमअधिकारीजनहैं ॥ तिनहमारेकूं आपणेगुरुमू र्त्तिकादर्शनकराइकै प्रकाशकरो ॥ और हेरुद्रभगवन्! पापीजीवोंकूंसंसाररूपगरतविषेपावणेवासते जोतुम दूसरी नारीरूपतामसी मूर्त्तिकूंधारणकरोहो ॥ साआपणीतामसीमूर्त्ति हमअधिकारीजनोंकेप्रति सुखकाहेतुकरो ॥ कैसी हैसाआपकीतामसीमूर्त्ति? कामक्रोधा दिकरूपलोहमयहै ॥ तथा धनुषबाणकीन्यांई वैरीआदिकोंकूंनिवारणकरणेहारी है ॥ तथा अत्यंतभयानकरूपवाली है ॥ हेभगवन्! ऐ सीनारीरूपतामसीमूर्त्तिकरिकै याजगत्रूपपुरुषकूं प्रमादरूपमृत्युकीप्राप्तिमतकरो ॥ तथा याआपणीतामसीमूर्त्तिकरिकै हमअधिका रीजीवोंके वास्तवस्वरूपकूंआच्छादनमतकरो ॥ हेसंन्यासियो! इसप्रकार जबी हमनैं तारुद्रदेवकीप्रार्थनाकरी ॥ तबी हमारा अंतःकर ण कामक्रोधादिकविकारोंतैंरहित शुद्धहोताभया ॥ ताचित्तशुद्धितैंअनंतर मैंश्वेताश्वतरनामाऋषि तारुद्रभगवान्के गुरुरूपसात्विकी मूर्त्तिकूंदेखताभया ॥ तामूर्त्तिकेदर्शनतैं मैं कृतकृत्यहोताभया ॥ हेसंन्यासियो! जैसे यालोकविषे पुत्ररहितधनवान्पुरुष पुत्रकूंप्राप्तिहो इकै आपणेकूंकृतकृत्यमानै है ॥ और जैसे सर्वदा स्त्रीकाचिंतनकरताहुआकामीपुरुष ताप्रियस्त्रीकूंप्राप्तहोइकै आपणेकूंकृतकृत्यमानै है ॥ और जैसे अत्यंतकृपणलोभीपुरुष पूर्वनष्टहुएधनकूंप्राप्तहोइकै आपणेकूंकृतकृत्यमानै है ॥ तैसे तारुद्रभगवान्केगुरुरूपसात्विकी मूर्त्तिकूंप्राप्तहोइकै मैंश्वेताश्वतर आपणेकूंकृतकृत्यमानताभया ॥ हेसंन्यासियो! तारुद्रभगवान्केगुरुरूपमूर्त्तिनैं जोहमारेऊपरिउपका रकर्‍याहै ॥ ताउपकारकेनिवृत्तिकरणेवासते मैंश्वेताश्वतर इसलोकविषे तथा स्वर्गादिकलोकोंविषे तथा अनेकजन्मोंकरिकै कोईप्रति उपकारकूंदेखतानहीं ॥ हेसंन्यासियो! जैसे मैंश्वेताश्वतरऋषि तारुद्रभगवान्केगुरुमूर्त्तिकूंदेखिकै कृतकृत्यभावकूंप्राप्तभयाहूं ॥ तैसे तुमभी जबी पूर्वउक्तस्तुतिकूंकरिकै तारुद्रभगवान्केगुरुमूर्त्तिकूंदेखोगे ॥ तबी तुमभी कृतकृत्यभावकूंप्राप्तहोवोगे ॥ हेसंन्यासियो! सारुद्रभगवान्कीगुरुमूर्त्ति हमारेप्रति याप्रकारकाउपदेशकरतीभई है ॥ हेपुत्र! कारणअज्ञानसहित जोयहसंसारचक्रहै ॥ तासंसा रचक्रतैंपरेजोअद्वितीयब्रह्महै ॥ सोअद्वितीयब्रह्महीं तुमारावास्तवस्वरूपहै ॥ कर्त्ताभोक्तारूपसंसारी तुमारावास्तवस्वरूपनहीं है ॥

हेसंन्यासियो! याप्रकार जबी नानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिकै तारुद्ररूपगुरुमूर्त्तिनैं हमारेप्रति आत्माकाउपदेशकऱ्या ॥ तबी ताउपदेशकरिकै मैंश्वेताश्वतर अनेकसंशयविपर्ययतैंरहितहोताभया ॥ और यासंसारजालतैंपरेस्थित जोअद्वितीयब्रह्महै ॥ ताअद्वितीयब्रह्मकूं मैं आपणाआत्मरूपजाणताभया ॥ कैसाहैसोअद्वितीयब्रह्म? सर्वतैंअधिकहै ॥ और तापरमात्मादेवतैंअधिककोईभीपदार्थनहींहै ॥ और कारणअज्ञानसहित आकाशादिकपंचभूत जिसपरमात्मादेवकाशरीररूपहैं ॥ और वास्तवतैं शरीरतैंरहितहै ॥ और जैसे आकाश जिसजिसघटमठादिकउपाधियोंविषेस्थितहोवैहै ॥ तिसतिसउपाधिकेसमानआकारवालाहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे जिसजिसजीवका जैसाजैसाशरीरहोवैहै ॥ तिसतिसशरीरविषे सोपरमात्मादेव तिसतिसरूपकरिकै स्थितहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ समःप्लुषिणासमोमशकेन ॥ अर्थयह ॥ प्लुषिमशकादिकअल्पशरीरोंविषे तथा हस्तीआदिकमहान्‌शरीरोंविषे स्थितहोइकै यहपरमात्मादेव तिनोंशरीरोंकेसमानआकारवालाहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ १ ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सोपरमात्मादेव जो सर्वशरीरोंविषेस्थितहै तौ सर्वजीवोंकूं किसवासतेनहींप्रतीतहोता? समाधान ॥ हेसंन्यासियो! जैसे सर्वकाष्ठोंकेअंतर अग्नि गुह्यहोइकैरहैहै ॥ याकारणतैं सोअग्नि तिनकाष्ठोंकेमथनरूपउपायतैंविना प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे सोपरमात्मादेवभी सर्वभूतप्राणियोंविषे गुह्यहोइकैरह्याहै ॥ याकारणतैं आत्मज्ञानरूपउपायतैंविना सोपरमात्मादेव प्रतीतहोवैनहीं ॥ और हेसंन्यासियो! जैसे ऊर्णनाभिजंतु तंतुवोंकूं चारोओरतैंवेष्टनकरिकै तिनतंतुवोंविषेस्थितहोवैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी यास्थावरजंगमरूप जगत्‌कूं सर्वओरतैंव्याप्तकरिकै ताजगत्‌विषेस्थितहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो! यालोकविषे जेअधिकारीपुरुष तारुद्रभगवान्‌केगुरुरूपमूर्त्तिकूंप्राप्तहोइकै तापरमात्मादेवकूं साक्षात्कारकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहोवैहैं ॥ ऐसे मायारूपतमतैंपरेस्थित स्वयंज्योतिव्यापकआत्माकूं मैंश्वेताश्वतरनामाऋषि तारुद्रभगवान्‌केप्रसादतैं जानताहूं ॥ हेसंन्यासियो! जैसे मैंश्वेताश्वतरनामाऋषि गुरुकेउपदेशतैं ताअद्वितीयपरमात्माकूंनिश्चयकरिकै यासंसाररूपमृत्युतैंरहितहुआहूं ॥ तैसे दूसरेभीअधिकारीजन गुरुकेउपदेशतैं तापरमात्मादेवकूंनिश्चयकरिकै यासंसाररूपमृत्युतैंरहितहोवैहैं ॥ हेसंन्यासियो! अज्ञानकीनिवृत्ति

पूर्वक जोब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षहै ॥ तामोक्षकेप्राप्तिवासते आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईमार्गनहीं है ॥ किंतु मैंअद्वितीयब्रह्म
रूपहूं याप्रकारकाअभेदज्ञानही तामोक्षकेप्राप्तिकामार्ग है ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं श्रवणमननादिकसाधनोंकरिकै ताआत्म
ज्ञानकूंअवश्यसंपादनकरणा ॥ तहांश्रुति ॥ तमेवविदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यःपंथाविद्यतेऽयनाय ॥ अर्थयह ॥ ताअद्विती
यब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपजानिकै यहविद्वान्पुरुष संसाररूपमृत्युतैं पारिहोवै है ॥ और मोक्षकीप्राप्तिवासते आत्मज्ञानतैंविना
दूसराकोईमार्गनहीं है ॥ हेसंन्यासियो ! यहपरमात्मादेव सर्वजगत्काआत्मरूपहै ॥ याकारणतैं तापरमात्मादेवतैं कोईपदार्थ
अधिकनहीं है ॥ तथा कोईपदार्थ सूक्ष्मनहीं है ॥ और जैसे यालोकविषे अनेकशाखापर्णोंकरिकैयुक्त जोकोईकमहान्वटका
वृक्षहै ॥ सोवृक्ष बहुतअवकाशकूंव्याप्तकरिकै स्थितहोवै है ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी संपूर्णजगत्कूंव्याप्तकरिकै आपणेस्वप्र
काशस्वरूपविषेस्थितहोवै है ॥ और हेसंन्यासियो ! यद्यपि यहनिर्गुणपरमात्मादेवही समष्टिस्थूलशरीररूपउपाधिकेसंबंधतैं वि
राट्रूपहोवै है ॥ तथा समष्टिसूक्ष्मशरीररूपउपाधिकेसंबंधतैं हिरण्यगर्भरूपहोवै है ॥ तथा समष्टिकारणअज्ञानरूपउपाधिकेसंबं
धतैं ईश्वररूपहोवै है ॥ तथापि सोपरमात्मादेवका विराट्रूप तथा हिरण्यगर्भरूप तथा ईश्वररूप केवलउपासनाकाउपयोगी है ॥
परंतु सोउपाधियुक्तरूप मुमुक्षुजनोंकेजानणेयोग्यनहीं है ॥ किंतु तिनस्थूलसूक्ष्मकारणतैंपरेस्थित जोआत्माकानिर्गुणस्वरूपहै ॥
सोनिर्गुणस्वरूप मुमुक्षुजनोंकेजानणेयोग्यहै ॥ काहेतैं ? विराट्विषे तथा हिरण्यगर्भविषे तथा ईश्वरविषे नाम रूपक्रिया यह
तीनोंप्रकारकाजगत् विद्यमानहै ॥ और जोजोपदार्थ नामरूपक्रियाकरिकैयुक्तहोवै है ॥ सोसोपदार्थ मिथ्याहीहोवै है ॥ और जोजो
पदार्थमिथ्याहोवै है ॥ सोसोपदार्थ रज्जुसर्पकीन्यांई नाशवान्होवै है ॥ और तापरमात्मादेवकेविराटादिकस्वरूपभी मिथ्याहोणेतैं
नाशवान्हैं ॥ याकारणतैं तेविराटादिकस्वरूप मुमुक्षुजनोंकेजानणेयोग्यनहीं हैं ॥ किंतु ताविराटादिकतीनोंतैंपरेस्थित जोशुद्ध
निर्गुणआत्माहै ॥ सोइही मुमुक्षुजनोंकेजानणेयोग्यहै ॥ ऐसे निर्गुणशुद्धपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मरूपक
रिकैजानैं हैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही मोक्षरूपअमृतभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और जेपुरुष ऐसेनिर्गुणपरमात्माकूं आपणाआत्मरूपक

रिकै नहींजानैं हैं ॥ तेपुरुष यासंसारविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तहांश्रुति ॥ यएतद्विदुरमृतास्तेभवंत्यथेतरेदुःखमेवापियंति ॥ अर्थयह ॥ मैंअद्वितीयब्रह्मरूपहूं याप्रकार जेअधिकारीपुरुष आत्माकूंजानैं हैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही मोक्षरूपअमृतभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जेपुरुष ताअद्वितीयआत्माकूंनहींजानैं हैं ॥ तेअज्ञानीपुरुष यासंसारविषे केवलदुःखकूंहीप्राप्तहोवैहैं ॥ १ ॥ अब तापरमात्मादेवकी सर्वत्रव्यापकतानिरूपणकरैं हैं ॥ हेसंन्यासियो ! यालोकविषे जितनेकीजीवोंके मुख मस्तक ग्रीवा हस्त पादादिकअवयवहैं ॥ तेसंपूर्णअवयव तापरमात्मादेवकेही हैं ॥ और सोपरमात्मादेव सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थितहै ॥ तथा सर्व जीवोंकाआत्मरूपहै ॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेव सर्वगतहै ॥ और ताआनंदस्वरूपआत्मादेवविषे शोकादिकोंकाकारणरूपअविद्याहैनहीं ॥ यातैं तापरमात्मादेवविषे शोकादिकविकारभीसंभवैनहीं ॥ याकारणतैंही श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं शिव यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ हेसंन्यासियो ! सोआनंदस्वरूपआत्मादेव आकाशादिकमहान्पदार्थोंतैंभी अतिशयकरिकैमहान्है ॥ और सोपरमात्मादेव याजीवोंकेशरीररूपपुरविषे सर्वदाविराजमानहै ॥ कैसे हैंतेशरीररूपपुर ? दोचक्षु दोनासिका दोश्रोत्र मुख पायु उपस्थ नाभि मूर्द्धद्वार याएकादशद्वारोंकरिकैयुक्तहै॥ और सोपरमात्मादेव याजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थितहोइकै तिनजीवोंकेबुद्धिकूं शुभअशुभकर्मोंविषेप्रवृत्तकरैहै ॥ तथा सोपरमात्मादेव आपणेस्वरूपभूतआनंदकूं आपणेस्वप्रकाशरूपकरिकैहीजानैंहै ॥ और भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषेस्थित जितनेकीस्थूलसूक्ष्मपदार्थहैं॥ तिनपदार्थोंका यहपरमात्मादेवही स्वामीहै ॥ और सोपरमात्मादेव सूर्यादिकज्योतियोंकाभीज्योतिरूपहै ॥ तथा सोपरमात्मादेव नाशतैंरहित साक्षीक्षेत्रज्ञरूपहै ॥ और हेसंन्यासियो ! यहस्वयंज्योतिपरमात्मादेव यद्यपि वास्तवतैंआकाशकीन्यांई सर्वत्रपरिपूर्णहै ॥ तथापि जीवोंकेअंगुष्ठमात्रपरिमाणहृदयछिद्रविषेस्थितहुआ सोपरमात्मादेव अंगुष्ठमात्रपरिमाणवाला कह्याजावैहै ॥ और यहपरमात्मादेव यद्यपि स्थावरजंगमरूपसर्वजगत्विषे समानव्यापकहै ॥ तथापि हृदयदेशविषे बुद्धिआदिकसंघातकासाक्षिरूपकरिकै यापरमात्मादेवकी विशेषकरिकैप्रतीतिहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं हृदयदेशविषेस्थितकहैहै ॥ हेसंन्यासियो ! बुद्धिकेसर्ववृत्तियोंकूंप्रवृत्त

करणेहारा तथा श्रवणमननादिकसाधनोंकरिकैयुक्त ऐसाजोअंतर्मुखशुद्धमनहै ॥ ताशुद्धमनकरिकैही सोपरमात्मादेव जान्याजावैहै ॥ यातें जेअधिकारीपुरुष ताशुद्धमनकरिकै ताअंतर्यामीआत्माकूंसाक्षात्कारकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही मोक्षरूपअमृतभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और हेसंन्यासियो ! यहपरमात्मादेव सर्वभूतप्राणियोंकाआत्मरूपहै ॥ याकारणतें यहपरमात्मादेव सहस्रमस्तकवालाहै ॥ तथा सहस्रनेत्रोंवालाहै ॥ तथा सहस्रपादोंवालाहै ॥ हेसंन्यासियो! जैसेदशअंगुलपरिमाणवालाजोकाष्ठहै ॥ ताकाष्ठकूंव्याप्तकरिकै अग्नि ताकाष्ठतैंबाह्यअधिकदेशविषेभीरहैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी विराट् हिरण्यगर्भ अव्याकृत यातीनोंकूंव्याप्तकरिकै तिनोंतेंअधिकदेशविषेभीरहैहै ॥ सोअधिकदेश तापरमात्माकामहिमारूपहै ॥ यातें आकाशकीन्यांई यहआनंदस्वरूपआत्मा ब्रह्मांडकेअंतर्बाह्य सर्वत्रव्याप्तकरिकैस्थितहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ! भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषेस्थितजितनाकीजगत्‌है ॥ सोसंपूर्णजगत् तापरमात्मादेवकरिकैव्याप्तहै ॥ याकारणतें सोपरमात्मादेवही याअधिकारीपुरुषोंकूं मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिकरैहै ॥ तथा कर्मउपासनाकरणेहारेपुरुषोंकूं धर्म अर्थ काम यातीनप्रकारकेपुरुषार्थकीप्राप्तिकरैहै ॥ और यहपरमात्मादेवही यापृथिवीविषे अन्नरूपकरिकै प्रगटहोवैहै ॥ जिसअन्नकेभक्षणतें यहमनुष्यादिकजंगमशरीर उत्पन्नहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो! यहअंतर्यामीपुरुष सर्वजगत्‌काआत्मरूपहै ॥ याकारणतें यहअंतर्यामीआत्मा अद्वितीयब्रह्मरूपहै ॥ कैसाहैसोब्रह्म ? यालोकविषे जितनेकीजीवोंके हस्त पाद नेत्र मुख श्रोत्र इत्यादिकअंगहैं ॥ तेसंपूर्णअंग ताब्रह्मकेहीहैं ॥ तथा सोब्रह्म सर्वजगत्‌कूंव्याप्तकरिकैरहैहै ॥ और वास्तवतें नेत्रादिसर्वइंद्रियोंतेंरहितहुआभी सोपरमात्मादेव तिननेत्रादिकइंद्रियोंकेरूपादिकसर्वविषयोंकूंप्रकाशकरैहै ॥ और सोपरमात्मादेवही यासर्वजगत्‌कास्वामीहै ॥ तथा सोपरमात्मादेवही यासंपूर्णजगत्‌कूं आपणीआज्ञाविषेचलावैहै ॥ तथा सोपरमात्मादेवही यासर्वजगत्‌कारक्षणकरणेहाराहै ॥ तथा यासर्वजगत्‌ऊपरि उपकारकरणेहाराहै ॥ हेसंन्यासियो ! जैसे महाराजा आपणेपुरविषेप्रवेशकरिकैस्थितहोवैहै ॥ तैसे सोपरमात्मादेवही जीवरूपतें याशरीररूपपुरविषेप्रवेशकरिकैस्थितहोवैहै ॥ और यहशरीर मुखादिकनवद्वारोंवालाहै ॥ याकारणतें विवेकीपुरुष याशरीरकूं नवद्वारवालापुरकहैहैं ॥ और अ

न्नपानादिकोंकापरिणामरूपजेरसादिकधातुहैं ॥ तिनधातुवोंकरिकै यहशरीर नित्यहीपूर्णहोवैहै ॥ याकारणतें विवेकीपुरुष याश रीरकूं पुर यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ ऐसेशरीररूपपुरविषेस्थितहोइकै यहजीवात्मा आपणेकूंअद्वितीयब्रह्मरूपजाणिकै जबी का र्यसहितअज्ञानकूंनाशकरै ॥ तबी यहजीवात्मा हंससंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसाजीवरूपहंस याशरीररूपपुरविषेस्थितहोइकैविषयों कीप्राप्तिवासते बाहरिजाइकै नानाप्रकारकीचेष्टाकरैहै ॥ हेसंन्यासियो! जैसे यालोकविषे जोविषयासक्तकामीपुरुष स्त्रियोंकेवश वर्तीहोवैहै ॥ ताकामीपुरुषकूं लोक वशी यानामकरिकै कथनकरैहैं ॥ तैसे वास्तवतें स्वतंत्रहुआभीयहपरमात्मादेव जबी अवि द्यारूपउपाधिकेसंबंधतें यासंसारचक्रकूंप्राप्तहोइकै सर्वलोकोंकेवशवर्तीहोवैहै ॥ तबी यहपरमात्मादेव वशी यानामकूंप्राप्तहोवै है ॥ अथवा यालोकविषे जीवोंकेवशकरणेकेसाधन जेमंत्रऔषधआदिकपदार्थहैं ॥ तेमंत्रऔषधादिक जिसपुरुषकेहस्तविषेहोवै हैं ॥ तापुरुषकूं लोक वशी यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ तैसे यास्थावरजंगमरूपजगत्के वशकरणेकासाधन जाचैतन्यरूपता है ॥ साचैतन्यरूपता यापरमात्मादेवविषे सर्वदाविद्यमानहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं वशी यानामकरिकैकथ नकरैहै ॥ और हेसंन्यासियो! यहपरमात्मादेव पाणिइंद्रियतैंरहितहुआभी सर्वपदार्थोंकाग्रहणकरैहै ॥ और यहपरमात्मादेव पादइंद्रियतैंरहितहुआभी मनतैंअधिकवेगवालाहोवैहै ॥ और यहपरमात्मादेव नेत्रइंद्रियतैंरहितहुआभी सर्वरूपोंकूंदेखैहै ॥ और यहपरत्मादेव श्रोत्रइंद्रियतैंरहितहुआभी सर्वशब्दोंकूंश्रवणकरैहै ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! यहपरमात्मादेव सर्वजगत्काउपा दानकारणहै ॥ यातैं तापरमात्मादेवविषे सर्वजगत्कासंबंधहोवैहै ॥ ऐसे परमात्मादेवविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकाअभावकहणासंभवै नहीं ॥ **समाधान** ॥ हेसंन्यासियो! नेत्रादिकइंद्रिय तथा तिनइंद्रियोंकेगोलक यहसंपूर्ण सूक्ष्मस्थूलशरीरविषेरहेहैं ॥ आत्माविषे कोईरहैनहीं ॥ यातैं जिसआत्माका तास्थूलसूक्ष्मशरीरकेसाथ तादात्म्यअध्यासहै ॥ तिसीआत्माका तिनइंद्रियोंकेसाथसंबंधहै ॥ और ब्रह्मविद्याकरिकै जिसआत्माका तिनशरीरादिकोंकेसाथ तादात्म्यअध्यास निवृत्तभयाहै ॥ तामुक्तआत्माविषे तिनइंद्रियों कासंबंधहैनहीं ॥ याकारणतैंही श्रुतिविषे तापरमात्मादेवकूं सर्वइंद्रियोंतें रहितकह्याहै ॥ और मायाशक्तिकेसंबंधतें तिसपरमा

त्मादेवतैं सर्वइंद्रियोंकेव्यापारसिद्धहोवैहैं ॥ याकारणतैं तापरमात्मादेवकूं सर्वइंद्रियोंकेव्यापारकाकर्त्तारूपकह्याहै ॥ हेसंन्यासि
यो! यहपरमात्मादेवही सर्वइंद्रियोंकेव्यापारोंकूंकरैहै याअर्थविषे तुम आश्चर्यमतकरो ॥ किंतु जैसे एकहीमृत्तिकाघटशरावादि
कअनेकरूपकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहजीव नेत्रादिकबाह्यकरणोंकरिकै तथा मनबुद्धिआदिकआंतरकरणोंकरिकै जिनजिनपदार्थों
कूंग्रहणकरैहै ॥ तिनतिनसंपूर्णपदार्थरूप यहपरमात्मादेवहीहोवैहै ॥ याकारणतैं यहपरमात्मादेव देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित
सर्वत्रव्यापकहै ॥ ऐसेस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माकूं यालोकविषे कोईजडचेतनपदार्थ विषयकरिसकतानहीं ॥ याकारणतैं ब्रह्म
वेत्ताविद्वान्पुरुष याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वभी ताअद्वितीयआत्माकीस्थिति कथनकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो! यहपरमात्मादेव अणु
पदार्थोंतैंभी अत्यंतअणुहै ॥ तथा आकाशादिकमहान्पदार्थोंतैंभी अत्यंतमहान्है ॥ ऐसापरमात्मादेव याजीवोंकेहृदयरूपगुहा
विषे सर्वदाविराजमानहै ॥ हेसंन्यासियो! सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषे विद्यमानहुआभी सोपरमात्मादेव पूर्णगुरुकीकृपातैंविना
प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं जेअधिकारीपुरुष विषयवासनातैंरहितहोइकै गुरुकेशरणकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तागुरुकेउपदेशतैं तास्वयं
ज्योतिआत्माकूंसाक्षात्कारकरैहैं ॥ तेहीअधिकारीपुरुष कामक्रोधादिकसर्वपाशोंतैंरहितहोवैहैं ॥ हेसंन्यासियो! जोरुद्रभगवान्
आपणीकल्याणमूर्त्तिकरिकै हमसर्वअधिकारीजनोंका पालनकरैहै ॥ सोरुद्रभगवान्ही हमअधिकारीजीवोंकागुरुरूपहै ॥ सोरुद्र
भगवान्रूपगुरु याअधिकारीजनोंकेप्रति याप्रकारकाउपदेशकरैहै ॥ हेशिष्य! तू पुण्यपापकर्मकाकर्त्तानहींहै ॥ तथा तिनपुण्य
पापकर्मोंकेसुखदुःखरूपफलकाभोक्तानहींहै ॥ किंतु जोवेदांतशास्त्रविषे अद्वितीयआनंदरूपब्रह्मकथनकर्याहै ॥ सोअद्वितीयब्रह्म
रूपतूहै ॥ याअर्थविषे तुमनैं किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ और तुमारेस्वरूपतैंभिन्न जितनाकीयहजगत्है ॥ सोजगत्
स्वप्नकीन्यांई नाशवान्है ॥ यातैं सोसंपूर्णजगत् तेरेस्वरूपविषेकल्पितहीहै ॥ हेसंन्यासियो! याप्रकारकेरुद्रभगवान्केउपदेश
तैं उत्पन्नभयाजोअद्वितीयआत्माकाज्ञानहै ॥ ताआत्मज्ञानकरिकै तेअधिकारीपुरुष सर्वशोकतैंरहितहोवैहैं ॥ हेसंन्यासियो!
जैसे रुद्रभगवान्केउपदेशतैं तेअधिकारीपुरुष अद्वितीयआत्माकूं साक्षात्कारकरतेभयेहैं ॥ तैसे मैंश्वेताश्वतरनामाऋषिभी

तारुद्रभगवान्‌केउपदेशतैं ताअद्वितीयआत्माकूं साक्षात्कारकरताहूं ॥ कैसाहैसोआत्मादेव ? अजरहै तथा सर्वजगत्‌काआत्मरूपहै तथा पुरातनहै ॥ तथाविभुहोणेतें सर्वत्रव्यापकहै ॥ तथा सर्वभेदतैंरहितहै ॥ और अज्ञानीजीव ताआत्माकूंजन्ममरणवालाकहेहैं ॥ और ब्रह्मवेत्ताविद्वान्‌पुरुष ताआत्माकूंनित्यकहेहैं ॥ हेसंन्यासियो! ऐसे परमात्मादेवकासाक्षात्कार अशुद्धअंतःकरणवालेपुरुषकूं होवैनहीं ॥ यातैं अंतःकरणकीशुद्धिवासते तिनअधिकारीपुरुषोंनें प्रथम याप्रकार सगुणब्रह्मकाचिंतनकरणा ॥ तापरमात्मादेवके दोरूपहोवैहैं एकतौ पररूपहोवैहै ॥ और दूसरा अपररूपहोवैहै ॥ तहां निर्गुणरूपकानाम परहै ॥ और सगुणरूपकानामअपरहै ॥ तहांश्रुति ॥ देवाब्रह्मणोरूपेपरंचापरंच ॥ ऐसापरअपररूपवाला सोपरमात्मादेव ॐकाररूपप्रणवकाअर्थरूपहै ॥ तहां परब्रह्म ताप्रणवकालक्ष्यअर्थहै ॥ और अपरब्रह्म ताप्रणवकावाच्यअर्थहै ॥ और मीमांसादिकशास्त्रोंविषे शब्दका आपणेअर्थकेसाथ तादात्म्यसंबंधअंगीकारकऱ्याहै ॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेव ताप्रणवरूपहै ॥ ऐसाप्रणवरूपपरमात्मादेव आपणीमायाशक्तिकरिकै सृष्टिकेआदिकालविषे जीवोंकेभोगकीसिद्धिवासते ताप्रणवनामतैंही सर्वशब्दोंकूं तथा सर्वअर्थोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ और सोईहीपरमात्मादेव प्रलयकालविषे तासंपूर्णप्रपंचकूं आपणेशांतस्वरूपविषेलयकरैहै ॥ ऐसापरमात्मादेव हमअधिकारीजीवोंकूं शुभबुद्धिकीप्राप्तिकरै ॥ जिसशुभबुद्धिकेप्रसादतैं हमअधिकारीजीव आपणेआत्माकूं अद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैनिश्चयकरैं ॥ हेसंन्यासियो! मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकीशुभबुद्धिकरिकै जानणेयोग्यजोब्रह्महै ॥ सोब्रह्मही अग्निरूपहै ॥ तथा सोब्रह्मही आदित्यरूपहै ॥ तथा सोब्रह्मही वायुरूपहै ॥ तथा सोब्रह्मही चंद्रमारूपहै ॥ तथा सोब्रह्मही अव्याकृतरूपहै ॥ तथा सोब्रह्मही तारामंडलरूपहै ॥ तथा सोब्रह्मही ऋगादिकवेदरूपहै ॥ तथा सोब्रह्मही सूक्ष्मपंचभूतरूपहै ॥ तथा सोब्रह्मही हिरण्यगर्भरूपहै ॥ तथा सोब्रह्मही विराट्‌रूपहै ॥ तथा सोब्रह्मही मरीचिदक्षप्रजापतिरूपहै ॥ इतनेकरिकै ताब्रह्मविषेअधिदैवरूपतानिरूपणकरी ॥ अब तिसीब्रह्मविषे अध्यात्मरूपतानिरूपणकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो! सोब्रह्मही स्त्रीरूपहै ॥ तथा सोब्रह्मही पुरुषरूपहै ॥ तथा सोब्रह्मही कुमाररूपहै ॥ तथा सोब्रह्मही कुमारीरूपहै ॥ तथा सोब्र

ह्महीं वृद्धअवस्थाकूंप्राप्तहोइकै दंडकूंहाथविषेग्रहणकरिकै शनैःशनैःगमनकरैहै ॥ इसतैंआदिलैके सोब्रह्महीं सर्वशरीररूपहोवैहै ॥ और सोब्रह्महीं अंतःकरणकीवृत्तिरूपउपाधिकेभेदकरिकै नानाज्ञानरूपहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ! इसप्रकार स्त्रीआदिकशरीरोंकरिकै युक्त जोत्वंपदकाअर्थरूपआत्माहै ॥ सोआत्मादेव तत्पदार्थरूपईश्वरतैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु उपाधिकापरित्यागकरिकै सोजीवात्मा ईश्वररूपही है ॥ अब उपासनाकेवासते तापरमात्मादेवकूंपक्षिरूपकरिकै वर्णनकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो ! जेअधिकारीपुरुष तानिर्गुणब्रह्मकेजानणेविषे समर्थनहींहोवैहैं ॥ ऐसेमंदबुद्धिअधिकारीजनोंऊपरि अनुग्रहकरिकै तेमहात्मापुरुष ताविराट्रूपपरमात्मादेवकूं पक्षिरूपकरिकै वर्णनकरैहैं ॥ तहां जगत्काकारणरूप सोविराट्भगवान् पक्षिरूपहै ॥ और दूर्वादलकेसमान तापक्षीकाश्यामवर्णहै ॥ और ताविराट्रूपपक्षीकेदोनोंनेत्र अग्निकेसमानरक्तवर्णवालेहैं ॥ और जैसे माताकेउदरविषे बालकरहेहै ॥ तैसे विद्युत्केसमान शीघ्रही उत्पत्तिनाशवालायहजगत् ताविराट्रूपपक्षीकेगर्भविषेरहैहै ॥ और वसंतऋतुतैंआदिलैकेजोनानाप्रकारकाकालहै ॥ तथा क्षीरसमुद्रतैंआदिलैके जेनानाप्रकारकेसमुद्रहैं ॥ यहसंपूर्ण ताविराट्रूपपक्षीकेपक्षरूपहैं ॥ और सोविराट्रूपपक्षीही उपासकपुरुषोंकूं ब्रह्मांडतैंबाहरिलेजावैहै ॥ और सोविराट्रूपपक्षीही याब्रह्मांडकेअंतरबाहरिव्यापकहै ॥ और तिसीविराट्भगवान्तैं चतुर्दशभुवन उत्पन्नहोवैहैं ॥ तथा तिनभुवनोंकाकारणरूप स्थूलभूत उत्पन्नहोवैहैं ॥ हेसंन्यासियो ! इसप्रकार सगुणब्रह्मकेध्यानकरिकै जबी याअधिकारीपुरुषोंकाअंतःकरणशुद्धहोवैहै ॥ तबी तिनअधिकारीपुरुषोंकूं सुखेनही निर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ निर्विशेषंपरंब्रह्म साक्षात्कर्तुमनीश्वराः ॥ येमंदास्तेऽनुकंप्यंते सविशेषनिरूपणैः ॥ १ ॥ वशीकृतमनस्येषां सगुणब्रह्मशीलनात् ॥ तदेवाविर्भवेत्साक्षादपेतोपाधिकल्पनम् ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ जेमंदबुद्धिपुरुष निर्गुणब्रह्मकेसाक्षात्कारकरणेविषे समर्थनहींहैं ॥ तिनमंदबुद्धिपुरुषोंऊपरि अनुग्रहकरिकै ब्रह्मवेत्तागुरु सगुणब्रह्मकाकथनकरैहैं ॥ तासगुणब्रह्मकेध्यानकरिकै जबी तिनअधिकारीपुरुषोंकाअंतःकरण शुद्धहोवैहै ॥ तबी तिनअधिकारीपुरुषोंकूंसुखेनही निर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारहोवैहै॥इतनैंकरिकै सगुणब्रह्मकेध्यानकाप्रकार निरूपणकर्‌या ॥ अब शुद्धचित्तवालेपुरुषोंकेप्रति महावाक्य

काउपयोगीविचार निरूपणकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो! इसप्रकार तापरमेश्वरविषे पक्षिरूपताकल्पनाकरिकै पुनःतेविद्वान्पुरुष तापर मात्मादेवविषे जीव ईश्वर माया यहतीनप्रकारकाभेद कल्पनाकरैहैं ॥ तहां सर्वजगत्काकारणरूपजामायाहै ॥ तामायाकाजन्महोवै नहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तामायाकूं अजा यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ साअजामाया तेज जल पृथिवी यातीनकार्यरूपकरिकै तीनरूपवालीहोवैहै ॥ तहां अग्निरूपकरिकै सामाया लोहितरूपवालीहोवैहै ॥ और जलरूपकरिकै सामाया शुक्लवर्णवालीहोवैहै ॥ और पृथिवीरूपकरिकै सामाया कृष्णवर्णवालीहोवैहै ॥ इसप्रकार लोहित शुक्ल कृष्ण यातीनरूपवालीसामाया तातीनरूपोंकरिकै आपणेसमान सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरैहै ॥ जैसे यालोकविषेप्रसिद्ध जारक्तशुक्लनीलवर्णवालीअजाहै ॥ साअजा आपणेसमानरूपवा लेअजोंकूंही उत्पन्नकरैहै ॥ तैसे सामायारूपअजाभी आपणेसमानरूपवाले जगत्कूंहीउत्पन्नकरैहै ॥ और जैसे यालोकप्रसिद्धअ जाकेभोगणेकीइच्छावालाजोअजहै ॥ सोअज ताअजाकासेवनकरैहै ॥ और ताअजाकेभोगणेकीइच्छातैंरहितजोनिष्कामअजहै ॥ सोनिष्कामअज ताअजाकापरित्यागकरैहै ॥ तैसे त्वंपदकाअर्थरूप यहजीवात्मारूपअज तामायारूपअजाकेभोगणेकीइच्छावा लाहै ॥ याकारणतैं सोजीवरूपअज तामायारूपअजाकासेवनकरैहै ॥ तासेवनकरिकै सोजीवरूपअज बध्यमानहोवैहै ॥ और तत्पदकाअर्थरूप जोईश्वरहै ॥ सोईश्वररूपअज तामायारूपअजाकेभोगणेकीइच्छातैंरहितहै ॥ याकारणतैं सोईश्वररूपअज ता मायारूपअजाकापरित्यागकरैहै ॥ याकारणतैंही सोईश्वर नित्यमुक्तहै ॥ अब दूसरीरीतिसैंभी ताजीवईश्वरमायाकानिरूपणकरै हैं ॥ हेसंन्यासियो! कोईकमहात्मापुरुषतौ जीव ईश्वर माया यातीनोंका याप्रकार वर्णनकरैहैं ॥ जैसे यालोकविषे पिप्पलादिक वृक्षोंऊपरिपक्षीरहेहैं ॥ तैसे यहकार्यसहितमायातौ वृक्षरूपहै ॥ और तत्पदकाअर्थरूपईश्वर तथा त्वंपदकाअर्थरूपजीव यहदो नोंपक्षीहैं॥ कैसेहैं तेजीवईश्वररूपदोनोंपक्षी? वास्तवतैंपरस्परअभिन्नहैं ॥ तथा समानरूपवालेहैं ॥ तथा एकहीकार्यसहितमा यारूपवृक्षकेआश्रितरहैहैं ॥ तिनदोनोंविषे बुद्धिविशिष्टजीवरूपपक्षीतौ तामायारूपवृक्षकेपुण्यपापरूपपुष्पोंतैं उत्पन्नभयेसुखदुःख रूपफलकूं स्वादुमानिकैभोगेहै ॥ और दूसराईश्वररूपपक्षीतौ तासुखदुःखरूपफलकूं कदाचित्भीभोगतानहीं ॥ किंतु सोईश्वर

रूपपक्षी तासुखदुःखरूपफलकूं केवलप्रकाशहीकरैहै ॥ हेसंन्यासियो ! अजरूपकरिकै तथापक्षिरूपकरिकै जोश्रुतिनैं भोक्ता अभोक्तारूपतैं जीवईश्वरकीविलक्षणता कथनकरीहै ॥ ताश्रुतिवचनका जीवकेभोक्तापणेविषे तात्पर्यनहींहै ॥ किंतु ताजीवके भोक्तापणाकीनिवृत्तिविषेतात्पर्यहै॥ काहेतें? लोकोंकरिकेअज्ञातजोअर्थहै ताअज्ञातअर्थकेबोधनकरणेकरिकैही शास्त्रविषे प्रमाणरूपताहोवैहै ॥ लोकप्रसिद्धअर्थकेबोधनकरणेकरिकै शास्त्रविषे प्रमाणरूपताहोवैनहीं ॥ और यालोकविषे अज्ञानीपुरुषोंकूं जीवविषे भोक्तापणा प्रत्यक्षसिद्धहै ॥ यातें तालोकप्रसिद्धजीवकेभोक्तापणेविषे ताश्रुतिकातात्पर्यसंभवैनहीं॥ किंतु ताजीवकेभोक्तापणेकीनिवृत्तिविषेही तावचनकातात्पर्यहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! सोश्रुतिवचन जीवकेभोक्तापणाकीनिवृत्तिनहींकरैहै ॥ किंतु सोश्रुतिवचनईश्वरकेभोक्तापणाकीहीनिवृत्तिकरैहै ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो! जोवस्तु जिसस्थानविषे किसीप्रमाणकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ तावस्तुकाही तिसस्थानतेंनिषेधहोवैहै ॥ और जोवस्तु जिसस्थानविषे किसीप्रमाणकरिकैप्राप्तनहींहै ॥ तावस्तुका तिसस्थानतेंनिषेधहोवैनहीं ॥ यहसर्वशास्त्रोंकासिद्धांतहै ॥ यातें सोश्रुतिवचन ईश्वरविषे भोक्तापणाकीनिवृत्ति तबीकरैगा ॥ जबी ताईश्वरविषे सोभोक्तापणा किसीप्रमाणकरिकैसिद्धहोवै ॥ सोईश्वरविषेभोक्तापणा किसीप्रमाणकरिकैसिद्धहैनहीं ॥ किंवा जोवादी ताईश्वरविषेभोक्तापणाअंगीकारकरैहै ॥ तावादीसैंयहपूछाचाहिये ॥ ताईश्वरविषे भोक्तापणा प्रत्यक्षादिकलौकिकप्रमाणोंकरिकै सिद्धहै अथवा किसीश्रुतिप्रमाणकरिकैसिद्धहै? तहां प्रथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ! प्रत्यक्षादिकलौकिकप्रमाणतौ लोकप्रसिद्धघटादिकपदार्थोंकूंही विषयकरैहैं ॥ अलौकिपदार्थकूंविषयकरैनहीं ॥ और सोईश्वर लोकप्रसिद्धहैनहीं ॥ यातें सोईश्वरअलौकिकहै॥ ऐसेअलौकिकईश्वरकूंतेप्रत्यक्षादिकलौकिकप्रमाण विषयकरिसकैनहीं ॥ और ताईश्वरविषे सोभोक्तापणा किसीश्रुतिप्रमाणकरिकैसिद्धहै ॥ यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरै ॥ सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? ताईश्वरविषेअभोक्तापणाकूंप्रतिपादनकरणेहारी कोईश्रुति प्रसिद्धहैनहीं ॥ उलटा ॥ नतदश्नातिकिंचन ॥ इत्यादिकश्रुतियां ताईश्वरविषेअभोक्तापणाहीकथनकरैहैं ॥ यातें तातत्पदार्थरूपईश्वरविषे सोभोक्तापणा किसीप्रमाणकरिकैप्राप्तहैनहीं ॥ याकारणतें ताश्रुतिवचन

तैं ताईश्वरविषेभोक्तापणाकानिषेधभीसंभवैनहीं ॥ किंतु सोश्रुतिवचन याप्रकारकेशंकाकीनिवृत्तिकरिकै त्वंपदार्थजीवविषेही भोक्तापणाकीनिवृत्तिकरैहै ॥ साशंकायहहै ॥ मैंब्रह्मरूपहूं यहजीवब्रह्मकेअभेदकूंबोधनकरणेहारावचन व्यर्थहै ॥ काहेतें ? यहजीवतौ कर्मकेफलकाभोक्ताहै ॥ और ब्रह्म ताकर्मकेफलकाअभोक्ताहै ॥ ऐसेभोक्ताजीवका अभोक्ताब्रह्मकेसाथ अभेदसंभवैनहीं ॥ याप्रकारकीवादीकेशंकाकूं सोश्रुतिवचन निवृत्तकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! जीवईश्वरकूं अजरूपकरिकै तथा पक्षिरूपकरिकै वर्णनकरणेहारा सोश्रुतिवचन तावादीकेशंकाकीनिवृत्ति किसप्रकारकरैहै? समाधान ॥ हेसंन्यासियो! सोश्रुतिवचन जिसरीतिसें ताशंकाकीनिवृत्तिकरैहै ॥ तारीतिकूं तुम श्रवणकरो ॥ जैसे तत्पदार्थरूप निर्विकारईश्वरविषे अजरूपता तथा पक्षिरूपता यद्यपि शब्दकेबलतें प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि ताईश्वरविषे साअजरूपता तथा पक्षिरूपता वास्तवतैंहैनहीं ॥ किंतु आरोपितहै ॥ तैसे त्वंपदार्थरूपजीवविषे यद्यपि बुद्धिकेसंबंधतैं भोक्तापणाप्रतीतहोवैहै ॥ तथापि ताजीवविषे सोभोक्तपणा वास्तवतैंहैनहीं ॥ किंतु आरोपितहै ॥ तात्पर्य यह ॥ अंतःकरणादिकउपाधियोंकरिकैयुक्तजोचेतनहै ताकानामजीवहै ॥ तहां अंतःकरणादिकउपाधिकापरित्यागकरिकै ताजीवका जोसाक्षीकूटस्थस्वरूपहै ताकेविषेतौ तीनकालमैंभोक्तापणानहींहै ॥ किंतु सोभोक्तापणा अंतःकरणविषेहीहै ॥ ताअंतःकरणकेभोक्तापणेका आत्माविषेआरोपणकरिकै ताजीवकूं भोक्ताकह्याहै ॥ वास्तवतैंयहजीवभी अभोक्ताहीहै ॥ यातैं ताअभोक्ताजीवका अभोक्ताब्रह्मविषे अभेद संभवहोइसकैहै ॥ हेसंन्यासियो! जीवईश्वररूपदोनोंपक्षियोंकेरहणेकास्थान जोयहकार्यसहितअविद्यारूपीवृक्षहै ॥ ताअविद्यारूपवृक्षविषे यहजीवरूपपक्षी आपणेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतैंही सुखदुःखरूपफलकूंभोगेहै ॥ तथा शरीरबुद्धि आदिकोंकेतादात्म्यअध्यासतैं सोजीव दुःखरूपसमुद्रविषेडूबैहै ॥ तथा असमर्थताकूंप्राप्तहोइकै सोअज्ञानीजीव नानाप्रकारकेशोकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सोत्वंपदकाअर्थरूपजीवात्मा जबी गुरुकीकृपातैंप्राप्तभईशुद्धबुद्धिकरिकै यास्वयंज्योतिआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माकूं देहादिकोंतैंभिन्नकरिकैजाणेहै ॥ तबी यहजीवात्मा सर्वशोकोंतैंरहितहोवैहै ॥ तथा तत्पदार्थईश्वरकेसाथ अभेदभावकूं प्राप्तहोइकै ताईश्वरकेसर्वात्मभावरूपमहिमाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो! ब्रह्मवेत्तागुरुकीकृपाकरिकै यहविद्वानपुरुष जिसत

त्पदार्थईश्वरकेमहिमाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसीईश्वरकेस्वरूपकूं याज्ञवल्क्यमुनिनें गार्गीकेप्रति अक्षररूपकरिकैवर्णनकऱ्याहै ॥ तिसी अक्षरपरमात्माविषे यहऋगादिकवेद स्थितहैं ॥ और तिसीअक्षरविषे विश्वेदेवता तथाअग्निआदिकदेवता स्थितहैं ॥ इसतैंआदि लैके यहसंपूर्णजगत् ताअक्षरविषेहीस्थितहै ॥ हेसंन्यासियो! इसप्रकार सर्वजगत्काअधिष्ठानरूप जोपरमात्मादेवहै ॥ ताअक्षरप रमात्माकूं जेअधिकारीपुरुष सर्वांतर्यामिरूपकरिकै नहींजानैहैं ॥ तेअज्ञानीपुरुष यालोकविषे व्यर्थहीजीवतेहैं ॥ और जेअधिकारी पुरुष ताअक्षरपरमात्माकूं सर्वांतर्यामिरूपकरिकैजानैहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकाजीवन सफलहै॥ हेसंन्यासियो! जैसे गर्दभकेऊ परिपाया जोचंदनकेकाष्ठोंकाभारहै ॥ सोचंदनकाभार तागर्दभकेउपकारवासतेनहींहै ॥ किंतु क्लेशवासतेहै ॥ तैसे जिनपुरुषोंनें ऐसेअंतर्यामीपरमात्माकूंनहींजान्याहै ॥ तिनबहिर्मुखपुरुषोंकूं षट्अंगोंसहितचारिवेदोंकाअध्ययनभी किसीउपकारवासतेहोवैन हीं ॥ उलटा वेदोंकेअध्ययनकरिकै तिनबहिर्मुखपुरुषोंकूं अभिमानकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो! जेतुमसरीखेविद्वान्पुरुष तथा हमसरीखेविद्वान्पुरुष तापरमात्मादेवकूं आपणाआत्मरूपकरिकैजानैहैं ॥ तेविद्वान्पुरुषही महाराजाकेसमान सुखपूर्वक स्थितहोवैहैं ॥ हेसंन्यासियो! तिनऋगादिकवेदोंकेअध्ययनकाफलभी यहआत्मज्ञानहीहै ॥ आत्मज्ञानतैंकोईअधिकफल तिनवे दोंकेअध्ययनकाहैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! एकआत्माकेज्ञानतैं यहअधिकारीपुरुष कृतकृत्यताकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतें? या अधिकारीपुरुषकूं आत्मातैंभिन्न अनेकपदार्थ जानणेयोग्यरहेहैं ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो! आत्माकेज्ञानतैंविना यहअधिकारी पुरुष किसीअन्यउपायकरिकै यासर्वजगत्कूंजाणिसकैनहीं ॥ किंतु आत्माकेज्ञानकरिकैही यहअधिकारीपुरुष तासर्वजगत्कूंजाणि सकैहै ॥ काहेतें? जैसे यालोकविषे घटपटादिककार्योंका मृत्तिकातंतुआदिककारणही वास्तवस्वरूपहोवैहै ॥ कारणतैंविनादूस राकोईकार्यकावास्तवस्वरूपहोवैनहीं ॥ यातैं मृत्तिकादिककारणोंकेज्ञानहुएतैंअनंतर तिनघटादिककार्योंकाभी अवश्यज्ञानहोवै है ॥ और जैसे मायावीऐंद्रजालिकपुरुष नानाप्रकारकेरूपोंकाकारणहोवैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेवही आपणीमायाशक्तिकरिकै यासर्वजगत्काकारणहोवैहै ॥ तहां यहपरमात्मादेवही आपणीमायाशक्तिकरिकै गायत्रीआदिकनानाप्रकारकेछंदोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥

तथा ऋगादिकचारिवेदोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तथा अग्निष्टोमादिकनानाप्रकारकेयज्ञोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेशुभअशुभसं
कल्पोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तथा तपतैंआदिलैके नानाप्रकारकेव्रतोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ इसतैंआदिलैके भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकाल
विषेस्थित जितनाकीजगतहै ॥ सोसंपूर्णजगत् तापरमात्मादेवतैंहीउत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं तापरमात्मरूपकारणकेज्ञानकरिकै याजग
तरूपकार्यकाज्ञान संभवहोइसकैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जिसमायाशक्तिकरिकै यहपरमात्मादेव याजगतकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तामाया
काक्यास्वरूपहै? समाधान ॥ हेसंन्यासियो! जैसे अंधकार आपणीसिद्धिविषे सूर्यादिकप्रकाशोंकीअपेक्षानहींकरैहै ॥ तैसे जोव
स्तु आपणीसिद्धिविषे किसीप्रमाणकीअपेक्षानहींकरैहै ॥ तथा सर्वकार्योंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तावस्तुकानाममायाहै ॥ हेसंन्यासियो!
जैसे स्वप्नद्रष्टापुरुष अविद्याकेबलतैं तास्वप्नविषे अनेकपदार्थोंकीउत्पत्तिस्थितिलयकरैहै ॥ तैसेसोपरमात्मादेवभीतामायाशक्तिकरिकै
याजगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकूंकरैहै ॥ हेसंन्यासियो! इसप्रकार तापरमात्मादेवतैंउत्पन्नभया जोयहसंसारचक्रहै ॥ तासंसारचक्र
विषे अविद्याकरिकैनिरुद्धहुआ यहजीव आपणेकूं तापरमात्मादेवतैंभिन्नकरिकैमानैहै ॥ तथा कर्मरूपीबंधनगृहविषे कामक्रोधादि
कपाशोंकरिकैबद्धहुआ यहजीव नानाप्रकारकीदीनदशाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं तामायाशक्तिका अत्यंतआश्चर्यरूपबलहै ॥ अब ता
मायाकेसामर्थ्यकानिरूपणकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो! तामायाकूं तुम प्रकृतिरूपजाणों ॥ और महेश्वरकूं तुम तामायाकाअधिष्ठानजा
णो ॥ हेसंन्यासियो! यहपुरुष जिसकरिकै अत्यंतदुर्घटकार्योंकूंकरैहै ताकानाम प्रकृतिहै ॥ और यहपरमात्मादेव तामाया
करिकै अत्यंतदुर्घटकार्योंकूंकरैहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तामायाकूं प्रकृति यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ हेसंन्यासियो! य
हपरमात्मादेव निर्गुणहै तथाअसंगहै तथा जन्मादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ तथा एकअद्वितीयरूपहै ॥ ऐसेअद्वितीयआ
त्माविषे यहनानापणा अत्यंतदुर्घटहै ॥ तथापि यहमाया ताअद्वितीयपरमात्मादेवकूं कार्यरूपकरिकै नानाभावकूंप्राप्तकरैहै ॥
यातैं तादुर्घटकार्यकेकरणेहारीमायाकूं बुद्धिमानपुरुष प्रकृतिकहैहैं ॥ हेसंन्यासियो! यालोकविषेप्रसिद्ध जाऐंद्रजालिकपुरुषोंकीमा
याहै ॥ तामायाविषे दोस्वभावप्रसिद्धहैं एकतौ मिथ्यापदार्थोंकीउत्पत्तिकरणी ॥ और दूसरा एकपदार्थकूं नानारूपकरिकै

दिखावणा ॥ तादोनोंस्वभाववालीमायाकरिकैयुक्त जोऐंद्रजालिकपुरुषहै ॥ ताकूं लोकविषे मायी कहेहैं ॥ तैसे यापरमात्मादेवके आश्रित जामायाहै ॥ तामायाविषेभी तेदोनोंस्वभाव विद्यमानहैं ॥ काहेतें ! सोएकहीअसंगनिर्गुणपरमात्मादेव तामायाकरिकै अनेकप्रकारकाहोवैहै ॥ तथा आपणेअवयवरूपजेआकाशादिकपंचभूतहैं तथा इंद्रियादिकहैं ॥ तिनोंकरिकै याचराचररूपसर्वजगत्कूं व्याप्तकरैहै ॥ हेसंन्यासियो ! यहअधिकारीपुरुष जिसीकिसीशरीरविषेस्थितहोइके जबी तापरमात्मादेवकूं आपणाआत्मरूपकरिकै साक्षात्कारकरैहै ॥ तबीही तेअधिकारीपुरुष मोक्षरूपपरमशांतिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव ॥ जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेशरीरोंविषे एकरूपकरिकैस्थितहै ॥ तथा यासर्वजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकूंकरणेहाराहै ॥ तथा अधिकारीजनोंकूं मोक्षकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तथा सर्वबुद्धिआदिकोंकाप्रेरकहै ॥ तथा सर्वदेवताओंकरिकैस्तुतिकरणेयोग्यहै ॥ ऐसेअद्वितीयपरमात्मादेवकूं आपणाआत्मरूपजाणिकरिकै यहअधिकारीपुरुष मोक्षरूपशांतिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेसंन्यासियो ! हमअधिकारीजनोंकूं शुभबुद्धिकीप्राप्तिकरणेहारा तथा हिरण्यगर्भादिकदेवतावोंकूंउत्पन्नकरणेहारा जोपरमात्मादेव हमनैं पूर्व तुमारेप्रति कथनकऱ्याथा ॥ सोइहीपरमात्मादेव इंद्रादिकसर्वदेवतावोंकाअधिपतिहै ॥ और जैसे यहमनुष्यादिकशरीर पृथिवीकेआश्रित रहैहैं ॥ तैसे यहभूरादिकलोक जिसपरमात्मादेवकेआश्रितरहैहैं ॥ तथा जोपरमात्मादेव दोपादवालेमनुष्यादिकशरीरोंका तथा चारिपादवालेअश्वादिकशरीरोंका नियंताईश्वरहै ॥ तथा वृक्षादिकस्थावरप्राणियोंका नियंताईश्वरहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवकेप्रसन्नकरणेवासते हमअधिकारीजन घृत यव तिल आदिकहविष्करिकै तथा नानाप्रकारकेअन्नकरिकै पूजनकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो ! जबपर्यंत हमअधिकारीजनोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिनहींभई ॥ तबपर्यंतहीहमअधिकारीजन शास्त्रउक्तरीतिसैं आपणेवर्णआश्रमकेअनुसार ताघृतादिरूपहविष्करिकै तापरमात्मादेवकापूजनकरैहैं ॥ और जबी हमअधिकारीजनोंकूं गुरुशास्त्रकीकृपातें तापरमात्मादेवका आपणाआत्मरूपकरिकैसाक्षात्कारहोवैहै ॥ तबी सोपरमात्मादेव हमअधिकारीजीवोंका आत्मस्वरूपहीहोवैहै ॥ यातें ताआत्मज्ञानअवस्थाविषे हमअधिकारीजीव जिसअन्नपानादिकोंकरिकै याशरीरकाधारणकरैहैं ॥ सोशरीरकाधारणही

तापरमात्मादेवकापूजनहै ॥ हेसंन्यासियो ! यालोकविषे जोपदार्थ नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै नहींजान्याजावैहै ॥ किंतु केवलबुद्धि करिकैही जान्याजावैहै ॥ तापदार्थकानाम सूक्ष्महै ॥ और यहपरमात्मादेवता ताबुद्धिकरिकैभी ग्रहणकऱ्याजावैनहीं ॥ यातें यह आत्मादेवसूक्ष्मतैंहीअतिसूक्ष्महै ॥ और हेसंन्यासियो ! यहआत्मादेव आपणेस्वरूपकेअज्ञानतें पुण्यपापकर्मोंकूंकरैहै ॥ तापुण्य पापकर्मकेवशतें अन्नद्वारा पिताकेशरीरविषेजावैहै ॥ तापिताकेशरीरतें वीर्यद्वारास्त्रीकेउदरविषेजावैहै ॥ तहां स्त्रीकेरजकेसाथमि लिकै सोवीर्य फेनाकार कलिलअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताकलिलरूपउपाधिविषेस्थितहोइकै सोपरमात्मादेव नानाप्रकारके शरीरोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ इसप्रकार वटादिकबीजोंविषेस्थितहोइकै नानाप्रकारकेवृक्षोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव ? शरीररूपउपाधिकेसंबंधतें नानारूपहुआभी वास्तवतें सर्वभेदतेंरहित एकअद्वितीयरूपहै ॥ तथा स्मरणमात्रकरिकै हमअधिका रीजनोंकेभयकीनिवृत्तिकरैहै ॥ याकारणतें सोपरमात्मादेव मंगलरूपहै ॥ ऐसेआनंदस्वरूपअद्वितीयपरमात्माकूं जेअधिकारी पुरुष आपणाआत्मरूपकरिकैजानैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोइकै सर्वदुःखोंतेंरहितहोवैहैं ॥ हेसंन्यासियो ! जोपर मात्मादेव वीर्यादिकबीजोंविषेस्थितहोइकै याजगत्‌कूंउत्पन्नकरैहै ॥ सोइहीपरमात्मादेव याजगत्‌कीस्थितिकालविषे काष्ठोंविषे अग्निकीन्यांई तासर्वजगत्‌केअंतरगुह्यरहिकै तासर्वजगत्‌कापालनकरैहै ॥ याकारणतेंही श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं विश्वाधिपति यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और तिसीपरमात्मादेवविषे योगीजन तथा अंतर्मुखब्राह्मण तथा हिरण्यगर्भादिक देवता स्थितहोवैहैं ॥ ऐसे परमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष सर्वजगत्‌काउपादानकारणरूपकरिकै तथा सर्वांतर्यामिरूपकरिकै जानैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही ताज्ञानरूपअसिकरिकै प्रमादजन्यकामक्रोधादिकपाशोंकूंछेदनकरैहैं ॥ और हेसंन्यासियो ! जैसे यालोकविषे दधितेंनिकस्याहुआजोघृतहै ॥ सोघृत तादधितेंउत्कृष्टहोवैहै ॥ और ताद्रवीभावघृततेंभी घनीभावयु क्तघृत अत्यंतस्वादुहोवैहै ॥ यातें ताद्रवीभावघृततें सोघनीभावघृत उत्कृष्टहै ॥ तैसे यास्थूलसूक्ष्मरूपजगत्‌तें मायाविशिष्टस गुणब्रह्म उत्कृष्टहोवैहै ॥ और तासगुणब्रह्मतेंभी निर्गुणशुद्धब्रह्म उत्कृष्टहोवैहै ॥ ऐसेआनंदस्वरूपशुद्धब्रह्मकूं जबी यहअधिकारी

पुरुष आपणाआत्मरूपकरिकैजानैंहै ॥ तबी यहअधिकारीपुरुष कामक्रोधादिकसर्वपाशोंतैं मुक्तहोवैंहै ॥ हेसंन्यासियो! पूर्वेह मनैं तुमारेप्रति जोपरमात्मादेव हृदयरूपउपाधिकेसंबंधतैं अंगुष्ठमात्रपरिमाणवालाकह्याथा ॥ सोइहीपरमात्मादेव सर्वत्रपरिपूर्णहै ॥ तथा सर्वजगत्‌काकर्ताहै ॥ तथा मनबुद्धिआदिकोंका साक्षिरूपकरिकै तथाप्रेरकरूपकरिकै सर्वदाप्रसिद्धहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मरूपकरिकै जाणेहैं ॥ तेहीअधिकारीपुरुष मोक्षरूपअमृतकूं प्राप्तहोवैंहैं ॥ हेसंन्यासियो! याअधिकारीपुरुषोंकूं जबी गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं ब्रह्मआत्माकाअभेदज्ञानहोवैंहै ॥ तबीही यहसर्वजगत्‌कीजननीमायारूपतम नाशकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ ताज्ञानअवस्थाविषे दिन रात्रि स्थूल सूक्ष्म इसतैंआदिलैकेसर्वपदार्थ लयभावकूं प्राप्तहोवैंहै ॥ ताज्ञानअवस्थाविषे तिनविद्वान्‌पुरुषोंकूं एकस्वयंज्योतिअक्षरशिवरूपआत्माही प्रकाशमानहोवैंहै ॥ तिसीअक्षरपरमात्मादेवकूं गायत्रीआदिकमंत्र जगत्‌काकारणसूर्यरूपकरिकैवर्णनकरैंहै ॥ हेसंन्यासियो! तिसीपरमात्मादेवकेआराधनकरिकै हमअधिकारीजीवोंकूं याशुद्धबुद्धिकीप्राप्तिभईहै ॥ जाशुद्धबुद्धिकरिकै हमअधिकारीजीवोंनैं ता तत्पदार्थरूपपरमात्मादेवकूं साक्षात्कारकर्याहै ॥ हेसंन्यासियो! गुरुकेउपदेशतैंपूर्व यद्यपि हमअधिकारीजनोंकूं साबुद्धिउत्पन्नहोतीभई ॥ तथा साबुद्धि दशोंदिशाविषेभ्रमणकरतीभई ॥ तथापि साबुद्धि याआनंदस्वरूपआत्माकूंनहींग्रहणकरतीभई ॥ और अबी गुरुकेउपदेशकूंप्राप्तहोइकै साहमारीबुद्धि तापरमात्मादेवकूं सर्वत्रव्यापकरूपकरिकैग्रहणकरैंहै ॥ हेसंन्यासियो! तापरमात्मादेवका कैसास्वरूपहै? याप्रकारकीशंका तुमोंनैं कदाचित्‌भी नहींकरणी ॥ काहेतें? जैसे यालोकविषे गौकेसमानस्वभाववाला गवयपशुहोवैंहै ॥ यातैं तागवयपशुकेजनावणेवासते गौकूंउपमानकरतेहैं ॥ तैसे यालोकविषे जोकोईपदार्थ तापरमात्मादेवकेसमानस्वभाववालाहोवै तौ तापरमात्मादेवकेजनावणेवासते तापदार्थकूंउपमानकरियै ॥ परंतु यालोकविषे तापरमात्मादेवकेसमानस्वभाववाला कोईपदार्थ हैनहीं ॥ यातैं आत्माकेजनावणेविषे किसीअनात्मपदार्थकूं उपमानरूपतासंभवैनहीं ॥ और सोपरमात्मादेव सर्वअनात्मपदार्थोंतैं अत्यंतप्रियरूपहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं महद्‌यशः यानामकरिकैकथनकरैंहै ॥ हेसंन्यासियो! ऐसेआ

नंदस्वरूपअद्वितीयआत्माकूं कोईभीपुरुष चक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकै ग्रहणकरिसकैनहीं ॥ किंतु जिसअधिकारीपुरुषऊपरि तारुद्रभगवान्कीकृपाभईहै॥ सोइहीअधिकारीपुरुष सर्ववृत्तियोंसहितमनकानिरोधकरिकै ताआनंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरैहै॥ यातैं हेसंन्यासियो! तारुद्रभगवान्केप्रसन्नकरणेवासते यहअधिकारीपुरुष याप्रकार तारुद्रभगवान्कीप्रार्थनाकरै ॥ हेरुद्रभगवन्! आप जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतेंरहितहो ॥ यातैं हमअधिकारीजीवोंके कामक्रोधादिकपाशोंकेनिवृत्तकरणेविषे आप समर्थ हो ॥ हेभगवन्! जैसे यालोकविषे जीवताहुआकोईजंतु अग्निकेमध्यविषेस्थितहोइके दुःसहदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे मैंअज्ञानी जीव याशरीररूपअग्निविषेस्थितहुआ नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोताहूं ॥ हेभगवन्! ज्वरादिकव्याधियोंकरिकै तथा कामक्रोधादिकआधियोंकरिकै उत्पन्नभयेजेअध्यात्मदुःखहैं ॥ तथा सिंहसर्पादिकोंकरिकै उत्पन्नभयेजेअधिभूतदुःखहैं ॥ तथा अग्निजलादिकोंकरिकै उत्पन्नभयेजेअधिदैवदुःखहैं ॥ यातीनप्रकारकेदुःखोंकरिकै मैं सर्वदापीडितरहताहूं ॥ और पुण्यपापकरिकै पराधीनताकूंप्राप्तहुआ मैंपशु आपपशुपतिकेअधीनहूं ॥ हेभगवन्! पुण्यपापकर्मकेफलकाप्रदाता जोआपईश्वरहो ॥ ताआपकेसमान यालोकविषे कोईउद्धारकरणेहाराकृपालुहैनहीं ॥ और मेरेसमान यालोकविषे कोईदीनपुरुषनहीं है ॥ यातैं दैवनैं तुमाराहमारायोग्यसंबंधकऱ्याहै ॥ हेभगवन्! यहऋगादिकवेद जोकदाचित् प्रमाणरूपहैं ॥ तथा सुखकेदेणेहारा शंकरनामादेव जोकदाचित् जीवतअवस्थाविषे तथा मोक्षअवस्थाविषे परिपूर्णरूपहै तौ हमअधिकारीजनोंके जन्ममरणादिकदुःखोंकूं आप नाशकरो ॥ हेभगवन्! रुद्रभगवान् शरणागतजीवोंकीरक्षाकरैहै ॥ याप्रकारकेवेदवचनोंतें हमनैं आपकामहिमाश्रवणकऱ्याहै ॥ याकारणतैं जन्ममरणादिकदुःखोंकीनिवृत्तिकरणेवासते मैंअनाथ आपकेशरणागतकूंप्राप्तभयाहूं ॥ यातैं आप हमारेप्रति आत्मज्ञानकीप्राप्तिकरिकै हमारेसर्वदुःखोंकीनिवृत्तिकरो ॥ शंका ॥ हेशिष्य! तू आपहीआत्माकाविचारकरिकै जन्ममरणादिकदुःखोंतैंरहितहोवै ॥ हमारेअनुग्रहकाक्याप्रयोजनहै? समाधान ॥ हेभगवन्! मैंअल्पबुद्धिवालाजीव किसीअर्थकूंभीजाणतानहीं तौ आपकेअनुग्रहतेंविना दुर्विज्ञेयआत्माकूं मैं कैसेजाणोंगा? यातैं बुद्धिमान्पुरुषोंविषे हमारीगिणतीनहीं ॥ शंका ॥ हेशिष्य! जोतू किसीभीअर्थ

कूंनहीं जाणता तौ तू पाषाणकीन्यांई जडहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेभगवन्! जैसे सर्पव्याघ्रादिकोंकरिकैयुक्त किसीनिर्जनवन विषे किसीबालककूंएकलाछोडिदयीए ॥ सोबालक तावनविषे भयकूंप्राप्तहोइकै केवलदुःखकाहीअनुभवकरैहै ॥ तैसे मैंभी यासंसाररूपवनविषे केवलदुःखकूंही अनुभवकरताहूं ॥ इतनेमात्रकरिकै हमारेविषे चेतनताहै ॥ हेभगवन्! यासंसाररूपवनविषे क्षुधापिपासारूपपिशाच हमारेकूं परमदुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ हेभगवन्! तासंसाररूपवनविषेभी यहयौवनअवस्थारूपमहावनहै ॥ तायौवनरूपवनविषे प्राप्तभयाजोमैंअनाथहूं ॥ तामैंअनाथकूं यहकामदेवरूपसर्प वारंवार दंशकरैहै ॥ कैसाहैसोकामदेवरूपसर्प? अत्यंतविषवालाहै ॥ जाविषकेनिवृत्तिकरणेहारा आपस्मरणरिकेध्यानतैंविना दूसराकोईउपायहैनहीं ॥ एकआपकाध्यानही ताविषकेनिवृत्तिकाउपायहै ॥ हेभगवन्! तायौवनरूपवनविषे शब्द स्पर्श रूप रस गंध यहपंचप्रकारकेविषयरूपट्ठकरहैहैं ॥ तथा स्त्रीरूपीकाकरहैहैं ॥ तेविषयरूपट्ठक तथा स्त्रीरूपकाक हमारे धर्मविचाररूपशरीरकूं सर्वदाहननकरैहैं ॥ हेभगवन्! तासंसाररूपवनविषे यहक्रोधरूपसिंहरहैहै ॥ ताकीगर्जनाकरिकै हमाराहृदय सर्वदा तपायमानहोवैहै ॥ हेभगवन्! यासंसाररूपवनविषे यहलोभरूपतरक्षुरहेहै ॥ डाकनीकेवाहनकानाम तरक्षुहै ॥ ऐसाविचित्रवर्णवाला लोभरूपतरक्षु आपणेदर्शनतैं हमारेनेत्रोंकूं तपायमानकरैहै ॥ याकारणतैंही लोभीपुरुषकूंदेखिकै दातापुरुष आपणेनेत्रोंकूं तालोभीपुरुषकीतरफतैं हटाईलेवैहैं ॥ हेभगवन्! जैसे विंध्याचलादिकपर्वत सूर्यकेप्रकाशकूं आच्छादनकरैहैं ॥ तैसे यासंसाररूपपवनविषे आत्मरूपसूर्यकेप्रकाशकूं आच्छादनकरणेहारा यहअहंकाररूप महान्पर्वतरहैहै ॥ हेभगवन्! इसतैंआदिलैकेअसंख्यातदुःख हमारेकूंदिनदिनविषेप्राप्तहोवैहैं ॥ और आपकास्वभाव अत्यंतदयालुहै ॥ यातैं तिनहमारेदुःखोंके श्रवणकरणेविषेभी आप समर्थनहींहो ॥ याकारणतैं आपकेसमीप मैं आपणेबहुतदुःखोंकावर्णननहींकरता ॥ और हेरुद्रभगवन्! तत्पुरुष अघोर सद्योजात वामदेव ईशान यहजोआपकेपंचमुखहैं ॥ तेपंचमुख क्रमतैं पूर्वादिकचारीदिशावोंविषे तथा मध्यविषे स्थितहैं ॥ तिनमुखोंविषेभी दक्षिणकेतरफका जोआपका अघोरनामामुखहै ॥ सोअघोरनामामुख अधिकारीजनोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेविषे अत्यंतकुशलहै ॥ ऐसेगुरुरूपअघोर

नामासुखकरिकै हमअधिकारीजनोंकूं यासंसारदुःखोंतैंरक्षाकरो ॥ तथा हमअधिकारीजनोंकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिकरिकै सर्वशोकों तैंरहितकरो ॥ तहांश्रुति ॥ तरतिशोकमात्मवित् ॥ अर्थयह ॥ आत्माकूंजानणेहारापुरुष सर्वशोकोंतैंरहितहोवैहै ॥ हेभगवन्! ऐसासर्वशोकोंकीनिवृत्तिकरणेहाराआत्मज्ञान हमअधिकारीजीवोंकूं जबपर्यंत नहींप्राप्तहोवै ॥ तबपर्यंत जैसे अन्यपापीजीवोंके पुत्रादिकप्रियपदार्थोंकूं आप मृत्युरूपहोइकैहननकरोहो ॥ तैसे हमअधिकारीजनोंके पुत्रादिकप्रियपदार्थोंकूं आप मृत्युरूपहोइकै मतहननकरो ॥ तथा हमअधिकारीजनोंके पुत्रपौत्रादिकसंबंधियोंविषे तथा गौअश्वादिकपशुवोंविषे किसीरोगादिकउपद्रवोंकी उत्पत्तिमतकरो ॥ हेभगवन्! आप साक्षात् मोक्षकीप्राप्तिकरणेहारेहो ॥ यातैं आपकेआगे पुत्रादिकअनात्मपदार्थोंकेरक्षाकरणेकीप्रार्थनाकरणा यद्यपि हमारेकूंउचितनहींहै ॥ तथापि तिनपुत्रादिकप्रियपदार्थोंकेवियोगतैं हमअधिकारीजनोंकेचित्तविषे क्षोभकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ताक्षोभवालेचित्तविषे आपकाध्यानहोइसकैनहीं ॥ याकारणतैं हमारेमृत्युतेंपूर्व हमारेप्रियपुत्रोंकूं तथा हमारेप्रियभ्रातावोंकूं तथा हमारेअग्नियोंकूं तथा हमारेऊपरिउपकारकरणेहारेराजादिकोंकूं आप मृत्युरूपहोइकैहननमतकरो ॥ किंतु तिनसंपूर्णप्रियपदार्थोंकूं आप दीर्घ आयुष्यवालाकरो ॥ हेभगवन्! यद्यपि आप स्वभावतैंदयालुहो ॥ यातैं हमअधिकारीजनोंकेपुत्रादिकप्रियपदार्थोंकूं आप कदाचित्भी हननकरतेनहीं ॥ उलटा तिनपुत्रादिकप्रियपदार्थोंकूं आप दीर्घआयुष्यकीप्राप्तिकरतेहो ॥ यातैं आपके आगे तिनपुत्रादिकप्रियपदार्थोंकेरक्षाकीप्रार्थनाकरणी हमअधिकारियोंकूं उचितनहींहै ॥ तथापि ताआपकेदयालुस्वभावकाही हम अनुवादकरतेहैं ॥ पूर्वसिद्धअर्थका पुनःकथनकरणा याकानाम अनुवादहै ॥ हेभगवन्! जिसधनधान्यादिकपदार्थोंकरिकै युक्तहुए हमअधिकारीजन सुखपूर्वक आपकाआराधनकरैं ॥ तिसधनधान्यादिकपदार्थोंकरिकैयुक्त हमअधिकारीजनोंकूं आपकरो ॥ हेसंन्यासियो! इसप्रकार यहअधिकारीपुरुष जबी तारुद्रभगवान्कीप्रार्थनाकरैहैं ॥ तबी सोरुद्रभगवान् तिनअधिकारीजनोंऊपरि प्रसन्नहोइकै तिनअधिकारियोंकेप्रति भोग मोक्ष यादोनोंकीप्राप्तिकरैहैं ॥ यातैं जिनअधिकारीजनोंकूं भोगमोक्ष दोनोंकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तिनअधिकारीजनोंनैं तारुद्रभगवान्कीप्रार्थना अवश्यकरणी ॥ हेसंन्यासियो! शतशोपिपथ्यंवक्तव्यं॥

अर्थयह ॥ जोपदार्थ अधिकारीजनोंकेहितकासाधनहोवै ॥ तापदार्थकूं अनेकप्रकारकरिकै शास्त्रवेत्तापुरुषनैं कथनकरणा ॥ याके विषे कोईभीपुनरुक्तिदोष होवैनहीं ॥ याप्रकारकानियम शास्त्रविषे कथनकऱ्याहै ॥ यातैं अधिकारीजनोंकेप्रति भोगमोक्षकीप्राप्ति करणेहारा जोपरमात्मादेवहै ॥ तापरमात्मादेवकाउपदेश मैंश्वेताश्वतरमुनि पुनःतुमारेप्रतिकरताहूं ॥ तुम सावधानहोइकैश्रवण करो ॥ हेसंन्यासियो ! जैसे लोकप्रसिद्धवृक्षोंविषे पत्रोंकरिकै आच्छादित आम्रादिकफल गुह्यरहैहैं ॥ तैसे यावेदरूपीवृक्षविषे अविद्या विद्या यहदोनों गुह्यहोइकैरहैहैं ॥ तहां अग्निहोत्रादिककर्मोंकानाम अविद्याहै ॥ और ब्रह्मज्ञानकानाम विद्याहै ॥ और साकर्मरूपअविद्या याजीवोंकूं स्वर्गादिरूपअनित्यफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताकर्मरूपअविद्याकूं क्षरयानाम करिकैकथनकरैहै ॥ और साब्रह्मज्ञानरूपविद्या याअधिकारीजीवोंकूं मोक्षरूपनित्यसुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताब्रह्मज्ञानरूपविद्याकूं अक्षर अमृत यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ तेविद्याअविद्यादोनों मोक्षकेप्राप्तिकाहेतुहै ॥ तहां ब्रह्मज्ञानरूप विद्यातौ साक्षात् मोक्षकेप्राप्तिकाहेतुहै ॥ और कर्मरूपअविद्यातौ फलकीइच्छातैंरहितकरीहुई चित्तकीशुद्धिद्वारा मोक्षकेप्राप्तिकाहे तुहोवैहै ॥ तिनविद्याअविद्या दोनोंकेप्रवृत्तकरणेहारा तथा तिनदोनोंकेफलकेदेणेहारा सोरुद्रभगवान्हीहै ॥ हेसंन्यासियो! तेवि द्याअविद्यादोनों याजीवोंकेप्रति आपणेआपणेफलकूंनदेकरिकै नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तेविद्याअविद्यादोनों याजीवोंकेप्रति आपणेआपणेफलकूंदेकरिकै पश्चात् नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तिनविद्याअविद्याकूं अनंत यानामकरिकै कथनकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो ! साकर्मरूपअविद्या तथा ब्रह्मज्ञानरूपविद्या यहदोनों शिवभगवान्केप्रसादतैंही जीवोंकूंप्राप्तहो वैहैं ॥ दूसरेकिसीउपायकरिकै प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं तिनविद्याअविद्यादोनोंका सोरुद्रभगवान्ही ईश्वरहै ॥ और हेसंन्यासियो ! जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेशरीरोंकीउत्पत्तिकेकारण जेबीजहैं ॥ तिनसर्वबीजोंकूंआश्रयणकरिकै जोपरमा त्मादेव स्थितहोवैहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव आकाशादिकसर्वभूतोंकूं तथा सर्वबीजोंकूं आपणेतैंउत्पन्नकरैहै ॥ और विचित्रवर्ण वालाहोणेतैं श्रुतिविषे कपिलपदकरिकै कथनकऱ्याजोहिरण्यगर्भहै ॥ तथा सर्वपदार्थोंकाद्रष्टाहोणेतैं श्रुतिविषे ऋषिपदकरिकै

कथनकऱ्याजोहिरण्यगर्भहै ॥ जोहिरण्यगर्भ यास्थूलजगततैं पूर्वउत्पन्नभयाहै ॥ ऐसेहिरण्यगर्भकेप्रति जोपरमात्मादेव अर्थस
हितचारिवेदोंकूंदेकै नानाप्रकारकेज्ञानोंकरिकै भरणकरैहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव ताहिरण्यगर्भकूं यास्थूलजगत्कीउत्पत्तिकरणे
विषेसमर्थदेखेहै ॥ ऐसापरमात्मादेवही तत्त्वमसि यावाक्यविषेस्थित तत्पदकाअर्थरूपहै ॥ हेसंन्यासियो! सोपरमात्मादेव
प्रथम जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेयोनियोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तिनचारिप्रकारकेयोनियोंविषेभीएकएकयोनिकूं
एकविंशतिलक्षप्रकारका करैहै ॥ तेसंपूर्णयोनियांमिलिकै चौरासीलक्षयोनियांहोवैहैं ॥ तिनचौरासीलक्षयोनियोंविषेभी एकएक
योनिकूं अवांतरअनेकभेदकरिकै जालकीन्यांई अनेकप्रकारकाकरैहै ॥ इसप्रकार सृष्टिकालविषे सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरिकै सोपर
मात्मादेव प्रलयकालविषे तासंपूर्णजगत्कूं आपणेमायारूपक्षेत्रविषे लयकरैहै ॥ तिसतैंअनंतरसृष्टिकालविषे सोपरमात्मादेव
पुनःतामायारूपक्षेत्रतैं पूर्वकीन्यांई नानाप्रकारकेजगत्कूंउत्पन्नकरैहै ॥ तथा तिसजगत्केपालनकरणेहारे दिक्पालोंकूंउत्पन्नकरै
है ॥ इसप्रकार सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरिकै सोपरमात्मादेव सर्वजगत्काअधिपतिहोवैहै ॥ और हेसंन्यासियो! जैसे वृषभ भारकूं
उठावैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेव सर्वविश्वकेभारकूंधारणकरैहै ॥ तथा सोपरमात्मादेव सर्वजगत्केउपकारवासते सूर्यरूपहोइकै
पूर्वादिकदशदिशावोंकूं प्रकाशकरैहै ॥ और सोपरमात्मादेवही अनेकशरीरोंकूंउत्पन्नकरिकै तिनशरीरोंकेअनेकस्वभावोंकूं आपणे
विषेआरोपणकरिकै स्थितहोवैहै ॥ और पुत्रादिकप्रजाकेउत्पत्तिकरणेहारे जेस्त्रीपुरुषोंकेस्वभावहैं ॥ तिनस्वभावोंकूंधारणकरिकै
सोपरमात्मादेवही तिनोंकूं फलकीप्राप्तिकरैहै ॥ और सोपरमात्मादेवही नानायोनियोंकेशरीरोंकूं उत्तरउत्तरकालविषेपरिणामकी
प्राप्तिकरैहै ॥ जैसे कबी तौ यहशरीर बाल्यअवस्थावालाहोवैहै ॥ और कबी यहशरीर युवाअवस्थावालाहोवैहै ॥ और कबी यह
शरीर वृद्धअवस्थावालाहोवैहै ॥ इसप्रकार सोपरमात्मादेव याशरीरोंकूं अनेकप्रकारकेपरिणामोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ हेसंन्यासियो!
यहपरमात्मादेव सर्वपदार्थोंकाअधिष्ठानहै याअर्थविषे हम बहुतक्याकहैं ॥ किंतु नानाप्रकारकेस्वभाववालेयहसंपूर्णशरीर जिस
ब्रह्मांडकेगर्भविषेरहैहैं ॥ ताब्रह्मांडकूंभी यहपरमात्मादेवही धारणकरिरह्याहै ॥ तथा सोपरमात्मादेवही तिसब्रह्मांडवर्तीजीवोंकूं

आपणेआपणेकार्यविषेप्रवृत्तकरैहै ॥ हेसंन्यासियो ! इसप्रकार यासर्वजगत्काकारणरूप जोअद्वितीयब्रह्महै ॥ तिसअद्वितीयब्रह्मकूं मैंश्वेताश्वतरनामाऋषि तारुद्रभगवान्केअनुग्रहतैं साक्षात्कारकरताहूं ॥ कैसाहैसोब्रह्म? उपनिषद्रूप वेदकरिकै प्रतिपादितहै ॥ तथा सनातनहै ॥ तथा नानाप्रकारकेवृत्तिरूपज्ञानोंविषे स्वप्रकाशरूपकरिकैस्थितहै ॥ तथा शास्त्रविचारतैंरहितमूढपुरुषोंकरिकै दुर्विज्ञेयहै ॥ हेसंन्यासियो! जैसे मैंश्वेताश्वतरनामाऋषि तारुद्रभगवान्केप्रसादतैं तत्पदार्थरूपब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपकरिकैजानताहूं ॥ तैसे पूर्व हिरण्यगर्भभगवान् तथा इंद्रादिकदेवता तथा सनकादिकऋषि तारुद्रभगवान्केप्रसादतैं तास्वयंज्योतिसर्वज्ञपरमात्मादेवकूं आपणाआत्मरूपकरिकै जानतेभयेहैं ॥ तैसे इदानींकालविषेभी जोकोईबुद्धिमान्पुरुष तारुद्रभगवान्काआराधनकरैगा ॥ सोबुद्धिमान्पुरुषभी ताअद्वितीयब्रह्मकूं अवश्यजाणेगा ॥ हेसंन्यासियो ! इसप्रकार जेजेहिरण्यगर्भादिकदेववता तथा जेजेऋषि तथा जेजेमनुष्य ताअद्वितीयब्रह्मकूंजानतेभयेहैं ॥ तेसंपूर्णविद्वान् ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोइकै मोक्षरूप अमृतभावकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ इतनैंकरिकै आत्माकूं तत्पदार्थईश्वररूपकरिकैवर्णनकऱ्या ॥ अब तिसीआत्माकूं त्वंपदार्थजीवरूपकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो! जैसे स्वभावतैं उष्णस्पर्शतैंरहित तथा गंधतैंरहित जोजलहै ॥ सोजल जबी अग्निकेसंबंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोजल ताअग्निकेउष्णस्पर्शकूंप्राप्तहोवै ॥ और सोजल जबी पुष्पादिकोंकेसंबंधकूंप्राप्तहोवैहै तबी सोजल तापुष्पादिकोंकेगंधगुणकूंप्राप्तहोवैहै॥ तैसे वास्तवतैं सर्वधर्मोंतैंरहित जोनिर्गुणपरमात्मादेवहै॥ सोपरमात्मादेव जबी आपणेस्वरूपकेअज्ञानतैं जीवभावकूंप्राप्तहोइकै अंतःकरणादिकउपाधियोंके तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोआत्मादेव तिनअंतःकरणादिकउपाधियोंके कामक्रोधादिकधर्मोंकूं तथा सत्त्व रज तम यातीनगुणोंकूं आपणेविषेमानैहै ॥ तिसतैंअनंतर यहआत्मादेव रागपूर्वक पुण्यपापरूपकर्मोंकूंकरैहै ॥ और तापुण्यपापरूपअदृष्टद्वारा सुखदुःखरूपफलकूं तथा सुखदुःखकेसाधनोंकूं उत्पन्नकरिकै यहआत्मादेव तिसीअंतःकरणादिकउपाधियोंकेतादात्म्यअध्यासकरिकै तिससुखदुःखरूपफलकूंभोगैहै ॥ तिनशुभअशुभकर्मोंविषेभी उपासनारूपमानसकर्मकरिकै यहजीवात्मा देवयाननामाउत्तममार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ और अग्निहोत्रादिकपुण्यकर्मोंकरिकै यहजी

वात्मा पितृयाणनामामध्यममार्गद्वारा स्वर्गादिकलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकरिकै यहजीवात्मा तृतीयस्था
ननामामार्गद्वारा कीटपतंगादिकक्षुद्रशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार पुण्यपापकर्मकेवशतैं यहजीवात्मा निरंतर संसारविषेभ्रमण
करैहै ॥ हेसंन्यासियो ! यहआत्मादेव यद्यपि वास्तवतैं देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित सर्वत्रपरिपूर्णरूपहै ॥ तथापि अंगुष्ठमात्रहृद
यरूपउपाधिकेसंबंधतैं यहआत्मादेव अंगुष्ठमात्रपरिमाणवालाहोवैहै ॥ तथा सोआत्मादेव अहंकारकरिकै तथा मनकेसंकल्पोंकरि
कै युक्तहोवैहै ॥ तथा बुद्धिके परिणामवृत्तिरूपगुणोंकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ कैसेहैंतेवृत्तिरूपगुण ? मायाविशिष्टआत्माकरिकैरचितहैं ॥
यातैं आत्माकेभी तेगुणहैं ॥ तथा स्वप्नकेसमान मिथ्यारूपहैं ॥ ऐसेबुद्धिकेवृत्तिरूपगुणोंकूं प्रकाशकरणेहारा सोआत्मादेव सूर्यकी
न्यांई स्वयंज्योतिरूपहै ॥ हेसंन्यासियो ! यहआत्मादेव यद्यपि वास्तवतैंमहान्‌है ॥ तथापि अल्पपरिमाणवालीबुद्धिविषेस्थितहो
इकै यहआत्मादेव आराकेआग्रभागसमान अल्पपरिमाणवालाहोवैहै ॥ तहां चर्मकेभेदनकरणेहारी जाचर्मकारकीसूई है ताकानाम
आराहै ॥ हेसंन्यासियो ! इसप्रकार बुद्धिरूपउपाधिके तादात्म्यसंबंधतैं यहआत्मादेव जीवभावकूंप्राप्तहोइकै यद्यपि अविवेकी
पुरुषोंकीदृष्टिविषे निकृष्टभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथापि विवेकीमहात्मापुरुष याआनंदस्वरूपआत्माकूं सर्वतैंउत्कृष्टरूपकरिकैहीदे
खैहै ॥ हेसंन्यासियो ! ताबुद्धिविषेस्थितहोइकै यहजीवात्मा जिससूक्ष्मताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तासूक्ष्मताविषे कोईकसूक्ष्मदर्शीपुरुष
याप्रकारकादृष्टांत कथनकरैहै ॥ एककेशकाजोअग्रभागहै ॥ ताके एकशत १०० विभागकरियै ॥ ताशतविभागोंविषे एकविभाग
कूं पुनःएकशत १०० विभागकरियै ॥ सोएककेशकाविभाग जिससूक्ष्मपरिमाणवालाहोवैहै ॥ तिसी सूक्ष्मपरिमाणवाला यहजी
वात्माहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ! यहजीवात्माकूं जबपर्यंत आपणेवास्तवस्वरूपकाअज्ञानहोवैहै ॥ तबपर्यंतही यहजीवात्मा बुद्धिके
तादात्म्यसंबंधतैं याप्रकारकीअल्पताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जबी यहजीवात्मा तारुद्रभगवान्‌केप्रसादतैं आपणेकूंब्रह्मरूपकरिकै
जानैहै ॥ तबी कार्यसहितअज्ञानकेनिवृत्तहुए यहजीवात्मा परिपूर्णब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ! यहआत्मादेव यद्यपि
वास्तवतैं स्त्री पुरुष नपुंसक भावतैंरहितहै ॥ तथापि आपणेस्वरूपकेअज्ञानतैं यहआत्मादेव जिसजिसशरीरकूं तादात्म्यसंबंधक

रिकैग्रहणकरैंहै ॥ तिसतिसशरीररूपहोइकै प्रतीतहोवैंहै ॥ जैसे नटपुरुष स्त्रीआदिकोंकेवेशकूंधारणकरिकै स्त्रीआदिकरूपकरिकै प्रतीतहोवैंहै ॥ हेसंन्यासियो! शब्दस्पर्शादिकविषयोंकरिकैजन्य जोबाह्यभोगहै ॥ तथा मनकेसंकल्पकरिकैजन्य जोआंतरभोग है ॥ तथा सुखकेप्राप्तिकीजाइच्छाहै ॥ तथा नानाप्रकारकेअन्नजलकी जाप्राप्तिहै ॥ इत्यादिकअनेकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै यद्यपि यह देहादिकही वृद्धिकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तथापि तिनदेहादिकोंकेतादात्म्यअध्यासतें यहआत्मादेव तावृद्धिकूं आपणेविषेमानेहै ॥ तथा तिनदेहादिकोंकीवासनाकरिकै यहआत्मादेव अनेकजन्मोंकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ हेसंन्यासियो! याजीवोंकूं पूर्वलीवासनाकेअनुसार जोजन्ममरणवृद्धिआदिकप्राप्तहोवैंहैं ॥ ताकेविषे पुण्यपापरूपकर्मभी निमित्तकारणहै ॥ तापुण्यपापकर्मकेअनुसार यहजीवात्मा सुखदुःखकीप्राप्तिवासतें यासंसारविषे नानाप्रकारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ कबीतौ यहजीवात्मा नपुंसकशरीरकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ और कबी स्त्रीशरीरकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ और कबी पुरुषशरीरकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ और कबी स्वर्गादिकलोकोंविषे देवताशरीरकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ इसप्रकार पुण्यपापकर्मकेवशतें यहजीवात्मा अनेकजन्मोंविषेभ्रमणकरैंहै ॥ हेसंन्यासियो! जैसे यालोकविषे नटपुरुष अनेकप्रकारकेरूपोंकूं धारणकरैंहै ॥ तैसे यहआत्मादेवभी बुद्धिआदिकोंकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइकै तापुण्यपापकेवशतें कबी हस्तीआदिकस्थूलशरीरोंकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ और कबी चीटीआदिकसूक्ष्मशरीरोंकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ हेसंन्यासियो! याजीवोंकूं निकृष्टभावकीप्राप्तिकरणेहारा जोआपणेस्वरूपकाअज्ञानहै ॥ ताअज्ञानकूं जबी यहजीवात्मा आपणेविषेआरोपणकरैंहै ॥ तबी यहजीवात्मा श्रोत्रादिक एकादशइंद्रियोंकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइकै नानाप्रकारकेशरीरोंकूंग्रहणकरैंहै ॥ हेसंन्यासियो! याआनंदस्वरूपआत्मादेवकूं वास्तवतेंजन्ममरणादिकोंकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातें पूर्वहमनैं कलिलादिकबीजोंविषेस्थित जिसपरमात्मादेवका कथनकऱ्याथा ॥ सो तत्पदकाअर्थरूप परमात्मादेव यात्वंपदकेअर्थरूपआत्मातें भिन्ननहींहै ॥ किंतु यहजीवात्मा ब्रह्मरूपहीहै ॥ ऐसे आत्मादेवकेज्ञानतें यहअधिकारीजन कामक्रोधादिकसर्वपाशोंतेंमुक्तहोवैंहै ॥ हेसंन्यासियो! जोआत्मादेव पूर्वइंद्रनैं प्रतर्दनराजाकेप्रति प्राणप्रज्ञारूपकरिकैकथनकऱ्याथा ॥ सोआत्मादेव याअधिकारीजीवोंकूं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअभेदज्ञानतेंही प्राप्त

होवैहै ॥ याअभेदज्ञानतैंविना अन्यकिसीउपायकरिकै सोआत्मादेव प्राप्तहोवैनहीं ॥ और हेसंन्यासियो! प्राण १ श्रद्धा २ आकाश ३ वायु ४ तेज ५ जल ६ पृथिवी ७ श्रोत्रादिकदशइंद्रिय ८ मन ९ अन्न १० वीर्य ११ तप १२ मंत्र १३ यज्ञादिककर्म १४ लोक १५ नाम १६ याषोडशकलावोंकूं सोपरमात्मादेवही सृष्टिकेआदिकालविषेउत्पन्नकरैहै ॥ तथा यासर्व जगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकाकारणभी सोपरमात्मादेवहीहै ॥ और यहस्वयंज्योतिपरमात्मादेव सर्वमंगलोंकाभीमंगलरूपहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं शिव यानामकरिकैंकथनकरैहै ॥ ऐसेअद्वितीयपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मरूपकरिकै साक्षात्कारकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीररूपबंधनकापरित्यागकरिकै मोक्षकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ हेसंन्यासियो! यापूर्वग्रंथविषे तापरमात्मादेवकूं सर्वजगत्काकारणरूपकरिकै हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्या ॥ अब वादियोंकेमतखंडनपूर्वक तिसीपरमात्मादेवकाउपदेश मैंश्वेताश्वतरनामामुनि तुमारेप्रति करातहूं ॥ तुम सावधानहोइकैश्रवणकरो ॥ हेसंन्यासियो! कोईकबुद्धिमान्पुरुष काल स्वभाव नियति यदृच्छा भूत प्रकृति पुरुष इनोंकूंही जगत्काकारणकहेहैं॥ तिनवादियोंकेमतका विस्तारतैंनिरूपण पूर्वकहिआयेहैं ॥ परंतु तेकालादिकोंकूंकारणमानणेहारेवादी वेदभगवान्केयथार्थतात्पर्यकूं जाणिसकतेनहीं ॥ याकारणतैंही मोहकूंप्राप्तहोइकै तेवादी याजगत्केकारणविषे नानाप्रकारकाविवादकरैहैं ॥ जैसे जन्मकेअंधपुरुष दुग्धादिकोंकेरूपविषे विवादकरैहैं ॥ तैसे तेवादीभी परस्परविवादकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो! तिनवादियोंकेवचन प्रमाणतैं तथायुक्तितैंरहितहै ॥ याकारणतैं वेदकेयथार्थतात्पर्यकूंजानणेहारेबुद्धिमान्पुरुषोंनें तिनवादियोंकेवचन कदाचित्भी नहींग्रहणकरणे ॥ अब तिनवादियोंकेमतविषे प्रमाणकाअभाव निरूपणकरैहै ॥ हेसंन्यासियो! कालस्वभावादिक जगत्केकारणहैं याअर्थविषे कोई वेदकावचनरूपशब्दप्रमाणतौहैनहीं॥ और सोसर्वजगत्काकारण नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै ग्रहणकऱ्याजावैनहीं ॥ याकारणतैं ताजगत्केकारणविषे लोकोंकाप्रत्यक्षप्रमाणभी संभवैनहीं ॥ और प्रत्यक्षप्रमाणकूंआश्रयणकरिकैही अनुमानप्रमाणकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ यातैं ताप्रत्यक्षप्रमाणकेअभावहुए ताकारणविषे अनुमानप्रमाणभीसंभवैनहीं ॥ यातैं तिनवादियोंकेमत प्रमाणतैंरहितहै ॥ अब

तिनवादियोंकेमतविषे युक्तियोंकाअभाव निरूपणकरैंहैं ॥ हेसंन्यासियो ! तेवादी जिसकालस्वभावादिकोंकूंकारणमानैंहैं ॥ तेका लस्वभावादिकपदार्थ जडरूपहैं ॥ याकारणतैं चेतनआत्मातैंविना स्वतंत्र तिनकालादिकोंविषे कारणरूपतासंभवैनहीं ॥ किंवा यालोकविषे जोजोपदार्थ जडहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ कार्यरूपहीहोवैहै ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ जडरूपहैं यातैंकार्यरूपभीहैं ॥ तैसे यहकालस्वभावादिककारणभी जडरूपहैं यातैं कार्यरूपभीअवश्यहोवैंगे ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ किसीकारणकरिकैजन्य अवश्यहोवैहै ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ कार्यरूपहोणेतैं मृत्तिकातंतुआदिककारणोंकरिकैज न्यहोवैहैं ॥ तैसे तिनकालस्वभावादिककार्योंकाभी कोईदूसराकारण कल्पनाकरणाहोवैगा॥ यातैं तिनकालादिकोंकेकारणतैंही यासर्वजगत्कीउत्पत्तिसंभवहोइसकैहै ॥ तिसकार्यकारणकेमध्यविषे कालादिकोंकूंजगत्काकारणमानणा निष्फलहै ॥ यातैं तिन वादियोंकामत युक्तितैंभीरहितहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! वेदरूपसूर्यकेविद्यमानहुएभी तिनवादियोंकूं याप्रकारकामोह किसवास तेहोवैहै ? समाधान ॥ हेसंन्यासियो ! याजगत्केकारणविषे तिनवादियोंका जोनानाप्रकारकाविवाद देखणेविषेआवैहै ॥ सोकोई आश्चर्यरूपनहींहै ॥ काहेतैं ? जिसपरमात्मादेवकीमायाशक्ति यासंसाररूपचक्रकूंभ्रमणकरावैहै ॥ सा अद्भुतप्रभाववालीमाया शक्ति तिनवादियोंकूंभी मोहकीप्राप्तिकरैहै ॥ हेसंन्यासियो ! जैसे वायु आकाशविषे तूलकूंभ्रमणकरावैहै ॥ तैसे यहपरमात्मा देव आपणेमायाशक्तिकरिकै बुद्धिमान्पुरुषोंकेभी बुद्धिकूं भ्रमणकरावैहै ॥ और हेसंन्यासियो ! जिसज्ञानस्वरूपपरमात्मादेवक रिकै यहसंपूर्णजगत्व्याप्तहै ॥ और जोपरमात्मादेव कालकाभीकालहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव सत्यकाम सत्यसंकल्प इत्यादि कगुणोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव आपणेस्वप्रकाशज्ञानकरिकै सर्वजगत्कूंजाणैहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव याजीवोंके प्रति शुभअशुभकर्मका सुखदुःखरूपफलदेवैहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव आकाश वायु तेज जल पृथिवी यापंचभूतरूपकरिकै विवर्तभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां आपणेस्वरूपका नपरित्यागकरिकै जोअन्यरूपतैंप्रतीतिहै याकानाम विवर्तहै ॥ जैसे रज्जु आप णावास्तवस्वरूपका नपरित्यागकरिकै सर्पादिकरूपतैं प्रतीतहोवैहै॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी आपणेवास्तवस्वरूपका नपरित्या

गकरिकै आकाशादिकरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ ऐसापरमात्मादेव मुमुक्षुजनोंनैं सर्वदाचिंतनकरणेयोग्यहै ॥ हेसंन्यासियो ! जिस पुरुषकूं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष प्रथम फलकीइच्छातैंरहितहोइकै यज्ञादिककर्मोंकरिकै आपणेअंतःकरणकूं शुद्धकरै ॥ ताअंतःकरणकीशुद्धितैंअनंतर सोअधिकारीपुरुष मनसहितनेत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेव्यापारतैंनिवृत्तकरै ॥ ताइंद्रियोंकेनिरोधतैंअनंतर सोअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं याआनंदस्वरूआत्माकूं साक्षात्कारकरै ॥ कैसाहैयहआत्मादेव? अविद्याएकतैंरहितहै ॥ तथा पुण्यपाप यादोनोंकर्मोंतैंरहितहै ॥ तथा सत्व रज तम यातीनगुणोंतैंरहितहै ॥ तथा आकाशादिकपंचभूत अव्यक्त बुद्धि अहंकार याअष्टोंतैंरहितहै ॥ अथवा ॥ पंचमअध्यायविषे कथनकरेजे इंद्रियरूपअष्टग्रह तथा विषयरूपअष्ट अतिग्रह तिनोंतैंरहितहै॥ तथा कालतैंरहितहै॥ तथा बुद्धिकेवृत्तिरूपगुणोंतैंरहितहै॥ ऐसेआत्मादेवकूं तेशुद्धचित्तवालेअधिकारीजन साक्षात्कारकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो ! इसप्रकार वास्तवतैंसर्वधर्मोंतैंरहितहुआभी यहआत्मादेव सत्व रज तम यातीनगुणोंकेअभिमान करिकै पुण्यपापरूपकर्मोंकूंकरैहै ॥ तथा सुखदुःखकीप्राप्तिवासते यहआत्मादेव आंतरपदार्थोंकूं तथा बाह्यपदार्थोंकूं आपणेआपणे व्यापारविषेजोडैहै ॥ और सोईहीआत्मादेव जबी आपणेवास्तवस्वरूपविषे तिनसर्वपदार्थोंकेअभावकूंनिश्चयकरैहै ॥ तबी ताआत्मज्ञानरूपअग्निकरिकै तिनसर्वकर्मोंकूंक्षयकरैहै ॥ तिनकर्मोंकेक्षयहुए यहविद्वान्पुरुष तिनसर्वअनात्मपदार्थोंतैंभिन्नरूपकरिकै आपणेब्रह्मस्वरूपकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ! जोमायाकाआश्रयरूप परमात्मादेव याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व कारणरूपहोइकैस्थितहोवैहै ॥ तथा आपणेचिदाभासकेसंबंधकरिकै कार्यसहितअविद्याकूं चेतनकीन्यांईकरैहै ॥ तथा जिसपरमात्मादेवकूं महात्मापुरुष तीनकालोंतैंरहित तथा प्राणादिकषोडशकलावोंतैंरहित शुद्धरूपकरिकैदेखैहैं ॥ तथा जोपरमात्मादेव सर्वजगत्काआत्मारूपहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव इंद्रादिकदेवतावोंकरिकै स्तुतिकरणेयोग्यहै ॥ तथा सर्वप्राणियोंकेचित्तविषेस्थितहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवकूं प्रथम उपासनाकरिकै यहअधिकारीजन सर्वविघ्नोंतैंरहितहोवैहै॥तथा तागुरुशास्त्रकेउपदेशतैं आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोइकैयह अधिकारीजन ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ! जोपरमात्मादेव यासंसाररूपवृक्षतैं तथाकालतैं तथा अविद्यातैं परेस्थित

है ॥ तथा जिसपरमात्मादेवतें यहसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव स्मरणमात्रकरिकै याजीवोंकूं धर्मकीप्राप्तिकरै है ॥ तथा पापकीनिवृत्तिकरैहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव ऐश्वर्य धर्म यश श्री ज्ञान वैराग्य याषट्भगोंकाईश्वरहै ॥ अथवा जो परमात्मादेव याजगत्कीउत्पत्ति स्थिति जीवोंकापरलोकविषेगमन तथापरलोकतैंआगमन विद्या अविद्या याषट्भगोंकाईश्वर है ॥ कार्यकेकरणेविषे तथा नकरणेविषे तथा अन्यथाकरणेविषे जोसमर्थहोवै ताकानामईश्वरहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव याजीवोंके पुण्यपापकर्मोंकास्वामीहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ तथा सर्वप्राणियोंकेहृदयदेशविषे जाका निवासहै ॥ तथा स्वयंज्योतिअद्वितीयरूपहै ॥ तथा सर्वविश्वकाईश्वरहै ॥ तथा सूर्यादिकसर्वप्रकाशोंकाआश्रयरूपहै ॥ ऐसे परमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मरूपकरिकै साक्षात्कारकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष कृतकृत्यभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेसंन्यासियो! जोपरमात्मादेव ब्रह्मादिकईश्वरोंकाभीईश्वरहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव इंद्रादिकदेवतावोंकाभीदेवताहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव मरीचिआदिकप्रजापतियोंकाभीपतिहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव भूरादिकचतुर्दशलोकोंकूं आपणीआज्ञाविषेचलावणेहाराहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवकूं हमअधिकारीजन केवल वेदकेवचनोंतैंहीजानेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! ताअद्वितीयआत्मादेवकूं वेदकेवचन किसप्रकारबोधनकरैहैं? समाधान ॥ हेसंन्यासियो! तापरमात्मादेवका यहस्थूलप्रपंचरूपकार्यभीकोईहैनहीं ॥ तथा तापरमात्मादेवका नेत्रादिकइंद्रिययुक्तसूक्ष्मशरीररूपकारणभीकोईहैनहीं ॥ और यालोकविषे तापरमात्मादेवकेसमान कोईभीपदार्थहैनहीं ॥ जबी तापरमात्मादेवकेसमानभी कोईपदार्थनहींभया ॥ तबी तापरमात्मादेवतैंअधिक कौनपदार्थहोवैगा? और हेसंन्यासियो! तापरमात्मादेवकी एकमायाशक्ति सर्वत्रप्रसिद्धहै ॥ सामायाभी प्रथम ज्ञानशक्ति क्रियाशक्तिकेभेदतें दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां साज्ञानशक्ति प्रमाणसंशयादिकोंकेभेदकरिकै अनेकप्रकारकीहोवैहै ॥ इसीप्रकार साक्रियाशक्तिभी बलवीर्यादिकोंकेभेदकरिकै अनेकप्रकारकीहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो! जैसे यालोकविषे पिता आपणेपुत्रादिकोंकापालनकरैहै ॥ याकारणतें सोपिता तिनपुत्रादिकोंका पतिहै ॥ और यालोकविषे महाराजा ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र याचारिवर्णोंकूं आपणेआपणेधर्ममर्यादाविषेचलावैहै ॥

याकारणतें सोमहाराजा तिनचारिवर्णोंका नियंताहै ॥ और यालोकविषे पर्वतादिकोंमें धूमकूंदेखिकै यालोकोंकूं अग्निकाज्ञानहोवै है ॥ याकारणतें सोधूम अग्निकेजनावणेहारालिंगहोवैहै ॥ तैसे यापरमात्मादेवका कोईपतिहैनहीं ॥ तथा कोईनियंताहैनहीं ॥ तथा कोईलिंगहैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ सोपरमात्मादेव अंतर्यामिरूपकरिकै सर्वजगत्कापालनकरैहै ॥ याकारणतें तापरमात्मादेवकाको ईपतिहैनहीं ॥ और सोपरमात्मादेव ब्रह्मादिकदेवतावोंकूंभी आपणीआज्ञाविषेचलावैहै ॥ याकारणतें तापरमात्मादेवका कोईनियं ताभीनहींहै ॥ और सोपरमात्मादेव असंगनिर्गुणहै ॥ याकारणतें तापरमात्मादेवका कोईजनावणेहारालिंगभीनहींहै ॥ हेसंन्या सियो! सोपरमात्मादेव सर्वजगत्काकारणहै ॥ तथा सोपरमात्मादेव नेत्रादिकइंद्रियोंके सूर्यादिकदेवतावोंकाभी नियंताईश्वर है ॥ याकारणतें तापरमात्मादेवका कोईजनकहैनहीं ॥ तथा तापरमात्मादेवका कोईनियंताईश्वरभीनहींहै ॥ हेसंन्यासियो! जै से तंतुनाभनामाजंतु आपणेतंतुवोंकरिकै गृहकूंव्याप्तकरैहै ॥ तैसे जोपरमात्मादेव मायाजन्यपंचभूतरूपतंतुवोंकरिकै अस्मदादि कजीवोंकूंव्याप्तकरिकै स्थितहुआहै ॥ ऐसास्वयंज्योतिअद्वितीयपरमात्मादेव हमअधिकारीजनोंकेचित्तविषे आपणेनिर्गुणस्वरूप काप्रकाशकरै ॥ तात्पर्ययह ॥ हमारेचित्तकीवृत्तिविषेआरूढहोइकै सोपरमात्मादेव हमारेअज्ञानकूंनिवृत्तकरै ॥ और हेसंन्या सियो! जैसे आकाश सर्वत्रव्यापकहै ॥ तैसे यहस्वयंज्योतिपरमात्मादेवभी सर्वभूतोंविषेव्यापकहै ॥ और जैसे अग्निसर्व काष्ठोंकेअंतर गुह्यहोइकैरहैहै ॥ तैसे यहस्वयंज्योतिआत्मादेवभी सर्व प्राणियोंविषे गुह्यहोइकैरहैहै ॥ और सोपरमात्मादे वही हमजीवोंकेप्रति पुण्यपापरूपकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकूंदेवैहै ॥ और सोपरमात्मादेवही सर्वजीवोंके शरीरोंविषेआत्मा रूपकरिकैनिवासकरैहै ॥ और सोपरमात्मादेवही चैतन्यरूपहै ॥ याकारणतें सोपरमात्मादेव सर्वबुद्धिवृत्तियोंका द्रष्टा साक्षि रूपहै ॥ हेसंन्यासियो! तापरमात्मादेवविषे जोद्रष्टासाक्षिपणाहै ॥ सोभी बुद्धिआदिकउपाधियोंकेसंबंधतैंहीहै ॥ वास्तवतैंताप रमात्मादेवविषे साक्षिपणाभीहैनहीं ॥ याकारणतें सोपरमात्मादेव केवलनिर्गुणरूपहै ॥ तथा सर्वसंगतैंरहितहै ॥ हेसंन्यासियो! स्वभावतें प्रवृत्तहोणेमैंअसमर्थ जेयहअनेकजडपदार्थहैं ॥ तिनसर्वजडपदार्थोंकूं जोचेतनपरमात्मादेव आपणेआपणेकार्यवि

षे स्वतंत्र प्रवृत्तकरैहै ॥ तथा संपूर्णस्थूलशरीरोंका बीजरूपजोहिरण्यगर्भहै ॥ ताहिरण्यगर्भकूं जोपरमात्मादेव सूक्ष्मउपाधिविषे प्रवेशकरिकै उत्पन्नकरैहै ॥ और जोपरमात्मादेव एकही सर्वजगत्कीउत्पत्तिकरैहै ॥ ऐसे परमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मरूपकरिकैसाक्षात्कारकरै हैं ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंकूंही सर्वदुःखोंकीनिवृत्तिपूर्वक मोक्षरूपनित्यसुखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ताआत्मज्ञानतैंरहित इतरजीवोंकूं तानित्यसुखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं मोक्षकीइच्छावालेअधिकारीजनोंनैं ताआत्मसाक्षात्कारकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ हेसंन्यासियो! यालोकविषे नित्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जेआकाशादिकहैं ॥ तिनआकाशादिकनित्यपदार्थोंकाभी जोपरमात्मादेव नित्यरूपहै ॥ तथा यालोकविषे चेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध जेप्रमाताजीवहैं ॥ तिनचेतनप्रमातावोंकाभी जोपरमात्मादेव चेतनरूपहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसपरमात्मादेवकी नित्यताकूं तथा चेतनताकूं अंगीकारकरिकै अनित्यजडरूपपदार्थभी नित्यचेतनरूपहोइकैप्रतीतहोवैहै ॥ और जिसपरमात्मादेवकेस्वरूपभूतसुखकूं अधिकारीजन ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकै प्राप्तहोवैहैं ॥ ऐसापरमात्मादेव जबी याअधिकारीजनोंकूं आत्मरूपकरिकैसाक्षात्कारहोवैहै ॥ तबी याअधिकारीजनोंकी अविद्या तथा अविद्याजन्यकामक्रोधादिकसर्वपाश छेदनकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेसंन्यासियो! ऐसेआत्मादेवकेप्राप्तिके दोसाधनहोवैहैं ॥ एकतो विचाररूपसांख्यसाधनहै ॥ और दूसरा योगसाधनहै ॥ तहां प्रथम विचाररूपसांख्यसाधनकूं तुम श्रवणकरो ॥ हेसंन्यासियो! यहमुमुक्षुजन ताआत्मादेवकीप्राप्तिवासते याप्रकारकाचिंतनकरै ॥ शास्त्रवेत्ताविद्वान्पुरुष ताअद्वितीयब्रह्मकूं मनवाणीकाअविषयकहेहैं ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मकूं मैंअधिकारीजन किसप्रकारजानौंगा? यातैं प्रथम मैं याप्रकारकाविचारकरौं ॥ सोब्रह्मरूपसुख मेरेकूं प्रतीतहोताहै ॥ अथवा नहींप्रतीतहोताहै ॥ और ताब्रह्मरूपसुखकेप्रतीतहुएभी सोब्रह्मरूपसुख मेरेकूं प्रकाशरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ अथवा सोब्रह्मरूपसुख मेरेकूं अप्रकाशरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ अथवा सोब्रह्मरूपसुख मेरेकूं विपरीतरूपकरिकै प्रतीतहोवैहै ॥ और वास्तवतैं ताब्रह्मरूपसुखकूं प्रकाशरूपताहुएभी सोब्रह्मरूपसुख मेरेकूंघटादिकपदार्थोंकीन्यांई विषयरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ अथवा सोब्रह्मरूपसुख मेरेकूं अविषयरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै॥ हेसंन्यासियो! आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवास

ते सोमुमुक्षुजन याप्रकारकाविचारकरै ॥ परंतु याप्रकारकाविचार सोमुमुक्षुजन गुरुकेउपदेशतैंपूर्वनहींकरै ॥ किंतु श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरु जबी यामुमुक्षुजनकेप्रति तू आनंदस्वरूपआत्मा ब्रह्मरूपहीहै याप्रकारकाउपदेशकरै ॥ तबीही सोमुमुक्षुजन याप्रकारका विचारकरै ॥ अब पूर्वकहेविकल्पोंविषे एकअर्थकेनिश्चयकरणेवासते ताविचारका स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो! गुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रकाश्रवणकरिकै यहअधिकारीजन आपणेअसंभावनाकीनिवृत्तिवासते याप्रकारका विचाररूपमननकरै ॥ श्रीगुरुनैं हमारेप्रति उपदेशकऱ्याजोआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ सोआत्मस्वरूपआनंद चैतन्यरूपप्रकाशतैंभिन्नहै अथवा अभिन्नहै? तहां सोआत्मस्वरूपआनंद चैतन्यरूपप्रकाशतैंभिन्नहै यहप्रथमपक्षतौसंभवैनहीं ॥ काहेतें? सोआनंद प्रकाशतैंभिन्नहै याप्रथमपक्षविषेभी यहविचारकऱ्याचाहिये ॥ आनंद प्रकाश यहदोनोंहीनित्यहैं ॥ अथवा तिनदोनोंविषे एकनित्यहै एकअनित्यहै ॥ तहां आनंद प्रकाश यहदोनोंनित्यहैं यहप्रथमपक्ष जोअंगीकारकरिये तौ जैसे काल आकाश यादोनोंका परस्पर संयोगसंबंध तथा समवायसंबंध होवैनहीं ॥ तैसे निरवयवपरिपूर्णरूप जेआनंदप्रकाशहैं ॥ तिनदोनोंकाभी परस्पर संयोगसंबंध तथा समवायसंबंध संभवैनहीं ॥ तैसे आनंद प्रकाश यादोनोंका परस्पर तादात्म्यसंबंधभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें? जिनदोपदार्थोंविषे एकपदार्थ कल्पितहोवैहै ॥ तिनदोनोंपदार्थोंकाही परस्पर तादात्म्यसंबंधहोवैहै ॥ जैसे घटरूपकार्यका तथा मृत्तिकारूपकारणका परस्पर तादात्म्यसंबंधहै ॥ तहां घटरूपकार्यतौ कल्पितहै ॥ और मृत्तिकारूपकारण सत्यहै ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माका तथा चैतन्यरूपप्रकाशका जोपरस्पर तादात्म्यसंबंध अंगीकारकरिये तौ तिनदोनोंविषेभी एककूंकल्पितमान्याचाहिये ॥ तहां आनंदस्वरूपआत्माकूं कल्पितमानणा यहवार्तातौसंभवैनहीं ॥ काहेतें? जोकदाचित् सोआनंदस्वरूपआत्मा कल्पितहोवैगा तौ कृतनाश अकृताभ्यागमरूप दोनोंदूषणोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तहां कऱ्येहुएपुण्यपापरूपकर्मोंका जोफलकेभोगतैंविनाहीनाशहै ताकानाम कृतनाशरूपदोषहै ॥ और नकऱ्येहुएपुण्यपापकर्मोंका जोसुखदुःखरूपफलकाभोगहै ताकानाम अकृताभ्यागमरूपदोषहै ॥ यातैं ताआनंदस्वरूपआत्माविषेतौ कल्पितरूपतासंभवैनहीं ॥ तैसे चैतन्यरूपप्रकाशविषेभी कल्पितरूपतासंभवैनहीं ॥ काहेतें? सोचैतन्यरूपप्रकाश

जोकदाचित् कल्पितहोवै तौ ताप्रकाशतैंपूर्व ताआनंदस्वरूपआत्माकीसिद्धिनहींहोवैगी ॥ यातैं ताचैतन्यरूपप्रकाशविषेभी कल्पितरूपतासंभवैनहीं ॥ किंवा जैसे घटविषे रूपादिकगुणरहेहैं ॥ तैसे ताआनंदस्वरूपआत्माविषे सोचैतन्यरूपप्रकाश गुणरूपहोइकै रहेहैं ॥ याप्रकार जोअंगीकारकरिये ॥सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? साक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च ॥ याश्रुतिविषे ताआनंदस्वरूपआत्माकूं सर्वगुणोंतैंरहित निर्गुणकह्याहै ॥ यातैं तानिर्गुणआत्माविषे प्रकाशरूपगुणसंभवैनहीं ॥ अब युक्तियोंकरिकैभी ताप्रकाशविषे गुणरूपताकाखंडनकरैहैं ॥ सोप्रकाशरूपगुण निर्गुणआत्माविषेरहेहै ॥ अथवा सगुणआत्माविषेरहेहै ॥ तहां निर्गुणआत्माविषे सोप्रकाशरूपगुणरहेहै यहप्रथमपक्ष जोअंगीकारकरिये तौ जैसे मेरेमुखविषेजिह्वानहींहै याप्रकारकावचन वदतोव्याघातदोषवालाहोवैहै ॥ तैसे निर्गुणआत्माविषे प्रकाशरूपगुणरहेहै याप्रकारकावचनभी वदतोव्याघातदोषवालाहोवैगा ॥ और सगुण आत्माविषे सो प्रकाशरूपगुणरहेहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरिये तौ आत्माश्रय अन्योन्याश्रय चक्रिका अनवस्था या चारीदोषोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतें ? गुणवालेपदार्थकानाम सगुणहै ॥ तहां जासगुणआत्माविषे सोप्रकाशरूपगुणरहेहै ॥ सो आत्मा तिसीप्रकाशरूपगुणकरिकैसगुणहुआहै ॥ अथवा तिसप्रकाशरूपगुणतैंभिन्न किसीदूसरेगुणकरिकै सोआत्मा सगुण हुआहै ॥ तहांतिसीप्रकाशरूपगुणकरिकै सोआत्मा सगुणहुआहै यहप्रथमपक्ष जोअंगीकारकरिये तौ ताप्रकाशरूपगुणकूं आपणीस्थितिविषे आपणीअपेक्षारूप आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और ताप्रकाशरूपगुणतैंभिन्न किसीदूसरेगुण करिकै सगुणभावकूंप्राप्तभयाजोआत्माहै ॥ तासगुणआत्माविषे सोप्रकाशरूपगुणरहेहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरिये तौ याकेविषेभी यहविचारकन्याचाहिये ॥ सोदूसरागुणभी निर्गुणआत्माविषेरहेहै ॥ अथवा सगुणआत्माविषेरहेहै ? तहां सो दूसरागुण निर्गुणआत्माविषेरहेहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोअंगीकारकरिये तौ पूर्वकीन्यांई वदतोव्याघातदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और सोदूसरागुणभी सगुणआत्माविषेरहेहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरिये तौ याकेविषेभी यहविचारकन्याचाहिये ॥ तादूसरेगुणकरिकैसगुणभावकूं प्राप्तभया जोआत्माहै ॥ तासगुणआत्माविषे सोदूसरागुणरहेहै ॥ अथवा प्रथमप्रकाशरूपगु

णकरिकै सगुणभावकूंप्राप्तभयाजोआत्माहै तासगुणआत्माविषे सोदूसरागुणरहैहै ॥ अथवा किसीतीसरेगुणकरिकै सगुणभाव कूंप्राप्तभयाजोआत्माहै तासगुणआत्माविषे सोदूसरागुणरहैहै? तहां तादूसरेगुणविशिष्टआत्माविषे सोदूसरागुणरहैहै यहप्रथम पक्ष जोअंगीकारकरिये तौ पूर्वकीन्यांई आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और ताप्रथमगुणविशिष्टआत्माविषे सोदूसरागुणरहै है यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरिये तौ प्रथमगुणविशिष्टआत्माविषे सोदूसरागुणरहैहै ॥ और तादूसरेगुणविशिष्टआत्मा विषे सोप्रथमगुणरहैहै ॥ याप्रकारका अन्योन्याश्रयदोषहोवैगा ॥ और सोदूसरागुण किसीतीसरेगुणविशिष्टआत्माविषे रहैहै यहतीसरापक्ष जोअंगीकारकरिये तौ सोतीसरागुणभी जोआपणेकरिकैविशिष्टआत्माविषे आपरहैगा तौ आत्माश्र यदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और सोतीसरागुण जोद्वितीयगुणविशिष्टआत्माविषेरहैगा तौ अन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और सोतीसरागुण जोप्रथमगुणविशिष्टआत्माविषेरहैगा तौ सोतीसरागुण प्रथमगुणविशिष्टआत्माविषेरहैहै ॥ और सोप्रथमगु ण दूसरेगुणविशिष्टआत्माविषेरहैहै ॥ और सोदूसरागुण तीसरेगुणविशिष्टआत्माविषेरहैहै ॥ और सोतीसरागुण प्रथमगुणवि शिष्टआत्माविषेरहैहै॥याप्रकार चक्रकीन्यांई भ्रमणरूप चक्रिकादोषकीप्राप्तिहोवैगी॥ और सोतीसरागुण चतुर्थगुणविशिष्टआत्मा विषेरहैहै ॥ और सोचतुर्थगुण पंचमगुणविशिष्टआत्माविषेरहैहै ॥ याप्रकार आगेआगे गुणोंकेअंगीकारकरणेतैं अनवस्थादोषकी प्राप्तिहोवैगी ॥ याकारणतैं सोचैतन्यरूपप्रकाश गुणरूपकरिकै आत्माविषेरहैनहीं ॥ किंवा आत्मस्वरूपआनंद तथा चैतन्यरूपप्र काश यादोनोंकेमध्यविषे जोकदाचित् एकविषेनित्यपणाहोवै अथवा अनित्यपणाहोवै तौ तिनदोनोंका परस्परसंबंधहीसंभवैगा ॥ काहेतैं? यालोकविषे योग्यपदार्थका योग्यपदार्थकेसाथही संबंधहोवैहै ॥ योग्यपदार्थका अयोग्यपदार्थकेसाथ संबंधसंभवैनहीं ॥ यातैं तिनदोनोंकेसंबंधकीसिद्धिवासते तिनदोनोंकूं नित्यहीअंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ अथवा तिनदोनोंकूं अनित्यहीअंगीकारक ऱ्याचाहिये ॥ तहां आत्माकेअनित्यपणेविषे पूर्व कृतनाश अकृताभ्यागमरूप दोनोंदूषणोंकीप्राप्ति कथनकरीआयेहैं ॥ तथा प्रका शकेअनित्यपणेविषेभीपूर्वदूषणकहिआयेहैं ॥ और आनंदस्वरूपआत्मा तथाप्रकाश यादोनोंका जोपरस्पर संबंधहीनहींअंगी

कारकरिये ॥ तौ ताआनंदस्वरूपआत्माविषे सर्वदा प्रकाशकाअभाव अंगीकारकरणाहोवैगा ॥और ताआनंदस्वरूपआत्माविषे प्रकाशकाअभावमानणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ काहेतें ? ताआनंदस्वरूपआत्माविषे जोकदाचित् प्रकाशकाअभावहोवै ॥ तौ हमजीवोंकूंताआनंदस्वरूपआत्माकी अत्यंतप्रियरूपकरिकैप्रतीति नहींहोणीचाहिये ॥ और हमसर्वजीवोंकूं सोआनंदस्वरूपआत्मा अत्यंतप्रियरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ सोआत्मस्वरूपआनंद ताप्रकाशकेसाथ नित्यसंबंधवालाहै ॥ अब आनंद प्रकाश या दोनोंकेअभेदसिद्धकरणेवासते प्रथम ताआनंदविषे आत्मरूपताकरिकै नित्यतासिद्धकरैहैं ॥ सोआनंद जोकदाचित् आत्मातेंभिन्नहोवैगा ॥ तौ ताआनंदतेंभिन्नहुआ सोआत्माअत्यंतप्रियरूपनहींहोवैगा ॥ किंतु ताआनंदतेंभिन्नहुआ सोआत्मा दुःखरूपहोवैगा ॥ अथवा स्रक्चंदनादिकोंकीन्यांई सोआत्मा सुखकासाधनहोवैगा ॥ और जोपदार्थ दुःखरूपहोवैहै ॥ अथवा जोपदार्थ सुखकासाधनहोवैहै ॥ तापदार्थविषे जीवोंकी निरतिशयप्रीतिहोवैनहीं॥ यातें ताआत्माविषेभी जीवोंकी निरतिशयप्रीतिनहींहोणीचाहिये ॥और मेरा कदाचित्भीअभावनहींहोवै किंतु मैं सर्वदाविद्यमानहोवौं याप्रकारकी निरतिशयप्रीति सर्वलोकोंकीआत्माविषे देखणेमैंआवैहै ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ सोआनंद आत्मरूपही है॥ और आत्माकेउत्पत्तिकरणेहारा कोईकारणहैनहीं ॥ याकारणतें सोआत्मा नित्यहै॥ ऐसे नित्यआत्मातें सोआनंदअभिन्नहै ॥ याकारणतें सोआनंदभी नित्यहीहोवैगा ॥ और ऐसेआत्मरूपानित्यआनंदकेसाथ अनित्य प्रकाशकासंबंध संभवैनहीं ॥ याकारणतें ताप्रकाशकूंभी नित्यहीअंगीकारकरणाहोवैगा ॥ और जोकदाचित् ताप्रकाशकूंअनित्य अंगीकारकरिये ॥ तौ ताअनित्यप्रकाशका तानित्यआनंदकेसाथ संबंधहोवैगानहीं ॥ और प्रकाशकेसंबंधतेंविना वस्तुकाभानहोवैनहीं ॥ याकारणतें ताप्रकाशकेसंबंधतेंरहितहुआ सोआत्मस्वरूपआनंद हमजीवोंकूं कदाचित्भी प्रतीतनहींहोवैगा॥ और यालोकविषे अज्ञातपदार्थविषे किसीभीजीवकीप्रीतिहोतीनहीं ॥ किंतु ज्ञातपदार्थोंविषेही सर्वजीवोंकीप्रीतिहोवैहै ॥ यातें ताआनंदस्वरूप आत्माकेअज्ञातहुए हमजीवोंकूं ताआनंदस्वरूपआत्माविषे परमप्रीतिनहींहोवैगी ॥ और सर्वजीवोंकी आपणेआत्माविषे परमप्रीतिदेखणेमैंआवैहै ॥ याकारणतें ताप्रकाशकूंभी आत्मस्वरूपआनंदकीन्यांई नित्यहीअंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ किंवा जैसे घटादिक

पदार्थोंकेज्ञान नेत्रादिककरणोंकरिकैजन्यहोवैहै ॥ तैसे ताआत्मस्वरूपआनंदकाज्ञान किसीकरणकरिकैजन्यहोवैनहीं ॥ काहेतें ? जोपदार्थ जिसवस्तुकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोइकै तावस्तुकेज्ञानकूंउत्पन्नकरै हैं ॥ सोपदार्थ तावस्तुकेज्ञानविषे करणहोवैहै ॥ जैसे नेत्रादिकइंद्रिय घटादिकपदार्थोंकेसाथ संयोगादिरूपसंबंधकूंप्राप्तहोइकै ताघटादिकपदार्थों केज्ञानकूंउत्पन्नकरै हैं ॥ याकारणतैं तेनेत्रादिकइंद्रिय तिनघटादिकोंकेज्ञानविषे करणहोवैहैं ॥ तैसे आत्मस्वरूपआनंदकेसाथ जोकदाचित् किसीपदार्थकासंबंधहोताहोवै ॥ तौ सोपदार्थ ताआत्मस्वरूपनित्यआनंदकेज्ञानविषे करणसंभवै ॥ परंतु ताआत्मस्वरूपनित्यआनंदकेसाथ किसीअनित्यपदार्थकासंबंधसंभवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ असंगोनहिसज्जते ॥ अर्थयह ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा स्वभावतैंअसंगहै ॥ याकारणतैं यहआनंदस्वरूपआत्मा किसीपदार्थकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ १ ॥ यातैं ताआत्मस्वरूपआनंदकेज्ञानविषे किसीअनात्मपदार्थकूं करणरूपतासंभवैनहीं ॥ शंका ॥ ताआत्मस्वरूपआनंदकेज्ञानविषे मनकूंही करणरूपताहै ॥ समाधान ॥ ताआनंदस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारविषे जोकदाचित् मनकूंहीकरणरूपताहोवै ॥ तौ यालोकविषे जोजोकरणहोवैहै ॥ सोसोकरण किसीकर्ताकीअपेक्षा अवश्यकरै है ॥ जैसे कुठारादिककरण पुरुषरूपकर्ताकीअपेक्षाकरैहै ॥ तैसे सोमनरूपकरणभी किसीकर्ताकीअपेक्षा अवश्यकरैगा ॥ तहां ताज्ञानरूपक्रियाविषे आत्माकूं कर्तारूपताहै ॥ अथवा ताकरणरूपमनकूंही कर्तारूपताहै? तहां ताज्ञानरूपक्रियाविषे आत्माकूं कर्तारूपताहै यहप्रथमपक्ष जोअंगीकारकरिये सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? यालोकविषे जोपदार्थ जिसक्रियाकाकर्मरूपहोवैहै ॥ सोपदार्थ तिसीक्रियाविषे कर्तारूपहोवैनहीं ॥ जैसे दर्शनरूपक्रियाका कर्मरूपजोघटहै ॥ सोघट तादर्शनरूपक्रियाका कर्तारूपहोवैनहीं ॥ तैसे ताज्ञानरूपक्रियाका कर्मरूपजोआनंदस्वरूपआत्माहै सोआनंदस्वरूपआत्मा ताज्ञानरूपक्रियाविषे कर्तारूप होवैनहीं ॥ और ज्ञानरूपक्रियाविषे तामनरूपकरणकूंही कर्तारूपताहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरिये सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? यालोकविषे जोपदार्थ जिसकालविषे जिसक्रियाकेप्रति करणरूपहोवै ॥ सोपदार्थ तिसीकालविषे तिसीक्रियाकेप्रति कर्तारूपहोवैनहीं ॥ जैसे छेदनरूपक्रियाकाकरणरूप जोकुठारहै ॥ सोकुठार तिसीछेदनरूपक्रियाका कर्तारूपहोवैनहीं ॥ तैसे ता

ज्ञानरूपक्रियाविषे करणरूपजोमनहै॥ सोमन तिसीज्ञानरूपक्रियाविषे कर्त्तारूपहोइसकैनहीं॥ और ताज्ञानरूपक्रियाविषे जोमनकूं
कर्त्तामानिये तौ ताज्ञानरूपक्रियाविषे तामनकूं करणरूपतानहींहोवैगी ॥ तात्पर्ययह ॥ कर्त्ता उपकार्यहोवैहै॥ और करण उपकारक
होवैहै॥ तहां जिसऊपरिउपकारकरिये ताकानाम उपकार्यहोवैहै॥ और जोउपकारकरै ताकानाम उपकारकहोवैहै॥ सोउपकार्यपणा
तथाउपकारकपणा एककालविषे एकवस्तुमैंरहैनहीं॥ किंवा॥ मेरामन इसवस्तुविषे गयाथा ॥ और मेरामन यावस्तुकेप्राप्तिकीइच्छा
करैहै ॥ यासर्वलोकोंकेअनुभवतें तामनविषेभी ज्ञानकीविषयता प्रतीतहोवैहै ॥ ताकेविषे यहविचारकर्याचाहिये ॥ तामनकूंविष
यकरणेहारेज्ञानविषे कौनकरणहै? नेत्रादिकइंद्रिय करणहैं अथवा मनकरणहै? तहां प्रथमपक्षतौसंभवैनहीं ॥ काहेतें? नेत्रा
दिकइंद्रियतौ बाह्यस्थूलघटादिकपदार्थोंकेज्ञानविषेहीकरणहोवैहैं ॥ आंतरपदार्थकेज्ञानविषे तिननेत्रादिकोंकूंकरणरूपतासंभवैन
हीं॥ और तामनकूंविषयकरणेहारेज्ञानविषे तामनकूंहीकरणताहै यहदूसरापक्षभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें? सोमन ताज्ञानरूपक्रिया
कर्मरूपहै ॥ यातें ताज्ञानरूपक्रियाविषे तिसीमनकूं करणरूपतासंभवैनहीं ॥ जोकदाचित् कर्मकूंभी करणरूपताहोवै तौ घटकेज्ञा
नविषे ताघटकूंभी करणरूपताहोणीचाहिये॥ और घटादिकपदार्थोंकेज्ञानविषे घटादिकपदार्थोंकूं करणरूपताहैनहीं ॥ किंतु ति
नघटादिकोंकेज्ञानविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकूंहीकरणरूपताहै ॥ यातें तामनकूंविषयकरणेहाराज्ञान किसीकरणकरिकैजन्यनहींहै ॥
किंतु सोज्ञान नित्यआत्मस्वरूपहीहै ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ आनंद प्रकाश आत्मा यातीनोंपदोंका एकहीअर्थहै ॥ याप्र
कारकेविचारकियेहुए आत्मरूपआनंद हमारेकूं प्रतीतहोताहै अथवा नहींप्रतीतहोताहै याप्रकारकासंशय संभवैनहीं ॥ अब आ
त्मस्वरूपआनंदके विपरीतभानपक्षका खंडनकरणेवासते ताविपरीतभानकेकारणकाविचारकरैहैं ॥ सोआत्मस्वरूपआनंद किस
निमित्तकरिकै विपरीतप्रतीतहोवैहै? तहां ताआत्मरूपआनंदविषे जोआत्माकाभेदप्रतीतहोवैहै ॥ तथा ज्ञानकीविषयताप्रतीत
होवैहै॥ तथा विषयोंकीप्राप्तिकरिकै जो जन्यताप्रतीतहोवैहै॥ यहतीनों ताआत्मस्वरूपआनंदविषे विपरीतरूपताहै ॥ काहेतें? जि
सवस्तुका जोवास्तवस्वरूपहोवै॥ सोवास्तवस्वरूप जिसज्ञानविषे नहींप्रतीतहोवै॥ सोज्ञान विपरीतज्ञानहोवैहै॥ जैसे रज्जुविषे यह

सर्पहै याप्रकारकाजोज्ञानहोवैहै ॥ ताज्ञानविषे रज्जुकावास्तवस्वरूप प्रतीतहोवैनहीं ॥ याकारणतैं सोसर्पज्ञान विपरीतज्ञानरूपहै ॥ तैसे विषयभावतैंरहित जोआत्मस्वरूप नित्यआनंदहै ॥ ताआनंदविषे आत्माकेभेदकूंविषयकरणेहाराजोज्ञानहै ॥ तथा ताआनंद विषे विषयरूपताकूंविषयकरणेहाराजोज्ञानहै ॥ तथा ताआनंदविषे विषयजन्यरूपताकूं विषयकरणेहाराजोज्ञानहै ॥ यहसंपूर्णज्ञान विपरीतज्ञानरूपहै ॥ और यालोकविषे जोजोविपरीतज्ञानहोवैहै ॥ सोसोविपरीतज्ञान मिथ्याहीहोवैहै ॥ जैसे शुक्तिकाविषेरजत ज्ञान तथा रज्जुविषेसर्पज्ञान विपरीतरूपहोणेतैं मिथ्यारूपहै ॥ तैसे आत्मस्वरूपआनंदविषे भेदकूं तथाविषयताकूं तथाजन्यता कूं विषयकरणेहारे तेविपरीतज्ञानभी मिथ्याहीहोवैंगे ॥ और यालोकविषे कार्यकेसमानस्वभाववालापदार्थही कारणहोवैहै ॥ जैसे घटकेसमानस्वभाववालीमृत्तिका ताघटकाकारणहोवैहै ॥ तैसे तिनमिथ्याज्ञानोंका कोईकारणभी मिथ्याहीअंगीकारकन्याचाहिये ॥ सत्यपदार्थविषे तिनमिथ्याज्ञानोंकीकारणतासंभवैनहीं ॥ और ऐसामिथ्याकारण मायातैंविना दूसराकोईहैनहीं ॥ यातैं सामिथ्यामायाही तामिथ्याविपरीतज्ञानोंकाकारणहै ॥ याप्रकारकेविचारकानाम सांख्यहै ॥ हेसंन्यासियो! जेअधिकारीपुरुष या विचाररूपसांख्यकूंकरैहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं कार्यसहितमायातैंभिन्नरूपकरिकै स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माका साक्षात्कारहोवैहै ॥ इतनेकरिकै सांख्यरूपउपायकानिरूपणकऱ्या ॥ अब योगरूपउपायकानिरूपणकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो! यज्ञदानादिरूप जेबाह्यकर्महैं ॥ तथा उपासनारूप जेआंतरकर्महैं ॥ यादोनोंप्रकारकेकर्मोंकानाम योगहै ॥ तानिष्कामकर्मरूपयोगकरिकै जबी याअधिकारीपुरुषोंकाअंतःकरण शुद्धहोवैहै ॥ तबीही याअधिकारीपुरुषोंकूं स्वयंज्योतिआत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ और ताब्रह्म साक्षात्कारकेउत्पन्नहुए याअधिकारीपुरुषोंकीअविद्या नाशहोवैहै ॥ और ताअविद्यारूपकारणकेनाशहुए याअधिकारीपुरुषोंके काम क्रोधादिकसर्वपाशोंकानाशहोवैहै इसप्रकार सोनिष्कामकर्मरूपयोगभी चित्तकीशुद्धिद्वारा आत्माकेप्राप्तिकाहीसाधनहै ॥ हेसंन्यासियो! इसप्रकार सांख्ययोगरूपउपायकरिकै उत्पन्नभयाजोब्रह्मज्ञानहै ॥ ताब्रह्मज्ञानकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं जोस्वयंज्योतिआत्मादेव प्रतीतहोवैहै ॥ तास्वयंज्योतिआत्मादेवकूं यहसूर्यचंद्रमादिकतेज प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ किंतु उलटा सोस्वयंज्योति

आत्मादेवही तिनसूर्यचंद्रमादिकतेजोंकूं प्रकाशकरैं है॥ तात्पर्ययह॥ सूर्यचंद्रमादिकबाह्यतेजोंकूं प्रकाशकरणेहारा जोचिदाभासयुक्त अंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानहै॥ सोवृत्तिरूपज्ञानभी तास्वयंज्योतिआत्मादेवकूं प्रकाशकरिसकैंनहीं ॥ किंतु सोस्वयंज्योतिआत्माही तावृत्तिज्ञानकूंप्रकाशकरैं हैं॥जबी सोवृत्तिरूपज्ञानभी तास्वयंज्योतिआत्माकूं प्रकाशनहींकरिसकैं है॥ तबी तावृत्तिज्ञानकेविषय सूर्य चंद्रमादिकबाह्यजडतेज तास्वयंज्योतिआत्माकूं प्रकाशनहींकरिसकैं हैं याकेविषेक्याकहणाहै ? हेसंन्यासियो ! ऐसास्वयंज्योतिपरमा त्मादेवही सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थितहै॥ तथा सोपरमात्मादेवही तीनलोकोंकेअंतरस्थितहै ॥ और सोपरमात्मादेवही आत्मसा क्षात्कारकरिकै कार्यसहितअविद्याकूंनाशकरताहुआ हंस यानामकूंप्राप्तहोवैं है॥ और सोपरमात्मादेवही वडवाग्निरूपहै॥ तथा सो परमात्मादेवही जठराग्निरूपहै॥ तथा सोपरमात्मादेवही विराट्रूपहै॥ हेसंन्यासियो ! ऐसेपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुषआप णाआत्मरूपकरिकै साक्षात्कारकरैं हैं॥ तेअधिकारीपुरुष यासंसाररूपमृत्युकाउल्लंघनकरिकै ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैं हैं॥ हेसंन्यासियो ! यालोकविषे मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मज्ञाननैंविना दूसराकोईउपाय ताब्रह्मभावकेप्राप्तिकाहैनहीं॥ किंतु सोजीवब्रह्मकाअभेदज्ञा नही ताब्रह्मभावकेप्राप्तिकासाधनहै ॥ यातैं ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षकीइच्छावालेमुमुक्षुजनोंनैं श्रवणादिकसाधनोंकरिकै ताब्रह्म ज्ञानकूं अवश्यसंपादनकरणा॥ हेसंन्यासियो ! श्रवणादिकसाधनोंकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं जिसपरमात्मादेवकाज्ञानहोवैं है॥ सो परमात्मादेवकैसाहै ? यासंपूर्णचराचरजगत्कूं सामान्यरूपकरिकै तथा विशेषरूपकरिकै जानणेहाराहै॥ तथा सर्वजगत्काकारणहै॥ तथा कालकाभीकालहै ॥ तथा सर्वगुणोंकरिकैसंपन्नहै ॥ और सोपरमात्मादेवही क्षेत्रज्ञरूपजीवका तथा मायाका तथा मायाकेसत्वा दिकगुणोंका पतिरूपहै ॥ तथा सोपरमात्मादेवही याजीवोंकेप्रति पुण्यपापरूपकर्मकेसुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकरैं है ॥ तथा सोपर मात्मादेवही याजीवोंकेबंधमोक्षकाकारणहै॥ तथा सोपरमात्मादेवही याजगत्केव्यवस्थाकूंकरैं है ॥ तथा याजगत्कापालनकरैं है ॥ हेसंन्यासियो ! प्रपंचरूपकरिकैदेख्याहुआ॥ सोपरमात्मादेव याजीवोंकूं बंधकीप्राप्तिकरैं है ॥ और जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहित रूपकरिकै देख्याहुआसोपरमात्मादेव याजीवोंकूं मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिकरैं है ॥ और जोपरमात्मादेव आपणेज्ञानस्वरूपविषेस्थि

तहोइकै यासर्वजगत्‌कापालनकरैहै ॥ और जोपरमात्मादेव यासर्वजगत्‌कूंआपणीआज्ञाविषेचलावैहै ॥ और जिसपरमात्मादेवके ऐश्वर्यतें अधिकऐश्वर्यवाला कोईहैनहीं ॥ ऐसापरमात्मादेवही याअधिकारीजीवोंनें आपणाआत्मरूपकरिकै जानणेयोग्यहै ॥ हेसंन्यासियो ! मैंश्वेताश्वतरमुनि तापरमात्मादेवकी जिसप्रार्थनाकरिकै आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोताभयाहूं ॥ ताप्रार्थनाकूं तुम श्रवण करो ॥ जोपरमात्मादेव पूर्व हिरण्यगर्भकूंउत्पन्नकरिकै ताहिरण्यगर्भकेप्रति चारिवेदोंसहितज्ञानकूंदेताभया ॥ तथा जोपरमात्मादेव केवलआत्मज्ञानकरिकैहीप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवकेशरणकूं मैंमुमुक्षुजन प्राप्तभयाहूं ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव ! हस्तपादादिकअवयवोंतेंरहितहै ॥ तथा क्रियातेंरहितहै ॥ तथा शांतस्वरूपहै ॥ तथा सुखरूपहै ॥ तथा सर्वजीवोंकाआत्मरूपहै ॥ तथा सर्वदोषोंतेंरहितहै ॥ तथा कारणतेंरहितहै ॥ तथा मोक्षरूपअमृतकूं सेतुकीन्यांई धारणकरणेहाराहै ॥ और जैसे काष्ठोंकूंदग्धकरिकै अग्नि आपणेस्वरूपविषेस्थितहोवैहै ॥ तैसे कार्यसहितमायारूपउपाधितेंरहितहुआ सोपरमात्मादेव आपणेअद्वितीयरूपविषेस्थितहोवैहै ॥ ऐसेअद्वितीयपरमात्मादेवकेशरणकूं मैंमुमुक्षु प्राप्तभयाहूं ॥ हेसंन्यासियो ! याप्रकार जबीहमनैं तापरमात्मादेवकीप्रार्थनाकरी ॥ तबी सोपरमात्मादेव कृपाकरिकै हमारेतांई मोक्षकाकारणरूपआत्मज्ञान देताभया ॥ जिसज्ञानकेप्रभावतें मैंश्वेताश्वतरऋषि तापरमात्मादेवकूं आपणाआत्मरूपजानताभयाहूं ॥ तापरमात्मादेवकेज्ञानतेंविनायाजीवोंकूं कदाचित्‌भी मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ अब आत्मज्ञानतेंविना मोक्षकेप्राप्तिकाअभाव निरूपणकरैहै ॥ हेसंन्यासियो ! यहदेहधारीजीव जोकदाचित् चर्मकीन्यांई याआकाशकूं इकठ्ठाकरिलेवैंगे ॥ तौ यहदेहधारीजीव आत्मज्ञानतेंविनाही मोक्षकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ परंतु जैसे चर्मकीन्यांई सोआकाश इकठ्ठाहोइसकैनहीं ॥ तैसे आत्मज्ञानतेंविना मोक्षकीप्राप्तिहोइसकैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ यदाचर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यंतिमानवाः ॥ तदादेवमविज्ञाय दुःखस्यान्तोभविष्यति ॥ अर्थयह ॥ यहमनुष्य जिसकालविषे चर्मकीन्यांई याआकाशकूंइकठ्ठाकरैंगे ॥ तिसकालविषे परमात्मादेवकूंनजाणिकरिकै तिनमनुष्योंके जन्ममरणादिकदुःखोंकीनिवृत्तिहोवैगी ॥ १ ॥ हेसंन्यासियो ! जोआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्मादेव हमनैं तुमारेप्रति उपदेशकऱ्याहै ॥ सोइहीआत्मादेव यामुमु

क्षुजनोंनें जानणेयोग्यहै॥ तथा सोइहीपरमात्मादेव आपणीमायाशक्तिकरिकै यासर्वजगत्‌काउपादानकारणहोवैहै ॥ तथा सोइहीप
रमात्मादेव तुमारा तथाहमारा तथा अन्यस्थावरजंगमरूपजगत्‌का आत्मरूपहै॥ तथा सर्वभेदरहितहै॥ हेसंन्यासियो! जैसे शुद्ध
आकाशविषे नानाप्रकारकेमेघ कल्पितहैं॥ तैसे यापरमात्मादेवविषेही पूर्वउक्तकालस्वभावादिककारण कल्पितहैं॥ और जैसे भ्रांत
पुरुषकूं आकाशविषे गंधर्वनगरप्रतीतहोवैहै॥ तैसे अविवेकीपुरुषोंकूं यापरमात्मादेवविषे मायासहितजगत् प्रतीतहोवैहै॥ हेसंन्या
सियो! जैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहएकहीस्वप्नद्रष्टापुरुष अनेकरूपहोवैहै॥ तैसे यह एकहीपरमात्मादेव अविद्यादोषकरिकै अनेकरूप
होवैहै॥ और जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे नेत्रादिकइंद्रियोंके तथा रूपादिकविषयोंके लयहुए यहसंसारीजीवकिंचित्‌मात्रभी द्वैतप्रपंच
कूंदेखतानहीं॥ तैसे मोक्षअवस्थाविषे आत्मज्ञानकरिकै कार्यसहितअविद्याकेनाशहुए यहविद्वान्‌पुरुष किंचित्‌मात्रभी द्वैतप्रपंचकूंदे
खतानहीं॥ और जैसे जाग्रत्‌अवस्थाकेप्राप्तहुए याजीवोंके सर्वस्वप्नपदार्थोंकालयहोवैहै॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानतैं याअधि
कारीजनोंका संपूर्णप्रपंच लयभावकूंप्राप्तहोवैहै॥ ऐसे आत्मज्ञानकूं याअधिकारीजनोंनें अवश्यसंपादनकरणा॥ अब ताआत्मज्ञान
केदुर्लभताका निरूपणकरैहैं॥ हेसंन्यासियो! जोहमनें तुमारेप्रति आत्मज्ञानकाउपदेशकर्‍याहै॥ सोआत्मज्ञान अत्यंतदुर्लभहै॥ का
हेतें? याआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते मनुष्योंनें नानाप्रकारकेतपकरिकै प्रसन्नकर्‍येजेदेवताहैं॥ तेदेवताभी तिनमनुष्योंकेतांई याआ
त्मज्ञानकाउपदेशकरतेनहीं॥ किंतु तेदेवता तिनमनुष्योंकेतांई दूसरेअनेकप्रकारकेवरदेतेहैं॥ और जेमनुष्य तिनवरोंकरिकैसंतो
षकूंनहींप्राप्तहोवैहैं॥ तिनअधिकारीजनोंकेप्रति सत्यपाशकरिकैबांध्येहुए तेदेवता याआत्मज्ञानकाउपदेशकरैहैं॥ जैसे पूर्व सत्य
पाशकरिकैबांध्याहुआयमराजा नचिकेताकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभयाहै॥यावार्ताकूं तुमसंन्यासीभी तपकेप्रभावतैं जानते
हीहो॥ शंका॥ हेभगवन्! यहब्रह्मविद्या जोऐसीदुर्लभहै तौ सभाविषेस्थितहोइके आपनें साब्रह्मविद्या हमारेप्रति किसवासतेउप
देशकरीहै? समाधान॥ हेसंन्यासियो! यहब्रह्मविद्या यद्यपिअत्यंतदुर्लभहै॥ तथापि जिसविचारकरिकै हमनें यहदुर्लभब्रह्मविद्या
तुमारेप्रति उपदेशकरीहै॥ ताविचारकूं तुम श्रवणकरो॥ यहअतिथिसंन्यासी हमारेआश्रयविषेचलिके आयेहैं॥ तथा ब्रह्मविद्या

केअधिकारीहैं ॥ जोमैंश्वेताश्वतरऋषि इनसंन्यासियोंकेतांई ब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकरौंगा तौ हमारेतैंविना दूसराकौनपुरुषइन
संन्यासियोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैगा ? किंतु मेरेसमानब्रह्मवेत्तापणा दूसरेकिसीविषे निश्चितनहींहै ॥ और दध्यङ्अथ
र्वणऋषिकीन्यांई मैंश्वेताश्वतरनामाऋषिभी सर्वजीवोंकेउपकारवासतै प्रवृत्तभयाहुं ॥ यातैं इनअतिथिसंन्यासियोंतैं ब्रह्मविद्याग़ु
ह्यराखणी हमारेकूंयोग्यनहींहै ॥ हेसंन्यासियो! याप्रकारकाआपणेमनविषेविचारकरिकै मैंश्वेताश्वतरमुनि तुमसंन्यासियोंकेप्रति
यहगुह्यब्रह्मविद्या उपदेशकरताभयाहूं ॥ किंवा जोविद्वान्पुरुष अधिकारीजनोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैहै॥ताविद्वान्पुरुषऊ
परि परमेश्वरभी प्रसन्नहोवैहै ॥ याकारणतैंभी मैंश्वेताश्वतरनामाऋषि तुमसंन्यासियोंकेप्रति यागुह्यब्रह्मविद्याकाउपदेश करताभया
हूं॥ यहवार्ता गीताविषे श्रीकृष्णभगवान्नैंभी अर्जुनकेप्रति कहीहै॥तहां श्लोक॥ यइदंपरमंगुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति॥भक्तिंम
यिपरांकृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयम् १ नचतस्मान्मनुष्येषुकश्चिन्मेप्रियकृत्तमः॥भवितानचमेतस्मादन्यःप्रियतरोभुवि२
अर्थयह॥हेअर्जुन! तुमारेप्रति जोहमनैं यहपरमगुह्यआत्मज्ञानका उपदेशकर्याहै॥ ताआत्मज्ञानकूं जोविद्वान्पुरुष मेरेभक्तोंविषेदे
वैगा ॥सोविद्वान्पुरुष मैंपरमेश्वरविषे परमभक्तिकूंकरिकै मेरेविषेही प्राप्तहोवैगा ॥ याकेविषे किंचित्मात्रभी तुमनैं संशयनहींकर
णा ॥१॥ ऐसे विद्वान्पुरुषतैंविना यामनुष्योंविषे कोईभीमनुष्यों हमारेप्रसन्नताकरणेहारानहीं ॥ किंतु सोआत्मज्ञानकाउपदेशकरणे
हारा विद्वान्पुरुषही हमारेप्रसन्नताकरणेहाराहै ॥ और मैंपरमेश्वरकूंभी ताविद्वान्पुरुषतैंभिन्नकोईपदार्थ यालोकविषेप्रियनहींहै ॥
किंतु सोब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषही हमारेकूं अत्यंतप्रियहै ॥ २॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! सोश्वेताश्वतरनामाऋषि तिनसंन्यासियोंके
प्रतिताब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै मौनकूंधारणकरिकै स्थितहोताभया ॥ हेशिष्य! वेदवेदांगविद्याकेतात्पर्यकूंजानणेहारा सोश्वे
ताश्वतरनामाऋषि तपकेप्रभावतैं तथा ईश्वरकेप्रसादतैं आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोइकै आपणेआश्रमविषे अतिआश्रमीसंन्यासियों
केप्रति आत्मज्ञानकाउपदेशकरताभया ॥ हेशिष्य! यालोकविषे ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ यातीनआश्रमियोंतैं परमहंससंन्या
सि अधिकहोवैहैं ॥ याकारणतैं श्रुतिविषे तिनपरमहंससंन्यासियोंकूं अतिआश्रमीकह्याहै ॥ ऐसेअतिआश्रमीसंन्यासि ताश्वेताश्व

तरमुनितैं ब्रह्मात्मज्ञानकूं प्राप्तहोतेभये ॥ कैसाहैसोब्रह्मात्मज्ञान? अत्यंतपवित्रहै ॥ तथा ब्रह्मभावकीप्राप्ति कार्यसहितअज्ञानकी निवृत्तिरूप मोक्षकेप्राप्तिकाकारणहै ॥ तथा मोक्षकीइच्छावाले मुनिलोकोंकरिकै सेवितहै ॥ पुनःकैसाहैसोआत्मज्ञान? वेदांतोंविषे गुह्यरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ और इहांप्रसंगविषे पुराकल्परूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तहां जिसवेदकेभागविषे पूर्ववृद्धपुरुषोंके सृष्टिआदिकव्यवहार कथनकरियें ॥ तावेदभागकानाम पुराकल्पहै ॥ जैसे इहांप्रसंगविषे पूर्वब्रह्मवेत्तावृद्धब्राह्मणोंका जगत्केकारणकाविचारकरणेवासते समागमभयाहै याकानाम पुराकल्पहै ॥ हेशिष्य! जिसविचारकूंमनविषेराखिकै सोश्वेताश्वतरनामाऋषिमौनकूंधारणकरताभया ॥ ताविचारकूं तू श्रवणकर ॥ जोपुरुष शमदमादिकसाधनोंतैंरहितहोवै ॥ तथा जिसपुरुषकाचित्त विषयोंविषेआसक्तहोवै ॥ ऐसाविषयासक्तपुरुष जोकदाचित् किसीदयालुब्रह्मवेत्तागुरुकेआगे ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकीप्रार्थनाभीकरै तौभीताब्रह्मवेत्तागुरुनैं ताविषयासक्तपुरुषकेप्रति ताब्रह्मविद्याकाउपदेश कदाचित्भीनहींकरणा ॥ और सोपुरुष जोकदाचित् शमदमादिकसाधनोंकरिकैसंपन्न ताब्रह्मविद्याकाअधिकारीभीहोवै ॥ परंतु सोअधिकारीपुरुष पुत्रभावतैं तथा शिष्यभावतैं रहितहोवै तौभी ताब्रह्मवेत्तागुरुनैं तापुत्रशिष्यभावतैंरहितपुरुषकेप्रति याब्रह्मविद्याकाउपदेश कदाचित्भी नहींकरणा ॥ और जोकदाचित् सोब्रह्मवेत्तागुरु किसीप्रतिज्ञादिकनिमित्तकरिकै परवशहुआहोवै तौभी ताब्रह्मवेत्तागुरुनैं तागुरुभक्तितैंरहितअधिकारीकेप्रतिताब्रह्मविद्याकायथार्थतात्पर्य कदाचित्भीनहींकहणा ॥ और जोपुरुष विवेक वैराग्य शमादिषट्संपत्ति मुमुक्षुता याचारिसाधनोंकरिकैयुक्तहोवै ॥ तथा प्रमादतैंरहितहोवै ॥ तथा जोपुरुष साक्षात्परमेश्वरकीन्याईं ब्रह्मवेत्तागुरुकूंदेखताहोवै ॥ ऐसेगुरुभक्तअधिकारीपुरुषकेप्रति सोब्रह्मवेत्तागुरु याब्रह्मविद्याकाउपदेशकरै ॥ और ऐसागुरुभक्तअधिकारीही ताब्रह्मविद्याकेमोक्षरूपफलकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष गुरुभक्तितैंरहितहै ॥ सोपुरुष जोकदाचित् किसीदैवयोगतैं ताब्रह्मविद्याकाअध्ययनभीकरैहै तौभी तागुरुभक्तितैंरहितपुरुषकूं ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकाफलहोवैनहीं ॥ उलटा तागुरुविमुखपुरुषकूं अनर्थकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहवार्ता पुराणादिकशास्त्रोंविषे श्रीव्यासभगवान्आदिकोंनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ गुरुंयोमानवैरन्यैः समंपश्यतिमोहतः ॥ नतस्यास्मिन्भ

वेल्लोके सुखंनैवपरत्रवा ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष आपणेप्रमादकरिकै ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेहारेगुरुकूं दूसरेमनुष्योंकेसमानदे
खताहै ॥ तिसपुरुषकूं इसलोकविषे तथा परलोकविषे किंचित्मात्रभी सुखकीप्राप्तिहोवैनहीं॥किंतु तापुरुषकूं दोनोंलोकविषे दुःखकी
हीप्राप्तिहोवैहै ॥ १ ॥ तहां श्लोक ॥ कर्मणामनसावाचा गुरुंयोनावमन्यते ॥ सयातिनरकान्घोरान् महारौरवसंज्ञितान् ॥ २ ॥
अर्थयह ॥ जोपुरुष शरीरमनवाणीकरिकै ब्रह्मविद्याप्रदातागुरुकीअवज्ञाकरैहै ॥ सोपुरुष महान्घोररौरवनरकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इहां
आपणेशरीरकरिकै गुरुकूंखेदकीप्राप्तिकरणी याकानाम शरीरकृतअवज्ञाहै ॥ और आपणेमनविषे तागुरुकेदूषणोंकाचिंतनकरणा
याकानाम मनःकृतअवज्ञाहै ॥ और आपणीवाणीकरिकै तागुरुकीनिंदाकरणी याकानाम वाणीकृतअवज्ञाहै ॥ और सहस्त्रवृश्चिककेस
मानविषवाले अनेकजंतुवोंकरिकैपूर्णजोनरकहै ताकानाम रौरवनरकहै ॥ ऐसेनरकविषे सोगुरुकीअवज्ञाकरणेहारापुरुष प्राप्तहोवैहै
॥ २ ॥ तहांश्लोक ॥ एकाऽक्षरप्रदातारं गुरुंयोनैवमन्यते ॥ समूढोनरकंयाति यावदाभूतसंप्लवं ॥ ३ ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मविद्याकेए
कअक्षरमात्रकाभीउपदेशकरणेहाराजोगुरुहै ॥ तागुरुकूं जोमूढपुरुष नहींमानैहै ॥ सोमूढपुरुष जाजगत्केप्रलयपर्यंत तारौरवनरक
विषेनिवासकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ब्रह्मविद्याकेएकअक्षरमात्रकाउपदेशकरणेहारेगुरुकूं नहींमानणेहारापुरुषभी जवी प्रलयपर्यंत नरक
विषेनिवासकरैहै ॥ तबी संपूर्णब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणेहारेगुरुकूं नहींमानणेहारापुरुष अनेकप्रलयपर्यंत नरकविषेरहैहै याकेविषे
क्याकहणाहै? ॥ ३ ॥ तहांश्लोक ॥ कृतघ्नानांहियेलोका येलोकाब्रह्मघातिनां ॥ मृत्वातानभिसंयाति गुरुद्रोहपरोनरः ॥ ४ ॥ अ
र्थयह ॥ कन्येहुएउपकारकूंनमानणेहारेजेकृतघ्नपुरुषहैं ॥ तथा ब्राह्मणोंकाहननकरणेहारे जेब्रह्मघातीपुरुषहैं ॥ तेकृतघ्नपुरुष तथा
ब्रह्मघातीपुरुष मरिकरिकै जिननरकादिकलोकोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसीनरकादिकलोकोंकूं यहगुरुद्रोहीपुरुष मरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ ४ ॥
तहां श्लोक ॥ समहापातकीज्ञेयस्तथोपपातकीत्यपि॥गत्वाकल्पसहस्रांते विष्ठायांजायतेकृमिः ॥५॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मविद्याका
उपदेशकरणेहारा जोगुरुहै ॥ तागुरुकेसाथ जोपुरुष द्रोहकरैहै ॥ सोगुरुद्रोहीपुरुषही महापातकीजानणा ॥ तथा उपपातकीजानणा ॥
इहां ब्रह्महत्यामदिरापान सुवर्णकीचोरी गुरुस्त्रीकेसाथगमन इनपापकर्मोंकूंकरणेहारेपुरुषकानाम महापातकीहै ॥ और गोवधादिक

पापकर्मोंकूंकरणेहारेपुरुषकानाम उपपातकी है ॥ ऐसागुरुद्रोहीपुरुष रौरवादिकनरकोंकूंप्राप्तहोइकै तिननरकोंविषे सहस्त्रकल्पपर्यंत निवासकरै है ॥ तिसतैंअनंतर सोगुरुद्रोहीपुरुष विष्ठाविषेकृमिशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥५॥ किंवा शास्त्रविषे जितनीविद्याहैं ॥ तिनसर्व विद्यावोंकीप्राप्तिविषे यहगुरुहीकारणहै॥याकारणतैं याअधिकारीपुरुषनैं महादेवकेपूजनसमान तागुरुकापूजनकरणा॥किंवा याअधि कारीपुरुषनैं शिवकेपूजनतैंभी गुरुकाअधिकपूजनकरणा ॥ तहांश्लोक ॥ शिवेरुष्टेगुरुस्त्राता गुरौरुष्टेशिवोनहि ॥ शिवादप्यऽधिकं तस्मात् गुरुंयत्नेनपूजयेत् ॥ ६ ॥ अर्थयह ॥ शिवभगवान्‌केक्रोधहुए याअधिकारीपुरुषकी गुरु रक्षाकरिसकै है ॥ और गुरुकेक्रो धहुए याअधिकारीपुरुषोंकी शिव रक्षाकरिसकैनहीं ॥ याकारणतैं यहअधिकारीपुरुष शिवकेपूजनतैंभी गुरुकाअधिकपूजनकरै ॥६॥ किंवा जोपुरुष अभिमानकरिकै आपणेगुरुकीअवज्ञाकरै है ॥ तापुरुषकेपापकर्मकीनिवृत्तिकरणेहारा कोईप्रायश्चित्त यालोकविषे है नहीं ॥ काहेतें ? ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकेनिवृत्तिकरणेकेप्रायश्चित्त धर्मशास्त्रोंविषेदेखते हैं ॥ परंतु गुरुद्रोहीपुरुषकेपापकर्मकीनि वृत्तिकाप्रायश्चित्त किसीशास्त्रविषेदेखणेमें आवतानहीं ॥ किंवा यालोकविषे अन्यपापीजीवोंतैं ब्रह्मघातीपुरुष अधिकपापीहोवै है ॥ और ताब्रह्मघातीतैंभी कन्येहुएउपकारकूंनहींमानणेहाराकृतघ्नपुरुष अधिकपापीहोवै है ॥ और ताकृतघ्नपुरुषतैंभी यहगुरुकेद्रोह करणेहारापुरुष अधिकपापीहोवै है ॥ काहेतें ? याअधिकारीजीवोंका गुरुही मातापिताहै ॥ तथा गुरुही देवहै ॥ तथा गुरुही बंधुहै ॥ तथा गुरुही मित्रहै ॥ तथा गुरुही उपकारकरणेहारासुहृद्‌है ॥ ऐसेगुरुकेद्रोहकरणेहारापुरुष कृतघ्नपुरुषतैंअधिकपापी है याकेविषे कोईआश्चर्यनहीं है ॥ किंवा ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति ॥ याश्रुतिविषे ब्रह्मवेत्तापुरुषकूंब्रह्मरूपकह्याहै ॥ यातैं यहअधिकारीजीव आत्म ज्ञानकरिकै जिसब्रह्मकूंप्राप्तहोवै है ॥ सोब्रह्म ब्रह्मवेत्तागुरुतैंअभिन्नहै ॥ यातैं ताब्रह्मवेत्तागुरुकीअवज्ञातैं ब्रह्मकीहीअवज्ञाहोवै है ॥ और अयमात्माब्रह्म ॥ याश्रुतिविषे याआत्माका ब्रह्मकेसाथअभेदकह्याहै ॥ यातैं ताब्रह्मकीअवज्ञातैं याआत्माकीहीअवज्ञाहो वैहै ॥ और एतदात्म्यमिदंसर्वं ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे यासंपूर्णजगत्‌कूं आत्मरूपकह्याहै ॥ यातैं ताआत्माकीअवज्ञातैं सर्वज गत्‌कीअवज्ञाहोवै है ॥ और सोअवज्ञारूपहनन शस्त्रकेहननतैंभी अत्यंतदारुणहै ॥ काहेतें ? शस्त्रकरिकैहननकन्याहुआयहपुरुष

क्षणमात्रदुःखकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ कदाचित् नहींभीप्राप्तहोवैंहै ॥ और ताअवज्ञारूपशस्त्रकरिकैंहननकऱ्याहुआयहपुरुष स्मृतिद्वारा मर
णपर्यंतदुःखकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ यातैं गुरुकेद्रोहकरिकैं सर्वजगत्कूंहननकरणेहारा जोगुरुद्रोहीपुरुषहै ॥ तागुरुद्रोहीपुरुषकूं सुखकीप्रा
प्तिहोणी अत्यंतदुर्लभहै ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं आपणेकल्याणकरणेकीइच्छाहोवै ॥ तिसअधिकारीपुरुषनैं शरीर मन वाणी
करिकै ताब्रह्मवेत्तागुरुकीप्रसन्नताहीकरणी ॥ और जैसे यहअधिकारीपुरुष शिवादिकदेवतावोंकेपूजनकूं सावधानहोइकैंकरैहैं ॥
तैसेही याअधिकारीपुरुषनैं सावधानहोइकै गुरुकापूजनकरणा ॥ और सोब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणेहारागुरु याशिष्यकेप्रति जोशुभ
अथवा अशुभ कार्यकहै ॥ ताशुभाशुभकार्यकूं ताशिष्यनैं प्रसन्नमनहोइकैंकरणा ॥ ताकार्यकेकरणेविषे ताशिष्यनैं आपणेशरीरके
रक्षाकीचिंतानहींकरणी ॥ और ताशिष्यनैं आपणेकर्णोंकरिकै तागुरुकी सर्वदा कीर्तिहीश्रवणकरणी ॥ और ताशिष्यनैं आपणेमु
खकरिकै सर्वदा तागुरुकेस्तुतिकूंहीकरणा ॥ और ताशिष्यकेसमीप जोकोईदुष्टपुरुष ताब्रह्मवेत्तागुरुकेदोषोंकूंकथनकरै ॥ तौ ता
शिष्यनैं तानिंदकदुष्टपुरुषका यथाशक्ति अपमानहीकरणा ॥ और तानिंदकदुष्टपुरुषोंके अपमानकरणेविषे जोकदाचित् सोशिष्य
समर्थनहींहोवै ॥ तौ जिसस्थानविषे तेदुष्टपुरुष निंदाकरतेहोवैं ॥ तिसस्थानतैं सोशिष्य दूरचल्याजावै ॥ और सोशिष्य जोकदा
चित् तिसस्थानतैं दूरजाणेविषेसमर्थनहींहोवै ॥ तौ सोबुद्धिमान्शिष्य तास्थानविषे आपणेकर्णोंकूंनिरोधकरिकैंस्थितहोवै ॥ जाक
रिकैं आपणेगुरुकीनिंदा श्रवणकरणेविषेनहींआवै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जिसअधिकारीजनकूं आपणेसुखकीइच्छाहोवै ॥
तिसअधिकारीपुरुषनैं शिवादिकदेवतावोंकेभक्तिकीन्यांई रात्रिदिनविषे सावधानहोइकै आपणेगुरुकीभक्तिकरणी ॥ तागुरुकीभक्ति
करिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं मोक्षरूपपुरुषार्थकीप्राप्तिहोवैंहै ॥ तहांश्रुति ॥ यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथि
ताह्यर्थाः प्रकाशंतेमहात्मनः ॥ अर्थयह ॥ जिसअधिकारीपुरुषकी परमात्मादेवविषे परमभक्तिहै ॥ और जैसीपरमात्मादेवविषे
परमभक्तिहै ॥ तैसीहीभक्ति गुरुविषेहै ॥ तिसगुरुभक्तपुरुषकूंही यहवेदांतशास्त्रकेपदार्थ बुद्धिविषेप्रकाशितहोवैंहैं ॥ तथा तिसगुरुभ
क्तपुरुषकूंही धर्म अर्थ काम मोक्ष यहचारिप्रकारकापुरुषार्थ प्राप्तहोवैंहै ॥ किंवा जैसे ब्रह्मचर्यआश्रमविषे यहपुरुष ईश्वरकेआरा

धनविषे तथा वेदकेअध्ययनादिकोंविषे सावधानहुआवर्त्ते है ॥ तैसेहीयाअधिकारीपुरुषनैं गुरुकीभक्तिविषे सावधानरहणा ॥ का
हेतें? यहअधिकारीपुरुष जोकदाचित् ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंतैंभ्रष्टभीहोवैहै ॥ तौभी ताशिष्यऊपरि जोगुरुकीप्रसन्नताहोवै है तौ
सोगुरु ताशिष्यकूं प्रायश्चित्तादिकउपायोंकरिकै शोधनकरिसकैहै ॥ और यहअधिकारीपुरुष जबी गुरुकीभक्तितैंभ्रष्टहोइकै ता
गुरुतैंविमुखहोवैहै ॥ तबी तागुरुविमुखपुरुषकेरक्षाकरणेहारा कोईभीप्रायश्चित्तादिकउपायहैनहीं ॥ तहांश्लोक ॥ गुरौविमुखतां
याते विमुखाःसर्वदेवताः ॥ भवंतिक्रियमाणंच पुण्यंपापंहिजायते ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणेहारा जोगुरुहै ॥
तागुरुतैं जबीयहपुरुष विमुखहोवैहै ॥ तबी तागुरुविमुखपुरुषतैं संपूर्णदेवता विमुखहोवैहैं ॥ और गुरुतैंविमुखहुआसोपुरुष जो
कदाचित् पुण्यकर्मभीकरैहै तौ सोपुण्यकर्मभी पापरूपहीहोवैहै ॥ १ ॥ यातैं जिनअधिकारीपुरुषोंकूं धर्म अर्थ काम मोक्ष या
चारिप्रकारकेपुरुषार्थकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंनैं सर्वप्रकारतैं देवताकीन्याई गुरुकापूजनकरणा ॥ किंवा श
मदमादिकगुणोंकरिकैयुक्त तथा आत्मसाक्षात्कारकरिकैयुक्त जेजीवन्मुक्तपरमहंससंन्यासीहैं ॥ तिनजीवन्मुक्तसंन्यासियोंनैंभी स
र्वप्रकारकरिकै आपणेगुरुवोंकापूजनकरणा तहांस्मृति ॥ यावदायुस्त्रयोवंद्या वेदांतोगुरुरीश्वरः ॥ अर्थयह ॥ जबपर्यंत याविद्वा
नूपुरुषकाआयुष्होवै ॥ तबपर्यंत ताविद्वानूपुरुषकूंभी यहतीनों अवश्यवंदनाकरणेयोग्यहैं ॥ तहांएकतौ वेदांतशास्त्र और दू
सरा वेदांतशास्त्रकेउपदेशकरणेहारागुरु ॥ और तीसरा ईश्वर ॥ तात्पर्ययह ॥ जबी विधिनिषेधतैंरहित जीवन्मुक्तसंन्यासियोंनैं
भी गुरुकापूजन अवश्यकरणेयोग्यहै ॥ तबी अन्यआश्रमवालेपुरुषोंनैं गुरुकाअवश्यपूजनकरणा याकेविषेक्याकहणाहै? यातैं
हेसंन्यासियो! तुमारेकूं हमारेउपदेशकरिकै यद्यपि आत्माकासाक्षात्कार प्राप्तभयाहै ॥ तथापि आपणेआपणेगुरुवोंकेपूजनकर
णेवासते तुमसंन्यासियोंकूं तिनपुरुषोंकेसमीप अवश्यजाणाचाहिये ॥ हेशिष्य! याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिकै सोश्वेता
श्वतरनामाऋषि मौनकूंधारणकरताभया ॥ और ताश्वेताश्वतरमुनिके अभिप्रायकूंजाणिकै तेविद्वान्संन्यासी ताश्वेताश्वतरमुनि
की यथायोग्यस्तुतिकरिकै आपणेआपणेगुरुवोंकेसमीपजातेभये ॥ हेशिष्य! पूर्वब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंनैं जगत्केकारणकाविचार

करिकै तथा मायाशक्तिकेदर्शनकरिकै जाब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ साइहीब्रह्मविद्या सोश्वेताश्वतरमुनि संन्यासियोंकेप्रति उपदेशकरताभया ॥ और साइहीब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति उपदेशकरीहै ॥ अबी जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारेकूं इच्छाहोवै ॥ सोअर्थ तुम हमारेसैंपूछो ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामीउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतात्मपुराणे श्वेताश्वतरोपनिषत्सारार्थप्रकाशे श्वेताश्वतरसंन्यासिसंवादो नाम अष्टमोऽध्यायः समाप्तः ॥ ८ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथ आत्मपुराणे स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां

नवमाऽध्यायप्रारंभः ॥ ९ ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ नवमाध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्वअष्टमाध्यायविषे यजुर्वेदके श्वेताश्वतर [illegible] उप[illegible]केअर्थकानिरूपणकऱ्या ॥ अब नवमाध्यायविषे तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीनामाउपनिषद्केअर्थकानिरूपणकरैहैं ॥ [illegible]माध्यायविषे जिनब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंनैं शुद्धब्रह्मतैंभिन्नकरिकै मायाकास्वरूपदेख्याथा ॥ तिनब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंवे[illegible]नेष[illegible]करिकै परमआनंदकूंप्राप्तहुआ सोशिष्य पुनः आपणेगुरुकेप्रति याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ [illegible] नमः आत्मपुराणकेप्रथमाध्यायविषे आपनैं ऋग्वेदके ऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमाध्यायविषे आप[illegible] स[illegible]दिकऋषियोंके तथा वामदेवादिकसात्विकीप्रजाके संवादकरिकै वैराग्यादिकसाधनोंयुक्त नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और माताकेउदरविषेस्थितहोइके वामदेवनैं जोआपणाअनुभव ताअधिकारीपुरुषोंकेप्रति कह्याथा ॥ सोभी आपनैं प्रथमाध्यायविषे निरूपणकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणके द्वितीयाध्यायविषे तथा तृतीयाध्यायविषे आपनैं तिसीऋग्वेदके कौषीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां द्वितीयाध्यायविषे आपनैं देवराजइंद्रके तथा प्रतर्दनराजाके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और तृतीयाध्यायविषे आपनैं अजातशत्रुराजाके तथा बालाकिब्राह्मणके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषे आपनैं यजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां चतुर्थाध्यायविषे आपनैं दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंकेऋषियोंका परस्परभेद तथाअभेद निरूपणकऱ्याथा ॥ और ताचतुर्थाध्यायविषे आपनैं दध्यङ्अथर्वणऋषिके तथा अश्विनीकुमारोंके तथा देवराजइंद्रके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और अश्विनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेतैं तादेवराजइंद्रनैं जिसप्रकार तादध्यङ्ऋषिका मस्तकछेदनकऱ्याथा ॥ तथा ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकालोभ करिकै तिनअश्विनीकुमारोंनैं जिसप्रकार अश्वकेमस्तककूं दध्यङ्ऋषिकेग्रीवाऊपरिराख्याथा ॥ तथा दध्यङ्ऋषिकेमस्तककूं अश्वकेग्रीवाऊपरिराख्याथा ॥ यहसंपूर्णवार्ता आपनैं ताचतुर्थाध्यायविषेकथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणकेपंचमाध्यायविषे

जनकराजाकेयज्ञविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथा आश्वलायनादिकअनेकब्राह्मणोंके संवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ तथा याज्ञवल्क्यमुनिकेसाथ द्वेषकरणेहारेशाकल्यकामृत्यु आपनैं निरूपणकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणकेछठेअध्यायविषे आपनैं याज्ञवल्क्यमुनिके तथा जनकराजाके दोवार संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणकेसप्तमाध्यायविषे आपनैं याज्ञवल्क्यमुनिके तथा मैत्रेयीस्त्रीके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या निरूपणकरीथी ॥ तथा तायाज्ञवल्क्यमुनिके संन्यासआश्रमका निरूपणकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणकेअष्टमाध्यायविषे आपनैं श्वेताश्वतरमुनिके तथा संन्यासियोंके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ हेभगवन्! ताअष्टमाध्यायकेअंतविषे आपनैं यहवार्ता कथनकरीथी ॥ यहब्रह्मविद्या अत्यंतदुर्लभहै ॥ काहेतें? यालोकविषे जेअधिकारीमनुष्य ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासते नानाप्रकारकातपकरिकै जिनदेवतावोंकूं प्रसन्नकरैहैं ॥ तेदेवताभी तिनमनुष्योंकेप्रति ताब्रह्मविद्याकाउपदेशकरतेनहीं ॥ किंतु तेदेवता तिनमनुष्योंकेतांई ताब्रह्मविद्यातैंभिन्न अनेकप्रकारकेवरोंकूंदेकै प्रसन्नकरैहैं ॥ और जेअधिकारीमनुष्य तिनवरोंकीप्राप्तिकरिकै प्रसन्ननहींहोवैहैं ॥ तिनअधिकारीमनुष्योंकेप्रति तेदेवता सत्यवचनरूपपाशकरिकैबांध्येहुए ताब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैहैं ॥ जैसे पूर्वअन्यवरोंकरिकै संतोषकूंनहींप्राप्तभया जोनचिकेताहै ॥ तानचिकेताकेप्रति यमराजा ताब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ यहवार्ता अष्टमाध्यायकेअंतविषे आपनैं कथनकरीथी ॥ हेभगवन्! याकेविषे हमारेकूं याअर्थकेश्रवणकरणेकीइच्छाहोवैहै ॥ सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति किसप्रकार ताब्रह्मविद्याका[illegible]करताभया? और सोनचिकेता किसप्रकार तायमलोकविषेजाताभया? और साब्रह्मविद्या किसप्रकारकीथी? यहसंपूर्णवृ[illegible]आप[illegible]करिकैहमारेप्रतिकहो ॥ इसप्रकार शिष्यकरिकैपूछाहुआ सोश्रीगुरु ताशिष्यकेप्रति वेदविषेकहीहुईकथाका उपदे[illegible]भ[illegible] श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! अरुणऋषिकापुत्र एकउद्दालकनामाऋषि पूर्व होताभया ॥ कैसाथासोउद्दालकऋषि [illegible]दवेत्ता[illegible]ह्मणोंविषे श्रेष्ठथा ॥ और यालोकविषे [illegible]दानकरिकै सोउद्दालकमुनि महान्कीर्तिकूंप्राप्तहोताभया ॥ याकारणतैंही सर्वअर्थीजन [illegible]उद्दालकमुनिकीइच्छाकरतेभये ॥ ऐसा उद्दालकमुनि एककालविषे

विश्वजित्नामायज्ञकरणेकाआरंभकरताभया ॥ ताविश्वजित्यज्ञविषे सोउद्दालकमुनि ब्राह्मणोंकेतांई आपणेसर्वधनदेणेकासंकल्पकरताभया ॥ और ताउद्दालकमुनिका एकनचिकेतानामापुत्रथा ॥ सोनचिकेता पंचवर्षकाबालकथा ॥ याकारणतें तानचिकेताविषे ताउद्दालकमुनिका बहुतस्नेहहोताभया ॥ और ताउद्दालकमुनिकेगृहविषे विशेषकरिकैतौ गौवांरूपहीधनथा ॥ यातें सोउद्दालकमुनि तिनगौवोंकेदोविभागकरताभया ॥ तहां दुग्धकेदेणेहारियां तथा यौवनअवस्थाकरिकैयुक्त जेश्रेष्ठगौवांथ्यां ॥ तेश्रेष्ठगौवांतौ तानचिकेतापुत्रकेनामकीकरताभया ॥ और जेदुर्बलवृद्धगौवांथ्यां ॥ तेवृद्धगौवां आपणेनामकीकारिकै सोउद्दालकमुनि तिनवृद्धगौवोंकूं ब्राह्मणोंकेतांई देणेकाआरंभकरताभया ॥ कैसीथीतेवृद्धगौवां ? अन्नकेभक्षणकरणेविषे तथा जलकेपानकरणेविषेभी जिनगौवोंकासामर्थ्यनहींथा ॥ जबी अन्नजलकेभक्षणकरणेविषेभी तेगौवां समर्थनहींभइयां ॥ तबी तेगौवां गर्भकूंधारणकरेंगीयां तथा दुग्धकूंदेवैंगीयां याकेविषे क्याआशाहै ? ऐसीदुर्बलवृद्धगौवोंकूं सोउद्दालकमुनि ब्राह्मणोंकेतांई देणेकाआरंभकरताभया ॥ और ताउद्दालकमुनिनैं जिसनचिकेतापुत्रवासते सुंदरसुंदरगौवां राखीयांथ्यां ॥ सोनचिकेता स्वभावतैंही शास्त्रकेधर्मविषे श्रद्धावान्था ॥ तथा पंचवर्षकीअवस्थावालाथा ॥ सोनचिकेता ताउद्दालकपिताकेअंकविषेस्थितथा ॥ और ताउद्दालकपिताके ताअनुचितव्यवहारकूंदेखिकै सोनचिकेता आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ यालोकविषे जोपुरुष जिसप्राणीकेतांई सुखकीप्राप्तिकरैंहै ॥ सोपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे तिसीसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष यालोकविषे किसीप्राणीकूं दुःखकीप्राप्तिकरैंहै ॥ सोपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे तिसीदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहसर्वशास्त्रोंकासिद्धांतहै ॥ और याहमारेपितानैं इनब्राह्मणोंकेतांई जिनवृद्धगौवोंकेदेणेकाउद्यमकन्याहै ॥ तेवृद्धगौवां दुग्धादिकोंकीप्राप्तिकरिकै इनब्राह्मणोंकेसुखकाकारणनहींहैं ॥ किंतु उलटा तेवृद्धगौवां आपणेभरणपोषणकीचिंताद्वारा इनब्राह्मणोंकेदुःखकाहीकारणहोवैंगीयां ॥ यातें तिनवृद्धगौवोंकेदानदेणेकरिकै याब्राह्मणोंकूंदुःखकीप्राप्तिकरणेहारा यहहमारापिताभी दुःखकूंहीप्राप्तहोवैगा ॥ काहेतें ? यालोकविषे जोपुरुष ब्राह्मणोंकूंदुःखकीप्राप्तिकरैंहै ॥ सोपुरुष सुखतैंरहितभयकेदेणेहारेलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकार श्रुतिविषेकथनकन्याहै ॥

यातें यहहमारापिता जैसे तिननरकादिकलोकोंकूंनहींप्राप्तहोवै ॥ तैसे मैंनचिकेता यापिताकूं तिनवृद्धगौवोंकेदानकरणेतें निवारणकरौं ॥ किंवा याहमारेपितानैं हमारेवासते जेसुंदरगौवांराख्याहैं ॥ तेसुंदरगौवां यहहमारापिता ब्राह्मणोंकेतांई किसवासते नहीं देता ? और हमारेचिंताकरणेका यापिताकूं क्याप्रयोजनहै ? किंवा यालोकविषे पुत्र स्त्री सुवर्ण गौ इसतेंआदिलैकेजितनाधन है ॥ सोधन जबी याधनीपुरुषके परलोकसुखकासाधनहोवैहै ॥ तबीही धन यानामकरिकैकह्याजावैहै ॥ और जाधनकरिकै याधनीपुरुषकूं परलोककेसुखकीप्राप्तिनहींहोवैहै ॥ सोधन केवल याधनीपुरुषकेबंधनकरणेहारी लोहेकीशृंखलारूपहै ॥ और मैंनचिकेता याउद्दालकमुनिकापुत्रहूं ॥ यातें शास्त्रकीरीतिसें मैंभी यापिताकाधनहूं ॥ किंवा जिसपुत्रकेदेखतेहुए तापिताकूं कोईनरकदुःखकेप्राप्तिकानिमित्त आइकैप्राप्तहोवै ॥ और सोपुत्र तानरकदुःखकीप्राप्तिकेनिमित्तकूं निवृत्तनहींकरै ॥ सोपुत्र तापिताकापुत्र नहीं है ॥ किंतु सोपुत्र तापिताकेविष्ठामूत्रादिकमलकेसमानहै ॥ यातें मैंनचिकेता यापिताकूं आपणेदानकरणेविषेप्रेरणाकरौं ॥ जो मैंपुत्ररूपधनकूं आप किसब्राह्मणकेतांई देवोगे ॥ याप्रकारकावचन जबी मैंनचिकेता पिताकेप्रतिकहौंगा ॥ तबी ताहमारेवचनकूंश्रवणकरिकै यहहमारापिता हमारेवासतेराखीहुई सुंदरगौवोंकेदानकरणेका हमारातात्पर्यजाणिकरिकै तिनसुंदरगौवोंकूं ब्राह्मणोंकेतांई देवैगा ॥ अथवा याहमारेअभिप्रायकूं यहपिता जोकदाचित् नहींजाणैगा॥ तौभी ताहमारेवचनकूंश्रवणकरिकै यहपिता हमारेसैंपूछैगा ॥ तिसतेंअनंतर मैंनचिकेता यापिताकेप्रति आपणाअभिप्रायकहौंगा ॥ हेशिष्य ! याप्रकारकाविचारआपणेमनविषेकरिकै सोनचिकेता ताउद्दालकमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेपिता जैसे यहगौवां आपकाधनहै ॥ तैसे मैंपुत्रभी आपकाधनहूं ॥ यातें मेरेकूं किसब्राह्मणकेतांई आप देवोगे ? हेशिष्य ! याप्रकारकावचन जबी तानचिकेतानैं दोतीनवारपिताके प्रतिकह्या ॥ तबी सोउद्दालकमुनि तानचिकेतापुत्रके पंडितपणेकेअभिमानकूंदेखिकै क्रोधवान्होताभया ॥ और क्रोधवान्होइकै सो उद्दालकमुनि तानचिकेतापुत्रकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेनचिकेता ! तू हमारेस्नेहकानिरादरकरिकै आपणापंडितपणा दिखावताहै ॥ यातें सर्वजगत्केनाशकरणेहारा जोमृत्युहै ॥ तामृत्युकेतांई मैं तुमारेकूंदेवोंगा ॥ हेशिष्य ! ताउद्दालकमुनिनैं जबी

याप्रकारकावचनकह्या ॥ तबी सोनचिकेता तापिताकेवचनकूंश्रवणकरिकै आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ जैसे यालोकविषे कोईविचारतैंरहिततामसीपुरुष आपणेकूंहीदुःखकीप्राप्तिकरणेहारावचन उच्चारणकरैहै ॥ तैसे यहहमारापिता आपणेकूंदुःखकीप्राप्तिकरणेहारा यहवचन किसवासते कहताभयाहै? काहेतें? पुत्रकेमरणेतें जोपितामाताकूंदुःखहोवैहै॥ तादुःखकूं बुद्धिमान्पुरुष ब्रह्महत्याकाफलरूपकहैहैं ॥ और यहहमारापिताभी सर्वशास्त्रोंकेजानणेहारा बुद्धिमान्है ॥ यातैं याहमारेपितानैं आपणेकूं आपही तापुत्रमरणजन्यदुःखकीप्राप्ति किसवासतेकरी? यहहमारेकूं बहुतआश्चर्यहोवैहै॥ किंवा यापितानैं जोहमारेकूंयमकेतांईदियाहै॥ याकेविषे कोईहमारीहानिनहींहै ॥ किंतु उलटा हमारेकूंतौ पुण्यकीहीप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतें? यालोकविषे जोजोशरीर उत्पन्नभयाहै॥ सोसोशरीर किसीकालपाइकै अवश्यमृत्युकेवशहोवैगा ॥ ऐसेअवश्यभावीअर्थविषे मैंनचिकेता जोकदाचित् पिताकीआज्ञाकूंपालनकरिकै तामृत्युकूं प्राप्तहोवौंगा॥ तौ इसधर्मतैंपरे दूसराकोईधर्म हमारेकल्याणकाहेतुनहींहै ॥ किंतु यहपिताकेआज्ञाकापालनकरणाही हमारेकल्याणकाहेतुहै ॥ परंतु हमारेवियोगकरिकै याहमारेपिताकूं महान्दुःखकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और मेरेतैंविना यहहमारापिता एकक्षणमात्रभी नहींरहिसकैगा ॥ तापिताकेदुःखकाविचारकरिकै हमारेचित्तविषे महान्क्लेशहोवैहै ॥ आपणेमृत्युकरिकै हमारेकूं किंचित्मात्रभीक्लेशहोतानहीं ॥ किंवा मैंनचिकेता जोकदाचित् यापिताकेदुःखकूंदेखिकै तायमलोकविषे नहींजावौंगा ॥ अथवा अश्रद्धापूर्वकजावौंगा ॥ तौ मैंनचिकेता अधमभावकूंप्राप्तहोवौंगा ॥ तहांश्लोक ॥ उत्तमश्चिंतितं कुर्यात् प्रोक्तकारीतुमध्यमः ॥ अधमोऽश्रद्धयाकुर्यात् प्रत्याख्याताथतद्वचः ॥ अर्थयह ॥ यालोकविषे पुत्र तथाशिष्य तीनप्रकारके होवैहैं ॥ एकतौ उत्तमहोवैहैं ॥ और दूसरे मध्यमहोवैहैं ॥ और तीसरे अधमहोवैहैं ॥ तहां पितानैं तथागुरुनैं आपणेमनविषेचिंतन कऱ्याजोकोईकार्यहै॥ तापिताके तथागुरुके ताअभिप्रायकूं किसीनिमित्ततैंजाणिकरिकै जेपुत्र तथाजेशिष्य विनाहीकहेतें ताकार्यकूं श्रद्धापूर्वककरैहैं ॥ तेपुत्र तथातेशिष्य उत्तमकहेजावैहैं ॥ और तापितानैं तथागुरुनैं आपणेमुखसैंकह्याजोकार्यहै ॥ ताकार्यकूं जेपुत्र तथाजेशिष्य श्रद्धापूर्वककरैहैं ॥ तेपुत्र तथातेशिष्य मध्यमकहेजावैहैं॥ और पितानैं तथागुरुनैं आपणेमुखतैंकह्याजोकार्यहै॥

ताकार्यकूं जेपुत्र तथाजेशिष्य अश्रद्धापूर्वककरैहैं ॥ अथवा ताकार्यकूंनहींकरैहैं ॥ तेपुत्र तथातेशिष्य अधमकहेजावैहैं ॥ १ ॥ यातें यापिताकेजेबहुतशिष्यहैं तथा पुत्रहैं तिनसंपूर्णोंविषे मैंनचिकेता अधमभावकूंनहींप्राप्तहोवौं ॥ किंतु उत्तमभावकूं अथवा मध्यमभावकूं मैं प्राप्तहोवौं ॥ साउत्तमभावकीप्राप्ति अथवा मध्यमभावकीप्राप्ति हमारेकूं यापिताकीआज्ञामानणेकरिकैहीहोवैगी ॥ किंवा ॥ यालोककापरित्यागकरिकै मैंनचिकेता जबी यमलोकविषेजावौंगा ॥ तबी ताहमारेजाणेकरिकै कोईधर्मराजाकाप्रयोजन सिद्धहोवैगानहीं ॥ तथा हमारेजाणेकरिकै हमारेपिताकाभी कोईप्रयोजन सिद्धहोवैगानहीं ॥ उलटा हमारेवियोगकरिकै यह हमारापिता उन्मत्तअवस्थाकूंप्राप्तहोइकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवैगा ॥ यातें याहमारेपितानैं जोहमारेकूं यमकेतांईदेणेकावचनकह्या है ॥ सो केवलआपणेदुःखकेवासतेहीकह्याहै ॥ किंवा हमारेवियोगतेंअनंतर याहमारेपिताकूं जोदुःखहोवैगा सोतौहोवैगा ॥ परंतु अबीही याहमारेपिताकूं परमदुःखकीप्राप्तिभईहै ॥ काहेतें? याहमारेपिताकामुख अबी परमग्लानिकूंप्राप्तहुआहै ॥ और हमारेकूं देखिकरिकै यहहमारापिता आपणेनेत्रोंतें अश्रुवोंकापरित्यागकरैहै ॥ तथा यहहमारापिता स्नेहकरिकै वारंवार हमाराआलिंगन करैहै ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ यहहमारापिता अबीहीदुःखकूंप्राप्तभयाहै ॥ यातें मैंनचिकेता यापिताकेप्रति ऐसाकोईयुक्तिपूर्वक वचनकहौं ॥ जाकरिकै यहहमारापिता हमारेस्नेहकापरित्यागकरै ॥ जोकदाचित् यहहमारापिता हमारेस्नेहकरिकै आपणेवचनकूं मिथ्याकरैगा तौ तामिथ्यावचनरूपपापतें याहमारेपिताकूं नरककीप्राप्तिहोवैगी ॥ हेशिष्य! याप्रकारकाविचार आपणेमनविषे करिकै सोनचिकेता ताउद्दालकपिताकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ नचिकेताउवाच ॥ हेपिता! जन्मतेंलैकेअबपर्यंत आपनैं कोईमिथ्यावचननहींकह्या ॥ ऐसेआपणेसत्यपणेकूं तू विचारकरिकैदेख ॥ और तुमारेकुलविषे जेपूर्व पितापितामहादिकवृद्धपुरुषहुएहैं ॥ जेतुमारेवृद्धपुरुष आपणेमृत्युकेप्राप्तहुएभी मिथ्यावचनकूंनहींकहतेभयेहैं ॥ ऐसेआपणेवृद्धोंकीतरफ आपदेखो ॥ और तुमारेवंश्यकेतुल्य जेदध्यङ्अथर्वणादिक सत्यवादीब्राह्मणहुएहैं ॥ तथा अन्यभी जेक्षत्रियवैश्य सत्यवादीहुएहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकी तरफआपदेखो ॥ हेपिता! ब्राह्मणकेरूपकूंधारणकरिकैप्राप्तभयाजोइंद्रहै ॥ ताइंद्रकेतांई कर्णराजा आपणीत्वचादेताभयाहै ॥ और

शिबिनामाकोईधर्मात्मापुरुष शरणागतकपोतकीरक्षाकरणेवासते आपणेशरीरकामांस देताभयाहै ॥ और जीमूतवाहननामा कोई धर्मात्मापुरुष शरणागतकीरक्षाकरणेवासते किसीराक्षसकेतांई आपणाशरीर देताभयाहै ॥ और दधीचिनामाऋषि देवतावोंकेतां ई आपणीअस्थियांदेताभयाहै ॥ और दध्यङ्अथर्वणनामाऋषि आपणेसत्यवचनकरणेवासते आपणेमस्तककाछेदनकराइकेभी अ श्विनीकुमारोंकेतांई ब्रह्मविद्यादेताभयाहै ॥ और देवराजइंद्र आपणेवचनकेसत्यकरणेवासते आपणेशत्रुप्रतर्दनराजाकेतांई ब्रह्मवि द्यादेताभयाहै ॥ और याज्ञवल्क्यमुनि आपणेवचनकेसत्यकरणेवासते जनकराजाकेतांई कामवरदेताभयाहै ॥ और दशरथराजा आपणेवचनकेसत्यकरणेवासते प्राणोंतैंभीअत्यंतप्रियरामचंद्रपुत्रकूं महाभयानकवनविषे भेजताभयाहै ॥ इसतैंआदिलैकेअन्यभी अनेकसत्यवादीजन आपणेवचनकेसत्यकरणेवासते नानाप्रकारकेक्लेशोंकूं सहनकरतेभयेहैं ॥ तिनसंपूर्णसत्यवादीजनोंकीतरफ आपदेखो ॥ किंवा जैसे सूर्यभगवान् आम्रादिकवृक्षोंकेफलोंकूं परिपक्वकरैहै ॥ तैसे यहकालभगवान् दिनदिनविषे याजीवोंकेशरी रोंकूं मृत्युकेसन्मुखकरैहै ॥ और यहजीव पुण्यपापरूपकर्मोंकेवशतैं पुनःपुनःजन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ऐसेक्षणभंगुरअनित्यशरीरों कूंप्राप्तहोइके याजीवोंनैं पापकर्मकासंपादननहींकरणा ॥ किंतु पुण्यरूपसत्यकाहीसंपादनकरणा ॥ हेपिता ! जोतुम स्नेहकेवशहो इके हमारेकूं मृत्युकेतांई नहींदेवोंगे तौभी किसीकालपाइके मैं अवश्यमृत्युकूंप्राप्तहोवोंगा ॥ और आप तथायहअन्यप्राणीभी किसीकालपाइके अवश्यमृत्युकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ यातैं हेपिता ! हमारेस्नेहकापरित्यागकरिकै तुम हमारेकूं यमकेतांईदेके आपणेव चनकूंसत्यकरो ॥ तावचनकेसत्यकरणेकरिकै तुमारा तथाहमारा दोनोंकाकल्याणहोवैगा ॥ और हमारेस्नेहकेवशतैं जो तू आप णेवचनकूंमिथ्याकरैगा तौ तामिथ्यावचनजन्यपापतैं तुमारेकूंतौ दुःखकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और पिताकेआज्ञाकूंनमानणेकरिकै ह मारेकूं अधमभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ हेशिष्य ! याप्रकारकेवचन जबी तानचिकेतानैं उद्दालकपिताकेप्रतिकहे ॥ तबी सो उद्दाल कमुनि आपणेवचनकेसत्यकरणेवासते अत्यंतदुःखीहोइकै तानचिकेतापुत्रकूं यमलोकविषेभेजताभया ॥ और सोनचिकेता पिता कीभक्तिकेप्रभावतैं तथा आपणेतपकेप्रभावतैं तथा चित्तकीशुद्धिकेप्रभावतैं यास्थूलशरीरसहितही तायमलोककूंजाताभया ॥ और

आगेतैं सोयमराजा किसीदूसरेग्रामविषेगयाथा ॥ तावार्ताकूं यमकिंकरोंकेमुखतैंश्रवणकरिकै सोनचिकेता तायमराजाकेद्वारऊपरि तीनदिनपर्यंत उपवासकरताभया ॥ हेशिष्य ! जिसविचारकरिकै सोनचिकेता तीनदिनपर्यंत उपवासकरताभया ॥ ताविचारकूं तुम श्रवणकरो ॥ पितानैं हमारेकूं यमराजाकेताईं दियाहै ॥ सोयमराजा जोकदाचित् हमारेकूंनहींअंगीकारकरैगा ॥ तौ हमारेपिताका वचन मिथ्याहोवैगा ॥ यातैं मैंनचिकेता उपवासरूपहठकूंकरों ॥ जाहठकरिकै सोयमराजा हमारेकूंअंगीकारकरै ॥ याप्रकारकावि चारकरिकै सोनचिकेता तीनउपवासोंकूंकरताभया ॥ और सोयमराजाभी तानचिकेताकेधैर्यकीपरीक्षाकरणेवासते तीनदिन पर्यंत आपणेगृहविषे नहींआवताभया ॥ और सोसर्वज्ञयमराजा आपणेभृत्योंकेप्रति याप्रकारकीआज्ञाकरिकै बाहरिगयाथा ॥ जो यहनचिकेता जबीइहांआवै ॥ तबी तुमोनैं नानाप्रकारकेउपदेशकरिकै तानचिकेताकूं पुनःभूमिलोकविषेभेजणा ॥ और तेयमकिं कर तानचिकेताकूंयमलोकविषेआयाहुआदेखिकै तानचिकेताकेप्रति याप्रकारकेवचन कहतेभये ॥ हेनचिकेता ! याभयानकयमपुरी विषे तूब्राह्मणकाबालक किसवासतैआयाहै ? इसप्रकार जबी तिनयमकिंकरोंनैं तानचिकेतासैंपूछा ॥ तबी सोनचिकेता तिनयम किंकरोंकेप्रति आपणासंपूर्णवृत्तांत कहताभया ॥ यद्यपि सर्वज्ञयमराजाकेसमीपरहणेहारे तेयमकिंकर पूर्वहीं तावृत्तांतकूंजाणतेथे॥ तथापि पुनःतानचिकेताकेमुखतैं तिसवृत्तांतकूंश्रवणकरिकै तेयमकिंकर तानचिकेताकेप्रति याप्रकारकावचनकहतेभये ॥ हेनचि केता ! जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेजीवोंविषे कोईभीजीव यमराजाकेताईं दईये अथवा नहींदईये ॥ परंतु आयु ष्यकीसमाप्तितैंविना सोयमराजा किसीजीवकूंग्रहणकरतानहीं॥ किंतु आयुष्यकीसमाप्तितैंअनंतरही सोयम तिनजीवोंकूंग्रहणकरैहै॥ और सोयमराजाभी अबीइसकालविषे इहांहैनहीं ॥ यातैं हेनचिकेता ! तुम अबी शीघ्रही आपणेपिताकेगृहकूंजावो ॥ हेशिष्य ! याप्रकारकेवचन तेयमकिंकर तानचिकेताकेप्रति बहुतवारकहतेभये ॥ परंतु सोनचिकेता आपणेधैर्यतैं नहींचलायमानहोताभया॥ और तानचिकेताकेधैर्यकूंदेखिकै सोसर्वज्ञयमराजाभी तीसरेदिनतैंपीछे आपणेगृहकूंआवताभया॥ और तायमराजाकूं आयादेखिकै तेयमकिंकर तायमराजाकेप्रति याप्रकारकेवचनकहतेभये ॥ यमकिंकरउवाच ॥ हेयमराजा ! तुमारेगृहविषे अग्निरूप एकब्राह्मण

कावालकअतिथिआयाहै ॥ ताअतिथिरूपअग्निके शांतिकरणेवासते तुम शीघ्रही अर्घ्यपाद्यादिरूपजलकीप्राप्तिकरो ॥ हेयमराजा !
जैसे यालोकविषे प्रज्वलितमहान्अग्निकीशांति जलकरिकेहोवैहै ॥ तैसे अतिथिरूपअग्निकीशांति अर्घ्यपाद्यादिरूपजलकरिकेहो
वैहै ॥ और जैसे यालोकविषे जलकरिकेनहींशांतकर्‍याहुआअग्नि गृहादिकसर्वपदार्थोंकूंदग्धकरैहै ॥ तैसे अर्घ्यपाद्यादिरूपजलक
रिकै यागृहीपुरुषोंनें शांतिकूंनहींप्राप्तकर्‍याहुआ जोअतिथिरूपअग्निहै ॥ सोअतिथिरूपअग्नि तिनगृहीपुरुषोंके सर्वपदार्थोंकूंदग्ध
करैहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकेनिरूपणकरैहैं ॥ हेयमराजा ! जिसमंदबुद्धिगृहस्थपुरुषकेगृहविषे जोअतिथिब्राह्मण अन्नजला
दिकोंकीप्राप्तितैंविना क्षुधातृषावालारहैहैं ॥ सोअतिथिब्राह्मण तागृहस्थपुरुषके आशा प्रतीक्षा संगत सूनृता इष्ट पूर्त पुत्र पशु
इत्यादिकसर्वपदार्थोंकूंनाशकरैहै॥ इहां जिससुखकेप्राप्तिकानिश्चयनहींहोवै ॥ तासुखकेप्राप्तिकीजाइच्छाहै ताकानाम आशाहै ॥
और जिससुखकेप्राप्तिकानिश्चयहोवै ॥ तासुखकेप्राप्तिकीजाइच्छाहै ताकानाम प्रतीक्षाहै ॥ और यापुरुषकूं सुखकीप्राप्तिकरणेहारे
जेप्राणीहैं ॥ तिनप्राणियोंकेसाथ जोसमागमहै ताकानाम संगतहै॥ और यालोकविषे तथा वेदविषे अर्थकूंप्रकाशकरणेहारी तथा
सुखकीप्राप्तिकरणेहारी जावाणीहै ताकानाम सूनृताहै ॥ और अग्निकरिकेसिद्धहोणेहारे जेअग्निष्टोमादिकयज्ञहैं तिनोंकानाम
इष्टहै ॥ और सर्वजीवोंकेउपकारवासते जो कूप तलाव गृह आदिकोंकाकरणाहै याकानाम पूर्तहै ॥ और पाणिगृहीतस्त्रीतैंउत्प
न्नकर्‍ये जेसर्वलक्षणोंकरिकैसंपन्नसुतहैं तिनोंकानाम पुत्रहै ॥ और बहुतमूल्यवालीजेश्रेष्ठगौआदिकहैं ॥ तिनोंकानाम पशुहै ॥
इसतैंआदिलेके जितने तागृहीपुरुषकेपदार्थहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ जिसगृहीपुरुषकेद्वारतैं अतिथिब्राह्मण नि
राशजावैहै ॥ यातैं सर्वशास्त्रकेमर्यादाकूंजानणेहारे आपयमराजाकूंभी ताअतिथिब्राह्मणकासंतोषकरणाचाहिये ॥ हेशिष्य ! याप्र
कारकेवचन जबी तिनयमकिंकरोंनें यमराजाकेप्रतिकहे ॥ तबी सोयमराजा अत्यंतभयवान्होताभया॥ और सोयमराजा तानचि
केताअतिथिब्राह्मणकेसमीपजाइकै याप्रकारकावचन कहताभया॥ यमराजाउवाच॥ हेनचिकेता ! तूअतिथिब्राह्मण हमारेगृहविषे
तीनरात्रिपर्यंत अन्नजलकेग्रहणतैंविना रह्याहै ॥ ताकरिकै हमारेकूं महान्दोषकीप्राप्तिहोवैगी॥ यातैं तादोषकीनिवृत्तिवासते मैंय

मराजा तुमारेतांई तीनवरदेताहूं ॥ जोतुमारीइच्छाहोवै सोहमारेसैंमागो ॥ हेनचिकेता! जोतू हमारेप्रसन्नकरणेवासते उद्यम
वालाहुआहै तौ तुमारेभीकल्याणहोवै ॥ और मैंयमराजाका तुमअतिथिब्राह्मणकेतांई नमस्कारहोवै ॥ तुमअतिथिब्राह्मणकेप्र
सादतैंकुटुंबसहितमैंयमराजाकूं किसीभीदुःखकीप्राप्तिनहींहोवै ॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी तायमराजानैं नचिकेताकेप्रति
कह्या ॥ तबी सोनचिकेता तायमराजासैं तीनवरमागताभया ॥ तहां एकतौ आपणेपिताकीप्रसन्नतारूपवर मागताभया ॥ और
दूसरा अग्निकाज्ञानरूपवर मागताभया ॥ और तीसरा आत्माकाज्ञानरूपवर मागताभया ॥ अब पिताकीप्रसन्नतारूप प्रथमव
रका विस्तारतैंनिरूपणकरैंहैं ॥ हेयमराजा! जैसे मैंनचिकेता तुमारेलोकविषे तुमारेप्रसादतैं सर्वदुःखतैंरहितहुआस्थितहूं ॥ त
था प्रसन्नमनहूं तथा क्रोधतैंरहितहूं ॥ तैसे हमाराउद्दालकनामापिताभी सर्वदुःखोंतैंरहितहोवै ॥ तथा मनकेसंतापतैंरहित
होवै तथा क्रोधतैंरहितहोवै ॥ और इसयमलोकतैं जबीमैं पिताकेसमीपजावौंगा ॥ तबी ताहमारेपिताका हमारेविषे अविश्वासन
हींहोवै ॥ किंतु जैसे पूर्व हमारेकूं आपणापुत्रजाणिकरिकै हमारेसाथ संभाषणकरताथा ॥ तैसेहीपुनःहमारेसाथ संभाषणकरै ॥ या
प्रकारकाप्रथमवर हमारेतांईदेवो ॥ **शंका** ॥ हेनचिकेता! सर्वमुनियोंविषेश्रेष्ठ जोउद्दालकमुनिहै ॥ ताकेविषे दुःख संताप क्रोध
अविश्वास यहचारोंसंभवैनहीं ॥ यातैं तिनोंकेनिवृत्तिकावर किसवासते तुम हमारेसैंमागतेहो? **समाधान** ॥ हेयमराजा! सर्वशा
स्त्रोंकूंजानणेहारा जोहमारापिताहै ॥ ताकेविषे यद्यपि वास्तवतैं तेदुःखादिक संभवैनहीं ॥ तथापि व्यवहारदृष्टिकूंलेकै हमारेकूं तापि
ताविषे दुःखादिकोंकीसंभावनाहोवैहै ॥ काहेतैं? तापिताका हमारेविषेबहुतस्नेहथा ॥ यातैं हमारेवियोगकरिकै सोपिता अवश्यदुः
खकूंप्राप्तहुआहोवैगा ॥ याप्रकार हमारेकूं तापिताविषे दुःखकीसंभावनाहोवैहै ॥ और तापितानैं क्रोधवान्होइकै हमारेप्रति या
प्रकारकावचन कह्याथा ॥ हेनचिकेता! हमारेस्नेहकानिरादरकरिकै हमारेआगे तू आपणेपंडितपणेकाअभिमानकरताहै ॥ यातैं
मैंउद्दालक तुमारेकूं मृत्युकेतांईदेवौंगा ॥ याप्रकारके तापिताकेवचनकरिकै हमारेकूं तापिताविषे संतापकी तथाक्रोधकी संभावना
होवैहै ॥ और यमलोकविषेजाइकै पुनःतिसीशरीरकरिकै कोईभीप्राणी भूमिलोकविषे आवतानहीं ॥ और मैंनचिकेता जबी इसी

शरीरकरिकै ताभूमिलोकविषेजावौंगा ॥ तबी हमारेविषे तापिताकाअविश्वास अवश्यहोवैगा ॥ ऐसीमेरेकूंसंभावनाहोतीहै ॥ या
तें हेभगवन्! मैंनचिकेतानैं तापिताविषे संभावनाकरेजे दुःख संताप क्रोध अविश्वास यहचारों ॥ तेदुःखादिकचारों हमारेपि
ताविषे नहींप्राप्तहोवै ॥ यहप्रथमवर मैंनचिकेता आपसैंमागताहूं ॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी तानचिकेतानैं यमराजाके
प्रतिकह्या ॥ तबी सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेनचिकेता! यहपिताकीप्रसन्नतारूपजोप्रथमव
र तुमनैं हमारेसैंमाग्याहै ॥ सोप्रसन्नतारूपवर तुमारेपिताकूं आजदिनविषेहीप्राप्तहोवैगा ॥ हेनचिकेता! हमारीप्रेरणाकरिकै
जबीतू इहांसें भूमिलोकविषेजावैगा ॥ तबीसोतुमारापिता पूर्वकीन्यांईही तुमारेशरीरविषे विश्वासकूंप्राप्तहोवैगा ॥ तथा दुःख
संताप क्रोध यातीनोंतैंरहितहोवैगा ॥ और मृत्युकेमुखतें तुमारेकूं पुनःआयाहुआदेखिकरिकै सोउद्दालकमुनि स्वस्थचित्तहो
इकै पूर्वकीन्यांई निद्राआहारादिकोंकूंकरैगा ॥ और जिसप्रकार तुमारापिता दुःखादिकोंतैंरहितहोवैगा ॥ तैसे तूभी दुःखादिकों
तैंरहितहोवैगा ॥ हेशिष्य! इसप्रकार पिताकीप्रसन्नतारूप प्रथमवरकूं यमराजातैंलैकरिकै सोनचिकेता तायमराजासें पुनःअ
ग्निकाज्ञानरूपदूसरावर मागताभया ॥ हेयमराजा! हमनैं वेदवेत्ताब्राह्मणोंकेमुखतें यहवार्ता श्रवणकरीहै ॥ जोस्वर्गलोकतैंआदि
लैके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेंकीऊपरिकेलोकहैं ॥ तिनस्वर्गादिकलोकोंविषेप्राप्तभये जेअधिकारीमनुष्यहैं ॥ तिनमनुष्योंकूं मृत्यु
रूपतुमारेतैंभयकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और जराअवस्था ज्वरादिकव्याधि शत्रु क्षुधा तृषा शोक मोह इसतैंआदिलैके जेअनेकप्रकार
केविकारहैं ॥ तिनविकारोंतैंभी तिनमनुष्योंकूं भयकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तेस्वर्गादिकलोकवासीजीव सुखकूंप्राप्तहोइकै सर्वदा
प्रसन्नरहेहैं ॥ याप्रकार हमनैं तिनवेदवेत्ताब्राह्मणोंकेमुखतैंश्रवणकऱ्याहै ॥ हेभगवन्! तेस्वर्गादिकलोक याजीवोंकूं चयननामायज्ञ
केअग्निकरिकै प्राप्तहोवैहैं ॥ यहभी हमनैं श्रवणकऱ्याहै ॥ और स्वर्गलोकविषेनिवासकरणेहारे जेआपदेवताहो ॥ तेआप ताअग्नि
केस्वरूपकूं भलीप्रकारजाणतेहो ॥ यातें श्रद्धावान्मैंशिष्यकेताईं ताअग्निकेस्वरूपकाउपदेशकरो ॥ हेभगवन्! याअग्निकरिकै
स्वर्गादिकलोकोंकूंप्राप्तहुए जेअधिकारीजनहैं ॥ तेअधिकारीजन ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिद्वारा मोक्षरूपमुख्यअमृतकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और

तेअधिकारीजन तिनस्वर्गादिकलोकोंविषे प्रलयपर्यंतस्थितिरूप गौणअमृतकूंभीप्राप्तहोवैहैं ॥ याप्रकारका ताअग्निकाप्रभाव हम नें तिनवेदवेत्ताब्राह्मणोंकेमुखतैंश्रवणकर्‌याहै ॥ यातैं ताअग्निकाज्ञानरूपदूसरावर आप कृपाकरिकै हमारेताईंदेवो ॥ हेशिष्य ! याप्रकार जबी दूसरावर तानचिकेतानैं यमराजासैंमाग्या ॥ तबी सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेनचिकेता ! स्वर्गादिकलोकोंकेप्राप्तिकासाधनरूप जोअग्निहै ॥ ताअग्निकेस्वरूपकूं हम भलीप्रकारजाणतेहैं ॥ यातैं सर्व अंगों करिकैयुक्त ताअग्निकास्वरूप मैंयमराजा तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ तू सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ हेनचिकेता ! स्वर्गादिकलो कोंकेप्राप्तिका तथास्थितिका कारणरूपजोअग्निहै ॥ सोअग्नि विराट्‌रूपहै ॥ यातैं जैसे यहलोकप्रसिद्धअग्नि सर्वकाष्ठोंविषेरहा है ॥ तैसे सोविराट्‌रूपअग्निभी तीनलोकोंविषेस्थितहै तोभी सोअग्निगुह्यहै ॥ अथवा वास्तवतैंसाक्षीआत्मरूपहै ॥ यातैं ताअ ग्निकूं बुद्धिमान्‌पुरुषोंकेबुद्धिरूपगुहाविषेस्थितहुआ तूजाण ॥ हेशिष्य ! याप्रकारकावचनकहिकै सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति सर्वलोकोंकाकारणरूप ताविराट्‌रूपअग्निकास्वरूप कहताभया ॥ और चयननामायज्ञविषे ताअग्निकेस्वरूपकीसिद्धिकरणेहारी जेइष्टकाहैं ॥ तेइष्टका जितनीसंख्यावालीहोवैहैं ॥ तथा जैसेरूपवालीहोवैहै ॥ तथा जिसप्रकार तेइष्टका रखीतियांहैं ॥ तथा ताकेविषेउपयोगी जितनेकीदूसरेपदार्थहैं तथामंत्रहैं तथाक्रियाहैं ॥ सासंपूर्णप्रक्रिया तानचिकेताकेप्रति सोयमराजा कहता भया ॥ हेशिष्य ! याप्रकार अग्निकास्वरूपकहिकै सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेनचिकेता ! मैंयमराजानैं तुमारेप्रति जिसप्रकार अग्निकास्वरूपकह्याहै ॥ सासंपूर्णप्रक्रिया तुम हमारेआगेकथनकरो ॥ हेशिष्य ! याप्रका रके यमराजाकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोनचिकेता जिसप्रकार तायमराजाकेमुखतैं अग्निकास्वरूप श्रवणकर्‌याथा ॥ तिसीप्रकार ताअग्निकास्वरूप कथनकरताभया ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार जबी तानचिकेतानैं भयतैंरहितहोइकै तायमराजाकेसमीप ताअग्नि कास्वरूप कथनकर्‌या ॥ तबी सोयमराजा तानचिकेताकी अलौकिकबुद्धिदेखिकै बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और सोयमराजा ता नचिकेताकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेनचिकेता ! हमारेकर्‌येहुएउपदेशका तुमनैं यथावत् कथनकर्‌याहै ॥ यातैं तु

मारे तीक्ष्णबुद्धिकूंदेखिकै मैंयमराजा तुमारेऊपरि बहुतप्रसन्नभयाहूं ॥ यातैं पूर्वजोतुमनैं तीनवरमागेहैं ॥ सोतौ मैंतुमारेतांई देवोंगा ॥ परंतु तिनतीनोंवरोंतैं यहअधिकवर मैं तुमारेतांई देताहूं ॥ तावरकूं तुम अंगीकारकरो ॥ हेनचिकेता! हमनैं तुमारेप्रति जिसअग्निकाउपदेशकऱ्याहै ॥ सोअग्नि आजदिनतैंलैके तुमारेनामकाहीप्रसिद्धहोवैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ यालोकविषे जबपर्यंत यहवेदरहैंगे ॥ तथा जबपर्यंत यहसूर्यभगवान्‌रहेगा ॥ तथा जबपर्यंत यहपांचभौतिकजगत्‌रहेगा ॥ तबपर्यंत वेदवेत्ता महात्मापुरुष ताअग्निकूं नाचिकेताग्नि यानामकरिकैकथनकरैंगे ॥ नचिकेताकीजोअग्निहोवै ताकानाम नाचिकेताग्निहै ॥ इसप्रकार यहअग्नि तुमारेनामसैंप्रगटहोवैगा ॥ और हेनचिकेता! दूसरा यहदिव्यमालारूपवर मैं तुमारेतांईदेताहूं ॥ तामालाकूं तुम आपणेकंठविषेधारणकरो ॥ कैसीहैसामाला ? मणियोंकेसमान जेश्रेष्ठसुवर्णकेदाणेहैं ॥ तेदाणे परोयेहुएहैंजिनोंविषे ऐसेअनेकसूत्रोंकरिकैयुक्तहै ॥ और बहुतमूल्यवाले जेवज्रादिकनवीनरत्नहैं तिनरत्नोंकरिकैजडितहै ॥ तथा स्थूलआमलकफलकेसमान जेअनेकमुक्ताहैं तिनोंकरिकैजडितहै ॥ तथा सूर्यकेसमान जाकाप्रकाशहै ॥ तथा नानाप्रकारकेशब्दोंकरिकैयुक्तहै ॥ ऐसीविचित्रदिव्यमालाकूं तू आपणेकंठविषेधारणकर ॥ जैसे मेघ विद्युत्‌कूंधारणकरैहैं ॥ तैसे तामालाकूं तू धारणकर ॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचनकहिकै सोयमराजा तानचिकेताकेतांई सादिव्यमालादेताभया॥ अब तानाचिकेतनामाअग्निके माहात्म्यकूंवर्णनकरैहैं ॥ हेनचिकेता! मेरेवरकरिकै नाचिकेतसंज्ञाकूंप्राप्तभया जोयहअग्निहै॥ ताअग्निकूं जोमातापितागुरुकरिकै शिक्षित अधिकारीपुरुष चयननामायज्ञकरिकै तीनवार संपादनकरैगा ॥ और ताअग्निकरिकै अग्निष्टोमादिकतीनयज्ञोंकूंकरैगा ॥ सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मलोककीप्राप्तिद्वारा जन्ममृत्युकूंतरैंगा ॥ अथवा सोअधिकारीपुरुष इसीजन्मविषे ब्रह्मज्ञानकेसाधनसंपत्तिकूंप्राप्तहोइके जन्ममृत्युसैंतरैगा ॥ अथवा सोअधिकारीपुरुष आपणेपुण्यकर्मपर्यंत पुनरावृत्तितैंरहितहुआ स्वर्गलोकविषेनिवासरूप जन्ममृत्युकेतरणकूं प्राप्तहोवैगा ॥ अथवा सोअधिकारीपुरुष मोक्षरूप जन्ममृत्युकेतरणकूं प्राप्तहोवैगा ॥ परंतु तिनअधिकारीपुरुषोंविषेभी मोक्षरूपफलकीप्राप्तितौ किसीएकनिष्कामअधिकारीकूंहीहोवैगी ॥ हेनचिकेता! हिरण्यगर्भतैंउत्पन्नभया जोयहविराट्‌रूपअग्नि

है ॥ सोयहविराट्रूपअग्नि सर्वज्ञरूपहै ॥ तथा अत्यंतप्रकाशमान्है ॥ तथा संपूर्ण सुरअसुरोंकरिकै स्तुतिकरणेयोग्यहै ॥ ऐसेविरा ट्रूपअग्निकूं गुरुकेमुखतैंजाणिकरिकै जेअधिकारीपुरुष यज्ञादिरूपकर्मोंकूं तथाउपासनाकूं करैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष आपणेआपणे भावनाकेअनुसार स्वर्गरूपशांतिकूं अथवा मोक्षरूपशांतिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति नानाप्रकारकेफलसहित ताअग्निकाउपदेशकरिकै पुनःयाप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेनचिकेता ! जोअग्नि तुमनैं हमारेसैंपू छाथा ॥ और जिसअग्निकाज्ञान नानाप्रकारकेफलोंसहित हमनैं तुमारेप्रति कथनकर्‍याहै ॥ सोयहअग्नि स्वर्गरूपकरिकै प्रत्यक्षदी खेहै ॥ हेनचिकेता ! अग्निकाज्ञानरूप दूसरावर तुमनैं हमारेसैंमाग्याथा ॥ सोहमनैं तुमारेताईं दूसरावरदिया ॥ अबी तीसरावर तू हमारेसैंमाग ॥ हेशिष्य ! याप्रकारकावचन जबी तायमराजानैं नचिकेताकेप्रतिकह्या ॥ तबी सोनचिकेता तीसरेवरकेप्राप्तिकी इच्छाकरिकै तायमराजाकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेयमराजा ! पूर्वहमनैं वेदवेत्तामहात्मापुरुषोंकेमुखतैं याप्रकारके वचन श्रवणकरैहैं ॥ यालोकविषे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेशरीरोंकरिकैयुक्त जितनेकीजीवहैं ॥ तेसंपूर्ण जीव आपणेआपणेप्रारब्धकर्मकेसमाप्तहुएतैंअनंतर अवश्यमृत्युकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ यहजीव पुण्यपापकर्मके वशतैं जिसजिसशरीरकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतिसशरीरकेसाथही तिनजीवोंकामृत्यु उत्पन्नहोवैहै ॥ सोतिनजीवोंकामृत्युआजदिनवि षेहोवै ॥ अथवा शतवर्षतैंअनंतरहोवै ॥ याकेविषे कोईनियमनहींहै ॥ परंतु जोजोजीव उत्पन्नहोवैहै ॥ ताजीवकामृत्यु अवश्यक रिकैहोवैहै ॥ हेभगवन् ! अस्मदादिकजीवोंकीक्यावार्ताहै ? परंतु जन्मकरिकैयुक्त जेब्रह्मादिकदेवताहैं ॥ तिनदेवतावोंकाभी मृत्यु अवश्यहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ अतोऽन्यदार्तं ॥ अर्थयह ॥ अधिष्ठानआत्मातैंभिन्न जितनाकीअनात्मजगत्है ॥ सोजगत्मृत्युकरिकै युक्तहै ॥ तहांस्मृति ॥ जातस्यहिध्रुवोमृत्युर्ध्रुवंजन्ममृतस्यच ॥ अर्थयह ॥ जोजोप्राणी जन्मकूंप्राप्तभयाहै ताका मृत्युअवश्य होवैहै ॥ और जोजोअज्ञानीजीव मरणकूंप्राप्तभयाहै ॥ ताका जन्मभी अवश्यहोवैहै ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनोंतैं जन्मवालेपदा र्थोंका मृत्युअवश्यहोवैहै ॥ यहअर्थनिश्चयहोवैहै ॥ अब मरणअवस्थातैंअनंतर आत्मा विद्यमानहै अथवा नहींविद्यमानहै ॥ या

प्रकारकेसंशयकेदिखावणेवासते प्रथम जीवत्‌अवस्थाविषेही तासंशयकानिरूपणकरैहै ॥ हेयमराजा ! कोईकचार्वाकादिकनास्तिक याशरीरकेविद्यमानहुएभी आत्माकेसत्ताकाअभाव कथनकरैहैं ॥ ताअर्थविषे तेचार्वाकवादी याप्रकारकीयुक्तियां कथनकरैहैं ॥ वेदकूंमानणेहारेआस्तिकपुरुषोंनें जोभावरूपआत्मामान्याहै ॥ सोआत्मा यासंघाततैंभिन्नहोइकैप्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं सोआत्मा यास्थूलसंघाततैंभिन्ननहींहै ॥ किंतु यहसंघातही आत्मरूपहै ॥ किंवा जोवादी यासंघाततैं आत्माकूंभिन्नमानैंहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहियै ॥ सोतुमाराआत्मा स्पर्शादिकगुणोंवालाहै अथवा तिनस्पर्शादिकगुणोंतैंरहितहै ? तहां सोआत्मा स्पर्शादिकगुणोंवालाहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? यालोकविषे जोजोपदार्थ स्पर्शगुणवालाहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ त्वक्‌इंद्रियकरिकैग्रहणहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ स्पर्शगुणवालेहैं ॥ यातैं तेघटादिकपदार्थ त्वक्‌इंद्रियकरिकै ग्रहणहोवैहैं ॥ तैसे सोतुमाराआत्माभी स्पर्शगुणवालाहोणेतैं त्वक्‌इंद्रियकरिकै ग्रहणहोवैगा ॥ और तास्पर्शगुणवालेआत्माका जोत्वक्‌इंद्रियकरिकैग्रहणमानोगे ॥ तौ सोतुमाराआत्मा प्राणवायुरूपहोवैगा ॥ और आत्माकूंतुमोंनें नित्यअंगीकारकर्‍याहै ॥ और यहवायुरूपप्राण अनित्यहै ॥ यातैं आत्माकूंनित्यमानणेहारे तुमवादियोंकेमतविषे ताआत्माकूं अनित्यप्राणवायुरूपतासंभवैनहीं ॥ किंवा जोप्राणात्मवादी वायुरूपप्राणकूंही आत्मामानैंहैं ॥ ताप्राणात्मवादीसैं यहपूछाचाहियै ॥ यासंघातविषे जैसे वायुरूपप्राणविद्यमानहै ॥ तैसे तेज जल पृथिवी यहतीनभूतभीविद्यमानहैं ॥ तिनचारोंविषे एकप्राणही आत्मरूपहै ॥ तेजादिकभूत आत्मारूपनहींहैं ॥ याअर्थकीसिद्धिकरणेवासते तुमोंनें कोईयुक्तिकहीचाहियै ॥ शंका ॥ हेचार्वाकवादी ! जिसपदार्थकेअभावहुए याशरीरकेजीवनकाअभावहोवै ॥ तापदार्थकानाम आत्माहै ॥ याप्रकारका आत्माकालक्षण याप्राणविषेहीघटैहै ॥ काहेतें ? प्राणोंकेअभावहुएही याशरीरकेजीवनकाअभाव यालोकविषेदीखताहै ॥ याप्रकारकीयुक्तिकरिकै प्राणोंविषेही आत्मरूपतासिद्धहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेप्राणात्मवादी ! तायुक्तिकरिकै जैसे वायुरूपप्राणोंविषे आत्मरूपतासिद्धहोवैहै ॥ तैसे तायुक्तिकरिकै तेज जल पृथिवी यातीनभूतोंविषेभी आत्मरूपतासिद्धहोवैहै ॥ काहेतें ? याशरीरविषे तेजरूपजाउष्णताहै ॥

तथा जलरूपजोरक्तहै ॥ तथा पृथिवीरूप जोवीर्यकासारभूत ओजनामाअष्टमधातुहै ॥ यातीनोंका जबीअभावहोवैहै ॥ तबी याशरीरोंकेजीवनकाभी अभावहोवैहै ॥ यातैं वायुरूपप्राणकीन्याईं तेज जल पृथिवी यातीनोंविषेभी आत्मरूपताहोणीचाहिये ॥ किंवा जिसकालविषे याजीवोंकामरणहोवैहै ॥ तिसकालविषे याजीवोंकेशरीरमैं प्राण उष्णता रक्त ओज याचारोंका समानहीअभावहोवैहै ॥ और तिनचारोंविषे जडरूपताभीसमानहीहै ॥ यातैं तिनचारोंविषे एकवायुरूपप्राणकूंतौ आत्मरूपमानणा ॥ और तेज जल पृथिवी यातीनोंकूं आत्मरूपनहींमानणा ॥ यापक्षकेअंगीकारकरणेविषे कोईयुक्तिहैनहीं ॥ शंका ॥ हे चार्वाकवादी! यासंघातविषे जोज्ञानउत्पन्नहोवैहै ॥ ताज्ञानकाकारण वायुरूपप्राणहीहै ॥ तेजादिकतीनभूत ताज्ञानकेकारणहैं नहीं ॥ याकारणतैं सोवायुरूपप्राणही आत्मरूपहै ॥ तेजादिकतीनभूत आत्मरूपनहींहैं ॥ **समाधान** ॥ हेप्राणात्मवादी! जिस कालविषे याजीवोंकूं घटादिकपदार्थोंकाज्ञानहोवैहै ॥ तिसकालविषे यासंघातमैं जैसे सोवायुरूपप्राण विद्यमानहै ॥ तैसे उष्णता रुधिर ओज यह तीनोंभीविद्यमानहैं ॥ यातैं तिनचारोंकेविद्यमानहुएभी एकवायुरूपप्राणकाही सोज्ञान धर्महै ॥ तेजादिकतीनभूतोंका सोज्ञान धर्मनहींहै ॥ यहकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ यातैं शास्त्रयुक्तितैंरहित जेकोईमूढबालकवादीहैं ॥ तिनवादियोंनैं मोहमात्रतैं यहप्राणात्मवाद प्रगटकऱ्याहै ॥ परंतु सोप्राणात्मवाद किसीयुक्तिप्रमाणतैं सिद्धहोइसकैनहीं ॥ किंवा जोप्राणात्मवादी प्राणकूंही आत्मामानैहैं ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोतुमाराप्राणरूपआत्मा जबी परलोकविषेजावैहै ॥ तबी सोप्राणरूपआत्मा निराधारहुआ किसप्रकारजावैहै? और जैसे यहलोकप्रसिद्धबाह्यवायु आकाशविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सोप्राणरूपआत्माभी परलोकविषेजाताहुआ तामार्गविषेही लयभावकूं किसवासतेनहींप्राप्तहोता? यादोनोंप्रश्नोंकाउत्तर तुमप्राणात्मवादियोंनैं कह्याचाहिये ॥ किंवा यालोकविषे चर्मादिकोंविषे निरोधकऱ्याहुआजोवायुहै ॥ सोवायु तबपर्यंतही ताचर्मादिकोंविषेरहेहै ॥ जबपर्यंत तिनचर्मादिकोंविषे कोईछिद्रनहींभया ॥ तिनचर्मादिकोंविषेछिद्रहुएतैंअनंतर तिनचर्मादिकोंविषेरहैनहीं ॥ किंतु तिनचर्मादिकोंतैं सोवायु तिसछिद्रद्वारा बाहरिनिकसिजावैहै ॥ यहवायुकास्वभाव सर्वलोकोंकूंअनुभवसिद्धहै ॥ और सु

खादिकनवद्वारोंवाला जोयहशरीरहै ॥ ताशरीरविषेरहताहुआ सोतुमाराप्राणरूपआत्मा याशरीरकापरित्यागकरिकै बाहरिकि सवासतेनहींजाता? और सोप्राण याशरीरकापरित्यागकरिकै बाहरिजातानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ याशरीरविषे कोईपदार्थ तिसप्राणकेबंधनकरणेहाराहै ॥ जिसपदार्थकरिकैबांध्याहुआ सोतुमाराप्राणरूपआत्मा याशरीरकापरित्यागकरिकै बाहरिजातानहीं ॥ सोप्राणोंकेबंधनकरणेहारा कौनपदार्थहै? सोपदार्थ तुमोंनैं कह्याचाहिये ॥ शंका ॥ हेचार्वाकवादी! जिनपुण्यपापरूपकर्मोंनैं याशरीरकीप्राप्तिकरीहै ॥ तेपुण्यपापरूपकर्महीं याशरीरविषे ताप्राणकेस्थितिकाकारणहै ॥ और तेपुण्यपापरूपकर्म जबी सुखदुःखरूपभोगकूंदेकैसमाप्तहोवैहै ॥ तबी सोप्राणभी याशरीरविषेरहैनहीं ॥ समाधान ॥ हेप्राणात्मवादी! तुमनैं जिसपुण्यपापरूपकर्मोंकेअधीन यासंघातविषे प्राणोंकीस्थिति कथनकरीहै ॥ तेपुण्यपापरूपकर्म नित्यहैं अथवा अनित्यहैं? तहां तेपुण्यपापरूपकर्म नित्यहैं यहप्रथमपक्ष जो तू अंगीकारकरैं तौ जिनपुण्यपापरूपकर्मोंकरिकै याशरीरविषे ताप्राणकीस्थितिविनाशहोवैहै ॥ तेपुण्यपापरूपनित्यकर्महीं आत्मरूप किसवासतेनहींहोवै? और तेपुण्यपापरूपकर्म अनित्यहैं यहदूसरापक्ष जो तू अंगीकारकरै तौ जैसे तापुण्यपापरूपकर्मोंकेनाशतैं ताप्राणरूपवायुका याशरीरतैंबाहरिनिकसणा तुम कल्पनाकरतेहो ॥ तैसे तापुण्यपापरूपकर्मकेनाशतैंअनंतर ताप्राणरूपआत्माकानाश तुम किसवासतेनहींकल्पनाकरतेहो? किंतु तापुण्यपापरूपकर्मोंकेनाशतैंअनंतर ताप्राणरूपआत्माकानाशभी तुमोंनैं अंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ सोप्राणरूपआत्माकानाश तुम अंगीकारकरतेनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जेवादी प्राणकूंहीआत्मामानैंहैं ॥ तिनप्राणात्मवादियोंकेमतविषेभी देहात्मवादियोंकीन्यांई ताप्राणरूप आत्माका परलोकविषेगमनसंभवैनहीं ॥ यातैं जेचार्वाकादिकनास्तिक पृथिवी जल तेज वायु याचारीभूतोंकेसमुदायरूपशरीरकूंही आत्मामानैंहैं ॥ तिनचार्वाकनास्तिकोंकेमतकूं अंगीकारकरिकैही किसीनास्तिकनैं नाममात्रकाभेदकरिकै प्राणकूंआत्मा मान्याहै ॥ परंतु वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ तिसप्राणात्मवादीकेमतविषेभी तिनवायुआदिकभूतोंकूंही आत्मरूपता सिद्धहोवैहै ॥ यातैं यासंघाततैंभिन्न कोईदूसरा स्पर्शगुणवालाआत्माहैनहीं ॥ किंवा यासंघाततैंभिन्न किसीआत्माविषे जैसे

स्पर्शगुण प्रतीतनहींहोवैहै ॥ तैसे रूप रस गंध यहतीनोंगुणभीप्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं यासंघाततैंभिन्न जैसे कोईस्पर्शगुणवाला आत्मानहींहै ॥ तैसे यासंघाततैंभिन्न कोईरूपगुणवाला तथा रसगुणवाला तथा गंधगुणवालाभी आत्माहैनहीं ॥ किंवा जोवादी यासंघाततैंभिन्न शब्दगुणवालाकोई आत्मामानैं सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं? पृथिवी जल तेज वायु यहचारिभूतहीशब्दगुणवालेहुएप्रतीतहोवैहैं ॥ याचारिभूतोंतैंभिन्न किसीभीपदार्थविषे सोशब्दगुण प्रतीतहोतानहीं ॥ जोकदाचित् सोवादी याचारिभूतोंतैंभिन्नभीकिसी पदार्थकूं ताशब्दगुणवालाअंगीकारकरै तौ तावादीकेमतविषे याचारिभूतोंतैंभिन्न वंध्यापुत्रभी मधुरशब्दवालाहोणाचाहिये ॥ किंवा जोवादी यासंघाततैंभिन्न किसीआत्माकूं शब्दगुणवालाअंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ तुमारेमतविषे ताशब्दगुणवालेआत्माकाज्ञान किसप्रमाणकरिकैहोवै है सोप्रमाण तुमनैं कह्याचाहिये ॥ तहां सोवादी जोश्रोत्रेंद्रियकरिकै ताआत्माकाज्ञानमानैं सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं? सोश्रोत्रेंद्रिय एकतौशब्दगुणकूंग्रहणकरै है ॥ तथा ताशब्दविषेवर्त्तणेहारी शब्दत्वादिकजातियोंकूंग्रहणकरैहै ॥ तथा तिनशब्दोंकेअभावकूंग्रहणकरै है ॥ परंतु सोश्रोत्रेंद्रिय शब्दगुणवालेद्रव्यकूंग्रहणकरै है यहप्रक्रिया किसीभीवादीनैं अंगीकारकरीनहीं ॥ यातैं ताशब्दगुणवालेआत्माकाज्ञान श्रोत्रेंद्रियकरिकैसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेचार्वाकवादी! ताशब्दगुणवालेआत्माकाज्ञान मनकरिकैहीहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेवादी! मनकरिकैभी ताशब्दगुणवालेआत्माका ज्ञानहोइसकैनहीं ॥ काहेतैं? याजीवोंकामन जिसजिसमनोरथादिकोंकीकल्पनाकरै है ॥ तिसीतिसीमनोरथादिकपदार्थोंकूं यहजीव तामनकरिकैदेखैहै ॥ शब्दादिकगुणोंकूं तथा शब्दादिकगुणवालेद्रव्योंकूं यालोकविषे कोईभीजीव मनकरिकैदेखतानहीं ॥ किंवा स्पर्शादिकगुणोंवालाआत्माहै यापक्षविषे जैसे ताआत्माकूं अनित्यरूपताप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे स्पर्शादिकगुणरूपआत्माहै यापक्षविषेभी ताआत्माकूं अनित्यरूपताही प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं स्पर्शादिकगुणरूपभी सोआत्मानहींहै ॥ किंवा जेवादी स्पर्शादिकोंकूंगुणरूपमानैहैं ॥ और आत्माकूं द्रव्यरूपमानैहैं ॥ और गुणोंका तथा द्रव्योंका परस्परभेदमानैहैं ॥ तिनवादियोंकेमतविषे सोद्रव्यरूपआत्मा स्पर्शादिकगुणरूप किसप्रकारहोवैगा? किंतु सोद्रव्यरूपआत्मा स्पर्शादिकगुणरूप कदाचित्भीनहीं

होवैगा ॥ किंवा जैसे सोतुमाराआत्मा रूपस्पर्शादिकगुणरूपनहींहै ॥ तैसे सोआत्मा रूपस्पर्शादिकगुणोंतेंभिन्नभी कह्याजावैनहीं ॥ काहेतें? सोआत्मा जोवायुआदिकद्रव्यरूपकरिकै तिनस्पर्शादिकगुणोंतेंभिन्नहोवै ॥ अथवा वायुआदिकद्रव्योंतेंभी भिन्नहोवै ॥ यादोनोंपक्षोंविषे ताआत्माकेज्ञानविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकूं करणरूपतासंभवैनहीं ॥ काहेतें? तेनेत्रादिकइंद्रिय रूपस्पर्शादिकगुणोंके तथा तिनरूपस्पर्शादिकगुणोंवालेद्रव्योंके ग्रहणविषेहीसमर्थहोवैहैं ॥ तिसतेंभिन्नकिसीपदार्थकूं तेनेत्रादिकइंद्रिय ग्रहणकरिसकैनहीं ॥ यातें पृथिवी जल तेज वायु याचारिभूतोंकासमुदायरूप जोयहस्थूलशरीरहै ॥ सोस्थूलशरीरही आत्माहै ॥ याशरीरतेंभिन्न कोईआत्माहैनहीं ॥ हेयमराजा! इसतेंआदिलेके जोतिनचार्वाकादिकनास्तिकोंके कुतर्कवचनहैं ॥ तिनवचनोंकूं श्रवणकरिकै बुद्धिमान्पुरुषभी याजीवत्अवस्थाविषेही यासंघाततें आत्माभिन्नहै ॥ अथवा यहसंघातही आत्मारूपहै याप्रकारकेव्यामोहकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेयमराजा! जैसे तेचार्वाकादिकनास्तिक नानाप्रकारकीयुक्तियोंकेबलतें यास्थूलसंघाततेंभिन्न ताआत्माका असत्यपणाकहेहैं ॥ तैसे कोईकआस्तिकवादी वेदवचनोंकेबलतें यासंघाततेंभिन्न ताआत्माकासत्यपणाभीकहेहैं ॥ हेभगवन्! इसप्रकार आत्माविषे सत्यपणा तथाअसत्यपणा श्रवणकरिकै हमारेकूं संशयप्राप्तभयाहै ॥ जोआत्मा सत्यहै अथवा असत्यहै? हेभगवन्! याहमारेसंशयकीनिवृत्तिकरणेवासते आप कृपाकरिकै हमारेप्रति तिनदोनोंपक्षोंविषे एकपक्षकीसिद्धिकरणेहारावचन कथनकरो ॥ याप्रकारका तीसरावर आप हमारेतांईदेवो ॥ हेशिष्य! याप्रकार आत्मज्ञानकीप्राप्तिरूप तीसरावर जबी तानचिकेतानैं यमराजासैंमाग्या ॥ तबी सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति आपणेहस्तकोभ्रमणरूपचेष्टातें निवारणकरता हुआ याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेनचिकेता! याआत्माकास्वरूप तू हमारेसैंमतपूछ ॥ काहेतें? पूर्वजेदेवता शमदमादिकगुणोंकरिकैयुक्तहुएहैं ॥ तथा इदानींकालविषे जेदेवता शमदमादिकगुणोंकरिकैयुक्तहुएहैं ॥ तेबुद्धिमान्देवताभी याआत्माकेस्वरूपविषे संशयकूंप्राप्तहोइकै तास्वरूपकानिर्णयकरणेविषे समर्थनहींहोतेभयेहैं तौ तूबालक ताआत्माकेस्वरूपकानिर्णयकरणेविषे कैसासमर्थहोवैगा? हेनचिकेता! ताआत्माका जोसत्यपणाधर्महै तथा असत्यपणाधर्महै तेदोनोंधर्म अत्यंतसूक्ष्महैं ॥

याकारणतैं तेमहान्बुद्धिवालेदेवताभी ताआत्माकेसत्यपणाकूं तथा असत्यपणाकूं नहींजाणतेभयेहैं॥ ऐसेदुर्विज्ञेयआत्माकाज्ञान रूपतीसरावर तू हमारेसैंमतमाग॥ किंतु याआत्मज्ञानतैंभिन्न जिसपदार्थविषे तुमारीप्रीतिहोवै॥ सोतीसरावर तू हमारेसैंमाग॥ यादुर्विज्ञेयआत्माकेउपदेशकरणेविषे तू हमारेकूंप्रेरणामतकर॥ हेनचिकेता! सत्यवचनरूपपाशकरिकैबांध्याहुआ मैं यमराजा तुमारेवशकूंप्राप्तभयाहूं॥ यातैं तादुर्विज्ञेयआत्माकाप्रश्नरूपभार तुम हमारेऊपरिमतपावो॥ किंतु ताआत्मज्ञानतैंभिन्न कोईतीसरावर हमारेसैंमागिकैं हमारेकूं तासत्यवचनरूपपाशतैं मुक्तकरो॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी तायमराजानैं नचिकेताके प्रतिकह्या॥ तबी सोनचिकेता तायमराजाकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥ हेयमराजा! जिसआत्माकेवास्तवस्वरूप विषे देवतावोंकूंभी संशयहोवैहै॥ और जिसआत्माकीदुर्विज्ञेयता आपनैं कथनकरीहै॥ तथा पूर्वमहात्माविद्वान्पुरुषोंनैंभी कथनकरीहै॥ ऐसेदुर्विज्ञेयआत्माके उपदेशकरणेहारे आपसरीखेमहात्मा दुर्लभहैं॥ हेभगवन्! ऐसेआपसरीखेदुर्लभगुरुवोंकूं प्राप्तहोइकैभी जोमैंनचिकेता तादुर्विज्ञेयआत्माकूंनहींजाणोंगा तौ यातीनलोकोंविषे तादुर्विज्ञेयआत्माकाउपदेश हमारेप्रति कौनविद्वान्पुरुष करैगा? किंतु तादुर्विज्ञेयआत्माकेउपदेशकरणेविषे आपतैंविना दूसराकोई समर्थहैनहीं॥ यातैं हेयमराजा! जोकदाचित् हमारेविषे तुमारीप्रीतिहै॥ तथा जोकदाजित् सोतुमारावचन सत्यहै तौ यहआत्मज्ञानकीप्राप्तिरूपहीतीसरावर आप हमारेताईंदेवो॥ हेभगवन्! याआत्मज्ञानकीप्राप्तिरूपवरतैंपरे दूसराकोईवर मैं श्रेष्ठदेखतानहीं॥ यातैं ताआत्मज्ञानरूपवरकूंछोडिकै अन्यकिसीवरदेणेकाउद्यम आप किसवासतेकरतेहो॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी तानचिकेतानैं यमराजाकेप्रति कथनकऱ्या॥ तबीसोयमराजा तानचिकेताकेवैराग्यकीपरीक्षाकरणेवासते पुत्र १ पौत्र २ पशु ३ हस्ती ४ सुवर्ण ५ अश्व ६ मंडलाधिपत्य ७ चिरजीवन ८ वित्त ९ स्थिरजीविका १० चक्रवर्त्तिराजापणा ११ दिव्यमनुष्यकामभोगिपणा १२ सत्यकामपणा १३ दिव्यस्त्रियां १४ तिनस्त्रियोंकीदासियां १५ तिनास्त्रियोंका नृत्यवादित्रादिकोंविषे कुशलपणा १६॥ यहषोडशप्रकारकेवर तानचिकेताकेताईं देताभया॥ अब क्रमतैं तिनषोडशवरोंकानिरूपणकरैहैं॥ हेनचिकेता! शतवर्षपर्यंतजीवणेहारे तथा

रूपयौवनविद्यादिकगुणोंकरिकैयुक्त जेअनेकश्रेष्ठपुत्रहैं ॥ तिनपुत्रोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तू हमारेसैंमाग ॥ १ ॥ अथवा तिसी प्रकारकेश्रेष्ठगुणवालेजेपौत्रहैं ॥ तिनपौत्रोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तू हमारेसैंमाग ॥ २॥ अथवा बहुतमूल्यवाले जेगौआदिकश्रेष्ठप शुहैं ॥ तिनपशुवोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तू हमारेसैंमाग ॥ ३ ॥ अथवा पर्वतकेसमान जिनोंकाआकारहै ऐसेजेश्रेष्ठहस्तीहैं ॥ तिन हस्तियोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तू हमारेसैंमाग ॥ ४ ॥ अथवा स्वर्गलोकविषेस्थित जोसुमेरुपर्वतकेसमानसुवर्णहै ॥ तासुवर्णकी प्राप्तिरूप तीसरावर तू हमारेसैंमाग ॥ ५ ॥ अथवा सूर्यभगवान्केरथविषेस्थित जेअश्वहैं ॥ तिनअश्वोंकेसमान आकाशविषेगम नकरणेहारे जेश्रेष्ठअश्वहैं ॥ तिनअश्वोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तू हमारेसैंमाग ॥ ६ ॥ अथवा सर्वभूमीविषे आपणेशुभगुणोंकरि केप्रसिद्ध जोनिष्कंटकभूमिमंडलकाराज्यहै ॥ ताराज्यकीप्राप्तिरूप तीसरावर तू हमारेसैंमाग ॥ ७ ॥ अथवा जितनेकालपर्यंत जीवनविषे तुमारीइच्छाहोवै ॥ तितनेकालपर्यंत दिर्घआयुष्यकीप्राप्तिरूप तीसरावर तू हमारेसैंमाग ॥ ८ ॥ अथवा यातीनलोक विषेस्थित जोनानाप्रकारकाधनहै ॥ ताधनकीप्राप्तिरूप तीसरावर तू हमारेसैंमाग ॥ ९॥ अथवा यालोकविषे जोचिरकालपर्यंत आ पणीजीविकाहै ॥ ताजीविकाकीप्राप्तिरूप तीसरावर तू हमारेसैंमाग ॥ १० ॥ अथवा यासर्वभूमिविषे जोचक्रवर्तिराजापणाहै ॥ ताचक्रवर्त्तिराजापणाकीप्राप्तिरूप तीसरावर तू हमारेसैंमाग ॥ ११ ॥ अथवा आपणीकामनाकेविषय जेपुत्रपौत्रादिकदिव्यपदार्थ हैं ॥ तिनदिव्यपदार्थोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तू हमारेसैंमाग ॥१२॥ अथवा यातीनलोकविषे जेजेदुर्लभपदार्थहैं ॥ तिनपदार्थोंकी आपणीइच्छामात्रतैं प्राप्तिरूप जोसत्यकामपणाहै ॥ तासत्यकामपणाकीप्राप्तिरूप तीसरावर तू हमारेसैंमाग ॥ १३ ॥ अथवा या स्वर्गलोकविषेस्थित जेदिव्यअप्सराहैं ॥ तिनदिव्यस्त्रियोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तू हमारेसैंमाग ॥ कैसीहैंतेस्वर्गकीस्त्रियां ? स्वर्ग केरहणेहारेपुरुषोंके मनकूं तथानेत्रोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहारियांहैं ॥ और अश्वमेधादिकमहान्यज्ञोंकरिकै याजीवोंकूं जिन स्त्रियोंकादर्शनहोवैहै ॥ और आपणेपीनउन्नतदोस्तनोंकरिकै चंद्रमंडलका तिरस्कारकर्‍याहै जिनस्त्रियोंनैं ॥ और नितंबस्था नविषेस्थित सुवर्णमणिमयकांचीकेमधुरशब्दोंकरिकै व्याप्तकरीहैभूमि जिनस्त्रियोंनैं ॥ और आपणेमुखरूपकमलकेसुगंधकरिकै

युक्तजोवायुहै ॥ तावायुकरिकै सुगंधिवालाकऱ्याहै गृहकामध्यभाग जिनस्त्रियोंनैं ॥ और दंततैंरहित जोचंपकपुष्पोंकीमालाहै ॥ ता मालाकेकोमलस्पर्शकूं आपणेशरीरकेकोमलस्पर्शकरिकै तिरस्कारकऱ्याहै जिनस्त्रियोंनैं ॥ तथा उत्कृष्टहावभावोंकरिकै कामीपुरुषों केरसउल्लासकूं उत्पन्नकरणेहारे हैं विलास जिनस्त्रियोंके ॥ तथा कोकिलाकेसमानहै मधुरस्वर जिनस्त्रियोंका ॥ और मंदमंदहास्यक रिकैयुक्त जोस्निग्धमुखहै ॥ तामुखकरिकै जेस्त्रियां विचित्रअर्थवालेपदोंकूंभाषणकरणेहारियांहैं ॥ और आपणेशरीरकीनिर्मलकां तिकरिकै जिनस्त्रियोंनैं सूर्यचंद्रमाकीकांतिकूंभी तिरस्कारकऱ्याहै ॥ और जेस्त्रियां सर्वलक्षणोंकरिकैसंपन्नहैं ॥ और प्रथमनवीनयौ वनअवस्था प्राप्तभई है जिनस्त्रियोंकूं ॥ और आपणेशरीरकीसुंदरताकरिकै जेस्त्रियां कामकूंभी कामकीउत्पत्तिकरणेहारियांहैं ॥ और प्रकाशमान तथा अमूल्य जेनानाप्रकारकेविचित्रवस्त्रहैं तथा भूषणहैं ॥ तिनवस्त्रभूषणोंकरिकै शोभायमानहैशरीर जिनस्त्रियोंका ॥ औरभोक्तापुरुषोंकेअनेकपुण्यकर्मोंकरिकै रचितहैशरीर जिनस्त्रियोंका ॥ १४ ॥ पुनः कैसी हैं तेस्त्रियां? आपणेसमानरूपवालियां त थासमानअवस्थावालियां जेएकएकशत १०० दासियांहै ॥ तिनदासियोंकरिकैयुक्तहैं ॥ १५ ॥ तथा नृत्यकरणेकेसाधन जेनानाप्र कारकेतूर्यवीणादिकवादित्रहैं तिनवादित्रोंकरिकैयुक्तहैं ॥ १६ ॥ ऐसेस्वर्गकीस्त्रियोंकेजेनेत्रोंकेकटाक्षहैं ॥ तेकटाक्ष याजीवोंकूंमोक्ष रूपसुखतैंभी अधिकसुखकीप्राप्तिकरै हैं ॥ जबी तिनस्त्रियोंकेकटाक्षमात्रभीयाजीवोंकूं मोक्षसुखतैंभी अधिकसुखकीप्राप्तिकरै हैं ॥ तबी तिनस्त्रियोंकेअंगोंकास्पर्श याजीवोंकूं परमआनंदकीप्राप्तिकरै है याकेविषेक्याकहणाहै ! हेनचिकेता ! मेरीआज्ञाविषेविचरणे हारे जेस्वर्गवासीपुरुषहैं ॥ तेस्वर्गवासीपुरुष ऐसीसुंदरस्त्रियोंकूंआलिंगनरिकै सर्वदा सुखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ऐसीसुंदरस्त्रियां मनु ष्यलोकविषे किसीमनुष्योंकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ हेनचिकेता ! ऐसीस्वर्गकीसुंदरस्त्रियां मैंयमराजा तुमारेतांईदेताहूं ॥ तिनस्त्रियोंकेसाथ तुम सुखपूर्वक रमणकरो ॥ परंतु मरणतैंअनंतर याशरीरतैंभिन्नरूपकारिकै आत्माकासत्यपणाहै अथवा असत्यपणाहै ? याप्र कारका मरणविषयकप्रश्न तुम हमारेसैंमतकरो ॥ हेनचिकेता ! जैसे यालोकविषे काककेकितनेदंतहैं याप्रकार काककेदंतोंकीप रीक्षाकरणेतैं याजीवोंकूं किंचित्मात्रभीफलकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तैसे मरणतैंअनंतर यहजीवात्मा स्वर्गादिकलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै

अथवा भस्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकेआत्मविचारकरणेतैं तेरेकूं किंचित्‌मात्रभीफलकीप्राप्तिहोवैगीनहीं ॥ हेनचिकेता !
यहजेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ मैं तुमारेतांईदेताहूं ॥ तेपदार्थ इसीकालविषे तुमारेकूंसुखरूपफलकीप्राप्तिकरैंगे ॥ और जोतू आत्माका
विचारकरताहै ॥ सोविचार आपसुखरूपनहींहै ॥ तथा सोविचार सुखकेप्राप्तिकासाधनरूपनहींहै ॥ यातैं सोनिष्फलविचार तुमारे
कूंकरणेयोग्यनहींहै ॥ हेनचिकेता ! यालोकविषे जेजेबुद्धिमान्‌पुरुषहोवैहैं ॥ तेबुद्धिमान्‌पुरुष तिसकार्यकूंकरैहैं ॥ जिसकार्यतैं आपणे
कूंसुखरूपफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जिसकार्यतैं आपणेकूंसुखरूपफलकीप्राप्तिनहींहोवैहै ॥ ताकार्यकूं तेबुद्धिमान्‌पुरुष करतेनहीं ॥
और यालोकविषे सुखकीप्राप्तिकरणेहारे पुत्रस्त्रीआदिकपदार्थहीहैं ॥ यातैं तिनपुत्रस्त्रीआदिकपदार्थोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमा
रेसैं माग ॥ और आत्मज्ञानकीप्राप्तिरूपवरकरिकै तुमारेकूं किंचित्‌मात्रभीसुखकीप्राप्तिहोवैगीनहीं ॥ यातैं सोआत्मज्ञानरूपवर तू हमा
रेसैंमतमाग ॥ हेशिष्य ! याप्रकार आत्मज्ञानकेप्रश्नतैं निवृत्तकरणेवासतै सोयमराजा तानचिकेताविषेलोभकूंउत्पन्नकरताहुआ
नानाप्रकारकेवरोंकूं कथनकरताभया ॥ और तायमराजाकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै सोनचिकेताभी तायमराजाकेप्रति याप्रकारका
वचन कहताभया ॥ नचिकेताउवाच ॥ हेयमराजा ! जिनस्वर्गकीस्त्रियोंकूं तुमनैं यापुरुषोंकेसुखकासाधनरूपकरिकै वर्णनकऱ्या
है ॥ तेस्वर्गकीस्त्रियां आपणीउत्पत्तितैंपूर्व तथाआपणेनाशतैंअनंतर आपणेकूं तथापुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिकरैहैं अथवा नहींकरैहैं ?
तहां आपणीउत्पत्तितैंपूर्व तथा आपणेनाशतैंअनंतर तेस्वर्गकीस्त्रियां आपणेकूं तथाअन्यपुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ यहप्रथम
पक्ष जो आप अंगीकारकरो सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ? यालोकविषे उत्पत्तितैंपूर्व तथानाशतैंअनंतर किसीभीपदार्थविषे कारणरूप
तादेखणेमैंआवतीनहीं ॥ जोकदाचित् उत्पत्तितैंपूर्व तथानाशतैंअनंतरभी तावस्तुविषे कारणरूपताहोवै तौ जिसकालविषे कुलाल
कीउत्पत्तिनहींभयीथी ॥ तिसकालविषेभी ताकुलालतैं घटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और जिसकालविषे ताकुलालकानाशहो
वैहै ॥ तिसकालविषेभी ताकुलालतैं तिसघटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और ताउत्पत्तिकालविषे तथानाशकालविषे ताकुला
लतैं घटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं वर्तमानकालविषेही तेस्वर्गकीस्त्रियां आपणेकूं तथा अन्यपुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिकरैहैं

॥१२॥

यहपक्षही आपने अंगीकारकरणाहोवैगा सोयहपक्षभी वास्तवतैंविचारकरिकैंदेखियेतौ संभवैनहीं ॥ काहेतें? आदावंतेचयन्ना स्ति वर्तमानेपितत्तथा ॥ अर्थयह ॥ जोपदार्थ आद्यकालविषे नहींहोवैहै ॥ तथा अंत्यकालविषेनहींहोवैहै ॥ सोपदार्थ वर्तमान कालविषेभीनहींहोवैहै ॥ जैसे रज्जुविषे सर्प आदिकालमैंनहींहै ॥ तथा तारज्जुकेज्ञानतैंअनंतरभीनहींहै ॥ यातें सोसर्प वर्तमानका लविषेभी तारज्जुमैंहैनहीं ॥ तैसे यहस्वर्गकीस्त्रियांभी आपणीउत्पत्तितैंपूर्व तथानाशतैंअनंतर आपणेकूं तथाअन्यकिसीपुरुषकूंसु खकीप्राप्तिकरतींनहीं ॥ यातें वर्तमानकालविषेभी यास्त्रियोंविषे पुरुषोंकेसुखकीकारणतासंभवैनहीं ॥ और वर्तमानकालविषे या पुरुषोंकूं जोतिनास्त्रियोंविषे आपणेसुखकीकारणता प्रतीतहोवैहै ॥ ताप्रतीतिविषे तिनास्त्रियोंकास्वभाव कारणनहींहै ॥ किंतु ताप्र तीतिविषे याविषयासक्तकामीपुरुषोंकी जोतिनास्त्रियोंविषेरमणीकबुद्धिहै ॥ सारमणीकबुद्धिहीकारणहै ॥ हेयमराजा! पूर्व तुमनैं जि नस्वर्गलोककीस्त्रियोंकावर्णनकन्याहै ॥ तेस्वर्गकीस्त्रियांभी जबी विषयसंभोगकीप्राप्तिद्वाराही विषयासक्तकामीपुरुषोंकूं सुखकीप्रा प्तिकरैंहैं ॥ तबी तिनस्वर्गलोककीस्त्रियोंविषे मनुष्यलोककीस्त्रियोंतैं कौनअधिकतासिद्धहोवैगी? किंतु विचारकियेतें तिनोंविषेको ईभीअधिकतासिद्धहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ स्वर्गलोककीस्त्रियोंविषे तथा मनुष्यलोककीस्त्रियोंविषे स्वभावतैंतौ किसीपुरुषकेसुख कीसाधनताहैनहीं ॥ किंतु जिसस्त्रीविषे जिसपुरुषकूं कामदोषजन्यरमणीकबुद्धिहोवैहै ॥ सास्त्री तिसीपुरुषकेसुखकासाधनहोवैहै ॥ सोकामदोषजन्यरमणीकबुद्धिवालेपुरुषोंकूं जैसे यहसुगंधिवालीस्वर्गकीस्त्रियां सुखकीप्राप्तिकरैंहैं ॥ तैसे दुर्गंधवालीमनुष्यलोककी स्त्रियांभी कामदोषजन्यरमणीकबुद्धिवालेपुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिकरैंहैं ॥ यातें तामनुष्यलोककीस्त्रियोंतैं यास्वर्गलोककीस्त्रियोंविषे अ धिकतासंभवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैंनिरूपणकरैंहैं ॥ हेयमराजा! यालोकविषे जैसे श्वानिणीस्त्रीआपणेश्वानपुरुष कूं सुखकीप्राप्तिकरैंहै ॥ और जैसे मनुष्यस्त्री आपणेमनुष्यपुरुषकूं सुखकीप्राप्तिकरैंहै ॥ तैसेही यहस्वर्गकीस्त्रियां आपणेदे वतापुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिकरैंहैं ॥ परंतु ताविषयजन्यसुखरूपफलविषे किंचित्मात्रभी न्यूनअधिकतानहींहै ॥ किंतु देवता मनु ष्य श्वान यातीनोंकूं आपणीआपणीस्त्रीकेसंभोगतें समानहीसुखहोवैहै ॥ हेयमराजा! जोकदाचित् येस्त्रियांस्वभावतैंहीसु

खकासाधनहोवै तौ सर्वजातिवालीस्त्रियां सर्वजातिवालेपुरुषोंके सुखकाकारण होणीयांचाहिये ॥ और याप्रकारकाव्यवहार लोक विषेदीखतानहीं ॥ किंतु जिसजिसपुरुषकी जिसजिसस्त्रीविषे रमणीकबुद्धिहोवैहै ॥ सासास्त्री तिसतिसपुरुषकूंही विषयसंभोग द्वारा सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ इतरपुरुषोंकूं सास्त्री सुखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ जैसे यास्वर्गकीस्त्रियोंविषे देवतापुरुषोंकीरमणीकबुद्धिहै ॥ श्वानकीरमणीकबुद्धिहैनहीं ॥ यातैं तेस्वर्गकीस्त्रियां तिनदेवतापुरुषोंकूंही विषयसंभोगकरिकै सुखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ श्वानपुरुषकूं ते स्वर्गकीस्त्रियां सुखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ तैसे श्वानिणीस्त्रीविषे श्वानपुरुषकूं रमणीकबुद्धिहै ॥ देवतापुरुषोंकूं ताश्वानिणीस्त्रीविषे रमणीकबुद्धिहैनहीं ॥ यातैं साश्वानिणीस्त्री विषयसंभोगकरिकै ताश्वानपुरुषकूंही सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ देवतापुरुषोंकूं साश्वानिणीस्त्री सुखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ इसीप्रकार मनुष्य पशु पक्षी सर्प इत्यादिकसर्वजातिवालीस्त्रियां आपणेविषेरमणीकबुद्धिवालेपुरुषोंकूंही सुखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ रमणीकबुद्धितैंरहित निष्कामपुरुषकूं कोईभीस्त्री सुखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ यातैं स्वर्गलोककीस्त्रियोंविषे मनुष्यलोककीस्त्रियोंतैं जोआपनैं अधिकताकही सोसंभवैनहीं ॥ हेयमराजा ! जोतुम याप्रकारकावचनकहो ॥ तेदेवतापुरुष जैसे स्वर्गकीस्त्रियांविषे सुंदररूपादिकगुणोंकूंदेखेहैं ॥ तैसे तेदेवतापुरुष ताश्वानिणीस्त्रीविषे सुंदररूपादिकगुणोंकूं देखतेनहीं ॥ किंतु ताश्वानिणीस्त्रीविषे तेदेवता सर्वदा कुरूपादिकदोषोंकूंहीदेखेहैं ॥ याकारणतैं तिनस्वर्गकीस्त्रियोंतैं साश्वानिणीस्त्री अत्यंतनिकृष्टहै ॥ सोयहतुमारा कहणासंभवैनहीं ॥ काहेतैं ? जैसे तेदेवतापुरुष स्वर्गकीस्त्रियोंविषेतौ गुणोंकूंदेखेहैं ॥ और श्वानिणीस्त्रीविषे दोषोंकूंदेखेहैं ॥ तैसे सोश्वानपुरुषभी आपणीश्वानिणीस्त्रीविषेतौ गुणोंकूंदेखेहै ॥ और स्वर्गकीस्त्रियोंविषे तथामनुष्योंकी स्त्रियोंविषे सोश्वान सर्वदा दोषोंकूंहीदेखेहै ॥ याकारणतैंही सोश्वान स्वर्गकीस्त्रीकूं तथामनुष्यस्त्रीकूं प्राप्तहोइकै प्रसन्नहोवैनहीं ॥ किंतु सोश्वान आपणीश्वानिणीस्त्रीकूं प्राप्तहोइकैही प्रसन्नहोवैहै ॥ हेयमराजा ! जैसे यहदेवतापुरुष यास्वर्गकीस्त्रियोंविषे नानाप्रकारकेगुणोंकूंदेखेहै ॥ तैसे सोश्वानभी आपणीश्वानिणीस्त्रीविषे याप्रकारकेगुणोंकूंदेखेहै ॥ यहहमारी प्रियाश्वानिणीस्त्री सुंदरदीर्घमुखवालीहै ॥ तथा अत्यंतकोमलस्पर्शवालीहै ॥ तथा तीक्ष्णदांतोंवालीहै ॥ तथा रक्तमुखवालीहै ॥ तथा रक्तपुष्पकेसमान जाकीजिह्वाहै ॥ तथा मांसरुधिरकेभक्ष

णतें सुंदरगंधवाली है ॥ तथा दीर्घनेत्रोंवाली है ॥ तथा ऊच्चैःकर्णोंवाली है ॥ तथा सर्वदा शीघ्रगमनकरणेवाली है ॥ तथा पुष्टशरीरवाली है॥ तथा अल्पउदरवाली है॥ तथा ऊच्चैःपुच्छवाली है॥ तथा संकुचितयोनिछिद्रवाली है ॥ तथा अत्यंतशोभायमान है॥ तथा उगुंकारशब्दोंकरिकै तथा झंकारशब्दोंकरिकै मेरेमनकूं तथाकर्णोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहारी है ॥ तथा हमारेसन्मुखगमनकरणेतें तथा हमारेपीछेगमनकरणेतें यहस्त्री सर्वदा हमारासेवनकरैहै॥ और यहस्त्री आपणेदर्शनकरिकै हमारेनेत्रोंकूं तथामनकूं आनंदकी प्राप्तिकरणेहारी है ॥ इसतेंआदिलैकेअनेकप्रकारकेगुणोंकूं सोश्वान ताआपणीश्वानिणीस्त्रीविषेदेखैहै ॥ हेयमराजा! ताश्वानिणी स्त्रीकूंदेखिकरिकै ताश्वानपुरुषकूं जैसीमनविषे प्रसन्नताहोवैहै ॥ तैसीप्रसन्नता इंद्राणीकूंदेखिकै इंद्रकूंभी होतीहोवैगी अथवा नहींहोतीहोवैगी ॥ यातें स्वर्गकीस्त्रियोंविषे जोआपनें अधिकतावर्णनकरी है सोसंभवैनहीं ॥ हेयमराजा! जैसे स्वर्गकीस्त्रियां तथामनुष्यस्त्रियां तथा पशुस्त्रियां आपणेआपणेविषेरमणीकबुद्धिवाले सजातीयपुरुषोंकूंही सुखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ इतरजातिवालेपुरुषकूं इतरजातिवालीस्त्री सुखकीप्राप्तिकरैनहीं॥ तैसे देवतावोंके तथा मनुष्योंके तथा पशुवोंके जेजेपुत्रपौत्रादिकपदार्थ हैं॥ तेपुत्रपौत्रादिकपदार्थभी आपणेआपणेविषे रमणीकबुद्धिवालेसजातीयपितामातादिकोंकूंही सुखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ इतरजातिवालेपितामातादिकोंकूं इतरजातिवालेपुत्रपौत्रादिकपदार्थ सुखकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ याकारणतें तेपुत्रपौत्रादिकपदार्थभी सर्वलोकोंकेसमानहीहैं ॥ हेयमराजा! यहजीव पुण्यपापकर्मकेवशतें जिसजिसजातिवालेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतिसजातिवालेशरीरके जितने स्त्री पुत्र अन्न पान आदिकपदार्थहैं ॥ तिनपदार्थोंकूंही सोजीव सर्वपदार्थोंतेंअधिककरिकैमानैहै ॥ और इतरजातिवालेशरीरोंकेजितने स्त्री पुत्र अन्न पानादिकपदार्थहैं ॥ तिनपदार्थोंकूं सोजीव अत्यंतनिकृष्टकरिकैमानैहै॥ हेयमराजा! जैसे श्वानके जितने स्त्री पुत्र अन्न पान आदिकभोगकेसाधनहैं ॥ तिनोंविषे तुमदेवतावोंकूं सर्वदाग्लानिहीरहैहै ॥ तैसे तुमदेवतावोंके जितने स्त्री पुत्र अन्न पान आदिकभोगकेसाधनहैं॥ तिनोंविषे ताश्वानकूंभी सर्वदा ग्लानिहीरहैहै ॥ यातें हेयमराजा! स्वभावतें किसीस्त्रीशरीरविषे तथापुरुषशरीरविषे सुखरूपताहैनहीं॥ किंतु जैसे पित्तदोषकरिकै भ्रमकूंप्राप्तहुआयहपुरुष श्वेतशंखकूं पीतरूप

वालादेखेहै ॥ तैसे कामरूपज्वरकरिकैउत्पन्नभया जोयहव्यामोहरूपपित्तदोषहै ॥ ताव्यामोहरूपपित्तदोषकरिकै भ्रमकूंप्राप्तहुएयह पुरुष आपणेआपणेसमानजातिवालीस्त्रियोंविषे सुखबुद्धिकरैहैं ॥ इतरजातिवालीस्त्रियोंविषे सुखबुद्धिकरैनहीं ॥ तैसे तेस्त्रियांभी ताव्यामोहरूपदोषकरिकैभ्रमकूंप्राप्तहुईयां आपणेआपणेसमानजातिवालेपुरुषोंविषेही सुखबुद्धिकरैहैं ॥ इतरजातिवालेपुरुषोंविषे तेस्त्रियां सुखबुद्धिकरैनहीं ॥ यातैं तिनस्त्रियोंविषे जोतिनपुरुषोंकीसुखबुद्धिहै ॥ तथा तिनपुरुषोंविषे जोतिनस्त्रियोंकीसुखबुद्धि है ॥ सासुखबुद्धि श्वेतशंखविषे पीतबुद्धिकीन्यांई केवलभ्रमरूपहै ॥ अब स्त्रीशरीरविषे तथा पुरुषशरीरविषे स्वभावतैंसुखरूप ताका खंडनकरैहैं ॥ हेयमराजा! यास्त्रीशरीरविषे तथा पुरुषशरीरविषे स्वभावतैं सुखरूपतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं? यहस्त्री जो कदाचित् आपहीसुखरूपहोवै तौयहस्त्री आपणेकूंआपही सुखकीप्राप्ति किसवासतेनहींकरती? और हेयमराजा! जोतुम यहकहो ॥ सास्त्री आपणेशरीरतैंभिन्न किसीशरीरकूंसुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं? सास्त्री जोकदाचित् आपणेतैंभिन्नशरीरविषे सुखकीप्राप्तिकरतीहोवै तौ सास्त्री आपणेतैंभिन्न सपत्नीआदिकस्त्रियोंकूं सुखकीप्राप्ति किसवासतेनहीं करती? और हेयमराजा! जोतुमयहकहो ॥ सास्त्री आपणेतैंभिन्नपुरुषशरीरकूं सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं? सास्त्री जोकदाचित् आपणेतैंभिन्न पुरुषशरीरकूं सुखकीप्राप्तिकरतीहोवै तौ तानस्त्रीकेहृदयदेशऊपरिक्रीडा करता जोबालकपुरुषहै ॥ ताबालकपुरुषकूं सास्त्री सुखकीप्राप्ति किसवासतेनहींकरती? और हेयमराजा! जोतुमयहकहो ॥ सास्त्री युवान्पुरुषकूं सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं? सास्त्री जोकदाचित् युवान्पुरुषकूं सुखकीप्राप्तिकरतीहोवै तौ सास्त्री आपणेपुत्रभ्रातादिकयुवान्पुरुषोंकूं सुखकीप्राप्ति किसवासतेनहींकरतीहै? और हेयमराजा! जोतुम यहकहो ॥ सास्त्री आपणेयुवान्पतिकूं सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं? सास्त्री जोकदाचित् आपणेयुवान्पतिकूं सुखकीप्राप्तिकरतीहोवै तौ तास्त्रीकेबहुतवारसंभोगकरिकै कामरूपज्वरतैंनिवृत्तभयाजो सोयुवान्पतिहै ॥ तायुवान्पतिकूं सास्त्री पूर्वकीन्यांई सुखकीप्राप्ति किसवासतेनहींकरतीहै? और हेयमराजा! जोतुमयहकहो ॥ सास्त्री कामदोष

वालेयुवानूपतिकूं सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें ? स्त्री जोकदाचित् कामदोषवालेयुवानूप
तिकूं सुखकीप्राप्तिकरतीहोवै ॥ तौ ज्वरादिकरोगोंकरिकैदुर्बलताकूंप्राप्तहुईस्त्री ताकामदोषवालेयुवानूपतिकूं सुखकीप्राप्ति कि
सवासतेनहींकरती ? यातें किसीप्रकारकरिकैभी तिनस्त्रियोंविषे स्वभावतें सुखरूपतासंभवैनहीं ॥ और हेयमराजा ! जैसे या
स्त्रियोंविषे स्वभावतें तिनपुरुषोंकेसुखकीकारणतानहींहै ॥ तैसे यापुरुषोंविषेभी स्वभावतें तिनस्त्रियोंकेसुखकीकारणतानहींहै ॥
काहेतें ? यहपुरुष जोकदाचित् स्वभावतैंही तिनस्त्रियोंकेसुखकाकारणहोवै ॥ तौ सोपुरुष आपणेपुत्रीभगिनीआदिकस्त्रियोंकूं तासुख
कीप्राप्ति किसवासतेनहींकरता ? हेयमराजा ! याप्रकारकीयुक्तियोंसें विचारकरिकैदेखियेतौ किसीस्त्रीशरीरविषे तथा पुरुषशरीरवि
षेस्वभावतें सुखरूपता सिद्धहोवैनहीं ॥ तथापि स्त्रियोंकूं पुरुषोंकेशरीरविषे जोसुखबुद्धिहोवैहै ॥ तथा पुरुषोंकूं स्त्रियोंकेशरीरविषे जो
सुखबुद्धिहोवैहै ॥ सोयहसंपूर्ण कामरूपज्वरकाहीमहिमाहै ॥ हेयमराजा ! जैसे यालोकविषे जोपुरुष धतूरेकेबीजोंकूं भक्षणकरैहै ॥
सोपुरुष तादोषकरिकै संपूर्णजगतकूं पीतवर्णवालादेखैहै ॥ तैसे यहस्त्रियां तथायहपुरुष आपणेकामदोषकरिकै आपणेसमानजा
तिवालेपुरुषोंविषे तथा आपणेसमानजातिवालीस्त्रियोंविषे तौसुखबुद्धिकरैहैं ॥ और विजातीयपुरुषोंविषे तथा विजातीयस्त्रियों
विषे दुःखबुद्धिकरैहैं ॥ हेयमराजा ! जैसे यालोकविषे जराअवस्था यापुरुषोंके तथास्त्रियोंके कुरूपताका कारणहोवैहै ॥ तैसे या
स्त्रीपुरुषोंकी यौवनावस्थाही ताकामरूपज्वरका कारणहोवैहै ॥ हेयमराजा ! जेपुरुष ताकामरूपज्वरकरिकै व्यामोहकूंप्राप्तहोवैहै ॥
तेकामीपुरुषही तिनस्त्रियोंकीस्तुतिकरैहैं ॥ निष्कामपुरुष तिनस्त्रियोंकीस्तुतिकरतेनहीं ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ आपने जोतिनस्त्रि
योंकीस्तुतिकरीहै ॥ सोभी तिनविषयासक्तकामीपुरुषोंकेअभिप्रायकूंग्रहणकरिकैहीकरीहै ॥ परंतु तिनदुःखरूपास्त्रियोंकेस्तुतिक
रणेविषे कोईआपका तात्पर्यहैनहीं ॥ हेयमराजा ! याकेविषे हम बहुतक्याकहैं ? जितनेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ आपने सुखका
कारणरूपकरिकैकथनकरैहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ अनित्यहीहैं ॥ और यालोकविषे जोजोअनित्यपदार्थ जिसजिसजीवकूं अत्यंतप्रि
यहोवैहै ॥ सोअनित्यप्रियपदार्थ आपणेवर्तमानकालविषे ताजीवकूं जितनेसुखप्राप्तिकरैहै ॥ तिससुखतें सहस्रगुणाअधिक

दुःख सोप्रियपदार्थ आपणेवियोगकालविषे ताजीवकूं प्राप्तकरैहै॥ यातैं यास्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषे जोअनित्यपणाहै ॥ सोअनित्यपणाही तिनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषे दुःखरूपताकूंबोधनकरैहै ॥ हेयमराजा ! प्रियस्त्रियां पुत्र पौत्र दीर्घआयुष सर्वभूमिकाराज्य हस्ती अश्व सुवर्ण इसतैंआदिलैके जितनेपदार्थ आपने अत्यंतप्रियरूपकरिकैकथनकरेहैं ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकप्रियपदार्थ आजदिनविषेतौ हमारेकूं प्राप्तहैंनहीं ॥ और आपकेवरकरिकै तेस्त्रिपुत्रादिकपदार्थ हमारेकूंदूसरेदिनविषेप्राप्तहोवैंगे॥ परंतु तेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ अनित्यहैं ॥ यातैं तेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ तीसरेदिनविषे हमारेपासरहैंगे अथवा नाशहोइजावैंगे याप्रकारकानिश्चय कऱ्याजावैनहीं ॥ यातैं तेस्त्रीपुत्रधनादिकअनित्यपदार्थ आपणेवियोगकालविषे हमारेकूं परमदुःखकीप्राप्तिकरैंगे ॥ हेयमराजा ! यद्यपि वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ तेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ क्षणभंगुरहैं ॥ तथापि विचारतैंरहितमूढपुरुषोंनैं तिनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकूंचिरकालपर्यंतस्थायीमान्याहै ॥ यातैं तिनमूढपुरुषोंकीदृष्टिकूंअंगीकारकरिकै जोकदाचित् तिनपदार्थोंकूं चिरकालस्थायीभी मानिये तौभी तेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ हमजीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ किंतु तेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ हमजीवोंकूं सर्वदा दुःखकीहीप्राप्तिकरैहैं ॥ अब प्रथम स्त्रियोंविषे दुःखकीकारणतादिखावैंहैं ॥ हेयमराजा ! जैसे यालोकविषे पुष्पोंकेरसकूंनिकासणेहारा जोनलिकायंत्रहै ॥ तायंत्रकरिकै यहअग्नि तिनपुष्पोंकेसाररूपरसकूं बाहरिनिकासेहै ॥ तारसकेनिकसणेकरिकै तेपुष्प शोभातैंरहितहोवैंहैं ॥ तथा शीघ्रहीनाशकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तैसे यहस्त्रीरूपअग्निभी संभोगरूपीयंत्रकरिकै यापुरुषरूपीपुष्पके वीर्यरूपरसकूं बाहरिनिकासेहै ॥ तावीर्यरूपरसकेबाहरिनिकसणेकरिकै यापुरुषके नेत्रादिकइंद्रिय तथाआयुष शीघ्रही क्षयकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ यातैं यहस्त्रियां वर्तमानकालविषेभी यापुरुषोंकेदुःखकाहीकारणहोवैंहैं ॥ अब पुत्रोंविषे दुःखकीकारणता निरूपणकरैहैं ॥ हेयमराजा ! जैसे यहस्त्रियां पुरुषोंके वीर्यरूपरसकूंनाशकरैहैं ॥ तैसे यहपुत्रभी यापिताकेश्रोत्रादिकइंद्रियोंके तथामनके सत्त्वरूपरसकूंनाशकरैहैं ॥ सोसत्त्वरूपरस याजीवोंकेधर्मज्ञानकीवृद्धिकरैहै ॥ हेयमराजा ! यहपुत्र पिताकेश्रोत्रादिकइंद्रियोंके तथामनके सत्वरूपरसकूं नाशकरैहैं ॥ याअर्थविषे हमारा उद्दालकपिताही दृष्टांतहै ॥ काहेतें ? मैंनचिकेतापुत्रकेजीवनकीचिंताकरिकै

सोहमारा पिता ब्राह्मणोंकेतांई दुर्बलवृद्धगौवां देताभया ॥ तावृद्धगौवोंकेदानकरणे तैं ताहमारेपिताके धर्मकीहानिहोतीभई ॥ और हमारेवियोगकरिकै ताहमारेपिताकेमनविषे महानूक्षोभहोताभया ॥ तामनकेक्षोभहुए ॥ ताहमारेपिताकेश्रोत्रादिकइंद्रियोंका तेजरूपबलक्षयहोताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ मैंनचिकेतासरीखेआज्ञाकारीपुत्रभी जबी पिताकेदुःखकेहीकारणहुए ॥ तबी दूसरेलौकिकपुत्र आपणेपिताकेदुःखकेकारणहोवैंगे याकेविषेक्याकहणाहे ? यातैं हेयमराजा ! यहस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ अनित्यहोणेतें दुःखरूपही हैं ॥ ऐसेअनित्यदुःखरूपपदार्थोंकूंभी जोकदाचित् तुमनैं आपणेलोकपालरूपअधिकारकेपालनकरणेवासते प्रियरूपकरिकैग्रहणकऱ्याहोवै ॥ तौ यहवार्ता आपकूंयोग्यहै ॥ परंतु आत्मज्ञानकीइच्छावाला जोमैंनचिकेताहूं ॥ ताहमारेकूं तिनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकेग्रहणकरणेकीयोग्यतानहीं है ॥ और हेयमराजा ! जोपूर्वआपनें परमआयुषकीप्राप्तिरूप तीसरावर देणेकाकह्याथा ॥ सोभी अत्यंततुच्छहै ॥ काहेतें ? यालोकोंविषे हिरण्यगर्भरूपब्रह्माकीआयुष सर्वतेंअधिकहै ॥ परंतु ताब्रह्माकेआयुषकीभी दोपरार्धपर्यंत अवधिहै ॥ यातें साब्रह्माकीआयुषभी अल्पहै ॥ जबी ताब्रह्माकीआयुषभी अल्पहुई ॥ तबी ताब्रह्माकेआयुषकेअंतर्भूत जोदेवतामनुष्यादिकोंकीआयुषहै ॥ साआयुष अल्पहै ॥ याकेविषेक्याकहणाहै ? अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं ॥ हेयमराजा ! भूमिलोकवासीहममनुष्योंका जोएकवर्ष है ॥ सोहमाराएकवर्ष स्वर्गवासीदेवतावोंका एकदिनरात्रिहोवैहै ॥ तहां हममनुष्योंका जोषट्मासकाउत्तरायणहै ॥ सोउत्तरायण तिनदेवतावोंकादिनहोवैहै ॥ और हममनुष्योंकाजोषट्मासकादक्षिणायनहै ॥ सोदक्षिणायन तिनदेवतावोंकीरात्रिहोवैहै ॥ ऐसादेवतावोंकादिनरात्रि जबी तीनसैसाठ ३६० होवैहै ॥ तबी तिनदेवतावोंका एकवर्षहोवैहै ॥ ऐसेदेवतावोंकेवर्ष जबी द्वादशसहस्र १२००० होवैहैं ॥ तबी कृत त्रेता द्वापर कलि येचारियुगहोवैहैं ॥ ऐसेचारियुग जबी एकसहस्र १००० वारवीतीतहोवैहैं ॥ तबी ताब्रह्माका एकदिन होवैहै ॥ और तादिनजितनीही ताब्रह्माकीरात्रिहोवैहै ॥ जिसब्रह्माकीरात्रिविषे येतीनोंलोक नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसीरात्रिकूं शास्त्रविषे नैमित्तिकप्रलयकहै हैं ॥ तथा अवांतरप्रलयकहै हैं ॥ ऐसाब्रह्माकादिनरात्रि जबी तीनसैंसाठ ३६० होवैहैं ॥ तबी ताब्रह्माकाएकवर्षहोवैहै ॥ ऐसाएकशतवर्ष १०० ताब्रह्माका आयुषहोवैहै ॥ ताब्रह्माकेएकशतवर्षोंविषे प्रथमपंचासवर्ष

५० प्रथमपरार्धहोवैहै ॥ और उत्तरपंचासवर्ष ५० दूसरापरार्धहोवैहै ॥ तिनदोनोंपरार्धोंविषे प्रथमपरार्धतौ व्यतीतहोइगयाहै ॥ अबी दूसरापरार्ध व्यतीतहोताहै ॥ हेयमराजा ! जिसब्रह्माकेमरणतैंअनंतर यासर्वजगत्का महाप्रलयहोवैगा ॥ सोब्रह्माभी अबी अर्धआयुषवालाहुआस्थितहै ॥ और जैसे हममनुष्योंकूं मरणकाभयहोवैहै ॥ तैसे ताब्रह्माकूंभी आपणेमरणकाभयहोवैहै ॥ याकारणतैंही सोब्रह्मा आपणेनेत्रोंकूंमूदिकरिकै अंतरात्माकेध्यानकूंकरताहुआ स्थितहोवैहै ॥ यातैं हेयमराजा ! ऐसाब्रह्माभी जबी मरणकेभयकरिकैयुक्तहै ॥ तबी ताब्रह्माकाअंशभूत तुमदेवता हमारेतांई परमआयुषकीप्राप्ति किसप्रकारकरोगे ? यातैं हेयमराजा ! जलकेफेनबुद्बुदेकीन्यांई क्षणभंगुर जोयहदुःखरूपसंसारसमुद्रहै ॥ तासंसारविषेस्थित जितने हस्ती अश्व रथ इत्यादिकवाहनहैं ॥ तथा नृत्यगीतादिकोंकरिकैयुक्त जेयहसुंदरस्त्रियांहैं ॥ तथा शुभगुणवाले जेपुत्रपौत्रादिकपदार्थहैं ॥ इसतैंआदिलैकै जितनेपदार्थ पूर्वआपनैं हमारेदेणेवासतेकहेहैं ॥ तेसंपूर्णस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ आपकेपासिहीरहैं ॥ ऐसेअनित्यपदार्थोंकेप्राप्तिकी हमारेकूं इच्छाहैनहीं ॥ अब धनविषेभी दुःखकीकारणता निरूपणकरैहै ॥ हेयमराजा ! जोतुम हमारेतांई सुवर्णादिरूपधन देतेहो ॥ सोधन कैसाहै ? जोकदाचित् किसीपुरुषकूं तीनलोकोंकाधनभीप्राप्तहोवै तौभी ताधनकीप्राप्तिकरिकै तापुरुषकेतृष्णाकी निवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तातीनलोकोंकेधनकूंप्राप्तहोइकै सोपुरुष पुनःब्रह्मलोककेप्राप्तिकीइच्छाकरैहै ॥ और जोकदाचित् किसीपुण्यकर्मकेयोगतैं तापुरुषकूं ब्रह्मलोककीभीप्राप्तिहोवैहै ॥ तौभी सोपुरुष ताब्रह्मलोकतैंनीचेपतनकेअभावकीइच्छाकरैहै ॥ हेयमराजा ! जैसे यालोकविषे प्रज्वलितअग्नि काष्ठोंकरिकै तथाघृतकरिकै तृप्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जैसे यहसमुद्र जलोंकरिकै तृप्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जैसे स्त्री पुरुषोंकरिकै तृप्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे यहपुरुष नानाप्रकारकेधनकरिकै तृप्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ उलटा जैसे काष्ठघृतकेपावणेतैं अग्निकीवृद्धिहोतीजावैहै ॥ तैसे बहुतधनकेप्राप्तिकरिकै यापुरुषकीतृष्णा वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताधनकेरक्षणकरिकै तथा ताधनकेनाशकीभयकरिकै याधनीपुरुषोंकूं सर्वदा क्लेशकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं ऐसेदुःखरूपधनकेप्राप्तिकी हमारेकूं इच्छानहींहै ॥ हेयमराजा ! याप्रकार वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ यहधन जीवोंकेदुःखकाहीकारणहै ॥ तथापि

लौकिकदृष्टिकूंअंगीकारकरिकै जोकदाचित् ताधनविषे सुखकीकारणताभीमानिये तौभी ताधनकीप्राप्तिरूपवर हमारेकूं आपसैं मागणा उचितनहींहै काहेतें? आपणेदर्शनमात्रतें सर्वदुःखोंकेनाशकरणेहारे जोतुमदेवताहो॥ तिसतुमारेकूं हमनैं यामांसमयने त्रोंकरिकैदेख्याहै॥ यातैं जोधन हमारेकूं व्यवहारविषेअपेक्षितहोवैगा॥ सोधन आपेही हमारेकूंप्राप्तहोवैगा॥ ताधनकीप्राप्ति वासते हम आपकेआगे प्रार्थनाकरतेनहीं॥ अब तायमराजाकेस्वरूपकावर्णनकरैहैं॥ मेघकीन्यांई जायमराजाका श्यामवर्णहै॥ तथा दीर्घ जाकाशरीरहै॥ तथा पीतांबरोंकूं जिसनैं धारणकर्‍याहै॥ तथा लाक्षारसकेसमान रक्तवर्णवाले स्वच्छविशाल जाके नेत्रहैं॥ तथा दीर्घ जाकीग्रीवाहै तथा विशाल जिसका उरस्थलहै॥ तथा जानुपर्यंत जाकी दीर्घभुजाहैं॥ तथा सूर्यकेसमानजि सकेतेजस्वीनेत्रहैं॥ तथा सूर्यकेसमान जाकेशरीरकातेजहै॥ तथा महान्‌महिषरूपवाहनऊपरि जाकीस्थितिहै॥ तथा पापीजी वोंकूंभयकीप्राप्तिकरणेहारादंड जाकेहस्तविषेहै॥ तथा क्रोधवान्‌सर्पकीन्यांई आपणेदर्शनकरिकै पापीजीवोंकूं भयकीप्राप्तिकरणे हाराहै॥ तथा आपणेचित्तविषे सर्वदा दयालुहै॥ तथा वेदभगवान्‌नैंबोधनकर्‍या जोपुण्यपापकर्मके सुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिरू पमार्गहै॥ तामार्गकारक्षणरूप जाका कर्महै॥ तथा आत्मज्ञानकरिकैसंपन्नहै॥ तथा सर्वरोगोंतैंरहितहै॥ तथा संपूर्णभूतोंविषे जाकीसमदृष्टिहै॥ तथा शत्रुमित्रभावतैंरहितहै॥ हेयमराजा! याप्रकारकेस्वरूपकरिकैयुक्त जोआपहो॥ सोआपही यास्थावरजं गमरूपजगत्‌का मृत्युरूपहो॥ ऐसेसर्वजगत्‌केसंहारकरणेहारेआप जबी हमारे गुरुरूपहुए॥ तबी हमारेकूं किसकरिकैमृत्युकी प्राप्तिहोवैगी? किंतु जबपर्यंत आप यादक्षिणदिशाविषेस्थितहोवोगे॥ तबपर्यंततौ हम निःसंशयहोइकैजीवैंगे॥ यातैं आपकेकृ पाकटाक्षकीप्राप्तिकरिकै सोचिरकालपर्यंतजीवन हमारेकूं स्वभावतैंहीसिद्धहै॥ यातैं ताचिरकालपर्यंत जीवनकीप्राप्तिरूपवर आप सैंमागणा हमारेकूं उचितनहींहै॥ यातैं हेयमराजा! मरणतैंअनंतर आत्माकेसत्ताकाजोसंशयहै॥ तासंशयकूं जोबोध निवृत्त करै॥ ताबोधकीप्राप्तिरूप तीसरावर आप हमारेतांईदेवौ॥ हेयमराजा! जरामरणतैंरहित जे आप स्वर्गवासीदेवताहो॥ और ज रामरणकरिकैयुक्त जेभूमिलोकविषेरहणेहारे हममनुष्यहैं॥ ऐसेहमसरीखेमनुष्य किसीदैवयोगतैं आपसरीखेदेवतावोंकीसमीप

ताकूंप्राप्तहोइके जोकदाचित् आत्म अनात्म पदार्थोंकेविचारकरिकैयुक्तहोवै तौ तेअधिकारीमनुष्य यास्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकूंरम णीकजानिकरिकै ताचिरकालजीवनविषे किसप्रकार आसक्तिकरैंगे ? किंतु तेअधिकारीमनुष्य तिनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषेआस क्तिनहींकरैंगे ॥ कैसे हैंतेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ ? विचारवान्पुरुषकूंतौ सर्वदादुःखरूपहीप्रतीतहोवैहैं ॥ और विचारतैंरहितमूढ पुरुषोंकूं तेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ आपणेदर्शनद्वारा तथाभोगद्वारा सुखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ हेयमराजा! मनुष्यलोकतैंआदिलैके ब्रह्मलो कपर्यंत जितनेकीविषयजन्यसुखहैं ॥ तथा सुखकीप्राप्तिके जितनेकी स्त्री पुत्र धन आदिकसाधनहैं ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंकूं पूर्वउक्त रीतिसैं मैंनचिकेता दुःखरूपकरिकैहीजाणताहूं ॥ यातैं तिनपदार्थोंकेप्राप्तिकी हमारेकूं इच्छानहींहै ॥ यातैं हेयमराजा! जरामरण तैंरहितदेवताभी जिसदुर्विज्ञेयआत्माविषे निर्णयतैंविना संशयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ताआत्माकानिर्णयरूप तीसरावर आप हमारेतां ई देवौ ॥ हेशिष्य! याप्रकार अनेकप्रकारकेवरोंकूंदेकरिकै तायमराजानैं तानचिकेताकूंलोभायमानकराभी तौभी सोनचिकेता ता आत्मज्ञानतैंविना किसीदूसरेवरकूं नहींग्रहणकरताभया ॥ इसप्रकार तानचिकेताके तीव्रवैराग्यकूंदेखिकै सोयमराजा बहुतप्रस न्नहोताभया ॥ और तानचिकेताकूं ब्रह्मविद्याकाअधिकारीजाणिकै सोयमराजा तानचिकेताकेतांई आत्मज्ञानरूपतीसरावर देणेवा सतै याप्रकारकावचन कहताभया ॥ यमराजाउवाच ॥ हेनचिकेता! इसलोकविषे तथा परलोकविषे जीवोंकेप्राप्तहोणेयोग्यदो प्रकारकाफलहोवैहै ॥ तहां एकतौश्रेयरूपफलहोवैहै ॥ और दूसरा प्रेयरूपफलहोवैहै ॥ तहां बुद्धिमान्पुरुषोंकेप्रीतिकाविषयजोमो क्षरूपनित्यसुखहै ॥ सोमोक्षरूपसुख सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ याकारणतैं तामोक्षरूपनित्यसुखकूं श्रुतिभगवती श्रेय यानामकरिकैकथनक रैहै ॥ और मूढपुरुषोंकेप्रीतिकाविषय सोसंसारसंबंधीविषयजन्यअनित्यसुखहै ॥ सोविषयजन्यसुख अत्यंतनिकृष्टहै ॥ याकारण तैं ताविषयजन्यअनित्यसुखकूं श्रुतिभगवती प्रेय यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और स्वरूप साधन प्रमाण अधिकारी याचारोंकेभेद करिकै सोश्रेयरूपफल तथा प्रेयरूपफल परस्परविलक्षणहोवैहैं ॥ तहां प्रथम मोक्षरूपश्रेयका नित्यसिद्धआनंदस्वरूपआत्माही स्वरूपहै ॥ और मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाअभेदज्ञान ताश्रेयका साधनहै ॥ और उपनिषद्रूपवेदांतशास्त्र ताश्रेयविषे प्रमाणहै ॥

और विवेक वैराग्य शमदमादिषट्संपत्ति मुमुक्षुता यासाधनचतुष्टयसंपन्नपुरुष ताश्रेयका अधिकारीहै ॥ और दूसरा जोप्रेयरूपफ
लहै ॥ ताप्रेयकातौ विषयजन्यअनित्यसुख स्वरूपहै ॥ और यज्ञादिककर्म ताप्रेयके साधनहैं ॥ और वेदकापूर्वकर्मकांड ताप्रेयावि
षे प्रमाणहै ॥ और सकामपुरुष ताप्रेयका अधिकारीहै ॥ याप्रकार तिनश्रेयप्रेयदोनोंका परस्परभेदहोवैहै ॥ हेनचिकेता! श्रेयप्रे
य यादोनोंप्रकारकेफलोंविषे जोअधिकारीपुरुष श्रेयरूपफलकूं संपादनकरैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष आपणेप्रयोजनतैं भ्रष्टहोवैन
हीं ॥ किंतु सोअधिकारीपुरुष कृतकृत्यभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोमूढबुद्धिपुरुष ताप्रेयरूपफलकूं संपादनकरैहै॥ सोमूढबुद्धिपु
रुष यासंसारविषे नानाप्रकारकेजन्ममरणादिकदुःखोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ हेनचिकेता! जैसे जलविषेस्थितजोमत्स्यहै सोमत्स्य जबी
लोहेकीकुंढीसाथबांध्येहुएमांसकेभक्षणकरणेकीइच्छाकरिकै प्रवृत्तहोवैहै ॥ तबी सोमत्स्य सुखलेशतैंरहित मरणांतदुःखकूंप्राप्तहो
वैहै ॥ तैसे यहसकामपुरुषभी जबी स्वर्गादिकभोगोंकीइच्छाकरिकै यज्ञादिककर्मोंविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ तबी सोसकामपुरुष सुखले
शतैंरहित जन्ममरणादिकअनेकदुःखोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और हेनचिकेता! जैसे निर्धनदरिद्रीपुरुष दुष्टराजाकेदेशविषेस्थितहुआभी
बंधनादिकदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे मोक्षरूपश्रेयकीइच्छावाले आपसरीखेनिष्कामपुरुष प्रारब्धकर्मकेयोगतैं यासंसारविषेवर्त
मानहुएभी दुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ नित्यसुखकीप्राप्तिकरणेहारा जोमोक्षरूपश्रेयहै ॥ सोमोक्षरूपश्रेयतौ नि
ष्कामपुरुषकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जन्ममरणादिरूपदुःखकीप्राप्तिकरणेहारा जोविषयजन्यसुखरूपप्रेयहै ॥ सोप्रेय
सकामपुरुषकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां तुमारेसरीखे जेनिष्कामपुरुषहैं ॥ तेनिष्कामपुरुषतौ मोक्षरूपश्रेयकेसाथही संबं
धकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और विषयोंविषेआसक्त जेमंदबुद्धिसकामपुरुषहैं ॥ तेसकामपुरुषतौ विषयजन्यसुखरूपप्रेयकेसाथही संबंधकूं
प्राप्तहोवैहै ॥ हेनचिकेता! जिसकालविषे यहअधिकारीपुरुष वेदोंका तथा पुराणादिकशास्त्रोंका अध्ययनकरैहैं ॥ तथा तिनवेदों
के तथा पुराणोंके अर्थविषेकुशलहोवैहैं ॥ तिसीकालविषे याअधिकारीपुरुषोंकेसाथ श्रेयका तथाप्रेयका संबंधहोवैहै ॥ तिनअधि
कारियोंविषेभी जेतौ अत्यंततीक्ष्णबुद्धिवालेपुरुषहोवैहैं ॥ तेपुरुषतौ तामोक्षरूपश्रेयकीहीइच्छाकरैहैं ॥ और विषयोंविषेआसक्त जे

मंदबुद्धिपुरुषहोवैंहैं ॥ तेमंदबुद्धिपुरुषतौ ताप्रेयकीहीइच्छाकरैंहैं ॥ हेनचिकेता! सोप्रेयकीइच्छाकरणेहारा सकामपुरुष पूर्वअप्राप्त हुए स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंके प्राप्तिकीइच्छाकरैंहै ॥ और पूर्वप्राप्तहुए तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंके रक्षाकरणेकीइच्छाकरैंहै ॥ परंतु तिनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकीप्राप्ति तथा तिनपदार्थोंकारक्षण दैवकेअधीनहै ॥ हमारीइच्छातैं तिनपदार्थोंकीप्राप्ति तथारक्षण होइसकैनहीं ॥ याप्रकारकेअर्थकूं तेसकामपुरुष जाणतेनहीं ॥ याकारणतैं तेप्रेयअर्थीसकामपुरुष मंदबुद्धिवालेहैं ॥ और हेनचिकेता! जेतुमारे सरीखेबुद्धिमान् निष्कामपुरुषहोवैंहैं ॥ तेबुद्धिमान्पुरुषतौ तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिकी तथा रक्षणकरणेकी इच्छाकरतेनहीं ॥ किंतु तिनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकेप्राप्तिकूं तथा रक्षणकूं दैवकेअधीनमानिकै तेनिष्कामपुरुष आपणेचित्तविषे निरंतर ताप्रेयका तथाश्रेयकाही विचारकरैंहैं ॥ अब प्रथम प्रेयकेस्वरूपकाविचार निरूपणकरैंहैं ॥ हेनचिकेता! जिसअधिकारीपुरुषकूं जन्ममरणादिकदुःखोंकेनिवृत्तिकीइच्छाहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष ताप्रेयकेस्वरूपविषे याप्रकारकाविचारकरै ॥ यहसंपूर्णजीव हमारेकूं सर्वदासुखकीप्राप्तिहोवै तथाहमारेकूं दुःखकीप्राप्ति कदाचित्भीनहींहोवै याप्रकार सुखकेप्राप्तिकी तथादुःखकेनिवृत्तिकी इच्छाकरैंहैं ॥ परंतु तिनजीवोंकूं सुखकीप्राप्ति तथा दुःखाभावकीप्राप्ति होतीनहीं ॥ उलटा तिनपुरुषोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिहोवैंहै ॥ यातैं यह जान्याजावैहै ॥ कोईबलवान्दोष विद्यमानहै ॥ जादोषकेप्रभावतैं यहजीव सुखकीप्राप्तिवासते उद्यमकरतेहुएभी दुःखकूंहीप्राप्तहोवैंहै ॥ यातैं यहविचारकऱ्याचाहिये ॥ सोदुःखकीप्राप्तिकरणेहारादोष किसकाधर्महै ? तहां पुण्यपापरूपकर्मोंकाकर्त्ता जोपुरुषहै ॥ तारुपुषकाही सोदोष धर्महै ॥ अथवा सोदोष पुण्यपापरूपकर्मोंकाही धर्महै ॥ तहां सोदोष पुरुषकाधर्महै यहप्रथमपक्षतौसंभवै नहीं ॥ काहेतैं ? शास्त्रविषेकथनकरी जायज्ञादिककर्मोंकेकरणेकीरीतिहै ॥ ताशास्त्रकीरीतिसैं किंचित्न्यूनरूपकरिकै अथवा किंचित् अधिकरूपकरिकै जोतिनयज्ञादिककर्मोंकाकरणाहै याकानाम वैगुण्यहै ॥ तावैगुण्यकरिकै तेयज्ञादिककर्म कर्त्तापुरुषकूं आपणेफलकी प्राप्तिकरैंनहीं ॥ यातैं सोवैगुण्यही तापुरुषकादोष कहणाहोवैगा ॥ और सोवैगुण्यदोष जिनपुरुषोंविषेहैनहीं ॥ किंतु जेपुरुष तिन यज्ञादिककर्मोंकूं शास्त्रकीरीतिसैं भलीप्रकारकरैंहैं ॥ तिनपुरुषोंकूंभी दुःखकीप्राप्तिदेखणेमेंआवैंहै ॥ यातैं सोदोष पुरुषका धर्मन

हीहै ॥ किंतु परिशेषतें स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिवासते कन्येजेकाम्यकर्म हैं ॥ तिनकाम्यकर्मोंकाही सोदोष धर्म है ॥ यातें काम्यक र्मही याजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ अब लोकप्रसिद्ध सुखकेसाधनोंकानिरूपणकरैहैं । यालोकविषे साक्षात् अथवा परंपराकरि के विषयजन्यसुखोंकासाधन जोसुवर्णादिरूपधनहै ॥ ताधनकूं ब्राह्मणतौ प्रतिग्रह याज्न अध्यापन यातीनउपायोंकरिकै संपादन करैहैं ॥ तहां ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंविषे जिसपुरुषनें शास्त्रकीरीतिसें धर्मपूर्वक धनकासंपादनकर्‍याहोवै ॥ तथा जोपु रुष गुरुशास्त्रदेवतावोंविषे श्रद्धाभक्तिवालाहोवै ॥ तथा अनाचारतैंरहितहोवै ॥ ऐसेधर्मात्मापुरुषतें याब्राह्मणनैं धनकादानलेणा याकानाम प्रतिग्रहहै ॥ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यात्रैवर्णिकपुरुषोंकूं याब्राह्मणनैं यथअधिकार यज्ञकरावणा याकानाम याजनहै ॥ और वैराग्यादिकसाधनोंकरिकैयुक्त जेअधिकारीपुरुषहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकेतांई ब्राह्मणनैं विद्यादेणी याकानाम अध्यापन है ॥ याप्रकारकेउपायोंकरिकै यहब्राह्मण धनकासंपादनकरैहैं ॥ और क्षत्रियराजा प्रजाकीचौरादिकोंतैंरक्षाकरिकै धनकासंपाद नकरैहैं ॥ और वैश्यपुरुष कृषिवाणिज्यादिकोंकरिकै धनकासंपादनकरैहैं ॥ और शूद्रपुरुष ब्राह्मणादिकतीनवर्णोंकीसेवाकरिकै ध नकासंपादनकरैहैं ॥ इसप्रकार आपणीआपणीवृत्तितें धनकूंएकठाकरिकै तेब्राह्मणादिकचारिवर्णोंकेपुरुष ताधनकरिकै नानाप्र कारकेअन्नकूं तथा स्त्रियोंकूं तथा गृहादिकपदार्थोंकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तहां तेब्राह्मणादिकपुरुष अन्नकरिकैतौ तृप्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और स्त्रियोंकरिकै पुत्रपौत्रादिकप्रजाकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ और गृहादिकपदार्थोंकरिकै मनकेसंतोषकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तेब्राह्म णादिकपुरुष जोकदाचित् ताधनकरिकै यज्ञादिकरूपइष्टकर्मोंकूंकरैहैं ॥ तथा लोकोंकेसुखवासतै वापी कूप तडाग गृह इत्यादि कपूर्त्तकर्मकरैहैं ॥ तथा अन्नवस्त्रादिकपदार्थोंकादानकरैहैं ॥ तौ तेब्राह्मणादिकपुरुष इसलोकविषेतौ यशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और मर णतैंअनंतर स्वर्गादिकलोकोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तास्वर्गविषे तेपुरुष नानाप्रकारकेदिव्यभोगोंकूंभोगैहैं ॥ और तापुण्यकर्मोंकेक्षयहु एतैंअनंतर तेसकामपुरुष तास्वर्गतैं पुनःभूमिलोकविषेप्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकार घटीयंत्रकीन्याईं तेसकामपुरुष निरंतर यासं सारविषेभ्रमणकरैहैं ॥ यातैं यालोकविषे जिन स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकूं यासकामपुरुषोंनैं सुखकासाधनरूपकरिकैमान्याहै ॥ ते

संपूर्ण पदार्थयाजीवोंकेदुःखरूपवृक्षकेउत्पत्तिका बीजरूपकारणहैं ॥ अब तिनपदार्थोंविषे दुःखकीकारणता निरूपणकरैहैं ॥ यह सकामपुरुष जबी तिनधनादिकपदार्थोंकूंएकठाकरैहैं ॥ तबी मरणकेसमानदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तादुःखोंकूंसहनकरिकै जबी यहसकामपुरुष ताधनादिकपदार्थोंकूंएकठाकरैहैं ॥ तबी यहसकामपुरुष तिनधनादिकपदार्थोंकेवियोगकाभयकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और धनादिकजडपदार्थोंकी तथा स्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थोंकी जाअन्यपुरुषोंकेसमीपजाणेकीशंकाहै ॥ तथा अप्रियपदार्थोंकेप्राप्तिकीजाशंकाहै ॥ यहदोनोंप्रकारकीशंका तिनसकामपुरुषोंकेचित्तकूं अग्निकीन्यांई दाहकरैहै ॥ और यालोकविषे तथा परलोकविषे स्थित जोआपणाशरीरहै ॥ तथा ताशरीरकेसंबंधी जेमातापिता गुरुआदिकोंकेशरीरहैं ॥ तिनशरीरोंके मरणकाभयकरिकैभी यासकामपुरुषोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और इसलोकविषे तथा परलोकविषे वर्तमानजोशरीरहै ॥ ताशरीरकेनाशतैंअनंतर पुनः पुण्यपापरूपकर्मोंकरिकै हमारेकूं किसशरीरकीप्राप्तिहोवैगी? याप्रकारकीचिंताजन्यभयकरिकैभी यासकामपुरुषोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और यालोकविषे तथा परलोकविषे आध्यात्मिकदुःख आधिदैविकदुःख आधिभौतिकदुःख येतीनप्रकारकेदुःख तिनसकामपुरुषोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं यासंसारविषे कोईभीपदार्थ याजीवोंकेसुखकासाधननहींहै ॥ और जैसे विषकरिकैमिल्याहुआअन्न मूढबालकोंकूं सुखकासाधन प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे येस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थभी विचारहीनमूढपुरुषोंकूं सुखकेसाधन प्रतीतहोवैहैं ॥ इतनेकरिकैप्रेयरूपफलकाविचारकऱ्या ॥ अब श्रेयरूपफलकाविचार निरूपणकरैहैं ॥ जैसे श्वानकामैथुन प्रथमकालविषे ताश्वानकूं सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ और उत्तरकालविषे ताश्वानकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे इसलोकविषे तथा परलोकविषे स्थित जितनाप्रेयहै ॥ सोप्रेय प्रथमकालविषे तौ तिनभ्रांतपुरुषोंकूं किंचित्मात्र सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ और उत्तरकालविषे सोप्रेय तिनपुरुषोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिकरैहै । ऐसादुःखरूपप्रेय यद्यपि विचारहीनमूढपुरुषोंकूं ग्रहणकरणेयोग्यहै ॥ तथापि बुद्धिमान्मैंअधिकारीपुरुषकूं सोप्रेय ग्रहणकरणेयोग्यनहींहै ॥ किंतु शरीरतैंरहित तथा सर्वदुःखोंतैंरहित जोमोक्षसुखरूपश्रेयहै ॥ सोश्रेयही हमारेकूं संपादनकरणेयोग्यहै ॥ तामोक्षरूपश्रेयकूंछोडिकै कोईदूसरा

पदार्थ हमारेकूं संपादनकरणेयोग्यनहीं है॥ और ताश्रेयकीप्राप्ति ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंविना होवैनहीं॥ यातें वेदोंकेतात्पर्यकूंजाणेहारे जेब्रह्मवेत्तामहात्मापुरुषहैं॥ तिनब्रह्मवेत्तागुरुवोंकेसमीपजाइकै मैंअधिकारीजन याप्रकार ताश्रेयकास्वरूपपूछौं॥ हे भगवन्! यालोकविषे शरीरतैंरहित कोईनित्यसुखहै अथवा नहीं है? याप्रकार हमारेकरिकैपूछेहुए तेमहात्मापुरुष हमारेतांई जिसवस्तुका उपदेशकरैंगे॥ सोईहीवस्तु हमाराश्रेयहोवैगा॥ याप्रकारकाविचारकरिके सोनिष्कामअधिकारीपुरुष तिनमहात्मापुरुषोंकेआगे ताश्रेयकेप्राप्तिकीही प्रार्थनाकरैहै॥ हेनचिकेता! तामोक्षरूपश्रेयकीप्राप्तिवासते महात्मागुरुकेआगे प्रार्थनाकरणेहारे तेरेसरीखे निष्कामपुरुष यालोकविषेदुर्लभहैं॥ हेनचिकेता! यालोकविषे जीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरणेहारे जितने स्त्री पुत्र धन आदिकपदार्थहैं॥ तेसंपूर्णपदार्थ मैंयमराजा पूर्वतुमारेतांई देताभया॥ परंतु तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकूं दुःखरूपजाणिकै तुमनैं अंगीकारकर्‍यानहीं॥ यातें मोक्षरूपश्रेयकूंग्रहणकरणेहारा तू हमाराशिष्य सर्वविवेकीपुरुषोंविषेश्रेष्ठहै॥ हेनचिकेता! जैसे यालोकविषेचोरादिकदुष्टपुरुषोंके हस्तपादोंविषेस्थित जालोहकीशृंखलाहै॥ ताशृंखला तिनचोरादिकपुरुषोंकूं चलणेदेवैनहीं॥ तैसे स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंविषे आसक्तिरूप जासुवर्णमयशृंखलाहै॥ साआसक्तिरूपशृंखलाभी यापुरुषोंकूं किसीशुभकर्मविषे प्रवृत्तहोणेदेवैनहीं॥ ऐसीआसक्तिरूपशृंखलाकूं विचारकेबलतैंतोडिकै तू नचिकेता बाहरिनिकस्याहै। यातें यासंसाररूपज्वरतें तू अवश्यमुक्त होवैगा॥ कैसी है सा आसक्तिरूपशृंखला? जाआसक्तिरूपशृंखलाकरिकैबांध्येहुए केईकशास्त्रवेत्ताबुद्धिमान्पुरुषभी यासंसाररूपसमुद्रविषेही डुबेरहेहैं॥ तासंसारसमुद्रतें आपणेकूं निकासणेविषे समर्थहोवैंनहीं॥ तात्पर्ययह स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंविषे आसक्तिरूपशृंखलाकरिकैबांध्येहुए शास्त्रवेत्ताबुद्धिमान्पुरुषभी जबी आपणेकूं यासंसारसमुद्रतैंबाहरिनिकासणेविषे समर्थनहींहोवैहैं॥ तबी शास्त्रविचारतैंरहित अन्यजीवोंकीक्यावार्ताहै? ऐसीआसक्तिरूपशृंखलाकूं तुमनैं विचारकेबलतैं भेदनकर्‍याहै॥ यातें सर्वविचारवान्पुरुषोंविषे तू श्रेष्ठहै॥ हेनचिकेता! यालोकविषे दोप्रकारकेमार्गहैं॥ एकतौ यज्ञादिककर्मरूपमार्गहै॥ और दूसरा आत्मज्ञानरूपमार्गहै॥ तेदोनोंमार्ग परस्पर दूरवर्तमानहैं॥ काहेतें? यहकर्मरूपमार्गतौ याजन्ममरणरूपसंसारकेस्थितिकाका

रणहै ॥ याकारणतैंही सोकर्मरूपमार्ग अनित्यविषयजन्यसुखरूप प्रेयरूपपुरकीप्राप्तिकरैहै ॥ और दूसरा आत्मज्ञानरूपमार्गतौ
ताजन्ममरणरूपसंसारकेनिवृत्तिकाकारणहै ॥ याकारणतैंही सोआत्मज्ञानरूपमार्ग नित्यसुखमोक्षरूपश्रेयरूपपुरकीप्राप्तिकरैहै ॥
हेनचिकेता ! पूर्वहमनैं तुमारेतांई स्त्रीपुत्रधनादिकअनेकपदार्थ देणेकर्ह्येथे ॥ तौभी तुमारामन चलायमाननहींहोताभया ॥ यातैं
तिनदोनोंमार्गोंविषे आत्मज्ञानरूपमार्गकाअधिकारी मैं तुमारेकूंहीमानताहूं ॥ हेनचिकेता ! सोकर्मरूपमार्गभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥
एकतौ शास्त्रविहितयज्ञादिकशुभकर्मरूपमार्गहोवैहै ॥ और दूसरा शास्त्रनिषिद्धहिंसादिकअशुभकर्मरूपमार्गहोवैहै ॥ तहांप्रथम
शुभकर्मरूपमार्गकूं तू श्रवणकर ॥ यज्ञादिकशुभकर्मोंकूंकरणेहारे जेसकामअज्ञानीपुरुषहैं ॥ तथा तिनसकामपुरुषोंकेकामनाका
विषय जितनेस्त्रीपुत्रादिकप्रियपदार्थहैं ॥ तेसंपूर्ण याअविद्यारूपभूमिविषेही वर्तमानहैं ॥ कैसेहैं अज्ञानीकर्मीपुरुष? यादेहा
दिकसंघातकूंही आत्मरूपमानिकै तादेहादिकसंघातकीही सर्वदा स्तुतिकरैहैं ॥ और तेसकामकर्मीपुरुष हैंतौमूर्ख ॥ परंतु आ
पणेकूंपंडितमानैहैं ॥ ऐसेसकामकर्मीपुरुष ताअविद्याकरिकै यासंसारविषे गर्भवासादिरूपदुर्गतिकूंप्राप्तहोइकै नानाप्रकारकेदुः
खोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेनचिकेता ! तेसकामकर्मीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंरहितहैं ॥ यकारणतैं तेसकामअज्ञानीपुरुष ताआत्म
ज्ञानरूपमोक्षमार्गकूं जाणिसकतेनहीं ॥ और तेअज्ञानीसकामकर्मीपुरुष गुरुरूपहोइकै अज्ञानीपुरुषोंकूंहीउपदेशकरैहैं ॥ और
तिनअज्ञानीसकामकर्मीपुरुषोंके उपदेशकूंश्रवणकरिकै तेअज्ञानीशिष्यभी तिसीप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ जैसे अंधपुरुषकेपी
छेचाल्याहुआ जोदूसराअंधपुरुषहै ॥ सोअंधपुरुष वारंवार भूमिविषेपडेहै ॥ तैसे अज्ञानीकर्मीगुरुवोंकेपीछेचालणेहारे तेअज्ञानी
शिष्यभी तिनगुरुवोंकीन्यांई वारंवार जन्ममरणादिकदुःखोंकूंही प्राप्तहोवैहैं ॥ हेनचिकेता! याजन्ममरणरूपसंसारविषेप्राप्तहो
णेहारे तेसकामअज्ञानीजीव यद्यपि बहुतप्रकारकेहैं ॥ तथापि तेसकामअज्ञानीपुरुष संक्षेपतैं दोनप्रकारकेहोवैहैं ॥ एकसकाम
पुरुषतौ पुण्यरूपअदृष्टद्वारा सुखकेप्राप्तिकीइच्छाकरैहैं ॥ और दूसरेसकामपुरुषतौ दृष्टउपायद्वारा तासुखकेप्राप्तिकीइच्छाकरैहैं ॥
तहां पुण्यरूपअदृष्टद्वारा सुखकेप्राप्तिकीइच्छाकरणेहारे सकामपुरुषतौ अर्थवादसहित कर्मकांडरूपवेदकूंप्रमाणमानैहैं ॥ और

दृष्टउपायद्वारा सुखकेप्राप्तिकीइच्छाकरणेहारे दूसरेसकामपुरुषतौ तावेदप्रमाणकूंअंगीकारकरैंनहीं ॥ किंतु तेबहिर्मुखपुरुष केवलप्रत्यक्षप्रमाणकूंही अंगीकारकरैं हैं ॥ तहां वेदकेकर्मकांडकूंमानणेहारे तेसकामकर्मीपुरुषतौ अपणेशिष्योंकेप्रति याप्रकारकेवचन कथनकरैं हैं ॥ पितानैं तथागुरुनैं जिसजिसमार्गकाग्रहणकऱ्याहोवै ॥ तिसीतिसीमार्गकूं पुत्रनैं तथाशिष्यनैं आपणेनेत्रोंकूंमूंदिकेग्रहणकरणा ॥ तात्पर्ययह ॥ पितानैं तथागुरुनैं उपदेशकऱ्या जोकर्मकांडरूपमार्ग है ॥ ताकर्मकांडरूपमार्गकूं पुत्रनैं तथाशिष्यनैं श्रद्धापूर्वकहीग्रहणकरणा ॥ ताकेविषे आपणीकुतर्क नहींकरणी ॥ याप्रकारकेवचन तेकर्मीपुरुष अपणेशिष्योंकेप्रति कथनकरैं हैं ॥ हे नचिकेता ! तिनसकामकर्मीपुरुषोंकेवचनविषेविश्वासराखिकै जोमूढबुद्धिपुरुष तिनसकामकर्मोंकूंकरैं है ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष यासंसाररूपमहान्‌वनकूंप्राप्तहोइकै कबी स्वर्गादिकऊपरिकेलोकोंकूं प्राप्तहोवैंहै ॥ और कबी पातालादिकनीचेलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार तेसकामपुरुष निरंतर यासंसाररूपवनविषेभ्रमणकरैं हैं ॥ हेनचिकेता ! केवलप्रत्यक्षप्रमाणकूंहीअंगीकारकरणेहारे जेदूसरेसकामपुरुषहैं ॥ तेसकामपुरुषतौ स्वर्गादिकलोकोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरैंनहीं ॥ किंतु इसीलोकके स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरैं हैं ॥ और तिनस्त्रीपुत्रादिकोंविषेआसक्तिकरिकै तिनस्त्रीपुत्रादिकोंकेभरणपोषणवासते चोरी निंदा हिंसा आदिकअनेकपापकर्मोंकूंकरैं हैं ॥ तापापकर्मोंकरिकै तेबहिर्मुखपुरुष रौरवादिकनरकोंविषेप्राप्तहोइकै पुनःकीटपतंगादिकक्षुद्रशरीरोंकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ हेनचिकेता ! यज्ञादिकपुण्यकर्मोंकूंकरणेहारे जेसकामपुरुषहैं ॥ तथा चोरीआदिकपापकर्मोंकूंकरणेहारे जेसकामपुरुषहैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेसकामपुरुषोंकूं आपणेहृदयदेशविषेस्थित स्वयंज्योतिआत्मा प्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं आनंदस्वरूपआत्माकाअज्ञान तिनदोनोंका साधारणधर्म है ॥ अब तिनदोनोंप्रकारकेसकामपुरुषोंविषे किंचित्‌मात्रविशेषताभी निरूपणकरैं हैं ॥ हेनचिकेता ! जैसे दूरआकाशविषेभ्रमणकरताहुआभीपक्षी ताआकाशतैंनीचैभूमिविषेआइकै बंधकपुरुषकेजालविषेफसैं है ॥ तैसे यज्ञादिकपुण्यकर्मकेप्रभावतैं तेसकामपुरुष ऊपरिस्वर्गलोकविषेविचरतेहुएभी जबी तापुण्यकर्मका भोगकरिकैक्षयहोवैं है ॥ तथा पूर्वलेकिसीपापकर्मका उदयहोवै है ॥ तबी तेसकामपुरुष तास्वर्गलोककापरित्यागकरिकै मैंयमराजाकेवशहोवैं हैं ॥ तहांश्रुति ॥ कपूयचरणाःकपूयांयोनिमापद्यंते ॥

अथ यह ॥ स्वर्गफलभोगकेअंतकालविषे याजीवोंका जोकदाचित् कोईपूर्वलापापकर्म फलदेणेवासते सन्मुखहोवैहै ॥ तबी तेजीव स्वर्गकापरित्यागकरिकै नरककीप्राप्तिद्वारा श्वानादिकनीचयोनियोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं तेपुण्यवान्सकामपुरुष किसीकालविषे मैंयमराजाकेवशकूं अवश्यप्राप्तहोवैहैं ॥ और जिनपुरुषोंकी सर्वदा पापकर्मोंविषेहीप्रीतिहै ॥ तथा महामोहरूपतमकरिकै जेपुरुष प्रमादकूं प्राप्तहुएहैं ॥ ऐसेवेदबाह्यपापात्मासकामपुरुषतौ नित्यही मैंयमराजाकेवशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हे नचिकेता! तेवेदतैंविमुख सकामपुरुष जिसकुतर्ककरिकै पापकर्मोंकूंकरेहैं ॥ तेकुतर्क तू श्रवणकर ॥ यालोकविषे प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्ध जोयहस्थूलशरीरहै ॥ सोस्थूलशरीरहीआत्मा ॥ ताशरीररूपआत्माकेमृत्युहुएतैंअनंतर ताआत्माकूं परलोकविषे दूसरेशरीरकीप्राप्तिहोवैगी याकेविषेकौनकारणहै? किंतु ॥ परलोकविषे पुनःशरीरकीप्राप्तिकरणेहारा कोईकारणदेखीतानहीं ॥ यातैं परलोकविषे दूसरेशरीरकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा जेवादी शरीरतैंभिन्नआत्माकूंमानैहैं ॥ तेवादी दूसरेशरीरकीप्राप्तिविषे पुण्यपापरूपकर्मोंकूंहीकारणमानेहैं ॥ सोतिनवादियोंकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? यालोकविषे जोपुरुष तिनकर्मोंकाकर्ताहोवैहै ॥ सोईहीपुरुष तिनकर्मोंकेफलकाभोक्ताहोवैहै ॥ अन्यपुरुषकेकर्मोंकाफल अन्यपुरुष भोगेनहीं ॥ और यालोकविषे यहस्थूलशरीरतौ पुण्यपापकर्मोंकूंकरेहै ॥ और यास्थूलशरीरतैंभिन्नआत्मा परलोकविषेजाइकै तापुण्यपापकर्मोंकेफलकूंभोगेहै ॥ याप्रकारकाविरुद्धअर्थ तिनवादियोंकेमतविषे कैसेघटैगा? किंवा जेवादी याशरीरतैंभिन्न आत्माकूंमानैहैं ॥ तिनवादियोंकेमतविषे कर्येहुएकर्मोंके भोगतैंविनाहीनाशरूप कृतहानिदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और नकर्येहुएकर्मोंकेफलभोगकीप्राप्तिरूप अकृताभ्यागमरूपदोष प्राप्तहोवैगा ॥ काहेतें? जिसशरीरनैं पुण्यपापरूपकर्मकर्येथे ॥ सोशरीरतौ मरणतैंअनंतर अग्निविषेभस्महोइजावैहै ॥ यातैं ताशरीरकूंतौ तिनपुण्यपापरूपकर्मोंका सुखदुःखरूपफल होवैनहीं ॥ और याशरीरतैंभिन्न जिसतुमारेआत्मानैं तेपुण्यपापरूपकर्म नहींकर्येथे ॥ सोतुमाराआत्मा परलोकविषे तिनपुण्यपापकर्मोंकेसुखदुःखरूपफलकूंभोगेहै ॥ याप्रकार कृतनाश अकृताभ्यागमरूप दोनोंदूषण तिनवादियोंकेमतविषे प्राप्तहोवैहैं ॥ किंवा कृतनाश और अकृताभ्यागम यादोनोंदोषोंकीनिवृत्तिवासते सोवादी जोकदाचित् ताआत्माकूं पुण्यपापरूपकर्मोंकाकर्ताअंगीकारकरै ॥

तौ तावादीनैं अक्रियत्वरूपहेतुतैं ताआत्माविषे जोनित्यरूपतासिद्धकरीहै ॥ सोनित्यरूपता ताआत्माविषेनहींरहैगी ॥ और सो वादी जोकदाचित् ताआत्माकूं क्रियावालामानिकैभी नित्यरूपमानै ॥ तौ जैसे क्रियावालेआत्माविषे तावादीनैं नित्यरूपता अंगी कारकरीहै ॥ तैसे क्रियावाले याशरीरविषेभी सोवादी नित्यरूपता किसवासतेनहींमानता ? किंतु याशरीरविषेभी नित्यरूपतामा नीचाहिये ॥ किंवा यालोकविषे जोजोपदार्थ क्रियावालाहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ स्पर्शगुणवालाभी अवश्यहोवैहै ॥ जैसे घटपटादि कपदार्थ क्रियावालेहैं ॥ यातैं स्पर्शगुणवालेभीहैं ॥ तैसे सोवादी जोकदाचित् ताआत्माकूं क्रियावालामानैगा ॥ तौ सोआत्मा स्पर्श गुणवालाभी अवश्यहोवैगा ॥ और क्रियावाला तथास्पर्शगुणवाला यहशरीरभीहै ॥ यातैं याशरीरतैं ताआत्माकाभेद सिद्धनहींहो वैगा ॥ किंतु यहशरीरही आत्मारूपसिद्धहोवैगा ॥ और याशरीररूपआत्माका परलोकविषेगमन संभवैनहीं ॥ यातैं मरणतैंअनं तर कोईपरलोकहैनहीं ॥ किंवा जोकदाचित् याशरीरतैंभिन्नकोईआत्मा परलोकविषेजाताहोवै तौ यालोकविषे जैसे कोईपुरुष आपणेगृहकापरित्यागकरिकै किसीविदेशविषेजावैहै ॥ सोपुरुष किसीकालपाइकै पुनःआपणेगृहविषेआइकै आपणेस्त्रीपुत्रादिक बांधवोंकूंदेखैहै ॥ तैसे मरणतैंअनंतर लोकांतरकूंप्राप्तहुआ सोतुमाराआत्मा पुनःकदाचित् आपणेस्त्रीपुत्रादिकप्रियपदार्थोंकेदेख णेवासते क्यूंनहींआवता ? और मरणतैंअनंतर कोईभीपुरुष आपणेस्त्रीपुत्रादिकोंकेदेखणेवासतेआवतानहीं ॥ यातैं यहजान्या जावैहै ॥ इसलोकतैंभिन्न कोईपरलोकहैनहीं ॥ किंवा यमकिंकरआइकै याजीवात्माकूं परलोकविषेलेजावैहैं याप्रकार जोवादी कथ नकरैहैं ॥ सोभीअसंगतहै ॥ काहेतैं ? तेयमकिंकर जोकदाचित् याजीवात्माकूंबांधिकै याशरीरतैंबाहरि परलोकविषे लेजातेहोवैं तौ जैसे यालोकविषे राजाकेभृत्य जबी किसीचौरपुरुषकूंबांधिकै गृहतैंबाहरिनिकासैहैं ॥ तबी सोचौरपुरुष आपणेगृहतैंबाहरिनि कसिकै ऊच्चैःशब्दोंकूंकरैहै ॥ तैसे मरणकालविषे तिनयमकिंकरोंनैं याशरीरतैंबाहरिनिकास्याहुआसोजीवात्माभी ऊच्चैःशब्दोंकूंकि सवासतेनहींकरता ? और मरणकालविषे याशरीरतैंबाहरिनिकसिकै कोईभीजीवात्मा ऊच्चैःशब्दोंकूंकरतानहीं ॥ तथा किसीजीव ऊपरि उपकार तथाअपकार करतानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ याशरीरतैंभिन्न कोईआत्मानहींहै ॥ किंवा यास्थूलशरीरतैंआ

त्माभिन्नहै ॥ सोआत्मा पुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं परलोकविषेजावैहै ॥ याप्रकारकेवचन जेवेदविषेदेखणेमैंआवैहैं ॥ तेवचनकोई ईश्वरनैं नहींउच्चारणकर्‍ये ॥ किंतु लोकोंकेधनादिकपदार्थोंकेहरणेवासते किसीलोभीब्राह्मणोंनैं तेवचन वेदविषेपाएहैं ॥ किंवा इस लोकविषे जोपुरुष आपणेपितरोंकीप्रसन्नतावासते ब्राह्मणोंकेतांई अन्न जल वस्त्र भूषण गृह इत्यादिकपदार्थ दानदेवैहैं ॥ तेसंपूर्ण अन्नादिकपदार्थ तापुरुषकेपितरोंकूं परलोकविषेप्राप्तहोवैहैं ॥ याप्रकारकेवचन जो तेवादीपुरुषकथनकरैहैं ॥ तेवचनभीमिथ्याहैं ॥ काहेतैं ? इसलोकविषेस्थितब्राह्मणोंकेतांई दियेहुएअन्नादिकपदार्थ जोकदाचित् परलोकविषेस्थितपितरोंकूंप्राप्तहोतेहोवैं ॥ तौ इसी लोकविषे किसीगृहकेकोणविषे मातापिताकूंबैठाइकै पुत्रनैं तिनोंकीतृप्तिकरणेवासते तिसीगृहविषे ब्राह्मणोंकेतांई अन्नजलादिकप दार्थ दानदिये ॥ ताअन्नजलादिकोंकरिकै तामातापिताकी क्षुधातृषा किसवासतेनिवृत्तनहींहोती? तात्पर्ययह ॥ मातापिताकीतृ प्तिवासते जिसगृहविषे ब्राह्मणोंकेतांई अन्नादिकपदार्थदियेहैं ॥ तिसीगृहविषेस्थितमातापिताकीभी जबी ताअन्नादिकोंकरिकै तृप्तिनहींभई ॥ तबी अत्यंतदूरपरलोकविषेस्थित तामातापिताकी ताअन्नकरिकैतृप्ति किसप्रकारहोवैगी? यातैं याशरीरतैंभिन्न कोईआत्मा परलोकविषेजावैहै यहतिनोंवादियोंकाकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ हेनचिकेता ! इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकीकुतर्कोंकूं तेबहिर्मुखमूढपुरुष कामक्रोधादिकोंकेवशहुए कथनकरैहैं ॥ ऐसेवेदबाह्यनास्तिकपुरुषोंकूं इसलोकतैंविना दूसराकोईपरलोक प्रती तहोवैनहीं ॥ हेनचिकेता ! इसप्रकार वेदोंकीनिंदाकरणेहारे तथा आपणेशरीरकेपालनकरणेवासते तथा स्त्रीपुत्रादिककुटुंबकेपा लनकरणेवासते अनेकप्रकारकेपापकर्मोंकूंकरणेहारे जेबहिर्मुखनास्तिकपुरुषहैं ॥ तेबहिर्मुखपुरुषतौ वारंवार मृत्युकूंप्राप्तहोइकै मैंय मराजाकेवशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेनचिकेता ! जैसे वनविषे किसीवृक्षकीशाखाविषेस्थित जोवानरहै ॥ सोवानर आपणेचंचलस्वभा वतैं धनुषवालेपुरुषकी तबपर्यंत अवज्ञाकरैहै ॥ जबपर्यंत ताधनुषवालेपुरुषनैं तावानरकीतरफ आपणेधनुषतैं बाणनहींचलाया ॥ और जबी सोधनुषवालापुरुष तावानरकीतरफ बाणचलावैहै ॥ तबी सोमूढवानर ताअवज्ञाकेदुःखरूपफलकूं भलीप्रकारअनुभवकरै है ॥ तैसे मैंयमराजानैं जबपर्यंत तिनबहिर्मुखपापीजीवोंकीउपेक्षाकरीहै ॥ तबपर्यंतही तेबहिर्मुखपापीजीव वेदोंकी तथादेवतावोंकी

तथामैंयमराजाकी निंदाकरैं हैं ॥ और जबी मैंयमराजा तिनबहिर्मुखपुरुषोंकूं हननकरताहूं ॥ तबी तेबहिर्मुखपुरुष तानिंदारूपपाप कर्मकेदुःखरूपफलकूं नरकविषे प्रलयपर्यंत अनुभवकरैं हैं ॥ हेनचिकेता! तिनबहिर्मुखपापीपुरुषोंनैं जोपूर्व ब्राह्मणोंकेदानदेणेविषे उपहासकर्‌याहै ॥ सोतिनोंकेकहणेविषे पदार्थोंकेसामर्थ्यकाअज्ञानही कारणहै ॥ काहेतें? यालोकविषे संपूर्णपदार्थ दृष्टअर्थकेअनुसारीहीहोवैं हैं ॥ याप्रकारकेनियमकूं अंगीकारकरिकै तिनबहिर्मुखपुरुषोंनैं सोकुतर्ककर्‌याहै ॥ सोतिनोंकानियम सर्वत्रसंभवैनहीं ॥ काहेतें? तानियमकूं जोकदाचित् सर्वत्रअंगीकारकरिये तौ दिनविषे दीपककरिकै अंधकारकीनिवृत्ति दीखतीनहीं ॥ यातें तादीपककरिकै रात्रिविषे ताअंधकारकीनिवृत्ति नहींहोणीचाहिये ॥ और रात्रिविषे तादीपककरिकै अंधकारकीनिवृत्ति सर्वलोकोंकूं प्रत्यक्षदेखणेमैंआवैहै ॥ यातें तिनबहिर्मुखपुरुषोंका सोनियम संभवैनहीं ॥ किंवा यालोकविषे जोपुरुष किसीरोगादिकोंकरिकै मूर्च्छाभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तापुरुषकेसंबंधी जबी तापुरुषकेमूर्च्छाकेनिवृत्तकरणेवासतै ब्राह्मणोंकेतांईं ग्रहादिकोंकादानदेवैं हैं ॥ तबी तापुरुषकीमूर्च्छा निवृत्तहोइजावैहै ॥ और तादानकेनहींदियेहुए तापुरुषकूं सामूर्च्छा बनीरहैहै ॥ यहवार्ता लोकविषे प्रत्यक्षदेखणेमैंआवैहै ॥ यातें जैसे इसलोकविषे ब्राह्मणोंकेतांईं दानदेणेकरिकै याजीवोंकेमूर्च्छाकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तैसे इसलोकविषे ब्राह्मणोंकेतांईं अन्नादिकोंकेदानकरणेतें परलोकविषे पितामातादिकोंकीतृप्तिहोवैहै ॥ यहवार्ताभी संभवहोइसकैहै ॥ यातें जिसअधिकारी पुरुषकूं आपणेकल्याणकरणेकीइच्छाहोवै ॥ तिसपुरुषनैं पूर्वउक्तकुतर्कोंका परित्यागकरणा ॥ तथा कुतर्कीपुरुषोंकेसंगकाभी परित्यागकरणा ॥ और वेदभगवान्नैं जिसजिसअर्थकाबोधनकर्‌याहै ॥ तिसतिसअर्थकूं यापुरुषनैं श्रद्धापूर्वक अंगीकारकरणा ॥ हे नचिकेता! यद्यपि तिनबहिर्मुखपुरुषोंनैं पूर्व कृतनाश अकृताभ्यागम इत्यादिककुतर्कोंकरिकै याशरीरतैंभिन्न आत्माकेअभावकीसिद्धिकरीहै ॥ तथापि तिनबहिर्मुखपुरुषोंकाकुतर्क किसीयुक्तिप्रमाणकूंसंहारिसकैनहीं ॥ यातें तिनकुतर्कोंविषे किसीआस्तिक पुरुषनैं विश्वासनहींकरणा ॥ और तिनबहिर्मुखपुरुषोंकेकुतर्कोंकरिकै आत्माकावास्तवस्वरूप जान्याजावैनहीं ॥ किंतु जिनअधिकारीपुरुषोंके अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्म एकठेहोवैं हैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतवचनोंकाश्रवणकरिकै ता

आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंजाणेहैं ॥ कैसाहैसोआत्मा? वास्तवतें सर्वविकारोंतेंरहितस्वयंज्योतिरूपहुआभी अविद्याकेसंबंधतें जीवभावकूंप्राप्तहोइके कर्ताभोक्तापणेकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सोईहीआत्मादेव ब्रह्मविद्याकरिकैपुनःआपणेसर्वात्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब ताआत्माकेश्रवणादिकोंकीदुर्लभता निरूपणकरैहैं ॥ हेनचिकेता! अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यापंचप्रकारके क्लेशोंकरिकै मोहकूंप्राप्तभये जेकोईपापात्मापुरुषहैं ॥ तिनपापात्मापुरुषोंकूंतौ यहआत्मादेव श्रवणकरणेवासतेभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातें सोआत्माकाश्रवणभी दुर्लभहै ॥ और हेनचिकेता! सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे यहसंपूर्णजीव हृदयदेशविषे स्थित सत्यपरमात्माकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याप्रकारकेवेदांतवचनोंकूंश्रवणकरिकैभी केईकपुरुष किसीप्रतिबंधकेवशतें ताआत्माका निश्चयकरिसकैनहीं ॥ जैसे यालोकविषे किसीसत्यवादीपुरुषनें उपदेशकऱ्याजोकोईकार्यहै ॥ ताकार्यकेमहान्‌पणेकूंमूढबालक जाणिसकतेनहीं ॥ तैसे तेपुरुष आत्माकूंजाणिसकतेनहीं ॥ यातें याआत्मादेवकाज्ञानभी अत्यंतदुर्लभहै ॥ हेनचिकेता! यहआनंदस्वरूपआत्मा मनवाणीकाअविषयहै ॥ यातें जोपुरुष ऐसेअद्वितीयआत्माकाउपदेश आपणेशिष्योंकेप्रतिकरैहै ॥ सोआत्माकावक्तापुरुषभी आश्चर्यरूपहै ॥ और ऐसेनिर्गुणआत्मादेवकूं जोपुरुष तागुरुकेउपदेशतेंसाक्षात्कारकरैहै ॥ सोआत्माकेजानणेहारा लब्धापुरुषभी अत्यंतकुशलजानणा ॥ हेनचिकेता! याअद्वितीयआत्माका प्रतिपादन तथाज्ञान येदोनोंआश्चर्यरूपहैं ॥ याकारणतें ताप्रतिपादनकरणेहारेवक्तापुरुषकूं तथा ताज्ञानवालेज्ञातापुरुषकूं श्रुतिभगवती आश्चर्यरूपकहेहै ॥ और गुरुउपदिष्टमहावाक्यतेंउत्पन्नभया जोनिर्विकल्पकज्ञानहै ॥ तानिर्विकल्पकरूपसूक्ष्मज्ञानतें यहआत्मादेव प्राप्तहोवैहै ॥ यातें ताआत्मज्ञानवालेपुरुषकूं श्रुतिभगवती कुशलकहेहै ॥ हेनचिकेता! याआत्माकेअपरोक्षज्ञानवाला जोकुशलगुरुहै ॥ सोब्रह्मवेत्तागुरु जबी याअधिकारीपुरुषोंकेप्रति आत्माकाउपदेशकरैहै ॥ तबीही यहअधिकारीपुरुष ताआत्माकेवास्तवस्वरूपकूंजाणेहै ॥ परोक्षज्ञानवालेगुरुकेउपदेशतें याअधिकारीपुरुषोंकूं अपरोक्षज्ञानकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ हेनचिकेता! जिनपुरुषोंकूं ताब्रह्मवेत्ताकुशलगुरुकेउपदेशतें आत्माकासाक्षात्कारनहींभयाहै ॥ ऐसेअज्ञानीपुरुष जोकदाचित् किसीशिष्यकेप्रति बहुतकालपर्यंतभी

आत्माकाउपदेशकरै तौभी ताअज्ञानीपुरुषोंकेउपदेशतैं ताशिष्यकूं आत्माकाअपरोक्षज्ञान कदाचित्भीहोवैनहीं ॥ और ताब्रह्म वेत्ताकुशलगुरुकेउपदेशतैंविना जोपुरुष आपणेनानाप्रकारकेतर्कोंकरिकै आत्माकाचिंतनकरैहै ॥ तापुरुषकूंभी आत्माकासाक्षात्कार होवैनहीं ॥ जैसे महान्वनविषेस्थितहुआकोईपुरुष आपणेग्रामकेमार्गकूंनजाणिकरिकै किसीदूसरेपुरुषतैं तामार्गकूंपूछे ॥ और आगेतैंसोदूसरापुरुषभी ताग्रामकेमार्गकूंनजाणताहुआ तापुरुषकेप्रति किसीमार्गकाउपदेशकरिदेवै ॥ तापुरुषकेवचनविषेविश्वा सराखिकै सोपुरुष जोकदाचित् तिसमार्गविषेचालेहै तौ सोपुरुष ताआपणेग्रामकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा तामार्गकेचलणे तैं सोपुरुष दुःखकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यासंसाररूपमहान्वनविषेस्थितहुआ यहअधिकारीपुरुष जबी किसीअज्ञानीकर्मीपुरुष तैं आत्मज्ञानरूपमोक्षकामार्ग पूछेहै ॥ तबी तिनअज्ञानीकर्मीपुरुषोंकेउपदेशतैं यहअधिकारीपुरुष ताआत्मज्ञानरूपमोक्षमार्गकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा ताअज्ञानीपुरुषोंकेउपदेशतैं सोअधिकारीपुरुष विषयरूपसंसारमार्गकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं जिन पुरुषोंकूं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तिनमुमुक्षुपुरुषोंनैं आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते ब्रह्मवेत्ताकुशलगुरुकूंही खोजणा ॥ तिसब्रह्मवे त्ताकुशलगुरुकेउपदेशकरिकैही यामुमुक्षुजनोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेनचिकेता! ऐसाब्रह्मवेत्ताकुशलवक्तापुरुषसर्व जगत्केआत्मरूपब्रह्मकूं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणेआत्मातैं अभिन्नकरिकैजानैहै ॥ याकारणतैं सोब्रह्मवेत्ताकुशलपुरुष सर्वज गत्तैंअभिन्नहोवैहै ॥ ऐसाब्रह्मवेत्तागुरु जबी याअधिकारीपुरुषोंकेप्रति आत्माकाउपदेशकरैहै ॥ तबी ताब्रह्मवेत्तागुरुकूं ताआत्म ज्ञानकरिकै जोअद्वितीयब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपफलभयाहै ॥ सोईहीब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपफल ताशिष्यकूंभीहोवैहै ॥ यातैं ऐसेब्रह्मवे त्ताकुशलगुरुकेउपदेशतैंही यहशिष्य सर्वात्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ परंतु ऐसाब्रह्मवेत्तागुरु यालोकविषे कोईविरलाहीहै ॥ हेनचि केता! याजीवोंकाआत्मा सूक्ष्मपदार्थोंतैंभी अतिसूक्ष्महै ॥ यातैं ऐसादुर्विज्ञेयआत्मा केवलआपणेतर्ककरिकै जान्याजावैनहीं ॥ किंतु ताब्रह्मवेत्ताकुशलगुरुकेउपदेशतैंही सोआत्मा जान्याजावैहै ॥ हेनचिकेता! ऐसेब्रह्मवेत्ताकुशलगुरुकेउपदेशतैं जिसअधिका रीपुरुषकी आत्माकारमतिहुईहै ॥ तामतिकूं यहअधिकारीपुरुष किसीकुतर्ककरिकैदूरनहींकरै ॥ किंतु उलटा नास्तिकवादियोंनैं

शरीरादिकोंविषे आत्मरूपतासिद्धकरणेवासते जेजेनानाप्रकारकेकुतर्ककरैं हैं ॥ तिनकुतर्कोंकूं श्रुतिउक्ततर्कोंतैंछेदनकरिकै यहअ
धिकारीपुरुष तातत्पदार्थरूपब्रह्मकेसाथ त्वंपदार्थरूपजीवकीसमानताकूं स्थापनकरै ॥ और ताश्रुतिउक्ततर्कोंतैंविना उत्पन्नभई
सामात तिनकुतर्कोंकरिकै निष्फलताकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ हेनचिकेता ! याआत्माकारमतिके उत्पत्तिविषे तथाफलविषे प्रतिबंधकर
णेहारे जेनानाप्रकारकेकुतर्क वादियोंनैं कल्पनाकऱ्येहैं ॥ तिनबहिर्मुखवादियोंकेकुतर्कोंकूं तू श्रवणकर ॥ तहां प्रथम तेबहिर्मुखपु
रुष याप्रकारकीकुतर्ककरैं हैं ॥ यासंपूर्णशरीरोंविषे यहआत्मा एकहै अथवा अनेकहैं ॥ तहां सर्वशरीरोंविषे आत्माएकहै यहप्रथ
मपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ? जोकदाचित् सर्वशरीरोंविषे आत्माएकहोवै तौ तू मैं अन्य इत्यादिकभे
दव्यवहार नहींहोणाचाहिये ॥ और याप्रकारकाभेदव्यवहार सर्वलोकोंविषे देखणेमैंआवताहै ॥ यातैं सर्वशरीरोंविषे आत्माएक
नहींहै ॥ और सर्वशरीरोंविषे आत्मा अनेकहैं ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ? जोकदाचित् श
रीरशरीरविषे आत्माकाभेदहोवै तौ तावादीनैं जोआत्माकीअद्वितीयरूपताअंगीकारकरीहै ॥ साअद्वितीयरूपता ताआत्मावि
षेनहींरहेगी ॥ यातैं ताआत्माविषे अनेकरूपताभी संभवैनहीं ॥ किंवा आत्माकूं एकअद्वितीयरूपमानणेहारा सोवादी जोकदाचि
त् शरीररूपउपाधिकेभेदतैं आत्माकाभेदअंगीकारकरै ॥ तौतावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ एकहीआत्माकूं एककालविषे नानाशरी
रोंकीप्राप्ति किसप्रकारहोवैहै ? जैसे यालोकविषे कोईयोगीपुरुष आपणेयोगसिद्धिकेप्रभावतैं एकहीकालविषे अनेकशरीरोंकूंप्राप्त
होवैहै॥ तैसे कोईयोगसिद्धि याआत्माकूंप्राप्तभईनहीं ॥ जिसयोगसिद्धिकरिकै यहएकहीआत्मा एकहीकालविषे अनेकशरीरोंकूं
प्राप्तहोवैहै ॥ किंवा जोकदाचित् सर्वशरीरोंविषे एकहीआत्मास्थितहोवै तौ जैसे आपणेएकशरीरविषे यहहमाराशरीरहै याप्र
कारकाज्ञान ताआत्माकूंहोवैहै तैसे संपूर्णशरीरोंविषे येसंपूर्णशरीर हमारेहैं याप्रकारकाज्ञान ताआत्माकूं किसवासतेनहींहोता ?
और सर्वशरीरोंविषे यहसंपूर्णशरीर हमारेहैं याप्रकारकाज्ञान किसीआत्माविषे देखणेमैंआवतानहीं ॥ याकारणतैंभी सर्वशरीरों
विषे आत्मा एकनहींहै ॥ किंवा यहआत्मा जोकदाचित् सर्वशरीरोंविषेएकहीहोवै तौ यहआत्मा जैसे आपणेशरीरकेसुखदुःखोंकूं

अनुभवकरैहै तैसे सर्व शरीरोंकेसुखदुःखोंकूं किसवासते नहींअनुभवकरता ? और नानाप्रकारकीयोनियोंविषे भ्रमणतैंविना यह आत्मा एककालविषे सर्वशरीरोंकेसुखदुःखका अनुभवकरतानहीं ॥ याकारणतैंभी सर्वशरीरोंविषे सोआत्मा एकनहींहै ॥ किंवा तावादीनैं सर्वशरीरोंविषे अंगीकारकऱ्याजोआत्माहै सोआत्मा घटादिकोंकीन्याईं जडहै अथवा चेतनहै ॥ तहां सोआत्माजडहै यह प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? सोआत्मा जोकदाचित् घटादिकोंकीन्यांईं जडहोवैगा तौ जडआत्माविषे कर्तापणा तथाभोक्तापणा संभवैनहीं ॥ यातें ताजडआत्माका अंगीकारकरणाही निष्फलहोवैगा ॥ किंवा सोआत्माजोकदाचित् घटादिकोंकीन्यांईं जडहोवैगा तौ जैसे जडघटकेभोगवासते दूसरेकिसीजडपदार्थकूं कोई उत्पन्नकरतानहीं ॥ तैसे ताजडआत्माकेभोगवासते याजडशरीरकाआरंभ नहींहोवैगा ॥ और आत्माकेसुखदुःखरूपभोगवासतेही याजडशरीरकाआरंभ होवैहै ॥ यातें आत्माविषे जडरूपतासंभवैनहीं ॥ और सोआत्मा चेतनरूपहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभीसंभवै नहीं ॥ काहेतें ? ज्ञानवालेकानाम चेतनहोवैहै ॥ और चेतनकेभोगवासतेही यहशरीरादिकजडपदार्थ होवैहैं ॥ याकेविषे यहविचारकऱ्याचाहिये ॥ यहशरीरादिकजडपदार्थ जोआत्माकेभोगवासतेहोवैहैं ॥ सो ज्ञानरूपसंबंधतैंहोवैहैं ॥ अथवा ताज्ञानरूपसंबंधतैंविनाहीहोवैहैं ॥ तहां ताज्ञानरूपसंबंधतैंविनाही तेशरीरादिक आत्माकेभोगवासतेहोवैहैं ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकार करै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? जोपदार्थ ज्ञानकाविषय नहींहोवैहै ॥ सोपदार्थ किसीपुरुषकेभोगकासाधनहोवैनहीं ॥ किंतु ज्ञानकेविषयहुएही तेसर्वपदार्थ याजीवोंकेभोगकासाधनहोवैहैं ॥ और तेशरीरादिकपदार्थ ताज्ञानरूपसंबंधतैंही याआत्माकेभोगकासाधनहोवैहैं ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ जिसज्ञानरूपसंबंधतैं तेशरीरादिकपदार्थ याआत्माकेभोगकासाधनहोवैहैं ॥ सोज्ञान नित्यहै अथवा अनित्यहै ॥ तहां सोज्ञान नित्यहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? सोज्ञान जोकदाचित् नित्यहोवै तौ ताशरीरादिकपदार्थोंकरिकै याआत्माकूं सर्वदा भोगकीप्राप्तिहोणीचाहिये और तिनशरीरादिकपदार्थोंकरिकै याआत्माकूं सर्वकालविषे भोगकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ यातें ताज्ञानविषे नित्यरूपतासंभवैन

हीं ॥ और सोज्ञान अनित्यहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोअनित्यज्ञान आपणेकरिकैही आप प्रकाशितहै ॥ अथवा किसीदूसरेज्ञानकरिकै प्रकाशितहै ॥ तहां सोअनित्यज्ञान आपणेकरिकैही प्रकाशितहै ॥ यहप्रथम पक्ष जोवादी अंगीकारकरै तौ एकहीज्ञानविषे ताप्रकाशरूपक्रियाकी कर्मरूपता तथाकर्तारूपता प्राप्तहोवैगी ॥ सोअत्यंतविरुद्धहै ॥ और सोअनित्यज्ञान दूसरेज्ञानकरिकैप्रकाशितहै ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै तौ सोएकज्ञान दूसरेज्ञानकरिकै प्रकाशितहोवैगा ॥ और सोदूसराज्ञान तीसरेज्ञानकरिकैप्रकाशितहोवैगा ॥ और सोतीसराज्ञान चतुर्थज्ञानकरिकैप्रकाशितहोवैगा ॥ याप्रकार तिनज्ञानोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ हेनचिकेता! इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकेकुतर्कोंकूं तेबहिर्मुखमूढपुरुष कल्पनाकरैहैं ॥ तेसंपूर्ण तिनोंकेकुतर्क श्रुतिप्रमाणतैंविरुद्धहैं॥ याकारणतैंही तेकुतर्क क्रकचकेसमानदुःखकाहेतुहैं ॥ हेनचिकेता! जिसअधिकारीपुरुषकूं ताआत्माकारमतिकीउत्पत्तितैंपूर्वही याकुतर्कोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ताअधिकारीपुरुषविषे साआत्माकारमति उत्पन्नहीनहींहोवैहै ॥ और जिसअधिकारीपुरुषकूं ताआत्माकारमतिकीउत्पत्तितैंअनंतरही तिनकुतर्कोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकूं श्रुतिकेअर्थविषे अविश्वासहोवैहै ॥ ताअविश्वासकरिकै तिसपुरुषकूं ताश्रुतिकेअर्थविषे संशयविपरीतभावनाहोवैहै ॥ तासंशयविपरीतभावनाकरिकै साआत्माकारमति विनाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं हेनचिकेता! जिसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ताअधिकारीपुरुषनैं ताआत्माकारमतिरूपगौकी कुतर्करूपसिंहतैं अवश्यकरिकैरक्षाकरणी ॥ हेनचिकेता! वेदोंकूंप्रमाणरूपमानणेहारे जेआस्तिकपुरुषहैं ॥ तथा वेदोंकूंअप्रमाणरूपमानणेहारे जेनास्तिकपुरुषहैं ॥ तेसंपूर्णपुरुष आपणीआपणीबुद्धिकेअनुसार जिसीकिसीप्रकारका आत्माकास्वरूप जाणतेहीहैं ॥ तथा ताआत्माकास्वरूप आपणेशिष्योंकेप्रति कथनभीकरैहैं ॥ यातैं आपणेआपणेगुरुकेउपदेशतैं साआत्माकारमति सर्वपुरुषोंविषेउत्पन्नहोवैहै ॥ कितनेकचार्वाकादिकोंकूंतौ याशरीरविषेही आत्माकारमतिहोवैहै ॥ और कितनेकवादियोंकूंतौ प्राणादिकोंविषेही आत्माकारमतिहोवैहै ॥ और कितनेकवादियोंकूंतौ कर्ताभोक्ताविषेही आत्माकारमतिहोवैहै॥ परंतु ताआत्माकारमतिकरिकै तिनमूढपुरुषोंकूं मोक्षकी

प्राप्तिहोवैनहीं ॥ और अद्वितीयआत्माकेयथार्थज्ञानवाला तथा श्रुतिअनुकूलतर्कोंविषेकुशल ऐसाजोब्रह्मवेत्तागुरुहै ॥ सोब्रह्मवेत्ता गुरु जबी याअधिकारीपुरुषोंकेप्रति ताआत्माकारमतिकाउपदेशकरैहै ॥ तबीही याअधिकारीपुरुषोंकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेन चिकेता! जिसअधिकारीपुरुषके पूर्वअनेकजन्मोंकेपुण्यकर्म इकठेहोवैहैं ॥ सोअधिकारीपुरुषही ताआत्माकारमतकूं प्राप्तहोवैहै ॥ जैसे तू नचिकेता किसीपूर्वलेपुण्यकर्मोंकेप्रभावतें याआत्माकारमतिकूंप्राप्तभयाहै ॥ हेनचिकेता! मैंयमराजानैं तुमारेप्रति स्त्रीपुत्र धनादिकअनेकपदार्थ देणेकरे तौभी तिनपदार्थोंकूं तू ग्रहणनहींकरताभया ॥ यातें तुमाराधैर्य कोईआश्चर्यरूपहै ॥ ऐसेधैर्यवा नूपुरुषोंकूंही यहआत्माकारमति प्राप्तहोवैहै ॥ और ऐसेधैर्यवान् तुमारेसरीखेशिष्य यालोकविषे अत्यंतदुर्लभहैं ॥ हेनचिकेता! ऐ सेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिकालविषे जिसप्रकारकाधैर्य तुमारेकूंप्राप्तभयाहै ॥ तिसप्रकारकाधैर्य पूर्वकिसीपुरुषकूं प्राप्तभयान हींहै ॥ और अबीवर्तमानकालविषे ऐसाधैर्य किसीपुरुषकूंहैनहीं ॥ और आगेकिसीपुरुषकूं होवैगानहीं ॥ हेनचिकेता! दूसरेपुरु षोंकीक्यावार्त्ताहै? परंतु मैंयमराजाविषेभी तेरेजैसाधैर्यनहींहै ॥ काहेतें? यद्यपि मैंयमराजा आपणेहृदयदेशविषेस्थित ब्रह्मानंद रूपनिधिकूं नित्यजाणताहूं ॥ और लोकपालरूपअधिकारसहित आपणेदेवतापणेकूं अनित्यजाणताहूं ॥ तथापि जैसे स्त्रीपुत्रादिक सर्वपदार्थोंविषे तुमारी त्यागबुद्धिहुईहै ॥ तैसे तिनपदार्थोंविषे हमारी त्यागबुद्धिनहींहै ॥ हेनचिकेता! तुमारेजैसीत्यागबुद्धि ह मारेकूंइसकालविषेतौनहींहै ॥ परंतु ऐसीत्यागबुद्धि हमारेकूं पूर्वकालविषेभीनहींभईहै ॥ काहेतें? यहअधिकारीपुरुष यज्ञादिकअ नित्यकर्मोंकरिकै मोक्षरूपनित्यसुखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याप्रकारकेअर्थकूं नजाणिकरिकै मैंयमराजा पशुइष्टकादिकअनित्यपदार्थोंक रिकैअग्निचयन अग्निष्टोम आदिकअनेकयज्ञोंकूंकरताभयाहूं ॥ तिन अग्निचयनादिकयज्ञोंकरिकै मैंयमराजा यालोकपालपदवीकूंप्रा प्तभयाहूं ॥ जालोकपालपदवी प्रलयपर्यंत रहणेहारीहै ॥ और जैसे अन्नकेभोजनकियेहुए याजीवोंकी विनाहीयत्नतें तृप्तिहोवैहै ॥ तैसे यालोकपालपदवीविषेभी विनाहीयत्नतें हमारेकूं सर्वभोगोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेनचिकेता! इसप्रकार पूर्वमहान्यत्नोंकरिकै हमारेकूं प्राप्तभयाजोयहऐश्वर्यहै ॥ सोयहऐश्वर्य तुमारेकूंविनाहीयत्नतें प्राप्तहोताथा तौभी ताहमारेऐश्वर्यकूं तू त्यागकरताभयाहै ॥ यातें तुमा

राधैर्य कोईआश्चर्यरूपहै ॥ हेनचिकेता! जिसआनंदस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारवासते तू सर्वविषयोंकापरित्याग करताभयाहै ॥
तिसआनंदस्वरूपआत्माकूं मैंयमराजा साक्षात्अनुभवकरताहुआभी तिनविषयोंकापरित्याग करिसकतानहीं ॥ याकारणतैंभी ह
मारेधैर्यतैं तुमाराधैर्य अधिकहै ॥ हेनचिकेता! जिसआनंदस्वरूपआत्माकेजानणेवासते तुमनैं सर्वपदार्थोंकात्यागकऱ्याहै ॥ सो
आनंदस्वरूपआत्माकैसाहै ? याभूमिलोकतैंआदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेविषयजन्यआनंदहैं ॥ तेसंपूर्णआनंद जिसआत्म
स्वरूपआनंदके अंतरभूतहैं ॥ तथा सोआत्मादेवही यासर्वजगत्काआधारहै ॥ तथा सोआत्मादेवही आकाशकीन्याई सर्वत्रपूर्ण
है ॥ तथा इंद्रादिकदेवतावोंकरिकै सोआत्मादेवही स्तुतिकरणेयोग्यहै ॥ तथा सोआत्मादेवही सर्वत्रपरिपूर्णरूपकरिकै तथा याज
गत्केउत्पत्ति आदिकोंका कारणरूपकरिकै जानणेयोग्यहै ॥ तथा सोआत्मादेवही नानाप्रकारकेसंकल्पोंका प्रवर्त्तकहै ॥ तथा सो
आत्मादेवही देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहोणेतैं अनंतरूपहै ॥ तथा सोआत्मादेवही सर्वअभयका अवधिरूपहै ॥ जिसतैंपरेको
ईअभयहैनहीं ॥ ऐसेआनंदस्वरूपआत्माकूं जाणताहुआभी मैंयमराजा जिनविषयोंकापरित्याग नहींकरिसकताहूं ॥ तिनविषयोंकूं
तुमनैं ताआत्माकेजानणेकीइच्छाकालविषेही परित्यागकरिदियाहै ॥ यातैं हमारेधैर्यतैं तुमाराधैर्य अधिकहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जिस
पुरुषकूं ब्रह्मानंदकीप्राप्तिभईनहीं ॥ किंतु ताब्रह्मानंदकेप्राप्तिकी केवलइच्छामात्रहै ॥ ऐसामुमुक्षुजनभी जबी तिनस्त्रीपुत्रधनादिक
पदार्थोंका परित्यागकरैहै ॥ तबी ब्रह्मानंदकूंअनुभवकरणेहारे ब्रह्मवेत्तापुरुषोंनैंतो तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंका विशेषकरिकै प
रित्यागकऱ्याचाहिये ॥ और हेनचिकेता! यास्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकापरित्यागकरिकै जिसआनंदस्वरूपआत्माविषे तुमारेकूं
प्रीतिहुईहै ॥ सोआनंदस्वरूपआत्माकैसाहै ? बुद्धिआदिकसर्वसंघातका साक्षीरूपहै ॥ और नेत्रादिकइंद्रियोंके तथामनकेसंयम
तैंरहित जेबहिर्मुखपुरुषहैं ॥ तिनबहिर्मुखपुरुषोंकरिकै सोआत्मादेव देख्याजावैनहीं ॥ और जैसे अग्नि सर्वकाष्ठोंविषे गुह्यहोइकै
रहैहै ॥ तैसे सोआत्मादेवभी सर्वशरीरोंविषे गुह्यहोइकैरहैहै ॥ और जैसे आकाश घटमठादिकउपाधियोंविषे प्रवेशकरैहै ॥ तैसे सो
आत्मादेवभी यासंपूर्णजगत्कूंउत्पन्नकरिकै ताकेविषेप्रवेशकरैहै ॥ और सोआत्मादेवही हृदयदेशविषेस्थित बुद्धिरूपगुहाविषे निवा

सकरैहै॥ तथा सोआत्मादेवही भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषे एकरसहै॥ और सत्यब्रह्ममैंहूं याप्रकारके निदिध्यासनरू
पयोगकरिकै सोआत्मादेवही प्राप्तहोणेयोग्यहै॥ तथा सोआत्मादेवही स्वप्रकाशहै ॥ हेनचिकेता! ऐसेआनंस्वरूपआत्माकूं साक्षा
त्कारकरिकै जैसेतू हर्षशोकतैंरहितहुआहै॥ तैसे जोकोईदूसराअधिकारीपुरुषभी गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं ताआनंदस्वरूपआत्माकूं सा
क्षात्कारकरैगा॥ सोअधिकारीपुरुषभी तिनहर्षशोकादिकोंतैंरहितहोवैगा॥ हेनचिकेता! तत्त्वमसि॥ यामहावाक्यविषेस्थितजोतत्
त्वं यहदोपदहैं॥ तिनदोनोंपदोंविषे सर्वत्रपरिपूर्ण मायाविशिष्टसर्वज्ञईश्वर तत्पदकाअर्थहै॥ और अज्ञानविशिष्ट अल्पज्ञजीवात्मा
त्वंपदकाअर्थहै॥ तहां जोअधिकारीपुरुष गुरुकेमुखतैं तिसतत्त्वंपदार्थकाश्रवणकरिकै तातत्पदार्थके मायासर्वज्ञतादिरूपवाच्य
भागकापरित्यागकरिकै एकचेतनमात्रलक्ष्यभागकाग्रहणकरैहै ॥ इसप्रकार त्वंपदार्थके अविद्याअल्पज्ञत्वादिरूपवाच्यभागकापरि
त्यागकरिकै एकचेतनमात्रलक्ष्यभागकाग्रहणकरैहै॥ इसप्रकार चेतनरूपलक्ष्यभागकाग्रहणकरिकै जोअधिकारीपुरुष मैंअद्वितीय
ब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणेकूंब्रह्मरूपकरिकैजाणेहै॥ सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मानंदरूपमोक्षकूं प्राप्तहोइकै सर्वदा प्रसन्नरहेहै॥ कैसा
हैसोब्रह्मानंद? सर्वप्राणियोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहाराहै॥ तहांश्रुति॥ एषह्येवानंदयाति॥ अर्थयह ॥ यहआनंदस्वरूपब्रह्मही स
र्वप्राणियोंकूंआनंदकीप्राप्तिकरैहै॥ हेनचिकेता! हृदयरूपगुहाविषेस्थित जोब्रह्मानंदरूपगृहहै॥ सोब्रह्मानंदरूपगृह याअधिकारीपु
रुषोंकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंही प्राप्तहोवैहै ॥ ऐसाब्रह्मानंदरूपगृह तुमनचिकेताकेप्रति खुलेद्वारवालाहै ॥ हेनचिकेता! मैंयमरा
जातौ आपणेचित्तविषे ऐसामानताहूं॥ जो ताब्रह्मानंदरूपगृहविषे तुमाराप्रवेश हुआहीहै॥ काहेतैं? ताब्रह्मानंदरूपगृहविषे प्रवेश
करणेकामार्ग चित्तकीअंतर्मुखताहै॥ और तामार्गद्वारा ब्रह्मानंदरूपगृहकीप्राप्तिविषे यहविषयाकार अंतःकरणकीवृत्तिरूपपाशही
प्रतिबंधकहै॥ तिन विषयाकारवृत्तिरूपपाशोंकूं तुमनैं विचारकेबलतैं नष्टकऱ्याहै॥ यातैं अबीतुमारेकूं ताब्रह्मानंदरूपगृहकेप्रवे
शकरणेविषे कोईदूसराप्रतिबंधकनहींहै ॥ हेशिष्य! याप्रकारकाउपदेश जबी तायमराजानैं नचिकेताकेप्रतिकऱ्या॥ तबी सो
नचिकेता मरणतैंअनंतर आत्माकेसत्ताकूं अर्थापत्तिरूपप्रमाणतैं निश्चयकरताभया॥ अब ताअर्थापत्तिरूपप्रमाणकानिरूपणकरै

हैं ॥ इसयमराजानैं मैंनचिकेताकेप्रति जोपूर्व सकाम निष्काम रूपअधिकारियोंकेभेदतैं प्रेय श्रेयरूप फलकाभेद कथनकऱ्याथा ॥
और मरणतैंअनंतर यहपापीजीव वारंवार मैंयमराजाकेवशकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ याप्रकारकावचन जोइसयमराजानैं पूर्वहमारेप्रति क
थनकऱ्याथा ॥ यहसंपूर्ण यमराजाकेवचन तबी सत्यहोवैंगे ॥ जबी यास्थूलशरीरतैंभिन्न कोईआत्माअंगीकारकरिये ॥ और जो
कदाचित् यास्थूलशरीरकूंही आत्मारूपमानिये तौ तेयमराजाकेवचन मिथ्याहोवैंगे ॥ काहेतैं? यहस्थूलशरीरतौ इसीलोकविषे
अग्निकरिकैंभस्महोइजावैंहै ॥ ऐसेअनित्यस्थूलशरीरकूं परलोकविषे सुखदुःखरूपभोगकीप्राप्तिसंभवैनहीं ॥ यातैं याशरीरतैंभिन्न
हीकोई आत्मा परलोकविषेजावैंहै ॥ हेशिष्य! याप्रकारकाविचारकरिकै सोबुद्धिमान्नचिकेता याशरीरतैंभिन्नरूपकरिकै ताआ
त्माकेसत्ताकूं आपहीनिश्चयकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोनचिकेता ताआत्माकेविशेषस्वरूपकेजानणेकीइच्छाकरिकै तायमरा
जाकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ नचिकेताउवाच ॥ हेयमराजा! जोवस्तु धर्मअधर्मतैंरहितहै ॥ तथा जोवस्तु कार्यका
रणभावतैंरहितहै ॥ तथा जोवस्तु भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंतैंरहितहै ॥ तथा जोवस्तु सुखदुःखतैंरहितहै ॥ ऐसेवस्तु
कूं तूयमराजा भलीप्रकारजाणताहै ॥ यातैं आप तावस्तुकाउपदेश मैंनचिकेताशिष्यकेप्रति करो ॥ हेशिष्य! याप्रकारकाप्रश्न ज
बी तानचिकेतानैं यमराजाकेप्रति कऱ्या ॥ तबी सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति ताशुद्धआत्माकेबोधकरणेवासते प्रथम प्रणवरू
पकरिकै ताआत्माकाउपदेशकरताभया॥ यमराजाउवाच ॥ हेनचिकेता! जिसपरब्रह्मकूं यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंक
रिकै साक्षात्कारकरैंहै॥ तथा जिसपरब्रह्मकूं यहऋगादिकसर्ववेद कथनकरैंहैं॥ तथा जिसपरब्रह्मकूं यहकृच्छ्रचांद्रायणादिकतप कथ
नकरैंहै॥ तिसपरब्रह्मकूं तू प्रणवरूपकरिकैजाण॥ शंका ॥ हेभगवन्! शब्दरूपऋगादिकवेद तापरब्रह्मकूं प्रतिपादनकरैंहैं॥ यह
वार्त्ता यद्यपि संभवहोइसकैहै॥ तथापि अर्थरूप कृच्छ्रचांद्रायणादिकतप तापरब्रह्मकूं प्रतिपादनकरैंहैं॥ यहवार्त्ता संभवैनहीं॥ समा
धान॥ हेनचिकेता! अशुद्धअंतःकरणविषे तापरब्रह्मकासाक्षात्कारहोवैनहीं॥ किंतु कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपकरिकै जोअंतःकरणशुद्ध
भयाहै॥ ताशुद्धअंतःकरणविषेही याअधिकारीपुरुषकूं तापरब्रह्मकासाक्षात्कारहोवैंहै॥ यातैं जैसेऋगादिकवेद तापरब्रह्मकूं प्रतिपाद

नकरैहैं ॥ तैसे यहकृच्छ्रचांद्रायणादिकतपभी तापरब्रह्मकूंही प्रतिपादनकरैहैं ॥ अब अष्टप्रकारकेमैथुनकापरित्यागरूप ब्रह्मचर्यकेज नावणेवासते प्रथम ताअष्टप्रकारकेमैथुनका निरूपणकरैहैं ॥ तहां स्मरण १ कीर्तन २ क्रीडा ३ प्रेक्षण ४ गुह्यभाषण ५ संकल्प ६ अध्यवसाय ७ क्रियानिर्वृत्ति ८ यहअष्टप्रकारकामैथुनहोवैहै ॥ तहां आपणेचित्तविषे जोस्त्रियोंकाचिंतनकरणाहै याकानाम स्मरणहै ॥ १ ॥ और तिनस्त्रियोंकेकीर्तनगावणे तथा तिनस्त्रियोंकेसाथ संभाषणकरणा याकानामकीर्तनहै ॥ २ ॥ और तिनस्त्रियोंकेसाथ जो द्यूतादिक व्यवहारकरणाहै याकानाम क्रीडा है ॥ ३ ॥ और कामदोषयुक्तमनकरिकै प्रेरणाकऱ्येहुएजेनेत्रहैं ॥ तिननेत्रोंकरिकै वारंवार तिनस्त्रियों कूंदेखणा याकानाम प्रेक्षणहै ॥ ४ ॥ और विषयसंभोगकेवासते तिनस्त्रियोंके गुह्यअंगोंकाकथनकरणा याकानाम गुह्यभाषणहै ॥ ५ ॥ और यहस्त्री हमारेसाथ विषयसंभोगकरै याप्रकारकाजोचिंतनहै याकानाम संकल्पहै ॥ ६ ॥ और यास्त्रीकेसाथ मैंअवश्यसंभोग करौंगा याप्रकारकाजोनिश्चयहै याकानाम अध्यवसायहै ॥ ७ ॥ और विषयसुखकीप्राप्तिकरणेहारा जोतिसस्त्रीकेसाथसंभोगहै याकानाम क्रियानिर्वृत्तिहै ॥ ८ ॥ याअष्टप्रकारकेमैथुनतैंजोनिवृत्तिहै याकानाम ब्रह्मचर्यहै ॥ हेनचिकेता ! जिसब्रह्मकीप्राप्तिवासते यहअधिकारीपुरुष ताब्रह्मचर्यकूंकरैहै ॥ सोब्रह्म ओंकाररूपप्रणवशब्दका अर्थरूपहै ॥ अथवा सोब्रह्म ताप्रणवशब्दरूपप्रतीकवालाहै ॥ यातैं ताब्रह्मकूं तू प्रणवशब्दतैंअभिन्नकरिकैजाण ॥ जिसवस्तुविषे अन्यवस्तुकाआरोपणकरिकै ध्यानकरिये ॥ तावस्तुकानाम प्रतीकहै ॥ जैसे पाषाणरूपशालिग्रामविषे विष्णुकाआरोपणकरिकै ध्यानकरिताहै ॥ यातैं सोशालिग्राम प्रतीकहै ॥ हेनचिकेता ! याअधिकारीपुरुषोंकूं यहप्रणवरूपअक्षरही हिरण्यगर्भरूपकरिकै तथा परब्रह्मरूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्यहै ॥ इसप्रकार जेअधिकारीपुरुष ताप्रणवरूपअक्षरकूं ब्रह्मरूपकरिकैध्यानकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष हिरण्यगर्भभावकीप्राप्ति तथापरब्रह्मभावकीप्राप्ति यादोनोंफलोंविषे जिसफलकीइच्छाकरैहैं तिसीफलकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनें ताप्रणवरूपअक्षरकीप्रतीकउपासना अवश्यकरिकैसंपादनकरणी ॥ हेनचिकेता ! ओंकाररूपप्रणवविषे अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा यह चारीमात्राहोवैहैं ॥ तिनअकारादिकचारिमात्रावोंके यथाक्रमतैं स्थूल सूक्ष्म कारण तुरीय येचारिअवस्था वाच्यअर्थहोवैहैं ॥ तिन

चारिअवस्थाउपहितशुद्धचेतन मैंहूं याप्रकारकाजोनिरंतरचिंतनहै ॥ याकानाम आलंबनउपासनाहै ॥ ताआलंबनउपासनाकूंकरणे हारेपुरुषकूं जोफल प्राप्तहोवैहै ताफलकूं तू श्रवणकर ॥ यहप्रणवरूपआलंबनही हिरण्यगर्भकेध्यानकाउपयोगीहै ॥ और यह प्रणवरूपआलंबनही परब्रह्मकेध्यानकाउपयोगीहै ॥ याप्रकार ताप्रणवकूंआलंबनकरिकै जोअधिकारीपुरुष हिरण्यगर्भकाध्यानकरै है ॥ तथा परब्रह्मकाध्यानकरैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मलोकविषेजाइकै तहांमोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इतनेकरिकै फलसहित प्रतीक उपासनाका तथाआलंबनउपासनाका निरूपणकऱ्या ॥ अब ताउपासनाकरिकै जिसअधिकारीपुरुषकाचित्तशुद्धभयाहै ॥ ताअधि कारीकेप्रति आत्माकेवास्तवस्वरूपकाउपदेश निरूपणकरैहैं ॥ हेनचिकेता! ताप्रणवशब्दकरिकै प्रतिपादनकरणेयोग्यजोब्रह्म है ॥ ताब्रह्मके याप्रकारकेस्वभावकूं यहमुमुक्षुजन चिंतनकरैं ॥ यहस्वयंज्योतिआत्मादेव जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ काहेतें? यालोकविषे जोजोपदार्थ उत्पत्तिवालाहोवैहै ॥ तिसतिसपदार्थका कोईकारण प्रतीतहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ उत्प त्तिवालेहैं ॥ यातें तिनघटादिकोंके मृत्तिकाकुलालादिककारण प्रतीतहोवैहैं॥ तैसे याआत्मादेवकी जोकदाचित् उत्पत्तिहोतीहोवै तौ याआत्मादेवकाभी कोईकारण प्रतीतहोणाचाहिये ॥ और आत्माकेउत्पन्नकरणेहारा कोईकारण प्रतीतहोतानहीं ॥ यातें या आत्मादेवका जन्मसंभवैनहीं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मादेव वास्तवतेंअद्वितीयरूपहै ॥ यातें याअद्वितीयआत्मातेंभी कोई पदार्थउत्पन्नहोवैनहीं ॥ हेनचिकेता! इसप्रकार सोआत्मादेव जन्मतैंरहितहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं अज नित्य यादोनोंनामकरिकैकथनकरैहै ॥ और यहआत्मादेव अजहै तथानित्यहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं शा श्वत यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ जोवस्तु सर्वदेशविषे तथासर्वकालविषे वर्तमानहोवै ॥ तावस्तुकानाम शाश्वतहै ॥ और यह आत्मादेव शाश्वतहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती याआत्मादेवकूं पुराण यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ जोवस्तु पूर्वकालविषेभी न वीनहीहोवै ताकानाम पुराणहै ॥ हेनचिकेता! जैसे घटरूपउपाधिकेनाशहुएभी ताघटविषेस्थितआकाशका नाशहोवैनहीं ॥ तै से याशरीररूपउपाधिकेनाशहुएभी ताशरीरविषेस्थितआत्मादेवका नाशहोवैनहीं ॥ और हेनचिकेता! यहआत्मादेव यद्यपि वा

स्तवतें किसीपदार्थकूं हननकरतानहीं ॥ तथा यहआत्मादेव आपभी किसीपदार्थकरिकैहननहोतानहीं ॥ तथापि जेअविवेकीपुरुषयाआत्मादेवकूं हननक्रियाकाकर्तामानेहैं ॥ तथा जेअविवेकीपुरुष याआत्मादेवकूं हननक्रियाकाकर्म मानेहैं ॥ तेदोनोंप्रकारकेपुरुषयाआत्मादेवके वास्तवस्वरूपकूंजाणतेनहीं ॥ काहेतें ? यालोकविषे कार्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जेशरीरादिकस्थूलपदार्थहैं ॥ तथा कारणरूपकरिकैप्रसिद्ध जेइंद्रियादिकसूक्ष्मपदार्थहैं ॥ तिनदोनोंकाही नाशदेखणेविषेआवैहै॥ यातें यहनियमसिद्धभया ॥ यालोकविषे जिसजिसपदार्थकानाशहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ कार्यरूपहोवैहै ॥ अथवा कारणरूपहोवैहै ॥ कार्यकारणभावतैंरहित किसीभीपदार्थकानाशहोवैनहीं ॥ और यहआत्मादेव कार्यकारणभावतैंरहितहै ॥ यातें याआत्मादेवकानाश संभवैनहीं ॥ हेनाचिकेता! देहइंद्रियादिकोंतैंरहित तथा आकाशकीन्यांईनिराकार जोयहआत्मादेवहै ॥ ताआत्मादेवकूं जोपुरुष हननरूपक्रियाकाकर्तारूप तथाकर्मरूप मानैहै ॥ सोपुरुष अत्यंतमूढबुद्धिहै ॥ हेनचिकेता ! जेपुरुष याअविनाशीअक्रियआत्माकूं हननक्रियाकाकर्तारूप तथाकर्मरूप मानेहैं ॥ तेपुरुष जोकदाचित् सर्वशास्त्रोंकेजानणेहारेभीहोवैं तौभी तेपुरुष विपरीतज्ञानवालेहीजानणे ॥ काहेतें ? अन्यवस्तुविषे जोअन्यवस्तुकाज्ञानहै याकानाम विपरीतज्ञानहै ॥ जैसे रज्जुविषेसर्पकाज्ञान विपरीतज्ञानहै ॥ तैसे अकर्ताआत्माविषे कर्तापणेकाज्ञान तथा अविनाशीआत्माविषे नाशपणेकाज्ञान येदोनोंप्रकारकेज्ञानभी विपरीतज्ञानरूपहैं ॥ हेनचिकेता! यालोकविषे जोपदार्थ सत्यहोवैहै ॥ तासत्यपदार्थका कदाचित्भी नाशहोवैनहीं ॥ और यहआत्मादेवभी सत्यरूपहै ॥ यातें असत्यदेहादिकोंकीन्यांई यासत्यस्वरूपआत्माकानाश किसप्रकारहोवैगा? किंतु नहींहोवैगा ॥ हेनचिकेता! केईकनैयायिकादिकवादीतौ पृथिवी जल तेज वायु याचारिभूतोंकेपरमाणुवोंका तथामनकाभी नाशमानतेनहीं ॥ और यहआत्मादेवतौ तिनपरमाणुवोंका तथा मनकाभी विवर्तउपादानकारणहै ॥ यातें यहआत्मादेव तिनपरमाणुवोंतैंभी अत्यंतसूक्ष्महै ॥ ऐसेअत्यंतसूक्ष्म याआत्माकानाशकिसप्रकारहोवैगा? किंतु नहींहोवैगा ॥ किंवा तिननैयायिकोंकेमतविषेतौ आकाश काल दिशा येतीनों महत्परिमाणवालेहोवैहैं ॥ याकारणतें तेनैयायिक तिनआकाशादिकमहान्पदार्थोंकानाश अंगीकारकरैंनहीं ॥ और यहआत्मादे

वतौ तिनआकाशादिकमहान्‌पदार्थोंकाभी अधिष्ठानरूपहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव तिनआकाशादिकोंतैंभी अत्यंतमहान्‌है ॥ ऐसेअत्यंतमहान्‌आत्माकानाश किसप्रकारहोवैंगे? किंतु नहींहोवैगा॥ हेनचिकेता! जैसे वस्त्रादिकसावयवपदार्थ आपणेपरिणामरूपस्वभावतैंही नाशकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तैसे यहनिरवयवआत्मादेव आपणेस्वभावतैंतौ नाशकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ यातैं जोवादी आत्माकानाश मानैंहै ॥ तावादीनैं आत्माकेस्वभावतैंभिन्नहीकोईपदार्थ ताआत्माकेनाशका कारणमान्याचाहिये ॥ और यालोकविषे ताआत्माकेस्वभावतैंभिन्न जितनेकुठारऔषधादिक नाशकेकारणहैं ॥ तेकुठारादिककारण याशरीरकूं तथानेत्रादिकइंद्रियोंकूं प्राप्तहोइकै तिनशरीरादिकोंकूंनाशकरिकै आपभीनाशहोइजावैंहैं ॥ परंतु तेकुठारादिककारण बुद्धिकेनाशकरणेविषे प्रवर्तहोवैंनहीं ॥ जबी बुद्धिकेनाशकरणेविषेभी तेकुठारादिककारण प्रवृत्तनहींहोवैंहैं ॥ तबी ताबुद्धितैंभीपरेस्थित जोताबुद्धिकासाक्षीरूपआत्माहै ॥ तासाक्षीआत्माकेनाशकरणेविषे तेकुठारादिककारण किसप्रकार प्रवृत्तहोवैंगे? किंतु नहीं प्रवृत्तहोवैंगे ॥ यातैं यहआत्मादेव अविनाशीहै ॥ हेनचिकेता! जिसअधिकारीपुरुषकाअंतःकरण शुद्धभयाहै ॥ तथा जिसअधिकारीपुरुषनैं श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूंजयकऱ्याहै ॥ तथा जिसअधिकारीपुरुषका दुःखविषे द्वेषनहींहै ॥ तथा सुखविषेरागनहींहै ॥ ऐसाउत्तमअधिकारीपुरुष जबी गुरुशास्त्रकीकृपातैं तापरमात्मादेवकेमहिमाकूं आपणेआत्मातैं अभिन्नकरिकैदेखेहै ॥ तबी सोविद्वान्‌पुरुष नकिसीकूं हननकरैहै ॥ और नकिसीकरिकै हननहोवैहै ॥ कैसाहैसोपरमेश्वरकामहिमा? परमाणुवोंतैंआदिलैके जितनेसूक्ष्मपदार्थहैं ॥ तथा आकाशतैंआदिलैके जितनेमहान्‌पदार्थहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकाअवधिरूपहै ॥ जिसमहिमातैंपरे कोईसूक्ष्मपदार्थनहींहै ॥ तथाकोईमहान्‌पदार्थनहींहै ॥ और सोमहिमा आनंदआत्मस्वरूपहै ॥ यातैं सोमहिमा सर्वभेदतैंरहित अद्वितीयस्वरूपहै ॥ हेनचिकेता! जैसे यालोकविषेस्थित जेयेस्थूलशरीरहैं ॥ तेशरीर परिच्छिन्नहैं ॥ यातैं तेशरीर जिसकालविषे स्थितहोवैंहैं ॥ तथा शयनकरैंहैं ॥ तिसकालविषे तेशरीर दूरजाणेकूंसमर्थहोवैंनहीं ॥ और यहआत्मादेव परिच्छिन्नहैनहीं ॥ किंतु सर्वत्रव्यापकहै ॥ यातैं यहआत्मादेव जिसकालविषे जाग्रत्‌अवस्थाकूंदेखेहै ॥ तथा स्वप्नसुषुप्तिअवस्थाकूंदेखेहै ॥ तिसकालवि

षेभी यहआत्मादेव सर्वदेशकालविषे प्राप्तहोवैहै ॥ और हेनचिकेता! जैसे जल सिंदूरहरितालादिकपदार्थोंकेसंबंधतें अद्यपि र
क्तपीतादिकवर्णोंवालाहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि सोजल वास्तवतैं शुक्लवर्णवालाहीहै ॥ तैसे यहआत्मादेवभी बुद्धिआदिकउपा
धियोंकेतादात्म्यसंबंधतें यद्यपि विद्यामद धनमद इत्यादिकविकारोंवालाहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि सोआत्मादेव वास्तवतें वि
द्यामदादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ हेनचिकेता! इसप्रकार वास्तवतैंतौ मदतैंरहित तथा बुद्धिआदिकउपाधियोंकेसंबंधतें मदवा
ला ऐसाजोपरमात्मादेवहै ॥ तिसपरमात्मादेवकूं मैंचेतनआत्मातैंभिन्न कोईपदार्थ जाणिसकैनहीं ॥ काहेतैं? जोजोपदार्थ मैंचेतन
आत्मातैंभिन्नहोवैगा ॥ सोसोपदार्थ घटादिकोंकीन्यांई अनात्माजडरूपहीहोवैगा ॥ सोअनात्मारूपजडपदार्थ ताचेतनआत्माकूं
प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ याकारणतैं सोआत्मादेव स्वप्रकाशरूपहै ॥ हेनचिकेता! यहआत्मादेवकैसाहै? वास्तवतैंतौ स्थूल सूक्ष्म
कारण यातीनोंशरीरोंतैंरहितहै ॥ तथा सोआत्मादेवही याअनित्यशरीरोंविषेस्थितहोवैहै ॥ तथा सोआत्मादेवही महान्‌विभुहै ॥
ऐसेआत्मादेवकेस्वरूपकूं जिसकालविषे यहअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतें साक्षात्कारकरैहै ॥ तिसीकालविषे यहअधिका
रीपुरुष सर्वशोकोंतैंरहितहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ कर्तृत्व भोक्तृत्व आदिरूपबंधकानाम शोकहै ॥ सोशोक अज्ञानतैंउत्पन्नहोवैहै ॥
और ताविद्वान्‌पुरुषकाअज्ञान आत्मज्ञानतैंनाशहोइजावैहै ॥ यातें ताअज्ञानरूपकारणकेअभावहुए ताविद्वान्‌पुरुषविषे शोकरूप
कार्यकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ हेनचिकेता! जोयहआत्मादेव हमनैं तुमारेप्रति विभुरूपकरिकै तथा स्वप्रकाशरूपकरिकै कथनकऱ्या
है ॥ सोयहआत्मादेव अत्यंतदुर्लभहै ॥ काहेतैं? यहआत्मादेव चारिवेदोंकेअध्यापनकरावणेकरिकैभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा चारि
वेदोंकेअध्ययनकरिकैभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा अनेकशास्त्रोंकेज्ञानतैंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा कोटिजन्मोंकरिकैभी प्राप्तहोवैनहीं ॥
शंका ॥ हेभगवन्! ऐसादुर्लभआत्मा हमअधिकारीपुरुषोंकूं किसप्रकार प्राप्तहोवैगा? **समाधान** ॥ हेनचिकेता! यहआनंदस्वरू
पआत्मा यद्यपि बहिर्मुखपुरुषोंकरिकैदुर्लभहै ॥ तथापि जिसअंतर्मुखअधिकारीपुरुषकेप्रति यहआत्मादेव गुरुशास्त्ररूपहोइकै आ
पणावास्तवस्वरूप अभेदरूपकरिकै साक्षात्कारकरावैहै ॥ सोईहीअधिकारीपुरुष याआनंदस्वरूपआत्माकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेनचिकेता!

जिसपुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारनहींहोवैहै ॥ और जिसपुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ तिनदोनौंपुरुषोंकेलक्षणोंकूं तू श्रवण कर ॥ तहां जोपुरुष पापकर्मोंतैंनिवृत्तनहींभयाहै ॥ तथा जोपुरुष शमदमादिकोंतैंरहिततहै ॥ तथा जोपुरुष ध्यानरूपसमाधितैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुषमनकीशांतितैंरहिततहै ॥ ऐसेबहिर्मुखपुरुषकूं याआत्मादेवकासाक्षात्कारहोवैनहीं ॥ और जोपुरुष पुण्यात्माहै ॥ तथा जोपुरुष सर्वजीवोंविषेक्रोधतैंरहिततहै ॥ तथा जोपुरुष क्षणक्षणविषे आत्माकाचिंतनकरैहै ॥ तथा जोपुरुष रागद्वेषतैंरहिततहै ॥ ऐसाअंतर्मुखपुरुषही मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणेआत्माकूं ब्रह्मरूपकरिकैसाक्षात्कारकरैहै ॥ हेनचिकेता! जैसे यालोकविषे यहपुरुष ओदनविषे शाकदधिआदिकपदार्थ मिलाइके ताओदनकूंभक्षणकरैहै ॥ तैसे जिसमायाविशिष्टईश्वरका यहब्राह्मणक्षत्रियादिकसर्वजगत् ओदनरूपहै ॥ और सर्वजगतकूंनाशकरणेहारामृत्यु शाकादिरूपहै ॥ तामृत्युरूपशाकादिकोंकूं याजगतरूपओदनविषेमिलाइकै जोपरमेश्वर यासर्वजगतकूंभक्षणकरैहै ॥ सोमायाविशिष्टईश्वर जिसशुद्धआत्माविषेस्थिततहै ॥ ताशुद्धआत्मादेवकूं जैसे मैंयमराजानैं साक्षात्कारकऱ्याहै ॥ तैसे ताशुद्धआत्माकूं दूसराकौनपुरुष साक्षात्कारकरिसकैगा? किंतु नहींकरिसकैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ तत्त्वं पदार्थकेशोधनकालविषे जिसअधिकारीपुरुषनैं ताशुद्धपरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजान्याहै ॥ सोईहीअधिकारीपुरुष ताशुद्धपरमात्मादेवकूं महावाक्यकाअर्थरूपकरिकैभी जानिसकैहै ॥ ताविचारतैंरहित दूसराकोईपुरुष ताशुद्धपरमात्मादेवकूंजाणिसकैनहीं ॥ अब ताशुद्धआत्माकेजानणेकाप्रकार निरूपणकरैहैं ॥ हेनचिकेता! जिसध्यानरूपउपायकरिकै याआत्मादेवका साक्षात्कारहोवैहै ताउपायकूं तू श्रवणकर ॥ जैसे लोकप्रसिद्धपिप्पलादिकवृक्षोंविषे पक्षीरहैहैं ॥ तैसे याशरीररूपवृक्षविषे दोपक्षीरहैहैं ॥ तहां एक तौ तत्पदकाअर्थ ईश्वररूपपक्षीहै ॥ और दूसरात्वंपदकाअर्थ जीवरूपपक्षीहै ॥ तहां जीवरूपपक्षीतौ याशरीररूपवृक्षविषे पुण्यपापरूपकर्मके सुखदुःखरूपफलकूंभोगेहै ॥ और दूसराअंतर्यामीईश्वररूपपक्षीतौ तासुखदुःखरूपफलकूंभोगतानहीं ॥ किंतु सोईश्वररूपपक्षी ताजीवरूपपक्षीकूं सोसुखदुःखरूपफल भोगावैहै ॥ कैसेहैंतेजीवईश्वररूपदोनोंपक्षी? बुद्धिरूप उत्कृष्टस्थानविषे इकठेस्थिततहैं ॥ तथा भोक्ताअभोक्तारूपकरिकै तथा अल्पज्ञतासर्वज्ञतारूपकरिकै परस्पर विरुद्धधर्मवालेहैं ॥ हे

नचिकेता! जिनअधिकारीपुरुषोंनें दक्षिणाअग्नि गार्हपत्य आहवनीय सभ्य आवसथ्य यापंचअग्नियोंकीउपासनाकरीहै ॥ तथा जिनअधिकारीपुरुषोंनें नाचिकेताग्निका तीनवार चयनकऱ्याहै ॥ तेअधिकारीपुरुषही ताउपासनाकेबलतैं शुद्धअंतःकरणवालेहुए तिनजीवईश्वरदोनोंकेस्वरूपकूं प्रतिपादनकरैहैं ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! दक्षिणाग्निआदिकपंचअग्नियोंकेस्वरूपकूं जानणेहारे जेकर्मीउपासकपुरुषहैं ॥ तिनोंकूंअद्वितीयब्रह्मकेज्ञानकीप्राप्ति देखणेमैंआवतीनहीं ॥ उलटा तेकर्मीपुरुष जीवब्रह्मकेभेदकूंही कथन करैहैं ॥ **समाधान** ॥ हेनचिकेता! तेपंचअग्नियोंकेजानणेहारेकर्मीपुरुष यद्यपि विशेषकरिकेंतौ ब्रह्मज्ञानतैंरहितहीहोवैहैं ॥ तथा जीवईश्वरकेभेदकूंही कथनकरैहैं ॥ तथापि तेकर्मीपुरुष तबपर्यंत जीवईश्वरकाभेदकथनकरैहैं ॥ जबपर्यंत तिनकर्मीपुरुषोंकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकासमागमनहींभया ॥ और जबी तिनकर्मीपुरुषोंकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकासमागमहोवैहै ॥ तबी नाचिकेतअग्निकेअनुष्ठानकरिकै तथा प्रणवकीउपासनाकेअनुष्ठानकरिकै शुद्धअंतःकरणवालेहुए तेकर्मीपुरुष इसीकालविषे ताअभयब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ कैसाहैसो ब्रह्म? जैसे प्रसिद्धनदियोंकासेतु याजीवोंकूं तानदीकेपारकीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे यज्ञादिककर्मोंकूंकरणेहारे तथा यासंसारसमुद्रतैंपारहोणेकीइच्छावाले जेअधिकारीपुरुषहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं जोब्रह्म तत्पदार्थईश्वररूपकरिकै यासंसारसमुद्रतैं पारिकरणेहारा सेतुरूपहै ॥ हेनचिकेता! ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमागमतैं तेकर्मीपुरुष जिसविचारकरिकै ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ताविचारकूं तू श्रवणकर ॥ पुण्यपापरूपकर्मकेफलकाभोक्ता जोयहत्वंपदार्थरूपजीवात्माहै ॥ सोजीवात्मा याशरीरकरिकैही संसारकूं तथामोक्षकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं यहजीवात्मातौ रथवालाहै ॥ और ताजीवात्माका यहशरीर रथरूपहै ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धरथकेचलावणेहारा सारथिहोवैहै ॥ तैसे याशरीररूपरथकेचलावणेहारा बुद्धिरूपसारथिहै ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धरथविषे अश्वहोवैहैं ॥ तथा तिनअश्वोंकेसाथबांध्यीहुईरज्जु तासारथिपुरुषकेसाथविषेहोवैहै ॥ तैसे येनेत्रादिकइंद्रिय याशरीररूपरथकेअश्वहैं ॥ और मनरूपी रज्जुहैं ॥ और जैसे प्रसिद्धरथकेअश्व भूमिविषेचालेहैं ॥ तैसे येइंद्रियरूपअश्वभी शब्दस्पर्शादिकविषयरूपभूमिविषेचालेहैं ॥ और जैसे प्रसिद्धरथकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य ग्रामादिकस्थानहोवैहैं ॥ तैसे बुद्धिइंद्रियादिकोंतैंरहितशुद्धआत्मा याशरीररूपरथकरि

के प्राप्तहोणेयोग्यस्थानहै ॥ हेनचिकेता ! यारथकेदृष्टांतकहणेका यहप्रयोजनहै ॥ कर्मउपासनाकरिकै जिनअधिकारीपुरुषोंकाचित्त शुद्धभयाहे ॥ तेअधिकारीपुरुषही ताबुद्धिरूपसारथिद्वारा तिनइंद्रियरूपदुष्टअश्वोंकूं जयकरै हैं ॥ तिसतैंअनंतर तेअधिकारीपुरुष कर्तृत्वभोक्तृत्वरूपपूर्वदेशकापरित्यागकरिकै ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपउत्तरदेशकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ रथवालेपुरुषनें जिसदेशविषे जाणाहोवै तिसदेशतैंभिन्न दूसरेकिसीदेशविषे रागकाअभावहोणा ॥ तथा अश्वादिकोंकेचलावणेका तथानिग्रहणकरणेका जोज्ञानरूपकुशलताहै ॥ येदोनोंप्रकारकेगुण जिससारथिपुरुषविषेरहेहैं ॥ सोईहीसारथिपुरुष तिसरथवालेपुरुषकूं तिसदेशविषेप्राप्तकरै है ॥ तादोनोंगुणोंतैंरहित सारथिपुरुष तादेशकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ तैसे यहबुद्धिरूपसारथिभी जबी तिनदोनोंगुणोंवालाहोवैहे ॥ तबीही यहबुद्धिरूपसारथि याजीवात्माकूं ब्रह्मभावकीप्राप्तिकरै है ॥ और जिसबुद्धिरूपसारथिविषे तेदोनोंगुणनहींहोवैं हैं ॥ सोबुद्धिरूपसारथि याजीवकूं ब्रह्मभावकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ उलटा याजीवकूं संसारदुःखकीहीप्राप्तिकरै है ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहें ॥ हेनचिकेता! जिसअधिकारीपुरुषका यहबुद्धिरूपसारथि वैराग्यरूपकवचकूंप्राप्तभयाहे ॥ सोअधिकारीपुरुषही ताबुद्धिरूपसारथिद्वारा मनरूपदृढरज्जुकरिके ताइंद्रियरूपअश्वोंकूं आपणेवशकरिकै परमात्मारूपदेशकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और जैसे यालोकविषे दुष्टअश्व सारथिपुरुषकेवशवर्तीहोवैनहीं ॥ तैसे जिसपुरुषकाबुद्धिरूपसारथि विषयोंविषेरागवालाहै ॥ तथा जिसपुरुषकामनरूपरज्जु धैर्यरूपबलतैंरहितहै ॥ तिसपुरुषके यहइंद्रियरूपदुष्टअश्व वशवर्तीहोवैंनहीं ॥ याकारणतेंही सोबहिर्मुखपुरुष याशरीररूपरथकरिके तापरमात्मारूपदेशकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ और जैसे यालोकविषे श्रेष्ठगुणोंवालेअश्व तासारथिपुरुषके सर्वदावशवर्तीरहे हैं ॥ तैसे जिसअधिकारीपुरुषका बुद्धिरूपसारथि विषयोंतें वैराग्यकूंप्राप्तभयाहे ॥ तथा जिसअधिकारीपुरुषकामनरूपरज्जु धैर्यबलकरिकैयुक्तहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकेही येइंद्रियरूपअश्व वशवर्तीरहे हैं ॥ याकारणतेंही सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेनचिकेता ! जिसपुरुषका बुद्धिरूपसारथि विवेकतैंरहितहोवैहै ॥ तथा जिसपुरुषकामनरूपरज्जु बहिर्मुखहोवैहै ॥ तथा जोपुरुष सर्वदाअशुचिरहे हैं ॥ ऐसा विवेकहीनमूढपुरुष ताब्रह्मरूपदेशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सोवैराग्यहीनपुरुष उलटा जन्ममरणरूपसंसारकूंही प्राप्तहोवैहे ॥ और

हेनचिकेता ! जिसअधिकारीपुरुषका बुद्धिरूपसारथि विवेकवालाहोवैहै ॥ तथा जिसअधिकारीपुरुषका मनरूपरज्जु अंतर्मुखहोवैहै ॥ तथा जोअधिकारीपुरुष सर्वदाशुचिरहैहै ॥ ऐसाअधिकारीपुरुषही याशरीररूपरथकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मरूपपदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जिसअद्वितीयब्रह्मरूपपदकूंप्राप्तहोइकै सोअधिकारीपुरुष पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेनचिकेता ! इसप्रकार जिसअधिकारीपुरुषका बुद्धिरूपसारथि विवेकवालाहै ॥ तथा जिसपुरुषनैं मनरूपरज्जुकरिकै नेत्रादिरूपदुष्टअश्वोंकूं आपणेवशकऱ्याहै ॥ सोअधिकारीपुरुषही यासंसाररूपसमुद्रके परमात्मारूपपारकूं प्राप्तहोवैहै ॥ याकहणेतेंयहअर्थसिद्धभया ॥ विषयोंतेंवैराग्यवालीजाबुद्धिहै ॥ तथा विषयोंकेप्राप्तहुएभी धैर्यवालाजोमनहै ॥ येदोनों याअधिकारीपुरुषोंके मोक्षकासाधनहोवैहैं ॥ और विषयोंविषे रागवालीजाबुद्धिहै ॥ तथा धैर्यतैंरहितजोमनहै ॥ येदोनों याजीवोंकेबंधनकाकारणहोवैहैं ॥ यातैं आत्मज्ञानद्वारा मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छावालेमुमुक्षुजनोंनैं वैराग्यकूं तथाधैर्यकूं अवश्यसंपादनकरणा ॥ अब बंधमोक्षकेस्वरूपकानिरूपणकरैहैं ॥ हेनचिकेता ! अंतरभावकानाम मोक्षहै ॥ और बाह्यभावकानाम बंधहै ॥ सोअंतरभावपणा सर्वदा कारणविषेहीरहेहै ॥ और सोबाह्यपणा सर्वदा कार्यविषेहीरहेहै ॥ अब परमकारणरूपपरमात्मादेवविषे मोक्षरूपतासिद्धकरणेवासते प्रथम कारणोंकीपरंपरा निरूपणकरैहैं ॥ हेनचिकेता ! शब्द स्पर्श रूप रस गंध येपंचविषय आकाशादिकपंचभूतोंकासाररूपहैं ॥ यातैं तेशब्दादिकपंचविषयआकाशादिकपंचभूतरूपकरिकै श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंकेकारणहैं ॥ याकारणतें तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंतें तेशब्दादिकविषयपरहैं ॥ और तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं शब्दादिकविषयोंकेग्रहणविषे यहमनहीप्रवृत्तकरैहै ॥ यातैं जैसे समुद्र लहरियोंकाकारणहोवैहै ॥ तैसे शब्दादिकविषयभावकूंप्राप्तहुए जेश्रोत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तिनोंका यहमनहीकारणहै ॥ यातैं सोमन तिनशब्दादिकविषयोंतेंपरहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे शब्दादिकविषय आकाशादिकभूतरूपकरिकै श्रोत्रादिकइंद्रियोंतेंपरहैं ॥ तैसे श्रोत्रादिकइंद्रियभावकूंप्राप्तहुए जेशब्दादिकविषयहैं ॥ तिनशब्दादिकविषयोंतें मनकूंभी पररूपतासंभवैहै ॥ और मेरेकूं सुखकीप्राप्तिहोवै मेरेकूं दुःखकीप्राप्तिनहींहोवै याप्रकारकीइच्छारूप सोमनहै ॥ यातैं सोइच्छारूपमन आपणीउत्पत्तिवासते निश्चयरूपबुद्धिकीअवश्य

अपेक्षाकरैहै ॥ निश्चयरूपबुद्धितैंविनाइच्छाकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं सानिश्चयरूपबुद्धि ताइच्छारूपमनकाकारणहै ॥ याकारणतैं ही सानिश्चयरूपबुद्धि ताइच्छारूपमनतैंपरहै ॥ और सानिश्चयरूपव्यष्टिबुद्धिभी आपणीउत्पत्तिविषे समष्टिरूप हिरण्यगर्भकेबुद्धि कीअपेक्षाकरैहै ॥ जाहिरण्यगर्भकीबुद्धि सर्वस्थूलजगत्कानिमित्तकारणहै ॥ तथा जाबुद्धिकूं श्रुतिविषे महत्तत्त्व यानामकरिकैकथन कऱ्याहै ॥ यातैं ताव्यष्टिबुद्धिका हिरण्यगर्भकीमहत्तत्वनामासमष्टिबुद्धि कारणहै ॥ याकारणतैंही ताव्यष्टिबुद्धितैं सामहत्तत्त्वनामास मष्टिबुद्धि परहै ॥ और सामहत्तत्त्वरूपसमष्टिबुद्धिभी आपणीउत्पत्तिविषे मायासहित समष्टिसूक्ष्मशरीरकीअपेक्षाकरै ॥ कैसाहैसो मायासहितसूक्ष्मशरीर? यास्थूलशरीरतैंविलक्षणहै यातैं तासूक्ष्मशरीरकूं श्रुतिविषे अव्यक्त यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ यातैं तामहत्तत्त्वरूपसमष्टिबुद्धिका सोमायासहितसूक्ष्मशरीररूपअव्यक्त कारणहै॥ याकारणतैंही तामहत्तत्त्वरूपसमष्टिबुद्धितैं सोअव्यक्त परहै ॥ और साअविद्यारूपमाया आपणेआश्रयविषयकी प्राप्तिवासते चैतन्यपुरुषकीअपेक्षाकरैहै ॥ याकारणतैं ताअविद्यारूपमा यातैंसोचेतनरूपपुरुष परहै ॥ और सोचेतनरूपपुरुष आपणीउत्पत्तिविषे तथाआपणेज्ञानविषे किसीदूसरेकीअपेक्षाकरतानहीं ॥ याकारणतैं सोचेतनपुरुष सर्वतैंपरहै ॥ ताचेतनपुरुषतैंपरेकोईपदार्थहैनहीं ॥ ऐसेचेतनपुरुषकेबोधकरावणेवासतेही शास्त्रवेत्तापु रुषोंनैं इंद्रियोंतैंआदिलैके ताचेतनपुरुषपर्यंत यहकारणोंकीपरंपरा कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ इंद्रियेभ्यःपराह्यर्था अर्थेभ्यश्चप रंमनः॥मनसश्चपराबुद्धिर्बुद्धेरात्मामहान्परः ॥ महतःपरमव्यक्तमव्यक्तात्पुरुषःपरः ॥ पुरुषान्नपरंकिंचित् साकाष्ठासाप रागतिः ॥ अर्थयह ॥ पूर्वकहीरीतिसैं श्रोत्रादिकइंद्रियोंतैं शब्दादिकअर्थ परहैं ॥ और तिनशब्दादिकअर्थोंतैं मन परहै ॥ और ताम नतैं व्यष्टिबुद्धि परहै ॥ और ताव्यष्टिबुद्धितैं महत्तत्त्वरूपसमष्टिबुद्धि परहै ॥ और तामहत्तत्त्वरूपसमष्टिबुद्धितैं अव्यक्त परहै ॥ और ता अव्यक्ततैं चेतनपुरुष परहै ॥ और ताचेतनपुरुषतैंपरे कोईवस्तुहैनहीं ॥ किंतु सोचेतनपुरुषही काष्ठारूपहै ॥ तथा परागतिरूपहै ॥ १ ॥ हेनचिकेता! यहस्वयंप्रकाशचेतनरूपसंवितही तुमनैं सर्वतैंपरेजानणा ॥ कैसाहैसोचेतनरूपसंवित्? दिशाकालादिकोंकेकल्पना काभी अधिष्ठानरूपहै ॥ तथा सर्वजगत्काविवर्तउपादानकारणहै ॥ ऐसेचेतनरूपसंवित्तैंपरे कोईगतिहैनहीं ॥ काहेतैं? श्रोत्रादिक

इंद्रियोंतैं शब्दादिकअर्थ परहैं ॥ और शब्दादिकअर्थोंतैं मन परहै॥और मनतैंबुद्धि परहै ॥ याप्रकारकीकारणोंकीपरंपरा ताचेतनपुरुषपर्यंतही प्राप्तहोवैहै ॥ ताचेतनपुरुषतैंपरे साकारणोंकीपरंपरा चालैनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताचेतनपुरुषकूं परमकाष्ठा यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और ताचेतनपुरुषविषे कोईकारणहैनहीं ॥ यातैं ताचेतनपुरुषतैंपरे कोईदूसरीगति हैनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताचेतनपुरुषकूं परमगति यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और हेनचिकेता ! जैसे अग्नि सर्वकाष्ठोंविषेगुह्यहोइकैरहे हैं ॥ तैसे यहआत्मादेवभी सर्वशरीरोंविषे गुह्यहोइकैरहेहै ॥ और जैसे तिनकाष्ठोंकेमथनरूपउपायतैंपूर्व सोअग्नि तिनकाष्ठोंविषे प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंपूर्व यहआत्मादेवभी याशरीरोंविषे स्पष्टरूपकरिकैप्रतीतहोवैनहीं ॥ और जैसे तिनकाष्ठोंकेमथनतैं सोअग्नि प्रत्यक्षहोवैहै ॥ तैसे ब्रह्मवेत्तागुरुनैं उपदेशकऱ्येजेतत्त्वमसिआदिकमहावाक्यहैं ॥ तिनमहावाक्योंतैंउत्पन्नभई जाब्रह्माकारसूक्ष्मबुद्धिहै ॥ तासूक्ष्मबुद्धिकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं यहआत्मादेव स्पष्टप्रतीतहोवैहै॥ तहांश्रुति ॥ एषसर्वेषुभूतेषु गूढात्मानप्रकाशते ॥ दृश्यतेत्वग्र्ययाबुद्ध्या सूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शिभिः ॥ अर्थयह ॥ सर्वभूतोंविषेगुह्यहोइकैरह्याहुआ यहआत्मादेव यद्यपि विचारहीनपुरुषोंकूं स्पष्टप्रतीतहोवैनहीं ॥ तथापि गुरुकेउपदेशतैं उत्पन्नभई जाब्रह्माकारसूक्ष्मबुद्धिहै॥ताबुद्धिकरिकै सूक्ष्मदर्शीअधिकारीपुरुषोंनैं यहआत्मादेव स्पष्टदीखताहै ॥ १ ॥ अब ताआत्मज्ञानकेप्राप्तिवासतै योगरूपसाधनकानिरूपणकरैहैं ॥ हेनचिकेता ! जिसअधिकारीपुरुषकूं आत्माकेसाक्षात्कारकीइच्छाहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष प्रथम याचारिअवस्थावालेयोगकूंकरै ॥ तिनचारिअवस्थावोंविषे प्रथमअवस्थायहहै ॥ जोमन सुखकेप्राप्तिकीकामनाकरिकै श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंकूं तथा वाकादिकपंचकर्मइंद्रियोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवृत्तकरैहै ॥ तामनविषे यहअधिकारीपुरुष तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकालयकरै ॥ तात्पर्य यह ॥ श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेव्यापारोंतैंरहित केवलमनकाजोव्यापारहै ॥ यहही श्रोत्रादिकइंद्रियोंका मनविषेलयहै ॥ याप्रकारकी तायोगकीप्रथमअवस्थाहै ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे यालोकविषे अश्वोंकूंशिक्षाकरणेहारापुरुष तिनदुष्टअश्वोंकूं बाह्यभूमिरूपदेशतैंले आइके अंतरअश्वशालाविषेबांधे है ॥ तहां तिनदुष्टअश्वोंका जोबाह्यभूमिविषे नानाप्रकारकाव्यापारथा ॥ तिससर्वव्यापारका निरो

धहोवैहै ॥ केवल ताअश्वकेशरीरमात्रकाचलनरूपव्यापार बाकीरहैहै ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुष जबी तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं अंत
रमनविषेलयकरैहै॥ तबी तामनका पूर्व श्रोत्रादिकइंद्रियरूपकरिकै जोबाह्यनानाप्रकारकाव्यापारथा ॥ सोसंपूर्णव्यापार निरोधकूं
प्राप्तहोवैहै ॥ किंतु तामनका केवलशरीरकेअंतरही व्यापाररहैहै ॥ अब तायोगकेदूसरीअवस्थाकानिरूपणकरैहैं ॥ हेनचिकेता !
सोमनकैसाहै ? यहवस्तुहमारेकूंप्राप्तहोवै यहवस्तुहमारेकूंनहींप्राप्तहोवै याप्रकारकीइच्छारूपहै ॥ तथा सोमन गर्वयुक्तहै ॥ याकार
णतैंही प्रमत्तहस्तीकीन्यांई सोमन बलात्कारसैं सर्वदा प्रमादकरणेविषेही उद्यमकरैहै ॥ और जैसे यालोकविषेमहावतपुरुष ताप्र
मत्तहस्तीकूं लोहेकेतीक्ष्णअंकुशकरिकै आपणेवशकरैहै ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुषभी तामनरूपप्रमत्तहस्तीकूंवैराग्ययुक्त निश्चया
त्मकबुद्धिरूपअंकुशकरिकै आपणेवशकरै ॥ तात्पर्ययह ॥ ताइच्छारूपमनका निश्चयरूपबुद्धिविषेलयकरै॥ अब तीसरी चतुर्थ यादो
नोंअवस्थावोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेनचिकेता ! तानिश्चयरूपव्यष्टिबुद्धिकूं यहअधिकारीपुरुष हिरण्यगर्भकीमहत्तत्वरूपसमष्टिबुद्धि
विषे लयकरै ॥ कैसीहै सा महत्तत्वरूपसमष्टिबुद्धि ? अहंअस्मि ॥ यासामान्यज्ञानरूपहै ॥ तथा सामान्यरूपकरिकै सर्वजगत्कूंविष
यकरणेहारीहै ॥ याकारणतैंही विशेषरूपकरिकै जगत्कूंविषयकरणेहारी जेव्यष्टिबुद्धियांहैं तिनसर्वबुद्धियोंका सासमष्टिबुद्धि कार
णरूपहै ॥ और तासामान्यज्ञानरूपसमष्टिबुद्धिकूं यहअधिकारीपुरुष आनंदस्वरूपआत्माविषे लयकरै ॥ अब याहीश्रुतिकेअर्थकूं
युक्ति करिकैनिरूपणकरैहैं॥ हेनचिकेता ! यहअधिकारीपुरुष श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं मनविषेलयकरै॥ और तामनकूं व्यष्टिबुद्धिविषेल
यकरै ॥ और ताव्यष्टिबुद्धिकूं समष्टिबुद्धिविषेलयकरै ॥ और तासमष्टिबुद्धिकूं परमात्माविषेलयकरै ॥ याप्रकारकी योगकीचारीअव
स्था जोश्रुतिनैं संक्षेपतैंकथनकरीं हैं ॥ तिनचारीअवस्थावोंकेस्पष्टकरणेवासते शास्त्रवेत्ताबुद्धिमान्पुरुष याप्रकारकीयुक्तियां कथ
नकरैहैं ॥ श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रिय यादोनोंप्रकारकेइंद्रियोंकी जोशुभअशुभव्यापारविषे प्रवृत्तिहो
वैहै ॥ सो सुखकेप्राप्तिकीकामनाकरिकैही प्रवृत्तिहोवैहै ॥ तहां ताइंद्रियोंकेप्रवृत्तिकाकारणरूप जासुखकेप्राप्तिकीइच्छाहै ॥ तथा
ताइच्छाकेउत्पत्तिकाकारणरूप जोयहवस्तुरमणीकहै याप्रकारकास्मृतिरूपज्ञानहै ॥ तेदोनों केवल मनकाविलासरूपकरिकैही

स्थितहैं ॥ यातें तेदोनों मनतेंभिन्ननहीं हैं ॥ याकारणतें श्रोत्रादिकइंद्रियोंका मनविषेलय संभवैहै ॥ हेनचिकेता! इसप्रकार सुख कीइच्छारूप तथास्मृतिज्ञानरूप जोमनहै ॥ तामनकीउत्पत्ति निश्चयरूपबुद्धितेंविनाहोवैनहीं ॥ किंतु निश्चयरूपबुद्धितेंही ताइच्छा रूपमनकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ काहेतें? जिसपुरुषकूं पूर्व सानिश्चयरूपबुद्धिनहींभई ॥ तिसपुरुषकूं सासुखकीइच्छा तथाताइच्छाकाका रणरूप सोस्मृतिरूपज्ञान होवैनहीं ॥ किंतु पूर्वअनुभवरूपनिश्चयही संस्कारद्वारा तास्मृतिज्ञानका तथाइच्छाकाकारणहोवैहै ॥ या कारणतेंतामनका निश्चयरूपबुद्धिविषेलय संभवैहै ॥ और हेनचिकेता! सा मनकाकारणरूपव्यष्टिबुद्धि आपणीउत्पत्तिविषे ताहि रण्यगर्भकेसामान्यबुद्धिकीअपेक्षाकरैहै ॥ यातें साहिरण्यगर्भकी समष्टिरूपसामान्यबुद्धि याव्यष्टिरूपविशेषबुद्धिका कारणहोवैहै ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे तलावआदिकोंकेजलोंका मेघोंविषेस्थितजल कारणहोवैहै ॥ तैसे हिरण्यगर्भकेइच्छाकाकारणरूप जासमष्टि सामान्यबुद्धिहै ॥ सासमष्टिबुद्धि हमजीवोंकेव्यष्टिबुद्धिका कारणहोवैहै ॥ और हेनचिकेता! जैसे स्वप्नअवस्थाविषे हमजीवोंकी व्यष्टिबुद्धि तास्वप्नके जडचेतनरूपजगत्का कारणहोवैहै ॥ तैसे साहिरण्यगर्भकीसमष्टिबुद्धि यासंपूर्णजगत्का कारणहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे निद्राविषेसोयाहुआपुरुष आपणेबुद्धिकेबलतें आकाशादिकपंचभूतोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तथा जरायुज अंडज स्वे जड उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेशरीरोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ इसप्रकार तिनसर्वपदार्थोंकूंउत्पन्नकरिकै सोस्वप्नद्रष्टापुरुष आपही तिनसर्वपदार्थोंविषेस्थितहोवैहै ॥ तैसे सोहिरण्यगर्भभगवान्भी आपणेसमष्टिबुद्धिकेबलतें याजडचेतनरूपजगत्कूंउत्पन्नकरिकै तास्थावरजंगमरूपशरीरोंविषे आपहीस्थितहोवैहै ॥ यातें जैसे मठाकाशविषेस्थितघटाकाश तामठाकाशरूपहीहोवैहै ॥ तै से हमजीवोंकीव्यष्टिबुद्धि ताहिरण्यगर्भकीसमष्टिबुद्धिरूपहीहै ॥ याकारणतें ताव्यष्टिबुद्धिका तासमष्टिबुद्धिविषेलय संभवै है ॥ और हेनचिकेता! ताहिरण्यगर्भकेसमष्टिबुद्धिका मायाविशिष्टपरमात्मादेवही उपादानकारणहै ॥ याकारणतें तासमष्टि बुद्धिका तामायाविशिष्टईश्वरविषेलय संभवैहै ॥ और हेनचिकेता! जैसे यालोकविषे त्वचारूपकंचुककरिकैविशिष्ट जेव्री हिहैं ॥ तिनव्रीहियोंविषेही बीजरूपताहोवैहै ॥ त्वचारूपकंचुकतेंरहित तिनव्रीहियोंविषे बीजरूपतासंभवैनहीं ॥ तैसे अ

विद्यारूपकंचुककरिकैविशिष्ट जोआत्मादेवहै ॥ ताविशिष्टआत्माविषेही याजगत्कीकारणरूपताहोवैहै ॥ अविद्यारूपकंचुकतैंर हित शुद्धआत्माविषे याजगत्कीकारणतासंभवैनहीं ॥ और मैंअद्वितीयब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मज्ञानकरिकै जबी ताअविद्या रूपकंचुककानाशहोवैहै ॥ तबी साहिरण्यगर्भकीसमष्टिबुद्धि केवलशुद्धआत्माविषेलयहोवैहै ॥ यातैं तासमष्टिबुद्धिका सोशुद्धआ त्माही अधिकरणहै ॥ याप्रकारअधिकारीपुरुषनैं तासमष्टिबुद्धिका सर्वदाचिंतनकरणा ॥ हेनचिकेता! यासमष्टिबुद्धिका माया विशिष्टईश्वर कारणहै याप्रकारकाचिंतन जोअधिकारीपुरुष सर्वदाकरैहै ॥ तथा जिसअधिकारीपुरुषनैं व्यष्टिअभिमानकापरि त्यागकरिकै समष्टिअभिमानकूंधारणकऱ्याहै ॥ तथा जिसअधिकारीपुरुषके अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मोंकरिकै संपूर्णपापकर्मरूपप्र तिबंधक निवृत्तभयेहैं ॥ ऐसेउत्तमअधिकारीपुरुषकूंही गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं मैंअद्वितीयब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाआत्मज्ञान प्राप्तहो वैहै ॥ कैसाहैसोआत्मज्ञान? भेददर्शनरूपपर्वतकूं इंद्रकेवज्रसमान भेदन करणेहाराहै ॥ हेनचिकेता! मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारका ब्रह्मज्ञान जिसकालविषे याअधिकारीपुरुषकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसीकालविषे याअधिकारीपुरुषके अविद्याकानाशहोवैहै ॥ और जि सकालविषे ताअविद्यारूपकारणकानाशहोवैहै ॥ तिसीकालविषे तासमष्टिबुद्धिकानाशहोवैहै ॥ और जिसकालविषे तासमष्टिबु द्धिरूपकारणकानाशहोवैहै ॥ तिसीकालविषे याव्यष्टिबुद्धिकानाशहोवैहै ॥ और जिसकालविषे ताव्यष्टिबुद्धिरूपकारणकानाशहो वैहै ॥ तिसीकालविषे याइच्छारूपमनके प्रवृत्तिकाअभावहोवैहै ॥ और जिसकालविषे ताइच्छारूपमनके प्रवृत्तिकाअभावहोवैहै ॥ तिसीकालविषे श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेप्रवृत्तिकाअभावहोवैहै ॥ और शब्दादिकविषयोंविषे जोश्रोत्रादिकइंद्रियोंकीप्रवृत्तिहै ॥ साप्र वृत्तिही याजीवोंकूं अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ यातैं जिसकालविषे तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेप्रवृत्तिकाअभावहोवैहै ॥ ति सकालविषे याअधिकारीपुरुषकूं किंचित्मात्रभीदुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तिसतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष मनवाणीकाअविषय जोआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिअद्वितीयआत्माहै ताअद्वितीयआत्माकूं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ ताअद्वितीयआत्माकी प्राप्तिक रिकैही ताविद्वान्पुरुषकूं शास्त्रवेत्तापुरुष कुशल अंत्यदेह आश्चर्य यानामोंकरिकैकथनकरैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! याप्रकारकेयोग

रूपउपायतैं सर्वजगत्कालयकरिकै सोयोगीपुरुष जिसकालविषे मुक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे दूसरेअयोगीपुरुषोंकूं संसारकीप्राप्ति किसवासतेहोवैहै? **समाधान** ॥ हेनचिकेता! यामायाकाप्रभाव बहुतआश्चर्यरूपहै ॥ काहेतैं? सर्वजगत्काकारणरूप जायहमायाहै ॥ सामाया यद्यपि एकहीहै ॥ तथापि साएकहीमाया एकहीकालविषे ब्रह्मवेत्तापुरुषविषेतौ लयव्यवहारकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और दूसरेअज्ञानीजीवोंविषे सामाया अलयव्यवहारकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसअधिकारीपुरुषविषे मैंशुद्धब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाब्रह्मज्ञान उत्पन्नभयाहै ॥ तिसविद्वान्पुरुषकूंतौ तामायाकादर्शनहोवैनहीं ॥ और जिसपुरुषविषे सोब्रह्मज्ञान उत्पन्ननहींभयाहै ॥ तिसअज्ञानीपुरुषकूं तामायाकादर्शनहोवैहै ॥ इसप्रकार एकहीकालविषे एकहीमायाका दर्शन तथाअदर्शन येदोनों सिद्धहोवैहैं॥ यहवार्त्ता पतंजलिभगवान्नैंभीकहीहै ॥ तहांसूत्र ॥ कृतार्थंप्रतिनष्टमप्यनष्टंतदन्यसाधारणत्वात् ॥ अर्थयह ॥ आत्मसाक्षात्कारकरिकै कृतार्थभयाजोविद्वान्पुरुषहै ॥ ताविद्वान्पुरुषकीदृष्टिकरिकै यद्यपि यहमायारूपअज्ञान नष्टभयाहै ॥ तथापि अज्ञानीजीवोंविषे सोअज्ञानविद्यमानहै ॥ यातैं तिनअज्ञानीजीवोंकीदृष्टिकरिकै सोअज्ञान नष्टनहींभया ॥ शंका ॥ हेभगवन्! पातंजलशास्त्रकेमतविषे आत्माकाभेद अंगीकारकऱ्याहै॥ यातैं तिनोंकेमतविषे यद्यपि साव्यवस्थासंभवैहै ॥ तथापि वेदांतसिद्धांतविषे आत्मा एकअद्वितीयरूपहै ॥ यातैं वेदांतविषे साव्यवस्था किसप्रकारसंभवैगी? **समाधान** ॥ हेनचिकेता! वेदांतमतविषे यद्यपि आत्मा एकअद्वितीयरूपहै ॥ तथापि अंतःकरणादिरूपउपाधिकेभेदतैं साव्यवस्था संभवहोइसकैहै ॥ काहेतैं? जैसे नेत्ररूपदोनोंगोलकविषे यद्यपि चक्षुइंद्रिय एकहीहै॥ तथापि दक्षिणगोलकविषेस्थितहोइकै सोचक्षुइंद्रिय जैसेस्पष्टदेखेहै ॥ तैसे वामगोलकविषेस्थितहोइकै स्पष्टदेखैनहीं ॥ तैसे एकहीआत्मादेव योगीपुरुषकेशरीरविषेस्थितहोइकै ताकार्यसहितमायाकूंदेखतानहीं ॥ और अयोगीपुरुषकेशरीरविषेस्थितहोइकै सोआत्मादेव ताकार्यसहितमायाकूंदेखेहै ॥ याप्रकार शरीरादिकउपाधियोंकेभेदतैं साव्यवस्था संभवहोइसकैहै ॥ यातैं एकहीकालविषे एकहीमायाकी कहांतौनिवृत्ति और कहांअनिवृत्ति? याप्रकारके विरोधकी आशंकाकूं सोमायाकादुर्घटस्वभावही निवृत्तकरैहै ॥ अब तामायाके दूसरेभीदुर्घटस्वभावोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेनचि

केता! यालोकविषे यहघटहै यहपटहै इत्यादिकजेज्ञानहैं ॥ तिनज्ञानोंका अंतःकरण आश्रयहै ॥ और घटपटादिकविषयहैं ॥ इसप्रकार ज्ञानकेआश्रयका तथाविषयका परस्परभेदहीदेख्याहै ॥ और यामायाकातौ एकहीस्वयंज्योतिअद्वितीयआत्मा आश्रयहोवैहै तथाविषयहोवैहै ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहै ॥ और यहआत्मादेव सर्वभेदतैंरहितअद्वितीयरूपहुआभी प्रपंचरूपऐश्वर्यकीअपेक्षाकरिकै महेश्वरभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहै ॥ और यालोकविषे जहांआपणीस्थितिविषे आपणीअपेक्षाहोवैहै ॥ तहां आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और इहां मायासंबंधतैंरहितअद्वितीयआत्माविषे जोमायाकीस्थितिहै सो मायाकरिकैहीहै ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहै ॥ और यहमाया सत्यरूपनहींहै ॥ तथा असत्यरूपनहींहै ॥ तथा सत्यअसत्यउभयरूपनहींहै ॥ इसप्रकार अनिर्वचनीयरूपहुईभी सामाया भावरूपकरिकै प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहै ॥ और यहमाया वास्तवतैंजडरूपहुईभी यास्थूलसूक्ष्मजगत्का कर्त्तारूपहोवैहै ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहै ॥ यद्यपि वेदांतशास्त्रविषे मायाविशिष्टचेतनकूंही याजगत्काकर्त्ताकह्याहै ॥ तथापि तामायातैंरहितशुद्धचेतनविषे सोजगत्काकर्त्तापणाहैनहीं ॥ यातैं परिशेषतैं तामायाविषेही सोकर्त्तापणाघटैहै ॥ काहेतैं? शास्त्रविषेयहनियम कथनकर्‍याहै ॥ विशिष्टपदार्थविषे जोविधिनिषेधप्राप्तहोवै ॥ सोविधिनिषेध जोकदाचित् विशेष्यपदार्थविषेनहींघटताहोवै तौ सोविधिनिषेध विशेषणविषेहीप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकेनियमतैं तामायाविषेकर्त्तापणासंभवैहै ॥ और मरणअवस्थाविषे तथासुषुप्तिअवस्थाविषे यहमाया स्पष्टरूपकरिकैनहींप्रतीतहुईभी आगेहोणेवालेशरीरोंकाबीजरूपहोइकैरहैहै ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहै ॥ और यहआत्मादेव अनादिभावरूपहै ॥ यातैं नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और यहमायातौ अनादिभावरूपहुईभी आत्मज्ञानतैंनाशहोइजावैहै ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहै ॥ और विद्वान्पुरुषोंकीअपेक्षाकरिकै ताकार्यसहितमायाकेनाशहुएभी अज्ञानीजीवोंकीअपेक्षाकरिकै ताकार्यसहितमायाकानाशहोवैनहीं ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहै ॥ और यहमाया किसीप्रमाणकातौविषयहैनहीं तौभीयहमाया बंधमोक्षादिकनानाप्रकारकीविचित्रताका कारणहोवैहै ॥ यातैं यहवार्त्ताभी

अत्यंतदुर्घटहै ॥ हेनचिकेता ! इसतैंआदिलैके अनेकप्रकाकेरदुर्घटस्वभाव तामायाकेहैं ॥ तेमायाकेदुर्घटस्वभाव सर्वलोकविषेप्रसिद्धहै ॥ यातैं तिनमायाकेदुर्घटस्वभावोंकूंअंगीकारकरिकै हममायावादीवेदांती तिनसर्ववादियोंकेदूषणोंकूं निवारणकरिसकैहैं ॥ और हेनचिकेता ! जैसे गोपजनोंकीस्त्रियोंकेदुकूलवस्त्रोंकूं हरणकरणेहारा जोश्रीकृष्णभगवान्है ॥ ताकृष्णभगवान्विषे जोकामीपणाहै ॥ और सर्वजगत्कासंहारकरणेहारा जोरुद्रभगवान् है ॥ तारुद्रभगवान्विषे जोक्रोधीपणाहै ॥ सोकामीपणा तथाक्रोधीपणा ध्यानकरणेहारेभक्तजनोंकूं मनवांछितफलकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ यातैं ताकृष्णभगवान्विषेकामीपणा तथारुद्रभगवान्विषेक्रोधीपणा कोईदूषणरूपनहींहै ॥ किंतु भूषणरूपहै ॥ तैसे ताअविद्यारूपमायाविषे जोदुर्घटपणाहै ॥ सोदुर्घटपणा कोईदूषणरूपनहीं है ॥ किंतु ताअविद्याका सोदुर्घटपणा भूषणरूपही है ॥ हेनचिकेता ! जिसवस्तुविषे स्वभावतैंतौ सुघटपणाहोवैहै ॥ और तिसीवस्तुविषे जोकदाचित् किसीअंशविषे दुर्घटपणाप्रतीतहोवै ॥ तौ सोदुर्घटपणा तावस्तुकादूषणरूपहोवैहै ॥ जैसे किसीश्रेष्ठकविपुरुषनें रच्या जोकाव्यहै ॥ ताकाव्यविषे स्वभावतैंतौ सुघटपणाहीहोवैहै ॥ परंतु ताकाव्यविषे जोकदाचित् किसीअंशविषे दुर्घटपणाप्रतीत होवै ॥ तौ सोदुर्घटपणा ताकाव्यकादूषणरूपहीहोवैहै ॥ और यहअविद्यारूपमायातौ स्वभावतैंही दुर्घटरूपहै ॥ यातैं तामायाविषे सोदुर्घटपणा दूषणरूपनहींहै ॥ किंतु भूषणरूपहै ॥ इहां युक्तिप्रमाणकरिकै जिसअर्थकीसिद्धिनहींहोइसकै याकानाम दुर्घटपणाहै ॥ और युक्तिप्रमाणकरिकै जिसअर्थकीसिद्धिहोइसकै याकानाम सुघटपणाहै ॥ और हेनचिकेता ! जिसस्थानविषे जिस पुरुषका वारंवार निरादरहोवैहै ॥ तिसस्थानविषे जोकदाचित् सोपुरुष स्थितहोवैहै ॥ तौ तापुरुषकूं लोकविषेढीठकहैहैं ॥ सोऐसाढीठपणा जैसे अविद्याविषेहै ॥ तैसे दूसरेकिसीपदार्थविषेनहींहै ॥ काहेतें ? घटादिकविषयउपहितचेतनकेआवरणकीनिवृत्ति करणेहारे जेप्रत्यक्षादिकप्रमाणहैं ॥ तिनप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणोंकरिकै यहअविद्या अनेकवार निरादरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तौभी यह अविद्या ताअसंगचेतनतैं निवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु यहअविद्या पुनःताअसंगचेतनविषेहीस्थितहोवैहै ॥ यातैं याअविद्याकाढीठपणा कोईआश्चर्यरूपहै ॥ और ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषकीदृष्टिविषेतौ यहअविद्या तीनकालमें हैनहीं ॥ हेनचिकेता ! ऐसेढीठस्वभाववाली

यहअविद्यारूपमाया एकआत्मज्ञानतैंविना दूसरेकिसीतैं भयकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु एकआत्मज्ञानतैंही भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहमायाही सर्वजीवोंकूं जन्ममरणादिकदुःखोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं तिनजन्ममरणादिकदुःखोंतैं वैराग्यप्राप्तभयाहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषनैं तामायाकेनिवृत्तिकाउपाय अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ हेनचिकेता! ताअविद्यारूपमायाके निवृत्तिकाउपाय यहहै ॥ जिसअद्वितीयआत्माविषे साहिरण्यगर्भकीसमष्टिबुद्धि लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताअद्वितीयआत्माकासाक्षात्कारही तामायाकेनिवृत्तिकाउपायहै ॥ यातैं ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते याअधिकारीपुरुषोंनैं अवश्यकरिकैयत्नकरणा ॥ हेनचिकेता! जैसे माता आपणेपुत्रोंकूं हितकाउपदेशकरैहै ॥ तैसे श्रुतिभगवती याअधिकारीपुरुषोंकेप्रति याप्रकार हितका उपदेशकरैहै ॥ हेअधिकारीजनो! यामायानैंउत्पन्नकरी जोविवेकतैंविमुखतारूपजडताहै ॥ ताजडताकापरित्यागकरिकै तुमआत्मविचारविषेसावधानहोवौ ॥ ताजडताकरिकैही तुमारेकूं अद्वितीयब्रह्मरूपआत्माका विस्मरणरूपमोह प्राप्तभयाहै ॥ हेअधिकारीजनो! जैसे यालोकविषे जेपुरुष निद्राविषेसोयेहोवैहैं ॥ तिनपुरुषोंके पशुसुवर्णादिकधनकूं चौरलैजावैहैं ॥ तैसे अविद्यारूपनिद्राविषेसोयेहुए जोतुमअधिकारीजनहो तिनतुमअधिकारीजनोंके धर्मज्ञानरूपधनकूं यहकामक्रोधादिकचौर लेजावैहैं ॥ यातैं ताअविद्यारूपनिद्राकापरित्यागकरिकै तुम साधनहोवौ ॥ और हेअधिकारीजनो! जैसे यालोकविषे निद्रामैंसोयेहुएपुरुषकूंनानाप्रकारकेस्वप्नकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तथा तास्वप्नविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे याअविद्यारूपनिद्राविषेसोयेहुए तुमअधिकारीजनोंकूं यहविपरीतभावरूपस्वप्न प्राप्तभयाहै ॥ तहां अन्यपदार्थविषे अन्यबुद्धिकानाम विपरीतभावहै ॥ जैसे देहादिकअनात्मपदार्थोंविषे आत्मबुद्धिकानाम विपरीतभावहै ॥ जाविपरीतभावरूपस्वप्नविषे अहंता ममता यादोनोंप्रकारकेअध्यास करिकै तुमारेकूं अनेकप्रकारकेदुःख प्राप्तहोवैहैं ॥ तहां प्रथम अहंताघटित विपरीतभावकानिरूपणकरैहैं ॥ हेअधिकारीजनो! जैसे यालोकविषे किसीपिशाचकरिकैग्रस्याहुआ कोईब्राह्मण आपणेकूंशूद्रमानेहै ॥ तैसे वास्तवतैंजन्ममरणादिकविकारोंतैंरहित हुआभी यहआत्मादेव अहंतारूपपिशाचीकरिकैग्रस्याहुआ आपणेकूंयाप्रकारमानेहै ॥ मैंआत्मा माताकेगर्भविषेस्थितहूं ॥ तथा

मैं जन्म्याहूं ॥ तथा मैं कुमारहूं ॥ तथा मैं युवानहूं ॥ तथा मैं वृद्धहूं ॥ तथा मैं धनवान्हूं ॥ तथा मैं निर्धनहूं ॥ तथा मैं सुखीहूं ॥ तथा मैं दुःखीहूं ॥ तथा मैं स्त्रीवालाहूं ॥ तथा मैं स्त्रीतैंरहितहूं ॥ तथा मैं पुत्रवालाहूं ॥ तथा मैं पुत्रतैंरहितहूं ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारका आपणेकूंमानै है ॥ अब ममताघटित विपरीतभावका निरूपणकरै हैं ॥ हेअधिकारीजनो! जैसे साअहंता अनेकप्रकारकी है ॥ तैसे ताअहंताकीपुत्री जाममताहै ॥ साममताभी अनेकप्रकारकी है ॥ तहां यहपुरुष हमारेकूंदुःखकीप्राप्तिकरै है ॥ यातैं हमाराशत्रुहै ॥ और यहपुरुष हमारेकूं सुखकीप्राप्तिकरै है ॥ यातैं हमारासुहृद्मित्रहै ॥ और यहपुरुष हमारेकूं सुखदुःखकीप्राप्तिकरतानहीं ॥ यातैं हमारा उदासीनहै ॥ और येहमारेक्षेत्रवस्त्रादिकपदार्थ बहुतकालपर्यंत रहैंगे ॥ और येहमारेक्षेत्रवस्त्रादिकपदार्थ थोडेकालपर्यंतरहैंगे ॥ और येकामक्रोधलोभमोहादिकविकार हमारेविषेरहे हैं ॥ और येकामक्रोधादिकविकार हमारेविषे नहींरहे हैं ॥ इसतैंआदिलैके साममता सहस्रप्रकारकीहोवै है ॥ अब ताअहंताममताके फलकानिरूपणकरै हैं ॥ हे अधिकारीजनो! जेपुरुष याअहंताममताकरिकैयुक्तहैं ॥ तेपुरुष जन्मकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ ताजन्मतैंअनंतर मरणकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तामरणतैंअनंतर पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ इसप्रकार तेअहंताममतावालेअज्ञानीपुरुष चक्रकीन्यांई यासंसारविषेभ्रमणकरै हैं ॥ हेअधिकारीजनो! याप्रकार सर्वदुःखोंकाकारण यहविपरीतभावरूपस्वप्न तुमारेकूं प्राप्तभयाहै ॥ तास्वप्नतैं तुम जाग्रत्‌अवस्थाकूंप्राप्तहोवो ॥ जाकरिकै तुमारेसर्वदुःखोंकीनिवृत्तिहोवै ॥ हेअधिकारीजनो! विपरीतभावरूप अनेकस्वप्नोंकूंदिखावणेहारी जायहअविद्यारूपनिद्राहै ॥ साअविद्यारूपनिद्रा जैसे माताकेउदरविषेस्थितवामदेवऋषिकी आपेहीनिवृत्तभई है ॥ तैसे साअविद्यारूपनिद्रा जोकदाचित् तुमारी आपेहीनिवृत्तनहींहोवै तौ तुमअधिकारीजन ताअविद्यारूपनिद्राकीनिवृत्तिकरणेवासतै ब्रह्मवेत्ताकुशलगुरुवोंकेसमीपजावो ॥ कैसे हैंतेब्रह्मवेत्तामहात्मापुरुष? ताअविद्यारूपनिद्रातैंरहितहैं ॥ तथासर्वभूतप्राणियोंविषे जिनोंकीकृपादृष्टिहै ॥ ऐसेमहात्मापुरुषोंकेसमीप जबी तुमअधिकारीजन जावोंगे ॥ तबी तेदयालुमहात्मापुरुष तुमारेप्रति नानाप्रकारकेउपायोंकरिकै आत्माकाउपदेशकरैंगे ॥ हेअधिकारीजनो! तेब्रह्मवेत्तागुरु जोकदाचित् तुमारेकूं ब्रह्मविद्याकेउपदेशका

अधिकारी नहींदेखैंगे तौभी तेब्रह्मवेत्तागुरु कृपाकरिकै तुमारेअंतःकरणकीशुद्धिवासते धारणा ध्यान समाधिरूप नियमोंका उपदेशकरैंगे ॥ कैसेहैंतेनियम ? समाधिरूपयोगके साधनरूपहैं ॥ तथा योगाभ्यासकरिकैजन्यहैं ॥ हेअधिकारीजनो ! जैसे यहनाचिकेता यमराजाकूं वररूपपाशतैंबांधिकरिकै याआनंदस्वरूपआत्माकूंजानतामयाहै ॥ तैसे तुमअधिकारीजनभी जडताका तथानिद्राका परित्यागकरिकै तथा तिनब्रह्मवेत्तागुरुवोंकूं वररूपपाशोंतैंवशकरिकै ताआनंदस्वरूपआत्माकूं निश्चयकरौ ॥ हेअधिकारीजनो ! याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंपाइकैभी जोतुमारेकूं आत्माकासाक्षात्कारनहींहोवैगा तौ तुमारेकूं महान्हानिकी प्राप्तिहोवैगी ॥ ताहानिकरिकै तुमारेकूं अनेकशरीरोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं तुमअधिकारीजन शीघ्रही आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतेयत्नकरो ॥ और हेअधिकारीजनो ! यहआत्मज्ञानरूपमार्ग अत्यंतदुर्लक्ष्यहै ॥ तथा अत्यंतविषमहै ॥ यातैं तुमअधिकारीजन प्रमादकापरित्यागकरिकै सावधानहोवौ ॥ अब याहीअर्थकूंदृष्टांतकरिकैस्पष्टकरैहैं ॥ हेअधिकारीजनो ! जैसे सिंहव्याघ्रादिकोंकरिकैयुक्त तथा महान्वनविषेस्थित जोकोईकमार्गहै ॥ सोमार्ग तीनकांटेवाले अनेकगोक्षुरकोंकरिकैयुक्तहोवै ॥ अथवा तीनवार शाणकेघर्षणकरिकै अत्यंततीक्ष्णहुआ जोनापितपुरुषकाक्षुरनामाशस्त्रहै ॥ ताशस्त्रोंकीअनेकतीक्ष्णधारावोंकरिकै सोमार्गयुक्तहोवै ॥ ऐसेतीक्ष्णमार्गविषे अश्वादिकवाहनोंतैंरहितपुरुष चालिसकैनहीं ॥ किंतु अश्वादिकवाहनोंवालापुरुषही तामार्गविषेचालिसकेहै ॥ तैसे मोक्षरूपपुरकेप्राप्तिकरणेहारा जोयहआत्मज्ञानरूपमार्गहै ॥ सोआत्मज्ञानरूपमार्गभी नानाप्रकारकेविघ्नरूपकंटकोंकरिकैयुक्तहै ॥ यातैं अत्यंततीक्ष्णहै ॥ ऐसेआत्मज्ञानरूपमार्गविषे यहअधिकारीपुरुष गुरुपरमेश्वरकेअनुग्रहरूपवाहनतैंविना चालिसकैनहीं ॥ किंतु गुरुपरमेश्वरकेअनुग्रहरूपवाहनकरिकैही यहअधिकारीपुरुष ताआत्मज्ञानरूपमार्गविषे चालिसकैहै ॥ यातैं गुरुभक्तितैंरहितपुरुषोंकूं सो आत्मज्ञानरूपमार्ग अत्यंतदुर्गमहै ॥ हेअधिकारीजनो ! ऐसेआत्मज्ञानरूपमार्गविषेचलनेकाप्रकारभी तेमहात्मापुरुष कथनकरैहैं ॥ जिनमहात्मापुरुषोंनैं पूर्व ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं ताआत्मज्ञानरूपमार्गका भलीप्रकारअनुभवकऱ्याहै ॥ और जिनपुरुषोंनैं ताआत्मज्ञानरूपमार्गकाअनुभवनहींकऱ्या ॥ तेपुरुष ताआत्मज्ञानरूपमार्गकेउपदे

शकरणेविषेसमर्थहोवैनहीं ॥ तथा तिनोंकेउपदेशतैं किसीअधिकारीजनकूं ताआत्मज्ञानरूपमार्गकाबोधभीहोवैनहीं ॥ जैसे एक अंधपुरुषकेउपदेशतैं दूसराअंधपुरुष किसीमार्गकूंजाणिसकैनहीं ॥ यातैं जिनमहात्मापुरुषोंनैं पूर्व ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं ता आत्मज्ञानरूपमार्गकूं साक्षात्कारकऱ्याहै ॥ तिनमहात्मापुरुषोंकेशरणकूं तुमप्राप्तहोवो ॥ जाकरिकै तुमारेकूंआत्मसाक्षात्कारकी प्राप्तिहोवै ॥ हेनचिकेता! इसप्रकार साश्रुतिभगवती माताकीन्यांई सर्वअधिकारीजनोंकेप्रति आत्मज्ञानरूपहितकाउपदेशकर तीभई है ॥ यातैं ताआत्मज्ञानरूपमार्गविषे चलणेकाप्रकार हमसरीखेब्रह्मवेत्तापुरुषही कथनकरैंहैं ॥ अब ताआत्मज्ञानरूपमार्ग विषे दुर्लक्ष्यता बोधनकरणेवासते ताआत्मादेवविषे संपूर्णदृश्यप्रपंचकेधर्मोंकाअभाव निरूपणकरैंहैं॥ हेनचिकेता! यहआनंदस्व रूपआत्मादेव सर्वशरीरोंविषे एकअद्वितीयरूपकरिकैस्थितहै ॥ तथा मनवाणीकाअविषयहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ ऐसेआत्मा देवकेज्ञानरूपमार्गकूं ब्रह्मवेत्ताकुशलपुरुषही कथनकरैंहै॥ कैसाहैसोआत्मादेव? शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचगुणोंतैंरहितहै ॥ याकारणतैं तानिर्गुणआत्माकूं श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण येपंचज्ञानइंद्रिय ग्रहणकरिसकैंनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ नेत्रइंद्रियतौ नीलपीतादिकरूपोंकूं तथा तारूपगुणवालेद्रव्यकूं ग्रहणकरैंहै ॥ और त्वक्इंद्रियतौ शीतउष्णादिकस्पर्शोंकूं तथा तास्पर्शगुण वालेद्रव्यकूं ग्रहणकरैंहै ॥ और श्रोत्र रसन घ्राण येतीनइंद्रियतौ क्रमतैं शब्द रस गंध यातीनगुणोंकूंहीग्रहणकरैंहै ॥ तागु णोंकेआश्रयकूंग्रहणकरैंनहीं ॥ और यहआत्मादेव तिनशब्दादिकगुणोंकाआश्रयरूपनहींहै ॥ तथा तिनशब्दादिकगुणरूपन हींहै ॥ यातैं तानिर्गुणआत्माकूं कोईइंद्रिय ग्रहणकरिसकैंनहीं और हेनचिकेता! शनैःशनैःकरिकैजोपदार्थकानाशहै ताकानाम व्ययहै ॥ सोनाशरूपव्यय स्पर्शगुणवालेवायुआदिकसावयवपदार्थोंकाहीहोवैहै ॥ और यहआत्मादेव स्पर्शादिकगुणोंतैंरहितहै ॥ तथा निरवयवहै ॥ यातैं याआत्मादेवका सोनाशरूपव्यय संभवैनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं अव्यय यानामक रिकैकथनकरैंहै ॥ और सोअव्ययआत्मादेव नाशतैंरहितहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं नित्य यानामकरिकैकथन करैंहै ॥ और यहआत्मादेव अनादिहै ॥ यातैं नाशतैंरहितहै ॥काहेतैं? यालोकविषे जोजोपदार्थ उत्पत्तिरूपआदिवालाहोवैहै ॥ सो

सोपदार्थ नाशरूपअंतवालाभीहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ उत्पत्तिरूपआदिवालेहैं ॥ यातैं नाशरूपअंतवालेभीहैं ॥ और यहआ
त्मादेवतौ उत्पत्तिरूपआदितैंरहित अनादिहै ॥ यातैं याआत्मादेवकानाशरूपअंतभी संभवैनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआ
त्मादेवकूं अनंत यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और हेनचिकेता ! उत्पत्तिनाशवाली जोहिरण्यगर्भकी महत्तत्त्वरूपबुद्धिहै ॥ तामहत्त
त्त्वरूपसमष्टिबुद्धितैं नानाप्रकारकीविक्रियायुक्तअव्याकृतपरहै ॥ और ताअव्याकृततैंभी यहनिर्विकारआत्मा परहै ॥ तथा नाशतैं
रहितहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं ध्रुव यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ हेनचिकेता ! जैसे सामहत्तत्त्वरूपबुद्धि उत्प
त्तिनाशवालीहै ॥ तैसे यहआत्मादेव उत्पत्तिनाशवालानहींहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव नित्यहै ॥ हेनचिकेता ! जोअधिकारीपुरुष
ऐसेआनंदस्वरूपनित्यआत्माकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैंश्रवणकरैहैं ॥ तथा श्रुतिअनुकूलयुक्तिरूपतर्कोंकरिकै मननकरैहै ॥ तथा ता
आत्माविषेनिरंतरवृत्तियोंकाप्रवाहरूप निदिध्यासनकरैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष यासंसाररूपमृत्युकेमुखतैं अवश्यमुक्तहोवैहै ॥ हेन
चिकेता ! देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित जोयहआनंदस्वरूपआत्मादेवहै ॥ ताआत्मादेवकेसाक्षात्कारतैं यहअधिकारीपुरुष यासं
साररूपमृत्युकेमुखतैं मुक्तहोवैहै यहवार्ता कोईआश्चर्यकाकारणनहींहै ॥ काहेतैं ? याआनंदस्वरूपआत्माकूं प्रतिपादनकरणेहारा
जोयहकठवल्लीउपनिषद्रूपग्रंथहै ॥ ताग्रंथकेकथनमात्रतैं तथाश्रवणमात्रतैंभी याअधिकारीपुरुषोंकूं अर्चिरादिकमार्गद्वारा ब्रह्मलो
ककीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेशिष्य ! तायमराजानैं नचिकेताकेप्रति जोयाग्रंथके श्रवणमननकीर्तनतैंअनंतफलकीप्राप्तिकहीहै ॥ ताअर्थ
विषे यहदोनोंश्रुतिवचन प्रमाणहैं ॥ तहांश्रुति ॥ नाचिकेतमुपाख्यानं मृत्युप्रोक्तंसनातनं ॥ उक्त्वाश्रुत्वाचमेधावी ब्रह्मलो
केमहीयते ॥ १ ॥ य इमं परमं गुह्यं श्रावयेद्ब्रह्मसंसदि ॥ प्रयतः श्राद्धकाले वा तदानंत्याय कल्पते ॥ २ ॥ अर्थयह ॥
यमराजानैंकथनकऱ्या जोनचिकेताकासनातनआख्यान ताआख्यानकूंकथनकरिकै तथाश्रवणकरिकै यहबुद्धिमान्पुरुषब्रह्म
लोकविषेप्राप्तहोवैहै ॥ १ ॥ और जोपुरुष पवित्रहोइकै यापरमगुह्यआख्यानकूं ब्राह्मणोंकीसभाविषे श्रवणकरावैहै ॥ सोपुरु
षभी महान्फलकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष याआख्यानकूं श्राद्धकालविषेश्रवणकरैहै ॥ सोश्राद्ध तापुरुषकूं अनंतफलकीप्रा

प्तिकरैहै ॥ २॥ तात्पर्ययह ॥ ताआत्मादेवकेंप्रतिपादनकरणेहारा जोयहशास्त्रहै ॥ ताशास्त्रकेश्रवणमात्रतैं तथाकथनमात्रतैंभी जबी यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी ताआत्माकेसाक्षात्कारतैं यहअधिकारीपुरुष यासंसाररूपमृत्युकेमुखतैंमुक्तहोवै है याकेविषेक्याआश्चर्य है ? हेशिष्य ! ॐकाररूपप्रणवहैप्रतीकजिसका तथाप्रणवहैआलंबनजिसका ऐसाजोब्रह्महै ॥ ताब्रह्मकासं क्षेपतैंउपदेशकरिकै सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति पुनःतिसीब्रह्मका विस्तारतैंउपदेशकरणेवासतै याप्रकारकावचन कहताभया ॥ यमराजाउवाच ॥ हेनचिकेता ! हमनैं पूर्व तुमारेप्रति जोआनंदस्वरूपआत्मा संक्षेपतैंकथनकऱ्याहै सोआनंदस्वरूपआत्मा श्रोत्रा दिकइंद्रियोंकरिकैग्रहणकऱ्याजावैनहीं ॥ काहेतैं ? याजगत्कास्वतंत्रकर्ता जोपरमेश्वरहै ॥ सोपरमेश्वर तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं अंतरआत्मातैंबहिर्मुखही रचताभया ॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेव तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंका मानो हिंसनकरताभयाहै ॥ याप्र कार हमविवेकीपुरुषोंकूं प्रतीतहोवैहै ॥ काहेतैं ? जैसे यालोकविषेकोईमहाराजा किसीआपणेमंत्रीकूं आपणेसमीपपुरकाअधिकार छुडाइकै जबी किसीदूरदेशविषेअधिकारदेवैहै ॥ तबी सोमहाराजा तामंत्रीकेहिंसाकरणेहारेकीन्यांईहोवैहै ॥ तैसे तापरमात्मादे वनैंभी तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेतांई अंतरआत्मारूपविषय दियानहीं ॥ किंतु तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं अंतरआत्मातैंविमुखकरि कै बाह्यशब्दादिकविषयोंकीहीप्राप्तिकरी ॥ यातैं तेश्रोत्रादिकइंद्रिय हिंसाभावकूंप्राप्तहुएकेसमानहैं ॥ हेनचिकेता ! जैसे तामहारा जातैंदूरदेशविषेरहणेहारे तथा शत्रुवोंकेसमीपप्राप्तहुए ऐसेजेतामहाराजाकेमंत्रीहैं ॥ तिनमंत्रियोंकूं ताराजाकेविरोधीशत्रु किसी छिद्रकूंपाइकै हननकरैहैं ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माकापरित्यागकरिकै बाह्यविषयदेशविषेप्राप्तभये जेश्रोत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तिन श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं अद्वितीयआत्माकेविरोधीकामक्रोधादिकविकार हननकरैहैं ॥ हेनचिकेता ! जैसे तामहाराजातैंदूरदेशविषेगए हुए तेमंत्री यद्यपि तिसदेशविषेस्थितपदार्थोंकूंदेखैहैं ॥ तथापि तिनमंत्रियोंकूं तामहाराजाकादर्शनहोणा अत्यंतदुर्लभहै ॥ तैसे अंत रआत्माकापरित्यागकरिकै बाह्यदेशकूंप्राप्तभएजेश्रोत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तेश्रोत्रादिकइंद्रिय यद्यपि तहांशब्दादिकविषयोंकूंतौदेखैहैं ॥ तथापि तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं अंतरआत्माकादर्शनहोणा अत्यंतदुर्लभहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! परमेश्वरनैं श्रोत्रादिकइंद्रियों

कूं बहिर्मुखहीरचाहै ॥ यातें तेश्रोत्रादिकइंद्रिय अंतरआत्माकूंमतदेखै ॥ तथापि मनकीक्यागतिहै ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता ! या जीवोंकामन दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां एकमनतौ सकामहोवैहै ॥ और दूसरामन निष्कामहोवैहै ॥ तहां सकाममनतौ तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेअधीनहीहोवैहै ॥ यातें सोसकाममनतौ श्रोत्रादिकइंद्रियोंकीन्यांई अंतरआत्माकूंजाणिसकैनहीं ॥ और दूसरा जोनिष्काममनहै ॥ सोनिष्काममन श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेनिरोधतैं आत्मसाक्षात्कारकाहेतुहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ हेनचिकेता ! तेश्रोत्रादिकइंद्रिय जबी बाह्यशब्दादिकविषयोंविषे जावैहैं ॥ तबी सोसकाममनभी तिनइंद्रियोंकेपीछेहीजावैहै ॥ और तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंका जबी अंतरनिरोधहोवैहै ॥ तबी सोनिष्काममन बाहरिजावैनहीं ॥ परंतु सो श्रोत्रादिकइंद्रियोंकाअंतरनिरोध देहाभिमानीपुरुषोंकूं मुखतैंकथनकरणाभी दुर्घटहै ॥ जबी सोअंतरइंद्रियोंकानिरोध तिनदेहाभिमानीपुरुषोंकूं मुखतैंकहणेविषेभीदुर्घटभया ॥ तबी सोइंद्रियोंकानिरोध तिनदेहाभिमानीपुरुषोंकूं करणेविषेदुर्घटहै याकेविषे क्याकहणाहै ? हेनचिकेता ! सहस्रमनुष्योंविषे कोईएकहीमनुष्य तादेहाभिमानतैंरहितहोइकै तथा शमदमादिकसाधनसंपन्नहोइकै तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं अंतरनिरोधकरैहै ॥ हेनचिकेता ! तेश्रोत्रादिकइंद्रिय जबी याशरीरकेअंतरहीस्थितहोवैहै ॥ तबी ताइंद्रियरूपद्वारकेअभावहुए सोमनभी ताशरीरकेअंतरहीस्थितहोवैहै ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे यालोकविषे किसीनवद्वारवालेगृहविषे किसीवानरकूं निरुद्धकरिकै तागृहकेनवद्वारोंकूं बंदिकरिदईये ॥ तहां सोवानर तागृहतैंबाहरिनिकसणेविषेअसमर्थहुआ तागृहविषेही नानाप्रकारकीचेष्टाकरिकै जबी परिश्रमकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोवानर तागृहविषेही सुखपूर्वकस्थितहोवैहै ॥ तैसे जिनअधिकारीपुरुषोंनैं तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेनिरोधपूर्वक तामनकाअंतरनिरोधकऱ्याहै ॥ तिनअधिकारीजनोंका सोनिष्काममन श्रवणमननादिकसाधनोंकरिकैयुक्तहुआ ताअंतरआत्माकेसाक्षात्कारकूं उत्पन्नकरैहै ॥ यातें मुमुक्षुजनोंनैं श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेनिरोधपूर्वक तामनका अवश्यकरिकैनिरोधकरणा ॥ हेनचिकेता ! इसलोकविषे तथापरलोकविषे स्थित जेशब्दादिकविषयहैं ॥ तिनशब्दादिकविषयोंकूं जेविचारहीनपुरुष श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकैग्रहणकरैहैं ॥ तेविचारहीनपुरुष शरीरशरीरविषे मैंयमराजाकेवशकूंप्राप्त

होवैहैं ॥ कैसामैंहूं? आधि व्याधि शत्रु आदिकरूपोंकरिकैस्थितहूं ॥ और जैसे जालकरिकैबांध्येहुएमत्स्य मृत्युकूंप्राप्तहोवैहैं ॥
तैसे श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेअधीनहुए तेअविवेकीपुरुष वारंवार मृत्युकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इतनेकरिकैअविवेकीपुरुषोंकावृत्तांत कथनक
र्या ॥ अब विवेकीपुरुषोंकावृत्तांत निरूपणकरैंहैं ॥ हेनचिकेता! ब्रह्मातैंआदिलैके स्तंबपर्यंत जितनेस्थावरजंगमप्राणीहैं ॥
तेसंपूर्णप्राणी मृत्युकेवशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याप्रकारकीव्यवस्थाकूंदेखिकरिकै तेविवेकीपुरुष कर्मउपासनाकेफलकूं अनित्यहीजानै
हैं ॥ और आत्मज्ञानकेमोक्षरूपफलकूं नित्यजानैहैं ॥ इसप्रकार ब्रह्मलोकपर्यंत कर्मकेफलकूंअनित्यजाणिकै तेविवेकीपुरुष ताकर्म
केस्वर्गादिरूपफलकीइच्छाकरतेनहीं ॥ जैसे तूनचिकेता स्वर्गादिकसुखोंकीइच्छाकरतानहीं ॥ तैसे तेविवेकीपुरुषभी तिनस्वर्गादि
कसुखोंकीइच्छाकरतेनहीं ॥ किंतु तेविवेकीपुरुष तुमारेन्यांई मोक्षरूपनित्यफलकीहीइच्छाकरैंहैं ॥ हेनचिकेता! तेविवेकीपुरुष
जिसआत्माकेज्ञानकरिकै तामोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ सोआत्मादेव कैसाहै? नेत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंके तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रियों
केजेदर्शनादिकव्यापारहैं ॥ तिनदर्शनादिकव्यापारोंकूं यहजीव जिसअंतःकरणकरिकैजानैहै ॥ ताविषयसहितअंतःकरणकूं यहजी
व जिसस्वयंज्योतिरूपसाक्षीकरिकै अनुभवकरैहै ॥ सोस्वयंज्योतिरूपसाक्षी ताआत्मादेवरूपहीहै ॥ जोतुमनैं पूर्व धर्मअधर्मादि
कोंतैंरहितआत्माकास्वरूपपूछाथा ॥ तास्वयंज्योतिरूपसाक्षीतैं सोआत्मादेव भिन्ननहींहै ॥ हेनचिकेता! जैसे रज्जुविषे सर्पदंड ज
लधारा आदिककल्पितहोवैहैं ॥ तैसे भूत भविष्यत् वर्त्तमान येजोतीनकालहैं ॥ तथा तातीनकालोंविषेवर्त्तमान जितनेस्थूल
सूक्ष्मपदार्थहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ यास्वयंज्योतिरूपसाक्षीआत्माविषे कल्पितहैं ॥ यातैं यास्वयंज्योतिसाक्षीआत्मातैं भिन्नसत्तावाला
कोईभीपदार्थनहींहै ॥ याकारणतैं सोआत्मादेव अद्वितीयरूपहै ॥ और हेनचिकेता! यहपुरुष जिसस्वयंज्योतिरूपसाक्षीकरिकै
जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंकूंदेखैहै ॥ तास्वयंज्योतिरूपसाक्षीकूंही तुमनैं आपणाआत्मारूपकरिकैजानणा ॥ और पूर्व
हमनैं तुमारेप्रति जोमहान्आत्मा सर्वत्रव्यापकरूपकरिकै कथनकर्याथा ॥ सोमहान्आत्माभी यास्वयंज्योतिरूपसाक्षीतैंभिन्ननहीं
है ॥ किंतु सोमहान्आत्मा स्वयंज्योतिसाक्षीरूपहीहै ॥ जिसआत्मादेवके अद्वितीयरूपमहत्त्वकूंजाणिकरिकै विद्वान्पुरुष कर्तृत्वभो

कृत्वादिरूपसर्वशोकोंकूं तरैहैं ॥ हेनचिकेता! यहजीवरूपआत्मादेव बुद्धिआदिकोंकासाक्षीरूपकरिकै सर्वजीवोंकूं अत्यंतसमीप हैं ॥ और लोकप्रसिद्धमधुकेसमान जोपुण्यपापकर्मोंका सुखदुःखरूपफलहै ॥ ताफलकाभी यहआत्मादेवहीभोक्ताहै ॥ ऐसेसर्वभेद तैंरहितअद्वितीयआत्माकूं जेअधिकारीपुरुष यासर्वजगत्‌काअधिपतिरूपकरिकैजानैंहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष किसीसंशयकूं तथाकि सीकेनिंदाकूं करैंनहीं ॥ इतनेकरिकै त्वंपदार्थरूपजीवके शोधनकाप्रकार निरूपणकऱ्या ॥ अब तत्पदार्थरूपईश्वरके शोधनकाप्र कार निरूपणकरैंहैं ॥ हेनचिकेता! जिसपरमात्मादेवतैं यहहिरण्यगर्भ उत्पन्नभयाहै ॥ कैसाहैसोहिरण्यगर्भ? ब्रह्मांडकाआरंभक रणेहारे जेआकाशादिकस्थूलभूतहैं ॥ तिनस्थूलभूतोंतैंभी जोहिरण्यगर्भ पूर्वउत्पन्नभयाहै ॥ और पूर्वजन्मोंविषे अनुष्ठानकरे जे कृच्छ्रचांद्रायणादिककर्महैं ॥ तथा नानाप्रकारकीउपासनाहैं ॥ ताकर्मउपासनारूपतपकेबलतैं जिसहिरण्यगर्भकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ ऐसेहिरण्यगर्भकूंभी उत्पन्नकरणेहारा जोपरमात्मादेवहै ॥ जोपरमात्मादेव सर्वशरीरोंविषे सर्वबुद्धिरूपगुहावोंविषेप्रवेशकरिकै ति नबुद्धियोंकूं साक्षीरूपकरिकैदेखताहुआ स्थितहोवैहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव आकाशकीन्यांई सर्वत्रव्यापकहै ॥ तिसपरमात्मादेव कूं तू अद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैजाण ॥ हेनचिकेता! जोप्राणस्वरूपहिरण्यगर्भदेवता पूर्वकल्पके कर्मउपासनारूपतपकेप्रभावतैं या स्थूलविराट्तैंप्रथम उत्पन्नहोवैहै ॥ सोहिरण्यगर्भदेवता यास्थूलप्रपंचरूपअन्नकूं भोजनकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताहि रण्यगर्भदेवताकूं अदिति यानामकरिकै कथनकरैहै ॥ और संपूर्णइंद्रादिकदेवता ताहिरण्यगर्भकेविभूतियांहैं ॥ यातैं सोहिरण्य गर्भभगवान् सर्वदेवमयहै ॥ और सोहिरण्यगर्भभगवान् संपूर्णव्यष्टिभूतप्राणियोंविषे तादात्म्यसंबंधकरिकैरहैहै ॥ यातैं सोहि रण्यगर्भभगवान् सर्वभूतमयहै ॥ ऐसाहिरण्यगर्भभगवान्‌भी जिसपरमात्मादेवका ध्यानकरणेयोग्यस्वरूपहै ॥ तिसपरमात्मादेव कूं तू अद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैजाण ॥ और हेनचिकेता! ऐसेअदितिनामाहिरण्यगर्भतैं उत्पन्नभयाजोविराट्भगवान्‌है ॥ जावि राट्भगवान्‌कूं शास्त्रविषेअग्निरूपकरिकैवर्णनकऱ्याहै ॥ याकारणतैंही नीचेकाकाष्ठरूप जोअधरअरणीहै ॥ तथा ऊपरिकाकाष्ठरू प जोउत्तरअरणीहै ॥ तादोनोंअरणियोंतैं सोअग्निरूपविराट् यज्ञविषेप्रादुर्भावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे यालोकविषे गर्भिणी

स्त्रियां स्नेहपूर्वक गर्भकूं धारणकरैहैं ॥ तैसे यज्ञकेकरणेहारेपुरुष याअग्निरूपविराट्कूं श्रद्धापूर्वक दोनोंअरणियोंकरिकै धारणकरैहैं ॥ तथा निद्रातैंरहितयोगीजनभी ताअग्निरूपविराट्कूं आपणेअंतरधारणकरैहैं ॥ और सोअग्निरूपविराट्ही सर्वभूतोंविषेस्थितहै ॥ और स्वर्गकीइच्छावाले तथामोक्षकीइच्छावाले जेदेवतामनुष्यहैं ॥ तिनोंकरिकै यहअग्निरूपविराट्ही स्तुतिकरणेयोग्यहै ॥ हेनचिकेता! जैसे अदितिनामाहिरण्यगर्भ तापरमात्मादेवकास्वरूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्यहै ॥ तैसे यहअग्निरूपविराट्भी तापरमात्मादेवकास्वरूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्यहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! हिरण्यगर्भरूपकरिकै तथाविराट्रूपकरिकै तापरमात्मादेवकाउपदेश आप किसवासतेकरतेहो? साक्षात्ही तापरमात्मादेवकेस्वरूपकाउपदेश आप हमारेप्रतिकरो ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता! तापरमात्मादेवका वास्तवशुद्धस्वरूप मनवाणीकाअविषयहै ॥ तथा अध्यात्म अधिदैव अधिभूत इत्यादिकसर्वभेदतैंरहित है ॥ यातैं तापरमात्मादेवकेवास्तवस्वरूपकूं साक्षात्कहणेविषे हम समर्थनहीं हैं ॥ काहेतें? जातिवाला तथागुणवाला तथाक्रियावाला जोपदार्थहै ॥ तापदार्थकूंही यहशब्द साक्षात्कथनकरैहै ॥ जैसे घट यहशब्द घटत्वजातिवालेघटकूं कथनकरैहै ॥ और नीलघट यहशब्द नीलगुणवालेघटकूं कथनकरैहै और पाचक यहशब्द पाकरूपक्रियावालेपुरुषकूंकथनकरैहै ॥ इसप्रकार संपूर्णशब्दकिसीजातिगुणादिकनिमित्तकूंअंगीकारकरिकैही आपणेआपणेअर्थकूं साक्षात्कथनकरैहैं ॥ और यहनिर्गुणपरमात्मादेवतौ जातिगुणक्रियादिकधर्मोंतैंरहितहैं ॥ यातैं तापरमात्मादेवकूं कोईशब्द साक्षात्कथनकरिसकैनहीं ॥ याकारणतैं हिरण्यगर्भ विराट् इत्यादिक सविशेषरूपोंकरिकै तानिर्गुणपरमात्मादेवकेवास्तवस्वरूपकूं तू जाण ॥ और हेनचिकेता! जिसअधिदैववायुरूपप्राणतैंयहसूर्यचंद्रमादिकतेज उदयहोवैहै ॥ और जिसप्राणविषे तेसूर्यादिकतेज अस्तभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जैसे रथकेचक्रकेनाभिविषे अरास्थितहोवैहै ॥ तैसे वाकादिकइंद्रिय तथाअग्निआदिकदेवता जिसप्राणविषे सर्वदास्थितहोवैहैं ॥ तहांश्रुति ॥ प्राणाद्वाएषउदेतिप्राणेऽस्तमेति सर्वंप्राणेऽर्पितं ॥ अर्थयह ॥ प्राणतैंही यहसूर्यादिकतेज उदयहोवैहैं ॥ तथा प्राणविषेही तेसूर्यादिकतेज अस्तभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और ताप्राणविषेही संपूर्णअग्निआदिकदेवता स्थितहोवैहैं ॥ १ ॥ और जिसप्राणकूं आपणेबलकरिकै उ

ल्लंघनकरणेविषे कोईभीपुरुष समर्थनहींहै ॥ ऐसाप्राणभी जिसपरमात्मादेवका ध्यानकरणेयोग्यस्वरूपहै ॥ ऐसे परमात्मादेवकूंतू ब्रह्मरूपकरिकैजाण ॥ इतनैंकरिकै तत्पदार्थरूपईश्वरकेशोधनकाप्रकार निरूपणकऱ्या ॥ अब ताशोधित तत्त्वं पदार्थोंका अभेदनिरूपणकरैंहैं ॥ हेनचिकेता! तुमारेशरीरविषे तथाहमारेशरीरविषे तथा अन्यजीवोंकेशरीरविषे जोचैतन्यदेव सर्वबुद्धिवृत्तियोंका साक्षीरूपकरिकैस्थितहै ॥ सोईहीचैतन्यदेव परोक्षईश्वरशरीरविषे तथाहिरण्यगर्भशरीरविषे तथाविराट्शरीरविषे साक्षीरूपकरिकैस्थितहै ॥ और जोचैतन्यदेव ईश्वरहिरण्यगर्भादिकोंकेशरीरविषेस्थितहै ॥ सोईहीचैतन्यदेव अस्मदादिकजीवोंकेशरीरविषे स्थितहै ॥ हेनचिकेता! जैसे अखंडआकाशविषे किंचित्मात्रभीभेदनहींहै ॥ तैसे याअखंडचैतन्यदेवविषे किंचित्मात्रभीभेदनहींहै ॥ और जैसे भेदतैंरहितआकाश घटमठादिकउपाधियोंकेभेदकरिकै भेदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहचैतन्यदेवभी अव्याकृत सूक्ष्म स्थूल इत्यादिकउपाधियोंकेभेदकरिकै ईश्वर हिरण्यगर्भ विराट् इत्यादिकभेदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेनचिकेता! जैसे वास्तवतैंतीनकालविषे असत्यहुआभी गंधर्वनगर आकाशकेभेदकूंकरैहै ॥ तैसे वास्तवतैं तीनकालविषे असत्यहुआभी यहजडजगत् ताचैतन्यआत्माकेभेदकूंकरैहै ॥ परंतु सोचैतन्यआत्माकाभेद अज्ञानीपुरुषोंकीदृष्टिविषेही है ॥ और विद्वान्पुरुषकीदृष्टिकरिकै तौ ताअद्वितीयब्रह्मविषे कल्पितनानापणाभीनहींहै ॥ जबी ताअद्वितीयब्रह्मविषे कल्पितनानापणाभीनहींभया ॥ तबी ताअद्वितीयब्रह्मविषे सत्यनानापणा किसप्रकारसंभवैगा? हेनचिकेता! ऐसेअद्वितीयब्रह्मविषे जोपुरुष कल्पितनानापणाभीदेखैहै ॥ सोभेददर्शीपुरुष वारंवार जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोमंदबुद्धिपुरुष पापकर्मकरिकैमोहितहुआ ताअद्वितीयब्रह्मविषे वास्तवभेदकूंदेखैहै ॥ सोभेददर्शीपुरुषतौ अनेकवार नरकोंकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ मृत्योःसमृत्युमाप्नोति यइहनानेवपश्यति ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुषयाअद्वितीयब्रह्मविषे नानापणेकीन्यांईदेखैहै ॥ सोभेददर्शीपुरुष वारंवार मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं मुमुक्षुजनोंनैं ताब्रह्मकूं सर्वभेदतैंरहितएकअद्वितीयरूपकरिकैजानणा ॥ हेनचिकेता! ऐसेअद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकेदर्शनविषे यहबाहिर्मुखश्रोत्रादिकइंद्रिय करणहोइसकैनहीं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषनैं निष्कामशुद्धमनकरिकैही ताआत्मरूपब्रह्मकूं निश्चयकरणा ॥ और हेनचिकेता! जैसे अखंड

आकाशविषे स्वभावतैंनानापणानहीं है ॥ तैसे याअखंडब्रह्मविषेभी स्वभावतैं नानापणानहीं है॥ किंतु जैसे घटमठरूपउपाधिकेभेदतैं
ताआकाशकाभेदहोवैहै ॥ तैसे देहादिकउपाधियोंकेभेदतैंही ताआत्माकाभेदकहणाहोवैगा ॥ और यालोकविषे जोजोभेद उपाधिकू
तहोवैहै ॥ सोसोभेद ताउपाधिवालेउपहितपदार्थकूं स्पर्शकरैनहीं ॥ किंतु तिनउपाधियोंविषेही सोभेद स्थितहोवैहै ॥ जैसे घटमठ
रूपउपाधिकृत जोआकाशकाभेदहै॥ सोभेद आकाशकूंस्पर्शकरतानहीं ॥ किंतु ताघटमठरूपउपाधियोंविषेही सोभेद स्थितहोवैहै॥
तैसे देहादिरूपउपाधिकृत जोआत्माकाभेदहै॥ सोभेदभी ताअद्वितीयआत्माकूंस्पर्शकरैनहीं॥ किंतु तिनदेहादिरूपउपाधियोंविषेही
सोभेद स्थितहोवैहै ॥ किंवा ताअद्वितीयब्रह्मतैंभिन्न जितनेदेहादिकपदार्थहैं ॥ तेदेहादिकपदार्थ ताब्रह्मतैंभिन्नहुए नरशृंगकी
न्यांई असत्यहीहोवैंगे ॥ तिनअसत्यपदार्थोंकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मकाभेद संभवैनहीं ॥ और ताअद्वितीयब्रह्मविषे भेदकेदर्शनतैं
वारंवारमृत्युकीप्राप्ति पूर्व कथनकरिआये हैं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं वेदांतशास्त्रकेसंस्कारयुक्तशुद्धमनकरिकै याआत्मरूपब्र
ह्मकूं अद्वितीयरूपकरिकैहीदेखणा ॥ हेनचिकेता ! ऐसाअद्वितीयपरमात्मादेव जीवरूपकरिकै यामनुष्योंकेहृदयदेशविषेस्थितहो
वैहै ॥ और यामनुष्योंकाहृदय विशेषकरिकै तौ अंगुष्ठमात्रपरिमाणवालाहोवैहै ॥ ऐसेहृदयविषेस्थितहुआ सोपरमात्मादेवभी अंगु
ष्ठमात्रकह्याजावै है ॥ ऐसे अंगुष्ठमात्रपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष भूतभविष्यत्पदार्थोंका ईशानरूपकरिकैजानै हैं ॥ तिनअधि
कारीपुरुषोंकूं संशयादिकप्राप्तहोवैंनहीं ॥ हेनचिकेता ! सोहृदयदेशविषेस्थित अंगुष्ठमात्रपुरुष कैसाहै ? यासर्वजगत्काईशानहै ॥
तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषे विपरीतभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तीनोंकालविषेएकर
सरहैहै ॥ और जैसे यालोकविषे द्रवत्वरूपकरिकै तथास्नेहरूपकरिकै जलकाभेदहोवैनहीं ॥ किंतु द्रवत्वरूपकरिकै तथास्नेहरूपक
रिकै सोजल सर्वत्रएकरूपहीहोवैहै ॥ तैसे अस्ति भाति प्रिय यारूपकरिकै ताआत्मादेवकाभेदहोवैनहीं ॥ किंतु अस्तिभातिप्रिय
रूपकरिकै सोआत्मादेव सर्वत्रएकरूपहीहै ॥ और हेनचिकेता! जैसे उच्चैःपर्वतोंविषे मेघोंतैंपतनहुएजेजलहैं॥ तेजल तिनउच्चैःपर्व
तोंतैं नीचेदेशविषे विशीर्णभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे भेदरूपकरिकैदेख्याहुआ यहआत्मादेवभी नानाप्रकारकीनीचयोनियोंकूंप्राप्त

होवैहै ॥ और हेनचिकेता ! जैसे तेमेघोंकेजल प्रथम तापर्वतकेशिखरविषेप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर तेजल तापर्वतकेमध्यदेश विषेप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर तेजल नीचीभूमिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तानीचीभूमितैंपरे तेजल कहांजावैनहीं ॥ किंतु तेजल तानीची भूमिविषेहीस्थितहोवैहैं ॥ यातैं सानीचीभूमि ताजलोंकेविश्रामकास्थानहै ॥ तैसे यहजीवात्मारूपजलभी भेददर्शनरूपउच्चैःपर्वततैं नीचैपतनहोइकै पुण्यपापकर्मकेवशतैं नानाप्रकारकेयोनियोंविषेभ्रमणकरै है ॥ तिसतैंअनंतर पूर्वलेकिसीमहान्पुण्यकर्मकेयोगतैं यहजीवात्मा जबी आत्मज्ञानरूपनीचीभूमिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहजीवात्मा ब्रह्मानंदरूपविश्रामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेनचिकेता ! जैसे स्वभावतैंशुद्धजोजलहै ॥ सोजल जबी किसीपर्वतादिकशुद्धस्थलविषेप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोजल शुद्धहीरहैहै ॥ और सोशुद्ध जल जबी गैरकहरितालमयभूमिविषे प्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोजल ताभूमिकेसंबंधतैं रक्तपीतादिकनानावर्णोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे वास्तवतैंशुद्धयहआत्मादेवभी रागद्वेषतैंरहितशुद्धमनविषेस्थितहोइकै शुद्धभावकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ और रागद्वेषवालेअशुद्धमनविषे स्थितहोइकै सोआत्मादेवभी अशुद्धभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेनचिकेता ! जैसे स्वभावतैंशुक्लवर्णवालाजोजलहै ॥ सोजलयद्यपि गैरकादिकोंकेसंबंधतैं रक्तादिकवर्णोंवालाप्रतीतहोवैहै ॥ तथापि ताजलकेस्वाभाविकशुक्लवर्णकीहानिहोवैनहीं ॥ तैसे यहआत्मादेवभी यद्यपि अंतःकरणादिकोंकेसंबंधतैं कर्तृत्वभोक्तृत्वरूपमलवालाप्रतीतहोवैहै ॥ तथापि ताआत्मादेवकेवास्तवशुद्धस्वरूपकीहानिहोवैनहीं ॥ और हेनचिकेता ! जैसे स्वभावतैंशीतलजोजलहै ॥ सोजल अग्निकेसंबंधतैं उष्णभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे स्वभावतैं सुखरूप यहआत्मादेवभी देहादिकोंकेसंबंधतैं दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ शरीरकेविद्यमानहुए याजीवोंकूंदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और शरीरकेअभावहुए जाजीवोंकूंदुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै कारणशरीरसहित यास्थूलसूक्ष्मशरीरविषेही दुःखकीकारणतासिद्धहोवैहै ॥ हेनचिकेता ! स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंविषेभी जोअज्ञानरूपकारणशरीरहै ॥ सोकारणशरीर याजीवोंकेदुःखका साक्षात्कारणहोवैनहीं ॥ जोकदाचित् सोकारणशरीर साक्षात्दुःखकाकारणहोवै ॥ तौ सुषुप्तिअवस्थाविषेभी हमजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोणीचाहिये ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे दुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं

जैसे बीज अंकुरादिद्वारा फलकाकारणहोवैहै ॥ तैसे यहअज्ञानरूपकारणशरीरभी सूक्ष्मस्थूलशरीरद्वाराही याजीवोंकेदुःखकाकारण होवैहै ॥ हेनचिकेता ! तिनसूक्ष्मस्थूलशरीरोंविषेभी यहसूक्ष्मशरीर साक्षात्अज्ञानरूपमायाकाकार्यहै ॥ यातें तामायारूपकारणकेनाशतेंविना सोसूक्ष्मशरीर नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और सोसूक्ष्मशरीरही याजीवोंकेस्थूलसंसाररूपपटकाकारणहै ॥ याकारणतें तासूक्ष्मशरीरकूं शास्त्रविषे सूत्र यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ ऐसासूक्ष्मशरीर यास्थूलशरीरकेग्रहणतेंविना याजीवोंकूं भोगकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ किंतु यास्थूलशरीरकूंग्रहणकरिकैही सोसूक्ष्मशरीर याजीवोंकूं भोगकीप्राप्तिकरैहै ॥ यातें तास्थूलशरीरविषेही गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकै सोआत्मादेव प्रत्यक्षहोवैहै ॥ याकारणतें मैंयमराजा तुमारेप्रति यास्थूलशरीरकाकथनकरताहूं ॥ तू श्रवणकर ॥ सूक्ष्मशरीररूपजोपुरुषहै ॥ तथा त्वगादिकजेसप्तधातुहैं ॥ तथा भक्षणकरेहुएअन्नपानादिकोंके जेनानाप्रकारकेरसहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकरिकै यहस्थूलशरीर दिनदिनविषे पूर्णकरीताहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती यास्थूलशरीरकूं पुर यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ अथवा जैसे लोकप्रसिद्धपुर राजादिकोंकरिकैयुक्तहोवैहैं ॥ तैसे यहस्थूलशरीरभी पूर्णपरमात्माकरिकैयुक्तहै ॥ याकारणतें यास्थूलशरीरकूं पुर कहेहैं ॥ अब यास्थूलशरीररूपपुरविषे लोकप्रसिद्धपुरकीसमानता निरूपणकरैहैं ॥ हेनचिकेता ! जैसे यहलोकप्रसिद्धपुर अनेकद्वारोंवालाहोवैहै ॥ तथा कोईराजा तापुरकास्वामीहोवैहै ॥ तैसे यहस्थूलशरीररूपपुरभी एकादशद्वारवालाहै ॥ तहां दोचक्षु दोनासिका दोश्रवण एकमुख येसप्त याशरीररूपपुरकेऊपरिलेद्वारहैं ॥ और पायु उपस्थ येदोनों नीचेकेद्वारहैं ॥ और उदरविषेस्थित जोनाभिछिद्रहै ॥ सोनाभिछिद्र दशमाद्वारहै ॥ और मस्तककेतीनकपालोंकीसंधिविषेस्थित जोछिद्रहै ॥ सोएकादशमाद्वारहै ॥ जाएकादशमेंद्वारविषे सुषुम्नानाडीरूपसरस्वती प्राप्तहोवैहै ॥ कैसीहैसा सुषुम्नारूपसरस्वती ? अयोगीपुरुषोंकरिकै दुर्लक्ष्य है ॥ किंतु योगीपुरुषही तासुषुम्नाकूंजाणेहैं ॥ और जिससुषुम्नारूपसरस्वतीकरिकै याशरीरतेंबाहरिनिकस्याहुआ यहयोगीपुरुष ब्रह्मलोककेदेवयानमार्गकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसेशरीररूपपुरविषे यहपरमात्मारूपइंद्र वाकादिकइंद्रियरूप तथाअग्निआदिकदेवतारूप प्रजाकेसहित निवासकरैहै ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव ? वास्तवतें जन्ममरणादिकविकारोंतेंरहितहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥

तथा बहिर्मुखजडमनतैंरहितहै ॥ तथा वाकादिकइंद्रियोंतैंरहितहै ॥ हेनचिकेता ! ऐसापरमात्मादेव यद्यपि वास्तवतैंपुण्यपापरूपकर्मोंतैंरहितहै ॥ तथापि कल्पितपुण्यपापरूपकर्मोंकेसंबंधतैं याशरीररूपपुरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ऐसेदुःखरूपशरीरकूंप्राप्तहोइकै भी यहआनंदस्वरूपआत्मादेव वास्तवतैंशोककूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतें ? यालोकविषेजोजोशोकहोवैहै ॥ सोसोशोक दुःखरूपकारणतैंही उत्पन्नहोवैहै ॥ और सोदुःख अनिष्टपदार्थोंकेसंगतैंउत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं तादुःखकीउत्पत्तिद्वारा सोसंगही ताशोककाकारण है ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वसंगतैंरहितहै ॥ यातैं ऐसेअसंगआत्माकूं सोशोक किसप्रकारप्राप्तहोवैगा ? किंतु नहींप्राप्त होवैगा ॥ हेनचिकेता ! जोपूर्वतुमनैं धर्मअधर्मतैंरहित आत्माकास्वरूपपूछाथा ॥ सोभी यहसर्वशोकतैंरहितस्वयंज्योतिआत्मादेवही है ॥ याकेविषे तुमनैं किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ हेनचिकेता ! यहअधिकारीपुरुष नित्यमुक्तआत्मास्वरूपकरिकै नित्यहीमुक्तरूपहै ॥ तथापि यास्वयंज्योतिआत्माकेसाक्षात्कारतैं कल्पितअज्ञानरूपबंधकापरित्यागकरिकै तुमसरीखेअधिकारीपुरुष पुनःमुक्तिकूंप्राप्तिहोवैहैं ॥ जैसे यालोकविषे कोईभाग्यवान्पुरुष पूर्व सुखकूंप्राप्तहुआभी पुनःसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहआत्मादेव पूर्वमुक्तहुआभी पुनःमुक्तहोवैहै ॥ हेनचिकेता ! जेवादी ताआत्माविषे बंध अंगीकारकरैंहैं ॥ तिनवादियोंसैं यहपूछाचाहिये ॥ ताआत्माविषे रज्जुआदिकोंकरिकै वेष्टनरूपबंधहै ॥ अथवा संसर्गरूपबंधहै ॥ तहां ताआत्माविषे रज्जुआदिकोंकरिकैवेष्टनरूपबंध है यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? यालोकविषे जिसजिसपदार्थविषे रज्जुआदिकोंकरिकैबंधहोवैहै ॥ तिसतिसपदार्थविषे मूर्त्तपणाहीदेख्याहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थोंविषे रज्जुकरिकैबंधहोवैहै ॥ यातैं तिनघटादिकपदार्थोंविषे मूर्त्तपणाभीहै ॥ और जिसपदार्थविषे मूर्त्तपणेकाअभावहोवैहै ॥ तिसपदार्थविषे रज्जुआदिकोंकरिकैबंधभीहोवैनहीं ॥ जैसे आकाशविषे मूर्त्तपणेकाअभावहै ॥ यातैं ताआकाशविषे रज्जुकरिकैबंधभीहोवैनहीं ॥ सोमूर्त्तपणेकाअभाव आत्माविषेभीहै ॥ यातैं ताआत्मादेवविषे रज्जुआदिकोंकरिकैबंध संभवैनहीं ॥ और ताआत्माविषे संसर्गरूपबंधहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? जोवादियोंनैं संयोगसमवायसंबंधादिरूपबंधनकल्पनाकऱ्याहै ॥ सोसंयोगसमवायसंबंधादिरूपबंधन

कल्पितहै ॥ यातैं तेसंयोगसमवायादिक असत्यहैं ॥ अब तिनसंयोगसमवायादिकसंबंधोंविषे कल्पितरूपता स्पष्टकरणेवासतेप्रथ
म तिनसंयोगादिकोंविषेप्रमाणका खंडनकरैहैं ॥ तहांजोवादी संयोगसमवायादिकसंबंधोंकूंअंगीकारकरैहै ॥ तावादीसें यहपूछा
चाहिये ॥ तासंयोगसमवायसंबंधविषे प्रत्यक्षप्रमाणहै? अथवा अनुमानप्रमाणहै? अथवा शब्दप्रमाणहै? अथवा इनोंतैंकोईभि
न्नप्रमाणहै? तहां संयोगसंबंधविषे तथासमवायसंबंधविषे प्रत्यक्षप्रमाणहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोसंभवैनहीं ॥
काहेतें? तावादीकेमतविषे दंडवालापुरुषहै यास्थलविषे दंडका पुरुषकेसाथ संयोगसंबंधहोवैहै ॥ और रूपवालाघटहै यास्थलविषे
रूपगुणका घटकेसाथ समवायसंबंधहोवैहै ॥ तहां तासंयोगसंबंधका दंडतौ प्रतियोगीहोवैहै ॥ और पुरुष अनुयोगीहोवैहै ॥
इसीप्रकार तासमवायसंबंधकाभी रूपगुणतौ प्रतियोगीहोवैहै ॥ और घट अनुयोगीहोवैहै ॥ तहां प्रतियोगीकेस्वरूपका तथा
अनुयोगीकेस्वरूपका जोभलीप्रकारविचारकरिदेखिये तौ ताप्रतियोगी अनुयोगीकेस्वरूपतैंभिन्नहोइकै सोसंयोगसंबंध तथा स
मवायसंबंध प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं तासंयोगसमवायविषे प्रत्यक्षप्रमाण संभवैनहीं ॥ और तासंयोगसमवायविषे अनुमानप्रमा
णहै ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें? जावस्तुका किसीप्रकारकरिकैभी प्रत्यक्षनहींहोवै ॥ ता
वस्तुविषे अनुमानप्रमाणकीभी प्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ काहेतें? जोकदाचित् सर्वप्रकारतैंअप्रत्यक्षवस्तुकीभी अनुमानप्रमाणतैं सिद्धि
होतीहोवै तौ वंध्यापुत्रकी तथानरशृंगकीभी अनुमानप्रमाणतैं सिद्धिहोणीचाहिये ॥ और अनुमानप्रमाणकरिकै वंध्यापुत्रकी
तथा नरशृंगकी सिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं प्रत्यक्षप्रमाणकेअभावहुए तासंयोगसमवायविषे अनुमानप्रमाणभी संभवैनहीं ॥ और ता
संयोगसमवायसंबंधविषे शब्दप्रमाणहै यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें? सोशब्द दोप्रकारका
होवैहै ॥ एकतौ लौकिकशब्दहोवैहै ॥ और दूसरा वैदिकशब्दहोवैहै ॥ तहां तासंयोगसमवायविषे लौकिकशब्द प्रमाणहै यहकह
णातौसंभवैनहीं ॥ काहेतें? प्रत्यक्षअनुमानादिकप्रमाणोंकीसहायतातैंविना सोलौकिकशब्द किसीअर्थकीभीसिद्धिकरिसकैनहीं ॥
किंतु प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकीसहायताकूंअंगीकारकरिकैही सोलौकिकशब्द किसीअर्थकीसिद्धिकरैहै ॥ काहेतें? जोकदाचित् सो

लौकिकशब्द प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकीसहायतातैंविनाही किसीअर्थविषे प्रमाणरूपहोवै तौ वंध्यापुत्रविषे तथानरशृंगविषेभी तालौकिकशब्दकूं प्रमाणरूपताहोणीचाहिये ॥ और वंध्यापुत्रविषे तथानरशृंगविषे तालौकिकशब्दकूं प्रमाणरूपताहैनहीं ॥ यातैं प्रत्यक्षअनुमानप्रमाणकेअभावहुए तासंयोगसमवायविषे लौकिकशब्दकूंभी प्रमाणरूपतासंभवैनहीं ॥ और तासंयोगसमवायसंबंधविषे वैदिकशब्द प्रमाणहै यहकहणाभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? दंडपुरुषका संयोगसंबंधहोवैहै ॥ और रूपघटका समवायसंबंधहोवैहै याप्रकारकेअर्थकूंबोधनकरणेहारा कोईश्रुतिवचन वेदविषेदीखतानहीं ॥ जावैदिकवचनकरिकै तासंयोगसमवायकीसिद्धिहोवै ॥ यातैं तासंयोगसमवायविषे वैदिकशब्दकूंभी प्रमाणरूपतासंभवैनहीं ॥ और तासंयोगसमवायविषे प्रत्यक्ष अनुमान शब्द यातीनप्रमाणोंतैंभिन्नहीकोईप्रमाणहै यहचतुर्थपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? प्रत्यक्षअनुमान शब्द यातीनप्रमाणोंविषे किसीएकप्रमाणकीसहायताकूंअंगीकारकरिकैही उपमानअर्थापत्तिआदिकप्रमाण प्रवर्तहोवैहै ॥ जबी तासंयोगसमवायविषे प्रत्यक्षादिकतीनप्रमाणोंकीप्रवृत्तिनहींभई ॥ तबी तासंयोगसमवायविषे उपमानअर्थापत्तिआदिकप्रमाण किसप्रकार प्रवर्तहोवैंगे ? किंतु नहींप्रवर्तहोवैंगे ॥ हेनचिकेता ! याप्रकार आकाशादिकजडपदार्थोंविषेभी सोसंयोगसमवायसंबंध संभवैनहीं ॥ जबी आकाशादिकजडपदार्थोंविषेभी तेसंयोगसमवायसंबंध नहींसिद्धभये ॥ तबी चैतन्यस्वरूपअमूर्तआत्मादेवविषे तेसंयोगसमवायसंबंध किसप्रकारसिद्धहोवैंगे? ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! संयोगसमवायसंबंधरूपबंध ताआत्माविषे मतहोवै ॥ तथापि कोईअनिर्वचनीयसंबंधरूपबंध ताआत्मादेवविषे किसवासतेनहींहोवै? ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता ! योग्यपदार्थका किसीयोग्यपदार्थकेसाथही संबंधहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम शास्त्रविषेकथनकऱ्याहै ॥ यातैं सो अनिर्वचनीयसंबंध अनिर्वचनीयशरीरादिकोंविषेहीसंभवैगा ॥ आनंदस्वरूपअसंगआत्माविषे सोअनिर्वचनीयसंबंधभी संभवै नहीं ॥ यातैं सर्वसंबंधतैंरहितयहआत्मादेव यद्यपि पूर्वअज्ञानअवस्थाविषेभी नित्यमुक्तरूपहीथा ॥ तथापि आत्मसाक्षात्कारकरिकै ताकल्पितमायारूपबंधकेनिवृत्तहुए यहआत्मादेव पुनःविशेषकरिकै मुक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ विमुक्तश्चविमुच्यते ॥

अर्थयह ॥ विशेषकरिकैमुक्तहुआभीयहआत्मादेव आत्मसाक्षात्कारकरिकै पुनःविशेषकरिकैमुक्तहोवैहै ॥ १ ॥ इतनेंकरिकै याआत्मादेवविषे नित्यमुक्तरूपतादिखाई ॥ अब ताआवरणरहितशुद्धआत्माके प्रभावकावर्णनकरैहैं ॥ हेनचिकेता ! यहआत्मादेव आत्मसाक्षात्कारकरिकै कार्यसहितअविद्याकूं हननकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याआत्मादेवकूं हंस यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ अथवा सर्वजीवोंका बाह्यप्राणरूप जोयहसूर्यभगवान्है ॥ तासूर्यरूपकरिकै यहआत्मादेवही तीनलोकोंकूंप्रकाशकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं हंस यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ तहां श्रुति ॥ प्राणःप्रजानामुदयत्येषसूर्यः ॥ अर्थयह ॥ संपूर्णप्रजाका बाह्यप्राणरूप यहसूर्य उदयहोवैहै ॥ १ ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मादेव शुद्धहृदयविषे अथवा आकाशविषे स्थितहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं शुचिष्मत् यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और जैसे यालोकविषे पुरुषोंकूं सुवर्णादिरूप धन प्रियहोवैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माभी याजीवोंकूं अत्यंतप्रियहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं वसु यानामकरिकैकथनकरै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मादेव अंतरहृदयआकाशविषेतौ आत्मरूपकरिकै स्थितहोवैहै ॥ और बाह्यआकाशविषे सूर्यरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं अंतरिक्षसत् यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और यहआत्मादेव यज्ञकर्तायजमानकेप्रसन्नकरणेवासतै तासंस्कृतयज्ञभूमिविषे ऋत्विक्रूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं होता यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ अथवा यहआत्मादेव भोक्तारूपआत्मअग्निविषे सर्वअन्नकूं हवनकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं होता यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और यज्ञकेवेदीसमान जो मध्यछिद्रवालाहृदयहै ॥ ताहृदयविषे अथवा सूर्यमंडलविषे यहआत्मादेवही स्थितहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं वेदिषत् यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और हेनचिकेता ! यहआत्मादेवही सोमयागविषे सोमवल्लीकारसरूपकरिकै कलशविषेस्थितहोवैहै ॥ और यहआत्मादेवही श्रेष्ठगृहस्थपुरुषोंकेगृहविषे अतिथिरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ तहां जिसपुरुषकेकुलका तथागोत्रका ज्ञाननहींहोवै ॥ तथा मध्यान्हादिककालविषेआवै ॥ तथा अन्नकेप्राप्तिकीइच्छावालाहोवै ॥ तापुरुषकानाम अतिथिहै ॥ और जिनोंकेकुलगोत्रादिकों

काज्ञानहोवै ॥ ऐसेजेआचार्यऋत्विकादिकब्राह्मणहैं ॥ तिनोंकानामभी अतिथिहै ॥ और हेनचिकेता! वाकादिकइंद्रियोंविषे प्रगटभई जेनानाप्रकारकीशक्तियां हैं ॥ तथा नानाप्रकारकेसुखदुःखका जोभोक्तापणाहै ॥ तेनानाप्रकारकीशक्तियां तथा सोभोक्तापणा चैतन्यआत्मातैंविना याजडसंघातविषेसंभवैनहीं ॥ यातैं ताशक्तियोंकरिकै तथाभोक्तापणेकरिकै याशरीरविषे ताआत्मादेवकी स्थिति जानणेविषेआवैहै ॥ और हेनचिकेता! जैसे पृथिवीआदिक जलादिकोंकेआश्रितरहैहैं ॥ तैसे यहस्वयंज्योति आत्मादेवकिसीकेआश्रितरहतानहीं ॥ किंतु यहआत्मादेव आपणेस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपविषेहीस्थितहोवैहै ॥ तहांश्रुति सभूमाकस्मिन्प्रतिष्ठितःस्वेमहिम्नि ॥ अर्थयह ॥ सोव्यापकआत्मा किसविषेस्थितहोवैहै? याकारणकीशंकाकेहुए ॥ सोव्यापकआत्मा आपणेस्वप्रकाशमहिमाविषे स्थितहोवैहै याप्रकारकाउत्तर श्रुतिनें कह्याहै ॥ हेनचिकेता! सुखदुःखरूपफलकी अवश्यकरिकैप्राप्तिकरणेहारे जे पुण्यपापकर्म हैं ॥ तिनकर्मोंविषेभी यहआत्मादेवही फलरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ और हेनचिकेता! सूर्यमंडलके अंतरस्थित जोसूक्ष्मसमष्टिरूपहिरण्यगर्भ है ॥ ताहिरण्यगर्भके समष्टिबुद्धिकेअंतरस्थितजोआकाशहै तथा जीवोंके सूक्ष्मव्यष्टिबुद्धिकेअंतरस्थितजो आकाशहै ॥ ताआकाशविषेभी यहआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्माही साक्षीरूपकरिकै स्थितहोवैहै ॥ और हेनचिकेता! जलहैप्रधान जिनोंविषे ऐसेजेसूक्ष्मआकाशादिकपंचभूतहैं ॥ तिनसूक्ष्मभूतोंतैं यहआत्मादेवही पूर्व हिरण्यगर्भरूपकरिकैउत्पन्नहोवैहै ॥ और मेघरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तभई जेसूर्यकेकिरणहैं ॥ तिनसूर्यकेकिरणोंतैं यहआत्मादेवही जलरूपकरिकैउत्पन्नहोवैहै ॥ और हेनचिकेता! सुखदुःखरूपफलकेदेणेवासते सन्मुखभयेजेपुण्यपापरूपकर्म हैं ॥ तिनपुण्यपापरूपकर्मोंतैं यहआत्मादेवही सुखदुःखकी प्राप्तिकरणेहारे अनेकदेहइंद्रियादिरूपकरिकै उत्पन्नहोवैहै ॥ और पृथिवीरूपकमलका कर्णिकारूपजोसुमेरुपर्वतहै ॥ तासुमेरुपर्वततैंयहआत्मादेवही चतुराननब्रह्मारूपकरिकै उत्पन्नहोवैहै ॥ कैसाहैसोसुमेरुपर्वत? ताब्रह्मारूपगर्भकेप्रादुर्भावविषे जरायुपटकेसमानहै ॥ और यहआत्मादेवही हिमाद्रिपर्वततैं गिरिजारूपकरिकैउत्पन्नहोवैहै ॥ हेनचिकेता! याअर्थविषे हम बहुतक्याकहैं? पुण्यपापकर्मकाफलभूत जितनास्थावरजंगमरूपजगतहै ॥ सोसंपूर्णजगतब्रह्मरूपहीहै ॥ ब्रह्मतैंभिन्न कोईभीपदार्थनहींहै ॥ तहां

श्रुति ॥ सर्वंखल्विदंब्रह्म ॥ अर्थयह ॥ यहसंपूर्णजगत् ब्रह्मरूपही है ॥ इहां सर्वजगत्का जोब्रह्मकेसाथअभेदकह्या है ॥ सोबाध सामानाधिकरणकरिकैजानणा ॥ जैसे स्थाणुविषेप्रतीतभयाजोचौरहै ॥ ताचौरका स्थाणुकेसाथ बाधसामानाधिकरणकरिकैअभेद होवैहै ॥ इतनेकरिकै याआत्मादेवका सर्वात्मभावरूपप्रभाव वर्णनकऱ्या ॥ अब तिसीआत्माकेजनावणेहारे नानाप्रकारकेलिंगोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेनचिकेता! यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थितहोइकै प्राणरूपवायुकूं ऊर्ध्वलेजावैहै ॥ और अपानरूपवायुकूं नीचेलेजावैहै ॥ यातैं याशरीरविषे जोप्राणअपानवायुकाधारणहै ॥ सोधारणभी याआत्माकेजनावणेहारालिंग है ॥ और यापुरुषोंकेहृदयदेशका अंगुष्ठमात्रजोमध्यदेशहै ॥ ताकेविषेस्थितहोइकै यहआत्मादेव परिच्छिन्नकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ और याआत्मादेवकूंही संपूर्णवाकादिकदेवता आश्रयणकरैहैं ॥ और हेनचिकेता! याशरीरविषेस्थित जोआत्मादेवहै ॥ सोआत्मा देव जबी मरणकेहेतुरूपकर्मोंकरिकै याशरीरतैंबाहरिगमनकरैहै ॥ तबी ताशरीरकेस्थितिकाकारण कोईरहतानहीं ॥ काहेतैं? या आत्माकेनिर्गमनहुएतैंअनंतर सोशरीर काष्ठकीन्यांई केवलदाहकरणेयोग्यहोवैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ तामरणकालविषे या शरीरकेस्थितिकाकारणरूपचैतन्यरहतानहीं ॥ यातैं जोचैतन्य याशरीरकेस्थितिकाकारणहै ॥ सोचैतन्यही धर्मअधर्मतैंरहित अद्वि तीयब्रह्मरूपहै ॥ जोब्रह्म पूर्वतुमनैं हमारेसैंपूछाथा ॥ शंका ॥ हेभगवन्! याशरीरकेस्थितिकीकारणता जैसे चैतन्यआत्माविषे है ॥ तैसे प्राणविषेभीहै ॥ यातैं सोप्राणही आत्मरूपहै ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता! यालोकविषे कोईभीदेहधारीजीव प्राणकरि कै तथा अपानकरिकै जीवतानहीं ॥ किंतु जिसअधिष्ठानचैतन्यविषे प्राण अपान येदोनोंस्थितहोवैहैं ॥ तिसअधिष्ठानचैतन्यक रिकैही यहप्राणीजीवैहै ॥ यातैं यहप्राणअपानदोनों किसीभीप्राणिका आत्मरूपनहींहै ॥ किंतु मरणमूर्च्छादिकअवस्थावोंविषे य हप्राणअपान जिसअधिष्ठानचैतन्यविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ सोअधिष्ठानचैतन्यही सर्वजीवोंकाआत्मरूपहै ॥ तहांश्रुति ॥ न प्राणेननाऽपानेन मर्त्योजीवतिकश्चन ॥ इतरेणतुजीवंति यस्मिन्नेतावुपाश्रितौ ॥ अर्थयह ॥ कोईभीदेहधारीजीव प्राणकरिकै तथाअपानकरिकै जीवतानहीं ॥ किंतु जिसअधिष्ठानचेतनविषे यहप्राणअपानदोनों स्थितहैं ॥ तिसचेतनआत्माकरिकैही यहसंपूर्ण

प्राणी जीवतेहैं॥ १ ॥ हेनचिकेता! इतनेग्रंथकरिकै हमनैं तुमारेप्रति धर्मअधर्मतैंरहित शुद्धआत्माकाउपदेशकऱ्या॥ और पूर्वती
सरेवरविषे जोतुमनैं मरणतैं अनंतर परलोकविषे आत्माकासत्व पूछाथा॥ सोहम अबी तुमारेप्रति कथनकरतेहैं॥ तू सावधानहोइकै
श्रवणकर॥ हेनचिकेता! मरणकेप्राप्तहुए याआत्मादेवका अत्यंतअभावहोवैनहीं॥ किंतु मरणतैंअनंतर केईकजीवतौ मनुष्यादिक
जंगमशरीरोंकीप्राप्तिवासते तिनजंगमशरीरोंकेबीजभावकूंप्राप्तहोवैहैं॥ और केईकजीवतौ वृक्षादिकस्थावरशरीरोंकीप्राप्तिवासते
तिनस्थावरशरीरोंकेबीजभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तहां मनुष्यादिकजंगमशरीरोंकीप्राप्तिविषे तथावृक्षादिकस्थावरशरीरोंकीप्राप्तिविषे
दोप्रकारकेकारणहोवैहैं॥ एकतौ शरीरमनवाणीकरिकै करेहुए पुण्यपापरूपकर्म कारणहोवैहैं॥ और दूसरा पूर्वपूर्वजन्मकेज्ञानकर्म
जन्यसंस्काररूपवासना कारणहोवैहैं॥ अब पुण्यपापरूपकर्मोंविषे याशरीरोंकीकारणता निरूपणकरैहैं॥ हेनचिकेता! याजीवोंकेपा
पकर्मकीअपेक्षाकरिकै जबी पुण्यकर्म अधिकहोवैहैं ॥ तबी यहजीव मरणतैंअनंतर मनुष्यादिरूपजंगमशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और
याजीवोंके पुण्यकर्मकीअपेक्षाकरिकै जबी पापकर्म अधिकहोवैहै॥ तबी यहजीव मरणतैंअनंतर वृक्षादिरूपस्थावरशरीरोंकूंप्राप्तहोवै
है॥ तहां जंगमशरीरोंविषेभी पुण्यपापकर्मकी न्यूनअधिकताकरिकै यहजीव ब्रह्मातैंआदिलैकैकीटपर्यंत शरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्प
र्ययह॥ अधिकपुण्यकर्मवालेजीव ऊँचजंगमशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और अल्पपुण्यकर्मवालेजीव नीचजंगमशरीरोंकूं प्राप्तहोवैहैं ॥
हेनचिकेता! जिनजीवोंकेपुण्यकर्मतौ अणुकीन्यांई अत्यंतसूक्ष्महोवैहैं॥ और पापकर्मतौ पर्वतकीन्यांई अधिकहोवैहैं॥ तेजीव मर
णतैंअनंतर वृक्षादिरूपस्थावरशरीरोंकूंही प्राप्तहोवैहैं॥ जिनवृक्षादिकशरीरोंविषे केवलदुःखकीहीअधिकताहै॥ तथा जेवृक्ष गमन
आगमनादिकोंविषे स्वतंत्रतातैंरहितहैं॥ इसप्रकार पुण्यपापरूपकर्मोंकेअनुसार याजीवोंकूं ऊँचनीचशरीरोंकीप्राप्तिहोवैहै॥ अब सं
स्काररूपवासनाविषे याशरीरोंकीकारणता निरूपणकरैहैं॥ हेनचिकेता! यहदेहधारीजीव पूर्वजन्मविषे पितादिकवृद्धपुरुषोंकेमुखतैं
जिसपुण्यकर्मकूं अथवा जिसपापकर्मकूं कर्तव्यतारूपकरिकैश्रवणकरैहैं॥ तिसीपुण्यकर्मकूं अथवा पापकर्मकूं यहजीव करैहैं ॥ इसप्र
कार पुण्यपापकर्मोंकूंकरिकै तेजीव जबी मृत्युकूंप्राप्तहोवैहैं॥ तबी तेजीव तिसपुण्यपापकर्मकेअनुसारही पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवैहैं॥ ता

जन्मकूंप्राप्तहोइके यहजीव पूर्वपूर्वकर्मोंकेवासनाअनुसार पुनःपितादिकवृद्धपुरुषोंकेमुखतें श्रवणकरिकै तिसीतिसीपुण्यकर्मोंकूं अथवा पापकर्मोंकूंकरै हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जिनजीवोंनैं पूर्वलेजन्मोंविषे पापकर्मोंकाश्रवणकरिकै तिनपापकर्मोंकूंहीकऱ्याहै ॥ तिनजीवोंकूं उत्तरउत्तरजन्मोंविषेभी तिनपापकर्मोंकेश्रवणविषे तथा तिनपापकर्मोंकेकरणेविषेही प्रीतिहोवैहै ॥ और जिनजीवोंनैं पूर्वजन्मोंविषे पुण्यकर्मकाश्रवणकरिकै तिनपुण्यकर्मोंकूंहीकऱ्याहै ॥ तिनजीवोंकूं उत्तरउत्तरजन्मोंविषेभी तिनपुण्यकर्मोंकेश्रवणविषे तथा तिन पुण्यकर्मोंकेकरणेविषेही प्रीतिहोवैहै ॥ और हेनचिकेता! सर्वस्थूलप्रपंचतैं पूर्वउत्पन्नभयाजोहिरण्यगर्भभगवान्है ॥ ताहिरण्यगर्भ विषेपुण्यकर्मतौ पर्वतकेसमान अधिकरहे हैं ॥ और पापकर्मतौ केशकेअग्रकेशतभागसमान अल्परहे हैं॥ याकारणतैंही श्रुतिविषे ता हिरण्यगर्भकूंभी क्षुधाभयकीप्राप्तिकथनकरी है ॥ यातैं हिरण्यगर्भकाशरीरभी पुण्यपापदोनोंकरिकैरचितहै॥यातैं यहअर्थसिद्धभया॥ हिरण्यगर्भतैंआदिलैके वृक्षादिरूपस्थावरपर्यंत जितनायहजगत्है ॥ सोसंपूर्णजगत् याजीवोंकेपुण्यपापरूपकर्मोंतैं उत्पन्नभयाहै ॥ और तेपुण्यपापरूपकर्म पूर्वपूर्वशरीरोंतैं उत्पन्नहोवैहैं ॥ और तेपूर्वपूर्वशरीर चेतनआत्मातैंविना संभवैनहीं॥ यातैं तिनपूर्वपूर्वशरीरोंकूंधारणकरणेहारा चेतनआत्मा अवश्यअंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ हेशिष्य! इसप्रकार पुण्यपापकर्मोंतैं जोसंसारकेउत्पत्तिकावर्णन है ॥ तासंसारकेवर्णनकाभी आत्माकीसिद्धिविषेही तात्पर्यहै ॥ यातैं तासंसारकेवर्णनकरिकै सोयमराजा जन्मांतरोंविषेआत्माकेसत्ताकाकथनकरिकै तानचिकेताकेप्रति सर्वउपनिषदोंकासाररूप जीवब्रह्मकाअभेद कथनकरताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सर्वउपनिषदोंकासाररूप जोजीवब्रह्मकाअभेदहै ॥ सोअभेद तानचिकेतानैं यमराजासैं पूछानहींथा ॥ यातैं विनाहीपूछेतैं सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति जीवब्रह्मकेअभेदकाउपदेश किसवासतेकरताभया? शिष्यकेपूछेतैंविना उपदेशकरणेका शास्त्रविषे निषेधकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ नाऽपृष्टंकस्यचिद्ब्रूयात् नचाऽन्यायेनपृच्छतः ॥ जानन्नपिहिमेधावी जडवल्लोकमाचरेत् ॥ अर्थयह ॥ शास्त्रवेत्ताबुद्धिमान्पुरुष पूछेतैंविना किसीपुरुषकेप्रति शास्त्रकीवार्ता कदाचित्भीनहींकहै ॥ और जोपुरुष श्रद्धाभक्तितैं रहितहोइके केवलपरीक्षाकरणेवासतेपूछेहै ॥ अथवा आपणेबुद्धिकीचातुर्यताजनावणेवासते पूछेहै ॥ तापुरुषकेप्रतिभी सोविद्वान्

पुरुष शास्त्रकीवार्ताकदाचित्भीनहींकहै ॥ १ ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ! तानचिकेतानैं यमराजासैं यद्यपि जीवब्रह्मकाअभेद साक्षात्नहींपूछाथा ॥ तथापि तानचिकेताका जीवब्रह्मकेअभेदकाप्रश्न अर्थतैंसिद्धहोवैहै ॥ काहेतें ? पूर्व यमराजानैं तानचिकेताकेप्रति तीनवरदियेथे ॥ तहां प्रथमवरकरिकै सोनचिकेता पिताकेप्रसन्नताकूं प्राप्तहोताभया ॥ और दूसरेवरकरिकै सोनचिकेता अग्निविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तीसरेवरकरिकै संपूर्णब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकीइच्छाकरताहुआ सोनचिकेता प्रथम ताआत्मादेवकूंत्वंपदार्थरूपकरिकैपूछताभया ॥ तिसतैंअनंतर तिसीआत्मादेवकूं धर्मअधर्मादिकोंतैंरहित तत्पदार्थरूपकरिकैपूछताभया ॥ ताप्रश्नकरिकै जीवब्रह्मकेअभेदकाप्रश्नभी अर्थतैंहीप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारके तानचिकेताकेअभिप्रायकूंजाणिकरिकै सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति जीवब्रह्मकाअभेदरूप महावाक्यकाअर्थ उपदेशकरताभया ॥ अब ताउपदेशकाप्रकार निरूपणकरैहैं ॥ हेनचिकेता ! संपूर्णजीवोंकाआत्मारूप जोयहस्वयंप्रकाशचेतनपुरुषहै ॥ सोचेतनपुरुष स्वप्नअवस्थाविषे पुत्रगृहक्षेत्रादिकअनेक पदार्थोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ और तास्वप्नअवस्थाविषे श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेलयहुएभी सोआत्मादेव लयभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सोआत्मादेव सर्वअवस्थावोंविषे साक्षीरूपकरिकैजागेहै ॥ हेनचिकेता ! इसप्रकार स्वप्नकाद्रष्टारूपकरिकै जोआत्माकास्वरूपहमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ सोईहीआत्माकास्वरूप चेतनरूपहोणेतैं शुद्धस्वरूपहै ॥ तथा सोईहीआत्माकास्वरूप अद्वितीयब्रह्मस्वरूपहै ॥ तथा मोक्षरूपहै ॥ हेनचिकेता ! भूरादिक जेचतुर्दशलोकहैं ॥ तथा तिनलोकोंविषे स्थित जे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारीप्रकारकेशरीरहैं ॥ तेसंपूर्ण याआत्मादेवकेहीआश्रितहैं ॥ यातैं सर्वकाआधारहोणेतैं याआत्मादेवकूं ब्रह्मरूपतासंभवैहै ॥ और हेनचिकेता ! यासंसाररूपसमुद्रके पारकेप्राप्तिकीइच्छावाले जेमुमुक्षुजनहैं ॥ तेमुमुक्षुजन ताआत्माकेस्वरूपकूं उल्लंघनकरिकैजावैनहीं ॥ किंतु तेमुमुक्षुजन यासंसाररूपसमुद्रकेपाररूप ताआत्मादेवकूंही प्राप्तहोवैहैं ॥ काहेतें ? याआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न दूसराकोईपदार्थ मोक्षस्वरूपहैनहीं ॥ किंतु सोआनंदस्वरूपआत्माही मोक्षरूपहै ॥ अब इसीआत्माकेस्वरूपका विस्तारकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेनचिकेता ! यहएकहीआत्मादेव संपूर्णस्थूलशरीरोंविषेस्थितहै ॥ तथा संपूर्णसूक्ष्मशरीरों

विषेस्थितहै ॥ तथा सर्वदेहधारीजीवोंकाआत्मस्वरूपहै ॥ हेनचिकेता! जैसे यहअग्नि वास्तवतैंतेजरूपकरिकै यद्यपि काष्ठोंतैं विलक्षणहै ॥ तथापि तिनस्थूलकाष्ठोंविषेस्थितहुआ सोअग्नि तिसतिसकाष्ठकेसमानरूपवालाहोवैहै ॥ तैसे यहआत्मादेव यद्यपि वास्तवतैं सर्वस्थूलशरीरोंतैंविलक्षणहै ॥ तथापि देव मनुष्य असुर आदिकोंकेस्थूलशरीरोंविषेस्थितहोइकै यहआत्मादेव तिस तिसशरीरकेसमानरूपवालाहोवैहै ॥ और हेनचिकेता! जैसे सूक्ष्मसमष्टिरूपवायु व्यष्टिसूक्ष्मशरीरोंविषेस्थितहोइकै तिसतिस सूक्ष्मशरीररूपहोइकै यद्यपि प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि सोसमष्टिरूपवायु ताव्यष्टिसूक्ष्मशरीरोंतैं विलक्षणरूपकरिकैस्थितहोवै है ॥ तैसे यहआत्मादेवभी सूक्ष्मशरीरोंविषेस्थितहोइकै यद्यपि तिसतिसशरीरकेसमानआकारवालाहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ तथा पि सोआत्मादेव वास्तवतैं सत्चित्आनंदरूपहोणेतैं तिनसूक्ष्मशरीरोंतैंविलक्षणहीहै ॥ और हेनचिकेता! जैसे यहसूर्यभग वान् सर्वजीवोंकेनेत्रइंद्रियोंकादेवताहै ॥ यातैं सोसूर्यभगवान् देवतारूपकरिकै सर्वजीवोंकेनेत्रइंद्रियोंविषेस्थितहुआभी तिननेत्रइंद्रियोंकेअंधत्वादिकदोषोंकरिकै तथा स्वच्छतादिकगुणोंकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ तैसे यहआत्मादेवभी साक्षीरूपकरिकै यास्थूलसूक्ष्मशरीरोंविषे विद्यमानहुआभी तिनशरीरोंकेगुणदोषोंकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ और हेनचिकेता! जैसे बाह्यआकाशविषेस्थितहुआ यहसूर्यभगवान् दोषवालेसर्वपदार्थोंतैं भिन्नहोइकैप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे याहृदयआकाशविषे साक्षीरूप करिकैस्थितहुआ यहआत्मादेवभी शास्त्रदृष्टिकरिकै यास्थूलसूक्ष्मशरीरोंतैं भिन्नहोइकैप्रतीतहोवैहै ॥ तथा तिनस्थूलसूक्ष्मशरीरोंकेधर्मोंकरिकैभी लिपायमानहोवैनहीं ॥ और हेनचिकेता! जैसे तिसतिसदेशविषेरहणेहारे जेदेहधारीजीवहैं ॥ तिनजीवोंकूं आपणेआपणेनेत्रोंकेभेदकरिकै तथातिसतिसदेशकेभेदकरिकै एकहीसूर्य अनेकप्रकारकाप्रतीतहोवैहै ॥ परंतु ताएकसूर्यविषे जो नानापणेकाज्ञानहोवैहै ॥ सोज्ञान मिथ्यारूपहै ॥ तैसे एकहीयहस्वयंज्योतिआत्मा शरीरादिकउपाधियोंकरिकै नानाप्रकारकाप्रतीतहोवैहै ॥ परंतु ताएकअद्वितीयआत्माविषे जोनानापणेकाज्ञानहै ॥ सोज्ञान मिथ्यारूपहै ॥ हेनचिकेता! जैसे एकसूर्यविषे नानापणेकूंविषयकरणेहारे जेमिथ्याज्ञानहैं ॥ तिनमिथ्याज्ञानोंकरिकै ताएकसूर्यविषे भेदकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ तैसे एकहीआत्माविषे

नानापणेकूंविषयकरणेहारे जेज्ञानहैं ॥ तिनमिथ्याज्ञानोंकरिकै ताअद्वितीयआत्माविषे भेदकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ हेनचिकेता ! जैसे वास्तवतैं नानापणेतैंरहित सूर्यभगवान्‌विषे जोमूढबुद्धिपुरुष नानापणेकूंदेखेहै ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष लोकोंकेउपहासजन्यअनेक दुःखोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे वास्तवतैं सर्वभेदतैंरहित याआनंदस्वरूपआत्माविषे जोमूढबुद्धिपुरुष भेदकूंदेखेहै ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष वारंवार जन्ममरणादिकदुःखोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ हेनचिकेता ! ऐसाअद्वितीयआत्मादेव यद्यपि वास्तवतैं मायातैंरहितहै ॥ तथापि सोस्वतंत्रआत्मादेव आपणीमायाशक्तिकरिकै एकहीआपणेस्वरूपकूं बहुतप्रकारकाकरैहै ॥ ऐसे हृदयदेशविषेस्थित अद्वितीयआत्माकूं जेब्रह्मचर्यादिसाधनसंपन्नअधिकारीजन गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं साक्षात्कारकरैहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूंही मोक्षरूपनित्यसुखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जेपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं ताआत्मादेवकूंनहींजानैहैं ॥ तिनअज्ञानीपुरुषोंकूंतौ जन्ममरणरूपदुःखकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेनचिकेता ! यालोकविषे नित्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जेकालआकाशादिकहैं ॥ तिनकालादिकोंविषेभी यहआत्मादेव आपणीसत्तादेकरिकै नित्यतासिद्धकरैहै ॥ यातैं यहआत्मादेव नित्यपदार्थोंकाभी नित्यस्वरूपहै ॥ और यालोकविषे चैतन्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जेनेत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तथा तिनइंद्रियोंतैंउत्पन्नभई जेअंतःकरणकीवृत्तियांहैं ॥ तिनोंविषे आपणेचिदाभासकीप्राप्तिकरिकै यहआत्मादेवही चेतनताकीसिद्धिकरैहै ॥ यातैं यहआत्मादेव चेतनपदार्थोंकाभी चेतनस्वरूपहै ॥ हेनचिकेता ! जिसपरमात्मादेवकूंसाक्षात्कारकरिकै यहअधिकारीजन नित्यसुखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जोएकही परमात्मादेव सर्वजीवोंकूं मनवांछितपदार्थोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ तथा सर्वदुःखोंकीनिवृत्तिकरैहै ॥ तिसपरमात्मादेवका यहहीस्वरूपहै ॥ सोसर्वप्राणियोंकेहृदयदेशविषेस्थित स्वयंज्योतिचेतनहै ॥ तथा मनवाणीकाअविषयहै ॥ हेनचिकेता ! ऐसेअद्वितीयआत्मादेवका स्वरूपभूत जोनित्यसुखहै ॥ सोआत्मरूपनित्यसुख यद्यपि मनवाणीकाअविषयहै ॥ तथापि जेमहात्माविद्वान्‌पुरुष आपणेअनुभवविषे प्रीतिवालेहैं ॥ तेमहात्मापुरुष ताआत्मरूपसुखकूं अपरोक्षरूपकरिकैजानैहैं ॥ अब ताआत्मरूपनित्य सुखविषे वाणीकीअविषयता बोधनकरणेवासते प्रथम विषयजन्यसुखविषेभी वाणीकीअविषयता कथनकरैहैं ॥ हेनचिकेता ! या

देहधारीजीवोंविषे मिष्टअन्नकेभोजनादिकोंकरिकै उत्पन्नभयाजोसुखहै ॥ ताविषयजन्यसुखकूंभी कोईपुरुष साक्षात्वाणीकरिकैक हिसकतानहीं ॥ और जोकदाचित् तेलौकिकपुरुष ताविषयजन्यसुखका कथनभीकरैहैं ॥ तौभी हमारेकूंसुख प्राप्तभयाहै याप्रकार सामान्यरूपतें तासुखकाकथनकरैहैं ॥ परंतु इसप्रकारका हमारेकूंसुखभयाहै याप्रकार विशेषरूपकरिकै तासुखकेकहणेविषे कोई भीपुरुष समर्थहोवैनहीं ॥ किंतु तेलौकिकपुरुष ताविषयजन्यसुखकेस्वरूपविषे किसीपदार्थकीसादृश्यता आरोपणकरिकैही तावि षयजन्यसुखकाकथनकरैहैं ॥ परंतु ताविषयजन्यसुखकूं कोईपुरुष साक्षात्कहिसकतानहीं ॥ यातें यालोकविषे जितनाविषयज न्यसुखहै ॥ सोसंपूर्णसुख वाणीकरिकैकह्याजावैनहीं ॥ किंतु सोसुख आपणेअनुभवकरिकैही जान्याजावैहै ॥ हेनाचिकेता! जबी लौकिकविषयजन्यसुखभी वाणीकरिकैनहींकह्याजावैहै ॥ तबी मनुष्य मनुष्यगंधर्व देवगंधर्व पितर आजानजदेव कर्मजदेव इंद्र बृहस्पति विराट्हिरण्यगर्भ इनसंपूर्णोंविषे पूर्वपूर्वकीअपेक्षाकरिकै उत्तरउत्तर शतगुणअधिकआनंदहोवैहै ॥ तिनसंपूर्णोंविषे जो हिरण्यगर्भकूंविषयजन्यसुखहोवैहै ॥ तासुखतैंअधिकसुख किसीकूंभीहोवैनहीं ॥ किंतु सोहिरण्यगर्भकासुख सर्वविषयजन्यसुखों का अवधिरूपहै ॥ ऐसा हिरण्यगर्भकाविषयजन्यसुखभी जिसब्रह्मानंदरूपसमुद्रका एकबिंदुमात्रहै ॥ ऐसाब्रह्मानंदरूपनित्यसुख वाणीकरिकैनहींकह्याजावैहै याकेविषे क्याकहणाहै? हेनचिकेता! सोआत्मस्वरूपनित्यसुख मनवाणीका अविषयहै ॥ याकारण तैंही ब्रह्मवेत्तागुरु तथावेदकीश्रुतियां तानित्यसुखकेसाक्षात्कथनकरणेविषे नसमर्थहोइकै याअधिकारीजनोंकेप्रति तानित्यसुख कूं सामान्यतैं प्रियतमरूपकरिकै वर्णनकरैहैं ॥ हेनचिकेता! इसप्रकार प्रियतमरूपकरिकै गुरुशास्त्रनैंकथनकन्या जोआत्मरूप नित्यसुखहै ॥ तानित्यसुखकूं मैंकिसप्रकारसाक्षात् अनुभवकरौं याप्रकारकीइच्छाकरताहुआ यहअधिकारीपुरुष आपणेमनविषे या प्रकारकाविचारकरै ॥ अब ताकेविचारकानिरूपणकरैहैं ॥ ताआत्मरूपनित्यसुखकेआवरणकीनिवृत्तिकरणेहारा जोआत्माकाज्ञान है ॥ ताआत्मज्ञानकरिकैयुक्त तथाविषयोंविषे रागरूपप्रतिबंधकतैंरहित ऐसाजोमैंअधिकारीजनहूं ॥ तिसमेरेकूं सोआत्मरूपनित्य सुख यथार्थप्रतीतहोवैहै ॥ अथवा विपरीतप्रतीतहोवैहै ॥ याप्रकारकाविचार सोअधिकारीपुरुषकरै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! वाणीकी

अविषयतारूपलक्षणकरिकैही सोनित्यसुख जाननेकूंयोग्यहै ॥ यातैं ताविचारकरणेकाकछुप्रयोजननहींहै ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता ! वाणीकीअविषयतारूपविलक्षण जैसे आत्मरूपनित्यसुखविषेरहेहै ॥ तैसे विषयजन्यसुखविषेभी सोलक्षणरहेहै ॥ यातैं अतिव्याप्तिरूपदोषवाले तालक्षणतैं आत्मरूपनित्यसुखकाज्ञानहोइसकैनहीं ॥ यातैं सोआत्मरूपनित्यसुख मेरेकूं यथार्थप्रतीतहोवैहै अथवा विपरीतप्रतीतहोवैहै याप्रकारकाविचारकरणा युक्तहै ॥ किंवा कर्ता कर्म करण संप्रदान अपादान अधिकरण यहषट्प्रकारके जेकारकहैं ॥ तथा पदार्थोंका जोपरस्परसंबंधहै ॥ तथा गमनादिकजेक्रियाहैं ॥ यहसंपूर्ण जिसपदार्थविषेप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसपदार्थविषे भेदभीअवश्यहोवैहै ॥ भेदकूंछोडिकै यहकारकादिकपदार्थ रहैनहीं ॥ और जोजोपदार्थ भेदवालाहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ वस्तुपरिच्छेदवालाहोवैहै ॥ और जोजोपदार्थ परिच्छिन्नहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ मुख्यसुखरूपहोवैनहीं ॥ काहेतें ? श्रुतिनें व्यापकवस्तुकूंही सुखरूपकह्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ योवैभूमातत्सुखं ॥अर्थयह॥ जोवस्तु सर्वत्रव्यापकहै सोवस्तुही सुखरूपहोवैहै ॥१॥ किंवा जोसुख भेदवालाहोवैहै ॥ सोसुख जन्ममरणादिकविकारोंकरिकै ग्रस्तहीहोवैहै ॥ ऐसेजन्ममरणादिकविकारोंवालेसुखविषे सामान्यतैंसुखरूपताही नहींसिद्धभई ॥ तबी ताजन्मादिकविकारवालेसुखविषे सामान्यतैंसुखरूपताही नहींसिद्धभई ॥ तबी ताविषयजन्यसुखविषे परमसुखरूपता किसप्रकारसंभवैगी ? यातैं सोविषयजन्यपरिच्छिन्नसुख केवलदुःखरूपहीहै ॥ किंवा ताविषयजन्यसुखविषे जोलोकोंकूं सुखबुद्धिहोवैहै ॥ साबुद्धि भ्रांतिरूपहीहै ॥ काहेतें ? जोवस्तु आदिकालविषे तथाअंतकालविषे दुःखरूपहोवैहै ॥ सोवस्तु मध्यकालविषे सुखरूप किसप्रकारहोवैगा ? किंतु सोवस्तु मध्यकालविषेभी दुःखरूपहीहोवैहै ॥ तैसे यहविषयजन्यसुखभी जिसकालविषे यापुरुषोंकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे तिनपुरुषोंकूं इच्छाकीउत्पत्तिद्वारा दुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और जिसकालविषे यहविषयजन्यसुख नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे तेविषयजन्यसुख आपणेवियोगकरिकै तिनपुरुषोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ इसप्रकार आदिअंतकालविषे दुःखरूपहोणेतें यहविषयजन्यसुख वर्तमानकालविषेभी दुःखरूपहीहै ॥ परंतु जैसे वातरोगवालेपुरुष दुःखरूपमुष्टिकादिकोंकेप्रहारकूंभी सुखरूपकरिकमानेहैं ॥ तैसे विषयासक्तमूढपुरुषभी तादुःखरूपविषयजन्यसुख

कूं सुखरूपकरिकेमानैहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जोवस्तु पूर्वउक्तकारकादिकोंकीअपेक्षातैंविनाही विद्यमानहोवैहै ॥ सोवस्तुही परमसुखरूपहोवैहै ॥ सोऐसावस्तु यहआनंदस्वरूपआत्माही है ॥ यातैं यहआनंदस्वरूपआत्माही परमसुखरूपहै ॥ तिसतैंभिन्न यह संपूर्णअनात्मपदार्थ दुःखरूपही है ॥ ऐसाजोआत्मरूपपरमसुखहै ॥ सो स्वप्रकाशचैतन्यरूपही है ॥ और जोस्वप्रकाशरूपचैतन्यहै ॥ सोपरमसुखरूपही है ॥ इसप्रकार जबी तासुखप्रकाशका परस्पर अभेदसिद्धहोवैहै ॥ तबीही सोआत्मस्वरूपपरमसुख याजीवोंकूं सर्वदाप्रतीतहोवैहै ॥ चैतन्यरूपप्रकाशकेसंबंधतैंविना तासुखकीसर्वदाप्रतीतिसंभवैनहीं ॥ किंवा सोआत्मरूपपरमसुख जोकदाचित् जीवोंकूंनहींप्रतीतहोताहोवै ॥ तौ आपणेआत्माविषे सर्वजीवोंकी निरतिशयप्रीति नहींहोणीचाहिये ॥ और सर्वजीवोंकी आपणेआत्माविषे निरतिशयप्रीति देखणेमेंआवैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ सोआत्मरूपसुख यासर्वजीवोंकूं प्रतीतहोवैहै ॥ किंवा विषयकीप्राप्तिकालविषे मेरेकूंसुखप्रतीतहोवैहै याप्रकारकेजेज्ञान लोकोंकूंहोवैहैं ॥ तिनज्ञानोंविषे अन्यवस्तुमैंअन्यवस्तुकाआरोपणरूपअध्यासही वर्तमानहै ॥ तात्पर्ययह ॥ विषयकेसंबंधतैं उत्पन्नभईजोअंतःकरणकीवृत्तिहै ॥ तावृत्तिविषे आत्मस्वरूपसुखका आरोपणकरिकेही तेमूढलोक मेरेकूं याविषयतैंसुखप्राप्तहोवैहै याप्रकारकाकथनकरैहैं ॥ जैसे कामीपुरुषोंकूं स्त्रीकीप्राप्तिकालविषे ताकेइच्छाकीनिवृत्तिकरिकै अभिव्यक्तभयाजोस्वरूपसुखहै ॥ तासुखकूं निंदितस्त्रीकेशरीरविषेआरोपणकरिकै तेकामीपुरुष तास्त्रीकूंसुखरूपकहेहैं ॥ तहां सोआत्मरूपसुख जोकदाचित् याजीवोंकूं नहीं प्रतीतहोताहोवै ॥ तौ तासुखकाअन्यपदार्थोंविषेआरोपण नहींहोणाचाहिये ॥ और तासुखका अन्यपदार्थोंविषेआरोपणदीखताहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ सोआत्मस्वरूपसुख सर्वजीवोंकूं सर्वकालविषेप्रतीतहोवैहै ॥ और जिसकालविषे याजीवोंकूं अत्यंतदुःखहोवैहै ॥ तिसकालविषेभीतेजीव किसीसुखकूंआश्रयणकरिकेही जीवैहैं ॥ सुखतैंविना किसीभीप्राणीका जीवनहोवैनहीं ॥ हेनचिकेता ! जेविरक्तमहात्मापुरुष इसप्रकार वारंवार विचारकरैहैं ॥ तिनमहात्मापुरुषोंकूं सोमनवाणीकाअविषयरूपपरमसुख करामलककीन्याईं स्पष्टप्रतीतहोवैहै ॥ हेनचिकेता ! जैसे यालोकविषे सूर्यभगवान्केउदयहुए रात्रि निवृत्तहोइजावैहै ॥ तैसे ब्रह्मानंदरूपसूर्यकाहैउदयजिसविषे ऐसीजाब्रह्माकारवृत्तिहै ॥ ताब्रह्मा

कारवृत्तिकेउत्पन्नहुए यहसंसारदुःखरूपरात्रि निवृत्तहोइजावैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे सूर्यभगवान् उदयाचलपर्वतऊपरि आरूढहोइकै रात्रिरूपअंधकारकीनिवृत्तिकरैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्मरूपसूर्यभी अंतःकरणकीवृत्तिरूपउदयाचलपर्वतऊपरिआरूढहोइकै मायारूपअंधकारकानाशकरैहै ॥ हेनचिकेता ! ऐसेस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माकूं सूर्य चंद्रमा तारागण विद्युत्‌अग्नि इत्यादिकतेज प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ किंतु उलटा सोस्वयंज्योतिआत्मादेवही तिनसूर्यादिकोंकूंप्रकाशकरैहै ॥ हेनचिकेता ! जैसे स्वभावतैंअप्रकाशरूप लोहकापिंड प्रकाशमानअग्निकूंआश्रयणकरिकै पश्चात् प्रकाशमानहोवैहै ॥ तैसे यहजडचेतनरूपजगतभीताप्रकाशरूपआत्माकूंआश्रयणकरिकैही पश्चात् प्रकाशमानहोवैहै ॥ और हेनचिकेता! जैसे स्वभावतैंप्रकाशशक्तितैंरहित जेतैलबतीआदिकपदार्थहैं ॥ ते तैलबतीआदिकपदार्थ दीपशिखाकेप्रकाशतैंअनंतरही प्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे स्वभावतैंप्रकाशशक्तितैंरहित जितनाबुद्धिआदिकजगत्‌है ॥ सोसंपूर्णजगत्‌भी स्वयंज्योतिआत्माकेप्रकाशतैंअनंतरही प्रतीतहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! जोपदार्थ अप्रकाशमानहोवैहै ॥ सोपदार्थही आपणेप्रकाशवासते दूसरेप्रकाशकीअपेक्षाकरैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ अप्रकाशमानहै ॥ यातैं तेघटादिक आपणेप्रकाशवासते सूर्यादिकप्रकाशोंकीअपेक्षाकरैहै ॥ और यहसूर्यादिकतेजतौ आपहीप्रकाशरूपहैं ॥ यातैं तिनसूर्यादिकतेजोंकूं दूसरेकिसीप्रकाशकीअपेक्षासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता ! एकप्रकाशकूं दूसरेप्रकाशकीअपेक्षानहींहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम सर्वत्रसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ? जैसे तेजरूपजोचक्षुइंद्रियहै ॥ सोचक्षुइंद्रिय सूर्यरूपतेजकीअपेक्षाकरिकैही घटादिकपदार्थोंकूंप्रकाशकरैहै ॥ तैसे यहसूर्यादिकतेजभी तास्वयंज्योतिआत्माकीअपेक्षाकरिकैही पदार्थोंकूंप्रकाशकरैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जडतेजरूपकरिकै सूर्यकेसमानजातिवालाजोचक्षुइंद्रियहै ॥ सोचक्षुइंद्रियभी जबी घटादिकपदार्थोंकेप्रकाशकरणेवासते सूर्यादिरूपजडतेजकीअपेक्षाकरैहै ॥ तबी जडरूपकरिकै चैतन्यआत्मातैंविलक्षण जेसूर्यादिकतेजहैं ॥ तेसूर्यादिकजडतेज आपणेव्यवहारकीसिद्धिवासते चैतन्यरूपप्रकाशकीअपेक्षाकरैहैं याकेविषेक्याकहणाहै ! इतनेंकरिकै ताअद्वितीयआत्मरूपब्रह्मविषे स्वयंज्योतिरूपता निरूपणकरी ॥ अब तिसीस्वयंज्योतिब्रह्मकूं यासंसारकामूलकारणरूपकरिकै वर्णनकरैहैं ॥ हेनचिके

ता! जोसंसाररूप यहस्थूलशरीर पूर्वहमनैं तुमारेप्रति एकादशद्वारवालापुररूपकरिकैवर्णनकर्‌याथा ॥ तिसीस्थूलशरीरकूं कोईकवे दवेत्तामहात्मापुरुष अश्वत्थवृक्षरूपकरिकैवर्णनकरैहैं ॥ हेनचिकेता! पूर्वहमनैं तुमारेप्रति जोब्रह्म जगत्‌काकारणरूपकरिकै तथा स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपकरिकै तथामोक्षरूपकरिकै वर्णनकर्‌याथा ॥ सोईहीब्रह्म याशरीररूपअश्वत्थवृक्षका मूलरूपहै ॥ हेनचिके ता! जोवस्तु दूसरेदिनविषैस्थितनहींहोवै तावस्तुकानाम अश्वत्थहै ॥ सोयाप्रकारका अश्वत्थशब्दकाअर्थ याशरीरविषेभीघटैहै ॥ काहेतें? याशरीरके एकक्षणपर्यंतस्थितिविषेभी बुद्धिमान्‌पुरुषोंकूं विश्वासहोवैनहीं तौ दूसरेदिनपर्यंत यहशरीर स्थिररहैगा याके विषे तिनबुद्धिमान्‌पुरुषोंकूं किसप्रकारविश्वासहोवैगा? याकारणतें श्रुतिभगवती यास्थूलशरीरकूं अश्वत्थ यानामककरिकैकथन करैहै ॥ हेनचिकेता! याशरीररूपवृक्षकामूलरूप जोकारणब्रह्महै ॥ ताकारणब्रह्मरूपमूलकीअपेक्षाकरिकै याशरीररूपअश्वत्थवृक्ष कीशाखा नीचेहोवैहैं ॥ तहां पुण्यपापकर्मरूपस्कंधोंतें उत्पन्नभयेजेनानायोनियोंकेशरीरहैं ॥ तथा नेत्रादिकइंद्रियोंकेसहित जे सू क्ष्मशरीरहैं ॥ यहसंपूर्ण ताशरीररूपअश्वत्थवृक्षकीशाखारूपहैं ॥ और हेनचिकेता! जैसे यहलोकप्रसिद्धवटादिकवृक्ष यद्यपि स्व रूपतैंअनित्यहैं ॥ तथापि तिनवटादिकोंकेबीजतैंअंकुरहोवैहै ॥ और ताअंकुरतैंपुनःबीजहोवैहै ॥ ताबीजतैंपुनःअंकुरहोवैहै ॥ याप्रका र बीजअंकुरोंकेप्रवाहरूपकरिकै तेवटादिकवृक्ष नित्यरूपहैं ॥ तैसे यहशरीररूपअश्वत्थवृक्षभी यद्यपि स्वरूपतैंअनित्यहीहै ॥ तथा पि ताशरीरतैं पुण्यपापकर्मोंकीउत्पत्ति और तापुण्यपापकर्मोंतैं पुनःशरीरकीउत्पत्ति याप्रकारकेप्रवाहरूपकरिकै यहशरीररूपअ श्वत्थवृक्ष नित्यरूपहीहै ॥ हेनचिकेता! याशरीररूपअश्वत्थवृक्षका जोब्रह्मरूपमूलहै ॥ तिसीब्रह्मविषे यहसंपूर्णलोकस्थितहोवैहै ॥ और तिसीब्रह्मकूं कोईपुरुष उल्लंघनकरिसकैनहीं ॥ ऐसेअधिष्ठानरूपब्रह्मकेज्ञानतैंही याशरीररूपअश्वत्थवृक्षकानाशहोवैहै ॥ औ र जोपूर्वतुमनैं धर्मअधर्मतैंरहितवस्तुपूछाथा ॥ सोभी यहआनंदस्वरूपब्रह्महीहै ॥ और हेनचिकेता! यहसंपूर्णजगत् जिसकारण रूपपरमात्माविषेस्थितहोइकै आपणेआपणेव्यापारविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ और जिसपरमात्मादेवतैं यहसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ सोई हीपरमात्मादेव मृत्युरूपहोइकै यासर्वजगत्‌कासंहारकरैहै ॥ याकारणतैं इंद्रकेवज्रकीन्यांई सोपरमात्मादेवही संपूर्णदेहाभिमानी

जीवोंकेभयकाकारणहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मरूपकरिकै साक्षात्कारकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही मो
क्षरूपअमृतभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेनचिकेता ! तापरमात्मादेवकूं आपणाआत्मरूपजाणिकरिकै यहअधिकारीपुरुष अमृतभावकूं
प्राप्तहोवैहैं ॥ याकहणेकायहअभिप्रायहै ॥ जैसे यहअग्नि यद्यपि आपणेतैंभिन्नकाष्ठादिकपदार्थोंकूं दग्धकरैहै ॥ तथापि सोअग्नि
आपणेकूंदग्धकरैनहीं ॥ तैसे सोपरमात्मादेव यद्यपि मृत्युरूपहोइकै सर्वजगत्कूंनाशकरैहै ॥ तथापि आपणाआत्मरूप जेब्रह्मवे
त्तापुरुषहैं ॥ तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं सोपरमात्मादेव नाशकरैनहीं ॥ याकारणतैं तेब्रह्मवेत्तापुरुष अमृतरूपहैं ॥ अब तापरमात्मादे
वविषे सर्वलोकोंकेभयकीकारणता निरूपणकरैहैं ॥ हेनचिकेता ! यातीनलोकोंविषे यहसूर्यभगवान् तथाअग्नि जोप्रकाशकरै
हैं ॥ तथा तप्तकरैहैं ॥ सोभी तापरमात्मादेवकीभयतैंकरैहैं ॥ और यालोकविषे इंद्रदेवता जोवर्षाकरैहै ॥ सोभी तापरमात्मादेवकीभ
यतैंहीकरैहै ॥ और यालोकविषे यहवायु जोचलायमानहोवैहै ॥ सोभी तापरमात्मादेवकीभयतैंही चलायमानहोवैहै ॥ और सूर्य अ
ग्नि इंद्र वायु याचारोंकीअपेक्षाकरिकै पंचमाजोमैंमृत्युहूं ॥ सोमैंमृत्यु जोजीवोंकेशरीरतैंप्राणोंकूंहरणकरताहूं ॥ सोभी तापरमात्मादेव
कीभयतैंहीकरताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ सूर्य अग्नि इंद्र वायु यमराजा इत्यादिकमहान्देवताभी जबी तापरमात्मादेवतैं भयकूंप्राप्तहोवै
हैं ॥ तबी दूसरेजीव तापरमात्मादेवतैंभयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याकेविषेक्याकहणाहै ? हेनचिकेता ! ताभयकेनिवृत्तिकाउपाय एकआत्म
ज्ञानहीहै ॥ आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईउपाय ताभयकेनिवृत्तिकाहैनहीं ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं तामृत्युतैंभयहोताहोवै ॥ ति
सअधिकारीपुरुषनैं इसीजन्मविषे ताआत्मसाक्षात्कारकूंसंपादनकरणा ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ मृत्योर्बि
भेषिकिंमूढ भीतंमुंचतिकिंयमः ॥ अजातंनैवगृह्णाति कुरुयत्नमजन्मनि ॥ अर्थयह ॥ हेमूढपुरुष ! तू मृत्युतैंभय किसवासते
करताहै ? भयकरणेहारेपुरुषकूं सोयमराजा क्याछोडिदेवैगा ? किंतु नहींछोडेगा ॥ काहेतें ? याजगत्विषे जिसजीवकाजन्महोवैहै ॥
तिसजीवकूं सोयमराजा कदाचित्भीनहींछोडता ॥ और याजगत्विषे जिसजीवकाजन्मनहींहोवैहै ॥ तिसजीवकूं सोयमराजा ग्रह
णकरतानहीं ॥ यातैं जोतुमारेकूं तामृत्युतैंभयहोताहोवै तौ तू ऐसायत्नकर ॥ जिसकरिकै तुमारेकूं पुनःजन्मकीप्राप्तिनहींहोवै ॥ १ ॥

हेनचिकेता! याभरतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकैभी जिनपुरुषोंकूं याशरीरकेमरणतैंपूर्व आत्माकासाक्षात्कार नहींप्राप्तभया ॥ तेअज्ञानीपुरुष आपणेपुण्यपापकर्मोंकेअनुसार भूमिआदिकसर्वशुभअशुभलोकोंविषे नानाप्रकारकेऊचनीचशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ कैसेहैंतेसर्वशरीर? मृत्युकेभयकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा अनेकप्रकारकेदुःखोंकरिकैयुक्तहैं॥ और हेनचिकेता! जैसे शुद्धदर्पणविषे यहमुख स्पष्टप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे विवेकादिकसाधनचतुष्टयसंपन्न याअधिकारीशरीरविषे अंतर्मुखशुद्धबुद्धिविषे यहआत्मादेव स्पष्टप्रतीतहोवैहै ॥ और जैसे स्वप्नअवस्थाविषे याजीवोंकूं आपणेआत्माकास्वरूप स्पष्टप्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे स्वर्गलोकविषे रमणीकभोगोंकेआसक्तिवालीबुद्धिविषे यहआत्मादेव स्पष्टप्रतीतहोवैनहीं ॥ और हेनचिकेता! जैसे वास्तवतैं कंपादिकधर्मोंतैंरहित जोमुखहै ॥ सोमुख कंपायमानजलविषे कंपादिकविपरीतधर्मवालाहुआप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे गंधर्वलोकविषे भी भोगासक्तपुरुषोंकूं यहआत्मादेव विपरीतरूपकरिकैही प्रतीतहोवैहै ॥ इसप्रकार दूसरेलोकोंविषेभी यहआत्मादेव यथार्थरूप करिकै प्रतीतहोवैनहीं ॥ हेनचिकेता! तिनगंधर्वादिकलोकोंविषे रहणेहारेपुरुष विषयभोगोंविषे अत्यंतआसक्तहोवैहैं ॥ यातैं तिनपुरुषोंकूं जोकदाचित् आत्माकाज्ञान होवैभीहै तौभी विषयासक्तिरूपप्रतिबंधककेवशतैं सोज्ञान आत्माकेवास्तवस्वरूपकूं विषयकरैनहीं ॥ याकारणतैं ताज्ञानकरिकै तिनपुरुषोंके अविद्याकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं स्वर्गादिकलोकोंविषे आत्मज्ञानके प्राप्तिकीइच्छाकरिकै याअधिकारीपुरुषोंनैं इहां पुरुषार्थतैंरहितनहींहोणा ॥ और हेनचिकेता! जैसे छाया तथाआतप येदोनों भिन्नभिन्नहोइकैप्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे ब्रह्मलोकविषे यद्यपि याजीवोंकूं सोआत्मादेव देहादिकोंतैंभिन्नरूपकरिकै स्पष्टप्रतीत होवैहै ॥ तथापि सोब्रह्मलोक बहुतकालपर्यंत उपासनाकरिकै याजीवोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं सोब्रह्मलोक अत्यंत दुर्लभ है ॥ यातैं ताब्रह्मलोकविषे आत्मज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छाकरिकै याअधिकारीपुरुषोंनैं इहां आत्मज्ञानकेयत्नकूं शिथिलनहींकरणा ॥ किंतु जिसपुरुषकूं मोक्षरूपसुखकीइच्छाहोवै ॥ तिसपुरुषनैं याभरतखंडविषेगुरुशास्त्रादिकसाधनसंपन्न याअधिकारीमनुष्यशरीरविषेही आत्माकेसाक्षात्कारकूंसंपादनकरणा ॥ हेनचिकेता! ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिविषे दोप्रकारकेसाधनहोवैहैं ॥ तहां

एकतौ विचाररूपसांख्य साधनहै ॥ और दूसरा इंद्रियादिकोंकानिग्रहरूपयोगसाधनहै ॥ तहां प्रथम तासांख्यसाधनकूं तू श्र
वणकर ॥ आकाशादिकपंचभूतोंतें भिन्नभिन्नकरिकैउत्पन्नभयेजे आपणेआपणेव्यापारसहित श्रोत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तिनश्रोत्रादि
कइंद्रियोंकूं जोचैतन्य आपणेस्वरूपतें तथापरस्पर भिन्नकरिकैजानैंहै ॥ सोबुद्धिकासाक्षीरूपचैतन्य याअधिकारीपुरुषोंकूं आपणा
आत्मारूपकरिकै जानणेयोग्यहै और जेअधिकारीपुरुष ताचैतन्यरूपसाक्षीकूंही आपणाआत्मारूपकरिकैमानैंहैं ॥ तथा सर्वदृश्य
प्रपंचकूं ताआत्माविषेकल्पितमानैंहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही सर्वशोकोंतैंरहितहोवैंहैं ॥ तथा तेअधिकारीपुरुषही शास्त्रकेतात्पर्य
जानणेहारेविद्वान्हैं ॥ और हेनचिकेता! पूर्वहमनें तुमारेप्रति जोआत्मादेव कारणतैंरहित अजरूपकरिकैकथनकऱ्याथा ॥ सोपर
मात्मादेव श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंतें तथा तिनोंकेज्ञानरूपव्यापारोंतें परे साक्षीरूपकरिकैस्थितहै ॥ तथा सोईहीआत्मादेव वा
कादिकपंचकर्मइंद्रियोंतें तथा तिनोंकेक्रियारूपव्यापारोंतें परे साक्षीरूपकरिकैस्थितहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैं
हैं ॥ हेनचिकेता! विशेषरूपवालेश्रोत्रादिकइंद्रियोंतें सामान्यरूपवालामन परहै ॥ और तासविकल्परूपमनतें निर्विकल्परूप
बुद्धि परहै ॥ और तानिर्विकल्परूपव्यष्टिबुद्धितें समष्टिबुद्धि परहै ॥ और तासमष्टिबुद्धितें अव्याकृत परहै ॥ और ताअव्याकृत
तें सर्वांतर्यामीपुरुष परहै ॥ कैसाहैसोअंतर्यामीपुरुष? स्थूलप्रपंचरूपकार्यतैंरहितहै ॥ तथा सूक्ष्मप्रपंचरूपकारणतैंरहितहै ॥ औ
र जिसपरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूपजानिकै यहअधिकारीपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा अमृतभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेनचि
केता! यापरमात्मादेवविषे कार्यसहितअविद्याकीनाशरूपताहै ॥ याकारणतें शास्त्रवेत्तापुरुष यापरमात्मादेवकूं मोक्षरूपकहेहैं ॥
और यापरमात्मादेवविषे भासमानआनंदरूपताहै ॥ याकारणतें शास्त्रवेत्तापुरुष यापरमात्मादेवकूं अमृतरूपकहेहैं ॥ हेनचिके
ता! यद्यपि मोक्षशब्दकाअर्थ तथाअमृतशब्दकाअर्थ येदोनों परस्पर अभिन्नहै ॥ तथापि कार्यसहितअविद्याकेनाशरूपनिमि
त्तकूं अंगीकारकरिकै तथापरमानंदतारूपनिमित्तकूं अंगीकारकरिकै तेविद्वान्पुरुष तामोक्षअमृतदोनोंका किंचित्कल्पितभेद अं
गीकारकरैंहैं ॥ इतनैंकरिकै विचाररूपसांख्यउपायका वर्णनकऱ्या ॥ अब इंद्रियादिकोंकेनिरोधरूप योगसाधनकानिरूपणकरैंहैं ॥

प्रमादकेविद्यमानहुएभी सोयोग प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं जोअधिकारीपुरुष तिनमनबुद्धिसहितइंद्रियोंकेनिरोधकरिकै तथाप्रमादतैं रहितहोइकै ताअभेदज्ञानरूपयोगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष परमेश्वरकीन्यांई याजगत्केउत्पत्तिसंहारकरणेविषेभीसमर्थ होवैहै ॥ हेनचिकेता ! तायोगरूपउपायतैंविना यहआत्मादेव मनवाणीकरिकै तथा श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै प्राप्तहोइसकैनहीं ॥ किंतु ताएकयोगरूपउपायकरिकैही यहआत्मादेव प्राप्तहोवैहै ॥ हेनचिकेता ! यहआनंदस्वरूपआत्मा जैसे तायोगरूपउपायकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे श्रद्धारूपउपायकरिकैभी यहआत्मादेव प्राप्तहोवैहै ॥ तहां वेदबाह्यनास्तिकोंकेविकल्पोंकापरित्यागकरिकै सद्गुरुशास्त्रकेउपदेशविषेविश्वासराखिकै जोआनंदस्वरूपआत्माकेसत्ताका निश्चयकरणाहै याकानाम श्रद्धाहै ॥ हेनचिकेता ! भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषे मनवाणीकाविषयरूपकरिकैप्रसिद्ध जितनेस्थूलसूक्ष्मपदार्थहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ मायाविशिष्टपरमात्मास्वरूपहैं ॥ और मनवाणीकाअविषय जोशुद्धचैतन्यहै ॥ सो सत्यरूपहीहै ॥ याप्रकारकेवचनोंकूंकथनकरणेहारे जेआस्तिकपुरुषहैं ॥ तिनआस्तिकपुरुषोंकेमतकापरित्यागकरिकै जेबहिर्मुखपुरुष वेदबाह्यनास्तिकोंकेमतविषेश्रद्धाकरैहैं ॥ तिन बहिर्मुखपुरुषोंकूं आत्माकेवास्तवस्वरूपकासाक्षात्कारहोवैनहीं ॥ यातैं आत्मसाक्षात्कारकीइच्छावालेपुरुषनैं तिननास्तिकोंकेमतकापरित्यागकरिकै तिनआस्तिकपुरुषोंकेमतविषेहीश्रद्धाकरणी ॥ हेनचिकेता ! यद्यपि यहआत्मादेव सत्वरूपधर्मतैंरहितहै ॥ यातैं सत्शब्दकरिकैभी कथनकऱ्याजावैनहीं ॥ और यहआत्मादेव सर्वजगत्केव्यवहारकूंसिद्धकरैहै ॥ यातैं असत्शब्दकरिकैभी कथनकऱ्याजावैनहीं ॥ तथापि ताआत्मादेवकेदर्शनविषे शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं याप्रकारकाक्रम कथनकऱ्याहै ॥ यहअधिकारीपुरुष प्रथम ताआत्मादेवकूं जगत्कीकारणतारूप सत्त्वरूपकरिकैदेखै ॥ तिसतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष तिसीआत्मादेवकूं तत्त्वभावरूपशुद्धस्वरूपकरिकैदेखै ॥ इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष ताआत्मादेवकूं अस्तिरूपकरिकै तथातत्त्वभावरूपकरिकैदेखैहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकेअंतःकरणविषे ताअस्तिरूपआत्माका तत्त्वभावरूपशुद्धस्वरूप आविर्भावहोवैहै ॥ हेनचिकेता ! निरतिशयप्रीतिकाविषयहोणेतैं परमआनंदस्वरूप जोआत्मादेवहै ॥ ताआत्मादेवविषे अस्तिरूपताहीहै ॥ नास्तिरूपता कदाचित्भीनहींहै ॥ यातैं

हेनचिकेता! यास्वयंज्योतिआत्मादेवकास्वरूप नेत्रादिकइंद्रियजन्यज्ञानविषे विषयभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं याआनंदस्व रूपआत्मादेवकूं कोईभीपुरुष नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकैदेखिसकैनहीं ॥ काहेतें? यालोकविषे जोपदार्थ रूपस्पर्शादिकगुणोंवालाहो वैहै ॥ तापदार्थकूंही यहनेत्रादिकइंद्रिय ग्रहणकरैंहैं ॥ रूपादिकगुणोंतैंरहितपदार्थकूं यहनेत्रादिकइंद्रिय ग्रहणकरैनहीं ॥ और य हआनंदस्वरूपआत्माभी रूपस्पर्शादिकगुणोंतैंरहित निर्गुणस्वरूपहै ॥ यातैं यानिर्गुणआत्मादेवकूं तेनेत्रादिकइंद्रिय ग्रहणकरिस कैंनहीं ॥ यहवार्ता पूर्वहमनैं तुमारेप्रति कथनकरीहै ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष तिननेत्रादिकइंद्रियोंकेनिरोधरूपयोगकरिकै ताप रमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरै ॥ कैसाहैसोयोग? संकल्पसहितमनकूंवशकरणेहारी जोअंतर्मुखशुद्धबुद्धिहै ॥ ताशुद्धबुद्धिकरिकै याआनंदस्वरूपआत्माविषे किंचित्‌मात्रभी दृश्यपदार्थका नसंकल्पकरिकै जायोगकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ ऐसेयोग रूपउपायकरिकै जेअधिकारीपुरुष ताआनंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरैंहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही अमृतभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेनचिकेता! जिसकालविषे याअधिकारीपुरुषोंके श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथामनबुद्धि आपणेचंचलताकूंछोडिकै निश्चलभा वकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसकालविषे तिनोंकेनिश्चलताकूं विद्वानूपुरुष परमगति यानामकरिकैकथनकरैंहै ॥ हेनचिकेता! मनबुद्धि इंद्रियोंकी जोनिरंतरएकाग्रताहै ॥ ताएकाग्रतारूपअवस्थाकीप्राप्तिकेसमान कोईदूसरीअधिकगतिनहींहै॥ किंतु ताएकाग्रतारूपअ वस्थाकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं स्वयंज्योतिआत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ जिसआत्मसाक्षात्कारकरिकै यहअधिकारीपुरुष किंचि त्‌मात्रभीसंसारदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ याकारणतैं सामनबुद्धिइंद्रियोंकीएकाग्रताही परमगतिरूपहै॥ हेनचिकेता! नानाप्रकारकेवि घ्नोंकरिकैभी नहींचलायमानभई जोमनबुद्धिइंद्रियोंकीएकाग्रतारूपधारणाहै ॥ ताधारणाकूं विवेकीपुरुष योग यानामकरिकैकथन करैंहैं ॥ और सोयोगही ब्रह्मभावकीप्राप्तिद्वारा याजगत्‌केउत्पत्तिसंहारकरणेकीसामर्थ्यरूप ऐश्वर्यकेप्राप्तिकाकारणहै ॥ यातैं ता योगकेप्राप्तिवासते तू प्रमादतैंरहितहोइकै सावधानहोवै ॥ और हेनचिकेता! मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारका जोजीवब्रह्मकाअभेदज्ञा नरूपयोगहै ॥ सोयोग ताइंद्रियोंकीएकाग्रतारूपधारणातैंविनाहोवैनहीं ॥ तथा कामसंकल्पादिकचित्तकेवृत्तियोंकीउत्पत्तिरूप

ताआत्मादेवविषे जोअस्तिरूपताहै ॥ साअस्तिरूपता तातत्त्वभावतेंभिन्ननहींहै ॥ किंतु साअस्तिरूपता तत्त्वभावरूपहीहै ॥ हेन चिकेता! जोआत्मादेव नास्तिरूपताकूंभी सिद्धकरैहै ॥ ताआत्मादेवकूं नास्तिरूपकहणा संभवैनहीं ॥ और यहसंपूर्णदृश्यप्रपंच जडरूपहै ॥ यातें तादृश्यप्रपंचकी स्वतःसिद्धिहोवैनहीं ॥ किंतु ताद्रष्टाआत्माकेअनुग्रहतेंही ताजडप्रपंचकीसिद्धिहोवैहै ॥ ऐसास र्वप्रपंचकूंसत्तादेणेहारा यहअस्तिरूपआत्मादेव गौणअस्तिरूपताकरिकै सिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु सोआत्मादेवही मुख्यअस्तिरूपहै ॥ ताआत्मादेवकेअस्तिरूपताकूंअंगीकारकरिकैही दूसरेअनात्मपदार्थ अस्तिरूपकरिकैप्रतीतहोवैहैं ॥ जैसे गुडकेमधुरताकूंअंगीका रकरिकैही चणकादिकअन्न मधुरप्रतीतहोवैहैं ॥ हेनचिकेता! यालोकविषे जिसपुरुषका जैसावास्तवस्वरूपहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं तिसीवास्तवस्वरूपकरिकै जोपुरुष देखैहै तथा कथनकरैहै ॥ तिसपुरुषऊपरि सोपुरुष प्रसन्नहोवैहै ॥ जैसे महाराजाकूं जोपुरुष महाराजारूपकरिकैदेखैहै ॥ तथा कथनकरैहै ॥ तिसपुरुषऊपरि सोमहाराजा प्रसन्नहोवैहै ॥ तथा तापुरुषकूं सोमहाराजा सुखकी प्राप्तिकरैहै ॥ तैसे अस्तिरूपआत्मादेवकूं जोपुरुष अस्तिरूपकरिकैदेखैहै ॥ तथा अस्तिरूपकरिकैकथनकरैहै ॥ तिसपुरुषऊपरि यहआत्मादेव प्रसन्नहोवैहै ॥ तथा तापुरुषकूं यहआत्मादेव मोक्षरूपनित्यसुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ और जैसे तामहाराजाकूं जोमू ढपुरुषकूं महाराजारूपकरिकै नहींदेखैहै ॥ तथा महाराजारूपकरिकै नहींकथनकरैहै ॥ किंतु तामहाराजाकूं मृत्युरूपकरिकैदेखै है ॥ तथा मृत्युरूपकरिकै कथनकरैहै ॥ तिसपुरुषऊपरि सोमहाराजा प्रसन्नहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा सोमहाराजा क्रोधवान्होइ कै तामूढपुरुषकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे अस्तिरूप याआत्मादेवकूं जोमूढपुरुष अस्तिरूपकरिकै नहींदेखैहै ॥ तथा अस्तिरू पकरिकै नहींकथनकरैहै ॥ किंतु याआत्मादेवकूं नास्तिरूपकरिकैदेखैहै ॥ तथा नास्तिरूपकरिकै कथनकरैहै ॥ तिसमूढपुरुषऊप रि यहआत्मादेव प्रसन्नहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा यहआत्मादेव ताविपरीतदर्शीपुरुषकूं जन्ममरणादिकदुःखोंकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ यातें जिसअधिकारीपुरुषकूं सुखकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तिसअधिकारीपुरुषनें याआत्मादेवकूंअस्तिरूपकरिकैही जानणा ॥ तथा अस्तिरूपकरिकैही कथनकरणा ॥ और हमअधिकारीजनोंकेप्रति शास्त्रवेत्ताविद्वान्पुरुषोंनें प्रथम आत्माकेअस्तिरूपकाउपदेश

करिकै पश्चात् ताआत्माकेतत्त्वभावकाउपदेशकऱ्याहै ॥ यातैं तातत्त्वभावरूपकरिकैदेख्याहुआ यहआत्मादेव हमअधिकारीजनोंऊपरि अवश्यप्रसन्नहोवैगा ॥ शंका ॥ हेभगवन्! तातत्त्वभावरूपकरिकै याआत्मादेवकेदर्शनतैं याअधिकारीपुरुषोंकूं किसफलकीप्राप्तिहोवैहै? ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता! याजीवकेहृदयविषेस्थितजेकामहैं ॥ तेसंपूर्णकाम जिसकालविषेनिवृत्तहोवैंहैं ॥ तिसकालविषे यहजीव अमृतभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा इसीशरीरविषे ब्रह्मरूपनित्यसुखकूंअनुभवकरैहै ॥ यहही तातत्त्वदर्शनकाफलहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैनिरूपणकरैंहैं ॥ हेनचिकेता! याजीवोंकेहृदयविषेस्थित जोइसलोकके विषयजन्यसुखोंकारागहै ॥ तथा स्वर्गादिकलोकोंकेविषयजन्यसुखोंकारागहै ॥ तिसरागकानाम कामहै ॥ ऐसेरागरूपकामोंकूं तत्त्वभावरूपकरिकैदेख्याहुआ यहआत्मादेव आपणा सौंदर्यतातैंनाशकरैहै ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे रूपयौवनअवस्थाकरिकैयुक्त कामिनी आपणीसौंदर्यतातैंकामीपुरुषोंके अन्यस्त्रीविषेरागकूं नाशकरैहै ॥ और जैसे अग्निविषेतपायाहुआ जोसुगंधिवालानवीनगौकाघृतहै ॥ सोगौकाघृत आपणीसौंदर्यताकरिकै यापुरुषोंके तैलविषेरागकूं नाशकरैहै ॥ तैसे तत्त्वभावरूपकरिकैदेख्याहुआ यहआनंदस्वरूपस्वयंज्योति आत्मादेवभी आपणीसौंदर्यतातैं याजीवोंके विषयसुखविषेरागकूं शीघ्रही नाशकरैहै ॥ हेनचिकेता! याजीवोंका जोविषयजन्य सुखविषेरागरूपकामहै ॥ सोकामही याजीवोंकामरणहै ॥ और ताकामरूपमरणकूंअंगीकारकरिकैही याजीवोंकूं शास्त्रविषे मर्त्य यानामकरिकैकथनकरैंहैं ॥ तारागरूपकामकेनिवृत्तहुए यहजीव मर्त्यभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु जीवत्अवस्थाविषेही ॥ सोपुरुष अमरभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेनचिकेता! शास्त्रकेतात्पर्यकूंजानणेहारे विद्वान्पुरुष यास्थूलशरीरकेनाशकूं मरणकहैंनहीं ॥ किंतु सर्वदुःखोंकीप्राप्तिकरणेहारा जोयहरागरूपकामहै ॥ ताकामकूंही तेविद्वान्पुरुष मरणकहैंहैं ॥ ताकामरूपमरणकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर अमरभावकूंप्राप्तहुआयहपुरुष सर्वदुःखोंतैंरहितजीवनकूं किसवासतेनहींप्राप्तहोवैगा? किंतु ताजीवनकूं अवश्यप्राप्तहोवैगा ॥ और हेनचिकेता! आनंदस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारहुए यहअधिकारीपुरुष किसवासतेब्रह्मरूपनहींहोवैगा? किंतु आत्मसाक्षात्कारकेहुए यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मरूपअवश्यहोवैहै ॥ और सोब्रह्म सर्वदुःखोंतैंरहितहै ॥ यातैं ताब्रह्मकेसाथ अभेदभावकूं

प्राप्तहुआयहजीवात्माभी सर्वदुःखोंतैंरहितहोवैहै ॥ और हेनचिकेता ! याजीवत्कालविषे याआनंदस्वरूपआत्माका जोसाक्षात्कारहै ॥ सोसाक्षात्कारही ताब्रह्मकीप्राप्तिहै ॥ और अन्यवस्तुकेज्ञानकरिकै अन्यवस्तुकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातें यहआत्मादेव ताब्रह्मतैंभिन्ननहींहै ॥ किंतु यहआत्मादेव ब्रह्मरूपहीहै ॥ और जोकदाचित् सोब्रह्म आत्मातैंभिन्नहोवैगा तौ एकमेवाद्वितीयंब्रह्म याश्रुतिविषे जोब्रह्मकीअद्वितीयरूपताकथनकरीहै ॥ सो असंगतहोवैगी ॥ यातें सोब्रह्म आत्मरूपहीहै ॥ और हेनचिकेता ! भावअभावतैंरहित तथासर्वभेदतैंरहित ऐसाजोयहस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ ताआनंदस्वरूपआत्मादेवकूं यहअधिकारीपुरुष जबी याशरीरविषेसाक्षात्कारकरैहै ॥ तबी याअधिकारीपुरुषकूं सोअद्वितीयब्रह्म प्राप्तनहींभयाहै याप्रकारकेवचनकहणेविषे कौनपुरुष समर्थहोवैगा ? किंतु कोईभीआस्तिकपुरुष तावचनकेकहणेविषे समर्थनहींहोवैगा ॥ यातें यहअर्थ सिद्धभया ॥ याअधिकारीपुरुषकूं जबी आत्माकेसाक्षात्कारकरिकै सर्वकामोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी यहअधिकारीपुरुष इसीशरीरविषे ब्रह्मरूपआत्माकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा सर्वदुःखोंतैंरहित अमृतभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेनचिकेता ! जिनअधिकारीपुरुषोंकूं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाआत्मज्ञान प्राप्तभयाहै ॥ तिनपुरुषोंके संपूर्णसंशय तथाविपर्यय नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याकारणतें याअधिकारीपुरुषोंनैं ताआत्मज्ञानकूं अवश्यसंपादनकरणा ॥ अब तिनकुतर्करूप संशयविपर्ययोंकानिरूपणकरैहैं ॥ यालोकविषे कोईब्रह्महैनहीं ॥ काहेतें ? जोकोईब्रह्म सत्यहोता तौहमारेकूंप्रतीतहोता ॥ और हमारेकूं सोब्रह्म प्रतीतहोतानहीं ॥ यातें सोब्रह्म हैनहीं ॥ किंवा जोकदाचित् सोब्रह्म प्रसिद्धभीहोवै तौभी सर्वधर्मोंतैंरहितसोनिर्गुणब्रह्मरूप मैंकर्ताभोक्ताजीव किसप्रकारहोवौंगा ? किंतु मैंब्रह्मरूप नहींहूं ॥ इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारके संशय विपर्यय याअज्ञानीजीवोंकेहृदयविषे उत्पन्नहोवैहैं ॥ हेनचिकेता ! गुरुशास्त्रकेअनुग्रहतें जिसक्षणविषे याअधिकारीपुरुषोंके तेसंशयविपर्ययरूपहृदयग्रंथियां नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसीक्षणविषे सोअधिकारीपुरुष ताअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ जैसे जिसक्षणविषे सूर्यकाउदयहोवैहै ॥ तिसीक्षणविषे अंधकारकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और याअधिकारीपुरुषोंनैं

गुरुशास्त्रके उपदेशकरिकैभी यहजीवब्रह्मका अभेदही जानणेयोग्य है॥ इसतैंपरे कोईवस्तु जानणेयोग्यनहींहै ॥ और हे नचिकेता! याप्रकारकाविचारकरिकै जिनपुरुषोंकूं आत्माका साक्षात्कार नहींप्राप्तभयाहै॥ तिनपुरुषोंकी दोप्रकारकीगति शास्त्रविषे कथनकरीहै ॥ तहां एकतौ उपासनाकरिकै ब्रह्मलोककीप्राप्ति ॥ और दूसरी कर्मोंकरिकै स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्ति ॥ येदोनोंप्रकारकी गति जिननाडीरूप द्वारोंकरिकै होवैहै॥ तिननाडिरूपद्वारोंकूं तू श्रवण कर ॥ हेनचिकेता! या हृदयरूप मूलतैं एकऊपरिएकशत १०१ प्रधाननाडियां निकसेहैं ॥ तिनसर्वनाडियोंविषे एकसुषुम्नानामा नाडी मूर्द्धद्वारकूंभेदनकरिकै सूर्यमंडलद्वारा ब्रह्मलोकपर्यंत प्राप्तभईहै ॥ याकारणतैंही सासुषुम्नानामा नाडी ताब्रह्मलोकका द्वाररूप है॥ जिससुषुम्नानामानाडीद्वारा यहजीव ब्रह्मलोककूं प्राप्तहोवैहै ॥ और तासुषुम्नानामानाडीकूंछोडिकै दूसरी जोएकशत नाडियांहैं ॥ तिननाडियोंद्वारा याशरीरतैंबाहरिनिकस्याहुआ यहजीवात्मा आपणेपुण्यपापकर्मोंकेअनुसार नानाप्रकारकेऊचनीचशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा मैंयमराजाकेवशकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं इसीजन्मविषे आत्मसाक्षात्कारकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ अब संपूर्णकठवल्लीउपनिषद्करिकै निरूपणकऱ्याजोअर्थहै ताअर्थकूं संक्षेपतैंनिरूपणकरैहैं ॥ हेनचिकेता! अंतःकरणरूपउपाधिकेसंबंधतैं अंगुष्ठमात्रपरिमाणवाला जोयहआत्मादेवहै ॥ सोआत्मादेव अविद्यारूपअंतरकंचुककरिकै तथा सूक्ष्मशरीररूपबाह्यकंचुककरिकै आवृतहुआ यासर्वजीवोंकेहृदयविषे विराजमानहोवैहै ॥ कैसाहै सोसूक्ष्मशरीर? अनेकप्रकारकेदुःखोंकाकारणहै ॥ तथा तासूक्ष्मशरीरविषेस्थितजोचित्तहै ॥ सोचित्त लोहेकेशृंखलाकीन्यांई याजीवोंकेबंधनकाकारणहै ॥ ऐसेसूक्ष्मशरीरतैं तथाअविद्यातैं यहअधिकारीपुरुष ताआत्मादेवकूं विवेकयुक्तशुद्धमनकरिकै भिन्नकरै ॥ जैसे यालोकविषे बालक मुंजरूपबाह्यत्वचातैं ईषिकारूपमध्यकेतृणकूं भिन्नकरैहैं ॥ इसप्रकार अविद्यासूक्ष्मशरीरादिक सर्वजडउपाधियोंतैं विचारकरिकैभिन्नकऱ्याहुआ यहआत्मादेव उपाधिकृतपरिच्छिन्नभावकापरित्यागकरिकै आपणे परिपूर्णस्वरूपकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और हेनचिकेता! अंतःकरणादिक उपाधियोंकरिकै युक्तहुआ यहजीवात्मा मरणतैं

अनंतर जैसे मैंयमराजाकेपाशोंकरिकै बंधायमानहोवैहै ॥ तैसे अंतःकरणादिकउपाधियोंतैंरहितहुआ यहशुद्धआत्मादेव मैंयमराजाकेपाशोंकरिकै बंधायमानहोवैनहीं ॥ हेनचिकेता ! इसप्रकार स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनउपाधियोंतैंरहित तथाजन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहित जोस्वयंज्योतिपरमात्मादेवहै ॥ तापरमात्मादेवकूंही तुमनैं आपणाआत्मारूपकरिकैनिश्चयकरणा ॥ यहजीवब्रह्मकाअभेदही सर्ववेदांतशास्त्रकासिद्धांतहै ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ! याप्रकार सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति साधनोंसहित संपूर्णब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै मौनकूंधारणकरताभया ॥ और सोनचिकेताभी ताब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिकै संतोषकूंप्राप्तहोताभया ॥ और ताब्रह्मविद्याके श्रवण मनन निदिध्यासन करिकै आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहुआ सोनचिकेता कृतकृत्यभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तायमराजाकेउपदेशतैं संपूर्णब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोइकै सोनचिकेता याजीवत्अवस्थाविषेही अद्वितीयपरब्रह्मकूं प्राप्तहोताभया ॥ कैसाहैसोअद्वितीयब्रह्म ? स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा परमआनंदस्वरूपहै ॥ तथा सर्वजीवोंकाआत्मारूपहै ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपजाणिकै सोनचिकेता संपूर्णदुःखशोकोंतैंरहितहोताभया तथा जन्ममरणतैंरहितहोताभया ॥ और प्रारब्धकर्मके भोगतैंविना निवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं ताप्रारब्धकर्मोंकरिकैरक्षित जोविक्षेपरूप अविद्याकालेशहै ॥ ताअविद्याकेलेशकी जबी प्रारब्धकर्मकेभोगतैंअनंतर निवृत्तिभई ॥ तबी सोनचिकेता विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोताभया ॥ हेशिष्य ! जैसे सोनचिकेता आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोइकै जीवन्मुक्तिकूं तथाविदेहमुक्तिकूं प्राप्तहोताभयाहै ॥ तैसे इदानींकालविषेभी जोकोईअधिकारीपुरुष ताआत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोवैगा ॥ सोअधिकारीपुरुषभी जीवन्मुक्तिकूं तथाविदेहमुक्तिकूं प्राप्तहोवैगा ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं अवश्यकरिकै ताआत्मसाक्षात्कारकूंसंपादनकरणा ॥ हेशिष्य ! यहजोहमनैं तुमारेप्रति यमराजानचिकेताकाआख्यान कथनकऱ्याहै ॥ सोयहआख्यान पूर्व कठनामाऋषि त्रैवर्णिकअधिकारीशिष्योंकेप्रति कथनकरताभयाहै ॥ हेशिष्य ! जीवब्रह्मकेअभेदकूंबोधनकरणेहारी जोयहब्रह्मविद्याहै ॥ सायहब्रह्मविद्या ॥ पूर्व नचिकेतादिकमहान्पुरुष यमराजादिकदेवतावोंतैंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ यातैं यहब्रह्मविद्या अत्यंतदुर्लभहै ॥ याकारणतैंही याब्रह्मविद्याकेकथन

करणेहारेगुरुकूं तथाश्रवणकरणेहारेशिष्यकूं पूर्व यमराजानें आश्चर्यरूपकरिकैंकथनकऱ्याहै ॥ हेशिष्य ! ऐसीदुर्लभब्रह्मविद्या
केउपदेशकालविषे ताब्रह्मविद्याकेवक्तागुरुकूं अथवा ताब्रह्मविद्याकेश्रोताशिष्यकूं अथवा गुरुशिष्यदोनोंकूं इंद्रादिकदेवता ना
नाप्रकारकेविघ्नकरैंहैं ॥ यहवार्ता पूर्वचतुर्थअध्यायविषे दध्यङ्ऋषिइंद्रकेसंवादविषे हमनैं विस्तारकरिकै तुमारेप्रति कथनकरी
थी ॥ हेशिष्य ! जिसअधिकारीशिष्यकागुरु ब्रह्मविद्याविषे कुशलनहींहोवैहै ॥ तिसअधिकारीशिष्यकूंही ब्रह्मविद्याकीप्राप्ति
विषे तेदेवता विघ्नकरैंहैं ॥ और जिसअधिकारीशिष्यकागुरु ब्रह्मविद्याकीसंप्रदायविषेकुशलहोवैहै ॥ तिसअधिकारीशिष्यकूं
ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषे तेदेवता विघ्नकरिसकैंनहीं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषनैं ब्रह्मविद्याकेसंप्रदायजाणणेहारेकुशलगुरुतैंही
ब्रह्मविद्याकाश्रवणकरणा ॥ हेशिष्य ! जिसपुरुषकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषे देवता विघ्नकरैहैं ॥ तिसपुरुषकीबुद्धि पूर्वलेपापकर्म
केयोगतैं विपरीतहोइजावैहै ॥ ताविपरीतबुद्धिकरिकै सोशिष्य आपणेगुरुकेसाथ द्वेषकरैहै ॥ तागुरुकेद्वेषकरिकै सोशिष्य अनेक
प्रकारकेनरकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहअधिकारीशिष्य जबी ताब्रह्मवेत्तागुरुकी शरीर मन वाणी करिकैसेवाकरैहै ॥ तबी या
अधिकारीशिष्यकूंगुरुकीकृपातैं शीघ्रही आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और यहअधिकारीशिष्य जबी देवतावोंकीसेवाकरैहै ॥
तबी याअधिकारीशिष्यकूं ताआत्मसाक्षात्कारके निष्ठारूपफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसप्रकार ब्रह्मवेत्तागुरुकीसेवाकरिकै तथादेवता
वोंकीसेवाकरिकै सर्वविघ्नोंतैंरहितहुआ यहशिष्य फलसहितब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य ! स्वप्रकाशआत्मस्वरूप जोमो
क्षरूपफलहै ॥ तामोक्षरूपफलकीप्राप्तिकूं हम देवतावोंकेअनुग्रहअधीन मानतेहैं ॥ यातैं तिनदेवतावोंकीप्रसन्नताकरणेवासते
यामुमुक्षुजनोंनैं शांतिमंत्रोंकापाठ अवश्यकरणा ॥ याप्रकारकावचन सोकठनामाऋषि आपणेशिष्योंकेप्रति कथनकरताभया ॥
और हेशिष्य ! जैसे सोकठनामाऋषि आपणेशिष्योंकेप्रति याब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै विघ्नोंकीनिवृत्तिवासते शांतिमंत्रोंके

पाठकरणेकाउपदेशकरताभयाहै ॥ तैसे तित्तिरिनामाऋषिभी नानाप्रकारकेआख्यानयुक्त यहब्रह्मविद्या आपणेशिष्योंकेप्रति उपदेशकरिकै ताविघ्नोंकीनिवृत्तिवासते शांतिमंत्रोंकेपाठकरणेकाउपदेशकरताभयाहै ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामी उद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचित प्राकृतआत्मपुराणे कठकोपनिषत्साराथप्रकाशे यमनचिकेतःसंवादोनाम नवमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ९ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ ॥

इतिआत्मपुराणेश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां
नवमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ९ ॥

अथ आत्मपुराणे स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां
दशमाऽध्यायप्रारंभः ॥ १० ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ दशमाऽध्यायप्रारंभः ॥ पूर्वनवमअध्यायविषे यजुर्वेदकेकठवल्लीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब दशमअध्यायविषे तिसयजुर्वेदके तैत्तिरीयकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकरैहै ॥ तहां पूर्वनवमअध्यायविषे यमनचिकेताके अद्भुतआख्यानकूंश्रवणकरिकै सोशिष्य बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और सो शिष्य पुनः आपणेगुरुकेप्रति याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन्! याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे आपनैं ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमअध्यायविषे सनकादिकऋषियोंके तथावामदेवादिकसात्विकीप्रजाके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणके द्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअध्यायविषे आपनैं तिसऋग्वेदकेकौषीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां द्वितीयअध्यायविषे देवराजइंद्रके तथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और तृतीयअध्यायविषे अजातशत्रुराजाके तथाबालाकिब्राह्मणके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषे आपनैं यजुर्वेदके बृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां चतुर्थअध्यायविषे दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंकेऋषियोंका परस्परभेद तथाअभेद आपनैं निरूपणकऱ्याथा ॥ तथा सूक्ष्मदर्शीऋषिनैं जोअश्विनीकुमारोंका गुह्यवृत्तांतकथनकऱ्याथा ॥ सोभी आपनैं निरूपणकऱ्याथा॥ और दध्यङ्अथर्वणऋषिनैं जाब्रह्मविद्या देवराजइंद्रकेप्रति तथाअश्विनीकुमारोंकेप्रति उपदेशकरीथी॥ साब्रह्मविद्याभी आपनैं कथनकरीथी॥ और अश्विनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेतैं देवराजइंद्रनैं जिसप्रकार तादध्यङ्ऋषिकामस्तकछेदनकऱ्याथा सोवृत्तांतभी आपनैं कथनकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणकेपंचमअध्यायविषे जनकराजाकेयज्ञविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथाआश्वलायनादिकअनेकब्राह्मणोंके संवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥ तथा याज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरिकै शाकल्यब्राह्मणकामृत्युभी आपनैं कथनकऱ्याथा तथा सर्वब्राह्मणोंतैं तायाज्ञवल्क्यमुनिकाजय आपनैं कथनकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिके

तथाजनकराजाके दोवारसंवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथा मैत्रेयीस्त्रीके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा याज्ञवल्क्यमुनिकेसंन्यासआश्रमकाकथनकर्‍याथा ॥ और याआत्मपुराणके अष्टमअध्यायविषे आपनैं तिसयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकर्‍याथा ॥ ताअष्टमअध्यायविषे ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंकेसंवादकरिकै तथा श्वेताश्वतरसंन्यासियोंकेसंवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा याजगत्‌केकारणोंका निरूपणकर्‍याथा ॥ और याआत्मपुराणकेनवमअध्यायविषे आपनैं तिसयजुर्वेदके कठवल्ली उपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकर्‍याथा ॥ तानवमअध्यायविषे यमराजाके तथानचिकेताके संवादकरिकै नानाप्रकारकी ब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ हेभगवन्! तानवमअध्यायकेअंतविषे आपनैं याप्रकारकावचन कह्याथा ॥ जोब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषे इंद्रादिकदेवता अनेकप्रकारकेविघ्नकरैहैं ॥ तिनविघ्नोंकीनिवृत्तिवासतै याअधिकारीशिष्यनैं शांतिमंत्रोंकापाठ अवश्यकरणा ॥ याप्रकारकावचन जैसे कठनामाऋषि आपणेशिष्योंकेप्रति कहताभयाहै ॥ तैसे तित्तिरिनामाऋषिभी आपणेशिष्योंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै तिनविघ्नोंकीनिवृत्तिवासतै तिनशांतिमंत्रोंके पाठकरणेकाउपदेश करताभयाहै ॥ याप्रकारकावचन आपनैं नवमअध्यायकेअंतविषेकह्याथा॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके प्रथमअध्यायतें लेकेनवमअध्यायपर्यंतग्रंथविषे ऐतरेय कौषीतकी आदित्य दध्यङ्अथर्वण याज्ञवल्क्य श्वेताश्वतर कठ यासप्तऋषियोंनैं आपणेआपणेशिष्योंकेप्रति जाजाब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं आपकेमुखतैं श्रवणकरीहै॥ परंतु तातित्तिरिनामाऋषिनैं आपणेशिष्योंकेप्रति जाब्रह्मविद्या कथनकरीहै ॥ ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेकी हमारेकूंइच्छाहै ॥ आप कृपाकरिकै साब्रह्मविद्या हमारेप्रति कथनकरो ॥ हेभगवन्! सोतित्तिरिनामाऋषि नानाप्रकारकेआख्यानयुक्तब्रह्मविद्या आपणे शिष्योंकेप्रति कथनकरताभया ॥ याप्रकारकावचन पूर्वनवमअध्यायकेअंतविषे आपनैं कथनकर्‍याथा ॥ ताआपकेवचनतैं हमारेकूं ऐसीसंभावनाहोवैहै ॥ जो तातित्तिरिऋषिउक्तब्रह्मविद्याविषे कोईअत्यंतविचित्रआख्यानहोवैगा ॥ याकारणतैं ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेविषे हमारेकूं अत्यंतउत्कटइच्छाहै ॥

जोआपकी हमारे ऊपरिकृपाहोवै ॥ तौ साब्रह्मविद्या हमारेप्रति उपदेशकरौ ॥ याप्रकार शिष्यकरिकैपूछाहुआ सोश्रीगुरु ताशिष्य ऊपरि अत्यंतप्रसन्नहोताभया ॥ और जाब्रह्मविद्या तित्तिरिऋषिनैं आपणेशिष्योंकेप्रति उपदेशकरीथी ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्या सोश्रीगुरु ताशिष्यकेप्रति कथनकरताभया ॥ कैसीहैसाब्रह्मविद्या? वनविषेपठणकरणेयोग्य जोयजुर्वेदकाब्राह्मणभागहै ताकेवि षेस्थितहै॥तथा श्रोतापुरुषके कर्णोंका तथामनका ताप हरणेहारीहै॥अब ताब्रह्मविद्याकानिरूपणकरेहै॥श्रीगुरुरुवाच॥ हेशिष्य! जाब्रह्मविद्या तित्तिरिनामाऋषिनैं आपणेशिष्योंकेप्रति उपदेशकरीहै ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्या मैं तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ तू सावधानहोइकैश्रवणकर हेशिष्य! एककालविषे सुमेरुपर्वतऊपरि सर्वऋषियोंकासमाज एकठाहोताभया ॥ तहां तेऋषि पर स्पर याप्रकारकासंकेत करतेभये ॥ अमुकदिनविषे जोऋषि यासमाजविषे नहींआवैगा ताऋषिकूं ब्रह्महत्याकीप्राप्तिहोवैगी ॥ याप्रकारके तिनऋषियोंकेसंकेतकूं वैशंपायननामाऋषि भंगकरताभया॥ और तासंकेतकेभंगकरणेतैं तावैशंपायनकूं ब्रह्महत्याकी प्राप्तिहोतीभई ॥ ताब्रह्महत्याके निवृत्तिकरणेवासते सोवैशंपायननामाऋषि आपणेयाज्ञवल्क्यादिकशिष्योंकेतांई प्रायश्चि त्तकरणेकीआज्ञाकरताभया ॥ और तावैशंपायनगुरुकेवचनकूं श्रवणकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि तावैशंपायनगुरुकेप्रति या प्रकारकावचनकहताभया ॥ हेभगवन्! आपकी वृद्धअवस्थाहुईहै ॥ यातैं ताप्रायश्चित्तकरणेविषे आपकातौ सामर्थ्यहैनहीं ॥ और यहआपकेशिष्य असमर्थबालकहैं ॥ यातैं ताप्रायश्चित्तकरणेविषे इनशिष्योंकाभी सामर्थ्यनहींहै ॥ किंतु मैंयाज्ञवल्क्यही ताप्रायश्चित्तकूंकरौंगा ॥ याप्रकारके तायाज्ञवल्क्यमुनिकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोवैशंपायननामाऋषि अत्यंतक्रोधवान्होताभया ॥ और सोवैशंपायन तायाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्य! तू सर्वब्राह्मणोंकीनिंदाकरणेहारा है ॥ यातैं जोहमनैं तुमारेप्रति विद्यादईहै ॥ सासंपूर्णविद्या तुम शीघ्रही परित्यागकरो ॥ और जोतू हमारीविद्याकापरित्याग न हीं करैगा ॥ तौमैं शापदेकै तुमारेकूं दग्धकरौंगा ॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी तावैशंपायननैं याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रतिकह्या॥त बी सो अष्टांगयोगकेजानणेहारा याज्ञवल्क्यमुनि जैसे पानकरेहुएजलकूं हस्ती बाहरिनिकसेहै ॥ तैसे सर्वविद्याकापरित्याग

करताभया ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार वैशंपायनगुरुकेवचकूं अंगीकारकरिकै जबी तायाज्ञवल्क्यमुनिनैं तिनयजुर्वेदकेमंत्रोंकापरित्यागकन्या॥ तबी अभिमानीदेवतारूपकरिकै सूर्यकीन्यांई प्रकाशमान जेयजुर्वेदकेमंत्रहैं॥ तेमंत्र भूमिविषेभिन्नभिन्नस्थितहोतेभये॥ और तायाज्ञवल्क्यमुनिनैं वमनकरिकै भूमिविषेपरित्यागकरे जेयजुर्वेदकेमंत्रहैं ॥ तिनप्रकाशमानमंत्रोंकूंदेखिकरिकै वैशंपायनकेसंपूर्णशिष्य आश्चर्यकूंप्राप्तहोतेभये ॥ और तिनशिष्योंकूं आश्चर्यमानहुआदेखिकै सोवैशंपायननामागुरु तिनशिष्योंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेसर्वब्राह्मणो ! इसयाज्ञवल्क्यनामाशिष्यनैं शास्त्रकीरीतिप्रमाण इनयजुर्वेदकेमंत्रोंकाअध्ययनकन्याथा ॥ याकारणतैंही यहयजुर्वेदकेमंत्र सूर्यकीन्यांई प्रकाशमान प्रतीतहोवैंहैं ॥ हेब्राह्मणो ! यहयजुर्वेदकेमंत्र हमब्राह्मणोंका अक्षयधनहैं ॥ यातैं यहयजुर्वेदकेमंत्र जैसे याभूमिलोककापरित्यागकरिकै ब्रह्माकीसभाकूं नहींप्राप्तहोवैं ॥ तैसे तुमसंपूर्णब्राह्मण शीघ्रहीइनमंत्रोंकूंग्रहणकरो ॥ हेब्राह्मणो ! यहयजुर्वेदकेमंत्र इसयाज्ञवल्क्यमुनिनैं अन्नकीन्यांई वमनकरेहैं ॥ यातैं इनवमनकरेहुएमंत्रोंकूं हमब्राह्मण किसप्रकार ग्रहणकरैं ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै तुमोनैं विलंबनहींकरणा ॥ काहेतें ? यद्यपि यामनुष्यशरीरकरिकै वमनकरीहुईवस्तुकूं भक्षणकरणायोग्यनहीं है ॥ तथापि यामनुष्यशरीरतैंभिन्न किसीशरीरकरिकै वमनकरीहुईवस्तुभी भक्षणकरीजावैहै ॥ यातैं तुमसंपूर्णब्राह्मण तित्तिरिनामापक्षीकेरूपकूंधारणकरिकै शीघ्रही यामंत्रोंकूंग्रहणकरो ॥ हेशिष्य ! याप्रकारकावचन जबी तावैशंपायनऋषिनैं आपणेशिष्योंकेप्रति कह्या ॥ तबी तेसंपूर्णब्राह्मण तित्तिरिपक्षीकेरूपकूंधारणकरिकै शीघ्रही तिनमंत्रोंकूंग्रहणकरतेभये॥ जैसे यालोकविषेप्रसिद्ध जेतित्तिरिनामापक्षीहैं॥ तेतित्तिरीपक्षी जबी क्षुधाकरिकेआतुरहोवैहैं ॥ तबी भूमिविषेस्थित तथाआकाशविषेस्थित जेपतंगादिकक्षुद्रजंतुहैं तिनजंतुवोंकूं तेतित्तिरिपक्षी भक्षणकरैहैं ॥ तैसे भूमिविषेस्थित तथाआकाशविषेस्थित जो तेयजुर्वेदकेमंत्रथे ॥ तिनसंपूर्णमंत्रोंकूं तेब्राह्मण तित्तिरिरूपकरिकैग्रहणकरतेभये ॥ याकारणतैंही वेदविषे तिनब्राह्मणोंकूं तित्तिरि यानामकरिकैकथनकन्याहै ॥ और तिनतित्तिरिनामाब्राह्मणोंनैं आपणेशिष्योंकेप्रति जा ब्रह्मविद्या उपदेशकरीहै ॥ ताब्रह्मविद्याकूं वेदवेत्तापुरुष तैत्तिरीयकउपनिषद् यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ और याज्ञवल्क्यमुनिनैं

जिनयजुर्वेदकेमंत्रोंकावमनकऱ्याथा ॥ तिनमंत्रोंकूं तेब्राह्मण तित्तिरिपक्षीकारूपधारणकरिकै भक्षणकरतेभये ॥ याकारणतें तिनमंत्रों का कृष्णयजुष् याप्रकारकानामहोताभया ॥ हेशिष्य ! तिनयजुर्वेदकेमंत्रोंविषेभी वनविषेस्थितहोइकैपठनकरणेयोग्यजेमंत्रहैं ॥ तिनमंत्रोंविषे जाब्रह्मविद्या कथनकरीहै ॥ ताब्रह्मविद्याकूं तू सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ तहां तातैत्तिरीयकउपनिषद्रूपब्रह्मविद्याविषे दोवल्लीहैं ॥ एकतौ आनंदवल्लीहै ॥ और दूसरी भृगुवल्लीहै ॥ तहां प्रथम आनंदवल्लीकाअर्थ निरूपणकरैहैं ॥ ताआनंदवल्लीविषे प्रथम यहसूत्ररूपवचन कथनकऱ्याहै ॥ ब्रह्मविदाप्नोतिपरं ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मकूंजानणेहारापुरुष परमपदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यावचनविषे संपूर्णब्रह्मविद्या स्थितहै ॥ याकारणतें यावचनकूं सूत्ररूपकहेहैं ॥ तहां जोवचन अल्पअक्षरोंकरिकै बहुतअर्थकूंसूचनकरै तावचनकानाम सूत्रहै ॥ अब तासूत्ररूपवचनविषे सर्वअर्थकीसूचकता स्पष्टकरणेवासते प्रथम विषय प्रयोजन अधिकारी संबंध याचारिअनुबंधोंका निरूपणकरैहैं ॥ जिसकेज्ञानतें याअधिकारीपुरुषोंकी शास्त्रविषेप्रवृत्तिहोवैहै ताकानाम अनुबंधहै ॥ तहां ब्रह्मविदाप्नोतिपरं यासूत्ररूपवचनविषेस्थित जोब्रह्मपदहै ॥ ताब्रह्मपदकरिकै यातैत्तिरीयकउपनिषद्रूपशास्त्रका विषय कथनकऱ्याहै ॥ तहां जाशास्त्रजन्यप्रमाज्ञानकरिकै निवृत्तहोणेयोग्यजोअज्ञानहै ॥ ताअज्ञानकरिकै जोपदार्थ आवृतहोवैहै ॥ सोपदार्थ ताशास्त्रका विषयहोवैहै ॥ सोइहांप्रसंगविषे तैत्तिरीयकउपनिषद्रूपशास्त्रकरिकैजन्य जोप्रमारूपज्ञानहै ॥ ताज्ञानकरिकैनिवृत्तहोणेयोग्य जो अज्ञानहै ॥ ताअज्ञानकरिकै सोब्रह्मआवृतहै ॥ यातैं सोब्रह्म यातैत्तिरीयकउपनिषद्रूपशास्त्रकाविषयहै ॥ काहेतें ब्रह्मविदाप्नोतिपरं यावाक्यविषेस्थितब्रह्मशब्दकेश्रवणतें सामान्यरूपतें ताब्रह्मकेज्ञानहुएभी सोब्रह्म याजीवोंकाआत्मरूपहै अथवा आत्मातैंभिन्नहै ॥ तथा सोब्रह्म चेतनरूपहै अथवा जडरूपहै इसतैंआदिलेकेअनेकप्रकारकेसंशय ताब्रह्मविषेहोवैहैं ॥ तिनसंशयोंकी निवृत्ति उत्तरवाक्योंकरिकैहोवैहै ॥ यातैं सोसूत्ररूपवचन उत्तरवाक्योंविषे याअधिकारीपुरुषोंके जिज्ञासाकूंउत्पन्नकरैहै ॥ अब प्रयोजनकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! शास्त्रकाप्रयोजन दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ गौणप्रयोजनहोवैहै ॥ और दूसरा मुख्यप्रयोजनहोवैहै ॥ तहां ताब्रह्मकूंविषयकरणेहारा जोअंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानहै सोज्ञान यावेदांतशास्त्रका गौणप्रयोजनहै ॥

और संपूर्ण अनर्थोंकीनिवृत्तिपूर्वक जोपरब्रह्मभावकीप्राप्तिहै ॥ सो यावेदांतशास्त्रका मुख्यप्रयोजनहै ॥ अब अधिकारीकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जिसपुरुषकूं तादोनोंप्रयोजनोंकेप्राप्तिकीइच्छाहै ॥ तथा विवेक वैराग्य शमदमादिकषट्कसंपत्ति मुमुक्षुता याचारिसाधनोंकरिकै संपन्नहै ॥ सोपुरुष यावेदांतशास्त्रकाअधिकारीहै ॥ अब संबंधकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! यावेदांतशास्त्रकासंबंधतौ योग्यताकेवशतैं अनेकप्रकारकाहोवैहै ॥तहां अधिकारीपुरुषका तथावेदांतशास्त्रका परस्पर बोध्यबोधकभाव संबंध है ॥ इहां अधिकारीपुरुषतौ बोध्य है ॥ और वेदांतशास्त्र बोधक है ॥ और ब्रह्मज्ञानका तथावेदांतशास्त्रका परस्पर जन्यजनकभाव संबंध है ॥ इहां ब्रह्मज्ञानतौ जन्य है ॥ और वेदांतशास्त्र जनक है ॥ और ब्रह्मका तथावेदांतशास्त्रका परस्पर अभिव्यंग्य अभिव्यंजकभाव संबंध है॥इहां ब्रह्मतौ अभिव्यंग्य है ॥और वेदांतशास्त्र अभिव्यंजक है॥जोपदार्थ पूर्वसिद्धवस्तुकी प्रतीतिकराइदेवै॥ तापदार्थकानाम अभिव्यंजकहोवैहै ॥ और ताप्रतीतिकाविषय जोपदार्थहोवैहै ॥ ताकानामआभिव्यंग्यहोवैहै ॥ जैसेहारीतकीआमलकादिकोंकाभक्षण जलकेमधुररसकीप्रतीतिकरावैहै॥ यातैं सोहरीतकी आमलकादिकोंकाभक्षण जलकेमाधुर्यताकाअभिव्यंजक है॥और साजलकीमाधुर्यता अभिव्यंग्य है॥तैसे यहवेदांतशास्त्रभीपूर्व सिद्धब्रह्मका साक्षात्कारकरावैहै॥यातैं यहवेदांतशास्त्रतौ अभिव्यंजकहै॥और सोब्रह्म अभिव्यंग्यहै॥और अज्ञानका तथावेदांतशास्त्रका परस्पर निवर्त्यनिवर्तकभाव संबंधहै॥इहां अज्ञानतौ निवर्त्यहै ॥ और आत्मज्ञानद्वारा वेदांतशास्त्र ताकानिवर्तकहै ॥ हेशिष्य! ब्रह्मविदाप्नोतिपरं यहवचन केवलचारिअनुबंधोंकीसूचना करिकै सूत्ररूपनहीं है ॥ किंतु यातैत्तिरीयकउपनिषद्कीसमाप्तिपर्यंत यासूत्ररूपवचनकाही विस्तारतैं व्याख्यानकऱ्याहै ॥ याकारणतैं तावचनकूं सूत्ररूपता संभवैहै ॥ अब तासूत्ररूपवचनका संक्षेपतैं व्याख्यानकरैहैं॥ हेशिष्य! ब्रह्मविदाप्नोतिपरं यासूत्ररूपवचनविषेस्थित जो ब्रह्मपदहै ॥ ताब्रह्मपदकरिकै श्रुतिविषे तत्पदकाअर्थरूपपरमात्मादेव कथनकऱ्याहै ॥ और लक्षणप्रमाणतैंविना वस्तुकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं ताब्रह्मका कोईलक्षण कह्याचाहिये ॥ तहां लक्षणभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ स्वरूपलक्षणहोवैहै ॥ और दूसरा तटस्थलक्षणहोवैहै ॥ तहां जोअसाधारणधर्मरूपलक्षण आपणेलक्ष्यपदार्थतैंअभिन्नहुआ तालक्ष्य

पदार्थकूं इतरपदार्थोंतैंभिन्नरूपकरिकै जनावैहै ॥ सोअसाधारणधर्म स्वरूपलक्षणहोवैहै ॥ और जोअसाधारणधर्म आपणेलक्ष्य पदार्थविषे कदाचित्वर्तमानहुआ तालक्ष्यकूं इतरपदार्थोंतैंभिन्नरूपकरिकैजनावैहै ॥ सोअसाधारणधर्म तटस्थलक्षणहोवैहै ॥ तहां सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म॥यह श्रुतिवचन ताब्रह्मकेस्वरूपलक्षणकूंकथनकरैहै॥अर्थयह॥जिसब्रह्मकेसाक्षात्कारतैं यहअधिकारीपुरुष मोक्षरूपपरमपदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोब्रह्म सत्य ज्ञान अनंत स्वरूपहै॥यालक्षणवाक्यविषे कोईकवेदवेत्तापुरुषतौ शास्त्रदृष्टिकूं अंगीकार करिकै सत्यस्वरूपब्रह्महै ज्ञानस्वरूपब्रह्महै अनंतस्वरूपब्रह्महै यहतीनलक्षण ब्रह्मकेमानेहैं॥और कोईकवेदवेत्तापुरुषतौ लोकदृष्टिकूंअंगीकारकरिकै सत्यज्ञानअनंतरूपब्रह्महै यहएकहीलक्षण ब्रह्मकामानेहै ॥ अब तिनदोनोंपक्षोंविषे प्रथम तीनलक्षणवालेपक्षका निरूपणकरैहैं॥हेशिष्य! सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ याश्रुतिविषेस्थित जोसत्यशब्दहै ॥ तासत्यशब्दका तीनकालविषेनाशतैं रहितयथार्थवस्तुही अर्थहै ॥ और जोवस्तुनाशनैंरहितहोवैहै ॥ सोनित्यवस्तु जडरूपहोवैनहीं किंतु सोनित्यवस्तु चैतन्यरूपज्ञानस्वरूपहीहोवैहै ॥ यातैं सत्यशब्दकाअर्थ ताज्ञानशब्दकेअर्थतैंभिन्ननहीं ॥ और जैसे रज्जुविषे सर्पदंडमालादिक कल्पित होवैहै ॥ तैसे संपूर्णजडदृश्यपदार्थ चैतन्यज्ञानरूपद्रष्टाविषेकल्पितहै ॥ ऐसासर्वजडप्रपंचकाअधिष्ठानरूपजोचैतन्यरूपज्ञानहै ॥ ताचैतन्यरूपज्ञानविषे परिच्छिन्नपणासंभवैनहीं ॥ यातैं सोचैन्यस्वरूपज्ञान अनंतरूपहै ॥ याकहणेतैंयहअर्थसिद्धभया ॥ सत्यस्वरूपब्रह्महै यालक्षणविषे सत्यशब्दकरिकै सत्यज्ञानअनंतरूपवस्तुकाहीबोधहोवैहै ॥ यातैं यालक्षणकी जडपरिच्छिन्नपदार्थोंविषे अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ तैसे ज्ञानस्वरूपब्रह्महै यालक्षणविषेभी ज्ञानशब्दकरिकै ज्ञानसत्यअनंतरूपवस्तुकाहीबोधहोवैहै ॥ यातैं यालक्षणकीभी अनित्यपरिच्छिन्नपदार्थोंविषे अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ तैसे अनंतस्वरूपब्रह्महै यालक्षणविषेभी अनंतशब्दकरिकै अनंतसत्यज्ञानरूपवस्तुकाहीबोधहोवैहै ॥ यातैं यालक्षणकीभी असत्यजडपदार्थोंविषे अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं सत्य ज्ञान अनंत यहतीनों ब्रह्मकेभिन्नभिन्नलक्षणहैं॥तात्पर्ययह॥अतिव्याप्ति अव्याप्ति असंभव यातीनदोषोंकीनिवृत्तिवासतैंही लक्षणविषे पदोंकानिवेशहोवैहै ॥ साअतिव्याप्तिआदिकदोषोंकीनिवृत्ति जोकदाचित् एकहीपदकरिकैहोइसकै ॥ तौ तालक्षणविषे

दूसरेपदोंकानिवेशकरणाव्यर्थहोवैहै ॥ यातैं ताश्रुतिवचनकरिकै ब्रह्मकेतीनलक्षणमानणे उचितहैं ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवा सतै प्रथम सत्यशब्दका अर्थ निरूपणकरैहैं॥हेशिष्य! जोवस्तु भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषे अन्यथाभावकूंनहींप्राप्तहोवै तावस्तुकानाम सत्यहै ॥ सोऐसासत्यशब्दकाअर्थ आनंदस्वरूपआत्माविषेहीघटैहै ॥ आत्मातैंभिन्न अनात्मपदार्थोंविषे सोसत्य शब्दकाअर्थ घटैनहीं ॥ काहेतैं? आत्मातैंभिन्न जितनेकीअनात्मपदार्थहैं ॥ तेसंपूर्णअनात्मपहार्थ किसीकालपाइकै अन्यथाभाव कूंअवश्यप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं तिनअनात्मपदार्थोंविषे सत्यरूपतासंभवैनहीं और सर्वजगत्काआत्मरूप जोयहआत्मादेवहै ॥ ताआत्मादेवकेनाशकरणेहारा कोईकारणहैनहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव नाशतैंरहितअविनाशिरूपहै ॥ ऐसेअविनाशीआत्माविषे ही सत्यरूपतासंभवैहै ॥ किंवा जोवादी ऐसेआत्माकेनाशकूंअंगीकारकरैहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोआत्माकानाश या जीवोंकरिकै अज्ञातहै अथवा ज्ञातहै ? तहां सोआत्माकानाश अज्ञातहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं? जैसे कोईपुरुष मेरीमातावंध्याथीयाप्रकारकावचनकहै ॥ सोताकावचन वदतोव्याघातदोषवालाहोवैहै ॥ तैसे आत्माका नाश किसीजीवकरिकैज्ञाततौहैनहीं ॥ परंतु आत्माकानाश विद्यमानहै ॥ याप्रकारका तावादीकावचनभी वदतोव्याघातदोषवा लाहै ॥ किंवा जोपदार्थ किसीभीजीवकरिकै ज्ञातनहींहोवैहै ॥ तापदार्थविषे सत्यरूपता संभवैनहीं ॥ किंतु उलटा तापदार्थविषे असत्यरूपताही संभवैहै ॥ जैसे वंध्यापुत्रनरशृंगादिक किसीभीजीवकरिकैज्ञातनहींहैं ॥ यातैं तेवंध्यापुत्रनरशृंगादिक असत्यरूपहीहैं ॥ तैसे किसीभीजीवकरिकैअज्ञातहुआ सोआत्माकानाशभी असत्यरूपहीहोवैगा ॥ यातैं सोआत्माकानाश अज्ञात है यहप्रथमपक्ष संभवैनहीं ॥ और सोआत्माकानाश ज्ञातहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ ताआत्माकेनाशकाज्ञाता आत्माहै अथवा अनात्माहै ? तहां आत्माकेनाशकाज्ञाता अनात्माहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं? आत्मातैंभिन्न जितनेअनात्मपदार्थहैं ॥ तेसंपूर्णअनात्मपदार्थ जडरूपहैं ॥ जडपदार्थोंकूं आपणा तथा परका ज्ञानहोवैनहीं ॥ यातैं तिनजडपदार्थोंविषे ज्ञातापणा लोककरिकै तथाशास्त्रकरिकै विरुद्धहै ॥ काहेतैं? लौकिकपुरुष

तथाशास्त्रवेत्तापुरुष चेतनआत्माविषेही ज्ञातापणामानैहैं ॥ घटादिकजडपदार्थोंविषे कोईभीपुरुष ज्ञातापणामानतानहीं ॥ और आत्माकेनाशकाज्ञाता आत्माहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै तावादीसें यहपूछाहिये ॥ ताआत्माकेनाश कूं विनष्टआत्मा जानैहै अथवा अविनष्टआत्मा जानैहै ? तहां विनष्टआत्मा ताआत्माकेनाशकूं जानैहै यहप्रथमपक्ष जोवा दी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? जिसआत्माकानाशहुआहै ॥ सोविनष्टआत्मा आपणेनाशकेजानणेविषे समर्थहोइ सकैनहीं ॥ काहेतें ? यालोकविषे अन्यपुरुषकेनाशकूंही अन्यपुरुष जानैहै परंतु आपणेनाशकूं कोईभीपुरुष जाणतानहीं ॥ और अविनष्टआत्मा ताआत्माकेनाशकूंजाणेहै यहदूसरापक्ष जोवादीअगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? आत्माकेवि द्यमानहुए आत्माकानाश संभवैनहीं ॥ और पदार्थकेविद्यमानहुएही तापदार्थकाज्ञानहोवैहै ॥ यातें ताआत्मनाशकेअभावहुए ता काज्ञानभीसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ! विद्यमानपदार्थकाहीज्ञानहोवैहै यहनियम संभवैनहीं ॥ काहेतें ? असत्यपदार्थोंका भीज्ञान लोकविषेदेखजाताहै ॥ जैसे शत्रुविषे मित्रपणा अत्यंतअसत्यहै ॥ तौभी भ्रांतपुरुषोंकूं ताशत्रुविषे मित्रपणा प्रतीतहोवै है ॥ तैसे असत्यजोआत्माकानाशहै ॥ ताका आत्माकूंज्ञान संभवैहै ॥ समाधान ॥ हेवादी ! असत्यजोआत्माकानाशहै ताकूं आत्माजानैहै ॥ याप्रकार जोतू अंगीकारकरैगा ॥ तौ ताआत्माकेनाशकूं वंध्यापुत्रशशशृंगकीतुल्यता प्राप्तहोवैगी ॥ सोहमारेकूं भी अंगीकारहै ॥ तात्पर्य ॥ जिसस्थलविषे जिसवस्तुकेअभावकाअभाव बोधनकरियेहै ॥ तिनस्थलविषे तिसवस्तुकीहीसि द्धिहोवैहै ॥ जैसे भूतलविषे घटकाअभावनहींहै ॥ यास्थलविषे ताभूतलविषे ताघटकीविद्यमानताहीसिद्धहोवैहै ॥ तैसे आत्मा कानाश असत्यहै याकहणेतैंभी आत्माकीसत्यरूपताहीसिद्धहोवैहै ॥ सोआत्माकीसत्यरूपता हमारेकूंइष्टहै ॥ हेशिष्य ! इसप्र कार यहआत्मादेव विनाशतैंरहितहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव प्रियतमहै ॥ और यहआत्मादेव प्रियतमरूपहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव परमानंदस्वरूपहै ॥ और याआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न जितनेकीपुत्रस्त्रीधनादिकपदार्थ याजीवोंके सुखकेकारण हैं ॥ तथा तिनपुत्रादिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकैउत्पन्नभयाजो अंतःकरणकापरिणामरूपसुखहै ॥ तासुखसहित तेसंपूर्णपुत्रादिक

पदार्थ जोजीवोंकूंप्रियलागेहैं॥ सो आपणे आत्माकेवासतेही प्रियलागतेहैं॥ स्वभावतें तिनपुत्रादिकपदार्थोंविषे प्रियरूपताहैनहीं॥ जो कदाचित् तिनपुत्रादिकपदार्थोंविषे स्वभावतैंहीप्रियरूपताहोवै॥ तौ जिसकालविषे तेपुत्रादिकपदार्थ यापुरुषकेप्रतिकूलहोवैहैं ॥ तिसकालविषेभी यापुरुषकूं तिनपुत्रादिकपदार्थोंविषे प्रियरूपता प्रतीतहोणीचाहिये ॥ और प्रतिकूलताकालविषे किसीभीपुरुष कूं तिनपुत्रादिकपदार्थोंविषे प्रियरूपताप्रतीतहोवैनहीं ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ तिनपुत्रादिकपदार्थोंविषे स्वभावतैंप्रियरूपता नहीं है ॥ और आपणे आत्माविषे जोजीवोंकीप्रियरूपताहै सो किसीकेवासते नहीं हैं ॥ किंतु स्वभावतैंही यहआत्मादेव प्रियतम रूपहै॥ शंका ॥ हेभगवन्! आत्मातैंभिन्नकिसीपदार्थविषे जोप्रियरूपतानहींहोवै॥ तौ आत्माविषे प्रियतमरूपताभी संभवैनहीं॥ काहेतैं? प्रिय प्रियतर यादोनोंकीअपेक्षाकरिकैही प्रियतमरूपताहोवैहै॥समाधान॥ हेशिष्य! वास्तवतैंविचारकरिकै देखियेतौ कि सीभीअनात्मपदार्थविषे प्रियरूपता तथाप्रियतररूपता हैनहीं॥ तथापि लोकोंकीदृष्टिकूंलैके पुत्रस्त्रीधनादिकपदार्थ प्रियरूपहैं ॥ और तिनपुत्रादिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै उत्पन्नभयाजो अतःकरणकापरिणामरूपसुखहै ॥ सोविषयसुख प्रियतररूपहै ॥ और सोविषयसुख जिसआत्माकेवासतेहै ॥ सोआत्मा प्रियतमरूपहै ॥ याकारणतें सोविनाशतैंरहितआत्मा परमानंदरूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म याश्रुतिविषे ब्रह्मकूंही सत्य ज्ञान अनंतरूपकह्याहै ॥ और आपनैंअबी नानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिकैआत्माविषेही सत् चित् आनंदरूपतासिद्धकरी ॥ ताकरिकै ब्रह्मविषे सा सत्चित्आनंदरूपता किसप्रकारसिद्धहोवैगी? ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! व्याकरणकीरीतिसैं आत्मशब्दकाअर्थ तथाब्रह्मशब्दकाअर्थ एकहीव्या पकचेतनहै ॥ यहवार्ता पूर्वचतुर्थअध्यायविषे दध्यङ्अथर्वणइंद्रकेसंवादविषे हम तुमारेप्रति विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ या तें सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म याश्रुतिविषेस्थितजोब्रह्मशब्दहै ॥ ताब्रह्मशब्दकरिकै यहआनंदस्वरूपआत्माही लक्ष्यरूपकरिकैकथ नकर्‍याहै ॥ सोआनंदस्वरूपआत्मा विनाशतैंरहितहै ॥ यातें ताअविनाशीआत्माके जेसत्यादिकलक्षणहैं ॥ तेसत्यादिक लक्षण ब्रह्मकेहीहैं॥ और जेब्रह्मकेसत्यादिकलक्षणहैं ॥तेसत्यादिकलक्षण आत्माकेही हैं॥शंका॥ हेभगवन्! आत्मरूपब्रह्मके स्वरू

पभूतजेसत्यादिकपदार्थ हैं ॥ तिनसत्यादिकपदार्थोंविषे ताब्रह्मकीलक्षणरूपता संभवैनहीं ॥ काहेतें? यालोकविषे जिनपदार्थोंका परस्पर भेदहोवैहै ॥ तिनपदार्थोंकाही परस्पर लक्ष्यलक्षणभाव होवैहै॥ भेदतैंविना लक्ष्यलक्षणभाव होवैनहीं ॥ समाधान ॥ हे शिष्य! सोलक्ष्यलक्षणभाव आपणीसिद्धिवासतै कल्पितभेदकीअपेक्षाकरैहै ॥ अथवा वास्तवभेदकीअपेक्षाकरैहै ? तहां सोलक्ष्यलक्षणभाव कल्पितभेदकीअपेक्षाकरै यहप्रथमपक्ष जोतू अंगीकारकरैहै॥तौ याकेविषे कोईहमारेसिद्धांतकीहानिहोवैनहीं॥काहेतें ! लक्ष्यपदार्थविषे लक्षणकाकल्पितभेद हमभी अंगीकारकरतेहीहैं और सोलक्ष्यलक्षणभाव वास्तवभेदकीअपेक्षाकरैहै यहदूसरापक्ष जोतू अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं॥ काहेतें? यालोकविषे जितनेलक्ष्यपदार्थ हैं तथा जितनेकीलक्षणपदार्थ हैं तिनोंका जो परस्पर भेदहै सोभेदभी वास्तवतैं हैनहीं॥ किंतु याजीवोंनैं आपणीआपणी बुद्धिकरिकै सोभेद कल्पनाकऱ्याहै॥जबी लोकप्रसिद्धलक्ष्यपदार्थोंविषेभी आपणे लक्षणोंकाभेद कल्पितसिद्धभया ॥ तबी अद्वितीयब्रह्मरूपलक्ष्यविषे सत्यादिकलक्षणोंकाभेद कल्पितहै याकेविषेक्याकहणाहै॥ अब लोकप्रसिद्धलक्ष्यपदार्थोंविषे लक्षणोंकेभेदकूं कल्पितरूपता निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! गंधगुणवाली पृथिवीहोवै है॥तथा पृथिवीत्वजातिवाली पृथिवीहोवै है इसतैंआदिलेकैअनेकप्रकारकेलक्षण पृथिवीआदिकपदार्थोंके नैयायिकादिकवादियोंनैं मानेहैं॥ तहां गंधगुणरूपलक्षण तथा पृथिवीत्वजातिरूपलक्षण वास्तवतैं तापृथिवीरूपलक्ष्यतैं भिन्ननहीं है॥ काहेतें? जो कदाचित् गंधगुणरूपलक्षण तथा पृथिवीत्वजातिरूपलक्षण तापृथिवीरूपलक्ष्यतैंभिन्नहोवै ॥ तौ जैसे गौका तथाअश्वका परस्पर वास्तवतैं भेदहै ॥ यातैं सोगौ अश्वकाधर्मनहीं है ॥ और सोअश्व गौकाधर्म नहींहै ॥ तैसे पृथिवीत्वजातिगंधगुणरूपलक्षणका तथापृथिवीरूपलक्ष्यका परस्पर धर्मधर्मिभावही नहींसिद्धहोवैगा ॥ और जिनपदार्थोंका परस्पर धर्मधर्मिभावसंबंधहोवै है ॥ तिनपदार्थोंकाही परस्पर लक्षणलक्ष्यभाव संबंधहोवैहै यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ पृथिवीआदिकलक्ष्यपदार्थोंविषे गंधगुण पृथिवीत्वजातिआदिकलक्षणोंकाभेद वास्तवतैं हैनहीं ॥ किंतु नैयायिकादिकवादियोंनैं आपणीबुद्धिकरिकै सोभेद कल्पनाकऱ्या है ॥ किंवा! जोकदाचित् गंधगुणादिरूपलक्षण पृथिवीआदिकलक्ष्यपदार्थोंतैं वास्तवतैंभिन्नहोवै॥ तौ जैसे घट पटतैंवास्तव

भेदवालाहै ॥ यातें सोघट पटतैंभिन्नहोइकैप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे पृथिवीआदिकलक्ष्यपदार्थोंतें तेगंधगुणादिकलक्षणभी भि न्नहोइकै प्रतीतहोणेचाहिये ॥ और गंधादिकगुण पृथिवीआदिकोंतैंभिन्नहोइकै प्रतीतहोतेनहीं ॥ यातैंतिनोंका परस्पर वास्तवतैंभे दनहींहै किंतु सोभेद कल्पितहै ॥ ताकल्पितभेदकूं अंगीकारकरिकै जैसे तिनोंका परस्पर लक्ष्यलक्षणभाव संबंध संभवैहै ॥ तैसे अद्वितीयब्रह्मविषे सत्यादिकलक्षणोंका कल्पितभेदमानिकै शास्त्रवेत्तापुरुष तिनोंका परस्पर लक्ष्यलक्षणभाव कथनकरैहैं ॥ अब तिनधर्मोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जैसे ताअद्वितीयब्रह्मविषे कल्पितभेदकूंअंगीकारकरिकै ब्रह्मत्वरूपधर्म रहेहैं ॥ तैसे ताकल्पितभेदकूंअंगीकारकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मविषे आत्मरूपता आनंदरूपता सत्यरूपता ज्ञानरूपता अनंतरूपता यहपांचोधर्मरहैहैं ॥ याकारणतैंही वेदवेत्तापुरुष ताअधिष्ठानरूपसाक्षीआत्माके सत्य ज्ञान अनंत ब्रह्म आत्मा आनंद यहषट्नाम कथनकरैहैं ॥ हेशिष्य! जैसे वास्तवतैं गंधर्वनगरतैंरहितजोआकाशहै ॥ ताआकाशविषे सोगंधर्वनगर कल्पितहोवैहै ॥ तैसे वास्तवतैं जगत्भावतैंरहित जोअद्वितीयआत्माहै ॥ ताअद्वितीयआत्माविषे यहसंपूर्णजगत् कल्पितहै ॥ कैसाहैसोजगत्? अविवेकीलोकोंकूं नित्यरूपकरिकै प्रसिद्धहै ॥ तथा भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा नामरूपक्रियास्वरूपहै ॥ तथा सत्असद्रूपहै ॥ इहां जेपदार्थ नेत्रादिकइंद्रियजन्यज्ञानकेविषयहैं ॥ तिनपदार्थोंकानाम सत्है ॥ और जेपदार्थ इंद्रियजन्यज्ञानकेविषयनहींहैं ॥ तिनपदार्थोंकानाम असत्है ॥ ऐसेकल्पितजगत्का अधिष्ठानरूपजो आत्मादेवहै ॥ ताआत्मादेवकूंही विद्वान्पुरुष तासत्यादिकषट्नामोंकरिकैकथनकरैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! पूर्वआपनैं आत्माके सत्यादिकषट्नामकथनकरे ॥ ते सत्यादिकनाम एकहीआत्माके षट्लक्षणोंकूंकथनकरैंगे ॥ और सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म याश्रुतिविषे ब्रह्मरूपआत्माके तीनही लक्षण कथनकरेहैं॥यातें ताश्रुतिकेसाथ आपकेकहणेकाविरोधहोवैगा॥समाधान॥हेशिष्य! सत्य ज्ञान अनंत ब्रह्म आत्मा आनंद यहषट्नामयद्यपि एकही चेतनआत्माकेबोधकहैं ॥ तथापि तिनषट्नामोंविषे ब्रह्म आत्मा आनंद यातीननामोंकेअर्थकूं लक्ष्यरूपमानिकै सत्य ज्ञान अनंत यहतीननाम क्रमतैं ताआनंदआत्मारूपब्रह्मके तीनलक्षणोंकूंकथनकरैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म

याश्रुतिविषे आत्मा आनंद येदोनोंशब्द कथनकरैनहीं ॥ केवलब्रह्मशब्दकूंहीकथनकर्‍याहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ आत्मा आनद यादानोंशब्दोंकेअर्थका लक्ष्यरूपब्रह्मविषे अंतर्भावकरिकें नाश्रुतिनें ब्रह्मशब्दकाकथनकर्‍याहै ॥ और सत्य ज्ञान अनंत यातीनशब्दोंकरिकै क्रमतैं ताश्रुतिनें तालक्ष्यरूपब्रह्मके तीनलक्षण कथनकरे हैं॥हेशिष्य! इसप्रकार उपनिषद्‌रूपवेदांतशास्त्रके सिद्धतारूपसारकूंजानणेहारे जेब्रह्मवेत्ताविद्वान्‌पुरुषहैं॥ तेब्रह्मवेत्ताविद्वान्‌पुरुष शास्त्रदृष्टिकूं अंगीकारकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मके सत्यज्ञान अनंत यहतीनप्रकारकेलक्षण मानैहैं॥अब सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म याश्रुतिवचनविषे लोकदृष्टिकूंअंगीकारकरिकै जेविद्वान्‌पुरुष एकहीलक्षणअगीकरकरैहैं॥तिनोंकेमतकानिरूपकरैहैं॥ हेशिष्य! कोईकविद्वान्‌पुरुषतौ याप्रकार कथनकरिकै सत्यंज्ञानमनंतं ब्रह्म याश्रुतिविषेस्थितजे सत्य ज्ञान अनंत यहतीनपदहैं॥तेतीनोंपदमिलिकै ताअद्वितीयब्रह्मके एकहीलक्षणकूंकथनकरैहैं॥तात्पर्य यह ॥ सत्यब्रह्महै इतनाहीजोब्रह्मकालक्षणकरियै॥तौ नैयायिक सत्ताजातिवाले द्रव्य गुण कर्म यातीनपदार्थोंकूंसत्यमानैहैं॥तिनद्रव्यादिकपदार्थोंविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैगी ॥ अथवा ब्रह्मकी पारमार्थिकसत्ताहै ॥ और आकाशादिकप्रपंचकीव्यावहारिकसत्ताहै॥और शुक्तिरजतकी तथास्वप्नपदार्थोंकी प्रातिभासिकसत्ताहै॥ यातीनसत्ताकूं अंगीकारकरणेहारे जेकोईकवेदांतीहैं तिनोंकेमतकूंअंगीकारकरिकै व्यावहारिकसत्तावाले आकाशादिकपदार्थोंविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैगी ॥ और ज्ञानरूपब्रह्महै इतनाहीजोब्रह्मकालक्षणकरियै॥तौ नैयायिक ज्ञानकूं आत्माकागुणमानैहैं॥तागुणरूपज्ञानविषे तालक्षणकी अतिव्याप्ति होवैगी॥अथवा सिद्धांतविषे अंतःकरणकेवृत्तिकूंभी ज्ञानकहेहै ॥ तावृत्तिरूपज्ञानविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैगी ॥ और अनंतरूपब्रह्महै इतनाही जोब्रह्मकालक्षणकरियै ॥ तौ नैयायिक कालपरिच्छेदतैंरहित आकाशादिकनित्यपदार्थोंकूं अनंतमानैहैं ॥ तिनआकाशादिकोंविषे तालक्षणकीअतिव्याप्ति होवैगी ॥ यातैं सत्य ज्ञान अनंत यातीनोंपदोंविषे एकएकपद ताब्रह्मकेलक्षणकूंबोधनकरैनहीं॥ किंतु तेतीनोंपद मिलिकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मके एकहीलक्षणकूबोधनकरैहैं ॥ और ताएकलक्षणकेमानणेविषे पूर्वकीन्यांई कोई अतिव्याप्तिआदिकदोष प्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका॥ हेभगवन्! सोअद्वितीयब्रह्म मनवाणीकाअविषयहै ॥ याकारणतैं ताअद्वितीयब्रह्म

कूं ते सत्यादिकपद शक्तिवृत्तिकरिकैतौ बोधनकरिसकैनहीं ॥ किंतु भागत्यागलक्षणाकरिकैही तेसत्यादिकपद ताअद्वितीयब्रह्मकूं बोधकरैंगे ॥ सोलक्ष्यअर्थ तिनसर्वपदोंकाएकहीहै ॥ यातैं एकपदकरिकैही ताअद्वितीयब्रह्मकाबोधहोइसकैहै ॥ दूसरेपद व्यर्थ होवैंगे ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ! सत्य ज्ञान अनंत येतीनोंपद लक्षणावृत्तिकरिकै यद्यपि एकअद्वितीयब्रह्मकेहीबोधकहैं ॥ तथापि तिनसत्यादिकपदोंनैं लक्ष्यरूपब्रह्मविषे बोधनकरीजेव्यावृत्तियांहैं ॥ तिनव्यावृत्तियोंका परस्पर भेदहै ॥ यातैं तिनसत्यादिकपदोंविषे पुनरुक्तिदोषकरिकै व्यर्थरूपताहोवैनहीं ॥ तहां लक्ष्यस्वरूपब्रह्मविषे भ्रांतिकरिकैप्राप्तभया जोअसत्यपणाहै ॥ ताअसत्यपणाकीव्यावृत्तिकूं सत्यशब्द बोधनकरैहै ॥ और तालक्ष्यस्वरूपब्रह्मविषे भ्रांतिकरिकैप्राप्तभयाजोजडपणाहै ॥ ताजडपणाकी व्यावृत्तिकूं ज्ञानशब्द बोधनकरैहै ॥ और तालक्ष्यस्वरूपब्रह्मविषे भ्रांतिकरिकैप्राप्तभया जोपरिच्छिन्नपणाहै॥तापरिच्छिन्नपणाकेव्यावृत्तिकूं आनंदशब्द बोधनकरैहै ॥याअर्थविषे वार्तिकग्रंथकेकर्ता सुरेश्वराचार्यनैं इतनीविशेषता कथनकरीहै ॥ सत्य ज्ञान येदोनों शब्दतौ तालक्ष्यस्वरूपब्रह्मविषे साक्षात् सत्यरूपता ज्ञानरूपता बोधनकरिकै अर्थतैं असत्जडकीव्यावृत्तिकूंबोधनकरैहैं ॥ और अनंतशब्दतौ साक्षात् परिच्छिन्नपणाकीव्यावृत्तिकूंबोधनकरिकै अर्थतैं तालक्ष्यरूपब्रह्मकूंबोधनकरैहै॥हेशिष्य!इसप्रकार सत्य ज्ञान अनंत येतीनोंपद तालक्ष्यस्वरूपब्रह्मविषे असत् जड परिच्छिन्नपणाकेव्यावृत्तिकूंबोधनकरैहैं॥ यातैं जैसे नीलकमल है यहवचन नीलगुणके तथाकमलके परस्पर गुणगुणीभावसंबंधकूंबोधनकरैहै ॥ अथवा सोवचन नीलगुणविशिष्टकमलकूंबोधनकरैहै ॥ तैसे सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म यहश्रुतिवचन सत्यादिकधर्मोंके तथाब्रह्मके गुणगुणीभावसंबंधकूं तथासत्यादिकगुणविशिष्टब्रह्मकूं बोधनकरैनहीं ॥ किंतु भागत्यागलक्षणाकरिकै सोश्रुतिवचन एकअद्वितीयअखंडब्रह्मकूंहीबोधनकरैहै ॥ शंका ॥ हे भगवन् ! सत्य ज्ञान अनंत यातीनोंपदोनैं क्रमतैं ताब्रह्मविषे बोधनकरीजो असत्यपणाकीव्यावृत्ति तथाजडपणाकीव्यावृत्ति तथा परिच्छिन्नपणाकी व्यावृत्ति ॥ तिनअभावरूपतीनव्यावृत्तियोंकेभेदकरिकही ताब्रह्मविषे अद्वितीयरूपताकीहानिहोवैगी ॥ समाधान॥ हेशिष्य! यद्यपि तेअभावरूपव्यावृत्तियां ब्रह्मविषेरहेहैं ॥ तथापि ताब्रह्मतैंभिन्नदूसराकोई भावपदार्थहै नहीं ॥ याकारणतैं सोब्रह्म अद्वितीयरूप

है ॥ याप्रकार भावअद्वैतपक्षकूंमानणेहारेजोहमसिद्धांतीहैं ॥ तिसहमारेमतविषे ताब्रह्मकेअद्वितीयरूपताकीहानिहोवैनहीं ॥ हे
शिष्य! वेदांतशास्त्रकेतात्पर्यकूंजानणेहारे जेपूर्व नृसिंहआश्रमआदिकविद्वान्पुरुषहुएहैं ॥ तिनोनैं जिसअभिप्रायकरिकै यहभा
वअद्वैतपक्ष अंगीकारकऱ्याहै ताअभिप्रायकूं तू श्रवणकर ॥ याब्रह्मरूपआत्माविषे जोकदाचित् सहस्रअभाव रहतेहोवैं ॥ तौनिःशं
कहोइकै तेअभावरहैं ॥ याअर्थकेमानणेविषे आत्माकेअद्वितीयरूपताकूंकथनकरणेहारेहमसिद्धांतियोंकी किंचित्मात्रभी हानिहोवै
नहीं ॥ काहेतें? सो द्वैतप्रपंचकाअभाव वंध्यापुत्रनरशृंगकीन्यांई अत्यंततुच्छहै॥यातें सोद्वैतप्रपंचकाअभाव ताब्रह्मकेअद्वितीयरूप
ताकीहानिकरणेविषे समर्थहोइसकैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जोवादी अभावोंकेभेदकरि
कै ताब्रह्मकेअद्वितीयरूपताकीहानि कथनकरैहैं ॥ तावादीसैंयहपूछाचाहिये ॥ तेअभाव आपणेस्वरूपतैंहीभेदकूंप्राप्तहुए अद्वैतकी
हानिकरैहैं ॥ अथवा आपणेप्रतियोगियोंकेभेदकरिकै भेदकूंप्राप्तहुएतेअभाव अद्वैतकीहानिकरै हैं? अथवा तिनअभावोंकूंविषयक
रणेहारे जेशब्दरूप तथाज्ञानरूप व्यवहारहैं तिनव्यवहारोंकेभेदकरिकै भेदकूंप्राप्तहुएतेअभाव अद्वैतकीहानिकरैहैं? तहां स्व
रूपतैंभेदकूंप्राप्तहुएतेअभाव अद्वैतकीहानिकरैहैं यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? यालोकविषे जित
नेकीअभावहैं ॥ तिनअभावोंका प्रतियोगीकेभेदतैंविना स्वरूपतैंभेद कोईभीवादी अंगीकारकरैनहीं ॥ और प्रतियोगीपदार्थोंके
भेदकरिकै भेदकूंप्राप्तहुएतेअभाव अद्वैतकीहानिकरैहैं यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें? जिसकाल
विषे सर्वजगत्काकारणरूपअविद्या विद्यमानहै ॥ तिसकालविषे यद्यपि प्रतियोगीपदार्थोंकेभेदकरिकै तिनअभावोंकाभेद संभवै
है ॥ तथापि जिसकालविषे याअधिकारीपुरुषोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैहै तिसकालविषे॥ नेहनानास्तिकिंचन ॥ अर्थयह
याअद्वितीयब्रह्मविषे किंचित्मात्रभी द्वैतप्रपंचनहींहै ॥ यहश्रुतिरूपीनृसिंह कार्यसहितअविद्याकूं भक्षणकरिलेवैहै ॥ यातें ताज्ञा
नअवस्थाविषे नाशकूंप्राप्तहुएतिनप्रतियोगीपदार्थोंविषे तिनअभावोंकेभेदकीकारणतासंभवैनहीं ॥ काहेतें? यालोकविषे विद्यमा
नहुएप्रतियोगीपदार्थही अभावोंकेभेदकूंकरै हैं ॥ जैसे विद्यमानहुएघटपटादिकप्रतियोगी घटाभाव पटाभाव आदिकअभावोंका

भेदकरैहैं ॥ और आपणेव्यवहारोंकेभेदकरिकै भेदकूंप्राप्तहुएतेअभाव अद्वैतकीहानिकरैहैं ॥ यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सो भीसंभवैनहीं॥काहेतैं? अभावोंकूंविषयकरणेहारेजेज्ञानहैं तथा अभावोंकूंबोधनकरणेहारेजेशब्दहैं॥तिनदोनोंकानाम व्यवहारहै ॥ तिनव्यवहारोंकाभेद स्वरूपतैंहोवैनहीं॥किंतु तिनअभावोंकेजेप्रतियोगीहैं ॥ तिनप्रतियोगीपदार्थोंकेभेदकीअपेक्षाकरिकैही तिनव्यवहारोंकाभेदहोवैहै ॥ जैसे घटपटरूपप्रतियोगीकेभेदकीअपेक्षाकरिकैही घटाभावहै पटाभावहै याप्रकारकेज्ञानरूपव्यवहारोंका तथाशब्दरूपव्यवहारोंका परस्परभेदहोवैहै ॥ तेअभावोंकेभेदकूंविषयकरणेहारेव्यवहार यद्यपि अज्ञानअवस्थाविषेसंभवैहैं ॥ तथापिजिस कालविषे याअधिकारीपुरुषोंकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं ताअद्वितीयआत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ तिसज्ञानकालविषे याअधिकारीपुरुषोंकीबुद्धि सर्वअनात्मव्यवहारोंकापरित्यागकरिकै केवलआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माविषे एकाग्रभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं यह अर्थ सिद्धभया ॥ प्रतियोगीपदार्थोंकेभेदतैंविना अभावकाभेद संभवैनहीं ॥ और तेसंपूर्णप्रतियोगीपदार्थ आत्मसाक्षात्कारकेहुए नाशकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं ताज्ञानअवस्थाविषे ताअद्वितीयआत्माविषे नानाअभावरहैनहीं ॥ किंतु सर्वद्वैतप्रपंचका एकहीअभावरहैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! सोएकअभावही आत्माकेअद्वितीयरूपताकीहानिकरैगा ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ! ताएकभावका अधिष्ठानरूपजोआत्माहै ॥ ताअधिष्ठानरूपआत्माके वास्तवस्वरूपकाविचारकरिकैदेखियेतौ सोएकअभावभी ताअधिष्ठानआत्मातैं भिन्नहोइकैस्थितहोवैनहीं ॥ किंतु सोकल्पितप्रपंचकाअभाव अधिष्ठानआत्मारूपहीहै ॥ जैसे कल्पितसर्पकाअभाव रज्जरूपहीहोवैहै ॥ किंवा लौकिकदृष्टिकूंअंगीकारकरिकैभी अधिष्ठानतैंभिन्नरूपकरिकै ताअभावकीसत्ता प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं साअप्रसिद्धअभावकीसत्ता अद्वैतकानाश किसप्रकारकरैगी ! किंतु साअप्रसिद्धअभावकीसत्ता ताअद्वैतकानाश कदाचित्भीनहींकरैगी ॥ काहेतैं? यालोकविषे प्रसिद्धपदार्थही अन्यपदार्थकानाशकरैहै ॥ अप्रसिद्धपदार्थ किसीपदार्थकानाशकरैनहीं ॥ जोकदाचित् अप्रसिद्धपदार्थभी किसीवस्तुकानाशकरताहोवै ॥ तौ अप्रसिद्धवंध्यापुत्रकरिकैभी किसीशत्रुकानाशहोणाचाहिये ॥ और वंध्यापुत्र किसीशत्रुकानाशकरतानहीं ॥ तैसे अप्रसिद्धअभावकीसत्ताकरिकै अद्वैतकानाश संभवैनहीं ॥ और जोवादी घटादिकपदार्थोंकीन्या

ई ताअभावकीभीअधिष्ठानतैंभिन्नहीसत्ता अंगीकारकरै ॥ तौ घटादिकभावपदार्थोंका तथाअभावका परस्पर भेदसिद्धनहीहोवैगा ॥ किंवा सोअभाव स्वरूप विशेष सत्ता इत्यादिकसर्वधर्मोंतैंरहितहै ॥ यातैं ताअभावकूंअस्तिरूपकरिकैकथनकरणेको कोईभीजीव समर्थनहींहै ॥ किंतु जैसे वंध्यापुत्र नरशृंग इत्यादिकअसत्पदार्थ विकल्पज्ञानकेविषयहोवैहैं ॥ तैसे सोअभावभी केवल विकल्पज्ञानकाहीविषयहै ॥ किसीप्रमाणजन्यज्ञानकाविषयहैनहीं ॥ तहां जिसशब्दकाअर्थ किसीदेशविषे तथाकिसीकालविषे किसीभीजीवकूं प्रसिद्धनहींहोवै ॥ तिसशब्दकेश्रवणतैं जोपुरुषोंकूं तिसअर्थकाज्ञानहोवैहै ॥ ताकानाम विकल्पज्ञानहै ॥ जैसे वंध्यापुत्र याशब्दकाअर्थ जोवंध्यास्त्रीकापुत्रहै ॥ सोवंध्यापुत्र किसीदेशविषे तथाकिसीकालविषे किसीभीजीवकूं प्रसिद्धनहींहै ॥ यातैं वंध्यापुत्र याशब्दकेश्रवणतैं जोपुरुषोंकूं तावंध्यापुत्रकाज्ञानहोवैहै ॥ सोज्ञान विकल्परूपहै ॥ ऐसेविकल्परूपज्ञानकेविषयहोणेतैं जैसे वंध्यापुत्रनरशृंगादिकअसत्यपदार्थ तुच्छरूपहैं॥तैसे ताविकल्परूपज्ञानकाविषयहोणेतैं सोअभावभी तुच्छरूपहै ॥ ऐसातुच्छअभाव आत्माकेअद्वितीयरूपताकीहानि करिसकैनहीं ॥ किंवा सोअभावकाविकल्परूपज्ञानभी तवपर्यंत रहैहै ॥ जबपर्यंत याअधिकारीपुरुषोंकूं अद्वितीयआत्माकासाक्षात्कार नहींप्राप्तभयाहै ॥ और जबी याअधिकारीपुरुषोंकूं सोअद्वितीय आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ तबी सोविकल्परूपज्ञानभी नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ऐसीआत्मसाक्षात्कारअवस्थाविषे सोद्वैतप्रपंचकाअभाव ताअद्वितीयआत्माविषे किसप्रकारस्थितहोवैगा ? किंतु नहींस्थितहोवैगा ॥ यातैं सोद्वैतप्रपंचकाअभाव आत्माकेअद्वितीयरूपताकीहानिकरैनहीं ॥ याप्रकारकेविचारकियेहुए सोब्रह्मरूपआत्मा सर्वद्वैततैंरहितहोवैहै यहअर्थसिद्धभया ॥ अब सत्यं ज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ याश्रुतिविषेस्थितअनंतपदनें जिनपरिच्छिन्नपदार्थोंकीव्यावृत्ति बोधनकरीहै॥ तिनपरिच्छिन्नपदार्थोंका निरूपण करैहैं ॥ हेशिष्य ! यालोकविषे आत्मातैंभिन्न जितनेकीअनात्मपदार्थहैं ॥ तेअनात्मपदार्थ देशपरिच्छेद कालपरिच्छेद वस्तुपरिच्छेद यातीनपरिच्छेदोंकरिकैयुक्तहैं ॥ याकेविषेभी इतनीविशेषताहै ॥ कार्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जितनेकीघटपटादिकपदार्थहैं ॥ तेघटपटादिकपदार्थ किसीदेशविषेतौहैं ॥ और किसीदेशविषेनहीहैं ॥ याकारणतैं तेघटादिकपदार्थ देशपरिच्छेदवालेहैं ॥ और तेघटप

टादिकपदार्थ किसीकालविषैतौ हैं॥ और किसीकालविषेनहीं हैं॥ याकारणतैं तेघटादिकपदार्थ कालपरिच्छेदवाले हैं॥ और तादेशविषे तथाकालविषे देशपरिच्छेद तथाकालपरिच्छेद संभवैनहीं॥ यातैं तादेशविषे तथाकालविषे परस्पर भेदरूपवस्तुपरिच्छेदही रहै है॥ यातैं तेदेशकालभी परिच्छिन्ननहीं हैं॥ शंका॥ हेभगवन्! परस्परभेदरूपवस्तुरिच्छेद जैसे देशकालविषे रहै है॥ तैसेघटपटादिकपदार्थोंविषेभी सोभेदरूपवस्तुपरिच्छेदरहै है॥ यातैं एकवस्तुपरच्छेदकरिकैही सर्वजगत्विषे परिच्छिन्नपणा सिद्धहोइसकै है॥ यातैं देशपरिच्छेद कालपरिच्छेद यादोनोंपरिच्छेदोंकूं अंगीकारकरणानिष्फलहै॥ समाधान॥ हेशिष्य! यद्यपिवास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौएकवस्तुपरिच्छेदकरिकैहीसर्वजगत्विषे परिच्छिन्नपणा सिद्धहोइसकैहै तथापि मंदबुद्धिपुरुषोंऊपरि अनुग्रहकरणेवासतै शास्त्रविषे तीनपरिच्छेदोंका निरूपणकर्‍याहै॥ हेशिष्य! जिसअभिप्रायकरिकै शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं तीनपरिच्छेदमाने हैं॥ ताअभिप्रायकूं तू श्रवणकर॥ कोइकनैयायिकवादीतौ पृथिवी जल तेज वायु याचारिभूतोंके सूक्ष्मपरमाणुवोंकूंही याजगत्काकारणमानैं हैं॥ तिननैयायिकोंकेमतविषे तेपरमाणु नित्यहैं॥ यातैं तिनपरमाणुवोंविषे कालपरिच्छेदतौ रहैनहीं॥ और तिनपरमाणुवोंविषे यद्यपि भेदरूपवस्तुपरिच्छेदरहैहै॥ तथापि तामेदविषे वस्तुपरिच्छेदरूपता तेनैयायिक अंगीकारकरतेनहीं॥ यातैं तिनपरमाणुवोंविषे वस्तुपरिच्छेदभीरहैनहीं॥ किंतु तेनैयायिकतिन परमाणुवोंविषे केवलदेशपरिच्छेदही अंगीकारकरैं हैं॥ शंका॥ हेभगवन्! प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकेअविषय जेपरमाणुहैं॥ तेपरमाणु तिननैयायिकोंकेमतविषे किसप्रकार सत्यरूपहै?॥ समाधान॥ हेशिष्य! जैसे मूढबालकोंकेमतविषे असत्यवंध्यापुत्रभी सत्यरूपहोवैहै॥ तैसे तिननैयायिकोंकेमतविषे असत्यपरमाणुभी सत्यरूपहोवै हैं॥ काहेतें? यालोकविषे ऐसा कौनपदार्थहै जो भ्रांतिज्ञानकाविषयनहींहोवै? किंतु सर्वपदार्थ भ्रांतिज्ञानकेविषयहोइसकैहैं॥ और हेशिष्य! कोईकसांख्यशास्त्रवालेवादीतौ महत्तत्त्वकूं विभुमानैं हैं॥ तथा सर्वविकारोंकाकारणमानैं हैं॥ यातैं तिनसांख्यवादियोंकेमतविषे यद्यपि सोहमहत्तत्त्व देशपरिच्छेदतैं तथा वस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै॥ तथापि सोमहत्तत्त्वप्रलयकालविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै॥ यातैं सोमहत्तत्त्व केवलकालपरिच्छेदवालाही होवैहै॥ और हेशिष्य! केईकवादीतौ आकाश काल दिशा आत्मा याचारोंकूं विभुमानैं हैं तथानित्यमानैंहैं॥ यातैं तिनवा

दियोंकेमतविषे देशपरिच्छेद तथाकालपरिच्छेद यहदोनों तिनआकाशादिकोंविषेरहैंनहीं॥किंतु केवलभेदरूपवस्तुपरिच्छेदही तिन आकाशादिकोंविषेरहे है ॥ इसप्रकार भ्रांतिकूंप्राप्तहुयेजेवादीहैं ॥ तिनवादियोंकेबोधकरणेवासतै तिनवादियोंकेअनुसार शास्त्रविषेतीनपरिच्छेदोंकाकथनकऱ्याहै ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ एकवस्तुपरिच्छेदकरिकैही सर्वजगत्विषे परिच्छिन्नपणा सिद्धहोइसकैहै ॥ हेशिष्य! सोभेदरूपवस्तुपरिच्छेदभी तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां एकतौ स्वगतभेदहोवैहै ॥ और दूसरा सजातीयभेदहोवैहै ॥ और तीसरा विजातीयभेदहोवैहै ॥ तहां आपणेस्वरूपविषे आपणेअवयवोंकाजोभेदहै ताकानाम स्वगतभेदहै॥ जैसे एकहीवटकेवृक्षविषे शाखा पत्र फलादिरूपअवयवोंकाभेदहै ॥ और समानजातिवालेपदार्थकाजोभेदहै ताकानाम सजातीयभेदहै ॥ जैसे एकवटकेवृक्षविषे दूसरेवटकेवृक्षकाभेदरहैहै ॥ तहां वटत्वरूपजाति तिनदोनोंवृक्षोंविषेसमानहै ॥ और विरुद्धजातिवालेपदार्थकाजोभेदहै ताकानाम विजातीयभेदहै ॥जैसे तावटकेवृक्षविषे पिप्पलकेवृक्षकाभेदहै॥ तहां पिप्पलत्वरूपजाति वटकेवृक्षविषेरहैनहीं ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यहतीनप्रकारकाजोभेदहै॥ तथा देशपरिच्छेद कालपरिच्छेद वस्तुपरिच्छेद यहतीनप्रकारकाजोपरिच्छेदहै ॥ इनसंपूर्णोंकानाम परिच्छिन्नपणाहै ॥ सोपरिच्छिन्नपणा यद्यपि ताब्रह्मविषेवास्तवतैंनहीं है ॥ तथापि ताब्रह्मविषे सोपरिच्छिन्नपणा भ्रांतिकरिकैकल्पितहै ॥ ताभ्रांतिसिद्धपरिच्छिन्नपणाकूं सो अनंतशब्द निवारणकरैहै ॥ हेशिष्य! जिसब्रह्मविषे सोअनंतशब्द परिच्छिन्नपणाकीनिवृत्तिकरैहै॥सोब्रह्मकैसाहै ? वास्तवतैं पूर्वउक्तदेशादिकतीनपरिच्छेदोंतैं तथास्वगतादिकतीनभेदोंतैं रहितहै॥ तथा तिनपरिच्छेदोंकेअभावतैंभीरहितहै ॥ काहेतैं? ताब्रह्मविषे जोकदाचित् सोअभाव भिन्नरूपकरिकैरहैगा॥तौ सोअनंतशब्द पुनःक्षोभकूंप्राप्तहोवैगा॥याकारणतैं सोअनंतशब्द तिनपरिच्छेदोंकेअभावकूंभी निवारणकरैहै॥यातैं सोआनंदस्वरूपआत्मा सर्वभेदतैंरहित परिपूर्णब्रह्मरूपहै॥इतनैकरि कै॥सत्यंज्ञानमनंतं ब्रह्म याश्रुतिविषेस्थित जोअनंतपदहै ॥ ताअनंतपदकेफलकानिरूपणकऱ्या ॥ अब ज्ञानपदकेफलकानिरूपणकरैहैं॥हेशिष्य! सत्यं ज्ञानंमनंतंब्रह्म ॥ याश्रुतिविषे कथनकऱ्याजोआत्मरूपब्रह्महै॥ताब्रह्मकूं कोईकनैयायिकवादी जडरूपमानैहैं ॥यातैं तिनवादियोंकी

भ्रांतिकरिकैसिद्ध जोब्रह्मविषेजडपणाहै ॥ ताजडपणाकूं यहज्ञानशब्द निवारणकरैहै ॥ हेशिष्य! सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म याश्रुतिविषेस्थितजोज्ञानशब्दहै ॥ ताज्ञानशब्दका कोईकनैयायिकवादी याप्रकारकाअर्थकरेहैं ॥ ज्ञानगुण जिसविषेरहैहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ याप्रकारका ज्ञानशब्दकाअर्थ करिकै ताब्रह्मकूं ज्ञानगुणवालामानैहैं ॥ ज्ञानस्वरूपमानै नहीं ॥ याप्रकारका जोज्ञानशब्दकाअर्थ अंगीकारकरियै ॥ तौ सोज्ञानशब्द ताब्रह्मविषे जडपणाकीव्यावृत्ति करिसकैगानहीं ॥ काहेतें? जैसे यहभूमि मनुष्यवालीहै या प्रकारकावचन ताभूमिविषे मनुष्यतैंभिन्नपणाकीनिवृत्तिकरैनहीं ॥ तैसे ज्ञानगुणवालाब्रह्महै यहवचनभी ताब्रह्मविषे ज्ञानतैंभिन्नत्वरूपजडपणाकी निवृत्तिकरैनहीं॥यातें सोज्ञानशब्द ज्ञानगुणवालेब्रह्मकाबोधनकरैनहीं॥किंतु ताब्रह्मविषे जडपणाकीनिवृत्तिकरणेवासतै सोज्ञानशब्द केवलज्ञानरूपताकूंहीबोधनकरैहै॥हेशिष्य! यहज्ञानशब्द ताब्रह्मविषे जैसे जडरूपताकीव्यावृत्तिकरैहै॥ तैसे अप्रकाशरूपताकी तथापरप्रकाशरूपताकीभी व्यावृत्तिकरैहै॥ काहेतें? सोब्रह्म जोकदाचित् अप्रकाशरूपहोवै॥ तौ जैसे अप्रकाशरूपहोणेतें घटादिकपदार्थ जडरूपहैं ॥ तैसे अप्रकाशरूपहोणेतें सोब्रह्मभी जडरूपहोवैगा॥ यातें सोब्रह्म अप्रकाशरूपनहींहै ॥ किंतु प्रकाशरूपहै॥ हेशिष्य! ताब्रह्मकूं प्रकाशरूपतासिद्धहुएभी सोब्रह्म जोकदाचित् परप्रकाशहोवै॥तौ जैसे सूर्यचंद्रमादिकप्रकाश परप्रकाशहोणेतें जडरूपहैं ॥ तैसे परप्रकाशहोणेतें ताब्रह्मकूं पुनःजडरूपता प्राप्तहोवैगी ॥ यातें ताजडतादोषकेनिवारणकरणेवासतै सोज्ञानशब्द ताब्रह्मविषे परप्रकाशरूपताकी निवृत्तिकरिकै केवलस्वयंप्रकाशरूपताकूं बोधनकरैहै ॥ इतनैकरिकै ज्ञानपदकेफलका निरूपणकऱ्या ॥ अब सत्यपदकेफलकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जैसे रज्जुविषेसर्प तथाशुक्तिविषेरजत असत्यहोवैहै तैसे यहस्वयंज्योतिब्रह्म असत्यरूपमतहोवै ॥ याप्रकारकीसंभावनाकरिकै ताब्रह्मविषेप्राप्तभयाजोअसत्यपणाहै ॥ ताभ्रांतिसिद्धअसत्यपणाकूं यहसत्यशब्द निवारणकरैहै ॥शंका॥ हेभगवन्! शुक्तिरजतविषे तथारज्जुसर्पविषेभीभ्रांतिकालपर्यंत सत्यपणाहीविद्यमानहै ॥ यातें यहसत्यशब्द ताब्रह्मविषे असत्यपणाकीव्यावृत्ति किसप्रकारकरैहै? ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! ज्ञानशब्दकी तथाअनंतशब्दकी समीपताकरिकै सोसत्यशब्द ताब्रह्मविषे असत्यपणाकीव्यावृत्तिकरैहै ॥ काहेतें? यालोकविषे जोजोपदार्थ परि

च्छिन्नहोवैहै तथाजडहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ नाशकूंअवश्यप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे रज्जुसर्पादिकपदार्थ तथाघटादिकपदार्थ परिच्छिन्न हैं तथाजडहैं ॥ यातें तेपदार्थ किसीनिमित्तकरिकै नाशकूंभीअवश्यप्राप्तहोवैहैं ॥ और यहब्रह्मतौ परिच्छिन्नपणातैं तथा जडपणातैंरहितहै ॥ यातें ताब्रह्मकूं कोईभीकारण नाशकरिसकैनहीं ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ या श्रुतिविषेस्थित जे सत्य ज्ञान अनंत यहतीनपदहैं ॥ तेतीनोंपद क्रमतें असत्य जड परिच्छिन्नपणाकीनिवृत्तिकरिकै ताअ द्वितीयब्रह्मकूंबोधनकरेहैं ॥ हेशिष्य! सोलक्ष्यस्वरूपब्रह्म यद्यपि सर्वत्रपरिपूर्णहै ॥ तथापि सोब्रह्म याबुद्धिरूपगुहाविषेही साक्षिरूपकरिकै स्पष्टप्रतीतहोवैहै ॥ ऐसेसाक्षिरूपब्रह्मकूं जोअधिकारीपुरुष मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणाआत्मारूपक रिकैजानैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष ताब्रह्मकीन्याई सर्वजगत्कूं आपणे अस्ति भाति प्रिय रूपकरिकै व्याप्तकरेहै ॥ और ता सर्वजगत्कूं व्याप्तकरिकै सोविद्वान्पुरुष एकहीकालविषे सर्वमनवांछितपदार्थोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य! सत्यंज्ञानमनंतंब्र ह्म ॥ याश्रुतिविषे जोब्रह्मरूपआत्मा सत्यज्ञानअनंतरूपकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ सोब्रह्मरूपआत्मा सर्वभेदतैंरहितहै ॥ या कारणतैं सोआत्मादेव अद्वितीयरूपहै॥ ताब्रह्मकेअद्वितीयरूपताविषे जोविद्वान्पुरुषोंनें युक्ति कथनकरीहै॥ तायुक्तिकूं तू श्रवणक र ॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवैहै ॥ सोसोकार्यपदार्थ आपणेकारणतैं भिन्नसत्तावालाहोवैनहीं ॥ जैसे मृत्तिकाकेकार्य जेघटशरावादिकहैं ॥ तेघटशरावादिककार्य मृत्तिकारूपकारणतैंभिन्ननहींहैं ॥ किंतु तेघटादिककार्य मृत्तिकारूपही हैं॥ तैसे ब्रह्मरू पआत्माका कार्यरूपजो यहआकाशादिकप्रपंचहै ॥ सोयहआकाशादिकप्रपंच ताआत्मरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ किंतु सोआका शादिकप्रपंच आत्मरूपहीहै ॥ याकारणतैं सोब्रह्मरूपआत्मा अद्वितीयरूपहीहै ॥ याप्रकार जगत्केउत्पत्तिकूंबोधनकरणेहारेवा क्यभी याब्रह्मरूपआत्माके अद्वितीयरूपताकूंही बोधनकरैहैं ॥ अब जगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकीकारणतारूप तटस्थलक्षणकेबोधन करणेवासतै प्रथम ताब्रह्मरूपआत्मातैं याजगत्केउत्पत्तिकाप्रकार निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! यासत्यज्ञानअनंतब्रह्मरूप आत्मातैं प्रथम शब्दगुणवालाआकाश उत्पन्नहोताभया ॥ और ताआकाशतैं स्पर्शगुणवालावायु उत्पन्नहोताभया ॥ और

तावायुतैं रूपगुणवालाअग्नि उत्पन्नहोताभया॥ और ताअग्नितैं रसगुणवालाजल उत्पन्नहोताभया॥ और ताजलतैं गंधगुणवालीपृथि
वी उत्पन्नहोतीभई॥ हेशिष्य! संपूर्णकार्योंविषे आपणाआपणाकारण तादात्म्यसंबंधकरिकैरहैहैं ॥ यातैं सोसत्यरूपआत्मा आकाश
रूपकार्यविषे तादात्म्यसंबंधकरिकैरहैहैं ॥ और सोआकाश वायुरूपकार्यविषे तादात्म्यसंबंधकरिकैरहैहैं ॥ और सोवायु अग्निरूप
कार्यविषे तादात्म्यसंबंधकरिकैरहैहैं ॥ और सोअग्नि जलरूपकार्यविषे तादात्म्यसंबंधकरिकैरहैहैं ॥ और सोजलपृथिवीरूप
कार्यविषे तादात्म्यसंबंधकरिकैरहैहैं ॥ इहां कल्पितभेदकरिकैयुक्त जोवास्तवअभेदहै ताकानाम तादात्म्यसंबंधहै ॥ हेशिष्य! इ
सप्रकार आकाशादिककारणोंका वायुआदिककार्योंविषे तादात्म्यसंबंधहोवैहै ॥ याकारणतैं ताआकाशविषेतौ एकशब्दगुणहीरहै
है ॥ और ताआकाशतैंउत्पन्नभयाजोवायुहै ॥ तावायुविषे शब्द स्पर्श यहदोगुणरहैहैं ॥ तहां वायुविषे स्पर्शगुणतौ आपणाहै
॥ और शब्दगुण आकाशरूपकारणकाहै ॥ और तावायुतैंउत्पन्नभयाजोअग्निहै ॥ ताअग्निविषे शब्द स्पर्श रूप यहतीनगुणरहैहैं
॥ तहां ताअग्निविषे रूपगुणतौ आपणाहै ॥ और शब्द स्पर्श यहदोनोंगुण आकाशवायुरूपकारणकेहैं ॥ और ताअग्नितैंउत्पन्नभ
याजोजलहै ॥ ताजलविषे शब्द स्पर्श रूप रस यहचारिगुणरहैहैं ॥ तहां ताजलविषे रसगुणतौ आपणाहै॥ और शब्द स्पर्श रू
प येतीनोंगुण क्रमतैं आकाशवायुअग्निरूपकारणोंकेहैं ॥ और ताजलतैंउत्पन्नभईजापृथिवीहै ॥ तापृथिवीविषे शब्द स्पर्श रूप
रस गंध यहपांचगुणरहैहैं ॥ तहां तापृथिवीविषे गंधगुणतौ आपणाहै॥ और शब्द स्पर्श रूपरस यहचारिगुण क्रमतैं आकाशवा
युअग्निजलरूपकारणोंकेहैं ॥ इसप्रकार आकाशादिककारणोंकेगुण वायुआदिककार्योंविषे प्राप्तहोवैहैं ॥ हेशिष्य! जैसे आकाशा
दिकभूतोंके शब्दस्पर्शादिकगुणहैं ॥ तैसे या आनंदस्वरूपआत्माके ज्ञान आनंद गुणरूपनहीं हैं ॥ किंतु सोज्ञानआनंद आत्मा
कास्वरूपभूतहीहैं॥काहेतैं? जोकदाचित् याचेतनआत्माके ज्ञान आनंद गुणरूपहोवैंगे॥तौ जैसे आकाशादिककारणोंके शब्दादि
कगुण वायुआदिककार्योंविषेप्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे ताआत्मरूपकारणके तेज्ञानादिकगुणभी आकाशादिककार्योंविषेप्रतीतहोते ॥ प
रंतु तिनआकाशादिककार्योंविषे तेज्ञानादिकगुण प्रतीतहोतेनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ तेज्ञानआनंद आत्माकेगुण

रूपनहींहैं ॥ किंतु तेज्ञान आनंद आत्माकेस्वरूपभूतहीहैं ॥ किंवा यालोकविषे जोजोपदार्थ परिणामीकारणहोवैहै ॥ ति
सतिसपरिणामीकारणकेगुणही कार्यविषेप्रतीतहोवैहैं ॥ जैसे आकाशादिकपरिणामीकारणोंकेशब्दादिकगुण वायुआदिकका
र्योंविषे प्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे यहसत्चित्आनंदस्वरूपआत्मा जोकदाचित् आकाशादिकोंका परिणामीकारणहोवै ॥ तौ या
आत्माके सत्चित्आनंदादिकधर्म तिनआकाशादिकभूतोंविषे प्रतीतहोणेचाहिये ॥ और या आत्माके सत्चित्आनंदादिक
धर्म तिनआकाशादिकजडभूतोंविषे देखतेनहीं ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ यहआत्मादेव याआकाशादिकजडजगत्का प
रिणामीउपादानकारण नहींहै ॥ किंतु यहआत्मादेव याजगत्का विवर्त्तउपादानकारणहै ॥ और ताब्रह्मरूपआत्माविषे
साविवर्त्तउपादानरूपता मायातैंविनासंभवैनहीं ॥ यातें सोपरमात्मादेव मायाकरिकैही ताआकाशादिकप्रपंचका विवर्त्तउपा
दानकारणहोवैहै ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे परिणामभावतैंरहितजोरज्जुहै ॥ सारज्जु मायाकरिकैही सर्पकाविवर्त्तउपादानकारण
होवैहै ॥ तैसे परिणामभावतैंरहित यह आत्मादेवभी मायाकरिकैही याजगत्का विवर्त्तउपादानकारणहोवैहै ॥ और ताआत्मा
तैंभिन्न जितनेकी आकाशादिकभूतहैं ॥ तिनआकाशादिकोंके शब्दादिकगुण वायुआदिककार्योंविषे सर्वजीवोंकूं प्रतीतहोवैहैं॥ यातैं
यहजान्याजावैहै ॥ तेआकाशादिक वायुआदिकोंकेपरिणामीउपादानकारणहैं ॥ हेशिष्य! वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ सर्वप
रिणामोंतैंरहित सोआत्मरूपब्रह्महीं सर्वत्रकारणहै ॥ ताब्रह्मतैंभिन्न जितनेकीआकाशादिकपदार्थहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ ताब्रह्मकेही
कार्यहैं ॥ तिनआकाशादिकोंविषे वायुआदिकोंकीकारणतासंभवैनहीं॥ काहेतें? जोकदाचित् आकाशादिकोंकूंहीं वायुआदिकोंका का
रणमानिये ॥ और ब्रह्मकूं वायुआदिकोंका कारणनहींमानिये ॥ तौ ब्रह्मकेज्ञानतैं जोश्रुतिनैं सर्वजगत्काज्ञान कथनकऱ्याहै सोअ
संगतहोवैगा ॥ काहेतें? कारणकेज्ञानतैंविना कार्यकाज्ञानहोवैनहीं॥ यातें ताश्रुतितैं ब्रह्मविषेही सर्वजगत्की कारणतासिद्धहोवैहै
॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोकदाचित् आकाशादिकसर्वकार्योंकेप्रति एकब्रह्मकूंहीकारणताहोवै ॥ तौ आकाशादिकोंविषे वायुआदिकोंके
कारणताकाकथन असंगतहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ संपूर्णकार्योंविषे ब्रह्मकूंही

कारणताहै ॥ तथापि लोकोंकूं जोआकाशादिकोंविषे वायुआदिकोंकीकारणताप्रतीतहोवै है ॥ याकेविषेयहकारणहै ॥ उपाधितैंर हित शुद्धब्रह्मविषेतौ किसीभीपदार्थकी कारणतानहीं है ॥ किंतु मायादिकउपाधियुक्तब्रह्मकूंही याजगत्कीकारणताहै ॥ यातैं जै से मायाविशिष्टब्रह्म आकाशकाकारणहै ॥तैसे आकाशविशिष्टब्रह्म वायुकाकारणहै॥और वायुविशिष्टब्रह्म अग्निकाकारणहै ॥ और अग्निविशिष्टब्रह्म जलकाकारणहै॥और जलविशिष्टब्रह्म पृथिवीकाकारणहै॥और पृथिवीविशिष्टब्रह्म घटादिकोंकाकारणहै ॥ इसप्र कार पूर्वपूर्व आकाशादिककार्यविशिष्टब्रह्म उत्तरउत्तर वायुआदिककार्योंकेप्रति करणहोवैहै ॥ याकारणतैंही तिनआकाशादि कोंविषे वायुआदिकोंकेकारणपणाकाअभिमान लोकोंकूंहोवैहै ॥ और आकाशादिकोंके शब्दादिकगुणोंकूं वायुआदिककार्योंविषे देखिकरिकै वायुआदिककार्योंविषे यहशब्दादिकगुण आकाशादिककारणोंकेआयेहैं ॥ याप्रकारकाभ्रम लोकोंकूंहोवैहै ॥ यातैं सोब्रह्मही सर्वजगत्काकारणहै यहअर्थसिद्धभया ॥ अब पूर्वप्रसंगकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! शब्दादिकपांचगुणोंवाली तथा सर्वब्रह्मांडकीजननी तथास्थावरजंगमरूपसर्वजगत्कूंधारणकरणेहारी जापृथिवी पूर्वजलतैंउत्पन्नभईथी ॥ तापृथिवीतैं अनेकप्र कारकीओषधियां उत्पन्नहोतियांभयां ॥ और तेओषधियां यद्यपि अनेकप्रकारकीहैं ॥ तथापि संक्षेपतैं ते ओषधियां दोप्रकार कीहोवैहैं॥ तहां एकतौ ग्राम्यओषधियांहोवैहैं ॥और दूसरी आरण्यकओषधियांहोवैहै॥ तहां पुरुषोंकेप्रयत्नकरिकैजन्य जेव्रीहियव माषादिकहैं तिनोंकानाम ग्राम्यओषधिहै ॥ और पुरुषोंकेप्रयत्नतैंविनाही वनविषेहोणेहारे जेश्यामकादिकहैं तिनोंकानाम आर ण्यकओषधिहैं ॥ तेदोनोंप्रकारकीओषधियां मनुष्यादिकजंगमप्राणियोंकरिकै भक्षणकरणेयोग्यहैं ॥ ऐसीओषधियोंतैं व्रीहियवा दिक नानाप्राकारकेअन्न उत्पन्नहोतेभये॥औरतिनव्रीहियवादिकअन्नोंकूं स्त्रियां तथापुरुष भक्षणकरतेभये ॥ ताभक्षणकरेहुएअन्न तैं वीर्य उत्पन्नहोताभया॥ कैसाहैसोवीर्य? स्वर्ग मेघ भूमिलोक पुरुष योषित् यापांचअग्नियोंविषे योषितरूपपंचमअग्निका आहुति रूपहै ॥ तिनपांचअग्नियोंका छठेअध्यायविषे विस्तारतैं निरूपणकरिआयेहैं ॥ और तावीर्यतैं हस्तपादादिकअंगोंवाला यहपुरुष शरीर उत्पन्नहोताभया ॥ याकारणतैं यास्थूलशरीररूपपुरुषकूं श्रुतिभगवती अन्नरसमय यानामकरिकै कथनकरैहै ॥ अन्नकेरस

काजोविकारहोवै ताकानाम अन्नरसमयहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जैसे यामनुष्यशरीरकी अन्नतैं उत्पत्तिहोवैहै ॥ तैसे गौअश्वादिक पशुवोंकीभी ताअन्नतैंही उत्पत्तिहोवैहै ॥ यातैं श्रुतिविषे केवलमनुष्यशरीरकीही अन्नतैंउत्पत्ति किसवास्तेकथनकरीहै ? समाधान ॥ हेशिष्य! यद्यपि पूर्वउक्तरीतिसें सर्वशरीरोंकी अन्नतैंहीउत्पत्तिहोवै है ॥ तथापि यहमनुष्यशरीर सर्वशरीरोंनैंश्रेष्ठहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवतीनैं ताअन्नतैं मनुष्यशरीरकीहीउत्पत्तिकथनकरीहै॥ सर्वशरीरोंविषे यामनुष्यशरीरकीप्रधानता प्रथमअध्यायविषे कथनकरीआयेहैं ॥ हेशिष्य! जैसे पितामातानैंभक्षणकऱ्याजो अन्नहै ॥ ताअन्नतैं शुक्रशोणितद्वारा यहस्थूलशरीर उत्पन्नहोवैहै ॥ याकारणतैं यास्थूलशरीरकूं श्रुति अन्नरसमयकहेहै ॥ तैसे दिनदिनविषे अन्नकेभक्षणकरणतैं यास्थूलशरीरकीवृद्धिहोवैहै॥ याकारणतैंभी श्रुतिभगवती यास्थूलशरीरकूं अन्नरसमय यानामकरिकैकथनकरैहै॥ इतनैग्रंथकरिकै ताब्रह्मकीअद्वितीयरूपताजनावणेवासते ताब्रह्मतैं आकाशतैंआदिलेके यास्थूलशरीपर्यंत जगत्केउत्पत्तिकानिरूपणकऱ्या ॥ अब स्थूलबुद्धिवालेपुरुषोंकेप्रति सर्वांतर्यामीपरमात्मादेवकेबोधनकरणेवासतै पंचकोशोंकानिरूपणकरैहैं॥ हेशिष्य! पूर्वहमनैं सत्यज्ञानअनंतरूपकरिकै तथा आकाशादिकजगत्काकारणरूपकरिकै जोब्रह्मरूपआत्मा तुमारेप्रति कथनकऱ्याथा ॥ ताआत्मादेवके स्थूल सूक्ष्म कारण यहतीनप्रकारकेशरीर प्रसिद्धहैं ॥ और तिन तीनशरीरोंविषेही तैत्तिरिनामाब्राह्मण अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय यहपंचकोश कल्पनाकरैहैं ॥ हेशिष्य ! जैसे यालोकविषे खड्गकूंआवरणकरणेहारा जोकाष्ठविशेषहै ॥ ताकूं कोशकहेहैं ॥ तैसे यहअन्नमयादिकभी आत्माकूं आवरणकरैहैं ॥ याकारणतैं तिनअन्नमयादिकपांचोंकूं शास्त्रविषे कोशयानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और असंगबुद्धिरूपशस्त्रतैंरहित जेअज्ञानीपुरुषहैं ॥ तिनअज्ञानीपुरुषोंकरिकै तेअन्नमयादिककोश भेदनकरेजावैनहीं ॥ याकारणतैं तिनअन्नमयादिककोशोंकूं दुर्भेद्यकहेहैं॥ अब तिनपंचकोशोंका तीनशरीरोंविषे अंतर्भाव निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य! यह प्रथमस्थूलशरीरतौ एकअन्नमयकोशरूपहै ॥ और दूसरा सूक्ष्मशरीरतौ प्राणमय मनोमय विज्ञानमय यातीनकोशस्वरूपहै ॥ और तीसरा कारणशरीरतौ एकआनंदमयकोशरूपहै ॥ इसप्रकार तीनशरीरोंविषेही तेपंचकोशरहेहैं ॥ हेशिष्य! इसप्रकार तीनशरी

रोंविषे पंचकोशोंकी कल्पनाकरिकै तैतित्तिरिनामाब्राह्मण आपणेशिष्योंकेबोधकरणेवासतै तिनपंचकोशोंकूं पक्षिरूपकरिकै कल्प नाकरतेभये॥और जैसे लोकप्रसिद्धपक्षियोंके शिर वामपक्ष दक्षिणपक्ष उदर पुच्छ यहपंचअवयवहोवैहैं ॥ तैसे तैतित्तिरिनामाब्रा ह्मण तिनअन्नमयकोशादिरूपपक्षियोंके शिरादिकपंचअवयव कल्पनाकरतेभये॥ अब प्रथमअन्नमयकोशविषे तिनपंचअवयवोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! यहस्थूलशरीरूप जोअन्नमयकोशरूपपक्षीहै ॥ ताका यहप्रसिद्धमस्तकतौ शिरहै ॥ और दक्षिणभु जा दक्षिणपक्षहै ॥ और वामभुजा उत्तरपक्षहै ॥ और यहप्रसिद्धउदर ताकाउदरहै ॥ और यहदोनोंपाद प्रसिद्धपक्षीकेपुच्छकी न्यांई दीर्घहैं॥ तातैं यहदोनोंपाद ताकापुच्छहै ॥ और तेदोनोंपाद याशरीरकेस्थितिकाआधारहैं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ता पादरूपपुच्छकूं प्रतिष्ठा यानामकरिकैकथनकरैहै॥शंका॥हेभगवन्! यहलोकप्रसिद्धपक्षी आपणेपुच्छऊपरि स्थितहोवैनहीं॥यातैं ताप्रतिष्ठापदका स्थितिकीआधारतारूपअर्थ संभवैनहीं ॥ किंतु पक्षीकेशरीरकीसमाप्तिही ताप्रतिष्ठापदकाअर्थहै ॥ समाधान॥ हेशिष्य! यद्यपि यहलोकप्रसिद्धपक्षी आपणेपुच्छऊपरिस्थितहोवैनहीं ॥ तथापिकोईकवानरभल्लूकादिकजीव आपणेपुच्छऊप रिही स्थितहोवैहैं॥ याकरणतैं स्थितिकी आधारताही ताप्रतिष्ठाशब्दकाअर्थहै ॥ हेशिष्य! याप्रकार स्थूलशरीररूपअन्नमयको शकाकथनकरिकै तैतित्तिरिनामाब्राह्मण याअन्नमयकोशविषे याप्रकारका मंत्ररूपश्लोककथनकरैहै ॥ रसबीजभावकूंप्राप्तभयाजो अन्नहै ॥ ताअन्नतैंही यहसंपूर्णपृथिवीविषेस्थितप्रजा उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताअन्नकरिकैहीयहसंपूर्णप्रजा जीवनकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तापृथिवीरूपअन्नविषेही यहसंपूर्णप्रजा लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य! स्थावररूपकरिकैप्रसिद्ध जेयहवृक्षादिकहैं ॥ तिन वृक्षादिकस्थावरोंकी याजलरूपअन्नतैंही उत्पत्तिहोवैहै ॥ और ताजलरूपअन्नकरिकैही तिनवृक्षोंकाजीवनहोवैहै ॥ और ताजलरू पअन्नविषेही तिनवृक्षोंकालयहोवै है ॥ हेशिष्य! जलरूपअन्नकरिकै जोतिनवृक्षादिकोंकी उत्पत्ति स्थिति लय कथनकऱ्याहै ॥ सोकेवलजलकरिकैही तिनवृक्षादिकोंकेउत्पत्तिआदि तुमनैं नहींजानणे ॥ किंतु भूमियुक्त ताजलरूपअन्नतैंही तिनवृक्षादिकोंकी उत्पत्ति स्थितिलय होवैहैं ॥ और मनुष्यादिकजंगमशरीरोंकी उत्पत्तिस्थितिलयविषेतौ यहप्रसिद्धव्रीहियवादिकअन्नही कारणहै ॥

अब दूसरीरीतिसैं तिनस्थावरजंगमशरीरोंका अन्नविषैलय निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! यहवृक्षादिरूप जेस्थावरशरीरहैं ॥ तथा यहमनुष्यादिरूप जेजंगमशरीरहैं ॥ तेसंपूर्णशरीर जीवभावतैंरहितहुए किसीप्राणीके अन्नरूपताकूंप्राप्तहोइकै नाशकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसवस्तुकूं यहप्राणी आपणेक्षुधाकीनिवृत्तिवास्तै भक्षणकरैहैं तिसवस्तुकानाम अन्नहै ॥ याप्रकारका अन्नश ब्दकाअर्थ वृक्षादिरूपस्थावरशरीरोंविषे तथामनुष्यादिरूपजंगमशरीरोंविषे घटहै ॥ काहेतें? वृक्षादिकस्थावरशरीरोंकूं यहमनुष्या दिकजंगमप्राणी शाकादिरूपकरिकैभक्षणकरैहैं ॥ तैसे यामनुष्यादिकजंगमशरीरोंकूंभी सिंहश्वानकृमिआदिकजीव भक्षणकरैहैं ॥ यातैं यहसंपूर्णस्थावरजंगमशरीर अन्नभावकूंप्राप्तहोइकै नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्तासंभवैहै ॥ किंवा यहपृथिवी सर्वजीवों केभोगकासाधानहै ॥ याकारणतैं यहपृथिवी सर्वजीवोंकाअन्नरूपहै ॥ और यहसंपूर्णस्थावरजंगमशरीर आपणेनाशकालवि षे तापृथिवीतैंअभिन्नहोवैहै ॥ याकारणतैंभी तिनसंपूर्णशरीरोंविषे अन्नरूपता संभवहोइसकैहै ॥ हेशिष्य! यहसमष्टिरूपअन्न सर्वप्रजाके उत्पत्तिस्थितिलयका कारणहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताअन्नकूं ज्येष्ठ यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और सर्वरोग रूप जोयहक्षुधाहै ताक्षुधारूपरोगकूं यहअन्न नाशकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याअन्नकूं सर्वौषध यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ हेशिष्य! ताअन्नविषे सर्वभूतोंके उत्पत्तिस्थितिलयकीकारणतारूप ब्रह्मकेलक्षणकूं निश्चयकरिकै जेअधिकारीपुरुष ताअन्नकूं ब्र ह्मरूपकरिकै उपासनाकरैहैं॥तेअधिकारीपुरुष मनवांछितअन्नकीप्राप्तिरूपफलकूं प्राप्तहोवैहैं॥ इहां अन्नशब्दका दोप्रकारकाअर्थ है ॥ व्यष्टिरूपकरिकै जोवस्तु भूतोंकेभक्षणकूंप्राप्तहोवै तावस्तुकानाम अन्नहै॥अथवा समष्टिरूपकरिकै जोवस्तु सर्वभूतोंकूंभक्षण करैहै तावस्तुकानाम अन्नहै ॥ हेशिष्य! याअन्नमयादिकपंचकोशोंविषे जोएकएककोशके शिरादिकपंचपंचअवयवकहेहैं ॥ ति नअवयवोंविषे जिसअवयवकूं पुच्छशब्दकरिकै तथाप्रतिष्ठाशब्दकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ तिसअवयवकूं तिसतिसकोशविषे प्रधान जानणा तथा कारणरूपजानणा ॥ तथा उत्तरउत्तरकोशकूं पूर्वपूर्वकोशकाकारणजानणा ॥ इतनैंकरिकै अन्नमयकोशकानिरूप णकऱ्या ॥ अब जिसनिमित्तकूंलेकै एकहीसूक्ष्मशरीरविषे तीनकोशोंकीकल्पनाकरीहै ॥ तिननिमित्तोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य!

यासूक्ष्मशरीरविषे क्रिया नाम रूप यहतीनों भिन्नभिन्नरहैहैं ॥ तहां तासूक्ष्मशरीरविषे जोक्रियाप्रधानअंशहै ॥ ताकानाम प्राणमयकोशहै ॥ और प्रमाणरूपजोनाम तानामप्रधानजोअंशहै ॥ ताकानाम मनोमयकोशहै ॥ और प्रमेयस्वरूपजोरूपहै ॥ तारूपप्रधानजोअंशहै ॥ ताकानाम विज्ञानमयकोशहै ॥ नाम रूप यादोनोंशब्दोंकेअर्थकूं क्रमतें मनोमयकोशकेनिरूपणविषे तथा विज्ञानमयकोशकेनिरूपणविषे स्पष्टकरिकैकहैंगे ॥ अब प्राणमयकोशकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! तापंचअवयवोंवाले स्थूलशरीररूपअन्नमयकोशतें अन्यअंतर प्राणमयकोशस्थितहै ॥ सोप्राणमयकोशरूपपक्षीभी अन्नमयकोशकीन्यांई शिरादिकपंचअवयवोंवालाहै ॥ और ताप्राणमयकोशतेंअंतर मनोमयकोशहै ॥ और तामनोमयकोशतें अंतर विज्ञानमयकोशहै ॥ और ताविज्ञानमयकोशतेंअंतर अविद्यारूपआनंदमयकोशहै ॥ तिनपांचोंकोशोंविषे उत्तरउत्तरकोश पूर्वपूर्वकोशकेसदृशहीहोवैहै ॥ जैसे मूषाविषे पायेहुएजे द्रवीभूतताम्रादिकधातुहैं ॥ तिनताम्रादिकधातुवोंकरिकै सोमूषा सर्वओरतें परिपूर्णहोवैहै ॥ तैसे उत्तरउत्तरकोशकरिकै पूर्वपूर्वकोश सर्वओरतें परिपूर्णहोवैहै ॥ जैसे प्राणमयकोशकरिकै यहअन्नमयकोश सर्वओरतेंपरिपूर्णहोवैहै ॥ और मनोमयकोशकरिकै यहप्राणमयकोश सर्वओरतेंपरिपूर्णहोवैहै ॥ तहां अत्यंतअग्निकेसंबंधकरिकै द्रवीभावहुएजेताम्रादिकधातुहैं ॥ तेताम्रादिकधातु जिसपात्रविषेपावणेकरिकै मनुष्यादिकोंकेमूर्तिआकारकूंप्राप्तहोवैहैं तापात्रकानाम मूषाहै ॥ अब ताप्राणमयकोशके शिरादिकपंचअवयवोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! मुखनासिकाद्वारा चलणेहारा जोप्राणरूपवायुहै ॥ सोप्राणरूपवायु याप्राणमयकोशरूपपक्षीका शिरोरूपहै ॥ और प्राणअपानकासंधिरूप जोव्यानरूपवायुहै ॥ सो व्यानरूपवायु याप्राणमयपक्षीका दक्षिणपक्षरूपहै ॥ और नीचैगमनकरणेहारा जोअपानरूपवायुहै ॥ सोअपान याप्राणमयपक्षीका उत्तरपक्षहै ॥ और आकाशहैदेवताजिसका ऐसाजोसमानवायु ॥ सोसमाननामावायु याप्राणमयपक्षीका उदररूपहै ॥ और पृथिवीहैदेवताजिसका ऐसाजोउदाननामावायुहै ॥ सोउदाननामावायु याप्राणमयपक्षीका पुच्छरूपहै तथा प्रतिष्ठारूपहै ॥ हेशिष्य! मरणकालविषे याशरीरकापरित्यागकरिकै लोकांतरविषेजाणेहारा जोयहउदाननामावायुहै ॥ सोउदाननामावायु जबी याश

रीरतैंबाहरिनिकसेहै ॥ तबी संपूणप्रांण याशरीरतैंबाहरिनिकसैहैं ॥ याकारणतैं ताउदानवायुरूपपुच्छकूं प्रतिष्ठाकहेहैं ॥ और हेशिष्य! जैसे समष्टिरूपकरिकैध्यानकऱ्याहुआ यहअन्नमयकोश मनवांछितअन्नकीप्राप्तिरूपफलकाहेतुहोवैहै ॥ तैसे समष्टि रूपकरिकैध्यानकऱ्याहुआ यहप्राणमयकोशभी दीर्घ आयुष्यकीप्राप्तिरूपफलकाहेतुहोवैहै ॥ हेशिष्य! याप्राणमयकोशविषेभी ते तित्तिरिनामाब्राह्मण याप्रकारकामंत्ररूपश्लोक कथनकरैहैं ॥ प्राणव्यापारकूंकरणेहारा जोसमष्टिप्राणकाअभिमानीदेवताहै ॥ ता प्राणदेवताकूंआश्रयणकरिकैही संपूर्णदेवता तथासंपूर्णमनुष्य तथासंपूर्णपशु नानाप्रकारकीचेष्टाकरैहैं तथा जीवनकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ और याप्राणोंकेविद्यमानहुएही सर्वप्राणियोंकाजीवनहोवैहै ॥ प्राणोंतैंविना किसीभीप्राणीका जीवनहोवैनहीं ॥ यातैं यहप्रा ण सर्वजीवोंकाआयुष्यरूपहै ॥ याकरणतैंही श्रुतिभगवती याप्राणकूं सर्वायुष यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ ऐसेप्राणकूं जेअ धिकारीपुरुष ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष शतवर्षसहस्रवर्षादिकसंपूर्णआयुष्यकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ हेशिष्य! यह प्राणमयकोश तास्थूलशरीररूपअन्नमयकोशकूं सर्वओरतैं व्याप्यकरिकैरहैहै ॥ याकारणतैं यहप्राणमयकोश ताअन्नमयकोश का आत्मारूपहै ॥ तात्पर्ययह ॥ याअधिकारी पुरुषनैं ताअन्नमयकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरिकै अंतरप्राणमयकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकरणी ॥ अब तीसरेमनोमयकोशका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जैसे याअन्नमयकोशतैं भिन्नरूपकरिकै तथाअंतररूप करिकै तथा ताअन्नमयकोशकाआत्मरूपकरिकै यहप्राणमयकोशस्थितहै ॥ तैसेयाप्राणमयकोशतैंभिन्न तथाताप्राणमयकोशतैंअंतर तथाताप्राणमयकोशकाआत्मरूप तीसरामनोमयकोशहै ॥ अब तामनोमयकोशरूपपक्षीके शिरादिकपांचअवयवोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! तामनोमयकोशरूपपक्षीका यजुर्वेद शिरहै ॥ और ऋग्वेद दक्षिणपक्षरूपहै ॥ और सामवेद उत्तरपक्षहै ॥ और वेदकाब्रा ह्मणभाग उदररूपहै ॥ और अथर्वणवेद शांतिआदिकगुणोंकाकरणहोणेतैं स्थितिकाहेतुहै ॥ याकारणतैं सोअथर्वणवेद यामनो मयपक्षीकापुच्छरूपहै तथाप्रतिष्ठारूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! ऋग् यजुष् साम अथर्वण यहचारोंवेद शब्दरूपहैं ॥ यातैं तिनश ब्दरूपवेदोंविषे मनोमयकोशकीअवयवरूपता संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! यद्यपि यहऋगादिकचारिवेद शब्दोंकासमूह

रूपहीहैं ॥ मानसज्ञानरूपनहीं हैं ॥ तथापि तिनऋगादिकवेदोंकेस्वरूपकाघटक तथातिनऋगादिकवेदोंके प्रमाणरूपताकाघटक जेमानसवृत्तियां हैं तेवृत्तियां मनविषेहीरहैहैं ॥ यातें तेऋगादिकशब्द लक्षणावृत्तिकरिकै तिनमनकेवृत्तियोंकाहीबोधनकरैहैं ॥ यातें तिनशब्दरूपवेदोंविषे मनोमयकोशकीअवयवरूपताकाकथन विरुद्धनहीं है ॥ तात्पर्ययह ॥ केवलककारादिकवर्णोंकूं वेदरूपताहैनहीं॥किंतु कंठादिकस्थानोंके तथाउदात्तादिकस्वरोंके अनुसंधानकरिकैविशिष्ट जेककारादिकवर्णहैं ॥ तिनवर्णोंकेसमूहकूंही वेदरूपताहै ॥ यातें तिनऋगादिकवेदोंकास्वरूप अनुसंधानरूपमानसवृत्तिकरिकै घटितहै ॥ तैसे तिनऋगादिकवेदोंविषे जाप्रमाज्ञानकीकारणतारूपप्रमाणताहै ॥ साप्रमाणताभी स्वभावतैं तिनवेदोंविषेहैनहीं ॥ किंतु मानसवृत्तिरूपप्रमाज्ञाननिरूपित साप्रमाणताहै ॥ यातें तिनवेदोंकीप्रमाणताभी मानसवृत्तिकरिकैही घटितहै ॥ हेशिष्य! यहब्रह्मरूपआत्मा किसीप्रमाणजन्यज्ञानका विषयहैनहीं ॥ यातें सोमन जैसे वेदरूपप्रमाणकरिकै याब्रह्मरूपआत्माकूं साक्षात्विषयकरिसकैनहीं ॥ तैसे सोमन आपणेस्वरूपकरिकैभी ताब्रह्मरूपआत्माकूं विषयकरिसकैनहीं ॥ हेशिष्य! याअर्थविषेभी तैत्तिरिनामाब्राह्मण याप्रकारकामंत्ररूप श्लोक कथनरैहैं ॥ जिसब्रह्मकूं नप्राप्तहोइकै यहमनसहितवाणियां जिसब्रह्मतैं निवृत्तहोइआवैंहैं ॥ ताब्रह्मकेस्वरूपभूतआनंदकूं जाणताहुआ यहविद्वान्पुरुष किसीतैंभयकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेशिष्य! ऋग्वेदतैंआदिलैके जितनेकीवेदरूपवाणियांहैं ॥ तथा पूर्वउक्तरीतिसें तिनवेदरूपवाणीयोंकेस्वरूपकाघटक तथाप्रमाणताकाघटक जोमनहै ॥ तिसवेदवाणीरूपप्रमाणकूं तथातामनरूप प्रमाणकूं यद्यपि याआनंदस्वरूपआत्माकेप्रकाशकरणेविषे सामर्थ्यनहीं है ॥ तथापि शास्त्रकेसंस्कारोंकरिकैयुक्त जो अंतर्मुखशुद्ध मनहै ॥ ताअंतर्मुखशुद्धमनकरिकै यहअधिकारीपुरुष तामनोमयकेअंतःस्थित आत्मस्वरूपआनंदकूंजाणताहुआ ॥ याजन्ममरणादिरूपसंसारतैं भयकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ ताप्राणमयकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरिकै यहअधिकारीपुरुष मनोमयकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकरै ॥ अब विज्ञानमयकोशकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जैसे क्रियारूपप्राणमयकोशतैं प्रमाणरूप मनोमयकोश अंतःस्थितहै ॥ तैसे ताप्रमाणरूपमनोमयकोशतैं यहप्रमाताप्रमेयरूपविज्ञानमयकोश अंतःस्थितहै ॥ अब तावि

ज्ञानमयकोशरूपपक्षीके शिरादिकपांचअवयवोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! सर्वकर्मोंकामूलरूप जोगुरुशास्त्रकेवचनोंविषेविश्वा
सहै ॥ सोविश्वासरूपश्रद्धा याविज्ञानमयपक्षीका शिररूपहै ॥ औरशास्त्रनैंविधानकरेजेयज्ञादिककर्म हैं ॥ तिनकर्मोंकेविचारविषे
जामीमांसाशास्त्रजन्यमानसीबुद्धिहै ॥ सोबुद्धिरूपऋत याविज्ञानमयपक्षीका दक्षिणपक्षरूपहै ॥ और अनुष्ठानकरेहुए जेशास्त्रवि
हितयज्ञादिककर्म हैं ॥ तिनकर्मोंकूंविषयकरणेहारीजाबुद्धिहै ॥ सोबुद्धिरूपसत्य याविज्ञानमयपक्षीका उत्तरपक्षरूपहै ॥ और अ
ध्यात्मशास्त्रकेअर्थकाजो निश्चयहै ॥ सोनिश्चयरूपयोग याविज्ञानमयपक्षीका उदरहै ॥ और सर्वस्थूलप्रपंचकाकारणरूप जा
हिरण्यगर्भकीसमष्टिबुद्धिहै ॥ सोसमष्टिबुद्धिरूपमह याविज्ञानमयपक्षीका पुच्छरूपहै तथाप्रतिष्ठारूपहै ॥ हेशिष्य! याविज्ञान
मयकोशविषेभी तैतित्तिरिनामाब्राह्मण याप्रकारकामंत्ररूपश्लोक कथनकरैहै ॥ यहविज्ञानरूपबुद्धिही यज्ञादिकसर्ववैदिकक
र्मोंकूं तथागमनआगमनादिकसर्वलौकिककर्मोंकूं करैहै ॥ और देवभावकूंप्राप्तहोणेहारे सर्वअधिकारीपुरुष याविज्ञानरूपसमष्टि
बुद्धिकूंही ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरैहैं ॥ और जेअधिकारीपुरुष याविज्ञानमयआत्माकूं ब्रह्मरूपजाणिकरिकै इतरपदार्थोंविषे
आत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष देहअभिमानजन्यपापकर्मोंकापरित्यागकरिकै मनवांछितसर्वपदार्थोंकूंप्राप्तहोवै
हैं ॥ हेशिष्य! पूर्वउक्तमूषाताम्रादिकधातुवोंकेदृष्टांतकरिकै यहविज्ञानमयकोश तामनोमयकोशकूं सर्वओरतैं परिपूर्णकरैहै ॥ यातैं
यहविज्ञानमयकोश तामनोमयकोशका आत्मरूपहै ॥ तात्पर्ययह ॥ याअधिकारीपुरुषनैं तामनोमयकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकाप
रित्यागकरिकै याविज्ञानमयकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकरणी ॥ अब आनंदमयकोशका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! ताविज्ञानमय
कोशतैंअन्य अंतरात्मा आनंदमयकोशहै ॥ सोआनंदमयकोश अव्याकृतरूपहै ॥ अब ताआनंदमयकोशरूपपक्षीके शिरादिकपांच
अवयवोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! इष्टपदार्थकेदर्शनतैंउत्पन्नभयाजोसुखहै ॥ सोसुखरूपप्रिय याआनंदमयपक्षीका शिरहै ॥
और इष्टपदार्थकीप्राप्तिकरिकै उत्पन्नभयाजोसुखहै ॥ सोसुखरूपमोद याआनंदमयपक्षीका दक्षिणपक्षरूपहै ॥ और ताइष्टपदार्थ
केभोगजन्यजोसुखहै ॥ सोसुखरूपप्रमोद याआनंदमयपक्षीका उत्तरपक्षरूपहै ॥ और तिनप्रियमोदादिकविशेषोंविषे जोसुख सामा

न्यरूपतैंअनुगतहै ॥ सोसामान्यसुखरूपआनंद याआनंदमयपक्षीका उदररूपहै ॥ और यासर्वजगत्काकारणरूप जोआनंद स्वरूपब्रह्महै ॥ सोअधिष्ठानरूपब्रह्म याअनंदमयपक्षीका पुच्छरूपहै तथा प्रतिष्ठारूपहै ॥ और यहअज्ञानरूपआनंदमयकोश ताविज्ञानमयकोशकूं सर्वओरतैं परिपूर्णकरिकैस्थितहै ॥ याकारणतैं यहआनंदमयकोश ताविज्ञानमयकोशकाआत्मरूपहै ॥ तात्पर्ययह ॥ याअधिकारीपुरुषनैं ताविज्ञानमयकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरिकै याआनंदमयकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकरणी ॥ इतनैंग्रंथकरिकै अन्नमयादिकपांचकोशोंकानिरूपणकऱ्या ॥ अब जिसअभिप्रायकरिकै श्रुतिभगवतीनैं अन्नमयादिकपांच कोशोंका निरूपणकऱ्याहै ॥ ताअभिप्रायकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! यालोकविषे सर्वदेहधारीजीवोंका चित्त तथाश्रोत्रादिक पांचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपांचकर्मइंद्रिय नित्यबहिर्मुखहीहोवैहैं ॥ याकरणतैं यहसंपूर्णजीव चित्तकरिकै तथाइंद्रियों करिकै बाह्यपदर्थोंकूंहीग्रहणकरैहैं ॥ और याशरीरकेअंतःस्थित जोआनंदकासमुद्ररूपआत्मादेवहै ॥ ताअनंदस्वरूपआत्माकूं कोईभीदेहधारीजीव ग्रहणकरतानहीं ॥ किंतु याअंतरआनंदस्वरूपआत्माकूं परित्यागकरिकै यहसंपूर्णजीव सुखकी प्राप्तिवासते बाहरीहीभ्रमणकरैहैं ॥ और सुखकीप्राप्तिवासते बाहरिभ्रमणकरतेहुएयहजीव किंचित्मात्रभी सुखकूं प्राप्तहोतेनहीं ॥ उलटा ताबहिर्मुखताकरिकैयहजीव महान्दुःखरूपसमुद्रविषे प्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकार तिनबहिर्मुखजीवोंकूं मोक्षरूपपुरुषार्थतैंभ्रष्टहुआदेखिकै तथा जन्ममरणरूपसंसारविषेप्राप्तहुआदेखिकै माताकीन्याई अत्यंतस्नेहयुक्तश्रुतिभगवती अत्यंतदुःखीहोतीभई ॥ और ताबहिर्मुखप्रवृत्तितैं तिनजीवोंकूं साक्षात्निवृत्तकरणेविषे असमर्थहुई साश्रुतिभगवती पंचकोशरूपउपायकाविचारकरिकै प्रथम अधिकारीब्राह्मणोंकूं ताबहिर्मुखप्रवृत्तितैं निवृत्तकरतीभई ॥ शंका ॥ हेभगवन्! माताकीन्याई सर्वजीवोंके हितवासते प्रवृत्तभईजाश्रुतिभगवगतीहै ॥ ताश्रुतिभगवतीनैं प्रथम केवलब्राह्मणोंकूंहीउपदेश किसवासतेकऱ्या ?॥ समाधान ॥ हेशिष्य! साश्रुतिभगवती जिसअभिप्रायकरिकै प्रथम अधिकारी ब्राह्मणोंकेप्रतिही उपदेशकरतीभईहै ॥ ताअभिप्रायकूं तू श्रवणकर ॥ याअधिकारीब्राह्मणोंकूं जबी मैं ताबहिर्मुखप्रवृत्तितैं निवृत्तकरैगी तबी ताबहि

मुखप्रवृत्तितैं निवृत्तहुए यहब्राह्मण अन्यक्षत्रियोंकूं तथावैश्योंकूं वेदकेवचनोंकाउपदेशकरिकै ताबहिर्मुखप्रवृत्तितैंनिवृत्तकरैंगे ॥ तथा अन्यशूद्रादिकोंकूं पुराणकेवचनोंकाउपदेशकरिकै ताबहिर्मुखप्रवृत्तितैं निवृत्तकरैंगे ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकाविचारकरिकै साश्रुतिभगवती याजीवोंकूं बहिर्मुखप्रवृत्तितैंनिवृत्तकरणेवासते तिनअन्नमयादिकपंचकोशोंका उपदेशकरतीभई ॥ शंका ॥ हेभगवन्! तिनअन्नमयादिकपंचकोशोंकाकथनकरिकै साश्रुतिभगवती याजीवोंकेबाह्यप्रवृत्तिकूं किसप्रकारनिवृत्तकरैहै? ॥समाधान॥ हेशिष्य! यालोकविषे रूपयौवनादिकगुणोंकरिकैयुक्त जेपुरुषहैं ॥ तथा रूपयौवनादिकगुणोंकरिकै जेस्त्रियांहैं ॥ तेपुरुष तथास्त्रियां आपणेआपणेशरीरकरिकै प्रसन्नताकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तेपुरुष तथास्त्रियां सुखकीप्राप्तिवासते पिशाचकी न्यांई आपणे शरीरतैंभिन्न किसीजीवत्शरीरकूं अथवा मृतकशरीरकूंही सेवनकरैहैं ॥ और तेपुरुष तथास्त्रियां सुखकीप्राप्तिवासते जिसपरशरीरकासेवनकरैहैं ॥ सोपरशरीरभी स्थूल सूक्ष्म कारण याभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां प्रथम यहस्थूलशरीरतौ अन्नकाविकाररूपहोवैहै ॥ और दूसरासूक्ष्मशरीरतौ प्राण मन विज्ञान यातीनरूपहोवैहै ॥ और तीसराकारणशरीरतौ अनादिअज्ञानरूपहोवैहै ॥ हेशिष्य! केवलपरशरीरही अन्नप्राणादिरूपनहींहै ॥ किंतु यातीनलोकोंविषे जितनाकीप्रपंचहै ॥ सोसंपूर्णप्रपंच अन्न प्राण मन बुद्धि अज्ञान यापंचकोशरूपहीहै ॥ और सोपंचकोशरूप संपूर्णप्रपंच याजीवोंकूं आपणेआपणेशरीरविषेही विराजमानहै ॥ यातैं ताआंतरपदार्थोंकूंपरित्यागकरिकै याजीवोंकूं बाह्यपदार्थोंकिप्राप्तिकीइच्छाकरणी योग्यनहींहै ॥ तात्पर्ययह ॥ मधुकेप्राप्तिकी इच्छावान्जोपुरुषहै ॥ तापुरुषकूं जोकदाचित् आपणेगृहकेसमीपही तामधुकीप्राप्तिहोवै ॥ तौ तापुरुषकूं तिसमधुकीप्राप्तिवासते पर्वतऊपरिजाणा योग्यनहींहै ॥ तैसे याजीवोंकूं याआपणेशरीरविषेही जोसर्वपदार्थोंकीप्राप्तिहोइसकै ॥ तौ तिनपदार्थोंकी प्राप्तिवासते याजीवोंकूं बाह्यभटकणा योग्यनहींहै ॥ हेशिष्य! याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिकै साश्रुतिभगवती माताकी न्यांई कृपाकरिकै तिनअधिकारीपुरुषोंकेप्रति याप्रकारकावचनकहती ॥ हेपुत्र! वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ याआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न किसीवस्तुविषे सुखरूपतानहींहै ॥ परंतु जोकदाचित् तुमारेकूं याप्रकारका चित्तविषेआग्रहहोवै ॥ जोआ

त्मातैंभिन्नवस्तुही हमारेसुखकाकारणहै ॥ तौ आत्मातैंभिन्नवस्तु तुमारेसुखकाकारणहोवै ॥ ताका हम निवारणकरतेनहीं ॥ तथापि आत्मातैंभिन्न जिनअन्नमयादिकपदार्थोंकूं तुमोनैं आपणेसुखकासाधन मान्याहै ॥ तेअन्नमयादिकपदार्थ तुमारेशरीरविषेही विद्यमानहैं ॥ तिनअन्नमयादिकपदार्थोंकूं तुम सेवनकरो ॥ आपणेशरीरविषेविद्यमान अन्नमयादिकपदार्थोंकापरित्यागकरिकै तिन अन्नमयादिकपदार्थोंकीप्राप्तिवासते तुम बाहरिकिसवासतेभ्रमणकरतेहो ? अब याहीअर्थकूं लोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकै स्पष्टकरैं हैं ॥ हे शिष्य ! जैसे यालोकविषे क्षुधाकरिकै तथाकामकरिकै पीडितहुआ कोईकपुत्र आपणेगृहकापरित्यागकरिकै जबी बाहरिजाणेकाउद्यमकरैहै ॥ तबी तापुत्रकीमाता तापुत्रकेहस्तकूंग्रहणकरिकै तापुत्रकूं गृहतैंबाहरिजाणेतैं निवारणकरैहै ॥ और सामाता तापुत्रकेप्रति याप्रकारकावचनकहैहै ॥ हेपुत्र ! अन्नकीप्राप्तिवासते तथास्त्रीकीप्राप्तिवासते तू आपणेगृहकापरित्यागकरिकै बाहरिमत जाव ॥ आपणेगृहतैंबाहरिजाणेकरिकै तेरेकूं बहुतदुःखकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और ॥ जिसअन्नकीप्राप्तिवासते तथाजिनास्त्रियोंकीप्राप्तिवासते तू आपणेगृहकापरित्यागकरिकैबाहरिजाताहै ॥ तेनानाप्रकारकेअन्नादिकपदार्थ तथारूपयौवनअवस्थासंपन्नमनोरमास्त्रियां तुमारेसुखवासते मैं इसआपणेगृहविषेही संपादनकरतीहूं ॥ तिनअन्नादिकपदार्थोंकीप्राप्तिवासते तुमारेकूं आपणेगृहतैंबाहरिजाणा योग्यनहींहै ॥ हेशिष्य ! याप्रकार माताकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै सोपुत्र जो कदाचित् बुद्धिमान्होवैहै ॥ तौ सोपुत्र गृहतैंबाहरिजाणेकेआग्रहकापरित्यागकरिकै कहांअन्नहै कहांस्त्रीहै याप्रकारकावचनकहताहुआ शीघ्रही आपणेगृहविषेप्रवेशकरैहै ॥ और आपणेगृहविषे प्राप्तहुआसोपुत्र तामाताकीकृपाकरिकै संपूर्णमनवांछितपदार्थोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे आपणेशरीरतैंबाहरि परशरीरोंकूं सुखकासाधनमानिकरिकै तासुखकीप्राप्तिवासते बाहरिभ्रमणकरतेहुए जेबाहिर्मुखपुरुषहैं ॥ तिनाहिबर्मुखपुरुषोंकूं अंतर्मुखकरणेवासते श्रुतिभगवतीनैं प्रथम अन्नमयकोशका कथनकर्‍याहै ॥ ताश्रुतिभगवतीकेउपदेशतैं यहअधिकारीपुरुष बाह्यविषयोंकापरित्यागकरिकै ताअन्नमयकोशविषे प्राप्तहोवैहै ॥ और बाह्यस्थूलविषयोंकरिकैजन्यजोसुखहै ॥ तासंपूर्णसुखकूं यहअधिकारीपुरुष ताअन्नमयकोशविषेही प्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार श्रुतिमाताकेउपदेशतैं बाह्यविषयोंतैंनिवृत्तहोइकै ताअन्नमयकोशविषे

स्थितहुआ यहअधिकारीपुरुष यद्यपि स्थूलविषयजन्यसुखकूं प्राप्तहोवैहै॥ तथापि सोअधिकारीपुरुष ताअन्नमयकोशविषे आत्म
रूपवास्तवसुखकूं प्राप्तहोवैनहीं॥याकारणतैं सोसुखकीइच्छावान्अधिकारीपुरुष श्रुतिरूपमाताकेवचनविषे विश्वासकरिकै तास्थूल
शरीररूपअन्नमयकोशकापरित्यागकरिकै ताअन्नमयकोशतैंअंतर तीनकोशरूपसूक्ष्मशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तासूक्ष्मशरीरविषेभी य
हअधिकारीपुरुष प्रथम अन्नमयकोशकापरित्यागकरिकै तिसतैंअंतर प्राणमयकोशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताप्राणमयकोशविषेभी
वास्तवआत्मरूपआनंदकूं नहींदेखताहुआ सोअधिकारीपुरुष ताप्राणमयकोशकाभीपरित्यागकरिकै तिसतैंअंतर मनोमयको
शकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तामनोमयकोशविषेभी वास्तवआत्मारूपआनंदकूं नहींदेखताहुआ सोअधिकारीपुरुष तामनोमयकोशका
भीपरित्यागकरिकै तिसतैंअंतर विज्ञानमयकोशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताविज्ञानमयकोशविषेभी आत्मरूपवास्तवआनंदकूं नहीं
देखताहुआ सोअधिकारीपुरुष ताविज्ञानमयकोशकाभीपरित्यागकरिकै तिसतैंअंतर आनंदमयकोशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताकारणश
रीररूप आनंदमयकोशविषे प्राप्तहुआ यहअधिकारीपुरुष संपूर्णकार्यप्रपंचका परित्यागकरैहै ॥ और ताआनंदमयकोशविषे
सोअधिकारीपुरुष प्रथम इष्टवस्तुकेदर्शनजन्यसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोअधिकारीपुरुष ताइष्टवस्तुकेप्राप्तिजन्यसुख
कूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोअधिकारीपुरुष ताइष्टपदार्थकेभोगजन्यसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोअधिकारीपुरुष
सामान्यसुखरूपआनंदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोअधिकारीपुरुष सर्वतैंअंतरआनंदस्वरूपब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जिसब्रह्मकूं
श्रुतिनैं पुच्छरूपकरिकै तथाप्रतिष्ठारूपकरिकै कथनकर्‍याहै ॥ और इसीसर्वअधिष्ठानब्रह्मकेजनावणेवासतै श्रुतिभगवतीनैं स्थू
लअरुंधतीन्यायकूंअंगीकारकरिकै अन्नमयादिकपंचकोशोंकूं आत्मरूपकरिकै वर्णनकर्‍याहै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार श्रुतिभगव
तीनैं सर्वअधिकारीजनोंऊपरि अनुग्रहकरिकै उपदेशकर्‍याजोआनंदस्वरूपब्रह्महै ॥ ताब्रह्मकूं जोअधिकारीपुरुष आपणाआत्म
रूपकरिकै नहींजानैहै ॥ सोपुरुष जीवताहुआभी वंध्यापुत्रनरशृंगकीन्यांई असत्यभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य ! याअर्थविषेभी
तैतित्तिरिनामाब्राह्मण याप्रकारकामंत्ररूपश्लोक कथनकरैहै ॥ जोपुरुष ब्रह्मनहींहै याप्रकारजानैहै ॥ तिसपुरुषकाआत्मा असत्यही

होवैहै ॥ और जोपुरुष ब्रह्महै याप्रकारजानैहै ॥ तिसपुरुषकूं विद्वान्पुरुष सत्यजानैहैं ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! सर्वकालविषे तथासर्वदेशविषे सर्वकाआत्मरूपकरिकै विद्यमानजोब्रह्महै ॥ ताआनंदस्वरूपब्रह्मकूं जोपुरुष नास्तिरूपकरिकै जानताहै ॥ तथा नास्तिरूपकरिकैकथनकरताहै ॥ तिसपुरुषकूं तामिथ्याज्ञानतैं तथामिथ्यावचनतैं महान्पापकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तापापकर्मरूपदोषकेप्रभावतैं सोनास्तिकपुरुष आपणेअंतर ब्रह्मानंदतैंविमुखहोइकै बाह्यविषयोंकीप्राप्तिवासते रात्रिदिनविषे भ्रमणकरैहै ॥ और ताभ्रमणकरिकै अनेकप्रकारकेदुःखोंकूं प्राप्तहोइकै सोबहिर्मुखनास्तिक पुनःमृत्युकूं प्राप्तहोवै है ॥ और तामृत्युतैं अनंतर सोनास्तिकपुरुष पुनः जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताजन्मतैंअनंतर सोनास्तिकपुरुष पुनःनानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तिनदुःखोंतैंअनंतर सोनास्तिकपुरुष पुनःमृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार यमराजाकेवशकूंप्राप्तहुआ सोदीनपुरुष निरंतर संसारविषेभ्रमणकरैहै ॥ और सोबहिर्मुखनास्तिकपुरुष अल्पआयुषवालाहोवै है ॥ तथा सर्वजन ताकानिरादरकरैहैं ॥ इसप्रकार जन्ममरणादिकअनेकदुःखोंकूंप्राप्तहुआ सोनास्तिकपुरुष असत्यकीन्यांई होवैहै ॥ और हेशिष्य! गुरुशास्त्रकेवचनोंविषेविश्वासकरणेहारा जोआस्तिकपुरुषहै ॥ सोआस्तिकपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं ताब्रह्मकेअस्तिपणाकूंजानिकै जन्ममरणादिकदुःखोंसहितमायाकूंनाशकरणेहाराजोआत्मज्ञानहै ताआत्मज्ञानकूंसंपादनकरैहै ॥ और ताआत्मज्ञानकेप्रभावतैं सोआस्तिकपुरुष सर्वदुःखोंतैंरहितहुआ सर्वदा आनंदस्वरूपब्रह्मरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ ऐसेब्रह्मवेत्ताआस्तिकपुरुषकूं वेदवेत्तामहात्मापुरुष सत्यरूपकरिकैकथनकरैहै ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं सुखकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तिसअधिकारीपुरुषनैं गुरुशास्त्रउपदिष्टअतींद्रियअर्थविषे नास्तिकपणा कदाचित्भीनहींकरणा ॥ किंतु तागुरुशास्त्रउपदिष्टअर्थविषे याअधिकारीपुरुषोंनैं सर्वदा आस्तिकपणाहीकरणा ॥ अब कोईकवृत्तिकारएकदेशी आनंदमयकोशकूंही ब्रह्मरूपकरिकैमानैहैं ॥ तिनोंकेमतकेखंडनकरणेवासतै अन्नमयादिकपंचकोशोंके शिरादिकअवयवोंकेपरंपराकी पुच्छरूपब्रह्मविषेपरिसमाप्तिका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय यापांचकोशोंविषे एकएककोशके शिर दक्षिणपक्ष उत्तरपक्ष उदर पुच्छ यहपंचपंचअव

यव कथनकरैहैं ॥ तिनपंचकोशोंके पंचपंचअवयवमिलिकै २५ पंचविंशतिअवयवहोवैहैं ॥ तेपंचविंशतिअवयवरूपभूमिका या बहिर्मुखचित्तकेस्थिरकरणेका कारणहोवैहैं ॥ अब तिनोंकेध्यानकाप्रकार निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! यहअधिकारीपुरुष आपणे चित्तकी बहिर्मुखताकेनिवृत्तिकरणेवासते प्रथम यास्थूलशरीररूप अन्नमयकोशरूपपक्षीके मस्तककूं शिररूपकरिकैध्यानकरै ॥ तिसतैंअनंतर दक्षिणभुजाकूं दक्षिणपक्षरूपकरिकैध्यानकरै ॥ तिसतैंअनंतर वामभुजाकूं उत्तरपक्षरूपकरिकैध्यानकरै ॥ तिसतैंअनंतर उदरकूं उदररूपकरिकैध्यानकरै ॥ तिसतैंअनंतर दोनोंपादोंकूं पुच्छप्रतिष्ठारूपकरिकैध्यानकरै ॥ तिनपुच्छरूपपादोंतैंपरे याअन्नमयकोशविषे दूसराकोईपदार्थहैनहीं ॥ इसप्रकार अन्नमयकोशकाध्यानकरिकै तिसतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष ताअन्नमयकोशकेअंतर दूसरेप्राणमयकोशकाध्यानकरै ॥ ताप्राणमयकोशविषेभी अन्नमयकोशकीन्यांई शिरादिकपंचअवयवोंका यथाक्रमतैंध्यानकरै ॥ इसीप्रकार यहअधिकारीपुरुष मनोमय विज्ञानमय आनंदमय यातीनोंकोशोंके शिरादिकअवयवोंकाध्यानकरै॥ इसप्रकार अन्नमयादिकपंचकोशोंके शिरादिकअवयवरूप पंचविंशतिभूमिकावोंकूं यहअधिकारीपुरुष क्रमतैंध्यानकरै ॥ ताध्यानकरिकै याअधिकारीरुपुषकाचित्त अंतर्मुखहोवैहै॥ हेशिष्य! जैसे अन्नमयकोशके शिरादिकपांचअवयवोंकेअंतविषे पुच्छरूपकरिकै तथाप्रतिष्ठारूपकरिकै कथनकरेजेदोपादहैं ॥ तेदोनोंपाद याअन्नमयकोशका आधाररूपहैं ॥ तैसे अन्नमयादिकपंचकोशोंके शिरादिकपंचविंशतिअवयवोंके अंतविषे पुच्छरूपकरिकै तथाप्रतिष्ठारूपकरिकै कथनकऱ्याजोब्रह्महै ॥ ताअधिष्ठानरूपब्रह्मविषेही यहचतुर्विंशतिभूमिका स्थितहोवैहैं ॥ और इसीअधिष्ठानब्रह्मकेबोधकरावणेवासते श्रुतिभगवतीनैं शिरादिकपंचअवयवोंकरिकैयुक्त अन्नमयादिकपंचकोशोंकानिरूपणकऱ्याहै ॥हेशिष्य! श्रुतिभगवतीनैं पुच्छप्रतिष्ठाशब्दकरिकै कथनकऱ्याजो सर्वका अधिष्ठानरूपब्रह्महै ॥ ताअधिष्ठानब्रह्मकेअज्ञानहुए याजीवोंकूं इसलोकविषे तथापरलोकविषे किंचित्मात्रभी सुखकीप्राप्तिहोवै नहीं ॥ उलटा ताअज्ञानकेप्रभावातैं ब्रह्मकूं नास्तिरूपकरिकै जाणताहुआ सोपुरुष दोनोंलोकोंविषे असत्यभावकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष ताअधिष्ठानरूपब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपकरिकैजानैं ॥ ताअधिकारीपुरुषकूं इसलोकविषे तथापरलोकविषे सर्व

सुखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जोअर्थ फलवालाहोवैहै तथा प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै अज्ञातहोवैहै ॥ ताअर्थ केबोधनकरणेविषेही श्रुतिका तात्पर्यहोवैहै ॥ सोऐसाफलवाला तथाअज्ञात अधिष्ठानब्रह्मरूपअर्थहै॥अन्नमयादिकपंचकोश फल वाले तथाअज्ञातहैनहीं ॥ यातैं ताअधिष्ठानब्रह्मविषेही श्रुतिका तात्पर्यहै ॥ अन्नमयादिकपंचकोशोंके आत्मरूपताबोधनकरणेवि षे श्रुतिका तात्पर्यनहीं ॥ इतनैग्रंथकरिकै श्रवणकीरीतिसैं आत्माकेवास्तवस्वरूपका निरूपणकर्‍या ॥ अब उत्तरग्रंथकरिकै ति सीआत्माकेवास्तवस्वरूपकूं मननकीरीतिसैं निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार आत्मरूपब्रह्मके सत्यादिकधर्मोंकाविचारक रिकै तिनतित्तिरिनामाब्राह्मणोंनैं जिसअर्थकानिश्चयकर्‍याहै ॥ ताअर्थकूं तू सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ हेशिष्य ! ब्रह्मज्ञानविषे जोब्रह्मभावकेप्राप्तिकीकारणताहै ॥ ताकूं संशयतैंरहितकरणेवासतै तेतित्तिरिनामाब्राह्मण याप्रकारकाविचारकरतेभये ॥ अब ता प्रमेयरूपब्रह्मविषे असंभावनारूपसंशयकीनिवृत्तिकरणेवासतै प्रथम ताब्रह्मविषे तीनप्रकारकेसंशय निरूपणकरैहैं ॥ तहां सोब्र ह्म विद्यमानहै अथवा नहींहै ? ॥ १ ॥ और सोब्रह्म अविद्वान्पुरुषकूं प्राप्तहोणेयोग्यहै अथवा नहींप्राप्तहोणेयोग्यहै ? ॥ २ ॥ औ र सोब्रह्म विद्वान्पुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्यहै अथवा नहींप्राप्तहोणेयोग्यहै ? ॥ ३ ॥ यहतीनप्रकारकेसंशयहैं ॥ तहां प्रथमसंशयवि षे सोब्रह्मनहींहै यादूसरीकोटीका पूर्वपक्षकीरीतिसैं निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! कोईकवादी याप्रकारकाविकल्पकरैहैं ॥ जिनवेदां तियोंकेमतविषे सोब्रह्म सत्यज्ञानअनंतरूपहै ॥ तिनवेदांतियोंकेमतविषे ताब्रह्मकाज्ञान व्यर्थहै ॥ काहेतैं ? ऐसासत्यज्ञानअनंतरू पब्रह्म किसीभीजीवकूं प्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं सोब्रह्म कहांभीहैनहीं ॥ जोकदाचित् सोसत्यज्ञानअनंतरूपब्रह्म कहांभीहोता ॥ तौ जैसे यालोकविषे हमजीवोंकूं पृथिवीआदिकपदार्थ प्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे सोब्रह्मभी हमारेकूं प्रतीतहोता ॥ और सोब्रह्म हमजी वोंकूं प्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं सोब्रह्म हैनहीं ॥ अब दूसरेसंशयविषे सोब्रह्म अविद्वान्पुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्यहै याप्रथमकोटीकूं पूर्वपक्षरूपकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! कोईकवादीतौ याप्रकारकाविकल्पकरैहैं ॥ वेदांतविषे जोब्रह्मरूपआत्मा अंगी कारकर्‍याहै ॥ सोब्रह्मरूपआत्मा विद्वान्पुरुषोंका तथाअविद्वान्पुरुषोंका समानहीहै ॥ ताब्रह्मरूपआत्माकूं किसीविद्वान्अवि

द्वान्‌विषे पक्षपातहैनहीं ॥ यातें जैसे सोविद्वान्‌पुरुष ताब्रह्मरूपआत्माका स्मरणकरिकै ताब्रह्मरूपआत्मा प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सोअविद्वान्‌पुरुषभी ताब्रह्मरूपआत्माकूं किसवासते नहींप्राप्तहोता? किंतु सोअविद्वान्‌पुरुषभी ताब्रह्मरूपआत्माकूं प्राप्तहोणाचाहिये ॥ और सोविद्वान्‌पुरुषही ताब्रह्मरूपआत्माकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अविद्वान्‌पुरुष ताब्रह्मरूपआत्माकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ याप्रकारकेअर्थविषे तुमवेदांतियोंनें कोईकारण कह्याचाहिये ॥ और अविद्वान्‌पुरुषकूं ताब्रह्मरूपआत्माका स्मरणनहींहोवैहै यहजो वेदांतीकहै ॥ सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें? तुमवेदांतियोंनें ताअद्वितीयब्रह्मकूं सर्वजीवोंका आत्मरूपमान्याहै ॥ यातें सोअद्वितीयब्रह्म जैसे ताविद्वान्‌पुरुषका आत्मरूपहै ॥ तैसे ताअविद्वान्‌पुरुषकाभी आत्मरूपहै ॥ यातें ताविद्वान्‌पुरुषकीन्यांई ताअविद्वान्‌पुरुषकूंभी ताब्रह्मरूपआत्माका स्मरण तथाप्राप्ति अवश्यहोवैगी ॥ अब तीसरेसंशयविषे सोब्रह्म विद्वान्‌पुरुषोंकूंभी प्राप्तहोणेयोग्य नहींहै यादूसरीकोटीकूं पूर्वपक्षरूपकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! कोईकवादीतौ याप्रकारका विकल्पकरैहैं ॥ तुमवेदांतियोंनें अंगीकारकऱ्याजोब्रह्महै ॥ ताब्रह्मकूं जोकदाचित्‌ अविद्वान्‌पुरुष नहींप्राप्तहोताहोवै ॥ तौ सोतुमाराब्रह्म असत्यहीहोवैगा ॥ काहेतें? सोब्रह्म सर्वजीवोंकाआत्मरूपहै ॥ और आपणाआत्मा सर्वजीवोंकूं नित्यहीप्राप्तहै ॥ यातें ताब्रह्मकूं सर्वजीवोंकाआत्मरूपमानिकै अप्राप्तकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ और ताअविद्वान्‌पुरुषकूं अप्राप्तहोणेतें सोब्रह्म जबीअसत्यभया ॥ तबी जैसे यालोकविषे वंध्यापुत्रादिकअसत्यपदार्थोंकूं कोईभीपुरुष प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे ताअसत्यब्रह्मकूं जैसे अविद्वान्‌पुरुष प्राप्तनहींहोवैहै ॥ तैसे विद्वान्‌पुरुषभी ताअसत्यब्रह्मकूं प्राप्तनहींहोवैगा ॥ और सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ याश्रुतिवचनकूंअंगीकारकरिकै तुमवेदांती ताब्रह्मकूं जोसत्यमानोंगे ॥ तौविद्वान्‌पुरुषकूं सोब्रह्म प्राप्तहोवैहै ॥ और अविद्वान्‌पुरुषकूं सोब्रह्म प्राप्तहोवैनहीं ॥ यहतुमाराकहणा असंगतहोवैगा ॥ काहेतें? जैसे एकहीआकाशकूं विद्वान्‌पुरुषतौ प्राप्तहोवै ॥ और अविद्वान्‌पुरुष ताआकाशकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ यहकहणा संभवैनहीं ॥ तैसे ताएकहीअद्वितीयब्रह्मकूं विद्वान्‌पुरुषतौ प्राप्तहोवैहै ॥ और अविद्वान्‌पुरुष ताब्रह्मकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ यहकहणाभी संभवैनहीं ॥ किंतु जैसे सर्वज्ञपुरुषकूं तथामूढबालककूं ताआकाशकीप्राप्ति समानहीहै ॥ तैसे विद्वान्‌पुरुषकूं तथाअवि

द्वान्पुरुषकूं ताअद्वितीयब्रह्मकीप्राप्ति समानहीहै ॥ अब इनतीनप्रश्नोंकेउत्तरकहणेवास्ते प्रथम सूचीकटाहन्यायकरिकै ताब्रह्मके प्राप्तिकी तथाअप्राप्तिकी व्यवस्थाकूं निरूपणकरैहैं ॥ सूचीकटाहन्यायका यहअर्थहै ॥ जैसै यालोकोंविषे कोईलुहारपुरुष किसी कटाहकूंबनावताहोवै ॥ तालुहारकेपास कोईपुरुष टेढीसूचीकूंसूधाकरावणेवासतेआवै ॥ तहां सोलुहारपुरुष ताकटाहकूंछोडिके प्रथम तासूचीकूंसूधाकरिदेवैहै ॥ याकानाम सूचीकटाहन्यायहै ॥ तैसे पूर्वकहेहुएतीनप्रश्नोंकाउत्तर आगेविस्ताकरिकैकहणाहै ॥ ताउत्तरकेसुखपूर्वकबोधवासते प्रथम ताब्रह्मके प्राप्तिअप्राप्तिकीव्यवस्था निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! तेतित्तिरिनामाब्राह्मण पूर्व उक्ततीनप्रश्नोंकीकल्पनाकरिकै तिनप्रश्नोंका याप्रकारकाउत्तर कहतेभये ॥ यद्यपि सोब्रह्म विद्वान्पुरुषोंकेप्रति तथाअविद्वान्पुरुषोंकेप्रति समानहीप्राप्तहै ॥ और सोब्रह्म विद्वान्पुरुषका तथाअविद्वान्पुरुषका समानही आत्मरूपहै ॥ यातैं सोब्रह्म वास्तवतैं विद्वान्पुरुषकूं तथाअविद्वान्पुरुषकूं नित्यहीप्राप्तहै ॥ तथापि सोअविद्वान्पुरुष ताब्रह्मकूं कदाचित्भी प्राप्तहोतानहीं ॥ याप्रकारकाअर्थही युक्तिकरिकैसंभवैहै ॥ काहेतैं अविद्याकेनाशहुए जोआवरणरहितब्रह्मकाप्रकाशहै ॥ सोप्रकाशही ताब्रह्मकीप्राप्तिहै ॥ और सोअविद्याकानाश ब्रह्मविद्याकरिकैहीहोवैहै ॥ साब्रह्मविद्या ताअविद्वान्पुरुषकूं प्राप्तहैनहीं ॥ यातैं सोअविद्वान्पुरुष ताअविद्यातैंरहितहोइसकैनहीं ॥ याकारणतैंही सोअविद्वान्पुरुष ताअद्वितीयब्रह्मकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिकैस्पष्टकरै हैं ॥ हेशिष्य ! जैसे यालोकविषे किसीदोपुरुषोंके आपणेआपणेगृहविषे सुवर्णादिरूपधन पृथिवीविषे दाब्याहोवै ॥ तहां एकपुरुषतौ ताधनरूपनिधिकूं जाणताहै ॥ और दूसरापुरुष ताधनरूपनिधिकूं जाणतानहीं ॥ तहां वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ तेदोनोंपुरुष ताधनरूपनिधिवालेहैं॥तथापि ताधनरूपनिधिकेज्ञानवालापुरुषतौ ताधनरूपनिधिकूं प्राप्तहुआहै ॥ और ताधनरूपनिधिकेअज्ञानवालापुरुष ताधनरूपनिधिकूं प्राप्तनहींभयाहै ॥ याप्रकार तानिधिकेप्राप्तिका तथाअप्राप्तिका व्यवहार लोकविषे होवैहै ॥ तैसे विद्वान्पुरुषकूं तथाअविद्वान्पुरुषकूं यद्यपि वास्तवतैं ब्रह्मकीप्राप्ति समानहीहै ॥ तथापि जैसे विद्वान्पुरुषकूं ताब्रह्मकाज्ञानहै ॥ तैसे अविद्वान्पुरुषकूं ताब्रह्मज्ञानहैनहीं ॥ याकारणतैं सोअविद्वान्पुरुष अध्यात्मदुःखकरिकै तथाअधिदैवदुःख

करिकै तथाअधिभूतदुःखकरिकै सर्वदा पीडितरहैहैं ॥ याकहणेतैंयहअर्थ सिद्धभया ॥ आपणेसत्यस्वभावकेबलतैं असत्यपणेका परित्यागकरिकै सर्वत्र समानस्थितहुआजोब्रह्महै ॥ ताब्रह्मका विद्वान्पुरुषकूं जोज्ञानहै ॥ सोब्रह्मकाज्ञानही ताविद्वान्पुरुषकूं ब्रह्मकीप्राप्तिहै ॥ और अविद्वान्पुरुषकूं जो ताब्रह्मकाअज्ञानहै ॥ सोब्रह्मकाअज्ञानही ताअविद्वान्पुरुषकूं ब्रह्मकीअप्राप्तिहै ॥ इतनैंकरिकैब्रह्मकेप्राप्तिकीअप्राप्तिकीव्यवस्था निरूपणकरी ॥ अब कामना विचार जगत्कीउत्पत्ति जगत्विषेप्रवेश भोग्यपदार्थरूपताया पंचहेतुवोंकरिकै ताब्रह्मविषे सत्यपणाकीसिद्धिकरैहैं॥हेशिष्य! आकाशादिकपंचभूतरूप तथातिनपंचभूतोंकाकार्यरूप जितनाकीयहस्थूलसूक्ष्मजगतहै ॥ सोयहसंपूर्णजगत् जिसब्रह्मतैंउत्पन्नभयाहै ॥ सोब्रह्म असत्यहै याप्रकारकीशंकाकरणेविषेभीकोइवादी समर्थनहींहै ॥ जबी ताब्रह्मकेअसत्यपणेकीशंकाकरणेविषेभी कोईवादी समर्थनहींभया ॥ तबी ताब्रह्मकेअसत्यपणाकीसिद्धिकरणेविषे कौनवादी समर्थहोवैगा ? किंतु ताब्रह्मके असत्यपणेकूं कोईभीपुरुष सिद्धकरिसकैनहीं ॥ अब ताब्रह्मतैं जगत्केउत्पत्तिकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! अनादिजीवोंकेकर्मवासनाकरिकै विचित्रभावकूंप्राप्तभईजामायाहै ॥ तामायारूपकंचुककरिकैयुक्तहुआ सोपरमात्मादेव याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व एकअद्वितीयरूपकरिकै स्थितहोताभया ॥ और सोईहीपरमात्मादेव सृष्टिकेआदिकालविषे जीवोंकेपुण्यपापरूपकर्मोंकरिकैप्रेरणाकऱ्याहुआ भूतभौतिकजगत्केउत्पन्नकरणेवासते याप्रकारकीकामनाकरताभया ॥ मैंपरमात्मादेव आपणाहीजन्मकरिकै बहुतरूपहोवौं ॥ हेशिष्य! इसप्रकार आगेउत्पन्नहोणेहारा जोनामरूपक्रियास्वरूप जडचेतनरूपजगतहै ॥ ताजगत्कूंविषयकरणेहारी कामनारूपचिंताकूंकरिकै सोपरमात्मादेव ताजगत्के विशेषनामरूपादिकोंकेकरणेवासते पुनःयाप्रकारकाविचारकरताभया ॥ पूर्वकल्पविषे याजगत्के जिसजिसपदार्थका जिसजिसप्रकारका नामरूपक्रियाथा ॥ इसकल्पविषेभी याजगत्के तिसतिसपदार्थका तिसातिसप्रकारका नामरूपक्रिया मैं उत्पन्नकरौं॥हेशिष्य ! इसप्रकारकाविचारकरिकै सोपरमात्मादेव पूर्वकल्पकीन्यांई यास्थावरजंगमरूपजगत्कूं उत्पन्नकरताभया ॥ और तिनसर्वपदार्थोंके भिन्नभिन्ननामरूपक्रियावोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ हेशिष्य! जैसे तापरमात्मादेवनैं पूर्वकल्पविषे सूर्यचंद्रमादिजगत्कूं उत्पन्न

कन्याथा ॥ तैसे इसकल्पविषेभी सूर्य चंद्रमा स्वर्ग पृथिवी अंतरिक्ष इसतैंआदिलैके जितनाकीभूतभौतिकजगत्‌है ॥ तासंपूर्णजगत्‌कूं सोपरमात्मादेव उत्पन्नकरताभया ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सोपरमात्मादेव स्थावरजंगमरूपसर्वजगत्‌कूंउत्पन्नकरिकै आपही जीवरूपकरिकै ताजगत्‌विषेप्रवेशकरताभया ॥ हेशिष्य! ब्रह्मविदाप्नोतिपरं ॥ यासूत्ररूपश्रुतिविषे जिसब्रह्मकेज्ञानतैं पूर्व मोक्षकीप्राप्तिकथनकरीथी ॥ और सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ याश्रुतिविषे पूर्व जिसब्रह्मकास्वरूपलक्षण कथनकऱ्याथा सोइहीब्रह्म या स्थावरजंगमरूपजगत्‌कूं उत्पन्नकरिकै ताजगत्‌विषे जीवरूपकरिकैप्रवेशकरताभया ॥ इसप्रकार सोएकहीपरमात्मादेव नानारूपकरिकैउत्पन्नहोताभया ॥ अब तिननानारूपोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! सोपरमात्मादेवही सत्‌रूप तथात्यत्‌रूप होताभया ॥ इहां पृथिवी जल तेज यहतीनभूत नेत्रादिकइंद्रियोंके विषयहैं ॥ याकारणतैं तिनपृथिवीआदिकतीनभूतोंकूं श्रुतिभगवती सत्‌यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और वायु आकाश यहदोनोंभूत नेत्रादिकइंद्रियोंकेअविषयहैं ॥ याकारणतैंतिनदोनोंभूतोंकूं श्रुतिभगवती त्यत्‌ यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और सोपरमात्मादेवही निरुक्तरूप तथाअनिरुक्तरूप होताभया ॥ इहां मनुष्यादिकजीव जिनआकाशादिकपंचभूतोंका तथातिनभूतोंकेकार्यका नामरूपक्रियाकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ तिनभूतभौतिकपदार्थोंकानाम निरुक्त है ॥ और मनुष्यादिकजीव जिनपदार्थोंका नामरूपक्रियाकरिकै निरूपणनहींकरैहैं ॥ तिनपदार्थोंकानाम अनिरुक्तहै ॥ और सोपरमात्मादेव निलयनरूप तथाअनिलयनरूप होताभया ॥ इहां पृथिवीआदिकोंकेआश्रयसेरहणेहारे जेघटादिकपदार्थ हैं ॥ तिनोंकानाम निलयनहै ॥ और लोकविषे निराधाररूपकरिकैप्रसिद्ध जेआकाशादिकहैं ॥ तिनोंकानाम अनिलयनहै ॥ और सोपरमात्मादेवही विज्ञानरूप तथा अविज्ञानरूप होताभया ॥ इहां लोकविषे चेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध जेनेत्रादिकइंद्रियां हैं तथाअंतःकरणहै ॥ तिनोंकानाम विज्ञानहै ॥ और जडरूपकरिकैप्रसिद्ध जेघटपटादिकपदार्थ हैं ॥ तिनोंकानाम अविज्ञानहै ॥ और सोपरमात्मादेवही सत्यरूप तथाअनृतरूप होताभया ॥ इहां व्यवहारकालविषे बाधतैंरहित जेभूमिघटादिकव्यावहारिकपदार्थ हैं ॥ तिनोंकानाम सत्यहै ॥ और व्यवहारकालविषेही बाध्यमान जेरज्जुसर्पादिकप्रातिभासिकपदार्थ हैं ॥ तिनोंकानाम अनृतहै ॥ आत्मज्ञानतैं ओरे

औरेजोकालहै ताकानाम व्यवहारकालहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार अस्तिरूपकरिकै तथानास्तिरूपकरिकै प्रसिद्ध जितनाकीयह विचित्रजगतहै ॥ तिसजगतरूपकूं सोएकअद्वितीयब्रह्मही प्राप्तहोवैहै ॥हेशिष्य! जैसे एकहीआकाश गंधर्वनगररूपकरिकै नाना भावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे एकही अद्वितीयब्रह्म जगतरूपकरिकै नानाभावकूंप्राप्त होवैहै ॥ और हेशिष्य! सोसत्यरूपब्रह्म ही पूर्व याजगतरूपकरिकै उत्पन्नभयाहै ॥ याकारणतैं वास्तवतैं असत्यरूपभीयहजगत् याचितमंडनन्यायकरिकै सत्यरूपहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे आपणेगृहकेभूषणवस्त्रादिकपदार्थोंतैंरहित जोकोईनिर्धनपुरुषहै ॥ सोनिर्धनपुरुष दूसरेधनवान् पुरुषोंतैं भूषणवस्त्रादिकपदार्थमांगिकै आपणेगृहकीशोभाकरै है ॥ याकानाम याचितमंडनन्यायहै ॥ तैसे स्वभावतैं आपणीसत्तातैं रहित जोयहजगतहै ॥ सोयहजगत् ताअधिष्ठानब्रह्मकेसत्ताकूंअंगीकारकरिकैही सत्यरूपहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! याजगत्विषे आपणीहीसत्ता किसवासतैनहींहोवै?॥ समाधान ॥हेशिष्य! भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषे जोपदार्थ एकरसहोवै॥ किसीकालविषेभी अन्यथाभावकूंनहींप्राप्तहोवै ॥ सोपदार्थ सत्यरूपहोवैहै ॥ ऐसीसत्यरूपता उत्पत्तिनाशवान्याजगत्विषे कदाचित्भीसंभवैनहीं ॥ किंतु उत्पत्तिनाशतैंरहितब्रह्मविषेही सासत्यरूपता संभवैहै ॥ और हेशिष्य! जोपदार्थ जहां आदिकालविषे तथा अंत्यकालविषे नहींहोवैहै ॥ सोपदार्थ तहां मध्यकालविषेभीनहींहोवैहै॥ जैसे रज्जुविषे सर्प आदिकालविषेभीनहीं है॥ तथा अंत्यकालविषेभीनहीं है ॥ याकारणतैं तारज्जुविषे सोसर्प मध्यकालविषेभीनहीं है॥ तैसे ताअधिष्ठानब्रह्मविषेयहसंपूर्णजगत् आदिकालविषेभीनहीं है ॥ तथा अंतकालविषेभीनहीं॥ ऐसाजगत् मध्यकालविषे किसप्रकार सत्यहोवैगा ? किंतु यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत् मिथ्यारूपहीहै ॥ ऐसामिथ्यारूपयहजगत् तासत्यरूपअधिष्ठानब्रह्मकीसत्ताकूं अंगीकारकरिकैही सत्यरूपहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ जैसे अग्निभावतैंरहित जोलोहकापिंडहै ॥ सो अग्निकेसंबंधतैं अग्निरूपताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे अधिष्ठानसत्यब्रह्मके तादात्म्य संबंधकूंप्राप्तहोइकै यहमिथ्याजगत्भी सत्यरूपहुआ प्रतीतहोवैहै ॥हेशिष्य! याअर्थविषेभी तैतित्तिरिनामाब्राह्मण याप्रकारका मंत्ररूपश्लोक कथनकरै है॥असद्वाइदमग्रआसीत् ततोवैसदजायत तदात्मानंस्वयमकुरुत तस्मात्तत्सुकृतमुच्यते ॥ अर्थय

ह ॥ यहदृश्यमानजगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व असत्रूपहोताभया ॥ ताअसत्तैं यहसत्जगत् उत्पन्नहोताभया ॥ और सोकारणब्र ह्म आपणेआत्माकूंही प्रपंचरूपकरताभया ॥ याकारणतैं सोब्रह्म सुकृत यानामकरिकैकथनकरताहै ॥१॥ अब याहीमंत्ररूपश्लोकके अर्थकूं स्पष्टकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जैसे गंधर्वनगर आपणीउत्पत्तितैंपूर्व आकाशविषे असत्होवैहै ॥ तैसे यहजगत्भी आपणीउत्पत्तितैंपूर्व ताब्रह्मरूपआत्माविषे असत्होताभया ॥ हेशिष्य ! इहां असत्शब्दकरिकै तुमनैं अत्यंताभावरूपशून्यका ग्र हणनहींकरणा ॥ किंतु ताअसत्शब्दकरिकै तुमनैं अस्पष्टनामरूपवालेजगत्का ग्रहणकरणा ॥ यातैं असद्वाइदमग्रआसीत् ॥ या श्रुतिवचनतैं यहजगत् आपणी उत्पत्तितैंपूर्व अस्पष्टनामरूपवालाहोताभया॥याप्रकारकाअर्थ सिद्धहोवैहै॥ तिसतैंअनंतर सृष्टिका लविषे सोअस्पष्टनामरूपवालाजगत् स्पष्टनामरूपवालाहोताभया ॥ और यहसंपूर्णजगत् ताकारणरूपब्रह्मकीसत्ताकरिकैही स त्यरूपहोवैहै ॥ स्वभावतैं यहजगत् सत्यरूपहैनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताब्रह्मकूं सुकृत यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और हेशिष्य! यहजगत्केउत्पत्तिकाप्रकरण यद्यपि ताब्रह्मरूपआत्माकेसत्यरूपताकूं स्पष्टकरणेवासतैंही प्रवृत्तभयाहै॥ तथापि ताप्रकरण केअभिप्रायभावकूं नजाणिकै केईकमंदबुद्धिपुरुष॥असद्वाइदमग्रआसीत्॥ताश्रुतिवचननैं कारणकेअसत्यरूपताकूंही कथनकऱ्याहै याप्रकारकावचनकहेहैं ॥ जैसे वेदबाह्यनास्तिकपुरुष बीजकेप्रध्वंसाभावतैं अंकुरकीउत्पत्ति अंगीकारकरैहैं और कोईकअर्द्धवैना शिकनैयायिकतौ॥असद्वाइदमग्रआसीत्॥याश्रुतिविषेस्थित जोकार्यप्रपंचकावाचकइदंशब्दहै ताइदंशब्दका असत्शब्दकेसाथ सामानाधिकरण्य कल्पनाकरिकै याजगत्रूपकार्यकूंही उत्पत्तितैंपूर्व असत्कहेहैं॥और केईकमंदबुद्धिशून्यवादीतौ ताश्रुतिविषेस्थि तइदंशब्दकीअर्थरूपता कार्य कारण यादोनोंविषेमानिकै तथाताइदंशब्दका असत्शब्दकेसाथ सामानाधिकरण्य कल्पनाकरिकै कार्यकरणरूपसर्वजगतकूं शून्यरूपमानैंहैं ॥ हेशिष्य! इसप्रकार ॥ असद्वाइदमग्रआसीत् ॥ याश्रुतिके पूर्वउक्तयथार्थकूंनजा णिकरिकै केईकमंदबुद्धिपुरुषतौ कारणकूंही असत्यमानैंहैं ॥ और केईकमंदबुद्धिपुरुषतौकार्यकूंहीअसत्यमानैंहैं॥ और केईकमंद बुद्धिपुरुषतौ कार्य कारण दोनोंकूं असत्यमानैंहैं॥तिनमंदबुद्धिपुरुषोंतैं यहपूछाचाहिये॥ कारणादिकोंकूं जोतुम असत्मानतेहो॥सो

केवलयुक्तियोंकेबलतैंमानतेहो ॥ अथवा श्रुतिकेबलतैं मानतेहो ? तहां केवलयुक्तियोंकेवलतैं तिनकारणादिकोंविषे असत्यरूपताहैं॥ यहप्रथमपक्ष जोतेवादी अंगीकारकरैं सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं? याआत्मपुराणके अष्टमाध्यायकेआदिविषे प्रागभावादिकोंविषे कारणताकेखंडनप्रसंगविषे तिनबहिर्मुखवादियोंके नानाप्रकारकीयुक्तियोंकाखंडन हम विस्तारतैंकरिआये हैं ॥ यातैं युक्तियोंकेव लतैं तिनकारणादिकोंविषे असत्यरूपतासिद्धहोवैनहीं ॥ और श्रुतिप्रमाणकेबलतैं तिनकारणादिकोंविषे असत्यरूपताहै यह दूसरापक्ष जोतेवादी अंगीकारकरैं ॥ सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेते ? सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ याश्रुतिविषे ब्रह्मकूंसत्यरूपकहिके तिसी सत्यब्रह्मतैं जगत्केउत्पत्तिकूंकथनकरणेहारा जोवेद्भगवान्है॥सोवेद्भगवान् असद्वाइदमग्रआसीत् ॥ याश्रुतिवचनकरिके ता कारणरूपसत्यब्रह्मकूं असत्यरूप किसप्रकारकहैंगा? किंतु नहींकहैंगा ॥ और जोकदाचित् सोवेद्भगवान् प्रथम ताकारणकूंस त्यरूपकहिके पश्चात् तिसीकारणकूं असत्यरूपकहैंगा ॥ तौ जैसे मेरेमुखविषे जिह्वानहींहै याप्रकारकावचन वदतोव्याघातदोषवा लाहै ॥ तैसे सोवेद्भगवान्भी वदतोव्याघातदोषवालाहोवैगा ॥ यातैं असद्वाइदमग्रआसीत्॥याश्रुतिका कारणकेअसत्पणेवि षे तात्पर्यनहींहै॥और हेशिष्य! ताश्रुतिके यथार्थअर्थकूंनजाणिकरिकै जे अर्धवैनाशिकनैयायिकवादी उत्पत्तितैंपूर्व याजगत्रूपका र्यकूं असत्यमानेहैं॥ तिनवादियोंकेमतविषे अबीवर्तमानकालमैं याजगत्रूपकार्यविषे सत्यपणा नहींहोणाचाहिये॥ किंतु जैसे मृत्ति काके घटशरावादिककार्योंविषे सर्वजीवोंकूं मृत्तिकाबुद्धिहोवैहै ॥ तैसे याकार्यरूपजगत्विषेभी सर्वजीवोंकूं असत् असत् याप्रका रकीअनुगतबुद्धिहोणीचाहिये॥ और याकार्यरूपजगत्विषे किसीभीजीवकूं असत्यबुद्धिहोतीनहीं॥ उलटा घटोऽस्ति पटोऽस्ति ॥ त्याप्रकारकीसत्यबुद्धिही होवैहै ॥ यातैं उत्पत्तितैंपूर्व याकार्यजगत्के असत्यपणेविषे ताश्रुतिकातात्पर्यनहींहै ॥ किंवा जोकदाचित् याजगत्रूपकार्यकेअसत्यपणेविषेही ताश्रुतिका तात्पर्यहोवै॥तौ असद्वाइदमग्रआसीत् ॥ याश्रुतिवचनतैंअनंतर ताजगत्कीस त्यरूपताकूं कथनकरणेहाराजो ॥ ततोवैसदऽजायत ॥ यहश्रुतिवचनहै सो असंगतहोवैगा ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ! यहकार्यरू पजगत् स्वभावतैं सत्यरूप मतहोवै ॥ तथापि कारणरूपब्रह्मकीसत्ताकरिकै यहकार्यजगत् सत्यरूप किसवासतेनहींहोवै ? ॥

॥समाधान॥ हेवादी! सत्यब्रह्मकेतादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहोइकै यहकार्यजगत् सत्यरूपहोवैहै ॥ यहअर्थ जोतुमनें अंगीकारकऱ्याहै सोहमारेकूंभीइष्टहै ॥ ब्रह्मकीसत्ताकरिकै कार्यजगत्कीसत्यरूपताकूं हम निवारणकरतेनहीं ॥ और ताब्रह्मकीसत्ताकेप्रभावतें यह असत्जगत्भी सत्यरूपहोवैहै॥याअर्थकेबोधनकरणेवासतेही तिनातित्तिरिनामाब्राह्मणोंनें असद्वा इत्यादिकश्लोकका कथनकऱ्या है ॥शंका ॥ हेभगवन्! जैसे यालोकविषे कोईपुरुष एकगृहतैंवस्तुकूंलेके दूसरेगृहविषेलेजावैहै ॥ तैसे ब्रह्मकेसत्ताकूं प्रपंचविषे कौन लेजावैहै? ॥समाधान॥ हेशिष्य! भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषे असत्रूप जोयहजगत्रूपकार्य है॥सोजगत्रूपकार्य कारणब्रह्मकीसत्ताकरिकैही हमारेकूं सत्यरूपप्रतीतहोवैहै ॥ याकेविषे अनादिमायाकरिकैकऱ्याहुआ आत्माअनात्माकाअध्यासही कारणहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे स्वभावतैं उष्णस्पर्शतैंरहितजोजलहै ॥ ताजलविषे अग्निकेसंगरूपदोषकरिकै उष्णता प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे स्वभावतैं आपणीसत्तातैंरहित जोयहजगत्है ॥ ताअसत्जगत्विषे सत्ब्रह्मकेतादात्म्यअध्यासरूपदोषकरिकै सत्यरूपता प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं यहअध्यासही ताब्रह्मकेसत्ताकूं जगत्विषेलेजावैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! ब्रह्मतैंभिन्नहीकोईपदार्थ आपणीसत्ताकरिकै याकार्यरूपजगत्कूं सत्यरूप किसवासतेनहींकरता?॥ समाधान ॥ हेशिष्य! तासत्यस्वरूपब्रह्मतैंभिन्न जितनेकी कार्यरूप तथाकारणरूप पदार्थहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ अनात्मरूपहोणेतैं असत्यरूपहीहैं ॥ यातैं ताब्रह्मतैंभिन्न किसीभीपदार्थकीसत्ताकरिकै याजगत्कीसत्यरूपता संभवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे यालोकविषे धनवान्पुरुषही अन्यनिर्धनपुरुषकूं धनवान्करिसकैहै ॥ और जोपुरुष आपहीनिर्धनहोवैहै॥सोनिर्धनपुरुष अन्यनिर्धनपुरुषकूं धनवान् करिसकैनहीं ॥ तैसे तासत्यब्रह्मतैंभिन्नरूपता करिकै आपहीअसत्यभावकूंप्राप्तहुआसोपदार्थ याअसत्यजगत्कूं सत्यरूपकरिकैसकैनहीं॥किंवा॥जैसे यालोकविषे किसीमहान्वनविषे भ्रमणकरताहुआकोईक नेत्रहीनअंधपुरुष जबी किसीअन्यनेत्रवालेपुरुषकूं मार्गकाउपदेशकरैहै तबी सोनेत्रोंवालापुरुष ताअंधपुरुषकेप्रति याप्रकारकाउपालंभदेवैहै ॥ हेअंधपुरुष! जिसमार्गका तू हमारेप्रति उपदेशकरताहै ॥ तिसमार्गकूं तूआप किसवासतेनहींदेखता॥तैसे ब्रह्मतैंभिन्न जोकोईपदार्थ याकार्यजगत्केसत्ताकूंसिद्धकरैहै ॥ तापदार्थकेप्रति यहवचन कह्याचाहिये ॥

हेपदार्थ! ब्रह्मतैंभिन्नहुआ तू आपहीअसत्यरूपहै ॥ यातैं प्रथम तू आपणेसत्ताकूंतौ सिद्धकर॥ तिसतैंअनंतर तुमनैं याकार्यजगत
विषे सत्ताकीसिद्धिकरणी ॥ आपणीसत्ताकेसिद्धितैंविना दूसरेविषेसत्ताकीसिद्धिकरणी संभवैनहीं ॥ किंवा ब्रह्मतैंभिन्नकोईपदा
र्थ आपणीसत्ताकरिकै याकार्यजगत्कूं सत्यरूपकरैहै यहकहणा तबीसंभवै॥ जबी किसीपदार्थविषे ताब्रह्मकाभेद सिद्धहोवै ॥सोब्र
ह्मतैंभिन्न कोईपदार्थहैनहीं ॥ किंतु यहसंपूर्ण स्थूलसूक्ष्मप्रपंच ताब्रह्मरूपहीहै ॥ और यहसंपूर्णप्रपंच ब्रह्मरूपहीहै याअर्थकूं ॥
सर्वंखल्विदंब्रह्म॥ इत्यादिकश्रुतिवचनोंकरिकै वेदवेत्तामहात्मापुरुष वारंवार कथनकरैहै॥ यातैं ताब्रह्मतैंभिन्न कोईभीपदार्थनहींहै
॥ किंवा जोकदाचित् कोईस्थूलपदार्थ तथासूक्ष्मपदार्थ ताब्रह्मतैंभिन्न अंगीकारकरिये तौ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म॥ याश्रुतिनैं कथन
करीजो ब्रह्मविषे अनंतरूपता सा नहींसिद्धिहोवैगी॥ काहेतें? जैसे आकाशादिकपदार्थ पृथिवीआदिकोंतैंभिन्नहैं॥ यातैं तेआकाशादि
क भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालेहोणेतैं अनंतरूपनहींहैं॥ तैसे सोब्रह्मभी भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालाहोणेतैं अनंतरूप नहींहोवैगा॥ औ
र ॥सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म॥ याश्रुतिनैं साअनंतता ब्रह्मकास्वरूपकह्याहै॥ यातैं ताअनंततास्वरूपकेअभावहुए ताब्रह्मकाभी अभावप्राप्त
होवैगा ॥ जैसे यालोकविषे अग्निआदिकतेजका प्रकाश तथा उष्णता यहदोनोंस्वरूपहैं॥ ताप्रकाश तथा उष्णता स्वरूपकेअभावहु
ए ता तेजकाभी अभावहीहोवैहै ॥ तैसे ताअनंततास्वरूपकेअभावहुए ताब्रह्मकाभीअभावहीहोवैगा॥ और ताब्रह्मकेअभावहुए ता
ब्रह्मकूंबोधनकरणेहारा जोउपनिषद्रूपज्ञानकांडहै सो अप्रमाणताकूंप्राप्तहोवैगा ॥ और ताउपनिषद्रूपज्ञानकांडके अप्रमाण
हुए ताज्ञानकेसाधनोंकूंबोधनकरणेहारा जोकर्मकांडहै तथाउपासनाकांडहै सोभी अप्रमाणताकूंप्राप्तहोवैगा ॥ और सर्वप्र
माणोंविषेराजारूप तथाभ्रमादिकदोषोंतैंरहित जोवेद भगवान्है॥ तावेद भगवान्केअप्रमाण हुए भ्रमादिकदोषों करिकैयुक्त जेलौकि
कवचनहैं तथाप्रत्यक्षादिकप्रमाणहैं ॥ तेसंपूर्ण अप्रमाणताकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ और तिनप्रत्यक्षादिकविशेषप्रमाणोंकूं अप्रमाणरूपता
हुए सामान्यतैं प्रमाणमात्रकूंही अप्रमाणरूपता प्राप्तहोवैगी ॥ और यालोकविषे किसीप्रमाणकरिकैही वस्तुकीसिद्धिहोवैहै॥ प्रमा
णतैंविना वस्तुकीसिद्धिहोवैनहीं॥ यातैं तिनप्रत्यक्षादिकसर्व प्रमाणोंविषे जबी अप्रमाणरूताप्राप्तभई॥ तबी ताब्रह्मतैंभिन्न किसीस्थू

लसूक्ष्मपदार्थकी तथा किसीकार्यकारणपदार्थकी किसप्रकारसिद्धिहोवैगी ? किंतु प्रमाणतैंविना ताब्रह्मतैंभिन्न किसीभीपदार्थकी सिद्धिनहींहोवैगी॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया॥ यालोकविषे कोईअसत्यपदार्थभी ताब्रह्मरूपआत्मातैं भिन्ननहींहै॥जबी कोईअसत्यपदार्थभी ताब्रह्मरूपआत्मातैंभिन्ननहींभया॥तबी ताब्रह्मरूपआत्माकीसत्ताकूंपाइकै सत्यरूपताकूंप्राप्तभयेजेपदार्थ हैं॥ तेसत्यपदार्थ ताब्रह्मरूपआत्मातैं भिन्न किसप्रकारहोवैंगे॥किंतु तेसत्पदार्थ ताब्रह्मतैंभिन्न कदाचित्भीनहींहोवैंगे॥और हेशिष्य! असद्वाइदमग्रआसीत्॥यहश्रुतिवचन कारणकेअसत्यरूपताकूं बोधनकरै है॥ अथवा कार्यकेअसत्यरूपताकूं बोधनकरै है॥अथवा कारण कार्य यादोनोंके असत्यरूपताकूंबोधनकरै है? याप्रकारकेतीनविकल्प जोपूर्व मंदबुद्धिपुरुषोंनेंकरे हैं॥सोतीनोंप्रकारकेविकल्प संभवतेनहीं॥काहेतें? यालोकविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैही वस्तुकीसिद्धिहोवै है॥प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंतैंविना किसीवस्तुकीसिद्धिहोवैनहीं॥ और याजगत्रूपकार्यके असत्यरूपताकूं तथाकारणकेअसत्यरूपताकूं कोईप्रत्यक्षादिकप्रमाण सिद्धकरतानहीं ॥ उलटा तेप्रत्याक्षादिकप्रमाण ॥ घटोऽस्ति पटोऽस्ति॥इत्यादिप्रतीतियोंकरिकै ताकार्यकारणके सत्यरूपताकूंहीसिद्धकरै हैं ॥ किंवा कार्यविषे तथाकारणविषे जो असत्यरूपताहोवै तौ ॥असद्वाइदमग्रआसीत्॥याश्रुतिनें इदंशब्दकरिकै ताकार्यकारणका जोकथनकन्या है ॥ सोअसंगतहोवैगा ॥काहेतें? प्रत्यक्षज्ञानकाविषय तथासमीपवर्तिजोवस्तु है ॥ तावस्तुकूंहीइदंशब्द कथनकरै है ॥ साप्रत्यक्षज्ञानकीविषयता तथासमीपवर्तिपणा असत्यवस्तुविषे संभवैनहीं ॥ याकारणतैंभी ताकार्यकारणविषे असत्यरूपतासंभवैनहीं ॥ किंवा याजगत्रूपकार्यविषे तथाताकेकारणविषे प्रत्यक्षज्ञानकीविषयताकूंअंगीकारकरिकै जोमंदबुद्धिवादी ताकार्यकारणविषे असत्यरूपतामानैं है ॥ सो अत्यंतविरुद्ध है॥ काहेतें? सोप्रत्यक्षज्ञान विद्यमानवस्तुकूंही विषयकरै है ॥ अविद्यमानवस्तुकूं सोप्रत्यक्ष विषयकरैनहीं॥ याअर्थकूं सर्ववादी अंगीकारकरै हैं ॥ यातैं कार्यकारणकूं प्रत्यक्षज्ञानकाविषयमानिकै तिनोंकूं असत्यकहणा अत्यंतविरुद्ध है ॥ किंवा ॥ असत्यवस्तुका प्रत्यक्षज्ञान नहींहोवै है॥किंतु विद्यमानसत्यवस्तुकाही प्रत्यक्षज्ञानहोवै है ॥ याकारणतैंही पूर्वनष्टहुएपदार्थोंका तथा आगेहोणेहारेपदार्थोंका याजीवोंकूं प्रत्यक्षज्ञानहोतानहीं ॥ जोकदाचित् असत्यवस्तुकाभी प्रत्यक्षज्ञानहोताहोवै ॥ तौ अतीतप

दार्थोंका तथाभावीपदार्थोंकाभी याजीवोंकूं प्रत्यक्षज्ञानहोणाचाहिये॥यातैं असद्वाइदमग्रआसीत् ॥ यहश्रुति कार्यकेअसत्यपणाकूं तथा कारणकेअसत्यपणाकूं तथाकार्यकारणदोनोंकेअसत्यपणाकूं कथनकरतीनहीं ॥ किंतु साश्रुति असत्शब्दकरिकै यामायामय जगत्के अस्पष्टनामरूपसूक्ष्मअवस्थाकूंही कथनकरैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जिसब्रह्मरूपआत्माकेसत्ताकूंप्राप्तहोइकै यह असत्जगत्भी सत्यरूपताकूंप्राप्तहोवैहै॥ सोब्रह्मरूपआत्माही वास्तवतैं सत्यहै ॥ इतनेग्रंथकरिकै ताब्रह्मरूपआत्माके सत्यरूप ताका निरूपणकऱ्या ॥ अब तासत्यब्रह्मके आनंदरूपताकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जोब्रह्म आपणेआनंदरूपसत्ताकरिकै यासर्वजगत्कूं सत्यरूपकरताभयाहै सोइही ब्रह्म आनंदस्वरूपहोणेतैं यासर्वजगत्का साररूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! यहब्रह्मरूपआत्मा आनंदरूपकरिकैविद्यमानहै याअर्थविषे कौनप्रमाणहै?॥ समाधान ॥ हेशिष्य! याब्रह्मरूपआत्माके आनंदरूपकरिकै सत्यपणाविषे ब्रह्मवेत्ता विद्वान्पुरुषोंकाअनुभवही प्रमाणहै ॥ काहेतैं! लोकप्रसिद्धविषयानंदकी प्राप्तिकरणेहारे जेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थहैं ॥ तिनपदार्थोंतैंरहितहुएभी यहविद्वान्पुरुष मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेज्ञानकरिकै ताआनंदस्वरूपआत्माकूंप्राप्तहोइकै सर्वदा आनंदविषे मग्नहुए प्रतीतहोवैहैं॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ यहआत्मादेवही आनंदस्वरूपहै ॥ जिसआनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिकरिकै यहविद्वान्पुरुष सर्वदा आनंदीरहैहैं और ॥ हेशिष्य! सर्वप्राणियोंके हृदयदेशविषेस्थित यहआनंदस्वरूपआत्मा जोकदाचित् ताप्राणियोंके जीवनका तथा ताजीवनकेअनुकूल प्राणादिकोंकेक्रियाका कारणरूपनहींहोवै ॥ तौ यादेहधारी जीवोंकेजीवनकूं तथा ताजीवनकेअनुकूल प्राणअपानादिकोंकेक्रियाकूं दूसराकौनकरैगा? किंतु ताआनंदस्वरूपआत्मातैंविना दूसराकोईपदार्थ ताजीवनकूं तथाप्राणादिकोंकेक्रियाकूं करिसकैनहीं ॥ याकारणतैंभी यहआत्मादेव आनंदस्वरूपहै ॥ और हे शिष्य! यासर्वजीवोंके हृदयदेशविषेस्थित जोयहआत्मादेवहै ॥ सो आनंदस्वरूपहै ॥ याअर्थविषे तुमनैं संशयनहींकरणा ॥ काहेतैं? यालोकविषे जोजोजीव सुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सो इसीआनंदस्वरूपआत्मातैंही सुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याआनंदस्वरूपआत्माकूंछोडिकै किसीभीअनात्मपदार्थविषे सुखरूपतानहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोकदाचित् यहआनंद आ

त्माकास्वरूपहीहोवै ॥ तौ हमारेकूं विषयोंतैं आनंदप्राप्तहोवैहै यालोकोंकेअनुभवतैं जो ताआनंदविषे विषयोंकरिकैजन्यता प्रतीतहोवैहै ॥ सोनहींहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ! सोआत्मस्वरूपआनंद नित्यहै ॥ यातैं सोआत्मस्वरूपआनंद शब्दस्पर्शादिकविषयोंकरिकैजन्यहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे दीपकादिकप्रकाश घटादिकपदार्थोंकीप्रतीतिकरावैहैं ॥ तैसे तेशब्दादिकविषयभी इच्छाकीनिवृत्तिद्वारा ताआत्मस्वरूपआनंदकी प्रतीतिकरावैहैं ॥ याअर्थकूंनजाणिकै तेमूढबुद्धिपुरुष ताआनंदकूं विषयजन्यमानैहैं ॥ और हेशिष्य ! यहआत्मादेवही आनंदस्वरूपहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेवही सर्वजीवोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरैहै ॥ तहां जिनजीवोंकेप्रति यहआत्मादेव अज्ञातरहैहै ॥ तिनजीवोंकेतांईतौ यहआत्मादेव परिच्छिन्नविषयजन्यआनंदकीप्राप्तिकरैहै ॥ और जिनविद्वान्पुरुषोंकेप्रति यहआत्मादेव ज्ञातहोवैहै ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंकेतांईतौ यहआत्मादेव परिपूर्णआनंदकीही प्राप्तिकरैहै ॥ यातैं आपणेआनंदकरिकै सर्वजीवोंकूंआनंदकीप्राप्तिकरणेहारा यहआत्मादेवही आनंदस्वरूपहै ॥ इतनैंकरिकै ताब्रह्मरूपआत्माके आनंदरूपताका वर्णनकऱ्या ॥ अब सोआनंदस्वरूपआत्मा विद्वान्पुरुषकूंही प्राप्तहोवैहै याअर्थकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! ऐसाआनंदस्वरूपआत्मा एकब्रह्मविद्याकरिकैही प्राप्तहोवैहै ॥ अन्यउपायकरिकै प्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं ताब्रह्मविद्यावाला विद्वान्पुरुषही जीवन्मुक्तअवस्थाविषे तथाविदेहमुक्तअवस्थाविषे ताआत्मस्वरूपआनंदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताब्रह्मविद्यातैंरहितअज्ञानीजीवतौ ताआनंदकूं शब्दस्पर्शादिकविषयोंतैंजन्यमानैहै ॥ याकारणतैं तेअज्ञानीजीव ताआत्मस्वरूपआनंदकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ अब ताब्रह्मविद्याकेस्वरूपका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! यहअधिकारीपुरुषजबी त्वंपदार्थआत्माकेविचारतैं अभयब्रह्मभावकेयोग्यहोवैहै ॥ तथा गुरुनैंउपदेशकऱ्या जो तत्त्वमसि यहमहावाक्यहै ॥ तामहावाक्यतैंउत्पन्नभयाजो मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाअभेदज्ञानहै ॥ ताअभेदज्ञानकरिकै यहअधिकारीपुरुष तत्पदार्थब्रह्मरूपकेसाथअभेदभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबीही यहअधिकारीपुरुष ताअभयरूपब्रह्मानंदकूं प्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोतत्पदार्थरूपब्रह्म ? नेत्रादिकोंकाविषय जोबाह्यप्रपंचहै तिसतैंरहितहै ॥ तथा स्थूलशरीर सूक्ष्मशरीर कारणशरीर यातीनशरीरोंतैंरहितहै ॥ ऐसाअद्वितीयब्रह्म मैंहूंयाप्रका

रकेअभेदज्ञानकानामही ब्रह्मविद्याहै ॥ इतनेंकरिकै विद्वान्पुरुषोंकेप्रति ताब्रह्मानंदकीप्राप्ति निरूपणकरी ॥ अब अविद्वान् पुरुष ताब्रह्मानंदकूं प्राप्तहोवैनहीं याकोटीकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम ईश्वरविषे तिनअविद्वान्पुरुषोंकेभयकीकारणता निरूपण करैहैं ॥ हेशिष्य! जैसे विद्वान्पुरुष ताआनंदस्वरूपब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे अविद्वान्पुरुष ताब्रह्मकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतें ? जन्ममरणादिकदुःखोंकाकारण जाभेददृष्टिहै ॥ साभेददृष्टि ताअविद्वान्पुरुषविषे सर्वदाविद्यमानहै ॥ याकारणतें सोभेददर्शीअविद्वान्पुरुष ताब्रह्मानंदकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ उलटा सोभेददर्शीपुरुषभयकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य ! शास्त्रोंकूंजानणेहाराजोविद्वान्पुरुषहै ॥ सोविद्वान्पुरुष ताजीवब्रह्मकेवास्तवभेदकूंदेखतानहीं ॥ परंतु सोविद्वान्पुरुषभी जोकदाचित् बहिर्मुखताकरिकै तथा आपणेपंडितपणाकेअभिमानकरिकै ताजीवब्रह्मविषे व्यावहारिकभेदकूंभीदेखैहै ॥ तौ सोविद्वान्पुरुषभी ताभेदरूपपर्वतकीसमीपताकरिकै परमभयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जबी व्यवहारकालविषे जीवब्रह्मकेभेदकूंदेखणेहारा विद्वान्पुरुषभी भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी ताजीवब्रह्मकेवास्तवभेदकूंमानणेहारा जोअविद्वान्पुरुषहै ॥ सोअविद्वान्पुरुष साक्षात् तिनभेदरूपीपर्वतोंविषेनिवासकरताहुआ परमभयकूंप्राप्तहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै? हेशिष्य! वास्तवतें विद्वान्पणातेंरहितहुआभी जोपुरुष भ्रांतिकरिकै आपणेकूंविद्वान्मानैहै ॥ तथा शास्त्रविचारतेंरहित जोकेवलअज्ञानीपुरुषहै ॥ तिनदोनोंकूंताभेददर्शनकरिकै जिसप्रकारकाभय प्राप्तहोवैहै ॥ तिसीप्रकारकाभय प्रमादीविद्वान्पुरुषकूंभी प्राप्तहोवैहै ॥ इहां जोपुरुष शास्त्रकेयथार्थअर्थकूंजाणिकरिकैभी ताशास्त्रकेअर्थविषे निष्ठानहींकरैहै तापुरुषकानाम प्रमादीहै ॥ ऐसाप्रमादीविद्वान्पुरुषभी ताभेददर्शनकरिकै अज्ञानीजीवोंकीन्यांईही जन्ममरणरूपसंसारभयकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातें जिसअधिकारीपुरुषकूं ताजन्ममरणरूपसंसारकेनिवृत्तकरणेकीइच्छाहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतें ताआनंदस्वरूपआत्माकाश्रवणकरिकै श्रुतिकेअनुकूलयुक्तियोंकरिकै ताआनंदस्वरूपआत्माका निरंतरविचाररूपमननकरै ॥ और जोकदाचित् यहअधिकारीपुरुषब्रह्मवेत्तागुरुके उपदेशतें ताआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माका विचाररूपमनन नहींकरैगा॥तौ अनादीभेदवासनावोंकेबलतें सोअधिकारीपुरुष वारं

वार जन्ममरणरूपसंसारकूं प्राप्तहोवैगा ॥ हेशिष्य ! तिनभेदवासनावोंकानाश याआनंदस्वरूपआत्माके विचाररूपमननतेंहीहो
वैहै ॥ मननतेंविना किसीअन्यउपायकरिकै तिनभेदवासनावोंकानाश होवैनहीं ॥ यातैं यहमुमुक्षुजन तिनभेदवासनावोंकीनिवृत्ति
वासते निरंतर ताआत्माकेविचाररूपमननकूंकरै ॥ हेशिष्य ! याआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारतेंविना सोमायाविशि
ष्टपरमेश्वर विद्वान् देवतावोंकूंभी भयकीप्राप्तिकरैहै ॥ तौ शास्त्रविचारतेंरहितअज्ञानीजीवोंकूं सोपरमेश्वर भयकीप्राप्तिकरैहै याके
विषेक्याकहणाहै ? तहांश्रुति ॥ यदाह्येवैषएतस्मिन्नुदरमंतरंकुरुते अथतस्यभयंभवति ॥ अर्थयह ॥ जिसकालविषे यहपुरुष
याअद्वितीयआत्माविषे किंचित्मात्रभीभेद कल्पनाकरैहै ॥ तिसकालविषे ताभेददर्शीपुरुषकूं परमभयकीप्राप्तिहोवैहै ॥ १ ॥ हेशि
ष्य ! अद्वितीयआत्माकेज्ञानतेंविना सोमायाविशिष्टपरमेश्वर सर्वजीवोंकूंभयकीप्राप्तिकरैहै ॥ याप्रकारकेअर्थविषेभी ते तित्तिरिना
माब्राह्मण याप्रकारकामंत्ररूपश्लोक कथनकरैहैं ॥ भीषाऽस्माद्वातःपवते भीषोदेतिसूर्य्यः ॥ भीषाऽस्मादग्निश्चेंद्रश्च मृत्युर्धा
वतिपंचमः ॥ अर्थयह ॥ यापरमात्मादेवकेभयकरिकैही यहवायु चलायमानहोवैहै ॥ और यापरमात्मादेवकेभयकरिकैही यहसूर्यका
उदयहोवैहै ॥ और यापरमात्मादेवकेभयकरिकैही यहअग्नि प्रज्वलितहोवैहै ॥ और यापरमात्मादेवकेभयकरिकैही यहइंद्र वर्षा
द्वारा यालोकोंकारक्षणकरैहै ॥ और यापरमात्मादेवकेभयकरिकैही यहमृत्यु जहांतहांभ्रमणकरताहुआ जीवोंकाहननकरैहै ॥ १ ॥
हेशिष्य ! यासर्वजगत्केव्यवहारकूंसिद्धकरणेहारेजे वायु सूर्य अग्नि इंद्र यम यहपंचदेवताहैं ॥ तेवायुआदिकदेवताभी जबी ता
परमेश्वरतेंभयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तबी दूसरेजीव तापरमेश्वरतेंभयकूंप्राप्तहोवैहैं याकेविषेक्याकहणाहै ? इतनेंकरिकै भेददर्शीपुरुषोंकूं
ईश्वरतेंभयकीप्राप्तिका निरूपणकऱ्या ॥ अब तिसीब्रह्मरूपआत्माविषे निरतिशयआनंदरूपताकेनिरूपणकरणेवासते प्रथम विष
यजन्यआनंदके न्यूनअधिकताकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! सर्वजीवोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहारा तथाभेददर्शीजीवोंकूं भयकी
प्राप्तिकरणेहारा जोआनंदस्वरूपआत्मा पूर्व कथनकऱ्याहै ॥ तिसआत्माकास्वरूपभूतआनंद कितनेपरिमाणवालाहै याप्रकारकी
जाशिष्यकीजिज्ञासाहै ॥ ताजिज्ञासाकेनिवृत्तकरणेवासते तेतित्तिरिनामाब्राह्मण प्रथम विषयजन्यआनंदोंविषे न्यूनअधिकता

वर्णनकरिकै ताआत्मस्वरूपआंनदकूं अनंतरूपकहतेभयेहैं ॥ अब प्रथम यामनुष्यलोकके आनंदकी अवधिका निरूपणकरैहैं ॥ हे शिष्य! यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष यौवनअवस्थाकरिकैयुक्तहोवै ॥ तथा सुंदररूपशीलादिकशुभगुणोंकरिकैयुक्तहोवै ॥ और पुराण न्याय मीमांसा धर्मशास्त्र यहचारिशास्त्र ॥ तथा शिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त ज्योतिष छंद यहवेदकेषट्अंग ॥ तथा ऋग् यजुष् साम अथर्वण यहचारिवेद ॥ यहचतुर्दशविद्या धर्मके तथाज्ञानके जनावणेहारियांहैं ॥ तिनचतुर्दशविद्यावोंका जिसपुरुषनें अध्ययनकऱ्याहोवै ॥ तथा जोपुरुष तिनविद्यावोंकेअध्ययनकरावणेविषेभी समर्थहोवै ॥ औरतिनविद्यावोंकेअर्थकीकल्पनाकरणेविषे जिसपुरुषकीबुद्धि अत्यंतकुशलहोवै ॥ और जोपुरुष प्रथम माताकरिकैशिक्षितहोवै ॥ तिसतैं अनंतर पिताकरिकैशिक्षितहोवै ॥ तिसतैंअनंतर आचार्यकरिकैशिक्षितहोवै ॥ तथा जोपुरुष विनयकरिकैयुक्तहोवै ॥ तथा वज्रसारकेसमान जिसकेअंगहोवैं॥ तथा इंद्रकेसमान जिसकाबलहोवै ॥ और सुमेरुपर्वतहैमध्यविषेजिसके तथासुवर्णादिकधनकरिकैपूर्ण तथा व्रीहियवादिकधान्यकरिकैपूर्ण ऐसीजा यहसप्तमसमुद्रपर्यंत पृथिवीहै ॥ सा संपूर्णपृथिवी जिसकेवशवर्तीहोवै॥ तथा दीर्घ जिसकीआयुष्यहोवै ॥ हे शिष्य! यौवनअवस्थातें आदिलैके दीर्घआयुष्यपर्यंत जितनेकीपदार्थ पूर्व कथनकरेहैं॥ तिनसर्वपदार्थोंकरिकैयुक्त जो कोईकचक्रवर्तीराजाहै ॥ ताचक्रवर्तीराजाकूं जोविषयजन्यआनंद प्राप्तहोवैहै ॥ सोआनंद यामनुष्यलोकोंकेअनंदोंका अवधिरूपहै॥ और ताचक्रवर्तीराजाकेआनंदतैं मनुष्यगंधर्वोंकाआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवैहै ॥ इहां जेमनुष्य कर्मउपासनाकेबलतैं गंधर्वभावकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिनोंकानाम मनुष्यगंधर्वहै॥ और तिनमनुष्यगंधर्वोंकेआनंदतैं देवगंधर्वोंकाआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवैहै॥ और तादेवगंधर्वोंकेआनंदतैं पितरोंकाआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवैहै ॥ और तिनपितरोंकेआनंदतैं आजानजदेवतावोंकाआनंद१००शतगुणाअधिकहोवैहै॥ इहां जेपुरुष स्मार्त्तकर्मोंकेअनुष्ठानकरिकै देवताभावकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिनोंकानाम आजानजदेवताहै ॥ और तिनआजानजदेवतावोंकेआनंदतैं कर्मदेवतावोंकाआनंद१००शतगुणाअधिकहोवैहै ॥ इहां जेपुरुष अग्निहोत्रादिकश्रौतकर्मोंके अनुष्ठानकरिकै देवताभावकूंप्राप्तहोवैहैं॥तिनोंकानाम कर्मदेवताहै॥और तिनकर्मदेवतावोंकेआनंदतैं वसुरुद्रादिकदेवता

वोंकाआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवैहै ॥ और तिनवसुरुद्रादिकदेवतावोंकेआनंदतैं देवराजइंद्रकाआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवै है ॥ और तादेवराजइंद्रकेआनंदतैं बृहस्पतिकाआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवैहै ॥ और ताबृहस्पतिकेआनंदतैं प्रजापतिकाआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवैहै ॥ इहां प्रजापतिशब्दकरिकै विराट्भगवान्का ग्रहणकरणा ॥ और ताप्रजापतिकेआनंदतैं ब्रह्माका आनंद १०० शतगुणाअधिकहोवैहै ॥ जाब्रह्माकूं शास्त्रविषे हिरण्यगर्भनामकरिकै तथासूत्रात्मानामकरिकै कथनकरैहैं ॥ ता हिरण्यगर्भकेआनंदतैंअधिक कोईभीविषयजन्यआनंद नहीं है ॥ किंतु संपूर्णविषयजन्यआनंदोंका सोहिरण्यगर्भकाआनंदही अ वधिरूपहै ॥ हेशिष्य! मनुष्यलोकतैं आदिलेकै ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेकीविषयजन्यआनंद श्रुतिनैं कथनकरैहैं ॥ तिनसंपूर्ण आनं दोंविषे जिसजिसलोकके आनंदतैं यहअधिकारीपुरुष विरक्तहोवैहै ॥ तिसतिसलोकतैं शतगुणाअधिकआनंदकूं सोअधिकारीपुरु ष प्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जिनमनुष्यादिकआनंदोंकूं यहजीव चिरकालपर्यंत अनेककर्मउपासनाकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ तिन मनुष्यादिकआनंदोंकूं यहनिष्कामअधिकारी पुरुष सुखेनहीप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं सर्वकामनावोंकापरित्या गकरिकै अवश्य निष्कामहोणा ॥ और हेशिष्य! यहअधिकारीपुरुष मनुष्यलोकतैंआदिलेकै ब्रह्मलोकपर्यंत सर्वविषयजन्यआ नंदोंकेप्राप्तिकीइच्छाकापरित्यागकरिकै जिसआत्मस्वरूपआनंदका अनुभवकरैहै ॥ सोआत्मस्वरूपआनंद ताहिरण्यगर्भकेआनं दतैंभी अधिकहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जैसे पूर्वपूर्व मनुष्यादिकआनंदोंकीअपेक्षाकरिकै उत्तरउत्तर मनुष्यगंधर्वादिकोंकेआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवैहैं ॥ तैसे सोआत्मस्वरूपआनंदभी ताहिरण्यगर्भके आनंदतैं १०० शतगुणाअधिकहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! यामनुष्यलोकादिकोंके आनंदकीअपेक्षाकरिकै यद्यपि सोहिरण्यगर्भकाआनंद अधिकहै ॥ तथापि सोहिरण्यगर्भका आनंद ताआत्मानंदरूपसमुद्रका एकबिंदुमात्रहै ॥ यातैं सोआत्मस्वरूपआनंद अनंतहै ॥ ऐसेअनंतआत्मस्वरूपआनंद विषे शतगुणीअधिकता तथासहस्रगुणीअधिकता कहीजावैनहीं ॥ हेशिष्य! जोयहआत्मस्वरूपआनंद व्यष्टिउपाधिवालेत्वंप दार्थपुरुषविषे रहैहै ॥ सोइहीआत्मस्वरूपआनंद समष्टिउपाधिवाले तत्पदार्थ आदित्यपुरुषविषे रहैहै ॥ यातैं तात्वंपदार्थजीवावि

षेतथाततूपदार्थईश्वरविषे किंचित्‌मात्रभीभेद्‌नहीं है ॥ किंतु सोआनंदस्वरूपआत्मा सर्वत्र एकहीहै ॥ ऐसेआनंदस्वरूपअद्वितीय आत्माविषे जोजीवोंकूं यहसूर्यादिक अधिदैवरूपहैं यहनेत्रादिक अध्यात्मरूपहैं यहरूपादिकविषय अधिभूतरूपहैं याप्रकार काभेद प्रतीतहोवैहै ॥ सोभेद ताअद्वितीयआत्माकेअज्ञानतैंही प्रतीतहोवैहै ॥ और हेशिष्य! याजीवोंकूं वस्तुकेपरोक्षज्ञानहुएभी जबपर्यंत तावस्तुकाअपरोक्षज्ञान नहींहोवैहै ॥ तबपर्यंत तिनजीवोंका तावस्तुविषे भ्रम निवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु अपरोक्षज्ञानकेहुए ही ताभ्रमकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ जैसे पूर्वदक्षिणादिकदिशावोंके परोक्षज्ञानहुएभी जबपर्यंत याजीवकूं तिनपूर्वादिकदिशावोंका अप रोक्षज्ञान नहींहोवैहै ॥ तबपर्यंत ताजीवकूं तिनपूर्वादिकदिशावोंकेभ्रमकीनिवृत्ति होवैनहीं ॥ किंतु तिनपूर्वादिकदिशावोंके अपरो क्षज्ञानकरिकैही तादिशाभ्रमकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तैसे ताब्रह्मरूपआत्माके परोक्षज्ञानहुएभी जबपर्यंत याजीवोंकूं ताब्रह्मरूपआत्मा का अपरोक्षज्ञान नहींहोवैहै ॥ तबपर्यंत याजीवोंके अध्यात्म अधिदैव अधिभूत इत्यादिकभेदभ्रम निवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु ताब्रह्म रूपआत्माकेअपरोक्षज्ञानकरिकैही ताभेदभ्रमकीनिवृत्तिहोवैहै॥ हेशिष्य! जोअधिकारीपुरुष याप्रकार भ्रमकीमर्यादाकूंजाणिकरिकै ताब्रह्मरूपआत्माकेसाक्षात्कारवासतै यत्नकरैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष पूर्वउक्तअन्नमयादिकपंचकोशोंविषे क्रमतैं आत्मबुद्धिकरिकै पंचमेआनंदमयकोशकेपुच्छरूपब्रह्मकूं साक्षात्कारकरैहै ॥ हेशिष्य! ऐसेआनंदस्वरूपब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपकरिकै प्राप्तभया जोविद्वान्‌पुरुषहै ॥ ताविद्वान्‌पुरुषकूं किसीभीपदार्थतैं भयकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ याप्रकारकेअर्थविषेभी ते तित्तिरिनामाब्राह्मण या प्रकारकामंत्ररूपश्लोक कथनकरैहै॥ यतोवाचोनिवर्त्तन्ते अप्राप्यमनसासह आनंदंब्रह्मणोविद्वान् नबिभेतिकुतश्चन॥अर्थयह॥ शब्दोंविषे वाणीकीप्रवृत्तिहोवैहै और तिनशब्दोंके अर्थोंविषे मनकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ और यहअद्वितीयब्रह्मतौ शब्दरूपप्रपंचतैं तथा अर्थरूपप्रपंचतैं रहितहै॥यातैं ताअद्वितीयब्रह्मविषे वाणीकी तथामनकी प्रवृत्तिहोवैनहीं॥ ऐसेआनंदस्वरूपब्रह्मकूं जोविद्वान् पुरुष आपणाआत्मरूपकरिकै जानैहै सोअभेददर्शीविद्वान्‌पुरुष किसीतैंभी भयकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ १॥ और हेशिष्य! जीवब्रह्म केभेदकूंदेखणेहारा जोअज्ञानीपुरुषहै ॥ ताभेददर्शीअज्ञानीपुरुषकूं पुण्यकर्म तथापापकर्म यहदोनों तपायमानकरैहैं ॥ तहां

पुण्यकर्मतो नहींकऱ्येहुए तिनअज्ञानीजीवोंकूं तपायमानकरैहैं ॥ और पापकर्मतो कऱ्येहुए तिनअज्ञानीजीवोंकूं तपायमान करैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ दूसरेपुण्यवान्पुरुषोंकूं सुखीहुआदेखिकै तेअज्ञानीजीव याप्रकारका पश्चात्तापकरैहैं ॥ जिसपुण्यकर्मकरिकै यापुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिभईहै ॥ सोपुण्यकर्म हमनें पूर्वजन्मोंविषे कऱ्यानहीं ॥ जोकदाचित् पूर्वजन्मोंविषे मैंभी ऐसापुण्यकर्म करता ॥ तो हमारेकूंभी अबी ऐसीसुखकीप्राप्तिहोती॥ याप्रकारका पश्चात्तापकरिकै सोअज्ञानीपुरुष आपणेकूं धिक्कारकरैहै ॥ और सोअज्ञानीपुरुष जबी पूर्वलेपापकर्मोंका दुःखरूपफलभोगेहै ॥ तबी याप्रकारका पश्चात्तापकरैहै ॥ मैं पूर्वजन्मोंविषे ऐसेपापकर्म किसवासतेकरताभया ? जिनपापकर्मोंकरिकै मैं अबी परमदुःखकूं प्राप्तभयाहूं ॥ याप्रकारका पश्चात्तापकरिकै सोअज्ञानीपुरुष आपणेकूं धिक्कारकरैहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार ताभेददर्शी अज्ञानीपुरुषोंकूं जैसे नहींकऱ्येहुएपुण्यकर्म तपायमानकरैहैं ॥ तथा कऱ्येहुएपापकर्म तपायमानकरैहैं ॥ तैसे मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअभेदज्ञानकरिकै ब्रह्मभावकूंप्राप्तभयाजोविद्वान्पुरुषहै ॥ ताविद्वान्पुरुषकूं नहींकऱ्येहुएपुण्यकर्म तपायमानकरैनहीं ॥ तथा कऱ्येहुएपापकर्म तपायमानकरैनहीं ॥ हेशिष्य! याविद्वान् पुरुषकूं पुण्यपापकर्म तपायमानकरैनहींयाकेविषे यहकारण है ॥ जैसे यालोकविषे अग्नि आपणेतैं भिन्नकाष्ठादिकपदार्थोंकूंतो दाहकरैहै ॥ परंतु सोअग्नि आपणेआत्माकूं दाहकरैनहीं ॥ तैसे मैंब्रह्मरूपहूं याअभेदज्ञानकेप्रभावतैं तिनपुण्यपापकर्मोंकूंभी आपणाआत्मरूपकरिकैजानणेहारा जोविद्वान्पुरुषहै ॥ ताविद्वान्पुरुषकूं तेआत्मरूपपुण्यपापकर्म तपायमानकरैनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जोअधिकारीपुरुष याआनंदस्वरूपब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपकरैकजानैहै ॥ ताअधिकारीपुरुषकूं निश्चयकरिकै अभयकीप्राप्तिहोवैगी ॥ हेशिष्य! इसप्रकार ते तित्तिरिनामाब्राह्मण आपणेशिष्योंकेप्रति याब्रह्मविद्याकाउपदेश करतेभये ॥ कैसीहैयहब्रह्मविद्या ? हमअधिकारीजनोंकूं आनंदस्वरूपआत्माकेप्राप्तिका कारणहै ॥ इतनेंग्रंथकरिकै आनंदवल्लीकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब भृगुवल्लीकाअर्थ निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! पूर्वआनंदवल्लीविषे यहअर्थ कथनकऱ्याथा ॥ जोअधिकारी पुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं याआनंदस्वरूपब्रह्मकाश्रवणकरिकै तिसब्रह्मका वारंवार विचाररूपमनन करैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष

याअन्नमयादिकपंचकोशोंकूं आत्मरूपकरिकैजाणतानहीं ॥ किंतु पंचमेआनंदमयकोशकापुच्छरूपजोब्रह्महै ॥ ताब्रह्मकूंही सो अधिकारीपुरुष आपणाआत्मरूपकरिकैजाणेहै ॥ हेशिष्य! याप्रकारकेअर्थविषे ते तित्तिरिनामाब्राह्मण पितापुत्रके इतिहासकूं कथनकरतेभयेहैं ॥ कैसाहैसोइतिहास ? ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशश्रवणतेंअनंतर मननकेस्वरूपकूं बोधनकरणेहाराहै ॥ ऐसेइतिहासकूं तू सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ हेशिष्य! पूर्वकालविषे वरुणनामाऋषिकापुत्र एकभृगुनामाऋषि होताभयाहै ॥ सोभृगुनामाऋषि एककालविषे आपणेवरुणपिताकेसमीपजाइके याप्रकारकाप्रश्नकरताभया ॥ भृगुरुवाच ॥ हेभगवन्! जिसब्रह्मकूं आप जानतेहो ॥ सोब्रह्म हमारेप्रति उपदेशकरो ॥ हेशिष्य! इसप्रकार जबी ताभृगुनें आपणेवरुणपिताकेप्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तबी सोवरुणपिता आपणेमनविषे याप्रकारकाविचार करताभया ॥ मैंवरुण याभृगुपुत्रकेप्रति प्रथम त्वंपदार्थआत्माके उपलक्षणपदार्थोंका कथनकरौं ॥ तथा तत्पदार्थब्रह्मके उपलक्षणपदार्थोंका निरूपणकरौं ॥ जोकदाचित् यहभृगु बुद्धिमान्होवैगा ॥ तौ तिनउपलक्षणपदार्थोंकरिकै उपलक्षितजोचैतन्यआत्माहै ॥ ताचैतन्यआत्माकूं यहभृगु आपही जाणैगा ॥ हेशिष्य! याप्रकार भृगुपुत्रकेबुद्धिकीपरीक्षाकरणेवासते सोवरुणपिता प्रथम त्वंपदार्थआत्माकेउपलक्षणपदार्थोंका निरूपणकरताभया॥वरुणउवाच॥ हेभृगु! यहस्थूलशरीर तथा प्राण अपान समान व्यान उदान यहपंचप्राण तथा श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचज्ञानेंद्रिय तथा वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु यहपंचकर्मेंद्रिय तथा मन बुद्धि चित्त अहंकार यहचारी अंतःकरण ॥ इतनेंही व्यष्टिसमष्टिरूपपदार्थ भोग्यरूपकरिकै यासर्वजगत्विषे स्थितहैं ॥ तिनशरीरादिकपदार्थों तैंअधिककोईपदार्थ याजगत्विषेहैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ स्थूलशरीरतैंआदिलेकैजितनेकी यहभोग्यपदार्थहैं ॥ तिनोंकी किसीभोक्तारूपसाक्षीतैंविना सिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं तिनशरीरादिकभोग्यपदार्थोंका कोईभोक्तासाक्षीभीहै ॥ इतनेकरिकै त्वंपदार्थजीवात्माके शरीरादिकउपलक्षणपदार्थोंका निरूपणकऱ्या ॥ अब तत्पदार्थब्रह्मके उपलक्षणपदार्थोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेभृगु! जिसतत्पदार्थब्रह्मकेप्रादुर्भावकासाधन यालोकविषे प्रसिद्धनहींहै ॥ ऐसेब्रह्मकेप्रादुर्भावकरणेवासते मैंवरुण तुमारेप्रति ताब्रह्मकालक्षण कथनकरताहूं ॥ तालक्षणकाविचारकरिकै तू

आपणीबुद्धिकरिकै पूर्वकहेहुएशरीरादिकपदार्थौंविषे किसीपदार्थकूं ब्रह्मरूपकरिकैजाण ॥ अथवा तिनशरीरादिकपदार्थौंतैंभिन्न किसीपदार्थकूं ब्रह्मरूपकरिकैजाण ॥ सोजानणा तुमारेबुद्धिकेअधीनहै ॥ अब ताब्रह्मकेलक्षणका निरूपणकरेंहैं ॥ हेभृगु जिस उपादानकारणतैं यहसंपूर्णभूतभौतिकजगत् उत्पन्नभयाहै तथा जिसउपादानकारणविषे यहसंपूर्णजगत् स्थितहै ॥ तथा जिसउपादानकारणविषे यहसंपूर्णजगत् लयभावकूंप्राप्तहोवैहै॥ सोउपादानकारणही ब्रह्महै॥हेशिष्य! जैसे पूर्व ॥सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म॥ याश्रुतिविषे शास्त्रदृष्टिकूंअंगीकारकरिकै सत्य ज्ञान अनंत यहतीनलक्षण ब्रह्मकेकहेथे ॥ और लौकिकदृष्टिकूंअंगीकारकरिकै सत्यज्ञानअनंत यहएकहीलक्षण ब्रह्मकाकह्याथा ॥ तैसे इहांभी वरुणऋषिनैं भृगुपुत्रकेप्रति शास्त्रदृष्टिकूंअंगीकारकरिकैतौ याजगत्के उत्पत्तिकीकारणता तथास्थितिकीकारणता तथालयकीकारणता यहतीनलक्षण ब्रह्मकेकथनकरेंहैं ॥ और लौकिकदृष्टिकूंअंगीकारकरिकैतौ याजगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकीकारणता यहएकही ब्रह्मकालक्षण कथनकर्‍याहै ॥ इसप्रकार सोवरुणऋषि ताब्रह्मके जगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकीकारणतारूप तटस्थलक्षणकूं कथनकरिकै पुनःताभृगुपुत्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥हे भृगुपुत्र! ताब्रह्मके दोप्रकारकेलक्षण होवैंहैं॥ एकतौ स्वरूपलक्षणहोवैहै ॥ और दूसरे तटस्थलक्षणहोवैहै ॥ तहां ताब्रह्मकेस्वरूपलक्षणकेजानणेविषे अबी तुमारीबुद्धि समर्थनहींहै ॥ याकारणतैं हमनैं तुमारेप्रति सोब्रह्मकास्वरूपलक्षण नहींकथनकरेंहैं॥ हेभृगु! सूक्ष्मबुद्धिवालेअधिकारीपुरुषही आपणीसूक्ष्मबुद्धिकरिकै ताब्रह्मकेस्वरूपलक्षणकूंजानैंहैं ॥ स्थूलबुद्धिकरिकै सोब्रह्मका स्वरूपलक्षण जान्याजावैनहीं ॥ और इसकालविषे तुमारीभीस्थूलबुद्धिहै ॥ याकारणतैं ताब्रह्मकेस्वरूपलक्षणकापरित्यागकरिकै हमनैं तुमारेप्रति ताब्रह्मकेतटस्थलक्षणका कथनकर्‍याहै ॥ सोतटस्थलक्षण स्वरूपलक्षणकीअपेक्षाकरिकै स्थूलहोवैहै ॥ यातैं सो तटस्थलक्षण तुमारीबुद्धिविषे शीघ्रही आवैगा॥इहां लक्ष्यस्वरूपब्रह्मतैं ता तटस्थलक्षणकी जोबाह्यस्थितिहै॥यहही ता तटस्थलक्षणविषे स्थूलताहै ॥अब ता तटस्थलक्षणकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम लोकप्रसिद्धदृष्टांतविषे तास्वरूपलक्षणका तथातटस्थलक्षणका निरूपणकरेंहैं॥जैसे यालोकविषे सोमशर्मानामापुरुषकागृह स्थूलहै तथा मनोरमहै तथाशुक्लवर्णवालाहै तथाविचित्रध्वजापता

कावोंवालाहै तथामेघोंकूंस्पर्शकरैहै॥इहां तेस्थूलतादिकधर्म तागृहकेस्वरूपकाघटकहैं ॥ यातैं तेस्थूलतादिकधर्म तागृहकेस्वरूपलक्षणहैं॥और जहां तासोमशर्मापुरुषके गृहकेजनावणेवासते किसीपुरुषकेप्रति याप्रकारकावचन कहिये ॥ जिसगृहविषे विचित्रशब्दोंकूंकरणेहारे शुकसारिकादिकपक्षी स्थितहैं॥सोगृह तुमनैं सोमशर्मापुरुषकाजानणा ॥ इहां शुकसारिकादिकपक्षी तागृहका तटस्थलक्षणहैं ॥ अब तटस्थलक्षणके तथास्वरूपलक्षणके लक्षणकानिरूपणकरैहैं ॥ जालक्षकपदार्थकेअभावहुएभी जहां लक्ष्यपदार्थकाअभाव होवैनहीं ॥ तालक्षकपदार्थकानाम तटस्थलक्षणहै ॥ जैसे शुकसारिकादिकलक्षकपदार्थोंकेअभावहुएभी तागृहरूपलक्ष्यपदार्थका अभावहोवैनहीं ॥ यातैं तेशुकसारिकादिकपक्षी तागृहका तटस्थलक्षणहैं ॥ और जालक्षकपदार्थकेअभावहुए जहां तालक्ष्यपदार्थकाभीअभावहोवैहै ॥ तालक्षकपदार्थकानाम स्वरूपलक्षणहै ॥ जैसे स्थूलतादिकलक्षकपदार्थोंकेअभावहुए तागृहरूपलक्ष्यपदार्थकाभीअभावहोवैहै ॥ यातैं तेस्थूलतादिकधर्म तागृहका स्वरूपलक्षणहैं ॥ याकहणेतैं यहदोलक्षणासिद्धभये॥जिसलक्षकपदार्थकाअभाव तालक्ष्यपदार्थकेअभावका प्रयोजकनहींहोवैहै॥ सोलक्षकपदार्थ तटस्थलक्षणहोवैहै ॥ जैसेशुकसारिकादिकपक्षीहैं ॥ और जिसलक्षकपदार्थकाअभाव तालक्ष्यपदार्थकेअभावका प्रयोजकहोवैहै ॥ सोलक्षकपदार्थ स्वरूपलक्षणहोवैहै॥जैसे तागृहके स्थूलतादिकधर्महैं॥शंका॥हेभगवन्! लक्ष्यवस्तुकास्वरूपभूतजेपदार्थहैं॥ तिनपदार्थोंविषे लक्षणरूपतासंभवैनहीं॥काहेतैं?यालोकविषे जोपदार्थ आपणेलक्ष्यतैंभिन्नहोवैहै ॥ सोपदार्थही लक्षणरूपहोवैहै॥समाधान॥हेशिष्य! जहां स्वरूपलक्षणहोवैहै ॥ तहां तास्वरूपलक्षणका लक्ष्यपदार्थकेसाथ वास्तवतैंभेदहोवैनहीं ॥ किंतु तालक्षणकावक्तापुरुष आपणीबुद्धिकरिकै ताभेदकी कल्पनाकरैहै ॥ यातैं कल्पितभेदकूंअंगीकारकरिकै तास्वरूपभूतपदार्थविषेभी लक्षणरूपता संभवहोइसकैहै ॥ और जहां तटस्थलक्षणहोवैहै ॥ तहां तो जैसे गौतैं वास्तवभेदवाला अश्वहोवैहै ॥ तैसे तालक्ष्यपदार्थतैं वास्तवभेदवालाही सो तटस्थलक्षणहोवैहै ॥ याकहणेकरिकै यहदोलक्षण बोधनकरे ॥ जोपदार्थ आपणेलक्ष्यपदार्थतैं कल्पितभेदवालाहुआ तालक्ष्यपदार्थकूं इतरपदार्थोंतैंभिन्नकरिकैजनावैहै ॥ सोपदार्थ तालक्ष्यपदार्थका स्वरूपलक्षणहोवैहै ॥ और जोपदार्थ आपणेलक्ष्यपदार्थ

तैं वास्तवभेदवालाहुआ तालक्ष्यपदार्थकूं इतरपदार्थोंतैंभिन्नकरिकैजनावैहै ॥ सोपदार्थ तालक्ष्यपदार्थका तटस्थलक्षणहोवैहै ॥ अब यातटस्थलक्षणकेलक्षणकूं सिद्धांतविषेजोडेहैं॥हेभृगु! जडत्वपरिच्छिन्नत्वादिकधर्मोंकरिकै याजगत्‌विषे ब्रह्मकाभेद सर्वप्राणियोंकूंप्रसिद्धहै ॥ यातैं ताजगत्‌केधर्म जेउत्पत्तिस्थितिलयादिकहैं ॥ तिनउत्पत्तिआदिकधर्मोंविषे ताब्रह्मकीतटस्थलक्षणरूपता संभवहोइसकैहै ॥ और हेभृगु ! जहांकिसीलक्ष्यपदार्थकेजनावणेवासते तटस्थलक्षणकहाताहै ॥ तहां ता तटस्थलक्षणकरिकै तालक्ष्यपदार्थकावास्तवस्वरूप शीघ्रही प्रतीतहोवैनहीं ॥ किंतु तिसकालविषे तालक्ष्यपदार्थकास्वरूप सामान्यतैं प्रतीतहोवैहै ॥ और तिसतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष जबी तातटस्थलक्षणकेबोधनकरणेहारेवचनका अनेकप्रकारकीयुक्तियोंकरिकैविचारकरैहै ॥ तबी याअधिकारीपुरुषकूं तालक्ष्यपदार्थकेवास्तवस्वरूपका साक्षात्कारहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम सर्वतटस्थलक्षणोंविषे प्रसिद्धहै॥ यातैं हेभृगुपुत्र! तूभी ताब्रह्मकेतटस्थलक्षणकूंबोधनकरणेहारेवचनकाविचारकरिकै तालक्ष्यस्वरूपब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकूंजाण ॥ शंका ॥ हेभगवन्! स्वभावतैंप्रमाणरूप जेवेदकेवचनहैं ॥ तिनवेदवचनोंकूं आपणेअर्थकेबोधनकरणेविषे विचाररूप मननकीअपेक्षा संभवैनहीं ॥समाधान॥ हेभृगु! तिनवेदकेवचनोंकूं आपणेशाब्दबोधरूपफलकीउत्पत्तिविषे यद्यपि ताविचारकीअपेक्षानहीं हैं ॥ तथापि श्रोतापुरुषोंकेअपराधरूप जेअसंभावनादिकदोषहैं ॥ तिनदोषोंकीनिवृत्तिवासते तिनवेदवचनोंकूं ताविचाररूपमननकी अवश्यकरिकैअपेक्षाहै ॥ जैसे चक्षुइंद्रियकूं घटादिकपदार्थोंकेदर्शनविषे यद्यपि अंजनकीअपेक्षानहीं है ॥ तथापि तिनघटादिकोंकेदर्शनविषेप्रतिबंधक जोचक्षुनिष्ठमलिनताहै ॥तामलिनताकीनिवृत्तिकरणेवासते ताचक्षुइंद्रियकूं अंजनकीअपेक्षा अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ तैसे ब्रह्मसाक्षात्कारविषेप्रतिबंधकजे असंभावनादिकदोषहैं ॥ तिनदोषोंकीनिवृत्तिकरणेवासते तेवेदकेवचन ताविचाररूपमननकीअपेक्षा अवश्यकरैहैं ॥ और हेभृगु! जैसे आपणेगृहकीभूमिविषे दाब्याहुआ जोसुवर्णादिरूपधनहै॥ ताधनरूपनिधिकूं सोगृहवालापुरुष सिद्धअंजनतैंविना देखिसकैनहीं ॥ तैसे सर्वप्राणियोंकेहृदयदेशविषेविराजमान जोब्रह्महै ॥ ताब्रह्मकूं यहअधिकारीपुरुष ताविचाररूपमननतैंविना साक्षात्कारकरिसकैनहीं ॥ और हेभृगु! जैसे भूमिविषेदाब्येहुएधनकेदेखणेकासाधन

जोसिद्धअंजनहै ॥ तासिद्धअंजनविषे कोईसर्वलोकप्रसिद्धऔषध कारणहोवैनहीं ॥ किंतु कोईविलक्षणऔषधही ताअंजनविषेकारणहोवैहै ॥ तैसे ताब्रह्मकेसाक्षात्कारविषेभी कोईसर्वलोकप्रसिद्धउपायहैनहीं ॥ किंतु श्रुतिअनुकूलअनेकप्रकारकीयुक्तियोंकरिकै जो तालक्षणवाक्यकाविचारहै ॥सोविचाररूपमननही ताब्रह्मसाक्षात्कारका उपायहै ॥ और हेभृगु! ताब्रह्मकेलक्षणवाक्यकाजोज्ञानहै ॥ सोज्ञानतौ ताब्रह्मसाक्षात्कारविषे मुख्यउपायहै ॥ और जैसे रूपादिकपदार्थोंकेदर्शनविषे ताचक्षुइंद्रियका अंजन सहकारी होवैहै ॥ तैसे ब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तिविषे तालक्षणवाक्यकेज्ञानका तालक्षणवाक्यकेअर्थकाविचार सहकारीमात्रहोवैहै ॥ और हेभृगु! ऐसा ब्रह्मकेलक्षणवाक्यकाज्ञानरूपउपाय गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंप्राप्तहुआभी अशुद्धअंतःकरणवालेपुरुषोंकूं किंचित्मात्रभी फलकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ किंतु शुद्धअंतःकरणवालेपुरुषोंकूंही सोउपाय फलकीप्राप्तिकरैहै॥यातैं याअधिकारीपुरुषनैं आपणेअंतःकरणकूं अवश्यकरिकै शुद्धकऱ्याचाहिये ॥ अब ताअंतःकरणकेशुद्धिकाउपाय निरूपणकरैहैं ॥ हेभृगु! याअंतःकरणविषेजोअशुद्धिहोवैहै ॥ सो विषयोंकेरागतैंहोवैहै ॥ और सोविषयोंकाराग याशरीरइंद्रियोंकेगर्वतैंहोवैहै ॥ और सोशरीरइंद्रियोंकागर्व विषयोंकेसंबंधतैंहोवैहै॥यातैं परंपराकरिकै सोविषयोंकासंबंधही अंतःकरणकीअशुद्धिविषेकारणहै॥यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं आपणेअंतःकरणकीशुद्धिकरणेकीइच्छाहोवै॥सोअधिकारीपुरुष प्रथम विषयोंकेसंबंधकापरित्यागकरै॥ताविषयसंबंधरूपकारणकेनाशहुएतैंअनंतर तेगर्वादिककार्य आपहीनाशकूंप्राप्तहोवैहैं॥शंका॥ हेभगवन्! अन्नपानादिकसर्वविषयोंकेपरित्यागकरणेतैं याअधिकारीपुरुषकाशरीरही नाशकूंप्राप्तहोवैगा॥समाधान॥ हेभृगु! यहअधिकारीपुरुष जोकदाचित् किंचित्मात्रभी अन्नपानादिकविषयोंकाग्रहण नहींकरैगा ॥ तौ याअधिकारीपुरुषकाशरीर शीघ्रही नाशकूंप्राप्तहोवैगा ॥ और जोकदाचित् यहअधिकारीपुरुष अधिकअन्नपानादिकविषयोंकाग्रहणकरैगा ॥ तौयाअधिकारीपुरुषके शरीरइंद्रिय गर्वकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष इतनैंमात्र अन्नपानादिकविषयोंकाग्रहणकरै ॥ जितनैंकरिकै याशरीरकानाशभीनहींहोवै ॥ तथा याशरीरइंद्रियोंविषे गर्वभी उत्पन्ननहींहोवै ॥ इसप्रकार याशरीरकेजीवनमात्रविषेउपयोगी तथा आपणेवर्णाश्रमतैंअविरुद्ध ऐसेजेअन्नपानादिकविषयहैं ॥ तिनोंतैंअधिकाविष

योंकासंग्रह नहींकरणा याकानाम तपहै ॥ ऐसे संयमरूपतपकेप्राप्तहुए याअधिकारीपुरुषोंकेशरीरइंद्रियोंकागर्व नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तागर्वकेनाशहुए सोविषयोंकारागभी नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तारागकेनाशहुए याअधिकारीपुरुषकाअंतःकरण शुद्ध होवैहै ॥ इसप्रकार संयमरूपतपकरिकै रागद्वेषादिकमलतैंरहितहुआ यहअंतःकरण गुरुशास्त्रउपदिष्टवचनोंकेअर्थकाविचारकरिकै ताब्रह्मकूंनिश्चयकरैहै ॥ यातैं हेभृगु ! तूभी तासंयमरूपतपतैं आपणेचित्तकूंशुद्धकरिकै तथा पूर्वउक्तब्रह्मकेलक्षणवाक्यकाविचारकरिकै ताब्रह्मकूं निश्चयकर ॥ हेभृगु! ताब्रह्मकेलक्षणवाक्यका नानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिकैविचाररूपजोतपहै ॥ तथा शरीरइंद्रियादिकोंकासंयमरूपजोतपहै ॥ यहदोनोंप्रकारकातप ताब्रह्मकेसाक्षात्कारविषेकारणहै ॥ याप्रकारकावचन हम तुमारेप्रतिकहतेनहीं ॥ काहेतें? जोअर्थ शिष्यकूंअज्ञातहोवैहै ॥ तिसअर्थकूंही गुरुशास्त्र उपदेशकरैहैं ॥ ज्ञातअर्थका गुरुशास्त्र उपदेशकरैंनहीं ॥ और यहतप सर्वमनवांछितपदार्थोंकेप्राप्तिकाकारणहै याअर्थकूं तू आपही भलीप्रकारजाणताहै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार सोभृगुऋषि आपणेवरुणपिताकेमुखतैं ताब्रह्मका तटस्थलक्षण श्रवणकरिकै तथा ता तपविषे ब्रह्मज्ञानकीकारणताकानिश्चयकरिकै प्रथम अंतःकरणकीशुद्धिवासतै पूर्वउक्तशरीरइंद्रियादिकोंकेसंशयरूपतपकूं करताभया ॥ तासंयमरूपतपकरिकै जबी ता भृगुका अंतःकरणशुद्धभया ॥ तबी सोभृगुऋषि पूर्वउक्तब्रह्मकेलक्षणवाक्यका विचाररूपमनन करताभया ॥ और ताविचाररूपतपकरिकै सोभृगु प्रथम अध्यात्म अधिदैव अधिभूतरूप जोयहसमष्टिव्यष्टिरूपस्थूलशरीरहै तास्थूलशरीररूपअन्नमयकोशविषे पूर्वउक्तब्रह्मकालक्षणजाणिकै तास्थूलशरीररूपअन्नमयकोशकूंही ब्रह्मरूपजाणताभया ॥ तिसतैंअनंतर ताअन्नमयकोशविषेभी दोषोंकूंदेखिकै सोभृगु पुनःपिताकेसमीपजाताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! ताअन्नमयकोशविषे ताभृगुनैं ब्रह्मकालक्षण किसप्रकार निश्चयकऱ्या? और ताअन्नमयकोशविषे ताभृगुनैं कौनदोषदेखे? ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! समष्टिव्यष्टिरूप जेयहस्थूलशरीरहैं ॥ तिनशरीरोंतैंही यहसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ और तिनशरीरोंविषेही यहसंपूर्णजगत् स्थितहै ॥ और नाशकालविषे यहसंपूर्णजगत् तिनशरीरोंविषेही लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे मृतकशरीर श्वान

कृमि अग्नि आदिकदेहोंकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ इसप्रकार सोभृगु जगत्‌केउत्पत्तिस्थितिलयकीकारणतारूप ब्रह्मकालक्षण तासमष्टिव्यष्टिरूपस्थूलशरीरविषेही निश्चयकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर विचारकरिकै सोभृगु ताअन्नमयकोशविषे याप्रकारकेदोषोंकूंदेखताभया ॥ यहसमष्टिव्यष्टिरूपस्थूलशरीर यद्यपि याजगत्‌केकारणहै ॥ तथापि यहस्थूलशरीर आप नाशवान्‌है तथापरिच्छिन्नहै ॥ और ब्रह्मतौ उत्पत्तिनाशतैंरहितहै तथा सर्वत्र व्यापकहै ॥ यातैं यहस्थूलशरीर ब्रह्मरूप किसप्रकारहोवैगा? किंतु यहस्थूलशरीर ब्रह्मरूपनहींहै ॥ किंवा जैसे यहव्यष्टिस्थूलशरीर उत्पत्तिनाशवान्‌है तथापरिच्छिन्नहै ॥ तैसे समष्टिविराट्‌भगवान्‌कास्थूलशरीरभी उत्पत्तिनाशवान्‌है तथापरिच्छिन्नहै ॥ यातैं तासमष्टिस्थूलशरीरविषेभी ब्रह्मरूपता संभवैनहीं ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सोभृगुनामाऋषि ताअन्नमयकोशविषेदोषोंकूंदेखिकै ताअन्नमयकोशके कारणकेपूछणेकीइच्छा करिकै पुनःतावरुणपिताकेसमीप जाताभया ॥ और मेरेतांई ब्रह्मकाउपदेशकरो याप्रकारकाप्रश्न जैसे ताभृगुनैंपूर्वकर्‍याथा॥तिसीप्रकारकाप्रश्न सोभृगु पुनःतावरुणपिताकेप्रति करताभया ॥ और सोवरुणभी पूर्वकीन्यांई याप्रकारकाउत्तर कहताभया ॥ हेभृगु! जोविचाररूपतप हमनैं तुमारेप्रति बोधनकर्‍याहै ॥ तथा जोविचाररूपतप तुमनैं निश्चयकर्‍याहै ॥ सोविचाररूपतपही ताब्रह्मसाक्षात्कारविषे मुख्यकारणहै ॥ तिसतपतैंविना दूसराकोईकारणनहींहै ॥ यातैं ताविचाररूपतपकरिकैही तू याजगत्‌केकारणरूपब्रह्मकूं निश्चयकर ॥ हेभृगु! यहविचाररूपतपही ताब्रह्मज्ञानका मुख्यकारणहै याकारणतैंही वेदवेत्तापुरुष ता तपकूं ब्रह्म या नामकरिकैकथनकरैहैं ॥ हेशिष्य! इसप्रकार जबी तावरुणपितानैं ताभृगुपुत्रकेप्रति विचाररूपतपकाउपदेशकर्‍या ॥ तबीसोभृगुऋषि पूर्वकीन्यांई पुनःविचाररूपतपकूंकरताभया॥ ताविचाररूपतपकरिकै सोभृगु प्राणमयकोशकूंही ब्रह्मरूपजाणताभया॥और पुनःविचारकरिकै सोभृगु ताप्राणमयकोशविषेभी पूर्वकीन्यांई जडत्वादिकदोषोंकूंदेखिकै पुनःतावरुणपिताकेसमीपजाताभया॥ हेशिष्य! इसप्रकार अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय यापंचकोशोंकूं यथाक्रमतैं ब्रह्मरूपजाणिकै तथातिनपंचकोशोंविषे यथाक्रमतैं दोषोंकूंदेखिकै सोभृगुऋषि पंचवार तावरुणपिताकेसमीप जाताभया ॥ तहां सोभृगु पंचवार पिताकेसमीप

जाइकै मेरेतांई आप ब्रह्मकाउपदेशकरो याप्रकारकाहीप्रश्नकरताभया ॥ और आगेतैं सोवरुणपिताभी ताभृगुपुत्रकेप्रति विचार रूपतपकरिकै तू ब्रह्मकूंजाण याप्रकारकाहीउत्तर पंचवार कहताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! सोभृगु तिनप्राणादिकोंविषे किसप्रकार ब्रह्मकालक्षण जानताभया ? और तिनप्राणादिकोंविषे सोभृगु कौनदोषोंकूंदेखताभया ? ॥ समाधन ॥ हेशिष्य! जिसप्रकार सोभृगु तिनप्राणादिकोंविषे ब्रह्मकालक्षण जानताभयाहै ॥ तथातिनप्राणादिकोंविषे जोजोदोष ताभगुनैंदेखेहैं ॥ तासंपूर्णअर्थकूं तू श्रवणकर ॥ जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारिप्रकारकेदेह प्राणविशिष्टशरीरतैंही उत्पन्नहोवैहैं ॥ और ताप्राणनैंकन्याजोअन्नकाभक्षण ताकरिकैंही याशरीरोंकीस्थितिहोवैहै ॥ और याशरीरोंकापरित्यागकरिकै जबी तेप्राण लोकांतरविषेजावैहैं ॥ तबी यहशरीर नाशरूपलयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं यहप्राणही ब्रह्मरूपहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार याजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकीकारणतारूप ब्रह्मकालक्षण ताप्राणविषेजाणिकै सोभृगुऋषि ताप्राणकूंही ब्रह्मरूपजाणताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोभृगुऋषि विचारकरिकै ताप्राणविषे याप्रकारकेदोषोंकूंदेखताभया ॥ जैसे यहस्थूलशरीररूपअन्नमयकोश जडहै तथापरिच्छिन्नहै तथा उत्पत्तिनाशवालाहै ॥ तैसे यहप्राणमयकोशभी जडहै तथापरिच्छिन्नहै तथाउत्पत्तिनाशवालाहै ॥ यातैं याप्राणविषेभी ब्रह्मरूपता तथासर्वजगत्कीकारणरूपता संभवैनहीं ॥ किंतु याजडप्राणकाभी कोईचेतनरूपकारण अवश्यहोवैगा ॥ और संपूर्णलोक हमारामन जाणताहै याप्रकारकावचन कथनकरैहैं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ सर्वकूंजानणेहारा यहचेतनरूपमनही याप्राणादिकसर्वजगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकाकारणहै ॥ यातैं यहमनही ब्रह्मरूपहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सोभृगुऋषि याजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकीकारणतारूप ब्रह्मकालक्षण तामनविषेजाणिकै तामनकूंही ब्रह्मरूपजाणताभया ॥ और तिसतैंअनंतर पुनःविचारकरिकै सोभृगुऋषि पूर्वप्राणमयकोशकीन्यांई तामनोमयकोशविषेभी याप्रकारके दोषोंकूंदेखताभया ॥ यहमनभी सविकल्पक संशयरूपहै ॥ यातैं यहमन कारणतैंरहितहोवैनहीं ॥ किंतु यासंशयरूपमनकाभी कोईकारण अवश्यहोवैगा ॥ काहेतैं? यालोकविषे यह स्थाणुहै अथवा पुरुषहै इसतैंआदिलैकेजितनेकीसंशयहोवैहैं ॥ तेसंशय

कारणतैंविनाहोवैनहीं ॥ किंतु जिसधर्मीपदार्थविषे स्थाणुत्व पुरुषत्व यहविरुद्धधर्म प्रतीतहोवैहैं ॥ ताधर्मीपदार्थका जोइदंरूपकारिके सामान्यज्ञानहै ॥ सोसामान्यज्ञान तासंशयका कारणहोवैहै ॥ तथा स्थाणुत्व पुरुषत्व यादोनोंकोटियोंकास्मरणरूपज्ञान तासंशयका कारणहोवैहै ॥ और सोधर्मीपदार्थादिकोंकाज्ञान निर्विकल्पकबुद्धिरूपहै ॥ यातैं तासंशयरूपमनका सानिश्चयरूपबुद्धिही कारणहै ॥ तात्पर्ययह ॥ मंदअंधकारविषेस्थित जोसाढेतीनहस्तपरिमाणवाला काष्ठविशेषहै ताकानाम स्थाणुहै ॥ तास्थाणुविषे यहस्थाणुहै अथवा पुरुषहै याप्रकारकासंशय जीवोंकूंहोवैहै ॥ तहां तासंशयतैंपूर्व जिसजीवकूं तास्थाणुविषे मनुष्यपरिमाणऊंचापणाका निश्चयहोवैहै ॥ तिसीजीवकूं तास्थाणुविषे सोसंशयहोवैहै ॥ तानिश्चयतैंरहित अन्यजीवकूं सोसंशयहोवैनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ सानिश्चयरूपबुद्धि तासंशयरूपमनकाकारणहै ॥ यातैं साबुद्धिही ब्रह्मरूपहै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार तामनआदिकजगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकीकारणतारूपब्रह्मकालक्षण तानिश्चयरूपबुद्धिविषे जाणिके सोभृगुऋषि ताबुद्धिरूपविज्ञानमयकोशकूंही ब्रह्मरूपजाणताभया ॥ और तिसतैंअनंतर पुनःविचारकरिके सोभृगुऋषि ताबुद्धिरूपविज्ञानमयकोशविषेभी याप्रकारकेदोषोंकूंदेखताभया ॥ यहनिश्चयरूपबुद्धिभी यास्थूलशरीरकीन्याईं परिच्छिन्नहै ॥ और जोजोपदार्थ परिच्छिन्नहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ उत्पत्तिनाशवान्होवैहै ॥ जैसे यहस्थूलशरीर परिच्छिन्नहै ॥ यातैं उत्पत्तिनाशवालाभीहै ॥ तैसे परिच्छिन्नहोणेतैं साबुद्धिभी उत्पत्तिनाशवालीहै ॥ और जोजोपदार्थ उत्पत्तिनाशवालाहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ सर्वकालविषेहोवैनहीं ॥ किंतु किसीकालविषेहोवैहै तथाकिसीकालविषेनहींहोवैहै ॥ जैसे यहशरीर उत्पत्तिनाशवालाहै ॥ यातैं किसीकालविषेहै तथाकिसीकालविषेनहीं है ॥ तैसे उत्पत्तिनाशवान्होणेतैं साबुद्धिभी किसीकालविषेहै तथाकिसीकालविषेनहींहै ॥ और जोपदार्थ कादाचित्कहोवैहै ॥ सोपदार्थ ब्रह्मरूपहोवैनहीं ॥ जैसे यहशरीर कादाचित्कहै यातैं ब्रह्मरूपभीनहींहै ॥ तैसे कादाचित्कहोणेतैं यहबुद्धिभी ब्रह्मरूपहोइसकैनहीं ॥ किंतु याबुद्धिकाभी कोईकारण अवश्यहोवैगा ॥ तहां यालोकविषे जाजाबुद्धिकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ सासा सुखकीप्राप्तिवासतेंहीहोवैहै ॥ सुखकीप्राप्तितैंविना साबुद्धिकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ और कहां दुःखविषे तथदुःख

केसाधनोंविषे तथाद्वेष्यपदार्थोंविषे तथाउपेक्ष्यपदार्थोंविषे जाबुद्धिकीप्रवृत्ति देखणेमेंआवैहै॥साप्रवृत्तिभी भ्रमप्रमादादिकदोषोंके वशतैंहीहोवैहै॥स्वभावतैं साबुद्धि तिनदुःखादिकोंविषे प्रवृत्तहोवैनहीं॥किंतु स्वभावतैंतौ साबुद्धि सुखकीप्राप्तिवासतैही प्रवृत्तहोवैहै॥ किंवा सर्वइच्छातैंरहित समाधिविषेस्थितजेविद्वान्पुरुषहैं॥तिनविद्वान्पुरुषोंकीबुद्धि तासमाधिकालपर्यंत उत्थानकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ और इच्छावान्अविवेकीपुरुषोंकीबुद्धि सर्वदा उत्थानकूंप्राप्तहोवैहै॥याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै याइच्छाविषेही ताबुद्धिकीकार णता सिद्धहोवैहै॥और यालोकविषे अस्मदादिकजीवोंकूं जाजाइच्छाहोवैहै॥ सासाइच्छा सुखविषेहीहोवैहै ॥ तासुखतैंभिन्न दुःखवि षे तथादुःखकेसाधनोंविषे तथाद्वेष्यपदार्थोंविषे तथाउपेक्ष्यपदार्थोंविषे किसीभीजीवकूं इच्छाहोतीनहीं॥इसप्रकार आपणेस्वभावतैं सुखविषेप्रवृत्तहुईभी साजीवोंकीइच्छा अनुपादेयरूपकरिकै दुःखादिकोंकूंभीविषयकरैहै॥ इहां जोपदार्थ प्राप्तहुआ पुरुषोंकेप्रयत्न करिकैभीनिवारणकऱ्याजावैनहीं ॥ तापदार्थकानाम अनुपादेयहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ स्वभावतैं केवलसुखकूंहीविषयकर णेहारीजाइच्छाहै॥साइच्छा ताबुद्धिकाकारणहै॥और तासुखविषयकइच्छाकरिकैजन्यहोणेतैं साबुद्धिभी सुखविषेही उत्पन्नहोवैहै॥ और अनुपादेयरूपजेदुःखादिकहैं ॥ तेदुःखादिक जैसे ताइच्छाकीउत्पत्तिविषे निमित्तनहींहै॥तैसे ताबुद्धिकीउत्पत्तिविषेभी तेदुःखा दिक निमित्तनहींहैं ॥ यातैं प्रियमोदादिकअवयवोंवाला जोआनंदमयहै सोआनंदमयही ताविज्ञानमयबुद्धिका कारणरूपहै ॥ यातैं सोआनंदमयही ब्रह्मरूपहै॥ हेशिष्य! इसप्रकार बुद्धिआदिकजगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकीकारणतारूप ब्रह्मकालक्षण ताआ नंदमयकोशविषे जाणिकै सोभृगुऋषि ताआनंदमयकोशकूंही ब्रह्मरूपजाणताभया ॥ और सोभृगुऋषि पुनःविचारकरिकै ताआ नंदमयकोशविषेभी याप्रकारकेदोषोंकूंदेखताभया ॥ याआनंदमयविषेभी प्रिय मोद प्रमोद यहतीनअवयवतौ अंतःकरण कीवृत्तिरूपहैं ॥ और आनंदरूपचतुर्थअवयव अविद्याकीवृत्तिरूपहै॥ यातैं प्रिय मोद प्रमोद आनंद यहचारोंअवयव कार्य रूपहैं ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ किसीकारणकरिकैजन्य अवश्यहोवैहै ॥ जैसे घ टादिकपदार्थ कार्यरूपहैं ॥ यातैं मृत्तिकादिककारणोंकरिकैजन्यभीहैं ॥ तैसे कार्यरूपहोणेतैं तेप्रियादिकभी किसीकारणकरिकैज

न्य अवश्यहोवैंगे ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ किसीकारणकरिकैजन्यहोवैंहै ॥ सोसोपदार्थ नाशकूंभीअवश्यप्राप्तहोवैंहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ मृत्तिकादिककारणोंकरिकैजन्यहैं ॥ यातें नाशकूंभीप्राप्तहोवैंहैं ॥ तैसे कारणकरिकैजन्यहोणेतें यहप्रियादिकभी नाशकूंअवश्यप्राप्तहोवैंगे ॥ ऐसेउत्पत्तिविनाशवाले तिनप्रियमोदादिकोंविषे ब्रह्मरूपतासंभवैनहीं ॥ किंतु उत्पत्तिनाशतेंरहित तथान्यूनअधिकतातेंरहित जोब्रह्मस्वरूपआनंदहै॥सोब्रह्मस्वरूपआनंदही याबुद्धिआदिकजगत्काकारणहै॥ हेशिष्य! इसप्रकार विचारकरिकै सोभृगुऋषि ताआनंदमयकोशके पुच्छप्रतिष्ठारूप आनंदस्वरूपआत्माकूंही ब्रह्मरूपकरिकैनिश्चयकरताभया ॥काहेतें? यालोकविषे जितनेकीकारणहैं॥तेकारण प्रथम आनंदकूंप्राप्तहोइकैही किसीकार्यकेउत्पन्नकरणेविषे समर्थहोवैंहैं॥आनंदतेंविना कोईभी कार्यकूंउत्पन्नकरतानहीं ॥ जैसे स्त्री पुरुष दोनों प्रथम आनंदकूंप्राप्तहोइकैही पुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्तिकरैंहैं ॥ यातेंयहजान्याजावैंहै ॥ स्त्रीपुरुषादिकसर्वपदार्थोंविषे अनुगतजोआनंदहै ॥ सोआनंदही यासर्वजगत्काकारणहै ॥ और सोजगत्काकारणरूपआनंद उत्पत्तिनाशतेंरहितहै ॥ यातें सोकारणरूपआनंद नित्यहै ॥ और यालोकविषे सोआनंद यद्यपि स्त्रीआदिकविषयोंतेंजन्यहुआ प्रतीतहोवैंहै ॥ तथापि वास्तवतें सोआनंद स्त्रीआदिकविषयोंतेंजन्यहोवैनहीं ॥ किंतु इच्छाकीनिवृत्तिकरिकै चित्तकीएकाग्रताद्वारा तेस्त्रीआदिकविषय ताआनंदकीअभिव्यक्तिकरैंहैं ॥ इसप्रकार निद्रा आहार चंदनादिकोंकालेप स्त्रियां इत्यादिकविषयोंकेसंबंधतें अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुआ जोआत्मस्वरूपआनंदहै ॥ ताआनंदकरिकैही यहसंपूर्णभूतप्राणी जीवनकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ और मरणकालविषे यहसंपूर्णस्थावरजंगमजीव यास्थूलसूक्ष्मशरीरकेअभिमानकापरित्यागकरिकै हृदयदेशविषे ताआनंदस्वरूपब्रह्मविषेही तादात्म्यसंबंधकरिकै लयभावकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ ताआनंदस्वरूपब्रह्मकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जैसे यहअधिकारीपुरुष आत्मसाक्षात्कारकरिकै ब्रह्मकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ याकारणतें याअधिकारीपुरुषकूं पुनःजन्मकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तैसे मरणकालविषे यहसंपूर्णजीव जोकदाचित् ताब्रह्मकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोते होवैं ॥ तौ याजीवोंकूंभी पुनःजन्मकीप्राप्ति नहींहोणीचाहिये ॥ और मरणतेंअनंतर याअज्ञानीजीवोंकूं जन्मकीप्राप्ति अवश्यकरि

केहोवैहै ॥ **समाधान** ॥ हेशिष्य! जैसे आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानतैंरहितहुआ यहविद्वान्पुरुष ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे मरणकालविषे यहजीव जोकदाचित् अज्ञानतैंरहितहुए ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवै ॥ तौ याजीवोंकूंभी तामुक्तपुरुषकीन्यांई पुनःजन्मकीप्राप्तिनहींहोवै ॥ परंतु आत्मज्ञानतैंरहित यह अज्ञानीजीव तामरणकालविषे अज्ञानतैंरहितहुए ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ किंतु जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीव अज्ञानयुक्तहुए ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहैं॥तैसे मरणकालविषेभी यहजीवअज्ञानयुक्तहुएही ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याकारणतैं यहअज्ञानीजीव मरणतैंअनंतर पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जिसआत्मस्वरूपआनंदतैं याजगत्केउत्पत्तिस्थितिलय होवैहैं ॥ सोआत्मस्वरूपआनंदही ब्रह्मरूपहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार पूर्व सोभृगुऋषि विचाररूपमननकरिकै आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोताभयाहै ॥ यातैं इदानींकालकेमुमुक्षुजनोंनैंभी ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते सोविचाररूपमनन अवश्यकरणा ॥ हेशिष्य! वरुणऋषिनैं आपणेभृगुपुत्रकेप्रति उपदेशकरी जायहब्रह्मविद्याहै॥ सायहब्रह्मविद्या हृदयदेशविषेस्थित आनंदस्वरूपआत्माकूंही ब्रह्मरूपकरिकैबोधनकरैहै ॥ यातैं याब्रह्मविद्याकरिकै जैसे सोभृगुऋषिसर्वात्मभावरूपफलकूंप्राप्तभयाहै ॥ तैसे दूसराभीजोकोईअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं याब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिकै ताका विचाररूपमननकरैगा ॥ सोअधिकारीपुरुषभी तासर्वात्मभावरूपफलकूं अवश्यप्राप्तहोवैगा ॥ यातैंइदानींकालकेमुमुक्षुजनोंनैंभी आपणेअसंभावनादोषकीनिवृत्तिवासते ताब्रह्मविद्याका विचाररूपमनन अवश्यकरणाचाहिये॥ हेशिष्य! समष्टिरूपअन्नमयादिककोशोंकूं जोपुरुष आपणाआत्मरूपकरिकैजाणेहै ॥ तिसपुरुषकूं जैसे श्रुतिउक्तसर्वअन्नकीप्राप्तिआदिकफल प्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे आनंदस्वरूपब्रह्मकूं जोपुरुष आपणाआत्मरूपकरिकैजाणेहै ॥ तिसपुरुषकूंभी ताआनंदस्वरूपब्रह्मकीप्राप्तिरूपफल अवश्यप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार विचाररूपमननकेबलतैं यहविद्वान्पुरुष अन्नमयादिकपंचकोशोंकापरित्यागकरिकै हा वु इत्यादिकसामवेदकागायन करताहुआ जीवन्मुक्तरूपहोइकैस्थितहोवैहै ॥ तथा ताआत्मज्ञानकेप्रभावतैं सोविद्वान्पुरुष याप्रकार सर्वात्मभावरूपफलका अनुभवकरैहैं ॥ यहबहुतआश्चर्यहै ॥ जोयालोकविषे मैंएकहीआत्मादेव अन्नादिकभोग्यरूपकरिकै तथापुरुषादिकभोक्तृरूपकरिकै

स्थितहुआहूं ॥ और देवताअतिथिआदिकोंकेप्रति अन्नकूंनहींदेकरिकै जेकृपणपुरुष आपणेउदरकूंहीभरणकरैहैं ॥ तिनकृपणपुरुषोंकूं मैंआत्मादेवही मृत्युरूपहोइकै भक्षणकरताहूं॥और मैंहीआत्मादेव ईश्वररूपकरिकै याऋगादिकवेदोंकेमंत्रोंकाकरताहूं ॥ तथा मैंहीआत्मादेव ऋषिरूपकरिकै तिनवेदोंकेमंत्रोंकाद्रष्टाहूं तथास्मरणकरताहूं॥ और मैंहीआत्मादेव कर्मउपासनाके स्वर्गादिफलरूपकरिकैस्थितहूं ॥ और मैंहीआत्मादेव समष्टिसूक्ष्महिरण्यगर्भरूपकरिकै तथासमष्टिस्थूलविराट्रूपकरिकै संपूर्णव्यष्टिदेवतावोंतैं प्रथमउत्पन्नभयाहूं ॥ और ब्रह्मानंदस्वरूपजोमोक्षहै तथा यहसंपूर्णसंसाररूपजोचक्रहै यादोनोंकेमध्यविषे मैं आत्मादेवही नाभिकीन्यांईस्थितहूं ॥ तात्पर्ययह! मैंआत्मादेवही याजीवोंकूंमोक्षकीप्राप्तिकरताहूं तथा संसारकीप्राप्तिकरताहूं ॥ और मैंहीआत्मादेव धर्म अर्थ काम मोक्ष यहचारिप्रकारकापुरुषार्थरूपहूं ॥ और मैंहीआत्मादेव अन्नादिकपदार्थरूपहूं॥ और मैंहीआत्मादेव अन्नादिकपदार्थोंकादातारूपहूं ॥ यातैं ऐसेअन्नादिरूपमैंआत्माकूं जोपुरुष अतिथिआदिकोंकेतांई देकरिकै मृत्युतैंआपणेआत्माकीरक्षाकरैहैं ॥ सोअन्नदातापुरुषभी मैंआत्माकीहीरक्षाकरैहै ॥ और जेकृपणपुरुष अतिथिआदिकोंकेप्रति अन्नदान नहींकरैहैं॥ किंतु केवलआपणेउदरकूं तथाआपणेस्त्रीपुत्रादिककुटंबकेउदरकूंही भरणकरैहैं ॥ ऐसे अन्नदानतैंरहितकृपणपुरुषोंकूं मैंआत्मादेवहीदिनमासादिककालरूपकरिकै तथामृत्युरूपकरिकै भक्षणकरताहूं ॥और सुवर्णकीन्यांईप्रकाशमान तथासूर्यमंडलविषेस्थित जोस्वयंज्योतिपुरुषहै॥ ऐसेपुरुषरूपकरिकै मैंआत्मादेवही यासर्वजगततैंउत्कृष्टहूं॥ हेशिष्य! इसप्रकार तेविद्वान्पुरुष तासामवेदकेगायनकेव्याजकरिकै जोसर्वात्मभावकीप्राप्तिरूप आपणाअनुभव प्रगटकरैहैं॥ सो किसीआपणेस्वार्थवासते नहींप्रगटकरैहैं॥ किंतु यहअधिकारीपुरुष जिसीकिसीप्रकारसैं तासर्वात्मभावकीप्राप्तिवासते या ब्रह्मविद्याविषे प्रवृत्तहोवैं याप्रकारकी कृपा हमअधिकारीजनोंऊपरिकरिकै तेविद्वान्पुरुष श्रुतिभगवतीकीन्यांई ताआपणेअनुभवकूं प्रगटकरैहैं ॥ अब इसीअर्थविषे प्रमाणरूपकरिकै यजुर्वेदकेनारायणउपनिषद्काअर्थ निरूपणकरैहैं॥ हेशिष्य! जिससर्वात्मरूपब्रह्मकूं तेविद्वान्पुरुष सामवेदकरिकैगायनकरैहैं ॥ तिसीसर्वात्मरूपब्रह्मकूं नारायणउपनिषद्भी प्रतिपादनकरैहै॥ यातैं

तानारायणउपनिषद्विषे याआनंदस्वरूपब्रह्मकूं जिसप्रकार सर्वात्मरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ताअर्थकूं तू सावधानमनकरिकै श्रवणकर ॥ हेशिष्य! अविद्यारूपजलकरिकैपूर्ण जोयहसंसाररूपसमुद्रहै ॥ तथा तासंसाररूपसमुद्रविषेस्थित जेचतुर्दशभुवन हैं ॥ तिनसंपूर्णोंविषे यहआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिपरमात्मादेवही आकाशकीन्यांई अनुगतहोइकैवर्त्तेहै ॥ और यहपरमात्मादेव सर्वत्रव्यापकहै ॥ यातैं यालोकोंकीअपेक्षाकरिकै ऊपरिस्थितजोस्वर्गलोकहै ॥ तिसस्वर्गलोकतैंभी सोपरमात्मादेव ऊपरिस्थितहै ॥ और महान्रूपकरिकैप्रसिद्ध जेआकाशादिकहैं ॥ तिनआकाशादिकमहान्पदार्थोंतैंभी सोपरमात्मादेव अत्यंत महान्है ॥ और अध्यात्मरूपकरिकै तथासूर्यादिकअधिदैवरूपकरिकै स्थित जेजीवोंकेनेत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तिननेत्रादिकइंद्रियोंविषे यहपरमात्मादेवही आपणेस्वयंज्योतिचैतन्यरूपकरिकै प्रवेशकरैहै॥ और स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनप्रकारकीउपाधियोंकेसंबंधकरिकै क्रमतैं विराट् हिरण्यगर्भ ईश्वर यातीनप्रकारकेसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ यहपरमात्मादेव सर्वात्मतारूपकरिकै यासृष्टिकेपरंपराकूं प्रवृत्तकरैहै॥याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं प्रजापति यानामकरिकैकथनकरैहै॥और अध्यात्म अधिदैव अधिभूत यातीनरूपकरिकैस्थित जितनेकीस्थावरजंगमप्राणीहैं॥ तिनसर्वप्राणियोंकेहृदयदेशरूप आकाशविषे यहपरमात्मादेवहीसाक्षिरूपकरिकैविचरैहै ॥ और यहसंपूर्णस्थावरजंगमरूपजगत् आपणीउत्पत्तिकालविषे तथास्थितिकालविषे तथालयकालविषे यापरमात्मादेवकेअधीनहुआहीस्थितहोवैहै ॥और विश्वेदेवनामादेवतावोंतैंआदिलैकेजितनेकीदेवताहैं॥तेसंपूर्णदेवताभी यापरमात्मादेवकेअधीनहुएहीस्थितहोवैहैं॥ हेशिष्य! यहसंपूर्णजगत् यापरमात्मादेवकेअधीनहै याप्रकारकेवचनतैं तुमनैं परमात्माका तथायाजगत्का भेदनहींजानणा॥किंतु भूत भविष्यत् वर्त्तमान जितनाकीयहजगत्है॥सोसंपूर्णजगत् तापरमात्मरूपहीहै॥शंका॥ हेभगवन्! ॥ ऐसापरमात्मादेव किसवस्तुविषेस्थितहै ॥समाधान ॥हेशिष्य! यहआनंदस्वरूपआत्मादेव दूसरेकिसीपदार्थविषेरहैनहीं॥किंतु यहपरमात्मादेव चिदाकाशस्वरूपआपणेमहिमाविषेही स्थितहोवैहै॥और यहआत्मादेवही आकाशकूं तथास्वर्गकूं तथाभूमिकूं सर्वओरतैंव्याप्तकरिकैरहैहै ॥ और यासर्वलोकमंडलकेमध्यविषेस्थितहोइकै जोयहसूर्यभगवान् प्रकाशकरैहै ॥ तासूर्यभगवान्कूंभी

यहपरमात्मादेवही आपणेस्वप्रकाशतेजकरिकै प्रकाशमानकरैहै ॥ और हेशिष्य! जैसे यालोकविषे तंतुवायपुरुष तंतुरूपसूत्रकूंप टभावकीप्राप्तिवासते विस्तारकरैहै ॥ तैसे यासंसारसमुद्रविषेस्थित संपूर्णपदार्थरूपपटका सूत्ररूपजोपरमात्मादेवहै ॥ तापरमात्मादे वरूपसूत्रकूं वाल्मीकिआदिककवि जगत्पटरूपकरिकै विस्ताकरैहैं॥हेशिष्य! वास्तवतें मनवाणीकाअविषयहुआभी यहपरमात्मा देव याजगत्विषे तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोवैहै॥याप्रकार जो तापरमात्मादेवकावर्णनहै ॥ सोवर्णनही तापरमात्मरूपसूत्रका जगत्प टरूपकरिकै विस्तारकरणाहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे सूत्रतें पट भिन्ननहींहै ॥ तातें पटकाजोवर्णनहै सो सूत्रकाहीवर्णनहै ॥ तैसे यह जगत्रूपपटभी तापरमात्मरूपसूत्रतैंभिन्ननहींहै ॥ यातें तेवाल्मीकादिककवि याजगत्कावर्णनकरतेहुए तापरमात्मादेवकाही वर्णनकरैहैं ॥ तहांश्रुति! यइमेवीणायांगायंतिएतमेवतेगायंति ॥अर्थयह॥ यहलौकिकपुरुष जोवीणाविषे गायनकरैहैं ॥ सोभी यापरमात्मादेवकूंही गायनकरैहै ॥ १ ॥ हेशिष्य! सर्वतेंउत्कृष्टअव्याकृतरूप जोपरमात्मादेवहै ॥ तापरमात्मादेवविषेही यहस्थाव रजंगमरूपसर्वजगत् स्थितहोवैहै॥ और यापरमात्मादेवतेंहीउत्पन्नहुआ हिरण्यगर्भरूपब्रह्मा आकाशादिकपंचमहाभूतोंकरिकै या संपूर्णप्रजाकूंउत्पन्नकरताभया ॥ तहां याभूमिलोकविषे व्रीहियवादिकओषधिरूपकरिकै मनुष्यपशुआदिकअनेकप्रकारकीप्रजा कूं उत्पन्नकरताभया ॥ इसप्रकार हिरण्यगर्भद्वारा सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरिकै सोपरमात्मादेवही जीवरूपकरिकै ताजगत्विषेप्रवेशक रताभया ॥ और यहपरमात्मादेव परमाणुआदिकसूक्ष्मपदार्थोंतैंभी अत्यंतसूक्ष्महै ॥ तथा आकाशादिकमहान्पदार्थोंतैंभी अत्यं तमहान्है ॥ यातें यापरमात्मादेवतैंपरे कोईसूक्ष्मपदार्थनहींहै तथाकोईमहान्पदार्थनहींहै॥ किंतु यहपरमात्मादेवही अणुतेंअणुहै त थामहान्तैंमहान्है ॥ तहांश्रुति ॥अणोरणीयान् महतोमहीयान्॥इहां अणुशब्दकरिकै दुर्विज्ञेयताकाग्रहणकरणा॥और यहपर मात्मादेव सर्वभेदतैंरहितहै याकारणतें अनंतहै ॥ और यहपरमात्मादेव यासर्वजगत्का कारणहै यातें पुराणहै ॥ और यहपरम त्मादेव कार्यसहितअज्ञानरूपतमतैंपरहै यातें स्वयंज्योतिरूपहै॥और हेशिष्य! शास्त्रकरिकैविहित जोमनकाव्यापारहै ताकानाम ऋतहै ॥और शास्त्रकरिकैविहित जोशरीरकाव्यापारहै ताकानामसत्यहै॥सोऋतनामापुण्यकर्म तथा सत्यनामापुण्यकर्मही याजीवों

कूं सुखरूपफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ सोदोनोंप्रकारकापुण्यकर्मभी यहपरमात्मादेवहीहै ॥ और यहपरमात्मादेवही अग्निहोत्रादिक इष्टकर्मरूपहै ॥ और यहपरमात्मादेवही वापीकूपतडागादिकपूर्त्तकर्मरूपहै ॥ और भूत भविष्यत् वर्त्तमानरूप जितनाकी यहजगत्है ॥ सोयहसंपूर्णजगत् तापरमात्मादेवविषेहीस्थितहै ॥ याकारणतें ब्रह्मवेत्तापुरुष तापरमात्मादेवकूं यासंसाररूपचक्र का नाभिरूपकरिकैकथनकरैहैं ॥ और यहपरमात्मादेवही अग्नि वायु सूर्य चंद्रमा मोक्ष सूक्ष्मभूत विराट्रूपहै ॥ और यापरमात्मा देवतेंही निमेष घटी मुहूर्त्त प्रहर दिन रात्रि पक्ष मास ऋतु संवत्सर इत्यादिककाल उत्पन्नहोवैहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सोपर मात्मादेव सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरिकै आकाशादिकपंचभूतोंतें तथा तापंचभूतमयत्रिलोकीरूपगौतें नानाप्रकारकेभोगरूपदुग्धकूं दुह ताभया ॥ जोभोगरूपदुग्ध हमजीवोंकूं सुखरूपहुआप्रतीतहोवैहै ॥ हेशिष्य! यहपरमात्मादेव नेत्रादिकइंद्रियोंकाविषयहैनहीं ॥ याकारणतें यापरमात्मादेवकूं जगत्केऊपरि तथानीचै तथामध्यविषे कोईपुरुषग्रहणकरिसकैनहीं ॥ और यहपरमात्मादेव किसी इंद्रियकरिकैग्रहणकर्‍याजावैनहीं॥ याकारणतें यापरमात्मादेवका कोईनियंताभीनहींहै और यहपरमात्मादेव आत्मरूपकरिकै सर्वजीवोंकेनिरतिशयप्रीतिकाविषयहै॥याकारणतें श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं महद्यशः यानामकरिकैकथनकरैहै॥और यहपर मात्मादेव रूपस्पर्शादिकगुणोंतेंरहितहै॥याकारणतें यापरमात्मादेवकूं नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै कोईभीपुरुष देखिसकतानहीं ॥ किंतु मनकूंनिरोधकरणेहारी जाअंतर्मुखशुद्धबुद्धिहै ॥ ताशुद्धबुद्धिकरिकैहीयहपरमात्मादेव जान्याजावैहै॥और हेशिष्य! पूर्वसृष्टिकालवि षे आकाशादिकपंचसूक्ष्मभूतोंतें तथापृथिवीआदिकस्थूलभूतोंतें उत्पन्नभया जोहिरण्यगर्भनामा तथावैश्वानरनामा देवताहै॥सो हिरण्यगर्भनामादेवता तथावैश्वानरनामादेवताभी यापरमात्मादेवतेंही उत्पन्नहोवैहै ॥ और याव्यष्टिरूपजगत्तें समष्टिरूपकरि कै अधिकभावकूंप्राप्तहुआ सोहिरण्यगर्भ ॥ यासंपूर्णव्यष्टिशरीरविषे व्याप्तकरिकै स्थितहोवैहै ॥ कैसाहैसोहिरण्यगर्भ ॥ यासं पूर्णदेहधारीजीवोंतें प्रथम देहधारीजीवहै ॥ तथा यहसंपूर्णस्थूलजगत् ताहिरण्यगर्भकाहीस्वरूपहै ॥ और यहहीनारायणरूपपर मात्मादेव सूर्यमंडलविषेस्थितहोइकै आपणेअस्तिभातिप्रियरूपकरिकै याजगत्कूंभी अस्तिभातिप्रियरूपकरैहै ॥ और इसीही

परमात्मादेवकूं यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मविद्याकरिकैप्राप्तहोवैहैं॥ और याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व जोपरमात्मादेव अनंत निर्गुणचिद्घन इत्यादि रूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ सोईहीपरमात्मादेव ताहिरण्यगर्भका वास्तवस्वरूपहै॥ ऐसा मायारूपतमतैंपरे तथासूर्यकेसमान तेजवान् तथामहान् जोस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपपरमात्मादेवहै ॥ तिसपरमात्मादेवकूं मैंमंत्रद्रष्टाऋषि आपणाआत्मरूपकरिकैजाणताहूं ॥ और मेरेन्यांई जोकोईदूसराभीअधिकारीपुरुष तास्वयंज्योतिपरमात्मादेवकूं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणाआत्मरूपकरिकैजानैगा॥ सोअधिकारीपुरुषभी याशरीरकेवर्तमानकालविषे ब्रह्मरूपहुआ मरणतैंअनंतर ताशुद्धब्रह्मकूंहीप्राप्तहोवैगा॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मकीप्राप्तिवासते ब्रह्मज्ञानतैंविना दूसराकोईमार्ग हैनहीं ॥ किंतु यहब्रह्मज्ञानही ताकेप्राप्तिकामार्ग है ॥ अब ताब्रह्मज्ञानकी प्राप्तिवासते प्रथम त्वंपदार्थकेशोधनकानिरूपणकरैहैं ? हेशिष्य ! जैसे माताकेउदरविषे बालकस्थितहोवैहै ॥ तैसे आदित्यमंडलविषेस्थित यहस्वयंज्योतिपुरुषही विराट्रूपकरिकै सर्वजीवोंकेअंतरस्थितहोइकै नानाप्रकारकीसृष्टिकूंउत्पन्नकरताहुआ विचरैहै ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव ? शरीरादिकउपाधियोंकेजन्महुएभी वास्तवतैं जन्ममरणतैंरहितहै॥ और शास्त्रवेत्तापुरुष जैसे सूर्यमंडलादिकोंकूं सूर्यादिकोंकेकिरणोंका कारणमानैहैं ॥ तैसे तासर्वांतर्यामीपरमात्मादेवकूंही ताविराट्का कारणमानैहैं ॥ अब तत्पदार्थकाशोधनकरतेहुए प्रथम चित्तशुद्धिवासते तापरमात्मादेवकेआराधनकाप्रकार निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! अग्निआदिकजेअधिदैवहैं ॥ तथा वाकादिकजेअध्यात्महैं ॥ तिनसंपूर्णोंकेउपकारवासते जोपरमात्मादेव आदित्यमंडलविषेस्थितहोइकै सर्वत्रप्रकाशकरैहै ॥ और इंद्रादिकदेवतावोंकापुरोहित जोबृहस्पतिहै॥ सोबृहस्पतिभी जिसपरमात्मादेवकीही विभूतिहै॥ और जोपरमात्मादेव विभूतिरूपसर्वदेवतावोंतैंपूर्व आदित्यरूपकरिकै प्रादुर्भावहोवैहै ॥ ऐसे स्वप्रकाशचैतन्यरूपशुद्धपरमात्मादेवकेताईं हमारा वारंवार नमस्कारहोवै ॥ हेशिष्य! ऐसेनारायणरूपपरमात्मादेवनैं अग्निआदिकदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकावर दियाहै ॥ हेदेवतावो ! आदित्यरूप जोमैंआनंदस्वरूपपरमात्मादेवहूं ॥ तिसमैंपरमात्मादेवकीप्रसन्नताकरणेवासते जेअधिकारीपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वक मेरेताईं नमस्कारकरैंगे ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकेसर्वपापकर्म निवृत्तहोवैंगे ॥ और तिनपापकर्मोंकीनिवृत्तितैंअनंतर तिनअधिकारीपु

रुषोंका अंतःकरण शुद्धहोवैगा॥ ताशुद्धअंतःकरणविषे तिनअधिकारीपुरुषोंकूं मैंपरमात्मादेवकासाक्षात्कार प्राप्तहोवैगा॥ शंका॥ हेभगवन्! तापरमात्मादेवनैं तिनअग्निआदिकदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकावर किसकालविषेदियाहै? समाधान॥ हेशिष्य! पूर्व तेअग्निआदिकदेवता ताप्रकाशमानआदित्यरूपपरमात्मादेवकूं नानाप्रकारकेनमस्कारोंकरिकै प्रगटकरतेभये॥ और वरकेप्राप्तिकी कामनाकरिकै तेअग्निआदिकदेवता तापरमात्मादेवकेआगे याप्रकारकीप्रार्थनाकरतेभये॥ हेभगवन्! सर्वजगत्‌काआत्मरूप तथापरमानंदस्वरूप जोआपहो॥ तिसआपकेतांई जोअधिकारीपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वक नमस्कारकरै॥ तिसअधिकारीपुरुषके हृदयदेशविषे आप सर्वदाप्रगटहोवो॥ तात्पर्ययह॥ ताअधिकारीपुरुषकूं आपका आत्मरूपकरिकैसाक्षात्कारहोवै॥ याप्रकारकावर आप हमारेप्रतिदेवो॥ हेशिष्य! इसप्रकार जबी तिनअग्निआदिकदेवतावोंनैं तापरमात्मादेवकेआगे प्रार्थनाकरी॥ तबी सोपरमात्मादेव तिनदेवतावोंकेप्रति सोवर देताभया॥ यातैं जोअधिकारीपुरुष तापरमात्मादेवकेप्रति श्रद्धाभक्तिपूर्वक नमस्कारकरैहै॥ ताअधिकारीपुरुषकूं तापरमात्मादेवकेवरकेप्रभावतैं ब्रह्मात्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैहै॥ हेशिष्य! इसप्रकार अग्निआदिकदेवतावोंकेप्रति जोपरमात्मादेवनैं वरदियाहै॥ तावरप्रदानरूपगुह्यव्यवहारकूं जोअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंजानैंहै॥ तिसअधिकारीपुरुषके तेसंपूर्णदेवता वशवर्तीहोवैहैं॥ हेशिष्य! आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै तापरमात्मादेवकेप्रति नमस्कारकरता हुआ यहअधिकारीपुरुष याप्रकार तापरमात्मादेवकीस्तुतिकरै॥ हेपरमात्मादेव॥ ऐश्वर्यकाअभिमानीदेवतारूपजाश्रीहै॥ तथा सौंदर्यकाअभिमानीदेवतारूपजालक्ष्मीहै॥ तेश्रीलक्ष्मीदोनों आपकी पत्नियांहैं॥ और सर्वपदार्थोंकरिकैयुक्त जोदिनरूपकालहै तथा रात्रिरूपकालहै॥ तेदिनरात्रिरूपदोनोंकाल आपके पार्श्वस्थानहैं॥ और यहसंपूर्णतारागण आपका प्रकाशदानरूपहै॥ और अश्विनीकुमारोंकीन्यांई द्वंद्वरूपकरिकैप्रसिद्ध जेस्वर्ग पृथिवि यहदोनोंहैं॥ तेस्वर्गपृथिवीदोनों आपका प्रसृतमुखहै॥ हेदेवतावोंके ईश्वर! हमअधिकारीजनोंकूं मोक्षकीप्राप्तिकरणेवासते आपणास्वयंज्योतिआनंदस्वरूप प्रगटकरो॥ हेभगवन्! हमअधिकारीजनोंका वारंवार आपकेतांई नमस्कारहोवै॥ इतनैंकरिकै वैश्वानरअंतर्यामिरूपकरिकै तानारायणपरमात्मादेवकास्वरूप निरूपण

कऱ्या ॥ अब हिरण्यगर्भअंतर्यामिरूपकरिकैभी तानारायणपरमात्मादेवकास्वरूप निरूपणकरैहैं ॥ जोहिरण्यगर्भरूपदेव यासर्व जगत्तैंपूर्व प्रगटहोइकै यासर्वजगत्का महेश्वरहोताभया ॥ और जैसे यालोकविषे स्तंभ गृहकूंधारणकरैहैं ॥ तैसे सोहिरण्यगर्भ देवभी यात्रिलोकीरूपगृहकूं धारणकरताभया ॥ ऐसेहिरण्यगर्भरूपएकदेवके प्रसन्नताकरणेवासते हमअधिकारीजन आपणेवर्ण आश्रमकेअनुसार घृतादिरूपहविष्यपदार्थोंकरिकै अर्चनकरैहैं ॥ और प्राणोंकूंधारणकरणेहारे तथाज्ञानकर्मेंद्रियोंकरिकै नाना प्रकारकेव्यापारोंकूंकरणेहारे जेचेतनप्राणीहैं ॥ तिनसंपूर्णचेतनप्राणियोंका जोहिरण्यगर्भदेव अधिपतिहोताभया ॥ याकारणतैं सोहिरण्यगर्भदेव दोपादोंवालेमनुष्यादिकोंका तथाचारिपादोंवालेअश्वादिकोंका नियंताईश्वरहै ॥ ऐसेहिरण्यगर्भदेवकेशरणकूं मैं अधिकारीजन प्राप्तभयाहूं ॥ किंवा जोहिरण्यगर्भदेव आत्मसाक्षात्कारवालेअधिकारीजनोंकेप्रति आपणावास्तवस्वरूप प्राप्त करैहै ॥ तथा बल प्राप्तकरैहै ॥ और जिसहिरण्यगर्भदेवकूं आपणेशरीरविषेस्थितहोइकैसंपूर्णदेवता आराधनकरैहैं ॥ और जिस हिरण्यगर्भदेवके यहअग्निआदिकसर्वदेवता शिष्यरूपहैं ॥ और जिसहिरण्यगर्भदेवतैं यहसंपूर्णदेवता आशीर्वादकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जैसे छाया यापुरुषोंकेअधीनहोवैहै ॥ तैसे मोक्ष मृत्यु यहदोनों जिसहिरण्यगर्भदेवकेकिंकरहैं ॥ ऐसेहिरण्यगर्भदेवकेशरणकूं मैंअधिकारीजन प्राप्तभयाहूं ॥ किंवा हिमालयतैंआदिलेकेजितनेकीपर्वतहैं ॥ तेसंपूर्णपर्वत जिसहिरण्यगर्भका विभूतिरूपमहि माहैं ॥ अथवा हिमालयादिकपर्वतोंतैंभी जिसहिरण्यगर्भदेवकामहिमा अधिकहै ॥ और जैसे यालोकविषे जलकेतलाव बालकोंके क्रीडाकास्थानहोवैहैं ॥ तैसे हिमालयआदिकपर्वतहैंतरिरूपजिनोंके ऐसेजेसप्तसमुद्रहैं तथापातालहैं ॥ तेसमुद्र तथापाताल जिस हिरण्यगर्भदेवके क्रीडाकेस्थानहैं ॥ और पूर्वादिकचारिदिशा तथा अग्निकोणादिकचारिउपदिशा यहसंपूर्णदिशा जिसहिरण्यगर्भदे वकीभुजाहैं ॥ ऐसेहिरण्यगर्भदेवकेशरणकूंमैंअधिकारीजन प्राप्तभयाहूं ॥ किंवा जिसहिरण्यगर्भदेवकीसत्ताकरिकै धारणकरीहुई यहपृथिवी जलऊपरिस्थितहोवैहै ॥ तथा जिसहिरण्यगर्भदेवकीसत्ताकरिकैधारणकऱ्याहुआ स्वर्ग आकाशविषेस्थितहोवैहै ॥ और जिसहिरण्यगर्भकेवास्तवस्वरूपकूं सापृथिवी तथास्वर्ग आपणेमनकरिकै सर्वदा ध्यानकरैहैं ॥ ताध्यानकरिकै सापृथिवी तथास्वर्ग

सर्वदाशोभायमानहैं ॥ और जिसहिरण्यगर्भदेवकूंआश्रयणकरिकै सर्वतैंअधिकतारूपकरिकैउदयभयाजोयहसूर्यहै ॥ सोयहसूर्य भी जिसहिरण्यगर्भदेवकीभयकरिकै रात्रिदिनविषे नानाप्रकारकाभ्रमणकरै है ॥ ऐसेहिरण्यगर्भदेवकेशरणकूं मैंअधिकारीजन प्राप्तभयाहूं ॥ किंवा जिसहिरण्यगर्भदेवकीविभूतिरूप जेक्षत्रधर्मविषेप्रीतिवाले इंद्रादिकमहान्सूरवीरहैं ॥ तिसइंद्रादिरूपविभूतिकरिकैयुक्तहोणेतें यहस्वर्गलोक उग्ररूपकरिकैप्रसिद्धहै ॥ और जिसहिरण्यगर्भदेवकेअनुग्रहकरिकै यहपृथिवी अत्यंतबलकूं प्राप्तहोवैहै ॥ जिसबलकेप्रभावतें यहपृथिवी ब्रह्मांडकेभारकरियुक्तहुईभी नौकाकीन्यांई जलविषेडूबतीनहीं ॥ और जैसे स्तंभोंकरिकैधारणकऱ्याहुआगृह नीचैपतनहोवैनहीं ॥ तैसे जिसहिरण्यगर्भदेवकरिकै धारणकऱ्याहुआ यहस्वर्गलोक तथाअंतरिक्षलोक तथाब्रह्मलोक नीचैपतनहोवैनहीं ॥ और जोहिरण्यगर्भदेव रजोगुणकरिकैयुक्तहुआ स्वर्गलोकविषे विमानोंविषेस्थित नानाप्रकारकेभोगीरूपोंकूंधारणकरिकै विषयसुखकीप्राप्तिवासते देवांगनावोंकेमुखरूपचंद्रमाविषे आपणेनेत्ररूपकमलोंकूंअर्पणकरैहै ॥ और अग्निआदिकसर्वदेवतावोंकेरहणेकामंदिर जोवैश्वानरहै ॥ तावैश्वानररूपकूंभी यहहिरण्यगर्भदेवहीधारणकरैहै ॥ याकारणतें यहहिरण्यगर्भदेव मानतेंरहितहै ॥ ऐसेहिरण्यगर्भदेवकेशरणकूं मैंअधिकारीजन प्राप्तभयाहूं ॥ किंवा जैसे लोकप्रसिद्धगंगादिकनदीयोंकेजल समुद्रकूं पतिरूपकरिकै आश्रयणकरैहैं ॥ तैसे अव्याकृत प्रकृति माया इत्यादिकनामोंकरिकैप्रसिद्ध जाअविद्याहै ॥ तेअविद्यारूपजल जिससर्वात्मरूपहिरण्यगर्भदेवकूं पतिरूपकरिकैआश्रयणकरैहैं ॥ कैसेहैंतेअविद्यारूपजल? आकाशादिकपंचभूतरूपगर्भकरिकैयुक्तहैं ॥ याकारणतें महान्हैं ॥ पुनःकैसेहैंतेअविद्यारूपजल? विराट्रूपजोवैदिकअग्निहै तथालोकप्रद्धिजोयहअग्निहै तादोनोंप्रकारकेअग्निकूं सूक्ष्मबीजरूपकरिकै आपणेविषेधारणकरैहैं ॥ तथा तिनदोनोंप्रकारकेअग्नियोंकूं आपणेतेंउत्पन्नकरैहैं ॥ हेशिष्य! ताअविद्यारूपजलोंतें केवल एकअग्निही उत्पन्ननहींभया ॥ किंतु वाकादिक अध्यात्मोंका तथा अग्निआदिकअधिदेवोंका धारणकरणेहारा जोयहप्राणहै ॥ सोप्राणभी तिनअविद्यारूपजलोंतैंहीउत्पन्नभयाहै ॥ याकारणतेंही यहप्राण जलतेंविना स्थितहोइसकैनहीं ॥ ऐसेअविद्यारूपजल जिसहिरण्य

गर्भदेवकूं पतिरूपकरिकैंआश्रयणकरैंहैं ॥ ऐसेहिरण्यगर्भदेवकेशरणकूं मैंअधिकारीजन प्राप्तभयाहूं ॥ किंवा जोहिरण्यगर्भदेव आपणेस्वप्रकाशचैतन्यरूपतेजकरिकैं ताअविद्यारूपजलोंकूं प्रकाशकरैंहै ॥ और जोहिरण्यगर्भदेव सर्वजीवोंकाआत्मरूप है ॥ और जोहिरण्यगर्भदेव इंद्रादिकदेवतावोंकाभी अधिपतिहै॥ऐसेहिरण्यगर्भदेवकेप्रसन्नकरणेवासते घृतादिकहविष्यपदार्थोंकरिकैं तादेवकाअर्चनकरताहुआ मैंअधिकारीजन ताहिरण्यगर्भदेवकेशरणकूं प्राप्तभयाहूं ॥ किंवा साधनहीनपुरुषोंकेतांई उपदेशकरणेकूंअयोग्य तथासर्वत्रव्यापक ऐसाजोचैतन्यस्वरूपहिरण्यगर्भदेवहै॥ताहिरण्यगर्भदेवकेतांई मैंअधिकारीजनका वारंवार नमस्कारहोवै॥और सर्वधर्मोंतैंरहित तथासर्वकाआत्मरूप ऐसा हिरण्यगर्भदेव मैंमुमुक्षुजनकेतांई ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरै॥ हेशिष्य ! इसप्रकार जेअधिकारीपुरुष तापरमात्मरूपनारायणदेवकूं हिरण्यगर्भरूपकरिकैं तथावैश्वानररूपकरिकैं नमस्कारकरैंहैं तथास्तुतिकरैंहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकेप्रति सोपरमात्मादेव अवश्यकरिकैं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरैंहै॥यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै॥तिसअधिकारीपुरुषनैं पूर्वउक्तरीतिसैं तापरमात्मादेवकीस्तुति तथानमस्कार अवश्यकरिकैंकरणा ॥ इतनैंग्रंथकरिकैं तानारायणदेवका वैश्वानररूपकरिकैं तथाहिरण्यगर्भरूपकरिकैं निरूपणकऱ्या ॥ अब तापरमात्मारूपनारायणदेवका साक्षात्हीनिरूपणकरैंहैं ॥ हेशिष्य ! यहपरमात्मरूपनारायणदेव यास्थूलजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व हिरण्यगर्भरूपकरिकैंउत्पन्नहोताभयाहै ॥ याकारणतैं यहस्वयंज्योतिनारायणदेवही पूर्वादिकदिशारूपहै ॥ तथा अग्निकोणादिकउपदिशारूपहै ॥ और याब्रह्मांडगोलककेगर्भविषेस्थित जेतीनलोकहैं ॥ तेतीनलोकहैंशरीरजिसका ऐसाजोविराट्भगवान्है ॥ सोविराट्भगवान्भी यहनारायणदेवहीहै ॥ और भूत भविष्यत् वर्त्तमान यातीनकालोंविषेउत्पन्नहोणेहारे जे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारिप्रकारकेशरीरहैं ॥ तेचारिप्रकारकेशरीरभी यहपरमात्मादेवहीहै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार जेअंतर्मुखअधिकारीपुरुष तापरमात्मादेवकूं बुद्धिआदिकसर्वपदार्थोंतैं अत्यंतसमीपरूपकरिकैंदेखैहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं ताअंतर्मुखतारूपसमाधिविषे सोपरमात्मादेवही आपणाआत्मरूपकरिकैंप्रतीतहोवैहै ॥ और यहपरमात्मादेव सर्वभूतप्राणियोंकाआत्मरूपहै ॥ याकारणतैं यालो

कविषे जितनेकीजीवोंकेचक्षुहैं तथाजितनेकीजीवोंकेमुखहैं तथाजितनेजीवोंकेहस्तपादहैं ॥ तेसंपूर्णचक्षुआदिक यापरमात्मादेव केहीहैं ॥ और आकाशादिकपंचभूतोंसहित जेजीवोंकेपुण्यपापरूपकर्महैं ॥ तिनपुण्यपापकर्मरूपदोनोंभुजावोंकरिकै यहपरमात्मा देवही यासंपूर्णजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय करैहै ॥ और यहपरमात्मादेवही स्वर्गरूपऊर्ध्वलोककूं तथापृथिवीरूपअधोलोककूं उ त्पन्नकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! याप्रकार तापरमात्मादेवकीस्तुतिकरिकै पूर्वकिसीपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिभईहै अथवान हीं? ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! पूर्व एकवेननामागंधर्व होताभयाहै ॥ सोवेननामागंधर्व पूर्वउक्तरीतिसैं तापरमात्मादेवकीस्तुतिकरि कै तथानमस्कारकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तानारायणकेवास्तवस्वरूपकूं साक्षात्कारकरताभयाहै ॥ और ताआत्मसाक्षात्का रकूंप्राप्तहोइकै सोवेननामागंधर्व वामदेवऋषिकीन्यांई सर्वअधिकारीजनोंऊपरिकृपाकरिकै याप्रकारकाआपणाअनुभव कथनक रताभयाहै ॥ अब तावेननामागंधर्वकेअनुभवकानिरूपणकरैहैं ॥ जिसएकपरमात्मादेवविषे यहनानाप्रकारकाजगत् स्थितहै ॥ तथा जिसपरमात्मादेवतैं यहसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोवैहै॥तथा जिसपरमात्मादेवविषे यहसंपूर्णजगत् लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे तं तुरूपसूत्र पटविषेसर्वओरतैंओतप्रोतहोवैहै ॥ तैसे याजगत्रूपपटविषे जोपरमात्मादेवरूपसूत्र सर्वओरतैंओतप्रोतहै ॥ और जोप रमात्मादेव जीवरूपकरिकै यासर्वशरीरोंविषे प्रवेशकरैहै॥और जोपरमात्मादेव जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ ऐसे आनं दस्वरूपअद्वितीयपरमात्मादेवकूं मैंवेननामागंधर्व आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरौंहूं ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव ? ॥ चारिपा दोंकरिकैयुक्तहै ॥ तहां तापरमात्मादेवका एकपाद तौ यहसंपूर्णभूतभौतिकजगत्है ॥ और दूसरेतीनपादतौ आपणेस्वप्रकाशसाक्षी स्वरूपविषेस्थितहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जैसेचारिपादवालीगौ परिच्छिन्नपरिमाणवालीहोवैहै ॥ तैसे चारिपादवालासोपरमात्मा देवभी परिच्छिन्नहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! यहसंपूर्णजगत् तापरत्मामादेवकाएकपादहै ॥ और तीनपाद आपणेस्वप्रकाश स्वरूपविषेस्थितहैं ॥ याप्रकार जोश्रुतिनैंकथनकर्‍याहै ॥ सोताश्रुतिका परमात्माकेपरिच्छिन्नपणेविषे तात्पर्यनहींहै ॥ किंतु ताश्रु तिका परमात्माकेअनंतपणेविषेही तात्पर्यहै॥हेशिष्य! ऐसेसूर्यमंडलविषेस्थित नारायणरूपपरमात्मादेवके जे स्वप्रकाशसाक्षीरूप

तीनपादहैं ॥ तिनतीनपादोंकूं जोविद्वान्पुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं आपणाआत्मरूपकरिकै साक्षात्कारकरैहै ॥ सोविद्वान्पुरुषही हमअधिकारीजनोंकाबंधुहै ॥ तथा सोविद्वान्पुरुषही हमारा मातापिताहै ॥ तथा सोविद्वान्पुरुषही हमाराआत्माहै ॥ तथा सोविद्वान्पुरुषही हमारा ब्रह्माहै ॥ तिसब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषतैंभिन्न दूसरेकोईपुरुष हमारेबंधुआदिकनहींहैं ॥ इसप्रकार सोवेननामागंधर्व आपणाअनुभव कथनकरताभया ॥ हेशिष्य ! सूर्यचंद्रमादिकतेजोंके रहणेकेजेस्थानहैं ॥ तिनसंपूर्णस्थानोंकूं यहविद्वान्पुरुष ब्रह्मरूपकरिकैजाणेहै ॥ और ताब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपकरिकैजाणेहै ॥ यातैं सर्वजगतकूंआपणाआत्मरूपकरिकैदेखणेहारा सोविद्वान्पुरुषही हमारा बंधुमातापितादिरूपहै ॥ और हेशिष्य! अज्ञानरूपअव्याकृतकाअधिपति जोशुद्धब्रह्महै ॥ ताशुद्धब्रह्मकूं मैं ब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणाआत्मरूपजाणिकरिकै जैसे यहविद्वान्पुरुष जन्ममरणतैंरहितमोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे पूर्व अग्निआदिकदेवताभी ताब्रह्मकूंआपणाआत्मरूपजाणिकरिकै तामोक्षकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ और हेशिष्य! जैसे सोपरमात्मादेव आपणेभक्तजनोंकेताईं अनेकप्रकारकेवरदेवैहै तैसे तापरमात्मादेवकूं आपणाआत्मरूपजाणिकै तेअग्निआदिकदेवताभी आपणेभक्तजनोंकेप्रति वरदानादिकोंकरिकै दिव्यस्थानकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और तिसीब्रह्मज्ञानकेप्रभावतैं तेअग्निआदिकदेवता स्वर्गादिक सर्वलोकोंविषे तथापूर्वादिकसर्वदिशावोंविषे आपणीइच्छापूर्वकविचरैहैं ॥ और हेशिष्य! जैसे यालोकविषे कार्पासकेवृक्षतैं कार्पासरूपफल उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताकार्पासरूपफलतैं तंतुरूपसूत्र उत्पन्नहोवैहै ॥ और तातंतुरूपसूत्रतैं पट उत्पन्नहोवैहै ॥ और तापटरूपकार्यविषे सोसूत्ररूपकारणसर्वओरतैंअनुगतहोवैहै॥तैसे यहयागादिककर्मतौ कार्पासकावृक्षरूपहै॥ और ताकर्मरूपकार्पासकेवृक्षतैं धर्मअधर्मरूप कार्पासफल उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताधर्मअधर्मरूपकार्पासफलतैं स्थूलसूक्ष्मभूतरूपसूत्र उत्पन्नहोवैहै ॥ और जैसे तेस्थूलसूक्ष्मभूत सूत्ररूपहैं ॥ तैसे तेस्थूलसूक्ष्मभूतहैं शरीरजिसका ऐसाईश्वरभी सूत्ररूपहीहोवैहै ॥ ऐसेईश्वररूपसूत्रतैं यहजगतरूपपट उत्पन्नहोवैहै ॥ ऐसे जगतरूपपटविषे ताईश्वररूपसूत्रकूं अनुगतजाणिकरिकै हमअधिकारीजन आपणेआत्माकूं तासूत्रआत्मरूपकरिकै साक्षात्कारकरतेभयेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपरमात्मादेव उपाधिकेसंबंधतैं जगत्काकारणसूत्रआ

त्मरूपहोवैहै ॥ सोईहीपरमात्मादेव विचारकियेतैंअनंतर उपाधिकृतसूत्रआत्मरूपताकापरित्यागकरिकै निर्गुणब्रह्मरूपहोवैहै ॥ ऐसानिर्गुणब्रह्महीं हमाराआत्मरूपहै ॥ हेशिष्य! याप्रकारकेविचारकरिकै केवलहमअधिकारीजनोंकूंही ताब्रह्मात्मभावकीप्राप्तिनहीं भई ॥ किंतु पूर्वहिरण्यगर्भभगवान्कूंभी याप्रकारकेविचारकरिकैही ताब्रह्मात्मभावकीप्राप्तिभईहै ॥ काहेतें ? पूर्व सोहिरण्यगर्भभगवान् उत्कृष्टकर्मउपासनाकेबलतें स्वर्गादिकलोकोंका तथा जरायुजादिकचारिप्रकारकेप्राणियोंका तथा आकाशादिक पंचभूतोंका तथापूर्वादिकदशदिशावोंका स्वामीहोताभया ॥ और तिनस्वर्गादिकलोकोंकेस्वामीभावकूंप्राप्तहोइकैभी संतोषकूं नहींप्राप्तहुआ सोहिरण्यगर्भभगवान् जबी अंतर्यामीआत्मादेवकाविचारकरताभया ॥ तबीही सोहिरण्यगर्भ तास्वयंज्योतिआनंदस्वरूपब्रह्मभावकूं प्राप्तहोताभया ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ याअंतर्यामीआत्मादेवकाविचारही ताब्रह्मभावकेप्राप्तिकासाधनहै ॥ ताआत्मविचारतैंविना नानाप्रकारकेबाह्यऐश्वर्यकरिकै ताब्रह्मभावकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और हेशिष्य! सर्वे वेदायत्पदमामनंति ॥ अर्थयह ॥ संपूर्णवेद साक्षात् अथवा परंपराकरिकै अद्वितीयब्रह्मकूंहीकथनकरैहैं ॥ याश्रुतिनैं ब्रह्मकूंही सर्ववेदोंकरिकैप्रतिपाद्य कह्याहै ॥ यातैं सदसस्पतिं इत्यादिकजेनारायणउपनिषद्केमंत्रहैं ॥ तेमंत्र जिसअंतर्यामीपरमात्मादेवकूं अग्निआदिकदेवतावोंका आत्मरूपकरिकैकथनकरैहैं ॥ सोपरमात्मादेवही याविद्वान्पुरुषका आत्मरूपहै ॥ और हेशिष्य! जिसस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपपरमात्मादेवतैं ऋत सत्य यहदोनोंप्रकारका कर्मकाफल उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसपरमात्मादेवकूंही यहाविद्वान्पुरुष आपणाआत्मरूपकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ इहां मनकरिकैकन्येहुएशुभकर्मोंकाजोफलहै ताकानाम ऋतहै ॥ और शरीरकरिकै कन्येहुएशुभकर्मोंकाजोफलहै ताकानाम सत्यहै ॥ और केईकशास्त्रवेत्तापुरुषतो ऋत सत्य यादोनोंशब्दोंकाअर्थ चंद्रमा सूर्य मानैहैं ॥ सोतिनोंकाकहणा पुनरुक्तिदोषवालाहै ॥ काहेतें? सूर्यचंद्रमाकीउत्पत्ति आगेकथनकरणीहै ॥ यातैं इहां ऋत सत्य शब्दकरिकै तासूर्यचंद्रमाकाकथन संभवैनहीं ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सृष्टिकेआदिकालविषे जबी सोऋतसत्यरूपकर्मकाफल उत्पन्नहोणेकूंसन्मुखभया ॥ तबी ताफलकीसिद्धिकरणेवासतै तापरमात्मादेवतैं अंधकार उत्पन्नहोताभया ॥ तथा आकाशादिकपंचसूक्ष्म

भूत उत्पन्नहोतेभये ॥ तिसतैंअनंतर आपणेभ्रमणकरिकै रात्रिदिनकूंसिद्धकरणेहाराजोसूर्यहै ॥ तासूर्यरूप संवत्सरनामाकाल उत्पन्नहोताभया ॥ इसप्रकार हिरण्यगर्भरूपकरिकै यासर्वजगत्कूंउत्पन्नकरताहुआ सोपरमात्मादेव पूर्वकल्पतैं याजगत्कूं विलक्षणनहींकरताभया ॥ किंतु जैसे पूर्वकल्पविषे तापरमात्मादेवनैं यास्थावरजंगमरूपजगत्कूंउत्पन्नकऱ्याथा ॥ तिसीप्रकार सोपरमात्मादेव याकल्पविषेभी जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज येचारिप्रकारकेशरीर उत्पन्नकरताभया ॥ तथा आकाश वायु अग्नि जल पृथिवी यापंचमहाभूतोंकूंउत्पन्नकरताभया॥ तथा श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु मन याएकादशइंद्रियोंकूंउत्पन्नकरताभया ॥ तथा प्राण अपान समान व्यान उदान यापंचप्राणोंकूंउत्पन्नकरताभया ॥ तथा सूर्य चंद्रमा यादोनोंकूंउत्पन्नकरताभया ॥ तथा स्वर्गलोक भूमिलोक अंतरिक्षलोक यातीनलोकोंकूंउत्पन्नकरताभया ॥ और हेशिष्य! जलमयहैशरीरजिसका तथापापरूपरजकूंनाशकरणेहारा जोवरुणदेव यापृथिवीविषेप्रसिद्धहै ॥ सोवरुणदेवभी हिरण्यगर्भकीन्यांई तापरमात्मादेवकेतादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहोइकेही आपणेकार्यविषेसमर्थहोवेहै ॥ तापरमात्मादेवकेसंबंधतैंविना कोईभीदेवता आपणेकार्यकरणेविषेसमर्थहोवैनहीं ॥ और हेशिष्य! सोजगत्काकर्तापरमात्मादेवही याजगत्कीस्थितिकालविषे सर्वलोकोंकेअंतरस्थितहोइकै यासर्वजगत्कापालनकरैहै ॥ और यहस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपपरमात्मादेवही पुण्यवान्पुरुषोंकूं स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ और पापवान्पुरुषोंकूं नरकादिकोंकी तथामृत्युकेभयकी प्राप्तिकरैहै ॥ और यासंपूर्णलोकोंकेनीचैस्थितजापृथिवीहै ॥ तथा ऊपरिस्थितजोस्वर्गहै ॥ तिनदोनोंकेअंतरस्थितजोभयहै ॥ जाभयकरिकै यहपृथिवी तथास्वर्गलोकोंकूंधारणकरैहै ॥ सोपृथिवीआदिकोंकूं भयकीप्राप्तिभी यहपरमात्मादेवहीकरैहै ॥ और हेशिष्य! जोचेतनपरमात्मादेव अग्निविषे तथाजलविषे तथाअन्यपदार्थोंविषे तादात्म्यसंबंधकरिकैस्थितहोवेहै ॥ सोपरमात्मादेवही पुण्यवान्पुरुषोंकूं स्वर्गकीप्राप्तिकरैहै ॥ और साधनसंपन्नअधिकारीजनोंकूं मोक्षकीप्राप्तिकरैहै ॥ हेशिष्य! ऐसाअद्वितीयब्रह्म याअहंशब्दकेलक्ष्यअर्थरूपआत्मातैं भिन्ननहींहै ॥ किंतु सोब्रह्म आत्मरूपहै ॥ और यहआत्मा ब्रह्मरूपहै॥ याप्रकार तिनदोनोंका परस्परअभेदहीहै॥ जोकदाचित् तिनदोनोंका परस्परभेदहोवैगा ॥

तौ तिनदोनोंकेस्वरूपकीहीहानिहोवैगी ॥ ऐसे अद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकेज्ञानकरिकै यहअधिकारीपुरुष माया पंचक्लेश कर्म वासना इत्यादिकसर्वबंधतैंमुक्तहोवैहैं ॥ काहेतें ? जिसचिदाभासकूं ताबंधकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ताचिदाभासकूं यहविद्वान्‌पुरुष ब्रह्माकारवृत्तिविषेआरूढ ब्रह्मरूपअग्निविषे पावैहैं ॥ याकारणतें तिनविद्वान्‌पुरुषोंकूं ताबंधकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ हेशिष्य! इसप्रकार जेअधिकारीपुरुष वेदवचनोंकेअर्थकाविचारकरिकै तथावेदउक्तशुभकर्मोंकेअनुष्ठानकरिकै तथावेदवचनोंकेजपकरिकै जबीकीर्तिकेयोग्यहोवैहैं ॥ तबीही तेशुद्धमनवालेअधिकारीपुरुष ब्रह्मात्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और हेशिष्य! जैसे सुगंधिवाले पुष्पोंकरिकैयुक्त जोचंपककावृक्षहै ॥ तावृक्षकेसंबंधकरिकै सुगंधविशिष्टहुआवायु दशोंदिशाविषेचालैहै ॥ और सोसुगंधिवालावायु सर्वजीवोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे पुण्यवान्‌पुरुषोंकीकीर्तिभी दशोंदिशाविषे जावैहै ॥ और सापुण्यवान्‌पुरुषोंकीकीर्ति शास्त्रवेत्तासज्जनपुरुषोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरैहै ॥ हेशिष्य! जोपुरुष आपणेमरणतेंभी भयकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ और जो पुरुष आपणेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकेवियोगतेंभी भयकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ किंतु एकपापकर्मतेंही जोपुरुष भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तापुरुषकानाम पुण्यात्मा है ॥ हेशिष्य! जैसे किसीगर्त्तकेऊपरि अनेकतीक्ष्णखड्गकी धारा बिछाई होवै ॥ तिनखड्गधारावोंकेउल्लंघनकरणेतें अश्वादिकवाहनोंतेंरहित कोमलपादवालेपुरुषकूं जैसामहान्‌भय प्राप्तहोवैहै ॥ तैसाहीभय याविद्वान्‌पुरुषकूं परमेश्वरतेंहोवैहै ॥ यातें तापरमेश्वरकेभयकरिकै यहविद्वान्‌पुरुष पापकर्मोंकूंकरैनहीं ॥ हेशिष्य! जिसपरमात्मादेवकेभयकरिकै यहविद्वान्‌पुरुष पापकर्मोंतेंनिवृत्तहोवैहै ॥ और जिसपरमात्मादेवकूं यहविद्वान्‌पुरुषआपणाआत्मरूपकरिकैजानैहै ॥ सोपरमात्मादेव यानारायणदेवतेंभिन्ननहींहै ॥ किंतु सोपरमात्मादेवही नारायणस्वरूपहै ॥ और हेशिष्य! जोपरमात्मादेव परमाणुआदिकसूक्ष्मपदार्थोंतेंभी अत्यंतसूक्ष्महै ॥ और जोपरमात्मादेव आकाशादिकमहान्‌पदार्थोंतेंभी अत्यंतमहान्‌है ॥ और जोपरमात्मादेव याजीवोंकेहृदयरूपगृहविषे बुद्धिआदिकोंकासाक्षीरूपकरिकैस्थितहै ॥ ऐसेशुद्धपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेप्रसादतें आपणाआत्मरूपकरिकैसाक्षात्कारकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष सर्वशोकतेंरहित

होवैहैं ॥ अब तापरमात्मादेवकेअद्वितीयरूपताकूंस्पष्टकरणेवासते प्रथम तापरमात्मादेवविषे सर्वजगत्कीकारणताका निरूपण करहैं ॥ हेशिष्य! पुण्यपापकर्मोंकेअनुसार सर्वपदार्थोंकीप्राप्तिकरणेहारा जोजगत्काईश्वरहै ॥ सोईश्वरही अद्वितीयब्रह्मरूपहै ॥ काहेतें ? सप्तलोकोंविषेवर्तमान जेसप्तप्रकारकेशरीरहैं ॥ तिनशरीरोंविषेरहणेकरिकै सप्तप्रकारताकूंप्राप्तभयेजेप्राणहैं ॥ तेसप्तप्रकारकेप्राणभी तापरमात्मादेवतेंही उत्पन्नहोवैहैं ॥ और तापरमात्मादेवतैंही भौम जाठर सूर्य चंद्रमा विद्युत् वाडव चक्षु यहसप्तप्रकारकेअग्नि उत्पन्नहोवैहैं ॥ इहां काष्ठोंविषेस्थितजोअग्निहै ताकानाम भौमहै ॥ और उदरविषेस्थितजोअग्निहै ताकानाम जाठरहै ॥ और समुद्रविषेस्थितजोअग्निहै ताकानाम वाडवहै ॥ और तिसीपरमात्मादेवतैंही सप्तप्रकारकेसमिध उत्पन्नहोवैहैं ॥ तेसप्तप्रकारकेसमिध येहैं ॥ स्वर्ग मेघ भूमिलोक पुरुष योषित् यापंचअग्नियोंके क्रमतें आदित्य वायु संवत्सर वाक् उपस्थ यहपंचसमिधहैं ॥ यहवार्त्ता षष्ठेअध्यायविषे विस्तारतेंकहिआयेहैं ॥ और श्रुतिप्रसिद्ध आहवनीयगार्हपत्यादिकअग्नियोंका काष्ठादिरूपसमिधहै ॥ और स्मृतिप्रसिद्ध आवसथ्यनामाअग्निकाभी काष्ठादिरूपसमिधहै ॥ और तापरमात्मादेवतैंही भूरभुवः स्वर् महर् जन तप सत्य येसप्तलोक उत्पन्नहोवैहैं ॥ और तापरमात्मादेवतैंही काली कराली मनोजवा सुलोहिता धूम्रवर्णा स्फुलिंगिनी विश्वरूपी येअग्निकीसप्तजिह्वा उत्पन्नहोवैहैं ॥ और तिनभूरादिकसप्तलोकोंविषेविचरणेहारे तथासर्वजीवोंकेबाह्यप्राण ऐसेजेएकोनपंचाशत् ४९ मरुत्गणहैं ॥ तेमरुद्गणभी तापरमात्मादेवतैंहीउत्पन्नहोवैहैं ॥ और तापरमात्मादेवतैंही सप्तसमुद्र उत्पन्नहोवैहैं ॥ और तापरमात्मादेवतैंही हिमालयादिकपर्वत उत्पन्नहोवैहैं ॥ और तापरमात्मादेवतैंही संपूर्णनदियां उत्पन्नहोवैहैं ॥ और तारसरूपपरमात्मादेवतैंही यहव्रीहियवादिकओषधियां उत्पन्नहोवैहैं॥ और तारसरूपपरमात्मादेवतैंही यहशरीर जीवनकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और सोईहीपरमात्मादेव तिनजीवत्शरीरोंविषेस्थितहोवैहै ॥ और अग्निआदिकसर्वदेवतावोंकेमध्यविषे जिसपरमात्मादेवके हिरण्यगर्भादिकदेवता मुख्यविभूतियां हैं ॥ और जिसपरमात्मादेवकूं बुद्धिमान्पुरुष वेदवचनोंकेविचारकरिकै जानैहैं ॥ और जिसपरमात्मादेवकूं बुद्धिमान्पुरुष घृतादिकद्रव्यरूपकरिकै तथायज्ञरूपकरिकैवर्णनकरैहैं ॥ और जोपरमात्मादेव इंद्रादिकसर्वदेवतावोंकारि

के पूज्यहै ॥ तथा सर्वदेवतावोंतैंपूर्ववर्त्तमानहै ॥ और जोपरमात्मादेव सर्वप्राणियोंकेहृदयदेशविषेस्थितहोइकै चित्तकीसर्ववृत्तियोंकूं देखेहै ॥ और जोपरमात्मादेव हिरण्यगर्भकूंउत्पन्नकरिकै ताहिरण्यगर्भकूं आपणीअनुग्रहदृष्टितैं सर्वज्ञताकीप्राप्तिकरैहै ॥ ऐसाना रायणरूपपरमात्मादेव हमअधिकारीजनोंकूं शुभबुद्धिकीप्राप्तिकरै ॥ हेशिष्य ! याप्रकार जबी यहअधिकारीपुरुष तापरमात्मादे वकीस्तुतिकरैहैं ॥ तबी सोपरमात्मादेव प्रसन्नहोइकै तिनअधिकारीपुरुषोंकेप्रति आपणावास्तवस्वरूप दिखावैहै ॥ कैसाहैसोपर मात्माकास्वरूप ? जिसतैंपरेकोईपदार्थ अधिकनहींहै ॥ तथाजिसतैंपरे कोईपदार्थ सूक्ष्मनहींहै ॥ तथा जोस्वरूप वृक्षकीन्यांई निश्चलहै ॥ तथा आपणेस्वप्रकाशस्वरूपविषेस्थितहै ॥ तथा एकअद्वितीयरूपहै ॥ तथा जिसस्वरूपकरिकै यहसंपूर्णजगत् परिपूर्ण है ॥ ऐसेआपणेस्वरूपकूं सोपरमात्मादेव तिनअधिकारीजनोंकेप्रति दिखावैहै ॥ हेशिष्य! ऐसेनारायणरूप परमात्मादेवकीप्राप्ति याजीवोंकूं अग्निहोत्रादिककर्मोंकरिकैभीहोवैनहीं ॥ तथा अनेकपुत्रपौत्रादिरूप प्रजाकरिकैभी तापरमात्मादेवकीप्राप्तिहोवैनहीं तथा सुवर्णादिरूपधनकरिकैभी तापरमात्मादेवकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तिनसर्वपदार्थोंकेत्यागकरिकैही तापरमात्मादेवकीप्राप्तिहोवैहै तहांश्रुति॥नकर्मणानप्रजयानधनेनत्यागेनैकेअमृतत्वमानशुः॥ अर्थयह॥ पूर्व अधिकारीजन अग्निहोत्रादिककर्मोंकरिकै तथापुत्र पौत्रादिरूपप्रजाकरिकै तथासुवर्णादिरूपधनकरिकै ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षकूं नहींप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ किंतु कर्म प्रजा धन यासंपू र्णोंकेपरित्यागकरिकैही तेअधिकारीजन तामोक्षकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥हेशिष्य ! इसप्रकार पूर्व अनेकसहस्रमनुष्योंविषे कोईभाग्य वान्पुरुषही सर्वपदार्थोंकापरित्यागकरिकै तानारायणस्वरूपमोक्षकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ यातैं तापरमात्मारूपमोक्षकीप्राप्तिविषे त्यागतैंविना दूसराकोईसाधननहींहै ॥ किंतु एकत्यागही तामोक्षकीप्राप्तिविषे मुख्यसाधनहै॥हेशिष्य! स्वर्गादिकसुखोंतैंभीपरमउ त्कृष्ट जोआनंदस्वरूपपरमात्मादेवहै॥तापरमात्मारूपमोक्षकूं जैसे पूर्वअधिकारीजन सर्वपदार्थोंकेत्यागकरिकै प्राप्तहुएहैं ॥ तैसे इदा नींकालविषेभी जेअधिकारीपुरुष पुत्रएषणा धनएषणा लोकएषणा यातीनएषणावोंकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै हैं॥ तेअधिकारीजनही गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं तामोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं॥और जेपुरुष शरीरादिकोंविषेअहंअभिमानकरिकै तथाशरीरसंबं

धिपुत्रधनादिकोंविषे ममअभिमानकरिकै तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकात्याग नहींकरैहैं ॥ तेरागवान्पुरुष ताआनंदस्वरूपपरमात्मादेवकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! यालोकविषे कितनेकसंन्यासियोंकूंभी आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति देखीतीनहीं ॥ यातैं त्यागविषे आत्मसाक्षात्कारकीकारणता संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! संन्यासकरिकै तथाचित्तकेनिरोधरूपयोगकरिकै जिनसंन्यासियोंकाअंतःकरण शुद्धभयाहै ॥ तथा जेसंन्यासी शमदमादिकसाधनोंकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा जिनसंन्यासियोंनैं वेदांतवचनोंकेविचारकरिकै तत्त्वंपदार्थका शोधनकऱ्याहै ॥ ऐसेसाधनसंपन्नसंन्यासियोंकूं जोकदाचित् किसीप्रतिबंधकेवशतैं इसजन्मविषेआत्मसाक्षात्कार नहींहोवैहै ॥ तौतेसंन्यासी ताशरीरकापरित्यागकरिकै अर्चिरादिकमार्गद्वारा ब्रह्मलोकविषेजावैहैं ॥ और ताब्रह्मलोकविषे ब्रह्माकेसमानताकूंप्राप्तहोइकै तेसंन्यासी आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और ताब्रह्माकेदेहपातहुए तेसंन्यासीभी ताब्रह्माकेसाथिही विदेहमुक्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं सर्वपदार्थोंकापरित्यागही आत्मज्ञानद्वारा मोक्षकासाधनहै ॥ और हेशिष्य! एकादशहैंद्वारजिसविषे ऐसाजोयहशरीररूपपुर परमात्मादेवनैंउत्पन्नकऱ्याहै ॥ ताशरीरविषेस्थित जोअंगुष्ठपरिमाणहृदयकमलहै ॥ ताहृदयकमलरूपगृहविषे जोआनंदस्वरूपपरमात्मादेव विराजमानहै ॥ तापरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूपजाणिकरिकैही तेसंन्यासी इसलोकविषे तथाब्रह्मलोकविषे मोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ताआत्मसाक्षात्कारतैंविना किसीभीलोकविषे मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं! यातैं हेसंन्यासियो! ब्रह्मलोकविषेभी संन्यासियोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैहै याप्रकारकावचनश्रवणकरिकै तुमोनैं इसजन्मविषे ताआत्मसाक्षात्कारकेयत्नतैं रहितनहींहोणा ॥ किंतु जिसआत्मसाक्षात्कारकरिकै इसलोकविषे तथाब्रह्मलोकविषे मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिसआत्मसाक्षात्कारकूं तुमोनैं यामनुष्यशरीरविषेही संपादनकरणा ॥ बहुतकालतैंअनंतरप्राप्तहोणेहारेब्रह्मलोककी आशाकरिकै तुमोनैं इसजन्मविषे प्रयत्नकीशिथिलतानहींकरणी ॥ अब ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते प्रणवकेध्यानका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जिनअधिकारीपुरुषोंकूं महावाक्यकेविचारकरिकै आत्माकासाक्षात्कार प्राप्तनहींहोवैहै ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं ॐकाररूपप्रणवकेविचारकरिकैही सोआत्मसाक्षात्कार प्राप्त

होवैहै ॥ सोविचारयहहै ॥ मनकेजीतणेकीइच्छावाले जेमहात्मापुरुषहैं ॥ तिनमहात्मापुरुषोंकूं आनंदस्वरूपआत्माविषे यह ॐकाररूपप्रणवही क्रीडाकरावैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताॐकाररूपप्रणवकूं स्वर यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ जोॐकाररूपस्वर वेदकेआदिविषेकथनकऱ्याहै ॥ और जोॐकाररूपस्वर वेदकेअंतविषेकथनकऱ्याहै ॥ सोॐकाररूपस्वर आपणेलयअवस्थाविषे जिसपरानामाकारणविषेलयहोवैहै ॥ तापरातैंभी जोशुद्धचेतनपरहै ॥ सोशुद्धचेतनही हमारावास्तवस्वरूपहै ॥ याप्रकार जोअधिकारीपुरुष सर्वदा चिंतनकरैहै ॥ ताअधिकारीपुरुषकूंभी अवश्यकरिकै आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेशिष्य! हृदयदेशविषेस्थित जोपरमात्मादेव पूर्व अणुतैंभीअणुकह्याथा ॥ तापरमात्मादेवकूं तुमनैं महान्‌तैंभीमहान्‌जानणा ॥ काहेतैं ? यालोकविषे याजीवोंके जितनेमस्तकहैं ॥ तथा शरीरइंद्रियप्राणहैं ॥ तेसंपूर्णमस्तकादिक तापरमात्मादेवकेही हैं ॥ और सोपरमात्मादेवही यासर्वजीवोंकूं आपणेपुण्यपापकर्मकेअनुसार सुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ ऐसेस्वयंज्योतिसर्वात्मादेवकूं श्रुतिभगवती नारायण यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ अब तानारायणशब्दका एकादशप्रकारकाअर्थ निरूपणकरैहैं ॥ हे शिष्य! आपणीसमीपतामात्रकरिकै जोचेतन सर्वपदार्थोंकूं आपणेआपणेकार्यविषेप्रवृत्तकरैहै ॥ ताचेतनदेवकानाम नरहै ऐसेचेतनआत्मारूपनरका यहमाया दृश्यरूपकरिसंबंधीहै ॥ याकारणतैं तामायाकूं नारा यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ और यहसूक्ष्मप्रपंच तामायाकाकार्यहै ॥ याकारणतैं तासूक्ष्मप्रपंचकूं नार यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ ऐसेमायारूपनाराविषे तथा सूक्ष्मप्रपंचरूपनारविषे यहपरमात्मादेव प्रतिबिंबरूपकरिकैवर्त्तैहै ॥ याकारणतैं तामायाविशिष्टपरमात्मादेवकूं तथासूक्ष्मप्रपंचविशिष्टहिरण्यगर्भदेवकूं श्रुतिभगवती नारायण यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ १ ॥ अथवा परमात्मारूपनरनैं उत्पन्नकरेजेजलहैं तिनजलोंकानाम नाराहै ॥ तेनारारूपजल याविराट्‌रूपपरमात्मादेवकाआधारहैं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताविराट्‌रूपपरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ २ ॥ अथवा ॥ जैसे प्रसिद्धनादियोंकेजल नौकाकाआधारहोवैहैं ॥ तैसे याभूमिरूपनौकाकाआधार जेजलहैं ॥ तेजल यापरमात्मादेवतैंही उत्पन्नहोवैहैं ॥ यातैं तिनजलोंकानान नाराहै ॥ ऐसेनारारूप

जलोंकूं यहपरमात्मादेवही सूत्रात्मारूपप्राणरूपकरिकै धारणकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण या नामकरिकैकथनकरैहै ॥ ३ ॥ अथवा ॥ स्थूलप्रपंचहैशरीरजिसका ऐसाजोविराट्है ॥ तथासूक्ष्मप्रपंचहै शरीरजिसका ऐसाजो हिरण्यगर्भहै ॥ तिनदोनोंकानाम नरहै ॥ तिनदोनोंनरोंकीस्थिति यापरमात्मारूपकारणविषेहीहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकै कथनकरैहै ॥ ४ ॥ अथवा ॥ तापरमात्मादेवकेप्रतिबिंबरूपजेयहजीवहैं ॥ तिनजीवोंकानाम नरहै ॥ तिनप्रतिबिंबभूतनरोंकानिरूपण ताबिंबरूपपरमात्मादेवतैंहीहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानानकरिकैकथनकरैहै ॥ ५ ॥ अथवा ॥ याजीवोंविषे स्वभावतैंसिद्ध जेकामक्रोधादिकदोषहैं तिनदोषोंका नाम अरहै ॥ और तिनकामक्रोधादिरूपअरोंतैं उत्पन्नभयेजेदुःखहैं तिनदुःखोंकानाम आरहै ॥ और तिनदुःखरूपआरोंका आश्रयरूप जोयहअज्ञानादिकजडप्रपंचहै ॥ ताजडप्रपंचकानाम आरायणहै ॥ सोजडप्रपंचरूपआरायण यास्वयंज्योति आनंदस्वरूपपरमात्मादेवविषे तीनकालमैंनहींहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ ६ ॥ अथवा ॥ अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यहपंचक्लेश तथापुण्यपापरूपकर्म तथासुखदुःखरूपफल तथातिनोंकीवासना यहसंपूर्णअविद्यादिक यासंसाररूपचक्रकेअराहै ॥ और तिनक्लेशादिरूपअरोंका यहमाया परिणामीउपादानकारणरूपकरिकै आश्रयहै ॥ यातैं तामायाकानाम आरायणहै ॥ और ताआरायणरूपमायातैं यहकूटस्थपरमात्मादेव भिन्नहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ ७ ॥ अथवा ॥ कल्पिततादात्म्यअध्यासरूपसंबंध करिकै तामायारूपनारीकीस्थिति यापरमात्मादेवविषेहीहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ ८ ॥ अथवा ॥ परमेश्वररूपनरकीसंबंधी जायहलक्ष्मीहै तालक्ष्मीकानाम नारीहै ॥ कैसीहैसालक्ष्मी? सर्वदेहधारीजीवोंकूंप्रियहै ॥ तथा अनेककलावोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा अनेकरूपोंवालीहै ॥ तथा अत्यंतमनोरमहै ॥ तथा पुण्यवान् पुरुषोंकूं सर्वदा सुखदेणेहारीहै ॥ तथा पापीजीवोंकूं आपणीनप्राप्तिकरिकै तथानाशकरिकै सर्वदा दुःखकीप्राप्तिकरणेहारीहै ॥

ऐसीलक्ष्मीरूपनारी यापरमात्मापुरुषविषेही निश्चलस्थितहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानाम करिकैकथनकरैहै ॥ ९ ॥ अथवा ॥ याआनंदस्वरूपद्रष्टाआत्माकेप्रति नानाप्रकारकेपदार्थोंकूंदिखावणेहारी जायहसर्वजीवोंकीबु द्धिहै ॥ ताबुद्धिकानाम नारीहै तानारीरूपजडबुद्धिका यहस्वयंज्योतिआत्मादेवही प्रकाशकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तास्व यंज्योतिद्रष्टाआत्माकूं नारायण यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ १० ॥ अथवा ॥ यापरमात्मादेवतैंभिन्न किंचित्मात्रभीवस्तुनहींहै ॥ या कारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ ११ ॥ इसप्रकार नारायणशब्दके एकादशप्रकारकेअ र्थ शास्त्रवेत्तापुरुष कथनकरैहैं ॥ और यहनारायणदेवही स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा अक्षररूपहै ॥ तथा परमपदरूपहै ॥ तथा सर्व विश्वतैंपरहै ॥ तथा सर्वविश्वरूपहै ॥ तथा सनातनहै ॥ हेशिष्य ! ऐसेनारायणरूपपरमात्मादेवका जेअधिकारीजन श्रद्धाभक्तिपूर्वकस्म रणकरैहैं तथाकीर्तनकरैहैं ॥ तिनअधिकारीजनोंके अविद्यादिकपंचक्लेशोंकूं तथासर्वपापकर्मोंकूं यहपरमात्मादेवही नाशकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं हरि यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और यहपरमात्मादेवही यासंपूर्णजगत्कूंउत्पन्नकरिकै ताजगत्कापालनकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं पति यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और यहपरमात्मादेव आप णेअस्तिभातिप्रियरूपकरिकै यासंपूर्णविश्वकूं व्याप्तकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं आत्मा यानामकरिकै कथ नकरैहै ॥ और यहपरमात्मादेव सर्वमंगलोंकाभीमंगलरूपहै ॥ तथा परमकल्याणरूपहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मा देवकूं शिव यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और यापरमात्मादेवरूपआनंदसमुद्रके एकबिंदुमात्रआनंदकूंग्रहणकरिकै यहहिरण्यगर्भ देवभी आनंदकूंप्राप्तहोइरह्याहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं आनंद यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और कालकरिकै जोघटादिकपदार्थोंकानाशहोवैहै तानाशकानाम च्युतिहै ॥ साच्युति यापरमात्मादेवविषेहैनहीं ॥ काहेतैं ? यहपरमात्मादेव काल रूपमृत्युकूंभी भयकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तथा कालकाभीकालहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं अच्युत यानामकरि कैकथनकरैहै ॥ और यहपरमात्मादेव सूर्यअग्निआदिकसर्वजगत्का नियंताहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं ईश्व

र यानामकरिकैंकथनकरैंहैं ॥ और यहपरमात्मादेव किसीकालविषे तथाकिसीदेशविषे अन्यथाभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सर्वकालविषे तथासर्वदेशविषे एकरसरहैहैं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं शाश्वत यानामकरिकैंकथनकरैहैं ॥ और यहपरमात्मादेव ब्रह्मादिकमहान्पुरुषोंकरिकै जानणेयोग्यहैं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं महाज्ञेय यानामकरिकैंकथनकरैहैं ॥ और यहपरमात्मादेवही सर्वभूतोंकापरागतिहैं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं परायण यानामकरिकैंकथनकरैहैं ॥ और अग्निकीज्वालातैंआदिलैकेजेजडज्योतिहैं ॥ तथा बुद्धिआदिकोंविषेस्थित जेचिदाभासरूपचेतनज्योतिहैं ॥ तिन दोनोंप्रकारकेज्योतियोंकीअपेक्षाकरिकै यहपरमात्मादेव अत्यंतउत्कृष्टहैं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं परमज्योति यानामकरिकैंकथनकरैहैं ॥ तथा ब्रह्म परंतत्व यानामकरिकैंकथनकरैहैं ॥ हेशिष्य! ध्याता ध्यान ध्येय इसतैंआदिलैकेयहसंपूर्णजगत् तानारायणरूपहीहै ॥ और जितनाजगत् देखणेविषेआवैहै ॥ तथा जितनाजगत् श्रवणकरणेविषेआवैहै ॥ तासंपूर्णजगत्केअंतरबाहरव्याप्यकरिकै यहनारायणदेवही स्थितहैं ॥ पुनःकैसाहैसोनारायणदेव ? आनंदस्वरूपहैं ॥ तथा उत्पत्तिनाशतैंरहितहैं ॥ तथा स्वप्रकाशरूपहैं ॥ तथा सर्वजगत्कूंप्रकाशकरणेहाराहैं ॥ और यासंसाररूपसमुद्रकाकारण जामायाहैं ॥ तामायाविषे नियंतारूपकरिकैस्थितहुआभी सोपरमात्मादेव वास्तवतैं तिनमायादिकविकारोंतैंरहितहैं ॥ और हेशिष्य! यद्यपि यहपरमात्मादेव सर्वत्रव्यापकहैं ॥ तथापि हृदयकमलकेअंतरस्थित सूक्ष्मबुद्धिकरिकैही जान्याजावैहै ॥ याकारणतैंही या आत्मादेवकूं पूर्व अणुकह्याथा ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम हृदयकमलकास्वरूप निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जैसे यालोकविषे अष्टदलोंवाला तथारक्तवर्णवाला तथाकिंचित्मात्रविकासकूंप्राप्तहुआ कोई कमलहोवैहै ॥ तैसे हृदयदेशकेशिरविषे लंबायमान एकअंतरकमलरहैहै ॥ कैसाहैसोअंतरकमल ? अत्यंतरमणीकहै ॥ तथा पंचछिद्रोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा नीचैजाकामुखहै तथा नाभितैंद्वादशअंगुलऊपरिलेदेशविषेस्थितहै ॥ तहां ताहृदयकमलका पूर्वछिद्रतौ चक्षुरूपहै ॥ और दक्षिणछिद्र श्रोत्ररूपहै ॥ और पश्चिमछिद्र वाक्रूपहै ॥ और उत्तरछिद्र मनरूपहै ॥ और मध्यकाछिद्र घ्राणरूपहै ॥ और जिह्वा ताकमलकामूलस्था

नहे ॥ और वक्षःस्थलतैंआदिलैकै गलपर्यंत जोअंतरदेशहै ॥ सोदेश ताकमलकाभूमिहै ॥ और यहहृदयकमल मनकेहरणेका स्थानहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष ताहृदयकमलकूं मानस यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ और सोहृदयकमल गलतैंद्वादशअंगुलनीचैदेशविषेस्थितहै ॥ और सूर्य चंद्रमा अग्नि नक्षत्र विद्युत् यापांचोंकेसमान जाहृदयकमलकातेजहै ॥ तथा संपूर्णविश्वकाआधार और यहहृदयकमल अल्पपरिणामवालाहुआभी यासर्वविश्वकाआधारहै ॥ याकारणतैं विद्वान्योगीपुरुष ताहृदयकमलकूं महान्कहेहैं ॥ पुनःकैसाहैसोहृदयकमल ? रजतादिकधातुवोंकरिकैरचित जेशिलाहैं ॥ तिनशिलावोंकेसमान उज्ज्वलवर्णवाली तथारुधिरमांसादिक धातुवोंकरिकैलिप्तहुई ऐसीजेयाशरीरविषेस्थित नानाप्रकारकीअस्थियां हैं ॥ तिनअस्थियोंकरिकै सोहृदयकमल चारोंओरतैं वेष्टितहै ॥ और जैसे यालोकविषे किसीमहाराजाकेगृहकेभीतर तामहाराजाकेक्रीडाकरणेवासते जलकासरोवरहोवैहै ॥ तैसे हृदयकेमध्यविषेजोछिद्रहै ॥ सोछिद्र ताहृदयकमलका सरोवरहै ॥ ऐसेहृदयकमलविषे सोपरमात्मादेव निवासकरैहै ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव? अद्वितीयआनंदस्वरूपहै ॥ तथा अग्निकेसमानप्रकाशमानहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा जिसपरमात्मादेवकी चिदाभासरूपज्वाला बुद्धिआदिकसर्वजगत्विषेस्थितहै ॥ तथा बुद्धिआदिकसर्वसंघाततैं अत्यंतसमीपहै ॥ और सोपरमात्मादेवही बुद्धिरूपउपाधिकूंअंगीकारकरिकै सर्वविषयजन्यसुखोंकूंभोगेहै ॥ और सोपरमात्मादेवही प्राणजठराग्निरूपकरिकै भोजनकरेहुएअन्नके स्थूल मध्यम सूक्ष्म यहतीनप्रकारकेविभागोंकूंकरताहुआ सर्वजीवोंकेउदरविषेस्थितहोवैहै ॥ और ताजठराग्निरूपपरमात्मादेवकी क्षुधा तृषा क्रोधादिरूपकिरण नीचैऊपरिमध्यविषे तेजकरिकैव्याप्तहै ॥ ऐसेक्षुधातृषादिरूपकिरणोंकरिकै सोजठराग्निरूपपरमात्मादेव पादतैंलैकेमस्तकपर्यंत यासंपूर्णशरीरोंकूं तपायमानकरैहै ॥ हेशिष्य! ऐसेपरमात्मादेवका यहअधिकारीपुरुष ताहृदयकमलविषे ध्यानकरै ॥ ताध्यानकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं तापरमात्मादेवकासाक्षात्कार प्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य! याप्रकार ताहृदयकमलविषे परमात्माकेध्यानकियेहुएभी जबी याअधिकारीपुरुषकूं सोपरमात्मादेव सत्चित्आनंदरूपकरिकैप्रतीतनहींहोवै ॥ तबी सोअधिकारीपुरुष दूसरेप्रकारसैं तापरमात्मादेवकाध्यानकरै ॥ ताहृदयकमलकेमध्यविषे एकदीपककीशिखास्थितहै ॥ कैसीहैसादीपशिखा ? अ

त्यतसूक्ष्महै ॥ तथा ऊर्ध्वदेशविषेप्रज्वलितहै ॥ तथा निश्चलहै ॥ तथा नीलमेघविषेस्थितविद्युत्‌रेखाकेसमान प्रकाशमा नहै ॥ तथा श्यामककेशूककीन्यांई अत्यंतसूक्ष्महै ॥ तथा सुवर्णकेसमान पीतवर्णवालीहै ॥ तथासूक्ष्महुईभी प्रकाशवालीहै ॥ ऐसेदीपशिखाकेमध्यविषे सोपरमात्मादेवस्थितहै ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव ? ब्रह्मरूपहै तथाशिवरूपहै तथाहरिरूपहै ॥ तथा सर्व तैंसनातनहै ॥ तथा इंद्ररूपहै तथा अक्षररूपहै ॥ तथा सर्वजगत्‌काप्रभुहै ॥ तथा आपणेस्वप्रकाशरूपकरिकै विराजमानहै ॥ हेशिष्य ! ऐसेपरमात्मादेवका यहअधिकारीपुरुष तादीपशिखाविषेध्यानकरै ॥ ताध्यानकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं तापरमात्मादेवकासाक्षा त्कार प्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य! यहपरमात्मादेवही उपाधिकेसंबंधतैं हिरण्यगर्भभावकूं तथाविराट्‌भावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताहिरण्यगर्भविराट्‌रूपपरमात्मादेवकूं आदित्यादिकअनेकरूपकरिकै वर्णनकरैहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवकेसाक्षात्कार करिकैही याअधिकारीजीवोंकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेशिष्य ! ऐसाआत्माकासाक्षात्कार विक्षेपवालेपुरुषोंकूंहोवैनहीं ॥ किंतु स र्वविक्षेपतैंरहित अंतर्मुखपुरुषोंकूंहीहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती धर्म १ सत्य २ तप ३ दम ४ शम ५ दान ६ प्रजनन ७ आहिताग्नि ८ अग्निहोत्र ९ यज्ञ १० मानस ११ याएकादशसाधनोंकीस्तुतिकरिकै तिन धर्मादिकसर्वसाधनोंतैं संन्यासआश्र मविषे उत्कृष्टताबोधनकरैहै ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ ताश्रुतिभगवतीका सासंन्यासकेप्रधानताविषेही तात्पर्य है ॥ अव तासंन्यासकीउ त्कृष्टताबोधनकरणेवासते प्रथम धर्मादिकएकादशसाधनोंकेस्वरूपका तथा तिनोंकेफलका निरूपणकरैहैं ॥ तहां प्रथम धर्मकानिरू पणकरैहैं ॥ हेशिष्य! ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र येचारिवर्णजेहैं ॥ तथा ब्रह्मचर्य गार्हस्थ्य वानप्रस्थ संन्यास येचारिआश्रमजे हैं ॥ तिनसंपूर्णवर्णआश्रमवालेपुरुषोंकूं यहधर्मही धर्म अर्थ काम मोक्ष याचारिप्रकारकेपुरुषार्थकीप्राप्तिकरैहै ॥ तथा तिनपुरुषा र्थोंकेसाधनोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ काहेतैं ? यालोकविषे जोकार्य अत्यंतकठिनहोवैहै तिसकार्यकूंभी यहधर्म सिद्धकरिदेवैहै ॥ और यहधर्मही सर्वजगत्‌केपालनकरणेहारी परमेश्वरकीसात्विकीमूर्तिहै ॥ याकारणतैंही जैसे मार्गविषेस्थित फलपत्रपुष्पादिकोंकरिकैपूर्णवृक्षकूं मार्गकेचलणेहारेपुरुष सेवनकरैहैं ॥ तैसे ताधर्मात्मापुरुषकूं संपूर्णजन आश्रयणकरैहैं ॥ और यहजीव जाणिकरिकै तथानजाणिक

रिकै जेजेपापकर्मकरैहै ॥ तिनसंपूर्णपापकर्मौंकूं यहधर्महीही नाशकरैहै॥यातैं यहधर्मही जीवौंकेश्रेयकासाधनहै ॥ हेशिष्य!जैसे गौके चारिपादहोवैंहैं ॥ तैसे याधर्मकेभी सत्य तप दया दान येचारिपादहोवैंहैं ॥ ऐसेचारिपादयुक्तधर्मकूं याअधिकारीजनोंनैं जन्मतें लेकेमरणपर्यंत अवश्यकरिकेसेवनकरणा ॥ अब ताधर्मके सत्यरूपप्रथमपादका फलसहित निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जैसावृत्तांत आपणेनेत्रोंकरिकेदेख्याहोवै अथवा किसीधर्मात्मापुरुषकेमुखतैंश्रवणकऱ्याहोवै ॥ तैसाहीवृत्तांत आपणेमुखतैंकथनकरणा याकानाम सत्यहै अथवा आपणेमुखतैं जिसकार्यकरणेकीप्रतिज्ञाकरीहोवै तिसप्रतिज्ञातैं चलायमाननहींहोणा याकानाम सत्यहै ॥ सोसत्य वाक्इंद्रियकरिकेसिद्धहोवैहै ॥ यातैं तासत्यकूं वाचनिकधर्मकहैहैं ॥ हेशिष्य! कालांतरविषेहैफलजिनोंका ऐसे जेयज्ञादिक वैदिककर्महैं तथावाणिज्यादिकलौकिककर्महैं॥ तिनदोनोंप्रकारकेकर्मौंविषे जोजीवोंकीप्रवृत्तिहोवैहै॥सोसत्यवचनतैंही होवैहै ॥ सत्यवचनतैंविना किसीभीकर्मविषे प्रवृत्तिसंभवैनहीं॥और युधिष्ठरादिकराजा जोयास्थूलशरीरसहित स्वर्गविषेगयेहैं॥तथा अबपर्यंत तास्वर्गतैंनीचे पतननहींहोतेसोभी यासत्यवचनकेप्रभावतैंहीगयेहैं॥ और यासत्यधर्मकरिकैही यहवायु आपणेमर्यादाविषेचलेहै ॥ और यासत्यधर्मकरिकैही यहसूर्यभगवान् सर्वलोकोंकूंप्रकाशकरैहै ॥ और यासत्यधर्मकरिकैही यहपृथिवी जलऊपरिस्थितहै ॥ इसतैंआदिलेकेसंपूर्णदेवता तासत्यधर्मकेबलतैंही आपणेआपणेअधिकारकानिर्वाहकरैहै ॥ ऐसेसत्यकूं याअधिकारी पुरुषनैं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ अब ताधर्मके तपरूपद्वितीयपादका फलसहित निरूपणकरैहैं॥ हेशिष्य! आपणेमनविषेदृढ संकल्पधारणकरिकै जोशीतउष्णकासंहारणाहै तथाक्षुधातृषाकासहारणाहै तथाअन्नादिकपदार्थौंतैंरहितहोणाहै याकानाम तपहै ॥ हेशिष्य! यातपकेप्रभावतैंही मुनिलोक तथाइंद्रादिकदेवता मनवांछितस्वर्गादिकसुखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और यातपकेप्रभावतैंही यालोकविषेयहमनुष्य शत्रुवोंतैंजयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जैसे यहपटरूपकार्य तंतुरूपकारणविषेस्थितहोवैहै ॥ तैसे यहकार्यरूपजगत् ताकारणरूपतपविषेही स्थितहोवैहै ॥ और यातपकेप्रभावतैंही दुर्वासादिकमुनि वरशापदेणेविषेसमर्थहोवैहैं॥ और यहतपही सर्वकार्योंकीसिद्धिविषे अत्यंततेजस्वीसाधनहै॥याकारणतैंही पूर्व विश्वामित्रादिकऋषि यातपकेप्रभावतैं नवीनहीसृष्टिकूं रचतेभयेहैं॥

ऐसे तपकूं याअधिकारीपुरुषोंनैं अवश्यकरिकै संपादनकरणा॥ अब ताधर्मके दयारूपतीसरेपादका फलसहित निरूपणकरैहैं ॥ हे शिष्य ! दम शम यहदोनों तादयाकेकारणहैं ॥ तादमशमकारणतैंविना सादया उत्पन्नहोवैनहीं ॥ याकारणतें शास्त्रवेत्तापुरुष तादमशमकूं याजीवोंकेश्रेयकासाधनकहैहैं ॥ अब फलसहित तादमकेस्वरूपकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जैसे यालोकविषे किसीप्रमत्तवृषभका रज्जुआदिकबंधनोंकरिकैही जयहोवैहै ॥ तैसे बाह्यशब्दादिकविषयोंविषे दोषदृष्टिकरिकै जोश्रोत्रादिकइंद्रियोंका निरोधकरणाहै याकानाम दमहै ॥ तादमकरिकैयुक्त यहब्रह्मचारीपुरुष फलसहितसर्वपापकर्मोंकापरित्यागकरिकै मरणतैंअनंतर स्वर्गलोककूं अथवा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं ऐसेदमरूपसाधनकूं याअधिकारीपुरुषनैं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा॥ अब फलसहित शमकेस्वरूपका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जैसे स्त्रीआदिकविषयोंकेसमीपविद्यमानहुएभी ज्वरादिकरोगकेवशतैं यापुरुषोंकी तिनस्त्रीआदिकविषयोंविषेइच्छाहोतीनहीं॥ तैसे अनेकप्रकारकेदोषदर्शनकरिकै तिनस्त्रीआदिकविषयोंकीइच्छाकापरित्यागकरिकै केवलआनंदस्वरूपआत्माकीइच्छाकरणी याकानाम शमहै ॥ हेशिष्य! ताशमकाफल यालोकविषे तथावेदविषे प्रसिद्धहीहै काहेतैं? यालोकविषे शमकरिकैयुक्तमुनिलोक महान्वनविषेस्थितहुएभी सिंहसर्पादिकोंतैंभयकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ किंतु तेमुनिलोक ताशमकेप्रभावतैं तिनसिंहसर्पादिकतामसीजीवोंकूंबी हिंसादिकपापकर्मोंतैंरहितकरैहैं ॥ और ताशमकेप्रभावतैं तेमुनिलोक कामक्रोधादिकविकारोंकूंजयकरिकै स्वर्गादिकउत्तमलोकोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ऐसेशमकूं याअधिकारीपुरुषोंनैं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ तादमशमकरिकैहीयाजीवोंकूं सर्वभूतोंविषेदयाहोवैहै ॥ इतनैंकरिकै तादमशमकेप्राप्तहुए दयाकीप्राप्ति याप्रकारकेअन्वयकरिकै तादमशमविषे दयाकीकारणता निरूपणकरी ॥ अब तादमशमकेअप्राप्तहुए तादयाकीअप्राप्ति याप्रकारकेव्यतिरेककरिकैभी तादमशमविषे दयाकीकारणता निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! यालोकविषे जोपुरुष ताशमतैंरहितहोवैहै ॥ सोपुरुष कामक्रोधादिकविकारवालाहीहोवैहै ॥ और जोपुरुष तादमतैंरहितहोवैहै ॥ सोपुरुष सर्वदा इंद्रियोंकेअधीनहीहोवैहै ॥ और जोपुरुष कामक्रोधादिकविकारोंवाला तथाइंद्रियोंकेअधीनहोवैहै ॥ सोप्रमादीपुरुष शरीरमनवाणीकरिकै अवश्य भूतप्राणियोंकीहिंसा

करैहै ॥ और जोपुरुष शरीरमनवाणीकरिकै सर्वभूतोंकीहिंसाकरैं है ॥ सोपुरुष दयातैंरहितहीहोवैं है ॥ ऐसेनिर्दयपुरुषविषे कदाचित् भी दयाकीसंभावनाहोवैनहीं ॥ यातैं दयाकीउत्पत्तिद्वारा यहशमदमही जीवोंकेश्रेयकासाधनहै ॥ अब ताधर्मके दानरूपचतुर्थपाद का फलसहित निरूपणकरैंहैं॥ हेशिष्य! वाणीकादान तथाबुद्धिकादान तथाधनकादान तथाशरीरकादान इसतैंआदिलैके अनेकप्र कारकादानहोवैहै॥ तहां अधिकारीपुरुषकेप्रति विद्यादेणी यहवाणीकादानहोवैहै॥ और किसीपुरुषकेप्रति श्रेष्ठबुद्धिदेणी यहबुद्धिका दानहोवैहै॥ और सुपात्रब्राह्मणकेप्रति सुवर्णगौअन्नादिकपदार्थदेणे यहधनकादानहोवैहै॥ और शरणागतजीवोंकी शत्रुआदिकोंतें रक्षाकरणी यहशरीरकादानहोवैहै॥ हेशिष्य! यालोकविषे जेउदारपुरुष सुवर्णादिकपदार्थोंकादानकरैंहैं॥ तिनदानकर्त्तापुरुषोंकी सर्व प्राणी स्तुतिकरैंहैं ॥ जैसे कर्णराजानैं इंद्रकेप्रति आपणेत्वचाकादानकऱ्याहै ॥ और बलिराजानैं वामनभगवान्केप्रति तीनलोकोंकादानकऱ्याहै॥ और शिबिनामाकिसीधर्मात्मापुरुषनैं शरणागतकपोतकीरक्षाकरणेवासते आपणामांस दानकऱ्याहै॥ इ सतैंआदिलैके दूसरेभीअनेकधर्मात्मापुरुषोंनैं नानाप्रकारकेदानकरैंहैं ॥ याकारणतैं तिनकर्णराजादिकधर्मात्मापुरुषोंकी अबपर्यंत लोक स्तुतिकरैंहैं ॥ और तेदानकरणेहारेपुरुष याशरीरकेपरित्यागतैंअनंतर स्वर्गादिकउत्तमलोकोंकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ यातैं दानकर्त्ता पुरुषकूं दोनोंलोकविषेसुखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ किंवा यालोकविषे दक्षिणारूपदानकरिकैही अश्वमेधादिकयज्ञ संपूर्णताकूंप्राप्त होवैहैं ॥ और जैसे पुत्र पिताकूंआश्रयणकरैंहै ॥ तैसे दानकर्त्तापुरुषकूं सर्वप्राणी आश्रयणकरैं हैं ॥ और यादानकरिकै शत्रुभी मित्र भावकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ याकारणतैंही साम दान भेद दंड याचारिप्रकारकेउपायोंकूंजानणेहारे राजादिकपुरुष यादानरूपउपायकरि कैहीशत्रुवोंकूं आपणेवशकरैं हैं ॥ और यादानविषेही यहसंपूर्णजगत् स्थितहोवैहै ॥ ऐसेदानकूं याअधिकारीपुरुषनैं अवश्यकरिकैसं पादनकरणा॥ हेशिष्य! सत्य तप दया दान याचारिपादोंकरिकैयुक्त जोयहधर्महै ॥ सोधर्म यासर्वदेहधारीजीवोंका साधारणध र्महै ॥ ताधर्मविषे ब्राह्मणादिकचारिवर्णोंकी तथाब्रह्मचर्यादिकचारिआश्रमोंकी तथाबाल्यादिकतीनअवस्थावोंकी अपेक्षानहीं है ॥ काहेतें ? पंचवर्षकीअवस्थावाला ध्रुव तपरूपधर्मकरिकै परमपदकूंप्राप्तभयाहै ॥ यातैं याधर्मविषे किसीअवस्थाकीभी अपेक्षा

नहीं है ॥ और कपोतपक्षी अतिथिकेप्रति आपणेशरीरकादानकरिकै उत्तमगतिकूंप्राप्तभयाहै ॥ यातैं याधर्मविषे किसीवर्णआश्रम कीभी अपेक्षानहीं है ॥ किंतु सर्वदेहधारीजीवोंकूं याधर्मकरणेविषेअधिकारीहै ॥ इतनेंकरिकै धर्म सत्य तप दम शम दान याषट् साधनोंकानिरूपणकऱ्या ॥ अब प्रजननरूपसप्तमसाधनका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जैसे सोचारिपादोंवालाधर्म वर्ण आश्रम अवस्था यातीनोंकीअपेक्षातैंविनाही सिद्धहोवैहै ॥ तैसे यहपुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्तिरूप प्रजननसाधन वर्ण आश्रम अवस्था या तीनोंकीअपेक्षातैंविना सिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु यामनुष्यादिकसर्वजीवोंकूं गृहस्थआश्रमकी तथायौवनअवस्थाकी अपेक्षाकरिकैही पुत्रादिकप्रजाकीप्राप्तिहोवैहै ॥ स्त्रीतैंविना तथायौवनअवस्थातैंविना कोईभीपुरुष पुत्रकीउत्पत्ति करिसकैनहीं ॥हेशिष्य! दूसरे मनुष्यादिकोंकी क्यावार्त्ता है ? परंतु साक्षात्प्रजापतिभी यौवनअवस्थातैंविना तथास्त्रीतैंविना पुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्तिकरणेविषे समर्थहोइसकैनहीं ॥ हेशिष्य! पुत्रपौत्रादिरूपप्रजावालापुरुष इसलोकविषे कीर्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा सुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा शत्रुवोंतैं जयकूंप्राप्तहोवैहै॥ और सोपुत्रवान्पुरुष पितरोंकेऋणतैंमुक्तहोइकै मरणतैंअनंतर स्वर्गकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य ! यहपुत्रपौत्रादिरूपप्रजा याजीवोंके संसारसंबंधीसुखकाही कारणहोवैहै ॥ मोक्षरूपसुखका कारणहोवैनहीं ॥ उलटा रागकीउत्पत्तिद्वारा सापुत्रादिरूपप्रजा याजीवोंकेमोक्षविषे प्रतिबंधकहीहोवैहै ॥ अब जेविषयासक्तरागीपुरुष पुत्रादिकप्रजाकूंही मोक्षका कारणमानैहैं ॥ तिनरागीपुरुषोंके मतकेखंडनकरणेवासते प्रथम तिनरागीपुरुषोंकेमतका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! कामरूपज्वरकरिकैआतुरहुए केईकअविवेकीपुरुष पुत्रादिकप्रजाकूंही मोक्षकाकारणमानैहैं॥ और तेविषयासक्तबहिर्मुखपुरुष ताअर्थकीसिद्धिकरणेविषे याप्रकारकीयुक्तिकूं कथनकरैहैं ॥ जैसे यालोकविषे सप्तमहलवाला जोकोईऊंचागृहहै ॥ तागृहकेशिखरऊपरि आरूढहोणेकी जोपुरुष इच्छाकरैहै ॥ सोपुरुष सोपानकूंग्रहणकरिकैही तागृहकेशिखरऊपरिजावैहै ॥ तासोपानविषेभी सोपुरुष प्रथम पृथक् पौडीऊपरि पादराखैहै ॥ तिसतैंअनंतर दूसरीपौडीऊपरि पादराखैहै ॥ तिसतैंअनंतर तिसरीपौडीऊपरि पादराखैहै ॥ याप्रकार शनैःशनैः तासोपानकीपौडियोंऊपरि पादराखताराखता तागृहकेशिखरऊपरि जावैहै ॥ तासोपान

तैंविना सोपुरुष तागृहकेशिखरऊपरि जाइसकैनहीं ॥ तैसे इहां धर्म अर्थ काम मोक्ष याचारिप्रकारकेपुरुषार्थकी जोजीवोंकूं प्राप्तिहोवैहै ॥ सोभी पूर्वपूर्वकेप्राप्तितैंअनंतर उत्तरउत्तरकीप्राप्तिरूपक्रमतैंहीहोवैहै ॥ ताक्रमतैंविना तिनपुरुषार्थोंकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तहां यहजीव प्रथम धर्मकूंप्राप्तहोवैहै॥और ताधर्मतैंअनंतर यहजीव अर्थकूंप्राप्तहोवैहै॥और ताअर्थतैंअनंतर यहजीव कामकूंप्राप्तहोवैहै॥और ताकामतैंअनंतर यहजीव मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै॥ याक्रमतैंविना यहजीव प्रथमही मोक्षकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ अब धर्मादिकोंविषे अर्थादिकोंकीकारणताका निरूपणकरैहैं॥ यहधर्मही अर्थकाकारणहै ॥ काहेतें ? यहलोक दुःखवालेदरिद्रीपुरुषकूं पापात्मा कहेहैं॥ और सुखवालेधनीपुरुषकूं पुण्यात्माकहेहैं॥यालोकोंकेव्यवहारतें धर्मविषेही अर्थकीकारणता सिद्धहोवैहै ॥शंका॥ यालोकविषे कितनेकधनीपुरुष पुण्यकर्मकरतेनहीं ॥ यातें तिनधनीपुरुषोंविषे पुण्यात्माव्यवहार संभवैनहीं॥ समाधान॥ यालोकविषे दोप्रकारकाधर्महोवैहै॥ एकधर्मतौ इसशरीरविषेकऱ्याहुआ इसीशरीरविषे फलकीप्राप्तिकरैहै ॥ जैसे इसीशरीरकरिकैकऱ्याहुआ कारीरीनामायज्ञ इसीशरीरविषे वृष्टिरूपफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ तथा इसीशरीरकरिकैकऱ्याहुआ पुत्रइष्टिनामायज्ञ इसीशरीरविषे पुत्ररूपफलकीप्राप्तिकरैहै॥ और दूसराधर्मतौ इसशरीरकरिकैकऱ्याहुआ इसीशरीरविषे फलकीप्राप्तिकरैनहीं॥किंतु दूसरेशरीरविषे फलकीप्राप्तिकरैहै ॥ जैसे कृच्छ्रचांद्रायणादिकव्रतहैं ॥ तहां जेधनवान्‌पुरुष इसजन्मविषे पुण्यकर्मोंकूंकरतेनहीं ॥ किंतु केवलपापकर्मोंकूंहीकरतेहैं॥ तिनधनवान्‌पुरुषोंविषे पूर्वजन्मकेपुण्यकर्म कल्पनाकरणे ॥ जिनपूर्वलेपुण्यकर्मोंकरिकै तिनधनीपुरुषोंकूं इसजन्मविषे सुखकीप्राप्तिभईहै ॥ तात्पर्ययह ! कारणतैंविना कार्यकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यहसर्वशास्त्रकारोंकासिद्धांतहै ॥ तहांजिसस्थलविषे कार्यतो प्रत्यक्षदीखे ॥ और कारण प्रत्यक्षदीखेनहीं ॥ तिसस्थलविषे कार्यरूपहेतुतें कारणकाअनुमानहोवैहै॥ जैसे नदीविषे जोजलकीवृद्धिहोवैहै॥ ताजलकेवृद्धिकाकारण वृष्टिहै॥ सावृष्टि दूरदेशविषेस्थितहै॥ यातें लोकोंकूं प्रत्यक्षदीखेनहीं॥ किंतु ताजलकीवृद्धिरूपहेतुतें तेलोक तावृष्टिका अनुमानकरैहैं॥तैसे जोजोसुखहोवैहै सोसोसुख पुण्यकर्मकरिकैजन्यहोवैहै॥ पुण्यकर्मतैंविना सुखकीप्राप्तिहोवैनहीं॥ यातें सुखरूपहेतुतें तिसपापात्माधनीपुरुषोंके पूर्वजन्मकेपुण्यकर्मोंका अनुमान

होवैहै ॥ इसप्रकार श्वानादिकपशुवोंकूंभी जोस्त्रीसंभोगादिकोंतैंआनंदहोवैहै ॥ सोभी पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकरिकैहीहोवैहै ॥ और जैसे सोपुण्यकर्म दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तैसे पापकर्मभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां कोईकपापकर्मतौ इसशरीरकरिकैकन्याहुआ इसीशरीरविषे दुःखरूपफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ और कोईकपापकर्मतौ इसीशरीरकरिकैकन्याहुआ दूसरेशरीरविषे दुःखरूपफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ तहां इसशरीरविषे जिनपुरुषोंनैं कोईबुद्धिपूर्वक पापकर्मनहींकन्याहै ॥ किंतु सर्वदा पुण्यकर्महीकरैहैं॥ तिनपुण्यवान्पुरुषोंविषेभी अनेकप्रकारकेदुःख देखणेमैंआवैहैं॥यातैं तादुःखरूपहेतुतैं तिनपुण्यवान्पुरुषोंविषे पूर्वजन्मोंकेपापकर्मोंका अनुमानहोवैहै यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ याजीवोंकूं जितनाविषयजन्यसुख प्राप्तहोवैहै ॥ सो धर्मकरिकैही प्राप्तहोवैहै॥और ताधर्मात्मापुरुषोंकूं जोविषयसुखप्राप्तहोवैहै ॥ सो अर्थतैंविना प्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं ? यालोकविषे जोपुरुष धर्मात्माभीहै॥सोधर्मात्मापुरुषभी स्त्रीतैंविना ताविषयसुखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा पुत्रादिकप्रजाकूं तथागृहस्थपणेकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ और सोधर्मात्मापुरुषभी अन्नतैंविना क्षुधाकूं निवृत्तकरिसकैनहीं ॥ और निर्धनदरिद्रीपुरुषकेसमीप स्त्रीअन्नादिकपदार्थ विद्यमानहुएभी तानिर्धनपुरुषकूंसुखकीप्राप्तिकरैंनहीं यातैं धनादिरूपअर्थही कामसुखकाकारणहै॥काहेतैं ?धनरूपअर्थतैंरहितपतिकूं पतिव्रतास्त्रीभी परित्यागकारिदेवैहै॥और धनहीनदरिद्रीपुरुषकूं आपणेबांधव तथामित्र तथाअन्यलोकभी आदरकरतेनहीं ॥ किंतु सर्वलोक तानिर्धनपुरुषका निरादरहीकरैहैं ॥ और जैसे मृतकशरीर किसीकार्यकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ तैसे निर्धनपुरुषका उत्तमकुल तथाशील तथानानाप्रकारकीविद्या किंचित्मात्रभी कार्यकरणेविषेसमर्थहोवैनहीं ॥ और जोपुरुष धनवान्होवैहै ॥ सोपुरुषही नानाप्रकारकेभोगोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा स्वर्गकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा महान्कीर्तिकूंप्राप्तहोवैहै॥तथा नानाप्रकारकेगुणोंकूंप्राप्तहोवैहै॥यातैं यहअर्थसिद्धभया॥ यहपुरुष धनरूपअर्थकरिकैही स्त्रीसंभोगरूपकामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ धनरूपअर्थतैंविना स्त्रीसंभोगरूपकामकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं सोअर्थ कामकाकारणहै ॥ किंवा विषयसुखकीइच्छारूपजोकामहै ॥ सोकाम जिसदेहधारीजीवकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसाकोईदेहधारीजीव यातीनलोकोंविषे हैनहीं ॥ किंतु मनुष्यजातिविषे तथापशुजातिविषे जितने बाल्यअवस्थावाले तथायौवनअवस्थावाले तथावृ

द्वअवस्थावाले स्त्री पुरुष नपुंसकरूप जंगमप्राणी हैं ॥ तथा जितनेवृक्षादिरूपस्थावरप्राणी हैं ॥ तेसंपूर्णप्राणी ताविषयसुखकीइ
च्छारूपकामकरिकैही व्याप्तहैं ॥ ताकामतैंरहित कोईभीप्राणी नहीं है ॥ यातैं ताविषयसुखकेभोगतैंविना किसीभीजीवकूं वैराग्यकी
प्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु ताविषयसुखकेभोगतैंअनंतरही याजीवोंकूं वैराग्यकीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं ताविषयसुखकेभोगतैंपूर्व ब्रह्मचर्य
आश्रमविषे यहजीव मोक्षकाअधिकारीहोवैनहीं ॥ किंतु गृहस्थआश्रमतैंअनंतरही यहजीव मोक्षकाअधिकारीहोवै है ॥ किंवा
वैराग्यवान्पुरुषही मोक्षकाअधिकारीहोवैहै ॥ यहवेदांतशास्त्रकासिद्धांतहै ॥ तहां रागकेप्रध्वंसाभावकानाम वैराग्यहै ॥ सोराग
काप्रध्वंसाभावरूपवैराग्य रागकीउत्पत्तितैंविनाहीहोवैहै अथवा रागकीउत्पत्तितैंअनंतर होवैहै ॥ तहां रागकीउत्पत्तितैंविनाही
सोरागकाप्रध्वंसाभावरूपवैराग्यहोवै है यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं? प्रध्वंसाभावविषे प्रतियोगीभी
कारणहोवैहै ॥ प्रतियोगीतैंविना प्रध्वंसाभावकीउत्पत्ति होवैनहीं ॥ जैसे दंडकरिकैउत्पन्नभया जोघटकाप्रध्वंसाभावहै ॥ ताप्रध्वं
साभावविषे जैसे दंडकूंकारणताहै ॥ तैसे ताघटरूपप्रतियोगीकूंभी कारणताहै ॥ घटकीउत्पत्तितैंविना ताघटकाप्रध्वंसाभाव होवै
नहीं ॥ तैसे रागरूपप्रतियोगीकीउत्पत्तितैंविना तारागकाप्रध्वंसाभावरूपवैराग्यभी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और रागकीउत्पत्तितैंअनंत
रही सोरागकाप्रध्वंसाभावरूपवैराग्य उत्पन्नहोवैहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं॥काहेतैं ? जैसे यालोक
विषे जीवोंकूंउत्पन्नभईजाक्षुधाहै ॥ साक्षुधा अन्नकीप्राप्तितैंविना निवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु अन्नकीप्राप्तिकरिकैही साक्षुधा निवृत्तहो
वैहै ॥ तैसे याजीवोंविषे उत्पन्नभयाजो विषयसुखोंकारागहै ॥ सोरागभी तिनविषयसुखोंकीप्राप्तितैंविना निवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु ति
नविषयसुखोंकीप्राप्तिकरिकैही सोराग निवृत्तहोवैहै ॥ और तेविषयजन्यसुख ब्रह्मचर्यआश्रमविषे याजीवोंकूं प्राप्तहैनहीं ॥ यातैं
ब्रह्मचर्यआश्रमविषे याजीवोंकूं रागकाप्रध्वंसाभावरूपवैराग्यकीप्राप्ति संभवैनहीं ॥ तावैराग्यकेअभावहुए मोक्षकीप्राप्तिवास्तेउ
द्यमकरणा निष्फलहै ॥ शंका ॥ ताब्रह्मचर्यआश्रमविषे याजीवोंकूं यद्यपि विषयोंविषेराग उत्पन्नहोवै है ॥ तथापि तेअधिकारीजी
व शास्त्रविचारकेबलतैं तिनविषयोंविषे नानाप्रकारकेदोषोंकूंदेखिकै तिनविषयोंकेरागका निरोधकरै हैं ॥ यातैं ताब्रह्मचर्यअवस्था

विषेभी वैराग्य तथामुमुक्षुता संभवै है ॥ समाधान ॥ याजीवोंकेचित्तविषे उत्पन्नभयाजोविषयोंकारागहै ॥ सोराग जबपर्यंत ताविष
यकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ तबपर्यंत सोराग याजीवोंकेचित्तकूं सर्वओरतैंनिरुद्धकरिकैस्थितहोवैहै ॥ ताचित्तविषे दूसरेविषयका प्रवेश
होणदेवैनहीं ॥ जैसे यालोकविषे स्त्रीकेउदरविषे जबपर्यंत बालकरहैहै ॥ तबपर्यंत सोबालक तास्त्रीकेउदरविषे दूसरेबालकका प्रवे
शहोणेदेवैनहीं ॥ किंतु सोबालक जबी तास्त्रीकेउदरतैंबाहरिनिकसैहै ॥ तबीही तास्त्रीकेउदरविषे दूसरेबालकका प्रवेशहोवैहै ॥ तै
से याजीवोंकेचित्तविषेभी जबपर्यंत एकविषयकाराग रहैहै ॥ तबपर्यंत ताचित्तविषे दूसरेविषयकेरागकूं प्रवेशहोणदेवैनहीं ॥ तात्पर्य
यह ॥ याचित्तविषे एकविषयकेरागहुए जबीलोकप्रसिद्धविषयभी प्रवेशनहींकरिसकैहै ॥ तबी ताविषयरागवान्चित्तविषे अलौकिक
मोक्षकीइच्छा किसप्रकार प्रवेशकरैगी? किंतु नहींप्रवेशकरैगी ॥ किंवा जैसे मदकरिकैप्रभिन्नहुआहैगंडस्थलजिसका ऐसाजोषष्टि
वर्षकीअवस्थावाला कोईयुवानहस्तीहै ॥ सोहस्ती किसीमहान्वनकेसूक्ष्ममार्गोंविषेविचरताहुआ जबी तासूक्ष्ममार्गकेद्वारदेशकूं
निरुद्धकरिकै स्थितहोवैहै ॥ तबी सोप्रमत्तहस्ती दूसरेमृगादिकवनकेपशुवोंकूं तामार्गद्वारा तावनविषेप्रवेशकरणदेवैनहीं ॥ तैसे चित्त
रूपवनकेद्वारविषे जबपर्यंत यहविषयोंकारागरूपहस्ती विद्यमानहै ॥ तबपर्यंत मोक्षकीइच्छारूपमृगादिकोंकूं ताचित्तरूपवनविषे प्रवे
शहोणदेवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणवासते प्रथम लौकिकविषयोंकेरागविषे दूसरेलौकिकविषयोंकेरागकीप्रतिबंधकता दृष्टां
तकरिकैनिरूपणकरै हैं ॥ अनेकस्त्रीजनोंकेमध्यविषेस्थितहुआ जोमंदोदरीकापतिरावणथा ॥ सोरावण जबी सीताकेरागकरिकैयुक्तहु
आ तबी तासीतातैंविना तीनलोकवर्तिपदार्थोंकीभी इच्छानहींकरताभया ॥ किंतु ताएकसीताकेप्राप्तिकीहीइच्छाकरताभया ॥ और जै
से नलराजाविषेहैसंलग्नहृदयजिसका ऐसीजोदमयंतीनामास्त्रीथी ॥ सादमयंतीनामास्त्री स्वयंवरविषेप्राप्तहुएइंद्रादिकदेवतावोंकूंभी
नहींवरतीभई ॥ किंतु सादमयंतीनामास्त्री तानलराजाकूंहीवरतीभई ॥ इसप्रकार रागकरिकैअंधहुईहैबुद्धिजिनोंकी ऐसेदूसरेभीअ
नेकजीव पूर्वहुएहैं ॥ तथा अबीवर्तमानहैं ॥ तथा आगेहोवैंगे ॥ तेसंपूर्णरागीजीव जिसविषयकेरागकरिकैयुक्तहुएहैं ॥ तिसविषयतैंविना
दूसरेकीसीभीविषयकिइच्छा नहींकरतेभएहैं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ याजीवोंकेचित्तविषे जबपर्यंत एकविषयकाराग रहैहै ॥ तबपर्यंत

ताचित्तविषे दूसरेविषयकाराग होवैनहीं॥जबी याचित्तविषे एकविषयकेरागहुए दूसरेविषयकाभीराग संभवैनहीं॥तबी ताविषयराग वानूचित्तविषे मोक्षकीइच्छा किसप्रकारसंभवैगी किंतु नहींसंभवैगी॥शंका॥जिसपुरुषकूं प्रथम विषयसुखविषेरागहुआनहींकिंतु प्रथमही मोक्षरूपसुखविषे रागहुआहैसोपुरुषही संन्यासद्वारा आत्मज्ञानका तथामोक्षका अधिकारीहोवैगा॥समाधान॥ जिनपुरुषांकूंयालोकप्रसिद्धविषयजन्यसुखविषे रागनहींभयाहै ॥ तिनपुरुषोंकूं प्रथमही अलौकिकमोक्षरूपसुखविषेराग किसप्रकारहोवैगा ? किंतु नहींहोवैगा ॥ तात्पर्ययह॥ जिसपुरुषकूं इसलोककेविषयजन्यसुखविषे सुखत्वरूपकरिकै इष्टज्ञानभयाहै ॥ तिसपुरुषकूंही स्वर्गलोककेविषयजन्यसुखविषे इच्छाहोवैहै ॥ ताइष्टज्ञानतैंविना स्वर्गलोककेविषयजन्यसुखविषे किसीभीजीवकी इच्छाहोवैनहीं ॥ तैसे जिसपुरुषकूं यालोकप्रसिद्धविषयजन्यसुखोंकाज्ञानभयाहै ॥ तिसपुरुषकूंही तामोक्षरूपसुखविषे इच्छाहोवैहै ॥ विषयजन्यसुखकेज्ञानतैंविना प्रथमही तामोक्षकीइच्छा संभवैनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ आपणेहृदयविषेस्थित जेविषयसुखोंकी कामनाहै ॥ तिनकामनावोंकी ताविषयसुखोंकीप्राप्तितैं नहींपूर्णताकरिकै यहअधिकारीपुरुष प्रथमही तामोक्षकीप्राप्तिवासते संन्यासआश्रमकूंग्रहणनहींकरै ॥ किंतु यहबुद्धिमान्पुरुष प्रथम तिनविषयसुखोंकीकामनावोंकूं तिनविषयसुखोंकीप्राप्तितैंपूर्णकरिकै पश्चात् मोक्षकीप्राप्तिवासते संन्यासआश्रमकाग्रहणकरै ॥यहवार्त्ता मनुभगवान्नैंभीकहीहै॥तहांश्लोक॥अनधीत्यद्विजोवेदान् अनुत्पाद्यतथासुतान्॥अनिष्ट्वाचैवयज्ञैश्च मोक्षमिच्छन्व्रजत्यधः॥ अर्थयह॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंकानाम द्विजहै जोद्विज वेदोंकूं नअध्ययनकरिकै तथापुत्रोंकूं नउत्पन्नकरिकै तथायज्ञादिककर्मोंकूं नकरिकै प्रथमही मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाकरैहै ॥ सोद्विज तामोक्षकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा तामोक्षकीइच्छाकरताहुआसोद्विज अधोगतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ १ ॥ यातैं जिस द्विजकूं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै॥सोद्विज प्रथम ब्रह्मचर्यआश्रमविषेवेदोंकेअध्ययनकरिकै ऋषियोंकेऋणतैंमुक्तहोवै॥तिसतैंअनंतर गृहस्थआश्रमविषे पुत्रोंकूंउत्पन्नकरिकै पितरोंकेऋणतैंमुक्तहोवै॥तथा यज्ञादिककर्मोंकूंकरिकै देवतावोंकेऋणतैंमुक्तहोवै ॥ तिसतैंअनंतर मोक्षकीप्राप्तिवासते संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै ॥इसप्रकार तारागकेप्रभावकूंजानणेहारे मनुआदिकसर्वज्ञपुरुषोंनैं व्यव

स्थाकरीहै ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया॥ सर्वप्रकारकेविषयोंकेभोगकरिकै जबी याअधिकारीपुरुषोंकेचित्तविषे ताविषयोंकेरागकानाश होवै ॥ तबीही यहअधिकारीपुरुष संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिकै तामोक्षकीप्राप्तिवासते यत्नकरै ॥ विषयोंकेभोगतेंपूर्वही मोक्षकी प्राप्तिवासतेयत्नकरणा निष्फलहै ॥ इतनेंग्रंथकरिकै विषयासक्तपुरुषोंके मतकानिरूपणकऱ्या ॥ अब तिनोंकेमतकाखंडनकरेहैं॥हे शिष्य! इसप्रकार तेविषयासक्तबहिर्मुखपुरुष धर्म अर्थ काम यातीनपुरुषार्थोंकीप्राप्तितेंअनंतरही चतुर्थमोक्षरूपपुरुषार्थकीप्राप्तिका कथनकरेहैं॥सोतिनबहिर्मुखपुरुषोंकेवचनोंकूं विद्वान्पुरुष ग्रहणकरैनहींकिंतु विषयासक्तबहिर्मुखपुरुषोंकूंही तिनोंकेवचनोंकूं ग्रहणकरेहैं ॥ और हेशिष्य! तिनबहिर्मुखपुरुषोंनें जोपूर्वपुण्यकर्मविषे सुखकीकारणता कथनकरीथी ॥ तथा पापकर्मविषे दुःखकीकारणता कथनकरीथी सोतिनोंकावचन हमसिद्धांतीभी अंगीकारकरतेहैं ॥ परंतु तिनबहिर्मुखपुरुषोंनें जोपूर्व धनादिरूपअर्थविषे सुखकीकारणता कथनकरीथीसोतिनोंकावचन हमसिद्धांती अंगीकारकरतेनहीं ॥ काहेतें ? यालोकविषे धनादिरूपअर्थतेंरहितहुए भी बहुतजीव सुखीहुए देखणेमेंआवेहैं॥ और यालोकविषे धनादिरूपअर्थकरिकैयुक्तहुएभी बहुतजीव दुःखीहुए देखणेमें आवेहैं॥ यातें धनादिरूपअर्थविषे विषयसुखकीकारणता संभवैनहीं ॥ हेशिष्य! धनादिरूपअर्थतेंविनाभी यामनुष्यादिकजीवोंकूं विषयसुखकीप्राप्तिहोवेहै यहवार्त्ता हम सप्तमअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमैत्रेयीकेसंवादविषे विस्तारतें कथनकरिआएहैं ॥ यातें इहां कथनकरी नहीं ॥ और हेशिष्य! धनादिरूपअर्थोंके इकठेकरणेविषे तथारक्षणकरणेविषे तथानाशविषे याजीवोंकूं परमदुःखकीही प्राप्तिहोवैहै ॥ याप्रकारकेअर्थकूंजानणेहारे जेविद्वान्पुरुषहैं ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंकूंतौ यहधनादिरूपअर्थ दुःखकेहीकारण प्रतीतहोवेहै ॥ ऐसेधनादिरूपअर्थतैं तिनबहिर्मुखपुरुषोंकूं सुखकीप्राप्ति किसप्रकार होवैगी किंतु नहींहोवैगी ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अग्निके अंगारविषे मणिबुद्धिकरिकै जोमूढबुद्धिपुरुष ताअंगारकूं आपणेहस्तविषे ग्रहणकरेहै ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष दाहजन्यदुःखकूंही प्राप्त होवैहै ॥ तैसे दुःखकेदेणेहारे धनादिरूपअर्थोंविषे सुखसाधनताबुद्धिकरिकै जोमूढबुद्धिपुरुष तिनधनादिरूपअर्थोंकेग्रहणकरणेवासते प्रवृत्तहोवैहैं ॥ सोमूढबुद्धिपुरुषभी केवलदुःखकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ यातें धनादिरूपअर्थविषे सुखकीकारणता संभवैनहीं ॥ और

हेशिष्य! अर्थहीन दरिद्रीपुरुषकूं स्त्रीपुत्रादिकसर्वबांधव परित्यागकरिदेवैहैं ॥ याप्रकारकावचन जोपूर्व तिनबहिर्मुखपुरुषोंनैं कथन कऱ्याथा ॥ सोतिनोंकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें ? यालोकविषे जितनेनिर्धनदरिद्रीपुरुषहैं ॥ तिनसर्वदरिद्रीपुरुषोंकूं स्त्रीपुत्रादिकबांधव परित्यागकरैहैं ॥ याप्रकारकानियम सर्वलोकोंविषे देखणेमैंआवतानहींकिंतु कोईकदुष्टस्वभाववाले स्त्रीपुत्रादिकबांधवही तानिर्धनपुरुषका परित्यागकरैहैं ॥साधुस्वभाववालेस्त्रीपुत्रादिकबांधव तानिर्धनपुरुषका परित्यागकरैंनहीं ॥ और हेशिष्य! सर्वजीवोंकूं सुखकीइच्छारहैहै ॥ यातैं सर्वजगत् कामकरिकैंव्याप्तहै याप्रकारकावचन जोपूर्व तिनबहिर्मुखपुरुषोंनैं कथनकऱ्याथा ॥ सोतिनोंकावचनभी मिथ्याहै ॥ काहेतें ? यालोकविषे सर्वजीवोंकूं सुखकेप्राप्तिकीइच्छाहोवैहै ॥ यहवार्ता यद्यपि सत्यहै ॥ तथापि तासुखकीइच्छामात्रकरिकै तिनसर्वजीवोंविषे कामीपणा सिद्धहोवैनहीं॥किंतु यालोकविषे जेपुरुष जिव्हाइंद्रियकेविषयविषे तथाउपस्थइंद्रियकेविषयविषे अत्यंत आसक्तिवालेहोवैहैं ॥ तिनपुरुषोंकूंही लोकविषेकामीकहेहैं ॥ सुखमात्रकीइच्छावालेपुरुषकूं कोई कामीकहतानहीं ॥ यातैं तासुखकीइच्छामात्रकरिकै सर्वजगत्विषे कामीपणासंभवैनहीं ॥ और हेशिष्य! याजीवोंकेचित्तविषे उत्पन्नभया जोएकविषयकारागहै ॥ सोराग ताचित्तविषे दूसरेविषयकेरागकूं उत्पन्नहोणेदेवैनहीं याप्रकारकावचन जोपूर्व तिनबहिर्मुखपुरुषोंनैं कथनकऱ्याथा ॥ सोतिनोंकाकहणा हमासिद्धांतियोंकूं प्रतिकूल नहीं है ॥ किंतु सोतिनोंकाकहणा हमारेकूं अनुकूलहै ॥ काहेतें ? पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतें याअधिकारीपुरुषोंकेचित्तविषे जवी मोक्षकाराग उत्पन्नहोवैहै ॥ तबी सोमोक्षकाराग ताचित्तविषे किसीभीविषयकेरागकूं उत्पन्नहोणेदेवैनहीं ॥ याकारणतैंही नचिकेतादिकमहान्पुरुष तामोक्षकीइच्छाकालविषे किसीभीपदार्थकाग्रहण नहींकरतेभयेहैं ॥ और हेशिष्य! वेदोंकाअध्ययन तथापुत्रोंकीउत्पत्ति तथायज्ञादिककर्म यातीनोंकूंनकरिकै जोपुरुष मोक्षकीइच्छाकरैहै सोपुरुष अधोगतिकूंप्राप्तहोवैहै यहमनुभगवान्कावचन मोक्षकीनिंदाकरैहै याप्रकारकावचन जोपूर्व तिनबहिर्मुखपुरुषोंनैं कथनकऱ्याथा ॥ सोतिनोंकाकहणाभी संभवैनहीं॥ काहेतें ? वेदोंविषे तथास्मृतियोंविषे तथाइतिहासपुराणोंविषे जितनेनिंदावचनहोवैहैं ॥ तिननिंदावचनोंका किसीकीनिंदाविषे तात्पर्यहोवैनहीं ॥ किंतु तिननिंदावचनोंका प्रसंगसेप्राप्त

अर्थकीस्तुतिविषेही तात्पर्यहोवैहै ॥ जैसे विष्णुपुराणविषे यहवचनकथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ वासुदेवंपरित्यज्य यउपास्तेऽन्यदैवतं ॥ तृषितोजाह्नवीतीरे कूपंखनतिदुर्मतिः ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष विष्णुकापरित्यागकरिकै अन्यशिवादिकदेवतावोंकी उपासनाकरैहै ॥ सोदुर्बुद्धिपुरुष तृषाकरिकैआतुरहुआ तातृषाकीनिवृत्तिकरणेवासते श्रीगंगाजीकेतीरऊपरि कूपकूं खोदेहै ॥ १ ॥ और शिवपुराणविषेतो याप्रकारकावचन कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ महादेवंपरित्यज्य यउपास्तेऽन्यदैवतं ॥ समूढोविषमश्नाति सुधांत्यक्त्वाक्षुधातुरः ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष महादेवकापरित्यागकरिकै अन्यविष्णुआदिकदेवतावोंकी उपासनाकरैहै ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष क्षुधाकरिकैआतुरहुआ ताक्षुधाकीनिवृत्तिवासते अमृतकापरित्यागकरिकै विषकूंभक्षणकरैहै ॥ १ ॥ यादोनोंप्रकारकेवचनोंविषे प्रथम ताविष्णुपुराणकेवचनका तिनशिवादिकदेवतावोंकीनिंदाविषे तात्पर्यनहींहै ॥ किंतु तावचनका विष्णुकीस्तुतिविषे तात्पर्यहै ॥ तैसे ताशिवपुराणकेवचनकाभी तिनविष्णुआदिकदेवतावोंकीनिंदाविषे तात्पर्यनहींहै ॥ किंतु तावचनका महादेवकीस्तुतिविषे तात्पर्यहै ॥ जोकदाचित् तिनदोनोंवचनोंका शिवविष्णुआदिकदेवतावोंकी निंदाविषेही तात्पर्यहोवै ॥ तौ किसीभीदेवताविषे पूज्यता सिद्धनहींहोवैगी ॥ तैसे तामनुभगवान्केवचनकाभी मोक्षकी निंदाविषे तात्पर्यनहींहै ॥ किंतु अज्ञानीपुरुषोंकी कर्मोंविषेप्रवृत्तिकरावणेवासते तामनुकेवचनका वर्णआश्रमकेकर्मोंकीस्तुतिविषे तात्पर्यहै ॥ जोकदाचित् तामनुभगवान्का मोक्षकीनिंदाविषेही तात्पर्यहोता ॥ तौ सोमनुभगवान् तिसीमनुस्मृतिकेषष्ठेअध्यायविषे मोक्षकेधर्मोंका नहींकथनकरता ॥ और मनुस्मृतिकेषष्ठेअध्यायविषे तामनुभगवान्नैं मोक्षकेधर्मोंका विस्तारतैंनिरूपणकऱ्याहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ तामनुभगवान्केवचनका मोक्षकीनिंदाविषे तात्पर्यनहींहै ॥ किंतु कर्मोंकीस्तुतिविषे तात्पर्यहै ॥ किंवा सोबहिर्मुखवादी जोयाप्रकारकीशंकाकरै ॥ तामनुभगवान्का मोक्षकीनिंदाविषे तात्पर्यहै ॥ और तामनुस्मृतिकेषष्ठेअध्यायविषे जोमनुभगवान्नैं मोक्षधर्मोंकाकथनकऱ्याहै सोभ्रमादिकदोषकेवशतैं कथनकऱ्याहै ॥ सोयहशंकासंभवैनहीं ॥ काहेतैं? साक्षात्श्रुतिभगवतीही तामनुभगवान्कूं सर्वज्ञकहैहै ॥ ऐसेसर्वज्ञमनुभगवान्विषे तेभ्रमादिकदोष संभवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ यद्वैकिंचनम

नुरवदत्तद्भेषजं ॥ अर्थयह॥ यहमनुभगवान् जिसजिसधर्मका कथनकरैहै ॥ सोसोधर्म याजीवोंके कल्याणकाहेतुहै॥ शंका ॥ मनुभगवान्कूं सोमोक्ष अंगीकारहै यहवार्ता यद्यपि सत्यहै ॥ तथापि तामनुभगवान्कूं वेदोंकाअध्ययन पुत्रोंकीउत्पत्ति यज्ञादिक कर्म यातीनोंतैंअनंतरही सोमोक्ष अंगीकारहै ॥ यातीनोंतैंप्रथमही तामोक्षकाअंगीकारनहीं ॥ समाधान ॥ तामनुभगवान्केवचनका जोयुक्तिसैंविचारकरिकैदेखिये ॥ तौ तिनवेदअध्ययनादिकतीनोंतैंअनंतर तामोक्षकाअंगीकार सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतें ? पूर्व मनुभगवान्केवचनविषे बहुतवेदोंकाअध्ययन तथाबहुतपुत्रोंकीउत्पत्ति तथाबहुतयज्ञोंकाकरणा कथनकऱ्याहै ॥ तहां सोबहुत्वपणा तीनपदार्थोंविषे रहेहै ॥ अथवा सोबहुत्वपणा चारि पंच षट् इसतैंआदिलैके अनेकपदार्थोंविषे रहेहै ॥ तहां अनेकशतशाखावों केभेदकरिकै नानाविधकूंप्राप्तभये जेऋगादिकवेदहैं ॥ तिनसर्ववेदोंकेअध्ययनकरणेविषे महान्आयुषवालापुरुषभी समर्थहोइसकैनहीं तौ इदानींकालकेअल्पआयुषवालेपुरुष तिनसर्ववेदोंकेअध्ययनकरणेविषे किसप्रकारसमर्थहोवेंगे ? किंतु नहींसमर्थहोवेंगे ॥ यातैं सर्ववेदोंकाअध्ययनकरणा संभवैनहीं ॥ इसप्रकार तीनपुत्रोंकीउत्पत्तिकरणेविषे तथाअनेकपुत्रोंकीउत्पत्तिकरणेविषेभी यहजीव स्वतंत्र समर्थहोइसकैनहीं ॥ किंतु तिनबहुतपुत्रोंकीउत्पत्ति पूर्वलेपुण्यकर्मरूपअदृष्टकारणोंकेअधीनहोवैहै॥तथा स्त्रीयुवाअवस्थादिकदृष्टकारणोंकेअधीनहोवैहै ॥ जोकदाचित् तिनदृष्टअदृष्टकारणोंकीअपेक्षातैंविनाही यहपुरुष तिनपुत्रोंकीउत्पत्तिविषे स्वतंत्रकारणहोवै तौ यालोकविषे पुत्रकीइच्छावाला कोईभीपुरुष पुत्रोंतैंरहित नहींहोणाचाहिये ॥ और यालोकविषे पुत्रोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरतेहुएभी अनेकपुरुष पुत्रोंतैंरहित देखणेमेंआवैहैं ॥ यातैं बहुतपुत्रोंकीउत्पत्तिकरणीभी संभवैनहीं॥इसप्रकार तीनयज्ञोंकेकरणेविषे तथाअनेकयज्ञोंकेकरणेविषेभी यहपुरुष स्वतंत्रहोइसकैनहीं ॥ किंतु स्त्रीपुत्रधनादिकअनेकपदार्थोंकरिके तिनयज्ञोंकीसिद्धिहोवैहै ॥ यातैं बहुतयज्ञोंकाकरणाभी संभवैनहीं ॥ और सोमनुभगवान्कावचन जोकदाचित् ताबहुतवेदोंकेअध्ययनरूप अशक्यअर्थकूं बोधनकरैगा ॥ तथा बहुतपुत्रोंकीउत्पत्तिरूप अशक्यअर्थकूं बोधनकरैगा॥तथा बहुतयज्ञोंकाअनुष्ठानरूप अशक्यअर्थकूं बोधनकरैगा ॥ तौ सोमनुभगवान्कावचन अप्रमाणरूपहोवैगा ॥ काहेतें ? जोअर्थ याजीवोंकेसुखकासाधनहोवैहै ॥

तथा याजीवोंकेप्रयत्नकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यहोवैहै ॥ तथा दूसरेप्रमाणकरिकैबाधित नहींहोवैहै ॥ ताअर्थकेबोधनकरणेकरिकैही शास्त्रकूं प्रमाणरूपताहोवैहै ॥ यातैं तामनुभगवान्‌केवचनका तिसवेदअध्ययनादिरूपअर्थविषेतात्पर्यनहीं है ॥शंका॥ हेसिद्धांती! तामनुस्मृतिकेवचनकरिकै तामनुभगवान्‌कूं तिनवेदअध्ययनादिकोंविषे अप्राप्तअर्थकेबोधनकरणेहारी अपूर्वविधि अंगीकारनहीं है ॥ किंतु यालोकविषे जेपुरुष आपणेवेदकीशाखाकूंअध्ययनकरैहैं ॥ तथा पुत्रादिकप्रजाकूंउत्पन्नकरैहैं ॥ तथा यज्ञादिककर्मकरैहैं ॥ तिनपुरुषोंविषेही सामोक्षकीइच्छादेखणेमैंआवैहै ॥ और जेपुरुष वेदअध्ययनादिकनहींकरैहैं ॥ तिनपुरुषोंविषे सामोक्षकीइच्छाभी देखणेमैंआवतीनहीं ॥ याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै यालोकोंकूं तिनवेदअध्ययनादिकोंविषे मोक्षकेइच्छाकीकारणताप्रसिद्धहै ॥ तालोकप्रसिद्धकारणताकूं सोमनुभगवान्‌कावचन कथनकरैहै ॥ यातैं सोमनुभगवान्‌कावचन अनुवादरूपहै ॥ जैसे अग्निविषे हिमकेनिवृत्तिकीकारणता सर्वलोकोंकूंप्रसिद्धहै ॥ तालोकप्रसिद्धअर्थकूंकथनकरणेहारा जो अग्निर्हिमस्यभेषजं यहवचन है ॥ सोयहवचन अनुवादरूप है ॥ तैसे सोमनुभगवान्‌का वचनभी अनुवादरूप है ॥ अपूर्वविधिरूप नहीं ॥ **समाधान** ॥ हेवादी! जिसअन्वयव्यतिरेकका किसीभीस्थलविषे व्यभिचार नहींहोवैहै ॥ सोअन्वयव्यतिरेकही कारणताकीसिद्धि करैहै ॥ जैसे मृत्तिका कुलाल दंडादिकोंके विद्यमानहुए घटरूपकार्यकीउत्पत्ति और मृत्तिकादिकोंके अभावहुए ताघटरूपकार्यकी अनुत्पत्ति याप्रकारके अन्वयव्यतिरेकका किसीभीस्थलविषे व्यभिचार होवैनहीं ॥ याकारणतैं सोअन्वयव्यतिरेक मृत्तिकादिकोंविषे घटकेकारणताकूं सिद्धकरैहै ॥ और जिसअन्वयव्यतिरेकका किसीभी स्थलविषे व्यभिचार होवैहै ॥ सोअन्वयव्यतिरेक कारणताकीसिद्धि करिसकैनहीं ॥ जैसेताकुलालकेगृहविषेस्थित जो ताकुलालकी स्त्रीहै तथारासभहै तिनदोनोंकेविद्यमानहुएभी ताघटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और तिनदोनोंके नहींविद्यमानहुएभी ताघटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ यातैं ताकुलालकेस्त्रीका तथारासभका जोघटकेप्रति अन्वयव्यतिरेकहै ॥ सो व्यभिचारीहै ॥ ताव्यभिचारीअन्वयव्यतिरेककरिकै ताकुलालकीस्त्रीविषे तथारासभविषे घटकीकारणतासिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा तिनोंविषे घटकेकारणताका

बाधहीहोवैहै ॥ तैसे इहांप्रसंगविषे वेदअध्ययनादिकोंविषे मोक्षइच्छाकेकारणताकी सिद्धिकरणेवासते जोअन्वयव्यतिरेक तुम नैंकथनकऱ्याहै ॥ सोअन्वयव्यतिरेकभी व्यभिचारीहै ॥ काहेतें ? यालोकविषे वेदकेअध्ययनकरणेहारे तथातीनपुत्रोंवाले तथातीनयज्ञोंवाले बहुतब्राह्मण देखणेमेआवतेहैं ॥ परंतु तिनब्राह्मणोंविषे मोक्षकीइच्छा देखणेमेंआवतीनहीं ॥ उलटा बहुत स्थलविषेतौ तेवेदअध्ययनकरणेहारे तथाबहुतपुत्रोंवाले तथाबहुतयज्ञकरणेहारे ब्राह्मण संसारसुखोंविषेआसक्तहुए तामोक्षतेंव हिर्मुखहुएही देखणेमेंआवैहैं ॥ यातें ताव्यभिचारान्वयव्यतिरेककरिकै तिनवेदअध्ययनादिकोंविषे मोक्षइच्छाकीकारणता सिद्धहो वैनहीं यातें सोमनुभगवान्‌कावचन अनुवादरूपसंभवैनहीं॥शंका॥ हेसिद्धांती ! तामनुस्मृतिकेवचनकरिकै तामनुभगवान्‌मैं नियम विधि कथनकरीहै॥अथवा परिसंख्याविधि कथनकरीहै॥समाधान॥ हेवादी ! तामनुभगवान्‌केवचनविषे नियमविधिरूपता तथा परिसंख्याविधिरूपताभी संभवैनहीं॥काहेतें ? जिसस्थलविषे क्रमतें दोपदार्थ प्राप्तहोवैहैं॥ तिसस्थलविषे जोवचन एकपदार्थकी निवृत्तिकरिकै एकपदार्थका विधानकरैहै॥ तावचनकानाम नियमविधिहै॥ जैसे यज्ञकीअग्निविषे तुषोंतैंरहितव्रीहिरूपअन्नकीआहु ती दईजावैहै॥ तहां तिनव्रीहिरूपअन्नके तुषोंकीनिवृत्ति लोकविषे दोप्रकारकेउपायोंतैंहोवैहै॥ तहां एकतौ नखोंकरिकैहोवैहै॥ और दूसरा मुषलकरिकैकूटणेतैंहोवैहै॥ तिनदोनोंउपायोंविषे किसउपायकरिकै तिनव्रीहिकेतुषोंकीनिवृत्तिकरणी ? याप्रकारकीशं काकेहुए श्रुतिनैं॥ व्रीहीनवहन्यात्॥ यावचनकरिकै मुषलसैंव्रीहियोंकाकूटणा विधानकऱ्या॥ और नखोंतैंतुषोंकीनिवृत्तिकरणे का निवारणकऱ्या याकारणतें॥ व्रीहीनवहन्यात्॥ यहवचन नियमविधिरूपहै॥ तैसे तामनुभगवान्‌केवचनकूं जोनियमविधि रूप अंगीकारकरिये॥ तौ एकपक्षविषेतौ मोक्षकीइच्छा प्राप्तभई॥ और दूसरेपक्षविषे वेदोंकाअध्ययन पुत्रोंकीउत्पत्ति यज्ञोंकाअ नुष्ठान येतीनों प्राप्तभये॥ तहां वेदअध्ययनादिकतीनोंतैं पूर्वप्राप्तभईजामोक्षकीइच्छा तामोक्षकीइच्छाकानिरोधकरिकै यहअधि कारीपुरुष वेदअध्ययनादिकतीनोंकूंकरै याप्रकारका तामनुकेवचनकाअर्थ सिद्धहोवैगा॥ सोनियमविधिरूपतावचनकाअर्थ तबी संभवै॥ जबी तामोक्षकीइच्छाकीनिवृत्तिकरणेविषे यापुरुषकीस्वतंत्रताहोवै॥ परंतु ताइच्छाकेनिवृत्तकरणेविषे यापुरुषकीस्वतंत्रता

नहींहै ॥ यातें मोक्षरूपसुखके सौंदर्यताज्ञानकरिकें याजीवोंविषे उत्पन्नभईजामोक्षकीइच्छाहै ॥ ताइच्छाकूंनिवृत्तकरणेविषे कोईभी जीव समर्थहोइसकैनहीं ॥ तैसे बहुतवेदोंकेअध्ययनकरणेविषे तथाबहुतपुत्रोंकीउत्पत्तिकरणेविषे तथाबहुतयज्ञोंकेअनुष्ठानकरणेविषेभी यहजीव स्वतंत्र समर्थहोइसकैनहीं ॥ यातें तामनुभगवान्केवचनविषे नियमविधिरूपता संभवैनहीं ॥ तैसे तामनुभगवान्के वचनविषे परिसंख्याविधिरूपताभी संभवैनहीं ॥ काहेतें ? जिसस्थलविषे एकहीकालमैं दोपदार्थ प्राप्तहोवैंहैं ॥ तिसस्थलविषे जो वचन एकपदार्थकेनिवृत्तिकूंहीबोधनकरैहै ॥ सोवचन परिसंख्याविधिरूपहोवैहै ॥ जैसे एकहीकालविषे रागकरिकें याजीवोंकूं प्राप्तभयाजो शशक शल्लकी गोधा खड्गी कूर्म यापंचनखवालेपंचजीवोंकाभक्षण तथा मनुष्यवानरादिकपंचनखवालेजीवोंकाभक्षण तिनदोनोंविषे ॥ पंचपंचनखाभक्ष्याः॥ यहश्रुतिवचन पंचनखोंवाले शशकादिकपंचजीवोंतेंभिन्न मनुष्यवानरादिकजीवोंकेभक्षण कीनिवृत्ति बोधनकरैहै ॥ यातें पंचपंचनखाभक्ष्याः यहवचन परिसंख्याविधिरूपहै ॥ तैसे इहांप्रसंगविषे वेदोंकाअध्ययन पुत्रोंकीउत्पत्ति यज्ञोंकाअनुष्ठान येतीनोंतें एककोटीहै ॥ और मोक्षकीइच्छा दूसरीकोटीहै ॥ तेदोनोंकोटी जबी यापुरुषोंविषेप्राप्तहोवै ॥ तबी यापुरुषोंनैं वेदअध्ययनादिकोंकूंहीकरणा ॥ याप्रकार तामनुभगवान्केवचनका विपरिणामकरिकें जबी तामोक्षकेइच्छाका निवारणकरिये ॥ तबीही सोमनुभगवान्कावचन परिसंख्याविधिरूप संभवै ॥ और तामनुभगवान्केवचनकूं परिसंख्याविधिरूपमानिकें जोमोक्षकेइच्छाका निवारणकरिये ॥ तौ तामोक्षकीप्राप्तिवासतें किसीपुरुषविषे परियत्न नहींहोणाचाहिये ॥ और मोक्षकेप्राप्तिवासते परियत्न तथामोक्षकीइच्छा कितनेक अधिकारीपुरुषोंविषे देखणेमेंआवैहै ॥ तथा तामनुभगवान्नैंही मनुस्मृतिकेषष्ठेअध्यायविषे मोक्षधर्मोंका कथनकऱ्याहै ॥ यातें सोमनुभगवान्कावचन परिसंख्याविधिरूप संभवैनहीं ॥ किंवा सोमनुभगवान्कावचन जोकदाचित् मोक्षकेइच्छाकीनिवृत्तिकरताहोवै तौ वेदोंकाअध्ययन पुत्रोंकीउत्पत्ति यज्ञोंकाअनुष्ठान यातीनोंकूंकरिकें यहअधिकारीपुरुष मोक्षकीइच्छाकरै याप्रकारकेवचननैं जोवेदअध्ययनादिकोंतेंअनंतर मोक्षकेइच्छाकाकथनकऱ्याहै ॥ सोअसंगतहोवैगा याकारणतेंभी सोमनुभगवान्कावचन परिसंख्याविधिरूपनहींहै ॥ किंवा वेदअध्ययनादिकोंतेंपूर्व जोपुरुष मोक्षकीइच्छाकरैहै

सोपुरुष अधोगतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारका तामनुभगवान्केवचनकाअर्थ जोपूर्ववादीनें कथनकऱ्याथा ॥ सोअर्थ प्रत्यक्षश्रुति करिकैबाधितहै ॥ काहेतें? श्रुतिभगवतीनेंतौ मोक्षकीप्राप्तिवासते ब्रह्मचर्यआश्रमतेंअनंतरभी संन्यासकाविधानकऱ्याहै॥ तहांश्रुति ॥ यदिवेतरथाब्रह्मचर्यादेवप्रव्रजेत्॥ अर्थयह॥जिसपुरुषकूं विषयोंविषे उत्कटवैराग्यनहींहै॥सोपुरुषतौ ब्रह्मचर्यआश्रमतेंअनंतर गृहस्थआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ और तागृहस्थआश्रमतेंअनंतर वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ और तावानप्रस्थआश्रमतेंअनंतर चतुर्थअवस्थाविषे संन्यासआश्रमकाग्रहणकरै ॥ और जिसपुरुषकूं विषयोंविषे उत्कटवैराग्यहै ॥ सोपुरुष तामोक्षकीप्राप्तिवासते ब्रह्मचर्यआश्रमतेंअनंतरही संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै ॥१॥ इत्यादिकश्रुतिवचनोंकरिकै सोमनुकेवचनकाअर्थ बाधितहै ॥ यातें सोमनुभगवान्कावचन विधिरूपनहींहै किंतु अज्ञानीजनोंकी कर्मोंविषेप्रवृत्तिकरावणेवासते तिनकर्मोंकीस्तुतिकरताहुआ सोमनुभगवान्कावचन अर्थवादरूपहै॥ शंका ॥ हेसिद्धांति! सोमनुभगवान्कावचन तामोक्षइच्छाकेनिषेधकूं सूचनकरैनहीं॥किंतु सोमनुभगवान्कावचन तामोक्षइच्छाकेअभावका विधानकरैहै॥जैसे॥नकलंजंभक्षयेत्॥यहवचन प्राभाकरमीमांसकोंकेमतविषे कलंजभक्षणकेअभावका विधानकरैहै ॥ तैसे सोमनुभगवान्कावचनभी मोक्षइच्छाकेअभावकाही विधानकरैहै ॥ विषयुक्तबाणकरिकैहननकऱ्याजो मृगहै ॥ तामृगकेमांसकानाम कलंजहै॥ समाधान॥हेवादी! मोक्षकीइच्छाकाजोअभावहै ॥ सोअभाव विधानकरणेयोग्यहोवैनहीं ॥ काहेतें ? स्वर्गकामोजयेत॥ इत्यादिकवेदकेवचन यज्ञादिकभावपदार्थोंकाही विधानकरैहै ॥ अभावकूं कोईभीवचन विधानकरैनहीं ॥ और जोवादी तामनुभगवान्केवचनकरिकै मोक्षइच्छाकेअभावकाविधान अंगीकारकरैहै॥तावादीसें यहपूछाचाहीये ॥ सोमनुभगवान्कावचन तामोक्षइच्छाकेप्रागभावका विधानकरैहै ॥ अथवा तामोक्षइच्छाकेअत्यंताभावका विधानकरैहै ॥ अथवा ॥ तामोक्षइच्छाकेअन्योन्याभावका विधानकरैहै ॥अथवा तामोक्षइच्छाकेप्रध्वंसाभावका विधानकरैहै॥ तहां सोमनुभगवान्कावचन तामोक्षइच्छाके प्रागभावका तथाअत्यंताभावका तथाअन्योन्याभावका विधानकरैहै यहतीनपक्षतौसंभवैनहीं॥काहेतें?जोपदार्थ पूर्व किसी प्रमाणकरिकैसिद्धनहींहोवैहै ॥ तापदार्थकाही शास्त्र विधानकरैहै ॥ पूर्वसिद्धपदार्थका कोईभीशास्त्र विधानकरैनहीं ॥ और नै

यायिकवादियोंकेमतविषे प्रागभावतौ उत्पत्तितैंरहितअनादिहै ॥ तथा प्रतियोगीकीउत्पत्तितैंअनंतर सोप्रागभाव नाशकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं ताअनादिप्रागभावका विधानसंभवैनहीं॥ और तिनवादियोंकेमतविषे अत्यंताभाव तथाअन्योन्याभाव यहदोनोंअभाव तौ उत्पत्तिनाश दोनोंतैंरहितहैं ॥ यातैं तिनोंकाभी विधानसंभवैनहीं ॥शंका॥ हेसिद्धांती! ताप्रागभावकी यद्यपि उत्पत्तिसंभवैनहीं तथापि ताप्रागभावका नाशहोवैहै यातैं जैसे॥ब्राह्मणोनहंतव्यः॥ यहश्रुतिवचन ताब्रह्महत्याकेप्रागभावकेरक्षणकरणेका विधान करैहै ॥ तैसे सोमनुभगवान्‌कावचनभी तामोक्षइच्छाकेप्रागभावकेरक्षणकरणेका विधानकरैहै ॥ समाधान ॥ हेवादी! जैसे शास्त्रनें ब्रह्महत्याकरणेकानिषेधकऱ्याहै॥तैसे जोकोईशास्त्र तामोक्षइच्छाकानिषेधकरताहोवै ॥ तौ सोमनुभगवान्‌कावचन तामोक्षइच्छाके प्रागभावका विधानकरै ॥ परंतु तामोक्षइच्छाके निषेधकरणेहारा कोईभीशास्त्र देखीतानहीं ॥ किंतु उलटा शास्त्र तौ मोक्षकीइच्छावान्‌पुरुषकूं महान्‌फलकीप्राप्ति कथनकरैहै ॥ तहांश्रुति ॥ क्षणमेकंक्रतुशतस्य ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाराखिके एकक्षणमात्रभी आत्मविचारकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं १०० शतअश्वमेधयज्ञोंकाफल प्राप्तहोवैहै ॥ १ ॥ इसतैंआदिलेकेअनेकश्रुतिस्मृतिवचन तामोक्षइच्छाकेमहान्‌फलका कथनकरैहै ॥ यातैं तामोक्षकीइच्छाकेप्रागभावकेरक्षणकरणेकाभी विधानसंभवैनहीं ॥ और सोमनुभगवान्‌कावचन तामोक्षइच्छाकेप्रध्वंसाभावका विधानकरैहै ॥ यहचतुर्थपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं? यालोकविषे जोपदार्थ स्वतःसिद्धनहींहोवैहै ॥ तापदार्थकाही शास्त्र विधानकरैहै ॥ और जोपदार्थ स्वतःहीसिद्धहोवैहै ॥ तापदार्थका शास्त्र विधानकरैनहीं ॥ जैसे यालोकविषे अन्नकेभक्षणतैंक्षुधाकीनिवृत्ति स्वतःहीसिद्धहै ॥ यातैं ताअन्नकेभक्षणकरिकैक्षुधाकेनिवृत्तिकरणेका कोईशास्त्र विधानकरैनहीं॥तैसे यहमोक्षकीइच्छाभी क्षणभंगुरहै॥यातैं ताइच्छाकाप्रध्वंसाभावभी स्वतःहीसिद्धहै॥स्वतःहीसिद्धइच्छाकेप्रध्वंसाभावकूं जोकदाचित् सोमनुभगवान्‌कावचन विधानकरैगा ॥ तौ सोमनुभगवान्‌कावचन अप्रमाणरूपहीहोवैगा ॥ किंवा सोमनुभगवान्‌कावचन जो कदाचित् तामोक्षइच्छाकेप्रध्वंसाभावकाविधानकरैगा ॥ तौ सोमनुभगवान्‌कावचन व्यर्थहोवैगा॥ काहेतैं? यालोकविषे जिसपुरुष

का जिसवस्तुविषे जबपर्यंत सौंदर्यताज्ञान बन्यारहेहै ॥ तिसपुरुषकी तिसवस्तुविषे तबपर्यंत एकइच्छाकेनाशहुएभी पुनःदूसरीइच्छा उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे मोक्षरूपनित्यसुखकीसौंदर्यताभी यालोकविषे तथावेदविषे प्रसिद्धही है॥ यातैं एकमोक्षइच्छाकेनाशहुएभी याजीवोंकूं तासौंदर्यताज्ञानकरिकै पुनःदूसरीमोक्षइच्छाहोवैगी यातैं तामोक्षइच्छाकेप्रध्वंसाभावकेविधानकरणेविषे तामनुभगवान्का तात्पर्यनहींहै ॥ किंतु विषयोंविषेआसक्तपुरुषोंका कर्मोंविषेअधिकारदेखिकै तामनुभगवान्नैं तिनविषयआसक्तपुरुषोंकूं कर्मोंविषेप्रवृत्तकरणेवासते मोक्षकीनिंदाद्वारा तिनकर्मोंकीस्तुतिकरीहै॥ शंका ॥ हेसिद्धांती! तामनुभगवान्केवचनका मोक्षइच्छाकेनिषेधविषे तात्पर्यनहींहै ॥ यहअर्थ तुमोनैंकिसप्रकारजान्याहै? ॥समाधान॥ हेवादी! तामनुभगवान्केवचनतैंही सोअर्थ हमोनैं निश्चयकर्याहै ॥ काहेतैं? तामनुस्मृतिकेद्वादशेअध्यायविषे तामनुभगवान्नैं यहवचनकह्याहै॥ तहांश्लोक॥ **सर्वभूतेषुचात्मानं सर्वभूतानिचात्मनि॥ पश्यन्नात्मतयाजीवः स्वाराज्यमधिगच्छति** ॥ अर्थयह ॥ जोअधिकारीपुरुष याआत्मदेवकूं सर्वभूतोंविषे कारणरूपतैंअनुगत देखेहै॥ तथा तिनसर्वभूतोंकूं याअधिष्ठानआत्माविषे कल्पितदेखेहै॥ सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मानंदरूपस्वाराज्यकूं आपणाआत्मरूपकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ १ ॥ याप्रकारकेवचनोंकूंकथनकरताहुआ सो सर्ववेदांतकेअर्थकूंजानणेहारा सर्वज्ञमनुभगवान् तामुमुक्षुजनोंकूं मोक्षकीइच्छातैंनिवारणकिसप्रकारकरैगा ? किंतु नहींनिवारणकरैगा ॥ यातैं मोक्षकीनिंदाविषे तामनुभगवान्का तात्पर्यनहींहै ॥ किंतु कर्मोंकीस्तुतिविषे तामनुभगवान्का तात्पर्यहै ॥ तामनुभगवान्केतात्पर्यकूंनजाणिकरिकै तेविषयासक्तपुरुष तामनुभगवान्केवचनकूं मोक्षकीनिंदाविषेजोडेहैं ॥ ताकरिकै तेबाहिर्मुखपुरुष केवलआपणीमूर्खताकूंही बोधनकरैहैं ॥ किंवा यहपुरुष जबी सर्वविषयोंकेभोगकरिकै वैराग्यकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबीही यहपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकावचन जोपूर्व तिनविषयासक्तपुरुषोंनैं कथनकर्याथा ॥ सोतिनोंकाकहणाकैसाहै ? जैसे संनिपातरोगकेवशतैं यहपुरुष अनेकप्रकारकेशब्दोंका उच्चारणकरैहै ॥ तैसे कामरूपअग्निकेतापकरिकै उत्पन्नभयीजा धातुवोंकीविषमता ताविषमतारूपदोषकेवशतैं सोतिनोंका कहणाहै ॥ यातैं संनिपातरोगवालेपुरुषकेवचनकीन्यांई सोतिनोंकावचन बुद्धिमान्पुरुषोंकूंग्रहणकरणेयोग्यनहींहै ॥ किंवा ॥

सर्वविषयोंकेभोगतैंअनंतर तिनविषयोंविषेवैराग्यकरिकै याजीवोंकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याप्रकारकाअर्थ जोअंगीकारकरिये ॥ तौ यालोकविषे किसीभीजीवकूं तामोक्षकीप्राप्ति नहींहोणीचाहिये॥ काहेतैं? प्रथमतौ मनुष्यादिकजीवोंकी चौराशीलक्षयोनियांहैं और तिनचौराशीलक्षयोनियोंविषेभी एकएकयोनिविषे अनंतव्यक्तियांहैं॥ और तिनअनंतव्यक्तियोंविषेभी एकएकव्यक्तिविषे आपणीआपणीरुचिकेभेदकरिकै अनेकविषयप्राप्तहैं॥ तिनसर्वविषयोंकेभोगतैंअनंतर जोमोक्षकीप्राप्तिहोणीअत्यंतदुर्लभहै॥ यातैंमोक्षके कथनकरणेहाराशास्त्र अप्रमाणरूपहोवैगा॥ किंवा सर्वविषयोंकेभोगतैंअनंतर जोमोक्षकीप्राप्तिअंगीकारकरिये ॥ तौ नरकविषेभीअनेकप्रकारकेविषयहैं ॥ यातैं सोमोक्षकीइच्छावालापुरुष तिनविषयोंकेभोगवासते नरकविषेभीप्राप्तहोवैगा ॥ और कंटकोंकेभक्षणतैं जोस्वादप्राप्तहोवैहै ॥ सोउष्ट्रजातिविषेही प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं कंटकोंकेभक्षणजन्यस्वादकीप्राप्तिवासते सोमोक्षकीइच्छावालापुरुष उष्ट्रशरीरकूंभीप्राप्तहोवैगा ॥ इसप्रकार तिसतिसजातिकेविषयभोगवासते सोमुमुक्षुजन तिसतिसजातिवालेशरीरकूंप्राप्तहोवैगा ॥ किंवा स्वर्गादिकलोकोंविषेस्थित जेदुर्लभ्यविषयहैं ॥ जेविषय अनेकयज्ञोंकरिकैभी प्राप्तहोइसकैंनहीं ॥ तिनसर्वविषयोंकूं कौनपुरुष प्राप्तहोइसकैगा ? किंतु तिनसर्वविषयोंकीप्राप्तिविषे कोईभीपुरुष समर्थनहींहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ! यहअधिकारीपुरुष जबी उपासनाकरिकैहिरण्यगर्भभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तबी याअधिकारीपुरुषकूं सर्वविषयभोगोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तहां सोअधिकारीपुरुष आपणेतैंभिन्न किसीभीभोग्यपदार्थकूंदेखतानहीं॥ यातैं तिनसर्वविषयोंकेभोगअर्थ हमअधिकारीजन ताहिरण्यगर्भभावकीप्राप्तिवासतेही प्रयत्नकरैंगे ॥ समाधान ॥ हेवादी! ताहिरण्यगर्भभावकीप्राप्तिविषे याजीवोंकूं अनेकप्रकारकेविघ्नहोवैहैं ॥ यातैं नानाप्रकारकेउपायोंकरिकै ताहिरण्यगर्भभावकीप्राप्तिही प्रथम दुर्लभहै ॥ ऐसेदुर्लभहिरण्यगर्भभावकी प्रतीक्षाकरिकै जोपुरुष याअधिकारीमनुष्यशरीरविषे मोक्षकेप्रयत्नतैंरहितहोवैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष सर्वबुद्धिमान्पुरुषोंकेउपहास्यका विषयहोवैहै ॥ जैसे गृहकेसमीपस्थितमधुका परित्यागकरिकै जोमूढबुद्धिपुरुष तामधुकीप्राप्तिवासते पर्वतऊपरिजावैहै ॥ सोमूढपुरुष सर्वलोकोंकेउपहास्यकाविषयहोवैहै ॥ किंवा जोपुरुष अहंग्रहउपासनाकरिकै ताब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं तहां मोक्षकीप्राप्तितौ

अवश्यकरिकेंहोवैहै ॥ यातें तामोक्षकेअधिकारीकावर्णनकरताहुआ यहमोक्षशास्त्र निष्प्रयोजनतारूपअप्रमाणताकूं प्राप्तहोवैगा ॥ और मोक्षशास्त्रविषे अप्रमाणताकथनकरणी अत्यंतअनुचितहै ॥ यातें सर्वविषयोंकेभोगतेंअनंतरही मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहतिनवादियोंकाकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ किंवा विषयोंकेभोगतें कामकीशांतिहोवैहै यहजोपूर्व तिनवादियोंनें कथनकर्‍याथा सोतिनोंकाकहणाभी इतिहासपुराणादिकशास्त्रोंकेनजानणेकरिकैंहै ॥ काहेतें ? तिनशास्त्रोंविषेतौ यहकथनकर्‍याहै ॥ बहुतविषयोंकेभोगकरिकै यहकाम शांतिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा तिनविषयोंकेभोगतें सोकाम पूर्वतेंभीअधिकवृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे यालोकविषे घृतकाष्ठोंकेपावणेकरिकै यहअग्नि शांतिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा तिनघृतकाष्ठोंकेपावणेकरिकै सोअग्नि पूर्वतेंभीअधिकवृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे बहुतविषयोंकेभोगणेकरिकै यहकाम शांतिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा तिनबहुतविषयोंकेभोगकरिकै सोकाम पूर्वतेंभीअधिकवृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ किंवा यापृथिवीविषे जितनेव्रीहियवादिकअन्नहैं ॥ तथा जितने सुवर्णादिकधनहैं ॥ तथा जितनेगौअश्वादिकपशुहैं ॥ तेसंपूर्णअन्नादिकपदार्थ जोकदाचित् किसीकामनावालेएकपुरुषकूंभी प्राप्तहोवैं ॥ तौभी ताकामनावालेपुरुषकेतृप्तिकरणेविषे तेसंपूर्णअन्नादिकपदार्थ समर्थहोइसकैंनहीं ॥ तौ अल्पपदार्थोंकरिकै याजीवोंकेकामकीनिवृत्ति किसप्रकारहोवैगी ? किंतु नहींहोवैगी ॥ यातें बहुतविषयोंकाभोग यापुरुषोंकेवैराग्यकाकारणनहींहै ॥ किंतु उलटा सोबहुतविषयोंकाभोग यापुरुषोंकेरागकाहीकारणहै ॥ यातें तिनविषयासक्तपुरुषोंनें जोपूर्वयहकह्याथा ॥ यहअधिकारी पुरुष प्रथमधर्मकूंकरैहै ॥ ताधर्मतें धनादिरूपअर्थकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताधनादिरूपअर्थतें विषयभोगरूपकामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताविषयभोगरूपकामतेंअनंतर वैराग्यकूंप्राप्तहोइके आत्मज्ञानद्वारा मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोयाप्रकारकावचन तिनकामीपुरुषोंनें किसीशास्त्रप्रमाणकेअनुसार नहींकथनकर्‍याहै ॥ किंतु आपणेव्यामोहकेअनुसारही सोवचन तिनोंनें कथनकर्‍याहै ॥ यातें तिनविषयआसक्तपुरुषोंका सोवचन बुद्धिमान्पुरुषोंनें कदाचित्भी नहींअंगीकारकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! विषयभोगकीप्राप्ति जो तारागकेनिवृत्तिकाकारणनहींहै ॥ तौ तारागकेनिवृत्तिका दूसराकौनकारणहै ? ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ! पुत्रस्त्रीधनादिकपदार्थों

विषे जोवारंवार दोषोंकादर्शनहै ॥ सोएकदोषदर्शनही यारागकेनिवृत्तिकाउपायहै ॥ तादोषदर्शनतैंविना दूसराकोईउपाय तारागकेनिवृत्तिकाहैनहीं ॥ हेशिष्य ! याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे वामदेवादिकअधिकारियोंकेसंवादविषे सोविषयोंके दोषदर्शनकाप्रकार हम तुमारेप्रति विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ तथा याआत्मपुराणकेचतुर्थअध्यायविषेभी दध्यङ्अथर्वण इंद्रकेसंवादविषे सोविषयोंकेदोषदर्शनकाप्रकार हम तुमारेप्रति विस्तारतैंकथकरिआयेहैं ॥ यातैं पुनःइहांकहणेका यद्यपि जरूरनहींहै ॥ तथापि ताकेस्मरणकरावणेवासते पुनःसंक्षेपतैं ताविषयोंकेदोषदर्शनकाप्रकार हम तुमारेप्रति कथनकरतेहैं ॥ तू सावधानहोइकैश्रवणकर॥हेशिष्य !यामनुष्यलोकतैंलेके ब्रह्मलोकपर्यंत सर्वलोकोंविषेस्थित जितनेविषयहैं ॥ तेसंपूर्णविषय अनात्मरूपहैं ॥ तथा नाशवान्हैं ॥ तथा परिणामकालविषे दुःखकेकारणहैं ॥ तथा पराधीनहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ यहपुरुष सर्वदाऐसीइच्छाकरैहै ॥ जोयहधनादिकपदार्थ हमारेसमीप सर्वदाबनेरहैं ॥ कदाचित्भी इनधनादिकपदार्थोंकानाश नहींहोवै ॥ तौभी यहधनादिकपदार्थ नाशहोइजावैहैं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ यहधनादिकपदार्थ पराधीनहैं ॥ यापुरुषकेस्वाधीननहींहैं ॥ और हेशिष्य ! ब्रह्मलोकविषेस्थित जोब्रह्माहै॥तथा याभूमिलोकविषेस्थित जोश्वानादिकपशुहै॥तथा नरकविषेस्थित जेनीचजीवहैं ॥ तिन संपूर्णजीवोंकूं स्त्रीआदिकविषयोंकेभोग समानहीप्राप्तहैं ॥ तिनविषयभोगोंविषे किंचित्मात्रभी विलक्षणतानहींहै ॥ और येहमारेविषयभोग सर्वविषयभोगोंतैंउत्कृष्टहैं याप्रकारकीविलक्षणता जोलोकोंकूं आपणेआपणेविषयभोगोंविषे प्रतीतहोवैहै ॥ सो केवल अहंममअभिमानकेवशतैं प्रतीतहोवैहै ॥ और हेशिष्य ! जैसे याभूमिलोकविषेस्थित श्वानकाशरीर आकाशादिकपंचभूतोंकरिकैरचितहै ॥ तैसे ब्रह्मलोकविषेस्थित ब्रह्माकाशरीरभी तिनपंचभूतोंकरिकैहीरचितहै ॥ और जैसे याभूमिलोकविषे ताश्वानका जन्महोवैहै तथामृत्युहोवैहै ॥ तैसे ब्रह्मलोकविषेभी ताब्रह्मका जन्महोवैहै तथामृत्युहोवैहै ॥ और जैसे याशरीरकेसंबंधतैं ताश्वानकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे शरीरकेसंबंधतैं ताब्रह्माकूंभी दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेशिष्य ! यहसंपूर्णविषयभोग याजीवोंकेदुःखकाहीकारणहैं ॥ हयवार्त्ता केवलहम नहींकहते ॥ किंतु संपूर्णब्रह्मवेत्तापुरुषोंका यहहीअभिप्रायहै ॥ याकारणतैंही या

ज्ञवल्क्यादिकब्रह्मवेत्तापुरुष तिनविषयोंविषे अनेकप्रकारकेदोषोंकाविचारकरिकै तिनसर्वविषयोंका परित्यागकरतेभयेहैं ॥ यातैं हेशिष्य ! सापुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्ति रागकीउत्पत्तिद्वारा संसारकाहेतुहोणेतैं यद्यपि ताब्रह्मसाक्षात्कारकाहेतुनहींहै ॥ तथापि श्रुतिभगवतीनैं जोब्रह्मसाक्षात्कारकेसत्यादिकसाधनोंविषे तापुत्रादिकप्रजाकेउत्पत्तिका कथनकऱ्याहै ॥ सो सकामपुरुषोंके स्वर्गा दिकसुखवासते कथनकऱ्याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे पुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्ति याजीवोंके संसारसंबंधीसुखकाकारणहोवैहै ॥ तैसे स त्यादिकसाधनभी याअधिकारीपुरुषोंके ब्रह्मसाक्षात्कारकेहेतुहोवैंहैं ॥ याप्रकार दृष्टांतकेबोधनकरणेवासते ताश्रुतिनैं ज्ञानकेसत्या दिकसाधनोंविषे तापुत्रादिकप्रजाकेउत्पत्तिका कथनकऱ्याहै ॥ किंवा यालोकविषे जोपदार्थ याजीवोंकूं रागकरिकैप्राप्तनहींहोवैहै तिसीपदार्थका शास्त्र विधानकरैहै ॥ और जोपदार्थ याजीवोंकूं रागकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ तापदार्थका शास्त्र विधानकरैनहीं ॥ जैसे यालोकविषे भोजननिद्रादिकपदार्थ याजीवोंकूं रागकरिकैहीप्राप्तहैं ॥ यातैं तिनभोजननिद्रादिकपदार्थोंका शास्त्र विधानकरैनहीं ॥ तैसे मनुष्य पशुपक्षीतैंआदिलैके सर्वजीवोंकूं पुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्ति रागकरिकैहीप्राप्तहै ॥ यातैं तारागप्राप्तपुत्रादिकोंकेउत्पत्ति कूं साश्रुतिभगवती विधानकरैनहीं ॥शंका॥ हेभगवन् ! याअधिकारीपुरुषोंकेप्रति मोक्षकीप्राप्तिवासते श्रुतिनैं कथनकरेजेसत्यादि कधर्महैं ॥ तिनसत्यादिकधर्मोंकेमध्यविषे रागकरिकैप्राप्त तथामोक्षविषेअनुपयोगी पुत्रादिकप्रजाकेउत्पत्तिकाकथनकरणा अत्यंत असंगतहै ॥ समाधान॥ हेशिष्य! मोक्षकीप्राप्तिवासते सत्यादिकसाधनोंकाविधानकरणेहारीजाश्रुतिहै॥ ताश्रुतिविषेस्थित जोप्र जननशब्दहै ॥ सोप्रजननशब्दभी सत्यादिकशब्दोंकीन्यांई आपणेअर्थका विधानहीकरैहै ॥ यहतुमाराकहणा हम अंगीकारकरै हैं ॥ परंतु ताप्रजननशब्दका पुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्तिरूपअर्थ नहींहै॥किंतु विद्याकाअध्यापनही ताप्रजननशब्दकाअर्थहै॥ काहेतैं? यालोकविषे दोप्रकारकावंशहोवैहै ॥ तहां एकतौ शिष्योंकेप्रति विद्याअध्यापनकरिकैवंशहोवैहै ॥ और दूसरा पुत्रादिकोंके जन्म करिकैवंशहोवैहै ॥ यातैं यालोकप्रसिद्धितैं ताप्रजननशब्दकरिकै विद्याकाअध्यापनहीग्रहणकरणा ॥शंका॥ हेभगवन् ! सोप्रजनन शब्द जैसे पुत्रादिकप्रजाकेउत्पत्तिकाविधान नहींकरैहै तैसे सोप्रजननशब्द विद्याअध्यापनकाभी विधानकरैनहीं ॥ काहेतैं ? जोप

दार्थ रागकरिकै तथाप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै नहींप्राप्तहोवैहै ॥ सोपदार्थही शास्त्रकरिकै विधानकरणेयोग्यहोवैहै ॥ और जोपदार्थ पूर्व रागकरिकै तथाप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैप्राप्तहोवैहै।सोपदार्थ शास्त्रकरिकै विधानकरणेयोग्यहोवैनहीं ॥ जैसे क्षुधाकीनिवृत्ति वासतेअन्नादिकोंकाभक्षण रागकरिकै तथाप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै प्राप्तहै ॥ यातैं क्षुधाकेनिवृत्तिवासते अन्नकेभक्षणका कोईशा स्त्र विधानकरैनहीं ॥ तैसे यहविद्याकाअध्यापनभी जीविकाकेवासते ब्राह्मणोंकूं रागकरिकैहीप्राप्तहै॥ तथा ॥ याजनाध्यापनप्रतिग्र हैर्ब्राह्मणोधनमर्जयेत ॥ अर्थयह ॥ यज्ञकरावणा विद्यापढावणी प्रतिग्रहलेणा यातीनउपायोंकरिकै ब्राह्मण धनकूंसंपादनकरै ॥ यावचनकरिकैभी धनकीप्राप्तिवासते सोविद्याकाअध्यापन पूर्वप्राप्तहीहै ॥ यातैं ताप्रजननशब्दकरिकै विद्याअध्यापनकाविधान संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! यहतुमारीशंका तबीसंभवै ॥ जबी हम ताप्रजननशब्दकरिकै केवलविद्याअध्यापनकाहीग्रहण करैं ॥ परंतु ताप्रजननशब्दकरिकै हम केवलविद्याअध्यापनका ग्रहणकरतेनहीं ॥ काहेतें? अद्वितीयआत्माकेस्वरूपकूंबोधनकरणे हारा जोयहब्रह्मविद्याकाप्रकरणहै ॥ ताप्रकरणविषे जैसे सत्यादिकसाधनोंका उपयोगहै ॥ तैसे ताविद्याअध्यापनका उपयोगहै नहीं॥ किंतु ताअध्यापनकाफलभूत जोअद्वितीयब्रह्मविषे सर्ववेदांतशास्त्रकेतात्पर्यकानिश्चयरूपश्रवणहै॥ताश्रवणकाही उपयोगहै याकारणतें सोप्रजननशब्द लक्षणावृत्तिकरिकै ताश्रवणकाही बोधनकरैहै ॥ सोश्रवण रागकरिकै तथाप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरि कै पूर्व प्राप्तहैनहीं ॥ यातैं यापक्षविषे पूर्वउक्तदोष संभवैनहीं ॥ हेशिष्य! पूर्वहमनैं प्रजननशब्दकरिकैपुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्ति क थनकरीथी ॥ तापूर्वपक्षविषेतो तिनपुत्रादिकोंकीउत्पत्तिविषे यौवनअवस्थाकी तथास्त्रीआदिकसाधनोंकी अवश्यकरिकैअपेक्षाहो वैहै ॥ और अबी ताप्रजननशब्दकरिकै हमनैं श्रवणकाकथनकऱ्याहै ॥ यासिद्धांतपक्षविषे ताश्रवणकीउत्पत्तिविषे यौवनअवस्थाकी तथास्त्रीआदिकसाधनोंकी अपेक्षाहैनहीं ॥ किंतु यापक्षविषेतो ताश्रवणकीउत्पतिविषे याअधिकारीपुरुषोंकूं केवलसंन्यासआश्रम कीही अपेक्षाहै ॥ तहांश्रुति ॥ संन्यस्य श्रवणंकुर्यात् ॥अर्थयह॥ यहअधिकारीपुरुष संन्यासआश्रमकूंधारणकरिकैही श्रोत्रियब्रह्म निष्ठगुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रकाश्रवणकरै ॥ इतनैंग्रंथकरिकै प्रजननरूपसप्तमसाधनका निरूपणकऱ्या ॥ अब आहिताग्नि अग्नि

होत्र यज्ञ यातीनसाधनोंका फलसहित निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंविषे जिसपुरुषनैं वेदकाअध्ययनकऱ्याहै ॥ तथा जोपुरुष स्त्रीवालाहै ॥ तिसपुरुषकूंही आहिताग्निविषे तथाअग्निहोत्रविषे तथायज्ञविषे अधिकारहोवैहै॥ वेदअध्ययनादिकोंतैंरहितपुरुषकूं तिनोंविषेअधिकारहोवैनहीं ॥ यातैं तेतीनोंसाधन वेदअध्ययनकी तथास्त्रीआदिकोंकी अवश्यकरिकैअपेक्षाकरैहै ॥ काहेतैं? श्रुतियोंविषे तथा स्मृतियोंविषे याप्रकारकह्याहै॥ जोब्राह्मण तथाक्षत्रिय तथावैश्य स्त्रीवालाहोवै ॥ तथा पुत्रवालाहोवै॥ तथाजिसकेकेश कृष्णवर्णवालेहोवैं॥ तथा अंधत्वबधिरत्वादिकदोषोंतैंरहितहोवै॥ तथा वेदकेकर्मकांडविषेकुशलहोवै॥ तथा धनादिकसंपदावालाहोवै ॥ ऐसाब्राह्मण तथाक्षत्रिय वैश्य शास्त्रउक्तरीतिसैं दक्षिणाग्नि गार्हपत्य आहवनीय सभ्य आवसथ्य यापंचअग्नियोंकूं आपणेगृहविषेस्थापनकरै ॥ अथवा दक्षिणाग्नि गार्हपत्य आहवनीय यातीनअग्नियोंकूं स्थापनकरैहैं॥ कैसेहैंतेपंच अग्नि ? श्रुतिउक्तसर्वकर्मोंकीसिद्धिकरणेहारेहैं॥ याकारणतैं तिनअग्नियोंकूं शास्त्रविषे श्रौतअग्नि यानामकरिकैकथनकरैहैं॥ हेशिष्य! अथर्वणवेदकेअध्ययनकरणेहारे कोईकब्राह्मणतौ एकऋषिनामा एकअग्निकूंही श्रौतअग्निकहैहैं ॥ ता एकऋषिनामाअग्निकाग्रहण तौ विवाहकालतैंलेकरिकैही कथनकरैहैं॥ और हेशिष्य ! कोईकगृह्यसूत्रकारतौ याप्रकार कथनकरैहैं ॥ जिसपुरुषकूं दक्षिणाग्निआदिकश्रौतअग्नियोंकेग्रहणकरणेकासामर्थ्यनहींहोवै ॥ सोपुरुष एक औपासननामा स्मार्तअग्निकाग्रहणकरै ॥ परंतु अग्निआधानतैंविना गृहस्थनैं कदाचित्भीनहींरहणा॥ इतनैंकरिकै आहिताग्नियोंकास्वरूप निरूपणकऱ्या॥ अब तिनअग्नियोंकाफल निरूपणकरैहैं॥ हेशिष्य ! जेपुरुष तिनआहिताग्नियोंकरिकै केवलकर्मोंकूंहीकरैहैं ॥ तेपुरुष इसलोकविषेतौ महान्कीर्त्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और मरणतैं अनंतर स्वर्गलोककूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जेपुरुष तिनआहिताग्नियोंकरिकै उपासनासहितकर्मोंकूंकरैहैं ॥ तेपुरुषभी इसलोकविषेतौ महान्कीर्तिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ और मरणतैंअनंतर देवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहैं ॥ अब अग्निहोत्ररूपनवमेसाधनका फलसहित निरूपणकरैहैं॥ हेशिष्य! पूर्वउक्तआहितअग्नियोंविषे जोसायंकालमैं तथाप्रातःकालमैं आहुतिकापावणाहै याकानाम अग्निहोत्रहै॥ ताअग्निहोत्ररूपकर्मकूं यहगृहस्थपुरुष जबपर्यंतजीवै तबपर्यंतकरै॥ याप्रकारकाविधान अद्यापि श्रुतिनैंकऱ्याहै॥ तथापि ताश्रुति

कायहअभिप्रायहै॥संन्यासकाकारणभूत जोवैराग्यहै ॥ सोवैराग्य जबपर्यंत यापुरुषकूं नहींप्राप्तभयाहै॥तबपर्यंत यहअधिकारीपुरुष ताअग्निहोत्रकूं अवश्यकरिकैकरै ॥ और याअधिकारीपुरुषकूं जबी तिनाविषयोंविषेवैराग्यहोवै ॥ तबी सोअधिकारीपुरुष ताअग्निहोत्रकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकाहीग्रहणकरै ॥ अब ताअग्निहोत्रकाफल निरूपणकरै है ॥ हेशिष्य! गृहस्थपुरुषोंके गृहविषे कंडनी दलनी चुल्ली पेषणी मार्जनी यहपंच जीवहिंसाकेस्थानरहेहैं ॥ तहां जिसविषे व्रीहियवादिकअन्न कूटेजावैहैं ॥ ऐसीजोउलूखलीहै ताकानाम कंडनीहै ॥ और शाकादिकवस्तुवोंके भेदनकरणेकाजोसाधनहै ॥ ताकानाम दलनीहै ॥ और अन्नकेपकावणेकाजोस्थान ताकानाम चुल्लीहै ॥ और अन्नके पीसनेकाजोसाधनहै ताकानाम पेषणीहै ॥ और गृहकेशुद्धकरणेकाजोसाधनहै ताकानाम मार्जनीहै ॥ यापांचोंकरिकै जीवोंकीअवश्यहिंसाहोवैहै ॥ ताहिंसाकरिकैउत्पन्नभयेजेपापहैं॥तेपापकर्म ताअग्निहोत्रवालेगृहस्थकूं प्राप्तहोवैंनहीं ॥ किंवा यहअग्निहोत्रीपुरुष सायंकालविषे तथाप्रातःकालविषे जोअग्निविषे आहुतिपावैहै॥साआहुति ताअग्निद्वारा आदित्यकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताआहुतिविशिष्टआदित्यतैं जलकीवृष्टि उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताजलकीवृष्टितैं व्रीहियवादिकअन्न उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताअन्नतैं मनुष्यादिकप्रजा उत्पन्नहोवैहै ॥ यारीतिसैं सोअग्निहोत्रीपुरुषही सर्वजगत्काकारण होवैहै ॥ तथा सर्वजगत्का पालनकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सर्वजगत्कीतृप्तिकरणेतैं जोपुण्य उत्पन्नहोवैहै ॥ सोपुण्य ताअग्निहोत्रीपुरुषकूं नित्यहीप्राप्तहोवैहै ॥ किंवा यालोकविषे जैसे क्षुधाकरिकैआतुरहुएबालक आपणीमाताकूं आश्रयणकरैहैं ॥ तैसे स्वर्गविषेस्थित इंद्रादिकसर्वदेवता याअग्निहोत्रीपुरुषकूंही आश्रयकरैहैं ॥ याकारणतैं सोअग्निहोत्रीपुरुष तिनइंद्रादिकदेवतावोंकूं माताकेसमानहै ॥ किंवा यहअग्निहोत्रीपुरुष इसलोकविषेभी महान्कीर्त्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा धनादिकपदार्थोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा दर्शपूर्णमासादिकयज्ञोंकेकरणेका अधिकारीहोवैहै ॥ और सोअग्निहोत्रीपुरुष मरणतैंअनंतर स्वर्गलोककूंप्राप्तहोवैहै और सर्वदेवता ताकूं नमस्कारकरैहैं ॥ और जोपुरुष उपासनासहित अग्निहोत्रकूंकरैहैं॥सोपुरुषतौ मरणतैंअनंतर देवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंही प्राप्तहोवैहै ॥ अब यज्ञरूपदशमसाधनका फलसहित निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! पूर्वउक्तआहिताग्नियोंकरिकैसिद्धहोणे

हारे जेअश्वमेधादिककर्महैं तिनोंकानाम यज्ञहै ॥ और दानकरणेकरिकै जिसफलकीप्राप्ति पूर्व कथनकरिआयेहैं ॥ तिसीफल कीप्राप्ति यज्ञकरिकैहोवैहै यातैं यज्ञकेफलका इहां विस्तारतैंनिरूपणकरतेनहीं ॥ अब मानसरूप एकादशेसाधनका फलसहित निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! धर्म सत्य तप दम शम दान प्रजनन आहिताग्नि अग्निहोत्र यज्ञ यहपूर्वकथनकरेजेदशसाधनहैं॥ और आगे जिससंन्यासकाकथनकरैंगे ॥ येसंपूर्णसाधन एकमानससाधनतैंही उत्पन्नहोवैहै ॥ तामानससाधनतैंविना तेधर्मादिकसाधन फलकीप्राप्तिकरैंनहीं॥इहां धैर्ययुक्तमनकानाम मानससाधनहै॥ हेशिष्य! यालोकविषे जिसपुरुषकामन धैर्यकरिकैयुक्तहोवैहै सोपुरुषही तिनधर्मादिकसाधनोंकूं संपादनकरिसकैहै॥ और जिसपुरुषकामन धैर्यतैंरहित अत्यंतदीनहोवैहै ॥ सोदीनपुरुष तिन धर्मादिकसाधनोंकूं संपादनकरिसकैनहीं ॥ याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै यामानससाधनविषेही तिनधर्मादिकसाधनोंकीकारण तासिद्धहोवैहै ॥ हेशिष्य! यालोकविषे प्रवृत्तिरूप तथानिवृत्तिरूप जितनेवैदिककर्म हैं तथा जितने लौकिककर्म हैं तेसंपूर्णकर्म यामनकेहीअधीनहैं॥ मनतैंविना कोईभीकर्म सिद्धहोइसकैनहीं॥ याकारणतैंही श्रुतिनैं ताधैर्ययुक्तमनकूं एकादशवांसाधनरूपकरिकैकथनकऱ्याहै॥ हेशिष्य! यहमानससाधनही सर्वसाधनोंकामूलहै याअर्थविषे हिरण्यगर्भहीदृष्टांतहै॥काहेतें? सोहिरण्यगर्भभगवान् याधैर्ययुक्तमनकेप्रभावतैंही सृष्टिकेआदिकालविषे यासर्वस्थूलजगत्कूंउत्पन्नकरताभयाहै ॥ तथा आपणेस्मरणमात्रकरिकै भक्तजनोंकेसर्वपापकर्मोंकानाशकरैहै॥तथा सर्वजगत्करिकैस्तुतिकरणेयोग्यहै॥ तथा सर्वजगत्करिकै पूजणेयोग्यहै॥हेशिष्य! ताधैर्ययुक्त मनकेप्रभावतैं जैसे सोहिरण्यगर्भ सर्वतैंअधिकताकूंप्राप्तभयाहै ॥ तैसे दूसरेभीअनेकमुनिजन तथाअनेकदेवता तथाअनेकमनुष्य ताधैर्ययुक्तमनकेप्रभावतैं श्रेष्ठताकूंप्राप्तहोतेभयेहैं॥ याकारणतैंही श्रुतिभगवतीनैं मोक्षकीइच्छावान्पुरुषोंकेप्रति तथास्वर्गकीइच्छावान्पुरुषोंकेप्रति तिनधर्मादिकसर्वसाधनोंतैं तामानससाधनकीश्रेष्ठता कथनकरीहै॥ यातैं याअधिकारीपुरुषनैं तामानससाधनकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ अब संन्यासरूपद्वादशेसाधनकी सर्वसाधनोंतैंउत्कृष्टतावर्णनकरणेवासते प्रथम तासंन्यासकेभेदकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! सोसंन्यासआश्रम दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां एकतौ लिंगसंन्यासहोवैहै ॥ और दूसरा अलिंगसंन्यासहोवै

है ॥ तहां दंडादिकचिन्हधारणपूर्वक जोसंन्यासहै ताकानाम लिंगसंन्यासहै ॥ और दंडादिकचिन्हतैंरहित जोसंन्यासहै ताकानाम अलिंगसंन्यासहै ॥ तहां प्रथम लिंगसंन्यासविषेतौ एकब्राह्मणकाही अधिकारहोवैहै॥ क्षत्रियादिकोंका ताकेविषे अधिकारहैनहीं और दूसरे अलिंगसंन्यासविषेतौ क्षत्रिय वैश्य शूद्र स्त्री इत्यादिकसर्वोंकाअधिकारहै ॥ और तिनलिंगसंन्यासियोंके तथाअलिंगसंन्यासियोंके एकदंडादिकचिन्हकूंछोडिकै दूसरे भिक्षाअटनादिकबाह्यधर्म तथाशमदम अहिंसादिक अंतरधर्म तुल्यहीहोवैहैं॥ हे शिष्य! सोप्रथम लिंगसंन्यासभी दोप्रकारकाहोवैहै॥ तहां एकतौ त्रिदंडहोवैहै॥और दूसरा एकदंडहोवैहै॥ तहां जिससंन्यासविषे तीनदंडोंकाधारणहोवै ॥ तासंन्यासकानाम त्रिदंडसंन्यासहै॥ और जिससंन्यासविषे एकदंडकाधारणहोवै ॥ तासंन्यासकानाम एकदंडसंन्यासहै ॥ हेशिष्य! सोत्रिदंडसंन्यासभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां एकतौ कुटीचकनामा त्रिदंडसंन्यासहोवैहै और दूसरा बहूदकनामा त्रिदंडसंन्यासहोवैहै॥ हेशिष्य! जैसे त्रिदंडसंन्यास दोप्रकारकाहोवैहै॥ तैसे सोएकदंडसंन्यासभी दोप्रकारकाहोवैहै॥ तहां एकतौ हंसनामा एकदंडसंन्यासहोवैहै॥ और दूसरा परमहंसनामा एकदंडसंन्यासहोवैहै ॥ अब प्रथम कुटीचकसंन्यासके अधिकारीका तथाताकेधर्मोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जोब्राह्मण पुत्रवालाहोवै ॥ तथा गृहवालाहोवै ॥ तथा धनवान् होवै॥ तथा स्त्रीतैंरहितहोवै ॥ तथा जराअवस्थाकरिकैयुक्तहोवै ॥ तथा व्याधिकरिकैग्रस्तहोवै ॥ तथा पुत्रादिकोंविषे स्नेहवालाहोवै ॥ तथा भिक्षाभोजनकरणेविषे असमर्थहोवै ॥ तथा जिसकाशरीर क्लेशकूंनहींसहारिसकताहोवै ॥ ऐसाब्राह्मण त्रिदंडसंन्यासकूंग्रहणकरै ॥ और आपणेगृहविषेही कुटंबतैंपृथक् कुटीबांधिकैताकेविषेनिवासकरै॥ और आपणेपुत्रोंतैंही अन्नवस्त्रादिकलेवै ॥ और प्रणवादिकमंत्रोंकेजपतैंआदिलैके जितने स्मृतियोंविषे कुटीचकसंन्यासीकेधर्म कथनकरैहैं ॥ तिनसर्वधर्मोंकूं सावधानहोइकै करै ॥ अब बहूदकसंन्यासके अधिकारीका तथाधर्मोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जिसब्राह्मणकीस्त्रीमृत्युहुईहोवै ॥ और पुनः स्त्रीकेसंपादनकरणेविषे जाकीइच्छानहींहोवै ॥ अथवा जिसब्राह्मणकीस्त्री वृद्धअवस्थावालीहोवै ॥ तथा जिसब्राह्मणकी सर्वदा ब्रह्मचर्यधर्मविषेप्रीतिहोवै॥ तथा संध्याउपासनादिककर्मोंविषे जाकीश्रद्धाहोवै ॥ तथा जराअवस्थाकरिकैयुक्तहोवै ॥ तथा पुत्रादिकबां

धर्मोंविषे जिसका स्नेहनहींहोवै ॥ ऐसाब्राह्मण तावहूदकसंन्यासकूं ग्रहणकरै ॥ और सोबहूदकसंन्यासी यापंचमात्रावोंकूं सर्वदा धारणकरै ॥ तहां एकतौ तीनदंड १ और दूसरा जलकेराखणेवासते कमंडलु २ और तीसरा भिक्षाअन्नकेग्रहणकरणेवासते वस्त्र ३ और चतुर्थ भिक्षाअन्नकेभोजनकरणेकापात्र ४ और पंचम जलकेशोधनकरणेकावस्त्र ५ यापंचमात्रावोंकूंधारणकरिकै सोबहूदकना मासंन्यासी कीटकीन्यांई शनैःशनैःपृथिवीऊपरिविचरै ॥ और स्मृतियोंविषे जेबहूदकसंन्यासियोंकेधर्मकथनकरेहैं ॥ तिनसर्वध र्मोंकूं श्रद्धापूर्वककरै ॥ अब हंससंन्यासके अधिकारीका तथाताकेधर्मोंका निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य! जोब्राह्मण विषयसुखोंविषे परमवैराग्यकूंप्राप्तहोइकैभी कर्मोंविषे किंचित्मात्रश्रद्धावालाहोवै ॥ सोब्राह्मण हंससंन्यासकूंग्रहणकरै ॥ और जैसे सामवेदकेअ ध्ययनकरणेहाराब्रह्मचारी शिखातैंरहित यज्ञोपवीतकूंधारणकरैहै ॥ तैसे सोहंससंन्यासीभी शिखातैंरहित यज्ञोपवीतकूंधारणकरि कै तथाएकदंडकूंधारणकरिकै कीटकीन्यांई शनैःशनैःपृथिवीऊपरिविचरै ॥ तथा प्रणवादिकमंत्रोंकेजपतैंआदिलेकै जितनेहंस संन्यासियोंकेधर्म स्मृतियोंविषेकहेहैं ॥ तिनसर्वधर्मोंकूं श्रद्धापूर्वककरै ॥ अब परमहंससंन्यासके अधिकारीका तथाताकेधर्मोंका नि रूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य! जोब्राह्मण इसलोककेविषयसुखोंविषे तथास्वर्गादिकलोकोंकेविषयसुखोंविषे परमवैराग्यकूंप्राप्तहुआहोवै ॥ और हृदयदेशविषेस्थित जोआनंदस्वरूपआत्माहै ताकेप्राप्तिकी जिसकूंनित्यहीइच्छाहोवै ॥ तथा कर्मोंकीवासनातैंरहितहोवै ॥ ऐ साब्राह्मणआपणेहस्तविषे वेणुकेएकदंडकूंधारणकरिकै परमहंससंन्यासकूंग्रहणकरै ॥ और आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते नित्य ही वेदांतशास्त्रकाश्रवणकरै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार कुटीचक बहूदक हंस परमहंस यहच्यारिप्रकारकालिंगसंन्यास श्रुतिस्मृति योंविषेकथनकऱ्याहै ॥ तिसचारिप्रकारकेसंन्यासोंविषेभी चतुर्थ परमहंससंन्यास सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ अब तासंन्यासआश्रमविषे सर्वधर्मोंतैंउत्कृष्टतास्पष्टकरणेवासते प्रथम उत्कृष्टपदार्थोंकीपरंपरा निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जिनदेहधारीजीवोंविषे प्राणोंका श्वासप्रश्वासरूपव्यापार स्पष्टनहींहै ॥ ऐसेवृक्षादिकजीवोंतैं स्पष्टप्राणव्यापारवालेकीटादिकजंतु श्रेष्ठहैं ॥ और तिनस्पष्टप्रा णव्यापारवालेकीटादिकजंतुवोंतैंभी स्पष्टबुद्धिवालेसर्पादिकजीव श्रेष्ठहैं ॥ और तिनस्पष्टबुद्धिवालेसर्पादिकजीवोंतैंभी चारिपा

दवालेअश्वादिकपशु श्रेष्ठहैं ॥ और तिनचारिपादवालेअश्वादिकपशुवोंतैंभी चारिपादवालीगौवां श्रेष्ठहैं ॥ और तिनचारिपा
दवालीगौवोंतैंभी दोपादवालेजीव श्रेष्ठहैं ॥ और तिनदोपादवालेजीवोंतैंभी शूद्रमनुष्य श्रेष्ठहैं ॥ कैसेहैंतेशूद्र ? जन्मतैंआदिलैके
मरणपर्यंत जिनोंका एकहीवर्णआश्रमहोवैहै ॥ और तिनशूद्रोंतैंभी वैश्य श्रेष्ठहैं ॥ और तिनवैश्योंतैंभी क्षत्रिय श्रेष्ठहैं ॥ और ति
नक्षत्रियोंतैंभी ब्राह्मण श्रेष्ठहैं ॥ और यालोकविषे जैसे भूदेवब्राह्मण पूज्यहैं ॥ तैसे अग्निआदिकदेवताभी पूज्यहैं ॥ यातैं शास्त्र
विषे तिनअग्निआदिकदेवतावोंकूं ब्राह्मणोंकेतुल्यही कथनकऱ्याहै ॥ और तिनजातिमात्रब्राह्मणोंतैंभी वेदपाठीब्राह्मण श्रेष्ठहैं ॥
और तिनवेदपाठीब्राह्मणोंतैंभी सामान्यतैंवेदकेअर्थकूंजानणेहारे ब्राह्मण श्रेष्ठहैं ॥ और तिन सामान्यतैंवेदअर्थकेजानणेहारेब्रा
ह्मणोंतैंभी संशयविपर्ययतैंरहित वेदकेअर्थकूंजानणेहारे ब्राह्मण श्रेष्ठहैं ॥ और तिनसंशयविपर्ययतैंरहितब्राह्मणोंतैंभी आपणेव
र्णआश्रमकेकर्मोंकूंकरणेहारे ब्राह्मण श्रेष्ठहैं ॥ और ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास याचारिआश्रमोंविषेभी प्रथम ब्रह्मचर्य
आश्रमतैं गृहस्थआश्रम श्रेष्ठहै ॥ और तागृहस्थआश्रमतैंभी वानप्रस्थआश्रम श्रेष्ठहै ॥ और तावानप्रस्थआश्रमतैंभी संन्यास
आश्रम श्रेष्ठहै ॥ और तासंन्यासआश्रमविषेभी प्रथम कुटीचकसंन्यासतैं बहूदकसंन्यास श्रेष्ठहै ॥ और ताबहूदकसंन्यासतैंभी
हंससंन्यास श्रेष्ठहै ॥ और ताहंससंन्यासतैंभी परमहंससंन्यास श्रेष्ठहै ॥ हेशिष्य ! याचारिप्रकारकेसंन्यासियोंविषेभी जेचतु
र्थ परमहंससंन्यासी हैं ॥ तेपरमहंससंन्यासीतौ ब्रह्मकेसाक्षात्कारवासतेही तासंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरैहैं ॥ याकारणतैं श्रुतिभ
गवती तिनपरमहंससंन्यासियोंकूं ब्रह्मवित् ब्रह्मनिष्ठ यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ हेशिष्य ! याआनंदस्वरूपआत्माकूं स्थूल सू
क्ष्म कारण यातीनशरीरोंतैं भिन्नकरिकै जानणेवासतेही श्रुतिनैं यासंन्यासआश्रमका विधानकऱ्याहै ॥ और जोपुरुष तासंन्यास
आश्रमकाधारणकरिकैभी ताआत्मविचारकूंनहींकरैहै ॥ किंतु मोहकेवशहुआ जोपुरुष कर्मोंकूंहीकरैहै ॥ सोसंन्यासी पतितहोवैहै ॥६१॥
॥ हेशिष्य ! यहवार्त्ता वार्त्तिकग्रंथकेकर्त्ता सुरेश्वराचार्यनैंभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ त्वंपदार्थविवेकाय संन्यासःसर्वकर्मणां॥श्रुत्या
विधीयतेयस्मात् तत्त्यागीपतितोभवेत् ॥ अर्थयह ॥ श्रुतिभगवतीनैं त्वंपदार्थआत्माकाविवेककरणेवासतेही सर्वकर्मोंकासंन्या

स विधानकऱ्याहै ॥ यातैं जोपुरुष संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिकै ताआत्मविचारकूंनहींकरैहै ॥ सोपुरुष पतितहोवैहै ॥ १ ॥ हे शिष्य ! जोपुरुष तासंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिकै निरंतर आत्माकाविचारकरैहै ॥ सोपुरुष ब्रह्मरूपहीहोवैहै ॥ तहां श्रुति ॥ ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति ॥ अर्थयह ॥ आत्मरूपब्रह्मकूंसाक्षात्कारकरिकै यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मरूपहीहोवैहै ॥ हेशिष्य ! यालोकविषे कार्यकारणरूपकरिकै तथास्थूलसूक्ष्मरूपकरिकै तथापरअपररूपकरिकै जितनेपदार्थ प्रसिद्धहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ ब्रह्मरूपही हैं ॥ तहांश्रुति ॥ सर्वंखल्विदंब्रह्म ॥ अर्थयह ॥ यहसर्वजगत् ब्रह्मरूपहीहै ॥ ऐसे सर्वात्मरूपब्रह्मका जिनपुरुषोंकूं आपणाआत्मरूपकरिकैसाक्षत्कारहोवैहै ॥ तेब्रह्मवेत्तापुरुषभी सर्वजगत्का आत्मरूपहीहोवैहै ॥ ऐसेब्रह्मवेत्तापुरुषोंतैं भूत भविष्यत् वर्त्तमान कोईभीपदार्थ उत्कृष्टनहींहै ॥ किंतु सोब्रह्मवेत्तापुरुषही सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ याकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी सर्वजगत्तैं उत्कृष्टहै ॥ हेशिष्य ! जैसे कार्यकारणरूपसर्वजगत्कीअपेक्षाकरिकै सोब्रह्म परहै ॥ तैसे तापरब्रह्मकीप्राप्तिकरणेहारा यहसंन्यासभी तपादिकसर्वसाधनोंतैं परहै ॥ और तासंन्यासतैंभिन्न जितनेतपादिकसाधनहैं ॥ तेसंपूर्णसाधन तासंन्यासतैंनिकृष्टहैं ॥ यहसंन्यासही तिनसर्वसाधनोंतैंअधिकहै ॥ हेशिष्य ! तासंन्यासविषे ब्रह्मरूपताकेस्पष्टकरणेवासते तथा सर्वजगत्कीकारणरूपताकेस्पष्टकरणेवासते ते तित्तिरिनामाब्राह्मण याप्रकारकीयुक्ति कथनकरैहैं ॥ यालोकविषे जीवोंकूं ब्रह्मभावकीप्राप्तिकरणेहारा जोब्रह्मात्मसाक्षात्कारहै ॥ सोब्रह्मात्मसाक्षात्कार याअधिकारीपुरुषोंकूं संन्यासआश्रमकरिकैही प्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं यहसंन्यास कारणब्रह्मरूपहै ॥ जिसमूलकारणरूपब्रह्मतैं समष्टिसूक्ष्मभूतउपाधिवाला सूत्रआत्मा उत्पन्नहोवैहै ॥ जासूत्रआत्माकूं शास्त्रविषे हिरण्यगर्भ ब्रह्मा यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ और ताहिरण्यगर्भरूपसूत्रआत्मातैं समष्टिस्थूलउपाधिवाला प्रजापति उत्पन्नहोवैहै ॥ जाप्रजापतिकूं श्रुतिभगवती विराट् संवत्सर आदित्य इत्यादिकनामोंकरिकै कथनकरैहै ॥ हेशिष्य ! याआदित्यमंडलविषे जो सुवर्णकेसमानवर्णवाला स्वयंज्योतिपुरुष स्थितहै ॥ तास्वयंज्योतिपुरुषविषेही यासर्वजगत्कीकारणता प्रत्यक्षप्रतीतहोवैहै ॥ काहेतैं ! सोस्वयंज्योतिपुरुष आपणेशरीरतैंउत्पन्नहुईकिरणोंकरिकै यापृथ्वीविषेस्थितसर्वजलकूं

आकर्षणकरैहै ॥ और ताआकर्षकरेहुएजलकूं पुनः आपणीकिरणोंद्वारा मेघोंविषेस्थापनकरैहै ॥ और तिनमेघोंद्वारा तिस जलकूं याभूमिलोकविषे प्राप्तकरैहै ॥ और ताजलतैंयापृथ्वीविषे वृक्षादिकस्थावरप्राणी उत्पन्नहोवैहै ॥ तथा व्रीहियवादिकअनेकप्रकारकीऔषधियां तथावनस्पतियां उत्पन्नहोवैहैं ॥ और तिनस्थावररूपऔषधिवनस्पतियोंतैं व्रीहियवादिअन्न उत्पन्नहोवैहै ॥ और तिनव्रीहियवादिकअन्नोंतैं यामनुष्यादिकसर्वप्राणियोंकी उत्पत्तिहोवैहै ॥ तथा तिनसर्वजीवोंकेप्राणोंकाधारणहोवैहै ॥ यातैं सोआदित्यमंडलविषेस्थित स्वयंज्योतिपुरुषही अन्नद्वारा यासर्वजगत्काकारणहै ॥ अब याही अर्थकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम ताव्रीहियवादिअन्नविषे परंपरासंबंधकरिकै स्वर्गादिकसुखकी तथामोक्षकी कारणता निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! ताव्रीहियवादिकअन्नतैंउत्पन्नभयेजेप्राणहैं ॥ तिनप्राणोंतैंकर्मउपासनाकरणेकासामर्थ्यरूपबल उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताबलतैं शुद्धकर्मरूपतप उत्पन्नहोवैहै ॥ जिसतपकूं भृगुऋषिनैं वरुणपिताकेउपदेशतैं संपादनकऱ्याहै ॥ और ताशुद्धकर्मरूपतपतैं परलोकविषेआस्तिकबुद्धिरूपश्रद्धा उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताश्रद्धातैं शास्त्रकेअर्थधारणकरणेविषेसमर्थबुद्धिरूपमेधा उत्पन्नहोवैहै ॥ और तामेधातैं मनकेरोकणेविषेसमर्थ बुद्धिकीवृत्तिरूपमनीषा उत्पन्नहोवैहै ॥ जिसमनीषाकरिकै रोक्याहुआयहमन सर्वलौकिकपदार्थोंकापरित्यागकरिकै केवल शास्त्रकेअर्थविषेही प्रवृत्तहोवैहै ॥ और तामनीषातैं शास्त्रअर्थकीवासनाकरिकैयुक्त शुद्धमन उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताशुद्धमनतैं आत्माकारवृत्तिरूपशांति उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताशांतितैं आत्माकेआनंदादिकस्वरूपकूंनिर्णयकरणेहारा अंतःकरणकीवृत्तिविशेषरूपचित्त उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताचित्ततैं गुरुउपदिष्टवेदवाक्योंकेअर्थकूंविषयकरणेहारीस्मृति उत्पन्नहोवैहै ॥ और तास्मृतितैं शोधिततत्त्वंपदकेअर्थकाप्रकाशरूपस्मर उत्पन्नहोवैहै ॥ और तास्मरतैं ब्रह्मात्माकापरोक्षज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ और तापरोक्षज्ञाननतैं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाअपरोक्षज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ हे शिष्य! इसप्रकार सोब्रह्मरूपसंन्यास ताव्रीहियवादिकअन्नका कारणरूपभीहै तथाफलरूपभीहै ॥ तहां आदित्यमंडलस्थपुरुषरूपकरिकैतौ सोब्रह्मरूपसंन्यास ताअन्नका कारणरूपहै ॥ और प्राणादिकपरंपराकरिकैतौ सोब्रह्मरूपसंन्यास ताअन्नकाफल

रूपहै॥ इसप्रकार ताव्रीहियवादिकअन्नकूं कारणरूपतैं तथाफलरूपतैं ताब्रह्मकेसंबंधवालाजानिकै जेअधिकारीपुरुष अतिथिकेप्रति ताअन्नकादानकरैहैं॥ तेअधिकारीपुरुष ताअन्नके पूर्वउक्तसर्वकारणोंका तथासर्वकार्योंका दानकरैहैं॥ शंका॥ हेभगवन्! कार्यकेदानकियेतैं ताकार्यकेसर्वकारणोंकादान तथाकारणकेदानकियेतैं ताकारणकेसर्वकार्योंकादान संभवतानहीं॥समाधान॥ हेशिष्य! यालोकविषे जोकोईपुरुष किसीब्राह्मणकेप्रति याप्रकारकादानकरैहै॥ यहहमाराआम्रकावृक्ष जबपर्यंतरहै॥ तबपर्यंत यावृक्षकेफल आपनैंग्रहणकरणे॥ यास्थलविषे कार्यरूपफलोंकेदानकियेतैं तिनफलोंकेकारणरूपवृक्षकाभीदानहोवैहै॥ यातैं कार्यकेदानकियेतैं कारणकादान संभवैहै॥ और जोपुरुष ब्राह्मणकेप्रति गौदानदेवैहै॥ सोपुरुष ताकारणरूपगौकेदानकियेतैं तागौकेकार्यरूपदुग्धादिकोंकाभी दानकरैहै॥ यातैं कारणकेदानकियेतैं कार्यकादानभी संभवैहै॥ तैसे अन्नकेदानकियेतैं ताअन्नके पूर्वउक्तसर्वकारणोंका तथासर्वकार्योंका दान संभवैहै॥ और हेशिष्य! पूर्वउक्तअन्नमयकोशतैं प्राणमयकोश उत्पन्नहोवैहै॥ और ताप्राणमयकोशतैं मनोमयकोश उत्पन्नहोवैहै॥ और तामनोमयकोशतैं विज्ञानमयकोश उत्पन्नहोवैहै॥ और ताविज्ञानमयकोशतैं आनंदमयकोश उत्पन्नहोवैहै॥ इसप्रकार पंचकोशरूपकरिकै यहअन्नहीस्थितहोवैहै॥ याकारणतैंभी यहअन्नही सर्वजगत्‌काकारणहै॥ हेशिष्य! श्रुतिविषे विज्ञानमयकोशतैं जोआनंदमयकोशकीउत्पत्ति कथनकरीहै॥ ताकायहअभिप्रायहै॥ यहआनंदमयकोश पुच्छप्रतिष्ठाभूतशुद्धब्रह्मरूपकरिकै यद्यपि उत्पत्तिनाशतैंरहितहै॥ तथापि प्रिय मोद प्रमोद इत्यादिकवृत्तिविशिष्टरूपकरिकै सोआनंदमयकोश उत्पत्तिनाशवालाहै॥ यातैं ताप्रियादिकवृत्तिविशिष्टरूपकूंअंगीकारकरिकै ताश्रुतिनैं विज्ञानमयकोशतैं आनंदमयकोशकीउत्पत्ति कथनकरीहै॥ अब ताआनंदमयपुरुषविषे वास्तवतैं उत्पत्तिनाशकाअभाव स्पष्टकरणेवासते प्रथम ताआनंदमयपुरुषकेविभूतिका निरूपणकरैहैं॥ हेशिष्य! सोएकहीआनंदमयपुरुष भूमि अंतरिक्ष स्वर्ग पूर्वादिकचारिदिशा अग्निकोणादिकचारिउपदिशा यापंचरूपोंकरिकै पंचप्रकारका उत्पन्नहोवैहै॥ हेशिष्य! ताआनंदमयपुरुषके यहकेवलपंचरूपनहींहै॥ किंतु जैसे तंतुवोंकरिकै यहपट सर्वओरतैंओतप्रोतहोवैहै॥ तैसे यातीनलोकोंविषे भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषे

स्थित जितनास्थूलसूक्ष्मजगत्है ॥ सोसंपूर्णजगत् याआनंदस्वरूपआत्माकरिकैही व्याप्तहै ॥ यातें सोआनंदस्वरूपआत्माही सर्वजगत्रूपहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्माही विचाररूपजिज्ञासाकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्माही फलरूपकरिकै कर्मोंतें उत्पन्नहोवैहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्माही सुवर्णादिकसमीचीनवस्तुवोंविषे अंशरूपकरिकैस्थित होवैहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा याअधिकारीपुरुषोंकूं श्रद्धाकरिकै तथासत्यकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताआनंदस्वरूपआत्माकूं श्रद्धा सत्य यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती याआनंदस्वरूपआत्माकूं महस्वत् यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और भृगुऋषिनैं वरुणपिताकेउपदेशतें जिसविचाररूपतपकूं कन्याथा ॥ तिसतपतैंभी यहआनंदस्वरूपआत्मा श्रेष्ठहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याआनंदस्वरूपआत्माकूं तपसोवरिष्ठ यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ इतनैंकरिकै ताआनंदस्वरूपआत्माकामहिमा कथनकऱ्या ॥ अब ताआनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानकाफल निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! ऐसेआनंदस्वरूपपरमात्मादेवकूं जबी यहअधिकारीपुरुष आपणाआत्मरूपकरिकैसाक्षात्कारकरैहै ॥ तबी यहअधिकारीपुरुष जीवतअवस्थाविषेतौ अविद्यादिकसर्वक्लेशोंतैंरहितहोवैहै ॥ और याशरीरकेमरणतैंअनंतर पुनःमृत्युकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ हेशिष्य! जिसआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकै यहअधिकारीपुरुष पुनःमृत्युकूंनहींप्राप्तहोवैहै॥ सोअज्ञानकेनाशकरणेहारा आत्मज्ञान याजीवोंकूं इसलोकविषे अथवा ब्रह्मलोकविषे जोप्राप्तहोवैहै ॥ सोसंन्यासकेप्रभावतैंही प्राप्तहोवैहै॥ याकारणतैं ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष तासंन्यासकूं पूर्वउक्तसत्यादिकसर्वसाधनोंतैं श्रेष्ठकहैहैं ॥ अब संन्यासकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य जोआत्माहै ताकेस्वरूपका निरूपणकरैहैं॥ हेशिष्य! जोस्वयंप्रकाश आनंदस्वरूपआत्मा संन्यासकरिकैप्राप्तहोवैहै॥ सोआत्मादेव उत्पत्तिनाशतैंरहितहै ॥ यातैंसत्यरूपहै॥ और सोआत्मादेव दुर्विज्ञेयहै यातैंसूक्ष्मरूपहै ॥ और सोआत्मादेव आकाशादिकोंकाभीअधिष्ठानहै यातैं विभुरूपहै ॥ और सोआत्मादेव याशरीरकेअंतर प्राणअपानका नियंतारूपकरिकैस्थितहै ॥ तथा प्राण अपान यादोनोंके व्यानरूपसंधिकूंकरताहुआ सोआत्मादेव परिछिन्नतारूप वामनसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताआ

त्मादेवकूं प्राणसंधाता यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ पुनःसोआत्मादेव कैसाहै ॥ ब्रह्मरूपहै ॥ तथा सर्वजगत्का पालनकरणेहाराहै ॥ तथा सूर्य चंद्रमादिकोंकूं तेजकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तथा ब्राह्मणादिकोंकूं वर्चसकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ इहां जो ज्योतिपदार्थ दाहका तथाप्रकाशका कारणहोवैहै ॥ ताज्योतिपदार्थकानाम तेजहै ॥ जैसे सूर्यचंद्रमादिकहैं ॥ और जो ज्योतिपदार्थशरीरकेसौंदर्यताकाकारणहोवैहै ॥ ताज्योतिप दार्थकानाम वर्चसहै ॥ हेशिष्य ॥ यह आत्मादेव तिनब्राह्मणादिकोकूं जो वर्चसकीप्राप्तिकरैहै ॥ सोजठराग्निरूपकरिकैकरै है ॥ काहेतैं यह जीवोंकाजठराग्नि जभी अन्नकूंपचावैहै ॥ तभीही रसादिकधातुद्वारा याशरीरोंविषे सौंदर्यताकाकारण वर्चसहोवैहै ॥ जावर्चसकरिकै यहपुरुष रोगतैंरहितहोवै ॥ तथा सुंदरकांतिवालाहोवैहै ॥ और हे शिष्य ॥ सुवर्णदर्पणादिकस्वच्छपदार्थोंविषे जोसूर्यकेकिरणोंकेसंबंधकरिकै परप्रकाश ज्योतिरूप उत्पन्नहोवै है ताकानाम द्युम्नहै ॥ ताद्युम्नकेदेणेहाराभी यह आत्मादेवही है ॥ अथवा ॥ सूर्यचंद्रमाकाजोतेजहै ताकानाम द्युम्नहै ॥ और अग्निकाजोतेज है ताकानाम वर्चसहै जोआनंदस्वरूपआत्मा तासूर्यचंद्रमाकूं तथाअग्निकूं तातेजकीप्राप्तिकरैहै॥सोईहीआनंदस्वरूपआत्मा याअधि कारीपुरुषोंकूं संन्यासकरिकैप्राप्तहोणेयोग्यहै ॥ हेशिष्य ॥ अहिंसासत्यादिकपंचयम यासंन्यासके समीपरहैहैं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तासंन्यासकूं उपयाम यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा ताउपयामरूपसंन्यासकरिकैही प्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुति भगवती याआनंदस्वरूपआत्माकूं उपयामगृहीत यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ हेशिष्य ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा स्वप्रकाशहै ॥ याकारणतैं श्रुति भगवती याआनंदस्वरूपआत्माकूं मह या नामकरिकैकथनकरैहै ॥ और यह आनंदस्वरूपआत्मा सत्‌चित्‌आनंदस्वरूपहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याआत्मादेवकूंब्रह्म यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ हे शिष्य ॥ जाबाल आदिकउपनिषदोंविषे जोसंन्यासग्रहणकरणेकाप्रकार निरूपणकऱ्याहै ॥ तिसप्रकारसैं संन्यासआश्रमकाग्रहणकरिकै तथाजीवब्रह्मकेअभेदकूंबोधनकरणेहारा जोप्रणवमंत्रहै ताकूंभलीप्रकारजानि करिकै तथाहंसादिकउपनिषदोंकरिकैकथनकऱ्याजोयोगहै तायोगकूंआश्रयणकरिकै यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं आपणेआत्माकूं ब्रह्मरूपकरिकैचिंतनकरै ॥ ताचिंतनकरिकै यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अब कथनकरीहुई ब्रह्मविद्याका फलनिरूपणकरै हैं ॥ हे शिष्य ॥ तिन तित्तिरिनामाब्राह्मणोंनैंआपणेशिष्योंकेप्रति जायहब्रह्मविद्याकथनकरीहै ॥ सायहब्रह्मविद्या कैसीहै ॥ अज्ञानरूपमोहकेनाशक रणेहारीहै ॥ और अग्निआदिकदेवताभी निधिकीन्याईं जिसब्रह्मविद्याका रक्षणकरैहैं ॥ याकारणतैं साब्रह्मविद्या अग्निआदिकदेवतावोंकाभी

गुह्यधनहै ॥ ऐसीब्रह्मविद्याकूं जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं निश्चयकरैहै ॥ सोअधिकारीपुरुषही ताअद्वितीयब्रह्मभावकूंप्रतहोवैहै ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं ताब्रह्मभावकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष सर्वप्रकारतैं याब्रह्मविद्याका संपादनकरै ॥ हे शिष्य ॥ यह आत्मज्ञानरूप ब्रह्मविद्या आपणीसमीपताकरिकै याकार्यसहितअज्ञानकानाशकरैहै ॥ याकारणतैं यहउपनिषद्शब्द ताब्रह्मविद्याकाही वाचकहै ॥ और ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिकरणेहारा यहतैत्तिरीयकनामाग्रंथहै ॥ याकारणतैं यातैत्तिरीयकनामाग्रंथकूंभी शास्त्रवेत्तापुरुष उपनिषद्नामकरिकैकथनकरैहैं ॥ हे शिष्य ॥ यजुर्वेदकेतित्तिरिनामाशाखाविषे तिनतित्तिरिनामाब्राह्मणों नैं आपणेशिष्योंकेप्रति जाब्रह्मविद्या कथनकरी है ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं याआत्मपुराणकेदशमअध्यायविषे निरूपणकरी है ॥ इसब्रह्मविद्यातैंअधिककोईब्रह्मविद्या ता तित्तिरिशाखाविषेहैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ यानारायणउपनिषद्के अंतविषे ताब्रह्मवेत्तापुरुषकेज्ञाननिष्ठारूपयज्ञके जो आत्मा यजमानहै श्रद्धा पत्नीहै इत्यादिअंग निरूपण करे हैं ॥ सोआत्मसाक्षात्कारवासतै नहींकथनकरे हैं ॥ किंतु मंदबुद्धिपुरुषोंके चित्तकीशुद्धिकरणेवासतैं उपासनाकाप्रकार कथन कऱ्याहै ॥ हेशिष्य ॥ तित्तिरिनामाब्राह्मणों नैं आपणेशिष्योंकेप्रति जाब्रह्मविद्याकथनकरीथी सासंपूर्णब्रह्मविद्याहमनैं तुमारेप्रति कथनकरी ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारेकूंइच्छाहोवै ॥ सोहमारेप्रतिकहो ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वाम्युद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृताऽऽत्मपुराणे तैत्तिरीयसारार्थप्रकाशो नाम दशमोऽध्यायः समाप्तः ॥ १० ॥

श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाऽऽत्मपुराणे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अथआत्मपुराणेश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां
एकादशाऽध्यायःप्रारंभः॥ ११ ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ एकादशाऽध्याय प्रारंभः ॥ पूर्वदशमअध्यायविषे यजुर्वेदके तैत्तिरीयकउपनिषद्का तथानारायणउपनिषद्का अर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब याएकादशेअध्यायविषे जाबालउपनिषद् १ गर्भउपनिषद् २ अमृतनादउपनिषद् ३ हंसउपनिषद् ४ क्षुरिकाउपनिषद् ५ आरुणेयउपनिषद् ६ ब्रह्मउपनिषद् ७ परमहंसउपनिषद् ८ महत्उपनिषद् ९ आत्मबोधउपनिषद् १० और कैवल्यउपनिषद् ११ याएकादशउपनिषदोंका अर्थ निरूपणकरैहैं ॥ तहां पूर्वदशमअध्यायविषे तित्तिरिनामाब्राह्मणोंके ब्रह्मविद्याकूं श्रवणकरिकै सोशिष्य परम आश्चर्यकूंप्राप्तहोताभया ॥ और साधनोंसहित तथाफलसहित परमहंससंन्यासकेपूछणेकीइच्छाकरताहुआ सोशिष्य आपणेगुरुकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन्! ऐतरेयऋषिनैं तथाकौषीतकिऋषिनैं तथासूर्यभगवाननैं तथाश्वेताश्वतरऋषिनैं तथाकठऋषिनैं तथातित्तिरिऋषिनैं आपणेआपणेशिष्योंकेप्रति जाजाब्रह्मविद्या उपदेशकरीथी ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्या पूर्व आपनैं हमारेप्रति कथनकरी ॥ कैसीहैसाब्रह्मविद्या? दुःखरूपीससमुद्रकेसुकावणेहारीहै ॥ हेभगवन्! याआत्मपुराणकेप्रथम अध्यायविषे आपनैं ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमअध्यायविषे सनकादिकऋषियोंके तथावामदेवादिकअधिकारियोंके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणकेदूसरेअध्यायविषे तथातीसरेअध्यायविषे आपनैं तिसीऋग्वेदके कौषीतकिउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां द्वितीयअध्यायविषे आपनैं देवराजइंद्रके तथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणकेतृतीयअध्यायविषे राजाअजातशत्रुके तथाबालाकिब्राह्मणके संवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषे आपनैं यजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहांयाआत्मपुराणकेचतुर्थअध्यायविषे दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंविषेस्थितऋषियोंका परस्पर भेद तथाअभेद आपनैं कथनकऱ्याथा ॥ तथा अश्विनीकुमारोंकेसाथ जोसर्वज्ञऋषिकासंवादहुआथा ॥ सोभी आपनैं कथनकऱ्याथा ॥ और दध्यङ्ऋषिनैं जाब्रह्मविद्या

देवराजइंद्रकेप्रति तथाअश्विनीकुमारोंकेप्रति उपदेशकरीथी ॥ साब्रह्मविद्याभी आपनैं कथनकरीथी ॥ और तादध्यङ्ऋषिकीमहानता तथाइंद्रकीदुरात्मताभी आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा ब्रह्मविद्याकेलोभकरिकै गुरुकेमस्तककाछेदनरूप जोअश्विनीकुमारोंका अनुचितकर्मथा ॥ सोभी आपनैं कथनकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणके पंचमअध्यायविषे जनकराजाकेयज्ञसभाविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथाआश्वलादिकब्राह्मणोंके परस्पर जल्परूपसंवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा ब्रह्मवेत्तायाज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरिकै शाकल्यब्राह्मणकामृत्युभी आपनैं कथनकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथाजनकराजाके दोवारसंवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणके सप्तमअध्यायविषे तिसीयाज्ञवल्क्यमुनिके तथामैत्रेयीस्त्रीके तथामैत्रेयीस्त्रीकेनानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा तायाज्ञवल्क्यमुनिकेसंन्यासआश्रमकाभी आपनैं निरूपणकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताअष्टमअध्यायविषे श्वेताश्वतरऋषिके तथासंन्यासियोंके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा सर्वजगत्केकारणका निरूपणकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणकेनवमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तानवमअध्यायविषे यमराजाके तथा नचिकेताके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणके दशमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके तैत्तिरीयकउपनिषद्का तथानारायणउपनिषद्का अर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादशमअध्यायविषे वरुणऋषिके तथाभृगुऋषिके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा वेननामागंधर्वकाअनुभव कथनकऱ्याथा ॥ हेभगवन्! तादशमअध्यायविषे आपनैं धर्मतैंआदिलैके संन्यासपर्यंत मोक्षकेसाधनोंकीपरंपरा कथनकरीथी ॥ तहां अंत्यविषे कुटीचक बहूदक हंस परमहंस याचारिप्रकारकेसंन्यासविषे सर्वसाधनोंतैंश्रेष्ठता कथनकरीथी ॥ तिन चारिप्रकारकेसंन्यासविषेभी चतुर्थपरमहंससंन्यासकूंही सर्वतैंश्रेष्ठकह्याथा ॥ और हेभगवन्! तादशमअध्यायकेअंतविषे

यहवार्ताभी आपनैं कथनकरीथी ॥ जाबालादिकउपनिषदोंविषे कथनकऱ्याजोसंन्यासहै तासंन्यासकूंग्रहणकरिकै तथाहंसादिकउपनिषदोंविषे कथनकऱ्याजोयोगहै तायोगकूंसंपादनकरिकै यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं आपणेआत्माकूं ब्रह्मरूपकरिकैनिश्चयकरै ॥ यहसंपूर्णअर्थ आपनैं तादशमअध्यायकेअंतविषेकह्याथा ॥ हेभगवन्! याकेविषे हमारी मुख्यउत्कटइच्छातौ परमहंससंन्यासके स्वरूपजानणेविषेहीहै ॥ यातैं तापरमहंससंन्यासकेस्वरूपकूं मैं आपसैं प्रथमपूछताहूं ॥ तिसतैंअनंतर जाबालादिकउपनिषदोंविषे कथनकऱ्याजोसंन्यासहै ॥ तथा हंसादिकउपनिषदोंविषेकथनकऱ्याजोयोगहै ॥ तिनदोनोंकेस्वरूपकूंभी मैं आपसैंपूछताहूं ॥ यातैं हमारी उत्कटइच्छाकेअनुसार आप प्रथम परमहंससंन्यासकेस्वरूपकाही निरूपणकरो ॥ हेभगवन्! याकेविषे हमारे इतनेप्रश्नहैं ॥ सोपरमहंससंन्यास किसअधिकारीपुरुषकूं करणेयोग्यहै? ॥ १ ॥ तथा पूर्व किसमहात्माजनोंनैंता परमहंससंन्यासकूंग्रहणकऱ्याहै ॥ २ ॥ तथा यापरमहंससंन्यासकरिकै कौनवस्तु जानणेयोग्यहै ? ॥ ३ ॥ तथा यापरमहंससंन्यासके धर्मकौनहैं? ॥ ४ ॥ तथा यापरमहंससंन्यासका फलकौनहै? ॥ ५ ॥ यहसंपूर्णवार्ता आप विस्तारसैंकथनकरो ॥ इसप्रकार शिष्यकरिकैपूछाहुआ सोश्रीगुरु ताशिष्यकी तीक्ष्णबुद्धिदेखिकरिकै बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोश्रीगुरु ताशिष्यकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ श्रीगुरुवाच ॥ हेशिष्य! यहपरमहंससंन्यासका जोतुमनैं प्रश्नकऱ्याहै॥ ताप्रश्नकरिकै तुमनैं वृद्धकुमारीवरन्यायकीरीतिसैं जाबालादिकसर्वउपनिषदोंकेअर्थका प्रश्नकऱ्याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे वृद्धअवस्थाकूं प्राप्तहुईकोई कुमारी तपकरिकै इंद्रदेवताकूंप्रसन्नकरतीभई ॥ और सोइंद्रदेवताभी वरमाग याप्रकारकावचन ताकुमारीकेप्रतिकहताभया ॥ आगेतैं सावृद्धकुमारी आपणेमनविषेविचारकरिकै याप्रकारकावर मागतीभई ॥ हेइंद्र! हमारेपुत्र दधिकरिकैयुक्तओदनकूं सुवर्णकेपात्रोंविषे भोजनकरैं ॥ यहवर तुम हमारेकूंदेवो ॥ याएकहीवरकरिकै सावृद्धकुमारी देवराजइंद्रसैं आपणीयौवनअवस्था तथापति तथापुत्र तथागौवां तथासुवर्णादिकधन यहसंपूर्णपदार्थ लेतीभई ॥ याकानाम वृद्धकुमारीवरन्यायहै ॥ तैसे ताएकपरमहंससंन्यासकेप्रश्नकरिकै तुमनैं जाबालादिकसर्वउपनिषदोंकेअर्थका प्रश्नकऱ्याहै ॥ काहेतैं ? जाबाल ब्रह्म आरुणेय परमहंस

याचारिउपनिषदोंविषेतौ तापरमहंससंन्यासकेही धर्म कथनकरेहैं ॥ और आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिविषेउपयोगी जोयोगहै ॥ सो योग हंसक्षुरिकादिकउपनिषदोंविषे कथनकऱ्याहै ॥ और तायोगकीप्राप्तिविषे उपयोगीजोवैराग्यहै ॥ सोवैराग्य गर्भउपनिषद्विषेकथनकऱ्याहै ॥ यातैं तुमारे परमहंससंन्यासकेप्रश्नका जबीमैं उत्तरकहौंगा ॥ तबी तिनजाबालादिकउपनिषदोंका अर्थभीअवश्य करिकै कह्याजावैगा॥ अब तिनजाबालादिकउपनिषदोंविषे जिनऋषियोंनैं तापरमहंससंन्यासकाप्रश्नकऱ्याहै ॥तथा जिनऋषियोंनैं तिनप्रश्नोंकाउत्तर कह्याहै॥तिनऋषियोंकेनामोंकानिरूपणकरैहैं॥ हेशिष्य! जाबालउपनिषद्केचतुर्थखंडविषे जनकराजानैं याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति तापरमहंससंन्यासकाप्रश्नकऱ्याहै॥ और ताजाबालउपनिषद्के पंचमखंडविषे अत्रिऋषिनैं तायाज्ञवल्क्यमुनिके प्रति तापरमहंससंन्यासकाप्रश्न कऱ्याहै ॥ और आरुणेयउपनिषद्विषे आरुणिऋषिनैं प्रजापतिकेप्रति तापरमहंससंन्यासकाप्रश्न कऱ्याहै ॥ और परमहंसउपनिषद्विषे नारदमुनिनैं ताप्रजापतिकेप्रति तापरमहंससंन्यासकाप्रश्नकऱ्याहै॥ और जोपरमहंससंन्यास जाबालआदिकउपनिषदोंविषे कथनकऱ्याहै॥सोईहीपरमहंससंन्यास ब्रह्मउपनिषद्विषे किसीऋषिके प्रश्नउत्तरतैंविनाही वेदभगवान्नैं आपेही स्पष्टकरिकै कथनकऱ्याहै॥ हे शिष्य! इसप्रकार जाबालादिकउपनिषदोंविषे जोपरमहंससंन्यासकथनकऱ्याहै॥सो ईहीपरमहंससंन्यास तुमनैं हमारेसे पूछाहै॥ यातैं तापरमहंससंन्यासकास्वरूप हम तुमारे प्रति विस्तारतैं कथन करतेहैं॥ तू आपणेमनकूंसावधानकरिकै श्रवणकर॥ अब तापरमहंससंन्यासके साधनोंकेनिरूपणकरणेवासते प्रथम जाबालउपनिषद्केपंचमखंडविषे कथनकरेजेविद्वत्संन्यासीहैं॥ तिनोंकानिरूपणकरैहैं॥ हे शिष्य! देवतावोंकागुरु जोबृहस्पतिहै॥ताबृहस्पतिकाभ्राता एकसंवर्तकनामा ऋषि पूर्वहोताभयाहै॥ जिससंवर्तककामहिमा महाभारतकेअश्वमेधपर्वविषे वर्णनकऱ्याहै॥सो संवर्तकभी तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरताभयाहै ॥और अरुणऋषिकापुत्र एक आरुणिनामाऋषि पूर्वहोताभयाहै ॥ जिसआरुणिऋषिकूं उद्दालक यानामकरिकैभी कथनकरैहैं ॥ जोउद्दालक सर्वशास्त्रोंविषेबुद्धिमान्हुआहै॥ सो उद्दालकमुनिभी तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरता भयाहै॥ और ताउद्दालकमुनिका एकश्वेतकेतुनामापुत्र पूर्वहोताभयाहै ॥ सोश्वेतकेतुभी तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहै ॥ और महादेवकाअंश

अवतार एकदुर्वासाऋषि पूर्वहोताभयाहै॥ जोदुर्वासाऋषि महान्तपस्वीहै ॥सोदुर्वासाऋषिभी तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहै ॥ और जैसे सनकादिकऋषि ब्रह्माके मानसपुत्रहैं ॥ तैसे ताब्रह्माकामानसपुत्र एकऋभुनामाऋषि पूर्वहोताभयाहै ॥ सोऋभुनामाऋषिभी तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहै ॥ और ताऋभुनामाऋषिकाशिष्य एकनिदाघनामाऋषि पूर्वहोताभयाहै ॥ जोनिदाघनामाऋषि ताऋभुकेउपदेशतैंपूर्व कर्मोंविषे अत्यंतआसक्तहोताभयाहै ॥ सोनिदाघनामाऋषिभी तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहै ॥ और एकजडभरत पूर्वहोताभयाहै ॥ जोजडभरत मृगशरीरतैंपूर्व राजाहोताभयाहै ॥ जिसराजाकेनाम करिकै यह भारतखंडकह्याजावैहै ॥ सोजडभरतभी तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहै ॥ और विष्णुकाअवतार एकदत्तात्रेय मुनि पूर्वहोताभयाहै ॥ सोदत्तात्रेयमुनिभी तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहै ॥ और रैवतनामाकोईब्राह्मण पूर्वहोताभयाहै सोरैवतनामाब्राह्मणभी तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहै ॥ और एकभारद्वाजनामाऋषि पूर्वहोताभयाहै ॥ सोभारद्वाजनामाऋषिभी तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहै ॥ हेशिष्य! संवर्तक १ उद्दालक २ श्वेतकेतु ३ दुर्वासा ४ ऋभु ५ निदाघ ६ जडभरत ७ दत्तात्रेय ८ रैवत ९ भारद्वाज १० इनदशोंतैंआदिलेके दूसरेभी शुकवामदेवादिकअनेकब्राह्मण तापरमहंससंन्यासकूं धारणकरतेभयेहैं ॥ जिनोंकीकथा पुराणादिकशास्त्रोंविषेप्रसिद्धहैं ॥ तेसंपूर्णपरमहंससंन्यासी मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारके आत्मसाक्षात्कारकरिकै सर्वबंधनोंतैंरहितहोतेभयेहैं ॥ अब तिनविद्वत्संन्यासियोंकेअव्यक्तचिन्हका तथा अव्यक्त आचारका निरूपणकरैहैं ॥ जिसचिन्हकूं तथाजिसआचारकूं लोक नहींजाणिसकै ताकानाम अव्यक्तहै ॥ हे शिष्य! तेसंवर्तकादिकसंन्यासी नियमकरिकै मुंडितभी नहींहोतेभयेहैं ॥ तथा नियमकरिकै जटाधारीभी नहींहोतेभयेहैं ॥ तथा नियमकरिकै एकदंडकूं अथवा तीन दंडोंकूंभी नहींधारणकरतेभयेहैं ॥ तथा नियमकरिकै श्वेतवस्त्रोंकूंभी नहींधारणकरतेभयेहैं ॥ तथा नियमकरिकै रक्तवस्त्रोंकूंभी नहींधारणकरतेभयेहैं ॥ हे शिष्य! तिनब्रह्मवेत्तासंन्यासियोंका जैसे चिन्ह अव्यक्तहोताभयाहै ॥ तैसे तिनोंकाआचारभी अव्यक्तहीहोताभयाहै ॥ शंका ॥ हे भगवन्! सोअव्यक्तआचार किसप्रकारकाहोवैहै? ॥ समाधान ॥ हे शिष्य! तेअव्यक्तआचारवाले

महात्मापुरुष याप्रकार लोकविषे विचरेहैं ॥ तिनमहात्मापुरुषोंकी मतिभी अव्यक्तहीहोवैहै ॥ और तिनमहात्मापुरुषोंकी आकृति भी अव्यक्तहीहोवैहै ॥ और तिनमहात्मापुरुषोंका चिन्हभी अव्यक्तहीहोवैहै ॥ और कबीतौ तेमहात्मापुरुष सर्वपदार्थोंकीइच्छा तैंरहितहोवैहैं ॥ और कबी तेमहात्मापुरुष आसक्तपुरुषकीन्यांई सर्वपदार्थोंकीइच्छाकरतेहुएप्रतीतहोवैहैं ॥ और कबीतौ तेमहात्मापुरुष सर्वज्ञपुरुषकीन्यांई सर्वअर्थकेज्ञाता प्रतीतहोवैहैं ॥ और कबी तेमहात्मापुरुष अज्ञानीपुरुषकीन्यांई अज्ञाता प्रतीतहोवैहैं और कबीतौ तेमहात्मापुरुष शास्त्रवेत्तापुरुषकीन्यांई पंडित प्रतीतहोवैहैं ॥ और कबी तेमहात्मापुरुष शास्त्ररहितपुरुषकीन्यांई मूढ प्रतीतहोवैहैं ॥ और कबीतौ तेमहात्मापुरुष बुद्धिमान्पुरुषकीन्यांई नानाप्रकारकीचेष्टाकरतेहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और कबी तेमहात्मापुरुष जडपुरुषकीन्यांई सर्वचेष्टातैंरहितहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और कबीतौ तेमहात्मापुरुष वाचालपुरुषकीन्यांई नानाप्रकारके शब्दोंकूंउच्चारणकरतेहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और कबी तौमहात्मापुरुष मूकपुरुषकीन्यांई मौनकूंधारणकरतेहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और कबीतौ तेमहात्मापुरुष रागअंधपामरपुरुषकीन्यांई अत्यंतरागवान्हुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और कबी तेमहात्मापुरुष विरक्तपुरुषकीन्यांई सर्वरागतैंरहितहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और कबीतौ तेमहात्मापुरुष श्रेष्ठपुरुषोंकीन्यांई शास्त्रविहितआचार कूंकरेहैं ॥ और कबी तेमहात्मापुरुष अश्रेष्ठपुरुषोंकीन्यांई शास्त्रनिषिद्धआचारकूंकरेहैं ॥ हेशिष्य! इसप्रकार तेपरमहंस संन्यासी अव्यक्तचिन्होंकूं तथाअव्यक्तआचारोंकूं धारणकरिकै यालोकविषे विचरतेभयेहैं ॥ऐसेपरमहंससंन्यासियोंकूंदेखिकरिकै यह श्रेष्ठपुरुषहै याप्रकारकाभी कोईलोक तिनोंकूं जाणिसकतानहीं॥तथा यह अश्रेष्ठपुरुषहै याप्रकारकाभी कोईलोक तिनोंकूं जाणिसकता नहीं ॥तथा यह बहुतशास्त्रपढ्याहै याप्रकारभी कोईलोक तिनोंकूं जाणिसकतानहीं ॥ तथा यह शास्त्रनहींपढ्याहै याप्रकारभी कोईलोक तिनोंकूं जाणिसकतानहीं ॥ तथा यह श्रेष्ठआचारवालाहै याप्रकारभी कोईलोक तिनोंकूं जाणिसकतानहीं ॥ तथा यह अश्रेष्ठआचारवाला है याप्रकारभी कोईलोक तिनोंकूं जाणिसकतानहीं ॥ तथा यह ब्राह्मणहै याप्रकारभी कोईलोक तिनोंकूं जाणिसकतानहीं ॥ तथा यह चांडालहै याप्रकारभी कोईलोक तिनोंकूं जाणिसकतानहीं ॥ तथा यह संन्यासीहै याप्रकारभी कोईलोक

तिनोंकूं जाणिसकतानहीं ॥ तथा यह गृहस्थहै याप्रकारभी कोईलोक तिनोंकूं जाणिसकतानहीं ॥ हेशिष्य! इसप्रकार तिनब्रह्मवेत्तासंन्यासियोंकूं किसीवर्णकरिकै तथाकिसीआश्रमकरिकै कोईबुद्धिमान्पुरुषभी जाणिसकतानहीं ॥ तौ विचारतैंरहितमूढपुरुष तिनोंकूं कैसेजाणिसकैंगे? किंतु नहींजाणिसकैंगे ॥ यहवार्ता स्मृतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहां श्लोक ॥ यंनसंतंनचासंतं नाऽश्रुतं नबहुश्रुतं॥नसुवृत्तंनदुर्वृत्तं वेदकश्चित्सब्राह्मणः॥अर्थयह॥यालोकविषे जिसविद्वान्पुरुषकूं श्रेष्ठ अश्रेष्ठ मूर्ख पंडित शास्त्रविहितआचार शास्त्रनिषिद्धआचार इत्यादिकरूपोंकरिकै कोईभीमनुष्य नहींजाणिसकैहै ॥ सोविद्वान्पुरुषही ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणहै ॥ हेशिष्य! ऐसेब्रह्मवेत्तापरमहंससंन्यासियोंकेआचारकूं कोईबुद्धिमान्पुरुषभी जाणिसकतानहीं यहवार्ता दत्तात्रेयसंहिताविषे प्रसिद्धहै ॥ तहां यहप्रसंगहै ॥ एककालविषे दत्तात्रेयस्वामी नर्मदानदीकेजलविषेस्थितथा ॥ कैसाथा सोदत्तात्रेय स्वामी? रक्तवर्णवालेवस्त्रोंकरिकैयुक्तथा ॥ तथायौवनअवस्थाकरिकैयुक्तथा ॥ तथा सूर्यकेसमान जाकेशरीरकीकांतिथी ॥ तथा एकहस्तविषे जिसनैं मदिराकेपात्रकूंधारणकऱ्याहै ॥ और दूसरेहस्तविषे दंडकूंधारणकऱ्याहै ॥ और मदकरिकैघूर्णितहैंनेत्रजिसके ऐसीसुंदरस्त्री जाके वामभागविषेस्थितथी ॥ तास्त्रीकेमुखकूं वारंवार नेत्रोंकरिकैदेखताहुआ सोदत्तात्रेयस्वामी तास्त्रीकेप्रति श्रुतिवचनोंकरिकै अद्वितीयब्रह्मकाउपदेशकरताथा ॥ ऐसेव्यवहारकरिकैयुक्त तादत्तात्रेयस्वामीकूं सहस्रबाहुअर्जुन देखताभया ॥ और सोचक्रवर्तीराजासहस्रबाहु आपणेमनविषे बहुतविचारकरताभया ॥ परंतु तादत्तात्रेयस्वामीकूं सोसहस्रबाहु नहींजाणताभया॥शंका॥ हेभगवन्! तेदत्तात्रेयादिकमहात्मापुरुष ऐसेशास्त्रनिंदितआचारकूं किसवासते धारणकरैहैं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! जिसअभिप्रायकरिकै तेमहात्मापुरुष याप्रकारकेआचारकूंधारणकरैहैं ॥ ताअभिप्रायकूं तू श्रवणकर ॥ शास्त्रविषे यहकह्याहै ॥ तहां श्लोक ॥ अभिमानंसुरापानंगौरवं घोररौरवं ॥ प्रतिष्ठासूकरीविष्ठा त्रीणित्यक्त्वासुखीभवेत् ॥ अर्थयह ॥ अभिमानकूं मदिराकेसमानजाणिकरिकै तथा गौरवकूं घोररौरवनरककेसमानजाणिकरिकै तथा लोकप्रतिष्ठाकूं सूकरकीविष्ठासमानजाणिकरिकै यहविद्वान्पुरुष तिनतीनोंकापरित्यागकरिकै सुखकूंप्राप्तहोवै॥१॥ इत्यादिकशास्त्रोंविषे विद्वान्पुरुषकूं अभिमान गौरव लोकप्रतिष्ठा यातीनोंकापरित्यागकह्याहै ॥ १ ॥

श्रेष्ठआचारविषेवर्तणेहारे विद्वान्पुरुषकी लोकविषे प्रतिष्ठा अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ और ताप्रतिष्ठाकरिकै ताविद्वान्पुरुषकेसमीप बहुतलोकआवैहैं ॥ और ताबहुतलोकोंकेआवणेकरिकै ताविद्वान्पुरुषकाभीचित्त बहिर्मुखहोवैहै ॥ ताबहिर्मुखचित्तविषे जीवन्मुक्तिकासुख होवैनहीं॥हेशिष्य! याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै ते दत्तात्रेयादिकब्रह्मवेत्तापुरुष लोकप्रवृत्तिरूपविक्षेपकीनिवृत्तिकरणेवासते ताविपरीतआचरणकूं ऊपरिसैंधारणकरैहैं ॥ अथवा अधिकारीशिष्योंकेश्रद्धाकीपरीक्षाकरणेवासते तेब्रह्मवेत्तापुरुष ताविपरीतआचरणकूं ऊपरिसैंधारणकरैहैं ॥ अथवा ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिकरिकै किंचित्मात्रभी दोषोंकास्पर्शहोवैनहीं याप्रकार ताब्रह्मविद्याकेफलकाबोधनकरणेवासते तेब्रह्मवेत्तापुरुष ताविपरीतआचरणकूं ऊपरिसैंधारणकरैहैं॥ परंतु मनकरिकैतौ तेब्रह्मवेत्तापुरुष सर्वविकारोंतैंरहितहीहोवैहैं॥ हेशिष्य! तिन दत्तात्रेयादिकमहान्पुरुषोंकी जाऐसीसिद्धिअवस्थाहै॥सासिद्धअवस्था अस्मदादिकजीवोंकूं सहस्रजन्मोंकरिकैभी दुर्लभहै॥ ऐसेदत्तात्रेयादिकमहान्पुरुषोंके पूर्वउक्तअभिप्रायकूंनजाणिकरिकैजेअज्ञानीपुरुष तिनोंकेऊपरिलेआचरणकूंग्रहणकरिकै यालोकविषे विचरेहैं॥तेअज्ञानीपुरुष नरककूंहीप्राप्तहोवैहैं॥ तहां दृष्टांत॥जैसे महादेवनैं सर्वलोकोंकीरक्षाकरणेवासते आपणेयोगकेप्रभावतैं कन्याजोविषकापान॥ ताकूंदेखिकरिकै जोयोगसाधनतैंरहितपुरुष ताविषकूंपानकरैहैं॥ सोमूढबुद्धिपुरुष मृत्युकूंहीप्राप्तहोवैहै॥ तैसे जोअज्ञानीपुरुष तिनदत्तात्रेयादिकोंकेऊपरिलेआचारकूंग्रहणकरैहै ॥ सोअज्ञानीपुरुष नरककूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य! तेदत्तात्रेयादिकपरमहंससंन्यासी हम ब्रह्मरूपहैं याप्रकारकेआत्मसाक्षात्कारकरिकै ब्रह्मभावकूंप्राप्तहुएहैं ॥ याकारणतैं तेब्रह्मवेत्तापुरुष सर्वपुण्यपापकर्मोंकापरित्यागकरिकै सर्वदा परमपदविषेहीस्थितहैं॥ अब तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे पुण्यपापकर्मकाअभाव निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! ऐसेब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे जेभक्तजन प्रीतिकरैहैं ॥ तिनभक्तजनोंकेप्रतितौ तेब्रह्मवेत्तापुरुष आपणेसर्वपुण्यकर्म देवैहैं ॥ और तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे जेदुष्टजन सर्वदाद्वेषकरैहैं ॥ तिनदुष्टपुरुषोंकेप्रतितौ तेब्रह्मवेत्तापुरुष आपणेसंपूर्णपापकर्म देवैहैं॥ इसप्रकार सुखदुःखरूपफलसहित संपूर्णपुण्यपापकर्मोंकूंदेकरिकै तेब्रह्मवेत्तापुरुष तापुण्यपापकर्मकेसुखदुःखरूपफलतैंरहितहोवैहैं ॥तहांश्रुति॥सुहृदःसाधुकृत्यं द्विषंतःपापकृत्यं

॥ अर्थयह ॥ ताब्रह्मवेत्तापुरुषकेपुण्यकर्मतौ सेवाकरणेहारेभक्तजन लेजावैंहैं ॥ और ताब्रह्मवेत्तापुरुषकेपापकर्मतौ द्वेषकरणेहारे दुष्टजन लेजावैंहैं ॥ यातैं तेब्रह्मवेत्तापुरुष सर्वदाअसंगरहेहैं ॥ अब तिनब्रह्मवेत्तासंन्यासियोंका उन्मत्तपुरुषकीन्यांई आचरण निरूपणकरैंहैं ॥ हेशिष्य! तेब्रह्मवेत्तापरमहंससंन्यासी कबीतौ दिशारूपवस्त्रोंकूंही धारणकरैंहैं ॥ और कबीतौ नानाप्रकारकेदुकूलोंकूंधारणकरैंहैं ॥ और कबीतौ तेब्रह्मवेत्तासंन्यासी विष्ठामूत्रकरिकैलिप्तरहेहैं ॥ और कबीतौ चंदनादिकसुगंधपदार्थोंकरिकैलिप्तरहेहैं ॥ और तेब्रह्मवेत्तापुरुष कबीतौ हसेहैं ॥ औरकबी नानाप्रकारकागायनकरैंहैं ॥ और कबीतौ तेब्रह्मवेत्तापुरुष अश्वकीन्यांई शीघ्रगमनकरेहैं ॥ और कबीतौ तेब्रह्मवेत्तापुरुष पिशाचोंकीन्यांई आपणेअंगोंका ताडनकरैंहैं ॥ और कबीतौ तेब्रह्मवेत्तापुरुष बालकोंकेसाथ नानाप्रकारकीक्रीडाकरैंहैं ॥ और कबीतौ तेब्रह्मवेत्तापुरुष सर्वइच्छावोंतैंरहितहोवैंहैं ॥ और कबीतौ तेब्रह्मवेत्तापुरुष विनाहीकारणतैंरुदनकरैंहैं ॥ और कबीतौ तेब्रह्मवेत्तापुरुष दुष्टलोकोंकरिकै ताडनकरेहुए तथाबांधेहुएभी परमआनंदकूंप्राप्तहोइकै मेघोंकीन्यांई गर्जनाशब्दकूंकरैंहैं ॥ हेशिष्य! इसप्रकार तेदत्तात्रेयादिकब्रह्मवेत्तासंन्यासी आपणेवास्तवस्वरूपविषे लोकोंकेव्यामोहकरणेवासते उन्मत्तपुरुषकीन्यांई विपरीतचेष्टाकूंकरतेभयेहैं ॥ परंतु तेब्रह्मवेत्तासंन्यासीवास्तवतैं उन्मत्तहैंनहीं किंतु वास्तवतैंतौ तेब्रह्मवेत्तासंन्यासी अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यापंचप्रकारकेयमकीही सर्वदारक्षाकरणेहारेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषका उन्मत्तपुरुषकीन्यांई आचरण किसीभीशास्त्रनैं विधानकऱ्यानहीं ॥ यातैं ताउन्मत्तआचरणकूंधारणकरणायोग्यनहींहै ॥समाधान॥ हेशिष्य! आपणेस्वरूपकेगुह्यराखणेवासते ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषोंका उन्मत्तपुरुषकीन्यांई आचरण योगशास्त्रविषेकथनकऱ्याहै ॥तहांश्लोक ॥ तथाचरेतवैयोगी सतांधर्ममदूषयन् ॥ जनायथाऽवमन्येरन् गच्छेयुर्नैवसंगतिं ॥ अर्थयह ॥ यहब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष श्रेष्ठपुरुषोंकेधर्मकारक्षणकरताहुआ ऊपरिसैंऐसाआचरणराखे॥ जिसआचरणकरिकै ताब्रह्मवेत्तापुरुषकाकोईलोक माननहींकरैं ॥ तथा संगनहींकरैं ॥ काहेतैं? लोकोंकेमानकरिकै तथालोकोंकेसंगकरिकै ताविद्वान्पुरुषकाभीचित्त बहिर्मुखहोवैहै ॥ १ ॥ हेशिष्य! इत्यादिकशास्त्रोंकेवचनोंकाविचारकरिकै तेब्रह्मवेत्तापुरुष ऊपरिसैं

लोकोंकेदिखावणेवासते नानाप्रकारकाविपरीतआचरणकूंराखेहैं ॥ परंतु तेब्रह्मवेत्तापुरुष आपणेशरीरमनवाणीकरिकै कदा चित्भी ताविपरीतआचरणकूंकरतेनहीं ॥ किंतु तेब्रह्मवेत्तापुरुष आपणे शरीरमनवाणीकरिकैतौ शास्त्रविहितधर्मकाहीपालनकरै हैं ॥ हेशिष्य ! जैसे यालोकविषे प्रज्वलितमहाअग्नि शुष्ककाष्ठोंकूं तथाआर्द्रकाष्ठोंकूं दग्धकरैहै ॥ तैसे तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंका ज्ञा नरूपअग्निभी संपूर्णशुभअशुभकर्मोंका नाशकरैहै ॥ यातें ताब्रह्मवेत्तापुरुषकूं किंचित्मात्रभी दोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ! जैसे यहलोकप्रसिद्धअग्नि विषादिकसर्ववस्तुवोंकाभक्षणकरैहै ॥ ताअग्निकूंदेखिकरिकै जोमूढबुद्धिपुरुष ताअग्निकीन्यांई वि षादिकसर्ववस्तुवोंकेभक्षणविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष शीघ्रही नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे इदानींकालविषे आत्मसाक्षा त्कारतैंरहित जोपरमहंससंन्यासी तिनदत्तात्रेयादिकमहान्पुरुषोंके ऊपरिलेआचरणकूं धारणकरैहै ॥ सोपरमहंससंन्यासी दो नौंलोकोंतैंभ्रष्टहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ इसलोकविषेतौ अपमानजन्यदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और परलोकविषे नरकदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ अब ब्रह्मवेत्तापुरुषविषे शास्त्रविधिकाअभाव निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! ऐसेदत्तात्रेयादिकब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं जोयहफलरूपविद्व त्संन्यास प्राप्तभयाहै ॥ सो किसीशास्त्रकीविधिकरिकै प्राप्तनहींभया ॥ किंतु स्वतःही प्राप्तभयाहै ॥ यातें तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं ता संन्यासविषे कर्तव्यताबुद्धिहैनहीं ॥ और तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं जैसे तासंन्यासविषे कर्त्तव्यताबुद्धिनहींहै ॥ तैसे बहिरंगसाधनोंविषे तथाअंतरंगसाधनोंविषेभी साकर्तव्यताबुद्धिहैनहीं ॥ काहेतें? जबपर्यंत फलकीउत्पत्तिनहींहोवैहै ॥ तबपर्यंतही बहिरंगअंतरंगसा धनोंकीअपेक्षाहोवैहै ॥ फलकीउत्पत्तितैंअनंतर तिनसाधनोंकाप्रयोजनरहैनहीं॥ याकारणतैंही यहवेदभगवान् तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंके प्रति प्रातःकाल मध्यान्हकाल सायंकाल यातीनकालोंविषे स्नानकाभीविधानकरैनहीं ॥ काहेतें ? तात्रिकालस्नानकाफल जोअंतःक रणकीशुद्धिहै ॥ साशुद्धि तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं पूर्वहीप्राप्तहै ॥ और सोवेदभगवान् तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकेप्रति समाधिकरणेकाभी विधानकरैनहीं॥ काहेतें? सासमाधिभी तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं स्वरूपकरिकै तथाफलकरिकै पूर्वहीसिद्धहै॥ अब तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंवि षे स्वरूपतैंसमाधिका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! तेब्रह्मवेत्तापुरुष जिसकालविषे पद्मादिकआसनोंकूंबांधिकरिकै बैठेहैं ॥ तथा

जिसकालविषे आपणेहस्तपादादिकअंगोंकूंपसारेहैं ॥ तथा जिसकालविषे ताआसनतैंऊठेहैं ॥ तथाजिसकालविषे भोजनकरैहैं ॥ तथा जिसकालविषे जलपानकरैहैं ॥ तथा जिसकालविषे पृथिवीऊपरिफिरैहैं ॥ तथा जिसकालविषे शयनकरैहैं ॥ तिनसंपूर्णकालोंविषे तेब्रह्मवेत्तापुरुष समाधियुक्तहोरहेहैं ॥ हेशिष्य ! यहवार्ता पूर्व वृद्धपुरुषोंनैंभीकथनकरीहै।तहांश्लोक।देहाभिमानेगलिते विज्ञातेपरमात्मनि॥यत्रयत्रमनोयातितत्रतत्रसमाधयः॥ अर्थयह ॥मैं अद्वितीयब्रह्मरूपहूं याप्रकारके आत्मसाक्षात्कारकेप्राप्त हुए जबी याविद्वानपुरुषका देहाभिमान निवृत्तहोवैहै ॥ तबी याविद्वान्पुरुषकामन जिसजिसपदार्थविषेजावैहै ॥ तहांतहां समाधियांही होवैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ ताविद्वान्पुरुषकामन सर्वपदार्थविषे नामरूपअंशकाबाधकरिकै अस्तिभातिप्रियरूप अद्वितीयब्रह्मकूंहीदेखैहै ॥१॥हेशिष्य ! जैसे पंचवर्षपर्यंत बालकउपरि शास्त्रकाविधि तथा निषेधहोवैनहीं॥तैसे तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंऊपरिभी शास्त्रकाविधि तथानिषेध होवैनहीं ॥ काहेतें ? जिनपुरुषोंविषे भेददर्शनरूपअविद्या रहेहै ॥ तिनपुरुषोंऊपरिही शास्त्रकाविधि तथानिषेध होवैहै ॥ साभेददर्शनरूपअविद्या तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषेहैनहीं ॥ यातें तिनब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषोंऊपरि शास्त्रकाविधि तथानिषेध संभवैनहीं ॥ अब तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे भेददर्शनकाअभाव निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! तेब्रह्मवेत्तापुरुष आपणेशरीरकूं तथाश्वानकेविष्ठाकूं विलक्षणदेखतेनहीं ॥ किंतु दोनोंकूंसमानही देखैहैं ॥ याकारणतैंही तेब्रह्मवेत्तापुरुष भक्तजनोंनैं शरीरमनवाणीकरिकै तथानानाप्रकारकेदुकूलोंकरिकै तथाचंदनादिकोंकेलेपकरिकै तथासुगंधिवालेपुष्पोंकरिकै तथानानाप्रकारकेअन्नादिक पदार्थोंकरिकै पूजनकिएहुएभी किंचित्मात्रभीहर्षकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ हेशिष्य! तेब्रह्मवेत्तापुरुष याशरीरतैं आपणेकूंभिन्नकरिकैमानैहैं ॥ यातें तेब्रह्मवेत्तापुरुष जैसे याशरीरकेपूजनादिकोंविषे हर्षकूंनहींप्राप्तहोवैहैं॥ तैसे याशरीरके छेदनविषे तथाभेदनविषे तथाबंधनविषे तथाताडनविषे तथानिरादरविषे तेब्रह्मवेत्तापुरुष किंचित्मात्रभी खेदकूंप्राप्तहोवैनहीं॥हेशिष्य! तेब्रह्मवेत्तापुरुष आपणेशरीरविषे तथाभक्तजनोंकेशरीरविषे तथादुष्टजनोंकेशरीरविषे एकआत्माकूंही अनुगतजानैहैं ॥ याकारणतैंही तिनअभेददर्शी ब्रह्मवेत्तापुरुषोंका यालोकविषे कोईमित्रनहींहै ॥ तथा कोईशत्रुनहींहै ॥ तथा कोईउदासीननहींहै॥ तथा कोईपदार्थ आपणापराया

नहीं है॥ तथा तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं कोईशीतउष्णनहीं है॥ तथा कोईक्षुधापिपासानहीं है॥ तथा कोईशोकमोहनहीं है॥ तथा कोईजरामरणनहीं है॥ तात्पर्ययह ॥ तेब्रह्मवेत्तापुरुष शरीरादिकउपाधियोंके शीतउष्णादिकधर्मजानिकै आपणेवास्तवस्वरूपकूं सर्वदा असंगजानैं हैं॥ और हेशिष्य! यालोकविषे जेपुरुष तासमबुद्धितैंरहितहैं॥ तिनविषमदर्शीपुरुषोंकूं मानतौ सुखकीप्राप्तिकरै है॥ और अपमान दुःखकीप्राप्तिकरैहै॥ और तेब्रह्मवेत्तापुरुष सर्वत्र समबुद्धिवालेहैं॥ यातैं तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं सोमान सुखकीप्राप्तिकरैनहीं॥ तथा अपमान दुःखकीप्राप्तिकरैनहीं॥ हेशिष्य! इसप्रकार सर्वत्रसमबुद्धिवाले तथाजीवन्मुक्तअवस्थावाले तेसंवर्तकादिकविद्वत्संन्यांसी पूर्वहोतेभयेहैं॥ तिनोंनैं यहज्ञाननिष्ठारूप परमहंससंन्यास पूर्व धारणकऱ्याहै॥ हेशिष्य! वैराग्यतैंरहित जेबहिर्मुखपुरुषहैं तेबहिर्मुखपुरुषतौ याप्रकारकेवचन कथनकरै हैं॥ सत्यत्रेतायुगादिककालविषेही सा वर्णआश्रमकेधर्मोंकी व्यवस्थाथी॥ इदानींकालविषे ऐसापरमहंससंन्यासियोंकाधर्म देखणेविषेआवतानहीं॥ ऐसेवचनकहणेहारेवैराग्यहीनपुरुषोंकेप्रति वैराग्यवान्‌महात्मापुरुष तापरमहंससंन्यासकेधर्मोंकूं प्रत्यक्षकरिकैदिखावे हैं॥ यातैं वैराग्यही तासंन्यासकाकारणहै॥ इतनैंग्रंथकरिकै जाबालउपनिषद्‌विषे कथनकऱ्येजे संवर्तकादिक परमहंससंन्यासीहैं तिनोंका निरूपणकऱ्या॥ अब तापरमहंससंन्यासके प्राप्तिकासाधन जोवैराग्यहै तावैराग्यकीप्राप्तिवासते गर्भउपनिषद्‌केअर्थका निरूपणकरै हैं॥ हेशिष्य! गर्भउपनिषद्‌विषे कथनकरीजा याशरीरकीव्यवस्थाहै ॥ ताकेविचारकरिकैही याअधिकारीपुरुषोंकूं सोवैराग्य प्राप्तहोवैहै॥ याकारणतैं तागर्भउपनिषद्‌का अर्थ हम तुमारेप्रति कथनकरते हैं॥ तू सावधानहोइकैश्रवणकर॥ हेशिष्य! ब्रह्माकेशरीरतैंआदिलेकै श्वानकेशरीरपर्यंत जितनेशरीरहैं॥ तेसंपूर्णशरीर पंचभूतरूपहैं॥ तथा तिनपंचभूतोंकाकार्य जेश्रोत्रादिकइंद्रियहैं तिनोंकाआश्रयरूपहैं॥ यातैं तेसंपूर्णशरीर समानहीं है॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं॥ हेशिष्य! आकाश १ वायु २ तेज ३ जल ४ पृथिवी ५ यापंचोंकूं बुद्धिमान्‌पुरुष महाभूत यानामकरिकैकथनकरैहैं॥ और तेआकाशादिकपंचभूतही स्थूलसूक्ष्मरूपकरिकै वर्तमानहुए सर्वप्राणियोंके स्थूलसूक्ष्मशरीररूपहोवै हैं॥ अब प्रथम तिनसूक्ष्मभूतोंतैं सूक्ष्मशरीरकीउत्पत्ति निरूपणकरै हैं॥ हेशिष्य! ताआकाशकेसात्विकअंशतैं श्रोत्रइंद्रिय

उत्पन्नहोवैहै ॥ १ ॥ और वायुकेसात्विकअंशतैं त्वक्इंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ २ ॥ और तेजकेसात्विकअंशतैं चक्षुइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ ३ ॥ और जलकेसात्विकअंशतैं रसनइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ ४ ॥ और पृथिवीकेसात्विकअंशतैं घ्राणइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ ५ ॥ येश्रोत्रादिकपंचइंद्रिय शब्दादिकविषयोंकेज्ञानकाकारणहैं ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तिनश्रोत्रादिकपंचइंद्रियोंकूं ज्ञानइंद्रिय यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ और हेशिष्य! ताआकाशकेराजसअंशतैं वाक्इंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ १ ॥ और वायुकेराजसअंशतैं पाणिइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ २ ॥ और तेजकेराजसअंशतैं पादइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ ३ ॥ और जलकेराजसअंशतैं उपस्थइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ ४ ॥ और पृथिवीकेराजसअंशतैं पायुइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ ५ ॥ येवाकादिकपंचइंद्रिय शब्दउच्चारणादिकक्रियाकेकारणहोवैहैं ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तिनवाकादिकपंचइंद्रियोंकूं कर्मइंद्रिय यानामकरिकैकथनकरैहैं॥ और हेशिष्य ! तिनआकाशादिकपंचभूतोंके मिलेहुएसात्विकअंशतैं ज्ञानशक्तिवालाअंतःकरण उत्पन्नहोवैहै ॥ और तिनआकाशादिकपंचभूतोंके मिलेहुएराजसअंशतैं क्रियाशक्तिवालाप्राण उत्पन्नहोवैहै ॥ सोप्राणभी प्राण १ अपान २ व्यान ३ उदान ४ समान ५ याभेदकरिकै पंचप्रकारकाहोवैहै ॥ अथवा नाग १ कूर्म २ कृकल ३ देवदत्त ४ धनंजय ५ यापांचोंकूंमिलाइकै सोप्राण दशप्रकारकाहोवैहै ॥ औरहेशिष्य ! सर्वदेहधारीजीवोंकेहृदयकमलविषेस्थित जोज्ञानशक्तिवालाअंतःकरणहै ॥ सोअंतःकरणभी मन १ बुद्धि २ चित्त ३ अहंकार ४ याप्रकारकेभेदकरिकै चारिप्रकारकाहोवैहै ॥ इसप्रकार पंचज्ञानइंद्रिय तथापंचकर्मइंद्रिय तथापंचप्राण तथाअंतःकरणचतुष्टय यासंपूर्णोंकेसमुदायकानाम सूक्ष्मशरीरहै ॥ याहीकूं लिंगशरीरभीकहेहैं ॥ हेशिष्य ! यहसूक्ष्मशरीर अपंचीकृतसूक्ष्मभूतोंका कार्यहै ॥ तथा नेत्रादिकइंद्रियोंकाअविषयहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष ताशरीरकूं सूक्ष्मशरीर यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ और यहस्थूलशरीरतौ पंचीकृतस्थूलभूतोंकाकार्य है तथानेत्रादिकइंद्रियोंकाविषयहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष ताशरीरकूं स्थूलशरीर यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ इतनेंकरिकै स्थूल सूक्ष्म यादोशरीरोंका निरूपणकऱ्या ॥ अबअध्यात्म अधिदैव यादोप्रकारकेभेदकरिकै तास्थूलसूक्ष्मशरीरकाचारिप्रकारकाभेद निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! सोसूक्ष्मशरीरभी अध्यात्म अधिदैव भेदकरिकै दोप्रका

रकाहोवैहै ॥ और सोस्थूलशरीरभी अध्यात्म अधिदैव भेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां प्रथम तत्पदार्थरूपअधिदेवस्वरूपकूं तूश्रवणकर ॥ तहां समष्टिसूक्ष्मरूप हिरण्यगर्भ अधिदैवरूपसूक्ष्मशरीरहै ॥ और समष्टिस्थूलरूपविराट् अधिदैवरूप स्थूलशरीर है ॥ कैसाहैसोविराट् ? अतल १ वितल २ सुतल ३ तलातल ४ महातल ५ रसातल ६ पाताल ७ येनीचैकेसप्तलोकतौ ताविराट् भगवान्के दोपादहैं ॥ और ऊपरिकेसप्तलोकोंविषे प्रथम भूलोकतौ ताविराट्भगवान्का जघनस्थानहै ॥ १ ॥ और अंतरिक्षलोक ताविराट्भगवान्का नाभिस्थानहै ॥ २ ॥ और स्वर्गलोक ताविराट्भगवान्का हृदयस्थानहै ॥ ३ ॥ और महर्लोकताविराट्भग वान्का गलतैंलैकेमुखपर्यंत स्थानहै ॥ ५ ॥ और जनलोक ताविराट्भगवान्का मुखतैंलैकेनेत्रपर्यंत स्थानहै ॥ ५ ॥ और तप लोक ताविराट्भगवान्का ललाटस्थानहै ॥ ६ ॥ और सत्यलोक ताविराट्भगवान्का शिरहै ॥ ७ ॥ इसप्रकार सोविराट्भग वानही तिनचतुर्दशलोकोंकास्थानहै ॥ इतनैंकरिकै तत्पदार्थरूप अधिदैवसूक्ष्मशरीरका तथा अधिदैवस्थूलशरीरका निरूपणक न्या ॥ अब त्वंपदार्थरूप अध्यात्मसूक्ष्मशरीरका तथाअध्यात्मस्थूलशरीरका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! अहंममअभिमानका विषय जोव्यष्टिसूक्ष्मव्यक्तिहै ताकानाम अध्यात्मसूक्ष्मशरीरहै ॥ जाअध्यात्मसूक्ष्मशरीरकूं शास्त्रवेत्तापुरुष तैजस यानामकरिकैक थनकरैहैं ॥ और अहंममअभिमानकाविषय जोव्यष्टिस्थूलव्यक्तिहै ताकानाम अध्यात्मस्थूलशरीरहै ॥ जाअध्यात्मस्थूलशरीरकूं शास्त्रवेत्तापुरुष विश्व यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! अन्यशास्त्रोंविषेतौ अध्यात्म अधिदैव अधिभूत यहतीनप्रकार काविभाग कथनकऱ्याहै ॥ यातैं इहां अध्यात्म अधिदैव यहदोप्रकारकाविभागकथनकरणा असंगतहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! तेस्थूलसूक्ष्मशरीरही जिसकालविषे अध्यात्मअवस्थाकीन्यांई अपरोक्षरूपकरिकैप्रतीतहोवैहैं ॥ तिसकालविषे तास्थूलसूक्ष्मशरीर कूंही बुद्धिमान्पुरुष अधिभूत यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ यातैं तास्थूलसूक्ष्मशरीरविषेही तिनअधिभूतपदार्थोंका अंतरभावहै ॥ तिनस्थूलसूक्ष्मशरीरोंका जोअध्यात्मरूपहै तथाअधिभूतरूपहै ॥ तेदोनोंरूप मिलिकरिकै जबी व्यवहारकेविषयहोवैहैं ॥ तबी ही यहस्थावर जंगम भेदहोवैहै ॥ यातैं सोस्थावरजंगमभेदभी तास्थूलसूक्ष्मशरीरतैंभिन्ननहींहै ॥ किंतु तेस्थावरजंगमशरीरभी

तास्थूलसूक्ष्मशरीरकेअंतरभूतहीहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ संपूर्णस्थावरजंगमशरीर आपणेआपणेअभिमानीजीवकीअपेक्षाकरिकैतौ अध्यात्मभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और दूसरेद्रष्टापुरुषकीअपेक्षाकरिकै अधिभूतभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ जैसे चैत्रपुरुषकाशरीर ताचैत्रनामपुरुषकीअपेक्षाकरिकैतौ अध्यात्मरूपहै ॥ और दूसरेमैत्रनामरूपपुरुषकीअपेक्षाकरिकै अधिभूतरूपहै ॥ इसप्रकार सर्वशरीरोंविषेजानिलेणा ॥ और हेशिष्य! तेव्यष्टिस्थूलशरीरभी जरायुज १ अंडज २ स्वेदज ३ उद्भिज्ज ४ याभेदकरिकै चारिप्रकारकेहोवैहैं तहां माताकेउदरविषे बालककूंआवरणकरणेहारा जो जरायुनामा चर्मविशेषहै ॥ ताजरायुचर्मतैं जिनशरीरोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तिनशरीरोंकानाम जरायुजहै ॥ जैसे मनुष्य गौ अश्व अजा आदिकशरीरहैं ॥ १ ॥ और अंडतैं जिनशरीरोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तिनशरीरोंकानाम अंडजहै ॥ जैसे पक्षी सर्प मत्स्य पिपीलिका आदिकशरीरहैं ॥ २ ॥ और शरीरादिकोंकेस्वेदरूपमलतैं जिनशरीरोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तिनशरीरोंकानाम स्वेदजहै ॥ जैसे मत्कुणयूकादिकक्षुद्रशरीरहैं ॥३॥ और जिनशरीरोंका बीजरूपकारण ऊर्ध्वआकार परिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिनशरीरोंकानाम उद्भिज्जहै ॥ तेउद्भिज्जशरीरभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां एकतौ पापकर्मजन्यहोवैहैं ॥ और दूसरे पुण्यकर्मजन्यहोवैहैं ॥ तहां याभूमिलोकविषेस्थित जेवृक्षलतादिकहैं तथानरकविषेस्थित जेयमयातनाकेशरीरहैं ॥ तेदोनोंप्रकारकेशरीर पापकर्मजन्य उद्भिज्जशरीरहैं ॥ और स्वर्गलोकविषेस्थित जेदेवताशरीरहैं ॥ तेदेवताशरीर पुण्यकर्मजन्य उद्भिज्जशरीरहैं ॥ इतनैंकरिकै चारिप्रकारकेशरीरोंका निरूपणकर्‍या ॥ अब आकाशादिकपंचभूतोंकेव्यापारोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! तिनचारिप्रकारकेशरीरोंविषेभी अवकाशदेणा यह आकाशकाव्यापारहै ॥ १ ॥ और पदार्थोंका परस्पर संयोगकरणा तथाविभागकरणा यह वायुकाव्यापारहै ॥ २ ॥ और अन्नादिकोंकूंपकावणा यह तेजकाव्यापारहै ॥ ३ ॥ और वस्त्रादिकपदार्थोंकूंआर्द्रीभावकरणा यह जलकाव्यापारहै ॥ ४ ॥ और सर्वपदार्थोंकाधारणकरणा यह पृथिवीकाव्यापारहै ॥ ५ ॥ अब पंचज्ञानइंद्रियोंकेव्यापारकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! शब्दकाग्रहणकरणा यह श्रोत्रइंद्रियकाव्यापारहै ॥ १ ॥ और स्पर्शकाग्रहणकरणा यह त्वक्इंद्रियकाव्यापारहै ॥ २ ॥ और रूपकाग्रहणकरणा यह चक्षुइंद्रियकाव्यापारहै ॥ ३ ॥ और रसकाग्रहणकरणा

यह रसनइंद्रियकाव्यापारहै ॥ ४ ॥ और गंधकाग्रहणकरणा यह घ्राणइंद्रियकाव्यापारहै ॥ ५ ॥ अब पंचकर्मइंद्रियोंकेव्यापारका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! वचनकाउच्चारणकरणा यह वाक्इंद्रियकाव्यापारहै ॥ १ ॥ और वस्तुकाग्रहणकरणा यह पाणिइंद्रियकाव्यापारहै ॥ २ ॥ और गमनआगमनकरणा यह पादइंद्रियकाव्यापारहै ॥ ३ ॥ और पुत्रादिकप्रजाकेउत्पत्तिकाकारण जोविषयआनंदहै ॥ सोविषयानंद उपस्थइंद्रियकाव्यापारहै ॥ ४ ॥ और मलकापरित्यागकरणा यह पायुइंद्रियकाव्यापारहै ॥ ५ ॥ अब प्राणोंकेव्यापारका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! मुखनासिकाद्वारा याशरीरतैंबाहरिनिकसणा तथाशरीरकेभीतरजाणा यह प्राणकाव्यापारहै ॥ १ ॥ और मलादिकोंकूंनीचैलेजाणा यह अपानकाव्यापारहै ॥ २ ॥ और अन्नकेसूक्ष्मरसकूं सर्वनाडियोंविषे पहुंचावणा यह व्यानकाव्यापारहै ॥ ३ ॥ और अन्नादिकोंकूंऊर्ध्वलेजाणा यह उदानकाव्यापारहै ॥ ४ ॥ और भोजनकऱ्येहुएअन्नके परिपक्ककरणेवासते जठराग्निकूं प्रज्वलितकरणा यहसमानकाव्यापारहै ॥ ५ ॥ और उदगार नागकाव्यापारहै ॥ ६ ॥ और नेत्रोंकाउन्मीलन कूर्मकाव्यापारहै ॥ ७ ॥ और छिका कृकलकाव्यापारहै ॥ ८ ॥ और विजृंभण देवदत्तकाव्यापारहै ॥ ९ ॥ और शरीरकाफुलावणा धनंजयकाव्यापारहै ॥ १० ॥ और शरीरकाजीवन तथामरणकालविषे लोकांतरमैंउत्क्रमण येदोनों सर्वप्राणोंका साधारणव्यापारहै ॥ अब अंतःकरणचतुष्टयकेव्यापारका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! संशयरूपमनन मनकाव्यापारहै ॥ १ ॥ और पदार्थकानिश्चयकरणा यह बुद्धिकाव्यापारहै ॥ २ ॥ और वस्तुकास्मरणरूपसामान्यज्ञान चित्तकाव्यापारहै ॥ ३ ॥ और अहंअभिमानकरणा यह अहंकारकाव्यापार ॥ ४ ॥ अब आकाशादिकपंचभूतोंके स्वरूपलक्षणका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! अवकाशरूपछिद्र आकाशका स्वरूपलक्षणहै ॥ १ ॥ और चलायमानपणा वायुका स्वरूपलक्षणहै ॥ २ ॥ और उष्णपणा तथाप्रकाशपणा तेजका स्वरूपलक्षणहै ॥ ३ ॥ और द्रवीपणा तथास्नेहपणा जलका स्वरूपलक्षणहै ॥ ४ ॥ और कठिनपणा पृथिवीका स्वरूपलक्षणहै ॥ ५ ॥ अब आकाशादिकपंचभूतोंके तटस्थलक्षणका निरूपणकरैहैं ॥ ६ ॥ हेशिष्य ! शब्दगुण आकाशका तटस्थलक्षणहै ॥ १ ॥ और शब्द स्पर्श येदोनोंगुण वायुका तटस्थलक्षणहै ॥ २ ॥ और शब्द स्पर्श रूप येतीनोंगुण तेज

का तटस्थलक्षणहै ॥ ३ ॥ और शब्द स्पर्श रूप रस येचारिगुण जलका तटस्थलक्षणहै ॥ ४ ॥ और शब्द स्पर्श रूप रस गंध येपंचगुण पृथिवीका तटस्थलक्षणहै ॥ ५ ॥ अब श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेविषयका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! शब्दगुणवाला आकाशतौ श्रोत्रइंद्रियका विषयहोवैहै ॥ १ ॥ और शब्द स्पर्श यादोनोंगुणोंवालावायु त्वक्इंद्रियका विषयहोवैहै ॥ २ ॥ और शब्द स्पर्श रूप यातीनगुणोंवालातेज चक्षुइंद्रियका विषयहोवैहै ॥ ३ ॥ और शब्द स्पर्श रूप रस याचारिगुणोंवालाजल रसन इंद्रियका विषयहोवैहै ॥ ४ ॥ और शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचगुणोंवालीपृथिवी घ्राणइंद्रियोंकी विषयहोवैहै ॥ ५ ॥ इहां आकाश जल पृथिवी यातीनोंविषे जोक्रमतैं श्रोत्र रसन घ्राण यातीनइंद्रियोंकीविषयता कथनकरीहै ॥ ॥ सो तिनआकाशादिकतीनोंविषे क्रमतैं शब्द रस गंध यातीनगुणोंका तादात्म्यसंबंध अंगीकारकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ वास्तवतैंतौ श्रोत्र रसन घ्राण येतीनइंद्रिय क्रमतैं शब्द रस गंध यातीनगुणोंकूंही विषयकरैहैं ॥ तिनगुणोंकेआश्रयद्रव्यकूं विषयकरैनहीं ॥ और त्वक् चक्षु येदोनोंइंद्रियतौ रूपस्पर्शादिकगुणोंकूं तथातिनरूपादिकगुणोंकेआश्रयद्रव्यकूं यादोनोंकूंविषयकरैहैं ॥ और हेशिष्य! जे आकाशादिकभूत नियमकरिकै श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेविषयहोवैहैं॥ तेहीआकाशादिकभूत नियमतैंविना वाकादिकइंद्रियोंकेभी विषयहोवैहैं॥ जैसे हस्तइंद्रिय नियमकरिकै पृथिवीकाहीग्रहणकरैनहीं॥ किंतु सोहस्तइंद्रिय जलकाभी ग्रहणकरैहै॥ हेशिष्य! पूर्वकथन कऱ्याजे आकाशादिकपंचसूक्ष्मभूतहैं॥ तथा तिनपंचभूतोंकाकार्यरूप जेइंद्रिय प्राण अंतःकरण आदिकहैं ॥ येसंपूर्ण व्यष्टिरूप करिकैतौ अध्यात्मसूक्ष्मशरीरविषे वर्त्तैहैं ॥ और समष्टिरूपकरिकै अधिदैवसूक्ष्मशरीरविषे वर्त्तैहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ अत्यंतसूक्ष्म हैं ॥ याकारणतैं नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै तिनसूक्ष्मपदार्थोंकाज्ञान होवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! तिनआकाशादिकभूतोंकेसूक्ष्मताविषे कौनकारणहै? ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! ताव्यष्टिसमष्टिरूपसूक्ष्मशरीरकेघटक जेआकाशादिकहैं ॥ तिनआकाशादिकोंविषे जोसूक्ष्मताहै ॥ तासूक्ष्मताविषे पंचीकरणकाअभावही कारणहै॥ शंका ॥ हेभगवन्! जापंचीकरणकेअभावकरिकै याआकाशादिकभूतोंविषे सूक्ष्मरूपताहोवैहै ॥ और जापंचीकरणकरिकै याआकाशादिकभूतोंविषे स्थूलताप्राप्तहोवैहै ॥ तापंचीकरणका क्यास्वरूप

है ॥ **समाधान** ॥ हेशिष्य! आकाश १ वायु २ तेज ३ जल ४ पृथिवी ५ यापंचभूतोंविषे एकएकभूतके पंचपंचविभागहोवैहैं॥ तहां एकएकभूतके चारिचारिविभागतौ पृथक्होवैहैं॥ और पंचमापंचमाविभाग पृथक्होवैहै॥और ताएकएकभूतके पंचमेपंचमे विभागकेभी पुनःपंचपंचविभागहोवैहैं॥ तिनपंचविभागोंविषे एकएकविभाग यथाक्रमतें एकएकभूतके चारिचारिविभागोंविषे जाइकैमिलेहैं ॥ ताकरिकै एकएकभूतके२१ एकविंशति एकविंशति विभागतौ आपणेआपणेहोवैहैं॥और चारिचारिविभाग दूसरेदूसरे भूतोंकेहोवैहैं॥जैसे एकआकाशकेपंचविभाग समानकर्‍ये॥ तिनपंचविभागोंविषे चारिविभागतौ पृथक्राखे ॥ और पंचमाविभाग पृथक् राख्या॥तापंचमेविभागकेभी पुनःपंचविभागकर्‍ये॥ तिनपंचविभागोंतें एकविभागतौ आकाशकेचारिविभागोंविषेमिलाया ॥ और दूसराविभाग वायुविषेमिलाया॥और तीसराविभाग तेजविषेमिलाया ॥ और चतुर्थविभाग जलविषेमिलाया॥ और पंचमाविभाग पृथिवीविषेमिलाया ॥ याप्रकारकीरीति वायुआदिकोंविषेभी जाणिलेणी॥ तात्पर्ययह ॥ आकाशकेपंचमेविभागके जेपंचविभागकरे हैं ॥ तिनपंचविभागोंतें जोएकविभाग आकाशकूंप्राप्तभयाहै ॥ ताएकविभागकेसमान ताआकाशकेपूर्वलेचारिविभागोंके २० विंशतिविभागहोवैहैं॥ याअभिप्रायकरिकैही तिनआकाशादिकोंके आपणेआपणे २१ एकविंशति एकविंशति विभागकथनकरेहैं॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! पंचीकरणकरिकै जोएकएकभूतविषेपंचभूतोंकाअंश अंगीकारकरोगे ॥ तौ एकहीआकाशविषे वायुपणा तथातेजपणा तथाजलपणा तथापृथिवीपणा प्रतीतहोणाचाहिये तैसे वायुआदिकोंविषेभी पांचोंभूत प्रतीतहोणेचाहिये ॥ **समाधान** ॥ हेशिष्य! तापंचीकरणकेहुएभी तिनआकाशादिकभूतोंविषे आपणेआपणेतौ २१एकविंशतिएकविंशति विभागहैं॥और वायुआदिकभूतोंका एकएकविभागहै॥याकारणतें जैसे२१एकविंशतितोपरिमाणसुवर्णविषे एकतोलापरिमाण ताम्रादिकोंकेमिलेहुएभी तासुवर्णविषे ताम्रबुद्धिहोवैनहीं॥किंतु तासुवर्णविषे सुवर्णबुद्धिहीहोवैहै॥तैसे आपणेअंशकीअधिकताकरिकै तिनआकाशादिकोंविषे वायुआदिकोंकीप्रतीतिहोवैनहीं॥किंतु आकाशविषेतौ आकाशपणाहीप्रतीतहोवैहै॥और वायुविषे वायुपणाहीप्रतीतहोवैहै॥ऐसे तेजादिकोंविषेभीतेजपणादिकहीप्रतीतहोवैहै॥हेशिष्य! यहवार्ता ब्रह्मसूत्रोंविषे व्यासभगवाननेंभी कथनकरीहै॥तहां सूत्र॥वैशेष्यात्तुतद्वाद

स्तद्वादः॥अर्थयह॥आकाशादिकपंचभूतोंका यद्यपि पंचीकरणकीरीतिसें परस्पर विभाग मिल्याहुआहै॥ तथापि तिनआकाशादिक भूतोंकाआपणाआपणाअंश अधिकहै॥ याकारणतें लोकविषे यहपृथिवीहै यहजलहै इत्यादिकभिन्नभिन्नव्यवहारहोवैहै॥१॥शंका॥ हेभगवन्! पंचीकरणवार्तिकग्रंथविषे आकाशादिकभूतोंविषे अर्धअर्धभागतौ आपणाआपणाकह्याहै ॥ और अर्द्धअर्द्धभाग दूसरे भूतोंकाकह्याहै ॥ और याग्रंथविषे आपने आकाशादिकभूतोंविषे २१ एकविंशतिविभागतौ आपणेआपणे कथनकऱ्ये ॥ और चारिविभाग अन्यभूतोंकेकथनकऱ्ये ॥ यातें आपकेकहणेका तावर्तिकग्रंथकेसाथ विरोधहोवैहै ॥ समाधान॥ हेशिष्य! तावार्तिकग्रंथविषेभी अर्द्धशब्दकरिकै समानअर्द्धका नहींकथनकऱ्याहै॥ किंतु ताअर्द्धशब्दकरिकै चारिविभागकाविषमअर्द्ध कथनकऱ्याहै ॥ यातें तावार्तिकग्रंथका विरोधहोवैनहीं॥ और हेशिष्य! तावार्तिकग्रंथविषे अर्द्धशब्दकरिकै जोकदाचित् समान अर्द्धकाभी ग्रहणकरिये ॥ तौभी विरोधहोवैनहीं ॥ काहेतें? तावार्तिकग्रंथविषे जोपंचीकरणकीप्रक्रिया कथनकरीहै ॥ ताप्रक्रियातें यहप्रक्रिया भिन्नहै ॥ तिनप्रक्रियावोंकेभेदहुएभी हमारेअद्वैत सिद्धांतकीहानिहोवैनहीं ॥ उलटा सोप्रक्रियावोंकाभेद याजगत्विषे अनिर्वचनीयताकूंही बोधनकरैहै ॥ हेशिष्य! ऐसेपंचीकृतपंचभूतोंकाकार्य जोयहस्थूलशरीरहै ॥ सोयहस्थूलशरीर आपणेविषे अनेकप्रकारके रूपादिकगुणोंकूंधारणकरैहै॥ अब तिनगुणोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! यास्थूलशरीरविषे शुक्ल १ रक्त २ कृष्ण ३ धूम्र ४ पीत ५ कपिल ६ पांडुर ७ येसप्तप्रकारकेरूपरहेहैं ॥ इहां धूमकेरूपकानाम धूम्रहै ॥ और कपिलागौकेरूपकानाम कपिलहै ॥ और कपिलवर्णकरिकैमिल्याहुआजोशुक्लहै ताकानाम पांडुरहै ॥ और याशरीरविषे कोमल १ कठिन २ मध्यम ३ उष्ण ४ शीत ५ अनुष्णाशीत ६ येषट्प्रकारकेस्पर्शरहेहैं ॥ इहां जोस्पर्श कोमलभीनहींहोवै तथाकठिनभीनहींहोवै तास्पर्शका नाम मध्यमहै ॥ और जोस्पर्श उष्णभीनहींहोवै तथाशीतभीनहींहोवै तास्पर्शकानाम अनुष्णाशीतहै॥ और याशरीरविषे सुगंध दुर्गंध यहदोप्रकारकागंधरहेहैं ॥ तहांसुगंधतौ पुण्यवान्योगीपुरुषोंकूंही प्रत्यक्षहोवैहै ॥ दूसरेजीवोंकूं सोसुगंध प्रतीतहोवैनहीं ॥ और मुखनासिकादिकअंगोंविषेस्थित जेदुर्गंधहैं ॥ तिनदुर्गंधोंकूंतौ सर्वजीव नित्यही अनुभवकरैहैं ॥ और याशरीरविषे कटु १

तीक्ष्ण २ कषाय ३ क्षार ४ अम्ल ५ मधुर येषट्प्रकारकेरसरहेहैं ॥ और याशरीरविषे ध्वनिरूपशब्द तथावर्णरूपशब्द येदोप्रकारकेशब्दरहे हैं तहां ध्वनिरूपशब्दतौ निषाद १ ऋषभ २ गांधार ३ षड्ज ४ मध्यम ५ धैवत ६ पंचम ७ याभेदकरिकैसप्तप्रकारकाहोवैहै ॥ हेशिष्य! तिनध्वनिरूपसप्तस्वरोंकेजनावणेवासते नारदमुनिनैं याप्रकारकेदृष्टांतकथनकरैं हैं ॥ तहांश्लोक ॥ षड्जंरौतिमयूरस्तु गावोनर्दंतिचर्षभं ॥ अजाविकौचगांधारं क्रौंचोनर्दतिमध्यमं ॥ १ ॥ पुष्पसाधारणेकाले कोकिलोरौतिपंचमं॥अश्वस्तुधैवतंरौति निषादंरौतिकुंजरः॥ २॥ अर्थयह॥ मयूरपक्षीतौ षड्जस्वरकाउच्चारणकरैहै ॥ १॥ और गौवां ऋषभस्वरकाउच्चारणकरै हैं ॥ २॥ और अजा अवि येदोनों गांधारस्वरकाउच्चारणकरै हैं ॥ ३॥ और क्रौंचपक्षी मध्यमस्वरकाउच्चारणकरैहै ॥ ४॥ और कोकिलपक्षीपंचमस्वरकाउच्चारणकरैहै॥ ५॥ और अश्व धैवतस्वरकाउच्चारणकरै है॥ ६ ॥ और कुंजर निषादस्वरकाउच्चारणकरै है ॥ ७ ॥ तात्पर्ययह ॥ श्रीराग १ वसंत २ पंचम ३ भैरव ४ मेघनाद ५ नदनरायण ६ येषट्प्रकारकेरागहोवैहै ॥ तिनषट्रागों विषे एकएकरागके येनिषादादिक सप्तसप्तस्वरहोवैं हैं ॥ तथा षट्षट्स्त्रियांहोवैं हैं ॥ तहां गौडी १ कोलाहासी २ धाली ३ द्रविडी ४ मालवकौशिका ५ गांधारी ६ येषट्रागिणी श्रीरागकीस्त्रियां हैं ॥ १ ॥ और आदौली १ कौशिकी २ रामगरी ३ पुटमंजरी ४ गुंगरी ५ देशाख्या ६ येषट्रागिणी वसंतरागकीस्त्रियां हैं ॥ २ ॥ और भैरवी १ गुर्जरी २ भाषा ३ वेलीवती ४ कर्णाटी ५ रक्तसिंहा ६ येषट्रागिणी पंचमरागकीस्त्रियांहैं ॥ ३॥ और त्रिगुणा १ स्तंभतीर्था २ आभीरी ३ ककुभा ४ विराडी ५ सामेरी ६ येषट्रागिणी भैरवरागकीस्त्रियांहैं ॥ ४ ॥ और बंगाला १ मधुरा २ कामदा ३ चोकमादिका ४ कंबुग्रीवा ५ देवाला ६ येषट्रागिणी मेघनादरागकीस्त्रियांहैं ॥ ५॥ और त्रोटकी १ गांधारी २ शुद्धमुदगारी ३ इत्यादिकषट्रागिणी नदनरायणरागकीस्त्रियांहैं ॥ ६ ॥ याप्रकारकीछतीसरागिणी ३६ तथाषट्राग तथासप्तस्वर येसंपूर्ण याशरीरविषेरहे हैं ॥ परंतु तेरागरागिणियोंसहितसप्तस्वर सर्वजीवोंकूं प्रत्यक्षहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे याशरीरविषेस्थितउत्तमसुगंधकूं पुण्यवान्योगीपुरुषहीजानै हैं ॥ तैसे तिन सप्तस्वरोंकूंभी कोईपुण्यवान्पुरुषहीजानै हैं ॥ तिनांनिषादादिकस्वरोंकूंही योगीपुरुष अनाहदशब्दआदिकरूपकरिकै अनुभवकरै

हैं ॥ और गायनकरणेहारेपुरुषतौ तिनसप्तस्वरोंकूंआपणेमुखतैंप्रगटकरैहैं ॥ हेशिष्य! जैसे तेध्वनिरूपशब्द अनेकप्रकारकेहैं ॥ तैसे याशरीरविषे क ख ग इत्यादिकवर्णरूपशब्दभी अनेकप्रकारकेरहेहैं ॥ तेवर्णरूपशब्दभी योगीपुरुषोंकूंतौ शरीरकेभीतरही अनुभवहोवैहैं ॥ और अन्यपुरुषोंकूंतौ मुखविषेहीप्रसिद्धहोवैहैं ॥ और याशरीरविषे रस १ रुधिर २ मांस ३ मेद ४ अस्थि ५ मज्जा ६ वीर्य ७ येसप्तधातुरहेहैं ॥ तिनसप्तधातुवोंकीउत्पत्ति अन्नजलतैंहीहोवैहै ॥ तहां यामनुष्यादिकजीवोंनैं आपणेउदरविषे पायाजो अन्न तथाजल सोअन्नजल पित्तकेतेजतैं परिपक्कहोइके चारिदिनकेपीछे प्रथम रसधातुरूपहोवैहै ॥ १ ॥ और सोरसधातुभी पित्तकेतेजतैंपरिपक्कहोइकै चारिदिनकेपीछे रुधिररूपहोवैहै ॥ २ ॥ और सोरुधिरभी तापित्तकेतेजतैं परिपक्कहोइकै चारिदिनकेपीछे मांसरूपहोवैहै ॥ ३ ॥ और सोमांसभी पित्तकेतेजतैं परिपक्कहोइकै चारिदिनकेपीछे मेदरूपहोवैहै ॥ ४ ॥ और सोमेदभी पित्तकेतेजतैं परिपक्कहोइकै चारिदिनकेपीछे अस्थिरूपहोवैहै ॥ ५ ॥ और तेअस्थिभी पित्तकेतेजतैं परिपक्कहोइकै चारिदिनकेपीछे मज्जारूपहोवैहै ॥ ६ ॥ और सोमज्जाभी पित्तकेतेजतैं परिपक्कहोइकै चारिदिनकेपीछे वीर्यरूपहोवैहै ॥ ७ ॥ इसप्रकार वैद्यकशास्त्रोंविषे तिनसप्तधातुवोंकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ और याशरीरविषे बतीस ३२ दंतरूपअस्थि रहेहैं ॥ और याशरीरविषे पादतैंलेकेमस्तकपर्यंत सप्तऊपरिएकशत १०७मर्मस्थानरहेहैं ॥ तेमर्मस्थानभी मांसमर्म १ शिरामर्म २ स्नायुमर्म ३ अस्थिमर्म ४ संधिमर्म ५ याभेदकरिकै पंचप्रकारकेहोवैहैं ॥ तिनमर्मोंविषे एकादश ११ मांसमर्महोवैहैं ॥ १ ॥ और एकतालीश ४१ शिरामर्महोवैहैं ॥ २ ॥ और सतावीश २७ स्नायुमर्महोवैहैं ॥ ३ ॥ और अष्ट ८ अस्थिमर्महोवैहैं ॥ ४ ॥ और विंश २० संधिमर्महोवैहैं ॥ ५ ॥ तिनमर्मस्थानोंविषेभी कोईकमर्मस्थानतौ शस्त्रादिकोंकरिकैभेदनकूंप्राप्तहुए शीघ्रही याजीवोंके मृत्युकाकारणहोवैहैं ॥ और कोईकमर्मस्थानतौ शस्त्रादिकोंकरिकैभेदनकूंप्राप्तहुए कालांतरविषे याजीवोंकेमृत्युकाकारणहोवैहैं ॥ और कोईकमर्मस्थानतौ शस्त्रादिकोंकरिकैभेदनकूंप्राप्तहुए याजीवोंके असाध्यरोगोंकाकारणहोवैहैं ॥ तिनमर्मस्थानोंका विशेष करिकैनिर्णय सुश्रुतादिकवैद्यकशास्त्रोंविषे कथनकऱ्याहै ॥ और याशरीरविषे अस्थियोंकीसंधियां एकशतअशी १८० रहेहैं ॥ और

याशरीरविषे नवशत ९०० स्नायुरहेहैं॥ और याशरीरविषे अष्टसहस्रकोटियां केशरोमरहेहैं॥ और किसीशास्त्रविषेतौ तिनकेश रोमोंकीसंख्या साढीतीनकोटीकथनकरीहै॥ सो तिनकेशरोमोंकेरहणकेस्थानजे रोमकूपहैं॥ तिनोंकेसंख्याकूंलैके कथनकरीहै॥ और याशरीरकेमुखविषे जाजिव्हास्थितहै॥साजिव्हा द्वादशपल १२ परिमाणहोवैहै॥ और याशरीरविषेरक्तवर्णवाला जोहृदयमध्य है॥ जिसहृदयमध्यकूं शास्त्रविषे हार्दपद्मकहेहैं॥ सोहृदयमध्य अष्टपल ८ परिमाणहोवैहै॥ और याशरीरकेहृदयदेशविषेस्थित जोपित्तधातुहै॥ सोपित्तधातु एकप्रस्थपरिणामहोवैहै॥ इहां पलपरिमाणका तथाप्रस्थपरिमाणका यहस्वरूपहै॥ पंचगुंजा परिमाणकानाम मापहै॥ तिनषोडशमाषोंकानाम कर्षहै॥ तिनचारिकर्षोंकानाम पलहै॥ तिनचारिपलोंकानाम कुडवहै॥ तिन चारिकुडवोंकानाम प्रस्थहै॥ और याशरीरविषे विशेषकरिकैकंठदेशविषेस्थित जोकफधातुहै॥ सोकफधातु चारिप्रस्थ परिमा णहोवैहै॥ और वीर्यरूपसप्तमधातु यासर्वशरीरविषेस्थितहुआभी कंठ हृदय मूर्द्ध यातीनस्थानोंविषे विशेषकरिकैरहेहै॥ सोवीर्य यासर्वशरीरविषे कुडवपरिमाणरहेहै॥ और याशरीरविषे मेदधातु दोप्रस्थपरिमाणरहेहै॥ और याशरीरविषे बस्तिनामास्था नविषेस्थित जोमूत्रहै॥ तथासंग्रहणीनामास्थानविषेस्थित जोपुरीषहै॥ तिनदोनोंकीतौ अधिकअन्नजलकेग्रहणतैंतौ वृद्धिहो वैहै॥ और न्यूनअन्नजलकेग्रहणतैं न्यूनताहोवैहै॥ यातैं तिनमूत्रपुरीषकेपरिमाणका कोईनियमनहींहै॥ हेशिष्य! यागर्भउप निपषद्‌कादृष्टा जोपिप्पलादनामाऋषिहै॥ तापिप्पलादनामाऋषिनैं तागर्भउपनिपद्‌विषे याशरीरकेजिह्वादिकअंगोंकापरिमाण याप्रकारकाकथनकऱ्याहै॥ और रसरुधिरादिकधातुवोंकातौ जलकीनव अंजुलिआदिकपरिमाण याज्ञवल्क्यादिकऋषियोंनें कथनकऱ्याहै॥ अब यागर्भउपनिषद्‌विषे जेशरीरकेअवयव नहींकथनकरेहैं॥ तिनअवयवोंकूं दूसरेशास्त्रोंकेप्रमाणतैं इहां निरूप णकरैहैं॥ हेशिष्य! यालोकविषे सर्वजीवोंकाशरीर पादकेअग्रभागतैंलैके केशपर्यंत आपणेआपणे छियानवेअंगुल ९६ परि माणदीर्घहोवैहै॥ और याशरीरकेदोनोंपासोंविषे धनुषकेआकार षोडश षोडश अस्थिरहेहैं॥ और जैसे यालोकविषे पिप्प लादिकवृक्षकेएकमूलतैं प्रथम स्थूलस्कंधनिकसेहैं॥ तिनस्थूलस्कंधोंतैं अनेकस्थूलशाखानिकसेहैं॥ और तिनस्थूलशाखावोंतैं

अनेकसूक्ष्मशाखानिकसेहैं ॥ और तिनसूक्ष्मशाखावोंतें अनेकअत्यंतसूक्ष्मशाखानिकसेहैं ॥ तैसे याहृदयदेशतें प्रथम सुषुम्ना नामानाडीनिकसेहैं ॥ तासुषुम्नातें एकशत १०० नाडियांनिकसेहैं ॥ ताएकशतनाडियोंविषेभी एकएकनाडितें एकएकशत १०० नाडियांनिकसेहैं ॥ तिनएकशतनाडियोंविषेभीएकएकनाडीतें बाहतरिसहस्र ७२००० नाडियांनिकसेहैं ॥ येसंपूर्णनाडियांमिलिकै बाहतरिकोटि दशसहस्र एकशत एक इतनीनाडियांहोवैहैं ॥ तेसंपूर्णनाडियां पादतैंलेकेमस्तकपर्यंत यासर्वशरीरकूंव्याप्तकरिके रहेहैं ॥ याप्रकार प्रश्नउपनिषद्‌विषे नाडियोंकीसंख्या कथनकरीहै ॥ और छियानवेअंगुल ९६ परिमाण जोयहशरीरहै तिसशरीरतें यहप्राणवायु नासिकाद्वारा द्वादशअंगुल १२ परिमाण बाहरिजावैहै ॥ याकारणतें सोप्राणवायु अष्टोत्तरशतअंगुल १०८ परिमाणहोवैहै ॥ और याशरीरविषे पादकेअग्रभागतैंलेके अठतालीशअंगुल ४८ ऊपरि जोदेशहै ॥ अथवा केशकेअग्रभागतैंलेके अठतालीशअंगुल ४८ नीचैजोदेशहै ॥ सोदेश याशरीरका मध्यदेशहै ॥ तामध्यदेशविषे तप्तसुवर्णकेसमानतेजवाला तथा चारिकोणवाला एक अग्निकास्थानरहेहै ॥ सोअग्निरूपतेज नाडीमार्गद्वारा सर्वशरीरविषे व्याप्तहोइकैरहेहै ॥ तथा मस्तकविषे स्थितचंद्रमंडलपर्यंत व्याप्तहोइकैरहेहै ॥ यहवार्ता आगमशास्त्रविषे भगवान्‌महादेवनेंभी कथनकरीहै ॥तहां श्लोक॥ सर्वेषामपि जंतूना मूर्ध्निंतिष्ठतिचंद्रमाः ॥ अधोभागेरविःप्रोक्तो मृत्युकालेविपर्ययात् ॥ अर्थयह ॥ सर्वजीवोंकेमूर्धस्थानविषेतो चंद्रमा रहेहै॥ और नीचैस्थानविषे सूर्यरहेहै ॥ और याजीवोंकूं जबी मरणकाल प्राप्तहोवैहै ॥ तबीतो चंद्रमा नीचैस्थानविषेआवैहै ॥ और सूर्यमूर्धस्थानविषेजावैहै ॥ हेशिष्य ! ताचारिकोणवालेकुंडविषेस्थित जोअग्निरूपतेजहै ॥ सोअग्निरूपतेज याशरीरइंद्रियादिकसर्वसंघातकूं सामर्थ्यकीप्राप्तिकरैहै ॥ याकारणतें शास्त्रवेत्तापुरुष ताअग्निरूपतेजकूं शक्ति यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और सोअग्निरूपतेज अत्यंतसूक्ष्महै ॥ यातें याजीवोंकरिकै जान्याजावैनहीं ॥ और सोअग्निरूपतेजही आपणेउष्णतारूपकरिके यासर्व प्राणियोंके जीवनकाकारणहै ॥ ऐसेअग्निरूपतेजकास्थान एकअंगुलपरिमाणहोवैहै॥और पायुस्थानतैंदोअंगुलऊपरिदेशविषे तथा उपस्थस्थानतैंदोअंगुलनीचैदेशविषे सोअग्निकास्थानरहेहै ॥ हेशिष्य! सोएकअंगुलपरिमाण चारिकोणवाला अग्निकास्थान

जिसशरीरकेमध्यदेशविषेरहेहैं ॥ तामध्यदेशविषे नवअंगुलपरिमाण अवकाशरहेहै ॥ ताकेविषे चारिअंगुलपरिमाणदीर्घ तथाचारिअंगुलपरिमाणचौडा एक कंदकेसमान मांसकापिंडरहेहै ॥ तामांसकापिंडरूपकंदतें एक नाभिचक्ररूपकमलका नाल उत्पन्नहोवैहै ॥ कैसाहैसोनाल ? दंडकीन्यांई नवअंगुलपरिमाण दीर्घहै ॥ तथारसादिकसप्तधातुवोंकरिकैवेष्टितहै॥ तथा याशरीरके सर्वअवयवोंकामूलरूपहै ॥ ऐसेनालकेमध्यविषे एकनाभिचक्ररहेहै ॥ कैसाहैसो नाभिचक्र ? जैसे लोकप्रसिद्धरथकेचक्रकेअराहोवैहैं ॥ तैसे सोनाभिचक्रभी द्वादशअराकरिकैयुक्तहै ॥ तथा याशरीरकरिकैवेष्टितहै ॥ हेशिष्य! जैसे ऊर्णनाभीजंतु तंतुवोंविषे भ्रमणकरैहै ॥ तैसे पुण्यपापकर्मरूपतंतुवोंकूंआश्रयणकरिकै यहजीवात्मा इसीनाभिचक्रविषे भ्रमणकरेहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! पादतैलेकेमस्तकपर्यंत सर्वशरीरविषे यहजीवात्मा व्याप्यकरिकैरहेहै ॥ यातें याजीवात्माकी एकनाभिचक्रविषेही स्थितिकहणी संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! यहजीवात्मा यद्यपि पादतैलेकेमस्तकपर्यंत सर्वशरीरविषेस्थितहै॥तथापि नाभि हृदय कंठ चक्षु मूर्धा इत्यादिकस्थानोंविषे विशेषकरिकै ताजीवात्माकीअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ याकारणतें शास्त्रवेत्तापुरुष ताजीवात्माकीनाभिआदिकस्थानोंविषे स्थिति कथनकरैहैं ॥ हेशिष्य! तिनजीवकेस्थानोंविषेभी प्रथम चतुरकोणरूपकरिकै वर्णनकऱ्या जोआधारचक्र है॥ जआधारचक्रकूं मूलचक्रभीकहेहैं॥ ताआधारचक्रविषे यहप्राणसहितजीव सर्वदा निवासकरैहै॥ हेशिष्य! ताआधारचक्रतैंऊपरि तथानाभिचक्रतैंनीचै सर्पकीन्यांई वक्रआकार एककुंडलिनीनामाशक्तिरहेहै ॥ साकुंडलिनीशक्ति कारणस्वरूपब्रह्मकी मूर्तिरूप है ॥ और भूमि १ जल २ अग्नि ३ वायु ४ आकाश ५ मन ६ बुद्धि ७ अहंकार ८ येअष्टप्रकारकीअपरप्रकृति जे गीताविषेकथन करीहैं ॥ तिनोंकाभी यहकुंडलिनीनामाशक्तिहीकारणहै ॥ और यहकुंडलिनीनामाशक्तिही प्राणवायुकरिकैताडनकरीहुई सर्व शब्दोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ और यहकुंडलिनीही प्राणोंके बाहरिब्रह्मलोकजाणेविषे प्रतिबंधकहै॥ काहेतें? याजीवोंकेउदरविषेस्थित जो प्राणवायुहै ॥ सोप्राणवायु ऊपरिदशमद्वारविषेजाइके बाहरिब्रह्मलोककेजाणेकाउद्यमकरैहै ॥ परंतु सोप्राणवायु तादशमद्वारतैंबाहरि निकसिसकैनहीं ॥ काहेतें ? तादशमद्वारतैंबाहरिनिकसणेकामार्ग सुषुम्नानाडीहै ॥ तासुषुम्नानाडीकेमुखकूं यहकुंडलिनी

आपणेमुखसैंनिरोधकरिकै आपणेस्थानविषे शयनकरैहै ॥ याकारणतैं यहप्राणवायु ताब्रह्मलोकविषेजाइसकैनहीं ॥ शंका ॥
हेभगवन्! साकुंडलिनी किसकालविषे जाग्रत्कूंप्राप्तहोइकै तासुषुम्नानाडिमुखका परित्यागकरैहै?॥ समाधान॥ हेशिष्य! योगसा
धनकरिकैचलायमानकर्‍याजोप्राणवायुहै ॥ ताप्राणवायुकरिकै जबी साकुंडलिनी जाग्रत्कूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी साकुंडलिनी हृदय
आकाशकूंव्याप्तकरिकै स्फुरणहोवैहै ॥ तथा दशमद्वारपर्यंत जावैहै॥ कैसीहैसाकुंडलिनी? शेषनागकेसमान जाकीउज्ज्वलमूर्तिहै॥
हेशिष्य! जिसकालविषे योगसाधनकरिकैचलायाहुआ सोप्राणवायु अंतरअग्निसहित तासुषुम्नानाडीकेमुखरूपमार्गद्वारा ता
शरीरकेमध्यविषेप्रवेशकरैहै॥ तिसकालविषे जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहुई साकुंडलिनी तासुषुम्नानाडीकेमुखकूं निरोधकरैनहीं ॥ अब
आधारचक्रादिकोंविषे प्राणोंकीस्थितिरूप जोप्रत्याहारहै ताकेनिरूपणकरणेवासते प्रथम ताकेउपयोगीनाडियोंकास्वरूप निरूप
णकरैहै॥ हेशिष्य! याशरीरकेमध्यविषेस्थित जोमांसकापिंडरूपकंदहै॥ ताकंदकेमध्यविषे एकसुषुम्नानामानाडीरहेहै॥ तासुषुम्नाना
डीकेचारोंओरतैं दूसरीअनेकनाडियांरहेहैं॥ तिनसर्वनाडियोंकेमध्यविषे येचतुर्दशनाडियांप्रधानहैं ॥ सुषुम्ना १ इडा २ पिंगला ३
सरस्वती ४ कुहू ५ वारणा ६ यशस्विनी ७ पूषा ८ पयस्विनी ९ शंखिनी १० गांधारी ११ हस्तिजिव्हा १२ विश्वोदरा १३ अलंबु
षा १४ और याचतुर्दशनाडियोंविषेभी सुषुम्ना १ इडा २ पिंगला ३ येतीननाडियां प्रधानहैं॥ और यातीननाडियोंविषेभी एक
सुषुम्नानाडी प्रधानहै ॥ जासुषुम्नानाडी ब्रह्मलोककीप्राप्तिद्वारा मुक्तिकामार्गहै ॥ तथा सर्वविश्वोंकूंधारणकरणेहारीहै ॥ अब या
चतुर्दशनाडियोंकेस्थानोंका निरूपणकरैहैं॥ हेशिष्य! तानाडीकंदकेमध्यदेशविषेतौ सासुषुम्नानाडीस्थितहै ॥ और याशरीरके
पृष्ठदेशकेमध्यविषेस्थित जोदीर्घअस्थिहै ॥ ताअस्थिरूपमार्गद्वारा सासुषुम्नानाडी मूर्धस्थानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तासुषुम्नाना
डीकेवामभागविषे इडानामानाडीस्थितहै ॥ और तासुषुम्नाकेदक्षिणभागविषे पिंगलानाडीस्थितहै ॥ और सुषुम्ना इडा पिंगला
यातीननाडियोंकेअग्रभागविषे तथापृष्ठभागविषे एकएकनाडीरहेहै॥ तहां सुषुम्नानाडीकेपृष्ठभागविषेतौ सरस्वतीनाडीरहेहै॥ और
अग्रभागविषे कुहूनाडीरहेहै ॥ और इडानामानाडीके पृष्ठदेशविषेतौ गांधारीनाडीरहेहै॥ और अग्रभागविषे हस्तिजिव्हाना

डीरहेहै ॥ और पिंगलानामानाडीके पृष्ठभागविषेतौ पूषानाडीरहेहै ॥ और अग्रभागविषे यशस्विनीनाडीरहेहै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार तिननवनाडियोंकी तीनपंक्तिहोवेहै ॥ तहां एकतौ अग्रभागविषेस्थित तीननाडियोंकीपंक्ति है और दूसरी मध्यभागविषेस्थित तीननाडियोंकीपंक्ति और तीसरी पृष्ठभागविषेस्थित तीननाडियोंकीपंक्ति ॥ तहां सुषुम्नाकेवामभागकीतरफसें तिननाडियोंकीगिणतीकरणेतें यहक्रमसिद्धहोवैहै ॥ हस्तिजिव्हा १ कुहू २ यशस्विनी ३ येतीननाडियां अग्रभागकी प्रथमपंक्तिहैं ॥ और इडा १ सुषुम्ना २ पिंगला ३ येतीननाडियां मध्यभागकी दूसरीपंक्तिहै ॥ और गांधारी १ सरस्वती २ पूषा ३ येतीननाडियां पृष्ठदेशकी तीसरीपंक्तिहै ॥ इतनेकरिकै नवनाडियोंकेस्थानकहे ॥ अब बाकीके पंचनाडियोंकेस्थानोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! प्रथमपंक्तिविषे हस्तिजिव्हा कुहू यादोनोंनाडियोंकेमध्यविषे विश्वोदरानामानाडी रहेहै ॥ और तिसीप्रथमपंक्तिविषे कुहू यशस्विनी यादोनोंनाडियोंकेमध्यविषे वारणानामानाडी रहेहै ॥ और तिननाडियोंकीतीसरीपंक्तिविषे गांधारी सरस्वती यादोनोंनाडियोंकेमध्यविषे पयस्विनीनामानाडी रहेहै ॥ और तिसीतीसरीपंक्तिविषे सरस्वती पूषा यादोनोंनाडियोंकेमध्यविषे शंखिनीनामानाडी रहेहै ॥और अलंबुषानामानाडी ताकंदकेनीचे रहेहै॥यातें तिनचतुर्दशनाडियोंका यहक्रम सिद्धभया॥ हस्तिजिव्हा १ विश्वोदरा २ कुहू ३ वारणा ४ यशस्विनी ५ येपंचनाडियां प्रथम अग्रपंक्तिविषेस्थितहै ॥ और इडा १ सुषुम्ना २ पिंगला ३ येतीननाडियां दूसरी मध्यपंक्तिविषेस्थितहैं ॥ और गांधारी १ पयस्विनी २ सरस्वती ३ शंखिनी ४ पूषा ५ येपंचनाडियां तीसरी पृष्ठपंक्तिविषेस्थितहै ॥ और एक अलंबुषानामानाडी ताकंदकेनीचेदेशविषेस्थितहै ॥ इतने करिकैताकंददेशविषे नाडियोंकीस्थिति निरूपणकरी ॥ अब तेसुषुम्नाआदिकनाडियां ताकंदतैंनिकसिकै जिसजिसस्थानविषेजाइके जिसजिसव्यापारकूंकरैहैं ॥ तिनस्थानोंका तथा तिनव्यापारोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! ताकंदतैंनिकसिकै सासुषुम्नानामानाडीतौ मूर्धस्थानविषेजाइकै सर्वविश्वकाधारणरूपव्यापारकूं करैहै ॥ और इडा पिंगला येदोनोंनाडियांतौ यथाक्रमतें वामदक्षिणनासिकाविषेजाइकै गंधकाग्रहणव्यापारकूं करैहै ॥ और गांधारी पूषा येदोनोंनाडियांतौ यथाक्रमतें वामदक्षिणनेत्र

विषेजाइके रूपकाग्रहणरूपव्यापारकूं करैहैं ॥ और शंखिनी यशस्विनी येदोनोंनाडियांतौ यथाक्रमतैं वामदक्षिणकर्णविषेजाइके शब्दकाग्रहणरूपव्यापारकूंकरैहैं ॥ और सरस्वतीनाडीतौ रसनविषेजाइके रसकाग्रहणरूपव्यापारकूं करैहैं ॥ और हस्तिजिव्हा पयस्विनी येदोनोंनाडियांतौ यथाक्रमतैं वामदक्षिणपादकेअंगुष्ठविषेजाइके गमनरूपव्यापारकूंकरैहैं ॥ और अलंबुषानाडीतौ पायुस्थानविषेजाइके मलादिकोंकापरित्यागरूपव्यापारकूं करैहै ॥ और कुहूनाडीतौ उपस्थस्थानविषेजाइके विषयानंदरूपव्यापारकूं करैहै ॥ और विश्वोदरा वारणा येदोनोंनाडियांतौ यथाक्रमतैं वामदक्षिणहस्तविषेजाइके वस्तुकाग्रहणरूपव्यापारकूं करैहैं ॥ हेशिष्य! इनचतुर्दशनाडियोंतैंआदिलैके असंख्यातनाडियां याशरीरविषेस्थितहैं ॥ तिनसर्वनाडियोंविषे प्राणवायु भ्रमणकरैहै ॥ यातैं प्राणोंकेगमनकीमार्गरूपता तिनसर्वनाडियोंका साधारणव्यापारहै ? इतनेकरिकै नाडियोंकेव्यापारकानिरूपणकऱ्या ॥ अब तिननाडियोंविषेविचरणेहारेप्राणोंके मुख्यमुख्यस्थानोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जिसप्राणवायुके अपानादिकभेदहोवैहैं ॥ तथा जोप्राणवायु तानाडीकंदकेनीचैरहैहै ॥ सोप्राणवायु मुख नासिका हृदय नाभि पादका अंगुष्ठ यास्थानोंविषेरहैहै ॥ और याशरीरकेनाभिस्थानतैंलैके जंघापर्यंत देशविषे अपानवायु रहैहै ॥ तादेशविषेभी पायु उपस्थ यादोनोंस्थानोंविषे सोअपान विशेषकरिकैरहैहै ॥ और दोश्रोत्र दोचक्षु दोहस्तपाद दोपादोंकेगुल्फ पृष्ठदेशविषेस्थितदीर्घ अस्थि कटि उर यास्थानोंविषे व्याननामावायु रहैहै ॥ और याशरीरकेसर्वसंधियोंविषे तथादोहस्तपादोंविषे उदाननामावायु रहैहै ॥ और समाननामावायुतौ यासर्वशरीरकूंव्याप्यकरिकै रहैहै ॥ और सो समाननामावायुही अंतरअग्निकेसहित भोजन करेहुएअन्नकेरसकूं सर्वशरीरविषेव्याप्तकरैहै ॥ और सो समानवायुही पूर्वउक्तसर्वनाडियोंविषे विचरैहै ॥ और नाग कूर्म कृकल देवदत्त धनंजय येपंचवायुतौ यथाक्रमतैं त्वचा रुधिर मांस मेद अस्थि यापांचोंविषेरहैहैं ॥ इतनेकरिकै प्राणोंकेस्थानका निरूपणकऱ्या ॥ अब तिनप्राणोंकेव्यापारोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! याशरीरतैं मुखनासिकाद्वारा वायुकूंबाहरिकरणा याका नाम श्वासहै ॥ और बाहरिलेवायुकूं तामुखनासिकाद्वारा शरीरकेभीतरलेआवणा याकानाम प्रश्वासहै ॥ येदोनों प्राणके

व्यापारहैं ॥ और मलमूत्रादिकोंकापरित्यागकरणा यह अपानवायुकाव्यापारहै ॥ और बलकरिकैसिद्धहोणेहारे जेग्रहण त्याग चेष्टा आदिकहैं ॥ सो व्यानवायुकाव्यापारहै ॥ और याशरीरकेउत्थानादिक उदानवायुकाव्यापारहै ॥ और सर्वशरीरविषेव्यापक जोप्राणोंकाचलणाहै ॥ सो समानवायुकाव्यापारहै ॥ और उद्गार हिडकी यह नागवायुकाव्यापारहै ॥ और नेत्रोंकानिमीलन तथाउन्मीलन यह कूर्मवायुकाव्यापारहै ॥ और छिक्का कृकलवायुकाव्यापारहै ॥ और विजृंभण देवदत्तवायुका व्यापारहै ॥ और शरीरकासूजणा धनंजयवायुकाव्यापारहै ॥ इतनेकरिकै प्राणोंकेव्यापारोंका निरूपणकन्या ॥ अब योगीपुरुषोंकूंकरणेयोग्य जोप्राणोंकानिरोधरूपप्रत्याहारहै ताप्रत्याहारविषेउपयोगी जेअष्टादशस्थान वसिष्ठभगवान्नैं कथनकरेहैं तिनस्थानोंका निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य! पादकाअंगुष्ठ १ गुल्फ २ जंघोंकामध्य ३ चित्तिमूल ४ जानु ५ ऊरुकामध्य ६ पायुकामूल ७ शरीरकामध्य ८ उपस्थकामध्य ९ नाभि १० हृदय ११ कंठकूप १२ तालुकामूल १३ नासिकाकामूल १४ दोअक्षिकामध्य १५ दोभ्रूकामध्य १६ ललाट १७ मूर्धा १८ येअष्टादशस्थान ताप्रत्याहारकेहैं ॥ और पूर्वजो सप्तऊपरिशत १०७ मर्मस्थानकहेथे ॥ तेमर्मस्थान याअष्टादशस्थानोंकेसमीपवर्तीहीहैं ॥ याकारणतें तेमर्मस्थान याअष्टादशस्थानोंकेअंतर्भूतहीहैं ॥ इहां जंघोंकेपृष्ठदेशकामांस जिसस्थानतैंलैके वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तास्थानकानाम चित्तिमूलहै ॥ और कंठविषेस्थितघंटिकाके अधोदेशकानाम कंठकूपहै ॥ पूर्व पादकेअग्रभागतैंलैके केशकेअग्रभागपर्यंत छियानवे ९६ अंगुल शरीरकापरिमाण लोकदृष्टिकेअनुसार कथनकन्याथा ॥ अब वसिष्ठभगवान्नैं जिसप्रकार याशरीरकापरिमाण कथनकन्याहै ताका निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य! पादकेअंगुष्ठतैंलैके याशरीरका पृथक्परिमाणवर्णनकरणा संभवैनहीं ॥ किंतु अंगुष्ठतैंआदिलैके जितनेकी यापादकेअवयवहैं ॥ तिनसंपूर्णोंका पादशब्दकरिकैहीग्रहणहोवैहै ॥ यातैं पादतैंलैकेही याशरीरकापरिमाण वर्णनकरणा उचितहै ॥ तहांपादतैंलैके साढेचारीअंगुलपरिमाणऊपरिलेदेशविषे गुल्फ रहेहैं ॥ और तागुल्फदेशतैंलैके दशअंगुलपरिमाणऊपरिलेदेशविषे जंघोंकामध्य रहेहै ॥ और ताजंघोंकेमध्यदेशतैंलैके एकादशअंगुलपरिमाणऊपरिलेदेशविषे चित्तीमूल रहेहै ॥ और ताचित्तिमूलदेशतैंलैके दो

अंगुलपरिमाणऊपरिलेदेशविषे जानु रहेहै ॥ और ताजानुदेशतेंलेके नवअंगुलपरिमाणऊपरिलेदेशविषे ऊरुकामध्य रहेहै॥ और ताऊरुकेमध्यदेशतेंलेके नवअंगुलपरिमाणऊपरिलेदेशविषे पायुकामूल रहेहै ॥ और तापायुकेमूलदेशतेंलेके अढाईअंगुलपरिमाणऊपरिलेदेशविषे शरीरकामध्य रहेहै ॥ और ताशरीरकेमध्यदेशतेंलेके अढाईअंगुलपरिमाणऊपरिलेदेशविषे उपस्थ रहेहै और ताउपस्थदेशतेंलेके साढेदशअंगुलपरिमाणऊपरिलेशविषे नाभि रहेहै ॥ और तानाभिदेशतेंलेके चतुर्दशअंगुलपरिमाणऊपरिलेदेशविषे हृदयकामध्य रहेहै ॥ और ताहृदयकेमध्यदेशतेंलेके षट्अंगुलपरिमाणऊपरिलेदेविषे कंठकूप रहेहै ॥ और ताकंठकूपदेशतेंलेके चारिअंगुलपरिमाणऊपरिलेदेशविषे जिव्हाकामूल रहेहै ॥ और ताजिव्हाकेमूलदेशतेंलेके चारिअंगुलपरिमाणऊपरिलेदेशविषे नासिकाकामूल रहेहै ॥ और तानासिकाकेमूलदेशतेंलेके अर्धअंगुलपरिमाणऊपरिलेदेशविषे चक्षुकामध्य रहेहै ॥ और ताचक्षुकेमध्यदेशतेंलेके अर्धअंगुलपरिमाणऊपरिलेदेशविषे भ्रूकामध्य रहेहै ॥ और ताभ्रूकेमध्यदेशतेंलेके तीनअंगुलपरिमाणऊपरिलेदेशविषे ललाट रहेहै ॥ और ताललाटदेशतेंलेके तीनअंगुलपरिमाणऊपरिलेदेशविषे मूर्धस्थान रहेहै ॥ इसप्रकार पादतेंलेकेमूर्धस्थानपर्यंत यासर्वशरीरका छियानवेअंगुलपरिमाण वसिष्ठभगवान्नें कथनकऱ्याहै ॥ जिसशरीरकूं याजीवोंनें अहंबुद्धिकरिकैग्रहणकऱ्याहै ॥ इतनेग्रंथकरिकै याशरीरकावर्णनकऱ्या॥ अब याशरीरकेवर्णनका विवेकवैराग्यरूपफल निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य! पिप्पलादऋषिनें गर्भउपनिषद्विषे जिसशरीरकूं भूतभौतिकरूपकरिकै वर्णनकऱ्याहै ॥ सोयहशरीर इतनेअवयवोंकासमुदायरूपहै ॥ तेअवयव येहैं ॥ आकाशादिकपंचमहाभूत तथाश्रोत्रादिकदशइंद्रिय तथा तिनइंद्रियोंके शब्दादिकदशविषय तथाअंतःकरणचतुष्टय तथादशप्राण तथात्वगादिकसप्तधातु तथाअसंख्यातनाडियां तथासप्तऊपरिएकशत मर्मस्थान तथापित्तादिकतीनदोष तथाकंठ तथाहृदयकमल तथाविष्ठामूत्र तथाअनंतकेशलोम इत्यादिकअवयवोंकेसमुदायकानाम शरीरहै ॥ याप्रकारकेअवयवोंतेंभिन्नकरिकै याशरीरकाकिंचित्मात्रभी स्वरूपसिद्धहोइसकेनहीं ॥ ऐसे निषिद्धशरीरविषे याजीवोंकूं आत्मबुद्धिकरणी योग्यनहींहै ॥ काहेतें ? तिनविष्ठामूत्रादिकमलिनवस्तुवोंकासमुदायरूप यहशरीरहै ॥ तेविष्ठामूत्रादिकम

लिनवस्तु नरकादिकस्थानोंविषेभीरहेहैं ॥ यातें येअज्ञानीजीव जैसे याशरीरविषेआत्मबुद्धिकरैहैं ॥ तैसे नरकादिकोंविषेस्थित तिनविष्ठामूत्रादिकपदार्थोंविषे आत्मबुद्धि किसवासतेनहींकरते ? किंतु तिनोंविषेभी साआत्मबुद्धिकरीचाहिये ॥ और याशरीरतैंबाह्यस्थितजे विष्ठा मूत्र रुधिर मांस अस्थि आदिकमलिनपदार्थहैं ॥ तिनपदार्थोंविषे जैसे कोईभीपुरुष आत्मबुद्धिकरतानहीं ॥ उलटा तिनविष्ठामूत्रादिकपदार्थोंके दर्शनतैं तथास्पर्शतैं लोक स्नानादिककरैहैं ॥ तैसे तिनविष्ठामूत्रादिकपदार्थोंकासमूहरूप जोयहशरीरहै ॥ ताशरीरविषेभी आत्मबुद्धिकरणीयोग्यनहींहै ॥ किंतु उलटा याशरीरतैं गिलानिकरणीयोग्यहै ॥ किंवा जैसे दूसरेकिसीपुरुषकेशरीरविषेस्थित जेकेशदंतादिकपदार्थहैं ॥ तथा किसीमार्गविषेस्थितजेकेशदंतादिकपदार्थहैं ॥ तिन केशदंतादिकोंविषे जैसे याजीवोंकूं आत्मबुद्धिहोतीनहीं ॥ तैसे तिनकेशदंतादिकपदार्थोंकेसमूहरूपयाशरीरविषेभी आत्मबुद्धिकरणी योग्यनहींहै ॥ किंवा मरणअवस्थाविषे तथामूर्छाअवस्थाविषे तथासुषुप्तिअवस्थाविषे किसीभीजीवकूं याशरीरविषे आत्मबुद्धिहोवैनहीं ॥ यातें जाग्रत्अवस्थाविषे याजीवोंकूं याशरीरविषे जाआत्मबुद्धिहोवैहै ॥ साबुद्धि मिथ्याहीहै ॥ तात्पर्य यह ॥ जोपदार्थ कदाचित्तौ प्रतीतहोवैहै ॥ और कदाचित् नहींप्रतीतहोवैहै ॥ सोपदार्थ मिथ्याहीहोवैहै ॥ जैसे मृगतृष्णाकाजल कदाचित्तौ प्रतीतहोवैहै ॥ और कदाचित् नहींप्रतीतहोवैहै ॥ यातें सोमृगतृष्णाकाजल मिथ्याहीहै ॥ तैसे याशरीरविषेआत्मबुद्धिभी कदाचित् प्रतीतहोवैहै ॥ यातें साआत्मबुद्धिभी मिथ्याहीहै ॥ किंवा किसीव्याधिकरिकै अथवा शस्त्रकरिकै याशरीरविषे उत्पन्नभयाजोव्रणहै ॥ जोव्रण दुर्गंधकरिकै तथाकृमिपूयकरिकै युक्तहै ॥ ऐसेव्रणकूंदेखिकरिकै सर्वजीवोंकूं आपणेमनविषे ग्लानिहोवैहै ॥ परंतु तिनव्रणादिकविकारोंकाकारणजोयहशरीरहै ॥ ताशरीरविषे याजीवोंकूं गिलानिहोतीनहीं ॥ यह हमारेकूं बहुतआश्चर्यलागताहै ॥ किंतु ताव्रणतैंभी याशरीरविषे अधिकग्लानिकरीचाहिये ॥ किंवा यालोकविषे जैसे प्रसिद्धअन्नकाविकार जोविष्ठाहै तथावमनहै तथादुर्गंधिवालाजोअन्नहै ॥ तिनविष्ठादिकोंकूंदेखिकै सर्वजीवोंकूं ग्लानिहोवैहै ॥ तैसे यहशरीरभी ताअन्नकाहीविकारहै ॥ यातें याशरीरविषे हमविवेकीपुरुषोंकूंग्लानि किसवासतेनहीं

होती ? किंतु जैसे बाहरिलेविष्ठादिकपदार्थोंविषे हमारेकूं ग्लानिहोवैहै ॥ तैसे याशरीरविषेभी ग्लानिहोणीचाहिये ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार यहअधिकारीपुरुष जबी याशरीरकेदोषोंकाविचारकरैहै ॥ तबीही याअधिकारीपुरुषकूं वैराग्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं या अधिकारीपुरुषनैं याशरीरविषे अवश्यकरिकै तिनदोषोंकाविचारकरणा ॥ अब दूसरीरीतिसैंभी ताशरीरकेवर्णनका वैराग्यरूपफल निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! तागर्भउपनिषद्विषेकथनकऱ्याजो याजीवोंकाजन्महै ॥ ताजन्मकूं यहअधिकारीपुरुष दुःखरूपकरिकैचिंतनकरै ॥ ताचिंतनकरिकैभी याजीवोंकूं अवश्यकरिकै वैराग्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ अब ताजन्मदुःखोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! पिताकेशुक्रतैं तथामाताकेशोणिततैं जिनशरीरोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तिनशरीरोंकानाम योनिजशरीरहै ॥ ऐसेमनुष्यादिकयोनिजशरीरोंके जितनेपितामाताहैं ॥ तिनपितामातावोंकेशरीर रसरुधिरादिकसप्तधातुरूपहोवैहैं ॥ तथा पितामाताके शुक्रशोणिततैंउत्पन्नहोवैहैं ॥ यहवार्ता सर्वबुद्धिमान्पुरुषोंकूं संमतहै ॥ ऐसेपितामाताकेशरीरतैं जेमनुष्यादिकशरीर उत्पन्नहोवैहैं ॥ ते शरीरभी तिसीप्रकारकेहोवैहैं ॥ हेशिष्य ! पंचभूतोंतैंआदिलेके केशलोमपर्यंत तिनसर्वअवयवोंकासमुदायरूप जोयहस्थूलदेह हमनैं तुमारेप्रति पूर्व वर्णनकऱ्याथा ॥ सोयहदेह क्षणक्षणविषे विशीर्णभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती यादेहकूं शरीर यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ **शंका** ॥ हेभगवन् ! यहशरीर किसकारणकरिकै क्षणक्षणविषे विशीर्णभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ **समाधान** ॥ हेशिष्य! याशरीरकेभीतर तीनअग्नि रहेहैं ॥ ते तीनअग्निही याशरीरकेविशीर्णभावका कारणहैं ॥ तहां एकतौ उदरविषेस्थित जठराअग्निहै ॥ और दूसरा मनविषेस्थित जिज्ञासारूपअग्निहै ॥ और तिसरा श्रोत्रादिकइंद्रियोंविषेस्थित विषयोंकीलोलुपतारूपअग्निहै ॥ यातीनअग्नियोंकरिकै यहशरीर निरंतर दाहकूंप्राप्तहोवैहै ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! जैसे यालोकप्रसिद्ध अग्निकै घृतकाष्ठादिकपदार्थ आहुतिहोवैहैं ॥ यातीनअग्नियोंके कौनपदार्थ आहुतिरूपहैं ? ॥ **समाधान** ॥ हेशिष्य ! लेह्य पेय चोष्य भोज्य यहचारिप्रकारकाअन्न ताजठराअग्निकी आहुतिहै ॥ इहां मधुआदिकपदार्थोंकानाम लेह्यहै ॥ और दुग्धादिक पदार्थोंकानाम पेयहै ॥ और इक्षुआदिकपदार्थोंकानाम चोष्यहै ॥ और ओदनादिकपदार्थोंकानाम भोज्यहै ॥ और शास्त्रकेअनु

सार जेउपासनादिकज्ञानहैं तथाशास्त्रतैंविरुद्ध जेलौकिकज्ञानहैं तथासुखदुःखरूपजोफलहै येसंपूर्ण ताजिज्ञासारूपमानसअ
ग्निकी आहुतिहैं ॥ और श्रोत्रादिकइंद्रियोंविषेस्थित जोविषयोंकीलोलुपतारूपअग्निहै ॥ ताअग्निकेतौ यथाक्रमतें शब्दस्पर्शादिक
विषयही आहुतिहैं ॥ ऐसेतीनअग्नियोंकरिकै यहदेह शीर्णभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतें यादेहकूं शरीर यानामकरिकैकथनकरै
हैं ॥ अब षष्ठअध्यायविषे कथनकरीजापंचअग्निविद्याहै तापंचअविद्याकीरीतिसैं याजीवात्माका ताजठराग्निविषेप्रवेशकाप्रकार
निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! दुग्ध घृत सोम इत्यादिकपदार्थहैं प्रधानजिनोंविषे ऐसीजेआहुतिहैं ॥ तिनआहुतियोंकूं जबी यहकर्मी
पुरुष श्रद्धापूर्वक तथाशास्त्रविधिपूर्वक आहवनीयादिकअग्नियोंविषेपावैहै ॥ तबी तेआहुतियां सूक्ष्मअवस्थारूपपरिणामकूंप्राप्त
होवैहैं ॥ और मरणतैंअनंतर सोकर्मीपुरुष ताआहुतियोंकेसूक्ष्मअवस्थारूपपरिणामकेसाथमिलिकै स्वर्गलोकरूपप्रथमअग्निकूं
प्राप्तहोवैहै ॥ तास्वर्गलोकविषे सुखरूपफलकेभोगकरिकै जबी ताकर्मीजीवका पुण्यकर्म क्षयहोवैहैं ॥ तबी सोकर्मीजीव तास्वर्गलो
कतें नीचेपतनहोइके मेघरूपदूसरीअग्निकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तिनमेघोंतें वर्षाद्वारा याभूमिलोकविषेप्राप्तहोइकै सोकर्मीजीव व्री
हियवादिकअन्नभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताजीवमिलितअन्नकूं जबी पुरुष तथास्त्रियां आपणक्षुधाकीनिवृत्तिकरणेवासते भक्षण
करैहैं ॥ तबी सोजीवमिलितअन्न तिनपुरुषस्त्रियोंके जठराग्निविषेप्राप्तहोवैहै ॥ और सोजठराग्नि प्राणवायुकरिकैप्रेरणाक
न्याहुआ ताअन्नके असार मध्यम सार यातीनविभागोंकूंकरैहै ॥ तहां विष्ठामूत्ररूपअसारभागकूंतौ पायुइंद्रियद्वारा याशरीर
तैंबाहरिनिकासैहै ॥ और ताअन्नकेमध्यमभागकूंतौ सोअग्नि रसादिकसप्तधातुरूपकरैहै ॥ और ताअन्नके सूक्ष्मसारभागकरि
कैतौ मनप्राणइंद्रियोंकूं तृप्तकरैहै ॥ इसप्रकार सोजठराग्नि ताअन्नकेतीनभागोंकूंकरैहै ॥ अब ताअन्नकेमध्यमभागविषे र
सादिकसप्तधातुरूपता निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! सोजीवमिलितअन्नकामध्यमभाग ताजठराग्निकेतेजतैंपरिपक्कहोइकै प्रथम
रसधातुरूपकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सोरसधातुअग्निकेतेजतैंपरिपक्कहोइकै रुधिररूपहोवैहै ॥ और सोरुधिर अग्निकेतेजतैंघनीभूत
होइकै मांसरूपहोवैहै ॥ और सोमांस अग्निकेतेजतैंपरिपक्कहोइकै मेदरूपहोवैहै ॥ और सोमेद अग्निकेतेजतैं कठिनहोइकै अ

स्थिररूपहोवैहै॥ और तेअस्थि अग्निकेतेजतैं द्रवीभूतहोइकै मज्जारूपहोवैहैं॥ सामज्जा तिनअस्थियोंकेभीतरिहीरहेहै॥ तथा यत्किंचित्द्रवीभूतघृतकेसमान जामज्जाका आकारहोवैहै॥ और सामज्जा अग्निकेतेजतैंपरिपक्कहोइकै वीर्यरूपहोवैहै॥ सोवीर्य पुरुषके शरीरविषेतौ श्लेष्मकेसमानवर्णवालाहोवैहै॥ और स्त्रीकेशरीरविषेतौ सोवीर्य रुधिरकेसमानवर्णवालाहोवैहै॥ तहां पुरुषकेवीर्यकूं तौ शुक्रकहेहैं॥ और स्त्रीकेवीर्यकूं शोणितकहेहैं॥ तिनरसादिकधातुवोंकीउत्पत्ति चारिचारिदिनतैंपीछेहोवैहै यहप्रक्रिया इसीअध्यायविषे पूर्वकहिआयेहैं॥ हेशिष्य! स्वर्गनरक भूमि यातीनलोकोंविषेस्थित जितनेजीवहैं॥ तेजीव पूर्व शरीरकेत्यागतैंअनंतर जबी मनुष्यादिकयोनिजशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहैं॥ तबी पूर्वउक्तरीतिसैं तेजीव रसादिकधातुद्वारा तापितामाताकेवीर्यविषे अवश्यकरिकै प्रवेशकरैहैं॥ तिनजीवोंविषेभी केईकजीवतौ महान्दुःखकरिकैमिल्येहुए यत्किंचित्स्वर्गसुखकूंअनुभवकरिकै तास्वर्गतैंपवनहोइकै मेघोंकीवृष्टिद्वारा याभूमिलोककूंप्राप्तहोवैहैं॥ और केईकजीवतौ भूमिविषे तथानरकविषेस्थितहुएही मरणतैंअनंतर तामेघोंकेवृष्टिद्वारा दूसरेदेशरूपभूमिकूंप्राप्तहोवैहैं॥ इसप्रकार अन्नविषेप्रवेश सर्वजीवोंका समानहीहै॥ इहां यद्यपि वृक्षादिकस्थावरजीव तथा मत्कुणादिकस्वेदजजीव पूर्वशरीरकापरित्यागकरिकै तास्थावर स्वेदजशरीरकीप्राप्तिवासते ताअन्नभावकूंप्राप्तहोवैंनहीं॥ तथापि तेस्थावर स्वेदजजीव ताशरीरकापरित्यागकरिकै जबी किसीयोनिजशरीरकूंप्राप्तहोवैहैं॥ तबी तेस्थावरस्वेदजजीवभी अवश्यकरिकै ताअन्नभावकूंप्राप्तहोवैहैं॥ याअभिप्रायकरिकैही श्रुतिविषे सर्वजीवोंकूंअन्नभावकीप्राप्तिकथनकरीहै॥ अब पूर्वशरीरके त्यागतैंअनंतर यहजीव दुःखकाअनुभवकरिकैही याभूमिलोकविषेआवैहै यापूर्वकहेअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं॥ हेशिष्य! जैसे नरकविषे तथाभूमिलोकविषे तथामरणकालविषे यासर्वजीवोंकूं दुःखकीप्राप्ति प्रसिद्धहै॥ तैसे तास्वर्गलोकविषेभी सादुःखकीप्राप्ति प्रसिद्धहै॥ काहेतैं? जिसअधिकारीशरीरकेकर्मोंकरिकै यहस्वर्गसुख प्राप्तहोवैहै॥ सोशरीर सर्वदा दुःखोंकरिकैहीव्याप्तहै॥ अब तास्वर्गीपुरुषोंके दुःखोंकेस्पष्टकरणेवासते तास्वर्गकेमार्गकानिरूपणकरैहैं॥ हेशिष्य! याभरतखंडविषे जोपुरुष अग्निहोत्रादिकइष्टकर्मोंकूंकरैहै॥ तथा जोपुरुष वापीकूपतडागादिकपूर्तकर्मोंकूंकरैहै॥ तथा जोपुरुष नानाप्रकारकेदा

नकूंकरैंहैं ॥ तथा जोपुरुष कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपकूंकरैंहैं ॥ सोपुरुष मरणतेंअनंतर तास्वर्गके पितृयाणनामामार्गकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥
तामार्गविषेभी सोकर्मीपुरुष प्रथम धूमकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ और ताधूमतेंअनंतर रात्रिकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ और तारात्रितेंअनंतर कृष्णपक्षकूं
प्राप्तहोवैंहैं॥ और ताकृष्णपक्षतेंअनंतर षट्मासरूपदक्षिणायनकूं प्राप्तहोवैंहैं॥ जोदक्षिणायन देवतावोंकारात्रिरूपहै॥ तादक्षिणायन
तेंअनंतर सोकर्मीपुरुष पितरलोककूंप्राप्तहोवैंहैं॥ और तापितरलोकतेंअनंतर सोकर्मीपुरुष चंद्रमाकूंप्राप्तहोवैंहैं॥ जिसचंद्रमाकूंइंद्रा
दिकदेवता कृष्णपक्षविषेतौ भक्षणकरैंहैं॥ और शुक्लपक्षविषे वृद्धिकरैंहैं॥ इहां धूम रात्रि आदिकशब्दोंकरिकै तिनधूमरात्रिआदि
कोंके अभिमानिदेवतावोंका ग्रहणकरणा॥ हेशिष्य! जैसे यालोकविषे सेवाकरणेहारेदास धनीपुरुषोंकेभोगकासाधनहोवैंहैं॥ यातें
तेधनीपुरुष तिनदासोंकूंभोगेहैं॥ तैसे ताचंद्रमाकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुआ जोकर्मीपुरुषहै ॥ ताकर्मीपुरुषकूं तेवसुरुद्रा
दिकदेवता आपणेभोगकासाधनकरैंहैं॥ यातें तेदेवता ताकर्मीपुरुषकूंभोगेहैं॥ और जैसे यालोकविषे सोसेवाकरणेहारादास
ताधनीपुरुषकीअधीनताकरिकै तथाभयकरिकै सर्वदादुःखकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तैसे तास्वर्गलोकविषे सोकर्मीपुरुषभी तिनदेवता
वोंकीअधीनताकरिकै तथापुण्यकर्मोंकेनाशकीभीतिकरिकै सर्वदा दुःखकूंहीप्राप्तहोवैंहैं और हेशिष्य! जैसे यालोकविषे यहदे
हधारीजीव स्त्रीआदिकोंकीअप्राप्तिकरिकै तथाराजादिकोंकेभयकरिकै तथाप्रियपदार्थोंकेवियोगकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवैंहैं॥
तैसे स्वर्गलोकविषेभी सोकर्मीपुरुष स्त्रीआदिकोंकीअप्राप्तिकरिकै तथादैत्योंकेभयकरिकै तथाप्रियपदार्थोंकेवियोगकरिकै मरण
तैंभीअधिकदुःखकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ इसतेंआदिलेकेअनेककोटिदुःख तास्वर्गविषेप्राप्तहोवैंहैं॥ हेशिष्य! इसप्रकार तास्वर्गलोक
विषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकरिकै सोकर्मीपुरुष किसीकालपाइकै तास्वर्गतेंनीचेपतनहोवैंहैं ॥ तिसतेंअनंतर सोकर्मीपुरुष
मेघोंकीवृष्टिद्वारा याभूमिलोकविषे अन्नभावकूंप्राप्तहोइकै पिताकेजठराग्निविषेप्राप्तहोवैंहैं ॥ ताजठराग्निविषे सोजीव अत्यं
त तपायमानहोवैंहैं॥ अब ताजीवकूं पिताकेतापद्वारा तापकीप्राप्ति वर्णनकरैंहैं॥ हेशिष्य! ताजीवमिलितअन्नकूं जबी यहपुरुष
ष भक्षणकरैंहैं॥ तबी यहयौवनअवस्थावालापुरुष कामरूपपिशाचकेवशकूंप्राप्तहोवैंहैं॥ और ताकालविषे सोकामीपुरुष स्त्रीतैंविना

किंचित्मात्रभी सुखकूंप्राप्तहोवैनहीं किंतु तास्त्रीकास्मरणकरताहुआ सोकामीपुरुष सर्वदातपायमानहोवैहै ॥ और जैसे यालोकविषे विष्ठामूत्रकेनिरोधकरणेतैंयापुरुषोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिसतैंभीअधिकदुःखकीप्राप्ति तापुरुषकूं वीर्यकेनिरोधकरणेतैंहोवैहै ॥ ऐसेवीर्यविषेप्राप्तहुआ सोजीव पिताकीकामरूपअग्निकरिकै तथामाताकीकामरूपअग्निकरिकै तपायमानहुआ माताकेयोनियंत्रविषे प्राप्तहोवैहै ॥ जैसे यालोकविषे नलिकायंत्रविषेस्थित जेपुष्पहैं ॥ तिनपुष्पोंकारस अग्निकेसंबंधतैं तानलिकायंत्रतैंबाहरिनिकासिकै दूसरेपात्रविषेपडेहै॥ तैसे सोजीवमिलितवीर्यरूपरसभी कामरूपअग्निकेसंबंधतौं तापुरुषकेशरीरतैंबाहरिनिकासिकै स्त्रीकीयोनिविषे प्राप्तहोवैहै॥ और तिसकालविषे सोवीर्यविषेस्थितजीव जिसप्रकारकीदीनदशाकूंप्राप्तहोवैहै॥ तिसतैंभीअधिक तापिताकीदीनदशा करैहै॥ और तिसकालविषे सोवीर्यविषेस्थितजीव जैसेपिताकूं दीनदशाकीप्राप्तिकरैहै॥ तिसतैंभीअधिक आपणीमाताकूं दीनदशा कीप्रातिकरैहै॥ परंतु तिसकालविषे कामरूपपिशाचकरिकैमोहकूंप्राप्तहुईसास्त्री आपणेदीनदशाकूंजाणतीनहीं ॥ किंतु तिसकालविषे सास्त्री बहुतहर्षकूंप्राप्तहोइकै ताजीवमिलितवीर्यकूं आपणेयोनिमार्गद्वारा उदरविषेधारणकरैहै ॥ तावीर्यकेधारणकरिकै सास्त्री पश्चात् दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे कोईमूढबालक विषवालेसर्पकूंसुंदरदेखिकै आपणेहस्तविषेग्रहणकरैहै ॥ तासर्पकेग्रहणतैंअनंतर सोमूढबालक मृत्युदुःखकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसेकोईमूढपुरुष चौरादिकउपद्रववालेमार्गविषेचालैहै ॥ तामार्गके चलणेकरिकै सोमूढपुरुष मृत्युकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे कामकरिकैमोहितहुई सास्त्रीभी विषयभोगकेवासते तापुरुषकेसमीपजावैहै ताकरिकै सास्त्री परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसेकोईधूर्तपुरुष अन्यकिसीपुरुषकेमृत्युकरणेवासते याप्रकारकाउपायकरैहै ॥ प्रथम तापुरुषकूं अतिस्नेहतैंआलिंगनकरैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोधूर्तपुरुष आपणेस्नेहकेजनावणेवासते किसीसोयेहुएसर्पकूं सुवर्णकेपात्र विषेपाइकै तासुवर्णकेपात्रकूं नानाप्रकारकेपुष्पोंसैंपूर्णकरिकै तथासुगंधिवालेचंदनादिकोंकालेपकरिकै तापुरुषकेहस्तविषे देवैहै ॥ तासुवर्णकेपात्रकूंग्रहणकरिकै तापुरुषकामृत्युहीहोवैहै ॥ तैसे यहकामीपुरुषभी तावीर्यनहींसहारताहुआ नानाप्रकारकेआलिंगनतैं तास्त्रीकूंमोहउत्पन्नकरिकै तावीर्यकूं तास्त्रीकेउदरविषेप्राप्तकरैहै ॥ और तावीर्यकूंधारणकरिकै सास्त्री परमदुःखकूं

प्राप्तहोवैहै ॥ यातें ताधूर्त्तपुरुषकीन्यांई यहकामीपुरुषभी तास्त्रीका परमशत्रुहै ॥ और जैसे यालोकविषे जेदुष्टपुरुष ब्राह्मणोंकेध नकूं छलकरिकैहरणकरैहैं ॥ तिनदुष्टपुरुषोंकूं सोब्राह्मणोंकाधन यद्यपि तिसकालविषेतौ सुखकाहीकारणहोवैहै ॥ तथापि मरणतें अनंतर तिनदुष्टपुरुषोंकूं सोब्राह्मणोंकाधन नरकादिकदुःखोंकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे सोपुरुषकावीर्यभी जिसकालविषे तास्त्रीकेउ दरविषेप्रवेशकरैहै ॥ तिसकालविषेतौ यद्यपि तास्त्रीकूंसुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ तथापि सोवीर्य जबी गर्भरूपहोइकै तास्त्रीकेउदरतेंबा हरिनिकसैहै ॥ तबी तास्त्रीकूं मरणांतदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ और जैसे विषकरिकैमिल्याहुआ जोदुग्धहै ॥ सोदुग्ध यद्यपि पीणे कालविषे यापुरुषोंकेसुखकाहेतुहोवैहै ॥ तथापि तापीणेतेंअनंतर सोदुग्ध तिनपुरुषोंकेमरणकाहीहेतुहोवैहै ॥ तैसे यहवीर्यभी आ पणेप्रवेशकालविषेतौ यद्यपि तास्त्रीकेसुखकाहेतुहोवैहै ॥ तथापि आपणेनिकसणेकालविषे सोवीर्य तास्त्रीकेमरणकाहीहेतुहोवैहै ॥ याकहणेतैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे मरणकासाधनजोविषहै ॥ ताविषकूं जोकोईदुष्टपुरुष अन्यप्राणीकेप्रतिदेवैहै ॥ ताविषदेणेक रिकै जिसप्रकारकाताप तादुष्टपुरुषकूंहोवैहै ॥ तिसीप्रकारकापाप ताकामीपुरुषकूं स्त्रीकेउदरविषेवीर्यकेपावणेतेंहोवैहै ॥ और या लोकविषे जीवोंकेबंधनकरणेकाजोस्थानहै तथाजीवोंकेहिंसाकरणेकाजोस्थानहै ॥ तास्थानकेबनावणेहारपुरुषकूं जिसप्रकार कापापहोवैहै ॥ तिसीप्रकारकापाप यापिताकूं पुत्रशरीरकेउत्पत्तिकरणेविषेहोवैहै ॥ काहेतें ? जिसपुत्रशरीरकूं यहपिता उत्पन्नकरैहै सोशरीर तापुत्रकूं अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ जोकदाचित् सोपिता तास्त्रीकेउदरविषे वीर्यकीप्राप्तिनहींकरता ॥ तौ तापुत्रशरीरकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातें अन्वयव्यतिरेककरिकै यहपिताही तापुत्रकेदुःखका तथास्त्रीकेदुःखका कारणहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! ऋग्वेदविषे हरिश्चंद्रकेउपाख्यानविषे अपुत्रस्यनलोकोऽस्ति ॥ अर्थयह ॥ पुत्ररहितपुरुषकूं स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्ति होवैनहीं ॥ इत्यादिकवचनोंकरिकै पुत्रकेउत्पत्तिकीस्तुतिकरीहै ॥ यातें पुत्रकेउत्पत्तिकरणेहारेपिताकूं दोषकीप्राप्तिसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! ऋग्वेदकेवचननें कोईपुत्रकेउत्पत्तिकीस्तुतिनहींकरी ॥ किंतु याअधिकारीपुरुषोंकूं तिनपुत्रोंतें वैराग्य कीप्राप्तिकरणेवासते तावचननें कामीपुरुषोंकेमिथ्याअभिप्रायका अनुवादकऱ्याहै ॥ काहेतें ? तिसीऋग्वेदविषे तावचनतेंअनं

तर याप्रकारकावचनकह्याहै मातरंचस्वसारंचतेयांति ॥ अर्थयह ॥ तेकामीपुरुष तामिथ्याअभिप्रायकरिकै पशुवोंकीन्यांई आपणेमाताकेसाथ तथाभगिनीकेसाथभी गमनकरैंहैं ॥ याप्रकारकेवचननैं पुत्रोंकीउत्पत्तिकरणेहारेपुरुषोंविषे पशुवोंकेआचारकाप्रमाणदेकरिकै याप्रकार तिनकामीपुरुषोंकेनिंदाकूंबोधनकऱ्याहै ॥ हेकामीपुरुषो ! यालोकविषे जेश्वानादिकपशु आपणीमाताकेसाथ तथाआपणीभगिनीकेसाथभी विषयसंभोगकरैंहैं ॥ तेश्वानादिकपशुभी अवश्यकरिकै पुत्रोंकूंउत्पन्नकरैंहैं ॥ तिनश्वानादिकपशुवोंकेआचरणकूंअंगीकारकरिकै जोतुमअधिकारीमनुष्यभी पुत्रोंकूंहीउत्पन्नकरोगे तौ ॥ आत्मावैपुत्रनामासि याश्रुतिनैं पिताकाही पुत्रनाम कथनकऱ्याहै ॥ यातैं सोतुमारापुत्रनाम तुमारेविषे श्वानादिकपशुवोंकीसमानताकूंबोधनकरताहुआ अत्यंतनिंदितनामहोवैगा ॥ और हेकामीपुरुषो ! आत्मावैजायतेपुत्रः॥याश्रुतिनैं पुत्रकूं पिताकाआत्मारूपकह्याहै ॥ यातैं यहपिता जैसे आपणीमाताकेउदरतैंनिकसेहै ॥ तैसे पुत्ररूपहोइके आपणीस्त्रीकेउदरतैंभीनिकसेहै ॥ यातैं एकपुत्रकीउत्पत्तितैंअनंतर सास्त्री यापुरुषकीमाताहोवैहै ॥ यातैं जैसे आपणीमाता कामभावनाकरिकै स्पर्शकरणेयोग्यनहींहै ॥तैसे एकपुत्रकीउत्पत्तितैंअनंतर सास्त्रीभी कामभावनाकरिकै तुमारेकूं स्पर्शकरणेयोग्यनहींहै ॥ और हेकामीपुरुषो!तुमारेपुत्रभावकूंप्राप्तहोणेहारा जोजीवहै ॥ सोजीव पुण्यपापकर्मकेअधीनहै ॥ यातैं सोजीव परतंत्रहै ॥ ऐसापरतंत्रजीव यादुःखरूपमाताकेउदरविषे जोप्रवेशकरैहै ॥ याकेविषेकोई आश्चर्यनहींहै ॥ परंतु तुमपुरुष स्वतंत्रहोइकैभी ऐसेदुःखरूपस्त्रीकेउदरविषे पुत्ररूपहोइके जोप्रवेशकरतेहो सोयह हमारेकूं बहुतआश्चर्यहोवैहै ॥ हेशिष्य ! ताहरिश्चंद्रकेउपाख्यानविषेस्थितवचनका याप्रकारकाहीतात्पर्यहै ॥ कोईपुत्रोंकीस्तुतिविषे तावचनका तात्पर्यनहींहै ॥ किंवा तावचनकेबलतैं जोकदाचित् यापिताकूं पुत्रकरिकै लोककीप्राप्तिभी अंगीकारकरिये ॥ तौभी इसमनुष्यलोककीहीप्राप्ति अंगीकारकरणीहोवैगी ॥ काहेतैं ? बृहदारण्यकउपनिषद्विषे पुत्रकरिकै पिताकूं यामनुष्यलोककेजयकीप्राप्तिही कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ पुत्रेणायंलोकजयः अर्थयह ॥ पुत्रकरिकै यापिताकूं इसमनुष्यलोककाजयप्राप्तहोवैहै ॥ १ ॥ परंतु तिनपुत्रोंकरिकै यापिताकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और हेशिष्य! जैसे यालोकविषे आपणेपुत्रकेसुखकीइच्छाकरणेहारी

जामाताहै ॥ सामाता तापुत्रकेरोगकीनिवृत्तिकरणेवासते तापुत्रकेप्रति कोईनिंमादिककटुऔषधि पानकरावैहै ॥ आगेतैं सोबाल
क ताकटुऔषधिकूं पानकरतानहीं ॥ और कटुऔषधिकेपानकरेतैंविना ताबालककारोग निवृत्तहोवैनहीं ॥ यातैं सामाता ताबालक
केप्रति ताकटुऔषधिकेपानकरावणेवासते याप्रकारकावचनकहैहै ॥ हेपुत्र ! जोतू यहऔषधिपानकरैगा ॥ तौमैं तुमारीजिव्हा
विषे गुडदेवोंगी ॥ याप्रकारके तामाताकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोमूढबालक तागुडकेलोभकरिकै ताकटुऔषधिकूंपानकरैहै ॥ इहां
तामाताका औषधिपिवाइकै तापुत्रकेरोगकीनिवृत्तिकरणेविषे तात्पर्यहै ॥ तारोगीपुत्रकेप्रति गुडदेणेविषे तामाताका तात्पर्यनहींहै
याकानाम गुडजिव्हिकान्यायहै ॥ तागुडजिव्हिकान्यायकरिकै तिन हरिश्चंद्रउपाख्यानकेवचनोंका याअधिकारीपुरुषोंकेनिवृत्ति
विषेही तात्पर्यहै ॥ पुत्रादिकोंकीउत्पत्तिविषे तिनवचनोंका तात्पर्यनहींहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य !
यासंपूर्णजीवोंकूं विषयोंकेरागतैंअंधहुआदेखिकै माताकीन्यांई अत्यंतहितकारी साश्रुतिभगवती बहुतखेदकूंप्राप्तहोतीभई ॥ और
तिनजीवोंकूंविषयोंकेरागतैं निवृत्तकरणेवासते साश्रुतिभगवती याप्रकारकावचन कहतीभई ॥ हेपुत्र ! तपरूपधनकेनाशकरणेहा
री जेयेस्त्रियांहैं ॥ तिनस्त्रियोंविषे तुम गमनमतकरो ॥ तिनस्त्रियोंकेगमनतैं तुमारेकूं इसलोकविषे तथापरलोकविषे महानूदुःख
कीप्राप्तिहोवैगी ॥ और तिनदुःखोंकेभोगणेवासते तुमारेकूं अनेकप्रकारकेशरीरोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ कैसेहैंतेशरीर ? बंधनगृहकेस
मानहैं ॥ और जैसे चक्षु आपणेविषे अत्यंतसूक्ष्मवस्तुकूंभी सहारिसकतानहीं ॥ तैसे किंचित्मात्रविक्षेपकूंभी नहींसहारणेहारे जे
विद्वानूपुरुषहैं ॥ तिनविद्वानूपुरुषोंकूं तेशरीर नरकतैंभीअधिकदुःखकीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ ऐसेदुःखरूपशरीरोंकूं तुम प्राप्तहोवोगे
हेशिष्य ! इसप्रकार साश्रुतिभगवती तिनअधिकारीपुरुषोंकेप्रति स्त्रियोंविषेरमणीकबुद्धिरूपसंकल्पकेनिरोधनकरणेका उपदेशक
रतीभई ॥ और तासंकल्पकेनिरोधकरणेविषे जिनपुरुषोंकासामर्थ्यनहींहै ॥ तिनपुरुषोंकेप्रति साश्रुतिभगवती याप्रकारकाउपदे
शकरतीभई ॥ हेपुत्र ! तासंकल्पकेनिरोधकरणेविषे जोतुमारा सामर्थ्यनहींहोवै ॥ तोभी तुम कामकेवेगकानिरोधकरिकै ब्रह्मचर्यध
र्मकूंपालनकरो ॥ ताब्रह्मचर्यधर्मकूं जबीतुम पालनकरोगे ॥ तबी स्वर्गलोकविषे तथाब्रह्मलोकविषे मैं तुमारेतांई ऐसेस्त्रियोंकीप्राप्ति

करौंगी ॥ जेस्त्रियां यामनुष्यलोककीस्त्रियोंतें रूपादिकगुणोंकरिकै कोटिगुणाअधिकहैं ॥ और ताब्रह्मलोकविषे ५०० पंचशत्‌अप सरा पुष्पचंदनवस्त्रादिकपदार्थोंकूं आपणेहस्तविषेलेकै तुमारेलेणेवासते आवैंगीं ॥ और जैसे यामनुष्यलोककीस्त्रियोंकूं पुरुषके संबंधतैंगर्भहोवैहै ॥ तैसे स्वर्गलोककीस्त्रियोंकूं तथाब्रह्मलोककीस्त्रियोंकूं पुरुषकेसंबंधतैं गर्भकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं तागर्भकरिकै तिनस्त्रियोंकूं तथातुमारेकूं किंचित्‌मात्रभीदुःखकीप्राप्तिहोवैगीनहीं ॥ हेशिष्य! इसप्रकार साश्रुतिभगवती याअधिकारीपुरुषोंके प्रति ब्रह्मचर्यधर्मकाउपदेशकरतीभई ॥ और जेपुरुष ताब्रह्मचर्यधर्मकेपालनकरणेविषेभी समर्थनहींहोतेभये ॥ तिनअधिकारीपुरु षोंकेप्रति साश्रुतिभगवती याप्रकारकाउपदेशकरतीभई ॥ हेपुत्र! ताब्रह्मचर्यधर्मकेपालनकरणेविषेभी जोतुमारा सामर्थ्यनहींहो वै ॥ तौभी तुमोनैं शरीरमनवाणीकरिकै परस्त्रीकागमन कदाचित्‌भीनहींकरणा ॥ काहेतें? जेपुरुष परस्त्रीकागमनकरैहैं तेपुरुष इस लोकविषे तथापरलोकविषे परमभयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ऐसापरस्त्रीकागमन तुमोनैं कदाचित्‌भीनहीं करणा ॥ किंतु कामकीनिवृत्तिक रणेवासते तुम आपणीस्त्रीकासंपादनकरिकै गृहस्थहोवै ॥ तागृहस्थआश्रमकूंधारणकरिकैभी तुम शास्त्रनिषिद्धकर्मोंविषे कालव्यती त मतकरो ॥ किंतु यज्ञदानादिकश्रेष्ठकर्मोंकूंकरो ॥ और हेपुत्र ! तिनआपणीस्त्रियोंविषेभी तुमोनैं याप्रकारकानियमराखणा ॥ दिनविषे तिनस्त्रियोंकेसाथ तुमोनैं कदाचित्‌भीनहींगमनकरणा किंतु रात्रिकालविषेगमणकरणा ॥ तिनरात्रियोंविषेभी एकादशी द्वादशी अमावास्या पौर्णमासी संक्रांति व्यतिपात प्रदोष इत्यादिकजेपर्वरात्रिहैं ॥ तिनपर्वरात्रियोंविषे तुमोनैं तिनआपणीस्त्रियों केसाथ कदाचित्‌भी नहींगमनकरणा ॥ हेशिष्य! इसप्रकार श्रुतिभगवतीकेउपदेशकूंश्रवणकरिकै जेअधिकारीपुरुष तिनपर्व रात्रियोंतैंभिन्नरात्रियोंविषे तिनस्त्रियोंविषेआसक्तहोवैहैं ॥ तिनपुरुषोंके आसक्तिकीनिवृत्तिकरणेवासते साश्रुतिभगवती तिन अधिकारीपुरुषोंकेप्रति याप्रकारकेनियमका उपदेशकरैहै ॥ हेपुत्र! तिनपर्वरात्रियोंतैंभिन्नरात्रियोंविषेभी तुमोनैं ऋतुकालतैं विना कदाचित्‌भी तिनस्त्रियोंविषे गमननहींकरणा ॥ किंतु ऋतुस्नातस्त्रियोंविषेही तुमोनैं शास्त्रउक्तसंस्कारोंकूंकरिकै गमनकर णा ॥ ऐसेनियमकूंधारणकरिकै जोतुम आपणीस्त्रियोंविषेगमनकरोगे ॥ तौ तुमारेकूं शुभगुणवालेपुत्रोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ हेशिष्य!

इसप्रकार मूढपुरुषोंकी विषयोंविषेआसक्तिकेछुडावणेवासते साश्रुतिभगवती पुत्रकेजन्मकीस्तुतिकरैंहै ॥ यातैं ताश्रुतिवचनका नि
वृत्तिविषेहीतात्पर्यहै ॥ पुत्रकेजन्मविषे ताश्रुतिका तात्पर्यनहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! तिनश्रुतिवचनोंका पुत्रोंकीउत्पत्तिविषेही
तात्पर्य क्यूंनहींहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! यालोकविषे जोपदार्थ याजीवोंकूं रागकरिकैप्राप्तनहींहोवैहै ॥ तिसीपदार्थकूं शा
स्त्र विधानकरैंहै ॥ रागकरिकैप्राप्तवस्तुका शास्त्र विधानकरैनहीं ॥ याप्रकारकानियम सर्ववादी अंगीकारकरैंहैं ॥ और स्त्रियोंकेसं
गतैंपुत्रोंकीउत्पत्ति तथास्त्रियोंकासंग येदोनों शास्त्रतैंविनाही सर्वजीवोंकूं रागकरिकैहीप्राप्तहैं ॥ काहेतें ? यालोकविषे शास्त्रतैंरहि
त जेपशुपक्षीमत्स्यादिकजीवहैं ॥ तथा शास्त्रकेज्ञानतैंरहित जेम्लेच्छादिकहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं शास्त्रकेउपदेशतैंविनाही पुत्रोंकीउ
त्पत्ति तथास्त्रियोंकासंग रागकरिकैहीप्राप्तहै ॥ यातैं तारागप्राप्तअर्थविषे ताश्रुतिका तात्पर्यसंभवैनहीं ॥ याकारणतैंही ताअथर्व
णवेदकीश्रुतिनैं पुत्रोंकीउत्पत्तिकरणेहारेरागीपुरुषोंविषे पशुवोंकादृष्टांतदियाहै ॥ और याकारणतैंही ॥ पतिर्जायांप्रविशति ॥ यह
श्रुति एकपुत्रकीउत्पत्तितैंअनंतर यापुरुषकूं पुनःतास्त्रीकेसंबंधकानिषेधकरैंहै ॥ काहेतैं? पुत्रकीउत्पत्तितैंपूर्व जास्त्री मातावाचकजा
याशब्दकाअर्थनहींहै ॥ साहीस्त्री पुत्रकीउत्पत्तितैंअनंतर ताजायाशब्दाकाअर्थहोवैहै ॥ यातैं याजीवोंकूंरागकरिकैप्राप्त जोपु
त्रोंकीउत्पत्ति तथास्त्रीकासंबंध तिसकूं साश्रुतिविधानकरैनहीं ॥ किंतु यासंसारदुःखकीप्राप्तिकरणेहारा तथाआनंदस्वरूपआत्मा
कूंआवरणकरणेहारा जोरागरूपकामहै ॥ ताकामकेनिवृत्तिकूंही साश्रुति बोधनकरैंहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! साश्रुतिभगवती
जोपुत्रकीउत्पत्तिकूं तथास्त्रीकेसंगकूं विधाननहींकरती ॥ तौ साश्रुति किसअर्थकूंविधानकरैंहै ? ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! याजी
वोंकेहृदयदेशविषेस्थित जोआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्माहै ॥ सोआत्मादेव रागरहितपुरुषोंकूं ब्रह्मचर्यसाधनतैंही दीपककीन्यां
ई स्पष्टप्रतीतहोवैहै ॥ और सोब्रह्मचर्यधर्म याजीवोंकूं शास्त्रतैंविना रागकरिकैभीप्राप्तहैनहीं ॥ याकारणतैं साश्रुतिभगवती या
अधिकारीपुरुषोंकेप्रति ताब्रह्मचर्यधर्मकाही विधानकरैंहै ॥ अब जिसप्रकारतैं साश्रुतिभगवती ब्रह्मचर्यधर्मकाउपदेशकरैंहै ताप्र
कारकानिरूपणकरैंहैं ॥ जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज येचारिप्रकारकेजीव सर्वदा सुखकेप्राप्तिकीइच्छाकरैंहैं ॥ और तासु

खकीप्राप्तिवासते यत्नभीकरैहैं ॥ परंतु तिनजीवोंकूं सुखकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ ऐसेसुखतैंरहितजीवोंकूंदेखिकरिकै तिनोंकेदुःखकूं नहींसहारतीहुई साश्रुतिभगवती अत्यंतखेदकूंप्राप्तहोतीभई ॥ और हितकारीमाताकीन्यांई आपणे कृपाजन्यदुःखकेजनावणेवासते आपणेमस्तककूंताडनकरतीहुई साश्रुतिभगवती ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यात्रैवर्णिकअधिकारीपुरुषोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई ! हेअधिकारीजनो ! जो तुमारेकूंसुखकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तौ तुम हमारेवचनविषेश्रद्धाराखिकै कामकापरित्याग रूपब्रह्मचर्यधर्मकूं संपादनकरो ॥ ताब्रह्मचर्यकरिकैही तुमारेकूं सुखकीप्राप्तिहोवैगी ॥ हेअधिकारीजनो ! तुम श्रोत्रादिकइंद्रियों करिकै तथाबुद्धिआदिकगुणोंकरिकै युक्तहो ॥ तथा श्रवणमननादिकसाधनोंकेकरणेविषेसमर्थहो ॥ याकारणतें हमारेउपदेशकेधारणकरणेविषे तुमारेकूंही अधिकारहै ॥ तुमारेतैंभिन्नजीवोंकूं हमारेउपदेशकाअधिकार हैनहीं ॥ काहेतें ? यालोकविषे जितनेवृक्षादिकस्थावरप्राणीहैं ॥ तेवृक्षादिकप्राणी श्रोत्रादिकइंद्रियोंतैंरहितहैं ॥ यातैं तेवृक्षादिकतौ हमारेउपदेशकेश्रवणकरणेविषेभी समर्थनहींहैं ॥ और यालोकविषे श्रोत्रादिकइंद्रियोंवाले जितनेगौअश्वादिकपशुहैं ॥ तेपशुतौ शास्त्रकेअर्थकूंनिश्चयकरणेहारीबुद्धितैंरहितहैं ॥ यातैं तिनपशुवोंकूंभी हमारेउपदेशकाअधिकार हैनहीं ॥ और यालोकविषे जितनेशूद्रजातिवालेमनुष्यहैं ॥ तिनशूद्रोंकूंतौ ॥ स्त्रीशूद्रौनाऽधीयातां ॥ इत्यादिकवचनोंकरिकै वेदकेअध्ययनकानिषेधकऱ्याहै ॥ यातैं तिनशूद्रोंकूंभी हमारेउपदेशकाअधिकार हैनहीं ॥ किंतु तुमत्रैवर्णिकअधिकारियोंकूंही हमारेउपदेशकाअधिकारहै ॥ यातैं तुमअधिकारीजन हमारेउपदेशकूं अंगीकारकरिकै ताकामकापरित्यागकरो ॥ और हेअधिकारीजनो ! यालोकविषे जितनेजीव दुःखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ सो कामकरिकैहीप्राप्तहोवैहैं ॥ कामतैंविना किसीभीजीवकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं अन्वयव्यतिरेककरिकै यहकामही जीवोंकेदुःखकाकारणहै ॥ ऐसेकामकेवशहोणा तुमअधिकारियोंकूं योग्यनहींहै ॥ अब तैत्तिरीयकउपनिषद्कीरीतिसैं ताकामकेत्यागविषे सुखकीकारणता निरूपणकरैहैं ॥ हेअधिकारीजनो ! चक्रवर्तीराजा १ मनुष्यगंधर्व २ देवगंधर्व ३ पितर ४ आजानदेव ५ कर्मदेव ६ वसुरुद्रादिकआधिकारकदेव ७ इंद्र ८ बृहस्पति ९ विराट् १० हिरण्यगर्भ ११ याएकादशोंविषे पूर्वपूर्वकेआनंदतैं उत्तरउत्तरका

आनंद १०० शतशतगुणाअधिक कथनकऱ्याहै ॥ तिनसर्वआनंदोंकूं कामदोषतैंरहितनिष्कामपुरुष प्राप्तहोवैहै ॥ और ताचक्रवर्ती राजातैंलैके हिरण्यगर्भपर्यंत जितनेविषयजन्यआनंद कथनकरेहैं ॥ तेसंपूर्णआनंद जिसब्रह्मानंदरूपसमुद्रके एकबिंदुमात्रहैं॥ ताब्रह्मानंदकूंभी यहनिष्कामपुरुषही प्राप्तहोवैहै ॥ कामदोषवाले तेचक्रवर्तिराजादिक ताब्रह्मानंदकूं प्राप्तहोइसकैंनहीं ॥ हेअधिकारीजनो ! ऐसेब्रह्मानंदकाजोसाक्षात्कारहै ॥ सोसाक्षात्कारही यामनुष्यशरीरकाफलहै ॥ यातैं याअधिकारीमनुष्यशरीरविषे पुत्रएषणा लोकएषणा वित्तएषणा यातीनप्रकारकीएषणावोंकापरित्यागकरिके तुमअधिकारीजन ताआनंदस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारकीइच्छाकरौ ॥ और हेअधिकारीजनो ! जोतुम ताकामदोषकापरित्याग नहींकरोगे ॥ तौ तुमारेकूं श्वानादिकपशुवोंकीन्यांई विषयभोगरूपपापकर्म अवश्यकरणाहोवैगा ॥ कैसाहैसोपापकर्म ? पूर्वउक्तरीतिसैं स्त्रियोंके तथापुत्रोंके सर्वदादुःखकाहीकारणहै ॥ और हेअधिकारीजनो ! यालोकविषे जेश्वानादिकपशु शास्त्रज्ञानतैंरहितहैं ॥ तेश्वानादिकपशुभी आपणीस्त्रीकेसंभोगतैं पुत्रोंकीउत्पत्तिकरैहैं ॥ तथा तिनस्त्रीपुत्रादिककुटुंबका भरणपोषणभीकरैहैं ॥ तिनश्वानादिकपशुवोंकीन्यांई तुमअधिकारीमनुष्यभी जोकदाचित् स्त्रियोंकेसंभोगतैं पुत्रोंकीउत्पत्तिकरोगे ॥ तथा तिनस्त्रीपुत्रादिककुटुंबका पालनकरोगे ॥ तौ तुमअधिकारीमनुष्योंविषे तिनश्वानादिकपशुवोंतैं कौनअधिकता सिद्धहोवैगी ? किंतु तुमभी तिनश्वानादिकपशुवोंकेतुल्यहीहोवोगे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! यद्यपि स्त्रियोंकेसंभोगकरणेविषे तथापुत्रोंकीउत्पत्तिकरणेविषे हमअधिकारीजनोंकूं श्वानादिकपशुवोंकीसमानता प्राप्तहोवैहै ॥ तथापि गृहस्थपुरुषोंकूं स्वस्त्रीकासंभोग तथापुत्रोंकीउत्पत्ति शास्त्रनैंविधानकरीहै ॥ यातैं ताशास्त्रकीआज्ञामानिकै हमअधिकारीपुरुष आपणेविषे पशुवोंकीसमानताकूंभी अंगीकारकरैहैं ॥ समाधान ॥ हेअधिकारीजनो ! तिन शास्त्रकेवचनोंकातात्पर्य तुमोनैं जान्यानहीं ॥ काहेतैं ? वेदविषे दोप्रकारकेविधिवचनहोवैहैं ॥ तहां एकतौ नित्यविधिरूप वचनहोवैहैं ॥ और दूसरे काम्यविधिरूप वचनहोवैहैं ॥ तहां जिसविधिवचनकेउल्लंघनकरणेतैं याअधिकारीपुरुषोंकूं पापकीप्राप्तिहोवैहै और ताकेकरणेतैंपुण्यकीप्राप्तिहोवै ॥ ताविधिवचनकानाम नित्यविधिवचनहैं ॥ जैसे ॥ अहरहःसंध्यामुपासीत ॥

इत्यादिकविधिवचन यात्रैवर्णिकअधिकारीपुरुषोंकेप्रति दिनदिनविषे संध्यागायत्रीआदिकोंकेअनुष्ठानकाविधानकरैहैं॥ तिनसंध्या गायत्रीआदिकनित्यकर्मोंकेनहींकरणेतैं तिनअधिकारीपुरुषोंकूं पापकीप्राप्तिहोवैहै॥ और तिनोंकेकरणेतैं पुण्यकीप्राप्तिहोवैहै॥ यातैं तेवचन नित्यविधिरूपहैं॥ और जिनविधिवचनोंकेउल्लंघनकरणेतैं याअधिकारीपुरुषोंकूं पापकीप्राप्तिहोवैनहीं॥ और तिनों केकरणेतैं किसीफलकीप्राप्तिहोवै॥ ताविधिवचनकानाम काम्यविधिहै॥ जैसे ज्योतिष्टोमेनस्वर्गकामोयजेत॥ इत्यादिक विधिवचन स्वर्गादिकोंकीकामनावालेपुरुषोंकेप्रति ज्योतिष्टोमादिकयज्ञोंका विधानकरैहैं॥ तिनज्योतिष्टोमादिककाम्यकर्मोंकेनहीं करणेतैं याअधिकारीपुरुषोंकूं पापकीप्राप्तिहोवैनहीं॥ और तिनोंकेकरणेतैं याअधिकारीपुरुषोंकेप्रति स्वर्गादिकफलकीप्राप्तिहो वैहै॥ यातैं तेवचन काम्यविधिरूपहैं॥ तैसे इहांप्रसंगविषे पुत्रोंकीउत्पत्तिआदिकोंकूंकथनकरणेहारे जेवेदकेवचनहैं॥ तेवचन जो कदाचित् नित्यविधिरूपहोते तौ तानित्यविधिकेनकरणेकरिके याअधिकारीपुरुषोंकूं पापकीप्राप्तिहोती॥ परंतु तेवचन नित्य विधिरूपहैंनहीं॥ किंतु तेवचन काम्यविधिरूपहैं॥ यातैं ताकाम्यविधिकेनहींकरणेतैं निष्कामपुरुषोंकूं पापकीप्राप्तिहोवैनहीं॥ जैसे॥ श्येनेनाऽभिचरन्यजेत॥ यहकाम्यविधि शत्रुमारणेकीइच्छावान्पुरुषकेप्रति ताशत्रुकेमारणेवासते श्येननामायज्ञका वि धानकरैहै॥ ताश्येनयज्ञकेनहींकरणेतैं यापुरुषकूं पापकीप्राप्तिहोवैनहीं॥ किंतु उलटा ताश्येनयज्ञकेकरणेतैंही यापुरुषकूं न रकादिदुःखकीप्राप्तिहोवैहै॥ तैसे पुत्रादिकोंकेउत्पत्तिकूंकथनकरणेहारे जेकाम्यविधिरूपवचनहैं॥ तिनोंकेउल्लंघनकरणेतैं या अधिकारीपुरुषोंकूं पापकीप्राप्तिहोवैनहीं॥ किंतु उलटा तिनपुत्रादिकोंकीउत्पत्तिकरणेकरिकेही यापुरुषोंकूं अनेकप्रकारकेदुःखों कीप्राप्तिहोवैहै॥ और हेअधिकारीजनो! जैसे पुत्रकीउत्पत्तिकूंकथनकरणेहारेवेदकेवचन रागवान्पुरुषोंकेप्रतिही तापुत्र केउत्पत्तिकाविधानकरैहैं॥ तैसे तापुत्रकीउत्पत्तिकरणेवासते स्त्रीविवाहकूंकथनकरणेहारे जेवचनहैं॥ तथा ताऋतुस्नातस्त्री विषे गमनकालकेनियमकूंकथनकरणेहारे जेवचनहैं॥ तेसंपूर्णकाम्यविधिरूपवचन रागवान्पुरुषकेप्रतिही तिसातिसअर्थकावि धानकरैहैं॥ यातैं रागरहितनिष्कामपुरुषोंकूं तिनवचनोंकेउल्लंघनकरणेतैं किंचित्मात्रभी दोषकीप्राप्तिहोवैनहीं॥ उलटा

महान्फलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और हेअधिकारीजनो ! याकामकरिकैअंधहुए येपुरुष आपणीभगिनीआदिकोंविषेभी गमन करैहैं ॥ जैसे कामकरिकैअंधहुए श्वानादिकपशु आपणेभगिनीआदिकोंविषेभी गमनकरैहैं ॥ यातैं यहकामही सर्वअनर्थोंकाकारणहै ॥ ऐसेकामकूं तुमअधिकारीजन सर्वप्रकारसैंपरित्यागकरो ॥ हेअधिकारीजनो ! यहकामही जीवोंके सर्वअनर्थकाकारणहै ॥ यहवार्ता केवल हम नहींकहते ॥ किंतु ताकामविषे सर्वअनर्थकीकारणता यासर्वलोकोंकूंप्रसिद्धहै ॥ काहेतैं ? यालोकविषे जेपुरुष कामकरिकैअंधहोवैहैं ॥ तेकामीपुरुष किसकिसअनर्थकूंनहींकरैहैं ? किंतु तेकामीपुरुष सबअनर्थोंकूंकरैहैं ॥ और याकामकरिकै हीअंधहुए तेकामीपुरुष आपणीस्त्रीकूंतौ गर्भरूपदुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और आपणेकूं पापरूपदुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और जीवात्मारूपपुत्रकूं शरीरकासंबंधरूपदुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ यातैं यहकामही तुमारे अनर्थकाकारणहै ॥ ऐसेकामकूं जबीतुम परित्याग करोगे ॥ तबीही तुमारेकूं सुखकीप्राप्तिहोवैगी ॥ हेशिष्य! इसप्रकार साश्रुतिभगवती माताकीन्यांई कृपाकरिकै तिनअधिकारीपुरुषोंकेप्रति ब्रह्मचर्यधर्मकाउपदेशकरतीभई ॥ यातैं संपूर्णश्रुतिवचनोंका साक्षात् अथवा परंपराकरिकै निवृत्तिविषेहीतात्पर्यहै ॥ पुत्रादिकोंकीउत्पत्तिविषे किसीभीश्रुतिका तात्पर्यनहींहै यहअर्थसिद्धभया ॥ अब कामीपुरुषोंविषे पुत्रकेदेहरूप दुःखकीकारणता स्पष्टकरणेवासते प्रथम तापुत्रकेशरीरकीउत्पत्तिकाप्रकार निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! स्त्रीकेशोणितकेसाथ मिल्याहुआ यहपुरुषकावीर्यही तिनपुत्रोंकेशरीरकीउत्पत्तिकरैहै ॥ जिनशरीरोंकरिकै तिनपुत्रोंकूं अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जैसे रक्तकफ यादोनोंकेसंयोगतैं एकविलक्षणहीवर्ण उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे ताशोणितवीर्यकेसंयोगतैंभी एकविलक्षणहीवर्ण उत्पन्नहोवैहै ॥ ताशुक्रशोणितकेसंयोगतैंही यहजीवात्मा गर्भभावकीप्राप्तिद्वारा पुनःशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य ! पिताकेशरीरतैं तावीर्यकेनिकसणेकाप्रकार जिसरीतिसैं तागर्भउपनिषद्विषे कथनकर्याहै ॥ तारीतिकूं तू श्रवणकर ॥ पूर्वउक्तरीतिसैं सो जीवमिलितअन्न युवान्पुरुषकेशरीरविषेप्राप्तहोइके रसरुधिरादिकधातुद्वारा वीर्यरूपसप्तमधातुभावकूंप्राप्तहोइकै पादतैंलैकेमस्तकपर्यंत यासर्वशरीरविषे व्याप्यकरिकैरहेहै ॥ और जैसे अग्निकेसंबंधतैं पुष्पोंकारसनिकसेहै ॥ तैसे स्त्रियोंकेस्मरणादिकोंकरिकै

उत्पन्नभयाजोकामरूपअग्निहै ॥ ताकामरूपअग्निकेतापकरिकै यापुरुषकेसर्वअंगोंतैंसोवीर्यरूपरस निकसैहै ॥ और तिनसर्वअंगों तैंनिकसिकै सोवीर्य प्रथम हृदयदेशविषेस्थितहोवैहै ॥ और जैसे महान्‌वायु वृक्षकूं चलायमानकरैहै ॥ तैसे सोवीर्यभी ताहृदयक मलकूंचलायमानकरैहै ॥ और ताहृदयकमलकेचलायमानहुए यहकामीपुरुष धैर्यतैंरहितहोवैहै ॥ याकारणतैंही सोकामीपुरुष ति सकालविषे स्त्रीजनोंकेअधीनहोवैहै ॥ तथा धैर्यवान्‌पुरुषोंकेशोककाविषयहोवैहै ॥ और ताहृदयकमलविषे वीर्यकेप्राप्तहुए ताका मीपुरुषकूं जिसप्रकारकादुःखहोवैहै ॥ तिसीप्रकारकादुःख तावीर्यविषेस्थितजीवकूंभीहोवैहै ॥ और जैसे समुद्रविषेस्थितनौका जबी महान्‌वायुकरिकैंचलायमानहोवैहै ॥ तबी तानौकाविषेस्थितपुरुष महान्‌दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे ताहृदयकमलकेचलाय मानताकरिकै सोजीवात्माभी महान्‌दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार सोजीवात्मा ताहृदयदेशविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभव करिकै ताहृदयकमलतैंअनंतर नाडीरूपमार्गद्वारा तापिताकासर्वशरीरविषेप्राप्तहोवैहै ॥ तहां तापिताकेशरीरविषेस्थितजे रसरु धिरादिकसप्तधातुहैं ॥ तिनधातुवोंविषेस्थितजोअग्निहै ॥ तिसअग्निकूं सोजीवात्मा प्राप्तहोवैहै ॥ तामहान्‌अग्निविषेप्राप्तहुआ य हजीवात्मा दाहकूंप्राप्तहोइकै महान्‌दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताअग्निकरिकै याजीवात्माका मरणभीहोवैनहीं ॥ तथा ताअग्नितैं याजीवात्माका बाहरिभीनिकसणाहोवैनहीं ॥ इसप्रकार ताअग्निविषे बहुतकालपर्यंत दुःखकाअनुभवकरिकै सोजीवात्मा ताअग्नि तैंअनंतर पित्तभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोपित्त ? अग्निकेसंबंधतैंद्रवीभूतहुएजेताम्रादिकधातुहैं तिनोंकेसमानहै ॥ तथा क्षार क टु रसकरिकैयुक्तहै ॥ ऐसेपित्तभावकूंप्राप्तहोइकै यहजीवात्मा नरकदुःखतैंभीअधिकदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार पि त्तविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकरिकै सोजीवात्मा तापित्ततैंअनंतर वातभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोवात ? महान्‌वायुके समान वेगवालाहै ॥ और यालोकविषे किसीऊंचेपर्वतकेशिखरविषेस्थित जोकोईवस्त्रादिकोंतैंरहितपुरुषहै ॥ सोपुरुष तहां महान्‌ वायुकरिकैकंपायमानकऱ्याहुआ जिसप्रकारकेदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसीप्रकारकेदुःखकूं यहजीवात्मा तावातविषेप्राप्तहोवैहै ॥ हे शिष्य! इसप्रकार तावातविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकरिकै सोजीवात्मा तावाततैंअनंतर पुनःहृदयकमलविषेप्राप्तहोवै

है ॥ हेशिष्य ! सोहृदय दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ अस्थियोंकापंजररूपहृदयहोवैहै ॥ जिसहृदयकूं लोकविषे उरःस्थल वक्षःस्थल इत्यादिकनामकरिकैकथनकरैहै ॥ और दूसरा ताअस्थिपंजरकेभीतर मांसमयकमलरूपहृदयहोवैहै ॥ तामांसमयकमलकूंही शास्त्रविषे हृदयकमल हृदयपद्म इत्यादिकनामोंकरिकैकथनकरैहैं ॥ ऐसेहृदयकमलविषे सोजीवात्मा प्राप्तहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकूं पुनःस्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! अन्नकेसाथभक्षणकर्‍याहुआ सोजीवात्मा प्रथम तापिताके हृदयकमलकेसमीपजावैहै ॥ तिसतैंअनंतर ताअन्नकेसाथमिल्याहुआसोजीवात्मा तापिताकीजठराग्निविषेप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोजीवात्मा ताअन्नकेसूक्ष्मरसोंकेसाथमिलिकै समानवायुकेबलतैं ऊपरिगमनकरैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोजीवात्मा पित्तभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोजीवात्मा वातभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोजीवात्मा पुनःहृदयकमलकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार सोजीवात्मा तापिताकेशरीरविषे कंदुककीन्यांई भ्रमणकरैहै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार तापिताकेशरीरविषे नीचेऊपरिभ्रमणकरताहुआ सोजीवात्मा अनेकदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर पुण्यपापकर्मोंकेवशतैं सोजीवात्मा वीर्यकेसाथमिलिकै तापिताकेशरीरतैं बाहरिनिकसिकै माताकेउदरविषेप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य ! याजीवात्माकूं दूसरेकीप्राप्तिवासते याप्रकारकामार्ग प्रजापतिनैं उत्पन्नकर्‍याहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तामार्गकूं प्राजापत्ययानामकरिकैकथनकरैहै ॥ अब तीनमलोंकरिकै याशरीरकेउत्पत्तिकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! यालोकविषे जितनेमनुष्यादिकयोनिजशरीरहैं ॥ तिनशरीरोंके कार्मण मायीय आणव येतीनप्रकारकेमल कारणहोवैहैं ॥ तहां पिताकेशुक्रकानाम कार्मणमलहै ॥ और माताकेशोणितकानाम मायीयमलहै ॥ और तीसराजोआणवनामामलहै ॥ ताकेविषे यहतीनप्रकारकामतहै ॥ तहां कोईकशास्त्रवेत्तापुरुषतौ शुक्र शोणित यादोनोंमलोंकेसंधिकूं आणवमलकहैहैं ॥ और कोईकशास्त्रवेत्तापुरुषतौ पुण्यपापरूपकर्मकूंही आणवमल कहैहैं ॥ और कोईकविद्वानपुरुषतौ शुक्र शोणित यादोनोंमलोंकीअवस्थाविषेकूंही आणवमल कहैहैं ॥ तिनतीनोंमतोंविषे यहअंतकामतही समीचीनहै ॥ काहेतैं ? शुक्र शोणित यादोनोंमलोंकेयोगतैंअनंतर तत्कालही एकविलक्षणवर्ण उत्पन्नहोवै

है ॥ ताविलक्षणवर्णकानाम आणवमलहै ॥ सोआणवनामातृतीयमल तिनदोमलोंतैंभिन्ननहींहै ॥ किंतु सोतृतीयमल तिनदोम लोंकेअंतर्भूतहीहै ॥ हेशिष्य ! अविद्यादिकपंचक्लेशोंकरिकैयुक्त तथापुण्यपापकर्मोंकरिकैयुक्त तथापूर्ववासनावोंकरिकैयुक्त जोय हजीवात्माहै॥सोयहजीवात्मा यातीनमलोंकेसंबंधतैं जिसशरीरकूंप्राप्तहोवैहै॥सोशरीर तिनपितामाताकेसमानहीहोवैहै ॥ तिसपि तामाताकेशरीरतैं सोशरीर विलक्षणहोवैनहीं॥अब पुरुष स्त्री नपुंसक यातीनशरीरोंकेउत्पत्तिकाप्रकार निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! पुरुषस्त्रीकेसंभोगकालविषे जबी पिताकाशुक्ररूपमल अधिकपतनहोवैहै ॥ और माताकाशोणितरूपमल न्यूनपतनहोवैहै ॥ तबी तिनदोनोंमलोंतैं पुरुषशरीरकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और तासंभोगकालविषे जबी स्त्रीकाशोणितरूपमल अधिकपतनहोवैहै ॥ और पिताकाशुक्ररूपमल न्यूनपतनहोवैहै॥तबी तिनदोनोंमलोंतैं स्त्रीशरीरकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और तासंभोगकालविषे जबी पुरुषकाशु क्ररूपमल तथास्त्रीकाशोणितरूपमल समानहीपतनहोवैहै॥तबी तिनदोनोंमलोंतैं नपुंसकशरीरकीउत्पत्तिहोवैहै॥अब सुंदरबालकके उत्पत्तिकाप्रकार तथा कुरूपबालककेउत्पत्तिकाप्रकार निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! जिसकालविषे यहपुरुष तथास्त्री दोनों किसीचिंताकरिकैव्याकुलनहींहोवैहै ॥ किंतु स्वस्थचित्तवालेहोवैहैं ॥ तिसकालविषे सोपुरुष तथास्त्री जबी शास्त्रकीरीतिप्रमाण संभोगकरैहैं ॥ तबी तिनदोनोंके शुक्रशोणिततैं जोबालकउत्पन्नहोवैहै ॥ सोबालक नेत्रादिकसर्वइंद्रियोंकरिकैसंपन्नहोवैहै ॥ तथा अनेकशुभगुणोंकरिकैसंपन्नहोवैहै ॥ तथा हस्तपादादिकसर्वअवयवोंकरिकैसुंदरहोवैहै ॥ और जबी यहपुरुष तथास्त्री दोनों कि सीचिंताकरिकैव्याकुलहोवैहैं ॥ अथवा तिनदोनोंविषे एककामन व्याकुलहोवैहै ॥ तबी संभोगकालविषे तिनदोनोंकावीर्य सर्वअं गोंतैंनिकसेनहीं ॥ और जोकदाचित् सोशुक्रशोणितरूपवीर्य तिनदोनोंकेसर्वअंगोंतैंनिकसेभीहै॥तौभी सोवीर्य बाहरिनिकसणेका लविषे निरुद्धहोइजावैहै ॥ अथवा सोवीर्य कफादिकधातुवोंकरिकैमिलितहोवैहै ॥ ऐसेशुक्रशोणिततैं जोबालक उत्पन्नहोवैहै ॥ सोबालक सर्वअंगोंकरिकैसुंदरहोवैनहीं ॥ किंतु सोबालक खंजहोवैहै ॥ अथवा सोबालक पंगुहोवैहै ॥ अथवा सोबालक हस्तपा दकीअंगुलियोंतैंरहितहोवैहै ॥ अथवा सोबालक न्यूनअंगुलियोंवालाहोवैहै ॥ अथवा सोबालक अधिकअंगुलियोंवालाहोवैहै ॥

अथवा सोबालक श्यामनखोंवालाहोवैहै ॥ अथवा सोबालक एकपादएकहस्तवालाहोवैहै ॥ अथवा सोबालक नेत्रादिसर्वइंद्रियोंतैंरहितहोवैहै ॥ अथवा सोबालक किसीएकइंद्रियतैंरहितहोवैहै ॥ अथवा सोबालक वामनहोवैहै ॥ अथवा सोबालक कुब्जहोवैहै ॥ अथवा सोबालक अत्यंतदीर्घहोवैहै ॥ अथवा सोबालक अत्यंतभयवान्होवैहै ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकीकुरूपतावाला सोबालक उत्पन्नहोवैहै ॥ अब एकहीकालविषे स्त्रीकेउदरविषे दोतीनबालकोंकेउत्पत्तिकाप्रकार निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! तास्त्रीपुरुषकेसंभोगकालविषे जबी तापुरुषका तथास्त्रीका अपानवायु किसीनिमित्तकरिकैक्षोभकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोअपानवायु तास्त्रीकेगर्भाशयविषेजाइके तामिल्येहुएशुक्रशोणितके जोकदाचित् दोविभागकरैहै ॥ तौ तास्त्रीकेउदरविषे दोबालकोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और सोअपानवायु जोकदाचित् ताशुक्रशोणितकेतीनविभागकरैहै ॥ तौ तास्त्रीकेउदरविषे तीनबालकोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार पुण्यपापकर्मोंकेवशतैं सोजीवात्मा तामाताकेउदरविषे अनेकप्रकारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब तामाताकेउदरविषे बालककेवृद्धिकाप्रकार निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! तास्त्रीकेउदरविषे प्राप्तभयाजो पुरुषकाशुक्रहै ॥ सोशुक्र तथास्त्रीकाशोणित येदोनोंमल परस्परमिलिके प्रथमरात्रिविषेतौ जलकेफेनकीन्यांई कलिलअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताकलिलअवस्थाकापरिमाण माताकेअंगुष्ठपरिमाणहोवैहै ॥ और सप्तरात्रितैंअनंतर तेशुक्रशोणितदोनों ताफेनरूपकलिलअवस्थाकापरित्यागकरिकै बुद्बुदअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इहां यत्किंचित्द्रवीभूत तथाअंडेकीन्यांईवर्तुलाकार जोमांसविशेषहै ताकानाम बुद्बुदहै ॥ और एकपक्षतैंअनंतर सोबुद्बुदाकारमांस ताद्रवीभावताकापरित्यागकरिकै आपणेअग्निवायुकेसंबंधतैं तथामाताकेअग्निवायुकेसंबंधतैं पिंडभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा चारिकोणवालाहोवैहै ॥ इसप्रकार चारिकोणवालेपिंडभावकूंप्राप्तभयेजे तेशुक्रशोणितरूपदोमलहैं॥ तेदोनोंमल ताचतुरकोणवालेपिंडतैं दोअंडकोशरूपकरिकै पृथक्भावकूंप्राप्तहोवैहैं॥ और तिसकालविषे अंतरप्राणवायुकरिकै उपरिप्रेरणाकरेहुएजे तेदोनोंमलहैं ॥ तिनदोनोंमलोंतैं प्रथम सुषुम्नानामानाडी उत्पन्नहोवैहै ॥ कैसीहैसासुषुम्नानाडी ? पूर्व नाडीकंदकेमध्यविषेस्थितरूपकरिकै वर्णनकरीहै ॥ तथा अयोगीपुरुषोंकूंदुर्लक्ष्यहै ॥ तथा वर्तुलाकारहै ॥ तथा अत्यंतसर

लहै ॥ तथा नाभि हृदय गल तालु भ्रूमध्य यापंचस्थानोंकेभेदतें पंचपर्वा यानामकरिकैंकथनकरीहै ॥ तथा वृक्षकी
न्यांईं अधोमुखवालीहै ॥ ऐसी सुषुम्नानाडीकेदोनोंतरफ दूसरीदोनाडियां उत्पन्नहोवैंहैं ॥ तिनदोनोंनाडियोंविषेभी जाना
डी वामभागकेअंडकोशतैंउठिकै तासुषुम्नानाडीकेवामभागविषेसंबंधकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ और तासुषुम्नाकेवामभागतैंउठिकै दक्षि
णपार्श्वविषेस्थितछिद्ररूपमार्गद्वारा हृदयदेशकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ और ताहृदयदेशतैंउठिकै वामस्कंधके तथावामजत्रुके मध्यछि
द्ररूपमार्गकरिकै वामनासिकाकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ इसप्रकार धनुषकीन्यांईंवक्रमार्गकरिकै तावामनासिकाविषेप्राप्तभईजानाडी
है तानाडीकानाम इडाहै ॥ और जानाडी दक्षिणभागकेअंडकोशतैंउठिकै तासुषुम्नाकेदक्षिणभागविषे संबंधकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ और
तासुषुम्नाकेदक्षिणभागतैं उठिकै वामपार्श्वविषेस्थितछिद्ररूपमार्गद्वारा हृदयदेशकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ और ताहृदयदेशतैंउठिकै दक्षि
णस्कंधके तथादक्षिणजत्रुके मध्यछिद्ररूपमार्गद्वारादक्षिणनासिकाकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ इसप्रकार धनुषकीन्यांईंवक्रमार्गकरिकै ताद
क्षिणनासिकाविषेप्राप्तभईजानाडीहै तानाडीकानाम पिंगलाहै ॥ इहां गलकेनीचलीअस्थिकानाम जत्रुहै ॥ और हेशिष्य! ति
सकालविषे तागर्भकेनाभिस्थानतैं एकआप्यायनीनामानाडी उत्पन्नहोवैंहै ॥ ताआप्यायनीनाडीकूंही शास्त्रविषे शंखिनी यानाम
करिकैंकथनकरैंहैं ॥ साआप्यायनीनाडी तागर्भकेनाभिस्थानतैंनिकसिकै तामाताकेहृदयदेशविषेसंबंधकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ और जैसे
यालोकविषे कूपादिकोंकाजल कुल्याद्वारा क्षेत्रविषेजाइकै व्रीहियवादिकोंकीवृद्धिकरैंहै ॥ तैसे तामातानैं भोजनकन्याजोअन्न त
थाजल ताअन्नजलकासूक्ष्मरस ताआप्यायनीनाडीद्वारा तागर्भकेउदरविषेजाइकै तागर्भकीवृद्धिकरैंहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्!
इडा पिंगला येदोनोंनाडियां अंडकोशतैंउठिकै वामदक्षिणनासिकाविषे जावैंहै यहजोपूर्व आपनें कथनकन्याहै सो यद्यपि पुरुष
शरीरोंविषे घटैहै ॥ तथापि स्त्रीशरीरोंविषेघटैनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! तिननाडियोंकामूलग्रंथिरूप जेदोअंडकोशहैं ॥ तेदो
अंडकोश पुरुषशरीरोंविषेतौ स्पष्टहीहोवैंहैं ॥ और स्त्रीशरीरोंविषे अस्पष्टहोवैंहैं ॥ और नपुंसकशरीरोंविषे यत्किंचित्स्पष्टहोवैंहैं ॥
यातैं स्त्रीनपुंसकशरीरोंविषेभी तिननाडियोंकीउत्पत्ति संभवैंहै ॥ इसप्रकारएकपक्षकेसमाप्तहुए तागर्भविषे नाडियोंकीउत्पत्तिहो

वेंहै॥ और एकमासकेव्यतीतहुए सोचारिकोणवाला गर्भरूपपिंड कठिनभावकूंप्राप्तहोवैहै॥ और दोमासतैंअनंतर ताकठिनमांसके पिंडतैं प्रथम शिर उत्पन्नहोवैहै॥ और तीनमासतैंअनंतर ताचारिकोणातैं यथाक्रमतैं दोहस्त दोपाद उत्पन्नहोवैं हैं॥ और चारिमास तैंअनंतर तिनहस्तपादोंविषे अंगुलियां उत्पन्नहोवैं हैं॥ तथा कटि उर उदरदोनोंपार्श्व कोईकअस्थियां इत्यादिकअवयव उत्पन्नहोवैं हैं॥ और पंचमासतैंअनंतर तागर्भकेपृष्ठदेशविषेस्थित दीर्घअस्थि उत्पन्नहोवैंहै॥ और षष्ठमासतैंअनंतर तागर्भकेमुखादिकनवद्वार तथा तिनद्वारोंविषेस्थितवाकादिकइंद्रिय उत्पन्नहोवैं हैं॥ और सप्तममासतैंअनंतर तागर्भविषे प्राणोंकाव्यापार स्पष्टहोवैंहै॥ और अष्टममासविषे सोगर्भ अंतरबाहरिसर्वअंगोंकरिकैपूर्णहोवैंहै॥ परंतु ताअष्टममासविषे तागर्भविषे चैतन्यताप्रगटहोवैनहीं॥ यातैं ताअष्टममासविषे सोगर्भ सुषुप्तपुरुषकीन्यांई स्थितहोवैंहै ॥ और ताअष्टममासविषे वातपित्तादिकधातुवोंकीविषमतारूपदोषतैंरहितहुआ सोगर्भ जोकदाचित् तामाताकेउदरतैं बाहरिनिकासिकै जीवनकूंप्राप्तहोवैंहै॥ तौ सोगर्भ भोग मोक्ष दोनोंकैसंपादनकरणेविषेसमर्थहोवैंहै॥ तहां प्रणवादिकोंकीउपासनाकरिकैतौ ब्रह्मलोकादिरूपभोगकूं प्राप्तहोवैंहै॥ और आत्मसाक्षात्कारकरिकै मोक्षकूंप्राप्तहोवैंहै॥ याकहणेकरिकै यहअर्थ बोधनकऱ्या॥ जिसबालकका अष्टममासविषेजन्महोवैंहै॥ तिसबालककेजीवनेविषे संशयही होवैंहै॥ और ताअष्टममासकी जबी समाप्तिहोवैंहै॥ और नवममासकाप्रवेशहोवैंहै॥ तबी सोगर्भ सर्वज्ञहोवैंहै॥ और जैसे यालोकविषे विवेकादिकसाधनचतुष्टयसंपन्न कोईअधिकारीपुरुष ब्रह्मसाक्षात्कारकेप्राप्तिकीइच्छाकरताहुआ विनयपूर्वक ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीप स्थितहोवैंहै॥ तैसे तानवममासविषे सोगर्भभी विनयपूर्वक तामाताकेउदरविषे स्थितहोवैंहै॥ और तानवममासविषे सोबालक पूर्वअनेकजन्मोंकेपुण्यपापकर्मोंकूंस्मरणकरताहुआ आपणेकूंधिक्कारकरैंहै॥ हेशिष्य! तानवममासविषे सोबालक जिसप्रकार पूर्वलेजन्मोंकास्मरणकरिकै पश्चात्तापकरैंहै॥ सोप्रकार तू श्रवणकर॥ यादुःखरूपसंसारसमुद्रविषे हमनें पूर्व सुखदुःखकीप्राप्तिकरणेहारे असंख्यातशरीर धारणकरेंहैं॥ तिनशरीरोंविषेभी अनेकवारतौ मैं श्वानशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥ और अनेकवार मैं सूकरशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥ और अनेकवार मैं खर उष्ट्र शरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥ और अनेकवार मैं गोजाशरीरोंकूं प्रा

प्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं अजाशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं मृगशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं पक्षीशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं गोधाशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं सर्पशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं कीटादिकशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं प्रतिलोमशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं अनुलोमशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ इहां उत्तमजातिवालीमाताविषे नीचजातिवालेपुरुषतें जोपुत्र उत्पन्नहोवैहै ताकानाम प्रतिलोमहै ॥ और नीचजातिवालीमाताविषे उत्तमजातिवालेपुरुषतें जोपुत्रउत्पन्नहोवैहै ताकानाम अनुलोमहै ॥ और अनेकवार मैं चांडालादिकनीचशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं ब्राह्मणादिकऊंचेशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं वृक्षादिकस्थावरशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं झषशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं एकपादवालेशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं दोपादवालेशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं तीनचारिपादवालेशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं पादतैंरहितशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं अनेकपादोंवालेशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं हस्ततैंरहितशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं एकहस्तवालेशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं अनेकहस्तवालेशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं एकइंद्रियवालेशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं अनेकइंद्रियवालेशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ इसप्रकार ब्रह्मलोकविषे तथास्वर्गलोकविषे तथाअंतरिक्षलोकविषे तथापृथिवीलोकविषे तथानरकविषे मैंअनेकप्रकारकेशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और जैसे उदुंबरकाफल मछरजीवोंकरिकै पूर्णहोवैहै ॥ तैसे यहब्रह्मांडरूपउदुंबरकाफलभी मेरेशरीररूपमछरोंकरिकै मानों पूर्णहोताभयाहै ॥ और जैसे वायुकरिकैचलायाहुआतृण निरंतर भ्रमणकरैहै ॥ तैसे पुण्यपापकर्मोंकेवशतैं मैंदीनजीवभी अनेकशरीरोंकूंग्रहणकरताहुआ तथाअनेकशरीरोंकापरित्यागकरताहुआ नरकविषे तथास्वर्गविषे तथाभूमिलोकविषे निरंतर भ्रमणकरताभयाहूं ॥ और जैसे यालोकविषे कृषिकरणेहारेपुरुष रज्जुरूपपाशतैं वृषभादिकपशुवोंकूंबांधिकै आपणेकृषिआदिककार्योंविषे प्रवृत्तकरै

॥२६॥

हैं ॥ तैसे मायारूपसूत्रतैंउत्पन्नभये जेपुण्यपापकर्मरूपपाशहैं ॥ तिनकर्मरूपपाशोंतैंबांधिकै मैंपशुजीवकूं स्त्रीपुत्रादिककुटुंबकेपाल नकरणेविषे कोईअंतर्यामीदेव प्रवृत्तकरताभयाहै ॥ परंतु ताअंतर्यामीदेवकूं मैंमूढबुद्धिजीव नहींजाणताभयाहूं॥ और पूर्व हमारेकूं अनेकजातिवालेशरीरोंकीप्राप्तिहोतीभई है ॥ तिसतिसशरीरकेसमानजातिवाली जेअनेकमाताहैं ॥ तिनमातावोंकेस्तनोंतैं पूयकेस मान निकसेजेदुग्धहैं ॥ जेदुग्ध विचारवान्पुरुषोंकूं परमदुःखरूप प्रतीतहोवैहैं ॥ ऐसेनिंदितदुग्धोंकूंभी मैंदुरात्माजीव अनेकवार पानकरताभयाहूं ॥ और तिसतिसजातिवालेशरीरोंकरिकै भक्षणकरणेयोग्य जेअनेकप्रकारकेआहारहैं॥जिनआहारोंकूंदेखिकै दूस रे जातिवालेशरीरोंकूं महान्ग्लानिहोवैहै ॥ ऐसे निंदितआहारोंकूंभी मैं अनेकवार भोजनकरताभयाहूं ॥ और पूर्व मैं जिसजि सशरीरकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ तिसतिसशरीरविषे हमारेकूं जन्मकीप्राप्ति तथामरणकीप्राप्ति अवश्यकरिकै होतीभई है ॥ और तिसतिसशरीरकेसंबंधी जे पिता माता पुत्र स्त्री बांधव गृह आहार आदिकपदार्थथे ॥ तिनपदार्थोंविषे हमारा अत्यंतरागहोताभ या ॥ और तिसतिसशरीरकेनाशहुएतैंअनंतर तिनपितामातादिकपदार्थोंकास्वरूप तथातिनोंकाराग नाशकूंप्राप्तहोताभया ॥ और याभूमिविषे जितनेसूक्ष्मरजहैं ॥ और याआकाशविषे जितनेतारागणहैं ॥ तिनोंतैंभीअधिकशरीर पूर्व हमारेकूंप्राप्तहोतेभ येहैं ॥ तथा तितनेहीपितामाता हमारेहोतेभयेहैं ॥ और जैसे यालोकविषे कोईमनुष्य एकवारपीसेहुएअन्नकूं पुनःपीसतानहीं॥ तै से एकवार जन्मकूंप्राप्तहुएजीवका पुनःजन्महोणा तथाएकवार मृत्युकूंप्राप्तहुएजीवका पुनःमृत्युहोणा यद्यपि अयुक्तहै ॥ तथापि तेजन्ममरण अनेकसहस्रवार हमारेकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ यहहमारेकूं बहुत आश्चर्यहोवैहै॥ और जैसे कूपादिकोंकेऊपरि घटीयंत्र फिरेहै ॥ तैसे प्रथमजन्मअवस्था तिसतैंअनंतर बाल्यअवस्था तिसतैंअनंतर यौवनअवस्था तिसतैंअनंतर वृद्धअवस्था तिसतैंअ नंतर मरणअवस्था तिसतैंअनंतर पुनःजन्मअवस्था याप्रकार जन्मादिकअवस्थावोंकाप्रवाहरूपघटीयंत्र सर्वदा हमारेमस्तकऊ परिफिरेहै ॥ और जैसे कोईदुष्टपुरुष इसलोककेसुखवासते ब्रह्महत्याकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं साब्रह्महत्या इसलोकविषे तथापरलो कविषे दुःखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे मैं विचारहीन जिनकर्मोंकूं सुखकासाधनमानिकैकरताभयाहूं ॥ तेसंपूर्णकर्म हमारेकूं अनेकप्र

कारकेदुःखोंकीहीप्राप्तिकरतेभयेहैं॥काहेतें? तिनपुण्यपापकर्मोंकेकरणेविषे याजीवोंकूं इसलोकविषे तथापरलोकविषे दुःखकीहीप्राप्ति होवैहै॥तहां तेपुण्यपापकर्म जोकदाचित् अत्यंतउग्रहोवैहै॥तौ इसीजन्मविषे ताकर्तापुरुषकूं सुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकरैहैं॥और तेपुण्यपापकर्म जोकदाचित् मंदहोवैहैं॥तौ जन्मांतरविषे ताकर्तापुरुषकूं सुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और जोकोईपुरुष या प्रकारकावचनकहेहैं ॥ जो पापकर्मतौ प्रथमआरंभकालविषे तथाभविष्यत्कालविषे याजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरैहैं॥ और पुण्य कर्मतौ यद्यपि प्रथमआरंभकालविषे याजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहैं॥ तथापि भविष्यत्कालविषे दुःखकीप्राप्तिकरैनहीं॥किंतु तेपुण्य कर्म भविष्यत्कालविषे याजीवोंकूं सुखकीहीप्राप्तिकरैहैं ॥ सोयहतिनोंकाकहणा संभवैनहीं ॥ काहेतें? तापुण्यकर्मकेसुखरूपफल का जबी भोगकरिकैनाशहोवैहै ॥ तबी याजीवोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और तासुखकेविद्यमानकालविषेभी दूसरेपुरु षोंकेअधिकसुखकूंदेखिकै ईर्षाकीउत्पत्तिकरिकै याजीवोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और तासुखकेअप्राप्तिकालविषे तासुख कीइच्छाकरिकै याजीवोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याप्रकार तापुण्यजन्यविषयसुखविषे सर्वदा दुःखकीकारणताकूं मैं अने कवार अनुभवकरिआयाहूं ॥ यातें यहसंसार केवलदुःखकाहीसमुद्रहै ॥ ऐसेदुःखरूपसंसारसमुद्रविषे निमग्नहुआ मैंअज्ञानी जीव तासंसारदुःखकेनिवृत्तिकाउपाय देखतानहीं ॥ जिसउपायकरिकै मैं यासंसारसमुद्रकेपारकूंप्राप्तहोवौं ॥ किंवा याअनादि संसारविषे यहविषयरूपजुवारी मैंमूढबुद्धिजीवकूं पूर्व अनेकशरीरोंविषे पराजयकरतेभयेहैं ॥ और तिनविषयरूपजुवारियोंकेप राजयकरणेहारा यहअधिकारीमनुष्यशरीरहीहै॥ तिनअधिकारीमनुष्यशरीरोंकूंप्राप्तहोइकैभी मैंमूढबुद्धिपुरुष इंद्रियरूपपाशकोंका निरोधरूप जाकुशलताहै ताकुशलतातैंरहितहोताभया ॥ याकारणतें मैंमूढबुद्धिजीव तिनविषयरूपजुवारियोंकूं पराजयनहींकरता भया॥ किंतु उलटा तेविषयरूपजुवारीही ताहमारेअधिकारीमनुष्यशरीरकूं पराजयकरतेभये ॥ और अबी जोकिसीपुण्यकर्मकेप्रभाव तें मैं यामाताकेउदरतैंबाहरिनिकसौंगा ॥ तौ पूर्वशरीरोंकीन्यांई अबीमैं प्रमाद नहींकरौंगा॥ किंतु जन्ममरणादिकेदुःखोंकेनाशकर णेहारा जोब्रह्मात्मज्ञानहै ॥ ताब्रह्मात्मज्ञानकूं मैं अष्टांगयोगादिकउपायोंकरिकै संपादनकरौंगा॥ और जोकदाचित् ताआत्मसा

क्षात्कारकेसंपादनकरणेविषे हमारासामर्थ्यनहींहोवैगा॥ तौभी पार्वतीकापतिजोमहादेवहै तथा लक्ष्मीकापतिजोविष्णुहै तिनदोनों काआराधन मैं निरंतरकरौंगा॥ परंतु यामाताकेउदरतैंबाहरिनिकासिकै मैं पूर्वकीन्यांई स्त्रीपुत्रादिककुटुंबकेपालनकरणेविषे आपणे आयुषकूंव्यर्थनहींकरौंगा काहेतैं? पूर्वहमनैं जिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेपालनकरणेवासते अनेकप्रकारकेपुण्यपापकर्मकरेथे ॥ और मे रेप्रसादकरिकैही जिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकूं इसलोकविषे तथापरलोकविषे सुखकीप्राप्तिभईथी ॥ तेहमारेस्त्रीपुत्रादिकबांधव कैसे कृतघ्नथे? जैसे कोईपुरुष आपणेगृहतैंविष्ठाकूंनिकासिकै बाहरिछोडिआवैहैं॥ तैसे तेहमारेस्त्रीपुत्रादिकबांधव मरणतैंअनंतर हमारेकूं आपणेगृहतैंबाहरिनिकासिकै श्मशानभूमिविषे इकल्लाछोडिकै आपणेगृहकूंजातेभये ॥ किंवा हमारेजीवत्कालविषे जेस्त्रीपुत्रा दिकबांधव हमारेपादोंऊपरि आपणामस्तकराखिकै नमस्कारकरतेथे॥ तेहीस्त्रीपुत्रादिकबांधव मरणतैंअनंतर हमारेस्पर्शकरिकै आ पणेकूंअशुद्धमानतेभये ॥ और ताअशुद्धिकीनिवृत्तिवासते स्नानकरतेभये ॥ किंवा हमारेजीवत्अवस्थाविषे जेस्त्रीपुत्रादिकबांधव हमारेशरीरऊपरि चंदनादिकोंकालेपकरतेथे ॥ तेहीस्त्रीपुत्रादिकबांधव मरणतैंअनंतर हमारेकूं महान्अग्निविषेपावतेभये ॥ किंवा जिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेपालनकरणेवासते मैं अनेकपापकर्मोंकूंकरताभयाथा ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव तापापकर्मकेफलभोग णेवासते किसीभीजन्मविषे हमारेसाथआयेनहीं ॥ किंतु तापापकर्मकेदुःखरूपफलकूं मैं इकल्लाहीभोगताभया ॥ ऐसे आगमापा यीकृतघ्नबांधवोंकेसाथ स्नेहकरणा हमारेकूं उचितनहींहै ॥ किंवा जैसे यालोकविषे वेश्यास्त्री अंतरकेस्नेहतैंरहितहुईभी बाहरिसैं नानाप्रकारकास्नेहदिखाइकै धनवान्पुरुषोंकूं मोहितकरैहै ॥ तैसे तेस्त्रीपुत्रादिकबांधवभी अंतरकेस्नेहतैंरहितहुएभी बाहरिसैंनाना प्रकारकास्नेहदिखाइकै आपणेस्वार्थकीसिद्धिकरणेवासते मैंमूढबुद्धिपुरुषकूं मोहकीप्राप्तिकरतेभये ॥ और जैसे सावेश्यास्त्री ताधनी पुरुषकेसर्वधनकाहरणकरिकै निर्धनतारूपआपदाकालविषे तापुरुषकापरित्यागकरिदेवैहै ॥ तैसे तेस्त्रीपुत्रादिकबांधवभी मरणरू पआपदाकालविषे हमारा परित्यागकरतेभये ॥ और तिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंके भरणपोषणकरणेवासते जेजेपापकर्म हमनैंकरेथे ॥ तिनपापकर्मोंकेदुःखरूपफलकूं मैं इकल्लाहीभोगताभया ॥ हेशिष्य! इसप्रकार तानवममासविषे सोबालक माताकेउदरविषेस्थित

होइकै पूर्वअनेकजन्मोंकास्मरणकरिकै पश्चात्तापकरैहै ॥ तिसतैंअनंतर माताकेउदरविषेस्थित प्रसूतिवायु ताबालककामुख नीचेकरैहै और पादऊपरिकरैहै ॥ और तिसकालविषे ताबालकके वात पित्त कफ येतीनधातु क्षोभकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताधातुवोंके क्षोभकरिकै बहुतदुःखकूंप्राप्तहुआ सोबालक ताकालविषे आपणेकूं तथाअन्यकिसीपदार्थकूं जाणतानहीं ॥ और छियानवैअंगुल ९६ परिमाण जोमाताकाशरीरहै ॥ तामाताकेशरीरविषे चारिअंगुलपरिमाण योनिस्थानहै ॥ ऐसेसंकीर्णयोनियंत्रविषे प्रसूति वायुकरिकै चलायाहुआ सोबालक प्राप्तहोवैहै ॥ और तामाताकेउदरविषे मूत्रकेरहणेका जोबस्तिनामास्थानहै ॥ तथा तामाताकेउदरविषे विष्ठाकेरहणेका जोसंग्रहणीनामास्थानहै ॥ तेदोनोंस्थान प्रसूतिवायुकेचलणेतैं क्षोभकूंप्राप्तहोइकै ताबालककेमस्तक ऊपरि विष्ठामूत्रकूंपावैहैं॥ हेशिष्य! जैसे यालोकविषे तीक्ष्णक्रकचकरिकै उदरकेछेदनकरणेतैं अस्मदादिकजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसेहीदुःखकीप्राप्ति तागर्भकेत्यागकालविषे तागर्भिणीस्त्रीकूं तथाबालककूं होवैहै॥ और जैसे किसीअल्पव्रणविषेस्थितहुआ कोईमहान्कीट आपणेकूं तथाताव्रणवालेपुरुषकूं परमदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे तासंकीर्णयोनिद्वारविषेप्राप्तहुआ सोबालक आपणेकूं तथामाताकूं परमदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ और जैसे कोईलोहेकातीक्ष्णशस्त्र अजादिकपशुवोंकेयोनिस्थानकूं विदारणकरैहै ॥ तैसे यहबालकभी तामाताकेयोनिस्थानकूं विदारणकरैहै ॥ और जैसे यालोकविषे राजादिकोंकेचोरीआदिकअपराधकरणेहारा जोपुरुषहै ॥ ताचोरपुरुषकूं ताराजाकेभृत्य दोक्रकचोंकेमध्यविषे प्राप्तकरैहैं ॥ तैसे सोप्रसूतिकालकावायु ताबालककूं बलात्कारसैं तामाताकेयोनियंत्रविषेप्राप्तकरैहै ॥ और ताप्रसूतिकालविषे जरायुनामापटतैंरहितहुआ सोकोमलबालक अग्निकेस्पर्शकीन्याई तायोनियंत्रकेस्पर्शतैं दाहकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार अनेकदुःखोंकूंअनुभवकरिकै सोबालक नवममासविषे अथवा दशममासविषे पूर्वलेपुण्यपापकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकेभोगणेवासते तामाताकेयोनियंत्रतैंबाहरिप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे किसी दुर्गंधव्रणतैंबाहरिनिकसिकै कीट भूमिविषेपतनहोवैहै ॥ तैसे सोबालक तामाताकेयोनियंत्रतैंबाहरिनिकसिकै भूमिविषे पतनहोवैहै ॥ और अनेकतीक्ष्णकंटकोंकेलागणेकरिकै तथालोहेकेक्रकचकरिकै अंगोंकेछेदनहोणेतैं अस्मदादिकजीवोंकूं

जिसप्रकारकादुःख प्राप्तहोवैंहै ॥ तिसीप्रकारकादुःख ताबालककूं तामाताकेयोनियंत्रतैंनिकसणेकरिकैहोवैहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार माताकेप्रसूतिवायुकरिकैचलायाहुआ सोबालक तायोनियंत्रकेनिकसणेकालविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंभोगकरिकै तथाआपणेमाताकूंभीअनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरिकै तासंकीर्णयोनियंत्रतैं बाहरिभूमिविषेपतनहोवैहै ॥ ताकालविषे मूर्छाअवस्थाकूंप्राप्तहोइके सोबालक किंचित्मात्रभीजाणतानहीं ॥ हेशिष्य! तामूर्छाअवस्थातैंअनंतर यहवैष्णववायु आपणेसंबंधकरिके ताबालकके पूर्वलेविचारका विस्मरणकराइदेवैहै ॥ केसाहैसोवायु? तामाताकेउदरतैंबाहरि सर्वत्रव्यापकहै ॥ और जीवोंके व्यामोहद्वारा यासंसारचक्रकेनिर्वाहकरणेवासते विष्णुभगवान्नैं तावायुकूंउत्पन्नकऱ्याहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष ताबाह्यवायुकूं वैष्णववायु यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ हेशिष्य! इसीवैष्णववायुकेभयतैं पूर्व व्यासभगवान्कापुत्र शुकदेवमुनिमाताकेउदरविषे योगकेबलतैं प्रसूतिवायुकूंजीतिकरिकै बहुतकालपर्यंत स्थितहोताभयाहै ॥ हेशिष्य! जैसे यालोकविषे सर्वपुरुषोंकेअभिप्रायकूंजानणेहारा जोकोईबुद्धिमान्सर्वज्ञपुरुषहै ॥ सोसर्वज्ञपुरुषभी पापीपुरुषोंकृतमंत्रओषधियोंकरिकै शीघ्रही मूढअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यावैष्णववायुकरिकैस्पर्शकऱ्याहुआ सर्वज्ञपुरुषभी मूढअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य! याबालकनैं माताकेउदरविषे स्थितहोइके नवममासविषे जिसमनकरिकै सोपूर्वउक्तविचारकऱ्याथा ॥ तिसमनकूं जबी यावैष्णववायुकास्पर्शहोताभया ॥ तबी सोमन पूर्वविचाररूपऋजुभावका परित्यागकरिकै श्वानकेपुच्छकीन्यांई वक्रभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ और जैसे अग्निकरिकैदग्धहुएकाष्ठकेभ्रमावणेतैं अग्निकाभीभ्रमणहोवैहै ॥ तैसे तावक्रमनकेतादात्म्यअध्यासतैं यहसाक्षीआत्माभी वक्रभावकूंप्राप्तहोताभया तिसतैंअनंतर अत्यंतदुःखीहुआ सोबालक पूर्वलेसर्वविचारका विस्मरणकरिकै कोहंकोहं याप्रकारकाशब्दउच्चारणकरैहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार गर्भउपनिषद्विषे याजीवोंकेजन्मका कथनकऱ्याहै ॥ ताजन्मकेविचारकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं वैराग्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं वैराग्यकीप्राप्तिवासते याअधिकारीपुरुषोंनैं तागर्भउपनिषद्कीरीतिसैं आपणेजन्मकाविचार अवश्यकरिकैकरणा॥ और हेशिष्य! जैसे ताजन्मअवस्थाकेविचारकियेतैं याअधिकारीपुरुषोंकूं तावैराग्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे आपणेमरणअवस्था

केविचारकियेतेंभी याअधिकारीपुरुषोंकूं तावैराग्यकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ यातें तावैराग्यकीप्राप्तिवासते याअधिकारीपुरुषोंनैं आपणेमरणअवस्थाकूंभी अवश्यकरिकैजान्याचाहिये ॥ और ताआपणेमरणकाज्ञान याजीवोंकूं ॥ जातस्यहिध्रुवोमृत्युर्ध्रुवंजन्ममृतस्यच ॥ इत्यादिकशास्त्रकेवचनोंकरिकैभीहोवैहै ॥ तथा यालोकविषे जिसजिसप्राणीका जन्महोवैहै ॥ तिसतिसप्राणीकामृत्युभी अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ जैसे हमारेमातापितादिकबांधवोंका जन्महुआथा ॥ यातें तिनमातापितादिकबांधवोंका मृत्युभी अवश्यकरिकैहोताभया ॥ तैसे हमाराभी जन्महुआहै ॥ यातें हमाराभी मृत्यु अवश्यकरिकैहोवैगा ॥ याप्रकारकेअनुमानप्रमाणतैंभी याजीवोंकूं आपणेमृत्युकानिश्चयहोवैहै ॥ परंतु सोहमारामृत्यु इतनैंदिनोंपीछैहोवैगा ॥ याप्रकारकानिश्चय योगरहितपुरुषोंकूं होइसकैनहीं ॥ यातें तामरणकालकेनिश्चयकरावणेवासते ऋग्वेदविषे कौषीतकिमुनिनैं अनेकप्रकारके मृत्युकेचिन्ह कथनकरेहैं ॥ तथा वसिष्ठसंहिताविषे वसिष्ठभगवान्नैंभी तेमृत्युकेचिन्ह कथनकरेहैं ॥ तिनमरणचिन्होंकेज्ञानतें याअधिकारीपुरुषोंकूं आपणेमरणकालका निश्चयहोवैहै ॥ ताकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं वैराग्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें याअधिकारीपुरुषनैं तिनमरणकेचिन्होंकूं अवश्यकरिकैजान्याचाहिये ॥अब ऋग्वेदकेकौषीतकिशाखाविषे जाग्रत्अवस्थामेंदेखणेयोग्य जेमरणकेचिन्ह कथनकरेहैं ॥ तिनचिन्होंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! यासूर्यमंडलविषे तथायापुरुषोंकेदक्षिणनेत्रविषे एकहीअंतर्यामीपुरुष दोस्वरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ तिनदोनोंस्वरूपोंका नाडीरूपकरणद्वारा परस्परसंबंध श्रुतिविषेकथनकर्‍याहै ॥ और यापुरुषकूं जबी मरणकाल समीपप्राप्तहोवैहै ॥ तबी तिनदोनोंस्वरूपोंका सोसंबंध निवृत्तहोइजावैहै ॥ और जिसकालविषे तिनदोनोंस्वरूपोंकासंबंध निवृत्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे तासमीपमृत्युवालेपुरुषकूं सोसूर्यभगवान् पूर्वकीन्यांई प्रतीतहोवैनहीं ॥ किंतु तापुरुषकूं सोसूर्यभगवान् चंद्रमाकीन्यांई शीतलहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ अथवा तापुरुषकूं मध्यान्हकालविषेभी संध्याकालकीन्यांई सोसूर्यभगवान् किरणोंतैंरहितहुआप्रतीतहोवैहै ॥ अथवा तापुरुषकूं सोसूर्यभगवान् छिद्रवालाप्रतीतहोवैहै ॥ अथवा मंजिष्ठकरिकैरंजित जोरक्तवस्त्रहै तावस्त्रकेसमान रक्तवर्णवालेआकाशविषेस्थितहुआसोसूर्यभगवान् तापुरुषकूं प्रतीतहोवैहै ॥ इसप्रकार तासू

यंभगवान्कूं विपरीतदेखणेहारापुरुष थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेशिष्य! जोपुरुष पूर्वादिकचारिदिशावों कूं तथाअग्निकोणादिकचारिउपदिशावोंकूं तथाअंतरिक्षलोककूं तथातारागणकूं सर्वदा रक्तवर्णवालादेखैहै ॥ सोपुरुषभी थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै॥ और जैसे मलकेपरित्यागकालविषे यापुरुषोंका पायुद्वार संकोचतैंरहितहोवैहै ॥ तैसे जिस पुरुषका सोपायुद्वार सर्वदा संकोचतैंरहितहोवैहै ॥ सोपुरुषभी थोडेकालविषेहीमृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे अंडोंकरिकैयुक्त का ककेगृहविषे दुर्गंधहोवैहै ॥ तैसाहीदुर्गंध जिसपुरुषकेमस्तकविषेहोवैहै ॥ सोपुरुषभी थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष आपणीछायाविषे छिद्रदेखैहै ॥ सोपुरुषभी थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और दर्पणविषे तथाजलविषे स्थित जोआपणाप्रतिबिंबहै ॥ तथा भूमिविषेस्थित जाआपणीछायाहै ॥ ताप्रतिबिंबविषे तथाछायाविषे जिसपुरुषकूं आपणेमस्तकका संशयहोवैहै ॥ अथवा तिनोंविषे आपणेमस्तककेअभावकाही निश्चयहोवैहै ॥ सोपुरुषभी थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष दूसरेपुरुषकेनेत्रकीकनीनिकाविषे आपणेप्रतिबिंबके पादऊपरिदेखैहै और मस्तक नीचैदेखैहै ॥ अथवा जोपुरुष दर्पणादिकोंविषेस्थित आपणेप्रतिबिंबविषे याप्रतिबिंबकामस्तक ऊपरिहै अथवा नीचैहै? याप्रकारकासंशयकरैहै ॥ सोपुरुष भी थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और अंगुलिकरिकै आपणेनेत्रोंकेपीडनकियेतैं अस्मदादिकपुरुषोंकूं जोकिरणोंसंयुक्ततेज विशेष प्रतीतहोवैहै ॥ सोतेजविशेष जिसपुरुषकूं नेत्रकेपीडनकियेतैं नहींप्रतीतहोवैहै ॥ सोपुरुषभी थोडेकालविषे मृत्युकूंप्राप्तहो वैहै ॥ और दोनोंअंगुलियोंकरिकैआपणेदोनोंकर्णोंकेनिरोधकरणेतैं हमजीवोंकूं जोप्राणोंकाध्वनिरूपशब्द श्रवणकरणेविषेआवैहै॥ ताआपणेप्राणोंकेशब्दकूं जोपुरुष नहींश्रवणकरैहै ॥ सोपुरुषभी थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष मयूरकेकंठ समान अग्निकूंनीलवर्णवालादेखैहै ॥ तथा जोपुरुष मेघोंतैंविनाही आकाशविषेविद्युत्कूंदेखैहै॥ तथा जोपुरुष मेघोंकेविद्यमानहु एभी ताविद्युत्कूंदेखतानहीं ॥ सोपुरुषभी थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष वर्षावालेमेघविषे सूर्यकेकिरणोंकूंदेखै है ॥ तथा जोपुरुष अग्नितैंरहितभूमिकूंभी अग्निकरिकैप्रज्वलितदेखैहै ॥ सोपुरुषभी थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इत

नेकरिकै ऋग्वेदविषे कौषीतकिमुनिउक्त मृत्युचिन्होंकानिरूपणकन्या ॥ अब वसिष्ठमुनिउक्त मृत्युचिन्होंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! एकहीदिनविषे प्रातःकालविषे तथासंध्याकालविषे जोपुरुष आपणेमस्तकतैंतिकसेहुएधूमकूंदेखेहै ॥ सोपुरुष महान्भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अथवा मरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष सायंकालविषे तथाप्रातःकालविषे पंचदिनपर्यंत तामस्तककेधूमकूंदेखेहै ॥ सोपुरुष तीनवर्षतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष तामस्तककेधूमकूं चारिदिनपर्यंत देखेहै ॥ सोपुरुष दोवर्षतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष तामस्तककेधूमकूं तीनदिनपर्यंत देखेहै ॥ सोपुरुष एकवर्षतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष आपणेकर्णोंकूं दोनोंअंगुलियोंसेंनिरोधकरिकै ताकर्णोंकेअंतर प्राणोंकेध्वनिरूपशब्दकूं नहींश्रवणकरैहै ॥ सोपुरुषभी एकवर्षतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जिसपुरुषकाशरीर पूर्व कृशहोवै ॥ सोकृशशरीर किसीनिमित्ततैंविनाही स्थूलहोइजावै ॥ तथा जिसपुरुषकाशरीर पूर्व स्थूलहोवै ॥ सोस्थूलशरीर किसीनिमित्ततैंविनाही कृशहोइजावै ॥ सोपुरुषभी एकवर्षतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष पूर्व क्रोधीस्वभाववालाहोवैहै ॥ सोपुरुष अकस्मात्तैं शांतस्वभाववालाहोइजावै ॥ अथवा जो पुरुष पूर्व शांतस्वभाववालाहोवैहै ॥ सोपुरुष अकस्मात्तैं क्रोधीस्वभाववालाहोइजावै ॥ सोपुरुषभी एकवर्षतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जिसदिनविषे यापुरुषकूं विष्ठा मूत्र यादोनोंकापरित्याग एकहीकालविषेप्राप्तहोवै ॥ अथवा जिसपुरुषकूं क्षुधा पिपासा येदोनों एकहीकालविषेप्राप्तहोवैं ॥ और ताविष्ठामूत्रकेपरित्यागकालविषे तथाक्षुधापिपासाकालविषे तापुरुषकूं व्यामोहकीभीप्राप्तिहोवै ॥ सोपुरुष तिसदिनतैंलैके एकवर्षअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोकोईपुरुष अकस्मात्तैं किसीवृक्षकेअग्रभागविषे गंधर्वनगरकूंदेखैहै ॥ अथवा जोकोईपुरुष आपणेशरीरकूं कृष्णवर्णवाला तथापिंगलवर्णवाला देखैहै ॥ सोपुरुषभी एकवर्षतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और गृध्र काक गोमायु सारस इत्यादिक जेमांसकेभक्षणकरणेहारेपक्षीहैं ॥ तथा जेखरउष्ट्रहैं ॥ तथा दांतोंतैंरहितजेवृश्चिकादिकजीवहैं ॥ तथा जेराक्षसभूतपिशाचहैं॥ इसतैंआदिलैके जितने मांसकेभक्षणकरणेहारे दुष्टजीवहैं॥ तिनगृध्रादिकदुष्टजीवोंविषे कोईएकजीव अथवा बहुतजीव मांसकेभक्षणकरणेवासते जिसपुरुष

कीतरफ धावनकरैहैं ॥ सोपुरुषभी एकवर्षतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार स्वप्नविषे जोपुरुष तिनगृध्रादिकोंकूंदेखेहै ॥ सोपुरुषभी एकवर्षतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जिसपुरुषकेप्रति दूसरेलोक अरुंधतीतारा दिखावै ॥ अथवा ध्रुवतारा दिखावै ॥ अथवा पूर्णचंद्रकेमध्यविषेस्थितश्यामता दिखावै ॥ अथवा निर्मलआकाशविषे दक्षिणउत्तरदिशाविषेस्थित दीर्घमंदस्मा दिखावै ॥ और जोपुरुष तिनअरुंधतीआदिकोंकेदेखणेवासते प्रयत्नकरताहुआभी तिनअरुंधतीआदिकोंकूंदेखतानहीं ॥ सोपुरुषभी एकवर्षतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अथवा एकवर्षतैंपूर्वही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ परंतु सोपुरुष जिसतिथिविषे तानिमित्तकूंदेखेहै ॥ वर्षतैंअनंतर पुनःतातिथिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ इतनेकरिकै एकवर्षविषे मृत्युकीप्राप्तिकरणेहारे चिन्होंका निरूपणकन्या ॥ अब षट्मासविषे मृत्युकेप्राप्तिकरणेहारेचिन्होंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जोपुरुष आपणेश्यामवस्त्रकूं श्वेतदेखेहै ॥ अथवा आपणेश्वेतवस्त्रकूंश्यामदेखेहै ॥ सोपुरुष षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष सूर्यकूं अथवा चंद्रमाकूं आकाशतैंनीचेपतनहुआदेखेहै ॥ अथवा जोपुरुष भूमिविषेस्थितपदार्थकूं आकाशविषेस्थितहुआदेखेहै ॥ अथवा आकाशविषेस्थित पदार्थकूं भूमिविषेस्थितहुआ देखेहै ॥ सोपुरुषभी षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और रोगादिककारणोंतैंविनाही जिसपुरुषके ओष्ठ तथाताल्व शुष्कहोताजावैहै ॥ अथवा जिसपुरुषकाशरीर चक्रकीन्यांई भ्रमणकरैहै ॥ अथवा जोपुरुष पर्वतादिकस्थावर पदार्थोंकाभ्रमणदेखेहै ॥ तथा चलतेहुएपदार्थोंका स्थिरपणादेखेहै ॥ सोपुरुषभी षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष घंटाकेशब्दकूंनहींश्रवणकरैहै ॥ अथवा पंकवालीभूमिविषे तथारजवालीभूमिविषे जिसपुरुषकेपादकाचिन्ह खंडितहोवैहै ॥ सोपुरुषभी षट्मासकेभीतरही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब तीनमासविषेमृत्युकरणेहारेचिन्होंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! अंगुलिकरिकै नेत्रोंकेपीडनकियेतैं अस्मदादिकपुरुषोंकूं खद्योतकेसमान जेतेजकेसूक्ष्मकण प्रतीतहोवैहैं ॥ ते तेजकेसूक्ष्मकण जिसपुरुषकूं नेत्रोंकेपीडनकियेतैंविनाही प्रतीतहोवैहैं ॥ सोपुरुष तीनमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब एकमासविषेमरणकीप्राप्तिकरणेहारेचिन्होंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जिसपुरुषकेनेत्रादिकइंद्रिय रूपादिकविषयोंकूं पूर्वकीन्यांई य

थार्थनहींग्रहणकरैहै ॥ सोपुरुष एकमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जिनदेवतादिकोंकाशरीर हमजीवोंकूं प्रत्यक्षप्रतीतहोतानहीं ॥ ऐसेदेवतादिक जिसपुरुषकेश्रवणकरणेयोग्यवचनोंकूं कथनकरैहैं ॥ सोपुरुषभी एकमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जिसपुरुषकामस्तक अग्निकीज्वालावोंकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ सोपुरुषभी एकमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष दिनविषे उल्कापातकूंदेखेहै ॥ अथवा जोपुरुष रात्रिविषे इंद्रधनुषकूंदेखेहै ॥ अथवा जोपुरुष मेघरहित आकाशविषे विद्युतकूंदेखैहै ॥ अथवा जोपुरुष मेघवालेआकाशविषेभी ताविद्युतकूंनहींदेखेहै ॥ सोपुरुषभी एकमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष दर्पणादिकोंविषे आपणेप्रतिबिंबकूं नहींदेखेहै ॥ अथवा जोपुरुष काककेमैथुनकूंदेखेहै ॥ अथवा जोपुरुष हंसकेमैथुनकूंदेखेहै ॥ अथवा जोपुरुष मयूरकेमैथुनकूंदेखेहै ॥ सोपुरुषभी एकमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष रूक्षपदार्थोंकूं स्निग्ध देखेहै ॥ अथवा जोपुरुष शीतलपदार्थोंकूं उष्णदेखे ॥ अथवा जोपुरुष उष्णपदार्थोंकूंशीतलदेखेहै ॥ सोपुरुषभीएकमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और स्नानकियेतैंअनंतर जिसपुरुषके दूसरेसर्वअंगतौ जलकरिकैआर्द्रहोवै ॥ और हृदय पाद येदोनोंअंग शीघ्रही शुष्कहोइजावै ॥ सोपुरुषभी एकमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब अर्द्धमासविषेमृत्युकीप्राप्तिकरणेहारे चिन्होंका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ! जोपुरुष अकस्मात्तैं भूमिविषेछिद्रकूंदेखेहै ॥ अथवा जोपुरुष ता भूमिकेछिद्रतैंउत्पन्नहुएशब्दोंकूंश्रवणकरैहै ॥ सोपुरुष अर्द्धमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जिसपुरुषकूं सूर्यकेकिरण शीतलप्रतीतहोवैहैं ॥ अथवा जिसपुरुषकूं चंद्रमाकेकिरण उष्णप्रतीतहोवै हैं ॥ अथवा जिसपुरुषकामुख रक्तकमलकीन्यांई रक्तवर्णवालाहोवैहै ॥ अथवा जिसपुरुषकीजिह्वा प्रज्वलितअग्निकेसमानवर्णवालीहोवैहै ॥ अथवा जिसपुरुषकेदोनोंकर्ण अश्वकेकर्णोंकीन्यांई स्तब्धहोवैहैं ॥ अथवा जिसपुरुषकेहृदयविषे तथा नाभिविषे तथाताल्लुविषे कंपहोवैहै ॥ सोपुरुषभी अर्द्धमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब सप्तदिनविषे मरणकीप्राप्तिकरणेहारेचिन्होंका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ! जिसपुरुषकेशरीरविषे अकस्मात्तैं अग्निकीज्वाला प्रगटहोवै हैं ॥ सोपुरुष सप्तदिवसतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तारामंडलविषेस्थित जेसप्तऋषिहैं ॥

तथा आदित्यतैंआदिलैकेकेतुपर्यंत जेनवग्रहहैं ॥ तिनोंकूं जोपुरुष नहींदेखेहै ॥ सोपुरुषभी सप्तदिवसतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जोपुरुष आपणेनासिकाकूं तथाजिह्वाकूं नहींदेखेहै ॥ अथवा जोपुरुष किसीकार्यकूंकरिकै तिसीकालविषे ताका र्यकेविस्मृतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अथवा जिसपुरुषकेशरीरका पूर्वअर्द्धतौ उष्णरहेहै ॥ और अपरअर्द्ध शीतलरहेहै ॥ अथवा जिसपु रुषकेनेत्र अत्यंतविकासकरिकै मंडलाकारहोवैहैं ॥ अथवा जिसपुरुषकेदोनोंकर्ण शिथिलताकरिकै आपणेस्थाननैंच्युतहोवैहैं ॥ अथवा जिसपुरुषकीनासिका वक्रहोवैहै ॥ सोपुरुषभी सप्तदिवसतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब एकदिवसविषे मृत्युकीप्राप्ति करणेहारेचिन्होंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! दक्षिणविषेसूर्यकेस्थितहुए यापुरुषोंकीछाया नियमकरिकै उत्तरदिशाविषेहीस्थि तहोवैहै ॥ तिसआपणीछायाकूं जोपुरुष दक्षिणदिशाकीतरफदेखेहै ॥ सोपुरुष उसीदिनविषे शस्त्रादिकोंकरिकै मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जिसपुरुषनैं आपणेभोजनकरनेवासते अन्नकूंत्यारकऱ्याहै ॥ ताअन्नकूं कोईअपूर्वस्त्री भोजनकरतीहै ॥ याप्रकार जोपु रुषदेखेहै ॥ सोपुरुषभी तिसीदिनविषे मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और वृषभऊपरिआरूढहुआ अथवा महिषऊपरिआरूढहुआ तथादंड जिसकेहस्तविषेहै ऐसाजोकोईभयानकपुरुषहै ॥ अथवा खुलेहुएहैंरक्तवर्णवालेकेशजिसके तथा हस्तविषे पाशोंकूंग्रहणकऱ्या हैजिसनैं ऐसीजाकोईभयानकस्त्रीहै ॥ ताभयानकपुरुषकूं अथवा ताभयानकस्त्रीकूं जोपुरुष अन्नकेभोजनकालविषेदेखेहै ॥ सोपुरुषभी तिसीदिनविषे मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार तीनवर्षके तथादोवर्षके तथाएकवर्षके तथाषट्मासके तथाएक मासके तथा एकपक्षके तथासप्तदिवसके तथा एकदिवसके जितनेमृत्युकेचिह्न पूर्व कथनकरेहैं ॥ तिनांचिन्होंविषे किसीएकचि न्हकूं अथवा दोतीनचिन्होंकूं अथवा बहुतचिन्होंकूं जोपुरुष जिसतिथिविषे तथाजिसदिनविषे देखेहै ॥ सोपुरुष तिसतीनवर्षा दिककालतैंअनंतर तिसतिथिकूं तथातिसदिनकूं पुनःप्राप्तहोवैनहीं किंतु ता तीनवर्षादिककालकेभीतरही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इतनेग्रंथकरिकै जाग्रत्अवस्थाविषे मरणकेचिन्होंकानिरूपणकऱ्या ॥ अब वसिष्ठसंहिताविषे वसिष्ठभगवान्नैं स्वप्नअवस्थावि षे जेमरणकेचिन्हकथनकरेहैं तिनोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! जोपुरुष स्वप्नविषे कृष्णदंतवालेपुरुषकूं देखेहै अथवा कृष्णव

र्णवालेपुरुषकूंदेखैहै ॥ सोस्वप्नद्रष्टापुरुष थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और स्वप्नविषे जिसपुरुषकेशरीरकूं वराह तथाम
र्कट भक्षणकरेहैं ॥ अथवा ताशरीरकूं तेवराहमर्कट लेजावैहैं ॥ ऐसेस्वप्नकाद्रष्टापुरुष षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥
और जोपुरुष स्वप्नविषे पीतवर्णवालेपदार्थोंकूंभोजनकरिकै तिनपदार्थोंकावमनकरेहै ॥ अथवा जोपुरुष स्वप्नविषे मधुयुक्तअन्नकूं
भक्षणकरेहै ॥ अथवा जोपुरुष स्वप्नविषे कमलकीकोमलजटाकूं भक्षणकरेहै ॥ सोस्वप्नद्रष्टापुरुषभी षट्मासतैं अनंतर मृत्युकूंप्राप्त
होवैहै ॥ और जोपुरुष स्वप्नविषे श्वेतकमलकूं आपणेमस्तकविषे तथाकंठादिकोंविषे धारण करेहै ॥ अथवा जोपुरुष स्वप्न
विषे गर्दभ वराह उष्ट्र करिकैयुक्त रथविषे आरूढहोवैहै ॥ अथवा तिन गर्दभवराहउष्ट्रऊपरिही आरूढहोवैहै ॥ सोस्वप्नद्रष्टापुरु
षभी षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष स्वप्नविषे कृष्णवर्णवालेवत्सकरिकैयुक्त कृष्णवर्णवालीगौकूं दक्षिणादि
शाकीतरफजाताहुआ देखैहै ॥ सोस्वप्नद्रष्टापुरुषभी षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष स्वप्नविषे रक्तवर्णवालेज
पाकुसुमोंकीमालाकूं आपणेकंठविषेधारणकरिकै अथवा शेवालकीमालाकूंकंठविषेधारणकरिकै तथाआपणेशरीरऊपरि तैल
कामर्दनकरिकै अथवा नग्नहोइकै एकलाही तादक्षिणदिशाकीतरफजावैहै ॥ सोस्वप्नद्रष्टापुरुषभी षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्त
होवैहै ॥ और जोपुरुष स्वप्नविषे आपणेहस्तविषेस्थित गृध्रकाकादिकोंकरिकै भक्षणकूंप्राप्तहुआ तथाप्रसन्नतायुक्तहुआ तथारक्त
वस्त्रोंकरिकैयुक्तहुआ तथारक्तगंधकरिकैयुक्तहुआ तथा तैलकरिकैयुक्तहुआ तथाक्षुधापिपासाकरिकैआतुरहुआ तथाश्वानादिकक्रूर
जीवोंतैंभयकूंप्राप्तहुआ शीघ्रही दक्षिणदिशाविषेगमनकरेहै ॥ सोस्वप्नद्रष्टापुरुषभी षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जो
पुरुष स्वप्नविषे कृकलासजीवकूं आपणावाहनहुआदेखैहै ॥ सोपुरुषभी षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष
स्वप्नविषे लोहकेदंडकूंधारणकरणेहारे कृष्णवर्णवालेपुरुषकूं देखैहै ॥ सोस्वप्नद्रष्टापुरुष तीनदिवसतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥
और जिसपुरुषकूं स्वप्नविषे कृष्णवस्त्रोंकूंधारणकरणेहारी तथाकृष्णगंधकरिकैयुक्त कोईस्त्री स्नेहपूर्वक आलिंगनकरेहै ॥ सोस्वप्न
द्रष्टापुरुष दशदिवसतैंपूर्वही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अथवा सोपुरुष तिसीदिनविषे अरुणउदयकालविषे अथवा सूर्यउदयकालविषे

मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य ! याप्रकार मृत्युकेचिन्ह जिसस्वप्नविषेप्रतीतहोवैहै ॥ सोस्वप्नभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां एकस्व प्नतौ पुण्यपापादिरूपअदृष्टसामग्रीकरिकैही जन्यहोवैहै ॥ और दूसरास्वप्नतौ वात पित्त कफ यातीनदोषोंकीविषमतारूप दृष्टसा मग्रीकरिकै जन्यहोवैहै ॥ तथा काम क्रोध लोभ भय चिंतन इत्यादिकदृष्टसामग्रीकरिकै जन्यहोवैहै ॥ तिनदोनोंप्रकारकेस्वप्नविषे जोस्वप्न तादृष्टसामग्रीतैंविना केवलअदृष्टसामग्रीकरिकै जन्यहोवैहै ॥ तास्वप्नविषेदेखेहुए तेपूर्वउक्तमृत्युकेचिन्ह तास्वप्नद्रष्टापुरुष कूं अवश्यकरिकै तामृत्युरूपफलकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और जोस्वप्न तादृष्टसामग्रीकरिकैजन्यहोवैहै ॥ तास्वप्नविषेदेखेहुए तेपूर्वउक्तमृ त्युकेचिन्ह तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं तामृत्युरूपफलकीप्राप्तिकरैंनहीं ॥ किंतु सोस्वप्न निष्फलहीहोवैहै ॥ और हेशिष्य! ता वातपि त्तादिकदृष्टसामग्रीतैंविना केवलपुण्यपापादिरूपअदृष्टसामग्रीकरिकैजन्य जोस्वप्नहै ॥ सोस्वप्नभी रात्रिकेचारिप्रहरोंकेभेदक रिकै भिन्नभिन्नफलकीहीप्राप्तिकरैहैं ॥ तहां यहस्वप्नद्रष्टापुरुष रात्रिकेप्रथमप्रहरविषे जिसस्वप्नकूंदेखैहै ॥ सोस्वप्न तास्वप्नद्रष्टा पुरुषकूं एकवर्षतैंअनंतर ताफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ और यहस्वप्नद्रष्टापुरुष रात्रिकेद्वितीयप्रहरविषे जोस्वप्नकूंदेखैहै ॥ सोस्वप्न ता स्वप्नद्रष्टापुरुषकूं षट्मासतैंअनंतर ताफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ और यहस्वप्नद्रष्टापुरुष रात्रिकेतृतीयप्रहरविषे जोस्वप्नकूंदेखैहै ॥ सो स्वप्न तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं तीनमासतैंअनंतर ताफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ और रात्रिकेचतुर्थप्रहरविषेभी दोदोघटिकाभेदतैं सोस्वप्न भिन्नभिन्नफलकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ तहां यहस्वप्नद्रष्टापुरुष रात्रिकेचतुर्थप्रहरकीप्रथमदोघटिकाविषे जिसस्वप्नकूंदेखैहै ॥ सोस्वप्न ता स्वप्नद्रष्टापुरुषकूं एकमासतैंअनंतर ताफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ और यहस्वप्नद्रष्टापुरुष ताचतुर्थप्रहरकीदूसरीदोघटिकाविषे जिसस्व प्नकूंदेखैहै ॥ सोस्वप्न तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं एकपक्षतैंअनंतर तास्वप्नफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ और यहस्वप्नद्रष्टापुरुष ताचतुर्थप्रहरकी तीस रीदोघटिकाविषे जिसस्वप्नकूंदेखैहै ॥ सोस्वप्न तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं दशदिनतैंअनंतर ताफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ और यहस्वप्नद्रष्टापु रुष ताचतुर्थप्रहरकीचौथीदोघटिकाविषे जिसस्वप्नकूंदेखैहै ॥ सोस्वप्न तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं तिसीदिनविषे ताफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ इसप्रकार यास्वप्नद्रष्टापुरुषोंकूं ताअदृष्टसामग्रीजन्यस्वप्नकाफल प्राप्तहोवैहै ॥ और हेशिष्य! जैसे वात पित्त कफ काम क्रोध इ

त्यादिकदृष्टसामग्रीकरिकैजन्यजोस्वप्नहै सो निष्फलहोवैहै ॥ तैसे जिसस्वप्नकेउत्तरकालविषे दूसरास्वप्न प्राप्तहोवैहै ॥ सोप्रथमस्वप्नभी निष्फलहीहोवैहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार अनेकदोषोंकेवशतैं सोस्वप्न निष्फलभीहोवैहै ॥ यातैं यहहमारास्वप्न वातपित्तादिरूपदृष्टसामग्रीकरिकैजन्यहै अथवा पुण्यपापादिरूपअदृष्टसामग्रीकरिकैजन्यहै याप्रकारकेविचारकियेतैंविना सोस्वप्नतास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं नियमकरिकै ताफलकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ किंतु ताविचारकियेतैंविना तास्वप्नकेफलविषे संशयहीरहैहै ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे जेपूर्व मरणकेचिन्ह कथनकरेथे ॥ तेचिन्हतौ ताद्रष्टापुरुषकूं नियमकरिकै ताफलकीप्राप्तिकरैहैं ॥ यातैं ताजाग्रत्चिन्होंकेफलविषे संशयनहींहै ॥ याप्रकार कौषीतकिऋषिनैं तथावशिष्ठभगवान्नैं जाग्रत्विषे तथास्वप्नविषे मृत्युचिन्होंकेफलकीव्यवस्था कथनकरीहै ॥ हेशिष्य! यालोकविषे जोपुरुष विषयोंविषे अत्यंतआसक्तहै ॥ तिसपुरुषकूंभी पूर्वउक्तमृत्युचिन्होंकेदर्शनतैं अवश्यकरिकै वैराग्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं कौषीतकिवशिष्ठादिकऋषियोंनैं तिनमृत्युचिन्होंका कथनकऱ्याहै ॥ हेशिष्य! जैसे गर्भउपनिषद्केविचारतैं तथामृत्युचिन्होंकेदर्शनतैं यापुरुषोंकूंवैराग्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे हंसादिकउपनिषदोंविषेकथनकऱ्याजोयोगहै ॥ तायोगकरिकैभी याअधिकारीपुरुषोंकूं परमवैराग्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं तावैराग्यकीप्राप्तिवासते याअधिकारीपुरुषनैं तायोगकूंभी अवश्यकरिकै संपादनकरणा ॥ अब तायोगकेनिरूपणकरणेवासते प्रथम तायोगकेअंगोंका कथनकरणेहारी जाअमृतनादनामाउपनिषद्है ताकेअर्थकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां प्रथम योगकेअधिकारीका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जोपुरुष ब्रह्मचर्यधर्मवालाहोवैहै ॥ तथा जिसपुरुषनैं अंतरमनकूं तथाबाह्यइंद्रियोंकूं आपणेवशकऱ्याहोवै ॥ तथा जोपुरुष धैर्यवालाहोवैहै ॥ तथा जिसपुरुषकी गुरुशास्त्रविषे श्रद्धाभक्तिहोवैहै ॥ ऐसेगुणोंवालापुरुष तायोगकाअधिकारीहोवैहै ॥ ऐसाअधिकारीपुरुष प्रथम आपणेवर्णआश्रमकेअनुसार नित्यनैमित्तिककर्मोंकूंकरिकै किसीवनादिरूपएकांतदेशविषे कुटीबांधिकरिकै तहां योगाभ्यासकूंकरै ॥ कैसाहोवै सोदेश? शीत आतप वायु इत्यादिकसर्वउपद्रवोंतैंरहितहोवै ॥ तथा मनकूं तथानेत्रोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहाराहोवै ॥ ऐसेएकांतदेशविषे यहअधिकारीपुरुष प्रथमदर्भोंकूंबिछावै ॥ तिनदर्भोंकेऊपरि मृगचर्मकूंबिछावै ॥

तिसमृगचर्मकेऊपरि व्याघ्रचर्मकूंवछावै ॥ अथवा तामृगचर्मकेऊपरिकिसी कोमलवस्त्रादिकोंकूंवछावै ॥ जिसकरिकै तापुरुषकेशरीरविषे किंचित्मात्रभीपीडा नहींहोवै ॥ और सोआसन अत्यंतऊंचाभीनहींहोवै ॥ तथा अत्यंतनीचाभीनहींहोवै ॥ ऐसेआसनऊपरिस्थितहोइकै यहअधिकारीपुरुष प्रथम आपणेशरीरके मध्यदेशकूं तथाग्रीवाकूं तथाशिरकूं दंडकीन्यांई सूधाराखै ॥ और यहअधिकारीपुरुष आपणेनासिकाकेअग्रभागविषेदृष्टिकूंराखिकै दूसरेकिसीदिशाकीतरफ दृष्टिकरैनहीं ॥ और यहअधिकारीपुरुष अहिंसा १ सत्य २ अस्तेय ३ ब्रह्मचर्य ४ अपरिग्रह ५ यापंचप्रकारकेयमोंकूं सर्वदा सेवनकरै ॥ तथा शौच १ संतोष २ तप ३ स्वाध्याय ४ ईश्वरप्रणिधान ५ यापंचप्रकारकेनियमोंकूं सर्वदा सेवनकरै ॥ तिनयमनियमोंकाअर्थ अष्टमअध्यायविषे विस्तारतैंकथिआयेहैं ॥ हेशिष्य! तायोगकरणेविषे याअधिकारीपुरुषोंकूं अनेकप्रकारकेविघ्नोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं तिनविघ्नोंकीनिवृत्तिकरणेवासते यहअधिकारीपुरुष पूर्वउक्तआसनऊपरिस्थितहोइकै आपणेचित्तकूंएकाग्रकरिकै रुद्रभगवान्‌काध्यानकरै ॥ तारुद्रभगवान्‌केध्यानकरणेतैं याअधिकारीपुरुषके सर्वविघ्न निवृत्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष स्वस्तिक पद्म भद्र यातीनआसनोंविषे किसीएकआसनकूंबांधिकरिकै तथाउत्तरदिशाकीतरफिमुखकरिकै प्राणायामकूंकरै ॥ अब तिनआसनोंकेस्वरूपका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! वामजंघ ऊरु यादोनोंकेमध्यविषे दक्षिणपादकेतलकूंराखिकै तथा दक्षिणजंघ ऊरु यादोनोंकेमध्यविषे वामपादकेतलकूंराखिकै दंडकीन्यांई सरलस्थितहोणा याकानाम स्वस्तिकआसनहै ॥ और आपणेवामऊरुऊपरि दक्षिणपादकूंराखिकै तादक्षिणपादकेअंगुष्ठकूं आपणेपृष्ठदेशतैंपीछै दक्षिणहस्तकूंलेआइकै ग्रहणकरणा ॥ इसीप्रकार आपणेदक्षिणऊरुऊपरि वामपादकूंराखिकै तावामपादकेअंगुष्ठकूं आपणेपृष्ठदेशतैंपीछै वामहस्तकूंलेआइकै ग्रहणकरणा ॥ तथा आपणेशरीरकूं दंडकीन्यांई सरलराखणा ॥ याकानाम पद्मआसनहै ॥ और आपणेदोनोंपादोंकेतलोंकूं वृषणकेनीचैइकठ्ठाकरिकैराखणा ॥ और तिनपादोंकेतलोंऊपरि आपणेदोनोंहस्तोंकूं कच्छपकेआकार इकठ्ठाकरिकैराखणा ॥ तथा आपणेशरीरकूं दंडकीन्यांई सरलराखणा ॥ याकानाम भद्रआसनहै ॥

हेशिष्य! स्वस्तिक पद्म भद्र यातीनआसनोंविषे जिसआसनकेकरणेविषे यहपुरुष समर्थहोवै ॥ तिसआसनकूंबांधिकरिकै य
हअधिकारीपुरुष ताप्राणायामकूंकरै ॥ अब तायोगके षट्अंतरंगसाधनोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! प्राणायाम १ प्र
त्याहार २ तर्क ३ धारणा ४ ध्यान ५ समाधि ६ याषट्अंगोंवालायोगहोवैहै ॥ तहां प्रथम प्राणायामका फलसहितनि
रूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! जैसे अग्निकेसंबंधतें लोहादिकधातुवोंकेमलकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तैसे याप्राणायामतैंही अंतःकर
णकेदोषोंकी तथानेत्रादिकइंद्रियोंकेदोषोंकी निवृत्तिहोवैहै ॥ हेशिष्य! सोप्राणायामभी रेचक पूरक कुंभक याभेदकरिकै
तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तातीनप्रकारकेप्राणायामविषेभी एकएकप्राणायामकेकरणेकालविषे यहअधिकारीपुरुष प्रणवसहितसप्तव्या
हृतियोंयुक्त तथाशिरयुक्त गायत्रीमंत्रकूं तीनवारउच्चारणकरै ॥ और संन्यासियोंनैंतौ तागायत्रीमंत्रकेतीनवारउच्चारणकरणेतें जि
तनेअक्षरहोवैंहैं तितनेही प्रणवोंकाउच्चारणकरणा ॥ इसप्रकार गायत्रीमंत्रकरिकै तथाप्रणवमंत्रकरिकै कऱ्याहुआसोप्राणाया
म यापुरुषके सर्वदोषोंकीनिवृत्तिकरैहै ॥ अब रेचक पूरक कुंभक यातीनोंकेस्वरूपका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! आपणेप्राणवायु
कूंआधारचक्रतें कुंडलिनीमार्गद्वारा ऊपरिलेजाइकै ताप्राणवायुकूं नासिकाद्वारानिकासिकै शरीरतैंबाह्यआकाशविषेलयकरणा
याकानाम रेचकहै ॥ और जैसे कमलकीनालद्वारा मुखकरिकै जलकाआकर्षणकरताहै ॥ तैसे शरीरतैंबाह्यस्थितवायुकूं नासिका
द्वारा शरीरकेभीतरि आकर्षणकरणा याकानाम पूरकहै ॥ और जैसे तप्तपाषाणऊपरिपडाहुआजलकाबिंदु लयभावकूंप्राप्तहोवै
है ॥ तैसे ताप्राणवायुकेबाहरिगतिकूं तथाअंतरगतिकूं निरोधकरिकै शरीरकेभीतरिहीलयकरणा याकानाम कुंभकहै ॥ १ ॥
अब प्रत्याहारकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचविषयोंकूं क्रमतैंग्रहणकरणेहारे जे श्रोत्र
त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचज्ञानइंद्रियहैं ॥ तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेविषे यहमनही प्रवृत्तकरैहै ॥ ताचंचल
मनकूं आत्मविचारकेबलतें निरोधकरिकै जोश्रोत्रादिकइंद्रियोंका निरोधकरणाहै याकानाम प्रत्याहारहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे
सूर्यकेकिरण सूर्यतैंभिन्ननहींहै ॥ तैसे यहसंपूर्णदृश्यप्रपंच चेतनआत्मातैं भिन्ननहींहै ॥ याप्रकारकीदृष्टिकरिकै जोमनसहित

इंद्रियोंकानिरोधकरणाहै याकानाम प्रत्याहारहै ॥ यहप्रत्याहारकालक्षण याज्ञवल्क्यमुनिनैंभी कह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ यद्यत्पश्य तितत्सर्वं पश्येदात्मानमात्मनि ॥ प्रत्याहारःसचप्रोक्तो योगविद्भिर्महात्मभिः ॥ अर्थयह ॥ यहयोगीपुरुष जिसजिसपदार्थकूं देखेहै ॥ तिनसर्वपदार्थोंकूं आत्मरूपकरिकेंदेखे ॥ योगवेत्तामहात्मापुरुषोंनैं याहीकानाम प्रत्याहारकह्याहै ॥२॥ अब तर्ककानिरूपणकरें हैं ॥ हेशिष्य! जेमत वेदतैंबाह्यहैं ॥ तिनमतोंकापरित्यागकरिकै सर्ववेदोंकेतात्पर्यकाविषयरूपकरिकै जोअंतरआत्मवस्तुकाचिं नकरणाहै याकानाम तर्कहै ॥ ३ ॥ अब धारणाकानिरूपणकरैंहैं ॥ हेशिष्य ! यालोकविषे जेपुरुष चौरकूंनहींदेखैहैं ॥ तिन पुरुषोंकूंही सोचौर अनर्थोंकीप्राप्तिकरैंहैं ॥ तैसे जेपुरुष विचारदृष्टिकरिकै यामनकूंनहींदेखैंहैं ॥ तिनविचारहीनपुरुषोंकूंही सोमन संकल्पविकल्परूपअनर्थोंकीप्राप्तिकरैंहै ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै यामनकूं अंतरआनंदस्वरूपआत्माविषेजोडिकरिकै जोसंकल्प विकल्पतैंरहितकरणाहै याकानाम धारणाहै ॥ ४ ॥ अब ध्यानकानिरूपणकरैंहैं ॥ हेशिष्य ! जिसआनंदस्वरूपआत्माविषे धार णाकरीहै ॥ तिसीआनंदस्वरूपआत्माविषे अनात्माकार विजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित जो निरंतर तैलधाराकी न्यांई स जातीयवृत्तियोंकाप्रवाहकरणाहै याकानाम ध्यानहै ॥ ५ ॥ अब समाधिकानिरूपणकरैंहैं ॥ हेशिष्य ! जिसअवस्थाविषे अंतरआ त्मस्वरूपआनंदकूंग्रहणकरिकै ध्याता ध्यान ध्येय इत्यादिकसर्वद्वैतप्रपंचकाअनादरहोवैहै ॥ ताअवस्थाकानाम समाधिहै ॥ यह समाधिकास्वरूप गीताविषे भगवानूनैंभीकह्याहै ॥ तहां श्लोक ॥ यंलब्ध्वाचापरंलाभं मन्यतेनाधिकंततः ॥ अर्थयह ॥ यहविद्वान् पुरुष जिसआत्मस्वरूपआनंदकूंप्राप्तहोइके तिसतैंअधिक किसीदूसरेलाभकूंमानतानहीं ॥ ६ ॥ इतनेकरिकै प्राणायामादिकषट् साधनोंकानिरूपणकऱ्या अब योगीपुरुषकूंपरित्यागकरणेयोग्यजेपदार्थहैं तिनोंकानिरूपणकरैंहैं ॥ हेशिष्य ! जैसे रोगीपु रुष तारोगकीनिवृत्तिवासतै कुपथ्यवस्तुकापरित्यागकरैहै ॥ तैसे यहयोगीपुरुष तायोगकीसिद्धिवासतै भय क्रोध आलस्य या तीनोंकापरित्यागकरैके ॥ तथाअत्यंतनिद्राकाभी परित्यागकरै ॥ तथा अत्यंतजागरणकाभी परित्यागकरै तथा अत्यंतआहारकाभी परित्यागकरै ॥ तथा अत्यंतनिराहारकाभी परित्यागकरै ॥ किंतु तिननिद्राआहारादिकोंकूं युक्तिसैंकरै ॥ अब प्राणायामकरणे

काप्रकार निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! ताप्राणायामकरणेकाप्रकार वेदवेत्तापुरुषोंनैं याप्रकार कथनकर्‍याहैं ॥ यहयोगीपुरुष प्रथम आपणेदक्षिणनासिकाकूं हस्तकेअंगुष्ठसैंनिरोधकरिकै दूसरीवामनासिकाद्वारा बाह्यवायुकूंआकर्षणकरिकै अंतरधारण करै ॥ पुनः तिसीवायुकूं तादक्षिणनासिकाद्वारा शनैःशनैःकरिकै बाह्यपरित्यागकरै ॥ इसप्रकार वामनासिकाकूं अंगुष्ठसैंनिरुद्धक रिकै दक्षिणनासिकाद्वारा बाह्यवायुकूंआकर्षणकरिकैअंतरधारणकरै ॥ पुनः तिसीवायुकूं तावामनासिकाद्वारा शनैःशनैःकरिकै बाह्य परित्यागकरै ॥ हेशिष्य ! पूरक कुंभक रेचक यातीनप्रकारकेप्राणायामकूं यहयोगीपुरुष ॐकाररूपप्रणवमंत्रकरिकैकरै ॥ ताप्रण वमंत्रोंकीसंख्या मात्राकरिकैसिद्धहोवैहै ॥ तहां यहअधिकारीपुरुष प्रथम एकमात्राकरिकै पूरककरै ॥ और दोमात्राकरिकैरेचककरै ॥ और चारिमात्राकरिकै कुंभककरै ॥ इसप्रकार दोमात्रा तीनमात्रा चारिमात्रा पंचमात्रा तैंआदिलैकैआगेआगे तिनपूरकादिकोंका शनैःशनैःकरिकै वधावताजावै ॥ तहांसर्वत्र पूरकतैंद्विगुणाअधिक रेचककरणा ॥ और रेचकतैंद्विगुणाअधिक कुंभककरणा ॥ इहां मात्रानाम कालपरिमाणकाहै ॥ तामात्रापरिमाणकाअर्थशास्त्रोंविषेअनेकप्रकारका कथनकर्‍याहै ॥ तहांमार्कंडेयपुराणविषेतौ तामात्रा परिमाणका यहअर्थ कथनकर्‍याहै ॥ व्यवधानतैंरहित द्वादशवार निमेषोंकेचलावणेविषे जितनाकाल व्यतीतहोवैहै ताकानाम मा त्राहै ॥ अथवा व्यवधानतैंरहित द्वादशवार तालीबजावणेविषे जितनाकाल व्यतीतहोवैहै ताकानाम मात्राहै ॥ अथवा व्यवधा नतैंरहित द्वादशवार लघुअक्षरकेउच्चारणकरणेविषे जितनाकाल व्यतीतहोवैहै ताकानाम मात्राहै ॥ और वसिष्ठसंहिताविषे व सिष्ठभगवान्नैंतौ यहकह्याहै ॥ पूरकादिकप्राणायामोंविषे जोषोडशादिकवार प्रणवमंत्रकीआवृत्तिकरणीहै ॥ ताप्रणवमंत्रकेआ वृत्तिकानाम मात्राहै ॥ और याज्ञवल्क्यमुनिनैंतौ यहकह्याहै ॥ जितनेकालविषे व्यवधानतैंरहित तीनवार छोटिकामुद्राकरिये अथवा तीनवार आपणेजानुऊपरि हस्तकूंफेरिये अथवा तीनवार तालीबजाइये ताकानाम मात्राहै ॥ चपुटीबजावणेकानाम छो टिकामुद्राहै ॥ और मांडूक्यउपनिषद्विषे तथाप्रश्नउपनिषद्विषे प्रणवके अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा याचारिअवयवोंकूं ही मात्रारूपकरिकैकथनकर्‍याहै ॥ और नादबिंदुउपनिषद्विषेतौ तिनआकारादिकचारिमात्रावोंविषे एकएकमात्राके उदात्त

अनुदात्त स्वरित येतीनतीनअवयव कल्पनाकरिकै तिनमात्रावोंकेद्वादशभेद कथनकरेहैं ॥ इसप्रकार भिन्नभिन्नशास्त्रोंविषे तामा त्राशब्दके अनेकप्रकारकेअर्थ कथनकरेहैं ॥ तथापि याआत्मपुराणविषे व्यवधानतैंरहित तीनवार तालीबजावणेविषे जितना काल व्यतीतहोवैहै ताकानाम मात्राहै ॥ हेशिष्य! प्रणवमंत्रकाहैउच्चारणजिसविषे ऐसाजोयह पूरकादिरूपप्राणायामहै ॥ ताप्राणायामकूं जोयोगीपुरुष एकमात्राकरिकै अनुष्ठानकरैहै ॥ तायोगीपुरुषकूं आकाशतत्त्वकाअधिपतिपणा प्राप्तहोवैहै ॥ और दोमात्राकरिकै तायोगीपुरुषकूं वायुतत्त्वकाअधिपतिपणा प्राप्तहोवैहै ॥ और तीनमात्राकरिकै तायोगीपुरुषकूं अग्नितत्त्वका अधिपतिपणा प्राप्तहोवैहै ॥ और चारिमात्राकरिकै तायोगीपुरुषकूं जलतत्त्वकाअधिपतिपणा प्राप्तहोवैहै ॥ और पंचमात्राक रिकै तायोगीपुरुषकूं पृथिवीतत्त्वकाअधिपतिपणा प्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार ताप्राणायामकेअभ्यासकीदृढताकरिकै तिनयोगीपु रुषोंकूं आकाशादिकपंचभूतोंकाजयरूपफल प्राप्तहोवैहै ॥ और जिनपुरुषोंका सोप्राणायामकाअभ्यास शिथिलहै ॥ तिनपु रुषोंकूं सोभूतोंकाजयरूपफल प्राप्तहोवैनहीं ॥ और हेशिष्य! पुनःसोयोगीपुरुष तिनप्रणवमात्रावोंविषे यथाक्रमतैं शब्दा दिकपंचतन्मात्रावोंकाआरोपणकरिकै चिंतनकरै ॥ ताचिंतनकरिकै तायोगीपुरुषकूं निर्विशेषब्रह्मरूपकरिकैचिंतनकरणेयोग्य जोअर्द्धमात्रारूपप्रणवहै ताकेअभ्यासकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिनशब्दादिकपंचतन्मात्रावोंकेध्यानकरणेका यहप्रकारहै ॥ तहां पृ थिवीतत्त्वकीधारणाविषे चिंतनकाविषयहोणेतैं पार्थिवसंज्ञाकूंप्राप्तभयाजोप्रणवहै ॥ तापार्थिवनामाप्रणवकूं यहयोगीपुरुष श ब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचतन्मात्रारूपकरिकैध्यानकरै ॥ और जलतत्त्वकीधारणाविषे चिंतनकाविषयहोणेतैं वारुणसं ज्ञाकूंप्राप्तभयाजोप्रणवहै ॥ तावारुणनामाप्रणवकूं यहयोगीपुरुष शब्द स्पर्श रूप रस याचारितन्मात्रारूपकरिकैध्यानकरै ॥ और अग्नितत्त्वकीधारणाविषे चिंतनकाविषयहोणेतैं आग्नेयसंज्ञाकूंप्राप्तभयाजोप्रणवहै ॥ ताआग्नेयनामाप्रणवकूं यहयो गीपुरुष शब्द स्पर्श रूप यातीनमात्रारूपकरिकैध्यानकरै ॥ और वायुतत्त्वकीधारणाविषे चिंतनकाविषयहोणेतैं मारुतसंज्ञा कूंप्राप्तभयाजोप्रणवहै ॥ तामारुतनामाप्रणवकूं यहयोगीपुरुष शब्दस्पर्श यादोतन्मात्रारूपकरिकैध्यानकरै ॥ और आकाशत

त्वकीधारणाविषे आकाशसंज्ञाकूंप्राप्तभया जोप्रणवहै ॥ ताआकाशनामाप्रणवकूं यहयोगीपुरुष एकशब्दतन्मात्रारूपकरिकैध्यानकरै ॥ इसप्रकार अभ्यासकरिकै जबी यायोगीपुरुषकाचित्त चंचलतातैंरहितहोइकै स्थिरहोवै ॥ तबी सोयोगीपुरुष ताअर्द्धमात्रारूपप्रणवकूं ब्रह्मरूपकरिकैचिंतनकरै ॥ हेशिष्य! अथवा सोयोगीपुरुष आपणेचित्तकीनिश्चलताकरणेवासते ताप्राणायामकालविषे आपणेआपणेव्यापारयुक्त प्राणअपानादिकोंकाध्यानकरै ॥ अब ताध्यानकेप्रकारका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! प्राण अपान व्यान उदान समान यापंचप्राणोंके जेजेआपणे असाधारणव्यापारहैं ॥ तेअसाधारणव्यापार पूर्वगर्भउपनिषद्केअर्थनिरूपणविषे हम तुमारेप्रति विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ यातैं तिनअसाधारणव्यापारोंका पुनःइहां कथनकरतेनहीं ॥ और तिनपंचप्राणोंका जोएकसाधारणव्यापारहै ॥ सोव्यापार हम तुमारेप्रतिकथनकरतेहैं ॥ तू श्रवणकर ॥ याशरीरविषे यद्यपि अनंतनाडियां रहे हैं ॥ तथापि एकसहस्र छत्तीसनाडीयां १०३६ प्रधानहैं ॥ तिनसर्वनाडियोंविषेविचरणेहारे जेयेपंचप्राणहैं ॥ तिनपंचप्राणोंका हंसमंत्ररूप एकहीव्यापारहै ॥ और हंसः यहमंत्र हकार मकार अकार सकार विसर्ग यापंचअवयवोंवालाहै ॥ और दूसरेशास्त्रोंविषे यद्यपि ताहंसमंत्रकीसंख्या एकविंशतिसहस्र षट्शत २१६०० कथनकरीहै ॥ तथापि उपाधिकृतभेदकूंअंगीकारकरिकै ताहंसमंत्रकीसंख्या एकलक्ष त्रयोदशसहस्र एकशत अशी ११३१८० इतनीसंभवहोइसकैहै ॥ काहेतैं प्राण अपान व्यान उदान समान यापंचप्राणोंविषे एकएकप्राणके एकविंशतिसहस्र षट्शत २१६०० हंसमंत्र व्यापाररूपहै ॥ तिनहंसमंत्रोंकूं पंचगुणाकरणेतैं एकलक्ष अष्टसहस्र १०८००० संख्याहोवैहै ॥ और एकसहस्र षट्त्रिंशत् १०३६ नाडियोंविषेविचरणेहारे जे तेपंचप्राणहैं ॥ तिनपंचप्राणोंकीसंख्या जोनाडियोंकीसंख्याकरिकै पंचगुणीकरिये तौ पंचसहस्र एकशत अशी ५१८० इतनीसंख्या होवैहै ॥ तिनदोनोंप्रकारकीसंख्याकूंमिलाइकैजोगणतिकरिये तौ एकलक्ष त्रयोदशसहस्र एकशत अशी ११३१८० इतनीसंख्या सिद्धहोवैहै ॥ इतनेहंसमंत्र तिनपंचप्राणोंकाएकसाधारणव्यापारहै ॥ और हेशिष्य! गुदातैंलैके गलपर्यंत जोअंतरछिद्रहै ॥ सोछिद्र तीसअंगुल ३० परिमाणवालाहोवैहै ॥ ताछिद्रविषेस्थितहोइकै तेप्राणादिकपंचवायु ताहंसमंत्रकाउच्चारणकरै

हैं ॥ यातैं तिनपंचप्राणोंविषेस्थित जोहंसमंत्ररूपएककार्यकीआरंभकताहै ॥ ताका सोतीसअंगुलपरिमाणवालाछिद्रही प्रयोजक है ॥ याकारणतैं सोहंसमंत्र तिनप्राणअपानादिकसर्ववायुवोंका साधारणव्यापारहै ॥ तिनवायुवोंविषेभी मुखनासिकाविषेविचरणेहा रा जोवायुहै ॥ सोवायु ताहंसमंत्ररूपव्यापारविषे प्रधानकरणहै याकारणतैंही शास्त्रवेत्तापुरुष तिनवायवोंकूं अपान व्यान आदि कथनकरैहैं॥ और दूसरेवायु ताहंसमंत्ररूपव्यापारविषे गौणकारणहैं॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तिनवायुवोंकूं अपान व्यान आ दिकनामोंकरिकैकथकरैहैं ॥ अब ध्यानकरणेवासते तिनपंचप्राणोंके स्थानोंका तथारूपोंका वर्णनकरैहैं ॥ हेशिष्य ! प्राण अपान समान उदान व्यान यापंचप्राणोंविषे प्रथम प्राणवायुतौ हृदयस्थानविषे रहैहै ॥ और अपानवायु गुदास्थानविषेरहेहै ॥ और स मानवायु नाभिस्थानविषेरहेहै ॥ और उदानवायु कंठस्थानविषेरहेहै ॥ और व्यानवायु सर्वशरीरविषेरहेहै ॥ हेशिष्य ! प्राणवा युतौ रक्तमणिकेसमान रक्तरूपवालाहै॥और ताप्राणवायुकेअधीन जोअपानवायुहै ॥ सोअपानवायुतौ इंद्रगोपजंतुकेसमान अत्यं तरक्तरूपवालाहै ॥ और ताअपानवायुकेअधीन जोसमानवायुहै ॥ सोसमानवायुतौ क्षीरकेसमान तथास्फटिकमणिकेसमान श्वेतव र्णवालाहै ॥ और तासमानवायुकेअधीन जोउदानवायुहै ॥ सोउदानवायुतौ यत्किंचित्पांडुरवर्णवालाहै॥ और ताउदानवायुकेअधीन जोव्यानवायुहै ॥ सोव्यानवायुतौ अग्निशिखाकेसमान वर्णवालाहै ॥ इहां यद्यपि प्राणवायुविषे रक्तश्वेतादिकरूप संभवैनहीं ॥ तथा पि तिनश्वेतरक्तादिकरूपोंकूं तिनप्राणादिकोंविषे आरोपणकरिकै तिनप्राणोंकाध्यानकरणा याअर्थविषे ताश्रुतिकातात्पर्यहै ॥ हेशि ष्य ! ज्ञानशक्तिवालाजोमनहै॥तथा क्रियाशक्तिवालाजोप्राणहै॥येदोनों इकठेही याशरीरविषेरहेहैं ॥ और इकठेही याशरीरतैं बाह्यजावैहैं॥एककूंछोडिकै दूसरारहैनहीं॥तहांश्रुति॥सहहिएतेसमुत्क्रामतःसहतिष्ठतः॥अर्थयह॥प्रज्ञारूपयहमन तथाप्राण दोनों याशरीरविषेइकठेहीरहेहैं॥और मरणतैंअनंतर तेदोनों इकठेही परलोकविषेजावैहैं॥१॥ यहवार्ता याआत्मपुराणकेदूसरेअध्यायविषे विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं॥यातैं यापुरुषोंकामन जिसजिसमूलआधारादिकस्थानोंविषे स्थितहोवैहै॥तिसीतिसीस्थानविषे सोप्रा णभी स्थितहोवैहै ॥ इसप्रकार ताप्राणका मनकेसाथ इकठेरहणेकास्वभाव जाणिकरिकै यहयोगीपुरुष तिसमार्गकाध्यानकरै ॥ जि

समार्गद्वारा याशरीरतैंबाह्यनिकसिके ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवै ॥ अब तामार्गका निरूपणकरैहैं॥हेशिष्य! याशरीरविषे मूलआधारतैंऊपरि नाभिचक्रहै॥और तानाभिचक्रतैंऊपरि हृदयकमलहै॥सोहृदयकमल सुषुम्नानाडीरूपमार्गकरिकै संबद्धहै॥यातैं सोहृदयकमल ताब्रह्मलोकका द्वाररूपहै॥और सासुषुम्नानाडी तायोगीपुरुषके प्राणका तथामनका मार्गरूपहै॥ऐसासुषुम्नानाडीरूपमार्ग दशमद्वारकूंप्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोदशमद्वार ? सूर्यमंडलविषेस्थित तथामूर्द्धविषेस्थितचंद्रमंडलविषेस्थित जोबाह्यछिद्रहै ॥ ताबाह्यछिद्रके साथ जिसदशमद्वारका अभेदहै ॥ हेशिष्य ! जिसयोगीपुरुषकूं तीव्रवैराग्यनहींहै॥ सोयोगीपुरुषभी यासुषुम्नानाडीरूपमार्गद्वारा ताब्रह्मलोकविषेजाइकै तहां वैराग्यकूंप्राप्तहोइकै मोक्षकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और जिसयोगीपुरुषकूंतीव्रवैराग्यहै ॥ सोयोगीपुरुषतौ तिसमार्गकेनिकसणेकालविषेही विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और पूर्व हंसमंत्ररूपव्यापारयुक्तप्राणोंका जो ध्यानकथनकऱ्याथा ॥ ताध्यानकाभी यहहीफलहै ॥ जो तासुषुम्नानाडीरूपमार्गविषेप्रवेशकरिकै ब्रह्मलोककूं अथवा विदेहमोक्षकूं प्राप्तहोणा ॥ हे शिष्य ! यहयोगीपुरुष ताप्रणवमंत्रकरिकै जबी प्राणायामकरै ॥ तबी ताप्रणवके अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा याचारिमात्रावोंका चिंतनकरै ॥ तथा तिनअकारादिकचारिमात्रावोंके जेयथाक्रमतैं वैश्वानर हिरण्यगर्भ ईश्वर तुरीय यहचारिअर्थ हैं ॥ तिनोंकाभी चिंतनकरै ॥ हेशिष्य ! अथवा सोयोगीपुरुष याप्रकार ताप्रणवमंत्रका चिंतनकरै ॥ जैसे यालोकविषे यापुरुषोंकूं रथ मनवांछित ग्रामकीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे याअधिकारीपुरुषोंकूं यहप्रणवमंत्रभी मनवांछितलोककीप्राप्तिकरैहै ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष ताप्रणवमंत्रकूं रथरूपकरिकैध्यानकरै ॥ और विष्णुरूपपरमात्मादेव अंतर्यामिरूपकरिकै ताप्रणवरूपरथकूंप्रेरणाकरणेहाराहै ॥ यातैं ताविष्णुरूपपरमात्मादेवकूं यहअधिकारीपुरुष ताप्रणवरूपरथका सारथिरूपकरिकैध्यानकरै ॥ और ताप्रणवरूपरथकरिकै सकामपुरुषोंकूंतौ हिरण्यगर्भरूपसगुणब्रह्मकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और निष्कामपुरुषोंकूं निर्गुणशुद्धब्रह्मकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं ताहिरण्यगर्भकूं तथाशुद्धब्रह्मकूं यहअधिकारीपुरुष ताप्रणवरूपरथका गंतव्यस्थानरूपकरिकै ध्यानकरै ॥ हेशिष्य ! याप्रकारकेयोगाभ्यासकरणेविषे याअधिकारीपुरुषकूं अनेकप्रकारकेविघ्न प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं तिनविघ्नोंकीनिवृत्तिकरणेवासते यहअधिकारीपुरुष मैं

रुद्ररूपहूं याप्रकार अभेदरूपकरिकै तारुद्रभगवान्‌काध्यानकरै ॥ तारुद्रभगवान्‌केध्यानतैं सर्वविघ्नोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ हे शिष्य! ताप्राणायामकालविषे पादकेअंगुष्ठकेअग्रभागतेंलैके जोप्राणोंका ऊपरिआकर्षणकरणाहै ॥ सो अत्यंतकठिनहै ॥ यातैं ताप्राणों केआकर्षणकूं शास्त्रवेत्तापुरुष सूक्ष्म यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ और तिसअंगुष्ठकीअपेक्षाकरिकै मूलआधारतेंलैके तिनप्राणों का ऊपरिआकर्षणकरणा सुगमहै ॥ यातैं ताप्राणोंकेआकर्षणकूं शास्त्रवेत्तापुरुष स्थूल यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और तिसमूल आधारकीअपेक्षाकरिकै नाभिचक्रतेंलैके तिनप्राणोंकाऊपरिआकर्षणकरणा अत्यंतसुगमहै ॥ यातैं ताप्राणोंकेआकर्षणकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अतिस्थूल यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ इतनेग्रंथकरिकै योगाभ्यासका निरूपणकऱ्या ॥ अब तायोगाभ्यासकेफलका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! पूर्वकहीरीतिसैं जोपुरुष तायोगाभ्यासकूंकरैहै ॥ तायोगीपुरुषकूं तीनमासतैंअनंतर दूरदेशविषेस्थित जेदिव्यविषयहैं तिनोंकाभी ज्ञानहोवैहै और चारिमासतैंअनंतर सोयोगीपुरुष इंद्रादिकदेवतावोंकेदर्शनकरणेविषेभी समर्थ होवैहै ॥ और पंचमासतैंअनंतर सोयोगीपुरुष संपूर्णविषयसुखोंकूंतुच्छजाणिकै तिनविषयसुखोंतैं वैराग्यकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और षष्ठे मासतैंअनंतर सोयोगीपुरुष तायोगकेप्रभावतैं शुद्धअंतःकरणवालाहोइकै तथासर्वकर्मोंकासंन्यासकरिकै आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजावैहै ॥ तागुरुकेमुखतैं एकवारमहावाक्यकूंश्रवणकरिकै संशयविपर्ययतैंरहित आत्मसाक्षात्कारकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरिकै सोयोगीपुरुष जीवत्‌अवस्थाविषेही मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब ताजीवन्मुक्तपुरुषकेलक्षणोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! सोजीवन्मुक्तयोगीपुरुष सर्वपदार्थोंविषे अधिष्ठानरूपकरिकैआत्माकूंहीदेखैहै ॥ याकारणतैं सोजीवन्मुक्तपुरुष नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै रूपादिकविषयोंकूंदेखताहुआभी नहींदेखैहै॥ और आपणेशरीरकूंभी शुष्ककाष्ठकीन्यांईजाणिकै उपेक्षाकरैहै ॥ हेशिष्य ! ऐसे जीवन्मुक्तिरूपफलके प्राप्तहुएतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष तिन पूर्वउक्तसर्वउपायोंका परित्यागकरै ॥ काहेतैं ? यालोकविषे जितनेउपायहोवैहैं ॥ तेसंपूर्णउपाय फलकीप्राप्तिवासतेहोवैहैं ॥ ताफलकीप्राप्तितैंअनंतर तिनउपायोंका पुनःकछुप्रयोजनरहैनहीं ॥ यातैं जैसे मार्गविषेचलणेहारापुरुष नौकाऊपरिबैठिकै जबी

नदीकेपारकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी तानौकाका परित्यागकरिदेवैहै ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुषभी जबी ताजीवन्मुक्तिरूपफलकूंप्राप्तहोवैहै तबी तिनक्लेशरूपसर्वउपायोंका परित्यागकरिदेवैहै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार अमृतनादनामाउपनिषद्विषे जोयोगसाधनकानिरूपणकर्‍याहै ॥ सोहमनैं तुमारेप्रति कथनकर्‍या ॥ अब हंसउपनिषद्विषे जिसप्रकार तायोगसाधनका निरूपणकर्‍याहै ॥ सो हम तुमारेप्रति कथनकरतेहैं ॥ तिसकूं तू सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ अब तायोगाभ्यासकीसिद्धिवासते प्रथम षट्चक्रोंका निरूपणकरै हैं ॥ हे शिष्य ! याशरीरविषे पायुस्थानतैंलेके भ्रूकेमध्यस्थानपर्यंत आधारचक्र १ स्वाधिष्ठानचक्र २ मणिपूरकचक्र ३ अनाहतचक्र ४ विशुद्धचक्र ५ आज्ञाचक्र ६ येषट्चक्ररहेहैं ॥ अब आधारचक्रकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! पायुस्थानतैंदो अंगुलऊपरि आधारचक्ररहेहै ॥ जिसआधारचक्रकूं पूर्वगर्भउपनिषद्केअर्थनिरूपणविषे याशरीरका मध्यदेशरूपकरिकैवर्णनकर्‍याथा ॥ कैसाहैसोआधारचक्र ? चारिदलवालाहै ॥ तथा लाक्षारसकेसमानवर्णवालाहै ॥ और तिनचारिदलोंविषे प्रदक्षिणाक्रमकरिकैस्थितजे वं शं षं सं येचारिअक्षरहैं ॥ तिनचारिअक्षरोंकरिकै शोभायमानहै ॥ तथा कुंडलिनीरूपीसर्पिणीकेपुच्छकरिकैयुक्तहै ॥ तथा मूषकहैवाहनजिसका ऐसाजोगणपतिदेवताहै तागणपतिदेवताकरिकैयुक्तहै ॥ १ ॥ अब स्वाधिष्ठानचक्रकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! ताआधारचक्रतैंऊपरि उपस्थकेमूलदेशविषे स्वाधिष्ठानचक्ररहेहै ॥ कैसाहैसोस्वाधिष्ठानचक्र ? षट्दलवालाहै ॥ तथा सुवर्णकीन्यांईपीतवर्णवालाहै ॥ तथा अत्यंततेजस्वीहै ॥ और तिनषट्दलोंविषे प्रदक्षिणाक्रमकरिकैस्थितजे यं रं लं वं भं मं येषट् अक्षरहैं ॥ तिनषट्अक्षरोंकरिकै शोभायमानहै ॥ तथा प्रजापतिदेवताकरिकैयुक्तहै ॥ २ ॥ अब मणिपूरकचक्रका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! तास्वाधिष्ठानचक्रतैंऊपरि नाभिस्थानविषे मणिपूरकचक्ररहेहै ॥ कैसाहैसोमणिपूरकचक्र ? दशदलोंवालाहै ॥ तथा इंद्रनीलमणिकेसमान वर्णवालाहै ॥ तथा सूर्यचंद्रमाकेतेजसमान जाकातेजहै ॥ और तिनदशदलोंविषे प्रदक्षिणाक्रमकरिकैस्थितजो डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं येदशअक्षरहैं ॥ तिनदशअक्षरोंकरिकै शोभायमानहै ॥ तथा विष्णुदेवताकरिकैयुक्तहै ॥ ३ ॥ अब अनाहतचक्रका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! तामणिपूरकचक्रतैंउपरि हृदयदेशविषे अनाहतचक्ररहेहै ॥ कैसाहैसोअनाहतचक्र ?

गौकेक्षीरसमान श्वेतवर्णवालाहै ॥ तथा द्वादशदलोंवालाहै ॥ तथा मननेत्रोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ और तिनद्वाद
शदलोंविषे प्रदक्षिणाक्रमकरिकैस्थितजे कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं येद्वादशअक्षरहैं ॥ तिनद्वादशअक्षरोंकरिकै शोभा
यमानहै ॥ तथा रुद्रदेवताकरिकैयुक्तहै ॥ ४ ॥ अब विशुद्धचक्रका निरूपणकरैंहैं ॥ हेशिष्य ! ताअनाहतचक्रतैंऊपरि कंठदेशविषे
विशुद्धचक्ररहेहै ॥ कैसाहैसोविशुद्धचक्र ? विचित्रवर्णवालाहै ॥ तथा षोडशदलोंवालाहै ॥ और तिनषोडशदलोंविषे प्रदक्षिणा
क्रमकरिकैस्थितजे अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः येषोडशस्वरहैं ॥ तिनषोडशस्वरोंकरिकै शोभायमानहै
तथा जीवात्माकेरहणेकास्थानहै ॥ ५ ॥ अब आज्ञाचक्रका निरूपणकरैंहैं ॥ हेशिष्य ! ताविशुद्धचक्रतैंऊपरि दोनोंभ्रूकेमध्यवि
षे आज्ञाचक्ररहेहै ॥ कैसाहैसोआज्ञाचक्र ? यत्किंचित्रक्तवर्णवालाहै ॥ तथा दोदलोंवालाहै ॥ और सूर्यचंद्रमाकेसमानजे हं क्षं
येदोअक्षरहैं ॥ तेदोनोंअक्षर जिसकेदोनोंदलोंविषेस्थितहैं ॥ तथापरमात्मादेवकेरहणेकास्थानहै ॥ ६ ॥ हेशिष्य ! याशरीर
विषे मस्तकविषे एकसहस्रदलोंवाला पद्मरहेहै ॥ कैसाहैसोपद्म ? अमृतकीवर्षाकरणेहाराजोचंद्रमाहै ॥ सोचंद्रमा जापद्मके
गर्भविषेरहेहै ॥ तथा तापद्मकीकर्णिका दशमद्वारकूंप्राप्तभईहै ॥ तथा तापद्मकेअमृतकरिकैकरीहुईतृप्ति तिनषट्चक्रोंविषेर
हेहै ॥ तथा यहजीवात्मा तापद्मकाहंसहै ॥ अब ताजीवात्माविषे हंसरूपताका निरूपणकरैंहैं ॥ हेशिष्य ! यालोकवि
षे जोपक्षी जिसप्रकारकेशब्दकूंउच्चारणकरैहै ॥ तिसपक्षीका तिसशब्दकेअनुसारही नामहोवैहै ॥ जैसे काका याप्रका
रकेशब्दकूंउच्चारणकरणेहाराजोपक्षीहै ॥ तापक्षीकूं काक यानामकरिकैकथनकरैंहैं ॥ तैसे यहजीवात्माभी हृदयकमलविषे
तथाआधारचक्रादिकोंविषे प्राणसहित स्मितहोइकै रात्रिदिनविषे एकविंशतिसहस्र षट्शत २१६०० श्वासप्रश्वासोंकरिकै
हंसःयामंत्रकाउच्चारणकरैहै ॥ तहां हकारकरिकैतौ यहप्राणवायु मुखनासिकाद्वारा याशरीरतैं बाहरिजावैहै ॥ और सका
रकरिकै यहप्राणवायु तिसीमुखनासिकाद्वारा पुनःताशरीरविषे प्रवेशकरैहै ॥ याप्रकार प्राणोंकेश्वासप्रश्वासकरिकै यहजी
वात्मा सर्वदा हंसमंत्रकाउच्चारणकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याजीवात्माकूं हंस यानामकरिकै कथनकरैंहैं ॥ अब ध्या

नकरणेवासते ताजीवरूपहंसकूं पक्षिरूपकरिकैवर्णनकरैहैं ॥ हेशिष्य ! यालोकविषे पक्षिविशेषकूं हंसकहेहैं ॥ यातैं याजीवात्मा विषे ताहंसशब्दकूंअर्थवालाकरणेवासते तेवेदवेत्तापुरुष याजीवात्माकूं पक्षिरूपकरिकै वर्णनकरैहैं ॥ तहां भोक्तारूपअग्नि तथा भोग्यरूपसोम येदोनों ताजीवरूपहंसके दोनोंपक्षहैं ॥ और ओंकाररूपप्रणवमंत्र ताजीवरूपहंसका शिरहै ॥ और मूलशक्तिका जोक्रियाशक्तिवाला परिणामविशेषहै ॥ सोपरिणामरूपबिंदु ताजीवरूपहंसका हृदयहै ॥ और जैसे महादेवकामुख सूर्य अग्नि सोमरूप तीननेत्रोंवालाहै ॥ तैसे ताजीवरूपहंसकामुखभी सूर्य अग्नि सोम यातीननेत्रोंवालाहै ॥ और ताजीवरूपहंसका एकचरणतौ रुद्ररूपहै ॥ और दूसराचरण रुद्राणीरूपहै ॥ और यहत्वंपदकाअर्थ जीवरूपहंसही तत्पदार्थपरब्रह्मरूपहै ॥ तहां निरुपाधिकदृष्टिकरिकैतौ सोजीवरूपहंस निर्गुणब्रह्मरूपहै ॥ और सोपाधिकदृष्टिकरिकै सगुणब्रह्मरूपहै और सोसगुणब्रह्मभी वामभागविषेतौ अग्निरूपहै ॥ और दक्षिणभागविषे सोमरूपहै ॥ पुनःकैसाहैसोजीवरूपहंस ? कोटिसूर्यकेसमान तेजवालाहै ॥ तथा नखतैंलेके शिखापर्यंत यासर्वशरीरविषेव्याप्यकरिकैरहैहै ॥ हेशिष्य ! यहजीवरूपहंस यद्यपि सर्वशरीरविषेरहैहै ॥ तथापि हृदयकमलविषे विशेषकरिकैरहैहै ॥ ताहृदयकमलविषेभी अष्टदलोंकेभेदतैं ताजीवरूपहंसकी अष्टप्रकारकीस्थितिहोवैहै ॥ ताअष्टप्रकारकीस्थितिकेप्रभावतैंही जाग्रत्स्वप्नविषे पुण्यबुद्धिआदिककार्योंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! पूर्वादिकअष्टदिशावोंकीतरफ ताहृदयकमलके यथाक्रमतैं अष्टदलरहेहैं ॥ तहां मनकरिकैयुक्त यहजीवरूपहंस जबी ताहृदयकमलके पूर्वदिशाकेदलऊपरिस्थितहोवैहै ॥ तबी याजीवोंकूं पुण्यकर्मकरणेकीबुद्धिहोवैहै ॥ और सोजीवरूपहंस जबी ताहृदयकमलके अग्निकोणकेदलऊपरिस्थितहोवैहै ॥ तबी याजीवोंविषे निद्राआलस्यादिकविकार उत्पन्नहोवैहैं ॥ और सोजीवरूप हंस जबी ताहृदयकमलके दक्षिणदिशाकेदलऊपरिस्थितहोवैहै ॥ तबी याजीवोंविषे क्रोधादिकविकार उत्पन्नहोवैहैं ॥ और सोजीवरूप हंस जबी ताहृदयकमलके नैर्ऋतकोणकेदलऊपरिस्थितहोवैहै ॥ तबी याजीवोंविषे पापकर्मकरणेकीबुद्धि उत्पन्नहोवैहै ॥ और सोजीवरूपहंस जबी ताहृदयकमलके पश्चिमदिशाकेदलऊपरिस्थितहोवैहै ॥ तबी याजीवोंकूं नानाप्रकारकेव्यवहारकरणे

विषे प्रीतिउत्पन्नहोवैहै ॥ और सोजीवरूपहंस जबी ताहृदयकमलके वायुकोणकेदलऊपरिस्थितहोवैहै ॥ तबी याजीवोंकूं किसीदेशविषेगमनकरणेकीप्रीति उत्पन्नहोवैहै ॥ और सोजीवरूपहंस जबी ताहृदयकमलके उत्तरदिशाकेदलऊपरिस्थितहोवैहै ॥ तबी याजीवोंकूं स्त्रीकेसंभोगविषेप्रीति उत्पन्नहोवैहै ॥ और सोजीवरूपहंस जबी ताहृदयकमलके ईशानकोणकेदलऊपरिस्थित होवैहै ॥ तबी याजीवोंकी दानविषेप्रीति उत्पन्नहोवैहै ॥ और सोजीवरूपहंस जबी ताअष्टदलोंकेमध्यदेशविषेस्थितहोवैहै ॥ तबी जैसे लोकप्रसिद्धहंसपक्षी मिल्येहुएक्षीरनीरका विभागकरैहै ॥ तैसे यहजीवभी सत्यअसत्यवस्तुकाविचारकरिकै सर्वविषयसुखोंतैं वैराग्यकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सोजीवरूपहंस जबी ताहृदयकमलके केसरविषेस्थितहोवैहै तबी याजीवोंकूं जाग्रत् अवस्थाकी प्राप्तिहोवैहै ॥ और सोजीवरूपहंस जबी ताहृदयकमलके कर्णिकाविषेस्थितहोवैहै ॥ तबीयाजीवोंकूं स्वप्नअवस्थाकीप्राप्तिहोवैहै॥ और ताहृदयकमलकीकर्णिकाकेमध्यविषेस्थित जोरक्तवर्णवाला रुधिरकापिंडविशेषहै ॥ ताकेविषे जबी सोजीवरूपहंस स्थितहोवैहै ॥ तबी याजीवोंकूं सुषुप्तिअवस्थाकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और सोजीवरूपहंस जबी मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकीपूर्णदृष्टिकरिकै तापरिच्छिन्नहृदयकमलकेअभिमानकापरित्यागकरैहै ॥ तबी जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंकीअपेक्षाकरिकै जाकोईतुरीयअवस्थाहै ताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब तुरीयातीतनामा पंचमअवस्थाकेनिरूपणकरणेवासते प्रथम तातुरीयअवस्थाविषे जाग्रदादिकतीनअवस्थावोंतैंश्रेष्ठताकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! जाग्रदादिकतीनअवस्थावोंकीअपेक्षाकरिकै जातुरीयअवस्था कथनकरीहै ॥ तातुरीयअवस्थाविषे आत्मरूपज्ञेयवस्तु ज्ञातारूपयोगीपुरुषतैं भिन्नहोइकैप्रतीतहोवैहै ॥ काहेतें ? सोयोगीपुरुष तायोगाभ्यासकेबलतैं संप्रज्ञातसमाधिकूं तथाअसंप्रज्ञातसमाधिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहां जासमाधिविषे ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय तथा ध्याता ध्यान ध्येय याप्रकारकीत्रिपुटी प्रतीतहोवैहै ॥ तासमाधिकानाम संप्रज्ञातसमाधिहै ॥ और जासमाधिविषे सात्रिपुटी नहींप्रतीतहोवैहै ॥ तासमाधिकानाम असंप्रज्ञातसमाधिहै ॥ तहां जिसकालविषे तायोगीपुरुषकूं त्रिपुटीकेभानपूर्वक ब्रह्माकारवृत्तिहोवैहै ॥ तिसकालविषे सोयोगीपुरुष तुरीयअवस्थावाला कह्याजावैहै ॥ और जिसकालविषे सात्रिपुटी अद्वितीयब्रह्मरू

पनादविषे लयभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे सोयोगीपुरुष तुरीयातीतअवस्थावाला कह्याजावैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ॐकाररूप प्रणवविषे अकार उकार मकार बिंदु नाद येपंचअवयवहोवैहैं तहां अकार उकार मकार येतीनअवयवतौ यथाक्रमतैं विश्व तैजस प्राज्ञ यातीनोंकेवाचकहोवैहैं॥और अर्द्धमात्रारूपजोबिंदुनादहैं॥तेबिंदुनाद दोनों ब्रह्मकेवाचकहोवैहैं ॥ तिनदोनोंविषेभी बिंदुतौ सविशेषब्रह्मकावाचकहोवैहै॥और नाद निर्विशेषब्रह्मकावाचकहोवैहै ॥ हेशिष्य ! ऐसी तुरीयातीतअवस्था अनेकविरक्तपुरुषोंविषेभी किसीएकविरक्तपुरुषकूंही प्राप्तहोवैहै॥ सर्वकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं सातुरीयातीतअवस्था अत्यंतदुर्लभहै ॥ यहवार्ता गीताविषेभी भगवान्नैंकथनकरीहै॥तहांश्लोक॥मनुष्याणांसहस्रेषु कश्चिद्यततिसिद्धये॥यततामपिसिद्धानां कश्चिन्मांवेत्तितत्त्वतः अर्थयह ॥ अनेकसहस्रमनुष्योंविषे कोईएकमनुष्यही मेरीप्राप्तिवासते यत्नकरैहै ॥ और तिनयत्नकरणेहारेमनुष्योंविषेभी कोईएक मनुष्यही मैंअद्वितीयब्रह्मकूं वास्तवस्वरूपतैं जाणैहै ॥ १ ॥ अब ता तुरीयातीतभावकीप्राप्तिवासतै सोयोगरूपउपायकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! सोयोगीपुरुष पूर्वउक्तरीतिसैं याशरीरविषे तिनषट्चक्रोंसहित ताजीवरूपहंसकेस्वरूपकूंजाणिकरिकै प्रथम आपणेस्वरूपकाचिंतनकरै ॥ तिसतैंअनंतर ताअद्वितीयब्रह्मरूपनादका चिंतनकरै ॥ तहां आधारचक्रतैंलैके दशमद्वारपर्यंत व्यापकरूपकरिकै तथाअत्यंतश्वेतरूपकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मका चिंतनकरै ॥ इसप्रकार ताअद्वितीयब्रह्मविषे मनकूंएकाग्रकरिकै सोयोगीपुरुष आपणे पायु उपस्थ यादोनोंद्वारोंकूं संकोचकरै ॥ तिसतैंअनंतर सोयोगीपुरुष आपणेपादकेअंगुष्ठकेअग्रभागतैंलैके प्राणवायुकूंऊपरिआकर्षणकरिकै प्रथम आधारचक्रविषे स्थापनकरै ॥ ताआधारचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष ताप्राणवायुकूं शनैःशनैःकरिकै स्वाधिष्ठानचक्रविषे स्थापनकरै ॥ तिसस्वाधिष्ठानचक्रकेचारोंओरतैं ताप्राणवायुकूं तीनप्रदक्षिणाकरावै ॥ तास्वाधिष्ठानचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष ताप्राणवायुकूं मणिपूरकचक्रविषे स्थापनकरै ॥ तामणिपूरकचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष ताप्राणवायुकूं अनाहतचक्रविषे स्थापनकरै ॥ तिसअनाहतचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष ताप्राणवायुकूं विशुद्धचक्रविषे स्थापनकरै ॥ ताविशुद्धचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष ताप्राणवायुकूं आज्ञाचक्रविषे स्थापनकरै ॥ ताआज्ञाचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष ताप्रा

णवायुकूं दशमद्वारविषे स्थापनकरै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सोयोगीपुरुष जबी योगाभ्यासकेबलतैं ताप्राणवायुकूंऊपरिलेजावैहै ॥ तथा जीवरूपहंसकूंध्यातारूपकरिकै चिंतनकरैहै ॥ तथा ब्रह्मरूपनादकूं ध्येयरूपकरिकैचिंतनकरैहै ॥ तथा ऋषि छंद देवता आदिकोंकरिकैयुक्त जोहंसमंत्रहै ॥ ताहंसमंत्रका एककोटिसंख्यापरिमाण जपकरैहै ॥ तबी तायोगी पुरुषके शरीरकेअंतर योगफलकीसिद्धिविषे विश्वासकरावणेहारे चिणिनाद १ चिणिचिणिनाद २ घंटानाद ३ शंखनाद ४ तंत्रीनाद ५ तालनाद ६ वेणुनाद ७ भेरीनाद ७ मृदंगनाद ९ मेघनाद १० येदशप्रकारके नाद उत्पन्न होवैहैं ॥ हेशिष्य! तिनदशप्रकारकेनादोंविषेभी जोदशमामेघनादहै ॥ सोमेघनाद वारंवार अभ्यासकऱ्याहुआ तिनयोगीपुरुषोंकूं वैराग्यज्ञानादिकोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ याकारणतैं यहयोगीपुरुष तिननवनादोंकापरित्यागकरिकै तामेघनादकाही निरंतर अभ्यासकरै ॥ तामेघनादकेअभ्यासकरिकै तिनयोगीपुरुषोंकामन लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तामनकेलयहुएतैंअनंतर पुण्य पाप संकल्प विकल्प इसतैंआदिलैकै जितनेमनकेधर्महैं तेसंपूर्णधर्म लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तहां यहवस्तु हमारेकूंप्राप्तहोवै याप्रकारकीअभिलाषाकानाम संकल्पहै ॥ और संशयकानाम विकल्पहै ॥ हेशिष्य! तेसंकल्पविकल्पादिकविक्षेपही आत्माकीअप्रतीतिविषेकारणथे ॥ तेसंकल्पविकल्पादिकविक्षेप जबी लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तबी यहआनंदस्वरूपआत्मा आपणेस्वप्रकाशचैतन्यरूपकरिकै सर्वदा तिनयोगीपुरुषोंकूं प्रत्यक्षहोवैहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार हंसउपनिषद्विषे योगकानिरूपणकऱ्याहै ॥ सोहमनैं तुमारेप्रतिकथनकऱ्या ॥ अब क्षुरिकाउपनिषद्विषे जिसप्रकार तायोगकानिरूपणकऱ्याहै ॥ सोहम तुमारेप्रतिकथनकरतेहैं ॥ तू सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ तहां क्षुरिकानाम शस्त्रकाहै ॥ ताक्षुरिकाशस्त्रकीन्यांई संसाररूपबंधकूंछेदनकरणेहारीजाधारणाहै ॥ ताधारणाकूंकथनकरणेहारी यहउपनिषद्है ॥ यातैं याउपनिषद्कूं वेदवेत्तापुरुष क्षुरिका यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ हेशिष्य! यहयोगीपुरुष प्रथम अहिंसादिकपंचयमोंकूंकरै ॥ तिसतैंअनंतर शौचादिकपंचनियमोंकूंकरै ॥ तिसतैंअनंतर शब्दादिकविक्षेपतैं रहित किसीएकांतदेशविषे प्रथम दर्भोंकूंबिछावै ॥ तिनदर्भोंऊपरि मृगचर्मबिछावै तामृगचर्मऊपरि वस्त्रबिछावै ॥ ऐसेआसन

ऊपरि पद्मादिकआसनोंकूंबांधिकै सोयोगीपुरुष स्थितहोवै ॥ और जैसे कूर्मजंतु आपणेहस्तपादादिकअंगोंका संकोचकरै है ॥
तैसे सोयोगीपुरुष मनसहितनेत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेविषयोंतैंनिवृत्तकरिकै हृदयकमलविषे एकाग्रकरै ॥ याकानाम प्र
त्याहारहै ॥ और तिसतैंअनंतर सोयोगीपुरुष द्वादशमात्रायुक्तप्रणवमंत्रकरिकै शनैःशनैःबाह्यवायुकरिकै आपणेशरीरकूंपूर्णकरै
याकानाम पूरकहै ॥ और तिसतैंअनंतर सोयोगीपुरुष मुखनासिकादिकसर्वद्वारोंका निरोधकरिकै तथा हृदय मुख कटी ग्रीवा
इत्यादिकसर्वअंगोंकूंसूधाराखिकै तिनअंगोंविषेभी हृदयकूं किंचित्ऊंचाराखिकै ताहृदयविषे ताप्राणवायुकूं धारणकरै ॥ याकाना
म कुंभकहै ॥ तिसतैंअनंतर सोयोगीपुरुष ताप्राणवायुकूं नासिकादिकद्वारोंकरिकै शरीरतैंबाहिरिनिकासे ॥ याकानाम रेचकहै ॥
इहां कुंभक दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ पूरकादिसापेक्ष कुंभकहोवैहै ॥ और दूसरा पूरकादिनिरपेक्ष कुंभकहोवैहै ॥ तहां पूरका
दिसापेक्ष कुंभकका पूर्व निरूपणकऱ्या ॥ अब पूरकादिनिरपेक्ष कुंभकके निरूपणकरणेवासते प्रथम याशरीरकेविशेषअंगोंविषे ता
प्राणवायुकेनिरोधका निरूपणकरैहैं ॥ जिसनिरोधकूं योगीयाज्ञवल्क्यादिकोंनैं धारणा प्रत्याहार यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ हे
शिष्य ! यहयोगीपुरुष तिनपूरकादिकोंतैंविनाही ध्यानकेबलतैं ताप्राणवायुकूं प्रथम पादकेअंगुष्ठविषेस्थिरकरिकै प्रणवमंत्ररू
पमात्रावोंका जपकरताहुआ याप्रकारकीधारणावोंकूंकरै ॥ तहां वामदक्षिणपादकेदोगुल्फोंविषे जबी यहयोगीपुरुष ताप्राणवायु
कास्थापनकरै ॥ तबी दोदोमात्रावोंकाजपकरै ॥ और दोनोंजंघोंविषे ताप्राणवायुकेस्थापनकरणेविषे तीनतीनमात्रावोंकाजपकरै
और दोनोंजानुविषे तथादोनोंऊरुविषे ताप्राणवायुकेस्थापनकरणेविषे दोदोमात्रावोंकाजपकरै ॥ और गुदा लिंग यादोनोंविषे
ताप्राणवायुकेस्थापनकरणेविषे तीनतीनमात्रावोंकाजपकरै ॥ और गुदा लिंग यादोनोंकेमध्यविषे ताप्राणवायुकेरहणेकास्था
नरूप एककंद रहेहै ॥ कैसाहैसोकंद ? नाभिदेशकेसाथ जाकंदकासंबंधहै ॥ और सर्वमनुष्योंकेपृष्ठदेशविषेस्थित जोदीर्घअ
स्थिहै ॥ जादीर्घअस्थिरूपमार्गद्वारा सुषुम्नानाडी दशमद्वारकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तादीर्घअस्थिके समीपस्थितहै ॥ ऐसेकंदविषे सो
योगीपुरुष प्राणवायुरूपकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ और ताकंदविषे पूर्वउक्तदशनाडियोंकरिकैवेष्टितहुई एकसुषुम्नानाडीरहेहै ॥ और

ताकंदविषे पीतवर्णवाली तथारक्तवर्णवाली तथाकृष्णवर्णवाली तथाताम्रवर्णवाली तथालोहितवर्णवाली अत्यंतसूक्ष्म तथाअत्यंत लघु ऐसीअनेकनाडियांरहेहैं ॥ तिनसर्वनाडियोंकापरित्यागकरिकै सोयोगीपुरुष ताशुक्लवर्णवाली एकसुषुम्नानाडीकूंही आश्रयण करै ॥ और जैसे ऊर्णनाभिजंतु सर्वतंतुवोंकेजालविषे जोतंतु आपणेकूंप्रियहोवैहै ता तंतुविषेही विचरैहै ॥ दूसरेअप्रियतंतुवोंका परित्यागकरैहै ॥ तैसे तानाडीकंदविषेस्थितहुआ सोयोगीपुरुष दूसरेसर्वनाडियोंकापरित्यागकरिकै तासुषुम्नानाडीविषेही आपणेप्राणवायुका प्रवेशकरावै ॥ तिसनाडीकंदतैंअनंतर सोयोगीपुरुष हृदयकमलविषे प्राप्तहोवै ॥ कैसाहैसोहृदयकमल? रक्तपुष्पके समानवर्णवालाहै ॥ तथाजिसहृदयकमलकूं वेदांतशास्त्रविषे दहरपुंडरीक यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ ताहृदयकमलतैंअनंतर सोयोगीपुरुष कंठविषेस्थित विशुद्धचक्रकूंप्राप्तहोवै ॥ और ताविशुद्धचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष आज्ञाचक्रकूंप्राप्तहोवै ॥ तिसआज्ञाचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष मूर्द्धविषेस्थित सहस्रदलवालेपद्मकूंप्राप्तहोवै ॥ तामूर्द्धस्थानविषेस्थितहोइकै सोयोगीपुरुष आधारचक्रतैंलेके तासहस्रदलवालेपद्मपर्यंत तासुषुम्नानाडीका निरंतर ध्यानकरै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार तिनषट्चक्रोंकाभेदनकरिकै सोयोगीपुरुष मनरूपखड्गकरिकै देहाभिमानीपुरुषोंकूं बंधनकीप्राप्तिकरणेहारे जेमर्महैं तिनोंकूंछेदनकरै ॥ कैसाहैसोमनरूपखड्ग? प्राणरूपलोहमयशरीरजिसका ॥ तथा सगुणनिर्गुणब्रह्मकूंकथनकरणेहारीजाब्रह्मविद्याहै ॥ ताब्रह्मविद्यारूपशाणकेघर्षण करिकै जोमन निर्मलभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ ऐसेमनरूपखड्गकरिकै सोयोगीपुरुष तिनमर्मोंकाछेदनकरै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! सोनिर्मलमनहैतीक्ष्णधाराजिसकी ऐसाजो यहवशकर्‍याहुआप्राणवायुरूपखड्गहै ॥ ताप्राणवायुरूपखड्गकरिकै यहयोगीपुरुष आपणेपादतलकेऊपरिस्थित अंगुष्ठगुल्फादिकमर्मोंकूंछेदनकरै ॥ और योगसाधनतैंरहितपुरुषोंकरिकै इंद्रकेवज्रकीन्यांई दुर्भेद्य जेजंघोंविषेस्थितमर्महैं ॥ तिनमर्मोंकूं यहयोगीपुरुष ध्यानरूपबलयुक्त तामनरूपखड्गकरिकै छेदनकरै ॥ और ऊरुस्थानविषेस्थितजेमर्महैं ॥ जिनमर्मोंकेभेदनहुए याजीवोंकूंमृत्युकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिनमर्मोंकूंभी यहयोगीपुरुष प्रातःकाल मध्याह्नकाल सायंकाल रात्रिकाल याचारिकालविषेकर्‍याजोअभ्यास ताअभ्यासवालेयोगतैं छेदनकरै ॥

इसप्रकार गुदा शिश्न कंद नाभि हृदयकमल कंठ इत्यादिकस्थानोंविषेस्थित जितनेमर्म्महैं ॥ तिनसर्वमर्मोंकूं यहयोगीपुरुष तायोगकेबलतैं छेदनकरै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार तिनमर्मोंकूंछेदनकरिकै सोयोगीपुरुष नाडियोंकूंभीछेदनकरै ॥ तहां याशरीरविषे एकशत एकनाडी १०१ प्रधानरहेहैं ॥ तिनप्रधाननाडियोंविषेभी एकएकनाडीकीशाखारूप बाहतरिबाहतरिसहस्र ७२००० नाडियांरहेहैं ॥ तिनसर्वनाडियोंविषे एकसुषुम्नानाडीही प्रधानहै ॥ जासुषुम्नानाडी दशमद्वारविषेप्राप्तभईहै ॥ तासुषुम्नानाडीविषे आपणेप्राणोंकाप्रवेशकराइकै यहयोगीपुरुष दूसरीसर्वनाडियोंकाछेदनकरै ॥ मैं इनमर्मोंविषे तथानाडियोंविषे स्थितनहींहूं याप्रकारकाजोबाधनिश्चयहै सोईही तिनमर्मनाडियोंकाछेदनहै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार जोयोगीपुरुष तायोगाभ्यासकेबलतैं तिन मर्मस्थानोंकूं तथासुषुम्नातैंभिन्ननाडियोंकूं छेदनकरिकै आपणेप्राणवायुकूं तासुषुम्नानाडीविषे प्रवेशकरावैहै ॥ सोयोगीपुरुष इस जन्मविषे अथवा दूसरेजन्मविषे वैराग्यकूंप्राप्तहोइकै आत्मज्ञानद्वारा मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं ज्ञानरूपअग्निकरिकैप्रकाशमान जोशुद्धमनरूपखड्गहै ॥ तामनरूपखड्गकरिकै यहयोगीपुरुष तिनसर्वनाडीरूपबंधनोंकाछेदनकरै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार योगाभ्यासकेबलतैं जिसयोगीपुरुषकाचित्त वैराग्यकूंप्राप्तभयाहै ॥ तथा जोयोगीपुरुष सर्वदा एकांतदेशविषे निवासकरैहै ॥ तथा जोयोगीपुरुष सर्वसंगतैंरहितहै ॥ तथा जोयोगीपुरुष तायोगकेसर्वअंगोंकूंजानणेहाराहै ॥ ऐसायोगीपुरुष पूर्वउक्तसाधनोंकीभी अपेक्षानहींकरताहुआ शनैःशनैःकरिकै मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे यालोकविषे पाशोंकरिकैबांध्याहुआ कोईहंसपक्षी तिनपाशोंकूंछेदनकरिकै निःशंकहोइकै आकाशविषेउडैहै ॥ ताआकाशकेउडणेविषे ताहंसकूं दूसरेकिसीसाधनकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ तैसे सोयोगीपुरुषभी तिननाडीरूपपाशोंकाछेदनकरिकै ब्रह्मलोकविषेजाइकै मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अथवा जैसे अग्निआदिकविशेषतेज काष्ठादिकइंधनोंकूंदग्धकरिकै आपणेसामान्यतेजभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सोयोगीपुरुषभी तायोगाभ्यासकेबलतैं सर्वकर्मोंकूंदग्धकरिकै इसीशरीरविषे ब्रह्मभावरूपमोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ प्राणायामकरिकैसूक्ष्मकन्याहुआ तथाप्रणवरूप मात्राहैआधारजिसका तथावैराग्यरूपशाणकरिकैघर्षणकन्याहुआ ऐसाजो मनरूपखड्गहै ॥ तामनरूपखड्गकरिकै यहयोगीपुरुष

तिननाडीरूपबंधनोंकाछेदनकरिकै मोक्षकूंप्राप्तहोवै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार ताक्षुरिकाउपनिषद्विषे योगकानिरूपणकऱ्याहै ॥ सोसंपूर्ण हमनैं तुमारेप्रतिकथनकऱ्या ॥ इतनेग्रंथकरिकै परमवैराग्यकीप्राप्तिकरणेहारेयोगका निरूपणकऱ्या ॥ अब तापरमहंससंन्यासकेनिरूपणकरणेवासते प्रथम जाबालउपनिषद्केचतुर्थखंडविषेकथनकऱ्याजो तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेकाकाल तथा तापरमहंससंन्यासकाअधिकारी तिनदोनोंकानिरूपणकरैं हैं ॥ तहांप्रथम कालकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेशिष्य ! यासर्वअधिकारीपुरुषोंकूं सर्वअवस्थावोंविषे तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेविषे यहवैराग्यही मुख्यकारणहै ॥ तावैराग्यतैंविना किसीभीअवस्थाविषे तापरमहंससंन्यासकाग्रहणहोवैनहीं॥ याकारणतैं सोवैराग्यही तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेका कालहै ॥ तहांश्रुति॥ यदहरेवविरजेत्तदहरेवप्रव्रजेत्॥ अर्थयह॥ याअधिकारीपुरुषकूं बाल्यअवस्थाविषे तथा युवाअवस्थाविषे तथावृद्धअवस्थाविषे जिसदिनविषे तथाजिसक्षणविषे तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै॥ सोअधिकारीपुरुष तिसीअवस्थाविषे तथातिसीदिनविषे तथातिसीक्षणविषे संपूर्णकर्मोंकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै ॥१॥ ता तीव्रवैराग्यतैंविना याअधिकारीपुरुषोंने बाल्यअवस्थाविषे तथायौवनअवस्थाविषे तथावृद्धअवस्थाविषे तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेका संकल्पमात्रभीनहींकरणा॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुषोंनैं तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेका वैराग्यहीकालकह्याहै ॥ और तावैराग्यकीउत्पत्तिविषे पूर्व गर्भदुःखोंकाविचार तथामरणकालकाज्ञान तथायोगाभ्यास येतीनोंकारण कथनकरिआयेहैं॥ और संपूर्णउपनिषदोंविषे जानानाप्रकारकीउपासना कथनकरीहै॥ तेउपासनाभी तावैराग्यकीउत्पत्तिविषेही कारणहैं॥ शंका॥ हेभगवन्! तेउपासना साक्षात् मुक्तिकेहीकारण किसवास्तेनहींहोवैं ? समाधान॥ हेशिष्य ! तेउपासना विपरीतज्ञानरूपअध्यासकरिकैजन्यहोवै हैं॥ यातैं तिनउपासनावोंविषे साक्षात्मुक्तिकीकारणता संभवैनहीं॥ जैसे नाम रूप क्रिया स्थान गुण यापांचोंतैंरहित जो अद्वितीयब्रह्महै ॥ ताअद्वितीयब्रह्मका उत् यहनामहै ॥ तथा सुवर्णकीन्यांई रूपहै॥ तथा ऊर्ध्वलोकोंकापालन क्रियाहै ॥ तथा आदित्यमंडल स्थानहै ॥ तथा सर्वश्रेष्ठपणां गुणहै ॥ इसप्रकार तानिर्गुणब्रह्मविषे नामादिकोंकाआरोपणकरिकै सर्वत्र उपासनाहोवैहै ॥ यातैं [illegible] विपरी[illegible]नरूपअध्यासकरि[illegible] !

तेउपासनाभी अनेकप्रकारकीहोवैहैं ॥ तहां उपनिषदोंके स्थानोंविषे स्थित जितनेमर्म हैं ॥ तिनसर्वमर्मोंकूं यहयोगीपुरुष ॥
और किसीस्थलविषेतौ ताब्रह्मकेविभूतियोंकीउपासना कथनकरीहै॥तिनविभूतियोंविषेभी कोईक विभूतियांतौ कारणरूपहोवैहैं
तथासमष्टिरूपहोवैहैं तथाअधिदैवरूपहोवैहैं ॥ जैसे हिरण्यगर्भ विराट् आदित्य आदिकहैं ॥ और कोईक विभूतियांतौ कार्य
रूपहोवैहैं तथाव्यष्टिरूपहोवैहैं तथाअध्यात्मरूपहोवैहैं ॥ जैसे मन प्राण वाकादिकहैं ॥ तिन कारणकार्यरूपविभूतियोंकीही ब्रह्म
रूपकरिकैउपासना कथनकरीहै ॥ और किसीस्थलविषेतौ प्रणवादिकमंत्रोंका तथातिनमंत्रोंकेब्रह्मरूपअर्थका परस्पर तादात्म्य
रूपकरिकै उपासनाकथनकरीहै ॥ तेउपासनाभी दोप्रकारकीहोवैहैं ॥ तहां एकउपासनावोंविषेतौ प्रणवादिकमंत्र प्रधानहोवैहैं ॥
और तिनमंत्रोंकाब्रह्मरूपअर्थ गौणहोवैहै ॥ और दूसरीउपासनावोंविषेतौ प्रणवादिकमंत्र गौणहोवैहैं ॥ और तिनमंत्रोंकाब्रह्म
रूपअर्थ प्रधानहोवैहै ॥ तहां अथर्वशिर योगशिखा पूर्वतापनीय उत्तरतापनीय मांडूक्य आत्मबोध दोनोंनारायण अमृतनाद अ
मृतबिंदु इत्यादिकउपनिषदोंविषेतौ प्रणवादिकमंत्रोंकी प्रधानरूपकरिकैउपासना कथनकरीहै ॥ और तिनोंकेअर्थकी गौणरूपक
रिकै उपासना कथनकरीहै ॥ और प्रश्न मुंडक बृहदारण्यक छांदोग्य कठवल्ली इत्यादिकउपनिषदोंविषेतौ तिनप्रणवादिकमंत्रों
केअर्थकी प्रधानरूपकरिकै उपासनाकथनकरीहै ॥ और तिनप्रणवादिकमंत्रोंकी गौणरूपकरिकै उपासनाकथनकरीहै ॥ और रु
द्राध्यायविषे तथामंडलब्राह्मणविषे तथापुरुषसूक्तविषेतौ स्तुति रहस्यनाम मंत्र यातीनोंसहित ताब्रह्मकीउपासना कथनकरीहै ॥
इसप्रकार जितनी चारिवेदोंविषेउपनिषद्हैं ॥ तिनसर्वउपनिषदोंविषे याप्रकारकीअनेकउपासना कथनकरीहै ॥ तेसर्वउपा
सना वैराग्यकेहीकारणहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! याअधिकारीपुरुषोंकेप्रति आपणाआत्मरूपकरिकै निर्गुणब्रह्मकेबोधकरावणे
वासते प्रवृत्तहुईजेसर्वउपनिषद्हैं ॥ तिनउपनिषदोंविषे नानाप्रकारकीउपासनावोंकाकथनकरणा असंगतहै ॥ समाधान ॥ हे
शिष्य ! तेउपनिषद् यद्यपि निर्गुणब्रह्मकूंहीकथनकरैहैं ॥ तथापि सोनिर्गुणब्रह्म जिनपुरुषोंकेबुद्धिविषेनहींआवैहै ॥ तिनमंदबुद्धिपु
रुषोंऊपरि अनुग्रहकरिकै तेउपनिषद् स्थूलअरुंधतीन्यायकूंअंगीकारकरिकै नानाप्रकारसैं ताब्रह्मकावर्णनकरिकै तिनमंदबुद्धिपु

रुषोंकेचित्तविषे तानिर्गुणब्रह्मकाज्ञानकरावैहैं ॥ यातैं तिनउपनिषदोंविषे उपासनावोंकावर्णन असंगतनहीं है॥ शंका॥ हेभगवन्! सोब्रह्म सर्वदा एकरसहै ॥ यातैं ताएकरसअद्वितीयब्रह्मका नानारूपकरिकैवर्णन संभवैनहीं? ॥ समाधान॥ हेशिष्य! सोअद्वितीय निर्गुणब्रह्म अधिष्ठानरूपकरिकै यासर्वजगत्काआत्मरूपहै ॥ और जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानका इदंअंश कल्पितसर्पादिकोंविषे अनुगतहोइकैप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे सोअधिष्ठानरूपब्रह्मभी आपणेसत्यरूपकरिकै यासर्वजगत्विषे अनुगतहोइकैप्रतीतहोवैहै ॥ ताकल्पितजगत्रूपउपाधिकेसंबंधतैं तानिर्गुणब्रह्मकूंभी तेउपनिषद् नाम रूप क्रिया स्थान गुण यापंचरूपोंकरिकैविशिष्ट कथनकरैहैं ॥ यातैं कल्पितउपाधियोंकेसंबंधतैं ताअद्वितीयब्रह्मका नानारूपकरिकैवर्णन संभवहोइसकेहै ॥ हेशिष्य! नाम रूप क्रिया स्थान गुण यापांचोंकरिकैविशिष्ट जोसविशेषब्रह्महै ॥ तासविशेषब्रह्मकेबोधनकरणेविषे तिनउपनिषदोंकी जाप्रवृत्तिहोवैहै ॥ सा प्रवृत्ति दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां एकतौ तिननामरूपादिकउपाधियोंके अनिषेधपूर्वक प्रवृत्तिहोवैहै ॥ और दूसरी तिननामरूपादिकउपाधियोंके निषेधपूर्वक प्रवृत्तिहोवैहै ॥ तहां यहअधिकारीपुरुष शुद्धअंतःकरणवालेहोइकै आपेही तिननामरूपादिकउपाधियोंकापरित्यागकरिकै तानिर्गुणब्रह्मकूंजानैंगे याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिकै जेउपनिषद् सविशेषब्रह्ममात्रकूंकथनकरिकै निर्विशेषब्रह्मकथनतैं उपरामताकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तेउपनिषद् प्रथमप्रवृत्तिकरिकै तासविशेषब्रह्मकूंकथनकरैहैं ॥ और यहअधिकारीपुरुष हमारेउपदेशतैंविना तानिर्विशेषब्रह्मकूं किसप्रकारजाणैंगे? याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिकै तिनअधिकारीपुरुषों ऊपरि अत्यंतकरुणाकरिकै जेउपनिषद् तिननामरूपादिकसर्वउपाधियोंकानिषेधकरिकै वारंवार तानिर्विशेषब्रह्मकूंही कथनकरैहैं॥ तेउपनिषद् तादूसरीप्रवृत्तिकरिकै ताब्रह्मकाकथनकरैहैं ॥ हेशिष्य! तादूसरीप्रवृत्तिकूंअंगीकारकरिकै निर्गुणब्रह्मकूंकथनकरणेहारी जेबृहदारण्यक आदिकउपनिषद्हैं ॥ तिनोंकाअर्थ हम तुमारेप्रति पूर्व कथनकरिआयेहैं ॥ और तिनबृहदारण्यकआदिकउपनिषदोंतैंभिन्न दूसरी जितनीउपनिषद् तानिर्विशेषब्रह्मकूंकथनकरैहैं ॥ तिनसर्वउपनिषदोंका अर्थ आगे हम तुमारेप्रति स्पष्ट करिकैकथनकरैंगे ॥ हेशिष्य! इसप्रकार नानाप्रकारकेनहत्तस्यौर्न्दिकै [illegible]

कारीपुरुष थोडेहीकालविषे शुद्धअंतःकरणवालाहोइकै षट्रोकूशानोंहिविषेहै ॥ [illegible] गर्भदुःखोंकाविचार तथा [illegible]॥
न तथाअष्टांगयोग येतीनों वैराग्यकेकारणहैं ॥ तैसे सापरमेश्वरकीउपासनाभी वैराग्यकाहीकारणहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! जि
सअधिकारीपुरुषकूं तिनउपासनावोंकेकरणेविषे सामर्थ्यनहीं॥ सोअधिकारीपुरुष तावैराग्यकीप्राप्तिवासते कौनउपायकरै ? ॥ समा
धान ॥ हेशिष्य ! जिसअधिकारीपुरुषकूं तिनउपासनावोंकेकरणेविषे सामर्थ्यनहींहै ॥ सोअधिकारीपुरुष याप्रकारकाउपायकरै ॥
वेदोंकेकर्मकांडविषेकथनकऱ्येजे आपणेवर्णआश्रमकेकर्म हैं ॥ तिनकर्मोंकूं यहअधिकारीपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वक निरंतरकरै ॥ परं
तु तिनकर्मोंकेफलकीइच्छाकरैनहीं ॥ तानिष्कामकर्मोंकरिकैभी सोअधिकारीपुरुष बहुतकालकेपीछे अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तावैरा
ग्यकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं तेनिष्कामकर्मभी वैराग्यकेहीकारणहैं ॥ और हेशिष्य ! जोअधिकारीपुरुष तिननिष्कामकर्मोंकेकरणेवि
षेभी समर्थनहींहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष तावैराग्यकीप्राप्तिवासते याप्रकारकाउपायकरै ॥ तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषं
ति यज्ञेनदानेनतपसाऽनाशकेन ॥ याश्रुतिनैं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवासते वेदोंकाअध्ययन यज्ञ दान तप अनशन यापांचधर्मोंकावि
धानकऱ्याहै ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै जोअधिकारीपुरुष ताब्रह्मकेसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते तिनयज्ञदानादिककर्मोंकूंकरैहैं ॥
सोअधिकारीपुरुषभी अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तावैराग्यकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवासते जेयज्ञदानादिककर्म हैं ॥
तेकर्मभी वैराग्यकेहीकारणहैं ॥ और हेशिष्य ! जोअधिकारीपुरुष ताब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवासते कर्मोंकेकरणेविषेभी समर्थनहीं
होवै ॥ सोअधिकारीपुरुष तावैराग्यकी प्राप्तिवासते याप्रकारकाउपाय करै ॥ यत्करोषियदश्नासि यज्जुहोसिददासियत् ॥
यत्तपस्यसिकौंतेय तत्कुरुष्वमदर्पणम् ॥ याभगवत्गीताकेश्लोकविषे सर्वकर्मोंका परमेश्वरविषेअर्पण कथनकऱ्याहै ॥ या
प्रकारका विचारकरिकै जोअधिकारीपुरुष आपणेसर्वकर्मोंका परमेश्वरविषे अर्पण करैहै ॥ सोअधिकारीपुरुषभी अंतः
करणकीशुद्धिद्वारा तावैराग्यकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं ते परमेश्वरअर्पणकर्मभी वैराग्यकेही कारणहैं ॥ हेशिष्य ! इस
प्रकार गर्भदुःखोंका विचार १ तथा मृत्युकालकाज्ञान २ तथा अष्टांगयोग ३ तथाउपासना ४ तथा निष्कामकर्म ५ तथा

ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिअर्थकर्म ६ तथाईश्वरअर्पणकर्म ७ यासप्तप्रकारकेउपायोंकरिकैही याअधिकारीपुरुषोंकूं वैराग्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिनसप्तउपायोंविषे जिसउपायकेकरणेविषे याअधिकारीपुरुषकूं सामर्थ्यहोवै ॥ ताउपायकूंग्रहणकरिकै यहअधिकारीपुरुष तावैराग्यकूंउत्पन्नकरै ॥ तावैराग्यतैंअनंतर सोअधिकारीपुरुष तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ यामनुष्यलोकतैंलेके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेविषयजन्यसुखहैं ॥ तथा स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंतैंआदिलेके जितने तिनविषयसुखोंके साधनहैं ॥ तिनसंपूर्णोंतैंजोवैराग्यहै ॥ सोतीव्रवैराग्यही यापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेकाकालहै ॥ इतनेकरिकै तासंन्यासग्रहणकरणेकेकालका निरूपणकऱ्या॥ अब तासंन्यासकेअधिकारीका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! धनएषणा लोकएषणा पुत्रएषणा यतीनप्रकारकीएषणा सर्वलोकोंविषेप्रसिद्धहैं ॥ तहां धन दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ दैवधनहोवैहै ॥ और दूसरा मानुष्यधनहोवैहै ॥ तहां कर्मउपासनारूप दैवधनहै ॥ और सुवर्णादिकपदार्थ मानुष्यधनहै ॥ और स्वर्गलोक पितृलोक मनुष्यलोक इत्यादिकलोकहैं ॥ एषणानाम इच्छाकाहै ॥ ऐसेतीनएषणावोंतैं जोपुरुष रहितहै ॥ सोवैराग्यवान्पुरुषही यापरमहंससंन्यासकाअधिकारीहै ॥ अब जाबालउपनिषद्के चतुर्थखंडविषेस्थितवचनोंकेअर्थका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! जिसअधिकारीपुरुषविषे तेतीनोंएषणा विद्यमानहैं ॥ सोअधिकारीपुरुष तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरैनहीं ॥ किंतु सोअधिकारीपुरुष प्रथम ब्रह्मचर्यआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ ताब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतर गृहस्थआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ तागृहस्थआश्रमतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ तावानप्रस्थआश्रमतैं अनंतर कुटीचक बहूदक हंस यातीनसंन्यासोंविषे किसीएकसंन्यासकूंग्रहणकरै ॥ परंतु सोतीनएषणावान्रागीपुरुष तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेका मनविषेसंकल्पभीनहींकरै ॥ काहेतैं ? जिसअधिकारीपुरुषकूं इसलोककेविषयसुखोंविषे तथापरलोककेविषयसुखोंविषे इच्छानहींहोवैहै ॥ सोपुरुषही तापरमहंससंन्यासकाअधिकारीहोवैहै ॥ विषयसुखकीइच्छावान्पुरुष तापरमहंससंन्यासका अधिकारीहोवैनहीं ॥ और हेशिष्य ! जोअधिकारीपुरुष मोक्षकीइच्छावालाहै ॥ तथा तीनएषणावोंतैंरहितहै ॥ सोवैराग्यवान्पुरुषतौ ब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतरही तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरै ॥ अथवा गृहस्थआश्रमतैंअनंतर तापरमहंस

संन्यासकूंग्रहणकरै ॥ अथवा वानप्रस्थआश्रमतैंअनंतर तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरै ॥ ताकेविषेकोईनियमहैनहीं ॥ परंतु तावै राग्यवान्पुरुषनैंभी ब्रह्मचर्यआश्रमतैंपूर्व तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरणानहीं ॥ हेशिष्य! जिसअधिकारीपुरुषकूं तीव्रवैराग्यकी प्राप्तिभईहै ॥ सोअधिकारीपुरुष आपणेवर्णआश्रमकेधर्मोंकारिकैयुक्तहोवै ॥ तथा नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकैसंपन्नहोवै ॥ अथवा सो अधिकारीपुरुष आपणेवर्णआश्रमकेधर्मोंतैंरहितहोवै तथानेत्रादिकइंद्रियोंतैंरहितहोवै ॥ सर्वप्रकारसें सोतीव्रवैराग्यवान्पुरुषही यापरमहंससंन्यासका अधिकारीहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकारिकैनिरूपणकरै है ॥ हेशिष्य! वेदविद्याकीप्राप्तिकरणेहारेजे ब्रह्म चारीके गुरुकुलवासादिकधर्म हैं ॥ तिनधर्मोंवालेपुरुषकानाम व्रतीहै ॥ और तिनधर्मोंतैंरहितपुरुषकानाम अव्रतीहै ॥ और जोपु रुष गुरुकेसमीपनिवासकरिकै समग्रएकवेदकूं अथवा दोवेदोंकूं अथवा चारिवेदोंकूं अध्ययनकरिकै ताब्रह्मचर्यआश्रमकी स माप्तिकरै है ॥ तापुरुषकानाम स्नातकहै ॥ और जोपुरुष ताएकवेदकेभी किसीएकअंशका अध्ययनकरै है ॥ तापुरुषकानाम अस्नात कहै ॥ और जिसपुरुषनैं पूर्व श्रौतअग्निका अथवा स्मार्तअग्निका ग्रहणकऱ्याहोवै ॥ परंतु किसीस्त्रीमरणादिकनिमित्तकरिकै सो अग्नि जिसका नष्टहुआहोवै ॥ तापुरुषकानाम उत्सन्नअग्निकहै ॥ और जिसपुरुषनैं तास्त्रीमरणादिकनिमित्तकरिकै ताश्रौतस्मार्त अग्निका ग्रहणही नहींकऱ्याहोवै ॥ तापुरुषकानाम अनग्निक है ॥ अथवा जोपुरुष तिनश्रौतस्मार्तअग्नियोंका अंगीकारही नहींकरै है ॥ तापुरुषकानाम उत्सन्नअग्निकहै ॥ और तिनश्रौतस्मार्तअग्नियोंके ग्रहणकरणेविषेउपयोगी जेधनादिकपदार्थ हैं ॥ ति नधनादिकोंकूंही जोपुरुष ग्रहणनहींकरैहै ॥ तापुरुषकानाम अनग्निक है ॥ हेशिष्य! व्रती १ अव्रती २ स्नातक ३ अस्नातक ४ उत्सन्नाग्निक ५ अनग्निक ६ इनषट्प्रकारकेपुरुषोंविषे जिसपुरुषकूं जिसकालविषे ता तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ सोपुरुष ति सीकालविषे तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरै ॥ और कुटीचक बहूदक हंस यातीनप्रकारकेसंन्यासियोंकूंभी जोकदाचित् ता तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ तौ तेकुटीचकबहूदकहंससंन्यासीभी तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरैं ॥ परंतु वैराग्यतैंविना किसीभी अधिकारीपुरुषनैं तापरमहंससंन्यासका ग्रहणकरणानहीं ॥ इतनेकरिकै तापरमहंससंन्यासके अधिकारीकानिरूपणकऱ्या ॥ अब

धर्मशास्त्रोंकेअनुसार तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेकीरीतिका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! जैसे विवाहादिकशुभकार्योंविषे नानाप्रकारकेमंगलहोवैहैं ॥ तैसे तासंन्यासग्रहणतैंपूर्वदिनविषे नानाप्रकारकेमंगलोंकरिकैयुक्तहुआ सोअधिकारीपुरुष प्रथम नांदीमुखश्राद्धकूंकरै ॥ और तानांदीमुखश्राद्धविषे सोसंन्यासकर्त्तापुरुष प्रथम वसु सत्य यानामवालेविश्वेदेवतावोंकापूजनकरै ॥ और तानांदीमुखश्राद्धकेअंतर देवश्राद्ध १ ऋषिश्राद्ध २ दिव्यश्राद्ध ३ मानुष्यश्राद्ध ४ भूतश्राद्ध ५ पितृश्राद्ध ६ मातृश्राद्ध ७ आत्मश्राद्ध ८ यहअष्टश्राद्धहोवैहैं॥और याअष्टश्राद्धोंकेआदिविषे नवमा वैश्वदेवश्राद्धहोवैहै ॥ येनवश्राद्ध तानांदीमुखश्राद्धकेअंतरहोवैहैं ॥ तिननवश्राद्धोंकूंकरै ॥ हेशिष्य ! कोईक शौनकादिकऋषितौ मातृश्राद्धतैं मातामहश्राद्धकूंभिन्नमानिकै तादृशमेमातामहश्राद्धकाभी विधानकरैहैं ॥ और कोईक आपस्तंबादिकऋषितौ तामातृश्राद्धतैं तामातामहश्राद्धका अभेदमानिकै तामातामहश्राद्धका भिन्नविधानकरैनहीं ॥ यातैं तिनशौनकादिकऋषियोंकेमतविषेतौ तावैश्वदेवश्राद्धतैंउत्तर नवश्राद्धहोवैहैं॥ और आपस्तंबादिकऋषियोंकेमतविषेतौ तावैश्वदेवश्राद्धतैंउत्तर अष्टश्राद्धहोवैहैं॥हेशिष्य ! मातृश्राद्ध मातामहश्राद्ध यादोनोंश्राद्धोंका परस्परभेद अथवा परस्परअभेद आपणेआपणेकुलकेआचारकरिकैहीजान्याजावैहै ॥ हेशिष्य ! सोमातृश्राद्ध तामातामहश्राद्धतैंभिन्नहैयाभेदपक्षविषेभी अनेकऋषियोंकेमतभेदकरिकै तामातृश्राद्धविषे देवतावोंकाभी भेदकथनकर्‍याहै ॥ तहां कोईकऋषितौ तामातृश्राद्धके माता पितामही प्रपितामही येतीनदेवतामानेहैं ॥ और कोईकऋषितौ तामातृश्राद्धके माता मातामही प्रमातामही यहतीनदेवतामानेहैं ॥ और तामातृश्राद्धतैंभिन्नजोमातामहश्राद्धहै॥ तामातामहश्राद्धविषेतौ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामह येतीनदेवतामानेहैं ॥ इसप्रकार मातृश्राद्ध मातामहश्राद्ध यादोनोंश्राद्धोंकेभेदकूंअंगीकारकरिकै तेशौनकादिकऋषि तिनदोनोंश्राद्धोंकेदेवतावोंकाभी भेदहीअंगीकारकरैहैं ॥ और हेशिष्य ! जिनआपस्तंबादिकऋषियोंकेमतविषे मातृश्राद्ध मातामहश्राद्ध यादोनोंश्राद्धोंका अभेदहीकथनकर्‍याहै ॥ तिनऋषियोंकेमतविषेभी आपणेआपणे कुलआचारकेभेदकरिकै तामातृश्राद्धकेदेवतावोंका भेदहीकथनकर्‍याहै ॥ तहां कोईकऋषितौ तामातृश्राद्धके माता पितामही प्रपितामही येतीनदेवतामानेहैं ॥ और कोईकऋषि

तौ तामातृश्राद्धके माता मातामही प्रमातामही येतीनदेवतामानेहैं ॥ हे शिष्य ! इसप्रकार भिन्नभिन्नशास्त्रोंविषे तिनऋषियोंनें तामातृश्राद्धकेदेवतावोंका भेदकथनकऱ्याहै ॥ परंतु तिनदेवतावोंकेपूजनकरणेविषे आपणेआपणेकुलकाआचारहीप्रमाणहै ॥ और जिसपुरुषकूंआपणेकुलकाआचार विस्मरणहोइगयाहोवै ॥ तिसपुरुषनैंतौ तामातृश्राद्धविषे माता पितामही प्रपितामही यातीन देवतावोंकाहीपूजनकरणा॥ काहेतें ? यालोकविषे बहुतविद्वानूपुरुषतौ तामातृश्राद्धविषे माता पितामही प्रपितामही यातीनदेवतावोंकाहीपूजनकरैहैं ॥ यातें तिनबहुतोंकेआचारकूंहीअंगीकारकरणा ॥ इहांप्रसंगविषे पिताकेपिताकानाम पितामहहै ॥ और तापितामहकेपिताकानाम प्रपितामहहै ॥ और ताप्रपितामहकेपिताकानाम वृद्धप्रपितामहहै ॥ और पिताकेमाताकानाम पितामहीहै ॥ और पितामहकीमाताकानाम प्रपितामहीहै ॥ और ताप्रपितामहकीमाताकानाम वृद्धप्रपितामहीहै ॥ और माताकेपिताका नाम मातामहहै ॥ और तामातामहकेपिताकानाम प्रमातामहहै ॥ और ताप्रमातामहकेपिताकानाम वृद्धप्रमातामहहै ॥ और माताकेमाताकानाम मातामहीहै ॥ और तामातामहीकेपतिकीमाताकानाम प्रमातामहीहै ॥ और ताप्रमातामहीकेपतिकीमाताका नाम वृद्धप्रमातामहीहै ॥ ऐसेआगेभीजाणिलेणा ॥ इतनेकरिकै मातृश्राद्ध मातामहश्राद्ध यादोनोंश्राद्धोंके भेदका तथाअभेदका विचारकऱ्या ॥ अब पूर्वउक्तअष्टश्राद्धोंके देवतावोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! ब्रह्मा विष्णु महेश्वर येतीनों देवश्राद्धकेदेवताहैं ॥ १ ॥ और देवऋषि राजऋषि मनुष्यऋषि येतीनों ऋषिश्राद्धकेदेवताहैं ॥ २ ॥ और वसु रुद्र आदित्य येतीनों दिव्यश्राद्धकेदेवताहैं ॥ ३ ॥ और सनक सनंदन सनत्कुमार येतीनों मनुष्यश्राद्धकेदेवताहैं ॥४॥ और पृथिवीआदिकपंचभूत नेत्रादिक दशइंद्रिय जरायुजादिकचारियोनियां येतीनों भूतश्राद्धकेदेवताहैं ॥ ५॥ और पिता पितामह प्रपितामह येतीनों पितृश्राद्धकेदेवताहैं ॥ ६ ॥ और माता पितामही प्रपितामही येतीनों मातृश्राद्धकेदेवताहैं ॥ ७ ॥ और जिनपुरुषोंकेकुलआचारविषे तामातृश्राद्धतैंभिन्नही मातामहश्राद्धहोवै ॥ तिनपुरुषोंनैंभी तामातामहश्राद्धकूं तामातृश्राद्धतैंपश्चात्‌हीकरणा ॥ तामातृश्राद्धतें पूर्वनहींकरणा ॥ मातामहश्राद्धके मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामह येतीनदेवता पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ और तामातृश्राद्धतें

अनंतर अथवा मातामहश्राद्धतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणाश्राद्धकरै ॥ याकानाम आत्मश्राद्धहै ॥ ताआत्मश्राद्धके सो संन्यासकर्त्तापुरुष पिता पितामह यैतीनदेवताहैं ॥ ८ ॥ इसप्रकार सोसंन्यासकर्त्तापुरुष तानांदीमुखश्राद्धविषे प्रथम वैश्वदेवश्राद्धकूंकरिकै तिसतैंअनंतर आपणेकुलआचारकेअनुसार अष्टश्राद्धोंकूं अथवा नवश्राद्धोंकूं श्रद्धापूर्वककरै ॥ हेशिष्य! प्रथमवैश्वदेवश्राद्धकूंछोडिकै दैवश्राद्धतैंआदिलैके आत्मश्राद्धपर्यंत जेअष्टश्राद्धहैं अथवा नवश्राद्धहैं ॥ तिनश्राद्धोंविषे एकएकश्राद्धविषे तीनतीन देवताहोवैंहैं ॥ तिनदेवतावोंविषे एकएकदेवताकेप्रति एकएकपिंड दियाजावैहै ॥ यातैं अष्टश्राद्धपक्षविषेतौ तिनदेवतावोंकीसंख्यापरिमाण तेसंपूर्णपिंड चतुर्विंशति २४ होवैंहैं ॥ और नवश्राद्धपक्षविषेतौ तिनदेवतावोंकीसंख्यापरिमाण तेसंपूर्णपिंड सप्तविंशति २७ होवैंहैं ॥ हेशिष्य! सोसंन्यासकर्त्तापुरुष तिनपिंडोंविषे दधि लाजा अक्षत बदरीफल मधु दूर्वा कुंकम इत्यादिक मंगलपदार्थोंकूंपावै ॥ तथा तिनपिंडोंकेमध्यविषे मधुशर्करादिक बहुतपावै ॥ और तानांदीमुखश्राद्धविषे करणेयोग्यजे वैश्वदेवादिकश्राद्धहैं ॥ तिनश्राद्धोंविषे एकएकश्राद्धविषे दोदोब्राह्मणोंकूंभोजनकरावै ॥ यातैं सोसंन्यासकर्त्तापुरुष नवश्राद्धपक्षविषेतौ अष्टादश १८ ब्राह्मणोंकूंभोजनकरावै ॥ और दशश्राद्धपक्षविषेतौ विंशति २० ब्राह्मणोंकूंभोजनकरावै ॥ तिनब्राह्मणोंतैं न्यूनअधिकब्राह्मणोंकूंभोजननहींकरावणा ॥ और सोसंन्यासकर्त्तापुरुष जोकदाचित् धनवान्होवै ॥ तौ तिनब्राह्मणोंकेप्रति दुकूल कंकणादिकभूषण छत्र उपानह इत्यादिकपदार्थ दक्षिणादेवै ॥ और सोसंन्यासकर्त्तापुरुष जोकदाचित् अत्यंतधनवान्होवै ॥ तौ तिनब्राह्मणोंकेप्रति भूमिदानदेवै ॥ तथा गृहोंविषेअन्नवस्त्रादिकपदार्थराखिकै तेगृह दानदेवै ॥ जादानकरिकैतिनब्राह्मणोंकीदरिद्रता निवृत्तहोइजावै ॥ और सोसंन्यासकर्त्तापुरुष जोकदाचित् निर्धनहोवै ॥ तौ यथाशक्तिपरिमाण तिनब्राह्मणोंकेताईं दक्षिणादेवै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार तापिंडदानतैंअनंतर तिनब्राह्मणोंकूंभोजनकराइकै तथा यथाशक्तिपरिमाण तिनब्राह्मणोंकेताईं दक्षिणादेकरिकै सोसंन्यासकर्त्तापुरुष तिनब्राह्मणोंकेउच्छिष्टअन्नकूंछोडिकै आपणेयथाशक्तिपरिमाण दूसरेदीनअनाथोंकेताईं नानाप्रकारकेअन्नकादानकरै ॥ तथा तिनदीनअनाथोंकेप्रति वस्त्रधनादिकपदार्थोंकादानकरै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सोसंन्या

सकर्त्तापुरुष आपणेऋषिप्रणीतसूत्रोंकेअनुसार पितृश्राद्धकीन्यांई तानांदीमुखश्राद्धकूंकरै और तिसनांदीमुखश्राद्धकेदिनविषे पूर्व उक्तदानादिकोंकूंकरिकै प्रसन्नताकूंप्राप्तहुआ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणेबांधवोंकेसाथ तथास्त्रीपुत्रादिकोंकेसाथ यथायोग्यसंभाषणकरै॥और कलदिनकेहोमवासते यत्किंचितद्रव्यकूंभिन्नराखिकै तथाकंथाकौपीनादिकवस्त्रोंकूंभिन्नराखिकै दूसरेसंपूर्णधनादिकपदार्थ आपणेपुत्रोंकेतांई विभागकरिकैदेवै॥याप्रकारकेसर्वकार्यकूंकरिकै सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणेबांधवोंकेसाथ एकपंक्तिविषेबैठिकै पुण्याहं याप्रकारकावचनउच्चारणकरिकै भोजनकूंकरै॥परंतु तिसदिनविषे तासंन्यासकर्त्तापुरुषकेचित्तविषे जोकोईविक्षेपनहीं होवै तौभोजनकरै ॥ और तिसदिनविषे जोकदाचित् तासंन्यासकर्त्तापुरुषकूं चित्तकीविक्षेपताकरिकै अन्नविषेरुचिनहींहोवे ॥ तौ सोसंन्यासकर्तापुरुष ताश्राद्धकेशेषअन्नका घ्राणसैं गंधग्रहणकरिकै तिसदिनविषे उपवासकूंहीकरै॥ और सोसंन्यासकर्त्तापुरुष जोतिसदिनविषैभोजनकरै॥तौ दूसरेदिनविषे उपवासकरै॥हेशिष्य! जिसदिनविषे पिंडदानकरणा तिसदिनविषे उपासनहींकरणा॥किंतु दूसरेदिनविषे उपवासकरणा ॥ यहपक्ष बहुतशास्त्रोंविषेकथनकऱ्याहै ॥ यातैं यहपक्षमुख्यहै ॥ और जिसदिनविषे पिंडदानकरणा॥ तिसीदिनविषेउपवासकरणा ॥ यहपक्ष किसीशास्त्रविषेकथनकऱ्याहै ॥ यातैं यहपक्ष गौणहै ॥ हेशिष्य ! 'तामुख्यपक्षकूंअंगीकार करिकै सोसंन्यासकर्त्तापुरुष तापिंडदानतैंदूसरेदिनविषे उपवासकरै ॥ और ताउपवासकेदिनविषे सोसंन्यासकर्तापुरुष आपणे कक्षोंकेबाल तथाउपस्थकेबाल तथाशिखाकेबाल यातीनोंबालोंकूंछोडिकरिकै दूसरेसर्वशरीरकेकेशलोमोंका मुंडनकरावै ॥ और तामुंडनतैंअनंतर स्नानकरिकै दूसरेशुद्धवस्त्रकूंधारणकरै ॥ और होमवासतै स्थापनकऱ्याजोद्रव्यहै ॥ ताद्रव्यकूंछोडिकै आपणेगृहविषेस्थितजे शालग्राम तथाकंबलादिकवस्त्र तथापुस्तक तथामृगचर्म इत्यादिकपदार्थहैं ॥ जेपदार्थ संन्यासियोंकूंभी ग्रहणकरणेविषे निषिद्धनहींहोवैं ॥ ऐसे शालग्रामादिकपदार्थोंकूंग्रहणकरिकै सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणेब्रह्मवेत्तागुरुकेआगे अर्पणकरै ॥ यद्यपि तेशालग्रामादिकपदार्थ तासंन्यासकर्त्तापुरुषकूंभी अपेक्षितहैं ॥ तथापि सोब्रह्मवेत्तागुरु जोकदाचित् तिनपदार्थोंकूंअंगीकारकरै ॥ तौ तेसंपूर्णपदार्थ तागुरुकेही अर्पणकरै ॥ हेशिष्य ! जोसंन्यासी आत्माकेउपदेशकरणेविषे अत्यंतकुशलहोवै ॥

तथा ब्रह्मनिष्ठहोवै ॥ तथा शमदमादिकसर्वगुणोंकरिकैयुक्तहोवै ॥ ऐसेश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठसंन्यासीकूं सोसंन्यासकर्त्तापुरुष बहुतकालसैंपरीक्षाकरिकै गुरुधारणकरै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणेगुरुकेप्रति शालग्रामपुस्तकादिकपदार्थ अर्पणकरिकै तथाआपणेशीतादिकोंकीनिवृत्तिवासते कौपीनकंथादिकवस्त्रोंकूं पृथक्राखिकै ताकौपीनादिकवस्त्रोंकूं तथावेणुकेदंडकूं ताअग्निकुंडकेसमीप स्थापनकरै ॥ कैसाहोवै सोवेणुकादंड ? जलकरिकैशुद्धकन्याहोवै ॥ तथा छिद्रतैंरहितहोवै ॥ तथा देखणेविषे सुंदरहोवै ॥ तथा तासंन्यासकर्तापुरुषकेशरीरपरिमाण ऊंचाहोवै ॥ हेशिष्य! सोसंन्यासकर्त्तापुरुष जिसदिनविषेहोमकरै ॥ तादिनकीरात्रिविषे जागरणकूंकरै ॥ तहां ताहोमकरणेवासते तथारात्रिकेजागरणकरणेवासते याप्रकारकादेश चाहिये ॥ कैतौ महाननदीकातीरहोवै ॥ अथवा विष्णुआदिकदेवतावोंकामंदिरहोवै ॥ अथवा वनहोवै ॥ अथवा गौशालाहोवै ॥ अथवा मनुष्योंतैंरहित कोईएकांतगृहहोवै ॥ यास्थानोंविषे किसीएकस्थानविषे सोसंन्यासकर्त्तापुरुष होमकरै ॥ तथा रात्रिविषेजागरणकरै ॥ हेशिष्य! ऐसेपवित्रएकांतदेशविषेजाइकै सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणेआसनऊपरिस्थितहोवै ॥ और आपणेदोनोंहस्तोंकूंजोडिकै तथामनसहितइंद्रियोंकूंनिरोधकरिकै सोसंन्यासकर्त्तापुरुष प्रथम ब्रह्म इंद्र सोम सूर्य आत्मा अंतरात्मा परमात्मा विज्ञानात्मा याअष्टरूपवालेपरमेश्वरका स्मरणकरै॥ तथाप्रणवपूर्व ब्रह्मणेनमः इंद्रायनमः सोमायनमः सूर्यायनमः आत्मनेनमः अंतरात्मनेनमः परमात्मनेनमः विज्ञानात्मनेनमः याअष्टमंत्रोंका मानसजपकरै ॥ तामानसजपकास्वरूप व्यासभगवान्नैं याप्रकारकह्या ॥ हैं तहांश्लोक ॥ धियायदक्षरश्रेणिं वर्णस्वरविभूषितां ॥ उच्चरेदर्थसंस्मृत्या सउक्तोमानसोजपः॥अर्थयह ककारादिकवर्णोंकरिकै तथाउदात्तादिकस्वरोंकरिकैयुक्तजोअक्षरोंकीपंक्तिहै॥ताअक्षरोंकीपंक्तिकूं यहजपकर्त्तापुरुष अर्थकीस्मृतिपूर्वक बुद्धिकरिकैहीउच्चारण करै॥ याकानाम मानसजपहै ॥ १ ॥ हेशिष्य! तामानसजपतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष एकमुष्टिपरिमाणसक्तुवोंकाभक्षणकरिकै तीनवार आचमनकरै ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणेहस्तकूंनाभिदेशविषेराखिकै प्रणवपूर्वक आत्मनेस्वाहा अंतरात्मनेस्वाहा प्रजापतयेस्वाहा यातीनमंत्रोंकाउच्चारणकरै ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष पय दधि घृत यातीनपदा

थोंविषे एकएकपदार्थकूं तीनतीनवार भक्षणकरै।और पूर्वसक्तुवोंकेभक्षणविषे तथा पय दधि घृत यातीनोंकेभक्षणविषे तासंन्यासकर्त्तापुरुषनें प्रणवमंत्रकाहीउच्चारणकरणा ॥ और तिसतैंअनंतर आचमनकरिकै सोसंन्यासकर्त्तापुरुष पूर्वदिशाकीतरफमुखकरिकै यथाशक्तिपरिमाण प्रणवमंत्रका तथागायत्रीमंत्रका जपकरै ॥ तथा उपवासकरणेकासंकल्पकरै ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष सर्ववेदोंकाआदिरूपजोप्रणवमंत्रहै ताकाउच्चारणकरै ॥ अथवा ऋग् यजुष् साम यातीनवेदोंकेआदिविषेस्थितजे यथाक्रमतैं अग्निमीळइति इषेत्वेति अग्नआयाहीति येतीनमंत्रहैं तिनमंत्रोंका प्रणवपूर्वक उच्चारणकरै ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष सावित्रीप्रवेशकेमंत्रकाउच्चारणकरै ॥ तहां प्रणवमंत्रपूर्वकजो भूः भुवः स्वः येतीनव्याहृतियांहैं ॥ तातीनव्याहृतियोंविषे एकएकव्याहृतिकेउच्चारणपूर्वक ॥ सावित्रींप्रविशामि ॥ यावचनकूं दोदोवार उच्चारणकरै ॥ यारीतिसैं तासावित्रीप्रवेशके षट्मंत्रसिद्धहोवैहैं ॥ तिनषट्मंत्रोंविषे यथाक्रमतैं त्रिपदागायत्रीमंत्रकेपादोंका उच्चारणकरणा ॥ तहां प्रथममंत्रविषेतौ तागायत्रीमंत्रकेप्रथमपादका उच्चारणकरणा ॥ और दूसरेमंत्रविषे तागायत्रीमंत्रकेदूसरेपादकाउच्चारणकरणा ॥ और तीसरेमंत्रविषे तागायत्रीमंत्रकेतीसरेपादका उच्चारणकरणा ॥ और चतुर्थमंत्रविषे तागायत्रीमंत्रकेआदिकेदोपादोंका उच्चारणकरणा ॥ और पंचममंत्रविषे तागायत्रीमंत्रकेतीसरेपादका उच्चारणकरणा ॥ और षष्ठेमंत्रविषे तासमग्रगायत्रीमंत्रका उच्चारणकरणा ॥ तिनषट्मंत्रोंकेउच्चारणकाक्रमयहहै ॥ प्रथम प्रणवमंत्रकाउच्चारणकरणा तिसतैंउत्तर व्याहृतिकाउच्चारणकरणा तिसतैंउत्तर सावित्रीप्रवेशवाक्यकाउच्चारणकरणा ॥ तिसतैंउत्तर गायत्रीकेपादकाउच्चारणकरणा ॥ यहसंपूर्णमिलिके एकमंत्रहोवैहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सावित्रीप्रवेशकेषट्मंत्रोंकूंउच्चारणकरिकै तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ब्रह्मान्वाधाननामाकर्मकूंकरै ॥ ताकर्मकी यहरीतिहै ॥ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष सूर्यकेअस्तहुएतैंपूर्व आपणेऋषिप्रणीतसूत्रोंकेअनुसार होमकरणेवासते श्रौतअग्निकूं अथवा स्मार्तअग्निकूं अथवा किसीपवित्रस्थानविषेस्थित लौकिकअग्निकूं लेआइकै कुंडविषे अथवा भूमिविषे स्थापनकरै ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणेऋषिप्रणीतसूत्रोंकेअनुसार सायंकालविषे ताअग्निविषे अग्निहोत्रनामाहोमकूंकरै ॥ तहां आ

न्यभागपर्यंत सर्वअंगोंकूं विधिपूर्वककरिकै तिसतैंअनंतर प्रणवपूर्वक स्वाहामंत्रकरिकै तिसअग्निविषे आज्याहुतिकूंपावै ॥ और तिसीमंत्रकरिकै ताअग्निविषे पूर्णाहुतिकूंपावै ॥ याप्रकारकेकर्मकूं शास्त्रविषे ब्रह्मान्वाधान यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ हेशिष्य ! इ सप्रकार सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ताब्रह्मान्वाधानकर्मकूंकरिकै तिसतैंअनंतर सायंसंध्याकीउपासनाकरै ॥ तिसतैंअनंतर ताअग्निकेउत्त रदिशाविषे दर्भोंकूंबिछाइकै तिसऊपरिबैठै ॥ और गायत्रीमंत्रनैं कथनकऱ्याजोब्रह्महै ॥ ताब्रह्मकूंमनविषेस्मरणकर्त्ताहुआ सोसं न्यासकर्त्तापुरुष तारात्रिविषे जागरणकरै ॥ हेशिष्य ! सोसंन्यासकर्त्तापुरुष तारात्रिविषे इष्टिकूंभीकरै ॥ तहां सोसंन्यासकर्त्तापुरु ष जोकदाचित् गार्हपत्यादिकश्रौतअग्नियोंवालाहोवै तौ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष तिनश्रौतअग्नियोंकरिकै प्रथम अग्निदेवतासंबंधी वैश्वानरीनामाइष्टिकूंकरै ॥ तिसतैंअनंतर राजाधिराजस्वराट् इत्यादिकगुणविशिष्टजोदेवताविशेषहै ॥ तादेवतासंबंधी त्रैधातवी नामाइष्टिकूंकरै ॥ और सोसंन्यासकर्त्तापुरुष जोकदाचित् औपासननामास्मार्त्तअग्निवालाहोवै तौ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष तास्मा र्त्तअग्निकरिकै प्राजापत्यनामाइष्टिकूंकरै ॥ और जिसपुरुषका पूर्वगृहस्थआश्रम नष्टहोइगयाहै ॥ और उत्तरआश्रम जिसपुरुषनैं ग्रहणकऱ्यानहीं तापुरुषकानाम विधुरहै ॥ सोविधुरपुरुषभीविधुरअग्निकरिकै ताप्राजापत्यइष्टिकूंहीकरै ॥ पृष्ठोदिवी इत्यादिकमं त्रकरिकै उत्पन्नकऱ्याजोअग्निहै ॥ ताकानाम विधुरअग्निहै ॥ और सोसंन्यासकर्त्तापुरुष जोब्रह्मचारीहोवै अथवा वानप्रस्थहोवै॥ तौ सोब्रह्मचारी तथावानप्रस्थ किसीपवित्रस्थानतैंअग्निकूंलेआइकै तालौकिकअग्निकरिकै ताप्राजापत्यइष्टिकूंकरै ॥ हेशिष्य ! कोईकऋषितौ याप्रकारकहेहैं ॥ आहिताऽग्निपुरुषोंकूं तथाअनाहिताऽग्निपुरुषोंकूं तथाअनग्निपुरुषोंकूं साप्राजापत्यनामाइष्टिही करणेयोग्यहै ॥ इहां श्रौतअग्निवालेपुरुषकानाम आहिताग्निहै ॥ और स्मार्त्तअग्निवालेपुरुषकानाम अनाहिताग्निहै ॥ और श्रौ तस्मार्त्तअग्नितैंरहितविधुरादिकोंकानाम अनग्निहै ॥ और कोईकऋषितौ तीनोंकेप्रति प्राजापत्यइष्टिकाविधानकरैनहीं ॥ किंतु पूर्वकहीरीतिसैं आहितअग्निपुरुषकेप्रतितौ वैश्वानरीइष्टिका तथात्रैधातवीइष्टिका विधानकरैहैं ॥ और अनाहिताग्निपुरुषोंकेप्र ति तथाअनग्निपुरुषोंकेप्रति प्राजापत्यइष्टिकाविधानकरैहैं ॥ हेशिष्य ! किसअधिकारीपुरुषनैं कौनइष्टिकरणी यहसंपूर्णव्यव

स्था हम आगेस्पष्टकरिकैकहैंगे ॥ यातें अबी हम ताव्यवस्थाकूंकथनकरतेनहीं ॥ किंतु अबी तासंन्यासकर्त्तापुरुषकूं तिसरेदिन
विषे जोकार्य करणेयोग्यहै ॥ तिसकूं तू श्रवणकर ॥ हेशिष्य ! सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ब्राह्ममुहूर्त्तविषे तादर्भकेआसनतेंउठिकै ज
लकरिकै अथवा शन्नआप इत्यादिकमंत्रोंकरिकै अथवा भस्मकरिकै यथाशक्तिपरिमाण स्नानकरै ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासक
र्त्तापुरुष ताआपणेअग्निविषे चरुकूंपकावै ॥ तापक्कचरुकूं ताअग्नितैंउतारिकै तिसअग्निकेपूर्वदिशाविषे अथवा उत्तरदिशाविषे
स्थापनकरै ॥ तिसतैंअनंतर तापक्कओदनरूपचरुकूं घृतयुक्तकरिकै पश्चात् प्रणवपूर्वक भूरादिकतीनव्याहृतियोंकूंपठनकरै ॥
तथा सहस्रशीर्षा इत्यादिकषोडशऋचारूप पुरुषसूक्तकूंपठनकरै ॥ तथा प्रणवपूर्वक इंद्रायस्वाहा प्रजापतयेस्वाहाविश्वेभ्योदेवे
भ्यःस्वाहा ब्रह्मणेस्वाहा याचारिमंत्रोंकाजपकरै ॥ तिसतैंअनंतर पुण्याहं याप्रकारकावचन उच्चारणकरै ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यास
कर्त्तापुरुष शुचिनामापात्रविषे संस्कृतघृतकूंग्रहणकरिकै प्रणवपूर्वक अग्नयेस्वाहा यामंत्रकरिकै अग्निमुखनामाआहुतिकूं ताअग्नि
विषेपावै ॥ और भोजनकेआदिकालविषे करणेयोग्यजो प्राणअग्निहोत्रहै ॥ ताप्राणअग्निहोत्रविषे जैसें प्रणवपूर्वक प्राणायस्वा
हा अपानायस्वाहा व्यानायस्वाहा उदानायस्वाहा समानायस्वाहा यापंचमंत्रोंकरिकै पंचग्रासरूप पंचआहुति पाइजावे है ॥
तैसे तिनपंचमंत्रोंकरिकै ताअग्निविषे आहुतिकूंपावै ॥ तथा आपणेवेदकीशाखाविषे पठनकऱ्याजो सहस्रशीर्षापुरुष इत्यादिकपुरु
षसूक्तहै ॥ तापुरुषसूक्तकेएकएकऋचाकापाठकरिकै ताअग्निविषे आहुतिकूंपावै ॥ हेशिष्य ! ताअग्निविषे आहुतिपावणेका यहक्र
महै ॥ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष प्रथम ताअग्निविषे काष्ठरूपसमिधकूंपावै ॥ तिसतैंअनंतर घृतकूंपावै ॥ तिसतैंअनंतर ओदनरूपचरु
कूंपावै ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ताअग्निविषे प्रणवपूर्वक स्विष्टकृतेऽग्नयेस्वाहा यामंत्रकरिकै घृतकीआहुतिकूंपावै ॥
तथा आपणेवेदकीशाखाकेअनुसार तापुरुषसूक्तकाजपकरै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार होमकूंकरिकै सोसंन्यासकर्तापुरुष ताहोमतैं
अनंतर पुनःदूसरेविरजाहोमकूंकरै ॥ तहां तिसीअग्निविषे पूर्वकीन्यांई दूसराचरुपकाइकै ताचरुकूंघृतयुक्तकरिकै पूर्णआहुतिपर्यं
त ताविरजाहोमकूंकरै ॥ हेशिष्य ! ताविरजाहोमका यहक्रम शास्त्रविषेकथनकऱ्याहै ॥ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष शास्त्रउक्तमंत्रोंकरिकै

ताअग्निविषे घृतयुक्तचरुकरिकै विरजाहोमकूंकरै ॥ तिसतैंअनंतर ताहोमतैंबाकीरहेहुए घृतयुक्तचरुकूं भक्षणकरै ॥ तिसतैंअनंतर आचमनकरिकै प्रणवपूर्वक स्वाहामंत्रकरिकै ताअग्निविषे पूर्णआहुतिकूंकरै ॥ अब पूर्वकथनकरीहुईइष्टिकेनिर्णयकरणेवासते प्रथम ताकेविषे तीनमतोंकानिरूपणकरैंहैं ॥ हेशिष्य! कोईऋषितौ याप्रकार कथनकरैंहैं ॥ वैश्वानरीइष्टितैंआदिलैके जितने इष्टियां हैं ॥ तेसंपूर्णइष्टियां श्रौतअग्निवालेपुरुषनैंही करणी ॥ स्मार्त्तअग्निवालेपुरुषनैं तथाअग्नितैंरहितपुरुषनैं कोईभीइष्टि करणीनहीं ॥ १ ॥ और हेशिष्य! दूसरेऋषितौ याप्रकार कथनकरैंहैं ॥ एकप्राजापत्यइष्टिकूंछोडिकै दूसरीइष्टियांतौ ताश्रौतअग्निवालेपुरुषनैंहीकरणी ॥ और प्राजापत्यइष्टितौ स्मार्त्तअग्निवालेपुरुषनैंभी करणी ॥ और श्रौतस्मार्तअग्नितैंरहित अनग्निपुरुषनैंतौ कोईभीइष्टि नहींकरणी ॥ २ ॥ और हेशिष्य! तीसरेऋषितौ याप्रकार कथनकरैंहैं ॥ जैसे ॥ निषादस्थपतिंयाजयेत्॥ याश्रुतिवचनकरिकै शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं वर्णसंकरजातिवालेनिषादकूंभी इष्टिकरणेकाअधिकार कल्पनाकऱ्याहै॥ तैसे श्रौतस्मार्त्तअग्नितैंरहित जे विधुर ब्रह्मचारी वानप्रस्थहैं ॥ तिनोंकूंभी ताप्राजापत्यइष्टिकाअधिकार संभवहोइसकैहै ॥ काहेतैं? श्रुतियोंविषे तथास्मृतियोंविषे इष्टिपूर्वकही संन्यासकरणेकाविधानकऱ्याहै ॥ यातैं विधुरादिकोंकूं संन्यासकाअधिकारमानिकै इष्टिकाअधिकारनहींमानणा ॥ यहवार्त्ता संभवतीनहीं तहांश्रुति ब्राह्मीमिष्टिंनिर्वपेत् ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मादेवतावालीइष्टिकूंकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ तहांस्मृति ॥ प्राजापत्यांनिरूप्येष्टिं सर्ववेदसदक्षिणाम् ॥ आत्मन्यग्नीन्समारोप्यब्राह्मणःप्रव्रजेद्गृहात् ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीब्राह्मण सर्वदक्षिणायुक्त प्राजापत्यइष्टिकूंकरिकै तथा आपणेउदरविषे सर्वअग्नियोंकूं समारोपणकरिकै आपणेगृहकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकूं धारणकरै॥ १ ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतियोंविषे इष्टिपूर्वकही संन्यासआश्रमकाविधानकऱ्याहै ॥ यातैं श्रौतस्मार्तअग्नितैंरहित विधुरादिकपुरुषोंनैंभी संन्यासतैंपूर्व लौकिकअग्निविषे ताप्राजापत्यइष्टिकूंअवश्यकरिकैकरणा ॥ ३ ॥ हेशिष्य! इसप्रकार ताइष्टिकेकरणेविषे ऋषियोंके तीनमतहैं ॥ तहां श्रौत अग्निविषेही साप्राजापत्यइष्टिहोवैहै याअभिप्रायकरिकैतौ प्रथममतकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ और स्मार्त्तअग्निविषेभी साप्राजापत्यइष्टिहोवैहै याअभिप्रायकरिकै

दूसरेमतकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ और लौकिकअग्निविषेभी साप्राजापत्यइष्टिहोवैहै याअभिप्रायकरिकै तीसरेमतकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ हे
शिष्य! यातीनोंपक्षोंविषे जोसिद्धांतपक्ष जाबालादिकउपनिषदोंविषे कथनकर्‍याहै ॥ तासिद्धांतपक्षकूं तू श्रवणकर ॥ श्रौतअ
ग्निवाला जोअग्निहोत्रीपुरुषहै ॥ सोअग्निहोत्रीपुरुष जोकदाचित् तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरै तौ वैश्वानरीइष्टिकूं तथात्रै
धातवीइष्टिकूंहीकरै ॥ और सोअग्निहोत्रीपुरुष जोकदाचित् कुटीचक बहूदक हंस यातीनसंन्यासोंविषे किसीएकसंन्यासकूंग्रह
णकरै तौ सोअग्निहोत्रीपुरुषभी ताप्राजापत्यइष्टिकूंहीकरै ॥ और श्रौतअग्नितैंरहितजोपुरुषहै ॥ ताकूं किसीभीइष्टिविषे अ
धिकारहैनहीं ॥ याप्रकारकासिद्धांतपक्ष तिनवेदवेत्ताऋषियोंनैं कथनकर्‍याहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ तापरमहंससंन्यासकेग्र
हणकालविषे अग्निहोत्रीपुरुषनैंतौ वैश्वानरीइष्टिकूं तथात्रैधातवीइष्टिकूं अवश्यकरिकैकरणा ॥ याकेविषे किसीभीऋषिकाविवादहैन
हीं ॥ और प्राजापत्यइष्टिविषे पूर्वउक्तरीतिसैं नानाप्रकारकाविवाद देखणेविषेआवैहै ॥ सो ताविवादकाभी यथायोग्यविकल्पकूं
अंगीकारकरिकै बुद्धिमान्पुरुषोंनैं समाधानकरणा ॥ हेशिष्य! ताइष्टिकूंछोडिकै जेपूर्वअष्टश्राद्धकहेथे ॥ तथा होमकह्याथा ॥ ति
नश्राद्धोंकेकरणेविषे तथाहोमकेकरणेविषे किसीभीशास्त्रकारका विवादहैनहीं ॥ किंतु तासंन्यासग्रहणकालविषे सर्वअधिकारीपु
रुषोंनैं तिनश्राद्धादिककर्मोंकूंकरणा ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सोसंन्यासकर्त्तापुरुष श्रौतअग्निविषे अथवा स्मार्त्तअग्निविषे अथवा
लौकिकअग्निविषे पूर्वउक्तसर्वकर्मोंकूंकरिकै तिसतैंअनंतर उत्तरनारायणीयउपनिषद्केपाठकूंकरताहुआ आपणेगृहतैंनिकसिकै
किसीजलकेस्थानऊपरिजावै ॥ और तिसकालविषे सोसंन्यासकर्त्तापुरुष सर्वऊपरि अनुग्रहरूपअमृतकीदृष्टिकूंकरै ॥ सोअनुग्रह
यहहै ॥ श्राद्धादिककर्मोंकूंकरावणेहारेजे ऋत्विकब्राह्मणहैं ॥ तीनब्राह्मणोंकेतांई गौदानदेवै ॥ तथा सुवर्णदानदेवै ॥ तथा चरुका
शेषअन्नदेवै ॥ तथा होमतैंशेषरह्याहुआघृतदेवै ॥ तथा दूसरेभीअन्नादिकपदार्थ यथाशक्तिपरिमाण दानकरै ॥ तिसतैंअनंतर सो
संन्यासकर्त्तापुरुष तिनऋत्विक्ब्राह्मणोंतैं तथाआपणेबंधुजनोंतैं आपणेअपराधकूंक्षमाकरावै ॥ तिसतैंअनंतर आपणेपुत्रस्त्रीआदिक
बांधवोंकूं आशीर्वादादिकोंतैंप्रसन्नकरिकै बिदाकरै ॥ और जैसे संन्यासग्रहणतैंउत्तरकालविषे तापुरुषनैं निःसंगहोणाहै तैसे पू

वही निःसंगहोवै ॥ और तासंन्यासकर्त्तापुरुषकेआज्ञाकूंपाइकै तेस्त्रीपुत्रादिकबांधवभी तिसकालविषे प्रसन्नमनहुए आपणेआपणे गृहकूंचलेजावैं ॥ अथवा जैसे दूसरेउदासीनपुरुष कौतुकदेखणेवासते तहां स्थितहोवैहैं ॥ तैसे तेस्त्रीपुत्रादिकबांधवभी स्नेहकाप रित्यागकरिकै तहांही स्थितहोवैं ॥ हे शिष्य ! सोसंन्यासकर्त्तापुरुष जैसे प्रातःकालविषे नित्यहीहोमकरैहै ॥ तैसे तापूर्वउक्तहोम देशविषे ताहोमकूंकरिकै ॥ समासिंचंतुमरुतःसमिंद्र ॥ इत्यादिकमंत्रकरिकै ताअग्निकाउपस्थानकरै ॥ तिसतैंअनंतर ॥ यातेअग्ने यज्ञियातनूः ॥ इत्यादिकमंत्रकूं अथवा ॥ अयंतेयोनिर्ऋत्वियो ॥ इत्यादिकमंत्रकूं तीनवारपठनकरिकै ताआपणेश्रौतस्मात्तअग्निकूं ताअग्निकेउष्णतापानपूर्वक आपणेउदरविषे समारोपणकरै ॥ हेशिष्य ! जिससंन्यासकर्त्तापुरुषकूं श्रौत स्मार्त लौकिक यातीनोंअ ग्नियोंविषे कोईभीअग्नि प्राप्तनहींहोवै ॥ सोपुरुष ताअग्निसाध्यहोमादिकसर्वकर्मोंकूं जलविषेहीकरै ॥ तथा भावनामयअग्निकाही आपणेउदरविषे समारोपणकरै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार तिनबाह्यअग्नियोंकूं आपणेउदरविषेसमारोपणकरिकै तहां भावनामयकुं डविषे तिनअग्नियोंकूंस्थापनकरिकै पूर्वउक्तसावित्रीप्रवेशकेमंत्रोंकूं पठनकरै ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ताजलकेसमी पजावै ॥ तहां नाभिपरिमाणजलविषेस्थितहोइकै संध्यागायत्रीकीउपासनाकरै ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष पूर्वदिशा कीतरफमुखकरिकै तथा आपणेदोनोंभुजावोंकूंउच्चाकरिकै ॥ अहंवृक्षस्य ॥ इसवचनतैंआदिलेकै ॥ त्रिशंकोर्वेदानुवचनं ॥ इसवच नपर्यंत संपूर्णवचनोंकूं पठनकरै ॥ तथा ॥ यश्छंदसां ॥ याशांतिमंत्रविषेस्थितजे नववाक्यहैं तिनोंकाजपकरै ॥ तिसतैंअनंतर ॥ पु त्रैषणायावित्तैषणाया ॥ इत्यादिकवचनकापाठकरै ॥ तिसतैंअनंतर प्रणवपूर्वक भूरादिकतीनव्याहृतियोंविषे एकएकव्याहृतिके उच्चारणपूर्वक क्रमतैं मंद मध्यम उत्तम यातीनस्वरोंकरिकै प्रैषमंत्रकाउच्चारणकरै ॥ अब प्रसंगतैं आतुरसंन्यासका निरूपणकरैहैं॥ हेशिष्य ! यह अष्टश्राद्धतैंआदिलेकै जलविषेस्थितिपर्यंत जोसंन्यासकेसाधनोंकानिरूपणकऱ्याहै ॥ सोस्वस्थशरीरवालेपुरुषकेवा सते कथनकऱ्याहै ॥ और जिसअधिकारीपुरुषकाशरीर रोगादिकोंकरिकैव्याकुलहोवै ॥ तिसआतुरपुरुषनैंतो केवल प्रैषमंत्रकाहीउ च्चारणकरणा ॥ ताप्रैषमंत्रकेउच्चारणमात्रकरिकैही ताकासंन्याससिद्धहोवैहै ॥ ताआतुरसंन्यासविषे तिनश्राद्धादिकसाधनोंकेकरणेका

कछुजरूरनहींहै॥ हेशिष्य ! यहअधिकारीपुरुष जोकदाचित् वाणीकरिकैभी ताप्रैषमंत्रकेउच्चारणकरणेविषे समर्थनहींहोवै॥ तौ सोअधिकारीपुरुष तामरणकालविषे मनकरिकैही ताप्रैषमंत्रकाउच्चारणकरै॥तहांश्रुति॥यद्यातुरःस्यान्मनसावाचासंन्यसेत्॥अर्थयह॥ यहअधिकारीपुरुष जबी अत्यंतआतुरहोवै॥तबी मनकरिकै अथवा वाणीकरिकै संन्यासकूंकरै ॥१॥ यातें आतुरपुरुषोंकूं तासंन्यासकेग्रहणविषे तिनश्राद्धादिककर्मोंकेकरणेकाविधानहैनहीं॥ किंतु वाणीकरिकै अथवा मनकरिकै उच्चारणकऱ्याजोप्रैषमंत्रहै॥ताप्रैषमंत्रकरिकैही तिनआतुरपुरुषोंकूं तासंन्यासकीप्राप्तिहोवैहै॥ अब प्रसंगतें तासंन्यासकेफलका निरूपणकरैहैं॥ हेशिष्य ! तासंन्यासआश्रमकूं धारणकरिकै जोअधिकारीपुरुष याशरीरकापरित्यागकरैहै॥ सोअधिकारीपुरुष प्रतिबंधकेअभावहुए शीघ्रही ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहै और किसीप्रतिबंधके विद्यमानहुएतौ कालांतरविषे ताब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य ! यहसंन्यासकाफल कपिलादिऋषियोंनैंभीकथनकऱ्याहै ॥ तहां श्लोक॥संन्यस्तमितियोब्रूयात् प्राणैःकंठगतैरपि॥ससूर्यमंडलंभित्त्वा ब्रह्मलोकेमहीयते॥अर्थयह ॥ मरणकालविषे कंठदेशविषेप्राणोंकेस्थितहुएभी जोअधिकारीपुरुष ताप्रैषमंत्रकाउच्चारणकरिकै संन्यासआश्रमकूंधारणकरैहै॥ सोपुरुष मरणतैंअनंतर सूर्यमंडलकाभेदनकरिकै ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहोवैहै ॥ १ ॥ और महाप्रलयकेप्राप्तहुए.जबी ताब्रह्माकामरणहोवैहै ॥ तबी सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ताब्रह्माकेसाथ निर्गुणब्रह्मरूपमोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ १ ॥ हेशिष्य ! तासंन्यासकाफल दक्षप्रजापतिनैंभी कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक॥ त्रिंशत्परांस्त्रिंशदवरांस्त्रिंशच्चपरतःपरान् सद्यःसंन्यसनादेव नरकात्त्रायतेपितॄन्॥अर्थयह॥ यहसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणेसंन्यासआश्रमकेप्रभावतें पूर्वव्यतीतहुए ९० नबे वंशपर्यंत सर्वपितरोंकूं नरकतैंउधारकरैहै ॥ १॥ हेशिष्य! तासंन्यासकाफल जाबालउपनिषद्विषेभी कथनकऱ्याहै॥तहांश्रुति॥शतंकुलानापुरतोबभूव तथाकुलानांत्रिशतंसमग्रं एतेभवंतिसुकृतस्यलोके येषांकुलेसंन्यसतीहविप्रः॥अर्थयह॥जिसकुलविषे जोब्राह्मण तासंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरैहै॥ ताकुलविषे पूर्वव्यतीतहुए एकशत१०० पुरुष तथाआगेहोणेहारे तीनशत ३००कूं पुरुषस्वर्गादिकउत्तमलोकविषेप्राप्तहोवैहैं॥१॥हेशिष्य! संन्यास यानामविषे दोपदहैं॥ एकतौ 'सं' यहपदहै ॥ और दूसरा 'न्यास' यहपदहै ॥ तहां 'सं' पदकातौ सम्यक्पणाअर्थहै॥और

न्यासपदका त्यागअर्थहै ॥ तहां त्यागरूपन्यासविषे सोसम्यक्‌पणायहहै ॥ सर्वकालविषे तथासर्वदेशविषे सर्वपदार्थोंका शरीर मनवाणीकरिकै त्यागकरणा ॥ याप्रकारका संन्यासशब्दकाअर्थ मुख्यकरिकैतौ परमहंससंन्यासविषेहीघटेहै ॥ दूसरे कुटीचका दिकोंविषे सोसंन्यासशब्दकाअर्थगौणहै ॥ इतनेकरिकै तासंन्यासकाफल निरूपणकऱ्या ॥ अब ताआतुरसंन्यासकेप्रसंगतैंही तापरमहंससंन्यासीकेमरणतैंअनंतर ताकेपुत्रादिकबांधवोंनैं तथादूसरेभक्तजनोंनैं जोकार्यकरणेयोग्यहै ताका निरूपणकरैहैं ॥ हे शिष्य ! याब्राह्मणनैं परमहंससंन्यासकूंग्रहणकऱ्याहै ॥ याप्रकार लोकोंकरिकैजान्याहुआ सोपरमहंससंन्यासी जबी मृत्युकूंप्राप्त होवैहै ॥ तबी ताकेपुत्रादिकबांधवोंतैंआदिलैके नगरकेराजापर्यंत तिनसर्वभक्तजनोंनैं तासंन्यासीकेशरीरके जेजेसंस्कारकरणेयो ग्यहैं ॥ तेसंपूर्णसंस्कार शौनकबौधायनादिकऋषियोंनै धर्मशास्त्रोंविषेकथनकरैहैं ॥ तिनोंकूं तू श्रवणकर ॥ हेशिष्य ! सोपरमहंस संन्यासी जबी मृत्युकूंप्राप्तहोवै ॥ तबी तेअधिकारीजन तासंन्यासीकेशरीरकेलेजाणेवासते किसीसुंदररथकूंत्यागकरै ॥ अथवा कि सीसुंदरविमानकूंत्यारकरैं ॥ अथवा किसीसुंदरपालकीकूंत्यारकरैं ॥ अथवा कोईसुंदरछिका त्यारकरैं ॥ तेरथादिककैसेहोवैं ? विस्ता रवालेहोवैं ॥ तथा अत्यंतकोमलहोवैं ॥ तथा अत्यंतदृढहोवैं ॥ और जैसे महादेवकेभक्तजन तथाविष्णुकेभक्तजन शिवरात्रिविषे तथाकृष्णजन्मअष्टमीविषे नानाप्रकारकेवादित्रबजावैंहैं ॥ तथा नृत्यकरैहैं ॥ तथा जयजयशब्द उच्चारणकरैहैं ॥ तथा वेदोंकेशब्दों काउच्चारणकरैहैं ॥ तैसे तेअधिकारीजनभी नृत्यकरैं ॥ तथा नानाप्रकारकेवादित्रोंकूंबजावैं ॥ तथा वेदकेशब्दोंका उच्चारणकरैं ॥ और जैसे वसंतमासकेहोलिकाविषे येलोक नानाप्रकारकाउत्सवकरैहैं ॥ तैसे तेसर्वअधिकारीजन प्रथम स्नानकूंकरैं ॥ तथा ना नाप्रकारकेदुकूलादिकवस्त्रोंकूंधारणकरैं ॥ तथा आपणेशरीरविषे चंदनकूंलगावैं ॥ तथा आपणेमुखविषे तांबूलकूंपावैं ॥ तथा आपणेगलेविषे सुगंधिवालेपुष्पोंकीमालावोंकूंधारणकरैं ॥ तथा हरिद्राकाचूर्ण दुग्ध फल सुगंधिवालेपुष्प इत्यादिक मंगलिकप दार्थोंकूं आपणेहस्तोंविषेधारणकरैं ॥ और तिनअधिकारीजनोंकेपास जोबहुतधनकीसंपत्तिहोवै तौ जिसमार्गकरिकै तासंन्या सीकेशरीरकूं बाहरिलेजाणाहै ॥ तिसमार्गकूं तथागृहादिकोंकूं सर्वओरतैंमार्जनकरिकै शुद्धकरावैं ॥ तथा चंदनकर्पूरादिकोंकेज

लकरिकै तिनमार्गादिकोंकूंसिंचनकरैं ॥ और जैसे भक्तजन शिवविष्णुकीप्रतिमाकूं पंचामृतकरिकै स्नानकरावैहैं ॥ तैसे तेभक्तज नभी तासंन्यासीकेशरीरकूं पंचामृतकरिकै स्नानकरावैं ॥ तथा श्रीगंगादिकपवित्रजलोंकरिकै स्नानकरावैं ॥ तथा चंदनादिकसु गंधकरिकै तासंन्यासीकेशरीरकालेपकरैं ॥ तथा तासंन्यासीकेशरीरकूं नानाप्रकारकेपुष्पोंकीमालाकरिकै शोभायमानकरैं ॥ तथा ताशरीरकूं चंदन अगरु कर्पूर इत्यादिकसुगंधपदार्थोंका वारंवार धूपदेवैं ॥ तथा कर्पूरयुक्तआर्तिदीपकोंकरिकै वारंवार ताकीआर्ति करैं ॥ हेशिष्य! इसप्रकार तेअधिकारीजन तासंन्यासीकेशरीरकापूजनकरिकै ताविमानादिकोंविषेबैठावैं ॥ और विष्णुआदिकदे वतावोंकीन्यांई तथामहाराजाकीन्यांई तासंन्यासीकेशरीरकूं तिसस्थाननतैंउठाइकै वेदकेशब्दोंकूंउच्चारणकरतेहुए बाहरिलैजावैं ॥ तहां वनविषे मलअस्थिआदिकोंतैंरहित जोकोईपिप्पलकावृक्षहै ॥ अथवा मनुष्योंतैंरहित जोकोईवनस्पतिहै अथवा विष्णुशि वादिकदेवतावोंकाजोस्थानहै ॥ अथवा गौवोंकेरहणेकीजा गौशालाहै ॥ अथवा महानदीकाजोतीरहै ॥ अथवा दूसराभीजोकोई पवित्रस्थानहै ॥ इत्यादिकस्थानोंविषे किसीएकस्थानविषे तासंन्यासीकेशरीरकूंलैजाइकै ताशुभस्थानविषेतेअधिकारीजन कूप कीन्यांई वर्तुलाकार तथापुरुषपरिमाणनीचा एकखातकूंखोदैं ॥ और ताखातकेखोदणेहारेब्राह्मण वारंवारभूरादिकव्याहृतियों कापाठकरैं ॥ और ताखातकूंखोदिकरिकै तेअधिकारीजन भूरादिकसप्तव्याहृतियोंकेपाठकरिकै ताखातकूं जलसेंप्रोक्षणकरैं ॥ ति सतैंअनंतर ताखातकेनीचैभूमिविषे प्रणवमंत्रकरिकै दर्भोंकाआसनबिछावैं ॥ और ताखातकेबाह्यदेशविषे तासंन्यासीकेशरीरकूंस्था पनकरिकै सावित्रीमंत्रकेपाठयुक्तस्नानकराइकै मृत्तिकादिकमलतैंरहितकरैं ॥ तिसतैंअनंतर तेअधिकारीपुरुष तासंन्यासीकेशरीरवि षे विष्णुबुद्धिकरिकै पुरुषसूक्तमंत्रकेपाठपूर्वक स्नानकरावैं॥तथा पूर्वकीन्यांई सुगंधपुष्पोंकीमालावोंकरिकै शोभायमानकरैं॥तिसतैं अनंतर ॥ विष्णोहव्यंरक्षस्व ॥ यामंत्रकाउच्चारणकरिकै तासंन्यासीकेशरीरकूं ताखातविषे पूर्वदिशाकीतरफमुखकरिकै बैठावैं ॥ तिसतैंअनंतर तासंन्यासीकेदंडकूं तीनविभागकरिकै तासंन्यासीकेदक्षिणहस्तविषेदेवैं ॥ हेशिष्य ! जोअधिकारीब्राह्मण आतुरसं न्यासकूंधारणकरिकै तिसीकालविषेमृत्युकूंप्राप्तभयाहै ॥ तिसब्राह्मणकूं यद्यपि पूर्व शास्त्रकीरीतिसें दंडप्राप्तनहींहै ॥ तथापि

मरणतैंअनंतर ताआतुरसंन्यासीकेहस्तविषे कोईविद्वान्पुरुष ॥ इदंविष्णुर्विचक्रमे ॥ यामंत्रकरिकैदंडकूंदेवै ॥ तिसीदंडके तीनविभागकरिकै ताआतुरसंन्यासीकेदक्षिणहस्तविषेदेवै ॥ तिसतैंअनंतर तेअधिकारीजन तासंन्यासीकेहृदयदेशविषे आपणा हस्तराखिकै ॥ हंसःशुचिषत् ॥ इत्यादिकमंत्रका जपकरैं ॥ तथा तासंन्यासीके भ्रूमध्यदेशविषे आपणाहस्तराखिकै पुरुषसूक्त मंत्रोंका जापकरैं ॥ तथा तासंन्यासीके मूर्द्धस्थानविषे आपणाहस्तराखिकै ॥ ब्रह्मजज्ञानं ॥ इत्यादिकमंत्रकाजापकरैं ॥ तिसतैंअनंतर तेअधिकारीजन॥ भूमिर्भूमिमगात् ॥यामंत्रकाउच्चारणकरिकै तासंन्यासीकेमस्तककूं पाषाणसैंभेदनकरैं॥ तिसतैंअनंतर ते अधितारीजन प्रणवमंत्रकूं तथाभूरादिकव्याहृतियोंकूं वारंवार उच्चारणकरतेहुए ताखातकूं पाषाणोंकरिकै तथामृत्तिकाकरिकै दृढ पूरणकरैं ॥ जैसे तासंन्यासीकेशरीरकूं कोईश्वानशृगालादिकजंतु भक्षणनहींकरिजावैं॥तैसे ताखातकूंदृढकरिकैपूरणकरैं ॥ काहेतें? जिसदेशविषे तासंन्यासीकेशरीरकूं श्वानशृगालादिकजंतु भक्षणकरिजावैं हैं ॥ तिसदेशविषे दुर्भिक्षादिकउपद्रव प्राप्तहोवैं हैं॥ याप्रकार बौधायनऋषिनैं कथनकर्‍याहै ॥ यातैं तिनअधिकारीजनोंनैं तासंन्यासीकेशरीरकूं दृढकरिकैपूरणकरणा ॥ हेशिष्य ! तापरमहंससंन्यासीकेमरणतैंअनंतर जेसंस्कार हमनैं तुमारेप्रतिकथनकरेहैं ॥ तेसंपूर्णसंस्कार विधिपूर्वककर्‍येहुए यद्यपि तामुक्तसंन्यासीकूं किसीपुण्यकीप्राप्तिकरैंनहीं ॥ तथा नहींकर्‍येहुए तेसंस्कार तामुक्तसंन्यासीकूं किसीपापकीप्राप्तिकरैंनहीं ॥ तथापि जेअधिकारीपुरुष तासंन्यासीकेमरणतैंअनंतर तिनसंस्कारोंकूं विधिपूर्वककरैं हैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूंतो पुण्यकीप्राप्तिहोवै है ॥ और जे अधिकारीजन तिनसंस्कारोंकूंनहींकरैं हैं॥ तिनपुरुषोंकूं पापकीप्राप्तिहोवै है ॥ हेशिष्य ! तेब्रह्मवेत्तापरमहंससंन्यासी यद्यपि याप्रकारकीइच्छाकरैं हैं॥मरणतैंअनंतर याहमारेशरीरकूंतुमोंनैं छेदनकरिकै श्वानशृगालादिकजंतुवोंकेताई भक्षणकरणेवासतेदेणा ॥ तथापि स्वर्गादिकसुखोंकीइच्छाकरतेहुए तेअधिकारीजन तासंन्यासीकेशरीरकूं श्वानशृगालादिकजंतुवोंकेताई देणेकीइच्छाकरतेनहीं ॥ किंतु तेअधिकारीजन शास्त्रकेविधिपूर्वक ताशरीरकेसंस्कारकरैं हैं॥हेशिष्य ! तासंन्यासीकेशरीरकूं ताभूमिविषे जोदृढकरिकैपूरणाहै॥ सो तिनपूरणकरणेहारे ब्राह्मणादिकचारिवर्णोंकूंहीसुखकाकारणहै ॥ यातैं तिनब्राह्मणादिकअधिकारीजनोंनैं तासंन्यासीकेशरीरकूं

भलीप्रकारसें पूरणकरणा ॥ हेशिष्य! कुटीचक बहूदक हंस यातीनप्रकारकेसंन्यासियोंकूं शिखासूत्र विद्यमानहै ॥ यातें कि तनेकऋषियोंनैंतौ तिनकुटीचकादिकसंन्यासियोंकेमरणतैंअनंतर तिनोंका अग्निविषेदाहकाविधानकऱ्याहै ॥ और कितनेकऋ षियोंनैं तिनकुटीचकादिकोंके पृथिवीविषे पूरणेका विधानकऱ्याहै ॥ यातें मरणतेंअनंतर तिनकुटीचकादिकसंन्यासियोंकूं याअ धिकारीजनोंनैं अग्निविषेदाहकरणा अथवा पृथिवीविषेपूरणा ॥ और तिनसर्वऋषियोंनैं तापरमहंससंन्यासीकेदाहकरणेका सर्वथा निषेधकऱ्याहै ॥ यातें याअधिकारीपुरुषोंनैं तापरमहंससंन्यासीकेशरीरकादाह कदाचित्भीनहींकरणा ॥ यहवार्ता कपिलमुनिनैंभी कथनकरी है॥ तहांश्लोक॥ अनग्नेर्दहनंकार्यं पूर्वभिक्षोर्यथाविधि॥ विदुषस्तुनतत्कार्यमेकोद्दिष्टादिकंहिंचित् ॥ अर्थयह ॥ श्रौत स्मार्त्तअग्नितैंरहित जोकुटीचकादिकतीनसंन्यासीहैं ॥ तिनोंका मरणतैंअनंतर अग्निविषेदाहकरणा॥ परंतु चतुर्थपरमहंससंन्यासी का अग्निविषेदाह कदाचित्भीनहींकरणा ॥ १ ॥ हेशिष्य! देवताकेप्रतिमाकीन्यांई भक्तजनोंकेतांई सर्वमनोरथोंकीप्राप्तिकरणेहा रा जोयह परमहंससंन्यासीकाशरीरहै ॥ ताशरीरका जबी अग्निविषेदाहहोवैहै ॥ अथवा श्वानशृंगालादिकोंकरिकैभक्षणहो वैहै ॥ तबी तिनप्राणियोंकेसंपूर्णमनोरथ नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं याअधिकारीजनोंनैं तापरमहंससंन्यासियोंकेशरीरकूं अ ग्निविषेदाहकरणानहीं ॥ किंतु पूर्वउक्तरीतिसें ताशरीरकूं पृथिवीविषेदृढकरिकैपूरणा ॥ हेशिष्य! इसप्रकार तापरमहंससंन्या सीकेशरीरकूं तापृथिवीविषेपूरिकै तिसतैंअनंतर तेअधिकारीजन ॥ अग्निनाऽग्निःसमिध्यते ॥ इत्यादिकमंत्रका पाठकरैं ॥ तथा सूर्याते॥ इत्यादिकमंत्रकापाठकरैं ॥ हेशिष्य! जैसे विवाहादिकउत्सवविषे यहलोक प्रसन्नहोवैहैं ॥ तैसे प्रसन्नसुखहोइकै तथास र्वशोकक्लेशोंतैंरहितहोइकै तेसंपूर्णअधिकारीजन तापृथिवीविषे पूरणकरेहुएसंन्यासीकेशरीरकूं यथाशक्तिप्रदक्षिणाकरैं ॥ तथा नम स्कारकरैं ॥ और तापृथिवीकेऊपरि देवालयकूंकरैं ॥ अथवा वटपिप्पलादिकपवित्रवृक्षकूंस्थापनकरैं ॥ और तादेवालयविषे वि ष्णुकीप्रतिमाकूंस्थापनकरैं ॥ अथवा महादेवकेलिंगकूंस्थापनकरैं ॥ अथवा सूर्य गणपति देवी आदिकोंकीप्रतिमाकूंस्थापनकरैं ॥ ताप्रतिमाकी तिनअधिकारीजनोंनैं सर्वदापूजाकरणी ॥ हेशिष्य! याअर्थविषे हम बहुतक्याकहैं? परंतु याअधिकारीपुरुषोंनैं ए

साकोईउपायकरणा ॥ जाकरिकै बहुतदिनोंकेपीछेभी तास्थानविषे किसीमलअस्थिआदिकअशुचिपदार्थोंका संबंधनहींहोवै ॥ ऐसेउपायकीअवश्यकर्त्तव्यताकेप्राप्तहुएभी जेअधिकारीजन तास्थानविषे देवालयकास्थापनकरैंहैं ॥ तेअधिकारीजन बहुतबुद्धिमानूजानणे ॥ जैसे आपणेआम्रकेवृक्षोंविषे जलअवश्यपावणाहै ॥ परंतु जेपुरुष ताआम्रवृक्षोंविषे जलकूंपावतेहुए ताजलकूं पितरोंकेअर्पणकरैंहैं ॥ तेपुरुष अत्यंतबुद्धिमानूहोवैंहैं ॥ तैसे तास्थानविषे देवालयकूंकरणेहारेपुरुषभी अत्यंतबुद्धिमानूजानणे ॥ हेशिष्य ! जैसे दूसरेमृतकशरीरकेदर्शनकरणेकरिकै तथास्पर्शकरणेकरिकै यापुरुषोंकूं आपणेशरीरविषे अशुचित्वबुद्धिहोवैहै ॥ तैसे तापरमहंससंन्यासीके मृतकशरीरके दर्शनकरणेतैं तथास्पर्शकरणेतैं याअधिकारीपुरुषोंनैं आपणेविषे अशुचित्वबुद्धि कदाचित्भी नहींकरणी ॥ किंतु विष्णुकीप्रतिमाकेदर्शनकरणेतैं तथास्पर्शकरणेतैं जैसे भक्तजनोंकूं आपणेशरीरविषे शुचित्वबुद्धिहोवैहै तैसे या अधिकारीपुरुषोंनैंभी तामृतकसंन्यासीकेदर्शनतैं तथास्पर्शतैं आपणेविषेशुचित्वबुद्धिकरणी ॥ और जिसनदीआदिकोंकेजलकरिकै तामृतकसंन्यासीकूंस्नानकरायाहै ॥ सोनदीआदिकोंकाजलभी तीर्थरूपहोवैहै ॥ यातैं तानदीआदिकोंकेजलविषे तिनअधिकारीजनोंनैं तीर्थबुद्धिकरिकैस्नानकरणा ॥ परंतु आपणेविषेअशुचित्वबुद्धिकरिकै तिनअधिकारीजनोंनैं स्नाननहींकरणा ॥ और तिनअधिकारीजनोंकूं जोकदाचित् स्नानकरणेकीइच्छानहींहोवै तौ नहींस्नानकरै ॥ तास्नानविषे तिनपुरुषोंकीइच्छाहीकारणहै ॥ कोईअशुचिपणाकारणनहींहै ॥ काहेतैं ? तापरमहंससंन्यासीकाशरीर मरणतैंपूर्वतौ साक्षात्विष्णुरूपहै और मरणतैंअनंतर ताविष्णुकीप्रतिमाकेतुल्यहै ॥ हेशिष्य ! यहवार्त्ता अत्रिऋषिनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ द्वेरूपेवासुदेवस्य चलंचाचलमेवच ॥ चलंसंन्यासिनांरूपमचलंप्रतिमादिकं ॥ १ ॥ देवताप्रतिमांदृष्ट्वा यतिंदृष्ट्वैवदंडिनं ॥ प्रणिपातमकुर्वाणो नरकंरौरवंव्रजेत् ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ वासुदेवविष्णुके दोरूपहोवैंहैं ॥ एकतौ चलरूपहोवैहै और दूसरा अचलरूपहोवैहै ॥ तहां यहपरमहंससंन्यासीतौ ताविष्णुका चलरूपहै ॥ और शालग्रामादिक प्रतिमा ताविष्णुका अचलरूपहै ॥ १ ॥ तहां जोपुरुष ताविष्णुकेशालग्रामादिकप्रतिमावोंकूंदेखिकरिकै ताप्रतिमाकूं नमस्कारनहींकरैहैं ॥ तथा दंडीपरमहंससंन्यासीकूंदेखिकरिकै ताकूं नमस्कार नहींकरैहैं ॥ सोपुरुष रौरवनरककूंप्राप्त

होवैहै ॥२॥ हेशिष्य! यहवार्त्ता महाभारतविषे व्यासभगवान्नैंभीकहीहै॥ तहांश्लोक दुर्वृत्तोवासुवृत्तोवा मूर्खःपंडितएववा॥काषायं दंडमात्रेण यतिःपूज्योद्विजैःसदा ॥अर्थयह॥ सोपरमहंससंन्यासी अश्रेष्ठआचारवालाहोवै ॥ अथवा श्रेष्ठआचारवालाहोवै॥ अथवा मूर्खहोवै अथवा पंडितहोवै ॥ परंतु जोसंन्यासी काषायवस्त्रोंकरिकै तथादंडकरिकैयुक्तहोवै ॥ तासंन्यासीकूं ब्राह्मणादिकोंनैं विष्णुरूपकरिकै पूजनकरणा ॥ १ ॥ हेशिष्य! यहवार्त्ता अपमानेकृतेतेषां देवाःसर्वेऽपकारिताः॥ इत्यादिकवचनोंकरिकै नारदमुनिनैंभी कथनकरीहै ॥ तिनवचनोंकायहअभिप्रायहै ॥ ब्रह्मा विष्णु रुद्र इंद्र लोकपाल वसुआदिकदेवगण येसंपूर्णदेवता तापरमहंस संन्यासीकेशरीरविषेरहैहैं ॥ यातैं जेअधिकारीपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वक तापरमहंससंन्यासीका पूजनकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष तिन ब्रह्मादिकसर्वदेवतावोंका पूजनकरैहैं ॥ और जेपुरुष तापरमहंससंन्यासीका निरादरकरैहैं ॥ तेपुरुष तिनब्रह्मादिकसर्वदेवतावोंका निरादरकरैहैं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं तापरमहंससंन्यासीका कदाचित्भी निरादरकरणानहीं ॥ और हेशिष्य! जैसे विष्णुभगवान् आपणेशालग्रामादिकप्रतिमावोंविषे सर्वदा स्थितरहैहै ॥ तैसे सोविष्णुभगवान् तापरमहंससंन्यासीकेशरीरविषेभी सर्वदा स्थितहोवैहै ॥ यातैं सोपरमहंससंन्यासी जिसाजिसस्थानविषेस्थितहोवैहै ॥ तिसातिसस्थानविषे साक्षात् सोविष्णुभगवान्ही स्थितहोवैहै ॥ यातैं याअधिकारीजनोंनैं तापरमहंससंन्यासीका अवश्यकरिकै पूजनकरणा ॥ और हेशिष्य! यालोकविषे जेपुरुष तापरमहंससंन्यासीकीस्तुतिकरैहैं अथवा निंदाकरैहैं अथवा अन्नवस्त्रादिकदेवैहैं ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंकूं सोसंन्यासी विष्णुभगवान्केतांई अर्पणकरैहै ॥ सोविष्णुभगवान् आपेही तिनदेणेहारेपुरुषोंकूं यथायोग्य सुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ हेशिष्य! ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र येचारिवर्णवालेपुरुष जोकदाचित् तासंन्यासीकूं आपणेधर्मतैंभ्रष्टहुआभीदेखै तौभी तिन चारिवर्णवालेपुरुषोंनैं तासंन्यासीकूं किसीदंडदेणेकासंकल्प करणानहीं ॥ काहेतैं? तिनसंन्यासियोंकोंशिक्षाकरणेहारे तीनहोवैहैं तहां एकतौ गुरु शिक्षाकरणेहाराहोवैहै ॥ और दूसरा राजा शिक्षाकरणेहाराहोवैहै ॥ और तीसरा यम शिक्षाकरणेहाराहोवैहै ॥ तहां जिनसंन्यासियोंकूं आपणेधर्मविषे संशयहोवैहै ॥ तिनसंन्यासियोंकूंतौ आपणागुरुही शिक्षाकरैहै ॥ यहवार्त्ता जमदग्नि

नामाऋषिनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ अथवायद्गुरुर्ब्रूयात्तत्कार्यमविशंकया ॥ निग्रहेऽनुग्रहेचापि गुरुःसर्वत्रकारणं ॥ अर्थयह ॥ यासंन्यासीकेप्रति जोवचन आपणागुरु कथनकरै ॥ तावचनकूं सोसंन्यासी संशयतैंरहितहोइके अंगीकारकरै ॥ काहेतैं ? तासंन्यासीके निग्रहकरणेविषे तथाअनुग्रहकरणेविषे सर्वत्र सोगुरुही कारणहै ॥ १ ॥ और यालोकविषे जेसंन्यासी मद्यपान स्त्रीगमन आदिकपापकर्मोंकूं प्रसिद्धहीकरैहैं ॥ तिनदुराचारीसंन्यासियोंकूं यहराजा शिक्षाकरैहै ॥ यहवार्ता दक्षप्रजापतिनैंभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ पारिव्राज्यंगृहीत्वातु यःस्वधर्मेनतिष्ठति ॥ श्वपदेनांकयित्वातं राजाशीघ्रंप्रवासयेत् ॥ अर्थयह ॥ जोब्राह्मण तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरिकै आपणेधर्मविषे स्थितनहींहोवैहै ॥ किंतु मद्यपान स्त्रीगमन आदिकपापकर्मोंकूंहीकरैहै ॥ तादुराचारीसंन्यासीकूं यहराजा मस्तकविषे श्वानकेपादका चिन्हकरिकै आपणेदेशतैंबाहरिनिकासिदेवै ॥ १ ॥ और जेसंन्यासी राजादिकोंतैंगुह्यहोइके तिनपापकर्मोंकूंकरै हैं ॥ तिनदुराचारीसंन्यासियोंकूं यमराजा शिक्षाकरैहै ॥ हेशिष्य! गुरु राजा यम यातीनोंतैं भिन्न दूसराकोईपुरुष तिनसंन्यासियोंकूं शिक्षाकरणेहाराहैनहीं ॥ याप्रकारकी शास्त्रकेमर्यादाकूंजाणिकरिकै याअधिकारीपुरुषोंनैं आपणेधर्मकीवृद्धिकरणेवासते तथास्वर्गादिकसुखोंकीप्राप्तिवासते तासंन्यासीकूं शरीरमनवाणीकरिकै सुखकीहीप्राप्तिकरणी ॥ ताकरिकै तिनअधिकारीजनोंकूं सर्वमनवांछितपदार्थोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेशिष्य! यापरमहंससंन्यासीकाशरीर अग्निविषे दाहकरणेयोग्यनहींहै ॥ यातैं जैसे अन्यपुरुषोंकेमरणतैंअनंतर अशौचादिकहोवैहैं ॥ तैसे तापरमहंससंन्यासीकेमरणतैंअनंतर अशौचहोवैनहीं ॥ तथा तिलांजलिदानभीहोवैनहीं ॥ तथा घृतकापानकरणाभी होवैनहीं ॥ तथा अग्निकातपनकरणाभी होवैनहीं ॥ तथा निंबकेपत्रोंकाभक्षणभी होवैनहीं ॥ हेशिष्य! जेअधिकारीपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वक तापरमहंससंन्यासीकेशरीरकूं उठाइलैजावैहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं एकएकपादकेउठावणेकरिकै अश्वमेधयज्ञकाफल प्राप्तहोवैहै ॥ और विष्णुभगवान्की शालग्रामादिकप्रतिमावोंके दर्शनकरणेतैं तथास्पर्शकरणेतैं भक्तजनोंकूं जिसप्रकारकाफल प्राप्तहोवैहै ॥ तैसाहीफल तिनअधिकारीजनोंकूं तामृतकसंन्यासीके दर्शनकरणेतैं तथास्पर्शकरणेतैं होवैहै ॥ हेशिष्य! जेपुरुष मनकरिकै अथवा वाणीकरिकै प्रैषमंत्रकाउच्चारणकरि

के तापरमहंससंन्यासकूंप्राप्तहुएहैं ॥ तिनपरमहंससंन्यासियोंकेशरीरकूं याअधिकारीजनोंनैं अग्निविषदाह कदाचित्‌भीनहींकर
णा ॥ किंतु पूर्वउक्तरीतिसैं तासंन्यासीकेशरीरकूं पृथिवीविषेही पूरणकरणा ॥ तथा तिन परमहंससंन्यासियोंकेमरणतैंअनंतर अशौ
च तिलांजलि आदिककर्मभीनहींकरणे ॥ हेशिष्य ! जेअधिकारीजन तापरमहंससंन्यासीकेशरीरकूं उठाइलैचालेहैं ॥ तथा जेपु
रुष तिनोंकेसाथचालेहैं ॥ तथा जेपुरुष ताभूमिविषे गर्तकूंखोदेहैं ॥ तथा जेपुरुष तासंन्यासीकेशरीरकूं तागर्तविषे पूरणकरैंहैं ॥
तेसंपूर्णअधिकारीजन सर्वदा शुद्धहीरहैहैं ॥ हेशिष्य ! मरणतैंअनंतर तिनपरमहंससंन्यासियोंविषे यद्यपि अग्निदाहादिकसं
स्कार तथापिंडोदकक्रिया होवैनहीं ॥ तथापि तापरमहंससंन्यासीकेमरणतैंअनंतर एकादशेदिनविषे तासंन्यासीके पूर्वगृहस्थआश्र
मकेपुत्र पार्वणनामाश्राद्धकूंकरैं ॥ तहां जैसेविवाहादिककालविषे उत्सवहोवैहै ॥ तैसे उत्सवपूर्वक तेपुत्र ताएकादशेदिनविषे वि
ष्णुकेनामउच्चारणपूर्वक ताआपणेपिताकानामउच्चारणकरिकै शास्त्रविधिपूर्वक तापार्वणश्राद्धकूंकरैं ॥ और तिनपुत्रोंतैंभिन्न जेदूसरे
अधिकारीजनहैं ॥ तिनोंनैंतौ विष्णुकीप्रसन्नतावासते द्वादशेदिनविषे केवल नारायणबलिहीकरणा ॥ पार्वणश्राद्धकरणानहीं ॥
और तासंन्यासीकेपुत्रोंनैंतौ एकादशेदिनविषे पार्वणश्राद्धकरणा ॥ और द्वादशेदिनविषे नारायणबलिकरणा ॥ अब बौधायनऋ
षिउक्तरीतिसैं तानारायणबलिकास्वरूप वर्णनकरैंहैं ॥ हेशिष्य ! ताद्वादशेदिनविषे तेअधिकारीजन याप्रकारसैं तानारायणबलि
कूंकरैं ॥ प्रथमतौ षोडशउपचारोंकरिकै विष्णुकीमहापूजाकरैं ॥ तेषोडशउपचार येहैं ॥ आवाहन १ आसन २ पाद्य ३ अर्घ्य ४
आचमनीय ५ स्नान ६ वस्त्र ७ उपवीत ८ गंध ९ पुष्प १० धूप ११ दीप १२ अन्न १३ नमस्कार १४ प्रदक्षिणा १५
विसर्जन १६ ॥ तामहापूजातैंअनंतर ताविष्णुदेवकेतांई पायसरूपनैवेद्य अर्पणकरैं ॥ तिसतैंअनंतर तापायसकूं प्रणवपूर्वक भूरा
दिकतीनव्याहृतियोंकाउच्चारणकरिकै अग्निविषेहोमकरैं ॥ इसप्रकार होमकरिकै संस्कारकूंप्राप्तभयाजो विष्णुकानैवेद्यरूपपायसहै ॥
तापायसकूं सर्वब्राह्मणोंकेतांईदेवै ॥ और तिनअधिकारीजनोंनैं तानारायणबलिविषे त्रयोदशपुरुषोंकूं प्रधानकरिकैपूजना ॥ ता
पूजणेकायहक्रमहै ॥ तानारायणबलिकर्त्तापुरुषनैं द्वादशसंन्यासियोंकूं निमंत्रणदेकरिकै आपणेगृहविषेलेआवणा ॥ और जोकदा

चित् द्वादशसंन्यासी नहींप्राप्तहोवै तौ श्रेष्ठआचारविषे वर्त्तणेहारे गृहस्थब्राह्मणोंकूं निमंत्रणदेकरिकै आपणेगृहविषेलेआवणा ॥ और केशवायनमः ॥ इत्यादिकद्वादशमंत्रोंकरिकै तिनद्वादशसंन्यासियोंका अथवा श्रेष्ठब्राह्मणोंका गंधपुष्पादिकोंकरिकै पूजनकरणा ॥ तिसतैंअनंतर प्रीतिपूर्वक तिनोंकूं भोजनकरावणा ॥ तहां तेद्वादश जेसंन्यासीहोवैं तौ तिनसंन्यासियोंकेताईं नानाप्रकारकेवस्त्रदेणे ॥ और तेद्वादश जोगृहस्थब्राह्मणहोवैं तौ तिनब्राह्मणोंकेताईं दक्षिणासहित वस्त्रदेणे ॥ हेशिष्य! जोकदाचित् तिनद्वादशसंन्यासियोंकीप्राप्तिनहींहोवै तौभी ता त्रयोदशसंख्याकेपूर्णकरणेवासते तथापूजाकरणेवासते एकविद्वान्संन्यासीकूंतौ अवश्यकरिकै लैआवणा ॥ और तात्रयोदशेसंन्यासीकीतौ पुरुषसूक्तविषेस्थित षोडशऋचारूपमंत्रोंकरिकै तिनषोडशउपचारोंकरिकैपूजाकरणी ॥ और जोकदाचित् सोएकपरमहंससंन्यासीभी नहींप्राप्तहोवै तौ तिसत्रयोदशेस्थानविषे किसीविद्वान्धर्मात्माब्राह्मणकूंस्थापनकरिकै ताकेविषे विष्णुबुद्धिकरिकै तिनषोडशऋचारूपमंत्रोंकरिकै ताषोडशउपचारोंकरिकै पूजनकरणा ॥ और जिसस्थानविषे तेत्रयोदशसंन्यासी अथवात्रयोदशब्राह्मण भोजनकरैंहैं ॥ तिसस्थानकेसमीपदेशविषे दर्भोंकूंविछाइकै जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिभूतप्राणियोंकेताईं नानाप्रकारकेमधुरअन्नकाबलिदेणा ॥ तहां तिनचारीभूतप्राणियोंविषे एकएकभूतप्राणीकानामउच्चारणकरिकै यथाक्रमतैं प्रणवपूर्वक॥भूःस्वाहा भुवःस्वाहा स्वःस्वाहा भूर्भुवःस्वःस्वाहा ॥ याचारिमंत्रोंकरिकै बलिदानदेणा ॥ हेशिष्य! तानारायणबलिकर्त्तापुरुषकेगृहविषे जोकदाचित् धनसंपत्ति नहींहोवै तौ अन्नवस्त्रमात्रकी प्राप्तिकरिकै संतोषकूंप्राप्तहोणेहारेजेसंन्यासीहैं ॥ तिनत्रयोदशसंन्यासियोंकूंही तहां भोजनकरावणा ॥ और तानारायणबलिकर्त्तापुरुषकेगृहविषे जोकदाचित् धनसंपत्ति बहुतहोवै तौ वस्त्रभूषणादिकपदार्थोंकेग्रहणकरणेयोग्य जोश्रेष्ठब्राह्मणहैं ॥ तिनब्राह्मणोंकूंही तहां भोजनकरावणा ॥ परंतु ताधनीपुरुषनैंभी एकसंन्यासीकूंतौ अवश्यकरिकै भोजनकरावणा ॥ हेशिष्य! दानादिककर्मोंकाविधानकरणेहारा जोशास्त्रहै ॥ सोशास्त्र ताकर्मकर्त्तापुरुषकीशक्तिकेअनुसारही तिनकर्मोंका विधानकरैहै ॥ यातैं तानारायणबलिविषे पूर्वकथनकरेजेपक्ष तिनपक्षोंविषे एकपक्षकानियम हम कथनकरतेनहीं ॥ किंतु तानारायणबलिकर्त्तापुरुषकूं जैसीशक्ति

होवै ॥ ताशक्तिपरिमाण तिनत्रयोदशसंन्यासियोंकूं अथवा त्रयोदशब्राह्मणोंकूं भोजनकराइकै वस्त्रादिकपदार्थ दानदेणे॥ तिसतें अनंतर यथाशक्तिपरिमाण दूसरेअनेकब्राह्मणोंकूं नानाप्रकारकेमधुरअन्नोंका भोजनकरावणा ॥ तथा तिनब्राह्मणोंकेप्रति यथाशक्तिपरिमाण दक्षिणादेणी ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार जेअधिकारीजन तासंन्यासीकेमरणतेंअनंतर नारायणबलिकूंकरैहैं ॥ तेअधिकारीजन इसलोकविषेतौ मनवांछितपदार्थोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और मरणतेंअनंतर तेअधिकारीजन आपणेसर्वपितरोंसहित विष्णुलोककूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातें याअधिकारीजनोंनें तासंन्यासीकेमरणतेंअनंतर तानारायणबलिकूं अवश्यकरिकैकरणा ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार आतुरसंन्यासकेप्रसंगतें तापरमहंससंन्यासीकेमरणतेंउत्तर जोकार्य करणेयोग्यहोवैहै ॥ सो हमनें तुमारेप्रति कथनकऱ्या ॥ अब पूर्वलेप्रसंगकूं तू श्रवणकर ॥ हेशिष्य ! तीनदंडोंकूंधारणकरणेहारा तथाशिखायज्ञोपवीतकूंधारणकरणेहारा तथाआपणेपुत्रकेगृहविषेभिक्षाकरणेहारा जोकुटीचकसंन्यासीहै ॥ और तीनदंडोंकूंधारणकरणेहारा तथाशिखायज्ञोपवीतकूंधारणकरणेहारा तथासप्तगृहोंतेंभिक्षामांगिकैभोजनकरणेहारा तथादेशोंविषेविचरणेहारा जोबहूदकसंन्यासीहै॥ और एकदंडकूंधारणकरणेहारा तथा शिखारहितयज्ञोपवीतकूंधारणकरणेहारा तथाएकवार अन्नकेअष्टग्रासोंकूंभोजनकरणेहारा जोहंससंन्यासीहै ॥ ते कुटीचक बहूदक हंस संन्यासीभी जोकदाचित् तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिकरिकै तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेकीइच्छाकरैं ॥ तौ तिनकुटीचकादिक संन्यासियोंनें तेअष्टश्राद्ध तथाहोमादिककर्म करणेनहीं ॥ किंतु जैसे आतुरपुरुष केवलप्रैषमंत्रकाउच्चारणकरिकैही तापरमहंससंन्यासकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे तेकुटीचकादिकसंन्यासीभी ताप्रैषमंत्रकाउच्चारणकरिकैही तापरमहंससंन्याकूंधारणकरैं ॥ अब तिनकुटीचकादिकसंन्यासियोंकूं ताप्रैषमंत्रकेउच्चारणकरणेकीविधिका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! तेकुटीचकादिकसंन्यासी प्रथम आपणेहस्तकीअंजलिकूं जलसैंपूर्णकरिकै भूरादिकतीनव्याहृतियोंविषे एकएकव्याहृतिकूं प्रणवपूर्वक उच्चारणकरिकै अभयं यापदतें लेकै स्वाहा यापदपर्यंत समग्रमंत्रकूं मंद मध्यम उत्तम यातीनस्वरोंकरिकै उच्चारणकरैं ॥ और आपणेयज्ञोपवीतकूंउतारिकै तथाआपणेशिखाकूंहस्तसैंतोडिकै तिनदोनोंकूं आपणेहस्तकीअंजलिविषेस्थितकरिकै प्रणवपूर्वक ॥ भूःस्वाहा ॥ यामंत्रकरिकै ता

शिखायज्ञोपवीतकूं जलविषेपरित्यागकरैं ॥ अथवा भूमिविषेपरित्यागकरैं ॥ तहांश्रुति ॥ उपवीतं भूमौऽप्सुवाविसृजेत् ॥ अर्थय
ह॥सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणेयज्ञोपवीतकूं तथाशिखाकूं पूर्वउक्तमंत्रकरिकै भूमिविषेपरित्यागकरै॥अथवा जलविषे परित्यागकरै
॥१॥तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष विरक्तहोइकै तथानग्नहोइकै उत्तरदिशाकीतरफ अथवा पूर्वदिशाकीतरफजावै॥और तासं
न्यासकर्त्तापुरुषकूं जोकदाचित् आत्माकेजानणेकीइच्छाहोवै तौ श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकूंआश्रयणकरै॥हेशिष्य ! कुटीचक बहूदक हंस
येतीनप्रकारकेसंन्यासी दंड १ कमंडलु २ शिक्य ३ भिक्षापात्र ४ पवित्र ५ यापंचमुद्रावोंकूं सर्वदाधारणकरैहैं॥ जिसपात्रविषे भिक्षा
अन्न मागिलेआइये तापात्रकानाम शिक्यहै ॥ और जलकेशोधनकरणेवासते जोएकवितस्तिपरिमाणवस्त्रहै ताकानाम पवित्र
है ॥ तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकालविषे तिनकमंडलुआदिकचारिमुद्रावोंसहित एकदंडकूंतौ हंससंन्यासी परित्यागकरैं ॥
और तिनचारिमुद्रावोंसहित तीनदंडोंकूं कुटीचकबहूदकसंन्यासी परित्यागकरैं ॥ हेशिष्य ! कुटीचक बहूदक हंस यातीनप्रकार
केसंन्यासतैंउत्तर तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेविषे जोशिखायज्ञोपवीतादिकोंकेत्यागकरणेकीविधि हमनैं तुमारेप्रति कथनक
रीहै ॥ तिसीप्रकारकीविधि ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ यातीनआश्रमोंतैंउत्तर तापरमहंससंन्यासकेग्रहणेकरणेविषेभी जानि
लेणी ॥ हे शिष्य ! हंससंन्यासीकूं यद्यपि शिखाहोवैनहीं ॥ तथापि यज्ञोपवीत ताहंससंन्यासीकूंहोवैहै ॥ यातें सोहंससंन्यासी ता
परमहंससंन्यासकेग्रहणकालविषे तायज्ञोपवीतकूं पूर्वउक्तमंत्रकरिकै जलविषे अथवा पृथिवीविषे परित्यागकरै ॥ तथा पूर्वआ
श्रमविषेग्रहणकरेजे दंडकमंडलुआदिकहैं ॥ तिनोंकाभी परित्यागकरै ॥ इतनैंकरिकै ब्राह्मणोंके संन्यासग्रहणकरणेकाप्रकार वर्ण
नकऱ्या ॥ अब क्षत्रिय वैश्यके संन्यासग्रहणकरणेकाप्रकार जो जाबालादिकउपनिषदोंविषेकथनकऱ्याहै ताका निरूपणकरैहैं ॥ हे
शिष्य ! पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं जिसक्षत्रियकूं तथाजिसवैश्यकूं तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ सोक्षत्रिय तथावैश्य जोकदा
चित् संन्यासआश्रमकेधारणकरणेकीइच्छाकरै तौ सोक्षत्रिय तथावैश्य पूर्वउक्तरीतिसैं अष्टश्राद्धहोमादिकसर्वकर्मोंकूंकरिकै शि
खासहितयज्ञोपवीतकूं जलविषे अथवा भूमिविषे परित्यागकरै ॥ तिसतैंअनंतर नग्नहोइकै उत्तरदिशाविषे अथवा पूर्वदिशाविषे च

ल्याजावै ॥ परंतु जैसेब्राह्मणसंन्यासी ताउत्तरदिशातैंफिरिआइकै दंडादिकचिन्होंकूंधारणकरैहैं ॥ तैसे सोक्षत्रियवैश्यसंन्यासी तिसदंडादिकचिन्हकूंधारणकरैनहीं ॥ और सोक्षत्रियवैश्यसंन्यासी जड उन्मत्त पिशाचकीन्यांई नग्नहोइकैविचरैं ॥ और अंतरसैं विद्वान्हुआभी बाहरिसैं अविद्वान्कीन्यांई प्रतीतहोवै ॥ हेशिष्य ! यद्यपि तापरमहंससंन्यासविषे आपणेस्वरूपकेछपावणेवासते नानाप्रकारकेचिन्होंकाधारणकरणा संभवैहै ॥ तथापि विष्णुसंबंधि जोदंडरूपचिन्हहै ॥तावैष्णवदंडरूपचिन्हकेधारणकरणेविषे एकब्राह्मणकूंही अधिकारहै ॥ क्षत्रियवैश्यकूं तादंडकेग्रहणकरणेका अधिकारहैनहीं॥ तहां षट्ग्रंथिवालेदंडकानाम सुदर्शनहै ॥ और अष्टग्रंथिवालेदंडकानाम वासुदेवहै ॥ याकारणतैं तादंडकूं वैष्णवदंड यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ हेशिष्य ! सोक्षत्रियसंन्यासी तथावैश्यसंन्यासी पूर्वउक्तरीतिसैं शिखायज्ञोपवीतका परित्यागकरिकै तथानग्नहोइकै पुनरावृत्तितैंरहितहुआ उत्तरदिशाविषे अथवा पूर्वदिशाविषे चल्याजावै ॥ यहजोपूर्व हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ याकेविषे यहकारणहै ॥ संन्यासकर्त्ताब्राह्मण जबी शिखायज्ञोपवीतकापरित्यागकरिकै तथानग्नहोइकै ताउत्तरदिशाकीतरफ जावैहै ॥ तबी पूर्वउक्तश्राद्धादिककर्मोंकूंकरावणेहाराआचार्यब्राह्मण तासंन्यासकर्त्ताब्राह्मणकेसमीपजाइकै दंडवत्प्रणामकरैहै॥तथा प्रार्थनाकरिकै कौपीनादिकवस्त्र पहरावैहै ॥ तथा तासंन्यासीकूं ताउत्तरदिशातैंफिराइकै ब्रह्मवेत्तासंन्यासीगुरुकेसमीप लेआवैहै ॥ सा आचार्यब्राह्मणकी दंडवत्प्रणामपूर्वक प्रार्थना ताक्षत्रियवैश्यकेआगे संभवैनहीं ॥ और आचार्यब्राह्मणकीप्रार्थनातैंविना सोसंन्यासकर्त्तापुरुष कौपीनादिकवस्त्रोंकूं धारणकरैनहीं ॥ तथा ताउत्तरदिशातैंपीछैभी फिरैनहीं ॥ याकारणतैं तिनक्षत्रियवैश्यसंन्यासियोंकूं ताउत्तरादिकदिशातैंपीछैफिरणा तथा कौपीनादिकवस्त्रोंकूंधारणकरणा तथादंडरूपचिन्हकूंधारणकरणा येतीनोंसंभवैनहीं ॥ यातैं जैसे ऋषभदेवनैं तथापंचपांडवोंनैं वीरमार्गकरिकैआपणेशरीरका परित्यागकऱ्याहै ॥ तैसे सोक्षत्रिय तथावैश्यभी तासंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिकै तावीरमार्गकरिकै आपणेशरीरका परित्यागकरै ॥ हेशिष्य! सिंहादिकोंकेशब्दतैं तथाजलअग्निआदिकोंतैं तथाव्याघ्रादिकजीवोंतैं भयतैंरहितहोइकै शरीरकेनाशपर्यंत जोभूमिविषेविचरणाहै याकानाम वीरमार्गहै ॥ हेशिष्य ! तेब्रह्मवेत्ता क्षत्रियसंन्यासी तथावैश्यसं

न्यासी आपणेस्थूलशरीरकूं दुःखरूपजाणिकै किसीजलविषेपाइकैनाशकरैं ॥ अथवा किसीअग्निविषेपाइकैनाशकरैं ॥ अथवा अ
न्नजलकापरित्यागकरिकै नाशकरैं ॥ अथवा किसीएकदिशाविषे निरंतर गमनकरिकै नाशकरैं ॥ इतनेकरिकै क्षत्रियवैश्यके संन्या
सकाप्रकार वर्णनकऱ्या ॥ अब शूद्र स्त्री आदिकोंकेसंन्यासकाप्रकार वर्णनकरैहैं ॥ हेशिष्य ! यालोकविषे जिनशूद्रोंकूं तथाजिन
स्त्रियोंकूं तथाजिनवर्णसंकरोंकूं पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं जबी यासंसारतैंतीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ तबी तेशूद्रादिक
पूर्वउक्तअष्टश्राद्धोंतैंआदिलैके प्रैषमंत्रपर्यंत कर्मोंकूं कदाचित्भी नहींकरैं ॥ किंतु तेशूद्रादिक आपणेमनविषे तासंन्यासका
संकल्पकरिकै ताक्षत्रियवैश्यसंन्यासीकीन्यांई तावीरमार्गकरिकै आपणेशरीरका परित्यागकरैं ॥ यावीरसंन्यासविषे सर्वकाअ
धिकारहै ॥ यावीरसंन्यासकूंही अलिंगसंन्यासकहेहैं ॥ इतनेकरिकै क्षत्रिय वैश्य शूद्र स्त्री आदिकोंकेसंन्यासका वर्णनकऱ्या ॥
अब पुनः पूर्वलेप्रसंगकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! जबी सोब्राह्मणसंन्यासी शिखायज्ञोपवीतकापरित्यागकरिकै तथानग्न
होइकै उत्तरदिशाकीतरफिजावैहै ॥ तबी सोश्राद्धादिककर्मोंकेकरावणेहारा आचार्यब्राह्मण ताकेसमीपजाइकै ताब्राह्मणसंन्यासी
केतांई दंडवत्प्रणामकरैहै ॥ तथा आपणेदोनोंहस्तोंकूं तासंन्यासीकेदोनोंपादऊपरिराखिकै सोआचार्यब्राह्मण तासंन्यासीकेप्र
ति याप्रकारकीप्रार्थनाकरैहै ॥ हेब्राह्मण ! यालोकविषे जोब्राह्मण वेदवेत्ताहोवैहै ॥ ताब्राह्मणकेशरीरविषे संपूर्णदेवता निवासक
रैहैं ॥ याकारणतैंसोवेदवेत्ताब्राह्मण ईश्वररूपहै ॥ ऐसावेदवेत्ताब्राह्मण तूंमीहै ॥ यातैं याउत्तमब्राह्मणशरीरकूं व्यर्थहीपरित्याग
करणा तुमारेकूं उचितनहींहै ॥ और हेब्राह्मण ! जेअधिकारीजन तुमारेदर्शनकरिकै तथातुमारेवचनोंकेश्रवणकरिकै कृतार्थहोवैंगे ॥
तिनअधिकारीजनोंकाही यहतुमाराशरीरहै तुमारा यहशरीरनहींहै ॥ यातैं जैसे यालोकविषे बुद्धिमान्पुरुष परायेपदार्थकानाश
करैनहीं ॥ तैसे तेबुद्धिमान्पुरुषकूंभी यापरायेशरीरकानाशकरणा उचितनहींहै ॥ किंतु यादुर्लभअधिकारीशरीरकूंपाइकै तुम ब्रह्मवे
त्तागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रकाश्रवणकरिकै तथामनननिदिध्यासनकरिकै आत्मसाक्षात्कारकूंसंपादनकरो ॥ ताआत्मसाक्षात्कारकी
प्राप्तितैंअनंतर जोतुमारीइच्छाहोवै सोकरो ॥ हेब्राह्मण ! जिसब्रह्मवेत्तागुरुकी तुमनैं बहुतकालपर्यंतसेवाकरीहै ॥ तातुमारेगुरु

नैं हमारेप्रति यहआज्ञाकरीहै ॥ जो याहमारेशिष्यकूं अनेकउपायोंकरिकैभी पीछेफिराइलैआवो ॥ यातैं आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतैं तुम आपणेगुरुकीआज्ञाकूंही पालनकरौ ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार सोआचार्यब्राह्मण जबी तासंन्यासीकेप्रति नानाप्रकारकी प्रार्थनाकरै ॥ तथा इहांखडेरहो इहांखडेरहो याप्रकारकावचनउच्चारणकरै ॥ तबी सोसंन्यासी ताआचार्यब्राह्मणकीप्रार्थनाकूंअंगीकारकरिकै तहांस्थितहोवै ॥ तिसतैंअनंतर सोआचार्यब्राह्मण तासंन्यासीकेतांई वेणुकादंडहस्तविषेदेवै ॥ तथा कटीविषेबांधणेवासते सूत्रकादोरादेवै ॥ तथा कौपीनादिककाषायवस्त्रदेवै ॥ तहां सोसंन्यासी ॥ इंद्रस्यवज्रोसि ॥ इत्यादिकमंत्रकरिकैतो ता दंडकूंग्रहणकरै ॥ और प्रणवमंत्रकरिकै तिनकौपीनादिकवस्त्रोंकूंग्रहणकरै ॥ इसप्रकार ताआचार्यब्राह्मणकीप्रार्थनातैं दंडकमंडलुवस्त्रादिकोंकूंग्रहणकरिकै सोसंन्यासी ताउत्तरदिशातैंफिरिआइकै आपणेब्रह्मवेत्तासंन्यासीगुरुकूं दंडवत्प्रणामकरै ॥ और ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासते ताब्रह्मवेत्तागुरुकी शरीरमनवाणीकरिकै सेवाकरै ॥ इतनेग्रंथकरिकै श्रुतिस्मृतिकेअनुसार तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेकाप्रकार निरूपणकऱ्या ॥ अब जाबालादिकउपनिषदोंविषे कथनकरेजे परमहंससंन्यासियोंकेधर्म हैं तिनधर्मोंका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ! सोपरमहंससंन्यासी तावेणुकेदंडकूंधारणकरै ॥ तथा शिखायज्ञोपवीततैंरहितहोवै ॥ तथा प्रसन्नमुखहोवै ॥ और सोपरमहंससंन्यासी दोकौपीनोंकूंग्रहणकरै ॥ तथा शीतकीनिवृत्तिवासते एककंथाकूंग्रहणकरै ॥ और सोसंन्यासी जबी ग्रामविषे भिक्षामागणेवासतेजावै ॥ तबी ताकौपीनकेउपरिबांधणेवासते कटीवस्त्ररारखै ॥ सोकटीवस्त्र जीर्णहोवै ॥ अथवा नवीनहोवै ॥ और शौचादिकक्रियाकेकरणेवासते सोसंन्यासी आपणेहस्तविषे तुंबिकापात्ररारखै ॥ अथवा काष्ठकापात्ररारखै ॥ अथवा वेणुकापात्ररारखै ॥ अथवा मृत्तिकाकापात्ररारखै ॥ याचारिप्रकारकेपात्रोंविषे जोपात्र प्राप्तहोवै तापात्रकूंरारखै ॥ और सोपरमहंससंन्यासी प्रयोजनतैंविना आपणेहस्तपादादिकअंगोंकूं चलायमानकरैनहीं ॥ और सोसंन्यासी वाक्भेदादिकोंविषेभी चपलहोवैनहीं ॥ तावाक्भेदकायहस्वरूपहै ॥ किसीअर्थकेजनावणेवासते किसीपुरुषनैं जोवचनकह्या ॥ तावचनकूंकिसीदूसरेअर्थविषेजोडिकै तापुरुषकूं दोषदेणा याकानाम वाक्भेदहै ॥ जैसे किसीपुरुषनैं यहदेवदत्तनामापुरुष नवकंबलवालाहै याप्रकारका

वचनकह्या॥तावचनविषेस्थितजो नव यहशब्दहै॥तानवशब्दकेदोअर्थहोवैहैं॥एकतौ नवीन यहअर्थहोवैहै॥और दूसरा नवत्वसंख्या वालायहअर्थहोवैहै॥तहां तावचनकहणेहारेपुरुषकातौ यहदेवदत्त नवीनकंबलवालाहै याप्रथमअर्थविषेही तात्पर्यहै॥परंतु तानवश ब्दका नवत्वसंख्यावालेविषे तात्पर्यकल्पनाकरिकै तावचनकहणेहारेपुरुषकेप्रति याप्रकारकादोषदेणा ॥ जोयादरिद्रीदेवदत्तकूं एक कंबलकीप्राप्तिहोणीभीदुर्लभहै॥तौ यादेवदत्तकेपासि नवकंबल कहांसैंहोवैंगे॥याकानाम वाक्भेदहै॥यावाक्भेदकूंही नैयायिक छल यानामकरिकैकथनकरैहैं॥याप्रकारकेवाक्भेदविषेभी सोसंन्यासी चपलहोवैनहीं॥और सोसंन्यासी जबी किसीमार्गविषेचालै तबी आपणेशरीरतैंआगे चारिहस्तपरिमाणभूमिकूंदेखताजावै ॥ जिसकरिकै कोईजंतु पादकेनीचैनहींआइजावै ॥ और आपणेआ सनविषेस्थितहुआ सोसंन्यासी आपणेनासिकाकेअग्रभागकूंदेखतारहै ॥ अथवा वेदांतकेपुस्तककूंदेखतारहै ॥ जाकरिकै चित्त ब हिर्मुखनहींहोवै ॥ और सोपरमहंससंन्यासी इतनेस्थानोंविषे निवासकरै ॥ तहां सोपरमहंससंन्यासी किसीशून्यगृहविषे निवा सकरै ॥ अथवा किसीदेवताकेमंदिरविषे निवासकरै ॥ अथवा किसीपृथिवीकीगर्त्तविषे निवासकरै ॥ अथवा किसीपलालादिकतृ णोंकेसमुदायविषे निवासकरै ॥ अथवा किसीवृक्षकेमूलविषे निवासकरै ॥ अथवा जिसस्थानविषे कुलाल मृत्तिकाकेपात्र बणावैहै॥ ताकुलालकीशालाविषे निवासकरै ॥ अथवा अग्निहोत्रीब्राह्मणके अग्निकीशालाविषे निवासकरै ॥ अथवा किसीनदीकेपुलविषे निवासकरै ॥ अथवा किसीपर्वतकीगुफाविषे निवासकरै ॥ अथवा किसीवृक्षकेकोटरविषे निवासकरै ॥ अथवा किसीसमानभूमि विषेनिवासकरै ॥ अथवा किसीबगीचेविषेनिवासकरै ॥ इत्यादिकएकांतस्थानोंविषे निवासकरिकै सोपरमहंससंन्याभी सर्वदा आपणेशरीरकूं तथाअंतःकरणकूं शुद्धराखै ॥ और सोसंन्यासी भिक्षामागणेवासतेग्रामविषेजावै ॥ तहां आपणेस्थानतैंनिकसि कै ताग्रामविषे प्रदक्षिणाक्रमकरिकै जेगृहआवैं ॥ तिनगृहोंतैं भिक्षाअन्नकूंग्रहणकरै ॥ और सोसंन्यासी आपणेउदरकूंही पात्रक रिकै अथवा आपणेहस्तोंकूंही पात्रकरिकै ताभिक्षाअन्नकूंग्रहणकरै ॥ इहां जोसंन्यासी आपणेहस्तविषे भिक्षाअन्नकूंग्रहणकरता नहीं ॥ किंतु दूसराकोईभक्तजन ताकेमुखविषेअन्नदेवैहै ॥ तासंन्यासीका उदरहीपात्रहै ॥ और जोसंन्यासी आपणेहस्तविषे भि

क्षाअन्नग्रहणकरिकै भोजनकरैहै ॥ तासंन्यासीका हस्तहीपात्रहै ॥ और जोसंन्यासी आपणेउदरकूं तथाहस्तोंकूं पात्रकरणेविषेसमर्थनहींहोवै ॥ सोसंन्यासी किसीवस्त्रादिकोंकूं पात्रकरिकै ताकेविषे भिक्षाअन्नकूंग्रहणकरै ॥ और ताभिक्षाअन्नकूं औषधिकीन्यांई ग्रहणकरै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रोगीपुरुष आपणेरोगकीनिवृत्तिवासते औषधिकूंभक्षणकरैहै ॥ कोईस्वादकेवासते औषधिकाभक्षणकरैनहीं ॥ तैसे सोसंन्यासीभी केवल क्षुधाकीनिवृत्तिवासते ताभिक्षाअन्नकूंभक्षणकरै ॥ किसीस्वादवासते अथवा शरीरकेपुष्टकरणेवासते ताभिक्षाअन्नकूंभोजनकरैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ औषधवदशनमाचरेत् ॥ और सोपरमहंससंन्यासी किसीपदार्थकी निंदाभीनहींकरै ॥ तथा किसीपदार्थकी स्तुतिभीनहींकरै ॥ और भिक्षाअन्नकेप्राप्तहुएअथवा नहींप्राप्तहुए सोसंन्यासी एकरसरहै ॥ और आदरपूर्वक नानाप्रकारकेरसयुक्त भिक्षाअन्नकूंप्राप्तहोइकै सोसंन्यासी प्रसन्ननहींहोवै ॥ और निरादरपूर्वक रसादिकगुणोंतैंरहित भिक्षाअन्नकूंप्राप्तहोइकै सोसंन्यासी ग्लानिकूंनहींप्राप्तहोवै ॥ तथा सुख दुःख शीत उष्ण इत्यादिकद्वंद्वधर्मोंविषे समानरहै ॥ तथा उपकारकरणेहारेभक्तजनोंविषे तथाअपकारकरणेहारे दुष्टजनोंविषे समानरहै ॥ और सोपरमहंससंन्यासी इतनेपरिमाणअन्नकाभोजनकरै ॥ जिसकरिकै यहशरीर अत्यंतस्थूलभीनहींहोवै ॥ तथा अत्यंतकृशभीनहींहोवै ॥ और सोपरमहंससंन्यासी दोमासतैंअनंतर दोऋतुकीसंधिविषे पूर्णमासीकेदिनविषे केशश्मश्रुनखोंका मुंडनकरावै ॥ परंतु कक्षाविषेस्थितवालोंका तथाउपस्थविषेस्थितवालोंका मुंडनकरावैनहीं ॥ और वर्षाकालविषे सोसंन्यासी केशोंकामुंडनकरावै अथवा नहींकरावै ॥ यहदोनोंपक्ष शास्त्रविषेकहेहैं ॥ और सोपरमहंससंन्यासी आषाढमासकी पौर्णमासीविषे व्यासपूजाकूंकरै ॥ ताव्यासपूजाविषे व्यासपंचक १ कृष्णपंचक २ आचार्यपंचक ३ गुरुपंचक ४ आत्मपंचक ५ यापंचपंचकोंकीपूजाकरै ॥ तहां पूर्वादिकचारिदिशावोंविषे यथाक्रमतैंस्थितजे वैशंपायन सुमंतु जैमिनि पैल येचारिहैं ॥ तिनचारोंकेमध्यविषेस्थितजो व्यासभगवान्है ॥ यापांचोंकानाम व्यासपंचकहै ॥ १ ॥ और पूर्वादिकचारिदिशावोंविषे यथाक्रमतैंस्थितजे वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध यहचारिहैं ॥ तिनचारोंकेमध्यविषेस्थितजो कृष्णभगवान्है ॥ यापांचोंकानाम कृष्णपंचकहै ॥ २ ॥ और पूर्वादिकचारि

दिशावोंविषे यथाक्रमतैंस्थितजे विश्वरूप पद्मनाभ हस्तामलक तोटक येचारिहैं ॥ तिनचारोंकेमध्यविषे स्थितजो शंक
राचार्यहै ॥ यापांचोंकानाम आचार्यपंचकहै ॥ ३ ॥ और पूर्वादिकचारिदिशावोंविषे यथाक्रमतैंस्थितजे परमगुरु परमे
ष्ठिगुरु गोविंदपाद गौडपाद येचारिहैं ॥ तिनचारोंकेमध्यविषेस्थितजो आपणागुरुहै ॥ तिनपांचोंकानाम गुरुपंचकहै ॥ ४ ॥
और पूर्वादिकचारिदिशावोंविषे यथाक्रमतैंस्थितजे अंतरात्मा ज्ञानात्मा परात्मा आनंदात्मा येचारिहैं ॥ तिनचारोंकेमध्य
विषेस्थितजो आत्माहै ॥ यापांचोंकानाम आत्मपंचकहै ॥ ५ ॥ हेशिष्य ! सोपरमहंससंन्यासी तापूजामंडलविषे याप्रकार ति
नपंचपंचकोंकास्थापनकरिकै तिनोंकापूजनकरै ॥ तहां तापूजामंडलकेमध्यविषेतौ कृष्णपंचककास्थापनकरै ॥ और ताकृष्ण
पंचककी पूर्वदिशाविषे आत्मपंचककूं स्थापनकरै ॥ और ताकृष्णपंचककी दक्षिणदिशाविषे आचार्यपंचककूं स्थापनकरै ॥
और ताकृष्णपंचककी पश्चिमदिशाविषे गुरुपंचककूं स्थापनकरै ॥ और ताकृष्णपंचककी उत्तरदिशाविषे व्यासपंचककूंस्थापन
करै ॥ और ताकृष्णपंचकके पूर्वदक्षिणदिशाकेमध्यविषेस्थित जोअग्निकोणहै ॥ ताअग्निकोणविषे गणपतिकास्थापनकरै ॥ और
दक्षिणपश्चिमदिशाकेमध्यविषेस्थित जोनैर्ऋतकोणहै ॥ तानैर्ऋतकोणविषे दुर्गादेवीकूं स्थापनकरै ॥ और पश्चिमउत्तरदिशाके
मध्यविषेस्थित जोवायुकोणहै ॥ तावायुकोणविषे सरस्वतीकूं स्थापनकरै ॥ और उत्तरपूर्वदिशाकेमध्यविषेस्थित जोईशानकोणहै॥
ताईशानकोणविषे क्षेत्रपालकूं स्थापनकरै ॥ और ताकृष्णपंचककेसर्वओरतैं सनंदन सनक सनत्कुमार सनत्सुजात याचारोंकूं
स्थापनकरै ॥ और ताकृष्णपंचककेअग्रभागविषे नर नारायण यादोनोंकूं स्थापनकरै ॥ और ताकृष्णपंचककेपृष्ठदेशविषे
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर यातीनोंकूं स्थापनकरै ॥ और तानरनारायणकेअग्रभागविषे नारदमुनिकूं स्थापनकरै ॥ इसप्रकार दूसरे
भीमुनियोंकूं तथादिकपालादिकोंकूं यथायोग्य आपणेआपणेस्थानोंविषे स्थापनकरै ॥ तिनसंपूर्णोंविषे कृष्णभगवान्कातौ मूलमं
त्रकरिकैपूजनकरै ॥ और दूसरेकातौ प्रणवपूर्वक ॥ गुरवेनमः आत्मनेनमः ॥ इत्यादिकनाममंत्रोंकरिकै पूजनकरै ॥ हेशिष्य !
इसप्रकार आषाढमासकीपौर्णमासीविषे व्यासादिकसर्वदेवतावोंकापूजनकरिकै सोपरमहंससंन्यासी तास्थानविषे दोमासरू

हणेकासंकल्पकरिकै अथवा चारिमासरहणेकासंकल्पकरिकै तहां निवासकरै ॥ हेशिष्य ! सोपरमहंससंन्यासी ताचातुर्मासविषे जोएकस्थानविषेनिवासकरैहै ॥ ताकेविषे यहकारणहै ॥ ताचातुर्मासकालविषे यहभूमि अनेककोटिस्थावरजंगमजीवोंकरिकै पूर्ण रहेहै ॥ ताचातुर्मासविषे चलणेकरिकै तिनजीवोंकीहिंसा अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ यातैं तिनजीवोंकीरक्षाकरणेवासतै तथाशास्त्रके आज्ञाकूंपालनकरणेवासतै ॥ सोसंन्यासी तावर्षाकालविषे एकस्थानविषेहीनिवासकरैहै ॥ अब तासंन्यासीविषे यमनियमादिकसा धनोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! सोपरमहंससंन्यासी स्थावरजंगमशरीरोंविषे किसीभीशरीरकी हिंसाकरैनहीं ॥ तथा असत्यवच नकूंभी उच्चारणकरैनहीं ॥ तथा किसीजीवकेतृणकीभीचौरी करैनहीं ॥ तथा स्त्रियोंविषे विषयभोगकीइच्छा करैनहीं॥तथा विषयभो गकेसाधनोंकूंभी इकठाकरैनहीं ॥ तथा किसीदंभयुक्तचेष्टाकूंभी करैनहीं ॥ तथा किसीव्यर्थवचनकूंभी उच्चारणकरैनहीं ॥ और सो परमहंससंन्यासी सर्वदा महादेवविष्णुकेस्मरणकीर्त्तनादिकोंकूंकरै ॥ तथा प्रातःकालादिकोंविषे प्राणायामकूंकरै ॥ तथा निरंतर वेदांतशास्त्रकाविचारकरै ॥ तथा त्रिकालस्नानकरै ॥ तथा आपणागुरु जिसप्रकारकीआज्ञाकरै ॥ तिसीप्रकार गुरुकीभक्तिकरै ॥ और वर्षाकालतैंभिन्नकालविषे एकस्थानविषेनहींरहे ॥ और तावर्षाकालविषेभी जिसदेशविषेरहै ॥ तिसदेशकेपदार्थोंविषे रागद्वे षतैंरहितहोवै ॥ तथा प्रियपदार्थोंकीप्राप्तितैं हर्षकूंनहींप्राप्तहोवै ॥ तथा अप्रियपदार्थोंकीप्राप्तितैं द्वेषकूंनहींप्राप्तहोवै ॥ और शत्रु मित्रविषे तथामानअपमानविषे समानरहै ॥ तथा सर्वभूतप्राणियोंकूं आपणेआत्माकीन्याईंजाणिकै शरीरमनवाणीकरिकै तिनभूत प्राणियोंकूं सुखकीहीप्राप्तिकरै ॥ किसीभीप्राणीकूं दुःखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ और सुवर्णादिकपदार्थोंकूं तथासुंदरस्त्रियोंकूं काकवि ष्ठाकेसमान तुच्छजाणिकै दूरसैं तिनोंकापरित्यागकरै ॥ तथा तिनोंका मनविषे स्मरणभीनहींकरै ॥ और सोसंन्यासी सर्वदा आ पणेमनकेप्रति याप्रकारकाबोधकरै ॥ हेमन ! जिसशरीरविषे तू तादात्म्यअभिमानकरैहै ॥ सोशरीरकैसाहै ? पितामाताके शुक्रशो णितरूपमलतैं उत्पन्नभयाहै ॥ तथा विष्ठामूत्रादिकमलोंकेरहणेकास्थानहै ॥ तथा सर्वअवस्थावोंविषे कामक्रोधादिकअनेकरोगों करिकै ग्रस्तहै ॥ तथा नाशवान्है ॥ ऐसेनिंदितशरीरविषे तादात्म्यअभिमानकरणा तुमारेकूं उचितनहींहै ॥ और हे

शिष्य ! सोपरमहंससंन्यासी मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअभेदज्ञानकीप्राप्तिवासते ताब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतवचनोंकाश्रवणकरिके तिनवचनोंकेअर्थका मननकरै ॥ तथा निदिध्यासनकरै ॥ और तासंन्यासीकूं जबपर्यंत ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति नहींहोवै ॥ तबपर्यंत सोसंन्यासी आपणेअंतःकरणकीशुद्धिवासते यथाशक्तिपरिमाण प्रणवमंत्रकाजपकरै ॥ तथा हंसमंत्रकाजपकरै ॥ तथा दूसरेभीमंत्रोंकाजपकरै ॥ परंतु मुख्यकरिकैतौ प्रणवमंत्रका तथाहंसमंत्रकाही जपकरै ॥ और सोसंन्यासी अश्वादिकोंऊपरिआरूढहोवैनहीं ॥ तथा धनादिकपदार्थोंकूं इकठ्ठाकरैनहीं ॥ किंतु जिनअन्नवस्त्रादिकपदार्थोंतैंविना याशरीरकापरित्यागहोइजाताहोवै॥ तिनअन्नवस्त्रादिकपदार्थोंकूंग्रहणकरै ॥ शरीरकेनिर्वाहतैंअधिकपदार्थोंका ग्रहणकरैनहीं ॥ अब परमहंसउपनिषद्विषे तापरमहंससंन्यासीके जेधर्म कथनकरेहैं तिनधर्मोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! प्रातःकाल मध्याह्नकाल सायंकाल यातीनसंध्यावोंविषे जैसे ब्राह्मणादिक संध्याकर्मकूं अवश्यकरिकैकरैहैं ॥ तैसे सोसंन्यासीभी तातीनसंध्यावोंविषे तासंध्याकर्मकूं अवश्यकरिकैकरै ॥ तहां गुरुकेउपदेशतैं जीवब्रह्मकेअभेदकूं निश्चयकरिकै मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारका जोनिरंतरचिंतनकरणाहै ॥ यहही तासंन्यासीका संध्याकर्महै ॥ और किसीजीवविषे विद्यमानजेकामक्रोधादिकदोषहैं ॥ तिनदोषोंका विनाहीप्रसंगतैं कथनकरणा याकानाम निंदाहै ॥ अथवा जिसजीवविषे तेकामक्रोधादिकदोषहैंनहीं॥ परंतु तेकामक्रोधादिकदोष ताजीवविषेआरोपणकरिकै तिनदोषोंका कथनकरणा याकानाम निंदाहै ॥ ऐसीकिसीकीनिंदाकूंभी सोसंन्यासी करैनहीं ॥ और मैं विद्यादिकगुणोंकरिकै सर्वतैंअधिकहूं याप्रकारकी जोआपणेविषे सर्वतैंअधिकताबुद्धिहै याकानाम गर्वहै ॥ ऐसेगर्वकूंभी सोसंन्यासी करैनहीं ॥ और यापुरुषका किसीभीप्रकारकरिकै लोकविषेअपमानहोवै याप्रकार दूसरेकीअधिकताकूंनहींसहनकरणा याकानाम मत्सरहै ॥ ऐसेमत्सरकूंभी सोसंन्यासी करैनहीं ॥ और आपणेशरीरमनवाणीकरिकै कन्याजोकोईशुभकर्महै ॥ ताआपणेशुभकर्मकूं आपणीमहानताजनावणेवासते दूसरेलोकोंकेआगे प्रगटकरणा याकानाम दंभहै ॥ ऐसेदंभकूंभी सोसंन्यासी करैनहीं॥ और श्रुतिविरुद्धकुतर्कोंकरिकै किसीदूसरेवादीकेपक्षकाखंडनकरणा याकानाम दर्पहै ॥ ऐसेदर्पकूंभी सोसंन्यासीकरैनहीं ॥ और सोसंन्यासी सुखविषे तथासुखके

साधनोंविषे राग नहींकरै ॥ और दुःखविषे तथादुःखकेसाधनोंविषे द्वेषनहींकरै ॥ और सोसंन्यासी स्वप्नविषेभी स्त्रीकेसंभोगकीइच्छाकरैनहीं ॥ और आपणेशरीरमनवाणीकरिकै किसीभीकालविषे भूतप्राणियोंकाद्रोह करैनहीं ॥ और दैवयोगतैंप्राप्तहुए सुवर्णादिकपदार्थोंकूं ग्रहणकरैनहीं ॥ तथा अनात्मरूपदेहादिकोंविषे आत्मबुद्धि करैनहीं ॥ और क्षुद्रचित्तवालेजीवोंविषेस्थित जेविद्याअभिमानादिकधर्म हैं ॥ तिनोंकूंदेखिकै तासंन्यासीनैं क्षमातैंरहितनहींहोणा ॥ किंतु तिनोंऊपरिभी क्षमाहीराखणी ॥ और सोसंन्यासी याआपणेशरीरविषे अहंअभिमान नहींकरै ॥ तथा शरीरकेसंबंधी वस्त्रादिकपदार्थोंविषे ममअभिमान नहींकरै ॥ हेशिष्य ! जिससंन्यासीकूं आपणेमोक्षकीइच्छाहोवै ॥ सोसंन्यासी मिथ्यावचनकूं वाणीकरिकै तथामनकरिकै कदाचित्भी नहींउच्चारणकरै और जिसचेष्टाकरिकै यहलोक बहुतप्रसन्नहोवै ॥ तथा आपणेविषेप्रीतिकरै ॥ ऐसीचेष्टाकूं सोसंन्यासी कदाचित्भी नहींकरै ॥ और सोसंन्यासी याआपणेशरीरकूं सर्वदा विष्ठा मूत्र मृतककेसमानदेखै ॥ और सोपरमहंससंन्यासी स्तुतितैंभीरहितहोवै ॥ तथा नमस्कारतैंभीरहितहोवै ॥ तथा स्वधाकारतैंभी रहितहोवै ॥ तथा नियमकरिकै एकस्थानविषे रहैनहीं ॥ किंतु आपणीइच्छापूर्वक विचरै ॥ और सोसंन्यासी आत्मातैंविना किसीकाभी पूजनकरैनहीं ॥ तथा दूसरेजीवोंकूं किसीशुभकर्मतैंनिवृत्तकरैनहीं ॥ और आत्मातैंभिन्नअर्थकूंकथनकरणेहारेजेमंत्रहैं तिनमंत्रोंका सोसंन्यासी जपकरैनहीं ॥ तथा आत्मातैंभिन्नपदार्थोंकेध्यानकूं तथा उपासनाकूं करैनहीं ॥ किंतु सर्वदा आत्माकाही ध्यान उपासनाकरै ॥ हेशिष्य ! सोपरमहंससंन्यासी यासर्वजगत्कूं आपणा आत्मरूपकरिकैदेखैहै ॥ याकारणतैं तापरमहंससंन्यासीकूं यालोकविषे यहकर्म हमारेकूं अवश्यकरणेयोग्यहै याप्रकारकीबुद्धिकरिकै कोईकर्म करणेयोग्यनहींरहेहै ॥ और यहकर्म हमारेकूं नहींकरणेयोग्यहै याप्रकारकीबुद्धिकरिकै कोईकर्म परित्यागकरणेयोग्यनहींहै ॥ किंतु सोविद्वान्संन्यासी बालककीन्यांई ग्रहणत्यागतैंरहितहोइकैविचरेहै ॥ और तापरमहंससंन्यासीकूं आत्मातैंभिन्नरूपकरिकै याजगत्कूंविषयकरणेहाराज्ञान होवैनहीं ॥ तथा आत्मातैंअभिन्नरूपकरिकै याजगत्कूंविषयकरणेहाराज्ञानभी होवैनहीं ॥ और तासंन्यासीकूं कोईइच्छाकाविषयप्रयोजनभी होवैनहीं ॥ तथा मैं तू जगत्

इत्यादिकभेदभी होवैनहीं ॥ हेशिष्य ! जोअद्वितीयआनंदस्वरूपब्रह्म सर्वजगत्काआत्मरूपहै ॥ तथा आश्रयतैंरहि तहै ॥ ताआनंदस्वरूपब्रह्मविषेही तासंन्यासीकीसर्वदा स्थितिरहेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ मठादिकसर्वपदार्थोंविषे ममत्वकापरित्याग करिकै सोसंन्यासी ताअद्वितीयब्रह्मविषेही सर्वदा स्थितिकरै ॥ और सोपरमहंससंन्यासी रागपूर्वक सुवर्णादिकपदार्थोंकूंदेखे नहीं ॥ तथा तिनसुवर्णादिकोंका रागपूर्वक स्पर्शनहींकरै ॥ तथा तिनसुवर्णादिकपदार्थोंका संग्रहनहींकरै ॥ काहेतें ? यहसुवर्णादि क हमारेकूं प्राप्तहोवैं याप्रकारकेरागकरिकै जोसंन्यासी तासुवर्णादिकोंकूंदेखेहै ॥ सोसंन्यासी ब्राह्मणीस्त्रीविषे शूद्रपुरुषतैंउत्प न्नहुएपुत्रकेसमानहोवैहै ॥ और जोसंन्यासी तारागपूर्वक तिनसुवर्णादिकोंका स्पर्शकरैहै ॥ सोसंन्यासी शूद्राणीस्त्रीविषे निषाद पुरुषतैंउत्पन्नहुएपुत्रकेसमानहोवैहै ॥ और जोसंन्यासी तिनसुवर्णादिकोंका संग्रहकरैहै ॥ सोसंन्यासी आत्महत्याराहोवैहै ॥ और यहआत्मादेव सर्वजगत्रूपहै ॥ यातें याआत्माकेहननकियेतें तासर्वजगत्काहननहोवैहै ॥ और सोपरमहंससंन्यासी विवेक वैराग्य शम दम इत्यादिकसाधनोंयुक्तहोइकै आपणेयज्ञोपवीतकेस्थानविषे आत्मज्ञानरूपयज्ञोपवीतकूंधारणकरै ॥ तथा शिखाके स्थानविषेभी ताआत्मज्ञानरूपशिखाकूंधारणकरै ॥ काहेतें ! ब्रह्मउपनिषद्विषे तथापरमहंसउपनिषद्विषे तथा आरुणिकउपनि षद्विषे ताआत्मज्ञानरूपयज्ञोपवीतशिखाकाधारणकरणा विधानकऱ्याहै ॥ तहां प्रथम ब्रह्मउपनिषद्केवचनोंकाअर्थ निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ! जैसे यालोकविषे ब्राह्मणादिकोंकेगलेविषेस्थित जोतीनदोरवालायज्ञोपवीतहै ॥ तायज्ञोपवीतका एकएकदोर तीनतीनतंतुवोंकाहोवैहै॥यातें सोयज्ञोपवीत नवतंतुरूपहोवैहै॥तैसे ताब्रह्मवेत्तासंन्यासीके हृदयदेशविषेस्थितजेनवतत्त्वहैं ॥ तेनव तत्त्वही तासंन्यासीका यज्ञोपवीतहैं ॥ तेनवतत्त्व येहैं ॥ ईश्वर १ हिरण्यगर्भ २ विराट् ३ विश्व ४ तैजस ५ प्राज्ञ ६ प्राण ७ अ पान ८ व्यान ९॥ हेशिष्य ! जैसे नवतंतुरूपसूत्रतैंउत्पन्नभया जोउपवीतहै॥ सोउपवीत यज्ञादिककर्मोंका साधनरूपहै ॥ याकारणतें ताउपवीतकूं शास्त्रवेत्तापुरुष यज्ञोपवीत यानामकरिकैकथनकरै हैं॥तैसे तिननवतत्त्वोंकेविचारकरिकै प्रगटभयाजो अखंडचैतन्यहै॥ सोचैतन्य ज्ञानरूपयज्ञका अंगरूपहै यातें ताचैतन्यकूं शास्त्रवेत्तापुरुष यज्ञोपवीत यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और॥यज्ञोपवीतंपर

मंपवित्रं ॥ यहमंत्रभी सुख्यवृत्तिकरिकै ताचैतन्यरूपयज्ञोपवीतकूंही कथनकरै है॥काहेतें ? परमपवित्ररूपता ताचैतन्यतैंविना दूसरे किसीअनात्मपदार्थविषे संभवैनहीं ॥ किंतु सोचैतन्यही परमपवित्ररूपहै ॥ ऐसेचैतन्यरूपयज्ञोपवीतकूं आपणेहृदयदेशविषेजा णिकरिकै यहविद्वान्पुरुष शास्त्रकीरीतिसैं ताबाहरिलेयज्ञोपवीतशिखाका परित्यागकरै ॥ तथा संपूर्णदृश्यप्रपंचकूं मिथ्याजाणि के परित्यागकरै ॥ और आकाशादिकसर्वप्रपंचका अधिष्ठानरूप जोअक्षरपरब्रह्महै ॥ तापरब्रह्मकूंही सोविद्वान्पुरुष सूत्ररूपक रिकैनिश्चयकरै ॥ काहेतें ? जैसे लोकप्रसिद्धतंतु आपणेविषेस्थितपटकूं प्रकाशकरै हैं ॥ याकारणतें तिनतंतुवोंकूं सूत्र यानामकरिकैक थनकरै हैं ॥ तैसे सोपरब्रह्मभी आपणेविषेस्थित जगत्रूपपटकूं प्रकाशकरै है ॥ यातें तापरब्रह्मकूं शास्त्रवेत्तापुरुष सूत्र यानामकरि कैकथनकरै हैं ॥ हेशिष्य ! जिसविद्वान्पुरुषनें ऐसेपरब्रह्मरूपसूत्रकूंआपणाआत्मरूपकरिकै जान्याहै ॥ सोविद्वान्पुरुषही सर्व वेदोंकेअर्थकूं जानणेहाराहै ॥ हेशिष्य ! जैसे सूत्रकेआधार सर्वमणियांरहै हैं ॥ तैसे जिसचैतन्यरूपब्रह्मविषे यहसंपूर्णदृश्यप्रपंच स्थितहै ॥ ताचैतन्यरूपसूत्रकूंही यहविद्वान्पुरुष धारणकरै ॥ हेशिष्य ! जोपुरुष अष्टांगयोगकूंजाणैहै ॥ तथा नित्यअनित्यवस्तु केविवेकवालाहै ॥ सोपुरुषही ताचैतन्यरूपसूत्रकेधारणेविषे समर्थहोवैहै ॥ तिनसाधनोंतैंहीनपुरुष ताचैतन्यरूपसूत्रकेधारणकर णेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ! जीवब्रह्मकेअभेदकूंजानणेहारा जोविद्वान्पुरुष बाह्यसूत्रकापरित्यागकरिकै ताचैतन्यब्रह्मरूप सूत्रकूं धारणकरै है ॥ सोविद्वान्पुरुषही चेतनहै ॥ ताब्रह्मवेत्ताविद्वान्तैंभिन्न दूसरेपुरुष यद्यपि शास्त्रोंकेजानणेहारेभी हैं ॥ तथापि तेपुरुष पाषाणादिकोंकीन्यांई जडही हैं ॥ हेशिष्य ! ऐसेचैतन्यरूपसूत्रकूं जिसविद्वान्पुरुषनें धारणकऱ्याहै ॥ सोविद्वान्पुरुष किसीभीकालविषे उच्छिष्टहोवैनहीं तथा अशुचिभीहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ! जिनविद्वान्पुरुषोंकेहृदयदेशवि षे सोचैतन्यपरब्रह्मरूपसूत्र प्रकाशमान्होवैहै ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंकूं सोआत्मज्ञानही प्रधानकर्महै ॥ और तिनविद्वान्पुरुषों कूं कायिक मानसिक वाचनिक यातीनप्रकारकेपापकर्मोंतें शुद्धकरणेहाराभी सोज्ञानही है ॥ तहांस्मृति ॥ नहिज्ञानेनसदृशं पवित्रमिहविद्यते ॥ अर्थयह ॥ याश्लोकविषे आत्मज्ञानकेसमान दूसराकोईपदार्थ पवित्रहैनहीं ॥ हेशिष्य ! जैसे अग्निकीज्वाला

रूपशिखा ताअग्नितैंभिन्ननहींहै ॥ तैसे जिसविद्वान्पुरुषकी नित्यविज्ञानरूपशिखा आपणेस्वरूपतैंभिन्ननहींहै ॥ ताविद्वान्पुरुषकूंही वेदवेत्तापुरुष शिखी यानामकरिकैकथनकरैहैं प्रसिद्धकेशोंकूं मस्तकविषेधारणकरणेहारेपुरुषोंकूं शिखी यानामकरिकै कथनकरैनहीं ॥ काहेतें ? प्रसिद्धकेशोंकूंतौ शूद्रस्त्रीआदिकभी धारणकरैहैं ॥ परंतु तिनशूद्रादिकोंकूं शिखी यानामकरिकैकथनकरै नहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जबी सोज्ञानरूपयज्ञोपवीत तथाज्ञानरूपशिखाही सर्वतैंश्रेष्ठहै ॥ तबी यासर्वब्राह्मणादिकोंनैं ताबाह्ययज्ञोपवीतशिखाका परित्यागकऱ्याचाहिये ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! वेदभगवान्नैं कथनकऱ्येजेअग्निहोत्रादिककर्म हैं ॥ तिन अग्निहोत्रादिककर्मोंविषे जिनब्राह्मणादिकोंकाअधिकारहै ॥ तिनब्राह्मणादिकोंनैंतौ तिनकर्मोंकीसिद्धिकरणेवासते ताबाह्ययज्ञोपवीतकूं तथाशिखाकूं अवश्यकरिकैधारणकरणा ॥ और जेशुद्धचित्तवालेविद्वान्पुरुष तिनकर्मोंकेअधिकारीनहींहैं ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंनैंतौ अंतरज्ञानरूपयज्ञोपवीतशिखाकूंही धारणकरणा ॥ हेशिष्य! केईकब्रह्मवेत्तापुरुष याप्रकारकेवचन कहैहैं ॥ सर्वकाअधिष्ठान अद्वितीयब्रह्मरूप मैंहूं याप्रकारकेज्ञानरूपयज्ञोपवीतकूं तथाताज्ञानरूपशिखाकूं जिसपुरुषनैं धारणकऱ्याहै ॥ तिसब्रह्मवेत्तापुरुषविषेही संपूर्णब्राह्मणपणाहै ॥ और जोपुरुष ताआत्मज्ञानरूपयज्ञोपवीतशिखातैंरहितहै ॥ किंतु बाहरिलेसूत्ररूपयज्ञोपवीतकूं तथाकेशरूपशिखाकूं धारणकरणेहाराहै ॥ तापुरुषविषे सोब्राह्मणपणा मुख्यनहींहै ॥ किंतु ताकेविषे सोब्राह्मणपणा गौण है ॥ काहेतें ? वज्रसूचिनामाउपनिषद्विषे ब्रह्मवेत्तापुरुषकूंही ब्राह्मणकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ जन्मनाजायतेशूद्रो व्रतबंधाद्द्विजः स्मृतः ॥ वेदाभ्यासाद्भवेद्विप्रोब्रह्मजानातिब्राह्मणः ॥ अर्थयह ॥ यहदेहधारीजीव जन्मकरिकै शूद्रसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और यज्ञोपवीतसंस्कारकरिकै द्विजसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और वेदकेअध्ययनकरिकै विप्रसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ब्रह्मकेज्ञानकरिकै ब्राह्मणसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ १ ॥ यातें सोब्रह्मवेत्तापुरुषही ब्राह्मणशब्दकामुख्यअर्थहै ॥ और सोब्रह्मवेत्तापुरुषही यज्ञादिककर्मरूपहै ॥ तथा यज्ञादिककर्मोंकाकर्त्तृरूपहै ॥ हेशिष्य! जैसे ताआत्मज्ञानरूपयज्ञोपवीतशिखातैंविना यापुरुषविषे मुख्य यज्ञोपवीतीपणा तथाशिखीपणा संभवैनहीं तैसे ताआत्मज्ञानरूपदंडकीप्राप्तितैंविना केवल काष्ठकेदंडधारणकरणेकरिकै यासंन्यासी

विषे दंडीपणा सिद्धहोवैनहीं॥काहेतैं? तापरमहंससंन्यासीकेधर्मोंकूंकथनकरणेहारी जापरमहंसउपनिषद्है तापरमहंसउपनिषद्विषे यापकार कथनकऱ्याहै॥ज्ञानदंडोधृतोयेन एकदंडीसउच्यते॥काष्ठदंडोधृतोयेन सर्वाशीज्ञानवर्जितं ॥ सयातिनरकान्घोरा न्महारौरवसंज्ञकान्॥अर्थयह॥जिससंन्यासीनैं आत्मज्ञानरूपदंडकूं धारणकऱ्याहै॥सोसंन्यासीही एकदंडी कह्याजावैहै॥और जिस संन्यासीनैं केवल काष्ठकेदंडकूंधारणकऱ्याहै॥ और आत्मज्ञानरूपदंडतैंरहितहै॥तथा विषयोंविषेआसक्तहै॥ सोविषयासक्तअज्ञानी संन्यासी याशरीरकापरित्यागकरिकै रौरवादिकमहान्घोरनरकोंकूं प्राप्तहोवैहै॥१॥ यातैं यापरमहंससंन्यासीनैं श्रवणमननादिकसा धनोंकरिकै ताआत्मज्ञानकूं अवश्यकरिकै संपादनकरणा॥ जिसजीवब्रह्मकेअभेदज्ञानकरिकै यासंन्यासीकूं पुनःभेदबुद्धि उत्पन्न होवैनहीं॥ हेशिष्य! यद्यपि याजीवात्माविषे ब्रह्मरूपता हमनैं तुमारेप्रति अनेकवार कथनकरीहै॥ तथापि ताअर्थकीदृढताकरा वणेवासते पुनः हम तुमारेप्रति कथनकरे हैं॥ जिसब्रह्मात्मज्ञानकीप्राप्तितैं यहअधिकारीपुरुष कृतार्थहोवैहै॥हेशिष्य! सोपरमहं ससंन्यासी आपणेमनविषे सर्वदा याप्रकारकाविचारकरे॥ जैसे मध्याह्नकालकासूर्य अंधकारतैंरहितहै॥ तैसे जोअद्वितीयब्रह्म आ पणेस्वयंज्योतिरूपकरिकै सर्वदा अविद्यातैंरहितहै॥सोआनंदस्वरूपअद्वितीयब्रह्म याजीवात्माविषे सर्वदा अभेदरूपकरिकैहीस्थि तहोवैहै॥ तटस्थरूपकरिकैस्थितहोवैनहीं॥ कैसाहैसोब्रह्म? सर्वभेदतैंरहितहै यातैं अद्वितीयरूपहै॥ और सोब्रह्म अद्वितीयरूपहै यातैं जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै॥ और सोअद्वितीयब्रह्म आकाशकीन्यांई सर्वत्रव्यापकहै॥ यातैं सर्वक्रियातैंरहित नि श्चलरूपहै॥ और जोअद्वितीयब्रह्म अविद्यादिकविकारोंतैंरहितहै॥ सोअद्वितीयब्रह्म हमारेआत्मातैंभिन्न नहींहै॥ किंतु सो अद्वितीयब्रह्म हमारा आत्मरूपहीहै॥जोकदाचित् ताआत्मरूपब्रह्मतैं मैं भिन्नहोवौंगा॥ तौ घटादिकोंकीन्यांई हमारेविषेभी अना त्मरूपता प्राप्तहोवैगी॥यातैं मैं ताअद्वितीयब्रह्मतैंभिन्ननहींहूं॥और यहआत्मस्वरूपब्रह्मही हमारा सर्वतैंउत्कृष्टप्रियस्थानहै॥ तहां श्रुति॥सभूमाकस्मिन्प्रतिष्ठितःस्वेमहिम्नि॥अर्थयह॥सोव्यापकआत्मादेव किसविषेस्थितहै॥याप्रकारकीजिज्ञासीकेहुएसोव्याप कआत्मा आपणेस्वप्रकाशरूपमहिमाविषेहीस्थितहै॥यहउत्तर श्रुतिनैं कह्याहै॥१॥ और सोअद्वितीयब्रह्म केवलहमाराही आत्मरूप

नहीं हैं ॥ किंतु सोअद्वितीयब्रह्म यासर्वजगत्‌काआत्मस्वरूपहै॥ यातें सोज्ञानस्वरूपब्रह्महीं हमारीशिखाहै ॥ तथा सोज्ञानस्वरूप ब्रह्महीं हमारा यज्ञोपवीतहै ॥ तथा सोज्ञानस्वरूपब्रह्महीं हमारादंडहै ॥ काहेतें ? यालोकविषे राजादिकपुरुष जिसउपायकरिकै शत्रुआदिकोंकूं आपणेवशकरैहैं ॥ ताउपायकानाम दंडहै ॥ सोयाप्रकारकादंडशब्दकाअर्थ मुख्यवृत्तिकरिकै ताज्ञानस्वरूपब्रह्म विषेहीघटैहै ॥ काहेतें ? यहज्ञानस्वरूपब्रह्महीं महावाक्यजन्यअंतःकरणकीवृत्तिविषेआरूढहोइकै कार्यसहित अज्ञानरूपशत्रुकीनि वृत्तिकरैहै ॥ यातें यहज्ञानस्वरूपब्रह्महीं तादंडशब्दका मुख्यअर्थहै ॥ और हमारेहस्तविषेस्थित जोयह काष्ठकादंडहै ॥ सोकेव ल मनकेवशकरणेका स्मरणकरावैहै ॥ यातें यहकाष्ठकादंड तादंडशब्दका मुख्यअर्थनहींहै ॥ किंतु गौणअर्थहै ॥ हेशिष्य ! याप्र कारकाविचारकरिकै सोपरमहंससंन्यासी जबी याआनंदस्वरूपआत्माविषेस्थितहोवैहै ॥ तबी सोपरमहंससंन्यासी सर्वकर्मोंके अधिकारतैंरहितहोइकै ताअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपकरिकैदेखैहै ॥ हेशिष्य ! जिसअद्वितीयब्रह्मकूं यहविद्वान्‌पुरुष आ पणाआत्मरूपकरिकै अपरोक्षदेखैहै ॥ सोब्रह्म सर्वजगत्‌विषेव्यापकहै ॥ तथा निरतिशयआनंदरूपताकरिकै सर्वतैंउत्कृष्टपदहै ॥ और जैसे याजीवोंकेप्रत्यक्षज्ञानका अविषयहुआभी यहचक्षुइंद्रिय घटादिकपदार्थोंकूंप्रकाशकरैहैं ॥ तैसे अज्ञानीजीवोंकेहृदयदे शविषेस्थितहुआभी सोस्वप्रकाशब्रह्म बुद्धिआदिकसर्वपदार्थोंकूंप्रकाशकरैहै ॥ इतनेकरिकै परमहंसउपनिषद्‌काअर्थ निरूपण कऱ्या ॥ अब त्वंपदार्थजीवकाशोधनकरिकै ताजीवकूंब्रह्मरूपकरिकैकथनकरणेहारी जाब्रह्मउपनिषद्‌है ताकेअर्थका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ! यात्वंपदार्थजीवात्माकेस्पष्टकरणेवासतै ताब्रह्मउपनिषद्‌विषे जेचारिअवस्थाकथनकरीहैं ॥ तिनोंकूं तू श्रवणकर ॥ हेशिष्य ! यहआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्मा यद्यपि वास्तवतैंतौ सर्वअवस्थावोंतैंरहितहै ॥ तथापि मायाकेवशतैं यहआत्मादे व जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति तुरीय याचारिअवस्थावोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिनजाग्रदादिकचारिअवस्थावोंके यथाक्रमतैं नाभि कंठ हृदय मूर्द्धा येचारिस्थानहैं ॥ हेशिष्य ! यहअंतःकरणविशिष्टजीवात्मा जबी नाभितैंलेकेनेत्रपर्यंतदेशविषे विशेषकरिकैस्थितहोवैहै ॥ तबी यहजीवात्मा विश्वसंज्ञाकूंप्राप्तकरणेहारी जाग्रत्‌अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहजीवात्मा जबी कंठदेशविषे विशेषकरिकै

स्थितहोवैहै ॥ तबी तैजससंज्ञाकूंप्राप्तकरणेहारी स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहजीवात्मा जबी हृदयकमलविषे विशेषकरिकैस्थितहोवैहै ॥ तबी प्राज्ञसंज्ञाकूंप्राप्तकरणेहारी सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहजीवात्मा जबी समाधिकेप्रभावतैं मूर्द्धस्थानविषेस्थितहोवैहै तबी शुद्धआत्मरूपताकूंप्राप्तकरणेहारी तुरीयअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब तिनचारिअवस्थावोंके देवतावोंका निरूपणकरैहै ॥ हेशिष्य ! ताजाग्रत्अवस्थाका विराट् देवताहै ॥ और स्वप्नअवस्थाका हिरण्यगर्भ देवताहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाका रुद्रदेवताहै ॥ और तुरीयअवस्थाका परमात्मादेवताहै ॥ हेशिष्य ! तातुरीयअवस्थाकादेवतारूप जोपरमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेव मायारूपउपाधिकेसंबंधकरिकैतौ सर्वजगत्रूपहोवैहै ॥ और वास्तवतैं सोपरमात्मादेव कार्यकारणभावतैंरहितहै ॥ तथा मनवाणीकाअविषयहै ॥ तथा स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपहै ॥ और जिसपरमात्मादेवविषे यहकर्मकाफलरूपशब्दादिकविषय आपणेविषयस्वभावकापरित्यागकरिदेवैहैं ॥ हेशिष्य ! ता तुरीयरूपपरमात्मादेवविषे जैसे तेशब्दादिकविषय आपणेस्वभावकापरित्यागकरैहैं ॥ तैसे तापरमात्मादेवविषे देव वेद यज्ञ माता पिता स्नुषा इत्यादिक ममअध्यासकेविषयपदार्थभी आपणेस्वभावकापरित्यागकरिदेवैहैं ॥ और अहंअध्यासकेविषयजे ब्राह्मणत्व क्षत्रियत्व वैश्यत्व शूद्रत्व चांडालत्व पुष्कसत्व इत्यादिकजातियांहैं ॥ तेजातियांभी तिसपरमात्मादेवविषे वास्तवतैंहैंनहीं ॥ इहां ब्राह्मणीस्त्रीविषे शूद्रपुरुषतैंउत्पन्नभयाजोपुत्रहै ताकानाम चांडालहै ॥ और क्षत्रियाणीस्त्रीविषे शूद्रपुरुषतैंउत्पन्नभयाजोपुत्रहै ताकानाम पुष्कसहै ॥ और तापरमात्मादेवविषे ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास येचारिआश्रमभी हैंनहीं ॥ और उत्तम मध्यम कनिष्ठ येतीनप्रकारकेजे कर्मकेकर्त्ताहैं ॥ तथा इसलोकविषे तथापरलोकविषे सुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकरणेहारेजेनानाप्रकारकेसाधनहैं ॥ तथाइसलोकविषे तथापरलोकविषे प्राप्तहोणेहारे जेसुखदुःखरूपफलहैं ॥ इसतैंआदिलैके जितनायहसंसारहै ॥ सोसंसारभी तापरमात्मादेवविषे वास्तवतैंहै नहीं ॥ ऐसा कार्यसहितअज्ञानतैंरहित अद्वितीयब्रह्म शुद्धचित्तवालेअधिकारीजनोंकूं आपणेस्वयंज्योतिरूपकरिकै प्रतीतहोवैहै ॥ और सोपरमात्मादेव इंद्रादिकसर्वदेवतावोंकूं आपणीआज्ञाविषे चलावणेहाराहै ॥ यातैं ऋषि पितर देवता इत्यादिक महान्तेजस्वी

पुरुषभी तापरमात्मादेवके नियमनकरणेविषे समर्थहोवैंनहीं ॥ हेशिष्य ! ऐसेंपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मरूपकरिकैजानेहैं॥तेअधिकारीपुरुष अनाथपुरुषकीन्याई तिनऋषिदेवतावोंके किंकरभावकूंप्राप्तहोवैंनहीं॥हेशिष्य ! ताअद्वितीयपरमात्माविषे ईश जीव जगत् इत्यादिकद्वैतभाव हमजीवोंनैंही कल्पनाकऱ्याहै ॥ वास्तवतैं तापरमात्मादेवविषे सो द्वैतप्रपंचहैनहीं॥जैसे वास्तवतैं अंधकारतैंरहितसूर्यविषे घूकादिकपक्षी अंधकार कल्पनाकरैहैं॥तैसे यहजीव ताअद्वितीयब्रह्मविषे जगत्कीकल्पनाकरैहैं॥हेशिष्य ! जैसे अग्नि संपूर्णकाष्ठोंविषे गुह्यहोइकैरहेहै॥तैसे यालोकविषे कार्यकारणरूपकरिकैप्रसिद्धजे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्जयेचारिप्रकारकेभूतप्राणीहैं ॥ तिनसर्वभूतप्राणियोंविषे सोस्वयंज्योतिएकपरमात्मादेव गुह्यहोइकैरह्याहै ॥ और सोपरमात्मादेव आकाशकीन्यांई सर्वत्र व्यापकहै॥तथा स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंविषे साक्षीरूपकरिकैस्थितहै ॥ तथा राजाकीन्यांई सर्वभूतोंकूंआपणेवशकरिकै तिनभूतोंविषे निवासकरैहै॥और जैसे यालोकविषे मध्यस्थपुरुष विवादकर्त्तापुरुषोंकेव्यापारोंकूं साक्षीरूपहोइकैदेखेहै॥तैसे सोपरमात्मादेवभी साक्षीरूपहोइकैतिनभूतोंकेव्यापारोंकूंदेखेहै॥और सोपरमात्मादेव सर्वजडपदार्थोंतैं विलक्षणहै ॥ यातैं चिद्घनरूपहै ॥ तथा अद्वितीयरूपहै॥तथा निर्गुणरूपहै॥तहांश्रुति॥साक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च॥हेशिष्य ! याश्रुतिविषेस्थितजोचेताशब्दहै ॥ ताचेताशब्दकाअर्थ यद्यपि कोईकभेदवादी चैतन्यगुणवाला मानैहैं ॥ तथापि सोपरमात्मादेव ज्ञानादिकगुणोंवालाहोवैनहीं॥ काहेतैं ? जोकदाचित् तापरमात्मादेवविषे ज्ञानादिकगुण अंगीकारकरीये॥ तौ तिसीश्रुतिविषे निर्गुणशब्दकरिकैतापरमात्मादेवकूं ज्ञानादिकसर्वगुणोंतैंरहितकह्याहै ॥ सोअसंगतहोवैगा और तिसीश्रुतिविषेस्थित जोकेवलशब्दहै ॥ ताकेवलशब्दकरिकै तापरमात्मादेवकूं अद्वितीयरूपकह्याहै ॥ ऐसेअद्वितीयनिर्गुणपरमात्माविषे तिनज्ञानादिकोंका गुणगुणीभाव संभवैनहीं ॥ यातैं सोचेताशब्द चैतन्यस्वरूपआत्माकूंहीकथनकरैहै ॥ हेशिष्य ! सोपरमात्मादेव मायाकेसंबंधतैं आपणेस्वरूपकूंहीयाजगत्रूपकरैहै ॥ यातैं सोकारणरूपपरमात्मादेवही यासर्वजगत्कास्वामीहै ॥ तथा सर्वजगत्कूं आपणीआज्ञाविषेचलावणेहाराहै ॥ हेशिष्य ! जैसे सर्वकाष्ठोंविषे गुह्यहोइकैरह्याजोअग्निहै ॥ सोअग्नि तिनकाष्ठोंकेमथनरूपउपायतैंही प्रगटहोवैहै ॥ तैसे ब्र

ह्मवेत्तापुरुषोंनैं ताअद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारवासतै याप्रकारकाउपाय कथनकऱ्याहै ॥ यहअधिकारीपुरुष आपणेशरीरकूं अ
थवा बुद्धिकूं नीचेकीअरणिरूपकरिकै चिंतनकरै ॥ और अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा याचारिमात्रावोंकरिकै यथाक्रमतैं विश्व
तैजस प्राज्ञ तुरीय याचारिअवस्थावालेआत्माकूं कथनकरणेहारा जोॐकारहै ॥ ताॐकारकूं ऊपरिलीअरणिरूपकरिकैचिंतन
करै ॥ और जैसे यालोकविषे काष्ठरूपदोनोंअरणियोंकेमथनकरणेतैं अग्नि प्रगटहोवैहै ॥ तैसे शरीरबुद्धि तथाॐकार यादोनोंअर
णियोंकेमथनकरणेतैं आत्मसाक्षात्काररूपअग्नि प्रगटहोवैहै ॥ जोआत्मज्ञानरूपअग्नि कार्यसहितअज्ञानकूंनाशकरैहै ॥ हेशिष्य !
यहअधिकारीपुरुष प्रथम विश्व तैजस प्राज्ञ तुरीय याचारोंकूं यथाक्रमतैं विराट् हिरण्यगर्भ ईश्वर परमात्मा याचारोंतैं अभिन्नरूप
करिकैचिंतनकरै ॥ तिसतैंअनंतर तिनविश्वादिकचारोंकूं यथाक्रमतैं अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा याॐकारकीचारिमात्रावोंतैं
अभिन्नरूपकरिकै चिंतनकरै ॥ याप्रकारका जोनिरंतर ध्यानकरणाहै ॥ सोध्यानही तिनदोनोंअरणियोंका मथनहै ॥ हेशिष्य !
यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि काष्ठोंविषेअग्निकीन्यांई यासंघातविषे गुह्यहोइकैरह्याहै ॥ तथापि ताध्यानरूपमथनतैं यहआ
त्मादेव शीघ्रही प्रगटहोवैहै॥याअर्थविषे तुमनैं किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा॥हेशिष्य ! जैसे तिलोंविषे गुह्यहोइकै रह्याजोतैल
है ॥ सोतैल यंत्रविषेपीडनरूपउपायतैं याजीवोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे दुग्धविषे गुह्यहोइकैरह्याजोघृतहै ॥ सोघृत विलोडनरूप
उपायतैं याजीवोंकूं प्राप्तहोवैहै॥तैसे याबुद्धिआदिकसंघातविषे गुह्यहोइकैरह्याजोआत्मादेवहै॥सोआत्मादेव याजीवोंकूं ताध्यानरू
पउपायकरिकै तथा तप सत्य विवेक आदिकउपायोंकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ और हेशिष्य ! यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि वास्तवतैं
जीवईश्वरभावतैंरहितहै ॥ तथापि अविद्याकेसंबंधतैं जीवभावकूंप्राप्तहोइकै यहआत्मादेव जाग्रत्स्वप्नादिकसंसारविषे भ्रमणकरै
है ॥ और यहअधिकारीपुरुष जबी गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं ताआत्मादेवकूं साक्षात्कारकरैहै ॥ तबी सोआत्मादेव ताकल्पि
तजीवभावकापरित्यागकरिकै अद्वितीयब्रह्मरूपहोवैहै ॥ हेशिष्य ! जैसे यालोकविषे ऊर्णनाभिजंतु तंतुवोंकूंउत्पन्नकरैहै त
थालयकरैहै ॥ तैसे यहजीवात्माभी जाग्रत्स्वप्नविषे अनेकप्रकारकेपदार्थोंकूंउत्पन्नकरैहै तथालयकरैहै ॥ और यहजीवात्मा

जबी गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं आपणेहृदयदेशविषेस्थित आनंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरैहै ॥ तबीही यहजीवात्मा आपणेजी वत्वभावकापरित्यागकरिकै ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य! जिसस्वयंज्योतिआत्माकूं यहमनसहितवाकादिकइंद्रिय विषयक रिसकतेनहीं ॥ और जिसस्वयंज्योतिआत्माकेज्ञानतैं याजीवोंकूं आनंदस्वरूपता प्रगटहोवैहै ॥ ऐसेस्वयंज्योतिआत्माकूं साक्षा त्कारकरिकैही यहविवेकीपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेशिष्य! जैसे क्षीरविषे घृत व्याप्यकरिकैरहेहै ॥ तैसे यहआत्मादेव यासर्वजगत्विषे व्याप्यकरिकैरहेहै ॥ और कर्मउपासनाकाफलरूप जोयहसंपूर्णसंसारहै ॥ तासंसारकाभी यहआत्मादेवही कारणहै ॥ ऐसेआत्मादेवकूं जोअधिकारीपुरुष मनकानिग्रहकरिकै साक्षात्कारकरैहै ॥ सोअधिकारीपुरुषही मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तामनकेनिग्रहतैंविना अनेककोटिजन्मोंकरिकैभी यहजीव ताआत्माकूंजाणिसकतानहीं ॥यातैं मोक्षकीइच्छावान्पुरुषतैं सोमनका निग्रह अवश्यकरिकैकरणा ॥ इतनेकरिकै ब्रह्मउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब याहीअर्थविषेप्रमाणरूपकरिकै ब्रह्मबिंदु उपनिषद्काअर्थ निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! याअधिकारीपुरुषोंकूं मनकेनिग्रहकरणेतैंही मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहवार्ता ब्रह्म बिंदुउपनिषद्विषेभी कथनकरीहै ॥ ताकूं तू श्रवणकर ॥ हेशिष्य! याजीवोंकामन दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ शुद्धमनहोवैहै ॥ और दूसरा अशुद्धमनहोवैहै ॥ तहां जिसमनविषे विषयोंकारागहोवैहै ॥ सोअशुद्धमनहोवैहै ॥ और जोमन निष्कामकर्मउपा सनाकरिकै विषयोंकेरागतैंरहितहुआहै सो शुद्धमनहै ॥ हेशिष्य! यहदोप्रकारकामनही यामनुष्योंके बंधका तथामोक्षका कारण होवैहै ॥ तहां विषयोंविषेआसक्त जोअशुद्धमनहै ॥ सोअशुद्धमनतौ यामनुष्योंकेबंधका कारणहोवैहै ॥ और विषयोंकीआसक्ति तैंरहित जोशुद्धमनहै ॥ सो शुद्धमनतौ यामनुष्योंकेमोक्षका कारणहोवैहै ॥ यातैं मोक्षकीइच्छावान् अधिकारीपुरुषोंनैं तामनकूं अ वश्यकरिकै विषयोंतैंरहितकरणा ॥ और हेशिष्य! सर्वविषयोंकीआसक्तितैंरहित सोशुद्धमन जबी हृदयदेशविषे निरोधकूंप्रा प्तहोइकै जीवब्रह्मकेअभेदकूं निश्चयकरैहै ॥ तबी याअधिकारीपुरुषकूंमोक्षरूपफलकीप्राप्तिविषे किंचित्मात्रभी विलंबहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे भोजनकेसमानकालविषेही तृप्तिकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे याअधिकारीपुरुषकूं तिसीआत्मज्ञानकीप्राप्तिकालविषेही मो

क्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और हेशिष्य ! जैसे स्वप्नअवस्थाविषे यह मन आपणेस्वरूपकेअज्ञानकरिकै मिथ्याद्वैतप्रपंचकेआकारकूं प्राप्तहोइकै नानाप्रकारकेविकारोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी सो मन ता अज्ञानकरिकै मिथ्याद्वैतप्रपंचकेआकारकूं प्राप्तहोइकै नानाप्रकारकेविकारोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य ! जैसे स्वप्नअवस्थाविषे अज्ञानकरिकै द्वैतप्रपंचकेआकारकूंप्राप्तहुआ भी सोमन वास्तवतैं अधिष्ठानचैतन्यरूपकरिकै द्वैतभावतैंरहितहै ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी सोमन वास्तवतैं अधिष्ठानचेतन रूपकरिकै ताद्वैतभावतैंरहितहीहै ॥ हेशिष्य ! याअधिकारीपुरुषकामन जबी अधिष्ठानआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै द्वैतप्रपंचाकारवृत्ति योंका परित्यागकरैहै ॥ तबी सोअधिकारीपुरुष द्वैतप्रपंचकाअग्रहणरूप अमनसभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! जिसका लविषे सोमन अमनसभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे याआत्माका किसप्रकारकास्वरूप बाकीरहैहै ? ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ! जिसकालविषे सोभ्रमसिद्धमन ताअमनसभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे वेदवेत्तापुरुष ताआत्मादेवकायाप्रकारकास्वरूप कथनकरैहैं ॥ ताकालविषे याआत्मादेवकूं एकब्रह्महि जानणेयोग्यहोवैहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव सर्वकल्पनातैंरहितहोवैहै ॥ और सोआत्मादेव नित्यहोणेतैं जन्मादिकसर्वविकारोंतैंरहितहोवैहै ॥ और ताजन्मतैंरहितज्ञानकरिकै जन्मतैंरहितवस्तुकाहीबो धहोवैहै दूसरेअनात्मपदार्थोंकाबोधहोवैनहीं ॥ याकारणतैं सोआत्मादेव ज्ञेयवस्तुतैंअभिन्नस्वप्रकाशज्ञानरूपहोवैहै ॥ हेशिष्य ! कोईकभ्रांतपुरुषतौ याप्रकार कथनकरैहैं ॥ यहमन जिसप्रकार सुषुप्तिअवस्थाविषेलयहोवैहै ॥ तिसीप्रकार यहमन जबी लय भावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबीही अमनसभावकीप्राप्तिहोवैहै ॥ सोयहतिनोंकाकहणा संभवैनहीं ॥ काहेतैं ? सुषुप्तिअवस्थाविषे जोमन कालयहै तथासमाधिअवस्थाविषे जोमनकानिरोधहै यादोनोंविषे महान्विशेषता प्रतीतहोवैहै ॥ अब ताविशेषताकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! जोमन विषयोंतैंनिग्रहकूंप्राप्तहुआहै ॥ तथा जोमन सर्वकल्पनातैंरहितहुआहै ॥ तथा जोमन महावाक्यजन्यावि द्याकरिकै संस्कृतहुआहै ॥ ऐसेशुद्धमनकी जाग्रत्अवस्थाविषे जोब्रह्माकारतारूपअवस्थाहोवैहै ताअवस्थातैं सुषुप्तिअवस्थावि षे तामनकी विलक्षणहीअवस्थाहोवैहै ॥ काहेतैं ? सुषुप्तिअवस्थाविषेतौ सोमन आपणेकारणअज्ञानविषे सूक्ष्मरूपहोइकैस्थित

होवै है ॥ और समाधिअवस्थाविषेतौ सोमन कारणअज्ञानविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तासमाधिअवस्थाविषे सोमन अधिष्ठानब्रह्मविषे बाधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब सुषुप्ति समाधि यादोनोंविषे दूसरीविशेषताभी निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! तासमाधिअवस्थाविषे ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय इत्यादिकभेदतैंरहितहुआ सोनिरुद्धमन अद्वितीयब्रह्मरूपहीहोवैहै ॥ कैसाहैसोअद्वितीयब्रह्म? द्वैतभावतैंरहितहोणेतैं निर्भयहै ॥ तथा स्वप्रकाशज्ञानस्वरूपहै ॥ तथा सर्वत्रव्यापकहै ॥ तथा जन्मादिकविकारोंतैंरहितहै ॥ तथा अज्ञानरूपनिद्रातैंरहितहै ॥ तथा अहं मम इत्यादिकसर्वअध्यासोंतैंरहितहै ॥ तथा नामरूपादिकधर्मोंतैंरहितहोणेतैं नेत्रादिकसर्वइंद्रियोंका अविषयहै ॥ और जिसब्रह्मकेज्ञानतैं एकवार नाशकूंप्राप्तहुईअविद्या पुनःउत्पन्नहोवैनहीं ॥ याकारणतैं सोब्रह्म एकवारहीआविर्भूतहोवैहै ॥ तथा सोब्रह्म चैतन्यमात्रस्वरूपहै ॥ ऐसे अद्वितीयब्रह्माकारताकूं सोमन समाधिअवस्थाविषे प्राप्तहोवैहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे तौ सोमन अविद्याविशिष्टचेतनविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताअद्वितीयब्रह्मकेआकारताकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थातैं तासमाधिविषे महान्विशेषताहै ॥ अब तासमाधिकीदुर्लभता निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! पूर्वलेअनेकपुण्यकर्मोंकेप्रभावतैं जबी याअधिकारीपुरुषकामन ताअमनसभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहअधिकारीपुरुष तानिर्विकल्पसमाधिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोनिर्विकल्पसमाधि? वाक्इंद्रियकेविषय जेसर्वशब्दहैं तिनोंतैंरहितहै ॥ तथा अंतःकरणकी चिंतादिकसर्ववृत्तियोंतैंरहितहै ॥ हेशिष्य! ऐसेनिर्विकल्पसमाधिविषे सर्वद्वैतकाअभावहोवैहै ॥ यातैं तासमाधिविषेस्थितहुआ यहविद्वान्पुरुष किसीपदार्थका ग्रहण अथवा त्याग करैनहीं ॥ तथा किसीविषयकीचिंताभीकरैनहीं ॥ हेशिष्य! याअधिकारीपुरुषकामन जबी अद्वितीयआत्माकूंनिश्चयकरिकै सर्वविक्षेपोंतैंरहित निश्चलताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा अद्वितीयआत्मरूपहोवैहै ॥ तथा सर्वसंकल्पविकल्पोंतैंरहितहोवैहै ॥ तथा समताभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबीही याअधिकारीपुरुषकूं निर्विकल्पसमाधिकीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेशिष्य! ऐसेनिर्विकल्पसमाधिकूं यद्यपि वेदांतशास्त्रकेवचन कथनकरैहैं ॥ तथापि ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंही याअधिकारीपुरुषकूं तासमाधिकीप्राप्तिहोवैहै ॥ गुरुकेउपदेशतैंविना तासमाधिकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ हेशिष्य! यहनिर्विकल्पसमाधि ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय ध्या

ता ध्यान ध्येय इत्यादिकसर्वसंबंधतैंरहितहै ॥ याकारणतैं विद्वान्पुरुष यासमाधिकूंअस्पर्शयोग यानामकरिकेकथनकरैंहैं ॥ ऐसेनि विकल्पसमाधिकूं वेदांतविचारतैंरहितयोगीपुरुष देखिसकतेनहीं॥काहेतैं? जैसे भयतैंरहित जोएकांतस्थानहै॥ताएकांतस्थानविषे भयकीकारणताकाआरोपणकरिकै मूढबालक तास्थानतैंभयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे सर्वभयतैंरहित तानिर्विकल्पसमाधिविषे भयकी कारणताकाआरोपणकरिकै तेवेदांतविचारतैंरहितयोगीपुरुष तानिर्विकल्पसमाधितैं भयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और हेशिष्य ! जैसे जन्मतैंअंधपुरुष प्रसिद्धरूपकूंभीदेखतेनहीं ॥ तैसे तेवेदांतविचारतैंरहितयोगीपुरुष अंतरआत्माकेअज्ञानतैं ताअमनसभावरूपसमाधिकूं सुषुप्तिकेतुल्य कथनकरैंहैं ॥ हेशिष्य ! तिन वेदांतविचारतैंरहित योगीपुरुषोंकूं जो तानिर्विकल्पसमाधितैंभयहोवैहै ॥ ताभयविषे एकतौ आत्माकेस्वरूपकाअज्ञानही कारणहै ॥ और दूसरा शास्त्रविरुद्ध नानाप्रकारकेकुतर्क कारणहैं ॥ अब तिनकुतर्कोंका निरूपणकरैंहैं ॥ तहां प्रथम सांख्यशास्त्रकेअनुसारी योगीपुरुषोंकेकुतर्कोंका निरूपणकरैंहैं ॥ सर्वभेदतैंरहित एकअद्वितीयआत्माही सर्वशरीरोंविषेव्यापकहै ॥ तथा सोअद्वितीयआत्मा सत्‌चित्‌आनंदस्वरूपहै ॥ याप्रकारका आत्माकास्वरूप वेदांतशास्त्रविषे कथनकऱ्याहै ॥ सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं? यासर्वभूतप्राणियोंविषे जोएकहीआत्माहोवै तौ यालोकविषे एकजीवकेसुखीहुए सर्वजीव सुखीहोणेचाहिये ॥ तथा एकजीवकेदुःखीहुए सर्वजीव दुःखीहुणेचाहिये ॥ और ऐसीवार्त्ता यालोकविषे देखणेमैंआवती नहीं ॥ किंतु यालोकविषे कोईजीवतौ सुखीहै और कोईजीव दुःखीहै ॥ तथा कोईजीवतौ जन्मताहै और कोईजीव मरताहै ॥ याप्रकारकीव्यवस्था देखणेमैंआवैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ यासर्वशरीरोंविषे आत्मा एकनहींहै ॥ किंतु एकएकशरीरविषे एकएकआत्मा रहेहै ॥ तेशरीर अनंतहैं ॥ यातैं तेआत्माभी अनंतहैं ॥ तिनअनेकआत्मावोंकूं भोगमोक्षकीप्राप्तिकरणेहारी एकप्रकृति अंगीकारकरीचाहिये ॥ साएकप्रकृति यद्यपि संसारदशाविषे महत्तत्वआदिकअनेकरूपोंकरिकैस्थितहै ॥ तथापि साप्रकृति मोक्षअवस्थाविषे यापुरुषके अदर्शनभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अथवा साप्रकृति संसारदशाविषे बंधरूपअनुलोमपरिणामकूं प्राप्तहुईभी मोक्षकालविषे मुक्तिरूपप्रतिलोमपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अथवा साप्रकृति आपणेस्वरूपतैं यापुरुषकूं बंधकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ किं

तु साप्रकृति मनरूपकरिकै यापुरुषकूं बंधकीप्राप्तिकरै है ॥ यातें मुक्तिअवस्थाविषे कृतार्थहुआ सोमनही आपणेकारण विषे लय रूपताकूंप्राप्तहोवै है ॥ यहतीनप्रकारकीरीतिही संभवहोइसकेहै ॥ और वेदांतियोंनें तामनका अद्वितीयब्रह्मविषे तादात्म्यरूपजो लयमान्याहै ॥ सो संभवतानहीं ॥ काहेतें? यालोकविषे कार्यका आपणेकारणविषेही लयहोवै है ॥ अकारणविषे लयहोवैनहीं ॥ जैसे घटरूपकार्यका मृत्तिकारूपकारणविषेही लयहोवै है ॥ तंतुआदिकअकारणोंविषे लयहोवैनहीं ॥ और निर्विकारअद्वितीयब्रह्म विषे तामनकीकारणतासंभवैनहीं ॥ यातें ताअद्वितीयब्रह्मविषे तामनकालय संभवैनहीं ॥ हेशिष्य ! इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकीकुतर्कोंकरिकै तेवेदांतविचारतैंरहित योगीपुरुष तानिर्विकल्पसमाधितें भयकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तथा श्रुतिविद्वान्पुरुषोंकेअनुभवकरिकैसिद्ध जोपूर्वउक्त अमनसभावहै ॥ ताका परित्यागकरिकै ताअमनसभावकूं सुषुप्तिकेतुल्यमानेहैं ॥ याकारणतें तेयोगीपुरुष आपणेआनंदस्वरूपआत्माकूं प्राप्तहोइसकैनहीं॥ हेशिष्य ! ते वेदांतविचारतैंरहित योगीपुरुष यद्यपि वृक्षकीन्यांई ज्ञानतैंरहितहैं ॥ तथापि आपणेकूंपंडितमानेहैं ॥ और तेयोगीपुरुष यद्यपि पाषाणकीन्यांई निश्चलहैं ॥ तथापि भस्त्राकीन्यांई व्यर्थहीश्वासोंकूं उठावैहैं ॥ तहां बाहरिलेवायुकरिकै पूर्णकन्याजो अजादिकोंकाचर्महै जिसचर्मकेवायुकरिकै लुहारपुरुष अग्निकूंप्रज्वलितकरै है ॥ ताचर्मकानाम भस्त्राहै ॥ हेशिष्य ! जैसे जन्मतैंअंधपुरुष आपणेहस्तविषेस्थितनिधिकूंभी देखतेनहीं॥ तैसे ते वेदांतविचारतैंरहित योगीपुरुष आपणेहृदयदेशविषे स्थित आनंदस्वरूपआत्माकूंभी देखिसकतेनहीं ॥ इतनेकरिकै सांख्यशास्त्रवालेपुरुषोंके कुतर्कोंका निरूपणकन्या ॥ अब नैयायिकआदिकोंकेकुतर्कोंका संक्षेपतैंनिरूपणकरै हैं ॥ बुद्धिआदिकोंकासाक्षीरूप तथासर्वउपाधियोंतें रहित ऐसाजो आनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्माहै ॥ ताआत्मादेवकूं केईकनैयायिकवादी स्वभावतें ज्ञानतैंरहितजडमानैहैं ॥ और केईकशून्यवादी माध्यमिकतौ सुख ज्ञान यादोनोंकूं अत्यंतअसत्यमानैहैं ॥ तहां नैयायिकोंकेमतविषेतौ जिसकालविषे आत्माकेसाथ मनका संयोगसंबंधहोवै है ॥ तिसीकालविषे ताआत्माविषे ज्ञान सुख आदिकगुण उत्पन्नहोवै हैं ॥ और जिसकालविषे ताआत्माकेसाथ मनका संयोगसंबंधनहींहोवै है ॥ तिसकालविषे तेज्ञानसुखादिकगुण आत्माविषे उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और माध्य

मिकोंकेमतविषेतौ तेज्ञानसुखादिक अत्यंत असत्यहीहोवैहैं ॥ और तिननैयायिकोंकेमतविषे सोआत्मा मोक्षकालविषेही तामनकेसंबंधतैंरहितहोवैहै ॥ जीवत्अवस्थाविषेहोवैनहीं ॥ यातें तेवादी जीवत्अवस्थाविषे ताअमनसभावकूं अंगीकारक रैनहीं ॥ किंतु मोक्षकालविषेही ताअमनसभावकूं अंगीकारकरैहैं ॥ याकारणतें तेभ्रांतवादी तानिर्विकल्पसमाधितें सर्व दा भयकूंहीप्राप्तहोवैहैं ॥ हेशिष्य ! ऐसे शास्त्रविरुद्धकुतर्कोंकापरित्यागकरिकै जेअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुवेदांतशास्त्रके संप्रदायकेअनुसार तामनकानिग्रहकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोइकै मोक्षरूपनित्यसुखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा सर्वभयतैंरहितहोवैहैं ॥ तथा जन्ममरणादिकसर्वदुःखोंतैंरहितहोवैहैं ॥ यातें जिनअधिकारीपुरुषोंकूं मोक्षकीप्राप्ति कीइच्छाहोवै ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंनैं प्रथम आपनेमनकूंहीजयकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! सोमन अत्यंतप्रबलहै ॥ यातें तामनकेजयकरणेविषे कोईभीपुरुष समर्थनहींहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ! तामनकेजयकरणेविषे जो किसीजीवका सामर्थ्यनहीं होता तौ श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्र तामनकेजयकरणेका विधाननहींकरता ॥ काहेतें ? जिसकर्मकेकरणेविषे याअधिकारीपुरुषोंका सा मर्थ्यहोवैहै ॥ तिसीकर्मकेकरणेका सोशास्त्र विधानकरैहै ॥ और जिसकर्मकेकरणेविषे यापुरुषोंका सामर्थ्यनहींहोवैहै ॥ ताकर्मके करणेका सोशास्त्र विधानकरैनहीं ॥ जैसे अग्निहोत्रादिककर्मोंकेकरणेविषे याअधिकारीपुरुषोंकासामर्थ्यहै ॥ यातें सोशास्त्र तिनअ ग्निहोत्रादिककर्मोंका विधानकरैहै ॥ और अग्निकेभक्षणकरणेविषे तथासमुद्रकेउल्लंघनकरणेविषे यापुरुषोंका सामर्थ्यहैनहीं ॥ यातें ताअग्निकेभक्षणकरणेका तथासमुद्रकेउल्लंघनकरणेका कोईभीशास्त्र विधानकरैनहीं ॥ और तामनकेजयकरणेकातौ वारंवार सोशा स्त्र विधानकरैहै ॥ तथा सोमनकाजयकरणा अनेकविद्वान्पुरुषोंके अनुभवकरिकैभीसिद्धहै ॥ यातें गुरुशास्त्रकेउपदेशतें तामनका जय अवश्यकरिकैसिद्धहोवैहै ॥ हेशिष्य ! तामनकेनिग्रहकरणेविषे याअधिकारीपुरुषका उद्वेगतैंरहित दृढउत्साहही कारणहै ॥ जैसे पूर्व किसीटिटिभपक्षीनैं दृढउत्साहकरिकै जलकेएकबिंदुकूंग्रहणकरणेहारी आपणीचंचुसैं समुद्रकूं जलसैंरहितकर्याहै ॥ तै से याअधिकारीपुरुषनैंभी उद्वेगतैंरहितहोइकै तथादृढउत्साहकरिकै तामनकानिग्रहकरणा ॥ हेशिष्य ! लोकपरंपराकरिकैप्राप्त जो टि

टिभपक्षीकावृत्तांतहैं ॥ ताकूं तू श्रवणकर ॥ समुद्रकेजलकीलहरियोंकरिकैयुक्त जोसमुद्रकातीरहै ॥ तासमुद्रकेतीरविषे एकटिटिभपक्षी आपणेअंडोंकूंराखताभया ॥ और तिसकालविषे यद्यपि टिटिभीस्त्री ताटिटिभपक्षीकूं बहुतवार निवारणकरतीभई ॥ तथापि सो टिटिभपक्षी आपणेअहंकारकरिकै तास्त्रीकेवचनकूंनहींमानताभया ॥ तथा समुद्रकूं तुच्छमानिकै तासमुद्रकेतीरविषेही आपणेअंडोंकूंराखताभया ॥ और सोटिटिभपक्षी आपणीस्त्रीकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेटिटिभी! तू याससुद्रतैंभयमतकर ॥ जोकदाचित् यहसमुद्र आपणेगर्वकरिकै हमारेअंडोंकाहरणकरैगा ॥ तौ यामदकरिकैमत्तसमुद्रकूं मैं अबी जलतैंरहितकरौंगा ॥ हेटिटिभी! मेरेकोपकरिकैउत्पन्नभयाजोभय ताभयकरिकै तेजतैंरहितहुएयासमुद्रकूं तू देख॥ हेशिष्य! इसप्रकार ताटिटिभपतिके गर्वयुक्तवचनोंकूंश्रवणकरिकै साटिटिभीस्त्री तापतिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई ॥ हेपति! मैं समुद्रकूंजलतैंरहितकरौंगा या प्रकारकावचन जोतू कथनकरताहै ॥ सोयहवार्त्ता अत्यंतदुर्घटहै ॥ काहेतें? यासमुद्रकाबल कहांहै! और तुमाराबलकहांहै? ऐसे महान्समुद्रकेसुकावणेविषे तुमारा सामर्थ्यहैनहीं ॥ हेशिष्य! इसप्रकार बहुतवारकहिकै साटिटिभीस्त्री पुनःकहणेतैंउपरामहोतीभई ॥ और सोटिटिभपक्षीभी तास्त्रीकेप्रति तू समुद्रतैंभयमतकर याप्रकारकावचन वारंवारकहिकै तासमुद्रकेतीरविषे आपणेअंडोंकूंराखताभया॥तिसतैंअनंतर सोटिटिभपक्षी आपणीस्त्रीकूंसाथलेके कहां आहारकेवासते जाताभया ॥ हेशिष्य! ताटिटिभपक्षीनें आपणीस्त्रीकेप्रति जेजेवचनकहेथे॥तिनसंपूर्णवचनोंकूं सोसमुद्र श्रवणकरताभया॥और तास्त्रीसहितटिटिभपक्षीकेगयेतैंअनंतर सोसमुद्र आपणेमहान्पणेकूंस्मरणकरिकै तथा ताटिटिभपक्षीकेअल्पपणेकूंस्मरणकरिकै मंदमंद हसताभया ॥ तिसतैंअनंतर सो समुद्र पर्वतकेसमानउंची जलकीलहरीकूंपसारिकै ताटिटिभपक्षीकेअंडोंकूंहरणकरताभया ॥ और तिनअंडोंकूंग्रहणकरिकै सोसमुद्र परमेश्वरकूं सर्वजगत्केभयकाकारणमानताहुआआपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ यालोकविषे जितनेस्थावरजंगम जीवहैं॥तेसंपूर्णजीव परमेश्वरकीविभूतियांहैं॥यातैं किसीभीजीवकीशक्ति स्वरूपकरिकै तथादेशकरिकै तथाकालकरिकै तथानिमित्तकरिकै जानीजातीनहीं॥काहेतें? सर्वशक्तियोंकाआश्रय जोपरमेश्वरकीमायाहै॥सामाया दुर्घटअर्थकूंभी सिद्धकरिदेवैहै॥याकारणतैं

ही शास्त्रवेत्तापुरुषोंनें अघटितघटनापटीयसीमाया यहमायाकास्वरूप कथनकऱ्याहै॥ और यहटिटिभपक्षीभी तापरमेश्वरकीवि
भूतिरूपहै ॥ यातैं याटिटिभपक्षीका कौनदेशहै तथाकौनकालहै तथाकौनमित्रहैं तथाकौनशक्तिहै यहवार्त्ता सर्वज्ञपरमेश्वरतैंविना
हमजीव जानिसकतेनहीं ॥ यातैं इसटिटिभपक्षीकेअंडोंकूं मैं नाशनहींकरौं ॥ किंतु किसीगुह्यस्थानविषे मैं इनअंडोंकूंराखिछोडौं ॥
हेशिष्य ! इसप्रकारकाविचारआपणेमनविषेकरिकै सोसमुद्र तिनअंडोंकूं किसीगुह्यस्थानविषेराखताभया ॥ और महान्‌गर्ज
नारूपशब्दोंकूंकरताहुआ सोसमुद्र पूर्वकीन्यांई निर्भयस्थितहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोटिटिभपक्षी आपणेउदरकीपूर्णताकरि
कै ताटिटिभीस्त्रीसहित तासमुद्रकेतीरऊपरिआवताभया ॥ और तहां आपणेपुत्रोंकेअंडोंकूंनदेखिकरिकै सोटिटिभपक्षी आपणे
नेत्रोंकूंरक्तकरताभया ॥ तथा क्रोधकरिकैमूर्छितहोताभया ॥ और यहसमुद्र हमारेअंडोंकूंलेगयाहै याप्रकारकाअनुमानकरिकै सो
टिटिभपक्षी तासमुद्रकेसुकावणेकानिश्चयकरताभया ॥ तिसकालविषे साटिटिभीस्त्री आपणेपतिकेअभिप्रायकूंजानिकै तापतिकेहि
तवासते याप्रकारकेनीतियुक्तवचनोंकूं कहतीभई ॥ टिटिभीउवाच ॥ हेपति ! सर्वनदियोंकापति जोयह समुद्रहै ॥ ताकाबल अत्यं
तमहान्‌है ॥ और तुमाराबल अत्यंतअल्पहै ॥ ऐसेमहान्‌बलवालेसमुद्रकेसाथ जोतूं वैरकरताहै सोनीतिशास्त्रतैं विरुद्धकरताहै ॥
काहेतें ? तानीतिशास्त्रविषे यहकह्याहै ॥ जैसे मैत्री तथाविवाह येदोनों समानपुरुषोंकेहीहोवैहै ॥ न्यूनअधिकपुरुषोंका परस्पर
मैत्री तथाविवाह होवैनहीं ॥ तैसे परस्पर वैरभी समानवलवालेपुरुषोंकाहीहोवैहै ॥ न्यूनअधिकबलवालेपुरुषोंका परस्पर वैर सं
भवैनहीं ॥ और यासमुद्रकेबलसमान तुमाराबल हमारेकूंदेखणेविषेआवतानहीं ॥ यातैं यासमुद्रकेसाथवैरकरणा तुमारेकूं उ
चितनहींहै और हेपति ! यालोकविषे देशबल १ कालबल २ मित्रबल ३ धनबल ४ शारीरबल ५ कुलबल ६ यहषट्प्रकारका
बलहोवैहै ॥ सोषट्प्रकारकाबल यासमुद्रविषेतौ देखणेमैंआवैहै ॥ परंतु तुमारेविषे सोषट्प्रकारकाबल हमारेकूंदेखणेविषेआवता
नहीं ॥ काहेतें ? शिरतैंलैकेपुच्छपर्यंत तुमारेशरीरकीदीर्घतातौ षोडशअंगुलपरिमाणहै ॥ और तुमारेदोनोंपक्ष द्वादशअंगुलपरिमाण
दीर्घहै॥यातैं वामपक्षकेअग्रभागतैंलैके दक्षिणपक्षकेअग्रभागपर्यंत यहतुमाराशरीर एकहस्तपरिमाण चौडाहै ॥ और आम्रफलकेवं

तसमान तुमारे दोनौंपादहैं ॥ और कुशाकेअग्रभागकेसमान तुमारीचंचुहै॥और जीर्णवस्त्रकेसमान अत्यंतशिथिल तुमारेदोनौंपक्ष हैं ॥ इसतैंअधिकदेश तुमारा अंतरनहींहै तथाबाहरिनहींहै ॥ यातैं देशबलभी तुमारेविषेनहींहै ॥ और हेपति! हमपक्षीआदिकनी चजातियोंविषे जन्मतैंलेकेनाशपर्यंत यहकाल एकरूपहीरहेहै॥ देव दैत्य मनुष्य इत्यादिकउत्तमजातियोंविषेही सोकाल उत्कृष्टता तथानिकृष्टता प्राप्तकरैहै ॥ यातैंकालबलभी तुमारेविषेनहींहै ॥ और हेपति! पुत्रोंकेवियोगकरिकै दीनभावकूंप्राप्तभई जोमैंस्त्री हूं तास्त्रीतैंविना तुमारा दूसराकोईमित्रहैनहीं ॥ यातैं मित्रबलभी तुमारेविषेनहींहै॥ और हेपति! यालोकविषे जोधनवान्पुरुषहै॥ ताधनीपुरुषके धनकेप्राप्तिकीआशाकरिकै अमित्रपुरुषभी मित्रभावकूंप्राप्तहोवैहैं॥ सोधन तुमारेपासहैनहीं॥ यातैं धनबल भी तुमारेविषेनहींहै ॥ और हेपति ! किसीबलवान्पुरुषनैं आकाशविषेचलायाजोबाणहै ॥ सोबाण जितनेपर्यंतजाइकै नीचै पतनहोवैहै ॥ तितनेपर्यंत उडणेविषेभी तुमारा सामर्थ्यहैनहीं ॥ यातैं शरीरबलभी तुमारेविषेनहींहै ॥ और हेपति ! तुमारा जन्म टिटिभपक्षीकेकुलविषेहुआहै ॥ सोटिटिभपक्षी सर्वपक्षियोंविषे निकृष्टहोवैहै ॥ यातैं कुलबलभी तुमारेविषेनहींहै ॥ इतने करिकै टिटिभपक्षीविषे तापट्प्रकारकेबलकाअभाव निरूपणकऱ्या ॥ अब समुद्रविषे तापट्प्रकारकेबलकीविद्यमानता निरूप णकरैहै ॥ हेपति! यहसमुद्र ओरलेकिनारेविषेतौ एकलक्षयोजनपरिमाण विस्तारवालाहै ॥ और पारलेकिनारेविषे दोलक्षयोजनपरिमाण विस्तारवालाहै ॥ और नीचैपृथिवीविषेतौ यासमुद्रका पातालपर्यंत विस्तारहै ॥ और जैसे त लावकाजल कुल्याद्वारा सर्वक्षेत्रभूमिकूंव्याप्यकरिकैस्थितहोवैहै ॥ तैसे यहसमुद्रभी प्रलयकालविषे तीनलोकोंकूंव्याप्य करिकैस्थितहोवैहै ॥ यातैं यहसमुद्र देशबलवालाहै ॥ और हेपति! यासमुद्रादिकमहान्पुरुषोंके यहकाल सर्वदाअनुकूलरहेहै॥ यातैं यहसमुद्र कालबलवालाभीहै ॥ और हेपति! याभूमिविषे जितनेजातिकेप्राणीरहेहैं ॥ तितनेहीजातिकेरत्न यासमुद्रवि षेरहेहैं ॥ यातैं यहसमुद्र धनबलवालाभीहै ॥ और हेपति ! यहसमुद्र इंद्रादिकदेवतावोंकूं तथामुनिलोकोंकूं तथामनुष्योंकूं अनेक प्रकारकेरत्नोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ यातैं तेसंपूर्णइंद्रादिकदेवता यासमुद्रकेमित्रहैं ॥ यातैं यहसमुद्र मित्रबलवालाभीहै ॥ और हेपति !

यहसमुद्र साक्षात् महेश्वरतैंउत्पन्नभयाहै ॥ यातैं यहसमुद्र कुलबलवालाभीहै ॥ और हेपति ! अनेकशतयोजनहैंविस्ताराजिनोंका ऐसेजे मैनाकादिकपर्वतथे ॥ तेपर्वत इंद्रतैंभयकूंप्राप्तहोइके याससुद्रकेशरणकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तिनपर्वतोंकूं यहसमुद्र आपणेजल विषेस्थितकरिकै पालनकरताभयाहै ॥ यातैं यहसमुद्र शरीरबलवालाभीहै ॥ हेपति ! इसप्रकार आपणेबलकूं तथायासमुद्रकेब लकूं तू भलीप्रकार विचारकरिकैंदेख ॥ आपणेनाशकरणेवासते तू याससुद्रसैं व्यर्थविरोधमतकर ॥ हेपति ! तुमनैं आपणीमू र्खताकरिकै प्रथमतो हमारेकूं पुत्रोंतैंरहितकन्याहै ॥ अबी आपणेनाशकरिकै हमारेकूं विधवाभावकीप्राप्ति मतकर ॥ हेशिष्य ! इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेवचन जबी ताटिटिभीस्त्रीनैं आपणेपतिकेप्रति कहे ॥ तबी सोटिटिभपक्षी तास्त्रीकेवचनोंकूंश्रवण करिकै तास्त्रीकेप्रति याप्रकारकेवचन कहताभया ॥ टिटिभउवाच ॥ हेस्त्री ! यालोकविषे संपदाकालविषेतौ आपणेस्वार्थवासते कोटिसहस्र मित्रहोवैंहैं ॥ परंतु आपदाकालविषे कोई मित्रहोतानहीं ॥ और जो आपदाकालविषे मित्रहोवैहै ॥ सोईही मि त्रकह्याजावैहै ॥ और हेस्त्री ! जोदेहधारीजीव आपदाकालविषे जिसपुरुषका परित्यागकरिदेवैंहैं ॥ सोदेहधारीजीव तिसपुरुषका शत्रुहीहोवैहै ॥ सो आपणीस्त्रीहोवै अथवा आपणापुत्रहोवै अथवा आपणाभ्राताहोवै ॥ ताकूं शत्रुहीजानणा ॥ और हेस्त्री ! या लोकविषे जोदेहधारीजीव जिसपुरुषके पुण्यपापरूपकर्मोंविषे तथासुखदुःखरूपभोगविषे अनुसारीवर्त्तैहै ॥ सोदेहधारीजीवही तिसपुरुषका मित्रकह्याजावैहै ॥ और हेस्त्री ! यालोकविषे जिसपुरुषनैं जिसबुद्धिमान्मनुष्यकूं आपणेआत्माकीन्यांई विश्वा सकापात्रकरिकै मान्याहै ॥ सोबुद्धिमान्मनुष्य तिसपुरुषकूं जबी आपदाकालविषे चित्तकेउत्साहकूंनष्टकरणेहारेवचन कहैहै ॥ तबी सोबुद्धिमान्मनुष्य तापुरुषका शत्रुहीजानणा ॥ और हेस्त्री ! यालोकविषे जोपुरुष केवल आपणेयोगक्षेमकीहीइच्छाकरै है ॥ आपणेमित्रके योगक्षेमकीइच्छाकरतानहीं ॥ ऐसेकपटीमित्रकूं यहबुद्धिमान्पुरुष प्रथमही नाशकरै ॥ तिसतैंअनंतर आप णेसाक्षात्शत्रुकूंनाशकरै ॥ याप्रकारकेवचन नीतीशास्त्रविषे बुद्धिमान्पुरुषोंनैं कथनकरैहैं ॥ हेस्त्री ! यद्यपि पूर्व तू हमारेकूं मि त्ररूपहोइके प्रतीतहोतीथी तथापि याआपदाकालविषे तुमनैं हमारेप्रति उत्साहकेनाशकरणेहारे कठोरवचन कहेहैं ॥ यातैं अबी

हमारेकूं तू शत्रुरूपहोइकैप्रतीतहोतीहै ॥ और जोदेहधारीजीव अंतरविषेतौ शत्रुपणाराखैहै ॥ और बाहरिसैं मित्रपणादिखावै है॥ ऐसेकपटीमित्रकेमारणेविषे यद्यपि नीतिशास्त्रनैं दोष कह्यानहीं ॥ तथापि मैं तुमारेकूं मारतानहीं ॥ काहेतें? शास्त्रविषे दोप्रकारके वचनहोवैंहैं ॥ तहां एकतौ सामान्यवचनहोवैहै ॥ और दूसरे विशेषवचनहोवैहै ॥ जैसे याअधिकारीपुरुषनैं किसीभीजीवकीहिंसानहींकरणी यहसामान्यवचनहै ॥ और याअधिकारीपुरुषनैं यज्ञविषे पशुकीहिंसाकरणी यहविशेषवचनहै ॥ तहां सामान्यवचनतें विशेषवचन बलवान्होवैहै ॥ तैसे यापुरुषनैं कपटीमित्रकूंमारणा यहसामान्यवचनहै ॥ और स्त्रीबालककूं नहींमारणा यहविशेषवचनहै ॥ सोयहविशेषवचन सामान्यवचनतें बलवान्है ॥ याप्रकारकी शास्त्रकीव्यवस्थाकूंविचारिकै मैं तुमारेकूंमारतानहीं ॥ और हेस्त्री ! तुमारेनमारणेविषे एकदूसराभीकारणहै ॥ जिसपुरुषकेसाथ जोपुरुष प्रीतिपूर्वक सप्तवचन उच्चारणकरैहै ॥ अथवा भूमिविषे सप्तपाद इकठेउठावैहै ॥ सोपुरुष ताकामित्रहोवैहै ॥ याप्रकारका मित्रकालक्षण कोईक बुद्धिमान्पुरुष कथनकरैहै ॥ सोयहमित्रकालक्षण तुमारेविषेभीघटैहै ॥ काहेतें? मैंनें तुमारेसाथ स्वस्थचित्तहोइकै बहुतकालपर्यंत निवासकर्‍याहै ॥ यातें तुमारेकूं मृत्युरूप शरीरकादंड मैं करतानहीं ॥ और पूर्वउक्तशत्रुकेलक्षणभी तुमारेविषेघटैहै ॥ यातें हेदुष्टस्त्री! तू हमारेसमीपतें कहांअन्यत्र चलीजाउ यहकठोरवचनरूप धिक्दंड मैं तुमारेकूंकरताहूं ॥ हेस्त्री ! मैं एकलाही आपणेबलकरिकै यासमुद्रकूंसुकावोंगा ॥ आपणेदोनोंपक्षोंकरिकै तथाआपणेचंचुकरिकै यासमुद्रकेजलकूंग्रहणकरिकै बाहरिभूमिविषेजाइकै पावौंगा ॥ याप्रकार थोडेहीकालविषे यासमुद्रकूं अंधकूपकीन्यांई जलतैंरहितकरोंगा ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारकेवचन तास्त्रीकेप्रतिकहिकै सोटिटिभपक्षी क्रोधवान्होइकै आकाशविषेउडताभया ॥ और सोटिटिभपक्षी तिसीप्रकार तासमुद्रकेसुकावणेवासते प्रवृत्तहोताभया ॥ तिसतें अनंतर सापतिव्रताटिटिभीस्त्रीभी तापतिका समुद्रकेसुकावणेकादृढनिश्चयदेखिकै तापतितें आपणाअपराधक्षमाकरावतीभई ॥ और तिसीप्रकार साटिटिभीस्त्रीभी तासमुद्रकेसुकावणेवासते प्रवृत्तहोतीभई ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार सोटिटिभपक्षी तथाटिटिभीस्त्री दोनों उद्वेगतैंरहितहोइकै रात्रिदिनविषे निरंतर तासमुद्रकेसुकावणेविषे प्रयत्नकरतेभये ॥ और तेस्त्रीपुरुषदोनोंपक्षी आपणेदोनों

पक्षोंकरिकै तथाआपणेचंचुकरिकै तासमुद्रकेजलकूंग्रहणकरिकै बाहरिभूमिविषेआइकै ताजलकूंपावैं॥ यद्यपि तेदोनोंपक्षी समुद्रकेज
लकूंग्रहणकरिकै जबी आकाशविषेउडैं॥ तबी तिनोंकेवेगतैंउत्पन्नभयाजोपवनहै॥ तापवनकरिकै सोजल मार्गविषेही सूकिजावै॥तथा
पि तेपक्षी ताप्रयत्नतैं उपरामहोवैंनहीं॥ किंतु वारंवार ताजलकूंग्रहणकरिकै बाहरिभूमिविषेजाइकैपावैं॥ हेशिष्य! इसप्रकार
ताटिटिमटिटिमीकूं समुद्रकेसुकावणेविषे प्रवृत्तहुआदेखिकै दूसरेअनेकटिटिमपक्षी तहांआवतेभये॥ और तेदूसरेटिटिमपक्षी ति
नोंकेवृत्तांतकूंजाणिकै तिनदोनोंकूंतासमुद्रसुकावणेकेउद्यमतैं निवृत्तकरणेवासते अनेकप्रकारकेवचनकहतेभये॥ परंतु तेदोनोंस्त्री
पुरुष तिनदूसरेटिटिमपक्षियोंकेवचनोंकूं नहींमानतेभये॥ और तेदोनोंस्त्रीपुरुष तिनसर्वटिटिमपक्षियोंकेप्रति याप्रकारकावचन क
हतेभये॥ हेटिटिमपक्षियो! जोतुम हमारेसाथ मित्रताराखतेहोवौ तौ हमारेन्यांई तुमभी यासमुद्रकेसुकावणेविषे प्रयत्नकरौ॥
और जोतुम हमारेसाथ मित्रतानहींराखतेहोवौ तौ तुम आपणेगृहोंकूंचल्येजावौ॥ हमतौ यासमुद्रकूं अवश्यकरिकैसुकावैंगे॥
हेशिष्य! इसप्रकार तिनदोनोंस्त्रीपुरुषकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै तेसंपूर्णटिटिमपक्षी तिनदोनोंकीन्यांई तासमुद्रकेसुकावणेविषे उद्य
मकरतेभये॥ और तिनसर्वटिटिमपक्षियोंकूं समुद्रकेसुकावणेविषे प्रवृत्तहुआदेखिकै दूसरेभी अनेकजातिवालेपक्षी तहांआवतेभ
ये॥ तेसंपूर्णपक्षिभी तिनटिटिमपक्षियोंकीन्यांई तासमुद्रकेसुकावणेविषे उद्यमकरतेभये॥ हेशिष्य! इसप्रकार तिनसर्वपक्षियोंके
प्रवृत्तहुएतैंअनंतर आपणीइच्छाकरिकै तीनलोकोंविषेविचरणेहारा नारदमुनि किसीदैवयोगतैं तहांआवताभया॥ और सोनारदमु
नि तिनसर्वपक्षियोंकेवृत्तांतकूंजाणिकै तिनपक्षियोंकूं तासमुद्रकेसुकावणेतैंनिवृत्तकरणेवासते अनेकप्रकारकेवचन कहताभया॥ प
रंतु दुःखकरिकैआतुरहुएतेपक्षी तानारदमुनिकेवचनकूं अंगीकार नहींकरतेभये॥ तिसतैंअनंतर सोनारदमुनि तिनपक्षियोंके दृढ
निश्चयकूंदेखिकै कृपाकरिकैयुक्तहुआ तिनपक्षियोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥ हेसर्वपक्षियो! विष्णुभगवान्‌कावाहन जो
गरुडपक्षीहै॥ सोगरुडपक्षी तुमसर्वपक्षियोंकाराजाहै॥ यातैं तुमसर्वपक्षी तागरुडकेसमीपजाइकै इहांलैआवौ॥ तौ तुमाराकार्य
सिद्धहोवैगा॥ हेशिष्य! याप्रकारके तानारदमुनिकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै तेसंपूर्णपक्षी गरुडकेसमीपजाइकै आपणावृत्तांतकहिकै

तागरुडकूं तहांलैआवतेभये ॥ तहां गरुडकूंआयाहुआदेखिकै सोसमुद्र भयकरिकै विह्वलताकूं प्राप्तहोताभया ॥ और जिनअंडों कूं सोसमुद्र पूर्व लैगयाथा ॥ तेसंपूर्णअंडे ताटिटिभपक्षीकेतांई देताभया ॥ हेशिष्य ! याटिटिभपक्षीकेदृष्टांतकहणेका यहअभिप्रा यहै ॥ जैसे सोटिटिभपक्षी आपणेदृढपुरुषार्थकरिकै तासमुद्रकूंजयकरताभयाहै ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुषभी आपणेदृढपुरुषार्थक रिकै यामनकूंजयकरै ॥ हेशिष्य ! जैसे ताटिटिभपक्षीनैं जबी तासमुद्रकेसुकावणेका दृढनिश्चयकन्याथा ॥ तबीही ताटिटिभप क्षीकी गरुडभगवान्नैं आइकै सहायताकरीथी ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुषभी जबी तामनकेजीतणेका दृढनिश्चयकरैहै ॥ तबी या अधिकारीपुरुषकी संपूर्णदेवता सहायताकरैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! सोगरुड पक्षित्वरूपकरिकै ताटिटिभपक्षीका सजातीयथा ॥ यातें टिटिभपक्षीकीसहायताकरणी यद्यपि गरुडपक्षीविषेतौ संभवैहै ॥ तथापि तेदेवता हममनुष्योंकेसजातीयहैंनहीं ॥ यातें ति नदेवतावोंविषे हममनुष्योंकीसहायताकरणी संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ! समानजातिवालेही सहायताकरैहैं ॥ याप्रकार कानियम संभवैनहीं ॥ किंतु किसीस्थलविषे विजातीयपुरुषभी सहायताकरैहैं ॥ जैसे सीताकेवियोगजन्यदुःखकीनिवृत्तिकरणे वासते रावणकेसाथ युद्धरूपकार्यविषे प्रवृत्तभयेजोश्रीरामचंद्रहैं ॥ ताश्रीरामचंद्रकीसहायता विजातीय वानरोंनें करीहै ॥ तैसे दृ ढनिश्चयपूर्वक तथाश्रद्धाभक्तिपूर्वक किसीशुभकर्मविषे प्रवृत्तभया जोअधिकारीपुरुषहै ॥ ताअधिकारीपुरुषकीसहायता सर्वदेवता करैहैं ॥ हेशिष्य ! उद्यम साहस धैर्य बल बुद्धि पराक्रम यहषट्गुण जिसपुरुषविषे विद्यमानहोवैहैं ॥ तिसपुरुषकूं कोईभीपदार्थ दुर्लभनहींहै ॥ किंतु सोपुरुष सर्वपदार्थोंकूंप्राप्तहोइसकैहै ॥ तहां पुरुषार्थकानाम उद्यमहै ॥ और इंद्रियोंकाजयरूप जोदमहै ताकाना म साहसहै ॥ और अनेकविघ्नोंकेप्राप्तहुएभी चित्तविषे उद्वेगनहींहोणा याकानाम धैर्यहै ॥ और दृष्टसाधनोंकीसंपत्तिहोणी याकाना म बलहै ॥ और नानाप्रकारकीचातुर्यताहोणी याकानाम बुद्धिहै ॥ और शरीरकेबलकानाम पराक्रमहै ॥ हेशिष्य ! यहअधिकारीपुरु ष तापराक्रमकूंतौ सिंहतैंसीखै ॥ काहेतैं ! जैसे सिंह आपणेसन्मुखभूमिविषे पादकूंराखैहै ॥ तहां अनेकशस्त्रोंकेप्रहारहुएभी सोसिंह तापादकूं पीछेउठावतानहीं ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुषभी आरंभकन्येहुए किसीमहान्शुभकार्यकूं अथवा किसीअल्पशुभकार्यकूं परि

त्यागकरैनहीं ॥ किंतु ताकार्यकीसमाप्तिहीकरै ॥ हेशिष्य ! अंगीकारकऱ्येहुए किसीकार्यकूं परित्यागनहींकरणा याअर्थविषे बहुतमहा
त्मापुरुष दृष्टांतरूपहैं ॥ जैसे अंगीकारकऱ्येहुएकालकूटविषकूं महादेव परित्यागकरतानहीं ॥ और जैसे अंगीकारकऱ्येहुए वडवाअ
ग्निकूं समुद्र परित्यागकरतानहीं ॥ और जैसे अंगीकारकऱ्येहुए पृथिवीकेभारकूं कूर्म परित्यागकरतानहीं ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुष
भी आरंभकऱ्येहुए शुभकार्यकूं परित्यागकरैनहीं ॥ हेशिष्य ! याप्रकारकाविचारकरिकै जोअधिकारीपुरुष तामनकेनिग्रहकरणेविषे
प्रवृत्तहोवैहै॥और मरणांतसंकटकेप्राप्तहुएभी तिसउद्यमतैं निवृत्तहोतानहीं॥सोअधिकारीपुरुष अवश्यकरिकै तामनकाजय करैहै॥
हेशिष्य! रजोगुणकाकार्य जोइच्छारूपकामहै॥तथा सत्वगुणकाकार्य जोविषयसुखकाअनुभवरूपभोगहै॥ताकामभोगविषे तत्परहुआ
जोयहमनहै॥तथा तामसनिद्रारूपलयविषे जाग्रत्स्वप्नकेविक्षेपतैंरहितहुआ जोयहमनहै॥तामनकूं यहअधिकारीपुरुष किसीउपाय
करिकै निग्रहकरै ॥ हेशिष्य ! जैसे सोकामभोग याअधिकारीपुरुषोंके अनर्थकाकारणहै ॥ तैसे सर्वदोषोंकाबीजरूप सोनिद्रारू
पलयभी अनर्थकाहीकारणहै ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष तानिद्रारूपलयतैंभी यामनकूंनिवृत्तकरै ॥ अब तामनकेनिग्रहकरणेका
उपायवर्णनकरैहैं ॥ हेशिष्य ! यामनकेनिग्रहकरणेवासते दोउपाय शास्त्रविषेकथनकरैहैं ॥ एकतौ वैराग्यरूपउपायहै ॥ और दू
सरा अभ्यासरूपउपायहै ॥ तहां यहसंपूर्णद्वैतप्रपंच याजीवोंकूं अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ यातैं यहसंपूर्णजगत् दुःख
रूपहीहै ॥ अथवा यहसंपूर्णजगत् याजीवोंके ब्रह्मानंदकूंआच्छादनकरणेहाराहै ॥ यातैं दुःखरूपहीहै ॥ इसप्रकार गुरुशास्त्रकेउप
देशतैं यासर्वजगत्कूंदुःखरूपजाणिकै किसीपदार्थकेप्राप्तिकीइच्छानहींकरणी याकानाम वैराग्यहै ॥ और यहसंपूर्णजगत् ब्रह्मरू
पहीहै ॥ ब्रह्मतैंभिन्न याजगत्का कोईवास्तवस्वरूपहैनहीं ॥ जैसे मृत्तिकातैंभिन्न कोईघटका वास्तवस्वरूपनहींहै ॥ याप्रकार वा
रंवार आपणेमनविषेचिंतनकरणा याकानाम अभ्यासहै ॥ ऐसे वैराग्यअभ्यासरूपउपायकरिकैही यामनकानिग्रहहोवैहै ॥ यहवा
र्त्ता गीताविषे भगवान्नैंभीकहीहै॥तहां श्लोक॥ असंशयंमहाबाहो मनोदुर्निग्रहंचलं॥अभ्यासेनतुकौंतेय वैराग्येणचगृह्यते॥
अर्थयह ॥ हेअर्जुन ! तुमनैं जोपूर्व मनकीदुर्निग्रहता कहीहै ॥ सोवार्त्ता यद्यपि सत्यहै ॥ तथापि अभ्यासकरिकै तथावैराग्यकरिकै

तामनकानिग्रह होइसकैहै ॥१॥ हेशिष्य! मनकानिरोधरूपजोयोगहै ॥ तायोगविषे याचित्तकी लय विक्षेप कषाय यहतीनअवस्था विरोधीहोवैहैं ॥ तिनतीनोंअवस्थावोंकूं यहअधिकारीपुरुष ताअभ्यासवैराग्यरूपदोउपायोंकरिकैनाशकरै ॥ तहां यहचित्त जबी तानिद्रारूपलयविषे प्रवर्त्तमानहोवै ॥ तबी यहअधिकारीपुरुष ताचित्तकूं आत्मचिंतनरूपअभ्यासविषेजोडै ॥ और यह चित्त जबीताकामभोगविषे तत्परतारूपविक्षेपअवस्थाकूंप्राप्तहोवै ॥ तबी यहअधिकारीपुरुष तिनविषयभोगोंविषे अनेकप्रकारके दोषोंकाचिंतनरूप वैराग्यकरिकै तिनविषयभोगोंतैं चित्तकूंनिवृत्तकरै ॥ और रागादिकोंकेसंस्कारकरिकै याचित्तविषे जोआत्मअनात्मआकारवृत्तितैंरहिततारूप स्तब्धअवस्थाहै याकानाम कषायहै ॥ ताकषायदोषयुक्तचित्तकूंदेखिकै यहअधिकारीपुरुष तावैराग्यअभ्यासरूपउपायकरिकै ताकषायदोषकीनिवृत्तिकरै ॥ इसप्रकार उपायकरिकै याअधिकारीपुरुषकाचित्त जबी ब्रह्माकारताकूं प्राप्तहोवै ॥ तब यहअधिकारीपुरुष ताचित्तकूं ब्रह्माकारअवस्थातैं चलायमानकरैनहीं ॥ किंतु ताब्रह्माकारअवस्थाका परिपालन करै ॥ हेशिष्य! तासमाधिकालविषे सत्वगुणकीअधिकतातैं उत्पन्नभयाजोसुखविशेषहै ॥ तासुखविषेभी यहअधिकारीपुरुष आसक्तिकरैनहीं ॥ किंतु विचारकरिकै तासुखतैंभीनिःसंगहोवै ॥ और ब्रह्माकारताकूंप्राप्तहोइकैभी यहचित्त जबी बाह्यजावै ॥ तबी यहअधिकारीपुरुष प्रयत्नकरिकै ताचित्तकूं पुनःब्रह्माकारकरै ॥ हेशिष्य! जिसकालविषे यहचित्त लय विक्षेप कषाय यातीनोंदोषोंतैं रहितहोवैहै ॥ तथा चलनतैंरहितहोवैहै ॥ तथा सर्वदृश्यपदार्थोंकेसंबंधतैंरहितहोवैहै ॥ तिसकालविषेही सोचित्त ब्रह्मभावकूं प्राप्तहुआजानणा ॥ हेशिष्य! सर्वविक्षेपतैंरहितहुआ सोचित्त जिसब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै सोब्रह्मकैसाहै? शुद्धहै तथासर्वअनर्थोंतैंरहितहै ॥ तथा नित्यमुक्तहै ॥ तथा वाकादिकसर्वइंद्रियोंकाअविषयहै ॥ तथा भूमाआनंदरूपहै ॥ हेशिष्य! जबपर्यंत साक्षीआत्माविषे यामनका बाधरूपलयनहींहोवै ॥ तबपर्यंत याअधिकारीपुरुषनैं तामनकूं अवश्यकरिकैनिरोधकरणा ॥ तानिरोधकर्‍येहुएमनकूं जोब्रह्मभावकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहही तामनकाबाधहै ॥ हेशिष्य! यहब्रह्माकारतारूप जोमनकानिरोधहै ॥ सोनिरोधही वेदांतवाक्योंकेविचाररूपसांख्यका फलहै ॥ तथा सोनिरोधही योगकाफलहै ॥ यामनकेनिरोधतैंअधिक दूसराकोईफल

तासांख्ययोगकाहैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! जोअधिकारीपुरुष यामनकेनिग्रहकूंनकरिकै तथा तामनकेनिग्रहकूंप्रतिपादनकरणेहारे अध्यात्मशास्त्रका नअध्ययनकरिकै दूसरेअनेकशास्त्रोंका अभ्यासकरैहैं ॥ सोपुरुष बहुतवाचालहोवैहै तथा व्यवहारविषेकुशलहोवैहै ॥ तथा बहुतबोलणेकरिकै तापुरुषके उरकंठादिकसूकतेजावैहैं ॥ इसतैंपरेदूसराकोईफल तिसपुरुषकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ और जोअधिकारीपुरुष यामनकेनिग्रहकूं प्राप्तहोवैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष थोडेग्रंथकेपठनकरिकैभी परमपुरुषार्थकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य ! यामनकेनिग्रहकूंछोडिकै तथातामनकेनिग्रहकूंप्रतिपादनकरणेहारे वेदांतशास्त्रकूंछोडिकै जोपुरुष दूसरेन्यायमीमांसादिकअनेकशास्त्रोंकूं अध्ययनकरैहै ॥ तथा अध्ययनकरावैहै ॥ तिसपुरुषकूं तेन्यायमीमांसादिकअनेकशास्त्र किंचित्मात्रभी शांतिकीप्राप्तिकरतेनहीं॥उलटा तेअनात्मशास्त्र तापुरुषकूं अहंकारकीहीप्राप्तिकरैहैं ॥ यातें याअधिकारीपुरुषनैं तामनकेनिग्रहकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ मनकेनिग्रहकियेतैंविना यहजीव जिसजिसकर्मकूंकरैहै ॥ सोकर्म ताजीवकूं फलकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ तहांश्लोक ॥ दानमिज्यातपःशौचं तीर्थंवेदाःश्रुतंतथा॥अशांतमनसःपुंसः सर्वमेतान्निरर्थकं॥ अर्थयह ॥ जिसपुरुषकामन विषयवासनाकापरित्यागकरिकै शांतिकूंनहींप्राप्तभया ॥ तिसपुरुषके दान यज्ञ तप शौच तीर्थ वेद श्रवण इत्यादिकसर्वकर्म निष्फलहीहोवैहैं ॥ जैसे हस्तीकास्नान निष्फलहै ॥ १ ॥ हेशिष्य ! इसलोकविषेप्राप्तहोणेयोग्य जितनेशुभफलहैं ॥ तथा परलोकविषेप्राप्तहोणेयोग्य जितनेशुभफलहैं ॥ तेसंपूर्णशुभफल यापुरुषकूं मनकेनिरोधकरणेतैंही प्राप्तहोवैहैं ॥ मनके निरोधकियेतैंविना किसीभीफलकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ! यहमोक्षकीइच्छावान्अधिकारीपुरुष जबी तामनकानिरोधकरैहै ॥ तबी यहअधिकारीपुरुष सुखेनही ताब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोब्रह्म ? मनकरिकैभी चिंतनकऱ्याजातानहीं ॥ यातें श्रुतिभगवती ताब्रह्मकूं अचिंत्य यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और जैसे यहमन शब्दादिकविषयोंकूं बाह्यरूपकरिकैचिंतनकरैहै ॥ तैसे यहमन ताब्रह्मकूं बाह्यरूपकरिकै चिंतनकरिसकैनहीं ॥ किंतु यहशुद्धमन ताब्रह्मकूं सर्वतैं अंतररूपकरिकै चिंतनकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताब्रह्मकूं चिंत्य यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ हेशिष्य ! एकहीब्रह्मकूं जो

श्रुतिनैं मनकरिकैअचिंत्यकह्याहै ॥ तथामनकरिकैचिंत्यकह्याहै ॥ ताकायहअभिप्रायहै ॥ यासंसारकेविषयसुखोंविषआसक्त जोमन है ॥ ताअशुद्धमनकरिकै यहअविवेकीजीव ताब्रह्मकाचिंतनकरिसकैनहीं ॥ यातैं श्रुतिनैं ताब्रह्मकूं अचिंत्यकह्याहै ॥ और विषयवासना तैंरहित जोशुद्धमनहै ताकरिकै सोब्रह्म चिंतनकऱ्याजावैहै ॥ यातैं तुममुमुक्षुजनोंनैं विषयोंकाचिंतन नहींकरणा याप्रकार तिनमुमुक्षु जनोंकेउपदेशकरणेवासते ताश्रुतिनैं ब्रह्मकूंचिंत्यकह्याहै ॥ हेशिष्य! जैसे यालोकविषे जीवोंकूं आपणेशत्रुमित्रादिकोंविषे पक्षपात होवैहै॥ तैसे ताब्रह्मकूं किसीभीपदार्थविषे पक्षपातनहींहै॥ किंतु सोब्रह्म सर्वजगत्‌विषे समानव्यापकहै ॥ तहांश्रुति॥ समःप्लुषिणा स मोमशकेन समोनागेन ॥ अर्थयह ॥ प्लुषि मशक आदिकअल्पशरीरोंविषे तथाहस्तीआदिकमहान्‌शरीरोंविषे सोब्रह्म समानहीहै १ हेशिष्य! शब्दादिकविषयोंकेसाथ जो यामनकासंबंधहै ॥ सोविषयोंकासंबंधही यामनकूं ब्रह्मतैंभिन्नकरणेहाराहै ॥ और यहमन जबी ताविषयोंकेसंबंधकापरित्यागकरिकै निरंतर आत्माकाचिंतनकरैहै ॥ तबी यहमन ब्रह्मभावकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य! यहअ धिकारीपुरुष तामनकेनिरोधकरिकै जिसब्रह्मकूंजानैहै ॥ सोब्रह्मकैसाहै ? परमपदरूपहै तथा निरवयवहै ॥ तथा सर्वविकल्पोंतैंर हितहै॥ तथा कार्यसहित अज्ञानतैंरहितहै ॥ तथा देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै॥ तथा हेतुदृष्टांततैंरहितहै॥ तथा प्रमाणजन्यज्ञान काअविषयहै ॥ तथा ग्रहणत्यागतैंरहितहै॥ तथा जिसब्रह्मकेज्ञानतैं बुद्धिमान्‌पुरुष मुक्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मकूं जोअधि कारीपुरुष मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणाआत्मरूपकरिकैजानैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष ताब्रह्मभावकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य! ऐसेब्रह्मात्माकेज्ञानकरिकै जिसविद्वान्‌पुरुषकामन ताअधिष्ठानब्रह्मविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै॥ ऐसेविद्वान्‌योगीपुरुषकूं यहआत्मादे व याप्रकार सर्वधर्मोंतैंरहितहुआप्रतीतहोवैहै॥ याअद्वितीयआत्मादेवविषे वास्तवतैं याजगत्‌कानिरोधभीनहींहै॥ तथा याजगत्‌की उत्पत्तिभीनहींहै ॥ तथा बद्धभीनहींहै ॥ तथा साधकभीनहींहै ॥ तथा मुमुक्षुभीनहींहै॥ तथा मुक्तभीनहींहै ॥ यहही सर्वशास्त्रका वास्तवअर्थहै ॥ इहां नाशकानाम निरोधहै ॥ और कर्तृत्वभोक्तृत्वादिरूपसंसारवालेकानाम बद्धहै ॥ और यज्ञादिकबाहिरंगसाधनों केकरणेहारे पुरुषकानाम साधकहै ॥ और शमदमादिकअंतरंगसाधनोंयुक्तपुरुषकानाम मुमुक्षुहै ॥ और ज्ञानवान्‌पुरुषकानाम

मुक्तहै ॥ हेशिष्य! ऐसे सर्वधर्मोंतैंरहितअद्वितीयआत्माकूं सोईपुरुष साक्षात्कारकरैहै ॥ जोपुरुष आपणेस्वरूपकूं जाग्रतादिकतीनअवस्थावोंतैं भिन्नकरिकैजानैहै ॥ ऐसाविद्वानूपुरुष पुनःजन्ममरणादिकोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! यहआत्मादेव जोएकअद्वितीयरूपहोवै तौ याआत्माविषे यहनानाप्रकारकाभेद किसवासतेप्रतीतहोवैहै ? ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! जैसे आकाशविषेस्थितचंद्रमाविषे यद्यपि वास्तवतैं भेदनहींहै ॥ तथापि जलपात्ररूपउपाधिकेएकहुए सोचंद्रमा एकप्रकारकाप्रतीतहोवैहै ॥ और ताजलपात्ररूपउपाधियोंकेअनेकहुए सोचंद्रमाभी अनेकप्रकारकाप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे याआत्मादेवविषे यद्यपि वास्तवतैंनानापणानहींहै ॥ तथापि यहआत्मादेव कारणअज्ञानरूप एकउपाधिविषेस्थितहोइकै एकप्रकारकाप्रतीतहोवैहै ॥ और कार्यरूप अनेकउपाधियोंविषेस्थितहोइकै अनेकप्रकारकाप्रतीतहोवैहै ॥ वास्तवतैंतौ यहआत्मादेव एकता अनेकता इत्यादिकसर्वधर्मोंतैंरहितहै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं यासर्वभूतप्राणियोंविषे एकअद्वितीयआत्माकूंही व्यापक जानैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंविषेभी एकहीआत्माकूंनिश्चयकरैहै ॥ और यहएकअद्वितीय आत्मा जैसे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंतैंरहितहै ॥ तैसे ताअद्वितीयआत्माकूंजानणेहाराविद्वानूपुरुषभी तिनजाग्रतादिकतीनअवस्थावोंतैंरहितहोवैहै ॥ हेशिष्य! यहअधिकारीपुरुष जबी गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं तासर्वभेदतैंरहित एकअद्वितीयआत्माकूं जानैहै ॥ तबी उपाधिकेयोगतैं याजीवात्माविषे प्रतीतभयाजोनानापणाहै ॥ तानानापणेकूं सोअधिकारीपुरुष युक्तिकरिकैनिवृत्त करैहै ॥ सायुक्तियहहै ॥ जैसे याघटका एकदेशतैंदूसरेदेशविषे गमनहुएभी ताघटविषेस्थितआकाशका तहां गमनहोवैनहीं ॥ तैसे यास्थूलसूक्ष्मशरीरका एकदेशतैंदूसरेदेशविषेगमनहुएभी ताशरीरविषेस्थितजीवात्माका तहां गमनहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ! जैसे घट जडहै ॥ यातैं आपणेजन्ममरणादिकविकारोंकूंजाणतानहीं ॥ तैसे यहशरीरभीजडहै ॥ यातैं आपणेजन्ममरणादिकविकारोंकूंजानतानहीं ॥ यातैं घटकी तथायाशरीरकी यद्यपि समानतासंभवैहै ॥ तथापि घटाकाशकी तथाजीवात्माकी समानता संभवैनहीं ॥ काहेतैं ? सोघटाकाशतौ जडहै ॥ यातैं सोघटाकाश ताघटकेजन्ममरणादिकविकारोंकूंजाणतानहीं ॥ और याशरीरविषे

स्थितजो जीवात्माहै॥सोजीवात्मा चेतनरूपहै॥ यातें याशरीरकेजन्ममरणादिकसर्वविकारोंकूंसाक्षिरूपकरिकैदेखेहै॥ इसप्रकार यह जीवात्मा यद्यपि ताघटाकाशतैंविलक्षणहै॥तथापि जैसे घटाकाशविषे ताघटरूपउपाधिके गमनआगमनादिकधर्म स्पर्शकरतेनहीं॥ तैसे याजीवात्माविषेभी याशरीररूपउपाधिके जन्ममरणादिकधर्म स्पर्शकरतेनहीं ॥ इतनेअंशकूंग्रहणकरिकै ताघटाकाशकादृष्टांत दियाहै॥ अब ताजीवका निर्विकारब्रह्मकेसाथ अभेदनिरूपणकरेंहैं॥ हेशिष्य! यहजीव आत्मादेवतैंभिन्ननहींहै॥काहेतें? जोवादी या जीवकूं आत्मादेवतैंभिन्नमानैहै॥तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोजीव एकहै अथवा अनेकहै? तहां सोजीव एकहै यहप्रथमपक्ष जो वादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं॥काहेतें?एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढः॥इत्यादिकश्रुतियोंनैं याआत्मादेवकूंही एककह्याहै ॥ यातें ताएक आत्मादेवतैं सोएकजीव किसप्रकार भिन्नहोवैगा?किंतु भिन्ननहींहोवैगा॥ और तेजीव अनेकहैं यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै॥ तापक्षविषेभी तिनअनेकजीवोंका आत्मातें भेद सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतें? आत्मानाम आपणेस्वरूपकाहै ॥ ताआत्मस्वरूपतें जबी तेजीव भिन्नहोवैंगे ॥ तबी तिनजीवोंकूं वंध्यापुत्रकीन्यांई निःस्वरूपताप्राप्तहोवैगी ॥ यातें तेअनेकजीवभी आत्मातैंभिन्ननहींहैं ॥

॥ शंका ॥ हेभगवन्! अनेकजीवोंकेसाथ जोआत्माकाअभेदहोवैगा ॥ तौ आत्माविषेभी अनेकरूपताप्राप्तहोवैगी ॥ यातें आत्माअद्वितीयरूपहै यासिद्धांतकीहानिहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! जैसे नैयायिकोंकेमतविषे घटत्वजाति अनेकघटव्यक्तियों विषेरहेहै ॥ तहां तिनघटव्यक्तियोंकेभेदहुएभी ताघटत्वजातिकाभेदहोवैनहीं ॥ तैसे यहआत्मादेवभी सर्वजीवोंविषे अनुगतहोइ करहेहै ॥ यातें तिनजीवोंकेभेदहुएभी ताआत्मादेवका भेदहोवैनहीं ॥ और हेशिष्य! वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ तिनजीवोंकाभी भेदसंभवैनहीं ॥ काहेते? अज्ञानविशिष्टचेतनकानामजीवहै अथवा अंतःकरणविशिष्टचेतनकानाम जीवहै? ताजीवविषे जोचेतनअंशहै सोतौ सर्वत्रएकहीहै ॥ यातें ताचेतनअंशविषेतौ भेदसंभवैनहीं ॥ परिशेषतें अंतःकरणादिकउपाधियोंकाही भेदअंगीकारकरणाहोवैगा ॥ और तिनअंतःकरणादिकउपाधियोंतैंभी जबी अधिष्ठानरूपसत्अंशकूंभिन्नकरिये तबी तिनकल्पितउपाधियोंकाभी भेदसंभवैनहीं ॥ यातें यहजीव अद्वितीयआत्मस्वरूपहीहै ॥ हेशिष्य! याजीवकूं जोआत्मातैंअभिन्न न

हींमानियेतौ श्रुतिनैं याजीवात्माविषे जोघटाकाशकादृष्टांतदियाहै ॥ सोअसंगतहोवैगा ॥ काहेतें? स्थूल सूक्ष्म कारणरूप यासंघातविषे यहजीवतौ घटाकाशकीन्यांई है ॥ और आत्मादेव महाकाशकी न्यांई है ॥ तहां घटरूपउपाधिकेभेदकापरित्यागकरिकै जैसे ताघटाकाशका महाकाशतैंभेदनहींहै ॥ तैसे यासंघातरूपउपाधिकापरित्यागकरिकै याजीवकाभी ताआत्मादेवतैंभेदनहींहै ॥ हेशिष्य! यहघटाकाशरूपदृष्टांत केवल जीवआत्माकेअभेदकूंसिद्धकरतानहीं ॥ किंतु सोघटाकाशरूपदृष्टांत दूसरेभीअनेकअर्थोंकूंसिद्धकरैहै ॥ तिनअर्थोंकूं तू श्रवणकर ॥ हेशिष्य! जैसे घटरूपउपाधिकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर सोघटाकाश महाकाशविषे अभेदभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे अंतःकरणादिकउपाधियोंके निवृत्तहुएतैंअनंतर यहजीवभी ताव्यापकआत्मादेवविषे अभेदभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और हेशिष्य! जिसकालविषे सोएकघटाकाश धूलिधूमादिकोंकरिकै युक्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे दूसरेघटाकाश तिनधूलिधूमादिकोंकरिकैयुक्तहोवैंनहीं ॥ तैसे जिसकालविषे यहएकजीव सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे दूसरेजीव सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ तेसुखदुःखादिकधर्म केवल अंतःकरणादिकउपाधियोंविषेहीहैं ॥ तेअंतःकरणादिकउपाधियां सर्वशरीरविषे भिन्नभिन्नहीहैं ॥ यातें एकजीवकेसुखीदुःखीहुएभी तेसर्वजीव सुखीदुःखीहोवैंनहीं ॥ और हेशिष्य! जैसे ताघटाकाशविषे वर्त्तुल दीर्घ इत्यादिकरूपोंकाभीभेदहै ॥ तथा जलकाआनयन धारण निवास इत्यादिककार्योंकाभीभेदहै ॥ तथा घटाकाश मठाकाश इत्यादिकनामोंकाभीभेदहै ॥ इसप्रकार नाम रूप कार्य यातीनोंकेभेदहुएभी आकाशकाभेदहोवैनहीं ॥ तैसे अंतःकरणादिकउपाधियोंकेयोगतें तिनजीवोंकेभेदहुएभी आत्मादेवकाभेदहोवैनहीं ॥ और हेशिष्य! जैसे निर्विकार तथानिरवयव जोमहाकाशहै ॥ तामहाकाशका सोघटाकाश विकाररूपनहींहै ॥ तथा अवयवरूपनहींहै ॥ तैसे सर्वविकारोंतैंरहित तथानिरवयव जोआत्मादेवहै ॥ ताआत्मादेवका यहजीव विकाररूपनहींहै तथा अवयवरूपनहींहै ॥ और हेशिष्य! जैसे वास्तवतैं सर्वमलतैंरहित जोमहाकाशहै ॥ सोमहाकाश मूढबालकोंकूं मलिनप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे वास्तवतैंसर्वबंधतैंरहित जोयहआत्मादेवहै ॥ सोआत्मादेव अविवेकीमूढपुरुषोंकूं बंधवालाप्रतीतहोवैहै ॥ और हेशिष्य! जैसे घटादिकउपाधियोंके जन्म मरण गमन आगमन

हुएभी तिनघटादिकउपाधियोंविषेस्थित आकाश तिनजन्मादिकविकारोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे याशरीरादिकउपाधियोंके जन्म मरण गमन आगमन हुएभी तिनशरीरादिकउपाधियोंविषेस्थित यहआत्मादेव तिनजन्मादिकविकारोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और हे शिष्य ! जैसे स्वप्नविषेप्रतीतभयाजोजीवहै ॥ तथा ऐंद्रजालिकपुरुषनैं आपणीमायाकेप्रभावतैं दिखाया जोकोईजीवहै ॥ सोमिथ्याजीव यद्यपि भ्रांतपुरुषोंकीदृष्टिकरिकै जन्ममरणादिकविकारोंकूंप्राप्तहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि सोजीव वास्तवतैं जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहै ॥ तैसेभ्रांतपुरुषोंकीदृष्टिकरिकै यद्यपि यहजीव जन्ममरणादिकविकारोंकूंप्राप्तहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि वास्तवतैं यहजीव जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहै ॥ यातैं कोईभीजीव तिनजन्ममरणादिकविकारोंकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ किंतु यहचित्तही आप जन्ममरणादिकविकारोंकूंप्राप्तहोइकै तिनआपणेजन्ममरणादिकविकारोंकूं याजीवात्माविषे प्रतीतकरावैहै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार यहसर्वजीव वास्तवतैंतौ सर्वदा तिनजन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहै ॥ तथापि जन्ममरणादिकविकारवालेचित्तकेयोगतैं यहजीव जन्ममरणादिकविकारोंवालेहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ अब याहीअर्थकूं अलातकेदृष्टांतकरिकै स्पष्टकरैहैं ॥ हेशिष्य ! अग्निकरिकैप्रज्वलित जोकोईक काष्ठविशेषहै ताकानाम अलातहै ॥ ताअलातका जोभ्रमणरूपव्यापारहै ॥ सोभ्रमणरूपव्यापार कबीतौ दंडकीन्यांई सरलप्रतीतहोवैहै ॥ और कबीतौ चक्रकीन्यांई वर्त्तुलाकार प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे मायाविशिष्टपरमात्मादेवतैं उत्थानरूप जोमनकास्पंदहै ॥ सोमनकास्पंदभी ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय इत्यादिकत्रिपुटीरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ और हेशिष्य ! जैसे ताभ्रमणरूपस्पंदतैंरहितहुआ सोअलात ताकल्पित दंडचक्राकाररूपोंतैंरहित होवैहै ॥ तथा तिनकल्पितरूपोंकरिकै जन्मतैंरहितहोवैहै ॥ तैसे तास्पंदतैंरहितहुआयहचित्तभी ताकल्पितात्रिपुटीरूपतैंरहित होवैहै ॥ तथा तिनकल्पितरूपोंकरिकै जन्मतैंभीरहितहोवैहै ॥ किंतु सोशांतचित्त तिसकालविषे चेतनरूपहीहोवैहै ॥ और हेशिष्य ! ताअलातकेभ्रमणरूपस्पंदकालविषे जेदंडचक्रादिकआकार प्रतीतहोवैहैं ॥ तेदंडचक्रादिकआकार किसीदूसरेस्थानतैंचालिकै ताअलातविषे उत्पन्नहोतेनहीं ॥ तथा ताअलातके भ्रमणकाअभावरूपनिस्पंदकालविषे तेदंडचक्रादिकआकार ताअलाततैंनि

कसिकै किसीदूसरेस्थानविषेभीजातैनहीं ॥ तथा तेदंडचक्रादिकआकार ताअलातविषेभीप्रवेशकरतेनहीं ॥ काहेतैं? तिनदंडचक्रादिकआकारोंका ताअलातविषेआवणा तथा ताअलाततैंबाहरिजाणा तथा ताअलातविषेप्रवेशकरणा प्रत्यक्षदेखीतानहीं ॥ और ते दंडचक्रादिकआकार कोईवस्तुहैनहीं ॥ याकारणतैंभी तिनोंका आवणाजाणासंभवैनहीं ॥ यातैं ताअलातविषे तेदंडचक्रादिकआकार रज्जुसर्पकीन्यांई मिथ्याहीहैं ॥ तैसे यामनकेस्पंदहुए जे ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय इत्यादिकआकार प्रतीतहोवैहैं ॥ तेआकार किसीदूसरे पदार्थतैंचलिआइकै तामनविषे उत्पन्नहोवैनहीं ॥ तथा तामनकेनिस्पंदहुए तेआकार तामनतैंनिकसिकै किसीदूसरीस्थानविषेभी जातेनहीं ॥ तथा तेआकार तिसमनविषेभी प्रवेशकरतेनहीं ॥ यातैं ते ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय इत्यादिकमनकेआकारभी रज्जुसर्पकीन्याई मिथ्याहीहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! तेआकार जोमिथ्याहोवैं तौ हमजीवोंकूं तेआकार किसवासतेप्रतीतहोवैहैं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! जैसे यामनुष्योंविषे शृंग यद्यपि वास्तवतैंहैनही ॥ तथापि यामनुष्यविषेशृंगहै याशब्दरूपदोषकेप्रभावतैं तामनुष्य विषेभी शृंग प्रतीतहोवैहै ॥ और जैसे आकाशविषे गंधर्वनगर यद्यपि वास्तवतैंहैनहीं ॥ तथापि मायारूपदोषकेबलतैं ताआकाशविषे गंधर्वनगर प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे याआत्माद्वैविषे यहद्वैतप्रपंच यद्यपि वास्तवतैं नहीं ॥ तथापि शब्दकेबलतैं तथामायाके बलतैं याआत्माविषे यहद्वैतप्रपंच प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं नरशृंगकीन्यांई तथागंधर्वनगरकीन्यांई यहसंपूर्णजगत् असत्यहै॥शंका॥ हेभगवन्! जिसमायाकेबलतैं तथाशब्दकेबलतैं यहजगत् प्रतीतहोवैहै ॥ तिसमायाविषे तथातिसशब्दविषे सोअसत्यपणा किसप्रकार सिद्धहोवैगा? समाधान॥ हेशिष्य! जैसे नरशृंगहै याशब्दमात्रकरिकैही तानरशृंगकीसिद्धिहोवैहै ॥ किसीप्रमाणकरिकै तानरशृंगकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ तैसे माया अज्ञान अविद्या प्रकृति इत्यादिकशब्दोंकेबलतैंही तामायाकीसिद्धिहै ॥ किसीप्रमाणकेबलतैं तामायाकीसिद्धिहैनहीं ॥ यातैं सामायाभी तानरशृंगकीन्यांई असत्यहीहै ॥ तैसे शब्दकीभी शब्दकरिकैहीसिद्धिहै ॥ यातैं सोशब्दभी असत्यहीहै॥तहांश्रुति॥वाचारंभणंविकारोनामधेयंमृत्तिकेत्येवसत्यं ॥ अर्थयह ॥ मृत्तिकाकेविवर्त्त रूपजितनेघटशरावादिकविकारहैं॥तेविकार केवल घट शराव इत्यादिकनाममात्रहीहैं॥तानामतैंविना तिनविकारोंविषे लेशमात्रभी सत्यतान

हीं है ॥ और तिनघटशरावादिकविकारोंकाउपादानकारणजामृत्तिकाहै ॥ सामृत्तिकाही सत्यहै ॥ १ ॥ तैसे मनवाणीकाअविषयजोआ
त्माहै ॥ सोआत्माही सत्यहै ॥ ताआत्मातैंभिन्न यहसंपूर्णजगत् मिथ्याहीहै ॥ और हेशिष्य ! शब्दमात्रहैस्वरूपजिसका ऐसाजोयह
जगत्‌रूपविकारहै ॥ तथा ताजगत्‌रूपविकारका कारणरूप जायहमायाहै ॥ तिनदोनोंकरिकैआवृतहुआ यहजीवात्मा आपणेवास्त
वस्वरूपकूंजाणिसकतानहीं ॥ किंतु यहजीवात्मा परिच्छिन्नरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ जैसे जलकेमध्यविषेस्थितहुआ महान्‌घटभी अ
ल्परूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे तामायाजगत्‌करिकैआवृतहुआ यहमहान्‌आत्माभी परिच्छिन्नरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ और जबीआ
त्मसाक्षात्कारकरिकै ताकार्यसहितमायाकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी यहजीवात्मा आपणेव्यापकअद्वितीयस्वरूपकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और
हेशिष्य ! अकार उकार मकार यातीनमात्रावालेप्रणवविषे यथाक्रमतैं समष्टि स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनउपाधिवालाब्रह्म ता
दात्म्यसंबंधकरिकैरहेहै ॥ तासोपाधिकब्रह्मका प्रणवकीमात्रावोंसहित जबी यहअधिकारीपुरुष लयचिंतनकरैहै ॥ तबी नाशतैंर
हिततुरीयब्रह्मही बाकीरहेहै ॥ सोतुरीयब्रह्मही सर्वभेदतैंरहित एकअद्वितीयरूपहै ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं ताअद्वितीयब्रह्म
केजानणेकीइच्छाहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष प्रथम ताप्रणवमंत्रकूं ब्रह्मरूपकरिकैचिंतनकरै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपण
करैहैं ॥ हेशिष्य ! याअधिकारीपुरुषनैं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं दोब्रह्मकूं अवश्यकरिकैजानणा ॥ तहां एकतौ प्रणवरूपशब्दब्रह्मकूं
जानणा ॥ और दूसरा निर्विशेषशुद्धब्रह्मकूंजानणा ॥ तिनदोनोंब्रह्मविषेभी याअधिकारीपुरुषनैं प्रथम प्रणवरूपशब्दब्रह्मकूंही
निश्चयकरणा ॥ ताशब्दब्रह्मकूं यहअधिकारीपुरुष जबी भलीप्रकारकरिकैनिश्चयकरैहै ॥ तबी यहअधिकारीपुरुष सुखपूर्वकही ता
निर्विशेषब्रह्मकूंसाक्षात्कारकरैहै ॥ हेशिष्य ! याअधिकारीपुरुषकूं जबपर्यंत तानिर्विशेषब्रह्मकासाक्षात्कारनहींप्राप्तहोवै ॥ तबपर्यंतही
यहअधिकारीपुरुष ताशब्दब्रह्मकाचिंतनकरै ॥ तानिर्विशेषब्रह्मकेसाक्षात्कारहुएतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष ताशब्दब्रह्मका परि
त्यागकरिदेवै ॥ तथा सर्वशब्दरूपप्रपंचका परित्यागकरिदेवै ॥ जैसे व्रीहिरूपधान्यकेप्राप्तिकीइच्छावान्‌पुरुष तिनधान्योंकूंप्राप्तहो
इकै ताकेपलालका परित्यागकरिदेवैहै ॥ हेशिष्य ! यालोकविषे शुक्ल नील पीत रक्त इत्यादिकभिन्नभिन्नवर्णोंवाली जेअनेकगौ

वांहैं ॥ तिनसर्वगौवोंकादुग्ध एकशुक्लवर्णवालाहीहोवैहै ॥ तैसे यानानाप्रकारकेशरीरोंविषे यहज्ञानस्वरूपआत्मा एकरूपहीहोवै है ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार यहआत्मादेव यद्यपि सर्वशरीरोंविषे समानव्यापकहै ॥ तथापि यहआत्मादेव अशुद्धमनकरिकैजा न्याजावैनहीं ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ ताअधिकारीपुरुषनैं श्रवणादिकसाधनयुक्त शुद्धमनकरि कैही याआत्मादेवकूंजानणा ॥ हेशिष्य ! तामनकीशुद्धिकरणेवासते श्रुतिभगवतीनैं याप्रकारकाध्यान कथनकऱ्याहै ॥ जैसे या लोकविषे दधिविषे दीर्घकाष्ठरूपमंथाकूंपाइकै तामंथाकेसाथि दीर्घरज्जुकूंबांधिकै तादधिकूंमंथनकरैहै ॥ तामंथनकरिकै तिसदधितैं माखणेकूंनिकासैहैं ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुष यासर्वभूतभौतिकजगत्कूं दधिरूपकरिकैचिंतनकरै ॥ और यामनकूं मंथारूपकरिकै चिंतनकरै ॥ और मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअभेदज्ञानकूं तारज्जुरूपकरिकैचिंतनकरै ॥ और आनंदस्वरूपपरमात्मादेवकूं माखणरू पकरिकैचिंतनकरै ॥ और गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकै याआत्मादेवका जोसंसारसमुद्रतैं मोक्षरूपउद्धारकरणाहै ॥ सोईही यापरमा त्मादेवरूपमाखणका याजगत्रूपदधितैंउद्धारहै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार यहअधिकारीपुरुष याजगत्रूपदधितैं ताअद्वितीयब्रह्मरू पमाखणकूंउद्धारकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपकरिकैसाक्षात्कारकरै ॥ ताब्रह्मात्माकेसाक्षात्कारकरिकै यहअधिका रीपुरुष सर्वशोकतैंरहितहोवैहै ॥ हेशिष्य ! जिसअद्वितीयब्रह्मकेज्ञानतैं यहविद्वान्पुरुष सर्वशोकतैंरहितहोवैहै ॥ ताब्रह्मविषेही यह संपूर्णजगत् निवासकरैहै ॥ अथवा सोब्रह्मही यासर्वजगत्विषेनिवासकरैहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताअद्वितीयब्रह्मकूं वासुदेव यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ तथा तेवेदवेत्तापुरुष तावासुदेवरूपब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपकरिकैजानैहैं ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार मन केनिग्रहपूर्वक जोब्रह्मकावास्तवस्वरूपब्रह्मबिंदुउपनिषद्विषेकथनकऱ्याहै ॥ सो हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्या॥ अब नारायणीयउ पनिषद्विषे तथामहोपनिषद्विषेतथा आत्मप्रबोधउपनिषद्विषे जोसंक्षेपतैं ताब्रह्मकास्वरूपकथनकऱ्याहै ॥ सोहम तुमारेप्रति क थनकरतेहैं ॥ तू सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ तहां प्रथमनारायणीयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ! यहपरमात्मादेव आ पणे अस्तिभातिप्रियरूपकरिकै यासर्वजगत्कूं पूर्णकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती यापरमात्मादेवकूं पुरुष यानामकरिकैकथनकरै

हैं ॥ अथवा यहपरमात्मादेव यासर्वशरीररूपपुरविषे अंतर्यामीरूपकरिकैंनिवासकरैहैं॥याकारणतें श्रुतिभगवती यापरमात्मादेवकूंपु
रुष यानामकरिकैंकथनकरैहै ॥ और हेशिष्य! यहविराट्रूपपरमात्मादेव प्रलयकालविषे यासंपूर्णलोकोंकूंआपणेउद
रविषेग्रहणकरिकैं क्षीरसमुद्रविषे शेषनागकीशय्याऊपरि बालककीन्यांई शयनकरैहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ता
परमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकैंकथनकरैहै ॥ अथवा जैसे माताकेगर्भरूपशय्याविषे बालक शयनकरैहै ॥ तैसे व्यष्टिसूक्ष्म
उपाधिवाले तैजसनामाजीवरूपप्रतिबिंबोंका बिंबरूप यहहिरण्यगर्भभगवान् यामायारूपशय्याविषेस्थितहोवैहै ॥ याकारण
तें श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकैंकथनकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ परमात्मारूपनरकासंबंधीजामायाहै ॥ ता
मायाकानाम नारहै ॥ सोमायारूप नार तापरमात्मादेवकास्थानहै ॥ यातें तापरमात्मादेवकूं नारायणकहेहैं ॥ अथवा जीवरूपन
रोंका जोसमूहहै ताकानाम नारहै ॥ ताजीवोंकेसमूहरूपनारकूं जिसबिंबभूतपरमात्मादेवतें आपणेस्वरूपकालाभहोवैहै ॥ यातें ता
परमात्मादेवकूं नारायणकहेहैं ॥ और हेशिष्य! जैसे बालक कंदुककूंदूरदेशविषेफेंकैहै ॥ तैसे सर्वदोषतैंरहित यहपरमात्मादेव
कार्यकारणअविद्यारूपकंदुककूं दूरदेशविषे फेंकैहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकैंकथनकरै
है ॥ तात्पर्ययह ॥ यासंसाररूपचक्रके जारागद्वेषादिकअराहैं॥ तेअरा यापरमात्मादेवविषेहैंनहीं ॥ यातें तापरमात्मादेवकूं ना
रायणकहेहैं ॥ अथवा याजीवरूपनरोंकी ताअंतर्यामीदेवतैंही प्रवृत्तिहोवैहै ॥ यातें ताअंतर्यामीदेवकूं नारायणकहेहैं ॥ अथवा तु
रीयशुद्धरूपकरिकैंजानेहुए तापरमात्मादेवतैंही याजीवोंकेअविद्याकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ यातें तापरमात्मादेवकूं नारायणकहेहैं ॥ अ
थवा ताबदरिकाआश्रमवासीगुरुमूर्तितैंही याजीवोंकेअविद्याकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ यातें तागुरुमूर्त्तिपरमात्मादेवकूं नारायणकहेहैं ॥
दूसरेनारायणशब्दकेअर्थ दशमअध्यायविषे निरूपणकरिआयेहैं ॥ सो तहांतैंजानिलेणे ॥ हेशिष्य! ऐसानारायणदेव याजगत्की
उत्पत्तितैंपूर्व एकअद्वितीयरूपहोताभया ॥ सोनारायणदेव जीवोंकेपुण्यपापकर्मोंकरिकैंप्रेरणाकऱ्याहुआ सृष्टिकेआदिकालविषे मैं
जगत्कूंउत्पन्नकरों याप्रकारकीइच्छाकरताभया ॥ ताइच्छातैंअनंतर सोनारायणदेव सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरताभया ॥ नानाप्रकारकी

सामर्थ्यकरिकैयुक्तजो ब्रह्मा इंद्र आदित्य रुद्र वसु विश्वेदेव साध्य इत्यादिकदेवताहैं ॥ तिनसर्वदेवतावोंकूं सोनारायणदेव उत्पन्नकरताभया ॥ हेशिष्य! ब्रह्मादिकदेवतावोंतैंआदिलेके जितना यहस्थावरजंगमजगत्है ॥ सोसंपूर्णजगत् तानारायणदेवतैंही उत्पन्नहोवैहै ॥ तथा सोसंपूर्णजगत् तानारायणदेवविषेही स्थितहै ॥ तथा प्रलयकालविषे सोसंपूर्णजगत् तानारायणदेवविषेही लयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य ! जैसे घटकी उत्पत्ति स्थिति लय मृत्तिकाविषेहीहोवैहै ॥ यातैं सो घट मृत्तिकातैंभिन्ननहींहै ॥ तैसे याजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय तानारायणदेवविषेहीहोवैहै ॥ यातैं यहजगत् तानारायणदेवतैंभिन्ननहींहै ॥ किंतु ब्रह्मा विष्णु रुद्र इंद्र आदित्य अश्विनीकुमार इसतैंआदिलेकेजितनेदेवताहैं ॥ तेसंपूर्णदेवता तानारायणरूपहीहैं ॥ तथा पूर्वादिकदशोंदिशा तथाआकाशादिकपंचमहाभूत तथास्थावरजंगमशरीर इसतैंआदिलेके जितना भूतभविष्यत्वर्त्तमानकालविषेस्थितजगत्है ॥ तथा जितना स्थूलसूक्ष्मजगत्है ॥ तथा जितना प्रत्यक्षपरोक्षजगत्है ॥ सोसंपूर्णजगत् तानारायणरूपहीहै ॥ हेशिष्य ! जिसनारायणदेवकास्वरूप यहसंपूर्णजगत्है ॥ सोनारायणदेव नाशतैंरहित नित्यस्वरूपहै ॥ तथा प्राण श्रद्धा आकाश वायु तेज जल पृथिवी इंद्रिय मन अन्न वीर्य तप मंत्र कर्म लोक नाम याषोडशकलावोंतैंरहितहै ॥ तथा सोनारायणदेव याजगत्रूपविकल्पतैंरहितहै ॥ तथा कारणअज्ञानरूपअंजनतैंरहितहै ॥ और सर्वशुद्धितैंरहित जोयहजडमायाहै ॥ ताजडमायातैंभी यहनारायणदेव सर्वदारहितहै ॥ तथा तामायाकृतसर्वभेदतैंरहितहै ॥ हेशिष्य ! ऐसे नित्यशुद्धनारायणदेवतैंभिन्न कोईपदार्थ पूर्वहुआनहीं और अबीहैनहीं और आगेहोवैगानहीं ॥ किंतु यहसर्वजगत् तानारायणदेवरूपहीहै ॥ हेशिष्य ! जोअधिकारीपुरुष मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकीशुद्धबुद्धिकूंसारथिकरिकै तथाश्रवणादिकसाधनयुक्त शुद्धमनरूपरज्जुकूं ताबुद्धिरूपसारथिकेवशकरिके जीत्येहुए इंद्रियरूपअश्वोंकरिकैयुक्त याशरीररूपरथविषेस्थितहोवैहै॥सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षकूंप्राप्तहोवैहै॥हेशिष्य ! इसप्रकार तानारायणदेवकूं याजीवका आत्मारूपकरिकै प्रतिपादनकरणेहारी जोयह नारायणीयनामा उपनिषद्है ॥ ताउपनिषद्कूं जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं अर्थसहितजानैहै सोअधिकारीपुरुष याजीवत्अवस्थाविषेतौ सर्वआपदावोंतैंरहित

होइकै मनवांछितभोगोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और मरणतैंअनंतर सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मलोकविषैजाइकै तहां मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं
याअधिकारीपुरुषनैं तानारायणीयउपनिषद्केअर्थका अवश्यकरिकैविचारकरणा ॥ हेशिष्य! ऐसेनारायणदेवकास्मरणकराव
णेहाराजो ॐनमोनारायणाय यहअष्टअक्षरोंवालामंत्रहै॥सोअष्टाक्षरमंत्र जापकरणेहारेसर्वजीवोंकूं मनवांछितपदार्थोंकीप्राप्ति
करणेहाराहै॥यातैं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णवालेपुरुषोंनैंतौ प्रणवपूर्वक तामंत्रकाजपकरणा॥और स्त्रियोंनैं तथाशूद्रपुरुषोंनैं
तौ प्रणवकूंछोडिकै तामंत्रकाजपकरणा॥हेशिष्य! याअधिकारीपुरुषकूं साक्षात्नारायणकेज्ञानतैं जिसप्रकारकाफल प्राप्तहोवैहै॥ति
सप्रकारकाफल याअधिकारीपुरुषकूं ताअष्टाक्षरमंत्रकेज्ञानतैंहोवैहै ॥ यातैं यहअष्टाक्षरमंत्र तानारायणदेवकेसमानहै॥और हेशिष्य!
जैसे याअधिकारीपुरुषोंकूं प्रणवमंत्र तानारायणदेवकेप्राप्तिका उपायहै ॥तैसे यहअष्टाक्षरमंत्रभी तानारायणकेप्राप्तिका उपायहै ॥
यातैं यहअष्टाक्षरमंत्र ताप्रणवमंत्रकेसमानहै॥हेशिष्य! जेपापात्माशूद्रपुरुष तथास्त्रियां श्रद्धापूर्वक तथाअर्थज्ञानपूर्वक यामंत्रकाज
पकरैहैं॥तेशूद्रपुरुष तथास्त्रियांभी सर्वपापोंतैंरहितहोइकै तानारायणदेवकूं आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरैहैं॥तात्पर्ययह॥
पापात्माशूद्रपुरुष तथास्त्रियांभी जबी यामंत्रकेजपतैं तानारायणदेवकूं आपणाआत्मारूपजाणिकै मोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तबी सर्वपा
पोंतैंरहित ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य येत्रैवर्णिकअधिकारीपुरुष ताअष्टाक्षरमंत्रकेजपतैं तानारायणदेवकूं आपणाआत्मारूपजाणिकै
मोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं याकेविषैक्याकहणाहै ? यातैं सर्वमुमुक्षुजनोंनैं ताअष्टाक्षरमंत्रकाजप अवश्यकरिकैकरणा ॥ हेशिष्य! ताना
रायणीयउपनिषद्विषे जाब्रह्मविद्या कथनकरीहै ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति कथनकरी ॥ अब महोपनिषद्विषे जाब्र
ह्मविद्या कथनकरीहै॥ साब्रह्मविद्या हम तुमारेप्रति कथनकरतेहैं ॥ तू सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ हेशिष्य! प्राचीनवृत्तांतकूंजान
णेहारे वेदवेत्ताऋषि याप्रकारकेवचन कहतेभयेहैं ॥ याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व एकनारायणदेवही स्थितहोताभया ॥ तासृष्टितैंपूर्व
कालविषे ब्रह्मादिकदेवताभी नहींहोतेभये ॥ तथा आकाशादिकपंचमहाभूतभी नहींहोतेभये ॥ तथा तिनपंचभूतोंकाकार्यरूप यह
स्थावरजंगमशरीरभी नहींहोतेभये ॥ तथा पृथिवीस्वर्गतैंआदिलैके यहसर्वकार्यप्रपंचभी नहींहोताभया ॥ इसप्रकार सर्वद्वैतप्रपं

चतैंरहित एकाकीस्थितहुआ सोनारायणदेव ताकालविषे किंचित्मात्रभी क्रीडानहींकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोनारायणदेव क्रीडाकरणेवासते दूसरेपदार्थकाध्यानकरताभया ॥ ताध्यानतैंअनंतर तानारायणदेवका मायारूपस्त्रीकेसाथ संबंधहोताभया ॥ तामायारूपस्त्रीसंबंधतैं तानारायणदेवकूं त्रयोदशपुत्र उत्पन्नहोतेभये ॥ तथा बहुतपुरुषोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरणेहारी एकव्यभिचारिणीकन्या उत्पन्नहोतीभई ॥ तिसतैंअनंतर साकन्या आपणेकूं अधिदैव अध्यात्म अधिभूत यातीनरूपकरतीभई ॥ तथा तेत्रयोदशपुत्रभी आपणेकूं अधिदैव अध्यात्म अधिभूत यातीनरूपकरतेभये ॥ तहां समष्टिशरीरकेघटपदार्थोंकानाम अधिदैवहै ॥ और व्यष्टिशरीरकेघटपदार्थोंकानाम अध्यात्महै ॥ और इदंरूपकरिकै दृश्यमानपदार्थोंकानाम अधिभूतहै ॥ जैसे सूर्यादिकदेवता अधिदैवरूपहैं ॥ और नेत्रादिकइंद्रिय अध्यात्मरूपहैं ॥ और रूपादिकविषय अधिभूतरूपहैं ॥ हेशिष्य! वास्तवतैंएकअद्वितीयरूप सोनारायणदेव आपणेवास्तवस्वरूपकेअविवेकतैं ताबहुतरूपवालीपुत्रीकेसाथ तथाबहुतरूपवाले तिनत्रयोदशपुत्रोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासकरिकै आपणेकूंभी बहुतरूप मानताभया ॥ हेशिष्य! सृष्टिकेआदिकालविषे सोनारायणदेव प्रथम तिसपुत्रीसहित त्रयोदशपुत्रोंकेकारणोंकूंउत्पन्नकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर तिनकारणोंतैं तापुत्रीसहितत्रयोदशपुत्रोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर क्रियाशक्तिकूं उत्पन्नकरताभया ॥ कैसीहैसाक्रियाशक्ति ? पूर्वउत्पन्नहुएपदार्थोंविषे कितनेकपदार्थोंकातौ कार्यरूपहै ॥ और कितनेकपदार्थोंकीस्थितिका कारणरूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवान्! तिसपुत्रीसहितत्रयोदशपुत्रोंकेकौनकारणहैं ? तथा तापुत्रीसहितत्रयोदशपुत्र कौनहैं ? तथा साक्रियाशक्ति कौनहै ? यहसंपूर्णवार्त्ता आप निर्णयकरिकैकहो ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! आकाश वायु तेज जल पृथिवी यहपंचभूत तिसपुत्रीसहितत्रयोदशपुत्रोंका कारणरूपहैं ॥ तेआकाशादिकपंचभूतभी स्थूल सूक्ष्म याभेदकरिकै दोप्रकारकेहोवैहैं ॥ तहां पंचीकृतपंचमहाभूतोंकानाम स्थूलहै ॥ और पंचीकरणतैंरहित शब्द स्पर्श रूप रस गंध या पंचतन्मात्रावोंकानाम सूक्ष्महै ॥ तिनपंचभूतरूपकारणोंकूंदोप्रकारकाहोणेतैं तिनोंकाकार्यभी स्थूल सूक्ष्म भेदकरिकै दोप्रकारकाहीहोवैहै ॥ हेशिष्य! प्राणवायुकानाम क्रियाशक्तिहै ॥ सोक्रियाशक्तिरूपप्राण तिनआकाशादिकपंचभूतोंकातौ कार्यरूप

है ॥ और तापुत्रीसेहितत्रयोदशपुत्रोंकस्थितिका कारणरूपहै ॥ हेशिष्य! अहंकार मन चित्त श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु यहत्रयोदशपुत्रहैं ॥ और बुद्धिरूपपुत्रीहै ॥ यहसंपूर्ण तानारायणदेवतैंउत्पन्नहुएहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ पंचतन्मात्रा पंचमहाभूत एकप्राण अहंकारादिकत्रयोदशपुत्र एकबुद्धिरूपीपुत्री ॥ यहसंपूर्णमिलिकै पंचाविंशति २५ तत्वहोवैहैं ॥ तापंचविंशतितत्त्वोंके हिरण्यगर्भादिकतौ अधिदैवरूपहैं ॥ और यहस्थावरजंगमशरीर अधिभूतरूपहैं ॥ याकेविषेभीइतनीविशेषताहै ॥ अधिभूतरूपकरिकैकथनकऱ्येजेशरीरहैं ॥ तिनशरीरोंविषे जिसजिसशरीरविषे जिसजिसजीवकीअहंबुद्धिहै ॥ सोसोशरीर तिसतिसजीवकेप्रतितौ अध्यात्मरूपहै ॥ और तिसजीवतैंभिन्नदूसरेजीवोंकूं सोशरीर इदंरूपकरिकैप्रतीत होवैहै ॥ यातैं तिनदूसरेजीवोंकीअपेक्षाकरिकै सोशरीर अधिभूतरूपहै॥ जैसे देवदत्तपुरुषकाशरीर तादेवदत्तपुरुषकीअपेक्षाकरिकै तौ अध्यात्मरूपहै ॥ और दूसरेयज्ञदत्तपुरुषकीअपेक्षाकरिकै अधिभूतरूपहैं ॥ याप्रकारकीरीति सर्वत्र जानिलेणी॥ हेशिष्य! सर्वभूतप्राणियोंके उत्पत्तिस्थितिलयकूंकरणेहारा जोयहकालहै॥ ताकालकूंभी सोनारायणदेवही उत्पन्नकरताभयाहै ॥ इसप्रकार आकाशादिकसर्वजगत्कूंउत्पन्नकरिकै सोनारायणदेव सूत्रआत्मारूपकरिकै सर्वदेवतावोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार सर्वजगतकूंउत्पन्नकरणेहारा सोनारायणदेव किसीअनिर्वचनीयनिमित्तकरिकै आपणेविषेक्रोधकूंप्रगटकरताभया ॥ ताक्रोधकरिकै कुटिलहुई जाभ्रुकुटीहै ताभ्रुकुटीयुक्तआपणेललाटदेशतैं सोनारायणदेव रुद्रभगवान्कूंउत्पन्नकरताभया ॥ अब ध्यानकेवासते तारुद्रभगवान्कास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥ हेशिष्य! सोरुद्रभगवान्कैसाहै? जारुद्रभगवान्का नीलकंठहै ॥ तथा जारुद्रके लोहितअंगहैं॥ तथा जारुद्रके सूर्य चंद्रमाअग्नि येतीननेत्रहैं ॥ तथा जिसरुद्रभगवान्नैं त्रिशूलकूंधारणकऱ्याहै ॥ तथा अनेकबलकरिकैसिद्धहोणेहारेजेदुर्घटकर्महैं॥ तिनदुर्घटकर्मोंकूं जिसरुद्रभगवान्नैं धारणकऱ्याहै॥ तथा जिसरुद्रभगवान्केसमान दूसराकोईहैनहीं ॥ और जोरुद्रभगवान् तानारायणदेवतैंअभिन्नहै॥ याकारणतैं सोरुद्रभगवान् संपूर्णऐश्वर्यकाआधारहै ॥ तथा संपूर्णधर्मकाआधारहै ॥ तथा संपूर्णयशकाआधारहै॥ तथा संपूर्णश्रीकाआधारहै॥ तथा संपूर्णज्ञानकाआधारहै॥ तथा संपूर्णवैराग्यकाआधारहै ॥ तथा संपूर्णसत्यकाआधारहै ॥

तथा ब्रह्मचर्यकाआधारहै॥तथा ज्ञानकाआधारहै॥तथा इंद्रियोंकेनिग्रहरूपतपकाआधारहै॥तथा संपूर्णवेदशास्त्रोंकाआधारहै॥ ऐसे सर्वगुणोंकेआधाररूप तारुद्रभगवान्‌तैंही याइंद्रादिकदेवतावोंकूं ऐश्वर्यादिकसर्वगुण प्राप्तहोवैंहैं॥ और यहरुद्रभगवान्‌ही तिनस र्वदेवतावोंकूं तथासर्वमुनियोंकूं तथासर्वमनुष्योंकूं नानाप्रकारकेविद्याकीप्राप्तिविषे गुरुरूपहै॥ और जैसे तूलकीराशि अग्निकेसंबं धकूंप्राप्तहोइके शीघ्रही नाशकूंप्राप्तहोवैंहै॥ तैसे प्रलयकालविषे यहतीनलोकरूपतूल तारुद्ररूपअग्निकूंप्राप्तहोइके शीघ्रही ना शकूंप्राप्तहोवैंहै॥ ऐसारुद्रभगवान् तानारायणदेवकेललाटतैं उत्पन्नहोताभया॥ और सोसर्वजगत्‌काद्रष्टारूप नारायणदेव पुनः ध्यानरूपतपकूंकरताभया॥ ताध्यानरूपतपकरिकै श्रमकूंप्राप्तहुए तानारायणदेवकेललाटतैं स्वेदकेबिंदु पतनहोतेभये॥ कैसेहैं तेस्वेदकेबिंदु? यासर्वब्रह्मांडके तथाब्रह्मांडवर्त्तीसर्वलोकोंके उत्पन्नकरणेविषेसमर्थहैं॥ जिनजलकेबिंदुवोंकूं शास्त्रविषे नारा याना मकरिकैकथनकरैंहैं॥ तिनस्वेदरूपजलोंविषे सोनारायणदेव आपणेतेजरूपवीर्यकूंपावताभया॥ कैसाहैसोतेजरूपवीर्य? सुवर्ण केसमानवर्णवालाहै॥ तथा अत्यंतमनोरमहै॥ तथा कोटिसूर्यकेसमान तेजवालाहै॥ ऐसातेजरूपवीर्य तिनजलोंविषेप्राप्तहोइकै अंडकेआकार परिणामकूंप्राप्तहोताभया॥ और ताअंडकेमध्यविषे नाभिकमलतैं चतुर्मुखब्रह्मा उत्पन्नहोताभया॥ अब ध्यानकरणे वासते ताब्रह्माकेस्वरूपकावर्णनकरैंहैं॥ हेशिष्य! सोब्रह्माकैसाहै? सर्वभूतप्राणियोंका आदिरूपहै॥ तथा जिसब्रह्माके पूर्व प श्चिम उत्तर दक्षिण याचारिमुखोंतैं यथाक्रमतैं गायत्री त्रिष्टुप् जगती अनुष्टुप् यहचारिप्रकारकेछंद उत्पन्नहोवैंहैं॥ तथा भूः भु वः स्वः महः यहचारिव्याहृतियां उत्पन्नहोवैंहैं॥ तथा ऋग् यजुष् साम अथर्वण येचारिवेद उत्पन्नहोवैंहैं॥ इसतैंआदिलैके यहसंपूर्णस्थावरजंगमजगत् ताब्रह्मातैंही उत्पन्नहोताभयाहै॥ ऐसाचतुर्मुखब्रह्माभी तानारायणदेवतैंही उत्पन्नहोताभयाहै॥ हेशिष्य! इसप्रकार सोएकअद्वितीयनारायणदेव आपणीमायाशक्तिकरिकै यद्यपिनानाभावकूंप्राप्तहोवैंहै॥ तथापि सोनारायणदेव वास्त वतैं नानारूपहैनहीं॥ किंतु वास्तवतैंतौ सोनारायणदेव सर्वभेदतैंरहित एकअद्वितीयरूपहीहै॥ हेशिष्य! याप्रकारकेविचारकरि कैभी जबी यहअधिकारीपुरुष तानारायणदेवकूं नहींजानिसकै॥ तबी यहअधिकारीपुरुष तानारायणदेवकेध्यानकूंकरै॥ सोध्या

नकरणेकाप्रकार याआत्मपुराणकेदशमअध्यायविषे नारायणउपनिषद्केअर्थनिरूपणविषे विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ ताध्यानरू
पयोगकरिकै यहअधिकारीपुरुष तानारायणदेवकूंसाक्षात्कारकरौ।हेशिष्य! जोअधिकारीपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वक यामहोपनिषद्नामा
ग्रंथकाविचारकरैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष पूर्व अश्रोत्रीहुआभी श्रोत्रीभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसतैंआदिलेकै अनेकप्रकारकामहात्म
याउपनिषद्का वर्णनकऱ्याहै ॥ जवी यामहोपनिषद्केविचारतैंही महान्फलहोवैहै ॥ तवी याउपनिषद्केविचारतैं उत्पन्नभयाजो
आत्माकासाक्षात्कारहै ॥ जिसआत्माकासाक्षात्कारकरिकै यहकार्यसहितमाया नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताआत्मसाक्षात्कारका महान्म
हात्महै याकेविषेक्याकहणाहै ? हेशिष्य ! इसप्रकार तामहोपनिषद्विषे जाब्रह्मविद्या कथनकरीहै ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं तु
मारेप्रति कथनकरी ॥अब आत्मप्रबोधनामाउपनिषद्विषे जाब्रह्मविद्या निरूपणकरीहै ॥ साब्रह्मविद्या हम तुमारेप्रति कथनकर
तेहैं ॥ तू सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ हेशिष्य ! ताआत्मप्रबोधनामाउपनिषद्विषे प्रथम आत्मसाक्षात्काररूपफलकीप्राप्तिवास
ते दोप्रकारकेउपाय कथनकरैहैं ॥ तहां एकतौ प्रणवमंत्ररूपउपायहै ॥ और दूसरा अष्टाक्षरमंत्ररूपउपायहै ॥ तहां जिसअद्वैती
यआनंदस्वरूपआत्माकावाचक प्रणवमंत्रहै ॥ तिसीआनंदस्वरूपआत्माकावाचक अष्टाक्षरमंत्रभीहै ॥ तहां मंत्ररूपवाचकका त
थाआत्मारूपवाच्यका श्रुतिनैं अभेदरूपकरिकै ध्यानकथनकऱ्याहै ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषनैंभी तावाच्यवाचकका अभेदहीचिं
तनकरणा ॥ तहां अकार उकार मकार यातीनवर्णोंकासमुदायरूपजो ॐकारहै ॥ ताॐकारकानाम प्रणवमंत्रहै ॥ और ताप्रण
वसहितजो ॥ नमोनारायणाय ॥ यहमंत्रहै ॥ ताकानाम अष्टाक्षरमंत्रहै ॥ यहदोनोंमंत्र याअधिकारीपुरुषोंकूं मनवांछितफलकी
प्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ हेशिष्य! जोअधिकारीपुरुष यादोनोंमंत्रोंकाजपकरैहै ॥ तथा जोअधिकारीपुरुष यादोनोंमंत्रोंकरिकै दे
वतावोंकापूजनकरैहै ॥ तथा जोअधिकारीपुरुष यादोनोंमंत्रोंके अकारादिकमात्रावोंकेसाथ विश्वादिकपादोंकाअभेदचिंतनरूप
उपासनाकरैहै ॥ ताअधिकारीपुरुषकूं संशयविपर्ययतैंरहित ब्रह्मकानिश्चयहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर ताअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मा
रूपजाणिकरिकै सोअधिकारीपुरुष याजन्ममरणरूपसंसारबंधनतैं मुक्तहोवैहै ॥ हेशिष्य ! यादोनोंमंत्रोंका वाच्यअर्थरूपजोब्र

ह्महै ॥ ताब्रह्मकाजोवास्तव निर्गुणस्वरूपहै ॥ जोनिर्गुणस्वरूप याकार्यसहितअविद्याकाध्वंसरूपमोक्षका अधिष्ठानहै ॥ तथा अद्वि
तीयरूपहै ॥ ऐसेनिर्गुणब्रह्मकूं जबपर्यंत यहअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारनहींकरै ॥ तबपर्यंत यहअधि
कारीपुरुष ताब्रह्मकेसगुणरूपकाध्यानकरै ॥ तासगुणब्रह्मकेध्यानकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं सुखैनहीं तानिर्गुणब्रह्मकासाक्षा
त्कारहोवैहै ॥ हेशिष्य ! यद्यपि श्रुतिस्मृतिआदिकशास्त्रोंविषे तासगुणब्रह्मकास्वरूप ब्रह्मा विष्णु रुद्र सूर्य इत्यादिकभेदकरिकै
अनेकप्रकारकावर्णनकऱ्याहै ॥ तथापि नारदादिकमुनियोंनें अत्यंतआदरपूर्वक जिससगुणस्वरूपकाकथनकऱ्याहै ॥ ताकूं तू श्रव
णकर ॥ हेशिष्य ! जैसे काष्ठरूपअरणि अग्निकूंप्रगटकरैहै ॥ तैसे यापृथिवीविषे सर्वब्राह्मणोंकीरक्षाकरणेवासते तथातपादिकध
र्मोंकीरक्षाकरणेवासते जोपरमात्मादेवज्योति देवकीवसुदेवतैं आपणेकूंकृष्णरूपकरिकै प्रगटकरताभयाहै ॥ जिसकृष्णभगवान्के
तांई अंगिरसगोत्रवाला घोरनामाब्राह्मण संपूर्णविद्या देताभयाहै ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्नें अर्जुनकेप्रति तथायशोदामाताके
प्रति आपणाविश्वरूपदिखायाहै ॥ सोकृष्णभगवान्ही सर्वतैंश्रेष्ठहै ॥ और सोकृष्णभगवान् आपणेस्मरणमात्रकरिकै याजीवोंके
सर्वपापकर्मोंकूंहरणकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताकृष्णभगवान्कूं हरि यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ हेशिष्य ! भारतादिक
ग्रंथोंविषे वेदव्यासनैंभी इसीकृष्णभगवान्काप्रभाव वर्णनकऱ्याहै ॥ तथा भागवतपुराणविषे शुकदेवमुनिनैंभी इसीकृष्णभगवा
न्काप्रभाव वर्णनकऱ्याहै ॥ तथा दूसरेपुराणोंविषे तथाआगमोंविषे नारदादिकमुनियोंनैंभी इसीकृष्णभगवान्काप्रभाव वर्णनक
ऱ्याहै ॥ यातैं यहकृष्णभगवान् सर्वतैंश्रेष्ठहै ॥ हेशिष्य! यद्यपि इंद्रादिकसर्वदेवता याकृष्णभगवान्केहीरूपहैं॥तथापि तेसर्वदेवता
याकृष्णभगवान्रूपबिंबके प्रतिबिंबरूपहैं ॥ यातैं जैसे यालोकविषे दर्पणादिकउपाधियोंकेनीलपीतादिकधर्म प्रतिबिंबविषेहीप्रती
तहोवैहैं ॥ मुखरूपबिंबविषे प्रतीतहोवैंनहीं॥तैसे यामायारूपउपाधिके कामक्रोधादिकधर्म तिनदेवतारूपप्रतिबिंबोंविषेहीप्रतीतहो
वैहैं ॥ ताकृष्णभगवान्रूपबिंबविषे तेधर्म प्रतीतहोवैंनहीं ॥ याकारणतैंही किसीदेवताविषेतौ कामकीअधिकताहै ॥ और किसीदे
वताविषे क्रोधकीअधिकताहै ॥ और किसीदेवताविषे लोभकीअधिकताहै ॥ और किसीदेवताविषेतौ अहंकारादिकदूषणरहैहैं ॥

और याकृष्णभगवान्विषे तेकामक्रोधादिकदूषण तीनकालमैंनहींहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! ताकृष्णभगवान्विषे तेकामक्रोदिकदूषण नहींहैं ॥ यहवार्त्ता कैसेजानीजावै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ! सोकृष्णभगवान् अर्जुनका सारथिहुआहै ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ ताकृष्णभगवान्विषे अहंकारनहींहै ॥ और सोकृष्णभगवान् दुर्योधनराजाकापरित्यागकरिकै पांडवोंकेपक्षविषेहुआहै ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ ताकृष्णभगवान्विषे लोभभीनहींहै ॥ और सोकृष्णभगवान्आपणेबलभद्रभ्राताके अनेककठोरवचनोंकूं सहनकरताभयाहै ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ ताकृष्णभगवान्विषे क्रोधभीनहींहै ॥ और कामकाअवतारजोप्रद्युम्नहै ॥ ताका सोकृष्णभगवान् साक्षात्पिताहीहै ॥ पुत्रकाबल पिताऊपरिचलैनहीं ॥ यातें यहजान्याजावैहै ताकृष्णभगवान्विषे कामभीनहींहै ॥ और सोकृष्णभगवान् स्कंदकेशक्तिकूं आपणेवामहस्ततैंउठाइकै तास्कंदके ब्रह्मण्यताकेगर्वकूं निवृत्तकरताभयाहै ॥ यातें सोकृष्णभगवान् तीनलोकोंविषे ब्रह्मण्य यासंज्ञाकूंप्राप्तहोताभयाहै ॥ यहवार्त्ता महाभारतविषे स्कंदोपाख्यानविषे विस्तारतें कथनकरीहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपरमात्मादेव सत्यरूपतपकेरक्षणकरणेवासतै देवकीकेपुत्रभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव वेदोंकेरक्षाकरणेवासतै हयग्रीवादिकरूपोंकूंधारणकरिकै मधुआदिकदैत्योंकूंहननकरताभयाहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव महादेवकीपूजाविषे आपणेप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासतै एककमलकेस्थानविषे आपणेनेत्रकूंचढावताभयाहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव विष्णुरूपकरिकै आपणेवक्षस्थलविषे भृगुऋषिकेपादकेचिन्हकूंधारणकरताभयाहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवकृष्णभगवान्तैंविना दूसरा कौनब्रह्मण्यहै ? किंतु एककृष्णभगवानहीब्रह्मण्यहै ॥ सर्वतैंउत्कृष्टकानाम ब्रह्मण्यहै ॥ हेशिष्य ! सोकृष्णभगवान् रूप लावण्य सौभाग्य इत्यादिकगुणोंकेरहणेकास्थानहै ॥ याकारणतैं ताकृष्णभगवान्केशरीरविषे विश्वकर्माकीचातुर्यताभी प्रवृत्तहोइसकैनहीं ॥ इहां मुक्ताकेसमान जोअंगोंकीकांतिहै ताकानाम लावण्यहै ॥ और मनोहरताकानाम सौभाग्यहै ॥ हेशिष्य ! तिसकृष्णभगवान्विषे जिनजीवोंकाचित्त कामादिकबुद्धिकरिकैभी संलगनभयाहै ॥ तेजीवभी दिव्यलोककूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ तहां व्रजभूमिकीगोपीयां ताकृष्णभगवान्विषेकामभावनाकरिकै तादिव्यलोककूंप्राप्तभईहैं ॥ और कंसराजा ताकृष्णभगवान्कीभयतैं तादिव्यलोककूंप्राप्तहो

ताभयाहै ॥ और शिशुपालादिकराजा ताकृष्णभगवान्केद्वेषतें तादिव्यलोककूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ और जादव ताकृष्णविषे बांधवबुद्धिकरिकै तादिव्यलोककूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ और अर्जुनादिकपांडव तथाद्रौपदी ताकृष्णभगवान्विषे स्नेहकरिकै तादिव्यलोककूंप्राप्तहोतेभयेहैं॥ और नारदादिकमुनि ताकृष्णभगवान्कीभक्तिकरिकै तादिव्यलोककूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ इसतें आदिलैकेअनेकजीव ताकृष्णभगवान्केध्यानतें तादिव्यलोककूंप्राप्तभयेहैं ॥ इहां श्रुतिस्मृतियोंविषे ब्रह्मलोकनामकरिकैप्रसिद्ध जोवैकुंठहै ॥ तावैकुंठकानाम दिव्यलोकहै ॥ जिसब्रह्मलोकविषे ब्रह्माकेसाथि परब्रह्मभावकूंप्राप्तहोइके संन्यासी ताब्रह्मलोकतें पुनःसंसारविषे प्राप्तहोतेनहीं ॥ ऐसेब्रह्मलोकरूपवैकुंठविषे तेकृष्णकेभक्त प्राप्तहोवैहैं ॥ अब ध्यानकरणेवासते ताकृष्णभगवान्कास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥ हेशिष्य! सोकृष्णभगवान् द्वारकापुरीविषे तथामथुरापुरीविषे निवासकरैहै ॥ तथा गोपबालकतारूपकरिकै सोकृष्णभगवान् गोकुलादिकस्थानोंविषे निवासकरैहै ॥ और जलयुक्तमेघका जैसाश्यामवर्णहोवैहै ॥ तैसाहीश्यामवर्ण जिसकृष्णभगवान्काहै ॥ तथा सोकृष्णभगवान् अत्यंतशोभायमानहै ॥ और सोकृष्णभगवान् इंद्रनीलमणिकेसमान वर्णवालाहै ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्कीशोभा कोटिसूर्यकेसमानहै ॥ और जिसकृष्णभगान्कीदोनोंभुजा जानुपर्यंतदीर्घहैं ॥ और जिसकृष्णभगवान्कीग्रीवा शंखकीन्यांई तीनरेखावालीहै ॥ और जिसकृष्णभगवान्काहनु महान्है ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्केगंडस्थल ऊंचेहैं ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्केनेत्र कर्णपर्यंतविस्तारवालेहैं ॥ और जिसकृष्णभगवान्कीनासिका ऊचीहै तथातीक्ष्णहै ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्केओष्ठ रक्तवर्णवालेहैं तथामंदमंदहास्ययुक्तहैं ॥ और जिसकृष्णभगवान्काललाट तथादोनोंकपोल तथादोनोंकर्ण अत्यंतशोभायमानहैं ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्केकेश अत्यंतनीलवर्णवालेहैं ॥ और जिसकृष्णभगवान्नें आपणेनखदंतोंकीप्रभाकरिकै चंद्रमाकीप्रभाकूंभी जीतलियाहै ॥ और जिसकृष्णभगवान्कावक्षस्थल विशालहै तथाऊंचाहै ॥ तथा भृगुब्राह्मणकेपादकेचिन्हकरिकै शोभायमानहै ॥ और जिसकृष्णभगवान्के दोनोंहस्त तथादोनोंपाद मंडलाकारहैं तथाऊंचेहैं ॥ ऐसेहस्तपादरूपकमलोंकरिकै शोभायमानहै ॥ और जिसकृष्णभगवान्के गुल्फ जानु अंस भु

जावोंकीसंधि इत्यादिकस्थान अत्यंतपुष्टहैं ॥ और जिसकृष्णभगवान्‌काउदर कृशहै ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्‌केहस्तपादादिक अंग पुष्टहैं ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्‌केअंगोंकीरचना वज्रकेसमान सघनहै॥तथा जोकृष्णभगवान्‌ षोडशवर्षकीअवस्थावालाहै ॥ तथा जोकृष्णभगवान्‌ पीनउन्नतजघनस्थानोंकरिकै शोभायमानहै ॥ और जैसे वृक्ष शाखावोंकरिकै शोभायमानहोवैहै ॥ तैसे दो हस्तोंविषे तथादोपादोंविषे स्थित जे वर्तुलाकार तथादीर्घ अंगुलिहैं॥तिनअंगुलियोंकरिकै जोकृष्णभगवान्‌शोभायमानहै॥तथा जो कृष्णभगवान्‌ चारिभुजावोंकरिकै शोभायमानहै॥तथा जिसकृष्णभगवान्‌काशरीर महानहै॥तथा जिसकृष्णभगवान्‌नैं रेशमकेपी तांबरकूंधारणकऱ्याहै ॥ तथा जोकृष्णभगवान्‌ कटीदेशविषेस्थितकांचीभूषणके घंटिकावोंकेमधुरशब्दकरिकै शोभायमानहै॥और अनेकप्रकारकेरत्नोंकरिकैजडित कंकण जिसकृष्णभगवान्‌केहस्तोंविषेहैं ॥ तथा अनेकरत्नोंकरिकैजडित अंगद जिसकृष्णभग वान्‌कीभूजावोंविषेहैं॥ तथा अनेकरत्नोंकरिकैजडित नूपर जिसकृष्णभगवान्‌केपादोंविषेहैं॥तथा अनेकरत्नोंकरिकैजडित जेअंगुलि भूषणहैं॥तेभूषण जिसकृष्णभगवान्‌के हस्तपादकीअंगुलियोंविषे विराजमानहैं॥और ग्रीवाविषेस्थितभूषणसहित कौस्तुभमणिकूं जिसकृष्णभगवान्‌नैं कंठविषेधारणकऱ्याहै॥और मुक्तावोंकेहारकूं तथापत्रपुष्पमय वनमालाकूं जिसकृष्णभगवान्‌नैं वक्षस्थलविषे धारणकऱ्याहै ॥ तथा आपणेदोनोंकर्णोंविषे जिसकृष्णभगवान्‌नैं मकराकार कुंडलोंकूं धारणकऱ्याहै ॥ और मयूरकेपक्षोंकरिकैयुक्त जोसुवर्णरत्नमयमुकुटहै ॥ तामुकुटकूं जिसकृष्णभगवान्‌नैं आपणेमस्तकविषेधारणकऱ्याहै ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्‌नैं आपणे ललाटविषे केसरकेतिलककूं धारणकऱ्याहै ॥ और अनेकप्रकारकेरत्नोंकरिकैजडित तथाअनेकप्रकारकैपुष्पोंकरिकेयुक्त जासुवर्ण मयविचित्ररक्षाहै ॥ तारक्षाकूं जिसकृष्णभगवान्‌नैं आपणेमूर्द्धविषेधारणकऱ्याहै ॥ तहां जिसकरिकै मस्तकककेश बांधीतेहैं ताकूं रक्षाकहेहैं ॥ और जोकृष्णभगवान्‌ तीनलोकवर्त्तिस्त्रियोंके मनकूं तथानेत्रोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ और जोकृष्णभगवा न्‌ आपणेचारिहस्तोंविषे प्रदक्षिणाक्रमतैं शंख गदा पद्म चक्र याचारोंकूंधारणकरैहै ॥ तहां दक्षिणभागकेनीचलेहस्तविषेतो शंखकूंधारणकरैहै ॥ और तादक्षिणभागकेऊपरिलेहस्तविषे गदाकूंधारणकरैहै ॥ और वामभागकेऊपरिलेहस्तविषे पद्मकूंधारण

करैहै ॥ और तावामभागकेनीचलेहस्तविषे चक्रकूंधारणकरैहै ॥ और जोकृष्णभगवान् गौवां पृथिवी ब्राह्मण इनसर्वकेपीडाकूंनाशकरणेहाराहै ॥ और दैत्योंकेसमान यज्ञादिकधर्मोंका तथादेवतावोंका द्रोहकरणेहारे जेअधर्मीराजेहैं॥तिनराजावोंकूं जोकृष्णभगवान् सर्वदा दुःखकीप्राप्तिकरैहै॥औरयापृथिवीविषे जिसजिसकालमें धर्मकालोपहोइजावैहै ॥ तथा अधर्मकीवृद्धिहोवैहै॥तिसतिसकालविषे यहदेवकीकापुत्र कृष्णभगवान् धर्मात्मापुरुषोंकीरक्षाकरणेवासते तथादुष्टजनोंकेनाशकरणेवासते यापृथिवीविषे अवतारकूंधारणकरैहै॥यहवार्त्ता श्रीगीताविषे कृष्णभगवान्नें आपहीकहीहै॥तहांश्लोक॥परित्राणायसाधूनां विनाशायचदुष्कृतां॥धर्मसंस्थापनार्थायसंभवामियुगेयुगे॥अर्थयह॥धर्मात्मापुरुषोंकेरक्षाकरणेवासते तथापापात्माजीवोंकेनाशकरणेवासते मैंकृष्णभगवान् युगयुगविषे अवतारकूंधारणकरौंहूं॥१॥और यहकृष्णभगवान्हीसाक्षात् नारायणरूपहै ॥ तथा सर्वदेवतावोंका आत्मारूपहै ॥ और सोप्रणवमंत्र तथाअष्टाक्षरमंत्रभी याकृष्णभगवान्केस्वरूपकूंही प्रतिपादनकरैहै ॥ यातें यहकृष्णभगवान् सर्वसगुणरूपोंतेंश्रेष्ठहै॥ हेशिष्य ! याअधिकारीपुरुषकूं जबपर्यंत तानिर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारनहींहोवै ॥ तबपर्यंत यहअधिकारीपुरुष पूर्वउक्तवस्त्रभूषणादिकोंसहित ताकृष्णभगवान्काध्यानकरै ॥ हेशिष्य ! हृदयकमलविषेस्थित तथासूर्यमंडलविषेस्थित तथागोकुलादिकस्थानोंविषेस्थित तथापूर्वउक्तलीलादिकगुणोंकरिकैयुक्त जोकृष्णभगवान्है ॥ सोकृष्णभगवान् जबी याअधिकारीपुरुषकेचित्तविषे प्रयत्नतेंविनाही सर्वदा प्रतीतहोवैहै॥तबी जैसे दीपघटादिक पदार्थोंकेप्रकाशकाहेतुहोवैहै॥तैसे सोकृष्णभगवान्भी आपणेनिर्गुणस्वरूपकेसाक्षात्कारविषे हेतुहोवैहै ॥ हेशिष्य! यहअधिकारीपुरुष ताकृष्णभगवान्केध्यानतें शुद्धअंतःकरणवालाहोइकै जिसनिर्गुणब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरैहै ॥ सोनिर्गुणब्रह्मकैसाहै ? सर्वभूतोंकेअंतरस्थितहै ॥ तथा सर्वजगत्काकारणहै ॥ तथा उत्पत्तिनाशतेंरहितहै ॥ तथा सर्वशोकमोहादिकोंतेंरहितहै ॥ ऐसेब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपजाणिकै यहविद्वान्पुरुषभी तिसीप्रकारकाहोवैहै ॥ यातें श्रीकृष्णभगवान्केध्यानकरणेहारा योगीपुरुष पुनःसंसारदुःखोंकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ यहजोवचन श्रुतिविषेकथनकऱ्याहै सोयथार्थहीहै ॥ हेशिष्य! याअधिकारीपुरुषनें जबपर्यंत ताकृष्णभगवान्केध्यानकरिकै तानिर्गुणब्रह्मकूंआपणाआत्म

रूपकरिकैनहींजान्याहै ॥ तबपर्यंतही याअधिकारीपुरुषकूं यहद्वैतप्रपंच प्रतीतहोवैहै ॥ और यहअधिकारीपुरुष जबी ताकृष्णभग वान्केध्यानतैं तानिर्गुणब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजाणैहै ॥ तबी याअधिकारीपुरुषकूं सोद्वैतप्रपंच प्रतीतहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे रज्जुकेज्ञानतैंअनंतर कल्पितसर्प रज्जुरूपहीहोवैहै ॥ तैसे ताअद्वितीयब्रह्मकेज्ञानतैंअनंतर यहद्वैतप्रपंचभी अद्वितीयब्रह्मरूपही होवैहै ॥ अब भेददर्शनविषे अनर्थकीकारणता दिखावैहैं ॥हेशिष्य ! ऐसेअद्वितीयनिर्गुणब्रह्मविषे जोपुरुष भेदकूंदेखैहै ॥ सोभेद दर्शीपुरुष अनेकवार संसारकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा अनेकवार जन्ममरणादिकदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य ! जैसे निर्गुणब्रह्मविषे सोभेद वास्तवतैंनहींहै ॥ तैसे मायाविशिष्टसगुणब्रह्मविषेभी सोभेद वास्तवतैंनहींहै ॥काहेतें ? जैसे मृत्तिकाकेकार्य घटशरावादि कतामृत्तिकारूपकारणतैं भिन्ननहींहैं ॥ तैसे ताब्रह्मकाकार्यरूपयहजगत्भी ताब्रह्मरूपकारणतैंभिन्ननहींहै ॥ यातैं सगुणब्रह्मविषे तथानिर्गुणब्रह्मविषे सोभेद वास्तवतैंहैनहीं ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मविषे जोपुरुष भेदकूंदेखैहै ॥ सोभेददर्शीपुरुष अत्यंतदारुणदुःखकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यहजोश्रुतिनेंकह्याहै ॥ सो यथार्थकह्याहै ॥ हेशिष्य ! विपरीतदर्शीपुरुषकूं अनर्थकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहवार्त्ता केवल श्रुतिप्रमाणतैंही सिद्धनहींहै ॥ किंतु यहवार्त्ता सर्वलोकोंकेअनुभवकरिकैभीसिद्धहै ॥ काहेतें ? यालोकविषे जोभ्रांतपुरुष विषकूंअमृ तजाणिकै ताविषकूंभक्षणकरैहै ॥ सोविपरीतदर्शीपुरुष मृत्युकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ और जोभ्रांतपुरुष अग्निकूं जलरूपजाणिकै ताअ ग्निविषेप्रवेशकरैहै ॥ सोविपरीतदर्शीपुरुषदाहकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे विषविषे अमृतबुद्धिकरणी तथाअग्निविषे जलबुद्धिकर णीयेदोनों विपरीतदृष्टिहैं ॥ तैसे सर्वद्वैततैंरहितअद्वितीयब्रह्मविषे द्वैतबुद्धिकरणी यहभी विपरीतदृष्टिहीहै ॥ ऐसेद्वैतदर्शनरूप वि परीतदृष्टितैं यापुरुषकूं जोवारंवार जन्ममृत्युकीप्राप्तिहोवैहै ॥ सोकोई अनुचितवार्त्तानहींहै ॥ काहेतें ? यालोकविषे यहजीव जैसा जैसाबीज बोवैहैं ॥ तैसेही फलकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ जैसे निंबकेबीजबोयेतैं निंबकेफलोंकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ आम्रफलोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तै से अद्वितीयआत्माविषेभेददृष्टिकरिकै सोपुरुष वारंवार जन्ममृत्युकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ मोक्षकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह गौणआ त्मा मिथ्याआत्मा मुख्यआत्मा यहतीनप्रकारकाआत्माहोवैहै ॥ तहां पुत्रादिकपदार्थ गौणआत्माहै ॥ और शरीर मिथ्याआत्मा

है ॥ और साक्षीकूटस्थ मुख्यआत्माहै ॥ तहां जोकोईपुरुष किसीजीवकेपुत्ररूपगौणआत्माकाहननकरैहै ॥ अथवा किसीजीवकेश रीररूप मिथ्याआत्माकाहननकरैहै॥तिसहननकरणेहारेपुरुषकूं राजादिक महानताडनाकरैहैं ॥ जबी गौणआत्माके तथामिथ्याआ त्माके हननकरणेहारापुरुषभी राजादिकोंकताडनाकूंप्राप्तहोवैहै॥तबी साक्षीकूटस्थरूपमुख्यआत्माकूं भेददृष्टिरूपशस्त्रकरिकैहनन करणेहारापुरुष वारंवार जन्ममृत्युकूंप्राप्तहोवैहै याकेविषे क्याकहणाहै? यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै॥ तहांश्लोक॥अन्यथासं तमात्मानमन्यथायोऽभिमन्यते॥किंतेननकृतंपापं चौरेणात्मापहारिणा ॥ अर्थयह॥अद्वितीय सत् चित् आनंद व्यापक आ त्माकूं जोपुरुषद्वैत असत् जड दुःख परिछिन्न रूपकरिकैमानैहै॥सोपुरुष आपणेआत्माकाही हननकरणेहाराहै॥ऐसेआत्महत्यारे चौर पुरुषनैं यालोकविषेकौनपापनहींकन्ये? किंतु संपूर्णपापकर्म तापुरुषनैंकन्ये ॥ १ ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं ताअद्वितीयआत्माविषे कदाचित्भी भेददृष्टिनहींकरणी ॥ हेशिष्य! याजीवोंकेहृदयकमलविषेविराजमान तथासर्वभेदतैंरहित तथासर्वबुद्धिकाप्रकाशक तथासर्वजगत्काआधाररूप तथासूर्यादिकसर्वप्रकाशोंकाकारण ऐसाजो आनंदस्वरूपअद्वितीयकृष्णभगवान्है॥ ताकृष्णभगवान्कूं जोअधिकारीपुरुष मैंकृष्णरूपहूं याप्रकार आपणाआत्मारूपकरिकैजानैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष किंचित्मात्रभी संसारदुःखकूंप्रा प्तहोवैनहीं ॥ यातैं ऐसेजीवब्रह्मकेअभेदज्ञानकूं याअधिकारीपुरुषनैं अवश्यकरिकै संपादनकरणा ॥ हेशिष्य ! याआत्मपुराणकेप्र थमअध्यायविषे ऐतरेयउपनिषद्केअर्थनिरूपणविषे जोआत्मा प्रज्ञारूपकरिकैकथनकन्याथा ॥ सोईहीआत्मा याऐतरेयशाखावि षेस्थितआत्मप्रबोधनामाउपनिषद्विषे प्रज्ञानेत्र यानामकरिकैकथनकन्याहै ॥ जैसे याजीवोंकेनेत्र बाह्यसर्वव्यवहारकीसिद्धिकरै हैं ॥ तैसे याआत्मादेवका ज्ञानरूपप्रज्ञानेत्रभी सर्वव्यवहारोंकीसिद्धिकरैहै ॥ यातैं याआत्मादेवकूं श्रुतिभगवती प्रज्ञानेत्र यानाम करिकैकथनकरैहै ॥ हेशिष्य ! जाचैतन्यरूपप्रज्ञा यासर्वजगत्काआधारहै ॥ तथा जिसप्रज्ञाविषे यासर्वजगत्कीस्थितिरूप प्र तिष्ठाहै ॥ तात्वंपदार्थरूपप्रज्ञाकूं ॥ प्रज्ञानमानंदंब्रह्म ॥ इत्यादिकमहावाक्य ब्रह्मरूपकरिकैकथनकरैहै॥हेशिष्य ! ताप्रज्ञाप्रतिष्ठा रूपब्रह्मकूं यहअधिकारीपुरुष जबी आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरैहै ॥ तबी देहादिकअनात्मपदार्थोंविषे आत्मबुद्धिरूप

अविद्याकापरित्यागकरिकै यहअधिकारीपुरुष ताब्रह्मभावकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार ताअद्वितीयआत्माकेविचार करणेहारापुरुष जोकदाचित् विषयोंविषेरागवान्होवैहै तौ तिसपुरुषकूं तारागरूपप्रतिबंधकेवशतैं यद्यपि इसजन्मविषे ताआ त्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तथापि सोरागवान्पुरुष ब्रह्मलोकविषेजाइकै तहां नानाप्रकारकेदिव्यभोगोंकूंभोगिकै ताब्रह्मा केसाथ परब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सोअधिकारीपुरुष जोविषयरागतैंरहितहोवैहै तौ इसीजन्मविषे ताब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहै यातैं याअधिकारीपुरुषनैं ताविषयरागकापरित्यागकरिकै ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते दृढप्रयत्नकरणा ॥ हेशिष्य! जि सअद्वितीयब्रह्मविषे स्वप्रकाशप्रजारूपज्योति तथानिरतिशयआनंद स्वरूपभूतहोइकै सर्वदा स्थितहोवैहै ॥ ताअद्वितीयब्रह्मकी प्राप्तिवासते यहअधिकारीपुरुष ताकृष्णभगवान्की याप्रकार प्रार्थनाकरै ॥ हे वासुदेवस्वरूपकूंधारणकरणेहारा कृष्णभगवन्! हे देवकीमाताकेनेत्रोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहारा कृष्णभगवन्! हेवसुदेवकेपुत्रकृष्णभगवन्! मैंअधिकारीजन तुमारेशरणकूंप्रा प्तभयाहूं ॥ यातैं मैंअधिकारीजनकूं आपणेवास्तवनिर्गुणस्वरूपकीप्राप्तिकरो ॥ हेशिष्य! इसप्रकार यहअधिकारीपुरुष जबी ताकृष्णभगवान्कीप्रार्थनाकरैहै॥ तबी याअधिकारीपुरुषकेतांई सोकृष्णभगवन् वेदांतकेअर्थधारणकरणेविषेसमर्थ बुद्धिरूपमेधा कीप्राप्तिकरैहै॥ ताशुद्धबुद्धिकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशशतैं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ताआत्मज्ञानकेप्रभावतैं याअधिकारीपुरुषके जन्ममरणादिकसर्वदुःख निवृत्तहोवैहै॥यातैं याअधिकारीपुरुषनैं ताकृष्णभगवान्की प्रार्थना तथाध्यान अवश्यकरिकैकरणा ॥ हेशिष्य! इसप्रकार आत्मप्रबोधनामाउपनिषद्विषे जाब्रह्मविद्या कथनकरीहै ॥ सा संपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति कथनकरी ॥ अब कैवल्यउपनिषद्विषे जाब्रह्मविद्या कथनकरीहै ॥ साब्रह्मविद्या हम तुमारेप्र ति कथनकरतेहैं ॥ तू सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ हेशिष्य! पूर्व ऋग्वेदकाआचार्य एक आश्वलायननामाऋषि होताभया ॥ सो आश्वलायननामाऋषि एककालविषे ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकीइच्छाकरिकै ब्रह्मादीकेसमीप जाताभया ॥ ताब्रह्माकेसमीपजाइकै सो आश्वलायननामाऋषि याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ आश्वलायनउवाच ॥ हेभगवन्! जाब्रह्मविद्या सर्वविद्यावोंतैंश्रेष्ठ

है॥ तथा शमदमादिकसाधनोंयुक्त विद्वान्‌पुरुष आपणेहृदयकमलविषे जिसब्रह्मविद्याकूं सर्वदा सेवनकरैहैं ॥ तथा जा ब्रह्मविद्या विषयासक्तअनधिकारीपुरुषोंकेतांई नहींदेणेयोग्यहै ॥ तथा जिसब्रह्मविद्याकेप्रभावतें यहविद्वान्‌पुरुष सर्वपापोंकापरित्यागकरिकै परब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ऐसीब्रह्मविद्याकूं आप भलीप्रकारजाणतेहो ॥ यातें साब्रह्मविद्या हमारेतांई आपकृपाकरिकै उपदेशकरो ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार जबी ताआश्वलायनऋषिनैं ब्रह्माकेप्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तबी सोब्रह्मा ताआश्वलायनऋषिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ ब्रह्माउवाच॥ हेआश्वलायन ! जिसअधिकारीपुरुषकी गुरुशास्त्रकेवचनोंविषे आस्तिक्यबुद्धिरूपश्रद्धाहै॥ तथा जिसअधिकारीपुरुषकी ब्रह्मउपदेष्टागुरुविषे परमभक्तिहै ॥ तथा जोअधिकारीपुरुष ब्रह्माकारवृत्तिरूपध्यानकरिकैयुक्तहै ॥ सोअधिकारी पुरुषही ब्रह्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै॥ श्रद्धा भक्ति ध्यान यातीनोंतैंरहितपुरुषकूं ताब्रह्मज्ञानकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातें अन्वयव्यतिरेककरिकै श्रद्धा भक्ति ध्यान येतीनोंहीं ताब्रह्मज्ञानकेसाधनहैं ॥ हेआश्वलायन ! जैसे श्रद्धा भक्ति ध्यान येतीनों ब्रह्मज्ञानकेसाधनहैं॥ तैसे संन्यासआश्रमभी ताब्रह्मज्ञानकासाधनहै ॥ काहेतें ? याअधिकारीपुरुषोंकूं अग्निहोत्रादिक श्रौतस्मार्त्तकर्मोंकरिकैभी ताब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तथा याअधिकारीपुरुषोंकूं पुत्रपौत्रादिकप्रजाकरिकैभी ताब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैनहीं॥तथा याअधिकारीपुरुषोंकूं कर्मउपासनारूपदैवधनकरिकै तथासुवर्णादिरूपमानुषधनकरिकैभी ताब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैनहीं॥ किंतु एकत्यागकरूपसंन्यासआश्रमकरिकैही याअधिकारीपुरुषोंकूं ताब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेआश्वलायन ! कर्म प्रजा धन यातीनोंकरिकै जोकदाचित् सोब्रह्मज्ञान उत्पन्नभीहोवैहै ॥ तोभी सोब्रह्मज्ञान परोक्षहीहोवैहै ॥ अपरोक्षहोवैनहीं॥ केवलसंन्यासआश्रमकरिकैही याअधिकारीपुरुषोंकूं ताअपरोक्षज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तहांश्रुति॥ **नकर्मणा नप्रजया नधनेन त्यागेनैके अमृतत्वमानशुः** ॥ अर्थयह॥ कर्मोंकरिकै तथापुत्रादिकप्रजाकरिकै तथासुवर्णादिकधनकरिकै अमृतभावकीप्राप्ति होवैनहीं ॥ किंतु पूर्वविद्वान्‌पुरुष कर्म प्रजा धन यातीनोंकेत्यागरूपसंन्यासकरिकैही ताअमृतभावकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ १ ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ हे आश्वलायन ! यहआनंदस्वरूपब्रह्म स्वर्गलोकतैंपरहुआभी अमृतरूपहै॥ तथा सोब्र

ह्म सर्वजीवोंकेहृदयरूपगुहाविषेस्थितहैं ॥ यातें स्वयंप्रकाशरूपहै ॥ ऐसे स्वप्रकाशनित्यअपरोक्षब्रह्मका जोपरोक्षरूपकरिकैज्ञान है ॥ सोज्ञान भ्रांतिरूपहै ताभ्रांतिज्ञानतें मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु अपरोक्षब्रह्मज्ञानतैंही मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ऐसेब्रह्मके अपरोक्षज्ञानकूं सर्वप्रतिबंधतैंरहित संन्यासीही प्राप्तहोवैहै ॥ इतरपुरुष ताअपरोक्षज्ञानकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेआश्वलायन ! जेसंन्यासी ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतवचनोंकाश्रवणकरिकै तिनवचनोंका अद्वितीयब्रह्मविषे तात्पर्यनिश्चयकरैहैं ॥ तथा जेसंन्यासी ताश्रवणकरेहुएअर्थका वारंवार मननकरैहैं ॥ तथा तामननकर्‍येहुएब्रह्मविषे निरंतर चित्तकेवृत्तियोंकाप्रवाहरूप निदिध्यासनकरैहैं ॥ तिनसंन्यासियोंकूं जोकदाचित् ब्रह्मलोकके प्राप्तिकीइच्छारूप प्रतिबंधहोवैहै तौ तेसंन्यासी इसशरीरविषे ताब्रह्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तेसंन्यासी याशरीरकापरित्यागकरिकै ताब्रह्मलोकविषेजाइकै ताब्रह्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जिनसंन्यासियोंकूं ताब्रह्मलोकके प्राप्तिकीइच्छानहींहै ॥ तेसंन्यासीतौ इसीजन्मविषे ताब्रह्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और हेआश्वलायन ! तेसंन्यासी जबी ब्रह्मलोकविषेजावैहैं ॥ तबी तिनसंन्यासियोंकूं तिसीजाणेकालविषेही ताब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु जबी ताहिरण्यगर्भरूपब्रह्माके आयुषकीसमाप्तिहोवैहै ॥ तबीहीतेसंन्यासी ब्रह्माकेसाथ परब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातें ताब्रह्मलोकके प्राप्तिकीइच्छाकापरित्यागकरिकै यहअधिकारीपुरुष ताब्रह्मभावकीप्राप्तिवासतै याप्रकारकायोगकरै ॥ तहां यहअधिकारीपुरुष किसीएकांतनिर्मलदेशविषे प्रथमदर्भोंकूंबिछावै॥ तिनदर्भोंऊपरि मृगचर्मबिछावै ॥ तामृगचर्मऊपरि वस्त्रबिछावै ॥ ऐसेआसनऊपरि पद्मादिकआसनकूंबांधिकरिकैस्थितहोवै ॥ और शास्त्रकीरीतिसैं अंतरशौचकूं तथाबाह्यशौचकूं करिकै तथाश्रमतैंरहितहोइकै सोयोगीपुरुष आपणेमस्तककूं तथाग्रीवाकूं तथाशरीरकूं दंडकीन्यांई सूधाराखै ॥ इसप्रकार आसनकूंदृढकरिकै सोयोगीपुरुष नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंका तथामनरूपअंतरइंद्रियका निरोधकरै ॥ तथा आपणेगुरुकूं श्रद्धाभक्तिपूर्वक नमस्कारकरै ॥ तिसतैंअनंतर सोयोगीपुरुष पंचछिद्रयुक्तहृदयकमलकाध्यानकरै ॥ कैसाहैसोहृदयकमल ? सूर्य चंद्रमा अग्नि यातीनोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा रागद्वेषादिकराजसधर्मोंतैंरहितहै ॥ तथा मोहादिकतामसधर्मोंतैंरहितहै ॥ ऐसे हृदयकमलकाध्यानकरिकै सोयोगीपुरुष ता

हृदयकमलविषे निराकारब्रह्मकाध्यानकरै ॥ कैसाहैसोनिराकारब्रह्म ? सर्वदुःखोंतेंरहितहै ॥ तथा अद्वितीयआनंदस्वरूपहै ॥ तथा मनवाणीकरिकैअचिंत्यहै ॥ तथा शब्दस्पर्शादिकगुणोंतेंरहितहै ॥ तथा जन्मतेंरहितहै ॥ तथा शिवरूपहै ॥ तथा मायातेंरहितहै ॥ तथा देशकालवस्तुपरिच्छेदतेंरहितहै ॥ तथा श्वासोंकीन्यांई विनाहीप्रयत्नतें चारिवेदोंकूंउत्पन्नकरणेहाराहै ॥ तथा जन्ममरणादिक विकारोंतेंरहितहै ॥ तथा एकअद्वितीयरूपहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा सर्वशक्तिसंपन्नहै ॥ तथा रूपादिकगुणोंतें रहितहै ॥ तथा आश्चर्यकरणेहाराहै ॥ इसप्रकार तानिर्गुणब्रह्मकाध्यान सोयोगीपुरुषकरै ॥ तानिर्गुणब्रह्मकेध्यानतें तायोगीपुरुषकूं सुखेंनहीं तानिर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ और हेआश्वलायन ! जिसअधिकारीपुरुषकाचित्त तानिर्गुणब्रह्मकेध्यानकरणेविषे समर्थनहींहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष ताहृदयकमलविषे याप्रकार सगुणब्रह्मकाध्यानकरै ॥ केनउपनिषद्विषे जाउमानामादेवी ब्रह्मविद्यारूपकरिकै वर्णनकरीहै ॥ सारूपयौवनअवस्थासंपन्न उमादेवी जिसपरमेश्वरकी स्त्रीरूपकरिकैस्थितहै ॥ कैसीहैसाब्रह्मविद्यारूपउमादेवी? यालोकविषे नानाप्रकारकेजातिवाली जेस्त्रियांहैं ॥ तिनसर्वस्त्रीरूपप्रतिबिंबोंका जाउमादेवी बिंबरूपहै ॥ तथा जाउमादेवी सर्वशक्तिरूपहै ॥ तथा जाउमादेवी महदादिकसर्वतत्त्वरूपहै ॥ और जिसउमादेवीकेअनुग्रहकरिकै इंद्रादिकदेवता तथा मनुष्यादिकजीव स्वर्गादिकोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा मोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा इसलोकविषे नानाप्रकारकेसुखोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जगत्कीउत्पत्तिरूप जोब्रह्माकाकर्महै ॥ तथा जगत्कीस्थितिरूप जोविष्णुकाकर्महै ॥ तथा जगत्कासंहाररूप जो रुद्रकाकर्महै ॥ तथा इंद्रादिकदेवतावोंका जोनानाप्रकारका ऐश्वर्यहै ॥ तेसंपूर्ण जगत्केउत्पत्तिस्थितिआदिककर्म जिसउमादेवीकेकृपाकटाक्षोंतें उत्पन्नहोवैहैं ॥ और जिसउमादेवीके क्रूरकटाक्षोंतें तिनसंपूर्णोंकानाशहोवैहै ॥ और जिसउमादेवीकेदोनों स्तन पीनउन्नतहैं ॥ जिसउमादेवीके जघनस्थान विशालहैं ॥ तथा जिसउमादेवीकामुख चंद्रमाकेसमानहै ॥ तथा जिसउमादेवीके दोनोंनेत्र मीनकेसमानचंचलहै ॥ तथा जिसउमादेवीकेकेश भ्रमरकेसमान श्यामहै ॥ तथा जिसउमादेवीकेसर्वअंग सुंदरहैं ॥ तथा जाउमादेवी महादेवकेधैर्यकूं हरणेहारीहै ॥ और जाउमादेवी विचित्रकांचीसूत्रकरिकै शोभायमानहै ॥ तथा जाउ

मादेवी नानाप्रकारकेरत्नोंकरिकैजडित कंकण अंगद नूपुर करिकैशोभायमानहै॥तथा जाउमादेवी मुक्तादिकरत्नोंकरिकैजडितहारों करिकै तथाकंठकेभूषणोंकरिकै शोभायमानहै ॥ तथा जाउमादेवी नानाप्रकारकेरत्नोंकरिकैजडित विचित्रमुकुटकरिकै तथाकुंड लादिकभूषणोंकरिकै शोभायमानहै ॥ तथा जिसउमादेवीकास्वरूप उपमानतैंरहितहै ॥ तथा जाउमादेवी भूषणोंकूंभी भूषितकर णेहारीहै ॥ तथा जाउमादेवी सर्वजगत्काकारणरूपकरिकै अनादीहुईभी षोडशवर्षकी अवस्थावालीहै ॥ ऐसीउमादेवीकेसहित विराजमान तथाताउमादेवीकापति जोश्रीमहादेवहैं ॥ सोमहादेवकैसेहैं? ताउमादेवीतैंभी अधिकगुणवालेहैं ॥ तथा जोमहादेव ब्रह्मादिकसर्वदेवतावोंकाप्रभुहै ॥ तथा जोमहादेव नानाप्रकारकेभूषणोंकरिकै शोभायमानहै ॥ तथा जोमहादेव व्याघ्रकेचर्मरूपीव स्त्रोंकूं धारणकरणेहाराहै ॥ अथवा दिशारूपीवस्त्रोंकूंधारणकरणेहाराहै ॥ तथा जिसमहादेवकेसर्वअंग भस्मकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा जोमहादेव ब्रह्माकेमस्तकोंकीमालाकरिकै शोभायमानहै ॥ तथा जिसमहादेवकाललाटस्थल द्वितीयाकेचंद्रमाकरिकै शोभायमा नहै ॥ तथा जिसमहादेवनें आपणीजटावोंविषे श्रीगंगाजीकूंधारणकऱ्याहै॥ तथा जिसमहादेवकामुख मंदमंदहास्यकरिकै युक्तहै॥ तथा जिसमहादेवकाशरीर गौकेक्षीरसमान उज्ज्वलहै ॥ तथा जिसमहादेवकाशरीर कोटिकंदर्पकेसमान सुंदरहै ॥ तथा जिसम हादेवकेशरीरकीप्रभा कोटिसूर्यकेसमानहै ॥ तथा जोमहादेव यासर्वजगत्के उत्पत्ति स्थिति लयका कारणहै ॥ तथा जोमहा देव आप उत्पत्ति स्थिति लयतैं रहितहै ॥ तथा जिसमहादेवका मुखरूपकमल पूर्णमाकेचंद्रसमान सुंदरहै ॥ तथा जिसमहा देवके सूर्य चंद्रमा अग्नि येतीनोंनेत्र अत्यंत तेजस्वीहैं ॥ तथा जिसमहादेवके सर्वअंग सुंदरहै ॥ तथा जिसमहादेवकीग्रीवा शंखकीन्यांई तीनरेखावोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा जोमहादेव आपणीशोभाकरिकै जीवोंकेमनकूंहरणेहाराहै ॥ तथा जिसमहादे वकीदोनोंभुजा जानुपर्यंत दीर्घहैं ॥ तथा जिसमहादेवका शेषनाग यज्ञोपवीतरूपहै ॥ तथा जोमहादेव पद्मआसनकूंबांधिकै त थानासिकाकेअग्रभागविषे दृष्टिदेकै स्थितहै ॥ और जिसमहादेवकी ईशान तत्पुरुष अघोर सद्योजात वामदेव येपंचमूर्तिहैं ॥ तथा जोमहादेव तिनपंचमूर्तिकरिकै यथाक्रमतैं याजगत्की उत्पत्ति स्थिति संहार प्रवेश अनुग्रह यापंचकार्योंकीसिद्धिकरेहै ॥ तथा

जोमहादेव सनकादिकमुनियोंकाभी गुरुरूपहै ॥ तथा जोमहादेव स्वयंज्योतिस्वरूपहै ॥ तथा अद्वितीयआनंदस्वरूपहै ॥ और समष्टिस्थूलप्रपंचकूं उत्पन्नकरणेहारा तथादेवतामनुष्यादिकोंकूं आपणीआज्ञाविषेचलावणेहारा जोहिरण्यगर्भभगवान्है ॥ सो हिरण्यगर्भभगवान्भी जिसमहादेवतें उत्पन्नभयाहै ॥ तथा जोमहादेव यासर्वविश्वकाईश्वरहै तथा जोमहादेव आपणेस्मरणमात्रकरिकै भक्तजनोंके सर्वपापोंकूंनाशकरणेहाराहै ॥ ऐसे उमादेवीसहित नीलकंठमहादेवका सोयोगीपुरुष ताआपणेहृदयकमलविषेध्यानकरै ॥ अथवा सोयोगीपुरुष ताउमादेवीसहित महादेवका सूर्यमंडलविषेध्यानकरै ॥ अथवा सोयोगीपुरुष तामहादेवका अग्निविषेध्यानकरै ॥ अथवा सोयोगीपुरुष तामहादेवका चंद्रमंडलविषेध्यानकरै ॥ अथवा सोयोगीपुरुष तामहादेवका कैलासादिकपर्वतोंविषे ध्यानकरै ॥ हेआश्वलायन ! इसप्रकार ताउमादेवीसहित महादेवरूपसगुणब्रह्मकेध्यानकरिकै जबी तायोगीपुरुषकामन स्थिरताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोयोगीपुरुष सुखेनहीं तानिर्गुणब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपकरिकै साक्षात्कारकरैहै ॥ कैसाहैसोनिर्गुणब्रह्म मायाशक्तिकूंअंगीकारकरिकै यासर्वजगत्काकारणहै ॥ तथा मनवाणीका अविषयहै ॥ तथा अज्ञानरूपतमतेंपरहै ॥ तथा ताअज्ञानरूपतमतेंरहितहै ॥ तथा बुद्धिआदिकसर्वप्रपंचकासाक्षीरूपहै ॥ तथा बुद्धिआदिकोंतें रहितहै ॥ ऐसेअद्वितीयनिर्गुणब्रह्मकूं सोयोगीपुरुष आपणाआत्मरूपकरिकैजानैहै ॥ अब तानिर्गुणब्रह्मविषे अद्वितीयरूपता स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहै ॥ हेआश्वलायन ! जिसब्रह्मकूं उमादेवीसहित सगुणरूपकरिकैवर्णनकऱ्याहै ॥ सोसगुणब्रह्म निर्गुणब्रह्मतैंभिन्ननहींहै ॥ किंतु उपाधिकेपरित्यागकियेतैं सोसगुणब्रह्मही निर्गुणब्रह्मरूपहै ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मतैंभिन्न दूसराकोईपदार्थहै नहीं ॥ किंतु ब्रह्मा विष्णु रुद्र इंद्रादिकदेवता अग्नि सूर्य चंद्रमा काल एकादशइंद्रिय अंतःकरणचतुष्टय पंचप्राण आकाशादिक पंचभूत पूर्वादिकदशदिशा जरायुजादिकचारिभूतप्राणी ब्रह्मांड विराट् हिरण्यगर्भ जीव ईश्वर माया तामायाकाकार्यरूप स्थूलसूक्ष्मजगत् भूतपदार्थ भविष्यत्पदार्थ वर्तमानपदार्थ इसतैंआदिलैके जितनायहजगतहै ॥ सोसंपूर्णजगत् ताब्रह्मरूपहीहै ॥ ताब्रह्मतैंभिन्न कोईभीपदार्थनहींहै ॥ तहांश्रुति ॥ सर्वंखल्विदंब्रह्म ॥ अर्थयह ॥ यहसंपूर्णजगत् ब्रह्मरूपहीहै ॥ हेआश्वलायन !

जैसे स्वप्नअवस्थाविषे एकहीस्वप्नद्रष्टापुरुष नानाभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सोएकहीपरमात्मादेव मायाकेसंबंधतें नानाजगत्रूप करिकैस्थितहोवैहै ॥ और जैसे वास्तवतैं गंधर्वनगरतैंरहितजोआकाशहै ॥ ताआकाशविषे सोगंधर्वनगर उत्पत्ति स्थिति लय कूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे वास्तवतैं सर्वद्वैतप्रपंचतैंरहित जोयह आनंदस्वरूपआत्माहै ॥ ताआत्मादेवविषे यहद्वैतप्रपंच उत्पत्ति स्थि तिलयकूं प्राप्तहोवैहै ॥ हेआश्वलायन ! ऐसेअद्वितीयपरमात्मादेवकेज्ञानतैंविना दूसराकोई मुक्तिकेप्राप्तिकामार्ग अबीहैनहीं ॥ और पूर्वहुआनहीं ॥ और आगेहोवैगानहीं ॥ किंतु मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाआत्मज्ञानही तामुक्तिकेप्राप्तिकामार्गहै ॥ तहांश्रुति ॥ नान्यःपंथाविद्यतेअयनाय ॥अर्थयह ॥ मोक्षकीप्राप्तिवासतै आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईमार्गहैनहीं ॥ किंतु मैंब्रह्मरूपहूं यह आत्मज्ञानही तामोक्षकेप्राप्तिकामार्गहै ॥ १ ॥ हेआश्वलायन ! जोअधिकारीपुरुष आपणेआनंदस्वरूपआत्माकूं सर्वभूतोंविषे व्यापकदेखेहै ॥ तथा तिनसर्वभूतोंकूं याआत्मादेवविषे कल्पितरूपकरिकैदेखेहै ॥ सोअधिकारीपुरुषही ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ ऐसेआत्मज्ञानतैंविना दूसरेकिसीउपायकरिकै ताब्रह्मभावकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषनें ताआत्मज्ञानकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ और हेआश्वलायन ! यापूर्वकहीरीतिसैं जोअधिकारीपुरुष ताआत्मादेवकेजानणेविषेसमर्थनहीं होवै ॥ सोअधिकारीपुरुष प्रथम याप्रकारकाध्यानकरै ॥ जैसे यहलोक एककाष्ठरूपअरणिकूंनीचैराखिकै तथाएककाष्ठरूपअर णिकूंऊपरिराखिकै तथा तिनदोनोंअरणियोंकेमध्यविषे एकदीर्घकाष्ठरूपमंथाराखिकै तथातामंथाकेसाथ रज्जुबांधिकै तारज्जुकूं वारंवारआकर्षणकरिकै अग्निकूंप्रगटकरैहैं ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुष आपणेशरीरकूं नीचेकीअरणिरूपकरिकै ध्यानकरै ॥ और अकार उकार मकार यातीनमात्रावालेप्रणवकूं ऊपरिकीअरणिरूपकरिकैध्यानकरै ॥ और मनकूं मंथारूपकरिकै ध्यानकरै ॥ और ताध्यानरूपक्रियाकूं रज्जुरूपकरिकैध्यानकरै ॥ इसप्रकारचिंतनकरिकै सोअधिकारीपुरुष निरंतर ताध्यानकीआवृत्तिरू पमंथनकूंकरै ॥ इसप्रकार मंथनकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं याशरीरविषे अद्वितीयआत्मारूपअग्नि प्रगटहोवैहै ॥ सोअद्वितीयआ त्मरूपअग्नि एकवारप्रगटहुआभी कामक्रोधादिकसर्वपाशोंकूं दग्धकरैहै ॥ तिनकामादिकसर्वपाशोंकेदग्धहुएतैंअनंतर यहअधिका

रीपुरुष ताअद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ हेआश्वलायन ! जोजीव मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेज्ञानरूपअग्निकरिकै कामादि कसर्वपाशोंकूं दाहकरैहै ॥ सोत्वंपदार्थरूपजीव तत्पदार्थरूपब्रह्मतैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु सोजीव केवलब्रह्मरूपहीहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! यहजीव जोब्रह्मरूपहीहै तौ याजीवकूं जन्ममरणरूपसंसारकीप्राप्ति किसवासतेहोवैहै? ॥ समाधान ॥ हेआश्वलायन ! चेतनकेआश्रितरहणेहारी तथाचेतनकूंविषयकरणेहारी जाअविद्यारूपमायाहै ॥ तामायाकरिकैआवृतहुआ यहब्रह्महीजीवरूपहोवैहै ॥ यातैं ताअज्ञानकरिकैही यहजीव संसारकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तिसीमायाकरिकैआवृतहुआ सोपरमात्मादेव नानाउपाधियोंविषेनिवासकरैहै ॥ तथा पुरुषसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेआश्वलायन ! तामायाकेसंबंधकरिकैही यहआत्मादेव जीवभावकूंप्राप्तहोइकै नानाप्रकारकेपुण्यपापकर्मोंकूंकरैहै ॥ तथा तिनपुण्यपापकर्मों केसुखदुःखरूपफलकूंभोगैहै ॥ और तिसमायाकरिकैयुक्तहुआ यहआत्मादेव जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे नानाप्रकारकेशरीरोंकूंग्रहणकरैहै ॥ और सोआत्मादेव वास्तवतैं जन्यभोगोंकीतृप्तितैंरहितहुआभी तामायाकेसंबंधतैं तिसतिसजातिवालेशरीरोंविषेस्थित अनेकभोगोंकरिकै तृप्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सोईहीआत्मादेव मूर्छाकेसमान सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोइकै तहां विक्षेपरूपप्रतिबंधतैंरहितहोइकै आत्मस्वरूपआनंदकूंभोक्ताहुआभी जिसमायाकेसंबंधतैं ताआत्मस्वरूपआनंदकूंजाणतानहीं ॥ और जैसे यालोकविषे किसीमंत्रऔषधादिकोंकरिकै मूढअवस्थाकूंप्राप्तहुआ यहपुरुष आपणेब्राह्मणत्व क्षत्रियत्व आदिकस्वरूपोंकूंजाणता नहीं ॥ तैसे यासंसारविषे मायाकरिकै मूढअवस्थाकूंप्राप्तहुआ यहजीवात्मा आपणेवास्तवस्वरूपकूं जाणतानहीं ॥ और जैसे यालोकविषे स्वभावतैं चोरीआदिकदोषोंरहितहुआभी कोईधर्मात्मापुरुष जबी चौरादिकदुष्टपुरुषोंकेसंगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोधर्मात्मापुरुषभी बंधनकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे वास्तवतैं जन्ममरणादिकसंसारतैंरहितहुआभी यहजीवात्मा जबी तामायाकेसंगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहजीवात्मा जन्ममरणादिकसंसारकूंप्राप्तहुएकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ और जैसे वास्तवतैं रूपरहितआकाशविषे यहपुरुष मोहकेवशतैं नीलरूपकूंदेखैहै ॥ तैसे वास्तवतैं मायारहितआत्माविषे सामायाभी माया

करिकैही प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं जैसे याअद्वितीयआत्माविषे यहजगत् मायाकरिकैकल्पितहोणेतैं मिथ्याहीहै ॥ तैसे सामा
याभी मायाकरिकैकल्पितहोणेतैं मिथ्याहीहै ॥ यद्यपि आपणीसिद्धिविषे आपणीअपेक्षाहुए आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैहै ॥
तथापि दुर्घटकार्योंकेकरणेकरिकै अघटितघटनापटीयसी यानामकूंप्राप्तहुई तामायाविषे सोआत्माश्रयदोष संभवैनहीं ॥ और
हेआश्वलायन ! जैसे सर्वशास्त्रोंकेजानणेहारा विद्वान्पुरुषभी स्वप्नअवस्थाविषे निद्रादोषकरिकै नानाप्रकारकेमोहकूंप्राप्त
होवैहै ॥ तैसे वास्तवतैं सर्वमोहतैंरहितहुआभी यहआत्मादेव तामायारूपदोषकरिकै यासंसारविषे नानाप्रकारकेमोहकूं
प्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे निद्राविषेसोयाहुआयहपुरुष तानिद्राकेनाशपर्यंत तास्वप्नदुःखोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहजीवात्मा
भी तामायारूपनिद्राकेनाशपर्यंत यासंसारस्वप्नकेअनेकदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे तास्वप्नअवस्थाविषे सिंहसर्पादिकों
कूंदेखिकै दुःखकरिकैरुदनकरताहुआ तथाहिडकीशब्दकेसमान भयानकशब्दोंकूंकरताहुआ जोस्वप्नद्रष्टापुरुषहै ॥ तास्वप्नद्र
ष्टापुरुषकूं कोईदयालुपुरुष भेरीआदिकोंकेऊंचेशब्दकरिकै जाग्रत्करेहै ॥ तैसे मायारूपीनिद्राविषे यासंसाररूपस्वप्नकरिकैपीडित
तथातीनतापकरिकैयुक्त जोयहजीवात्माहै ताजीवात्माकूं यहब्रह्मवेत्तादयालुगुरु महावाक्यरूपभेरीकेशब्दकरिकै तामायारू
पनिद्रातैंजाग्रत्करैहै ॥ और जैसे जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहुआ सोस्वप्नद्रष्टापुरुष पुनःतास्वप्नसंबंधीदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तै
से ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशकरिकै अविद्यारूपनिद्रातैं ब्रह्मज्ञानरूपजाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहुआ यहअधिकारीपुरुष पुनः यासं
साररूपस्वप्नकेदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेआश्वलायन ! ऐसेब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति याजीवोंकूं अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मकरिकैहोवैहै ॥
यातैं साब्रह्मज्ञानरूपतुरीयअवस्था अत्यंतदुर्लभहै ॥ किसीभाग्यवान्पुरुषकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! तुरीयना
म चतुर्थकाहै ॥ सो तीनकीअपेक्षाकरिकै तुरीयहोवैहै ॥ यातैं इहांप्रसंगविषे ब्रह्मज्ञानरूपतुरीयअवस्थाकूं किसतीनअव
स्थावोंकीअपेक्षाकरिकै तुरीयरूपताहै ॥ समाधान ॥ हेआश्वलायन ! जाग्रत्रूपस्थूलअवस्था तथास्वप्नरूपसूक्ष्मअवस्था
तथासुषुप्तिरूपकारणअवस्था येतीनोंअवस्था याजीवात्माकेक्रीडाकरणेकास्थानहैं ॥ यातैं तिनतीनोंअवस्थावोंकूं पुर कहे

हैं ॥ तेतीनोंअवस्थारूपपुर ताब्रह्मज्ञानरूपतुरीयअवस्थाकीप्राप्तिहुएही नाशकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ ताब्रह्मज्ञानतैंविना दूसरेकि सीउपायकरिकै नाशहोवैनहीं ॥ यातैं तिनकल्पिततीनअवस्थावोंकीअपेक्षाकरिकै ताब्रह्मज्ञानरूपअवस्थाविषे तुरीयरूपता संभवहोइसकैहै ॥ और हेआश्वलायन ! जबपर्यंत याजीवात्माकूं ताब्रह्मज्ञानरूपतुरीयअवस्थाकीप्राप्ति नहींहोवैहै ॥ तबपर्यंत यहजीवात्मा पूर्वलेपुण्यपापकर्मोंकेअनुसार वारंवार मृत्युकूंप्राप्तहोइकै वारंवार स्थूलशरीरोंकूंग्रहणकरैहै ॥ तथा वारंवार तिन स्थूलशरीरोंका परित्यागकरैहै ॥ और यहजीवात्मा जन्मकूंप्राप्तहोइकै बाल्यअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताबाल्यअवस्थातैंअनंतर यौवनअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तायौवनअवस्थातैंअनंतर वृद्धअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तावृद्धअवस्थातैंअनंतर मरणअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तामरणअवस्थातैंअनंतर पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार पुण्यपापकर्मकेवशतैं यहजीवात्मा घटीयंत्रकीन्यांई यासंसारविषे भ्रमणकरैहै ॥ यहही ताजीवात्माकी तिनस्थूलादिकतीनपुरोंविषे क्रीडाहै ॥ हेआश्वलायन ! याजीवात्माकूं जबपर्यंत मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मज्ञानकीप्राप्तिनहींभई ॥ तबपर्यंतही यहजीवात्मा तापुण्यपापकर्मकेअनुसार अनेकप्रकारकेऊंचनीचशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तिनपुण्यपापरूपप्रारब्धकर्मकेअनुसार मरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताआत्मज्ञानकीप्राप्तितैंअनंतर यहजीवात्मा पुनःजन्ममरणकूंप्राप्तहोवैनहीं ! और हेआश्वलायन ! यहजीव गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं जिसआत्माकेतुरीयरूपकूंजानिकै जन्ममरणतैंरहितहोवैहै ॥ सोआत्माका तुरीयस्वरूपकैसाहै ? यासर्वजगत्का आधाररूपहै ॥ तथा केवलश्रुतिकरिकै प्रतिपादनकरणेयोग्यहै ॥ तथा स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपहै ॥ तथा यासर्वजगत्काकारणहै ॥ तथा वास्तवतैं कार्यकारणभावतैंरहितहै ॥ ऐसे तुरीयपरमात्मादेवतैंही येप्राण उत्पन्नहोवैहै ॥ तथा मन उत्पन्नहोवैहै ॥ तथा वाकादिकइंद्रिय उत्पन्नहोवैहैं ॥ तथा आकाश वायु तेज जल पृथिवी येपंचभूत उत्पन्नहोवैहैं ॥ ऐसे तुरीयपरमात्मादेवकास्वरूप ब्रह्मवेत्तामहात्मागुरु अधिकारीशिष्योंकेप्रति याप्रकार आत्मरूपकरिकैउपदेशकरैहैं ॥ हेशिष्य ! जो परब्रह्म सर्वकाआत्मरूपहै ॥ तथा सर्वविश्वकाआधारहै ॥ तथा तीनपरिच्छेदोंतैंरहितहै ॥ तथा सूक्ष्मपदार्थतैंभी अत्यंतसू

क्ष्महै ॥ तथा उत्पत्तिनाशतैंरहितहै ॥ सोअद्वितीयब्रह्मही तुमारास्वरूपहै ॥ और जोतुमारास्वरूपहै ॥ सोईही ताअद्विती यब्रह्मकास्वरूपहै ॥ इसप्रकार तेब्रह्मवेत्तागुरु तिनअधिकारीशिष्योंकेप्रति जीवब्रह्मकेअभेदकाउपदेशकरैंहैं ॥ हेआश्वलायन ! जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थारूपप्रपंचकूं जोसाक्षीचैतन्य प्रकाशकरैहै ॥ सोसाक्षीचैतन्य ब्रह्मरूपहै ॥ और जोब्रह्महै सो मैंहूं ॥ याप्रकार जोअधिकारीपुरुष जीवब्रह्मकेअभेदकूंनिश्चयकरैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष कार्यसहितअविद्यारूपसर्वबंधोंतैंर हितहोवैहै ॥ और हेआश्वलायन ! जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनोंअवस्थाविषे यथाक्रमतैं स्थूल सूक्ष्म आनंद येतीनप्रकारके भोग्यरहेहैं ॥ तथा विश्व तैजस प्राज्ञ येतीनप्रकारके भोक्तारहेहैं ॥ तथा ताभोग्यपदार्थकूंविषयकरणेहारी अंतःकरण की अथवा अज्ञानकी वृत्तिरूपभोगरहेहैं ॥ तिन भोग्य भोक्ता भोगकूं मैंशुद्धआत्मा साक्षीरूपकरिकैप्रकाशकरोंहूं ॥ यातैं मैंचैतन्यस्वरूपशुद्धआत्मा तिनभोग्यादिकतीनोंतैं विलक्षणहूं ॥ तथा सर्वदा तुरीयशिवरूपहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ विशिष्टस्वरू प यद्यपि शुद्धस्वरूपतैंभिन्नहोवैनहीं ॥ तथापि शुद्धस्वरूप विशिष्टस्वरूपतैं भिन्नहोवैहै ॥ यहशास्त्रकारोंकासिद्धांतहै ॥ जैसे घटत्वादिकधर्मविशिष्टमृत्तिका यद्यपि शुद्धमृत्तिकातैंभिन्ननहींहै ॥ तथापि शुद्धमृत्तिका ताघटत्वादिकधर्मविशिष्टमृत्तिकातैंभिन्न है ॥ तैसे विश्व तैजस प्राज्ञ आदिकविशिष्टस्वरूप यद्यपि शुद्धचेतनतैंभिन्ननहींहैं ॥ तथापि सोशुद्धचेतन तिनविशिष्टस्व रूपोंतैंभिन्नहै ॥ काहेतें ? मोक्षअवस्थाविषे तिनविशिष्टस्वरूपोंकेबाधहुएभी सोशुद्धचेतनस्वरूपरहेहै ॥ याअभिप्रायकरिकैही ॥ त्रिषुधामसुयद्भोग्यं भोक्ताभोगश्चयद्भवेत् ॥ तेभ्योविलक्षणःसाक्षी चिन्मात्रोहंसदाशिवः ॥ याश्रुतिनैं तिनविशिष्टस्वरूपों तैं शुद्धचैतन्यकूंविलक्षणकह्याहै ॥ हेआश्वलायन ! इसप्रकार ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंश्रवणकरिकै यहअधि कारीपुरुष याप्रकार ताआत्माकेस्वरूपकामननकरै ॥ यहसंपूर्णजगत् मैं आत्माविषेही उत्पन्नभयाहै ॥ तथा मैंआत्माविषे ही स्थितहै ॥ तथा मैंआत्माविषेही लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं सर्वभेदतैंरहित अद्वितीयब्रह्म मैंहूं ॥ मेरेतैंभिन्न ब्रह्म न हींहै ॥ याकारणतैं सर्ववेदकीश्रुतियां मेरेकूं विश्वरूप कहेहैं ॥ तथा पुराणपुरुष कहेहैं ॥ तथा सर्वतेजोंकानिधि कहेहैं ॥

तथा संपूर्णज्ञानकर्मइंद्रियोंतैंरहित कहेहैं ॥ तथा प्राणबुद्धिआदिकोंतैंरहित कहेहैं ॥ तथा भगवान्परमेश्वर कहेहैं ॥ तथा सर्वज्ञ कहेहैं ॥ तथा सर्वद्वैततैंरहितअद्वितीय कहेहैं ॥ तथा मनवाणीकाअविषय कहेहैं ॥ तथा सर्ववेदोंकरिकैंवेद्य कहेहैं ॥ तथा सर्ववेदांतकेअर्थकाप्रकाशक कहेहैं ॥ तथा सर्वविद्याकागुरु कहेहैं ॥ तथा देव कहेहैं ॥ तथा सर्वप्रपंचतैंरहित कहेहैं ॥ काहेतें ? जैसे निर्मलआकाशविषे गंधर्वनगर कल्पितहोवैहै ॥ तैसे आनंदस्वरूप मैंअद्वितीयआत्माविषे यहमायासहित संपूर्णभूतभौतिकजगत् कल्पितहै ॥ और कल्पितवस्तुतें अधिष्ठानकाभेदहोवैनहीं ॥ यातें याकल्पितजगत्करिकै मेरेस्वरूपविषे तीनकालमैं भेदनहींहै ॥ हेआश्वलायन ! याप्रकार आत्माकाविचारकरिकै यहअधिकारीपुरुष जिसशुद्धब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोशुद्धब्रह्मकैसाहै ॥ अद्वितीयआनंदस्वरूपहै ॥ तथा सर्वबुद्धियोंविषेस्थितहै ॥ तथा सर्वबुद्धियोंकासाक्षीहै ॥ तथा उत्पत्तिनाशतैंरहितहै ॥ तथा स्थूलसूक्ष्मजगत्तैंरहितहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सोब्रह्मा आश्वलायनऋषिकेप्रति सगुणनिर्गुणब्रह्मकेध्यानपूर्वक आत्मज्ञानकाउपदेशकरताभयाहै॥ यातें याअधिकारीपुरुषोंनैंभी ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते निर्गुणब्रह्मकाध्यान अथवा सगुणब्रह्मकाध्यान अवश्यकरिकैकरणा ॥ हेशिष्य! यहअधिकारीपुरुष जबी अंतःकरणकीमलिनतादोषकरिकै पूर्वउक्तसगुणब्रह्मकूं तथानिर्गुणब्रह्मकूं साक्षात्कारकरणेविषेसमर्थनहींहोवै ॥ तबी सोअधिकारीपुरुष ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते शीघ्रही संन्यासकूंकरैनहीं ॥ किंतु सोअधिकारीपुरुष प्रथम अंतःकरणकेशुद्धिकाउपायकरै ॥ तहां अंतःकरणकीशुद्धिके जितनेशास्त्रविषे साधनकहेहैं ॥ तिनसर्वसाधनोंविषे **नमस्ते** इत्यादिकरुद्राध्यायकेपाठकेसमान दूसरा कोईसाधनहैनहीं ॥ किंतु सोरुद्राध्यायकापाठही सर्वपापोंकेनिवृत्तिकरणेहाराहै ॥ यातें यहअधिकारीपुरुष आपणेअंतःकरणकीशुद्धिवासते श्रद्धाभक्तिपूर्वक निरंतर तारुद्राध्यायकाजपकरै ॥ तारुद्राध्यायकेजपकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं जबी अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा वैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ अथवा पूर्वउक्तगर्भदुःखोंकेविचारतें तथामरणकालकेज्ञानतें तथाअष्टांगयोगतें तथाउपासनादिकोंतें वैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ तबी यहअधिकारीपुरुष तासंन्यासआश्रमकूं ग्रहणकरै ॥ हेशिष्य! तासंन्यासकेग्रहण

कियेहुएभी याअधिकारीपुरुषकूं जबपर्यंत ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति नहींहोवै ॥ तबपर्यंत यह अधिकारीपुरुष तारुद्राध्यायकेजपपूर्वक उमादे वीसहितमहादेवकेध्यानकूं अवश्यकरिकैकरै ॥ तामहादेवकेध्यानतैं याअधिकारीपुरुषकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिद्वारा मोक्षकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवै है ॥ तहांश्रुति ॥ उमासहायंपरमेश्वरंप्रभुं त्रिलोचनंनीलकंठंप्रशांतम् ॥ ध्यात्वामुनिर्गच्छतिभूतयोनिं समस्तसाक्षिंतमसःपरस्तात् ॥ अर्थयह ॥ उमा देवीसहितविराजमान तथापरमेश्वर तथासर्वकाप्रभु तथातीननेत्रवाला तथाअत्यंतशांतस्वरूप तथानीलकंठ ऐसेमहादेवकाध्यानकरिकै यहअ धिकारीपुरुष अद्वितीयब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ कैसाहैसोब्रह्म ॥ सर्वभूतभौतिकजगत्काकारणहै ॥ तथा सर्वजगत्कासाक्षीहै ॥ तथा अज्ञान रूपतमतैंपरहै ॥ १ ॥ हेशिष्य ॥ यहअधिकारीपुरुष तासंन्यासआश्रमकूंधारणकरिकै श्रद्धापूर्वक निरंतर ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रका श्रवणकरै ॥ तथा मनननिदिध्यासनकूंकरै ॥ तथा ब्रह्मवेत्तागुरुकीभक्तिकूंकरै ॥ तावेदांतश्रवणादिकोंकरिकै तासंन्यासीकूं ब्रह्मसाक्षात्कारकी प्राप्तिहोवै है ॥ जोब्रह्मज्ञान पूर्वहम ब्रह्मउपनिषदादिकोंविषेकथनकरिआये हैं यातैं यासंन्यासियों नैं निरंतर वेदांतशास्त्रकाही चिंतनकरणा ॥ तहांश्लोक ॥ आसुप्तेरामृतेःकालं नयेद्वेदांतचिंतया ॥ दद्यान्नावसरंकिंचित् कामादीनांमनागपि ॥ अर्थयह ॥ संन्यासआश्रमकूंधारणकरिकै यहअधिकारीपुरुष सुषुप्तितैंलेकैमरणपर्यंत निरंतर वेदांतशास्त्रकेचिंतनकरिकैही कालकूंव्यतीतकरै ॥ तावेदांतचिंतनकरिकै सोसंन्यासीआप णेचित्तविषे कामक्रोधादिकविकारोंकूं किंचित् मात्रभी अवसरनहींदेवै ॥ १ ॥ इसप्रकार निरंतर वेदांतचिंतनकरणेहारेसंन्यासीकूं शीघ्रही आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवै है ॥ हे शिष्य ॥ ऐसे परमहंससंन्यासकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवै है ॥ याअर्थविषे सर्वज्ञश्वेतकेतुही दृष्टांतहै ॥ काहेतैं सर्वसंन्यासियोंविषेश्रेष्ठ सोश्वेतकेतुनामासंन्यासी पूर्व छांदोग्यउपनिषद्केषष्ठेअध्यायके श्रवणमननादिकों करिकै तथापूर्वउक्तवैराग्यादिकसाधनोंकरिकै आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंजाणताभयाहै ॥ यातैं इदानींकालके परमहंससंन्यासियोंनैंभी श्रवणा दिकउपायोंकरिकै ताआत्मज्ञानकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ काहेतैं यापरमहंससंन्यासियोंका सोआत्मज्ञानकीनिष्ठारूपआचारही मुख्य है ॥ ताज्ञाननिष्ठारूपआचारतैंविरुद्धदूसरेसर्वआचारगौणहैं ॥ यातैं यापरमहंससंन्यासियों नैं दूसरेसर्वआचारोंकापरित्यागकरिकै केवल ताज्ञाननिष्ठारूपआचारकूंही संपादनकरणा ॥ हेशिष्य ॥ जोतुमनैं पूर्व परमहंससंन्यासविषे प्रश्नकऱ्याथा ॥ सोहमनैं तुम्हारेप्रति

तापरमहंससंन्यासकास्वरूप तथाताकेअधिकारीकास्वरूप तथाताकेवैराग्यादिकसाधनोंकास्वरूप तथाताकेग्रहणकरणेकीरीति विस्तारतैंकथनकरी ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुम्हारेकूं इच्छाहोवै ॥ सो तुम हमारेसैंपूछो ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वाम्युद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतात्मपुराणे गर्भाद्युपनिषत्सारार्थप्रकाशो नाम एकादशोऽध्यायः समाप्तः ॥ ११ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाऽऽत्मपुराणे एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

अथ आत्मपुराणे स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां

द्वादशाऽध्यायप्रारंभः ॥ १२ ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथद्वादशोऽध्यायप्रारंभः ॥ पूर्व एकादशेअध्यायविषे जाबालउपनिषद् गर्भउपनिषद् अमृतनादउपनिषद् हंसउपनिषद् क्षुरिकाउपनिषद् आरुणेयउपनिषद् ब्रह्मउपनिषद् परमहंसउपनिषद् महत्उपनिषद् आत्मप्रबोधउपनिषद् कैवल्यउपनिषद् याएकादशउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब याद्वादशेअध्यायविषे सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्काअर्थ निरूपणकरैहैं॥ तहां पूर्वअध्यायोंविषे नानाप्रकारकीविचित्रकथावोंकूंश्रवणकरिकै प्रसन्नताकूंप्राप्तहुआ सोश्रद्धावान्शिष्य श्वेतकेतुकीकथाकेश्रवणकरणेवासते पुनःआपणेगुरुकेप्रति याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन्! पूर्व ऐतरेयऋषिनैं तथाकौषीतकीऋषिनैं तथासूर्यभगवान्नैं तथाश्वेताश्वतरऋषिनैं तथा कठऋषिनैं तथातित्तिरिऋषिनैं तथाजाबालादिकऋषियोंनैं आपणेआपणेशिष्योंकेप्रति जाजाब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥ तथा ताब्रह्मविद्याके जितनैं वैराग्य योग उपासना संन्यास आदिकसाधन कथनकरेथे ॥ तिनसर्वसाधनोंसहित सासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैंआपकेमुखतैं श्रवणकरी तथा ताब्रह्मविद्याकेप्रसंगतैं नानाप्रकारकेविचित्रआख्यानभी हमनैं आपकेमुखतैंश्रवणकरे ॥ हेभगवन्! याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे आपनें ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमअध्यायविषे यहवार्ता आपनैं कथनकरीथी ॥ प्रजाकूंदुःखीदेखिकरिकै करुणाकरिकैयुक्तहुए सनकादिकमुनि ताअधिकारीप्रजाकेहितवासते ब्रह्मात्मज्ञानकाउपदेशकरतेभये ॥ तथा तिनअधिकारीपुरुषोंविषे कोईकवामदेवनामाअधिकारी मृत्युकूंप्राप्तहोइकै माताकेगर्भविषे स्थितहोइकै तिनविचारवान्अधिकारीपुरुषोंकेहितवासते ब्रह्मात्मज्ञानकाउपदेशकरताभया ॥ जिसउपदेशकेविचारकरणेतैं याअधिकारीपुरुषोंकूं करामलककीन्यांई देहादिकजडसंघाततैंविलक्षण साक्षीआत्माका ब्रह्मरूपकरिकैज्ञानहोवैहै ॥ तथा जिसउपदेशकेश्रवणमननकियेतैं विषयासक्तकामीपुरुषोंकूंभी आपणेशरीरविषे तथास्त्रीपुत्रादिकोंकेशरीरविषे तीव्रवैराग्य उत्पन्नहोवैहै ॥ यहसंपूर्णवार्ता ताप्रथमअध्यायविषेकथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके द्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअध्यायविषे आपनैं तिसीऋग्वेदके कौषीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां द्वितीयअध्यायविषेतौ आपनैं यहवार्ता कथनकरी

थी ॥ इंद्रकेसाथयुद्धकरणेकीइच्छाकरिकै दिवोदासराजाकापुत्र प्रतर्दनराजा स्वर्गलोकविषेजाताभया ॥ तहां सोप्रतर्दनराजा युद्धकरिकै इंद्रकूंजीतताभया ॥ और ताप्रतर्दनराजाकेपुरुषार्थकूंदेखिकरिकै प्रसन्नहुआ सोइंद्र ताप्रतर्दनराजाकेतांई वरदेताभया ॥ जिसवरकीप्राप्ति यादेहधारीजीवोंकूं अत्यंतदुर्लभहै ॥ यहसंपूर्णवार्ता आपनैं ताद्वितीयअध्यायविषे कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेतृतीयअध्यायविषे आपनैं यहवार्ता कथनकरीथी ॥ बालाकिब्राह्मण संपूर्णदेशोंकेविद्वानोंकूंजीतकरिकै श्रीकाशीविषे अजातशत्रुराजाकेसमीपजाताभया ॥ तहां राजाकेकठोरवचनोंकूंश्रवणकरिकै अभिमानतैंरहितहुआ सोबालाकि ब्राह्मण तिसीअजातशत्रुराजातैं ब्रह्मविद्याकाउपदेशलेताभया ॥ यहसंपूर्णवार्ता आपनैं तातृतीयअध्यायविषेकथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषे आपनैं यजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां चतुर्थअध्यायविषेतौ आपनैं यहवार्ता कथनकरीथी ॥ दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंविषेस्थितऋषियोंका परस्परभेदभीसंभवैहै ॥ तथापरस्परअभेदभीसंभवैहै॥ और दध्यङ्अथर्वणऋषि इंद्रकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया॥ ता ब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिकै क्रोधवान्हुआसोइंद्र तादध्यङ्ऋषिकेप्रति पुनः ताब्रह्मविद्याकेनहींउपदेशकरणेकीआज्ञाकरताभया॥तिसतैंअनंतर सोदध्यङ्अथर्वण आपणेवचनकेसत्यकरणेवासते साब्रह्मविद्या अश्विनीकुमारोंकेप्रति उपदेशकरताभया॥ताकरिकैक्रोधवान्हुआ सोइंद्र तादध्यङ्ऋषिकेमस्तककूंछेदनकरताभया ॥ और तेअश्विनीकुमारभी ब्रह्मविद्याकेलोभकरिकै आपणेगुरुकेमस्तककूंकाटिकै अश्वकीग्रीवाऊपरिराखतेभये ॥ और अश्वकेमस्तककूंकाटिके तादध्यङ्गुरुकेग्रीवाऊपरिराखतेभये ॥ यहसंपूर्णवार्ता आपनैंताचतुर्थअध्यायविषेकथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके पंचमअध्यायविषे आपनैं जनकराजाकेयज्ञसभाविषे आश्वलादिकब्राह्मणोंकेसाथ याज्ञवल्क्यमुनिकेजल्पकथाका निरूपणकऱ्याथा ॥ तथा तायाज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरिकै शाकल्यकामृत्युकथनकऱ्याथा ॥ तहां परस्पर जीतणेकीइच्छाकरिकै जोशास्त्रकेअर्थकाविचारकरणाहै ताकानाम जल्पकथाहै ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे आपनैं तिसीयाज्ञवल्क्यमुनिकी जनकराजाकेसाथ दोवार वादकथा निरूपणकरीथी ॥ तहां तत्त्वजान

णेकीइच्छाकरिकै जोपरस्पर शास्त्रकेअर्थकाविचारकरणाहै ताकानाम वादकथाहै ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेसप्तमअध्या यविषे आपनैं तायाज्ञवल्क्यमुनिके तथामैत्रेयीस्त्रीके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ तथा याज्ञवल्क्यमुनिके संन्यासआश्रमका निरूपणकऱ्याथा ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके अष्टमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतर नामाउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताअष्टमअध्यायविषे श्वेताश्वतरमुनिका तथासंन्यासियोंका तथापूर्ववेदवेत्ताब्राह्मणोंका परस्पर याजगत्केकारणोंविषेविचार निरूपणकऱ्याथा ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेनवमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजु र्वेदके कठवल्लीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तानवमअध्यायविषे यमराजाका तथानचिकेताका नानाप्रकारकेवरोंयुक्तआ ख्यान निरूपणकऱ्याथा ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके दशमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके तैत्तिरीयकउपनिषद्का अर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादशमअध्यायविषे यहवार्ता आपनैं निरूपणकरीथी ॥ वैशंपायनगुरुकीआज्ञाकूंमानिकै याज्ञवल्क्यमु निनैं वमनकऱ्येजेयजुर्वेदकेमंत्र तिनमंत्रोंकूं ब्राह्मण तित्तिरीपक्षीकारूपधारणकरिकै भक्षणकरतेभये ॥ याकारणतैं तिनमंत्रोंवि षेकृष्णयजुषरूपता प्राप्तहोतीभई ॥ और ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासते भृगुऋषि वरुणपिताकेसमीप पंचवार जाताभया ॥ और वेनना मागंधर्वनैं जिसप्रकार आपणेआत्माकाअनुभव कथनकऱ्याथा ॥ सोभी आपनैं निरूपणकऱ्याथा ॥ तथा सत्यादिकसाधनोंकाक थनकरिकै तिनसर्वसाधनोंतैं संन्यासरूपसाधनकूं उत्कृष्टरूपकरिकैवर्णनकऱ्याथा ॥ तथा तासंन्यासकी ब्रह्मरूपकरिकैस्तुतिकरी थी ॥ यहसंपूर्णवार्ता तादशमअध्यायविषे निरूपणकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेएकादशेअध्यायविषे आपनैं जा बालादिकएकादशउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां जाबालउपनिषद्विषे तथापरमहंसउपनिषद्विषे तथाआरुणिउप निषद्विषे जिससंन्यासका कथनकऱ्याथा ॥ सोसंन्यास वेदकेशाखावोंकेभेदहुएभी भिन्नहोवैनहीं ॥ किंतु तिनसर्वउपनिषदोंविषे सोएकहीसंन्यास कथनकऱ्याहै ॥ यहवार्ता आपनैं ताएकादशेअध्यायविषे निरूपणकरीथी ॥ तथा तासंन्यासकीप्राप्तिविषे उप योगीजोवैराग्यहै ॥ तावैराग्यकीप्राप्तिवासते आपनैं मरणकेअनेकनिमित्तोंसहित नानाप्रकारकेयोगका कथनकऱ्याथा ॥ तथा

गर्भउपनिषद्विषे तायोगकेउपयोगी अनेकपदार्थोंका निरूपणकरिकै ताप्रसंगकरिकै वसिष्ठमुनिउक्त अद्भुतयोगका वर्णनकऱ्याथा ॥ और अमृतनादउपनिषद्विषे तथाहंसउपनिषद्विषे तथाक्षुरिकाउपनिषद्विषे वेदकीशाखावोंकेभेदकरिकै जोजोयोग निरूपणकऱ्याहै ॥ सोयोगभी आपनैं भिन्नभिन्नकरिकै निरूपणकऱ्याथा ॥ और ब्रह्मउपनिषद् अमृतबिंदुउपनिषद् नारायणीयउपनिषद् महोपनिषद् आत्मप्रबोधउपनिषद् कैवल्यउपनिषद् याषट्उपनिषदोंविषे जाजाब्रह्मविद्या कथनकरीहै ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्याभी आपनैं कथनकरीथी ॥ और तापरमहंससंन्यासविषेस्थित संवर्तकादिकसंन्यासी सर्वलोकोंतैंविलक्षणआचारवालेहुएवर्तेहैं ॥ यहवार्ताभी आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेका वैराग्यहीकालहै यहवार्ताभी आपनैं कथनकरीथी ॥ और गर्भदुःखोंतैंआदिलैके नानाप्रकारकेउपायोंकरिकै वैराग्यकूंप्राप्तहुए जेपुरुषहैं ॥ तेपुरुषही यापरमहंससंन्यासके अधिकारीहैं ॥ यहवार्ताभी आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा तासंन्यासग्रहणकरणेकीरीति तथातासंन्यासीकेमरणतैंअनंतरसंस्कार तथातासंन्यासीकावेष तथातासंन्यासीकाआचार यहसंपूर्णवार्ता आपनैं विस्तारतैंकथनकरीथी ॥ हेभगवन्! ताएकादशेअध्यायके अंतविषे आपनैं श्वेतकेतुकावर्णनकऱ्याथा ॥ जो श्वेतकेतु ब्रह्मज्ञानतैंपूर्वभी सर्वज्ञथा ॥ हेभगवन्! यहश्वेतकेतुकीवार्ता बहुतआश्चर्यकाकारणहै ॥ यातैं यावार्ताकेश्रवणकरणेकी हमारेकूं बहुतअभिलाषाहै ॥ हेभगवन्! आपनैंपूर्व ताएकादशेअध्यायकेआदिविषे सर्वलोकोंतैंविलक्षणआचारवाले संवर्तकादिकसंन्यासी कथनकऱ्येथे ॥ तिनसंन्यासियोंविषे श्वेतकेतुकाभी कथनकऱ्याथा ॥ ताएकादशेअध्यायकेअंतविषे पुनः तिसीश्वेतकेतुकाकथन आपनैं किसवासते कऱ्याहै ? हेभगवन्! सोसर्वज्ञश्वेतकेतु किसदोषकरिकै अज्ञताकूं प्राप्तहोताभया ? तथा किसमहात्मानैं ताश्वेतकेतुकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्याथा ? तथा साब्रह्मविद्या किसप्रकारकीथी ? यहसंपूर्णवार्ता आप कृपाकरिकै मैंश्रद्धावान्शिष्यकेप्रति कथनकरौ ॥ इसप्रकार बुद्धिमान्शिष्यकरिकैपूछाहुआ सोश्रीगुरु ताश्रद्धावान्शिष्यकेप्रति छांदोग्यउपनिषद्विषेकथनकरीहुईकथाकूं कहताभया ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! पूर्व एकश्वेतकेतुनामा ऋषिकाबालक होताभयाहै ॥ ताश्वेतकेतुबालकविषे मातापिताका बहुतस्ने

हहोताभया ॥ तामातापिताकेस्नेहकरिकै सोश्वेतकेतु अशिक्षितदुष्टवृषभकेतुल्यहोताभया ॥ तथा ताश्वेतकेतुकी सर्वदाक्रीडाकरणे
विषेही प्रीतिहोतीभई ॥ याकारणतैं सोश्वेतकेतु उपनयनसंस्कारतेंरहित द्वादशवर्षकाहोताभया ॥ और बालकोंकीक्रीडाविषे अ
त्यंतप्रीतिमान्हुआ सोश्वेतकेतु कबीतौ भोजनकूंकरताभया ॥ और कबीतौ भोजनकूंभी नहींकरताभया ॥ और सोश्वेतकेतु दूसरे
बालकोंकूं तथास्त्रियोंकूं तथाब्राह्मणोंकूं तथागौआदिकपशुवोंकूं कठोरवचनोंतैं निरादरकरिकै तथादंडादिकोंसैंताडनकरिकै शीघ्र
ही आपणेगृहविषे भागिजाताभया ॥ इसप्रकार बाल्यअवस्थाविषे सोश्वेतकेतु अशिक्षितदुष्टवृषभकीन्यांई सर्वजीवोंकूं दुःखकीही
प्राप्तिकरताभया ॥ और सोश्वेतकेतु किसीकालविषे विनयपूर्वक आपणेआरुणिपिताकेसमीपजाताभया ॥ और सोआरुणिऋषि
ताश्वेतकेतुपुत्रकेउन्मत्तदशाकूंदेखिकै आपणेचित्तविषे किंचित्मात्र क्लेशकूंप्राप्तहोइकै तापुत्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥
आरुणिरुवाच ॥ हेपुत्र! अविवेकहैकारणजिसका ऐसाजोस्नेहहै ॥ तास्नेहकेवशहोइकै मैंपितानैं तथामातानैं तुमारेकूंशिक्षाकरीन
हीं ॥ किंतु तास्नेहकेवशतैं हमोंनैं सर्वदा तुमारालालनकऱ्याहै ॥ याकारणतैं तू ऐसीउन्मत्तदशाकूंप्राप्तभयाहै ॥ हेपुत्र! पुत्र शि
ष्य स्त्री यातीनोंकेलालनकियेतैं तिनपुत्रादिकोंविषे बहुतदोष प्राप्तहोवैहैं ॥ और तिनपुत्रादिकोंकेताडनाकियेतैं तिनपुत्रादिकों
विषे बहुतगुण उत्पन्नहोवैहैं ॥ यहवार्ता जोनीतिशास्त्रवालोंनैं कथनकरीहै ॥ सो मिथ्यानहींहै ॥ किंतु सावार्ता यथार्थहै ॥ हेपुत्र!
तानीतिशास्त्रविषे याप्रकारकेवचनकहेहैं ॥ जेमातापिता स्नेहकेवशहोइकै पुत्रकूंशिक्षानहींकरैहैं ॥ किंतु सर्वदा तापुत्रकालालनकरै
हैं ॥ तेमातापिता तापुत्रकेशत्रुहीजानणे ॥ काहेतैं? तामातापिताकेलालनतैं तिसपुत्रविषे उत्पन्नभयेजेदोष तिनदोषोंकरिकै सोपु
त्र इसलोकविषेभी दुःखकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ और मरणतैंअनंतर नरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं मातापितानैं पुत्रकूं सर्वदा शिक्षाहीकर
णी ॥ तहां तीनवर्षपर्यंत तापुत्रकूं मातानैं शिक्षाकरणी ॥ और गर्भाधानतैंलैके अथवा जन्मतैंलैके अष्टवर्षपर्यंत तापुत्रकूं पितानैं
शिक्षाकरणी ॥ और ताअष्टवर्षतैंलैके षोडशवर्षपर्यंत तापुत्रकूं आचार्यगुरुनैं शिक्षाकरणी ॥ ताषोडशवर्षतैंअनंतर तापुत्रतैं सव
शिक्षावोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और जोकदाचित् ताषोडशवर्षतैंअनंतरभी तापुत्रविषे तथाशिष्यविषे शिक्षाकरणेकीयोग्यताहोवै ॥

तौ सोपिता अथवा आचार्य तापुत्रकेप्रति तथाशिष्यकेप्रति ताडनाकरिकै शिक्षानहींकरै ॥ किंतु मित्रकीन्यांई वाणीकरिकै शिक्षाकरै ॥ याप्रकारकीरीति तानीतिशास्त्रविषेकथनकरी है ॥ यातैं पितामातानैं पुत्रकूं अवश्यकरिकै शिक्षाकरणी ॥ हेपुत्र ! जोमूढबुद्धिपुत्र आपणेमाताकेशिक्षाकूं तथापिताकेशिक्षाकूं तथाआचार्यकेशिक्षाकूं ग्रहणनहींकरैहै ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष यौवनअवस्थाकेप्राप्तहुए परमक्लेशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां सोमूढबुद्धिपुरुष इसलोकविषेतौ राजादिकोंतैंभयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और परलोकविषे यमराजातैंभयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेपुत्र ! यालोकविषे पुत्रकूं मातापितानैं तथाआचार्यनैं अवश्यकरिकैशिक्षाकरीचाहिये ॥ जोकदाचित् तापुत्रऊपरिकोईदूसरापुरुष शिक्षाकरणेवालाहोवैभी तौभी तापुत्रकूं मातापितानैं तथाआचार्यनैं अवश्यकरिकै शिक्षाकरणी ॥ और तुमारीमातानैं तथामैंपितानैं तुमारेकूं शिक्षाकरीनहीं ॥ याकारणतैं तू ब्रह्मचर्यतैंरहितहुआ द्वादशवर्षकाहुआहैं ॥ और किसीअनाचारीनिकृष्टब्राह्मणकीन्यांई तू हमारेकुलविषे नहींउत्पन्नहुएकीन्यांई प्रतीतहोताहै ॥ हेपुत्र ! नीतिशास्त्रकेमर्यादाकापरित्यागकरिकै हमनैं स्नेहकेवशतैं इतनेकालपर्यंत तुमारा लालनकर्‍याहै ॥ यातैं मैंपिता तुमारेउपनयनसंस्कारकूंकरिकै तुमारेकूंशिक्षाकरों यहवार्ता अत्यंतदुर्घटहै ॥ और स्नेहयुक्तमैंपिताविषे तुमारीभीश्रद्धाहोवैगीनहीं ॥ और श्रद्धातैंविना विद्याकाउपदेशकरणा भस्मविषेआहुतिकीन्यांईव्यर्थहोवैहै ॥ यातैं तू किसीदूसरेआचार्यगुरुकेसमीपजाइकै ताआचार्यकेउपदेशतैं विद्याअध्ययनादिक ब्रह्मचारीकेधर्मोंकूंसंपादनकर ॥ हेपुत्र ! जोतू ब्रह्मचर्यआश्रमकूंधारणकरिकै वेदविद्याकाअध्ययन नहींकरैगा तौ इसलोकविषे नरकदुःखतैंभीअधिकदुःखकेदेणेहारी तुमारी अपकीर्तिहोवैगी ॥ और तुमारा हमारेकुलविषेजन्म हुआहै ॥ यातैं तुमारीअपकीर्तिकरिकै हमारी तथाहमारेवृद्धपुरुषोंकीभी अपकीर्तिहोवैगी ॥ और श्रेष्ठपुरुषोंकीजाअपकीर्ति है ॥ सामरणतैंभीअधिकहै ॥ यातैं हेपुत्र ! तूकिसीवेदवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै वेदविद्याकाअध्ययनकर ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारकेवचन जबी ताआरुणिपितानैं ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति कथनकर्‍ये ॥ तबी सोश्वेतकेतु तापिताकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै विचारकूं प्राप्तहोताभया ॥ और तापिताकीआज्ञालैके सोश्वेतकेतु आपणेगृहकापरित्यागकरिकै किसीअन्यदेशविषेजाताभया ॥ तहांजाइकै सोश्वेतकेतु

किसीवेदवेत्ता ब्राह्मणोंकूंगुरुधारणकरिकै व्याकरणादिकषट्अंगोंसहित चारिवेदोंका अध्ययनकरताभया ॥ तथा उपनिषद्रूपवेदांतभागकूंछोडिकै सोश्वेतकेतु तिनसर्ववेदोंकेअर्थकाभी विचारकरताभया ॥ इसप्रकार अर्थसहित चारिवेदोंकाअध्ययनकरिकै सोश्वेतकेतु तिनगुरुवोंतैंआज्ञालेकै आपणेगृहकेप्रति आवताभया ॥ और मार्गविषेआवताहुआ सोश्वेतकेतु आपणेमनविषे याप्रकारकाविचार करताभया ॥ सर्ववेदोंकेपाठकूं तथासर्ववेदोंकेअर्थकूं हमनैं भलीप्रकारअध्ययनकर्‍याहै ॥ यातैं मैंश्वेतकेतु अत्यंतबुद्धिमान्हूं ॥ और जैसा हमारेकूं वेदोंकापाठ तथाअर्थ आवैहै ॥ तैसा हमारेपिताकूंभी आवतानहीं ॥ काहेतें? जोकदाचित् हमारापिता तिनवेदोंकेपाठकूं तथाअर्थकूं जाणताहोता तौ मैंप्रियपुत्रकूं दूसरेब्राह्मणोंकेसमीप किसवासतेभेजता? और सोहमारापिता विद्याअध्ययनकरणेवासते हमारेकूं दूसरेब्राह्मणोंकेपास भेजताभयाहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ हमारेपिताकूं यथार्थवेदविद्या आवतीनहीं ॥ किंवा जिसगुरुवोंकेसमीप हमनैं वेदविद्याकाअध्ययनकर्‍याहै ॥ तेगुरुभी हमारीतीक्ष्णबुद्धिकूंदेखिकै आपणेपुत्रोंतैंभी अधिकस्नेह हमारेविषेकरतेभयेहैं ॥ जोमैं अधिकबुद्धिमान्नहींहोता तौ तेहमारेगुरुहमारेऊपरि अधिकस्नेहनहींकरते ॥ याकारणतैंभी मैं पितातैंअधिकबुद्धिमान्हूं ॥ किंवा तेहमारेगुरु किसीप्रसंगपाइकैस्नेहपूर्वक अनेकशपथोंकूंकरिकै हमारेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभयेहैं ॥ हेश्वेतकेतु! जितनीवेदविद्या हमारेकूं आवतीथी सासंपूर्णवेदविद्या हमोंनैं तुमारेप्रति उपदेशकरीहै ॥ इसतैंअधिककोईविद्या हमारेपासहैनहीं ॥ ऐसेगुरुवोंकेवचनोंतैंभी यहजान्याजावैहै ॥ जोमैं श्वेतकेतु ताआरुणिपितातैं अधिकविद्यावालाहूं ॥ किंवा पुत्र पितातैंभीअधिकबुद्धिमान्होवैहै ॥ यावार्ताविषे कोईआश्चर्यनहींहै ॥ काहेतें? जैसे पूर्व बृहस्पति तथाद्वताबृहस्पतिका अजनामापुत्र आपणेपितातैंभी अधिकविद्यावान्हुआहै ॥ जाअजकूं शास्त्रविषे शंयु यानामकरिकैभी कथनकरे हैं ॥ सोअज शुक्रतैंमृत्युसंजीवनीविद्याकूंपढिकै बृहस्पतिआदिकसर्वदेवतावोंकूं साविद्या पढावताभयाहै ॥ यहवार्ता वेदके शतपथब्राह्मणविषे तथामनुस्मृतिविषे प्रसिद्धहै ॥ तैसे मैंश्वेतकेतुभी आपणेपितातैंअधिकविद्यावान्हुआहूं ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकाचिंतनकरिकै सोश्वेतकेतु महान्गर्वकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तागर्वदोषकरिकै उत्पन्नभयाजोमोहहै ॥ तामोहकरिकै सोश्वेतकेतु

आपणेगृहविषेजाइकै आपणेपिताकेपादोंऊपरि नमस्कारनहींकरताभया ॥ किंतु स्तंभकीन्यांई नम्रभावतैंरहितहोइकै ऊंचे आसनऊपरि स्थितहोताभया ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार ताश्वेतकेतुपुत्रकूं नम्रतातैंरहितदेखिकैभी सोआरुणिपिता तापुत्रऊपरि क्रोधनहींकरताभया ॥ किंतु कृपाकरिकैयुक्तहुआ सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेहितवासतै याप्रकारकावचन तापुत्रके प्रति कहताभया ॥ आरुणिरुवाच ॥ हेश्वेतकेतु ! जिसअतिशयताकेअभिमानकरिकै तूस्थाणुकीन्याई नम्रतातैंरहितहुआहै ॥ तथा जिसअतिशयताकेअभिमानकरिकै तू आपणेकूं षट्अंगोंसहितचारिवेदोंकावेत्ता मानताहै ॥ तथा जिसअतिशयताकेअभिमानकरिकै तू आपणेकूंसर्वविद्वानोंतैं अधिकमानताहै ॥ साअतिशयता तुमारेविषेकौनहै? यहवार्ता तू हमारेप्रतिकह ॥ हेश्वेतकेतु ! तुमनैं आपणेगुरुवोंकेप्रति कबी यहप्रश्नकन्याहै ? जो जिसएकवस्तुकेश्रवणकरिकै संपूर्णअश्रुतपदार्थोंकाभीश्रवण होवैहै ॥ तथा जिसएकवस्तुकेमननकरिकै संपूर्णअमननकरेहुएपदार्थोंकाभी मननहोवैहै ॥ तथा जिसएकवस्तुकेविज्ञानकरिकै संपूर्णअविज्ञातपदार्थोंकाभी विज्ञानहोवैहै ॥ ऐसावस्तु तुमनैं कबी आपणेगुरुवोंतैंपूछाहै ? जोतू तावस्तुकूंजाणताहोवै तौ हमारेप्रति कथनकर ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारकावचन जबी ताआरुणिपितानैं श्वेतकेतुपुत्रकेप्रति कह्या ॥ तबी सोश्वेतकेतु तावस्तुकूंनजाणताहुआ तागर्वतैंरहितहोताभया ॥ और पिताकेवचनकूंश्रवणकरिकै परमआश्चर्यकूंप्राप्तहुआ सोश्वेतकेतु श्रद्धाभक्तिपूर्वक तापिताकूंनमस्कारकरिकै याप्रकारकावचन कहताभया॥ श्वेतकेतुरुवाच॥ हेभगवन् ! जिसएकवस्तुके श्रवणकरिकै तथामननकरिकै तथाविज्ञानकरिकै सर्वपदार्थोंका श्रवण मनन विज्ञान होवैहै॥ ताएकवस्तुकूं मैं जाणतानहीं ॥ यातैं आप कृपाकरिकै तावस्तुकाउपदेश हमारेप्रति करो ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार जबी ताश्वेतकेतुनैं आरुणिपिताकेप्रति प्रश्नकन्या ॥ तबी सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ आरुणिरुवाच ॥ हेश्वेतकेतु ! ताएकवस्तुकेजाणणेवासतै तू प्रथम तीनदृष्टांतोंकरिकै यासर्वजगतकूं तेज जल पृथिवी यातीनभूतरूपकरिकै निश्चयकर॥ तिसतैंअनंतर तिसी तीनदृष्टांतोंकरिकै तेज जल पृथिवी यातीनोंकाकारण जोपरमात्मादेवहै तापरमात्मारूपकरिकै तासर्वजगतकूं निश्चयकर ॥

अब तिन तीनदृष्टांतोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे यालोकविषे पृथिवीरूपमृत्तिकापिंडकेज्ञानहुएतैंअनंतर तामृत्तिकाके
कार्यरूप घटशरावादिकसर्वपदार्थोंका ज्ञानहोवैहै ॥ १ ॥ और जैसे तेजरूप सुवर्णपिंडकेज्ञानहुएतैंअनंतर तासुवर्णकेकार्यरूप
कटककुंडलादिकसर्वभूषणोंकाज्ञानहोवैहै ॥ २ ॥ और जैसे नखनिकृंतनादिकापिंडविषेस्थित जोलोहहै ॥ तालोहपिंडकेज्ञानहुए
तैंअनंतर तालोहकेकार्यरूप खड्गादिकसर्वपदार्थोंका ज्ञानहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपुरुष एकवार तामृत्तिकाकेघटरूपकार्यविषे
यहमृत्तिकाहीहै याप्रकारका निश्चयकरैहै ॥ सोपुरुष ताघटतैंभिन्न दूसरेमृत्तिकाकेकार्योंकूंदेखिके यहमृत्तिकाहै अथवानहींहै याप्र
कारकेसंशयकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तिनसर्वकार्योंकूं मृत्तिकारूपकरिकैहीदेखेहै ॥ यहरीति सुवर्णपिंडविषे तथालोहपिंडविषेभी
जानिलेणी ॥ तैसे तेज जल पृथिवी यातीनोंभूतोंकाकारण जोपरमात्मादेवहै ॥ तापरमात्मादेवकेज्ञानहुएतैंअनंतर याजीवोंकूं तेज
जलपृथिवीरूप यासर्वजगत्‌काज्ञानहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! मृत्तिकाकापिंड पृथिवीरूपहै ॥ यातैं तापृथिवीभूतविषे तामृत्ति
कापिंडकादृष्टांत संभवैहै ॥ तैसे सुवर्णपिंडभी तेजरूपहै ॥ यातैं ता तेजभूतविषे सुवर्णपिंडकादृष्टांतभी संभवैहै ॥ तथापि नखनिकृं
तनरूपलोहपिंड जलरूपहैनहीं ॥ यातैं ताजलभूतविषे तालोहपिंडकादृष्टांत संभवतानहीं ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु! यद्यपि द्रवी
भूतजलकेसंबंधतैंही पृथिवीआदिकोंतैं नानाप्रकारकेकार्य उत्पन्नहोवैहैं ॥ जलकेसंबंधतैंविना तिनपृथिवीआदिकोंतैं कोईभीकार्य
उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं अन्वयव्यतिरेककरिकै तिनजलोंविषे कारणता प्रसिद्धहै ॥ तथापि पृथिवीआदिकोंकेसंबंधतैंरहित केवल
जलपिंडविषे कोईकारणता लोकविषेप्रसिद्धहैनहीं ॥ याकारणतैं तालोकोंकेबुद्धिकूंअंगीकारकरिकै ताश्रुतिभगवतीनैं हिमकरका
दिरूपजलकेसमान निर्मलतारूपकरिकैप्रसिद्ध जोनखनिकृंतनादिरूपलोहहै तालोहकूं तीसरादृष्टांतरूपकरिकैकथनकर्‍याहै ॥
यातैं ताजलभूतविषे तालोहपिंडकादृष्टांत संभवैहै ॥ अब एककारणवस्तुकेज्ञानतैं सर्वकार्योंकाज्ञानहोवैहै ॥ यानियमविषे गौणरू
पतामानणेहारे जेभेदवादीहैं ॥ तिनभेदवादियोंकेमतकेखंडनकरणेवासते प्रथम तिनभेदवादियोंकेमतका निरूपणकरैहैं ॥ हेश्वेतके
तु! एककारणरूप परमात्माकेज्ञानतैं याकार्यरूपसर्वजगत्‌काज्ञानहोवैहै ॥ याश्रुतिअर्थविषे कोईकभेदवादीपुरुष स्थालीपुलाक

न्यायकूंअंगीकारकरिकै गौणरूपतामानैंहैं ॥ तिनभेदवादियोंका यहअभिप्रायहै ॥ जिसपात्रविषे तंडुलपकाइतेहैं तापात्रकानाम स्थालीहै ॥ और तिनतंडुलोंकानाम पुलाकहै ॥ तहां तिनतंडुलोंकूंपकावणेहारेपुरुष अग्निऊपरि जलयुक्तस्थालीपात्रकूंराखिकै तापात्रविषे तंडुलोंकूंपावैंहैं ॥ तिसतैंअनंतर तेपाचकपुरुष येतंडुल गलिगयेहैं ॥ अथवा काचेहैं ॥ याप्रकारकीपरीक्षाकरणेवा सते तिनतंडुलोंविषे एकतंडुलकादाणा बाहरिनिकासिकैदेखेहैं ॥ जोतौ सोएकतंडुलकादाणा पकिगयाहोवैहै तौ तिनसर्वतंडुलों कूं पकाहुआजाणेहै ॥ और सोएकतंडुलकादाणा जोकाचाहोवैहै तौ तिनसर्वतंडुलोंकूंकाचाजाणेहै ॥ याकानाम स्थालीपुलाक न्यायहै ॥ तास्थालीपुलाककीन्यांईही तेभेदवादीपुरुष ताएकआत्माकेज्ञानतैं सर्वजगत्‌काज्ञान कथनकरैंहैं ॥ ऐसेभेदवादीपुरु षोंतैं अद्वैतब्रह्मवादीपुरुषोंनैं यहपूछाचाहिये ॥ हेवादी! एकपरमात्माकेज्ञानतैं सर्वजगत्‌केज्ञानकूंकथनकरणेहारीश्रुतिविषे जो तुमनैं यहस्थालीपुलाकन्याय कल्पनाकऱ्याहै ॥ सोआपणीबुद्धिकरिकै कल्पनाकऱ्याहै ॥ अथवा श्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धिकरिकै कल्प नाकऱ्याहै ॥ अथवा वृद्धपुरुषोंकीपरंपरारूपसंप्रदायकेबलतैं कल्पनाकऱ्याहै ॥ तहां ताश्रुतिकेअर्थविषे आपणीबुद्धिकरिकै सोन्या य हमोंनैं कल्पनाकऱ्याहै यहप्रथमपक्ष जोतुम अंगीकारकरौ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? श्रुतिप्रमाणतैंरहित केवलपुरुषकीबुद्धि तौ बहुतस्थानोंविषे आपणेअर्थतैं व्यभिचारीहीदेखीहै ॥ जैसे रज्जुविषेसर्पबुद्धि तथाशुक्तिविषेरजतबुद्धि आपणे सर्परजतरूपअर्थ तैं व्यभिचारीहीहोवैहै ॥ याकारणतैंही वेदवेत्तापुरुष केवलपुरुषबुद्धिकूं किसीअर्थकीसिद्धिविषे प्रमाणरूपतामानतेनहीं ॥ किंवा यालोकविषे सर्वतार्किकोंविषेमुख्यजे कपिल बुद्ध कणाद गौतम आदिकमहान्‌पुरुषहैं ॥ तेकपिलादिकभी श्रुतिप्रमाणतैंविरुद्ध जि सजिसआपणीबुद्धिकरिकै जिसजिसअर्थकीसिद्धिकरैंहैं ॥ सासा तिनोंकीबुद्धि तिसतिसअर्थविषे अप्रमाणहीहोवैहै ॥ तिनबुद्धि योंकीअप्रमाणताविषे यहकारणहै ॥ तेकपिलादिकमुनि श्रुतिप्रमाणतैंविरुद्ध केवलआपणीबुद्धिकरिकै जगत्‌केकारणकूं तथाआ त्माकेस्वरूपकूं तथाबंधमोक्षकूं भिन्नभिन्नही कथनकरैंहैं ॥ याकारणतैं तिनोंकीयुक्तियां परस्परही खंडितहोइजावैहैं ॥ जैसे यालोक विषे परस्परविरुद्धअर्थकूंजनावणेहारी जेलोकोंकीबुद्धियांहैं ॥ तिनबुद्धियोंविषे किसीएकबुद्धिकूंभी प्रमाणतासिद्धहोवैनहीं ॥

तैसे परस्परविरुद्धअर्थकूंविषयकरणेहारी जेतिनकपिलादिकोंकीबुद्धियांहैं ॥ तिनबुद्धियोंविषे किसीएकबुद्धिकूंभी प्रमाणरूपता संभवैनहीं ॥ जबी कपिलादिकमहान्पुरुषोंकेबुद्धियोंविषेभी स्वतंत्र प्रमाणरूपता सिद्धनहींभई ॥ तबी इतरजीवोंकेबुद्धियोंविषे स्वतंत्र प्रमाणरूपता नहींहै ॥ याकेविषेक्याकहणाहै? यातें श्रुतिप्रमाणतेंरहित केवलपुरुषकीबुद्धिविषे प्रमाणरूपता संभवैनहीं यहअर्थसिद्धभया ॥ और ताश्रुतिअर्थविषे श्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धिकेबलतें हम तास्थालीपुलाकन्यायकीकल्पना करतेहैं यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? श्रुतिप्रमाणविषे अविश्वासकरणेहारे जोतुम भेदवादीहो ॥ तिनतुमारेकूं ताश्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धिकरिकै तामनवांच्छितअर्थकीसिद्धिहोणीअत्यंत दुर्घटहै ॥ और ताश्रुतिअर्थविषे संप्रदायकेबलतें हम तान्यायकीकल्पनाकरैहैं यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें! कपिल बुद्ध गौतम कणाद इत्यादिक महान्पुरुषोंकेशिष्योंनैं आपणेआपणेगुरुसंप्रदायकूंअंगीकारकरिकैभी श्रुतिअर्थकेनिर्णयकरणेविषे किसीनिमित्तकूं पायानहीं ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ आपणेवृद्धोंकीसंप्रदायकेअंगीकारकरणेतेंभी पुरुषकीबुद्धिही अंगीकारकरीजावैहै ॥ तापुरुषकीबुद्धितेंभिन्न दूसराकोईप्रमाण अंगीकारकऱ्याजावैनहीं ॥ काहेतें? तेकपिलादिक सांप्रदायिकपुरुष जोकदाचित् ताश्रुतिअर्थविषेउपयोगी किसीप्रमाणकूंप्राप्तहोते तौ तेसांप्रदायिकपुरुष ताश्रुतिअर्थविषे परस्पर विवादनहींकरते ॥ और श्रुतिअर्थविषे तिनोंका परस्पर विवाद प्रत्यक्षदेखणेविषेआवताहै ॥ एककेयुक्तियोंकूं दूसरा खंडनकरिदेवैहै ॥ तादूसरेकेयुक्तियोंकूं तीसराखंडनकरिदेवैहै ॥ यातें संप्रदायकेअंगीकारकियेतेंभी पुरुषकीबुद्धिही अंगीकारकरीजावैहै ॥ और पुरुषकीबुद्धिविषे पूर्व प्रथमपक्षविषे दोषोंकाकथनकरिआयेहैं ॥ तेसंपूर्णदूषण यातृतीयपक्षविषेभी प्राप्तहोवैहैं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती! तासंप्रदायपदकरिकै जोहम वृद्धपुरुषोंकीपरंपराकूं अंगीकारकरैं तौ प्रथमपक्षकी तथातृतीयपक्षकी समानताप्राप्तहोवै ॥ परंतु तासंप्रदायपदकरिकै हम तावृद्धपुरुषोंकीपरंपराकूं अंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु तासंप्रदायपदकरिकै हम लक्षणावृत्तितैं न्यायकाअंगीकारकरैहैं ॥ तान्यायकूंश्रुतिअर्थके निर्णयकरणेविषे साधनता सर्ववादियोंकूंसंमतहै ॥ यातें तातृतीयपक्षका प्रथमपक्षविषेअंतर्भाव संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवा

दी ॥ संप्रदायशब्दकरिकै जिसन्यायका तुमनैं अंगीकारकऱ्याहै ॥ तान्यायका क्यास्वरूपहै ? यहतुमारेकूं कह्याचाहिये ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे जहांजहां धूमरहेहै तहांतहां अग्निरहेहै ॥ याप्रकार धूमअग्निका बहुतवार सहचारदेखिकै उत्पन्नभईजा धूमअग्निकाव्याप्यहै याप्रकारकीबुद्धिहै ताकानाम न्यायहै ॥ अथवा अग्निकेअभाववालेपर्वतविषेभी धूम रहेहै यावादीकेशंकाकीनिवृत्तिकरणेवासतै उत्पन्नभयाजो धूम जोअग्निकेअभाववालेविषैरहैगा तौ सोधूम अग्निकरिकैजन्यनहींहोवैगा यहतर्कहै ॥ ता तर्ककानाम न्यायहै ॥ तहां वारंवार सहचारदर्शनतैंजन्यबुद्धिकानाम न्यायहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सो संभवैनहीं ॥ काहेतें ? यापक्षविषेभी पुरुषकीबुद्धितैंभिन्न कोईन्यायकास्वरूपसिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु तापुरुषकीबुद्धिकूंही न्यायरूपतासिद्धहोवैहै ॥ यातैं यान्यायरूपसंप्रदायपक्षकाभी ताप्रथमपक्षतैंभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ किंवा वारंवार सहचारदर्शनतैंजन्यबुद्धिकूं जोप्रमाणरूपमानिये तौ जहांजहां पृथिवीत्वधर्मरहेहै ॥ तहांतहां लोहलेख्यत्वधर्मरहेहै ॥ याप्रकारकेवारंवारसहचारदर्शनतैं उत्पन्नभईजा पृथिवीत्वधर्म लोहलेख्यत्वधर्मकाव्याप्यहै याप्रकारकीबुद्धिहै साबुद्धिभी प्रमाणरूपहोणीचाहिये ॥ और ताबुद्धिविषे प्रमाणरूपताहैनहीं ॥ काहेतें ? वज्रमणिविषे पृथिवीत्वधर्मतौरहेहै ॥ परंतु लोहलेख्यत्वधर्म तहां रहतानहीं ॥ और तर्ककानाम न्यायहै यहद्वितीयपक्षजोवादी अंगीकारकरै तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ तान्यायविषे तर्करूपता किसप्रकारहै ? तहां सोवादी जोयहकहै ॥ जैसे न्याय प्रमाणऊपरिअनुग्रहकरैहै ॥ तैसे सोतर्कभी प्रमाणऊपरिअनुग्रहकरैहै ॥ याकारणतैं सोन्याय तर्करूपहै ॥ याप्रकारकहणेहारेवादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोतर्करूपन्याय ताप्रमाणऊपरि किसप्रकारकाउपकारकरैहै ? यहतुमारेकूंकह्याचाहिये ॥ तात्पर्ययह ॥ सोतर्करूपन्याय ताप्रमाणविषे प्रमाणताकीसिद्धिरूप उपकारकरैहै ॥ अथवा सोतर्करूपन्याय ताप्रमाणऊपरि ताप्रमाणकेविरोधीकीनिवृत्तिरूप उपकारकरैहै ॥ अथवा सोतर्करूपन्याय ताप्रमाणऊपरि प्रमाणताकीअभिव्यक्तिरूप उपकारकरैहै ॥ तहां सोतर्करूपन्याय ताप्रमाणऊपरि प्रमाणताकीसिद्धिरूप उपकारकरैहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? ताप्रमाणविषे विषयोंकीप्रकाशकतारूप जाप्रमाणताहै ॥ ताप्रमाणताकूं कोईशास्त्रवालेतो स्व

तोग्राह्यमानेहैं ॥ और कोईकशास्त्रवालेता परतोग्राह्यमानेहैं ॥ तहां ताप्रमाणताधर्मकेआश्रयकूं जितनीसामग्रीग्रहणकरैहै ॥ तितनीहीसामग्री ताप्रमाणताधर्मकूंभीग्रहणकरै याकानाम स्वतोग्राह्यताहै ॥ और ताप्रमाणताधर्मकेआश्रयकूं जितनीसामग्री ग्रहणकरैहै ॥ तितनीसामग्री ताप्रमाणताधर्मकूं नहींग्रहणकरै याकानाम परतोग्राह्यताहै ॥ तहां वेदांतमतविषे तथामीमांसामत विषेतौ स्वतोग्राह्यताहै ॥ और नैयायिकोंकेमतविषे परतोग्राह्यताहै तहां स्वतोग्राह्यतापक्षविषेतौ ताप्रमाणतारूपकीसिद्धि सो प्रमाण आपेहीकरैहै ॥ ताप्रमाणताकेसिद्धिविषे ताप्रमाणकूं दूसरेकिसीकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ जैसे दीपक घटादिकविषयोंकेप्रकाशकरणेविषे दूसरेकिसीप्रकाशकीअपेक्षाकरतानहीं ॥ तैसे सोप्रमाणभी विषयोंकीप्रकाशकतारूप प्रमाणताविषे दूसरेकिसीकीअपेक्षाकरतानहीं ॥ जोकदाचित् सोप्रमाण विषयोंकेप्रकाशकरणेविषे किसीदूसरेकीअपेक्षाकरैगा तौ ताप्रमाणविषे अप्रमाणरूपताही प्राप्तहोवैगी ॥ यातें सोप्रमाण आपणेसमानविषयक तर्ककी अपेक्षाकरैनहीं ॥ और सोतर्क जोकदाजित् ताप्रमाणकेविषयतें भिन्नपदार्थोंकूंविषयकरताहोवै ॥ तौभी तातर्कका प्रमाणऊपरिउपकार संभवैनहीं ॥ काहेतें? ताप्रमाणविषे विषयोंकीप्रकाशकतारूप जाप्रमाणताहै ॥ साप्रमाणता तातर्ककीप्रवृत्तितैंपूर्वहीसिद्धहै ॥ तापूर्वसिद्धप्रमाणताकीसिद्धिवासतै ताप्रमाणकूं तातर्ककीअपेक्षा संभवैनहीं ॥ किंवा अप्रमाणरूपजोतर्कहै तातर्कका प्रमाणकेविषयविषेप्रवेश श्रमकरिकेभीहोइसकैनहीं ॥ काहेतें? या लोकविषे प्रमाण तथाअप्रमाण येदोनों आपणेस्वरूपकेभेदकरिकै तथाआश्रयकेभेदकरिकै तथाविषयकेभेदकरिकै परस्पर विलक्षणहीहोवैहै ॥ किंचित्मात्रभी तिनोंविषे सादृश्यताहोवैनहीं ॥ और लोकविषे समानस्वभाववालेपदार्थोंकाही परस्पर उपकार्यउपकारकभाव देख्याहै ॥ विरुद्धस्वभाववालेपदार्थोंका परस्पर उपकार्यउपकारकभाव कहांदेख्यानहीं ॥ याकारणतैंभी ताप्रमाणऊपरि ताअप्रमाणरूपतर्कका उपकारसंभवैनहीं ॥ और सोवादी जोयहदूसरापक्ष अंगीकारकरै ॥ जैसे यालोकविषे याजीवोंके अनिष्टकेकारण विषादिकपदार्थ प्रसिद्धहैं ॥ तैसे तिनविषादिकोंकीनिवृत्तिरूपउपकारके औषधिमंत्रादिककारणभी प्रसिद्धहैं ॥ तैसे इहांप्रसंगविषे सोतर्क ताप्रमाणऊपरि ताप्रमाणकेविरोधीकीनिवृत्तिरूपउपकार करैहै ॥ सोयहदूसरापक्षभीसंभवैनहीं ॥

काहेतें ? जैसे यालोकविषे सो विरोधीकीनिवृत्तिरूपउपकार प्रसिद्धहै ॥ तैसे इहांप्रसंगविषे सोविरोधीकीनिवृत्तिरूपउपकार संभवतानहीं ॥ काहेतें ? प्रमाण तथाताकाविरोधीअप्रमाण येदोनों जोकदाचित् एकदेशविषेही इकठेरहतेहोवैं तौ सोतर्क अप्रमाणकीनिवृत्तिरूपउपकार ताप्रमाणऊपरिकरै ॥ परंतु सोप्रमाण तथाअप्रमाण येदोनों एकदेशविषे इकठेरहतेनहीं ॥ और एकदेशविषेतथाएककालविषे रहणेहारेपदार्थोंकाही परस्परविरोधहोवैहै ॥ भिन्नदेशकालविषे रहणेहारेपदार्थोंका परस्परविरोध कहांदेख्यानहीं ॥ जैसे मक्षिकारूपग्रासकूं ग्रसताहुआजोमंडूकहै ॥ तामंडूककूं दूसरासर्प ग्रसैहै ॥ तैसे प्रमाण अप्रमाण यादोनोंविषे एककूंग्रसणेहारा कोईदूसराप्रसिद्धहैनहीं ॥ जिसविरोधीकीनिवृत्तिरूपउपकार सोतर्क प्रमाणऊपरिकरै ॥ किंवा जिसस्थलविषे समानबलवाले दोप्रमाणोंकी एकविषयविषेप्रवृत्तिहोवैहै ॥ तिसस्थलविषेही बुद्धिमान्पुरुष तिनदोनोंप्रमाणोंका परस्परविरोध अंगीकार करैहैं ॥ सोइहांप्रसंगविषेहैनहीं ॥ काहेतें ? प्रमाणकीतौ सत्यवस्तुविषे प्रवृत्तिहोवैहै ॥ और अप्रमाणकी असत्यवस्तुविषे प्रवृत्तिहोवैहै ॥ और जैसे ताप्रमाणके तथाअप्रमाणके विषयकाभेदहै ॥ तैसे ताप्रमाणके तथाअप्रमाणके धर्मोंकाभीभेदहै ॥ तहां प्रमाणत्वधर्मतौ केवलप्रमाणविषेहीरहेहै ॥ अप्रमाणविषेरहैनहीं ॥ तैसे अप्रमाणत्वधर्मभी केवलअप्रमाणविषेहीरहेहै ॥ प्रमाणविषेरहैनहीं ॥ इसप्रकार भिन्नभिन्नअर्थकूंविषयकरणेहारे तिनप्रमाणअप्रमाणविषे परस्पर विरोधीपणासंभवैनहीं ॥ किंवा जोवादी प्रमाणकेविरोधीकीनिवृत्तिरूप तर्ककाउपकार ताप्रमाणऊपरि अंगीकारकरैहै ॥ तावादीसें यहपूछाचाहीये ॥ सोतुमारातर्क ताप्रमाणकेविरोधीकूं अप्रमाणरूपजाणिकै निवृत्तकरैहै ॥ अथवा सोतर्क ताप्रमाणकेविरोधीकूं प्रमाणरूपजाणिकै निवृत्तकरैहै ॥ तहां सोतर्क ताप्रमाणकेविरोधीकूं अप्रमाणरूपजाणिकै निवृत्तकरैहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? यालोकविषे जैसे कोईपुरुष पीसेहुएअन्नकूं पुनः पीसतानहीं ॥ तथा मरेहुएशरीरकूं पुनः मारतानहीं ॥ तैसे ताप्रमाणकेविरोधीकूं अप्रमाणरूपकरिकैजाणताहुआ सोतर्क ताप्रमाणकेविरोधीकीनिवृत्तिकरणेविषे प्रवृत्तहोवैगानहीं ॥ जैसे रज्जुकेसर्पकूंमिथ्याजाणताहुआ यहपुरुष तामिथ्यासर्पकेनिवृत्तकरणेविषे प्रवृत्तहोवैनहीं ॥ और सोतर्क ताप्रमाणकेविरोधीकूं प्रमाणरूप

जाणिके निवृत्तकरैहै यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? ताप्रमाणकेविरोधीविषे प्रमाणरूपता कूंविषयकरणेहारा जोतर्कहै ॥ तातर्ककरिकै ताप्रमाणकेविरोधीकीनिवृत्तिसंभवैनहीं ॥ जोकदाचित् सोतर्क ताप्रमाणकेविरोधी कूं प्रमाणरूपजाणिकैभी ताकीनिवृत्तिकरैगा तौ सोतर्क कदाचित् ताप्रमाणकूंभीनिवृत्तकरैगा ॥ यद्यपि श्रुतिअनुकूलतर्ककरिकै ताप्रमाणकेविरोधीकीनिवृत्ति संभवैहै ॥ तथापि श्रुतिप्रमाणतैंविना केवलदुराग्रहतैंअर्थकीसिद्धिकरणेहारे जोतुमवादीहो ॥ तिनतुमवादियोंकूं ताशुष्कतर्ककेवलतैं तावांछितअर्थकीसिद्धिहोणी अत्यंतदुर्घटहै ॥ इतनेकरिकै ताप्रमाणविषे स्वतःप्रमाणताका अंगीकारकरिकै ताप्रमाणऊपरि तर्ककेउपकारकाअभाव वर्णनकऱ्या ॥ अब ताप्रमाणविषे परतःप्रमाणताकाअंगीकारकरिकै ताप्रमाणऊपरि तर्ककेउपकारकाअभाव वर्णनकरैहैं ॥ हेवादी! ताप्रमाणविषे जोकदाचित् परतःप्रमाणताभीमानिये तौभी ताप्रमाणऊपरि तातर्कका कौनउपकारहै? सोतर्ककाउपकार तुमनैं कह्याचाहिये ॥ तात्पर्ययह ॥ तातर्कका ताप्रमाणऊपरि विषयोंकाप्रकाशरूपउपकारतौ संभवैनहीं ॥ काहेतें? सोविषयकाप्रकाशतौ ताप्रमाणकरिकैहीसिद्धहै ॥ तैसे तातर्कका प्रमाणऊपरि प्रमाताकेअसंभावनाकीनिवृत्तिरूपउपकारभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें? ताप्रमातानिष्ठअसंभावना पूर्वलेपापकर्मोंकरिकैजन्यहोवैहै ॥ यातैं तिनपापकर्मोंकेविरोधी पुण्यकर्मोंकरिकैही ताअसंभावनाकीनिवृत्ति संभवैहै ॥ तर्ककरिकै ताअसंभावनाकीनिवृत्तिसंभवैनहीं ॥ किंवा तातर्ककरिकै जोकदाचित् प्रमाताकेअसंभावनाकीनिवृत्तिभी अंगीकारकरिये तौभी तातर्कका ताप्रमाताऊपरिही उपकार सिद्धहोवैगा ॥ ताप्रमातातैंभिन्न ताप्रमाणऊपरि तातर्ककाउपकार सिद्धहोवैगानहीं ॥ किंवा विषयकेप्रकाशकरणेविषेअसमर्थ जोअप्रमाणहै ॥ ताअप्रमाणविषेतौ सहस्रतर्कोंकरिकैभी प्रमाणरूपतासिद्धहोइसकैनहीं ॥ और विषयकेप्रकाशकरणेविषेसमर्थ जोप्रमाणहै ॥ ताप्रमाणविषे साप्रमाणरूपता तातर्ककीप्रवृत्तितैंपूर्वहीसिद्धहै ॥ यातैं तापूर्वसिद्धप्रमाणताकीभी किसीतर्ककरिकैसिद्धिसंभवैनहीं ॥ और सोतर्क ताप्रमाणऊपरि प्रमाणत्वधर्मकीअभिव्यक्तिरूप उपकारकरैहै ॥ यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोतर्क अप्रमाणरूपहै ॥ अथवा सोतर्क प्रमाणरूपहै ॥ तहां

सोतर्क अप्रमाणरूपहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? यालोकविषे जोजोपदार्थ अप्रमाज्ञानकावि
षयहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ मिथ्याहीहोवैहै ॥ जैसे अप्रमाज्ञानकेविषय शुक्तिरजतादिक मिथ्याहीहोवैहैं ॥ तैसे सोअप्रमाणरूपत
र्कभी जिसप्रमाणकेप्रमाणत्वधर्मकीअभिव्यक्तिकरैगा ॥ सोप्रमाणभी मिथ्याहीहोवैगा ॥ यातें ताअप्रमाणरूपतर्ककरिकै ता
प्रमाणताकीअभिव्यक्तिसंभवैनहीं ॥ और सोतर्क प्रमाणरूपहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभीसंभवैनहीं ॥
काहेतें ? तातर्कविषे किसीभीवादीनें प्रमाणरूपतामानीनहीं ॥ किंतु सर्ववादी तातर्कविषे अप्रमाणरूपताहीमानैहैं ॥ यातें तातर्क
विषेप्रमाणरूपतामानणेविषे आपणेसिद्धांतकीहानिरूप अपसिद्धांतदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ किंवा ताप्रमाणके प्रमाणरूपताकी
अभिव्यक्तिकरणेहाराजोतर्कहै ॥ तातर्ककूं जोप्रमाणरूपमानोंगे तौ तातर्ककेप्रमाणताकीअभिव्यक्तिकरणेहारा कोईदूसरातर्क
अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ और तादूसरेतर्कके प्रमाणताकीअभिव्यक्तिकरणेहारा कोईतीसरातर्क अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ इस
प्रकार परंपरा तर्कोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ किंवा जोवादी तातर्ककूंप्रमाणरूपमानेहै ॥ तावादीसें
यहपूछाचाहिये ॥ सोतर्क स्वतंत्रप्रमाणहै ॥ अथवा सोतर्क प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकेअंतर्भूतहुआ प्रमाणहै ॥ तहां सोतर्क स्वतंत्रप्र
माणहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? तातर्कविषे स्वतंत्रप्रमाणता किसीभीवादीनें अंगीकारक
रीनहीं ॥ और सोतर्क प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकेअंतर्भूतहुआ प्रमाणहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥
काहेतें ? ताप्रमाणरूपतर्कका प्रत्यक्षप्रमाणविषेतौ अंतर्भावसंभवतानहीं ॥ यातें तातर्कका अनुमानादिकप्रमाणोंविषेही अंतर्भाव
कहणाहोवैगा ॥ सोतिनअनुमानादिकप्रमाणोंविषेभी इसप्रमाणविषे तातर्ककाअंतर्भावहै यहनियमकऱ्याजावैनहीं ॥ काहेतें ? ति
नअनुमानादिकोंके प्रमाणरूपताविषे सर्ववादियोंकी एकसंमतिहैनहीं ॥ किंतु तिनप्रमाणोंविषे नानाप्रकारकाविवाद देखणेमेंआवै
है ॥ तहां चार्वाकतौ एकप्रत्यक्षप्रमाणहीमानैहैं ॥ और वैशेषिक बौद्ध आर्हत येतीनोंतौ प्रत्यक्ष अनुमान यहदोप्रमाणमानेहैं ॥
और सांख्यशास्त्रवालेतौ प्रत्यक्ष अनुमान शब्द येतीनप्रमाणमानेहैं ॥ और नैयायिकोंकेएकदेशीतौ प्रत्यक्ष अनुमान उपमान

येतीनप्रमाणमानेहैं ॥ और नैयायिकतौ प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द येचारिप्रमाणमानेहैं ॥ और प्राभाकरतौ प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति येपंचप्रमाणमानेहैं ॥ और भट्ट वेदांती यहदोनोंतौ प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति अनुपलब्धि येषट्प्रमाणमानेहैं ॥ और पौराणिकतौ प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति अनुपलब्धि संभव ऐतिह्य यहअष्टप्रमाणमानेहैं ॥ और तंत्रशास्त्रवालेतौ प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति अनुपलब्धि संभव ऐतिह्य चेष्टा येनवप्रमाणमानेहैं ॥ इसप्रकार तेवादी भिन्नभिन्नप्रमाणोंकूंअंगीकारकरैहैं ॥ तिनसर्वप्रमाणोंविषे तातर्करूपन्यायका किस प्रमाणविषेअंतर्भावहै? यहतुमारेकूं कह्याचाहिये ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ! जोप्रमाण आपणेविषयतैंव्यभिचारी नहींहोवैहै ॥ सोईही प्रमाणहोवैहै ॥ और जोआपणेविषयतैंव्यभिचारीहोवैहै ॥ सो प्रमाणहोवैनहीं ॥ याप्रकारके प्रमाणलक्षणकेविचारकियेतैंपूर्व यद्यपि सोतर्क किसीप्रमाणकेअंतर्भूतहोइसकेहै ॥ तथापि ताप्रमाणलक्षणकेविचारकियेतैंपश्चात् सोतर्क अप्रमाणताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं पूर्वउक्त विनिगमनाविरहदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादी ! इसप्रकार पूर्वउक्तप्रमाणकेलक्षणकरिकै तिन प्रमाणोंकेविचारकियेतैं जोकदाचित् तिनप्रत्यक्षादिकषट्प्रमाणोंविषे आपणेआपणेअर्थतैं अव्यभिचारितारूप प्रमाणता होवै तौभी सोन्यायरूपतर्क किसप्रमाणकेअंतर्भूतहोवैहै? यहपूर्वउक्त विनिगमनाविरहरूपदोष तुमारेमतविषे बलात्कारसैंप्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैं ? भट्टपादादिक विद्वान्पुरुषोंनैं तिनप्रत्यक्षादिकषट्प्रमाणोंकूं आपणेआपणेविषयविषे नियमतैं प्रमाणता सिद्धकरीहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ! नानाप्रमाणरूप जोअनुमानप्रमाणहै ॥ ताअनुमानप्रमाणकेअंतर्भूत सोन्यायरूपतर्कहै ॥ याकारणतैं सोन्यायरूप तर्क तिनप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणोंकेअंतर्भूतहै ॥ याप्रकारमानणेविषे सोपूर्वउक्तविनिगमनाविरहरूपदोष प्राप्तहोवैनहीं ॥ तहां अनुमानप्रमाणकूं सर्वप्रमाणरूपता याप्रकारहै ॥ प्रतिज्ञा १ हेतु २ उदाहरण ३ उपनय ४ निगमन ५ यापंचवाक्यरूपअवयवोंका समुदायरूप परार्थअनुमानहोवैहै ॥ जैसे प्रसिद्धअनुमानविषे ॥ पर्वतोवह्निमान् ॥ अर्थयह ॥ यहपर्वत वह्निवालाहै यहप्रतिज्ञाअवयवहै ॥१॥ धूमवत्त्वात् ॥ अर्थयह ॥ धूमवालाहोणेतैं यहहेतुअवयवहै ॥२॥ योयोधूमवान् सवह्निमान् यथामहानसः॥

अर्थयह ॥ जोजो धूमवालाहोवैहै सोसोवह्निवालाहोवैहै जैसे रसोईकरणेकास्थानहै यहउदाहरणअवयवहै ॥ ३ ॥ तथा चायं ॥ अर्थयह ॥ यहपर्वतभी तामहानसकीन्यांई वह्निव्याप्यधूमवालाहै यहउपनयअवयवहै ॥ ४ ॥ तस्मात्तथा ॥ अर्थयह ॥ वह्निव्याप्यधूमवालाहोणेतैं यहपर्वतभी तामहानसकीन्यांई वह्निवालाहै यहनिगमनअवयवहै ॥ ५ ॥ तहां प्रथम प्रतिज्ञाअवयवतौ आगमप्रमाणरूपहै ॥ और दूसरा हेतुअवयव अनुमानप्रमाणरूपहै ॥ और तीसरा उदाहरणअवयव प्रत्यक्षप्रमाणरूपहै ॥ और चतुर्थ उपनयअवयव उपमानप्रमाणरूपहै ॥ और तस्मात् याअंशकरिकै पूर्वउक्तसर्वप्रमाणोंकासंग्रहकरणेहारा जोनिगमनअवयवहै ॥ सोसर्वप्रमाणरूपहै ॥ इसरीतिसैं सोअनुमानप्रमाण सर्वप्रमाणरूपहै ॥ ताअनुमानप्रमाणकेअंतर्भूतहुआ सोन्यायरूपतर्कभी सर्वप्रमाणरूपहै ॥ यातैं सोपूर्वउक्तविनिगमनाविरहरूपदोष हमारेमतविषे प्राप्तहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादी ! यहतुमारावचन असंख्यातदूषणोंकरिकैयुक्तहै ॥ काहेतैं ? तिनदूषणोंकूंकहणेहारा जोमैंवक्ताहूं ॥ तथा तिनदूषणोंकूंश्रवणकरणेहारा जोतू श्रोताहै ॥ तिनहमदोनोंका जोकदाचित् ब्रह्माकेसमान महान्आयुषहोवै तौ हम तिनसर्वदूषणोंकेकहणेविषे समर्थहोवें ॥ तथा तू तिनसर्वदूषणोंकेश्रवणकरणेविषे समर्थहोवै ॥ परंतु ताब्रह्माकेसमानआयुष हमारा तुमारा हैनहीं ॥ यातैं तेसंपूर्णदूषण यद्यपि हमारेसैंकहेजातेनहीं ॥ और तुमारेसैं श्रवणकर्येजातेनहीं ॥ तथापि तान्यायरूपतर्कविषे अभिनिवेशवालाजोतूवादीहै ॥ तिसतुमारेप्रति मैंसिद्धांती संक्षेपतैं तिनदूषणोंकीरीतिमात्र कथनकरताहूं ॥ तू सावधानहोइकै श्रवणकर ॥ हेवादी ! जिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकूं तुमनैं अनुमानप्रमाणकेअंतर्भूतमान्याहै ॥ तेप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाण एकहीकार्यकूंकरेहैं ॥ अथवा तेप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाण भिन्नभिन्न अनेककार्योंकूंकरेहैं ॥ तहां तेप्रत्यक्षादिकप्रमाण अनेककार्योंकूं करैहैं यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ? जिसअनुमानप्रमाणकूं तुमनैं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंका समुदायरूपमान्याहै ॥ ताअनुमानप्रमाणविषेस्थितहुएभी तेप्रत्यक्षादिकप्रमाण आपणे अनेककार्योंका कर्तृत्वरूपस्वभावकूं परित्यागकरैंनहीं ॥ किंतु तेप्रत्यक्षादिकप्रमाण ताअनुमानविषेस्थितहुएभी आपणेआपणेकार्यकूं अवश्यकरैंगे ॥ यातैं तिन

प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकूं एकअनुमानप्रमाणकेअंतर्भूतमानणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ और तेप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाण एककार्यकूंकरै हैं ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें? तेप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाण एकहीकार्यकूंकरैहैं याप्रकारका जोनियम अंगीकारकरिये तौ अनुमानतैंभिन्न तिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंविषे स्वतंत्र प्रमाणतानहींहोणीचाहिये ॥ और सोवादी जोकदाचित् याअर्थविषे इष्टापत्तिकरै ॥ सो संभवैनहीं ॥ काहेतें ? तिनप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणोंविषे अनुमानप्रमाणकीअपेक्षा करिकै तबी प्रमाणतासिद्धहोवै ॥ जबी तिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकूं आपणेआपणेविषयविषे स्वतंत्र प्रमाणता नहींदेखणेमेंआवै ॥ सोऐसाहैनहीं ॥ किंतु तिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकूं आपणेआपणेविषयविषे स्वतंत्रप्रमाणता सर्वबुद्धिमान्पुरुषोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ यातें तिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंका अनुमानविषेअंतर्भाव संभवैनहीं ॥ किंवा पूर्वउक्त प्रतिज्ञादिकपंचअवयवोंविषे दूसरेहेतुरूपअवयवकूं तावादीनैं अनुमानरूप अंगीकारकऱ्याहै ॥ ताहेतुरूपअनुमानविषे प्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणरूपता अंगीकारकरणी अत्यंतविरुद्धहै ॥ काहेतें ? ताहेतुरूपअवयवविषे तिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकाअंतर्भाव देखणेविषेआवतानहीं ॥ और सोवादी जोकदाचित् ताहेतुअवयवविषे तिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकाअध्याहारकरिकै ताहेतुरूपअनुमानकूं सर्वप्रमाणरूपताअंगीकारकरै तौ पंचमीविभक्ति जिसकेअंतविषेहोवै ऐसाजोलिंगकाबोधकवचनहै ताकानामहेतुहै ॥ यालक्षणनैं बोधनकरी जाताहेतुविषे साधनरूपताहै ॥ तासाधनरूपताका अभावहोवैगा ॥ किंवा पूर्वउक्त प्रतिज्ञादिकपंचअवयवोंविषे वाक्यरूपतातुल्यहीहै ॥ तावाक्यरूपताकेसमानहुएभी एकप्रतिज्ञावाक्यविषेही आगमप्रमाणरूपता अंगीकारकरणी दूसरेवाक्योंविषे आगमप्रमाणरूपता नहींअंगीकारकरणी यहवादीकाकहणाभी युक्तितैंरहितहै ॥ किंवा ताप्रतिज्ञाअवयवकूं आगमप्रमाणरूपता जोवादीनैं अंगीकारकरीहै ॥ सो संभवैनहीं ॥ काहेतें ? सोप्रतिज्ञावचनतौ संदिग्धअर्थकूंकथनकरैहै ॥ और सोआगमप्रमाणतौ संदिग्धअर्थकूंकथनकरैनहीं ॥ किंतु सोआगमप्रमाण निश्चितअर्थकूंहीकथनकरैहै ॥ जोकदाचित् सोआगमप्रमाण संदिग्धअर्थकूंभी कथनकरैगा तौ आपणीआगमरूपतातैंही रहितहोवैगा यहवार्त्ता तुमवादियोंकेमतविषेभीसिद्धहै ॥ ऐसे परस्पर विरुद्धअर्थकूंकथन

करणेहारा प्रतिज्ञाका तथाआगमका अभेद्मानणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ और उपनयवाक्यविषेस्थित जोतथाशब्दहै ॥ तथा निगमन वाक्यविषेस्थितजो तस्मात् शब्दहै ॥ तेदोनोंशब्द पक्षविषे व्याप्तिमान्हेतुकेसंबंधमात्रकूंहीबोधनकरैंहैं ॥ सादृश्यादिकोंकूंकथन करैंनहीं ॥ यातैं ताउपनयवाक्यकूं उपमानप्रमाणरूपता संभवैनहीं ॥ तथा निगमनवाक्यकूं पूर्वउक्तसर्वप्रमाणरूपता संभवैनहीं ॥ और तर्ककेजीवनका औषधिरूपजोव्याप्तिहै ॥ साव्याप्ति केवलकल्पनारूपहीहै ॥ यातैं ताकल्पनारूपव्याप्तिकूंकथनकरणेहारे उदाहरणवाक्यविषे प्रत्यक्षप्रमाणरूपतासंभवैनहीं ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेदूषण तावादीकेकहणेविषे प्राप्तहोवैंहैं ॥ यातैं आगमप्रमाणरूपसूर्यकीउपेक्षाकरिकै केवल कल्पनाजन्यतर्कविषे जोवादीका अत्यंतआदरहै ॥ सोइही तावादीकेविचाररूपदृष्टिकीमंदताकूं स्पष्टकरैहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती! तान्यायरूपतर्ककरिकै जोकदाचित् किसीअर्थकीसिद्धिनहींहोतीहोवै तौ ॥ मंतव्यः ॥ इत्यादिकश्रुतियोंनैं विचाररूपतर्ककाविधान किसवासतेकर्‍याहै? ॥ समाधान ॥ हेवादी! यद्यपि यहन्यायरूपतर्कवृद्ध आचार्योंनैं विचाररूपमननविषे उपयोगीकह्याहै ॥ तथापि सोतर्क श्रुतिप्रमाणकीसहायतातैंविना स्वतंत्र किसीअर्थकेनिश्चयकरावणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ किंतु सोतर्क श्रुतिप्रमाणकीसहायताकूंअंगीकारकरिकैही किसीअर्थकानिश्चयकरावैहै ॥ यातैं आचार्योंनैं ॥ मंतव्यः ॥ इत्यादिकवचनोंविषे जोतर्ककाअंगीकारकर्‍याहै ॥ सो श्रुतिअनुकूलतर्ककाही अंगीकारकर्‍याहै ॥ श्रुतिप्रतिकूलशुष्कतर्कका ग्रहणनहींकर्‍याहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ साश्रुति स्थालीपुलाकन्यायकरिकैही एकआत्माकेज्ञानतैं सर्वजगत्का ज्ञान कथनकरैहै ॥ याप्रकारकेअर्थकीकल्पनाविषे ताकल्पनाकरणेहारेपुरुषकीबुद्धि हेतुहै ॥ अथवा श्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धिहेतुहै ॥ अथवा उपदेशकरणेहारेगुरुवोंकी परंपरारूपसंप्रदायकीअनुकूलता हेतुहै ॥ यापूर्वउक्ततीनपक्षोंविषे प्रथमपक्षविषे तथातृतीयपक्षविषेतौ पूर्वअनेकप्रकारकेदूषण कथनकरिआये हैं ॥ यातैं तेदोनोंपक्षतौ संभवैंनहीं ॥ परिशेषतैं श्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धि हेतुहै यहदूसरामध्यकापक्षही अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ साश्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धितौ तावादीकेइष्टअर्थकीसिद्धिकरैनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती! साश्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धिही तातर्कतैंविना किसप्रकार उत्पन्नहोवैगी? ॥ समाधान ॥ हेवादी! व्याकरणादिकलौकिकउपायोंतैं

पदोंकेअर्थकूंजानिकरिकै तथाउपक्रमउपसंहारादिकषट्लिंगोंतें वाक्योंकेअर्थकूंजाणिकरिकै तिनशुष्कतर्कोंतैंविनाही याअधिकारी पुरुषकूं साश्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धि प्राप्तहोइसकैहै ॥ यातें ताश्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धिविषे तिनशुष्कतर्कोंकीअपेक्षाहैनहीं ॥ तैसे इहांप्र संगविषेभी तास्थालीपुलाकन्यायकी उपेक्षाकरिकैही साश्रुतिभगवती मृत्पिंड लोहमणि नखनिकृंतन यातीनपदोंतें उपादानका रणकास्वरूपकथनकरिकै ताउपादानकारणकेसाथ तिनोंकेकार्योंका अभेदकथनकरैहै ॥ यातें एकपरमात्मादेवकेज्ञानतें यासर्वज गत्‌केज्ञानकूंकथनकरणेहारी साश्रुति तास्थालीपुलाककीन्यांई संभावनामात्ररूप सर्वजगत्‌केज्ञानकूं कथनकरैनहीं ॥ शंका ॥ हे सिद्धांती ! तास्थालीपुलाकन्यायकूंअंगीकारकरिकै जो ताश्रुतिकीप्रवृत्ति नहींहोवे हैं तौ किसन्यायकूंअंगीकारकरिकै ताश्रुतिकी प्रवृत्तिहोवैहै ? ॥ समाधान ॥ हेवादी ! विवर्तवादविषेस्थित जेरज्जुसर्पादिकन्यायहैं ॥ तिनोंकूंअंगीकारकरिकैही साश्रुतिकी प्रवृ त्तिहोवैहै ॥ जैसे अधिष्ठानरूपरज्जुके वास्तवस्वरूपकेज्ञानतें तारज्जुविषेकल्पित सर्प दंड जलधारा माला इत्यादिकसर्वोंका वास्त वतैंज्ञानहोवैहै ॥ तैसे याअधिष्ठानआत्माकेज्ञानतें ताआत्माविषेकल्पित सर्वजगत्‌काज्ञानहोवैहै ॥ हेशिष्य ! यापूर्वउक्तसर्वअभि प्रायकूं मनविषेराखिकै सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति मृत्तिका सुवर्ण लोह यातीनदृष्टांतोंकरिकै यासर्वजगत्‌केकारणरूपब्र ह्मका उपदेशकरताभया ॥ हेशिष्य ! सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति सर्वस्थलविषे कारणतैंभिन्नरूपकरिकै जोकार्यकाअस त्यपणाहै सोइही ताकारणकेअद्वितीयपणेकूंसिद्धकरैहै याअर्थकेस्पष्टकरणेवासते याप्रकारकीयुक्ति कथनकरताभया ॥ हेश्वेतकेतु ! यहघटशरावादिककार्य केवल वाणिमात्रकरिकैही प्रतीतहोवैहै ॥ तावाणीतैंविना वास्तवतें प्रतीतहोवैनहीं ॥ याकारणतें तेघटश रावादिककार्य घट शराव याप्रकारकेनाममात्रहीहैं ॥ तिननामोंतैंभिन्न तिनघटशरावादिककार्योंका कोईवास्तवस्वरूपहैनहीं ॥ और तेघटशरावादिककार्य मृत्तिकामात्रहीहैं ॥ यातें तामृत्तिकानैं घटशरावादिककार्योंका आरंभकरीताहै यहभीकह्याजावैनहीं ॥ काहेतें ? सामृत्तिका मृत्तिकाकाआरंभकरैनहीं ॥ कार्यकारणकेभेदकूंअंगीकारकरिकैही सोआरंभहोवैहै ॥ जैसे नैयायिक कपालरूप कारणतैंभिन्नघटकूं तिनकपालोंकरिकैआरब्ध अंगीकारकरैहैं ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ तिनघटशरावादिककार्योंविषे जोमृत्तिका

दिककारणोंतें भेदप्रतीतहोवैहै ॥ सोभेद वास्तवतैंहैनहीं ॥ किंतु घट शराव इत्यादिकनामविशिष्ट तिनघटादिककार्योंविषे सोमृत्तिकाकाभेद प्रतीतहोवैहै ॥ और विशिष्टपदार्थविषे प्रतीतभयाजोधर्महै ॥ सोधर्म जोकदाचित् विशेष्यपदार्थविषे नहींसंभवैहै ॥ तौ सोधर्म केवलविशेषणविषेही प्राप्तहोवैहै ॥ यहसर्वशास्त्रकारोंका नियमहै ॥ तैसे इहां घट शराव इत्यादिकनामविशिष्ट घटशरावादिककार्योंविषे प्रतीतभयाजो मृत्तिकारूपकारणकाभेदहै ॥ सोभेद घटशरावादिरूपविशेष्यपदार्थोंविषेतौ संभवतानहीं ॥ यातैं परिशेषतैं सोमृत्तिकाकाभेद घट शराव इत्यादिकनामरूपविशेषणोंविषेही प्राप्तहोवैगा ॥ यहरीति सर्वकार्यकारणभावस्थलविषे जानिलेणी ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिकैस्पष्टकरै हैं ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे यालोकविषे पटभावकूंप्राप्तहुएजेतंतुहैं ॥ तिनतंतुवोंकूं तापटतैंभिन्नकरिकै तापटरूपकार्यकूं कौनबुद्धिमानपुरुष देखिसकैगा? ॥ किंतु नहींदेखिसकैगा ॥ तैसे घटादिककार्यभावकूंप्राप्तहुए जेमृत्तिकादिककारणहैं ॥ तिनमृत्तिकादिककारणोंकूं तिनघटादिककार्योंतैंभिन्नकरिकै तिनघटादिककार्योंकूं कौनबुद्धिमान्पुरुष देखिसकैगा? किंतु कोईनहींदेखिसकैगा ॥ यातैं हेश्वेतकेतु! यालोकविषे जेमृत्तिकादिककारणहैं ॥ तेकारणही सत्यहैं ॥ और घटशरावादिककार्यतौ केवलनाममात्रतैंप्रतीतहोवैहैं ॥ यातैं तेघटशरावादिककार्य मिथ्याहीहैं ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे रज्जुविषे सर्पदंडादिक मिथ्याहीप्रतीतहोवैहैं ॥ तथा जैसे आकाशविषे गंधर्वनगर मिथ्याहीप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे मृत्तिकादिककारणोंविषे घटशरावादिककार्यभी मिथ्याहीप्रतीतहोवैहैं ॥ अब याहीविवर्त्तवादकेस्पष्टकरणेवासते परिणामवादकाखंडनकरै हैं ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे यालोकविषे गौआदिकोंकाक्षीर दधिरूपपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहमृत्तिकासुवर्णादिककारण घट शराव भूषणादिरूपपरिणामकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं? तेमृत्तिकादिककारण जोकदाचित् घटशरावादिरूपपरिणामकूंप्राप्तहोतेहोवैं तौ जैसे दधिरूपपरिणामकूंप्राप्तहुआ सोक्षीर नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे तेमृत्तिकादिककारणभी नाशकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ और घटादिककार्यभावकूंप्राप्तहुए मृत्तिकादिककारणोंकानाश देखणेविषेआवतानहीं ॥ यातैं तेघटशरावादिककार्य तिनमृत्तिकादिककारणोंके परिणामरूपनहीं हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! दधिभावकूंप्राप्तहुआक्षीर नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और घटशरावादिकभावकूंप्राप्तहुईमृत्तिका नाशकूंनहींप्राप्त

होवैहै ॥ यहवार्ता कैसेजानीजावै? ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे घटशरावादिकभावकूंप्राप्तहुईभी सामृत्तिका पूर्वकीन्यांई मृत्तिकारूपकरिकैंहीप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे दधिभावकूंप्राप्तहुआ सोक्षीर पूर्वकीन्यांई क्षीररूपहोइकै प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ सोक्षीर दधिभावकालविषे नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सामृत्तिका घटभावकालविषे नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैंही वाचारंभणंविकारोनामधेयंमृत्तिकेत्येवसत्यं ॥ साश्रुतिविषे मृत्तिकारूपकारणकूंसत्यकह्याहै ॥ और हेश्वेतकेतु! जोपरिणामीकारणहोवैहै ॥ सो उपादानकारणहोवैनहीं ॥ किंतु निमित्तकारणहीहोवैहै ॥ काहेतैं? जोकारण आपणेकार्यविषे अनुगतहोवैहै ॥ सोकारणहीताकार्यका उपादानकारणहोवैहै ॥ याप्रकारका उपादानकारणकालक्षण शास्त्रकारोंनैं कथनकन्याहै ॥ सोलक्षण परिणामीकारणविषे घटतानहीं ॥ यातैं सोक्षीर तादधिरूपकार्यकाउपादानकारणनहींहै ॥ किंतु सोक्षीर तादधिका निमित्तकारणहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! यालोकविषे जोजोभावकार्य उत्पन्नहोवैहै ॥ सोसो उपादान निमित्त यादोकारणोंकरिकैजन्यहोवैहै ॥ और सोदधिभी भावकार्यहै यातैं तादधिरूपकार्यका ताक्षीरतैंभिन्न कोईउपादानकारणकह्याचाहिये ॥ सोउपादानकारणकौनहै? ॥ समाधान हेश्वेतकेतु! तेज जल पृथिवी यातीनभूतोंके जेकोईकअवयवहैं ॥ तेअवयवही गौआदिकोंनैंभक्षणकन्येहुए घासादिकोंविषे स्थितहोइकै ताक्षीरकेउपादानकारणहोवैहैं ॥ तथा दधि तक्र घृत इत्यादिककार्योंके उपादानकारणहोवैहैं ॥ काहेतैं? ते तेजादिक तीनभूतोंकेअवयवही यथाक्रमतैं रोहित शुक्ल कृष्ण यातीनरूपोंकरिकै सर्वत्रप्रतीतहोवैहैं ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे विशेषआकारवाला जोमृत्तिकाकापिंडहै ॥ सोमृत्तिकाकापिंड घटरूपकार्यकीउत्पत्तिकालविषे ताघटरूपकार्यविषे अनुगतहोइकैप्रतीतहोवैनहीं ॥ याकारणतैं सोमृत्तिकाकापिंड ताघटरूपकार्यकीउत्पत्तिविषे उपादानकारणनहींहै ॥ किंतु निमित्तकारणहै ॥ तैसे सोक्षीरभी तादधिरूपकार्यकीउत्पत्तिकालविषे तादधिरूपकार्यविषे अनुगतहोइकैप्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं सोक्षीर तादधिरूपकार्यका उपादानकारण नहींहै किंतु निमित्तकारणहै ॥ और हेश्वेतकेतु! जैसे चूर्णपिंडादिकविशेषआकारतैंरहित जोशुद्धमृत्तिकाहै ॥ साशुद्धमृत्तिका तिनघटशरावादिकसर्वकार्योंविषे अनुगतहोइकै प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं साशुद्धमृत्तिका तिनघटशरावादिककार्योंका उपादान

कारणहै ॥ तैसे घासादिकोंविषे अवयवरूपकरिकैस्थित जे तेज जल पृथिवी येतीनभूतहैं ॥ ते तीनभूतही यासर्वकार्योंविषे अ नुगतहोइके प्रतीतहोवैहैं ॥ यातें ते तेजादिकतीनभूतही तीनदधिआदिककार्योंकेउपादानकारणहैं ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ जो वस्तु परिणामीहोवैहै ॥ सोवस्तु क्षीरकीन्यांई उपादानकारणहोवैनहीं ॥ और जोवस्तु परिणामीनहींहोवैहै ॥ सोवस्तुही उपादा नकारणहोवैहै ॥ यातें श्रुतिविषे लोहमणिपदकरिकै कथनकऱ्या जोसुवर्णहै ॥ तथा नखनिकृंतनपदकरिकै कथनकऱ्या जोलोह है ॥ तासुवर्णलोहकूं परिणामित्वरूपकरिकै दृष्टांतरूपता ताश्रुतिनैंनहींकथनकरी ॥ किंतु तासुवर्णलोहकूं विवर्तउपादानत्वरूपक रिकै दृष्टांतरूपता श्रुतिनैं कथनकरीहै ॥ काहेतें? तेसुवर्णादिक जोकदाचित् भूषणादिककार्योंके परिणामीकारणहोवैं तो जैसे द धिरूपकार्यकेउत्पत्तिकालविषे सोदुग्धरूपपरिणामीकारण प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे कुंडलकंकणादिककार्योंकीउत्पत्तिकालविषे ते सुवर्णादिककारणभी नहींप्रतीतहोणेचाहिये ॥ और कुंडलादिककार्योंकीउत्पत्तिकालविषे तेसुवर्णादिककारण सर्वलोकोंकूंप्रतीत होवैहैं ॥ याकारणतें तेसुवर्णादिक तिनकुंडलादिककार्योंके परिणामीकारणनहींहैं ॥ किंतु विवर्तउपादानकारणहैं ॥ इतनैंकरिकै कारणविषे सत्यरूपता निरूपणकरी ॥ अब तिसीकारणविषे अद्वितीयरूपताकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम कारण कार्य या दोनोंके भे दाभेदपक्षका तथाकेवलभेदपक्षका खंडनकरैहैं ॥ हेशिष्य ! सांख्यशास्त्रवाले तथाभट्टपादादिकमीमांसक उपादानकारणका तथा कार्यका परस्पर भेदाभेदमानैहैं ॥ और नैयायिकवादीतो ताउपादानकारणका तथाकार्यका केवलभेदही मानैहैं ॥ सोतिनदोनोंका मत अयुक्तहै ॥ काहेतें? यालोकविषे जिनजिनपदार्थोंका परस्पर भेदहोवैहै ॥ तेतेपदार्थ परस्पर भिन्नभिन्नदेशविषेहीवर्तैहैं ॥ जै से गौ अश्व यादोनोंकापरस्परभेदहै ॥ यातें सोगौ तथाअश्व परस्पर भिन्नभिन्नदेशविषेहीवर्तैहैं ॥ और तंतु पटविषे तथामृत्तिका घटविषे सोभिन्नभिन्नदेशविषेवृत्तिपणा हैनहीं ॥ यातें तिनोंविषे परस्परभेदभी संभवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अग्निरूपव्याप ककेअभावहुए धूमरूपव्याप्यकाभीअभावहोवैहै ॥ तैसे भिन्नदेशवृत्तित्वरूपव्यापककेअभावहुए भेदरूपव्याप्यकाभी अभावहोवै है ॥ याकहणेकरिकै यहअनुमानसिद्धभया ॥ मृत्तिका घट येदोनों परस्पर अभिन्नहैं ॥ भिन्नदेशवृत्तित्वकेअभाववालेहोणेतें ॥ जे

परस्पर अभिन्ननहींहोवैंहैं ॥ ते भिन्नदेशवृत्तित्वकेअभाववालेभी नहींहोवैंहैं जैसे गौ अश्व येदोनोंहैं ॥ याअनुमानकरिकै ता कारणकार्यका अभेदहीसिद्धहोवैंहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती! पटादिककार्यतौ तंतुआदिकदेशविषेरहेहैं ॥ और तेतंतुआदिककारण भूतलादिकदेशविषेरहेहैं ॥ यातैं ताउपादानकारणका तथाकार्यका भिन्नभिन्नहीदेशहै ॥ यातैं सोतुमाराहेतु पक्षविषेअवृत्तिहोणे तैंस्वरूपासिद्धनामाहेत्वाभासहै ॥ तास्वरूपासिद्धहेतुतैं ताकारणकार्यकाअभेद सिद्धहोइसकैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादी! ताका रणकार्यका जोतुमनैं भिन्नभिन्नदेश कथनकर्‍याहै ॥ सोकेवल आपणीकल्पनामात्रकरिकै कथनकर्‍याहै ॥ वास्तवतैं तिनोंका भिन्न भिन्नअधिकरणनहीं है ॥ काहेतैं? भूतलादिकोंविषे घटपटादिकपदार्थोंकेवृत्तिपणेकूंअनुभवकरणेहारे जेलोकहैं ॥ तिनलोकोंनैं सो कार्यकारणका भिन्नभिन्नअधिकरण अनुभवकरीतानहीं ॥ यातैं सोकार्यकारणकाभेदपक्ष संभवैनहीं ॥ और भेद अभेद येदोनों प रस्पर विरुद्धहैं ॥ जहां भेदरहेहै तहां अभेद रहैनहीं ॥ और जहां अभेद रहेहै तहां भेद रहैनहीं ॥ यातैं सोभेदाभेदपक्षभी संभ वैनहीं ॥ यातैं ताकारणकार्यका केवलअभेदपक्षही सर्ववादियोंकूंअंगीकार कर्‍याचाहिये ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित जेसर्पदंडादिक हैं ॥ तेसर्पादिक रज्जुरूपकारणतैं भिन्नहोइकैप्रतीतहोवैंनहीं ॥ यातैं तेसर्पादिक रज्जुतैंअभिन्नहैं ॥ तैसे यहघटादिककार्यभी मृत्ति कादिककारणोंतैं भिन्नहोइकै प्रतीतहोवैंनहीं ॥ यातैं यहघटादिककार्यभी तिनमृत्तिकादिककारणोंतैंअभिन्नहैं ॥ और जैसे तारज्जु केवास्तवस्वरूपकेज्ञानहुए तेसर्पादिक प्रतीतहोवैंनहीं ॥ तैसे तिनमृत्तिकादिककारणोंकेवास्तवस्वरूपकेज्ञानहुए तेघटादिकका र्यभी प्रतीतहोवैंनहीं ॥ इसप्रकार कारणकीअद्वितीयरूपता सर्वविद्वान्पुरुषोंकूं अनुभवकरिकै सिद्धहै ॥ किंवा यालोकों कूं घटादिककार्योंविषे जोभेदभ्रमहोवैहै ॥ सोभेदभ्रम अपरोक्षरूपहै ॥ यातैं ताअपरोक्षभ्रमकीनिवृत्ति ताकारणकेपरोक्ष ज्ञानतैंहोवैनहीं ॥ किंतु ताकारणकेअपरोक्षज्ञानकरिकैही ताभेदभ्रमकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ जैसे पूर्वादिकदिशावोंविषे जोपश्चिमा दिकदिशावोंकाभ्रमहै सोभ्रम अपरोक्षरूपहै ॥ यातैं तिनपूर्वादिकदिशावोंकेपरोक्षज्ञानहुएभी ताभ्रमकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ किं तु तिनपूर्वादिकदिशावोंकेअपरोक्षज्ञानतैंही ताभ्रमकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तैसे कारणकेअपरोक्षज्ञानतैंही ताकार्यकेभेदभ्रमकीनि

वृत्तिहोवैहै ॥ और हेश्वेतकेतु! जैसे घटशरावादिकपदार्थ परस्परभेदवालेहोणेतैं कार्यरूपहैं ॥ और कार्यरूपहोणेतैं तेघटशरावादिकपदार्थ पृथिवी जल तेज रूपकारणतैं भिन्नसत्तावालेनहींहैं ॥ तैसे तेपृथिवीजलतेजभी परस्परभेदवालेहोणेतैं कार्यरूपहीहैं ॥ और कार्यरूपहोणेतैं तेपृथिवीआदिक तापरमात्मरूपकारणतैं भिन्नसत्तावालेनहींहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ यहअधिकारीपुरुष प्रथम पृथिवी जल तेज यातीनभूतरूपकारणोंविषे घटादिककार्योंकेभेदकेअभावकूंनिश्चयकरिकै तिसतैंअनंतर तिसीदृष्टांतकरिकै तापृथिवीजलतेजरूपकार्यकेभेदकेअभावकूं परमात्मरूपकारणविषे निश्चयकरै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! घटादिकपदार्थ भेदवालेहैं यातैं कार्यरूपहैं ॥ यहजोआपनैं भेदरूपहेतुतैं कार्यरूपता सिद्धकरीहै ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं? जोहेतु आपणेसाध्यपदार्थकूं छोडिकै अन्यत्रनहींरहेहै ॥ ताहेतुतैंही तासाध्यपदार्थकीसिद्धिहोवैहै ॥ और जोहेतु आपणेसाध्यकूंछोडिकै अन्यत्रभीरहेहै ॥ सोहेतु व्यभिचारीहोवैहै ॥ ताव्यभिचारीहेतुतैं साध्यकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ और सोभेदरूपहेतुभी कार्यत्वकेअभाववालेआत्माविषेरहेहै ॥ यातैं सोभेदरूपहेतुभी व्यभिचारीहै ॥ ताभेदरूपहेतुतैं कार्यपणेकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! जडताधर्मविशिष्टजोभेदहै ॥ सोभेदरूपहेतुही कार्यपणेकीसिद्धिकरैहै ॥ सोजडताविशिष्टभेद आत्माविषेहैनहीं ॥ यातैं ताआत्माविषे कार्यरूपता सिद्धहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सोजडताविशिष्टभेद अविद्याविषेभीरहेहै ॥ परंतु सिद्धांतविषे ताअविद्याकूं कार्यरूप अंगीकारकर्यानहीं ॥ किंतु सिद्धांतविषे ताअविद्याकूंअनादिमान्याहै ॥ यातैं सोजडताविशिष्टभेदरूपहेतुभी व्यभिचारीहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! ताअविद्याविषे यद्यपि उत्पत्तिरूपकार्यतारहैनहीं ॥ तथापि अधिष्ठानविषेकल्पितत्वरूपकार्यता ताअविद्याविषेभीरहेहै ॥ यातैं सोजडताविशिष्टभेदरूपहेतु व्यभिचारीनहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! ताआत्माविषे ताजडताविशिष्टभेदरूपहेतुकेअभावहुएभी सोकार्यपणा किसवासतेनहींहोवै? समाधान ॥ हेशिष्य! ताआत्माविषे जडताविशिष्टभेदरूपहेतुकेअभावहुएभी जोवादी कार्यरूपता अंगीकारकरैहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहीये ॥ ताआत्माविषेस्थित जोकार्यताहै ॥ साकार्यता कारणतैंरहितहै ॥ अथवा साकार्यता कारणसहितहै? तहां साकार्यता कारणतैंरहितहै यहप्रथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरै ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं?

जैसे आत्माविषेस्थितकार्यता कारणतैंरहितहै ॥ तैसे घटपटादिकजगत्विषेस्थितकार्यताभी कारणतैंरहितहोणीचाहीये ॥ और सोवादी जोयाअर्थविषे इष्टापत्तिकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? घटपटादिककार्योंविषे मृत्तिकातंतुआदिकोंकूंकारणता सर्वलोकोंकूं अनुभवकरिकैसिद्धहै ॥ और याआत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे कारणतैंविनाही कार्यकीउत्पत्तिविषे अनेकप्रकारकेदूषण कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं कारणतैंविना कार्यकीउत्पत्तिसंभवैनहीं ॥ और साआत्माविषेस्थितकार्यता कारणसहितहै ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहीये ॥ सोआत्माकाकारण असत्यरूपहै अथवा सत्यरूपहै? ॥ तहां सोआत्माकाकारण असत्यरूपहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतें? यालोकविषे सत्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जेघटपटादिककार्यहैं ॥ तेसत्यकार्य मृत्तिकातंतुआदिकसत्यकारणोंतैंही उत्पन्नहोवैहैं ॥ असत्यतैं सत्यकीउत्पत्ति कहांभीदेखणेविषेआवतीनहीं ॥ और यहआत्मादेवभी सर्वलोकोंकेअनुभवकरिकै तथाश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकै सत्यरूपतैंही प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं तासत्यआत्माकी असत्यकारणतैंउत्पत्ति संभवैनहीं ॥ जोकदाचित् ताआत्माकी असत्यकारणतैं उत्पत्तिहोवैगी तौ सोआत्माभी ताकारणकीन्यांई असत्यरूपहीहोवैगा ॥ सो आत्माकूंअसत्यकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ किंवा आत्माकाकारण असत्यरूपहै यावचनविषेस्थितजोअसत्यशब्दहै ॥ ताअसत्यशब्दकाअर्थ सत्यवस्तुकाअभाव प्रतीतहोवैहै ॥ और यालोकविषे जोजोअभावहोवैहै ॥ सोआपणेज्ञानविषे प्रतियोगीकीअपेक्षा अवश्यकरैहै ॥ प्रतियोगीकेज्ञानतैंविना अभावकाज्ञानहोवैनहीं ॥ यातैं सोसत्यकाअभावरूपअसत्यभी आपणीसिद्धिविषे सत्यरूपप्रतियोगीकीअपेक्षा अवश्यकरिकैकरैगा ॥ यातैं तासत्यवस्तुविषेही आत्माकीकारणता संभवहोइसकैहै ॥ तासत्यवस्तुकेअभावविषे आत्माकीकारणतामानणी निष्फलहै ॥ किंवा यालोकविषे कोईभीअभाव किसीभीकार्यकेप्रतिकारणहोइसकैनहीं ॥ यहवार्त्ता पूर्वअष्टमअध्यायविषे कारणोंकेविचारप्रसंगमैं विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ यातैं ताआत्माकाकारण असत्यहै यहप्रथमपक्ष संभवैनहीं ॥ और ताआत्माकाकारण सत्यहै यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहीये ॥ सोआत्माका सत्यकारण परिच्छिन्नहै? ॥ अथवा अपरिच्छिन्नहै? ॥ तहां सोआत्माका सत्यकारण परिच्छिन्नहै

यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? यालोकविषे जोजोपदार्थ परिच्छिन्नहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ जडहीहोवैहै ॥ और जोजोपदार्थ जडहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ कार्यरूपहीहोवैहै ॥ और जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ आपणीउत्पत्तिविषे दूसरेकारणोंकीअपेक्षा अवश्यकरैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ परिच्छिन्नहोणेतें जडहैं ॥ और जडहोणेतें कार्यरूपहैं ॥ और कार्यरूपहोणेतें कारणकीअपेक्षावालेहैं ॥ तैसे सोआत्माका सत्यकारणभी परिच्छिन्नहोणेतें जडरूपहोवैगा ॥ और जडरूपहोणेतें कार्यरूपहोवैगा ॥ और कार्यरूपहोणेतें आपणीउत्पत्तिविषे किसीदूसरेकारणकीअपेक्षा अवश्यकरैगा ॥ आगेतें सोकारणभी आपणीउत्पत्तिविषे किसीदूसरेकारणकीअपेक्षाकरैगा सोदूसराकारण किसीतीसरेकारणकीअपेक्षाकरैगा ॥ इसप्रकार कारणोंकीपरंपरामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ ताअनवस्थादोषकेनिवारणकरणेवासते सोआत्माका सत्यकारण चेतनरूपहै तथाअपरिच्छिन्नरूपहै ॥ यहदूसरापक्षही तावादीनें अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ याकेविषेभी यहविचारकऱ्याचाहीये ॥ सोआत्माका सत्तारूपकारण आत्मातैंभिन्नहै ॥ अथवा आत्मातैंअभिन्नहै ॥ तहां सोसत्तारूपकारण आत्मातैंभिन्नहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? यालोकविषे जोजोपदार्थ आत्मातैंभिन्नहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ अनात्मारूपहीहोवैहै ॥ जैसे गृहादिकपदार्थ आत्मातैंभिन्नहोणेतें अनात्मरूपहैं ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ अनात्मरूपहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ भोक्ताआत्माके सुखकासाधनहोवैहै ॥ जैसे गृहशय्याआदिकपदार्थ अनात्मरूपहोणेतें भोक्ताआत्माकेसुखकेसाधनहैं ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ भोक्ताआत्माकेसुखकासाधनहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ जडहोवैहै ॥ जैसे भोक्ताआत्माकेसुखकेसाधनहोणेतें तेगृहादिकपदार्थ जडरूपहैं ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ जडहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ कार्यरूपहोवैहै ॥ जैसे जडरूपहोणेतें तेगृहादिक कार्यरूपहैं ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ किसीकारणकरिकैजन्यहोवैहै ॥ जैसे कार्यरूपहोणेतें तेगृहादिकपदार्थ मृत्तिकादिककारणोंकरिकैजन्यहैं ॥ तैसे सोआत्माकासत्तारूपकारणभी आत्मातैंभिन्नहोणेतें पूर्वउक्तपरंपराकरिकै कार्यरूपभी अवश्यहोवैगा ॥ और कार्यरूपहोणेतें किसीदूसरेकारणकरिकैजन्यभी अवश्यहोवैगा ॥

आगेतें सोदूसराकारणभी किसीतीसरेकारणकरिकैजन्यहोवैगा ॥ इसप्रकार कारणोंकीपरंपरामानणेविषे पुनः पूर्वकीन्यांई अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ ताअनवस्थादोषकीनिवृत्तिवासते ताआत्माके सत्तारूपकारणकूं तावादीनैं आत्मरूपमान्याचाहिये ॥ तथा चेतनरूपमान्याचाहिये ॥ तथा आनंदरूपमान्याचाहिये ॥ तथा सर्वभेदतैंरहित अपरिछिन्न मान्याचाहिये ॥ तथा कारणतैंरहितमान्याचाहिये ॥ ऐसेआत्मरूपसत्ताकूं जबी तावादीनैं आत्माकाकारणमान्या ॥ तबी ताआत्मरूपसत्तारूपकारणतैंभिन्न दूसरेकिसीकार्यविषेतौ आत्मरूपतासंभवैनहीं ॥ यातैं तावादीनैं जोआत्माका सत्तारूपकारणमान्याहै ॥ तासत्तारूपकारणकूंही हमवेदांती आत्मरूपमानेहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ यहआत्मादेव किसीकारणकरिकै उत्पन्नहोवैनहीं ॥ याकारणतैंही वेदकीश्रुतियां ताआत्मादेवकूं अजकहेहैं ॥ तथा नित्यकहेहैं ॥ तथा अग्निआदिकसर्वकारणोंकाभीकारणकहेहैं ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपकहेहैं ॥ तथा सर्वभेदतैंरहितकहेहैं ॥ ऐसेआत्मदेवकूंही यहछांदोग्यउपनिषद्कीश्रुति सत्शब्दकरिकैकथनकरैहै ॥ हेश्वेतकेतु! साश्रुति तासत्शब्दकरिकै याआत्मदेवके केवल सत्यरूपताकूंकथनकरैनहीं ॥ किंतु साश्रुति तासत्शब्दकरिकै याआत्माके चेतनरूपताकूं तथाआनंदरूपताकूंभी कथनकरैहै ॥ काहेतें! सत् चित् आनंद आत्मा याचारिपदार्थोंका जोकदाचित् परस्परभेद अंगीकारकरिये तौ ताभेदरूपवस्तुपरिच्छेदरूपहेतुतैं तिनसत्यादिकचारोंविषे घटादिकोंकीन्यांई जडतासिद्धहोवैगी ॥ और ताजडतारूपहेतुतैं तिनसत्यादिकोंविषे घटादिकोंकीन्यांई कार्यरूपता सिद्धहोवैगी ॥ और ताकार्यतारूपहेतुतैं तिनसत्यादिकोंविषे घटादिकोंकीन्यांई कारणकीअपेक्षा सिद्धहोवैगी ॥ और तिनसत्यादिकोंकेकारणकूंभी आपणीउत्पत्तिविषे किसीदूसरेकारणकीअपेक्षाहोवैगी ॥ और तादूसरेकारणकूंभी आपणीउत्पत्तिविषे किसीतीसरेकारणकीअपेक्षाहोवैगी ॥ इसप्रकार कारणोंकीपरंपरामानणेविषे पूर्वकीन्यांई अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं सत् चित् आनंद आत्मा याचारोंविषे किंचित्मात्रभी भेदसंभवैनहीं ॥ किंतु सत् चित् आनंद आत्मा येचारोंशब्द एकहीअर्थकेवाचकहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सत् चित् आनंद आत्मा येचारोंशब्द जो एकहीअर्थकेवाचकहोवैंगे तौ पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु! याआत्मादेवविषे भ्रांतिकरिकैप्राप्तभया

जोअसत्यपणाहै ॥ ताअसत्पणेकूं सत्शब्द निवृत्तकरैहै ॥ और ताआत्माविषे भ्रांतिकरिकैप्राप्तभया जोजडपणाहै ॥ ताजडपणेकूं चित्शब्द निवृत्तकरैहै ॥ और ताआत्माविषे भ्रांतिकरिकैप्राप्तभया जोदुःखपणाहै ॥ तादुःखपणेकूं आनंदशब्द निवृत्तकरैहै ॥ और ताआत्माविषे भ्रांतिकरिकैप्राप्तभया जोपरिच्छिन्नपणाहै ॥ तापरिच्छिन्नपणेकूं आत्मशब्द निवृत्तकरैहै ॥ इसप्रकार असत् जडदुःख परिच्छिन्नतारूपकीनिवृत्तिकरिकै तेसत्यादिकशब्द पूर्वअज्ञातआत्माकेस्वरूपकूं कथनकरैहैं ॥ यातैं तिनसत्यादिकशब्दोंविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे आकाशतैं गंधर्वनगर उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे सत्यस्वरूपआत्मादेवतैं यहतेज जल पृथिवी रूपसर्वजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ अब ताआत्मादेवविषे विवर्तउपादानरूपताकरिकै परमसत्यरूपताकूं अनेकयुक्तियोंसैं निरूपणकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे घटशरावादिककार्योंविषे मृत्तिकारूपकारण सर्वदा अनुगतहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे आत्मरूपसत्ताभी याजगत्विषे सर्वपदार्थोंविषे अनुगतहुई प्रतीतहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानहुएतैंअनंतर सर्परूपअध्यासकी निवृत्तिहोइजावैहै ॥ तैसे ताअधिष्ठानरूपसत्ताकेज्ञानहुएतैंअनंतर यासंसाररूपअध्यासकीनिवृत्तिहोणीचाहिये ॥ और ताअधिष्ठानरूपसत्ताके ज्ञानहुएभी यासंसाररूपअध्यासकीनिवृत्ति देखणेविषेआवतीनहीं ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे यद्यपि मूढबालकोंकूं मनुष्यरूपकरिकैतौ महाराजाज्ञातहै ॥ तथापि तिनमूढबालकोंकूं पितादिकवृद्धपुरुषोंकेउपदेशतैंविना सोमहाराजा राजारूपकरिकैज्ञातहोवैनहीं ॥ किंतु तिनपितादिकवृद्धपुरुषोंकेउपदेशकरिकैही तेबालक ताराजाकूं महाराजारूपकरिकैजानैहैं ॥ तैसे साआत्मारूपसत्ता सर्वत्र भास्यमानहुईभी यापुरुषोंकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंविना सासत्ता आपणाआत्मारूपकरिकैप्रतीतहोवैनहीं ॥ और जबपर्यंत याअधिकारीपुरुषकूं तातत्पदार्थरूपसत्ताका आपणाआत्मारूपकरिकैज्ञाननहीं होवैहै ॥ तबपर्यंत अज्ञानरूपमायाकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ और जबपर्यंत ताअज्ञानरूपमायाकीनिवृत्तिनहींभई तबपर्यंत तामायाका कार्यरूप यहजगत्भी निवृत्तहोवैनहीं ॥ और यहअधिकारीपुरुष जबी तागुरुशास्त्रकेउपदेशतैं तापरमात्मारूपसत्ताकूं आपणा आत्मारूपकरिकैदेखैहै ॥ तबी याअधिकारीपुरुषके ताअज्ञानरूपमायाकी निवृत्तिहोइजावैहै ॥ तामायारूपकारणकेनिवृत्तहुएतैं

अनंतर यहअधिकारीपुरुष ताजगत्‌रूपअध्यासकूं कदाचित्‌भी देखतानहीं॥ जैसे दोषरहितआकाशविषे गंधर्वनगर कदाचित्‌भी प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे तामायारूपदोषरहित आत्मादेवविषे यहजगत् कदाचित्‌भी प्रतीतहोवैनहीं॥ हेश्वेतकेतु! जैसे ताआकाशके अज्ञानतैंही सोगंधर्वनगर उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे याआत्मादेवकेअज्ञानतैंही यहसर्वजगत् उत्पन्नहोवैहै॥ और जैसे ताआकाशविषे सोगंधर्वनगर वास्तवतैंतौ तीनकालविषेहैनहीं ॥ किंतु ताआकाशविषे सोगंधर्वनगर केवलनाममात्रतैंप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्मादेवविषेभी यहजगत् वास्तवतैं तीनकालमैंहैनहीं ॥ किंतु याआत्मादेवविषे यहजगत् केवल नाममात्रतैं प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं यहजगत्‌भी तागंधर्वनगरकीन्यांई मिथ्याहीहै ॥ और हेश्वेतकेतु! ताआकाशविषे तीनकालमैंअसत्यहुआभी सोगंधर्वनगर जैसे मायाकेवशतैं किसीदोषदर्शीपुरुषकूं मध्यकालविषे प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माविषे तीनकालमैंअसत्यरूपहुआभी यहजगत् मायाकेवशतैं किसीदोषदर्शीपुरुषकूं मध्यकालविषे प्रतीतहोवैहै ॥ याकारणतैंभी यहजगत् मिथ्याहीहै ॥ और हेश्वेतकेतु! जैसे तामायाकरिकैमोहितपुरुषोंनैं ताआकाशविषे सोगंधर्वनगर देख्याहुआभी तामायादोषतैंरहितपुरुष ताआकाशविषे तागंधर्वनगरकूंदेखतेनहीं ॥ तैसे मायादोषवालेअज्ञानीपुरुषोंनैं याआनंदस्वरूपआत्माविषे यहजगत् देख्याहुआभी तामायादोषतैंरहितविद्वान्‌पुरुष ताआत्मादेवविषे याजगत्‌कूंदेखतेनहीं ॥ याकारणतैंही ते अज्ञानीजीवतौ बंधकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तेविद्वान्‌पुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और हेश्वेतकेतु! जैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहएकही स्वप्नद्रष्टापुरुष अनेकरूपोंकूंधारणकरिकै किसीरूपकरिकैतौ बंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और किसीरूपकरिकै मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहएकहीआत्मादेव अविद्याकेसंबंधतैं अनेकरूपोंकूंधारणकरिकै किसीरूपकरिकैतौ बंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और किसीरूपकरिकै मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेश्वेतकेतु! जैसे तास्वप्नअवस्थामैं तास्वप्नद्रष्टापुरुषविषे सोबंधमोक्ष वास्तवतैंहैनहीं ॥ तैसे याजाग्रत्‌अवस्थामैं याआत्मादेवविषे सोबंधमोक्ष वास्तवतैंहैनहीं ॥ हेश्वेतकेतु! जोआत्मादेव ताबंधमोक्षादिकसर्वजगत्‌कूं सर्वदा साक्षीरूपकरिकैदेखैहै ॥ सोआत्मादेवही परमसत्यरूपहै ॥ ताआत्मादेवतैंभिन्न यहसर्वदृश्यप्रपंच मिथ्याहीहै ॥ हेश्वेतकेतु! यालोक

विषे जोसर्वजगत्‌काद्रष्टासाक्षीहै ॥ सोद्रष्टासाक्षीही सर्वजगत्‌काकारणहोणेतैं परमसत्यरूपहै ॥ और यालोकविषे जेजेदृश्य पदा
र्थहैं ॥ तेदृश्यपदार्थ कार्यरूपहोणेतैं तथानाममात्रहोणेतैं असत्यहीहैं ॥ हेशिष्य! इसप्रकार तापरमात्मरूपकारणविषेही परम
सत्यरूपताअंगीकारकरिकै सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति मृत्तिका सुवर्ण लोह यातीनोंविषे आपणेआपणे कार्यकीअपे
क्षाकरिकै सत्यरूपता कहताभयाहै ॥ तथा घट भूषण खड्ग इत्यादिककार्योंविषे असत्यरूपता कहताभयाहै ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे
मृत्तिका सुवर्ण लोह येतीनों आपणेआपणे घट भूषण खड्ग इत्यादिककार्योंकीअपेक्षाकरिकै सत्यरूपहैं ॥ तैसे यहपरमात्मादेव
भी पृथिवी जल तेजरूपसर्वजगत्‌की अपेक्षाकरिकै परमसत्यरूपहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं सत्यकासत्यया
नामकरिकैकथनकरैहै ॥ ऐसापरमात्मादेव तुमारेकूंभी अवश्यकरिकै जानणेयोग्यथा ॥ जिसपरमात्मादेवकेजान्येहुए यालोकविषे
कोईभीपदार्थ जानणेयोग्यरहतानहीं ॥ परंतु ऐसापरमात्मादेव तुमनैं प्रमादकेवशतैं आपणेगुरुवोंसैं पूछानहीं ॥ यातैं हेश्वेतकेतु!
तापरमात्मादेवकेजानणेवासते तूअबी पुनःतिनगुरुवोंकेसमीपजाइकै प्रश्नकर ॥ तिनगुरुवोंकेउपदेशतैं तापरमात्मादेवकेस्वरूपकूं
जानिकै तू पुनः शीघ्रही हमारेपासआव ॥ हेशिष्य! ताआरुणिपितानैं जबी इसप्रकारकावचन ताश्वेतकेतुकेप्रति कह्या ॥ त
बी सोश्वेतकेतु ताआरुणिपिताकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ श्वेतकेतुरुवाच ॥ हेपिता! जिसपरमात्मादेवकेज्ञानतैंया
सर्वजगत्‌काज्ञानहोवैहै ॥ तापरमात्मादेवकेस्वरूपकूं तेहमारेगुरु जाणतेनहींथे ॥ काहेतैं? जोकदाचित् तेहमारेगुरु तापरमात्मा
देवकूंजाणतेहोते तौ हमारेविषेअत्यंतस्नेहवाले तेहमारेगुरु मैंश्रद्धावान्‌शिष्यकेताईं तापरमात्मादेवकाउपदेश अवश्यकरिकैकर
ते ॥ परंतु तापरमात्मादेवकाउपदेश तिनगुरुवोंनैं हमारेप्रति कबीभीनहींकर्‍या ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ तेहमारेगुरु तापरमात्मा
देवकेस्वरूपकूंजाणतेनहीं ॥ हेपिता! तेहमारेगुरु मैंश्वेतकेतुशिष्यकूं आपणेपुत्रोंतैंभीप्रियजाणतेथे ॥ यातैं तिनहमारेगुरुवोंनैं
हमारेसैं कोईभीविद्या गुह्यराखीनहीं ॥ किंतु जितनीकीविद्या तेहमारेगुरु जानतेथे ॥ सासंपूर्णविद्या तिनगुरुवोंनैं हमारेप्रति उप
देशकर्‍याहै ॥ यातैं पुनः तिनगुरुवोंकेसमीपजाणेविषे हमारा कोईप्रयोजन सिद्धहोवैगानहीं ॥ हेपिता! तिनगुरुवोंकेआज्ञाकूंपाइ

के मैं श्वेतकेतु समावर्तननामासंस्कारकूंप्राप्तहोइके आपणेगृहविषेआयाहूं ॥ यातैं अविश्वासीपुरुषकीन्यांई पुनः तिनगुरुवोंकेस मीपजाइके प्रश्नकरणा हमारेकूंउचितनहींहै ॥ यातैं हेभगवन्! जिसपरमात्मादेवकेज्ञानतैं सर्वज्ञातअज्ञातपदार्थोंकाज्ञानहोवै है ॥ तिसपरमात्मादेवकेबोधकरणेवासते आपही हमारेप्रति उपदेशकरो ॥ आपपिताकूंछोडिकै मैं दूसरेकिसीगुरुकेसमीपजा तानहीं ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकावचन जबी ताश्वेतकेतुनैं आपणेआरुणिपिताकेप्रति कह्या ॥ तबी सर्वविद्वानोंविषेश्रेष्ठ सोआरुणि ऋषि ताश्वेतकेतुपुत्रकेवचनकूं अंगीकारकरिकै ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ आरुणिरुवाच ॥ हेचंद्रमाकी न्यांई प्रियदर्शन श्वेतकेतुपुत्र! जोपरमात्मादेवकास्वरूप श्रुतिनैं कथनकऱ्याहै ॥ तथा जोपरमात्मादेवकास्वरूप तुमनैं हमारेसेंपू छाहै ॥ सो परमात्मादेवकास्वरूप मैं तुमारेप्रति उपदेशकरताहूं ॥ तू गर्वकापरित्यागकरिकै तथामनकूंसावधानकरिकै श्रवणकर ॥ अब जिसपरमात्मादेवकेज्ञानतैं यासर्वजगत्काज्ञानहोवैहै तापरमात्मादेवविषे अद्वितीयरूपताका निरूपणकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु! जोयह नामरूपक्रियास्वरूपजगत् देखणेविषेआवैहै ॥ कैसाहैयहजगत्? यथाक्रमतैं स्थूलसूक्ष्मकेवाचक जे सत् असत् येदोश ब्दहैं ॥ तासत्असत्शब्दकरिकै कथनकरणेयोग्यहै ॥ तथा तिससत्असत्शब्दतैं उत्पन्नभईजा स्थूलसूक्ष्मविषयकबुद्धिहै ताबु द्धिकाविषयहै ॥ तथा तासत्असत्शब्दबुद्धिकरिकैयुक्तहै ॥ ऐसा यहदृश्यमानजगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व सत्तामात्रहोताभया ॥ तथा सत् असत् याप्रकारकेशब्दज्ञानतैंरहितहोताभया ॥ ताकालविषे यहसर्वजगत् तासत्तातैं भिन्ननहींहोताभया ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे नैयायिकवादी घटपटादिकपदार्थोंविषे एकसत्तानामा जातिअंगीकारकरैहैं ॥ तैसे तुमनैं यासत्ताशब्दकरिकै सासत्तानामाज डजाति अंगीकारनहींकरणी ॥ किंतु जोहमतैं पूर्वतुमारेप्रति चिदानंदरूपसत्ता कथनकरीथी ॥ साचेतनरूपसत्ताही तुमनैं यास त्ताशब्दकरिकै ग्रहणकरणी ॥ काहेतैं? तासत्ताशब्दकरिकै जोकदाचित् जातिरूपजडसत्ताकूंग्रहणकरियै तौ यालोकविषे जोजो पदार्थ जडहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालाहोवैहै ॥ और जोजोपदार्थ भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालाहोवैहै ॥ सोसोप दार्थ कार्यरूपहोवैहै ॥ जैसे घटादिकजडपदार्थ भेदवालेहोणेतैं कार्यरूपहैं ॥ तैसे साजडसत्ताभी भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालीहोणेतैं

कार्यरूपहोवैगी ॥ ताकार्यरूपसत्ताविषे सर्वजगत्कीकारणतासंभवैनहीं ॥ यातैं इहां सर्वजगत्काकारणरूपकरिकैकथनकरीजा सत्ताहै ॥ साकारणरूपसत्ता ताजातिरूपजडसत्तातैंविलक्षणही तुमनैं जानणी ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे सूर्यकेउदयतैंपूर्व सर्वओरतैं अंधकाररहैहै ॥ तैसे याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व यहसत्ताही बाकीरहेहै ॥ और याहीकारणरूपसत्ताकूं मायारूपउपाधिकेसंबंधतैं श्रुतिभगवती अव्याकृतनामकरिकैकथनकरैहै ॥ हेश्वेतकेतु! याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व जोसत्तावस्तु कारणरूपहोइकैस्थितहोवै है ॥ तथा जासत्तारूपकारणकूं श्रुतिनैं अव्याकृतनामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ सोसत्तारूपकारणवस्तु निर्गुणब्रह्मरूपहीहै ॥ जिसनिर्गुणब्रह्मविषे ॥ यतोवाचोनिवर्तंते अप्राप्यमनसासह ॥ इत्यादिकश्रुतियोंनैं विद्वान्पुरुषकेभी मनसहितवाणीकीनिवृत्ति कथन करीहै ॥ तथा जिसनिर्गुणब्रह्मविषे यहदेशकाल तथास्थूलसूक्ष्मपदार्थ पूर्वकलाविषेहुएनहीं ॥ तथा अबीवर्तमानकालविषे हैनहीं ॥ तथा आगेभविष्यत्कालविषे होवैंगेनहीं ॥ ऐसेनिर्गुणब्रह्मविषे जो ॥ सदेवसोम्येदमग्रआसीत् ॥ याश्रुतिनैं आसीत्पद करिकै पूर्वअतीतकालका कथनकऱ्याहै ॥ सोभी कालकीवासनायुक्तशिष्यकीबुद्धिकेअनुसार कथनकऱ्याहै ॥ वास्तवतैं सोअतीत कालभी ताब्रह्मविषेनहींहै ॥ अब तानिर्गुणब्रह्मविषे स्वगतभेद सजातीयभेद विजातीयभेद यातीनभेदोंकाअभाव निरूपणकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे यालोकविषे एकहीवृक्ष आपणे पत्र पुष्प फल शाखा स्कंध इत्यादिकअवयवोंकेभेदकरिकै स्वगतभेदवालाहोवै है ॥ तैसे यहपरमात्मादेव निरवयवहोणेतैं तास्वगतभेदवालाहैनहीं ॥ और जैसे यालोकविषे गौअश्वादिक आपणेसमानजातिवाले दूसरेगौअश्वादिकोंतैं सजातीयभेदवालेहोवैंहैं ॥ तैसे यहपरमात्मादेव तासजातीयभेदवालाभीहैनहीं ॥ और जैसे यालोकविषे तेगौअश्वादिक आपणेतैंविरुद्धजातिवालेमहिषादिकोंतैं विजातीयभेदवालेहोवैंहैं ॥ तैसे यहपरमात्मादेव ताविजातीयभेदवालाभी हैनहीं ॥ हेश्वेतकेतु! यहपरमात्मादेव सजातीय विजातीय स्वगत यातीनभेदोंतैंरहितहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष यापरमात्मादेवकूं सत्तारूपकहेहैं ॥ इतनेकरिकै ॥ एकमेवाद्वितीयं ॥ याश्रुतिविषेस्थित एकशब्दकरिकै तापरमात्मादेवविषे सजातीयभेदकाअभाव दिखाया ॥ और ताश्रुतिविषेस्थित एवशब्दकरिकै स्वगतभेदकाअभाव दिखाया ॥ और ताश्रुतिविषेस्थित अद्वितीयशब्दकरि

के विजातीयभेदकाअभाव दिखाया ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व यद्यपि ताब्रह्मविषे यहकार्यजगत्हैनहीं ॥ तथा पि ताकालविषे माया विद्यमानहै ॥ यातैं तामायाकरिकैही ब्रह्मविषे सद्वितीयपणा सिद्धहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ! तानिर्गुण ब्रह्मविषे जगत्केकारणताकीसिद्धिकरणेहारी सामाया यद्यपि द्वितीयरूपकरिकैसंभावनाहोवैहै ॥ तथापि ताब्रह्मविषे सामाया वास्त वतैंहैनहीं ॥ किंतु तामायाकरिकैमोहितअज्ञानीजीवही तामायाकूं ब्रह्मविषेदेखैहैं ॥ यातैं सामाया ताब्रह्मविषे मायाकरिकैहीसिद्धहै ॥ जैसे हममनुष्योंकूं प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्धजोदिनहै ॥ तादिनकूं उलूकपक्षी रात्रिमानैहैं ॥ तहां दिनकेरात्रिरूपताविषे ताउलूक पक्षीका आपणाअनुभवही प्रमाणहै ॥ ताकेविषे दूसराकोईप्रमाणहैनहीं ॥ तैसे तामायाविषेभी तिनअज्ञानीपुरुषोंकाअनुभवही प्र माणहै ॥ दूसराकोईप्रमाण तामायाविषेहैनहीं ॥ यातैं सामाया मायाकरिकैहीसिद्धहै ॥ हेश्वेतकेतु ! जैसे वास्तवतैंअंधकारतैंरहित जोसूर्यभगवान्है ॥ सोसूर्यभगवान् जबी सुमेरुपर्वतकेपृष्ठदेशविषेजावैहै ॥ तबी रात्रिविषे मूढपुरुष तासूर्यविषे अंधकार कल्पना करैहैं ॥ तैसे वास्तवतैं मायातैंरहितजोपरमात्मादेवहै ॥ तापरमात्मादेवविषे मूढअज्ञानीपुरुष मायाकल्पनाकरैहैं ॥ और हेश्वेतके तु ! जैसे नेत्रोंकरिकैदेख्येहुएसूर्यभगवान्केउदयहुएतैंअनंतर यापुरुषोंकूं सोअंधकार दिखाइदेवैनहीं ॥ तैसे ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेश जन्य आत्मसाक्षात्कारकेउदयहुएतैंअनंतर याविद्वान्पुरुषोंकूं सामाया दिखाइदेवैनहीं ॥ और जैसे यासूर्यभगवान्कूं सोअंधकार ती नकालविषेस्पर्शकरैनहीं ॥ तैसे याआत्मादेवकूंभी सामाया तीनकालविषे स्पर्शकरैनहीं ॥ और हेश्वेतकेतु ! जैसे अंधकार अथवा मे घादिक याद्रष्टापुरुषोंकेनेत्रोंकूंआच्छादनकरिकैही आकाशविषेस्थितसूर्यमंडलकूं आच्छादनकरैहै ॥ तैसे यहअज्ञानरूपमायाभी अज्ञा नीपुरुषोंकेबुद्धिकूंआच्छादनकरिकैही तापरमात्मादेवकूंआच्छादनकरैहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ तापरमात्मादेवविषे यहमाया वा स्तववतैंहैनहीं ॥ तथा तामायाका स्थूलसूक्ष्मकार्यभी वास्तवतैंहैनहीं ॥ यातैं याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व सोसत्परमात्मादेवहीस्थितहोता भया ॥ तापरमात्मादेवतैंभिन्न यहस्थूलसूक्ष्मजगत् तथाताकाकारणमाया नहींहोतेभये ॥ इतनेकरिकै तासत्परमात्मारूपकारणवि षे अद्वितीयरूपतासिद्धकरी ॥ अब ॥ तद्धैकआहुरसदेवेदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयंतस्मादसतःसज्जायत ॥ याश्रुतिनैं खंड

नकरणेवासते कथनकन्याजो असत्कारणवादियोंकामत तामतका निरूपणकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु! इसप्रकार सर्वभेदतैंरहित सत्ता रूपकारणकेसिद्धहुएभी केईकब्रह्मबोधतैंरहितपंडितजन तासत्तारूपकारणकेस्थानविषे असत्ताकूंअंगीकारकरिकै ताअसत्ताकूंहीया जगत्काकारणमानेहैं ॥ और परमात्मारूपसत्ताकूं याजगत्काकारणमानणेहारे जेहमवेदांतीहैं ॥ तिनवेदांतियोंकेमतविषे तेअस त्कारणवादीपुरुष याप्रकारकेदोषकथनकरैहैं ॥ तुमवेदांतियोंनैं सर्वजगत्का उपादानकारणरूपकरिकै अंगीकारकरीजा सत्ता है ॥ सासत्ता सत्रूपहै अथवा असत्रूपहै?॥ तहां सासत्ता सत्रूपहै यहप्रथमपक्ष जोवेदांती अंगीकारकरै ॥ तावेदांतीसैं यहपू छाचाहिये ॥ तासत्ताविषे जोसत्रूपताहै ॥ सासत्रूपता आपणेस्वरूपतैंसिद्धहै अथवा सासत्रूपता किसीधर्मरूपदूसरीसत्ता करिकैसिद्धहै? तहां तासत्ताविषे सासत्रूपता स्वरूपतैंहीसिद्धहै यहप्रथमपक्ष जोवेदांतीअंगीकारकरै तौ तासत्ताविषेअसत्तातैंवि लक्षणता सिद्धनहींहोवेगी ॥ काहेतें? जैसे तासत्ताविषे स्वरूपतैं सत्रूपताहै ॥ तैसे ताअसत्ताविषेभी स्वरूपतैंसत्रूपतासंभव होइसकैहै ॥ ताकेनिवृत्तकरणेविषे कोईभीवादी समर्थहोइसकैनहीं ॥ और सोवेदांती जोयहकहै ॥ तासत्ताविषेतौ अस्ति याप्र कारकाविधिमुखप्रतीतिकीविषयतारहेहै ॥ और असत्ताविषे साविधिमुखप्रतीतिकीविषयतारहतीनहीं ॥ यातैं साविधिमुखप्रतीति कीविषयताही तासत्ताविषे ताअसत्तातैं विलक्षणताहै॥ सोयहताकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं? तासत्ताविषेही साविधिमुखप्रती तिकीविषयतारहेहै ॥ असत्ताविषेरहैनहीं॥ यहवार्ता जोवेदांतीनैंअंगीकारकरीहै ॥ सोकेवल आपणेकुलधर्मकीन्यांई आपणेवृद्धपु रुषोंकेसंकेतमात्रतैंहीसिद्धहै॥ कोईवस्तुकेस्वभावकेअनुसारनहींहै॥ यातैं सोतिनोंकेवृद्धपुरुषोंकासंकेत ताअसत्ताविषे विधिमुखप्र तीतिकीविषयतामानणेविषे प्रतिबंध करिसकैनहीं ॥ एकअधिकरणवृत्तिपदार्थोंकाही परस्पर प्रतिबध्यप्रतिबंधकभावहोवैहै॥ या तैं तासत्ताकीन्यांई ताअसत्ताविषेभी साविधिमुखप्रतीतिकीविषयता संभवैहै ॥ किंवा याजगत्कीउत्पत्तिकालविषे यद्यपि तासत्ता विषे विधिमुखप्रतीतिकीविषयता संभवहोइसकैहै॥ तथापि याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वकालविषे तासत्ताविषे साविधिमुखप्रतीतिकीवि षयता संभवतीनहीं ॥ काहेतैं? चिदाभासयुक्तअंतःकरणकीवृत्तिकानाम प्रतीतिहै॥ साप्रतीति चिदाभासयुक्तअंतःकरणरूपप्रमाता

केआश्रितरहेहैं ॥ सोप्रमाता याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वकालविषैहैनहीं ॥ ताप्रमाताकेअभावहुए ताकालविषे प्रतीतिभीसंभवैनहीं ॥ यातैं ताजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वकालविषे आपहीअविद्यमानहुई साविधिमुखप्रतीति तासत्ताकीसिद्धि किसप्रकारकरैगी? किंतु नहींसि द्धकरैगी ॥ और तासत्ताविषे सत्यरूपता किसीदूसरीसत्ताकरिकैसिद्धहै यहदूसरापक्ष जोवेदांती अंगीकारकरै तौ तादूसरीसत्तावि षे सत्यरूपताके सिद्धकरणेवासते कोईतीसरीसत्ता कल्पनाकरणीहोवैगी ॥ और तातीसरीसत्ताविषे सत्यरूपताकेसिद्धकरणेवासते कोईचतुर्थसत्ता कल्पनाकरणीहोवैगी ॥ इसप्रकार पूर्वपूर्वसत्ताविषे सत्यरूपताकेसिद्धकरणेवासते कल्पनाकरी जेउत्तरउत्तरसत्ता हैं ॥ तेसर्वसत्ता नियतसंख्यातैंरहित असंख्यातहैं अथवा तेसत्ता नियतसंख्यावालीहैं? तहां तेसत्ता असंख्यातहैं यहप्रथमपक्ष जो वादी अंगीकारकरै ॥ सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं? तेअसंख्यातसर्वसत्ता क्रमकरिकै अथवा एककालविषे किसीभीजीवकूं प्रतीतहोवैन हीं ॥ यातैं तिनअसंख्यातसर्वसत्तावोंविषे कोईएकसत्ताही सिद्धहोवैगी ॥ सर्वसत्ता सिद्धहोवैगीनहीं॥ और तेसत्ता नियतसंख्यावाली हैं यहदूसरापक्ष जोवेदांतीअंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं? तिनसर्वसत्तावोंविषे जोअंतकीसत्ताहै ॥ साअंतकीसत्ता ताअ सत्तातैंविलक्षण सिद्धनहींहोवैगी ॥ किंतु साअंतकीसत्ता ताअसत्ताकेसमानहीहोवैगी ॥ और ताअंतकीसत्ताविषे दूसरीसत्तातैंवि नाहीजोसत्यरूपताव्यवहारकीसिद्धिमानोंगे तौ ताअंतकीसत्तातैंपूर्वसत्तावोंविषेभी उत्तरउत्तरसत्तातैंविनाही सत्यरूपताव्यवहार सि द्धहोइसकैगा ॥ यातैं ताअंत्यसत्तातैंपूर्वपूर्वसत्तावोंकीकल्पना व्यर्थहोवैगी ॥ किंवा तिनवेदांतियोंनैं सर्वजगत्काउपादानकारणरू प जासत्ताअंगीकारकरीहै ॥ सासत्ता निर्विकारस्वभाववालीहोणेतैं एकरूपहै अथवा परिणामीस्वभाववालीहोणेतैं अनेकरूपहै ? तहां सासत्ता एकरूपहै यहप्रथमपक्ष जोवेदांतीअंगीकारकरै तौ ताएकरूपसत्ताविषे ताअसत्तातैं कौनविलक्षणता सिद्ध होवै गी ? किंतु सासत्ताभी ताअसत्ताकेही तुल्यहोवैगी ॥ और सासत्ता अनेकरूपहै यहदूसरापक्ष जोवेदांतीअंगीकारकरै तौ ता सत्ताविषे घटादिकपदार्थोंकीतुल्यता प्राप्तहोवैगी ॥ किंवा याअंत्यपक्षविषे घटादिकपदार्थोंकेतुल्यताकूंप्राप्तभई जासत्ताहै ॥ ता सत्ताकी जोकदाचित् याजगत्तैंपूर्व स्थितिअंगीकारकरोगे तौ ताकालविषे घटादिकपदार्थोंनैं कौनअपराधकऱ्याहै ? किंतु यह

घटादिकपदार्थभी तासत्ताकीन्यांई याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व अवश्यकरिकैरहेंगे ॥ यातें तापूर्वकालकी तथाइदानींकालकी परस्प रविशेषता सिद्धनहींहोवैगी ॥ यातें तासत्ताविषे अनेकरूपताभी संभवैनहीं ॥ इसतैंआदिलेकेअनेकप्रकारकेदूषण तासत्ताविषेप्रा प्तहोवैहें ॥ यातें सासत्ता याजगत्काकारणनहीं है ॥ किंतु असत्ताही याजगत्काकारणहै ॥ इतनेकरिकैतिनअसत्कारणवादियोंका मत निरूपणकऱ्या ॥ अब तिनअसत्कारणवादियोंकेमतका खंडनकरैं हैं ॥ हेश्वेतकेतु! इसप्रकार असत्कारणकीसिद्धिकरणेवास ते तेमंदबुद्धिवादी अनेकप्रकारकेकुतर्क कथनकरैंहैं ॥ और तेवादी वास्तवतैंपंडितपणेतैंरहितहुएभी आपणेकूं मिथ्याहीपंडितमा नेहैं ॥ ऐसेवादियोंकेप्रति यहपूछाचाहिये ॥ सृष्टिकेआदिकालविषे ताअसत्कारणतैं जोयहजगत्रूपकार्य उत्पन्नहोवैहै ॥ सोकार्य सत्रूपहोवैहै अथवा सोकार्य असत्रूपहोवैहै? ॥ तहां सोकार्य सत्रूपहोवैहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवै नहीं ॥ काहेतें? जैसे सृष्टिकेआदिकालविषे असत्कारणतैं सत्कार्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तैसे इदानींकालविषेभी असत्कारणतैं सत्कार्यकीउत्पत्ति किसवासतेनहींहोती ? किंतु होणीचाहिये ॥ और सृष्टिकेआदिकालविषेतौ ताअसत्कारणतैं सत्कार्यकीउ त्पत्तिहोवैहै ॥ और इदानींकालविषे असत्कारणतैं सत्कार्यकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ याअर्थकीसिद्धिकरणेहारी कोईयुक्ति तावादीनैं कहीचाहिये ॥ और सोकार्य असत्रूपहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें? असत्कारणतैं असत् कार्यकीउत्पत्ति तीनकालविषेभीहोवैनहीं ॥ जैसे असत्वंध्यापुत्ररूपकारणतैं असत्नरशृंगरूपकार्यकीउत्पत्ति कदाचित्भीहोवैन हीं ॥ जोकदाचित् असत्कारणतैं असत्कार्यकीउत्पत्तिहोतीहोवै तौ असत्वंध्यापुत्रतैं असत्नरशृंगकीभी उत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ यातें जैसे असत्वस्तुविषे कारणरूपतानहींसंभवैहै ॥ तैसे असत्वस्तुविषे कार्यरूपताभीसंभवैनहीं ॥ यातें तिनसर्ववादियों नैं ताकार्यकूं सत्यरूपहीमान्याचाहिये ॥ तासत्कार्यकी असत्कारणतैंउत्पत्ति कदाचित्भीसंभवैनहीं ॥ यातें तासत्कार्यका कारणभी सत्यहीमान्याचाहिये ॥ यातें ताअसत्कारणवादीनैं पूर्व जेजेविकल्पकऱ्येथे ॥ तेसंपूर्णविकल्प व्यर्थहीहैं ॥ अब तावा दीनैं पूर्व विकल्पकरिकै जेजेदूषणकथनकरेथे तिनदूषणोंकीनिवृत्तिकरैंहैं ॥ किंवा साकारणरूपसत्ता आपणेस्वरूपतैंही सत्यरूपता

कूंप्राप्तहोवैहै ॥ यापक्षकेअंगीकारकियेहुए हमसिद्धांतियोंकूं कौनदोषकीप्राप्तिहोवैहै? ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ! जैसे सासत्ता आपणे स्वरूपतेंही सत्यरूपताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे साअसत्ताभी आपणेस्वरूपतेंही सत्यरूपताकूंप्राप्तहोवैगी ॥ याप्रकारका प्रतिवंदीरूप दूषण तुमारेमतविषे प्राप्तहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेवादी ! तर्कविषेकुशलजेबुद्धिमानूपुरुषहैं ॥ तेबुद्धिमानूपुरुष दूसरेप्रतिवादीकेप्र ति सोप्रतिबंदीरूपदूषण देतेनहीं ॥ किंतु तर्कविषेअकुशलपुरुषही सोप्रतिबंदीरूपदूषण देवैहैं ॥ किंवा तासत्ताविषे जोस्वरूपतेंस त्यरूपताअंगीकारकरोगे तौ असत्ताविषेभी स्वरूपतेंसत्यरूपताहोणीचाहिये ॥ यहजोवादीनें दूषणकथनकऱ्याहै ॥ सोदूषण व्या प्तितेंरहितहै ॥ काहेतें ? जहांजहां स्वरूपहोवैहै तहांतहां सत्यरूपताहोवैहै याप्रकारकीव्याप्तिसंभवैनहीं ॥ जो याप्रकारकीव्याप्ति अंगीकारकरिये तौ स्वरूपतें अग्निविषे उष्णतारहेहै ॥ यातें स्वरूपतें जलविषेभी उष्णताहोणीचाहिये ॥ और जैसे पार्थिवहोणेतें घट जलकेआनयनरूपक्रियाकूंसिद्धकरैहै ॥ तैसे पार्थिवहोणेतें लोष्ठभी ताजलकेआनयनरूपक्रियाकूं किसवासतेनहींसिद्धकरता ? इसतेंआदिलेके अनेकप्रकारकेदूषण तिसवादीकेमतविषे प्राप्तहोवैहैं ॥ तिनसर्वदूषणोंकेकथनकरणेतें तावादीकाउपहास तथाक थनकरणेहारेपुरुषकेकंठतालुआदिकोंकाशोषण येदोनोंदोष प्राप्तहोवैहैं ॥ तिनदोनोंदोषोंतें अधिककोईफलहोवैनहीं ॥ किंवा तावादीकेकहणेतेंही साहमारीसत्तासिद्धहोवैहै ॥ काहेतें ? असत्तातेंजोभिन्नहोवै ताकानाम सत्ताहै ॥ और सत्तातेंजोभिन्नहोवै ता कानाम असत्ताहै ॥ याप्रकार सत्ताअसत्ताशब्दकाअर्थ तावादीनेंही अंगीकारकऱ्याहै ॥ जोकदाचित् सोवादी सत्ताकूंअंगीकार नहींकरैगा तौ तासत्ताकेभेदवाली असत्ताही सिद्धनहींहोवैगी ॥ यातें असत्ताकीसिद्धिवासते तावादीनेंभी सत्ताकूंअवश्य अंगीकार कऱ्याचाहिये ॥ किंवा तासत्ताकेस्थानविषे तावादीनें अंगीकारकरीजाअसत्ताहै ताअसत्तारूपकारणकूं आपणेस्वरूपकेवलतें जो वादीनें सत्यरूपताकथनकरीहै ॥ सो हमसत्कारणवादियोंकूं कोईअनिष्टनहींहै ॥ किंतु सोहमारेकूंभी इष्टहै ॥ काहेतें ? सर्वपदार्थों का आत्माही वास्तवस्वरूपहै ॥ ताआत्माकीसत्यरूपता हमारेकूंइष्टहै ॥ किंवा अस्ति याप्रकारकीविधिमुखप्रतीतिकाजोविषयहोवै ताकानाम सत्ताहै ॥ याप्रकारकेसत्ताकेलक्षणविषे जोवादीनें कुलधर्मकीसमानता कथनकरीथी ॥ सोदूषण तावादीकेमतविषेभीप्रा

प्तहोवैहै ॥ काहेतें? नास्ति याप्रकारकीनिषेधमुखप्रतीतिकाजोविषयहोवै ताकानामअसत्ताहै ॥ यहजोवादीनैं ताअसत्ताकालक्षण कऱ्याहै ॥ तालक्षणविषेभी केवल आपणेकुलकीपरंपराही अंगीकारकरणीहोवैगी ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती! जोकदाचित् तासत्ताकी तथाअसत्ताकी आपणेकुलधर्मकीन्यांई सिद्धिमानोंगे तौ तिनदोनोंकाभेद सिद्धनहींहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेवादी! तासत्ताविषे तथाअसत्ताविषे एकरूपताकेप्राप्तहुएभी तिनदोनोंकामहान्भेदहै ॥ काहेतें? सत्तातौ भावरूपहै ॥ और असत्ता अभावरूपहै ॥ याप्रकार तिनोंकाभेद सर्वलोकोंकेअनुभवकरिकैसिद्धहै ॥ यातें तिनदोनोंकीएकरूपतासिद्धहोवैनहीं इतनेकरिकै लोकदृष्टिकूंअंगीकारकरिकै तावादीकेशंकाकासमाधानकऱ्या ॥ अब आपणेसिद्धांतकूंअंगीकारकरिकै तावादीकेशंकाकासमाधानकरैहैं ॥ हेवादी! अस्ति याप्रकारकेविधिमुखप्रतीतिकाजोविषयहोवैहै ताकानाम सत्ताहै ॥ यहसत्ताकालक्षण जोतुमनैं पूर्वखंडनकऱ्याथा ॥ सोहमारेकूंभी अंगीकारहै ॥ काहेतें? हमारेसिद्धांतविषे अद्वितीयब्रह्मकानाम सत्ताहै ॥ ताअद्वितीयब्रह्मरूपसत्ताविषे विधिमुखप्रतीतिकीविषयतारूपलक्षण संभवतानहीं ॥ किंतु ताब्रह्मरूपसत्ताका मनवाणीकीअविषयतारूपही लक्षणहै ॥ अथवा सर्वलक्षणोंतैंरहितपणाहीलक्षणहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती! जैसे सत्ता मनवाणीकाअविषयहै ॥ तथा सर्वलक्षणोंतैंरहितहै ॥ तैसे वंध्यापुत्रादिकअसत्पदार्थभी मनवाणीकेअविषयहैं ॥ तथा सर्वलक्षणोंतैंरहितहैं ॥ यातें तिनअसत्पदार्थोंविषेभी तासत्ताकेलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेवादी! प्रतियोगी अनुयोगीरूप दोसत्यपदार्थोंकरिकैही अभावकानिरूपणहोवैहै ॥ यहसर्वशास्त्रकारोंकासिद्धांतहै ॥ यातें तिनअसत्पदार्थोंविषे मनवाणीकीविषयताकाअभाव तथासर्वलक्षणोंकाअभावसंभवैनहीं ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ यालोकविषे जेमूढबुद्धिपुरुष सूर्यभगवान्विषे धूलिपावैहैं ॥ तेमूढबुद्धिपुरुषही ताधूलिकरिकै व्याप्तहोवैहैं ॥ सूर्यभगवान्कूं ताधूलिकासंबंधहोवैनहीं ॥ तैसे वेदविषेकथनकऱ्याजोसत्तारूपकारणहै ॥ तासत्तारूपसूर्यविषे जेमूढबुद्धिवादी कुतर्करूपीधूलिपावैहैं ॥ तेमूढबुद्धिपुरुष ताकुतर्करूपीधूलिकरिकै आपहीपराजयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तासत्तारूप सूर्यकूं ताकुतर्करूपीधूलिका स्पर्शहोवैनहीं ॥ यातें हेश्वेतकेतु! असत्ही याजगत्काकारणहै याप्रकारकेतिनवादियोंकेवचन सि

ध्याहीहै ॥ यातैं मोक्षकीइच्छावान्पुरुषोंनैं तिनतार्किकोंकेवचन कदाचित्भी नहींअंगीकारकरणे ॥ किंतु वेदविषेकथनकऱ्याजोसत्तारूपकारणहै ॥ तासत्तारूपकारणकूंही यामुमुक्षुजनोंनैं अंगीकारकरणा ॥ काहेतें? यालोकविषे असत्कारणतें सत्कार्यकीउत्पत्ति देखणेविषेआवतीनहीं ॥ यातैं याजगत्रूपसत्कार्यका कारणभी सत्यरूपही मान्याचाहिये ॥ और यालोकविषे जैसे मृत्तिका सुवर्ण लोहरूप कारणकेज्ञाननैं घट भूषण खड्ग आदिकसर्वकार्योंकाज्ञानहोवैहै ॥ तैसे तासत्तारूपकारणकेज्ञाननैं यासर्वजगत्रूप कार्यकाज्ञानहोवैहै ॥ यातैं सर्वज्ञतारूपफलकीप्राप्तिवासते याअधिकारीपुरुषनैं तासत्तारूपकारणकूं अवश्यकरिकैजानणा ॥ अब तासत्तारूपकारणविषे अद्वितीयरूपताकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम याजगत्केउत्पत्तिकाप्रकार वर्णनकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु! पूर्वहमनैं अद्वितीयरूपकरिकैकथनकऱ्याजो सत्तारूपब्रह्महै ॥ सोसत्ब्रह्म जिसप्रकार यासर्वजगत्कूं उत्पन्नकरताभयाहै ॥ ताप्रकारकूं तू श्रवणकर ॥ सर्वभेदतैंरहित तथावास्तवतैंमायाकेसंबंधतैंरहित ऐसाजोसत्ब्रह्महै॥ सोसत्ब्रह्म कल्पितमायाकेसंबंधकूंपाइके सृष्टिके आदिकालविषे याप्रकारका चिंतनकरताभया ॥ मैंपरमात्मादेव आपही बहुतरूपकरिकैउत्पन्नहोवौं ॥ तामेरेजन्मकरिकैही साबहुतरूपतासिद्धहोवैगी ॥ मेरेजन्मतैंविना साबहुतरूपता कदाचित्भी नहींहोवैगी ॥ इसप्रकारकाचिंतनकरिके सोपरमात्मादेव यथाक्रमतैं आकाशादिकपंचभूतोंकूं रचताभया॥ हेश्वेतकेतु! सोपरमात्मादेव केवल आकाशादिकभूतोंकीउत्पत्तितैंपूर्वही ताचिंतनकूंनहींकरताभयाहै ॥ किंतु एकएकभूतकीउत्पत्तितैंपूर्वभी ताचिंतनकूंकरताभयाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! तैत्तिरीयकउपनिषद्विषे आकाश वायु तेज जल पृथिवी यापंचभूतोंकी उत्पत्ति कथनकरीहै॥ और याछांदोग्यउपनिषद्विषे तेज जल पृथिवी यातीनभूतोंकीही उत्पत्तिकथनकरीहै ॥ यातैं तिनदोनोंउपनिषदोंका परस्पर विरोधप्राप्तहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु! तेज जल पृथिवी यातीनभूतोंकेउत्पत्तिकूंकथनकरणेहारी याछांदोग्यश्रुतिका यहअभिप्रायहै ॥ अल्पबुद्धिवालेपुरुषोंकूं पंचीकरणकीप्रक्रियाजानणी अत्यंतकठिनहै ॥ यातैं तापंचीकरणविषेउपयोगी जोआकाशवायुहैं ॥ तादोनोंकेउत्पत्तिकीउपेक्षाकरिकै ताश्रुतिभगवतीनैं स्थूलबुद्धिवालेपुरुषोंऊपरिअनुग्रहकरिकै तेज जल पृथिवी यातीनभूतोंकात्रिवृत्करण कथनकऱ्याहै ॥ याकारणतैं ताछांदोग्यश्रुतिनैं तेज

जल पृथिवी यातीनभूतोंकीही उत्पत्तिकथनकरी है ॥ परंतु वास्तवतें ताछांदोग्यश्रुतिकाभी पंचीकरणविषेहीतात्पर्य है ॥ तापंचीक रणकेनिषेधविषेतात्पर्यनहीं है ॥ यातें तैत्तिरीयकश्रुतिका तथाछांदोग्यश्रुतिका परस्पर विरोधसंभवैनहीं ॥ अब तेजादिकतीनभू तोंकेउत्पत्तिकाक्रम कथनकरै हैं ॥ हेश्वेतकेतु! सोसत्ब्रह्म प्रथम तेजकूंउत्पन्नकरताभया ॥ तातेजतैंअनंतर जलोंकूंउत्पन्नकरताभ या ॥ ताजलोंतैंअनंतर पृथिवीकूंउत्पन्नकरताभया ॥ जापृथिवीकूं श्रुतिविषे अन्नशब्दकरिकैंकथनकऱ्याहै ॥ इसप्रकार तेज जल पृथिवी यातीनभूतोंकूंउत्पन्नकरिकै सोकारणब्रह्म तिनभूतोंकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे सृष्टिकेआ दिकालविषे तेज जल पृथिवी यातीनभूतोंविषे प्रथम तेज जलकाकारणहोवैहै ॥ और सोजल पृथिवीकाकारणहोवैहै ॥ तैसे इ दानींकालविषेभी देखणेमैंआवैहै ॥ काहेतें? इदानींकालविषेभी जबी अत्यंत तपतपडे है ॥ तबी ता तपततें जलकीवृष्टिहोवै है ॥ और ताजलकीवृष्टितें अन्नहोवैहै ॥ यहवार्ता सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ हेश्वेतकेतु! तेज जल पृथिवी येतीनभूतही यासर्व जगत्केकारणहैं ॥ यातें ताकारणकेस्वभावकूंअनुसारकरिकैही शास्त्रवेत्तापुरुषोंनें यासर्वदेहधारीजीवोंके तीनप्रकारकेकारण कथन करेहैं ॥ तहां जरायुजनामा जीवोंकीजाति प्रथम देहधारीजीवोंकाबीजहै ॥ काहेतें? गर्भकूंवेष्टनकरणेहारा जोजरायुनामाचर्म है ॥ सोजरायु जठराग्निकेतेजकरिकैजन्यहोवैहै ॥ याकारणतें सोजरायु तैजसपदार्थहै ॥ तिसतैंअनंतर दोप्रकारकेस्वेदज उत्पन्नहो वैहैं ॥ तहां एकतौ मशकादिरूपस्वेदज उद्भिज्जरूपहोवैहै ॥ और दूसरे यूकादिरूपस्वेदज अंडजरूपहोवैहै ॥ यातें एकहीस्वेदज का जलीयउद्भिज्जरूपकरिकै तथापार्थिवअंडजरूपकरिकै संग्रह संभवहोइसकै है ॥ यातें जरायुज उद्भिज्ज अंडज येतीनही सर्वदे हधारीजीवोंके बीजरूपहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! ब्रह्मसूत्रोंकेतृतीयअध्यायकेप्रथमपादविषे व्यासभगवान्नें स्वेदजका उद्भिज्जवि षेही अंतर्भावकथनकऱ्याहै ॥ और इहांआपने तास्वेदजका उद्भिज्ज अंडज यादोनोंविषेअंतर्भाव कथनकऱ्या ॥ यातें तासूत्रकेसाथ तुमारेवचनका विरोधहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! ताव्यासभगवान्का यहअभिप्रायहै ॥ जैसे येप्रसिद्धवृक्षादिक भूमिकूंऊ र्ध्वभेदनकरिकैउत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे मशकादिरूपउद्भिज्ज तथायूकादिरूपअंडज येदोप्रकारकेस्वेदजभी आपणेउपादानकारणरूप

जलोंकूं ऊर्ध्वभेदनकरिकैही उत्पन्नहोवैहैं ॥ यातैं मशकादिकउद्भिज्जोंकीन्यांई यूकादिकअंडजोंविषेभी सोउद्भिज्जशब्दकाअर्थघटैहै ॥
याप्रकारके अर्थकेजनावणेवासतेही ताव्यासभगवान्नैं उद्भिज्जविषे तास्वेदजकाअंतर्भाव कथनकन्याहै ॥ परंतु ताअंडजविषे तास्वे
दजकाअंतर्भावनहीं है ॥ याअर्थकेबोधनकरणेविषे ताव्यासभगवान्का तात्पर्यनहीं है ॥ किंवा ऐतरेयउपनिषद्विषे जरायुज अंडज
उद्भिज्ज यातीनोंकीअपेक्षाकरिकै कथनकन्याजो चतुर्थस्वेदजहै ॥ तास्वेदजका असत्यपणानहीं है ॥ किंतु जरायुजादिकतीनोंकी
न्यांई सोस्वेदजभी विद्यमानहै ॥ याप्रकार तास्वेदजकेअसत्यपणेकीनिवृत्तिकरणेविषे ताव्यासभगवान्कातात्पर्यहै ॥ उद्भिज्जविषे
ही तास्वेदजकाअंतर्भावहै याअर्थविषे तासर्वज्ञव्यासभगवान्कातात्पर्यनहीं है ॥ किंतु ताव्यासभगवान्का यहतात्पर्यहै ॥ पक्षीस
र्पयूकादिकजीव अंडजहैं ॥ और वृक्षमशकादिकशरीर उद्भिज्जहैं ॥ तिनदोनोंतैंभिन्न सर्वजीव जरायुजहैं ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे या
लोकप्रसिद्ध शरीरादिकअध्यात्मकार्योंकेकारणोंविषे जरायुज उद्भिज्ज अंडज यातीनभेदकरिकै तीनरूपतारहेहैं ॥ तैसे यासर्वजग
त्केकारणोंविषेभी तेज जल पृथिवी यातीनभेदकरिकै तीनरूपतारहेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! याप्रकार तेजादिककारणोंकेज्ञान
तैं याअधिकारीपुरुषकूं किसफलकीप्राप्तिहोवैहै? ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे तेज जल पृथिवी येतीनकारण आपणेआपणे
कार्यविषे अनुगतरूपहोइकैरहेहैं ॥ तैसे तेज जल पृथिवी यातीनोंविषे सोपरमात्मादेव आपणेसत्तारूपतैं अनुगतहोइकैरहेहै ॥
ऐसा सर्वजगत्काकारणरूप परमात्मादेवही हमअधिकारीजनोंकूं जानणेयोग्यहै ॥ याप्रकार तापरमात्मारूपकारणविषे जो याअ
धिकारीपुरुषोंकेबुद्धिकीस्थितिहै ॥ साबुद्धिकीस्थितिही ताकारणकेविचारकाफलहै ॥ अब तापरमात्मादेवरूप परमकारणका तिनते
जादिकभूतोंविषेअनुगतपणा स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे घटशरावादिककार्योंविषे मृत्तिका कारणरूपकरिकैप्र
वेशकरैहै ॥ तैसे तेज जल पृथिवी यातीनोंविषे सोपरमात्मादेव पूर्व कारणरूपकरिकैप्रवेशकरताभयाहै ॥ काहेतें? तापरमात्मा ॥२२॥
देवका असाधारणधर्मरूपईक्षण ॥ तत्तेजऐक्षत ॥ इत्यादिकश्रुतियोंनैं प्रतिपादनकन्याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे सृष्टिकेआदिकालवि
षे सोसत्परमात्मादेव मैंबहुतरूपहोइकैउत्पन्नहोवों याप्रकारकाविचारकरिकै बहुतरूपहोताभयाहै ॥ तैसे तेज तथाजल येदोनोंभी

ताविचारकूंकरिकै बहुतरूपहोतेभयेहैं ॥ तहां जडतेजविषे तथाजडजलविषे चेतनकेप्रवेशतैंविना सोविचार संभवतानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ सोचेतनपरमात्मादेवही ता तेजजलविषेप्रवेशकरिकै ताविचारकूंकरताभयाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सोपरमात्मादेव तिनतेजादिकोंविषे जोकदाचित् पूर्वहीअनुगतहुआहोवै तौ श्रुतिनैं तापरमात्मादेवका पुनःजीवरूपकरिकैप्रवेश किसवासतेकथनकर्‍याहै?॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु! यद्यपि यहसत्परमात्मादेव कारणरूपकरिकैतौ तिनतेजादिकोंविषे पूर्वहीप्रविष्टहुआहै ॥ तथापि सोपरमात्मादेव जीवरूपकरिकै तिनतेजादिकोंविषे पूर्वप्रविष्टहुआनहीं ॥ काहेतें? जो प्राणोंकूंधारणकरैहै ताकानाम जीवहै ॥ तेप्राणधारणादिकजीवकेधर्म तिसकालविषेहैंनहीं ॥ हेश्वेतकेतु! जोचेतन प्राण अपान व्यान उदान समान यापंचप्राणोंकूंधारणकरैहै ॥ तथा वारंवार जन्ममरणकीप्राप्तिरूप संसारकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा शुभअशुभफलकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा बंधकीनिवृत्तिरूपमोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताचेतनकानाम जीवहै ॥ हेश्वेतकेतु! यासर्वदेहधारीजीवोंका आपणेआपणेअंगुष्ठपरिमाण हृदयकमलहोवैहै ॥ ताहृदयकमलविषे ज्ञानशक्तिवालाअंतःकरण सर्वदारहैहै ॥ ताअंतःकरणकेसाथ जोचेतन तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताअंतःकरणउपहितचेतनकानाम जीवहै॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोअंतःकरणकूंही जीवकाउपाधिरूपअंगीकारकरोगे तौ सुषुप्तिअवस्थाविषे ताअंतःकरणकानाशहोइजावैहै ॥ यातैं ताजीवकाभी तहांनाशहोणाचाहियै ॥ और सुषुप्तिविषे ता जीवकानाश सिद्धांतमैंअंगीकारहैनहीं ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु! सुषुप्तिअवस्थाविषेभी ताअंतःकरणका सर्वथा नाशहोवै नहीं ॥ किंतु तासुषुप्तिअवस्थाविषेभी सोअंतःकरण संस्काररभूतसूक्ष्मवासनारूपकरिकैबन्यारहैहै ॥ काहेतें? तासुषुप्तितैंपूर्वकालविषे जिसप्रकारकाअंतःकरण प्रतीतहोवैहै ॥ तिसीप्रकारकाअंतःकरण तासुषुप्तितैंउत्तरजाग्रत्कालविषेभी प्रतीतहोवैहै ॥ जोकदाचित् सोअंतःकरण तासुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वथानाशकूंप्राप्तहुआहोवै तौ पूर्वदिनकेअंतःकरणतैं उत्तरदिनकाअंतःकरण विलक्षण प्रतीतहोणाचाहियै ॥ और सोअंतःकरण विलक्षण प्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ सोअंतःकरण सुषुप्तिअवस्थाविषे नाशकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! अंतःकरणकूं तथाअंतःकरणकेवासनावोंकूं जोकदाचित् ताजीवात्माका

उपाधिरूपअंगीकारकरौंगे तौ तेअंतःकरण तथावासना अनेकहैं ॥ यातें तेजीवभी अनेकहोवैंगे ॥ और ॥ अजोह्येकोजुषमाणो ऽनुशेते ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे एकहीजीवकह्याहै तिनश्रुतियोंकाविरोधहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु! तामायाविशिष्टपरमात्मादेवरूपकारणविषे याअंतःकरणवासनाविशिष्टजीवका तादात्म्यसंबंध शास्त्रवेत्तापुरुषोंनें कथनकऱ्याहै ॥ याकारणतेंही अंतःकरणादिरूपकार्यकेसाथ ताजीवात्माका तादात्म्यकाअध्यास विनाहीप्रयत्नतें प्राप्तहोवैहै ॥ जोकदाचित् ताअंतःकरणकेकारणकेसाथ याजीवात्माका तादात्म्यसंबंधनहींहोवै तौ ताअंतःकरणकेउदयकालविषेही ताजीवात्माका जोअंतःकरणकेसाथ तादात्म्यअध्यासहोवैहै ॥ सोनहींहोणाचाहिये ॥ हेश्वेतकेतु! ताअंतःकरणकीउत्पत्तिहुए तथानाशहुएभी याजीवात्माका उत्पत्तिनाशहोवैनहीं ॥ किंतु सोजीवात्मा सर्वदा एकरूपहीहै ॥ हेश्वेतकेतु! यद्यपि भिन्नभिन्नअंतःकरणोंविषेस्थितहोइकै सोजीवात्मा भिन्नभिन्नरूपकरिकै प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि सोजीवात्मा तिनअंतःकरणोंकेकारणभूतअज्ञानकेसाथभी तादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोअंतःकरणकीवासनावोंकाआधारभूतअज्ञान एकहीहै ॥ और आत्मज्ञानतेंविना ताअज्ञानकानाशभीहोवैहै ॥ ऐसेअज्ञानरूपउपाधिकूंग्रहणकरिकैही शास्त्रवेत्तापुरुष ताजीवात्माकूंएककहेहैं ॥ तथा नित्यकहेहैं ॥ और हेश्वेतकेतु! जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंका निमित्तकारणभूत जेसंस्काररूप कर्मवासनाहैं ॥ तथा वृत्तिज्ञानरूपअंतःकरणका निमित्तकारणभूत जे संस्काररूप ज्ञानवासनाहैं ॥ तिनसर्ववासनावोंकाआश्रय अज्ञानहै ॥ ताअज्ञानरूपआश्रयकेनाशकरिकै जबी तिनसर्ववासनावोंकानाशहोवैहै ॥ तबी यहजीवात्मा मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब अन्वयव्यतिरेककरिकै तावासनावोंकेनाशविषे मोक्षकीकारणतानिरूपणकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे याभूमिविषेस्थित जितनेवृक्षहैं ॥ तिनवृक्षोंविषे जिसवृक्षका मूलबीज नाशहोवैहै ॥ सोवृक्षही नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ दूसरेवृक्ष नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे यामायाविषेस्थित जितनेजीवहैं ॥ तिनजीवोंविषे जिसजीवकेअंतःकरणकीवासनावोंकानाशहोवैहै ॥ सोजीवही मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जिनजीवोंकेअंतःकरणकीवासनावोंकानाश नहींहुआहै ॥ तेजीव तामोक्षकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ किंतु तेजीव बंधकूंहीप्राप्तहोवैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! पूर्वआपनें एकहीजीवकथनकऱ्याथा ॥ और अबीआपनें नाना

जीव कथनकरे ॥ यातें पूर्वउत्तरवचनोंका विरोधप्राप्तहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहएकहीस्वप्नद्रष्टापुरुष अज्ञानकेवशतें अनेकरूपोंकूंधारणकरिकै किसीरूपकरिकैतौ बंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा किसीरूपकरिकै मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहएकहीजीवात्मा मायाकेवशतें अनेकरूपोंकूंधारणकरिकै किसीरूपकरिकैतौ बंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और किसीरूपकरिकै मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे तास्वप्नकेनिवृत्तहुएतेंअनंतर तेस्वप्नकेबंधमोक्ष तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माके साक्षात्कारहुएतेंअनंतर सोबंधमोक्ष प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जीवोंकापरस्परभेद तथातिनजीवोंका परमात्माकेसाथभेद जोप्रतीतहोवैहै ॥ सोकेवल उपाधिकेसंबंधतें प्रतीतहोवैहै ॥ वास्तवतेंतौ यहजीवात्मा अद्वितीयब्रह्मरूपही है ॥ शंका ॥ हेभगवन्! यहपरमात्मादेवही याजगत्विषे प्रवेशकरैहै यहजोवार्ता पूर्वआपनैंकथनकरीथी ॥ सोसंभवतीनहीं ॥ काहेतें? यालोकविषे परिच्छिन्नवस्तुकाही प्रवेशदेखणेमैंआवैहै ॥ व्यापकवस्तुकाप्रवेश देखणेविषेआवतानहीं ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे सर्प आपणेबिलविषेप्रवेशकरैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेव जगत्विषेप्रवेशकरैनहीं ॥ किंतु जैसे सर्वत्रव्यापकहुआभी यहआकाश घटादिकउपाधियोंविषे प्रवेशकरैहै ॥ तैसे सर्वत्रव्यापकहुआभी यहपरमात्मादेव तिनतेजादिकभूतोंविषेप्रवेश करैहै ॥ और हेश्वेतकेतु! जैसे सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहुआयहपुरुष सामान्यरूपतें यद्यपि याशरीरविषेप्रविष्टहुआहै ॥ तथापि विशेषरूपतें प्रविष्टहुआनहीं ॥ और सोईहीपुरुष पुनः जाग्रत्अवस्थाविषे विशेषरूपकरिकै याशरीरविषेप्रवेशकरैहै ॥ तैसे तेज जल पृथिवी यातीनभूतोंविषे सोपरमात्मादेव यद्यपि सामान्यरूपकरिकै पूर्वहीप्रविष्टहुआहै ॥ तथापि विशेषरूपकरिकै पूर्व प्रविष्टहुआनहीं ॥ और सोईहीपरमात्मादेव पुनः तिनतेजादिकोंविषे जीवात्मारूपविशेषस्वरूपकरिकै प्रवेशकरैहै ॥ और सोपरमात्मादेव ताविशेषरूपकरिकै प्रवेशकरणेवासते याप्रकारकाविचार करताभया ॥ आपणेआपणेकार्यविषे प्रविष्टहुए जेये तेजजलपृथिवीरूपतीनभूतहैं ॥ तिनोंविषे मैंपरमात्मादेव आपणेजीवरूपतैंप्रवेशकरिकै नाम रूप यादोनोंकूं विविधप्रकारकाकरौं ॥ तथा तानामरूपकूं स्पष्टकरौं ॥ और तानामरूपकेविविधप्रकारकरणेविषे तथास्पष्टकरणेविषे याप्रकारकाउपाय हमारेकूंप्रतीतहोवैहै ॥

तेज जल पृथिवी येजे तीनभूतरूपदेवताहैं ॥ तिनोंविषेप्रवेशकरिकै मैंपरमात्मादेव तिसएकएकभूतकूं नवनवप्रकारकाकरौं ॥ तिनभूतोंकूं नवनवप्रकारकरणेतैंही यहनामरूपदोनों स्पष्टभावकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ तिसतैंही यहसर्वजगत् उत्पन्नहोवैगा ॥ इसप्रकार काविचारकरिकै सोपरमात्मादेव तिसीप्रकार करताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ तेज जल पृथिवी यातीनभूतोंविषे एकएकभूतके तीनतीनविभाग समानकरै ॥ तहां तिनतीनोंभूतोंके दोदोविभागतौ पृथक्पृथक्राखै ॥ और तिनभूतोंके तीसरेतीसरेविभागके पुनःतीनतीनविभागकरै ॥ तिनतीनोंविभागोंविषे एकएकविभागकूं यथाक्रमतैं तिनतीनभूतोंकेदोदोविभागोंविषेमिलाया ॥ इसप्रकार तेजादिकभूतोंके आपणेआपणेतौ सप्तसप्तविभागहोवैहैं ॥ और दूसरेभूतोंके दोदोविभागहोवैहैं ॥ याहीप्रक्रियाकूं छांदोग्यश्रुतिविषे त्रिवृत्करण यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति अध्यारोपभूत त्रिवृत्करणरूपसृष्टिकाकथनकरिकै यहकार्यजगत् कारणमात्ररूपहै याप्रकारकेअपवादकेकहणेवासतै अग्नि आदित्य चंद्रमा विद्युत् यहचारिदृष्टांत कथनकरताभया ॥ हेश्वेतकेतु! अग्नि आदित्य चंद्रमा विद्युत् याचारोंविषे जोरक्तरूप प्रतीतहोवैहै ॥ सोरक्तरूप तासप्तभागवाले तेजकाहीजानणा ॥ और तिनअग्निआदिकचारोंविषे जोशुक्लरूप प्रतीतहोवैहै ॥ सोशुक्लरूप ताजलकेअष्टमभागकाजानणा ॥ और तिनअग्निआदिकचारोंविषे जोकृष्णरूप प्रतीतहोवैहै ॥ सोकृष्णरूप पृथिवीकेनवमभागकाजानणा ॥ इसप्रकार तेअग्निआदिकचारों तेज जल पृथिवी येतीनभूतरूपहीहैं ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे रक्तरूपवालाजोतेजहै ॥ तथाशुक्लरूपवालाजोजलहै तथाकृष्णरूपवालीजापृथिवीहै ॥ यातीनोंकारणकूं जबी तिनअग्निआदिककार्योंतैंभिन्नकरिये ॥ तबी तेअग्निआदिककार्य प्रतीतहोवैंनहीं ॥ याकारणतैं तेअग्निआदिककार्य मिथ्याहीहैं ॥ तैसे जलरूपजेनदीआदिकहैं ॥ तथा पृथिवीरूपजेपर्वतादिकहैं ॥ तेभी पूर्वकहीरीतिसैं तेज जल पृथिवी यातीनभूतोंकेहीकार्यहैं ॥ तिनतेजादिककारणोंकूं जबी तिननदीपर्वतादिककार्योंतैं पृथक्करिये ॥ तबी तेनदीपर्वतादिककार्य प्रतीतहोवैंनहीं ॥ यातैं तेनदीपर्वतादिकपदार्थभी मिथ्याहीहैं ॥ काहेतैं? तेअग्निआदिकविकार केवलवाणीमात्रकरिकैहीसिद्धहैं ॥ वास्तवतैं तेअग्निआदिकविकार हैंनहीं ॥ यातैं तेज जल पृथिवी यातीनकारणोंतैंभिन्नकरेहुए तेअग्निआदिकवि

कार मिथ्याहीहोवैहै ॥ यातैं तिनअग्निआदिकविकारोंकेकारणरूपजे तेजादिकतीनभूतहैं ॥ तेतीनभूत तिनविकारोंकीअपेक्षाकरिकै सत्यरूपहैं ॥ हेश्वेतकेतु ! जैसे अग्निआदिकविकार कार्यरूपहोणेतैं मिथ्याहैं ॥ तैसे तेज जल पृथिवी येतीनभूतभी कार्यरूपहोणेतैं मिथ्याही हैं ॥ तिनमिथ्यातेजादिकभूतोंका जोपरमात्मादेवरूपकारणहै ॥ सोपरमात्मादेवही सत्यहै ॥ तापरमात्मादेवतैंभिन्न यहसर्व जगत् मिथ्याही है ॥ तासत्यपरमात्मादेवकेज्ञानतैंही यासर्वजगत्काज्ञानहोवैहै ॥ अब याहीअर्थविषे विद्वान्पुरुषोंकाअनुभव निरूपणकरै हैं ॥ हेश्वेतकेतु ! इसप्रकार कारणकेसत्यरूपताकूंजाणिकै परमहर्षकूंप्राप्तहुए केईकविद्वान्पुरुष परस्परमिलिकै पूर्व याप्रकार केवचन कहतेभयेहैं ॥ हमविद्वान्ब्राह्मणोंके विद्यारूपकुलविषे जितनेपुरुष उत्पन्नहोवैंगे ॥ तिनोंविषे कोईभीपुरुष किसीअज्ञात वस्तुका कथनकरैगानहीं ॥ किंतु सोपुरुष कारणकेसत्यरूपताकूं तथाकार्यकेमिथ्यारूपताकूं जाणिकरिकै ज्ञातवस्तुकाही कथनकरैगा ॥ काहेतें? यालोकविषे आपणेकारणतैं सोकार्य किंचित्मात्रभीभिन्नहोवैनहीं ॥ यातैं ताकारणकेज्ञानतैं तेसर्वपुरुष सर्वज्ञताकूंप्राप्त होवैंगे ॥ हेश्वेतकेतु! तिनविद्वान्पुरुषोंका जोयाप्रकारकाकहणाहै ॥ सोअसंगतनहीं है किंतु यथार्थही है ॥काहेतें? यासर्वजगत्काकारणरूप जे तेज जल पृथिही येतीनभूतहैं ॥ तिनभूतोंकूंभी तेविद्वान्पुरुष भलीप्रकार जाणतेभये हैं ॥ और तिनतेजादिकतीनभूतोंकाकारणरूप जोसत्परमात्मादेवहै ॥तापरमात्मादेवकूंभी तेविद्वान्पुरुष भलीप्रकार जाणतेभये हैं ॥ ऐसेविद्वान्पुरुषोंकूं यासर्वजगत्काज्ञानहोणाकोईदुर्लभनहीं है ॥ इतनेकरिकै अग्निआदिकबाह्यप्रपंचविषे तेजादिकतीनभूतोंकीकार्यता निरूपणकरी॥अब यास्थूलसूक्ष्मशरीरविषे तिनतेजादिकभूतोंकीकार्यता निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार सोउद्दालकनामाआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रके प्रति याबाह्यप्रपंचविषे भौतिकपणा कथनकरिकै मनप्राणादिकअंतरप्रपंचविषे तिनतेजादिकभूतोंकीकार्यता तथातिनभूतोंद्वारा ब्रह्मकीकार्यता कहणेकीइच्छाकरताहुआ याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेश्वेतकेतु ! यालोकविषे अन्नजलकूं भक्षणकरणेहारेजितनेदेहधारीजीवहैं ॥ तेदेहधारीजीव जिसत्रिवृत्रूपअन्नकूंभक्षणकरै हैं ॥ तथा जिसत्रिवृत्रूपजलकूंपानकरै हैं ॥ सोअन्न तथाजल जठराग्निकेसंबंधकरिकै पृथिवी जल तेज यातीनरूपकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ हेश्वेतकेतु ! इसप्रकार तीनविभागोंकूंप्राप्त

हुआजो अन्नजलहै ॥ ताअन्नजलकाजोतैजसभागहै ॥ सोतैजसभागभी सूक्ष्म मध्यम स्थूल याभेदकरिकैतीनप्रकारकाहोवैहै ॥
तहां सूक्ष्मतैजसभागतौ वाक्रूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और मध्यमतैजसभाग मज्जारूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥
और स्थूलतैजसभाग अस्थिरूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सोजलीयभागभी सूक्ष्म मध्यम स्थूल यातीनरूपकरिकै ती
नप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां सूक्ष्मजलकाभागतौ प्राणरूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और मध्यमजलकाभाग रक्तरूपकरिकैपरि
णामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और स्थूलजलकाभाग मूत्ररूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार सोपृथिवीकाभागभी सूक्ष्म मध्य
म स्थूल यातीनभेदकरिकैतीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां सूक्ष्मपार्थिवभागतौ मनरूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और मध्यम
पार्थिवभाग मांसरूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और स्थूलपार्थिवभाग पुरीषरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य !
वाक् तेजकाकार्यहै ॥ और प्राण जलकाकार्यहै ॥ और मन पृथिवीरूपअन्नकाकार्यहै ॥ याप्रकारकेअर्थकूंश्रवणकरिकै सोश्वेत
केतु आपणेपिताकेप्रति याप्रकारकाप्रश्नकरताभया ॥ श्वेतकेतुरुवाच ॥ हेपिता ! अन्नजलादिरूपकूंप्राप्तभयेजे तेज जल पृथि
वी येतीनभूतहैं ॥ ते अत्यंतस्थूलहैं ॥ और वाक् प्राण मन ये तीनों अत्यंतसूक्ष्महैं ॥ ऐसे तेजादिकस्थूलभूतोंतैं वाकादिक
सूक्ष्मोंकीउत्पत्तिसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? यालोकविषे समानस्वभाववाले तंतुपटादिकोंकाही परस्पर कार्यकारणभाव देखणेविषेआवे
है ॥ विलक्षणस्वभाववालेपदार्थोंका परस्पर कार्यकारणभाव देखणेविषेआवतानहीं ॥ यातें हेभगवन् ! तापूर्वकहेअर्थकूं आपहमा
रेप्रति पुनः किसीयुक्तिकरिकैकथनकरौ ॥ जाकरिकै ताअर्थका हमारेकूं वास्तवरूपतैंज्ञानहोवै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार जबी ता
श्वेतकेतुनैं आपणेआरुणिपिताकेप्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तबी सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥
आरुणिरुवाच ॥ हेश्वेतकेतु ! स्थूलतैंसूक्ष्मकीउत्पत्तिविषे तूदृष्टांतकूंश्रवणकर ॥ जैसे यालोकविषे घनीभावकरिकैस्थूलताकूंप्राप्तभ
याजोदधिहै ॥ तास्थूलदधिविषे यद्यपि मंथनकरणेतैंपूर्व तक्र फेन घृत येतीनरूपप्रतीतहोवैंनहीं ॥ तथा मंथनकरिकै तास्थूल
दधि तक्र फेन घृत यातीनसूक्ष्मरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे अन्नजलभावकूंप्राप्तहुए तेज जल पृथिवी येतीन

स्थूलभूतभी वाक् प्राण मन यातीनसूक्ष्मरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और हेश्वेतकेतु ! जैसे मथनकऱ्येहुए दधिका जोसूक्ष्म अंशहै ॥ सोघृतरूपकरिकै ऊर्ध्वदेशकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे अन्नजलरूपकरिकै जठराग्निविषेस्थित जे तेज जल पृथिवीहैं ॥ तिनतीनोंतें कथाक्रमतें वाक् प्राण मन यातीनोंकाउपादानकारणरूप सूक्ष्मअंशभी ऊर्ध्वदेशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार तेज जल पृथिवी यातीनस्थूलभूतोंतें यथाक्रमतें वाक् प्राण मन येतीनोंसूक्ष्म उत्पन्नहोवैहैं ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार जबी ताआरुणिपितानैं ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति उत्तरकह्या ॥ तबी सोश्वेतकेतु ताअरुणिपिताकेप्रति पुनः याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ श्वेतकेतुरुवाच ॥ हेपिता ! पूर्वआपनें वाक्विषे जोतेजरूपताकथनकरी सोयद्यपि संभवैहै ॥ काहेतें ? यालोकाविषे जैसे जलकरिकै तेजकापराभव देखणेमेंआवैहै ॥ तैसे याशरीरविषे जलरूपकफधातुकीवृद्धिकरिकै जबी तेजकापराभवहोवैहै ॥ तबी सर्वदेहधारीजीवोंका सोवाक् शिथिलताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताकफधातुकेवृद्धिकेअभावहुए सोवाक् स्पष्टप्रतीतहोवैहै ॥ याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै तावाक्विषे तेजकीकार्यता निश्चयहोइसकैहै ॥ तथापि प्राणविषे जलकीकार्यता तथामनविषे पृथिवीरूपअन्नकीकार्यता किसप्रकार निश्चयकरिजावै? तावाक्कीन्यांई याप्राणमनविषे कोईअन्वयव्यतिरेक देखणेमेंआवतानहीं ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार जबी ताश्वेतकेतुनैं उद्दालकपिताकेप्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तबी सोउद्दालकपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति ताप्राणमनविषेभी सोअन्वयव्यतिरेक दिखावताहुआ याप्रकारकावचन कहताभया ॥ आरुणिरुवाच ॥ हेश्वेतकेतु ! श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रिय तथाआकाशादिकपंचभूतएकप्राण याषोडशतत्त्वोंकासमुदाय तप्तलोहपिंडकीन्यांई चेतनकेतादात्म्यसंबंधकरिकैयुक्तहुआ पुरुषनामकरिकेकह्याजावैहै ॥ और चंद्रमाहैदेवताजिसका ऐसाजोमनहै ॥ सोमनहैप्रधानजिसविषे ऐसाजोसोपुरुषहै ॥ तामनोमयपुरुषकी वेदवेत्तापुरुषोंनें षोडशकला कथनकरीहैं ॥ इहां दिनदिनविषेभोजनकऱ्याजोअन्नहै ॥ ताअन्नतैंउत्पन्नभईजे मनकेवृत्तियोंकाउपादानकारणरूप शक्तियांविशेषहैं ॥ तिनशक्तियोंकानाम कलाहै ॥ तहां एकएकदिनविषे ताअन्नकेभक्षणकियेतें तामनविषे एकएककला उत्पन्नहोवैहै ॥ इसप्रकार षोडशदिनपर्यंत ताअन्नकेभक्षणकरणेतें तामनोमयपुरुषविषे षोडशकला उत्पन्नहोवैहैं ॥ और जोपुरुष अन्नकूंभक्षणनहींकरै

है ॥ तिसपुरुषकी एकएकदिनविषे एकएककला नाशकूंप्राप्तहोतीजावैहै ॥ षोडशदिनपर्यंत ताअन्नकेनहींभक्षणकियेनैं तेसर्वक
ला नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याअर्थविषे तुमनें किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ परंतु यहसर्ववार्ता रोगरहितपुरुषविषेही घटेहै ॥
रोगीपुरुषविषेतौ वातपित्तादिकदोषकीही साशक्तिहोवैहै ॥ हेश्वेतकेतु! यहप्राण जलतैंविना एकदिनमात्रभी याशरीरविषे स्थि
तहोइसकैनहीं ॥ और ताप्राणकेगएहुएतैंअनंतर सोअन्वयव्यतिरेक जान्याजावैनहीं ॥ यातैं ताअन्वयव्यतिरेकके ज्ञानविषेउप
योगी जोप्राणहै ॥ ताप्राणकीरक्षाकरणेवासतै तू जलकूंतौ आपणीइच्छापूर्वक पानकर ॥ परंतु अन्नकूं पंचदशादिनपर्यंत तू भक्षण
मतकर ॥ ताअन्नकेनहींभक्षणकियेतैं तू आपेहि ताअन्वयव्यतिरेककूंनिश्चयकरैगा ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकावचन जवी ताआरु
णिपितानैं श्वेतकेतुपुत्रकेप्रतिकह्या ॥ तवीसोश्वेतकेतु तापिताकेआज्ञाकूंमानिकै पंचदशादिनपर्यंत अन्नकूंनहींभक्षणकरताभया ॥
तापंचदशादिनतैंअनंतर सोश्वेतकेतु पुनःताआरुणिपिताकेसमीपजाइकै स्थितहोताभया ॥ और क्षुधाकरिकैक्षीणहुआहैमनजिस
काऐसाजोश्वेतकेतुहै ॥ ताश्वेतकेतुकूं आपणेसमीपआयाहुआदेखिकै सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति याप्रकारकावचन कह
ताभया ॥ हेपुत्र! जोतुमनैं पूर्व ऋग् यजुष् साम यातीनवेदोंके पाठका तथाअर्थका अध्ययनकऱ्याहै ॥ तिनअर्थसहितवेदोंकूं
हमारे समीपकथनकरो ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकावचन जवी ताआरुणिपितानैं श्वेतकेतुकेप्रतिकह्या ॥ तवी सोश्वेतकेतु पूर्वअध्य
यनकऱ्येहुएवेदोंकाचिंतनकरताहुआभी ताकालविषे किंचित्मात्रभी तिनवेदोंकास्मरणनहींकरताभया ॥ जैसे दुर्बुद्धिपुरुष किसी
भीअर्थकूं स्मरणकरिसकतानहीं ॥ तैसे सोश्वेतकेतुभी तापूर्वअध्ययनकऱ्येहुएअर्थकूं किंचित्मात्रभी स्मरणनहींकरताभया ॥ ति
सतैंअनंतर गिलानिकरिकैयुक्तहुआ सोश्वेतकेतु आपणेआरुणिपिताकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेपिता! पूर्वहमनैं जि
नऋगादिकवेदोंका अर्थसहितअध्ययनकऱ्याथा ॥ तेऋगादिकवेद अवी हमारेकूं प्रतीतहोतेनहीं ॥ किंतु जैसेकिसीपुरुषनैं बहुत
कालपर्यंत आराधनकऱ्याजोमंत्रहै ॥ सोमंत्र तापुरुषकेभाग्यकेक्षयहुए निष्फलहीहोवै है ॥ तैसे हमनैं पूर्व जितनावेदोंकाअ
ध्ययनकऱ्याथा ॥ सोसंपूर्णअध्ययन हमारा निष्फलहोताभयाहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकावचन जवी ताश्वेतकेतुनैंकह्या ॥ तवी

सोआरुणिपिता ताक्षुधावान्श्वेतकेतुकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेश्वेतकेतु! तूअबी अन्नकूंभक्षणकर ॥ ताअन्नकेभक्षण किंयेतैंअनंतर तू तिनसर्ववेदोंकेअर्थकूं पूर्वकीन्यांई जाणैगा ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे महान्प्रज्वलितअग्निके जबी काष्ठादिकइंधनोंका नाशहोवैहै ॥ तबी ताअग्निके खद्योतजंतुकेसमान कोईकअंगारकण बाकीरहेहैं ॥ ताखद्योतकेसमानअग्निकेअंगारकणोंकरिकै पूर्वप्रज्वलितअग्निकीन्यांई महान्काष्ठोंकादाहरूपकार्य उत्पन्नहोवैनहीं ॥ तैसे पंचदशदिनपर्यंत अन्नकेनहींभोजनकरणेकरिकै तातुमारेमनकी पंचदशकलातौ नाशहोइगईहैं ॥ बाकी एककलारहीहै ॥ याकारणतैं सोतुमारामन किंचित्मात्रभीअर्थकेजानणेविषे तथास्मरणकरणेविषे समर्थहोतानहीं ॥ यातैं तूअबी अन्नकेभोजनतैं आपणेमनके कलावोंकीवृद्धिकरिकै पुनः हमारेसमीपआव ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकेपिताकेवचनकूंअंगीकारकरिकै सोश्वेतकेतु अन्नकूंभोजनकरिकै पुनःआपणेपिताकेसमीपजाताभया ॥ ताश्वेतकेतुपुत्रकूंदेखिकै सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रतैं पुनःपूर्वअध्ययनकऱ्येहुएवेदोंकाअर्थ पूछताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोश्वेतकेतु ताआरुणिपिताकेप्रति सोसर्ववेदोंकाअर्थ कथनकरताभया ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति अन्नकेअभावहुए मनकाभीअभावहोवैहै याप्रकारकेव्यतिरेककूं अग्निकेदृष्टांततैंकथनकरिकै तिसतैंअनंतर अन्नकेविद्यमानहुए मनकीभीविद्यमानताहोवैहै याप्रकारकेअन्वयकूं तिसीअग्निकेदृष्टांततैं कथनकरताहुआ याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे सोखद्योतकेसमानसूक्ष्मअंगार सूक्ष्मशुष्कतृणोंकेपावणेकरिकै शनैःशनैः वृद्धिकूंप्राप्तहोइकै महान्शुष्ककाष्ठोंकूं तथामहान्आर्द्रकाष्ठोंकूंभी दाहकरिसकैहैं ॥ तैसे आहारकेग्रहणतैंपूर्व जोतुमारामन एककलामात्र बाकीरह्याथा ॥ सोईहीतुमारामन अबीआहारकेग्रहणकरणेतैं पुनःसर्वज्ञताकूं प्राप्तहुआहै ॥ याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै तुमनैंभी आपणेमनविषे अन्नमयता निश्चयकरीहै ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे वाक्विषे तथामनविषे अन्वयव्यतिरेककरिकै तुमनैं तेजोमयता तथाअन्नमयता निश्चयकरीहै ॥ तैसे प्राणविषेभी तुमनैं जलमयता निश्चयकरणी ॥ काहेतैं? जैसे अन्नतैंविना मनकाक्षयहोवैहै ॥ तैसे जलतैंविना प्राणकाभीक्षयहोवैहै ॥ इतनेग्रंथकरिकै सर्वजगत्काकारणरूप जोअद्वितीयब्रह्महै ॥ ताअद्वितीयब्रह्मरूप तत्पदार्थकाशोधन निरूपणकऱ्या ॥ अब तातत्पदार्थविषे प्रत्यक्आत्मा

रूप त्वंपदार्थरूपता निरूपणकरैहैं ॥ तहां त्वंपदार्थरूपआत्माविषे सा तीनप्रकारकी प्रत्यक्रूपता वेदांतशास्त्रोंविषेकथनकरीहै ॥ तहां एकतौ अंतःकरणादिकोंविषेस्थित चिदाभासकीबिंबरूपताकरिकै प्रत्यक्रूपताकहीहै ॥ और दूसरी शरीरकीअधिष्ठानता रूपकरिकै प्रत्यक्रूपता कथनकरीहै ॥ और तीसरी इंद्रियोंकीअधिष्ठानतारूपकरिकै प्रत्यक्रूपता कथनकरीहै ॥ तहां प्रथमप्र त्यक्रूपताकूं याछांदोग्यश्रुतिविषे शकुनिपक्षीकेदृष्टांतकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ताका अबीनिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! पूर्वकहीरीतिसें वाक् प्राण मन आदिकोंकेउपादानकारणरूप अद्वितीयब्रह्मकूंनिश्चयकऱ्याहै जिसनैं ऐसाजोश्वेतकेतुहै ॥ ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति सोउ द्दालकनामाआरुणिपिता त्वंपदार्थआत्माकेशोधनकरणेवासते पुनः याप्रकारकावचन कहतामया ॥ हेश्वेतकेतु! पूर्वमहनैं तुमारेप्रति जोमन अन्नमयरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तिसमनकाही यहतेजजलपृथिवीरूपसर्वजगत् विलासहै ॥ तिसमनकेविद्यमानहुएही यहपुरुष वारंवार अध्यासरूपमोहकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जोकदाचित् यहमन नहींहोवै तौ तामनविषेप्रतिबिंबरूप मोहकूंभी यहजीव प्रा प्तहोवैनहीं ॥ ताप्रतिबिंबरूपमोहकेअभावहुए याजीवात्माकूं रागद्वेषादिकविकारभीप्राप्तहोवैनहीं ॥ तिनरागद्वेषादिकविकारोंके अभावहुए यहजीवात्मा पुनःसंसारकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं यहचिदाभासयुक्तमनही यासर्वजगत्कानिर्वाह करणेहाराहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! यामनकूंभी उपादानकारणतारूपकरिकै आपणेवशविषेस्थापनकरणेहारा कौनवस्तुहै? ॥ समाधान ॥ हेश्वेत तु! कारणरूपजोप्रथमशरीरहै सोकारणशरीरही यामनकूं आपणेवशकरणेहाराहै ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम ती नप्रकारकेशरीरोंका निरूपणकरैहै ॥ स्थूलशरीर सूक्ष्मशरीर कारणशरीर येतीनप्रकारकेशरीरहोवैहैं ॥ तहां प्रथम कारण शरीरका निरूपणकरैहैं ॥ सर्वदेहधारीजीवोंका जोअज्ञानहै ॥ ताअज्ञानकानाम कारणशरीरहै ॥ सोअज्ञान एकहोणेतें सर्वदेह धारीजीवोंकूं साधारणहै ॥ तथा सर्वदुःखोंकाकारणहै ॥ याकारणतें सोअज्ञानरूपकारणशरीर स्थूलसूक्ष्मशरीरोंकीअपेक्षाकरिकै उत्कृष्टहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! ताअज्ञानरूपकारणशरीरविषे कौनप्रमाणहै? ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु! यहसर्वदेहधारीजीवसु षुप्तितैंउठिकै याप्रकारकास्मरणकरैहैं ॥ जोहम सुखीसोतेभये तथाकिंचित्मात्रभी नहींजाणतेभये ॥ यासर्वलोकोंकेस्मरणतें यह

जान्याजावैहै ॥ जोयहजीव सुषुप्तिअवस्थाविषेजाइकै तहां सर्वदुःखोंतैंरहितआनंदकूंअनुभवकरैहै ॥ तथा अज्ञानकूंअनुभवकरैहै ॥ ताअनुभवजन्यसंस्कारोंतैंही याजाग्रत्अवस्थाविषे ताआनंदकी तथाअज्ञानकी स्मृतिहोवैहै ॥ यातैं याजीवोंकेजाग्रत्अवस्थाकेस्मरणरूपहेतुतैं अनुमानकर्‌याजोसुषुप्तिकाअनुभवहै ॥ ताजीवोंकेअनुभवकरिकैही सोअज्ञानरूपकारणशरीर सिद्धहोवैहै ॥ अब सूक्ष्मशरीरका निरूपणकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु! ताकारणअज्ञानविशिष्टआत्मादेवतैं आकाशादिकपंचसूक्ष्मभूत तथामनइंद्रियादिकभौतिकपदार्थ उत्पन्नहोवैहैं ॥ तिनसमष्टिसूक्ष्मपदार्थोंकाअभिमानीजोहिरण्यगर्भहै ॥ ताहिरण्यगर्भकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अधिदैव यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ और मनहैप्रधानजिसविषे ऐसाजोव्यष्टिसूक्ष्मकाअभिमानी तैजसहै ॥ तातैजसकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अध्यात्म यानामकरिकै कथनकरैहैं ॥ अब स्थूलशरीरकावर्णनकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु! तिनसूक्ष्मभूतोंतैं यहस्थूलभूत उत्पन्नहोवैहैं ॥ तथा स्थूलशरीरादिकभौतिकपदार्थ उत्पन्नहोवैहैं ॥ तिनसमष्टिस्थूलभूतभौतिकपदार्थोंकेअभिमानीदेवताकूं शास्त्रवेत्तापुरुष विराट् यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ और व्यष्टिस्थूलकेअभिमानीकूं शास्त्रवेत्तापुरुष विश्व यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ तहां विराट्तौअधिदैवरूपहै ॥ और विश्व अध्यात्मरूपहै ॥ अब जाग्रतादिकतीनअवस्थावोंकेआश्रयका निरूपणकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु! यासर्वदेहधारीजीवोंकूं भिन्नभिन्नरूपकरिकै जोआपणाआपणास्थूलशरीर प्रतीतहोवैहै ॥ सोयहस्थूलशरीरतौ जाग्रत्अवस्थाका स्थानहोवैहै ॥ और सूक्ष्मशरीर स्वप्नअवस्थाका स्थानहोवैहै ॥ और तास्वप्नअवस्थाकाआश्रयरूप जोअंतःकरणहै ॥ ताअंतःकरणकी दोअवस्थाहोवैहैं ॥ एकतौ स्वरूपतैंअभिव्यक्तिरूपअवस्थाहोवैहै ॥ और दूसरी संस्काररूपतैंस्थितिरूपअवस्थाहोवैहै ॥ ताअंतःकरणकीदोअवस्थावोंकेभेदकरिकै सास्वप्नअवस्थाभी दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां एकतौ सस्वप्नअवस्थाहोवैहै ॥ और दूसरी स्वप्नरहितअवस्थाहोवैहै ॥ तहां प्रसिद्धस्वप्नअवस्थाकूं सस्वप्नअवस्थाकहेहैं ॥ और प्रसिद्धसुषुप्तिअवस्थाकूं स्वप्नरहितअवस्थाकहेहैं ॥ जिससुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वदुःखोंकालयहोवैहै ॥ काहेतें? तासुषुप्तिअवस्थाविषे यहप्रतिबिंबरूपजीव आपणेबिंबरूपपरमात्मादेवविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव? परमआनंदस्वरूपहै ॥ तथा सर्वभेदतैंरहितहै ॥ याकारण

तैंही सोपरमात्मादेव क्षुधा पिपासा हर्ष शोक जन्म मरण याषट्ऊर्मियोंतैंरहितहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवविषे लयभावकूंप्राप्तहोइकै यहजीवभी सर्वदुःखोंतैंरहितहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे दर्पणरूपउपाधिकेलयहुए तादर्पणविषेस्थितप्रतिबिंब आपणेवास्तवस्व रूपबिंबविषेलयहोवैहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे तामनरूपउपाधिकेलयहुए तामनविषेस्थितप्रतिबिंबरूपजीव आपणेवास्तवस्व रूपपरमात्मादेवरूपबिंबविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेश्वेतकेतु! कोईक बुद्धिमान्पुरुष लौकिकदृष्टिकूंअंगीकारकरिकै याअव स्थाकूं स्वपिति यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ और कोईक विद्वान्पुरुषतौ याप्रकारकावचनकहेहैं ॥ यहस्वपितिनाम ताअवस्थाका वाचकनहींहै ॥ किंतु सोस्वपितिनाम तापरमात्मादेवकाहीवाचकहै ॥ काहेतैं? सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीवात्मा जिसआपणेवा स्तवस्वरूप परमात्मादेवकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसपरमात्मादेवकूं श्रुतिभगवती स्वमपीत यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और श्रेष्ठपुरु षोंकीन्यांई इंद्रादिकदेवतावोंकूं परोक्षनामहीप्रियहोवैहै ॥ याकारणतैं तेपरोक्षप्रियदेवता तापरमात्मादेवकूं स्वमपीत यासाक्षात् नामकरिकैकथनकरैंनहीं ॥ किंतु स्वपिति यापरोक्षनामकरिकैकथकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे जाग्रत्अवस्था तथास्वप्नअवस्था या मनकाही परिणामरूपहोवैहै ॥ तैसे सासुषुप्तिअवस्थाभी यामनकाही परिणामरूपहोवैहै ॥ काहेतैं? जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्व प्नअवस्थाविषे जोमन पूर्वादिकदशोंदिशाविषे भ्रमणकरैहै ॥ सोइहीमन ताभ्रमणकेपरिश्रमकरिकैयुक्तहुआ ॥ लयरूपसुषुप्ति अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे यालोकविषे किसीपुरुषनैं पंजरविषे दृढसूत्रकरिकैबांध्याहुआजोशकुनिपक्षीहै ॥ सोशकुनिपक्षी आहारकीकामनाकरिकै तापंजरकेआंतरदेशविषेही आपणेपक्षोंकूंचलायमानकरिकैउडेहै॥ ताकरिकै सोशकुनिपक्षी आहारकूंप्रा प्तहोइकै अथवा नहींप्राप्तहोइकै जबी परिश्रमकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोशकुनिपक्षी तापंजरकेमध्यदेशविषे आपणेबैठणेकेस्थान कूंप्राप्तहोइकै पूर्वभ्रमणकालकेदुःखतैंरहितहोइकै तथानिश्चलहोइकै लीनहुएपुरुषकीन्यांई तहांस्थितहोवैहै ॥ तैसे यहमनभी पुण्यपापकर्मरूपसूत्रकरिकै याशरीररूपपंजरविषे हृदयदेशविषेबांध्याहुआहै ॥ तथा रागरूपक्षुधाकरिकै उत्पन्नभयेजे अध्यात्म अधिदैव अधिभूत येतीनप्रकारकेदुःखहैं तिनदुःखोंकरिकैतपायमानहै ॥ ऐसामनरूपशकुनिपक्षी विषयसुखोंकीप्राप्तिवासते

जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे सर्वदा भ्रमणकरैहै ॥ ताभ्रमणकरिकै जबी सोमन अत्यंतपरिश्रमकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा ताजाग्रत्स्वप्नकेभोगदेणेहारेकर्मोंका जबीक्षयहोवैहै ॥ तबी सोमन तापरिश्रमकीनिवृत्तिकरणेवासते ताहृदयदेशविषे सुषुप्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेश्वेतकेतु ! तासुषुप्तिअवस्थाविषे कारणअज्ञानउपहित जोआनंदस्वरूप परमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेवही ताइंद्रियोंसहितमनके लयकास्थानहै ॥ ताअज्ञानउपहित परमात्मादेवतैंभिन्न दूसराकोईपदार्थ तामनकेलयकास्थाननहीं है ॥ यातैं यहमन ताअज्ञानउपहितपरमात्मादेवकूंछोडिकै दूसरेकिसीवस्तुकूं आश्रयणकरतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ तासुषुप्तिअवस्थाविषे सो मनतौ कारणअज्ञानविषेलयहोवैहै ॥ और तामनविषे स्थितप्रतिबिंबतौ परमात्मारूपबिंबविषेलयहोवैहै ॥ हेश्वेतकेतु ! सुषुप्तिअवस्थाविषे यहमन ताअज्ञानउपहितपरमात्मादेवतैंविना दूसरेपदार्थकूं आश्रयणकरैनहीं ॥ याअर्थविषे यहहेतु है ॥ आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न जितनेकीस्थूलसूक्ष्मपदार्थहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ मनकरिकैकल्पितहोणेतैं यामनकाहीकार्यरूपहैं ॥ और यालोकविषे जोजोकार्यहोवैहै सोसो कारणतैंपश्चात्भावीहीहोवैहै ॥ जैसे घटपटादिककार्य मृत्तिकातंतुआदिककारणोंतैं पश्चात्भावीहैं ॥ तैसे यहस्थूलसूक्ष्मपदार्थभी तामनरूपकारणतैंपश्चात्भावीहीहै ॥ ऐसेकार्यरूपपदार्थ तामनरूपकारणका किसप्रकार आश्रयहोवैंगे? किंतु नहींहोवैंगे ॥ हेश्वेतकेतु ! सोप्रतिबिंबसहितमन सुषुप्तिअवस्थाविषे जिसपरमात्मादेवविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोपरमात्मादेवही पूर्वउक्त तेज जल पृथिवी यातीनोंकाकारणहै ॥ तथा तिसीसत्परमात्मादेवविषे तुमनैं सर्वांतर्यामीपणा जानणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! परमात्मादेवकीप्राप्तिकरिकै याजीवोंके संसारबंधकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ यहवेदांतशास्त्रकासिद्धांतहै ॥ यातैं तासुषुप्तिअवस्थाविषे तापरमात्मादेवकीप्राप्तिहुएभी याजीवोंकूं पुनःसंसारकीप्राप्तिकिसवासते होवैहै? ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ! यद्यपि तासुषुप्तिअवस्थाविषे याजीवोंकूं परमात्मादेवकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तथापि तासुषुप्तिअवस्थाविषे तथामुक्तिअवस्थाविषे उतनीविशेषताहै ॥ यासुषुप्तिअवस्थाविषे कारणअज्ञानविषेलयभावकूंप्राप्तहुआभी यहमन सूक्ष्मसंस्काररूपकरिकैबाकीरहैहै ॥ याकारणतैंही सोमन जाग्रत्स्वप्नअवस्थाविषे पुनःउत्पन्नहोवैहै ॥ और मुक्तिअवस्थाविषे

तौ अधिष्ठानआत्माविषे लयभावकूंप्राप्तहुआसोमन पुनःउत्पन्नहोवैनहीं ॥ काहेतें ? तामुक्तिअवस्थाविषे आत्मज्ञानरूपअग्निकरि
के तामनकेसंस्कारोंकाआश्रयरूपअज्ञान नाशकूंप्राप्तहोवैहै॥ याप्रकारकाभेद तामुक्तिअवस्थाविषे तथासुषुप्तिअवस्थाविषे विद्यमा
नहै॥ यातें सुषुप्तिअवस्थाविषे तापरमात्मादेवकीप्राप्तिहुएभी पुनःसंसारकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ हेश्वेतकेतु! यहआत्मादेव यद्यपि स
र्वत्रएकहीहै॥ तथापि यासर्वजीवोंका सोमन एकनहींहै॥ किंतु तेमन अनेकहैं॥ और सुखदुःख बंधमोक्ष इत्यादिकसर्वधर्म मनके
हीहोवैहैं॥ यातें यालोकविषे कोईसुखीहै कोईदुःखीहै कोईबद्धहै कोईमुक्तहै इत्यादिकसर्वव्यवस्था बनिसकेहै॥ इतनेकरिकै मनविषे
स्थितजोचिदाभासहै ताचिदाभासका बिंबरूपत्वकरिकै ताआत्माविषे प्रत्यक्रूपता निरूपणकरी॥ अब शरीरकाअधिष्ठानत्वरूपक
रिकैताआत्माविषे प्रत्यक्रूपतानिरूपणरैहैं॥ इहां सर्वतैंअंतरपणेकानाम प्रत्यक्रूपताहै ॥ हेश्वेतकेतु! मुक्तिकीअपेक्षाकरिकै
किंचित्न्यूनतावाली जासुषुप्तिअवस्था हमनें तुमारेप्रति कथनकरीहै॥ सासुषुप्तिअवस्था जैसे वासनारूपमनद्वारा आनंदस्वरूपआ
त्माकेसंबंधवालीहै॥ तथा बिंबप्रतिबिंबकेएकताज्ञानरूपफलवालीहै॥ तैसे दूसरी स्वप्नजाग्रत्रूपअवस्थाभी तामनद्वारा आत्माके
संबंधवालीहै॥ तथा बिंबप्रतिबिंबकेएकता ज्ञानरूपफलवालीहै॥ हेश्वेतकेतु! वास्तवतैं सर्वनामरूपतैंरहितहुआभी यहआत्मादेव
तिसस्थूलशरीरकेअभिमानवालीजाग्रत्अवस्थाविषे तथासूक्ष्मशरीरकेअभिमानवालीस्वप्नअवस्थाविषे अशनाया उदन्या यादोनों
नामोंकूंप्राप्तहोवैहै॥ जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे सोआत्मादेव स्वपिति यानामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेश्वेतकेतु! अशनाया उदन्या येदो
नोंनाम जो आत्माविषेप्रवृत्तहोवैहैं॥ सो प्राणरूपउपाधिकूंलेकरिकैही प्रवृत्तहोवैहैं॥ काहेतें? याआनंदस्वरूपआत्माविषे साक्षात्
क्षुधाभीनहींहै॥ तथा पिपासाभीनहींहै॥ किंतु तेक्षुधापिपासा साक्षात्तौ प्राणविषेहीरहेहैं॥ और यहप्राण सर्वशरीरविषेव्याप
कहै॥ यातें यहप्राण सर्वजीवोंकेउदरविषेस्थितअन्नजलकूं नाडीद्वारा सर्वअंगोंविषेलेजावैहै॥ याकारणतें अशनाया उदन्या ये ।।२९॥
दोनोंनाम मुख्यवृत्तिकरिकै ताप्राणविषेहीघटेहैं॥ और ताप्राणकेसाथ आत्मादेवका तादात्म्यसंबंधहै ॥ यातें ताप्राण
द्वारा तेदोनोंनाम आत्माकेभीहोवैहैं॥ हेश्वेतकेतु! अशनाया उदन्या येदोनोंनाम यद्यपि आत्माकीअपेक्षाकरिकैतौ प्राण

विषेहीमुख्यहैं ॥ तथापि जल तेज यादोनोंकीअपेक्षाकरिकै तेदोनोंनाम ताप्राणविषेभी मुख्यनहींहै ॥ किंतु जलतेजविषेही ते दोनोंनाम मुख्यहैं ॥ काहेतें? भोजनकऱ्येहुए अन्नकूंतौ यहजलही द्रवीभावकरिकै लैजावैहै ॥ याकारणतें तिनजलोंकूं अशनाया यानामकरिकै कथनकरैहैं ॥ और पानकऱ्येहुएजलकूं यहशोषणकरणेहारातेज लैजावैहै ॥ याकारणतें तातेजकूं उदन्या यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ जैसे यालोकविषे जोपुरुष गौवोंकूंलैजावैहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं गोनाया यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ और जेपुरुष अश्वोंकूंलैजावैहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं अश्वनाया यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ तैसे यहजलभी द्रावकस्वभाववालेहोणेतें भक्षणकऱ्येहुए अन्नकूं लैजावैहै ॥ यातें तिनजलोंकूं श्रुतिभगवती अशनाया यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और यहतेज शोषणस्वभाववालाहोणेतें पानकऱ्येहुएजलकूंलैजावैहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ता तेजकूं उदन्या यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और याआनंदस्वरूपआत्मादेवका ताजलकेसाथ तथातेजकेसाथ तादात्म्यअध्यासहै ॥ याकारणतें ताजलतेजद्वारा सोआत्मादेवभी तिनदोनोंनामोंकरिकैकथनकऱ्याजावैहै ॥ अब तासत्परमात्मादेवविषे सर्वतेंअंतररूपता बोधनकरणेवासते प्रथम कार्यकारणोंके परंपराकावर्णन करैहैं ॥ हेश्वेतकेतु! तू प्रथम यास्थूलशरीरकूं कार्यरूपकरिकैजाण ॥ तिसतेंअनंतर तू अन्नकूं कार्यरूपकरिकैजाण ॥ तिसतेंअनंतर तू पृथिवीकूं कार्यरूपकरिकैजाण ॥ तिसतेंअनंतर तू जलकूं कार्यरूपकरिकैजाण ॥ तिसतेंअनंतर तू तेजकूं कार्यरूपकरिकैजाण ॥ हेश्वेतकेतु! शरीर १ अन्न २ पृथिवी ३ जल ४ तेज ५ यापंचकार्योंविषे जोपंचमातेजरूपकार्यहै ॥ तातेजरूपकार्यकातौ पूर्वउक्तसत्वस्तुही मूलकारणहै ॥ और सोतेज जलकामूलकारणहै ॥ और सोजल पृथिवीकामूलकारणहै ॥ और सापृथिवी अन्नका मूलकारणहै ॥ और जलतेजकरिकै परिणामकूंप्राप्तकऱ्याहुआ सोअन्न याशरीरकामूलकारणहै ॥ और हेश्वेतकेतु! जैसे लोकप्रसिद्धवृक्षोंका एकमूलहोवैहै ॥ और दूसरा अंकुरहोवैहै ॥ तैसे श्रुतिभगवतीनें शुंगपदकरिकै येशरीरादिकविकारतौ अंकुररूपकरिकैकथनकरैहैं ॥ और अन्नतेंलेके सत्यवस्तुपर्यंतपदार्थ मूलरूपकरिकैकथनकरैहैं ॥ यातें जैसे अंकुररूपलिंगकरिकै मूलकाअनुमानहोवैहै ॥ तैसे याशरीररूपकार्यकरिकै तू अन्नरूपमूलकारणकूंनिश्चयकर ॥ तथा ताअन्नरूपकार्यकरिकै तू पृथिवीरूपमूलका

रणकूंनिश्चयकर ॥ तथा तापृथिवीरूपकार्यकरिकै तू जलरूपमूलकारणकूंनिश्चयकर ॥ तथा ताजलरूपकार्यकरिकै तू तेजरूपमूल कारणकूंनिश्चयकर ॥ तथा तातेजरूपकार्यकरिकै तू तापरमात्मारूपमूलकारणकूंनिश्चयकर ॥ हेश्वेतकेतु! सोपरमात्मारूपसतव स्तुही यासर्वभूतभौतिकजगत्केउत्पत्तिकाकारणहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तासतवस्तुकूं मूल यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और सोसतवस्तुही यासर्वजगत्कीस्थितिकाकारणहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तासतवस्तुकूं आयतन यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और सोसतवस्तुही यासर्वजगत्केलयकाकारणहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तासतवस्तुकूं प्रतिष्ठा यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और वास्तवतैंतौ सोसतवस्तु मूल आयतन प्रतिष्ठा यातीनोंतेंरहितहै ॥ हेश्वेतकेतु! इसप्रकार जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअ वस्थाविषे क्षुधापिपासाकरिकैआतुर जोप्राणादिकउपाधिवालाजीवहै ॥ सोजीव पुण्यपापकर्मकेअनुसार सर्वदासुखदुःखकाहीअनु भवकरैहै ॥ इतनेकरिकै याशरीरकाअधिष्ठानत्वरूपकरिकै याआत्मादेवविषे प्रत्यक्रूपतानिरूपणकरी ॥ ताकरिकै त्वंपदार्थका शोधन सिद्धभया ॥ अब मरणकालविषे इंद्रियोंकीअधिष्ठानतारूपकरिकै ताआत्मादेवविषे प्रत्यक्रूपतावर्णनकरतेहुए ता तत्त्वं पदार्थका अभेदवर्णनकरैहैं ॥ तहां ॥ तत्त्वमसिश्वेतकेतो ॥ यहमहावाक्य नववार उद्दालकनैं श्वेतकेतुकेप्रति उपदेशकन्याहै ॥ ताकेविषे प्रथमवारमहावाक्यकेअर्थका निरूपणकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु! जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यापूर्वउक्ततीनअवस्थावोंविषे विचरणे हारा यहजीवात्मा अज्ञानकेवशतैं अनेकशरीरोंकूंग्रहणकरैहै ॥ तथा अनेकशरीरोंकापरित्यागकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! यहजी वात्मा किसप्रकार तिनशरीरोंकापरित्यागकरैहै? ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु! यहजीव जिसकालविषे मरणअवस्थाकेसमीपप्राप्तहो वैहै ॥ तिसकालविषे यहजीव आपणेपूर्वलेपापकर्मोंकास्मरणकरिकै पश्चात्तापकरैहै ॥ तथा तापुरुषकूं पुत्रादिकबांधव कठिनभूमिवि षेशयनकरावैहैं ॥ तथा सर्वबांधव तापुरुषकूं चारोंओरतैंवेष्टनकरिकैस्थितहोवैहैं ॥ तथा सोपुरुष हिडकीकरिकै तथाउच्चैःश्वासोंकरि कैयुक्तहोवैहै ॥ तथा तापुरुषके दोनोंनेत्र ऊपरिआकाशकीतरफ खुलिजावैहैं ॥ तथा तापुरुषकामुख लालाकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ ऐसी मरणअवस्थाकूंप्राप्तहुएपुरुषका जोनेत्रादिकइंद्रियोंसहित वाक्इंद्रियहै ॥ तावाक्इंद्रियकी आपणेकार्यकरणेकीसामर्थ्यरूपप्रवृत्ति

तापुरुषकेमनविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तामनकी आपणेकार्यकरणेकीसामर्थ्यरूपवृत्ति क्रियारूपप्राणकीवृत्तिविषेलयभाव कूंप्राप्तहोवैहै और साप्राणकीवृत्ति सूक्ष्मपंचभूतोंयुक्तजीवात्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सोपंचभूतोंसहितजीवात्मा सुषुप्तिकीन्यांई संस्कारस्वरूपबाकीरह्याहुआ मायाउपहित आनंदस्वरूपआत्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेश्वेतकेतु! सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे केवल संस्कारमात्ररूपबंधवाला जोयहजीवात्माहै ॥ ताजीवात्माका जोसत्वस्तु लयकास्थानहै ॥ तथा जोसत्वस्तु जीवरूपकरिकै यासंघातविषेप्रविष्टहुआहै ॥ तथा जोसत्वस्तु पूर्व तेजादिकभूतोंका कारणरूपकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ सोसत्वस्तुही तुमाराआत्माहै ॥ हेश्वेतकेतु! जोसत्वस्तु तुमाराआत्मारूपहै ॥ सोसत्वस्तु कैसाहै? सूक्ष्मपदार्थोंतैंभी अत्यंतसूक्ष्म है ॥ तथा कालआकाशादिकमहान्पदार्थोंतैंभी अत्यंतमहान्है ॥ और जैसे रज्जुविषेकल्पितजे सर्प दंड जलधारा आदिकहैं ॥ ते कल्पितसर्पादिक रज्जुमात्ररूपहीहैं ॥ तैसे तेजजलपृथिवीरूप यासर्वजगत्का सोसत्वस्तुही वास्तवस्वरूपहै ॥ हेश्वेतकेतु! ऐसा सर्वजगत्काअधिष्ठानरूपपरमात्मादेव तुमारेस्वरूपतैंभिन्ननहींहै किंतु सोपरमात्मादेव तू है ॥ देहादिकसंघातरूप तू नहीं है ॥ हेश्वेतकेतु! जोआत्मादेव बुद्धिआदिकोंकासाक्षिरूपकरिकै सर्वत्र प्रतीतहोवैहै ॥ तथा जोआत्मादेव अद्वितीयरूपहोणेतैं परमआनंदस्वरूपहै ॥ तथा जोआत्मादेव सर्वजडपदार्थोंकाप्रकाशकहोणेतैं स्वयंजोतिस्वरूपहै ॥ ऐसाआत्मादेवही तुमारावास्तवस्वरूपहै ॥ यातैं तूकर्तानहींहै ॥ तथा भोक्तानहींहै ॥ तथा प्रमातानहींहै ॥ हेश्वेतकेतु! तैंप्रियपुत्रकेताईं जोहमनैं यहहितकाउपदेशकऱ्याहै ॥ सोउपदेश तुमारेगर्वदोषकीनिवृत्तिकरणेहाराहै ॥ याकारणतैं ताउपदेशकूं हमनैं आदेश शब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ दुष्टपुरुषोंके प्रति जो राजादिक शासनाकरैहैं ताशासनाकानाम आदेशहै ॥ हेश्वेतकेतु! जिससर्वांतर्यामीआत्मादेवकाउपदेश हमनैं तुमारेप्रति कऱ्याहै ॥ तापरमात्मादेवके श्रवणतैं तथामननतैं तथाविज्ञानतैं सर्वअश्रुतपदार्थोंकाभी श्रवणहोवैहै ॥ तथा मननकेअविषय पदार्थोंकाभी मननहोवैहै ॥ तथा अविज्ञातपदार्थोंकाभी विज्ञानहोवैहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार जबी ताउद्दालकपितानैं ताश्वेतकेतु पुत्रकेप्रति जीवब्रह्मकेअभेदकाउपदेशकऱ्या ॥ तबी सोश्वेतकेतु संशययुक्तहोइकै पुनः ताउद्दालकपिताकेप्रति अष्टप्रश्न करताभ

या ॥ और सोउद्दालकपिताभी ताश्वेतकेतुपुत्रके संशयकीनिवृत्तिकरणेवासते तिनअष्टप्रश्नोंके यथाक्रमतें अष्टउत्तरकहताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन्! ताउद्दालकमुनिनें ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति ॥ तत्त्वमसिश्वेतकेतो ॥ याप्रथममहावाक्यकाउपदेशकरिकै जीवब्रह्मकाअभेद निश्चयकराया ॥ तामहावाक्यकेअर्थकूंजाणिकरिकैभी ताश्वेतकेतुकूं पुनःसंशय किसवासतेहोताभया? ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! महावाक्यकूंश्रवणकरिकैभी ताश्वेतकेतुकूं जोअष्टवार संशयहुआहै ॥ ताअष्टप्रकारकेसंशयोंविषे ताश्वेतकेतुके यहअष्टप्रकारकेकुतर्कही कारणहैं ॥ जिनअष्टकुतर्कोंकूं सोउद्दालकमुनि अष्टवारमहावाक्यकेउपदेशतें निवृत्तकरताभयाहै ॥ अब ताश्वेतकेतुके प्रश्नरूपअष्टकुतर्कोंकानिरूपणकरे हैं ॥ अथप्रथमप्रश्ननिरूपणं ॥ हेभगवन्! पूर्वआपनें सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे सर्वजीवोंकूं सत्वस्तुकीप्राप्तिकथनकरी ॥ याकेविषे हमारेकूं यहसंशयहोवै है ॥ जोकदाचित् सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे यासर्वजीवोंकूं तासत्वस्तुकीप्राप्तिहोतीहोवै तौ तेसर्वजीव तहां सत्वस्तुकूं हम प्राप्तहुएहैं याप्रकार तासत्वस्तुकूं किसवासते नहींजाणते? और तेसर्वजीव तहां सत्वस्तुकूंजाणतेनहीं ॥ यातें तासत्वस्तुकेप्राप्तहुएभी जो तासत्वस्तुकाअज्ञानहोवैहै ॥ याकेविषे आपनें कोईदृष्टांतकह्याचाहिये ॥ जिसदृष्टांतकरिकै ताहमारेसंशयकीनिवृत्तिहोवै ॥ १ ॥ अथ द्वितीयप्रश्ननिरूपणम् ॥ हेभगवन्! तासुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे वाकादिकसर्वइंद्रियोंकेलयहुएभी अविद्यारूपमाया तहां विद्यमानहै ॥ यातें जैसे यालोकविषे आपणेगृहतैंबाहरिआयेहुएपुरुषकूं मैंआपणेगृहतैंआयाहूं याप्रकारकाअनुभवहोवैहै ॥ तैसे तासुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीव तासत्वस्तुकूंप्राप्तहोइकै जबी जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी याजीवोंकूं हमसत्वस्तुतैं आयेहैं याप्रकारकाअनुभव किसवासतेनहींहोता? याहमारेशंकाकीनिवृत्तिकरणेवासतेभी आपनें कोईदृष्टांतकह्याचाहिये ॥ २ ॥ अथ तृतीयप्रश्ननिरूपणम् ॥ हेभगवन्! जैसे संपूर्णनदियां समुद्रविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे याजीवोंका सत्वस्तुविषेलयहोवैहै ॥ याप्रकार नदियोंकेदृष्टांतकरिकै जो याजीवोंका तासत्वस्तुविषेलय अंगीकारकरौगे तौ जैसे समुद्रविषे लयभावकूंप्राप्तहुईनदियोंका पुनः तासमुद्रतैंउद्भवहोतानहीं ॥ किंतु तेनदियां तासमुद्रकूं

प्राप्तहोइकै नाशकूंही प्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे यहजीवभी तासत्वस्तुकूंप्राप्तहोइकै नाशकूंही प्राप्तहोवैंगे ॥ तिनजीवोंकेनाशहुए तासत्ब्रह्मकीप्राप्ति किसकूंहोवैगी? याहमारीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतेभी आपनैं कोईदृष्टांतकह्याचाहिये ॥ ३ ॥ अथ चतुर्थप्रश्ननिरूपणं ॥ हेभगवन्! यहआत्मादेव अत्यंतसूक्ष्महै ॥ यातैं यहसूक्ष्मआत्मादेव यास्थूलजगत्काआधार किसप्रकारहोवैगा? याहमारीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतेभी आपनैं कोईदृष्टांतकह्याचाहिये ॥ ४ ॥ अथ पंचमप्रश्ननिरूपणं ॥ हेभगवन्! याअधिकारीपुरुषोंकूं यहआत्मादेव श्रद्धाकरिकैही प्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकावचन आपनैं कथनकऱ्याहै ॥ साश्रद्धा अनुभवकऱ्येहुएपदार्थविषेहीहोवैहै ॥ और जिसपदार्थका कदाचित्भी अनुभवनहींभया ॥ तिसपदार्थविषे शब्दभी प्रवेशकरिसकैनहीं तौ तिसपदार्थविषे साश्रद्धा किसप्रकारहोवैगी? याहमारीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतेभी आपनैं कोईदृष्टांतकह्याचाहिये ॥ ५ ॥ अथ षष्ठप्रश्ननिरूपणं ॥ हेभगवन्! यालोकविषे जोवस्तुकास्वरूप इंद्रियोंकरिकैग्रहणकरणेयोग्यहोवैहै ॥ सोइहीवस्तुकास्वरूप किसीइंद्रियकरिकैग्रहणकऱ्याजावैहै ॥ जैसे नेत्रादिकइंद्रियोंकाअविषयहुआभीरस रसनइंद्रियकरिकैग्रहणकऱ्याजावैहै ॥ और यहआत्मादेवतौ किसीभीइंद्रियकरिकैग्रहणकऱ्याजावैनहीं ॥ ऐसाइंद्रियोंकाअविषयआत्मा किसउपायकरिकैजान्याजावैहै? याहमारीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतेभी आपनैं कोईदृष्टांतकह्याचाहिये ॥ ६ ॥ अथ सप्तमप्रश्ननिरूपणं ॥ हेभगवन्! जैसे मरणकालविषे अज्ञानीजीवोंकेइंद्रियादिक सूक्ष्मरूपकरिकैस्थितहोवैहैं ॥ तैसे तामरणकालविषे जोकदाचित् विद्वान्पुरुषकेभीइंद्रियादिक सूक्ष्मरूपकरिकैरहतेहोवैं तौ जैसे मरणतैंअनंतर तिनअज्ञानीजीवोंका पुनःजन्महोवैहै ॥ तैसे ताविद्वान्पुरुषकाभी पुनः जन्म किसवासतेनहींहोता? याहमारीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतेभी आपनैं कोईदृष्टांतकह्याचाहिये ॥ ७ ॥ अथ अष्टमप्रश्ननिरूपणं ॥ हेभगवन्! जैसे मरणअवस्थाविषे तिनविद्वान्पुरुषोंकेवाकादिक निरवशेषलयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे अज्ञानीपुरुषोंकेभी तेवाकादिक निरवशेषलयकूं किसवासतेनहींप्राप्तहोते? यहहमारीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतेभी आपनैं कोईदृष्टांतकह्याचाहिये ॥ ८ ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सोश्वेतकेतु ताउद्दालकपिताकेप्रति आपणेसंशयकेजनावणेहारे अष्टप्र

श्नकरताभया ॥ आगेतैं सोउद्दालकमुनिभी ताश्वेतकेतुकेप्रति यथाक्रमतैं तिनअष्टप्रश्नोंकाउत्तरकहताभया ॥ तहां अब प्रथमप्र श्नकाउत्तर निरूपणकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे यालोकविषे मधुकरजंतु आपणेअपूपाकारगृहविषे नानाप्रकारकेवृक्षोंकेरसकूंलेजाइ कै तारसकूं मधुरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तकरैहैं ॥ तेमधुभावकूंप्राप्तहुए नानावृक्षोंकेरस मैं आम्रवृक्षकारसहूं ॥ जंबीरवृक्षकारस न हींहूं ॥ याप्रकार आपणेकूंजाणतेनहीं ॥ तैसे यासुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे तेनानाजातिवालेजीव तासत्वस्तुकूं प्रा प्तहोइकै तासत्वस्तुकेसाथ एकताभावकूंप्राप्तहुएभी आपणेआत्माकूं विशेषरूपकरिकै जाणतेनहीं ॥ इहां यहतात्पर्यहै ॥ मधुरूपदृष्टां तविषे जोआपणेस्वरूपकाअविवेकहै ॥ सो आपणेजडस्वभावतैंहीहै ॥ और दार्ष्टांतिकजीवविषे जोआपणेस्वरूपकाअविवेकहै ॥ सो आपणे स्वभावतैंनहींहै ॥ किंतु अविद्याकृतआवरणकरिकै सोअविवेककन्याहुआहै ॥ अथवा तामधुरूपदृष्टांतविषे तिनरसोंतैंभिन्न प्रमातापुरुषविषेस्थित जोअविवेकहै ॥ ताअविवेककातिनरसोंविषेआरोपणहोवैहै ॥ और दार्ष्टांतिकविषेतौ अज्ञानकरिकैआवृतजी वोंविषेही सोअविवेकमुख्यहै ॥ याप्रकार तादृष्टांतदार्ष्टांतिकविषे विशेषताकेहुएभी ताविशेषताकापरित्यागकरिकै केवलअज्ञानकी समानतामात्र तिनदोनोंविषेग्रहणकरीहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! तासुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीव जोकदाचित् तासत्वस्तुकेसाथएक ताकूं प्राप्तहोतेहोवै तौ तासुषुप्तितैंउठेहुएतिनजीवोंकूं पुनः तिसजातिवालेशरीरकीप्राप्ति नहींहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ हेश्वेत केतु! व्याघ्रसर्पादिकजे तामसजातिवालेजीवहैं ॥ तथा राजादिकजे राजसजातिवालेजीवहैं ॥ तथा ब्राह्मणादिकजे सात्त्विकजातिवा लेजीवहैं॥ तेसंपूर्णजीव जिसजिसशरीरवालेहुए जासुषुप्तिविषे सत्वस्तुकूंप्राप्तहोवैहैं॥ तेसंपूर्णजीव तासुषुप्तितैंउठिकै तिसीतिसी शरीरकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंविलक्षणशरीरकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं? जैसे वर्षाकालकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर सर्वमंडूक मृत्तिकाभावकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ परंतु तिनमंडूकोंकेसूक्ष्मअवयवरूपसंस्कार तापृथिवीविषेरहेहैं ॥ जबी पुनःवर्षाकालहोवैहै ॥ तबी तेमंडूक तिनसंस्का रोंकेवशतैं पुनः तिसीतिसीशरीरकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंविलक्षणशरीरकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे तासुषुप्तिअवस्थाविषे तिनसर्वजीवोंके लयहुएभी तिनजीवोंके वासनारूपसूक्ष्मसंस्कार तहांरहेहैं ॥ तिनसंस्कारोंकेवशतैंही तेजीव सुषुप्तितैंउठिकै तिसीतिसीशरीरकूंप्राप्त

होवैहैं ॥१॥ अब दूसरेप्रश्नकाउत्तरकहैहैं ॥ हेश्वेतकेतु ! जैसे यहगंगादिकनदियां आपणेनामरूपकापरित्यागकरिकै समुद्रभावकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ और तेनदियां पुनः मेघोंद्वारा वृष्टिरूपकरिकै तासमुद्रतैंबाहरिआइकैभी हमनदियां समुद्रतैं आइयांहै याप्रकार ते नदियां जाणतींनहीं ॥ तैसे येजीव तासुषुप्तिअवस्थाविषे तासत्ब्रह्मकूंप्राप्तहोइकैभी तासुषुप्तितैंउठिकै हम सत्ब्रह्मतैंआयेहैं याप्रकार जाणतेनहीं ॥ काहेतैं ! तासत्ब्रह्मकीप्राप्तिकालविषे जिसमूलाज्ञाननें तासत्ब्रह्मकेभानका प्रतिबंधकऱ्याथा ॥ सोमूलाज्ञान याजाग्रत्अवस्थाविषेभी विद्यमानहै ॥ ताअज्ञानकरिकैमोहितहुएयेजीव तासत्ब्रह्मकूं जाणिसकतेनहीं ॥ २ ॥ अब तृतीयप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु ! येजीव जिसजातिवालेहुए तासुषुप्तिअवस्थाविषे जासत्वस्तुकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तासत्वस्तुतैंआइकै तिसीजातिवाले होवै हैं ॥ तिसतैंभिन्नजातिवाले होवैंनहीं ॥ काहेतैं ? जोजोजीव तासुषुप्तिअवस्थाविषे सत्वस्तुकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहुएथे ॥ तिनजीवोंका जोकदाचित् उत्थाननहींहोताहोवै तौ सुषुप्तिविषे तासत्वस्तुविषेलयमात्रकरिकैही दिनदिनविषे तिनजीवोंकेदेहकापातहोणाचाहिये ॥ और ऐसादेखणेविषेआवतानहीं ॥ यातैं जे जीव तासुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तेजीवही तासुषुप्तितैंउठैहैं ॥ किंवा याजीवकानाश किसीभीपुरुषनैंदेख्यानहीं ॥ किंतु जिसजिसपदार्थकूं यह जीव परित्यागकरैहै ॥ तिसीतिसीपदार्थकानाश देखणेविषेआवैहै ॥ जैसे वृक्षविषेस्थितजोजीवहै ॥ सोजीव तावृक्षकीशाखावोंविषे जिसजिसशाखाकापरित्यागकरैहै ॥ तिसतिसशाखाका शोषणहोइजावैहै ॥ ताजीवतैंरहितहुई कोईभीशाखा जीवनकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! जैसे ता वृक्षविषेस्थितजीव जिसशाखाकापरित्यागकरैहै ॥ ताशाखाविषे जोकदाचित् दूसराकोई जीव प्रवेशकरैहै तौ साशाखा सूकतीनहीं ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीव तासत्ब्रह्मकूंप्राप्तहोइकै यद्यपि मुक्तहोइजावैहै ॥ तथापि कोईदूसराजीव याशरीरविषेप्रवेशकरिकै याशरीरकूंउठावैहै ॥ याकारणतैं दिनदिनविषे याशरीरकापातहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ! तावृक्षकेशाखाकीन्यांई जोकदाचित् सुषुप्तिकालविषे याशरीरविषे दूसराकोईजीवप्रवेशकरिकै याशरीरकूंउठावताहोवै तौ यालोकविषे किसीभीशरीरकानाश नहींहोणाचाहिये ॥ काहेतैं ? जोदूसराजीव सुषुप्तितैंअनंतर याशरीरविषेप्रवेश

करिकै याशरीरकूंउठावैहै ॥ सोदूसराजीव मरणतैंअनंतरभी याशरीरविषेप्रवेशकरिकै याशरीरकूंउठावैगा ॥ यातैं यालोकविषे कि
सीभीशरीरकानाश नहींहोवैगा ॥ सोऐसा देखणेविषेआवतानहीं ॥ यातैं जोजीव तासुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोईहीजीव ता
सुषुप्तितैंउठेहै ॥ कोईदूसराजीव उठैनहीं ॥ हेश्वेतकेतु ! जैसे जोजीव सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोईहीजीव तासुषुप्तितैंउठेहै ॥
तैसे जोजीव मरणअवस्थाविषे तासतब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोईहीजीव तामरणअवस्थातैंअनंतर पुण्यपापकर्मोंकेवशतैं दूसरेशरी
रकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताजीवतैंभिन्नकोईदूसराजीव तादूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ इसप्रकार ताजीवरूपअधिकारीकूं नित्यहोणेतैं मो
क्षशास्त्रकीभी व्यर्थताहोवैनहीं ॥ तथा कृतनाश अकृताभ्यागमरूप दोषकीभी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ ३ ॥ अब चतुर्थप्रश्नकाउत्तर निरू
पणकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु! जैसे यालोकविषे अत्यंतसूक्ष्म जोवटकाबीजहै ॥ सोवटकाबीज महान्वटकेवृक्षकाआधारहोवैहै ॥ काहे
तैं? सोवटकावृक्ष आपणीउत्पत्तितैंपूर्व जोकदाचित् तावटकेविषे अत्यंतअसत्होवै तौ अत्यंतअसत्पदार्थकी कदाचित्भी उ
त्पत्तिहोतीनहीं ॥ जैसे अत्यंतअसत्वंध्यापुत्रकी कदाचित्भी उत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं सोमहान्वृक्ष आपणीउत्पत्तितैंपूर्व ताबी
जविषेरहेहै ॥ परंतु ताबीजदशाविषे सोवटकावृक्ष ताबीजविषे स्कंध शाखा पत्र इत्यादिकभेदकरिकैप्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे याज
गत्केसूक्ष्मसंस्कारोंयुक्तजामायाहै ॥ तामायाउपहित यहआत्मादेव सूक्ष्महुआभी याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व यासर्वजगत्काआधा
रहोवैहै ॥ परंतु याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वकालविषे सोआत्मादेव विद्यमानहै याप्रकारकानिश्चय शास्त्रदृष्टितैंरहितपुरुषोंकूंहोवैनहीं ॥
किंतु ॥ सदेवसोम्येदमग्रआसीत् ॥ इत्यादिकशास्त्ररूपीचक्षुवालेविद्वान्पुरुषोंकूंही सोनिश्चयहोवैहै ॥ ४ ॥ अब पंचमप्रश्नकेउत्त
रकानिरूपणकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु! यासर्वजगत्काउपादानकारणरूप जोआत्मादेवहै ॥ सोआत्मादेव यद्यपि प्रत्यक्षादिकलौकिक
प्रमाणोंकरिकैजान्याजावैनहीं ॥ तथापि यहआत्मादेव गुरुशास्त्रकेवचनोंविषेविश्वासरूपश्रद्धाकरिकै जान्याजावैहै ॥ जैसे जलवि
षेस्थितजोलवणहै ॥ सोलवण यद्यपि चक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकैजान्याजावैनहीं ॥ तथापि रसनइंद्रियकरिकै सोलवण जान्याजावै
है ॥ तैसे यहआत्मादेव यद्यपि यासर्वजडप्रपंचविषे विद्यमानहै ॥ तथापि गुरुशास्त्रकेवचनोंविषे विश्वासरूपश्रद्धातैंरहितपुरुष या

आत्मादेवकूंजाणिसकतेनहीं किंतु गुरुशास्त्रकेवचनोंविषे श्रद्धावान्पुरुषही तत्त्वंपदार्थकाशोधनकरिकै याआनंदस्वरूपचै तन्यआत्माकूं साक्षात्कारकरैहैं ॥ ५ ॥ अब षष्ठेप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु! यद्यपि यालोकप्रसिद्धइंद्रियादिकउपायों करिकै याआत्मादेवकासाक्षात्कारहोवैनहीं ॥ तथापि ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशरूपअपूर्वउपायतैं याआत्मादेवकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ जैसे गांधारदेशविषेरहणेहारेकिसीपुरुषकूं कोईचौरपुरुष महान्वनविषेलेआइके तापुरुषकेदोनोंनेत्रोंकूंबांधिकै तावनविषेछोडते भये ॥ और सोपुरुष पुनःआपणेगांधारदेशकेप्राप्तिकीइच्छाकरताहुआ अत्यंतदुःखकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तामहान्वनविषेदुःख कूंप्राप्तहुआसोपुरुष इसमहान्वनविषे मेरेकूं चौर गांधारदेशतैं लेआयेहैं याप्रकारकेआपणेवृत्तांतकूं ऊचैःस्वरतैंपुकारताभया ॥ ऐसेमहान्वनविषेपुकारतेहुएपुरुषकेसमीप कोईमार्गविषेचलणेहारा दयालुपुरुष आवताभया ॥ सोदयालुपुरुष तापुरुषकूं वनवि षे दुःखीदेखिकरिकै तापुरुषकेदोनोंनेत्रोंकूंखोलताभया ॥ और तापुरुषकेप्रति सोदयालुपुरुष याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेपु रुष! इसदिशाविषेस्थितगांधारदेशतैं तू आयाहै ॥ यातैं तू इसीदिशाविषे सुखपूर्वकचल्याजाव ॥ इसप्रकार तादयालुपुरुषकेवच नोंकूंश्रवणकरिकै परमहर्षकूंप्राप्तहुआसोपुरुष तादयालुपुरुषकेवचनविषेविश्वासराखिकै तादिशाविषेचलताहुआ शनैःशनैःकरिकै ताआपणेगांधारदेशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार यहबुद्धिमान्अधिकारीपुरुषभी ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं आपणेआत्मरूपदेशकूंप्रा प्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ याअधिकारीपुरुषकूं कामक्रोधादिकचौरोंनैं आपणेआत्मरूपदेशतैंलेआइके संसाररूपवनविषेप्राप्तकर्‍या है ॥ तथा तिनकामक्रोधादिकचौरोंनैं यापुरुषकेसाक्षिरूपनेत्रोंका अज्ञानरूपीदृढबंधनकर्‍याहै ॥ ताकरिकै यहजीव यासंसाररूपवन विषे सर्वदाभ्रमणकरताहुआ परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसेसंसाररूपवनविषे ब्रह्मवेत्तागुरुरूपदयालुपुरुष जबी महावाक्यरूपआ पणेहस्तकरिकै याअधिकारीपुरुषकेसाक्षिरूपनेत्रका अज्ञानरूपीबंधन खोलेहै ॥ तबी अज्ञानरूपआवरणतैंरहितहुआ यहअधि कारीपुरुष आपणेअद्वितीयआत्मरूपदेशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं तिनकामक्रोधादिकचौरोंकूं यासंसाररू पवनकेप्राप्तिकाहेतुरूपजाणिकै सोअधिकारीपुरुष पुनः कबीभी तिनकामक्रोधादिकचौरोंकेवशहोवैनहीं ॥ यातैंब्रह्मवेत्तागुरुकाउ

पदेशही याआनंदस्वरूपआत्माकेप्राप्तिकाउपायहै ॥ ६ ॥ अब सप्तमप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु! मरणकालविषे वाकादिकइंद्रियोंका मनादिकोंविषे स्वरूपतैंलयहोवैनहीं ॥ किंतु आपणेवृत्तिरूपकरिकैलयहोवैहै ॥ संस्काररूपकरिकै तिनवाकादिकोंकास्वरूप तामरणकालविषेभीबन्यारहैहै ॥ यहवार्त्ताजो हमनैं पूर्वतुमारेप्रतिकथनकरीथी ॥ सोअज्ञानीपुरुषोंकेमरणकेअभिप्रायतैं कथनकरीथी ॥ और विद्वान्‌पुरुषोंकेतौ ब्रह्मज्ञानकेप्रभावतैं तामरणकालविषे आपणेआपणेव्यापारसहित सर्ववाकादिकप्रपंच स्वरूपतैंहीलयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं सोविद्वान्‌पुरुष अज्ञानीजीवोंकीन्यांई पुनःशरीरकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेश्वेतकेतु! विद्वान्‌पुरुषकेमरणविषे तथाअज्ञानीपुरुषकेमरणविषे यहजोहमनैं विशेषताकही है ॥ सोशास्त्रदृष्टिकूं अंगीकारकरिकैकही है ॥ और लोकदृष्टिकरिकैतौ विद्वान्‌पुरुषोंकामरण तथाअज्ञानीपुरुषोंकामरण तुल्यही है ॥ काहेतें? यहअज्ञानीपुरुष जबी मरणकेसमीप प्राप्त होवैहै ॥ तबी तापुरुषकूं आपणे मातापितादिकबांधव चारोंओरतैंवेष्टनकरिकै रुदनकरैहैं ॥ और तेबांधव तामरणहारेपुरुषकेप्रति याप्रकारकेवचनकहैहैं ॥ हेपुत्र! प्राणकेसमानप्रिय मैंमाताकूं तू जानताहै? हेभ्राता! प्राणोंकेसमानप्रिय मैंभ्राताकूं तू जानताहै? इत्यादिकबांधवोंकेवचन सोपुरुष तबपर्यंत श्रवणकरैहै ॥ जबपर्यंत तापुरुषकेवाकादिकइंद्रिय लयभावकूंनहींप्राप्तभये ॥ तिनवाकादिकइंद्रियोंकेलयहुएतैंअनंतर सोपुरुष किसीभीवस्तुकूंजाणतानहीं ॥ इसप्रकार सोविद्वान्‌पुरुषभी जबी मरणकेसमीपकालकूंप्राप्त होवैहै ॥ तबी तिनवाकादिकइंद्रियोंकेलयपर्यंततौ तिनबांधवोंके नानाप्रकारकेवचनोंकूंश्रवणकरैहै ॥ और तिनवाकादिकइंद्रियोंकेलय हुएतैंअनंतर सोविद्वान्‌पुरुषभी किसीवस्तुकूंजाणिसकतानहीं ॥ इसप्रकार लोकदृष्टिकरिकै ताविद्वान्‌केमरणविषे तथाअविद्वान्‌केमरणविषे समानताहुएभी यहमहान्‌विशेषताहै जो विद्वान्‌पुरुषतौ पुनः जन्मकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और अज्ञानीपुरुष पुनः जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ७ ॥ अब अष्टमप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु! विद्वान्‌पुरुषके तथाअविद्वान्‌पुरुषके मरणअवस्थाकेसमानहुएभी यहविद्वान्‌पुरुषतौ मरणतैंअनंतर पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और अविद्वान्‌पुरुष मरणतैंअनंतर पुनः जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकीविशेषताविषे यहहेतुहै ॥ सोविद्वान्‌पुरुषतौ सत्यस्वरूपआत्मादेवकूंहीजानेहै ॥ और अविद्वान्‌पुरुषतौ मिथ्यारूपतीनशरीरोंकूंही

आत्मरूपकरिकैजानेहैं ॥ याकारणतेंही सोविद्वान्पुरुषतौ सत्यआत्मादेवकेसाक्षात्कारकरिकै मायारूपपाशतेंरहितहुआ मरणकालविषे वाकादिकइंद्रियोंकेलयतेंअनंतर पुनः जन्मकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और सोअविद्वान्पुरुषतौ मिथ्यातीनशरीरोंकूं आत्मरूपकरिकैजाणताहुआ तामरणकालविषे वाकादिकइंद्रियोंकेलयतेंअनंतर संस्कारोंकेवशतें पुनः शरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेश्वेतकेतु ! या लोकविषेभी जिसपुरुषका सत्यविषेअभिप्रायहोवैहै ॥ सोपुरुष जोकदाचित् किसीमिथ्याकलंककूंभीप्राप्तहोवैहै ॥ तौभी सोसत्यवादीपुरुष तामिथ्याकलंकतें मुक्तहीहोवैहै ॥ और जिसपुरुषका मिथ्याविषेअभिप्रायहोवैहै ॥ सोमिथ्यावादीपुरुष दुःखकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ जैसे यालोकविषे एकचोरपुरुषथा ॥ और दूसरा साधुपुरुषथा ॥ तिनदोनोंपुरुषोंकूं राजाकेभृत्योंनें बलात्कारसें ग्रहणकऱ्या ॥ और येदोनोंपुरुष चौरहैं यातें दंडदेणेकूंयोग्यहैं याप्रकार तेराजाकेभृत्य निश्चयकरतेभये ॥ और तेभृत्य तिन दोनोंपुरुषोंकूं राजाकीसभाविषेलेजातेभये ॥ तासभाविषेजाइकै सोचोरपुरुष मैंचौरनहींहूं याप्रकार पुकारताभया ॥ और सोसाधुपुरुषभी मैंचौरनहींहूं याप्रकार पुकारताभया ॥ तिनदोनोंकेवचनकूंश्रवणकरिकै तिनराजाकेप्रधानभृत्योंकूं याप्रकारका संशय होताभया ॥ जोइनदोनोंविषे कौनचौरहै कौनसाधुहै ? ॥ तासंशयकेनिवृत्तकरणेवासते तेराजाकेभृत्य अग्निविषे लोहकेपरशुकूं तपाइकै तिनदोनोंकेहस्तोंविषेदेतेभये ॥ तहां जोसत्यवादीसाधुपुरुषथा ॥ सो तातप्तपरशुकरिकै दाहकूंनहींप्राप्तहोताभया ॥ और जेमिथ्यावादीचौरथा ॥ सो तातप्तपरशुकरिकै दाहकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिनदोनोंविषे तातप्तपरशुकेग्रहणतें तासाधुपुरुषकेहस्तोंकूं नहींदग्धहुआदेखिकै तेराजाकेभृत्य तासाधुपुरुषकूं सत्यवादीजाणिकै छोडिदेतेभये ॥ और तातप्तपरशुकेग्रहणतें ताचौरपुरुषकेहस्तोंकूंदग्धहुआदेखिकै तेराजाकेभृत्य ताचौरपुरुषकूं मिथ्यावादीजाणिकै ताकूं बंधनगृहविषेप्राप्तकरतेभये ॥ तथा ताडनाकरतेभये ॥ इसप्रकार विद्वान्पुरुषके तथाअविद्वान्पुरुषके मरणकेसमानहुएभी सत्यआत्माकूंजानणेहाराजोविद्वान्पुरुषहै ॥ ताविद्वान्पुरुषकेवाकादिकइंद्रियतौ तामरणकालविषे स्वरूपतेंहीलयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याकारणतें सोसत्यात्मवादीविद्वान्पुरुषतौ पुनःजन्मादिकदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और मिथ्यादेहादिकोंकूंही आत्मरूपजानणेहारा जोअविद्वान्पुरुषहै ॥ ताअविद्वान्पुरुषके

वाकादिकइंद्रिय तामरणकालविषे स्वरूपतैंलयभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु संस्काररूपहोइकैरहेहैं ॥ याकारणतैं सोमिथ्यावादीअवि द्वान्पुरुष वारंवार जन्मादिकदुखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सोउद्दालकपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति ॥ तत्त्वमसिश्वेत केतो ॥ याप्रकारकामहावाक्य नववार उपदेशकरताभया ॥ तापिताकेउपदेशकूंश्रवणकरिकै संशयतैंरहितहुआ सोश्वेतकेतु ता नवमेवचनविषे प्रथमवचनविषेकथनकन्येहुएआत्माकेवास्तवस्वरूपकूं साक्षात्कारकरताभया ॥ हेशिष्य! इसप्रकार पिताकेउपदे शतैं आत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकै सोमहान्तेजवालाश्वेतकेतु किंचित्कालपर्यंत आपणेगृहविषे निवासकरताभया॥ तिसतैंअनंतर सो श्वेतकेतु! परमवैराग्यकूंप्राप्तहोइकै आपणेउद्दालकपिताकीन्यांई परमहंससंन्यासकूंग्रहणकरताभया ॥ हेशिष्य! सोउद्दालकमुनि ताश्वेतकेतुपुत्रकूं अत्यंतबुद्धिमान्जाणिकै ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति ताआत्मरूपसत्ताविषे सुखरूपता नहींउपदेशकरताभया॥ काहे तें? जोसूक्ष्मबुद्धिवालापुरुषहोवैहै ॥ सो नहींकहेहुएअर्थकूंभी आपेहीजानिलेवैहै ॥ और ताश्वेतकेतुनें ताउद्दालकपिताकेप्रति यहकारणरूपसत्ता सुखरूपहै अथवा सुखरूपनहींहै याप्रकारकाप्रश्नभी नहींकन्याथा ॥ याकारणतैंभी सोउद्दालकमुनि ताश्वेत केतुपुत्रकेप्रति ताआत्मरूपसत्ताविषे सुखरूपता नहींकथनकरताभया ॥ और पूर्व नारदमुनिकेप्रश्नकरिकै संतोषकूंप्राप्तभयाजो भगवान्सनत्कुमारहै ॥ सोभगवान्सनत्कुमारतौ तानारदमुनिकेतांई विनाहीपूछेतें ताआत्मरूपसत्ताकीसुखरूपता कथनकरता भयाहै ॥ हेशिष्य! पूर्व जोतुमनैं श्वेतकेतुकेअज्ञानकाकारणपूछाथा सोहमनैं तुमारेप्रति कथनकन्या ॥ तथा ताश्वेतकेतुकूं पुनः उद्दालकपिताकेउपदेशकरिकै जिसप्रकार आत्मज्ञानकीप्राप्तिभयीथी ॥ सोभी हमनैं तुमारेप्रति कथनकन्या॥ अब जिसअर्थके श्रवणकरणेकीतुमारेकूंइच्छाहोवै ॥ सो हमारेसैंपूछो ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशि ष्येणस्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतात्मपुराणे छांदोग्यसारार्थप्रकाशे आरुणिश्वेतकेतुसंवादो नाम द्वादशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १२ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्यो नमः ॥ ॥ ॥ ॥

॥ इति द्वादशोऽध्यायः समाप्तः ॥

अथ आत्मपुराणेश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां
त्रयोदशोऽध्यायप्रारंभः॥ १३ ॥

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ त्रयोदशाध्यायप्रारंभः ॥ पूर्वद्वादशाध्यायविषे सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्केषष्ठअध्यायकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ अब यात्रयोदशाध्यायविषे तिसीछांदोग्यउपनिषद्के सप्तमअध्यायकाअर्थ निरूपणकरेंहैं ॥ इसप्रकार सोशिष्य! गुरुकेमुखतें आपणेआत्माकीब्रह्मरूपताकूंश्रवण करिकै पुनःप्रश्नकरणेकीकामनाकरताहुआ याप्रकारकावचनकहताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन्! याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे आपनें ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमअध्यायविषे सनकादिकमुनि वामदेवादिकअधिकारीपुरुषोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरतेभये ॥ तथा वामदेवमुनि माताकेगर्भविषेस्थितहोइकै तिनअधिकारीजनोंकेप्रति आपणास्वात्मभाव कथनकरताभया ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकीवार्त्ता आपनें ताप्रथमअध्यायविषे कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअध्यायविषे आपनें तिसीऋग्वेदके कौषीतकिउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां याआत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषेतौ देवराजइंद्र प्रतर्दनराजाकेप्रति प्राणप्रज्ञारूपकरिकै आत्माकाउपदेशकरताभया ॥ और याआत्मपुराणकेतृतीयअध्यायविषे अजातशत्रुराजा बालाकिब्राह्मणकेप्रति तिनप्राणादिकोंतैंभिन्नकरिकै आत्माकाउपदेशकरताभया ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषे आपनें यजुर्वेदके बृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां चतुर्थअध्यायविषेतौ दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंविषेस्थितऋषियोंका परस्परभेद तथापरस्पर अभेद वर्णनकऱ्याथा ॥ और दध्यङ्अथर्वण देवराजइंद्रकेप्रति ब्रह्मविद्या उपदेशकरताभया ॥ ताब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिकै सोइंद्र उलटा तादध्यङ्ऋषिऊपरि क्रोधवान्होइकै ताब्रह्मविद्याकेनहींउपदेशकरणेकीआज्ञाकरताभया ॥ और सोदध्यङ्ऋषि आपणेप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासते साब्रह्मविद्या अश्विनीकुमारोंकेप्रति उपदेशकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोइंद्र तादध्यङ्ऋषिकामस्तक छेदनकरताभया ॥ और तेअश्विनीकुमार ब्रह्मविद्याकेलोभकरिकै आपणेगुरुकेमस्तककूंकाटिकै अश्वकीग्रीवाऊपरि राखतेभये ॥ और अश्वकामस्तककाटिके आपणेगुरुकीग्रीवाऊपरि राखतेभये ॥ इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकीवार्ता

आपनैं ताचतुर्थअध्यायविषेकथनकरीथी ॥ और हे भगवन्! याआत्मपुराणकेपंचमेअध्यायविषे आपनैं यहवार्ताकथनकरीथी ॥ जो जनकराजाकेयज्ञसभाविषे आश्वलादिकब्राह्मण याज्ञवल्क्यमुनिकेजीतणेकीइच्छाकरिकै तायाज्ञवल्क्यमुनिकेसाथ अनेकप्रकारकाविवादकरतेभये ॥ तथा तासभाविषे याज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरिकै शाकल्यब्राह्मणकामृत्युहोताभया ॥ और हे भगवन्! या आत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे आपनैं यहवार्ता कहीथी ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि ताजनकराजाकेप्रति दोवार ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै ताजनकराजाकूं कृतकृत्यभावकीप्राप्तिकरताभया ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे आपनैं यहवार्ता कथनकरीथी ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेमैत्रेयीस्त्रीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै तामैत्रेयीकूं कृतकृत्यभावकीप्राप्तिकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनि संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरताभया ॥ और हेभगवन्! या आत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताअष्टमअध्यायविषे आपनैं यहवार्ताकथनकरीथी ॥ संपूर्णसंन्यासी याजगत्केकारणविषे विवादकरिकै श्वेताश्वतरमुनिकेआश्रमविषेजातेभये॥ तिनसंन्यासियोंकेप्रतिसोश्वेताश्वतरमुनिपूर्ववेदवेत्ताब्राह्मणोंकाआख्यानकहिकै याजगत्केकारणकानिश्चयकरावताभया ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेनवमेअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तानवमअध्यायविषे आपनैं यहवार्ता कथनकरीथी ॥ पिताकेसत्यवचनकरणेवासते नचिकेता यमराजाकेलोकविषेजाताभया ॥ तानचिकेताकेधैर्यकूंदेखिकैप्रसन्नहुआसोयमराजा तानचिकेताकेप्रति संपूर्णब्रह्मविद्या उपदेशकरताभया ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेदशमेअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदकेतैत्तिरीयकउपनिषद्का तथानारायणीयउपनिषद्का अर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादशमअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ भृगुऋषि आपणेवरुणपिताकेसमीपजाइकै ब्रह्मविद्याकीप्रार्थनाकरताभया ॥ और सोवरुणपिता ताभृगुपुत्रकेप्रति साब्रह्मविद्याउपदेशकरताभया ॥ और वेननामागंधर्व आपणेसर्वात्मभावकाअनुभवकहताभया ॥ तथा सत्यादिक सर्वसाधनोंविषे संन्यासआश्रमकी अधिकता वर्णन करीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके

एकादशअध्यायविषे आपनैं जाबालादिकएकादशउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताएकादशअध्यायविषे आपनैं यह वार्ता कथनकरीथी ॥ तापरमहंससंन्यासकूं पूर्व संवर्त्तकादिकमहात्मापुरुष ग्रहणकरतेभयेहैं ॥ और तापरमहंससंन्यासकेग्रहण विषे वैराग्यहीकालहै ॥ तावैराग्यकीउत्पत्तिविषे गर्भउपनिषद्काविचार तथामरणकेचिन्होंकाज्ञान तथाअष्टांगयोग इत्यादिक उपायकारणहैं ॥ और तापरमहंससंन्यासविषे वैराग्यवान्पुरुषही अधिकारीहै ॥ और तापरमहंससंन्यासीका शिखासूत्रादिकों तैंरहितपणा बाह्यआचारहै ॥ और अहिंसादिकधर्म आंतरआचारहै ॥ और तापरमहंससंन्यासीकामुख्यधर्मतौ आत्मज्ञानहीहै ॥ सोआत्मज्ञानतौ ब्रह्मउपनिषदादिकोंविषे आपनैं कथनकऱ्याथा ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेद्वादशअध्यायविषे आपनैं सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्केषष्ठेअध्यायकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताद्वादशेअध्यायविषे आपनैं यहवार्ता कथनकरीथी ॥ उद्दालकमुनि श्वेतकेतुपुत्रकेसंशयकीनिवृत्तिकरणेवासते॥तत्त्वमसिश्वेतकेतो॥यामहावाक्यका नववार उपदेशकरताभया ॥ ताउपदेशकूंश्रवणकरिकै ॥ सोश्वेतकेतु संशयतैंरहितआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोताभया ॥ हेभगवन्! ताद्वादशअध्यायकेअंतविषे आपनैंयहकह्याथा॥जो उद्दालकमुनि श्वेतकेतुपुत्रकूंबुद्धिमान्जानिकै ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति विनापूछेतैं आत्माकीसुखरूपता नहींकथनकरताभया॥ और पूर्वसनत्कुमारतौ नारदमुनिकेप्रति विनाहीपूछेतैं साआत्माकीसुखरूपताकथनकरताभयाहै ॥ हेभगवन्! तासनत्कुमारनैं नारदमुनिकेप्रति जाब्रह्मविद्या उपदेशकरीथी ॥ साब्रह्मविद्या मैं आपकेमुखतैंश्रवणकरणेकीइच्छाकरताहूं॥आप कृपाकरिकै साब्रह्मविद्या हमारेप्रति उपदेशकरो॥इसप्रकार ताश्रद्धावान्शिष्यकरिकैपूछाहुआ सोश्रीगुरु ताशिष्यकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! पूर्वएककालविषे संसारकेतापकरिकैतप्तहुआ नारदमुनि एकांतदेशविषेस्थितसनत्कुमारोंकेसमीपजाइकै याप्रकारकावचन कहताभया ॥ नारदउवाच ॥ हेभगवन्! जोब्रह्म यासर्वजगत्का अधिष्ठानहै ॥ तथा जोब्रह्म सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ तथा जिसब्रह्मकेज्ञानतैं विद्वान्पुरुष कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकअध्यासरूपसर्वशोकोंकूंतरेहैं ॥ ताब्रह्मकेस्वरूपकूं आप भलीप्रकारसैंजाणतेहो ॥ यातैं हेभगवन्! जोब्रह्मज्ञान सर्वशोकोंकेनिवृत्तिकाकारणहै सोब्रह्मज्ञान मैंशिष्यकेप्रति आप कृपाकरिकै

उपदेशकरो ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकावचन जबी तानारदमुनिनैं भगवान्‌सनत्कुमारकेप्रति कह्या ॥ तबी सोभगवान्‌सनत्कुमार मंदमंदहसताहुआ तानारदकेअज्ञानकीनिवृत्तिकरणेवासते याप्रकारकावचन कहताभया ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद! तू सर्व लोकोंविषे सर्वज्ञतारूपकरिकैप्रसिद्धहै ॥ यातें तुमारेकूं जितनीविद्या आवतीहै सासंपूर्णविद्या तुम हमारेप्रतिकहो ॥ तातुमा रीसर्वविद्याकूंश्रवणकरिकै पश्चात् हम तुमारेप्रति ब्रह्मज्ञानकाउपदेशकरैंगे ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकावचन जबी तिससनत्कुमार नें नारदमुनिकेप्रति कह्या ॥ तबी सोनारदमुनि तासनत्कुमारकेप्रति दंडवत्प्रणामकरिकै आपणीसर्वविद्या कहताभया ॥ नार दउवाच ॥ हेभगवन्! मंत्र ब्राह्मण यादोरूपकरिकै दोदोप्रकारताकूंप्राप्तहुएजे ऋग् यजुष् साम अथर्वण येचारिवेदहैं ॥ ति नचारिवेदोंकूंभी मैं आपणेब्रह्मापिताकेप्रसादतैं भलीप्रकार जानताहूं ॥ और हेभगवन्! तिनचारिवेदोंविषे जेवचन पूर्व ब्राह्म णादिकोंकेकथाप्रसंगकूं प्रतिपादनकरैंहैं ॥ तिनवचनोंकानाम इतिहासहै ॥ तिनइतिहासोंकूंभी मैं भलीप्रकारसेंजाणताहूं ॥ और हेभगवन्! तिनवेदोंविषे जेवचन याजगत्‌केउत्पत्तिस्थितिआदिकोंका कथनकरैंहैं ॥ तिनवचनोंकानाम पुराणहै ॥ तिनपुराणोंकूं भी मैं भलीप्रकार जानताहूं ॥ और हेभगवन्! यहशब्दसाधुहै यहशब्द असाधुहै याप्रकारकेज्ञानकाहेतु जोव्याकरणहै ॥ जा व्याकरणकूं श्रुतिनैं वेदानांवेद यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ताव्याकरणकूंभी मैं भलीप्रकार जानताहूं ॥ और हेभगवन्! श्राद्धा दिककर्मोंकेरीतिकूं कथनकरणेहाराजोपित्र्यनामाशास्त्रहै ॥ ताशास्त्रकूंभी मैं भलीप्रकार जानताहूं ॥ और हेभगवन्! सहस्रलक्षा दिकसंख्याकेस्वरूपका निर्णयकरणेहारा जोगणितशास्त्रहै ॥ जागणितशास्त्रकूं श्रुतिनैं राशि यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ताग णितशास्त्रकूंभी मैं भलीप्रकार जानताहूं ॥ और हेभगवन्! जीवोंकेउत्पातादिकोंकेस्वरूपकानिर्णयकरणेहाराजोशास्त्रहै ॥ जा शास्त्रकूं देव याशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ताशास्त्रकूंभी मैं भलीप्रकार जानताहूं ॥ और हेभगवन्! जिसशास्त्रकरिकै भूमिविषे दाबेहुएधनका ज्ञानहोवैहै ॥ जाशास्त्रकूं निधि याशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ताशास्त्रकूंभी मैं भलीप्रकार जानताहूं ॥ और हेभगव न्! तर्कहैप्रधानजिसविषे ऐसाजो अक्षपादप्रणीतन्यायशास्त्रहै ॥ तान्यायशास्त्रकूंभी मैं भलीप्रकार जानताहूं ॥ तथा वेदविषेस्थि

त जोप्रश्नउत्तरभागहै ॥ ताकूंभीमैंभलीप्रकार जानताहूं ॥ जिसन्यायशास्त्रकूं तथाप्रश्नउत्तररूपवेदकेभागकूं श्रुतिविषे वाकोवाक्य या नामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ और हेभगवन्! अनेकप्रकारकेव्यवहारोंकेनियमकूं कथनकरणेहाराजो नीतिशास्त्रहै ॥ जिसनीतिशास्त्रकूं श्रुतिविषे एकायन यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तानीतिशास्त्रकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं ॥ और हेभगवन्! वेदका अंगरूप जोनि रुक्तशास्त्रहै ॥ तानिरुक्तशास्त्रके जितनेभागविषे सर्वदेवतावोंकूं सर्वात्मरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तानिरुक्तकेभागकानाम देवविद्या है ॥ तादेवविद्याकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं ॥ और हेभगवन्! तादेवविद्यारूपनिरुक्तभागकूंछोडिकै बाकीरह्याजोनिरुक्तशास्त्रहै ॥ तथा शिक्षाकल्पहै ॥ यहतीनों वेदकेअंगहोणेतें वेदकेउपकारकहैं ॥ यातें निरुक्त शिक्षा कल्प यातीनोंकूं वेदविद्या यानामकरिकैकथन करेहैं ॥ तावेदविद्याकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं ॥ और हेभगवन्! यहआयुर्वेद तथा सुश्रुतादिकवैद्यककेग्रंथ सर्वभूतप्राणियोंके रोगकीनिवृत्तिकरिकै सर्वभूतप्राणियोंऊपरि उपकारकरेहैं ॥ यातें सुश्रुतादिकग्रंथसहित ताआयुर्वेदकूं भूतविद्या यानामकरिकैकथ नकरेहैं ॥ ताआयुर्वेदरूपभूतविद्याकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं ॥ तथा शांतिपुष्टिआदिकफलोंकीप्राप्तिकरणेहारे जेनानाप्रकारकेमं त्रहैं ॥ तिनमंत्रोंकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं ॥ और हेभगवन्! अस्त्रविद्यासहितजोधनुर्विद्याहै ॥ ताधनुर्विद्याकानाम क्षत्रविद्याहै ॥ ताक्षत्रविद्याकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं ॥ और हेभगवन्! राहुकेतुआदिकग्रहोंकेस्थितिआदिकोंकूंप्रतिपादनकरणेहाराजोज्यो तिष्शास्त्रहै ॥ ताज्योतिष्शास्त्रकानाम नक्षत्रविद्याहै ॥ तानक्षत्रविद्याकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं ॥ और हेभगवन्! सर्पोंविषेजे देवशरीरहैं ॥ तिनोंकेवशकरणेकासाधन जागारुडविद्याहै ॥ तागारुडविद्याकानाम सर्पदेवविद्याहै ॥ तासर्पदेवविद्याकूंभी मैं भली प्रकारजानताहूं ॥ और हेभगवन्! सर्वलोकोंकेमनकूंरंजनकरणेहारा तथागीतादिकोंकूंप्रतिपादनकरणेहारा जोगांधर्वशास्त्रहै ॥ तागांधर्वशास्त्रकानाम जनविद्याहै ॥ ताजनविद्याकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं ॥ हेभगवन्! इसप्रकार ऋग्वेदतैंआदिलैके गांध र्वशास्त्रपर्यंत सर्वविद्यावोंकूं मैं भलीप्रकारजानताहूं ॥ परंतु तिनवेदोंकेतात्पर्यकाविषयरूप जोआपणेमोक्षकासाधनहै ॥ तामो क्षकेसाधनकूं मैं जानतानहीं ॥ हेभगवन्! यद्यपि तिनवेदोंकेअर्थकूं सामान्यतैं मैं जानताहूं ॥ तथापि तिनवेदोंकेतात्पर्यकाविष

यभूत जोअद्वितीयआत्माहै ॥ तिसआत्मादेवकूं मैं जानतानहीं ॥ यातैं मैं केवलवेदमंत्रोंकेपाठकूंजानणेहाराहूं ॥ तिनमंत्रोंकेअर्थकूं मैं जानतानहीं ॥ हेभगवन्! पूर्व आपसरीखेमहात्मापुरुषोंकेमुखतैं हमनैं याप्रकारकावचन श्रवणकऱ्याहै ॥ जो आत्माकूंजानणेहारापुरुष मूलकारणसहितसर्वशोकोंकूं तरैहै ॥ हेभगवन्! जैसे यालोकविषे तीनकोणवालेअग्निकेकूंडविषे पतनभयाजोकोईपंगुपुरुषहै ॥ तापंगुपुरुषकूं महान्शोककीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे अध्यात्मदुःख अधिदैवदुःख अधिभूतदुःख यातीनदुःखोंकरिकै हमारेकूं सर्वदाशोककीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेदीनदयालुसनत्कुमार! जैसे कोईपतिव्रतास्त्री छोटेबालकोंवालीहोवै ॥ अथवा पुत्रोंतैंरहितहोवै ॥ तथा यौवनअवस्थावालीहोवै ॥ तथा धनतैंरहितहोवै ॥ तथा बांधवोंतैंरहितहोवै ॥ ऐसीपतिव्रतास्त्रीका जबी तायौवनअवस्थाविषेही पतिमृत्युहोइजावैहै ॥ तबी सास्त्री हादैवहमारीकौनगतिहोवैगी? याप्रकार निरंतर आपणाशोककरैहै ॥ तैसे मैंनारदभी हादैवमेरीकौनगतिहोवैगी? याप्रकार निरंतर आपणाशोककरताहूं ॥ तथा अध्यात्म अधिदैव अधिभूत यातीनतापोंकेवशकूंप्राप्तहुआहूं ॥ तथा विचारहीनपुरुषोंकरिकैदुस्तर जोयहशोकरूपीसमुद्रहै ॥ ताशोकरूपीसमुद्रविषे मैं सर्वदाडूबाहूं ॥ तथा ताअगाधशोकरूपीसमुद्रकेपारलेकिनारेकेप्राप्तिकी मैं सर्वदाइच्छाकरताहूं ॥ ऐसेमैंदीनकूं आप कृपाकरिकै याशोकरूपीसमुद्रतैं पारकरो ॥ हेशिष्य! इसप्रकार तानारदमुनिके दीनतापूर्वकवचनोंकूंश्रवणकरिकै सोभगवान्सनत्कुमार तानारदकेप्रति स्थूलाऽरुंधतीन्यायकरिकै आत्माकेवास्तवस्वरूपकेबोधनकरणेवासते याप्रकारकावचन कहताभया ॥ सनत्कुमारउवाच हेनारद! पूर्वउक्तजितनेंशास्त्रोंकूं तूं अध्ययनकरिकैजाणताभयाहै ॥ तेसंपूर्णशास्त्र शब्दरूपहीहैं ॥ काहेतैं? यासंपूर्णप्रपंचका एकदेशरूप जितनेवस्तुहैं ॥ तिनसर्ववस्तुवोंकूं यहवाकादिकइंद्रिय नामस्वरूपकरिकैही कथनकरैहैं ॥ जोकदाचित् यालोकविषे सोशब्दरूपनाम नहींहोवै तौ कोईभीपुरुष किसीभीवस्तुकेकहणेविषे समर्थनहींहोवैगा ॥ नामकरिकैही सर्ववस्तुवोंकाव्यवहारहोवैहै ॥ यातैं यहनाम सर्ववस्तुरूपहै ॥ ऐसेसर्ववस्तुरूपनामकूं तूं ब्रह्मरूपकरिकैचिंतनकर ॥ हेनारद! तुमाराचित्त द्वैतवासनावोंकरिकैकुंठितहोइगयाहै ॥ जबीतूं तापूर्वअभ्यासकऱ्येहुएनामविषे ब्रह्मभावना करैगा ॥ तबी सोतुमाराचित्त साक्षात्ब्रह्मकेजानणेविषेयोग्यहोवैगा ॥ हेनारद! यालो

कविषे जोपुरुष संपूर्णशब्दरूपनामोंकूं ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं नामकरिकैसंबद्धसर्वजगत्‌विषे स्वतंत्रतारूप
फलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ जैसे महाराजाकूं आपणेदेशविषेस्वतंत्रताहोवैहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार जबी तासनत्कुमारभगवान्‌नें नारद
केप्रति शब्दरूपनामकी ब्रह्मरूपकरिकैउपासना कथनकरी ॥ तबी सोनारदमुनि ताभगवान्‌सनत्कुमारकेप्रति याप्रकारकाप्रश्नकर
ताभया ॥ हेभगवन्! याशब्दरूपनामविषे ब्रह्मदृष्टिमात्रकरिकै ताशोककीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं जोवस्तु तानामतैंभीअधिकहो
वै ॥ सोवस्तु हमारेप्रति कथनकरो ॥ इसप्रकार तानारदकरिकैपूछाहुआ सोभगवान्‌सनत्कुमार तानारदकेप्रति पूर्वपूर्वकीअपेक्षाक
रिकै उत्तरउत्तरविषे अधिकतानिरूपणकरताहुआ वाक्‌इंद्रियतैंलेके आशापर्यंत त्रयोदशतत्त्वोंका वर्णनकरताभया ॥ तथा तिनत्र
योदशतत्त्वोंविषे एकएकतत्त्वकी ब्रह्मरूपकरिकैउपासना कथनकरताभया ॥ तथा जैसेनामकूंब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरणेहारेपुरुष
कूं तानामकरिकैसंबद्धसर्वजगत्‌विषे स्वतंत्रतारूपफल प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे तिनवाकादिकोंकूं ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरणेहारेपुरुषों
कूं तिनवाकादिकोंकरिकैसंबद्धसर्वजगत्‌विषे स्वतंत्रतारूपफल प्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकार तिनवाकादिकोंकेउपासनावोंकाफलभीवर्ण
नकरताभया ॥ अब तिनवाकादिकत्रयोदशतत्त्वोंकेस्वरूपका वर्णनकरेहैं ॥ हेनारद! यहशब्दरूपनाम वाक्‌इंद्रियतैंउत्पन्नहोवै
है ॥ यातैं ताशब्दरूपकार्यतैं सोवाक्‌रूपकारण अधिकहै ॥ १ ॥ और तावाक्‌इंद्रियकूं आपणेकार्यविषे यहइच्छारूपमनही प्रेर
णाकरैहै ॥ यातैं तावाक्‌इंद्रियतैं सोइच्छारूपमन अधिकहै ॥ २ ॥ और यहकार्य हमारेकूंकरणेयोग्यहै अथवा नहींकरणेयोग्यहै ॥
याप्रकार कर्तव्य अकर्तव्य रूपदोनोंकोटियोंकूं भिन्नभिन्नरूपकरिकै विषयकरणेहारी जासंकल्परूपअंतःकरणकीवृत्तिहै ॥ सासंक
ल्परूपवृत्तिही ताइच्छारूपमनकूंउत्पन्नकरैहै ॥ यातैं ताइच्छारूपमनतैं सोसंकल्प अधिकहै ॥ ३ ॥ और यहअनुसंधानरूपचित्त ज
बी सुखसाधनतारूपकरिकै तथादुःखसाधनतारूपकरिकै पूर्वअनुभवकरेहुएपदार्थोंकीसादृश्यता सन्मुखदेशवृत्तिपदार्थोंविषेविष
यकरैहै ॥ तबीही सोकर्तव्यअकर्तव्यविषयकसंकल्पहोवैहै ॥ यातैं सोअनुसंधानरूपचित्त तासंकल्पतैंअधिकहै ॥ ४ ॥ और वृत्तिज्ञानों
काप्रवाहरूपजाचिंताहै ॥ सोचिंतारूपध्यान पूर्वसंस्कारोंकेउद्बोधद्वारा तास्मृतिरूपअनुसंधानकाजनकहै ॥ यातैं सोचिंतारूप

ध्यान ताअनुसंधानरूपचित्ततैंअधिकहै ॥ ५ ॥ और यालोकविषे जिसवस्तुकूं उपेक्षाज्ञानतैंभिन्नविशेषज्ञान विषयकरैहै ॥ तिसी वस्तुका ध्यानकऱ्याजावैहै ॥ यातैं सो विशेषज्ञानरूपविज्ञान ताध्यानतैंअधिकहै ॥ ६ ॥ और अन्नकेभक्षणकरिकैउत्पन्नभयाजोअवयवोंकीवृद्धिरूपबलहै ॥ जिसबलतैं सर्वशत्रु भयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ऐसेबलयुक्तमनकरिकैही सोविज्ञानसिद्धहोवैहै ॥ यातैं सोबल ताविज्ञानतैंअधिकहै ॥ ७ ॥ और सोबल भूमिरूपअन्नतैंउत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं सोभूमिरूपअन्न ताबलतैंअधिकहै ॥ ८ ॥ और सो भूमिरूपअन्न वृष्टिरूपजलोंतैंउत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं तेजल ताभूमिरूपअन्नतैंअधिकहैं ॥ ९ ॥ और यालोकविषे जबी उष्णतारूपतेजकीअधिकताहोवैहै ॥ तबीही साजलकीवृष्टिहोवैहै ॥ यातैं सोतेज तिनजलोंतैंअधिकहै ॥ १० ॥ और यहआकाश तातेजकाआधाररूपहै ॥ यातैं यहआकाश तातेजतैंअधिकहै ॥ ११ ॥ इहां यद्यपि तातेजतैंवायुविषेअधिकताकहणीयोग्यथी ॥ तथापि जैसेउष्णतारूपतेज जलकेवृष्टिकाकारणहोवैहै ॥ तैसे यहबाह्यवायुभी ताजलकेवृष्टिकाकारणहै ॥ यातैं तावायुका तेजविषेअंतर्भावमानिकै तावायुयुक्ततेजतैं आकाशकूंअधिककह्याहै ॥ और सुषुप्तिकेअंतविषे जोपूर्वदृष्टआकाशकास्मरणहोवैहै ॥ सोस्मरणही ताआकाशकेउत्पत्तिकाकारणहै ॥ जैसे पूर्वअनुभवकऱ्येहुएघटकास्मरणही उत्तरघटकेउत्पत्तिकाकारणहोवैहै ॥ पूर्वघटकेस्मरणतैंविना उत्तरघटकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं सोस्मरणरूपकारण ताआकाशरूपकार्यतैंअधिकहै ॥ १२ ॥ और यहकार्य इसीप्रकारहोवैगा याप्रकारकीजाआशाहै ॥ साआशाही तास्मरणकाकारणहोवैहै ॥ ताआशातैंरहितनिष्कामपुरुषकूं तास्मरणकरणेविषे किंचित्मात्रभी प्रयोजनहोवैनहीं ॥ यातैं साआशा तास्मरणतैंअधिकहै ॥ १३ ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सोभगवान्सनत्कुमार तानारदमुनिकेप्रति वाक् १ मन २ संकल्प ३ चित्त ४ ध्यान ५ विज्ञान ६ बल ७ अन्न ८ जल ९ तेज १० आकाश ११ स्मरण १२ आशा १३ यात्रयोदशतत्त्वोंविषे पूर्वपूर्वतत्त्वकीअपेक्षाकरिकै उत्तरउत्तरतत्त्वविषेअधिकताकथनकरिकै तिनवाकादिकतत्त्वोंकीअधिकताविषे याप्रकारकीयुक्ति कथनकरताभया ॥ अब प्रथम नामतैं वाक्कीअधिकताविषे युक्तिका निरूपणकरैहैं ॥ हेनारद! जोतुमनैं पूर्व ऋग्वेदतैंआदिलैके गांधर्वशास्त्रपर्यंत संपूर्णशब्दरूपशास्त्र कथनकरेहैं ॥ तेसंपूर्णशब्दरूपशास्त्र लोकोंनैं वाक्इंद्रियकरिकैहीजाने

हैं ॥ तथा तिनऋग्वेदादिकोंकेअर्थ तथास्वर्गादिकलोक तथाआकाशादिकपंचभूत तथाइंद्रादिकदेवता तथाअसुरादिक तथा मनुष्यादिकजंगमजीव तथावृक्षादिकस्थावरजीव इसतैंआदिलैकेजेअनेककोटिपदार्थहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ यालोकोंनें वाक्इंद्रियकरिकैही जानेहैं ॥ तथा धर्म सत्य साधु हृदयज्ञ अधर्म असत्य असाधु अहृदयज्ञ येअष्टपदार्थभी लोकोंनें वाक्इंद्रियकरिकेही जानेहैं ॥ वाक्इंद्रियतैंविना याअष्टपदार्थोंकेज्ञानविषे कोईभीसमर्थहोइसकैनहीं ॥ तहां सुखकेकारणकानाम धर्महै ॥ और जिसपदार्थका जैसास्वरूप अनुभवकन्याहोवै ॥ तिसपदार्थका तैसाहीस्वरूप कथनकरणा याकानाम सत्यहै ॥ और दूसरेप्राणियों ऊपरि उपकारकरणेहाराजोवचनहै ॥ तावचनकानाम साधुहै ॥ और शीघ्रही लोकोंकेमनकीप्रसन्नताकरणेहाराजोवचनहै ॥ तावचनकानाम हृदयज्ञहै ॥ और ताधर्मतैंविपरीतकानाम अधर्महै ॥ और तासत्यतैंविपरीतकानाम असत्यहै ॥ और तासाधुतैंविपरीतकानाम असाधुहै ॥ और ताहृदयज्ञतैंविपरीतकानाम अहृदयज्ञहै ॥ इसप्रकार सोवाक्इंद्रियही शब्दरूपनामोंके तथासर्वपदार्थोंकेव्यवहारकाकारणहै ॥ यातैं सोवाक्इंद्रिय तानामतैंअधिकहै ॥ याकारणतैंही सोवाक्इंद्रिय पूर्वउक्तनामकीन्यांई ब्रह्मरूपकरिकेउपासनाकरणेयोग्यहै ॥ और तानामकीउपासनाका जोसर्वत्रस्वतंत्रतारूपफल पूर्वकथनकन्याथा ॥ सोईहीफल यावाक्इंद्रियकेउपासनाकाभीहोवैहै ॥ १ ॥ अब तावाक्तैं मनकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरैहैं ॥ हेनारद! जैसे दोबदरीफलोंकी अथवा दो आमलकफलोंकूं यहहस्तरूपमुष्टि आपणेविषेअंतर्भावकरैहै ॥ तैसे पूर्वकथनकन्येहुएशब्दरूपनामकूं तथावाक्इंद्रियकूं यहमनही आपणेविषे अंतर्भावकरैहै ॥ काहेतें? यामनकेअभावहुए सोशब्दरूपनाम तथावाक्इंद्रिय प्रतीतहोवैनहीं ॥ यामनकेविद्यमान हुएही तेवाकादिक प्रतीतहोवैहैं ॥ और यहपुरुष तामनकेविचारकरिकैही वेदोंकेअध्ययनकूंकरैहै ॥ तथा यज्ञादिककर्मोंकाअनुष्ठानकरैहै ॥ तथा इसलोककेफलकी तथापरलोककेफलकी अभिलाषाकरैहै ॥ तथा ताफलकीप्राप्तिकरणेहारे साधनोंकीअभिलाषा करैहै ॥ और यहशरीर तथावाकादिकइंद्रिय तथानानाप्रकारकालौकिकसुख यहसंपूर्ण तामनकेविद्यमानहुएही विद्यमानहोवैहैं ॥ तथा तामनकेअविद्यमानहुए अविद्यमानहोवैहैं ॥ यातैं तेशरीरइंद्रियादिकसंपूर्ण मनरूपहीहैं ॥ याकारणतैं यहमन तावाक्इंद्रिय

तेंअधिकहै ॥ ऐसेमनकूं तू ब्रह्मरूपकरिकेंउपासनाकर ॥ २ ॥ अब तामनतें संकल्पकीअधिकताविषे युक्तिकानिरूपणकरैंहैं ॥ हेनारद! जोपुरुष पूर्वउक्तसंकल्पकरिकेंयुक्तहोवैहै ॥ सोसंकल्पवान्पुरुषही तासर्वमानसव्यापारोंकूंकरैहै ॥ तामानसव्यापारतेंअनंतर सोपुरुष वाक्इंद्रियकेव्यापारकूंकरैहै ॥ तावाक्इंद्रियकेव्यापारतेंअनंतर तानामरूप शब्दकेव्यापारकूंकरैहै ॥ ताशब्दकेव्यापारविषे संपूर्णवेदादिकोंकेशब्दोंकासमूह अंतर्भावहोवैहै ॥ और ताशब्दोंकेसमूहविषे सुखकीप्राप्तिकरणेहारेसर्वकर्म स्थितहोवैहैं ॥ इसप्रकारकीपरंपराकरिके सोसंकल्पही तिनसर्वकर्मोंकाकारण सिद्धहोवैहै ॥ काहेतें? तिनयज्ञादिककर्मोंकी उत्पत्तिकरणेविषे तथास्थितिकरणेविषे तथासंहारकरणेविषे यहसंकल्पही कुशलहै ॥ और स्वर्गादिकलोक तथापृथिवीआदिकभूत जिसचराचरविश्वकूंउत्पन्नकरैहैं ॥ साविश्वकीउत्पत्ति संकल्परूपनिमित्तकेविद्यमानहुएहीहोवैहै ॥ संकल्पतेंविना याजगत्कीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ काहेतें? लोकोंके तथाभूतोंके संकल्पकरिकेंतौ वृष्टिउत्पन्नहोवैहै ॥ और तावृष्टिकेसंकल्पकरिकें अन्नउत्पन्नहोवैहै ॥ और ताअन्नकेसंकल्पकरिकें याभूतोंकेइंद्रियसहितप्राण उत्पन्नहोवैहैं ॥ और तिनप्राणोंकेसंकल्पकरिकें मंत्रउत्पन्नहोवैहैं ॥ और तिनमंत्रोंकेसंकल्पकरिकें कर्मउत्पन्नहोवैहैं ॥ और तिनकर्मोंकेसंकल्पकरिकें धर्मरूपअपूर्वउत्पन्नहोवैहै ॥ और ताधर्मरूपअपूर्वकेसंकल्पकरिकें स्वर्गादिकफल प्राप्तहोवैहैं ॥ इहां लोक भूत वृष्टि अन्न प्राण मंत्र कर्म अपूर्व याशब्दोंकरिकें तिनलोकादिकोंकेअभिमानीदेवतावोंकाग्रहणकरणा ॥ तिनचेतनदेवतावोंतेंविना जडलोकादिकोंविषे सोसंकल्पसंभवैनहीं ॥ इसरीतिसें यहसंकल्पही सर्वजगत्काकारणहै ॥ यातें सोसंकल्प तामनतेंअधिकहै ॥ ऐसेसंकल्पकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकेंउपासनाकरैहै ॥ सोपुरुष सर्वदुःखोंतेंरहित तथानाशतेंरहित तथाअतिशयतातेंरहित ऐसेलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सोउपासकपुरुष आपभी सर्वदुःखोंतेंरहितहोवैहै ॥ तथानाशतेंरहितहोवैहै ॥ तथा अतिशयतातेंरहितहोवैहै ॥ ३ ॥ अब तासंकल्पतें सामान्यज्ञानरूपचित्तकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरैहैं ॥ हेनारद! यासर्वजगत्काकारणरूपकरिकें कथनकऱ्याजोसंकल्पहै ॥ सोसंकल्पभी तबीहोवैहै ॥ जबी सोपूर्वउक्तसामान्यज्ञानरूपचित्तहोवैहै ॥ ताचित्ततेंविना सोसंकल्पहोवैनहीं ॥ याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकें यहचित्तहीतासंकल्पकाकारणसिद्धहोवैहै ॥ और याचि

त्तकीअधिकता लोकविषेभीप्रसिद्धहै ॥ काहेतैं ? यालोकविषे सर्वज्ञपुरुषभी जबी अनुसंधानरूपचित्ततैंरहितहोवैहै ॥ तबी ताचित्तर
हितपुरुषकूं पुत्रादिकसर्वबांधव याप्रकारकेवचनोंकूंकहतेहुए अनादरकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ जोकदाचित् यहपुरुप सर्वज्ञहोवै तौ अनुसं
धानरूपचित्ततैंरहितहुआ किसवासतेप्रतीतहोताहै ॥ और यहपुरुषतौ पाषाणादिकजडपदार्थोंकीन्याई अनुसंधानरूपचित्ततैंरहि
तहुआ प्रतीतहोवैहै यातैं यहपुरुष सर्वज्ञनहींहै ॥ इसप्रकार सोचित्तरहितपुरुष सर्वदा निरादरकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ और यालोकवि
षे जोपुरुष ताअनुसंधानरूपचित्तवालाहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं संपूर्णलोक साक्षीपणेविषे ग्रहणकरैं हैं ॥ तथा ताचित्तवालेपुरुषकेमुख
तैंयेसंपूर्णजन लौकिकवचनोंकूं तथावैदिकवचनोंकूं श्रद्धापूर्वक श्रवणकरैंहैं ॥ तथा ताचित्तवालेपुरुषनैं विधानकरेंयेजे गुरुत्व उत्त
मवर्णत्व आदिकधर्मेंहैं ॥ तिनधर्मोंकूंभी येलोक श्रद्धापूर्वक अंगीकारकरैंहैं ॥ याकारणतैं यहअनुसंधानरूपचित्त तासंकल्पतैंअधि
कहै ॥ ऐसेचित्तकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरै है ॥ तापुरुषकूं तासंकल्पकीउपासनातैंभी अधिकफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ४ ॥
अब ताचित्ततैं ध्यानकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरैंहैं ॥ हेनारद! स्वर्गलोक अंतरिक्षलोक भूमिलोक येतीनोंलोक तथाआकाशा
दिकपंचभूत तथाहिमालयादिकपर्वत तथादेवतावोंकेसमान शमदमादिकसाधनसंपन्नमनुष्य येसंपूर्ण निश्चलतारूपकरिकैस्थि
तहुए ध्यानकरतापुरुषकीन्याई प्रतीतहोवैहैं ॥ याकारणतैं सोध्यान अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ और यालोकविषे जेपुरुष आपणेशमदमादिक
गुणोंकरिकै यासर्वमनुष्योंविषेपूज्यताकूंप्राप्तहुएहैं ॥ तेपुरुष ताध्यानके यत्किंचित्फलकूंप्राप्तहुएकीन्याई जानणे ॥ ताध्यानतैंविनाइ
सजन्मविषे तथाजन्मांतरविषे सोमहानतारूपफल प्राप्तहोवैनहीं ॥ और यालोकविषे जेपुरुष सर्वदा परायेदूषणोंकाहीकथनकरते
रहतेहैं ॥ तथा सर्वदा निंदाकरतेरहतेहैं ॥ तथा अन्यपुरुषोंके अपकारविषे तथाकलहविषे जेपुरुष सर्वदा उद्यमवालेहोवैहैं ॥ तेपुरु
ष सर्वमनुष्योंविषे अधमजानणे ॥ ऐसेअधमपुरुष ताध्यानकेअभावतैं सर्वदाविक्षेपयुक्तचित्तवालेहोवैहैं ॥ ऐसेचित्तकेविक्षेपकूं तेध्या
नवालेमहानपुरुष प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तेध्यानवालेमहानपुरुष ताध्यानकेप्रभावतैं सर्वदा मान्यहोवैहैं ॥ याकारणतैं सोध्यान ता
चित्ततैंअधिकहै ॥ ऐसेध्यानकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरै है ॥ सोपुरुष ताचित्तकीउपासनातैंभी अधिकफलकूंप्राप्तहोवै

है ॥ ५ ॥ ताध्यानतैं विज्ञानकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरैहैं ॥ हेनारद! ऋग्वेदतैंआदिलैके अहदयज्ञपर्यंत जितनावाक्
इंद्रियकाविषय पूर्वकथनकऱ्याथा ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंकूं तथातिसतैंभीअधिकपदार्थोंकूं यहपुरुष ताविज्ञानकरिकैजानेहै ॥ काहेतें?
भक्षणकरणेयोग्य जोनानाप्रकारकाअन्नहै ॥ ताअन्नविषेस्थितजे मधुर अम्ल लवण कटु कषाय तिक्त येषट्प्रकारकेरसहैं ॥ तिन
षट्रसोंकूंभी यहपुरुष ताविज्ञानतैंहीजानेहै ॥ तथा इसलोकके तथा परलोकके सर्वव्यवहारोंकूंभी यहपुरुष ताविज्ञानतैंहीजानेहै ॥
याकारणतैं सो विज्ञान ताध्यानतैंअधिकहै ॥ ऐसेविज्ञानकूं जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष शा
स्त्रकेअर्थकूं विषयकरणेहाराजोविज्ञानहै तथाव्यवहारविषेकुशलतारूपजोज्ञानहै तिसज्ञानविज्ञानकरिकैसंपन्नलोकोंकूं प्राप्तहोवैहै
॥ ६ ॥ अब ताविज्ञानतैं बलकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरैहैं ॥ हेनारद! यालोकविषे एकहीबलवान्पुरुष आपणेबलकरिकै ता
विज्ञानयुक्तएकशतपुरुषोंकूं कंपायमानकरैहै ॥ और सोबलवान्पुरुषही यापृथिवीकूं धारणकरणेहारा भूपतिहोवैहै ॥ और सोबलवा
न्पुरुषही प्रथमतौ उद्यमवालाहोवैहै ॥ ताउद्यमतैंअनंतर सोबलवान्पुरुष गुरुआदिकोंकेसेवाकरणेविषेसमर्थहोवैहै ॥ तिसतैंअनंत
र तागुरुकीसेवाविषेप्रीतिमान्हुआसोपुरुष तिनगुरुआदिकोंकेसमीप गमनकरैहै ॥ तिसतैंअनंतर तागुरुकेसमीपनिवासकरणेविषे
प्रीतिमान्हुआ सोपुरुष द्रष्टाहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोपुरुष श्रोताहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोपुरुष मंताहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर
सोपुरुष बोद्धाहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोपुरुष कर्त्ताहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोपुरुष विज्ञाताहोवैहै ॥ इहां उपदेशकरणेहारेगुरुवों
के परीक्षारूपदर्शनकेकरणेहारेपुरुषकानाम द्रष्टाहै ॥ और तिनगुरुवोंनैंकथनकऱ्याजोअर्थहै ताअर्थकूंश्रवणकरणेहारेपुरुषकानाम
श्रोताहै ॥ और ताश्रवणकऱ्येहुएअर्थकूं युक्तियोंसैंचिंतनकरणेहारेपुरुषकानाम मंताहै ॥ और यहअर्थ इसीप्रकारहै याप्रकारकेनि
श्चयकरणेहारेपुरुषकानाम बोद्धाहै ॥ और तानिश्चयकऱ्येहुए विहितअर्थके अनुष्ठानकरणेहारेपुरुषकानाम कर्त्ताहै ॥ और तिनवि
हितकर्मोंकेफलकूं साक्षात्कारकरणेहारेपुरुषकानाम विज्ञाताहै ॥ इसप्रकारकेसाधनोंकीपरंपरा यापुरुषकूं बलकरिकैहीप्राप्तहोवै
है ॥ याकारणतैं सोबल ताविज्ञानतैंश्रेष्ठहै ॥ किंवा स्वर्गलोक अंतरिक्षलोक भूमिलोक येतीनलोक तथाआकाशादिकपंचभूत

तथाहिमालयादिकपर्वत तथाइंद्रादिकदेवता तथामनुष्यादिकजंगमप्राणी तथावृक्षादिक[illegible]रप्राणी येसंपूर्ण बलकूंआश्रयण करिकैही स्थितहोवैहैं ॥ बलतैंविना किसीकीभीस्थितिहोवैनहीं ॥ याकारणतैंभी सोबल [illegible] विज्ञानतैंश्रेष्ठहै ॥ ऐसेबलकूं जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरेहै ॥ तापुरुषकूं ताबलयुक्तसर्वलोकोंकीप्राप्तिहोवैहै [illegible]७ ॥ अब ताबलतैं अन्नकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरेहैं ॥ हेनारद ! यालोकविषे जोकोईबलवान्पुरुषभी जबी दशरात्रि[illegible]त अन्नकूंभोजननहींकरेहै ॥ तबी सोबलवान्पुरुषभी नानाप्रकारकेविक्षेपकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा सोपुरुष नेत्रादिकइंद्रियोंकेव्यापारोंतैं तथामनकेव्यापारतैं रहित होवैहै ॥ याकारणतैं सोपुरुष जीवताहुआभी मन्येकेतुल्यहोवैहै ॥ अथवा साक्षात्मृत्युकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ और सोईहीपुरुष जबी पुनःअन्नकूंभक्षणकरिकैबलवान्होवैहै ॥ तबी सोपुरुष मनसहितसर्वइंद्रियोंकेव्यापारोंकूंसिद्धकरेहै ॥ याकारणतैं सोअन्न ताबलतैंअधिकहै ॥ ऐसेअन्नकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरैहै ॥ सोपुरुष नानाप्रकारकेअन्नपानयुक्तलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ८ ॥ अब ताअन्नतैं जलोंकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरेहैं ॥ हेनारद! जिसकालविषे यहवृष्टिरूपजल उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसीकालविषे सोअन्नउत्पन्नहोवैहै ॥ तावृष्टिरूपजलकेअभावहुए ताअन्नकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ और ताअन्नकेअभावहुए याजीवोंकेप्राण शीघ्रहीनाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और ताअन्नकेविद्यमानहुए तेप्राण वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याकारणतैं तेजल अन्नतैंअधिकहैं ॥ किंवा स्वर्ग भूमि पाताल येतीनलोकजेहैं ॥ तथा तिनलोकोंविषेस्थित जितनेस्थावरजंगमप्राणीहैं ॥ तेसंपूर्ण अन्नभावकूंप्राप्तहुएजलरूपहीहैं ॥ तिनजलोंतैंभिन्न कोईभीपदार्थनहींहै ॥ याकारणतैंभी तेजल अन्नतैंअधिकहैं ॥ ऐसेजलोंकूं जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष सर्वकामनाकेविषयपदार्थोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा सर्वदातृप्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ९ ॥ अब तिनजलोंतैं तेजकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरेहैं ॥ हेनारद! यहतेज प्रथम आपणेउष्णताकूंदिखाइकै तथाविद्युत्कूं तथापूर्वादिशाकेवायुकूं उत्पन्नकरिकै पश्चात् जलकीवृष्टिकरेहै ॥ याकारणतैं सोतेज जलतैंअधिकहै ॥ किंवा यालोकविषे जोपुरुष तेजकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ सोतेजस्वीपुरुष आपणेश्रीमत्त्वरूपकरिकै प्रकाशमानहोवैहै ॥ तथा तमदोषतैंरहिततहोवैहै ॥ याकारणतैंभी सोतेज

तिनजलोंतेंअधिकहै ॥ ऐसेतेजकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरेहै ॥ तापुरुषकूं महान्फलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ १० ॥ अब
तातेजतें आकाशकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरेहैं ॥ हेनारद ! तेजवायुतेंआदिलैके जितनायहनानाप्रकारकाजगत्है ॥
सोसंपूर्णजगत् याआकाशविषेही स्थितहोवैहै ॥ याकारणतें तावायुसहिततेजतें सोआकाशअधिकहै ॥ किंवा यहदेहधारीजी
व याआकाशकूंआश्रयणकरिकैही वाकादिकइंद्रियोंकेव्यापारोंकूं कहेहै ॥ तथा पुण्यपापकर्मके सुखदुःखरूपफलकूंप्राप्तहोवैहै ॥ त
था तिससुखदुःखरूपफलकेसाधनोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताआकाशतेंविना किसीभीकार्यकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ याकारणतेंभी सोआकाश
तातेजतेंअधिकहै ॥ ऐसेआकाशकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरेहै ॥ सोपुरुष विस्तारप्रकाशकरिकैयुक्तकीर्तिमान्लोकोंकूं
प्राप्तहोवैहै ॥ ११ ॥ अब ताआकाशतें स्मरणकीअधिकताविषे युक्तिकानिरूपणकरेहैं ॥ हेनारद ! यालोकविषे यहदेहधारीजी
व पूर्वअनुभवकरेहुएआकाशादिकजगत्केस्मरणतेंही उत्तरउत्तर ताआकाशादिकजगत्कीकल्पनाकरेहैं ॥ तथा यहदेहधारीजी
व स्मरणतेंही वाकादिकइंद्रियोंकेव्यापारोंकाआरंभकरेहैं ॥ तथा तास्मरणतेंही यहजीव पुण्यपापकर्मकेसुखदुःखरूपफलकूं प्रा
प्तहोवैहैं ॥ तथा तासुखदुःखकेसाधनोंकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ स्मरणतेंविना किसीभीकार्यकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ याकारणतें सोस्मर
ण ताआकाशतेंअधिकहै ॥ ऐसेस्मरणकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरेहै ॥ सोपुरुष तास्मरणकेविषयभूतसर्वपदार्थोंवि
षे स्वतंत्रतारूपफलकूं प्राप्तहोवैहै ॥ १२ ॥ अब तास्मरणतें कामनारूपआशाकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरेहैं ॥ हेनार
द ! यालोकविषे जोपुरुष कामनारूपआशाकरिकैमुक्तहोवैहै ॥ सोआशावान्पुरुषही तास्मरणकरिकै सर्वपुण्यपापकर्मोंकूंक
रेहै ॥ तथा तापुण्यपापकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकेभोगवासते दोनोंलोकोंविषेभ्रमणकरेहै ॥ और जोपुरुष ताआशातेंरहितहोवै
है ॥ सोनिष्कामपुरुष तास्मरणकूंभीकरैनहीं ॥ तथा दूसरेकिसीव्यापारकूंभीकरेनहीं ॥ याकारणतें साआशा तास्मरणतेंअधिक
है ॥ ऐसीआशाकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरेहै ॥ सोपुरुष सर्वमनवांछितपदार्थोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा सत्यसंकल्पहोवै
है ॥ ३ ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार सोनारदमुनि ताभगवान्सनत्कुमारकेप्रति नामतेंकौनअधिकहै ? इत्यादिकत्रयोदशप्रश्न करताभ

या ॥ और सोभगवान्सनत्कुमारभीतानारदकेप्रति नामतैंवाक्‌अधिकहै इत्यादिकत्रयोदशउत्तर कथनकरताभया ॥ तथा सोभग
वान्सनत्कुमार तानारदकेचित्तविषेलोभउत्पन्नकरणेवासते तिनवाकादिकोंकेउपासनाजन्यफलोंकूंभी तहांतहां कथनकरताभया ॥
तिसतैंअनंतर सोबुद्धिमान्नारदमुनि तासनत्कुमारकेप्रति पुनःयाप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ हेभगवन्! ताकामनारूपआशातैं
कौनअधिकहै? ॥ इसप्रकार तानारदकरिकैपूछाहुआ सोसनत्कुमार याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेनारद! यासर्वजीवोंनैं आत्मा
रूपकरिकैनिश्चयकऱ्याजोप्राणहै ॥ सोप्राण ताआशातैंअधिकहै ॥ अब ताप्राणोंकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरेहैं ॥ हेनारद!
जैसे रथकेचक्रकेजेअराहैं ॥ तेअरा ताचक्रकेनाभिकेआश्रितरहेहैं ॥ तैसे यहसंपूर्णविश्व प्राणोंकेआश्रितरहेहै ॥ काहेतें? यहप्रा
णहीसर्वकारकरूपहै ॥ जैसे देवदत्तनामापुरुष अश्वकरिकै ग्रामकूं गमनकरेहै ॥ यास्थलविषे गमनक्रियाकाकर्त्ताजोदेवदत्तहै ॥ त
था तागमनक्रियाकाकारणरूपजोअश्वहै ॥ तथा तागमनक्रियाकाकर्मरूपजोग्रामहै ॥ येतीनोंप्राणरूपहीहै ॥ तथा यहपुरुष सु
पात्रब्राह्मणकेतांई गौ देवैहै ॥ यास्थलविषेभी दानरूपक्रियाकाकर्तारूपजोपुरुषहै ॥ तथा तादानरूपक्रियाका संप्रदानरूपजोब्रा
ह्मणहै ॥ तथा तादानरूपक्रियाका कर्मरूपजोगौहै ॥ येसंपूर्ण ताप्राणरूपहीहैं ॥ तथा पिता माता आचार्य ब्राह्मण भ्राता स्व
सा स्नुषा जाया पुत्र इसतैंआदिलैके जितनेदेहधारीजीवहैं ॥ तेसंपूर्णजीव प्राणरूपहीहैं ॥ ताप्राणतैंभिन्न यालोकविषे किंचि
त्मात्रभीनहींहै ॥ अब याहीअर्थकूंलोकप्रसिद्धअन्वयव्यतिरेककरिकैदृढकरेहैं ॥ हेनारद! यालोकविषे जबीकोईपुरुष ताप्रमाणके
विद्यमानहुए आपणेपितामातादिकोंकेशरीरकूं वाणीमात्रकरिकैभी तिरस्कारकरेहै ॥ तबी तातिरस्कारकरणेहारेपुरुषकेप्रति दू
सरेबुद्धिमान्पुरुष याप्रकारकेवचनकहेहैं ॥ जिनपितामातादिकमहान्पुरुषोंका तू वाणीकरिकैतिरस्कारकरेहैं ॥ तिनमहान्पुरुषों
का तुमनैं वधकऱ्याहै ॥ काहेतें? उत्तमपुरुषोंका जोवाणीकरिकैनिरादरकरणाहै ॥ सोनिरादरही तिनउत्तमपुरुषोंका विनाश
रूपतैंवधहै ॥ यातें तू पितृहाहै ॥ तथा मातृहाहै ॥ इत्यादिकवचन तेलोक तापुरुषकेप्रति कथनकरेहैं ॥ और तिनपितामाता
दिकोंकेशरीरतैं प्राणोंकेनिर्गमनहुएतैंअनंतर यहपुरुष जबी तिनपितामातादिकोंकेशरीरकूं महान्अग्निविषे तीक्ष्णकाष्ठ

सें वारंवार वेधनकरिकै दग्धकरैहै ॥ तबी तादाहकरणेहारेपुरुषकूं यहलोक पुण्यकर्त्ताकहेहैं ॥ तथा पितामातादिकोंकाभक्तक हेहैं ॥ याप्रकारकाअन्वयव्यतिरेक यासर्वलोकविषे प्रसिद्धहै ॥ ताअन्वयव्यतिरेककरिकै यहप्राणही तापितामातादिरूपसिद्ध होवैहै ॥ हेनारद! बाह्यचक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकै जितनाव्यवहारहोवैहै तथा अंतरमनबुद्धिआदिकोंकरिकै जितनाव्यवहारहोवैहै ॥ तासर्वव्यवहारकालविषे जोपुरुष याप्राणकूंही सर्वकारकरूपदेखेहै ॥ सोपुरुषही अतिवादीहोवैहै ॥ काहेतें? सोपुरुष प्राणकूंही सर्वतेंअधिककहेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ यालोकविषे जोपुरुष किसीदूसरेपुरुषकेप्रति मैं तुमारापिताहूं याप्रकारकावचन जबीकहेहै ॥ तबी तापुरुषकेप्रति तू मर्यादकाअतिक्रमणकरिकै किसवासते यहवचनकहताहै? याप्रकारकाउपालंभ लोक देवैहैं ॥ परंतु सोपुरुष मैं तुमारापिताहूं याप्रकारकेवचनमात्रकहणेकरिकै मुख्यअतिवादीहोवैनहीं ॥ किंतु सोपुरुष गौणअतिवादी होवैहै ॥ काहेतें? तापितातैंभिन्न आचार्यादिकबहुतपदार्थ बाकीरहतेहैं ॥ तिनोंकूं तिसपुरुषनैं आत्मरूपजान्यानहीं ॥ और जोपुरुष पितामातादिकसर्वपदार्थरूपप्राण मैंहूं याप्रकारकावचनकहेहै ॥ सोपुरुषही मुख्यअतिवादी कह्याजावैहै ॥ हेनारद! ताप्राणात्मवादीपुरुषकेप्रति जोकदाचित् कोईकपुरुष तू किसप्रकारअतिवादीहै याप्रकारकाप्रश्नकरै तोभी सोप्राणात्मवादीपुरुष मैंअतिवादीनहींहूं याप्रकारकावचन कदाचित्भी नहींकथनकरै ॥ किंतु सोप्राणात्मवादीपुरुष मैं अतिवादीहूं याप्रकारकावचन निःशंकहोइकैकथनकरै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार जबी तासनत्कुमारभगवान्नैं नारदकेप्रति प्राणोंकीअधिकताकथनकरी ॥ तबी सोनारदमुनि ताप्राणतैंपरेतत्त्वकेपूछणेविषे असमर्थहुआ तूष्णींभावकूंप्राप्तहोइकै पुनः प्रश्नकरणेतैंउपरामहोताभया ॥ काहेतें? यालोकविषे जिसपुरुषकूं जिसपदार्थका सामान्यरूपतैंज्ञानहोवैहै ॥ सोपुरुषही तिसपदार्थकेविशेषरूपजानणेवासते प्रश्नकरेहै ॥ तासामान्यज्ञानतैंविना विशेषरूपकाप्रश्नहोवैनहीं ॥ जैसे यहपुरुष ब्राह्मणहै याप्रकारकेसामान्यज्ञानहुएतैंअनंतरही यहपुरुष कौनब्राह्मणहै याप्रकारका विशेषप्रश्नहोवैहै ॥ सामान्यज्ञानतैंविना विशेषरूपकाप्रश्नहोवैनहीं ॥ सोइहांप्रसंगविषे प्राणोंतैंपरेजोतत्त्व है ॥ सोतत्त्व मनका तथावचनोंका तथाप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंका अविषयहै ॥ यातैं ताप्राणतैंपरेतत्त्वकूं सोनारद नहींजानताभया ॥

याकारणतैंही सोनारद तातत्त्वकाप्रश्न नहींकरताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सोनारद तासनत्कुमारकेप्रति ताप्राणकेउपासना काफल किसवासतेनहींपूछताभया? ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! तासनत्कुमारभगवान्‌नैं तानारदकेप्रति तू प्राणोंकीब्रह्मरूपकरि कैउपासनाकर याप्रकारकावचन जो पूर्व कथनकर्‍याहोता तौ सोनारद ताप्राणोंकेउपासनाकाफल पूछता ॥ परंतु सोवचन तासनत्कुमारनैं कथननहींकर्‍याथा ॥ यातैं सोनारद ताउपासनाकेफलकाप्रश्न नहींकरताभया ॥ हेशिष्य! इसप्रकार तानारदमुनिकूं तूष्णींहुआदेखिकै सोभगवान्‌सनत्कुमार कृपाकरिकैयुक्तहुआ तानारदमुनिकेप्रति आपेही ताप्राणतैंपरेतत्त्वका उपदेशकरताभया ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद! प्राणकेज्ञानतैंही सोअतिवादीपणाहोवैहै यहतुमनैं निश्चयकरणानहीं ॥ काहेतैं? ताप्राणतैंपरे जोकोईअधिकवस्तु नहींहोता तौ ताप्राणकेज्ञानतैं अतिवादीपणा सिद्धहोता ॥ परंतु ताप्राणतैंभी सत्यवस्तुअधिक है ॥ यातैं ताप्राणकेज्ञानतैं अतिवादीपणाहोवैनहीं ॥ किंतु जोपुरुष निरंतर तासत्यवस्तुकाही कथनकरेहै ॥ तिसीपुरुषकूं तुमनैं मुख्यअतिवादी जानणा ॥ हेशिष्य! सत्यवस्तुकेकथनकरणेहारापुरुषही मुख्यअतिवादीहोवैहै याप्रकारकेवचनकहणेहारे तासनत्कुमारका यहतात्पर्यहै ॥ जोपरब्रह्म पूर्वअध्यायविषे याजगत्‌काकारणरूपकरिकैकथनकर्‍याहै ॥ और जोपरब्रह्म याअध्यायविषेआगे सुखरूपकरिकैवर्णनकरणाहै ॥ तथा जोपरब्रह्म नामतैंलैके प्राणपर्यंत सर्वविश्वरूपकरिकैकथनकर्‍याहै ॥ सोपरब्रह्महीं तासत्यशब्दकाअर्थहै ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिकै सोभगवान्‌सनत्कुमार तानारदकेप्रति पुनःयाप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेनारद! ताप्राणतैंपरे जोसत्यवस्तुहै॥ सोसत्यवस्तुही तुमारेकूं जानणेयोग्यहै॥ तासत्यवस्तुकेविचारतैंविना तुमनैं आपकूं कृतकृत्यमानिकै स्थितहोणानहीं॥ हेशिष्य! इसप्रकारकावचन जबी तासनत्कुमारनैं नारदमुनिकेप्रति कथनकर्‍या ॥ तबी सो नारदमुनि तासनत्कुमारकेप्रति पूर्वकीन्यांई याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ हेभगवन्! तासत्यवस्तुकेजानणेकीमैं इच्छाकरताहूं ॥ आप कृपाकरिकै हमारेप्रति तासत्यवस्तुकाउपदेशकरो ॥ हेशिष्य! जैसे सोसनत्कुमारभगवान् तानारदमुनिकेप्रति तासत्यवस्तुकेजिज्ञासाकाजनकवचन कहताभया ॥ तैसे विज्ञान १ मनन २ श्रद्धा ३ निष्ठा ४ कृति ५ सुख ६ याषट्‌पदार्थोंकीजिज्ञासाकूंउत्पन्नकरणेहारे

षट्वचनोंकूंकथनकरताभया ॥ तिनषट्वचनोंकूंश्रवणकरिकै सोनारदमुनिभी तासनत्कुमारकेप्रति षट्वार प्रश्नकरताभया ॥ तात्प
र्ययह ॥ हेभगवन्! मैं तासत्वस्तुकेजानणेकीइच्छाकरताहूं इसप्रकारकाप्रथमप्रश्नकरिकै तिसतैंअनंतर मैं विज्ञानकेजानणेकीइच्छा
करताहूं इत्यादिकषट्प्रश्नकरताभया ॥ इहां आनंदस्वरूपसत्यवस्तुतौ उपेयहै ॥ और दूसरेविज्ञानादिकषट्पदार्थतौ उपायरूप
हैं ॥ तथा पूर्वपूर्ववस्तुकेप्राप्तिकासाधनरूपहैं ॥ तहां उपायकरिकैप्राप्तहोणेयोग्यवस्तुकूं उपेयकहेहैं ॥ याप्रकारकीविशेषताकेहुए
तिनोंविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ याकेविषेभी यहविशेषताजानणी ॥ कामनाकीविषयतारूपकरिकै तासुखविषे उपायरू
पताहै ॥ और स्वभावसिद्धसत्यरूपकरिकै तासुखविषे उपेयरूपताहै ॥ अब तिनविज्ञानादिकषट्पदार्थोंकास्वरूप तथा उत्तरउत्तर
पदार्थविषे पूर्वपूर्वपदार्थकेप्राप्तिकीसाधनता निरूपणकरैहैं ॥ हेनारद! जोपुरुष तासत्यस्वरूपब्रह्मकूं प्रत्यक्षजानताहै ॥ सोपुरुष
ही तासत्यवस्तुका स्पष्टकरिकैकथनकरैहै ॥ तासत्यवस्तुकेज्ञानतैंरहितपुरुष तासत्यवस्तुका कथनकरिसकैनहीं ॥ यातैं यहजान्या
जावैहै ॥ तासत्यवस्तुकेकथनविषे तासत्यवस्तुकाप्रत्यक्षप्रमाणरूपविज्ञानहीकारणहै ॥ १ ॥ और हेनारद! नानाप्रकारकीयु
क्तियोंकरिकै तासत्यवस्तुकाचिंतनरूपजोमननहै ॥ तामननकरिकै जबी तासत्यवस्तुरूपप्रमेयके असंभावनाकीनिवृत्तिहोवैहै ॥
तबीही तासत्यवस्तुकाविज्ञानहोवैहै ॥ तामननतैंविना सोसत्यवस्तुकाविज्ञान होवैनहीं यातैंयहजान्याजावैहै ॥ सोमनन ताबि
ज्ञानकाकारणहै ॥ २ ॥ और हेनारद! गुरुशास्त्रकेउपदेशविषेविश्वासरूपजाश्रद्धाहै ॥ ताश्रद्धावालापुरुषही तामननकरणेविषे
प्रवृत्तहोवैहै ॥ ताश्रद्धातैंरहितनास्तिकपुरुष तामननविषे प्रवृत्तहोवैनहीं ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ साश्रद्धा तामननकाकारणहै
॥ ३ ॥ और हेनारद! यहवेदांतशास्त्र जीवब्रह्मकेअभेदकूंकथनकरैहै अथवा भेदकूंकथनकरैहै याप्रकारकीजाप्रमाणगतअसंभाव
नाहै ॥ ताअसंभावनाकूंनिवृत्तकरणेहारी तथाअद्वितीयब्रह्मविषे तिनवेदांतोंकेतात्पर्यकूंनिश्चयकरावणेहारीजे युक्तियांहैं ॥ तिनयु
क्तियोंकेचिंतनकानाम निष्ठाहै ॥ ऐसीनिष्ठावालापुरुषही ताश्रद्धावालाहोवैहै ॥ तानिष्ठातैंरहितपुरुषकूं साश्रद्धाहोवैनहीं ॥ यातैंयह
जान्याजावैहै ॥ सानिष्ठा ताश्रद्धाकाकारणहै ॥ ४ ॥ और हेनारद! यज्ञादिकजेबहिरंगसाधनहैं ॥ तथा शमदमादिक जेअंतरंगसा

धनहैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेसाधनोंका जोअनुष्ठानहै ॥ ताअनुष्ठानकानाम कृतिहै॥ जोपुरुष याप्रकारकीकृतिकरिकैंयुक्तहोवैहै॥ सो पुरुषही अंतःकरणकीशुद्धि तथाएकाग्रता करिकैंयुक्तहुआ तानिष्ठावालाहोवैहै ॥ ताकृतितैंविना सानिष्ठाहोवैनहीं ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ साकृति तानिष्ठाकाकारणहै ॥ ५ ॥ और हेनारद! यालोकविषे जोपुरुष सुखरूपपुरुषार्थकेप्राप्तिकीइच्छाकरेहै॥ सोपुरुषही तिनबहिरंगअंतरंगसाधनोंकूंकरेहै॥सुखकीइच्छातैंविना कोईभीपुरुष तिनसाधनोंविषेप्रवृत्तहोवैनहीं ॥ यद्यपि दुःखकेअभावकीइच्छाकरिकैंभी यालोकोंकी तिनसाधनोंविषेप्रवृत्तिहोवैहै॥ तथापि सोदुःखाभाव स्वतःपुरुषार्थरूपनहींहै॥ किंतु सोदुःखाभावसुखकेअभिव्यक्तिकासाधनरूपहोणेतें याजीवोंकेइच्छाकाविषयहोवैहै॥ यातें यहजान्याजावैहै॥ सोसुख ताकृतिकाकारणहै ॥ ६ ॥ हे शिष्य! इसप्रकार तासनत्कुमारभगवान्केवचनोंकूंश्रवणकरिकैं सांसारिकसुखतैंविरक्तहुआ सोनारदमुनि तासांसारिकसुखकूं दुःखपक्षविषेपावताहुआ मुख्यसुखकीजिज्ञासाप्रगटकरताभया ॥ नारदउवाच ॥ हेभगवन्! हमारेकूंमोक्षकीप्राप्तिहोवै याप्रकारकी कामना जिसपुरुषकेचित्तविषेहै तिसपुरुषनैं तासुखकावास्तवस्वरूप अवश्यकरिकैंजानणेयोग्यहै ॥ हेभगवन्! जिससुखकेज्ञानतैंमोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ सोसुख यासंसारविषेप्रसिद्धहैनहीं ॥ काहेतें? यासंसारविषे याजीवोंकूं विषयोंतैंजोसुखप्राप्तहोवैहै॥ सो विषयजन्यसुख सुखरूपनहींहै॥ किंतु सोविषयजन्यसुख दुःखरूपहीहै॥ काहेतें? यालोकविषे जिसवस्तुका जोस्वभावहोवैहै ॥ तिसवस्तुका सोस्वभाव कदाचित्भी अन्यथाहोवैनहीं ॥ जैसे अग्निकाउष्णस्वभाव किसीकालविषेभीअन्यथाहोवैनहीं ॥ तैसे यह विषयजन्यसुखभी जोसुखरूपहोवै तौ यहविषयजन्यसुख किसीकालमैंभी दुःखरूपनहींहोणाचाहिये ॥ सोऐसादेखणेविषेआवना नहीं ॥ किंतु यहविषयजन्यसुख आपणीअप्राप्तिकालविषेभी याजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरेहै॥ और आपणेवियोगकालविषेभी याजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरेहै॥ इसप्रकार आदिअंतविषे दुःखकीप्राप्तिकरणेहारा यहविषयसुख मध्यकालविषे याजीवोंकूंसुखरूपकिसप्रकारहोवैगा? किंतु आदिअंतकीन्यांई मध्यकालविषेभी सोविषयजन्यसुख दुःखरूपहीहै ॥ हेभगवन्! ऐसेदुःखरूपविषयसुखविषे जोजीवोंकूं सुखरूपताप्रतीतहोवैहै॥ सोकेवल अज्ञानकेवशतें प्रतीतहोवैहै॥ जैसे यालोकविषे शस्त्रकाप्रहार यद्य

पि दुःखरूपहै ॥ तथापि परिपक्कव्रणविषै सोशस्त्रकाप्रहार सुखरूपहोइकैप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे यहविषयजन्यसुख यद्यपि वास्तवतैं दुःखरूपहीहै ॥ तथापि ताअज्ञानकेवशतैं यहविषयसुख याजीवोंकूं सुखरूपहोइकैप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं हेभगवन्! जोवास्तवसुख है सोहमारेप्रति कथनकरो ॥ हेशिष्य! इसप्रकार जबी तानारदमुनिनैं तासनत्कुमारभगवान्केप्रति सुखकास्वरूपपूछा ॥ तबी सोसनत्कुमारभगवान् तानारदकेप्रति तावास्तवसुखकास्वरूप कथनकरताभया ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद! देशपरिच्छेद का लपरिच्छेद वस्तुपरिच्छेद यातीनपरिच्छेदोंतैंरहित जोव्यापकवस्तुहै ॥ तावस्तुकूंही विद्वान्पुरुष सुखरूपकहेहैं ॥ हेनारद! तिन सर्वपरिच्छेदोंतैंरहितहोणेतैं जिसवस्तुकूं श्रुतिनैं भूमा याशब्दकरिकैकथनकन्याहै ॥ ताभूमावस्तुकूंही तू सुखरूपकरिकैजान ॥ ताभूमातैंभिन्न सर्वपदार्थ दुःखरूपहीहैं ॥ हेनारद! जोतुमारेकूं तावास्तवसुखकेस्वरूपनिर्णयकरणेकीइच्छाहोवै तौ तू ताभूमापदा र्थकेजानणेकीइच्छाकर ॥ हेशिष्य! इसप्रकारके तासनत्कुमारभगवान्केवचनोंकूंश्रवणकरिकै सोनारदमुनि तासनत्कुमारकेप्रति ताभूमापदार्थकाप्रश्नकरताभया ॥ तानारदकेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै सोभगवान्सनत्कुमार तानारदकेप्रति याप्रकार ताभूमाकास्वरू प कथनकरताभया ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद! जिसतत्त्वविषेस्थितहुआ यहविद्वान्पुरुष आपणेतैंभिन्नरूपकरिकै किसीभीप दार्थकूं नेत्रइंद्रियकरिकैदेखतानहीं ॥ तथा श्रोत्रइंद्रियकरिकैश्रवणकरतानहीं ॥ तथा मनकरिकैजाणतानहीं ॥ सोतत्त्वही भूमाश ब्दकाअर्थहै ॥ तथासुखशब्दकाअर्थहै ॥ और हेनारद! जिसपदार्थकेबुद्धिविषेआरूढहुए यहपुरुष आपणेआत्मातैंभिन्नपदार्थोंकूं ने त्रइंद्रियकरिकैदेखेहै ॥ तथा श्रोत्रइंद्रियकरिकैश्रवणकरेहै ॥ तथा मनकरिकैजानैहै ॥ सोपदार्थ अल्पहोवैहै ॥ तथा दुःखरूपहोवै है ॥ तहांश्रुति ॥ द्वितीयाद्वैभयंभवति ॥ अर्थयह ॥ आत्मातैंद्वितीयवस्तुतैंभयकीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेनारद! जोहमनैं तुमारेप्रति सुखरूपभूमा कथनकन्याहै ॥ सोसुखरूपभूमातौ मरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ यातैं सोभूमा अमृतरूपहै ॥ और ताभूमातैं भिन्न जितनेअल्पपदार्थहैं ॥ तेअल्पपदार्थतौ तिनमरणादिकसर्वविकारोंवालेहैं ॥ यातैं तेपदार्थ मर्त्यरूपहैं ॥ हेनारद! ऐसेसुख रूपभूमाकूं जबी यहअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंजानैहै ॥ तबीही यहअधिकारीपुरुष मुख्यअतिवादीहोवैहै ॥ ताभूमातैं

भिन्नप्राणादिकोंकेज्ञानतें यहपुरुष मुख्यअतिवादीहोवैनहीं ॥ यातें तामुख्यअतिवादीपणेकीप्राप्तिवासते याअधिकारीपुरुषोंनें ता
सुखरूपभूमाकूंअवश्यकरिकैंजानणा ॥ हेशिष्य! इसप्रकार जबी तासनत्कुमारभगवान्नें नारदकेप्रति भूमाकाउपदेशकऱ्या ॥ त
बी सोनारद आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ यासनत्कुमारभगवान्नें जोहमारेप्रति सुखरूपभूमाकाउपदेशकऱ्या
है ॥ ताभूमाका कोईआधारहै अथवा सोभूमा निराधारहै? तहां ताभूमाका जोकोईआधारमानिये तौ सोभूमाभी घटादिकपदा
र्थोंकीन्यांई परिच्छिन्नहोवैगा ॥ और ताभूमाकूं जोनिराधारमानिये तौ सोनिराधारभूमा हमारेबुद्धिविषे किसप्रकारआरूढहोवैगा?
याप्रकारकीचिंताकरिकैयुक्तहुआ सोनारद तासनत्कुमारकेप्रति याप्रकारकाप्रश्नकरताभया ॥ हेभगवन्! सोसुखरूपभूमा किस
आधारविषेस्थितिकूंप्राप्तहोवैहै? सोभूमाकाआधार हमारेप्रति कथनकरो ॥ हेशिष्य! इसप्रकार तानारदकेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै
सोभगवान्सनत्कुमार तानारदकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद! ताभूमाका जोतूं आधार
पूछताहै ॥ सो व्यवहारमात्रविषेउपयोगीआधार पूछताहै अथवा वास्तवआधारपूछताहै? तहां प्रथमपक्षकूं जोतूं अंगीका
रकरै तौ मायातैंआदिलैकेयहसर्वप्रपंच ताभूमाकीविभूतिहै ॥ ताविभूतिरूपमहिमाविषेही सोभूमास्थितहोवैहै ॥ यातें सोविभू
तिरूपमहिमाही ताभूमाकाआधारहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! यालोकविषे विभूतिरूपमहिमाका तथा तामहिमावालेका परस्पर
भेदहीदेख्याहै ॥ यातें ताविभूतिरूपमहिमातें भिन्नहुआसोभूमा घटादिकोंकीन्यांई वस्तुपरिच्छेदवालाहोवैगा ॥ समाधान ॥
हेनारद! जैसे यालोकविषे देवदत्तनामापुरुषकी गौ अश्व हस्ति हिरण्य दास भार्या क्षेत्र गृह इत्यादिकजाविभूतिहै ॥ सावि
भूतिरूपमहिमा तादेवदत्तपुरुषतें भिन्नहुईप्रतीतहोवैहै ॥ और सोदेवदत्तपुरुष ताभिन्नविभूतिकेआश्रितहुआप्रतीतहोवैहै ॥
तैंसे इहां यहमायासहितप्रपंचरूपमहिमा तासुखरूपभूमातैंभिन्ननहींहै ॥ किंतु सोमहिमा ताभूमातैंअभिन्नहीहै ॥ यातें
ताभूमाविषे भेदरूपवस्तुपरिच्छेदकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोकदाचित् सोमहिमा ताभूमातैंअभिन्नहोवै
गा तौ तामहिमाका तथाभूमाका परस्पर आधाराधेयभाव नहींहोवैगा ॥ काहेतें? यालोकविषे परस्परभिन्नपदार्थों

काही परस्पर आधाराधेयभावहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेनारद! जैसे ॥ स्वयंदासास्तपस्विनः ॥ अर्थयह ॥ तपस्वीपुरुषआप आपणेदासहैं ॥ यास्थलविषे एकहीतपस्वियोंविषे स्वामीदासभावहोवैहै ॥ तैसे तासुखरूपभूमाका सर्वपरिच्छेदतैंरहितजोआप णास्वरूपहै ॥ सोआपणास्वरूपही ताभूमाकामहिमाहै ॥ तास्वरूपभूतमहिमाविषे सोभूमा व्यवहारदृष्टिकरिकै स्थितहोवैहै ॥ और ताभूमाका कोईवास्तवआधारहै यहदूसरापक्ष जोतू अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं? पूर्वउक्तआपणेमहिमा स्वरूप तैंभिन्नपदार्थोंविषेतौ सोभूमा कदाचित्भीरहैनहीं ॥ और आपणेस्वरूपभूतमहिमाविषे जोताभूमाकीस्थिति कथनकरीहै ॥ सो भी व्यवहारदृष्टिकूंलैकेकथनकरीहै ॥ ताव्यवहारदृष्टिकेपरित्यागकियेतैं सोभूमा आधारतैंरहित निराधारकह्याजावैहै ॥ अब सोनि राधारभूमा किसप्रकार बुद्धिविषे आरूढहोवैगा? ऐसीनारदकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासते प्रथम ताभूमाकूं तत्पदार्थरूपकरिकै वर्णनकरै हैं ॥ हेनारद! यहतत्पदार्थरूपभूमाही दशोंदिशाविषेस्थितहै ॥ तथा तीनकालोंविषेस्थितहै॥ और जैसे निर्मलआकाश विषे गंधर्वनगरकल्पितहोवैहै ॥ तैसे सर्वभेदतैंरहितयाभूमाविषे यहदेशकालतैंआदिलैके सर्वस्थूलसूक्ष्मपदार्थ कल्पितहैं ॥ और कल्पितवस्तु अधिष्ठानतैंभिन्नहोवैनहीं याकारणतैं सोभूमाही यासर्वजगत्रूपहै ॥ इसप्रकार यासर्वजगत्काअधिष्ठानरूपकरिकै ताभूमाकूं तू प्रथम आपणीबुद्धिविषेआरूढकर ॥ तिसतैंअनंतर ताभूमाकीतटस्थरूपताकेनिवृत्तकरणेवासते सोसर्वत्रव्यापकभूमा अहंअस्मि याप्रकार ताभूमाकूं तू आपणाआत्मारूपकरिकैजान ॥ शंका ॥ हेभगवन्! परिच्छिन्नअहंकारविशिष्टकावाचक जोअ हंशब्दहै ॥ ताअहंशब्दका व्यापकभूमाविषे प्रयोगकरणा संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेनारद! यद्यपि अहं याशब्दतैंअहंकारकी प्रतीतिहोवैहै ॥ तथापि ताअहंकारकी ताभूमाविषे सादृश्यताहै ॥ तासादृश्यताकूंग्रहणकरिकै सोअहंशब्द गौणीलक्षणाकरिकै ताभूमाकाहीबोधनकरैहै ॥ अब ताअहंकारकी तथाभूमाआत्माकी सादृश्यता निरूपणकरैहैं ॥ हेनारद! पूर्वादिकदशोंदिशावि षे तथा भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषे स्थित जितनेदेहधारीजीवहैं ॥ तेसंपूर्णजीव प्रथम अहं याप्रकारकाअनुभव करतेहुएही पश्चात् वचनउच्चारणादिकव्यवहारोंकूंकरैहैं ॥ ताअहंअनुभवतैंविना कोईभीव्यवहार सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं यहजा

न्याजावैहै ॥ यहअहंकारही याजीवोंकेसर्वव्यवहारोंकाकारणहै ॥ ऐसासर्वव्यवहारोंकाकारणभूतअहंकार जैसे सर्वदिशावोंकूं तथा सर्वभूतप्राणियोंकूं व्याप्यकरिकै स्थितहुआहै ॥ तैसे ताअहंकारकाआश्रयरूपकरिकै यहजीवात्माभी तिनसर्वदिशावोंकूं तथा सर्वभूतप्राणियोंकूं व्याप्यकरिकैस्थितहुआहै ॥ याप्रकार अहंकारकी तथाभूमाआत्माकी सर्वत्रव्यापकतारूप सादृश्यताहै ॥ ता सादृश्यताकूंअंगीकारकरिकै सोअहंशब्द लक्षणावृत्तिकरिकै सर्वउपाधितेंरहितकूटस्थआत्माकूंहीबोधनकरैहै ॥ तिसीकूटस्थआत्माका तत्पदार्थरूपभूमाकेसाथ अभेद तत्त्वमसिआदिकमहावाक्योंनें प्रतिपादनकरताहै ॥ अब ताअभेदज्ञानका जीवन्मुक्तिरूपफल निरूपणकरै हैं ॥ हेनारद! जैसे यालोकविषे यहअज्ञानीपुरुष नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै तथामनकरिकै सर्वव्यवहारोंकूंकरते हुएभी आपणेमनुष्यपणेकूंविस्मरणकरतेनहीं ॥ किंतु आपणेमनुष्यपणेकूं संशयविपर्ययतैंरहितहोइकै सर्वदा अनुभवकरै हैं ॥ तैसे जोपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं तिनअहंकारादिकउपाधियोंकाविस्मरणकरिकै मैंआत्मा भूमारूपहूं याप्रकारके संशयविपर्ययतैंरहितज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोविद्वान्पुरुष वेदांतशास्त्रकेचिंतनकालविषे आनंदस्वरूपआत्माविषेही क्रीडाकरताहुआ स्थितहोवैहै ॥ जैसे बालक बालकोंकेसमुदायविषे क्रीडाकरताहुआ स्थितहोवैहै ॥ और सोविद्वान्पुरुष स्नानभोजनादिककालविषेभी ताआनंदस्वरूपआत्माविषेही चित्तकीशक्तिरूपरतिकूंधारणकरताहुआ स्थितहोवैहै ॥ जैसे कामीपुरुष विदेशविषेस्थितहुआभी चित्तकी शक्तिरूपरतिकूं सर्वदा आपणीस्त्रीविषेहीराखैहै ॥ इतनैंकरिकै यहअर्थबोधनकऱ्या ॥ जीवन्मुक्तपुरुषकी दोप्रकारकीदशाहोवैहै ॥ एकतौ समाधिदशाहोवैहै ॥ और दूसरी तासमाधितैंउत्थानदशाहोवैहै ॥ तहां तासमाधितैंउत्थानदशाभी दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौ वेदांतशास्त्रकाचिंतनरूप उत्थानदशाहोवैहै ॥ और दूसरीस्नानभोजनादिकव्यवहाररूप उत्थानदशाहोवैहै ॥ तहां वेदांतशास्त्रकाचिंतनरूप प्रथमउत्थानदशाविषे सोविद्वान्पुरुष जोआत्माकाचिंतनकरैहै ॥ ताआत्मचिंतनकूं श्रुतिनैं क्रीडाशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ और स्नानभोजनादिकव्यवहाररूप दूसरीउत्थानदशाविषे सोविद्वान्पुरुष जोआत्माकाचिंतनकरैहै ॥ ताआत्मचिंतनकूं श्रुतिनैं रतिशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ और जैसे साव्युत्थानदशा दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तैसे सासमाधि

दशाभीदोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौ सविकल्पसमाधिहोवैहै ॥ और दूसरीनिर्विकल्पसमाधिहोवैहै ॥ तहां सविकल्पसमाधि विषे सोविद्वान् जोआत्माकाचिंतनकरेहै ॥ ताआत्मचिंतनकूं श्रुतिनैं मिथुन याशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ और निर्विकल्पस माधिविषे सोविद्वान्पुरुष जोआत्माकाचिंतनकरेहै ॥ ताआत्मचिंतनकूं श्रुतिनैं आनंद याशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तहां क्रीडा रति यादोनोंशब्दोंकाअर्थ पूर्वनिरूपणकऱ्या ॥ अब मिथुन आनंद यादोनोंशब्दोंकाअर्थ निरूपणकरैहैं ॥ हेनारद ! जैसे यालोक विषे गृहकेसर्वव्यवहारोंकापरित्यागकरिकै एकांतदेशविषे स्थितहुए जेस्त्रीपुरुषहैं ॥ तिनस्त्रीपुरुषदोनोंका जोपरस्परमिथुनीभाव है ॥ सोमिथुनीभाव तिनदोनोंके परस्पर विषयानंदकाहेतुहोवैहै ॥ तैसे याविद्वान्पुरुषका ध्याताध्येयभावकरिकै जोआत्माविषे मिथुनीभावहै ॥ सोमिथुनीभावही याविद्वान्पुरुषकूं सविकल्पसमाधिकालविषे आनंदकाहेतुहोवैहै ॥ और हेनारद ! जैसे यालो कविषे गांधर्वादिकविषयोंकीप्राप्तितैंअनंतर परीक्षकपुरुषोंकूं जोताकेआनंदरूपफलकाअनुभवहोवैहै ॥ सोआनंदकाअनुभव नि र्विकल्पहीहोवैहै ॥ तैसे याविद्वान्पुरुषकूं निर्विकल्पसमाधिकालविषे जोनिरतिशयआनंदकाअनुभवहोवैहै ॥ सोआनंदकाअनुभव भी ध्याता ध्यान ध्येय इत्यादिकत्रिपुटीरूपविकल्पतैंरहितहीहोवैहै ॥ हेनारद ! ताविद्वान्पुरुषकूं जोआत्माविषेहीआनंदहोवैहै ॥ याकेविषे यहकारणहै ॥ अद्वितीयआत्माकूं साक्षात्अनुभवकरताहुआ सोविद्वान्पुरुष जन्ममरणादिकसर्वदुःखोंकीनिवृत्तिविषे किसीदूसरेकीअपेक्षाकरतानहीं ॥ याकारणतैं सोविद्वान्पुरुष विराट्भगवान्कीन्यांई स्वराट् यासंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सोवि द्वान्पुरुषही ब्रह्मरूपहोणेतैं सर्वजीवोंकाआत्मरूपहै ॥ याकारणतैं सोविद्वान्पुरुष संपूर्णश्रेष्ठलोकोंविषे कामचारहोवैहै ॥ इहां प्रतिबंधतैंरहित तिनसर्वलोकोंकेप्राप्तिकानाम कामचारहै ॥ इतनेकरिकै ताभूमाआत्माकेज्ञानकाफल निरूपणकऱ्या ॥ अब ता ज्ञानतैंरहितपुरुषोंकूं अनर्थकेप्राप्तिकावर्णनकरैहैं ॥ हेनारद ! जेमूढपुरुष ताभूमाकूं आपणाआत्मरूपकरिकैनहींजानेहैं ॥ किंतु मोहकेवशतैं ताभूमाकूं आपणेआत्मातैंभिन्नकरिकैजानेहैं ॥ तेमूढपुरुष सर्वदा पराधीनताकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तथा नाशवान्लोकोंकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तथा स्वतंत्रतातैंरहितहोवैहैं ॥ तथा वारंवार जन्ममरणादिकदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ अब तिनविद्वान्पुरुषोंकूं जगत्

काकर्ताईश्वररूपकरिकैवर्णनकरैहैं ॥ हेनारद ! जोपुरुष पूर्वउक्तप्रकारसैं ता तत्पदार्थरूपभूमाकूं आपणाआत्मरूपकरिकैजाने है ॥ ताविद्वान्पुरुषतैंही नामतैंआदिलैकेप्राणपर्यंत पूर्वउक्तपंचदशतत्त्व उत्पन्नहोवैहैं ॥ जैसे रज्जुतैं सर्प उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे ताविद्वान्पुरुषतैं नामादिकउत्पन्नहोवैहैं ॥ और यज्ञादिककर्मोंसहित तथास्वर्गादिकफलोंसहित जेमंत्रब्राह्मणरूप ऋगादिक चारिवेदहैं ॥ तेचारिवेदभी ताविद्वान्पुरुषतैंही उत्पन्नहोवैहैं ॥ हेनारद ! याकेविषे हम बहुतक्याकहैं ? यहजितनास्थूलसूक्ष्मजगत्है ॥ सोसंपूर्णजगत् ताविद्वान्पुरुषतैंही उत्पन्नहोवैहै ॥ हेनारद ! जिनपुरुषोंकूं ताभूमाआत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ तिनपुरुषोंके तेसंपूर्णजन्ममरणादिकदुःख निवृत्तहोवैहैं ॥ यहजो हमनैं तुमारेप्रति आत्मज्ञानकाफल कथनकर्याहै ॥ ताकेविषे वेदवेत्तापुरुष याप्रकारकामंत्ररूपश्लोक कथनकरैहैं ॥ नपश्योमृत्युंपश्यति नरोगंनोतदुःखताम् ॥ सर्वंहपश्यःपश्यति सर्वमाप्नोतिसर्वशः ॥ अब याश्लोककाअर्थ निरूपणकरैहैं ॥ हेनारद ! यहजीवात्मा आपणेज्ञानकेबलतैं शुभअशुभरूपसर्वसंसारकूं तथामोक्षकूं देखेहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याजीवात्माकूं पश्य यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और मृत्युनाम मरणकाहै ॥ तामृत्युशब्दकरिकै ज्वरादिकरोगोंतैंविना जितनेयाशरीरकेजन्मादिकधर्महैं तिनसर्वधर्मोंकाग्रहणकरणा ॥ और उदरविषे जठराग्निकरिकैपरिपक्वकर्याहुआजोअन्नकारसहै ॥ तारसकीन्यूनअधिकतातैं उत्पन्नभयेजेज्वरादिकव्याधिहैं तिनज्वरादिकोंकानाम रोगहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! तामंत्ररूपश्लोकविषेस्थितमृत्युशब्दकरिकै जैसे जन्मादिकविकारोंकाग्रहणहोवैहै ॥ तैसे तामृत्युशब्दकरिकै ज्वरादिकरोगोंकाभी ग्रहणहोइसकैहै ॥ यातैं श्रुतिविषे ज्वरादिकरोगोंका पृथक्ग्रहणकरणा असंगतहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ! जैसे याजीवोंकामरण अल्पकालपर्यंत स्थायीरहेहै ॥ तैसे याजीवोंकेजन्मादिकभी अल्पकालपर्यंत स्थायीरहेहैं ॥ यातैं अल्पकालस्थायीतारूप सामान्यधर्मकूं अंगीकारकरिकै सोमृत्युशब्द तिनजन्मादिकोंकाभी बोधनकरैहै ॥ और ज्वरादिकोंविषे सोअल्पकालपर्यंतस्थायीपणाहैनहीं ॥ किंतु तिनज्वरादिकोंविषे चिरकालपर्यंत स्थायीपणाहै ॥ यातैं श्रुतिविषे तामृत्युशब्दकरिकै तिनज्वरादिकोंकाग्रहणकर्यानहीं ॥ किंतु तामृत्युशब्दतैंभिन्न रोगशब्दकरिकै तिनज्वरादिकोंकाग्रहणकर्याहै ॥ और जरायुज अंडज स्वे

दज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेभूतप्राणियोंकी जेनानाप्रकारकीविलक्षणबुद्धियांहैं ॥ तिनबुद्धियोंविषे प्रतिबिंबितत्वरूपकरिकै नाना प्रकारकेभेदवालेजेजीवहैं ॥ तिनजीवोंका जोजन्मादिकअनेकधर्मवालेशरीरकेसाथ अहंममअध्यासरूपसंबंधहै ताकानाम दुःख है ॥ ऐसे मरणादिकविकारोंकूं तथाज्वरादिकरोगोंकूं तथाअहंममअध्यासरूपदुःखकूं सोपश्यनामाजीव देखतानहीं ॥ हेनारद! सो पश्यनामाविद्वान्जीव तिनमृत्युआदिकोंकूंजोनहींदेखैहै ॥ याकेविषेयहकारणहै ॥ स्थूलसूक्ष्मरूपकरिकैप्रसिद्ध जितना यहद्वै तप्रपंचहै ॥ सोसंपूर्णद्वैतप्रपंच आत्माविषेकल्पितहै ॥ ताकल्पितप्रपंचकी तबपर्यंत स्थितिहोवैहै ॥ जबपर्यंत ताप्रपंचविषे क ल्पितरूपताकूंविषयकरणेहाराज्ञान नहींउत्पन्नभया ॥ ताज्ञानकेउत्पन्नहुएतैंअनंतर ताकल्पितप्रपंचका पुनःदर्शनहोवैनहीं ॥ इस प्रकार यासर्वद्वैतप्रपंचकूं अधिष्ठानआत्माविषे कल्पितरूपकरिकैदेखणेहारा सोविद्वान्पुरुष तिनमरणादिकविकारोंकूंदेखतान हीं ॥ और याभूमाआत्माकेज्ञानतैंअनंतर यहसंपूर्णजगत् ताभूमाआत्माविषे अनन्यभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोअनन्यभावही या जीवात्माकूं यासर्वजगत्कीप्राप्तिहै ॥ काहेतें? सर्ववेदोंकेतात्पर्यकाविषय जोयहभूमाआत्माहै ॥ ताभूमाआत्माविषेही यहसंपूर्ण यज्ञलोकादिरूपवेदकाअर्थ अंतर्भूतहै ॥ ताभूमाआत्मातैंभिन्न कोईवेदकाअर्थहैनहीं॥ यातें ताभूमाआत्माकेविज्ञानतैं यहजीवा त्मा तिनसर्वपदार्थोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्ता संभवहोइसकैहै ॥ अब ताविद्वान्पुरुषविषे उपाधिकेयोगतें नानारूपताका निरूपण करेहैं ॥ हेनारद! मैं भूमारूपहूं याप्रकारकेज्ञानयुक्त सोविद्वान्पुरुष आपणेवास्तवभूमारूपकरिकैएकहुआभी आपणीमायाकरिकै नानारूपहोवैहै ॥ तहां सोविद्वान्पुरुष आत्मा माया तामायाकाकार्य यातीनरूपोंकूंग्रहणकरिकैतो तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ और सो विद्वान्पुरुष आकाश वायु तेज जल पृथिवी यापंचभूतोंकूंग्रहणकरिकै अथवा श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंकूंग्रहणकरिकै पंचप्रकार काहोवैहै ॥ और सोविद्वान्पुरुष भूरादिकसप्तलोकोंकूंग्रहणकरिकै सप्तप्रकारकाहोवैहै ॥ और सोविद्वान्पुरुष आदित्य चंद्रमा मं गल बुद्ध बृहस्पति शुक्र शनि राहु केतु यानवग्रहोंकूंग्रहणकरिकै नवप्रकारकाहोवैहै ॥ और पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय एकमन याएकादशइंद्रियोंकूंग्रहणकरिकै सोविद्वान्पुरुष एकादशप्रकारकाहोवैहै ॥ और तिनएकादशइंद्रियोंविषे एकएकइंद्रियके दशदश

प्रकारकीवृत्तियोंकूं अंगीकारकरिकै सोविद्वान्पुरुष एकशतदश ११० प्रकारकाहोवैहै ॥ और दिनरात्रिविषे एकविंशतिसहस्र षट्
शत २१६०० श्वासप्रश्वासचालेहैं ॥ तिनश्वासप्रश्वासरूपहंसमंत्रोंकेभेदकूंग्रहणकरिकै सोविद्वान्पुरुष एकविंशतिसहस्रषट्शत
प्रकारकाहोवैहै ॥ इसप्रकार सोब्रह्मरूपविद्वान्पुरुष वास्तवतैंएकअद्वितीयरूपहुआभी उपाधिकेभेदकूंअंगीकारकरिकै नानाप्रकार
काहोवैहै ॥ अब ताआत्मज्ञानके आहारशुद्धिआदिकसाधनोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेनारद! जेपुरुष बाह्यतौ सर्वदा पुण्यकर्मोंकाअ
नुष्ठानकरैहैं ॥ परंतु जिनोंकेमनविषे सर्वदा पापवासनारहेहै ॥ ऐसेपुरुषोंकूं शतकोटिजन्मोंकरिकैभी यहसर्वात्मज्ञान अत्यंतदुर्ल
भहै ॥ जबी अंतरपापवासनायुक्त पुण्यवान्पुरुषोंकूंभी यहआत्मज्ञान दुर्लभहुआ ॥ तबी बाह्यअंतर सर्वदा पापकर्मोंकेआचरणक
रणेहारेपुरुषोंकूं यहआत्मज्ञान दुर्लभहै याकेविषेक्याकहणाहै? यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं ताआत्मसाक्षात्कारकी इच्छाहोवै ॥ ति
सअधिकारीपुरुषनैं प्रथम आपणेचित्तकूंशुद्धकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन्! साचित्तशुद्धि किसप्रकारसैंहोवैहै? ॥ समाधान ॥ हेना
रद! आपणेआपणेवर्णआश्रमकेअनुसार प्राप्तभयेजेअन्नपानादिकविषयहैं ॥ तिनविषयोंकेग्रहणकानाम आहारहै ॥ सोआहार जि
सपुरुषका रागद्वेषतैंरहितबुद्धिकरिकै पापतैंरहितशुद्धहुआहै ॥ तिसीपुरुषकाचित्त शुद्धहोवैहै ॥ ताआहारकीशुद्धितैंविना चित्तकी
शुद्धिहोवैनहीं ॥ हेनारद! जैसे आहारशुद्धिवालेपुरुषकी पापकर्मोंविषेप्रीतिहोवैनहीं ॥ तैसे जोपुरुष बीज योनि व्यवहार यातीनों
केशुद्धिवालाहोवैहै ॥ तिसपुरुषकी आपदाकालविषेभी पापकर्मविषेप्रीतिहोवैनहीं ॥ इहां पितृकुलकानाम बीजहै ॥ और मातृकुल
कानाम योनिहै ॥ और पदार्थोंकेग्रहणत्यागकानाम व्यवहारहै ॥ हेनारद! इसप्रकार आहार व्यवहार बीज योनि याचारोंकीशुद्धि
करिकै जिसपुरुषकाचित्त शुद्धहुआहै ॥ तिसपुरुषकी कदाचित्भी पापकर्मविषेप्रीतिहोतीनहीं ॥ और पापकर्महीं चित्तकेएकाग्रता
का प्रतिबंधकहोवैहै ॥ जबी तिनआहारादिकोंकीशुद्धिकरिकै यहपुरुष तिनपापकर्मोंतैंरहितहोवैहै ॥ तबी याअधिकारीपुरुषकाचि
त्त एकाग्रताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसेशुद्धचित्तवालापुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं शीघ्रही आपणेभूमास्वरूपआत्माकूंसाक्षात्कारकरैहै ॥
जैसे भिल्लपुरुषोंकरिकैपालनकऱ्याहुआ कोईक्षत्रियराजाकापुत्र किसीमहात्मापुरुषकेमुखतैं तूंक्षत्रियराजाकापुत्रहै याप्रकारकेवच

नकूंश्रवणकरिकै शीघ्रही आपणेक्षत्रियस्वरूपकूंस्मरणकरेहै ॥ तैसे तूब्रह्मरूपहै याप्रकारकेब्रह्मवेत्तागुरुकेवचनकूंश्रवणकरिकै सो शुद्धचित्तवालापुरुष शीघ्रही आपणेब्रह्मरूपकूंस्मरणकरेहै ॥ हेनारद! जोकोईपुरुष पूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैं ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशकरिकै याभूमाआत्माकेस्मृतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोपुरुष ताआत्मज्ञानरूपखड्गकरिकै कामक्रोधादिकग्रंथियोंकूं शीघ्रही छेदनकरेहै ॥ ताआत्मज्ञानतैंविना तेकामक्रोधादिकग्रंथियां कदाचित्भी निवृत्तहोवैंनहीं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषनैं ताकामक्रोधादिकबंधकेनिवृत्तकरणेवासतै ताभूमाआत्माकेज्ञानकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ अब तानारदमुनिविषे ब्रह्मविद्याकेअधिकारीकेविशेषणोंकानिरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य! सोनारदमुनि पूर्वउक्तआहारादिकोंकीशुद्धिकरिकै शुद्धचित्तवालाहोताभया ॥ ताचित्तशुद्धितैंअनंतर सोनारदमुनि कामक्रोधादिकोंतैंरहितहोताभया ॥ हेशिष्य! हरीतकीआदिकोंतैंउत्पन्नभयाजोरसहै ॥ जिसरसकेसंबंधतैंवस्त्रादिकोंविषे कुसंभादिकोंकारंग अत्यंतदृढहोवैहै ॥ ताहरीतकीआदिकोंकेरसकूं बुद्धिमान्पुरुष कषाय याशब्दकरिकैकथनकरैहैं ॥ ताकषायरसकीन्यांई यहकामक्रोधादिकविकारभी याचित्तरूपवस्त्रकूं रंजितकरैहैं ॥ याकारणतैं तिनकामक्रोधादिकोंकूंभी शास्त्रवेत्तापुरुष कषाय याशब्दकरिकैकथनकरैहैं ॥ और जैसे वस्त्रविषेस्थित ताकषायरसकी क्षारादिकोंकरिकैनिवृत्तिहोवैहै ॥ तैसे तिनकामक्रोधादिककषायोंकीभी ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकैनिवृत्तिहोवैहै ॥ और सोनारदमुनि तिनब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नथा ॥ तथा यासंसारसमुद्रतैंवैराग्यवान्था ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवतीनैं तानारदमुनिकूं मृदितकषाय यानामकरिकैकथनकयाहै ॥ ऐसेमृदितकषायनारदमुनिकेतांई सोभगवान्सनत्कुमार मूलअज्ञानरूपतमका भूमारूपपरपार दिखावताभया ॥ जैसे यालोकविषे यहपुरुष आपणेशत्रुकेप्रति दुःख दिखावैहै ॥ तैसे तानारदमुनिकेप्रति सोभगवान्सनत्कुमार भूमाआत्मा दिखावताभया ॥ जिसभूमाआत्माकेदर्शनकरिकै यहअधिकारीपुरुष पुनः संसाररूपशोककूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेशिष्य! जोसनत्कुमारभगवान् तानारदमुनिकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभयाहै ॥ सोसनत्कुमारभगवान् दूसरेजन्मविषे स्वामिकार्त्तिकेयअवतारकूंधारणकरताभयाहै ॥ हेशिष्य! याअर्थविषे इतिहासकूंजानणेहारेब्राह्मण याप्रकारकीकथा कहतेभयेहैं ॥ तिसकथाकूं तू श्रवणकर ॥

किसीकालविषे किसीनिमित्तपाइकै सर्वमुनिजन श्रीकाशीजीविषेजातेभये ॥ तहां तेमुनिजन प्रातःकालविषे स्नानादिकनित्य कर्मोंकूंकरिकै श्रीगंगाजीकेतीरविषेस्थितहोतेभये ॥ और तेसर्वमुनिजन आपणीआपणीबुद्धिकरिकै परब्रह्मकाचिंतनकरते भये ॥ तिसकालविषे भवानीदेवीसहित श्रीमहादेव तहांआवताभया ॥ तिसकालविषे यद्यपि सोमहादेव आपणेस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपकरिकै तिनमुनिलोकोंकेध्यानकाविषयथा ॥ तथापि सोमहादेव कृपाकरिकै तिनमुनिलोकोंके मांसमयनेत्रोंकाविषयहोताभया ॥ ताभवानीसहितमहादेवकूंदेखिकै तेसर्वमुनिजन आपणेआपणेआसनतैंउठतेभये ॥ तथा अत्यंतहर्षकूंप्राप्तहोतेभये ॥ जैसे प्राणोंकेप्रवेशतैं यहशरीर उठैहै ॥ तथा हर्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे तेमुनीश्वर महादेवकूंदेखिकैउठतेभये ॥ तथा हर्षकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तिनसर्वमुनियोंविषे एकसनत्कुमारभगवान् आपणेआसनतैं नहींउठताभया ॥ काहेतैं? सोसनत्कुमारभगवान् सर्वकालविषे एकअद्वितीयआत्माकूंही अंतरबाह्यसर्वत्र परिपूर्णदेखैहै ॥ और तिसकालविषेतौ सोसनत्कुमारभगवान् विशेषकरिकैसमाधिविषेस्थितथा ॥ याकारणतैं सोसनत्कुमार महादेवकूंदेखिकै अभ्युत्थान नहींकरताभया ॥ और तासनत्कुमारतैंविना दूसरेमुनिजनतौ तामहादेवकूंदेखिकै अभ्युत्थान करतेभये ॥ तथा ताभवानीसहितमहादेवकूं प्रणामकरतेभये ॥ और तिनमुनिजनोंविषे कितनेकमुनिजनतौ वेदकेपाठादिकोंकरिकै तामहादेवकीस्तुतिकरतेभये ॥ और कितनेकमुनिजनतौ आपणेनवीनस्तोत्रबनाइकै तिनस्तोत्रोंकरिकै तामहादेवकीस्तुतिकरतेभये ॥ और कितनेकमुनिजनतौ प्राचीनपुरुषोंकरिकैकरेहुएस्तोत्रोंकरिकै तामहादेवकीस्तुतिकरतेभये ॥ इसप्रकार सर्वमुनिजन ताभवानीसहितमहादेवकीप्रसन्नताकरिकै आपणेआपणेआसनऊपरि स्थितहोतेभये ॥ इसप्रकार तामुनिजनोंकीश्रद्धाभक्तिकूंदेखिकरिकै अत्यंतप्रसन्नहुआ सोमहादेव तिनसर्वमुनिजनोंकूं मनवांछितवरोंकीप्राप्तिकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोभवानीसहितमहादेव तिसस्थानतैंजाणेकीइच्छाकरताहुआ तहांसर्वमुनिजनोंकूं जहांतहां देखतेभये ॥ तासमाजविषे सनत्कुमारकूं ध्यानविषेस्थितहुआदेखिकै सोभगवान्महादेव परमहर्षकूंप्राप्तहोताभया ॥ परंतु तासनत्कुमारकूंदेखिकै साभवानी हर्षकूंनहींप्राप्तहोतीभई ॥

किंतु साभवानी आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरिकै आपणेस्त्रीस्वभावतें परमक्रोधकूंप्राप्तहोतीभई ॥ अब ताभवानीकेविचार कावर्णनकरेहैं ॥ यहभगवान्महादेव अनादिपुरुषहैं॥ और यहमहादेव सर्वदा योगीजनोंकेहृदयविषेस्थितहैं॥ तथा अष्टांगयोगकरि कैयुक्तपुरुषोंकरिकै यहमहादेव सर्वदा ध्यानकरणेयोग्यहैं॥ तथा यहमहादेवही सर्वविद्यावोंका परमगुरुरूपहैं॥ और जैसे यालो कविषे राजादिकपुरुषोंके गर्भदासपुरुष किंकरहोवेहैं॥ तैसे ब्रह्मा विष्णु इंद्र सर्वलोकपाल इसतेंआदिलेकेजितनेदेवताहैं॥ ते सर्वदेवता यामहादेवकेही गर्भदासकिंकरहैं॥ इहां धनकरिकैमोललीनीजोदासीहै ॥ तादासीविषेउत्पन्नहुएपुत्रोंकानाम गर्भदास है ॥ तैसे यामहादेवनें सत्तास्फूर्तिरूपधनदेके यामायारूपदासीकूं आपणेवशकन्याहै ॥ तामायारूपदासीतेंही तिनब्रह्मादिकदेवता वोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ यातें तेब्रह्मादिकदेवता इनमहादेवके गर्भदासहैं॥ और यहमहादेवही महदादिकतत्त्वोंका तथास्थावरजंग मभूतोंका जनकहैं॥ तथा तिनमहदादिकोंकापालनकरणेहारेहैं॥ तथा तिनमहदादिकोंका संहारकरणेहारेहैं ॥ और यामहा देवकेसमान पूर्व कोईहुआनहीं॥ और आगेकोईहोवैगानहीं॥ और अबीकोईहैनहीं॥ जबी यामहादेवके समानभीकोईनहींभ या ॥ तबी यामहादेवतेंअधिक कौनहोवैगा? किंतु यामहादेवतें कोईभीअधिकनहींहै ॥ और यामहादेवनें कामदेवकूंनाशक न्याहै ॥ यातें यहमहादेवही ब्रह्मचर्यधर्मवालाहै ॥ ऐसेजगद्गुरुमहादेवकूं मैंस्त्रीसहितदेखिकै यहसनत्कुमार स्त्रीकेअधीनमानता भयाहै ॥ और यहसनत्कुमार आपणेकूंब्रह्मचारीमानिकै महान्गर्वयुक्तहुआहै ॥ याकारणतेंही यहसनत्कुमार श्रीमहादेवकूंदेखि कै अभ्युत्थान तथानमस्कार नहींकरताभयाहै ॥ यातें याअभिमानीसनत्कुमारकेप्रति मैं कोईदारुणशापदेवों ॥ हेशिष्य ! इस प्रकार साभवानीदेवी तासनत्कुमारकेप्रति शापदेणेकानिश्चयकरिकै पुनःसाभवानी यासनत्कुमारकेप्रति मैं कौनशापदेवों याप्र कारकाविचारकरतीभई ॥ तहां यालोकविषे महान्दुःखकीप्राप्तिकरणेहारेजेस्थानहैं ॥ तिनस्थानोंविषेनिवासकरणेहारे यद्यपि अ नेकजीवहैं ॥ तथापि तिनसर्वजीवोंविषे अश्वोंकीसेवातें आपणाजीवनकरणेहारेपुरुष मुख्यहैं ॥ काहेतें ? दुर्गंधकरिकैयुक्त जाअ श्वोंकीशालाहै ॥ तादुर्गंधशालाविषे तिनपुरुषोंका सर्वदा निवासरहेहै ॥ तथा बहुतसेवाकरणेतेंभी तिनोंकूं अल्पधनकीप्राप्तिहो

वैहै ॥ यातैं अश्वोंकीसेवाकरणेहारेमनुष्य सर्वमनुष्योंतैंनीचहैं ॥ ऐसेअश्वोंकीसेवाकरणेहारेपुरुषोंकेकुलविषे यासनत्कुमारकाज
न्महोवै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारकाविचारकरिकै साभवानी तासनत्कुमारकेप्रति याप्रकारकाशापदेतीभई ॥ हेसनत्कुमार ! तुमनैं ह
मारे महादेवभर्त्ताकाअपमानकऱ्याहै ॥ यातैं अश्वोंकीसेवाकरणेहारेपुरुषोंकेकुलविषे तुमाराजन्महोवैगा ॥ हेशिष्य ! जिसकालवि
षे साभवानीदेवीतासनत्कुमारकेप्रति याप्रकारकाशापदेतीभई ॥ तिसकालविषे सोमहादेव ताभवानीकेप्रति ताशापदेणेतैं बहुत
निवारणकरताभया ॥ तथापि क्रोधकेवशहुई साभवानी तामहादेवकेवचनकूंभी नहींअंगीकारकरतीभई ॥ हेशिष्य ! ताभवानीके
शापतैं अनंतर सोसनत्कुमार तापूर्वशरीरकापरित्यागकरिकै अश्वोंकेसेवाकरणेहारेशरीरकूंप्राप्तहोताभया ॥ ताशरीरविषेभी सो
सनत्कुमार परमआनंदकूंप्राप्तहोताभया ॥ काहेतैं ? पूर्वब्राह्मणशरीरविषे स्नानादिकनित्यनैमित्तिककर्मोंकेकरणेकरिकै जेक्लेशहोते
थे ॥ तेसर्वक्लेश याअश्वसेवकशरीरविषे निवृत्तहोतेभये ॥ और अश्वोंकेभक्षणकरणेयोग्यजेचणकादिकअन्नहैं ॥ तिनोंकूंभक्षणक
रिकै सोसनत्कुमार अत्यंतस्थूलशरीरवालाहोताभया ॥ और सोसनत्कुमार ताअश्वसेवकशरीरविषे अत्यंतआलसीहोताभया ॥
यातैं ताकेसंबंधियोंनैं तासनत्कुमारकूं अत्यंतआलसीदेखिकै दूसरेकिसीकार्यविषेलगायानहीं ॥ किंतु ताअश्वशालाकेद्वारमात्रकीर
क्षाकरणेवासते तासनत्कुमारकूं ताअश्वशालाकेद्वारऊपरिबैठावतेभये ॥ और सोसनत्कुमार तिनोंकेआज्ञाकूंमानिकै ताअश्वशाला
केद्वारऊपरि रात्रिदिनविषे सुखपूर्वक स्थितहोताभया ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार किसीकालकेव्यतीतहुएतैंअनंतर तामहादेवसहित
साभवानीदेवी ताअश्वशालाकेसमीप आवतीभई ॥ और साभवानीदेवी तासनत्कुमारकूं तिसनीचशरीरविषेभी परमआनंदकूंप्रा
प्तहुआदेखिकै प्रसन्नहोतीभई ॥ तिसतैंअनंतर साभवानीदेवी तासनत्कुमारकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई ॥ हेसनत्कुमार !
मैं तुमारेऊपरिप्रसन्नभईहूं ॥ यातैं जोतुमारेकूंइच्छाहोवै सो हमारेसैंवरमांग ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारकावचन जबी ताभवानीदे
वीनैंकह्या ॥ तबी सोसनत्कुमार ताभवानीदेवीकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेदेवी ! आपनैं कृपाकरिकै हमारेतांई जोय
हशरीरदियाहै ॥ सोयहशरीर यद्यपि पूर्वब्राह्मणशरीरतैंश्रेष्ठहै ॥ तथापि याशरीरविषे विष्ठामूत्रादिकोंकेपरित्यागकरणेवासते उठि

केदूरजाणेकरिकैहमारेकूं बहुतक्लेशहोवैहै ॥ यातैं आप कृपाकरिकै हमारेप्रति ऐसेशरीरकीप्राप्तिकरो ॥ जिसशरीरविषे जोकदा चित् मैंबैठाहुआभी विष्ठामूत्रकापरित्यागकरौं तौभी सोविष्ठामूत्र हमारेशरीरतैं दूरजाइकैपडे ॥ ताविष्ठामूत्रका हमारेशरीरके साथ स्पर्शहोवैनहीं ॥ ऐसे शरीरकीप्राप्तिरूपवर हमारेप्रतिदेवौ ॥ हेशिष्य ! तासनत्कुमारनैं जबी ताभवानीदेवीसैं याप्रकारका वर माग्या तबी साभवानीदेवी पुनः क्रोधवान्होइकै याप्रकारकाशापदेतीभई ॥ हेसनत्कुमार ! उष्ट्रशरीरविषे तेविष्ठामूत्रा दिकमल शरीरतैंदूरजाइकैपडैहैं ॥ यातैं तू ताउष्ट्रशरीरकूंप्राप्तहोवैगा ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार ताभवानीकेशापतैं अनंतर सोसन त्कुमार ताअश्वसेवकशरीरकापरित्यागकरिकै राजाकेगृहविषे उष्ट्रशरीरकूंप्राप्तहोताभया ॥ तहां उष्ट्रोंकेशिक्षाकरणेहारेपुरुषोंनें ता उष्ट्रकूं बहुतप्रकारकीशिक्षाकरी ॥ परंतु सोउष्ट्र किंचित्मात्रभीतिनपुरुषोंकीशिक्षाकूं नहींमानताभया ॥ तिसतैंअनंतर तेउष्ट्रोंके शिक्षाकरणेहारेपुरुष ताउष्ट्रकूंअत्यंतआलसीजानिकै वनविषेपरित्यागकरतेभये ॥ तावनविषेप्राप्तहुआसोउष्ट्र परमसुखकूंप्राप्तहो ताभया ॥ काहेतैं ? तावनविषे सोउष्ट्र करीरादिकबहुतकंटकोंकूं भक्षणकरताभया ॥ तथा श्रीगंगाजीकेमधुरजलकूंपानकरताभ या ॥ और बैठाहुआही सोउष्ट्र मलमूत्रकापरित्यागकरताभया ॥ याकारणतैं सोसनत्कुमारमुनि ताउष्ट्रशरीरविषे परमआनंदकूंप्राप्त होताभया ॥ किंवा सृष्टिकेआदिकालविषे ब्रह्मानैं जितनैंपशुशरीरोंकूं उत्पन्नकऱ्याथा ॥ तिनसर्वशरीरोंविषे याउष्ट्रशरीरकूंसुख रूपजानिकै सोब्रह्मायाउष्ट्रशरीरकूं सर्वतैंप्रथमउत्पन्नकरताभयाहै ॥ यातैं यहउष्ट्रशरीर सर्वपशुशरीरोंतैंश्रेष्ठहै ॥ याप्रकार ताउष्ट्र शरीरविषे सर्वशरीरोंतैंश्रेष्ठताकाविचारकरिकैभी सोसनत्कुमारमुनि ताउष्ट्रशरीरविषे परमआनंदकूंप्राप्तहोताभया ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार कितनेककालकेव्यतीतहुएतैंअनंतर तामहादेवसहित साभवानीदेवी तावनविषेआवतीभई ॥ और तासनत्कुमारकूं ता उष्ट्रशरीरविषेभी परमआनंदकूंप्राप्तहुआदेखिकै साभवानी तासनत्कुमारकेप्रति याप्रकारकावचनकहतीभई ॥ हेसनत्कुमार ! मैं तुमारेऊपरिप्रसन्नभईहूं ॥ यातैं जोतुमारेकूंइच्छाहोवै सोहमारेसैंवरमाँग ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारके ताभवानीकेवचनकूंश्रवणक रिकै सोसनत्कुमार ताभवानीके प्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेदेवी ! आपने कृपाकरिकै हमारेताई जोयहउष्ट्रकाशरीर

दियाहै ॥ इसतैंपरेकोईअधिकवर मैं देखतानहीं ॥ याउष्ट्रशरीरविषेही मैं कृतकृत्यहूं ॥ हेदेवी ! याउष्ट्रशरीरविषे हमारेकूं वे दोंतैं तथालोकोंतैं भयकीप्राप्तितथालज्जाकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ और याउष्ट्रशरीरविषे जोकदाचित् मैंबैठाहुआभी विष्ठामूत्रकापरि त्यागकरताहूं तौभी तेविष्ठामूत्र हमारेशरीरकूंस्पर्शकरतेनहीं ॥ किंतु तेविष्ठामूत्र याहमारेशरीरतैं दूरजाइकेपडेहैं ॥ हेदेवी ! मैं ने याउष्ट्रशरीरविषे परमसुखकाअनुभवकर्‍याहै ॥ यातैं जोकदाचित् परमेश्वर हमारेकूं आगेशरीरोंकीप्राप्तिकरै तौ याउष्ट्रशरीरों कीही वारंवार प्राप्तिकरै ॥ ऐसीप्रार्थना मैं परमेश्वरकेआगेकरताहूं ॥ हेदेवी ! याअनादिसंसारविषे मैंनेपूर्व अनेकप्रकारकेऊंचनी चशरीरोंका अनुभवकर्‍याहै ॥ परंतु याउष्ट्रशरीरकेसमान सुखकाहेतु याब्रह्मांडविषेकोईभीशरीर हमनैंदेख्यानहीं ॥ यातैं इसउष्ट्र शरीरतैंपरेकिसीभीवरकीमैं इच्छाकरतानहीं ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारकेवचन जबी तासनत्कुमारने ताभवानीकेप्रतिकहैं ॥ तबी साभवानी तासनत्कुमारकूंनिष्कामदेखिकै महादेवकेसाथ विचारकरिकै याप्रकारकावचनकहतीभई ॥ हेसनत्कुमारमुनि ! सर्व कामनावोंतैंरहितहोणेतैं जोतू हमारेसैंवरनहींमागता तौ तू हमारेप्रति मनवांछितवरदेहु ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारके ताभवानीके वचनकूं श्रवणकरिकै सोसनत्कुमार ताभवानीकेवचनकूं अंगीकारकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर साभवानी तूहमारापुत्रहोहु ॥ याप्र कारकावरमागतीभई ॥ तावरकूंदेकै सोसनत्कुमार ताभवानीदेवीका स्कंदनामापुत्रहोताभया ॥ तिसीस्कंदकूं शास्त्रवेत्तापुरुष स्वा मिकार्तिकेय यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ जोकामकूं आपणवशकरै ताकूंस्कंदकहेहैं ॥ सोसनत्कुमार तास्कंदनामाअवतारविषेभी पू र्वकीन्याांई ब्रह्मचर्यधर्मविषेभीहीस्थितहोताभया ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार पूर्व सनत्कुमारभगवान्नैं नारदमुनिकेप्रति जोसुखरूपभू माकाउपदेशकर्‍याहै ॥ सोसंपूर्णउपदेश हमनैं तुमारेप्रति कथनकर्‍या ॥ हेशिष्य ! जैसेआरुणिऋषि श्वेतकेतुपुत्रकेप्रति याआ त्मादेवका सत्यरूपकरिकै उपदेशकरताभयाहै ॥ और जैसे सनत्कुमारभगवान् नारदमुनिकेप्रति याआत्मादेवका आनंदरूपकरि कैउपदेशकरताभयाहै ॥ तैसे ब्रह्माइंद्रकेप्रति तथाविरोचनकेप्रति याआत्मादेवका जाग्रतादिकतीनअवस्थावोंतैंरहितरूपकरिकै उपदेशकरताभयाहै ॥ परंतु तिनदोनोंविषे देवराजइंद्रतौ शुद्धआहारवालाथा तथाशुद्धचित्तवालाथा तथापूर्वउक्तस्मृतिवालाथा त

थाकामक्रोधादिकग्रंथियोंकेपरित्यागकरणेविषे यत्नवालाथा ॥ यातैं सोइंद्र ताब्रह्माकेउपदेशतैं जाग्रतादिकतीनअवस्थावोंतैंभिन्न करिकै ताआत्माकूं साक्षात्कारकरताभया ॥ और विरोचन तिनआहारशुद्धिआदिकोंतैंरहितथा ॥ यातैं सोविरोचन जाग्रतादिक तीनअवस्थावोंतैंभिन्नकरिकै ताआत्माकूंनहींजानताभया ॥ किंतु सोविरोचन यास्थूलशरीरकूंही आत्माजानताभया ॥ हेशिष्य ! यात्रयोदशेअध्यायकेआदिविषे जोतुमनैं आत्माकीसुखरूपतापूँछीथी ॥ सो हमनैं तुमारेप्रति विस्तारतैंकथनकरी ॥ अब जिस अर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारेकूं इच्छाहोवै ॥ सोहमारेसैंपूँछ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितेप्राकृताऽऽत्मपुराणे छांदोग्यसारार्थप्रकाशे सनत्कुमारनारदसंवादो नाम त्रयोदशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १३ ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इति आत्मपुराणे स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाया

त्रयोदशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १३ ॥

अथ आत्मपुराणेश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां

चतुर्दशाऽध्यायप्रारंभः ॥ १४ ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ चतुर्दशोऽध्यायप्रारंभः ॥
पूर्वत्रयोदशेअध्यायविषे सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्के सप्तमअध्यायकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब याचतुर्दशेअध्यायविषे तिसी छांदोग्यउपनिषद्केअष्टमअध्यायकाअर्थ निरूपणकरैहैं ॥ तहां पूर्वत्रयोदशेअध्यायविषे ताभूमाआत्माकीसुखरूपताकूंश्रवणकरिकै परमआनंदकूंप्राप्तहुआ सोशिष्य पुनः जाग्रतादिकतीनअवस्थावोंतैंभिन्नरूपकरिकै ताभूमाआत्माकेश्रवणकरणेकीइच्छाकरता हुआ आपणेगुरुकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन्! याआत्मपुराणके प्रथमअध्यायविषे आपनैं ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमअध्यायविषे सनकादिकमुनियोंके तथावामदेवादिकअधिकारीजनोंकेसंवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके द्वितीयअध्यायविषे तथा तृतीयअध्यायविषे आपनैं तिसीऋग्वेदके कौषीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां याआत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषे देवराजइंद्रके तथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्याकथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणकेतृतीयअध्यायविषे राजाअजातशत्रुके तथाबालाकीब्राह्मणकेसंवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषे आपनैं यजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां याआत्मपुराणके चतुर्थअध्यायविषे आपनैं प्रथम एकस्त्रीवंश दोपुरुषवंश यहतीनप्रकारकाऋषियोंकावंश कथनकऱ्याथा ॥ और दध्यङ्अथर्वणऋषिनैं जाब्रह्मविद्या देवराजइंद्रकेप्रति तथाअश्विनीकुमारोंकेप्रति उपदेशकरीथी ॥ साब्रह्मविद्याभी आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा तादध्यङ्ऋषिका देवराजइंद्रतैंमरणभी आपनैं कथनकऱ्याथा ॥ तथा तादध्यङ्ऋषिके क्षमादिकगुणोंकाभी आपनैं कथनकऱ्याथा ॥ इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकीवार्ता ताचतुर्थअध्यायविषे आपनैं कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेपंचमेअध्यायविषे जनकराजाकीयज्ञसभाविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथाआश्वलादिकब्राह्मणोंके संवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥तथा याज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरिकै शाकल्यब्राह्मणकामृत्यु कथनकऱ्याथा ॥ और हेभगवन्!

याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथाजनकराजाके दोवारसंवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनक
रीथी ॥ जाब्रह्मविद्या सूर्यभगवान् याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति देताभयाहै ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे याज्ञ
वल्क्यमुनिके तथा मैत्रेयीस्त्रीके संवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ तथा याज्ञवल्क्यमुनिकेसंन्यासआश्र
मका कथनकऱ्याथा ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके अष्टमेअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्काअर्थ
निरूपणकऱ्याथा ॥ ताअष्टमअध्यायविषे श्वेताश्वतरमुनिके तथासंन्यासियोंके संवादकरिकै आपनैं याजगत्केकारणका निरूपण
कऱ्याथा ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेनवमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या
था ॥ तानवमअध्यायविषे आपनैं यहवार्ता कथनकरीथी ॥ नचिकेता पिताकेवचनकूंसत्यकरणेवासते यमलोकविषे जाताभया ॥
तहां सोनचिकेता तायमराजातैं पिताकीप्रसन्नता अग्निविद्या आत्मज्ञान यहतीनवरलेताभया ॥ तावरकेप्रभावतैं सोनचिकेता ता
यमराजाकेमुखतैं वैराग्यादिकसाधनोंसहित आत्मज्ञानकूंश्रवणकरताभया ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेदशमेअध्यायविषे
आपनैं तिसीयजुर्वेदके तैत्तिरीयकउपनिषद्का तथानारायणीयउपनिषद्का अर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादशमअध्यायविषे आप
नैं वरुणपिताके तथाभृगुपुत्रके संवादकरिकै ब्रह्मकास्वरूपलक्षण तथातटस्थलक्षण निरूपणकऱ्याथा ॥ तथा अन्नमयादिकपंच
कोशोंतैंभिन्नकरिकै ताब्रह्मकास्वरूप वर्णनकऱ्याथा ॥ तथा वेननामागंधर्वका सर्वात्मभावरूपअनुभव आपनैं कथनकऱ्याथा ॥ त
था सत्यादिकसाधनोंकानिरूपणकरिकै तिनसर्वसाधनोंतैं संन्यासआश्रमकीअधिकता वर्णनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्म
पुराणकेएकादशेअध्यायविषे आपनैं जाबालादिएकादशउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताएकादशेअध्यायविषे आपनैं यह
वार्त्ता कथनकरीथी ॥ पूर्वसंवर्त्तकादिकमहान्पुरुष तापरमहंससंन्यासकूंधारणकरतेभयेहैं ॥ और तापरमहंससंन्यासकेप्राप्तिका ए
कवैराग्यहीकारणहै ॥ और तावैराग्यकीप्राप्ति गर्भदुःखोंकेविचारतैंहोवैहै ॥ तथा मरणकेज्ञानतैंहोवैहै ॥ तथा अष्टांगयोगतैंहोवै
है ॥ और सोवैराग्यवान्पुरुषही तासंन्यासकाअधिकारीहै ॥ और तापरमहंससंन्यासीका बाह्यअंतरभेदकरिकै दोप्रकारकाआचार

होवैहै ॥ तहां दंडकमंडलुभिक्षाआदिक बाह्यआचारहोवैहै ॥ और शमदमादिक अंतरआचारहोवैहै ॥ तहां मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार के अभेदज्ञानकातौ सोशमदमादिरूपअंतरआचारही मुख्यकारणहै ॥ सोब्रह्मज्ञानभी आपनैं ब्रह्मउपनिषदादिकोंविषेकथनकऱ्या था ॥ इत्यादिकसर्ववार्ता आपनैं ताएकादशेअध्यायविषेवर्णनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेद्वादशेअध्यायविषे आपनैं सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताद्वादशेअध्यायविषे उद्दालकमुनिके तथाश्वेतकेतुके संवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके त्रयोदशेअध्यायविषे आपनैं तिसीछांदोग्यउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तात्रयोदशेअध्यायविषे आपनैं सनत्कुमारके तथानारदके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ हेभगवन्! तात्रयोदशेअध्यायकेअंतविषे आपनैं यहवार्ता कथनकरीथी ॥ प्रजापतिब्रह्मा इंद्रकेप्रति तथाविरोचनकेप्रति तीनअवस्थातैंरहितभूमाआत्माका उपदेशकरताभया ॥ तिनदोनोंविषे इंद्रतौ ताभूमाआत्माकूंजानताभया ॥ और विरोचन ताभूमाआत्माकूं नहींजानताभया ॥ हेभगवन्! याप्रकारकेविचित्रआख्यानकूं मैं आपकेमुखतैंश्रवणकरणेकीइच्छाकरताहूं ॥ आप कृपाकरिकै हमारेप्रति सोसर्ववृत्तांत कथनकरो ॥ इसप्रकार ताश्रद्धावान्शिष्यकरिकैपूछाहुआ सोश्रीगुरु ताशिष्यकेप्रति छांदोग्यउपनिषद्के अष्टमअध्यायविषेकथनकरीहुईकथाकूं कहताभया ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! जोब्रह्मा इंद्रकेप्रति तथाविरोचनकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभयाहै ॥ सोब्रह्मा सर्वदा जिसब्रह्मलोकविषे निवासकरेहै ॥ सोब्रह्मलोककैसाहै? अत्यंत विस्तारवालाहै ॥ तथा सर्वदुःखोंकूंनाशकरणेहाराहै ॥ तथा जोब्रह्मलोक शुद्धअंतःकरणवालेसंन्यासियोंकूं अर्चिरादिकमार्गकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यहै ॥ तथाभृगुआदिकप्रजापतियोंके जेमहरादिकलोकहैं ॥ तिनसर्वलोकोंतैं सोब्रह्मलोक ऊपरिस्थितहै ॥ और ताब्रह्मलोकविषे ऐरंमदीयनामा एकमहान्सरोवरहै ॥ सोसरोवर अनेकप्रकारकेकमलोंकरिकैशोभायमानहै ॥ तथा तीनतापोंकीनिवृत्ति करणेहाराहै ॥ तथा उपासनाकेबलतैं अल्पफलकेदेणेहारेपुण्यपापकर्मोंकेक्षयहुएतैंअनंतर याउपासकपुरुषोंकूं तासरोवरकीप्राप्ति होवैहै ॥ और सोसरोवर इरानामाअन्नकारसरूपहै ॥ तथा मदकाहेतुहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तासरोवरकूं ऐरंमदीय यानाम

करिकैकथनकरैंहैं ॥ और जिसब्रह्मलोकविषे अश्वत्थवृक्षकेआकार एकसोमसवननामा कल्पद्रुमरहेहै ॥ सोकल्पवृक्ष माताकीन्याईं सर्वभूतप्राणियोंकूं मनवांछितपदार्थोंकीप्राप्तिकरेहै ॥ तावृक्षतैं सर्वदा अमृतस्रवेहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तावृक्षकूं सोमसवन यानामकरिकैकथनकरैंहैं ॥ और जिसब्रह्मलोकविषे एक अरनामा तलावरहेहै ॥ और दूसरा ण्यनामा तलावरहेहै ॥ कैसेहैंतेदोनोंतलाव? समुद्रकेतुल्य विस्तारवालेहैं ॥ तथा दुग्ध दधि घृत यातीनोंकरिकैपूर्णहैं ॥ और जैसे राजाकेभृत्य राजाकेपुत्रकूं आदरपूर्वकराजदरबारविषेलेजावैंहैं ॥ तैसे विद्युतूलोकविषेप्राप्तहुए उपासकपुरुषकूं अमानवपुरुष ताविद्युतूलोकतैं जिसब्रह्मलोकविषेलैजावैंहैं ॥ और जिसब्रह्मलोकविषेप्राप्तहुए उपासकपुरुषकेप्रति ब्रह्माकरिकैप्रेरणाकरीहुई पंचशत ५०० अप्सरा सन्मुखआवैंहैं ॥ कैसीहैंतेअप्सरा? सूर्यकेसमान तेजवालीहैं ॥ तथा षोडशवर्षकीअवस्थावालीहैं ॥ तथा रूपयौवनकरिकैसंपन्नहैं ॥ तथा तुर्यादिकवादित्रोंके मधुरशब्दोंकरिकैशोभायमानहैं ॥ तथा ताउपासकपुरुषकेदेखणेकीहैउत्कंठाजिनोंकूं ॥ तथा ताउपासकपुरुषकेशरीरकूं ब्रह्माकेसमान अलंकारोंकरिकै शोभायमानकरणेहारीहैं ॥ जिनअप्सरावोंकूं श्रुतिविषे अंबा अंबायवीय यादोनामोंकरिकैकथनकर्याहै ॥ ऐसीपंचशतअप्सरा ताउपासकपुरुषकेसमीपआवैंहैं ॥ तिनपंचशतअप्सरावोंविषेभी एकशत १०० अप्सरा तौ ताउपासकपुरुषकेपहरावणेवासते नानाप्रकारकेसुगंधिवालेपुष्पोंकीमालावोंकूं आपणेहस्तविषेलैआवैंहैं ॥ और एकशत १०० अप्सरातौ ताउपासकपुरुषकेलगावणेवासते नानाप्रकारकेअंजनोंकूं आपणेहस्तविषेलैआवैंहैं ॥ और एकशत १०० अप्सरातौ ताउपासकपुरुषकेलगावणेवासते नानाप्रकारकेचूर्णोंकूं आपणेहस्तविषेलेआवैंहैं ॥ और एकशत १०० अप्सरातौ ताउपासकपुरुषकेपहरावणेवासते नानाप्रकारकेवस्त्रोंकूं आपणेहस्तविषेलेआवैंहैं ॥ और एकशत १०० अप्सरातौ ताउपासकपुरुषकेपहरावणेवासते नानाप्रकारकेभूषणोंकूं आपणेहस्तविषेलैआवैंहैं ॥ इहां शरीरकेचाकचिक्यकाहेतु जेसुगंधिवालेतैलादिकहैं तिनोंकानाम अंजनहै ॥ और शरीरकेमर्दनकरणेयोग्य जेसुगंधिवाले केईकपदार्थहैं तिनोंकानामचूर्णहै ॥ इत्यादिकअनेकपदार्थोंकूं आपणेहस्तविषेलैके तेअप्सरा ताउपासकपुरुषकेसमीपआवैंहैं ॥ और जिसब्रह्मलोकविषे एकआरनामाह्रदरहेहै ॥

तथा एकदुस्तरविरजानामा नदीरहेहैं ॥ ताआरनामाहृदके तथाविरजानामानदीके मध्यविषे येष्टिहनामा मुहूर्तोंकेअभिमानीदेव तारहेहैं ॥ तिनदेवतावोंकूं सोउपासकपुरुष आपणेविवेकयुक्तमनकरिकै दूरभगाइदेवैहै ॥ और ताब्रह्मलोकविषे यहउपासकपुरुष जबी ताहृदनदीकूंतरिकै इल्यनामावृक्षकेसमीपजावैहै ॥ तबी ताउपासकपुरुषकूं ब्रह्माकेग्रहणकरणेयोग्य दिव्यगंध प्राप्तहोवैहै ॥ और ताब्रह्मलोकविषे यहउपासकपुरुष जबी शालज्यनामा संस्थानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी ताउपासकपुरुषकूं ब्रह्माकेग्रहणकरणे योग्य दिव्यरस प्राप्तहोवैहै ॥ और ताब्रह्मलोकविषे यहउपासकपुरुष जबी अपराजितनामा आयतनकेसमीपजावैहै ॥ तबी ताउपासकपुरुषकूं नानाप्रकारकेदिव्यरूप प्राप्तहोवैहैं ॥ तथा ताउपासकपुरुषविषे ब्रह्माकातेज प्रवेशकरैहै ॥ और तिसब्रह्मलोकविषे महान्तेजवाले इंद्र तथाप्रजापति येदोनों द्वारपालहैं ॥ तेदोनोंद्वारपाल ताउपासकपुरुषकूं ब्रह्माकेतेजयुक्तदेखिके भययुक्तपुरुषकीन्यांई शीघ्रही भीतरिजाणेकेमार्गकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और ताब्रह्मलोकविषे एकहिरण्मयनामा ब्रह्माकाप्रासादहै ॥ कैसाहैसोप्रासाद? महान्विस्तारवालाहै ॥ तथा अनेकप्रकारकेरत्नोंकरिकैजडितहै ॥ तथा सभास्थानकरिकैयुक्तहै ॥ और ताब्रह्माकेप्रासादविषे विचक्षणानामा बुद्धिरूपवेदिकाहै ॥ कैसीहैसाबुद्धिरूपवेदिका? सर्वशुभलक्षणोंकरिकैसंपन्नहै ॥ तथा सर्वजगत्काकारणहै ॥ और ताप्रज्ञारूपवेदिकाविषे एक अमितौजसनामा प्राणरूपपर्यंकास्थितहै ॥ जिसप्राणकूं वाजसनेयशाखावाले ब्राह्मण उद्गातारूपकरिकैउपासनाकरैहैं ॥ और छांदोग्यशाखावालेब्राह्मण ताप्राणकूं उद्गीथरूपकरिकै उपासनाकरैहैं ॥ कैसाहै सोप्राणरूपपर्यंक? जिसपर्यंकके पूर्वदिशाकीतरफकेदोपादतौ भूतभविष्यत्जगत्रूपहैं ॥ और लक्ष्मी पृथिवी येदोनों तापर्यंकके पश्चिमदिशाकीतरफकेदोपादहैं ॥ और बृहत्साम रथंतरसाम यहदोप्रकारकासामवेद तापर्यंकके दक्षिणउत्तरदिशाकेतरफकी दीर्घकाष्ठमयदोपटिकाहैं ॥ और भद्रसाम तथायज्ञायज्ञीयसाम यहदोप्रकारकासामवेद तापर्यंकके पूर्वपश्चिमदिशाकेतरफकी अल्पकाष्ठमयदोपटिकाहैं ॥ और मंत्ररूपऋग्वेद तथामंत्ररूपसामवेद यहदोनों तापर्यंकके पूर्वपश्चिमदिशाकेतरफकी दीर्घसूत्रमयपटियांहैं ॥ और मंत्ररूपयजुर्वेद तापर्यंकके दक्षिणउत्तरदिशाकेतरफकी अल्पसूत्रमयपटियांहैं ॥ जिनसूत्रमयपटियोंकूं

लोकविषे नवारकहेहैं ॥ और जिसपर्यंकका चंद्रमाकीकिरणमय उपस्तरणहै ॥ जिसउपस्तरणकूं लोकविषे गादलाकहेहैं ॥ और उद्गीथनामासामवेद् ताउपस्तरणकेऊपरिविछावणेयोग्य श्वेतवस्त्ररूपहै ॥ और लक्ष्मी तापर्यंककासिराणाहै ॥ ऐसेप्राण रूपपर्यंकविषे जोब्रह्मा सर्वदा विराजमानहै ॥ कैसाहैसोहिरण्यगर्भरूपब्रह्मा? जगत्रूपपटकरिकैआवृतहै ॥ तथा जाहिरण्यगर्भकाशरीर पृथिवीआदिकपंचभूतोंकरिकैपुष्टहुआहै ॥ तथा जोहिरण्यगर्भ सर्वजीवोंकासमष्टिरूपहै ॥ और श्रुतिविषे अंबया या शब्दकरिकैकथनकरीजे उपासनारूपनदियांहैं ॥ तिननदियोंकेनीरकूं जोब्रह्मा सर्वदा पानकरेहै ॥ और ताब्रह्माकी दोप्रियस्त्रियांहैं ॥ तहां एकतौ प्रतिरूपानामाप्रियाहै ॥ कैसीहैसाप्रतिरूपानामाप्रिया ॥ समष्टिरूपतेजकेपुंजकूं आपणेअभिमानकाविषयकरिकै विराजमानहै ॥ तथा सर्वचक्षुइंद्रियोंका उपादानकारणरूपहै ॥ और ताब्रह्माकी दूसरीप्रिया मानसीनामाहै ॥ जामानसीप्रिया सरस्वतीरूपकरिकैप्रसिद्धहै ॥ ऐसीदोपत्नियोंसहित सोब्रह्मा तासभाविषेस्थितहोवैहै ॥ कैसाहैसोब्रह्मा? इंद्रादिकसर्वदेवतावोंकादेवताहै ॥ और सर्वब्रह्मांडविषे व्याप्तहैंविभूतियांजिनोंकी ऐसेजेइंद्रादिकदेवताहैं ॥ तिनसर्वदेवतावोंकरिकै जोब्रह्मा उपासनाकरणेयोग्यहै ॥ ऐसाप्रजापतिब्रह्मा सर्वभूतोंकेहितकीइच्छाकरताहुआ तिनसर्वभूतोंकूंसुखकीप्राप्तिकरणेवासते किसीप्रसंगपाइकै तासभाविषे याप्रकारकावचनकहताभया ॥ जोवस्तुअत्यंतदुर्लक्ष्यत्वरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तथा जोवस्तु भूमारूपकरिकैवर्णनकऱ्याहै ॥ तथा जोवस्तु सर्वदेहधारीजीवोंकूं प्रत्यग्रूपकरिकैप्रसिद्धहै ॥ सोवस्तु सर्वअनात्मपदार्थोंतैं निरतिशयप्रीतिकाविषयहै ॥ याकारणतैं तावस्तुकूं आत्मा याशब्दकरिकैकथनकरेहैं ॥ तथा ताआत्मवस्तुकूं अहंकारादिकोंतैंपरे कथनकरेहैं ॥ और अनित्यफलकीप्राप्तिकरणेहाराजोकर्महै ॥ ताकर्मकानाम पाप्माहै ॥ तापाप्मानाम कर्मोंकाआश्रयभूतजो यहस्थूलसूक्ष्मशरीरहै ॥ तिनदोनोंशरीरोंकेसंगतैं सोआत्मादेव रहितहै ॥ याकारणतैं ताआत्मादेवकूं अपहतपाप्मा यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और सोआत्मादेव जरा मरण शोक मोह क्षुधा पिपासा याषट्ऊर्मियोंतैंरहितहै ॥ काहेतें? जरा मरण जन्म इत्यादिक यास्थूलशरीरकेधर्महैं ॥ और शोक मोह राग इत्यादिक मनकेधर्महैं ॥ और क्षुधा पिपासा येदोनों प्राणकेधर्महैं ॥ तिनजरामरणादिधर्मोंविषे कोई

भीआत्माकाधर्मनहींहै ॥ याकारणतें ताआत्मादेवकूं श्रुतिभगवती विजर विमृत्यु विशोक विजिघत्स अपिपास इत्यादिकनामोंक
रिकैकथनकरेहै ॥ और ताआत्मादेवका इच्छारूपकाम सत्यहै ॥ तथा ज्ञानरूपसंकल्प सत्यहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती ताआत्मा
देवकूं सत्यकाम सत्यसंकल्प यानामकरिकैकथनकरेहै ॥ काहेतें ? देह मन प्राण यातीनोंकेअध्यासरूपसंबंधतें याआत्मादेवकूं जन्म
मरणादिकसंसारकीप्राप्तिहोवेहै ॥ तासंसारकालविषे यहआत्मादेव जितनीइच्छारूपकामनाकरेहै ॥ तथा जितनेज्ञानरूपसंक
ल्पकरेहैं ॥ तेसंपूर्णकामना तथासंकल्प बाधितअर्थविषयकहोणेतें मिथ्याहीहोवेहैं ॥ और आत्मज्ञानकरिकै जबी तिनदेहमनप्रा
णादिकोंकाबाधहोवेहै ॥ तबी तेइच्छासंकल्पादिक प्रथमतौ उत्पन्नहीनहींहोवेहैं ॥ और ताज्ञानअवस्थाविषे जोकदाचित् बाधिता
नुवृत्तिकरिकै तेइच्छादिक उत्पन्नभीहोवेहैं ॥ तभी तेइच्छादिक मिथ्याहोवेंनहीं ॥ काहेतें ? ताज्ञानकालविषे सोविद्वान्पुरुष ताइ
च्छासंकल्पादिकसर्वजगतकूं आत्ममात्ररूपकरिकैहीअनुसंधानकरेहै ॥ अधिष्ठानआत्मातेंभिन्नरूपकरिकै तिनइच्छादिकोंकूंदेखेन
हीं ॥ और तेइच्छासंकल्पादिक आपणीउत्पत्तितेंपूर्वभी सत्मात्ररूपहीहैं ॥ याकारणतें ताआत्मादेवके इच्छासंकल्पादिकसत्यरूप
हैं ॥ और सोआत्मादेव यासंसारकेसर्वपदार्थोंतेंरहितहै ॥ तथा बुद्धिआदिकोंतेंविलक्षणहै ॥ ऐसाआत्मादेव याअधिकारीपुरुषोंकूं अ
वश्यजानणेयोग्यहै ॥ ताआत्माकेजानणेकायहप्रकारहै ॥ यहअधिकारीपुरुष प्रथम ब्रह्मचर्यादिकसाधनसंपन्नहोइकै ब्रह्मवेत्तागु
रुकेसमीपजावे ॥ तिसतेंअनंतर प्रमाणगतअसंभावनाकीनिवृत्तिकरणेवासते सोअधिकारीपुरुष ताब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतें वेदांतवच
नोंकूंश्रवणकरै ॥ तिसतेंअनंतर प्रमेयगतअसंभावनाकीनिवृत्तिकरणेवासते यहअधिकारीपुरुष तिनवेदांतवचनोंकेअर्थकामननक
रै ॥ तिसतैंअनंतर विपरीतभावनाकीनिवृत्तिकरणेवासते यहअधिकारीपुरुष तामननकरेहुएअर्थविषे चित्तकेवृत्तियोंकाप्रवाहरूप
निदिध्यासनकूंकरै ॥ इहां वेदांतशास्त्र जीवब्रह्मकेअभेदकाप्रतिपादकहै अथवा भेदकाप्रतिपादकहै याप्रकारकेसंशयकानाम प्रमाण
गतअसंभावनाहै ॥ और यहप्रत्यक्आत्मा ब्रह्मतेंअभिन्नहै अथवा भिन्नहै? इत्यादिकसंशयोंकानाम प्रमेयगतअसंभावनाहै ॥ और प
रिपूर्णआत्माकूंपरिच्छिन्नजानणा इत्यादिकोंकानाम विपरीतभावनाहै ॥ इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष श्रवणादिकसाधनोंकरिकै

तिसआत्मादेवकूंसाक्षात्कारकरे है ॥ सोविद्वान्पुरुष सर्वात्मभावकीप्राप्तिकरिकै सर्वभेदतैंरहितहुआ भूरादिकसर्वलोकोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ तथा तिनभूरादिकलोकोंविषेवर्त्तमान सर्वभोगोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ काहेतें? सोविद्वान्पुरुष तिनसर्वलोकोंकूं तथातिनसर्वभोग्य पदार्थोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजानै है ॥ यहसर्वात्मज्ञानही तिनसर्वपदार्थोंकीप्राप्तिहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकावचन जबीता प्रजापतिब्रह्मानैं सभाविषेस्थितहोइकै कथनकऱ्या ॥ तबी ताब्रह्माकेवचनकूं देवता तथा असुर दोनों श्रवणकरतेभये ॥ शंका ॥ हेभगवन्! आपणेआपणेलोकविषेस्थित जेदेवताहैं तथाअसुरहैं ॥ तेदेवता तथा असुर ताब्रह्माकेवचनकूं किसप्रकार श्रवणकरते भये? ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! ताब्रह्माकीसभाविषे ताब्रह्माके वामभागकीतरफ तथादक्षिणभागकीतरफ अनेकसहस्रदेवता तथा असुर रहेहैं ॥ तहां असुर देवतावोंतैंज्येष्ठहैं ॥ यातैं तेअसुर ताब्रह्माकेदक्षिणहस्तकीतरफरहेहैं ॥ और देवता तिनअसुरोंतैंकनिष्ठहैं ॥ यातैं तेदेवता ताब्रह्माके वामहस्तकीतरफरहेहैं ॥ तहांश्रुति ॥ द्वयाहवैप्राजापत्याज्यायांसोऽसुराःकनीयांसोदेवाः ॥ अर्थयह ॥ असुर तथादेवता येदोनों प्रजापतितैंउत्पन्नहुएहैं ॥ तिनोंविषे असुरतौ ज्येष्ठहैं ॥ और देवता कनिष्ठहैं ॥ १ ॥ कैसेहैंते देवता तथा असुर? अत्यंतउग्रतेजवालेब्रह्माविषे जिनोंकेनेत्रोंकीदृष्टिलागीहै ॥ तथा परस्परविरोधकरिकैयुक्तहैं ॥ याकारणतैं ताब्रह्माकीसभाविषे तेदेवतातौ असुरोंकूंनहींदेखते ॥ और तेअसुर देवतावोंकूंनहींदेखते ॥ हेशिष्य! इसप्रकार जबी ताब्रह्माकीसभाविषे ताब्रह्माकेमुखतैं मोक्षकेसाधनकूंप्रकाशकरणेहारेवचन निकसे तबीतिनब्रह्माकेवचनोंकूं तेसभावासीदेवता तथाअसुर श्रवणकरतेभये ॥ तिसतैंअनंतर तेदेवतातौ तीनलोकवर्तिसर्वदेवतावोंकेप्रति सावार्त्ता कहतेभये ॥ और तेअसुरतौ तीनलोकवर्ति सर्वअसुरोंकेप्रति सावार्त्ता कहतेभये ॥ तहां सर्वदेवतावोंकाराजाइंद्र तावार्त्ताकूंश्रवणकरिकै आपणेसर्वदेवतावोंकेप्रति याप्रकार कावचनकहताभया ॥ हेदेवतावो! ब्रह्माकेमुखतैं जोयहवार्त्ता निकसीहै ॥ तावार्त्ताकूं हमारेशत्रुअसुर जैसे नहींजानिसकैं ॥ ऐसा कोईप्रयत्न तुमोंनैंकरणा ॥ इसप्रकार सोसर्वअसुरोंकाराजाविरोचनभी तावार्त्ताकूंश्रवणकरिकै आपणेसर्वअसुरोंकेप्रति याप्रकार कावचनकहताभया ॥ हेसर्वअसुरो! ब्रह्माकेमुखतैं जोयहवार्त्ता निकसीहै ॥ तावार्त्ताकूं हमारेशत्रुदेवता जैसे नहींजानिसकैं ॥ ऐ

साकोईप्रयत्न तुमोनैंकरणा ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सोइंद्र तथाविरोचन आपणेआपणेअनुचरोंकेप्रति तावार्त्ताकेप्रगटकरणेकी नि
वारणकरतेभये ॥ तिसतैंअनंतर देवराजइंद्रतौ आपणेदेवतावोंकेसाथ तथाविरोचन आपणेअसुरोंकेसाथ याप्रकारकामंत्र करता
भया ॥ हेबुद्धिमान्अनुचरो! जिसआत्माकेज्ञानतैं हम विनाहीप्रयत्नतैं सर्वलोकोंकूंप्राप्तहोवैं ॥ तथा तिनसर्वलोकवर्तिभोग्यप
दार्थोंकूंप्राप्तहोवैं ॥ ऐसाआत्माकाज्ञान हमारेकूं अवश्यकरिकेसंपादनकरणेयोग्यहै ॥ परंतु ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते जोकदा
चित् हमसर्व आपणेलोककापरित्यागकरिके ताब्रह्माकेसभाविषेजावैंगे तौ हमारेछिद्रोंकूंसर्वदादेखणेहारे जोहमारेशत्रुहैं ॥ तेह
मारेशत्रु याहमारेत्रिलोकीकेराजकूं आइकेआपणेवशकरिलेवैंगे यातैं जैसे कोईपुरुष आपणेमूलधनकीवृद्धिकरणेवासते किसी
व्यापारविषेप्रवृत्तहोवै ॥ और ताव्यापारविषे तापुरुषका सोमूलधनभीनष्टहोइजावै तैसे याप्रकारकान्याय हमारेविषेभीप्राप्तहो
वैगा ॥ यातैं आपणेराजकापरित्यागकरिके हमसर्वोंकूं ताब्रह्मलोकविषे जाणायोग्यनहींहै ॥ किंतु हमसर्वोंविषे कोईएकबुद्धिमा
मान्पुरुष ताब्रह्मलोकविषेजावै ॥ जोबुद्धिमान्पुरुष ताब्रह्मातैं आत्मज्ञानकाउपदेशलेके हमसर्वोंकेप्रति गुरुरूपहोइके ताआत्म
ज्ञानकाउपदेशकरे ॥ हेशिष्य! इसप्रकार तेदेवता तथाअसुर आपणेआपणेविषे परस्परमंत्रकरिके तिनदेवतावोंविषेतौ देवरा
जइंद्र निकसताभया ॥ और तिनअसुरोंविषे विरोचनराजा निकसताभया ॥ सोदेवराजइंद्र तथाविरोचनराजा दोनों कैसेहैं?
बलबुद्धिआदिकगुणोंकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा धैर्यवान्हैं ॥ तथा सर्वलोकविषेयशवालेहैं ॥ तथा दोनों ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकीइच्छावा
लेहैं ॥ तथा दोनों अत्यंतअभिमानयुक्तहैं ॥ तथा तेदोनों परस्पर जीतणेकीइच्छावालेहैं ॥ ऐसे इंद्र तथा विरोचन दोनों स
मिदादिकपदार्थोंकूंहस्तविषेग्रहणकरिके एकहीकालविषे घटकुटीप्रभातन्यायकीरीतिसैं ताब्रह्माकेसमीपजातेभये ॥ ताघटकुटीप्र
भातन्यायका यहअर्थहै ॥ नदीकेतीरविषे स्थितजाकुटीहै ॥ जिसकुटीविषेस्थितहोइकै राजाकेभृत्य लोकोंतैंअन्नादिकपदार्थों
कामहसूललेवैंहैं ॥ ताकुटीकानाम घटकुटीहै ॥ ताघटकुटीविषेस्थितराजाकेभृत्योंकेप्रति महसूलदीयेतैंविनाही आपणेदेशविषे
जाणेकीइच्छाकरतेहुए केईकवणिक्पुरुष ताकुटीकेमार्गकापरित्यागकरिके किसीदूसरेमार्गविषे रात्रिकूंचलतेभए ॥ तिनवणिक्पु

रुषोंकूं दैवयोगतें तामार्गकाविभ्रमहोइकै तिसीघटकुटीकेसमीपआइकै प्रभातहोतीभई ॥ याकानाम घटकुटीप्रभातन्यायहै ॥ ता घटकुटीप्रभातन्यायकीरीतिसैं सोदेवराजइंद्र तथाअसुरोंकाराजाविरोचन दोनों एकहीकालविषे ताब्रह्माकेसमीपआवतेभये ॥ औ र यहवार्ताहमारेशत्रु नहींजानैं याप्रकारकीजाइच्छा तिनोंनैंकरीथी ॥ सातिनोंकीइच्छा पूर्णनहीं होतीभई ॥ हेशिष्य! सोइंद्र तथावि रोचन दोनों आपणेआपणेकार्यकीसिद्धिकरणेविषे अत्यंतबुद्धिमान्थे ॥ यातें अंतरविषेपरस्परशत्रुभावराखतेहुएभी बाहरिसैं आपणे भ्राताकीन्यांई परस्परस्नेहकरतेभये ॥ और तेइंद्रविरोचनदोनों ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासते ताब्रह्माकेपादोंऊपरि दंडवत्प्रणामकरि कै ताब्रह्माकेप्रति ताब्रह्मविद्याकाप्रश्नकरतेभये ॥ और सर्वभूतप्राणियोंतैं पूर्वउत्पन्नभयेजेमनुआदिकहैं ॥ तिनमनुआदिकोंतैंभीपू र्वउत्पन्नभया जोचतुर्मुखब्रह्माहै ॥ सोब्रह्मा तिनदोनोंकेअंतरकेसर्वअभिप्रायकूंजानिकै तिनदोनोंकेगर्वादिकदोषोंकीनिवृत्तिकरणेवा सते बत्तीस ३२ वर्षपर्यंत किसीकार्यांतरविषे संलग्नपुरुषकीन्यांई स्थितहोताभया ॥ और सोब्रह्मा तिनदोनोंकेवचनोंकूंश्रवणकर ताहुआभी नहींश्रवणकरतेकीन्यांई स्थितहोताभया ॥ हेशिष्य! इसप्रकार ताब्रह्मानैंकऱ्याजो उपेक्षारूपनिरादर तानिरादरकूं प्राप्तहुए तथासर्वभोगोंतैंरहितहुए तेइंद्रविरोचनदोनों ताब्रह्माकेसमीप स्थितहोतेभए ॥ जैसे यालोकविषे महाराजाकेस्नेहकापा त्रभूत जोकोईपुरुषहै ॥ तिसपुरुषके किसीमहान्अपराधकूंदेखिकै जबी सोमहाराजा तापुरुषकीउपेक्षाकरिदेवैहै ॥ तबी सोदोष वान्पुरुष ताउपेक्षारूपनिरादरकूंप्राप्तहुआ तथासर्वभोगोंतैंरहितहुआ तथाताराजाकेमुखकूंसर्वदादेखताहुआ महान्ग्लानिपूर्व क ताराजाकेसमीपनिवासकरैहै ॥ तिसीप्रकार तेइंद्रविरोचनदोनों ताब्रह्माकेसमीप निवासकरतेभये ॥ हेशिष्य! सायंकालवि षे तथाप्रातःकालविषे करणेयोग्यजेभोजनादिकहैं ॥ तेभोजनादिकक्रियाभी तिनदोनोंकी नियमपूर्वकनहींहोतीभई ॥ जबी भो जनादिकभी तिनदोनोंकूं नियमपूर्वक नहींप्राप्तहोतेभये ॥ तबी स्त्रीसंभोगादिकोंकेप्राप्तिकीक्याआशाहै? हेशिष्य! इसप्रकार तेइंद्रविरोचनदोनों बत्तीसवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यधर्मकूंपालनकरतेभये ॥ तथा यहब्रह्मा कबीहमारेऊपरिअनुग्रहकरैगा याप्रकारकीइ च्छाकरिकै सर्वदा ताब्रह्माकेमुखकीतरफदेखतेभये ॥ तिनबत्तीसवर्षोंकेव्यतीतहुएतैंअनंतर सोब्रह्मा तिनदोनोंकेमुखकीतरफदेख

ताभया ॥ तथा सोब्रह्मा तिनदोनोंकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेइंद्र! हेविरोचन! तुमारेभोगणेयोग्य जेस्वर्गादिकलो
कोंकेस्थूलभोगहैं ॥ तिनस्थूलभोगोंतेंरहित तथामहान्दुःखकरिकैप्राप्तहोणेयोग्यजोयहब्रह्मलोकहै ॥ ताब्रह्मलोकविषे महान्दुःखपू
र्वकआइके तुमदोनों किसप्रयोजनवासते निवासकरतेभयेहो? हेशिष्य! इसप्रकार जबी ताप्रजापतिनैं इंद्रविरोचनसैंपूछा ॥ त
बी सोइंद्रविरोचनदोनों ॥ यआत्माऽपहतपाप्मा ॥ इत्यादिकपूर्वउक्तब्रह्माकेवचनकापाठकरिकै ताब्रह्माकेप्रति याप्रकारकावचन
कहतेभये ॥ हेभगवन्! याअधिकारीपुरुषोंकूं आत्माकेज्ञानतें सर्वलोकोंकी तथातिनसर्वलोकवर्तिभोग्यपदार्थोंकी प्राप्तिहोवैहै ॥
याप्रकारकावचन पूर्वआपनैं सभाविषेकह्याथा ॥ ताआपकेवचनकूं श्रवणकरिकै तिसआत्मज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छाकरतेहुए हमदोनों
आपकेसमीप बत्तीसवर्षपर्यंत निवासकरतेभयेहैं ॥ यातें आप कृपाकरिकै हमारेप्रति ताआत्मज्ञानकाउपदेशकरो ॥ हेशिष्य! इ
सप्रकारकावचन जबी ताइंद्रविरोचननैं ब्रह्माकेप्रतिकह्या ॥ तबी मंदमंदहसताहुआ सोप्रजापति तिनदोनोंकेप्रति प्रथम जाग्रत
अवस्थाकेसाक्षीआत्माका चक्षुविषेस्थितरूपकरिकै उपदेशकरताभया ॥ ब्रह्माउवाच ॥ हेइंद्र! हेविरोचन! याअधिकारीपुरुषोंनैं
शास्त्रसंस्कारयुक्तबुद्धिकरिकै चक्षुविषे जोपुरुषदेखाजाताहै ॥ सो चक्षुःस्थपुरुषही आत्माहै तथा सोचक्षुःस्थपुरुषही अपहतपाप्मा
विजर विमृत्यु विशोक विजिघत्स अपिपास सत्यकाम सत्यसंकल्प इत्यादिस्वरूपहै ॥ तथा सोचक्षुःस्थपुरुषही भयतेंरहितनिर्गु
णब्रह्मरूपहै ॥ हेशिष्य! जैसे गुड यद्यपि स्वभावतेंमधुरहीहोवैहै ॥ तथापि जिनपुरुषोंकेरसनविषेपित्तदोषहोवैहै ॥ तेपुरुषताम
धुरगुडकूंभी कटुरूपकरिकैग्रहणकरेहैं ॥ तैसे सोप्रजापतिकावचन यद्यपि आत्माकेवास्तवस्वरूपकाप्रतिपादकहै ॥ तथापिआप
णेविषयसंस्काररूपदोषकेवशतें तेइंद्रविरोचनदोनों ताब्रह्माकेवचनका कोईदूसराअर्थकल्पनाकरिकै ताब्रह्माकेप्रति याप्रकारका
वचन कहतेभये ॥ हेभगवन्! याशरीरकाप्रतिबिंबरूपजोछायाहै ॥ साछायाही ताचक्षुविषेदेखणेमैंआवैहै ॥ यातें आपनैं ताच
क्षुविषेस्थितछायाकूंही आत्मरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ताछायाआत्माकास्वरूप हम आपणीबुद्धिकेबलतें ताचक्षुतेंभिन्नस्थलवि
षेभीजानतेहैं ॥ काहेतें! जैसे चक्षुविषे सोछायारूपआत्मा प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे स्वच्छदर्पणविषे तथास्वच्छजलविषे तथास्वच्छव

ङ्गविषेभी सोछायारूपआत्माप्रतीतहोवैहै ॥ हेभगवन्! पूर्वआपनैं यहवचनकह्याथा ॥ दक्षिणचक्षुविषे जोपुरुष देखणेमें आवैहै ॥ सोपुरुषही आत्माहै ॥ सोयहआपकावचन द्रष्टापुरुषकेअभिप्रायकरिकैसंभवैनहीं ॥ काहेतैं? यालोकविषे जिसपुरुषकूं आपणी छायाकेदेखणेकीइच्छाहोवैहै ॥ सोपुरुष दर्पणादिकोंतैंविना केवलआपणीचक्षुविषे आपणीछायाकूंदेखिसकतानहीं ॥ किंतु सोपुरुष दर्पणादिकोंविषेही आपणीछायाकूं देखिसकेहै ॥ यातैं हमोनैंकथनकऱ्येजे दर्पण जल खड्ग आदिकोंविषेस्थितछायारूपआत्माहैं ॥ तथा आपनैंकथनकऱ्याजो चक्षुविषेस्थितछायाआत्माहै ॥ तिनसर्वछायाआत्मावोंविषे कौनछायाआत्मा ग्रहणकरणा? हेशिष्य! इसप्रकारकावचन जबी ताइंद्रविरोचननैं आपणेपंडितपणेकेअभिमानकरिकै ताप्रजापतिकेप्रति कथनकऱ्या ॥ तबी सोप्रजापति तिनदोनोंकेभ्रांतिकूंजानताहुआभी तिनोंकेभ्रांतिकी उपेक्षाकरिकै आपणेयथार्थअनुभवकेअनुसार तिनदोनोंकेप्रति याप्रकारकाव चन कहताभया ॥ हेइंद्र! हेविरोचन! सोआनंदस्वरूपआत्मा तिनदर्पणादिकसर्वउपाधियोंविषे साक्षीरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सोआनंदस्वरूपआत्मा तिनदर्पणादिकसर्वउपाधियोंविषे विद्यमानहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सोब्रह्मा ताइंद्रविरोचनकेप्रति आत्माकाउपदेशकरिकै आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ याइंद्रविरोचनकेप्रति हमनैं आनंदस्वरूपस्फुरणकाही आत्मारूपकरिकैउपदेशकऱ्याथा ॥ परंतु याइंद्रविरोचनकूं आपणेबुद्धिकेदोषतैं जैसे प्रथमहमारेउपदेशतैं आत्माकाबोधनहींभ याथा ॥ तैसे यादूसरीवारउपदेशतैंभी इनोंकूं ताआत्माकाबोधहुआनहीं ॥ किंतु हमारेदोनोंउपदेशतैं इनोंनैं छायाकूंही आत्मा जान्याहै ॥ याप्रकारका आपणेमनविषेविचारकरिकै सोब्रह्मा तिनदोनोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेइंद्र! हेविरोचन! जलकरिकैपूर्णजोयहशरावनामा मृत्तिकाकापात्रहै ॥ ताशरावविषे तुमदोनों आपणेआत्माकूंजाइकैदेखो ॥ ताशरावविषे जिसव स्तुकूं तुमदेखो ॥ सोवस्तु तुम पुनःहमारेप्रतिआइकैकथनकरो ॥ हेशिष्य! ताब्रह्मानैं इंद्रविरोचनकेप्रति जोयाप्रकारकावचन कथनकऱ्याहै ॥ तावचनकहणेविषे ताब्रह्माकायहअभिप्रायहै ॥ दर्पणजलादिकउपाधियोंविषेस्थितजोछायाहै ॥ साछाया नित्य हैनहीं ॥ किंतु तिनदर्पणादिकउपाधियोंकेभेदकरिकै साछाया परिणामीहै ॥ यातैं घटपटादिकपदार्थोंकीन्यांई ताछायाविषे अना

त्मरूपता स्पष्टहीहै ॥ और सोस्फुरणरूपसाक्षी अंतरबाहरि सर्वत्रपरिपूर्णहै ॥ यातैं सोस्फुरणरूपसाक्षीही आत्मरूपहै ॥ या प्रकार साक्षीआत्माविषे तथाछायाविषे महान्‌विशेषताहै ॥ ताविशेषताकूं येदोनों नहींग्रहणकरतेभयेहैं ॥ काहेतें? यादोनोंकूं आपणेपंडितपणेका बहुतअभिमानहै ॥ तथा परस्परद्वेषकरिकै इनदोनोंकाचित्त मलिनहुआहै ॥ याकारणतैं येदोनों हमारेउपदेशतैं तास्फुरणरूपसाक्षीआत्माकूं नहींजानतेभयेहैं ॥ किंतु उलटा छायाकूंहीआत्मामानिकै येदोनों दर्पणादिकोंविषेस्थित छायाआत्मावोंविषे कौनछायाआत्मा ग्रहणकरणा याप्रकारकेसंशयकूंप्राप्तहुएहैं ॥ जोमैं इनदोनोंकेप्रति याप्रकारकावचनकहौंगा ॥ हमनैं तुमारेप्रति जोआत्माकास्वरूप उपदेशकऱ्याहै ॥ ताहमारेउपदेशकूं तुमोनैं यथार्थग्रहणनहींकऱ्या ॥ किंतु ताहमारेउपदेशकूं तुमोनैं विपरीतग्रहणकऱ्याहै ॥ याप्रकारकावचन जोमैं इनदोनोंकेप्रति कहौंगा तौ इनदोनोंका मानभंगहोवैगा ॥ तामानके भंगहुए इनदोनोंकूं महान्‌लज्जाकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तालज्जाकरिकै इनोंकीबुद्धि कुंठितहोइजावैगी ॥ ताकुंठितबुद्धिकरिकै इनोंकूं हमारेवचनकाअर्थ किंचित्‌मात्रभी नहींप्रतीतहोवैगा ॥ यातैं तुमोंनैं हमारेउपदेशकूं विपरीतग्रहणकऱ्याहै याप्रकार इनोंकीभ्रांतिकूंप्रगटकरिकै पुनः इनोंकेप्रति आत्माकाउपदेशकरणा हमारेकूं योग्यनहींहै ॥ किंतु इनदोनोंअभिमानियोंकेप्रति मैं किसीउपायकरिकै ताआत्माकाबोधकरौं ॥ काहेतें? शास्त्रविषे याप्रकारकानियमकह्याहै ॥ जिसप्रकारकीशिष्यकीबुद्धिहोवै ॥ तिसीप्रकारकेबुद्धिकूंग्रहणकरिकै यहगुरु ताशिष्यकेप्रति बोधकरै ॥ शिष्यकेबुद्धिकीउपेक्षाकरिकै यहगुरु ताशिष्यकेप्रति बोधकरैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ उत्तम मध्यम मंद याप्रकारकेभेदकरिकै शिष्य तीनप्रकारकेहोवैहैं ॥ तहां जिसशिष्यविषे सत्वगुणतौ अधिकहोवैहै ॥ और रजोतमोगुण अल्पहोवैहै ॥ सोशिष्य उत्तमकह्याजावैहै ॥ और जिसशिष्यविषे रजोगुण अधिकहोवैहै ॥ और सत्त्वगुण तमोगुण अल्पहोवैहै ॥ सोशिष्य मध्यमकह्याजावैहै ॥ और जिसशिष्यविषे तमोगुणअधिकहोवैहै ॥ और सत्त्वगुण तथारजोगुण अल्पहोवैहै ॥ सोशिष्य मंदकह्याजावैहै ॥ और उत्तम मध्यम मंद यहतीनप्रकारकेशिष्यभी बुद्धिकीतीक्ष्णताकरिकै तथाबुद्धिकीमध्यमताकरिकै तथाबुद्धिकीमृदुताकरिकै तीनतीनप्रकारकहोवैहैं ॥ तिनशिष्योंविषे जिसजिसशिष्यकी जैसीजैसीबुद्धिहोवै ॥

तिसतिसशिष्यके तैसीतैसीबुद्धिकूंग्रहणकरिकैही यागुरुनैं बोधकरणा ॥ हेशिष्य! याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिकै सो प्रजापति ताइंद्रविरोचनकेप्रति दर्पण जल चक्षु आदिकसर्वउपाधियोंविषे सोआत्माव्यापकहै याप्रकारकाउत्तर कहताभया ॥ हमनैं तुमारेप्रति प्रत्यक्वस्तुकाउपदेशकऱ्याहै ताकूंनजाणिकै तुम अनात्मछायाकूं किसवासतेआत्मामानतेहो? याप्रकारकाउत्तर सोब्रह्मा तिनोंकेप्रति नहींकहताभया ॥ और तिसीअभिप्रायकूं अंगीकारकरिकै सोप्रजापति तिनदोनोंकेप्रति तुमदोनोंजल करिकैपूर्णशरावविषे आपणेकूंदेखो याप्रकारकाउपदेशकरताभया ॥ हेशिष्य! ताब्रह्माकेउपदेशकूंअंगीकारकरिकै तेइंद्रविरोचन दोनों तहांतैंजाइकै शरावविषेआपणेकूंदेखतेभये ॥ ताशरावविषेआपणेकूंदेखिकै तेदोनों पुनः ताप्रजापतिकेसमीपजातेभये ॥ तिनदोनोंकूंआयाहुआदेखिकै सोप्रजापति तिनदोनोंकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया॥ हेइंद्र! हेविरोचन! तुमदोनोंनैं याजलयुक्त शरावविषे आपणेप्रतिबिंबकेदेखणेकरिकै किसतत्वकूंनिश्चयकऱ्याहै? हेशिष्य! इसप्रकारकावचन जबी ताप्रजापतिनैं ताइंद्र विरोचनकेप्रतिकह्या ॥ तबी जैसेमूढबालक आपणेअभिप्रायकूं पिताकेआगे कथनकरैहै ॥ तैसे तेइंद्रविरोचनदोनों ताप्रजापतिके आगे याप्रकारकाआपणाअभिप्राय कथनकरतेभये ॥ हेभगवन्! पादतैंलैकेमस्तकपर्यंत नखकेशादिकोंकरिकैयुक्त जोयहहमाराशरीरहै ॥ ताशरीररूपआत्माकूंही हमदोनों याशरावविषेदेखतेभयेहैं ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकावचन जबी ताइंद्रविरोचननैं प्रजापतिकेप्रतिकथनकऱ्या ॥ तबी सोप्रजापति तिनोंकेभ्रांतियुक्तवचनकूंश्रवणकरिकै आपणेउपदेशकरणेकेप्रयत्नकूं निष्फलमानिकै बहुतखेदकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर पुनः तिनदोनोंकेबोधकरणेवासते सोप्रजापति आपणेचित्तविषे याप्रकारकाविचार करताभया ॥ याइंद्रविरोचनकेबुद्धिकूंमोहकीप्राप्तिकरणेहारा कोईविचित्रदोषहै ॥ जिसदोषकेबलतैं यहइंद्रविरोचन हमारेउपदेशकूंविपरीतहीग्रहणकरैहै ॥ काहेतैं! प्रथम हमनैं इनोंकेप्रति सूक्ष्मरीतिकरिकै चक्षुविषेआत्माकाउपदेशकऱ्याथा ॥ ताउपदेशतैं यहदोनों छायाकूंही आत्मामानतेभये ॥ तिसतैंअनंतर हमनैं इनदोनोंकेप्रति मध्यमरीतिकरिकै दर्पणजलादिकसर्वउपाधियोंविषे ताआत्माकाउपदेशकऱ्या॥ ताउपदेशतैंभी यहदोनों ताछायाकूंहीआत्मामानतेभये॥ तिसतैंअनंतर हमनैं इनदोनोंकेप्रति मृदुरीति

करिकै शरावविषेदेखणेकाउपदेशकऱ्या ॥ ताउपदेशतैं येदोनों यास्थूलशरीरकूंही आत्मामानतेभये ॥ परंतु तुमदोनों याजलके शरावविषे आपणेकूंदेखो यातीसरीवारकेउपदेशकरिकै इनोंकूं पूर्वलेदोवारकेउपदेशतैं इतनाविशेषबोधहुआहै ॥ पूर्वइनोंनैं दर्पणादिकउपाधियोंविषेस्थित आपणीछायाकूंही आत्मामान्याथा ॥ और अबी शरावकेदेखणेकरिकै येदोनों ताछायाकापरित्यागकरिकै यास्थूलशरीरकूंही आत्मामानतेभये हैं ॥ और इनदोनोंनैं जोछायाआत्माकापरित्यागकऱ्याहै ॥ सो याप्रकारकेविचारकरिकैकऱ्याहै ॥ भेदतैंरहित जोयहद्रष्टापुरुषकाशरीरहै ॥ सोशरीरही दूसरेपुरुषोंकेचक्षुविषे तथादर्पणविषे तथाजलादिकोंविषे प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं ताद्रष्टापुरुषकेशरीरविषे भेदनहींहै ॥ और चक्षु दर्पण जल खड्ग इत्यादिकउपाधियोंविषे जाप्रतिबिंबरूपछायाप्रतीतहोवैहै ॥ साछायातौ परिमाणकेभेदकरिकै तथारूपादिकगुणोंकेभेदकरिकै भेदवालीहीहोवैहै ॥ याकारणतैं साछाया आत्मानहींहै ॥ किंतु तिनदर्पणादिकउपाधियोंविषे भेदतैंरहित जोयहस्थूलशरीरहै ॥ सोयहशरीरही आत्माहै ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै इनदोनोंनैं ताछायाकेआत्मरूपताकापरित्यागकऱ्याहै ॥ यातैं जैसे छायाविषे नानारूपताकूंदेखिकै यादोनोंनैं ताछायाकेआत्मरूपताकापरित्यागकऱ्याहै ॥ तैसे येदोनों याशरीरविषेभी नानापणेकूंदेखिकै याशरीरकेआत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरैं ॥ ऐसाकोईउपाय मैंकरौं ॥ सोउपाय हमारेकूंयहप्रतीतहोवैहै ॥ यहइंद्रविरोचनदोनों पूर्वजलशरावविषे जिसशरीरकूंदेखतेभयेहैं ॥ सोइनोंकाशरीर नखकेशादिकोंकरिकैयुक्तथा ॥ तथा मलिनथा ॥ तथा मलिनवस्त्रोंवालाथा अबी इनोंकेशरीरकूं नखकेशादिकोंतैं रहितकराइकै तथास्नानकराइकै पुनः ताजलशरावकेदेखणेका उपदेशकरौं ॥ ताआपणेशरीरकूं पूर्वलेशरीरतैं विलक्षणदेखिकै येदोनों ताछायाकीन्यांई याशरीरविषेभी आत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरैंगे ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारकाविचारकरिकै सोभगवान्प्रजापति ताइंद्रविरोचनकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेइंद्र ! हेविरोचन ! तुमदोनों आपणेनखकेशोंकामुंडनकराइकै तथास्नानकरिकै तथासुंदरवस्त्रोंकूंपहरिकै तथाश्रेष्ठअलंकारोंकूंधारणकरिकै पुनः ताजलशरावविषे आपणेआत्माकूंदेखो ॥ ताजलशरावविषे जिसवस्तुकूं तुमदेखो ॥ सावस्तु आइकैहमारेआगेकथनकरो ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारकावचन जबी ताप्रजापतिनैं ताइंद्रविरोचनकेप्र

तिकथनकऱ्या ॥ तबी सोइंद्रविरोचन ताब्रह्माकेवचनकूंअंगीकारकरिकै आपणेनखकेशोंकामुंडनकराइकै तथावस्त्रभूषणादिकोंकूंधा
रणकरिकै पुनः ताजलशराववविषे आपणेआत्माकूंदेखतेभये ॥ तादेखणेकरिकै तेदोनों पुनःभी याशरीरविषेही दृढआत्मरूपताग्रह
णकरिकै ताप्रजापतिकेसमीपआइकै याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हेभगवन्! हमदोनोंकूं जैसे यास्थूलशरीरविषेही आत्मरूप
तासिद्धहोवै ॥ तैसे हमोंनैं याजलशराववविषे आपणेआत्माकूंदेख्याहै ॥ यातें यहस्थूलशरीरहीआत्माहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकाव
चन जबी ताइंद्रविरोचननैं ताप्रजापतिकेप्रति कह्या ॥ तबी सोप्रजापति पुनःभी तिनोंकेभ्रांतिकीदृढतादेखिकै आपणेमनविषे या
प्रकारकाविचारकरताभया ॥ अल्पबुद्धिवाले जेयेहमारेदोनोंशिष्यहैं ॥ तिनदोनोंकेप्रति हमनैं अन्वयव्यतिरेककरिकै आत्माके
बोधकरणेकाप्रारंभकऱ्याथा ॥ तहां सर्वपदार्थोंविषे जोआत्माकाअनुगतपणाहै ताकानाम अन्वयहै ॥ और दृश्यपदार्थोंविषे जोआ
गमापायीरूपताहै ताकानाम व्यतिरेकहै ॥ और तुमदोनों आपणेकूंयाजलशराववविषेदेखो यहजोउपदेश हमनैं इनोंकेप्रतिकऱ्या
था ॥ ताउपदेशकरिकैभी हमनैं याशरीरकेनखकेशादिकधर्मोंकी आगमापायितादिखाइकै याशरीरतैंभिन्नकरिकैही आत्माकानिरू
पणकऱ्याथा ॥ याशरीरकीआत्मरूपताविषे कोईहमारातात्पर्यथानहीं ॥ परंतु यादोनोंनैं आपणेबुद्धिकेदोषतैं याशरीरतैंभिन्न
रूपकरिकै ताआत्माकूंजान्यानहीं ॥ किंतु उलटा यास्थूलशरीरकूंही इनोंनैं आत्मरूपकरिकैजान्याहै ॥ यातें इनदोनोंकेभ्रांतिकी
निवृत्तिकरणेवासते हमारेकूं कोईउपायकऱ्याचाहिये ॥ सोउपाय हमारेकूं यहप्रतीतहोवैहै ॥ यालोकविषे यादेहरूपआत्माविषे
जोजोचंदनलेपादिकसंस्कारकरतेहैं ॥ तेसर्वसंस्कार छायारूपआत्माविषेप्रतीतहोवैहैं ॥ ताशरीरकेसंस्कारोंतैंविना ताछायाआ
त्माविषे स्वभावतैंकिंचित्मात्रभीसंस्कारहोवैनहीं ॥ यातें चंदनलेपादिरूपवास्तवसंस्कारोंकाआश्रयहोणेतैं यहशरीरहीआत्माहै ॥
और यहछाया आरोपितधर्मोंकाआश्रयहोणेतैं आत्मरूपनहींहै ॥ किंवा सुखकाअनुभवरूपजोफलहै ॥ सोफलभी याजीवोंकूं
याशरीरकेविद्यमानहुएहीहोवैहै ॥ ताछायाकेविद्यमानहुए सोसुखरूपफल किसीकूंभीप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैंभी यहशरीरही
आत्माहै ॥ याप्रकार याशरीरकेउत्कृष्टताकूंविषयकरणेहारीबुद्धिकूं अंगीकारकरिकै इनदोनोंनैं याशरीरविषेही आत्मरूपतादृढ

करीहै ॥ यातें इनोंकेबुद्धिकूंअंगीकारकरिकैही मैं इनोंकीशरीरविषेआत्मबुद्धिछुडाइकै स्फुरणरूपमुख्यआत्माविषे इनोंकेबुद्धिकूं जोडों ॥ सोमुख्यआत्माविषेबुद्धिकेजोडणेकाप्रकार यहहै ॥ जिसस्थूलशरीरकूं इनोंनैं आत्मामान्याहै ॥ सोस्थूलशरीरकैसाहै? स्वभावतैंजन्ममरणादिकविकारोंवाला देखणेमैंआवैहै ॥ तथा शत्रुवोंतैंभयकूंप्राप्तहुआ देखणेमैंआवैहै ॥ तथा परिच्छिन्नदेखणेमैंआवैहै ॥ ऐसेअनित्यशरीरविषे अमरत्वादिकधर्म जिसस्फुरणकेतादात्म्यसंबंधकरिकैप्रतीतहोवैहैं ॥ तास्फुरणकूंभी इनदोनोंनैं हमारेसर्वउपदेशोंविषेदेख्याहै ॥ काहेतें? जिसशरीरकूं इनोंनैं आत्मामान्याहै ॥ तिनशरीरादिकसर्वपदार्थोंविषे यहआत्मा आध्यासिकसंबंधकरिकैअनुगतहै ॥ तास्फुरणरूपआत्मातेंविना कोईभीपदार्थ प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातें जैसे याशरीरविषेस्थितधर्मोंकी छायाविषेअसंभवदेखिकै इनोंनैं ताछायाकापरित्यागकरिकै याशरीरकूंही आत्मामान्याहै ॥ तैसे यास्थूलशरीरविषेभी नहींसंभवहोणेहारे जेअमरत्वादिक स्फुरणकेधर्म हैं ॥ तिनधर्मोंका मैं कथनकरों ॥ जिनधर्मोंकूंदेखिकै यहदोनों आपेही याशरीरविषेआत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरैं ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकाविचारकरिकै सोप्रजापति ताइंद्रविरोचनकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेइंद्र! हेविरोचन! यहस्फुरणरूपआत्मा मरणतैंरहितहै तथा भयतैंरहितहै ॥ तथा देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै ॥ तथा ब्रह्मरूपहै ॥ ऐसेआत्मादेवकेस्फुरणस्वरूपकूं तुमोंनैं हमारेसर्वउपदेशोंविषे सामान्यरूपतैंअनुभवकऱ्याहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकावचन जबी ताप्रजापतिनैं ताइंद्रविरोचनकेप्रतिकह्या ॥ तबी सोइंद्रविरोचन ताउपदेशकरिकैभी पुनः ताशरीरविषेही आत्मरूपतानिश्चयकरतेभये ॥ और ताप्रजापतिनैं जोआत्माके अमरत्वअभयत्वादिकधर्म कथनकऱ्येथे ॥ तेअमरत्वादिकधर्मभी यास्थूलशरीरविषेहीअंगीकारकरतेभये ॥ हेशिष्य! यास्थूलशरीरविषे यद्यपि अमरत्वअभयत्वादिकधर्म संभवतेनहीं ॥ तथापि जिसअभिप्रायकरिकै ताइंद्रविरोचननैं यास्थूलशरीरविषे तेअमरत्वअभयत्वादिकधर्म अंगीकारकरेहैं ॥ ताअभिप्रायकूं तू श्रवणकर ॥ यालोकविषे जरारोगादिकोंकीनिवृत्तिकरणेहारे जेरसायनरूपऔषधहैं ॥ तथा नानाप्रकारकेमंत्रकल्पादिकउपायहैं ॥ तेसंपूर्णरसायनादिकउपाय याशरीरकूं जरामरणादिकोंतैंरहितकरेहैं ॥ यातें तिनरसायनादिकउपायोंकरिकै यास्थूलशरीरविषेभी अमरपणा संभवहोइसकैहै ॥

यातें यास्थूलशरीरकेअमरकरणेवासते हमोंनें तेरसायनमंत्रकल्पादिकउपाय अवश्यकऱ्येचाहिये ॥ और जबी याहमारेशरीरविषे तिनरसायनादिकोंकरिकै अमरपणा सिद्धहोवैगा ॥ तबी याशरीरविषे अभयपणाभी विनाहीयत्नतैंसिद्धहोवैगा ॥ काहेतें ? यालोकविषे जजीव मरणवालेहैं ॥ तिनजीवोंकूंही आपणेमरणकेकारणोंतेंभयकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोपुरुषअमरहै ॥ सोपुरुष आपणेशत्रुआदिकोंतें कदाचित्भी भयकूंप्राप्तनहींहोता ॥ और यहशरीर जबीअभयहोवैहै ॥ तबी याशरीरविषे ब्रह्मरूपताभी संभवहोइसकैहै ॥ काहेतें ? व्याकरणकीरीतिसें ब्रह्मशब्दकाअर्थ वृद्धिवालाहै ॥ और संकोचकेअभावकानाम वृद्धिहै ॥ तासंकोचकीप्राप्ति याजीवोंकूं भयकरिकैहोवैहै ॥ भयतैंरहितपुरुषकूं किसीतैंभीसंकोचहोवैनहीं ॥ अथवा नानाप्रकारकेरूपोंकेधारणकरणेकाजोसामर्थ्यहै ॥ ताकानाम वृद्धिहै ॥ याप्रकारकीवृद्धिभी याशरीरविषे संभवहोइसकैहै ॥ काहेतें ? यहपुरुष योगकेबलतें तथादिव्य औषधिसेवनकेबलतें मृग अश्व हस्ती महिष इत्यादिकशरीरोंकेधारणकरणेविषे समर्थहोइसकेहै ॥ तथा पर्वतकेसमानआकारके धारणकरणेविषेभी समर्थहोइसकैहै ॥ तथा साक्षात् पर्वतरूपकेधारणकरणेविषेभी समर्थहोइसकेहै ॥ याकारणतें याशरीरविषेही साब्रह्मरूपतासंभवैहै ॥ किंवा उपदेशकेप्रारंभकालविषे जोब्रह्मानें आत्माके अपहतपाप्मा विजर विमृत्यु विशोक विजिघत्स सत्यकाम सत्यसंकल्प इत्यादिकलक्षणकथनकऱ्येथे ॥ तेसर्वलक्षण योगादिकउपायोंतें याशरीरविषेसंभवहोइसकेहैं ॥ काहेतें ? यहशरीररूपआत्मा तिनरसायनादिकोंकरिकै जबी जरामरणतैंरहितहोवैहै ॥ तबी शोकतेंभीरहितहोवैहै ॥ काहेतें ? यालोकविषे जरामरणादिकविकारोंवालेजीवही सर्वदाशोककूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और मंत्रऔषधादिकोंकेबलतें यहशरीर क्षुधापिपासादिकोंतेंभीरहितहोवैहै ॥ इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष आपणेशरीरकूं रसायनमंत्रादिकउपायोंकरिकै अमरअभयादिरूपकरेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष आपणेबलकेप्रभावतें भूरादिकसर्वलोकोंकूं तथातिनलोकवर्तिसर्वभोग्यपदार्थोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ याअर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहींहै ॥ किंवा याप्रजापतिनें जोपूर्व हमारेप्रति चक्षुविषे तथाजलशरावविषे आपणीछायादेखणेकाउपदेशकऱ्याथा ॥ताउपदेशकरिकैभी याप्रजापतिनें ताछायाकेदृष्टांतकरिकै याशरीररूपआत्माकूंही जरा मरण पाप शोक भय इत्यादिकविकारोंतें

रहितकह्याथा ॥ ताब्रह्माकेकहणेकायहअभिप्रायथा ॥ जैसे यहछायाशस्त्रोंकरिकै तथाअग्निआदिकोंकरिकै नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा याछायाकूं पाप शोक भय इत्यादिकविकारभी प्राप्तहोवैंनहीं ॥ तैसे यास्थूलशरीरविषेभी जैसे ते मरण पाप शोक भय आदिकविकार नहींप्राप्तहोवैं ॥ ऐसाकोईउपाय याअधिकारीपुरुषोंनैं करणा ॥ किंवा जैसे प्रातःकालविषे तथासायंकालविषे यहछाया वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहशरीरभी उपायोंतैंवृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैंभी यहशरीरहीआत्माहै ॥ किंवा जैसे स्वभावतैंनाशरहितहुईभीयहछाया कारणकेनाशतैं नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे स्वभावतैंनाशतैंरहितहुआभीयहशरीर कारणकेनाशतैं नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ किंवा जैसे ताप्रतिबिंबरूपछायाका यहशरीररूपआत्माही कारणहै ॥ तैसे याशरीररूपआत्माकाभी त्वकादिकसप्तधातुहीकारणहैं ॥ जबी शस्त्रप्रहारादिकबाह्यनिमित्तोंकरिकै तथारोगादिकअंतरनिमित्तोंकरिकै वात पित्त कफ येतीन दोष क्षोभकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तबी तेत्वकादिकसप्तधातुभी क्षोभकूंप्राप्तहोइकै याशरीरकानाशकरैहैं ॥ यातैं जैसे याशरीररूपबिंबकी स्थिरताकरिकै प्रतिबिंबरूपछायाकीस्थिरताहोवैहै ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुष जबी मंत्रऔषधादिकोंकेसेवनतैं शस्त्रअग्निआदिक बाह्यनिमित्तोंकूं तथारोगादिकअंतरनिमित्तोंकूं नहींउत्पन्नहोणदेवैहै ॥ तबी याअधिकारीपुरुषके वात पित्त कफ येतीनदोष क्षोभकूं प्राप्तहोवैंनहीं ॥ तिनदोषोंकेक्षोभतैंविना तेत्वकादिकसप्तधातुभी क्षोभकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ और जबी तेत्वकादिकसप्तधातु क्षोभकूंनहींप्राप्तहोवैहैं ॥ तबी यहशरीर दाहछेदनादिकोंकरिकै कदाचित्भी नाशहोवैनहीं ॥ किंवा योग मंत्र रसायनादिकऔषध इत्यादिकउपायोंकरिकै सिद्धिकूंप्राप्तहुआजोयहशरीरहै ॥ सोशरीर अग्निविषेतौ जलकीन्यांई शीतलरहैहै ॥ और जलविषे सोशरीर पाषाणकीन्यांई रहैहै ॥ और पृथिवीविषे सोशरीर पृथिवीकेसमानरहैहै ॥ अथवा जलकेसमानरहैहै ॥ और वायुविषे सोशरीर वायुकेसमानरहैहै ॥ और आकाशविषे सोशरीर आकाशकीन्यांईहोवैहै ॥ किंवा योगाभ्यासकालविषे यहपुरुष जबी पृथिवीआदिकपंचभूतोंकीधारणाकरैहै ॥ तबी यापुरुषकाशरीर तापृथिवीआदिकपंचभूतोंकेसादृश्यताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं सोशरीर शस्त्रादिकोंकरिकैभी भेदनकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ और जैसे बाणादिकोंकरिकैभेदनकूंप्राप्तहुआभीजल

पुनः पूर्वकीन्यांईस्थितहोवैहै ॥ तैसे तायोगसिद्धपुरुषकाशरीर बाणादिकोंकरिकैभेदनकूंप्राप्तहुआभी पुनः पूर्वकीन्यांई स्थितहोवैहै ॥ यातें मंत्र औषध योग आदिकउपायोंकरिकै यास्थूलशरीरविषेभी अजरत्व अमरत्व अभयत्व आदिकधर्म संभवहोइसकैहैं ॥ हेशिष्य! याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै कुबुद्धिकूंप्राप्तहुए तथाअर्थशास्त्रके तथाकामशास्त्रके संस्कारोंकरिकै दूषितहैचित्तजिनोंका ऐसेइंद्रविरोचनदोनों यास्थूलशरीरकूंहीआत्मामानतेभये ॥ और ताब्रह्माकेउपदेशतें याशरीरकूंआत्माजानिकै तेइंद्रविरोचनदोनों आपणेमनविषे बहुतप्रसन्नहोतेभये ॥ तथा आपणेकूंकृतकृत्यमानतेभये ॥ तिसतैंअनंतर तेइंद्रविरोचनदोनों ताप्रजापतिकूंनमस्कारकरिकै ताब्रह्मलोकतें आपणेलोकविषेजातेभये ॥ और तिसकालविषे सोप्रजापति मौनकूंधारणकरिकैस्थितथा ॥ याकारणतें सोब्रह्मा तिनोंकेप्रति जाणेवासते तथारहणेवासते किंचित्मात्रभी वचन नहींकहताभया ॥ हेशिष्य! इसप्रकार जबी तेइंद्रविरोचन यास्थूलशरीरकूंआत्मामानिकै ताब्रह्मलोकतें आपणे गृहकूंजातेभये ॥ तबी सोब्रह्मा तिनदोनोंकूंजाताहुआदेखिकै आपणेमनविषे याप्रकारकावचनकहताभया ॥ यहदेवतावोंका पतिइंद्र तथाअसुरोंकापतिविरोचन दोनों आपणेकूंपंडितमानतेहैं ॥ तथा लोकविषेभी येइंद्रविरोचन महान्बलबुद्धिवाले हैं ॥ याप्रकारप्रसिद्धहैं ॥ तथा इनदोनोंकी परस्परबहुतस्पर्द्धाहै ॥ तथा पर्वतकेसमानइनोंकूंअभिमानहै ॥ याकारणतें इनदोनोंनें हमारेप्रति पुनःप्रश्नकर्यानहीं ॥ किंतु याशरीरकूंही आत्मामानिकै येदोनों हमारेकूंनमस्कारकरिकै शीघ्रही आपणेलोकविषेजातेभयेहैं ॥ जोमैं अबी किसीआपणेअनुचरकूंभेजिकै तुमदोनोंकूं आत्माकायथार्थबोधनहींभया यातें तुम आपणेलोकविषेमतजावो याप्रकारकावचनकहिकै इनोंकूंजाणेतैंनिवारणकरोंगा तौ राजसप्रकृतिवाले येइंद्रविरोचनदोनों आपणेअभिमानकेनाशहुएतें क्रोधवान्होइकै आपणेजीवनेविषेभी आशातैंरहितहोवैंगे ॥ काहेतें? मानकेभंगकरणेहाराजोवचनहै ॥ ताअल्पवचनकेश्रवणकरिकैभी येदोनों क्रोधरूपशत्रुकेवशकूंप्राप्तहुए हमारेकूंदेखणेविषेआवैंहैं ॥ ऐसेइंद्रविरोचनकूं जोमैं मानभंगकरिकै क्रोधवान् करौंगा तौ क्रोधकूंप्राप्तहुएयेदोनों महान्युद्धकरैंगे ॥ कैसेहैंयेदोनों? देवतावोंकी तथाअसुरोंकी जेस्त्रियांहैं ॥ तिनस्त्रियोंकेपति

योंकूंनाशकरिकै तिनस्त्रियोंकूं विधवाभावकीप्राप्तिकरणेहारे हैं ॥ तथा मांसकेभक्षणकरणेहारे जेगृध्रादिकजीवहैं ॥ तिनोंकूंआनंद कीप्राप्तिकरणेहारे हैं ॥ तथा साधुस्वभाववालेपुरुषोंकूं भयकीप्राप्तिकरणेहारे हैं ॥ ऐसेयेइंद्रविरोचनदोनों क्रोधकूंप्राप्तहोइकै हस्ती अश्व रथ पदात याचतुरंगसेनाकूंनाशकरणेहारेयुद्धकूंकरेंगे ॥ यातैं इनदोनोंकेआत्मज्ञानकेप्रसंगविषे किसीनिमित्ततैंविना अकस्मात्तैंही सर्वभूतोंकानाशहोवैंगा ॥ सोसर्वभूतोंकानाश मतहोवै ॥ याकारणतैं इनदोनोंकूं जाणेतैंनिवारणकरणा योग्यनहीं है ॥ शंका ॥ हेभगवन्! युद्धकेभयतैं ताब्रह्मानैं तिसइंद्रविरोचनकूं जाणेतैंनिवारणकऱ्यानहीं ॥ यहवार्त्ता ब्रह्मानैं श्रेष्ठनहींकरी ॥ काहेतैं? यादेहकूंआत्माजानिकै तेइंद्रविरोचन जबी आपणेआपणेलोकविषे जावैंगे ॥ तबी सर्वजीवोंकेप्रति यादेहात्मवादकाउपदेश करैंगे ॥ तादेहात्मवादकूंनिश्चयकरिकै तेसर्वजीव अनर्थकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! तादेहात्मवादतैं सर्वलोकोंकूंनिवृत्तकरणेवासते सोप्रजापति तादेहात्मवादियोंकेप्रति याप्रकारकाशापदेताभया ॥ जिनदेवतावोंकेप्रति तथाजिनअसुरोंकेप्रति तथा जिनमनुष्योंकेप्रति येइंद्रविरोचन साक्षात्गुरुरूपहोइकै तथापरंपरागुरुरूपहोइकै यादेहात्मवादकाउपदेशकरैंगे ॥ तेसर्वइनोंके शिष्य इसजन्मविषे तथाभावीजन्मविषे श्रेयकेमार्गतैंभ्रष्टहोवैंगे ॥ काहेतैं? तेमूढपुरुष यादेहकूंहीआत्मामानिकै तादेहकेरक्षणकरणेवासते नानाप्रकारकेउपायकरैंगे ॥ तेसर्वउपाय जबी निष्फलहोवैंगे ॥ तबी तेमूढपुरुष महान्दुःखकूंप्राप्तहोवैंगे काहेतैं? जैसे ओदनादिरूपपक्वअन्न अथवा खेतिरूपपक्वअन्न नानाप्रकारकेउपायोंकरिकैभी नाशतैंरहितहुआ स्थितहोवैनहीं ॥ किंतु सोपक्वअन्न अवश्यकरिकैनाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहस्थूलदेहभी नानाप्रकारकेउपायोंकरिकैभी नाशतैंरहितहुआ स्थितहोवैनहीं ॥ किंतु यहदेह अवश्यकरिकैनाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ किंवा जिसकालविषे सर्वभूतप्राणियोंकूंधारणकरणेहारी तथामहान्पर्वतोंकरिकैयुक्त यहपृथिवीभी नाशकूंप्राप्तहोवैगी ॥ तथा जलकरिकैपूर्णसप्तसमुद्रभी सूखजावैंगे ॥ तथा तेज वायु आकाश येतीनोंभी नाशकूं प्राप्तहोवैंगे ॥ तिसकालविषे जलकेफेनबुद्बुदकेसमान यहशरीर किसप्रकारस्थितहोवैगा ॥ किंतु तिसकालविषे यहशरीर नहींस्थितहोवैगा ॥ किंवा ज्वरादिकव्याधिरूपशत्रु तथामृत्युरूपशत्रु जिसदेहकेअन्नजलकेसाथमिल्येहुएरहे हैं ॥ तथा रक्तवर्णवालेअंगार

रूपअग्निकेसमान क्षुधारूपदाह जिसदेहकेउदरविषे सर्वदारहेहै ॥ तथा जिसदेहकेबाह्यदेशविषेभी सर्वदृश्चिकादिकभूतरूपदाहस र्वदारहेहै ॥ तथा जिसदेहके शस्त्रअस्त्ररूपमृत्यु बाह्यविचरणेहारेहैं ॥ और जैसे कदलीवृक्षकास्तंभ त्वचामात्रहोणेतैं निःसारहोवै है ॥ तैसे विचारकियेतैंयहदेहभी निःसारहीहोवैहै ॥ ऐसायहस्थूलदेहकिसप्रकारअमरहोवैगा? किंतु यादेहविषे किसीप्रकारक रिकैभी अमररूपतासंभवैनहीं ॥ किंवा सर्वजीवोंकायहस्थूलदेह पुण्यपापकर्मरूपनिमित्तकारणतैं उत्पन्नहोवैहै ॥ तथापृथिवीआ दिकपंचभूतरूपउपादानकारणतैंउत्पन्नहोवैहै ॥ जबीतिनकर्मोंका तथापृथिवीआदिकभूतोंकाभी नाशहोवैगा ॥ तबी यहदेह कि सप्रकार स्थितहोवैगा? किंतु नहींस्थितहोवैगा ॥ किंवा यादेहका कारणरूपजोकर्महै ॥ सोकर्म यद्यपि एकशतवर्ष १००आयुष या मनुष्योंकूंदेवैहै ॥ तथापि ताशतवर्षतैं अनंतर सोकर्म अधिकआयुष देवैनहीं ॥ काहेतैं? जगत्केकर्त्ताईश्वरनैं सृष्टिकेआदिकालवि षे जैसीजैसीव्यवस्थाकरीहै ॥ तिसीतिसीप्रकार तेकर्मादिक फलकूंदेवैहैं ॥ यातैं एकशतवर्षतैंउत्तर यादेहविषे सोअमरपणा किस प्रकारहोवैगा? किंतु नहींहोवैगा ॥ किंवा वैद्यकशास्त्रविषे ऋषिलोकोंनैं जेरसायनादिकऔषध कथनकरेहैं ॥ सोकेवल यादेहके रोगादिकोंकीनिवृत्तिवासतेकथनकरेहैं ॥ यादेहकेअमरकरणेवासते नहींकथनकरेहैं ॥ तथा योगाभ्यासकालविषे धारणाकरिकैव शकऱ्येजेपृथिवीआदिकपंचभूतहैं ॥ तेपंचभूतभी तायोगीपुरुषके बलकीवृद्धिकरणेवासतेहीहोवैहैं ॥ तायोगीपुरुषकेअमरकरणे वासतेहोवैनहीं ॥ जोकदाचित् रसायणादिकऔषधोंकरिकै तथा पंचभूतोंकीधारणाकरिकै यहदेह अमरहोताहोवै तौ जिनपुरुषों नैं तेरसायनादिकऔषध प्रवृत्तकरेहैं तथा सापंचभूतोंकीधारणाप्रवृत्तकरीहै ॥ तेपुरुष मृत्युकूंनहींप्राप्तहोणेचाहिये ॥ और तेर सायनादिकोंकूंप्रवृत्तकरणेहारेपुरुषभी मृत्युकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ यातैं तिनरसायनादिकोंविषे यादेहकेअमरकरणेकासामर्थ्य संभ वैनहीं ॥ किंवा यालोकविषे जोजोपदार्थ जन्मवालाहोवैहै ॥ तिसतिसपदार्थकानाश अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ जैसे घटपटा दिकपदार्थ जन्मवालेहैं ॥ यातैं तिनोंकानाशभी अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ तैसे यहदेहभी जन्मवालाहै ॥ यातैं यादेहका नाश भीअवश्यकरिकैहोवैगा ॥ किंवा येसर्वमनुष्योंकेशरीर पंचवर्षपर्यंततौ बाल्यअवस्थावालेहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर षोडशवर्षप

यैंत कुमारअवस्थावालेहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर षष्टिवर्षपर्यंत यौवनअवस्थावालेहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर वृद्धअवस्थावालेहोवैहैं ॥ इसप्रकार सर्वदेहधारीजीवोंकूं आपणेआपणेदेहकानाश अनुभवकरिकैंसिद्धहै ॥ ऐसानाशवान्‌देह किसप्रकारसैंनित्यहोवैगा ? किंवा याजीवोंकामरण यादेहकेसाथही उत्पन्नहोवैहै ॥ तादेहकेविद्यमानहुए तामरणकेनिवृत्तकरणेका कोईभीउपायनहींहै ॥ यह वार्त्ता पुराणविषे व्यासभगवान्‌नैंभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ मृत्युर्जन्मवतांवीर देहेनसहजायते ॥ अद्यवाऽब्दशतांतेवा मृत्युर्वैप्राणिनांध्रुवः ॥ अर्थयह ॥ हेवीर ! जन्मवालेप्राणियोंकामृत्यु देहकेसाथहीउत्पन्नहोवैहै ॥ सोमृत्यु आजदिनविषेहोवै ॥ अथवा शतवर्षतैंअनंतरहोवै ॥ परंतु जन्मवालेप्राणियोंका मृत्युअवश्यकरिकैंहोणाहै ॥१॥ किंवा तामृत्युकेनिवृत्तकरणेका यहएकउपायहै ॥ जो पुनः यादेहकाग्रहणनहींहोणा ॥ याउपायकूंछोडिकै दूसराकोई मृत्युकेनिवृत्तकरणेकाउपाय तीनलोकविषेहैनहीं ॥ यहवार्ता अन्य शास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ मृत्योर्बिभेषिकिंमूढ भीतंमुंचतिकिंयमः ॥ अजातंनैवगृह्णाति कुरुयत्नमजन्मनि ॥ अर्थयह ॥ हेमूढ ! मृत्युतैं तू क्यूंभयकरताहै ॥ तुमारेकूंभययुक्तदेखिकै क्या यमराजाछोडिदेवैगा? किंतु नहींछोडेगा ॥ जिसपुरुषकाजन्मनहीं होता ॥ तिसपुरुषकूं सोयमराजा ग्रहणकरतानहीं ॥ यातैं जोतुमारेकूं यमराजातैंछूटणेकीइच्छाहोवै तौ जन्मतैंरहितकरणेहारे आत्मज्ञानविषे तू प्रयत्नकर ॥ १ ॥ ऐसा जन्ममरणकीनिवृत्तिकरणेहारा आत्मज्ञान यादेहात्मवादियोंकूं अत्यंतदुर्लभहै ॥ काहेतें ? जो यहस्थूलदेह मरणतैंअनंतर श्वानादिकोंकरिकैभक्षणकऱ्याहुआतौ विष्ठारूपहोवैहै ॥ तथा अग्निविषेदग्धकऱ्याहुआ भस्मरूपहोवैहै ॥ तथा पृथिवीविषेपूरणकऱ्याहुआ मृत्तिकारूपहोवैहै ॥ ऐसेनाशवान्‌देहकूं जिनोंनें आत्मारूपमान्याहै ॥ ऐसेदेहात्मवादीपुरुष ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते मनकरिकैंभी प्रयत्ननहींकरैंगे ॥ किंवा सर्वदेहात्मवादियोंकागुरुरूप जोयहप्रल्हादकापुत्रविरोचनहै तथादेवराजइंद्रहै ॥ तिनदोनोंकादेहभी मरणतैंअनंतर विष्ठाभस्मपृथिवीरूपअवश्यहोवैगा ॥ जबी तिनदोनोंकादेहभी यात्रकारकीगतिकूंप्राप्तहोवैगा ॥ तबी इतरजीवोंकेदेहोंकीक्यावार्ताहै ? किंवा तेमूढपुरुष यादेहकूंहीआत्मामानिकै विवेकसंतोषादिकगुणोंतैंरहितहोइकै केवलपापकर्मोंकूंही करैंगे ॥ तिनपापकर्मोंकरिकै तेदेहात्मवादीपुरुष परलोकविषे किंचित्‌मात्रभी सुखकूंनहीं

प्राप्तहोवैंगे ॥ किंतु केवलदुःखकूंहीप्राप्तहोवैंगे ॥ जिनदुःखोंकूंवाणीकरिकैकहणेविषेभी कोईसमर्थनहींहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥
याइंद्रकरिकै तथाविरोचनकरिकै उपदेशकऱ्याजोदेहात्मवादहै ॥ सोदेहात्मवाद जिसजिसजीवकीबुद्धिविषेप्रवेशकरैगा ॥ तेसर्व
जीव दोनोंलोकविषे दुःखकूंहीप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं यहदेहात्मवाद महामोहमयहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार देहात्मवादकरिकै लोकोंकूं
अनर्थकीप्राप्तिरूपफलकाचिंतनकरिकैभी सोप्रजापति युद्धकेभयतैं तिनदोनोंकेप्रति किंचित्मात्रभीवचन नहींकहताभया ॥ किंतु
सोप्रजापति मौनकूंधारणकरिकैस्थितहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर तेइंद्रविरोचनदोनों आपणेआपणेलोकविषेजातेभये ॥ अब ति
नदोनोंविषे प्रथम विरोचनकावृत्तांत निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य! देहरूपआत्माकूंजानिकै अत्यंतप्रसन्नहुआ सोविरोचन ताब्रह्म
लोकतैं शीघ्रही आपणेअसुरोंकीसभाविषेआवताभया ॥ कैसेहैंतेअसुर? स्वभावतैंहीतामसीहैं ॥ तथा रजोगुणकरिकैआवृतहैं ॥
तथा सत्त्वगुणकेलेशमात्रतैंभीरहितहैं ॥ तथा सर्वदाविचारतैंरहितहैं ॥ ऐसेअसुरोंकीसभाविषे सोविरोचन आवताभया ॥ तासभा
विषे असुरोंकरिकैबहुतसन्मानकऱ्याहुआ सोसूर्यकेसमान तेजस्वीविरोचन ऊंचेआसनउपरिस्थितहोताभया ॥ तिसतैंअनंतरसोमू
ढात्माविरोचन ताब्रह्मलोकविषे महान्कष्टकरिकै जिसदेहात्मज्ञानकूं ग्रहणकऱ्याथा ॥ सोदेहात्मज्ञान तिनसर्वअसुरोंकेप्रतिउपदे
शकरताभया ॥ तेअसुर ताउपदेशतैंपूर्वभी अनेकप्रकारकीकुतर्कोंकरिकै यादेहकूंही आत्मामानतेथे ॥ तिसीदेहात्मवादकूं गुरुसंप्र
दायतैंजानिकै अत्यंतदृढनिश्चयकरतेभये ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सोविरोचन तिनसर्वअसुरोंकेप्रति ताप्रजापतिकासर्वउपदेशश्र
वणकराइकै पुनः याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेअसुरो! तुमोंनैं यादेहरूपआत्माकाही सर्वदापूजनकरणा ॥ यादेहरूपआत्मा
तैंभिन्न जितनेअग्निब्राह्मणादिकहैं तिनोंका तुमोंनैं कदाचित्भीपूजननहींकरणा ॥ काहेतैं? याशरीरतैंभिन्न जितनेअग्निब्राह्म
णादिकहैं ॥ तेसर्व यादेहऊपरि उपकारकरैहैं ॥ याकारणतैं तेसर्व यादेहरूपआत्माकेशेषभूतहैं ॥ यहदेहरूपआत्माही तिनसर्वो
काशेषीरूपहै ॥ ऐसेदेहरूपआत्माका जोसर्वतैंउत्कृष्टरूपकरिकैज्ञानहै ॥ सोज्ञानही ताआत्माकापूजनहै ॥ और हेअसुरो! जिसअ
धिकारीपुरुषकूं दोनोंलोकोंकेसुखकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ सोपुरुष आपणेगुरुकीन्यांई यादेहरूपआत्माकाही नानाप्रकारकेदुकूलों

करिकैपूजनकरै ॥ तथा सुवर्णकरिकैजडित नानाप्रकारकेरत्नोंकरिकैपूजनकरै ॥ तथा हस्तियोंकेमस्तकतैंनिकसेजेमोतीहैं ॥ तिन मोतियोंकेगुच्छोंकरिकै तादेहरूपआत्माका पूजनकरै॥ तथा सूर्यकेसमानतेजवाले जेनानाप्रकारकेअलंकारहैं ॥ तिनअलंकारोंकरिकै ताकापूजनकरै ॥ और कोमलस्पर्शवाले तथासुंदररूपवाले तथासुगंधिवाले ऐसेजेविचित्रमालारूपपुष्पहैं ॥ तिनपुष्पोंकरिकै तादेहरूपआत्माका पूजनकरै ॥ और कर्पूरादिकोंकरिकैयुक्त तथाशीतलजलकरिकैयुक्त जोचंदनहै ॥ ताचंदनकरिकै ताका पूजनकरै ॥ तथा शय्या आसन अन्न पान इत्यादिकपदार्थोंकरिकै तादेहरूपआत्माकापूजनकरै ॥ इसप्रकार जोपुरुष अनेकप्रकारकेपदार्थोंकरिकैश्रद्धाभक्तिपूर्वक यादेहरूपआत्माकापूजनकरैहै ॥ सोपुरुष दोनोंलोकविषेसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं सुखकीइच्छावान्पुरुषनैं यादेहरूपआत्माका अवश्यकरिकैपूजनकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! प्रत्यक्षनाशवान्जोयहदेहहै ॥ ताकेपूजनकरणेकरिकै किसफलकीप्राप्तिहोवैगी? किंतु नहींहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेअसुरो ! रसायनादिकउपायोंकरिकैसिद्धिकूंप्राप्तभयाजोयहदेहहै ॥ तादेहरूप आत्माका कदाचित्भी मरणहोवैनहीं ॥ और जोदेह रसायनादिकउपायोंकरिकैसिद्धिकूंनहींप्राप्तभयाहै ॥ तादेहकीमरणअवस्था यद्यपि विचारहीनमूढपुरुषोंनेमानीहै ॥ तथापि विवेकीपुरुषोंनैं यहदेह मरणकूंप्राप्तहुआहै याप्रकारकीमरणबुद्धिकरिकै तादेहकूंअग्निविषेदाहकरणानहीं ॥ काहेतैं ? जैसेसंग्रामशालाविषे शस्त्रअस्त्रोंकेप्रहारकरिकैपीडितहुआकोईशूरवीर किंचित्कालपर्यंत तारथविषे सर्वचेष्टातैंरहित मूर्छितहुआ शयनकरैहै ॥ तैसे यहदेहभी रसायनादिकसिद्धियोंकेअप्राप्तहुए किंचित्कालपर्यंत मच्येहुएकीन्यांई मूर्छाकूंप्राप्तहुआ शयनकरैहै ॥ परंतु सोदेह मृत्युकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं यादेहरूपआत्माकेबांधवोंनैं मरणकीशंकाकरिकै तादेहकूं अग्निविषेदाहकरणानहीं ॥ किंतु तिनबांधवोंनैं प्रथमतौ तादेहकूंश्रेष्ठजलोंकरिकैस्नानकरावणा ॥ तथा तादेहकूं सुगंधिवालेपुष्पचंदनादिकोंकरिकै शोभायमानकरणा ॥ तथा तादेहकूं नानाप्रकारकेवस्त्रोंकरिकै तथानानाप्रकारकेमालावोंकरिकै शोभायमानकरणा ॥ तथा तिनबंधुजनोंनैं तादेहकूं विमानऊपरिबैठाइकै नानाप्रकारकेवादित्रोंकेशब्दसहित बाहरिलेजाणा ॥ तथा भक्षणकरणेयोग्य जे भक्ष भोज्य लेह्य च्योष्य येचारिप्रकारकेअन्नहैं ॥ तिनअन्नोंकूंबाहरिलेजाणा ॥ तथा सुगंधिवालेशीतल

जलकरिकैपूर्ण कलशोंकूंबाहरिलेजाणा ॥ तहांजाइकै तादेहकेनिवासकरणेयोग्य भूमिविषे खातरूपगृहकरणा ॥ ताखातरूपगृह कूं सर्वओरतैंशुद्धकरणा ॥ तथा तागृहविषे कोमलआसनबिछावणा ॥ ताखातरूपगृहविषे तामृतकदेहकूंरावणा ॥ और तादेह केदोनोंतरफ तेभक्षणकरणेयोग्य भक्ष्यभोज्यादिकपदार्थ रावणे ॥ तथा तेजलकेकलश रावणे ॥ जैसे महाराजाकेभृत्य तामहा राजाकेवासते नानाप्रकारकीसामग्री त्यारकरिकैरखेहैं ॥ तैसे तिनबंधुजनोंनैं तामृतकदेहकेसमीप नानाप्रकारकेभोग्यपदार्थ त्या रकरिकैरावणे ॥ और तिनबांधवोंनैं ताभूमिविषे इसप्रकारकागृह बनावना ॥ जिसकरिकै यादेहरूपआत्माकी सादीर्घनिद्राविषेस्थिति नाशकूंनहींप्राप्तहोवै ॥ और तिनबांधवोंनैं ताभूमिगृहकेऊपरि एकमंडपरूपवेदिकाकरणी ॥ जिसकरिकै ताभूमिगृह काचिरकालपर्यंतभी नाशनहींहोवै ॥ तथा तागृहविषे वृष्टिकाजलभी प्रवेशनहींकरै ॥ तथा ग्रीष्मऋतुकातापभी तागृहविषेप्रवेशनहींकरै ॥ तथा मांसकूंभक्षणकरणेहारे जंबुकादिकजीवभी तागृहविषेप्रवेशनहींकरैं ॥ ऐसीवेदिका ताभूमिगृहकेऊपरिबनावणी ॥ इसप्रकार तेबांधव जबी भलीप्रकारसैंरक्षणकरे हैं ॥ तबी सोदेहरूपआत्मा महाराजाकीन्यांई सुखपूर्वक बहुतकालपर्यंत शयनकरे है ॥ हेअसुरो! जबपर्यंत सोदेहात्मवादकेप्रवृत्तकरणेहाराब्रह्मा तिनआपणेशिष्योंकूं देखणेवासतेनहींआवै है ॥ तबपर्यंत सोदेहसुखपूर्वक तहांशयनकरे है ॥ और जबी सोभगवान्ब्रह्मा कृपाकरिकै आपणेदेहात्मवादीशिष्योंकेदेखणेवासते आवैगा ॥ तबी वायुनैं सर्वत्रव्यापककन्याजो ताब्रह्माकेदेहकासुगंधहै ॥ तासुगंधकरिकै तेसर्वदेह तादीर्घनिद्रातैंउठैंगे ॥ जैसे शस्त्रअस्त्रोंकेप्रहारकरिकै मूर्च्छाकूंप्राप्तहुआकोईशूरवीर किसीवायुकेस्पर्शतैंशीघ्रहीतामूर्च्छातैंउठेहै ॥ तामूर्च्छातैंउठिकै सोशूरवीरपुरुष पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतैं पुनः आपणेशत्रुवोंकूंनाशकरे है ॥ तैसे रसायनादिकउपायोंकायत्नकरतेहुए यहपुरुष जबी तादीर्घनिद्राविषेसोइजावै है ॥ तबी ताब्रह्माकेसुगंधकरिकै तेपुरुष तादीर्घनिद्रातैंउठिकै पूर्वसंस्कारोंकेवशतैं पुनः तिनरसायनादिकोंकीप्राप्तिवासते प्रयत्न करे हैं ॥ हेअसुरो! इसप्रकार प्रयत्नकरतेहुए यहदेह किसीकालपाइकै तिनरसायनादिकोंकूंप्राप्तहोइकै अवश्यकरिकैअमरहोवैंगे ॥ ताअमरपणेकूंप्राप्तहुए तिनयोगीपुरुषोंकेदेह कदाचित्भीनाशकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ यातैं हेअसुरो! यादेहरूपआत्माकेअमरकरणे

वासते तुमसर्वेदैत्य रसायनादिकोंकूंसिद्धकरो ॥ तथा योगपरायणहोवो ॥ तथा दयातैंरहितहोइकै आपणेशत्रुदेवतावोंकूंनाशकरो ॥
और हेअसुरो! याअविवेकीलोकोंकरिकैपूजणेयोग्यजे ब्राह्मण गौवां देवता साधु इत्यादिकहैं ॥ तिनब्राह्मणादिकोंकाशरीर इतर
शरीरोंतैंविलक्षणप्रतीतहोवैनहीं ॥ किंतु समानहीप्रतीतहोवैहै ॥ काहेतें? दोपादवालेजेब्राह्मणादिकहैं ॥ तिनब्राह्मणादिकोंविषे
दोपादवालेशूद्रादिकोंतैं किंचित्मात्रभीविलक्षणतानहींहै ॥ किंतु तेदोनों समानहीहैं ॥ तथा चारिपादवालीजेगौवांहैं ॥ तिनगौ
वोंविषे चारिपादवालेअश्वादिकोंतैं किंचित्मात्रभीविलक्षणतानहींहै ॥ किंतु तेदोनों समानहीहैं ॥ ऐसेसमानस्वभाववालेशरीरों
विषे येब्राह्मणादिक पूज्यहैं यहशूद्रादिक अपूज्यहैं याप्रकारकीविषमताकल्पनाकरणी अयोग्यहै ॥ और हेअसुरो! जैसे तिनब्रा
ह्मणादिकोंकेशरीरविषे विशेषतानहींहै ॥ तैसे तिनशरीरोंकेकारणोंविषेभी विशेषतानहींहै ॥ काहेतें? जैसे तिनब्राह्मणादिकोंकाश
रीर कामयुक्तपितामाताके शुक्रशोणिततैंउत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे इतरशूद्रादिकोंकेशरीरभी ताकामयुक्तपितामाताके शुक्रशोणिततैंउ
त्पन्नहोवैहैं॥ यातैं कारणकीविशेषताकरिकैभी तिनब्राह्मणादिकोंविषे विशेषतासंभवैनहीं ॥ और हेअसुरो! जोतुम यहकहो ॥ सर्वज
गत्काकर्त्ता जोईश्वरहै ताईश्वरका ब्राह्मणादिकोंविषेही पक्षपातहै ॥ याकारणतैं तिनब्राह्मणादिकोंविषे सर्वतैंअधिकताहै ॥ सोयहतु
मारा कहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं? शास्त्रवालेपुरुषोंनैं जोईश्वरकालक्षण कथनकऱ्याहै ॥ सोलक्षण याकामविषेही घटैहै ॥ यातैं का
मतैंभिन्न दूसराकोईईश्वरहैनहीं ॥ अब सोईश्वरकालक्षण कामविषेदिखावैहैं ॥ हेअसुरो! यहकामही सर्वजीवोंकीजननीहै ॥ तथा य
हकामही सर्वजीवोंकापिताहै ॥ तथा यहकामही विप्रहै ॥ तथा यहकामही गौहै ॥ तथा यहकामही देवताहै ॥ तथा यहकामही साधुहै॥
तथा यहकामही भ्रातादिकबंधुरूपहै ॥ तथा यहकामही दातारूपहै ॥ तथा यहकामही बलात्कारसैं तथाआपणीइच्छाकरिकै वस्तुकेग्र
हणकरणेहारा प्रतिग्रहीतारूपहै ॥ याकारणतैं यहकामही सर्वजगत्काकारणहै ॥ ताकामतैंविना दूसराकोईजगत्काकारणहैनहीं ॥ औ
र हेअसुरो! जैसे पृथिवीविषेस्थितसर्वजल अंशरूपहै ॥ तिनअंशरूपजलोंकीअपेक्षाकरिकै समुद्र अंशीरूपहै ॥ याकारणतैं सोसमु
द्र तिनअंशरूपसर्वजलोंतैंश्रेष्ठहै ॥ तैसे यालोकविषे यादेहतैंभिन्नपदार्थोंकूंविषयकरणेहारे जितनेकामहैं ॥ तिनसर्वकामोंतैं यहदे

हविषयककामही श्रेष्ठहै ॥ काहेतें ? याब्रह्मांडविषे जितनेदेवतामुनीश्वरहैं ॥ तथा जितनेहमदैत्यहैं ॥ तथा तीनकालोंविषेवर्त मान जितनेमनुष्यादिकप्राणीहैं ॥ तेसंपूर्णहम तिसतिसभोग्यपदार्थोंकीकामनाकरिकैही आपणेआपणेदेहकेव्यापारकूंकरेहैं ॥ कामनातेंविना कोईभीप्राणी किसीव्यापारविषेप्रवृत्तहोवैनहीं ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ यादेहतेंभिन्न सर्वभोग्यपदार्थविषयकाजि तनेकामहैं ॥ तेसर्वकामभी आपणेदेहवास्तेहीहैं ॥ यातें तिनकामोंतें तथातिनकामोंकेविषयसर्वभोग्यपदार्थोंतें यहदेहही अ त्यंतश्रेष्ठहै ॥ यातें हेअसुरो ! याआस्तिकलोकोंकरिकैरक्षणकरणेयोग्य जेब्राह्मणहैं ॥ तथा गौ देवता साधु आदिकहैं ॥ तिनसर्वों तें यहआपणादेह श्रेष्ठहै ॥ तथा तेसर्व यादेहकेऊपरिउपकारकरणेहारेहैं ॥ यातें तुमोंनें याआपणेदेहकूंही ब्राह्मण गौ देवता सा धुरूप जानिकै सर्वदारक्षणकरणा ॥ और हेअसुरो ! यालोकविषे जोकर्म सुखकीप्राप्तिकरेहै ॥ ताकर्मकूं पुण्यकहेहैं ॥ और जो कर्म दुःखकीप्राप्तिकरेहै ॥ ताकर्मकूं पापकहेहैं ॥ और पशुआदिकोंकीहिंसा तथापरस्त्रीगमन तथापरद्रव्यकाहरण इत्यादिककर्म याजीवोंकूं प्रसिद्धसुखकीहीप्राप्तिकरेहैं ॥ यातें तेहिंसादिककर्मही पुण्यकर्महैं ॥ और प्रातःकालस्नान तथाअग्निहोत्र तथाचांद्राय णादिकव्रत इत्यादिककर्मतौ याजीवोंकूं प्रसिद्धदुःखकीहीप्राप्तिकरेहैं ॥ यातें तेप्रातःकालस्नानादिककर्म पापकर्महैं ॥ ऐसेपापकर्मों कूं तुमोंनें कदाचित्भीनहींकरणा ॥ किंतु हिंसादिकपुण्यकर्मोंकूंहीकरणा ॥ और हेअसुरो ! यादेहरूपआत्माके जोअनुकूलवर्तेहै ॥ तिसीकूं तुमोंनें देवताजानणा ॥ तथा तिसीकूं तुमोंनें साधुजानणा ॥ और यादेहरूपआत्माके जोप्रतिकूलवर्तेहैं ॥ तिसीकूं तुमोंनें असुरजानणा ॥ ऐसेदेहकेप्रतिकूलवर्तणेहारेअसुरोंकूं तुमोंनें अवश्यकरिकैमारणा ॥ हेअसुरो ! जोकदाचित् आपणेपितादिकभी यादेहरूपआत्माके प्रतिकूलवर्ततेहोवैं तौ तिनापितादिकोंकूंभी तुमोंनें नाशकरणा ॥ काहेतें ? यालोकविषेभी पिता माता भगिनी भ्राता स्नुषा जाया पुत्र इत्यादिकसंबंधियोंविषे जोकोईसंबंधी आपणेप्रतिकूलहोवैहै ॥ तिससंबंधीकूं कोईभीपुरुष आपणामित्रमा नतानहीं ॥ किंतु तिसकूं सर्वपुरुष आपणाशत्रुहीमानतेहैं ॥ यातें यादेहरूपआत्माके जोप्रतिकूलहोवै ॥ तिसकूं तुमोंनें अवश्यक रिकैमारणा ॥ इतनेंकरिकै ताविरोचननें सर्वअसुरोंकेप्रति आपणेमतकाकथनकऱ्या ॥ अब वैदिकमतविषे दोषकानिरूपणकरेहैं ॥

हेअसुरो! ब्राह्मणादिकोंकेमारणेविषेपापहोवैहै ॥ तथा परस्त्रीकेसंभोगकरणेविषे पापहोवैहै ॥ तथा परधनकेहरणकरणेविषे पाप होवैहै ॥ याप्रकारकेवचन जोवैदिकपुरुषोंनैं कथनकरेहैं ॥ तेसर्ववचन मिथ्याहैं ॥ काहेतें? जिसकर्मकरिकै यापुरुषकूं दुःखरूप फलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ताकर्मकानाम पापकर्म है ॥ सोयहपापकर्मकालक्षण तिनब्राह्मणवधादिककर्मोंविषेघटतानहीं ॥ काहेतें? आपणेविरोधीब्राह्मणादिकोंकेहिंसातैंअनंतर यापुरुषोंकूं सुखकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ तथा परस्त्रीकेसंभोगतें तथापरधनकेहरणतैंभी या पुरुषोंकूं सुखकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ दुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातें तेहिंसादिक पापकर्मनहीं हैं ॥ किंतु पुण्यकर्म हैं ॥ और हेअसुरो! तेवैदिकपुरुष जोयाप्रकारकावचनकहेहैं ॥ तेहिंसादिककर्म यद्यपि वर्त्तमानकालविषेतौ सुखकीहीप्राप्तिकरेहैं ॥ तथापि तेहिंसादिककर्म कालांतरविषे यापुरुषकूं दुःखरूपफलकीप्राप्तिकरैंगे ॥ सोयहभीतिनोंकाकहणा संभवैनहीं ॥ काहेतें? कार्यकीउत्पत्तितें अव्यवहितपूर्वक्षणविषे जोपदार्थरहेहै ॥ सोपदार्थ ताकार्यकीउत्पत्तिविषे कारणहोवैहै ॥ जैसे मृत्तिकाकुलालादिक घटरूपकार्यकीउत्पत्तितें अव्यवहितपूर्वक्षणविषेरहेहैं ॥ यातें तेमृत्तिकाकुलालादिक ताघटरूपकार्यकीउत्पत्तिविषे कारणहोवैहैं ॥ याप्रकारका कारणकालक्षण तिनहिंसादिककर्मोंविषेघटतानहीं ॥ काहेतें? तेहिंसादिककर्म तीनचारिक्षणमात्र स्थितरहेहैं ॥ तिसतैंअधिककालपर्यंततेहिंसादिककर्म रहैंनहीं ॥ यातें भावीकालविषेउत्पन्नहोणेहारेदुःखपर्यंत तेहिंसादिककर्म रहैंनहीं ॥ और पूर्वनष्टहुएकर्मोंकूंभी जो भावीदुःखकाकारणमानिये तौ पूर्वनष्टहुआकुलालभी भावीघटकाकारणहोणाचाहिये ॥ और पूर्वनष्टहुआकुलाल जैसे भावीघटकाकारणनहींहोवैहै ॥ तैसे तेनष्टहुएहिंसादिककर्मभी ताभावीदुःखकेकारणहोइसकैंनहीं ॥ और हेअसुरो! तेवैदिकपुरुष जोयाप्रकारकावचनकहेहैं ॥ तेहिंसादिककर्म यद्यपि तिसीकालविषेनष्टहोइजावैहैं ॥ तथापि तिनहिंसादिककर्मोंतें एकपापरूपअदृष्ट उत्पन्नहोवैहै ॥ सोपापरूपअदृष्ट ताभावीदुःखपर्यंतरहेहै ॥ यातें तापापरूपअदृष्टतैंही सोभावीदुःख उत्पन्नहोवैहै ॥ सोयहतिनोंका कहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? जिसस्थलविषे दृष्टकारणनहींसंभवैहै ॥ तिसस्थलविषेही अदृष्टकारणकी कल्पनाकरीजावैहै ॥ दृष्टकारणकेसंभवहुए अदृष्टकारणकीकल्पनाहोवैनहीं ॥ और ताभावीदुःखकीउत्पत्तितौ कुपथ्यसेवनादिकदृष्टकारणोंतेंही संभवहो

इसकेंहै ॥ यातें पापरूपअदृष्टकारणतें ताभावीदुःखकीउत्पत्तिमानणी निष्फलहै ॥ और हेअसुरो! अहिंसा सत्य ब्रह्मचर्य इत्यादिकजेतपहैं ॥ तथा यज्ञदानादिकजेकर्महैं ॥ तेसर्व याजीवोंकूं क्लेशकीहीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ यातें तिनतपयज्ञदानादिकसर्वकर्मोंकूंपापरूपजानिके तुमोंनें परित्यागकरणा ॥ हेअसुरो! तिन तपयज्ञादिककर्मोंविषे केवलहमही पापरूपतानहींकथनकरते ॥ किंतु तिनवैदिकपुरुषोंकेवचनतेंही तिनतपयज्ञादिककर्मोंविषे पापरूपतासिद्धहोवैहै ॥ काहेतें? तिनवैदिकपुरुषोंनें तापुण्यपापकर्मोंका याप्रकारकालक्षणकथनकर्‍याहै ॥ जिसकर्मतें याजीवोंकूं सुखरूपफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ताकर्मकानाम पुण्यहै ॥ और जिसकर्मतेंयाजीवोंकूं दुःखरूपफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिसकर्मकानाम पापहै ॥ सोयहपापकालक्षण तपयज्ञादिककर्मोंविषेहीघटैहै ॥ और सोपुण्यकर्मकालक्षण हिंसापरस्त्रीगमनादिककर्मोंविषेहीघटैहै ॥ यातें तिनतपयज्ञादिकपापकर्मोंकापरित्यागकरिके तुमसर्वअसुर हिंसापरस्त्रीगमनादिकपुण्यकर्मोंकूंकरो ॥ और हेअसुरो! सृष्टिकेआदिकालविषे परंपराउपदेशरूप वेदोंकासंप्रदाय दोप्रकारका प्रवृत्तहुआहै ॥ तहां हिंसादिककर्मोंकेकरणेकरिके हमारेकूं महान्अनर्थकीप्राप्तिहोवैगी याप्रकारकीभयकरिके दूषितहैचित्तजिनोंका ऐसेजेभीरुपुरुषहैं ॥ तिनभीरुपुरुषोंविषेतौ याप्रकारकासंप्रदायप्रवृत्तहुआहै ॥ शीघ्रही सुखकीप्राप्तिकरणेहारे जेहिंसादिककर्महैं ॥ तेहिंसादिककर्मतौ पापरूपहैं ॥ और शीघ्रही दुःखकीप्राप्तिकरणेहारे जेतपयज्ञादिककर्महैं ॥ तेतपयज्ञादिक पुण्यकर्मरूपहैं ॥ याप्रकारकासंप्रदाय तिनभीरुपुरुषोंविषेप्रवृत्तहुआहै ॥ और ताभयदोषतेंरहित जेवीरपुरुषहैं ॥ तिनवीरपुरुषोंविषेतौ याप्रकारकासंप्रदाय प्रवृत्तहुआहै ॥ शीघ्रही दुःखकीप्राप्तिकरणेहारेजे तपयज्ञादिककर्महैं ॥ तेतपयज्ञादिककर्मतौ पापकर्महैं ॥ और शीघ्रही सुखकीप्राप्तिकरणेहारेजे हिंसादिककर्महैं ॥ तेहिंसादिककर्म पुण्यकर्मरूपहैं ॥ याप्रकारकासंप्रदाय वीरपुरुषोंविषेप्रवृत्तहुआहै ॥ इसप्रकार सृष्टिकेआदिकालविषे भीरुपुरुष तथावीरपुरुष यादोप्रकारकेअधिकारियोंकेभेदतें सोवेदकासंप्रदायभी दोप्रकारकाप्रवृत्तहोताभयाहै ॥ हेअसुरो! तासृष्टिकेआदिकालतेंलेके अबपर्यंत सोभीरुपुरुषोंकासंप्रदाय तथावीरपुरुषोंकासंप्रदाय विद्यमानहै ॥ तहां सोभीरुपुरुषोंकासंप्रदायतौ इनब्राह्मणोंविषे तथादेवतावोंविषे वर्तमानहै ॥ और दूसरावीरपुरुषोंकासंप्रदाय

तौ एकहमारेविषेही वर्तमानहै ॥ दूसरेकिसीविषेहैनहीं ॥ हेअसुरो! यावीरसंप्रदायकूं एकतौब्रह्माजानताहै ॥ और दूसरा मैंजान
ताहूं ॥ हमदोनोंतैंविना दूसराकोईपुरुष यावीरसंप्रदायकूं जानतानहीं ॥ काहेतें? हमदोनोंतैंभिन्न दूसरेजितनेब्राह्मणदेवता
दिकहैं ॥ तेसर्व अज्ञानकरिकै तथादुष्टसंगकरिकै तथाअसामर्थ्यकरिकै दूषितहैं ॥ याकारणतैं तेब्राह्मणदेवतादिक यावीरसंप्रदाय
कूंग्रहणकरिसकतेनहीं ॥ उलटा तेब्राह्मणादिक मोहकेवशतैं यावीरसंप्रदायकीनिंदाकरेहैं ॥ हेअसुरो! ऐसाउत्तमवीरसंप्रदाय तु
मारेकूं पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं हमारेउपदेशतैं प्राप्तभयाहै ॥ हेअसुरो! सर्वलोकोंकूंसुखकीप्राप्तिकरणेहारा तथाहिंसादिक
पुण्यकर्मोंकाकारण जोयहवीरसंप्रदायहै ॥ तावीरसंप्रदायकूं तुमसर्वअसुर आपणेभुजावोंकेबलतैं यातीनलोकोंविषे प्रवृत्तकरो ॥
हेअसुरो! यावीरसंप्रदायकीप्रवृत्ति तबी होवैगी ॥ जबी तुम यावीरसंप्रदायकेविरोधीपुरुषोंका हननकरौगे ॥ तिनविरोधीपुरुषोंके
हननतैंविना यावीरसंप्रदायकीप्रवृत्ति होवैगीनहीं ॥ हेअसुरो! यज्ञादिककर्मोंविषेप्रीतिवाले तथाब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकैसंपन्न
जेब्राह्मणहैं ॥ तेब्राह्मणभी यावीरसंप्रदायकेविरोधीहैं ॥ और स्वभावतैंहमारेशत्रुजेदेवताहैं ॥ तेदेवताभी यावीरसंप्रदायकेविरोधी
हैं ॥ और हमारेशत्रुवोंकेपक्षविषेस्थित तथासर्वदा हमारीनिंदाकरणेहारे दूसरेभीअनेकदुर्बलप्राणी यावीरसंप्रदायकेविरोधीहैं ॥
और हेअसुरो! तेब्राह्मणदेवता केवल यावीरसंप्रदायकेविरोधीनहींहैं ॥ किंतु तेब्राह्मणदेवता हमअसुरोंकेभीविरोधीहैं ॥ तथा ते
ब्राह्मणदेवता वेदकेअर्थकूंभीअन्यथाकरणेहारेहैं ॥ ऐसेपापात्माब्राह्मणदेवतावोंकूं तुमजाइकैहननकरो ॥ हेअसुरो! याप्रकारके हमा
रे उपदेशकूं अंगीकारकरिकै जबीतुम दयातैंरहितहोइकै तिनब्राह्मणदेवतावोंकाहननकरौगे ॥ तबी तुमारेकूं इसलोकविषेभी सुख
कीप्राप्तिहोवैगी ॥ तथा परलोकविषेभीसुखकीप्राप्तिहोवैगी ॥ हेशिष्य! इसप्रकार जबी ताविरोचनराजानैं सर्वअसुरोंकेप्रति उ
पदेशकऱ्या ॥ तबी तेअसुर तिसीप्रकार सर्वजगत्कूं दुःखकीप्राप्तिकरतेभये ॥ कैसेथेतेअसुर? ताउपदेशतैं पूर्वभी स्वभावतैंहीपा
पात्माथे ॥ तथा दयातैंरहितथे ॥ तथा क्रूरकर्मोंकूंकरणेहारेथे ॥ हेशिष्य! ब्राह्मणादिकोंकेसाथ विरोधकरणा ॥ तथा जीवतअवस्था
विषे सर्वदा यास्थूलदेहकाहीपोषणकरणा ॥ तथा मरणतैंअनंतर यादेहकूं नानाप्रकारकेअलंकारोंकरिकै शोभायमानकरणा ॥ तथा

सर्वदा हिंसादिककर्मकरणे ॥ याप्रकारकाजोअसुरोंकासंप्रदायहै ॥ सोसंप्रदाय अबपर्यंत नष्टनहींभया ॥ किंतु सोसंप्रदाय इदानींकालविषेभी बहुतलोकोंविषे देखणेमेंआवैहै ॥ हेशिष्य ! सोअसुरोंकासंप्रदाय इदानींकालविषेभी बहुतमनुष्योंविषेवर्तेहै ॥ याअर्थविषे महात्मापुरुषोंकेवचनभी प्रमाणहैं ॥ काहेतें ? यालोकविषे जोपुरुष मोक्षकीइच्छातैंरहितहोवैहैं ॥ तथा हिंसादिकपापकर्मोंविषेप्रीतिवालाहोवैहै ॥ तथा शास्त्रतेंविपरीतआचरणकरणेहाराहोवैहै ॥ ऐसेनास्तिकपुरुषकूंदेखिकै महात्माआस्तिकब्राह्मण याप्रकारकावचनकहेहै ॥ असुरोंकूंप्रिय जेहिंसादिकपापकर्महैं ॥ तिनपापकर्मोंकूं यहपुरुष सर्वदाकरेहै ॥ याकारणतें यहपुरुषअसुरोंकीसंप्रदायविषेहै ॥ जोकदाचित् यहपुरुष असुरोंकीसंप्रदायविषे नहींवर्तताहोवै तौ यहपुरुष नास्तिकपणेकरिकै यज्ञादिककर्मोंतेंविमुख किसवासतेहोता ? किंवा यहपुरुष मरणतेंअनंतर तामृतकदेहकूं नानाप्रकारकेअन्नादिकपदार्थोंकरिकै तथा नानाप्रकारकेवस्त्रभूषणादिकोंकरिकै शोभायमानकरेहैं ॥ यातेंयहजान्याजावैहै ॥ यहपुरुष आपणेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानरूपमायाकरिकै मूढभावकूंप्राप्तहुएहैं ॥ किंवा मरणतेंअनंतर यामृतकदेहकेपूजनकियेतें तादेहात्माकूं परलोककाजयरूपफल प्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकेवचन जोयहमूढपुरुष कथनकरेहै ॥ सोतिनोंकेवचनोंतें यहजान्याजावैहै ॥ जो तिनमंदबुद्धिपुरुषोंविषे कोईआश्चर्यरूप मूर्खताकामाहात्म्य विद्यमानहै ॥ जिसमूर्खताकेमाहात्म्यकरिकै यहमूढपुरुष प्रथमतौ यास्थूलदेहकूंही आत्मामानेहै ॥ और दूसरा तादेहरूपआत्माकेमरणतेंअनंतर तामृतकदेहकेअलंकारकरणेतें तादेहरूपआत्माकूं परलोकविषे श्रेष्ठफलकीप्राप्तिमानेहै ॥ हेशिष्य ! विचारकरिकैदेखियेतौ तिनदेहात्मवादियोंकेमतविषे लेशमात्रभीयुक्तिसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? मरणतेंअनंतर पृथिवीविषेपूरणकऱ्याहुआ यहस्थूलदेह पृथिवीरूपहीहोइजावैहै ॥ ऐसेदेहका पुनःउत्थान किसप्रकारहोवैगा ? किंतु नहीं होवैगा ॥ और हेशिष्य ! ताआपणेमतकीसिद्धिकरणेवासते तेदेहात्मवादी जोयाप्रकारकीयुक्तिकथनकरेहैं ॥ जैसे जलकेतलावविषेस्थित जेमंडूकहैं ॥ तेमंडूक ताजलकेसूकणेतेंअनंतर मृत्तिकाविषेलयहोइजावैहैं ॥ जबी वर्षाकरिकै सोतलाव जलसैंपूर्णहोवैहै ॥ तबी तेसर्वमंडूक पुनःजीवनकूंप्राप्तहोइकैउठेहैं ॥ तैसेमरणतेंअनंतर यापृथिवीविषे लयभावकूंप्राप्तहुएभी तेदेहताब्रह्माके

सुगंधकरिकै पुनःजीवनकूंप्राप्तहोइकैउठैंगे ॥ सोयहतिनोंकादृष्टांतभी संभवैनहीं ॥ काहेतें ? ताजलकेसुकणेतैंअनंतर तेमंडूकसर्वप्रकारसैं नाशकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ किंतु सर्वअंगोंकरिकैसंपन्नहुए तेमंडूक जलकेवियोगतैंमूर्छाभावकूंप्राप्तहुए तामृत्तिकाविषेरहेहैं ॥ जबी वर्षाकेजलका तिनोंकेसाथ संबंधहोवैहै ॥ तबी तेमंडूक पुनःजीवनकूंप्राप्तहोइकै उठैहैं ॥ और जिनमंडूकोंकेअवयवोंकूंकाकादिकपक्षी भक्षणकरिगयेहैं ॥ तेमंडूक तावर्षाजलकेसंबंधकरिकै कदाचित्‌भीउठतेनहीं ॥ तैसे यहदेहभी तापृथिवीविषे बहुतकालतैंपीछै सर्वप्रकारसैंनाशहोइजावैहै ॥ तानष्टहुएशरीरका पुनःउत्थानमानणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ किंवा प्रजापतिकेशरीरकूंस्पर्शकरिकैचलायमान भयाजोवायुहै ॥ तावायुकेसंबंधकेप्रभावतैं पृथिवीविषेलयहुएदेहभी पुनःउत्थानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकावचन जोतादेहात्मवादी विरोचननैं कथनकऱ्याहै ॥ सोताकाकहणा उष्ट्रलगुडन्यायकरिकै ताविरोचनकीयुक्तिसैंही खंडनहोइसकैहै ॥ इहां लकडियोंकेभारयुक्तजोउष्ट्रहै ॥ ताउष्ट्रकूं तिसलकडियोंकेभारतैं एकलकडीनिकासिकैमारणा याकानाम उष्ट्रलगुडन्यायहै ॥ तैसे तादेहात्मवादीविरोचननैं वैदिकपुरुषोंकेखंडनकरणेवासते जोयहयुक्तिकहीथी ॥ जबपर्यंत दृष्टवस्तुकासंभवहोइसकै तबपर्यंत अदृष्टवस्तुकीकल्पनाकरणीअयोग्यहै ॥ यातैं भावीदुःखविषे पापरूपअदृष्ट कारणनहींहै ॥ किंतु कुपथ्यसेवनादिक दृष्टनिमित्तही तादुःखविषेकारणहै ॥ सोयहअदृष्टअर्थकीकल्पनारूपदूषण ताविरोचनकेमतविषेहीप्राप्तहोवैहै ॥ काहेतें ? पृथिवीविषे लयहुएशरीरोंका प्राजापत्यवायुकेसंबंधतैंउत्थानमानणाभी अदृष्टकल्पनाहीहै ॥ नष्टहुएदेहका पुनःउत्थान कहांदेखणेमैंआवतानहीं ॥ किंवा तादेहात्मवादीविरोचननैं जोवैदिकपुरुषोंकेसंप्रदायकूं भीरुपुरुषोंकासंप्रदायकह्याथा ॥ सोतिसकाकहणाभी केवलअज्ञानतैंहीहै ॥ काहेतें ? यालोकविषे नारदमुनि भृगुऋषि देवराजइंद्र स्वायंभुवमनु इसतैंआदिलैके जेमहान्‌पराक्रमवाले तथामहान्‌बुद्धिवाले पुरुषहुएहैं ॥ तेसर्वमहान्‌पुरुष किसप्रकार भीरुकहेजावैंगे ? किंतु तिननारदादिकमहान्‌पुरुषोंकूंभीरुकहणा अत्यंतअनुचितहै ॥ यातैं दैत्योंकीसभाविषे स्थितहोइकै सोविरोचन आत्मज्ञानतैंरहितमूढअसुरोंकेप्रति जेजेवचन कहताभयाहै ॥ तेसर्ववचन मिथ्याहीकहताभयाहै ॥ यातैं ताविरोचनकूं आस्तिकपुरुषोंनैं कामकरिकैमोहितचित्तवालाजानणा ॥ ऐसेसर्वप्रमाणतैंविरुद्ध विरोचनकेमतकूं उन्मत्तपुरुषकेवचनों

केसमानजानिकै आस्तिकपुरुषोंनैं सर्वथापरित्यागकरणा ॥ हेशिष्य! जोकामातुरपुरुष नरकरूपग्रामकेमार्गविषेस्थितहोइकै ता असुरमतकूं अंगीकारकरिकै पूर्वउक्तकुतर्कोंकरिकै हिंसादिकपापकर्मोंकूं पुण्यरूपजानिकैंकरैहै ॥ सोपापात्मापुरुष इसलोकविषेतौ महानूअकीर्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और परलोकविषे निवृत्तिकेउपायतैंरहित महानूदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकेवचन श्रीगीतादिकशास्त्रोंविषे श्रीकृष्णभगवानादिकश्रेष्ठपुरुषोंनैं कथनकरेहैं ॥ यातैं जिनपुरुषोंकूं सुखकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंनैं जबपर्यंत कंठविषेप्राणस्थितहोवै तबपर्यंत याविरोचनकेसंप्रदायविषे कदाचित्भीप्रवेशनहींकरणा ॥ किंतु याविरोचनकेसंप्रदायका तिनआस्तिकपुरुषोंनैं दूरसैंपरित्यागकरणा ॥ इतनेग्रंथकरिकै विरोचनकावृत्तांत कथनकऱ्या ॥ अब ताइंद्रकावृत्तांत निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य! ताब्रह्मलोकतैं जबी तेइंद्रविरोचनदोनौं आपणेआपणेलोकविषेचलेथे ॥ तबी अर्द्धमार्गविषे सोदेवराजइंद्र ताविरोचनकूंतामसीदेखिकै शनैःशनैःचलनेकेमिषकरिकै ताविरोचनकापरित्यागकरताभया ॥ ताविरोचनकापरित्यागकरिकै तथाआपणीदेवसभाकूंनप्राप्तहोइके सोदेवराजइंद्र तामार्गविषे किसीएकांतदेशविषेस्थितहोताभया ॥ तहांस्थितहोइकै सोसात्विकस्वभाववालाइंद्र आपणेमनविषेविचारकरिकै पूर्वग्रहणकरेहुएआत्माविषे याप्रकारकेदोष देखताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे बृहदारण्यकउपनिषद्विषे देवता मनुष्य असुर येतीनौं प्रजापतिसैं आपणेश्रेयकासाधनपूछतेभये ॥ तिनोंकेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै सोप्रजापति दकारअक्षरकूंउच्चारणकरताभया ॥ तादकारअक्षरकूंश्रवणकरिकै आपणेआपणेभावनाकेअनुसार देवतातौ इंद्रियोंकेनिग्रहरूपदमकूंही श्रेयकासाधनरूपकरिकैग्रहणकरतेभये ॥ और मनुष्यतौ गौसुवर्णादिकपदार्थोंकेदानकूंही श्रेयकासाधनरूपकरिकैग्रहणकरतेभये ॥ और असुरतौ दयाकूंही श्रेयकासाधनरूपकरिकैग्रहणकरतेभये ॥ तैसे प्रजापतिनैं ताइंद्रविरोचनदोनोंकेप्रति ॥ यएषोऽक्षिणिपुरुषोदृश्यतएषआत्मा ॥ याप्रकारकावचन समानकह्याथा ॥ तावचनकूंश्रवणकरिकै सोविरोचनतौ तावचनकीलक्षणाकरिकै छायाकेसदृशदेहकूंही आत्मामानताभयाथा ॥ और सोइंद्रतौ ताब्रह्माकेयथाश्रुतवचनतैं छायाकूंही आत्मामानताभयाथा ॥ याकारणतैं सोदेवराजइंद्र ताछायाआत्माविषे याप्रकारकेदोषोंकाविचारकरताभया ॥ ताछायाकेस्वरूपकी

सिद्धिकरणेहारा जोयहदेहहै ॥ तादेहविषे जन्ममरणतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेविकार प्रतीतहोवैहैं ॥ तिनजन्ममरणादिकवि
कारोंकेविद्यमानहुए यहदेह अमृतत्व अभयत्व आदिकधर्मोंवाला किसप्रकारहोवैगा? किंतु नहींहोवैगा ॥ यातैं जैसे जन्मम
रणादिकविकारोंवाले घटादिकपदार्थ आत्मानहींहैं ॥ तैसे यहदेहभी आत्मानहींहै ॥ जबी यादेहविषेभीआत्मरूपतासिद्धनहीं
भई ॥ तबी ताबिंबरूपदेहकेअधीन चक्षुदर्पणादिकोंविषेस्थितछायाविषे साआत्मरूपता किसप्रकारसंभवैगी? किंतु नहींसंभ
वैगी ॥ काहेतें? ताप्रजापतिनैं आत्माकूं अमृत अभय ब्रह्म रूप कह्याथा ॥ तेअमृतत्वादिकधर्म याछायाविषेसंभवतेनहीं ॥
यातैं यहछाया आत्मरूपनहींहै ॥ किंवा याप्रतिबिंबरूपछायाविषे यद्यपि बिंबकीअपेक्षातैंविना स्वभावतैं मरण तथा भय दीख
तानहीं ॥ यातैं याछायाआत्माविषे अमरत्व तथा अभयत्व संभवैहै ॥ तथाप्रातःकालविषे तथासंध्याकालविषे याछायाकीवृद्धि
भीदेखणेविषेआवैहै ॥ यातैं याछायाविषे ब्रह्मरूपताभीसंभवैहै ॥ तथापि यास्थूलदेहकीन्यांई यहछायाआत्माभी परित्यागकर
णेयोग्यहै ॥ काहेतें? यहछाया सर्वदायास्थूलदेहकेगुणोंकूं तथादोषोंकूं आपणेविषेधारणकरैहै ॥ तहां यहबिंबरूपदेह जबी वस्त्र
भूषण छत्र इत्यादिकअलंकारोंकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ तबी सोछायाआत्माभी तिसीप्रकारकेअलंकारोंवालाहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ औ
र यादेहकेअंधहुए सोछायाआत्माभी अंधहुआप्रतीतहोवैहै ॥ और यादेहकेश्लेष्मयुक्तहुए सोछायाआत्माभी श्लेष्मयुक्तहुआप्र
तीतहोवैहै ॥ और यादेहकेहस्तपादादिकअंगोंतैंरहितहुए सोछायाआत्माभी हस्तपादादिकअंगोंतैंरहितहुआप्रतीतहोवैहै ॥ इ
सप्रकार याबिंबरूपदेहकेअनुसार प्रतीतहोणेहारा जोयहछायाआत्माहै ॥ सोछायाआत्मा स्वभावतैं जडहै ॥ तथा नाशवान्
है ॥ तथा भोगोंकेभोगणेकीयोग्यतातैंरहितहै ॥ याकारणतैं याछायाआत्माविषे भोक्तापणासंभवैनहीं ॥ और ब्रह्मानैं आत्माके
ज्ञानतैं सर्वलोकवर्त्तिभोगोंकीप्राप्तिकथनकरीथी ॥ सो याजडछायारूपआत्माकेज्ञानतैं सर्वभोगोंकीप्राप्तिरूपफलकूं मैं देखतान
हीं ॥ यातैं यहछाया आत्मानहींहै ॥ किंतु याछायातैंभिन्नही कोईआत्माहै ॥ किंवा याबिंबरूपदेहका जबी नाशहोवैहै ॥ तबी
याछायाकाभीनाशहोवैहै ॥ यातैं पुण्यपापकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकेभोगणेवासते छायाआत्माकातौ परलोकविषे गमनसंभवै

नहीं ॥ किंतु तापरलोकविषे सुखदुःखरूपफलकेभोगणेवासते याछायातैंभिन्नहीकोईआत्मा अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ अन्यथा कऱ्येहुएकर्मोंकाफलकेभोगतैंविनाहीनाशरूप कृतनाशदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ याकारणतैंभी यहछाया आत्मानहींहै ॥ किंतु याछायातैं तथायादेहतैं भिन्नहीकोईआत्माहोवैगा ॥ ताछायादेहतैंभिन्नआत्माकूं मैं पुनःताब्रह्माकेसमीपजाइकैपूछौं ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै सोसात्विकस्वभाववाला देवराजइंद्र ताआत्माकेजानणेकीइच्छाकरताहुआ समिदादिकपदार्थोंकूं आपणेहस्तविषेग्रहणकरिकै विनयपूर्वक पुनः ताप्रजापतिगुरुकेसमीपजाताभया ॥ और तादेवराजइंद्रकूं पुनःआयाहुआदेखिकै मंदमंदहसताहुआ सोप्रजापति तादेवराजइंद्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेइंद्र! तू विरोचनकेसहित प्रसन्नमनहुआ याब्रह्मलोकतैंगयाथा ॥ अबी किसप्रयोजनवासते तू पुनःइहांआयाहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकावचन जबी ताप्रजापतिनैं इंद्रकेप्रतिकह्या ॥ तबी ताइंद्रनैं छायाविषे तथादेहविषे जितनेपूर्वदोष निश्चयकऱ्येथे ॥ तिनसर्वदोषोंकूं सोइंद्र ताप्रजापतिकेप्रति कथनकरताभया ॥ ताइंद्रकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेइंद्र! यहस्थूलदेह तथाछाया येदोनोंजडहैं ॥ यातैं तिनोंविषे भोक्तापणासंभवतानहीं ॥ याप्रकारकावचन जोतुमनैं कह्याहै ॥ सो यथार्थकह्याहै ॥ परंतु जिसआत्माकेअविज्ञानतैं तुमनैं अनुक्तउपालंभकेसमान यहपरिश्रमकऱ्याहै ॥ सोदेहछायातैंभिन्नआत्मा पुनःमैं तुमारेप्रति उपदेशकरताहूं ॥ जोआत्मा विरोचनकेसहिततुमारेताईं हमनैं पूर्वभीउपदेशकऱ्याथा ॥ सोईहीआत्मा मैंपुनः तुमारेप्रति उपदेशकरताहूं ॥ इहांकथनकऱ्येहुएवचनके यथार्थअर्थकूंनजाणिकै तथातावचनका विपरीतअर्थ ग्रहणकरिकै तावचनकहणेहारेपुरुषकूं जोउपालंभदेणाहै याकानाम अनुक्तउपालंभहै ॥ सोइहांप्रसंगविषे ॥ यएषोऽक्षिणिपुरुषोदृश्यतएषआत्मा ॥ यावचनकरिकै ताप्रजापतिनैं इंद्रकेप्रति यादेहछायातैंविलक्षण साक्षीआत्माकाहीबोधनकऱ्याथा ॥ ताब्रह्माकेवचनके यथार्थअर्थकूंनजाणिकरिकै तथातावचनका छायादेहरूपविपरीतअर्थकल्पनाकरिकै ताइंद्रनैं जोब्रह्माकेप्रति उपालंभदियाहै ॥ सोभी अनुक्तउपालंभहीहै ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेइंद्र! पूर्वजोतुमनैं बतीसवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकऱ्याथा ॥ सो

हमारेवचनतैं संकल्पपूर्वक नहींकर्‍याथा ॥ किंतुविनाहीसंकल्पतैं कर्‍याथा ॥ यातैं आपणेचित्तकीशुद्धिवासते तूपुनः बतीसवर्षपर्यंत ताब्रह्मचर्यकूंकर ॥ तिसतैंअनंतर मैं तुमारेप्रति ताआत्माकाउपदेशकरौंगा ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारकावचन जबी ताप्रजापतिनैं इंद्रके प्रतिकह्या ॥ तबी सोइंद्र ताब्रह्माकेआज्ञाकूंमानिकै पुनः बतीसवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकूंकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोइंद्र ताप्रजापतिके समीपजाताभया ॥ ताइंद्रकूंआयाहुआदेखिकै सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति स्वप्नअवस्थाकासाक्षीरूपकरिकै ताआत्माकाउपदेशकरता भया ॥ हेइंद्र ! पूर्वहमनैं चक्षुविषे तथाजलशराववविषे जिसपुरुषकाउपदेशकर्‍याथा ॥ सोईहीपुरुष स्वप्नअवस्थाविषे आपणेविभूति रूप नानाप्रकारकेविषयोंकूं साक्षीरूपकरिकैअनुभवकरताहुआ स्थितहोवैहै ॥ तिसीपुरुषकूं तू आत्मारूपकरिकैजान ॥ हेशिष्य ! इस प्रकारकावचन जबी ताप्रजापतिनैं इंद्रकेप्रतिकह्या ॥ तबी सोइंद्र ताब्रह्माकेवचनतैं अंतःकरणादिकविशिष्ट तैजसनामाजीवकूं आ त्माजानिकै बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और सोइंद्र पूर्वकीन्यांई ताप्रजापतिकूंनमस्कारकरिकै पुनः आपणेलोककूंजाताभया ॥ तहां अर्द्धमार्गविषेजाइकै किसीएकांतदेशविषेस्थितहोइकै सोइंद्र पुनः आपणेमनविषे विचारकरताभया ॥ ताविचारकरिकै सोइंद्र ता स्वप्नद्रष्टापुरुषविषेभी याप्रकारकेदोषोंकूंदेखताभया ॥ जैसे छायाआत्मा यास्थूलदेहकेगुणदोषोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहस्वप्नद्रष्टापु रुष यद्यपि यास्थूलदेहकेगुणदोषोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथापि यास्वप्नद्रष्टापुरुषविषे याप्रकारकेमहान्‌दोष हमारेकूं प्रतीतहोवैहैं ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं कोईकशत्रुपुरुष हननकरेहैं ॥ और जैसे जाग्रत्‌अवस्थाविषे कोईप्रमत्तहस्ती क्रोधवान्‌होइकै आपणेसुंडकूं ऊपरिउठाइकै मूढबालकोंकूंभयकीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं वृक व्याघ्र सर्प आदिकजी व भयकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और तास्वप्नविषे सोस्वप्नद्रष्टापुरुष आपणेसुहृदोंकेवियोगकूंदेखिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा रुदन करैहै ॥ इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकेदोष तास्वप्नद्रष्टापुरुषविषे देखणेमैंआवैहैं ॥ और प्रजापतिनैं हमारेप्रति आत्मा अमृत अभय ब्रह्मरूपहै याप्रकारकाआत्माकालक्षण कथनकर्‍याथा ॥ सोयाप्रकारकालक्षण यास्वप्नद्रष्टापुरुषविषेघटतानहीं ॥ यातैं य हस्वप्नद्रष्टापुरुष आत्मानहींहै ॥ किंतु यास्वप्नद्रष्टापुरुषतैंभिन्नहीकोईआत्माहोवैगा ॥ ताआत्माकेजानणेवासते मैंइंद्र पुनः ताप्र

जापतिकेसमीपजावौं ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकाविचारकरिकै सोइंद्र पुनः ताप्रजापतिकेसमीप जाताभया ॥ ताइंद्रकूं पुनः आयाहुआदेखिकै सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेइंद्र! पूर्वतूं आत्माकाउपदेशश्रवणकरिकै प्रसन्नमनहुआ आपणेलोककूंगयाथा ॥ अबीपुनःकिसप्रयोजनवासते तू इहांआयाहैं? हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी ताप्रजापतिनैं इंद्रकेप्रतिकह्या ॥ तबी ताइंद्रनैं मार्गविषे जितनेदोष तास्वप्नद्रष्टापुरुषविषेदेखेथे ॥ तिनसर्वदोषोंकूं सोइंद्र ताप्रजापतिकेआगे कहताभया ॥ ताइंद्रकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति पुनः बतीसवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकरणेकीआज्ञाकरताभया ॥ ताप्रजापतिगुरुकेआज्ञाकूंमानिकै सोदेवराजइंद्र पुनःबतीसवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकूंकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोइंद्र पुनःताप्रजापतिकेसमीपजाइकै ताआत्माकाप्रश्नकरताभया ॥ ताइंद्रकेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै सोप्रजापति पुनःसुषुप्तिअवस्थाकासाक्षीरूपकरिकै ताआत्माकाउपदेशकरताभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेइंद्र! जिसकालविषे यहपुरुष सर्वविशेषज्ञानोंतैंरहितहुआ शयनकरैहै॥ तिसकालविषे सोपुरुष जिसहार्दाकाशरूप ब्रह्मलोकविषे एकताभावकूंप्राप्तहोइकै सर्वदुःखोंतैंरहितहोवैहै ॥ तथा सर्वइंद्रियोंतैंरहितहोवैहै ॥ तथा जिसहार्दाकाशरूपब्रह्मलोकविषे प्राप्तहुआभीयहपुरुष ताहार्दाकाशकूंनजानिकरिकै पुनःपुनः बाहरिआवैहै ॥ सोमायामात्रउपाधिवाला हार्दाकाशरूपब्रह्मलोकही अमृतअभयब्रह्मरूपहोणेतैं तुमारा आत्माहै ॥ यहहीआत्मा हमनैं पूर्वभीतुमारेप्रति उपदेशकऱ्याथा ॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी ताप्रजापतिनैं देवराजइंद्रकेप्रतिकह्या ॥ तबी सोइंद्र ताब्रह्माकेवचनतैं अज्ञानविशिष्टप्राज्ञनामाजीवकूं आत्माजानिकै बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और पूर्वकीन्यांई ताप्रजापतिकूंनमस्कारकरिकै सोइंद्र पुनः आपणेलोककूंजाताभया ॥ तहां अर्धमार्गविषेजाइकै सोइंद्र पुनः किसीएकांतदेशविषेस्थितहोइकै आपणेमनविषे विचारकरताभया ॥ ताविचारकरिकै सोइंद्र तासुषुप्तिकेप्राज्ञनामाआत्माविषेभी याप्रकारकेदोषोंकूंदेखताभया ॥ यहसुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित प्राज्ञनामापुरुष यद्यपि स्वप्नद्रष्टापुरुषकीन्यांई भयादिकोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथापि यहप्राज्ञनामापुरुष मैंइसप्रकारकाहूं याप्रकार आपणेकूंभीजानतानहीं ॥ और हमारेतैंभिन्नयहपुरुष इसप्रकारकाहै ॥ याप्रकार दूसरेकूंभीजानतान

हीं ॥ जैसे यालोकविषे मदिरादिकोंकेपानकरिकैमूढहुआपुरुष आपणेकूं तथापरकूं जानतानहीं ॥ तैसे तासुषुप्तिविषे सो प्राज्ञनामापुरुषभी आपणेकूं तथापरकूं जानतानहीं ॥ किंतु तासुषुप्तिविषे विद्यमानहुआभी सोप्राज्ञनामापुरुष नाशहुएकी न्यांई स्थितहोवैहै ॥ यातैं ताप्रजापतिनैं जोआत्माका अमृतअभयब्रह्मरूपतालक्षण कह्याथा ॥ सोलक्षण याप्राज्ञनामापु रुषविषेघटतानहीं ॥ यातैं तालक्षणवाला याप्राज्ञनामापुरुषतैंभिन्नहीकोई आत्माहोवैगा ॥ ताआत्माकेनिश्चयकरणेवासते मैंइंद्र पुनः ताप्रजापतिकेसमीपजावों ॥ हेशिष्य! याप्रकारका मनविषेविचारकरिके सोइंद्र पुनः ताप्रजापतिकेसमीपजाताभ या ॥ ताइंद्रकूंआयाहुआदेखिके सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेइंद्र! पूर्वहमारेउपदेशतैं तू आ त्माकूंजानिकै प्रसन्नमनहुआ आपणेलोककूंगयाथा ॥ अबी पुनःतू किसप्रयोजनवासते इहांआयाहै? हेशिष्य! इसप्रका रकावचन जबी ताप्रजापतिनैं इंद्रकेप्रतिकह्या ॥ तबी ताइंद्रनैं मार्गविषेजितनेदोष ताप्राज्ञनामापुरुषविषे देखेथे ॥ तिनस र्वेदोषोंकूं सोइंद्र ताप्रजापतिकेआगेकहताभया ॥ ताइंद्रकेवचनकूंश्रवणकरिके सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति पुनः ब्रह्मचर्यकरणे कीआज्ञाकरताभया॥ परंतु याचतुर्थवारमें सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति पंचवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकरणेकीआज्ञाकरताभया ॥ हेशिष्य! सोदेवराजइंद्र प्रथमतौ ताप्रजापतिकेवचनतैंविनाही बतीसवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर दूसरीवार तथातीसरी वार सोइंद्र प्रजापतिकेवचनतैं बतीसबतीसवर्षपर्यंत ताब्रह्मचर्यकूंकरताभया ॥ और चतुर्थवारतौ सोइंद्र ताप्रजापतिकेवचनतैं पं चवर्षपर्यंत ताब्रह्मचर्यकूंकरताभया ॥ इसप्रकार चारोंवारमिलिकै एकशतएकवर्ष १०१ पर्यंत सोइंद्र ताप्रजापतिकेआगे ब्रह्मच र्यकूंकरताभया ॥ अब ताब्रह्मचर्यकेमाहात्म्यकावर्णनकरेहैं ॥ हेशिष्य! यालोकविषे जोजोपदार्थ अत्यंतदुर्लभहोवैहै ॥ तिनदुर्लभ पदार्थोंकूंभी यहपुरुष ताब्रह्मचर्यकरिकैहीप्राप्तहोवैहै ॥ काहेतें? वेदवेत्तापुरुष याब्रह्मचर्यकूंही सर्वयज्ञादिरूपकरिकैकथनकरेहैं ॥ हेशिष्य! यालोकविषे जोकोईपुरुष याआनंदस्वरूपआत्माकूंजानेहै ॥ सोपुरुष याब्रह्मचर्यतैंही ताआत्माकूंजानेहै ॥ ताब्रह्मचर्य तैंविना ताआत्माकाज्ञानहोवैनहीं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताब्रह्मचर्यकूं यज्ञ यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और हेशिष्य! दर्श

पौर्णमासादिककर्म याअधिकारीपुरुषोंकूं स्वर्गादिकइष्टपदार्थोंकीप्राप्तिकरैहैं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तिनदर्शपौर्णमासकर्मोंकूं इष्ट यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ सोइष्टकर्मरूपभी यहब्रह्मचर्यहीहै ॥ काहेतैं ? सर्वपदार्थोंकीअपेक्षाकरिकै अत्यंतप्रियरूपताकरिकै इष्टशब्दकामुख्यअर्थ जोआत्माहै ॥ ताइष्टआत्माकूं यहअधिकारीपुरुष ताब्रह्मचर्यकरिकैहीजानैहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताब्रह्मचर्यकूं इष्ट यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ हेशिष्य ! यद्यपि कोशादिकलौकिकप्रमाणोंकेबलतैं यज्ञशब्दकेअर्थका तथाइष्टशब्दकेअर्थका भेदसिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु तेदोनोंशब्द एकहीअर्थकेवाचकहैं ॥ तथापि मीमांसकोंनैं तिनदोनोंका याप्रकारसैंभेद कथनकर्याहै ॥ सोमपशुआदिकपदार्थोंकरिकैसिद्धहोणेहारेजे ज्योतिष्टोमादिककर्म हैं ॥ तिनज्योतिष्टोमादिकोंकानाम यज्ञहै ॥ और पशुआदिकोंतैंविना केवल औषधादिकपदार्थोंकरिकैसिद्धहोणेहारेजे दर्शपौर्णमासादिककर्महैं ॥ तिनदर्शादिककर्मोंकानाम इष्टहै ॥ और हेशिष्य ! नानापुरुषोंनैं मिलिकैकर्याजोयागविशेषहै ॥ तायागविशेषकानाम सत्रायणहै ॥ सोसत्रायणरूपभी यहब्रह्मचर्यहीहै ॥ काहेतैं ? यहअधिकारीपुरुष आपणेसत्यस्वरूपआत्माकूं याब्रह्मचर्यकरिकैही जन्ममरणरूपसंसारतैंरक्षाकरैहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताब्रह्मचर्यकूं सत्रायण यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ और हेशिष्य ! मननशीलपुरुषकाजोभावहोवै ॥ ताकानाम मौनहै ॥ तामौनशब्दकाप्रसिद्धअर्थतौ वाणीकानिरोधरूपतपहै अथवा संन्यासआश्रमहै ॥ सोमौनशब्दभी याब्रह्मचर्यकाहीवाचकहै ॥ काहेतैं ? सर्वअधिकारीपुरुष याब्रह्मचर्यकेप्रभावतैंही आत्माकेमननकरणेविषेसमर्थहोवैहैं ॥ ताब्रह्मचर्यतैंविना कोटिजन्मोंकरिकैभी ताआत्माकामननहोवैनहीं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताब्रह्मचर्यकूं मौन यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ और हेशिष्य ! लोकप्रसिद्ध उपवासपरायणताकावाचक जोअनाशकायनपदहै ॥ सोअनाशकायनपदभी याब्रह्मचर्यकाहीवाचकहै ॥ काहेतैं ? याब्रह्मचर्यकरिकै प्राप्तहुआजोआत्माहै ॥ सोआत्मा कार्यसहितअज्ञानरूपप्रतिबंधकेदाहहुए कदाचित्भी नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताब्रह्मचर्यकूं अनाशकायन यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ और हेशिष्य ! लोकप्रसिद्ध वनवासकावाचक जोअरण्यायनशब्दहै ॥ सोअरण्यायनशब्दभी याब्रह्मचर्यकाहीवाचकहै ॥ काहेतैं ? समुद्रकेसमानविस्तारवालेजे अरण्यनामादोह्रदहैं ॥ तिनदोह्रदोंकरिकै

युक्तजोब्रह्मलोकहै ॥ ताब्रह्मलोककूंभी यहअधिकारीपुरुष ताब्रह्मचर्यकरिकैहीप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताब्रह्मचर्यकूं अरण्यायन यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ हेशिष्य ! याब्रह्मचर्यकेप्रभावतैंही यहपुरुष प्रतिबंधतैंरहितहुआ आपणीइच्छापूर्वक सर्व लोकोंविषेविचरेहैं ॥ जैसे नारदमुनि ब्रह्मचर्यकेप्रभावतैं आपणीइच्छापूर्वक सर्वलोकोंविषेविचरताभयाहै ॥ और हेशिष्य! याब्रह्म चर्यकरिकैसंपन्नहुए येब्राह्मणादिकअधिकारीजन ऋगादिकवेदोंकाअध्ययनकरिकै क्षीर मधु घृत दधि अमृत सोमरस इत्यादिक पदार्थोंकरिकै अग्निआदिकदेवतावोंकीतृप्तिकरे हैं ॥ तिनअग्निआदिकदेवतावोंकेप्रसादतैं तेअधिकारीपुरुष आपभी तिनक्षीरादिक पदार्थोंकूं आपणीइच्छापूर्वक पानकरेहैं ॥ हेशिष्य ! सर्वलोकोंविषेस्वतंत्रविचरणा तथाक्षीरादिकपदार्थोंकापानकरणा यहजोशा स्त्रविषे ब्रह्मचर्यकाफलकथनकऱ्याहै ॥ सोअवांतरफल कथनकऱ्याहै ॥ ताब्रह्मचर्यकामुख्यफलतौयहहै ॥ जो तेब्रह्मचर्यवालेअधि कारीपुरुष ताआनंदस्वरूपआत्माकूंजानिकै यामृत्युदुःखरूपसंसारकूंतरेहैं ॥ हेशिष्य ! तुमारेप्रति हम बहुतक्याकहैं ? यालोक विषे जितनेसाधनविद्यमानहैं ॥ तेसर्वसाधन याब्रह्मचर्यविषेही अंतर्भूतहैं ॥ जैसे हस्तीकेपादविषे सर्वपादोंकाअंतर्भावहोवैहै ॥ तैसे याब्रह्मचर्यविषेही सर्वसाधनोंकाअंतर्भावहोवैहै ॥ ताब्रह्मचर्यतैंअधिक कोईभीसाधननहीं है ॥ और हेशिष्य! याअधिकारी पुरुषोंकीशुद्धिकरणेहाराजोशौचहै ॥ तथा याअधिकारीपुरुषकूं स्वर्गादिकसुखोंकीप्राप्तिकरणेहाराजोतपहै ॥ ताशौचरूप तथा त परूपभी यहब्रह्मचर्यही है ऐसेब्रह्मचर्यकरिकैस्थित जेब्राह्मणहैं ॥ तेबहुतब्राह्मण देवलोककूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ हेशिष्य ! तेब्रह्मच र्यसंपन्नपुरुष केवलदेवलोककूंप्राप्तनहींहोवैहैं ॥ किंतु तेब्रह्मचर्यवालेपुरुष देवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंभी प्राप्तहोवैहैं ॥ कैसाहै सोदेवयानमार्ग ॥ पुनरावृत्तितैंरहितहै ॥ तथा जैसे कर्मकांडकेउपदेशकरणेहारे अठासीसहस्रमुनि ८८००० दक्षिणमार्गविषेस्थि तहोवैहैं ॥ तैसे उपासनाकांडकेउपदेशकरणेहारे अठासीसहस्रमुनि तादेवयानमार्गविषेस्थितहोवैहैं ॥ ऐसेदेवयानमार्गद्वारा तेब्रह्म चर्यवालेपुरुष ताब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेशिष्य ! यालोकविषे जेपुरुष दूसरेसर्वसाधनोंकरिकैसंपन्नभीहैं ॥ तथा विद्याविषेभीकु शलहैं ॥ परंतु एकब्रह्मचर्यसाधनतैंरहितहैं ॥ तेपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तेविषयासक्तपुरुष जन्ममरणरूपक्लेशकूंहीप्राप्त

होवैहैं ॥ याअर्थविषे सौभरिआदिककोटिपुरुष दृष्टांतरूपहैं ॥ हेशिष्य! जैसे समुद्रकेतरणेविषे एकनौकाहीसाधनहै ॥ तैसे या जन्ममरणरूपसंसारकेतरणेविषे यहब्रह्मचर्यहीसाधनहै ॥ हेशिष्य! यहब्रह्मचर्य केवलदुःखकीनिवृत्तिनहींकरे है ॥ किंतु ताब्रह्म चर्यकरिकै येपुरुष स्वर्गकूंभीप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा मोक्षकूंभीप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा दीर्घआयुषकूंभीप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा इसलोकविषे म हान्सुखकूं तथामहान्यशकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तथा तेब्रह्मचर्ययुक्तपुरुष सर्वरोगोंतैंरहितहोवैहैं ॥ तथा सुंदरकांतिवालेहोवैहैं ॥ तथा सर्वदुःखोंतैंरहितहोवैहैं ॥ तथा सर्वपापतैंरहितहोवैहैं ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकामाहात्म्य ताब्रह्मचर्यका शास्त्रोंविषेकथनक र्याहै ॥ हेशिष्य! जोपुरुष याप्रकारकेमाहात्म्यकूंजानिकैभी ताब्रह्मचर्यकेस्थिरकरणेविषे समर्थनहींहोवै ॥ सोपुरुष याप्रकारकाविचा रकरिकै ताब्रह्मचर्यकूंस्थिरकरे ॥ आपणीमाताकेशरीरविषे तथाआपणीस्त्रीकेशरीरविषे कौनविशेषताहै? जिसविशेषताकूंदेखिकै यहपुरुष ताब्रह्मचर्यतैं भ्रष्टहोवैहै ॥ किंतु तिनदोनोंकेशरीरविषे किंचित्मात्रभी विशेषतानहींहै ॥ सर्वस्त्रियोंका पांचभौति कशरीर समानहीहै ॥ यातैं सर्वस्त्रियोंकूं आपणीमाताकेसमानजानिकै यहपुरुष ताब्रह्मचर्यकीरक्षाकरै ॥ किंवा मूत्रकापात्र त थाअपानवायुकरिकैदूषित जास्त्रीकीयोनिहै ॥ तायोनिविषेगमनकरणेहारेपुरुषकूं कौनसुखकीप्राप्तिहोवैहै? किंतु किंचित्मात्रभी सुखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ उलटा जैसे शरीरकेकंडूयनकरिकै हस्तोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे तिनकामीपुरुषोंकूं ताविषयभो गतैं केवलदुःखकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेशिष्य! याप्रकारकाविचारकरतेहुएभी यापुरुषकूं जबी किसीपूर्वलेपापकर्मकेवशतैं तास्त्रीके त्यागकरणेकीबुद्धि नहींहोवै ॥ तबी यहअधिकारीपुरुष तिसत्यागबुद्धिकेप्राप्तिवासते अंतर्यामीपरमेश्वरकेआगे याप्रकारकीप्रार्थ नाकरै ॥ हेअंतर्यामीईश्वर! सर्वब्राह्मणक्षत्रियादिकोंका आत्मरूपजोब्रह्महै ॥ ताब्रह्मभावकेप्राप्तिकी मैं सर्वदा इच्छाकरताहूं ॥ याकारणतैंही मैं सन्मार्गविषेस्थितिरूपचर्याकी अभिलाषावालाहूं ॥ जोकदाचित् मेरेकूं ब्रह्मभावकीइच्छानहींहोती ॥ तौमैं सन्मार्ग विषेस्थितिकीअभिलाषाकिसवासतेकरता? और मेरेकूं सर्वदा ब्रह्मभावकेप्राप्तिकीइच्छारहेहै ॥ साब्रह्मभावकीप्राप्ति ब्रह्मचर्य तैंविनाहोवैनहीं ॥ यातैं हमारेउपरि आप यहअनुग्रहकरौ ॥ जोमैं पुनःयास्त्रीकीयोनिविषेगमननहींकरौं ॥ जायोनि हमनें मा

ताकेउदरतैंनिकसणेकालविषे अनेकवार अनुभवकरीहै ॥ कैसीहैयहस्त्रीकीयोनि? सर्वदामूत्रकरिकैगीलीरहेहै ॥ तथा बहुतलोमकरिकैयुक्तहै ॥ तथा यापुरुषोंके बल विवेक वैराग्य आदिकगुणोंकूंनष्टकरणेहारीहै ॥ तथा पक्वव्रणकेसमान रक्तवर्णवालीहै ॥ तथा अत्यंतदुर्गंधवालीहै ॥ तथा सर्वजन्मोंविषेदुःखकीप्राप्तिकरणेहारीहै ॥ ऐसीनिंदितस्त्रीकीयोनिविषे जैसे पुनः हमारागमननहीं होवै ॥ ऐसीआपकृपाकरो ॥ हेशिष्य! यहअधिकारीपुरुष जबी तापरमेश्वरकेआगे इसप्रकारकीप्रार्थनाकरेहै ॥ तबी सोपरमेश्वर ताअधिकारीपुरुषकूं तिनस्त्रियोंकेमैथुनविषे वैराग्यकीप्राप्तिकरेहै ॥ जावैराग्यकरिकै यहअधिकारीपुरुष तामैथुनविषेप्रवृत्तहोवैनहीं ॥ हेशिष्य! केवलस्त्रीकेसंभोगकानाम मैथुननहीं हैं ॥ किंतु तासंभोगकेसाधनरूपजे स्मरण १ कीर्तन २ केलि ३ प्रेक्षण ४ गुह्यभाषण ५ संकल्प ६ अध्यवसाय ७ येसप्तहैं ॥ तिनोंकूंभी शास्त्रविषेमैथुनकहेहैं ॥ तहां स्त्रियोंका मनविषेचिंतनकरणा याकानाम स्मरणहै ॥ और तिनस्त्रियोंकेसौंदर्यादिकगुणोंका मुखतैंकथनकरणा याकानाम कीर्तनहै ॥ और तिनस्त्रियोंकेसाथ जूवादिकक्रीडाकरणा तथापरिहासकरणा याकानाम केलिहै ॥ और रागपूर्वक वारंवार तिनस्त्रियोंकूंदेखणा याकानाम प्रेक्षणहै ॥ और एकांतदेशविषे तिनस्त्रियोंकेसाथ संभाषणकरणा याकानाम गुह्यभाषणहै ॥ अथवा तिनस्त्रियोंकेगुह्यअंगोंका कथनकरणा याकानाम गुह्यभाषणहै ॥ और तिनस्त्रियोंविषे रमणीकबुद्धिकरणी याकानाम संकल्पहै ॥ और यास्त्रीकेसाथ मैं अवश्य संभोगकरौंगा याप्रकारकेनिश्चयकानाम अध्यवसायहै ॥ यहअष्टप्रकारकामैथुनही तिनस्त्रियोंविषेप्रीतिकाहेतुहै ॥ ताअष्टप्रकारकेमैथुनकेत्यागकियेहुए यापुरुषकी तिनस्त्रियोंविषेप्रीतिहोवैनहीं ॥ और ताअष्टप्रकारकेमैथुनकेपरित्यागकानाम ब्रह्मचर्य है ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकेब्रह्मचर्यकरिकैयुक्तजोपुरुषहै ॥ सोपुरुष विनाहीयत्नतैं सर्वदुःखोंतैंरहित आनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्माकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं सर्वमुमुक्षुजनोंनैं ताब्रह्मचर्यधर्मकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ और जोपुरुष विषयोंविषेआसक्तिकरिकै ताब्रह्मचर्यका परित्यागकरेहै ॥ सोपुरुष नानाप्रकारकेयोनियोंकूं अवश्यकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ काहेतें? ब्रह्मचर्यतैंरहितविषयासक्तपुरुषकूं अत्यंतसमीप हृदयदेशविषेस्थितआत्मा कदाचित्भी प्रतीतहोतानहीं ॥ किंतु ताविषयासक्तपुरुषकेचित्तविषे विष्ठामूत्रादिकमलोंकासमूहरूपस्त्रीही स

वैदा प्रतीतहोवैहै ॥ और निरंतर तास्त्रीकेध्याननतैं उत्पन्नभयेजेसंस्कार तिनसंस्कारोंकेबलतैं सोविषयासक्तपुरुष स्वप्नमनोरथा
दिकोंविषेभी तास्त्रीकूंहीदेखेहै ॥ इसप्रकार सर्वदा तास्त्रीकूंदेखताहुआ तथातास्त्रीकाध्यानकरताहुआ सोविषयासक्तपुरुष मरणतैं
अनंतर इसलोकविषे अथवा परलोकविषे तिसीस्त्रीकेउदरविषे जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अथवा तास्त्रीकेसजातीयकिसीदूसरीस्त्रीकेउ
दरविषे जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अथवा किसीविजातीय पशुआदिकस्त्रीकेउदरविषे जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताजन्मतैंअनंतर सोपुरुष
पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतैं पुनः तिनस्त्रियोंकूंदेखेहैं ॥ तथा तिनस्त्रियोंका सर्वदा ध्यानकरेहै ॥ तिसतैंअनंतर मरणकूंप्राप्तहोइकै सो
विषयासक्तपुरुष पुनःतिनस्त्रियोंकेउदरविषे जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताजन्मतैंअनंतर पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतैं पुनः तिनस्त्रियोंविषेआ
सक्तहोवैहै ॥ इसप्रकार ब्रह्मचर्यतैंरहितहुआ सोविषयासक्तपुरुष आपणेआनंदस्वरूपआत्माकूंनजाणिकरिकै वारंवार जन्ममरण
रूपसंसारकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार अन्वयव्यतिरेककरिकै याब्रह्मचर्यकूंही ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकीकारणताहै ॥ याका
रणतैंही सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते तीनवार बतीसबतीसवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकरणेकीआज्ञा करताभ
या ॥ और चतुर्थवार सोप्रजापति ताइंद्रकेचित्तकूंशुद्धहुआदेखिकै तथाअल्पदोषयुक्तदेखिकै ताअल्पदोषकीनिवृत्तिकरणेवासते
पंचवर्षपर्यंत ताब्रह्मचर्यकरणेकीआज्ञाकरताभया ॥ ताब्रह्माकेआज्ञाकूंमानिकै सोइंद्र पंचवर्षपर्यंत ताब्रह्मचर्यकूंकरिकै पुनःताप्र
जापतिकेसमीप आवताभया ॥ ताइंद्रकूंआयाहुआदेखिकै सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति याप्रकार तुरीयआत्माकाउपदेशकरताभया ॥
प्रजापतिरुवाच ॥ हेइंद्र! स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंतैंविलक्षण जोआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ सोआनंदस्वरूपआत्माहमनैं
तुमारेप्रति पूर्वही चक्षुआदिकस्थानोंविषे उपदेशकऱ्याथा ॥ परंतु आपणेअज्ञानकेवशतैं तू ताआत्माकूंअन्यथाहीग्रहणकरताभ
या ॥ अब तीनशरीरोंतैंभिन्नरूपकरिकै ताआत्माकेबोधकरणेवासते प्रथम धर्मोंसहिततीनशरीरोंकावर्णनकरेहैं ॥ हेइंद्र! जिसश
रीरविशिष्टआत्माकूं तुमनैं ग्रहणकऱ्याहै ॥ सोआत्माकाउपाधिरूपशरीर स्थूल सूक्ष्म कारण याभेदकरिकैतीनप्रकारकाहोवैहै ॥ सो
तीनप्रकारकाशरीर केवलअज्ञानकरिकैहीसिद्धहै ॥ ताअज्ञानकेअभावहुए कार्यकारणरूपकरिकै तिनशरीरोंकीसिद्धिहोवैनहीं ॥

हेइंद्र ! तेतीनोंशरीर अविद्याकरिकेंकल्पितहैं ॥ यातें मरणवत्ताधर्म तिनोंविषे यद्यपि समानहीहै ॥ तथापि यहस्थूलशरीर सर्वदा तामरणवत्ताधर्मवालाहै ॥ काहेतें ? जैसे सर्प आपणाभक्ष्यरूपकरिकै मंडूककूंग्रहणकरेहै ॥ तैसे प्रमादरूपमृत्युनें आपणाभक्ष्यरूपकरिकै सर्वदा यास्थूलशरीरकूं ग्रहणकऱ्याहै ॥ ऐसे यास्थूलशरीरविषे अजरत्व अमरत्व अभयत्व आदिकआत्माकालक्षण संभवतानहीं ॥ यातें यहस्थूलशरीर आत्मानहीं है ॥ किंतु यास्थूलशरीरतेंविलक्षणहीआत्माहै ॥ और हेइंद्र ! जैसे यहस्थूलशरीर आत्मानहीं है ॥ तैसे सोसूक्ष्मशरीरभी आत्मानहीं है ॥ काहेतें ? जैसे अनुकूलरूपप्रियता तथाप्रतिकूलरूपअप्रियता ये दोनोंधर्म यास्थूलशरीरविषेरहेहैं ॥ तैसे तासूक्ष्मशरीरविषेभी तेप्रियअप्रियताधर्मरहेहैं ॥ और आत्मा तिनप्रियअप्रियतादिकधर्मोंतेंरहितहै ॥ यातें यासूक्ष्मशरीरविषेभी आत्मरूपतासंभवैनहीं ॥ किंतु यासूक्ष्मशरीरतेंभी आत्माविलक्षणहै ॥ और हेइंद्र ! जैसे यहस्थूलसूक्ष्मशरीर आत्मानहीं है ॥ तैसे तीसरा अज्ञानरूपकारणशरीरभी आत्मानहीं है ॥ काहेतें? तासुषुप्तिकेकारणशरीरविषे यद्यपि तासुषुप्तिकालविषे दुःखनहीं है ॥ तथापि ताअज्ञानरूपकारणशरीरविषे भावीउत्पन्नहोणेहारेसर्वदुःख बीजरूपहोइकैरहेहैं ॥ यातें सर्वदुःखोंकाबीजरूपहोणेतें सोअज्ञानरूपकारणशरीरभी आत्माहोइसकैनहीं ॥ किंतु ताकारणशरीरतेंभी आत्माविलक्षणहै ॥ हेइंद्र ! स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंतें तथातिनशरीरोंकेप्रियअप्रियतादिकधर्मोंतें रहितजोयहआत्माहै ॥ सो यहआत्मादेव जैसे दुःखतेंरहितहै ॥ तैसे विषयजन्यसुखतेंभीरहितहै ॥ काहेतें ? विषयजन्यसुखभी दुःखकेसमानहीहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! जोकदाचित् आत्माविषे सुखदुःखनहींहोवै तो मैं सुखीहूं मैं दुःखीहूं याप्रतीतिसें आत्मामें सुखदुःख किसकारणतेंभासताहै ? ॥ समाधान ॥ हेइंद्र ! याआनंदस्वरूपआत्माविषे जोप्रीतिकरणेहारासुखप्रतीतहोवैहै तथाअप्रीतिकरणेहारादुःखप्रतीतहोवैहै ॥ सोकेवल शरीरकेतादात्म्यअध्यासतेंप्रतीतहोवैहै ॥ ताशरीरकेतादात्म्यअध्यासतेंविना आत्माविषे सोसुखदुःख प्रतीतहोवैनहीं ॥ जोशरीरकेतादात्म्यअध्यासतेंविनाभी आत्माविषे सोसुखदुःख प्रतीतहोता तो समाधिअवस्थाविषेभी विद्वान् पुरुषोंकूं सोसुखदुःख प्रतीतहोणाचाहिये ॥ और समाधिअवस्थाविषे सोसुखदुःख प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥

शरीरकेतादात्म्यअध्यासतैंही आत्माविषे सोसुखदुःख प्रतीतहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकूंदृष्टांतकरिकैस्पष्टकरेहैं ॥ हेइंद्र! यालोकविषे वायुअग्निआदिकजेभूतहैं ॥ तथा विद्युत् मेघादिक जेभौतिकपदार्थहैं ॥ यहसंपूर्ण घनीभावअवयवोंवालेदेहतैं रहितहैं ॥ याकारणतैं येवायुआदिक ताप्रियअप्रियतेंभीरहितहैं ॥ काहेतें? जैसे हममनुष्यादिकोंकादेह सर्वलोकोंकूं प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे तिनवायुमेघादिकोंका घनीभूतदेह किसीपुरुषनें किसीदेशविषेदेख्यानहीं ॥ किंतु जीवोंकेपुण्यपापरूप अदृष्टादिककारणोंकेवशतें अकस्मात्तैंप्रगटहोइकै तेमेघादिक वृष्टिआदिककार्योंकूंकरेहैं ॥ यातें यहशरीरकासंबंधही सुखदुःखकाकारणहै ॥ और हेइंद्र! जैसे तेवायुमेघादिककार्य आपणेअद्वितीयब्रह्मरूपकारणकूंप्राप्तहोइकै सर्वभेदतेंरहितअद्वितीयरूपकरिकैस्थितहोवैहैं ॥ तैसे सोसुषुप्तिविषेस्थित प्राज्ञनामाजीवात्माभी तीनशरीरोंकेअभिमानकापरित्यागकरिकै हार्दाकाशरूपस्वयंज्योतिब्रह्मकूंप्राप्तहोइकै आपणेवास्तवअद्वितीयरूपकरिकै स्थितहोवैहै ॥ हेइंद्र! वायुआदिकभूतपदार्थ तथा विद्युदादिकभौतिकपदार्थ ताब्रह्मतैंहीउत्पन्नहोवैहैं ॥ और कार्यकाआपणेउपादानकारणविषेही लयहोवैहै ॥ याकारणतैं लयकालविषे तेवायुविद्युदादिककार्य ताब्रह्मरूपकारणकूंहीप्राप्तहोवैहैं ॥ दूसरेकिसीपदार्थकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतें? सर्वजगत्कूं सत्तास्फूर्तिदेणेहारा जोब्रह्मरूपआत्माहै ॥ ताआत्मातैं जोजोपदार्थ रहितहोवैगा ॥ सोसोपदार्थ शशशृंगकीन्यांई निःस्वरूपहीहोवैगा ॥ ऐसे निःस्वरूपपदार्थविषे तिनवायुविद्युदादिकपदार्थोंकालयसंभवैनहीं ॥ हेइंद्र! जैसे तिनवायुआदिककार्योंका चैतन्यआत्माविषेलयहोवैहै ॥ तैसे याघटादिककार्योंकाभी केवलमृत्तिकादिकोंविषेलयहोवैनहीं ॥ किंतु तिनमृत्तिकादिकउपहितचैतन्यआत्माविषेही तिनघटादिककार्योंकालयहोवैहै ॥ किंवा जैसे ताम्रधातुकूं पूर्वरक्तरूपकेविद्यमानहुए सुवर्णभावकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तथा सर्वथानष्टहुएताम्रधातुकूंभी सुवर्णभावकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु पूर्वरूपकेत्यागतैंअनंतर विद्यमानताम्रधातुकूंही सुवर्णभावकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे यहघटादिकपदार्थ आपणेआत्मस्वरूपतेंभिन्न केवलघटादिस्वरूपकरिकैतौ कदाचित्भी कारणविषेलयहोवैनहीं ॥ काहेतें? आत्मस्वरूपतेंभिन्नहुए तेघटादिककार्य आपही शशशृंगादिकोंकीन्यांई निःस्वरूपताकूंप्राप्तहोवैंगे ॥

और निःस्वरूपशशशृंगादिकोंका किसीपदार्थविषेलय देखणेविषेआवतानहीं ॥ तैसे अनात्मरूपपटविषे अनात्मरूपघटकालय भी देखणेविषेआवतानहीं ॥ यातें घटादिककार्योंका मृत्तिकादिकजडपदार्थोंविषेलयहोवैनहीं ॥ किंतु मृत्तिकाउपहितचेतनविषेही तेघटादिककार्य आपणेनामरूपकापरित्यागकरिकैलयहोवैहैं ॥ हेइंद्र! जबी घटादिकजडपदार्थभी आपणेलयकालविषे चेतनब्रह्म भावकूंहीप्राप्तहोवैहैं ॥ तबी सर्वदा तिसब्रह्मकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहुआ जोयहचेतनजीवात्माहै ॥ सोचेतनजीवात्मा आपणेल यकालविषे चेतनब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै? ॥ शंका ॥ हेभगवन्! याजीवात्माका जोसर्वदा ब्रह्मकेसाथअभेद होवै तौ याजीवात्माकूं संसारदशातें मोक्षदशाविषे कौनविशेषता प्राप्तहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेइंद्र! यात्वंपदार्थरूपजीवात्माविषे मैंकर्त्ताहूं मैंभोक्ताहूं याप्रकारके जेकर्तृत्वभोक्तृत्वआदिकधर्म प्रतीतहोवैहैं ॥ तेकर्तृत्वभोक्तृत्वादिकरूप अविद्याकरिकैकल्पित होणेतें मिथ्याहीहैं ॥ और ताजीवात्माका स्वयंप्रकाशता तथाअद्वितीयआनंदरूपता वास्तवस्वरूपहै ॥ और ताजीवात्माका जोवास्तवस्वरूपहै ॥ सोईहीवास्तवस्वरूप तत्पदार्थरूपब्रह्मकाभीहै ॥ यातें वास्तवस्वरूपकरिकै तेजीवब्रह्मदोनों अभिन्नहैं ॥ और संसारदशाविषे जो ताजीवब्रह्मकाभेद प्रतीतहोवैहै ॥ ताभेदभ्रमकाहेतु स्थूलसूक्ष्मशरीरसहितकारणअज्ञानहीहै ॥ ताअ ज्ञानरूपकारणकेनिवृत्तहुएतेंअनंतर सोकल्पितभेदभी निवृत्तहोइजावैहै ॥ हेइंद्र! मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअभेदज्ञानकरिकै ज बी ताअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी तेकर्तृत्वभोक्तृत्वादिककल्पितरूपभी आपही निवृत्तहोइजावैहैं ॥ यहही तासंसारदशातें मो क्षदशाविषेविशेषताहै ॥ हेइंद्र! जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानकरिकै जबी तारज्जुविषयकअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी सोकल्पि तसर्प तथातासर्पके भयउत्पादकत्व मोहउत्पादकत्व आदिकधर्म आपहीनिवृत्तहोइजावैहैं ॥ तैसे अधिष्ठानब्रह्मकेज्ञानतें जबी ता ब्रह्मविषयकअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी तेकर्तृत्वभोक्तृत्वादिकधर्म आपेहीनिवृत्तहोइजावैहैं ॥ और हेइंद्र! जैसे घटरूपउपाधि केनिवृत्तहुए सोघटाकाश आपणेमहाकाशरूपकरिकै स्थितहोवैहै ॥ तैसे स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंतें तथातिनोंकेकर्तृत्व भोक्तृत्वादिकधर्मोंतें रहितहुआयहजीवात्मा आपणेपरिपूर्णब्रह्मरूपकरिकै स्थितहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! विद्युदादिकजडपदा

थोंकूं तथाजीवात्माचेतनकूं लयकालविषे जोसमानही ब्रह्मभावकीप्राप्तिहोतीहोवै तौ श्रुतिविषे जीवात्माकूं ब्रह्मभावकीप्राप्तिविषेजो विद्युदादिकोंकादृष्टांतदियाहै सो असंगतहोवैगा ॥ काहेतें ? किंचित्मात्रविलक्षणताकूंअंगीकारकरिकैही उपमानउपमेयभावहोवै है ॥ यातें तिनोंविषे किंचित्मात्र विलक्षणताकहीचाहिये ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ! यद्यपि श्रुतिनें लयअवस्थाविषे जैसे जीवात्मा कूंपरब्रह्मभावकीप्राप्तिकथनकरीहै ॥ तैसे विद्युदादिकजडपदार्थोंकूंभी परब्रह्मभावकीप्राप्तिकथनकरीहै ॥ तथापि तादृष्टांतदार्ष्टांतिक विषे कार्यअकार्यतारूपकरिकै विलक्षणता प्रसिद्धहीहै ॥ तहां विद्युदादिरूपदृष्टांतविषेतौ कार्यत्वधर्मरहेहै ॥ और जीवात्मारूपदार्ष्टां तिकविषे सोकार्यत्वधर्मरहेनहीं ॥ किंतु अकार्यत्वधर्म रहेहै ॥ यातें दृष्टांतदार्ष्टांतिकदोनोंकीविलक्षणता संभवहोइसकेहै ॥ शंका ॥ हेभ गवन् ! तिनविद्युदादिकोंकीन्यांई ताजीवात्माविषेभी कार्यरूपताकिसवास्तेनहींहोवै ? ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ! तिनमेघविद्युदादि कोंकीन्यांई याजीवात्माविषेभी जोकार्यरूपताअंगीकारकरिये तौ जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ नाशवान्‌होवैहै ॥ जैसे यहदेहादिक कार्यरूपहैं यातेंनाशवान्‌भीहैं ॥ तैसे कार्यरूपहोणेतें ताजीवात्माकाभी अवश्यकरिकेनाशहोवैगा ॥ यातें आत्मा अज र अमर अभय ब्रह्मरूपहै ॥ याप्रकारआत्माकेस्वरूपकूंकथनकरणेहारा सोप्रजापति मिथ्यावादीहोवैगा ॥ किंवा पूर्वतीनवार आत्माविषे विनाशितारूपदोषकूंदेखिकै सोइंद्र ताप्रजापतिकेसमीपआवताभयाथा ॥ जोकदाचित् अबी चतुर्थवारभीताइंद्रकूं अविनाशीआत्माकालाभ नहींहोता तौ ताइंद्रकाआवणाही व्यर्थहोता ॥ और पूर्वकीन्यांई ताआत्माविषेभी विनाशीपणादेखिकै सोइंद्र पुनःभी ताप्रजापतिकेसमीपआवता ॥ किंवा याजीवात्माका जोनाशअंगीकारकरिये तौ ताप्रजापतिनें इंद्रकेप्रतिस्वयंज्यो तिब्रह्मकीप्राप्तिपूर्वक आपणेपरिपूर्णरूपकरिकैस्थितिरूप जोफलकथनकन्याथा ॥ सोभी असंगतहोवैगा ॥ काहेतें ? तानष्टहुएजी वकूं सामन्यतेंकिसीपदार्थकीभीप्राप्तिसंभवैनहीं ॥ जबी नष्टहुएजीवकूं सामान्यतें किसीवस्तुकीभीप्राप्तिनहींभयी ॥ तबी तानष्टहु हुएजीवकूं ताप्राप्तिपूर्वक स्वरूपकरिकै स्थिति किसप्रकारहोवैगी ? किंतु नहींहोवैगी ॥ इत्यादिकअनेकप्रकारकेदोश प्राप्तहोवैं गे ॥ यातें ताजीवात्माविषे कार्यरूपतासंभवैनहीं ॥ किंवा वास्तवतेंविचारकरिकैदेखियेतौ तावायुमेघविद्युदादिकदृष्टांतविषे

तथाजीवात्मारूपदार्ष्टांतिकविषे साकार्यअकार्यतारूपविलक्षणता अपेक्षितहैनहीं ॥ व्यक्तियोंकेभेदमात्रकरिकैभी तिनोंविषेदृष्टांतरू
पतासंभवहोइसकेहै ॥ याअभिप्रायकरिकै तावायुमेघविद्युदादिकदृष्टांतविषेभी वास्तवतैंकार्यरूपताकाखंडनकरेहैं ॥ हेशिष्य ! ता
वायुमेघादिकदृष्टांतविषे जोकदाचित् नैयायिकोंकेमतकीन्यांई वास्तवतैं कार्यरूपताहोवै तौ तानाशवान्वायुआदिकदृष्टांतविषेश्रु
तिनैं समानधर्मरूपकरिकैकथनकऱ्येजे समुत्थान प्राप्ति स्वरूपावस्थिति येतीनधर्म तेनहींसंभवैं ॥ परंतु तिनवायुआदिकोंविषे
कारणतैंपृथक्सत्तारूप वास्तवकार्यताहैनहीं ॥ किंतु कारणही कार्यरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ सोकार्य कारणतैंभिन्नरूपकरिकै सत्न
हींहैं ॥ काहेतैं ? ताकारणतैंभिन्नहुआ सोकार्य मिथ्याहीहोवैहै ॥ जोकदाचित् नैयायिकोंकेमतकीन्यांई सोकार्य आपणेकारणतैंपृथ
क्रूपकरिकै स्थितहोवै तौ सोकार्य आपणेविनाशकरिकै असत्ताकूंभीप्राप्तहोवै ॥ ताकरिकै पूर्वउक्तसर्वदोष प्राप्तहोवै ॥ परंतु ता
कार्यकूं हम कारणतैंपृथक्सत्तावाला अंगीकारकरतेनहीं ॥ यातैं यापक्षविषे सोपूर्वउक्तदोष प्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् !
वायुमेघादिरूपदृष्टांतविषेस्थितकार्यपणेकूं जोमिथ्यामानोंगे तौ दार्ष्टांतिकरूपजीवविषेभी सोमिथ्यापणासिद्धहोवैगा॥ समाधान ॥
हेशिष्य ! जैसे दृष्टांतविषेस्थितकार्यरूपता मिथ्याहै तैसे सोजीवपणाभी मिथ्याहोवैगा याप्रकारकीतुल्यताविषे जोतुमारा आ
ग्रहहोवै तौ यहवार्ता हमारेकूंअनिष्टनहींहै ॥ काहेतैं ? ताजीवपणेकूं हमभी मिथ्यामानतेहैं ॥ याकारणतैंही ॥ मायाभासेनजीवे
शौकरोति ॥ याश्रुतिनैं जीवईश्वरकीस्थिति मायाकेअधीनकथनकरीहै ॥ जैसे घटरूपउपाधिकेनाशहुए घटाकाशपणा मिथ्या
हीहोवैहै ॥ तैसे तीनशरीरोंकेविवेककियेतैं सोजीवपणाभी मिथ्याहीहोवैहै ॥ और जैसे घटाकाशरूपसंघातविषे विशेष्यरूपकरि
कैस्थित जोआकाशहै ॥ सोआकाश सत्यरूपहै ॥ तैसे जीवरूपसंघातविषे विशेष्यरूपकरिकैस्थित जोआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ सो
आनंदस्वरूपआत्माभी सत्यरूपहै ॥ यातैं वायुमेघादिकदृष्टांतविषे तथाजीवरूपदार्ष्टांतिकविषे स्थित जोनामरूपलक्षणमायाका
अंशहै ॥ तामायाकेअंशविषे जोकोईवादी मिथ्यापणाकथनकरै तौ ताकेविषे सोमिथ्यापणा निःशंकहोवै ॥ तामायाकेनामरू
पअंशकूं हमभी सत्यकहतेनहीं ॥ किंतु जोपरमात्मादेव अस्ति भाति प्रियरूपकरिकै सर्ववस्तुवोंविषे अनुगतहै ॥ तापरमात्मा

देवकूंही हम सत्यकहेहैं ॥ और स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंकरिकैविशिष्टजोजीवहै ॥ सोजीवतौ ताआनंदस्वरूपआत्मा केसत्ताकूंअंगीकारकरिकैही सत्यरूपहोवैहै ॥ स्वभावतैं ताजीवविषेभी सत्यरूपताहोवैनहीं ॥ इसप्रकार वायुमेघादिकभी तापर मात्मादेवकीसत्ताकूंअंगीकारकरिकैही सत्यरूपप्रतीतहोवैहैं ॥ स्वभावतैं तिनोंविषेभी सत्यरूपतानहीं ॥ इतनीअंशकीसमान ताकूंअंगीकारकरिकैही तिनवायुमेघादिकोंविषे उपमानरूपता कथनकरीहै ॥ और जीवात्माविषे उपमेयरूपता कथनकरीहै ॥ परंतु तिसवायुमेघादिकदृष्टांतविषेस्थितजाकार्यताहै ॥ ताकार्यताअंशविषे ताजीवात्माकूं तादृष्टांतकीसमानतानहींहै ॥ जोक दाचित् तिनवायुमेघादिकोंकीन्यांई ताजीवविषेभी कार्यरूपताहोवै तौ जोजोपदार्थ उत्पत्तिमान्होवैहै ॥ सोसोपदार्थ नाश वान्होवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ उत्पत्तिमान्होणेतैं नाशवान्हैं ॥ तैसे कार्यरूपहोणेतैं सोजीवात्माभी नाशवान्होवै गा ॥ ताजीवात्माकेनाशहुए कन्येहुएकर्मोंका फलभोगतैंविनानाशरूपकृतनाशदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तथा नकन्येहुएकर्मोंकेफलकी प्राप्तिरूप अकृताऽभ्यागमरूपदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और ऐसेनाशवान्आत्माकेउपदेशकरणेकरिकै ताप्रजापतिकूंभी मिथ्यावादी पणासिद्धहोवैगा ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! जैसे वायुमेघादिकोंविषेकार्यरूपताहै ॥ तैसे घटादिकपदार्थोंविषेभीकार्यरूपताहै ॥ यातैं प्रसिद्धघटादिकपदार्थोंकूंछोडिकै ताप्रजापतिनैं वायुमेघादिकोंकादृष्टांत किसवासतेदियाहै?॥ **समाधान** ॥ हेशिष्य! सोप्रजापति वायुमेघादिकोंकूं जोदृष्टांतरूपकरिकैकथनकरताभयाहै ॥ ताप्रजापतिकेवचनका कार्यरूपताकेबोधनकरणेविषे तात्पर्यनहींहै ॥ किंतु प्रियअप्रियतातैंरहितकरणेहारा जोअशरीरभावहै ॥ ताअशरीरभावकेबोधनकरणेविषे ताप्रजापतिकेवचनका तात्पर्यहै ॥ और घटादिकपदार्थोंकी वायुमेघादिकोंकीन्यांई शरीरतैंरहितहोइकैस्थिति संभवैनहीं ॥ याकारणतैं ताप्रजापतिनैं तिनघटादिकों कादृष्टांतदियानहीं ॥ हेशिष्य! ताप्रजापतिका यहअभिप्रायहै ॥ जैसे घनीभूतअवयवोंवालेशरीरतैंरहितहुए तेवायुमेघादिक प्रि यअप्रियभावकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ तैसे यहजीवात्माभी तीनशरीरोंतैंरहितहुआ ताप्रियअप्रियभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जैसे प्रलय कालकेप्राप्तहुए तेशरीरतैंरहितवायुआदिक परमज्योतिरूप कारणकूंप्राप्तहोइकै आपणेपरिपूर्णस्वरूपकरिकैस्थितहुए पुनः कदा

चित्भी संसारसंबंधिदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे शरीरकेअभिमानतेंरहित यहजीवात्माभी परमज्योतिरूपपरमात्मादेवकूंप्राप्तहो इकै आपणेपरिपूर्णरूपकरिकैस्थितहुआ पुनःकदाचित्भी संसारसंबंधिदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ! तापरमात्मारूपज्यो तिविषे जोपरमज्योतिरूपताकथनकरीहै ॥ सोस्वप्रकाशतारूपकरिकैकथनकरीहै ॥ काहेतें ? तास्वयंज्योतिपरमात्मादेवतेंभिन्न जितने सूर्यचंद्रमाअग्निआदिकज्योतिहैं ॥ तेसूर्यादिकज्योति आपणीसिद्धिवासते आपणेतेंभिन्न ज्ञानरूपज्योतिकीअपेक्षाक रेहैं ॥ यातें तिनसूर्यादिकोंविषे परमज्योतिरूपता संभवैनहीं ॥ और सोज्ञानरूप परमात्मादेव आपणीसिद्धिवासते किसीदूसरेज्ञा नकीअपेक्षा करतानहीं ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं परमज्योति यानामकरिकैकथनकरेहै ॥ किंवा सोआत्म स्वरूपज्ञान जोकदाचित् आपणीसिद्धिवासते किसीदूसरेज्ञाताकीअपेक्षाकरैगा तौ आत्माश्रय अन्योन्याश्रय चक्रिका अन वस्था याचारिदोषोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतें ? ज्ञानवालेकूंज्ञाताकहेहैं ॥ सोआत्मस्वरूपज्ञान आपणीसिद्धिवासते जिसज्ञाताकी अपेक्षाकरेहै ॥ सोज्ञाता ताप्रथमज्ञानकरिकैज्ञानवालाहुआ ताप्रथमज्ञानकीसिद्धिकरेहै ॥ अथवा किसीदूसरेज्ञानकरिकैज्ञान वालाहुआ सोज्ञाता ताप्रथमज्ञानकीसिद्धिकरेहै ॥ तहां प्रथमपक्षकेअंगीकारकरणेविषेतौ आपणीसिद्धिविषे आपणीअपेक्षारूप आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोदूसरापक्ष अंगीकारकरिये ॥ ताकेविषेभी यहविचारकर्याचाहिये ॥ सोज्ञाता तादूसरेज्ञा नकीजोसिद्धिकरेहै ? सो तिसीदूसरेज्ञानकरिकैज्ञानवालाहुआ तादूसरेज्ञानकीसिद्धिकरेहै ? अथवा प्रथमज्ञानकरिकैज्ञानवालाहु आ सोज्ञाता तादूसरेज्ञानकीसिद्धिकरेहै ॥ अथवा किसीतीसरेज्ञानकरिकैज्ञानवालाहुआ सोज्ञाता तादूसरेज्ञानकीसिद्धिकरेहै ? तहां प्रथमपक्षकेअंगीकारकियेहुए पुनःपूर्वकीन्यांई आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और दूसरेपक्षकेअंगीकारकियेहुए अन्यो ऽन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतें ? प्रथमज्ञानकूं आपणीसिद्धिविषेतौ दूसरेज्ञानकीअपेक्षा और तादूसरेज्ञानकूं आपणीसि द्धिविषे ताप्रथमज्ञानकीअपेक्षा ॥ याप्रकारकाअन्योन्याश्रयदोष प्राप्तहोवैगा ॥ और जोतीसरापक्ष अंगीकारकरिये ॥ ताकेविषे भी यहविचारकर्याचाहिये ॥ सोज्ञाता तातीसरेज्ञानकीजोसिद्धिकरेहै ॥ सोतिसीतीसरेज्ञानकरिकैज्ञानवालाहुआ तातीसरेज्ञान

कीसिद्धिकरैहै ॥ अथवा दूसरेज्ञानकरिकैज्ञानवालाहुआ सोज्ञाता तातीसरेज्ञानकीसिद्धिकरैहै ॥ अथवा प्रथमज्ञानकरिकैज्ञानवालाहुआसोज्ञाता तातीसरेज्ञानकीसिद्धिकरैहै ॥ अथवा किसीचतुर्थज्ञानकरिकैज्ञानवालाहुआ सोज्ञाता तातीसरेज्ञानकीसिद्धिकरैहै ॥ तहां प्रथमपक्षकेअंगीकारकियेहुएतौ पुनःपूर्वकीन्यांई आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और दूसरेपक्षकेअंगीकारकियेहुए पूर्वकीन्यांई पुनःअन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और तीसरेपक्षकेअंगीकारकियेहुए चक्रिकादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतें ? प्रथमज्ञानकूं आपणीसिद्धिविषे दूसरेज्ञानकीअपेक्षा ॥ और तादूसरेज्ञानकूंआपणीसिद्धिविषे तीसरेज्ञानकीअपेक्षा ॥ और तातीसरेज्ञानकूं आपणीसिद्धिविषे पुनःप्रथमज्ञानकीअपेक्षा ॥ याप्रकारचक्रकीन्यांईभ्रमणरूप चक्रिकादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और किसीचतुर्थज्ञानकरिकैज्ञानवालाहुआ सोज्ञाता तातीसरेज्ञानकीसिद्धिकरैहै ॥ यहचतुर्थपक्षजोअंगीकारकरिये तौ सोचतुर्थज्ञान आपणीसिद्धिवासते किसीपंचमज्ञानकीअपेक्षाकरैगा ॥ और सोपंचमज्ञानभी आपणीसिद्धिवासतेकिसीषष्ठेज्ञानकी अपेक्षाकरैगा ॥ याप्रकार उत्तरउत्तर ज्ञानोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं सोआत्मस्वरूपज्ञान आपणीसिद्धिविषे किसीदूसरेज्ञाताकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ किंतु सोआत्मस्वरूपज्ञान स्वप्रकाशरूपहै ॥ याकारणतैं ताज्ञानरूपस्वयंज्योतिआत्माकूं श्रुतिभगवती परंज्योति यानामकरिकै कथनकरैहै ॥ ऐसेपरंज्योतिरूप परमात्मादेवकूंप्राप्तहोइकै यहजीवात्मा आपणेपरिपूर्णअद्वितीयस्वरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! याजीवात्माकूं तापरमज्योतिकीजा प्राप्तिहै ॥ साप्राप्तिही आपणेस्वरूपकरिकैस्थितिरूपहै ॥ यातैं संपत्ति याशब्दकरिकै ताप्राप्तिकूंकथनकरणेहारी तथा स्वस्वरूपाभिनिष्पत्ति याशब्दकरिकै तास्थितिकूंकथनकरणेहारी जा ॥ परंज्योतिरुपसंपद्यस्वेनरूपेणाभिनिष्पद्यते यहश्रुतिहै ॥ ताश्रुतिविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ! महावाक्यतैंउत्पन्नभयाजो मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाज्ञानहै ॥ ताज्ञानकानाम संपत्तिहै ॥ और ताजीवब्रह्मकेअभेदज्ञानतैंउत्पन्नभयाजो सर्वद्वैततैंरहिततारूपफलहै ॥ ताफलकानाम स्वरूपाभिनिष्पत्तिहै ॥ यातैं ताश्रुतिविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेइंद्र ! ताअद्वितीयभावरूपफलकीप्राप्तिका

लविषे जो ताजीवब्रह्मकाअभेदस्वरूपहोवैहै ॥ सोअभेदस्वरूप सर्वकार्यकारणरूपप्रपंचतैं श्रेष्ठहै ॥ तथा सर्वउपाधियोंविषेपरिपूर्णहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताजीवब्रह्मकेअभेदस्वरूपकूं उत्तमपुरुष यानामकरिकैंकथनकरेहै ॥ ताअभेदस्वरूपतैंपरेदूसराकोईपदार्थ उत्तमपुरुषरूपनहींहै ॥ अब जीवन्मुक्तपुरुषोंकेस्थितिकाप्रकार वर्णनकरेहैं ॥ हेइंद्र ! महावाक्यतैं जीवब्रह्मकेअभेदकूंजानणेहारा जोउत्तमपुरुषहै ॥ सोउत्तमपुरुष आपणेप्रारब्धकर्मकीसमाप्तिपर्यंत जिसप्रकार निवासकरेहै ॥ ताप्रकारकूं तू श्रवणकर ॥ तहां निर्विकल्पसमाधिविषेस्थितहुआ सोजीवन्मुक्तपुरुष सर्वप्रकारसें अद्वितीयब्रह्मकूंहीदेखेहै ॥ ताअद्वितीयब्रह्मतैंविना किसीभीअनात्मपदार्थकूंदेखतानहीं ॥ और तासमाधितैंव्युत्थानदशाविषेतौ सोजीवन्मुक्तपुरुष सर्वजगत्कूंआपणाआत्मरूपदेखताहुआ सर्वलोकोंविषे आपणीइच्छापूर्वक स्वतंत्रविचरेहै ॥ जैसे महाराजा स्वतंत्रहोइकै आपणेदेशविषेविचरेहै ॥ तैसेसो जीवन्मुक्तपुरुषभी स्वतंत्रहोइकैविचरेहै ॥ और हेइंद्र ! सोसर्वात्मरूपविद्वान्पुरुष सर्वप्राणिरूपकरिकै भक्ष्यअभक्ष्यपदार्थोंकूंभोजनकरेहै ॥ तथा बालकोंकेसमान नानाप्रकारकीक्रीडाकरेहै ॥ तथा महान्पुरुषोंकरिकै आदरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा सोविद्वान्पुरुष इंद्रादिरूपकरिकै देवांगनावोंकेसाथ रमणकरेहै ॥ तथा नानाप्रकारकेरथादिकवाहनोंविषेआरूढहोवैहै ॥ तथा अनेकसखियोंकेसाथ रमणकरेहै ॥ तथा आपणेबंधुजनोंकेसाथ विराजमानहोवैहै ॥ इसप्रकार अनेकव्यवहारोंकूंकरताहुआभी सोविद्वान्पुरुष तिनव्यवहारोंसहित याआपणेदेहकूं कदाचित्भी स्मरणकरतानहीं ॥ जैसे सुषुप्तपुरुष तासुषुप्तिकालविषे आपणेदेहादिकोंका स्मरणकरतानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! देहादिकसर्वपदार्थोंकूंविस्मरणकरताहुआ सोविद्वान्पुरुष मंदबुद्धिकह्याजावैगा ॥ समाधान ॥ हेइंद्र ! जैसे कोईपुरुष उन्मत्तदशाकूंप्राप्तहोइकै ताउन्मत्तदशाविषे नानाप्रकारकेविपरीतव्यवहारोंकूंकरेहै ॥ जबी तापुरुषकी साउन्मत्तदशानिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी सोपुरुष ताउन्मत्तदशाकेसर्वव्यवहारोंकूं विस्मरणकरताहुआभी मंदबुद्धिकह्याजावैनहीं ॥ तैसे सोविद्वान्पुरुषभी आविद्यकव्यवहारोंकूंविस्मरणकरताहुआभी मंदबुद्धिकह्याजावैनहीं ॥ उलटा आविद्यकव्यवहारोंकेस्मरणतैंही मंदबुद्धिकह्याजावैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! ताविद्वान्पुरुषकूं जोकदाचित् देहादिकसर्वपदार्थोंकाविस्मरणहोताहोवै तौ ता

विद्वान्पुरुषकेशरीरकीस्थिति किसप्रकारहोवैगी? ॥ समाधान ॥ हेइंद्र! जैसे सुषुप्तपुरुषकूं तासुषुप्तिकालविषे यद्यपि आपणेशरीरकेरक्षणकरणेकीचिंतानहींहै ॥ तथापि तासुषुप्तपुरुषकेशरीरकी यहप्राण रक्षाकरेहै ॥ तैसे तामुक्तपुरुषकेशरीरकीभी सोप्राणहीरक्षाकरेहै ॥ और हेइंद्र! जैसे रथऊपरि सारथिपुरुषकेसोयेहुएभी तारथविषेजुडेहुए शिक्षितअश्व तारथकूं पूर्वकीन्यांई नियमपूर्वक लैजावैहैं ॥ तैसे याविद्वान्पुरुषकेउपरामहुएभी याविद्वान्पुरुषकेदेहकूं तेप्राण पूर्वकीन्यांई नियमपूर्वक चलावैहैं ॥ और हेइंद्र! जैसे महाराजाकेसोयेहुएभी तामहाराजाकेमंत्री पूर्वकीन्यांई ताराज्यकारक्षणकरैहैं ॥ तैसे तामुक्तपुरुषकेउपरामहुएभी तामुक्तपुरुषकेदेहका तेप्राण रक्षणकरैहैं ॥ हेइंद्र! जैसे तामुक्तपुरुषकेदेहकेरक्षाकाहेतु तेप्राणहोवैहैं ॥ तैसे तामुक्तपुरुषकेभोगकाहेतु मनसहितश्रोत्रादिकइंद्रियहोवैहैं ॥ अब विषयभोगकालविषे अज्ञानीजीवोंतैं ताविद्वान्पुरुषविषे विशेषताकावर्णनकरेहैं ॥ हेइंद्र! जैसे मूढबालक अथवा कोईउन्मत्तपुरुष श्रोत्रादिकएकादशइंद्रियोंकरिकै शब्दादिकअनेकविषयोंकूंग्रहणकरताहुआभी पश्चात् तिनविषयोंकास्मरणकरतानहीं ॥ तैसे सोजीवन्मुक्तपुरुषभी श्रोत्रादिकएकादशइंद्रियोंकरिकै शब्दादिकविषयोंकूंग्रहणकरताहुआभी आपणेआत्मातैंभिन्न किसीभीपदार्थकूंजाणतानहीं ॥ हेइंद्र! शब्दादिकविषयोंविषे आसक्तितैंरहितहुआभी यहविद्वान्पुरुष ब्रह्मलोकादिकलोकोंविषेवर्तमानभोगोंकूं सूर्यादिकदेवतावोंकरिकैप्रेरणाकऱ्येहुएनेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै ग्रहणकरेहै ॥ आपणीआसक्तिपूर्वक तिनविषयोंकूंग्रहणकरैनहीं ॥ याकारणतैं सोविद्वान्पुरुष सर्वदुःखोंतैंरहितहोवैहै ॥ अब ताविद्वान्पुरुषविषे ब्रह्मरूपताकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम सर्वदेवतावोंकरिकैउपास्यतारूपब्रह्मकाधर्म ताविद्वान्विषेनिरूपणकरेहैं ॥ हेइंद्र! ।ृसब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषकूंहमनें उत्तमपुरुष यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तासर्वात्मरूपविद्वान्पुरुषकूं शमदमादिकसाधनोंयुक्तदेवता जबपर्यंत आपणाआत्मरूपकरिकैसाक्षात्कारनहींकरेहैं ॥ तबपर्यंत तेदेवता ताविद्वान्पुरुषकूं नानाप्रकारकेसविशेषरूपोंकरिकै उपासनाकरेहैं ॥ तासर्वात्मरूपविद्वान्पुरुषकीउपासनाकरिकैही तिनदेवतावोंकूं सर्वलोकोंविषे तथासर्वभोगोंविषे स्वतंत्रताहोवैहै ॥ हेइंद्र! जैसे तेदेवता तासर्वात्मरूपविद्वान्पुरुषकीउपासनाकरिकै सर्वलोकवर्तिभोगोंकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे इदानींकालविषेभी जोअधिकारीपुरु

ष तासर्वात्मरूपविद्वान्पुरुषकूं आपणाआत्मरूपजानिकै उपासनाकरेहै ॥ सोअधिकारीपुरुषभी सर्वलोकवर्तिभोगपदार्थोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ याअर्थविषे तुमनैं किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ हेइंद्र! सर्वजगत्काअधिष्ठानरूपकरिकै जोतत्पदार्थरूपप रमात्मादेव हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ सोपरमात्मादेवही सर्वभूतप्राणियोंकेहृदयाकाशविषे त्वंपदार्थजीवरूपकरिकैस्थि तहोवैहै ॥ तथा संघातरूपउपाधिकेसंबंधतैं शबलसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसेआनंदस्वरूपपरमात्मादेवकूं जोअधिकारीपुरुष आ पणाआत्मरूपकरिकै साक्षात्कारकरेहै ॥ सोविद्वान्पुरुष महान्पापोंकरिकैभी लिपायमानहोवैनहीं ॥ हेइंद्र! ताविद्वान्पुरुषकूं पापकर्म नहींस्पर्शकरेहैं ॥ याकेविषे यहकारणहै ॥ जिसविद्वान्पुरुषकूं सर्वकालविषे परमार्थसत्यसाक्षीही हमाराआत्माहै याप्र कार आवरणतैंरहितआत्माकाज्ञानहुआहै ॥ सोविद्वान्पुरुष किसप्रकार पापकर्मोंकूंकरैगा? किंतु नहींकरैगा ॥ काहेतें? पापक र्मोविषेप्रवृत्तिकाहेतुभूत जोद्वैतदर्शनहै ॥ सोद्वैतदर्शन ताविद्वान्पुरुषका निवृत्तहोइगयाहै ॥ हेइंद्र! जोविद्वान्पुरुष सर्वदा सु खरूपआत्माकूंही प्रियजानेहै ॥ ताआत्मातैंभिन्न विषयसुखकूंप्रियजानतानहीं ॥ ऐसाविद्वान्पुरुष ताविषयसुखकीप्राप्तिवास्ते किसप्रकार पापकर्मोंकूंकरैगा? किंतु नहीं करैगा ॥ हेइंद्र! जन्ममरणादिकविकारोंकूंभी अन्यहीप्राप्तहोवैहै ॥ मैंसाक्षीआत्मा जन्ममरणादिकविकारोंकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तथा शुभअशुभकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकूंभी अन्यहीभोगेहै ॥ मैंसाक्षीआत्मा ता फलकाभोक्तानहींहूं ॥ याप्रकार सर्वदा आपणेकूंअसंगजानताहुआ सोविद्वान्पुरुष जबी पुण्यकर्मोंकाकर्त्ताभी आपणेकूंमानतान हीं ॥ तबी सोविद्वान्पुरुष पापकर्मोंकूंनहींकरेहै याकेविषेक्याकहणाहै? ॥ शंका ॥ हेभगवन्! व्यवहारविषेस्थितहुए ताविद्वान् पुरुषका ऐसामहिमा किसप्रकारहोवैगा? ॥ समाधान ॥ हेइंद्र! जोविद्वान्पुरुष सर्वभूतप्राणियोंकाआत्मरूपहै ॥ तथा सर्वभू तप्राणियोंकूंअभिन्नकरिकै देखेहै ॥ ऐसेब्रह्मवेत्तापुरुषके निष्ठारूपमार्गविषे अनेकबुद्धिमान्पुरुषभी मोहकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जेदेवता ताविद्वान्पुरुषकेनिष्ठारूपमार्गकेप्राप्तिकीइच्छाकरेहैं ॥ तेदेवता धन्यहैं ॥ हेइंद्र! सर्वपुण्यपापकर्मोंतैंरहित जो ब्रह्म वेत्तापुरुषोत्तमहै ॥ ताब्रह्मवेत्तापुरुषकूं यहपुण्यवान्है अथवा यहपापीहै याप्रकार कोईपुरुष जानिसकतानहीं ॥ हेइंद्र!

इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष पूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतें ताआनंदस्वरूपअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपकरिकै सांक्षात्कारकरे है ॥ सोविद्वान्पुरुष अवश्यकरिकै मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याअर्थविषे तुमनैं किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ हेशिष्य ! इसप्र कार सोसर्वज्ञप्रजापति तादेवराजइंद्रकेप्रति तीनअवस्थावोंतैंरहितभूमाब्रह्मका आपणाआत्मरूपकरिकै उपदेशकरताभया ॥ कैसाहैसोभूमाब्रह्म ? सर्वभूतप्राणियोंका हृदयाकाशरूपहै ॥ तथा आपणीसत्तास्फूर्त्तिदेकरिकै नामरूपात्मकसर्वजगत्कानिर्वाहक रणेहाराहै ॥ तथा सर्वदा तानामरूपात्मकजगत्तैंपरहै ॥ तथा तानामरूपात्मकजगत्केसंबंधतैंरहितहै ॥ ऐसेभूमाब्रह्मकूं सोइंद्र आपणाआत्मरूपकरिकैजानताभया ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार गुरुशिष्यकीपरंपरारूपविद्याकासंप्रदाय दोप्रकारकाप्रवृत्तहोताभ या ॥ तहां एकसंप्रदायतौ देवराजइंद्रतैंलेके प्रवृत्तहोताभया ॥ और दूसरासंप्रदायतौ स्वायंभूमनुतैंआदिलेके प्रवृत्तहोता भया ॥ काहेतें ? ताप्रजापतिनैं जैसे देवराजइंद्रकेप्रति साविद्या उपदेशकरीथी ॥ तैसे तास्वायंभूमनुकेप्रतिभी साविद्याउपदे शकरीथी ॥ तहां सोमनुभगवान् भूमिलोकविषे आदिगुरुहोइकै अधिकारीपुरुषोंकेप्रति साब्रह्मविद्याकहताभया ॥ और ताब्र ह्मविद्याविषेअधिकारकीसिद्धिकरणेहारी जाअंतःकरणकीशुद्धिहै ॥ ताअंतःकरणकीशुद्धितैंरहितब्राह्मणक्षत्रियवैश्योंकूंदेखिकै सोमनुभगवान् तिनोंकेप्रति याप्रकारकाउपदेशकरताभया ॥ हेत्रैवर्णिकपुरुषो ! तुमारेकूं जबपर्यंत अंतःकरणकीशुद्धिपूर्वक आत्माकाज्ञाननहींहोवै ॥ तबपर्यंत तुम चारिआश्रमोंविषेकिसीआश्रमकूंधारणकरिकै आपणेआपणेयज्ञादिककर्मोंकूं सावधा नहोइकैकरौ ॥ और तिननिष्कामकर्मोंकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा जबी तुमारेकूं वैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ तबीही तुमोंनैं आ त्मसाक्षात्कारकेवासते परमहंससंन्यासकूंग्रहणकरणा ॥ तावैराग्यतैंविना तुमोंनैं तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरणानहीं ॥ हेशि ष्य ! इसप्रकार सोमनुभगवान् अधिकारीजनोंकेप्रति यथाअधिकार विद्याकाउपदेशकरताभया ॥ और सोदेवराजइंद्रभी ताप्रजापतितैं तादुर्लभब्रह्मविद्याकूं प्राप्तहोइकै साब्रह्मविद्या अग्निवायुआदिकदेवतावोंकेप्रति कथनकरताभया ॥ और ताउ मारूपब्रह्मविद्याकेअनुग्रहतैं तेअग्निवायुआदिकदेवताभी तातीनअवस्थातैंरहित भूमाब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपकरिकैसाक्षात्कार

करतेभये ॥ हेशिष्य ! तेदेवता सात्त्विकस्वभाववालेथे ॥ यातैं तिनदेवतावोंविषे परमेश्वरका महान्‌पक्षपातथा ॥ याकारणतैं ही तेइंद्रादिकदेवता ताब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपकरिकै साक्षात्कारकरतेभये ॥ हेशिष्य ! याअध्यायकेआदिविषे जोतुमनैं जाग्रदादिकतीनअवस्थावोंतैंरहित भूमाआत्माकास्वरूपपूछाथा ॥ सोसंपूर्ण हमनैं तुमारेप्रति विस्तारतैंकथनकऱ्या ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकीतुमारेकूंइच्छाहोवै ॥ सोअर्थ तूहमारेसैंपूछ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे छांदोग्यसारार्थप्रकाशे प्रजापतिइंद्रविरोचनसंवादोनाम चतुर्दशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १४ ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥

अथ श्रीआत्मपुराणे स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां
पंचदशाऽध्यायप्रारंभः ॥ १५ ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ पंचदशाऽध्यायप्रारंभः ॥
पूर्वचतुर्दशेअध्यायविषे सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब यापंचदशेअध्यायविषे तिसीसामवेदकेकेनउपनिषद्काअर्थ निरूपणकरैहैं ॥ तहां पूर्वचतुर्दशेअध्यायकेअंतविषे अग्निवायुआदिकदेवतावोंकूं ब्रह्मविद्याकेअनुग्रहतैं ब्रह्मज्ञानकी प्राप्तिकथनकरीथी ॥ ताकूंश्रवणकरिकै सोशिष्य ताअर्थकेपूछणेकीइच्छाकरताहुआ आपणेगुरुकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन्! याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे आपनैं ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमअध्यायविषे सनकादिकमुनियोंके तथावामदेवादिकअधिकारीप्रजाके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनै कथन करीथी ॥ तथा गर्भविषेस्थितवामदेवका सर्वात्मभावरूपअनुभव कथनकऱ्याथा ॥ तथा वामदेवादिकसर्वअधिकारियोंके ज्ञानवैराग्यादिकसाधन कथनकऱ्येथे ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअध्यायविषे आपनैं तिसीऋग्वेदके कौषीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां द्वितीयअध्यायविषे देवराजइंद्रके तथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिकै आपनैं प्राणप्रज्ञास्वरूपआत्माका कथनकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणकेतृतीयअध्यायविषे राजाअजातशत्रुके तथाबालाकिब्राह्मणकेसंवादकरिकै आपनैं तिसीआत्माकूं प्राणादिकोंतैंभिन्नकरिकै कथनकऱ्याथा ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचमषष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषे आपनैं यजुर्वेदके बृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां चतुर्थअध्यायविषेतौ आपनैं दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंविषेस्थितऋषियोंका परस्परभेद तथाअभेद वर्णनकऱ्याथा ॥ तहां दध्यङ्अथर्वणऋषिदेवराजइंद्रकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ ताब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिकै क्रोधवान्हुआसोइंद्र तादध्यङ्ऋषिकूं पुनःताब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेतैं निवारणकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोदध्यङ्ऋषि आपणेवचनकेसत्यकरणेवासते अश्विनीकुमारोंकेप्रति सा ब्रह्मविद्या उपदेशकरताभया ॥ ताकरिकैक्रोधवान्हुआ सोइंद्र तादध्यङ्ऋषिकामस्तकछेदनकरताभया ॥ इत्यादिकसर्ववार्ता ताचतुर्थअध्यायविषे आपनैं कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेपंचमअध्यायविषे आपनैं यहवार्ता कथनकरीथी ॥

जनकराजाकेयज्ञसभाविषे याज्ञवल्क्यमुनि आश्वलादिकसर्वब्राह्मणोंकूंजीतताभया ॥ तहां याज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरिकै शाकल्यब्रा ह्मणकामृत्युहोताभया ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे आपनैं याज्ञवल्क्यमुनिके तथाजनकराजाके दोवारसंवा दकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथा मैत्रे यीस्त्रीके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा तायाज्ञवल्क्यमुनिकेसंन्यासआश्रमका निरूपणकऱ्या था ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरनामाउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या था ॥ ताअष्टमअध्यायविषे श्वेताश्वतरऋषिके तथासंन्यासियोंके संवादकरिकै आपनैं याजगत्केकारणोंकाविचार निरूपणकऱ्या था ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेनवमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदकेकठवल्लीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ता नवमअध्यायविषे यमराजाके तथानचिकेताके संवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! या आत्मपुराणकेदशमेअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके तैत्तिरीयकउपनिषद्का तथानारायणीयउपनिषद्का अर्थ निरूपणकऱ्या था ॥ तादशमअध्यायविषे वरुणपिताके तथाभृगुपुत्रके संवादकरिकै पंचकोशोंकाविचार कथनकऱ्याथा ॥ तथा वेननामागंधर्वका अनुभव कथनकऱ्याथा ॥ तथा सत्यादिकसर्वसाधनोंतैं संन्यासआश्रमकीअधिकता कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुरा णके एकादशेअध्यायविषे आपनैं जाबालादिकएकादशउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताएकादशेअध्यायविषे आपनैं यह वार्ता कथनकरीथी ॥ संवर्तकादिकमहान्पुरुष तापरमहंससंन्यासकूं धारणकरतेभयेहैं ॥ और तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेका वैराग्यहीकालहै ॥ तथा यमनियमादिकसाधनोंवालेविरक्तपुरुषही तासंन्यासकेअधिकारीहैं ॥ तथा तासंन्यासीका दंड कमंडलु काषायवस्त्र इत्यादिकबाह्यवेशहै ॥ तथा भिक्षाटन एकांतवास वेदांतचिंतन इत्यादिक आचारहै ॥ इत्यादिकसर्ववार्ता ताएकाद शेअध्यायविषे आपनैं कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके द्वादश त्रयोदश चतुर्दश यातीनअध्यायोंविषे आपनैं सा मवेदकेछांदोग्यउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां द्वादशेअध्यायविषे उद्दालकमुनिके तथाश्वेतकेतुके संवादकरिकै आपनैं

नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणकेत्रयोदशेअध्यायविषे भगवान्सनत्कुमारके तथानारदमुनिके संवाद करिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणकेचतुर्दशेअध्यायविषे आपनैं प्रजापतिके तथा इंद्रविरोचनके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ हेभगवन्! ताचतुर्दशेअध्यायकेअंतविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ तिनदेवतावोंकेमध्यविषे इंद्र अग्नि वायु आदिकदेवतावोंकूं ब्रह्मविद्यारूपउमादेवीकेअनुग्रहतें विशेषकरिकै ब्रह्मकाज्ञान होताभया ॥ याआपकेकहणेतें हमारेकूंऐसाप्रतीतहोवैहै ॥ याप्रसंगविषे कोईआश्चर्यरूपवार्त्ता होवैगी ॥ यावार्त्ताकेश्रवणकरणेकी मैं इच्छाकरताहूं ॥ आप कृपाकरिकै साआश्चर्यरूपवार्ता हमारेप्रति कथनकरो ॥ इसप्रकार शिष्यकरिकैपूछाहुआ सो श्रीगुरु ताश्रद्धावान्शिष्यकेप्रति केनउपनिषद्विषेस्थितकथाका उपदेशकरताभया ॥ कैसीहैसाकथा? अधिकारीपुरुषोंकूं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिकरणेहारीहै ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! तेशुद्धअंतःकरणवाले अग्निवायुआदिकदेवता तादेवराजइंद्रतें ब्रह्मविद्याकूंपाइकै तासभाविषेस्थितइंद्रकेसमीपजाइकै याप्रकारकामनन करतेभये ॥ देवताउवाच ॥ हेदेवराजइंद्र! श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंकूं तथा वाकादिकपंचकर्मइंद्रियोंकूं तथामनकूं तथाप्राणोंकूं आपणेआपणेकार्यकरणेविषे कौनप्रेरणाकरताहै? हेभगवन्! तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेकार्यविषे यहजीवही प्रेरणाकरेहै याप्रकारकावचन जोआपकहो ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें? यहजीव आपणेमनविषे याप्रकारकासंकल्पकरेहै ॥ जो इसइंद्रियकरिकै मैं याव्यापारकूं कदाचित्भीनहींकरोंगा ॥ याप्रकारकेसंकल्पकूंकरिकैभी यहजीव तिसीव्यापारकूंकरेहै ॥ जैसे भूतकेआवेशकरिकैयुक्तहुआ यहपुरुष आपणेप्रतिकूलव्यापारोंकूंभीकरेहै ॥ तैसे यहजीवभी ताव्यापारकेनकरणेकीइच्छाकरताहुआभी अवश्यकरिकैताव्यापारकूंकरेहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ यहजीव स्वतंत्र नहींहै ॥ किंतु परतंत्रहै ॥ ऐसेपरतंत्रजीवोंविषे तिनइंद्रियोंकीप्रेरकतासंभवैनहीं ॥ और हेभगवन्! सुषुप्तसारथिरथाश्वन्यायकरिकै जैसे जीवन्मुक्तपुरुषकेश्रोत्रादिकइंद्रिय स्वतंत्रहोइकै आपणेआपणेव्यापारोंकूं करेहैं ॥ तैसे सर्वप्राणियोंकेश्रोत्रादिकइंद्रिय स्वतंत्र होइकै आपणेआपणेव्यापारोंकूंकरेहैं ॥ याप्रकारकावचन जोआपकहो ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? यालोकविषेबहुतजनतों

जिसवस्तुविषे आपणीअनुकूलताकाविचारकरे हैं ॥ तावस्तुविषेतौ प्रवृत्तहोवै हैं ॥ और जिसवस्तुविषे आपणीप्रतिकूलताकाविचारकरे हैं ॥ तिसवस्तुतें निवृत्तहोवै है ॥ सोअनुकूलताकाविचार तथाप्रतिकूलताकाविचार जडइंद्रियोंविषे संभवैनहीं ॥ किंतु चेतनविषेही सोविचारसंभवै है ॥ और मुक्तपुरुषोंकेइंद्रियोंकेव्यापारविषेभी चक्रभ्रमिन्यायकरिकै व्यवहितचेतनकेव्यापारकाही अनुमानकऱ्याजावै है ॥ यातें तिनपरतंत्रइंद्रियोंकेप्रेरणाकरणेहारा कोईचेतन अंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ और हेभगवन्! यहश्रोत्रादिकइंद्रियहीचेतनहैं याप्रकारकावचन जोआपकहो ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? जोश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूंही चेतनरूपमानिये तौ एकहीशरीरविषे अनेकचेतनआत्माहोवैंगे ॥ तेअनेकचेतनआत्माभी भिन्नभिन्नमतवालेहोवैंगे ॥ यातें जैसे एकग्रामविषेरहणेहारे भिन्नभिन्नमतवाले अनेकप्रधानपुरुष ताग्रामकाही नाशकरे हैं ॥ तैसे भिन्नभिन्नमतवाले तेअनेकचेतनभी याशरीरकाही नाशकरैंगे ॥ यातें तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंविषे साचेतनरूपतासंभवैनहीं ॥ और हेभगवन्! पुण्यपापकर्मही याश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवृत्तकरे हैं ॥ याप्रकारकावचन जोआपकहो ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतें? जैसे तेश्रोत्रादिकइंद्रिय जडहोणेतें स्वतंत्रनहीं हैं ॥ तैसे तेपुण्यपापरूपकर्मभी जडहोणेतें स्वतंत्रनहीं हैं ॥ यातें तिनकर्मोंविषेभी तिनइंद्रियोंकीप्रवर्तकता संभवैनहीं ॥ हेभगवन्! यालोकविषे सर्वप्राणी आपणीअनुकूलताकाविचारकरिकैतौ प्रवृत्तहोवै हैं ॥ और आपणीप्रतिकूलताकाविचारकरिकैनिवृत्तहोवै है ॥ ताअनुकूलताप्रतिकूलताकेविचारतेंविना किसीभीप्राणीकी प्रवृत्तिनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ सोअनुकूलताप्रतिकूलताकाविचार यादेहइंद्रियादिकजडसंघातविषे संभवतानहीं॥ यातें यहजान्याजावै है ॥ तादेहइंद्रियादिकजडसंघातकूं आपणेआपणेकार्यविषेप्रवृत्तकरणेहारा कोईतासंघाततेंभिन्न चेतनहोवैगा ॥ सोकौनचेतनहै? यहआप कृपाकरिकैकहो ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकाप्रश्न जबी तिनअग्निआदिकदेवतावोंनें तादेवराजइंद्रकेप्रतिकऱ्या ॥ तबी सोइंद्र तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकाउत्तरकहताभया इंद्रउवाच ॥ हेदेवतावो! जोआत्मादेव श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियोंकाभी इंद्रियरूपहै ॥ तथा जोआत्मादेव मनकाभी मनरूपहै ॥ तथा जोआत्मादेव प्राणकाभी प्राणरूपहै ॥ तथा जिसआत्मादेवकूं ब्रह्मानें जाग्रदादिकतीनअवस्थावोंतेंरहितकह्याथा ॥ सोआत्मादेवही आपणी

समीपतामात्रकरिकै सर्वदेहधारीजीवोंका तथाश्रोत्रादिसर्वइंद्रियोंका प्रेरकहै ॥ हेदेवतावो! जोआत्मादेव श्रोत्रादिकइंद्रियोंका तथामनका प्रेरकहै ॥ सोईहीआत्मादेव प्राणोंकाभीप्रेरकहै ॥ काहेतें ? यालोकविषे कोईभीदेहधारीजीव प्राणकरिकै तथाअपानकरिकै जीवतानहीं ॥ किंतु जिसआत्मादेवकेआश्रित यहप्राणअपानरहेहैं ॥ ताआत्मादेवरूपप्राणकरिकैही यहसर्वप्राणीजीवनकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं ताआत्मादेवकूंश्रुतिभगवतीनैं प्राणोंकाभीप्राणकह्याहै ॥ और यहश्रोत्रादिकइंद्रिय तथामन ताआत्मादेवकीसत्तास्फूर्तिकूंपाइकैही आपणेआपणे कार्यकरणेविषेसमर्थहोवैहैं ॥ याकारणतैं ताआत्मादेवकूं श्रुतिभगवतीनैं इंद्रियोंकाभीइंद्रियकह्याहै ॥ तथा मनकाभीमनकह्याहै ॥ हेदेवतावो! इसप्रकार जेअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं ताइंद्रियादिकोंकेप्रवर्तकआत्मादेवकूं श्रवणकरिकै पश्चात् शुद्धमनकरिकै ताआत्मादेवकाविचारकरेहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही जाग्रदादिकतीनअवस्थारूपबंधतैंमुक्तहोइकै ताअंतर्यामीअद्वितीयआत्माकूं निश्चयकरेहैं ॥ हेदेवतावो! ऐसेइंद्रियादिकोंकेप्रवर्तकआत्माकेज्ञानतैंही यहविद्वान्पुरुष जन्ममरणादिकविकारोंकीनिवृत्तिपूर्वक ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपअमृतकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोइकै यहविद्वान्पुरुष पुनः जन्ममरणरूपसंसारकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेदेवतावो! जिसआनंदस्वरूपआत्मादेवविषे मनसहितसर्वइंद्रिय प्रवृत्तहोइसकतेनहीं ॥ ऐसेआनंदस्वरूपआत्मादेवकूं मैंइंद्र भलीप्रकारजानताभीहूं ॥ तथापि लोकप्रसिद्ध सामान्यरूपकरिकै तथा विशेषरूपकरिकै ताआत्मादेवकेकथनकरणेकूं मैं जानतानहीं ॥ हेदेवतावो! लोकवासनाकरिकैयुक्त जेतुमदेवताहो ॥ तिनतुमारेकूं ताआत्मादेवका सामान्यरूपकरिकै तथाविशेषरूपकरिकै उपदेश अपेक्षितहै ॥ और सोआत्मादेव सामान्यविशेषभावतैंरहितहै ॥ तथा मनसहित सर्वइंद्रियोंका अविषयहै ॥ ऐसेआत्मादेवका साक्षात्उपदेश मैं तुमारेप्रति किसप्रकारकरिसकौंगा? किंतु ताआत्मादेवके साक्षात्उपदेशकरणेविषे हमारा सामर्थ्यनहींहै ॥ यातैं निषेधमुखकरिकै ताआत्माकाउपदेश मैं तुमारेप्रति करताहूं ॥ तुम सावधानहोइकैश्रवणकरो ॥ हेदेवतावो! जोआत्मादेव तुमोंनैं हमारेसैंपूछाहै ॥ तथा जिसआत्मादेवकेप्रतिपादनकरणेकाहमनैं उद्यमकर्‍याहै ॥ सोआत्मादेव विदितपदार्थोंतैंभीभिन्नहै ॥ तथा अविदितपदार्थोंतैंभीभिन्नहै ॥ हेदेवतावो! यालोकविषे जे

पदार्थ पृथिवीत्वादिकसामान्यरूपकरिकै तथाघटत्वादिकविशेषरूपकरिकै जान्येजावैहैं ॥ तेसर्वपदार्थ विदितकह्येजावैहैं ॥ तेसर्व विदितपदार्थ घटादिकोंकीन्यांई अनात्मरूपहोणेतें त्यागकरणेयोग्यहैं ॥ और हेदेवतावो! जेपदार्थ याजीवोंकूं कदाचित्भी प्रतीतहोतेनहीं ॥ तिनपदार्थोंकूं अविदितकहेहैं ॥ तेअविदितपदार्थभी वंध्यापुत्रकीन्यांई अत्यंतअसत्होणेतें अनात्मरूपहीहैं ॥ यातें तेअविदितपदार्थभी परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ हेदेवतावो! इसप्रकार विदितअविदित पदार्थोंतेंभिन्न आत्माकेस्वरूपकूं हम पूर्व आचार्योंकेमुखतें श्रवणकरतेभयेहैं ॥ हेदेवतावो! तिनपूर्वआचार्योंनें हमारेप्रति जिसप्रकार आत्माकाउपदेशकन्याहै ॥ ताप्रकारकूं तुमश्रवणकरो ॥ जोप्रत्यक्चेतन श्रोत्रादिकज्ञानइंद्रियोंकरिकै तथावाकादिककर्मइंद्रियोंकरिकैभी जान्याजावैनहीं ॥ तथा मनकरिकैभीजान्याजातानहीं ॥ तथा सर्वदेवताहैंविभूतिजिसकी ऐसाजोक्रियाशक्तिप्रधानप्राणहै ॥ ताप्राणकरिकैभी जान्याजातानहीं ॥ और जोप्रत्यक्चेतन आपणेसाक्षिस्वरूपकरिकै तिनसर्वइंद्रियोंकूंजानेहै ॥ तथा तामनकूंजानेहै ॥ तथा ताप्राणकूंजानेहै ॥ तथा तिनइंद्रियमनप्राणकेव्यापारोंकूंजानेहै॥ तथा जोप्रत्यक्चेतन आपणीसमीपतामात्रकरिकै तिनइंद्रियादिकोंकूं आपणेआपणे व्यापारोंविषे प्रवृत्तकरेहै ॥ तिसीप्रत्यक्चेतनकूं तुमदेवता ब्रह्मरूपकरिकैजानो ॥ और जिसवस्तुकूं तुमदेवता पराक्रूपकरिकैउपासनाकरतेहो ॥ सोपराक्वस्तु ब्रह्मरूपनहींहै ॥ हेदेवतावो! हमदेवता दिनदिनप्रति ताआत्मादेवकेस्वरूपकीउपासनाकरेहैं ॥ यातें सोआत्माकास्वरूप हमदेवतावोंकूं सुखेनही जानणेयोग्यहै ॥ याप्रकार जोतुम आपणेचित्तविषे मानतेहोतौ सोऐसातुमोंनै माननानहीं ॥ काहेतें? जिसआत्माके दहराकाशनामारूपकूं तुमदेवता उपासनाकरतेहो ॥ सोदहराकाशरूप केवल ध्यानकरणेयोग्यहै ॥ कोईजानणेयोग्यनहींहै ॥ ऐसेदहराकाशनामा ध्येयरूपकूं जोतुमदेवता ज्ञेयरूपकरिकैमानतेहो यहबहुतआश्चर्यहै॥ हेदेवतावो! अधिकारीपुरुषोंकरिकैजानणेयोग्य जोआत्माकास्वरूपहै ॥ सोआत्माकास्वरूपतौ त्वं अहं इदं इत्यादिकसर्वशब्दोंतें रहितहै ॥ ऐसेबुद्धिआदिकोंकेसाक्षीआत्माकेप्राप्तिवासतें तुमसर्वदेवता परस्परमिलिकैविचारकरो ॥ हेदेवतावो! श्रुतिकेयथार्थतात्पर्यकूंजानणेहारेजेविद्वान्पुरुषहैं ॥ तेविद्वान्पुरुषतौ ताआत्मादेवकूं अविज्ञेय विज्ञेय सविज्ञेय दुर्विज्ञेय याचारिनामों

करिकैंकथनकरेहैं ॥ हेदेवतावो ! यालोकविषे जितने देहाभिमानीजीवहैं ॥ तेदेहाभिमानीजीव ताआत्मादेवकूं सत्चित्आनंद स्वरूपकरिकै कदाचित्भी जानिसकतेनहीं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताआत्मादेवकूं अविज्ञेय यानामकरिकैंकथनकरेहैं ॥ और यालोकविषे सर्वदेहधारीजीव ताआत्मादेवकूं अहंअस्मि याप्रकार आत्मरूपकरिकैंजानेहैं ॥ याकारणतैं तेवेदवेत्तापुरुष ताआत्मादेवकूं विज्ञेय यानामकरिकैंकथनकरेहैं ॥ और यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुके उपदेशतैं ताआत्मादेवकूं अद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैंजानेहैं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताआत्मादेवकूं सुविज्ञेय यानामकरिकैंकथनकरेहैं ॥ और श्रुतिप्रतिकूलतर्कहैंप्रधानजिनोंविषे ऐसेशास्त्रोंकरिकै सोआत्मादेव कदाचित्भी जान्याजावैनहीं ॥ याकारणतैं तेवेदवेत्तापुरुष ताआत्मादेवकूं दुर्विज्ञेय यानामकरिकै कथनकरेहैं ॥ अब याहीअर्थकूं पुनःस्पष्टकरिकैंनिरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो ! यहसत्चित्आनंदस्वरूप स्वयंज्योतिआत्मा यद्यपि सर्वप्राणियोंकेहृदयकमलविषे विराजमानहै ॥ तथा सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वजीवोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथापि संसारकेक्लेशोंकरिकैंतप्तहुए तथापरमेश्वरकीमायाकरिकैंमोहितहुए येजीव ताआत्मादेवकूंजानिसकतेनहीं ॥ जैसे जन्मअंधपुरुष आपणेहस्तविषेस्थितनिधिकूंभी जानिसकतेनहीं ॥ तैसे यहअज्ञानीजीव ताआत्मादेवकूं जानिसकतेनहीं ॥ उलटा येजीव ताआत्मादेवतैंभिन्न अनात्मपदार्थोंकूंही सर्वदादेखेहैं ॥ ताअनात्मपदार्थोंकेदर्शनतैं याजीवोंकूं वारंवार जन्ममरणकीही प्राप्तिहोवैहै ॥ और हेदेवतावो ! यहआत्मादेव अहंअस्मि याप्रकारकेशब्दका तथा ताशब्दजन्यज्ञानका विषयहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव सर्वप्राणियोंकूं विदितहै ॥ किंवा यहआत्मादेव केवल अहंअस्मि याप्रकारकीप्रतीतिकरिकैंविदितनहीं है ॥ किंतु जाग्रत्विषे तथास्वप्नविषे अस्ति भाति प्रिय इत्यादिकप्रतीतियोंकरिकैंभी विदितहोवैहै ॥ अस्ति भाति प्रिय इत्यादिकअंशोंकेपरित्यागकियेहुए घटादिकपदार्थोंका किंचित्मात्रभी व्यवहारहोवैनहीं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं विज्ञेय यानामकरिकैंकथनकरेहैं ॥ और हेदेवतावो ! यहअधिकारीपुरुष पूर्वलेअनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मोंकरिकै तथाब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकै जबी ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं आपणेआत्माकूं ब्रह्मरूपकरिकैंसाक्षात्कारकरेहै ॥ तबी यहअधिकारीपुरुष आपणेहृदयकमलवि

वस्थित स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माकूं सुखेनही प्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं तेवेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं सुविज्ञेय यानामक रिकैकथनकरेहैं ॥ और हेदेवतावो! जिसद्रव्यविषै ज्ञानसुखादिकगुण समवायसंबंधकरिकैरहेहैं ॥ ताद्रव्यकानाम आत्माहै ॥ याप्रकारके नैयायिकोंकेतर्ककूंअंगीकारकरिकै यहपुरुष जबी ताआत्माकेनिश्चयकरणेविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ तबी ताआत्माविषे ज्ञानरूपताकूं तथाआनंदरूपताकूं सिद्धकरणेहारे जेश्रुतिअनुकूलतर्कहैं तिनतर्कोंकूंदेखिकै सोपुरुष आत्मा ज्ञानसुखादिकगुणोंवालाहै अथवा ज्ञानसुखादिस्वरूपहै याप्रकारकेसंशयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसेसंशययुक्तपुरुषकूं यहआत्मादेव अत्यंतदुर्विज्ञेयहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! महान्बुद्धिवाले जेलौकिकपुरुषहैं तथा शास्त्रवेत्तापुरुषहैं॥ तेबुद्धिमान्पुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंविनाही आपणीबुद्धिकेबलतैं ताआत्मादेवकूं किसवासतेनहींजानते? ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो! यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंविना केवलआपणीबुद्धिकेबलतैं ताआत्मादेवकूं कदाचित्भीनहींजानिसकते ॥ जोकदाचित् यहअधिकारीपुरुष ताब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंविना केवलआपणीबुद्धिकेबलतैं ताआत्मादेवकूंजानैंगे तौभी वास्तवस्वरूपकरिकै ताआत्माकूं जानैंगेनहीं ॥ किंतु लोकप्रसिद्धविशेषरूपकरिकै अथवा सामान्यरूपकरिकैही ताआत्माकूंजानैंगे ॥ हेदेवतावो! यहआत्मादेव सर्वविशेषोंतैं रहित निर्विशेषरूपहै ॥ यातैं जोपुरुष तानिर्विशेषआत्माकूं विशेषरूपकरिकैजानेहै ॥ सोभ्रांतपुरुष ताआत्माकेस्वरूपकूंजानतानहीं ॥ जैसे सर्पभावतैंरहितरज्जुकूं सर्परूपकरिकैदेखणेहारापुरुषतारज्जुकेस्वरूपकूंजाणतानहीं ॥ तैसे निर्विशेषआत्माकूं सविशेषरूपकरिकैदेखणेहारापुरुषभी ताआत्माकेस्वरूपकूंजाणतानहीं ॥ और हेदेवतावो! यहआत्मादेवविशेषरूपकीअपेक्षाकरणेहारे सामान्यरूपतैंभीरहितहै ॥ यातैं तासामान्यभावतैंरहितआत्मादेवकूं जोपुरुष सामान्यरूपकरिकैजानेहै ॥ सोभ्रांतपुरुषभी ताआत्माकेस्वरूपकूंजानतानहीं ॥ यातैं ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंविना याअधिकारीपुरुषोंकूं ताआत्माकायथार्थज्ञान कदाचित्भीहोवैनहीं ॥ और हेदेवतावो! यहअधिकारीपुरुष जबी ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं ताआत्माकाश्रवणकरेहै ॥ तबी ताआत्माकेयथार्थस्वरूपकूं अवश्यकरिकैनिश्चयकरेहै ॥ सोआत्माकायथार्थस्वरूप श्रुतिनैं सामान्यविशेषभावतैंरहितकथनकर्याहै ॥ तहांश्रु

ति ॥ यस्यामतंतस्यमतं मतंयस्यनवेदसः ॥ अविज्ञातंविजानतां विज्ञातमविजानताम् ॥ अब याश्रुतिकेअर्थका विस्तारतैंनिरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो! जिसपुरुषकेसिद्धांतविषे यहआत्मरूपब्रह्म माता मान मेय यात्रिपुटीगोचरज्ञानकाविषयहै ॥ सोपुरुष ताब्रह्मकेअद्वितीयस्वभावतैंविपरीत त्रिपुटीरूपभेदकूंदेखेहै ॥ यातें सोभेददर्शीपुरुष ताब्रह्मकूंजानतानहीं ॥ इतनेकरिके ॥ मतंयस्यनवेदसः ॥ याश्रुतिकेदूसरेपादकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब ॥ यस्यामतंतस्यमतं ॥ याश्रुतिकेप्रथमपादकाअर्थ निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो! जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं तात्रिपुटीरूपद्वैततैंरहितअद्वितीयब्रह्मकूं साक्षात्कारकरिकै मैंनै अद्वितीयब्रह्मजान्याहै याप्रकारकासिद्धांतकरेहै ॥ सोविद्वान्पुरुष ताब्रह्मके अद्वितीयरूपवास्तवस्वरूपकूंहीजानेहै ॥ यातें तिसविद्वान्पुरुषकूं सोअद्वितीयब्रह्म ज्ञातहीहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! आपनैं ताब्रह्मज्ञानकेअप्रमाणताविषे भेदकीविषयतारूप हेतुकह्या ॥ और ताब्रह्मज्ञानकेप्रमाणताविषे भेदकीअविषयतारूप हेतुकह्या ॥ सोसंभवतानहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो! ताब्रह्मज्ञानके प्रमाणताविषे तथाअप्रमाणताविषे जोहमनैं दोप्रकारकेहेतुकहेहैं ॥ तेदोनोंहेतु ताश्रुतिनैंही कथनकरेहैं ॥ तहां ॥ अविज्ञातंविजानतां ॥ याश्रुतिकेतीसरेपादकरिकै ताब्रह्मज्ञानके अप्रमत्वकाहेतु वर्णनकरेहैं ॥ हेदेवतावो! जेपुरुष मायाकरिकैमोहितहुए प्रमाता प्रमाण प्रमेय इत्यादिरूपकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मकूं नानाविधमानेहैं ॥ ऐसेभेददर्शीपुरुषोंकूं सोअद्वितीयब्रह्म सर्वदा अज्ञातहीरहेहै ॥ काहेतें? सर्वदा अभिन्नस्वभाववालासोब्रह्म कदाचित्भीभेदवालाहोवैनहीं ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मविषे भेदकूंविषयकरणेहारा जोतिनभेदवादियोंकाज्ञानहै ॥ सोज्ञान अप्रमारूपहीहै ॥ अब ॥ विज्ञातमविजानतां ॥ याश्रुतिकेचतुर्थपादकरिकै ताब्रह्मज्ञानकेप्रमात्वकाहेतु निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो! जेअधिकारीपुरुष ताआनंदस्वरूपअद्वितीयनिर्गुणब्रह्मकूं ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय इत्यादिरूपकरिकै नानाविधनहींजानेहैं ॥ तिनअभेददर्शीविद्वान्पुरुषोंकूं सोअद्वितीयब्रह्म सर्वदा विज्ञातहीहै ॥ ऐसेविद्वान्पुरुषोंका सोब्रह्मज्ञानभी प्रमारूपहीहै ॥ १ ॥ हेदेवतावो! जोअधिकारीपुरुष मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेबोधकरिकै क्षणक्षणविषे आपणेआत्मस्वरूपकाचिंतनकरेहै ॥ ऐसेमहात्मापुरुषकूं आपणेआत्माकास्वरूप ज्ञातहीहै ॥ काहेतें? मैंब्रह्मरूपहूं या

प्रकारकेअभेदज्ञानतैंही सर्वअधिकारीपुरुष ताआनंदस्वरूपआत्माकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ताअभेदज्ञानतैंविना किसीउपायकरिकैभी ताआत्मादेवकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ कैसाहैसोआनंदस्वरूपआत्मा? जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहै ॥ याकारणतैंही ताआत्मादेवकूं वेदवेत्तापुरुष अमृत यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ अब ताआत्मज्ञानकरिकै अमृतभावकीप्राप्तिविषे युक्तिकावर्णनकरेहैं ॥ हेदेवतावो! जे अधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहैं ॥ तथा कृपणतादिकदोषोंतैंरहितहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं शुद्धमनकरिकै ब्रह्मविद्यारूपवीर्यकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ताब्रह्मविद्यारूपवीर्यकरिकैही तेअधिकारीपुरुष ताआत्मानंदरूपअमृतकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तामोक्षरूपअमृतभावकूंप्राप्तहोइकै यहअधिकारीपुरुष पुनः मरणकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और हेदेवतावो! यहअधिकारीपुरुष जबी इसअधिकारीशरीरविषे आपणेहितकाविचारकरिकै ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकूंकरेहैं ॥ तबी यहअधिकारीपुरुष थोडेप्रयत्नकरिकैही आत्मानंदरूपमहत्फलकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ जिसआनंदरूपमहत्फलकेप्राप्तहुए यहजीवात्मा आनंदकासमुद्ररूपहोवैहै ॥ और मायातथामायाकेकार्यसर्वदुःखरूपफेनबुद्बुदादिकोंतैंरहितहोवैहै ॥ और याआत्मानंदरूपफलतैंपरे कोईभीपदार्थ याजीवोंकेप्रार्थनाकाविषयनहींहोवैहै ॥ और याआत्मानंदरूपफलतैंपरे दूसराकोईलाभ यालोकविषे हैनहीं ॥ ऐसेआत्मस्वरूपआनंदकीप्राप्तिवासते याअधिकारीपुरुषोंनैं अवश्यकरिकैप्रयत्नकरणा ॥ हेदेवतावो! याअधिकारीशरीरकूंपाइकै यहपुरुष जबी परमेश्वरकीमायाकरिकैमोहितहुआ तथामूढपुरुषोंकरिकैसेवितविषयोंविषेआसक्तहुआ ताआनंदस्वरूपआत्माकूंनहींजानेहै ॥ तबी यहकामक्रोधादिकजूवारी यापुरुषकी महान्हानिकरेहैं ॥ जिसहानिकरिकै यहपुरुष वारंवार जन्ममरणादिकदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ कैसेहैंतेकामक्रोधादिकजूवारी? बहुतधूर्तहैं ॥ तथा विषयरूपभूमिविषे इंद्रियरूपपाशकोंकेचलावणेविषे अत्यंतकुशलहैं ॥ तथा नानाप्रकारकेरूपग्रहणकरणेविषेसमर्थहैं ॥ तथा अनेकजन्मोंविषे यापुरुषकापराजयकरिआयेहैं ॥ हेदेवतावो! ऐसेकामक्रोधादिकजूवारियोंकरिकै पराजयकूंप्राप्तहुआ यहपुरुष निंदाकापात्रहोणेतैं जीवताहुआही मृतकेसमानहोवैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेशरीरोंकेग्रहणकरिकै वारंवार जन्ममरणादिकदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा आशारूपीअनेकपाशोंकरिकैबांध्याहुआ तथा क्रोधलोभादिकोंकेवशहुआ सो

अज्ञानीपुरुष कालकर्मकेवशतें अनेकप्रकारकेऊंचनीचशरीरोंविषे प्राप्तहोवैंहै ॥ तिनअनेकशरीरोंविषे नानाप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकरताहुआ यहअज्ञानीजीव नष्टहुएजैसाहोवैहै ॥ यातें धैर्यवान्पुरुषनें तिनजन्ममरणादिकदुःखोंकीनिवृत्तिवासतें याअधिकारीशरीरविषे ताआनंदस्वरूपआत्माकूं अवश्यकरिकैजानणा ॥ हेदेवतावो! सोमोक्षरूपफलसहितआत्मज्ञान याअधिकारीशरीरविषेदुर्लभहै ॥ याप्रकारकीशंकाकरिकै तुमोंनें प्रयत्नतेंशिथलहोणानहीं ॥ काहेतें? सोफलसहितआत्मज्ञान याअधिकारीशरीरविषेहीप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता सर्वविद्वान्पुरुषोंकेअनुभवकरिकैसिद्धहै ॥ काहेतें? पूर्वजेअधिकारीपुरुष याअधिकारीशरीरविषेस्थितहोइकै ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकूंकरतेभयेहैं ॥ तथा परमधैर्यकरिकैयुक्तहुएहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतें आकाशकीन्यांई सर्वत्रव्यापक स्वयंज्योति आनंदस्वरूप निर्गुणअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपजानिकै जीवत्अवस्थाविषे अथवा मरणअवस्थाविषे अमृतभावकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ ताअमृतभावकूंप्राप्तहोइकै तेविद्वान्पुरुष पुनः जन्ममरणादिकविकारोंतेंरहितहोतेभयेहैं ॥ यातें आत्मज्ञानकरिकै अमृतभावकीप्राप्तिरूपफल तिनसर्वविद्वान्पुरुषोंकेअनुभवकरिकैसिद्धहै ॥ हेदेवतावो! सर्वभूतप्राणियोंविषेस्थित जोपरमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेव वास्तवतेंएकहीहै ॥ परंतु देहादिकउपाधियोंकेभेदतें सोपरमात्मादेव नानारूपहोइकैप्रतीतहोवैहै ॥ जैसे वास्तवतेंएकहुआभीचंद्रमा जलपात्रोंकेभेदकरिकै बहुतरूपहोइकैप्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे सोएकपरमात्मादेवभी उपाधिकेभेदतें बहुतरूपहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ ऐसेसर्वत्रव्यापकपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मरूपकरिकै जानेहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष तिनपूर्वविद्वान्पुरुषोंकीन्यांई सर्वलोकोंकूं तथासर्वभोग्यपदार्थोंकूं आपणाआत्मरूपकरिकैप्राप्तहोवैहैं ॥ याप्रकारकेफलविषे तुमोंनें किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ हेदेवतावो! जैसे मृष्टअन्नकेभोजनका मुख्यफलतौ क्षुधाकीनिवृत्तिहीहै ॥ और पुष्टि ताभोजनका नांतरीयकफलहै ॥ तैसे ताब्रह्मज्ञानका मुख्यफलतौ अमृतभावकीप्राप्तिहीहै ॥ और शत्रुवोंकाजय आदिक ताब्रह्मज्ञानका नांतरीयकफलहै ॥ इहां मुख्यफलकीप्राप्तिकरणेहारेप्रयत्नतेंही जिसफलकीसिद्धिहोवैहै ॥ ताकानाम नांतरीयकफलहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार तेअग्निवायुआदिकदेवता ताइंद्रकेमुखतें ब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिकै ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोतेभये ॥

और ताब्रह्मविद्याकेप्रभावतें तेअग्निवायुआदिकदेवता सर्वलोकोंकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तथा सर्वकामोंकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तथा सर्वशत्रु वोंतेंजयकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तथा सर्वदुःखोंतेंरहितहोतेभये ॥ इसप्रकार ब्रह्मविद्याकेफलकूंप्राप्तहोइके स्वर्गभोगोंविषेस्थितहुएभी तेदेवता सर्वदा ब्रह्मकेचिंतनपरायणहोतेभये ॥ हेशिष्य! इसप्रकार आत्मसाक्षात्कारकेप्रभावतें ब्रह्मरूपताकूंप्राप्तहुएजे तेइंद्रा दिकदेवताहैं ॥ तिनदेवतावोंकीसमीपतातें सर्वअसुर क्षयकूंप्राप्तहोतेभये ॥ जैसे अग्निकीसमीपतातें पतंग नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे तिनब्रह्मवेत्तादेवतावोंकीसमीपतातें तेअसुर क्षयकूंप्राप्तहोतेभये ॥ हेशिष्य! जैसे अग्निकरिकैतप्तहुआ लोहकापिंड शुष्कआर्द्र तृणोंकूं दाहकरेहै ॥ तैसे ब्रह्मरूपअग्निकरिकैप्रकाशमानहुए तेदेवता तिनअसुरोंकूंदग्धकरतेभये ॥ हेशिष्य! जैसे सोलोहकापिंड जो तृणोंकूंदाहकरेहै ॥ सो अग्निकेसामर्थ्यतैंहीदाहकरेहै ॥ स्वभावतें तालोहकेपिंडविषे दाहकरणेकासामर्थ्यहैनहीं ॥ तैसे तेइंद्रादिक देवता जो तिनअसुरोंकूंदाहकरतेभये ॥ सोब्रह्मरूपअग्निकेसामर्थ्यतैंही दाहकरतेभये ॥ स्वभावतें तिनदेवतावोंविषे असुरोंकेदाहक रणेकासामर्थ्य थानहीं ॥ हेशिष्य! तैसे सामुद्रिकशास्त्रविषेकथनकरेजे श्रेष्ठलक्षणहैं ॥ तिनश्रेष्ठलक्षणोंकेबलतैंही याजीवोंकूं धना दिकपदार्थोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिनधनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिविषे आपणेप्रयत्नसाध्यताकाअभिमानकरणा व्यर्थहीहै ॥ तैसे ताब्रह्म केबलतैंही तिनदेवतावोंकाविजयहोताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोकदाचित् सोब्रह्महीआपणेबलतें देवतावोंकेजयकाकारणहो वैगा ॥ तथा असुरोंकेपराजयकाकारणहोवैगा तौ ताब्रह्मविषे अस्मदादिकजीवोंकीन्यांई विषमतादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! जैसे सर्वत्रप्रकाशमानहुआभी यहसूर्यभगवान् अत्यंतनिर्मलसूर्यकांतमणिविषे विशेषकरिकैप्रतिबिंबभावकूंप्राप्त होवैहै ॥ तैसे सर्वत्रव्यापकहुआभी सोब्रह्म सत्वगुणप्रधानदेवतावोंविषे विशेषकरिकै संबंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतें तेदेवतावि शेषतेजवालेहोतेभयेहैं ॥ और हेशिष्य! जैसे यालोकविषे पुत्तलियोंकूंनृत्यकरावणेहारा सूत्रधारपुरुष सूत्रोंकरिकै काष्ठकीपुत्तलि योंकूंचलायमानकरताहुआ तिनपुत्तलियोंविषे किसीपुत्तलियोंकूंतौ जयकीप्राप्तिकरेहै ॥ और किसीपुत्तलियोंकूं पराजयकीप्राप्तिक रेहै ॥ तैसे याजगत्रूपीलीलाकरणेविषेप्रवृत्तहुआजो परमात्मादेवरूपसूत्रधारहै ॥ तिसपरमात्मादेवनें यादेवताअसुररूपपुत्तलि

योंविषे किसीनकिसीपुत्तलियोंकाजयता अवश्यकरिकैंकरणाहै ॥ यातें अशोकवनिकान्यायकरिकैं सोपरमात्मादेव तिनदेवतावों काहीजयकरताभया ॥ यातें ताईश्वरविषे पक्षपातदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ अशोकवनिकान्यायका यहअर्थहै ॥ जैसेरावणनैंसीता कूं किसीस्थानविषेअवश्यराखणाथा ॥ दैवयोगतें सोरावण तासीताकूं अशोकवनविषेहीराखताभया ॥ और हेशिष्य ! जैसे क्री डाकरताहुआबालक ताक्रीडाकेसाधनरूपपदार्थोंविषे कितनेकपदार्थोंविषेतौ इनपदार्थोंकीउत्कृष्टताकेहुए हमारीहीउत्कृष्टताहोवै है याप्रकारकाअभिमानकरेहै ॥ और कितनेकपदार्थोंविषे सोबालक ताअभिमानकूंनहींकरेहै ॥ तैसे सोपरमात्मादेवभी तिनदे वतावोंविषेही सोअभिमानकरताभया ॥ यातें ताबालककीन्यांई ताईश्वरविषे विषमतादोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ! ऐसेब्र ह्मकीविभूतिरूपमहिमाकरिकैं तेइंद्रादिकदेवता युद्धविषे तिनबलवान्असुरोंकूंजीततेभये ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार तेब्रह्मवेत्तादेव ताभी किसीकालपाइकै परमेश्वरकीमायाकरिकैंमोहितहोतेभये ॥ तथा विषयभोगोंविषेआसक्तहोतेभये ॥ ताकरिकैं तेइंद्रादिकदे वता ताब्रह्मकेभावतेंही हमारा असुरोंतेंजयहुआहै ॥ याप्रकारके ताब्रह्मकेउपकारकाविस्मरणकरतेभये ॥ किंतु उटला तेइंद्रअग्नि वायुआदिकदेवता हमारा आपणेबलकेप्रभावतेंजयहुआहै याप्रकारकानिश्चयकरतेभये ॥ हेशिष्य ! जैसे यालोकविषे महान्दुःख कूंप्राप्तहुए कोईकमनुष्य देवतामुनियोंकेअनुग्रहतें तादुःखतेंनिवृत्तहोइकैंभी पुनःधनादिकोंकेमदकरिकैंदूषितहुए तेमनुष्य तिन देवतामुनिआदिकोंका विस्मरणकरिदेवैंहैं ॥ तैसे येदेवताभी ताब्रह्मकेअनुग्रहतैंपूर्वं अनेकवार दैत्योंकरिकैंपराजयकूंप्राप्तहुए थे ॥ तिसतैंअनंतर ताब्रह्माकेअनुग्रहकरिकैं तेदेवता तिनअसुरोंकूंजीततेभये ॥ तिसतैंअनंतर रजोगुणकरिकैंयुक्तहुए तेदेवता आपणेजयकेकारणरूपब्रह्मकूं विस्मरणकरतेभये ॥ किंतु आपणेबलकेप्रभावतेंही तिनअसुरोंतेंजयकूंमानतेभये ॥ हेशिष्य ! जैसेया लोकविषे छलयुक्तजूवाविषेतत्पर जेकोईवंचकपुरुषहैं ॥ तेवंचकपुरुष आपणेऊपरिउपकारकरणेहारेपुरुषकाभी विस्मरणकरिदेवैंहैं ॥ तैसे तापरब्रह्मकेअनुग्रहतें कृतार्थभावकूंप्राप्तहुए यहइंद्रादिकदेवताभी ताउपकारकरणेहारेपरमेश्वरका विस्मरणकरतेभये ॥ याका रणतें तेदेवता कृतघ्नपुरुषकेसमानताकूंप्राप्तहोतेभये ॥ हेशिष्य ! तिनइंद्रादिकदेवतावोंकूंरजोगुणकेप्रभावतें महान् अभिमानहो

तामया ॥ जिसअभिमानकरिकै यहजीव सर्वदा विनाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब तिनदेवतावोंकेअभिमानकानिरूपणकरेहैं ॥ हमदेवताही मनकानिग्रहरूपशमवालेहैं ॥ तथा हमदेवताही इंद्रियोंकानिग्रहरूपदमवालेहैं ॥ तथा हमदेवताही महान्कुलतैंउत्पन्नहुएहैं ॥ तथा हमदेवताही सुंदररूपयौवनकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा हमदेवताही विद्याविनयकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा हमदेवताही महान्कीर्तिवालेहैं ॥ तथा हमदेवताही महान्भाग्यवालेहैं ॥ तथा हमदेवताही नानाप्रकारकेभोग्यपदार्थोंवालेहैं ॥ तथा हमदेवताही आपणीशक्तिकरिकै तीनलोकोंकापालनकरेहैं ॥ ऐसेहमदेवतावोंकेबलकेआगे इनअसुरोंकेबलकी क्यागणतीहै? किंतु हमारेबलकेआगे इनअसुरोंकाबल अत्यंततुच्छहै ॥ कैसेहैंतेअसुर? अंजनकेपर्वतसमान कालेवर्णवालेहैं ॥ तथा काल अंतक यम यातीनोंकेसमानहैं ॥ इहां दिनमासादिकसमयकाअभिमानी जोदेवताहै ताकानाम कालहै ॥ और जगत्केसंहारकरणेहारेमृत्युकानाम अंतकहै ॥ और धर्मराजाकानाम यमहै ॥ पुनःकैसेहैंतेअसुर? अत्यंतमायावीहैं ॥ तथा युद्धविषेअत्यंतकुशलहैं ॥ तथा अत्यंत पराक्रमवालेहैं ॥ तथा अधिकबलवीर्यवालेहैं ॥ तथा यात्रिलोकीकेग्रसनकरणेविषे समर्थहैं ॥ ऐसेसर्वअसुरोंविषे एकअसुरकेसाथभी हमदेवतावोंतैंविनादूसराकोईपुरुष युद्धकरणेविषे समर्थनहींहै ॥ ऐसेअसुरोंकूं हमदेवता आपणेबलकेप्रभावतैं जीततेभयेहैं ॥ यातैं हमारेसमान दूसराकौनहै? इतनेकरिकै सर्वदेवतावोंकासाधारणअभिमान निरूपणकऱ्या ॥ अब देवराजइंद्रका विशेषकरिकैअभिमान निरूपणकरेहैं ॥ वज्रहैहस्तविषेजिसके ऐसाजो मैंइंद्रहूं ॥ सोमैंइंद्र आपणेबलतैं यावज्रकरिकै महान्ऊंचेपर्वतोंकूंभी चूर्णकरिदेवोंहूं ॥ कैसाहैयहहमारावज्र? एकशतग्रंथहैंजिसविषे तथा एकशततीक्ष्णधाराहैं जिसविषे ॥ तथा जोवज्र चलायाहुआ कदाचित्भी निष्फलहोतानहीं ॥ ऐसेवज्रवालामैंइंद्र सर्वतैंअधिकबलवान्हूं ॥ अब वायुदेवताकेअभिमानकानिरूपणकरेहैं ॥ मैंवायुदेवता यासर्वजगत्कूं आपणीकुक्षिविषेपाइकै तृणतूलकीन्यांई याब्रह्मांडगोलकतैं बाह्यदेशविषे लेजाणेमैंसमर्थहूं ॥ यातैं मैंवायुदेवताकेसमान दूसराकोईबलवान्हैनहीं ॥ अब अग्निदेवताकेअभिमानकावर्णनकरेहैं ॥ शुष्कआर्द्ररूप जितनायहघनीभूतसर्वजगत्है ॥ तासर्वजगत्कूं मैं अग्निदेवता तूलकीन्यांई शीघ्रहीभस्मकरिदेवौं ॥ यातैं हमारेसमान दूसराकोईबलवान्

हैनहीं ॥ हेशिष्य! इसप्रकार दूसरेवरुणादिकदेवताभी आपणेआपणेबलकूंप्रकटकरिकै महान्‌गर्वकूंप्राप्तहोतेभये ॥ कैसाहै सो तिनोंकागर्व? रजोगुणकरिकै जिसगर्वकीउत्पत्तिहै ॥ तथा पापकेप्राप्तिकाकारणहै ॥ तथा पराक्रमकानाशकरणेहाराहै ॥ तथा कीर्तिकानाशकरणेहाराहै ॥ ऐसेअनिष्टकीप्राप्तिकरणेहारे देवतावोंकेगर्वकूंदेखिकै सोपरब्रह्म पिताकीन्यांई तिनदेवतावोंकेहितकी इच्छाकरताहुआ याप्रकारकाचिंतनकरताभया ॥ येइंद्रादिकदेवता मैंपरब्रह्मकेअनुग्रहतेंही सर्वलक्षणोंकरिकैयुक्तहुएहैं ॥ तथा हमारेअनुग्रहतेंही इनदेवतावोंका जयहोताभयाहै ॥ और इसवर्तमानकालविषेभी यहदेवता हमारेअनुग्रहतेंही महान्‌पराक्रम वालेहैं ॥ ऐसेयहदेवता मैंपरब्रह्मकीमायाकरिकैमोहितहुए कृतघ्नपुरुषोंकीन्यांई उपकारकरणेहारेमैंपरब्रह्मकूंही विस्मरणकरते भयेहैं ॥ यातें यहदेवताअत्यंतमूढबालकहैं ॥ अब ताकृतघ्नतादोषकीनिवृत्तिवासते प्रथम ताकृतघ्नतादोषका अनर्थरूपफल व र्णनकरेहैं ॥ यालोकविषे जोपुरुष जिसपुरुषकेअनुग्रहतें उत्कृष्टताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोपुरुष जोकदाचित् मोहकेवशतें ताउपकार कर्त्तापुरुषका विस्मरणकरेहै ॥ सोकृतघ्नपुरुष शतअयुतजन्मपर्यंत महान्‌दुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ किंवा जोमूढपुरुष आपणेउपकारक र्त्तापुरुषकूंमानतानहीं ॥ सोमूढपुरुष ताकृतघ्नतादोषतें कोटिकल्पपर्यंत विष्ठाविषेकृमिशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ किंवा जोपुरुष किसीपु रुषकेकन्येहुएअल्पउपकारकूंभीनहींमानता ॥ सोपुरुष कृतघ्नकह्याजावैहै ॥ सोकृतघ्नपुरुष यालोकविषे ब्रह्महत्यारेतेंभी अधिकपा पीहै ॥ काहेतें? ताब्रह्महत्याकेनिवृत्तकरणेवासते मनुआदिकवेदवेत्तापुरुषोंनें प्रायश्चित्तकाविधानकन्याहै ॥ और याकृतघ्नतादो षकीनिवृत्तिवासते तिनमनुआदिकोंनें कोईप्रायश्चित्तकाविधानकन्यानहीं ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ ताकृतघ्नतादोषकीनिवृत्तिक रणेहारा कोईप्रायश्चित्तहैनहीं ॥ और ब्रह्महत्याकीनिवृत्तिकरणेवासतेतौ मनुआदिकोंनें प्रायश्चित्तकाविधानकन्याहै ॥ यातें यहकृ तघ्नतादोष ताब्रह्महत्यातेंभी अधिकदुःखकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ किंवा यादेवतावोंविषे केवल एककृतघ्नतादोषनहींहै ॥ किंतु आ पणीस्तुतिकरिकै तथादूसरेप्राणियोंकीनिंदाकरिकै इनदेवतावोंविषे आत्मघातीपणा तथाविश्वघातीपणा येदोनोंदोषभी विद्यमा नहैं ॥ काहेतें? यालोकविषे जोभेददर्शीपुरुष गर्वकरिकैयुक्तहुआ आपणेकर्मकी मनकरिकैभीस्तुतिकरेहै ॥ तथा दूसरेपुरु

षोंकेकर्मकीनिंदाकरेहै ॥ सोअविवेकीपुरुष ताभेददृष्टिकरिकै आपणेकूं तथापरकूं हननकरेहैं ॥ काहेतें ? शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं भेद दृष्टिपूर्वक आपणीस्तुतिकरणेविषे आत्महत्याकीप्राप्तिकथनकरीहै ॥ तथा परकीनिंदाविषे परहत्याकीप्राप्तिकथनकरीहै ॥ किंवा जोपुरुष आपणीस्तुतिकरिकै आत्माकाहननकरेहै ॥ सोपुरुष यालोकविषे अत्यंतपापात्माजानणा ॥ और जैसे कृतघ्नतादोषकेनिवृत्तकरणेवासते शास्त्रविषे कोईप्रायश्चित्त नहींकथनकऱ्या ॥ तैसे ताआत्महत्याकेनिवृत्तकरणेवासतेभी शास्त्रविषे कोई प्रायश्चित्त कथनकऱ्यानहीं ॥ यातें साआत्महत्याभी ताकृतघ्नताकेसमानहीहै ॥ किंवा यहदेवता सर्वदा आपणीतौस्तुतिकरतेहैं ॥ तथा आपणेतैंभिन्नसर्वलोकोंकी निंदाकरतेहैं ॥ यातें इनदेवतावोंकूं दिनदिनविषे आत्महत्याकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तथा सर्वविश्वकेहत्याकीप्राप्तिहोवैहै ॥ **शंका** ॥ हेभगवन् ! ऐसेआत्महत्यादिकअनर्थरूपकर्मोंविषे येजीव किसवासते प्रवृत्तहोवैहैं ? ॥ **समाधान** ॥ मैंपरमात्मादेवकीमायाकरिकैमोहितहुए तथाकालपाशकेवशकूंप्राप्तहुए येअज्ञानीजीव आपणेअल्पकार्यकीसिद्धिवासतेभी ताआत्महत्याकूं तथाकृतघ्नताकूं तथाविश्वहत्याकूं करेहैं ॥ याकेविषे कोईआश्चर्यरूपतानहीं है ॥ किंवा कृतघ्नतादिकपापकर्मोंविषे प्रीतिवाले जेयेदेवताहैं ॥ तेदेवता यद्यपि असुरोंकीन्यांई दंडकरणेयोग्यहैं ॥ तथापि इनदेवतावोंकूं असुरोंकीन्यांई दंडदेणा हमारेकूंउचितनहीं है ॥ काहेतें ? यालोकविषे जिसपुरुषनैं आपणेहस्तोंकरिकै विषकावृक्षभीलगायाहै ॥ तथा अत्यंतप्रयत्नतैं ताविषकेवृक्षकापालनकऱ्याहै ॥ तिसपुरुषकूं आपणेहस्तोंकरिकै सोविषकावृक्षभी छेदनकरणेयोग्यनहीं है ॥ जबी पालनकऱ्याहुआ विषकावृक्षभी छेदनकरणेयोग्यनहींभया ॥ तबी यहश्रेष्ठदेवता किसप्रकार दंडदेणेयोग्यहोवैंगे ? किंतु येदेवता दंडदेणेयोग्यनहीं हैं ॥ किंवा पापकर्मकेआचरणकरणेहारेपुरुषोंकेप्रति दंडकरणेवासते यहपुरुष आप पापआचरणवालानहींहोवै ॥ किंतु जिसउपायकरिकै आपणेकूंपापकीप्राप्तिनहींहोवै ॥ ऐसेउपायकरिकै यहपुरुष तिनपापात्मापुरुषोंकूं शिक्षाकरे ॥ काहेतें ? जोपुरुष पापकर्मोंकेकरणेकीइच्छाकरेहै ॥ सोपुरुषतौ आपही तापापकर्मकरिकैहननहुआहै ॥ ऐसेपापात्मापुरुषकूं जोकोईसाधुस्वभाववालापुरुष किसीक्रूरकर्मकरिकैशिक्षाकरेहै ॥ तिससाधुपुरुषकूं दोप्रकारकेदोषकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तहां

एकतौ आपणेसाधुस्वभावकापरित्यागहोवैहै ॥ और दूसरा पिष्टपेषणकीन्यांई मन्येहुएकापुनःमारणरूपदोष प्राप्तहोवैहै ॥ किं
वा यहसर्वदेवता मैंपरमात्मादेवकेपुत्रहैं ॥ तिनदेवतावोंकूं मैंनें भलीप्रकारसैंपालनकऱ्याहै ॥ तथा इनदेवतावोंकूं मैंनें असुरोंतैंज
यकीप्राप्तिकरीहै ॥ ऐसेदेवतावोंकाहननकरणा बिलाडीकेकर्मकीन्यांई पापरूपहीहै ॥ यातैं आत्महत्या कृतघ्नता विश्वहत्या याती
नदोषोंकीप्राप्तिकरणेहारा जोइनदेवतावोंकागर्वहै ॥ तागर्वदोषकूं मैंपरमात्मादेव किसीअन्यउपायकरिकैनिवृत्तकरौं ॥ जिसगर्वकी
निवृत्तिकरिकै इनदेवतावोंकाकल्याणहोवै ॥ याप्रकारकाविचार सोपरमात्मादेव करताभया ॥ हेशिष्य ! जैसे अर्जुनकेप्रति कृष्ण
भगवान्नें उपदेशकऱ्याजो गीताशास्त्र तागीताशास्त्रकूं सोअर्जुन किसीकालपाइकै भोगोंकीआसक्तिकरिकै विस्मरणकरताभ
या ॥ ताअर्जुनकेविस्मृतिकूं सोकृष्णभगवान् पुनः अनुगीताकेउपदेशकरिकै निवृत्तकरताभया ॥ तैंसे सोपरमात्मादेवभी तिनदेव
तावोंकूं पुनःआपणेस्वरूपकीस्मृतिकरावणेवासते तथातिनोंकेअभिमानकीनिवृत्तिकरणेवासते सोपूर्वउक्तविचारकरिकै एकअद्भुत
यक्षकास्वरूपधारणकरिकै तिनदेवतावोंकेनेत्रोंकाविषयहोताभया ॥ कैसाहैसोयक्ष? असंख्यातहैंमस्तकजिसके ॥ तथा असंख्या
तहैंनेत्रादिकइंद्रियजिसके ॥ तथा सर्वजातिवालेजीवोंकेजेमुखहैं तिनसर्वमुखोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा जिसयक्षविषे सर्वभूतभौतिक
पदार्थ विद्यमानहैं ॥ तथा सर्वआयुधोंकूंधारणकरणेहाराहै ॥ तथा सर्वमालावोंकूंधारणकरणेहाराहै ॥ तथा सर्ववस्त्रादिकोंकूंधारण
करणेहाराहै ॥ तथा स्त्री पुरुष नपुंसक यातीनोंचिन्होंकूंधारणकरणेहाराहै ॥ ऐसे अद्भुतरूपवालेयक्षकूंदेखिकै तेसर्वसभावासीदेव
ता आश्चर्यकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तथा यहकौनहै? यहकौनहै? याप्रकारकेवचन परस्परकहतेभये ॥ हेशिष्य! जेबुद्धिमान्देवताअन्यपु
रुषोंके आकारकूंदेखिकै तथाअवयवोंकीक्रियाकूंदेखिकै तथागतिकूंदेखिकै तथाचेष्टाकूंदेखिकै तथाशब्दकूंश्रवणकरिकै तथामुखने
त्रोंकेअन्यथाभावकूंदेखिकै तिनपुरुषोंकेमनकेवृत्तांतकूंजानेहैं ॥ ऐसेबुद्धिमान्देवताभी तायक्षकेस्वरूपकूंदेखिकै निश्चयकूं नहींप्राप्तहो
तेभये ॥ हेशिष्य ! ऐसेअद्भुतयक्षकूंदेखिकै विस्मयकूंप्राप्तहुआहै मनजिनोंका तथाउत्फुल्लहुएहैंनेत्रकमलजिनोंके तथारोमांचखडे
हुएहैंजिनोंके ऐसेतेदेवता यहकौनहै? यहकौनहै? याप्रकारकावचनही वारंवारकहतेभये ॥ हेशिष्य ! जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज

याचारिप्रकारकेशरिरोंकेलक्षणकरिकैयुक्त जोयक्षहै ॥ जिसयक्षकेस्वरूपकूं पूर्वकिसीनैंभी अनुभवकऱ्यानहीं ॥ ऐसेअपूर्वयक्षकेदर्श नतैंतिनदेवतावोंकीसभाविषे महान्क्षोभहोताभया ॥ हेशिष्य! ऐसेयक्षकेस्वरूपकूंदेखिकै भयकरिकैयुक्तहुआहै हृदयजिनोंका तथा विस्मरणहुआहै आपणाप्रभावजिनोंकूं ऐसेतेदेवता तायक्षकेसमीपजाणेविषे समर्थनहींहोतेभये ॥ तिसतैंअनंतर तेइंद्रादिकसर्वदेव ताअग्निदेवताकूं आज्ञाकरतेभये ॥ हेअग्निदेवता! तूयायक्षकेसमीपजाइकै यहनिश्चयकर ॥ जोयहयक्ष कौनहै ? हमदेवतावोंकेअनु कूलहै अथवा हमदेवतावोंकेप्रतिकूलहै ? कैसाहैसोअग्निदेवता? सर्वदेवतावोंतैंकनिष्ठहै ॥ तथा सर्वदेवतावोंतैंप्रथमपूज्यहै ॥ त था सर्वतेजोंकासमुदायरूपहै ॥ तहांश्रुति ॥ अग्निरवमोदेवानांविष्णुःपरमोदेवता ॥ अर्थयह ॥ अग्निदेवता सर्वदेवतावोंतैंकनि ष्ठहै ॥ और विष्णुदेवता सर्वदेवतावोंतैंश्रेष्ठहै ॥ १ ॥ ऐसाअग्निदेवता तिनसर्वदेवतावोंकेआज्ञाकूंमानिकै निःशंकहोइकै तायक्षकेस मीपजाताभया ॥ ताअग्निदेवतासैं सोयक्ष तूकौनहै याप्रकार पूछताभया ॥ तायक्षकेवचनकूंश्रवणकरिकै सो अग्निदेवता निशंकहो इकै मैंजातवेदानामकरिकैप्रसिद्ध अग्निदेवताहूं याप्रकारकावचन तायक्षकेप्रति कहताभया ॥ इहां ॥ जातंवेदोधनंयस्मात्सजा तवेदाः ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकैतौ सोजातवेदाशब्द धनकेदाताकावाचकहै ॥ और जातेजातेविद्यते सजातवेदाः ॥ याप्रकार कीव्युत्पत्तिकरिकै सोजातवेदाशब्द व्यापककावाचकहै ॥ इसप्रकारकावचन जबी ताजातवेदानामाअग्निनैं तायक्षकेप्रतिकह्या ॥ तबी सोयक्ष ताअग्निकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेजातवेदानामाअग्नि ! तुमारेविषेकितनाबलहै ॥ हेशिष्य! इसप्रका रकावचन जबी तायक्षनैं अग्निदेवताकेप्रतिकह्या तबी सोअग्निदेवता तायक्षकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेयक्ष ! यह जितनाकीमूर्तिमान्विश्वहै ॥ तासर्वविश्वकूं मैंअग्निदेवता एकक्षणविषेदाहकरिदेवों ॥ इतनासामर्थ्य हमारेविषेहै ॥ इसप्रकारकाव चन जबी ताअग्निदेवतानैं तायक्षकेप्रतिकह्या ॥ तबी सोयक्ष मंदमंदहसताहुआ ताअग्निदेवताकेआगे एकशुष्कतृणकूंराखिकै ता अग्निकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेअग्निदेवता! तुमारेविषे जोइतनासामर्थ्यहै तौ याशुष्कतृणकूं तू भस्मकर ॥ याप्रका रके तायक्षकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोअग्निदेवता आपणेसर्ववेगकरिकै तथासर्वप्रयत्नकरिकै तातृणकेदग्धकरणेकाउद्यमकरताभ

या ॥ परंतु सोअग्निदेवता तातृणकूंदग्धनहींकरिसकताभया ॥ हेशिष्य! इसप्रकार जबी ताअग्निदेवतासैं तातृणकादाहनहींभ
या ॥ तबी सोअग्निदेवता तागर्वतैंरहितहोताभया ॥ तथा लज्जावान्होताभया ॥ और देवतावोंकीसभाविषेआइकै सोअग्निदेवता
तिनसर्वदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदेवतावो! जिसयक्षनैं हमारेसर्वबलकूंनाशकर्याहै ॥ तिसयक्षकूं मैंअग्नि
जानिसकतानहीं ॥ जोयहयक्ष हमदेवतावोंकेअनुकूलहै अथवा हमदेवतावोंकेप्रतिकूलहै? यातैं तायक्षकेस्वरूपनिर्णयकरणेवा
सते तुमदेवता किसीदूसरेदेवताकूंभेजो ॥ हेशिष्य! इसप्रकार ताअग्निदेवताकेवचनकूंश्रवणकरिकै तेइंद्रादिकदेवता वायुदेवता
कूंतायक्षकेसमीपभेजतेभये ॥ तिनसर्वदेवतावोंकीआज्ञाकूंमानिकै सोवायुदेवता तायक्षकेसमीपजाताभया ॥ तावायुदेवताकूंआया
हुआदेखिकै सोयक्ष तावायुदेवताकेप्रति तू कौनहै? याप्रकार पूछताभया ॥ तायक्षकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोवायुदेवता तायक्षकेप्र
ति मातरिश्वानामकरिकैप्रसिद्ध मैं वायुदेवताहूं याप्रकारकावचन कहताभया ॥ तावायुदेवताकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोयक्ष तावायु
देवताकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेवायुदेवता! तुमारेविषे कितनाबलहै? इसप्रकार तायक्षकेवचनकूंश्रवणकरिकै
सोवायुदेवता निःशंकहोइकै तायक्षकेप्रति आपणाबल कहताभया ॥ हेयक्ष! जैसे बालक आपणेसुखकरिकै सूक्ष्मतृणकूंलैजावै
है ॥ तैसे मैंवायुदेवता यासर्वविश्वकूं आपणीकुक्षिविषेपाइकै याब्रह्मांडगोलकतैं बाह्यदेशविषे लेजाणेमेंसमर्थहूं ॥ इतनासामर्थ्य ह
मारेविषेहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकावचन जबी तावायुनैं यक्षकेप्रति कह्या ॥ तबी सोयक्ष पूर्वअग्निकीन्यांई तावायुकेआगेभी ए
कशुष्कतृणराखिकै तावायुकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेवायुदेवता! जोतुमारेविषेइतनाबलहै तौ याशुष्कतृणकूं तू ले
जाव ॥ इसप्रकार तायक्षकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोवायुदेवता आपणेसर्ववेगकरिकै तातृणकेउडावणेकाउद्यमकरताभया ॥ परंतु
सोवायु तातृणकूं किंचित्मात्रभीचलायमाननहींकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर अग्निदेवताकीन्यांई गर्वतैंरहितहोइकै तिनदेवता
वोंकीसभाविषे जाताभया ॥ और सोवायुदेवता तिनसर्वदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदेवतावो! यह यक्ष
हमदेवतावोंकेअनुकूलहै अथवा हमदेवतावोंकेप्रतिकूलहै याप्रकारकेनिश्चयकरणेविषे मैं समर्थनहींहूं ॥ यातैं तुम दूसरेकिसी

देवताकूंभेजिकै यावार्ताकानिश्चयकरो ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकावचन जबी तावायुदेवतानैं सर्वदेवतावोंकेप्रतिकह्या ॥ तबी तेसर्व सभावासीदेवता देवराजइंद्रकेप्रतिकहतेभये ॥ हेदेवराजइंद्र! यहयक्ष हमदेवतावोंकेअनुकूलहै अथवा प्रतिकूलहै? यावार्त्ताकूं आप जाइकैनिश्चयकरो ॥ हेशिष्य! इसप्रकार सर्वदेवतावोंकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोदेवराजइंद्र जैसे पूर्व अग्नि वायु तायक्षकेसमीपग येथे ॥ तैसे तायक्षकेसमीपजाताभया ॥ ताइंद्रकूं समीपआयाहुआदेखिकै सोयक्ष ताइंद्रकेविशेषअभिमानकीनिवृत्तिकरणेवासते तहां अंतर्धानहोताभया ॥ तायक्षकूंअंतर्धानहुआदेखिकैसो देवराजइंद्र चारोंदिशाविषे तायक्षकूंदेखताहुआ तिसीस्थानविषे स्थि तहोताभया ॥ और तायक्षकेदेखणेकीउत्कटइच्छाकरिकै निवृत्तहुएहैंगर्वादिकदोषजिसके ऐसासोदेवराजइंद्र तायक्षकेअंतर्धानदे शविषे किसीअपूर्वस्त्रीकूंदेखताभया ॥ कैसीहैसास्त्री? हिमाचलपर्वतकीपुत्रीहै ॥ तथा सर्वकल्याणगुणोंकरिकै तथा श्रेष्ठलक्षणों करिकै शोभायमानहै ॥ तथा आपणीकांतिकरिकैशोभायमानहै ॥ तथा उपमातैंरहितशरीरकूंधारणकरणेहारीहै ॥ तथा देवराज इंद्रऊपरि माताकीन्यांई तथाभगिनीकीन्यांई कृपारूपीस्नेहकरणेहारीहै ॥ तथा जिसउमाभवानीदेवीकूं शास्त्रवेत्तापुरुष ब्रह्मविद्या यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ पुनःकैसीहैसाउमादेवी? जिसउमादेवीकेअनुग्रहतें तीनलोकविषेस्थितपुरुष अद्भुतसौंदर्यताकूंप्राप्तहो वैहैं ॥ तथा मनवांछितसंपदावोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जिसउमादेवीकेअनुग्रहतें ब्रह्मचारीपुरुष अखंडितब्रह्मचर्यकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा चारिवेदोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जिसउमादेवीकेअनुग्रहतें गृहस्थपुरुष दोनोंलोकविषेसुखकीप्राप्तिकरणेहारेगृहस्थपणेकूंप्राप्त होवैहैं ॥ और जिसउमादेवीकेअनुग्रहतें वनविषेरहणेहारेवानप्रस्थ तपकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जिसउमादेवीकेअनुग्रहतें संन्यासी स्वधर्मकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ जिसस्वधर्मकरिकै तेसंन्यासी ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जाब्रह्मविद्यारूपउमादेवी माताकीन्यांई कृपा करिकै परमहंससंन्यासियोंकूं आपणेब्रह्मविद्यास्वरूपकीप्राप्तिकरैहै ॥ जिसब्रह्मविद्याकेदर्शनतैं तिनपरमहंससंन्यासियोंके अविद्या रूपबंधनगृह नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा कामक्रोधादिरूपशृंखला नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जाउमादेवी श्रीमहादेवकेमुखकी सौंदर्यताकूंदेखिकै आपणीसौंदर्यताकरिकै सर्वजीवोंकेमनकूंमोहितकरतीहुई स्थितहोवैहै ॥ और जिसउमादेवीकेशरीरकीप्रभा

कोटिसूर्यकेसमानहै ॥ तथा जिसउमादेवीकीशीतलता कोटिचंद्रमाकेसमानहै ॥ और जाउमादेवी आपणेशरीरकीलावण्यताकरि कै कोटिकामदेवताकेसमानहै ॥ और जाउमादेवी नानाप्रकारकीऐश्वर्यताकरिकै कोटिलक्ष्मीकेसमानहै ॥ और किसीप्रसिद्धदेशविषे अथवा किसीअप्रसिद्धदेशविषे स्थितहुए यहदेहधारीजीव जिसजिससामर्थ्यकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ सो याउमादेवीकेअनुग्रहतैंही तिसतिससामर्थ्यकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जाउमादेवी भक्तजनोंकेदुःखकीनिवृत्तिकरणेवासते शांतस्वरूपहुईभी इतरअभक्तजनोंकेप्रति आपणेतेजकीअतिशयताकरिकै दुर्विज्ञेयताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैंही ताइंद्रकेगर्वकीनिवृत्तिकरणेवासते साउमादेवी आपणेदर्शनतैं ताइंद्रकेसहस्रनेत्रोंविषेस्थिततेजकूं हरणकरतीभई ॥ और जाउमादेवी देवराजइंद्रनैं यात्रिलोकीविषे पूर्वकबीदेखीनहीं ॥ तथा जाउमादेवी दिव्यगंधकूं तथादिव्यमालावोंकूं तथादिव्यवस्त्रोंकूं धारणकरणेहारी है ॥ तथा जाउमादेवी आपणेदर्शनतैं सर्वप्राणियोंकेनेत्रोंकूं तथामनकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहारी है ॥ तथा सर्वभूषणोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा मंदमंदहास्यपूर्वक वचनोंकूंउच्चारणकरणेहारी है ॥ और जाउमादेवी ब्रह्मविद्यारूपकरिकै सर्वदा उपनिषदोंविषेरहे है ॥ तथा ब्रह्मचर्यादिकसाधनसंपन्न परमहंससंन्यासियोंकेमनविषेरहे है ॥ और कामदेवकूंनष्टकरणेहारा तथायक्षरूपकूंधारणकरणेहारा जोपरब्रह्मरूप त्रिलोचनमहादेवहै ॥ तामहादेवरूपभर्ताकेवामभागविषे जाउमादेवी सर्वदास्थितहै ॥ ऐसीउमादेवीकूं तहांस्थितहुईदेखिकै सोदेवराजइंद्र ताउमादेवीसें याप्रकारपूछताभया ॥ हेदेवीमाता! यास्थानविषे जोयक्ष पूर्वप्रादुर्भावहोइकै अंतर्धानहोताभया सोयक्ष कौनथा? तायक्षकेस्वरूपकूं जोतू जानतीहोवै तौकृपाकरिकै हमारेप्रतिकथनकर ॥ हेशिष्य! याप्रकारकावचन जबी ताइंद्रनैं ताउमादेवीकेप्रतिकह्या ॥ तबी साउमादेवी ताइंद्रकेप्रति ताब्रह्मरूपमहादेवकेवास्तवस्वरूपका कथनकरतीभई ॥ तथा जिसप्रयोजनवासते सोपरब्रह्मरूपमहादेव यक्षकास्वरूपधारणकरिकै तहांआयाथा ॥ सोसंपूर्णप्रयोजन तिनदेवतावोंकेप्रति कथनकरतीभई ॥ हेशिष्य! ताउमादेवीकेवचनकूं श्रवणकरिकै सोदेवराजइंद्र तागर्वतैंरहितहोताभया ॥ तथा पूर्व विस्मरणकर्येहुए तामहादेवकेब्रह्मभावरूपवास्तवस्वरूपकूं पुनःस्मरणकरताभया ॥ तथा सोइंद्र तापरब्रह्मकूंही आपणेजयकाकारणमानताभया ॥ हेशिष्य!

इसप्रकार सा जन्ममरणरूपसंसारकेनाशकरणेहारी भवानीदेवी ताइंद्रकेप्रति सर्वब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै तिसीआकाशविषे
अंतर्धानहोतीभई ॥ तिसतैंअनंतर सोदेवराजइंद्र ताआकाशविषेअंतर्धानहुए महादेवभवानीकूं नमस्कारकरिकै देवतावोंकीस
भाविषेआवताभया ॥ तासभाविषेआइकै सोदेवराजइंद्र तिनसर्वदेवतावोंके प्रति सोयक्षउमादेवीकावृत्तांत कथनकरताभया ॥ तावृ
त्तांतकूंश्रवणकरिकै तेअग्निवायुआदिकसर्वदेवता तिनगर्वादिकदोषोंतैंरहितहोतेभये ॥ हेशिष्य ! तेइंद्रादिकदेवता सात्विकी हैं ॥
यातैं तेदेवता स्वभावतैं तिनगर्वक्रोधादिकदोषोंतैंरहितहैं ॥ तथा प्रमादतैंरहितहैं ॥ तथा परीक्षाकरिकैसर्वकार्योंकूंकरणेहारेहैं ॥ त
था आपणेहितकूंअहितकूंजानणेहारेहैं ॥ ऐसेदेवताभी किसीकालपाइकै परमेश्वरकीमायाकरिकै तथारजोगुणकरिकै मोहकूंप्राप्त
होतेभये ॥ ऐसेदेवतावोंप्रति साब्रह्मविद्यारूपउमादेवी ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै पुनःपूर्वकीन्यांई सावधानकरतीभई ॥ हेशिष्य !
ताब्रह्मविद्याकेअनुग्रहकरिकै तेइंद्रादिकदेवता तापरब्रह्मकूंही यासर्वजगत्काउपादानकारण तथा निमित्तकारण जानतेभये ॥
हेशिष्य ! जोपरब्रह्म दूसरेदेवतावोंकूं तथामनुष्यादिकोंकूं अत्यंतदुर्लभहै ॥ तायक्षरूपपरब्रह्मकूं सोइंद्रदेवता तथाअग्निवायुदेवता
अत्यंतसमीपतारूपकरिकै प्राप्तहोतेभये ॥ याकारणतैं सोइंद्रदेवता तथाअग्निवायुदेवता दूसरेसर्वदेवतावोंतैंअधिकहै ॥ और इंद्र
अग्नि वायु यातीनोंविषेभी सोइंद्रदेवता अधिकहै ॥ काहेतें? सोदेवराजइंद्र साक्षात् ताउमादेवीकेमुखतैंही तापरब्रह्मकेवास्तवस्व
रूपकूं साक्षात्कारकरताभयाहै ॥ याकारणतैं सोइंद्र तिनसर्वदेवतावोंतैंश्रेष्ठहै ॥ हेशिष्य ! जिसपरब्रह्मकूं सोअग्निवायुदेवता प्राप्त
होताभया ॥ तथा जिसपरब्रह्मकूं सोइंद्रदेवता निश्चयकरताभया ॥ तापरब्रह्मकूं वेदवेत्ताब्राह्मण अधिदैव अध्यात्म यहदोनोंरूपोंकरि
कै उपासनाकरेहैं ॥ अब तापरब्रह्मके अधिदैवरूपकावर्णनकरेहैं ॥ हेशिष्य ! जोहिरण्यगर्भभगवान् विराट्भगवान्के बीजनकहे ॥
तथा जिसहिरण्यगर्भभगवान्का यहसंपूर्णविश्वशरीरहै ॥ तिसहिरण्यगर्भभगवान्के समष्टिरूपदेहकेअंतर जोविद्युत्केप्रकाश
समानतत्त्वहै ॥ तथा चेतनरूपहोणेतैं ताजडविद्युत्तैंविलक्षणहै ॥ तथा आपणीसमीपतामात्रकरिकै सर्वप्राणियोंकेइंद्रियोंका तथा
मनका प्रेरकहै ॥ सोतत्त्वही तापरब्रह्मका अधिदैवरूपहै ॥ अब तापरब्रह्मकेअध्यात्मरूपकावर्णनकरेहैं ॥ हेशिष्य ! जैसे तापरब्र

ह्मकाअधिदैवरूप श्रुतिविषेकथनकऱ्याहै ॥ तैसे तापरब्रह्मका अध्यात्मरूपभीकथनकऱ्याहै ॥ तहां जोतत्त्व यादेहधारीजीवोंके प्रत्येकशरीरविषेस्थितहोइके तासंघातविषेस्थितबुद्धिकेजाग्रदादिकअवस्थावोंकूं साक्षिरूपकरिकैप्रकाशकरेहै ॥ सोसाक्षिस्वरूपतत्त्व तापरब्रह्मका अध्यात्मस्वरूपहै ॥ हेशिष्य ! सोसाक्षिस्वरूपतत्त्व यासंसाररूपवनविषेप्रविष्टहुआ सर्वांतर्यामीपरब्रह्मरूपहीहै ॥ तथा सोसाक्षिस्वरूपतत्त्व सर्वजनोंकेनिरतिशयप्रीतिकाविषयहोणेतें तिनसर्वजनोंकूं भजनीयहै ॥ याकारणतें ताप्रत्यक्साक्षीआत्माकूं वेदवेत्तापुरुष वनं यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ हेशिष्य ! जेपुरुष वनं यानामकरिकै तापरमात्मादेवकीउपासनाकरेहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं सर्वजन आराधनाकरणेवासतेइच्छाकरेहैं ॥ अब ताब्रह्मविद्याकेसाधनोंकावर्णनकरेहैं ॥ हेशिष्य ! जाब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति पूर्वकथनकरीहै ॥ साब्रह्मविद्या साधनोंतेंविनाप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातें संक्षेपतें ताब्रह्मविद्याकेसाधनोंकूं हम तुमारेप्रति कथनकरतेहैं ॥ तिनसाधनोंकूं तू सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ हेशिष्य ! सर्वदेहधारीजीवोंकेप्रति आपणेआपणे वर्णआश्रमकेअनुसार जेवेदभगवान्नैं नित्यनैमित्तिककर्म विधानकरेहैं ॥ तेकर्मभी निष्कामकऱ्येहुए अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ताब्रह्मविद्याकेसाधनहैं ॥ तथा कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपभी ताब्रह्मविद्याकेसाधनहैं ॥ तथा शमदमादिकभी ताब्रह्मविद्याकेसाधनहैं ॥ तथा वेदविषेकथनकरीजे नानाप्रकारकीउपासनाहैं ॥ तेउपासनाभी चित्तकेविक्षेपकीनिवृत्तिद्वारा ताब्रह्मविद्याकेसाधनहैं ॥ तथा याश्रुतिविषेकथनकरीजा वेदवाणीरूपधेनुकीउपासनाहै ॥ साउपासनाभी आत्मज्ञानार्थीपुरुषनैं अवश्यकरिकैकरणी ॥ तहां तावाक्रूपधेनुके ऋग् यजुष् साम अथर्वण येचारिवेदतौ चारिपादरूपहैं ॥ और तिनवेदोंकेजेशिक्षादिकअंगहैं ॥ तेशिक्षादिकअंग तावाक्रूपधेनुके शिरादिकअवयवरूपहैं ॥ तथा स्वाहाकार वषट्कार हंतकार स्वधाकार येचारोंमंत्र तावाक्रूपधेनुकेचारिस्तनहैं ॥ और श्रुतिविषे सत्यशब्दकरिकैकथनकऱ्याजोब्रह्महै ॥ सोब्रह्म यावाक्रूपधेनुका भूमिरूपआधारहै ॥ और मनकीवृत्तिरूपजोबोधहै ॥ सोबोध तावाक्रूपधेनुका वत्सहै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारकीरीतिसें जोपुरुष तावाक्रूपधेनुकीउपासनाकरेहै ॥ सोपुरुष चित्तकीशुद्धिद्वारा ताआत्मज्ञानकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिकरिकै सोविद्वान्पुरुष अद्वितीयआनंदस्वरूपब्रह्मविषेस्थितिकूं

प्राप्तहोवैहै ॥ जिसआनंदस्वरूपब्रह्मविषेस्थितहुआ सोविद्वान्पुरुष पुनःजन्ममरणरूपसंसारविषेप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेशिष्य! पूर्व चतुर्दशेअध्यायविषे जोइंद्र प्रजापतिकाशिष्यरूपकरिकैवर्णनकऱ्याथा ॥ सोइंद्र ब्रह्मविद्याकेअनुग्रहतैं ताअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपकरिकैजानताभया ॥ हेशिष्य! जैसे ताप्रजापतिका देवराजइंद्र शिष्यहोताभयाहै ॥ तैसे ताप्रजापतिका एकअथर्वानामाज्येष्ठपुत्रभी शिष्यहोताभयाहै ॥ जिसअथर्वनामाब्रह्माकेपुत्रतैंप्रवृत्तहुईसंप्रदायतैं साब्रह्मविद्या बहुतविस्तारकूंप्राप्तहोतीभई ॥ हेशिष्य! ब्रह्मविद्यारूपउमादेवीकेअनुग्रहतैं तेइंद्रादिकदेवता किसप्रकारब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोतेभये ॥ यहजोप्रश्न पूर्वतुमनैंकऱ्याथा ॥ सो ताब्रह्मविद्याकेप्रसंगतैं सर्ववार्ता हमनैं तुमारेप्रति कथनकरी ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारेकूं इच्छाहोवै ॥ सोअर्थ तू हमारेसैंपूछ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे तलवकारोपनिषत्सारार्थप्रकाशोनाम पंचदशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १५ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

इति आत्मपुराणेश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां
पंचदशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १५ ॥

अथ श्रीआत्मपुराणे स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां

षोडशाऽध्यायप्रारंभः ॥ १६ ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ षोडशाऽध्यायप्रारंभः ॥

याआत्मपुराणके प्रथम द्वितीय तृतीय यातीनअध्यायोंविषे ऋग्वेदकेउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकर्‍या ॥ और याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम अष्टम नवम दशम यासप्त अध्यायोंविषे यजुर्वेदकेउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकर्‍या ॥ और याआत्मपुराणकेएकादशेअध्यायविषे ऋगादिकसर्ववेदोंकेउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकर्‍या ॥ और याआत्मपुराणके द्वादश त्रयोदश चतुर्दश पंचदश याचारिअध्यायोंविषे सामवेदकेउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकर्‍या ॥ अब याआत्मपुराणके षोडश सप्तदश अष्टादश यातीनअध्यायोंविषे अथर्वणवेदकेउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकरेहैं ॥ तहां याषोडशेअध्यायविषे ताअथर्वणवेदके मुंडकउपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकरेहैं ॥ तहां पूर्वअध्यायविषे ब्रह्मविद्यायुक्त अत्यंतसुंदरकथाकूंश्रवणकरिकै सोशिष्य बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और अथर्वाऋषि उक्तब्रह्मविद्याकेपूछणेवासते सोशिष्य आपणेगुरुकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन्! याआत्मपुराणके प्रथमअध्यायविषे आपनैं ऋग्वेदके ऐतरेयउपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकर्‍याथा ॥ ताप्रथमअध्यायविषे आपनैं सनकादिकमुनियोंके तथावामदेवादिकअधिकारीप्रजाके संवादकरिकै वैराग्यादिकसाधनोंयुक्त नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ तथा माताकेउदरविषेस्थित वामदेवका सर्वात्मभावरूपअनुभव कथनकर्‍याथा ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके द्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअध्यायविषे आपनैं तिसीऋग्वेदके कौषीतकिउपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकर्‍याथा ॥ तहां द्वितीयअध्यायविषे देवराजइंद्रके तथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और तृतीयअध्यायविषे राजाअजातशत्रुके तथाबालाकिब्राह्मणके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषे आपनैं यजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकर्‍याथा ॥ तहां चतुर्थअध्यायविषे आपनैं दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंविषेस्थितऋषियोंका परस्परभेद तथाअभेद कथनकर्‍याथा ॥ तथा दध्यङ्‌अथर्वणऋषि गुरुरूपहोइकै अश्विनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ ताब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेतैं सोदध्य

ङ्अथर्वणऋषि देवराजइंद्रतैं महान्दुःखकूंप्राप्तहोताभया ॥ इत्यादिकसर्ववार्ता आपनैं ताचतुर्थअध्यायविषेकथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ! याआत्मपुराणके पंचमअध्यायविषे आपनैं यहवार्ता कथनकरीथी ॥ सर्वशास्त्रोंकावेत्ता याज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेयज्ञसभाविषेजाइकै जल्पकथाकरिकै आश्वलादिकसर्वब्राह्मणोंकूं जीतताभया ॥ तथा तायाज्ञवल्क्यमुनिकेशापतैं शाकल्यब्राह्मणका मृत्युहोताभया ॥ इहां जीतनेइच्छाकरिकै जोशास्त्रकेअर्थकाविचारकरणाहै ताकानाम जल्पकथाहै ॥ और हेभगवन् ! याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे आपनैं यहवार्ता कथनकरीथी ॥ अत्यंतदुस्तर संसारसमुद्रविषे डूबाहुआ तथातासंसारसमुद्रतैंपारहोणेकीइच्छाकरताहुआ जोराजाजनकथा ॥ ताराजाजनककूं सोयाज्ञवल्क्यमुनि दोवारब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै तासंसारसमुद्रतैं पारकरताभया ॥ और हेभगवन् ! याआत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे आपनैं यहवार्ता कथनकरीथी ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि चतुर्थअवस्थाविषे आपणेमैत्रेयीस्त्रीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै यासंसारसमुद्रतैंपारकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सो याज्ञवल्क्यमुनि संन्यासआश्रमकूंधारणकरताभया ॥ और हेभगवन् ! याआत्मपुराणकेअष्टमेअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ताअष्टमअध्यायविषे श्वेताश्वतरऋषिके तथासंन्यासियोंके संवादकरिकै आपनैं याजगत्केकारणोंकाविचारकऱ्याथा ॥ और हेभगवन् ! याआत्मपुराणकेनवमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तानवमअध्यायविषे यमराजाके तथानचिकेताके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ! याआत्मपुराणकेदशमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके तैत्तिरीयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तथा नारायणीयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादशमअध्यायविषे वरुणपिताके तथाभृगुपुत्रके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा वेननामागंधर्वका सर्वात्मभावरूपअनुभव कथनकऱ्याथा ॥ तथा आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते सत्यतैंआदिलैकेसंन्यासपर्यंत साधनोंकाकथनकऱ्याथा ॥ तथा तिनसत्यादिकसर्वसाधनोंतैं संन्यासआश्रमकीअधिकता कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ! याआत्मपुराणकेएकादशेअध्यायविषे आपनैं जाबालादिकएकाद

शउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताएकादशेअध्यायविषे आपनैं यहवार्ता कथनकरीथी ॥ तापरमहंससंन्यासकूं पूर्व संव
र्तकादिकमहान्पुरुष धारणकरतेभयेहैं ॥ और तापरमहंससंन्यासकीप्राप्तिविषे वैराग्यहीकारणहै ॥ और तावैराग्यकीप्राप्तिविषे
गर्भदुःखोंकाविचार कारणहै ॥ तथा मरणकेचिन्होंकाज्ञान कारणहै ॥ तथा अष्टांगयोग कारणहै ॥ और तापरमहंससंन्यासवि
षे विरक्तपुरुषही अधिकारीहै ॥ और तापरमहंससंन्यासीका शिखासूत्रादिकोंतैंरहितपणावेशहै ॥ तथा तापरमहंससंन्यासीका
ब्रह्मज्ञानरूपमुख्यआचारहै ॥ इत्यादिकसर्ववार्ता ताएकादशेअध्यायविषे आपनैं कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुरा
णके द्वादश त्रयोदश चतुर्दश यातीनअध्यायोंविषे आपनैं सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां द्वादशे
अध्यायविषे आपनैं उद्दालकपिताके तथाश्वेतकेतुपुत्रके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ जेउद्दालक तथाश्वे
तकेतु जाबालउपनिषद्विषे सर्वसंन्यासियोंविषे मुख्यकरिकैकथनकरेहैं ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके त्रयोदशेअध्यायवि
षे आपनैं भगवान्सनत्कुमारके तथानारदमुनिके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआ
त्मपुराणके चतुर्दशेअध्यायविषे आपनैं प्रजापतिब्रह्माके तथाइंद्रविरोचनके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥
और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेपंचदशेअध्यायविषे आपनैं सामवेदकेतलवकारशाखाविषेस्थित केनउपनिषद्काअर्थ निरूपण
कऱ्याथा ॥ तापंचदशेअध्यायविषे देवराजइंद्रकूं ब्रह्मविद्याकेअनुग्रहतैं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति आपनैं कथनकरीथी ॥ इत्यादिकसर्ववा
र्ता आपनैं मैंश्रद्धावान्शिष्यकेप्रति कथनकरीथी ॥ हेभगवन्! तापंचदशेअध्यायकेअंतविषे आपनैं यहवार्ता कथनकरीथी ॥ जैसे
ताप्रजापतिब्रह्माका देवराजइंद्र शिष्यहोताभयाहै ॥ तैसे ताब्रह्माका अथर्वनामाज्येष्ठपुत्रभी शिष्यहोताभयाहै ॥ हेभगवन्! सो
ब्रह्मा ताअथर्वनामापुत्रकेप्रति जाब्रह्मविद्या उपदेशकरताभयाहै ॥ ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेकी मैं इच्छाकरताहूं ॥ और सोअ
थर्वनामामुनि ताब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोइकै कौनशिष्योंकेप्रति साब्रह्मविद्या उपदेशकरताभया? यहसंपूर्णवार्ता आप कृपाकरिकै
हमारेप्रतिकथनकरो ॥ इसप्रकार ताश्रद्धावान्शिष्यकरिकैपूछाहुआ सोश्रीगुरु ताशिष्यकेप्रति मुंडकउपनिषद्विषेकथनकरीहुई

कथाकूं कथनकरताभया ॥ कैसीहैसाकथा ? श्रोतापुरुषोंके मनकूं तथाश्रोत्रइंद्रियकूं सुखकीप्राप्तिकरणेहारीहै ॥ तथा अद्वितीयब्र ह्मकेस्वरूपकूं कथनकरणेहारीहै ॥ अब हिरण्यगर्भभगवान्कीप्रथमताकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम मनुभगवान्उक्तसृष्टिक्रमकूं आश्र यणकरिके तासृष्टिकालकेपूर्वअवस्थाका वर्णनकरेहैं ॥ हेशिष्य! यहसंपूर्णकार्यजगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व तमरूपहोताभया ॥ कै साहैसोतम ? प्रत्यक्षप्रमाणकेअयोग्यहै ॥ तथा कार्यरूपहेतुतें अनुमानकरणेयोग्यहै ॥ तथा कुतर्कोंकेअयोग्यहै ॥ तथा शब्दकरिकै भीकथनकऱ्याजावैनहीं ॥ तथा सुषुप्तिपुरुषकीन्यांई कार्यकेआरंभकरणेविषे असमर्थहै ॥ ऐसातम याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वहोताभ या ॥ इहां तमकेसमानआवरणकरणेहारा जो अव्याकृत माया अविद्या इत्यादिकशब्दोंकावाच्यार्थरूपअज्ञानहै ॥ ताअज्ञानउपहि तसत्यवस्तुकानाम तमहै ॥ अब याहीअर्थविषे ॥ नासदासीन्नोसदासीत्तदानींकिंत्वभूत्तमः ॥ याश्रुतिकाअर्थ प्रमाणरूपकरि कैवर्णनकरेहैं ॥ हेशिष्य! यालोकविषे असत्शब्दकरिकैकथनकरणेयोग्य जोअभावहै ॥ सोअभावभी याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व न हींहोताभया ॥ और यालोकविषे सत्शब्दकरिकैकथनकरणेयोग्य जोभावपदार्थहै ॥ सोभावपदार्थभी याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व नहीं होताभया ॥ और यालोकविषे तेजकाविरोधिरूपकरिकै प्रसिद्धजोअंधकारहै ॥ सोअंधकारभी याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व नहींहोताभ या ॥ और यहआकाशादिकपंचभूतभी याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व नहींहोतेभये ॥ और याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व यहदिनरात्रिभी न हींहोताभया ॥ और प्रातःकाल तथासायंकाल येदोनोंप्रकारकीसंध्याभी याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व नहींहोतीभई ॥ और तिनदोनों प्रकारकीसंध्याके चिह्नरूप जेसूर्यचंद्रमादिकतेजहैं ॥ तेसूर्यादिकतेजभी याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व नहींहोतेभये ॥ किंतु प्रसिद्धतम कीन्यांई आत्माकेस्वरूपकूंआच्छादनकरणेहारा कारणतत्त्वही याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वहोताभया ॥ जोकारणतत्त्व मृत्युरूपकरिकैभी ज्ञातनहींहै ॥ तथा अमृतरूपकरिकैभीज्ञातनहींहै ॥ इहां संहारकरणेहारेकानाम मृत्युहै ॥ और वृद्धिकाकारणरूपजो आहुतिकाप रिणामहै ताकानाम अमृतहै ॥ तेमृत्युअमृतदोनों द्वैतदशाविषेरहेहैं ॥ अद्वैतदशाविषेरहैंनहीं ॥ पुनःकैसाहैसोकारणतत्त्व? याजगत् कीउत्पत्तितैंपूर्वकालविषे अस्पष्टनामरूपवालाहोइकैरहेहै ॥ याकारणतैं वेदांतशास्त्रविषे ताकारणतत्त्वकूं अव्याकृत यानामकरिकै

कथनकरेहैं ॥ और सोअव्याकृतनामातत्त्वही यासर्वजगत्केनामरूपकाकारणहै ॥ तथा सोअव्याकृत आप कारणकीअपेक्षातेंरहित है ॥ तथा एकअद्वितीयरूपहै ॥ तथा केवलश्रुतिवाक्यकरिकैंगम्यहै ॥ तथा सर्वलक्षणोंतेंरहितहै ॥ और यालोकविषे वास्तव तथाविद्यमान पदार्थही कारणहोवैहै ॥ अवास्तव तथाअविद्यमान पदार्थ कारणहोवैनहीं ॥ और सोअव्याकृतनामातत्त्वतौ वास्तवतेंअविद्यमानहुआभी याजगत्काकारणहोवैहै ॥ और यालोकविषे अनादिभावरूपपदार्थोंकूं अविनाशिपणाहीप्रसिद्धहै ॥ जैसे आत्मा अनादिभावरूपहोणेतें अविनाशीहै ॥ और यहअव्याकृतनामातत्त्वतौ अनादिभावरूपहुआभी आत्मज्ञानतेंनाशकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और यहअव्याकृतनामातत्त्व जडरूपहोणेतें परतंत्रहुआभी अक्रियअसंगआत्माके संगकर्मादिकोंकाकारणहोवैहै ॥ इसतेंआदिलेके अनिर्वचनीयताकेबोधक अनेकप्रकारकेदुर्घटलक्षणोंकरिकैंयुक्तहै ॥ ऐसेशुद्धब्रह्मकेप्रतिबिंबयुक्तअव्याकृतनामाकारणतें हिरण्यगर्भभगवान् उत्पन्नहोताभया ॥ कैसाहैसोहिरण्यगर्भ? सर्वव्यष्टिजीवोंकाईश्वरहै ॥ तथा समष्टिअभिमानिरूपता करिकै जोहिरण्यगर्भ जीवघन यानामकरिकैकह्याजावैहै ॥ और एकअंतःकरण पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय एकप्राण पंचसूक्ष्मभूत यासप्तदशतत्त्वोंकेसमुदायरूपशरीरविषे सोहिरण्यगर्भरूपआत्मा निवासकरेहै ॥ ताहिरण्यगर्भभगवान्तें आकाशादिकपंचस्थूलभूत उत्पन्नहोतेभये ॥ तिनस्थूलभूतोंविषेअभिमानकरिकै सोहिरण्यगर्भभगवान् विराट्संज्ञाकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसतेंअनंतर तिनस्थूलभूतोंविषेनिवासकरताहुआ सोहिरण्यगर्भभगवान् आपणेनिवासकरणेवासते ब्रह्मांडरूपगोलककेउत्पन्नकरणेकीइच्छाकरताभया ॥ ताहिरण्यगर्भभगवान्केसत्यसंकल्पकेवशतें तेआकाशादिकपंचभूत जलऊपरिस्थित सुवर्णमयअंडरूपकरिकै परिणामकूं प्राप्तहोतेभये ॥ कैसाहैसोअंड? कोटिसूर्यकेसमान जाअंडकीप्रभाहै ॥ तथा जिसअंडविषे भूरादिकसप्तलोककल्पितहैं ॥ तथा पातालादिकलोककल्पितहैं ॥ तथा संवत्सरादिरूपकाल कल्पितहै ॥ और तिसब्रह्मांडकेअंतरस्थित जोभूमिरूपपद्महै ॥ ताभूमिरूपपद्मका कर्णिकारूपजोमेरुहै ॥ तामेरुतें जोहिरण्यगर्भभगवान् चतुर्मुखब्रह्मरूपकरिकै प्रगटहोताभया ॥ कैसाहैसोचतुर्मुखब्रह्मा? इंद्रादिकसर्वदेवतावोंतेंप्रथमहै ॥ तथा इंद्रादिकसर्वदेवतावोंकरिकैपूज्यहै ॥ तथा यासंपूर्णजगत्काकर्ताहै ॥ तथा यासर्वजग

त्का पालनकरणेहाराहै ॥ तथा यासर्वजगत्कासंहारकरणेहाराहै ॥ ऐसेब्रह्माका अथर्वानामा एकज्येष्ठपुत्र होताभया ॥ तिस अथर्वानामाज्येष्ठपुत्रकेतांई यहवक्ष्यमाणब्रह्मविद्या देताभया ॥ कैसीहैयहब्रह्मविद्या? मूलाअज्ञानकानाशकरणेहारीहै ॥ याकारणतें यहब्रह्मविद्या सर्वविद्यावोंकाआधारभूतहै ॥ ऐसीब्रह्मविद्याकेप्राप्तहुए इतरविद्यावोंकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ काहेतें? याब्रह्मविद्यातें इतर जितनीविद्याहैं ॥ तेविद्या किंचित्किंचित्अर्थका प्रकाशकरेहैं ॥ और यहब्रह्मविद्यातौ सर्वअर्थकाप्रकाशकरेहै ॥ यातें तेसर्वविद्या फलरूपकरिकै याब्रह्मविद्याविषेही अंतर्भूतहोवैहैं ॥ जैसे तृप्तिरूपफलकीसिद्धिविषे सर्वग्रासोंकारस अंतर्भूतहोवैहै ॥ तैसे याब्रह्मविद्याविषेही इतरसर्वविद्या अंतर्भूतहोवैहैं ॥ ऐसीब्रह्मविद्या सोब्रह्मा ताअथर्वानामाशिष्यकेप्रति देताभया ॥ और ताअथर्वानामाऋषिका अंगिरानामाऋषि शिष्यहोताभया॥ और ताअंगिरानामाऋषिका भारद्वाजनामाऋषि शिष्यहोताभया ॥ जिसभारद्वाजकूं लोकविषे सत्यवह यानामकरिकैभी कथनकरेहैं ॥ और तिसभारद्वाजनामाऋषिका अंगिरस्नामाऋषि शिष्यहोताभया ॥ और ताअंगिरस्नामाऋषिका शौनकनामाऋषि शिष्यहोताभया॥ जोशौनकऋषि बहुतअन्नदानादिकोंकरिकै महान्गृहस्थपणेकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसशौनकनामाऋषिके सर्वद्विज शिष्यहोतेभये ॥ हेशिष्य! यामुंडकउपनिषद्विषे जाब्रह्मविद्या कथनकरीहै ॥ साब्रह्मविद्या प्रथमतौ ब्रह्मानैं अथर्वानामापुत्रकेप्रति कथनकरीहै॥ ताअथर्वानामाऋषिकेमुखकूंप्राप्तहोइकै जाब्रह्मविद्या पूर्वउक्तरीतिसैं बहुतशिष्यपरंपराकूंप्राप्तहोतीभईहै॥ साब्रह्मविद्या मैं तुमारेप्रति कथनकरताहूं तू सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ अब अंगिरस्ऋषिके तथाशौनकऋषिके संवादकरिकै ताब्रह्मविद्याकावर्णनकरेहैं ॥ हेशिष्य! पूर्वएककालविषे अंगिरस्नामाऋषि प्रातःकालविषे स्नानादिकनित्यकर्मोंकूंकरिकै किसीएकांतदेशविषेस्थितहोताभया ॥ कैसाथासोअंगिरस्नामाऋषि? सर्ववेदोंका वेत्ताथा ॥ तथा तिनवेदोंकरिकैप्रतिपादित अद्वितीयब्रह्मकूंजानणेहाराथा ॥ तथा सर्वइच्छातैंरहितनिष्कामथा ॥ ऐसेश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठ अंगिरस्नामाऋषिकूंदेखिकै सोशौनकऋषि समिदादिकपदार्थोंकूंहस्तविषेग्रहणकरिकैविधिपूर्वक ताअंगिरस्ऋषिकेसमीपजाइकै याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ शौनकउवाच ॥ हेभगवन्अंगिरस्! किसएकवस्तुकेज्ञानतैं यासर्वजगत्काज्ञानहोवैहै?

जिसएकवस्तुकेज्ञानतैं यासर्वजगत्काज्ञानहोवैहै ॥ सोएकवस्तु आप कृपाकरिकैं हमारेप्रति कथनकरो ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारकाप्रश्न जबी ताशौनकऋषिनैं ताअंगिराऋषिकेप्रतिकऱ्या ॥ तबी सोअंगिरानामाऋषि ताशौनककेप्रति याप्रकारकाउत्तर कहताभया ॥ अंगिराउवाच ॥ हेशौनक ! अद्वितीयब्रह्मरूपएकआत्मवस्तुकेज्ञानहुएही यासर्वजगत्काज्ञानहोवैहै ॥ हेशौनक ! तापरब्रह्मकीप्राप्तिवासते ब्रह्मविंदुउपनिषदादिकोंविषे शाब्दब्रह्मकाज्ञानही श्रेष्ठउपायकथनकऱ्याहै ॥ तहां शिक्षादिकषट्अंगोंसहितजेचारिवेदहैं ॥ तेचारिवेदहैंशरीर जिसब्रह्मका ॥ ताब्रह्मकानाम शाब्दब्रह्महै ॥ ऐसेशाब्दब्रह्मविषे जोपुरुष कुशलहै ॥ सोपुरुषही तापरब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं मुमुक्षुजननैं दोप्रकारकीविद्याकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ तिनदोनोंविद्यावोंविषे एकविद्यातौ साधनरूपहोणेतैं अपरानामाहै ॥ और दूसरीविद्या फलरूपहोणेतैं परानामाहै ॥ तहां अपरा परायादोनोंविद्यावोंविषे प्रथम अपराविद्याकूं तू श्रवणकर ॥ हेशौनक ! शिक्षादिकषट्अंगोंसहित जे ऋग् यजुष् साम अथर्वणयेचारिवेदहैं ॥ तेचारिवेदहैंविषय जिसविद्याके ताविद्याकानाम अपराविद्याहै ॥ याअपराविद्याकरिकैही सापराविद्या प्राप्तहोवैहै ॥ जाविद्या अद्वितीयब्रह्मकूंविषयकरैहै ॥ ताब्रह्मविद्याकानाम पराविद्याहै ॥ और जिसब्रह्मकूं सापराविद्याकथनकरैहै ॥ तिसब्रह्मकूं श्रुतिविषे अक्षर यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ताअक्षरस्वरूपब्रह्मका वेदवेत्तापुरुषोंनैं याप्रकारकालक्षणकथनकऱ्याहै ॥ सोअक्षरब्रह्म मनसहितपंचज्ञानइंद्रियोंतैं तथापंचकर्मइंद्रियोंतैं रहिततहै ॥ तथा पंचप्राणोंतैंभीरहिततहै ॥ तथाआकाशादिकपंचभूतोंतैंभीरहिततहै ॥ तथा शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचज्ञानइंद्रियोंकेविषयोंतैंभीरहिततहै ॥ तथा वचन आदान गमन विसर्ग आनंद यापंचकर्मइंद्रियोंकेव्यापारोंतैंभीरहिततहै ॥ याकारणतैं सोअक्षरब्रह्म नेत्रादिकज्ञानइंद्रियोंकरिकैभी देख्याजावैनहीं ॥ तथा वाकादिककर्मइंद्रियोंकरिकैभी ग्रहणकऱ्याजावैनहीं ॥ और सोअक्षरब्रह्म नाम रूप क्रिया यातीनोंतैंरहिततहै ॥ तथा जन्मादिकविकारोंतैंरहिततहै ॥ याकारणतैं सोअक्षरब्रह्म कुलरूपगोत्रतैंभीरहिततहै ॥ तथा ब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वादिरूपवर्णोंतैंभीरहिततहै ॥ और सोअक्षरब्रह्म आकाशकीन्यांई सर्वत्रव्यापकहै ॥ यातैं देशकृतपरिच्छेदतैं रहिततहै ॥ और सोअक्षरब्रह्म साधनहीनपुरुषोंकूं दुर्वि

ज्ञेयहै यातें सूक्ष्महै ॥ और सोअक्षरब्रह्म उत्पत्तिनाशतैंरहितहै ॥ यातैं कालकृतपरिच्छेदतैंरहितहै ॥ और सोअक्षरब्रह्म मायाकेव शतैं यासर्वजगत्काकारणरूपहुआभी वास्तवतैं तासर्वजगत्रूपद्वैततैंरहितहै ॥ याकारणतैं सोअक्षरब्रह्म वस्तुपरिच्छेदतैं रहितहै ॥ और जिसअक्षरब्रह्मकूं ब्रह्मचर्यादिकसाधनसंपन्नपुरुषही आपणेचित्तविषे देखेहैं ॥ साधनहीनपुरुष देखिसकैनहीं ॥ ऐसेअक्षरब्र ह्मकूंही तुमनैं आपणाआत्मरूपकरिकैजानणा ॥ ताअक्षरब्रह्मतैंभिन्नकुलवर्णादिकोंकूं तुमनैं आपणाआत्मरूपकरिकैजानणानहीं ॥ ताअक्षरब्रह्मकेज्ञानतैंही यासर्वजगत्काज्ञानहोवैहै ॥ अब ताअक्षरब्रह्मकेज्ञानतैं यासर्वजगत्केज्ञानकीसिद्धिकरणेवासते ताअक्षर ब्रह्मविषे याजगत्कीकारणताकूं तीनदृष्टांतोंकरिकैसिद्धकरैहैं ॥ हेशौनक! यहअक्षरब्रह्मही यासर्वजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकाअ भिन्ननिमित्तउपादानकारणहै ॥ याअर्थविषे वेदवेत्तापुरुष ऊर्णनाभिजंतुकादृष्टांत कथनकरैहैं ॥ जैसे ऊर्णनाभिजंतु आपणेतैंभिन्न दूसरेकारणकीअपेक्षातैंविनाही तंतुवोंकीउत्पत्तिस्थितिलयकरैहै ॥ तैसेयहअक्षरब्रह्मभी आपणेतैंभिन्नदूसरेकारणकीअपेक्षातैंविना ही यासर्वजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयकरैहै ॥ यातैं जैसे ऊर्णनाभिजंतु तिनतंतुवोंका उपादानकारण तथानिमित्तकारण दोनोंहै ॥ तैसे सोअक्षरब्रह्मभी यासर्वजगत्का उपादानकारण तथानिमित्तकारण दोनोंहै ॥ और हेशौनक! याजगत्विषे कोईसुखीहै को ईदुःखीहै कोईधनीहै कोईनिर्धनहै इत्यादिकअनेकप्रकारकीविलक्षणता प्रतीतहोवैहै ॥ ऐसेविलक्षणजगत्का जोएकअक्षरब्रह्म कर्त्तामानिये तौ ताअक्षरब्रह्मविषे विषमतादोषकी तथानिर्दयतादोषकी प्राप्तिहोवैगी याप्रकारकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासते वे दवेत्तापुरुष भूमिकादृष्टांत कथनकरैहैं ॥ जैसे अनेकप्रकारकेस्थावरजंगमरूपशरीर एकहीभूमितैं उत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे एकही अक्षरब्रह्मतैं यहनानाप्रकारकाजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे एकहीभूमितैं बीजोंकीविलक्षणताकरिकै नानाप्रकारकेस्था वरजंगमशरीर उत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे एकहीअक्षरब्रह्मतैं जीवोंकेपुण्यपापरूपकर्मोंकी तथासंस्कारोंकी विलक्षणताकरिकै नानाप्रकार काजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं ताअक्षरब्रह्मविषे विषमता निर्दयता यादोनोंदोषोंकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और हेशौनक! यालोकविषे समानस्वभाववाले मृत्तिकाघटादिकपदार्थोंकाही परस्पर कारणकार्यभावदेख्याहै ॥ विलक्षणपदार्थोंका परस्पर कारणकार्यभाव

कहांदेख्यानहीं ॥ यातैं चेतनब्रह्मतैं जडजगत्कीउत्पत्ति संभवैनहीं ॥ याप्रकारकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासते तेवेदवेत्तापुरुष या पुरुषकादृष्टांत कथनकरेहैं ॥ जैसे जीवत्अवस्थाविषे चेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध जोयहपुरुषहै ॥ ताचेतनपुरुषतैं नखकेशलोमादिकअचेतनकार्य उत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे ताचेतनरूपअक्षरब्रह्मतैं यहजडजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं सर्वथा समानस्वभाववालेपदार्थौंकाही परस्पर कार्यकारणभावहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम सर्वत्रसंभवैनहीं ॥ हेशौनक! ताअक्षरब्रह्मतैं याजगत्का जन्म स्थिति लय येतीनोंहोवैहैं ॥ तिनजन्मादिकतीनोंविषे प्रथम याजगत्केजन्मकाप्रकार तेविद्वान्पुरुष इसरीतिसैंकथनकरेहैं ॥ सोअक्षरब्रह्म याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व ताउत्पन्नकरणेयोग्यजगत्कूंविषयकरणेहारेज्ञानरूपतपकूंकरताभया ॥ कैसाहैसोजगत्? वेदकरिकैप्रसिद्धहै नानाप्रकारकेनामरूपजिसके ॥ ऐसेजगत्विषयकज्ञानरूपतपतैंअनंतर सोअक्षरब्रह्म याजगत्केउत्पत्तिकीअनुकूलतारूपस्थूलताकूं प्राप्तहोताभया ॥ जैसे जलकरिकैगीलिहुईपृथिवीविषेप्राप्तहुआबीज स्थूलताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सोअक्षरब्रह्म भी तास्थूलताकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर ताज्ञानरूपतपकरिकै तास्थूलताकूंप्राप्तहुएअक्षरब्रह्मतैं यथाक्रमतैं आकाशादिकपंचभूत उत्पन्नहोतेभये ॥ तिनपंचभूतोंतैं यहसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोताभया ॥ तिनपंचभूतोंकूं श्रुतिविषेअन्नशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ अथवा अन्नशब्दकरिकै इहां अव्याकृतकाग्रहणकरणा ॥ सोनामरूपात्मकजगत्काआरंभकरणेहारा अव्याकृतरूपअज्ञान यद्यपि सिद्धांतमतविषेअनादिहै ॥ तथापि याजगत्कीउत्पत्तिकालविषे प्रधानताकीप्राप्तिरूपजन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताचेतनकेप्रतिबिंबयुक्तअव्याकृतरूपअन्नतैं मनप्राणादिकसमष्टिसूक्ष्मशरीरवाला हिरण्यगर्भ उत्पन्नहोताभया ॥ जिसहिरण्यगर्भकूंबृहदारण्यकउपनिषद्विषे मृत्यु यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तिसहिरण्यगर्भतैं समष्टिस्थूलभूतरूपशरीरवालाविराट् उत्पन्नहोताभया ॥ जिसविराट्कूंश्रुतिविषे सत्यशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ताविराट्कीउत्पत्तितैंअनंतर ताविराट्विषेस्थित भूरादिकसप्तलोक उत्पन्नहोतेभये ॥ तिसतैंअनंतर तिनलोकोंविषेरहणेहारेजनहैं अधिकारीजिनोंके ऐसेवेदउक्तसर्वकर्म उत्पन्नहोतेभये ॥ तिन वेदउक्तकर्मोंतैं स्वर्गादिरूपफल उत्पन्नहोताभया ॥ सोकर्मोंकाफल याजीवोंकूं अवश्यकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं ताकर्मकेफलकूं

श्रुतिभगवती अमृत यानामकरिकैकथनकरे है ॥ इतनेकरिकै विषयसहितपराविद्याका संक्षेपतैंनिरूपणकर्‍या ॥ अब वैराग्यकी प्राप्तिवासते ताविषयसहितअपरविद्याका निरूपणकरे हैं ॥ हेशौनक! यहअक्षरब्रह्म सामान्यतैं सर्वजगतकूं जाने है ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताअक्षरब्रह्मकूं सर्वज्ञ यानामकरिकैकथनकरे है ॥ और सोअक्षरब्रह्म विशेषरूपकरिकैभी यासर्वजगतकूंजाने है ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याअक्षरब्रह्मकूं सर्ववित् यानामकरिकैकथनकरे है ॥ ऐसेसर्वज्ञसर्ववित्अक्षरब्रह्मतैं समष्टिसूक्ष्मकाअभिमानी हिरण्यगर्भ उत्पन्नहोताभया ॥ ताहिरण्यगर्भतैं समष्टिस्थूलकाअभिमानीविराट् उत्पन्नहोताभया ॥ हेशौनक! ताहिरण्यगर्भकाशरीररूप जितनाकीसूक्ष्मसमष्टिविश्वहै ॥ तथा ताविराट्काशरीररूप जितनास्थूलसमष्टिविश्वहै ॥ सोसर्वविश्व तिनवेदवेत्तापुरुषोंनें कर्मकाफलरूपकरिकैवर्णनकर्‍याहै ॥ और सोकर्मकाफल कर्मतैंअनंतर याजीवोंकूं अवश्यकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिविषे ताकर्मकेफलकूं सत्यशब्दकरिकैकथनकर्‍याहै ॥ **शंका** ॥ हेभगवन्! सोहिरण्यगर्भादिकोंकाऐश्वर्य किसकर्मकाफलहै? ॥ **समाधान** ॥ हेशौनक! अधिकारीपुरुषोंकेप्रति वेदभगवान्नें विधानकर्‍येजे दर्शपौर्णमासादिकयज्ञोंसहित अग्निहोत्रादिककर्महैं ॥ जेअग्निहोत्रादिककर्म दधि घृत यजमान मंत्र देश काल इत्यादिकपदार्थोंकेभेदकरिकै नानाप्रकारके हैं ॥ ऐसेअग्निहोत्रादिककर्मोंकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं ताऐश्वर्यरूपफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेशौनक! जेअधिकारीपुरुष वेदविहितअग्निहोत्रादिककर्मोंकूंनहींकरेहैं ॥ तथा वेदनिषिद्धहिंसादिककर्मोंकूंकरेहैं ॥ तथा नेत्रादिकइंद्रियोंकेरूपादिकविषयोंविषे अत्यंतआसक्तहैं ॥ ते पुरुष अधोगतिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जेअधिकारीपुरुष वेदविहितअग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरेहैं ॥ तथा वेदनिषिद्धहिंसादिककर्मोंका परित्यागकरेहैं ॥ तथा इंद्रियोंकेविषयोंविषेआसक्तितैंरहितहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष स्वर्गादिकउत्तमलोकोंविषे देवताशरीरकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेशौनक! तेअग्निहोत्रादिककर्म केवल स्वर्गादिकसुखोंकेही कारणनहींहोवैहैं ॥ किंतु निष्कामकर्‍येहुए तेअग्निहोत्रादिककर्म अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मज्ञानकेभीहेतुहोवैहैं ॥ काहेतैं? तेअग्निहोत्रादिककर्म सकाम निष्काम भेदकरिकैदोप्रकारके होवैहैं ॥ तहां स्वर्गादिकसुखोंकीप्राप्तिकरणेहारे अग्निहोत्रादिककर्मोंकानाम सकामकर्महै ॥ और अंतःकरणकीशुद्धिकरणेहारे

अग्निहोत्रादिककर्मोंकानाम निष्कामकर्म है तहां प्रथम सकामकर्मोंकातौ स्वर्गादिरूपफल हमनें तुमारेप्रति कथनकऱ्या ॥ अब अंतःकरणकीशुद्धिवासते कऱ्येहुएनिष्कामकर्मोंका वैराग्यरूपफलकूं तू श्रवणकर ॥ हेशौनक! स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरों तैंरहितजोमोक्षहै ॥ तामोक्षकूंभी सोकर्मीपुरुष प्राप्तहोवैहै याप्रकारकीआशा तुमनें कदाचित्भी नहींकरणी ॥ काहेतें? जोजोफल कर्मकरिकैजन्यहोवैहै ॥ सोसोफल अनित्यहीहोवैहै ॥ जैसे स्वर्गादिरूपफल कर्मकरिकैजन्यहै ॥ यातें अनित्यहीहै ॥ तैसे सो मोक्षभी जोकर्मकरिकैजन्यहोवैगा तौ सोमोक्षभी अनित्यहीहोवैगा ॥ और वेदवेत्तापुरुष मोक्षकूंअनित्यमानैंनहीं ॥ किंतु सर्व विद्वान्पुरुष तामोक्षकूंनित्यमानेहैं ॥ यातें तामोक्षविषे कर्मकीफलरूपतासंभवैनहीं ॥ और हेशौनक! ज्योतिष्टोमनामायज्ञतेंआदिलेके जितनेअग्निहोत्रादिककर्महैं ॥ तेसर्वकर्म याअधिकारीपुरुषकूं यासंसाररूपसमुद्रके मोक्षरूपपरपारकीप्राप्तिकरणेविषे समर्थ होवैंनहीं ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे महान्समुद्रकेजलविषे तृणकाष्ठादिकोंकरिकैरचेहुए जेतरणेकेसाधनरूपप्लवहैं ॥ तेप्लव केवल मत्स्यादिकजीवोंकेमारणेवासतेही उपयोगविषेआवैहैं ॥ तासमुद्रकेपारकरणेविषे तेप्लव समर्थहोवैंनहीं ॥ काहेतें? तेप्लव अत्यंतअल्पहैं ॥ तथा दृढतातैंरहितहैं ॥ तथा समुद्रकीलहरियोंकरिकैव्याकुलहैं ॥ तथा समुद्रकेजलविषे डुब्येहुएकीन्यांईस्थितहैं ॥ तथा तासमुद्रकेजलकरिकैपूर्णहुए तेप्लव अत्यंतकंपायमानहैं ॥ याकारणतैंही तेप्लव आपणेआश्रितपुरुषोंकूं सर्वदा भयकीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ ऐसे तेप्लव यापुरुषोंकूं तासमुद्रतैंपारकरणेविषे समर्थहोवैंनहीं ॥ तैसे यासंसाररूपमहान्समुद्रविषे तेअग्निहोत्रादिककर्मरूपप्लवस्थितहैं ॥ कैसेहैं तेकर्मरूपप्लव? यासंसारसमुद्रके कामक्रोधादिरूपलहरियोंकरिकै सर्वदाकंपायमानहैं ॥ तथा अल्पविघ्नकरिकैभी तेकर्म नष्टहोइजावैहैं ॥ यातें तेकर्मरूपप्लव दृढतातैंरहितहैं ॥ ऐसेकर्मरूपप्लवोंकूं परमेश्वरनें यासंसारसमुद्रविषेस्थितस्वर्गादिकसुखरूपमत्स्योंकीप्राप्तिवासतेही रचाहै ॥ यासंसारसमुद्रतैंपारकरणेवासते तिनकर्मरूपप्लवोंकूंरचानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जैसे यालोकप्रसिद्धसमुद्रविषेस्थितप्लवोंकेचलावणेहारे धीवरपुरुषहोवैहैं ॥ तैसे यासंसारसमुद्रविषेस्थित अग्निहोत्रादिककर्मरूपप्लवोंकेचलावणेहारे धीवरपुरुषोंकेसमान कौनहैं? ॥ समाधान ॥ हेशौनक! अध्वर्युतेंआदिलेके षोडशऋत्विज एकय

जमान एकतायजमानकीस्त्री येअष्टादश १८ तिनअग्निहोत्रादिककर्मरूपप्लवोंकेचलावणेहारेहैं ॥ यज्ञादिककर्मोंकेकरावणेहारे ब्राह्मणोंकानाम ऋत्विजहैं ॥ तिनषोडशऋत्विजोंके येनामहैं ॥ तहां यजुर्वेदकेजानणेहारे अध्वर्यु प्रतिपस्थाता नेष्टा नेतायेचारिऋत्विजहोवैहैं ॥ और ऋग्वेदकेजानणेहारे होता मैत्रावरुण अच्छावाक् ग्रावस्तुत येचारिऋत्विजहोवैहैं ॥ और सामवेदकेजानणेहारे उद्गाता प्रस्तोता प्रतिहर्त्ता सुब्रह्मण्य येचारिऋत्विजहोवैहैं ॥ और ऋग् यजुष् साम यातीनोंवेदोंकेजानणेहारे ब्रह्म ब्राह्मणाच्छंसी अग्नीध्र पोता येचारिऋत्विजहोवैहैं ॥ तेसर्वमिलिकै षोडशऋत्विजहोवैहैं ॥ तिनषोडशऋत्विजोंतैंविना तथायजमानतैंविना तथातायजमानकी स्त्रीतैंविना तेअग्निहोत्रादिककर्म सिद्धहोवैंनहीं ॥ यातैं तेअष्टादश तिनकर्मरूपप्लवोंकेचलावणेहारे धीवरहैं ॥ और हेशौनक! यासंसारसमुद्रविषेस्थित जेकर्मरूपअल्पप्लवहैं ॥ तिनकर्मरूपप्लवोंविषे श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुरूपधीवरहैंनहीं ॥ तथा ब्रह्मचर्यादिकसाधनरूप अनुकूलवायुभीहैंनहीं ॥ और तेकर्मरूपप्लव आपतौं स्वभावतैं क्षणक्षणविषेनाशवान्हैं ॥ तथा दृढतातैंरहितहैं ॥ ऐसेकर्मरूपप्लवोंकूंआश्रयणकरिकै ॥ कौनबुद्धिमान्पुरुष निःशंकहोइकै यासंसाररूपसमुद्रविषेप्रवेशकरैगा? किंतु यासंसारसमुद्रकेतरणेवासते कोईभीबुद्धिमान्पुरुष तिनकर्मरूपप्लवोंकूं आश्रयणकरतानहीं ॥ विचारहीनमूढपुरुषही तिनकर्मरूपप्लवोंकूं आश्रयणकरेहैं ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षरूपनित्यसुखकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तिसमुमुक्षुजननैं यासंसारसमुद्रकेतरणेवासते तिनकर्मरूपप्लवोंकूं कदाचित्भी आश्रयणकरणानहीं ॥ और हेशौनक! यासंसारसमुद्रविषेस्थित स्वर्गसुखादिरूपमत्स्योंकीप्राप्तिकरणेहारे जेयह अग्निहोत्रादिककर्मरूपप्लवहैं ॥ तिनकर्मरूपप्लवोंकूंआश्रयणकरिकै जेमूढकर्मीपुरुष आपणेकूंकृतकृत्यमानिकै स्थितहोवैहैं ॥ तेकर्मीपुरुष कदाचित्भी यासंसारसमुद्रतैंपारहोतेनहीं ॥ किंतु उलटा तेकर्मीपुरुष कामक्रोधादिकलहरियोंकरिकै याकर्मरूपप्लवोंकेचलायमानहुए यासंसारसमुद्रकेजन्ममरणरूपजलविषेही वारंवारडूबैहैं ॥ कदाचित्भी सुखकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ और हेशौनक! अविद्यारूपजलहैंजिसविषे ऐसाजोयहसंसाररूपसमुद्रहै ॥ तासंसारसमुद्रविषे यहकर्मीपुरुष लोकप्रसिद्धधीवरपुरुषोंकीन्यांई आपणेकूं तथाअन्यजीवोंकूं क्लेशकीप्राप्तिकरतेहुए स्थितहैं ॥ कैसेहैंतेकर्मीपुरुष?

आपणेकूं तथाआपणेशिष्योंकूं अनर्थकीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ याकारणतैं तेकर्मीपुरुष दुर्बुद्धिहैं ॥ ऐसीदुर्बुद्धिवालेहुएभी तेकर्मीपुरुष आपणेकूंपंडितमानेहैं ॥ तथा अनेकप्रकारकेरोगादिकअनर्थोंकरिकै विक्षेपकूंप्राप्तहुए तेकर्मीपुरुष मायारचितमोहरूपगर्तविषे वारंवारपतनहोवेहैं ॥ पुनःकैसेहैंतेकर्मीजन? अनित्यसुखकीप्राप्तिकरणेहारेकर्मोंकूंही मोक्षकासाधनमानेहैं ॥ याकारणतैं तेकर्मीपुरुष अत्यंतमूढबुद्धिहैं ॥ और तेकर्मीपुरुष आपणेविवेकतैंरहितहैं ॥ और तिनकर्मीपुरुषोंकेगुरुभीविवेकतैंरहितहैं ॥ याकारणतैं तिनकर्मीपुरुषोंकूं करणेयोग्यअर्थकानिर्णय आपणेगुरुतैंभीहोवैनहीं ॥ जैसे आपणेविवेकतैंरहित कोईअंधपुरुष किसीदूसरेअविवेकीअंधपुरुषकेपीछेचलेहुए वारंवार गर्तविषेपडेहैं ॥ तैसे आपणेविवेकतैंरहित तथास्वर्गसुखकेप्राप्तिकीइच्छाकरणेहारे यहकर्मीपुरुषभी विवेकहीनकर्मीगुरुकेपीछेचलेहुए यामायारूपनीरयुक्तसंसारसमुद्रविषे महान्दुःखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जैसे भूतकेआवेशकरिकैआतुरहुआ यहपुरुष आपणेदुःखकूं तथातादुःखकीनिवृत्तिकेउपायकूं जानतानहीं ॥ तैसे कामक्रोधादिरूपपिशाचकेआवेशकरिकै आतुरहुए तेकर्मीपुरुषभी आपणेदुःखकूं तथातादुःखकीनिवृत्तिकेउपायकूं जानिसकतेनहीं ॥ किंतु उलटा तेअल्पबुद्धिवालेकर्मीपुरुष इनअग्निहोत्रादिक कर्मोंकरिकै हम कृतार्थहुएहैं इसतैंपरेकोईहमारेकूंकर्तव्यनहींरह्या याप्रकारमानिकै पिशाचोंकीन्यांई नृत्यकरेहैं तथाहसेहैं ॥ और तेकर्मीपुरुष कामरूपपिशाचकेवशहुए तथापरमेश्वरकीमायाकरिकैमोहितहुए यापांचभौतिकशरीरविषेही परमसुखबुद्धिकरेहैं ॥ और ताकामरूपपिशाचकेवशहुए तेकर्मीपुरुष सर्वदा याप्रकारकाचिंतनकरेहैं ॥ यह शत्रु हमनैं आपणेबलतैं हननकऱ्याहै ॥ और यहशत्रु पुनःउत्थितहुआहै ॥ इसशत्रुकूंभी मैं आपणेबलतैं हननकरौंगा ॥ और यहहमारामित्र महान्बलवान्हुआहै ॥ यातैं हमारेकूं अबीकिसीतैंभयनहींहै ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकीचिंताकरिकै व्याप्तहुआहैचित्तजिनोंका तथा प्रमादरूपग्रहकेवशकूंप्राप्तहुआहै चित्तजिनोंका ऐसेतेकर्मीपुरुष आपणेहृदयदेशविषेस्थित आनंदस्वरूपआत्माकेजानणेविषे समर्थहोइसकैंनहीं ॥ याकारणतैं तेकर्मीपुरुष वारंवार जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और हेशौनक! जे पुरुष याआनंदस्वरूपआत्माकाविस्मरणकरिकै तथा यहअग्निहोत्रादिककर्मही हमारेश्रेयकासाधनहैं याप्रकारकानिश्चयकरिकै

यासंसारकेसुखोंविषेआसक्तहोवैंहैं ॥ तेकर्मीपुरुष स्वर्गविषे तिनपुण्यकर्मोंकेफलकूंभोगिकै किसीकालपाइकै तास्वर्गलोकतैं शोकयुक्तहुएनीचैपतनहोवैंहैं ॥ हेशौनक! जैसे यालोकविषे पुत्रादिककुटुंबकरिकैयुक्त जेधनवान्पुरुषहैं ॥ तेधनवान्पुरुष आपणेमृत्युकालविषे जिसप्रकारकेदुःखकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तिसीप्रकारकेदुःखकूं तेकर्मीपुरुष स्वर्गतैंनीचैपतनकालविषे प्राप्तहोवैंहैं ॥ और जैसे यालोकविषेमहान्सुखवालाजोकोईराजाहै ॥ ताराजाकूं आपणेमरणकालविषे जिसप्रकारकादुःखहोवैहै ॥ तिसीप्रकारकादुःख तिनकर्मीपुरुषोंकूं स्वर्गतैंनीचैपतनकालविषे प्राप्तहोवैहै ॥ यद्यपि मरणकालविषे सर्वदेहधारीजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तथापि धनवान्पुरुषोंकूं तथाराजावोंकूं बहुतभोगोंकीआसक्तिकरिकै तामरणकालविषे दूसरेजीवोंतैंअधिकदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं तास्वर्गतैंनीचैपतनजन्यदुःखविषे धनीपुरुषोंका तथाराजाका दृष्टांतदियाहै ॥ और हेशौनक! तिनकर्मीपुरुषोंकूं केवल स्वर्गतैं नीचैपतनकालविषेहीदुःखनहींहोवैहै ॥ किंतु तास्वर्गविषेभी तिनकर्मीपुरुषोंकूं इंद्रादिकदेवतावोंकी परतंत्रताकरिकै महान्दुःखकी प्राप्तिहोवैहै ॥ तथा अधिकभोगोंकीअप्राप्तिकरिकैभी महान्दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जैसे यालोकविषे धनीपुरुषोंकूं धनकेनाशतैं महान्दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे स्वर्गादिकलोकोंविषे तिनकर्मीपुरुषोंकूं पुण्यकर्मोंकेनाशतैं महान्दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसप्रकार तिनकर्मीपुरुषोंकूं तिनकर्मोंकेअनुष्ठानकालविषेभी दुःखकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ तथा तिनकर्मोंकेफलकीप्राप्तिकालविषेभी दुःखकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ तथा तिनकर्मोंकेफलकेनाशकालविषेभी दुःखकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ तथा तिनस्वर्गसुखादिरूपफलकेनाशतैंअनंतर तिनकर्मीपुरुषोंकूं पुनःजन्मकरिकैदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं आदिकालविषे तथामध्यकालविषे तथा अंतकालविषे यहकर्म दुःखकेहीकारणहैं ॥ हेशौनक! स्वर्गकूंप्राप्तहोइकै पुनःभूमिलोकविषेजन्मकूंप्राप्तहोणेहारा यहकर्मीपुरुष कौनशरीरकूंप्राप्तहोवैगा? किसीउत्तमशरीरकूंप्राप्तहोवैगा? अथवा किसीमध्यमशरीरकूंप्राप्तहोवैगा? अथवा किसीअधमशरीरकूंप्राप्तहोवैगा? अथवा किसी नारकीयशरीरकूंप्राप्तहोवैगा? याप्रकार तापुरुषकेकर्मकेफलकूं सर्वज्ञईश्वरतैंविना कौनपुरुष जानिसकैगा? किंतु सर्वज्ञईश्वरतैं विना ताकर्मकेफलकूं कोईभीपुरुष जानिसकतानहीं ॥ हेशौनक! अग्निहोत्रादिकइष्टकर्मोंकूंकरणेहारे तथावापीकूपतडागादिरूप

पूर्तकर्मोंकूंकरणेहारे जेकर्मीपुरुषहैं ॥ तिनकर्मीपुरुषोंकूं स्वर्गकीप्राप्तिकरणेहारा यहदक्षिणमार्ग हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्या ॥ अब देवयाननामा उत्तरमार्गविषेगमनकरणेहारेपुरुषोंकीगतिकूं तू श्रवणकर ॥ हेशौनक! जैसे स्वर्गकीप्राप्तिकरणेहारा सोदक्षिणमार्ग यासंसारकेअंतरस्थितहै ॥ तैसे ब्रह्मलोककीप्राप्तिकरणेहारा यहदेवयाननामा उत्तरमार्गभी यासंसारकेही अंतर्भूतहै ॥ परंतु सोदेवयाननामामार्ग यासंसारसमुद्रकेपरपारकेसमीपस्थितहै ॥ याकारणतें सोदेवयाननामामार्ग बहुतजनोंकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु किसीवैराग्यवान्पुरुषकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहैं ॥ हेशौनक! जेअधिकारीपुरुष हम आपणेवीर्यकूंपरित्यागनहींकरेंगे ॥ याप्रकारकादृढसंकल्पकरिकै याशरीरकरिकै स्त्रीकेसाथ संभोगनहींकरेहैं ॥ ऐसेनैष्ठिक ब्रह्मचारी ताउत्तरमार्गद्वारा ताब्रह्मलोकविषेजावैहैं ॥ तथा दहरादिकउपासनाकरणेहारेपुरुषभी ताउत्तरमार्गद्वारा ताब्रह्मलोकविषेजावैहैं ॥ तथा स्वर्गादिकपंचअग्नियोंकीउपासनाकरणेहारे कोईकगृहस्थपुरुषभी ताउत्तरमार्गद्वारा ताब्रह्मलोकविषेजावैहैं ॥ तेब्रह्मचर्यादिकसाधन अत्यंतकठिनहैं ॥ यातें सोदेवयानमार्ग किसीपुरुषकूंही प्राप्तहोवैहै सर्वकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेशौनक! ता उत्तरमार्गकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य जोब्रह्मलोकहै ॥ ताब्रह्मलोकविषेभी सर्वपुरुषोंकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु ताब्रह्मलोकविषे जिनअधिकारीपुरुषोंकूं दैवयोगतें ताआत्मज्ञानकीप्राप्तहोवैहै ॥ तेअधिकारीपुरुषही ताहिरण्यगर्भतेंपरेवर्तमान अद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपकरिकैप्राप्तहोवैहैं ॥ जैसे याभूमिलोकविषेस्थितअधिकारीजन ताआत्मज्ञानकरिकै अद्वितीयब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे ब्रह्मलोकविषेस्थितअधिकारीजनभी ताआत्मज्ञानकरिकैही अद्वितीयब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातें याभूमिलोकविषे तथाब्रह्मलोकविषे आत्मज्ञानकरिकै मोक्षकीप्राप्ति समानहीहै ॥ और जिनअधिकारीपुरुषोंकूं ताब्रह्मलोकविषे ताआत्मज्ञानकी प्राप्तिनहींहोवैहै ॥ तेअधिकारीपुरुष ताब्रह्मलोकतैंभी पुनः यामनुष्यलोककूंप्राप्तहोवैहैं ॥ परंतु तेअधिकारीपुरुष इसमन्वंतरविषे अथवा इसकल्पविषे ताब्रह्मलोकतैं यामनुष्यलोककूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ किंतु दूसरेमन्वंतरविषे अथवा दूसरेकल्पविषे यामनुष्यलोककूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं जैसे सोदक्षिणमार्ग पुनरावृत्तिकरिकैयुक्तहै ॥ तैसे यहदेवयानमार्गभी पुनरावृत्तिकरिकैयुक्तहै ॥ यातैं यामुमुक्षु

जनोंनैंतादक्षिणमार्गकीन्यांईं यहउत्तरमार्गभी परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ हेशौनक! उपासनादिकसाधनोंकरिकैंयुक्त जेनैष्ठिकब्रह्मचारीहैं ॥ तथागृहस्थहैं तथावानप्रस्थहैं तथासंन्यासीहैं ॥ तिनसर्वअधिकारीपुरुषोंकूं ब्रह्मलोकविषे अथवा स्वर्गलोकविषे अथवाभूमिलोकविषे अथवा पातालविषे अथवा नरकविषे सोब्रह्मात्मज्ञानही मुक्तिकाकारणहै ॥ ताब्रह्मज्ञानतैंविना किसीभीलोकविषे मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ याअर्थविषे तुमनैं किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ और हेशौनक! जैसेब्रह्मज्ञानतैंविना किसीभीलोकविषे मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तैसे यहशरीर किसीभीलोकविषे सुखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ किंतु यहशरीर भूमिलोकतैंलेकैब्रह्मलोकपर्यंत सर्वलोकोंविषे दुःखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ और ताशरीरकासंबंध जैसे याभूमिलोकविषेहै ॥ तैसे ताशरीरकासंबंध ब्रह्मलोकविषेभीरहेहै ॥ यातैं सोब्रह्मलोकभी पूर्वउक्तरीतिसैं स्वर्गलोककीन्यांईं दुःखकाहीकारणहै ॥ यातैं विद्वान्पुरुषोंनैं ताब्रह्मलोककूंभी नरककीन्यांईं दुःखकाहीकारणजानणा ॥ हेशौनक! यद्यपि मनुष्य देवता पशु इत्यादिकभेदकरिकै याशरीरोंकीविलक्षणताप्रतीतहोवैहै ॥ तथापि ताशरीरजन्यदुःखरूपफल सर्वत्रसमानहीहै ॥ जैसे महाराजाकेनिवासवासतेरच्याजो कोईसप्तमहलोंवालाऊंचागृहहै ॥ तागृहकेऊपरिस्थितपुरुषकूं तथाभूमिविषेस्थितपुरुषकूं ज्वरादिकव्याधियोंजन्यदुःखरूपफल समानहीहोवैहै ॥ तैसे स्वर्गादिकलोकोंविषेस्थितदेवतावोंकूं तथाभूमिविषेस्थितमनुष्यादिकोंकूं याशरीरकेसंबंधतैं दुःखरूपफल समानहीहोवैहै ॥ तादुःखरूपफलविषे किंचित्मात्रभी न्यूनअधिकतानहींहै ॥ और हेशौनक! जैसे यालोकविषे एकसुवर्णमयशृंखलाहोवैहै ॥ और दूसरीलोहमयशृंखलाहोवैहै ॥ तिनदोनोंप्रकारकीशृंखलावोंविषे यापुरुषोंकेबंधनकीकारणता समानहीहोवैहै ॥ तैसे कोईदेवताशरीरहै कोईमनुष्यशरीरहैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेशरीरोंविषे याजीवोंकेदुःखकीकारणता समानहीहै ॥ और हेशौनक! सर्वतैंउत्तम जोहिरण्यगर्भकाशरीरहै ॥ तथा सर्वतैंनिकृष्टजोश्वानकाशरीरहै ॥ तिनदोनोंशरीरोंविषे अविद्याकीकार्यता तथापांचभौतिकपणा समानहीहै ॥ यातैं विचारकियेतैं तिनदोनोंशरीरोंका किंचित्मात्रभी भेदसिद्धहोवैनहीं ॥ और जैसे तिनदोनोंशरीरोंकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ तैसे तिनदोनोंशरीरोंकेअभिमानीजीवोंकाभी भेदसिद्धहोवैनहीं ॥ हेशौनक! जिसजिसजीवनैं जिसजिसशरीरकूं

ग्रहणकऱ्याहै ॥ तिसतिसजीवकूं सोसोशरीर सर्वतैंअधिकहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ ताआपणेशरीरतैंभिन्नदूसरेसर्वशरीर ताजीवकूं निकृष्टप्रतीतहोवैहैं ॥ यातैं अभिमानकृतउत्कृष्टताभी ब्रह्मातैंआदिलैकेश्वानपर्यंत सर्वशरीरोंविषेसमानहै ॥ हेशौनक! जिसश रीरविषे याजीवोंनैं अधिकतामानीहै सोयहशरीर कैसाहै? आधिव्याधिजन्यसर्वदुःखोंकाकारणहै ॥ तथा सर्वदादुर्गंधकरिकैयुक्त है ॥ तथा सर्वदा अशुचिरहेहै ॥ ऐसामलिनशरीरभी याजीवोंकूं जिसदैवकेप्रभावतैं दुःखकाकारणरूपकरिकै प्रतीतहोतानहीं ॥ तथा दुर्गंधअशुचिरूपकरिकै प्रतीतहोतानहीं ॥ सोजीवोंकाविचित्रदैव बुद्धिमान्पुरुषोंकूं शोच्यकरणेयोग्यहै ॥ हेशौनक! यह शरीर यद्यपि दुर्गंधादिकअनेकदोषोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथापि कर्म काम अविद्या यातीनोंकेप्रभावतैं याजीवोंकूं तेशरीरकेदुर्गंधादि कदोष प्रतीतहोतेनहीं ॥ किंतु उलटा याजीवोंकूं सोशरीर अमृतकेसमान प्रियप्रतीतहोवैहै ॥ इहां प्रारब्धकर्मकेफलकानाम क र्महै ॥ और रागकानाम कामहै ॥ और अध्यासकानाम अविद्याहै ॥ हेशौनक! जिस कर्मकामअविद्याकेबलतैं यहमलिनशरीरभी अमृतकेसमानप्रतीतहोवैहै ॥ तिसकर्मकूंभी धिक्कारहै ॥ तथा तिसकामकूंभी धिक्कारहै ॥ तथा तिसअविद्याकूंभी धिक्कारहै ॥ जिस अध्यासरूपअविद्याकरिकैमोहकूंप्राप्तहुआ यहजीव आपणेमुखविषेस्थितलालावोंकूंपानकरताहुआभी ग्लानिकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ हेशौनक! जे विष्ठा मूत्र रुधिर कफ आदिकपदार्थ वैतरणीआदिकनरकोंविषेविद्यमानहैं ॥ तेविष्ठामूत्रादिकपदार्थही यादेहविषे विद्यमानहैं ॥ नरककेपदार्थोंविषे तथायाशरीरकेपदार्थोंविषे किंचित्मात्रभीभेदनहींहै ॥ तथापि याजीवोंकूं पापादिकदोषोंकेवश तैं तेमलिनपदार्थभी सौंदर्यतारूपकरिकैप्रतीतहोवैहैं ॥ यातैं याजीवोंकेपापादिकदोषोंका बहुतआश्चर्यरूपमहिमाहै ॥ हेशौनक! इसप्रकार यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मलोकतैंआदिलैके यामनुष्यलोकपर्यंत सर्वलोकोंकूं अनर्थरूपजानिकै तिनसर्वलोकोंतैंवैराग्यकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहांश्रुति परीक्ष्यलोकान्कर्मचितान् ब्राह्मणोनिर्वेदमायात् ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष पूर्वउक्तरीतिसैं क र्मरचितसर्वलोकोंकूं अनित्यतादिकदोषोंवालाजानिकै तिनलोकोंतैंवैराग्यकूंप्राप्तहोवै ॥ १ ॥ हेशौनक! याअधिकारीपुरुषोंकूं केवल पूर्वउक्तदोषोंकाविचारकरिकै यहलोक परित्यागकरणेयोग्यनहींहैं ॥ किंतु कर्मजन्यहोणेतैं अनित्यतादोषकरिकैभी तेलो

क परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ काहेतें ? भूमि अंतरिक्ष स्वर्ग यातीनलोकोंकेअंतर्गत जितनेलोकहैं ॥ तेलोकतौ याजीवोंकूं यज्ञा
दिरूपशारीरकर्मोंकरिकैप्राप्तहोवैहैं ॥ और तिन तीनलोकोंतेंबाह्यजेब्रह्मलोकादिकहैं ॥ तेब्रह्मलोकादिकतौ याजीवोंकूं उपासनारू
पमानसकर्मकरिकैप्राप्तहोवैहैं ॥ याप्रकारकानियम किसीकालविषेभी अन्यथाहोवैनहीं ॥ यातें यहसंपूर्णलोक कर्मजन्यहैं ॥ और
यालोकविषे जोजोपदार्थ कर्मजन्यहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ अनित्यहीहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ कर्मजन्यहोणेतें अनित्यहैं ॥ तैसे
कर्मजन्यहोणेतें तेस्वर्गादिकलोकभी अनित्यहीहोवैंगे ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ अनित्यहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ आपणेवि
योगकालविषे याजीवोंकूं दुःखकीप्राप्ति अवश्यकरैहै ॥ जैसे धनादिकपदार्थ अनित्यहोणेतें आपणेवियोगकालविषे याजीवोंकूं अ
वश्यकरिकैदुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ तैसे अनित्यहोणेतें तेस्वर्गादिकलोकभी याजीवोंकूं अवश्यकरिकैदुःखकीप्राप्तिकरैंगे ॥ याकारणतें
भी याअधिकारीपुरुषोंकूं तेस्वर्गादिकलोक परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ हेशौनक ! जैसे स्वर्गादिकलोक कर्मजन्यहैं ॥ तैसे यहमोक्ष
कर्मजन्यनहींहै ॥ काहेतें ? स्वर्गादिकलोकोंकीन्यांई जोकदाचित् सोमोक्षभी कर्मजन्यहोवैगा तौ सोमोक्षभी तिनस्वर्गादिकलो
कोंकीन्यांई अनित्यहीहोवैगा ॥ और जोकदाचित् तामोक्षकूंभी अनित्यमानिये तौ मोक्षकीप्राप्तिवासते अधिकारीपुरुषोंकाप्रय
त्नही व्यर्थहोवैगा किंवा तामोक्षकूंभी जोकदाचित् कर्मजन्यमानिये तौ तामोक्षविषे स्वर्गकीअपेक्षाकरिकै विशेषतानहींहोवैगी ॥
किंतु तामोक्षकूंभी स्वर्गविशेषरूपता प्राप्तहोवैगी ॥ काहेतें ? जैसे विश्वजित्नामायज्ञकरिकै प्राप्तहोणेहारा जोस्वर्गहै ॥ तथा
ज्योतिष्टोमनामायज्ञकरिकै प्राप्तहोणेहारा जोस्वर्गहै ॥ तिनदोनोंप्रकारकेस्वर्गोंविषे यद्यपि यत्किंचित् अवांतरविशेषताहै ॥ त
थापि स्वर्गत्वरूपकरिकै तथाअनित्यत्वरूपकरिकै तिनदोनोंस्वर्गोंविषे किंचित्मात्रभी विषमतानहींहै ॥ किंतु दोनों समानही
हैं ॥ तैसे कर्मजन्यस्वर्गविषे तथाकर्मजन्यमोक्षविषे यत्किंचित् अवांतरविशेषताकेहुएभी स्वर्गत्वरूपकरिकै तथाअनित्यत्वरूप
करिकै तिनदोनोंविषे समानताहीहोवैगी ॥ किंवा स्वर्गादिकोंकीन्यांई तामोक्षकूंभी जोअनित्यमानिये तौ नसपुनरावर्तते ॥ यह
श्रुतिवचन मुक्तपुरुषोंकेपुनरावृत्तिकेअभावकूंकथनकरणेहारा व्यर्थहोवैगा ॥ तथा सर्वशास्त्रोंकेआचार्योंकी जोमोक्षकीनित्यतावि

षेप्रसिद्धिहै ॥ साप्रसिद्धिंभी व्यर्थहोवैगी ॥ याकारणतैंभी तामोक्षविषे अनित्यतासंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ नान्यःपंथाविद्यतेऽयनाय ॥ अर्थयह ॥ मोक्षकीप्राप्तिवासते आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईमार्गहैनहीं ॥ किंतु एकआत्मज्ञानही तामोक्षकेप्राप्तिकामार्गहै ॥ १ ॥ ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष अद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपजानिकै ताब्रह्मरूपहीहोवैहै ॥ २ ॥ यहदोनोंश्रुति एकआत्मज्ञानकरिकैही तामोक्षकेप्राप्तिकाकथनकरेहैं ॥ जोकदाचित् तामोक्षकूंभी स्वर्गादिकोंकीन्यांई कर्मजन्य मानिये तो तेदोनोंश्रुति व्यर्थहोवैंगी ॥ और श्रुतिकीव्यर्थता किसीभीआस्तिकवादीकूं अंगीकारहैनहीं ॥ याकारणतैंभी तामोक्षविषे कर्मजन्यतासंभवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूंयुक्तिकरिकैनिरूपणकरेहैं ॥ हेशौनक! अविद्यारूपआवर्णतैंरहित जोआनंदस्वरूपब्रह्महै ॥ ताब्रह्मकूंही वेदवेत्तापुरुष मोक्ष यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और जिसअविद्यारूपआवर्णतैंरहितहुआब्रह्म मोक्षस्वरूपहोवैहै ॥ तिसअविद्याकूं तेविद्वान्पुरुष माया अज्ञान अव्याकृत शक्ति इत्यादिकनामोंकरिकैकथनकरेहैं ॥ ऐसेअज्ञानकी निवृत्ति केवलज्ञानकरिकैहीहोवैहै ॥ काहेतें? यालोकविषे जिसवस्तुविषयकअज्ञानहोवैहै ॥ तिसवस्तुविषयकज्ञानतैंही ताअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ दूसरेकिसीकर्मादिकउपायोंकरिकै ताअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पितसर्पकाकारणरूप जो अज्ञानहै ॥ सोअज्ञान रज्जुविषयकहोवैहै ॥ ताज्जुविषयकअज्ञानकीनिवृत्ति तारज्जुविषयकज्ञानतैंहीहोवैहै ॥ दूसरेकीसीकर्मादिक उपायोंकरिकै तारज्जुविषयकअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ और तारज्जुविषयकज्ञानकरिकै जबी तारज्जुविषयकअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी ताअज्ञानकाकार्यरूपसर्प आपेही निवृत्तहोइजावैहै ॥ यहवार्ता सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ तैसे यासंसारकाकारणरूपजोअज्ञानहै ॥ सोअज्ञानभी ब्रह्मात्मविषयकहोवैहै ॥ यातैं ताब्रह्मात्मविषयकज्ञानकरिकैही ताअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ ताब्रह्मात्मज्ञानतैंविना दूसरेकर्मउपासनादिकउपायोंतैं ताअज्ञानकीनिवृत्ति संभवैनहीं ॥ और ताब्रह्मात्मज्ञानकरिकै जबी ताअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी ताअज्ञानजन्यदुःखोंकीनिवृत्ति आपेहीहोइजावैहै ॥ किंवा जेवादी तासंसारसंबंधिदुःखोंकूं अज्ञानजन्यनहींमानेहैं ॥ किंतु नैयायिकोंकेमतकीन्यांई आत्मरूपसमवायिकारणादिकोंसहित तादुःखकूं सत्यमानेहैं ॥ तिनवादियों

केमतविषे सोदुःख आत्माकीन्यांई सर्वदा विद्यमानहोवैगा ॥ यातें तादुःखकीनिवृत्तिरूपमोक्षकीप्राप्तिवासते सर्वअधिकारीजनों काप्रयत्न व्यर्थहोवैगा ॥ और सोवादी जोकदाचित् घटादिकपदार्थोंकीन्यांई तादुःखकूंसत्यमानिकैभी अनित्यमानें तौभी तादुःखकीनिवृत्तिरूपमोक्षकीप्राप्तिवासते तिनअधिकारीपुरुषोंकाप्रयत्न व्यर्थहोवैगा ॥ काहेतें? यालोकविषे जोजोभावपदार्थ अनित्य होवैहै ॥ सोसोपदार्थ किसीकालपाइकै आपेहीनाशहोइजावैहै ॥ जैसे कुशूलविषेस्थितधान्य किसीकालपाइकै आपेहीनाशहोइ जावैहैं ॥ तैसे सोअनित्यदुःखभी किसीकालपाइकै अपेहीनाशहोइजावैगा ॥ ताअनित्यदुःखकीनिवृत्तिकरणेवासते प्रयत्नकरणा व्यर्थहीहै ॥ किंवा जेनैयायिक तादुःखकूंअविद्याजन्य नहींमानेहैं ॥ किंतु आत्मजन्यमानेहैं तिननैयायिकोंकेमतविषे तादुःखका अत्यंतनाश संभवैनहीं ॥ काहेतें? तिननैयायिकोंनें तादुःखकेसमवायिकारणआत्माकूं नित्यमान्याहै ॥ यातें एकदुःखकेनाशहुएभी तानित्यआत्मातें पुनःदुःखकीउत्पत्तिहोवैगी ॥ कारणकेविद्यमानहुए कार्यकेउत्पत्तिकूं कोईभी निवारणकरिसकैनहीं ॥ किंवा तादुःखकाकारणरूप जोयहद्वैतप्रपंचहै ॥ सोद्वैतप्रपंच जोकदाचित् सत्यहोवै तौ साक्षात्ईश्वरभी तादुःखकेनिवृत्तकरणेविषे समर्थनहींहोवैगा ॥ काहेतें? सोईश्वर जोकदाचित् सत्यवस्तुकीभीनिवृत्तिकरताहोवै तौ तुमवादियोंकेमतविषे सत्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जोयहजगत्है ॥ तासत्यजगत्कासंहारकरिकै सोईश्वर पुनःताजगत्कीउत्पत्तिहीनहींकरैगा ॥ सो ऐसादेखणेविषे आवतानहीं ॥ यातें तासत्यद्वैतविषे दुःखकीकारणतासंभवैनहीं ॥ किंतु आत्माकेअज्ञानतैंही तादुःखकी उत्पत्तिहोवैहै ॥ जबीआत्मज्ञानकरिकै ताअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै॥ तबी सोदुःख पुनः कदाचित्भी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यहउपनिषदोंकामतही युक्तिमानहै ॥ तहां दृष्टांत॥ जैसे रज्जुकेअज्ञानकरिकै उत्पन्नभयाजो सर्पादिदर्शनजन्य भयकंपादिरूपदुःखहै ॥ सोदुःख तारज्जुकेअज्ञानकेनिवृत्तहुए पुनः उत्पन्नहोवैनहीं ॥ तैसे आत्माकेअज्ञानतैंउत्पन्नभयाजो यहसंसारकादुःखहै ॥ सोदुःख ताआत्माकेअज्ञानकेनिवृत्तहुएपुनःउत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया॥ अनर्थकीनिवृत्तिपूर्वक ब्रह्मानंदकीप्राप्तिरूप जोमोक्षहै ॥ सोमोक्ष केवलआत्मज्ञानकरिकैहीहोवैहै ॥ कर्मउपासनाकरिकै तामोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ नास्त्यकृतःकृतेन ॥ अर्थयह ॥ कार्यभावतैंरहितजो

नित्यमोक्षहै ॥ सोमोक्ष कर्मउपासनाकरिकै प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु एकआत्मज्ञानकरिकैही सोमोक्ष प्राप्तहोवैहै ॥ अब ताब्रह्मात्म ज्ञानकेप्राप्तिकाप्रकार वर्णनकरेहैं ॥ हेशौनक! ब्रह्मरूपआत्माकाज्ञान याअधिकारीपुरुषोंकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंहीहोवैहै ॥ काहेतें? सर्वअर्थकूंप्रकाशकरणेहारीश्रुतिभगवतीही साक्षात् याअर्थकूंकथनकरेहै ॥ तहांश्रुति ॥ तद्विज्ञानार्थंसगुरुमेवाभिगच्छे त्समित्पाणिःश्रोत्रियंब्रह्मनिष्ठं ॥ अर्थयह ॥ विवेकादिकसाधनचतुष्टयसंपन्न यहअधिकारीपुरुष समिदादिकपदार्थोंकूंहस्तविषे ग्रहणकरिकै ताब्रह्मात्मज्ञानकीप्राप्तिवासते श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजावै ॥ १ ॥ इहां जोगुरु शास्त्रउक्तअनेकप्रकारकीयुक्तियों करिकै शिष्यकेसंशयकीनिवृत्तिकरणेविषेसमर्थहोवै ॥ तागुरुकानाम श्रोत्रियहै ॥ और जिसगुरुकी ब्रह्मविषेनिष्ठाहोवै ॥ तागुरु कानाम ब्रह्मनिष्ठहै ॥ ऐसेश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुके विधिवत्शरणकूंप्राप्तभयाजो श्रद्धावान्शिष्यहै॥ ताशिष्यकेप्रति सोश्रीगुरु स र्वदुःखोंकेनाशकरणेहारी ब्रह्मविद्याकाउदेशकरै ॥ जिसब्रह्मविद्याकरिकै सोब्रह्मचर्यसत्यादिकसाधनसंपन्न अधिकारीपुरुष ताअ क्षरब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपकरिकैनिश्चयकरै ॥ अब पूर्वसंक्षेपकरिकैकथनकरीहुई ॥ परविद्याका विस्तारतैंनिरूपणकरैहैं ॥ हे शौनक! सोविरक्तमुमुक्षुजन ताश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेमुखतैं जिसब्रह्मकूं सत्यरूपकरिकैजानैहै ॥ तथा ताब्रह्मतैंभिन्न सर्वजगत्कूं असत्यरूपकरिकैजानैहै ॥ तासत्यब्रह्मतैंही यहसंपूर्णविश्व उत्पन्नहोवैहै ॥ तथा तासत्यब्रह्मविषेही यहसर्वजगत् स्थितहोवैहै ॥ तथा तासत्यब्रह्मविषेही यहसर्वजगत् लयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब ताजगत्कीउत्पत्तिविषेदृष्टांतकहेतें ॥ हेशौनक! जैसे महान्प्र ज्वलितअग्नितें प्रकाशतारूपकरिकै ताअग्निकेसमानरूपवालेविस्फुलिंग उत्पन्नहोवैहैं॥ तथा ताअग्नितैंमलिनतारूपकरिकैविरुद्ध धर्मवालेधूम उत्पन्नहोवैहैं॥ तैसे ताअक्षरब्रह्मतें समानरूपवालेचेतनपदार्थ तथाविरुद्धरूपवालेजडपदार्थ उत्पन्नहोवैहैं ॥ हेशौ नक! जिसपरब्रह्मतैं यहजडचेतनरूपजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ सोपरब्रह्मकैसाहै? स्वयंप्रकाशरूपकरिकै यासर्वजगत्तैंविलक्षणहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरब्रह्मकूं दिव्य यानामकरिकैकथनकरेहै ॥ और सोपरब्रह्म आकाशकीन्यांई सर्वत्रव्यापकहै ॥ या कारणतैं श्रुतिभगवती तापरब्रह्मकूं अमूर्त यानामकरिकैकथनकरेहै ॥ और सोपरब्रह्म सर्वदेहादिकउपाधियोंविषे बाह्यअंतर

परिपूर्णहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरब्रह्मकूं पुरुष यानामकरिकैंकथनकरेहै ॥ और सोपरब्रह्म यास्थूलशरीरतैंरहितहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरब्रह्मकूं अज यानामकरिकैंकथनकरेहै ॥ और सोपरब्रह्म सूक्ष्मशरीरतैंभीरहितहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरब्रह्मकूं अप्राण अमनाः यानामकरिकैंकथनकरेहै ॥ और सोपरब्रह्म मायारूपकारणशरीरतैंभीरहितहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरब्रह्मकूं शुभ्र यानामकरिकैंकथनकरेहै ॥ और आकाशादिकजगत्रूपकार्यकीअपेक्षाकरिकै सामाया चिरकालपर्यंतरहेहै ॥ याकारणतैं तामायाकूं अक्षरकहेहैं ॥ और आपणेकार्यरूपजगत्कीअपेक्षाकरिकै साकारणरूपमाया परभीहै ॥ ऐसे पररूपअक्षरमायातैंभी सोपरब्रह्मपरहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरब्रह्मकूं अक्षरात्परतःपरः यानामकरिकैंकथनकरेहै ॥ इतनेकरिकै तापरमात्मादेवकास्वरूप वर्णनकऱ्या ॥ अब तापरमात्मादेवकेअद्वितीयरूपताकीसिद्धिकरणेवासते ॥ तापरमात्मादेवतैं यासर्वजगत्केउत्पत्तिका कथनकरेहैं ॥ हेशौनक! इसीमायाउपहितपरमात्मादेवतैं प्राण तथा मन उत्पन्नहोवैहै ॥ और तिसी परमात्मादेवतैं श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रिय उत्पन्नहोवैहैं ॥ और तिसीपरमात्मादेवतैं आकाश वायु अग्नि जल पृथिवी येपंचभूत उत्पन्नहोवैहैं ॥ इतनेकरिकै सूक्ष्मसप्तदशतत्त्वरूपहिरण्यगर्भकीउत्पत्ति कथनकरी ॥ अब स्थूलविराट्कीउत्पत्ति कथनकरेहैं ॥ हेशौनक! तिसपरमात्मादेवका जोस्थूलविराट्स्वरूपहै ॥ ताविराट्स्वरूपकूं वेदवेत्तापुरुष याप्रकार वर्णनकरेहैं ॥ यहस्वर्गलोक जिसविराट्भगवान्का शिररूपहै ॥ और येसूर्यचंद्रमा जिसविराट्भगवान्के दोनोंनेत्ररूपहैं ॥ और यहपूर्वादिकदशोंदिशा जिसविराट्भगवान्के श्रोत्ररूपहैं ॥ और यहऋगादिकचारिवेद जिसविराट्भगवान्का वाक्इंद्रियरूपहैं ॥ और यहबाह्यवायु जिसविराट्भगवान्का प्राणरूपहै ॥ और यहसंपूर्णजगत् जिसविराट्भगवान्का हृदयरूपहै ॥ और यहसंपूर्णपृथिवी जिसविराट्भगवान्का पादरूपहै ॥ याप्रकारकेशरीरवाला तथासर्वव्याष्टिभूतोंकाआत्मरूप जोपरमेश्वरकास्वरूपहै ॥ तास्वरूपकूं वेदवेत्तापुरुष विराट् यानामकरिकैंकथनकरेहैं ॥ अब याविराट्भगवान्तैं लोकोंकेप्रसिद्धिकरणेहारेपंचअग्नियोंकीउत्पत्ति कथनकरेहैं ॥ हेशौनक! ताविराट्स्वरूपतैं यहप्रसिद्धअग्नि तथाअधिदैवरूपस्वर्गलोकरूपअग्नि उ

त्पन्नहोताभया ॥ कैसाहैसोअग्नि ? आहवनीयगार्हपत्यादिरूपकरिकै तथास्वर्गादिफलरूपकरिकै अग्निहोत्रादिकसर्वकर्मोंकेप्रवृत्ति काकारणहै ॥ और ताअग्निके आदित्यरूपसमिधतैंआदिलैके ज्वाला धूम विस्फुलिंग अंगार इत्यादिकसर्वपदार्थ उत्पन्नहोतेभये ॥ तिनस्वर्गादिकपंचअग्नियोंके समिदादिकपदार्थ याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं तेसर्वजानिलेणे ॥ और तास्वर्गरूपअग्नितैंअनंतर चंद्रनामा सोम उत्पन्नहोताभया ॥ कैसाहैसोसोम ? सूर्यभगवान्‌तैं उत्पन्नहुई तथा कलारूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तहुई जेअग्निहोत्रकीआहुतियांहैं ॥ तिनआहुतियोंकरिकै वृद्धिकूंप्राप्तहुआहै शरीरजिसका ॥ याकारणतैंही सोसोमरूपचंद्र अग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरणेहारेकर्मीपुरुषोंकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ ऐसेद्रवीभावकूंप्राप्तहुएसोमतैं पर्जन्यनामा दूसराअग्नि उत्पन्नहोताभया ॥ तामेघरूपपर्जन्यतैं वृष्टिद्वारा पृथिवीरूपतीसरेअग्नितैं व्रीहियवादिकसर्वओषधि उत्पन्नहोतेभये ॥ और पुरुषरूपचतुर्थअग्निविषे अन्नरूपकरिकैप्राप्तहुएजे तेव्रीहियवादिकओषधिहैं ॥ तिनओषधियोंतैं तापुरुषविषे वीर्यरूपरेत उत्पन्नहोताभया ॥ और सोवीर्यरूपरेत योषितरूपपंचमअग्निविषेप्राप्तहोइकै गर्भरूपकरिकैप्रादुर्भावहोवैहै ॥ जिसगर्भरूपकूंप्राप्तहुएवीर्यतैं पुत्रादिरूपअनेकप्रकारकीप्रजा उत्पन्नहोवैहै ॥ जिसपुत्रादिरूपप्रजाकरिकै लौकिकवैदिकसर्वव्यवहारोंकीसिद्धिहोवैहै ॥ हेशौनक ! जिसपरमात्मादेवतैं सोपूर्वउक्तविराट् उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसीपरमात्मादेवतैं श्वासप्रश्वासोंकीन्यांई विनाहीप्रयत्नतैं यहऋगादिकवेद उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ याकारणतैंही वेदवेत्तापुरुष तिनऋगादिकवेदोंकूं अपरब्रह्म यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और तिसीपरमात्मादेवतैं दर्शपौर्णमासादिकयज्ञ उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ तथा ज्योतिष्टोमादिकक्रतु उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ तथा तिसीपरमात्मादेवतैं तिनयज्ञादिककर्मोंकेसिद्धकरणेहारे वसंतादिकऋतु उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ तथा गौसुवर्णादिरूपदक्षिणा उत्पन्नहोतीभईहै ॥ तथा कर्मकर्तापुरुषकेनानाप्रकारकेनियमरूपदीक्षा उत्पन्नहोतीभईहैं ॥ तथा संवत्सरादिरूपकाल उत्पन्नहोताभयाहै ॥ तथा स्वर्गादिकफलकेप्राप्तिकीकामनावाला अधिकारीयजमान उत्पन्नहोताभयाहै ॥ तथा लताविशेषकारसरूप सोमद्रव्य उत्पन्नहोताभयाहै ॥ तथा स्वर्गलोककेशरीरकाआरंभकरणेहारा सोमरूपफल उत्पन्नहोताभयाहै ॥ तथा स्वर्गादिकलोकसहित सूर्यम

गवान् उत्पन्नहोताभयाहै ॥ इसतैंआदिलैके सर्वस्थूलसूक्ष्मपदार्थ तापरमात्मादेवतैंही उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ हेशौनक ! तिसपरमा त्मादेवतैंही वसुआदिकदेवता उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ तथा साध्यनामादेवता उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ तथा मनुष्य पशु पक्षी उत्पन्नहोतेभ येहैं ॥ तथा प्राण अपान समान व्यान उदान येपंचप्रकारकेप्राण उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ तथा व्रीहियवादिकअन्न उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ तथा कृच्छ्रचांद्रायणादिकतप उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ तथा आस्तिकतारूपश्रद्धा उत्पन्नहोतीभईहै ॥ तथा अवश्यभावीकर्मकाफलरूप सत्य उत्पन्नहोताभयाहै ॥ तथा यथार्थभाषणरूपसत्य उत्पन्नहोताभयाहै ॥ तथा उपस्थइंद्रियकासंयमरूपब्रह्मचर्य उत्पन्नहोताभ याहै ॥ तथा वेदविहितकर्मरूपविधि उत्पन्नहोताभयाहै ॥ और तिसीपरमात्मादेवतैं सप्तप्राण तथासप्तअर्चिष् तथासप्तसमिध त थासप्तहोम तथासप्तलोक यहसंपूर्ण उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ तहां मस्तकविषेस्थितजे दोश्रोत्र दोचक्षु दोघ्राण एकवाक् यहसप्तइंद्रि यहैं तिनोंकानाम प्राणहै ॥ और तिनप्राणोंतैंउत्पन्नभईजे सप्तप्रकारकीवृत्तियांहैं ॥ तिनवृत्तियोंकानाम अर्चिष्है ॥ और तिनस प्तप्राणोंकेजेविषयहैं ॥ तिनविषयोंकानाम समिधहै ॥ और तिनविषयोंका तिनप्राणोंविषेलयचिंतनरूपजेउपासनाहैं ॥ तिनउपा सनावोंकानाम होमहै ॥ और तिनप्राणोंकेरहणेकास्थानरूपजेगोलकहैं ॥ तिनगोलकोंकानामलोकहै ॥ येसंपूर्ण सप्तसप्तपदार्थ तापरमात्मादेवतैंही उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ और तिसपरमात्मादेवतैंही येसप्तसमुद्र उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ तथा हिमाचलादिकपर्वत उ त्पन्नहोतेभयेहैं ॥ तथा श्रीगंगादिकनदियांउत्पन्नहोतीभईहैं ॥ तथा वृक्षादिकस्थावरशरीर उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ तथा मनुष्यादिक जंगमशरीर उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ इसतैंआदिलैके भूतभविष्यत्वर्तमानकालविषेस्थित जितनाजगत्है ॥ सोसर्वजगत् तापरमा त्मादेवतैंही उत्पन्नहोताभयाहै ॥ इतनेकरिकै तापरमात्मादेवतैंजगत्कीउत्पत्तिरूपअध्यारोपकावर्णनकऱ्या ॥ अब ताजगत्काअ पवादकरिकै तापरमात्मादेवविषे अद्वितीयशुद्धरूपताकावर्णनकरेहैं ॥ हेशौनक ! जोपरमात्मादेव यासर्वजगत्कूं उत्पन्नकरताभ याहै ॥ तिसपरमात्मादेवतैं यहजगत् भिन्ननहींहै ॥ किंतु यहसर्वजगत् तापरमात्मादेवरूपहीहै ॥ कैसाहैयहजगत्? तप कर्म वे द यातीनस्वरूपहै ॥ इहां उपासनाकेफलकानाम तपहै ॥ और यागादिककर्मोंके फलकानाम कर्महै ॥ और तिनदोनोंकेप्रकाश

करणेहारे अपौरुषेयवचनोंकानाम वेदहै ॥ सोयह तपकर्मादिरूपसर्वजगत् अमृतब्रह्मस्वरूपहीहै ॥ तापरब्रह्मतैंभिन्न किंचित् मात्रभीहैनहीं ॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेव एकअद्वितीयस्वरूपहै ॥ हेशौनक! इसप्रकार सर्वत्रव्यापक तथासर्वकाअभावरूप तथाउत्पत्तिनाशतैंरहित तथासर्वभूतप्राणियोंकेहृदयकमलविषेनिवासकरणेहारा जोपरमात्मादेवहै ॥ तापरमात्मादेवकूं जोअधिकारीपुरुष आपणाआत्मरूपकरिकैजानैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष मैंअज्ञानीहूं याप्रकारकीअविद्याग्रंथितैंरहितहोवैहै ॥ यातैंयाअधिकारीपुरुषोंनैं तापरमात्मादेवकूं अवश्यकरिकैजानणा ॥ अब पूर्वउक्तउपदेशकरिकै जिसअधिकारीपुरुषकूं ताअक्षरब्रह्मकाबोध नहींहोवै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकेप्रति दूसरीरीतिसैं साधनोंसहित ताअक्षरब्रह्मकेबोधकावर्णनकरैहैं ॥ हेशौनक! जोअक्षरब्रह्म स्वप्रकाशतारूपकरिकै सर्वदा आविर्भूतहै ॥ तथा बुद्धिरूपगुहाविषेस्थितहोणेतैं जोअक्षरब्रह्म अत्यंतसमीपहै ॥ तथा जोअक्षरब्रह्म सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ तथा जोअक्षरब्रह्म याअधिकारीशरीरविषेही प्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे रथकेचक्रविषेस्थितअरोंका नाभिअधिष्ठानहोवैहै ॥ तैसे जोअक्षरब्रह्म प्राणोंका तथाइंद्रियोंका अधिष्ठानरूपहै ॥ तथा जोअक्षरब्रह्म आपणीसमीपतामात्रकरिकै तिनप्राणइंद्रियोंकेसर्वव्यापारोंकाकारणरूपहै ॥ तथा सनातनहै ॥ तथा बुद्धिआदिकउपाधियोंतैंपरहै ॥ ऐसाअक्षरब्रह्मही याअधिकारीपुरुषोंनैं आपणाआत्मरूपकरिकैजानणेयोग्यहै ॥ पुनः कैसाहैसोअक्षरब्रह्म! मायाकेसंबंधतैं स्थूलसूक्ष्मरूपताकूंप्राप्तहुआभी वास्तवतैं तास्थूलसूक्ष्मभावतैंरहितहै ॥ तथा जोअक्षरब्रह्म विवेकीपुरुषोंकरिकै प्रार्थनाकरणेयोग्यहै ॥ तथा जोअक्षरब्रह्म सर्वदेहधारीजीवोंकूं अत्यंतप्रियहै ॥ और जोअक्षरब्रह्म आपणेस्वयंज्योतिप्रकाशकरिकै प्रकाशमानहै ॥ और जोअक्षरब्रह्म दुर्लक्ष्यपदार्थोंतैंभी अत्यंतदुर्लक्ष्यहै ॥ और जिसअक्षरब्रह्मविषे इंद्रादिकलोकपालोंसहित यहसर्वलोकस्थितहैं ॥ हेशौनक! पूर्वजो तुमनैंपूछाथा किसवस्तुकेज्ञानतैं यासर्वजगत्काज्ञानहोवैहै? सोवस्तु यहअक्षरब्रह्महीहै ॥ याअक्षरब्रह्मकेज्ञानतैंही सर्वजगत्काज्ञानहोवैहै ॥ इसीअक्षरब्रह्मकूं वेदवेत्तापुरुष प्राणइंद्रियरूपकरिकैकथनकरैहैं ॥ तथा इसीअक्षरब्रह्मकूंस्वर्गरूप करिकै तथा मोक्षरूपकरिकै कथनकरैहैं ॥ अब ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते ध्यानरूपउपायका वर्णनकरैहैं ॥ हेशौनक! जैसे

यालोकविषे कोईशूरवीरपुरुष आपणेधनुषतें बाणकूंचलाइकें किसीलक्ष्यवस्तुकूं वेधनकरैहै ॥ तैसे जोअधिकारीपुरुषधैर्यकरिकै युक्तहै ॥ तथा आत्माकेविवेककरिकैयुक्तहै ॥ तथा कामक्रोधादिकशत्रुवोंकूं सर्वदा भयकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ ऐसेअधिकारीपुरुषनें पूर्वउक्तअक्षरब्रह्मकूं लक्ष्यरूपकरिकै वेधनकरणा ॥ हेशौनक! महावाक्यरूपवेदांतहैउदरविषेजिसके ऐसाजोओंकाररूपप्रणवमंत्रहै ॥ सोप्रणवमंत्रतौ धनुष्यरूपहै ॥ और ध्यानकर्तापुरुषका जोशोधितकूटस्थआत्माहै ॥ सोआत्मा बाणरूपहै ॥ और मैं ब्रह्मरूपहूं याप्रकार जोमहावाक्यकेअर्थकाचिंतनहै ॥ सोचिंतन ताप्रणवरूपधनुषका आकर्षणरूपहै ॥ और शुद्धब्रह्मलक्ष्यस्वरूपहै ॥ जिसशुद्धब्रह्मरूपलक्ष्यविषेप्राप्तहुआ यहकूटस्थआत्मरूपबाण तालक्ष्यस्वरूपहीहोवैहै ॥ हेशौनक! जिसअक्षरब्रह्मविषे भूमिलोक अंतरिक्षलोक स्वर्गलोक येतीनोंलोकस्थितहैं ॥ तथा जिसअक्षरब्रह्मविषे यहआकाशादिकपंचभूतस्थितहैं ॥ तथा जिसअक्षरब्रह्मविषे मन प्राण इंद्रिय आदिकभौतिकपदार्थ स्थितहैं ॥ तथा जिसअक्षरब्रह्मविषे यहऋगादिकवेद स्थितहैं ॥ जिन वेदोंकूं विद्वान्पुरुष शब्दब्रह्म यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ ऐसासर्वजगत्काअधिष्ठानरूपअक्षरब्रह्महीं याअधिकारीपुरुषोंकूंजानणेयोग्यहै ॥ तिसअधिष्ठानब्रह्मतैंभिन्न अनात्मपदार्थ याअधिकारीपुरुषोंकूंजानणेयोग्यनहींहै ॥ हेशौनक! जैसे याअधिकारीपुरुषकूं ताअक्षरब्रह्मतैंभिन्नअनात्मपदार्थ परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ तैसे ताअक्षरब्रह्मतैंभिन्न अनात्मपदार्थोंकूंप्रतिपादनकरणेहारेवचनभी परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ काहेतें ? तेअनात्मपदार्थोंकूंप्रतिपादनकरणेहारेवचन केवल वाक् तालु कंठ इत्यादिकस्थानोंकूंपरिश्रमकीहीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ तिसपरिश्रमतैंभिन्न दूसराकोईफल तिनवचनोंकाहैनहीं ॥ यातें जिसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तिसअधिकारीपुरुषनें एकवेदांतवचनोंतैंविना दूसरेअनात्मवस्तुकेप्रतिपादकवचनोंकूं कदाचित्भीनहींउच्चारणकरणा ॥ तथा तिनअनात्मवस्तुकेप्रतिपादकवचनोंका श्रवणभीनहींकरणा ॥ काहेतें ? एकवेदांतवचनोंकूंछोडिकै दूसरेजितनेवचनेहैं ॥ तेसर्ववचन अनात्मरूपद्वैतकेहीप्रतिपादकहैं ॥ यातें तेवचन याअधिकारीपुरुषकूं मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ किंतु तिनअनात्मवस्तुकेप्रतिपादकवचनोंविषे कोईवचनतौ यापुरुषकूं धर्मकीप्राप्तिकरै हैं ॥ और कोईवचनतौ धनादिरूपअर्थकीप्राप्ति

करैहैं ॥ और कोईवचनतौ विषयसुखरूपकामकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और कोईकवचनतौ केवलदुःखकीहीप्राप्तिकरैहैं ॥ याचारोंतैंभि न्नदूसराकोईफल तिनवचनोंकाहोवैनहीं ॥ हेशौनक ! धर्म अर्थ काम येतीनों यद्यपि विचारहीनपुरुषोंकूं सुखरूपहोइकैप्रतीतहो वैहैं ॥ तथापि विचारकरिकैदेखियेतौ तेधर्मअर्थकाम आपणीअप्राप्तिकालविषे तथाआपणीप्राप्तिकालविषे तथाआपणेवियोगकाल विषे याजीवोंकूं केवल दुःखकीहीप्राप्तिकरैहैं ॥ यातें तिनधर्मादिकोंकूंप्रतिपादनकरणेहारेवचनभी केवल दुःखकेहीकारणहैं ॥ या कारणतें विद्वान्पुरुष तिनदुःखकीप्राप्तिकरणेहारेवचनोंकूं कदाचित्भी उच्चारणकरतेनहीं ॥ और तिनविद्वान्पुरुषोंकेसमीप जो कोईदूसरेपुरुषभी तिनअनात्मवचनोंकाउच्चारणकरैहैं ॥ तिनपुरुषोंकूंभी तेविद्वान्पुरुष तिनअनात्मवचनोंकेउच्चारणकरणेतें निवारणकरैहैं ॥ यहश्रेष्ठपुरुषोंकाआचार प्रसिद्धहै ॥ तिनश्रेष्ठपुरुषोंकेआचाररूपप्रमाणतैंभी तिनअनात्मवचनोंकेउच्चारणका निषेधहीप्राप्तहोवैहै ॥ हेशौनक! केवल तिनश्रेष्ठपुरुषोंकेआचाररूपप्रमाणतें तिनअनात्मवचनोंकानिषेधप्राप्तनहींहै ॥ किं तु साक्षात् श्रुतिभगवतीही तिनअनात्मवचनोंकानिषेधकरै है ॥ तहांश्रुति ॥ तमेवैकंजानथआत्मानमन्यावाचोविमुंचथ ॥ अ र्थयह ॥ हेअधिकारीपुरुषो ! वेदांतवचनोंकरिकै तिसएकअद्वितीयआत्माकूंहीजानौ ॥ तथा तिनवेदांतवचनोंतैंभिन्न अनात्मवस्तु कूंप्रतिपादनकरणेहारेवचनोंका परित्यागकरौ ॥ १ ॥ कैसेहैंतेअनात्मवचन? मृतकपुरुषोंकेवृत्तांतकथनकीन्याईं निष्फलहैं ॥ यह वार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ काकस्यकतिवादंतामेषस्यांडंकियत्पलं ॥ गर्दभेकतिरोमाणीत्येषामूर्ख विचारणा ॥ अर्थयह काककेकितनेदंतहोवैहैं ॥ और मेषकाअंड कितनेपलपरिमाणहोवैहै ॥ और गर्दभविषे कितनेरोमहोवैं हैं॥याप्रकारकाविचार मूर्खपुरुषहीकरैहैं ॥१॥ सोतिनमूर्खपुरुषोंकाविचार जैसे निष्फलहोवैहै॥ तैसे अनात्मवचनोंकाउच्चारणकरणा भी निष्फलहीहोवैहै ॥ अब पूर्वकथनकरयेहुएअर्थकूं पुनःस्पष्टकरिकैकथनकरैहैं ॥ हेशौनक! धनादिरूपअर्थकीप्राप्तिकरणेहारेजे वचनहैं ॥ तथा विषयभोगरूपकामकीप्राप्तिकरणेहारेजेवचनहैं॥ तेदोनोंप्रकारकेवचन याजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरैहैं ॥ काहेतें? सोअर्थ तथाकाम दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एक अर्थकामतौ शास्त्रतेंअविरुद्धहोवैहै॥ और दूसरा अर्थकाम शास्त्रतैंविरुद्धहोवैहै॥ तहां

शास्त्रतैंअविरुद्धजेअर्थकामहैं ॥ तेअर्थकामतौ आपणीअप्राप्तिकालविषे इच्छाकीउत्पत्तिद्वारा याजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और आपणीप्राप्तिकालविषे रक्षाकरणेकीचिंताद्वारा याजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरै हैं ॥ और आपणेनाशकालविषे वियोगद्वारा याजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ इसप्रकार तीनकालोंविषे तेअर्थकाम याजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरैहैं ॥ यातें तिनअर्थकामोंकूंप्रतिपादन करणेहारेवचनभी याजीवोंकेदुःखकाहीकारणहैं ॥ और दूसरेजे शास्त्रतैंविरुद्धअर्थकामहैं ॥ तेअर्थकामभी पूर्वकीन्यांई आपणीअप्राप्तिकालविषे तथाआपणीप्राप्तिकालविषे तथाआपणेनाशकालविषे याजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरैहैं ॥ हेशौनक! इसप्रकार शास्त्रविहितअर्थकामविषे तथाशास्त्रनिषिद्धअर्थकामविषे दुःखकीकारणताकेसमानहुएभी तिनदोनोंविषेइतनीविशेषताभीहै ॥ शास्त्रविहितअर्थकामतौ इसलोकविषे निंदाद्वारा दुःखकीप्राप्तिकरैंनहीं ॥ और परलोकविषे नरककीप्राप्तिद्वारा दुःखकीप्राप्तिकरैंनहीं ॥ और शास्त्रकरिकैनिषिद्धअर्थकामतौ याजीवोंकूं इसलोकविषेतौ निंदादिकोंकरिकै दुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और परलोकविषे नरकादिकोंकरिकै दुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ यातें तिनशास्त्रविरुद्धअर्थकामकूंप्रतिपादनकरणेहारेवचनभी याजीवोंकूं दुःखकेहीकारणहैं ॥ ऐसेदुःखकेदेणेहारेवचनोंकूं कौनबुद्धिमानपुरुष उच्चारणकरैगा? किंतु नहींउच्चारणकरैगा ॥ हेशौनक! जैसे अर्थकामकूं प्रतिपादनकरणेहारेवचन याजीवोंके दुःखकेहीकारणहैं ॥ तैसे धर्मकेप्रतिपादकवचनभी यापुरुषोंके दुःखकेहीकारणहैं ॥ काहेतें? अग्निहोत्रादिककर्मोंतैंउत्पन्नभयाजोधर्महै ॥ ताधर्मकरिकै याजीवोंकूं जिनस्वर्गादिकसुखोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तेस्वर्गादिकसुख अनित्यहैं तथासातिशयतादोषवालेहैं ॥ यातें आपणेवियोगकालविषे तथाआपणेवर्तमानकालविषे तेस्वर्गादिकसुख याजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरैहैं ॥ यातें ताअनित्यफलवालेधर्मकूंप्रतिपादनकरणेहारेवचनभी याजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरैहैं ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ धर्मकीप्राप्तिकरणेहारे तथाअर्थकीप्राप्तिकरणेहारे तथाकामकीप्राप्तिकरणेहारे जितनेवचनहैं ॥ तेसर्ववचन पूर्वउक्तरीतिसैं याजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ यातें मुमुक्षुजनोंनैं तिनअनात्मवचनोंकाउच्चारण कदाचित्‌भीनहींकरणा ॥ किंतु जिनवेदांतवचनोंकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिनवेदांतवचनोंकाही याअधिकारीपुरुषनैं सर्वदा अभ्या

सकरणा ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक॥आसुप्तेरामृतेःकालं नयेद्वेदांतचिंतया ॥ दद्यान्नावसरंकिंचित् कामादीनांमनागपि ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष प्रातःकालतैंलैके सुषुप्तिपर्यंत तथाविद्याप्राप्तिकालतैंलैके मरणपर्यंत वेदांतशास्त्रकेचिंतनकरिकैही कालकूंव्यतीतकरै ॥ तावेदांतविचारकरिकै कामादिकविकारोंकूं किंचित्कालपर्यंतभीचित्तविषे अवसरनहींदेवै ॥ १ ॥ हेशौनक! जैसे यालोकविषे सेतुरूपमार्गकरिकैही नदीआदिकोंकेपारकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे आत्मज्ञानरूपसेतुकरिकैही यासंसारसमुद्रके मोक्षरूपपरपारकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं यहआनंदस्वरूपआत्मा मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिवासते सेतुकीन्यांई स्थितहै ॥ तिसआत्माकेस्वरूपभूतआनंदकूंग्रहणकरिकैही यहविद्वान्‌पुरुष सर्वभयतैंरहितहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ आनंदंब्रह्मणोविद्वान्नबिभेतिकुतश्चनेति ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष अद्वितीयब्रह्मकेस्वरूपभूतआनंदकूंजानिकै किसीतैंभी भयकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ १ ॥ हेशौनक! यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वप्राणियोंकेहृदयाकाशविषेविराजमानहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं दहराकाश यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और जैसे रथचक्रकेनाभिविषे अरा स्थितहोवैहैं ॥ तैसे ताहृदयकमलविषे हितानामा शतसहस्रनाडियां स्थितहैं ॥ ऐसेहृदयकमलकेअंतर सोआनंदस्वरूपआत्मा सर्वदा विचरैहै ॥ कैसाहैसोआत्मादेव? वास्तवतैं जन्मतैंरहितहुआभी शरीरादिकउपाधियोंकेजन्मतैं जन्मवालेकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ जैसे घटरूपउपाधिकेजन्मतैं आकाश जायमानहुआप्रतीतहोवैहै ॥ हेशौनक! याप्रकार आत्माकेउपदेशकरिकैभी जोअधिकारीपुरुष किसीपापकर्मरूपप्रतिबंधकेवशतैं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार ताआत्माकेजानणेविषेसमर्थनहींहोवैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष ताआनंदस्वरूपआत्माकूं प्रणवमंत्रकरिकैचिंतनकरै ॥ हेशौनक! इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष ताआनंदस्वरूपआत्माकूं प्रणवमंत्रकरिकैचिंतनकरैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष ताध्यानरूपदीपककेबलतैं प्रतिबंधकपापरूपअंधकारतैं रहितहोइकै ताब्रह्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताब्रह्मज्ञानकरिकै सोविद्वान्‌पुरुष याअविद्यारूपसमुद्रके मोक्षरूपपरपारकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशौनक! जैसे ताआत्माकेध्यानकरिकैप्रतिबंधकपापकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तैसे ब्रह्मवेत्तागुरुकेआशीर्वादकरिकै तथापुनःपुनःउपदेशकरिकैभी तिनपापकर्मरूपप्रतिबं

घ्नोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ याकारणतैंही महात्मादयालुगुरु आपणेशिष्योंकेप्रति हेशिष्यो! तुमारेकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिविषे सर्व विघ्नोंकीनिवृत्तिहोवै याप्रकारकाआशीर्वाददेके वारंवार आत्माकाउपदेशकरेहैं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं आत्मज्ञानकीप्राप्ति वासते ब्रह्मवेत्तागुरुकीप्रसन्नता अवश्यकरिकैसंपादनकरणी ॥ अब तापरमात्मादेवकेस्वरूपकावर्णनकरेहैं ॥ हेशौनक! जोपर मात्मादेव यासर्वजगतकूं सामान्यरूपकरिकै तथाविशेषरूपकरिकै जानेहै ॥ और जिसपरमात्मादेवकी यहजगत्कीउत्पत्तिस्थि तिलयरूपविभूति सर्वलोकविषेप्रसिद्धहै ॥ सोपरमात्मादेव याब्रह्मपुरविषेस्थितदिव्यव्योमविषेस्थितहै ॥ हेशौनक! जैसे उत्पन्न हुआघट आकाशकरिकैपूर्णहोवैहै ॥ तैसे उत्पन्नहुआयहशरीर ब्रह्मकरिकैपूर्णहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याशरीरकूं ब्र ह्मपुर यानामकरिकैकथनकरेहै ॥ ताब्रह्मपुरविषेस्थित जोदिव्यव्योमहै ॥ सोदिव्यव्योम स्वयंप्रकाशआत्मरूपही है ॥ तिसीदि व्यव्योमकूं श्रुतिविषे दहराकाश यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ऐसेआपणेस्वरूपविषेही सोपरमात्मादेवस्थितहै ॥ तहांश्रुति ॥ **सभूमाकुत्रप्रतिष्ठितः स्वेमहिम्नि** ॥ अर्थयह ॥ सोभूमाआत्मा किसविषेस्थितहै ? याप्रकारकीजिज्ञासाकेहुए सोभूमाआत्मा आ पणेस्वरूपभूतमहिमाविषेस्थितहै यहउत्तर श्रुतिनैं कथनकऱ्याहै ॥ अब अज्ञातआत्माका तथा ज्ञातआत्माकास्वभाव वर्णनकरे हैं ॥ हेशौनक! जिसकालविषे यहआनंदस्वरूपआत्मा अज्ञातरहेहै ॥ तिसकालविषे यहआत्मादेव मनकेतादात्म्यअध्यासतैं म नोमयसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ प्राणोंकूं तथादेहकूं तथाइंद्रियोंकूं आपणेआपणेव्यापारोंविषेप्रवृत्तकरेहै ॥ तथा जबपर्यंत ब्रह्मात्मज्ञानकी प्राप्तिनहींहोवैहै ॥ तबपर्यंत सोमनोमयआत्मा सर्वजगत्केबीजभूतमूलाज्ञानविषे तादात्म्यअध्यासकरिकैस्थितहोवैहै ॥ और जिसकालविषे ब्रह्मचर्यादिकसाधनसंपन्न अधिकारीजन याआत्मादेवके वास्तवस्वरूपकूं जानेहैं ॥ तिसकालविषे तेअ धिकारीजन याआत्मादेवकूं परमानंदस्वरूपकरिकैदेखेहैं ॥ तथा जन्ममरणतैंआदिलैकेजितनेसंसारसंबंधीधर्महैं ॥ ति नसर्वधर्मोंतैंरहित देखेहैं ॥ तथा ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय इत्यादिकत्रिपुटीरूपद्वैततैंरहित देखेहैं ॥ अब ताआत्मज्ञानकेफलकावर्णनकरे हैं ॥ हेशौनक! जोअधिकारीपुरुष तापरब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपकरिकैजानेहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकूं याप्रकारकेफलकीप्राप्ति

श्रुतिनें कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ भिद्यतेहृदयग्रंथिश्छिद्यंतेसर्वसंशयाः ॥ क्षीयंतेचास्यकर्माणि तस्मिन्दृष्टेपरावरे ॥ अ
र्थयह ॥ कामक्रोधादिकोंकाकारणरूपजोआत्माअनात्माकाअध्यासहै ॥ जोअध्यास याजीवोंकूं सर्वदुःखोंकीप्राप्तिकरेहै ॥ ताअध्यास
कानाम हृदयग्रंथिहै ॥ और त्वंपदार्थजीवविषे संसारीपणा तथाअल्पज्ञता देखिकै और तत्पदार्थब्रह्मविषे असंसारीपणा तथासर्व
ज्ञता देखिकै यहजीव ब्रह्मरूपहै अथवाब्रह्मतेंभिन्नहै इत्यादिकजेआत्मविषयकअसंभावनाहैं ॥ तिनोंकानाम संशयहै ॥ और जिन
पुण्यपापकर्मोंनें यहशरीरदियाहै ॥ तिनप्रारब्धकर्मोंकूंछोडिकै जितनेसंचितक्रियमाणरूप पुण्यपापकर्म हैं ॥ जिनपुण्यपाप
कर्मोंकरिकै यहजीव अनेकशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिनसंचितक्रियमाणकर्मोंकानाम कर्महै ॥ तेसर्वकर्म तथातेसर्वहृदयग्रंथि तथातेस
र्वसंशय सर्वात्मरूपब्रह्मकेसाक्षात्कारहुए निवृत्तहोइजावैहैं ॥ १ ॥ हेशौनक! जिसआत्मसाक्षात्कारकरिकै संशयकर्मादिकोंकीनि
वृत्तिहोवैहै ॥ तिसीआत्मसाक्षात्कारकूं विद्वान्पुरुष श्रवणादिकसाधनोंकाफलरूपकहैहैं ॥ जिसआत्मसाक्षात्कारकेहुए यहसर्वदुः
खकेकरणेहारीअविद्या निवृत्तहोइजावैहै ॥ हेशौनक! जिसआत्माकेसाक्षात्कारतें यहकार्यसहितअविद्यानिवृत्तहोवैहै ॥ सोआत्मा
देव कैसाहै? अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय यापंचकोशोंविषे जोअंत्यकाआनंदमयकोशहै ॥ ताआनंदमयको
शविषे पुच्छप्रतिष्ठाभूतब्रह्मरूपकरिकैस्थितहै ॥ और सोआत्मादेव आवरणकरणेहारी मायारूपरजतेंरहितहै ॥ याकारणतें श्रुति
भगवती ताआत्मादेवकूं विरज यानामकरिकैकथनकरेहै ॥ और सोपरमात्मादेव तामायाकेकार्यरूपकलावोंतेंरहितहै ॥ याकारणतें
श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं निष्कल यानामकरिकैकथनकरेहै ॥ और सोपरमात्मादेव स्वप्रकाशरूपहै ॥ तथा लोकप्रसिद्धसूर्य
चंद्रमादिकज्योतियोंकाभी प्रकाशकरणेहाराहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं ज्योतिषांज्योति यानामकरिकैकथन
करेहै ॥ और सोपरमात्मादेव अद्वितीयतारूपकरिकै परमआनंदस्वरूपहै ॥ याकारणतें श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं शुभ्र याना
मकरिकैकथनकरेहै ॥ अब ताआत्मादेवविषे स्वप्रकाशताकावर्णनकरेहैं ॥ हेशौनक! शास्त्रवेत्ताविद्वान्पुरुष ताआत्मादेवविषे याप्र
कार स्वप्रकाशता वर्णनकरेहैं ॥ यालोकविषेप्रसिद्धजे सूर्य चंद्रमा तारागण विद्युत् अग्नि येबाह्यतेजसपदार्थहैं ॥ तथा अंतर

स्थितजे मनबुद्धिआदिकतैजसपदार्थहैं ॥ तिनतैजसपदार्थोंकरिकैसहकृतहुआ जोतत्त्व स्फुरणहोवैनहीं ॥ किंतु जोतत्त्व तिनतैं जसपदार्थोंकीसहायतातैंविना स्वतःहीस्फुरणहोवैहै ॥ तथा जिसतत्त्वकेप्रकाशकूंअनुसरणकरिकैही यहजडचेतनरूपसर्वजगत् प्रकाशमानहोवैहै ॥ तिसआत्मतत्त्वकूं विद्वान्पुरुष स्वप्रकाशकहेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जैसे यालोकविषे ॥ तातंगच्छंतमनु गच्छतिपुत्रः ॥ अर्थयह ॥ गमनकरतेहुएपिताकूं अनुसरणकरिकैपश्चात् पुत्र गमनकरैहै ॥ यावाक्यतैं पिताकीगमनरूपक्रियातैं पुत्रकीगमनरूपक्रिया भिन्नप्रतीतहोवैहै तैसे ॥ तमेवभातमनुभातिसर्वं ॥ याश्रुतिवचनतैंभी ताआत्माकेप्रकाशतैं याजगत्का प्रकाश भिन्नहीसिद्धहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेशौनक! जैसे पिताकीगमनरूपक्रियातैं पुत्रकीगमनरूपक्रिया भिन्नहोवैहै ॥ तैसे आत्माकेप्रकाशतैं याजगत्काप्रकाश भिन्नहोवैहै ॥ याअर्थविषे ताश्रुतिका तात्पर्यनहींहै ॥ किंतु ताश्रुतिका यहतात्पर्यहै ॥ जैसे त प्याहुआलोह अग्निकरिकैप्रकाशितहुआही प्रकाशमानहोवैहै ॥ ताअग्नितैंविना स्वतःप्रकाशमानहोवैनहीं ॥ तैसे तापरमात्मादेव केप्रकाशकरिकै भासमानहुआयहजगत् प्रकाशमानहोवैहै ॥ ताआत्मादेवकेप्रकाशतैंविना स्वतःसोजगत् प्रकाशमानहोवैनहीं ॥ इसप्रकार आपणेप्रकाशकरिकै सर्वजगत्कूंप्रकाशमानकरणेहारा जोआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ ताआत्मादेवकूं विद्वान्पुरुष स्वप्र काश यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ यहहीस्वप्रकाशआत्मा सूर्यादिकबाह्यज्योतियोंका तथाबुद्धिआदिकअंतर्ज्योतियोंका प्रकाशक है ॥ अब तास्वप्रकाशआत्माकी सर्वात्मरूपतावर्णनकरेहैं ॥ हेशौनक! सोस्वप्रकाशज्योतिब्रह्म पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर अधः ऊ र्ध्व इत्यादिकसर्वदिशावोंविषेव्याप्तहै ॥ तथा सोब्रह्महि पूर्वादिकदिशासहित सर्वविश्वरूपहै ॥ तथा सोपरब्रह्महि भूतभविष्यतव र्तमान यातीनकालरूपहै ॥ तथा सोपरब्रह्महि स्थूलसूक्ष्मकारणात्मकसर्वजगत्रूपहै ॥ तापरब्रह्मतैंभिन्न किंचित्मात्रभीवस्तुनहीं है ॥ अब जीवब्रह्मकाअभेदरूपमहावाक्यार्थकेनिरूपणकरणेवासते प्रथम तत्त्वंपदार्थोंकाशोधन निरूपणकरेहैं ॥ हेशौनक! य हअधिकारीपुरुष जबी तिनश्रुतिवचनोंतैं तामहावाक्यार्थरूप ब्रह्मात्माकूंनहींजानिसकै ॥ तबी ताअधिकारीशिष्यकेप्रति सोब्र ह्मवेत्तागुरु याप्रकार तत्त्वंपदार्थकाकथनकरै ॥ शरीररूपअश्वत्थकेवृक्षविषे जीवईश्वररूपदोपक्षीरहेहैं ॥ कैसेहैंतेदोनोंपक्षी?

सर्वदा इकठेरहेहैं ॥ तथा सत्‌चित्‌आनंदरूपताकरिकै समानस्वभाववालेहैं ॥ तथा याशरीररूपवृक्षकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहु
एहैं ॥ तिनदोनोंपक्षियोंविषे एकपक्षीतौ याशरीररूपवृक्षके पुण्यपापकर्मरूपपुष्पोंतैंउत्पन्नहुए सुखदुःखरूपफलकूंभोगताहुआ जी
वसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोभोक्ताजीव त्वंशब्दकाअर्थरूपहै ॥ और दूसरापक्षीतौ तासुखदुःखरूपकर्मकेफलकूंनहींभोगताहुआ केव
ल ताकर्मकेफलकूंप्रकाशहीकरेहै ॥ याकारणतैं सोअभोक्तापक्षी ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोसर्वत्रव्यापकअद्वितीयईश्वर तत्पदार्थ
काअर्थरूपहै ॥ हेशौनक ! जिसशरीररूपवृक्षविषे सोईश्वररूपपक्षी निवासकरेहै ॥ तिसीशरीररूपवृक्षविषे यहजीवरूपपक्षीभी
निवासकरेहै ॥ परंतु यहजीवरूपपक्षी आपणेकूं पुण्यपापकर्मोंकाकर्तामानिकै तथातिनपुण्यपापकर्मोंकेफलकाभोक्तामानिकै दीन
ताकूंप्राप्तहुआ सर्वदा शोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सोईश्वररूपपक्षी ताकर्तृत्वभोक्तृत्वधर्मतैंरहितहै ॥ यातैं तादीनताकरिकैशोककूंप्रा
प्तहोवैनहीं ॥ हेशौनक ! जैसे ता तत्पदार्थरूपपरमात्मादेवविषे कर्तृत्वभोक्तृत्वधर्म नहींहै ॥ तैसे तात्वंपदार्थजीवविषेभी वास्त
वतैं कर्तृत्वभोक्तृत्वधर्म नहींहै ॥ किंतु अंतःकरणादिकउपाधियोंकेसंबंधतैंही याजीवविषे सोकर्तृत्वभोक्तृत्वधर्म प्रतीतहोवैहै ॥ या
तैं जिसकालविषे यहत्वंपदार्थरूपजीवात्मा तातत्पदार्थरूपईश्वरकूं आपणाआत्मरूपकरिकैदेखैहै ॥ तिसकालविषे यहजीवात्मा
तापरमात्मादेवकेअद्वितीयतारूपमहिमाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोतत्पदार्थरूपपरमात्मादेव ? वास्तवतैं यात्वंपदार्थजीवतैंअभिन्न
हुआभी उपाधिकेसंबंधतैं भिन्नहोइकैप्रतीतहोवैहै ॥ तथा आनंदकासमुद्रहै ॥ याकारणतैंही सोपरमात्मादेव याजीवोंके परमप्रे
मकाविषयहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवके अद्वितीयतारूपमहिमाकूंप्राप्तहोइकै यहजीवात्मा सर्वदुःखोंतैंरहितहोवैहै ॥ हेशौनक ! यह
त्वंपदार्थरूपजीवात्मा जिसकालविषे तातत्पदार्थरूपस्वयंज्योतिपरमात्मादेवकूं आपणाआत्मरूपकरिकैदेखैहै ॥ तिसकालविषे
यहजीवात्मा नामरूपतैंरहितहुआ तथाविद्वान्‌भावकूंप्राप्तहुआ तापरमात्मादेवकेअद्वितीयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशौनक ! यहप
रमात्मादेव प्राणउपहितहिरण्यगर्भद्वारा सर्वव्यष्टिभूतोंविषेव्यापकहै ॥ तथा जीव ईश्वर जगत् इत्यादिकभेदविशिष्टतारूपकरि
कै कल्पितहुएकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ ऐसेशुद्धपरमात्मादेवकूं यहअधिकारीपुरुष जबी आपणाआत्मरूपकरिकैजानैहै ॥ तबी

यहअधिकारीपुरुष अतिवादी यासंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशौनक! ताविद्वान्पुरुषविषे जोअतिवादीपणाहै ॥ ताअतिवादीपणे का यहस्वरूप वेदवेत्तापुरुष कथनकरेहैं ॥ जैसे बालक नानाप्रकारकीक्रीडाकरेहै ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुष ताअद्वितीयआत्माविषेही सर्वदा क्रीडाकरेहैं ॥ और जैसे युवान्पुरुष आपणीयुवान्स्त्रीविषेही रतिकरेहै ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुष ताअद्वितीयआत्माविषेही रतिकरेहै ॥ और जैसे यज्ञकर्तापुरुष नानाप्रकारकीक्रियाकरेहै ॥ तैसे याविद्वान्पुरुषकी नानाप्रकारकीक्रिया भी ताअद्वितीयआत्माविषेहीहोवैहैं ॥ इसप्रकार जोविद्वान्पुरुष सर्वदा आत्माकाहीचिंतनकरेहै ॥ तिसविद्वान्पुरुषकूं वेदवेत्ता पुरुष अतिवादी यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ सोअतिवादीविद्वान् सर्वब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषेश्रेष्ठहै ॥ अब जिसब्रह्मविद्याकरिकै सो अतिवादीपणा प्राप्तहोवैहै ॥ ताब्रह्मविद्याकेसाधनोंकानिरूपणकरेहैं ॥ हेशौनक! सत्य तप ब्रह्मचर्य यातीनसाधनोंसहित जो पूर्वउक्ततत्त्वंपदार्थकाशोधनहै ॥ तातत्त्वंपदार्थकेशोधनरूपज्ञानकरिकैही याअधिकारीपुरुषोंकूं सोमहावाक्यकाअर्थरूपआत्मादेव प्राप्तहोवैहै ॥ जिसआत्मादेवकूं कामक्रोधादिकदोषोंतैंरहितसंन्यासी सर्वदा आपणेचित्तविषेदेखेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे सत्यादिकसाधनोंसहित तत्त्वंपदार्थकाशोधन ताआत्मज्ञानविषेकारणहै ॥ तैसे सोसंन्यासभी ताआत्मज्ञानविषेकारणहै ॥ इहां मिथ्यावचनकेपरित्यागकरणेकानाम सत्यहै ॥ और मनसहितश्रोत्रादिकइंद्रियोंकीएकाग्रताकानाम तपहै ॥ और उपस्थइंद्रियकेसंयमकानाम ब्रह्मचर्यहै ॥ अब तासत्यकीउत्कृष्टता वर्णनकरेहैं ॥ हेशौनक! सोमिथ्यावचनकापरित्यागरूपजोसत्यहै ॥ सो सत्य ताब्रह्मज्ञानकाकारणहोणेतैं सर्वसाधनोंतैंउत्कृष्टहै ॥ यातैं सोसत्य इसभूमिलोककेसुखकाभीकारणहै ॥ तथा स्वर्गलोकके सुखकाभीकारणहै ॥ तथा ब्रह्मलोककेसुखकाभीकारणहै ॥ याकेविषेकोईआश्चर्यनहींहै ॥ अब ताआत्माकेदुर्विज्ञेयताकानिरूपणकरेहैं ॥ हेशौनक! जोसत्यब्रह्म याअधिकारीपुरुषोंकूं महावाक्यजन्यज्ञानकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ सोसत्यब्रह्म आकाशादिकमहान्पदार्थोंकाभी आधाररूपहै ॥ यातैं सोसत्यब्रह्म महान्पदार्थोंतैंभी अत्यंतमहान्है ॥ और सोपरब्रह्म परमाणुआदिकसूक्ष्म पदार्थोंकेभी अंतरव्यापकहै ॥ यातैं सोपरब्रह्म सूक्ष्मपदार्थोंतैंभी अत्यंतसूक्ष्महै ॥ और सोपरब्रह्म स्वप्रकाशतारूपकरिकै सर्व

लोकतैंविलक्षणहै ॥ याकारणतैं सोपरब्रह्म दिव्यरूपहै ॥ और सोपरब्रह्म मनकरिकैभीचिंतनकऱ्याजावैनहीं ॥ याकारणतैं सोपरब्रह्म अचिंत्यरूपहै ॥ और सोपरब्रह्म बहिर्मुखपुरुषोंकूं अत्यंतदुर्विज्ञेयहै ॥ यातैं सोपरब्रह्म दूरपदार्थोंतैंभी अत्यंतदूरहै ॥ और सोपरब्रह्म साधनसंपन्नअंतर्मुखपुरुषोंकूं अत्यंतसुलभहै ॥ यातैं सोपरब्रह्म अत्यंतसमीपपदार्थोंतैंभी अत्यंतसमीपहै ॥ और तिस परब्रह्मविषे मनसहितनेत्रादिकइंद्रिय प्रकाशकरिसकतेनहीं ॥ यातैं सोपरब्रह्म सत्चित्रूपकरिकैसर्वत्रभासमानहुआभी प्रत्यक्अद्वितीयरूपकरिकै लोकविषे प्रतीतहोवैनहीं ॥ और सोपरब्रह्म सर्वजीवोंकेबुद्धिरूपगुहाविषेस्थितहै ॥ तथा सर्वपदार्थोंका प्रकाशकहै ॥ ऐसापरब्रह्म एकमहावाक्यजन्यब्रह्मात्मज्ञानतैंविना दूसरेकिसीउपायकरिकै प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु एकमहावाक्यजन्यब्रह्मात्मज्ञानकरिकैही याअधिकारीपुरुषोंकूं आपणाआत्मरूपकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव? सर्वइंद्रियोंकूंधारणकरणेहाराजोप्राणहै ॥ सोप्राणभी चित्तकेसहित जिसपरमात्मादेवविषेस्थितहै ॥ ऐसासर्वप्राणइंद्रियादिकोंकूं आपणेआपणेकार्यविषे प्रेरणाकरणेहारा सोपरमात्मादेव यादेहधारीजीवोंकूं जानणेविषेसुगमनहींहै ॥ किंतु अत्यंतदुर्लभहै ॥ हेशौनक! यहआत्मादेव यद्यपि दुर्लभहै ॥ तथापि ताआत्मादेवकेप्राप्तिका एकउपाय शास्त्रवेत्तापुरुषोंनें कथनकऱ्याहै ॥ सोउपाययहहै ॥ जिसअधिकारीपुरुषका चित्त रागद्वेषादिकदोषोंतैंरहितहै ॥ तथा वेदांतशास्त्रकेसंस्कारोंकरिकैयुक्तहै ॥ ऐसेशुद्धचित्तकरिकै यहश्रवणादिकसाधनसंपन्नअधिकारीपुरुष याआनंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरेहै ॥ तहांश्रुति ॥ एषोऽणुरात्माचेतसावेदितव्यः ॥ अर्थयह ॥ यहदुर्विज्ञेयआत्मा शुद्धचित्तकरिकैजानणेयोग्यहै ॥ हेशौनक! जोशुद्धचित्तवालापुरुष आपणेआत्माकूं ब्रह्मरूपकरिकै साक्षात्कारकरेहै ॥ सोविद्वान्पुरुष ब्रह्मरूपहीहोवैहै ॥ यातैं सोब्रह्मरूपविद्वान्पुरुष यासर्वजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयकरणेविषेभी समर्थहोवैहै ॥ और सोब्रह्मरूपविद्वान्पुरुषही यासर्वजीवोंकेप्रति पुण्यपापकर्मके सुखदुःखरूपफलकादेणेहाराहै ॥ तथा याजीवोंकूंप्राप्तहोणेहारेजितनेभोगहैं ॥ तेसर्वभोग ताविद्वान्पुरुषकीआज्ञाकरिकैही वर्ततेहैं ॥ तथा याजीवोंकेसर्वप्राणबुद्धिइंद्रियादिकभी ताविद्वान्पुरुषकीआज्ञाकरिकैही वर्ततेहैं ॥ और सोब्रह्मरूपविद्वान्पुरुष याजीवोंकूं शापदेणेविषे तथाअनुग्रहकरणेविषेभी स

वेदा समर्थ हैं ॥ ऐसेब्रह्मवेत्तापुरुषके पूजनअर्चनकरणेतें यहपुरुष पुण्यवान्होइके सुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताब्रह्मवेत्ताकीअव ज्ञाकरिकै पापवान्हुएयहपुरुष सर्वदा दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें जिसपुरुषकूं पुत्रधनादिकपदार्थरूपऐश्वर्यकेप्राप्तिकीभीइच्छाहो वे ॥ सोसकामपुरुषभी ताब्रह्मवेत्तापुरुषका सर्वदा पूजनअर्चनकरै ॥ ताब्रह्मवेत्तापुरुषकीअवज्ञाकूं यहबुद्धिमान्पुरुष मनकरिकै भीनहींकरै ॥ तथा स्वप्नविषेभी ताअवज्ञाकूंनहींकरै ॥ ऐसेश्रद्धावान्पुरुषकूं मनवांछितपदार्थोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ आत्मज्ञंह्यर्चयेद्भूतिकामः ॥ अर्थयह ॥ धनादिकऐश्वर्यताकीकामवालापुरुष ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषका पूजनअर्चनकरै ॥ तापूजनअर्चनकरिकै तिसपुरुषकूं सर्वमनवांछितपदार्थोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेशौनक ! जेविवेकीपुरुष निष्कामहोइकै ताब्रह्मवेत्तापुरुषकासेवनकरैहैं ॥ तेविवेकीपुरुष सर्वदुःखोंतेंरहितब्रह्मरूपब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ काहेतें ? सोब्रह्मवेत्तापुरुष याशरीरविषेस्थितहुआभी ताआनंदस्वरूपब्रह्मकूंही साक्षात् आत्मरूपकरिकैजानेहै ॥ तथा तापरब्रह्मकीही अभेदरूपकरिकैउपासनाकरैहै ॥ तथा तापरब्रह्मविषेही अभेदरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ ऐसेपरब्रह्मवेत्तापुरुषकी जेअधिकारीजन श्रद्धापूर्वक भक्तिकरैहैं ॥ तेभक्तजनभी ताब्रह्मवेत्तापुरुषकेअनुग्रहतें ब्रह्मवेत्ताहोइकै तिसब्रह्मवेत्तापुरुषके समानताकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातें ताब्रह्मभावरूपमोक्षकीप्राप्तिवासते याअधिकारीपुरुषोंनें निष्कामहोइकै ताब्रह्मवेत्तापुरुषकासेवनकरणा ॥ अब सकामताकीनिंदाकरिकै निष्कामताकीश्रेष्ठता वर्णनकरैहैं ॥ हेशौनक ! जेसकामपुरुष स्त्रीपुत्रधनादिकविषयोंकेप्राप्तिकीकामनाकरैहैं ॥ तेसकामपुरुष नानाप्रकारकेशरीरोंकूंग्रहणकरिकै तिसतिसशरीरविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ तेकामनाही सर्वदुःखोंकाकारणहैं ॥ हेशौनक ! जेविवेकीपुरुष तिनसर्वकामनावोंकापरित्यागकरिकै ब्रह्मात्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तेनिष्कामपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे किंचित्मात्रभी दुःखकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ यातें यहनिष्कामताही सर्वसुखकेप्राप्तिकाकारणहै ॥ ऐसीनिष्कामताकूं याअधिकारीपुरुषनें अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ अब ताआत्मज्ञानकेप्राप्तिकाप्रधानसाधन निरूपणकरैहैं ॥ हेशौनक ! यहआनंदस्वरूपआत्मादेव याअधिकारीपुरुषोंकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेअनुग्रहतेंविना केवल वेदोंकेअध्यापनकरावणेकरिकैभी प्राप्त

होवैनहीं ॥ तथा तिनवेदोंकेअध्ययनकरिकैभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा तीक्ष्णबुद्धिकरिकैभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु केवल ब्रह्मवे त्तागुरुकेउपदेशतैंही सोआत्मादेव याअधिकारीपुरुषोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ हेशौनक! ब्रह्मात्मज्ञानकरिकै ब्रह्मरूपताकूंप्राप्तभयाजो गुरुहै ॥ सोब्रह्मवेत्तागुरु जिसशिष्यऊपरि अनुग्रहकरैहै ॥ तिसशिष्यऊपरि सोपरब्रह्मभी अनुग्रहकरैहै ॥ इहां ताशिष्यकेचि त्तविषे आपणेअद्वितीयस्वरूपकाप्रादुर्भावकरणा यहहीतापरब्रह्मकाअनुग्रहहै ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषनैं ताब्रह्मात्मज्ञानकीप्रा प्तिवासते ताब्रह्मवेत्तागुरुकेअनुग्रहकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ तहांश्रुति ॥ नायमात्माप्रवचनेनलभ्यो नमेधयानब हुनाश्रुतेन ॥ यमेवैषवृणुतेतेनलभ्यस्तस्यैषआत्मावृणुतेतनूंस्वाम् ॥ याश्रुतिका यहपूर्वउक्तअर्थहीजानिलेना ॥ अब ता आत्मज्ञानकीप्राप्तिविषे सहकारीसाधनोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशौनक! कामक्रोधादिकशत्रुवोंकरिकै नहींदबायाहुआजो मनइं द्रियादिकोंकाधैर्यहै ॥ ताधैर्यकानाम बलहै ॥ ताबलतैंरहितपुरुषकूंभी यहआत्मादेव प्राप्तहोइसकैनहीं ॥ किंतु ताबलवान्पुरुष कूंही यहआत्मादेव प्राप्तहोवैहै ॥ हेशौनक! ताधैर्यरूपबलतैंरहितपुरुषोंकूं केवल आत्माकेप्राप्तिकाअभाव नहींहोवैहै ॥ किंतु तेधैर्यरूपबलतैंरहितपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे दुःखकूंहीप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं ताधैर्यरूपबलकूंभी अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ हेशौनक! जैसे ताबलकेअभावतैंयहआत्मादेव प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे प्रमादतैंभी यहआत्मादेव प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा किसीआश्रमतैंरहितपाखंडरूपतपतैंभी यहआत्मादेव प्राप्तहोवैनहीं ॥ इहां विषयोंकेसमीपप्राप्तहुए जोधै र्यकानाशहोइजाणाहै ॥ याकानाम प्रमादहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ याअधिकारीपुरुषोंकूं अप्रमादयुक्तधैर्यतैं तथास्वाश्रम धर्मसहकृततपतैं ब्रह्मात्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ताब्रह्मात्मज्ञानकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिहोवैहै ॥ अब ताब्रह्मात्मज्ञानके जीवन्मुक्तिआदिकफलोंकीव्यवस्थाका निरूपणकरैहैं ॥ हेशौनक! पूर्व जेजेमहात्मामुनिजन याआनंदस्वरू पप्रत्यक्आत्माकूं साक्षात्कारकरिकै ताआत्मस्वरूपआनंदविषे मग्नहोतेभयेहैं ॥ तेमुनिजन ताआत्मज्ञानकालविषेही ब्रह्मभावकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोइकै तेमुनिजन पुनः यासंसारविषेप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जिनपरमहंससंन्यासियोंकूं ब्रह्म

लोककेप्राप्तिकीइच्छारूप प्रतिबंधकेवशतें इसजन्मविषे ताब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति नहींहोवैहै ॥ तिनसंन्यासियोंकूंभी ब्रह्मलोक विषेजाइकै सोब्रह्मज्ञान अवश्यकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ हेशौनक! जिनसंन्यासियोंनें इसजन्मविषे महावाक्यरूपवेदांतवचनोंके अर्थका भलीप्रकारसेंविचारकऱ्याहै॥ तथा जिनसंन्यासियोंकाअंतःकरणरागद्वेषादिकदोषोंतेंरहितहोइकै शुद्धहुआहै॥ ऐसेसंन्यासी ही ताब्रह्मलोककूंप्राप्तहोइकै ताहिरण्यगर्भरूपब्रह्माकेमरणकालविषे ताब्रह्माकीन्यांई अद्वितीयब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेशौनक! इसलोकविषे अथवा ब्रह्मलोकविषे अथवा किसीअन्यलोकविषे यहब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष जबी प्रारब्धकर्मकूंभोगिकै विदेहमो क्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी याविद्वान्पुरुषके देवदत्तादिकनामोंकूंछोडिकै दूसरेप्राणादिकपंचदशकला आपणेआपणेकारणोंविषेल यकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तेपंचदशकलायेहैं ॥ श्लोक ॥ प्राणाश्रद्धाखादिभूतपंचकंचेंद्रियंमनः॥ अन्नंवीर्यंतपोमंत्राः कर्मलोकाश्च ताःकलाः ॥ अर्थयह ॥ प्राण १ श्रद्धा २ आकाश ३ वायु ४ तेज ५ जल ६ पृथिवी ७ वाकादिकइंद्रिय ८ मन ९ अन्न १० वीर्य ११ तप १२ मंत्र १३ कर्म १४ और लोक १५ येपंचदशकलाहोवैहैं ॥ १ ॥ और ताब्रह्मवेत्तापुरुषके जेअध्यात्मरूप वाकादिकइंद्रियोंकेअग्निआदिकदेवताहैं ॥ तेअग्निआदिकदेवता आपणेआपणेअधिदैवरूपकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और ताब्रह्मवेत्तापु रुषकेशरीरविषेस्थित जोबुद्धिविशिष्टविज्ञानमयनामाजीवहै ॥ सोविज्ञानमयजीव शुद्धपरमात्मादेवविषेलयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार सर्वकार्यकारणरूपउपाधिकेलयहुएतेंअनंतर सोविद्वान्पुरुष एकअद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ हेशौनक ! जैसे यालोकविषे पूर्वादिकसर्वदिशावोंविषे सहस्रनदियां विद्यमानहैं ॥ तेसर्वनदियां समुद्रकूंप्राप्तहोइकै आपणेनामरूपका परित्यागकरिदेवैहैं ॥ तैसे यहविज्ञानमयपुरुषभी आपणेनामरूपकापरित्यागकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मविषे लयभावकूंप्राप्तहो वैहै ॥ हेशौनक ! जैसे ताब्रह्मवेत्तापुरुषके प्राणादिकपंचदशकलावोंकालयहोवैहै ॥ तैसे तानामरूपषोडशवींकलाकाभीलय होवैहै ॥ तथापि श्रुतिविषेजो नामकूंछोडिकैप्राणादिकपंचदशकलावोंकालयकथनकऱ्याहै ॥ ताकायहअभिप्रायहै ॥ यद्यपि शुकवामदेवादिकमहान्पुरुष पूर्वमुक्तहोइगयेहैं ॥ तथापि तिनमुक्तपुरुषोंके शुकवामदेवादिकनामोंकूंअबपर्यंत लोक वाणीकरि

कैउच्चारणकरैहैं ॥ यातैं तेशुकवामदेवादिकनाम नाशकूंनहींप्राप्तहोवैहैं ॥ याप्रकारकी जालोकोंकीबुद्धिहै ॥ तालौकिकबुद्धिकूं अनुसरणकरिकै ताश्रुतिनैं प्राणादिकपंचदशकलावोंकाही लयकथनकऱ्याहै ॥ नामकालय कथनकऱ्यानहीं ॥ और हेशौनक ! जैसे पूर्वलेब्रह्मवेत्तापुरुष ताब्रह्मज्ञानके बलतैं ताअद्वितीयब्रह्मभावकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ तैसे इदानींकालविषेभी जेअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं ताब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपकरिकैसाक्षात्कारकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषभी ताब्रह्मज्ञानकेप्रभावतैं ताअद्वितीयब्रह्मभावकूंही प्राप्तहोवैहैं ॥ हेशौनक ! जिसपुरुषनैं ताअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मरूपकरिकैजान्याहै ॥ तिसब्रह्मवेत्तापुरुषके विद्यामयवंशविषेस्थित जेशिष्यप्रशिष्यादिकहैं तथाजन्ममयवंश विषेस्थित जेपुत्रपौत्रादिकहैं ॥ तेशिष्यादिक तथापुत्रादिक ब्रह्मज्ञानतैंरहितहोतेनहीं ॥ किंतु तेसर्व ब्रह्मज्ञाननिष्ठावालेहीहोवैहैं ॥ तहांश्रुति ॥ नास्याऽब्रह्मवित्कुलेभवति ॥ अर्थयह ॥ याब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषकेकुलविषे कोईपुत्र अथवा कोईशिष्य ब्रह्मज्ञानतैंरहितहोवैनहीं ॥ किंतु तेसर्व ब्रह्मवेत्ताहीहोवैहैं ॥ हेशौनक ! यहब्रह्मवेत्तापुरुष ताब्रह्मज्ञानकेप्रभावतैं कारणअज्ञानसहित सर्वपापकर्मोंकूंनाशकरिकै कामक्रोधादिकसर्वदोषोंतैंरहितहुआ तथासर्वशोकोंतैंरहितहुआ ताआनंदस्वरूपअद्वितीयब्रह्मकूं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ अब यापूर्वउक्तब्रह्मविद्याकेअधिकारीकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशौनक ! जायहब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति उपदेशकरीहै ॥ सायहब्रह्मविद्या तुमनैं जिसीकिसीअनधिकारीपुरुषकेप्रति कथनकरणीनहीं ॥ किंतु शांतिआदिकगुणोंकरिकैयुक्तअधिकारीपुरुषोंकेप्रतिही यहब्रह्मविद्या तुमनैं उपदेशकरणी ॥ हेशौनक ! जिनपुरुषोंनैं विधिपूर्वक वेदोंकाअध्ययनकऱ्याहै ॥ तथा तिनवेदउक्तकर्मोंकेअनुष्ठानकरिकै जिनपुरुषोंकाचित्त शुद्धहुआहै ॥ तथा जिनपुरुषोंनैं एकर्षिनामाअग्निकाआराधनकऱ्याहै ॥ तथाजिनपुरुषोंनैं ब्रह्मचर्यआश्रमविषे आपणेशिरऊपरि अग्निकाधारणरूपव्रतकऱ्याहै ॥ तथा जेपुरुष शमदमादिकसाधनोंकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेहारेगुरुविषे जिनपुरुषोंकीअत्यंतश्रद्धाभक्तिहै ॥ ऐसेगुणोंवालेअधिकारीपुरुषोंकेप्रतिही तुमनैं यहब्रह्मविद्या कथनकरणी ॥ कैसीहैयहब्रह्मविद्या ? सर्वदा श्रेष्ठपुरुषोंकरिकै सेवनकरणेयोग्यहै ॥ तथा अत्यंतदुर्लभहै ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य !

जाब्रह्मविद्या तुमनैं हमारेसैंपूछीथी ॥ तथा जाब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति कथनकरीहै ॥ साब्रह्मविद्या पूर्व ताअंगिराऋषिकूं परंपराकरिकै ब्रह्मातैंप्राप्तिहोतीभई है ॥ तिसीब्रह्मविद्याकूं सोअंगिराऋषि शौनकऋषिकेप्रति कथनकरताभयाहै ॥ और जैसे सोअंगिरानामाऋषि शौनकनामाऋषिकेप्रति साब्रह्मविद्या कथनकरताभयाहै ॥ तैसे पिप्पलादनामामुनिभी संसारदुःखकरिकै पीडितसुकेशादिकषट्शिष्योंकेप्रति यहब्रह्मविद्या कथनकरताभयाहै ॥ कैसीहैसाब्रह्मविद्या ? षट्प्रश्नउत्तरोंकरिकै अत्यंतस्पष्ट करीहुईहै ॥ हेशिष्य ! याषोडशेअध्यायकेआदिविषे जाअथर्वामुनिउक्तब्रह्मविद्या तुमनैं हमारेसैंपूछीथी ॥ सासर्वब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति कथनकरीहै ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारेकूंइच्छाहोवै ॥ सोअर्थ तू हमारेसैंपूछ ॥ इतिश्रीमत्पर महंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृताऽऽत्मपुराणे मुंडकोपनिषत्सारार्थप्रकाशे अंगिरःशौनकसंवादोनाम षोडशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १६ ॥ ॥श्रीगुरुभ्योनमः॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

इति आत्मपुराणेश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां

षोडशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १६ ॥

अथ श्रीआत्मपुराणे स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां
सप्तदशाऽध्यायप्रारंभः ॥ १७ ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ सप्तदशाऽध्यायप्रारंभः ॥

पूर्वषोडशेअध्यायविषे अथर्वणवेदके मुंडकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब यासप्तदशेअध्यायविषे तिसीअथर्वणवेदके प्रश्नउपनिषद्काअर्थ निरूपणकरेहैं ॥ तहां पूर्वषोडशेअध्यायविषे अथर्वामुनिउक्तब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिकै परमआनंदकूंप्राप्त हुआ सोश्रद्धावान्शिष्य पुनः तागुरुकेमुखतें पिप्पलादऋषि उक्तब्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेकीइच्छाकरताहुआ ताश्रीगुरुकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन्! याआत्मपुराणकेप्रथमाध्यायविषे आपनैं ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमाध्यायविषे सनकादिकमुनियोंके तथासात्विकीप्रजाके संवादकरिकै वैराग्यादिकसाधनों सहित नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा माताकेउदरविषेस्थित वामदेवऋषिका सर्वात्मभावरूपअनुभव कथनकऱ्याथा ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके द्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअध्यायविषे आपनैं तिसीऋग्वेदके कौषीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां याआत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषे देवराजइंद्रके तथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणके तृतीयअध्यायविषे राजाअजातशत्रुके तथाबालाकिब्राह्मणके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम या चारिअध्यायोंविषे आपनैं यजुर्वेदके बृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां याआत्मपुराणके चतुर्थअध्यायविषे आपनैं दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंविषेस्थितऋषियोंका परस्परभेद तथाअभेद कथनकऱ्याथा ॥ तथा दध्यङ्अथर्वणऋषिनैं जाब्रह्मविद्या देवराजइंद्रकेप्रति तथाअश्विनीकुमारोंकेप्रति कथनकरीथी ॥ साब्रह्मविद्याभी आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा तिन अश्विनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेकरिकै सोदध्यङ्अथर्वणऋषि जिसप्रकार ताइंद्रतैं क्लेशकूंप्राप्तहुआथा ॥ सासर्व वार्त्ता आपनैं कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके पंचमअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ जनकराजाके यज्ञसभाविषे याज्ञवल्क्यमुनिरूपसूर्य आश्वलादिकब्राह्मणरूपनिशाचरोंकूंजीतकरिकै शाकल्यब्राह्मणरूपअंधकारकूं निवृत्तकरता

भया ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ जैसे सूर्यभगवान् आपणेकिरणोंकरिके अंधकारकीनिवृत्तिकरिकै लोकोंकूं रूपादिकपदार्थ दिखावैहै ॥ तैसे सोयाज्ञवल्क्यमुनिरूपसूर्यभी आपणेउपदेशरूपकिरणोंकरिकै जनकराजाकेअज्ञानरूपअंधकारकीनिवृत्तिकरिकै ताजनकराजाकूं अद्वितीयब्रह्म दिखावताभया ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेसप्तमेअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनिरूपसूर्य आपणेउपदेशरूपकिरणोंकरिकै मैत्रेयीस्त्रीके अज्ञानरूपअंधकारकीनिवृत्तिकरिकै तामैत्रेयीस्त्रीकेप्रति अद्वितीयब्रह्म दिखावताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनि संन्यासआश्रमकूं ग्रहणकरताभया ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताअष्टमअध्यायविषे श्वेताश्वतरमुनिके तथासंन्यासियोंके संवादकरिकै आपनैं याजगत्केकारणोंका निरूपणकऱ्याथा ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके नवमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तानवमअध्यायविषे यमराजाके तथानचिकेताके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके दशमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके तैत्तिरीयउपनिषद्का तथानारायणीयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादशमअध्यायविषे वरुणपिताके तथाभृगुपुत्रके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा वेननामागंधर्वका सर्वात्मभावरूपअनुभव कथनकऱ्याथा ॥ तथा सत्यादिकसर्वसाधनोंतैं संन्यासआश्रमकीअधिकता कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके एकादशेअध्यायविषे आपनैं जाबालादिकएकादशउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताएकादशेअध्यायविषे आपनैं यहवार्ता कथनकरीथी ॥ तापरमहंससंन्यासकूं संवर्तकादिकमहान्पुरुष धारणकरतेभयेहैं ॥ और तासंन्यासकेप्राप्तिका वैराग्यही कालहै ॥ और गर्भदुःखोंकाविचार तथामृत्युचिह्नोंकाज्ञान तथाअष्टांगयोग इत्यादिकउपाय तावैराग्यकेकारणहैं ॥ और तासंन्यासविषे विरक्तपुरुषोंकाही अधिकारहै ॥ और दंड कमंडलु काषायवस्त्र इत्यादिकोंकाधारणकरणा तासंन्यासीका बाह्यवेषहै ॥ तथा तिनसंन्यासियोंका ब्रह्मचर्यादिरूप आचारहै ॥ इत्यादिकसर्ववार्ता ताएकाद

शेअध्यायविषे कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके द्वादश त्रयोदश चतुर्दश यातीनअध्यायोंविषे आपनें सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां याआत्मपुराणके द्वादशेअध्यायविषे उद्दालकपिताके तथाश्वेतकेतुपुत्रके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणकेत्रयोदशेअध्यायविषे सनत्कुमारोंके तथानारदमुनिके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणके चतुर्दशेअध्यायविषे प्रजापतिके तथाइंद्रविरोचनके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेपंचदशेअध्यायविषे आपनें तिसीसामवेदके केनउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तापंचदशेअध्यायविषे देवराजइंद्रकूं ब्रह्मविद्यारूपउमादेवीकेप्रसादतैं दृढआत्मज्ञानकीप्राप्ति आपनें कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणके षोडशेअध्यायविषे आपनें अथर्वणवेदके मुंडकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताषोडशेअध्यायविषे अंगिरामुनिके तथाशौनकऋषिके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनें कथनकरीथी ॥ हेभगवन्! ताषोडशेअध्यायकेअंतविषे आपनें यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ जैसे अंगिरानामामुनि शौनकऋषिकेप्रति साब्रह्मविद्या उपदेशकरताभयाहै ॥ तैसे षट्प्रश्नउत्तरोंकरिकैयुक्त साब्रह्मविद्या पिप्पलादमुनि सुकेशादिकषट्ऋषियोंकेप्रति कथनकरताभयाहै ॥ हेभगवन्! जाब्रह्मविद्या सोपिप्पलादनामामुनि सुकेशादिकषट्ऋषियोंकेप्रति उपदेशकरताभयाहै ॥ ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेकी मैं इच्छाकरताहूं ॥ आप कृपाकरिकै साब्रह्मविद्या हमारेप्रति कथनकरो ॥ इसप्रकार शिष्यकरिकैपूछाहुआ सोश्रीगुरु अथर्वणवेदकेशौनकीयशाखाविषेस्थित जाप्रश्नउपनिषद्है ॥ ताप्रश्नउपनिषद्विषेकथनकरीहुईकथा ताशिष्यकेप्रति कथनकरताभया ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य! पूर्वकिसीकालविषे तथाकिसीदेशविषे किसीनिमित्तपाइकै षट्मुनि इकठेहोतेभये ॥ कैसेथेतेमुनि? परस्पर अत्यंतस्नेहवालेथे ॥ तथा प्रातःसंध्यादिकनित्यकर्मोंविषे प्रीतिमान्थे ॥ अब तिनमुनियोंकेनामोंकावर्णनकरेहैं ॥ हेशिष्य! एकतौ गोत्रकरिकैभारद्वाजसंज्ञावाला सुकेशानामाऋषिथा ॥ १ ॥ और दूसरा शिबिनामाऋषिकेकुलविषेउत्पत्तिकरिकै शैब्यसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ सत्यकामनामाऋषिथा ॥ २ ॥ और तीसरा गोत्रक

रिकैगार्ग्यसंज्ञावाला सौर्यायणिऋषिथा ॥ ३ ॥ और चतुर्थ कोशलऋषिकेकुलविषेउत्पत्तिकरिकै कौशल्यसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ आश्व लायननामाऋषिथा ॥ ४ ॥ और पंचमा विदर्भऋषिकेकुलविषे उत्पत्तिकरिकै वैदर्भिसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ भार्गवनामाऋषिथा ॥ ५ ॥ और षष्ठा कतऋषिकेकुलविषेउत्पत्तिकरिकै कात्यायनसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ कबंधीनामाऋषिथा ॥ ६ ॥ येषट्ऋषि व्याकरणादिक षट्अंगोंसहितचारिवेदोंकूंअध्ययनकरिकै तिनवेदउक्तनित्यनैमित्तिककर्मोंकूं तथासगुणब्रह्मकेउपासनावोंकूं करतेभये ॥ तिसतैं अनंतर ताकर्मउपासनाकेप्रभावतैं शुद्धहुआहैअंतःकरणजिनोंका ऐसेतेषट्ऋषि निर्गुणब्रह्मकेजानणेकीइच्छाकरतेभये ॥ तिस तैंअनंतर तेषट्ऋषि परस्परमिलिकै याप्रकारकाविचार करतेभये ॥ जोविद्वान्पुरुष विद्यादिकगुणोंकरिकैहमारेतैंअधिकहोवै ॥ तथा श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठहोवै ॥ सोविद्वान्पुरुषही हमारेप्रति निर्गुणब्रह्मकाउपदेशकरैगा ॥ परंतु ऐसाश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठविद्वान्पुरुष कौनहै? जिसकेहम शरणकूंप्राप्तहोवैं ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकीचिंताकरिकैयुक्तजे तेषट्ऋषिहैं ॥ तिनऋषियोंऊपरिअनुग्रहकरिकै भगवान्पिप्पलादमुनि आपणीइच्छापूर्वकविचरताहुआ तास्थानविषेआवताभया ॥ तापिप्पलादमुनिकूं दूरसैंआवताहुआदेखिकै प्रसन्नमनहुए तेषट्ऋषि परस्पर याप्रकारकेवचनकहतेभये ॥ यहजोपिप्पलादमुनिआवताहै ॥ सो हमारेसर्वप्रश्नोंकाउत्तरकहैगा ॥ और सोपिप्पलादमुनि जबी तिनषट्ऋषियोंकेसमीपगया ॥ तबी तेषट्ऋषि आपणेआपणेआसनतैंउठतेभये ॥ तथा यथायो ग्य तापिप्पलादमुनिका पूजनअर्चनकरतेभये ॥ तिसतैंअनंतर तेषट्ऋषि तापिप्पलादमुनिकेप्रति दंडवत्प्रणामकरिकै तथा आपणेदोनोंहस्तोंकूंजोडिकै तथाशास्त्रकीविधिपूर्वक समिदादिकपदार्थोंकूं हस्तविषेधारणकरिकै याप्रकारकावचनकहतेभये ॥ हेभगवन्! यासंसारकेजन्ममरणरूपदुःखोंतैंभयकूंप्राप्तहोइकै हमसर्व आपकेशरणकूंप्राप्तहुएहैं ॥ आप कृपाकरिकै हमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरौ ॥ जिसब्रह्मविद्याकरिकै हमारे सर्वदुःखोंकीनिवृत्तिहोवै ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकीप्रार्थना जबी तिन षट्ऋषियोंनैं तापिप्पलादमुनिकेप्रतिकरी ॥ तबी सोपिप्पलादमुनि तिनषट्ऋषियोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेऋषियो! जोशिष्य विवेकादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नभीहोवै तथागुरुशास्त्रविषेश्रद्धावान्भीहोवै ॥ परंतु सोशिष्य एकवर्षप

यंत जिसगुरुकेसमीपनहींरह्याहोवै ॥ तिसशिष्यकेप्रति सोगुरु ब्रह्मविद्याकाउपदेश करैनहीं ॥ किंतु तासाधनसंपन्नश्रद्धावान्‌शिष्यकीभी एकवर्षपर्यंत परीक्षाकरिकै तिसतैंअनंतर सोगुरु ताशिष्यकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरै ॥ यहशास्त्रकीमर्यादाहै ॥ ताशास्त्रकेमर्यादाकूं तुमभी जानतेहीहो ॥ यातैं तुमसर्वऋषि यद्यपि स्वभावतैंही तपस्वीहो ॥ तथा सर्वदा ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकैयुक्तहो ॥ याकारणतैं तुमसर्व ब्रह्मविद्याकेअधिकारीहो ॥ तथापि ताशास्त्रके मर्यादाकेपालनकरणेवासते तुमसर्व एकवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकूंधारणकरिकै हमारेसमीप निवासकरो ॥ तावर्षकालपर्यंतनिवासकरणेतैंअनंतर जबपर्यंत तुमारेकूं तानिर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारनहींहोवैगा तबपर्यंत तुमारेसर्वप्रश्नोंकेउत्तरकूं मैं भलीप्रकारसैंकथनकरौंगा ॥ यहहमारावचन जोतुमारेकूंअंगीकारहोवै तौतुमसर्व तिसीप्रकारकरो ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकावचन जबी तापिप्पलादमुनिनैं तिनसर्वऋषियोंकेप्रतिकह्या ॥ तबी तेसर्वऋषि श्रद्धाभक्तिपूर्वक एकवर्षपर्यंत ताब्रह्मचर्यकूंकरतेभये ॥ ताएकवर्षकेव्यतीतहुएतैंअनंतर प्रथम कबंधीनामा कात्यायनऋषि तापिप्पलादमुनिकेसमीपजाइकै दंडवत्‌प्रणामकरिकै याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ तहां पूर्वमुंडकउपनिषद्‌विषे परा अपरा यहदोप्रकारकीविद्या कथनकरी ॥ तहां कर्म उपासना याभेदकरिकैदोप्रकारकीजाअपराविद्याहै ॥ ताअपराविद्याके फलकानिर्णयकरणेवासते सोकबंधीनामा कात्यायनऋषि प्रथम याजगत्‌केउत्पत्तिकाप्रश्न करताभया ॥ कात्यायनउवाच ॥ हे भगवन्! यहसंपूर्णप्रजा किसकारणतैं जन्मकूंप्राप्तहोवैहै? सोप्रजाकेउत्पत्तिकाकारण हमारेप्रति कथनकरो ॥ हेशिष्य! इस प्रकार जबी ताकात्यायननैं पिप्पलादमुनिकेप्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तबी सोपिप्पलादमुनि ताकात्यायनकेप्रति प्रजापतिनामाविराट्‌तैंउत्पन्नहुईसृष्टिका कथनकरताभया ॥ यद्यपि तापिप्पलादमुनिकूं मायाविशिष्टपरमेश्वरतैंउत्पन्नहुई आकाशादिकपंचभूतरूप तथाहिरण्यगर्भादिरूप महासृष्टिही कथनकरणेयोग्यथी ॥ तथापि याकात्यायननैं पूर्वशास्त्रतैंही सामहासृष्टि भलीप्रकारसैंजानीहै याप्रकारकाविचारकरिकै सोपिप्पलादमुनि ताईश्वरसंबंधीमहासृष्टिकीउपेक्षाकरिकै ताविराट्‌भगवान्‌तैं उत्पन्नहुईसृष्टिका कथनकरताभया ॥ पिप्पलादमुनिरुवाच ॥ हेकात्यायन! पूर्व याजगत्‌केवृद्धिकरणेकीइच्छाकरताहुआ सोप्रजापतिरूपविराट्‌भगवान्

यहअग्निषोमदोनों परस्परमिलिकै नानाप्रकारकीसृष्टिकरणेविषेसमर्थहैं याप्रकारकाविचारकरिकै भोक्तारूपअग्निकूं तथाभोग्यरूपसोमकूं उत्पन्नकरताभया ॥ अब तिनदोनोंविषे प्रथम भोक्तारूपअग्निकी सर्वात्मरूपता वर्णनकरेहैं ॥ हेकात्यायन! सोभोक्तारूप अग्नि अध्यात्मअधिदैवरूपकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां यासंघातविषेस्थितजोप्राणहै ॥ सोप्राण अध्यात्मअग्निरूपहै ॥ ताप्राणरूपअध्यात्मअग्निविषे यासंघातकावशकरणरूपभोक्तापणा स्पष्टहीहै ॥ और आदित्यरूपअधिदैवअग्निहै ॥ कैसाहैसोआदित्यरूपअग्नि? आपणेउदयअस्तभावकरिकै पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण इत्यादिकसर्वदिशावोंका विभागकरणेहाराहै ॥ तथा सर्वप्रकाश्यवस्तुवोंका भोक्तापुरुषहै ॥ तथा सर्वविश्वकाआत्मारूपहोणेतें सर्वविश्वरूपहै ॥ तथा तप्तसुवर्णकेसमान जिसआदित्यकीप्रभाहै ॥ तथा जिसआदित्यतें सर्ववस्तुविषयकज्ञानरूपधन उत्पन्नहुआहै ॥ तथा जोआदित्यरूपअग्नि आपणेसहस्रकिरणोंकरिकै प्रगटज्योतिरूपहै ॥ तथा जोआदित्य यासर्वजीवोंकाबाह्यप्राणहै ॥ तथा जोआदित्य अनेकव्यष्टिरूपोंकरिकैवर्तमानहै ॥ अब ताप्राणरूपअग्निविषे संवत्सररूपकालरूपकरिकै यासृष्टिकाकर्त्तापणा बोधनकरणेवासते प्रथम उत्तरायणादिककालविषे ताप्राणरूपअग्निकीअवयवरूपता वर्णनकरैहैं॥ हेकात्यायन! द्वादशमासकाजोसंवत्सरहै॥ तासंवत्सरका षट्मासरूपजोउत्तरायणहै ॥ सोउत्तरायणभी ताप्राणअग्निरूपहीहै ॥ याकारणतेंही ताउत्तरायणमार्गकरिकै ब्रह्मचर्यादिकसाधनसंपन्न उपासकपुरुष याआदित्यमंडलकूंभेदनकरिकै ऊपरिजावैहैं ॥ हेकात्यायन! यहअधिकारीउपासकपुरुष यासूर्यमंडलकूंभेदनकरिकै जिसपरोक्षस्थानकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ सोस्थान समष्टिप्राणरूपहिरण्यगर्भकेनिवासकास्थानहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तास्थानकूं प्राणायतन यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ और सोस्थान मृत्युभयतेंरहितहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तास्थानकूं अमृत अभय यादोनोंनामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और सोस्थान हिरण्यगर्भरूपब्रह्माकेरहणेकालोकहै ॥ यातें तास्थानकूं ब्रह्मलोक यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ सोब्रह्मलोकरूपस्थान यासूर्यमंडलतेंभी परेवर्तमानहै ॥ हेकात्यायन! जिनअधिकारीपुरुषोंनें तासगुणब्रह्मकीअभेदरूपकरिकैउपासनाकरीहै ॥ तथा जेअधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यधर्मकरिकैयुक्तहैं ॥ ऐसेअहंग्रहउपासनावालेपुरुष ताउत्तरायणमार्गद्वारा ताब्रह्मलोकविषेप्राप्तहोइकै

पुनः यासंसारमंडलविषेआवतेनहीं ॥ किंतु ताब्रह्मलोकविषेही मोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेकात्यायन ! जैसे सोषट्मासरूपउत्तरायण उपासकपुरुषोंकूं सूर्यमंडलकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ यातें वेदवेत्तापुरुषोंनें ताउत्तरायणकूं प्राणअग्निरूपकरिकैकथनकन्याहै ॥ तैसे ताषट्मासरूपउत्तरायणकेघटक जेशुक्लपक्षहैं ॥ तथा तिनशुक्लपक्षोंकेघटक जेदिनहैं ॥ तिनशुक्लपक्षोंकूं तथातिनदिवसोंकूंभीतेवेदवेत्तापुरुष ताप्राणअग्निरूपकरिकैकथनकरैहैं ॥ काहेतें ? जैसे सोषट्मासरूपउत्तरायण तादेवयानमार्गका घटकहै ॥ तैसे यहशुक्लपक्ष तथादिवसभी तादेवयानमार्गकेघटकहैं ॥ यातें तिनोंविषेभी प्राणअग्निरूपतासंभवैहै ॥ इतनेकरिकै ताभोक्तारूपअग्निके आदित्यादिकरूपोंकावर्णनकन्या ॥ अब ताभोग्यरूपसोमकेरूपोंकावर्णनकरैहैं ॥ हेकात्यायन ! यहचंद्रमा भोग्यअमृतादिरूप होणेतें सोमरूपहै ॥ और यहषट्मासरूपदक्षिणायन कर्मीपुरुषोंकूं ताचंद्रमारूपसोमकीप्राप्तिकरैहै ॥ यातें वेदवेत्तापुरुष तादक्षिणायनकूंभी सोम यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ जिसदक्षिणायनकरिकै अग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरणेहारे श्रद्धावान्कर्मीपुरुष ताचंद्रलोककूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेकात्यायन ! जैसे सोषट्मासरूपदक्षिणायन सोमरूपहै तैसे तादक्षिणायनकेघटक जेकृष्णपक्षहैं तथारात्रिहैं ॥ तेकृष्णपक्ष तथारात्रिभी तासोमरूपहीहैं ॥ जिनरात्रियोंविषे आपणीस्त्रीकेसाथ संभोगकरणेहारे गृहस्थपुरुषोंके ब्रह्मचर्यकाभंगहोवैनहीं ॥ इतनेकहणेकरिकै यहअर्थकथनकन्या ॥ येदिवस प्राणात्मकअग्निरूपहैं ॥ यातें तादिवसविषेआपणीस्त्रीकेसाथ संभोगकरणेहारेपुरुषोंके केवल ब्रह्मचर्यधर्मकीहानिनहींहोवैहै ॥ किंतु तिनपुरुषोंके प्राणोंकीभीहानिहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ प्राणंवाएतेप्रस्कंदंति येदिवारत्यासंयुज्यंते ब्रह्मचर्यमेवतद्यद्रात्रौरत्यासंयुज्यंते॥ अर्थयह ॥ जेगृहस्थपुरुष दिनविषेस्त्रीसंभोगकरेहैं ॥ तेपुरुष आपणेप्राणोंकूंहीनष्टकरेहैं ॥ और जेगृहस्थपुरुष रात्रिविषे स्त्रीसंभोगकरेहैं ॥ तेपुरुष ब्रह्मचर्यधर्मकूंही पालनकरेहैं ॥ १ ॥ हेकात्यायन ! उत्तरायण शुक्लपक्ष दिवस यातीनस्वरूपजोअग्निहै ॥ तथा दक्षिणायण कृष्णपक्ष रात्रि यातीनस्वरूपजोसोमहै ॥ तीसअग्निषोमदोनोंकाजो परस्परमिथुनीभावहै ॥ ताकानाम संवत्सरहै ॥ सो संवत्सर प्रजापतिरूपहै ॥ कैसाहैसोसंवत्सररूपप्रजापति ? वसंतादिकषट्ऋतुरूपपादोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा मार्गशीर्षादिकद्वादशमासोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा

जोसंवत्सररूपप्रजापति षट्ऋतुरूपअरोंकरिकैयुक्त शिशुमारनामाचक्रविषे सूर्यरूपकरिकैस्थितहै ॥ तथा स्वर्गलोककेऊपरिस्थितहै ॥ तथा वर्षायुक्तमेघोंकाकारणरूपहोणेतें यासर्वजगत्कापितारूपहै ॥ काहेतें? सूर्य चंद्र उत्तरायण दक्षिणायन इत्यादिरूप करिकै अग्निषोमरूपजोयहप्रजापतिहै॥ताप्रजापतितें वृष्टिद्वारा व्रीहियवादिरूपनानाप्रकारकाअन्न उत्पन्नहोवैहै ॥ और सो व्रीहियवादिरूपअन्न क्षुधातुरपुरुषोंकेजठराग्निविषेप्राप्तहोइकै जबी परिपक्कहोवैहै ॥ तबी ताअन्नतैं वीर्यरूपरेत उत्पन्नहोवैहै ॥ तावीर्यतें यहनानाप्रकारकीप्रजा उत्पन्नहोवैहै ॥ इसप्रकार ताअग्निषोमद्वारा सोप्रजापतिही याजगत्काकारणहै ॥ १ ॥ इतनेकरिकै याप्रथमप्रश्नविषे उपासनाकरणेयोग्यप्राणके सूर्यादिरूपकरिकैअधिदैवप्रभावका वर्णनकऱ्या ॥ अब ताप्राणके अध्यात्मप्रभावके निर्णयकरणेवासते द्वितीयप्रश्नउत्तरकानिरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकेउत्तरकूंश्रवणकरिकै जबी सोकात्यायनऋषि तूष्णींहोताभया ॥ तबी सोवैदर्भिनामा भार्गवऋषि तापिप्पलादमुनिकेप्रति याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ भार्गवउवाच ॥ हेभगवन्! याअध्यात्मसंघातरूपजगत्कूं धारणकरणेहारे कितनेदेवताहैं? और तिनदेवतावोंविषेभी प्रकाशकरणेहारे कितनेदेवताहैं? और तिनसर्वदेवतावोंविषेभी कीर्त्तिअतिशयतादिकगुणोंवाला सर्वतेंश्रेष्ठदेवता कौनहै? इनतीनोंप्रश्नोंकाउत्तर आप कृपा करिकै हमारेप्रति कथनकरो ॥ हेशिष्य! इसप्रकार जबी ताभार्गवनें तापिप्पलादमुनिकेप्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तबी सोपिप्पलादमुनि ताभार्गवकेप्रति याप्रकारकाउत्तर कहताभया ॥ पिप्पलादउवाच ॥ हेभार्गव! आकाशादिकपंचभूत श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय वाकादिकपंचकर्मइंद्रिय एकमन एकप्राण येसप्तदशदेवताही यासर्वशरीरोंकेधारणकरणेहारेहैं ॥ और तिनसप्तदशदेवतावोंविषेभी श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय एकमन येषट्देवता रूपादिकपदार्थोंकूं प्रकाशकरणेहारेहैं ॥ और याशरीरविषे प्राण अपान व्यान उदान समान यापंचवृत्तिरूपकरिकैस्थितजोप्राणहै ॥ सोप्राण तिनसर्वदेवतावोंतेंश्रेष्ठहै ॥ काहेतें? दूसरेश्रोत्रनेत्रादिकइंद्रियोंके नष्टहुएभी बधिरअंधादिरूपकरिकैयाशरीरकीस्थिति देखणेविषेआवैहै ॥ परंतु याप्राणकेनिसकणेतेंअनंतर याशरीरकीस्थिति देखणेविषे आवतीनहीं ॥ यातें यहप्राणदेवता तिनसर्वदेवतावोंतेंश्रेष्ठहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहैं ॥ हेभा

गव! जैसे यालोकविषे मधुमक्षिकावों विषे मधुकरराजनामा प्रधानमक्षिकाहोवैंहैं॥ तेमधुकरराजनामा प्रधानमक्षिका जबी तामधु
देशविषेस्थितहोवैहैं॥ तबी दूसरीसर्वमक्षिका तामधुदेशविषेस्थितहोवैहैं॥ और जबी तेमधुकरराजनामाप्रधानमक्षिका तामधुदे
शतैं चलीजावैहैं॥ तबी तेदूसरीसर्वमक्षिकाभी तामधुदेशतैंचलीजावैहैं॥ यहवार्त्ता सर्वलोकविषेप्रसिद्धहै॥ तैसे याशरीरविषे ज
बपर्यंत यहप्राण स्थितहोवैहैं॥ तबपर्यंत येवाकादिकसर्वइंद्रिय स्थितहोवैहैं॥ और यहप्राण जबी याशरीरतैंबाह्यनिकसिजावै
है॥ तबी तेवाकादिकसर्वइंद्रियभी याशरीरतैं बाह्यनिकसिजावैहैं॥ यातैं याशरीरविषे प्राणोंकेविद्यमानहुए दूसरेचक्षुआदिकइं
द्रियोंकेअभावहुएभी यासंघातकाजीवनरूपजोअन्वयहै॥ तथा याप्राणोंकेउत्क्रमणहुए तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंकी व्याकुलतारूप
जोव्यतिरेकहै॥ ताअन्वयव्यतिरेककरिकै याप्राणोंविषेही सर्वकीविधारकतारूपश्रेष्ठता निश्चयहोवैहै॥ ताप्राणोंकीश्रेष्ठताकूंदेखि
करिकै तेचक्षुआदिकइंद्रियोंकेअभिमानीदेवता याप्रकार ताप्राणकीस्तुतिकरतेभये॥ हेप्राणदेवता! अग्नि सूर्य पर्जन्य विद्युत् वा
यु इंद्र आकाशादिकपंचभूत सोम सत् असत् अमृत ऋगादिकचारिवेद इसतैंआदिलैकेजितना नामरूपक्रियास्वरूपविश्व
है॥ सोसर्वविश्वस्वरूप तूहीहैं॥ इहां पर्जन्यशब्दकरिकै वर्षावालेमेघोंकाग्रहणकरणा॥ और सोमशब्दकरिकै भोग्यपदार्थोंका
ग्रहणकरणा॥ और सत्शब्दकरिकै मूर्तपदार्थोंकाग्रहणकरणा॥ और असत्शब्दकरिकै अमूर्तपदार्थोंकाग्रहणकरणा॥ और अ
मृतशब्दकरिकै देवतावोंकेभोग्यपदार्थोंकाग्रहणकरणा॥ और हेप्राणदेवता! जैसे रथचक्रकेनाभिविषे अरा स्थितहोवैहैं॥ तै
से यहसंपूर्णविश्व तुमारेविषेही स्थितहै॥ याकारणतैं तूप्राणदेवता सर्वविश्वकाआत्मारूपहै॥ और हेप्राणदेवता! यालोकविषे
जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेप्राणिरूपकरिकैभी तूही उत्पन्नहोवैहै॥ तथा विराट्हिरण्यगर्भरूपकरिकैभी
तूही उत्पन्नहोवैहै॥ तुमारेतैंविना दूसराकोईश्रेष्ठहैनहीं॥ और हेप्राणदेवता! यालोकविषे ऐश्वर्यतावाले जितनेप्राणीहैं॥ जै
से देवतावोंविषे अग्निहै॥ और पितरोंविषे नांदीमुखहैं॥ और ऋषियोंविषे सत्यपरायण अंगिरस् अथर्वा आदिकहैं॥ जेऐश्वर्यवालेअ
ग्निआदिक देवतावोंकेप्रसन्नकरणेहारे स्वाहाशब्दकरिकैयुक्तहैं॥ तथा पितरोंकेप्रसन्नकरणेहारे स्वधाशब्दकरिकैयुक्तहैं॥ तेसर्वअ

ग्निआदिक तुमारेही स्वरूपहैं ॥ और हेप्राणदेवता ! तुमारीमूर्तिही चक्षुआदिकसर्वइंद्रियोंविषे बलकूंधारणकरिकै स्थितहुईहै ॥ ताआपणेमूर्तिकूं तू सर्वदा अनुकूलपरिणामवालाकर ॥ हमसंपूर्ण तुमारेहीकिंकरहैं ॥ यातैं हमारेअपराधकूंक्षमाकरिकै आप इ सशरीरतैंबाह्य कदाचित्भी उत्क्रमणनहींकरौं ॥ और हेप्राणदेवता ! स्वर्ग अंतरिक्ष भूमि यातीनलोकविषेस्थितजितने भूतभौतिकपदार्थहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ तुमारेही वशवर्तिहैं ॥ ऐसेतुमारेस्वरूपकूंजानणेहारेजेहमहैं ॥ तिनहमपुत्रोंकाआप मा ताकीन्यांई रक्षणकरो ॥ तथा हमारेतांई चारिवेदरूप ब्राह्मणोंकेधनकीप्राप्तिकरौ ॥ तथा सुवर्णादिरूप क्षत्रियोंकेधनकीप्रा प्तिकरौ ॥ तथा हमारेतांईसद्बुद्धिकीप्राप्तिकरौ ॥ इसप्रकार तेसर्वइंद्रियोंकेदेवता ताप्राणदेवताकीस्तुति करतेभये ॥ यातैं यहप्रा णही तिनसर्वदेवतावोंतैंश्रेष्ठहै ॥ इतनेकरिकै द्वितीयप्रश्नउत्तरका निरूपणकऱ्या ॥ अब तृतीयप्रश्नउत्तरका निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार सोवैदर्भिनामा भार्गवऋषि प्राणोंकीश्रेष्ठताकूं निश्चयकरिकै तूष्णींभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोआश्वलायननामा कौशल्यऋषि ताप्राणकेउत्पत्तिस्थितिआदिकोंकेनिर्णयकरणेवासते तापिप्पलादमुनिकेप्रति याप्रकारकेषट् प्रश्न करताभया ॥ आश्वलायनउवाच ॥ हेभगवन्पिप्पलादमुनि ! याप्राणकी किसवस्तुतैं उत्पत्तिहोवैहै? ॥ १ ॥ और किसनि मित्तकरिकै याप्राणका सर्वशरीरोंकेसाथसंबंधहोवैहै? ॥ २ ॥ और यहप्राण आपणेकूं भिन्नभिन्नकरिकै किसप्रकार याशरीरोंवि षेस्थितहोवैहै? ॥ ३ ॥ और यहप्राण याशरीरतैंबाह्य किसद्वारकरिकै तथाकिसवृत्तिविशेषकरिकै तथाकिसनिमित्तकरिकै उत्क्र मणकरेहै? ॥ ४ ॥ और यहप्राण बाह्यअधिभूतअधिदैवरूपसर्वजगत्कूं किसप्रकार धारणकरेहै? ॥ ५ ॥ और यहप्राण अंतरअ ध्यात्मजगत्कूं किसप्रकार धारणकरेहै ? ॥ ६ ॥ याषट्प्रश्नोंकरिकैयुक्त याहमारेप्रश्नका आप कृपाकरिकैउत्तरकहो ॥ हेशिष्य ! इस प्रकारकाप्रश्न जबी ताआश्वलायननैं पिप्पलादमुनिकेप्रतिकऱ्या ॥ तबी सोपिप्पलादमुनि ताआश्वलायनकेप्रति याप्रकारकावच न कहताभया ॥ पिप्पलादमुनिरुवाच ॥ हेआश्वलायन ! तुमनैं येअत्यंतसूक्ष्मप्रश्नकरेहैं ॥ यातैं यासर्वमुनियोंकेसमाजविषे तू ब्रह्मिष्ठहै ॥ जोपुरुष अतिशयकरिकै ब्रह्मपरायणहोवैहै ताकानामब्रह्मिष्ठहै ॥ ऐसेब्रह्मिष्ठतैंउत्तमअधिकारीकेप्रति मैं तिनसर्वप्र

श्नोंकाउत्तर कथनकरताहूं ॥ तू सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ अब याप्राणकीकिसवस्तुतैंउत्पत्तिहोवैहै याप्रथमप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरेहैं ॥ हेआश्वलायन! जैसे यास्थूलदेहतैं दर्पणादिकोंकीसमीपतारूपनिमित्तकरिकै प्रतिबिंबरूपछाया उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे परमार्थसत्यस्वरूपआत्मारूपबिंबतैं यहजीवभूतप्राणरूपप्रतिबिंब उत्पन्नहोवैहै ॥ इतनेकरिकैयहअर्थ बोधनकऱ्या ॥ जैसे दर्पणादिकोंविषेस्थितप्रतिबिंबकी मुखादिरूपबिंबतैं भिन्नसत्ताहोवैनहीं ॥ यातैं सोप्रतिबिंब ताबिंबमात्रकेहीआश्रितहै ॥ तैसे यह प्राणभी ताआत्मामात्रकेहीआश्रितहै ॥ १ ॥ अब किसनिमित्तकरिकै याप्राणका तिनसर्वशरीरोंकेसाथ संबंधहोवैहै याद्वितीयप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरेहैं ॥ हेआश्वलायन! यहजीवरूपप्राण तिसतिसशरीरकेसाथ जोसंबंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तासंबंधविषे या विज्ञानरूपमनकरिकैकऱ्येहुएपुण्यपापकर्महीं निमित्तकारणहैं ॥ तामनकृतकर्मोंकरिकैही यहजीवरूपप्राण तिसतिसशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैं? आत्माकेप्रतिबिंबकूंग्रहणकरिकै चेतनभावकूंप्राप्तभयाजोमनहै ॥ सोचिदाभासयुक्तमन यासंसारविषे जिसपुण्यपापकर्मोंकूंकरैहै ॥ सोईहीमन तिसपुण्यपापकर्मोंकेफलकूंभोगैहै ॥ यातैंयहमनही कर्ताभोक्ताहै ॥ तिसमनकाकार्यरूप जोमानसकर्म है ॥ तिसमानसकर्मकरिकैही यहजीवरूपप्राण तिसतिसशरीरविषेप्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! दूसरेशास्त्रोंविषेतौ शरीरकृतकर्म तथावाणीकृतकर्म तथामनकृतकर्म यातीनप्रकारकेपुण्यपापकर्मोंविषेही याजन्ममरणरूपसंसारकीनिमित्तकारणता कथनकरीहै ॥ और इहां आपनैं केवलमानसकर्मोंकूंही यासंसारकीकारणताकथनकरीहै ॥ यातैं तिनदूसरेशास्त्रोंकेसाथ आपकेवचनकाविरोधहोवैगा ॥ **समाधान** ॥ हेआश्वलायन! यहवाकादिकइंद्रिय तथायहशरीर तामनतैंविना स्वतंत्रहोइकै किसीकार्यकरणेविषेसमर्थहोइसकैनहीं ॥ किंतु तामनकूंआश्रयणकरिकैही तेवाकादिकइंद्रिय तथाशरीर किसीशुभअशुभकर्मकरणेविषे समर्थहोवैहैं ॥ यातैं ताशरीरकृतकर्मोंविषे तथावाणीकृतकर्मोंविषेभी तामनकीहीप्रधानताहै ॥ ताप्रधानताकूंअंगीकारकरिकै हमनैं केवलमानसकर्मोंकूंही यासंसारकीकारणता कथनकरीहै ॥ अब तामनकीप्रधानता निरूपणकरेहैं ॥ हेआश्वलायन! तामनकी सहायतातैंविना केवल याशरीरकरिकै तथावाकादिकइंद्रियोंकरिकै जोजोकर्महोवैहै ॥ तिसकर्मविषे पुण्यरूपता अथवापा

परूपता किसीभीशास्त्रविषे कथनकरीनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! मनकेव्यापारतैंविना केवल शरीरइंद्रियादिकोंकरिकै कऱ्येहुएक मविषे जोपुण्यपापरूपतानहींहोतीहोवै तौ धर्मशास्त्रविषे जो मनकेविज्ञानरूपव्यापारतैंविना केवलशरीरइंद्रियादिकोंकरिकैकऱ्येहु ए ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकेनिवृत्तकरणेवासते एकगुणाप्रायश्चित्त विधानकऱ्याहै ॥ और तामनकेविज्ञानरूपव्यापारपूर्वक कऱ्येहु एब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकेनिवृत्तकरणेवासते त्रिगुणाप्रायश्चित्त विधानकऱ्याहै ॥ सोधर्मशास्त्र असंगतहोवैगा ॥ समाधान ॥ हे आश्वलायन! यद्यपि धर्मशास्त्रविषे अबुद्धिपूर्वककऱ्येहुएपापकर्मोंकेनिवृत्तकरणेवासते प्रायश्चित्तकाविधानकऱ्याहै॥ तथापि सोप्रा यश्चित्त तामानसव्यापारकेयोगतैंही कऱ्याजावैहै ॥ तामानसव्यापारतैंविना सोप्रायश्चित्त कऱ्याजावैनहीं ॥ काहेतें? जिसपुरुषनें आपनीबुद्धिपूर्वक पापकर्मनहींकऱ्या ॥ सोपुरुष जबी मैंनेंअबुद्धिपूर्वकपापकर्मकऱ्याहै याप्रकारका आपणेमनकरिकैविचारकरैहै ॥ तबीही सोपुरुष ताप्रायश्चित्तकरणेकाअधिकारीहोवैहै ॥ तामानसविचारतैंविना सोपुरुष ताप्रायश्चित्तकाअधिकारीहोवैनहीं ॥ यातें तामनकेविज्ञानरूपव्यापारतैंही सोअबुद्धिपूर्वकपापोंका प्रायश्चित्तहोवैहै ॥ मनकेव्यापारतैंविना सोप्रायश्चित्तहोवैनहीं ॥ यातें अबुद्धिपूर्वककऱ्येहुएकर्मविषे मनकेयोगतैंही पुण्यरूपता अथवा पापरूपताप्राप्तहोवैहै ॥ तामनकेयोगतैंविना ताकर्मविषे पुण्यपा परूपता प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंवा तिनपुण्यपापकर्मोंकाकर्त्तापणा तथाभोक्तापणा शुद्धआत्माविषेहै अथवा देहइंद्रियादिकोंविषेहै अथवा मनविषेहै? यहविचारकऱ्याचाहिये ॥ तहां शुद्धआत्मातौ असंगनिर्विकारहै ॥ यातें ताशुद्धआत्माविषेतौ सोकर्त्तापणा तथाभोक्तापणा संभवैनहीं ॥ और यहदेहइंद्रियादिकतौ जडहैं तथापरतंत्रहैं ॥ यातें तिनदेहइंद्रियादिकोंविषेभी सोकर्त्ताभोक्ता पणासंभवैनहीं ॥ किंतु परिशेषतें सोकर्त्ताभोक्तापणा तथापुण्यपापकर्म तामनविषेहीस्थितहै ॥ यातें यहचिदाभासयुक्तमनही तिनपुण्यपापकर्मोंकूंकरैहै ॥ तामनकृतपुण्यपापकर्मोंकरिकैही यहदेहइंद्रियादिकसंघात उत्पन्नहोवैहै ॥ तथा तामनकृतपुण्यपापक र्मोंकेवशतैंही यहजीवरूपप्राण तिसातसशरीरकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ २ ॥ अब सोप्राण आपणेकूंभिन्नभिन्नरूपकरिकै या शरीरोंविषे किसप्रकारस्थितहोवैहै यातृतीयप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरै हैं ॥ हेआश्वलायन! जैसे यालोकविषे महाराजा आपणेमं

त्रियोंकूं आपणेआपणेकार्यविषेप्रेरणाकरेहै ॥ तैसे याशरीरविषेस्थितहुआ यहक्रियाशक्तिवालाप्राणभी आपणेकूं प्राण अपान समान व्यान उदान यापंचप्रकारकाकरिकै नेत्रादिकसर्वइंद्रियोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रेरणाकरेहै ॥ अब तिनपंचप्राणोंकेस्थानका तथाकार्यका वर्णनकरेहैं ॥ हेआश्वलायन! तिनपंचप्राणोंविषे जोप्रथम प्रधानप्राणहै ॥ सोप्राणतौ शिरविषेस्थितजे दोनासिका दोश्रोत्र दोनेत्र एकमुख येसप्तछिद्रहैं तिनसप्तछिद्रोंविषेस्थितहै ॥ तथा मुखनासिकाद्वारा बाह्यगमनागमनकरेहै ॥ और दूसराजोअपानहै ॥ सोअपानतौ पायु उपस्थ यादोनोंविषेस्थितहैं ॥ तथा विष्ठामूत्रकेविभागकूंकरेहै ॥ और तीसराजोसमाननामाप्राणहै ॥ सोसमानतौ भोजनकरेहुएअन्नकूं तथापानकरेहुएजलकूं समानकरेहै ॥ यातैं सर्वशरीरविषे व्यापकहुआभीसोसमान पूर्वउक्तसप्तछिद्रोंके तथा आधारचक्रके मध्यदेशविषे विशेषरूपकरिकैरहेहै ॥ अब व्याननामाप्राणकेआश्रयकहणेवासते प्रथम नाडियोंकी परमसंख्या कथनकरेहैं ॥ हेआश्वलायन! यादेहधारीजीवोंकेहृदयदेशविषे बहतरिकोटि दशसहस्र एकशत एक ७२००१०१०१ इतनीनाडियांरहेहैं ॥ जैसे यालोकविषेप्रसिद्धपिप्पलादिकवृक्षोंका एकमूलहोवैहै ॥ तामूलतैं स्कंधनिकसेहैं ॥ तास्कंधोंतैं स्थूलशाखा निकसेहैं तिनस्थूलशाखावोंतैं दूसरीसूक्ष्मशाखा निकसेहैं तिनसूक्ष्मशाखावोंतैंभी दूसरीअत्यंतसूक्ष्मशाखा निकसेहैं ॥ तैसे तिनसर्वनाडियोंविषे जोसुषुम्नानामानाडीहै ॥ सासुषुम्नानाडीतौ वृक्षकेमूलसमान मुख्यहै ॥ और तासुषुम्नारूपमूलकी स्कंधरूपदूसरीदशनाडीहोवैहैं ॥ और तिनस्कंधरूपदशनाडियोंविषे एकएकनाडीकी स्थूलशाखारूप दूसरीनवनवनाडीहोवैहैं ॥ तहां एकसुषुम्नानाडीकूंछोडिकै दूसरीदशस्कंधरूपनाडी तथातिनोंकीस्थूलशाखारूपनव्वेनाडी ९० येसर्वमिलिकै एकशत १०० नाडीहोवैहैं ॥ तिनएकशतनाडियोंविषे एकएकनाडीकी सूक्ष्मशाखारूप दूसरीएकएकशत १०० नाडीहोवैहैं ॥ तेसूक्ष्मशाखारूप सर्वनाडियां मिलिकै १०००० दशसहस्रहोवैहैं ॥ और तिनसूक्ष्मशाखारूपदशसहस्रनाडियोंविषे एकएकनाडीकी अत्यंतसूक्ष्मशाखारूप दूसरी बहतरिबहतरिसहस्र ७२००० नाडीहोवैहैं ॥ तेअत्यंतसूक्ष्मशाखारूपसर्वनाडियां मिलिकै बहतरिकोटिहोवैहैं ॥ इसप्रकार बहतरिकोटि दशसहस्र एकशत एक इतनीसर्वनाडीहोवैहैं ॥ तहां एकसुषुम्नानाडीकूंछोडिकै दूसरीसर्वनाडियोंविषे सो

व्याननामाप्राण वर्तैहै ॥ तिसीव्यानकूं श्रुतिविषे प्राणअपानकीसंधिरूपकरिकैवर्णनकर्‍याहै ॥ तथा बलवान्कर्मोंका साधकरूपकरि कैकथनकर्‍याहै ॥ और तासुषुम्नानाडीकरिकैतौ उदाननामाप्राणही विचरैहै ॥ कैसाहैसोउदाननामाप्राण ? सर्वदा ऊर्ध्वगमनकरणे काहैस्वभावजिसका ॥ ३ ॥ इतनेकरिकै यहप्राण याशरीरतैंबाह्य किसद्वारकरिकै तथाकिसवृत्तिविशेषकरिकै तथाकिसनिमित्तकरि कै उत्क्रमणकरैहै यातीनविकल्पोंकरिकैयुक्त चतुर्थप्रश्नविषे प्रथमदोविकल्पोंकासमाधान कथनकर्‍या ॥ काहेतैं ? यहप्राण सुषुम्ना नाडीरूपद्वारकरिकै तथाउदानवृत्तिरूपकरिकै याशरीरतैं बाह्यउत्क्रमणकरैहै ॥ यावचनतैं तिनदोनोंविकल्पोंकाउत्तर सिद्धहोवै है ॥ अब किसनिमित्तकरिकै यहप्राण शरीरतैंउत्क्रमणकरैहै यातृतीयविकल्पकासमाधान वर्णनकरैहैं ॥ हेआश्वलायन ! मरणका लविषे जिनजीवोंके अग्निहोत्रादिकपुण्यकर्म फलदेणेवासते सन्मुखहोवैहैं ॥ तिनजीवोंकूंतौ यहउदाननामाप्राण स्वर्गादिकलोकों कीप्राप्तिकरैहै ॥ और तामरणकालविषे जिनजीवोंके पापकर्म फलदेणेवासते सन्मुखहोवैहैं ॥ तिनजीवोंकूं सोउदाननामाप्राण न रकादिकोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ और तामरणकालविषे जिनजीवोंके पुण्यपापरूपदोनोंकर्म फलदेणेवासते सन्मुखहोवैहैं ॥ तिनजीवोंकूं सोउदाननामाप्राण मनुष्यलोककीप्राप्तिकरैहै ॥ और तामरणकालविषे जिनपुरुषोंकूं तिनस्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिकरणेहारे पुण्य पापकर्मरूपप्रतिबंधक नहींहोवैहैं ॥ तिनपुरुषोंकूंतौ सोउदान तासुषुम्नानाडीद्वारा ब्रह्मलोककीहीप्राप्तिकरैहै ॥ और जिनपुरुषोंके आत्मसाक्षात्कारकरिकै पुण्यपापरूपसर्वकर्म निवृत्तहुएहैं ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंका सोउदाननामाप्राण शरीरतैंबाह्य उत्क्रमणकर तानहीं ॥ यातैं अन्वयव्यतिरेककरिकै यापुण्यपापकर्मोंविषेही ताप्राणकेउत्क्रमणकीनिमित्तकारणता सिद्धहोवैहै ॥ इतनेकरिकै चतुर्थप्रश्नउत्तरकानिरूपणकर्‍या ॥ ४ ॥ अब यहप्राण बाह्यअधिभूतअधिदैवप्रपंचकूं किसप्रकार धारणकरैहै ? तथा अंतर अ ध्यात्मरूपजगत्कूं किसप्रकारधारणकरैहै ? यापंचमषष्ठदोनोंप्रश्नोंकाउत्तर निरूपणकरैहैं ॥ हेआश्वलायन ! यहप्राण बाह्यआ दित्यपृथिवीआदिकरूपोंकरिकै याअधिभूतअधिदैवरूपसर्वजगत्कूंधारणकरैहै ॥ और यहप्राण प्राण अपान समान व्यान उदान यापंचमुख्यस्वरूपोंकरिकै तथाचक्षुआदिकगौणस्वरूपोंकरिकै अंतरअध्यात्मजगत्कूंधारणकरैहै ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवा

सते पंचप्राणोंके क्रमतें बाह्यरूपोंकानिरूपणकरेहैं ॥ हेआश्वलायन! चक्षु तथाआदित्य येदोनों प्राणस्वरूपहैं ॥ यातें तिन दोनोंकापरस्परभेदनहींहै ॥ किंतु तिनदोनोंका अभेदहीहै ॥ यातें ताप्राणवायुका बाह्यरूपआदित्यहै ॥ और यापृथिवीदेवताकरि केही अपानवायुकाआकर्षणहोवैहै ॥ यातें ताअपानका सापृथिवी बाह्यरूपहै ॥ और जैसें यहसमान शरीरकेमध्यदेशविषेरहेहै ॥ तैसें भूमिलोकके तथास्वर्गलोकके मध्यदेशविषे यहआकाशरहेहै ॥ यातें तासमानका सोस्वर्गपृथिवीकेमध्यवर्तिआकाश बाह्यरूपहै ॥ और जैसें व्यान सर्वनाडियोंविषेव्यापकहै ॥ तैसें यहबाह्यवायुभी व्यापकहै ॥ यातें ताव्यानका यहवायु बाह्यरूपहै ॥ और जैसें याउदानका ऊर्ध्वगमनकरणेकास्वभावहै ॥ तैसें अग्निरूपतेजकाभी ऊर्ध्वगमनकरणेकास्वभावहै ॥ यातें ताउदानका यहतेज बाह्यरूपहै ॥ हेआश्वलायन! याशरीरविषेस्थितजो अंतःकरणकीवृत्तिरूप तथाउष्णतारूपतेजहै ॥ सोतेज जिसकालविषे शांतहोइजावैहै ॥ तिसकालविषे यहजीव ऊर्ध्वश्वासरूपप्राणवृत्तिवालाहोवैहै ॥ सोप्राण यद्यपि आपोमयःप्राणः याश्रुतिविषे जलमयरूपकरिकैकथनकन्याहै ॥ तथापि मरणकालविषे सोप्राण तेजोरूपउदानवृत्तिकरिकैयुक्तहुआ ताजीवकूं लोकांतरविषेलेजावैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ पूर्वउक्ततेजतैंविना याशरीरविषे ताउदानकीस्थितिहोवैनहीं ॥ याकारणतैंभी सोतेज उदानरूपहीहै ॥ हे आश्वलायन! मरणकालविषे जोजीव कर्मकेवशतैं भावीप्राप्तहोणेहारेशरीरकेज्ञानजन्यसंस्कारोंवालाहै ॥ तथा जोजीव इंद्रियमनप्राणोंकेसाथ तादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहुआहै ॥ ऐसेजीवकूंही सोक्रियाशक्तिप्राण लोकांतरविषेलेजावैहै ॥ अब यापूर्वउक्तविद्याका फल वर्णनकरेहैं ॥ हेआश्वलायन! जोप्राण पूर्वउक्तरीतिसैं परमात्मादेवतैं उत्पन्नभयाहै ॥ तथा जोप्राण पुण्यपापकर्मोंकेवशतैं अनेकशरीरोंकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा जोप्राण नाडीआदिकअनेकस्थानोंविषेरहेहै ॥ तथा जोप्राण सर्वकाप्रेरकहै ॥ तथा जोप्राण अध्यात्मअधिदैवरूपहै ॥ सोप्राण मैंहूं ॥ याप्रकार जोअधिकारीपुरुष ताप्राणकीअभेदउपासनाकरेहैं ॥ तिसअधिकारीपुरुषका शिष्यप्रशिष्यादिकोंकीपरंपरारूपविद्यावंश तथापुत्रपौत्रादिकोंकीपरंपरारूपजन्मवंश कदाचित्भी नष्टहोवैनहीं ॥ किंतु ताउपासकपुरुषका सोदोनोंप्रकारकावंश सर्वदाबन्यारहेहै ॥ हेआश्वलायन! ताप्राणोंकेउपासकपुरुषकूं केवल सोवंशकीवृद्धिरू

पफल नहींहोवैहै ॥ किंतु तिनउपासकपुरुषोंकूं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मसाक्षात्कारकीभीप्राप्तिहोवैहै ॥ ताआत्मसाक्षात्कारकरिकै तेउपासकपुरुष मोक्षरूपअमृतकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तामोक्षरूपअमृतकूंप्राप्तहोइकै तेउपासकपुरुष पुनःयासंसारदुःखकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ यातैं अंतःकरणकीशुद्धिवासते याअधिकारीपुरुषोंनैं साप्राणकीउपासना अवश्यकरिकैकरणी ॥ ३ ॥ इहां पूर्वप्रसंगविषे कात्यायन भार्गव आश्वलायन यातीनऋषियोंके तीनप्रश्नउत्तरोंकरिकै सगुणविद्याकाविषय निरूपणकर्‍या ॥ अब निर्गुणविद्याकेविषयकानिश्चयकरणेवासते चतुर्थप्रश्नउत्तरकानिरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य! इसप्रकार तापिप्पलादमुनिकेवचनकूंश्रवणरिकै सोआश्वलायनऋषि तूष्णींभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर गार्ग्यनामा सौर्यायणिऋषि तापिप्पलादमुनिकेप्रति यहपंचप्रकारकाप्रश्नकरताभया ॥ गार्ग्यउवाच ॥ हेपिप्पलादमुनि! याशरीरविषे आपणेआपणेव्यापारकीउपरामतारूपशयनकूं कौनप्राप्तहोवैहैं? इहां याप्रथमप्रश्नका जाग्रत्‌अवस्थाकेआश्रयकानिर्णय प्रयोजनहै॥ काहेतें ? जिसकेव्यापारकीउपरामताकरिकै जाग्रत्‌कीनिवृत्तिरूपशयन होवैगा ॥ तिसीकूंही जाग्रत्‌कीआश्रयता अर्थतैंसिद्धहोवैगी ॥ १ ॥ और हेभगवन्! याशरीरविषे सर्वदा आपणेआपणेव्यापारविषेस्थितहुए कौन जाग्रत्‌कूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याद्वितीयप्रश्नका याशरीरकेरक्षाकरणेहारेकानिर्णय प्रयोजनहै ॥ काहेतें ? जो सर्वदासावधानहोवैहै ॥ तिसविषेही रक्षकपणा संभवैहै ॥ असावधानविषे रक्षकपणासंभवैनहीं ॥ २ ॥ और हेभगवन्! यासंघातविषे नानाप्रकारकेस्वप्नोंकूं कौनदेखैहै? यातृतीयप्रश्नका स्वप्नअवस्थाकेआश्रयकानिर्णयही फलहै ॥ काहेतें ? जोवस्तु स्वप्नअवस्थाविषे सावधानरहैगा ॥ तिसवस्तुविषेही स्वप्नकीआश्रयता संभवैहै ॥ ३ ॥ और हेभगवन्! यासंघातविषे सुषुप्तिकेसुखकूं कौनभोगैहै? याचतुर्थप्रश्नका सुषुप्तिअवस्थाकेआश्रयकानिर्णयहीफलहै ॥ काहेतें? जोवस्तु सुषुप्तिकालकेसुखकूंभोगैगा ॥ तिसवस्तुविषेही सुषुप्तिअवस्थाकीआश्रयता संभवैहै ॥ ४ ॥ और हेभगवन्! तासुषुप्तिअवस्थाविषे यहसंपूर्णप्राणादिक किसआधारविषेस्थितहोवैहैं? यापंचमप्रश्नका तुरीयअक्षरआत्माकानिर्णयहीप्रयोजनहै ॥ ५ ॥ हेशिष्य! इसप्रकार जबी तागार्ग्यऋषिनैं तापिप्पलादमुनिकेप्रति पंचप्रश्नकरे ॥ तबी सोपिप्पलादमुनि तागार्ग्यकेप्रति यथाक्रमतैं तिनपंचप्रश्नों

काउत्तर कहताभया ॥ पिप्पलादमुनिरुवाच ॥ हेगार्ग्य ! स्वप्नअवस्थाविषे यहचक्षुआदिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रियमनकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइकै आपणेआपणेव्यापारतैंनिवृत्तिरूपशयनकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषेतौ ते चक्षुआदिकदशइंद्रिय मनकेसहितही ताशयनकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं सोचक्षुआदिकइंद्रियविशिष्टमनही याजाग्रत्अवस्थाकाआश्रयहै ॥ १ ॥ अब द्वितीयप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरैहैं ॥ हेगार्ग्य ! सुषुप्तिअवस्थाविषे मनसहितइंद्रियोंकेलयहुएभी प्राण अपान व्यान समान उदान यहपंचप्रकारकाप्राण जठराग्निसहित आपणेआपणेव्यापारविषेस्थितिरूपजाग्रत्कूं प्राप्तहोवैहैं ॥ याकारणतैंही तासुषुप्तिविषे याजीवोंकेउदरविषेस्थितअन्नकापरिपाकहोवैहै ॥ यातैं जठराग्निसहित तेपंचप्राणही याशरीरकारक्षणकरणेहारेहैं ॥ २ ॥ इहां सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थितविद्वान्पुरुषकूं श्रुतिनैं अग्निहोत्रकीप्राप्तिकथनकरीहै ताकानिरूपणकरैहैं ॥ हेगार्ग्य ! जैसे प्रसिद्धअग्निहोत्रीपुरुषोंका गार्हपत्यनामाअग्नि सर्वदास्थिररहैहै ॥ और आहवनीयनामाअग्नितौ होमकरणेवासते तागार्हपत्यअग्नितैंउठाइकै प्रज्वलितकऱ्याजावैहै ॥ तैसे इहांप्रसंगविषे अंतःप्रवेशकरणेहारेअपानवायुतैं बाह्यगमनकरणेहाराप्राणवायु उठायाजावैहै ॥ याप्रकारकीसमानताकूंग्रहणकरिकै श्रुतिभगवती ताविद्वान्पुरुषकेप्राणकूंतौ आहवनीयअग्निरूपकहैहै ॥ और ताअपानकूं गार्हपत्यअग्निरूपकहैहै ॥ और ताविद्वान्पुरुषका व्याननामावायु अन्वाहार्यपचनरूपहै ॥ इहां ओदनविशेषका नाम अन्वाहार्यहै ॥ सोअन्वाहार्यरूपओदन जिसअग्निविषेपकायाजावैहै ॥ ताअग्निकानाम अन्वाहार्यपचनहै ॥ याअन्वाहार्यपचनकूंही वेदवेत्तापुरुष दक्षिणअग्निकहैहैं ॥ तादक्षिणअग्निरूप सोव्याननामावायुहै ॥ काहेतैं ? जैसे प्रसिद्धअग्निहोत्रकीशालाविषे सोदक्षिणाग्नि दक्षिणदिशाकेकुंडविषेस्थितहोवैहै ॥ तैसे यहव्याननामावायुभी हृदयकेपंचछिद्रोंविषे दक्षिणछिद्रविषेस्थितहोवैहै ॥ याप्रकारकीसमानताकूंअंगीकारकरिकै श्रुतिनैं ताव्यानकूं दक्षिणाग्निरूपकह्याहै ॥ और ताविद्वान्पुरुषका समाननामावायुतौ तिनगार्हपत्यादिकअग्नियोंविषेपक्षपाततैंरहित होतारूपहै ॥ जैसे प्रसिद्धअग्निहोत्रविषे जबी यजमान किसीदूसरेकार्यविषेसंलग्नहोवैहै ॥ तबी तायजमानकाप्रतिनिधिरूपकरिकै शिष्यादिकहोताहोवैहैं ॥ तैसे याविद्वान्पुरुषकेप्राणरूपअग्निहोत्र

विषे सोसमाननामावायुही होतारूपहै ॥ काहेतें? यहसमाननामावायु उच्छ्वासनिःश्वासरूपदोनोंआहुतियोंकूं न्यूनअधिकभावतैंर हितसमानताकूंप्राप्तकरेहै ॥ और यहउदाननामावायुतौ ताविद्वान्पुरुषके प्राणअग्निहोत्रका फलरूपहै ॥ काहेतें? याप्रसिद्धअग्नि होत्रविषेभी यजमानपुरुषकूं ताउदाननामावायुकेउत्क्रमणकरिकैही स्वर्गादिकफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याकारणतें सोउदाननामावा यु ताविद्वान्पुरुषकेअग्निहोत्रकाफलरूपहै ॥ और याविद्वान्पुरुषकेप्राणअग्निहोत्रविषे ताविद्वान्पुरुषकामन यजमानरूपहै ॥ और जैसे बाह्यअग्निहोत्रविषे प्रसिद्धगार्हपत्यादिकअग्नि तायजमानपुरुषकूं स्वर्गरूपफलकीप्राप्तिकरेहैं ॥ तैसे यहप्राणरूपअग्निभी तामनरूपयजमानकूं सुषुप्तिअवस्थाविषे हृदयकमलविषेस्थित ब्रह्मानंदरूपस्वर्गकीप्राप्तिकरेहैं ॥ इसप्रकार ताब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरु षका सर्वदा अग्निहोत्रहोवैहै ॥ अब तृतीयचतुर्थप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरेहैं ॥ हेगार्ग्य! जोमन स्वप्नअवस्थाविषेभीजागेहै ॥ तथा जोमन सुषुप्तिअवस्थाविषे ताविद्वान्पुरुषके प्राणअग्निहोत्रका यजमानरूपहै ॥ सोईहीमन चेतनकेप्रतिबिंबकूंग्रहणकरिकै प्रकाशमानहुआ नानाप्रकारकेस्वप्नोंकूंदेखैहै ॥ याकारणतें सोचिदाभासयुक्तमनही तास्वप्नअवस्थाकाआश्रयहै ॥ ३ ॥ और हेगा र्ग्य! सोमनही तासुषुप्तिकेसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ काहेतें? तासुषुप्तिअवस्थाविषे जैसे यहसंसार यद्यपि स्पष्टकरिकैप्रतीतहोवैनहीं ॥ तथापि तासुषुप्तिविषे यहसंसार सूक्ष्मबीजरूपकरिकैरहेहै ॥ तैसे तासुषुप्तिविषे यहमन यद्यपि स्पष्टरूपकरिकैप्रतीतहोवैनहीं ॥ तथापि सोमन तासुषुप्तिविषे सूक्ष्मबीजरूपकरिकैरहेहै ॥ यातें तासूक्ष्मबीजरूपकरिकैस्थितहुआ यहमनही तासुषुप्तिकाआश्रय है ॥ ४ ॥ अब पंचमप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरेहैं ॥ हेगार्ग्य! जोचेतनस्वरूपआत्मा तामनविषे प्रतिबिंबरूपकरिकैस्थितहै ॥ ताचे तनआत्माविषेही यहप्राणादिकसर्वजगत् स्थितहै ॥ जैसे यालोकविषे सायंकालविषे अनेकदिशावोंतेंआयेहुए अनेकपक्षी किसीम हान्वृक्षविषेस्थितहोवैहैं ॥ तैसे पृथिवीआदिकपंचभूत तथातिनपृथिवीआदिकभूतोंकेगंधादिकगुण तथाचक्षुआदिकदशइंद्रिय तथाचारीप्रकारकाअंतःकरण तथापंचप्रकारकाप्राण येसंपूर्णपदार्थ ताचेतनआत्माविषेही स्थितहैं ॥ हेगार्ग्य! ताचेतनआत्मा विषे केवल यहजडप्रपंचही स्थितनहीं है ॥ किंतु इंद्रियअंतःकरणप्राणादिकोंकेव्यापारविशिष्टरूपकरिकै यहजीवभी ताशुद्धआत्मा

विषेहीस्थितहै ॥ यातैं सोआत्मादेवही सर्वकाआधारहै ॥ हेगार्ग्य! सोयहआत्मादेव चक्षुआदिकइंद्रियोंकेसाथमिलिकै दर्शनादिकअनेकव्यापारोंकूंकरेहै ॥ यातैं सोआत्मादेव द्रष्टा स्प्रष्टा श्रोता इत्यादिकगुणोंवालाहोइकै जीवसंज्ञाकूंप्राप्तहुआभी वास्तवतैंपरमात्मारूपही है ॥ ताजीवपरमात्माविषे किंचित्मात्रभीभेदनहीं है ॥ अब याकथनकरीहुई निर्गुणविद्याके फलकानिरूपणकरेहैं॥ हेगार्ग्य! जोआत्मादेव सर्वत्रव्यापकहुआभी शुद्धमनविषे विशेषकरिकैअभिव्यक्तहोवैहै ॥ तथा जोआत्मादेवसर्वजगत्काअधिष्ठानरूपहै ॥ तथा जोआत्मादेव स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंतैंरहितहै ॥ तथा जोआत्मादेव स्वप्रकाशअक्षरआनंदस्वरूपहै ॥ ऐसेआत्मादेवकूं जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं साक्षात्कारकरेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष यासर्वजगत्कूंसामान्यरूपकरिकै तथाविशेषरूपकरिकै साक्षात्कारकरेहै ॥ तथा यासंसारकेजन्ममरणादिकसर्वतापोंतैं मुक्तहोवैहै ॥ हेगार्ग्य! जिसअक्षरपरमात्मादेवविषे यहजीव स्थितहै ॥ तथा जिसअक्षरविषे ताजीवकेउपाधिरूपप्राणइंद्रियादिकस्थितहैं ॥ ताअक्षरपरमात्मादेवकूं जोअधिकारी पुरुष आपणाआत्मरूपकरिकैसाक्षात्कारकरेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष सर्वज्ञहुआ ब्रह्मभावरूपपरमपदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ५ ॥ इतनेकरिकै चतुर्थप्रश्नउत्तरकानिरूपणकऱ्या ॥ अब ताअक्षरआत्माकेएकवारउपदेशतैं जोअधिकारीपुरुष ताअक्षरआत्माकेजानणेविषे समर्थनहींहोवैहै ॥ ताअधिकारीपुरुषकेप्रति प्रणवकीउपासनाविधानकरणेवासते पंचमप्रश्नउत्तरकानिरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य! इसप्रकार जबी तापिप्पलादमुनिनैं गार्ग्यऋषिकेप्रति उत्तरकह्या तबी सोगार्ग्यऋषि तूष्णींभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोसत्यकामनामा शैल्यऋषितापिप्पलादमुनिकेप्रति याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ सत्यकामउवाच ॥ हेभगवन्! हेपिप्पलादमुनि! जोअधिकारीपुरुष आपणेमरणपर्यंत ॐकाररूपप्रणवकाध्यानकरेहैं ॥ सोअधिकारीपुरुष भूमिआदिकलोकोंविषे किसलोककूंप्राप्तहोवैहै? याहमारेप्रश्नकाउत्तर आप कृपाकरिकैकथनकरो ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकाप्रश्न जबी तासत्यकामनैं तापिप्पलादमुनिकेप्रति कऱ्या ॥ तबी सोपिप्पलादमुनि तासत्यकामकेप्रति याप्रकारकाउत्तर कहताभया ॥ पिप्पलादमुनिरुवाच ॥ हेसत्यकाम! जिसवर्णकूं वेदवेत्तापुरुष ॐकार यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ सोॐकार अक्षरस्वरूपब्रह्म

कानामहै ॥ तथा प्राणस्वरूपअपरब्रह्मकाभी नामहै ॥ कैसाहैसोॐकार? तापरब्रह्मकेसाथ तथाअपरब्रह्मकेसाथ अभिन्नहै ॥ काहेतें? वाच्यअर्थका तथावाचकनामका वेदवेत्तापुरुषोंनैं अभेदहीकथनकऱ्याहै ॥ अथवा देवताप्रतिमाकीन्याईं सोॐकार तापरअपरब्रह्मकाप्रतीकरूपहै ॥ याकारणतें सोॐकार तापरअपरब्रह्मतेंअभिन्नहै ॥ अन्यविषेअन्यदृष्टिकाजोआलंबनहोवैहै ताकानाम प्रतीकहै ॥ जैसे शालग्रामविषे जोविष्णुदृष्टिहै तादृष्टिकाआलंबन शालग्रामहै ॥ यातैं सोशालग्राम ताविष्णुकाप्रतीकरूपहै ॥ तैसे सोॐकारभी तापरअपरब्रह्मका प्रतीकरूपहै ॥ हेसत्यकाम! जोअधिकारीपुरुष याॐकाररूपप्रणवकूं परब्रह्मरूपकरिकै चिंतनकरेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष ताध्यानकेप्रभावतें तापरब्रह्मकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ और जोअधिकारीपुरुष ताप्रणवकूं अपरब्रह्मरूपकरिकै चिंतनकरेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष ताध्यानकेप्रभावतें ताअपरब्रह्मकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ हेसत्यकाम! ताफलकेभेदविषेकेवल पुरुषकीकामनाकाभेद कारणहीहै ॥ किंतु ताप्रणवकेमात्रावोंकाभेदभी ताफलकेभेदविषेकारणहै ॥ काहेतें! ताप्रणवमंत्रविषे अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा येसाढीतीनमात्रारहेहैं ॥ तहां जोपुरुष प्रथम अकारमात्राकूं ऋग्वेदरूपकरिकैचिंतनकरेहै ॥ तिसउपासकपुरुषकूं ताऋग्वेदकेअभिमानीदेवता याभूमिलोककीप्राप्तिकरेहैं ॥ और जोपुरुष अकार उकार यादोनोंमात्रावोंकूं यजुर्वेदरूपकरिकैचिंतनकरेहै ॥ तिसउपासकपुरुषकूं तायजुर्वेदकेअभिमानीदेवता स्वर्गलोककीप्राप्तकरेहैं ॥ और जोपुरुष अकार उकार मकार यातीनोंमात्रावोंकूं सामवेदरूपकरिकैचिंतनकरेहै ॥ तिसउपासकपुरुषकूं तासामवेदकेअभिमानीदेवता ब्रह्मलोककीप्राप्तिकरेहैं ॥ जाब्रह्मलोकविषेप्राप्तहुआ सोउपासकपुरुष पुनःभूमिलोकविषेआवैनहीं ॥ याकारणतें यामुमुक्षुजनोंनैं तातीनमात्रावालेप्रणवकाही ध्यानकरणा ॥ एकमात्राका अथवादोमात्राका ध्यानकरणानहीं ॥ काहेतें? याप्रणवकीजेअकारउकाररूपदोमात्राहैं ॥ तेदोनोंमात्रा याउपासकपुरुषकूं पुनरावृत्तियुक्त भूमिस्वर्गलोककेसुखकीही प्राप्तिकरेहैं ॥ पुनरावृत्तितैंरहितसुखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ और सोतीनमात्रायुक्तप्रणवतौ याउपासकपुरुषोंकूं पुनरावृत्तितैंरहितब्रह्मलोककीप्राप्तिकरेहै ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषनैं तातीनमात्रावोंयुक्तप्रणवकाही ध्यानकरणा ॥ हेसत्यकाम! जैसे एकअकारमात्राप्रधानप्रणवका चिंतनकरणेहा

रापुरुष याभूमिलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ और अकार उकार यादोमात्राप्रधानप्रणवका चिंतनकरणेहारापुरुष स्वर्गलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ और अकार उकार मकार यातीनमात्राप्रधानप्रणवका चिंतनकरणेहारापुरुष ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे जोपुरुष अर्द्धमात्राप्रधानप्रणवका चिंतनकरे है॥ सोपुरुष अद्वितीयब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार याअधिकारीपुरुषोंकूं ताॐकाररूपप्रणवतैंही सर्वभोग्यपदार्थोंकी तथामोक्षकी प्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं यहप्रणवमंत्र सर्वमंत्रोंतैंश्रेष्ठहै ॥ ५ ॥ इतनेकरिकै पंचमप्रश्नउत्तरकानिरूपणकऱ्या ॥ अब चतुर्थप्रश्नविषेकथनकऱ्येहुए अक्षरपरमात्मादेवविषे प्रत्यक्रूपतानिश्चयकरावणेवासते षष्ठप्रश्नउत्तरकानिरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार जबी तापिप्पलादमुनिनैं तासत्यकामकेप्रति उत्तरकह्या ॥ तबी सोसत्यकामनामाऋषि तूष्णींभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सुकेशानामाभारद्वाजऋषि तापिप्पलादमुनिसैं प्रत्यक्आत्माकास्वरूपपूछताभया ॥ सुकेशाउवाच ॥ हेभगवन्पिप्पलादमुनि ! वेदवेत्तापुरुषोंनैं जोषोडशकलावोंवालापुरुष कथनकऱ्याहै ॥ तापुरुषकेनिर्णयकरणेवासते मैं बहुतवार विचारकरताभयाहूं ॥ परंतु तापुरुषकेस्वरूपकूं मैंअबपर्यंत निश्चयनहींकरताभयाहूं ॥ हेभगवन् ! पूर्वकिसीकालविषे कोशलदेशकाअधिपति हिरण्यनाभनामाराजा हमारेसमीपआवताभया ॥ और सोहिरण्यनाभनामाराजा बहुतविनयपूर्वक ताषोडशकलावालेपुरुषकास्वरूप हमारेसैं पूछताभया ॥ ताराजाकेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै मैं ताहिरण्यनाभराजाकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेराजन् ! जोषोडशकलावालापुरुष तुमनैं हमारेसैंपूछाहै ॥ ताषोडशकलावालेपुरुषकूं मैं जानतानहीं ॥ हेराजन् ! यालोकविषे जोपुरुष मोहकेवशतैं मिथ्यावचनकूंउच्चारणकरेहै ॥ सोमिथ्यावादीपुरुषरूपवृक्ष दोनोंलोककेसुखरूपफलकूंनप्राप्तहोइकै भाग्यरूपमूलसहित नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकार तामिथ्यावचनके महान्दुःखरूपफलकूंजानताहुआ मैं स्वप्नविषेभी तामिथ्यावचनकूंकहतानहीं तो जाग्रत्अवस्थाविषे तामिथ्यावचनकूं मैं कैसेकहूंगा ? यातैं यासुकेशानामाऋषिनैं ताषोडशकलावालेपुरुषकूंजानिकरिकैभी हमारेप्रति नहींकथनकऱ्या ॥ याप्रकारकीशंका तुमनैं आपणेमनविषे कदाचित्भी नहींकरणी ॥ हेभगवन्पिप्पलादमुनि ! याप्रकारकावचन जबी हमनैं ताहिरण्यनाभराजाकेप्रतिकह्या ॥ तबीसोहिरण्यनाभराजा तूष्णींभावकूंप्राप्तहो

इकै आपणेदेशकूंजाताभया ॥ तिसदिनतैंलैके हमारेचित्तविषे ताषोडशकलावालेपुरुषकेजानणेकी बहुतउत्कटइच्छालगिरही है ॥ आप कृपाकरिकै ताषोडशकलावालेपुरुषकास्वरूप हमारेप्रति कथनकरौ ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार जबी तासुकेशानामाऋषिनैं तापिप्पलादमुनिकेप्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तबीसोपिप्पलादमुनि तासुकेशाऋषिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ पिप्पलादमुनिरुवाच ॥ हेसुकेशा ! जोतुमनैं षोडशकलावालापुरुष पूछाहै ॥ सोपुरुष कोईदूरस्थितनहींहै ॥ किंतु जिसपुरुषविषे ते षोडशकलारहेहैं ॥ सोपुरुष यातुमारेशरीरविषेही प्रत्यक्आत्मरूपकरिकैस्थितहै ॥ कैसाहैसोपुरुष ? तासर्वजगतूरूपषोडशकलावोंकाअधिष्ठानहोणेतैं यासर्वजगत्कानियंताहै ॥ अब तापरमात्मादेवरूपपुरुषकी अद्वितीयरूपतास्पष्टकरणेवासते तापरमात्मादेवतैं तिनषोडशकलावोंकीउत्पत्ति कथनकरेहैं ॥ हेसुकेशा ! जोपरमात्मादेव प्रत्यक्रूपकरिकै याशरीरविषेस्थितहै ॥ सोईहीपरमात्मादेव याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व जरायुचर्मकीन्यांई बंधनकरणेहारीउपाधिकेकरणेकीइच्छाकरताहुआ याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ मैंपरमात्मादेव याशरीरविषेस्थितहुआभी सर्वत्रव्यापकहूं तथा विक्रियातैंरहितहूं ॥ ऐसामैंपरमात्मादेव उत्क्रमण गमन आगमन इत्यादिकगुणोंवालेसंसारकूं किसउपाधिकरिकैप्राप्तहोवौंगा ? याप्रकारकाविचारकरिकै सोपरमात्मादेव प्रथम प्राण अपान समान व्यान उदान यापंचवृत्तिवाले प्राणरूपकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ कैसाहैसोप्राण ? याशरीरतैंउत्क्रमणका तथापरलोकविषेगमनका तथापरलोकतैंआगमनका कारणहै ॥ १ ॥ तिसप्राणतैंअनंतर सोपरमात्मादेव श्रद्धारूप दूसरीकलाकूं उत्पन्न करताभया ॥ इहां शुभकर्मोंविषेप्रवृत्तकरणेहारीआस्तिक्यबुद्धिकानाम श्रद्धाहै ॥ २ ॥ तिसश्रद्धातैंअनंतर सोपरमात्मादेव कर्मोंकेकरणेका तथातिनकर्मोंकेफलभोगका आधाररूपजे आकाश वायु तेज जल पृथिवी येपंचभूतहैं ॥ तिनपंचभूतरूपपंचकलावोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ ७ ॥ तिनपंचभूतोंतैंअनंतर सोपरमात्मादेव ज्ञानकासाधनरूपजे श्रोत्रादिक पंचज्ञानइंद्रियहैं ॥ तथाकर्मकासाधनरूपजेवाकादिकपंचकर्मइंद्रियहैं ॥ तादशइंद्रियरूपअष्टमीकलाकूंउत्पन्नकरताभया ॥ ८ ॥ तिसतैंअनंतर सोपरमात्मादेव तिनइंद्रियोंकूंप्रवृत्तकरणेहारेमनरूपनवमीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ ९ ॥ तिसतैंअनंतर सोपर

मात्मादेव तामनकीस्थितिकरणेहारे अन्नरूपदशमीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ १० ॥ तिसतैंअनंतर सोपरमात्मादेव वीर्यरूप एकादशीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ इहां ताअन्नकरिकैजन्य जोसामर्थ्यहै ताकानाम वीर्यहै ॥ ११ ॥ तिसतैंअनंतर सोपरमात्मा देव तावीर्यतैंजन्य जोशुद्धिकरणेहारातपहै तातपरूपद्वादशीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ १२ ॥ तिसतैंअनंतर सोपरमात्मादेव मंत्ररूपत्रयोदशीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ इहां वेदोंकेअध्ययनकानाममंत्रहै ॥ १३ ॥ तिसतैंअनंतर सोपरमात्मादेव लौकिक वैदिककर्मरूपचतुर्दशीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥१४॥ इहांमंत्रशब्दकी जोवेदकेअध्ययनविषेलक्षणाकरीहै ताकायहकारणहै ॥ यद्यपि मंत्ररूप तथाब्राह्मणरूप जेवेदहैं ॥ तेवेद साक्षात् प्राणतैंहीप्रगटहुएहैं ॥ तहांश्रुति अस्यमहतोभूतस्यनिःश्वसितमेतद्यदृग्वेदोयजुर्वेदःसामवेदोऽथर्वांगिरसइति ॥ अर्थयह ॥ इसमहान्परमात्मादेवकेही ऋग् यजुष् साम अथर्वण येचारिवेदश्वासरूपहैं ॥ १ ॥ याश्रुतिनैं साक्षात् प्राणोंतैं तिनवेदोंकाप्रगटहोणा कथनकऱ्याहै ॥ यातैं सामर्थ्यरूपवीर्यतैं तिनवेदों कीउत्पत्तिहुईनहीं ॥ तथापि अन्नहैआदिकारणजिसका ऐसाजोसामर्थ्यरूपवीर्यहै तथातपहै ॥ तावीर्यकरिकै तथातपकरिकै ते वेद अध्ययनादिरूपविस्तारकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं तेवेद अध्ययनद्वाराही तिनवीर्यादिकोंतैंप्रगटहोवैहैं ॥ साक्षात्प्रगटहोवैंनहीं ॥ यातैं तामंत्रपदकी वेदकेअध्ययनविषेलक्षणाकरणीयुक्तहै ॥ और तिनकर्मोंतैंअनंतर सोपरमात्मादेव लोकरूपपंचदशीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ इहां तिनकर्मोंतैंउत्पन्नभया जोसुखदुःखरूपफलहै ताकानामलोकहै ॥ १५ ॥ तिसतैंअनंतर सोपरमात्मादेव नामरूपषोडशीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ इहां शरीरावच्छिन्नचेतनकेवाचकजेदेवदत्त यज्ञदत्त इत्यादिकशब्दहैं ॥ तिनोंकूंनामकहेहैं ॥ जोषोडशीकलारूपनाम मुक्तपुरुषोंकाभी निवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु सोनामप्रलयकालपर्यंत स्थिररहेहैं ॥ याकारणतैंही श्रुतिविषे तानामकूं अनंत यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ १६ ॥ यहषोडशकला तापरमात्मादेवतैं उत्पन्नहोवैहैं ॥ तहांश्रुति ॥ सप्राणमसृजत प्राणाच्छ्रद्धां खंवायुर्ज्योतिरापःपृथिवींद्रियंमनोऽन्नमन्नाद्वीर्यंतपोमंत्राःकर्मलोकालोकेषुचनामच ॥१॥ याश्रुतिका यहपूर्वउक्तअर्थही जानिलेणा ॥ हेसुकेशा ! जिसपुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारहुआहै ॥ तामुक्तपुरुषकीदृष्टिकरिकैतो यहप्रा

णादिकषोडशकला आपणेअधिष्ठाननिर्गुणपुरुषकूंप्राप्तहोइकै अदर्शनभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ जैसे यालोकविषे श्रीगंगायमुनादिक नदियां जबपर्यंत समुद्रकूंप्राप्तनहींभई ॥ तबपर्यंत तेनदियां आपणेआपणे भिन्नभिन्ननामरूपकूंधारणकरेहैं ॥ और तेनदियां जबी तासमुद्रकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तबी तेनदियां आपणेभिन्नभिन्ननामोंकूं तथाभिन्नभिन्नरूपोंकूं परित्यागकरिकै तासमुद्रकेनामरूप कूंही धारणकरेहैं ॥ तैसे तामुक्तपुरुषके यहप्राणादिकषोडशकला जबपर्यंत तानिर्गुणपुरुषकूं नहींप्राप्तभई ॥ तबपर्यंतही आपणेआपणेभिन्नभिन्ननामरूपकूंधारणकरेहैं ॥ और तेप्राणादिकषोडशकला जबी तानिर्गुणपुरुषकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तबी तेप्राणादिककला आपणे भिन्नभिन्ननामरूपकापरित्यागकरिकै तानिर्गुणपुरुषकेनामरूपकूंही धारणकरेहैं ॥ हेसुकेशा ! जिसपुरुषविषे यहप्राणादिकषोडशकला लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ सोपुरुषकैसाहै ? वास्तवतैं नामरूपतैंरहितहै ॥ तथा निरवयवहै ॥ तथाआनंदस्वरूपहै ॥ तथा स्वयंज्योतिअमृतस्वरूपहै ॥ और जैसे रथचक्रकेनाभिविषे अरास्थितहोवैहैं ॥ तैसे जिसपुरुषविषे यहप्राणादिकषोडशकलास्थितहोवैहैं ॥ हेसुकेशा ! ऐसेपरमात्मादेवकूं जोपुरुष आपणाआत्मरूपकरिकैसाक्षात्कारकरेहै ॥ तिसपुरुषकूं याशरीरकेनाशतैंअनंतर पुनः प्रमादरूपमृत्युतैंभयकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं ताब्रह्मात्मज्ञानकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ ६ ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार सोपिप्पलादमुनि तासुकेशानामाभारद्वाजऋषिकेप्रति आत्माकाउपदेशकरिकै पुनः तिनसर्वऋषियोंकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ पिप्पलादमुनिरुवाच ॥ हेसुकेशादिकसर्वब्राह्मणो ! यहजोअद्वितीयब्रह्मकास्वरूप हमनैं तुमारेप्रति उपदेशकऱ्याहै ॥ इतनाही मैंजानताहूं इसतैंपरेकोईवस्तु मैं जानतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जो ब्रह्मकावास्तवस्वरूप हमनैं तुमारेप्रति उपदेशकऱ्याहै ॥ तिसतैंपरेदूसराकोईवस्तु उपदेशकरणेयोग्यनहींहै ॥ यातैं ताअद्वितीय ब्रह्मकूं तुमसर्व आपणाआत्मरूपकरिकै निश्चयकरो ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार जबी तापिप्पलादमुनिनैं तिनसुकेशादिकषट्ऋषियोंकेप्रति ब्रह्मविद्याका उपदेशकऱ्या ॥ तबी तेसर्वऋषि तापिप्पलादमुनिका देवताकीन्यांई अर्चनपूजनकरतेभये ॥ और तेसर्वऋषि तापिप्पलादमुनिकेप्रति याप्रकारकेवचनकहतेभये ॥ हेभगवन् ! आपनैं कृपाकरिकै हमारे सर्वसंशयोंकूंछेदनकऱ्याहै ॥

और हमारेकूं मायातैंपर निर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारकराइकै आपनैं कृतार्थकऱ्याहै ॥ हेभगवन्! आपकेउपदेशकरिकै ब्राह्मणभावकूंप्राप्तहुए हमसर्व आजदिनविषे आपतैं ब्रह्मवित्त्वरूपकरिकैउत्पन्नहुएहैं ॥ काहेतें? ब्रह्मजानातिब्राह्मणः ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिकरिकैंही मुख्यब्राह्मणभावकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ यातैं आपही हमारेपिताहो ॥ तथा आपहीहमारी माताहो ॥ आपतैंविना दूसराकोई हमारापितामातानहींहै ॥ काहेतें? येलोकप्रसिद्धपितामातातौ याशरीररूपमिथ्याआत्माकीही उत्पत्तिकरैहैं ॥ जाशरीरकेसंबंधतैं हमजीवोंकूं अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहवार्त्ता मनुभगवान्नैंभी कहीहै ॥ तहां श्लोक ॥ उत्पादकब्रह्मदात्रोर्गरीयान्ब्रह्मदःपिता ॥ ब्रह्मजन्महिविप्रस्य प्रेत्यचेहचशाश्वतं ॥ अर्थयह ॥ यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिकरणेहाराजोपिताहै ॥ तथा ब्रह्मभावकीप्राप्तिकरणेहाराजोगुरुरूपपिताहै ॥ तिनदोनोंविषे ब्रह्मभावकीप्राप्तिकरणेहारा गुरुरूप पिता अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ काहेतें? याअधिकारीपुरुषका ताब्रह्मउपदेष्टागुरुतैं जोब्रह्मवित्त्वरूपकरिकैजन्महै ॥ सोब्रह्मवित्त्वरूपजन्म या जीवत्अवस्थाविषे तथामरणअनंतर सर्वकालविषे नित्यहै ॥ ताब्रह्मवित्त्वरूपजन्मका कदाचित्भीनाशहोवैनहीं ॥ १ ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहां श्लोक ॥ शरीरमेतौकुरुतः पितामाताचभारत ॥ आचार्यदत्तायाजातिः सानित्यासाऽजराऽमरा ॥ अर्थयह ॥ हेभारत! यहलोकप्रसिद्धपितामाता जिसशरीरकूं उत्पन्नकरैहैं ॥ सोशरीरतौ जरामरणकरिकैयुक्तहै ॥ और यहब्रह्मवेत्तागुरु याअधिकारीपुरुषोंकेप्रति जिसब्रह्मवित्त्वरूपजातिकीप्राप्तिकरैहै ॥ साब्रह्मवित्त्वरूपजाति नित्यहै तथाअजरअमरहै ॥ यातैं यहब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणेहारागुरु यालोकप्रसिद्धपितामातातैं अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ १ ॥ हेभगवन्! कामक्रोधादिकमगरोंकरिकैयुक्त जोयहअविद्यारूप दुस्तरसमुद्रहै ॥ ताअविद्यारूपसमुद्रतैं आपनैं ब्रह्मविद्यारूपमहान्नौकाकरिकै हमारेकूं पारकऱ्याहै ॥ याआपकेमहान्उपकारकीनिवृत्तिकरणेवासते हम तीनलोकविषे कोईपदार्थदेखतेनहीं ॥ जोपदार्थ आपकेतांईदेकरिकै हम आपकेऋणतैंमुक्तहोवैं ॥ यातैं आपब्रह्मवेत्तागुरुवोंकेप्रसन्नकरणेवासते हमारा सर्वदानमस्कारहोवै ॥ ताहमारेनमस्कारमात्रकूं अंगीकारकरिकैंही आप प्रसन्नहोवो ॥ हेशिष्य! याप्रकारकेवचन जबी तिनसुकेशादिषट्ऋषियोंनें तापिप्प

लादमुनिकेप्रति कथनकरे ॥ तबी सोपिप्पलादमुनि प्रसन्नहोइकै आशीर्वादपूर्वक तिनऋषियोंकूंबिदाकरताभया ॥ तथा सो पिप्पलादमुनि आपभी तास्थानतैं सुखपूर्वकजाताभया ॥ हेशिष्य! मोक्षकीप्राप्तिकरणेहाराजोयहआत्मज्ञानहै ॥ सोआत्मज्ञान महान्ब्रह्मवेत्तागुरुवोंकरिकैउपदेशकऱ्याहुआभी शुद्धचित्तवालेअधिकारीपुरुषोंकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ अशुद्धचित्तवालेपुरुषोंकूं सो आत्मज्ञान प्राप्तहोवैनहीं ॥ और साचित्तकीशुद्धि उपासनाकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ उपासनातैंविना साचित्तकीशुद्धिहोवैनहीं ॥ जैसे पूर्व नृसिंहभगवान्कीउपासनाकरिकै शुद्धहुआहैचित्तजिनोंका ऐसेदेवता प्रजापतिरूपगुरुकेउपदेशतैं ताब्रह्मात्मज्ञानकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ हेशिष्य! यासप्तदशेअध्यायकेआदिविषे जोतुमनैं पिप्पलादमुनिउक्तब्रह्मविद्या हमारेसैंपूछीथी ॥ सोसंपूर्ण ब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति कथनकरी ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारेकूंइच्छाहोवै ॥ सोअर्थ तू हमारेसैंपूछ ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृताऽऽत्मपुराणे प्रश्नोपनिषत्सारार्थप्रकाशे पिप्पलादसुकेशादिकसंवादोनाम सप्तदशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १७ ॥ ॥श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥

इति श्रीआत्मपुराणे स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां
सप्तदशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १७ ॥

अथ आत्मपुराणेश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषायां

अष्टादशाऽध्यायप्रारंभः ॥ १८ ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ अष्टादशाऽध्यायप्रारंभः ॥

पूर्व सप्तदशेअध्यायविषे अथर्वणवेदके प्रश्नउपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब याअष्टादशेअध्यायविषे तिसीअथर्वणवेदके नृसिंहपूर्वोत्तरतापनीयउपनिषद्‌का तथा ईशावास्यउपनिषद्‌का अर्थनिरूपणकरेहैं ॥ तहां पूर्वअध्यायोंविषे नानाप्रकारकीब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिकै तृप्तिकूंप्राप्तहुआभी सोशिष्य पूर्वसप्तदशेअध्यायकेअंतविषे नृसिंहभगवान्‌के उपासकदेवतावोंकेवृत्तांतकूं श्रवणकरिकै पुनःप्रश्नकरणेकीइच्छाकरताभया ॥ और ब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिकै अत्यंतहर्षकूंप्राप्तहुआहैमनजिसका तथाचित्तकीप्रसन्नताकरिकै विकासितहुआहैमुखरूपकमलजिसका ऐसासोशिष्य ताआपणेगुरुकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन्! पूर्वआपनैं हमारेप्रति ऐतरेयादिकअनेकमुनियोंकरिकैकथनकरीहुई तथाइंद्रआदित्यादिकअनेकदेवतावोंकरिकैकथनकरीहुई नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकरिकै हमारा घोरसंसारकीप्राप्तिकरणेहारा आवरणरूपअज्ञान निवृत्तहोताभयाहै ॥ याकारणतैंही हमारेकूं स्वयंज्योतिआत्माही सर्वदा प्रतीतहोवैहै ॥ जैसे विषयासक्तकामीपुरुषकूं आपणेहृदयविषे सर्वदा कामिनीहीप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे हमारेकूं आपणेहृदयविषे सोआनंदस्वरूपआत्माही सर्वदा प्रतीतहोवैहै ॥ हेभगवन्! आपकेउपदेशतैं आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंजानिकै मैं अबी कृतकृत्यभावकूंप्राप्तहुआहूं ॥ यातैं ताआत्माकेस्वरूपविषे हमारेकूं किंचित्‌मात्रभी संशयरह्यानहीं ॥ यातैं ताआत्माकेनिर्णयकरणेविषे हमारेकूं अबी किंचित्‌मात्रभी पूछणेयोग्यरह्यानहीं ॥ तथापि जैसे पितामाता बालकका लालनकरेहैं ॥ तैसे आपनैंभी हमारालालनकऱ्याहै ॥ तहां हमनैं वारंवार कऱ्येजेप्रश्नहैं तिनप्रश्नोंका क्षोभतैंरहिततहोइकै जोआपनैं उत्तरकह्याहै यहही आपनैं हमारालालनकऱ्याहै ॥ यातैं ताबालभावकूं अंगीकारकरिकै हमारेकूं किसीअर्थकेजानणेकीइच्छारूप एककौतूहलहै ॥ सोआपकृपाकरिकै हमारेप्रति कथनकरो ॥ अब सो शिष्य तालालनरूपताकरिकै पूर्वश्रवणकरीहुई सर्वकथाकूं वर्णनकरेहै ॥ हेभगवन्! याआत्मपुराणके प्रथमअध्यायविषे आपनैं ऋग्वेदके ऐतरेयउपनिषद्‌काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमअध्यायविषे आपनैं ऐतरेयमुनिउक्तआत्मज्ञान कथनकऱ्या

था ॥ जोआत्मज्ञान सनकादिकमुनियोंके तथावामदेवादिकप्रजाके संवादकरिकैयुक्तहै ॥ तथा जोआत्मज्ञान द्विजोंकूं अत्यंतदुर्ल भहै ॥ काहेतें? तिनसर्वद्विजोंविषे जेअधिकारीपुरुष ताआत्मज्ञानकूं श्रवणकरिकैजीवैहैं ॥ तेहमारेसरीखेभाग्यवान्श्रोता यालो कविषे विरलेही हैं ॥ तथा ताआत्मज्ञानकेकथनकरणेहारे आपसरीखेभाग्यवान्वक्तापुरुषभी दुर्लभहीहैं ॥ ऐसादुर्लभआत्मज्ञान आपनैं हमारेप्रति कथनकऱ्याथा ॥ और हेभगवन्! ताआत्मपुराणके द्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअध्यायविषे आपनैं तिसी ऋग्वेदके कौषीतकिउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादोनोंअध्यायोंविषे आपनैं कौषीतकिमुनिउक्तज्ञान कथनकऱ्याथा ॥ जोकौषीतकिमुनिउक्तज्ञान इदानींकालविषे लुप्तसंप्रदायहुआ वर्तमानहै ॥ काहेतें? सोकौषीतकिमुनिउक्तज्ञान इदानींकालविषे कि सीविरक्तपुरुषोंविषेही विद्यमानहै ॥ परंतु अमुकदेशविषे ताकौषीतकिशाखाकेअध्ययनकरणेहारे ब्राह्मण विद्यमानहैं ॥ याप्रकार तें ताज्ञानकीप्रसिद्धिहैनहीं ॥ ताकौषीतकिमुनिउक्तविज्ञानविषे देवराजइंद्रके तथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिकै आपनैं नानाप्रकार कीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ तथा राजाअजातशत्रुके तथाबालाकिब्राह्मणके संवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनक रीथी ॥ जोअजातशत्रुबालाकिकासंवाद आश्चर्यकाकारणहै ॥ तथा श्रोतापुरुषोंकेबुद्धिकीवृद्धिकरणेहाराहै ॥ और हेभगवन्! या आत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषे आपनैं यजुर्वेदके बृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ त हां याज्ञवल्क्यमुनि स्वकृत याज्ञवल्क्यस्मृतिनामाग्रंथविषे संन्यासियोंकेप्रति याप्रकारकाउपदेश करताभयाहै ॥ हेसंन्यासियो! जाबृहदारण्यकउपनिषद् मैंयाज्ञवल्क्य सूर्यभगवानूतें अध्ययनकरताभयाहूं ॥ साबृहदारण्यकउपनिषद्भी यासुमुक्षुजनोंनैं अवश्य करिकै अर्थसहित जानणेयोग्यहै ॥ कैसाहैसोबृहदारण्यकउक्तविज्ञान? मधुकांड याज्ञवल्क्यकांड खिलकांड यातीनकांडोंकरिकैप्र काशितहै ॥ तथा दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंकूं कथनकरणेहाराहै ॥ तथा मधुब्राह्मणविषे प्रधानताकरिकै पर्यवसान कूंप्राप्तहुआहै ॥ ऐसाविज्ञान उपासनाभागकूंछोडिकै आपनैं कथनकऱ्याथा ॥ हेभगवन्! जिसबृहदारण्यकउपनिषद्केविज्ञानवि षे मधुकांडविषेस्थितसर्वमंत्रोंकेअर्थकीप्रगटताकरिकै तासर्वमधुकांडका महान्अर्थ आपनैं प्रगटकऱ्याथा ॥ तामधुकांडकेमंत्रोंकेअ

र्थविषेहीखिलकांडकेअर्थकाअंतर्भावकरिकै आपनैं कथनकऱ्याथा ॥ तामधुकांडविषे आपनैं दध्यङ्अथर्वणके तथाअश्विनीकुमारों के संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और तिनअश्विनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेकरिकै जिसप्रकार देवराजइंद्रनैं तादध्यङ्मुनिकेमस्तककाछेदनकऱ्याथा ॥ तथा तिनअश्विनीकुमारोंनैं जिसप्रकार तादध्यङ्मुनिका जीवनकऱ्याथा ॥ सासंपूर्णवार्त्ता आपनैं ताचतुर्थअध्यायविषे कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! पंचम षष्ठ यादोअध्यायरूप जोयाज्ञवल्क्यकांडहै ॥ तायाज्ञवल्क्यकांडविषे यथाक्रमतैं प्रवृत्तभईजा जल्पकथा वादकथा यहदोप्रकारकीकथाहै ॥ जाकथा श्रद्धावान्पुरुषोंकूं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिकरणेहारीहै ॥ सादोप्रकारकीकथाभी आपनैं अध्यायोंकेभेदकरिकैकथनकरीथी ॥ तहां याआत्मपुराणकेपंचमअध्यायविषे जनकराजाकेयज्ञसभाविषेस्थित आश्वलादिकब्राह्मणोंके तथागार्गीके हृदयविषेस्थितजेसंशयथे ॥ जेसंशय तर्करूपबलतैं तिनोंनैं प्रगटकरेथे ॥ तिनसर्वसंशयोंकूं सोयाज्ञवल्क्यमुनि जल्पकथाकरिकै भेदनकरताभया ॥ और सोयाज्ञवल्क्यमुनि शाकल्यब्राह्मणके तौ शरीरसहित तिनसंशयोंकूं भेदनकरताभया ॥ इहां परस्पर जीतणेकीइच्छाकरिकै जो शास्त्रकेअर्थकाविचारकरणाहै ताकानाम जल्पकथाहै ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे आपनैं यहवार्ताकथनकरीथी ॥ मिथिलापुरीकानाथ राजा जनक यासंसाररूपवनतैंभयकूंप्राप्तहोताभया ॥ ताजनकराजाकूं सोयाज्ञवल्क्यमुनि वादकथाकरिकै तासंसारवनतैं बाह्यकरताभया ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणीमैत्रेयीस्त्रीकूं तावादकथाकरिकै तासंसाररूपवनतैं बाह्यकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनि संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरताभया ॥ इहां तत्त्ववस्तुकेनिर्णयकरणेवासतै जोगुरुशिष्यकासंवादहै ताकानाम वादकथाहै ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताअष्टमअध्यायविषे श्वेताश्वतरमुनिके तथासंन्यासियों के संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्! याआत्मपुराणकेनवमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीउपनिषद्काअर्थनिरूपणकऱ्याथा ॥ तानवमअध्यायविषे यमराजाके तथानचिकेताके संवादकरिकै नानाप्र

कारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और हे भगवन् ! याआत्मपुराणकेदशमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदकेतैत्तिरीयकउ
पनिषद्काअर्थ तथानारायणीयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादशमअध्यायविषे वरुणपिताके तथाभृगुपुत्रके संवादकरि
कैनानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा वेननामागंधर्वका सर्वात्मभावरूपअनुभव कथनकऱ्याथा ॥ तथा सत्यादि
कसर्वसाधनोंविषे संन्यासआश्रमकीअधिकता कथनकरीथी ॥ और हे भगवन् ! याआत्मपुराणके एकादशेअध्यायविषे आपनैं जा
बालादिकएकादशउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताएकादशेअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ जाबालादिकउ
पनिषदोंविषेकथनकऱ्याजोपरमहंससंन्यासहै ॥ तापरमहंससंन्यासकूं पूर्वसंवर्तकादिकमहान्पुरुष ग्रहणकरतेभयेहैं ॥ और तापर
महंससंन्यासविषे वैराग्यहीकारणहै ॥ सोवैराग्य गर्भदुःखोंकेविचारकरिकै तथामृत्युचिन्होंकेज्ञानकरिकै तथाअष्टांगयोगकरिकै प्रा
प्तहोवैहै ॥ और तापरमहंससंन्यासविषे विरक्तपुरुषोंकाहीअधिकारहै ॥ और तिनपरमहंससंन्यासियोंका शिखायज्ञोपवीतकेत्याग
पूर्वक एकदंडकाधारणरूप बाह्यवेषहै ॥ तथा तिनसंन्यासियोंका ब्रह्मचर्यादिकधर्मोंकापालनरूप आचारहै ॥ तथा आत्मज्ञानरूप
मुख्यआचारहै ॥ इत्यादिकसर्ववार्त्ता आपनैं ताएकादशेअध्यायविषे कथनकरीथी ॥ और हे भगवन् ! याआत्मपुराणके द्वादशत्र
योदश चतुर्दश यातीनअध्यायोंविषे आपनैं सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां द्वादशेअध्यायविषे उद्दा
लकमुनिके तथाश्वेतकेतुके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणकेत्रयोदशेअध्याय
विषे भगवान्सनत्कुमारके तथानारदमुनिके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराण
केचतुर्दशेअध्यायविषे प्रजापतिके तथाइंद्रविरोचनके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और हे भग
वन् ! याआत्मपुराणकेपंचदशेअध्यायविषे आपनैं तिसीसामवेदके केनउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तापंचदशेअध्याय
विषे ब्रह्मविद्यारूपउमादेवीकेअनुग्रहतें सोदेवराजइंद्र यक्षरूपब्रह्मकूंदेखताभया यहवार्त्ता आपनैं कथनकरीथी ॥ और हे भगव
न् ! याआत्मपुराणकेषोडशेअध्यायविषे आपनैं अथर्वणवेदके मुंडकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताषोडशेअध्यायविषे

जाब्रह्मविद्या ब्रह्मानैं अथर्वामुनिकेप्रति उपदेशकरीथी ॥ साब्रह्मविद्या अंगिरामुनिके तथाशौनकमुनिके संवादकरिकै आपनैं कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ! याआत्मपुराणकेसप्तदशेअध्यायविषे आपनैं तिसीअथर्वणवेदके प्रश्नउपनिषद्काअर्थ निरूपण कऱ्याथा ॥ तासप्तदशेअध्यायविषेपिप्पलादमुनिके तथासुकेशादिकषट्मुनियोंके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ हेभगवन् ! इसप्रकार पूर्व जोजोअर्थ हमनैं आपसैंपूछाथा ॥ सोसर्वअर्थ आपनैं हमारेप्रति कथनकऱ्याथा ॥ यातैं अबीभी मैं बालक आपसैंकिंचित् अर्थकेपूछणेकीइच्छाकरताहूं ॥ आप कृपाकरिकै ताहमारे प्रश्नकाउत्तरकहो ॥ हेभगवन् ! यहजोप्रश्न मैं आपकेआगेकरताहूं ॥ सोअंधरज्जुन्यायकीरीतिसैं पूर्वउक्तआपकेअर्थका विस्मरणकरिकै करतानहीं ॥ किंतु आपकेकहेहुएसर्वअर्थकूं मनविषेस्मरणकरिकैही सोप्रश्नमैं आपकेआगेकरताहूं ॥ यातैं हमारेप्रश्नकाउत्तर आपकूंअवश्यकह्याचाहिये ॥ सोहमाराप्रश्नयहहै ॥ हेभगवन् ! पूर्वसप्तदशेअध्यायकेअंतविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ नृसिंहभगवान्कीउपासनाकरिकै शुद्धभयाहै अंतःकरणजिनोंका ऐसेदेवता प्रजापतिरूपब्रह्माकेउपदेशतैं ब्रह्मात्मज्ञानकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ हेभगवन् ! ताब्रह्मात्मज्ञानकेश्रवणकरणेकी मैं इच्छाकरताहूं ॥ आप कृपाकरिकै सोब्रह्मात्मज्ञान हमारेप्रति कथनकरो ॥ इसप्रकार शिष्यकरिकैपूछाहुआसोश्रीगुरु अथर्वणवेदविषेस्थित नृसिंहभगवान्कीकथा ताशिष्यकेप्रति कथनकरताभया ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ! पूर्वजोहमनैं नृसिंहभगवान्केउपासकदेवता कथनकरेथे ॥ तेचक्षुआदिकोंकेअधिष्ठाता सूर्यादिकदेवताहीहैं ॥ अब तानृसिंहभगवान्केस्वरूपकावर्णनकरेहैं ॥ हेशिष्य ! जोमनुष्यरूपहोवै तथासिंहरूपहोवै ताकानाम नृसिंहहै ॥ ऐसानृसिंहभगवान्ही याअधिकारीपुरुषोंकूं उपासनाकरणेयोग्यहै ॥ कैसाहैसोनृसिंहभगवान् ? क्रोधवान्होइकै सर्वप्राणियोंकेसंहारकूंकरेहै ॥ याकारणतैं सोनृसिंहभगवान्ही रुद्ररूपहै ॥ और सोनृसिंहभगवान्ही यासर्वजगत्कूंउत्पन्नकरेहै ॥ यातैं सोनृसिंहभगवान्ही ब्रह्मारूपहै ॥ और सोनृसिंहभगवान्ही यासर्वजगत्कापालनकरेहै ॥ यातैं सोनृसिंहभगवान्ही विष्णुरूपहै ॥ तहांश्रुति ॥ सब्रह्मासशिवःसहरिः ॥ और अथर्वणशिरनामाउपनिषद्विषे कथनकऱ्याजोरुद्रभगवान्है ॥ सोरुद्रभगवान्भी यानृसिंहभगवान्काहीस्वरूपहै ॥ कैसाहै

सोरुद्रभगवान् शरणागतजीवोंका पालनकरणेहाराहै ॥ तथा जोरुद्रभगवान् कैलासरूपस्वर्गकूं अथवा सत्ववृत्तिरूपस्वर्गकूं प्राप्तहुए तथा तूकौनहै याप्रकारपूछतेहुए सर्वदेवतावोंकागुरुरूपहै ॥ तथा जोरुद्रभगवान् तिनदेवतावोंकेप्रति आपणेसर्वव्यापि स्वरूपकाउपदेशकरिकै तथासर्वतेंअंतरआपणेप्रत्यग्भावकूं बोधनकरिकै तिनदेखतेहुएदेवतावोंकाअनादरकरिकै आपणेशरीरकूं अंतर्धानकरताभया ॥ और जिसउमापतिरुद्रभगवान्के ब्रह्माविष्णुआदिकसर्वदेवता विभूतिरूपहैं ॥ और जिसउमासहितरुद्रभगवान्रूपआत्माकूंदेखिकै प्रसन्नमनहुए तेसर्वदेवता सर्वलोकोंऊपरिअनुग्रहकरिकै आपणेसमीपस्थित अधिकारीजनोंकेप्रति या प्रकारकेवचन कहतेभये ॥ हेअधिकारीजनो! हमदेवता उमादेवीसहितमहादेवरूपीअमृतकूं आपणेनेत्ररूपीपात्रकरिकै पानकरते भयेहैं ॥ यातें हमदेवता महान्भाग्यवालेहैं ॥ तथा मरणतेंरहितअमृतहुएहैं ॥ और हमदेवता श्रद्धाभक्तिपूर्वक तारुद्रभगवान्काही आराधनकरतेभयेहैं ॥ याकारणतेंही हमदेवता तापरमज्योतिआनंदस्वरूप अद्वितीयरुद्रभगवान्कूं आपणाआत्मरूपकरिकै प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ तारुद्रभगवान्कीप्राप्तिकरिकै हमदेवता जन्ममरणादिकसर्वदुःखोंतेंरहितहोतेभयेहैं ॥ यातें अबीहमदेवता आपणेइंद्रादिकदेवतास्वरूपकूं आपणाआत्मरूपकरिकै कदाचित्भी नहींजानैंगे ॥ किंतु सोउमापतिरुद्रभगवान्ही हमाराआत्माहै ॥ किंवा कामदेवकूं नष्टकरणेहाराजो उमापतिरुद्रभगवान्है ॥ ताउमापतिरुद्रभगवान्कूं हमदेवता आपणाआत्मरूपकरिकै जानते भयेहैं ॥ यातें हमदेवतावोंकूं सोकामरूपशत्रु तथाक्रोधादिकशत्रु अबी किंचित्मात्रभी अनर्थकीप्राप्तिकरिसकैंगेनहीं ॥ कैसाहैसो कामरूपशत्रु ? जैसे यालोकविषे कपटीजूवारी यत्किंचित्धनादिरूपपण्यकूं मध्यविषेराखिकै लोकोंकेसर्वधनादिकपदार्थोंकूं हरण करिलेवैहैं ॥ तैसे यहकामभी अत्यंततुच्छनारीशरीररूपपण्यकरिकै यासर्वलोकोंके धर्मादिरूपसर्वधनकूंहरणकरिलेवैहै ॥ यातें यहकाम अत्यंतधूर्तहै ॥ किंवा सर्वदेवतावोंकाआत्मरूप जोरुद्रभगवान्है ॥ सोरुद्रभगवान् हमदेवतावोंकेहृदयविषे सर्वदानिवासकरेहै ॥ याकारणतें तेसर्वदेवताभी हमारेहृदयविषेनिवासकरेहैं ॥ और सोरुद्रभगवान् हमजीवोंके प्राणअपानदोनोंकेमध्यविषे स्थितहोइकै तिनप्राणअपानदोनोंकूं आपणेआपणेकार्यविषे प्रवृत्तकरेहै ॥ और स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनवाच्यअर्थोंकेसाथ

तादात्म्यभावकूंप्राप्तभयाजो अकार उकार मकार यातीनमात्रावोंवाला ॐकाररूपप्रणवहै ॥ ताप्रणवतैंभी जोरुद्रभगवान् तुरीय रूपकरिकै परेवर्तमानहै ॥ और मनहैप्रधानजिसविषे ऐसाजो प्राणइंद्रियादिकोंकासमुदायरूप सूक्ष्मलिंगशरीरहै ॥ तालिंगशरी रकूंभी सोरुद्रभगवान्ही साक्षिरूपकरिकैप्रकाशकरेहैं ॥ कैसाहैसोलिंगशरीर? जैसे यहलोकप्रसिद्धपट नानाप्रकारकेचित्रोंका आधाररूपहोवैहै ॥ तैसे जोसूक्ष्मलिंगशरीररूपपट यास्थूलजगत्रूपचित्रोंकाआधाररूपहै ॥ तथा जिससूक्ष्मलिंगशरीरविषे ति सतिसअर्थकूंविषयकरणेहारियां यहक्षुधातृषाकामक्रोधादिकोंकीसूक्ष्मअवस्थारूप अनेककोटिवासना रहेहैं ॥ जिनवासनावोंकरि कै यहसंपूर्णसंसार प्रवर्तमानहोवैहै ॥ ऐसेलिंगशरीरकूंभी सोरुद्रभगवान्ही प्रकाशकरेहै ॥ और अकार उकार मकार अर्द्धमा त्रा यासाढीतीनमात्रावालेप्रणवमंत्रकेसाथ तादात्म्यभावकूंअप्राप्तभयाजो रुद्रभगवान्है ॥ तारुद्रभगवान्के येअष्टादशनाम वेदवेत्तापुरुषोंनैं कथनकरेहैं ॥ ॐकार १ प्रणव २ सर्वव्यापी ३ अनंत ४ तारक ५ सूक्ष्म ६ शुक्ल ७ वैद्युत ८ परब्रह्म ९ ए क १० एकोरुद्र ११ ईशान १२ भगवान् १३ महेश्वर १४ महादेव १५ विष्णु १६ ब्रह्मा १७ प्रजापति १८ येअष्टादशनाम हैं ॥ अब यथाक्रमतैं तिनअष्टादशनामोंकाअर्थ निरूपणकरेहैं ॥ उच्चारणकऱ्याहुआ यहरुद्ररूपप्रणव यालोकोंकेप्राणोंकूं शिररूप ऊर्ध्वस्थानविषे प्राप्तकरेहै ॥ अथवा उत्कृष्टलोकविषेप्राप्तकरेहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताप्रणवरूपरुद्रभगवान्कूं ॐकार याना मकरिकैकथनकरेहैं ॥ १ ॥ और सोरुद्रभगवान् आपणेब्राह्मणादिकभक्तजनोंकूं ऋगादिकचारिवेदरूपशब्दब्रह्मकीप्राप्तिकरेहै ॥ अ थवा भूमिलोकतैंआदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत सर्वलोकोंविषेविद्यमान जेनानाप्रकारकेआनंदहैं तिनसर्वआनंदोंकीप्राप्तिकरेहैं ॥ याकार णतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं प्रणव यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ अथवा भक्तजनोंके दुःखसहित पापादिकसर्वविकारोंकाजो आत्यंतिकलयहै ॥ सोआत्यंतिकलय तारुद्रभगवान्तैंहीहोवैहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं प्रणव यानामकरिकै कथनकरेहैं ॥ २ ॥ और जैसे पीसेहुएतिलोंकेपिंडकूं तथाघनीभूतदधिपिंडकूं तैलघृतादिरूपस्नेह आपणेस्वरूपकरिकै अंतरबा ह्यव्याप्तकरेहै ॥ तैसे सोरुद्रभगवान्भी आपणेअस्तिभातिप्रियरूपकरिकै यासर्वजगत्कूं अंतरबाह्यव्याप्तकरेहै ॥ याकारणतैं

वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं सर्वव्यापी यानामकरिकैकथनकरेंहैं ॥ ३ ॥ और सोरुद्रभगवान् देशकृतपरिच्छेद कालकृतपरिच्छेद वस्तुकृतपरिच्छेद यातीनपरिच्छेदोंतैंरहितहै ॥ तथा याअधिकारीपुरुषोंकूं आपणेहृदयविषे उपासनातैंप्रतीतहोवैहैं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं अनंत यानामकरिकैकथनकरेंहैं ॥ ४ ॥ और सोरुद्रभगवान् आपणेभक्तजनोंकूं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै यादुःखरूपसंसारसमुद्रतैं पारकरेहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं तारक यानामकरिकैकथनकरेंहैं ॥ ५ ॥ और सोरुद्रभगवान् यासर्वशरीरोंविषे अत्यंतसूक्ष्मजीवरूपकरिकै स्थितहोवैहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं सूक्ष्म यानामकरिकैकथनकरेंहैं ॥ तहां एककेशकेअग्रभागकाजोशततमाभागहै ताशततमेभागकाभीजो शततमाभागहै ॥ ताभागकीन्यांई सोरुद्रभगवान् जीवरूपकरिकैसूक्ष्महै ॥ तासूक्ष्मताभी अंतःकरणादिकउपाधियोंकेसंबंधतैंहै वास्तवतैंनहीं ॥ वास्तवतैं तौ सोरुद्रभगवान् आकाशादिकमहान्पदार्थोंतैंभीमहान्है ॥ तहां श्रुति ॥ महतोमहीयान् ॥ अथवा योगीपुरुषोंका जोपरशरीरविषेप्रवेशहोवैहै ॥ ताप्रवेशकाकारण तिनयोगीपुरुषोंकाप्राणहै ॥ सोयोगीपुरुषोंकाप्राण तापरशरीरविषेस्थितनाडीआदिक सर्वसूक्ष्मअंगोंविषेप्रवेशकरेहै ॥ यातैं सोप्राण अत्यंतसूक्ष्महै ॥ ताप्राणतैंभी यहरुद्रभगवान् अत्यंतसूक्ष्महै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं सूक्ष्म यानामकरिकैकथनकरेंहैं ॥ ६ ॥ और यहरुद्रभगवान् आपणेभक्तजनोंके अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यापंचक्लेशोंकी आत्यंतिकनिवृत्तिकरेहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं शुक्ल यानामकरिकैकथनकरेंहैं ॥ ७ ॥ और यहरुद्रभगवान् निर्गुणसाक्षिरूपकरिकै यासंघातकेअंतरप्रकाशकरेहै ॥ और सूर्यादिकसगुणरूपकरिकै बाह्यप्रकाशकरेहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं वैद्युत यानामकरिकैकथनकरेंहैं ॥ ८ ॥ और यहरुद्रभगवान् याआकाशादिकसर्वजगत्तैं महान्है तथा आपणीसत्तास्फूर्तिदेकरिकै यासर्वजत्केवृद्धिकाकारणहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं परब्रह्म यानामकरिकै कथनकरेंहैं ॥ ९ ॥ और यहरुद्रभगवान् यासर्वजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयकरणेहाराहै ॥ यातैं यहरुद्रभगवान्ही यासर्वजगत्रूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ सोजगत्काकारणरूपरुद्रभगवान् अज्ञानकेवशतैं कल्पितभेदवालाप्रतीत

हुआभी वास्तवतें सर्वभेदतैंरहिततहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवानकूं एक यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ १० ॥ और यह रुद्रभगवान् सर्वभेदतैंरहित अद्वितीयरूपहै ॥ तथा आपणीमायाशक्तिकरिकै यासर्वजगत्का पालनकरेहै ॥ तथा आपणेभक्तजनोंकूं तुरीयपदकीप्राप्तिकरिकै सर्वदुःखोंकीनिवृत्तिकरेहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवानकूं एकोरुद्र यानामकरिकैकथन करेहैं ॥ ११ ॥ और जैसे पट कदाचित् संकोचवालाहुआ स्थितहोवैहै ॥ और कदाचित् सोपट विकासवालाहुआ स्थितहोवैहै ॥ तैसे यहरुद्रभगवानभी याजगत्केप्रलयकालविषेतौ संकोचवालाहुआ स्थितहोवैहै ॥ और याजगत्कीउत्पत्तिकालविषे विकासवालाहुआ स्थितहोवैहै ॥ तथा यासर्वजगत्कापालनकरेहैं ॥ तथा सोरुद्रभगवान् यासर्वजीवोंकेबुद्धियोंकाकारणरूपहै ॥ तथा तिनबुद्धिआदिकोंके रागद्वेषादिकसर्वधर्मोंतैंरहिततहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवानकूं ईशान यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ यहरुद्रभगवानही यासर्वजगत्का अभिन्ननिमित्तउपादानकारणहै तथा बुद्धिआदिकसर्वजगत्तैंअंतरहै ॥ तथा विषमतादिकदोषोंतैंरहिततहै ॥ याकारणतें सोईशानशब्द मुख्यताकरिकै यारुद्रभगवानविषेहीघटैहै ॥ और अनीशयाशोचतिमुह्यमानः ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे जीवोंकूंपरतंत्रकह्याहै ॥ यातें तिनजीवोंविषे सोईशानशब्द मुख्यनहीं है किंतु गौणहै ॥ और सोरुद्रभगवान् यासर्वजगत्कूं आपणेआपणेकार्यविषेप्रवृत्तकरेहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष याप्रकारसें तारुद्रभगवानकीस्तुतिकरेहैं ॥ यहरुद्रभगवान् असुरोंकेसाथयुद्धकरणेकालविषे अनेकगुणोंकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ यातें यहरुद्रभगवानही महानशूरवीरहै ॥ अथवा यह रुद्रभगवान् आपणेआत्मसाक्षात्काररूपबलकरिकै कामक्रोधादिकअंतरशत्रुवोंकूं भक्षणकरेहै ॥ याकारणतेंभी यहरुद्रभगवानही महानशूरवीरहै ॥ और यहरुद्रभगवान् कामरूपस्मरकेदेहकूं दग्धकरताभयाहै ॥ याकारणतें यारुद्रभगवानकूं स्मरदेहधृक्या नामकरिकैकथनकरेहैं ॥ हेरुद्रभगवन् ! हमअधिकारीजन आपकीस्तुतिरूपवचनोंकरिकै सर्वदा आपका आराधनकरेहैं ॥ कैसे होआप ? यासर्वजीवोंकेहृदयकमलविषे सर्वदा निवासकरणेहारेहो ॥ तथा आपकूं आपणीस्तुतिही प्रीतिकाहेतुहै ॥ और हेरुद्रभगवन् ! जैसे घटकीन्यांईविशालहै दुग्धकेरहणेकास्थानरूपऊधस् जिनोंका ऐसीजेनवीनप्रसूतहुईगौवां हैं ॥ जिनगौवोंका

दुग्धदुह्यानहीं ॥ ऐसीगौवां हुंकाररूपस्नेहशब्दोंकरिकै आपणेवत्सोंकूंबुलावैहैं ॥ तैसे परमानंदरूपदुग्धकरिकैयुक्त जेआपकीस्तुतिरूपगौवांहैं ॥ तेआपकीस्तुतिरूपगौवां ताआनंदरूपदुग्धकीप्राप्तिकरणेवासते हमभक्तजनरूपवत्सोंकूं प्रेमकरिकैआपहीबुलावैहैं ॥ हमवत्सोंकेप्रयत्नकीअपेक्षाकरतीनहीं ॥ जिसकारणतैं तेआपकीस्तुतिरूपगौवां हमभक्तजनरूपवत्सोंके सर्वदुःखोंकूंनाशकरणेहारीहैं ॥ इसप्रकार तेवेदवेत्तापुरुष ताईशाननामारुद्रभगवान्की सर्वदा स्तुतिकरेहैं ॥ १२ ॥ और यहरुद्रभगवान् संपूर्णऐश्वर्य १ संपूर्णधर्म २ संपूर्णयश ३ संपूर्णश्री ४ संपूर्णज्ञान ५ संपूर्णवैराग्य ६ याषट्भगोंकाआश्रयहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं भगवान् यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ १३ ॥ और यालोकविषेजितनेराजादिकहैं ॥ तेराजादिकपुरुष यत्किंचित्देशविषेस्थितप्राणिरूपभूतोंकेईश्वरहोवैहैं ॥ तथा तिनप्राणियोंतैंभिन्नस्थितहोवैहैं ॥ और यहरुद्रभगवान्तौ आकाशादिकपंचमहाभूतोंकाभीईश्वरहै ॥ तथा तिनआकाशादिकभूतोंके उत्पत्तिस्थितिलयकाकारणहोणेतैं तिनआकाशादिकभूतोंका अभिन्ननिमित्तउपादानकारणहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं महेश्वर यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ १४ ॥ और जोआनंदस्वरूप आत्मा सर्वतैंमहान्है ॥ तथा स्वप्रकाशअद्वितीयरूपहै ॥ तथा सत्चित्आनंदस्वरूपहै ॥ तथा सर्वभेदतैंरहितहै ॥ ऐसेमहान्आत्मादेवकूं यहब्रह्मविद्यारूपउमाकापतिरुद्रभगवान् सर्वदा आपणाआत्मरूपकरिकैदेखेहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं महादेव यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ १५ ॥ और यासर्वजगत्कूं सत्तास्फूर्तिदेणेहारा जोयहरुद्रभगवान्है ॥ सोरुद्रभगवान् यासर्वजगत्विषे सत्तादिरूपकरिकैप्रवेशकरेहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं विष्णु यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ अथवा तारुद्रभगवान्विषे योगीपुरुष अभेदरूपकरिकै प्रवेशकरेहैं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं विष्णु यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और सोरुद्रभगवान् सर्वत्रव्यापकतारूपब्रह्मत्वकरिकै सर्वतैंअधिकहै ॥ तथा सर्वप्रकाशकानियंताहै ॥ याकारणतैं तारुद्रभगवान्कूं नृसिंहपूर्वतापनीयविषे महाविष्णु यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तहां पूर्वतापनीयविषे ॥ उग्रंवीरंमहाविष्णुंज्वलंतंसर्वतोमुखं ॥ नृसिंहंभीषणंभद्रं मृत्युमृत्युंनमाम्यहं ॥ याएकादशपदोंवालेमंत्रविषे तामहाविष्णुरूप नरसिंहभगवान्

काहीप्रतिपादनकऱ्याहै ॥ कैसाहैसोमंत्र ? बत्तीसअक्षरोंवालाजोअनुष्टुपछंदहै ताअनुष्टुपछंदवालाहै ॥ तथा जिसमंत्रका स्वरविशे षरूपसामकरिकैउच्चारणहोवैहै ॥ पुनःकैसाहैसोमंत्र ? प्रणवादिकअंगमंत्रोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा चारिपादोंकरिकैयुक्तहै ॥ ऐसेमंत्र करिकेकथनकऱ्याजोनृसिंहभगवान्‌है ॥ सोनृसिंहभगवान् याअधिकारीपुरुषोंकूं अवश्यकरिकैउपासनाकरणेयोग्यहै ॥ हेशिष्य! य हप्रणवरूप तथारुद्ररूप नृसिंहभगवान् केवल तामंत्रकाअर्थरूपकरिकै उपासनाकरणेयोग्यनहींहै ॥ किंतु महाचक्रकानाभिरूपक रिकैभी उपासनाकरणेयोग्यहै ॥ तामहाचक्रकास्वरूप आचार्यों नैं याप्रकारसैंवर्णनकऱ्याहै ॥ प्रथम ॐकाररूप प्रणवकूंलिखणा तिसप्रणवतैंबाह्यदेशविषे सुदर्शनमंत्रकेषट्अक्षरोंकरिकैयुक्त षट्कोणवाला कमललिखणा ॥ तिसतैंबाह्यदेशविषे अष्टाक्षरमंत्रकेअ ष्टअक्षरोंकरिकैयुक्त अष्टकोणवालाकमललिखणा ॥ तिसतैंबाह्यदेशविषे द्वादशअक्षरमंत्रकेद्वादशवर्णोंकरिकैयुक्त द्वादशकोणवाला कमललिखणा ॥ तिसतैंबाह्यदेशविषे मातृकादिकषोडशस्वरोंकरिकैयुक्त षोडशकोणवालाकमललिखणा ॥ तिसतैंबाह्यदेशविषे पू र्वउक्तअनुष्टुपछंदकेबत्तीसअक्षरोंकरिकैयुक्त बत्तीसकोणवालाकमललिखणा ॥ तिसतैंअनंतर मायाबीजकरिकै तथाभूवलयकरिकै तथामातृकावर्णोंकरिकै ताचक्रकूं बाह्यतैंवेष्टनकरणा ॥ तथा षट्कोणतैंआदिलैके षोडशकोणपर्यंत एकएककोणरूपदलकूं बिंदुस हितईकारकरिकैवेष्टनकरणा ॥ याकानाम नृसिंहाख्यमहाचक्रहै ॥ तहां श्लोक ॥ षट्कोणस्थसुदर्शनंवसुदलप्रोल्लासिताष्टाक्षरं बाह्येद्वादशवर्णपत्रकमलंतत्षोडशार्णच्छदं ॥ द्वात्रिंशन्मनुवर्णपत्रकमलंवृत्तोल्लसन्मातृकं मध्यस्थध्रुवमुर्वीबीजवलयंचक्रं नृसिंहाह्वयं ॥ १ ॥ याश्लोककाअर्थ यहपूर्वउक्तहीजानिलेणा ॥ ऐसेमहाचक्रविषे रथचक्रकेनाभिकीन्यांईस्थित जोप्रणवरूपनृ सिंहभगवान्‌है ॥ तानृसिंहभगवान्‌कीउपासना याअधिकारीपुरुषोंकूं अवश्यकरणेयोग्यहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार तापूर्वउक्तमंत्र काअर्थरूप तथामहाचक्रकानाभिरूप तथाक्षीरसमुद्रविषेविष्णुरूपकरिकैस्थित तथासर्वप्राणियोंकेहृदयादिकोंविषेस्थित जोनृसिं हभगवान्‌है ॥ तानृसिंहभगवान्‌कीउपासनाकूं जेअधिकारीपुरुष निरंतरकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष यामहान्‌संसारसमुद्रकूं गौ केपदकीन्यांई अल्पजानिकै तरिजावैहैं ॥ यातें याअधिकारीपुरुषोंनैं तानृसिंहभगवान्‌कीउपासना अवश्यकरिकैकरणी ॥ १६ ॥

और यासृष्टिकूंउत्पन्नकरणेहारा जोचतुर्मुखोंवालाभगवान्है ॥ ताचतुर्मुखभगवानकूं वेदवेत्तापुरुष ब्रह्मा यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥१७॥ और सोब्रह्माही समष्टिसूक्ष्मरूपकरिकै व्यष्टिस्थूलशरीरोंकूंउत्पन्नकरेहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष ताब्रह्माकूं प्रजापतियाना मकरिकैकथनकरेहैं ॥१८॥ कैसाहैसोब्रह्मा? सुवर्णमयजोयहब्रह्मांडगोलकहै ॥ ताब्रह्मांडरूपगोलकविषेस्थित जोयहभूमिरूपकमलहै जिसभूमिरूपकमलका यहमेरुपर्वत कर्णिकारूपहै ॥ ताकेविषे तथासत्यलोकविषे जोब्रह्मा देवतावोंकेउपकारकरणेवासतेस्थितहै ॥ सोब्रह्माप्रजापतिभी तारुद्ररूपनृसिंहभगवान्काहीस्वरूपहै ॥ इतनेग्रंथकरिकैॐकारादिकअष्टादशनामोंकेनिरूपणप्रसंगकरिकै नृसिंहपूर्वतापनीयविषेकथनकरीजा प्रणवहैगौणजिसविषे तथा पूर्वउक्तअनुष्टुप्छंदरूपमंत्रहैप्रधानजिसविषे ऐसीजासगुणविद्या तासगुणविद्याकास्वरूपनिरूपणकऱ्या ॥ अब पूर्वउक्तअनुष्टुप्छंदरूपमंत्रहैगौणजिसविषे तथाप्रणवहैप्रधानजिसविषे ऐसीसगुण विद्याकेस्वरूपकूंकथनकरणेहारी तथाकेवलप्रणवहैप्रधानजिसविषे ऐसीसगुणविद्याकेस्वरूपकूंकथनकरणेहारी तथातुरीयप्रणवहै प्रधानजिसविषे ऐसीनिर्गुणविद्याकेस्वरूपकूंकथनकरणेहारी जोनृसिंहउत्तरतापनीयहैं ॥ ताकेअर्थकानिरूपणकरणेवासते प्रथम तानृसिंहभगवान्केउपासकदेवतावोंकीजिज्ञासाकावर्णनकरेहैं ॥ हेशिष्य! पूर्वएककालविषे अग्निआदिकसर्वदेवता ताप्रजापति केसमीपजातेभये ॥ कैसाहैसोप्रजापति? आपणीमानसीनामाप्रियाकेसहित अमितौजसनामा पर्यंकविषेस्थितहै ॥ तथा सर्वतैंउत्कृष्टशोभावालाहै ॥ तथा जिसप्रजापतिकूं वेदवेत्तापुरुष ब्रह्मायानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ ऐसेप्रजापतिकेसमीप तेअग्निआदिकदेवता जातेभये ॥ कैसेहैं तेअग्निआदिकदेवता? ताप्रजापतिके समष्टिस्थूलरूपविराट्शरीरविषेस्थितहै ॥ तथा ताअनुष्टुप्छंदरूपमंत्रकीविद्याविषे ताप्रजापतिके शिष्यतारूपकरिकै कुशलहैं ॥ तथा प्रणवहैप्रधानजिसविषे ऐसीजा ब्रह्मात्मभावकूंबोधनकरणेहारी विद्याहै ताविद्याकेप्राप्तिकीहैइच्छाजिनोंकूं ॥ तथा पूर्वउक्तविद्याकरिकै शुद्धभयाहै मनजिनोंका ॥ ऐसेते अग्निआदिकदेवता ताप्रजापतिके प्रतिदंडवत्प्रणामकरिकै तथाआपणेदोनोंहस्तजोडिकै याप्रकारकावचनकहतेभये ॥ देवताउवाच ॥ हेभगवन्! पूर्वआपनें हमारे प्रतिसर्वमंत्रोंविषेराजारूप जोअनुष्टुप्छंदरूपमंत्र प्रणवादिकअंगमंत्रोंसहित तथाबीजसहित तथाशक्तिसहित तथा सामउपास

नासहित तथामहाचक्रसहित कथनकऱ्याथा ॥ कैसाहैसोमंत्रराज? मृत्युभयकीनिवृत्तिकरणेहाराहै ॥ तामंत्रराजाकेनिरूपणाविषे आपनें संक्षेपतें चारिपादोंवाला प्रणवमंत्रभीकथनकऱ्याथा ॥ कैसाहैसोप्रणव? आपणेचारीपादोंकावाच्यरूपजो चारिप्रकार काआत्माहै ताआत्माकेसाथ अभिन्नहै ॥ हेभगवन्! यासंसाररूपअग्निकरिकैसंतप्तजेहमदेवताहैं ॥ तिनहमदेवतावोंकेताईं आप कृपाकरिकै ताप्रणवकाउपदेशकरो ॥ तथा ताप्रणवकरिकैप्रतिपादित जोअत्यंतदुर्विज्ञेयआत्माहै ॥ ताआत्माका उपदेशकरो ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकाप्रश्न जबी तिनअग्निआदिकदेवतावोंनैं प्रजापतिकेप्रतिकऱ्या ॥ तबी सोप्रजापति तिनदेवतावोंके प्रति याप्रकारकाउदेशकरताभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेदेवतावो! तुमोंनैं पूर्व जिसमंत्रराजकीउपासनाकरीहै ॥ सोमंत्रराजचारिपादोंवालाहै ॥ यातैं तामंत्रकेचारिविभागकरिकै तिनचारिविभागोंकूं यथाक्रमतैं प्रणवमंत्रकेचारिमात्रावोंविषे मिलावणा ॥ तिसतैंअनंतर जोनृसिंहभगवान् पूर्वतापनीयकेमंत्रराजविषेस्थितएकादशपदोंका सविशेषअर्थरूपकरिकै कथनकऱ्याथा ॥ तिसनृसिंहभगवानूकूं सर्वपदार्थोंतैंरहिततुरीयलक्ष्यस्वरूपजानिकै यथाक्रमतैं ताप्रणवमंत्रकेचारिमात्रावोंकावाचार्थरूप तथातामंत्रराजाकेचारिपदोंकावाचार्थरूप जेआत्माकेकल्पितचारिपादहैं तिनचारिपादोंकेसाथ तालक्ष्यकाअभेदचिंतनकरै ॥ तथा यहअधिकारीपुरुष तानृसिंहभगवान्के ब्रह्मा विष्णु रुद्र सर्वेश्वर येचारिरूपकल्पनाकरिकै यथाक्रमतैं नाभि हृदय भ्रूमध्य दशमद्वारा याचारिस्थानोंविषे तानृसिंहभगवानूका तिनमंत्रोंकरिकैपूजनकरै ॥ हेदेवतावो! ताॐकाररूपप्रणवकी अकार उकार मकार नाद यहचारिमात्राहोवैहैं ॥ तिन अकारादिकचारिमात्रावोंविषे एकएकमात्रा स्थूलसूक्ष्मादिकभेदकरिकै चारिचारिप्रकारकीहोवैहैं ॥ तहां तिनअकारादिकवर्णोंकी वैखरीनामास्थूलअवस्थातौ वाक्विषेरहेहैं ॥ और तिनअकारादिकवर्णोंकीदूसरी मध्यमानामासूक्ष्मअवस्था हृदयदेशविषेरहेहैं ॥ और तिनअकारादिकवर्णोंकी तीसरी पश्यंतीनामाबीजअवस्था कुंडलिनीविषेरहेहैं ॥ और तिनअकारादिकवर्णोंकी चतुर्थपरानामाअवस्थातौ साक्षिरूपकरिकैसर्वत्रव्यापकहै ॥ इसप्रकार अकारादिक चारिमात्रावोंकूं चारिचारिप्रकारकाहोणेतैं तिनमात्रावोंकासमुदायरूपप्रणव षोडशअवयवोंवालासिद्धहोवैहै ॥ अथवा ते

अकारादिकचारिमात्रा प्लुत तीर्घ ह्रस्व साक्षी याचारिभेदकरिकै चारिचारिप्रकारकीहोवैहैं ॥ यातैं तिनसर्वमात्रावोंकासमुदाय रूपप्रणव षोडशअवयवोंवालाकह्याजावैहै ॥ अब आत्माकेषोडशभेदोंकावर्णनकरेहैं ॥ हेदेवतावो! जैसे ताप्रणवके अकार उ कार मकार नाद येचारिपादहोवैहैं ॥ तैसे ताप्रणवकेवाच्यअर्थरूपआत्माकेभी चारिपादहोवैहैं ॥ तहां व्यष्टिस्थूलशरीररूप उपाधिवाला जोविश्वहै ॥ सोविश्व याआत्मादेवका प्रथमपादहै ॥ और व्यष्टिसूक्ष्मशरीररूपउपाधिवाला जोतैजसहै ॥ सोतैजसया आत्मादेवका द्वितीयपादहै ॥ और व्यष्टिकारणशरीररूपउपाधिवाला जोप्राज्ञहै ॥ सोप्राज्ञ याआत्मादेवका तृतीयपादहै ॥ और तिनतीनोंकूंप्रकाशकरणेहाराजोसाक्षीरूपतुरीयहै ॥ सोतुरीय याआत्मादेवका चतुर्थपादहै ॥ येचारोंपाद यथाक्रमतैं ताप्रण वमंत्रकेअकारादिकचारिमात्रावोंका अर्थरूपहैं ॥ तेचारोंपाद अध्यात्मरूपहैं ॥ और हेदेवतावो! ताआत्मादेवके जैसे विश्वादि कचारि अध्यात्मपादहैं ॥ तैसे ताआत्मादेवके चारिअधिदैवपादभीहैं ॥ तहां समष्टिस्थूलशरीररूपउपाधिवाला जोविराट्है ॥ सोविराट् प्रथमपादहै ॥ और समष्टिसूक्ष्मशरीररूपउपाधिवाला जोहिरण्यगर्भहै ॥ सोहिरण्यगर्भ द्वितीयपादहै ॥ और सम ष्टिकारणशरीररूपउपाधिवाला जोईश्वरहै ॥ सोईश्वर तृतीयपादहै ॥ और तिनसर्वोंकूंप्रकाशकरणेहारा परमात्मादेव चतुर्थ पादहै ॥ येचारों ताआत्मादेवके अधिदैवपादहैं ॥ हेदेवतावो! जैसे ताप्रणवकीअकारादिकचारिमात्रा चारिचारिप्रकारकी होवैहैं ॥ तैसे याआत्मादेवके विराटादिकचारिअधिदैवरूपोंतैंअभिन्न जेविश्वादिकचारिपादहैं ॥ तेविश्वादिकचारिपादभी तीव्र मध्यम मंद तुरीय याचारिभेदकरिकै चारिचारिप्रकारकेहोवैहैं ॥ तहां जाग्रत्रूपविश्वका जोस्वरूप नेत्रादिकइंद्रियों करिकै रूपादिकविषयोंकूंग्रहणकरेहै ॥ सोस्वरूप ताविश्वका तीव्रनामा प्रथमपादहै ॥ और ताविश्वका जोस्वरूप मनोरथोंकूं करेहै ॥ सोस्वरूप ताविश्वका मध्यमनामा द्वितीयपादहै ॥ और ताविश्वका जोस्वरूप मोहकरिकैतूष्णींभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सो स्वरूप ताविश्वका मंदनामा तृतीयपादहै ॥ और ताविश्वका जोसर्वउपाधितैंरहितनिर्विशेषतुरीयस्वरूपहै ॥ सोनिर्विशेषस्व रूप ताविश्वका चतुर्थपादहै ॥ इसप्रकार स्वप्नकाद्रष्टातैजसभी चारिप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां स्वप्नअवस्थाविषे जोतैजसका

स्वरूप सत्यमंत्रादिकोंकूंग्रहणकरेहै ॥ सोस्वरूप तातैजसका तीव्रनामा प्रथमपादहै ॥ और तातैजसका जोस्वरूप स्वप्नकूंस्व रूपकरिकेहीजानेहै ॥ सोस्वरूप तातैजसका मध्यमनामा द्वितीयपादहै ॥ और तातैजसका जोस्वरूप तास्वप्नविषे मोहकरिकै मूढभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोस्वरूप तातैजसका मंदनामा तृतीयपादहै ॥ और तातैजसका जोस्वरूप निर्विशेषतुरीयरूपहै ॥ सो निर्विशेषतुरीयस्वरूप तातैजसका चतुर्थपादहै ॥ इसप्रकार सुषुप्तिअवस्थावाला प्राज्ञभी चारिप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां सात्विकवृ त्तिहैप्रधानजिसविषे ऐसाजोप्राज्ञकास्वरूपहै ॥ सोस्वरूप ताप्राज्ञका तीव्रनामा प्रथमपादहै ॥ और राजसवृत्तिहैप्रधानजिसविषे ऐसाजोताप्राज्ञकास्वरूपहै ॥ सोस्वरूप ताप्राज्ञका मध्यमनामा द्वितीयपादहै ॥ और तामसवृत्तिहैप्रधानजिसविषे ऐसाजोताप्राज्ञ कास्वरूपहै ॥ सोस्वरूप ताप्राज्ञका मंदनामा तृतीयपादहै ॥ और ताप्राज्ञका जोस्वरूप निर्विशेषतुरीयरूपहै ॥ सोनिर्विशेषस्व रूप ताप्राज्ञका चतुर्थपादहै ॥ और पूर्व प्रणवमंत्रकी जोनादनामा चतुर्थीमात्राकथनकरीथी ॥ तानादमात्राकी बीज बिंदु शक्ति शांत येचारिअवस्था कथनकरीहैं ॥ तिनचारोंके यथाक्रमतें ओत अनुज्ञाता अनुज्ञा अविकल्प येतुरीयआत्माकेचारिपादअ र्थरूपहैं ॥ अब तिनओतादिकचारिपादोंकूं तीव्रादिरूपकरिकैवर्णनकरेहैं ॥ तहां जैसे अंगारोंविषे अग्नि अनुगतहोइकेरहेहै ॥ तैसे जोआत्मादेव सर्वस्थूलसूक्ष्मकारणशरीरोंविषे साक्षीरूपकरिकै अनुगतहै ॥ तथा सर्वजीवोंकाआत्मरूपहै ॥ तथा जिस आत्मादेवकरिकै यहसर्वप्रपंच आपणेआपणेरूपकरिकै जान्याजावैहै ॥ ताअंतर्यामीआत्मादेवकानाम ओतहै ॥ सोओतना माआत्मा तातुरीयआत्माका तीव्रनामा प्रथमपादहै ॥ और जोआत्मादेव ध्याता ध्यान ध्येय ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय इत्यादिकजग तकूं आपणी सत्तास्फूर्तितैंरहितदेखिकै तथा हमारीसत्तास्फूर्ति याजगतकूंप्राप्तहोवै याप्रकारकाविचारकरिकै आपणीसत्तास्फू र्ति ताजगतविषेप्राप्तकरेहै ॥ ताआत्मादेवकानाम अनुज्ञाताहै ॥ सोअनुज्ञातानामाआत्मा तिसतुरीयआत्मादेवका मध्यमनामा द्वितीयपादहै ॥ और जोआत्मादेव कल्पितजगततैं आपणीसत्तास्फूर्तिकूंआकर्षणकरिकै ताकल्पितजगतकूंलयकरिकै केवल आ पणेअद्वितीयरूपकूं जानेहै ॥ ताआत्माकूं अनुज्ञा यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ सोअनुज्ञानामाआत्मा तिसतुरीयआत्मादेव

का मंदनामा तृतीयपादहै ॥ और जिसआत्मादेवकेस्वरूपविषे याकल्पितद्वैतप्रपंचकी स्मृतिभीनहींहोवैहै ॥ तथाजोआत्माकास्वरूप योगीपुरुषोंकूं अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मोंकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ ताआत्माकेस्वरूपकानाम अविकल्पहै ॥ सोअविकल्पस्वरूप तिस तुरीयआत्माका चतुर्थपादहै ॥ हेदेवतावो! सोअविकल्पनामा तुरीयआनंदस्वरूप तिनचारोंअवस्थावोंविषे अधिष्ठानतारूपकरिकैअनुगतहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ और तिसीअविकल्पनामातुरीयआत्माकीसत्तास्फुर्तितें यहपूर्वउक्तषोडशप्रकारकाआत्माकास्वरूप प्रतीतहोवैहै ॥ तहां यद्यपि आत्माकेतुरीयस्वरूपविषेकल्पितरूपतासंभवैनहीं ॥ तथापि तातुरीयआत्माविषे जोतुरीयतारूप धर्महै ॥ सोतुरीयताधर्म आपणेतैंभिन्न तीनवस्तुवोंकीअपेक्षाकरेहै ॥ तिनकीअपेक्षाकरिकैही तुरीयकह्याजावैहै ॥ यातैं सोतुरीयताधर्मभी कल्पितहै ॥ परंतु तातुरीयताधर्मकाआश्रयरूपआत्मा कल्पितनहींहै ॥ हेदेवतावो! जैसे निर्मलआकाशविषे गंधर्वनगर प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सोगंधर्वनगर कल्पितकह्याजावैहै ॥ तैसे ताअविकल्परूपशुद्धआत्माविषे यहसर्वजगत् प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं यहजगत्भी कल्पितकह्याजावैहै ॥ और यहअविकल्पआत्मादेव सर्वभयतैंरहितहै ॥ तथा जन्मादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ तथा यहआत्मादेव परमाणुआदिकसूक्ष्मपदार्थोंतैंभी अत्यंतसूक्ष्महै ॥ और आकाशादिकमहान्पदार्थोंतैंभी अत्यंतमहान्है ॥ ऐसेआत्माकेसाक्षात्कारतैंही मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ अब ताआत्मज्ञानकेअधिकारीकावर्णनकरेहैं ॥ हेदेवतावो! याअविकल्पनामा आनंदस्वरूपआत्माकेजानणेकीइच्छाकरतेहुए येब्राह्मणादिकअधिकारीपुरुष वेदविहितअग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरेहैं ॥ तथा हिंसादिकनिषिद्धकर्मोंका परित्यागकरेहैं ॥ तथा तेअधिकारीपुरुष सत्य तप दया दान ब्रह्मचर्य अहिंसा इत्यादिकशुभकर्मोंकूंकरेहैं ॥ इतनेकरिकै मंद मध्यम यादोप्रकारकेअधिकारीकावर्णनकऱ्या ॥ अब उत्तमअधिकारीकावर्णनकरेहैं ॥ हेदेवतावो! याअविकल्पस्वरूपआत्माकेजानणेकी इच्छाकरतेहुए कोईकब्राह्मण पुत्रएषणा वित्तएषणा लोकएषणा यातीनप्रकारकेएषणावोंकापरित्यागकरिकै तथापरमहंससंन्यासकेग्रहणपूर्वक सर्वकर्मोंकापरित्यागकरिकै केवल भिक्षावृत्तिकूंधारणकरेहै ॥ ऐसेउत्तमअधिकारीपुरुष याआनंदस्वरूपआत्माकूंसाक्षात्कारकरिकै अंतरतैंसर्वज्ञहुएभी बाह्यतैं अंधमूकपुरुषकीन्यांई यापृथिवीविषेविचरेहै ॥

याकारणतैंही अविवेकीलोक तिनविद्वान्पुरुषोंकूं जानिसकतेनहीं ॥ जैसे पूर्व संवर्तकादिकसंन्यासी यालोकोंकरिकैअज्ञातहुए विचरतेभयेहैं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं ताअविकल्पआत्माकेसाक्षात्कारकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ अब तापूर्वउक्तअनुष्टुप्छंदरूपमंत्रसहित प्रणवकेउपासनाका तथाकेवलप्रणवकेउपासनाका निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो! यहअधिकारीपुरुष जो कदाचित् किसीपापकर्मरूपप्रतिबंधकेवशतैं ताआत्मादेवकूं अविकल्परूपकरिकैनहींजानिसकै तौ याअधिकारीपुरुषोंनैं तापापरूपप्रतिबंधकीनिवृत्तिकरणेवासते कोईउपाय अवश्यकरिकैकरणा ॥ सोउपाययहहै ॥ पूर्वजोचारिपादोंवाला मंत्रराजकह्या था ॥ तामंत्रकेचारिपादोंका यथाक्रमतैं विश्व तैजस प्राज्ञ तुरीय याचारिआत्माकेस्वरूपोंकावाचकजे अकार उकार मकार नाद येप्रणवकीचारिमात्राहैं तिनचारिमात्रावोंकेसाथ अभेदचिंतनकरणा ॥ तहां प्रणवमंत्रकेमात्रावोंकीविभूति याप्रकार श्रुतिनैं कथनकरीहै ॥ ब्रह्मा वसु गायत्री गार्हपत्य पृथिवी ऋग्मंत्र ऋग्वेद येसंपूर्ण अकाररूपहैं ॥ और विष्णु रुद्र त्रिष्टुप् दक्षिणाग्नि यजुर्मंत्र यजुर्वेद अंतरिक्ष येसंपूर्ण उकाररूपहैं ॥ और रुद्र आदित्य जगती आहवनीय स्वर्ग साममंत्र सामवेद येसंपूर्ण मकाररूपहैं ॥ और विराट् मरुत् एकर्षिरूपअग्नि प्रणव अथर्वणमंत्र अथर्ववेद संवर्तकाग्नि सोम लोक येसंपूर्ण नादरूपहैं ॥ इसप्रकारकीविभूतियोंसहिततिनअकारादिकचारिमात्रावोंकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैंजानिकै यहअधिकारीपुरुष पूर्वउक्तमंत्रराजकेचारिपादोंका यथाक्रमतैं याअकारादिकचारिमात्रावोंविषे अभेदचिंतनकरै ॥ तिसतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष तामंत्रकेचारिपादोंसहित तिनअकारादिकमात्रावोंका लयचिंतनकरै ॥ अथवा केवलअकारादिकमात्रावोंकाही लयचिंतनकरै ॥ सोलयचिंतनकरणेकाप्रकारशास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं याप्रकारसैं कथनकऱ्याहै ॥ अकारादिकपूर्वपादोंकूं उकारादिकउत्तरपादोंविषेलयकरै ॥ तैसे उकारादिकपादोंकूंभी उत्तरमकारादिकपादोंविषेलयकरै ॥ इसप्रकार तुरीयपर्यंत तिनोंकालयकरै ॥ तिसतैंअनंतर बीज बिंदु शक्ति शांत याचारिअवस्थावाले तुरीयरूपप्रणवकूं मनकरिकैचिंतनकरै ॥ हेदेवतावो! ताप्रणवमंत्रकावाच्यअर्थरूपजो पुरुषहै ॥ तापुरुषकी जोयहपादरूपषोडशकला कथनकरीहैं ॥ तेषोडशकला यथाक्रमतैं पूर्वउक्तषोडशअवयववालेप्रणवमंत्रावि

षेही तादात्म्यसंबंधकरिकैस्थितहोवैंहैं ॥ सर्वभेदतैंरहित शुद्धपरमात्मादेवविषे तेकला रहैंनहीं ॥ यातैं तिनसर्वकलावोंकालय संभवैंहै ॥ अब दूसरेप्रकारकावर्णनकरेहैं॥ हेदेवतावो! पूर्वउक्तरीतिसैं चारिचारिअवयवोंवाली जेअकारादिकचारिमात्राहैं ॥ तिनचारिमात्रावोंकेसाथ यथाक्रमतैं पूर्वउक्तअनुष्टुप्छंदरूपमंत्रराजकेचारिपादोंकेमिलावणेकरिकै तामंत्रराजकेभी षोडशअवयवसिद्धहोवैंहैं ॥ काहेतैं? सोअनुष्टुप्छंद बत्तीसअक्षरोंकाहोवैंहै ॥ और ताअनुष्टुप्छंदके अष्टअष्टअक्षरकेचारिपादहोवैंहैं॥ ताअष्टअष्टअक्षरवालेचारिपादोंकूं जबी यथाक्रमतैं चारिचारिअवयवोंवालीअकारादिकचारिमात्रावोंकेसाथमिलाया ॥ तबी तामंत्रके दोदोअक्षरोंकूं एकएकअवयवकीवाचकतासिद्धहोवैंहै ॥ तिनषोडशअवस्थावोंकूं याअधिकारीपुरुषनैं शनैःशनैः करिकैजयकरणा ॥ चित्तविषे प्रतिबंधतैंरहित जोतिनभूमिकावोंकी दृढप्रतीतिहै यहही तिनभूमिकावोंकाजयकरणाहै ॥ तिनभूमिकावोंविषेभी यह अधिकारीपुरुष जिसजिसभूमिकाकाजयकरै ॥ तिसतिसभूमिकाकापरित्यागकरिकै उत्तरउत्तरभूमिकाकूंआश्रयणकरै ॥ इसप्रकार शनैःशनैः अभ्यासकरतेकरते याअधिकारीपुरुषकूं जबीकिसीपूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैं ताअविकल्पतुरीयआत्माकीप्राप्तिहोवै ॥ तबी याअधिकारीपुरुषके कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैंहै ॥ तिसतैंअनंतर याअधिकारीपुरुषकूं किंचित्मात्रभीकर्तव्य बाकी नहींरहेहै ॥ यातैं ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासते याअधिकारीपुरुषोंनैं ताप्रणवकीउपासना अवश्यकरिकैकरणी ॥ अब जिसब्रह्मकेज्ञानकरिकै कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैंहै ताब्रह्मकेस्वभावकीअभिव्यक्तिकरणेहारीयुक्तियोंकानिरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो! स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंकीअपेक्षाकरिकै जोतुरीयरूपअविकल्पआत्माहै ॥ सोअविकल्पशुद्धआत्मा वाकादिकदशबाह्यइंद्रियोंका अविषयहै ॥ तथा मनकाभीअविषयहै ॥ याकारणतैं ताआत्मादेवकेप्रश्नकरणेविषेभी कोईपुरुष समर्थनहींहै ॥ तथा ताआत्माकेउत्तरकहणेविषेभी कोईपुरुष समर्थनहींहै ॥ याकारणतैंही श्रद्धावान्शिष्योंकरिकैपूछेहुएभी कोईकब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष तिनशिष्योंकेप्रति सोसत्चित्आनंदस्वरूपअविकल्पआत्मा मौनकरिकैही उपदेशकरतेभयेहैं ॥ काहेतैं? जोजोवस्तु वाणीकरिकैकथनकऱ्याजावैंहै ॥ तिसतिसवस्तुविषे नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकीविषयता अथवा अंतरमनबुद्धिआदिकोंकीविषयता

अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ तिनबाह्यअंतरइंद्रियोंकीविषयतातैंविना केवलवाणीकीविषयतासंभवैनहीं ॥ यातैं तिनइंद्रियोंकीविषयता
तौ व्यापकहै ॥ और वाणीकीविषयताव्याप्यहै ॥ और जहांव्यापककाअभावहोवैहै ॥ तहां व्याप्यकाभीअभावहीहोवैहै ॥ जैसे
अग्निरूपव्यापककेअभावहुए धूमरूपव्याप्यकाभीअभावहीहोवैहै ॥ तैसे इहांप्रसंगविषे सर्वअवस्थावोंविषेअनुगत जोअद्वितीय
ब्रह्मरूपआत्माहै ॥ ताआत्मादेवविषे तेनेत्रादिकइंद्रिय तथामनबुद्धि प्रवृत्तहोइसकैंनहीं ॥ यातैं ताआत्मादेवविषे वाणीकीविष
यताभी संभवैनहीं ॥ किंवा याअधिष्ठानआत्माकरिकैप्रेरणाकर्येहुए तेनेत्रादिकइंद्रिय तथामनबुद्धिशरीरादिक आपणेआपणे
कार्यविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ परंतु तेमनसहितनेत्रादिकइंद्रिय आपणेप्रवर्तकआत्माविषे प्रवृत्तहोवैंनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ आपणीस
मीपतामात्रकरिकै सर्वव्यवहारोंकीसिद्धिकर्ता जोआत्माहै ॥ ताकर्ताआत्माविषे जोमनसहितइंद्रियोंकीविषयतारूपकर्मतामानिये
तौ एकहीआत्माविषे कर्तापणा तथाकर्मपणा प्राप्तहोवैगा ॥ सो अत्यंतविरुद्धहै ॥ याकारणतैंभी ताआत्माविषे तामनसहितइं
द्रियोंकीविषयता संभवैनहीं ॥ किंवा यहवाक्इंद्रियतौ केवलशब्दोंकूंही विषयकरेहै अर्थकूंविषयकरेनहीं ॥ और तेशब्द तिनप
दार्थोंकूंविषयकरेहैं ॥ जेपदार्थ नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकेविषयहोवैहैं अथवा मनबुद्धिरूपअंतःकरणकेविषयहोवैहैं ॥ सर्वपदार्थोंकूं
तेशब्द विषयकरेनहीं ॥ और तेनेत्रादिकइंद्रियभी तिनपदार्थोंकूंविषयकरेहैं ॥ जिनपदार्थोंविषे अनात्मताधर्म रहेहै ॥ तथारू
पस्पर्शादिकगुणरहेहैं ॥ सोअनात्मताधर्म तथारूपस्पर्शादिकधर्म आत्माविषेहैंनहीं ॥ यातैं ताआत्मादेवविषे तिनइंद्रियोंकीविषय
ताभी संभवैनहीं ॥ और इंद्रियोंकीविषयताकेअभावहुए ताआत्मादेवविषे शब्दकीविषयताभीसंभवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ नेत्रादिक
इंद्रियतौ नियमकरिकै रूपस्पर्शादिकधर्मोंकूं तथारूपस्पर्शादिकधर्मवालेपदार्थोंकूंही विषयकरेहैं ॥ और मनरूपअंतरइंद्रियतौ निय
मकरिकै सुखदुःखादिकधर्मोंकूं तथासुखदुःखादिकधर्मवालेपदार्थकूंही विषयकरेहै ॥ तेरूपस्पर्शादिकगुण तथासुखदुःखादिकधर्म
आत्माविषेहैंनहीं ॥ यातैं ताआत्मादेवविषे तिनइंद्रियोंकीप्रवृत्तिसंभवैनहीं ॥ किंवा अहंसुखी अहंदुःखी याप्रतीतिकरिकै यद्यपि
सुखदुःख आत्माविषेप्रतीतहोवैहैं ॥ तथापि सोसुखदुःख ताआत्माविषे वास्तवतैंहैनहीं ॥ किंतु जैसे रज्जुविषे सर्पकल्पितहोवैहै ॥

तैसे सोसुखदुःखभी आत्माविषेकल्पितहै ॥ और कल्पितवस्तुकाज्ञान किसीइंद्रियकरिकैहोवैनहीं ॥ किंतु साक्षीआत्माकरिकैही ताकल्पितवस्तुकाज्ञान होवैहै ॥ यातें सोकल्पितसुखदुःखभी आत्माविषे मनकीविषयताकूंसिद्धकरिसकैनहीं ॥ अब ताआत्मावि षे इंद्रियोंकीअविषयता सिद्धकरणेवासते प्रथम अधिष्ठानत्व सिद्धकरेहैं ॥ हेदेवतावो! कल्पितपदार्थोंकाउपादानकारणरूपजो अज्ञानहै ॥ ताअज्ञानकाजोविषयहोवैहै ताकानाम अधिष्ठानहै ॥ सोअधिष्ठान सर्वकल्पितपदार्थोंकाएकहीहोवैहै ॥ जैसे एकहीर ज्जुरूपअधिष्ठानविषे कल्पितजे सर्प दंड जलधारा भूमिलय इत्यादिकपदार्थहैं ॥ तिनसर्वकल्पितपदार्थोंका एकहीरज्जु अधिष्ठान होवैहै ॥ तैसे सर्वकल्पितपदार्थोंका एकहीअधिष्ठानहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! कल्पितरजतादिकोंकेअधिष्ठानरूप जेशुक्तिआ दिकहैं ॥ तिनशुक्तिआदिकोंतैं कल्पितसर्पादिकोंकेअधिष्ठानरूपरज्जुआदिकोंका भेदहीदेखणेविषेआवैहै ॥ यातें सर्वकल्पितपदा र्थोंका एकही अधिष्ठानहोवैहै ॥ यहवार्त्ता संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो! यद्यपि अविचारकालविषे कल्पितसर्पादिकोंका तथा कल्पितरजतादिकोंका भिन्नभिन्नही अधिष्ठानप्रतीतहोवैहै ॥ तथापि बिचारकरिकैदेखियेतो तिनरज्जुआदिकोंकूं कल्पितस र्पादिकोंकीअधिष्ठानता संभवैनहीं ॥ किंतु तिनरज्जुशुक्तिआदिकोंविषेअनुगत जोसामान्यचैतन्यहै ॥ ताचेतनविषेही तिनकल्पित सर्पादिकोंकीअधिष्ठानतासंभवैहै ॥ काहेतें? कल्पितवस्तुकाउपादानकारण जोअज्ञानहै ताअज्ञानकाजोविषयहोवैहै ताकानाम अ धिष्ठानहै ॥ सोअज्ञान स्वभावतें आवृतरज्जुआदिकजडपदार्थोंकूंविषयकरैनहीं ॥ किंतु तिनरज्जुआदिकोंविषेअनुगत जोचेतनहै ॥ ताचेतनकूंही सोअज्ञान विषयकरेहै ॥ यातें सोचेतनही तिनकल्पितपदार्थोंका अधिष्ठानहै ॥ सोचेतनरूपअधिष्ठान सर्वत्रएकहीहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरणेवासते प्रथम स्थूलारुंधतीन्यायकरिकै इदंतारूपसामान्यअंशविषे अधिष्ठानरूपता निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो! भ्रमकालविषे जोवस्तु जिसकल्पितपदार्थकेसाथ तादात्म्यसंबंधकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ सोवस्तुही ताकल्पितपदार्थ काअधिष्ठानहोवैहै ॥ तिसवस्तुतैंभिन्न दूसराकोईवस्तु ताकल्पितपदार्थकाअधिष्ठानहोवैनहीं ॥ यहअधिष्ठानकालक्षण रज्जुशुक्ति आदिकोंविषेसंभवतानहीं ॥ किंतु तिनरज्जुशुक्तिआदिकोंविषेअनुगत जोइदंतारूपसामान्यअंशहै ॥ ताइदंताविषेही सोअधिष्ठान

कालक्षणसंभवैहै ॥ काहेतैं? ताभ्रमकालविषे रज्जुःसर्पः शुक्तिरजतं याप्रकारकीप्रतीतिहोवैनहीं ॥ किंतु ताभ्रमकालविषे सर्वप्रा
णियोंकूं अयंसर्पः इदंरजतं याप्रकारकीहीप्रतीतिहोवैहै ॥ यातैं कल्पितसर्पादिकोंकेसाथ तादात्म्यसंबंधकरिकैप्रतीतहोणेहारी जो
इदंतारूपसामान्यअंशहै ॥ सोइदंताअंशही तिनसर्पादिकोंकाअधिष्ठानहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! बाधसामानाधिकरण्य अध्याससा
मानाधिकरण्य विशेषणसामानाधिकरण्य ऐक्यसामानाधिकरण्य यहचारिप्रकारकासामानाधिकरण्य शास्त्रोंविषेकथनकर्‍याहै ॥ त
हां स्थाणुविषेचोरभ्रमकेउत्तरकालविषे तथारज्जुविषे सर्पभ्रमकेउत्तरकालविषे तास्थाणुरज्जुकेज्ञानहुएतैं अनंतरजो चोरोऽयंस्थाणुः
सर्पोऽयंरज्जुः याप्रकारकीप्रतीतिहोवैहै ॥ ताकानाम बाधसामानाधिकरण्यहै ॥ और अयंसर्पः इदंरजतं याकानाम अध्याससामा
नाधिकरण्यहै ॥ और नीलोघटः याकानाम विशेषणसामानाधिकरण्यहै ॥ और सोयंदेवदत्तः याकानाम ऐक्यसामानाधिकरण्य
है ॥ तहां जैसे अध्याससामानाधिकरण्यविषे इदंताअंशका ताकल्पितसर्पकेसाथ तादात्म्यसंबंध प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे बाधसा
मानाधिकरण्यविषे रज्जुकाभी तासर्पकेसाथ तादात्म्यसंबंध प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं ताइदंताविषे कल्पितसर्पादिकोंकीअधिष्ठानता
संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो! ताबाधसामानाधिकरण्यविषे यद्यपि रज्जुआदिकोंका सर्पादिकोंकेसाथ तादात्म्यप्रतीति
होवैहै ॥ तथापि ताबाधसामानाधिकरण्यकालविषे तेकल्पितसर्पादिक तहांहैंनहीं ॥ यातैं ताबाधकालविषे शास्त्रवेत्तापुरुषोंकूं
जो सर्पोऽयंरज्जुः याप्रकारकाज्ञानहोवैहै ॥ सोज्ञान वंध्यापुत्रविषयकज्ञानकीन्यांईं विकल्पमात्रही है ॥ ताविकल्पज्ञानकरिकै ति
नरज्जुआदिकोंविषे सर्पादिकोंकीअधिष्ठानता सिद्धहोवैनहीं ॥ जोकदाचित् विकल्पज्ञानतैंभी वस्तुकीसिद्धिहोतीहोवै तौ वंध्यापु
त्रहै याप्रकारकेविकल्पज्ञानतैं वंध्यापुत्रकीभीसिद्धिहोणीचाहिये ॥ यातैं इदंतारूपसामान्यअंशही सर्पादिकसर्वकल्पितपदार्थोंका
अधिष्ठानहै ॥ इतनेकरिकै इदंताविषे अधिष्ठानरूपतासिद्धकरी ॥ अब ताइदंताविषे ब्रह्मरूपतासिद्धकरणेवासते प्रथम ताइदंता
विषे भेदतैंरहितपणा निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो! इदंतारूपसामान्यअंशविषे जोहमारेकूंभेदप्रतीतहोवैहै ॥ सोभेद केवल श
ब्दमात्रकरिकैही प्रतीतहोवैहै ॥ वास्तवतैं ताइदंतारूपअर्थविषे किंचित्मात्रभीभेदनहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! तिनशब्दोंकेभे

दतैंही अर्थकाभेद किसवासतेनहींहोवै ? ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ! यालोकविषे शब्दोंकेभेदहुएभी अर्थकीएकताहीदेखीहै ॥ जैसे एकहीदेवदत्तनामापुरुषकूं कोईपुरुष अयंदेवदत्तः याशब्दकरिकैकथनकरेहैं ॥ और कोईकपुरुष तादेवदत्तकूं त्वं याशब्दकरिकै कथनकरेहैं ॥ और कोईकपुरुष स्नेहकरिकै देवदत्तोऽहमेव याप्रकारकेशब्दकरिकैकथनकरेहैं ॥ और कोईकपुरुषतौ यह देवदत्त मेरासर्वबांधवहै याप्रकारकेशब्दकरिकैकथनकरेहैं ॥ इसप्रकार एकहीदेवदत्तपुरुष अनेकवक्तापुरुषोंकरिकैउच्चारणकऱ्ये हुएअनेकशब्दोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ परंतु तिनशब्दोंकेभेदकरिकै तादेवदत्तनामापुरुषकाभेदहोवैनहीं ॥ तैसे ताइदंताकेवाचकशब्दोंकेभेदहुएभी ताइदंतारूपसामान्यअर्थविषे भेदसिद्धहोवैनहीं ॥ किंवा यालोकविषे जितनेकीपदार्थहैं ॥ तिनसर्वपदार्थोंविषे एकत्व स्वभावतैंही सिद्धहै ॥ तास्वभावसिद्धएकत्वकेविद्यमानहुए तापदार्थविषे तिनशब्दोंकेभेदकरिकै सोनानात्व कदाचित्‌भी नहींरहैगा ॥ जोकदाचित् तास्वभावसिद्धएकपदार्थविषेभी शब्दोंकेभेदतैं नानापणाप्रतीतहोवैगा तौभी सोनानापणा गंधर्वनगरकीन्यांई मिथ्याहीहोवैगा ॥ तामिथ्यानानापणेकरिकै वास्तवएकताकीहानिहोवैनहीं ॥ किंवा यालोकविषे प्रमाणकरिकैही वस्तुकीसिद्धिहोवैहै ॥ प्रमाणतैंविना वस्तुकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं सोइदंतारूपअर्थकाभेद किसप्रमाणकरिकैसिद्धहोवैहै ? यहविचार कऱ्याचाहिये ॥ तहां भेदरूपराजाका मुख्ययोद्धाजोशब्दथा सोशब्दतौ याइदंतारूपअर्थतैं पराजयकूंप्राप्तहोताभयाहै ॥ काहेतैं ? ताइदंताअर्थविषे स्वभावतैंरह्याजोअभेदहै ॥ ताअभेदकरिकै भेदकीनिवृत्तिहोइगईहै ॥ याकारणतैं ताभेदरूपराजाकेअनुसारकरिकै ताअर्थविषेप्रवेशकरणेकीइच्छाकरणेहाराजोशब्दहै ॥ सोशब्दभी ताअर्थविषेप्रवेशकरिसकैनहीं ॥ किंतु सोशब्द कल्पितभेदमात्रकूंअंगीकारकरिकैही संतोषकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सत्यभेदकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ किंवा जैसे सोशब्द ताइदंतारूपअर्थके भेदकूंग्रहणनहींकरेहैं ॥ तैसे यहचक्षुआदिकइंद्रियभी ताभेदकूंग्रहणनहींकरेहैं ॥ किंतु तेचक्षुआदिकइंद्रिय वस्तुकेस्वरूपमात्रकूंग्रहणकरिकैही कृतकृत्यहोवैहैं ॥ जैसे दोषयुक्तचक्षु शुक्तिविषे यहरजतहै याप्रकार रजतमात्रकाग्रहणकरिकैही कृतकृत्यहोवैहै ॥ शुक्तिविषे तारजतकेभेदकूंग्रहणकरेनहीं ॥ जोकदाचित् सोदुष्टचक्षु ताभेदकूंभी ग्रहणकरताहोवै तौ भ्रममात्रकाहीलोपहोवैगा ॥

किंवा याचक्षुआदिकइंद्रियोंतैं जबी स्वप्नकेइंद्रियोंकीन्यांई साइदंताभी सिद्धनहींभई ॥ तबी तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंतैं ताइदंता कामेद किसप्रकार सिद्धहोवैगा? किंतु नहींसिद्धहोवैगा ॥ काहेतैं? तीनकालविषे जाकाबाधनहींहोवैहै ऐसीजोसत्ताहै ॥ सासत्ता ही इदंतारूपहै ॥ याकारणतैंही यालोकविषे इदंसत् इदंसत् याप्रकारकीप्रतीतिहोवैहै ॥ ताप्रतीतितैं इदंशब्दकेअर्थका तथासत् शब्दकेअर्थका अभेदहीसिद्धहोवैहै ॥ यातैं तासत्तारूपइदंताकूं तथाताकेभेदकूं यहचक्षुआदिकइंद्रिय ग्रहणकरिसकैनहीं ॥ किंवा पूर्वउक्तयुक्तियोंतैं जबी ताइदंताविषेभी भेदसिद्धनहींभया ॥ तबी जिसपरमात्मादेवका सोइदंताभीविशेषरूपहै ॥ ऐसाजोसर्वत्रअ नुगतपरमात्मादेवहै ॥ तिसपरमात्मादेवविषे सोभेद किसप्रमाणकरिकैसिद्धहोवैगा? किंतु तापरमात्मादेवविषे किसीभीप्रमाणक रिकै ताभेदकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ अब ताइदंतारूपसत्ताकेभानविषे दूसरेकीअनपेक्षाबोधनकरणेवासते प्रथम तासत्ताकास्फुरणतैं अभेदसिद्धकरेहैं ॥ तहां दृष्टिसृष्टिसिद्धांतविषे अभासमानपदार्थकी सत्ताहोवैनहीं ॥ किंतु भासमानपदार्थकीही सत्ताहोवैहै ॥ या कारणतैं सासत्ता तास्फुरणतैंभिन्ननहींहै ॥ किंतु सासत्ता स्फुरणरूपहीहै ॥ और सोस्फुरण स्वप्रकाशहीहोवैहै ॥ यहवार्त्ता पूर्वअ नेकवार कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं तास्वप्रकाशस्फुरणतैंअभिन्नहुई सासत्ताभी स्वप्रकाशहीसिद्धहोवैहै ॥ अब तास्फुरणकेस्वप्रका शताविषे किंचित्युक्तिकाभी वर्णनकरेहैं ॥ हेदेवतावो! यालोकविषे जोजोवस्तु चैतन्यतातैंरहित अचैतन्यस्वरूपहै ॥ सोसोअचै तन्यवस्तु चैतन्यकरिकैहीसिद्धहोवैहै ॥ याअर्थविषे किसीभीवादीकाविवादहैनहीं ॥ किंतु यहअर्थ सर्ववादियोंकूंसंमतहै ॥ जोक दाचित् सोचैतन्यभी तिसचैतन्यकरिकैही प्रतीतहोवैहै याप्रकार अंगीकारकरिये तौ याकेविषे यहविचारकऱ्याचाहिये ॥ जिसचै तन्यकी चैतन्यकरिकैप्रतीतिहोवैहै ॥ सोप्रतीतिकाविषयरूपचैतन्य स्फुरणतैंविलक्षणहै ॥ अथवा सोचैतन्य स्फुरणरूपहै ॥ तहां जोवादी प्रथमपक्ष अंगीकारकरे सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं? स्फुरणतैंविलक्षणवस्तुविषे चैतन्यरूपतामानणेविषे किंचित्मात्रभीप्रमा णनहींहै ॥ तथा ताकेमानणेका कोईप्रयोजनभी हैनहीं ॥ काहेतैं? ताअस्फुरणरूपचैतन्यकूंप्रकाशकरणेहाराजोचैतन्यहै ॥ ताचैत न्यकरिकैही सर्वकानिर्वाहहोइसकेहै ॥ ताअस्फुरणरूपचैतन्यकाअंगीकारकरणा व्यर्थहीहै ॥ और सोचैतन्य स्फुरणरूपहै यहदूस

रापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें ? ताचैतन्यकूं जोवादी स्फुरणरूपअंगीकारकरैगा तौ सोस्फुरणरूपचैतन्य सर्वबुद्धिवृत्तियोंकासाक्षीरूपआत्माही सिद्धहोवैगा ॥ तास्फुरणरूपसाक्षीकूं आपणेप्रकाशविषे दूसरेकिसीकीअपेक्षासंभवैनहीं ॥ जोकदाचित् तास्फुरणरूपचैतन्यकूं आपणेप्रकाशविषे किसीदूसरेकीअपेक्षाहोवैगी तौ तास्फुरणरूपचैतन्यविषे घटादिकोंकी न्यांई अनात्मरूपताप्राप्तहोवैगी ॥ यातें सोस्फुरणरूपचैतन्यआत्मा स्वप्रकाशरूपहै ॥ इतनेकरिकै ताआत्मादेवकी सत्‌चित्‌रूपता निरूपणकरी ॥ अब ताआत्मादेवविषे आनंदरूपता निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो ! जोहमनैं सत्‌चित्‌स्वरूपआत्मा तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ सोआत्मादेव यादेहधारीजीवोंकूं सर्वपदार्थोंतें अत्यंतप्रियरूपहै ॥ यातें सोआत्मादेव परमआनंदस्वरूपहै ॥ काहेतें ? यालोकविषे याजीवोंनें आपणाआत्मरूपकरिकै अंगीकारकऱ्याजोयहशरीरहै ॥ ताशरीररूपआत्माकेनाशकाप्रसंग जबी आइकैप्राप्तहोवैहै ॥ तथा किसीविषयसुखकेनाशकाप्रसंग जबी आइकैप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहबुद्धिमान्‌पुरुष ताशरीररूपआत्माकीरक्षाकरणेवासते ताविषयजन्यसुखकाही परित्यागकरेहैं ॥ और यालोकविषे अधिकसुखवासतेही अल्पसुखकापरित्याग देखणेविषेआवैहै ॥ अल्पसुखवासते अधिकसुखकापरित्यागकरणा कहांभीदेखणेविषेआवतानहीं ॥ यातें यासर्वलोकोंकेव्यवहारतेंभी ताविषयसुखतें तथाताविषयसुखकेसाधनोंतें आत्माविषेही परमानंदरूपता सिद्धहोवैहै ॥ हेदेवतावो ! यापूर्वउक्तअभिप्रायकूंबोधनकरणेहारा जोविद्वान्‌पुरुषोंकामौनहै ॥ तामौनकरिकैही तेब्रह्मवेत्तापुरुष आपणेशिष्योंकेप्रति तासत्‌चित्‌आनंदस्वरूपआत्माका उपदेशकरतेभयेहैं ॥ और जेअल्पबुद्धिवालेशिष्य ताब्रह्मवेत्तागुरुके मौनरूपउपदेशकरिकै तासत्‌चित्‌आनंदस्वरूप आत्माकूं नहींजानिसकैहैं ॥ तिनशिष्योंकेप्रति सोब्रह्मवेत्तागुरु कृपाकरिकै ताअद्वितीयआत्माविषे किंचित्‌धर्मोंकाआरोपणकरिकै याप्रकारकाउपदेशकरै ॥ तहां यालोकविषे जोवस्तु वचनकरिकैस्पष्टकह्याजावैहै ॥ तावस्तुकूं विद्वान्‌पुरुष सत् यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और जोवस्तु केवल मनकरिकैही चिंतनकऱ्याजावैहै ॥ तावस्तुकूं विद्वान्‌पुरुष असत् यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और याआत्मादेवकास्वरूपतौ सत् असत् यादोनोंतेंरहितहै ॥ ऐसेआत्मादेवविषे सोब्रह्मवेत्तागुरु सत्‌असत्‌रूपदोधर्मोंकूं आरोपणक

रिकै ताशिष्यकेप्रति याप्रकारका उपदेशकरै ॥ हेशिष्य! अनुभवकरिकैसिद्ध जोसत्चित्आनंदस्वरूपआत्माहै ॥ सोसर्वक्लेशोंतैं रहितआत्मादेव तूहै ॥ तहां सोमंदबुद्धिशिष्य तासत्का क्यास्वरूपहै? याप्रकारकाजोप्रश्नकरै तौ सोब्रह्मवेत्तापुरुष ताशिष्यकेप्रति याप्रकारकावचनकहै ॥ जोवस्तु सर्वपदार्थोंविषे इदंइदं याप्रकारतैंप्रतीतहोवैहै तावस्तुकूंही तू सत्रूपकरिकैजान ॥ तहां पूर्वस्थूलारुंधतीन्यायकरिकै ताइदंताविषेकथनकरीजाआत्मता ताआत्मताकूं अबी मुख्यआत्माविषेप्राप्तकरेहैं ॥ हेशिष्य! जिस मनवाणीकेअविषयरूपस्फुरणविषे सापूर्वउक्तइदंताभी कल्पितहै ॥ सोस्फुरणही हमनैं तुमारेप्रति सत् यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तिसीस्फुरणकूं विद्वान्पुरुष अनुभूति यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और हेशिष्य! यहसत्रूपअनुभूति किसविषेस्थितहै? याप्रकारकाप्रश्न जोतू हमारेप्रतिकरैं तौ हम तुमारेप्रति तास्थानसहितअनुभूतिकेस्वरूपका कथनकरेहैं ॥ ताकूं तू श्रवणकर ॥ हेशिष्य! सर्वजीवोंकेबुद्धिविषे प्रतिबिंबभावकूंप्राप्तहुई तथासर्वविषयोंविषे इयंचित् इयंचित् याप्रकारसैंअनुगतप्रतीतहुई जाप्रसिद्धचित्है ॥ ताचित्कानाम अनुभूतिहै ॥ जिसचित्केस्वरूपविषे सापूर्वउक्तइदंताभी बाधितहोवैहै ॥ यातैं साबुद्धिही ताअनुभूतिकेंउपलब्धिकास्थानहै ॥ हेदेवतावो! इसप्रकार जबी तेश्रद्धावान्शिष्य तिनब्रह्मवेत्तागुरुवोंकेप्रति आत्माकास्वरूपपूछेहैं ॥ तबी तेब्रह्मवेत्तागुरु तिनशिष्योंकेप्रति ताअद्वितीयआत्माविषे वाकादिकइंद्रियोंकेयोग्य सत्तादिकधर्मोंकाआरोपणकरिकै ताआत्मादेवकाउपदेशकरेहैं ॥ हेदेवतावो! वास्तवतैंमनवाणीकाअविषयजोआत्माहै ॥ ताआत्मादेवविषे जामनवाणीकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ साप्रवृत्ति अध्यासतैंविनाहोवैनहीं ॥ किंतु अध्यासकूंअंगीकारकरिकैही सामनवाणीकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ यातैं पूर्वजोहमनैं तुमारेप्रति सत्चित्आनंदस्वरूपआत्माका कथनकऱ्याहै ॥ सोआत्माकास्वरूप ताअध्यासतैंविना वाणीकरिकैकथनकऱ्याजावैनहीं ॥ तथा मनकरिकैभी जान्याजावैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं कैमुत्यकन्यायकरिकैस्पष्टकरेहैं ॥ हेदेवतावो! यालोकविषे जीवोंकूं सुखदुःखकीप्राप्तिकरणेहारे जितनेभावपदार्थहैं ॥ तेभावपदार्थ आपणेसहकारीसाधनोंसहित क्षणक्षणविषे परिणामकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ऐसेपदार्थोंकूंभी कोईपुरुष वर्णनकरिसकतानहीं ॥ जैसे मोती दुग्ध चंद्र कुंदपुष्प याचारोंकेरूपविषे श्वेतताधर्मकेसमानहुएभी तिन

यीविष्णुभगवान् आपणेविचित्रकार्योंकीअपेक्षाकरिकै ईश्वरहीकह्याजावैहै ॥ तैसे येव्यष्टिअभिमानीजीवभी आपणेआपणेवि
चित्रकार्योंकीअपेक्षाकरिकै ईश्वररूपहीहैं ॥ अब याजीवोंविषे ईश्वररूपताकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम याजीवोंविषे विचित्रशक्ति
निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो! यालोकविषे जितनेदेहधारीजीवहैं ॥ तेसर्वजीव एकदूसरेकीअपेक्षाकरिकै विचित्रशक्तिवालेप्र
तहोवैहैं ॥ यातें यासर्वजीवोंके आपणेआपणेकार्यभी आश्चर्यकेहीकारणहैं ॥ जैसे यालोकविषे स्पष्टवचनकेउच्चारणकरणेकीश
क्ति केवल मनुष्योंविषेहीरहेहै ॥ दूसरेपशुआदिकोंविषे साशक्तिरहैनहीं ॥ और आकाशविषेगमनकरणेकीशक्ति केवल पक्षियोंविषे
ीरहेहै ॥ मनुष्यादिकोंविषे साशक्तिरहैनहीं ॥ और पृथिवीकेअल्पछिद्रविषेभीप्रवेशकरणेकीशक्ति केवल सर्पोविषेहीरहेहै ॥ दूसरे
नुष्यादिकोंविषेसाशक्तिरहैनहीं ॥ और निश्चलताकरिकै स्थितहोणेकीशक्ति केवल वृक्षोंविषेहीरहेहै ॥ दूसरेमनुष्यादिकोंविषे सा
शक्तिरहैनहीं ॥ और सर्वजीवोंकेदेखतेहुए अंतर्धानहोणेकीशक्ति केवल देवतादिकोंविषेहीरहेहै ॥ मनुष्यादिकोंविषे साशक्तिरहैन
हीं ॥ इसप्रकार दूसरेभी जातिगोत्रकुलादिकोंकेभेदकरिकै भिन्नताकूंप्राप्तहुए अनेकप्रकारकेजीव नानाप्रकारकीशक्तियोंकरिकैयुक्त
हैं ॥ जिनजीवोंकेकार्यकूं दूसरेजीव करिसकतेनहीं ॥ जैसे यामनुष्योंविषे कोईकमनुष्यतौ महान्शूरवीरहै ॥ और कोईकमनुष्यतौ स
मनुष्योंकूंआपणीआज्ञाविषेचलावणेहारेराजेहैं ॥ और कोईकमनुष्यतौ सर्वमंत्रोंकूंजानणेहारेहैं ॥ और कोईकब्राह्मणादिकमनुष्य
तौ सर्ववेदोंकूंजानणेहारेहैं ॥ और कोईकमनुष्यतौ शास्त्रोंकेकर्त्ताहैं ॥ और कोईकमनुष्यतौ तिनशास्त्रोंके यथार्थ अर्थकूंकहणेहारेहैं ॥
और कोईकमनुष्यतौ तिनवेदशास्त्रोंकेअर्थका अनुष्ठानकरणेहारेहैं॥ और कोईकमनुष्यतौ गंधर्वनाटकादिकउपविद्याविषे कुशलहैं ॥
और कोईकमनुष्यतौ कामक्रोधादिरूपआसुरीसंपदावालेहैं ॥ और कोईकमनुष्यतौ शांतिदांतिआदिकदैवीसंपदावालेहैं ॥ इसप्रका
रपरमेश्वरकीशक्ति तिसतिसउपाधिविषे विचित्रभावकूंप्राप्तहोतीभई है ॥ और साईहीईश्वरकीशक्ति वरशापकेदेणेविषेसमर्थऋ
... साईहीईश्वरकीशक्ति स्त्रीपुरुषादिकोंकेशरीरविषेरहेहै ॥ तथा साईहीईश्वरकीशक्ति सर्वइंद्रियोंविषे
... रपस्थ पायु इत्यादिकछिद्रहैं ॥ तेनासिकादिकछिद्र बाह्यतैंतौ समानही

रिकै ताशिष्यकेप्रति याप्रकारका उपदेशकरै ॥ हेशिष्य! अनुभवकरिकैसिद्ध जो
रहितआत्मादेव तूहै ॥ तहां सोमंदबुद्धि [illegible] तास्मरणकरयेहुएवेदरूपगुरुतें आत्मज्ञानहोतानहीं ॥ याकेविषे ईश्वर
याप्रकारकावचन [illegible] ॥ [illegible] परंतु चित्तकेशुद्धिकाअभावही कारणहै ॥ काहेतें ? इसलोकविषेभी जोकोईपुरुष ताहिरण्यगर्भकी
लारुंध [illegible] तवालाहोवै तौ यापुरुषकूंभी ताहिरण्यगर्भकीन्यांई ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवै ॥ परंतु ताहिरण्यगर्भकीन्यांई चि
णीदे शुद्धिहै णी अत्यंतदुर्लभहै ॥ यावाकरणतैं इदानींकालकेपुरुषोंकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंही आत्मज्ञानहोवैहै ॥ और इदानीं
कालकेपुरुषोंकेअज्ञानकीनिवृत्ति ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंहीहोवैहै याएकवार्ताकूंछोडिकै दूसरी याजगत्केउत्पत्तिलयकीकारणता
जैसे ताहिरण्यगर्भविषे है ॥ तैसे याजीवात्माविषेभी पूर्वउक्तदृष्टिसृष्टिवादकीरीतिसैं साजगत्केउत्पत्तिलयकीकारणताहै ॥ यातैं
यहजीवात्मापुरुष परमेश्वररूपहीहै ॥ और हेदेवतावो! याजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयकरणेविषे ईश्वरही स्वतंत्रकारणहै ॥ दूसरा
कोईकारणनहीं है ॥ याप्रकारकेवचन जोवेदांतशास्त्रविषे कथनकरेहैं ॥ तेवचनभी मिथ्यानहीं हैं ॥ किंतु तेवचनभी यथार्थही हैं ॥
परंतु तिनवचनोंका यहअभिप्रायहै ॥ सोईश्वरही हमसर्वजीवोंकाआत्माहै ॥ ताईश्वरतैंभिन्न कोईआत्माहैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ ना
न्योतोऽस्तिद्रष्टा ॥ अर्थयह ॥ तापरमात्मादेवतैंभिन्न दूसराकोईद्रष्टाहैनहीं ॥ याअभिप्रायकरिकैही तिनश्रुतियोंविषे ईश्वरकूंजग
त्काकारणकह्याहै ॥ अब ताआत्माकीएकताकावर्णनकरेहैं ॥ हेदेवतावो! जैसे एकहीईश्वर रावणकेशत्रुभावकूंअंगीकारकरिकै
श्रीरामचंद्र कह्याजावैहै ॥ और कंसकेशत्रुभावकूंअंगीकारकरिकै श्रीकृष्ण कह्याजावै ॥ तैसे एकहीपरमात्मादेव व्यष्टिअज्ञानरूप
उपाधियोंकेसंबंधतैं जीवकह्याजावैहै ॥ और समष्टिअज्ञानरूपउपाधिकेसंबंधतैं ईश्वरकह्याजावैहै ॥ और हेदेवतावो! जैसे एक
ईश्वरविषे कर्मकेभेदकरिकै ईश्वर अनीश्वर यहदोनोंप्रकारकाव्यवहारहोवैहै ॥ जैसे दशरथकापुत्र श्रीरामचंद्र रावणकेमार
णेविषेसमर्थ है ॥ यातैं सोरामचंद्र ईश्वरकह्याजावैहै ॥ और क्षीरसमुद्रविषे शेषनागऊपरिशयनकरणेहारा विष्णुभगवान् ताराव
णकेहननकरणेविषे असमर्थहै ॥ यातैं सोविष्णुभगवान् अनीशकह्याजावैहै ॥ तैसे यहएकहीपरमात्मादेव समष्टिव्यष्टिउपाधिके
संबंधतैं ईश अनीश कह्याजावैहै ॥ और हेदेवतावो! जैसे रामचंद्रअवतारके रावणवधादिरूपकार्यकूंनहींकरताहुआभी सोशेष

जगत्केमिथ्यात्वसिद्धकरणेवासते दृष्टिसृष्टिवादकीरीतिसैं ताजगत्केउत्पत्तिलयका निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो! यहआत्मादेव
जबी जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहआत्मादेव याजाग्रत्अवस्थाकूं उत्पन्नकरेहै ॥ तथा यास्थूलशरीरकूं उत्पन्नकरेहै ॥ त
था यास्थूलशरीरतैंभिन्न बाह्यघटादिकपदार्थोंकूंउत्पन्नकरेहै ॥ और यहआत्मादेव जबी स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहआ
त्मादेव तासूक्ष्मशरीरकूं उत्पन्नकरेहै ॥ तथा तासूक्ष्मशरीरतैंभिन्न बाह्यवर्तमानरथादिकपदार्थोंकूं उत्पन्नकरेहै ॥ और यहआत्मादे
व तास्वप्नअवस्थाकापरित्यागकरिकै जबी जाग्रत्विषेआवैहै ॥ तबी तिनस्वप्नकेपदार्थोंकूंदेखतानहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव तास्व
प्नप्रपंचकूं जाग्रत्विषे संहारकरेहै ॥ और यहआत्मादेव जबी ताजाग्रत्अवस्थाकापरित्यागकरिकै स्वप्नअवस्थाविषेआवैहै ॥ त
बी तिनजाग्रत्केपदार्थोंकूंदेखतानहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव ताजाग्रत्प्रपंचकूं तास्वप्नविषे संहारकरेहै ॥ और यहआत्मादेव जबी ता
जाग्रत्स्वप्नदोनोंकापरित्यागकरिकै सुषुप्तिविषेजावैहै ॥ तबी यहआत्मादेव ताजाग्रत्स्वप्न दोनोंप्रकारकेप्रपंचकूंदेखतानहीं ॥ यातैं
यहआत्मादेव तासुषुप्तिविषे तादोनोंप्रकारकेप्रपंचका संहारकरेहै ॥ और यहआत्मादेव जबी समाधिअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥
तबी तासुषुप्तिअवस्थाके तमरूपअज्ञानकूंभी देखतानहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव तासमाधिविषे ताअज्ञानकाभी संहारकरेहै ॥ कै
साहैसोतमरूपअज्ञान? तिसतमरूपअज्ञानकरिकैमोहितहुआ यहजीवात्मा आपणेस्वरूपानंदकूंभीजानतानहीं ॥ तथा तासर्व
द्वैतप्रपंचकेसंहारका जोसाक्षीरूपज्ञानहै तासाक्षीरूपज्ञानकूंभी जानतानहीं ॥ हेदेवतावो! तुरीयरूपशुद्धआत्माविषे ताअज्ञानका
लयरूपजानिवृत्तिहै ॥ ताअज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकीकृपाकरिकैही समर्थहोवैहै ॥ तागुरुकीकृपा
विना ईश्वरभी ताअज्ञानकेनिवृत्तकरणेविषे समर्थहोवैनहीं तौ अन्यजीवोंकीक्यावार्त्ताहै? हेदेवतावो! हिरण्यगर्भादिकजेईश्व
र तिनईश्वरोंकूं जोआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै ॥ सोभी गुरुतैंविना स्वतंत्रहोवैनहीं ॥ किंतु वेदभगवान्‌रूपगुरुकेवचनोंकेस्मर
[illegible] आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं ताअज्ञानकेनिवृत्तकरणेहारेआत्मज्ञानका ब्रह्मवेत्तागुरुही का ॥१४॥
[illegible] ॥ हेदेवतावो! जैसे हिरण्यगर्भादिकईश्वरोंकूं स्मरणकऱ्येहुएवेद

रिकै ताशिष्यकेप्रति याप्रकारका उपदेशकरै ॥ हेशिष्य! अनुभवकरिकैसिद्ध जो
रहितआत्मादेव तूहै ॥ तहां सोमंदबुद्धि[illegible] काइभीपुरुष समर्थहोइसकैनहीं ॥ जबी नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै प्र
याप्रकारकावच[illegible] वाणीकरिकैनहींकहेजावैहैं ॥ तबी सर्वइंद्रियोंकाअविषयआत्मा तावाणीकरिकैनहींकह्याजावै
[illegible] याकहणाहै ? किंवा विषयइंद्रियोंकेसंबंधतैंउत्पन्नभयाजोसुखहै सोविषयसुखही मनकाविषयहोवैहै ॥ और जोआ
[illegible]रूपसुख याअधिकारीपुरुषोंकूं तपादिकअनेकउपायोंकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ सोआत्मस्वरूपसुख तामनकीविषयताकूंप्राप्तहो
वैनहीं ॥ जबी ताआत्मस्वरूपसुखविषै मनकीभीप्रवृत्तिनहींभई ॥ तबी तास्वरूपसुखविषै वाणीकीप्रवृत्तिनहींहोवैहै याकेविषै
क्याकहणाहै ? किंवा जोविषयजन्यसुख याजीवोंकूं मनकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ सोविषयसुखभी आपणेअनुभवकरिकेही जान्याजा
वैहै ॥ परंतु सोआपणाविषयसुख दूसरेपुरुषकेप्रति वाणीकरिकैकह्याजावैनहीं ॥ जबी सोआपणाविषयसुखभी दूसरेकेप्रतिवा
णीकरिकैनहींकह्याजावैहै तबी मनपाणीकाअविषयजोस्वरूपसुखहै ॥ तास्वरूपसुखकूं जानतेहुएभीब्रह्मवेत्तागुरु आपणेशिष्यों
केप्रति तास्वरूपसुखकूं वाणीकरिकैनहींकहिसकेहैं याकेविषेक्याकहणाहै ? हेदेवतावो ! इसप्रकार सोआत्मादेव साक्षात्वाणीक
रिकैकह्याजावैनहीं ॥ यातैं तेब्रह्मवेत्तागुरु ताआनंदस्वरूपआत्माविषै भावअभावरूपधर्मोंकूंआरोपणकरिकैही आपणेशिष्यों
केप्रति ताआत्मादेवकाउपदेशकरेहैं ॥ तहां सत्यत्व चेतनत्व आनंदत्व इत्यादिकधर्मतौ भावरूपहैं ॥ और अस्थूल अनणु अह्र
स्व अदीर्घ इत्यादिकधर्म अभावरूपहैं ॥ हेदेवतावो ! इसप्रकार ताब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं आत्माकास्वरूपश्रवणकरिकै तेश्रद्धावा
नशिष्य जबी ताआत्माकामनननिदिध्यासनकरेहैं ॥ तबीही तेशिष्य आपणेअनुभवकरिकै ताभावअभावधर्मोंतैंरहित शुद्धआ
त्माकूं साक्षात्कारकरेहैं ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै सर्वजीवोंकेआत्माविषै निष्प्रपंचतारूपब्रह्मकाधर्म निरूपणकरेहैं ॥
हेदेवतावो ! यासर्वदेहधारीजीवोंकाजोआत्माहै ॥ सोआत्मादेव सर्वदा याप्रपंचतैंरहितहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! याजाग्रदादिरू
पप्रपंचकेविद्यमानहुए ताआत्मादेवविषै सानिष्प्रपंचरूपता किसप्रकार संभवैगी ? समाधान ॥ हेदेवतावो ! यहजाग्रतादिरूप
प्रपंच रज्जुसर्पकीन्यांई मिथ्याहीहै ॥ यातैं सोमिथ्याप्रपंच ताआत्मादेवकेवास्तवनिष्प्रपंचताकूं निवृत्तकरिसकैनहीं ॥ अब ता

प्रतीतहोवैहैं ॥ परंतु तिननासिकादिकछिद्रोंविषे अंतर विशेषताकोसिद्धकरणेहारी कोईशक्तिहै ॥ जिसशक्तिकेबलतैं तिननासिकादिकोंका गंधग्रहणादिरूपकार्य परस्परविलक्षणहीहोवैहैं ॥ एकइंद्रियकेकार्यकूं दूसराइंद्रिय करिसकतानहीं ॥ यातैं यहअर्थ सिद्धभया ॥ यालोकविषेजितनेपदार्थहैं ॥ तेसर्वपदार्थ अचिंत्यशक्तिवालेहैं ॥ याकारणतैंही तेपदार्थ अनिर्वचनीयस्वभाववालेहैं ॥ तथा विचित्रशक्तिवालेएकईश्वरकेआश्रितहैं ॥ यातैं सोएकहीआनंदस्वरूपपरमात्मादेव शरीरादिकउपाधियोंकेभेदकरिकै ईश जीव पुरुष स्त्री विप्र पंडित मूर्ख गौ वृक्ष पक्षी चारिपादवाला दोपादवाला पादोंतैंरहित तीनपादोंवाला अनेकपादोंवाला इत्यादिकनामोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ हेदेवतावो! इसप्रकार अविचारकालविषे भेदादिकउपाधियोंकेसंबंधतैं तेसर्वनाम तापरमात्मादेवकेहोवैहैं ॥ और विचारकालविषेतौ पुरुष स्त्री हस्ती अश्व वृक्ष सर्प वृषभ इत्यादिकसर्वनाम यास्थूलशरीरकेहीसिद्धहोवैहैं ॥ ताशरीरकेसाक्षीआत्माका कोईभीनामहोवैनहीं ॥ हेदेवतावो! वास्तवतैंतौ सोआनंदस्वरूपआत्मा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा सर्वभेदतैंरहितहै ॥ तथा कल्पितभेदकरिकै सत्यज्ञानादिकगुणोंवालाहुआभी वास्तवतैंनिर्गुणस्वरूपहै ॥ तथा सर्वउपाधियोंतैंरहितहै ॥ ऐसाआत्मादेव अनादिमायाकेसंबंधकरिकै नानाप्रकारकेकार्योंकूंकरैहै ॥ तथा ताकार्यसहितअनादिमायाविषेस्थितहोइकै सोपरमात्मादेव जीवईश्वरादिकभेदवालाहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ जैसे एकही आकाश घटमठादिरूपउपाधियोंकेभेदकूंग्रहणकरिकै महाकाश घटाकाश मठाकाश इत्यादिकभेदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे एकहीआत्मादेव अज्ञानादिकउपाधियोंकूंअंगीकारकरिकै जीवईश्वरादिकभेदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेदेवतावो! जैसे आकाशविषे मायाकरिकैकल्पितजोगंधर्वनगरहै ॥ सोकल्पितगंधर्वनगर ताआकाशविषे नानाप्रकारकेमिथ्याभेदकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माविषे मायाकरिकैकल्पित जोयहनानाप्रकारकाद्वैतप्रपंचहै ॥ सोद्वैतप्रपंच ताआत्मादेवविषे नानाप्रकारकेमिथ्याभेदकूं उत्पन्नकरैहै ॥ और हेदेवतावो! जैसे कुशूलादिकोंकाधारणरूप जोगृहाकाशकाकार्यहै ॥ ताकार्यकूं सोघटाकाश करिसकैनहीं ॥ तैसे ईश्वरकेकार्यकूं यहजीव करिसकैनहीं ॥ और हेदेवतावो! जैसे घटाकाश गृहाकाश यादोनोंकाभेद ताघटगृहरूपदोनोंउपाधियोंकरिकैहीहै ॥ वास्त

वतैं ताआकाशकाभेदहैनहीं ॥ तैसे याजीवईश्वरदोनोंकाभेदभी अंतःकरणअज्ञानरूपदोनोंउपाधियोंकरिकैहीहै ॥ वास्तवतैं ता जीवईश्वरकाभेदहैनहीं ॥ और हेदेवतावो! जैसे सोगृहाकाशघटाकाशकाभेद नाममात्रहीहै ॥ तैसे सोजीवईश्वरकाभेदभी नाममात्रहीहै वास्तवतैंहैनहीं ॥ यातैं सर्वभेदतैंरहित सोएकपरमात्मादेवही यासर्वशरीरोंविषेस्थितहै ॥ ताईश्वररूपताकूंग्रह णकरिकै यहसर्वजीव तिसतिसमनुष्यादिकशरीररूपउपाधियोंविषेस्थितहुएभी दृष्टिसृष्टिवादकीरीतिसैं आपणेदर्शनतैंतौ या जगत्कीउत्पत्तिकरेहैं ॥ और अदर्शनतैं याजगत्कालयकरेहैं ॥ सादृष्टिसृष्टिवादकीरीति याआत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषे विस्तारतैंनिरूपणकरिआयेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! शारीरकमीमांसाकेचतुर्थअध्यायकेचतुर्थपादविषे ॥ जगद्व्यापारवर्जं ॥ या सूत्रविषे व्यासभगवान्नैं सगुणब्रह्मकीअहंग्रहउपासनाकरणेहारेपुरुषोंकूं एकजगत्कीउत्पत्तिआदिकव्यापारकूंछोडिकै दूसरेसर्व ऐश्वर्यकीप्राप्तिकथनकरीहै ॥ और इहांआपनैं सर्वजीवोंकूं याजगत्केउत्पत्तिकीकारणता कथनकरीहै ॥ यातैं ताव्यासभगवान्केव चनसैं आपकेवचनकाविरोधहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो! सोव्यासभगवान् तासूत्ररूपवचनकरिकै उपासनारूपयोगकेफल कानियमकथनकरताभयाहै ॥ परंतु तिसतिसउपाधिविषेप्रविष्टईश्वरविषेस्थित जाजगत्केउत्पत्तिआदिकोंकीशक्तिहै ॥ ताशक्तिके नियमकूं सोव्यासभगवान्कावचन कथनकरतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ यहअधिकारीपुरुष जबी ताअहंग्रहउपासनारूपयोगकेफलकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तबी तेउपासकपुरुष याजगत्केउत्पत्तिआदिकव्यापारकूंछोडिकै दूसरेसर्वऐश्वर्यकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याप्रकार ताउपासना केफलकीपरिच्छिन्नताकूं सोवचन कथनकरेहै ॥ यहहीतावचनकातात्पर्यहै ॥ और जैसे शरीरादिकसर्वउपाधियोंविषेस्थितईश्वर या जगत्कीउत्पत्तिकरणेविषेप्रवृत्तहुआ विशेषरूपकरिकै तथासामान्यरूपकरिकै याजगत्केउत्पत्तिआदिकोंकूंकरेहै ॥ तैसे जीवभाव कीप्राप्तिकरणेहारे अंतःकरणादिकउपाधियोंविषेस्थितहुएभी यहपुरुष वामदेवकीन्यांई मैंही सर्वरूपहूं याप्रकारकी शास्त्रजन्यब्रह्म दृष्टिकरिकैयुक्तहुए याजगत्कूं सामान्यविशेषरूपकरिकै उत्पन्नकरेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ कर्मउपासनाकेजेफलहैं ॥ तिनफलोंकातौ सृ ष्टिकेआदिकालविषे ईश्वरनैं नियमकरिरख्याहै ॥ यातैं कर्तृत्वअभिमानपूर्वक तिनकर्मउपासनावोंकूंकरणेहारेपुरुष नियमपूर्व

क तितनेहीफलकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअधिकफलकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जबी तेअधिकारीपुरुष सर्वत्रपरिपूर्णब्रह्मदृष्टिकरिकै तापरिच्छिन्नपणेकेअभिमानकापरित्यागकरेहैं ॥ तबी तिनविद्वान्पुरुषोंकाभेद निवृत्तहोइजावैहै ॥ यातें ताकालविषे जोईश्वर काकर्महै ॥ सोईहीकर्म तिनविद्वान्पुरुषोंकाहै ॥ और सोईश्वरतौ व्यष्टिशरीरविषेस्थितहोइकैभी समष्टिउपाधिकेकार्यकरणेकूं स मर्थहोवैहै ॥ जैसे सोपरमेश्वर विश्वामित्रकेशरीरविषेस्थितहोइकै त्रिशंकुकेहितवासते दूसरेस्वर्गकूंरचताभयाहै ॥ यहवार्त्ता रा मायणादिकोंविषेप्रसिद्धहै ॥ यातें यहजाग्रत्प्रपंचादिकोंकीसृष्टिभी ताईश्वरकाहीकर्महै ॥ याअर्थकूं कोईभीवादी निवारणकरिस कैनहीं ॥ अथवा ॥ जगद्व्यापारवर्ज्यं ॥ यासूत्रका यहअभिप्रायहै ॥ तिनयोगीपुरुषोंका ब्रह्मविद्याकेबलतैं ताईश्वरकेसाथ अभेदहुएभी तिनयोगीपुरुषोंतैं सोईश्वर अधिकहै ॥ काहेतैं? यहईश्वरतौ सर्वदा याजगत्काकर्त्ताहै ॥ और तिनयोगीपुरुषों विषे ताब्रह्मविद्यातैंपूर्व सोसर्वजगत्काकर्तापणा थानहीं॥ यातें तेयोगीपुरुष सर्वदा यासर्वजगत्केकर्तानहींहैं ॥ याप्रकार ताप रमेश्वरकीअधिकताकाकारण तासूत्रविषे व्यासभगवान्नैं कथनकर्‍याहै ॥ परंतु तासूत्रकरिकै व्यासभगवान्नैं योगीआदिकजी वोंके आपणेआपणेईश्वरताकूंनिवारणकर्‍यानहीं ॥ जोकदाचित् सोसूत्र समष्टिउपाधिवालेईश्वरकेअधिकताकूं तथाव्यष्टिउपाधि वालेजीवोंकेअनीश्वरताकूं कथनकरैगा तौ तासूत्रविषे वाक्यभेदरूपदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातें सोसूत्र केवल ईश्वरकेअधिक ताकूंही कथनकरैहै ॥ किंवा यादेहधारीजीवोंविषे कितनेकजीवतौ बहुतपदार्थोंकेउत्पत्तिसंहारकूंकरतेहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और कितनेकजीवतौ अल्पपदार्थोंकेउत्पत्तिसंहारकूंकरतेहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ सोउत्पत्तिसंहारकीकारणतारूपधर्म केवल तिनजीवोंका नहींहै ॥ किंतु सोउत्पत्तिसंहारकीकारणतारूपधर्म ईश्वरकाभीहै ॥ जैसे चक्रवर्तिमहाराजाका जिसप्रकारका प्रजाकापालनरूप व्यापारहोवैहै ॥ तिसीप्रकारकाव्यापार ताचक्रवर्तिराजाकेअधीन दूसरेमंडलेश्वरराजोंकाभीहोवैहै ॥ और तिसीप्रकारकाव्यापार एकएकग्रामकीरक्षाकरणेहारेप्रधानपुरुषोंकाभीहोवैहै ॥ और तिसीप्रकारकाव्यापार दूसरेभृत्योंकाभीहोवैहै ॥ तहां जैसे मंडले श्वरराजोंतैं आदिलैकेभृत्यपुरुषोंपर्यंत सर्वोंविषेजोप्रभुपणारहेहैं ॥ तासर्वोंकेप्रभुपणेविषे ताचक्रवर्त्तिराजाकाप्रभुपणा अनुगत

होइकैरहेहैं ॥ तैसे यासर्वजीवोंकेकर्त्तापणेविषे तापरमेश्वरकाकर्त्तापणा अनुगतहोइकैरहेहैं ॥ तहां प्रथम मायाविशिष्टईश्वरतौ चक्रवर्त्तिराजाकेसमानहै ॥ और ताईश्वरका साक्षात्कार्यरूप जोसमष्टिसूक्ष्मउपाधिवाला हिरण्यगर्भभगवान्है ॥ सोहिरण्यगर्भ भगवान् तामंडलेश्वरराजाकेसमानहै ॥ और ताहिरण्यगर्भकाकार्यरूप जोसमष्टिस्थूलउपाधिवाला विराट्भगवान्है ॥ सोविराट् भगवान् एकग्रामकेअधिपतिकेसमानहै ॥ और ताविराट्भगवान्काकार्यरूप जोयहस्थावरजंगमरूप व्यष्टिप्राणीहैं ॥ तेव्यष्टिप्राणी तिनभृत्योंकेसमानहैं ॥ तिनहिरण्यगर्भादिकसर्वोंकेकर्त्तापणेविषे सोईश्वरकाकर्त्तापणा अनुगतहोइकैरहेहै ॥ और जोयह अंतःकरणादिकउपाधिवालेजीव अज्ञानकेबलतें आपणेस्वरूपभूतईश्वरतेंभी भेदकूंप्राप्तहुएहैं ॥ तिनजीवोंका यहजाग्रतादिकतीन अवस्थाही कार्यरूपहैं ॥ इसप्रकार साक्षात् अथवा परंपराकरिकै सोईश्वरही सर्वजगत्काकारणहै ॥ हेदेवतावो! यहजीवात्मा जिसजिसअवस्थाकूंदेखेहै ॥ तिसीतिसीअवस्थाकूं उत्पन्नकरेहै ॥ और यहजीवात्मा जिसजिसअवस्थाकूंनहींदेखेहै ॥ तिसतिसअवस्थाकूं आपणेविषेलयकरेहै ॥ यादृष्टिसृष्टिवादकीरीतिसें यहजीवात्माही तिनजाग्रदादिकअवस्थावोंकेउत्पत्तिलयकाकारणहै ॥ और हेदेवतावो! यद्यपि यहस्थूलशरीर पितामाताके शुक्रशोणिततें उत्पन्नहोवैहै ॥ और यहसूक्ष्मशरीर पंचभूतोंद्वारा मायाविशिष्टईश्वरतें उत्पन्नहोवैहै ॥ यहवार्त्ता लोकविषे तथाशास्त्रविषे प्रसिद्धहै ॥ तथापि साप्रक्रिया मंदबुद्धिपुरुषोंकेबोधवासते ॥ शास्त्रनैं कथनकरीहै ॥ उत्तमअधिकारीपुरुषकेप्रतितौ यहदृष्टिसृष्टिप्रक्रियाही मोक्षकेप्राप्तिकाद्वारहै ॥ तादृष्टिसृष्टिप्रक्रियारूपमोक्षकेद्वारकूं वेदांतोंविषे गुह्यकरिकैराख्याहै ॥ यातें यहस्थूलशरीरादिकपदार्थ आपणेदर्शनकालविषेतौ उत्पन्नहोवैहैं ॥ और आपणे अदर्शनकालविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यहश्रुतिअनुभवकरिकैसिद्ध दृष्टिसृष्टिप्रक्रियाही बुद्धिमान्पुरुषोंनैं अंगीकारकरणेयोग्यहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोकदाचित् दर्शनअदर्शनतें याशरीरादिकोंका उत्पत्तिलयहोताहोवै तौ याजीवोंकूं सोउत्पत्तिलय किसवासतेनहींप्रतीतहोता? ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो! यहशरीरादिकपदार्थ दर्शनअदर्शनकालविषे पूर्वशरीरादिकोंकेसमान आकारवालेही उत्पन्नहोवैहैं ॥ यातें यहपुरुष तिनशरीरादिकोंकेउत्पत्तिनाशकूं जानिसकतेनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनि

रूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो ! वास्तवतैंजन्ममरणतैंरहित जोयहआत्मादेवहै ॥ ताआत्मादेवका यास्थूलशरीरकेसाथ जोतादात्म्यअध्यासरूपअभिमानहै ॥ सोअभिमानही याआत्मादेवका जन्महै ॥ और ताशरीरकेअभिमानकीनिवृत्तिही ताआत्मादेवकामरणहै ॥ और याशरीरादिकदृश्यपदार्थोंकातौ दर्शनहीजन्महै ॥ और अदर्शनहीमरणहै ॥ यातें अहअर्थसिद्धभया ॥ यहजीवात्मायासंसारदशाविषे जिसजिसपदार्थकूंदेखेहै ॥ तिसतिसपदार्थकूं तादर्शनकालविषेही उत्पन्नकरेहै ॥ और यहजीवात्मा जिसजिसपदार्थकूंनहींदेखेहै ॥ तिसतिसपदार्थका ताअदर्शनकालविषे संहारकरेहै ॥ इसप्रकार दृष्टिसृष्टिवादकीरीतिसैं यहजीवात्मा जाग्रदादिकतीनअवस्थावोंविषे शरीरादिकपदार्थोंका उत्पत्तिसंहारकरतेहुएभी आपणेकूं ईश्वररूपकरिकैजानतेनहीं ॥ याकारणतैंहीजीवसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जबी याअधिकारीजीवोंका जाग्रदादिकतीनअवस्थावोंकाकारणरूपअज्ञान गुरुकीकृपाकरिकैप्राप्तहुएआत्मज्ञानकरिकै नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहअधिकारीजीव तीनअवस्थावोंतैंरहित तुरीयरूपपरमपदकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातें याअधिकारीपुरुषोंनैं ताआत्मज्ञानकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ अब पूर्वउक्तप्रणवमंत्रकरिकैजानणेयोग्य शुद्धआत्मा जिसप्रकार गुरुवोंनैं शिष्यकेप्रति उपदेशकरताहै तथा ताशिष्यनैं जिसप्रकार सोआत्मा जानीताहै ताप्रकारका निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार तेअग्निआदिकदेवता ताप्रजापतिकेमुखतैं शमदमादिकउपायोंसहित ताप्रणवरूपआत्माका श्रवणकरिकै पुनः केवलशुद्धआत्माकेपूछणेकीइच्छाकरतेहुए ताब्रह्माकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ देवताउवाच ॥ हेभगवन् ! पूर्वआपनैं हमारेप्रति प्रणवरूपआत्मा उपायरूपकरिकैकथनकऱ्याथा ॥ अब ताप्रणवरूपउपायकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यजो निर्विशेषशुद्धआत्माहै ॥ सो शुद्धआत्मा हमारेप्रति उपदेशकरो ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारकाप्रश्न जबी तिनदेवतावोंनैं ताप्रजापतिकेप्रति कऱ्या ॥ तबी सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकाउत्तर कहताभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेदेवतावो ! मनवाणीकाअविषय जोशुद्धआत्माहै ॥ ताशुद्धआत्मादेवके साक्षात्उपदेशकरणेविषे कोईभीसमर्थनहीं है ॥ यातेंता आत्मादेवविषे नानाप्रकारकेधर्मोंकाआरोपणकरिकै मैं तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ तुम सावधानहोइकैश्रवणकरो ॥ काहेतें ? चित्तकीशुद्धितेंअनंतर सोशुद्धआत्मादेव तुमारेतांई अवश्य

करिकैउपदेशकरणेयोग्यहै ॥ हेदेवतावो! पूर्वहमनैं तुमारेतांई जोसत्‌चित्‌आनंदस्वरूप नृसिंहपरमात्मादेव तत्त्वमसि यावाक्य विषेस्थित तत्‌पदार्थरूपकरिकैकथनकऱ्याथा ॥ सोईहीपरमात्मादेव यात्वंपदार्थजीवकेसाथ एकताकूंप्राप्तहुआ आपणीसमीपता मात्रकरिकै सर्वबुद्धिआदिकोंका द्रष्टारूपहै ॥ तथा वास्तवतैं तिनबुद्धिआदिकोंकेसंबंधतैंरहितहै ॥ और हेदेवतावो! यासंघातविषे याजीवोंकामन जबी शुभअशुभकर्मकूंकरेहै ॥ तबी सोद्रष्टाआत्मादेव ताकर्मविषे अनुमतिकूंकरेहै ॥ प्रवृत्तहुएकूं निवृत्तनहींकरणा याकानाम अनुमतिहै ॥ काहेतैं ? सोआत्मादेव पंगुपुरुषकीन्यांई सामर्थ्यतैंरहितहोणेतैं उदासीनहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! सोआत्मादेव तामनकीप्रवृत्तिविषे जोअनुमतिकरैगा तौ सोआत्मादेव विकारवान्‌होवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो! सोआत्मादेव चैतन्यस्वरूपहै ॥ तथा सर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ तथा सुखदुःखादिकोंतैंरहितहै ॥ तथा मनबुद्धिआदिकोंकासाक्षीरूपहै ॥ तथा सत्‌चित्‌आनंदस्वरूपहै ॥ तथा सर्वजगत्‌विषेएकरूपहै ॥ और यहसंपूर्णद्वैतप्रपंच याआत्मादेवविषे वास्तवतैंहैनहीं ॥ किंतु यह सर्वद्वैतप्रपंच ताअद्वितीयआत्माविषे मायाकरिकैकल्पितहै ॥ याकारणतैंही याअद्वितीयआत्मातैंभिन्नकरिकै याद्वैतप्रपंचकीसत्ता सिद्धहोवैनहीं ॥ हेदेवतावो ! जिसमायानैं यापरमात्मादेवविषेयहजगत् कल्पनाकऱ्याहै ॥ तामायाका यहस्वरूप वेदवेत्तापुरुषोंनैं कथनकऱ्याहै ॥ जा आपतौ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैप्रतीतहोवैनहीं ॥ और जिसकाकार्य प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैप्रतीतहोवै ॥ ताकूं दुर्घटमाया यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ हेदेवतावो ! सामाया आपतौ सत्‌रूपहैनहीं तौ तामायाका यहजगत्‌रूपकार्य किसप्रकार सत्‌होवैगा? किंतु तामायाकीन्यांई यहजगत्‌भी असत्‌रूपहीहै ॥ परंतु यहजगत् तादुर्घटमायाकेप्रभावतैंसत्‌रूप करिकैप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं अद्वितीयआत्माविषे यहजगत् मिथ्याहीहै वास्तवतैंहैनहीं ॥ हेदेवतावो ! जैसे आकाशविषे जोगंधर्वनगर प्रतीतहोवैहै ॥ सो विचारतैंविनाही प्रतीतहोवैहै ॥ विचारकियेतैं सोगंधर्वनगर प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे याअद्वितीयआत्माविषे जोद्वैतप्रपंचप्रतीतहोवैहै ॥ सोभी विचारतैंविनाही प्रतीतहोवैहै॥ विचारकियेतैं याअद्वितीयआत्माविषे किंचित्‌मात्रभी जगत्‌नहींहै ॥ हेदेवतावो ! यासर्वजीवोंके जाग्रदादिकतीनअवस्थावोंविषेअनुगत जोयहआत्मादेवहै ॥ सोआत्मादेव सत्‌चित्‌आनंद

स्वरूपहै ॥ यातैं यहत्वंपदार्थरूपआत्मादेव तत्पदार्थपरब्रह्मरूपहीहै ॥ हेदेवतावो! जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित प्राज्ञनामाजी व किंचित्मात्रभी दुःखकूंजानतानहीं ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मादेव सवकालविषे किंचित्मात्रभी दुःखकूंजानतानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! यहआत्मादेव जोकदाचित् सर्वदुःखोंतेंरहितहोवै तौ याजीवोंकूं अहंदुःखी याप्रकार दुःखकीप्रतीति किसवा सतेहोवैहै? ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो! सर्वदुःखोंतेंरहित जोपरब्रह्महै ॥ तापरब्रह्मकेसाथ याआत्मादेवका वास्तवतैंअभेदहै ॥ यातें याआत्मादेवविषेभी वास्तवतेंदुःखहैनहीं ॥ ऐसेदुःखरहितआत्मादेवविषे जोदुःख प्रतीतहोवैहै ॥ सोअविद्याकरिकैही प्रतीतहोवैहै ॥ वास्तवतैं याआत्मादेवविषे सोदुःखहैनहीं ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते ताअविद्याकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥ हेदेवतावो! गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंउत्पन्नभयाजो मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाज्ञानहै ॥ ताअभेदज्ञानकूं विद्वान्पुरुष विद्या यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ ताविद्याकेसाथ जा विरोधवालीहोवै ॥ तथा सर्वजीवोंकेदुःखकाकारणहोवै ॥ ताकूं वेदवेत्तापुरुष अविद्या यानामकरिकैकथन करेहैं ॥ कैसीहैसाअविद्या? मैं याशरीरविषेहीस्थितहूं सर्वत्रव्यापकनहींहूं इसप्रकारतैं यासर्वदेहधारीजीवोंकेअनुभवकरिकैसिद्धहै ॥ तथा उत्पत्तितैंरहितहै ॥ तथा सत्असत्रूपकरिकै कथनकरीजावैनहीं ॥ तथा संसारतैंरहितआत्माविषेभी संसारकीकारणता सिद्धकरणेहारीहै ॥ याकारणतैंही विद्वान्पुरुष याअविद्याकूं दुर्घट यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ हेदेवतावो! सादुर्घटअविद्या जडहोणेतैं यद्यपि आत्मातैंभिन्नहै ॥ तथापि साअविद्या आत्मातैंभिन्नहुई प्रतीतहोवैनहीं ॥ किंतु अधिष्ठानआत्माकेआश्रितहुईही साअविद्या प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं साअविद्या वास्तवतैंअस्वतंत्रहुईभी शत्रुकीन्यांई याआत्मादेवकूं अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरेहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताअविद्याकूं स्वतंत्रकहेहैं ॥ हेदेवतावो! यहस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपनिर्गुणआत्मादेव वास्तवतैंअद्वितीयरूपहुआभी याअविद्याकरिकै भेदवालाहुआप्रतीतहोवैहै ॥ जिसभेददृष्टिकरिकै यहजीव अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं ताभेददृष्टिद्वारा यहअविद्याही सर्वदुःखोंकाकारणहै ॥ और हेदेवतावो! ज्ञातसुखविषेही सर्वजीवोंकीप्रीतिहोवैहै ॥ अज्ञातसुखविषे किसीभीजीवकीप्रीतिहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकविषेप्रसिद्धहै ॥ और यासर्वजीवोंकी आ

पणेआत्माविषेप्रीति देखणेविषेआवैहै ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ येसर्वजीव आपणेआनंदस्वरूपआत्माकूंजानतेहीहैं ॥ तथापि ताअविद्याकरिकैआवृतहुए येजीव ताआत्मस्वरूपआनंदकूं विशेषरूपकरिकैजानतेनहीं ॥ याकारणतैंही येजीव ताआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न अल्पविषयोंविषे सुखबुद्धिकरिकै सर्वदा दुःखकूंहीप्राप्तहोवैहैं ॥ यातें आनंदस्वरूपआत्माकेआवरणद्वारा यहअविद्याही जीवोंकेदुःखकाकारणहै ॥ और हेदेवतावो! जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे येजीव जोआपणेआनंदस्वरूपआत्माकूंनहींजानेहैं ॥ सोभ्रमरूपकार्यअविद्याकेबलतैंहीनहींजानेहैं ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे येजीव जोताआनंदस्वरूपआत्माकूंनहींजानेहैं ॥ सो अज्ञानरूपकारणअविद्याकेबलतैंनहींजानेहैं ॥ यातें कार्यकारणरूपकरिकै यहअविद्याही सर्वजीवोंकूं मोहकीप्राप्तिकरणेहारीहै ॥ और हेदेवतावो! तासुषुप्तिअवस्थाविषे चैतन्यस्वरूपआत्माविषे जोअज्ञताप्रतीतहोवैहै ॥ ताअज्ञताविषे आत्माकेचैतन्यस्वरूपकानाश कारणनहींहै ॥ किंतु सर्वद्वैतप्रपंचकाअभावही ताअज्ञताविषेकारणहै ॥ सोआत्माकाचैतन्यस्वरूप तासुषुप्तिविषेभी विद्यमानहै ॥ तहांश्रुति ॥ नहिद्रष्टुर्दृष्टेर्विपरिलोपोविद्यतेअविनाशित्वात् ॥ अर्थयह ॥ द्रष्टाआत्माका स्वरूपभूत जाचैतन्यदृष्टिहै ॥ साचैतन्यरूपदृष्टि नाशतैंरहितहै ॥ यातें ताचैतन्यरूपदृष्टिका किसीअवस्थाविषेभी अभाव होवैनहीं ॥ हेदेवतावो! तासुषुप्तिअवस्थाविषे जोकदाचित् ताआत्मादेवके चैतन्यस्वरूपकानाशहोताहोवै तौ सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मादेव तमरूपअज्ञानकूंभी नहींजानैगा ॥ और तासुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मादेव तातमरूपअज्ञानकूंतौ अवश्यकरिकैजानेहै ॥ काहेतें? सुषुप्तितैंउठ्याहुआयहजीव मैंकिंचित्मात्रभीनहींजानताभया याप्रकारकास्मरणकरेहै ॥ सोजाग्रत्कास्मरण अज्ञानकूंहीविषयकरेहै ॥ और पूर्वअनुभवकर्‍येहुएवस्तुकाही स्मरणहोवैहै ॥ यातें याआत्मादेवनैं तासुषुप्तिविषे अज्ञानकूंअवश्यकरिकैअनुभवकर्‍याहै ॥ जिसअनुभवजन्यसंस्कारतैं जाग्रत्अवस्थाविषे ताअज्ञानकास्मरणकरेहै ॥ यातें तासुषुप्तिविषे याआत्मादेवकीचैतन्यस्वरूपता नाशहोवैनहीं ॥ अब ताअज्ञानकीतुच्छरूपता निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो! इसप्रकार सुषुप्तिविषे अनुभवकाविषयरूपकरिकैसिद्धकर्‍याजो आत्मातैंभिन्नजडरूपअज्ञानहै ॥ सोतमरूपअज्ञान प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै ग्रहण

होवैनहीं ॥ याकारणतैं विद्वान्पुरुष ताअज्ञानकूं तुच्छकरे हैं ॥ हेदेवतावो! यालोकविषे जोपदार्थ तीनकालोंविषेसत्तातेंरहितहोवै है ॥ तथा स्वरूपतेंरहितहोवैहै ॥ तथा नाममात्रकरिकै जाकीप्रतीतिहोवैहै ॥ तापदार्थकूं लोकविषे तुच्छकहे हैं ॥ जैसे वंध्यापुत्रन रश्रृंगादिकपदार्थ तीनकालविषे सत्तातेंरहितहैं ॥ तथा स्वरूपतेंरहितहैं ॥ तथा वंध्यापुत्र नरश्रृंग इत्यादिकनाममात्रकरिकै तिनोंकीप्रतीतिहोवैहै ॥ यातें तावंध्यापुत्रकूं तथानरश्रृंगकूं लोकविषे तुच्छकहे हैं ॥ तैसे यहअज्ञानभी तीनकालविषेसत्तातेंरहित है ॥ तथा स्वरूपतेंरहितहै ॥ तथा अज्ञान अविद्या माया इत्यादिकनाममात्रकरिकै ताकीप्रतीतिहोवैहै ॥ यातें ताअज्ञानकूं विद्वान्पुरुष तुच्छकहे हैं ॥ हेदेवतावो! ऐसातुच्छहुआभी यहअज्ञान यासर्वसंसारकाकारणहोवैहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष ताअज्ञानकूं दुर्घट यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ और हेदेवतावो! यहअज्ञान यद्यपि वंध्यापुत्रकीन्यांई तुच्छरूपहै ॥ तथापि सोअज्ञान भावरूपकरिकैप्रतीतहोणेहारेयाजगत्काकारणरूपहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष ताअज्ञानकूं भावरूपकहे हैं ॥ हेदेवतावो! तुच्छरूपता तथाभावरूपता येदोनोंधर्म परस्परविरोधीहोणेतें एकवस्तुविषेरहैनहीं ॥ याप्रकारकेअनुपपत्तिकाविचारकरिकै तेविद्वान्पुरुष ताअज्ञानकूं अनिर्वचनीय यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और हेदेवतावो! यहअज्ञान ताचैतन्यस्वरूपआत्मातेंभिन्नहै ॥ तथा याजडजगत्काकारणरूपहै ॥ तथा ताचेतनआत्माकूं आवरणकरणेहाराहै ॥ याकारणतें तेविद्वान्पुरुष ताअज्ञानकूं जडकहे हैं ॥ और हेदेवतावो! जैसे घटादिकपदार्थ आपणीउत्पत्तितेंपूर्व मृत्तिकादिकोंविषेस्थितप्रागभावकेप्रतियोगित्वरूपअंतवालेहोवै हैं ॥ तैसे यहअज्ञान ताकालिकपरिच्छेदरूपअंतवालाहैनहीं ॥ याकारणतें विद्वान्पुरुष याअज्ञानकूं अनंत यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ हेदेवतावो! जैसे घटादिकपदार्थोंके मृत्तिकादिक कारणहोवैहैं ॥ तैसे याअज्ञानकाभी जोकोईकारण अंगीकारकरिये तौ ताअज्ञानकेकारणकाभी कोईदूसराकारणहै अथवानहींहै ॥ तहां जोप्रथमपक्ष अंगीकारकरिये तौ तादूसरेकारणकाभी कोईतीसरा कारणहोवैगा ॥ तीसरेकाचतुर्थहोवैगा इसप्रकार क..रणोंकीपरंपरामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और ताअज्ञानके कारणका कोईदूसराकारणनहींहै ॥ यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरिये तौ ताअज्ञानकेकारणकरिकैही सर्वव्यवहारकीसिद्धिहोइस

केहै ॥ ताप्रथमअज्ञानविषे व्यर्थताप्राप्तहोवैगी ॥ यातैं ताअज्ञानकी किसीकारणतैंउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यहहीअंगीकारकरणाउचि
तहै ॥ याअभिप्रायकरिकैही तेविद्वान्पुरुष याअज्ञानकूं अनंतकहेहैं ॥ अथवा याप्रपंचकेअंतकूं कोईभीपुरुष जानिसकतानहीं ॥
याकारणतैं यहप्रपंच अनंतहै ॥ सोअनंतप्रपंच किसीपरिच्छिन्नकारणतैं उत्पन्नहोइसकैनहीं ॥ किंतु सोअनंतप्रपंच ताअज्ञान
रूपकारणतैंही उत्पन्नहोवैहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताअज्ञानकूं अनंत यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ अथवा यहअज्ञान ब्र
ह्मज्ञानतैंविना दूसरेसहस्रकारणोंकरिकैभी नाशरूपअंतकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं विद्वान्पुरुष ताअज्ञानकूं अनंत या
नामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और हेदेवतावो! वास्तवतैं सर्वमोहतैंरहित जोस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माहै ॥ ताआत्मा
देवकूंभी यहअज्ञान आवृतकरिलेवैहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताअज्ञानकूं मोहरूप यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और हेदेवता
वो! यहअज्ञानरूपअविद्या तास्वयंज्योतिआत्माविषे पूर्वकबीहुईनहीं ॥ और आगेकबीहोवैगीनहीं ॥ और अबीभीहैनहीं ॥ इसप्र
कार आत्माकेस्वरूपतैं नित्यनिवृत्तहुईभीयहअविद्या आपणेअचिंत्यशक्तिरूपबलतैं तास्वयंज्योतिआत्मादेवकूं नानाप्रकारकेमोह
कीप्राप्तिकरेहै ॥ अब ताअविद्याकृतमोहकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥ हेदेवतावो! आकाशादिकपंचभूतोंकाकार्यरूप जोयहस्थूलशरीर
है तथासूक्ष्मशरीरहै ॥ तादोनोंप्रकारकेशरीरोंविषे यहआनंदस्वरूपआत्मा अहंबुद्धिकूं तथाममबुद्धिकूंकरेहै ॥ तहां यहआत्मादेव
जिसभूतोंकेकार्यकूं प्रत्यक्आत्मरूपकरिकैमानेहै ॥ तिसभूतोंकेकार्यविषेतौ अहंबुद्धिकरेहै ॥ और यहआत्मादेव जिसभूतोंकेका
र्यकूं आपणेआत्मातैंबाह्यकरिकैमानेहै ॥ तिसभूतोंकेकार्यविषे ममबुद्धिकरेहै ॥ और वास्तवतैं सर्वद्वैतप्रपंचतैंरहितहुआभी यह
आनंदस्वरूपनिर्गुणआत्मादेव ताअविद्यारूपमायाकरिकैमोहितहुआ तिनशरीरादिकोंकेपरिच्छिन्नत्वादिकधर्मोंकूं आपणेविषेमाने
है ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेमोहकूं यहआत्मादेव प्राप्तहोवैहै ॥ हेदेवतावो! इसप्रकार आत्माकेमोहकाकारणरूपकरिकै त
थातुच्छजडरूपकरिकै तथायासर्वजगत्काकारणरूपकरिकै तथाअनादिअनंतरूपकरिकै पूर्वकथनकऱ्याजोमायारूपअज्ञानहै ॥ सो
अज्ञान सिद्धत्वधर्मकरिकैविशिष्टहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ याकारणतैं विद्वान्पुरुष ताअज्ञानका सत्त्वरूप कथनकरेहैं ॥ और सोअज्ञान

असिद्धत्वरूपकरिकैविशिष्टहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ याकारणतैं विद्वान्पुरुष ताअज्ञानका असत्त्वरूप कथनकरेहैं ॥ अब ताअज्ञानके सिद्धत्वअसिद्धत्वरूपका निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो! इंद्रियादिकोंकीविषयताकानाम सिद्धत्वहै ॥ सोसिद्धत्व कार्यरूपकरिकै ता अज्ञानविषेभीरहेहै ॥ याकारणतैं ताअज्ञानकूं सिद्धकहेहैं ॥ और स्वरूपतैं ताअज्ञानविषे इंद्रियादिकोंकीविषयताहैनहीं ॥ याकारणतैं ताअज्ञानकूं असिद्धकहेहैं ॥ अथवा यहअज्ञान मैंअज्ञानीहूं याप्रकारकेसर्वजीवोंकेअनुभवकाविषयहोवैहै ॥ याकारणतैं ताअज्ञानकूं सिद्धकहेहैं ॥ और विचारकरिकै ताअज्ञानकीनिवृत्तिहोइजावैहै ॥ याकारणतैं ताअज्ञानकूं असिद्धकहेहैं ॥ अथवा यालोकविषे स्वतंत्रपुरुषकूं सिद्धकहेहैं ॥ और परतंत्रपुरुषकूं असिद्धकहेहैं ॥ सास्वतंत्रता तथापरतंत्रता याकारणरूपअज्ञानविषेभीरहेहै ॥ याकारणतैं याअज्ञानकूं सिद्ध असिद्ध यादोनोंनामोंकरिकैकथनकरेहैं ॥ अब ताअज्ञानकेस्वतंत्रताका निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो! वेदवेत्तापुरुषोंनें याअज्ञानकी याप्रकारतैं स्वतंत्रताकथनकरीहै ॥ यहअज्ञान स्वरूपतैं जडतुच्छरूपहुआभी अनादिअनंतरूपकरिकैप्रसिद्धहै ॥ तथा यहअज्ञान वास्तवतैंमोहतैंरहितअद्वितीयआत्माकूंभी मोहकीप्राप्तिकरेहै ॥ याकारणतैं यहअज्ञान स्वतंत्रकह्याजावैहै ॥ अथवा जैसे मध्याह्नकेसूर्यविषे अंधकारकीस्थितिहोणी अत्यंतदुर्घटहै ॥ तैसे स्वयंज्योतिआनंदस्वरूप आत्माविषे दुःखकेकरणेहारेअज्ञानकीस्थितिहोणीभी अत्यंतदुर्घटहै तौभी यहअज्ञान आपणेबलतैं तास्वयंज्योतिआनंदस्वरूप आत्माविषेही स्थितहोवैहै ॥ याकारणतैं विद्वान्पुरुष ताअज्ञानकूं स्वतंत्रकहेहैं ॥ अथवा यहमायारूपअज्ञान तास्वयंज्योतिआत्मादेवकेही आश्रितरहेहै ॥ यातैं यहअज्ञान ताआत्मादेवकेअधीनहै ॥ और यहअज्ञान जिसआत्मादेवकेअधीनरहेहै ॥ तिसीआत्मादेवकूंआपणेवशकरेहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याअज्ञानकूं स्वतंत्रकहेहैं ॥ अब ताअज्ञानरूपअविद्याविषे परतंत्रताकानिरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो! यहअज्ञानरूपअविद्या आपणेआश्रयकी तथाविषयकी अपेक्षाकरिकैही सिद्धहोवैहै ॥ आश्रयविषयकी अपेक्षातैंविना ताअविद्याकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ याकारणतैं विद्वान्पुरुष ताअविद्याकूं परतंत्रकहेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! ताअविद्याका स्वरूपही ताअविद्याकेआश्रयभावकूं तथाविषयभावकूं प्राप्तहोवैगा ॥ यातैं ताअविद्याकूं दूसरेआश्रयविषयकीअपेक्षा संभवै

नहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो! जैसे यालोकप्रसिद्धअंधकारका अंधकार विषयहोवैनहीं ॥ किंतु ताअंधकारतैंभिन्न गृहादिकपदार्थही ताअंधकारकाविषयहोवैहैं ॥ तैसे ताअविद्याकाभी अविद्या विषयहोवैनहीं ॥ किंतु ताअविद्यातैंभिन्न चेतनआत्माही ताअविद्याकाविषयहोवैहै ॥ काहेतें? जोपदार्थ जिसपदार्थविषे किसीअतिशयतारूपफलकीउत्पत्तिकरैहै ॥ सोअतिशयतारूपफलकाआश्रयपदार्थही ताफलकर्त्तापदार्थकाविषयहोवैहै ॥ सोअतिशयतारूपफलकीउत्पत्ति आपणेतैंभिन्नपदार्थविषेही करीजावैहै ॥ आपणेविषे आपेही ताअतिशयतारूपफलकीउत्पत्तिकरणेविषे कोईभीसमर्थहोवैनहीं ॥ यातैं ताअविद्याकी अविद्याविषेविषयता संभवैनहीं ॥ और मैंअज्ञानीहूं मैंदुःखीहूं ॥ याप्रकारकेअनुभवकरिकैंसिद्ध जोआवरणविक्षेपरूपफलहै ॥ ताआवरणविक्षेपरूपफलकूं सा अविद्याआनंदस्वरूपआत्माविषेही उत्पन्नकरैहै ॥ यातैं ताअविद्याका सोआत्मादेवही विषयहै ॥ हेदेवतावो! जैसे ताअविद्याका अविद्याविषयनहींहै ॥ तैसे ताअविद्याका अविद्या आश्रयभीनहींहै ॥ जैसे यालोकप्रसिद्धअंधकारका अंधकार आश्रयनहींहै ॥ किंतु ताअंधकारतैंभिन्न गृहादिकपदार्थही ताअंधकारका आश्रयहै ॥ तैसे ताअविद्याकाभी ताअविद्यातैंभिन्नआत्मादेवही आश्रयहै ॥ काहेतें? यालोकविषे जोपदार्थ जिसपदार्थतैंभिन्नहोवैहै ॥ तथा जिसपदार्थतैं अधिकहोवैहै ॥ सोपदार्थही तिसपदार्थका आश्रयहोवैहै ॥ सोअविद्याविषे अविद्यातैंभिन्नरूपता तथाअधिकरूपता संभवैनहीं ॥ यातैं साअविद्याही अविद्याकाआश्रयहोइसकैनहीं ॥ और यहचैतन्यस्वरूपआत्मादेवतौ ताअविद्यातैंभिन्नभीहै ॥ तथा ताअविद्यातैंअधिकभीहै ॥ यातैं सोचैतन्यस्वरूपआत्मादेवही ताअविद्याकाआश्रयहै ॥ जैसे शुक्तिविषयकअज्ञान रजतभ्रमवालेपुरुषविषेहीरहैहै ॥ तैसे साअविद्या आत्माविषेहीरहैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन! जैसे ताशुक्तिविषयकअज्ञानका आश्रयतौभ्रांतपुरुषहै ॥ और शुक्ति ताअज्ञानकाविषयहै ॥ तैसे ताअज्ञानरूपअविद्याकाभी आश्रय तथाविषय भिन्नहीहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो! यद्यपि ताशुक्तिकेअज्ञानरूपदृष्टांतविषे ताअज्ञानकेपुरुषरूपआश्रयतैं शुक्तिरूपविषय भिन्नप्रतीतहोवैहै ॥ तथापि वास्तवतैंविचारकरिकैंदेखियेतौ ताअज्ञानकाभी शुक्तिविषयनहींहै ॥ किंतु ताशुक्तिकेअंतररह्याहुआ शुक्तिअवच्छिन्नचेतनआत्माही ताअज्ञानकाविषयहै ॥ काहेतें? शुक्तिआदिकजडपदार्थतौ स्वभावतैंहीआवृत

हैं ॥ तिनजडपदार्थोंविषे अज्ञानकृतआवरण संभवैनहीं ॥ यातें परिशेषतें सोअज्ञान पूर्वइदंतारूपकरिकैकथनकऱ्येहुए शुक्तिअवच्छिन्नचेतनकूंही विषयकरेहै ॥ इहां ताचेतनआत्माकेस्वरूपकूंआवरणकरणा यहही ताचेतनआत्माविषे अज्ञानकीविषयताहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सोअज्ञान जोकदाचित् चेतनकूंही विषयकरताहोवै तौ शुक्तिविषे ताअज्ञानकीविषयता नहींप्रतीतहोणी चाहिये ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो! पूर्वइदंतारूपकरिकैवर्णनकऱ्याजो स्फुरणरूपसामान्यचैतन्यहै ॥ तासामान्यचैतन्यविषे यह शुक्तिअवच्छिन्नविशेषचैतन्य तादात्म्यसंबंधकरिकैरहेहै ॥ ताशुक्तिअवच्छिन्नविशेषचैतन्यकूंही यहकल्पितरजतकाउपादानकारणरूप अज्ञान आवृतकरेहै ॥ सामान्यचैतन्यकूं सोअज्ञान आवृतकरैनहीं॥ यातें सोअज्ञान अवच्छेदकतारूपकरिकै ताशुक्तिकूंभी विषयकरेहै ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकरिकैही शुक्तिविषयकअज्ञानहै याप्रकारकाव्यवहारहोवैहै ॥ हेदेवतावो! बाह्यशुक्तिआदिक पदार्थोंविषेस्थित जोस्फुरणरूपचेतनहै ॥ सोचेतन अंतरआत्मातेंभिन्ननहीहै ॥ किंतु तास्फुरणरूपचेतनकूं वेदवेत्तापुरुष अंतर आत्मस्वरूपही कथनकरेहैं ॥ यातें शुक्तिआदिकदृष्टांतोंविषेभी सोअंतरआत्माही ताअज्ञानकाविषयहै ॥ हेदेवतावो! सोअज्ञान आत्माकेआश्रितरहेहै ॥ याअर्थविषेतौ किसीभीवादीका विवादहैनहीं ॥ किंतु सर्ववादी ताअज्ञानकूं आत्माकेहीआश्रितमानेहैं ॥ और अज्ञानकेविषयविषेतौ वादियोंका परस्पर विवाददेखणेविषेआवै है॥ कोईकवादी अनात्मपदार्थोंकूंभी ताअज्ञानकाविषयमानै हैं सोतिनवादियोंकेभ्रमकी पूर्वउक्तयुक्तियोंकरिकैनिवृत्तिकरी ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ वास्तवतेंअविद्यातेंरहित जोसत्चित्आनंदस्वरूपआत्माहै ॥ सोआत्मादेवही ताअविद्याकाआश्रयहै तथाविषयहै॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ आश्रयत्वविषयत्वभागिनी निर्विभागचितिरेवकेवला ॥ पूर्वसिद्धतमसोहिपश्चिमो नाश्रयोभवतिनापिगोचरः ॥ अर्थ यह ॥ जीवईशादिकभेदतेंरहित जोअद्वितीयचेतनहै ॥ सोअद्वितीयचेतनही याअनादिअज्ञानका आश्रयहै तथाविषयहै ॥ ताचेतनवस्तुतेंभिन्न दूसरेसर्वपदार्थ ताअज्ञानकेकार्यहैं॥ यातें तेअनात्मपदार्थ ताअनादिअज्ञानका आश्रयरूप तथाविषयरूप होइसकैं नहीं ॥ १ ॥ इसप्रकार आश्रयतारूपकरिकै तथाविषयतारूपकरिकै यहअविद्या ताआनंदस्वरूपआत्माकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहुईहै ॥

याकारणतैं यहअविद्या परतंत्रहीहै ॥ और हेदेवतावो! जैसे आश्रयविषयकीअपेक्षा ताअविद्याविषे परतंत्रतासिद्धकरेहै ॥ तैसे जडताधर्मभी ताअविद्याविषे परतंत्रताहीसिद्धकरेहै ॥ काहेतें? यालोकविषे जडतारूपकरिकैंप्रसिद्ध जेरथादिकपदार्थहैं ॥ तेरथादिकपदार्थ अश्ववृषभादिकचेतनपदार्थोंतेंविना स्वतंत्र प्रवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु अश्ववृषभादिकचेतनपदार्थोंकेसंबंधतेंही तिनरथादिकोंविषे क्रियाहोवैहै ॥ यातें यहजान्याजावैहै ॥ यालोकविषे जितनेजडपदार्थहोवैहैं ॥ तेसर्वजडपदार्थ अस्वतंत्रही होवैहैं ॥ और यहअज्ञानरूपअविद्याभी तिनरथादिकोंकीन्यांई जडरूपहै ॥ यातें यहअविद्याभी परतंत्रहीहै ॥ याकहणेकरिकै यह अनुमान बोधनकऱ्या ॥ अविद्या जडहोणेतें रथादिकोंकीन्यांई परतंत्रहोणेकूंयोग्यहै ॥ हेदेवतावो! इसप्रकार याअविद्याविषे परतंत्रता सिद्धहोवैहै ॥ और यालोकविषे जोपदार्थ अस्वतंत्रहोवैहै ॥ तापदार्थकूं असिद्धकहेहैं ॥ यातें अस्वतंत्रहोणेतें यहअविद्याभी असिद्धहीहै ॥ और यालोकविषे जोपदार्थ असिद्धहोवैहै ॥ सोपदार्थ असत्हीहोवैहै ॥ जैसे शशशृंगवंध्यापुत्रादिक असिद्धहोणेतें असत्हैं ॥ तैसे असिद्धहोणेतें यहअविद्याभी असत्यहीहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोयहअविद्या अस्वतंत्रत्व असिद्धत्व असत्त्व इत्यादिकधर्मोंवालीहोवै तौ पूर्वआपनैं याअविद्याविषे स्वतंत्रत्व सिद्धत्व सत्त्व इत्यादिकधर्म किसवासतेकथनकरेथे? ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो! जिसअभिप्रायकरिकै हमनैं ताअविद्याविषे स्वतंत्रआदिकधर्म कथनकरेहैं ॥ ताअभिप्रायकूं तुम श्रवणकरो ॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ असत्होवैहै ॥ सोसोपदार्थ किसीकार्यकाआरंभकरतानहीं ॥ जैसे असत्यवंध्यापुत्र किसीकार्यकाआरंभकरैनहीं ॥ यातें असत्त्वधर्मतौ व्याप्यहै ॥ और कार्यकाअनारंभकत्वधर्म व्यापकहै ॥ और जहांव्यापककाअभावहोवैहै ॥ तहां ताकेव्याप्यकाभी अभावहीहोवैहै ॥ जैसे महान्‌जलविषे अग्निरूपव्यापककाअभावहोवैहै ॥ यातें ताजलविषे ताके धूमरूपव्याप्यकाभी अभावहीहोवैहै ॥ तैसे इहांप्रसंगविषे सर्वजगत्‌काआरंभकरणेहारी तथाअसंगनिर्गुणआत्मादेवकूंभी मोहकीप्राप्तिकरणेहारी जाअविद्याहै ॥ ताअविद्याविषे सोकार्यकाअनारंभकत्वरूपव्यापकधर्म रहतानहीं ॥ यातें ताका व्याप्यरूप असत्त्वधर्मभी ताअविद्याविषेरहैनहीं ॥ यातें याअविद्याकूं पूर्वहमनैं सत्य यानामकरिकैकथनकऱ्याथा ॥ और सोअसत्त्वधर्म असिद्धत्वधर्म

काव्यापकहै ॥ जबी ताअविद्याविषे असत्त्वरूपव्यापकधर्मकाअभावहुआ ॥ तबी याअविद्याविषे असिद्धत्वरूपव्याप्यधर्मकाभीअ
भावहीहोवैगा ॥ याकारणतैं पूर्वहमनैं ताअविद्याकूं सिद्ध यानामकरिकैकथनकऱ्याथा ॥ और सोअसिद्धत्वधर्म अस्वतंत्रत्वधर्मका
व्यापकहै ॥ जबी ताअविद्याविषे असिद्धत्वरूपव्यापकधर्मकाअभावहुआ ॥ तबी ताअविद्याविषे अस्वतंत्रत्वरूपव्याप्यधर्मकाभी
अभावहीहोवैगा ॥ यातैं पूर्वहमनैं ताअविद्याकूं स्वतंत्र यानामकरिकैकथनकऱ्याथा ॥ याप्रकार ताअविद्याविषे सत्त्व असत्त्व सिद्ध
त्व असिद्धत्व स्वतंत्रता अस्वतंत्रता इत्यादिकसर्वधर्म संभवहोइसकेहैं ॥ याकारणतैंही वेदवेत्तापुरुष ताअविद्याकूं अनिर्वचनीय
दुर्घट इत्यादिकनामोंकरिकैकथनकरैहैं ॥ अब साअविद्या याआत्मादेवविषे जिसव्यामोहकूंकरैहै ताव्यामोहकानिरूपणकरैहैं ॥ हे
देवतावो ! याजीवोंविषे मैंअज्ञानीहूं मैंदुःखीहूं याप्रकारकाजोबोधहोवैहै ॥ सोबोध सर्वदा होवैनहीं ॥ किंतु कदाचितहीहोवैहै ॥
और यालोकविषे जोजोपदार्थ कादाचित्कहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ कार्यरूपहीहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ कादाचित्कहोणेतैं कार्य
रूपहैं ॥ तैसे सोबोधभी कादाचित्कहोणेतैं कार्यरूपहीहोवैगा ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ
किसीकारणकरिकैही जन्यहोवैहै ॥ कारणतैंविना कार्यकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ जैसे घटादिकपदार्थ कार्यरूपहोणेतैं मृत्तिकादिकका
रणोंकरिकैजन्यहैं ॥ तैसे सोबोधभी कार्यरूपहोणेतैं किसीकारणकरिकै अवश्यजन्यहोवैगा ॥ और अहंअज्ञः अहंदुःखी याप्रकारके
विपरीतबोधका अविद्यातैंविना दूसराकोईकारण संभवतानहीं ॥ किंतु सा अघटितघटनापटीयसीनामा अविद्याही ताबोधकाकार
ण संभवैहै ॥ काहेतैं ? वास्तवतैं स्वयंप्रकाश जोआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ ताआत्मादेवविषे मैंअज्ञानीहूं मैंदुःखीहूं याप्रकारकाविप
रीतबोध कदाचित्भीसंभवतानहीं ॥ यातैं परिशेषतैं ताबोधकाकारणरूप यहअविद्याही कल्पनाकरीजावैहै ॥ हेदेवतावो ! जैसे
लोकविषे आदरकूंप्राप्तहुआनीचपुरुष ताआदरकरणेहारेपुरुषके मस्तकऊपरिचढिजावैहै ॥ तैसे कल्पनाकरीहुई सानीचअवि
द्याभी आपणेआश्रयरूपआत्माका तिरस्कारकरिकै आपही विलासकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताअविद्याकरिकै तिरस्कारकूंप्राप्तहुआ
जोसर्वजगत्काअधिष्ठान चेतनदेवहै ॥ ताचेतनदेवका सर्वतैंअनंतर आनंदस्वरूपआत्मा ताअविद्याकेप्रभावतैं असत्केसमानहो

वैहै॥ हेदेवतावो! अनेकप्रकारकेविलासोंकरिकैयुक्त जायहमायारूपअविद्याहै ॥ ताअविद्याका कूटस्थआत्माहैनहीं याप्रकारकाअ
सत्त्वापादनरूप प्रथमविलास कथनकऱ्याहै॥ जिसविलासकरिकै यहआत्मादेव आपणेस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपकूंभी विस्मरणकर
ताभयाहै॥ हेदेवतावो! इसप्रकार यहआत्मादेव ताअसत्त्वापादनरूप अविद्याकेविलासकूंदेखिकै दूसरेभी अनेकप्रकारकेविक्षेपरू
पविलासोंकूंदेखैहै॥ तिनविक्षेपरूपविलासोंकूं तुम श्रवणकरो ॥ मैंजन्म्याहूं मैंबालकहूं मैंयुवाहूं मैंवृद्धहूं मैंमरोंगा मैंसुखीहूं मैं
दुःखीहूं मैंस्वर्गीहूं मैंनरकीहूं मैंस्त्रीहूं मैंपुरुषहूं मैंनपुंसकहूं मैंपापीहूं मैंधर्मीहूं इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेअहंअभिमानरूपदुःखोंकूं
यहजीवात्मादेखैहै॥ तथा ताजन्मादिकोंकेअहंअभिमानकरिकैयुक्तहुआ यहजीवात्मा पश्चात् ममत्वअभिमानकरिकैयुक्तहोवैहै ॥
ताममत्वअभिमानकेवशतैं यहजीवात्मा यहहमारापिताहै यहमेरीमाताहै यहमेरापुत्रहै येहमेरीस्त्रीहै यमेरेबांधवहैं यहमेराधन
है यहमेरागृहहै इसतैंआदिलैके नानाप्रकारके ताअविद्याकेविलासोंकूंदेखैहै ॥ जेअविद्याकेविलास यासंसारकेस्थितिकेकारण
रूपहैं॥ ऐसेअविद्याकेविलासोंकीप्राप्तितैंअनंतर देहरूपबंधनगृहकूंप्राप्तहुआ तथाकामक्रोधादिकशृंखलावोंकरिकेबांध्याहुआ त
थामैंसर्वदाहोवों मेराअभाव कदाचित्भीनहींहोवै याप्रकारकीप्रार्थनाकरिकै आपणेशरीरकारक्षणकरताहुआ यहमूढजीव अनेक
जन्मोंकूंप्राप्तहोवैहै॥ तिनअनेकजन्मोंविषेभी यहमूढजीव तास्वयंज्योतिआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माकूं नहींदेखताहुआ तथा
अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंदेखताहुआ निरंतर यासंसारविषेभ्रमणकरेहै॥ ताकरिकै विद्यमानहुआभीयहजीवात्मा असत्यकेसमानहो
वैहै ॥ याकारणतैं यहमायारूपअविद्या अत्यंतविचित्रहै॥ तथा अत्यंतदुर्घटहै॥ तथा सर्वजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरणेहारीहै ॥ त
था यासंसाररूपविषकेवृक्षकीजननीहै॥ तथा विचारहीनमनुष्योंकरिकै दुर्विज्ञेयहै ॥ ऐसीअविद्याकेप्रभावतैंयहजीवात्मा मैंअज्ञा
नीहूं मैंदुःखीहूं मैंब्राह्मणहूं मैंमहानकुलवालाहूं इत्यादिकविपरीतज्ञानोंकरिकैयुक्तहुआ यासंसारसमुद्रविषे वारंवार डूबैहै॥ अबव
टबीजादिकोंकीन्यांई याअविद्याकीव्यवस्थाकहणेवासते प्रथम याअविद्याविषे यासंसारवृक्षकीबीजरूपता तथापरिणामस्वभावता
वर्णनकरेहैं॥ हेदेवतावो! साअविद्या यासंसारवृक्षकाबीजरूपहै॥ तथा ज्ञानकर्मके जेसंस्काररूपवासनाहैं ॥ ताअनेककोटिवा

सनारूपगर्भकरिकैयुक्तहै ॥ तथा पटकीन्यांई संकोचविकासस्वभाववालीहै ॥ तहां सुषुप्ति मूर्च्छा मरण महाप्रलय इत्यादिकका लोंविषेतौ यहअविद्या संकोचभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तिनसुषुप्तिआदिककालोंतैंभिन्न जाग्रतादिककालोंविषे साअविद्या विकासभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेदेवतावो! यहजीवात्मापुरुष नानाप्रकारकेशरीरोंविषे जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे परतंत्र हुआ ताअविद्याकेविकासभावोंकरिकै अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं सोअविद्याकाविकासभाव याजीवोंकेदुःखकाही कारणहै ॥ और हेदेवतावो! तिनजाग्रतादिकअवस्थावोंविषेभोगदेणेहारेकर्मोंका जबीक्षयहोवैहै ॥ तबी यहअविद्या तासंकोच भावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तासुषुप्तिआदिकसंकोचकालविषे यहजीवात्मा जाग्रतादिकअवस्थावोंकेपरिश्रमकापरित्यागकरिकै तहां शयनकरेहै ॥ जैसे आकाशविषे उडणेकरिकै परिश्रमकूंप्राप्तहुआपक्षी· तापरिश्रमकापरित्यागकरिकै आपणेगृहविषे शयनकरेहै ॥ तैसे यहजीवात्मा जाग्रतादिकोंकेविक्षेपकापरित्यागकरिकै तासुषुप्तिआदिकोंविषे शयनकरेहै ॥ ताकालविषे यहजीवात्मा यद्यपि दुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथापि भावीदुःखोंकाबीजरूपजाअविद्याहै ॥ साअविद्या तासुषुप्तिआदिककालोंविषेभी विद्यमानहै ॥ यातैं ताअविद्याकेसंबंधतैं यहजीवात्मा तहांभी दुःखीहीकह्याजावैहै ॥ इसप्रकार संकोच विकास यादोनोंस्वभावोंकरिकै यहअविद्याही संसारकाकारणहोवैहै ॥ जाअविद्या अहंअज्ञः याप्रकारके सर्वजीवोंकेअनुभवकरिकैसिद्धहै ॥ तथा अत्यंतदुर्घटहै ॥ हेदेवतावो! पूर्वउक्तनानाप्रकारकेविलासोंकरिकैयुक्त जायहमिथ्याअविद्याहै ॥ साअविद्या जैसे याजीवोंकेसंसारकाकारणहै ॥ तैसे गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं जान्याहुआ यहआत्मादेव याजीवोंकेमोक्षकाकारणहै ॥ और जैसे तासंसारदशाविषे याजीवोंकूं ता आनंदस्वरूपआत्माकीअप्रतीतिहोवैहै अथवा विपरीतप्रतीतिहोवैहै ॥ तैसे मोक्षदशाविषे विद्वान्पुरुषोंकूं ताअविद्याकीअप्रतीति होवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! एकहीसाअविद्या अनेकजीवोंकेव्यवहारकूं किसप्रकारसिद्धकरैंगी?॥ समाधान॥ हेदेवतावो! सा मायारूपअविद्या वास्तवतैंएकरूपहुईभी वटबीजकीन्यांई नानारूपहोइकैप्रतीतहोवैहै ॥ अब तावटबीजकेदृष्टांतका स्पष्टकरिकै निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो! जैसे वटबीजोंविषेअनुगत जोजातिरूपसामान्यहै ॥ सोजातिरूपसामान्यही तिनवटवृक्षोंकाकारण

होवैहै ॥ और तेवटबीजरूपव्यक्तियांतो नाशवान्होणेतैं सर्वत्रअनुगतहैंनहीं ॥ यातैं तेबीजव्यक्तियां सर्वत्र कारणताकेयोग्यहो वैनहीं ॥ तैसे घटपटादिकसर्वकार्योंके प्रसिद्धकारणरूप जेमृत्तिकातंतुआदिकहैं ॥ तिनसर्वकारणोंविषेअनुगत जोसामान्यहै ॥ तासामान्यकूंही वेदवेत्तापुरुष अविद्या माया अज्ञान शक्ति इत्यादिकनामोंकरिकैकथनकरैहैं ॥ साअविद्यारूपमायाही तिनस र्वकार्योंकाकारणरूपहै ॥ और जैसे वटबीजरूपव्यक्तियोंकेनाशहुएभी तिनसर्वबीजोंविषेअनुगत सोजातिरूपसामान्य नाशकूंप्रा प्तहोवैनहीं ॥ तैसे सुषुप्तिआदिकअवस्थावोंविषे सर्वकार्योंकेनाशहुएभी तिनोंकाकारणरूप सामान्यमाया नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जैसे सोवटबीजोंविषेस्थित जातिरूपसामान्य तिसतिसवटवृक्षोंकेकारणीभूतबीजव्यक्तियोंकेविशेषताकूं अंगीकारकरिकै भि न्नभिन्नकार्यकूंकरैहै ॥ तैसे यहअविद्यारूपमायाभी तिसतिसकार्यकेसूक्ष्मअवस्थारूपसंस्कारोंकूंअंगीकारकरिकै नानाप्रकारके ज गत्काकारणरूपहोवैहै ॥ और जैसे तिनवटबीजोंविषेस्थित सामान्यरूपजातिकेनहींनाशहुएभी तिसतिसवटवृक्षकीउत्पत्तितैं अनंतर तिसतिसबीजव्यक्तियोंका नाशहोइजावैहै ॥ तैसे तामायाकेनहींनाशहुएभी तिसतिसकार्यकीउत्पत्तितैंअनंतर तिसतिस संस्कारोंकानाशहोइजावैहै ॥ और जैसे एकहीवटकाबीज वटवृक्षरूपपरिणामकूंप्राप्तहोइकै फलोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताफलीभूतवट वृक्षतैं वसंतवसंतऋतुविषे अनेककोटिरूपकरिकैउत्पन्नहोवैहैं ॥ तिनसर्वबीजव्यक्तियोंविषे पुनःएकएकबीजव्यक्ति तावटवृक्षकी उत्पत्तिद्वारा अनेककोटिरूपकरिकैउत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे यहसामान्यरूपमायाभी आपणेसंस्काररूपव्यक्तियोंकरिकै अनेकप्रकार कीउत्पन्नहोवैहै ॥ काहेतें? तामायातैं एककार्यकेउत्पन्नहुएतैंअनंतर तिसकार्यतैं पुनः नानाप्रकारकेकार्य उत्पन्नहोवैहैं ॥ तिनअ नेककार्योंविषे पुनः एकएकव्यक्ति अनेकरूपहोइकै उत्पन्नहोवैहै ॥ इसप्रकार यासंसारविषे अनंतररूपतासिद्धहोवैहै ॥ हेदेवता वो! तासामान्यरूपमायाके विशेषव्यक्तिरूपसंस्कार यद्यपि अनंतहैं ॥ तथापि वेदवेत्तापुरुषोंनैं संक्षेपतैं तेसंस्कार चारिप्रकारकेक थनकरैहैं ॥ काहेतें? तिनसंस्कारोंकाकार्य देह इंद्रिय क्रिया भोग याभेदकरिकै चारिप्रकारकाहोवैहै ॥ यातैं तेसंस्कारभी चारिप्र कारकेहीहोवैहैं ॥ हेदेवतावो! जैसे बीजतैंअंकुरहोवैहै ॥ और ताअंकुरतैं पुनःबीज होवैहै ॥ ताबीजतैं पुनःअंकुरहोवैहै ॥ इसप्रकार

ताबीजका तथाअंकुरका निरंतरप्रवाह चल्याजावैहै ॥ तैसे याअनादिसंसारविषे तिनसंस्कारोंतें देहादिकहोवैहैं ॥ और तिनदेहादिकोंतेंपुनःसंस्कारहोवैहैं ॥ तिनसंस्कारोंतें पुनःदेहादिकहोवैहैं इसप्रकार तिनसंस्कारोंका तथादेहादिकोंका निरंतर प्रवाहचल्याजावैहै ॥ तिनसंस्कारोंविषे तथादेहादिकोंविषे कोईभीव्यक्ति स्थिररहैनहीं ॥ अब तिनदेहादिकचारिप्रकारकेकार्योंका तीनतीनप्रकारकाभेदवर्णनकरेहैं ॥ हेदेवतावो ! नानाप्रकारकेअवांतरभेदकरिकैयुक्तजे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज येचारिप्रकारकेप्राणीहैं ॥ तिनचारि प्रकारकेप्राणियोंविषेस्थितजे देह इंद्रिय क्रिया भोग येचारिप्रकारकेकार्यहैं ॥ तेचारिप्रकारकेकार्य उत्तम अधम मध्यम याभेदकरिकै तीनतीनप्रकारकेहोवैहैं ॥ तहां यालोकविषे तिसतिसजातिवालेजीव अनंतहैं ॥ यातें तिनसर्वजीवोंविषे ते उत्तमादिकरूपकथनकऱ्येजावैनहीं ॥ यातें सर्ववर्णोंतेंश्रेष्ठ जाब्राह्मणजातिहै ॥ ताब्राह्मणजातिविषे तेउत्तमादिकभाव निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो ! यहब्राह्मणत्वजातिवाले भूदेवरूपब्राह्मण याभूमिलोकविषे उत्पन्नहुएहैं तथासुखदुःखदोनोंकूंभोगेहैं ॥ यातें येब्राह्मणत्वजातिवालेशरीरभी पुण्यपापदोनोंकरिकैरचितहैं ॥ तिनब्राह्मणशरीरोंविषे जाउत्तमताहै ॥ साउत्तमता अनेकप्रकारकेनिमित्ततेंहोवैहै ॥ तहां पिता माता आचार्य यातीनोंके कुल विद्या तप आदिकोंकीउत्कृष्टतातेंभी पुत्रादिकोंविषे साउत्तमता प्राप्तहोवैहै ॥ तथा पितामाताकाअंशरूपजोवीर्यहै ॥ तिनदोनोंवीर्योंका अवस्थाविशेषकरिकैजोपरिपाकहै ॥ तिसतैंभी तापुत्रविषे उत्तमताप्राप्तहोवैहै ॥ तथा तापुत्रका दशमासरूपकालकेपूर्णहुएतेंअनंतर जोमाताकेउदरतें बाह्यनिकसणाहै ॥ तिसतैंभी तापुत्रविषे उत्तमताहोवैहै ॥ तथा सुंदरगौररूप लावण्य सदाचार श्रेष्ठलक्षण इत्यादिकगुणोंकरिकैभी शरीरविषे उत्तमताहोवैहै ॥ इसतें आदिलैकेअनेकप्रकारकेनिमित्तोंकरिकै साउत्तमताहोवैहै ॥ अब इंद्रियोंकीउत्तमताका वर्णनकरेहैं ॥ हेदेवतावो ! जैसे देहकीउत्तमता अनेकनिमित्तोंकरिकैहोवैहै ॥ तैसे नेत्रादिकइंद्रियोंकीउत्तमताभी अनेकनिमित्तोंतेंहोवैहै ॥ तहां रूपादिकविषयोंकेग्रहणकरणेविषेजास्फुटताहै ॥ तिसतैंभी तिननेत्रादिकइंद्रियोंविषे उत्तमताहोवैहै ॥ तथा सुंदररचनाविशेषतैंभी तिनइंद्रियोंकी उत्तमताहोवैहै ॥ तथा विस्तारादिरूपपरिमाणतैंभी तिनइंद्रियोंविषे उत्तमताहोवैहै ॥ अब क्रियाकीउत्तमता वर्णनकरेहैं ॥ हेदेवतावो !

क्रियारूपजेकर्महैं ॥ तिनकर्मोंविषे श्रद्धाभक्तिपूर्वक देवताध्यानादिरूपप्रज्ञाकरिकै उत्तमताप्राप्तहोवैहै ॥ तथा शास्त्रविहितदाना दिकोंकेकरणेतैं तथाशास्त्रनिषिद्धहिंसादिकोंकेपरित्यागतैंभी तिनकर्मोंविषे उत्तमताप्राप्तहोवैहै ॥ अब भोगोंकेउत्तमताका वर्णन करेहैं ॥ हेदेवतावो ! पितामातादिकोंकेविद्यमानतातैंभी यापुरुषोंकेभोगोंविषे उत्तमताप्राप्तहोवै है॥ तथा आपणेबांधवोंकेसुशील स्वभावतैं तथाआपणेसुशीलस्वभावतैंभी तिनभोगोंविषे उत्तमताहोवैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेविद्यावोंकीप्राप्तितैंभी तिनभोगोंवि षे उत्तमताहोवैहै ॥ तथा तिनविद्यावोंकेबलतैं तिनबांधवोंकेशरीरमनविषे तथाआपणेशरीरमनविषे भयाजोपीडाकाअभावता पीडाकेअभावतैंभी तिनभोगोंविषे उत्तमताहोवैहै ॥ तथा पूर्वलेअनेकपुण्यकर्मों तैं तथाआपणीबुद्धिकीकुशलतातैंभी तिनभोगों विषे उत्तमताहोवैहै ॥ हेदेवतावो ! कोईकशास्त्रवेत्तापुरुषतौ आचार्य पिता माता इसतैंआदिलैकेसर्वबांधवोंकूं याजीवोंकेभोगका कारणमानेहैं ॥ और कोईकश्रेष्ठबुद्धिवालेविद्वान्पुरुषतौ श्रुतिप्रमाणकेअनुसार स्त्री पुरुष यादोनोंकूंही परस्पर भोगकाकारणमानै हैं ॥ आचार्यादिकोंकूं भोगकाकारण मानैंनहीं ॥ काहेतैं ? बृहदारण्यकउपनिषद्विषे याज्ञवल्क्यमुनि आपणीमैत्रेयीस्त्रीकेप्रति याप्र कारकावचन कहताभयाहै॥ **नवाअरेपत्युःकामायपतिःप्रियोभवति आत्मनस्तुकामायपतिःप्रियोभवति नवाअरेजायायै कामायजायाप्रियाभवति आत्मनस्तुकामायजायाप्रियाभवति** ॥ याश्रुतिवचनकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि स्त्रीपुरुषदोनोंविषे भ्रांतिकरिकैप्राप्तहुईभोगसाधनताकूंही निवारणकरताभयाहै॥ पितामातादिकोंविषे भोगसाधनताका निवारणकऱ्यानहीं॥ यातैं स्त्री पुरुषदोनोंविषेही परस्परभोगकीहेतुताहै॥ अथवा एकशरीरविषेभोगसंभवैनहीं ॥ यातैं तेदोनोंशरीर अपेक्षितहैं ॥ याअर्थविषेही तिनशास्त्रवेत्तापुरुषोंकातात्पर्यहै ॥ अथवा कोईकशास्त्रवेत्तापुरुषतौ याप्रकार कथनकरेहैं ॥ शिष्यादिकोंकेपुण्यरूपअदृष्टकरिकैही तेआचार्यादिकउत्पन्नहोवैहैं ॥ और जोपदार्थ जिसजीवकेपुण्यपापरूपअदृष्टतैंउत्पन्नहोवैहै ॥ सोपदार्थ तिसजीवके सुखदुःखरूप भोगकाहेतुहोवै ॥ यातैं तेआचार्यादिकभी तिनशिष्यादिकोंकेभोगकेहेतुहैं ॥ और कोईकशास्त्रवेत्तापुरुषतौ यहकहेहैं ॥ गुरुशि ष्यदोनोंका तथापितापुत्रादिकदोनोंका परस्पर उपकार्यउपकारकभाव देखणेविषेआवताहै ॥ यातैं तेदोनोंभी परस्परभोगके

हेतुहैं ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकैंदेखियेतौ आचार्य माता पिता इत्यादिकबांधवभी याजीवोंकेभोगकाहीहेतुहैं यहमत किसी स्थूलदृष्टिवालोंकाहै ॥ सूक्ष्मबुद्धिवालेपुरुषतौ तिनआचार्यादिकोंकूं याजीवोंके साक्षात्भोगकाहेतुमानैंनहीं ॥ किंतु तिनआचार्यादिकोंकूं धर्मअर्थदोनोंकाहेतुमाने हैं ॥ काहेतें ! तेआचार्यादिक याशिष्यादिकोंकेप्रति श्रेष्ठविद्याकाउपदेशकरिकैं धर्मकीप्राप्तिकरेहैं ॥ तथा कर्मउपासनारूपदैवधनकीप्राप्तिकरेहैं ॥ तथा ताविद्याद्वारा सुवर्णादिरूपलौकिकधनकीप्राप्तिकरेहैं ॥ तिनधनादिकोंकरिकैं याजीवोंकूं भोगकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इतनेकरिकै देह इंद्रिय क्रिया भोग याचारोंविषेउत्तमताकावर्णनकऱ्या ॥ अब तिन देहादिक चारोंविषे मध्यमताका तथाअधमताका वर्णनकरेहैं ॥ हेदेवतावो! पूर्व देह इंद्रिय क्रिया भोग याचारोंकेउत्तमताविषे जेहेतुकथनकरेथे ॥ तिनहेतुवोंविषे जबी कोईकहेतुवोंकाअभावहोवैहै ॥ तबी तिनदेहादिकचारोंविषे मध्यमता प्राप्तहोवैहै ॥ और तिनपूर्वउक्तसर्वहेतुवोंका जबी अभावहोवैहै ॥ तबी तिनदेहादिकचारोंविषे अधमता प्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार देह इंद्रिय क्रिया भोग येचारों उत्तम मध्यम अधम याभेदोंकरिकै तीनतीनप्रकारकेहोवैहैं ॥ और तिनदेहादिकचारोंविषेस्थितजे उत्तमत्व मध्यमत्व अधमत्व येतीनहैं ॥ तिनउत्तमत्वादिकतीनोंविषे एकएककूं जबी पुनः उत्तमत्व मध्यमत्व अधमत्व यातीनोंकेसाथजोडिये ॥ तबी तिनोंके नवभेद सिद्धहोवैहैं ॥ तेनवभेदयेहैं ॥ उत्तमउत्तम १ उत्तममध्यम २ उत्तमअधम ३ मध्यमउत्तम ४ मध्यममध्यम ५ मध्यमअधम ६ अधमउत्तम ७ अधममध्यम ८ अधमअधम ९ और तिननवोंविषेभी एकएककूं जबी मृदुत्व मध्यत्व उत्कटत्व यातीनोंकेसाथजोडिये ॥ तबी तिनोंके सप्तविंशतिभेद २७ सिद्धहोवैहैं ॥ जैसे उत्तमउत्तममृदु उत्तमउत्तममध्य उत्तमउत्तमउत्कट इसप्रकार दूसरेउत्तममध्यमादिकअष्टोंविषेभी तीनतीनभेदजानिलेणे ॥ और तिनसप्तविंशतिपदार्थोंविषेभी एकएकपदार्थकूं जबी पुनः मृदु मध्य उत्कट यातीनोंकेसाथजोडिये ॥ तबी तिनोंके एकाशीभेद ८१ सिद्धहोवैहैं ॥ जैसे उत्तमउत्तममृदुमृदु उत्तमउत्तममृदुमध्य उत्तमउत्तममृदुउत्कट ॥ इसप्रकारदूसरेछब्बीसपदार्थोंकेभी तीनतीनभेदजानिलेणे ॥ और तिनएकाशी ८१ भेदोंविषेभी जबी एकएककूं कर्मद्वारा कृतत्व कारितत्व अनुमोदितत्व यातीनधर्मोंकेसाथजोडिये ॥ तबी तिनोंके दोशतत्रितालीस

समेद २४३ सिद्धहोवैहैं ॥ इसतैंआदिलैके तिनदेहादिकोंकेअनंतभेदसिद्धहोवैहैं ॥ तेभेद अत्यंतसूक्ष्महैं ॥ यातैं किसीतैं वर्णन कऱ्येजावैनहीं ॥ अब देह इंद्रिय क्रिया भोग इनचारोंका तथातिनोंकेसंस्कारोंका परस्पर बीजअंकुरकीन्यांई कार्यकारणभावनि रूपणकरणेवासते प्रथम यादेहकीप्रधानता निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो ! यादेहोंकेसंस्कारोंतैं पुनःदेहउत्पन्नहोवैहैं ॥ और ति नदेहोंतैं पुनः देहादिकचारोंकेजनक संस्कार उत्पन्नहोवैहैं ॥ यातैं यादेहतैंही तेसर्वइंद्रियादिक प्रगटहोवैहैं ॥ हेदेवतावो ! या देहतैंही तेइंद्रियक्रियाभोग प्रगटहोवैहैं ॥ याअर्थविषे वेदवेत्तापुरुष याप्रकारकीयुक्तिकथनकरेहैं ॥ जोपुरुष प्रथम देहकरिकै युक्तहोवैहै ॥ सोदेहीपुरुषही वशकऱ्येहुएइंद्रियोंसहित यागादिककर्मोंकाकर्त्ताहोवैहै ॥ तथा तिनकर्मोंकेफलकाभोक्ताहोवैहै ॥ दे हतैंविना तिनकर्मोंकाकर्त्तापणा तथाभोक्तापणा संभवैनहीं ॥ और तादेहिभावतैंअनंतर पुनः देहिभावकेप्राप्तकरणेहारे संस्कार उत्पन्नहोवैहैं ॥ तिनसंस्कारोंतैं पुनः देहादिकहोवैहैं ॥ इसप्रकार यहदेहहीसर्वकाकारणहै ॥ हेदेवतावो ! जैसे यहदेह सर्वका कारणहै ॥ तैसे यहइंद्रिय तथाभोगभी कर्मादिद्वारा सर्वसंघातकाकारणहैं ॥ तहां नेत्रादिकइंद्रियोंकेरूपादिकविषयोंविषे लंपटजे पुरुषहैं ॥ तिनपुरुषोंका कोईभीकर्म संपूर्णहोवैनहीं ॥ यातैं विषयोंतैंनिरोधकऱ्येहुएइंद्रियोंविषेही कर्मद्वारा सर्वसंघातकीकारण ताहोवैहै ॥ बहिर्मुखइंद्रियोंविषे साकारणताहोवैनहीं ॥ अब कर्मोंतैं सर्वकासंभव कथनकरेहैं ॥ हेदेवतावो ! पुण्यपापरूपकर्म करिकैयुक्तजोपुरुषहै ॥ सोपुरुषही तिनइंद्रियोंकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ तथा देहकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेभोगोंकूंप्राप्त होवैहै ॥ तापुण्यपापकर्मतैंविना यहपुरुष किसीभीपदार्थकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं तिनपुण्यपापकर्मोंतैंही तिनदेहादिकसर्वोंका संभवहोवैहै ॥ अब भोगोंतैं सर्वकासंभव निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो ! यालोकविषे जोपुरुष भोगीहोवैहै ॥ सोभोगीपुरुषही कर्मोंकेकरणेविषे समर्थहोवैहै ॥ तथा वशवर्तिइंद्रियोंसहितहोवैहै ॥ काहेतैं ? यालोकविषे सर्वप्रकारकेभोगोंके तथाभोग्यपदा र्थोंके अनुभवहुएतैंअनंतरही कर्मोंकेअनुष्ठानकीवृद्धि देखणेविषेआवैहै ॥ ताभोगोंके तथाभोग्यपदार्थोंके अनुभवतैंविना कर्मों केअनुष्ठानकीवृद्धि होवैनहीं ॥ काहेतैं ? यालोकविषे जोपुरुष जिसविषयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोपुरुष पुनः तिसीविषयकीइच्छाकरे

है ॥ ताइच्छाकीउत्पत्तितैंअनंतर सोपुरुष तिसीविषयकेप्राप्तिवासते कर्मोंकूंकरेहै ॥ जैसे यामनुष्योंनैं स्वर्गकीदेवांगना अनुभवकरीनहीं ॥ किंतु यामनुष्यलोककीस्त्रियां अनुभवकरीहैं ॥ यातैं यामनुष्योंकूं तिनदेवांगनावोंविषे इच्छाहोवैनहीं ॥ किंतु यामनुष्यलोककीस्त्रियोंविषेही इच्छाहोवैहै ॥ तथा श्वानोंनैं येमनुष्यस्त्रियां अनुभवकरींनहीं ॥ किंतु श्वानिणीस्त्रियां अनुभवकरीं हैं ॥ यातैं तिनश्वानोंकूं यामनुष्यस्त्रियोंविषे इच्छाहोवैनहीं ॥ किंतु तिनश्वानिणीस्त्रियोंविषेही इच्छाहोवैहै ॥ तथा स्वर्गवासीदेवतावोंनैं यामनुष्यलोककीस्त्रियां तथाअन्नपानादिकभोग्यपदार्थ अनुभवकन्येनहीं ॥ किंतु स्वर्गलोककीस्त्रियां तथा स्वर्गलोकके भोग्यपदार्थ अनुभवकरेहैं ॥ यातैं तिनदेवतावोंकूं यामनुष्यलोककीस्त्रियोंविषे तथाअन्नपानादिकभोग्यपदार्थोंविषे इच्छाहोवैनहीं ॥ किंतु तिनस्वर्गकीस्त्रियोंविषे तथाअन्नपानादिकभोग्यपदार्थोंविषेही इच्छाहोवैहै ॥ यातैं अन्वयव्यतिरेककरिकै यहभोगोंकाअनुभवही तिनभोगोंकीप्राप्तिकरणेहारे कर्मोंकेवृद्धिकाकारणहै ॥ और यहजीव जिनजिनभोगोंकूंअनुभवकरेहै ॥ तिनभोगोंविषे वैराग्यकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु दिनदिनविषे यहजीव तिनभोगोंविषेकुशलहोताजावैहै ॥ यहवार्त्ता योगभाष्यविषेभी कहीहै ॥ योगाभ्यासमनुविवर्द्धंतेकामःकौशलानिचेंद्रियाणां ॥ अर्थयह ॥ भोगोंकेअनुभवतैंअनंतर दिनदिनविषेकामना वृद्धिकूंप्राप्तहोतीजावैहैं ॥ तथा तिनभोगोंविषे इंद्रियोंकीकुशलताभी वृद्धिकूंप्राप्तहोतीजावैहै ॥ १ ॥ हेदेवतावो! अनेकभोगोंकेप्राप्तहुएभीकामना वृद्धिकूंहीप्राप्तहोवैहैं ॥ याअर्थविषे कामीपुरुष तथाबलवान्पुरुष तथाधनीपुरुषही दृष्टांतरूपहैं ॥ काहेतैं? यालोकविषे तेकामीबलवान्धनीपुरुष अनेकप्रकारकेभोगोंकूंप्राप्तहोइकै तिनभोगोंविषेकुशलहुए पुनःपुनः तिनभोगोंकीइच्छाकरतेहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ बहुतभोगोंकेप्राप्तहुए कामनाकीवृद्धिहीहोवैहै ॥ जैसे घृतकाष्ठादिकोंकेपावणेकरिकै अग्निकीवृद्धिहीहोवैहै ॥ हेदेवतावो! जैसे अनुभवकन्येहुएयहभोग स्वविषयकइच्छाकीउत्पत्तिद्वारा यदेहइंद्रियकर्मादिरूपसंसारकाकारणहोवैहैं ॥ तैसे अनुभवकूंप्राप्तहुए येदेहइंद्रियकर्मभी स्वविषयकइच्छाकीउत्पत्तिद्वारा यासंसारकेहीकारणहोवैहैं ॥ काहेतैं? यहजीवात्मा इच्छासंस्कारोंकरिकैयुक्त जिसजिसदेहादिकोंकूं रागपूर्वक सेवनकरेहै ॥ सोजीवात्मा ताइच्छासंस्कारोंकेवशतैं तिसीति

सीजातिवालेदेहादिकोंकूं अनेकवार प्राप्तहोवैहै ॥ हेदेवतावो! इसप्रकार देह इंद्रिय क्रिया भोग येचारों अनुभव इच्छा संस्कार यातीनोंकरिकैहीप्राप्तहोवैहैं ॥ यातें तेदेहादिक जन्मजन्मविषेवृद्धिकूंप्राप्तहुएभी यादेहतेंउत्तर पुनःयहहीदेहप्राप्तहोवैहै या प्रकारकेनियमकाविषयहोवैनहीं ॥ काहेतें? तिनदेहादिकोंकाकारणरूपजे अनुभवइच्छासंस्कारहैं ॥ तिनोंका कोईनियमहैनहीं तौ तिनोंकेदेहादिककार्योंकानियम किसप्रकारहोवैगा? किंतु सोनियमसंभवैनहीं ॥ और यहजीवात्मा इच्छासंस्कारोंकेवशतें पुनःतिसीजातिवालेदेहकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकहणेकातौ यहअभिप्रायहै ॥ याअनादिसंसारविषे याजीवनें पूर्वअनेकजातिवालेशरीरोंकाअनुभवकन्याहै ॥ तहां मरणकालविषे याजीवकूं पुण्यपापकर्मकेवशतें जिसजिसजातिवालेशरीरकेसंस्कार उद्बुद्धहोवैहैं ॥ मरणतेंउत्तर तिसीतिसीशरीरकूं यहजीव प्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे विस्तारतेंनिरूपणकरिआयेहैं ॥ हेदेवतावो! इंद्रिय क्रिया भोग यातीनोंकरिकैयुक्तजे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज येचारिप्रकारकेदेहहैं ॥ तेदेहतौ वटवृक्षकेसमानहैं ॥ और संस्कार वटबीजकेसमानहैं ॥ और तिनसर्वसंस्कारोंविषेस्थितजो सामान्यहै ॥ तासामान्यकूं वेदवेत्तापुरुष माया यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ कैसीहैसामाया? सर्वजगत्काकारणरूपहै ॥ तथा अनादिहै ॥ और हेदेवतावो! जैसे तिन वटबीजोंविषे तथाअंकुरोंविषे अनुगतजोसामान्यहै ॥ सोसामान्य नाशतेंरहितहै ॥ याकारणतेंही सोसामान्य कारणरूपहै ॥ और तासामान्यका विशेषरूपजेबीजअंकुरहैं ॥ तेबीजअंकुर तासामान्यरूपकारणतेंभिन्नहैंनहीं ॥ यातें सोसामान्य अद्वितीयरूपहै ॥ और परस्परकारणकार्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जेबीजअंकुरहैं ॥ तेबीजअंकुरदोनों नाशवान्हैं ॥ तैसे कारणकार्यरूपकरिकैप्रसिद्धजे संस्कारदेहहैं ॥ तिनदोनोंकेनाशहुएभी सामाया नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और हेदेवतावो! जैसे तावटबीजतें वटवृक्ष उत्पन्नहोवैहै ॥ और तावटवृक्षतें पुनः बीजउत्पन्नहोवैहै ॥ और तिसबीजतें पुनः वटवृक्ष उत्पन्नहोवैहै ॥ इसप्रकार प्रवाहरूपकरिकै तिनदोनोंका परस्परकार्यकारणभावहोवैहै ॥ तैसे संस्कारोंतेंदेहहोवैहै ॥ तादेहतें पुनःसंस्कारउत्पन्नहोवैहैं ॥ तिनसंस्कारोंतें पुनःदेहहोवैहै ॥ इस प्रकार प्रवाहरूपकरिकै तिनदोनोंका परस्पर कार्यकारणभावहोवैहै ॥ और हेदेवतावो! जैसे कारणकार्यरूपकरिकैप्रसिद्धजे वट

बीज तथावृक्ष येदोनोंहैं ॥ तिनदोनोंविषे पृथिवीकेअवयव अनुगतहोवैहैं ॥ और तिनअवयवोंविषे पृथिवी अनुगतहोवैहै ॥ सा पृथिवी वटबीजके तथावटवृक्षके नाशहुएभी प्रलयअग्नितेंविना नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे यादेहादिकोंविषे तथातिनदेहादिकों केकारणभूतसंस्कारादिकोंविषे अनुगतजामायाहै ॥ सामाया तिनदेहादिकोंकेनाशहुएभी ब्रह्मज्ञानरूपकालाग्नितेंविना नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जोमायाही सर्वकार्यरकणेविषेसमर्थहोवै तौब्रह्मकूं किसवासतेअंगीकारकरणा? याशंकाकीनिवृत्तिकरणेवासते मायाकास्वरूप तथाब्रह्मकास्वरूप भिन्नभिन्नकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेदेवतावो! सर्वकार्योंविषे तथासर्वकारणोंविषे अनुगतजोपरिणामभागहै ॥ तापरिणामभागकूं वेदवेत्तापुरुष माया यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ और तिनकार्यकारणदोनोंका तथातिनदोनोंविषेअनुगतपरिणामभागका प्रकाशकरणेहारा जोस्फुरणरूपसत्वस्तुहै ॥ तास्फुरणरूपसत्वस्तुकूं वेदवेत्तापुरुष ब्रह्म आत्मा यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ हेदेवतावो! यालोकविषे जितनेस्थूलसूक्ष्मपदार्थहैं ॥ तिनसर्वपदार्थोंविषे परिणामरूपकरिकैतौ मायाकाअनुगतपणा देखणेविषेआवैहै ॥ और सत्तारूपकरिकै ब्रह्मकाअनुगतपणा देखणेविषेआवैहै ॥ यातें सामाया तथाब्रह्म दोनोंजगत्केउपादानकारणहैं ॥ परंतु ब्रह्मतौ विवर्तउपादानकारणहै ॥ और माया परिणामीउपादानकारणहै ॥ अब माया ब्रह्म यादोनोंविषे स्पष्टकरिकै याजगत्कीकारणताका निरूपणकरैहैं ॥ हेदेवतावो! सर्वदाएकरूपसत्ताही जोकदाचित् यासर्वकार्योंविषे अनुगतहुईदिखाईदेवै तौ मायाकूं कारणरूपतानहींसिद्धहोवै ॥ परंतु याजगत्विषे केवलएकसत्ताकाहीअनुगतपणा दिखाइदेतानहीं ॥ किंतु सापरिणामरूपमायाभी अनुगतहुईप्रतीतहोवैहै ॥ और जोकदाचित् सापरिणामरूपमायाही केवल याजगत्विषेअनुगतहुईप्रतीतहोवै तौ तासत्तारूपब्रह्मकूं कारणतानहींसिद्धहोवै ॥ परंतु सापरिणामरूपमायाही केवल अनुगतहुईप्रतीतहोवैनहीं ॥ किंतु सोब्रह्मभी आपणेसत्तारूपकरिकै सर्वत्रअनुगतहुआप्रतीतहोवैहै ॥ यातें सोसत्तारूपब्रह्म तथामाया दोनोंही याजगत्काकारणहैं ॥ तापरिणामसामान्यरूपमायाका तथास्फुरणरूपसत्ब्रह्मका परस्परभेद विद्वान्पुरुषोंनें कथनकऱ्याहै ॥ यातें याजगत्कीकारणताविषे तामायाकीन्यांई ब्रह्मकूंभीअवश्यअंगीकारकऱ्याचाहिये ॥

अब जडविकारोंका ताकारणरूपमायाकेस्वरूपतें अभेद निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो! जैसे सर्ववटबीजोंविषेअनुगत जोसामा न्यहै ॥ सोसामान्य सर्वबीजोंविषे अनुगतसत्तारूपब्रह्मकाशक्तिरूपहुआ आपणेस्वरूपतेंअभिन्न नानाप्रकारकेवटवृक्षोंकूंउत्पन्नक रेहै ॥ तैसे ब्रह्मकीशक्तिरूप सापरिणामरूपमायाभी देहादिरूपअनेकविश्वकूंउत्पन्नकरेहै ॥ कैसाहैसोविश्व ? ताकारणरूपमाया तेंअभिन्नहै ॥ तथा बीजअंकुरकीन्यांई परस्पर कार्यकारणरूपहै ॥ अब परस्पर व्याप्यव्यापकरूपकरिकैस्थित जेमायाकेतीन स्वरूपहैं तिनोंकानिरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो! जैसे एकएकवटवृक्षविषेअनुगत कार्यशक्तिनामासामान्य भिन्नहै ॥ और एकए कवटबीजविषे अनुगत कारणशक्तिनामासामान्य भिन्नहै ॥ और वटवृक्ष तथावटबीज यादोनोंविषे समानरूपकरिकैअनुगत जो पृथिवीरूपसामान्यहै ॥ सो तृतीयसामान्यहै ॥ तहां जैसे वटवृक्ष तथावटबीज येदोनों परस्पर कारणरूपहैं ॥ तैसे तिनदोनोंवि षेअनुगतजो तीसरापृथिवीरूपसामान्यहै ॥ सोपृथिवीरूपसामान्यभी तिनदोनोंकाकारणरूपहै ॥ यातें सोतीसरासामान्यव्यर्थ नहींहै ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे सोपृथिवीरूपसामान्य वटबीजोंकेसंबंधकरिकै तथावटवृक्षोंकेसंबंधकरिकैतौ दोप्रकार काहुआ स्थितहोवैहै ॥ और वटबीज वटवृक्ष यादोनोंविषेअनुगतरूपताकरिकै सोसामान्य एकरूपहुआ स्थितहोवैहै ॥ तैसे सामायारूपशक्तिभी कार्यकेसंबंधकरिकै तथाकारणकेसंबंधकरिकैतौ दोप्रकारकीहुई स्थितहोवैहै ॥ और सर्वकार्य तथासर्वकारण यादोनोंविषेअनुगतहुईसामायाशक्ति एकरूपहुई स्थितहोवैहै ॥ हेदेवतावो! यहमाया यद्यपि व्यापकरूपकरिकैएकहीहै ॥ तथा पि यहमाया कार्यविषे तथाकारणविषे व्याप्तहोइकैस्थितहोवैहै ॥ याकारणतें सामाया भिन्नहुएकीन्यांई स्थितहोवैहै ॥ तहां सा एकहीमाया कार्यावच्छिन्नशक्तिरूपकरिकैतौ जीवकेभेदकाकारणहै ॥ और कारणावच्छिन्नशक्तिरूपकरिकै ईश्वरकेभेदकाकारणहै ॥ हेदेवतावो! जैसे एकहीभूमि घटरूपकूं तथागृहरूपकूं प्राप्तहोइकै घटाकाश गृहाकाश यादोनोंकेभेदकाहेतुहोवैहै ॥ तैसे यहएक हीमाया आपणेकार्यकारणदोनोंरूपकरिकै जीवईश्वरदोनोंकेभेदकाकारणहोवैहै ॥ और हेदेवतावो! जैसे साएकहीभूमि इला धात्री कुः पृथिवी धरणी क्षमा इत्यादिकअनेकनामोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सापरिणामरूपएकहीमाया शक्ति दुर्भणा अविद्या

तम मोह अज्ञान भ्रांति विपर्यय सनातनी इत्यादिकअनेकनामोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब तामायाकेचित्रत्वादिकविशेषणोंका निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो ! साजीवईश्वरकेभेदकरणेहारी परिणामसामान्यरूपमाया अत्यंतअद्भुतशरीरवालीहै ॥ तथा नानाप्रकारकेसंस्काररूपचित्रोंकरिकैयुक्तहै ॥ और जैसे रजकपुरुष वस्त्रोंकूं नानाप्रकारकेनीलपीतादिकचित्रोंकरिकैयुक्तकरेहै ॥ तैसे यह मायाभी याविचित्रप्रपंचकूं आपणेसंस्काररूपचित्रोंकरिकैउत्पन्नकरेहै ॥ अब तामायाकीदृढता वर्णनकरेहैं ॥ हेदेवतावो ! यहमाया आत्मज्ञानतैंविना नाशतेंरहितहोणेतें दृढकहीजावैहै ॥ काहेतें ? सर्वजगत्‌तैंउत्कृष्टजोईश्वरहै सोईश्वरभी यामायाकूं नाशकरिसकैनहीं ॥ जिसवासते सोईश्वर यामायाकृतबलकरिकैयुक्तहुआही याजगत्‌कीउत्पत्तिस्थितिलयकरणेकीसामर्थ्यरूपईश्वरताकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तामायातैंविना सोईश्वरपणा सिद्धहोवैनहीं ॥ ऐसीउपकारकरणेहारीमायाकूं सोईश्वर किसप्रकारनाशकरैगा ? किंतु सोईश्वर तामायाकूंनाशकरैनहीं ॥ हेदेवतावो ! यालोकविषे जेशास्त्रवेत्तापुरुषहैं ॥ तेशास्त्रवेत्तापुरुष यद्यपि यामायाकूंअनर्थकाकारणजानिकै नाशकरणेविषे समर्थहैं ॥ तथापि यामायानैं आपणेप्रभावतें तिनशास्त्रवेत्तापुरुषोंकेबुद्धिकूं स्त्रीपुत्रधनादिकविषयोंविषे तत्परकरिराख्याहै ॥ यातैं तेशास्त्रवेत्तापुरुषभी यामायाकूंनाशकरिसकतेनहीं ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते यामायाकूं महाअटवीरूपकरिकैवर्णनकरेहैं ॥ महान्‌वनकानाम महाअटवीहै ॥ हेदेवतावो ! यहमायारूपमहाअटवी नानाप्रकारकेचिदाभासरूपजीवोंकरिकैव्याप्तहै ॥ तथा पंचमहाभूतरूपवृक्षोंकरिकैपरिपूर्णहै ॥ तथा विषयोंविषेरागरूपजेस्नेहहैं ॥ तिनस्नेहरूपमूलोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा नानाप्रकारकेदुःखरूपफलोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा पुत्रस्त्रीआदिरूपपुष्पोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा मातापितादिरूपपल्लवोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा बांधवरूपीशाखावोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा मेरेकूंयहसुखप्राप्तहोवैगा याप्रकारकीदीर्घआशारूपबीजोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा मृत्युरूपदावाग्निकरिकैयुक्तहै ॥ और तामायारूपमहाअटवीकूंनाशकरणेहारी जाशमदमादिरूप विवेकराजाकीसेनाहै ॥ ताशमदमादिरूपसेनाकूंभक्षणकरणेहारीजा कामक्रोधादिरूप महामोहराजाकीसेनाहै ॥ तिनकामक्रोधादिरूपसिंहोंकरिकैपूर्णहै ॥ तथा दुर्जनपुरुषरूपीसर्पकंटकोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा नारीरूपपिशाचोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा जन्ममरणादिकवृश्चिकोंकरिकैयु

क्तहै ॥ ऐसीमायारूपमहाअटवीकूं यद्यपि शास्त्रवेत्तापुरुष ध्यानयोगादिकउपायोंकरिकै नाशकरणेविषेसमर्थहैं ॥ तथापि यामाया रूपअटवीनैं तेशास्त्रवेत्तापुरुष स्त्रीपुत्रादिकोंकेदीनताकूंप्राप्तकरेहैं ॥ यातैं तेशास्त्रवेत्तापुरुषभी यामायारूपमहाअटवीकूंनाशकरणे विषेसमर्थहोतेनहीं ॥ हेदेवतावो! भद्र मंद्र मृग याभेदकरिकै तीनप्रकारकेहस्तीहोवैहैं ॥ तिनतीनोंप्रकारकेहस्तियोंविषे भद्रजाति वालाहस्ती महाबलवान्होवैहै॥ तथा श्रेष्ठलक्षणोंकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ तथा सर्वतैंनिर्भयहोवैहै ॥ सोभद्रजातिवालाहस्ती जैसे महान् वनकेनाशकरणेविषेसमर्थहोवैहै ॥ तैसे यहब्रह्मवेत्तारूपभद्रहस्तीभी यामायारूपमहाअटवीकेनाशकरणेविषे समर्थहोवैहै ॥ परंतु ऐसाब्रह्मवेत्तापुरुष यालोकविषे कोईविरलाहीहोवैहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष यामायाकूं दृढा यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ अब तामायाके बहुअंकुरत्व गुणभिन्नत्व सर्वत्रब्रह्मादिव्याप्तत्व यातीनधर्मोंकानिरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो! नानाप्रकारकेभावीशरीरों कीप्राप्तिकरणेहारी जेमरणकालकीअनेकवासनाहैं ॥ तावासनारूपअंकुरोंकरिकै सामायारूपअटवीयुक्तहै ॥ तथा सत्व रज तम यात्रिगुणात्मकपदार्थोंकरिकै नानाप्रकारकीहुई स्थितहै ॥ हेदेवतावो! जैसे यालोकप्रसिद्धमहान्वनविषे केईकमहान्वृक्षहोवै हैं ॥ तैसे यामायारूपमहाअटवीविषे ब्रह्मा विष्णु शिव येतीन महान्वृक्षस्थितहैं ॥ कैसेहैंतेवृक्ष? ॥ सर्वत्रव्यापकहैं ॥ तथा अनेकप्रकारकेफलोंकीप्राप्तिकरिकै यासर्वजीवोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ और यामायारूपमहाअटवीतैंबाह्यनिकसणेविषे समर्थ जोविद्वान्रूपभद्रहस्तीहै ॥ सोब्रह्मवेत्तारूपभद्रहस्ती जोकदाचित् कामक्रोधादिरूपसिंहोंतैं तथामृत्युरूपदावाग्नितैं भय भीतहुआभागै तौ सोब्रह्मवेत्तारूपभद्रहस्ती ब्रह्मा विष्णु शिव यातीनवृक्षोंविषे किसीएकवृक्षकूंआश्रयणकरै ॥ तहां तिनब्रह्मा दिकदेवतावोंकीजोउपासनाकरणीहै यहही तिनोंकाआश्रयणकरणाहै ॥ तिनब्रह्मादिकवृक्षोंकेआश्रयणकरणेकेप्रभावतैं यहविद्वान् पुरुष तिनकामक्रोधादिजन्यसर्वतापोंतैंरहितहोवैहै ॥ हेदेवतावो! अद्वितीयरूप जेयेब्रह्मादिकतीनवृक्षहैं ॥ तिनब्रह्मादिकतीन वृक्षोंविषे यहकामक्रोधादिकसिंह तथामृत्युरूपदावाग्नि तथादेहाभिमानीदुर्जनमनुष्य येसर्व प्रवेशकरणेविषेसमर्थहोवैंनहीं ॥ का हेतैं? देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित जोतिनब्रह्मादिकदेवतावोंकास्वरूपहै ॥ तापरिपूर्णस्वरूपतैं यहपरिच्छिन्नकामक्रोधादिक सर्वदा

भयकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं तिनब्रह्मादिकवृक्षोंकेसमीपजाइसकैनहीं ॥ हेदेवतावो! जैसे लोकप्रसिद्धवृक्षोंऊपरिलताहोवै
है ॥ तैसे ब्रह्मारूपवृक्षविषेतौ सरस्वतीरूपलताहै ॥ और विष्णुरूपवृक्षविषे लक्ष्मीरूपलताहै ॥ और शिवरूपवृक्षविषे भवानीरूपल
ताहै ॥ और ब्रह्मारूपवृक्षतौ सुवर्णकेसमानवर्णवालाहै ॥ और विष्णुरूपवृक्ष तमालकीन्यांई श्यामवर्णवालाहै ॥ और शिवरूपवृ
क्ष क्षीरकेसमानशुक्लवर्णवालाहै ॥ तेब्रह्मादिकतीनोंवृक्ष देखणेहारेपुरुषोंकेमनकूं तथानेत्रोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ और
ताब्रह्मारूपवृक्षकीलतारूपसरस्वतीतौ श्वेतवर्णवालीहै ॥ और विष्णुरूपवृक्षकीलतारूपलक्ष्मी पीतवर्णवालीहै ॥ और शिवरू
पवृक्षकीलतारूपभवानी श्यामवर्णवालीहै ॥ और हेदेवतावो! ब्रह्मा विष्णु शिव येतीनवृक्ष तथा सरस्वती लक्ष्मी भवानी
येतीनलता निर्विशेषरूपकरिकैतौ सर्ववर्णोंतैंरहितहैं ॥ और सर्वविश्वरूपहोणेतैं सर्ववर्णवालेभीहैं ॥ और दंभयुक्तपुरुषोंकेप्र
तितौ फलतैंरहितहैं ॥ और शरणागतभक्तजनोंकेप्रति नानाप्रकारकेफलोंसहितहैं ॥ और अनादिहोणेतैंतौ बीजतैंरहितहैं ॥
और मंत्ररूपबीजवालेहोणेतैं सबीजहैं ॥ तथा आदिअंततैंरहितहैं ॥ तथा सर्वप्रपंचकाबीजरूपहैं ॥ तथा नित्यहैं ॥ पुनःकैसे
हैंतेब्रह्मादिकवृक्ष? आपणेआश्रितभक्तजनोंके संसारतापकीनिवृत्तिकरणेहारेहैं ॥ तथा मनवांछितरूपोंकूंधारणकरणेहारेहैं ॥
तथा महान्पदार्थोंकीगिणतिविषे अत्यंतमहान्हैं ॥ तथा सूक्ष्मपदार्थोंकीगिणतिविषे अत्यंतसूक्ष्महैं ॥ हेदेवतावो! यद्यपि यह
अविद्यारूपमहाअटवी याजीवोंकूं महान्दुःखोंकीप्राप्तिकरेहै ॥ तथापि जिसब्रह्मवेत्तारूपभद्रहस्तीनैं याब्रह्मादिरूपवृक्षोंकेछाया
कूंआश्रयणकर्‍याहै ॥ ताब्रह्मवेत्तापुरुषकूं साअविद्यारूपमहाअटवी दुःखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ हेदेवतावो! यहलतावोंसहितब्रह्मा
दिकवृक्ष आपणेचैतन्यरूपप्रकाशकरिकै प्रकाशमानहुए सर्वजगत्कूंप्रकाशकरेहैं ॥ यातैं तिनस्वयंप्रकाशरूपवृक्षोंकेशरणकूंप्रा
प्तहुआ यहपुरुष अज्ञानरूपअंधकारतैंरहितहोवैहै ॥ हेदेवतावो! येब्रह्मादिकतीनवृक्ष स्वभावतैंतौ स्वप्रकाशरूपहैं ॥ तथा आनं
दस्वरूपहैं ॥ परंतु पुरुषोंकीभावनाकेअनुसार जंगमरूपहोवैहैं ॥ तथा स्थावररूपहोवैहैं ॥ और धर्म अर्थ काम मोक्ष याचारिप्र
कारकेपुरुषार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरिकै आराधनकरणेहारेजेभक्तजनहैं ॥ तिनभक्तजनोंकेप्रति ताचारिप्रकारकेपुरुषार्थोंकीप्राप्ति

करणेहारेहैं ॥ हेदेवतावो! याब्रह्मादिकतीनवृक्षोंकूं तथासरस्वतीआदिकतीनलतावोंकूं जोपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वक आश्रयणकरेहै ॥
सोपुरुष कदाचित्भी दुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तिनब्रह्मादिकतीनवृक्षोंकूं कल्पवृक्ष यानामकरिकेंकथनकरे
हैं ॥ और तिनसरस्वतीआदिकतीनलतावोंकूं कल्पलता यानामकरिकेंकथनकरेहैं ॥ यातें हेदेवतावो! यामायारूपमहाअटवीविषे
हैउत्पत्तिजिसकी तथाब्रह्मज्ञानरूपहैशुंढजिसका ऐसाजो यहब्रह्मवेत्तारूपभद्रहस्ती है॥ सोब्रह्मवेत्तारूपभद्रहस्ती यास्नेहरूपीदृढमू
लवालीअविद्यारूपमहाअटवीकूं अवश्यकरिकेंनाशकरै ॥ और सोब्रह्मवेत्तारूपभद्रहस्ती जबपर्यंत आपणेब्रह्मज्ञानरूपशुंढकूं बा
लभावकरिकें तथाकामक्रोधादिरूपसिंहकृतउपद्रवकरिकें दुर्बलदेखै ॥ तबपर्यंत सोब्रह्मवेत्तारूपहस्ती याब्रह्मादिकतीनवृक्षोंकूं आ
श्रयणकरिकेंस्थितहोवै ॥ तिनब्रह्मादिकवृक्षोंका कदाचित्भी परित्यागनहींकरै ॥ हेदेवतावो! यामायारूपमहाअटवीविषे यहब्रह्मा
विष्णुशिवरूपतीनवृक्ष यासर्वविश्वकूंव्याप्तकरिकेंरहेहैं ॥ और तिनोंकेस्वभावकाभी सर्वत्रअनुगतपणा प्रतीतहोवैहै ॥ याकारणतेंही
यहसर्वजगत् अधिदैव अध्यात्म अधिभूत यातीनरूपकरिकेंउत्पन्नहुआहै ॥ तहां सर्वजगत्विषे जोस्रष्टापणाहै सोब्रह्माकास्वभावहै ॥
और पालकत्वधर्म विष्णुकास्वभावहै ॥ और संहारकर्तृत्व रुद्रकास्वभावहै ॥ हेदेवतावो! जामाया ब्रह्मा विष्णु रुद्र यातीनोंकेसंबं
धकरिकें तथा सत्व रज तम यातीनोंगुणोंकरिकें तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ तामायाकेसंबंधकरिकें यहआत्मादेवभी कर्त्ता पालक संह
र्ता यातीनरूपोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा जाग्रदादिकतीनअवस्थारूपसंसारविषे अहंममअभिमानकूंकरेहै ॥ और सोआत्मादेवही सम
ष्टिस्थूलउपाधिकेसंबंधतें विराट्संज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और समष्टिसूक्ष्मउपाधिकेसंबंधतें सोआत्मादेव हिरण्यगर्भसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै
है ॥ और समष्टिकारणउपाधिकेसंबंधतें सोआत्मादेव ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब हिरण्यगर्भभगवान्विषे जीवरूपता तथाई
श्वररूपता सिद्धकरणेवासते ताहिरण्यगर्भकूं अध्यात्मअधिदैवरूपकरिकेंवर्णनकरेहैं ॥ हेदेवतावो! जिसहिरण्यगर्भभगवान्के ॥३०॥
विश्व तैजस प्राज्ञ येअध्यात्मतीनभेदहैं ॥ सोहिरण्यगर्भभगवान्ही समष्टिजाग्रत्विषेस्थितहुआ अधिदैवरूपविराट् कह्याजावै
है ॥ और व्यष्टिस्थूलशरीरोंकेअभिमानकरिकें सोहिरण्यगर्भभगवान् विश्वसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और विविधप्रकारतेंविराजमा

नहोणेतैं विराट्संज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और समष्टिसूक्ष्मविषे अहंअभिमानकरताहुआ सोआत्मादेव हिरण्यगर्भसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तेजोप्रधानव्यष्टिसूक्ष्मशरीरकेअभिमानतैं सोआत्मादेव तैजससंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और केवलअज्ञानविषे अहंअभिमान करताहुआ सोआत्मादेव निर्विक्षेपसाक्षीरूपज्ञानवालाहोणेतैं प्राज्ञसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा सर्वविश्वकाकारणहोणेतैं ईश्वरसंज्ञा कूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेदेवतावो ! जोआत्मादेव अधिदैवमर्यादाविषे हिरण्यगर्भ यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ सोहिरण्यगर्भरूपआ त्मादेव यासर्वजगत्विषे अहंअभिमानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोकारणउपाधिवाला आत्मादेव अधिदैवईश्वररूपकरिकै कथनक ऱ्याहै ॥ सोईहीआत्मादेव यासर्वजगतकूं आपणीआपणी मर्यादाविषेस्थापनकरेहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताआत्मादेवकूंनि यंता अंतर्यामी यानामकरिकैकथनकरेहै ॥ हेदेवतावो ! जैसे कारणउपाधिवालाईश्वर अध्यात्म अधिदैव अधिभूत यातीनरूपों करिकैस्थितहोवैहै ॥ तैसे यहकार्यउपाधिवाला हिरण्यगर्भनामाजीवभी सर्वत्रव्यापकहोणेतैं अध्यात्म अधिदैव अधिभूत यातीन रूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ और जैसे सोईश्वर स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपहै ॥ तथा सर्वत्रव्यापकहै ॥ तैसे यहहिरण्यगर्भभी स्वयंज्यो तिआनंदस्वरूपहै ॥ तथा सर्वत्रव्यापकहै ॥ यातैं यहहिरण्यगर्भ ताईश्वररूपहीहै ॥ यद्यपि यहहिरण्यगर्भ क्रियाशक्तिरूपप्राणवा लाहै ॥ तथा ज्ञानशक्तिरूपबुद्धिवालाहै ॥ ईश्वर ताप्राणबुद्धिरूपउपाधिवालाहैनहीं ॥ यातैं तिनदोनोंकीविलक्षणताभी संभवैहै ॥ तथापि यहहिरण्यगर्भभगवान् स्वतःसिद्धज्ञानकरिकै आपणेस्वरूपकूं सर्वउपाधियोंतैंरहित निर्विशेषस्वरूपहीमानेहै ॥ यातैं या हिरण्यगर्भविषे ईश्वररूपता संभवहोइसकैहै ॥ हेदेवतावो ! जोचेतन मायारूपउपाधिकेसंबंधतैं ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोई श्वररूपचेतनही ज्ञानशक्तिरूप तथाक्रियाशक्तिरूप उपाधिवालाहुआ हिरण्यगर्भकह्याजावैहै ॥ जिसहिरण्यगर्भविषे मायाकरिकै कऱ्याहुआ अनेकप्रकारकाविक्षेप प्रतीतहोवैहै ॥ याकारणतैंभी सोहिरण्यगर्भ ईश्वररूपहीहै ॥ अब दोनोंउपाधियोंकेअभेदद्वारा भीतिनदोनोंकाअभेद निरूपणकरेहै ॥ हेदेवतावो ! सामायाही आत्माकूंआवरणकरतीहुई अविद्याकहीजावैहै ॥ जिसअविद्यारू पमायातैं ज्ञान क्रिया दोनोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तिनदोनोंकीउत्पत्तिकरिकै यासर्वजगत्कीउत्पत्तिहोवैहै ॥ काहेतैं ? पंचभूतोंसहित

प्राणबुद्धिआदिकजितनेकीपदार्थ विश्वशब्दकरिकैकथनकन्येजावैहैं ॥ तेसर्वपदार्थ ज्ञानक्रियाशक्तिरूपहीहैं ॥ ज्ञानकूं अथवाक्रि
याकूं नहींउत्पन्नकरताहुआ कोईभीपदार्थ देखणेविषेआवतानहीं ॥ और सर्वपरिणामोंविषेअनुगतजोसामान्यहै ॥ तासामान्यकूं
पूर्व अविद्या यानामकरिकैकथनकरिआयेहैं ॥ सामायारूपअविद्याही ईश्वरकीउपाधिहै ॥ और तासामान्यरूपमायाकाकार्यरूप
जोज्ञानक्रियाहै ॥ ताज्ञानक्रियाविषेअनुगतजोकार्यशक्तिहै ॥ साकार्यशक्ति हिरण्यगर्भकीउपाधिहै ॥ और यालोकविषे मृत्तिका
दिककारणोंका तथाघटादिककार्योंका अभेदहीदेखणेविषेआवैहै ॥ यातें तामायारूपईश्वरकेउपाधिका तथाकार्यशक्तिरूपहिरण्य
गर्भकेउपाधिका अभेदहीसिद्धहोवैहै ॥ तिनउपाधियोंकेअभेदहुए ताईश्वरहिरण्यगर्भकाभी अभेदहीसिद्धहोवैहै ॥ **शंका** ॥ हे
भगवन्! यापूर्वउक्तरीतिसैं हिरण्यगर्भकी परमात्माकेसाथ एकतासिद्धहुएभी व्यष्टिजीवोंकी तापरमात्माकेसाथ एकता किस
प्रकारसिद्धहोवैगी? ॥ **समाधान** ॥ हेदेवतावो! ताहिरण्यगर्भकाउपाधिरूप जोसमष्टिलिंगशरीरहै ॥ तालिंगशरीरकेतुल्यहै रू
पजिसका तथा नानासंस्कारोंकाआश्रयहोणेतें विचित्रहैरूपजिसका तथामायातैंहैउत्पत्तिजिसकी ऐसाजो अनेकप्रकारकालिंग
शरीरहै ॥ सोलिंगशरीर याव्यष्टिजीवोंका उपाधिरूपहै ॥ और जैसे वटवृक्षोंविषेस्थित तथावटबीजोंविषेस्थितजो जनकतारू
पसामान्यहै ॥ सोजनकतारूपसामान्य एकएकव्यक्तिविषे परिपूर्णतारूपकरिकैवर्तेहै ॥ तैसे यहअविद्यारूपमायाभी हिरण्यगर्भ
के समष्टिसूक्ष्मउपाधिविषे तथाजीवोंके ज्ञानक्रियाशक्तिरूपव्यष्टिउपाधिविषे परिपूर्णतारूपकरिकैवर्तेहै ॥ जैसे मृत्तिका आपणे
घटशरावादिकसर्वकार्योंविषे अनुगतहोइकैरहेहै तैसे यहईश्वरकीउपाधिरूपमायाभी अधिदैवअधिभूतरूपबाह्यप्रपंचविषे तथा
अध्यात्मरूपअंतरप्रपंचविषे अनुगतहोइकैरहेहै ॥ याकहणेतैंयहअर्थसिद्धभया ॥ व्यष्टिसमष्टिरूपसर्वउपाधियोंका सर्वशक्तिसंप
न्नमायाकेसाथतादात्म्यसंबंधहै ॥ यातैं तेसर्वउपाधियां सर्वरूपहैं ॥ यातैं जैसे उपाधियोंकेअभेदद्वारा ताहिरण्यगर्भका परमात्मा
केसाथअभेदहै ॥ तैसे तिनव्यष्टिजीवोंकाभी तापरमात्माकेसाथ अभेदहीहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अविद्यारूपउपाधिविषे तथाउपहितचे
तनआत्माविषे जबी भेदसिद्धनहींभया ॥ तबी व्यष्टिजीवोंविषे तथाताजीवकीकार्यरूपउपाधिविषे सोभेद किसनिमित्तकरिकैसिद्ध

होवैगा ॥ किंतु किसीभीनिमित्तकरिकै सोभेद संभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! जोव्यष्टिसमष्टिका अभेदहीहोवै तौ व्यष्टिविषे परिच्छिन्नता किसवासतेप्रतीतहोवैहै ? ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ! जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंकूंप्राप्तहोणेहारेजे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज येचारिप्रकारकेजीवहैं ॥ तेसर्वजीव वास्तवतैं हिरण्यगर्भरूपईश्वरकेतुल्यरूपवालेहुए यद्यपि महान्पदार्थोंतैंभी अत्यंतमहान्हैं ॥ तथापि परिच्छिन्नबुद्धिआदिकोंकेयोगतैं तेजीव परिच्छिन्नहुएकीन्यांई प्रतीतहोवैहैं ॥ जैसे वास्तवतैंपरिपूर्णहुआभीआकाश घटमठादिकउपाधियोंकेसंबंधतैं घटाकाश मठाकाश इत्यादिकपरिच्छिन्नरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ हेदेवतावो ! जोसत्चित्आनंदस्वरूपआत्मा हमनैं पूर्व तुमारेप्रति कथनकऱ्याथा ॥ सोईहीआत्मादेव हिरण्यगर्भरूपहोइकैस्थूलविराट्कूंउत्पन्नकरैहै ॥ तथा अग्निआदिकदेवतावोंसहित वाकादिकइंद्रियोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तथा आकाशादिकपंचभूतोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तथा अन्नमयादिकपंचकोशोंकूंउत्पन्नकरै है ॥ इसप्रकार सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरिकै सोआत्मादेवही जीवरूपकरिकै याजगत्विषेप्रवेशकरताभयाहै ॥ ताप्रवेशतैंअनंतर तिनदेहादिकोंविषे अहंममअभिधानरूपकंचुककरिकै युक्तहुआ सोस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्मा वास्तवतैंसर्वज्ञहुआभीमूढकीन्यांई स्थितहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर स्थूलादिकतीनशरीरोंविषेवर्तमानजे नानाप्रकारकेव्यवहारहैं ॥ तिनव्यवहारोंकूं साक्षीरूपकरिकैदेखताहुआभी तिनव्यवहारोंकूं आपणेआत्माविषेमानैहै ॥ हेदेवतावो ! वास्तवतैं जीवईश्वरादिकभेदतैंरहित जोआत्मादेवहै ॥ ताआत्मादेवविषे जोयहजीवईश्वरादिकभेद प्रतीतहोवैहै ॥ ताभेदविषे यहमायाहीकारणहै ॥ कैसीहैसामाया ? चेतनकेअधीनहै ॥ तथा अनादिहै ॥ तथा अधिष्ठानकीसत्तातैंभिन्नसत्तातैंरहित है ॥ तथा वास्तवतैं तुच्छरूपहै ॥ ऐसीमिथ्याभूतमायाकरिकै प्रतीतभयाजोजीवईश्वरादिकभेदहै ॥ सोभेदप्रपंचभी मिथ्याही है ॥ अब प्रपंचकेमिथ्यात्ववर्णनकरिकै आत्माविषेसिद्धभयेजे अद्वितीयत्वादिकलक्षण तिनोंकावर्णनकरैहैं ॥ हेदेवतावो ! सोभेद यातुच्छरूपमायाकाकार्यहै ॥ यातैं याआत्मादेवविषे सोकिंचित्मात्रभीभेदहैनहीं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं अद्वितीय यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ हेदेवतावो ! जैसे स्वप्नअवस्थाविषे स्वप्नद्रष्टापुरुषनैं देख्याजो जीवईश्वरादिरूपअनेकप्र

कारकाभेदहै ॥ ताकल्पितभेदकरिकै तास्वप्नद्रष्टापुरुषका किंचित्मात्रभीभेदहोवैनहीं ॥ तैसे मायाकल्पितभेदकरिकै ताअद्विती
यआत्माविषे किंचित्मात्रभी द्वैतभावकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ हेदेवतावो ! याआत्माके जेसत्चित्आनंदस्वरूपहैं ॥ तिनसत्यादिक
स्वरूपोंकातौ परस्पर भेदसंभवैनहीं ॥ तथा पूर्वउक्तरीतिसैं कल्पितप्रपंचकाभी ताआत्माविषे भेदसंभवैनहीं ॥ याकारणतैं सो
आत्मादेव अद्वितीयरूपहै ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा अद्वितीयरूपहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव सत्यरूपहै ॥ और हेदेव
तावो ! किसीभीवादीनैं सत्ताकानाश अंगीकारकर्‌यानहीं ॥ किंतु सर्ववादी तासत्ताकूं नाशतैंरहितमानैहैं ॥ और जेनास्ति
कवादी सत्पदार्थकूं क्षणिकमानेहैं ॥ तेनास्तिकवादीभी तासत्ताकेआश्रयरूपपदार्थोंकूंही क्षणिकमानेहैं ॥ तिनसर्वपदार्थोंविषे
अनुगतसत्ताकूं क्षणिकमानैंनहीं ॥ यातैं नाशकेकारणोंतैंरहित तासत्तारूपआत्मादेवकूं वेदवेत्तापुरुष नित्य यानामकरिकैकथन
करेहैं ॥ और हेदेवतावो ! यालोकविषे जोजोपदार्थ जडतारूपकरिकै अशुद्धहोवैहै ॥ सोसोपदार्थही नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे
घटादिकजडपदार्थ अशुद्धहोणेतैं नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और यहआत्मादेवतौ तिनजडघटादिकोंतैंविलक्षणचेतनरूपहै ॥ यातैं यह
आत्मादेव नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं शुद्ध यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और हेदेवतावो ! य
हआनंदस्वरूपआत्मा आपणेस्वयंप्रकाशरूपकरिकै सर्वदा आपणेस्वरूपकूंअनुभवकरेहै ॥ यातैं यहआत्मादेव जडअशुद्धरूप जग
त्‌तैं विलक्षणहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं बुद्ध यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और हेदेवतावो ! यालोकविषे जोजो
पदार्थ मिथ्यारूपहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ आनंदतैंभिन्नहीहोवैहै ॥ जैसे मिथ्यारूपशुक्तिरजत आनंदतैंभिन्नहै ॥ और यहआत्मादेव
तौ स्वयंज्योतिरूपहोणेतैं तिनमिथ्यापदार्थोंतैंविलक्षण आनंदस्वरूपहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं सत्य यानाम
करिकैकथनकरेहैं ॥ और हेदेवतावो ! यालोकविषे जोजोपदार्थ सत्यहोवैहै ॥ सोसत्यपदार्थ आपणेविषेकल्पितमिथ्यापदार्थों
करिकै बंधायमानहोवैनहीं ॥ जैसे एकहीरज्जुविषे दोषयुक्तअनेकद्रष्टापुरुषोंनैं कल्पनाकर्‌येजेअनेकसर्पहैं ॥ तिनअनेकमिथ्या
सर्पोंकरिकै सासत्यरज्जु बंधायमानहोवैनहीं ॥ तैसे सोसत्यआत्माभी आपणेविषेकल्पितमिथ्याजगत्‌करिकै बंधायमानहोवै

नहीं ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष तासत्यआत्माकूं मुक्त यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और हेदेवतावो! उत्पन्नहुएबंधका जोकार णहोवैहै ॥ ताकूं अंजनकहेहैं ॥ जैसे सर्पकेबंधनकाकारणहोणेतें रज्जु अंजनरूपहै॥ और याआत्मादेवविषे कदाचित्भी बंधहु आनहीं ॥ यातें याआत्मादेवविषे ताबंधकेनिवृत्तकरणेहारेसाधनोंका किंचित्मात्रभीउपयोगहैनहीं ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष यानित्यमुक्तआत्मादेवकूं निरंजन यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और हेदेवतावो! यालोकविषे जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवैहै ॥ सो सोपदार्थपरिच्छिन्नहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ कार्यरूपहोणेतें परिच्छिन्नहैं ॥ और यहआत्मादेव कार्यरूपहैनहीं ॥ यातें याआ त्मादेवविषे परिच्छिन्नरूपताभी संभवैनहीं ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं विभु यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ और हे देवतावो! यालोकविषे जोजोपदार्थ अधिष्ठानहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ आरोपितपदार्थोंतें उत्कृष्टहीहोवैहै ॥ जैसे रज्जुशुक्तिआदिक अधिष्ठानआरोपितसर्परजतादिकोंतें उत्कृष्टहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माभी यासर्वजगत्काअधिष्ठानरूपहै ॥ यातें यहआत्मादेव ताआरोपितजगत्तें उत्कृष्टहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं पर यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और हे देवतावो! जैसे बाह्यघटादिकपदार्थोंकीअपेक्षाकरिकै नेत्र अंतरहैं ॥ तैसे बुद्धिआदिकदृश्यपदार्थोंकीअपेक्षाकरिकै यहद्रष्टाआ त्मा सर्वतेंअंतरहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं प्रत्यक् यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और हेदेवतावो! जैसे नीलपी तादिकअनेकवर्णोंवालीगौवोंकाक्षीर मधुरतारूपकरिकै एकरसहोवैहै ॥ तैसे यहआत्मादेवभी सत्चित्आनंदस्वरूपकरिकैसर्वत्र परिपूर्णहै ॥ तथा तेसत्चित्आनंदरूपभी परस्परभेदतेंरहितहैं॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं एकरस यानामकरिकै कथनकरेहैं ॥ हेदेवतावो! यहआनंदस्वरूपआत्मादेव स्फुरणरूपहै ॥ यातें पूर्वउक्त अद्वितीय यानामतेंआदिलैके एकरस याना मपर्यंत सर्वनामोंकरिकै सोआत्मादेवही जान्याजावैहै ॥ तथा दृश्यपदार्थोंकूंविषयकरणेहारे जेस्फुरणरूपबोधहैं ॥ तिनबोधोंक रिकैभी सोआत्मादेवही जान्याजावैहै ॥ तथा प्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणोंकरिकैभी सोआत्मादेवही जान्याजावैहै ॥ अब याही अर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो! प्रमाज्ञानकाजोकरणहोवैहै ॥ तिसीकूंही सर्ववादी प्रमाणकहेहैं ॥ और

बहुतशास्त्रवालेतौ ताप्रमाज्ञानकूं स्फुरणरूपमानेहैं ॥ और कोईकशास्त्रवालेतौ तास्फुरणकाअभिव्यंजक जाअंतःकरणकीवृत्तिहै ॥ तावृत्तिकूंही प्रमाज्ञानमानेहैं ॥ तादोनोंप्रकारसैं तिनप्रमाणोंका स्फुरणकेसाथसंबंध अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ और सर्वकालविषेवर्तमानजोस्फुरणहै ॥ सोस्फुरणही सत्तारूपहै ॥ यहवार्त्ता पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ यातैं सर्वबोधोंविषे सत्तारूपकरिकैभासमानजो स्फुरणहै ॥ सोस्फुरणही आवरणकीनिवृत्तिकरणेहारीवृत्तियोंकाविषयहै ॥ काहेतैं? सत्तामात्रंसर्वं॥ याश्रुतिनैं तासत्तारूपस्फुरणतैंभिन्नसर्ववस्तुवोंकाअभाव कथनकऱ्याहै ॥ यातैं तासत्तारूपस्फुरणतैंभिन्न घटपटादिकपदार्थोंविषे किसीभीज्ञानकूं नियमकरिकैप्रमाणरूपता अथवा अप्रमाणरूपता कहीजावैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ अयंघटः ॥ याप्रकारकाजोघटविषयकज्ञानहै ॥ सोज्ञान सर्वघटव्यक्तियोंकूंतौ विषयकरैनहीं ॥ किंतु किसीकघटविशेषकूंनहींविषयकरताहुआ किसीकघटविशेषकूंविषयकरैहै ॥ यातैं ताघटज्ञानविषे अर्थबोधकत्व तथाअर्थअबोधकत्व येदोनोंधर्मरहेहैं ॥ तहां अर्थबोधकत्वधर्मतौ प्रमाणरूपताका साधकहै ॥ और अर्थअबोधकत्वधर्म अप्रमाणरूपताका साधकहै ॥ तेदोनोंधर्म परस्परविरोधीहैं ॥ यातैं तिनज्ञानोंविषे नियमकरिकै प्रमाणरूपताका अथवा अप्रमाणरूपताका निश्चयहोणेदेवैनहीं ॥ यातैं जैसे मीमांसकोंकेमतविषे परस्परव्यभिचारी घटादिकव्यक्तियां घटादिकशब्दोंकावाच्यअर्थ होवैनहीं ॥ किंतु तिनघटादिकसर्वव्यक्तियोंविषेअनुगत जेघटत्वादिकजातियांहैं ॥ तेघटत्वादिकजातियांही तिनघटादिकपदोंकावाच्यअर्थहै ॥ तैसे सिद्धांतविषेभी परस्परव्यभिचारीघटादिकव्यक्तियां तिनज्ञानोंकाविषयनहीं हैं ॥ किंतु सर्वत्रअनुगतसत्तारूपस्फुरणही तिनज्ञानोंकाविषयहै ॥ किंवा जेप्रत्यक्षादिकप्रमाण जिसअर्थविषयक निश्चयरूपज्ञानकूं उत्पन्नकरेहैं ॥ तिसीअर्थविषे तिनप्रत्यक्षादिकोंकीप्रमाणरूपता सर्ववादियोंनैं अंगीकारकरीहै ॥ और घटोऽस्ति पटोऽस्ति इत्यादिक सर्वज्ञानोंविषे घटपटादिउपलक्षितसत्ताही प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सर्वलोकोंके प्रमारूपकरिकै तथाअप्रमारूपकरिकै प्रसिद्ध जितनेज्ञानहैं ॥ तेसर्वज्ञान तासत्तामात्रकूंहीविषयकरैहैं ॥ यातैं तिनसर्वबोधोंकूं तास्फुरणरूपसत्ताविषेही प्रमाणरूपताहै ॥ यहवार्त्ता वार्तिककार सुरेश्वराचार्यनैंभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ततोऽनुभवएवैको विषयोऽज्ञातलक्षणः ॥ अक्षादीनांस्वविषये

यत्रतेषाप्रमाणता ॥ अर्थयह ॥ स्फुरणरूपसत्ताही अज्ञानकाआश्रयविषयहोणेतैं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकाविषयहै ॥ जिसवासते तास्फुरणरूपसत्ताकेबोधनकरिकैही तिनप्रत्यक्षादिकोंकूं प्रमाणताकीप्राप्तिहोवैहै ॥ अनात्मपदार्थोंकेबोधनकरिकै तिनप्रत्यक्षादिकोंकूंप्रमाणताप्राप्तहोवैनहीं ॥ १ ॥ शंका ॥ हेभगवन्! घटोऽस्ति याज्ञानविषे जैसे सत्ताप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे ताघटकेअसत्ताका अभावभी प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सोअसत्ताकाअभावही सर्वप्रमाणकाविषय किसवासतेनहींहोवै? ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो! जेज्ञानविशेष असत्ताकेनिवृत्तिकूंबोधनकरेहैं ॥ तेज्ञानभी अंतविषेजाइकै तासत्वस्तुविषेहीसंबंधकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तासत्वस्तुतैंविना दूसराकोईपदार्थ तिनज्ञानोंकाआश्रयहोइसकैनहीं ॥ किंतु सोसत्वस्तुही तिनज्ञानोंकाआश्रयहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सत्अधिष्ठानतैं विना भ्रमहोवैनहीं ॥ और भ्रमकरिकेप्राप्तपदार्थकाही निषेधहोवैहै ॥ यहशास्त्रवेत्तापुरुषोंकासिद्धांतहै ॥ तासिद्धांतकूंअंगीकारकरिकै किसीसत्अधिष्ठानविषे ताअसत्ताकाआरोपणकरिकैनिषेधकरणाहोवैगा ॥ यातैं ताअसत्ताकीनिवृत्तितैंअनंतर तासत्अधिष्ठानकीस्फूर्तिकूं कौन निवारणकरैगा? किंतु ताअसत्ताकीनिवृत्तितैंअनंतर तासत्अधिष्ठानकीस्फूर्ति अवश्यकरिकैहोवैगी ॥ अब सर्वज्ञानोंका सत्वस्तुविषेपर्यवसान स्पष्टकरणेवासते सर्वत्र आधारकीअपेक्षाका वर्णनकरेहैं ॥ हेदेवतावो! असत्ताकूंप्रतिपादनकरणेहाराजो वंध्यापुत्रोनास्ति यहवचनहै ॥ तावचनविषेही प्रथम यहविचारकऱ्याचाहिये ॥ वंध्यापुत्रोनास्ति यावचनविषे आधारकावाचकजो कुत्र याप्रकारकाशब्दहै ताकुत्रशब्दकीअपेक्षाहै अथवा नहींहै? तहां दूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सो संभवतानहीं ॥ काहेतैं? तावचनविषे आधारवाचकपदकीअपेक्षा हमसर्वलोकोंकूं अत्यंतस्पष्ट प्रतीतहोवैहै ॥ तासर्वअनुभवसिद्धअर्थकेनहींअंगीकारकरणेविषे तावादीका केवलहठमात्रहीहै ॥ और वंध्यापुत्रोनास्ति यावचनविषे आधारकेवाचककुत्रशब्दकीअपेक्षाहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै तौ परिशेषतैं तासत्ताकीहीसिद्धिहोवैहै ॥ काहेतैं? वंध्यापुत्रोनास्ति यावचनकूंअपेक्षितजो आधारकारूपकुत्रशब्दहै ॥ ताकुत्रशब्दका लोकविषेअप्रसिद्धहोणेतैं जोअद्भुतअर्थ प्रतीतहोवैहै ॥ सोअर्थ परिशेषतैं स[illegible] ऐसासत्ता? सर्वपदार्थोंकूं आपणेविषे आश्रयदेणेहारीहै ॥ तात्पर्ययह ॥ भूतलेघटोऽस्ति इत्यादिकस्थलोंविषे

तलादिक घटादिकोंकाआधाररूपकरिकैप्रतीतहोवैहैं ॥ तहांतौ तिनभूतलादिकोंकाआधाररूपकरिकै ता सत्ताकीप्रतीति ॥ और जहां वंध्यापुत्रोनास्ति इत्यादिकस्थलोंविषे कोईलोकप्रसिद्धआधारसंभवैनहीं ॥ तहांतौ साक्षात् सत्ताकीहीआधाररूपकरिकै प्रतीतिहोवैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ घटोऽस्ति पटोऽस्ति इसतैंआदिलैकेजितनेज्ञानहैं ॥ ते सर्वज्ञान सत्वस्तुविषेस्थितिकूंप्राप्तहुएही प्रमाणरूपहोवैहैं ॥ और सासत्वस्तु आत्मस्वरूपहीहै ॥ यहवार्त्ता पूर्वकथनकरिआये हैं ॥ यातैं तेसर्वज्ञान आत्माविषेही प्रमाणरूपहैं ॥ हेदेवतावो! यादेहतैंआदिलैके जितनाभूतभौतिकरूपद्वैतप्रपंचहै ॥ सो द्वैतप्रपंच जिससत्तारूपअधिष्ठानविषे कल्पितहै ॥ सोसत्तारूपअधिष्ठानही परमार्थतैं सत्यरूपहै ॥ और सोसत्तारूपअधिष्ठान सर्वभेदतैंरहितहोणेतैं ब्रह्मआत्मारूपहै ॥ तथा सत्‌चित्‌आनंदस्वरूपहै ॥ यहवार्त्ता हम पूर्वतुमारेप्रति कथनकरिआयेहैं ॥ हेदेवतावो! जोपुरुष तासत्तासामान्यदृष्टिकूंअंगीकारकरिकै स्थितहोवैहै ॥ ताविद्वान्‌पुरुषकूं याद्वैतप्रपंचकाअनुभवहोवैनहीं ॥ यातैं सोसर्वकाअधिष्ठानरूपसत्‌ब्रह्म अद्वितीयरूपहीसिद्धहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! याप्रत्यक्षसिद्धद्वैतप्रपंचकेविरोधहोणेतैं ताअद्वैतकी सिद्धि किसप्रकारहोवैगी? ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो! एकदेशविषे तथाएककालविषे वर्तमानपदार्थोंकाही परस्परविरोधहोवैहै ॥ भिन्नदेशविषे तथाभिन्नकालविषे वर्तमानपदार्थोंका परस्पर विरोधसंभवैनहीं ॥ सोइहांप्रसंगविषे अद्वैतकीप्रतीति तथाद्वैतकीप्रतीति येदोनों एकदेशविषे तथाएककालविषेवर्तैनहीं ॥ किंतु तेदोनों भिन्नभिन्नदेशकालविषे वर्तैहैं ॥ यातैं तिनदोनोंका परस्पर विरोधसंभवैनहीं ॥ हेदेवतावो! जिनअज्ञानीपुरुषोंकूं अद्वैतकाअनुभवनहींहै ॥ तिनअज्ञानीपुरुषोंनैं देख्याजोद्वैतप्रपंचहै ॥ सोद्वैतप्रपंच ताअद्वितीयरूपअधिकरणविषे कदाचित्‌भी संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जिनविद्वान्‌पुरुषोंकूं ताअद्वितीयवस्तुकाअनुभवहै ॥ तिनविद्वान्‌पुरुषोंकेमतविषेभी ताअद्वितीयवस्तुरूपअधिकरणविषे यहद्वैतप्रपंच कदाचित्‌भी संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं भिन्नदेशकालवृत्तिहोणेतैं ताअद्वैतकेसाथ याद्वैतकाविरोधसंभवैनहीं ॥ यातैं पूर्वकथनकऱ्याजो अद्वैतविषेद्वैतप्रपंचकाअभाव सोसंभवहोइसकैहै ॥ हेदेवतावो! जोकदाचित् किसीअज्ञानीपुरुषोंकूं याद्वैतप्रपंचकाअनुभवहोताहोवै तौ निःशंकहोवै ॥ ताभ्रांतपुरुषोंके

अनुभवसिद्धद्वैतप्रपंचकरिकै हमविद्वान्पुरुषोंकेअनुभवसिद्धअद्वैतकी किंचित्मात्रभीहानिहोवैनहीं ॥ काहेतें ? सोमिथ्याद्वैत अधिष्ठानवस्तुकूं स्पर्शकरतानहीं ॥ तथा सोद्वैतप्रपंच अविचारकरिकैही प्रतीतहोवैहै ॥ विचारकूंसहारिसकैनहीं यातें सोद्वैतप्रपंचमायामयहै ॥ मायामयहोणेतैंही सोद्वैतप्रपंच अद्वितीयअधिष्ठानविषेकल्पितहै ॥ ताकल्पितद्वैतकरिकै वास्तवअद्वैतकीहानिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! ताकल्पितद्वैतप्रपंचकरिकैतौ अद्वैतकीहानि मतहोवै ॥ तथापि ताकल्पितद्वैतकेअभावकरिकै ताअद्वैतकी हानिहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ! जैसे कल्पितद्वैतप्रपंच ताअद्वितीयकीहानिकरैनहीं ॥ तैसे ताकल्पितद्वैतकाअभावभी ताअद्वितीयकीहानिकरैनहीं ॥ काहेतें ? वेदांतसिद्धांतविषे कल्पितवस्तुकाअभाव अधिष्ठानस्वरूपहीहोवैहै ॥ अधिष्ठानतेंभिन्नहोवैनहीं ॥ जैसे कल्पितसर्पकाअभाव रज्जुरूपअधिष्ठानस्वरूपहीहोवैहै ॥ तैसे याआकाशादिककल्पितप्रपंचकाअभावभी अधिष्ठानस्वरूपहीहोवैहै ॥ और याकल्पितप्रपंचका तथाताप्रपंचकेअभावका अद्वितीयआत्माही अधिष्ठानहै ॥ यातें सोकल्पितद्वैतप्रपंचकाअभाव आपणेस्वरूपभूतअद्वितीयआत्माकीहानिकरिसकैनहीं ॥ हेदेवतावो ! याशुद्धआत्मादेवविषे यहद्वैतप्रपंच पूर्वकबीहुआनहीं ॥ और आगेकबीहोवैगानहीं ॥ और अबीभीहैनहीं ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं अद्वैत यानामकरिकै कथनकरैहैं ॥ हेदेवतावो ! जैसे आकाशविषे गंधर्वनगर कल्पितहोवैहै ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माविषे यहद्वैतप्रपंच कल्पितहै ॥ यातें ताकल्पितद्वैतकरिकै आत्माकेअद्वितीयरूपताकीहानिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! याकल्पितप्रपंचकरिकै ताआत्मादेवविषे द्वैतमतहोवै ॥ तथापि यासर्वप्रपंचकाकारणरूपजोमायाहै ॥ तामायाकरिकै ताआत्मादेवविषे द्वैतभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ! यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वद्वैततैंरहितहै ॥ तथा बुद्धिआदिकसर्वजगत्कासाक्षीरूपहै ॥ तथा जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतें रहितहै ॥ तथा सूर्यभगवान्कीन्यांई प्रकाशमान्है ॥ ऐसेआत्मादेवविषे सूर्यविषेअंधकारकीन्यांई यहतमरूपअविद्या संभवतीनहीं ॥ किंतु तास्वयंज्योतिरूप [illegible]केप्रभावतें यहअविद्यारूपमाया आपहीनिवृत्तहोइजावैहै ॥ यातें तास्वयंज्योतिआत्माविषे जोमायाकीस्थि[illegible]मायादृष्टिकरिकैहीहै ॥ वास्तवदृष्टिकरिकै तामायाकीस्थितिहोवैनहीं ॥ हेदेवतावो ! जैसे प्रकाशमान्सूर्यविषे

कन्याजोअंधकाररूपतमहै ॥ सोतम ताघूकादिकल्पिततमकेबलतैंही सिद्धहोवैहै ॥ सूर्यकेतेजकरिकै तातम
की सिद्धिहोवैनहीं जिसवासते तेजका तथातमका परस्पर अत्यंतविरोधहै ॥ तैसे अद्वितीयस्वयंज्योतिआत्माविषे अज्ञानीपुरुषों
नें कल्पनाकरीजाअविद्यारूपमायाहै ॥ साअविद्यारूपमायाभी तामायाकरिकैही सिद्धहोवैहै ॥ किसीप्रमाणकरिकै तामायाकीसिद्धि
होवैनहीं ॥ हेदेवतावो ! वास्तवतें कार्यसहितमायातैंरहित जोआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ ताआत्मादेवविषे जैसे यहमायाकाकार्यरूप
प्रपंच कल्पितहै ॥ तैसे साजडमायाभी कल्पितहै ॥ तापरमात्मादेवतें यहकार्यसहितमाया भिन्नसत्तावालीनहींहै ॥ इतनेकरिकै सर्व
द्वैतप्रपंचविषे कल्पितरूपता निरूपणकरी ॥ अब ॥ योऽयंचौरःसस्थाणुरेव॥ याप्रकार बाधसामानाधिकरण्यकरिकै यासर्वजगत्‌वि
षेपरमेश्वरदृष्टिकानिरूपणकरैहैं ॥ हेदेवतावो ! पूर्वहमनें तुमारेप्रति जोस्वयंज्योतिपरमात्मादेव सत्‌चित्‌आनंदस्वरूपकरिकैकथन
कन्याहै ॥ सोपरमात्मादेवही तामायासहित यासर्वविश्वरूपहै ॥ तथा ब्रह्मा विष्णु शिव इंद्र इसतैंआदिलैके जितनायहस्थावर
जंगमरूपजगत्‌है ॥ तासर्वजगत्‌रूपभी सोपरमात्मादेवहीहै ॥ हेदेवतावो ! ऐसा सर्वात्मरूपपरमात्मादेव यादेहधारीजीवोंकूं यद्य
पि नित्यहीप्राप्तहै ॥ तथापि मायाकेबलतें याजीवोंकूं सोपरमात्मादेव अप्राप्तहुएकीन्यांई स्थितहै ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव ? सर्व
जगत्‌काअधिष्ठानरूपहै ॥ तथा तीनकालोंविषेसत्यरूपहै ॥ तथा नाशतैंरहितहै ॥ तथा स्वप्रकाशसुखरूपहुआभी दुःखरूप
देहादिकोंकेअध्यासतें अन्यथाहोइकैप्रतीतहोवैहै ॥ अब सर्वत्रआत्मदृष्टिविषे ताआत्मादेवकेप्राप्तिकी उपायरूपता बोधनकर
णेवासते याप्रपंचविषेभी सत्यरूपतासिद्धकरैहैं ॥ हेदेवतावो ! पूर्वहमनें तुमारेप्रति जोयहमायासहितसर्वप्रपंच कल्पितरूपक
रिकैवर्णनकन्याहै ॥ सोयहप्रपंचभी वंध्यापुत्रकीन्यांई अत्यंतअसत्‌रूपनहींहै ॥ काहेतें ? याप्रपंचकूं जोकदाचित् वंध्यापुत्रकीन्यां
ई अत्यंतअसत्‌मानिये तौ ताप्रपंचका सोअसत्तारूपधर्मभी किसप्रकारहोवैगा ? जिसवासते सोअसत्तारूपधर्मभी किसीधर्मिके
आश्रितहीरहेहै ॥ धर्मीतैंविना धर्मकीस्थितिसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! इसप्रकार जगत्‌की सत्यरूपताकेअंगीकारकियेहु
एभी वंध्यापुत्रनरशृंगादिकअसत्यपदार्थोंविषे साआत्मदृष्टिकरणी संभवैनहीं ॥ यातें सर्वत्रआत्मदृष्टिकरणी अत्यंतदुर्घटहै ॥

समाधान ॥ हेदेवतावो! असत्पदकाअर्थरूपकरिकैप्रसिद्धजेवस्तुहैं ॥ तिनोंविषेभी शास्त्रवेत्तापुरुषोंनें सत्रूपताही कथनकरी है ॥ जैसे अनश्व यापदविषेस्थितजो अन् यहपदहै ॥ सोअन्पद अश्वकेअभावकूंकथनकरैनहीं ॥ किंतु जोभावरूपवस्तु अश्वतैंभिन्नहोवैहै तथाताअश्वकेसदृशहोवैहै ॥ ताभावरूपवस्तुकूंही सोअनश्वपद कथनकरेहै ॥ तैसे नानाप्रकारकेकार्यकरणेविषेसमर्थजे प्रसिद्धसत्पदार्थहैं ॥ तिनसत्पदार्थोंतें कार्यकरणेविषेअसमर्थतारूपकरिकैविलक्षण जेसूक्ष्मपदार्थहैं ॥ तिनसूक्ष्मपदार्थोंकूंही वेदवेत्तापुरुष असत् यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और आत्माकीसत्ताकूंअंगीकारकरिकै सत्यरूपतातौ तिनसत्असत्रूप सर्वपदार्थोंविषे समानहीहै ॥ यहवार्त्ता याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे कथनकरिआयेहैं ॥ यातें आत्माकीसत्ताकूंअंगीकारकरिकै यासर्वजगत्कूंसत्रूपमानणेविषे किंचित्भीहानिहोवैनहीं ॥ हेदेवतावो! यहकार्यप्रपंचसहितमाया ताआनंदस्वरूपआत्माविषेकल्पितहै ॥ यातें यहकार्यप्रपंचसहितजडमाया वास्तवतें ताआत्मादेवकास्वरूपनहींहै ॥ काहेतें? यहकार्यप्रपंचसहितमाया आपणीसत्तातेंरहितहै ॥ किंतु जैसे कोईनिर्धनपुरुष दूसरेधनीपुरुषोंतें भूषणादिकपदार्थमागिकै आपणेगृहकीशोभाकरैहै ॥ तैसे यह कार्यप्रपंचसहितमायाभी अधिष्ठानआत्माकीसत्ताकूं अंगीकारकरिकै सत्रूपहुईप्रतीतहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! यहकार्यप्रपंचसहितमाया जोआत्माकावास्तवस्वरूपनहींहोवै तौ ताआत्मादेवका कौनवास्तवस्वरूपहै?॥ समाधान ॥ हेदेवतावो! सत्चित्आनंदस्वरूप तथासर्वकासाक्षीरूप तथास्वयंज्योतिरूप जोआत्मादेवकास्वरूप पूर्वहम कथनकरिआयेहैं ॥ सोईही ताआत्मादेवका वास्तवस्वरूपहै ॥ हेदेवतावो! सोआत्मादेवकास्वरूप सर्वदानित्यहै ॥ यातें आपणीसिद्धिविषे किसीदूसरेकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ और तानित्यआत्मातेंभिन्न जितनायहसर्वजगत्है ॥ सोसर्वजगत् जडहोणेतें आपणीसिद्धिविषे परकीअपेक्षावालाहै ॥ याकारणतें यहसर्वजगत् अनित्यहै ॥ ऐसेअनित्यजगत्विषे नित्यरूपताकी संभावनाभी होवैनहीं ॥ यातें कौननित्यहै याप्रकारकाजो मंदबुद्धिपुरुषोंकाप्रश्नहै सो व्यर्थहीहै ॥ हेदेवतावो! ताचेतनआत्माकेबलतेंही याजडप्रपंचकीसिद्धिहोवैहै ॥ ताचेतनआ[illegible]वतें याजडप्रपंचकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ याकारणतें याजडप्रपंचविषे साअनित्यरूपता स्पष्टहीप्रतीतहोवैहै ॥ यातें

अथवा अनित्यहै याप्रकारकासंशय तुमोंनें कदाचित्‌भीनहींकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन्! यहसर्वजगत् कि
सप्रकार ताआत्माकरिकैंसिद्धहोवैहै? ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो! जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतेंरहित तथाअविद्यारूपमायातेंरहि
त जोबुद्धिकासाक्षीरूप आत्मादेवहै ॥ सोआत्मादेवही साक्षात् अथवा बुद्धिवृत्तिद्वारा सर्वजगत्‌काप्रकाशकरैहै ॥ तहां बाह्यपदा
र्थोंकूंतौ सोआत्मादेव चिदाभासयुक्तबुद्धिवृत्तिद्वारा प्रकाशकरैहै ॥ और अंतर अज्ञानादिकपदार्थोंकूंतौ सोआत्मादेव साक्षात्‌हीप्र
काशकरैहै ॥ तथा सोआत्मादेव सर्वसंगतैंरहितहै ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं नित्य सिद्ध यानामकरिकैंकथनक
रैहैं ॥ हेदेवतावो! हमनें तुमारेप्रति जोयहआत्मादेव उपदेशकर्याहै ॥ सोआत्मादेव तुमोंनें निश्चयकर्याहै अथवा नहींकर्या
है? ॥ यहवार्त्ता हमारेप्रति तुम कथनकरो ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकावचन जबी ताप्रजापतिनें तिनदेवतावोंकेप्रतिकह्या ॥ तबी
तेदेवता पूर्वउपदेशतें चिदाभासकूंआत्मारूपमानिकै ताप्रजापतिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ देवताउवाच ॥ हेभगव
न्! पूर्वउपदेशविषे आपनें हमारेप्रति लौकिकव्यवहारोंतेंरहित तथामनवाणीकाअविषय तथाबुद्धिउपाधिवाला तथाअल्पपरि
माणवाला ऐसा आत्मादेव कथनकर्याथा ॥ हेशिष्य! इसप्रकारके तिनदेवतावोंकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोप्रजापति तिनदेवता
वोंकेभ्रांतिकीनिवृत्तिकरणेवासते ताचिदाभासविषे नहींसंभवहोणेहारेधर्मोंकरिकै ताआत्माकास्वरूप वर्णनकरताभया ॥ प्रजाप
तिरुवाच ॥ हेदेवतावो! पूर्वहमनें तुमारेप्रति अल्पपरिमाणवालेआत्माका उपदेशनहींकर्याथा ॥ किंतु यासर्वजगत्‌कासाक्षीरू
पकरिकै ताआत्माकाउपदेशकर्याथा ॥ कैसाहैसोसाक्षीआत्मादेव? नानाप्रकारकेविषयोंकरिकैकरीजाविशेषताहै ताविशेषतातैंर
हितहैस्वरूपजिसका ॥ तथा तुमारेतैंआदिलैकेजितनेप्रमाता हैं तिनप्रमातावोंकेसाथ अधिष्ठानतारूपकरिकै तादात्म्यसंबंधवा
लाहै ॥ तथा सुखदुःखादिकसर्वधर्मोंतेंरहितहै ॥ तथा अद्वितीयरूपहै ॥ तथा सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ तथा सर्वसंघातोंकापालकहै ॥ तथा ॥३६॥
सर्वज्ञहै ॥ तथा सर्वभेदतेंरहितहोणेतें अनंतहै ॥ तहां ताआत्मादेवविषे जासर्वज्ञताहै सासर्वज्ञता कादाचित्कज्ञानकरिकैनहीं है ॥ किं
तु तीनकालविषेवर्तमान स्वप्रकाशचैतन्यरूपकरिकैही सासर्वज्ञताहै ॥ हेदेवतावो! इत्यादिक आत्माकेवास्तवस्वरूपोंतें जोताआ

त्माविषे विपरीतरूपताप्रतीतहोवैहै ॥ ताकेविषे यामायाकाकल्पितसंबंधही कारणहै ॥ यातैं याब्रह्मरूपआत्माका जोपूर्वस्वरूप वर्णनकऱ्याहै ॥ सोस्वरूपही यथार्थहै ॥ हेदेवतावो ! जोआत्मादेव हमनैं तुमारेप्रति वर्णनकऱ्याहै ॥ तथा जोआत्मादेव हमनैं पूर्व तुमारेसैंपूछाथा ॥ ताआत्मादेवतैंभिन्न किंचित्मात्रभी पदार्थहैनहीं ॥ यातैं सोआत्मादेव तुमदेवतावोंका स्वरूपहीहै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति आत्माकाउपदेशकरिकै तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारपूछताभया ॥ हेदेवतावो ! याहमारेउपदेशतैं तुमोंनैं सोस्वप्रकाशरूपअद्वितीयआत्मा देख्याहै अथवा नहींदेख्याहै ? हेशिष्य ! इसप्रकारके ताप्रजापतिकेवचनकूंश्रवणकरिकै तेदेवता द्वैतकेअनुभवतैं ताआत्माकीस्वप्रकाशताविषे असंभावनाकरतेहुए ताप्रजापतिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ देवताउवाच ॥ हेभगवन् ! ताआत्मादेवकीस्वप्रकाशताही किसप्रकारसंभवैहै ? हेशिष्य ! इसप्रकार तिनदेवतावोंकरिकैपूछाहुआ सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेदेवतावो ! यामायाकेस्वरूपकूंप्रकाशकरणेहारा जोआत्मादेवहै ॥ ताआत्मादेवविषे यहमाया स्थितहोवैनहीं ॥ जोकदाचित् यहमाया ताआत्मादेवविषे स्थितहोवैगी तौ यहमाया ताआत्मादेवकरिकैप्रकाशितनहींहोवैगी ॥ जैसे चक्षुविषेस्थितअंजन ताचक्षुकरिकैप्रकाशितहोवैनहीं ॥ यातैं यामायाकेअभावहोणेतैं याआत्मादेवविषे तामायाकृतद्वैततौ संभवैनहीं ॥ और ताआत्मादेवतैंविना दूसराकोईप्रकाशकरणेहाराहैनहीं ॥ यातैं परिशेषतैं याआनंदस्वरूपआत्माविषेही स्वयंज्योतिरूपता सिद्धहोवैहै ॥ हेदेवतावो ! इसप्रकार ताआत्मादेवकीस्वप्रकाशताकेबोधनकरणेवासतेही श्रुतिविषे अद्वितीयरूपता कथनकरीहै ॥ ताअद्वितीयरूपताकेकथनकरिकैही याआत्मादेवविषे मायारहितत्व तथास्वयंप्रकाशत्व सिद्धहोवैहै ॥ हेदेवतावो ! जिसआत्मज्ञानदशाविषे यहद्वैतप्रपंच किंचित्मात्रभीनहींरहेहै ॥ तिसआत्मज्ञानदशाविषे तुमाराही सर्वभेदतैंरहितस्वयंज्योतिआनंदस्वरूप बाकीरहेहै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारजबी ताप्रजापतिनैं तिनदेवतावोंकेप्रति आत्माकीअद्वितीयस्वप्रकाशरूपता कथनकरी ॥ तबी तेदेवता आपणेमनविषे याप्रकार जोकदाचित् यहआत्मादेव अद्वितीयरूपहोवै तौ संगादिकदोषोंकरिकैदुष्ट जोयहकार्यप्रपंचसहितमाया

...तीमा ... ई अथवआत्माकेस्वप्रकाशस्वरूपविषेही प्रवेशहोवैगा ॥ तासंगवान्मायाकेप्रवेशतैं सोआत्मादेवभी संगवान्ह...
गा ॥ तासंगवान्कृत्स्मिाविषे स्वप्रकाशतासंभवैनहीं ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै तेदेवता ताप्रजापतिकेप्रति पुनः याप्रकारकाप्रश्न
करतेभये ॥ देवताउवाच ॥ हेभगवन्! याजडप्रपंचकेतादात्म्यसंबंधरूपसंगकरिकैयुक्तहुआ तथाहमद्रष्टापुरुषोंकेदृश्यभावकूंप्राप्त
हुआ तथामायारूपउपाधिकेसंबंधतैं ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ जोयहआत्मादेवहै ॥ ताआत्मादेवविषे असंगता तथास्वप्रकाशता
संभवैनहीं ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकाप्रश्न जबी तिनदेवतावोंनैं ताप्रजापतिकेप्रतिकऱ्या ॥ तबी सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्र
ति याप्रकारकाउत्तर कहताभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेदेवतावो! तुमारेकूं जोआत्मा द्वैतसहितप्रतीतहोवैहै ॥ सोकेवल अवि
द्यारूपमायाकेप्रभावतैंही प्रतीतहोवैहै ॥ वास्तवतैं ताआत्मदेवविषे सोद्वैतहैनहीं ॥ ऐसेअद्वितीयआत्माविषे जोद्वैतकादर्शनहै ॥
यहही मूढताकाचिन्हहै ॥ हेदेवतावो! जोकदाचित् तुमारेस्वरूपविषे वास्तवतैं कोईभेदसंभवै तौ द्रष्टाआत्माके तथादृश्यप्रपं
चके तादात्म्यसंबंधतैं तास्वरूपविषे संग तथापरप्रकाशता संभवै ॥ परंतु तुमारेवास्तवस्वरूपविषे किंचित्मात्रभीभेदहैन
हीं ॥ किंतु तुमही सर्वद्वैतभावतैंरहित शुद्धआत्मास्वरूपहो ॥ तुमारेस्वरूपतैंभिन्न किंचित्मात्रभी यहद्वैतप्रपंचनहींहै॥ याका
रणतैं तुम स्वप्रकाशस्वरूपहो ॥ ऐसेतुमारेअद्वितीयआत्मस्वरूपविषे सोसंग तथापरप्रकाशता किसप्रकारहोवैगा? यातैं सो
तुमाराअसंगआत्मा स्वप्रकाशरूपहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकावचन जबी ताप्रजापतिनैं तिनदेवतावोंकेप्रति कह्या ॥ तबी ते
देवता ताप्रजापतिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ देवताउवाच ॥ हेभगवन्! हमदेवता जैसे घटादिकबाह्यपदार्थोंकूं संवि
त्रूपज्ञानका विषयरूपकरिकैजानेहैं ॥ तैसे प्रपंचभावकूंप्राप्तहुएआपणेआत्माकूंभी हम तासंवित्रूपज्ञानका विषयरूपकरिकैजा
नतेहैं ॥ यातैं हमारेविषे जोआपनैं स्वप्रकाशरूपताकथनकरीहै सो संभवैनहीं ॥ हेभगवन्! यहसर्वजगत्हैशरीरजिसका ऐसाजो ॥३७॥
ईश्वरहै॥सोईश्वरभी हमारेतैंभिन्ननहींहै ॥ किंतु सोईश्वर हमाराहीस्वरूपहै ॥ याकारणतैं हम अद्वितीयस्वरूपहै ॥ और अद्विती
यरूपहोणेतैंही हम असंगरूपहैं ॥ ऐसेअद्वितीयअसंगरूपहुएभी हमदेवता सर्वप्रपंचरूपआपणेआत्माकूं तासंवित्रूपज्ञानका

विषयरूपकरिकैजानेहैं ॥ यातैं अद्वितीयभावकेहुएभी विषयविषयीभावरूपभेदकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार जबी तिनदेवतावोंनैं ताप्रजापतिकेप्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तबी सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकाउत्तर कहताभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेदेवतावो ! जितनेकालपर्यंत ताआत्माकीअद्वितीयरूपता नहींप्रतीतहोवैहै ॥ तितनेकालपर्यंतही कार्यसहितमायाकीस्थितिकरिकै याद्वैतकीप्रतीतिहोवैहै ॥ और जिसकालविषे ताकार्यसहितमायाकूंनाशकरणेहारा अद्वितीयरूपताकाबोध उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसकालविषे तुमारेअद्वितीयरूपविषे तासंवित्‌रूपज्ञानकीविषयता संभवैनहीं ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारके ताप्रजापतिकेवचनकूंश्रवणकरिकै तेदेवता ताप्रजापतिकेप्रति पुनःयाप्रकारकावचन कहतेभये ॥ देवताउवाच ॥ हेभगवन् ! यहअद्वितीय आत्मा तासंवित्‌रूपज्ञानकाविषयहै याअर्थकीदृढताकरावणेहारीयुक्तिकूंतौ हम जानतेनहीं ॥ परंतु अबपर्यंतभी हमदेवता ताप्रपंचरूपआत्माकूं तासंवित्‌रूपज्ञानका विषयरूपकरिकैहीजानतेहैं ॥ स्वप्रकाशरूपताकरिकै ताआत्माकूं हम जानतेनहीं ॥ यातैं शास्त्रके उपदेशका तथाहमारेअनुभवका महान्‌विरोधहोवै ॥ ताविरोधकीनिवृत्तिकरणेहारेआपही हमारा प्रमाणरूपहो ॥ जोअर्थ आप कथनकरौगे ॥ तिसीअर्थकूं हम निश्चयकरैंगे ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारकावचन जबी तिनदेवतावोंनैं ताप्रजापतिकेप्रति कह्या ॥ तबी सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेदेवतावो ! तुमदेवता सर्वशास्त्रोंविषे अत्यंतकुशलहो तथा अत्यंतबुद्धिमान्‌हो ॥ ऐसेतुमबुद्धिमान्‌देवतावोंकूंभी जबी ताआत्माकीविषयताविषे कोईयुक्ति नहींप्रतीत होती ॥ तबी दूसराकौनपुरुष ताअर्थविषेयुक्तिकहैगा ? किंतु ताआत्माकेविषयताकूंसिद्धकरणेहारी कोईभीयुक्तिहैनहीं ॥ यातैं ताआत्मादेवविषे अद्वितीयरूपताकरिकै जोस्वप्रकाशरूपता पूर्वसिद्धकरीहै ॥ तास्वप्रकाशरूपताकूंही तुमनिश्चयकरो ॥ जोकदाचित् तास्वप्रकाशआत्माकूं तुम विषयतारूपकरिकैजानौगे तौ तुमारेविषे अनात्मज्ञत्वकीप्राप्तिहोवैगी ॥ हेदेवतावो ! जोकदाचित् आत्माका [illegible]रूपज्ञानका परस्पर वास्तवभेदहोता तौ तिनदोनोंके विषयविषयीभावविषे तुमारेकूं कोईयुक्ति स्फुरणहो[illegible] परंतु [illegible] तिअद्वितीयआनंदस्वरूपआत्मादेवविषे तासंवित्‌रूपज्ञानकाभेदहैनहीं ॥ किंतु सोसंवित्‌रूपज्ञान आ[illegible]

नहीं है ॥ अथवा तैं तिनदोनोंकेविषयविषयीभावविषे तुमारेकूं कोईयुक्ति स्फुरणहुईनहीं ॥ यातैं तास्वयंज्योतिअद्वितीयआ त्माविषे ताविषयलक्षिणअभावहीहै ॥ हेदेवतावो! जिसद्वैतप्रतीतिकेप्रथमक्षणविषे तथासमाधिकालविषे यहआत्मादेव अहं अस्मि याप्रकार प्रत्यक्रूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ तिसकालविषे यास्वयंज्योतिअद्वितीयआत्माविषे सोविषयविषयीभावरूपभेद किंचित्मा त्रभीप्रतीतहोवैनहीं ॥ जोकदाचित् सोभेद याआत्मादेवविषे वास्तवतैंहोता तौ समाधिकालविषेभी सोभेदप्रतीतहोता ॥ शंका ॥ हेभगवन्! व्यवहारकेबलतैं याआत्मादेवविषे सोभेद सिद्धहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो! ताव्यवहारकेकारणरूप जोमनवा णीहै ॥ तामनवाणीतैंभी यहआत्मादेवपरहै ॥ तथा तामनवाणीकाविषयरूपजोभेदहै ॥ तासर्वभेदतैं यहआत्मादेव रहितहै ॥ याकारणतैं यहस्वयंज्योतिआत्मादेव किसीभीव्यवहारकाविषयहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्! ऐसेमनवाणीकेअविषयआत्मादेव का उपदेशहीनहींसंभवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो! सोस्वयंज्योतिअद्वितीयआत्मा मनवाणीकाअविषयहै ॥ याकारणतैंही ब्र ह्मवेत्तागुरु आपणेशिष्योंकेप्रति मौनरूपतैंही याआत्मादेवकाउपदेशकरेहैं ॥ हेदेवतावो! सत्शब्दकाअर्थरूपजो स्थूलप्रपंच है ॥ तथा असत्शब्दकाअर्थरूपजो सूक्ष्मप्रपंचहै ॥ तास्थूलसूक्ष्मप्रपंचविषेही वाणीकी तथामनकी प्रवृत्तिहोवैहै ॥ और यहआ त्मादेव तास्थूलसूक्ष्मजगत्तैंरहितहै ॥ यातैं याआत्मादेवविषे सामनवाणीकीप्रवृत्ति संभवैनहीं ॥ अब कारणादिकतीनअवस्थावों तैं आत्माकीभिन्नरूपतास्पष्टकरणेवासते प्रथम अधिदैवादिरूपकरिकै तिनअवस्थावोंविषे व्यवहारकीविषयताका निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो! यहकारणशरीररूपअविद्या स्वभावतैंतुच्छरूपहुईभी याजगत्रूपकार्यकूंउत्पन्नकरतीहुई सत्यकीन्यांई प्रतीतहोवै है ॥ और साअविद्या आपणीसत्तातैंरहितहुईभी ताआत्माकूंआश्रयणकरिकै सत्ताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तासत्ताकूंप्राप्तहोइकै साअ विद्या नानाप्रकारकेकार्योंकूंकरेहै ॥ याकारणतैंही साअविद्या नानाप्रकारकेव्यवहारोंकेयोग्यहोवैहै ॥ और ताअविद्याविषेप्रति बिंबभावकूंप्राप्तहुआ चेतनआत्मा ईश्वर यानामकरिकैकह्याजावैहै ॥ सोईहीईश्वरआत्मा जबी आपणेसंकल्पकरिकै प्राणबुद्धिआ दिकउपाधियोंवालाहोवैहै ॥ तबी जीव यानामकरिकैकह्याजावैहै ॥ तहां प्रथमकार्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जोसमष्टिसूक्ष्मकाअभि

मानी हिरण्यगर्भनामाजीवहै ॥ सोहिरण्यगर्भनामाजीव स्वतःसिद्धज्ञानवालाहै ॥ तथा अनंतशक्तिवालाहै ॥ यातैं सोहिरण्यग
र्भनामाजीवही ईश्वर यानामकरिकैकह्याजावैहै ॥ तथा सोहिरण्यगर्भभगवान्ही समष्टिस्थूलउपाधिवालाहुआ विराट् यानामक
रिकैकह्याजावैहै ॥ हेदेवतावो ! जैसे समष्टिरूप कारण सूक्ष्म स्थूल यातीनउपाधियोंकेसंबंधतैं सोआत्मादेव ईश्वर हिरण्यगर्भ
विराट् यातीननामोंकरिकैकह्याजावैहै ॥ तैसे व्यष्टिरूप कारण सूक्ष्म स्थूल यातीनउपाधियोंकेसंबंधतैं सोआत्मादेव प्राज्ञ तैज
स विश्व यातीननामोंकरिकैकह्याजावैहै ॥ हेदेवतावो ! इसप्रकार सोचेतनआत्मादेवही सुषुप्तिआदिकअवस्थावोंकूंप्राप्तहुआ जी
व यानामकरिकैकह्याजावैहै ॥ याकारणतैं ईश्वर हिरण्यगर्भादिकसर्वशब्द ताएकचेतनआत्माविषेही वर्तेहैं ॥ हेदेवतावो !
इसप्रकार सर्वव्यवहारोंकीसिद्धिकरणेहारी जेतीनअवस्थाहैं ॥ तिनतीनोंअवस्थावोंतेंरहित तथामनवाणीकाअविषय जोस्वयं
ज्योतिआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ सोआत्मादेव तुरीय यानामकरिकैकह्याजावैहै ॥ हेदेवतावो ! ताआत्मादेवविषे जोतुरीयरू
पकरिकैव्यवहारहोवैहै ॥ सोव्यवहारभी तीनअवस्थावोंकरिकैनिरूपित कल्पितभेदकीअपेक्षाकरिकैहीहोवैहै ॥ स्वभावतैं ता
आत्मादेवविषे सोतुरीयव्यवहारभी संभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! सोआत्मादेव जोकिसीभीव्यवहारकाविषयनहींहोवै
है तौ आपनैं हमारेप्रति ताआत्माकाउपदेशही किसप्रकारकऱ्याहै ? ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ! मनवाणीकाअविषय
जोआत्मादेवहै ॥ ताआत्मादेवविषे तुरीयत्वधर्मकीन्यांई कोईकधर्मोंकाआरोपणकरिकैही हमनैं तुमारेप्रति ताआत्मादेवका
उपदेशकऱ्याहै ॥ तिनधर्मोंकेआरोपणतैंविना केवलनिर्गुणआत्माकेउपदेशकरणेविषे हमभी समर्थनहींहै ॥ हेशिष्य ! ति
नदेवतावोंकेप्रति याप्रकार आत्माकाउपदेशकरिकै सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति पुनः याप्रकारकावचन कहताभया ॥
हेदेवतावो ! जिसआत्माका हमनैं तुमारेप्रति उपदेशकऱ्याहै ॥ सोआत्मा तुमोंनैं जान्याहै अथवा नहींजान्याहै ॥ हे
शिष्य ! याप्रक[illegible] ताप्रजापतिकेवचनकूं श्रवणकरिकै तेदेवता ताप्रजापतिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हेभगव
[illegible]न्स[illegible] [illegible]त्माकास्वरूपपूछणेहारेजो आपगुरुहो ॥ ताआपगुरुवोंकेप्रति ताआत्माकास्वरूप यद्यपि हमारेकूं [illegible]

अथवा ॥ तथापि ताआत्मादेवविषे ज्ञातत्व तथाअज्ञातत्व येदोनोंधर्म संभवतेनहीं ॥ यातें तिनदोनों धर्मोंविषे किसधर्मविशिष्टआत्माकूं हम आपकेप्रति कथनकरे? ॥ हेभगवन्! आपनैं हमारेप्रति जिसआत्मादेवकाउपदेशकियाहै ॥ सोआत्मादेव ज्ञानकेविषयरूपविदितपदार्थोंतें तथाज्ञानकेअविषयरूपअविदितपदार्थोंतें अत्यंतविलक्षणहै ॥ यातें ताआत्माकास्वरूप हम याप्रकारसैंकथनकरेहैं ॥ सोआत्मादेव ज्ञातहुआभी अविषयहोणेतें अज्ञातकीन्यांई वर्तेहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार जबी तिनदेवतावोंनैं त्वंपदार्थरूपकरिकै ताआत्मादेवके यथार्थस्वरूपकूंजान्या ॥ तबी सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति तिसीत्वंपदार्थरूपआत्माका तत्पदार्थरूपकरिकै उपदेशकरताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन्! सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति पूर्वअनेकवार ताआत्माकाउपदेशकरिआयाहै ॥ यातें पुनःपुनः तिसीआत्माकेउपदेशकरणेविषे ताप्रजापतिकूं पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! यहआत्मादेव अत्यंतदुर्विज्ञेयहै ॥ यातें शिष्योंकेप्रति आत्माकाउपदेशकरणेविषेप्रवृत्तहुए जेब्रह्मवेत्तागुरुहैं ॥ तेब्रह्मवेत्तागुरु जबी तिनशिष्योंकेप्रति ताआत्मादेवका वारंवार उपदेशकरेहैं ॥ तबी ताउपदेशकरिकै तिनशिष्योंके विपरीतभावनारूप तथादुर्वासनारूप प्रतिबंधककीनिवृत्तिहोवैहै ॥ ताप्रतिबंधककीनिवृत्तितैंअनंतर तिनशिष्योंकूं दृढआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातें ताआत्मादेवके पुनःपुनः उपदेशकरणेविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ फलतैंरहित सुविज्ञेयवस्तुके पुनःपुनः उपदेशकरणेविषेही सोपुनरुक्तिदोष प्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकेफलकूंविचारकरिकै सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति पुनःपुनः ताआत्मादेवकाउपदेशकरताभयाहै ॥ और जैसे पुनःपुनः आत्माकाउपदेश तिनदुर्वासनावोंकेनिवृत्तिकाकारणहोवैहै ॥ तैसे चारिपादोंवालेप्रणवकरिकै ताआत्माकाचिंतनभी तिनदुर्वासनावोंकेनिवृत्तिकाकारणहोवैहै ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेदेवतावो! अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा याचारिपादोंवालेप्रणवविषे विश्व तैजस प्राज्ञ तुरीय याअध्यात्मरूपचारिपादोंकरिकै अथवा विराट हिरण्यगर्भ ईश्वर परमात्मा याअधिदैवरूपचारिपादोंकरिकै तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुआ जोआत्मादेवहै ॥ ऐसेप्रणव

रूपआत्मादेवका जबी तुमध्यानकरौंगे ॥ तबी तुमारी कोईभीदुर्वासना रहैगीनहीं ॥ किंतु तेसर्वेदुर्वासना नाशकूंप्राप्तहोवैंगीं ॥ हेदेवतावो! ताआत्मज्ञानकरिकै जबी तुमारीदुर्वासना नाशकूंप्राप्तहोवैंगीं ॥ तबीही तुम ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवौगे ॥ ताब्रह्मभावकीप्राप्तिकरिकै तुमारेकूं पुनःसंसारकेदुःखोंकीप्राप्तिहोवैगीनहीं ॥ हेदेवतावो! जिसआत्मादेवकूं तुम अहंशब्दकरिकैकथनकरोहो ॥ सोत्वंपदार्थरूपआत्मा तत्पदार्थब्रह्मरूपहीहै ॥ और जोतत्पदार्थरूपब्रह्महै ॥ सोसत्यब्रह्म त्वंपदार्थरूपआत्मातैं भिन्ननहींहै ॥ किंतु सोतत्पदार्थरूपब्रह्म त्वंपदार्थरूपआत्मातैं अभिन्नहीहै ॥ इसप्रकार तत्पदार्थरूपब्रह्मकूं तथात्वंपदार्थरूपआत्माकूं परस्पर अभिन्नरूपकरिकै तुम जानो ॥ ताजीवब्रह्मकेअभेदविषे तुमोंनैं किंचित्मात्रभीसंशयकरणानहीं ॥ हेदेवतावो! जोप्रणवरूप तथासत्यब्रह्मरूप आत्मा हमनैं तुमारेप्रति महावाक्यकाअर्थरूपकरिकै वर्णनकऱ्याहै ॥ ताब्रह्मरूपआत्माकूं सूक्ष्मबुद्धिवालेपुरुषही आपणाआत्मरूपकरिकैजानेहैं ॥ स्थूलबुद्धिवालेपुरुष ताआत्मादेवकूं जानिसकतेनहीं ॥ कैसाहैसोआत्मादेव? आकाशादिकपंचभूतोंके यथाक्रमतैं जे शब्द स्पर्श रूप रस गंध येपंचगुणहैं ॥ तिनपंचगुणोंतैंरहितहै ॥ और श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंके तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रियोंके जेशब्दादिकविषयहैं तथानानाप्रकारकेव्यापारहैं तिनसर्वोंतैंरहितहै ॥ तथा मनबुद्धिप्राणआदिकोंकेव्यापारोंतैंरहितहै ॥ तथा इंद्रिय मन बुद्धि प्राण पंचमहाभूत भौतिकपदार्थ माया इत्यादिकसर्वोंतैं रहितहै ॥ तथा सर्वधर्मोंतैंरहितहै ॥ हेदेवतावो! तुमारेप्रति जोहमनैं यहसत्चित्आनंदस्वरूपआत्मा पूर्वउपदेशकऱ्याहै ॥ सोआत्मादेव यद्यपि स्वप्रकाशहै ॥ तथापि सोआत्मादेव उपनिषद्रूपवेदांतोंविषेही प्रतिपादनकऱ्याजावैहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं औपनिषद् यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मादेव स्वप्रकाशरूपहै ॥ यातैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं सुविभात यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और यहआत्मादेव ब्रह्मज्ञानतैं एकवारही आवरणतैंरहितहुआ [illegible]अज्ञानरूपआवरणकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं सकृद्विभात या[illegible]पनीतहोवैहै ॥ और यहआत्मादेव अंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानोंविषे प्रतिबिंबरूपकरिकै पुनःपुनःप्रतीतहोवैहै ॥ याका

अथ आत्मादेवकूं सर्वतःपुरतोविभाति यानामकरिकैंकथनकरेहैं ॥ हेदेवतावो! इत्यादिकसर्वगुणोंकरिकैयुक्त जोअद्वितीयआत्मा है ॥ ताअद्वितीयआत्माकूं तुमदेवता तत्त्वंपदार्थका परस्परअभेदरूपकरिकैसाक्षात्कारकरो ॥ हेशिष्य! सोप्रजापतिभगवान् तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकार आत्माकाउपदेशकरिकै तिनदेवतावोंसैं पुनःयाप्रकारपूछताभया ॥ हेदेवतावो! हमनैं तुमारेप्रति जोआत्मा उपदेशकऱ्याहै ॥ सोआत्मादेव तुमोंनैं साक्षात्कारकऱ्याहै अथवा नहींकऱ्याहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकार जबी ताप्रजापतिनैं तिनदेवतावोंसैंपूछा ॥ तबीतेदेवता पूर्वकीन्यांई पुनः विदितअविदितपदार्थोंतैंविलक्षणरूपकरिकै ताआत्माकास्वरूप कथनकरतेभये ॥ तिनदेवतावोंकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेबुद्धिकीपरीक्षाकरणेवासते तिनदेवतावोंसैं याप्रकारपूछताभया ॥ हेदेवतावो! पूर्वहमनैं तुमारेप्रति आनंदस्वरूपआत्माकास्वरूपभूत जाअनुभूति उपदेशकरीहै ॥ सास्वप्रकाशरूपअनुभूति किसआधारविषे स्थितहोवैहै? सोआधार तुम हमारेप्रतिकहो ॥ हेशिष्य! इसप्रकार जबी ताप्रजापतिनैं तिनदेवतावोंसैंपूछा ॥ तबी तेदेवता ताप्रजापतिकेप्रति याप्रकारकाउत्तर देतेभये ॥ हेभगवन्! पूर्वआपनैं हमारेप्रति आधारतैंरहितआत्माकाउपदेशकऱ्याथा ॥ अबी तिसअनुभूतिरूपआत्माकाआधार हमारेसैं आप किसवासतेपूछतेहो? हेशिष्य! इसप्रकारकावचन जबी तिनदेवतावोंनैं ताप्रजापतिकेप्रति कथनकऱ्या तबी सोप्रजापति पुनः तिनदेवतावोंकीपरीक्षाकरणेवासते याप्रकार तिनदेवतावोंसैंपूछताभया ॥ हेदेवतावो! पूर्वहमनैं तुमारेप्रति जोस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्मा उपदेशकऱ्याहै ॥ ताज्ञातहुएआत्मादेवकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं कौनफलकीप्राप्तिहोवैहै? हेशिष्य! इसप्रकार जबी ताप्रजापतिनैं तिनदेवतावोंसैंपूछा ॥ तबी तेदेवता ताप्रजापतिगुरुकेप्रति याप्रकारकाउत्तरकहतेभये ॥ हेभगवन्! सोज्ञातआत्मा आपहीफलरूपहै ॥ तिसज्ञातआत्माका दूसराकोईफलहैनहीं ॥ जैसे यालोकविषे फलअवस्थाकूंप्राप्तहुएजेआम्रादिकवृक्षहैं ॥ तिनफलीभूतआम्रादिकवृक्षोंतैं दूसराकोईफल उत्पन्नहुआदेखणेविषेआवतानहीं ॥ किंतु अंकुरवृक्षादिकअवस्थावालेआम्रादिकवृक्षोंतैंही फलकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तैसे ताफलरूपज्ञातआत्मातैं दूसराकोईफल उत्पन्नहोवैनहीं ॥ किंतु सोज्ञातआत्मा आपहीफल

रूपहै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारके तिनदेवतावोंकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोप्रजापति पुनः तिनदेवतावोंकेज्ञानकीपरीक्षाकरणेवासते या प्रकारकावचन तिनदेवतावोंकेप्रति कहताभया ॥ हेदेवतावो ! अत्यंतआश्चर्यरूपजामायाहै ॥ तामायाकूंभी ब्रह्मरूपताकरिकै तुम सत्तादेणेहारेहो ॥ याकारणतैं तुमदेवता अत्यंतआश्चर्यरूपहो ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारकावचन जबी ताप्रजापतिनैं तिनदेवतावोंके प्रतिकह्या ॥ तबी तेदेवता ताप्रजापतिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हेभगवन् ! यालोकविषे जितनेपदार्थहैं ॥ तेसर्व पदार्थ ब्रह्मरूपकरिकै ताआश्चर्यरूपमायाकूं सत्ताकीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ यातैं तेसर्वपदार्थ आश्चर्यरूपहैं ॥ केवलहमदेवतावोंविषे ही नियमकरिकै साआश्चर्यरूपताकहणी संभवैनहीं ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारके तिनदेवतावोंकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोप्रजापतिति नदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदेवतावो ! घटादिकदृश्यपदार्थोंकूंभी ब्रह्मरूपताकरिकै जबी तुमोंनैं आश्च र्यरूपकरिकैजान्या ॥ तबी सोआश्चर्यरूपवाला ब्रह्म तिनघटादिकपदार्थोंकीन्यांई इदंतारूपकरिकैभी तुमोंनैं जान्याहै यहअर्थ तुमारेकहणेतैंसिद्धहोवैहै ॥ यातैं ताॐकाररूपप्रणवकेअनुसंधानपूर्वक सोप्रत्यक्आत्मादेव हमोंनैं जान्याहै याप्रकारकावचन तु म किसवासतेनहींकहते ? हेशिष्य ! इसप्रकारकेताप्रजापतिकेवचनकूं श्रवणकरिकै तेदेवता ताप्रजापतिकेप्रति याप्रकारकावच न कहतेभये ॥ हेभगवन् ! सर्वत्रव्यापक जोएकअद्वितीयआत्माहै ॥ सोआत्मादेव किसीइंद्रियादिकोंकाविषयहैनहीं ॥ यातैं सोआ त्मादेव ज्ञातभीकह्याजावैनहीं ॥ और यहआत्मादेव अस्तिरूपकरिकै सर्वत्रप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सोआत्मादेव अज्ञातभीकह्याजावै नहीं ॥ और ज्ञातत्व अज्ञातत्व येदोनोंधर्म परस्परविरोधीहोणेतैं एकअधिकरणविषेरहैंनहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव ज्ञातत्व अज्ञा तत्व यादोनोंधर्मोंवालाभी कह्याजावैनहीं ॥ यातैं हमदेवता ज्ञातरूपकरिकै तथाअज्ञातरूपकरिकै तथादोनोंरूपोंकरिकै ताआत्मा देवकेकहणेविषे किसप्रकार समर्थहोवैंगे ? याकारणतैंही बाधसामानाधिकरण्यकरिकै सर्वपदार्थोंविषे हमोंनैं ब्रह्मरूपताकथनक रीहै ॥ ताकरिकै ...त्मादेवकेप्रत्यक्रूपताकीहानिहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारके तिनदेवतावोंकेवचनकूंश्रवणकरिकै सो ...ति ... केप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदेवतावो ! जोतुमारेकूं इसप्रकार आत्माकास्वरूपनिश्चयहु

अथ आत्मादेव हमारेकूं आपणेअनुभवकरिकैसिद्धहै याप्रकारकावचन हमारेप्रतिकहो ॥ हेशिष्य ! इसप्रकारकै ताब्रह्माकेवचनकूंश्रवणकरिकै तेदेवता ताप्रजापतिकेप्रति याप्रकारकावचनकहतेभये ॥ हेभगवन् ! आपगुरुवोंकीकृपातैंहमदेवता ताआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माकूं प्रत्यक्रूपकरिकैजानतेहैं ॥ विषयाविषयीभावरूपभेदकरिकै ताआत्मादेवकूं हमजानतेनहीं ॥ यातैं ताआत्मादेवविषे विषयतारूपकीप्राप्तिकरणेहारेजेविशेषणहैं ॥ ताआत्माकेविशेषणोंकेकहणेविषे हमदेवताकैसप्रकार समर्थहोवैंगे? किंतु नहींसमर्थहोवैंगे ॥ हेसर्वलोकोंकेपितामह प्रजापतिगुरु! आपगुरुवोंकेतांई हमदेवतावोंका वारंवार नमस्कारहोवै ॥ हेभगवन् ! सर्वजगत्केईश्वरआप सर्वज्ञहुएभी अज्ञानीकेसमानहोइकै जोहमारेसैं वारंवार पूछतेहो ॥ सो केवल हमारेज्ञानकीपरीक्षाकरणेवासते पूछतेहो ॥ दूसराकोईपूछणेकाकारणनहींहै ॥ हेभगवन् ! आपनैं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै हमारेकूं कृतार्थकर्‍याहै ॥ यातैं अबीआप हमारीपरीक्षामतकरो ॥ हेभगवन् ! सत्चित्आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिकरणेहारेजोआपहो ॥ तिसआपकेतांई हमारा वारंवार नमस्कारहोवै ॥ हेभगवन् ! हमशिष्योंऊपरी आपगुरु सर्वदाप्रसन्नहोवो ॥ आपकीप्रसन्नताकरिकैही हमारेकूं दुर्लभआत्मादेवकीप्राप्तिहुईहै ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार जबी तिनदेवतावोंनैं आपणेकृतकृत्यभावकेबोधकवचनकहे ॥ तबी तिनदेवतावोंकेवचनोंकूंश्रवणकरिकैभी सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेज्ञानकीदृढताकरणेवासते तिनदेवतावोंकीपरीक्षाकरताहुआ पुनः याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदेवतावो ! तुमोंनैं हमारेप्रति वारंवार नमस्कारकर्‍याहै ॥ तथा प्रार्थनाकरीहै ॥ तानमस्कारकरिकै तथाप्रार्थनाकरिकै तुमारेऊपरि हमारीबहुतप्रसन्नताहुईहै ॥ यातैं हमारेप्रति पुनःपुनः प्रश्नकरणेविषे तुमोंनैं किंचित्मात्रभीभयकरणानहीं ॥ हेदेवतावो ! जोतुमारेहृदयविषे किंचित्मात्रभीसंशयहोवै तो तुम हमारेसैंप्रश्नकरो ॥ तातुमारेसर्वसंशयकूं हम छेदनकरैंगे ॥ याअर्थविषे तुमोंनैं किंचित्मात्रभी संशयकरणानहीं ॥ हेशिष्य ! इसप्रकार ॥४१॥
कावचन जबी ताप्रजापतिनैं तिनदेवतावोंकेप्रति कह्या ॥ तबी तेदेवता ताप्रजापतिगुरुकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हेभगवन् ! सर्वकालविषे सिद्धहैस्वरूपजिसका ऐसाजोआत्मादेवहै ॥ ताआत्मादेवकेवर्णनकेप्रसंगविषे साध्यतारूपकरिकै

तासिद्धआत्मातैंविलक्षणजो अनुजानीध्वं याप्रकारकीअनुज्ञा आपनैं कथनकरीहै ॥ साअनुज्ञा हमारेकूं असंगतप्रतीतहोवैहै ॥
याकारणतैंही हमदेवतावोंकूं तापूर्वउक्तअर्थविषे संशयहोवैहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकावचन जबी तिनदेवतावोंनैं ताप्रजापतिके
प्रतिकह्या ॥ तबी सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदेवतावो! तानित्यसिद्धआत्मादेवकेवर्णनके
प्रसंगविषे हमनैं तुमारेप्रति साध्यरूपअनुज्ञा कथननहींकरी ॥ किंतु अद्वैतआत्मारूपअनुज्ञाही हमनैं तुमारेप्रति कथनकरीहै ॥
काहेतैं? द्वैतप्रपंचकेविस्मरणकरणेवासते शक्तिरूपप्रणवकीअवस्थाकावाच्यार्थभूत अनुज्ञारूपआत्माही याअधिकारीपुरुषोंकूं चिं
तनकरणेयोग्यहै ॥ याप्रकारकाअर्थ हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ हेशिष्य! इसप्रकारकावचन जबी ताप्रजापतिनैं तिनदेव
तावोंकेप्रति कह्या ॥ तबी तेदेवता दूसरेकिसीप्रकारतैं ताप्रजापतिगुरुकेउपकारकीनिवृत्तिनहींदेखतेहुए पूर्वकीन्यांई नमस्कारक
रिकै ताप्रजापतिकेप्रति आपणाआत्माही अर्पणकरतेभये ॥ तथा हेभगवन्! हमारेऊपरिप्रसन्नहोवो याप्रकारकेवचनोंकूंकहतेभ
ये ॥ हेशिष्य! इसप्रकार पूर्व सोप्रजापतिनामाब्रह्मा तिनदेवतावोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेश करताभयाहै ॥ जिसब्रह्मविद्याविषे
तैंज्ञानवान्शिष्यकूंभी उत्कटजिज्ञासाहोतीभईहै ॥ हेशिष्य! यासंसाररूपशूलका मूलरूपजोअज्ञानहै ॥ ताअज्ञानकूंनाशकरणेहा
रा यहआत्मज्ञान हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ जोआत्मज्ञानतैं श्रद्धावान्शिष्यनैं याअष्टादशेअध्यायकेआदिविषे हमारेसंपू
छाथा ॥ अब पूर्वग्रंथविषे विस्तारतैंकथनकऱ्याजोअर्थ ताअर्थकूं संक्षेपतैंकथनकरेहैं ॥ हेशिष्य! हमनैं तुमारेप्रति पूर्वग्रंथविषे
जोअर्थविस्तारतैंकथनकऱ्याहै ॥ तिसीअर्थकूं तूअबी संक्षेपतैंश्रवणकर ॥ अहंअज्ञः याप्रकारकेअनुभवकाविषय जाअज्ञानरूपमा
याहै ॥ ताअज्ञानरूपमायाकूं वेदवेत्तापुरुष कारणशरीर यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ ताकारणशरीररूपमायातैं सूक्ष्मशरीर स्थूलश
रीर याभेदकरिकै दोप्रकारकादृश्यप्रपंच उत्पन्नहोवैहै ॥ कैसाहैसोदृश्यप्रपंच? भूतभौतिकरूपहै ॥ तथा अधिदैव अध्यात्म अधि
भूत स्वरूपहै ॥ जाग्रत्प्रपंचकानाम स्थूलहै ॥ और स्वप्नप्रपंचकानाम सूक्ष्महै ॥ और मायारूपअविद्याकानाम सुषुप्तिहै ॥
तीनोंशरीर याअधिकारीपुरुषोंनैं परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ हेशिष्य! स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनोंतैं

तुहै ॥ अथव दवेत्तापुरुष तुरीय यानामकरिकैंकथनकरेहैं ॥ सोतुरीयभी ओत अनुज्ञाता अनुज्ञा अविकल्प याभेदक रिकैंचारिप्रकारकाहै ॥ हेशिष्य! अधिदैवरूपसाक्षीआत्माकी येओतादिकचारिअवस्थाहैं ॥ तिनओतादिकअवस्थावोंकीप्रा प्तिविषे स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंकाअभिमान प्रतिबंधकहै ॥ तादेहाभिमानकीनिवृत्तिहुए यहविद्वान्पुरुष समाधितैंव्यु त्थानकालविषे बाह्यअंतरविश्वकूं ब्रह्मरूपकरिकैंअनुभवकरेहैं ॥ तिसव्युत्थानकालविषे तासर्वविश्वकूंप्रकाशकरणेहाराजोचैतन्यहै ॥ ताचैतन्यकूं वेदवेत्तापुरुष ओत यानामकरिकैंकथनकरेहैं ॥ और ध्याता ध्यान ध्येय यात्रिपुटीकरिकैंयुक्त जोसविकल्पसमा धिहै ॥ तासविकल्पसमाधिविषेस्थितहुआ यहविद्वान्पुरुष यासर्वविश्वकूं ब्रह्मरूपकरिकैंदेखैहै ॥ तिससविकल्पसमाधिकाल विषे जोचैतन्य यासर्वविश्वकूं सत्ताकीप्राप्तिकरेहै ॥ ताचैतन्यकूं वेदवेत्तापुरुष अनुज्ञाता यानामकरिकैंकथनकरेहैं ॥ और जिसनिर्विकल्पसमाधिविषे स्थितहुआ यहविद्वान्पुरुष ध्याता ध्यान ध्येय इत्यादिकसर्वत्रिपुटीकापरित्यागकरिकै सर्वजगत्केस त्ताकूंआकर्षणकरणेहारे जिसचैतन्यरूपआत्माकूं अनुभवकरेहै ॥ ताचैतन्यस्वरूपआत्माकूं वेदवेत्तापुरुष अनुज्ञा यानामकरिकै कथनकरेहैं ॥ और जिसकालविषे ब्रह्मज्ञानरूपअग्निकरिकै यासंसारदुःखरूपशूलकामूलभूतअज्ञान नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा मनवाणीकाअविषयरूप जोस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माहै ॥ ताअद्वितीयआत्माकूं यहविद्वान्पुरुष अविषयतारूपक रिकैंदेखताहुआभी विषयतारूपकरिकैंदेखतानहीं ॥ तथा यहमैंहूं यहदूसराहै इत्यादिकभेदकूंदेखतानहीं ॥ तथा ताभेदकेअभा वकूंभी देखतानहीं ॥ तथा मैंजीवताहूं मैंमऱ्याहूं इत्यादिक विशेषोंकूंभी देखतानहीं ॥ तिसकालविषेस्थित चैतन्यस्वरूपआ त्माकूं वेदवेत्तापुरुष अविकल्प यानामकरिकैंकथनकरेहैं ॥ हेशिष्य! जैसे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति येतीनोंअवस्था भेददोषकरिकै युक्तहैं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषकूं तेजाग्रदादिकअवस्था परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ तैसे यातुरीयआत्माके ओत अनुज्ञाता अनु ज्ञा येतीनरूपभी ताभेदरूपदोषकरिकैंयुक्तहैं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषकूं तेओतादिकतीनरूपभी परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ और तातुरीयआत्माका जोचतुर्थ अविकल्पस्वरूपहै ॥ सोअविकल्पस्वरूप मनवाणीकाअविषयहै ॥ तथा द्वैतप्रपंचतैंरहित आनंद

स्वरूपहै ॥ तथा याशरीररूपद्वारवतीपुरीविषेस्थितहै ॥ तथा सर्वआश्रयोंतेंरहितहै ॥ तथा सर्वभेदतेंरहितहै ॥ तथा मायातेंरहितस्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा सर्वप्राणियोंकेहृदयकमलविषे सर्वदा साक्षीरूपकरिकैभासमानहै ॥ ऐसेअविकल्पस्वरूपआत्मादेवकूं यहअधिकारीपुरुष घटादिकदृश्यपदार्थोंकीन्यांई इदंतारूपकरिकैनहींदेखताहुआ अहंअस्मि याप्रकार प्रत्यक्रूपकरिकैदेखे ॥ यहही परमफलरूपज्ञानकास्वरूपहै ॥ और याअविकल्परूपआत्माकाज्ञानही याशास्त्रकाप्रयोजनहै ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते प्रथम ताअविकल्पआत्माकेज्ञानविषे असंभावनाकूं दृष्टांतकरिकै निवृत्तकरेहैं ॥ हेशिष्य! जैसे आकाशविषे गंधर्वनगरकल्पितहोवैहै ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माविषे यहमायादिकद्वैतप्रपंचभी कल्पितहै ॥ और हेशिष्य! जैसे निरवयवआकाशकाकल्पितजोकोईएकदेशहै ॥ ताएकदेशविषे आकाशकेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतें सागंधर्वनगरकीकल्पना होवैहै ॥ तैसे वास्तवतैंनिरवयवआत्माका कल्पितजोकोईएकदेशहै ॥ ताएकदेशविषे ताआत्माकेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतें सामायादिकप्रपंचकीकल्पनाहोवैहै ॥ और हेशिष्य! जैसे ताआकाशकेवास्तवस्वरूपकेज्ञानतें सोगंधर्वनगर लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे ताआत्माकेवास्तवस्वरूपकेज्ञानतें यहदृश्यप्रपंच लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेशिष्य! जैसे ताआकाशकेज्ञानतें केवलगंधर्वनगरकीही निवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तागंधर्वनगरकाकारणरूपजोअज्ञानहै ताअज्ञानकीभी निवृत्तिहोवैहै ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानतेंकेवल याकार्यप्रपंचकीही निवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु याकार्यप्रपंचकाकारणरूपजोअज्ञानहै ताअज्ञानकीभी निवृत्तिहोवैहै ॥ और हेशिष्य! अपरोक्षभ्रमकीनिवृत्तिकरणेवासते अधिष्ठानकाअपरोक्षज्ञानही अपेक्षितहोवैहै ॥ परोक्षज्ञानकरिकै अपरोक्षभ्रमकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ जैसे पूर्वादिकदिशावोंविषे जोपश्चिमादिकदिशावोंकाभ्रमहोवैहै ॥ ताअपरोक्षभ्रमकी पूर्वादिकदिशावोंकेपरोक्षज्ञानतें निवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तिनपूर्वादिकदिशावोंकेअपरोक्षज्ञानतेंही ताअपरोक्षभ्रमकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तैसे याआत्मादेवकेपरोक्षज्ञा[illegible] परोक्षरूपसंसारभ्रमकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु याआत्मादेवकेअपरोक्षज्ञानतेंही यासंसारभ्रमकीनिवृत्ति[illegible] ॥ जैसे एकहीस्वप्नद्रष्टापुरुष निद्रादोषकेवशतें अनेकप्रकारकाहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे यहएकहीआ

अथवा अज्ञानतैं अनेकप्रकारकाहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्! जैसे मध्याह्नकेसूर्यविषे अंधकारकीस्थिति संभवैनहीं तैसे ... समानस्वयंज्योतिआत्माविषे याअज्ञानकीस्थिति संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य! यहमाया अत्यंतदुर्घटहै ॥ तथा दुस्तरहै ॥ तथा याजीवोंकूं अत्यंतदुःखकीप्राप्तिकरणेहारीहै ॥ तथा यासंसाररूपवृक्षकीजननीहै ॥ ऐसीमायाकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अघटितघटनापटीयसी यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ ताआपणेस्वभावकेबलतैंही यहमाया तास्वयंज्योतिआत्माविषेस्थितहोवैहै ॥ हेशिष्य! जैसे यालोकविषे वृश्चिकी आपणेगर्भतैंनाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सर्वभेदतैंरहित याआनंदस्वरूपआत्माकूंविषयकरणेहारा जोमहावाक्यजन्य अंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानहै ॥ ताज्ञानरूपगर्भतैंही यहमायारूपवृश्चिकी नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य! यहअविद्यारूपमाया आनंदस्वरूपसाक्षीआत्मातैं कदाचित्भी भयकूंप्राप्तहोतीनहीं ॥ किंतु महावाक्यतैंउत्पन्नभई जाअंतःकरणकीवृत्तिहै ॥ तावृत्तिविषेस्थित तासाक्षीआत्माकेप्रतिबिंबतैंही यहमाया सर्वदा भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे काष्ठोंकूंप्रकाशकरणेहाराभीअग्नि कुठारादिरूपलोहविषेस्थितहोइकै तिनकाष्ठोंकूंभेदनकरैहै॥ तैसे यहआत्मादेव आपणेसाक्षीरूपकरिकै तामायाकासाधकहुआभी महावाक्यजन्यअंतःकरणकीवृत्तिविषेस्थितहोइकै तामायाकाबाधकहोवैहै ॥ याकारणतैंही वेदवेत्तापुरुषोंनैं याअनादिमायाकेनाशकरणेवासते एक महावाक्यजन्यआत्मज्ञानरूपउपायही कथनकऱ्याहै ॥ ताआत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईउपायहैनहीं ॥ हेशिष्य! जैसे यालोकविषे मनुष्योंकेशरीरविषेप्रवेशकरिकै अनेकप्रकारके दुःखोंकीप्राप्तिकरणेहारा जोकोईपिशाचहै ॥ सोपिशाच किसीमहान्मंत्रकरिकैही निवृत्तहोवैहै ॥ तैसे याजीवोंकूं जन्ममरणादिकअनेकदुःखोंकीप्राप्तिकरणेहारी जामायारूपपिशाचीहै ॥ सामायारूपपिशाची ब्रह्मात्मज्ञानरूपमहामंत्रकरिकैही नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताआत्मज्ञानतैंविना दूसरेकिसीउपायकरिकै यहमायारूपपिशाची नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं जोमुमुक्षुजन शांतिआदिकगुणोंकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा चित्तकीएकाग्रताकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा तामायारूपपिशाचीतैं भयकूंप्राप्तहुआहै ॥ सोमुमुक्षुजन ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै याआत्मज्ञानरूपमंत्रकूंसंपादनकरै ॥ यहआत्मज्ञानही यावेदांतशास्त्रकाप्रयोजनहै ॥ हेशिष्य! यामुमुक्षुजनों

नें यहआत्मज्ञानही अवश्यकरिकै संपादकरणेयोग्यहै ॥ याआत्मज्ञानतैंभिन्नउपायोंकेकरणेविषे यापुरुषोंकूं पुनःपुनःसंसारकीही प्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं ताआत्मज्ञानतैंभिन्न कोईभीउपाय याअधिकारीपुरुषोंकूंकरणेयोग्यनहींहै ॥ अब श्रीशंकरानंदमुनि आपणे शिष्यकेतांई याब्रह्मविद्याकेउपदेशकीपरिपूर्णता निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ! ऋग् यजुष् साम अथर्वण याचारिवेदोंविषेप्रसिद्ध जेऐतरेयादिकउपनिषद्रूपवेदांतहैं ॥ तिनउपनिषद्रूपवेदांतोंविषे जोवेदांतभाग केवल उपासनावोंकूंही प्रतिपादनकरेहै? ता वेदांतभागकूंछोडिकै दूसरेसर्वउपनिषद्रूपवेदांतोंकाअर्थरूप ब्रह्मात्मज्ञान हमनें तुमारेप्रति कथनकर्‍याहैं॥ कैसाहैसोज्ञान ? सर्वदोषोंतैंरहित शुद्धब्रह्मात्मविषयकहोणेतैं सर्वदादृढहै॥ ऐसेब्रह्मात्मज्ञानकीपरिपूर्णताहुएतैंअनंतर हमारेकूं तुमारेप्रति पूर्वकीन्यांई तू अबी किसअर्थकेश्रवणकरणेकीइच्छाकरताहै ॥ याप्रकारकाप्रश्नकरणा उचितनहींहै ॥ तथा ताआत्मज्ञानकेवासते अबी हमारेकूं दूसराकछुकहणेयोग्यभीनहींहै ॥ इसप्रकार उपासनाभागतैंरहित सर्ववेदांतोंकरिकैप्रतिपादित निर्गुणआत्माकेज्ञानकूं गुरुके मुखतैंश्रवणकरिकै सोश्रद्धावान्‌शिष्य कृतकृत्यभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ तथा आपणेगुरुकेतांई दंडवत्प्रणामकरताभया ॥ तथा आपणेगुरुकीस्तुतिकरताभया ॥ इसप्रकार आपणेगुरुकापूजनकरिकै परमआनंदकूंप्राप्तहुआ सोशिष्य तागुरुउपदिष्टआत्मज्ञानकूं आपणेशिष्योंकेप्रति उपदेशकरताभया ॥ जिनशिष्योंकरिकैविस्तारकूंप्राप्तहुआ सोआत्मज्ञान अबीकलिकालविषेभी याअधिकारीपुरुषोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैं ? पूर्वऐतरेयादिकउपनिषदोंविषे जाजाब्रह्मविद्या कथनकरीहै ॥ सा सर्वब्रह्मविद्याही याआत्मपुरा[illegible]करिकै परिणामकूंप्राप्तहुईहै ॥ यातैं यहआत्मपुराणग्रंथ साक्षात्‌वेदकेतुल्यहै ॥ तथा यासंसाररूपशूलका मूलकारण [illegible]है ॥ ताकार्यसहितअज्ञानका नाशकरणेहाराहै ॥ यातैं मुमुक्षुजनोंनें याआत्मपुराणग्रंथकूं अवश्यकरिकैविचार [illegible]राणविषे प्रसिद्धपुराणोंकेलक्षण घटावैहैं ॥ याआत्मपुराणविषे याजगत्‌के उत्पत्तिका तथास्थितिका तथा [illegible] तथा याआत्मपुराणविषे आकाशादिकभूतोंका तथाविराटादिकभौतिकोंका वंशभी वर्णनकर्‍याहै ॥ तथा [illegible]मनुकी उत्पत्तिआदिकोंकाभी वर्णनकर्‍याहै ॥ तास्वायंभुवमनुकेकथनकरिकै ताकेविभूतिरूप दूसरेम

...हींवैंह ॥ और याआत्मपुराणविषे आकाशादिकभूतोंके तथातिनभूतोंकेकार्यरूपइंद्रियादिकोंके तथा
...दिकराजोंके अनेकप्रकारकेव्यापार कथनकरेहैं ॥ और याआत्मपुराणविषे वेदरूपमूलप्रमाणतैंरहित किं
...कन्यानहीं ॥ किंतु जोअर्थ ब्रह्मसूत्रोंविषे तथाताकेभाष्यविषे तथाभगवत्गीतादिकस्मृतियोंविषे कथनक
...आत्मपुराणविषे कथनकन्याहै ॥ और तिनब्रह्मसूत्रादिकोंविषे वेदमूलकता सर्वविद्वान्पुरुषोंकूंसंमतहै ॥
यातें ... विस्तारतैंप्रतिपादकत्वरूप पुराणकाधर्मतौ याआत्मपुराणविषे अत्यंतस्पष्टही है ॥ अब जिससंस्कृतआत्मपुराण
का यहप्राकृतभाषाआत्मपुराणहुआहै ॥ तासंस्कृतआत्मपुराणके उत्पत्तिकादेश वर्णनकरेहैं ॥ दक्षिणदेशविषेस्थितजा कावेरीना
माएकपवित्रनदीहै ॥ ताकावेरीनदीकेतीरविषेनिवासकरिकै श्रीशंकरानंदमुनि केवलअनुग्रहकरिकै आपणेश्रद्धावान्‌शिष्यकेप्रति
यहआत्मपुराणनामाग्रंथ कथनकरताभयाहै ॥ अब याग्रंथके आत्मपुराणनामराखणेका प्रयोजन वर्णनकरेहैं ॥ सर्वपुराणइतिहासा
दिकोंविषे अनात्मपदार्थोंकूंप्रतिपादनकरणेहारी जेराजादिकोंकीनानाप्रकारकीकथाहैं ॥ तिनकथावोंकूंश्रवणकरिकै तिनअनात्मक
थावोंतैंविरक्तहुआ तथायासंसाररूपशूलकरिकैसंतप्तहुआ सोशिष्य यापुराणकेआरंभविषे आपणेगुरुवोंसें तामूलसहितसंसारशू
लकेनाशकरणेहारा आत्मज्ञानहीपूछताभयाहै ॥ अनात्मपदार्थोंकूंप्रतिपादनकरणेहारी कोईराजादिकोंकीकथा पूछीनहीं ॥ यातें
याआत्मपुराणविषे कोईभीअनात्मकथा कथनकरीनहीं ॥ किंतु आरंभतैंलैके समाप्तिपर्यंत आत्मज्ञानका तथाताआत्मज्ञानकेवैरा
ग्यादिकसाधनोंकाही यापुराणविषेप्रतिपादनकन्याहै ॥ याकारणतैं याग्रंथका आत्मपुराण यहनाम राख्याहै ॥ और ताशंकरानंदमु
निकेशिष्यकीन्यांई जोपुरुष अनात्मकथावोंकेरागतैंरहितहै ॥ तथा यासंसारशूलकरिकैसंतप्तहुआहै ॥ तथा विषयसुखोंतैंविर
क्तहै ॥ सोपुरुषही याआत्मपुराणग्रंथका अधिकारीहै ॥ शंका ॥ इसप्रकारकाअधिकारीपुरुष साक्षात्‌उपनिषद्रूपवेदांतोंतैंही ॥४६॥
आत्मज्ञानकूंसंपादनकरैगा ॥ यातें यहआत्मपुराणनामाग्रंथ व्यर्थहीहै ॥ समाधान ॥ असंभावनादिकदोषोंकरिकैयुक्तजेपुरुषहैं ॥
तिनपुरुषोंका साक्षात्‌वेदकेअर्थविषे प्रवेशहोइसकैनहीं ॥ किंतु असंभावनादिकदोषोंतैंरहितपुरुषोंकाही तासाक्षात्‌वेद...अर्थविषे

प्रवेशहोवैहै ॥ यातैं तेअसंभावनादिकदोष तावेदअर्थकेनिश्चयकरणेविषेप्रतिबंधकहैं ॥ ताअसंभावनादिकदोषोंकीनिवृत्तिकरणेवासते ताशंकरानंदमुनिनैं यहआत्मपुराणनामाग्रंथ कथनकऱ्याहै ॥ सोयहआत्मपुराण सर्वउपनिषद्रूपवेदांतोंकेसारअर्थका प्रतिपादनकरणेहाराहै ॥ यातैं याआत्मपुराणग्रंथतैंअधिक आत्माकेप्रतिपादनकरणेहारा दूसराकोईग्रंथहैनहीं ॥ सोयहआत्मपुराण नामाग्रंथ यद्यपि पूर्वउक्तमुख्यअधिकारीवासतेही प्रवृत्तभयाहै ॥ तथापि याग्रंथविषेइतनासामर्थ्यहै ॥ जोबहिर्मुख तथारागवान्पुरुषभी श्रद्धापूर्वक याआत्मपुराणग्रंथका निरंतरश्रवणकरेहै ॥ सोबहिर्मुखरागीपुरुषभी ताश्रवणकेप्रभावतैं अंतर्मुखहोइकै तथा वैराग्यवान्होइकै ताआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं मोक्षकीइच्छावान्पुरुषोंनैं अवश्यकरिकै याआत्मपुराणग्रंथकाविचारकरणा तथाश्रवणकरणा ॥ और श्रद्धावान्शिष्यकेप्रति उपदेशकरणेहारे जोश्रीशंकरानंदगुरुहैं ॥ तेशंकरानंदस्वामी शंकरमहादेवकूं सर्वदा आपणाआत्मरूपकरिकैदेखैहैं ॥ यातैं ताशंकरानंदगुरुकेशरीरविषेस्थितहोइकै सोसाक्षात् शंकरमहादेवही याआत्मपुराणग्रंथकाकर्त्ताहैं ॥ कैसाहैसोश्रीशंकर? जिसकेवाणीविषे नित्यही सरस्वतीनिवासकरेहै ॥ और सोशंकरही ब्रह्माविष्णुरूपहै ॥ तथा इंद्रादिकसर्वदेवतारूपहै ॥ यातैं जोपुरुष याआत्मपुराणग्रंथकूं श्रद्धाभक्तिपूर्वक ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं श्रवणकरेहै तथा विचारकरेहै ॥ सोपुरुष अर्थकेधारणकरणेहारीबुद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा आत्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारके प्रत्यक्षफलविषे किसीनैंभी संशयकरणानहीं ॥ अब याआत्मपुराणग्रंथके विषय संबंध यादोनोंअनुबंधोंकेनिरूपणकेमिषकरिकै याग्रंथकीसमाप्तिविषे मं[illegible]करताहुआ ग्रंथकार ईशावास्यउपनिषद्केअर्थकानिरूपणकरेहैं ॥ ईशावास्यउपनिषद्करिकैप्रतिपादनकऱ्याजो प[illegible]सपरमात्मादेवरूप यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत्है ॥ ऐसासर्वजगत्रूप परमात्मादेवही याआत्मपुराणग्रं[illegible]याहै ॥ इसप्रकार सर्वजगत्कूंईश्वररूपदेखिकै वेदवेत्तापुरुष आपणेशिष्योंकेप्रति याप्रकारकाउपदेश करतेभ[illegible]स्थावरजंगमरूपसर्वजगत् अभिन्ननिमित्[illegible]पादानकारणरूपईश्वरनैं व्याप्तकऱ्याहै ॥ अब याहीअर्थकूं अने[illegible] जैसे उपादानकारणरूपमृत्तिका यहघटशरावादिककार्य व्याप्तकरेहैं ॥ तैसे उपादानकारणरूप

…क्याहै ॥ और जैसे राजानैं दृष्टिद्वारा आपणेसर्वनगरादिक व्याप्तकरेहैं ॥ तैसे निमित्तकारणरूपई
…व्याप्तकऱ्याहै ॥ और जैसे यामनुष्योंकाशरीर बाह्यतें वस्त्रोंनैं व्याप्तकऱ्याहै ॥ तैसे यहसर्वजगत् विभुईश्वर
…र जैसे सुगंधिवालेपुष्प आपणेसुगंधिवालेसूक्ष्मअवयवोंकरिकै शीतलजलकूंव्याप्तकरतेहुए ताजलविषे रम
ए… ॥ तैसे यहईश्वरभी आपणीसत्तास्फुर्तिकरिकै यासर्वजगत्कूंव्याप्तकरताहुआ याजगत्विषे रमणीकता प्राप्त
करे… प्रवृत्तिकाकारणरूप वासनावोंनैं याजीवोंकामनव्याप्तकऱ्याहै ॥ तैसे अंतर्यामीईश्वरनैं यहसर्वजगत् व्याप्तकऱ्या
है ॥ यातैं आपणे तथापराये जितनेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थहैं ॥ तेसर्वपदार्थ यापूर्वउक्तरीतीसैं ईश्वररूपहीहैं ॥ ताईश्वरतैंभिन्नस
त्तावाला कोईभीपदार्थनहींहै ॥ यातैं तेसर्वपदार्थ ईश्वरकेहीहैं ॥ याजीवोंका कोईभीपदार्थनहींहै ॥ जैसे गंधर्वनगर आकाशरूपहो
णेतैं ताआकाशकाहीहै ॥ तैसे यहसर्वजगत्भी ईश्वररूपहोणेतैं ताईश्वरकाहीहै ॥ और जैसे राजादिकमहान्पुरुषोंविषे तथातिनों
केधनादिकपदार्थोंविषे बुद्धिमान्पुरुष स्वत्वदृष्टिकरैनहीं ॥ आपणीइच्छापूर्वक जोतिनपदार्थोंका ग्रहणत्यागकरणाहै यहही तिनपदा
र्थोंविषेस्वत्वदृष्टिहै ॥ तैसे तास्वत्वदृष्टितैंरहितहुआ यहपुरुष यहस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ ईश्वररूपहीहै याप्रकार तिनसर्वपदार्थोंकूं
ईश्वररूपजानिकै अथवा यहसर्वपदार्थ ताईश्वरकेहीहैं याप्रकार तिनसर्वपदार्थोंकूं ईश्वरकाजानिकै तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंके
कामनाका परित्यागकरै ॥ तहां यहसर्वजगत् ईश्वररूपहै याप्रथमदृष्टिविषेतौ तासर्वप्रपंचकेबाधकरिकै तास्वत्वदृष्टिकेपरित्यागहु
एपरिशेषतैं निर्गुणब्रह्मकाज्ञानरूपफल सिद्धहोवैहै ॥ और यहसर्वजगत् ईश्वरकाहै यादूसरीदृष्टिविषेतौ सगुणब्रह्मकाज्ञानरूपफ
ल सिद्धहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासते दोदृष्टांतकथनकरेहैं ॥ जैसे मिथ्यागंधर्वनगरविषे स्वत्वकीआशा यापुरुषोंकूं
दुःखकीहीप्राप्तिकरेहै ॥ और जैसे महाराजाकेस्त्रीआदिकपदार्थोंविषे स्वत्वकीआशा यापुरुषोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरेहै ॥ तैसे
आपणेमान्येहुएस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकीआशाभी यापुरुषोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरेहै ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं सर्वकामना
वोंकापरित्यागकरिकै सर्वकाअधिष्ठानरूपईश्वरही आपणाआत्मारूपकरिकैदेखणा ॥ अथवा सर्वजगत्काप्रेरकरूप…रिकै ता

काआराधनकरणा ॥ हेशिष्यो ! चित्तशुद्धिकेअभावहुए जोकदाचित् तुमारेकूं तासगुण ... निर्गुणब्रह्मज्ञानावि
अधिकारनहींहोवै तौभी तुम यहस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ ईश्वरकेहीहैं हमारेनहींहैं याप्रकारजानिकै कर्मोंकेफलरूपलोकोंका
त्यागकरौ ॥ तिसतैंअनंतर आपणेवर्णआश्रमकेअनुसार तुम शरीरमनवाणीकरिकै निष्कामकर्मोंकूंकरौ ॥ इसप्रकार जबी
निष्कामकर्मोंकूंकरौगे ॥ तबी इसजन्मविषे अथवा दूसरेजन्मविषे तुमाराअंतःकरण शुद्धहोवैगा ॥ ताअंतःकरणकीशुद्धितैं
अनंतर तुमारेकूं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैगी ॥ ताब्रह्मज्ञानकेप्रभावतैं तुमारेजन्ममरणादिकसर्वदुःखोंकीनिवृत्तिहोवैगी ॥ अब या
अर्थकेस्पष्टकरणेवासते तीनमार्गोंकानिरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्यो! स्वर्गब्रह्मलोकरूपजोअभ्युदयहै ॥ तथा मोक्षरूपजोनिःश्रेय
स ॥ ताअभ्युदयनिःश्रेयसकीप्राप्तिकरणेहारे तीनप्रकारकेमार्गहोवैहैं ॥ तहां अग्निहोत्रादिरूपइष्टकर्मोंकूं तथावापीकूपतडागा
दिरूप पूर्तकर्मोंकूं करणेहारेजेपुरुषहैं ॥ तिनकर्मीपुरुषोंकूं स्वर्गरूपअभ्युदयकीप्राप्तिकरणेहारा पितृयाणनामा दक्षिणमार्गहै ॥
और अहंग्रहादिकउपासनावोंकूंकरणेहारेजेपुरुषहैं ॥ तिनउपासकपुरुषोंकूं ब्रह्मलोकरूपअभ्युदयकीप्राप्तिकरणेहारा देवयाननामा
उत्तरमार्गहै ॥ और श्रवणादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नजेनिष्कामपुरुषहैं ॥ तिननिष्कामपुरुषोंकूं मोक्षरूपनिःश्रेयसकीप्राप्तिकरणेहा
रा ब्रह्मज्ञानरूपमार्गहै ॥ यातीनमार्गोंतैंभिन्न दूसराकोईभीमार्ग याजीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरणेहारानहींहै ॥ हेशिष्यो! पितृया
ण देवयान ब्रह्मज्ञान यातीनमार्गोंकापरित्यागकरिकै जेपुरुष केवलपापकर्मोंकूंहीकरेहैं ॥ तेअल्पबुद्धिवालेपुरुष सर्वदा दुःखोंकूं
हीप्राप्तहोवैहैं ॥ अब तिनतीनोंमार्गोंविषेभी तीसरेब्रह्मज्ञानरूपमार्गकीश्रेष्ठता वर्णनकरेहैं ॥ हेशिष्य! ब्रह्मलोकविषे तथास्वर्ग
लोकविषे ... देवताहैं ॥ तिनदेवतावोंविषेभी जेदेवता ब्रह्मज्ञानतैंरहितहैं ॥ तिनअज्ञानीदेवतावोंकूंभी वास्तवतैं किंचित्
... काहेतें? महान्पुरुषोंकाजो तिरस्कारकरणाहै ॥ सोतिरस्कारही तिनमहान्पुरुषोंकाहननहै ॥ यहवार्त्ता
... और जेपुरुष सर्वतैंमहान्आत्मादेवकूंनहींजानेहैं ॥ तेअज्ञानीपुरुष ताआत्मादेवका तिरस्काररूपहननक
... तिनआत्महत्यारेपुरुषोंकूं श्रुतिनैं संसाररूपदुःखकीप्राप्तिही कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ असुर्या

... ॥ तास्ते प्रेत्याभिगच्छंति येकेचात्महनोजनाः ॥ अर्थयह ॥ जेपुरुष आपणेआत्माविषेही
... ॥ तिनपुरुषोंकानाम सुरहै ॥ ऐसेआत्माराम विद्वान्पुरुषहैं ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंतैंभिन्न अज्ञानीपुरुषोंका
...सुरपुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्यजे शुभअशुभकर्मजन्यलोकहैं ॥ तिनलोकोंकानाम असुर्यहै ॥ तेअसुर्यनामा
... ...णकरणेहारेअज्ञानरूप अंधतमकरिकैव्याप्तहैं ॥ ऐसेअसुर्यलोकोंकूं तेआत्महत्यारेपुरुष मरणतैंअनंतर प्राप्त
होवैहैं ॥ १ ॥ अब जिसआत्माकेज्ञानतैं तिनअसुर्यलोकोंकीप्राप्ति नहींहोवैहै ॥ ताआत्माकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥ हेशिष्यो! ति
नअसुरपुरुषोंकरिकैअज्ञात यहआत्माकास्वरूप अत्यंतआश्चर्यरूपहै ॥ काहेतैं? यहआत्मादेव आप क्रियातैंरहितहुआभी म
नतैंभीअधिकवेगवालाहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसजिसपदार्थकूं यहमन आपणेसंकल्पद्वारा प्राप्तहोवैहै ॥ तिसतिसपदार्थविषे य
हआत्मादेव तामनकेगमनतैंपूर्वही परिपूर्णहै ॥ और यहआत्मादेव नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकैअगम्यहुआभी ब्रह्मज्ञानकरिकैगम्यहो
वैहै ॥ और यहआत्मादेव आप पर्वतकीन्यांईनिश्चलहुआभी शीघ्रगमनकरणेहारेवायुआदिकोंकूंभी उल्लंघनकरिकैआगेजावैहैं ॥
और तिसअंतर्यामीआत्मादेवकरिकैप्रेरितहुआही यहसूत्रात्मारूपवायु सर्वशरीरोंविषे अग्निहोत्रादिककर्मोंकेकरणेविषे समर्थहोवै
... जिन मेघादिभावकूंप्राप्तहुई अग्निहोत्रकीआहुतियोंरूपकरिकै यहअनेककर्मोंकाफलरूपविश्व उत्पन्नहोवैहै ॥ और सोआत्माद
...स्तवतैंसर्वक्रियातैंरहितहुआभी सर्वक्रियावालाहोवैहै ॥ और सोआत्मादेव अज्ञानीपुरुषोंकूं अत्यंतदूरहुआभी विद्वान्पुरुषोंकूं
...यंतसमीपहै ॥ तथा यहआत्मादेव यादृश्यप्रपंचके अंतरबाह्य परिपूर्णहै ॥ अब वर्णनकरेहुएआत्माकेज्ञानकाफल निरूपणकरे
॥ हेशिष्यो! जेविवेकीपुरुष याजीवत्अवस्थाविषे ब्रह्मातैंआदिलैके पिपीलिकापर्यंत सर्वशरीरोंकूं आपणेआत्मस्वरूपविषे क
...तरूपकरिकैदेखेहैं ॥ तथा तिनसर्वशरीरोंविषे आपणेआत्माकूं अनुगतरूपकरिकैदेखेहैं ॥ तेविवेकीपुरुष किंचित्मात्रभी दुः ॥४६॥
प्राप्तहोवैंनहीं ॥ हेशिष्य! जिसविद्वान्पुरुषकूं आत्मज्ञानकेप्रभावतैं यहसर्वभूतप्राणी आत्मभावकूंप्राप्तहुएहैं ॥ तथा जिस
...न्पुरुषनें अधिष्ठानआत्माकेएकत्वस्वभावकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं साक्षात्कारकर्‍याहै ॥ ... ...स्वरूपसोहकी

भीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तथा विक्षेपरूपशोककीभी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ हे शिष्यो ॥ जोअधिकारीपुरुष स्वयंप्रकाशआनंदस्वरूपईश्वरकूं आपणेतैंअभिन्न
रूपकरिकैसाक्षात्कारकरे हैं । सोपुरुष सर्वत्रव्यापकआत्माकूंही देखेहै ॥ कैसाहैसोआत्मादेव ॥ स्थूल सूक्ष्म कारण या तीनशरीरोंतैंरहितहै ॥
तथा निर्गुणनिरवयवहै ॥ ऐसेआत्मादेवकूं ईश्वररूपकरिकैजानणेहारा जोविद्वान्पुरुषहै ॥ सोविद्वान्पुरुषही सोपाधिकदृष्टिकरिकै आराधनक
रणेयोग्यईश्वररूपभीहोवै है ॥ कैसाहैसोईश्वर ॥ संकोचतैंरहितदर्शनस्वभाववालाहै ॥ तथा सर्वमनकेप्रवृत्तियोंकेजानणेहारासर्वज्ञहै ॥ तथा
अज्ञानादिकशत्रुवोंका तिरस्कारकरणेहाराहै ॥ तथा सर्वकारणों तैं रहित होणे तैं स्वयंभूरूपहै ॥ तथा लोकप्रसिद्धसर्वकारणोंकाभीकारणरूपहै ॥
हेशिष्यो ॥ ऐसेआत्मादेवकेसाक्षात्कारकीप्राप्तिविषे चित्तकीशुद्धिद्वारा उपासनासहितकर्मही उपायरूपहै ॥ ताकर्मकूं वेदवेत्तापुरुष असंभूति
अविद्या यादोनामोंकरिकैकथनकरे हैं और ताउपासनाकूं वेदवेत्तापुरुष संभूति विद्या या दोनामोंकरिकैकथनकरे हैं ॥ तेदोनो अंतःकरणकी
शुद्धिद्वारा तथाएकाग्रताद्वारा आत्मज्ञानकारणहैं ॥ अब कर्म उपासना यादोनोंकेसमुच्चयविधानकरणेवासतै प्रथम उपासनातैंरहित केवलकर्मों
कीनिंदाकरे हैं ॥ हे शिष्यो ॥ जेपुरुष केवलकर्मोंकूंहीकरेहैं ॥ ते पुरुष तिनकर्मोंकेप्रभावकरिकै स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंविषे परमआसक्तिकूंप्राप्त
होवै हैं ॥ तथा स्वर्गादिकअनित्यलोकोंकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ तथा नानाप्रकारकेरागद्वेषकरिकैयुक्तहोवै हैं ॥ इसप्रकार संसारकेसुखनिपेआसक्तहुए
तेंकर्मीपुरुष वारम्वार जन्ममृत्युकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ अब कर्मों तैंरहित केवलउपासनाकीनिंदाकरेहैं ॥ हे शिष्यो ॥ जेपुरुष केवलउपासनाविषेही
प्रीतिवालेहोवै हैं ॥ तेउपासकपुरुष ताउपासनाकेऐश्वर्यतारूपफलविषे आसक्तहुए तिनकर्मीपुरुषों तैं भी अधिकदारुणतमकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ काहेतैं
जेपुरुष वेदविहितकर्मोंकापरित्यागकरिकै केवलउपासनाविषे तत्परहोवै हैं ॥ तिनकेवलउपासकपुरुषोंविषे दोअनर्थकेहेतुहोवै हैं ॥ तहां एकतो
विहितकर्मोंकात्याग ॥ और दूसरा नानाप्रकारकेऐश्वर्यविषेआसक्ति ॥ तिनदोनोंदोषों तैं ते उपासकपुरुषतिनकर्मीपुरुषों तैं भीअधिकदुःखकूं
प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैंयाअधिकारीपुरुषों नैंवेदविहितकर्मोंसहितउपासनाकाहीअनुष्ठानकरणा ॥ केवलकर्मोंका तथाकेवलउपासनाका अनुष्ठान
करणानहीं ॥ हेशिष्यो ॥ इसप्रकार कर्मउपासना यादोनोंकरिकैयुक्त जोतत्त्वज्ञानार्थीपुरुषहै ॥ सोअधिकारीपुरुष चित्तकूंएकाग्रकरिकै ॥
हिरण्मयेनपात्रेण ॥ इत्यादिकमंत्रकरिकै याआदित्यभगवान्की पुनःपुनः प्रार्थनाकरै ॥ कैसाहैसोआदित्यभगवान् ॥ याअधिकारीपुरुषोंकूं
ब्रह्मलोककीप्राप्तिद्वारा क्रममुक्तिकीप्राप्तिवासतै आपणेमंडलविषे छिद्ररूपमार्गकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ हेशिष्यो ॥ जोकर्मउपासनावालापुरुष

हिरण्मयेनपात्रेण ॥ यामंत्रकरिकैतासूर्यभगवान्कीप्रार्थनाकरे है ॥ ताअधिकारीपुरुषकूं याप्रकारकीशुभबुद्धिप्राप्तहोवै है ॥ जोआदित्यमंडल विषेस्थित स्वयंज्योतिपुरुषहै ॥ सोस्वयंज्योतिपुरुषही हमारा वास्तवस्वरूप है यह देहइंद्रियादिरूपसंघातमेरावास्तवस्वरूपनहीं है ॥ काहेतैंयादे हादिरूपसंघातआकाशादिकपंचभूतोंकाकार्यरूपहै ॥ तथा मरणतैंअनंतर भस्मादिरूपपरिणामकूंप्राप्तहोवै है ॥ ऐसायहसंघात प्रणवपदकेवाच्यअर्थ रूपआत्माकूंजानणेहारेमैंविद्वान्पुरुषकास्वरूप किसप्रकारहोवैगा ॥ किंतु यहसंघात हमारास्वरूपनहीं है ॥ हेशिष्यो ॥ इसप्रकार कर्मउपासनाक रिकैयुक्त तथा यासंघातविषे वैराग्यवान् जोअधिकारीपुरुषहै ॥ सोअधिकारीपुरुष आपणेमनकेप्रति याप्रकारकावचनकहै ॥ हेमन पूर्वजिसदेशविषे तथाजिसकालविषे जिसजिसपदार्थकूं तू प्राप्तहोताभयाहै ॥ तिसातिसपदार्थकूं संकल्पसहितकर्मोंकारिकैहीप्राप्तहोताभयाहै ॥ संकल्पसहितकर्मों तैंवि नाकिंचितमात्रपदार्थकीभीप्राप्तिहोवैनहीं इसप्रकारका तासंकल्पका तथाकर्मकामाहात्म्यतुमनैं अभीकिसवास्तै विस्मरणकर्याहै ॥ किंतु इसकाल विषे तुम्हारेकूं तासंकल्पकामाहात्म्य विस्मरणकरणेयोग्यनहीं है ॥ यातैं वेदविहितकर्म तथाउपासनारूपसंकल्पयादोनोंकेमाहात्म्यकूं अभीस्मरण करिकै तूं ताकर्मसंकल्पविषे तत्परहो ॥ हेशिष्यो ॥ इसप्रकार मनकेआगेप्रार्थनाकरताहुआ यहअधिकारीपुरुष जभी हिरण्मयेनपात्रेण ॥ यावैदिक मंत्रकरिकै तथालौकिकस्तोत्रोंकरिकै ताआदित्यभगवान्कीप्रार्थनाकरैहै॥तथा अग्निदेवकीप्रार्थनाकरैहै ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष सर्वपापोंतैं रहित होइकै क्रमतैं ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब ताअग्निदेवताकेप्रार्थनाकानिरूपणकरैहैं ॥ हेअग्निदेवता ॥ आप हमारेकूं सर्वदुःखोंतैंरहित तथाप्रकाशमान ऐसेदेवयानमार्गकरिकै ब्रह्मलोककीप्राप्तिकरो॥तथा पापकीप्राप्तिकरणेहारे हमारेकामक्रोधादिकसर्वशत्रुवोंकूं नाशकरो॥और आपअग्निदेवता हमसर्व जीवोंके चित्तकेवृत्तांतकूं जानणेहारेहो ॥ यातैं तेहमारेकामक्रोधादिकसर्वशत्रु तुमारेकूं अज्ञातनहीं हैं किंतु तेसर्वशत्रु आपकूं ज्ञातहैं ॥ इसप्रकार हमअधिकारीजनोंके कामक्रोधादिकसर्वशत्रुवोंकूं नाशकरणेहारे तथाहमअधिकारीजनोंकूं ब्रह्मलोककीप्राप्तिकरणेहारे जोआपअग्निदेवताहो ॥ ताआपकेउपकारकेनिवृत्तकरणेविषे हम समर्थनहीं हैं ॥ यातैं हमअधिकारीजनोंका आपकेताईं वारंवार नमस्कारहोवै ॥ अब सूर्यभगवान्केप्रार्थ नाकूंकथनकरणेहाराजो ॥ हिरण्मयेनपात्रेण ॥ इत्यादिकमंत्रहै तामंत्रकाअर्थ निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्यो ॥ यहअधिकारीपुरुष याप्रकार तासूर्यभग वान्कीप्रार्थनाकरे ॥ हे भगवन् ॥ तप्तसुवर्णकेसमान अत्यंतप्रकाशमान जोयह आवरणकरनेहारेपात्रकेसमान तेजोमंडलहै ॥ तातेजोमंडलरूप हिरण्मयपात्रकरिकै आदित्यमंडलविषेस्थित आपब्रह्मका उपासकपुरुषोंकेप्राप्तिकाद्वारभूत छिद्ररूपमुख आवृतहोरह्याहै ॥ हेसर्वजगतके

पोषणकरनेहारेसूर्यभगवान् ॥ सत्यपरायणतारूपधर्मवालेहमअधिकारीजनोंकूं आपणादर्शनदेके यासंसारतैंरक्षाकरणेवासतै ताआपणेमुख केआवरणकूं निवृत्तकरो ॥ हेभगवन् ॥ स्मरणमात्रकरिकै सर्वअनर्थोंकूं नष्टकरणेहारा जोआपकावास्तवस्वरूपहै ताआपकेवास्तवस्वरूपकूं जिसप्रकार मैंअधिकारीजन साक्षात्कारकरों ॥ तिसप्रकार आप हमारेऊपर अनुग्रहकरौ ॥ याप्रकारसैं ताआदित्यभगवान्कीप्रार्थना यह अधिकारी पुरुष करै ॥ इसप्रकार तेवेदवेत्तापुरुष जिसपरमात्मादेवकीप्राप्तिवासतै आपणेशिष्योंकेप्रति नानाप्रकारकीविद्या उपदेशकरेहैं सोपरमात्मा देवही याआत्मपुराणग्रंथविषे सर्वत्रप्रतिपादनकन्याहै ॥ तापरमात्मादेवतैंभिन्न किसीभीअनात्मपदार्थका याआत्मपुराणग्रंथविषे प्रतिपादन कन्यानहीं ॥ यातैं जो अधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्ता गुरुतैं या आत्मपुराणग्रंथका पठनकरेहै ॥ तथा जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं याआत्मपुराणग्रंथकाश्रवणकरेहै ॥ तथा जोअधिकारीपुरुष दूसरेमुमुक्षुजनोंकेप्रति याआत्मपुराणग्रंथका कथनकरेहै ॥ तथा जोअधिकारी पुरुष याआत्मपुराणग्रंथकेअर्थकूं निरंतर चिंतनकरेहै ॥ तेसर्वअधिकारी जन तापरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूपजानिकै कार्यसहितअज्ञान कीनिवृत्तिपूर्वक ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ यातैं मोक्षकीइच्छावान्पुरुषोंनैं श्रद्धाभक्तिपूर्वक याआत्मपुराणग्रंथका अवश्य करिकैविचारकरणा ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृताऽऽत्मपुराणे नृसिंहपूर्वोत्तरतापनीयेशावास्यसारार्थप्रकाशे प्रजापतिदेवतासंवादो नाम अष्टादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १८ ॥ समाप्तश्चाय मात्मपुराणनामाग्रंथः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ श्रीशंकरानंदमुनिभ्योनमः ॥ ॥ ९ ॥